भार्गव

आदर्श हिन्दी शब्दकोश

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, ग्रामीण, व्रजभाषा तथा भिन्न विषयों के नवीन शब्द साहित्य, अलंकार- आयुर्वेद, इतिहास, भूगोल, पुराण, दर्शन, विज्ञान, ज्योतिष तथा शास्त्रीय शब्दों और वाग्व्यवहारों आदि का वृहत् संग्रह

(संशोधित तथा संवर्धित)

अर्थ प्रबन्ध कर विभाग, विनियम, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान. राजनियम, विधान तथा शासनकार्य के संबंध के विविध शब्दों की सूची-जिनके यथोचित अंग्रेजी के पर्याय साथ-साथ दिये गये हैं।

सम्पादक

पण्डित रामचन्द्र पाठक, बी. ए., एल्. टी.

भूतपूर्व प्रोफेसर गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज वाराणसी

संकलनकर्त्ता—भार्गव सचित्र स्टैण्डर्ड अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी कानूसाइस् अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी, सचित्र हिन्दी अंग्रेजी डिक्शनरी इत्यादि

प्रकाशक

भार्गव बुकडिपो, चौक, वाराणसी

प्रधान वितरक

श्रीगंगा पुस्तकालय, त्रिलोचन, वाराणसी

मूल्य ६०)

प्रकाशकीय

हिन्दी के राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत होने के पश्चात् से साहित्य, कला, विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर पाठ्य-पुस्तकों और संदर्भ-ग्रंथों की रचना तीव्रगति से हो रही है। इस नये वातावरण के अनुकूल हिन्दी में भी सभी सजीव भाषाओं की तरह हजारों नये शब्दों का निर्माण हुआ है और प्रतिदिन नये शब्द प्रकाश में आते जा रहे हैं।

इस परिस्थिति में कोई भी कोश यदि उसमें इन नये शब्दों का समावेश यथासमय नहीं हो जाता तो, अपना उपयोग खो देगा। अत: प्रत्येक कोशकार और प्रकाशक को इस दिशा में जागरूक रहना अनिवार्य है जिससे पाठकों को एक से अधिक कोश की सहायता लेने पर विवश न होना पड़े। यदि ऐसी असुविधा का अंत किया जा सके तो कोई भी कोश अपना मूल्य बनाये रखेगा।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हम अपने कोश का नया संशोधित एवं संर्वाधित संस्करण पाठकों के सम्मुख उपस्थित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। हमने प्रयास किया है कि भाषा की विभिन्न नयी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकार तथा अन्य संस्थाओं एवं विशिष्ट विद्वानों द्वारा जो नये शब्द निर्मित तथा संकलित किये गये हैं, वे प्राय: सभी प्रस्तुत संस्करण में ले लिये जायँ। इसके फलस्वरूप लगभग सवा सौ पृष्ठ (१५ फर्मे) पहले की अपेक्षा बढ़ गये हैं। आशा है, प्रस्तुत संस्करण पाठकों की आज की आवश्यकता पूरी कर सकने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

भार्गव
आदर्श हिन्दी शब्दकोश

अ

अ-हिन्दी तथा संस्कृत के स्वर वर्ण का पहिला अक्षर, इसका उच्चारण कंठ से होता है। सभी व्यंजन वर्णों का उच्चारण 'अकार' युक्त होता है; यथा-क्+अ=क; ख्+अ=ख इत्यादि। तन्त्रशास्त्र में अकार से ईश्वरत्व का बोध होता है; (आदि प्रत्य०) निषेध, अभाव तथा विपर्याय के अर्थ में प्रत्यय की तरह प्रयोग होता है, यथा-अकाल, अपापी, अब्राह्मण आदि। स्वर से आरंभ होनेवाले शब्दों के साथ लगने पर इसका रूप 'अन्' हो जाता है; जैसे-अ+अधिकार=अनधिकार; अ+आदर=अनादर आदि; (सं. पुं.) ब्रह्मा, सृष्टि, अमृत, मेघ, ब्राह्मण, कीर्ति, कण्ठ, ललाट।

अंक-(सं. पुं. अङ्क) चिह्न, निशान, छाप, संख्या (१, २, ३ आदि), लिखावट, दाग, कलंक, तप्त मुद्रांकित धार्मिक चिह्न, नाटक का खंड या सर्ग, रूपक अलंकार का भेद विशेष, गोद, क्रोड़, बगल या पार्श्व, करवट। (क्रि. प्र.)--**देना, भरना या लगाना**-भेंटना, आलिंगन करना।

अंकक-(सं. पुं., वि.) (स्त्री. अंकिका) हिसाब, चिह्न, छाप आदि लगानेवाला (यंत्र, व्यक्ति आदि)।

अंककरण-(सं. पुं.) चिह्न, छाप या गोद लगाने की क्रिया।

अंककार-(सं.पुं.) हिसाब या छाप लगानेवाला व्यक्ति, बाजी आदि का निर्णायक।

अंकगणित-(सं. पुं.) संख्याओं को जोड़ने, घटाने और गुणा-भाग करने का शास्त्र या विद्या।

अंकगत-(सं. वि.) गोद या पकड़ में आया हुआ।

अँकटा-(हिं. पुं.) (स्त्री. अँकटी) कंकड़ का चिकना छोटा टुकड़ा।

अँकटी-(हिं. स्त्री.) महीन छोटी कंकड़ी।

अँकड़ी-(हिं. स्त्री.) काँटी, तीर का मुड़ा हुआ फल, अनाजों में उगनेवाली लता विशेष, लग्गी।

अंकतंत्र-(स. पु.) अंकगणित।

अंकति-(सं. पुं.) अग्नि, पवन, ब्रह्मा, अग्निहोत्री।

अंकधारण-(सं.पुं.) गोद में धारण करना।

अंकन-(सं. पुं.) (वि. अंकनीय, अंकित) चिह्न या छाप लगाना, चिह्नितकरण, लेखन, शरीर पर शंख, चक्र आदि का धार्मिक चिह्न छपवाना, गिनने की क्रिया।

अँकना-(हिं. क्रि. अ. तथा स.) अंकित या चिह्नित होना, आँका जाना, आँकना, कूतना।

अंकनीय-(सं. वि.) अंकन के योग्य, अंकित किया जाने वाला।

अंकपत्र-(सं.पुं.) (वि. अंकपत्रित) पक्की लिखा-पढ़ी या मुकदमें आदि में प्रयुक्त होनेवाला निर्धारित मूल्य का सरकारी मुद्रांकित कागज, टिकट, स्टाम्प।

अंकपत्रित-(सं. वि.) (लिखा-पढ़ी, दावा आदि) जिसमें अंकपत्र का उपयोग किया गया हो।

अंकपालि, अंकपालिका-(हिं. स्त्री.) क्रोड़, आलिंगन।

अंकपाली-(सं. स्त्री.) आलिंगन, छाती से लगाना, परिचारिका।

अंकमाल-(सं. पुं.) आलिंगन, अँकवार।

अंकमालिका-(सं. स्त्री.) अंकपालिका।

अँकरा-(हिं. पुं.) (स्त्री. अँकरी) एक प्रकार की घास जो गेहूँ या जव के खेत में स्वतः उगती है।

अँकरी-(हिं. स्त्री.) छोटा अँकरा।

अँकरोरी, अँकरौरी-(हिं. स्त्री.) अँकटी, छोटी कंकड़ी।

अँकवाना-(हिं. क्रि. स.) जँचवाना, कूत करवाना, अंकित या चिह्नित कराना।

अँकवार-(हिं. स्त्री.) अंकपाली, गोद, छाती; (क्रि. प्र.)-**देना**-छाती से लगाना, -**भरना**-गले लगना या लगाना, नववधू का पुत्रवती होना।

अँकवारना-(हिं.क्रि.स.) आलिंगन करना।

अँकवारी-(हिं. स्त्री.) गोद, अंक।

अंकविद्या-(सं. स्त्री.) गणित जिसमें अंकों द्वारा हिसाब किया जाता है।

अंकशायिनी-(सं. स्त्री.) बगल में सोने वाली (स्त्री)।

अंकशायी-(सं. पुं., वि.) (स्त्री. अंकशायिनी) गोद में सोनेवाला (बच्चा या पुरुष)।

अंकस-(सं. पुं.) दाग, चिह्न, देह, शरीर।

अंकांक-(सं. पुं.) जल।

अँकाई-(हिं. स्त्री.) आँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी, कूत, अटकल।

अँकाना-(हिं. क्रि. स.) अँकवाना।

अँकाव-(हिं. पुं.) कूत कराने का कार्य, अँकाई, कुताई, जँचवाई।

अंकावतार-(सं. पुं.) नाटक में एक अंक के अंत में आगामी अंक की घटना सूचित करने का संकेत, अंक-पटाक्षेप।

अंकित-(सं. वि.) अंकन किया हुआ, चिह्नित, लिखित।

अंकितक-(सं. पुं.) किसी वस्तु पर चिपकाया हुआ नाम, मूल्य आदि लिखा हुआ कागज का छोटा टुकड़ा।

अंकित मूल्य-(सं. पुं.) वह मूल्य जो किसी पदार्थ पर अंकित रहता है।

अंकिल-(हिं. वि.) अंकित, चिह्नित, चिह्न किया हुआ; (हिं. पुं.) दागकर छोड़ा हुआ साँड़।

अँकुड़ा-(हिं. पुं.) (स्त्री. अँकुड़ी) लोहे का एक ओर मोड़कर गोल किया हुआ काँटा, कुलावा, बुनकरों का एक उपकरण।

अँकुड़ी-(हिं. स्त्री.) मुड़ी हुई काँटी, हल की लकड़ी का वह भाग जिसमें फार जड़ा होता है; -**दार**-(हिं. वि.) अँकुड़ी लगा हुआ।

अंकुर-(सं. पुं.) पौधे की बीज से फूटकर उगने की प्रारम्भिक अवस्था, अँखुवा.

डाभ, कली, रोआँ, संतान, रक्त, नोक या सिरा, घाव का भरना; (क्रि.प्र.) -उगना, जमना, निकलना या फूटना-बीज उगना।
अंकुरण-(सं. पुं.) (वि. अंकुरित) अंकुर निकलने की क्रिया या भाव, नव प्रस्फुटन।
अँकुरना, अँकुराना-(हिं. क्रि. अ.) अँखुवा फूटना, बीज जमना, उत्पन्न होना।
अंकुरित-(सं. वि.) अंकुर उगा हुआ, अँखुआया हुआ, नव प्रस्फुटित; -यौवना-(स्त्री.) वह स्त्री जिसमें युवावस्था के चिह्न प्रकट हो चुके हों।
अँकुरी-(हिं. स्त्री.) भिगाये हुए चने की घुघनी।
अंकुश-(सं. पुं.) लोहे की छोटी नुकीली छड़ जिसे महावत हाथी को वश में रखने के लिए उपयोग करता है, रोक, नियंत्रण, दबाव; -ग्रह-(पुं.) महावत, पीलवान।
अँकुशा-(हिं. स्त्री.) छोटा अंकुश।
अँकुसी-(हिं. स्त्री.) लोहे की झुकी हुई कील जो किसी पदार्थ के लटकाने या फँसाने के काम में आती है, साँप मारने का भाला, किवाड़ बंद करने का पेंच।
अँकोड़ा-(हिं. पुं.) एक प्रकार की मुड़ी हुई कड़ी जिसमें रस्से को फँसाकर पानी में नाव खींची जाती है, एक प्रकार का छोटा लंगर, बड़ी कँटिया।
अँकोर-(हिं. पुं.) गोद, अँकवार, भेंट, घूस, मजदूर का कलेवा, दोपहर।
अंकोल-(सं. पुं.) पहाड़ी वृक्ष विशेष जिसकी छाल दवा के काम आती है।
अंक्य-(सं. वि.) अंकन करने या आँकने योग्य।
अँखड़ी-(हिं. स्त्री.) चक्षु, नेत्र, आँख।
अँखमिचौनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'आँख-मिचौनी'।
अँखाना-(हिं. क्रि. अ.) क्रोध दिखलाना।
अँखिया-(हिं. स्त्री.) आँख, नकाशी बनाने का ठप्पा।
अँखुआ-(हिं. पुं.) बीज में से निकला हुआ महीन अंकुर।
अँखुआना-(हिं. क्रि. अ.) अंकुर फूटना, बीज जमना।
अंग-(सं. पुं.) देह, शरीर, अवयव, भाग, गौण या आश्रित विषय या वस्तु, उपाय या साधन, मन, प्राचीन भारत का एक जनपद; (क्रि. प्र.)-टूटना-अँगड़ाई आना; -लगना-आलिंगन करना, आहार का देह को पुष्ट बनाना, (बच्चे का) किसी से परचना; -लगाना-लिपटाना, परचाना, विवाह द्वारा कन्या को पुरुष के जिम्मे करना।
अंगचारी-(सं. पुं.) (स्त्री. अंगचारिणी) साथी, सहचर।
अंगच्छेद-(सं. पुं.) शरीर के किसी अंग को काटकर अलग करना, प्राचीन न्याय-व्यवस्था में ऐसा आपराधिक दंड।
अंगज, अंगजात-(सं. वि.) अंग या शरीर से उत्पन्न; (पुं.) पुत्र, स्वेद या पसीना, रोम, काम-वासना।
अंगजा, अंगजाता-(सं.स्त्री.) पुत्री, बेटी।
अंगड़-खंगड़-(हिं. वि., पुं.) टूटा-फूटा, गिरा-पड़ा हुआ (पदार्थ)।
अँगड़ाई-(हिं. स्त्री.) आलस्य में जँभाई लेते हुए देह टूटना।
अँगड़ाना-(हिं. क्रि. अ.) अँगड़ाई लेना।
अंगत्राण-(सं. पुं.) शस्त्र-प्रहार से रक्षा के लिए पहना जानेवाला कवच, बख्तर, वर्म।
अंगद-(सं. पुं.) बाजूबंद, बालि का बेटा, लक्ष्मण का पुत्र, दुर्योधन का एक योद्धा।
अंगदान-(सं. पुं.) युद्ध में आत्म-समर्पण, (स्त्री का भोग के लिए) देह-समर्पण।
अंग-द्वार-(सं.पुं.) मुख आदि शरीर के छिद्र।
अंग-धारी-(सं.पुं.) शरीर से युक्त प्राणी।
अँगना-(हिं. पुं.) आँगन, घर के मध्य का खुला भाग।
अंगना-(सं.स्त्री.) सुन्दर अंगोंवाली युवती।
अँगनाई-(हिं. स्त्री.) छोटा अँगना।
अँगनैया-(हिं. स्त्री.) अँगना।
अंगन्यास-(सं. पुं.) पूजा करते समय मंत्रोच्चार करते हुए अंगों का किया जानेवाला स्पर्श।
अंगपालि, अंगपाली-(सं. स्त्री.) आलिंगन।
अंगपालिका-(सं. स्त्री.) अंकपालिका।
अंग-प्रत्यंग-(सं. पुं.) शरीर के अवयव।
अंगभंग-(सं. पुं.) किसी अंग की हड्डी का टूटना, ऐसा आघात जिसमें हड्डी टूट जाय।
अंग-भंगिमा-(सं. स्त्री.) भावव्यंजक शारीरिक मुद्राएँ।
अंग-भंगी-(हिं. स्त्री.) अंग-भंगिमा।
अंग-भाव-(सं. पुं.) नृत्य, संगीत आदि में की जानेवाली अंग-भंगी।
अंग-भू-(सं. वि.) शरीर से उत्पन्न; (पुं.) पुत्र, बेटा, काम का भाव।
अंग-भूत-(सं. वि.) अंग के रूप में शामिल, अंतर्गत।
अंगमर्दक-(सं.पुं.) अंग-मर्दन करनेवाला।
अंग-मर्दन-(सं. पुं.) तेल आदि द्वारा शरीर की मालिश।
अंगमर्ष-(सं. पुं.) गठिया बात (रोग)।
अंग-रक्षक-(सं. पुं.) राजा-महाराजा आदि की शारीरिक रक्षा में नियुक्त सशस्त्र प्रहरी, बॉडी-गार्ड।
अंग-रक्षा-(सं. स्त्री.) शरीर की रक्षा।
अँगरखा-(हिं. पुं.) घुटने तक का लंबा अंगा या चपकन जिसमें बटन के स्थान पर बंद लगे होते हैं।
अँगरा-(हिं. पुं.) अंगार, अंगारा।
अँगराई-(हिं. स्त्री.) अँगड़ाई।
अंगराग-(सं. पुं.) शारीरिक सौंदर्य-वर्धन के लिए लगाया जानेवाला लेप आदि, सौन्दर्य-प्रसाधन।
अंग-राज-(सं.पुं.) अंग देश का राजा, कर्ण।
अँगराना-(हिं. क्रि. अ.) अँगड़ाई लेना।
अँगरी-(हिं. स्त्री.) कवच, बख्तर।
अंग-रुह-(सं. पुं.) रोआँ, ऊन।
अँगरेज-(हिं. पुं.) इँगलैण्ड देश का निवासी।
अँगरेजियत-(हिं. स्त्री.) अँगरेजी चाल-ढाल, इसका अंधानुकरण, अँगरेजपन।
अँगरेजी-(हिं. स्त्री.) अँगरेजों की भाषा, (वि.) विलायती।
अंगलेट-(हिं. पुं.) शरीर का गठन, काठी।
अंगलेप-(सं. पुं.) अंग-राग।
अँगवना-(हिं. क्रि. स.) स्वीकार करना, जिम्मेदारी लेना (कोई काम करने की)।
अंगवारा-(हिं. पुं.) खेत की जोताई में अन्य पुरुष की सहायता, गाँव के किसी अंश का मालिक।
अंग-विकृति-(सं. स्त्री.) किसी अंग के गठन में होनेवाला विकार या भद्दापन, सुडौलपन का विपर्यय।
अंग-विक्षेप-(सं. पुं.) भाव-भंगिमा में किया जानेवाला अंगों का संचालन।
अंग-विद्या-(सं. स्त्री.) व्याकरण आदि शास्त्र।
अंग-विभ्रम-(सं. पुं.) एक रोग।
अंग-शैथिल्य-(सं. पुं.) थकावट, शारीरिक उदासी।
अंग-शोष-(सं. पुं.) शिशुओं का सुखंडी नामक रोग।
अंग-संग-(सं. पुं.) संभोग।
अंग-संगी-(सं. पुं.) अंग-संग या संभोग करनेवाला।
अंग-संचालन-(सं. पुं.) भाव-भंगिमा में हाथ, सिर आदि की मुद्राएँ।
अंग-संधि-(सं. स्त्री.) शरीर-रचना में हड्डियों के जोड़ के भाग या स्थल।
अंग-संस्कार-(सं. पुं.) बनाव-सिंगार।
अंग-संहति-(सं. स्त्री.) किसी चीज की

रचना में उसके अंगों में होने वाला सामंजस्य या तातम्य ।
अंग-सख्य–(सं. पुं.) घनिष्ट मैत्री ।
अंग-सिहरी–(हि.स्त्री.) कँपकँपी, जूड़ी ।
अंग-सेवक–(सं. पुं.) शारीरिक सेवा-टहल करनेवाला ।
अंग-सौष्ठव–(सं. पुं.) शारीरिक गठन की सुन्दरता या आकर्षकता ।
अंग-हानि–(सं.स्त्री.) किसी अंग या अवयव की हानि ।
अंग-हार, अंग-हारि–(सं. पुं.) अंग-विक्षेप ।
अंग-हीन–(सं. वि.) किसी अंग या अवयव से रहित, बिना शरीर का; (पुं.) कामदेव, अनंग ।
अंगांगीभाव–(सं. पुं.) शरीर में अंगों का होनेवाला गौण और मुख्य का पारस्परिक समन्वय; अन्योन्याश्रय ।
अंगा–(हि. पुं.) अँगरखा, चपकन ।
अंगाकड़ी–(हि. स्त्री.) अंगार पर सेंकी अहुई मोटी रोटी, लिट्टी, बाटी ।
अंगार–(हि. पुं.) अंगारा, जलता हुआ कोयला ।
अंगारक–(सं. पुं.) अंगार, मंगल ग्रह, (रसायन शास्त्र में) कार्वन; **-मणि**–(पुं.) मूँगा ।
अंगारकाम्ल–(सं. पुं.) कार्वन और आक्सीजन के मेल से बननेवाला एक अम्ल या एसिड ।
गार-कुष्ठक(सं. पुं.) हितावली नाम का पौधा ।
अंगार-धानिका–(सं. स्त्री.) अँगीठी ।
अंगार-पर्ण–(सं. पुं.) गंधर्वों का नायक चित्ररथ ।
अंगार-पुष्प–(सं. पुं.) इंगुदी या हिंगोट का पेड़ ।
अंगार-मंजरी, अंगार-मंजी–(सं. स्त्री.) रक्त-करंज वृक्ष ।
अंगार-मणि–(सं. पुं.) मूँगा ।
अंगार-वल्लरी, अंगार-वल्ली–(सं. स्त्री.) घुँघची, करंज ।
अं(अँ)गारा–(हि.पुं.)दहकता हुआ कोयला, लकड़ी आदि, अंगार; (वि.) अंगार जैसा लाल; (मुहा०) **-बनना या होना**–गुस्सा या क्रोध में लाल हो जाना; **-(रे) उगलना**–मर्म पर आघात करनेवाली बातें कहना; **-फाँकना**–ऐसा काम करना जिसका परिणाम बहुत कष्टदायक हो; **-बरसना**–धूप का ताप असह्य होना; बहुत ही तप्त लू का बहना; **-(रों) पर पैर रखना**–जान-जोखिम काम करना; **-परलोटना**–क्रोधघ-ईर्ष्या से जलना ।
अंगारि, अंगारिका–(सं. स्त्री.) अँगीठी, किंशुक की कली ।
अंगारिणी–(सं. स्त्री.) छोटी अँगीठी, अस्ताचल सूर्य की लालिमा, एक लता ।
अंगारी–(सं. वि.) सूर्य द्वारा तप्त ।
अँगारी–(हि. स्त्री.) ईख के कटे हुए छोटे-छोटे टुकड़े, ईख के सिरे पर की पत्ती ।
अंगिका–(सं. स्त्री.) अँगिया, चोली ।
अँगिया–(हि. स्त्री.) स्त्रियों की केवल स्तनों को ढाँपने की कुरती जो बंदों से पीठ की ओर बाँधी जाती है ।
अंगिर–(सं. पुं.) अंगिरस् ।
अंगिरस्–(सं. पुं.) ब्रह्मा के मानसपुत्रों में से एक, सप्तर्षियों में से एक जो स्मृतिकार माने जाते थे ।
अंगिरा–(सं. पुं.) अंगिरस् ।
अँगिराना–(हि. क्रि. अ.) अँगड़ाई लेना ।
अंगिर्–(सं. पुं.) एक वैदिक ऋषि ।
अंगी–(सं. वि.) अंग या शरीर से युक्त, अवयव-युक्त ।
अंगीकरण–(सं. पुं.) (वि. अंगीकृत) स्वीकार करने की क्रिया या भाव, अंग के रूप में समन्वित करने की क्रिया या भाव ।
अंगीकार–(सं. पुं.) स्वीकार करने की क्रिया या भाव, अंगीकरण ।
अंगीकृत–(सं. वि.) (भाव. अंगीकृति) अंगीकार या स्वीकार किया हुआ ।
अंगीकृति–(सं. स्त्री.) स्वीकृति, मंजूरी ।
अँगीठा–(हि. पुं.) (स्त्री. अँगीठी) चूल्हा, बोरसी ।
अँगीठी–(हि. स्त्री.) छोटा चूल्हा, छोटी बोरसी ।
अंगीय–(सं. वि.) अंग का, अंग संबंधी ।
अँगुठा–(हि. पुं.) अँगूठा ।
अँगुठी–(हि. स्त्री.) मुंदरी, अँगूठी ।
अंगुर–(हि. पुं.) अंगुल ।
अंगुरि, अंगुरी–(सं. स्त्री.) हाथ या पैर की उँगली ।
अँगुरी–(हि. स्त्री.) उँगली ।
अंगुरीय, अंगुरीयक–(सं. पुं.) उँगली में पहनने का गहना, अँगूठी, बिछिया ।
अंगुल–(सं. पुं.) उँगली, उँगली की चौड़ाई के बराबर माप, बित्ते का माप ।
अंगुलि, अंगुली–(सं. स्त्री.) उँगली, हाथी की सूँड़ का अग्र भाग ।
अंगुलि-तोरण–(सं. पुं.) ललाट पर बना हुआ अर्ध चन्द्राकार टीका ।
अंगुलि-त्राण–(सं. पुं.) सिलाई के समय उँगली में पहना जानेवाला लोहे का टोप ।
अंगुलि-निर्देश–(सं. पुं.) उँगली द्वारा इशारा या संकेत करना ।
अंगुलि-पर्व–(सं. पुं.) उँगली का पोर या संधि ।
अंगुलि-प्रतिमुद्रा–(सं. स्त्री.) उँगली या अँगूठे की छाप या निशान ।
अंगुश्त–(फा. पुं.) उँगली; **-री**–(स्त्री.) अँगूठी ।
अंगुश्ताना–(फा. पुं.) अंगुलित्राण ।
अंगुष्ठ–(सं. पुं.) अँगूठा ।
अँगुसा–(हि. पुं.) अँखुआ ।
अँगुसाना–(हि. क्रि. अ.) अँखुआ निकलना ।
अँगुसी–(हि. स्त्री.) सोनार की बंकनाल या फुंकनी जिससे दीये को फूंककर टाँका लगाया जाता है ।
अँगूठा–(हि. पुं.) हाथ या पैर की सबसे मोटी अँगुली; (मुहा०) **-(अँगूठा) चूमना**–खुशामद करना; **-दिखाना**–तिरस्कार या अवज्ञा या विफलता के उपहास में अँगूठा दिखाना, नाहीं या इनकार करना ।
अँगूठी–(हि. स्त्री.) उँगली में पहनने का गहना, मुद्रिका, मुंदरी ।
अंगूर–(फा. पुं.) द्राक्षा, दाख ।
अंगूरी–(फा. वि.) अंगूर के रंग का, अंगूर से बना हुआ; **-शराब**–(स्त्री.) अंगूर की बनी शराब; (पुं.) अंगूर सा हलका हरा रंग ।
अँगेजना–(हि. क्रि. स.) अपने ऊपर ले लेना, अंगीकार करना, सहना ।
अँगेठा–(हि. पुं.) बड़ी अँगीठी ।
अँगेठी–(हि. स्त्री.) देखें 'अँगीठी' ।
अँगेरना–(हि. क्रि. स.) देखें 'अँगजना' ।
अँगोछना–(हि. क्रि. स.) गीले शरीर को वस्त्र से पोंछना ।
अँगोछा–(हि. पुं.) अंग पोंछने का वस्त्र, गमछा ।
अँगोछी–(हि. स्त्री.) छोटा अँगोछा, छोटी मर्दानी धोती ।
अँगोजना–(हि. क्रि. स.) देखें 'अँगेजना' ।
अँगोरा–(हि. पुं.) मच्छड़, भुनगा ।
अँगोरी–(हि. स्त्री.) देखें 'अँगारी' ।
अँगौंगा–(हि. पुं.) देवता, पुरोहित आदि को अर्पण करने के लिये निकाला हुआ पदार्थ, अँगऊँ ।
अँगौरिया–(हि. पुं.) मजदूरी के बदले हरवाहे को हल-बैल मँगनी देना ।
अंग्य–(सं.वि.) अंगों से संबंध रखनेवाला ।
अँग्रेज–(अं. पुं.) अँगरेज ।

अँधड़ा–(हिं. पुं.) पैर में पहिनने का काँसे का छल्ला जिसको नीच जाति की स्त्रियाँ पहिनती हैं।
अँघराई–(हिं. स्त्री.) पशुओं पर लगने का कर।
अंघस्–(सं. पुं.) पाप, पातक।
अँघिया–(हिं. स्त्री.) महीन आटा चालने की चलनी, अँगिया।
अँचरा–(हिं. पुं.) दे० 'आँचल'।
अँचवन–(हिं. पुं.) आचमन।
अँचवना–(हिं. क्रि. अ.) आचमन करना, भोजन के बाद कुल्ला करना।
अँचवाना–(हिं.क्रि.स.) आचमन कराना, मुँह धुलाना, कुल्ला कराना।
अंछर–(हिं. पुं.) अक्षर, मंत्र, मुख का एक प्रकार का रोग; (मुहा०) -मारना–जादू-टोना करना।
अंज–(सं. पुं.) पद्म, कमल।
अंजन–(सं. पुं.) काजल, सुरमा, स्याही, रात्रि, पश्चिम, नीलगिरि, एक वृक्ष।
अंजनसार–(हिं. वि.) आँखों में अंजन लगाया हुआ।
अंजनहारी–(हिं. स्त्री.) आँख पर होनेवाली फुंसी, विलनी, एक प्रकार का कीड़ा।
अंजना, अंजनी–(सं. स्त्री.) हनुमान् की माता, विलनी।
अंजर-पंजर–(हिं. पुं.) शरीर की ठठरी।
अंजवार–(फा. पं.) औषधि के प्रयोग में आनेवाला एक पौधा।
अंजल, अंजला–(हिं. पुं.) अंजलि।
अंजलि–(सं.स्त्री.) कर-संपुट, अंजली भर वस्तु; -गत–(वि.) अजंलि में रखा हुआ; -बद्ध–(वि.) करबद्ध।
अँजवाना–(हिं.क्रि.स.) आँजन लगवाना।
अंजहा–(हिं. वि.) अन्न से बना हुआ।
अंजही–(हिं. स्त्री., वि.) अन्न बिकने का बाजार, अन्न से बना हुआ, अनाजी।
अँजाना–(हिं. क्रि. स.) आँख में काजल लगवाना।
अंजित–(सं. वि.) अंजन लगा हुआ।
अंजीर–(हिं. पुं.) गूलर के फल के समान एक फल और उसका वृक्ष।
अँजुरी–(हिं. स्त्री.) हथेलियों को सटाकर बना संपुट, अंजलि।
अँजोर–(हिं. पुं.) प्रकाश, उजाला, रोशनी।
अँजोरना–(हिं. क्रि. अ.) प्रकाश करना।
अँजोरा–(हिं. पुं.) उजाला, प्रकाश।
अँजोरी–(हिं. स्त्री.) प्रकाश, चाँदनी; (वि.) प्रकाशमय।
अंझा–(हिं. पुं.) अनध्याय, नागा, छुट्टी।
अँटकना–(हिं.क्रि.स.) अटकना, रुकना।
अँटना–(हिं.क्रि.स.) पूरा होना, भर जाना, समा जाना, ठीक नाप का होना।
अंटा–(हिं. पुं.) बड़ी गोली, सूत लपेटने की गड़ारी, सूत का लच्छा, ऊँची अटारी।
अंटागुड़गुड़–(हिं. वि.) नशे में अचेत, बेसुध।
अंटाघर–(हिं. पुं.) बिलियर्ड् खेलने का कमरा।
अंटाचित–(हिं. वि.) पीठ के बल या चित पड़ा हुआ, नशे में चूर, बेसुध।
अंटाबंधू–(हिं. पुं.) कौड़ी जो जुए में फेंकी जाती है।
अँटिया–(हिं. स्त्री.) छोटा पुलिन्दा, गँठिया।
अँटियाना–(हिं. क्रि. स.) लुप्त करना, छिपा लेना, गँठिया बनाना, धागे की लच्छी गड़ारी पर लपेटना।
अंटी–(हिं. स्त्री.) लच्छी, गाँठ, उँगलियों के बीच का स्थान, टेंट, पहलवानी का एक दाँव, कान में पहिनने की छोटी बाली।
अंटीतल–(हिं. पुं.) कोल्हू के बैल की आँख पर बाँधा हुआ ढपना या पट्टी।
अंटीबाज–(हिं. पुं.) दगाबाज, धोखेबाज।
अँठई–(हिं. स्त्री.) छोटा कीड़ा, किलनी।
अंठली–(हिं. स्त्री.) नवयौवना का उभड़ा हुआ स्तन।
अंठी–(हिं. स्त्री.) गाँठ, गिलटी, गुठली, चियाँ।
अंड–(सं.पुं.) अंडा, फोता, अंडकोश, ब्रह्मांड, वीर्य।
अंड-कोश–(सं. पुं.) लिंग के नीचे संलग्न दो गुठलियों की थैली।
अंडज–(सं. वि., पुं.) अंडे से उत्पन्न होने वाला (प्राणी); जैसे–साँप, मुर्गा आदि।
अंडबंड–(हिं. पुं.) व्यर्थ की वार्ता, बक-झक, गाली-गलौज।
अँडरना–(हिं. क्रि.) अन्न की बाल फूटना।
अँड-वृद्धि–(सं.स्त्री.) फोता बढ़ने का रोग।
अंडस–(हिं. स्त्री.) असुविधा, अड़चन, कठिनाई।
अंडा–(हिं. पुं.) वह कड़ा आवरणवाला सफेद पिंड जिसमें से साँप, चिड़ियों आदि के बच्चे निकलते हैं, अंड; (मुहा०) अंडे सेना–पक्षियों का अपने अंडे पर बैठना, अकर्मण्य रूप से घर में बैठे रहना।
अंडाकार, अंडाकृति–(सं. वि.) अंडे की आकृतिवाला।
अँडिया–(हिं. स्त्री.) बाजरे की पकी बाल, सूत की लच्छी।
अंडी–(हिं. स्त्री.) रेंड़ी, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
अँडुआ–(हिं. पुं.) बिना बधिया किया हुआ पशु।
अँडुआना–(हिं. क्रि. स.) पशु को बधिया करना।
अँडुआ बैल–(हिं. पुं.) बिना बधिया किया हुआ बैल, साँड़।
अँडुवारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी मछली।
अंडे-बच्चे–(हिं. पुं.) बाल-बच्चे, संतान।
अंडैल–(हिं. वि.) जिसके पेट में अंडा हो।
अंतःकरण–(सं. पुं.) हृदय, विवेक, ज्ञानेन्द्रिय।
अंतःकलह–(सं. पुं.) भीतरी झगड़ा।
अंतःपाल–(सं. पुं.) अंतःपुर का रक्षक या प्रहरी।
अंतःपुर–(सं. पुं.) राजमहल में रानियों का निवास, जनानखाना।
अंतःप्रकृति–(सं. स्त्री.) भीतरी या मूल स्वभाव।
अंतःप्रज्ञ–(सं. वि.) आत्मज्ञानी।
अंतःस्थ–(सं. वि.) भीतर स्थित।
अंत–(सं. पुं.) आखिर, समाप्ति, निकट, आखिरी छोर, नाश, मृत्यु, अंतकाल, सामीप्य, पड़ोस, परिणाम, निबटारा, निश्चय, प्रकृति, स्वभाव, भेद, अंतःकरण; (वि.) निकट, समीप; (मुहा०) -पाना–भेद पाना; -बनना–जीवन के आखिरी दिनों का सुखमय होना; -बिगड़ना–जीवन के आखिरी दिनों का बुरा होना; -लेना–भेद लेना, गुप्त बातों की जानकारी प्राप्त करना।
अंतक–(सं. वि.) नाश करने वाला; (पुं.) मृत्यु, यमराज, सन्निपात ज्वर का एक भेद।
अंतकर, अंतकरण, अंतकारी–(सं. वि.) नाश करनेवाला।
अंतकर्म–(सं. पुं.), अंतक्रिया–(सं.स्त्री.) अन्त्येष्टि क्रिया, मृतक क्रिया।
अंतगति–(सं. स्त्री.) मृत्यु, मौत।
अंतघाई–(हिं. वि.) विश्वासघाती।
अंतघाती–(सं. वि.) विश्वासघाती।
अँतड़ी–(हिं. स्त्री.) आँत।
अंततः–(सं. अव्य.) अन्त में, कम से कम।
अंतरंग–(सं.वि.) भीतरी, घनिष्ठ या दिली; (पुं.) भीतरी अंग (हृदय, मस्तिष्क आदि)।
अंतर–(सं. वि.) भीतरी, निकट, आसन्न,

आत्मीय; (पुं.) भीतर का भाग, आशय, मन, हृदय, बीच, अवकाश, काल, अवधि, फर्क, शेष, दूरी, फासला।
अंतरग्नि–(सं. स्त्री.) जठराग्नि, पाचन-क्रिया की अग्नि।
अंतरछाल–(हिं. पुं.) छाल के भीतर का नरम भाग।
अंतरजाल–(हिं. पुं.) कसरत करने की एक लकड़ी।
अंतरण–(सं. पुं.) एक स्थान से दूसरे स्थान को हटना, स्थान-परिवर्तन।
अंतरा–(सं. अव्य.) भीतर, बीच में, पास, कभी-कभी, यदा-कदा, प्रसंगतः; (पुं.) स्थायी या टेक को छोड़कर गीत के अन्य पद।
अँतरा–(हिं. पुं.) कोना, नागा, रुकावट, एक दिन का अंतर देकर आने वाला ज्वर, अँतरिया बुखार; (वि.) जो एक दिन का अंतर देकर हो।
अंतराकाश–(सं. पुं.) आकाश का मध्य-भाग।
अंतरागार–(सं. पुं.) घर का भीतरी भाग, जनानखाना।
अंतरात्मा–(सं.स्त्री.) आत्मा, अंतःकरण।
अँतराना–(हिं. क्रि. स.) भीतर करना, छिपाना।
अंतराल–(सं. पुं.) मध्यवर्ती काल या स्थान, ओट।
अंतरिंद्रिय–(सं. पुं.) भीतरी इंद्रिय (मन, बुद्धि आदि)।
अंतरिक्ष–(सं. पुं.) आकाश का सुदूरतम भाग।
अंतरित–(सं. वि.) जिसका अंतरण किया गया हो, अपने स्थान या स्थिति से हटाया हुआ।
अंतरीप–(सं. पुं.) भू-भाग का वह पतला भाग जो समुद्र के भीतर दूर तक चला गया हो।
अंतरीय–(सं. पुं.) नीचे पहनने का कपड़ा, अँतरौटा।
अँतरौटा–(हिं. पुं.) अंतरीय।
अंतर्–(सं. अव्य.) भीतर, बीच में।
अंतर्गत–(सं. वि.) भीतर समाया हुआ।
अंतर्गृह–(सं. पुं.) मकान का भीतरी भाग या खंड।
अंतर्घट–(सं. पुं.) अंतःकरण, अंतरात्मा।
अंतर्जातीय–(सं. वि.) दो या कई जातियों से संबंधित; -विवाह–(पुं.) दो विभिन्न जातियों के पात्रों का होनेवाला विवाह।
अंतर्ज्ञान–(सं. पुं.) अंतःकरण, अंतर्बोध, भीतरी ज्ञान।
अंतर्ज्वाला–(सं. स्त्री.) पृथ्वी की भीतरी आग, चिंता, संताप।
अंतर्दर्शी–(सं. वि.) मन की भीतरी वृत्तियों को समझनेवाला, आत्म-निरीक्षक।
अंतर्दशाह–(सं.पुं.) मृत्यु के बाद दस दिनों की अवधि में होनेवाला अन्त्येष्टि कृत्य।
अंतर्दृष्टि–(सं. स्त्री.) आत्म-ज्ञान का बोध, ज्ञान-चक्षु।
अंतर्देशीय–(सं. वि.) दो या कई देशों के बीच होनेवाला या उनसे संबंधित।
अंतर्द्धान, अंतर्धान–(सं. पुं.) अदृश्य या गायब हो जाना।
अंतर्निहित–(सं. वि.) भीतर स्थित, मन के भीतर स्थित।
अंतर्बोध–(सं. पुं.) मन की स्वाभाविक सहज बुद्धि, अंतर्ज्ञान।
अंतर्भाव–(सं. पुं.) अंतर्गत होना।
अंतर्भावना–(सं. स्त्री.) मन ही मन किया जानेवाला चिंतन।
अंतर्भूत–(सं. वि.) मन में समाया हुआ।
अंतर्मुख–(सं. वि.) भीतर की ओर मुख वाला।
अंतर्यामी–(सं. वि., पुं.) मन में निवास करनेवाला या उसके भाव समझने वाला (ब्रह्म या आत्मा)।
अंतर्राष्ट्रीय–(सं. वि.) दो या अधिक राष्ट्रों से संबंधित।
अंतर्लीन–(सं. वि.) अपने मानसिक विचारों में ही लीन।
अंतर्वर्ती–(सं.वि.) भीतर या बीच में स्थित।
अंतर्वेदना–(सं. स्त्री.) भीतरी पीड़ा या कष्ट; संताप।
अंतर्हित–(सं. वि.) अदृश्य, लुप्त, दृष्टि से ओझल।
अंतस्तल–(सं. पुं.) हृदय, अंतःकरण।
अंतस्ताप–(सं. पुं.) भीतरी या मानसिक वेदना, मनस्ताप।
अंताक्षरी–(स. स्त्री.) पद्य-पाठ की वह प्रतियोगिता जिसमें एक प्रतियोगी द्वारा पढ़े पद्य के अंतिम अक्षर से आरंभ होनेवाला पद्य दूसरा प्रतियोगी प्रत्युत्तर में पढ़ता है।
अंतावरी–(हिं. स्त्री.) अँतड़ी, आँत।
अंतिम–(सं. वि.) आखिरी, चरम।
अंत्य–(सं. वि.) अंत का, अंतिम।
अंत्यकर्म–(सं.पुं.) मृतक का दाहकर्म आदि।
अंत्यज–(सं. पुं.) शूद्र, अछूत।
अंत्यवर्ण–(सं. पुं.) अंत्यज।
अंत्याक्षरी–(सं. स्त्री.) अंताक्षरी।
अंत्येष्टि–(सं. स्त्री.) मृतक कर्म।
अंत्र–(सं. पुं.) आँत, अँतड़ी।
अंत्रवृद्धि–(सं. स्त्री.) आँत फूलने की बीमारी।
अंदरसा–(हिं. पुं.) पीसे हुए चावल की मिठाई।
अंदरी–(फा. वि.) भीतरी।
अंदरूनी–(फा. वि.) भीतर का, भीतरी।
अंदाज–(फा. पुं.) अदा, मोहक रंग, अटकल।
अंदाजन–(फा. अव्य.) अटकल से, लगभग
अंदाजपट्टी–(हिं. स्त्री.) खेत की फसल के दाम की कूत।
अंदाजपीटी–(हिं. स्त्री.) दिनरात शृंगार करनेवाली स्त्री।
अंदाजा–(फा. पुं.) अंदाज।
अँदाना–(हिं. क्रि. स.) बचाना।
अँदुआ–(हिं. पुं.) हाथी के पिछले पैर में फँसाने की एक काँटेदार बेड़ी।
अंदेशा–(फा. पुं.) शक, आशंका, खतरा, दुविधा।
अंदोर–(हिं. पुं.) कोलाहल।
अँदोह–(फा. पुं.) सन्देह, आशंका, शोक।
अंध–(सं. वि.) जो दृष्टिशक्ति से रहित हो, अंधा, निर्बुद्धि; (पुं.) अंध या अंधा व्यक्ति।
अंधकार–(सं. पुं.) प्रकाश का अभाव, अँधियारा।
अंधखोपड़ा (-ड़ी)–(हिं. पुं.) अज्ञानी, मूर्ख, लंठ।
अंधड़–(हिं.पुं.) धूलिपूर्ण तीव्र वायु, आँधी।
अंधधुंध–(हिं. पुं.) अन्धकार, अत्याचार।
अंध-परंपरा–(सं. स्त्री.) बिना सोचे-समझे पुरानी रीति-रिवाज या विचारों का अंधानुकरण।
अंध-विश्वास–(सं. पुं.) पुरानी रीतियों या विचारों में अतार्किक विश्वास तर्कहीन विश्वास।
अंधा–(हिं. वि.) देखने की शक्ति से रहित, अंध, विचारहीन, मूर्ख; (पुं.) अंधा व्यक्ति; (मुहा०) अंधे की लकड़ी या लाठी–एकमात्र सहारा; -बनना–बेवकूफ बनना; -बनाना–बेवकूफ बनाना, ठगना।
अंधाधुंध–(हिं. वि.) बड़ा अँधेरा, विचार-हीनता, (अव्य.) अतिशय, बहुत।
अंधानुकरण–(सं. पुं.) बिना सोचे-समझे किसी रीति-रिवाज, विश्वास बात आदि की नकल।

अंधारी–(हि. स्त्री.) अंधड़ ।
अंधियार–(हि. पुं.) अन्धकार, प्रकाश का अभाव ।
अंधियारा–(हि. पुं.) अँधेरा, अन्धकार ।
अंधियारी–(सं. स्त्री.) अंधकारमय वातावरण, अँधेरा ।
अंधेर–(हि. पुं.) अत्याचार, अन्याय, बुरा प्रबंध ।
अंधेरखाता–(हि. पुं.) गड़बड़ी, कुप्रबंध ।
अंधेरना–(हि. क्रि. स.) गड़बड़ी करना, अँधेरा करना ।
अंधेरा–(हि. पुं.) अन्धकार; -पाख-(पुं.) कृष्ण पक्ष; (वि.) अंधकारमय; (मुहा०) अँधेरे घर का उजाला–अति सुन्दर व्यक्ति, एकलौता पुत्र; –छा जाना–कुछ दिखाई न देना; अँधेरे मुँह–पौ फटने से पूर्व, सूर्योदय से पहले ।
अंधेरिया–(हि. स्त्री.) अन्धकार, अँधेरी रात, घोड़े या बैल की आँख ढांपने का पट्टा ।
अंधेरी–(हि. स्त्री.) अँधेरिया, अन्धकार, घोड़े की आँख पर बाँधने की पट्टी या जाली ।
अंधोटी–(हि. स्त्री.) घोड़े या बैल की आँखों को ढाँपने का पट्टा, अँधवट ।
अंबर–(सं. पुं.) आकाश, आसमान, वस्त्र, केसर, एक सुगंधित द्रव्य ।
अंबरबारी–(हि. स्त्री.) एक वृक्षविशेष । इसकी लकड़ी को दारुहल्दी और इसकी जड़ से निकाले हुए रस को 'रसवत' कहते हैं ।
अंबरबेल–(हि. स्त्री.) आकाश बेल, अमरबेल. यह धागे के समान पतली होती है और वृक्षों पर एक टुकड़ा फेंक देने से बढ़ती है ।
अंबरसारी–(हि.स्त्री.) एक प्रकार का कर ।
अंबष्ठ–(सं. पुं.) मध्य पंजाब का प्राचीन नाम, महावन ।
अंबा–(सं. स्त्री.) माता, दुर्गा ।
अंबाड़ा–(हि. पु.) आमड़ा (फल) ।
अंबापोली–(हि. स्त्री.) आम का सुखाया और पत्तों में जमाया हुआ रस, अमावट ।
अंबारी–(फा. पु.) हाथी की पीठ पर रखने का छतदार हौदा, छज्जा ।
अंबिका–(सं. स्त्री.) अंबा ।
अंबिया–(हि. स्त्री.) बिना जाली पड़ा हुआ आम का कच्चा फल, टिकोरा ।
अंबु–(सं. पु.) जल, पानी, लग्न का चतुर्थ स्थान ।
अंबुज–(सं. पु., वि.) जल में उत्पन्न होनेवाला, कमल ।
अंबुद–(सं.वि.,पुं.) जल देनेवाला, बादल ।
अंबुधि–(सं. पुं.) सागर, समुद्र ।
अंबुनिधि–(सं. पुं.) सागर ।
अंबुपति–(सं. पुं.) समुद्र, वरुण ।
अंभोज–(सं. वि., पुं.) जल में उत्पन्न होनेवाला, कमल, चंद्रमा ।
अंश–(सं. पुं.) भाग, खण्ड, अवयव, कन्धा, किसी राशि का तीस भाग, अक्षांश, भाज्य अङ्क (यथा $\frac{1}{4}$ अपूर्णाङ्क में १ अंश और ४ हर कहलाता है), कला, राजा, पुरुहोत्र के पुत्र का नाम ।
अंशक–(सं. पुं.) हिस्सेदार, सझिया, पट्टीदार, ज्ञाति, पुत्र, बाँटनेवाला, किसी राशि का तीसवाँ भाग ।
अंशपत्र–(सं. पुं.) जिस प्रतिज्ञापत्र में पट्टेदार का अंश निर्धारित किया गया हो ।
अंशभाज्–(सं. पुं.) (स्त्री. अंशभाजा) अंश या हिस्से को ग्रहण करनेवाला ।
अंशमापन–(पुं. सं.) किसी वस्तु के अंश की नाप ।
अंशल–(सं. पुं.) अंश ग्रहण करनेवाला ।
अंशहर–(सं. पुं.) अंश या भाग को ग्रहण करनेवाला ।
अंशावतार–(सं. पुं.) ईश्वर का वह अवतार जिसमें उनकी थोड़ी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है ।
अंशी–(सं.पुं.) (स्त्री. अंशिनी) हिस्सेदार, अंश धारण करनेवाला, अवतारी ।
अंशु–(सं. पुं.) सूर्य-किरण, ज्योति, वेग, धागा, अल्प मात्रा, थोड़ा अंश, एक ऋषि का नाम ।
अंशुक–(सं. पुं.) रेशमी वस्त्र, ओढ़ने का वस्त्र, ओढ़नी, दुपट्टा, तेजपात नाम का सुगंधित द्रव्य ।
अंशुपति–(सं. पुं.) सूर्य, आदित्य, भानु ।
अंशुपर्णी–(सं. स्त्री.) शालपर्णी नाम की ओषधि विशेष, सरिवन ।
अंशुमंत–(हि. पुं.) सूर्य, राजा अंशुमान् ।
अंशुमता–(सं. स्त्री.) शालपर्णी का वृक्ष ।
अंशुमत्–(सं.वि.) किरणयुक्त; (पुं.) सूर्य ।
अंशुमत्फला–(सं. स्त्री.) केले का वृक्ष ।
अंशुमान्–(सं. पुं.) सूर्य, एक सूर्यवंशी राजा जो असमंजस के पुत्र थे ।
अंशुमाला–(सं. स्त्री.) किरणों का समूह ।
अंशुमाली–(सं. पुं.) सूर्य, १२ की संख्या ।
अंशुल–(सं. पुं.) चतुर मनुष्य, पण्डित ।
अंशुहस्त–(सं. पुं.) सूर्य, मरीचिमाली ।
अंस–(सं. पुं.) स्कन्ध, कन्धा ।
अंसकूट–(सं. पुं.) साँड़ की पीठ पर का ककुद (कूबड़ या उभड़ा हुआ भाग) ।
अंसत्र–(सं. पुं.) कन्धे की रक्षा करनेवाला, कवच ।
अंसफलक–(सं. पुं.) स्कन्धास्थि, कन्धे पर की हड्डी ।
अँसुवाना–(हि. क्रि. स.) आँसू से आँखे भर जाना ।
अइया–(हि.स्त्री.) वृद्धा स्त्री, दादी, नानी ।
अउ–(हि. अव्य.) और, तथा ।
अउठा–(हि. पुं.) कपड़ा नापने का गज ।
अउलना, अऊलना–(हि. क्रि. अ.) गरमी पड़ना और हवा का रुक जाना ।
अऋण, अऋणी–(सं. वि.) जो ऋण या कर्ज से मुक्त हो ।
अकंटक–(सं. वि.) काँटों से रहित, विघ्न-रहित, निःशत्रु ।
अकंप–(सं. वि.) कंप या कंपन से रहित ।
अकंपित–(सं. वि.) अकंप ।
अक–(सं. पुं.) पाप, दुःख, क्लेश ।
अकच–(सं. पुं.) खल्वाट, जिसके मस्तक में बाल न हों, गंजा, केतु ग्रह ।
अकच्छ–(सं. वि.) नंगा, व्यभिचारी ।
अकड़–(हि. स्त्री.). ऐंठन, मरोड़ ।
अकड़-तकड़–(हि. पुं.) गर्व, ऐंठन ।
अकड़ना–(हि. क्रि. अ.) सूखकर कड़ा हो जाना, ठिठुरना, ऐंठना, तनना, हठ करना, गर्व करना, अड़ना, ढिठाई दिखलाना, लड़ने को तैयार हो जाना ।
अकड़बाई–(हि. स्त्री.) शरीर की ऐंठन ।
अकड़बाज–(हि. वि.) घमंडी ।
अकड़म–(सं. पुं.) तन्त्र शास्त्र में प्रयुक्त करने का एक चक्र जिसका योग गुरु-शिष्य की सिद्धि जानने के लिये किया जाता है ।
अकड़ाव–(हि. पुं.) तनाव, खिंचाव, ऐंठन ।
अकत–(हि. वि.) समग्र, संपूर्ण; (अव्य.) पूरी तरह से, बिलकुल ।
अकथ–(हि. वि.) न कहने योग्य, अवर्णनीय ।
अकथनीय–(सं. वि.) अवर्णनीय, न कहने योग्य ।
अकथह–(सं. पुं.) अकड़म की तरह प्रयोग करने योग्य एक चक्र ।
अकथित–(सं. वि.) जो कहा न गया हो ।
अकथ्य–(सं. वि.) न कहने योग्य, व्यर्थ ।
अकथक–(हि. पुं.) सोच-विचार, आगा-पीछा, शंका ।
अकनना–(हि. क्रि. स.) आहट लेना, कान लगाकर चुपके से सुनना ।
अकबक–(हि. पुं.) असंबद्ध वार्ता, बड़-

बड़, अंडबंड, वकझक; (वि.) अवाक्, भौचक्का।

अकवकाना–(हिं. क्रि. अ.) घवड़ाना, भौचक्का होना।

अकवर–(अ. पुं.) वादशाह जो हुमायूं के पुत्र थे।

अकवरनामा–(अ. पुं.) शेख अबुल फजल का लिखा हुआ अकवर के समय का इतिहास।

अकरीव–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की फलहारी मिठाई; (वि.) अकवर संबंधी, अकवर की वनवाई हुई।

अकर–(सं.वि.) न किये जाने योग्य, दुष्कर, विकट, विना हाथ का, विना कर का।

अकरकरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ औषधियों में प्रयुक्त होती है।

अकरण–(सं.पुं.) कर्म का अभाव, कर्म का फल-रहित होना, इन्द्रिय-रहित ईश्वर।

अकरणीय–(सं. वि.) न करने योग्य।

अकरा–(हिं. वि.) बहुमूल्य, मोल न लेने योग्य, महँगा।

अकराथ–(हिं. वि.) निष्फल, व्यर्थ।

अकराल–(सं. वि.) जो भयंकर न हो, सौम्य, रम्य, सुन्दर।

अकरास–(हिं. पुं.) आलस्य, शरीर का टूटना।

अकरासू–(हिं. स्त्री.) गर्भवती स्त्री।

अकरी–(हिं. स्त्री.) हल में वँधा हुआ वह पोला वाँस जिसमें से वोते समय वीज गिराया जाता है।

अकरुण–(सं. वि.) करुणाहीन, कठोर।

अकर्ण–(सं. वि.) जिसके कान न हों।

अकर्तव्य–(सं. वि.) न करने योग्य।

अकर्ता–(सं. वि.) कार्य न करनेवाला।

अकर्तृक–(सं. वि.) विना कर्ता का।

अकर्म–(सं. पुं.) वुरा काम, कुकर्म, न करने योग्य कार्य, पाप, अपराध, अधर्म।

अकर्मक–(सं. वि.) कर्मरहित क्रिया, व्याकरण में जिस क्रिया का कर्म न हो।

अकर्मण्य–(सं.वि.) आलसी, सुस्त, वेकाम।

अकर्मण्यता–(सं. स्त्री.) निकम्मापन।

अकर्मा–(हिं. वि.) काम न करनेवाला।

अकर्मान्वित–(सं. वि.) अयोग्य, पापी, कुकर्मी।

अकर्मी–(हिं.पुं.वि.) वुरा कार्य करनेवाला, पापी।

अकर्षण–(हिं. पुं.) आकर्षण, खिंचाव।

अकलंक–(सं. वि.) दोषरहित, निष्कलंक, पापरहित।

अकलंकता–(सं. स्त्री.) निष्कलंकता, स्वच्छता।

अकलंकित–(सं.वि.) कलंकरहित, निर्दोष।

अकल–(सं. वि.) अवयवरहित, अंश-शून्य, व्यर्थ, निष्फल; (हिं. वि.) अखण्ड, निर्गुण; (हिं. पुं.) सिक्ख सम्प्रदाय में ईश्वर का एक नाम।

अकलखुरा–(हिं. वि.) अकेला भोजन करनेवाला, लालची, स्वार्थी, डाह करनेवाला।

अकलवर, अकलवीर–(हिं. पुं.) भाँग की तरह का एक पौधा।

अकल्क–(सं. वि.) विना पाप का, दुष्टताहीन।

अकल्पित–(सं. वि.) जो कल्पित न हो, न वनाया हुआ, अकृत्रिम, सहज।

अकल्मष–(सं. वि.) पापरहित, निर्दोष।

अकल्य–(सं. वि.) आरोग्यहीन, रोगी।

अकल्याण–(हिं. पुं.) अशुभ, अमङ्गल, मन्द, अकुशल, अहित।

अकवन–(हिं. पुं.) मदार का पौधा।

अकस–(हिं. पुं.) शत्रुता, वैर, द्वेष, डाह, विरोध।

अकसना–(हिं. क्रि. अ.) शत्रुता करना, द्वेष करना।

अकसीर–(अ. स्त्री.) अत्यन्त लाभ करनेवाली औषधि, सर्वरोगहर औषधि।

अकस्मात्–(सं. अव्य.) सहसा, अचानक, अनायास, अकारण।

अकांड, अकान्ड–(सं.वि.) विना शाखा या डाली का; (अव्य.) अकस्मात्, हठात्।

अकाज–(हिं. वि.) दुष्कर्म, कार्य की हानि, विगाड़, हर्ज, विघ्न।

अकाजना–(हिं. क्रि. अ.) हानि करना या होना।

अकाजी–(हिं. वि.) विघ्न करनेवाला, वाधक।

अकाट्य–(हिं. वि.) जो काटा न जा सके, अटल, दृढ़।

अकातर–(सं. वि.) जो डरपोक या कातर न हो, न डरनेवाला।

अकाथ–(हिं. अव्य.) व्यर्थ, अकारथ।

अकापट्य–(सं. पुं.) निश्छलता।

अकाम–(हिं. वि.) इच्छारहित, कामनारहित, निस्पृह; (अव्य.) व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

अकामतः–(सं. अव्य.) विना प्रयोजन के, व्यर्थ।

अकामा–(सं. स्त्री.) वह नवयौवना जिसमें काम का प्रादुर्भाव न हुआ हो।

अकामी–(सं. वि.) कामनारहित, निस्पृह, जितेन्द्रिय, जिसको किसी बात की चाह न हो।

अकाय–(सं. वि., पुं.) जिसको शरीर न हो, देहशून्य, निराकार, राहु ग्रह।

अकार–(हिं. पुं.) आकृति, स्वरूप, रचना वनावट, संगठन, चिह्न; (सं. पुं.) 'अ'-अक्षर या उसका उच्चारण।

अकारज–(हिं. पुं.) कार्य की हानि, हर्ज, हानि।

अकारण–(सं. वि.) कारणहीन, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

अकारथ–(हिं. वि.) विना लाभ का, वृथा, निष्प्रयोजन।

अकारांत–(सं.वि.) जिसके अंत में 'अ' हो।

अकारी–(सं. वि.) विना कर्ता का, कार्यहीन।

अकार्पण्य–(सं. पुं.) अकृपणता, कंजूसी का अभाव।

अकार्य–(सं. पुं.) कार्य का न होना, वुरा काम, हानि, दुष्कर्म, हर्ज।

अकाल–(सं. पुं.) वुरा समय, कुसमय, दुर्भिक्ष, महँगी, अप्राप्तकाल, अनवसर, शुभ कर्म के अयोग्य समय; -**कुसुम**–(सं. पुं.) असमय का फूल, विना अवसर की वातचीत; -**कूष्मांड**–(सं.पुं.) अपने परिवार या कुल को हानि पहुँचानेवाला मनुष्य; -**जलद**–(सं. पुं.) असमय का मेघ; -**पुरुष**–(सं. पुं.) सिक्खों के धर्मग्रन्थों में ईश्वर का नाम; -**प्रसव**–(सं. पुं.) स्त्री को नियत काल के पूर्व सन्तान उत्पन्न होना; -**भृत्य**–(सं. पुं.) दास वनाने के लिये दुर्भिक्ष में वनाया हुआ मनुष्य; -**मूर्ति**–(सं. पुं.) अविनाशी पुरुष; -**मृत्यु**–(सं.स्त्री.) असामयिक मृत्यु, अपमृत्यु; -**मेघोदय**–(सं.पुं.) विना समय मेघों का देख पड़ना; -**वृष्टि**–(सं. स्त्री.) कुसमय की वर्षा।

अकालिक–(सं. वि.) असामयिक, विना अवसर का।

अकाली–(सं. पुं.) सिक्खों का एक सम्प्रदाय, इस पंथवाले अकाल पुरुष का जप करते हैं, सिर पर लोहे का चक्र धारण करते हैं और काले रंग की पगड़ी वाँधते हैं।

अकाव–(हिं. पुं.) अर्क वृक्ष, मदार।

अकास–(हिं. पुं.) आकाश, गगन, आसमान; -**दीया**–(हिं.पुं.) वह दीपक जो कार्तिक महीने में वड़ी ऊँचाई पर लटकाया जाता है; -**नीम**–(हिं. स्त्री.) आकाशनिम्ब, सुन्दर

पत्तियोंवाला एक वृक्ष; -वानी-(हिं.स्त्री.) आकाशवाणी, देववाणी; -बेल-(हिं. स्त्री.) अमरबेल, आकाश बौंर।
अकासी-(हिं. स्त्री.) ताड़ का वृक्ष।
अकिंचन-(सं. वि.) जिसके पास कुछ भी न हो, अति दरिद्र, कंगाल, परिग्रह-त्यागी, संग्रहत्यागी, जैन मतानुसार ममता की निवृत्ति।
अकिंचनता-(सं. स्त्री.) निर्धनता, दरिद्रता।
अकिंचनत्व-(सं. पुं.) दरिद्रता, निर्धनता।
अकिंचित्कर-(सं. वि.) जो कुछ न करने योग्य हो, असमर्थ, अशक्त।
अकिंचितज्ञ-(सं. वि.) कुछ न जाननेवाला, ज्ञानशून्य।
अकिल-(हिं. स्त्री.) ज्ञान, बुद्धि; -बहार-(हिं. पुं.) वैजयंती का पौधा, इसके फूलों से उत्पन्न काला दाना।
अकिल्विष-(सं. वि.) पापरहित।
अकीर्ति-(सं. स्त्री.) अपयश, दुर्नाम; -कर-(सं.वि.) अपयश (दुर्नाम) करनेवाला।
अकुंठ-(सं. वि.) जो कुंठित न हो, तीव्र, प्रतिभायुक्त, कार्यदक्ष।
अकुटिल-(सं. वि.) जो टेढ़ा न हो, सीधा, निष्कपट।
अकुटिलता-(सं. स्त्री.) सीधापन, निष्कपटता।
अकुताना-(हिं.क्रि.अ.) घबड़ाना, ऊबना, उतावला होना।
अकुतोभय-(सं. वि.) जिसको किसी का भय न हो, निर्भीक, निःशंक, साहसी।
अकुप्य-(सं. स्त्री.) सोना, चाँदी।
अकुमार-(सं. वि.) जिसकी कुमारावस्था बीत गई हो, युवा।
अकुल-(सं. वि.) परिवारहीन, कुलरहित, जो अच्छे वंश का न हो; (पुं.) महादेव, शिव।
अकुलाना-(हिं.क्रि.अ.) घबड़ाना, व्याकुल होना, ऊबना, शीघ्रता करना, बेचैन होना, आवेश में होना।
अकुलिनी-(हिं. वि.) जो कुलवती न हो, कुलटा, व्यभिचारिणी।
अकुलीन-(सं. वि.) नीच वंश का, बुरे कुल का, क्षुद्र, कुलहीन, संकर जाति का।
अकुशल-(सं. पुं.) अमंगल, अशुभ, अहित, बुराई; (वि.) जो निपुण या दक्ष न हो, अनिपुण, अनाड़ी।
अकूत-(हिं. वि.) जो कूता न जा सके, जिसकी गिनती, तौल या नाप न बतलाई जा सके, अपरिमित, अगणित।
अकूपार-(सं. पुं.) जिसका पार थोड़ा न हो, समुद्र, पर्वत, सूर्य, पत्थर, चट्टान, वह कच्छप जिसकी पीठ पर शेष-नाग हैं, जिनके फन पर पृथ्वी धरी हुई मानी जाती है।
अकूर्च-(सं. वि.) बिना मूँछ का; (पुं.) बुद्धदेव।
अकृच्छ्र-(स. पुं.) जिसको किसी प्रकार का क्लेश या संकट न हो, संकोच-रहित, सुगम।
अकृत-(सं. वि.) बिना किया हुआ, असम्पन्न, असंपादित, बिगाड़ा हुआ, जो अपराध न किया गया हो, जो किसी से बनाया न गया हो, नित्य, प्राकृतिक, मन्द; (पुं.) प्रकृति, स्वभाव; -काल-(सं. वि.) जिसके लिये कोई समय स्थिर न किया गया हो।
अकृतघ्न-(सं.वि.) उपकार माननेवाला।
अकृतज्ञ-(सं. वि.) किये हुए उपकार को न माननेवाला, कृतघ्न।
अकृताभ्यागम-(सं.पुं.) बिना किये हुए कर्म की फलप्राप्ति, तर्क शास्त्र का एक दोष।
अकृतार्थ-(सं. वि.) जिसका कार्य पूरा न हुआ हो, फलों से वञ्चित, असफल।
अकृति, अकृती-(सं. स्त्री.) काम न करने योग्य, जो किसी काम के योग्य न हो, निकम्मा, पापी, अयोग्य।
अकृतित्व-(सं. पुं.) अयोग्यता।
अकृत्य-(सं. पुं.) दुष्कर्म, अकार्य, अनुपयुक्त काल में कोई कार्य करना।
अकृत्रिम-(सं. वि.) जो काल्पनिक न हो, नैसर्गिक, स्वाभाविक, वास्तविक, सच्चा, आन्तरिक, स्वयं उत्पन्न, हार्दिक, यथार्थ।
अकृप-(सं. वि.) कृपारहित, निर्दय।
अकृपण-(सं. वि.) जो कंजूस न हो, मुक्त-हस्त, उदार।
अकृपा-(सं.स्त्री.) क्रोध, अप्रसन्नता, रोष।
अकृष्ट-(सं.वि.) जो जोती न गयी हो।
अकृष्टकर्म-(सं.पुं.) निर्दोषता, सदाचार।
अकृष्टपच्य-(सं.वि.) जो स्वयं ही अर्थात् विना जोते-बोये उत्पन्न होकर पक जावे।
अकेतन-(सं. वि.) जिसके पास घर-द्वार न हो, विना ठिकाने का।
अकेतु-(सं. पुं.) अज्ञान, ज्ञानरहित।
अकेल, अकेला-(हिं. वि.) जिसका कोई साथी न हो, एकाकी, अद्वितीय, अनुपम, निराला।
अकेले-(हिं. अव्य.) विना साथी के, अकेला ही, (मुहा.)-दुकेले-अकेले।
अकेश-(सं. वि.) जिसके केश या बाल न हों।
अकैतव-(सं. वि.) कपटहीन, निश्छल, सदाचारी।
अकया-(हिं. पुं.) खुरजी, गोन, कवाजा, पशुओं की पीठ पर लादने का थैला या टोकरी।
अकोट-(सं.पुं.) सुपारी, असंख्य, करोड़ों।
अकोतर सौ-(हिं. वि.) एक सौ एक की संख्या।
अकोप-(हिं.पुं.) कोपका अभाव, प्रसन्नता।
अकोर-(हिं.पुं.) छाती, अंक, गोद, घूस।
अकोविद-(सं.वि.) जो पंडित न हो, मूर्ख, अज्ञानी; (पुं.) ऊख के सिर पर की पत्ती।
अकोसना-(हिं. क्रि. स.) गाली देना, कोसना, भला-बुरा कहना।
अकौआ-(हिं.पुं.) मदार, आक, गले की घंटी।
अकौटा-(हिं. पुं.) पहिये का धुरा।
अकौटिल्य-(हिं.पुं.) सरलता, निष्कपटता।
अकौशल-(सं. पुं.) कुशलता का अभाव, विरोध।
अक्का-(सं. स्त्री.) माता, अम्मा, पुकारने का शब्द।
अक्खड़-(हिं. वि.) हठी, उद्धत, उग्र, लड़ाका, अशिष्ट, निडर, मूर्ख, स्पष्ट-वक्ता, खरा, स्थिरप्रतिज्ञ, उच्छृङ्खल, न डिगनेवाला।
अक्खड़पन-(हिं. पुं.) हठ, अशिष्टता, कठोरता, खरापन, मूर्खता।
अक्खा-(हिं. पुं.) पशुओं की पीठ पर लादने का बोरा, खुरजी, पाखड़ी।
अक्खोमक्खो-(हिं. पुं.) एक टोटका जिसको स्त्रियाँ दीपक जलाकर बच्चे के मुख के चारों ओर फेरती हैं।
अक्त-(पुं. वि.) व्याप्त, संयुक्त, सफल, परिपूर्ण, रँगा हुआ, गीला, भरा हुआ; (वि. प्रत्य.) यह शब्द प्रत्यय की तरह शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है; यथा-रक्ताक्त, विषाक्त, इत्यादि।
अक्ता-(सं. स्त्री.) रात।
अक्र-(सं. वि.) स्थिर, दृढ़।
अक्रतु-(सं. वि.) संकल्परहित।
अक्रम-(सं. वि.) जिसमें क्रम न हो, विपरीत, उलटा-पुलटा, क्रमरहित; -संन्यास-(सं. पुं.) वह संन्यास जो ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ आश्रमों के पालन न करने पर ही ले लिया जाता है।
अक्रमातिशयोक्ति-(सं. स्त्री.) अर्थालंकार का एक भेद जिसमें कारण के

साथ ही कार्य सूचित रहता है, यह अति-शयोक्ति का एक भेद है।
अक्रव्याद–(सं. पुं.) मांस न खानेवाला।
अक्रांत–(सं. वि.) जिसे कोई क्रांत या पार न किया हो, अपराजित।
अक्रांता–(सं.स्त्री.)एक वृक्ष विशेष,कटैया।
अक्रिय–(सं.वि.) क्रियारहित, निश्चेष्ट, स्तब्ध, निकम्मा।
अक्रिया–(सं. स्त्री.) अप्रशस्त कार्य।
अक्रूर–(सं. वि.) जो क्रूर न हो, कोमल, सरल, सुशील, दयालु, अक्रोधी; (पुं.) श्रीकृष्ण के चाचा का नाम।
अक्रोध–(सं. पुं.) क्रोध का अभाव, दया, क्षमा, सहिष्णुता।
अक्ल–(अ. स्त्री.) बुद्धि, समझ; (मुहा.) **-आना**–समझ होना; **-का काम न करना**–कुछ समझ में न आना; **-का चरन जाना**–समझने की शक्ति का अभाव होना; **-का दुश्मन**–मूर्ख; **-का पूरा**–मूर्ख; **-खर्च करना**–बुद्धि लगाना; **-गुम होना**–बुद्धि का लोप होना; **-ठिकाने होना**–होश में आना; **-पर पत्थर पड़ना**–बुद्धि का नष्ट होना।
अक्लमंद–(अ. वि.) बुद्धिमान।
अक्लमंदी–(अ. स्त्री.) बुद्धि।
अक्लम–(सं. पुं.) श्रम का अभाव, थका-वट का न होना।
अक्लांत–(सं. वि.) ग्लानिरहित।
अक्लिष्ट–(सं. वि.) विना क्लेश का, दुःखरहित, सहज, सीधा, सरल, सुगम।
अक्लिष्टकर्मा–(स.वि.)जो विना कष्ट के कार्य कर सके।
अक्लेष–(सं.पुं.)क्लेष का अभाव, सुगमता।
अक्ष–(सं. पुं.) जुआ खेलने का पासा, पासे का खेल, चौपड़, छकड़ा, गाड़ी का धुरा, पृथ्वी की धुरी, गाड़ी का जुआ, पृथ्वी के भीतर की वह कल्पित रेखा जिस पर पृथ्वी घूमती है, जो पृथ्वी के केन्द्र से होती हुई दोनों ध्रुवों में मिलती है, तराजू की डंडी, व्यापार, इंद्रिय, तूतिया, सोहागा, आँवला, बहेड़ा, रुद्राक्ष, आत्मा, गरुड़, सर्प, सोलह माशे की तौल, व्याप्ति, रसांजन, जन्मांध, रावण के एक पुत्र का नाम जिसको हनुमान् ने मारा था, ग्रहों के भ्रमण करने का मार्ग।
अक्षक–(सं.पुं.)पासे से जुआ खेलनेवाला, जुआरी।
अक्षकुमार–(सं. पुं.) रावण के एक पुत्र का नाम।
अक्षकूट, अक्षकूटक–(सं. पुं.) आँख की पुतली।
अक्षक्रीड़ा–(सं. स्त्री.) चौपड़, पासे का खेल, चौसर।
अक्षक्षेत्र–(सं. पुं.) अखाड़ा, मल्लयुद्ध का स्थान, दंगल।
अक्षज–(सं. पुं., वि.) वज्र, आँखों से या इन्द्रियों से उत्पन्न, विवाद से उत्पन्न।
अक्षणिक–(सं. वि.) स्थिर, निश्चल।
अक्षत–(सं. वि.) अखण्डित, विना टूटा हुआ, जिसमें घाव न लगे हों; (पुं.) गणित में पूर्णाङ्क (जो भिन्न न हो), विना टूटे हुए चावल जो पूजन में व्यव-हृत होते हैं, धान का लावा, जव।
अक्षतयोनि–(सं. स्त्री.) वह योनि जिसमें वीर्यपात न हुआ हो, वह कन्या जिसने पुरुष के साथ संसर्ग न किया हो।
अक्षतवीर्य–(सं. पुं.) पुरुष जिसका ब्रह्मचर्य अखंड हो, जिसने स्त्री-प्रसंग न किया हो।
अक्षता–(सं. स्त्री.) अक्षतयोनि, काकड़ा-सिंघी नामक ओषधि विशेष।
अक्षधर–(सं. पुं.) साखू का वृक्ष, विष्णु का चक्र।
अक्षपटल–(सं. पुं.) आँख की पलक, आँख का एक रोग।
अक्षपाद–(सं. पुं.) न्याय शास्त्र के प्रव-र्तक गौतम ऋषि, नैयायिक, तार्किक। महर्षि वेदव्यास ने इनके सिद्धान्त का खंडन किया था इसलिए इन्होंने उनका मुख न देखने की प्रतिज्ञा की थी। बाद में जब वेदव्यासजी ने इनको प्रसन्न किया तब इन्होंने पैर में नेत्र उत्पन्न करके इनको देखा और अपनी प्रतिज्ञा दृढ़ रक्खी। इस कारण इनका नाम अक्ष-पाद पड़ा।
अक्षम–(सं. वि.) क्षमारहित, अशक्त, असहिष्णु, विवश, असमर्थ।
अक्षमता–(सं. स्त्री.) असामर्थ्य, असहि-ष्णुता, ईर्ष्या।
अक्षमा–(सं.स्त्री.)क्षमा का अभाव, ईर्ष्या।
अक्षमाला–(सं. स्त्री.) रुद्राक्ष की माला, गुरु वशिष्ठ की पत्नी का नाम।
अक्षम्य–(सं. वि.) क्षमा न करने योग्य।
अक्षय–(सं. वि.) जिसका क्षय न हो, अनश्वर, कभी नष्ट न होनेवाला, शाश्वत, अमर; **–कुमार**–(पुं.) रावण के एक पुत्र का नाम; **–तृतीया**–(स्त्री.) वैशाख शुक्ल तृतीया; इसी तिथि से सतयुग का आरंभ माना जाता है। इस तिथि को हिन्दू लोग पुनीत मानते हैं और गंगा-स्नान तथा पुण्य करते हैं; **–नवमी**–(स्त्री.) कार्तिक शुक्ल नवमी। इस तिथि से त्रेतायुग का आरंभ माना जाता है। इस तिथि को हिन्दू लोग पुनीत मानते हैं; **–ललिता**–(स्त्री.) भाद्रपद मास की सप्तमी, इस दिन स्त्रियाँ शिव-दुर्गा का पूजन करती हैं; **–वट**–(पुं.) बरगद का पूज्य वृक्ष। ऐसा एक प्राचीन वट प्रयाग के किले के भीतर है तथा दूसरा गया क्षेत्र में है। पुराण के अनुसार इसका नाश प्रलयकाल में भी नहीं हुआ था। पुराणा-नुसार इस वृक्ष का पूजन करने से अक्षय फल मिलता है।
अक्षया–(सं. स्त्री.) सोमवार की अमा-वस्या, रविवार की सप्तमी, मंगलवार की चतुर्थी तथा अक्षय तृतीया—अक्षया तिथि कहलाती हैं।
अक्षय्य–(सं.पुं.)श्राद्ध में पिंड-दान के बाद घृत तथा मधु मिला हुआ वह जल जो पितरों को अर्पण किया जाता है।
अक्षय्योदक–(सं. पुं.) पिंड-दान के बाद मधु तथा तिल मिलाया जल।
अक्षर–(सं. पुं.) ब्रह्मा, शिव, विष्णु, मोक्ष, जल, गगन, धर्म, तपस्या, अपा-मार्ग (चिचिड़ा), अकारादि वर्ण; (वि.) अविनाशी, स्थिर, नित्य।
अक्षरछंद–(सं. पुं.) वर्णवृत्त, अक्षरों की गणना से रचा हुआ छन्द।
अक्षरजीवी–(सं. पुं.) लेखक।
अक्षर-तूलिका–(सं. स्त्री.) लेखनी, चित्र-कार की कूंची।
अक्षरन्यास–(सं. पुं.) लेखन, लिपि, तंत्र के अनुसार अकारादि अक्षरों को क्रम से एक-एक करके उच्चारण करना और उसके अनुसार शरीर के विभिन्न स्थानों को स्पर्श करना।
अक्षरमाला–(सं. स्त्री.) वर्णमाला।
अक्षरलिपि–(सं. स्त्री.) अक्षरों को लिखने की रीति।
अक्षर-विन्यास–(सं. पुं.) लिपि, लेख।
अक्षरशः–(सं. अव्य.) अक्षर-अक्षर करके या मिलता हुआ।
अक्षरी–(सं. स्त्री.) शब्दों में अक्षरों का क्रम, वर्षाऋतु।
अक्षरौटी–(हिं.स्त्री.)वर्णमाला, अक्षरों के लिखने की रीति, सितार पर गत निका-लने की क्रिया।

अक्षांश–(सं. पुं.) देखें 'अक्ष'; पृथ्वी की नगी, जिस अक्ष पर पृथ्वी घूमती है।
अक्षि–(सं. पु.) नयन, नेत्र, आंख।
अक्षिगत–(सं. वि.) आंख पर चढ़ा हुआ (वैरी), देखा हुआ।
अक्षि-निक्षेप–(सं. पुं.) कटाक्ष, सैन।
अक्षि-विभ्रम–(सं. पुं.) आंख घुमाना।
अक्षुण्ण–(सं. वि.) विना टूटा हुआ, सम्पूर्ण, अविकृत।
अक्षुब्ध–(सं. वि.) क्रोध या क्षोभरहित।
अक्षौहिणी–(सं. स्त्री.) चतुरंगिणी सेना जिसमें १०९३५० पदाति, ६५६१० घोड़े, २१८७० हाथी और २१८७० रथ रहते थे।
अखंड–(सं. वि.) विना खंड या टुकड़े का, पूर्ण, पूरा, सब।
अखंडनीय–(सं. वि.) जिसका टुकड़ा न हो सके, दृढ़, पुष्ट, अटूट।
अखंडित–(सं. वि.) विना खंड का, पूरा, समूचा।
अखगरिया–(हि.पुं.) जिस घोड़े के शरीर को मलते समय चिनगारियाँ निकलें।
अखड़–(हि. वि.) अशिष्ट, गँवार, असभ्य, जंगली, अनारी।
अखड़ा–(हि. पुं.) चँदवा, मछलियों के पकड़ने का एक साधन।
अखड़ैत–(हि. पुं.) पहलवान।
अखरना–(हि.क्रि.अ.) बुरा लगना, अनुचित जान पड़ना, कष्ट होना।
अखरोट–(हि. पुं.) कड़े छिलके का एक पहाड़ी फल।
अखर्व–(सं. वि.) बहुत बड़ा।
अखात–(हि. पुं.) झील, खाड़ी।
अखाड़ा–(हि. पुं.) मल्लयुद्ध करने का स्थान, साधुओं का दल।
अखाड़िया–(हि.वि.) दंगली (पहलवान)।
अखाद्य–(सं. वि.) जो खाने योग्य न हो, अभक्ष्य।
अखानी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की टेढ़ी लकड़ी जो अनाज दाँवते समय डंठल अलगाने के काम में आती है, पाँचा।
अखिन्न–(सं. वि.) खेदरहित, अक्लेश।
अखिल–(सं. वि.) संपूर्ण, पूरा, सब।
अखिलात्मा, अखिलेश–(सं. पुं.) ईश्वर।
अखूट–(हि. वि.) अटूट, अक्षय, अति, अधिक, बहुत।
अखेट–(हि. पु.) आखेट, मृगया।
अखेटक–(हि. पुं.) आखेट करनेवाला।
अखेद–(सं. वि.) जिसे खेद या दुःख न हो; (पुं.) खेद का अभाव।
अखेदी–(सं. वि.) अखेद।
अखोर–(हि. वि.) सुन्दर, निर्दोष, सज्जन; (पुं.) बुरी वस्तु।
अखोह–(हि. पुं.) ऊँची-नीची भूमि।
अख्यात–(सं. वि.) अप्रसिद्ध।
अख्याति–(सं. स्त्री.) अप्रसिद्धि, अपकीर्ति, अयश।
अग–(सं.वि.) न चलनेवाला, स्थावर, टेढ़ा चलनेवाला; (वि.) सर्प, वृक्ष, पर्वत, सूर्य।
अगटना–(हि.क्रि.अ.) इकट्ठा होना।
अगड़धत, अगड़धत्ता–(हि. वि.) लंबा-चौड़ा, ऊँचा, तगड़ा, विशालकाय।
अगड़-बगड़–(हि. वि.) व्यर्थ, अंडबंड; (पुं.) निरर्थक वार्ता या कार्य।
अगणित–(सं. वि.) जिनकी गणना न हो सके, असंख्य, अनगिनत, अनेक।
अगण्य–(सं.वि.) न गिनने या गणना करने योग्य, असंख्य, असार।
अगत–(हि. अव्य.) हाथी को आगे बढ़ाने के लिये महावत इस शब्द का प्रयोग करते हैं; (सं. वि.) न गया हुआ।
अगति–(सं. स्त्री.) बुरी गति, अव्यवस्था, दुर्दशा, नरक, अकालमृत्यु।
अगतिक–(सं. वि.) निराश्रय, अशरण।
अगतिकगति–(हि. स्त्री.) विवश होकर स्वीकार करना।
अगत्या–(सं. अव्य.) अन्त में, अकस्मात्।
अगद–(सं. पुं.) ओषधि; (वि.) आरोग्य, रोगरहित, चंगा।
अगम–(हि. वि.) अगम्य, न जानने योग्य, दुर्गम, दुर्घट, अपार, बहुत गहरा, असंख्य।
अगमानी–(हि. स्त्री.) अतिथि आदि का जाकर स्वागत करना; (पुं.) नेता, सरदार।
अगम्य–(सं.वि.) न जानने या जाने योग्य, विकट, दुर्बोध, अपार, अज्ञेय, असंख्य।
अगम्या–(सं. वि. स्त्री.) गमन न करने योग्य, अंतज्या।
अगम्यागमन–(सं. पुं.) संभोग न करने योग्य स्त्री के साथ सहवास।
अगर–(हि. पुं.) एक सुगंधित वृक्षविशेष, अगरु; (फा. अव्य.) यदि।
अगरई–(हि. वि.) अगरु के रंग का, कालापन लिये सुनहले रंग का।
अगरना–(हि.क्रि.अ.) आगे बढ़ना, भागना।
अगरपार–(हि. पुं.) क्षत्रिय जाति का एक भेद।
अगरबत्ती–(हि. स्त्री.) धूपबत्ती जिसमें अगरु तथा अन्य सुगंधित द्रव्य पड़े होते हैं।
अगरवाल, अगरवाला–(हि. पुं.) वैश्य वर्ण की एक शाखा। ये लोग पंजाब प्रान्त में अगरोहा नामक प्राचीन नगर के आदिनिवासी थे; इसी से इनका नाम अगरवाला पड़ा। इनमें से अधिकांश वैष्णव तथा जैन होते हैं।
अगरसार–(हि. पुं.) अगरु का सत्त्व।
अगरी–(हि. स्त्री.) देवदार, चूहे का विष उतारने की जड़ी, अर्गला, सिटकिनी।
अगरु–(सं. पुं.) अगर की लकड़ी, ऊद।
अगरू–(हि. पुं.) अगर, ऊद।
अगरो–(हि. वि.) पहिला, अगला, अधिक, श्रेष्ठ।
अगर्व–(सं. वि.) गर्वरहित, बिना अभिमान का, भोलाभाला।
अगर्हित–(सं. वि.) निन्दा न किया हुआ, प्रशंसित।
अगल-बगल–(हि. अव्य.) आस-पास।
अगला–(हि. वि.) आगे का, पहिला, सामने का, प्राचीन, आगामी, पुराना, दूसरा; (पुं.) अग्रसर, नेता, प्रधान पुरुष, पूर्वपुरुष, चंचल आदमी, धूर्त मनुष्य।
अगवाँसी–(हि. स्त्री.) हल की वह लकड़ी जिसमें फार जड़ा जाता है, अगवार।
अगवाई–(हि. स्त्री.) स्वागत करने के लिये आगे जाना, अगवानी, अभ्यर्थना।
अगवाड़ा–(हि.पुं.) घर के सामने का स्थान।
अगवान–(हि. पुं.) स्वागत करने के लिये आगे जानेवाला, अगवानी करनेवाला।
अगवानी–(हि. स्त्री.) आगे बढ़कर स्वागत, विवाह के समय कन्यापक्षवालों का वरपक्षवालों की अभ्यर्थना; (पुं.) अग्रसर, अगुआ, नेता।
अगवार–(हि. पुं.) घर के सामने का स्थान, गाँव का चमार, अन्न के ढेर का वह अंश जो खलिहान में से हलवाहे को देने के लिये अलगा दिया जाता है, ओसाते समय जो हलका अन्न भूसे के साथ उड़कर आगे चला जाता है।
अगस्ति–(सं. पुं.) अगवार, बक वृक्ष, मौलसिरी, दक्षिण दिशा।
अगस्तिया–(हि. पुं.) एक वृक्ष विशेष।
अगस्त्य–(सं. पुं.) बक वृक्ष, एक तारे का नाम जो भाद्रपद मास में उदय होता है, एक महर्षि जो मित्रावरुण के पुत्र थे।
अगस्त्यकूट–(सं. पुं.) भारतवर्ष के दक्षिण में इस नाम का पर्वत जिसमें से ताम्रपर्णी नदी निकली है।
अगस्त्यगीता–(सं. स्त्री.) महाभारत के शान्तिपर्व में लिखी हुई अगस्त्य मुनि से कही हुई गीता या विद्या।

अगस्त्यचार–(सं. पुं.) अगस्त्य नक्षत्र का उदय ।

अगस्त्य-संहिता–(सं. स्त्री.) अगस्त्य मुनि रचित शास्त्र ।

अगस्त्योदय–(सं. पुं.) दक्षिण दिशा में अगस्त्य नक्षत्र का उदय ।

अगह–(हि. वि.) जो ग्रहण न किया जा सके, न वर्णन करने योग्य, कठिन ।

अगहन–(हि. पुं.) अग्रहायण, मार्ग-शीर्ष, वेद की प्राचीन शैली के अनुसार वर्ष का पहिला महीना, उत्तरी भारत में चैत्र में वर्ष आरंभ होता है, तदनुसार नवाँ महीना ।

अगहनियाँ–(हि. वि.) अगहन संबंधी, वह धान जो अगहन के महीने में काटा जाता है ।

अगहनी–(हि. वि.) अगहन या मार्ग-शीर्ष में उत्पन्न होनेवाला ।

अगहर–(हि. वि., अव्य.) पहिला, आगे का, पहिले ।

अगहाट–(हि. पुं.) वह भूमि जो बहुत दिनों से किसी के अधिकार में रही हो और उससे निकाली न जा सके ।

अगहुँड–(हि. वि.) अग्रगामी, आगे चलनेवाला, मुख्य, अगुआ ।

अगाऊ–(हि. वि.) अग्रिम; (अव्य.) पहिले से ।

अगाड़–(हि. पुं.) आगे का भाग, हुक्के की निगाली, ढेंकुल की लकड़ी ।

अगाड़ा–(हि. पुं.) यात्रा की पहिले से भेजी हुई सामग्री, कछार ।

अगाड़ी–(हि. अव्य.) भविष्य में, सामने, आगे, पहिले; (स्त्री.) पदार्थ का अग्र-भाग, घोड़े की गर्दन में बाँधने की रस्सी, सेना का प्रथम आक्रमण ।

अगात्र–(सं. वि.) बिना शरीर का ।

अगाध–(सं. वि.) बहुत गहरा, अथाह, असीम, गंभीर, लोमहीन, अपार ।

अगाच–(हि. पुं.) अगौरा, ऊख के पौधे के ऊपर का भाग ।

अगास–(हि. पुं.) आकाश, द्वार पर का चबूतरा ।

अगाह–(हि. वि.) देखो 'अगाध' ।

अगिआना–(हि.क्रि.अ.) गरम होना, जलन जान पड़ना ।

अगिनबोट–(हि. पु.) धुआँकस, स्टीमर ।

अगिया–(हि. स्त्री.) अग्नि, आग, एक प्रकार की घास जो कोदो और ज्वार के छोटे पौधों को जला देती है, नीम के समान रंग की एक घास, पशुओं का एक रोग, राजा विक्रमादित्य के एक वैताल का नाम; **–कोइलिया**–(पुं.) राजा विक्रमादित्य के इन दोनों नामों के सिद्ध वैताल; **–बैताल**–(पुं.) मुंह से आग फेंकनेवाला भूत, राजा विक्रमादित्य का एक सिद्ध वैताल, दल-दली गैस ।

अगियाना–(हि. क्रि. अ.) जलन होना ।

अगियारी–(हि. स्त्री.) धूप देने की क्रिया ।

अगिर–(सं. पुं.) अग्नि, स्वर्ग, सूर्य, राक्षस ।

अगिला–(हि. वि.) पहिला, सामने का ।

अगिहाना–(हि. पुं.) अग्नि रखने का स्थान, चूल्हा, अँगीठी, भट्ठी ।

अगींठा–(हि. पुं.) बड़ी अँगीठी, भट्ठा ।

अगीत-पछीत–(हि. अव्य.) आगे-पीछे, इधर-उधर; (पुं.) सामने और पीछे का भाग ।

अगु–(सं.पुं.) किरणशून्यता, राहु ग्रह ।

अगुआ–(हि. पुं.) आगे जानेवाला, मार्ग-दर्शक, सरदार, नेता, मुखिया ।

अगुआई–(हि. स्त्री.) पथप्रदर्शन का कार्य, मुखियापन ।

अगुआना–(हि.क्रि.अ.,स.) मार्ग दिखलाना, मुखिया या नेता बनना ।

अगुआनी–(हि. स्त्री.) आगे बढ़कर स्वागत करना ।

अगुण–(सं. पुं., वि.) गुणरहित, निर्गुण, दोष ।

अगुणज्ञ–(सं. वि.) गुणों को न जानने-वाला, परख न करनेवाला ।

अगुणी–(हि. वि.) गुणहीन, गँवार ।

अगुरु–(सं. पुं.) अगुरुचन्दन, शीशम का वृक्ष; (वि.) जो गुरु न हो, गौरवहीन ।

अगुवा–(हि. पुं.) आगे चलनेवाला, पथ-प्रदर्शक, मुखिया, नेता ।

अगूढ़–(सं. वि.) अगुप्त, जो गुप्त न हो, स्पष्ट, प्रकट, सरल; **–गंध (धा)**–(सं. पुं.) जिसकी गन्ध छिप न सके, हिङ्गु, हींग ।

अगृह्य–(सं. वि.) न ग्रहण करने योग्य ।

अगेंद्र–(सं. पुं.) पर्वतों का राजा हिमालय, सुमेरु ।

अगेला–(हि. पुं.) हाथ में पहिनने का सबसे आगे का आभूषण, भूसे के साथ उड़नेवाला हलका अन्न ।

अगेह–(सं. वि.) जिसके पास घर-द्वार न हो, गृहहीन ।

अगोई–(हि. वि.) जो गुप्त न हो, प्रकट ।

अगोचर–(सं. वि.) जो इंद्रियों से न जाना जा सके, अज्ञात, अप्रकट, अव्यक्त ।

अगोट–(हि. स्त्री.) रोक, [illegible] ।

अगोटना–(हि.क्रि.स.) रोकना, अटकाना, पकड़ रखना ।

अगोता–(हि. अव्य.) सम्मुख, आगे की ओर; (पुं.) स्वागत ।

अगोरदार–(हि. पुं.) पहरुआ, रक्षक, चौकीदार ।

अगोरना–(हि.क्रि.स.) पहरा देना, रख-वाली करना, रक्षा करना, रोकना, प्रतीक्षा करना, छेंकना ।

अगोरा–(हि. पुं.) पहरुआ, रखवाला ।

अगोरिया–(हि. पुं.) खेत की या वृक्ष के फलों की रखवाली करनेवाला मनुष्य ।

अगोही–(हि. पु.) नोकीली सींगवाला बैल ।

अगौड़–(हि. पुं.) अग्रिम, पहिले दिया जानेवाला रुपया ।

अगौनी–(हि.स्त्री.) अगवानी, अभ्यर्थना; (अव्य.) आगे, पहिले ।

अगौली–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की नाटी ऊख, नाटे कद का गन्ना ।

अग्नायी–(सं. स्त्री.) अग्नि देवता की स्त्री, स्वाहा, त्रेता युग ।

अग्नि–(सं. पुं.) पावक, वह्नि, अनल, आग, वैद्यक मत के अनुसार अग्नि के तीन भेद हैं :—(१) भौमाग्नि–जो लकड़ी इत्यादि के जलने से उत्पन्न होती है, (२) दिव्याग्नि–जो आकाश में विद्युत् रूप में दीख पड़ती है, (३) जठराग्नि–जो नाभि के ऊपर और हृदय के नीचे रहकर अन्न को पचाती है । कर्मकांड के अनुसार अग्नि ६ हैं—(१) गार्हपत्य, (२) आहवनीय, (३) दक्षिणाग्नि, (४) सभ्याग्नि, (५) आवसथ्य, (६) औपासनाग्नि । ऋग्वेद की उत्पत्ति अग्नि से मानी जाती है । वेद में अग्नि के मंत्र भी बहुत हैं । अग्नि की सात जिह्वाएँ निम्नलिखित हैं—काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता । यह दक्षिण-पूर्व कोण के अधिष्ठाता देवता हैं; **–[illegible]**–(सं. पु.) इन्द्रगोप, बीरबहूटी नाम का एक कीड़ा; **–कण**–(सं. पु.) स्फुलिङ्ग, चिनगारी; **–कर्म**–(सं. पु.) होम, चिता में आग लगाने का कार्य; **–कारिका**–(सं. स्त्री.) कुछ [illegible] ओषधि; **–कार्य**–(सं. पु.) आग जलाने का कार्य, हवन; **–काष्ठ**–(सं. पु.) अगर की लकड़ी; **–कुंड**–(सं. पु.) होम करने का कुण्ड; **–कुक्कुट**–(सं. पु.) [illegible]; **–कुमार**–

(सं. पु.) कुमार, कार्तिकेय; **–कुल–** एक राजवंशविशेष; **–केतु–**(सं.पु.) ऊर्ध्वगामी अग्नि की ज्वाला; **–कोण–** (सं. पुं.) पूर्व और दक्षिण का कोण; **–क्रिया–**(सं. स्त्री.) अंत्येष्टि क्रिया, शव जलाने की क्रिया; **–क्रीड़ा–**(सं. स्त्री.) आग का खेल; **–गर्भ–**(सं. पुं.) सूर्यकांत मणि; (सं.स्त्री.) शमी का वृक्ष, बबूल; **–गर्भपर्वत–**(सं.पुं.) ज्वालामुखी पहाड़; **–गर्भा–**(सं.स्त्री.) शमी, लता; **–गृह–**(सं. पुं.) जिस घर में हवन किया जावे; **–घृत–**(सं. पुं.) क्षुधा-वर्धक ओषधि-युक्त घृत; **–चक्र–** (सं.-पु.) तंत्रानुसार दोनों भौहों के बीच का स्थान जिसमें बिजली के समान प्रकाश रहता है (नेत्रत्रय); **–चित्–** (सं.वि.) अग्निहोत्री; **–ज–**(सं. पुं.) कार्तिकेय, सुवर्ण, सोना; **–जन्मा–**(सं. पुं.) कार्तिकेय, सुवर्ण, सोना; **–जार, –जाल–**(सं. पुं.) एक वृक्ष विशेष; **–जिह्वा–**(सं.स्त्री.) अग्नि की सात शिखा; **–ज्वाला–**(सं. स्त्री.) अग्नि-शिखा, आग की लपट; **–झाल–** (हिं. स्त्री.) जलपिप्पली नाम की ओषधि; **–तापस–**(सं. पुं.) अपने चारों ओर अग्नि जलाकर तपस्या करनेवाला; **–तुंडी–**(सं. स्त्री.) अग्नि-मांद्य दूर करने की विशेष ओषधि; **–द–**(सं. पुं.) आग लगानेवाला शत्रु; **–दग्ध–** (सं. वि.) आग से जलाया हुआ; **–दमनी–**(सं. स्त्री.) मकोय; **–दाता–** (सं.पुं.) (स्त्री. अग्निदात्री) अंत्येष्टि-क्रिया में मुखाग्नि देनेवाला स्वजन; **–दाह–**(सं. पुं.) आग जलाना, शव फूंकना; **–दीपक–** (सं. वि.) भूख को बढ़ानेवाली (ओषधि); **–देवता–**(सं. पुं.) अग्नि जो देवता माने जाते हैं; **–देवा–**(सं. स्त्री.) कृत्तिका नक्षत्र; **–धान–**(सं. पुं.) अग्निहोत्र का घर; **–नक्षत्र–**(सं. पुं.) कृत्तिका नक्षत्र; **–नयन–**(सं. पुं.) देवता, अग्नि के नेत्र; **–नेत्र–**(सं. पुं.) देवता, लाल आँख; **–परिक्रिया–**(सं. स्त्री.) हवन इत्यादि से अग्नि की पूजा; **–परीक्षा–**(सं. स्त्री.) सोना-चाँदी को आग में डालकर और तपाकर इनकी विशुद्धता की परीक्षा करना, जलती हुई अग्नि पर स्त्रियों को चलाकर इनके दोषादोष की जांच करने की विधि; **–पुराण–** (सं. पुं.) अठारह पुराणों में से आठवाँ पुराण जिसको अग्नि ने वसिष्ठ को सुनाया था। इसमें मन्त्र, यन्त्र तथा ओषधियों का वर्णन है, नाना प्रकार के विविध देवताओं की पूजनविधि तथा साहित्यविद्या, छन्दःशास्त्र, योगशास्त्र और ब्रह्मज्ञान विषयों का भी वर्णन है; **–प्रतिष्ठा–** (सं. स्त्री.) शुभकार्य में अग्नि-स्थापन; **–प्रस्तर–** (सं. पुं.) चकमक पत्थर, आग उत्पन्न करनेवाला पत्थर; **–बाण–** (सं. पुं.) एक प्रकार का बाण जिसके चलाने से आग निकलती थी; **–बाहु–** (सं. पुं.) एक राजपुत्र का नाम, धूम्र, धुवाँ; **–भ–**(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, लाल पदार्थ, कृत्तिका नक्षत्र; **–भू–** (सं. पुं.) कार्त्तिकेय, सुवर्ण, जल; **–मंथन–**(सं. पुं.) अरणी द्वारा संघर्ष से अग्नि उत्पन्न करना; **–मणि–**(सं. पुं.) सूर्यकान्त मणि, चकमक पत्थर; **–मांद्य–** (सं. पुं.) अजीर्ण, भूख का न लगना, मन्दाग्नि, पाचन-शक्ति में न्यूनता; **–मारुति–**(सं. पुं.) अगस्त्य मुनि; **–मित्र–**(सं. पुं.) शुङ्ग वंश के द्वितीय राजा जो मगध देश में राज्य करते थे; **–मुख–**(सं. पुं.) देवता, ब्राह्मण, चिता, भिलावाँ नामक ओषधि; **–मुखी–**(सं. स्त्री.) भिलावें का वृक्ष, गायत्रीमन्त्र; **–युग–**(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार पाँच वर्ष का काल; **–रक्षण–**(सं. पुं.) अग्नि-होत्र, अग्नि-रक्षा करने का मन्त्र; **–रूप–** (सं. वि.) अग्नि के समान वर्ण का परितप्त; **–रेतस्–** (सं. पुं.) सुवर्ण, सोना; **–लोक–**(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत के नीचे का प्रदेश; **–वक्र–**(सं. पुं.) भिलावे का वृक्ष; **–वत्–**(सं. वि.) अग्नि तुल्य; **–वधू–**(सं. स्त्री.) दक्ष की कन्या; **–वर्धक–**(सं. वि.) भूख बढ़ानेवाली औषधि; **–वल्लभ–** (सं. पुं.) साल का वृक्ष, साखू का पेड़; **–वाह–**(सं. पुं.) आग जलानेवाला पदार्थ, बकरा, धुवाँ; **–वाहन–**(सं. पुं.) अग्नि का रथ, बकरा; **विंदु–**(सं. वि.) स्फुलिंग, चिनगारी; **–विकार–** (सं. पुं.) भूख न लगने का रोग, क्षुधा न लगना; **–विद्या–** (सं. स्त्री.) अग्निहोत्र; **–वीज, –वीर्य–**(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना; **–वृद्धि–** (सं. स्त्री.) क्षुधा में वृद्धि, भूख अधिक लगना; **–वेश–**(सं. पुं.) महर्षि आत्रेय के शिष्य जो प्राचीन समय में पांचाल देश में राज्य करते थे; **–व्रत–** (सं. पुं.) अग्नि संस्कार; **–शर्मा–** (सं. पुं.) एक ऋषि का नाम जो बड़े क्रोधी थे; **–शाला–** (सं. पुं.) अग्नि रखने का स्थान; **–शिखा–** (सं. स्त्री.) अग्नि की ज्वाला, कुसुम वृक्ष, कुंकुम, सुवर्ण, सोना; **–शुद्धि–** (सं. स्त्री.) अग्नि द्वारा शुद्ध करने की विधि, अग्नि-परीक्षा; **–शेखर–**(सं. पुं.) कुंकुम का वृक्ष, केसर का पौधा, केशर; **–श्री–** (सं. स्त्री.) अग्नि की प्रभा; **–ष्टोम–** (सं. पुं.) स्वर्ग-प्राप्ति के लिये किया जानेवाला एक यज्ञ जिसमें सोमरस की आहुति देकर सोमरस पिया जाता है। इस यज्ञ में सोलह ऋत्विक् रहते हैं तथा इस यज्ञ को करने का अधिकार केवल ब्राह्मण अग्निहोत्री को होता है; **–ष्टोमयाजी–**(सं. पुं.) जिस ब्राह्मण ने अग्निष्टोम यज्ञ को किया हो; **–संस्कार–** (सं. पुं.) दाहक्रिया, शवदाह; **–संदीपन–** (सं. पुं.) जठरानल को तीव्र करने की औषधि; **–संभव–**(सं.पुं.) अग्नि से उत्पन्न होनेवाला पदार्थ, जंगली केशर, सुवर्ण; **–सखा–**(सं. पुं.) अग्नि-देव का मित्र, वायु; **–सहाय–** (सं.पुं.) वायु, धुवाँ; **–साक्षिक–** (सं. वि.) अग्नि को साक्षी देनेवाला; **–सात्–**(सं. वि.) अग्नि द्वारा भस्म किया हुआ; **–साध्य–** (सं. वि.) जो अग्नि से जलाया जा सके, अग्निदाह्य; **–सार–** (सं. पुं.) रसांजन; **–सारा–**(सं.स्त्री.) फलशून्य शाखा; (सं. पुं.) स्फुलिङ्ग, चिनगारी; **–स्तोक–**(सं.पुं.) अग्निष्टोम; **–स्तोम–**(सं. पुं.) मंजरी; **–हानि–** (सं. पुं.) अग्निमान्द्य; **–होत्र–**(सं.पुं.) प्रतिदिन प्रातःकाल तथा संध्या को मंत्र द्वारा स्थापित अग्नि में हवन करने का यज्ञ। इसमें अग्नि अहोरात्र जलती हुई रक्खी जाती है; **–होत्री–**(सं. पुं.) अग्निहोत्र करनेवाला ब्राह्मण।

अग्निक–(सं.पुं.) वीरवहूटी, इंद्रगोप, एक पौधा, एक तरह का साँप।

अग्नीध्र–(स. पु.) यज्ञाग्नि जलानेवाला ब्राह्मण, ऋत्विक, ब्रह्मा, यज्ञ, स्वायंभुव मनु का एक पुत्र।

अग्नीय–(सं.वि.) अग्नि-संबंधी, अग्नि का।

अग्नीष्टक–(सं. पुं.) मसालों से बनाई हुई ईंट जो अहोरात्र आग में रहने पर भी नष्ट नहीं होती।

अग्न्यगार–(सं.पुं.) यज्ञाग्नि रखने का स्थान।

अग्न्यस्त्र–(सं. पुं.) अग्निबाण, तोप, बन्दूक, बमगोला, तमंचा इत्यादि जो बारूद से चलाये जाते हैं।
अग्न्यागार–(सं. पुं.) अग्न्यगार।
अग्न्यात्मक–(सं. वि.) अति कठोर हृदयवाला, अति क्रूर।
अग्न्याधान–(सं. पुं.) अग्निहोत्र याग।
अग्न्याघय–(सं. पुं.) अग्निहोत्री।
अग्न्यालय–(सं. पुं.) अग्निहोत्र का घर।
अग्न्याशय–(सं. पुं.) पेट की जठराग्नि का स्थान।
अग्न्युत्पात–(सं. पुं.) आग लगना, आकाश से अग्नि की वर्षा, उल्कापात, धूम्रकेतु।
अग्न्युद्धार–(सं. पुं.) अरणि द्वारा यज्ञ करने के लिए आग निकालना।
अग्यारी–(हिं. स्त्री.) धूप देने का पात्र, धूपदानी।
अग्र–(सं. पुं.) ऊपरी भाग, शिखर, चोटी, नोक, आगे का भाग, अवलम्बन, समूह; (वि.) उत्तम, श्रेष्ठ, बड़ा, प्रधान, प्रथम, अगला; **–कर**–(सं. पुं.) दाहिना हाथ; **–काय**–(सं. पुं.) शरीर का अगला भाग; **–गण्य**–(सं. वि.) जिसकी गणना पहिले की जावे, प्रथम, अगुआ, नेता, श्रेष्ठ; **–गामी**–(सं. वि.) आगे जानेवाला, पुरोगामी, प्रधान नेता; **–ज**–(सं. पुं.) बड़ा (जेठा) पुत्र या भाई, जिसका जन्म पहले हुआ हो, नेता, विष्णु, ब्राह्मण; **–जंघा**–(सं. स्त्री.) जाँघ का अगला भाग; **–जन्मा**–(सं. पुं.) ज्येष्ठ पुत्र, बड़ा भाई, ब्रह्मा, ब्राह्मण; **–जात**–(सं. पुं.) जिसका जन्म पहले हुआ हो, जेठा पुत्र, बड़ा भाई, ब्राह्मण; **–जाति**–(सं. स्त्री.) मुख्य जाति, ब्राह्मण; **–जिह्वा**–(सं. स्त्री.) जीभ का अगला भाग; **–णी**–(सं. पुं.) अगुवा, नेता, श्रेष्ठ, स्वामी, मालिक; **–तः**–(सं. अव्य.) आगे, पहिले; **–दानी**–(सं. पुं.) निकृष्ट दान लेनेवाला ब्राह्मण, महाब्राह्मण, महापात्र; **–दानीय**–(सं. पुं.) प्रेत कर्म का दान लेनेवाला महाब्राह्मण; **–द्वीप**–(सं. पुं.) जो टापू सब से पहिले जल के बाहर निकल आया हो; **–धान्य**–(सं. पुं.) वह अन्न जो पहिले उत्पन्न हो, बाजरा; **–नख**–(सं. पुं.) नख का अगला भाग; **–नासिका**–(सं. स्त्री.) नाक का अगला भाग; **–निरूपण**–(सं. पुं.) पूर्वज्ञान, भविष्यवाणी; **–पर्णी**–(सं. स्त्री.) सतावर (औषधि); **–पश्चात**–(सं. पुं.) आगा-पीछा; **–पाणि**–(सं. पुं.) हाथ का अगला भाग, दाहिना हाथ; **–पुष्प**–(सं. पुं.) जो फूल पहिले फूला हो, बेंत का वृक्ष; **–पूजा**–(सं. स्त्री.) पहिली पूजा; **–पेय**–(सं. पुं.) जो पहिले पिया जावे; **–भाग**–(सं. पुं.) शिखाग्र, चोटी, आगे का भाग, किनारा, छोर; **–भुक्**–(सं. पुं.) बिना देवता या पितर को अर्पण किये स्वयं भोजन कर लेना; (वि.) भुक्खड़, पेटू; **–भू**–(सं. पुं.) जेठा भाई, ब्राह्मण; **–भूमि**–(सं. स्त्री.) आगे की भूमि; **–महिषी**–(सं. स्त्री.) अभिषेक की हुई प्रधान रानी; **–मांस**–(सं. पुं.) फुप्फुस, फेफड़ा; **–मुख**–(सं. पुं.) मुख का अगला भाग; **–यण**–(सं. पुं.) अगहन महीना; **–याण, –यान**–(सं. पुं.) आगे जानेवाली सेना; **अग्रयायी**–(सं. वि.) आगे जानेवाला, अग्रगामी; **–योधा**–(सं. पुं.) सेना के आगे लड़नेवाला योद्धा; **–लोहिता**–(सं. स्त्री.) लाल शिखावाला पौधा, चिलारी का साग; **–वर्ती**–(सं. पुं.) आगे रहनेवाला, नेता, अगुवा; **–वाल**–(हिं. पुं.) अगरवाला, वैश्य वंश की एक शाखा; **–बीज**–(सं. पुं.) जो वृक्ष डाल लगाने से उत्पन्न हों; **–वीर**–(सं. पुं.) सेना का प्रधान योद्धा; **–व्रीहि**–(सं. स्त्री.) कृषिफल का अन्न; **–शोची**–(सं. पुं.) आगे से विचार कर लेनेवाला, दूरदर्शी; **–संध्या**–(सं. स्त्री.) सन्ध्या का अग्रभाग, तड़का; **–सर**–(सं. वि.) आगे चलनेवाला, अग्रगामी, नेता, अगुआ; **–सारण**–(सं. पुं.) आगे बढ़ना, निवेदनपत्र आदि को बड़े अधिकारी के पास भेजना; **–सारा**–(सं. स्त्री.) बिना फूल का डंठल, पौधे की मंजरी; **–सारित**–(सं. वि.) बड़े अधिकारी के पास प्रेषित; **–हार**–(सं. पुं.) खेत की उपज का वह अन्न जो देवता या ब्राह्मण को अर्पण करने के लिये अलग कर दिया जाय।
अग्रह–(सं. पुं.) जिसने विवाह न किया हो, वानप्रस्थ, संन्यासी।
अग्रहायण–(सं. पुं.) हाथ का अगला भाग, हाथी की सूँड़ का अग्रभाग, अगहन महीना।
अग्रांश–(सं. पुं.) अग्रभाग।
अग्रांशु–(सं. पुं.) प्रकाश की किरण का अन्त, केंद्रीय बिंदु।
अग्राक्षि–(सं. पुं.) आँख का अगला भाग।
अग्राणीक–(सं. पुं.) आगे जानेवाली सेना।
अग्राम्य–(सं. पुं.) जंगली।
अग्राशन–(सं. पुं.) देवता को अर्पण करने के लिए भोजन करने से पहिले रक्खा हुआ रींधा हुआ अन्न।
अग्रासन–(सं. पुं.) जो आसन ब्राह्मण को पहिले बैठने के लिए दिया जाय।
अग्राह्य–(सं. वि.) न ग्रहण करने योग्य।
अग्रिम–(सं. पुं.) आगे का, श्रेष्ठ, प्रधान।
अग्रिमा–(सं. स्त्री.) शरीफा।
अग्रिय, अग्रीय–(सं. पुं.) बड़ा भाई, पहिला फल।
अघ–(सं. पुं.) अधर्म, पाप, दुःख, दुर्घटना, अपराध, व्यसन, निंदा, कंस का सेनापति जो एक असुर था।
अघकृत्–(सं. वि.) पाप करनेवाला।
अघखानि–(हिं. स्त्री.) पाप का भंडार।
अघट–(हिं. वि.) अयोग्य, अनुपयुक्त, जो ठीक न हो, बे-ठीक।
अघटन–(सं. पुं.) न घटने की अवस्था।
अघटित–(हिं. वि.) न होनेवाला, असंभव।
अघन–(सं. वि.) जो गाढ़ा न हो।
अघनाशक–(सं. वि.) पाप को दूर करनेवाला, पापनाशक।
अघन्य–(सं. पुं.) वध न करने योग्य, गाय, वृषभ, बादल, ब्रह्मा, प्रजापति।
अघभोजी–(सं. पुं.) अयोग्य या अग्राह्य भोजन करनेवाला।
अघमय–(सं. वि.) पापपूर्ण।
अघमर्षण–(सं. पुं.) पाप नाश करनेवाला मंत्र; (वि.) पापनाशक।
अघर्म–(सं. पुं.) शीतकाल जिसमें शरीर में पसीना न हो।
अघवाना–(हिं. क्रि. स.) भोजन से संतुष्ट करना, पेटभर खिलाना।
अघविष–(सं. पुं.) सर्प, साँप।
अघहरण–(सं. पुं.) पाप की निवृत्ति।
अघहार–(सं. पुं.) पवित्र पुरुष।
अघाई–(हिं. स्त्री.) तृप्ति, संतोष, पेटभर खाने की अवस्था।
अघाट–(हिं. पुं.) जहाँ पर घाट न हो।
अघाती–(हिं. वि.) जो घाती या घातक न हो, अघातक।
अघाना–(हिं. क्रि. अ.) प्रसन्न होना, इच्छा पूर्ण होना, छकना, मन भर जाना, पेट भरना, भोजन से तृप्त होना, *उगताना*।
अघायु–(सं. पुं., वि.) पाप करनेवाला, पापी, हत्यारा।

अघारि–(सं पुं.) पापनाशक, श्रीकृष्ण।
अघाव–(हिं. पुं.) तृप्ति, अघाना।
अघासुर–(सं. पुं.) एक असुर जो पूतना का भाई था। श्रीकृष्ण ने इसका वध किया था।
अघी–(हिं. वि.) कुकर्मी, पापी।
अघृण–(सं. वि.) दयारहित, क्रूर।
अघृणी–(सं. वि.) घृणा न करने योग्य, जो घृणित न हो, अच्छा।
अघरन–(हिं. पुं.) जव का मोटा आटा।
अघोर–(सं. वि.) जो भयानक न हो, प्रिय, सोहावना, सौम्य; (पुं.) महादेव, शिव, एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मल, मूत्र, मांस भी खाने से घृणा नहीं करते; **–नाथ**–(सं. पुं.) शिव, महादेव, शंकर; **–पंथ**–(हिं. पुं.) अघोरियों का संप्रदाय, अवघड़ों का मत, **–पंथी**–(हिं. पुं.) अघोर मत को माननेवाला, अघोरी।
अघोरी–(सं. पुं.) अघोर मतावलंबी।
अघोष–(सं. पुं.) संस्कृत व्याकरण के अनुसार उच्चारण करने के लिये एक विशेष प्रयत्न।
अचंचल–(सं. वि.) जो चंचल न हो, धीर।
अचंभव(भो,भौ)–(हिं. पुं.) अचंभा।
अचंभा–(हिं. पुं.) आश्चर्य, विस्मय।
अचंभित–(हिं. वि.) चकित, विस्मित।
अचक–(हिं. वि.) पूर्ण, पूरा, अधिक; (पुं.) आश्चर्य, विस्मय; (अव्य.) एकाएक, अचानक, अकस्मात्।
अचकन–(हिं. पुं.) लंवा कुरता या अँगरखा, लंवी वर्दी।
अचकाँ–(हिं. अव्य.) अकस्मात्, विना समझे-बूझे, एकाएक।
अचकित–(सं. वि.) भयहीन, अतृप्त, स्थिर, इधर-उधर न देखनेवाला।
अचक्का–(हिं. पुं.) अपरिचित व्यक्ति, अज्ञान; (मुहा.) **अचक्के में**–अचानक, धोखे में, अनजान में।
अचक्षु–(सं. वि.) विना आँख का, अन्धा।
अचगरी–(हिं. स्त्री.) उपद्रव, छिछोरापन।
अचतुर–(सं. वि.) जो चतुर न हो।
अचना–(हिं. क्रि. स.) आचमन करना, मुँह धोना, कुल्ला करना।
अचपल–(सं. वि.) जो चंचल न हो, अचंचल, स्थिर, धीर।
अचपलता–(सं.स्त्री.) धैर्य, स्थिरता।
अचपली–(हिं. स्त्री.) क्रीड़ा, खेल-कूद।
अचमन–(हिं. पुं.) आचमन, मुँह धोना।
अचर–(हिं. वि.) न चलनेवाला, ठहरा हुआ, स्थिर, अटल, स्थावर।
अचरज–(स.पुं.) अचंभा, आश्चर्य, विस्मय।
अचरम–(सं. वि.) जो अन्त का न हो, वीच का।
अचरित–(सं. वि.) नवीन, अप्रचलित।
अचल–(सं. वि.) जो चलायमान न हो, निश्चल, स्थिर, दृढ़, अटल; (पुं.) वृक्ष, पर्वत; **–कन्या**–(स्त्री.) पार्वती; **–कीला**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–जा**–(स्त्री.) पार्वती, पर्वत पर उत्पन्न होनेवाली लता; **–धृष्**–(पुं.) इन्द्र; **–नारी**–(स्त्री.) हिमालय की पत्नी; **–पति**–(सं.पुं.) हिमालय पर्वत; **–राज**–(पुं.) हिमालय।
अचला–(सं. स्त्री.) न चलनेवाली, स्थिर, हिमालय की पत्नी, पृथ्वी; **–सप्तमी**–(सं. स्त्री.) माघ सुदी सप्तमी, इस तिथि का किया हुआ दान-पुण्य अचल समझा जाता है।
अचवन–(हिं. पुं.) आचमन, भोजन के वाद हाथ-मुँह धोना तथा कुल्ली करना, पीने का कार्य।
अचवना–(हिं.क्रि.स.) आचमन करना, कुल्ला करना।
अचवाई–(हिं. स्त्री.) आचमन।
अचवाना–(हि.क्रि.स.) भोजन के बाद हाथ-मुँह धुलवाना, कुल्ला कराना।
अचानक–(हिं. अव्य.) अकस्मात्, एकाएक, दैवयोग से।
अचार–(हिं. पुं.) फल या तरकारियों में मसाला मिलाकर बना हुआ खाने का खट्टा पदार्थ, आचरण, व्यवहार।
अचारी–(हिं. वि.) आचार करनेवाला; (स्त्री.) एक प्रकार का आम का अचार।
अचालू–(हिं. पुं.) न चलनेवाला, कम चलनेवाला।
अचाह–(हिं. स्त्री.) इच्छा या प्रेम का अभाव; (वि.) किसी पदार्थ की इच्छा न रखनेवाला, निस्पृह।
अचाहा–(हिं. वि.) चाह या इच्छा न करनेवाला, निस्पृह।
अचाही–(हिं.वि.) इच्छारहित, किसी पदार्थ की आकांक्षा न करनेवाला, निष्काम।
अचिंत–(हिं. वि.) विना किसी प्रकार की चिंता का, निश्चिन्त।
अचिंतनीय–(सं. वि.) जिसका चिन्तन न हो सके, चिंता से अगम्य, अज्ञेय।
अचिंतित–(सं. वि.) बिना चिंता किया हुआ, अतर्कित।
अचिंत्य–(सं. वि.) विचार के वाहर, कल्पनातीत, आकस्मिक अज्ञेय; (पुं.) एक अलंकार विशेष।
अचिंत्यात्मा–(सं. पुं.) परमेश्वर।
अचिक्कण–(सं वि.) रूखा, जो चिकना न हो, मैला।
अचिकित्स्य–(सं. वि.) जिसकी चिकित्सा न हो सके, असाध्य (रोग)।
अचित्–(सं. पुं.) निर्जीव पदार्थ।
अचित्त–(सं. वि.) चेतनाहीन, वेसुध, ज्ञानशून्य, अज्ञान।
अचिर–(सं. वि.) थोड़े काल तक ठहरनेवाला; (अव्य.) शीघ्र, तुरत, जल्दी से।
अचिरद्युति, अचिरप्रभा–(सं. स्त्री.) विजली, विद्युत्।
अचिरांशु–(सं. स्त्री.) थोड़ी देर रहनेवाली चमक, विद्युत्, बिजली।
अचिरात्–(सं. अव्य.) बिना विलंब के, झटपट, तुरंत।
अचिराभा–(सं. स्त्री.) विद्युत्, विजली।
अचिष्णु–(सं. वि.) गमनशील, जानेवाला।
अचीता–(हिं. वि.) विना समझा-बूझा, आकस्मिक।
अचूक–(हिं. वि.) न चूकनेवाला, निश्चित, अवश्य; (अव्य.) विना भूल या चूक के।
अचेत–(सं. वि.) चेतनाशून्य, मूर्छित, निर्बुद्धि, मूर्ख, विकल, जड़; (पुं.) निर्जीव पदार्थ।
अचेतन–(सं. वि.) ज्ञानशून्य, चेतनारहित।
अचेष्ट–(सं. वि.) ज्ञानशून्य, निश्चेष्ट।
अचेष्टता–(सं. स्त्री.) ज्ञान या चेष्टा-शून्यता, निश्चेष्टता।
अचैतन्य–(सं. वि.) चेतनाहीन, जड़।
अचैन–(हिं. पुं.) व्याकुलता, वेचैनी, दुःख।
अचैना–(हिं. पुं.) भूमि में गड़ा हुआ चारा काटने का ठीहा, नेसुआ।
अचोट–(हिं. वि.) विना चोट लगा-हुआ, सुरक्षित।
अचोना–(हिं. पुं.) आचमनी, पानी पीने का छोटा पात्र।
अच्छ–(सं. वि.) स्वच्छ, निर्मल; (पुं.) भालू, स्फटिक।
अच्छत–(हिं. पुं.) देखें 'अक्षत'।
अच्छभल्ल–(सं. पुं.) भालू, रीछ।
अच्छा–(हिं. वि.) वढ़िया, उत्तम, भला, रोगरहित, स्वस्थ; (पुं.) श्रेष्ठ मनुष्य, वड़ा तथा बूढ़ा मनुष्य; (अव्य.) भली भाँति; स्वीकारसूचक शब्द, अस्तु; (मुहा.) **–आना**–ठीक वक्त पर आना; **अच्छे से पाला पड़ना**– बड़े अक्खड़ आदमी से पाला पड़ना; **अच्छी कटना या बीतना**–आराम से दिन

बीतना; अच्छे-अच्छे-वड़े आदमी।
अच्छाई (हिं. स्त्री), अच्छापन-(हिं. पुं.) भलाई, उत्तमता, सुघड़पन।
अच्छा-खासा-(हिं. वि.) काफी अच्छा।
अच्छा-बुरा-(हि. वि.) भला-बुरा।
अच्छिद्र-(सं. वि.) बिना छिद्र का, दोषहीन, बिना भ्रान्ति का।
अच्छिन्न-(सं. वि.) जो टूटा-फूटा न हो, अखंडित, समूचा, पूरा, समग्र।
अच्छेद्य-(सं.वि.) जिसका छेदन न हो सके, अविभाज्य।
अच्छोटन-(सं. पुं.) आखेट, शिकार।
अच्छोद-(सं. पुं.) कैलास पर्वत पर के एक सरोवर का नाम।
अच्युत-(सं. वि., पुं.) जिसका कभी क्षय न हो, सनातन, स्थायी, अभ्रष्ट, अमर, विष्णु, ब्रह्म, ईश्वर, जैनियों के एक देवता।
अच्युताग्रज-(सं. पुं.) कृष्ण के वड़े भाई बलराम, इंद्र।
अच्युतात्मज-(सं. पुं.) कृष्ण के पुत्र, कामदेव।
अच्युतानंद-(सं.पुं.) नित्यानंद, परमेश्वर।
अछक-(हिं. वि.) न छका हुआ, भूखा।
अछकना-(हिं. क्रि. अ.) भूखे रहना, पेटभर न खाना।
अछताना-पछताना-(हिं. क्रि. अ.) पश्चात्ताप करना, खेद करना।
अछत्र-(हिं. पुं.) राज्यहीन, बिना छत्र का, असहाय।
अछरा-(हिं. स्त्री.) अप्सरा, देवांगना।
अछरौटी-(हिं. स्त्री.) वर्णमाला।
अछल-(हिं.वि.) बिना कपट का, निष्कपट, निश्छल।
अछवाना-(हिं. क्रि. स.) सजाना, सुशोभित करना, सँवारना।
अछवानी-(सं. स्त्री.) प्रसूता स्त्रियों को दिया जानेवाला एक पाक विशेष।
अछाम-(हिं. वि.) हृष्ट-पुष्ट, बलवान्।
अछूत-(हिं. वि.) स्पर्श न किया हुआ, कोरा, नया, अस्पृश्य; (पुं.) अंत्यज जाति-डोम, चमार आदि।
अछूता-(हिं. वि.) बिना छुआ हुआ, नया, पवित्र।
अछेव-(हिं. वि.) बिना छिद्र का।
अछेह-(हिं. वि.) अखंडित, बहुत।
अज-(सं.वि.,पुं.) जिसका जन्म न हो, ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चंद्रमा, कामदेव, सूर्यवंशीय राजा रघु के पुत्र, बकरा, मेढ़ा, अजन्मा, नेता, सुवर्णमाक्षिक नाम की धातु-विशेष, प्रकृति, शक्ति, काकड़ासिंघी नामक औषधि।
अजकर्ण, अजकर्णक-(सं. पुं.) बकरे का कान, साल का वृक्ष।
अजकव-(सं. पुं.) शिवजी के धनुष का नाम, बबूल का वृक्ष, विषधर बड़ा बिच्छू।
अजका-(सं. स्त्री.) बकरे के गले का स्तन।
अजकाव-(सं. पुं.) यज्ञपात्र, शिव का धनुष।
अजगंधा-(सं. स्त्री.) अजवाइन, अजमोद।
अजग-(सं. पुं.) अग्नि, विष्णु।
अजगर-(सं. पुं.) बकरे को निगल जानेवाला स्थूलकाय सर्प; (वि.) आलसी, उद्यमहीन।
अजगरी-(हिं. वि.) अजगर सम्बन्धी, अजगर का।
अजगव-(सं. पुं.) महादेव का धनुष, पिनाक, देखें 'अजकव'।
अजघन्य-(सं. वि.) श्रेष्ठ, भला।
अजटा-(सं. वि.) बिना जटा का; (पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
अजड़-(सं. वि.) सजीव, चेतन।
अजदंडी-(सं. स्त्री.) ब्रह्मदंडी का वृक्ष।
अजदहा-(फा. पुं.) वड़े-वड़े पशुओं को निगल जानेवाला अजगर।
अजदेवता-(सं. पुं.) बकरे का अधिष्ठाता देवता।
अजन-(सं. वि.) जिसका जन्म न होता हो; (पुं.) निर्जन स्थान, एकान्त।
अजन्म, अजन्मा-(सं. वि.) जिसका जन्म न हो, अनादि।
अजप-(सं.पुं.) बकरी पालनेवाला मनुष्य।
अजपति-(सं. पुं.) श्रेष्ठ बकरा, मेष राशि का स्वामी, मंगल ग्रह।
अजपथ-(सं. पुं.) ईश्वर का बनाया हुआ मार्ग, छायापथ।
अजपा-(सं. स्त्री.) वह मंत्र जो बिना यत्न के जपा जा सके अथवा उच्चारण किया जा सके, (स्वाभाविक श्वासोच्छ्वास को अजपा जप अथवा हंस मन्त्र कहते हैं), (हं=श्वास खींचना, स =श्वास छोड़ना); बकरी पालनेवाला।
अजपाद-(सं. पुं.) एक रुद्र विशेष, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र।
अजबंधु-(सं. पुं.) मूर्ख, बुद्धिहीन पुरुष।
अजब-(अ. वि.) अद्भुत, विचित्र; (पुं.) अचंभा, अचरज।
अजबला-(सं. स्त्री.) श्यामा तुलसी।
अजमुख-(सं. पुं.) दक्ष प्रजापति।
अजमोद, अजमोदा-(सं. स्त्री.) अजवाइन।
अजय-(सं. पुं.) जय का अभाव, पराजय, हार।
अजयपाल-(सं. पुं.) एक राग विशेष, जमालगोटा; (वि.) अजेय।
अजया-(सं. स्त्री.) भाँग, विजया।
अजय्य-(हिं. वि.) जो जीता न जा सके, अपराजित।
अजर-(सं. वि.) जो कभी वृद्ध न हो, वार्धक्य-शून्य, चिर-युवा, अमर।
अजरा-(सं.स्त्री.) घृतकुमारी, घिकुआर।
अजरायल-(हिं. वि.) कभी जीर्ण न होनेवाला, चिरस्थायी।
अजलोमा-(सं. पुं.) केवाँच, वानरी; (वि.) बकरे के समान रोयेंवाला।
अजवल्ली-(सं. स्त्री.) एक औषधि विशेष, मेढ़ासिंघी।
अजवाइन, अजवायन-(हिं. स्त्री.) अजमोद, एक मसाला विशेष।
अजवीथी-(सं. स्त्री.) हाथी का मार्ग।
अजशृंगी-(सं. स्त्री.) अजवल्ली, मेढ़ासिंघी नामक औषधि।
अजस-(हिं.पुं.) अयश, अपयश, अपकीर्ति।
अजसी-(हिं. वि.) जिसके हाथ में यश न हो, यशहीन।
अजस्र-(सं. वि.) चिरस्थायी, सतत; (अव्य.) नित्य, निरंतर, सर्वदा।
अजहत्स्वार्था-(सं. स्त्री.) उपादानलक्षणा जिसमें कोई शब्द अपने अर्थ को दूसरे शब्द के अर्थ में प्रकट करता है।
अजहूँ-(हिं. अव्य.) अब भी, आजतक भी।
अजा-(सं. स्त्री.) बकरी, प्रकृति, माया।
अजागर-(सं. पुं.) भृंगराज, भँगरैया; (वि.) न जागनेवाला।
अजाचक-(हिं. पुं.) अयाचक या सम्पन्न मनुष्य; (वि.) न माँगनेवाला, जिसको कुछ माँगने की आवश्यकता न हो।
अजाची-(हिं. पुं., वि.) जो किसी से कुछ न माँगे, सम्पन्न व्यक्ति, भाग्यवान् पुरुष।
अजाजि-(सं. स्त्री.) गूलर का वृक्ष, जीरक, जीरा।
अजाजिक-(सं. पुं.) सफेद जीरा।
अजात-(सं.वि.) जिसका जन्म न हुआ हो।
अजातककुद-(सं.पुं.,वि.) बछड़ा, जिसको ककुद न निकला हो।
अजातदंत-(सं. वि.) जिसको दाँत न निकले हों; (पुं.) बिना दाँत का बालक।
अजातपक्ष-(सं. वि.) पक्षी का छोटा बच्चा जिसके पर न निकले हों और जो उड़ न सके।
अजातव्यवहार-(सं.वि.,पुं.) अप्राप्तवयस्क।
अजातशत्रु-(सं. पुं.) काशी के एक अति प्राचीन राजा का नाम, राजा

युधिष्ठिर, मगध देश के राजा विंबिसार के पुत्र का नाम।
अजातारि–(सं. पुं.) जिसका कोई शत्रु न हो, युधिष्ठिर।
अजाति, अजाती–(सं. वि.) जाति-शून्य, विजाति, विना जाति का, जाति से निकाला हुआ, पतित, त्याज्य।
अजादनी–(सं. स्त्री.) वेर का वृक्ष।
अजान–(हिं. वि.) जो जाना हुआ न हो, अज्ञात, अपरिचित; (पुं.) अज्ञान, अविवेक, अनजान।
अजानि–(सं. पुं.) विना पत्नी का पुरुष।
अजामिल–(सं. पुं.) पुराणों में एक पापी ब्राह्मण का नाम जो मरते समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेने से मुक्त हुआ था।
अजाय–(हिं. वि.) अनुचित, अयोग्य।
अजार–(हिं. पुं.) रोग, व्याधि।
अजिऔरा–(हिं. पुं.) आजी या दादी के पिता का घर।
अजित–(सं. वि.) जो हारा न हो, अपराजित; (पुं.) शिव, विष्णु, बुद्ध, जैनियों के दूसरे तीर्थंकर का नाम।
अजिता–(सं. स्त्री.) भादों वदी एकादशी।
अजितेंद्रिय–(सं. वि.) जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में न किया हो, विषयासक्त।
अजिन–(सं. पुं.) मृग-चर्म, मृगछाला।
अजिनपत्रा–(सं. स्त्री.) चमड़े के समान परवाला चमगादड़।
अजिनवासी–(सं. वि.) मृग-चर्म पहिनने-वाला; मृगचर्मधारी।
अजिर–(सं. पुं.) टीला, आँगन, चबूतरा, वायु, शरीर, मेढक, विषय; (वि.) शीघ्र चलनेवाला।
अजिह्म–(सं. वि.) जो टेढ़ा न हो, सरल, सीधा, ईमानदार।
अजिह्मग–(सं. वि., पुं.) सीधा जानेवाला, वाण, पक्षी।
अजिह्माग्र–(सं. वि.) सीधी नोकवाला।
अजिह्व–(स. पुं.) मेढक; (वि.) विना जीभ का।
अजी–(हिं. अव्य.) संबोधनार्थक शब्द, अरे!
अजीगर्त–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम जो शुनःशेफ के पिता थे, सर्प, साँप।
अजीरन–(हिं. पुं.) अपच, वहुतायत; (मुहा.) –होना–भारी या दूभर होना।
अजीर्ण–(सं. पुं.) अपाक, अपच, अन्न का अच्छी तरह से न पचना, वहुतायत; (वि.) जो पचा न हो।
अजीर्णी–(सं. वि.) जिसको अनपच हुआ हो।
अजीव–(सं. वि.) चेतनाशून्य, मृतक, विना जीव का, अचेतन, निर्जीव।
अजीवक–(सं. पुं.) शिवजी का धनुप।
अजीवन–(सं. पुं.) जीवन या अस्तित्व का अभाव, मृत्यु, मौत; (वि.) जीवनरहित।
अजुगुप्सित–(सं. वि.) निन्दा न किया हुआ, अनिंदित।
अजूजा–(हिं. पुं.) मृतक शरीर को खानेवाला जानवर।
अजूरा–(हिं. वि.) संग्रह न किया हुआ, अप्राप्त, अनुपस्थित।
अजेय–(सं. वि.) न जीतने योग्य।
अजैव–(सं. वि.) जिसमें जीव न हो।
अजो–(हिं. अव्य.) आज तक, अभी तक।
अजोग–(हिं. वि.) अयोग्य; (पुं.) बुरा योग या मुहूर्त।
अजौं–(हिं. अव्य.) अभी तक, आज भी।
अज्झल–(सं. पुं.) ढाल, अंगारा।
अज्ञ–(सं. वि.) ज्ञानशून्य, मूर्ख, अज्ञानी; (पुं.) मूर्ख मनुष्य।
अज्ञका–(सं. स्त्री.) भोली-भाली स्त्री।
अज्ञता (सं. स्त्री.), **अज्ञत्व**–(सं. पुं.) मूर्खता, अज्ञान।
अज्ञात–(सं. वि.) न जाना हुआ, अपरिचित, अविदित।
अज्ञातक–(सं. वि.) अनजाना, अपरिचित।
अज्ञातनामा–(सं. वि.) जिसका नाम ज्ञात न हो, अप्रख्यात।
अज्ञातभुक्त–(सं. वि.) अनजानी वस्तु को खानेवाला।
अज्ञातयौवना–(सं. स्त्री.) मुग्धा नायिका जिसे अपनी चढ़ती जवानी का ज्ञान न हो।
अज्ञातवास–(सं. वि.) जिसके रहने का स्थान ज्ञात न हो, गुप्त रूप से रहनेवाला; (पुं.) गुप्त-वास।
अज्ञातशील–(सं. वि.) जिसकी चाल-ढाल ज्ञात न हो।
अज्ञाति–(सं. पुं.) असंवन्धी पुरुष।
अज्ञान–(सं. वि.) विना ज्ञान का, ज्ञान-शून्य; (पुं) अविद्या, विरुद्ध ज्ञान, मोह, जड़ता, मूर्खता।
अज्ञानकृत–(सं.वि.) अनजान या अज्ञान में किया हुआ।
अज्ञानता–(सं. स्त्री.) अविद्या, मूर्खता।
अज्ञानी–(सं. वि.) अवोध, मूर्ख, ज्ञान-शून्य, जड़।
अज्ञेय–(सं. वि.) जो जाना न जा सके, ज्ञान के अयोग्य, समझ में न आने योग्य।
अज्येष्ठ–(सं. वि.) जो ज्येष्ठ या बड़ा न हो।
अझर–(हिं. वि.) न झरने या वरसनेवाला।
अझोरी–(हिं. स्त्री.) थैली।
अटंबर–(हिं. पुं.) राशि, ढेर।
अटक, अटकन–(हिं. स्त्री.) प्रतिबंध, रुकावट, अवरोध, आवश्यकता, बाधा, विघ्न।
अटकन-बटकन–(हिं. पुं) लड़कों का एक खेल; (मुहा.) -खेलना–बेकार का काम करना।
अटकना–(हिं. क्रि. अ.) बोलते-बोलते रुक जाना, ठहरना, फँसना, उलझना, विवाद करना, झगड़ा करना, लगे रहना, प्रेम करना, बकझक करना।
अटकर–(हिं. स्त्री.) अटकल या अनुमान।
अटकरना–(हिं. क्रि. स.) अनुमान करना, कूतना।
अटकल–(हिं. स्त्री.) कूत, अंदाजा, अनुमान।
अटकलना–(हिं. क्रि. स.) अटकल या अंदाजा लगाना।
अटकलपच्चू–(हिं. वि.) केवल अनुमान से विचारा हुआ।
अटका–(हिं. पुं) जगन्नाथपुरी में नैवेद्य लगाया हुआ भात जो सुखाकर अन्य देशों में प्रसाद के रूप में भेजा जाता है।
अटकाना–(हिं. क्रि. स.) ठहराना, लगाना, गति रोकना, फँसाना, बाधा डालना, रोक रखना, उलझाना।
अटकाव–(हिं. पुं.) अवरोध, प्रतिबंध, रुकावट।
अटखट–(हिं. वि.) टूटा-फूटा, छिन्न-भिन्न।
अटखेली–(हिं. स्त्री.) खेल-कूद, चंचलता, क्रीड़ा, कौतुक, झूमती हुई चाल।
अटन–(सं. पुं.) भ्रमण, घूमना-फिरना, गमन, यात्रा, चलना-फिरना।
अटना–(हिं. क्रि. अ.) चलना-फिरना, घूमना, यात्रा करना, रोकना, भर जाना, पूर्ण होना, समाना, पूरा पड़ना।
अटनि, अटनी–(सं. स्त्री.) धनुष का वह भाग जहाँ रोदा चढ़ाया जाता है।
अटपट, अटपटा–(हिं. वि.) टेढ़ामेढ़ा, विकट, भयंकर, अद्भुत, गहरा, दुस्तर, गूढ़, उलटा-सीधा।
अटपटाना–(हिं. क्रि. अ.) इधर-उधर होना, सकुचाना।
अटपटी–(हिं. स्त्री.) शरारत, नटखटपन।
अटब्बर–(हिं. पुं.) आडंवर, कुटुंब।
अटरूप–(सं. पुं.) अडूसे का पेड़।
अटल–(हिं. वि.) न टलनेवाला, निश्चल, स्थिर, अवश्य होनेवाला, पोढा, दृढ़।

अटवि, अटवी–(सं. स्त्री.) वन, जंगल।
अटविक–(सं. पुं.) लकड़हारा।
अटा–(सं. स्त्री.) पर्यटन, भ्रमण, घुमौवल, छत, ढेर।
अटाटूट–(हिं. वि.) न टूटनेवाला, दृढ़, पुष्ट, बहुत भारी, समग्र।
अटारी–(हिं. स्त्री.) छत, घर के सबसे ऊपर के खंड की कोठरी।
अटाल–(हिं. पुं.) बहुत ऊँचा घर, धौरहरा, बुर्ज।
अटाला–(हिं. पुं.) सामग्री, सामान, ढेर, राशि, अंबार।
अटूट–(हिं. वि.) न टूटनेवाला, जिसका खंड न हो सके, दृढ़, अजेय, अधिक, बराबर, लगातार।
अटेक–(हिं. वि.) बिना टेक का, उद्देश्य-रहित, बिना सहारे का।
अटेरन–(हिं. पुं.) सूत की आँटी बनाने का एक यंत्र, ओयना, कुश्ती का एक दाँव, घोड़े को चक्कर दिलाने की एक विधि।
अटेरना–(हिं. क्रि., स.) सूत की आँटी बनाना, मोड़ना, नशे में चूर होना।
अटोक–(हिं. वि.) बिना रोकटोक का।
अट्ट–(सं. पुं.) महल, अट्टालिका, हाट, बाजार; (वि.) अधिक, बहुत ऊँचा।
अट्टक–(सं. पुं.) छत पर की कोठरी।
अट्टन–(सं. पुं.) ढाल, अप्रतिष्ठा।
अट्टसट्ट–(हिं. वि.) ऊटपटांग, अंडबंड।
अट्टहसित–(सं.वि.) ठहाके की हँसी-युक्त।
अट्टहास–(सं. पुं.) ठहाके की हँसी।
अट्टहासक–(सं. पुं.) ठहाका मारकर हँसनेवाला, कुन्दवृक्ष।
अट्टहासी–(सं.पुं.) महादेव, शिव; (वि.) अट्टहास करनेवाला।
अट्टा–(हिं. पुं.) अट्टालिका, अटारी, मचान।
अट्टाट्टहास–(हिं. पुं.) देखें 'अट्टहास'।
अट्टाल–(सं. पुं.) महल में सबसे ऊपर की छत पर का कमरा, अटारी।
अट्टालिका–(सं. स्त्री.) अटारी, बड़ा मकान, राजगृह, प्रासाद।
अट्टी–(हिं. स्त्री.) लच्छी, अटेरन में लिपटा हुआ धागा।
अट्ठा–(हिं. पुं.) तास का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।
अट्ठाइस, अट्ठाईस–(हिं. वि., पुं.) बीस और आठ (से बनी हुई संख्या), २८।
अट्ठाईसवाँ–(हिं. वि.) अट्ठाइस संख्यावाला।
अट्ठानबे–(हिं. वि., पुं.) नब्बे और आठ (से बना हुई संख्या), ९८।
अट्ठावन–(हिं. वि., पुं.) पचास और आठ (से बनी हुई संख्या), ५८; –वाँ–(हिं. वि.) अट्ठावन संख्या का।
अट्ठासिवाँ–(हिं. वि.) अट्ठासी संख्या का।
अट्ठासी–(हिं. वि., पुं.) अस्सी और आठ (से बनी हुई संख्या), ८८।
अठ–(हिं. वि.) संयुक्त पदों में आठ की संख्या का वाचक।
अठइसी–(हिं. स्त्री.) अट्ठाइस गाही फलों की संख्या।
अठकौसल–(हिं. स्त्री.) सभा, पंचायत, सलाह, मंत्रणा।
अठखलपन–(हिं. पुं.) खेल-कूद, उपद्रव।
अठखेली–(हिं. स्त्री.) क्रीड़ा, कौतुक, खेल-कूद, उछल-कूद, चुलबुलापन।
अठत्तर–(हिं. वि., पुं.) सत्तर और आठ (से बनी हुई संख्या), ७८।
अठन्नी–(हिं. स्त्री.) आठ आने (आधे रुपये) की मुद्रा।
अठपतिया–(हिं. वि., स्त्री.) (एक प्रकार की बेलबूटी) जिसमें आठ पत्तियाँ काढ़ी जाती हैं।
अठपहला, अठपहलू–(हिं. वि.) आठ पहलों का।
अठपाव–(हिं. पुं.) उपद्रव, हलचल।
अठमासा–(हिं. वि.) आठ महीने का, आठ मासे की तौल का, ऊख बोने के लिये जो खेत माघ महीने से अगाढ़ तक जोता जावे।
अठमासी–(हिं.वि.) आठ मासे की तौल-वाली गिन्नी।
अठलाना–(हिं.क्रि.,अ.) देखें 'इठलाना'।
अठवना–(हिं.क्रि.,अ.) एकत्र होना, इकट्ठा होना।
अठवाँसा–(हिं. वि.) आठ महीने में जन्म लेनेवाला; (पुं.) सीमन्तोन्नयन संस्कार जो गर्भ धारण के बाद आठवें महीने में होता है, आठ महीने गर्भाधान के बाद उत्पन्न होनेवाला बच्चा।
अठाई–(हिं. वि.) उपद्रवी।
अठवारा–(हिं. पुं.) आठ दिन का काल, आठवाँ दिन, सप्ताह।
अठवारी–(हिं. स्त्री.) जमींदार को प्रत्येक आठवें दिन किसान से हल-बैल मिलने की प्रथा।
अठवाली–(हिं. स्त्री.) पालकी जिसको आठ कहार ढोते हैं।
अठहत्तर–(हिं. वि., पुं.) सत्तर और आठ (से बनी संख्या), ७८; –वाँ–(हिं. वि.) अठहत्तर संख्यावाला।
अठान–(हिं. वि., पुं.) न ठानने या निश्चय करने योग्य, अनुचित कार्य, द्रोह, वैमनस्य, शत्रुता।
अठाना–(हिं. क्रि., स.) ठानना, सताना, पीड़ा पहुँचाना।
अठारह, अट्ठारह–(हिं. वि., पुं.) दस और आठ (से बनी हुई संख्या), १८। –वाँ, –वाँ– (हिं. वि.) अठारह संख्या वाला, अठारह के स्थान का।
अठासी–(हिं.स्त्री.,वि.) देखें 'अट्ठासी'।
अठिलाना–(हिं.क्रि.,अ.) देखें 'इठलाना'।
अठोठ–(हिं. पुं.) ठाट-बाट, आडम्बर।
अठोतर सौ–(हिं. पुं.) एक सौ आठ की संख्या, १०८।
अठोतरी–(हिं. स्त्री.) एक सौ आठ दानों की जप करने की माला, एक सौ आठ वर्ष की आयु।
अठौरा–(हिं.वि.) आठ का; (पुं.) आठ पत्तों से बना हुआ दोना।
अडंग–(हिं. वि.) देखें 'अडिग'।
अड़ंगा–(हिं. पुं.) रोक, बाधा, [illegible], कुश्ती का एक दाँव; (मुहा.) –डालना, मारना या लगाना–बाधा या [illegible] डालना, बाधक होना।
अड़ंगेबाज–(हिं. पुं.) वह जो दूसरे के [illegible] में अड़ंगा या बाधा डालता हो।
अड़ंगेबाजी–(हिं. स्त्री.) अड़ंगा लगाने की क्रिया या भाव।
अड़–(हिं. स्त्री.) हठ, टेक।
अड़काना–(हिं.क्रि.,स.) अड़ाना, रोकना।
अड़ग–(हिं. वि.) दृढ़, पुष्ट, [illegible]।
अड़गड़ा–(हिं. पुं.) [illegible] का स्थान।
अड़गोड़ा–(हिं. पुं.) लकड़ी का टुकड़ा जो नटखट पशु के गले में बाँध दिया जाता है जिससे [illegible] नहीं भागता, [illegible], [illegible]।
[illegible]
[illegible]
अड़बंगा–(हिं. पुं.) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
अड़तालिस, अड़तालीस–(हिं. वि., पुं.) चालीस और आठ (से बनी हुई संख्या), [illegible]।

४८; –वाँ–(हिं. वि.) अड़तालिस संख्या वाले स्थान पर।
अड़तिस, अड़तीस–(हिं. वि., पुं.) तीस और आठ (से बनी हुई संख्या), ३८।
अड़तिसवाँ, अड़तीसवाँ–(हिं. वि.) अड़तीस संख्यावाला।
अड़दार–(हिं. वि.) अड़नेवाला, चलने में रुकनेवाला, अड़ियल, मस्त।
अड़ना–(हिं. क्रि. अ.) चलते-चलते रुक जाना, हठ करना, टेक ठानना, रुकना, अटकना।
अड़बंग, अड़बंगा–(हिं. वि.) टेढ़ा, ऊँचा-नीचा, दुर्गम, अड़बड़, अपूर्व, विकट, बेडौल, बेढब।
अड़बड़–(हिं. पुं.) व्यर्थ की वार्ता, गाली-गलौज; (मुहा.) – **बकना**–गाली-गलौज देना, प्रलाप करना।
अड़सठ, अरसठ–(हिं. वि., पुं.) साठ और आठ (से बनी हुई संख्या), ६८; –**वाँ**, –**वाँ**–(हिं. वि.) अड़सठ संख्या का।
अड़हुल–(हिं. पुं.) गहरे लाल रंग का पुष्प विशेष, देवीपुष्प, जपापुष्प।
अड़ा-अड़ी–(हिं. स्त्री.) दो दलों में मार-पीट के लिए मुकाबला, तत्परता या टेक।
अड़ाड़–(हिं. पुं.) पशुओं को बाँधने का बाड़ा, ढेर, राशि, अड़ार।
अड़ाड़ा–(हिं. पुं.) आडंबर, ढोंग, ढकोसला।
अड़ान–(हिं. स्त्री.) विश्राम-स्थान, पड़ाव, पथिकों के ठहरने का स्थान।
अड़ाना–(हिं. क्रि. स.) रोकना, ठहरना, टिकाना, आड़ देना, टेक लगाना, फँसाना, ठूँसना, भरना, ढरकाना; (पुं.) टेक, रोक, ठहराव, एक राग विशेष।
अड़ानी–(हिं. स्त्री.) रोकने का साधन, ओट, बड़ी पंखी, (पुं.) मल्लयुद्ध का एक दाँव।
अड़ार–(हिं. पुं.) ढेर, राशि, लकड़ी का ढेर, लकड़ी की दुकान।
अड़ाल–(हिं. पुं.) एक विशेष प्रकार का नाच।
अडिग–(हिं. पुं.) न डोलनेवाला, निश्चल, स्थिर, अटल।
अड़ियल–(हिं. वि.) अड़कर चलनेवाला, शीघ्र कार्य न करनेवाला, हठी।
अड़िया–(हिं. पुं.) साधुओं की टेककर बैठने की कुबड़ी।
अड़ी–(हिं. स्त्री.) रोक, हठ, अवसर, अड़ान, चाँड़।
अड़ीठ–(हिं. वि.) अदृष्ट, गुप्त।
अड़ूलना–(हिं. क्रि., स.) उड़ेलना, गिराना।
अड़ूसा–(हिं. पुं.) औषधि विशेष।
अड़ोल–(हिं. वि.) न डोलनेवाला, स्थिर।
अड़ोस-पड़ोस–(हिं. पुं.) पास-पड़ोस, आस-पास।
अड़ोसी-पड़ोसी–(हिं. पुं.) पड़ोस का रहनेवाला, पास रहनेवाला।
अड्डन–(सं. पुं.) ढाल।
अड्डा–(हिं. पुं.) रहने का स्थान, निवास, डेरा, एकत्र होने या उठने-बैठने का स्थान, दुष्टों के इकट्ठा होने का स्थान, सेना के रहने का स्थान, पक्षियों के बैठने का स्थान, खरादने की लकड़ी का आधार, वेश्यालय, करगह।
अड्डी–(हिं. स्त्री.) लकड़ी छेदने की बरमी।
अढ़तिया–(हिं. पुं.) आढ़त करनेवाला, कमीशन पर माल बेचनेवाला, दलाल।
अढ़वना–(हि. क्रि. स.) कार्य में नियुक्त करना, आज्ञा देना।
अढ़वायक–(हिं. पुं.) दूसरों से काम करानेवाला।
अढ़ाई–(हिं. वि.) दो तथा आधा मिलकर बनी हुई संख्या, पाँच का आधा; २½।
अढ़िया–(हि. स्त्री.) काठ या पत्थर का बना हुआ छोटा पात्र, गारा ढोने का तसला या कढ़ैया।
अढुक–(हिं. पुं.) चोट, ठोकर।
अढुकना–(हिं. क्रि. अ.) ठोकर लगना, ठेस लगना, चोट खाना।
अढ़ैया–(हिं. पुं.) अढ़ाई सेर की तौल, पाँच सेर (पसेरी) का आधा, अढ़ाई गुने का पहाड़ा; (वि.) कार्य में नियुक्त करनेवाला, निडर।
अण, अणक–(सं. वि.) अवम, नीच, बकवादी, तुच्छ।
अणि–(सं. स्त्री.) पहिये की धुरी की कील, नोक, आरा, अग्रभाग, धार, सीमा, किनारा, मेड़।
अणिमा–(सं. स्त्री.) अति सूक्ष्म परिमाण, आठ प्रकार की सिद्धियों में से वह सिद्धि जिसके द्वारा योगी अतिसूक्ष्म रूप धारण कर सकता है।
अणी–(हिं. अव्य.) एजी, अरी, ओजी।
अणु–(सं. वि.) सूक्ष्म, छोटा, थोड़ा, अदृश्य; (पुं.) परमाणु, अति सूक्ष्म कण, धान, संगीतशास्त्र की एक मात्रा; –**क**–(सं. वि.) निपुण, चतुर, अल्प परिमाण का; –**ता**–(सं. स्त्री.) सूक्ष्मता, अल्पता; –**त्व**–(सं. पुं.) अणुभाव, सूक्ष्मता, अल्पता; –**बम**–(हिं. पुं.) एक प्रकार का व्यापक विनाशकारी परमाणु विस्फोटक बम; –**भा**–(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली; –**मात्र**–(सं. वि.) अल्प परिमाण, अल्प मात्रा का, थोड़ा-सा; –**रेणु**–(सं. पुं.) धूलि का कण; –**रेवती**–(सं. स्त्री.) जमालगोटा; –**वाद**–(सं. पुं.) वैशेषिक दर्शन अथवा न्याय शास्त्र जो परमाणु को नित्य मानते हैं, वल्लभाचार्य का मत जो जीव तथा ईश्वर को अणु मानता है; –**वादी**–(सं. पुं.) वैशेषिक, नैयायिक, वल्लभाचार्य के मत का अनुयायी; –**वीक्षण**–(सं. पुं.) सूक्ष्मदर्शक यंत्र जिसके द्वारा निकट की सूक्ष्म वस्तु बड़ी दीख पड़ती है, सूक्ष्म-दर्शन।
अतंत्र–(सं. वि.) तंत्र या तंतु-रहित।
अतंद्र–(सं. वि.) जिसे नींद न आती हो, निद्रा-रहित।
अतंद्रिक–(सं. वि.) अतंद्र।
अतंद्रित, अतंद्री–(सं. वि.) निद्रा-रहित।
अतः–(सं. अव्य.) इस वास्ते, इस कारण से, इसलिये, इससे।
अतएव–(सं. अव्य.) अतः, इसलिए, इस कारण से।
अतट–(सं. पुं.) टीला, ऊँचा स्थान, शिखर, भूमि के नीचे का भाग; (वि.) तटहीन।
अतत्त्वविद्–(सं. पुं.) तत्त्व को न जाननेवाला व्यक्ति।
अतथ्य–(सं. वि., पुं.) जो तथ्य न हो, झूठा, मिथ्या, अन्यथा, असमान, ऊँचा-नीचा।
अतद्गुण–(सं. पुं.) एक विशेष प्रकार का अर्थालंकार जिसमें अत्यंत समीप होने पर भी किसी वस्तु का गुण अन्य वस्तु में संघटित नहीं होता।
अतद्वान्–(सं. वि.) असदृश, असमान।
अतनु–(सं. वि., पुं.) बिना देह का, अशरीर, कामदेव।
अतप–(सं. वि.) शांत, ठंढा, जो गरम न हो।
अतप्त–(सं. वि.) बिना तपाया हुआ, ठंढा, कच्चा; –**तनु**–(सं. वि.) बिना छापा लगा हुआ, जिसका शरीर तप इत्यादि से दुर्बल न हुआ हो।
अतर–(हिं. पुं.) इत्र, पुष्पनिर्यास, फूलों का सुगन्धित सत्त्व।
अतरदान–(हिं. पुं.) चाँदी का वह आधान या पात्र जिसमें अतर का फाहा रखकर सत्कार के निमित्त सभा में सबको सूँघने के लिए रक्खा जाता है, इत्रदान।
अतरल–(सं. वि.) जो तरल न हो, गाढ़ा।
अतरवन–(हिं. पुं.) दरवाजे के चौखट के नीचे रखने की पत्थर की पटिया

अतिप्रमाण–(सं. वि.) अधिक प्रमाण-युक्त, जिसके लिये कोई प्रमाण न हो।
अतिप्रवृत्ति–(सं. स्त्री.) अधिक प्रवृत्ति या झुकाव।
अतिप्रवृद्ध–(सं. वि.) बहुत बढ़ा हुआ, अत्यन्त बूढ़ा।
अतिप्रश्न–(सं. पुं.) ऐसा प्रश्न जो समझ में न आवे।
अतिप्रसंग–(सं.पुं.) प्रबल इच्छा, उत्कट अभिलाषा, अतिमैथुन।
अतिप्रसक्ति–(सं. स्त्री.) बड़ी आसक्ति या चाह, धृष्टता।
अतिप्राण–(सं. पुं.) स्वर्गीय जीवन।
अतिप्रौढ़ा–(सं. स्त्री.) अच्छी तरह बढ़ी हुई कन्या।
अतिबरवै–(हिं. पुं.) हिन्दी का एक छन्द जिसके पहिले और तीसरे चरण में बारह तथा दूसरे और चौथे चरण में नव मात्राएँ होती हैं।
अतिबल–(सं.वि.) अतिप्रबल, बड़ा बलवान्।
अतिबला–(सं. स्त्री.) एक पीली लता, ककही का पौधा, बरियारी।
अतिबालक–(सं. पुं.) छोटा-सा बच्चा।
अतिबाला–(सं. स्त्री.) दो वर्ष के वय की बच्ची, शिशु।
अतिबाहु–(सं. पुं.) अद्वितीय बाहुबल का मनुष्य।
अतिब्रह्मचर्य–(सं.वि.,पुं.) ब्रह्मचर्यआश्रम के बाद जिसने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो।
अतिभार–(सं. पुं.) बड़ा भार, अत्यन्त वेग, पर्वत, वज्र; (वि.) अतिशय।
अतिभारग–(सं. पुं.) बहुत भार ले जानेवाला, खच्चर।
अतिभारारोपण–(सं. पुं.) पशु की पीठ पर बहुत बोझा लादना।
अतिभी–(सं. स्त्री.) बिजली, विद्युत्।
अतिभूमि–(सं. स्त्री.) आधिक्य, अधिकता।
अतिभोजन–(सं. पुं.) अधिक भोजन, परिमाण से अधिक भोजन।
अतिमंजुला–(सं. वि.) अति सुन्दर; (स्त्री.) सेवती का पौधा।
अतिमति–(सं. स्त्री.) आग्रह, हठ।
अतिमर्याद–(सं. अव्य.) मर्यादा से बाहर; (वि.) अतिशय, बिना मर्यादा का।
अतिमर्श–(सं. पुं.) निकट का संबंध।
अतिमांगल्य–(सं. वि.) अति मंगलजनक; (पुं.) बेल का वृक्ष।
अतिमात्र–(सं. वि.) प्रमाण से अधिक, बहुत अधिक।
अतिमान–(सं. पुं.) वृथा का अभिमान, बड़ा घमंड; (वि.) आवश्यकतासे अधिक।
अतिमानी–(सं. वि.) बड़ा अभिमानी, बड़ा हठी।
अतिमानुष–(सं. वि.) मनुष्य-धर्म से परे, दिव्य, दैवी।
अतिमारुत–(सं. वि.) तूफान युक्त; (पुं.) आँधी।
अतिमित–(सं. वि.) प्रमाण से अधिक।
अतिमित्र–(सं. पुं.) परम मित्र, परम सुहृद्।
अतिमुक्त–(सं. वि.) मुक्ति प्राप्त किया हुआ, निरर्थक; (पुं.) माधवी लता।
अतिमुक्ति–(सं.स्त्री.) निर्वाण, परम मुक्ति।
अतिमूत्र–(सं. पुं.) बहुमूत्र रोग।
अतिमूर्ति–(सं.स्त्री.) दिव्यस्वरूप, सुन्दर रूप।
अतिमृत्यु–(सं. पुं.) मोक्ष, अधिक मृत्यु, महामारी।
अतिमैथुन–(सं. पुं.) अत्यंत स्त्री-प्रसंग।
अतिमोदा–(सं. वि.) अत्यन्त सुगन्धित; (स्त्री.) नवमल्लिका का पुष्प।
अतियोग–(सं. पुं.) अधिक संबंध, किसी औषधि का मात्रा से अधिक प्रयोग।
अतिरंजन–(सं. पुं.) बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति।
अतिरंजना–(सं. स्त्री.) अतिशयोक्ति।
अतिरक्ता–(सं. स्त्री.) जपापुष्प, अड़हुल का फूल।
अतिरथ–(सं. पुं.) बड़ा योद्धा, असंख्य शत्रुओं को पराजित करनेवाला योद्धा।
अतिरभस–(सं. पुं.) अति तीव्र गति।
अतिरसा–(सं. स्त्री.) मूर्वा लता।
अतिरात्र–(सं. पुं.) वह यज्ञ जो एक ही रात्रि में आरंभ होकर समाप्त हो जावे।
अतिरिक्त–(सं. वि.) नियत मात्रा या परिमाण से अधिक; (अव्य.) सिवाय, अलावा।
अतिरिक्त पत्र–(सं. पुं.) क्रोड़पत्र।
अतिरूप–(सं. वि.) रूपहीन, रूप से परे; (पुं.) ईश्वर, मनोहर आकृति।
अतिरेक–(सं. पुं.) अतिशयता, अधिकता।
अतिरोग–(सं. पुं.) क्षयरोग, राजयक्ष्मा।
अतिरोधान–(सं. पुं.) अंधकार का अभाव, प्रकाश; (वि.) प्रकाशित, खुला हुआ।
अतिरो (लो) मश–(सं. पुं.) घने बालोंवाला जंगली बकरा, एक प्रकार का बन्दर; (वि.) घने रोयें से युक्त।
अतिलंघन–(सं. पुं.) लंबा उपवास।
अतिवक्ता–(सं. पुं.) बहुत बोलनेवाला, बोलक्कड़, बकवादी।
अतिवय–(सं.वि.) बहुत बुड्ढा।
अतिवर्ती–(सं. वि.) अग्रगामी, आगे जानेवाला।
अतिवर्तुल–(सं. पुं.) बहुत ही गोलाकार।
अतिवात–(सं. पुं.) आँधी, तीव्र वायु।
अतिवाद–(सं. पुं.) कठोर वचन, कड़ी बात, अत्युक्ति।
अतिवादी–(सं. वि.) सच्चा, खरा, अपना पक्ष समर्थन करनेवाला, गर्वी।
अतिवास–(सं. पुं.) श्राद्ध करने के पूर्व दिन का उपवास।
अतिवाह–(सं. पुं.) लिंग शरीर का दूसरे शरीर में प्रवेश।
अतिवाहिक–(सं. पुं.) सूक्ष्म शरीर, पातालवासी।
अतिवाहित–(सं. वि.) अतिक्रमण किया हुआ, लाँघा हुआ।
अतिविष–(सं. पु.) बचनाग।
अतिविषा–(सं. स्त्री., वि.) बहुत ही विषाक्त, अतीस।
अतिवृत्ति–(सं. स्त्री.) आगे बढ़ जाना।
अतिवृद्धि–(सं. स्त्री.) अधिक उन्नति।
अतिवृष्टि–(सं. स्त्री.) बहुत वर्षा होना।
अतिवेगित–(सं. वि.) बड़े वेग का, बड़ी तीव्रता का।
अतिवेला–(सं. स्त्री.) विलब, असमय।
अतिव्यथन–(सं. पुं.), **अतिव्यथा**–(सं. स्त्री.) बड़ी पीड़ा।
अतिव्यय–(सं. पुं.) अपरिमित व्यय, आवश्यकता से अधिक व्यय।
अतिव्याप्त–(सं. वि.) सब स्थानों में व्याप्त या फैला हुआ।
अतिव्याप्ति–(सं. स्त्री.) अधिक व्याप्ति, किसी लक्षण या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के निर्देश को न्याय में अतिव्याप्ति का दोष कहते हैं।
अतिशंका–(सं. स्त्री.) अत्यंत भय, बहुत डर।
अतिशय–(सं. वि.) बहुत अधिक या ज्यादा; (पुं.) अतिशयता, अधिकता।
अतिशयन–(सं. पुं.) अधिक निद्रा।
अतिशयोक्ति–(सं. स्त्री.) बहुत बढ़ाकर कही हुई बात, अतिरंजन, काव्य में एक अलंकार विशेष जिसमें किसी विषय की प्रधानता दिखलाने के लिए उसका बढ़ाकर वर्णन किया जाता है।
अतिशयोपमा–(सं. स्त्री.) ऐसी उपमा जिसमें किसी वस्तु की उपमा दूसरी वस्तु के साथ न दी जा सके।
अतिशस्त–(सं. वि.) अत्युत्तम।
अतिशस्त्र–(सं. वि.) सब शस्त्रों में उत्तम या विनाशकारी।

अतिशायी–(सं. वि.) अधिक, प्रचुर।
अतिशीलन–(सं. पुं.) अभ्यास।
अतिशूद्र–(सं. पुं.) अन्त्यज, जिस शूद्र के हाथ का पानी द्विजाति नहीं पीते।
अतिशेष–(सं. वि.) बहुत थोड़ा-सा बचा हुआ, अल्पमात्र अवशिष्ट।
अतिशोभन–(सं. वि.) बहुत सुंदर, अति ललित या मनोहर।
अतिशोष–(सं. पुं.) क्षयरोग।
अतिसंधान–(सं. पुं.) विश्वासघात, वंचना, धोखा, छल-कपट।
अतिसंधित–(सं. वि.) ठगा हुआ।
अतिसर्ग–(सं. पुं.) उत्सर्ग, दान।
अतिसर्जन–(सं. पुं.) विसर्जन, अधिक दान।
अतिसांवत्सर–(सं. वि.) एक वर्ष से अधिक काल का।
अतिसामान्य–(सं. पुं.) वह उक्ति जो इतने अधिक सामान्य रूप से कही जाय कि उसका आशय पूर्ण रूप से न घटे; (वि.) बहुत ही सामान्य।
अतिसार–(सं. पुं.) एक उदर रोग जिसमें आँव तथा रुधिर मिला हुआ शौच होता है।
अतिसारी–(सं. वि.) अतिसार रोग से ग्रस्त या पीड़ित।
अतिसुलभ–(सं. वि.) सरलता से मिलनेवाला, बहुत सुलभ।
अतिसृष्टि–(सं. स्त्री.) अपूर्व संसार।
अतिस्तुति–(सं. स्त्री.) बड़ी स्तुति या प्रशंसा, अत्यधिक प्रशंसा।
अतिस्निग्ध–(सं. वि.) बहुत चिकना, अत्यंत प्रिय।
अतिस्वा–(सं. स्त्री.) महुवा का वृक्ष।
अतिस्वप्न–(सं. पुं.) अधिक नींद आना।
अतिहसित–(सं. पुं.) हँसी का अतिशय, जोर की हँसी।
अतिहास–(सं. पुं.) जोर की हँसी।
अतींद्रिय–(सं. वि.) इंद्रियों के बोध से परे, अगोचर।
अतीक्ष्ण–(सं. वि.) जो तीक्ष्ण या तीव्र न हो, अतीव्र।
अतीत–(सं. वि.) अतिक्रान्त, बीता हुआ; –काल–(पुं.) बीता हुआ समय, भूत-काल।
अतीतना–(हि. क्रि., अ.) बीतना, छोड़ देना।
अतीव–(सं. वि.) अतिशय, अत्यंत, बहुत।
अतीव्र–(सं. वि.) जो तीव्र न हो।
अतीस–(हि. पुं.) एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ औषधि के काम में आती है, अतिविषा।

अतुंग–(सं. वि.) जो ऊँचा न हो, छोटा, बौना, ठिंगना।
अतुंद–(सं. वि.) दुर्बल, जो बलिष्ठ न हो।
अतुराई–(हि. स्त्री.) चंचलता, आतुरता, जल्दी, उतावलापन।
अतुराना–(हि. क्रि., अ.) आतुर होना, गड़बड़ाना, जल्दी करना।
अतुल–(सं. पुं.) कफ, तिल; (वि.) अनुपम, बहुत अधिक, तुलना-रहित, असीम।
अतुलनीय–(सं. वि.) अद्वितीय, अपार, अपरिमित, बेजोड़, बहुत अधिक।
अतुलित–(सं. वि.) बिना तौला हुआ, अधिक, अपार, अपरिमित, तुलना-रहित, असंख्य।
अतुल्य–(सं. वि.) अनुपम, असदृश, बेजोड़।
अतुल्ययोगिता–(सं. स्त्री.) एक अलंकार जिसमें अनेक पदार्थों का धर्म होते हुए भी किसी विशिष्ट पदार्थ का विरुद्ध आचरण दिखलाया जावे।
अतुष–(सं. वि.) बिना भूसी या छिलके का।
अतुष्टि–(सं. स्त्री.) असंतोष, लालच।
अतुष्टिकर–(सं. वि.) संतोष न देनेवाला, अरुचिकर।
अतूप–(हि. वि.) बहुत ऊँचा, अपूर्व, विलक्षण।
अतृप्त–(सं. वि.) असंतुष्ट, जिसका पेट न भरा हो।
अतृप्ति–(सं. स्त्री.) असंतोष, चित्त की अशांति, असंतुष्टि।
अतृष्ण–(सं. वि.) बिना तृष्णा का, जिसको लालच न हो।
अतृष्णा–(सं. स्त्री.) लालसा न होना, अलोभ, निष्कामना।
अतेज–(सं. वि.) बिना चमक का, धुँधला, प्रकाशहीन।
अतोर–(हि. वि.) न टूटनेवाला, दृढ़, पुष्ट।
अतोल–(हि. वि.) बिना तौल का, अनोखा, बहुत अधिक।
अतोषणीय–(सं. वि.) संतुष्ट न होने योग्य।
अतौल–(हि. वि.) बेतौल, बिना तौल का।
अत्त–(हि. स्त्री.) बहुत, ज्यादा, अधिक।
अत्ता–(सं. स्त्री.) माता, सास।
अत्तार–(हि. पुं.) इत्र बेचनेवाला, गंधी, यूनानी औषधियों का विक्रेता।
अत्तिका–(सं. स्त्री.) बड़ी बहिन।
अत्यंत–(सं. वि.) बहुत ज्यादा या अधिक, अतिशय, नितांत; (अव्य.) अत्यधिक, बहुत; (पुं.) अति, अतिशयता।
अत्यंतसंपर्क–(सं. पुं.) बहुत अधिक एक साथ रहना।

अत्यंताभाव–(सं. पुं) किसी पदार्थ का बिलकुल न होना, पूर्ण रूप से न होना, सब प्रकार की न्यूनता, परमशून्यता।
अत्यंतिक–(सं. वि.) बहुत घूमनेवाला, बहुत कम दूरी का, समीप का, निकटवर्ती।
अत्यग्नि–(सं. पुं.) क्षुधा का अधिक लगना।
अत्यद्भूत–(सं. वि.) बड़ा आश्चर्यजनक, बड़ा अनोखा।
अत्यम्ल–(सं. पुं.) इमली का वृक्ष; (वि.) बहुत खट्टा।
अत्यम्ला–(सं. स्त्री.) बिजौरा नीबू।
अत्यय–(सं. पुं.) अभाव, नाश, दोष, दंड, दुःख, कष्ट, सीमा से बाहर जाना।
अत्यर्थ–(सं. पुं.) अतिशय, बहुतायत; (अव्य.) बहुतायत से।
अत्यल्प–(सं. वि.) बहुत थोड़ा, बहुत कम।
अत्याकार–(सं. पुं.) अपयश, तिरस्कार।
अत्याग–(सं. पुं.) त्याग का अभाव।
अत्यागी–(सं. वि.) त्याग न करनेवाला।
अत्याचार–(सं. पुं.) दूसरों को सताने का भाव, सदाचार का उल्लंघन, अन्याय, बुरा आचरण, पाप, पाखंड, आडंबर।
अत्याचारी–(सं. वि.) अत्याचार करनेवाला, अन्यायी, पाखंडी।
अत्याज्य–(सं. वि.) त्याग न करने योग्य, जो छोड़ा न जा सके।
अत्यायु–(सं. वि., पुं.) अधिक वय का (मनुष्य), वयोवृद्ध।
अत्युक्त–(सं. वि.) बहुत बढ़ाकर कहा हुआ।
अत्युक्ति–(सं. स्त्री.) अतिशय उक्ति, बहुत बढ़ाकर वर्णन करने की रीति, एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का वर्णन बहुत बढ़ाकर किया जाता है।
अत्युत्कट–(सं. वि.) बड़ा उग्र या भयंकर।
अत्युत्साह–(सं. पुं.) बड़ा उत्साह या पराक्रम।
अत्र–(सं. अव्य) इस विषय में, इस स्थान में, यहाँ पर, यहाँ।
अत्रपु–(सं. वि.) निर्लज्ज।
अत्रस्त–(सं. वि.) भयरहित, न डरा हुआ।
अत्रास–(सं. पुं.) भय का अभाव, निडर होना, निर्भयता।
अत्रि–(सं. पुं.) सप्त ऋषियों में से एक ऋषि जो ब्रह्मा के नेत्र से उत्पन्न हुये थे।
अत्रैगुण्य–(सं. पुं.) सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणों का अभाव जिसको सांख्यवादी मोक्ष मानते हैं।
अत्वरा–(सं. स्त्री.) जल्दी का न होना, धैर्य।
अथ–(सं. अव्य.) अब, इस समय, अनन्तर, आरम्भ में।

अथऊ–(हिं. पुं.) वह भोजन जो संध्या होने से पहिले किया जाय।
अथक–(हिं. वि.) न थकनेवाला, वहुत परिश्रमी, अक्लांत।
अथच–(सं. अव्य.) फिर, और भी।
अथरा–(हिं. पुं.) मिट्टी की चौड़ी नाँद।
अथरी–(हिं. स्त्री.) मिट्टी का खुले मुँह का छोटा पात्र, दही जमाने का पात्र।
अथर्व–(सं. पुं.) चतुर्थ वेद का नाम।
अथवा–(सं. अव्य.) किंवा, या, वा।
अथाई–(हिं. स्त्री.) घर के सामने का मैदान, अगवार, चबूतरा, वैठक, पंचायत करने का स्थान।
अथाना–(हिं. क्रि. अ., स.) अस्त होना, डूवना, गहराई नापना, पानी की थाह लेना या लगाना।
अथापि–(सं. अव्य.) अब भी, इस तरह।
अथाह–(हिं. वि.) जो वहुत गहरा हो, वेथाह, अपार, अनंत, गंभीर, वहुत अधिक, अतिगूढ़, अगाध।
अथिर–(हिं. वि.) अस्थिर, चलायमान।
अदंक–(हिं. पुं.) आतंक, भय, डर।
अदंड–(हिं.वि.) जो दंड के योग्य न हो, अदंडनीय, जिस पर कर न लगे, उद्दंड, स्वेच्छाचारी, निर्भय।
अदंडनीय, अदंड्य–(सं. वि.) जो दंड के योग्य न हो।
अदंत–(हिं. वि.) जिसे दाँत न हो, विना दाँत का।
अदंभ–(हिं. वि.) जिसे दंभ न हो, दंभ-रहित; (पुं.) दंभ का अभाव, सादगी, सरलता, सिधाई।
अदक्ष–(स.वि.) जो निपुण न हो, अकुशल।
अदक्षिण–(सं. वि.) प्रतिकूल, विरुद्ध, वायाँ, अचतुर, गवाँर।
अदग–(हिं. वि.) विना दाग का, निर-पराध, स्वच्छ, अछूता, विना अपयश का।
अदग्ध–(सं. वि.) विना जलाया हुआ, जिसकी विधिपूर्वक दाहक्रिया न हुई हो।
अदत्त–(सं. वि., पुं.) विधिवत् न दिया हुआ, जो दान शास्त्रानुसार न दिया गया हो।
अदत्तदान–(सं. पुं.) विना दिया हुआ दान, वलपूर्वक या चोरी से प्राप्त पदार्थ।
अदत्तदायी–(सं. पुं.) अदत्त संपत्ति को लेनेवाला, ठग, चोर।
अदत्ता–(सं. स्त्री.) अविवाहित कन्या; (वि. स्त्री.) जो न दी गई हो।
अदद–(अ. पुं.) संख्या, गिनती।
अदन–(सं. पुं.) भोजन, भक्षण, भक्षणीय या खाद्य पदार्थ।
अदना–(अ. वि.) छोटा, तुच्छ, मामूली।
अदनीय–(सं. वि.) भोजन करने योग्य।
अदव–(अ. पुं.) विनय, शिष्टता, वड़ों का सम्मान।
अदवदाकर–(हिं. अव्य.) हठ से, जान-बूझकर, अवश्य, टेक करके।
अदव-लिहाज–(अ. पुं.) शिष्टता और लज्जा, शिष्टाचार।
अदभ्र–(सं. वि.) अधिक, प्रचुर, अपार, वहुत ज्यादा।
अदम्य–(सं. वि.) जो दमन न किया जा सके, प्रवल, अजेय।
अदय–(सं.वि.) दयारहित, निष्ठुर, निर्दय।
अदयालु–(सं. वि.) करुणा-रहित, क्रूर।
अदरक–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसकी गाँठें दवा के रूप में चटनी वनाकर खायी जाती हैं, आर्द्रक, अदरख।
अदरकी–(हिं. स्त्री.) सोंठ में गुड़ मिला-कर वनी हुई टिकिया, सोंठौरा।
अदराना–(हिं. क्रि. अ.) आदर पाने की इच्छा करना, इतराना, अभिमानी बनना।
अदर्श–(हिं. पुं.) दर्पण, आईना।
अदर्शन–(सं. पुं.) दर्शन का अभाव, लोप, असावधानी; (वि.) न देख पड़ने-वाला, अगोचर।
अदर्शनीय–(सं. वि.) जो देखने योग्य न हो, कुरूप, भद्दा।
अदल-वदल–(हिं. पुं.) परिवर्तन, उलट-फेर, हेरफेर।
अदला-वदली–(हिं.स्त्री.) लेन-देन, उलट-फेर, हेर-फेर।
अदली–(हिं. वि.) न्यायी, पक्षपातहीन।
अदवाइन, अदवान–(हिं. स्त्री.) ओनचन, रस्सी जो चारपाई के पैंताने की ओर इसकी विनावट को कसने के लिये लगाई जाती है।
अदहन–(हिं. पुं.) पानी जो वरतन में भरकर चावल या दाल के लिये आँच पर रक्खा जाता है; (क्रि. प्र.)–देना–दाल-भात पकाने के लिये पानी आग पर चढ़ाना।
अदांत–(सं. वि.) जो वश या कावू में न किया गया हो।
अदाँत, अदाँता–(हिं. वि.) वैल, गाय, भैंस आदि जिसे दाँत न जमा हो।
अदा–(अ. स्त्री.) देना, चुकाना।
अदाता–(सं. पुं.) न देनेवाला, कृपण, कंजूस, अनुदार।
अदान–(सं. पुं.) कंजूस, कृपण; (वि.) अज्ञान, निर्वुद्धि, नासमझ।
अदानी–(हिं. वि.) कृपण, कंजूस।
अदान्य–(सं. वि.) कृपण, कंजूस।
अदाय–(सं. वि.) पैतृक संपत्ति का अंश न पाने योग्य।
अदायाद–(सं. वि.) जो सपिण्ड न हो, पतित, असपिंड।
अदार–(सं. पुं.) पत्नीरहित।
अदावँ–(हिं. पुं.) कठिनता, दावपेंच, धोखा।
अदावत–(अ. स्त्री.) वैर, शत्रुता।
अदावती–(अ. वि.) अदावत संबंधी, अदावत करनेवाला।
अदास–(सं. वि.) जो दास न हो, स्वतंत्र।
अदाहक–(सं. वि.) जिसमें जलाने की शक्ति न हो।
अदाह्य–(सं. वि.) जिस मृतक की दाह-क्रिया शास्त्र के अनुसार न की जा सके, जो जलाया न जा सके।
अदिति–(सं. स्त्री.) दक्ष प्रजापति की कन्या तथा देवताओं की माता, पृथ्वी, वाणी, प्रकृति, देवलोक, रक्षा, पूर्णता, माता, पिता; –ज, –नंदन, –सुत–(सं. पुं.) अदिति के पुत्र, देवता लोग।
अदिन–(हिं. पुं.) कुसमय, बुरा दिन, अभाग्य, दुःख का समय।
अदिव्य–(सं. वि.) जो दिव्य या स्वर्गीय न हो, संसारी, लौकिक, सामान्य।
अदिष्ट–(हिं. पुं.) दुर्दिन, दुर्भाग्य।
अदिष्टी–(हिं. वि.) जो दूरदर्शी न हो, मूर्ख, दुष्ट, अभागा, हतभाग्य।
अदीक्षित–(सं. वि.) जिसको दीक्षा न मिली हो, जो गुरुमुख न हुआ हो।
अदीठ–(हिं. वि.) विना देखा हुआ, अदृष्ट, गुप्त, छिपा हुआ।
अदीन–(सं. वि.) धनी, उदार, अनम्र, अदुःखित, दीनतारहित, निडर।
अदीनात्मा–(सं. वि.) वड़ा उदार।
अदीपित–(सं. वि.) न जलाया हुआ।
अदीयमान–(सं. वि.) जो न दिया जा सके, अदेय।
अदीर्घ–(सं. वि.) जो लंवा न हो, नाटा।
अदुंद–(हिं. वि.) झगड़ा-वखेड़ा से परे, निर्द्वंद, वेफिक्र।
अदुःख–(सं. वि.) दुःख से रहित, प्रसन्न; (पुं.) दुःख का अभाव।
अदूजा–(हिं. वि.) अद्वितीय।
अदूर–(सं. वि.) निकट का, समीप का; (अव्य.) पास, निकट; (पुं.) सामीप्य।
अदूरदर्शी–(सं. वि.) दूर का हिताहित न विचारनेवाला, जो किसी वात का अंत न देखे, विचाररहित।

अदूरभव–(सं. वि.) पास में रहनेवाला।

अदूषण–(सं. वि.) निर्दोष, स्वच्छ, शुद्ध।

अदूषित–(सं. वि.) जिसमें दोष न हो, निर्दोष, विमल।

अदृढ़–(सं. वि.) अस्थिर, ढीला, डावाँ-डोल, चंचल।

अदृश्य–(सं. वि.) जो आँखों से दिखाई न पड़े, अगोचर, लुप्त।

अदृष्ट–(सं. वि.) न देखा हुआ, अवीक्षित, लुप्त; (पुं.) भाग्य, भावी, आपत्ति; **–कर्मा**–(वि.) अनुभवहीन; **–काम**–(पुं.) बिना देखी हुई वस्तु के लिए लालसा; **–पूर्व**–(वि.) जो पहिले न देखा गया हो, निराला, अनोखा; **–फल**–(पुं.) फल जो देख न पड़े, भावी परिणाम या फल; **–रूप**–(पुं.) ऐसा रूप जो पहिले न देखा गया हो; **–वाद**–(पुं.) केवल भाग्य पर भरोसा करने का सिद्धांत, प्रारब्धवाद।

अदृष्टाक्षर–(सं. पुं.) ऐसे लिखे हुए अक्षर जो देख न पड़ें।

अदृष्टार्थ–(सं. वि.) जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा न हो सके।

अदृष्टि–(सं. स्त्री.) कोपदृष्टि, क्रूर दृष्टि; (वि.) अंधा।

अदेख–(हिं. वि.) न देखा हुआ, लुप्त, छिपा हुआ।

अदेखी–(हिं. वि.) जो ईर्ष्या के कारण दूसरे का सुख न देख सके, ईर्ष्यालु, डाह रखनेवाला, डाही।

अदेय–(सं. वि.) दान न देने योग्य, न समर्पण करने योग्य; **–दान**–(पुं.) अनुचित या अवैध दान।

अदेव–(सं. वि.) जो देवता से संबंधित न हो; (पुं.) निशाचर, राक्षस।

अदेश–(सं.पुं.) अयोग्य स्थान, म्लेच्छ देश; **–ज**–(वि.) अयोग्य स्थान में उत्पन्न; **–स्थ**–(वि.) अयोग्य देश में रहनेवाला।

अदेह–(सं.वि.) शरीररहित; (पुं.) कामदेव।

अदैव–(सं. वि.) जो दैव या देवताओं से संबद्ध न हो।

अदोष–(सं. पुं.) दोष का अभाव; (वि.) निर्दोष, निरपराध, पापरहित।

अदोह–(सं. पुं.) दूध न दूहने का समय।

अदौरी–(हिं. स्त्री.) उरद की सूखी हुई वरी।

अद्धा–(हिं. पुं.) आधा टुकड़ा, आधा परिमाण, आधी बोतल, प्रत्येक घंटे के बीच में तीस-तीस मिनट पर बजने-वाला घंटा।

अद्धी–(हिं. स्त्री.) आधी दमड़ी, एक पैसे का सोलहवाँ भाग, महीन तंजेब।

अद्भुत–(सं. वि.) विचित्र, विलक्षण, अलौकिक, अनूठा; (पुं.) अलंकार में नौरसों के अंतर्गत एक रस जिसका स्थायी भाव विस्मय है; **–कर्मा**–(वि.) अनोखा काम दिखलानेवाला; **–गंध**–(वि.) अलौकिक गंध का; **–तम**–(वि.) बड़ा ही विलक्षण; **–ता** (स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) विलक्षणता, निरालापन।

अद्भुतोपमा–(सं. स्त्री.) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय के विलक्षण गुण उपमान में कभी संभव न हों।

अद्य–(सं. अव्य.) आज, अभी, अब; **–तन**–(वि.) आज के दिन का, आज का, नया; **–भूत**–(पुं.) आज के दिन से पहिले का काल।

अद्यतनीय–(सं. वि.) आज का।

अद्यापि–(सं. अव्य.) अब या आज भी, आज तक, अभी तक।

अद्यावधि–(सं. अव्य.) आज से आगे, आज तक।

अद्रव–(सं. वि.) जो तरल न हो, घना, गाढ़ा, ठोस।

अद्रव्य–(सं. पुं.) निकम्मी वस्तु।

अद्रि–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़, पत्थर, सूर्य; **–का**–(सं. स्त्री.) धान्यक, धनियाँ; **–कीला**–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि; **–ज**–(सं. पुं.) शिलाजीत, गेरू; **–जा**–(सं. स्त्री.) गिरिराज-कन्या, पार्वती, गंगा; **–तनया**–(सं. स्त्री.) पार्वती, गंगाजी, तेईस वर्णों का एक छन्द; **–नंदिनी**–(सं. स्त्री.) पर्वत की कन्या, पार्वती; **–पति**, **–राज**–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत।

अद्रोह–(सं. पुं.) द्रोह न होना, डाह का अभाव; **–वृत्ति**–(वि.) जिसके स्वभाव में ईर्ष्या न हो।

अद्रोही–(सं. वि.) कभी द्रोह न करने-वाला, अद्रोह।

अद्वार–(सं. पुं.) गुप्तद्वार; (वि.) बिना किवाड़े का।

अद्विज–(सं. वि.) जो द्विज या ब्राह्मण न हो, शूद्र।

अद्वितीय–(सं. वि.) अकेला, जिसकी तरह का दूसरा कोई न हो, अतुल्य, बेजोड़, अनुपम, प्रधान, विलक्षण, केवल।

अद्वेष–(सं.पुं.) ईर्ष्या का अभाव, द्वेषाभाव। (वि.) जो द्वेष से रहित हो, द्वेषरहित।

अद्वेषी–(हिं. वि.) द्वेष न करनेवाला।

अद्वैत–(सं. वि.) अतुल्य, भेदरहित, अद्वितीय, अनुपमा; (पुं.) ब्रह्म तथा जीव की अभिन्नता; **–वाद**–(सं. पुं.) वह सिद्धांत जिसके अनुसार संसार असार है और ब्रह्म से ही संपूर्ण जगत् की उत्पत्ति है, वेदांत मत; **–वादी**–(सं. वि.) ब्रह्मवादी, अद्वैत मत को मानने-वाला, वेदांती।

अधः–(सं. अव्य.) नीचे (संयुक्त पदों में आदि में लगकर 'नीचे' या 'नीचे का' अर्थ प्रकट करता है); **–कर**–(पुं.) हाथ के नीचे का भाग; **–काय**–(पुं.) शरीर का कमर से नीचे का भाग; **–क्षिप्त**–(वि.) नीचे गिराया हुआ; **–पतन**–(पुं.) नीचे को गिरना, अवनति, दुर्गति, दुर्दशा; **–पात**, **–पातन**–(पुं.) अधोगति, दुर्दशा, नीचे को गिराने का कार्य; **–पुष्पी**–(स्त्री.) सौंफ; **–शयन**–(पुं.) भूमि पर सोना; **–शय्या**–(स्त्री.) भूमिशय्या; स्थित–(वि.) नीचे स्थित या विद्यमान।

अध–(हिं.वि.) अर्ध या आधा के अर्थ में कुछ संयुक्त शब्दों के साथ उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होता है, यथा–अधखिला, अधमरा, अधन्ना इत्यादि।

अधकचरा–(हिं.वि.) आधा कच्चा, अपूर्ण, अधूरा, अपरिपक्व, अदक्ष, अकुशल।

अध-कच्छा–(हिं. पुं.) नदी के तट की ढालुवाँ भूमि।

अधकछार–(हिं. पुं.) पहाड़ की ढालुवाँ उपजाऊ भूमि।

अधकपारी–(हिं. स्त्री.) आधे सिर की वेदना, आधासीसी, सूर्यावर्त।

अधकरिया, अधकरी–(हिं. स्त्री.) माल-गुजारी, लगान आदि की आधी किस्त।

अधकहा–(हिं. वि.) आधा कहा हुआ, अस्पष्ट।

अधखिला–(हिं. वि.) आधा खिला हुआ, जो पूरा खिला न हो, अर्ध-प्रस्फुटित।

अधखुला–(हिं. वि.) आधा खुला हुआ, अर्धोन्मीलित।

अधगोरा–(हिं. पुं.) युरोपीय और गैर युरोपीय माँ-बाप की संतान, युरेशियन।

अधघट–(हिं. वि.) जिसका अर्थ पूर्ण रूप से प्रकट न हो।

अधचरा–(हिं. वि.) आधा चरा हुआ।

अधड़ा–(हिं. वि.) बिना आधार का, बिना धड़ का, असंबद्ध।

अधड़ी–(हिं. वि.) आधारहीन, बिना सिर-पैर का।

अधन–(सं.वि.) धनहीन, निर्धन, कंगाल।

अधन्ना–(हिं. पुं.), **अधन्नी**–(हिं. स्त्री.) आध आने की एक मुद्रा।

[illegible]–(सं. वि.) [illegible], अभागा।
[illegible]–(हिं. स्त्री.) तौलने का बाट [illegible] जो आध छटांक का आधा [illegible] है।
अधम–(सं. वि.) खोटा, नीच, पापी, [illegible]।
अधमाई, अधमाई–(हिं. स्त्री.) बुराई, [illegible]।
अधमता–(सं. स्त्री.) नीचता, खोटाई, [illegible], निकृष्टता।
अधमरा अधमुआ–(हिं. वि.) आधा मरा [illegible], मरने के समान।
अधमर्ण–(सं. पुं.) ऋणी।
अधमा–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो हित [illegible] पति से घात करती है।
अधमाचार–(सं. वि.) नीच या बुरा [illegible]।
अधमाधम–(सं. वि.) बुरे से बुरा।
अधर–(हिं. पुं.) नीचे का ओष्ठ, शरीर का निचला भाग, धरती और आकाश के बीच का भाग; (वि.) नीचे को झुका हुआ, नीच, बुरा, चंचल, नीचे का; (मुहा.)–में झूलना, पड़ना या लटकना–कार्य पूरा न होना, दुविधा में पड़े रहना।
अधरज–(हिं. पुं. उप.) ओठों की लाली या उन पर पान की लाली।
अधरपान–(सं. पुं.) नीचे के ओंठ का [illegible]।
अधर-मधु–(सं. पुं.) नीचे के ओंठ का [illegible], अधरामृत।
अधरावर–(सं. पुं.) नीचे का ओंठ।
अधरामृत–(सं. पुं.) अधरमधु।
अधरीकृत–(सं. वि.) हारा हुआ;
अधरीभूत–(सं. वि.) हराया हुआ, विजित।
अधरोत्तर–(सं. वि.) ऊंचा-नीचा, नजदीक-दूर।
अधरोष्ठ–(सं. पुं.) नीचे का ओंठ।
अधर्म–(सं. पुं.) श्रुति-स्मृति-विरुद्ध आचरण, [illegible], पातक, दुराचार, कुकर्म; –चारी–(वि.) धर्म न करनेवाला, [illegible]; –मय–(वि.) अधर्मपूर्ण, [illegible]।
अधर्मात्मा–(सं. वि.) पापी, अधर्मी, [illegible], कुमार्गी।
अधर्मिष्ठ–(सं. वि.) महापापी, अधर्म-[illegible], [illegible]।
अधर्मी–(सं. पुं. वि.) अधर्मात्मा या [illegible]।
अधर्म्य–(सं. वि.) धर्म के विरुद्ध, [illegible]।
अधवा–(सं. स्त्री.) विधवा स्त्री, रांड।
अधवारी–(हिं. पुं. स्त्री.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी घर बनाने के काम में आती है।
अधसेरा–(हिं. पुं.) आध सेर (दो पाव) तौलने का बटखरा।
अधस्तल–(सं. पुं.) नीचे का तल, घर के नीचे का कमरा।
अधांगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का भूरे रंग का पक्षी।
अधाना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का राग-विशेष।
अधार–(हिं. पुं.) देखें 'आधार'।
अधारिया–(हिं. पुं.) बैलगाड़ी का वह स्थान जहां पर हांकनेवाला बैठता है, मोढ़ा।
अधारी–(हिं. स्त्री.) सहारे की वस्तु, आधार, आश्रय, साधुओं का टेकने का पतला पीढ़ा जो काठ के छोटे डंडे के ऊपर जड़ा होता है, यात्रा की सामग्री रखने का झोला; (वि.स्त्री.) आश्रय देनेवाली।
अधार्मिक–(सं. वि.) धर्म के विरुद्ध, धर्म-रहित, धर्मच्युत, पापी।
अधार्य–(सं. वि.) जो धारण न किया जा सके।
अधावट, अधवट–(हिं. वि.) (दूध) जो औलाकर आधा तथा खूब गाढ़ा हो जावे।
अधि–(सं. उपसर्ग) 'ऊपर', 'उस ओर', 'अधिक', 'प्रधान' आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।
अधिक–(सं. वि.) बहुत, ज्यादा, अतिरिक्त, प्रधान, विशेष, अनेक, अवशिष्ट, असाधारण, एक अलंकार जिसमें आधार और आधेय को पहले बड़ा कहकर बाद में छोटे आधार या आधेय को उससे भी बड़ा बतलाते हैं।
अधिकतम–(सं.वि.) सबसे अधिक, सबसे ज्यादा।
अधिकतर–(सं.अव्य.) अक्सर, अधिकांशतः।
अधिकता–(हिं. स्त्री.) बहुतायत, वृद्धि, बढ़ती।
अधिकतिथि–(सं. स्त्री.) जो तिथि सौर वर्ष पूर्ण करने के लिये जोड़ी जाती है।
अधिक मास–(सं. पुं.) मलमास, वह द्वित्व महीना जो सौर वर्ष पूरा करने के लिये ज्योतिषीय गणना में जोड़ा जाता है।
अधिकरण–(सं. पुं.) आधार, सहारा, व्याकरण में कर्म और क्रिया का आधार जो अधिकरण कारक कहलाता है, विषय, प्रकरण (श्रम-व्यवस्था का) न्यायालय, न्यायाधिकरण।
अधिकरण मंडप–(सं. पुं.) न्यायालय।
अधिकांग–(हिं. पुं., वि.) किसी अंग का अधिक होना; ऐसे अंग से युक्त।
अधिकांश–(सं. पुं.) अधिक भाग या हिस्सा; (अव्य.) प्रायः, बहुधा, विशेष करके; (वि.) अधिक-संख्यक।
अधिकाई–(हिं. स्त्री.) आधिक्य, अधिकता, बहुतायत, महिमा, बड़ाई।
अधिकाधिक–(सं. वि.) अधिक से अधिक।
अधिकाना–(हिं. क्रि. अ.) अधिक होना, ऊपर चढ़ना, बढ़ना।
अधिकाम–(सं. पुं.) असाधारण अभिलाषा, महत्वाकांक्षा।
अधिकामी–(सं. वि.) अधिकाम से युक्त।
अधिकार–(सं. पुं.) नागरिक को प्राकृतिक न्यायानुसार कुछ कार्य करने का मौलिक विकल्प, आधिपत्य, कब्जा, प्रकरण, अधिकारी को सौंपा गया राजकाज का भार, स्वत्व, पद, संपत्ति, संबन्ध, विषय, प्रमाण, चेष्टा, प्राप्ति, योग्यता।
अधिकारस्थ–(सं. वि.) अधिकार में नियुक्त, अधिकारी।
अधिकारिणी–(सं. स्त्री.) अधिकारी की पत्नी, अधिकारप्राप्त स्त्री।
अधिकारिता–(सं. स्त्री.) अधिकारी होने का भाव, स्वामित्व।
अधिकारी–(सं. पुं.) प्रभु, स्वामी, सरकारी अफसर या हाकिम, स्वत्ववान्, उपयुक्त पात्र; (वि.) अधिकार-युक्त।
अधिकार्य–(सं. वि.) एक से अधिक अर्थोंवाला।
अधिकृत–(सं. पुं.) अध्यक्ष, अधिकारी; (वि.) अधिकार या कब्जे में किया या आया हुआ, अधिकार-युक्त।
अधिकृति–(सं. स्त्री.) अधिकृत होने का भाव, स्वत्व, अधिकार।
अधिक्रम, अधिक्रमण–(सं. पुं.) आक्रमण।
अधिक्षिप्त–(सं. वि.) नीचे फेंका हुआ, अपमानित, निंदित, तिरस्कृत।
अधिक्षेप–(सं. पुं.) निन्दा, तिरस्कार।
अधिगणन–(सं. पुं) अधिक गणना, अधिक मूल्य लगाना।
अधिगत–(सं. वि.) विदित, स्वीकृत।
अधिगम–(सं. पुं.) ज्ञान, प्राप्ति, लाभ, स्वीकृति, उपार्जन, कमाई, पहुंच।
अधिगमन–(सं. पुं.) प्राप्ति, अध्ययन।
अधिगुण–(सं. पुं.) विशिष्ट या असामान्य गुण।
अधिज–(सं. वि.) उच्च कुल में उत्पन्न।
अधिजनन–(सं. पुं.) अधिक उत्पत्ति या जनन।

अधित्यका–(सं. स्त्री.) पर्वत के ऊपर की विस्तृत समतल भूमि या मैदान ।
अधिदेव,अधिदेवता–(सं.पुं.) देवताओं का अधिप या वरिष्ठ, परमेश्वर ।
अधिदैव, अधिदैवत–(सं. पुं.) अधिदेव ।
अधिदैविक–(सं. वि.) परमेश्वर या आत्मा सम्बन्धी ।
अधिनाथ–(सं.पुं.)बड़ा मालिक, सरदार ।
अधिनायक–(सं.पुं.) निरंकुश शासक, तानाशाह, प्रभु, मालिक ।
अधिनायकी–(हिं. स्त्री.) अधिनायक का पद, शासन या वृत्ति ।
अधिप–(सं. पुं.) राजा, स्वामी, ईश्वर, सरदार, मालिक ।
अधिपति–(सं. पुं.)प्रभु, स्वामी, पति, मुखिया, नायक ।
अधिपत्नी–(सं.स्त्री.)महारानी, साम्राज्ञी ।
अधिपुरुष–(सं.पुं.) श्रेष्ठ पुरुष, परमेश्वर ।
अधिभ–(सं. पुं.) स्वामी, राजा, पति ।
अधिभोजन–(सं. पुं.) अधिक भोजन ।
अधिभौतिक(सं. वि.) आधिभौतिक, पाँच भूतों से संबद्ध ।
अधिमांस–(सं. पुं.)वह रोग जिसमें शरीर में कहीं पर मांस बढ़ जाता है ।
अधिमात्र–(सं. वि.) अधिक मात्रा का ।
अधिमास–(सं.पुं.)अधिक मास,मलमास ।
अधिमुक्तिका–(सं. स्त्री.) शुक्ति, सीप ।
अधियज्ञ–(सं. पुं.) प्रधान यज्ञ ।
अधिया–(हिं. स्त्री.) अर्धांश, आधा भाग, अनाज की उपज का आधा-आधा बँटवारा ।
अधियान–(हिं. पुं.)जप करने की गोमुखी ।
अधियाना–(हिं. क्रि. अ., स.) आधा होना या करना, दो बराबर के टुकड़े या भाग करना ।
अधियार–(हिं. पुं.) संपत्ति का आधा हिस्सा, आधे का मालिक या हिस्सेदार ।
अधियारी–(हिं. स्त्री.) संपत्ति के आधे को हक या हिस्सा ।
अधियोग–(सं. पुं.) ज्योतिष में ग्रहों का एक शुभ योग या लग्न ।
अधिरथ–(सं. पु.) रथ पर चढ़ा हुआ योद्धा, सारथी, बड़ा रथ ।
अधिरथी–(सं. पुं.) सूर्य, समुद्र ।
अधिराज–(स. पुं.) अधीश्वर, सम्राट्, महाराज ।
अधिराज्य–(सं. पुं.) साम्राज्य ।
अधिराष्ट्र–(सं. पुं.) राज्य, साम्राज्य ।
अधिरूढ़–(सं.वि.)चढ़ा हुआ, वृद्धियुक्त ।
अधिरोपण–(सं. पुं.) ऊपर को चढ़ाना या उठाना ।
अधिरोपित–(सं.वि.)ऊपर चढ़ाया हुआ ।
अधिरोह, अधिरोहण–(सं. पु.) ऊपर का चढ़ाव ।
अधिरोहणी–(सं. स्त्री.) सोपान, सीढ़ी ।
अधिलोक–(सं. पुं.) संसार, ब्रह्मांड ।
अधिवक्ता–(सं. पुं.) वरिष्ठ वकील, एडवोकेट, बारिस्टर ।
अधिवास–(सं. पुं.) ठहरने का स्थान, निवास, पड़ोसी, सुगंध, दूसरे के घर में रहना, देर तक रहना, विवाह के पहले वर तथा कन्या को उबटन लगाने की प्रथा ।
अधिवासन–(सं. पुं.) स्थापन, अधिवास ।
अधिवासित–(सं.वि.)सुगंधित, स्थापित ।
अधिवासी–(स.वि.) स्थापित, रहनेवाला, टिकनेवाला, निवासी; (पुं.) सिकमी खेतिहर या काश्तकार ।
अधिवेत्ता–(सं. पुं.) एक पत्नी रहते हुए दूसरी से विवाह या प्रेम करनेवाला मनुष्य ।
अधिवेशन–(सं. पुं.) विधान सभा, न्यायालय आदि की बैठक, दलों या संस्थाओं का औपचारिक जलसा या सभा ।
अधिशयन–(सं. पुं.) लेटना, सोना ।
अधिशायित–(सं. वि.) लेटा हुआ ।
अधिश्री–(सं.स्त्री.) अत्यंत श्री या शोभा ।
अधिष्ठाता–(सं. पुं.) अध्यक्ष, सरदार, मुखिया, रक्षक, राजा, ईश्वर, किसी बड़े उद्योग या संस्था आदि की स्थापना करनेवाला ।
अधिष्ठान–(सं. पुं.) रहने का स्थान, नगर, सहारा, आश्रय, आधार, स्थिति, अधिकार, सत्ता, भ्रम का आरोपण करने की वस्तु, सांख्य दर्शन में भोक्ता और भोग्य का संयोग;–**शरीर**–(सं. पुं.)वह सूक्ष्म शरीर जिसमें मृत्यु के उपरांत आत्मा पितृलोक में रहता है ।
अधिष्ठापक–(सं. पुं.) देखें 'अधिष्ठाता' ।
अधिष्ठित–(सं. वि.) नियुक्त, स्थापित, बसा हुआ, निर्वाचित, देखा-भाला ।
अधीत–(सं. वि.) अध्ययन किया हुआ, पढ़ा हुआ ।
अधीन–(सं. वि.) वशीभूत, आश्रित, विवश, दबल;–**ता**–(स्त्री.) परवशता, लाचारी, दीनता;–**त्व**–(पुं.) परवशता, लाचारी, दीनता ।
अधीयान–(सं. पुं.) पढ़नेवाला विद्यार्थी ।
अधीर–(सं. वि.) जो धीर न हो, धैर्यहीन, बेचैन, अस्थिर, चंचल, कातर, व्याकुल, मूर्ख, आतुर, घबड़ाया हुआ ।
अधीरता–(हिं. स्त्री.)अस्थिरता, बेचैनी ।
अधीरा–(सं. स्त्री.) बिजली, वह नायिका जो अपने प्रेमी में विलास के चिह्न देखकर अधीर हो जाती परंतु क्रोध दिखलाती है ।
अधीश, अधीश्वर–(सं. पुं.)अधिपति, राजा, मालिक, प्रभु, अध्यक्ष, राजाधिराज ।
अधुना–(सं. अव्य.) अभी, आजकल, इन दिनों ।
अधुनातन–(सं. वि.) वर्तमान काल का, एतत्कालीन, हाल का ।
अधुर–(सं. वि.) बिना बोझ या चिंता का, निश्चित ।
अधूत–(हिं. वि.) निडर, धृष्ट, ढीठ ।
अधूरा–(हिं. वि.) अपूर्ण, खंडित, असमाप्त, आधा ।
अधृत–(सं. वि.) धारण न किया हुआ ।
अधृति–(सं. स्त्री.) धीरता का अभाव, उतावलापन, आतुरता ।
अधृष्ट–(सं. वि.) जो प्रगल्भ न हो, लज्जावान् ।
अधेंगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का भूरे रंग का पक्षी ।
अधेड़–(हिं. वि.) ढलती अवस्था का, युवावस्था को पार किया हुआ ।
अधेला–(हिं. पुं.) आधा पैसा ।
अधेली–(हिं. स्त्री.) आठ आने की मुद्रा, अठन्नी ।
अधैर्य–(सं. पुं.) धैर्यशून्यता, चंचलता, उतावलापन, व्याकुलता;–**वान्**–(वि.) चंचल, व्याकुल, उतावला ।
अधो–(सं. अव्य.) कुछ सयुक्त पदों में 'अधः' का आदि-पदिक रूप ।
अधोगत–(सं. वि.) नीचे की ओर पहुँचा हुआ ।
अधोगति–(सं.स्त्री.) निम्न गति, नरकगमन, दुर्दशा, पतन, अवनति ।
अधोगमन–(सं. पुं.) नीचे की ओर जाना, अवनति, पतन, दुर्दशा ।
अधोगामी–(सं. वि.)नीचे को जानेवाला, नरकगामी ।
अधोजानु–(सं. पुं.)जाँघ के नीचे का भाग ।
अधोदृष्टि–(सं. स्त्री.)नीचे की ओर दृष्टि ।
अधोदेश–(सं. पुं.) निचला भाग ।
अधोभाग–(सं. पुं.)नीचे का भाग, योनि ।
अधोभुवन–(सं. पुं.) पाताल, भूमि के नीचे का लोक ।
अधोभूमि–(सं. स्त्री.) पहाड़ के नीचे की भूमि ।
अधोमार्ग–(सं. पुं.) नीचे का मार्ग, सुरंग, गुदा ।

अधोमुख–(सं. वि.) मुख नीचा किये हुए, उलटा,औंधा; (पुं.) नरक के एक भाग का नाम।
अधोयंत्र–(सं. पुं.) वकयंत्र, अर्क खींचने का भभका।
अधोर्ध–(सं. अव्य.) ऊपर-नीचे।
अधोलंब–(सं. पुं.) वह सीधी रेखा जो दूसरी रेखा से संलग्न होकर दोनों ओर के कोणों को बराबर बनाती है, लंब, माहुल, पानी की गहराई नापने का यंत्र।
अधोलोक–(सं. पुं.) नीचे की दुनिया, पाताल।
अधोवायु–(सं. पुं.) अपानवायु, गुदा से निकलनेवाली वायु, पाद।
अधोविंदु–(सं. पुं.) अदृश्य आकाश का वह स्थान जो हमारे पैर के ठीक नीचे होता है।
अधौड़ी–(हिं. स्त्री.) मोटी खाल, किसी पशु के चमड़े का आधा भाग।
अध्यक्ष–(सं. पुं.) सभापति, स्वामी, नायक, अधिष्ठाता, प्रधान, अधिकारी।
अध्यक्षर–(सं. अव्य.) अक्षरशः, अक्षर-अक्षर।
अध्ययन–(सं. पुं.)पठन, पढ़ाई-लिखाई।
अध्ययनीय–(सं. वि.) पढ़ने योग्य।
अध्यर्ध–(सं. वि.)एक और आधा, डेढ़, $1\frac{1}{2}$।
अध्यवसान–(सं. पुं.) अभिप्राय, चेष्टा, उत्साह।
अध्यवसाय–(सं. पुं.) उत्साह, निरन्तर उद्योग, दृढ़तापूर्वक किसी व्यापार में लगे रहना, निश्चय।
अध्यवसायित–(सं. वि.) दृढ़ निश्चय किया हुआ।
अध्यवसायी–(सं. वि.) निरंतर उद्योग करनेवाला, उद्यमशील, उत्साही, निश्चयकारी।
अध्यवसित–(सं. वि.) दृढ़ निश्चय किया हुआ, अनुमोदित।
अध्यस्त–(सं. वि.) ऊपर रक्खा हुआ, छिपा हुआ, गुप्त, जो प्रत्यक्ष न हो।
अध्यात्म–(सं. पुं.) परब्रह्म, परमेश्वर; (वि.) आत्मा या ब्रह्म सबंधी।
अध्यात्म-ज्ञान–(सं. पुं.) ईश्वर अथवा आत्मा का ज्ञान।
अध्यात्मदर्शी–(सं. वि.) परमात्मा को जाननेवाला।
अध्यात्म-विद्या–(सं. स्त्री.), **अध्यात्म-शास्त्र**–(सं.पुं.) आत्मा-परमात्मा के स्वरूप, संबंध आदि का विवेचन करने वाला दर्शन।

अध्यात्मिक–(सं. वि.) अध्यात्म संबंधी।
अध्यापक–(सं. पुं.) शिक्षक, गुरु, आचार्य।
अध्यापकी–(हिं. स्त्री.) अध्यापक का कार्य, पढ़ाने-लिखाने का काम।
अध्यापन–(सं.पुं.)पढ़ाने-लिखाने का कार्य।
अध्यापिका–(सं. स्त्री.) पढ़ाने-लिखाने-वाली स्त्री, गुरुआइन।
अध्यापित–(सं. वि.) पढ़ाया-लिखाया हुआ।
अध्याय–(सं. पुं.) ग्रंथ-विभाग, पाठ, सर्ग, अंक, परिच्छेद, प्रकरण, कांड, पर्व।
अध्यायी–(हिं. वि.) पढ़नेवाला, पढ़ने-लिखने में लगा हुआ; (पुं.) विद्यार्थी।
अध्यारूढ़–(सं. वि.) समारूढ़, सवार, हुआ, चढ़ा ऊँचा।
अध्यारोप, अध्यारोपण–(सं. पुं.) चढ़ना, ऊपर पहुँचना, मिथ्या कल्पना-दोष, आरोप।
अध्यारोपित–(सं.वि.)मिथ्यारोपित, धोखे का, अशुद्ध समझा हुआ।
अध्यास–(सं. पुं.)झूठा आरोप, मिथ्या ज्ञान।
अध्यासन–(सं. पुं.) निवास, अधिष्ठान, चढ़ाव।
अध्यासित–(सं. वि.) बैठाया हुआ, सभापति के आसन पर बैठा हुआ।
अध्यासीन–(सं. वि.)उपविष्ट, बैठा हुआ।
अध्याहार–(सं. पुं.) तर्क, वितर्क, अ-संपूर्ण वाक्य को पूर्ण करने के लिए कुछ शब्द जोड़ना, अस्पष्ट विषय को दूसरे शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट करना।
अध्याहृत–(सं. वि.) तर्क किया हुआ।
अध्यूढ़–(सं. वि.) अधिक, अतिशय, भरपूर।
अध्यूढ़ा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके रहते उसका पति दूसरा विवाह कर ले।
अध्येतव्य, अध्येय–(सं.वि.) पाठ्य, पढ़ने योग्य।
अध्रुव–(सं. वि.) अनिश्चित, चंचल, अलग करने योग्य, बिना ठौर का, अस्थिर।
अध्वर–(सं. पुं.) यज्ञ, आकाश।
अध्वर्यु–(सं. पुं.)यज्ञ करनेवाला, यजुर्वेदी, पुरोहित।
अनंकुश–(सं. वि.)बिना नियंत्रण या वश का, निरंकुश, स्वेच्छाचारी।
अनंग–(सं. पुं.) अंग का अभाव, कामदेव, आकाश, मन; (वि.) जिसे अंग न हो, अनंगी; **–क्रीड़ा**–(सं. स्त्री.) मानसिक रति या संभोग।
अनंगक–(सं. पुं.) चित्त, मन, काम।
अनंगारि–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

अनंगी–(सं. वि.) बिना अंग या शरीर का, अशरीरी; (पुं.) कामदेव।
अनंत–(सं. वि.) जिसका अंत न हो, नांत, असीम; (पुं.) विष्णु, कृष्ण, शिव, रुद्र, शेषनाग, आकाश।
अनंतगुण–(सं. वि.) जो अपार गुणों का भंडार हो।
अनंत-चतुर्दशी–(सं. स्त्री.) भाद्र शुक्ला चतुर्दशी, उसका व्रत, अनंत व्रत।
अनंतता–(सं. स्त्री.), **अनंतत्व**–(सं. पुं.) अनंत होने की अवस्था या भाव, असीमता, अपारत्व।
अनंतमूल–(सं. पुं.) एक रक्त-शोधक वनस्पति।
अनंतर–(सं. अव्य.) बाद या पीछे, उपरांत, लगातार; (वि.) बिना अंतर का, लगातार।
अनंतराशि–(सं. स्त्री.) अकूत राशि या परिमाण।
अनंतशक्ति–(सं. वि.) सर्व-शक्तिमान्।
अनंता–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, पार्वती।
अनंतात्मा–(सं. पुं.) परमात्मा।
अनंत्य–(सं. वि.) जिसका अंत न हो।
अनंद–(हिं. पुं.) देखें 'आनंद'।
अनंदना–(हिं. क्रि. अ.) आनंदित होना।
अनंदी–(हिं. वि.) देखें 'आनंदी'।
अनंश–(सं. वि.) जिसका अंश या भाग न हो, अंशरहित, जिसका संपत्ति पर सत्त्व या हक न हो।
अन–(हिं. अव्य.) बिना, बगैर; (आदि प्रत्य०) कुछ देशज संयुक्त पदों में यह आदिपद के रूप में वपम्य, प्रतिकूलता, अभाव आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है; जैसे–अनगिनत, अनहोनी, अनदेखा आदि।
अनअहिवात–(हिं. पुं.) वैधव्य, रँडापा।
अनइस–(हिं. वि.) निकृष्ट, बुरा, अधम।
अनइसी–(हिं. स्त्री.)बुरा समझना, रूठना।
अनऋतु–(सिं. स्त्री.) बुरा ऋतु, कुसमय।
अनकना–(हिं.क्रि.स.)सुनना, छिपकर सुनना।
अनकहा–(हिं. वि.) जो कहा न गया हो।
अनक्षर–(सं. पुं.) निंदा, गाली; (वि.) मूर्ख, निरक्षर।
अनख–(हिं. पुं.) क्रोध, ईर्ष्या, अन्याय, काजल की बिंदी जो बच्चों के मस्तक पर नजर न लगने के लिए लगा दी जाती है, डिठौना।
अनखना–(हिं.क्रि.अ.) क्रोध करना, रूठना, रिसियाना।
अनखाना–(हिं. क्रि. अ., स.) क्रोध दिख-लाना, अप्रसन्न करना।

अनखाहट–(हिं. स्त्री.) अप्रसन्नता, क्रोध।
अनखी–(हिं. वि.) कोपान्वित, क्रोधी, शीघ्र कुपित होनेवाला।
अनखौंहाँ–(हिं. वि.) क्रोधपूर्ण, चिड़चिड़ा, अनुचित, बुरा।
अनगढ़–(हिं. वि.) विना गढ़ा हुआ, भद्दा, वेडौल, जो किसी का बनाया न हो, विना ओर-छोर का, स्वयंभू।
अनगन–(हिं. वि.) अगणित, बहुत।
अनगना–(हिं. वि.) विना गिना हुआ, अगणित।
अनगवना– (हिं. क्रि. अ.) जान-बूझकर देर करना।
अनगाना–(हिं. क्रि. स.) गिनवाना, सुधरवाना।
अनगिन, अनगिनत–(हिं. वि.) अगणित, असंख्य।
अनगिना–(हिं. वि.) विना गिना हुआ, असंख्य, अगणित।
अनगैरी–(हिं. वि.) अपरिचित, विना जान-पहिचान का, पराया।
अनग्न–(सं. वि.) जो नंगा न हो, वस्त्र पहिने हुए; **–ता**–(सं. स्त्री.) नंगा न होने की अवस्था।
अनघ–(सं. वि.) पापशून्य, निर्मल, शुद्ध, सुंदर, दुःखहीन, स्वच्छ।
अनघरी–(हिं.स्त्री.) कुसमय, बुरा समय।
अनघरी–(हिं. वि.) विना निमंत्रण का, विना बुलाया हुआ।
अनघोर–(हिं. पुं.) अत्याचार, अँधेर।
अनचाहा–(हिं. वि.) जिसकी चाह न हो, अनिच्छित।
अनचाहत–(हिं. वि.) न चाहनेवाला, प्रेम न करनेवाला।
अनचीन्हा–(हिं. वि.) अपरिचित, जिससे जान-पहिचान न हो।
अनच्छ–(सं. वि.) जो स्वच्छ न हो, मैला।
अनजान–(हिं. वि.) अनभिज्ञ, अपरिचित, अज्ञात; (पुं.) अनजान की अवस्था, जानकारी का अभाव।
अनजोखा–(हिं. वि.) विना तौला हुआ।
अनट–(हिं.पुं.) उपद्रव, अनीति, अत्याचार, बलवा।
अनडीठ–(हिं. वि.) अदृष्ट, अदेखा, विना देखा हुआ।
अनत–(सं. वि.) जो झुका न हो, सीधा, खड़ा, अभिमानी; (हिं. अव्य.) अन्यत्र, दूसरे किसी स्थान में।
अनति–(सं. वि.) अधिक नहीं, न्यून; (स्त्री.) अहंकार।
अनतिक्रम, अनतिक्रमण–(सं. पुं.) सीमा से वाहर न जाना, अनुल्लंघन।
अनतिक्रमणीय–(सं. वि.) उल्लंघन न करने योग्य, अनुल्लंघनीय।
अनदेखा–(हिं.वि.) अदृष्ट, जो देखा हुआ न हो।
अनद्यतन–(सं. वि.) जो आज का या आधुनिक न हो; **–भविष्य**–(पुं.) आगामी आधी रात के बाद का समय; **–भूत**–(पुं.) व्याकरण में अर्धरात्रि से पहिले का समय।
अनधिक–(सं. वि.) जो अधिक न हो।
अनधिकार–(सं. पुं.) अधिकार का न होना, अधिकारशून्यता, अयोग्यता; (वि.) अयोग्य, अधिकाररहित; **–चर्चा**–(स्त्री.) जिस विषय में अधिकार न हो उसमें हस्तक्षेप करना; **–प्रवेश**–(पुं.) विना अधिकार के किसी के घर में घुसना।
अनधिकारिता–(सं. स्त्री.) अधिकार का न होना।
अनधिकारी–(हि. वि.) विना अधिकार का, अधिकारहीन, जो पाने का अधिकारी न हो, अयोग्य।
अनधिकृत–(सं. वि.) जो अधिकृत न हो, जो अधिकार-प्राप्त न हो।
अनधिगत–(सं. वि.) अज्ञात, विना समझा-बूझा; **–मनोरथ**–(वि.) हताश।
अनधिगम्य–(सं. वि.) पहुँच के बाहर, प्राप्त न होने योग्य।
अनधीन–(सं. वि.) जो अधीन न हो।
अनध्ययन–(सं. पुं.) अध्ययन का अभाव, अनध्याय।
अनध्यवसाय–(सं. पुं.) अध्यवसाय का न होना, ढीलापन, शिथिलता, एक अलंकार जिसमें किसी एक वस्तु के विषय में असाधारण अनिश्चय दिखलाया जाता है।
अनध्याय–(सं. पुं.) छुट्टी का दिन, जिस दिन पढ़ाई बंद हो, अनध्ययन।
अननुज्ञात–(सं. वि.) असम्मत, विना अनुज्ञा या आज्ञा का।
अननुभूत–(सं. वि.) जिसका अनुभव न किया गया हो, अज्ञात।
अननुमत–(सं. वि.) जिसे अनुमति या स्वीकृति न मिली हो।
अनन्नास–(हिं. पुं.) एक फल जो खाने में खट-मीठा होता है।
अनन्य–(सं. वि.) दूसरे से संबंध न रखनेवाला, एक से अधिक नहीं, समूचा, सबसे अलग, स्वतंत्र; **–गामी**–(वि.) दूसरे की ओर न जानेवाला; **–चित्त**–(वि.) अपना चित्त एक ही विषय में लगानेवाला; **–ज**–(वि.) कामदेव; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) एकनिष्ठा, निरालापन, अनोखापन; **–दृष्टि**–(वि.) टकटकी लगाकर देखनेवाला; **–पूर्वा**–(स्त्री.) जिस स्त्री का किसी पुरुष से संसर्ग न हुआ हो, कुमारी, अविवाहिता; **–भव**–(वि.) आप से आप उत्पन्न होनेवाला; **–भाव**–(वि.) केवल ईश्वर में ध्यान लगानेवाला; **–मनस्क**–(वि.) अपना ध्यान निविष्ट या लीन रखनेवाला; **–योग्य**–(वि.) जो किसी दूसरे के उपयोग का या योग्य न हो; **–वृत्ति**–(वि.) जिसकी जीविका का उपाय एक ही हो दूसरा नहीं; **–साधारण, –सामान्य**–(वि.) सब से निराला; **–हृत**–(वि.) जिसको दूसरा न चुरा सके, सुरक्षित।
अनन्यार्थ–(सं. वि.) किसी दूसरे पदार्थ से संबंध न रखनेवाला, प्रधान।
अनन्याश्रित–(सं. वि.) जो दूसरे के आश्रित न हो, स्वतंत्र।
अनन्वय–(सं. पुं.) अन्वय या संबंध का अभाव, एक अलंकार जिसमें किसी वाक्य में एक ही वस्तु उपमान तथा उपमेय के रूप में दरसाई जाती है।
अनन्वित–(सं. वि.) अन्वयरहित, असंबद्ध, पृथक्, शून्य, अंडबंड।
अनप–(सं. वि.) जल से शून्य।
अनपकार–(सं. पुं.) अपकार न करना, सीधापन, भोलापन।
अनपकारी–(हिं. वि.) अपकार न करनेवाला, किसी का कुछ न बिगाड़नेवाला।
अनपकृत–(सं. वि.) जिसका अपकार न किया गया हो।
अनपच–(हिं. पुं.) भोजन का न पचना अपच, अजीर्ण।
अनपढ़–(हिं. वि.) अशिक्षित, बेपढ़, निरक्षर, मूर्ख।
अनपत्य–(सं. वि.) जिसके लड़के-बाले न हों, सन्तानहीन।
अनपराध–(सं. वि.) जिसने अपराध न किया हो, निरपराध, निर्दोष; (पुं.) अपराध का अभाव, निर्दोषता।
अनपराधी–(हिं. पुं.) निरपराध।
अनपहृत–(सं. वि.) अपहरण या चोरी न किया हुआ।
अनपायी–(सं. वि.) स्थिर, निश्चल।
अनपाश्रय–(सं. वि.) निर्द्वन्द्व, स्वाधीन।

अधोमुख–(सं. वि.) मुख नीचा किये हुए, उलटा, औंधा; (पुं.) नरक के एक भाग का नाम।
अधोयंत्र–(सं. पुं.) वकयंत्र, अर्क खींचने का भभका।
अधोर्ध्व–(सं. अव्य.) ऊपर-नीचे।
अधोलंब–(सं. पुं.) वह सीधी रेखा जो दूसरी रेखा से संलग्न होकर दोनों ओर के कोणों को बराबर बनाती है, लंब, माहुल, पानी की गहराई नापने का यंत्र।
अधोलोक–(सं. पुं.) नीचे की दुनिया, पाताल।
अधोवायु–(सं. पुं.) अपानवायु, गुदा से निकलनेवाली वायु, पाद।
अधोबिंदु–(सं. पुं.) अदृश्य आकाश का वह स्थान जो हमारे पैर के ठीक नीचे होता है।
अधौड़ी–(हि. स्त्री.) मोटी खाल, किसी पशु के चमड़े का आधा भाग।
अध्यक्ष–(सं. पुं.) सभापति, स्वामी, नायक, अधिष्ठाता, प्रधान, अधिकारी।
अध्यक्षर–(सं. अव्य.) अक्षरशः, अक्षर-अक्षर।
अध्ययन–(सं. पुं.) पठन, पढ़ाई-लिखाई।
अध्ययनीय–(सं. वि.) पढ़ने योग्य।
अध्यर्ध–(सं. वि.) एक और आधा, डेढ़, १½।
अध्यवसान–(सं. पुं.) अभिप्राय, चेष्टा, उत्साह।
अध्यवसाय–(सं. पुं.) उत्साह, निरन्तर उद्योग, दृढ़तापूर्वक किसी व्यापार में लगे रहना, निश्चय।
अध्यवसायित–(सं. वि.) दृढ़ निश्चय किया हुआ।
अध्यवसायी–(सं. वि.) निरंतर उद्योग करनेवाला, उद्यमशील, उत्साही, निश्चयकारी।
अध्यवसित–(सं. वि.) दृढ़ निश्चय किया हुआ, अनुमोदित।
अध्यस्त–(सं. वि.) ऊपर रक्खा हुआ, छिपा हुआ, गुप्त, जो प्रत्यक्ष न हो।
अध्यात्म–(सं. पुं.) परब्रह्म, परमेश्वर; (वि.) आत्मा या ब्रह्म सबंधी।
अध्यात्म-ज्ञान–(सं. पुं.) ईश्वर अथवा आत्मा का ज्ञान।
अध्यात्मदर्शी–(सं. वि.) परमात्मा को जाननेवाला।
अध्यात्म-विद्या–(सं. स्त्री.), **अध्यात्म-शास्त्र**–(सं.पुं.) आत्मा-परमात्मा के स्वरूप, संबंध आदि का विवेचन करने वाला दर्शन।
अध्यात्मिक–(सं. वि.) अध्यात्म संबंधी।
अध्यापक–(सं.पुं.) शिक्षक, गुरु, आचार्य।
अध्यापकी–(हि. स्त्री.) अध्यापक का कार्य, पढ़ाने-लिखाने का काम।
अध्यापन–(सं.पुं.) पढ़ाने-लिखाने का कार्य।
अध्यापिका–(सं. स्त्री.) पढ़ाने-लिखाने-वाली स्त्री, गुरुआइन।
अध्यापित–(सं. वि.) पढ़ाया-लिखाया हुआ।
अध्याय–(सं. पुं.) ग्रंथ-विभाग, पाठ, सर्ग, अंक, परिच्छेद, प्रकरण, कांड, पर्व।
अध्यायी–(हि. वि.) पढ़नेवाला, पढ़ने-लिखने में लगा हुआ; (पुं.) विद्यार्थी।
अध्यारूढ़–(सं. वि.) समारूढ़, सवार, हुआ, चढ़ा ऊँचा।
अध्यारोप, अध्यारोपण–(सं. पुं.) चढ़ना, ऊपर पहुँचना, मिथ्या कल्पना-दोष, आरोप।
अध्यारोपित–(सं.वि.) मिथ्यारोपित, धोखे का, अशुद्ध समझा हुआ।
अध्यास–(सं. पुं.) झूठा आरोप, मिथ्या ज्ञान।
अध्यासन–(सं. पुं.) निवास, अधिष्ठान, चढ़ाव।
अध्यासित–(सं. वि.) बैठाया हुआ, सभापति के आसन पर बैठा हुआ।
अध्यासीन–(सं. वि.) उपविष्ट, बैठा हुआ।
अध्याहार–(सं. पुं.) तर्क, वितर्क, असंपूर्ण वाक्य को पूर्ण करने के लिए कुछ शब्द जोड़ना, अस्पष्ट विषय को दूसरे शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट करना।
अध्याहृत–(सं. वि.) तर्क किया हुआ।
अध्यूढ़–(सं. वि.) अधिक, अतिशय, भरपूर।
अध्यूढ़ा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके रहते उसका पति दूसरा विवाह कर ले।
अध्येतव्य, अध्येय–(सं.वि.) पाठ्य, पढ़ने योग्य।
अध्रुव–(सं. वि.) अनिश्चित, चंचल, अलग करने योग्य, विना ठौर का, अस्थिर।
अध्वर–(सं. पुं.) यज्ञ, आकाश।
अध्वर्यु–(सं. पुं.) यज्ञ करनेवाला, यजुर्वेदी, पुरोहित।
अनंकुश–(सं. वि.) विना नियंत्रण या वश का, निरंकुश, स्वेच्छाचारी।
अनंग–(सं. पुं.) अंग का अभाव, कामदेव, आकाश, मन; (वि.) जिसे अंग न हो, अनंगी; –**क्रीड़ा**–(सं. स्त्री.) मानसिक रति या संभोग।
अनंगक–(सं. पुं.) चित्त, मन, काम।
अनंगारि–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
अनंगी–(सं. वि.) विना अंग या शरीर का, अशरीरी; (पुं.) कामदेव।
अनंत–(सं. वि.) जिसका अंत न हो, नांत, असीम; (पुं.) विष्णु, कृष्ण, शिव, रुद्र, शेषनाग, आकाश।
अनंतगुण–(सं. वि.) जो अपार गुणों का भंडार हो।
अनंत-चतुर्दशी–(सं. स्त्री.) भाद्र शुक्ला चतुर्दशी, उसका व्रत, अनंत व्रत।
अनंतता–(सं. स्त्री.), **अनंतत्व**–(सं. पुं.) अनंत होने की अवस्था या भाव, असीमता, अपारत्व।
अनंतमूल–(सं. पुं.) एक रक्त-शोधक वनस्पति।
अनंतर–(सं. अव्य.) बाद या पीछे, उपरांत, लगातार; (वि.) बिना अंतर का, लगातार।
अनंतराशि–(सं. स्त्री.) अकूत राशि या परिमाण।
अनंतशक्ति–(सं. वि.) सर्व-शक्तिमान्।
अनंता–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, पार्वती।
अनंतात्मा–(सं. पुं.) परमात्मा।
अनंत्य–(सं. वि.) जिसका अंत न हो।
अनंद–(हि. पुं.) देखें 'आनंद'।
अनंदना–(हि. क्रि. अ.) आनंदित होना।
अनंदी–(हि. वि.) देखें 'आनंदी'।
अनंश–(सं. वि.) जिसका अंश या भाग न हो, अंशरहित, जिसका संपत्ति पर सत्त्व या हक न हो।
अन–(हि. अव्य.) विना, बगैर; (आदि प्रत्य०) कुछ देशज संयुक्त पदों में यह आदिपद के रूप में वपम्य, प्रतिकूलता, अभाव आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है; जैसे–अनगिनत, अनहोनी, अनदेखा आदि।
अनअहिवात–(हि. पुं.) वैधव्य, रँडापा।
अनइस–(हि. वि.) निकृष्ट, बुरा, अधम।
अनइसी–(हि. स्त्री.) बुरा समझना, रूठना।
अनऋतु–(सं. स्त्री.) बुरा ऋतु, कुसमय।
अनकना–(हि.क्रि.स.) सुनना, छिपकर सुनना।
अनकहा–(हि. वि.) जो कहा न गया हो।
अनक्षर–(सं. पुं.) निंदा, गाली; (वि.) मूर्ख, निरक्षर।
अनख–(हि. पुं.) क्रोध, ईर्ष्या, अन्याय, काजल की बिंदी जो बच्चों के मस्तक पर नजर न लगने के लिए लगा दी जाती है, डिठौना।
अनखना–(हि.क्रि.अ.) क्रोध करना, रूठना, रिसियाना।
अनखाना–(हि. क्रि. अ., स.) क्रोध दिखलाना, अप्रसन्न करना।

अनखाहट–(हिं. स्त्री.) अप्रसन्नता, क्रोध।
अनखी–(हिं. वि.) कोपान्वित, क्रोधी, शीघ्र कुपित होनेवाला।
अनखौहाँ–(हिं. वि.) क्रोधपूर्ण, चिड़चिड़ा, अनुचित, बुरा।
अनगढ़–(हिं. वि.) विना गढ़ा हुआ, भद्दा, वेडौल, जो किसी का वनाया न हो, बिना ओर-छोर का, स्वयंभू।
अनगन–(हिं. वि.) अगणित, बहुत।
अनगना–(हिं. वि.) बिना गिना हुआ, अगणित।
अनगवना– (हिं. क्रि. अ.) जान-बूझकर देर करना।
अनगाना–(हिं. क्रि. स.) गिनवाना, सुधरवाना।
अनगिन, अनगिनत–(हिं. वि.) अगणित, असंख्य।
अनगिना–(हिं. वि.) बिना गिना हुआ, असंख्य, अगणित।
अनगैरी–(हिं. वि.) अपरिचित, विना जान-पहिचान का, पराया।
अनग्न–(सं. वि.) जो नंगा न हो, वस्त्र पहिने हुए; **–ता**–(सं. स्त्री.) नंगा न होने की अवस्था।
अनघ–(सं. वि.) पापशून्य, निर्मल, शुद्ध, सुंदर, दुःखहीन, स्वच्छ।
अनघरी–(हिं.स्त्री.) कुसमय, बुरा समय।
अनघरी–(हिं. वि.) विना निमंत्रण का, विना वुलाया हुआ।
अनघोर–(हिं. पुं.) अत्याचार, अँधेर।
अनचाहा–(हिं. वि.) जिसकी चाह न हो, अनिच्छित।
अनचाहत–(हिं. वि.) न चाहनेवाला, प्रेम न करनेवाला।
अनचीन्हा–(हिं. वि.) अपरिचित, जिससे जान-पहिचान न हो।
अनच्छ–(सं. वि.) जो स्वच्छ न हो, मैला।
अनजान–(हिं. वि.) अनभिज्ञ, अपरिचित, अज्ञात; (पुं.) अनजान की अवस्था, जानकारी का अभाव।
अनजोखा–(हिं. वि.) विना तौला हुआ।
अनट–(हिं.पुं.) उपद्रव, अनीति, अत्याचार, बलवा।
अनडीठ–(हिं. वि.) अदृष्ट, अदेखा, बिना देखा हुआ।
अनत–(सं. वि.) जो झुका न हो, सीधा, खड़ा, अभिमानी; (हिं. अव्य.) अन्यत्र, दूसरे किसी स्थान में।
अनति–(सं. वि.) अधिक नहीं, न्यून; (स्त्री.) अहंकार।
अनतिक्रम, अनतिक्रमण–(सं. पुं.) सीमा से बाहर न जाना, अनुल्लंघन।
अनतिक्रमणीय–(सं. वि.) उल्लंघन न करने योग्य, अनुल्लंघनीय।
अनदेखा–(हिं.वि.) अदृष्ट, जो देखा हुआ न हो।
अनद्यतन–(सं. वि.) जो आज का या आधुनिक न हों; **–भविष्य**–(पुं.) आगामी आधी रात के बाद का समय; **–भूत**–(पुं.) व्याकरण में अर्धरात्रि से पहिले का समय।
अनधिक–(सं. वि.) जो अधिक न हो।
अनधिकार–(सं. पुं.) अधिकार का न होना, अधिकारशून्यता, अयोग्यता; (वि.) अयोग्य, अधिकाररहित; **–चर्चा**–(स्त्री.) जिस विषय में अधिकार न हो उसमें हस्तक्षेप करना; **–प्रवेश**–(पुं.) बिना अधिकार के किसी के घर में घुसना।
अनधिकारिता–(सं. स्त्री.) अधिकार का न होना।
अनधिकारी–(हि. वि.) बिना अधिकार का, अधिकारहीन, जो पाने का अधिकारी न हो, अयोग्य।
अनधिकृत–(सं. वि.) जो अधिकृत न हो, जो अधिकार-प्राप्त न हो।
अनधिगत–(सं. वि.) अज्ञात, विना समझा-बूझा; **–मनोरथ**–(वि.) हताश।
अनधिगम्य–(सं. वि.) पहुँच के बाहर, प्राप्त न होने योग्य।
अनधीन–(सं. वि.) जो अधीन न हो।
अनध्ययन–(सं. पुं.) अध्ययन का अभाव, अनध्याय।
अनध्यवसाय–(सं. पुं.) अध्यवसाय का न होना, ढीलापन, शिथिलता, एक अलंकार जिसमें किसी एक वस्तु के विषय में असाधारण अनिश्चय दिखलाया जाता है।
अनध्याय–(सं. पुं.) छुट्टी का दिन, जिस दिन पढ़ाई बंद हो, अनध्ययन।
अननुज्ञात–(सं. वि.) असम्मत, बिना अनुज्ञा या आज्ञा का।
अननुभूत–(सं. वि.) जिसका अनुभव न किया गया हो, अज्ञात।
अननुमत–(सं. वि.) जिसे अनुमति या स्वीकृति न मिली हो।
अनन्नास–(हिं. पुं.) एक फल जो खाने में खट-मीठा होता है।
अनन्य–(सं. वि.) दूसरे से संबंध न रखनेवाला, एक से अधिक नहीं, समूचा, सबसे अलग, स्वतंत्र; **–गामी**–(वि.) दूसरे की ओर न जानेवाला; **–चित्त**–(वि.) अपना चित्त एक ही विषय में लगानेवाला; **–ज**– (वि.) कामदेव; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) एकनिष्ठा, निरालापन, अनोखापन; **–दृष्टि**–(वि.) टकटकी लगाकर देखनेवाला; **–पूर्वा**–(स्त्री.) जिस स्त्री का किसी पुरुष से संसर्ग न हुआ हो, कुमारी, अविवाहिता; **–भव**–(वि.) आप से आप उत्पन्न होनेवाला; **–भाव**–(वि.) केवल ईश्वर में ध्यान लगानेवाला; **–मनस्क**–(वि.) अपना ध्यान निविष्ट या लीन रखनेवाला; **–योग्य**–(वि.) जो किसी दूसरे के उपयोग का या योग्य न हो; **–वृत्ति**–(वि.) जिसकी जीविका का उपाय एक ही हो दूसरा नहीं; **–साधारण, –सामान्य**–(वि.) सब से निराला; **–हृत**–(वि.) जिसको दूसरा न चुरा सके, सुरक्षित।
अनन्यार्थ–(सं. वि.) किसी दूसरे पदार्थ से संबंध न रखनेवाला, प्रधान।
अनन्याश्रित–(सं. वि.) जो दूसरे के आश्रित न हो, स्वतंत्र।
अनन्वय–(सं. पुं.) अन्वय या संबंध का अभाव, एक अलंकार जिसमें किसी वाक्य में एक ही वस्तु उपमान तथा उपमेय के रूप में दरसाई जाती है।
अनन्वित–(सं. वि.) अन्वयरहित, असंबद्ध, पृथक्, शून्य, अंडबंड।
अनप–(सं. वि.) जल से शून्य।
अनपकार–(सं. पुं.) अपकार न करना, सीधापन, भोलापन।
अनपकारी–(हिं. वि.) अपकार न करनेवाला, किसी का कुछ न बिगाड़नेवाला।
अनपकृत–(सं. वि.) जिसका अपकार न किया गया हो।
अनपच–(हिं. पुं.) भोजन का न पचना अपच, अजीर्ण।
अनपढ़–(हिं. वि.) अशिक्षित, बेपढ़, निरक्षर, मूर्ख।
अनपत्य–(सं. वि.) जिसके लड़के-वाले न हों, सन्तानहीन।
अनपराध–(सं. वि.) जिसने अपराध न किया हो, निरपराध, निर्दोष; (पुं.) अपराध का अभाव, निर्दोषता।
अनपराधी–(हि. पुं.) निरपराध।
अनपहृत–(सं. वि.) अपहरण या चोरी न किया हुआ।
अनपायी–(सं. वि.) स्थिर, निश्चल।
अनपाश्रय–(सं. वि.) निर्द्वन्द्व, स्वाधीन।

अनपेक्ष–(सं. वि.) अपेक्षा न करनेवाला, पक्षपात-रहित; –त्व–(पुं.) पक्षपातशून्यता।
अनपेक्षा–(सं. स्त्री.) देखें 'अनपेक्षत्व'।
अनपेक्षित–(सं. वि.) जिसकी अपेक्षा, चाह या परवाह न हो, ध्यान न दिया हुआ, उपेक्षित।
अनपेक्ष्य–(सं. वि.) किसी की अपेक्षा न करनेवाला।
अनबन–(हिं. स्त्री.) विरोध, झगड़ा, द्रोह, झंझट, विगाड़; (वि.) विविध, भिन्न, पृथक्, अलग।
अनबिधा, अनबेध–(हिं. वि.) विना वधा या छेद किया हुआ।
अनबूझ–(हिं. वि.) जिसे बूझ या समझ न हो, अबूझ।
अनबोल–(हिं. वि.) न बोलनेवाला, मौन, चुप्पा, गूँगा, अपना सुख-दुःख किसी से न कहनेवाला।
अनबोलत, अनबोला–(हिं. वि.) न बोलनेवाला, गूँगा, अनबोल।
अनब्याहा–(हिं.वि.) अविवाहित, कुँवारा।
अनभल–(हिं. पुं.) बुराई, अहित, हानि; (मुहा.)–ताकना–किसी का अहित या अमंगल चाहना।
अनभला–(हिं.वि.) जो भला न हो, बुरा।
अनभाया, अनभावता–(हिं. वि.) अ-प्रिय, जो अच्छा न लगे।
अनभिग्रह–(सं. पुं.) जो अभिग्रह या भेद-भाव से रहित हो; (पुं.) भेद-भाव का अभाव।
अनभिज्ञ–(सं.वि.) जो अभिज्ञ या जानकार न हो, अपरिचित, ज्ञानशून्य, मूर्ख, अज्ञ; –ता– (स्त्री.) अज्ञता, मूर्खता।
अनभिधेय–(सं.वि.) जो कहा न जा सके।
अनभिप्रेत–(सं.वि.) जो अभिप्रेत, उद्दिष्ट या इच्छित न हो।
अनभिभव–(सं. पुं.) जीत का न होना, पराजय, हार।
अनभिभूत–(सं. वि.) जो अभिभूत या व्याकुल न हुआ हो, न हराया हुआ।
अनभिमत–(सं. वि.) जो अभिमत अथवा सम्मत न हो, असम्मत।
अनभिरूप–(सं.वि.) कुरूप, वेडौल, भद्दा।
अनभिलाप–(सं. पुं.) अभिलाषा का न होना, अरुचि; (वि.) अनभिलाषी।
अनभिलाषी–(हिं. वि.) वांछा या इच्छा न रखनेवाला, इच्छारहित।
अनभिवाद्य–(सं. वि.) जो अभिवादन या अभ्यर्थना के योग्य न हो।

अनभिव्यक्त–(सं. वि.) जो स्पष्ट न हो, गुप्त, छिपा हुआ।
अनभिसंधान–(सं.पुं.) प्रयोजन-विहीनता।
अनभिसंधि–(सं. स्त्री.) अभिसंधि अथवा आपराधिक कुचक्र का अभाव।
अनभिहित–(सं. वि.) न कहा हुआ, अकथित, विना वंधन का।
अनभीष्ट–(सं. वि.) जो अभीष्ट या इच्छित न हो, अवांछित।
अनभो–(हिं. पुं.) आश्चर्य, अचंभा, अनहोनी घटना; (वि.) अद्भुत, विचित्र, विलक्षण।
अनभोगा–(हिं. वि.) जिसका उपभोग न किया गया हो।
अनभोरी–(हिं.स्त्री.) कपट, छल, भुलावा।
अनभ्यसित, अनभ्यस्त–(सं.वि.) अभ्यास न किया हुआ, जिसे अभ्यास न हो।
अनभ्यास–(सं. पुं.) अभ्यास का अभाव, टेव न पड़ना।
अनभ्यासी–(हिं. वि.) जिसको अभ्यास न हो, अनभ्यस्त।
अनभ्र–(सं. वि.) मेघरहित, विना बादल का, अमेघ।
अनमन, अनमना–(हिं. वि.) अन्यमनस्क, जिसका चित्त न लगता हो, खिन्न, उदास, अस्वस्थ, रोगी।
अनमनापन–(हिं. पुं.) अन्यमनस्क मुद्रा, उदासीनता, अस्वस्थता।
अनमाँगा–(हिं. वि.) विना माँगा हुआ, अयाचित।
अनमापा–(हिं. वि.) विना नापा हुआ।
अनमारग–(हिं. पुं.) कुमार्ग, दुराचार।
अनमिल, अनमिलत–(हिं. वि.) बे-मेल, संवंधरहित, असंवद्ध, पृथक्, अलग।
अनमिलता–(हिं. वि.) न मिलनेवाला, अनमेल, अलभ्य।
अनमीलना–(हिं.क्रि.,स.) आँख उघारना, देखना।
अनमेल–(हिं. वि.) विना मिलावट का, विशुद्ध, असंवद्ध, वेजोड़।
अनमोल–(हिं. वि.) अमूल्य, मूल्यवान्, वड़े दाम का, अत्युत्तम, सुंदर।
अनम्र–(सं. वि.) जिसमें नम्रता न हो, उद्दंड।
अनय–(सं. पुं.) अन्याय, अनीति, अत्याचार, अशुभ दुर्घटना, व्यसन।
अनयन–(सं. वि.) विना नेत्र का, चक्षुहीन, अंधा।
अनरना–(हिं. क्रि., स.) अनादर करना, अपमान दिखलाना।

अनरस–(हिं. पुं) रसहीनता, रुखाई, वैर, दुःख, कष्ट, मनमोटाव, कोप, शुष्कता, काव्य जिसमें कोई प्रधान रस न दरसाया गया हो।
अनरसा–(हिं. वि.) बेचैन, रुग्ण; (पुं.) चावल की वनी एक प्रकार की मिठाई, अंदरसा।
अनरीति–(हिं. स्त्री.) बुरी चाल, कुरीति, अनैतिक व्यवहार।
अनर्क-चतुर्दशी–(सं. स्त्री.) कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी जो हनुमानजी का जन्म-दिवस माना जाता है। इस दिन हनुमानजी का पूजन होता है।
अनर्गल–(सं. वि.) प्रतिबंध-रहित, विना रोक-टोक का, निरंतर, व्यर्थ, अस्त-व्यस्त; –प्रलाप–(पुं.) व्यर्थ बकवाद।
अनर्घ–(सं. वि.) बहुमूल्य, कम मूल्य का।
अनर्घ्य–(सं. वि.) अपूज्य, अमूल्य, बहु-मूल्य, कीमती।
अनर्घ्यत्व–(सं. पुं.) अमूल्यता, बहु-मूल्यता, अपूज्यता।
अनर्थ– (सं. पुं.) उलटा अर्थ, अनिष्ट, प्रतिकूलता, कार्यहानि, आपत्ति, मूल्य का अभाव, बेकाम वस्तु; (वि.) अर्थहीन, धनहीन, निकम्मा।
अनर्थक–(सं. वि.) अर्थशून्य, निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, हानिकारक, अनिष्ट करनेवाला।
अनर्थकारी–(हिं. वि.) उलटा अर्थ निकालनेवाला, हानिकारक, अनिष्ट-कारी, उपद्रव करनेवाला।
अनर्थत्व–(सं. पुं.) बुराई, ईर्ष्या, द्वेष।
अनर्थदर्शी–(हिं. वि.) निरर्थक विषय पर विचार करनेवाला।
अनर्थनाशी–(सं. पुं.) अनर्थ का नाश करनेवाले शिव।
अनर्थबुद्धि–(सं. वि.) उलटी बुद्धिवाला।
अनर्थभाव–(सं. पुं.) ईर्ष्या, द्वेष।
अनर्ह–(सं. वि.) अनुपयुक्त, अयोग्य।
अनल–(सं. पुं.) अग्नि, वायु, रकार अक्षर, पाचन शक्ति, जठराग्नि, तीन की संख्या; –चूर्ण–(पुं.) बारूद; –दीपन–(वि.) पाचन-शक्ति बढ़ानेवाली (औषधि); –पक्ष– (पुं.) एक काल्पनिक चिड़िया जो सर्वदा आकाश में उड़ा करती है और वहीं अंडा भी देती है जो गिरने से फूट जाता है और वच्चा निकल आता है; –प्रभा– (स्त्री.) रतनजोत नाम की लाल रंग की लकड़ी; –मुख–(पुं.) देवता,

ब्राह्मण; -शिला-(स्त्री.) अग्निमय पत्थर जो आकाश से गिरते हैं। ये उल्कापात से भिन्न होते हैं।
अनलस-(सं. वि.) आलस्य-रहित, चंचल।
अनला-(सं. स्त्री.) दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप ऋषि को ब्याही थी।
अनल्प-(सं. वि.) प्रचुर, अधिक।
अनवकाश-(सं. पुं.) अवकाश न होना।
अनवगत-(सं. वि.) अज्ञात, न जाना हुआ।
अनवगाह-(सं. वि.) बहुत गहरा, अथाह।
अनवगाहिता-(सं. स्त्री.) बड़ी गहराई।
अनवगीत-(सं. वि.) अनिंदित।
अनवच्छिन्न-(सं. वि.) जो अलग न हो, संयुक्त, जुटा हुआ, अखंडित, व्याख्यारहित।
अनवट-(हिं. पुं.) चाँदी का छल्ला जिसको स्त्रियाँ पैर के अँगूठों में पहिनती हैं, कोल्हू के बैल की आँखों पर बाँधने का ढपना।
अनवद्य-(सं. वि.) निन्दारहित, दोष-शून्य; -ता-(स्त्री.) निर्दोषता; -त्व-(पुं.) अनवद्यता।
अनवधान-(सं. पुं.) असावधानी, अमनोयोग, प्रमाद, बावलापन; (वि.) असावधान, अमनोयोगी।
अनवधानता-(सं. स्त्री.) प्रमाद, पागलपन, अमनोयोग।
अनवधि-(सं.वि.) असीम; (अव्य.) सर्वदा।
अनवर-(सं. वि.) जो अवर न हो, श्रेष्ठ, सभ्य, शिष्ट।
अनवरत-(सं. वि.) निरंतर, सतत; (अव्य.) सर्वदा।
अनवलंब-(सं. वि.) निराश्रय, बिना सहारे का।
अनवलंबन-(सं.पुं.) आश्रय का न रहना।
अनवलंबित-(सं. वि.) बे-सहारा, आश्रयहीन।
अनवसर-(सं. पुं.) अवसर या अवकाश का अभाव, कुसमय।
अनवसान-(सं. वि.) जिसका अवसान या अंत न हो, अनंत।
अनवसित-(सं. वि.) असमाप्त, अधूरा।
अनवस्था-(सं.स्त्री.) स्थिति का अभाव, अव्यवस्था, अधीरता, चंचलता, चपलता, आतुरता, एक तर्क-दोष।
अनवस्थित-(सं. वि.) अस्थिर, चंचल, अशांत, निरवलंब, आधार-रहित।
अनवस्थितत्व-(सं. पुं.) चंचलता।
अनवस्थिति-(सं. स्त्री.) अधैर्य, चंचलता, बुलबुलापन, चित्त का स्थिर न रहना।
अनवाँसना-(हिं.क्रि.,स.) किसी नये पात्र को पहिले-पहिल काम में लाना, अवाँसना।
अनवाँसा-(हिं. वि.) पहिले-पहिल काम में लाया हुआ (पात्र); (पुं.) कटी हुई उपज का बँधा हुआ बोझ।
अनवाँसी-(हिं. स्त्री.) बिस्वांसी का बीसवाँ भाग, बिस्वे का ४००वाँ भाग।
अनवाद-(हिं. पुं.) बुरा शब्द, कटुवचन।
अनवाप्त-(सं. वि.) अप्राप्त, जो मिला न हो।
अनवाप्ति-(सं. स्त्री.) अप्राप्ति।
अनवाय, अनवयव-(सं. वि.) निराकार, निरवयव।
अनशन-(सं. पुं.) उपवास, लंघन, अन्न-त्याग, निराहार रहने का व्रत।
अनश्रु-(सं.वि.) जिसके आँसू न आते हों।
अनश्वर-(सं. वि.) नष्ट न होनेवाला, स्थायी, स्थिर, अटल, सर्वदा बना रहनेवाला।
अनष्ट-(सं. वि.) नष्ट न किया हुआ, अभंग, अखंडित, न टूटा हुआ।
अनसखरी-(हिं. स्त्री.) पक्का भोजन।
अनसमझा-(हिं.वि.) न समझा हुआ, जो समझ में न आया हो, अज्ञान, नासमझ।
अनसहत-(हिं. वि.) असह्य, न सहने योग्य, जो सहन न कर सके।
अनसाना-(हिं. क्रि., अ.) बुरा मानना, चिढ़ना।
अनसुना-(हिं. वि.) बिना सुना हुआ, अश्रुत।
अनसुनी-(हिं.वि.,स्त्री.) जो सुनी न गई हो; (मुहा.) - करना -बहटियाना, आनाकानी करना।
अनसूयक-(सं. वि.) दूसरे के उत्कर्ष पर ईर्ष्या न करनेवाला।
अनसूया-(सं. स्त्री.) ईर्ष्या का अभाव, डाह न करना, शकुंतला की सखी तथा अत्रि ऋषि की पत्नी का नाम।
अनस्तमित-(सं. वि.) जो अस्त न हुआ हो, जो डूब न गया हो।
अनहंकार-(सं. वि.) अहंकार-शून्य, बिना घमंड का।
अनहंकारी-(सं. वि.) गर्वशून्य, जो घमंड न करता हो।
अनहदनाद-(हिं. पुं.) हाथ के अँगूठों से दोनों कानों को बंद करने पर ध्यान लगाने से जो ध्वनि सुन पड़ती है, अनाहत नाद।
अनहित-(हिं.पुं.) बुराई, बिगाड़, अपकार; (वि.) अहित करनेवाला।
अनहितू-(हिं. वि.) हित न चाहनेवाला।
अनहोता-(हिं. वि.) न होनेवाला, अलौकिक, रिक्त, निर्धन, दरिद्र।
अनहोनी-(हिं.स्त्री.) न होनेवाली बात; (वि. स्त्री.) अद्‌भुत, असंभव।
अनाकानी-(हिं. स्त्री.) जान-बूझकर टालना, बहाना, आनाकानी।
अनाकार-(सं. वि.) बिना आकार का, निराकार, अवयवहीन।
अनाकाल-(सं. पुं.) दुर्भिक्ष, अकाल।
अनाकाश-(सं. वि.) आकाशरहित।
अनाकुल-(हिं. वि.) न घबड़ाया हुआ, अव्यग्र, एकाग्र।
अनाक्रांत-(सं.वि.) आक्रमण न किया हुआ।
अनागत-(सं. वि.) न आया हुआ, न होनेवाला, भावी, अविदित, अप्राप्त, अज्ञात, अपरिचित, अपूर्व, अनादि; (अव्य.) अचानक।
अनागम-(सं. पुं.) आगम का अभाव, अप्राप्ति।
अनागम्य-(सं.वि.) न पहुँचने योग्य, दुर्गम।
अनाचरण, अनाचार-(सं. पुं.) बुरा या असद् आचरण, कुरीति, धर्मनिषिद्ध कार्य या आचरण, बुरी प्रथा।
अनाचारिता-(हिं. स्त्री.) कुचाल, कुरीति।
अनाचारी-(हिं. वि.) कुकर्मी, दुराचारी।
अनाज-(हिं. पुं.) अन्न, धान्य, खाद्यान्न।
अनाज्ञाकारिता-(सं. स्त्री.) अनाज्ञाकारी का भाव या आचरण।
अनाज्ञाकारी-(सं.वि.) आज्ञा न माननेवाला।
अनाड़ी-(हिं. वि.) अज्ञानी, असभ्य, मूर्ख।
अनाढ्य-(सं. वि.) धनहीन, दरिद्र।
अनातप-(सं. पुं.) आतप या गर्मी न होना, शीतलता।
अनातुर-(सं. वि.) जो आतुर न हो, स्वस्थ, आरोग्य।
अनात्म-(सं. वि.) आत्मा से भिन्न, जड़, अचेतन।
अनात्मज्ञ-(सं.वि.) आत्मा को न जाननेवाला, अज्ञान।
अनाथ-(सं. वि.) प्रभुहीन, जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो, अशरण, असहाय, बिना माँ-बाप का, दीन; (पुं.) वह बच्चा जिसके माँ-बाप मर गये हों, यतीम।
अनाथालय, अनाथाश्रम-(सं.पुं.) दीन-दुखियों को रखने का स्थान, पितृहीन बच्चों की रक्षा का स्थान।
अनादर-(सं. पुं.) अपमान, अवज्ञा, तिरस्कार, अप्रतिष्ठा, एक अलंकार

जिसमें किसी प्राप्त वस्तु का अनादर वैसी ही किसी दूसरी वस्तु से किया जाता है।
अनादरणीय–(सं. वि.) अनादर करने योग्य, निंद्य।
अनादरित–(सं.वि.)अपमान किया हुआ।
अनादि–(सं. वि.) जिसका आदि न हो; (पुं.) ब्रह्म, परमेश्वर।
अनादित्व–(सं.पुं.)अनादि होने का भाव, गुण या स्थिति, नित्यता।
अनादिष्ट–(सं. वि.) आज्ञा या आदेश न दिया हुआ।
अनादृत–(सं. वि.) आदर न किया हुआ, तिरस्कृत, अपमानित।
अनादेय–(सं. वि.) ग्रहण न करने योग्य, अग्राह्य।
अनाधार–(सं. वि.) विना आधार का।
अनाना–(हिं. क्रि. स.) मँगाना।
अनापद्–(सं. स्त्री.) आपत्ति का अभाव।
अनापन्न–(सं.वि.)न पाया हुआ, अप्राप्त।
अनाप-शनाप–(हिं. पुं.) निरर्थक वार्ता, बकझक; (अव्य.)ऊटपटांग।
अनापा–(हिं. वि.) विना नापा या तौला हुआ, असीम।
अनाप्त–(सं. वि.) अप्राप्त, न मिला हुआ, अयोग्य, आत्मीय से भिन्न, विना ठौर-ठिकाने का, असत्य; (पुं.) अपरिचित व्यक्ति, अनजान मनुष्य।
अनाप्ति–(सं. स्त्री.) प्राप्ति का अभाव
अनाप्य–(सं. वि.) प्राप्त न करने योग्य।
अनाम–(सं. वि.) विना नाम का, अविख्यात; (पुं.) मलमास।
अनामक–(सं. वि.) अप्रसिद्ध, वेनाम; (पुं.) अधिक मास।
अनामत्व–(सं. पुं.) अप्रसिद्धि।
अनामय–(सं. वि.) स्वस्थ, निरोग, रोगरहित, आरोग्य; (पुं.)शिव, महादेव।
अनामा, अनामिका–(सं. स्त्री.) मध्यमा (विचली) और कनिष्ठिका (कानी) के वीच की अँगुली।
अनामिष–(सं. वि.) निरामिष, मांसरहित, निरर्थक।
अनायक–(सं. वि.) विना नायक या सरदार का, नायकहीन।
अनायत–(सं. वि.) न फैला हुआ, अदूर, समीप का, प्रचलित।
अनायत्त–(सं. वि.) जो वश में न हो, अनधीन।
अनायास–(सं. वि.) विना क्लेश या परिश्रम का; (अव्य.)सरलता से, सहज में।
अनायुध–(सं.वि.) विना अस्त्र-शस्त्र का।
अनारी–(हिं. वि.) अनार के रंग का, लाल रंग का, अनाड़ी; (स्त्री.) मूर्ख, एक प्रकार की मिठाई।
अनारोग्य–(सं.पुं.)आरोग्य का अभाव।
अनार्जव–(सं. वि.) कुटिल, टेढ़ा-मेढ़ा।
अनार्तव–(सं. वि.) जिस स्त्री को मासिक धर्म न होता हो, विना ऋतु का।
अनार्य–(सं.वि.)जो आर्य न हो, अप्रधान, म्लेच्छ, असच्चरित्र, दुष्ट, असाधु।
अनार्यज–(सं. वि) वह जो अनार्य देश में उत्पन्न हो।
अनार्यता–(सं. स्त्री.), **अनार्यत्व**–(सं. पुं.) दुष्टता, नीचता।
अनालंबी–(सं. स्त्री.) शिव की वीणा का नाम।
अनालाप–(सं. वि.) मौन रहनेवाला।
अनालोचित–(सं. वि.) विना आलोचना का, विना देखा हुआ, विना समझा-बूझा।
अनावर्षण–(सं. पुं.) वृष्टि का न होना।
अनावश्यक–(सं.वि.)जिसकी आवश्यकता न हो, बिना प्रयोजन का, आवश्यकतारहित।
अनावश्यकता–(सं. स्त्री.) आवश्यकता या प्रयोजन का अभाव।
अनाविद्ध–(सं. वि.) चोट न खाया हुआ, बिना बेधा हुआ।
अनावृत–(सं.वि.)न ढँपा हुआ,खुला हुआ।
अनावृत्त–(सं. वि.) पीछे न फिरनेवाला, जो दोहराया न गया हो।
अनावृत्ति–(सं.स्त्री.)आवृत्ति का अभाव, मुक्ति,निर्वाण,मोक्ष।
अनावृष्टि–(सं. स्त्री.) वृष्टि का अभाव, सूखा पड़ना, अवर्षण।
अनावेदित–(सं. वि.) प्रकट न किया हुआ, अविज्ञप्त।
अनाश–(सं. वि.) नाशशून्य, आशारहित।
अनाशस्त–(सं. वि.) प्रशंसारहित।
अनाशा–(सं. स्त्री.) निराशा।
अनाशी–(हिं.वि.)नाशहीन,न मिटनेवाला।
अनाशु–(सं. वि.) विलंबी, मंद।
अनाश्रमी–(सं. वि.) गृहस्थाश्रम आदि चारों आश्रमों में से किसी से संबंध न रखनेवाला, आश्रमहीन।
अनाश्रय–(सं. वि.) आश्रयरहित, निरवलंब, निराश्रय, बिना सहारे का, असहाय, दीन।
अनाश्रित–(सं. वि.) आश्रयहीन, निरवलंब, विना सहारे का।
अनासक्त–(सं. वि.) जो आसक्त न हो, आसक्तिरहित।
अनासक्ति–(सं. स्त्री.) आसक्ति का अभाव, निस्पृहा।
अनासाद्य–(सं. वि.) अप्राप्त, न मिला हुआ, प्राप्त न किया हुआ।
अनासिक–(सं. वि.) बिना नाक का, नककटा, नकटा।
अनास्था–(सं. स्त्री.) अपमान, अनादर, भक्तिहीनता, अश्रद्धा, निश्चेष्टता।
अनास्वाद–(सं. पुं.) स्वाद का अभाव, स्वादहीनता।
अनास्वादित–(सं. वि.) स्वाद न लिया हुआ, विना चखा हुआ।
अनाह–(सं. पुं.) मल-मूत्र रुकने से पेट का फूल जाना।
अनाहत–(सं. वि.) चोट न लगा हुआ; (पुं.)हठयोग के अनुसार सुषुम्ना नाड़ी के मध्य में स्थित हृदय का पद्म;–**नाद** –(पुं.) वह शब्द जो दोनों कानों को अँगूठों से बंद करने पर सुनाई देता हैं।
अनाहार–(सं. पुं.) अनशन, उपवास, भोजन का अभाव; (वि.) भोजन न किया हुआ, निराहार।
अनाहारी–(हिं.वि.)उपवास करनेवाला।
अनाहार्य–(सं. वि.) भोजन के अयोग्य, अभोज्य।
अनाहूत–(सं. वि.) विना बुलाया हुआ, निमंत्रण न दिया हुआ।
अनाह्लाद–(सं. वि.) अप्रसन्न, उदास।
अनिकेत–(सं. वि.) गृहहीन, विना घर का; (पुं.) संन्यासी।
अनिग्रह–(सं. वि.) विना निग्रह या रुकावट का, अनियंत्रित।
अनिच्छ–(सं. वि.) इच्छारहित, तृप्त।
अनिच्छा–(सं. स्त्री.) इच्छा का अभाव, अनभिलाषा, अरुचि।
अनिच्छित–(सं. वि.) इच्छा न किया हुआ, अनचाहा।
अनिच्छु, अनिच्छुक–(सं. वि.) इच्छा या चाह न रखनेवाला।
अनित–(हिं. वि.) अनित्य।
अनित्य–(सं. वि.) सदा न रहनेवाला, अदृढ़, अनिश्चित, नश्वर, अनियमित, क्षणभंगुर।
अनित्यता–(सं.स्त्री.),**अनित्यत्व**–(सं.पुं.) चंचलता, अस्थिरता, नश्वरता।
अनिदान–(सं. वि.) कारणशून्य।
अनिद्र–(सं. वि.) निद्रारहित, जिसको नींद न आती हो।
अनिद्रा–(सं. स्त्री.) निद्रा का अभाव, जागरण, नींद न आने का रोग।

अनिद्रित–(सं. वि.) न सोया हुआ, जागृत।
अनिप–(हिं. पुं.) सेनापति, सेनानायक।
अनिपात–(सं. वि., पुं.) निपात या पतन से परे, अपतन।
अनिपुण–(सं.वि.) अविज्ञ, अपटु, मूर्ख।
अनिबद्ध–(सं.वि.) न बँधा हुआ, असंबद्ध।
अनिभृत–(सं. वि.) जो निभृत या छिपा हुआ न हो।
अनिमंत्रित–(सं. वि.) निमंत्रण न दिया हुआ, न्योता न दिया हुआ।
अनिमा–(हिं. स्त्री.) देखें 'अणिमा'।
अनिमित्त–(सं. वि.) अकारण, अहेतुक; (अव्य.) बिना कारण, झूठ-मूठ।
अनिमित्तक–(सं. वि.) बिना कारण का, अहेतुक।
अनिमिष–(सं. पुं.) देवता, मछली, विष्णु; (वि.) आँख न झपकानेवाला, जिसकी पलक न गिरे; (अव्य.) एक टक, पलक न गिराकर।
अनिमेष–(सं. पुं., वि., अव्य.) देखें 'अनिमिष'।
अनियंत्रित–(सं. वि.) अनियत, प्रतिबन्ध-हीन, अनिवारित, उच्छृंखल, मनमाना; **–शासन**–(पुं.) एकतंत्र या निरंकुश शासन।
अनियत–(सं. वि.) अनित्य, अस्थायी, असीम, अनिश्चित।
अनियम–(सं. पुं.) नियम का अभाव, अव्यवस्था, शंका, अनिश्चय, दुराचार।
अनियमित–(सं. वि.) नियमहीन, अव्यवस्थित, अनिश्चित।
अनियारा–(हिं. वि.) धारदार, तीक्ष्ण, तीखी धारवाला।
अनियुक्त–(सं.वि.) जो नियुक्त न हो, किसी काम में न लगाया हुआ।
अनियोग–(सं. पुं.) नियोग या प्रयोग का अभाव।
अनियोगी–(हिं.वि.) संबंध न रखनेवाला।
अनिरुक्त–(सं. वि.) अच्छी तरह न समझाया हुआ, सम्यक् व्याख्यारहित।
अनिरुद्ध–(सं. वि.) जिसका निरोध न हो, न रोका हुआ, अबद्ध, बाधा-रहित; (पुं.) श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम। (इनका विवाह बाणासुर की पुत्री ऊषा से हुआ था।)
अनिरूपित–(सं. वि.) जिसका निरूपण या निर्देशन न हुआ हो।
अनिर्णय–(सं. पुं.) निर्णय का अभाव, अनिश्चय।
अनिर्णीत–(सं. वि.) अनिश्चित।
अनिर्दिश्य, अनिर्देश्य–(सं. वि.) जिसका निर्देश न हुआ हो या न किया जा सके।
अनिर्दिष्ट–(सं. वि.) जो निर्दिष्ट या निरूपित न हो।
अनिर्देश–(सं. पुं.) निर्देश या निरूपण का अभाव।
अनिर्धारित–(सं. वि.) स्थिर न किया हुआ, अनिश्चित।
अनिर्बंध–(सं.वि.) बंधन-रहित, स्वतंत्र।
अनिर्भर–(सं. वि.) जो निर्भर या आश्रित न हो।
अनिर्मल–(सं. वि.) मलिन, मैला।
अनिर्वचनीय–(सं. वि.) जिसका वर्णन न किया जा सके, अगम्य; (पुं.) परमात्मा, ब्रह्मा, माया।
अनिर्वाच्य–(सं. वि.) जिसका वर्णन न हो सके, निर्वाचन न किये जाने योग्य, जो चुना न जा सके।
अनिर्वाण–(सं. वि.) न बुझा हुआ; (पुं.) निर्वाण या मोक्ष का अभाव।
अनिर्वाह–(सं. पुं.) निर्वाह का अभाव, आय की न्यूनता, रोजी नहीं चल सकना।
अनिर्वाह्य–(सं.वि.) निर्वाह न करने योग्य।
अनिर्वृति(त्ति)–(सं. स्त्री.) चिंता, बेचैनी, उद्विग्नता।
अनिल–(सं. पुं.) वायु, हवा।
अनिलकुमार–(सं. पुं.) पवनतनय, हनुमान, भीम।
अनिलसखा–(सं. पुं.) अग्नि।
अनिवारित–(सं. वि.) बिना रोका या हटाया हुआ।
अनिवार्य–(सं.वि.) जो निवार्य या ऐच्छिक न हो, अत्यावश्यक।
अनिवृत, अनिवृत्त–(सं. वि.) अबाधित।
अनिवेदित–(सं.वि.) अवर्णित, अकथित।
अनिश–(सं. वि.) निरंतर, अविरत।
अनिश्चित–(सं. वि.) निश्चय न किया हुआ, अनिर्दिष्ट, अनवधारित।
अनिषिद्ध–(सं. वि.) निषेध-रहित, बिना रोक-टोक का।
अनिष्ट–(सं. पुं.) अहित, अपकार, बुराई, हानि, विषाद, पाप, दुःख, अमंगल; (वि.) अशुद्ध, अशुभ, अधम।
अनिष्टकर–(सं.वि.) बुराई करनेवाला।
अनिष्टसूचक–(सं.वि.) अपकार की सूचना देनेवाला।
अनिष्ट-शंका–(सं. स्त्री.) अनिष्ट या अहित की आशंका।
अनिष्ठुर–(सं. वि.) जो कठोर हृदय का न हो, सरल।
अनिष्पत्ति–(सं.स्त्री.) अपूर्णता, असफलता।
अनिष्पन्न–(सं. वि.) अपूर्ण, असमाप्त।
अनिस्तीर्ण–(सं. वि.) जिससे छुटकारा न मिला हो।
अनी–(हिं. स्त्री.) नोक, अग्रभाग, कोर, सिरा, नाव का अगला भाग, सेना, खेद, ग्लानि; (मुहा.)– **पर कनी चाटना**–अत्यधिक आत्म-ग्लानि के कारण आत्महत्या करना।
अनीक–(सं. पुं.) सेना, दल, युद्ध, कलह, चेष्टा, क्षेत्र, श्रेणी; (हिं. वि.) अनुत्तम, बुरा।
अनीच–(सं. वि.) प्रतिष्ठित, माननीय।
अनीठ–(हिं. वि.) अनिष्ट, अधम, बुरा।
अनीड–(सं.वि.) बिना नीड या घोंसले का।
अनीत–(हिं. स्त्री.) अनीति, अन्याय।
अनीति–(सं. स्त्री.) दुर्नीति, अन्याय, अत्याचार, अंधेर, असभ्यता।
अनीतिज्ञ–(सं. वि.) नीति में अनिपुण।
अनीप्सित–(सं. वि.) अनिच्छित।
अनीश–(सं.पुं.) विष्णु; (वि.) प्रभु-शून्य, असमर्थ, अनाथ, अधिकाररहित, अस्वतंत्र।
अनीशत्व–(सं. पुं.) शक्तिशून्यता।
अनीश्वर–(सं. वि.) प्रभुहीन, बिना स्वामी का, ईश्वर से भिन्न, नास्तिकता।
अनीश्वरता (सं. स्त्री.), **अनीश्वरत्व**–(सं.पुं.) ईश्वर की असत्ता, नास्तिकता।
अनीश्वरवाद–(सं. पुं.) ईश्वर को न मानने का मत, नास्तिकता, मीमांसा।
अनीश्वरवादी–(सं. वि.) ईश्वर को न माननवाला, नास्तिक, मीमांसक।
अनीस–(हिं. पुं.) अनीश, अनाथ, जिसका कोई रक्षक न हो।
अनीह–(सं. वि.) चेष्टाशून्य, इच्छारहित।
अनीहा–(सं. स्त्री.) चेष्टाशून्यता, उद्योगहीनता।
अनु–संस्कृत का एक उपसर्ग जो–पीछे, साथ-साथ, इधर-उधर, सदृश, पास, तथा प्रत्येक–के अर्थ में कुछ शब्दों के पहिले लगाया जाता है।
अनुकंपक–(सं. वि.) दया करनेवाला।
अनुकंपन–(सं. पुं.) दया, कृपा; (वि.) दयालु, हमदर्द।
अनुकंपा–(सं. स्त्री.) दया, कृपा, अनुग्रह, सहानुभूति।
अनुकंपित–(सं. वि.) जिस पर अनुग्रह किया गया हो।
अनुकथन–(सं. पुं.) पीछे कहना, वार्त्तालाप, वर्णन।

अनुकरण–(सं. पुं.) नकल करना।
अनुकरणीय–(सं.वि.) अनुकरण या नकल करने योग्य।
अनुकर्त्ता–(सं. पुं.) अनुकरण करनेवाला, आज्ञा माननेवाला।
अनुकर्ष, अनुकर्षण–(सं. पुं.) पीछे से आकर्षण या खिंचाव।
अनुकार–(सं. पुं.) अनुकरण।
अनुकारी–(सं. वि.) अनुकरण करनेवाला, आज्ञाकारी।
अनुकीर्तन–(सं. पुं.) सुयश का वर्णन, गुणगान।
अनुकूल–(सं. वि.) सहायक, दयालु, पक्षपाती, आश्रय देनेवाला; (पुं.) वह नायक जो एक ही स्त्री पर अनुरक्त रहे, एक अलंकार जिसमें अनिष्ट आचरण से लाभ की सिद्धि (प्राप्ति) दिखाई जावे।
अनुकूलता–(सं. स्त्री.) अविरुद्धता, सहायता, मेल।
अनुकूलना–(हिं. क्रि. अ., स.) सहायक होना, प्रसन्न होना या करना, आत्मीयता दिखलाना।
अनुकृत–(सं. वि.) अनुकरण या नकल किया हुआ।
अनुकृति–(सं. स्त्री.) अनुकरण, नकल।
अनुक्त–(सं.वि.) अकथित, न कहा हुआ।
अनुक्ति–(सं. स्त्री.) विना कही हुई वात, न वोलने का भाव।
अनुक्रम–(सं. पुं.) पिछला क्रम, अनुगत क्रम, क्रमवद्धता।
अनुक्रमण–(सं. पुं) पीछे चलना।
अनुक्रमणिका–(सं. स्त्री.) विषय-सूची, शब्द-सूची।
अनुक्रिया–(सं. स्त्री.) अनुकरण।
अनुक्षण–(सं. अव्य.) प्रतिक्षण, निरंतर, लगातार।
अनुग–(सं.वि.,पुं.) पीछे-पीछे जानेवाला, सेवक, अनुयायी, अनुगामी।
अनुगणित–(सं. वि.) गिनती किया हुआ।
अनुगत–(सं. वि.) आश्रित, अधीन, अनुकूल, अनुगामी।
अनुगति–(सं. स्त्री.) अनुसरण, अनुगमन, पीछे रहने की चाल, मृत्यु।
अनुगम, अनुगमन–(सं. पुं.) पीछे जाना, अनुसरण, विधवा स्त्री का सती होना, सहमरण, अनुगामी।
अनुगामी–(सं. वि.) पीछे चलनेवाला, अनुसरण करनेवाला, सहचर, समान आचरण करनेवाला, आज्ञाकारी।
अनुगीति–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का छंद।
अनुगुण–(सं. वि.) समान गुणवाला, सुयोग्य; (पुं.) स्वाभाविक गुण या विशेषता, एक अलंकार जिसमें किसी द्रव्य का पहिला गुण अन्य द्रव्य के संसर्ग से बढ़ा हुआ दरसाया जाता है।
अनुगुप्त–(सं. वि.) छिपा हुआ, ढका हुआ, अप्रकट।
अनुगृहीत–(सं. वि.) अनुग्रह किया हुआ, कृतज्ञ, जिस पर कृपा दिखलाई गई हो।
अनुग्रह–(सं. पुं.) अनिष्ट-निवारण, दया, कृपा, प्रसाद।
अनुग्राहक–(सं. वि.) दयालु, कृपालु।
अनुग्राही–(हिं. वि.) अनुग्रह करनेवाला।
अनुचर–(सं. पुं.) (स्त्री. अनुचरी) साथ चलनेवाला, सहचर, भृत्य, दास।
अनुचारक–(सं. पुं.) अनुगामी, सेवक।
अनुचारी–(सं.वि.) पीछे जानेवाला, सेवक।
अनुचिंतन–(सं.पुं.), **अनुचिंता**–(सं.स्त्री.) निरंतर चिंता, पीछे या बाद में होनेवाली चिंता।
अनुचित–(सं. वि.) अयुक्त, अकर्तव्य, बुरा।
अनुच्च–(सं. वि.) जो ऊँचा न हो, नीच।
अनुच्छिन्न–(सं. वि.) न कटा हुआ।
अनुच्छिष्ट–(सं. वि.) जो जूठा न हो।
अनुज–(सं. वि.) जो बाद में उत्पन्न हो, छोटा; (पुं.) छोटा भाई।
अनुजन्मा–(सं. पुं.) छोटा भाई।
अनुजा–(सं. स्त्री.) छोटी बहन।
अनुजाता–(सं. स्त्री.) छोटी बहन।
अनुजीवी–(सं. वि.) आश्रित, सेवक।
अनुज्ञा–(सं. स्त्री.) आज्ञा, अनुमति, सम्मति, एक अलंकार जिसमें किसी बुरी वस्तु में गुण देखकर उसे प्राप्त करने की इच्छा दिखलाई जाती है।
अनुज्ञात–(सं. वि.) अनुमति-प्राप्त, स्वीकृत।
अनुज्ञापक–(सं. पुं.) अनुमति देनेवाला।
अनुज्ञापन–(सं. पुं.) आज्ञा, आदेश।
अनुतप्त–(सं. वि.) अनुताप युक्त, खिन्न।
अनुताप–(सं. पुं.) पश्चात्ताप, पछतावा, गर्मी, जलन।
अनुतापी–(सं. वि.) पछतावे में पड़ा हुआ।
अनुत्तम–(सं. वि.) सर्वोत्तम, सबसे अच्छा, जो उत्तम या अच्छा न हो।
अनुत्तर–(सं. वि.) अत्यंत श्रेष्ठ, उत्तर-रहित, चुप, मौन; (पुं.) उत्तर का अभाव।
अनुत्तान–(सं. वि.) अधोमुख, मुँह नीचे किये हुए, औंधे-मुँह।
अनुत्थान–(सं. पुं.) उत्थान का अभाव।
अनुत्पत्ति–(सं. स्त्री.) उत्पत्ति का अभाव, पैदा न होना।
अनुत्पन्न–(सं. वि.) जो उत्पन्न न हुआ हो।
अनुत्पाद, अनुत्पादन–(सं. पुं.) उत्पत्ति या उत्पादन का अभाव।
अनुत्पादक–(सं. वि.) जो उत्पादन न कर सके।
अनुत्साह–(सं. पुं.) उत्साहहीनता, उत्साह का न होना; (वि.) जिसमें उत्साह न हो।
अनुत्सुक–(सं. वि.) उत्कंठारहित।
अनुत्सुकता–(सं. स्त्री.) उत्कंठा का अभाव, धैर्य।
अनुदक–(सं. वि.) जलशून्य, बिना पानी का, जलहीन।
अनुदय–(सं. पुं.) उदय न होना, न देख पड़ना।
अनुदात्त–(सं. वि., पुं.) जो ऊँचा न हो, स्वल्प, नीचा स्वर।
अनुदार–(सं. वि.) जो उदार न हो, अदाता।
अनुदार दल–(सं. पुं.) राजनीति में, वह दल जो सामाजिक परिवर्तनों का विरोधी हो।
अनुदित–(सं पुं.) अरुणोदय वेला, पौ फटने का समय; (वि.) अकथित, निंद्य।
अनुदिन, अनुदिवस–(सं. अव्य.) प्रतिदिन, नित्यप्रति।
अनुदृष्टि–(सं. स्त्री.) अनुकूल दृष्टि, दयादृष्टि।
अनुदेश–(सं. पुं.) बाद का उच्चारण, शिक्षा, उपदेश।
अनुद्धत–(सं.वि.) अप्रगल्भ, शांत, सौम्य।
अनुद्धरण–(सं. पुं.) उद्धरण का अभाव।
अनुद्धार–(सं. पुं.) उद्धार का अभाव, छुटकारा न पाना।
अनुद्धृत–(सं. वि.) उद्धार या उद्धरण न किया हुआ, अप्रमाणित।
अनुद्यत–(सं. वि.) जो उद्यत या तत्पर न हो, उद्यमहीन, आलसी।
अनुद्यम–(हिं. पुं.) उद्यमहीनता।
अनुद्यमी–(हिं. वि.) उद्यम न करनेवाला।
अनुद्योग–(सं. पुं.) उद्योग का अभाव।
अनुद्योगी–(सं. वि.) उद्योग न करनेवाला, उद्यमहीन।
अनुद्वाह–(सं. पुं.) विवाह का न होना, चिर-कौमार्य।
अनुद्विग्न–(सं. वि.) बिना उद्वेग या व्याकुलता का, शांत।
अनुद्वेग–(सं. पुं.) व्यग्रता या घबड़ाहट का अभाव; (वि.) अनुद्विग्न।
अनुधावन–(सं. पुं.) पीछे चलना या दौड़ना, अनुसंधान, खोज, शुद्धि।

अनुधावित–(सं. वि.) पीछे जानेवाला।
अनुध्यान–(सं. पुं.) पीछे किया जानेवाला ध्यान या चिंता।
अनुनय–(सं. पुं.) प्रार्थना, विनय, विनती।
अनुनयी–(सं. वि.) सभ्य, विनीत, शांत।
अनुनाद–(सं. पुं.) प्रतिध्वनि, शब्द की गूँज।
अनुनायिका–(सं. स्त्री.) गौण नायिका।
अनुनासिक–(सं.पुं.,वि.) नाक से बोला जानेवाला (वर्ण, यथा–ञ, म, ङ, ण, न।)
अनुनीत–(सं. वि.) विनय से युक्त, पीछे लिया हुआ।
अनुनीति–(सं. स्त्री.) सभ्यता, नम्रता।
अनुन्नत–(सं. वि.) जो ऊँचा न हो, नीचा।
अनुन्मत्त–(सं. वि.) जो उन्मत्त या पागल न हो, समझदार।
अनुपकार–(सं. पुं.) उपकार का अभाव, भलाई न करना।
अनुपकारी–(सं. वि.) उपकार न करनेवाला, उपकारशून्य।
अनुपगत–(सं. वि.) पास में न पहुँचा हुआ, अप्राप्त।
अनुपज–(हि. पुं.) उपज का न्यून होना या न होना।
अनुपतन–(सं. पुं.) गिराव, भाग, अंश, टुकड़ा।
अनुपतित–(सं. वि.) गिरा हुआ।
अनुपदिष्ट–(सं वि.) उपदेश या शिक्षा न दिया हुआ, अशिक्षित।
अनुपदी–(सं. वि.) अनुसरणकर्त्ता।
अनुपनीत–(सं. वि.) जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो।
अनुपपत्ति–(सं. स्त्री.) असंगति, असिद्धि, अयुक्ति।
अनुपपन्न–(सं. वि.) अप्रमाणित, असंभव।
अनुपभुक्त–(सं. वि.) उपभोग में न लाया हुआ, न भोगा हुआ।
अनुपम–(सं. वि.) उपमाविहीन, अति उत्कृष्ट, बहुत अच्छा।
अनुपमा–(सं.स्त्री.) अपूर्वता, अनोखापन।
अनुपमित–(सं. वि.) उपमा न दिया हुआ, अनोखा।
अनुपमेय–(सं. वि.) उपमा न देने योग्य।
अनुपयुक्त–(सं. वि.) अयोग्य, बेठीक, उपयोग में न लाया हुआ।
अनुपयुक्तता–(सं. स्त्री.) अयोग्यता।
अनुपयोग–(सं. पुं., वि.) उपयोग का न होना, जो किसी काम का न हो।
अनुपयोगिता–(सं. स्त्री.) अयोग्यता, निरर्थकता।
अनुपयोगी–(सं. वि.) उपयोग-रहित, व्यर्थ का, निष्फल।
अनुपलंभ–(सं.पुं.) अज्ञानता, मायावशता।
अनुपलक्षित–(सं. वि.) विशेष रूप से न बतलाया हुआ।
अनुपलब्ध–(सं. वि.) अप्राप्त, अविदित।
अनुपलब्धि–(सं. स्त्री.) उपलब्धि का अभाव, अप्राप्ति।
अनुपवीत–(सं. वि.) जिसका यज्ञोपवीत-संस्कार न हुआ हो।
अनुपस्थान–(सं. पुं.) उपस्थिति का अभाव, अनुपस्थिति।
अनुपस्थित–(सं. वि.) अविद्यमान, जो समीप में न हो, दूरस्थ।
अनुपस्थिति–(सं. स्त्री.) उपस्थिति का अभाव, गैरहाजिरी।
अनुपहत–(सं. वि.) चोट न खाया हुआ, अक्षत।
अनुपात–(सं. पुं.) गणित की दो राशियों में संबंध दिखलाने की क्रिया, त्रैराशिक की वह क्रिया जिससे यह ज्ञात होता है कि एक राशि दूसरी से कितनी गुनी अधिक या कितने भाग कम है।
अनुपातक–(सं. पुं.) बहुत बड़ा पाप।
अनुपातकी–(सं. वि.) बहुत बड़ा पाप करनेवाला।
अनुपाती–(सं. वि.) अनुपात संबंधी।
अनुपान–(सं. पुं.) आयुर्वेद में औषधि के साथ मिलाकर अथवा पीछे से जो वस्तु खाई या पी जाय।
अनुपानीय–(सं. वि.) अनुपान के योग्य।
अनुपुरुष–(सं. पुं.) शिष्य, चेला।
अनुपूर्व–(सं. वि.) ठीक क्रम का, क्रमिक।
अनुप्त–(सं. वि.) जो न बोया गया हो।
अनुप्रपन्न–(सं. वि.) पीछे पड़ा हुआ।
अनुप्रवेश–(सं. पुं.) प्रतिबिंब का पड़ना।
अनुप्रास–(सं. पुं.) एक अलंकार जिसमें किसी वाक्य में एक ही पद अथवा एक ही अक्षर का बारंबार प्रयोग किया जाता है।
अनुबंध–(सं. पुं.) बंधन, संबंध, उपक्रम, लगाव, भेद, आरोप, क्रम।
अनुबंधन–(सं. पुं.) संबंध, लगाव।
अनुबंधी–(सं. वि.) सहचर, अनुरोधी, व्यापक, संबद्ध।
अनुबल–(सं. पुं.) वह सेना जो रक्षा के लिये पीछे की ओर रक्खी जाती है।
अनुबोध, अनुबोधन–(सं. पुं.) पीछे होनेवाला स्मरण।
अनुभव–(सं. पुं.) प्रयोगों से प्राप्त किया हुआ ज्ञान, जानकारी।
अनुभवना–(हि. क्रि. स.) अनुभव करना, समझ लेना।
अनुभव-सिद्ध–(सं. वि.) प्रयोग या परीक्षा से सिद्ध या प्रमाणित।
अनुभवी–(सं. पुं., वि.) अनुभव-प्राप्त, जानकार व्यक्ति।
अनुभाव–(सं. पुं.) सामर्थ्य, प्रभाव, महिमा, संकेत, बड़ाई, ख्याति, निश्चय, अलंकार में स्थायी चार रसों में से एक।
अनुभावक–(सं. वि.) बता देनेवाला।
अनुभावन–(सं. पुं.) संकेत अथवा अनुमान से किसी विषय का बतलाना।
अनुभावी–(सं. वि.) किसी बात का अनुभव रखनेवाला, प्रत्यक्ष ज्ञान रखनेवाला।
अनुभूत–(सं. वि.) अनुभव द्वारा ज्ञात, उपलब्ध, परीक्षा किया हुआ।
अनुभूति–(सं. स्त्री.) अनुभवी होने की दशा, भाव या गुण, संवेदन, बोध।
अनुभोग–(सं. पुं.) बिना कर की भूमि, माफी जमीन।
अनुभ्राता–(सं. पुं.) छोटा भाई।
अनुमत–(सं. वि.) जिसे अनुमति या सम्मति मिली हो, सम्मत, स्वीकृत।
अनुमति–(सं. स्त्री.) सम्मति, आज्ञा, सलाह, स्वीकृति।
अनुमत्त–(सं. वि.) प्रसन्नता से बेसुध, आनन्दोन्मत्त।
अनुमरण–(सं. पुं.) सती का सहमरण।
अनुमाता–(सं. पुं.) अनुमान करनेवाला।
अनुमान–(सं. पुं.) न्याय में प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा अप्रत्यक्ष विषय का निश्चय या विचार, प्रमाण, अटकल, समझ।
अनुमानना–(हि. क्रि.स.) अनुमान करना, अटकल करना।
अनुमित–(सं. वि.) अनुमान द्वारा निश्चय किया हुआ।
अनुमिति–(सं. स्त्री.) अनुमान, अटकल।
अनुमेय–(सं. वि.) अनुमान करने योग्य, अटकल लगाने योग्य।
अनुमोद–(सं. पुं.) किसी की सहानुभूति में होनेवाली प्रसन्नता, समर्थन।
अनुमोदक–(सं.वि.,पुं.) समर्थन करनेवाला, हामी भरनेवाला।
अनुमोदन–(सं. पुं.) प्रसन्नता दिखलाना, स्वीकृति, समर्थन।
अनुमोदित–(सं. वि.) अनुमोदन किया हुआ, स्वीकार करने योग्य।
अनुयायी–(सं. वि., पुं.) पीछे चलनेवाला, अनुचर, अनुकरण करनेवाला, अनुगामी, सेवक।

अनुयोग–(स.पुं.)जोड़ना, प्रश्न, पूछताछ, साधन।
अनुयोगी–(सं. वि.) संयुक्त करनेवाला, जोड़नेवाला।
अनुयोजित–(सं. वि.) प्रश्न पूछा हुआ, जोड़ा हुआ।
अनुरंजक–(सं. वि., पुं.) प्रेम उत्पन्न करनेवाला, संतुष्ट करनेवाला।
अनुरंजन–(सं. पुं.) अनुराग, प्रेम, प्यार।
अनुरंजित–(सं. वि.) प्रीति से आनंदित।
अनुरक्त–(सं. वि.) प्रेमयुक्त, आसक्त।
अनुरक्ति–(सं. स्त्री.) आसक्ति, प्रेम।
अनुरत–(सं. वि.) अनुरक्त।
अनुरति–(सं. स्त्री.) अनुराग, प्रेम।
अनुराग–(सं. पुं.) आसक्ति, प्रेम, प्रीति।
अनुरागना–(हिं.क्रि.अ.,स.)प्रेम दिखलाना।
अनुरागी–(सं.वि.,पुं.)प्रेम दिखलानेवाला, प्रेमी, अनुरागयुक्त।
अनुराध–(हिं. पुं.) विनती, प्रार्थना।
अनुराधना–(हिं. क्रि.स.) प्रार्थना करना, विनती करना।
अनुराधा–(सं. स्त्री.) राशिचक्र के सत्ताईश नक्षत्रों में से सत्रहवाँ नक्षत्र।
अनुरुद्ध–(सं. वि.) अनुरोध किया हुआ, प्रसन्न।
अनुरूप–(सं. वि.) समान रूप का, सदृश, योग्य, मिलता-जुलता।
अनुरूपता–(सं. स्त्री.) सादृश्य, समानता, बराबरी, अनुकूलता।
अनुरोध–(सं. पुं.)बाधा, रुकावट, अभीष्ट-साधना की इच्छा, प्रार्थना, आग्रह।
अनुरोधक,अनुरोधी–(सं.पुं.,वि.)आग्रह या अनुरोध करनेवाला, रोकनेवाला।
अनुलग्न–(सं. वि.) पीछे या साथ में लगा हुआ, संलग्न।
अनुलाप–(सं. पुं.) बारंबार कथन, पुनरुक्ति।
अनुलिप्त–(सं. वि.) अनुरंजित, शरीर में गंध, चंदन इत्यादि पोते हुए।
अनुलेपन–(सं. पुं.) शरीर में सुगंधित द्रव्य पोतना।
अनुलोम–(सं. पुं.) अनुक्रम, ऊँचे से नीचे का क्रम, क्रमानुसार, संगीत में सुरों को क्रम से उतारना, श्रेष्ट वर्ण के पुरुष का नीच वर्णकी स्त्री से विवाह करना।
अनुवंश–(सं. अव्य.) वंश के अनुसार।
अनुवचन–(सं. पुं.) आवृत्ति, दोहराना।
अनुवर्तन–(सं. पुं.) अनुसरण, अनुक्रमण, संबंध, किसी नियम का अनेक स्थानों पर घटना।
अनुवर्ती–(सं. वि.) अनुयायी, पीछे चलनेवाला, आज्ञाकारी।
अनुवसित–(सं. वि.) संलग्न, वस्त्र पहिने हुए, संबद्ध।
अनुवाक्–(सं. पुं.) वेद के अध्याय का एक भाग, ऋग्वेद अथवा यजुर्वेद का संग्रह, ग्रंथ का भाग, पीछे का बोल जो दोहराया जाता है, टेक।
अनुवाचित–(सं. वि.) पूर्वोक्त, पहिले कहा हुआ।
अनुवाद–(सं. पुं.) पुनरुल्लेख, दोहराव, अनुकरण, निंदा, भाषांतर, उल्था, न्याय में किसी निर्दिष्ट वार्ता का दोहराना।
अनुवादक–(सं.वि.,पुं.)अनुवाद या उल्था करनेवाला।
अनुवादित–(सं. वि.)अनुवाद किया हुआ।
अनुवासन–(सं. पुं.) धूप आदि द्वारा सुगन्वित करना।
अनुवासित–(सं.वि.)सुगंधित किया हुआ।
अनुविद्ध–(सं. वि.) बिधा हुआ, विद्ध, संलग्न, जड़ा हुआ।
अनुवृत–(सं. वि.) अनुगत, पीछे रहनेवाला, अनुगामी।
अनुवृत्त–(सं. वि.) सुशील, सच्चरित्र।
अनुवृत्ति–(सं. स्त्री.) पीछे की गति, व्याकरण में किसी पूर्व सूत्र के पद का आगे के सूत्र में नियोग; पेंशन।
अनुवेश–(सं. पुं.) ज्येष्ठ पुत्र का विवाह न करके छोटे का विवाह करना।
अनुशय–(सं. पुं.) पश्चात्ताप, पछतावा, शोक, खेद।
अनुशयान–(सं. वि.) पश्चात्ताप करनेवाला, पश्चातापी।
अनुशयाना–(सं. स्त्री.) वह परकीया नायिका जो अपने प्रियतम के संकेत-स्थान पर न पहुँचने से अत्यंत दुःखी हो।
अनुशयी–(सं.वि.,)पछतावे में पड़ा हुआ।
अनुशासक–(सं. वि.,पुं.)अनुशासन करनेवाला, नियोजक, आज्ञा देनेवाला, शिक्षक, राज्य का प्रबंधकर्ता।
अनुशासन–(सं. पुं.) मानसिक या नैतिक संयम, आदेश, शिक्षा, आज्ञा, व्याख्या, कर्तव्य-विधान।
अनुशासनीय–(सं. वि.)अनुशासन के योग्य।
अनुशासित–(सं. वि.) अनुशासन दिया हुआ, प्रबंध किया हुआ।
अनुशीलन–(सं. पुं.) सतत अभ्यास या अध्ययन, मनन, विचार, चिंतन, सेवा जो बारंबार की जावे।
अनुशीलित–(सं. वि.) बारंबार चिंतित।
अनुशोक–(सं. पुं.) पश्चात्ताप, पछतावा।
अनुशोचक–(सं. पुं.) पछतावा करनेवाला।
अनुशोची–(सं. वि.) अनुशोक करनेवाला, पश्चात्तापी।
अनुषंग–(सं. पुं.) संबंध, लगाव, दया, पहिले वाक्य से आगे के वाक्य में कुछ शब्द जोड़ा जाना।
अनुषंगिक–(सं. वि.) संयुक्त, संलग्न, संबद्ध, प्रासंगिक।
अनुषंगी–(सं. वि.) संबद्ध, अनुषंगिक।
अनुष्टुप्–(सं. पुं.) आठ-आठ अक्षरों के चार पदों का छंद।
अनुष्ठाता–(सं. पुं.) अनुष्ठान करनेवाला।
अनुष्ठान–(सं. पुं.) कार्यारंभ, नियमपूर्वक किसी कार्य को करना, शास्त्रविहित कर्म का आचरण, वांछित फल की आकांक्षा से देवताओं की आराधना।
अनुष्ठापक–(सं. पुं.) अनुष्ठान करनेवाला।
अनुष्ठायी–(सं. पुं.) अनुष्ठान करनेवाला।
अनुष्ठित–(सं. वि.) अनुष्ठान किया हुआ।
अनुष्ण–(सं. वि.)जो गरम न हो, शीतल, ठंडा।
अनुसंधान–(सं. पुं.) अन्वेषण, प्रयत्न, खोज।
अनुसंधानना–(हिं. क्रि.स.) ढूँढ़ना, खोजना, सोचना, समझना, विचार करना।
अनुसंधानी–(हिं. वि.) अनुसंधान करनेवाला, जाँच-पड़ताल करनेवाला।
अनुसंधायी–(सं. वि.) अनुसंधान करनेवाला, अनुसंधानी।
अनुसंधि–(सं. स्त्री.) गुप्त मंत्रणा, कुचक्र, दुरभिसंधि।
अनुसंधेय–(सं. वि.) खोज करनेवाला।
अनुसंबद्ध–(सं.वि.) संलग्न, मिला हुआ।
अनुसंहित–(सं. वि.) अनुसंधान किया हुआ, खोजा हुआ।
अनुसरण–(सं. पुं.) पीछे जाना, अनुकरण, रीति, स्वभाव।
अनुसरना–(हिं. क्रि. स.) पीछे चलना, अनुसरण करना।
अनुसार–(हिं.वि., अव्य.) समान, सदृश, अनुकूल।
अनुसारना–(हिं. क्रि. स.) समान आचरण करना।
अनुसारी–(सं. वि.) पीछे जानेवाला, अनुसरण करनेवाला।
अनुसाल–(हिं पुं.) व्यथा, पीड़ा, वेदना।
अनुसूया–(सं.स्त्री.) वह स्त्री जिसमें ईर्ष्या न हो, शकुंतला की सहेली का नाम।
अनुसृत–(सं. वि.) अनुसरण किया हुआ।
अनुसृति–(सं. स्त्री.) अनुसरण।

अनुसेवी–(सं वि.) अभ्यास करनेवाला, सेवा करनेवाला ।
अनुस्मरण–(सं. पुं.) पुनःस्मरण, बाद में याद आना ।
अनुस्मृति–(सं. स्त्री) अनुस्मरण ।
अनुस्वार–(सं. पुं.) अनुनासिक वर्ण जो दूसरे वर्ण के साथ मिलकर उच्चारित होता है, अक्षर के माथे पर लगनेवाला बिन्दु (ं) ।
अनुहरण–(सं.पुं.) सादृश्य, अनुसार चलना।
अनुहरत–(हिं.वि.) अनुरूप, अनुसार, योग्य।
अनुहरना–(हिं.क्रि.स.) अनुकरण करना, बराबरी करना ।
अनुहरिया–(हिं. वि.) सदृश, तुल्य, बराबर; (स्त्री.) मुखड़ा, आकृति ।
अनुहार–(सं. पुं.) अनुकरण, सादृश्य, समानता; (वि.) सदृश, तुल्य, बराबर, समान ।
अनुहारक–(सं.वि.) अनुकरण करनेवाला।
अनुहारना–(हिं.क्रि.स.) बराबर करना, समान करना, तुल्य करना ।
अनुहारि–(हिं. वि.) सदृश, समान, तुल्य, बराबर, योग्य, अनुकूल ।
अनुहारी–(सं. वि.) अनुकरण करनेवाला, अनुहारक ।
अनूक्त–(सं. वि.) पीछे से कहा हुआ, दोहराया हुआ ।
अनूक्ति–(सं.स्त्री.) पुनःकथन, वेदाध्ययन ।
अनूठा–(हिं. वि.) (स्त्री. अनूठी) अपूर्व, विलक्षण, निराला, अच्छा, छापे में वह अक्षर जो साफ न उतरा हो ।
अनूठापन–(हिं. पुं.) विलक्षणता, अपूर्वता, अच्छापन, सुंदरता, निरालापन ।
अनूढ़–(सं.वि.) बिना व्याहा हुआ, क्वारा।
अनूढ़ा–(सं. स्त्री.) अविवाहिता स्त्री ।
अनूढ़ागमन–(सं. पुं.) अविवाहिता स्त्री से व्यभिचार ।
अनूतर–(हिं. वि.) उत्तरशून्य ।
अनूदित–(सं. वि.) कहा हुआ, भाषांतर या उल्था किया हुआ ।
अनूप–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ पर प्रचुर जल हो, समुद्र, नदी; (हिं. वि.) अनुपम, सुन्दर, उत्तम, अच्छा ।
अनूरु–(सं. पुं.) सूर्य का सारथि अरुण ।
अनूर्ध्व–(सं. वि.) जो ऊँचा न हो, नीचा ।
अनृण–(सं. वि.) ऋणशून्य ।
अनृणता–(सं. स्त्री) ऋण का न होना ।
अनृणी–(सं. वि.) जो ऋणी न हो ।
अनृत–(सं. पुं.) असत्य, मिथ्या, झूठ; (वि.) झूठ, अन्यथा ।
अनृतभाषण–(सं.पुं) झूठ बोलना ।
अनृतवादी–(सं. पुं.) झूठ बोलनेवाला ।
अनृशंस–(सं.वि.) जो क्रूर न हो, दयावान् ।
अनृशंसता–(सं.स्त्री.) कोमलता, दयालुता।
अनेक–(सं. वि.) एक से अधिक, बहुसंख्य, बहुत ।
अनेककृत्–(सं. पुं.) शिव, शंकर ।
अनेकज–(सं. वि.) जो कई बार उत्पन्न हुआ हो ।
अनेकता–(सं.स्त्री.) अधिकता, बहुतायत ।
अनेकत्व–(सं. पुं.) अनेकता, अधिकता ।
अनेकधा–(सं. अव्य.) प्रायः, बहुधा, कई प्रकार से ।
अनेकशः–(सं. अव्य.) अनेक प्रकार से ।
अनेकाकी–(सं. वि.) जो एकाकी या अकेला न हो ।
अनेकाक्षर–(सं. वि.) जिसमें कई अक्षर मिले हों ।
अनेकार्थ–(सं. वि.) एक से अधिक अर्थो-वाला ।
अनेरा–(हिं. वि.) असत्य, झूठ, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, दुष्ट, अन्यायी, क्रूर ।
अनेह–(हिं. पुं.) स्नेह का अभाव, प्रेम का न होना ।
अनैक्य–(सं. पुं.) एकता का न रहना, मतभेद, फूट, मेल न मिलना।
अनैश्वर्य–(सं.पुं.) अनीश्वरत्व, अधीनता।
अनैस–(हिं. वि.) नष्ट, बुरा ।
अनैसना–(हिं.क्रि.अ.) बुरा मानना, रूठना।
अनैसा–(हिं. वि.) अप्रिय, बुरा ।
अनैसे–(हिं. अव्य.) बुरी तरह से ।
अनहा–(हिं. पुं.) उपद्रव, उत्पात, बखड़ा।
अनोकह–(सं. पुं.) वृक्ष, पादप, पेड़ ।
अनोखा–(हिं. वि.) (स्त्री. अनोखी) अपूर्व, विलक्षण, निराला, नया, विचित्र, सुंदर, योग्य ।
अनोखापन–(हिं. पुं.) अपूर्वता, निरालापन, नवीनता, विचित्रता, योग्यता, सुंदरता।
अनौचित्य–(सं. पुं.) उचित न होना, अनुपयुक्तता ।
अनौट–(हिं. पुं.) देखें 'अनवट' ।
अनौद्धत्य–(सं. पुं.) गर्व का न रहना, उद्धत न होना ।
अन्न–(सं. पुं.) अनाज, धान्य, खाद्य पदार्थ, पकाया हुआ भोजन, भात, जल, सूर्य, प्राण, पृथ्वी ।
अन्नकूट–(सं. पुं.) भात की राशि, वैष्णवों का एक उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाता है। उस दिन नाना प्रकार के सुंदर भोजन का नैवेद्य भगवान को अर्पण किया जाता है ।
अन्नकोष्ठ–(सं. पुं.) अन्न रखने का भांड, खत्ती, कोठिला ।
अन्नछन्न–(सं. पुं.) भूखे-कंगालों को भोजन बाँटने का स्थान ।
अन्नज, अन्नजात–(सं.वि.) अन्न से उत्पन्न।
अन्न-जल–(सं. पुं.) दानापानी, जीविका, खानपान; (मुहा.)–छोड़ देना–उपवास या अनशन करना ।
अन्नद–(सं. पुं.) अन्न देनेवाला ।
अन्नदा–(सं. स्त्री.) अन्नपूर्णा देवी ।
अन्नदाता–(सं. वि.) अन्न देनेवाला, प्रतिपालक, स्वामी, परिपोषक, मालिक ।
अन्नदान–(हिं. पुं.) भोजन देना ।
अन्नपति–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
अन्नपाक–(सं.पुं.) उदर में अन्न का पाचन।
अन्न-पानी–(हि. पुं.) देखें 'अन्न-जल' ।
अन्नपूर्णा–(सं. स्त्री.) अन्न की अधिष्ठात्री देवी ।
अन्नप्राशन–(सं. पुं.) दस संस्कारों के अन्तर्गत वह संस्कार जिसमें छठे या आठवें महीने के बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है ।
अन्नभाग–(सं. पुं.) भोजन का अंश ।
अन्नमय–(सं.वि.) खाद्य सामग्री से परिपूर्ण
अन्नमय कोष–(सं.पुं.) स्थूल शरीर जिसका पालन-पोषण अन्न द्वारा होता है ।
अन्नरस–(सं. पुं.) जठरानल में अन्न का परिपाक होने पर इसका दूध के समान रस, जीवन-तत्व ।
अन्नलिप्सा–(सं. स्त्री.) भोजन की इच्छा।
अन्न-वस्त्र–(सं. पुं.) खाना-कपड़ा ।
अन्न-विकार–(सं. पुं.) अन्न का बदला हुआ रूप–रस, रक्त, पित्त, कफ आदि ।
अन्न-संस्कार–(सं. पुं.) भोजन के पदार्थ को पवित्र करना ।
अन्न-सत्र–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ भूखों और कंगालों को भोजन बाँटा जाता है, अन्नक्षेत्र ।
अन्ना–(हिं.स्त्री.) दूध पिलानेवाली धाय, दाई ।
अन्नादान–(सं. पुं.) भोजन करना, खाना।
अन्नार्थी–(सं. वि.) भोजन मांगनेवाला, भिक्षुक ।
अन्नाशन–(सं. पुं) देखें 'अन्न-प्राशन'।
अन्य–(सं.वि.) भिन्न, इतर, दूसरा, अपरापर।
अन्यकृत–(सं. वि.) (काम) जो दूसरे का किया हुआ हो ।
अन्यग, अन्यगामी–(सं. वि.) व्यभिचारी।
अन्यगोत्र–(सं. वि.) दूसरे कुल का ।

अन्यचित्त–(सं. वि.) अन्यमनस्क, जिसका चित्त दूसरी ओर लगा हो।
अन्यजात–(सं. वि.) दूसरे कुल में उत्पन्न।
अन्यतम–(सं.वि.) बहुतसे पदार्थो में से एक।
अन्यतः–(सं. अव्य.) किसी दूसरे से, किसी दूसरे स्थान में।
अन्यत्र–(सं. अव्य.) अन्य स्थान में, कहीं और, दूसरी जगह।
अन्यत्व–(सं. पुं.) परायापन।
अन्यथा–(सं. अव्य.) अन्य प्रकार; (वि.) मिथ्या, असत्य, विपरीत, उल्टा, और का और; (पुं.) विरोध।
अन्यथा-ख्याति–(सं.स्त्री.) भ्रमात्मक ज्ञान।
अन्यथाभूत–(स.वि.) और का और ही हो गया हुआ।
अन्यथासिद्ध–(सं. वि.) जो पदार्थ अन्य प्रकार से सिद्ध हो।
अन्यथासिद्धि–(सं.स्त्री.) अन्य प्रकार से सिद्धि, यथार्थ बात न दिखलाकर किसी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न।
अन्यदेशीय–(सं.वि.) दूसरे देश का, परदेशी।
अन्यधर्म–(सं. पुं.) भिन्न गुण, भिन्न धर्म।
अन्यपर–(सं. वि.) जिसका चित्त दूसरी ओर लगा हो।
अन्यपुरुष–(सं.पुं.) दूसरा मनुष्य, व्याकरण में उत्तम-मध्यम के सिवा पुरुष।
अन्यपूर्वा–(सं. स्त्री.) पति के मरने पर दूसरे से विवाह करनेवाली स्त्री।
अन्यभृत्–(सं.पुं.), **अन्यभृता**–(सं.स्त्री.) जिसका पालन-पोषण दूसरा कोई करे, कोकिल।
अन्यमनस्क–(सं. वि.) अनमना, चंचल-चित्त, उदास, चिंतित।
अन्यराष्ट्रीय–(सं. वि.) दूसरे राष्ट्र का।
अन्यरूप–(सं. पुं.) बदला हुआ भेष।
अन्यवर्णा–(सं. वि.) दूसरे रंग का।
अन्यवादी–(सं. वि.) प्रतिवादी, असत्य बोलनेवाला, झूठा।
अन्यव्रत–(सं. पुं.) यथेच्छाचारी मनुष्य।
अन्यसंभोग-दुःखिता–(सं. स्त्री.) परस्त्री में अपने प्रियतम के संभोग-चिह्न को देखकर दुःखी होनेवाली नायिका।
अन्यसुरति-दुःखिता–(सं. स्त्री.) देखें 'अन्य-संभोग-दुःखिता'।
अन्याधीन–(स. वि.) दूसरे के अधीन, दूसरे पर भरोसा करनेवाला।
अन्यापदेश–(सं. पुं.) अन्योक्ति।
अन्याय–(सं. पुं.) न्याय का अभाव, अनीति, अविचार, न्यायविरुद्ध आचरण, अत्याचार, अंधेर।
अन्यायी–(सं. वि.) अन्याय करनेवाला, दुराचारी।
अन्यारा–(हिं. वि.) जो अलग न हो, निराला, अनोखा।
अन्यार्थ–(सं. वि.) भिन्न अर्थवाला (शब्द, वाक्य आदि)।
अन्याश्रित–(सं. वि.) (स्त्री. अन्याश्रिता) दूसरे पर आश्रित, परजीवी।
अन्यास–(हि. अव्य.) अनायास।
अन्यासक्त–(सं. वि.) दूसरे पर आसक्त, दूसरे के आधार पर ठहरा हुआ।
अन्यून–(सं.वि.) जो कम न हो, पर्याप्त, पूर्ण।
अन्यूनांशिक–(सं. वि.) जो न्यूनाधिक न हो, ठीक-ठीक।
अन्येद्यु–(सं. अव्य.) दूसरे दिन।
अन्योक्ति–(सं. स्त्री.) अन्योपदेश, वह बात जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से दूसरे पर घटाया जावे।
अन्योढा–(सं. स्त्री.) दूसरे की विवाहिता स्त्री।
अन्योत्सुक–(सं.वि.) दूसरे के लिये उत्सुक।
अन्योदर्य–(सं. पुं.) दूसरी माता से उत्पन्न, सौतेला भाई।
अन्योन्य–(सं. वि.) आपस में, परस्पर, एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों के किसी गुण या क्रिया का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जावे।
अन्योन्यकलह–(सं.पुं.) आपस का झगड़ा।
अन्योन्यभद–(सं. पुं.) आपस की शत्रुता।
अन्योन्यवृत्ति–(सं.स्त्री.) एक का दूसरे पर प्रभाव।
अन्योन्याभाव–(सं. पुं.) परस्पर की अनुपस्थिति सम्बन्धी भेद।
अन्योन्याश्रय–(सं. वि.) आपस का आश्रय, संबंध या सहारा; परस्पर की अपेक्षा; न्याय में जब किसी वस्तु के ज्ञान के लिये दूसरी किसी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा होती है।
अन्योन्याश्रित–(सं. वि.) एक दूसरे के सहारे पर, परस्पर आश्रित।
अन्वक्ष–(सं.वि.) अनुगत, पीछे जानेवाला।
अन्वय–(सं. पुं.) वंश, मेल, सम्बन्ध, सन्तान, जाति, संयोग, तारतम्य, अवकाश, पद्य के शब्दों को वाक्य-रचना के नियमानुसार कर्त्ता, कर्म और क्रिया के क्रम में वाक्य में प्रयोग, अनुकूलता।
अन्वयव्यतिरेक–(सं. पुं.) न्याय में वह साधक हेतु जिसके द्वारा साध्य निश्चित होता है।
अन्वयी–(सं.वि.) एक ही वंश का, संबंधी।
अन्ववेक्षा–(सं. स्त्री.) अनुरोध, अपेक्षा।
अन्वादेश–(सं. पुं.) एक कार्य कर लेने पर दूसरा कार्य करने की आज्ञा।
अन्वारूढ़–(सं. वि.) पीछे चढ़नेवाला।
अन्वासीन–(सं. वि.) पीछे बैठा हुआ।
अन्विच्छा–(सं.स्त्री.) बाद की अभिलाषा।
अन्वित–(सं. वि.) अनुगत, सहित, युक्त, मिला हुआ।
अन्वीक्षण–(सं. पुं.) खोज, पर्यालोचना, विचार, ध्यान देकर देखना।
अन्वीक्षा–(सं. स्त्री.) ध्यान से देखना, पर्यालोचना, खोज।
अन्वेक्षक–(सं. वि., पुं.) अनुसंधान करनेवाला, खोजनेवाला।
अन्वेषक–(सं. वि., पुं.) अन्वेषण करनेवाला, खोज करनेवाला।
अन्वेषण–(सं. पुं.) अनुसन्धान, खोज, गवेषणा, तलाश।
अन्वेषणा–(सं. स्त्री.) देखें 'अन्वेषण'।
अन्वेषित–(सं. वि.) अनुसन्धान किया हुआ, खोजा हुआ।
अन्वेषी, अन्वेष्टा–(सं. पुं.) खोजनेवाला, अनुसन्धान करनेवाला।
अन्हवाना–(हिं. क्रि. स.) स्नान कराना, नहलाना।
अन्हाना–(हिं.क्रि.अ.) स्नान करना, नहाना।
अपंकिल–(सं. वि.) जो पंकिल या कीचड़-सा न हो।
अपंग–(हिं. वि.) लूला-लँगड़ा, अंगहीन।
अपंडित–(सं. वि.) मूर्ख, अज्ञान।
अप–(सं. उप.) उपसर्ग जो 'निषेध, अनादर, त्याग, वियोग, बुरा, अधिक तथा विरोध' अर्थ में व्यवहृत होता है; (हिं. सर्व.) 'आप' शब्द का पूर्वपदी रूप; यथा–अपस्वार्थी।
अपकरण–(सं. पुं.) दुराचार, दुर्व्यवहार।
अपकर्त्ता–(हिं. पुं.) बुरा काम करनेवाला, दुःशील, अनिष्टकारी।
अपकर्म–(सं. पुं.) कुकर्म, बुरा काम, पाप।
अपकर्ष–(सं. पुं.) हीनता, घटाव, अपमान, निरादर, नीचे को खींचना, उतार।
अपकर्षक–(सं. वि.) निरादर करनेवाला।
अपकर्षण–(सं. पुं.) देखें 'अपकर्ष'।
अपकलंक–(सं.पुं.) बड़ा कलंक जो मिटाये न मिटे।
अपकाजी–(हि. वि.) अपस्वार्थी।
अपकार–(सं. पुं.) अनिष्ट, अहित, हानि, अनुपकार, निन्दा, अनादर, द्वेष।
अपकारक–(सं. वि.) हानि पहुँचानेवाला, द्वेषी, विरोधी।

अपकारी–(सं. वि.) अनिष्ट करनेवाला, विरोधी ।
अपकारीचार–(हिं. वि.) हानिकारक, विघ्नकर्त्ता ।
अपकीरति–(हिं. स्त्री.), अपकीर्ति –(सं. स्त्री.) अपयश, निन्दा, अयश ।
अपकृत–(सं. वि.) अनिष्ट या विरोध किया हुआ, अपमानित ।
अपकृति–(सं.स्त्री.)अनिष्ट, अपकार,द्वेष ।
अपकृष्ट–(सं. वि.) निकृष्ट, बुरा, हीन, अधम, भ्रष्ट, पतित ।
अपकृष्ट जाति–(स.स्त्री.)नीच जाति ।
अपकृष्टता–(सं. स्त्री.) अधमता ।
अपक्रम–(सं. पुं.) अनियम, व्यतिक्रम, उलट-पलट, अपमान, गड़बड़, क्रम का ठीक न होना ।
अपक्रमण–(सं. पुं.) देखें 'अपक्रम' ।
अपक्रमी–(सं. वि.) अपक्रमवाला ।
अपक्रिया–(सं. स्त्री.) अपकार, बुरा काम, कुकर्म ।
अपक्रोश–(सं. पुं.) भर्त्सना, धमकी ।
अपक्व–(सं. वि.) बिना पका हुआ, कच्चा, असिद्ध, अनभ्यस्त ।
अपक्वता–(सं.स्त्री.)असिद्धता, कच्चापन ।
अपक्ष–(सं.वि.)पक्षहीन,बिना सहायक का ।
अपक्षपात–(सं. पुं.) पक्षपात का अभाव, निरपेक्षता, समदृष्टि ।
अपक्षपाती–(सं. वि.) पक्षपात न करनेवाला, समदर्शी ।
अपक्षिप्त–(सं. वि.) फेंका हुआ, गिराया हुआ ।
अपक्षेपण–(सं. पुं.) अधःपतन, गिराव ।
अपगत–(सं. वि.) गया या बीता हुआ, भागा हुआ, नष्ट, मृत ।
अपगमन–(सं. पुं.) अपसरण, भाग जाना ।
अपग्रह–(सं. पुं.) प्रतिकूल ग्रह (फलित ज्योतिष) ।
अपघात–(सं. पुं.) विश्वासघात, धोखा, अपमृत्यु, हिंसा, हत्या, आत्महत्या ।
अपघातक,अपघाती–(सं. पुं.,वि.)विश्वासघाती, वंचक, आत्महत्या करनेवाला ।
अपच–(सं. पुं.) अजीर्ण ।
अपचय–(सं. पुं.) अपहरण, नाश, हानि, कमी, छीजना ।
अपचरित–(सं.पुं.)बुरा आचरण, दुराचार ।
अपचार–(सं. पुं.) अपकार, दोष, अनादर, बुराई, निन्दा, विनाश, कुपथ्य, अनधिकार-प्रवेश, भ्रम, अनिष्ट ।
अपचारी–(हिं. वि.) दुराचारी, दुर्व्यवहार करनेवाला ।
अपचाल–(हिं.स्त्री.) कुचाल, खोटाई ।
अपचित–(सं. वि.) पूजित, सम्मानित ।
अपचिति–(सं. स्त्री.) पूजा, व्यय, हानि ।
अपची–(सं. स्त्री.)गंडमाला के ऊपर का व्रण या फोड़ा ।
अपच्छाया–(सं. स्त्री.) प्रेत, बुरी छाया ।
अपच्छी–(हिं. पुं.) विरोधी, वैरी, शत्रु ।
अपछरा–(हिं. स्त्री.) अप्सरा ।
अपजय–(सं. स्त्री.)पराजय, हार ।
अपजस–(हिं. पुं.) अपयश, दुर्नाम ।
अपटन–(हिं. पुं.) उबटन ।
अपटु–(सं. वि.) जो कार्यकुशल न हो, आलसी ।
अपटुता–(सं. स्त्री.) अकुशलता ।
अपठमान–(हिं. वि.) जो पढ़ा न जा सके, जो पढ़ने योग्य न हो ।
अपठ–(हिं. वि.) निरक्षर, अपढ़, जो पढ़ा-लिखा न हो ।
अपडर–(हिं. पुं.) भय, शंका ।
अपडरना–(हिं. क्रि. अ.) भयभीत होना, त्रस्त होना, डरना ।
अपड़ाना–(हिं. क्रि.अ.) रार करना,झगड़ना ।
अपड़ाव–(हिं.पुं.) लड़ाई-झगड़ा, कलह ।
अपढ़–(हिं. वि.) अपठ, बिना पढ़ा-लिखा, अशिक्षित ।
अपण्य–(सं.वि.)जो द्रव्य बेचने योग्य न हो।
अपत–(हिं. वि.) बिना पत्तों का, पत्रहीन, अधम, नीच, निर्लज्ज ।
अपतई–(हिं. वि.) निर्लज्ज; (स्त्री.) निर्लज्जता ।
अपताना–(हिं. पुं.)बखेड़ा, प्रपंच, जंजाल ।
अपति–(सं. वि.) पतिविहीन, विधवा, दुराचारी, दुष्ट, पातकी; (हिं. स्त्री.) अपमान, दुर्दशा ।
अपतीर्थ–(सं. पुं.) बुरा तीर्थ ।
अपत्नी–(सं.वि., स्त्री.) बिना पत्नी का ।
अपत्य–(सं. पुं.) बालबच्चे, सन्तान ।
अपत्यशत्रु–(सं. पुं.) केकड़ा, सर्प ।
अपत्र–(सं. वि.) बिना पंख का, बिना पत्ते का ।
अपत्रप–(सं. वि.) निर्लज्ज, लज्जाहीन ।
अपत्रस्त–(सं. वि.) भयभीत, डरा हुआ ।
अपथ–(सं. पुं.) जो मार्ग चलने योग्य न हो, विकट मार्ग, कुमार्ग, कुपथ ।
अपथगामी–(सं. वि.) कुमार्गी, कुपथ पर चलनेवाला ।
अपथ्य–(सं. वि.) अहितकर, स्वास्थ्य का नाश करनेवाला ।
अपद–(सं. वि.) बिना पैर का, रेंगनेवाला जीव, पादशून्य ।
अपदार्थ–(सं. वि.) तुच्छ, निकृष्ट ।
अपदिष्ट–(सं. वि.) प्रयुक्त, कहा हुआ ।
अपदेखा–(हिं. वि.) आत्म-प्रशंसक, स्वार्थी, घमंडी ।
अपदेवता–(सं. पुं.) दानव, राक्षस, बुरा देवता ।
अपदेश–(सं. पुं.) निमित्त, लक्ष्य, बहाना ।
अपदोष–(सं. वि.) निष्कलंक ।
अपद्रव्य–(सं. पुं.) कुत्सित पदार्थ, बुरी वस्तु, मिश्रण ।
अपद्वार–(सं. पुं.) चोर कपाट, खिड़की ।
अपध्वंस–(सं.पुं.)निंद्रा,अपमान,धिक्कार ।
अपध्वंसी–(सं.वि.)नाश करनेवाला, नष्ट होनेवाला, निन्दक, अपमान करनेवाला ।
अपन–(हिं. सर्व.) अपना, हम ।
अपनपौ–(हिं. पुं.) आत्मीयता, आत्मभाव, अपकार,संबंध, ज्ञान, अहंकार, सुध, मर्यादा, गर्व ।
अपनय–(सं. पुं.) बुरी नीति, खंडन, स्थानान्तरण, दूर करना, दूसरे स्थान में ले जाना ।
अपनयन–(सं.वि.) अंधा, नयनहीन; (पुं.) दूरीकरण, एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना ।
अपना–(हिं. सर्व.) निज का, निजी, स्वकीय, आत्मीय; (मुहा.)–करना–अपने अनुकूल बनाना, ले लेना; –सा मुँह लेकर रह जाना–ग्लानि के मारे लज्जित या खिन्न होना; अपनी अपनी पड़ना–प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी चिंता या फिक्र होना;अपनी गाना–अपनी बात कहते रहना; अपनी नींद सोना–इच्छानुसार काम करना; अपनी बात पर आना–अपने विचार या कथन पर अटल या कायम रहना; अपने तक रखना–कोई गुप्त बात और किसी से न कहना; अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना–आत्मश्लाघा करना ।
अपनाना–(हिं. क्रि. स.) अपना बनाना, अपने पक्ष में लाना, अपने अधिकार में करना, अपने अनुकूल करना, अपनी ओर करना ।
अपनापन–(हिं.पुं.)आत्मीयता, अपनायत ।
अपना-पराया, अपना-बेगाना–(हिं. पुं.) स्वजन-परजन, दोस्त और दुश्मन ।
अपनाम–(हिं. पुं.) दुर्नाम, अपयश ।
अपनायत–(सं. स्त्री.) आत्मीयता, स्वकीयता, अपनापन ।
अपनिद्र–(सं. वि.) निद्रा-रहित ।
अपनीत–(सं. वि.) दूर किया हुआ ।

अपने-आप–(हिं.अव्य.)अपनेसे,खुद,स्वतः।
अपभय–(सं. वि.) भयशून्य, निर्भय, निडर; (पुं.) निर्भयता।
अपभीति–(सं. वि.) भयरहित, निर्भय।
अपभ्रंश–(सं. पुं.) बिगाड़, पतन, गिराव, विकृति, बिगड़ा हुआ शब्द; (वि.) बिगड़ा हुआ।
अपभ्रंशित–(सं. वि.) बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट किया हुआ, गिरा हुआ।
अपभ्रष्ट–(सं.वि.)बिगड़ा या गिरा हुआ।
अपमान–(सं. पुं.) अनादर, तिरस्कार, अवज्ञा।
अपमानना–(हिं.क्रि.स.) अपमान करना, तिरस्कार करना,।
अपमानित–(सं. वि.) तिरस्कृत, तिरस्कार किया हुआ।
अपमानी–(हिं. वि.) अपमान करनेवाला, निरादर करनेवाला।
अपमार्ग–(सं.पुं.)कुपथ,कुमार्ग,बुरा रास्ता।
अपमार्गी–(हिं.वि.)कुमार्गी,कुपन्थी, पापी।
अपमृत्यु–(सं. स्त्री.) अस्वाभाविक मृत्यु, कुसमय की मृत्यु।
अपयश–(सं.पुं.)अपकीर्ति,लांछन, बुराई।
अपयान–(सं. पुं.) पलायन।
अपरंच–(सं. अव्य.) फिर भी, तो भी।
अपरंपार–(हिं. वि.) अपार, असीम।
अपर–(सं. वि.) पहिला, अभी, अन्य, दूसरा, पिछला, निकृष्टि।
अपरकाल–(सं.पुं.) पछला समय।
अपरछन–(हिं. वि.) जो ढँपा या छिपा छिन हो, गुप्त।
अपरतंत्र–(हिं. वि.) स्वाधीन, स्वतंत्र।
अपरता–(सं.स्त्री.)परायापन, बेगानापन।
अपरती–(सं. वि.) स्वार्थी।
अपरत्व–(सं. पुं.)पिछलापन,परायापन।
अपर-दक्षिण–(सं. पुं.) नैर्ऋत्य कोण।
अपर दिशा–(सं. स्त्री.) पश्चिम।
अपरपर–(सं.वि.)एक और,दूसरा कोई।
अपरबल–(हिं. वि.) प्रबल, बलवान्।
अपर-रात्र–(सं.पुं.) रात का पिछला भाग।
अपर-लोक–(सं. पुं.) दूसरा लोक, परलोक, स्वर्ग।
अपरवश–(हिं.वि.)दूसरे के वश,पराधीन।
अपरस–(हिं. वि.) अस्पृश्य, जो छूने योग्य न हो; (पुं.) एक चर्मरोग।
अपरस्पर–(सं. वि.)परस्परता के बिना।
अपरांमुख–(सं. वि.) जो कर्तव्य से विमुख न हो।
अपरा–(सं. स्त्री.) पश्चिम दिशा, पदार्थ-विद्या, जराय।

अपराग–(सं. पुं.)विराग, शत्रुता; (वि.) क्लेशरहित।
अपराजित–(सं. वि.) जो पराजित न हो; (पुं.) शिव, विष्णु।
अपराजिता–(सं. स्त्री.) दुर्गा, कोयल, कौवा-ठोंठी का फूल, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
अपराध–(सं. पुं.) जुर्म, पाप, भूल, दोष, दंड पाने योग्य काम करना।
अपराध-भंजन–(सं. पुं.) अपराधों का नाश करनेवाला, शिव।
अपराधी–(हिं.वि.) अपराध करनेवाला, दोषी, पापी।
अपरावर्ती–(हिं.वि.)पीछे न हटनेवाला।
अपराह्न–(सं. पुं.) दिन का शेष भाग, तीसरा पहर।
अपरिकल्पित–(सं.वि.) अज्ञात, बिना देखा-सुना।
अपरिगण्य–(सं.वि.)अगणित,अनगिनती।
अपरिगत–(सं.वि.)अपरिचित, अनजान।
अपरिगृहीत–(सं.वि.)अप्राप्त,त्यागा हुआ।
अपरिग्रह–(सं. पुं.) दान न लेना, अस्वीकार, विराग, स्त्रीरहितत्व, योग के अनुसार पाँचवाँ यम (संयम)।
अपरिचय–(सं. वि.)बिना जान-पहिचान का; (पुं.) परिचय का अभाव।
अपरिचित–(सं.वि.)अज्ञात, बिना जान-पहचान का, अनजान,बिना परिचय का।
अपरिच्छन्न–(सं.वि.)आवरणरहित,नंगा।
अपरिच्छिन्न–(सं. वि.) सीमारहित, असीम, अभेद्य, जिसका टुकड़ा न हो सके, सम्मिलित।
अपरिज्ञान–(सं. पुं.) तत्त्वज्ञानशून्यता।
अपरिणत–(सं.वि.) अपरिपक्व,कच्चा।
अपरिणय–(सं. पुं.) विवाह न होना, कुवाँरापन।
अपरिणाम–(स. पुं.) परिणाम से रहित होने का भाव।
अपरिणामी–(हिं. वि.) परिणामशून्य, व्यर्थ, निष्फल, जिसकी अवस्था में परिवर्तन न हो।
अपरिणीत–(सं.वि.) बिना ब्याहा हुआ, अविवाहित, क्वारा।
अपरितोष–(सं. पुं.) असन्तोष।
अपरिपक्व–(सं. वि.) जो पका न हो, कच्चा, अधूरा, अप्रौढ़।
अपरिमाण–(सं.वि.)अपरिमित,बहुत,अधिक।
अपरिमित–(सं. वि.) अगणित, असीम, अनन्त, असंख्य।

अपरिमेय–(सं. वि.) अगणित, असंख्य, अनगिनत।
अपरिवर्तनीय–(सं. वि.) जो परिवर्तित न हो सके।
अपरिवर्तित–(सं. वि.) जो परिवर्तित न हुआ हो।
अपरिष्कार–(सं. पुं.) मैलापन।
अपरिष्कृत–(सं. वि.) स्वच्छ न किया हुआ, मैला-कुचैला।
अपरिहरणीय–(सं. वि.) अत्याज्य, न छोड़ने योग्य, अनिवारित।
अपरिहार–(सं. पुं.) अनिवारण, दूर करने का उपाय न होना।
अपरिहारित–(सं.वि.)अनिवारित,अवर्जित।
अपरिहार्य–(सं.वि.)अत्याज्य, अवर्जनीय, न छोड़ने योग्य, आदरणीय।
अपरीक्षित–(सं. वि.) परीक्षा या जाँच न किया हुआ।
अपरुष–(सं. वि.) क्रोध-रहित, गर्व-रहित, स्निग्ध।
अपरूप–(सं.पुं.)अद्‌भुत रूपयुक्त, अपुन्दर, कुरूप, बेडौल, भद्दा।
अपरोक्ष–(सं. अव्य.) प्रत्यक्ष।
अपर्ण–(सं.वि.)पत्रहीन, बिना पत्तों का।
अपर्णा–(सं. स्त्री.) पार्वती, दुर्गा।
अपर्याप्त–(सं. वि.) अपूर्ण, असमर्थ, जो पर्याप्त न हो।
अपर्याप्ति–(सं.स्त्री.)अपूर्णता,त्रुटि,कमी।
अपलक्षण–(सं. पुं.) कुलक्षण, बुरा लक्षण, दोष।
अपलाप–(सं. पुं.) मिथ्यावाद, बकवाद।
अपवर्ग–(सं. पुं.) मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, कर्मफल, सफलता, दान, त्याग, पूर्णता।
अपवर्जन–(सं. पुं.) त्यागना, परित्याग।
अपवर्जित–(सं.वि.)त्यागा हुआ,छोड़ा हुआ।
अपवर्तक–(सं. पुं.) गणित में वह संख्या जिससे अन्य दो या अधिक संख्याओं का भाग देने पर शेष कुछ न रहे, गुणनखंड; यथा–४ अंक ८ तथा १२ का अपवर्तक है।
अपवर्तन–(सं.पुं.) संक्षेप,उलट-फर, लाघव।
अपवर्तित–(सं.वि.)पलटा या बदला हुआ।
अपवर्त्य–(सं. वि.) जिस संख्या को दूसरी किसी संख्या से भाग देने पर कुछ शेष न बचे–वह उस संख्या का अपवर्त्य कहलाता है, यथा—१४ संख्या २ का अपवर्त्य है।
अपवश–(हिं.वि.)अपने अधीन, अपने वश का।
अपवाचा–(हिं.स्त्री.) कुभाषा, बुरी बात।
अपवाद–(सं. पुं.) निन्दा, विरोध, अपकीर्ति, मिथ्या वार्ता, विश्वास, आदेश, आज्ञा, व्यापक नियम से विरुद्ध नियम।

अपवादक–(सं. पुं.) निन्दक, प्रतिरोधक।
अपवादित–(सं. वि.) निन्दा या विरोध किया हुआ।
अपवादी–(सं. वि.) अपवाद या निंदा करनेवाला, विरोधी, बुराई करनेवाला।
अपवारण–(सं. पुं.) व्यवधान, रुकावट, अन्तर्धान, हटाने का कार्य।
अपवारित–(सं. वि.) छिपाया हुआ, दूर किया हुआ।
अपवाहक–(सं. वि.) एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जानेवाला।
अपवाहन–(सं. पुं.) एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचाना।
अपवाहित–(सं. वि.) एक स्थान से दूसरे स्थान में लाया हुआ।
अपविघ्न–(सं. वि.) विघ्नशून्य, निर्विघ्न।
अपवित्र–(सं.वि.) अशुद्ध, दूषित, मलिन।
अपवित्रता–(सं.स्त्री.) अशुद्धि, मलिनता।
अपविद्ध–(सं. वि.) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, बेधा हुआ; (पुं.) माता-पिता से त्यागा हुआ बालक, जिसका दूसरा कोई पुत्रवत् पालन-पोषण करे।
अपविद्या–(सं.स्त्री.) बुरी विद्या, अविद्या।
अपविष–(सं. वि.) विष-रहित।
अपव्यय–(सं. पुं.) अपरिमित व्यय, दुष्कर्म में व्यय।
अपव्ययमान–(सं.वि.) दुर्व्यय करनेवाला।
अपव्ययी–(सं. वि.) अनियमित खर्च करनेवाला।
अपव्रत–(सं. वि.) दूषित व्रतवाला।
अपशकुन–(सं. पुं.) बुरा सगुन, कुसगुन।
अपशब्द–(सं. पुं.) अपभ्रंश शब्द, गाली, अर्थहीन शब्द, कुवाच्य, अपान वायु का निकलना, पाद।
अपश्चात्तापी–(सं. वि.) पश्चात्ताप या पछतावा न करनेवाला।
अपश्चिम–(सं. वि.) जो पिछला न हो, अगला।
अपश्री–(सं. वि.) श्री-हीन।
अपसगुन–(हिं. पुं.) अपशकुन, असगुन।
अपसद–(सं. वि.) नीच, अधम, वर्णसंकर।
अपसना–(हिं. क्रि. अ.) भाग जाना, खिसक जाना, चल देना।
अपसर–(सं. पुं.) अपयान, भाग जाना।
अपसरण–(सं. पुं.) भागना, चल देना।
अपसर्ग–(सं. पुं.) त्याग, मनाही, रोक।
अपसर्जन–(स. पुं.) वर्जन, त्याग, मोक्ष।
अपसर्पण–(सं.पुं.) पलायन, खिसक जाना।
अपसर्पित–(सं. वि.) पीछे को खिसका या हटा हुआ।

अपसव्य–(सं. पुं.) देह का दाहिना भाग, दक्षिण, विपरीत, उलटा, दक्षिण की ओर स्थित।
अपसार–(सं. पुं.) अपसरण।
अपसारण–(सं. पुं.) दूर कर देना।
अपसारित–(सं. वि.) दूर किया हुआ, हटाया हुआ।
अपसिद्धांत–(सं. पुं.) गलत या बुरा सिद्धांत।
अपसृत–(सं. वि.) अपसारित।
अपसृति–(सं. स्त्री.) अपसारण।
अपसोस–(हिं. पुं.) दुःख, चिंता।
अपसोसना–(हिं. क्रि. अ.) चिन्ता करना, सोच करना, पछताना।
अपसौन–(हिं. पुं.) अपशकुन, बुरा सगुन।
अपसौना–(हिं.क्रि.अ.) पहुँचना, आ जाना।
अपस्नात–(सं. वि.) मृतक के उद्देश्य में स्नान किया हुआ।
अपस्नान–(सं. पुं.) मृतक-स्नान, मृतक के उद्देश्य में स्नान।
अपस्मार–(सं. पुं.) मिरगी रोग, वह रोग जिसमें मनुष्य मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ता है।
अपस्मृति–(सं. स्त्री.) शीघ्र भूल जाना, भुलक्कड़पन।
अपस्वार्थी–(हिं.वि.) अपना स्वार्थ साधनेवाला।
अपह–(सं.वि.) विनाशक, नाश करनेवाला।
अपहत–(सं. वि.) विनाश किया हुआ, हटाया हुआ, दूर किया हुआ।
अपहति–(सं. स्त्री.) विनाश, नाश।
अपहरण–(सं. पुं.) छीन लेना, छिपा देना, चोरी।
अपहरणीय–(सं. वि.) ले लेने योग्य, छिपाने योग्य।
अपहरना–(हिं. क्रि.स.) चुराना, लूटना।
अपहर्ता–(सं. पुं.) छीननेवाला, ले लेनेवाला, चोर, लुटेरा, छिपानेवाला।
अपहसित–(सं. पुं.) अकारण हँसी।
अपहार–(सं.पुं.) अपहरण, चोरी, छिपाना।
अपहारक–(सं. वि.) अपहरण करनेवाला; (पुं.) चोर, डाकू, लुटेरा।
अपहारित–(हिं. वि.) छीना हुआ, चुराया हुआ।
अपहारी–(सं. वि.) अपहर्ता, चुरानेवाला।
अपहार्य–(सं. वि.) चुराने योग्य, छीनने योग्य।
अपहास–(सं.पुं.) अकारण हास्य, उपहास।
अपहृत–(सं.वि.) चुराया हुआ, छीना हुआ।
अपहृति–(सं. स्त्री.) चोरी की हुई वस्तु।

अपह्नव–(सं. पुं.) जानते हुए किसी बात को छिपाना, बहाना, टाल-मटोल।
अपह्नुति–(सं. स्त्री.) छिपाव, बहाना, व्याज, वह अर्थालंकार जिसमें प्रकृत पदार्थ का निषेध करके उस स्थान में वैसा ही कोई दूसरा पदार्थ स्थापित किया जाता है।
अपह्रास–(सं. पुं.) कमी, टोटा, घाटा।
अपांग–(सं. पुं.) नेत्र का कोना, तिलक, कामदेव; (वि.) अंगहीन।
अपाक–(सं.पुं.) अजीर्णता, अपच; (वि.) कच्चा।
अपाकरण–(सं. पुं.) दूर करना।
अपाकृत–(सं. वि.) दूरीकृत, हटाया हुआ।
अपाच्य–(सं. वि.) जो पाच्य न हो।
अपाटव–(सं. पुं.) पटुता का अभाव, रोग।
अपाठ्य–(सं. वि.) जो पढ़ने योग्य न हो।
अपात्र–(सं.वि.) असमर्थ, अयोग्य, कुपात्र, मूर्ख, श्राद्धादि में भोजन न कराने योग्य।
अपाद–(सं.वि.) पादशून्य, विना पैर का, पंगु।
अपादान–(सं. पुं.) विभाग, अलगाव, व्याकरण में वह कारक जिसमें विभागादि सूचित होता है। इस कारक में पंचमी विभक्ति लगती है।
अपान–(सं.पुं.) शरीर की पाँच वायुओं में से एक, गुदास्थ वायु, अधोवायु; (हिं. पुं.) आत्माभिमान, आत्म-गौरव, घमंड।
अपाप–(सं. वि.) पापहीन, पापरहित; (पुं.) पाप का अभाव, पुण्य।
अपामार्ग–(सं. पुं.) चिचिड़ा, लटजीरा।
अपाय–(सं. पुं.) विश्लेष, अपगमन, नाश, अलगाव, अनरीति; (वि.) असमर्थ, निरुपाय, लँगड़ा।
अपायी–(सं.वि.) अनित्य, अस्थिर, विनाशी।
अपार–(सं. वि.) जिसका पार न हो, असीम, सीमारहित, असंख्य, अतिशय।
अपारग–(सं. वि.) अक्षम, अयोग्य, नालायक।
अपारा–(सं. स्त्री.) दुर्गा, पृथ्वी।
अपार्जित–(सं. वि.) निकाला हुआ, फेंका हुआ।
अपार्थ–(सं. वि.) निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
अपाल–(सं.वि.) रक्षकहीन, विना रक्षक का।
अपाव–(हिं.पुं.) अन्याय, अत्याचार, उपद्रव।
अपावन–(सं.वि.) मलिन, अपवित्र, अशुद्ध।
अपावर्तन–(सं. पुं.) निवारण, निषेध।
अपाश्रय–(सं. वि.) आश्रयहीन।
अपाश्रित–(सं. वि.) विरत, त्यागी।

अपास्त–(सं. वि.) त्यागा हुआ।
अपाहिज–(हिं.वि.) अंगहीन, खंज, आलसी, लूला, लँगड़ा, काम करने के अयोग्य।
अपिंड–(स. वि.) विना पिंड का।
अपि–(सं.अव्य.) भी, ही, अवश्य, निश्चय।
अपिच–(सं. अव्य.) और भी, तो भी, परंच।
अपितु–(सं. अव्य.) किन्तु, और भी।
अपितृ–(सं. वि.) पितृहीन, विना बाप का।
अपिधान–(सं. पुं.) आच्छादन, आवरण।
अपिनद्ध–(सं. वि.) बाँधा हुआ, ढँका हुआ।
अपिबद्ध–(सं. वि.) देखें 'अपिनद्ध'।
अपिहित–(सं. वि.) आवृत, ढँपा हुआ।
अपीड़न–(सं. पुं.), अपीड़ा–(सं. स्त्री.) नम्रता, कृपा।
अपीत–(सं. वि.) जो रंग में पीला न हो।
अपील–(हिं. स्त्री.) ऊँची न्यायालय में मुकदमें पर पुनः विचार के लिए दिया गया प्रार्थना-पत्र।
अपुंस्त्व–(सं. पुं.) क्लीवत्व, नामर्दी।
अपुच्छ–(सं. वि.) विना पूँछ का।
अपुण्य–(सं. पुं.) पाप; (वि.) पुण्यहीन, मैला, बुरा।
अपुत्र, अपुत्रक–(सं. वि.) पुत्रहीन, विना बेटे का, निःसन्तान।
अपुत्रता–(सं. स्त्री.) पुत्रहीनता, पुत्र न रहने की स्थिति।
अपुत्रा, अपुत्रिका–(सं.स्त्री.) पुत्रहीन स्त्री।
अपुनपौ–(हिं.पुं.) आत्मीयता, मेल-जोल।
अपुनर्भव–(सं. वि.) पुनर्जन्मरहित, मुक्त।
अपुनीत–(सं. वि.) अपवित्र, दोषयुक्त, अशुद्ध, दूषित।
अपुरातन, अपुराण–(सं. वि.) जो पुराना न हो, नवीन।
अपुरुष–(सं. वि.) नपुंसक।
अपुरोदंत–(सं. वि.) विना दाँत का, पोपला।
अपुष्ट–(सं. वि.) दुर्बल, दुबला, पतला, अपक्व।
अपुष्टता–(सं. स्त्री.) पुष्ट न रहने की स्थिति, दुबलापन।
अपुष्प–(सं. वि.) विना फूल का; (पुं.) वह वृक्ष जिसमें फूल न होकर फल लगे।
अपूजक–(सं. वि.) पूजा न करनेवाला, अनादरकर्ता।
अपूजा–(सं. स्त्री.) अनादर, असम्मान।
अपूजित–(सं. वि.) पूजा न किया हुआ।
अपूज्य–(सं. वि.) जो पूजन के अयोग्य हो।
अपूठा–(हिं. वि.) अपुष्ट, कच्चा, अपरिपक्व, अनभिज्ञ, जो जानकार न हो, अस्फुट, जो खिला न हो।

अपूत–(सं.वि.) अपवित्र, अशुद्ध; (हिं.वि.) पुत्रहीन, विना सन्तति का; (हिं. पुं.) अयोग्य पुत्र, कपूत।
अपूप–(सं. पुं.) गेहूँ या चावल के आटे की लिट्टी।
अपूर–(हिं. वि.) पूर्ण, भरा हुआ, भरपूर।
अपूरना–(हिं.क्रि.स.) भरना, हवा भरना, शंख आदि बाजा बजाना।
अपूरब–(हिं. वि.) अपूर्व, विलक्षण।
अपूरा–(हिं. वि.) अपूर।
अपूर्ण–(सं. वि.) जो पूर्ण न हो, असमाप्त, अधूरा, न्यून, कम; (पुं.) जो अंक अधूरा हो।
अपूर्णकाल–(सं.वि.) जो उचित समय में समाप्त न हो, अधूरा।
अपूर्णता–(सं. स्त्री.) न्यूनता, अधूरापन, कमी।
अपूर्ण भूत–(सं. पुं.) व्याकरण में क्रिया का वह भूतकाल जिसमें क्रिया की समाप्ति नहीं दिखलाई जाती है; यथा– वह पढ़ता था।
अपूर्व–(सं. वि.) अनुपम, अनोखा, विचित्र, निराला, नूतन, नया, उत्तम, श्रेष्ठ, अज्ञात, विना हेतु का।
अपूर्वता–(सं.स्त्री.) विलक्षणता, अनोखापन, निरालापन।
अपूर्वत्व–(सं. पुं) देखें 'अपूर्वता'।
अपूर्वरूप–(सं. पुं.) अनोखा रूप, वह अलंकार जिसमें पूर्व गुण का मिलना असम्भव हो।
अपूर्वविधि–(सं. स्त्री.) निराला ढंग।
अपृथक्–(सं. अव्य.) जो अलग न रहे, मिला हुआ।
अपृष्ट–(सं. वि.) विना पूछा हुआ।
अपेक्षणीय–(सं. वि.) अनुरोध करने योग्य, जिसकी अपेक्षा करनी पड़े।
अपेक्षा–(सं.स्त्री.) आकांक्षा, इच्छा, मिलान, किसी पद का दूसरे पद से अन्वय, चाह, लालच, आशा, अनुरोध, भरोसा, तुलना।
अपेक्षित–(सं.वि.) आकांक्षायुक्त, इच्छित, चाहा हुआ, आवश्यक।
अपेक्षिता–(सं. स्त्री.) आकांक्षा, चाह।
अपेक्षी–(सं. वि.) आकांक्षी, अपेक्षा करनेवाला, राह देखनेवाला।
अपेच्छा–(हिं. स्त्री.) अपेक्षा, आकांक्षा।
अपेय–(सं. वि.) पीने के अयोग्य, जिसका पीना शास्त्र के अनुसार निषिद्ध हो।
अपेंठ–(हिं. वि.) पहुँच के बाहर, जहाँ पहुँच न हो।
अपैतृक–(सं. वि.) जो पिता से न मिला हो।

अपैशुन–(सं. पुं.) पिशुनता का अभाव, भलमनसी, सचाई; (वि.) भला, सच्चा।
अपोगंड–(सं.वि.) विकलांग, सोलह वर्ष से कम वय का, बच्चा, कोमल, डरपोक।
अपोमय–(सं. वि.) जलपूर्ण, जल से भरा हुआ।
अपोह–(सं. पुं.) त्याग, छुटकारा।
अपोहनीय–(सं. वि.) जो त्याज्य हो।
अपोहित–(सं. वि.) हटाया या त्यागा हुआ।
अपौरुष, अपौरुषेय–(सं. वि.) विक्रमशून्य, नामर्द।
अप्रकट, अप्रकटित–(सं.वि.) अप्रकाशित, गुप्त।
अप्रकरण–(सं. पुं.) अप्रधान विषय।
अप्रकर्ष–(सं. पुं.) प्रकर्ष का अभाव, श्रेष्ठता न होना।
अप्रकांड–(सं. वि.) शाखाशून्य, विना डाल का।
अप्रकाश–(सं. पुं.) प्रकाश का अभाव, छिपाव।
अप्रकाशक–(सं. वि.) प्रकाशित न करनेवाला, धुंधला करनेवाला।
अप्रकाशमान–(सं. वि.) जो प्रकट न हुआ हो, गुप्त, छिपा हुआ।
अप्रकाशित–(सं. वि.) जो छपकर प्रचलित न हुआ हो।
अप्रकाश्य–(सं. वि.) प्रकाश न करने योग्य, गोपनीय।
अप्रकृत–(सं.वि.) अस्वाभाविक, अयथार्थ, कृत्रिम, झूठा, बनावटी।
अप्रकृति–(सं. स्त्री.) स्वभावहीनता।
अप्रखर–(सं. वि.) अतीक्ष्ण, मृदु, कोमल।
अप्रगल्भ–(सं.वि.) जो ढीठ न हो, सहनशील, सभ्य।
अप्रगाध–(सं.वि.) अति गंभीर, बहुत गहरा।
अप्रचलित–(सं. वि.) जो प्रचलित न हो, जो व्यवहार में न आवे, अप्रयुक्त।
अप्रचुर–(सं. वि.) थोड़ा, न्यून, कम।
अप्रच्छन्न–(सं. वि.) न छिपा हुआ, स्पष्ट।
अप्रज–(सं. वि.) निस्सन्तान।
अप्रजा–(सं. स्त्री.) बन्ध्या, बाँझ स्त्री।
अप्रणीत–(सं. वि.) असम्पन्न, बेकाम।
अप्रतिकार–(सं. पुं.) प्रतिकार का अभाव, बदला न मिलना, रोक न होना।
अप्रतिकारी–(सं. वि.) बदला न लेनेवाला।
अप्रतिक्रिया–(सं. स्त्री.) उपशमन न होना, न दबाया जाना।
अप्रतिघात–(सं. पुं.) प्रतिघात का न होना।
अप्रतिद्वंद्व–(सं. वि.) विना प्रतिद्वंद्वी का।
अप्रतिपत्ति–(सं. स्त्री.) गौरव का न

रहना, बोध का अभाव, अस्वीकार।
अप्रतिपन्न-(स. वि.) अस्वीकृत, अज्ञात, अप्राप्त।
अप्रतिबंध-(स. वि.) बिना प्रतिबंध का।
अप्रतिबंधन-(सं. पुं.) रोक का न रहना।
अप्रतिभ-(सं. वि.) प्रतिभारहित, मूक, उत्तररहित।
अप्रतिभा-(सं. स्त्री.) प्रतिभा का अभाव।
अप्रतिम-(सं. वि.) अनुपम, अद्वितीय, असदृश, अनोखा।
अप्रतिमान-(सं. वि.) अनुपम, बेजोड़।
अप्रतियोगी-(सं. वि.) अनुपम, अनोखा, जिसका कोई शत्रु न हो।
अप्रतिरूप-(सं. वि.) जिसकी आकृति का कोई और न मिले।
अप्रतिवीर्य-(सं. वि.) अत्यन्त पराक्रमी।
अप्रतिषिद्ध-(सं.वि.) जिसका निषेध न हो।
अप्रतिषेध-(सं. पुं.) प्रतिषेध या निषेध का अभाव।
अप्रतिष्ठ-(सं. वि.) निष्फल, गौरवहीन।
अप्रतिष्ठा-(सं. स्त्री.) अपकीर्ति, अनादर, अपमान, अपयश।
अप्रतिष्ठित-(सं. वि.) अपमानित, अपयशी।
अप्रतिहत-(सं. वि.) न रोका हुआ, आशा रखनेवाला।
अप्रतीक-(सं.वि.,पुं.) प्रतीक के बिना, ब्रह्म।
अप्रतीकार-(सं. वि.) दमन न करने योग्य; (पुं.) विरोध का अभाव।
अप्रतीघात-(सं. पुं.) प्रतिघात का अभाव।
अप्रतीति-(सं. स्त्री.) अविश्वास, ज्ञान न होना।
अप्रतीप-(सं. वि.) अनुकूल।
अप्रत्यक्ष-(सं.वि.,अव्य.) इन्द्रिय-ज्ञान से परे, अदृश्य, छिपा हुआ, अज्ञात, परोक्ष, गुप्त, अगोचर।
अप्रत्यक्षता-(स.स्त्री.) अज्ञानता, अदृश्यता।
अप्रत्यय-(सं. पुं.) अविश्वास, अश्रद्धा।
अप्रधान-(सं. वि.) गौण, सामान्य।
अप्रधानता-(सं. स्त्री.) अधीनता, नीचता।
अप्रपन्न-(सं. वि.) अज्ञात, न जाना हुआ।
अप्रबल-(सं. वि.) शक्तिहीन, बिना पराक्रम का।
अप्रभ-(सं. वि.) प्रभाशून्य, मन्द।
अप्रभु-(सं. वि.) असमर्थ, अयोग्य।
अप्रभुत्व-(सं. पुं.) असामर्थ्य।
अप्रमत्त-(सं. वि.) सावधान, जो प्रमत्त या उन्मत्त न हो।
अप्रमा-(सं. स्त्री.) भ्रममूलक ज्ञान।
अप्रमाण-(सं. पुं.) बिना प्रमाण का तथा असम्भव कथन; (वि.) अपार, असीम।
अप्रमाणिक-(सं. वि.) प्रमाणरहित।
अप्रमाद-(सं. पुं.) प्रमाद का अभाव; (वि.) भ्रमरहित, जो मतवाला न हो।
अप्रमादी-(सं. वि.) सचेत।
अप्रमित-(सं. वि.) अपरिमित, जिसकी नाप न हो सके, अप्रमाण, अज्ञात।
अप्रमेय-(सं. वि.) जो न जाना जा सके, जो नापा न जा सके, अपार, अनन्त, प्रमाण द्वारा सिद्ध न होने योग्य।
अप्रयत्न-(सं. पुं.) यत्न का न होना; (वि.) यत्नरहित।
अप्रयास-(सं.पुं.) प्रयास का अभाव, आराम।
अप्रयुक्त-(सं. वि.) व्यवहार में न लाया हुआ, अनियुक्त।
अप्रयुक्तता-(सं. स्त्री.) अलंकार में शब्दादि का जैसा प्रयोग प्रसिद्ध है, उसके विपरीत व्यवहार करने से यह दोष कहा जाता है।
अप्रयोग-(सं.पुं.) प्रयोग का अभाव, अलगाव।
अप्रयोजक-(सं. वि.) प्रयोग करने में अयोग्य।
अप्रलंब-(सं. पुं., वि.) शीघ्रता, जल्दी, देर न करनेवाला।
अप्रवर्तक-(सं. वि.) काम में उत्साह न दिखलानेवाला, काम में न लगानेवाला, निष्क्रिय।
अप्रवीण-(सं.वि.) अज्ञान, मूर्ख, अनाड़ी।
अप्रवृद्ध-(सं.वि.) अधिक न बढ़ा हुआ।
अप्रवृत्त-(सं.वि.) काम में न लगा हुआ।
अप्रवृत्ति-(सं. स्त्री.) प्रवृत्ति का अभाव, काम में उदासीनता, अनुत्साह।
अप्रशंसनीय-(सं.वि.) प्रशंसा न पाने योग्य।
अप्रशस्त-(सं. वि.) अश्रेष्ठ।
अप्रसंग-(सं.पुं.) अलगाव; (वि.) असंबद्ध।
अप्रसन्न-(सं.वि.) असन्तुष्ट, खिन्न, दुःखी, उदास।
अप्रसन्नता-(सं. स्त्री.) असन्तोष, उदासी, खिन्नता, क्रोध।
अप्रसव-(सं. वि. स्त्री.) बच्चा न देनेवाली; (पुं.) प्रसव का अभाव।
अप्रसह्य-(सं.वि.) सहन न करने योग्य।
अप्रसाद-(सं.पुं.) कृपा का अभाव, अकृपा।
अप्रसिद्ध-(सं.वि.) अविख्यात, जो प्रसिद्ध न हो, अज्ञात, गुप्त, छिपा हुआ, अद्भुत।
अप्रसूत-(सं. वि.) (स्त्री. अप्रसूता) निःसन्तान, बाँझ, अनुत्पन्न।
अप्रस्तुत-(सं. वि.) अनिष्पन्न, अनुपस्थित, प्रकरण से अप्राप्त, अप्रशंसित।
अप्रस्तुत प्रशंसा-(सं.स्त्री.) वह अलंकार जिसमें प्रस्तुत विषय के अतिरिक्त अन्य विषय के वर्णन से प्रस्तुत विषय का बोध कराया जाता है।
अप्रहत-(सं. वि.) जिस पर मार न पड़ी हो, जो मारा न गया हो।
अप्राकृत-(सं. वि.) असामान्य, अस्वाभाविक, असाधारण, विशेष।
अप्राचीन-(सं.वि.) जो पुराना न हो, नया, नवीन।
अप्राज्ञ-(सं. वि.) अशिक्षित, जो पढ़ा-लिखा न हो।
अप्राज्ञता-(सं. स्त्री.) शिक्षा का अभाव।
अप्राण-(सं. वि.) प्राणहीन, मृत।
अप्राणी-(सं. वि.) जिसमें प्राण न हो, निर्जीव।
अप्राधान्य-(सं. पुं.) गौणता, अधीनता, नीचता।
अप्राप्त-(सं. वि.) जो न पाया गया हो, अनुपस्थित, अलब्ध, परोक्ष, अप्रत्यक्ष, अप्रस्तुत, अनागत।
अप्राप्तकाल-(सं.वि.) ऋतुहीन, कुसमय का।
अप्राप्तयौवन-(सं.वि.) अतरुण।
अप्राप्ति-(सं. स्त्री.) न मिलना, अनुपपत्ति, अलाभ।
अप्राप्य-(सं. वि.) न प्राप्त होने योग्य, दुष्प्राप्य, अलभ्य।
अप्रामाणिक-(सं. वि.) प्रमाणरहित, जो प्रमाण से सिद्ध न हो, मिथ्या, विश्वास न करने योग्य।
अप्रामाण्य-(सं. पुं.) प्रमाणशून्यता।
अप्रासंगिक-(सं. वि.) प्रसंगरहित, बिना क्रम का।
अप्रिय-(सं. वि.) अनभीष्ट, अप्रीतिकर, अरुचिकर, अच्छा न लगनेवाला, मैत्री न रखनेवाला; (पुं.) शत्रु।
अप्रियकर-(सं. वि.) कृपा न दिखलानेवाला, अमित्र।
अप्रियभागी-(सं.वि.) हतभाग्य।
अप्रियवादी-(सं.वि.) असभ्यता से बोलनेवाला, अनभीष्ट कहनेवाला।
अप्रीति-(सं. स्त्री.) प्रीति का अभाव।
अप्रीतिकर-(सं.वि.) असन्तुष्ट, विरुद्ध, असन्तोष दिखलानेवाला।
अप्रेंटिस-(अं. पुं.) व्यावसायिक काम सीखने के लिए उम्मेदवार।
अप्रेत-(सं. वि.) न भेजा हुआ।
अप्रैल-(अं. पुं.) अँगरेजी वर्ष का चौथा महीना (फाल्गुन-चैत्र)।
अप्रौढ़-(सं. वि.) गर्वरहित, बिना अभिमान का, कातर, डरपोक।

अप्रौढ़ा–(सं. स्त्री.) थोड़े वय की लड़की जिसका विवाह हो गया हो।
अप्लव–(सं. वि.) जो तैरता न हो।
अप्सरा–(सं. स्त्री.) स्वर्ग की देवांगना, परी, विद्याधरी, अलौकिक सुन्दरता की स्त्री, वाष्पकण, जलविन्दु।
अफरना–(हिं. क्रि. अ.) खूब पेट भर कर खाना, अघाना।
अफरा–(हिं.पुं.) पेट फूलने का रोग, फुलाव।
अफराना–(हिं. क्रि. अ., स.) पेट भरकर खाना या खिलाना, भोजन से तृप्त करना।
अफरीदी–(अ.पुं.) भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर बसनेवाली एक पठान जाति।
अफल–(सं. वि.) फलशून्य, निष्फल, व्यर्थ, शक्तिहीन, बाँझ।
अफलता–(सं. स्त्री.) निष्फलता, फल न प्राप्त करने की अवस्था।
अफला–(सं.स्त्री.) घृतकुमारी, घीकुआर।
अफलातून–(फा. पुं.) प्राचीन यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक और ज्ञानी, प्लैटो।
अफलित–(सं. वि.) न फला हुआ, प्रयोजनरहित।
अफवाह–(अ. स्त्री.) जन-श्रुति, उड़ती खबर, गप्प।
अफसर–(अं.पुं.) प्रशासनिक अधिकारी, हाकिम।
अफसरी–(हिं. वि.) अफसर जैसा, अफसर का; (स्त्री.) अफसर का पद।
अफसोस–(फा. पुं.) दुःख, खेद, शोक।
अफीडेविट–(अं. पुं.) हलफी बयान, हलफनामा।
अफीम–(हिं. स्त्री.) पोस्ते के ढोंढ़ से निकली हुई गोंद, अहिफेन।
अफीमची–(हिं. वि.) अफीम खानेवाला।
अफीमी–(हिं. वि.) देखें 'अफीमची'।
अफुल्ल–(सं. वि.) अमुकुलित, जो फूला हुआ न हो।
अफेन–(सं. वि.) विना फेन या झाग का; (पुं.) अहिफेन, अफीम।
अबंध–(सं. वि.) देखें 'अबंधन'।
अबंधन–(सं.वि.) बंधन-रहित, स्वच्छन्द।
अबंधु, अबांधव–(सं.वि.) मित्रहीन, अकेला।
अब–(हिं. अव्य.) इस समय, अभी, इस घड़ी; (मुहा.)–की–इस बार; –जाकर–इतनी देर बाद; –तब करना–आज-कल करना, टालना; –तब होना–मरणासन्न होना।
अबटन–(हिं. पुं) देखें 'उबटन'।
अबद्ध–(सं. वि.) न बँधा हुआ, स्वाधीन, मुक्त, स्वच्छन्द, जो किसी के अधीन न हो।
अबध–(सं. पुं.) बध या हिंसा का अभाव; (वि.) जो रोका न जा सके, अचूक।
अबधू–(हिं. वि.) अज्ञान, अबोध; (पुं.) सन्त, संन्यासी, वैरागी।
अबध्य–(सं. वि.) वध न करने योग्य, अनर्थक, बिना अर्थ का।
अबर, अब्बर–(हिं. वि.) अबल।
अबरक–(हिं. पुं.) एक धातु जिसमें तहें होती हैं, इसके चार भेद है–पिनाक, दर्दुर, नाग, वज्र; एक प्रकार का चिकना पत्थर।
अबरकी–(हिं.वि.) अबरक का बना हुआ।
अबरख–(हिं. पुं.) देखें 'अबरक'।
अबरन–(हिं. वि.) अवर्ण्य, न वर्णन करने योग्य।
अबरी–(फा. वि.) बादल जैसी धारियोंवाला, रंगदार; (स्त्री.) जिल्दसाजी में काम आनेवाला मजबूत चिकना कागज, मार्बल पेपर।
अबल–(सं. वि.) दुर्बल, कमजोर।
अबलक, अबलख–(हिं. वि, पुं.) सफेद काला या सफेद लाल रंग का, दुरंगा, कबरा, इस रंग का घोड़ा या बैल।
अबला–(सं. स्त्री.) स्त्री।
अबलाबल–(सं. पुं.) महादेव, शंकर।
अबल्य–(सं. पुं.) दुर्बलता।
अबहु–(सं. वि.) जो अधिक न हो, थोड़ा।
अबाती–(हिं. वि.) वायुरहित, जिसको हवा न हिलाती हो।
अबाद–(हिं.वि.) निर्विवाद, आबाद, बसा हुआ।
अबादान–(हिं. वि.) आबाद, बसा हुआ।
अबादानी–(हिं. स्त्री.) बस्ती, भलाई, शुभचिन्तन, आनन्द, चहल-पहल।
अबाध–(सं. वि.) अनिवारित, निर्विघ्न, बाधारहित, अपार, अनियन्त्रित, असीम, निरंकुश।
अबाधक–(सं. वि.) जो बाधक न हो।
अबाधा–(सं.स्त्री.) रेखागणित में त्रिकोण के आधार का अंश; (हिं.वि.) बाधारहित।
अबाध्य–(सं. वि.) जो अधीन न हो, जो रोका न जा सके।
अबान–(हिं. वि.) शस्त्ररहित।
अबाबील–(फा. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
अबार–(हिं. स्त्री.) विलम्ब, देर।
अबाह्य–(सं. वि.) जो बाहर का न हो, अन्तरंग।
अबिद्ध–(हिं. वि.) अविद्ध, न छिदा हुआ।
अबिरल–(हिं. वि.) देखें 'अविरल'।
अबुझ–(हिं. वि.) देखें 'अबूझ'।
अबुद्धि–(सं. स्त्री.) ज्ञान का अभाव; (वि.) बुद्धिहीन, नासमझ।
अबुद्धिपूर्वक–(सं. अव्य) मूर्खता से।
अबुध–(सं. पुं.) मूर्ख, गँवार।
अबूझ–(हिं. वि.) अबोध।
अबे–(हिं. अव्य.) ओ, अरे, क्यों रे–यह अव्यय अपने से छोटे को सम्बोधन करने में प्रयुक्त होता है; (मुहा.)–तबे बोलना–तिरस्कारसूचक वाक्य बोलना।
अबेध–(हिं.वि.) अविद्ध, न छेदा हुआ।
अबेर–(हिं. स्त्री.) विलम्ब, देर।
अबेश–(हिं. वि.) अधिक, बहुत।
अबोध–(सं.वि.) अज्ञान, मूर्ख; (पुं.) मूर्खता।
अबोधगम्य–(सं. वि.) बोध या तर्क से परे, अचिंतनीय।
अबोल–(हिं.वि.) न बोलनेवाला, मौन, अवाक्, चुप, जिसके विषय में कुछ कहा न जाय; (पुं.) बुरी बात, कुबोल, खराब बोली।
अबोला–(हिं.पुं.) दुःख के कारण मौन रहना।
अब्ज–(सं. पुं.) जल में उत्पन्न वस्तु, पद्म, कमल, शंख, कपूर, चन्द्रमा, धन्वन्तरि, सौ करोड़ की संख्या; –बांधव–(पुं.) सूर्य; –योनि–(पुं.) ब्रह्मा; –वाहन–(पुं.) शिव; –हस्त–(पुं.) सूर्य।
अब्जा–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी।
अब्द–(सं. पुं.) मेघ, बादल, आकाश, साल, वर्ष; –वाहन–(पुं.) शिव, इंद्र; –शत–(पुं.) सौ वर्ष का काल; –सहस्र–(पुं.) हजार वर्ष का समय; –सार–(पुं.) कपूर।
अब्धि–(सं. पुं.) सरोवर, तालाब, समुद्र, सागर, चार या सात की संख्या।
अब्धिज–(सं. वि.) समुद्र में उत्पन्न; (पुं.) चन्द्रमा, शंख, अश्विनीकुमार।
अब्धिजा–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, सुरा।
अब्धिसार–(सं. पुं.) रत्न।
अब्ध्यग्नि–(सं. पुं.) बड़वानल।
अब्रह्मण्य–(सं. वि.) ब्राह्मण-विरुद्ध, जो कार्य ब्राह्मण के करने के योग्य न हो।
अब्रह्मविद्–(सं. वि.) ब्रह्म को न पहिचाननेवाला।
अब्राह्मण–(सं. पुं.) जो ब्राह्मण शुद्ध आचरण का न हो, ब्राह्मण के कर्म को न करनेवाला मनुष्य।
अभंगुर–(सं.वि.) स्थिर, न टूटनेवाला।
अभक्त–(सं. वि.) भक्ति न रखनेवाला, श्रद्धाहीन, विभागरहित, न बांटा हुआ, पूरा, समूचा।

अभक्ति–(सं. स्त्री.) भक्ति का अभाव, अविश्वास।

अभक्तिमान्–(सं. वि.) भक्तिहीन, अविश्वासी।

अभक्ष–(हि.वि.) अभक्ष्य, न खाने योग्य।

अभक्षण–(सं.पुं.) भोजन न करने की स्थिति, उपवास; (वि.) जिसका खाना धर्मशास्त्र के विरुद्ध हो, अखाद्य, न भोजन करने योग्य।

अभक्ष-भक्षण–(सं.पुं.) निषिद्ध पदार्थ का भोजन।

अभक्ष्य–(सं. वि.) न खाने योग्य।

अभगत–(हि. वि.) अभक्त, श्रद्धाहीन।

अभग्न–(सं. वि.) विना टूटा हुआ, समूचा, अखण्ड।

अभद्र–(सं.वि.) अमंगल, अशुभ, अशिष्ट, बुरा; (पुं.) कष्ट, दुःख।

अभद्रता–(सं. स्त्री.) अमंगलता, अशिष्टता, दुष्टता।

अभय–(सं.पुं.) भय का अभाव, शांति, रक्षा, शिव, महादेव; (वि.) भयशून्य, निडर, निर्भय; **–देना**–(क्रि. प्र.) शरण देना; **–दक्षिणा**–(स्त्री.) आपत्ति से बचाने के निमित्त वाग्दान देना; **–दान**–(पुं.) त्रास से मुक्त होने के लिए वचन देना, शरण देना; **–पद**–(पुं.) मुक्ति, मोक्ष; **–प्रदान**–(पुं.) अभयदान; **–वचन**–(पुं.) निडर रहने के लिये आश्वासन देना, डर से छुड़ाने की प्रतिज्ञा।

अभया–(सं. स्त्री.) हरीतकी, हर्रे, विजया, भंग।

अभरम–(हिं. वि.) भ्रमरहित, शंकाशून्य, अभ्रान्त, भ्रम न करनेवाला, निडर; (अव्य.) असन्दिग्ध भाव से, निश्चय से, शंका छोड़कर।

अभल–(हिं. वि.) अश्रेष्ठ, जो भला न हो, बुरा।

अभव–(सं.पुं.) विनाश, मोक्ष, छुटकारा।

अभव्य–(सं. पुं.) अमंगल, दुर्भाग्य; (वि.) अद्भुत, अशुभ, अपूर्व, अनोखा, विलक्षण, असभ्य, नीच।

अभाऊ–(हिं. वि.) न भानेवाला, जो सुहावना न हो, अशोभित, बुरा लगनेवाला।

अभाग–(सं. वि.) अंश का अभाव-युक्त, भागरहित, समूचा; (हिं.पुं.) अभाग्य।

अभागा–(हिं. वि.) भाग्यहीन, प्रारब्धहीन, जिसका भाग्य बुरा हो।

अभागी–(हिं. वि.) भाग्यहीन, अभागा; देखें 'अभाग'।

अभाग्य–(सं. पुं.) मन्दभाग्य, भाग्यहीनता, दुर्दैव।

अभाजन–(सं.पुं.) मन्दपात्र, मूढ़, मूर्ख।

अभार्य–(सं.वि.) विना पत्नी का, जिसकी स्त्री न हो।

अभाव–(सं. पुं.) सत्ता की शून्यता, अनस्तित्व, असत्त्व, अनवस्था, घाटा, कमी, विरोध, दुर्भाव; (वि.) अलंकार में स्थायी भावों से रहित, अनुरागरहित।

अभावना–(सं.स्त्री.) विचार का अभाव, ध्यान का न होना।

अभावनीय–(सं. वि.) अचिन्तनीय, जिसका सोच न किया जावे।

अभावित–(सं.वि.) भावना न किया हुआ।

अभाषण–(सं. पुं.) मौन भाव।

अभास–(हि.पुं.) देखें 'आभास'।

अभि–(सं. उप.) यह उपसर्ग नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है— ओर, भीतर, वास्ते, लिये, से, पर, पास, सामने, समीप, अच्छी तरह।

अभिकांक्षा–(सं. स्त्री.) अभिलाषा, वांछा, इच्छा।

अभिकांक्षित–(सं. वि.) वांछित, चाहा हुआ।

अभिकांक्षी–(सं. वि.) अभिलाषायुक्त, आकांक्षा रखनेवाला।

अभिकाम–(सं. पुं.) अभिलाष, वांछा, इच्छा।

अभिकृत–(सं. वि.) प्रकाशित, तैयार, भरा हुआ।

अभिक्रम, अभिक्रमण–(सं.पुं.) आरोहण, आक्रमण, चढ़ाई।

अभिक्रांत–(सं. वि.) प्राप्त, आया हुआ, आक्रमण किया हुआ, आरम्भ किया हुआ।

अभिक्रांती–(सं.वि.) उद्योगी, काम-काजी।

अभिक्रोश–(सं. पुं.) निन्दा, घृणा।

अभिक्रोशक–(सं.पुं.) निन्दक।

अभिख्यात–(सं. वि.) प्रसिद्ध।

अभिख्यान–(सं.पुं.) यश, कीर्ति, प्रसिद्धि।

अभिगत–(सं. वि.) पास पहुँचा हुआ, सामने आया हुआ।

अभिगम, अभिगमन–(सं.पुं.) पास जाना, पहुँच, स्त्री-प्रसंग, सहवास।

अभिगामी–(सं. वि.) समीप जानेवाला, स्त्री से संभोग करनेवाला।

अभिगुप्त–(सं. वि.) अभिरक्षित, छिपा हुआ।

अभिगुप्ति–(सं. स्त्री.) निरीक्षण।

अभिगृहीत–(सं. वि.) पकड़ा हुआ।

अभिगोप्ता–(सं. वि.) अच्छी तरह रक्षा करनेवाला।

अभिग्रह–(सं. पुं.) आक्रमण, अभियोग, लड़ाई।

अभिघात–(सं. पुं.) ताड़न, प्रहार, चोट, दो वस्तुओं की परस्पर रगड़।

अभिघातक, अभिघाती–(सं. पुं.) मारनेवाला शत्रु।

अभिचार–(सं.पुं.) मन्त्र-तन्त्र द्वारा मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा वशीकरण के प्रयोग करना।

अभिचारक, अभिचारी–(सं. वि., पुं.) अभिचार करनेवाला।

अभिजन–(सं. पुं.) वंश, कुल, परिवार, जन्मभूमि, श्रेष्ठकुल, प्रसिद्धि, ख्याति।

अभिजय–(सं. पुं.) विजय, जीत।

अभिजात–(सं. वि.) उच्च कुल में उत्पन्न, कुलीन, पण्डित, श्रेष्ठ, बड़ा, मनोहर, मधुर, योग्य, पूज्य।

अभिजित्–(सं. वि.) सामने होकर शत्रु को जीतनेवाला, एक नक्षत्र जिसकी आकृति सिंघाड़े के समान होती है, जो दो तारों से बना हुआ देख पड़ता है।

अभिज्ञ–(सं. वि.) निपुण, कुशल, बुद्धिमान्।

अभिज्ञा–(सं. स्त्री.) वह बोध या ज्ञान जो पहिले से देखी हुई बात से चित्त में उत्पन्न होता है।

अभिज्ञात–(सं. वि.) पूर्व परिचित, पहिले से जाना हुआ।

अभिज्ञान–(सं. पुं.) स्मृति, ज्ञान, चिह्न, जिसको देखकर पूर्व विषय का स्मरण हो जावे।

अभिज्ञापक–(सं. वि.) सूचित करनेवाला, समाचार पहुँचानेवाला।

अभितप्त–(सं. वि.) जलाया हुआ, दुःखी, उदास।

अभिताप–(सं. पुं.) संक्षोभ, उद्वेग।

अभितृप्त–(सं. वि.) अच्छी तरह सन्तुष्ट किया हुआ।

अभितोमुख–(सं. वि.) जिसका मुख चारो ओर रहे।

अभिदक्षिण–(सं. अव्य.) दक्षिण की ओर।

अभिदर्शन–(सं. पुं.) सम्मुख दर्शन।

अभिदिष्ट–(सं. वि.) संकेत किया हुआ।

अभिद्रुत–(सं.वि.) भागता हुआ, आक्रांत।

अभिद्रोह–(सं. पुं.) अपकार, निर्दयता, अत्याचार।

अभिधा–(सं. स्त्री.) कथन, नाम, अलंकार में शब्द का सांकेतिक अर्थ बतलानेवाली शक्ति।

अभिधान–(सं. पुं.) कथन, बातचीत, नाम, शब्दकोश।
अभिधानक–(सं. पुं.) कोलाहल।
अभिधानी–(सं. स्त्री.) रस्सी, डोरी।
अभिधानीय–(सं. वि.) नाम लिया जानेवाला।
अभिधायक, अभिधायी–(सं. वि.) बोलनेवाला, बतलानेवाला, कहनेवाला, नाम लेनेवाला।
अभिधावक–(सं. वि.) आक्रमण करनेवाला, टूट पड़नेवाला।
अभिधावन–(सं. पुं.) आक्रमण, आखेट।
अभिधेय–(सं. वि.) वाच्य, जिसके विषय में संकेत किया गया हो, वर्णन करने योग्य।
अभिनंदन–(सं. पुं.) आनन्द, सन्तोष, सन्तुष्ट करने के लिए प्रशंसा, इच्छा, प्रोत्साहन।
अभिनंदन-पत्र–(सं.पुं.) किसी महान् व्यक्ति के आगमन पर सन्तोष तथा आनन्द प्रकट करने के निमित्त अर्पण किया हुआ मानपत्र।
अभिनंदनीय–(सं. वि.) प्रशंसनीय, वन्दनीय।
अभिनंदित–(सं. वि.) प्रशंसित, वन्दनीय।
अभिनम्र–(सं. वि.) आगे की ओर झुका हुआ।
अभिनय–(सं. पुं.) मन के भावों को प्रकाशित करनेवाली अंगों की चेष्टा, बनावटी हाव-भावों से किसी विषय का यथार्थ अनुकरण करके दिखाना, स्वाँग, नाटक का खेल।
अभिनव–(सं. वि.) नवीन, नया, हाल का, अनुभवहीन।
अभिनव यौवन–(सं.पुं.) नई जवानी।
अभिनिधन–(सं. वि.) मरणासन्न, जो मर रहा हो।
अभिनियुक्त–(सं. वि.) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
अभिनिविष्ट–(सं. वि.) गड़ा हुआ, आग्रहयुक्त, चित्त लगाये हुए, चिन्ता से व्याकुल, घबड़ाया हुआ।
अभिनिविष्टता–(सं. स्त्री.) मनोयोगिता, व्यग्रता।
अभिनिवेश–(सं. पुं.) प्रवेश, आसक्ति, लीनता, मनोयोग, प्रणिधान, दृढ़-संकल्प, तत्परता, योगशास्त्र के अनुसार मृत्यु के विषय में भयजनक अज्ञान।
अभिनिवेशित–(सं. वि.) निक्षिप्त, फेंका हुआ।
अभिनिवेशी–(सं.वि.) आग्रहयुक्त, हठी।
अभिनीत–(सं. वि.) समीप लाया हुआ, युक्त, भूषित, अलंकृत, उचित, कृपालु, अभिनय किया हुआ, अनुकरण किया हुआ।
अभिनेता–(सं. पुं.) (स्त्री. अभिनेत्री) अभिनय करनेवाला पुरुष, स्वाँग दिखलानेवाला, नाटक का पात्र।
अभिनेत्री–(सं. स्त्री.) अभिनय दिखलानेवाली स्त्री।
अभिनेय–(सं. वि.) अंगों की चेष्टा द्वारा अनुकरण करने योग्य, खेला जाने योग्य, नाटक करने योग्य।
अभिन्न–(सं. वि.) अपृथक्, जो भिन्न न हो, दृढ़, पुष्ट, सम्बद्ध, मिला हुआ, गणित में पूर्णांक।
अभिन्नता–(सं. स्त्री.) अखंडता, पूर्णता।
अभिन्न-पद–(सं. पुं.) अलंकार में श्लेष का एक भेद।
अभिन्नपुट–(सं.पुं.) महुवे का फूल, कमल।
अभिन्नात्मा–(सं. वि.) अभिन्न-हृदय।
अभिपतन–(सं. पुं.) नीचे को गिरना, आक्रमण।
अभिपन्न–(सं.वि.) आपद्ग्रस्त, अभिभूत।
अभिप्रणय–(सं.पुं.) अनुरंजन, प्रेम, कृपा।
अभिप्राप्त–(सं.वि.) मिला हुआ, हस्तगत।
अभिप्राय–(सं.पुं.) आशय, तात्पर्य, अर्थ।
अभिप्रीति–(सं.स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा।
अभिप्रेत–(सं. वि.) अभिलषित, उद्दिष्ट।
अभिभव–(सं. पुं.) पराजय, अनादर, तिरस्कार।
अभिभवनीय–(सं. वि.) हारने योग्य।
अभिभावक–(सं. वि.) पराजयकारी, हरानेवाला, अपमान करनेवाला, रक्षक, आत्मीय, स्वजन।
अभिभावन–(सं. पुं.) विजय, जीत।
अभिभावी–(सं. वि.) जीतनेवाला, अपमान करनेवाला।
अभिभावुक–(सं.वि.) देखें 'अभिभावी'।
अभिभाषण–(सं. पुं.) सम्मुख बोलना।
अभिभाषित–(सं.वि.) निवेदित, कहा हुआ।
अभिभाषी–(सं.वि.) सामने बोलनेवाला।
अभिभूत–(सं. वि.) विचलित, घबड़ाया हुआ, पीड़ित, पराभूत, हराया हुआ, व्याकुल, वश में लाया हुआ।
अभिभूति–(सं. स्त्री.) पराजय, हार, अपमान।
अभिमंडन–(सं. पुं.) श्रृंगार, सजधज।
अभिमंडित–(सं. वि.) अलंकृत, श्रृंगार किया हुआ।
अभिमत–(सं. वि.) सम्मत, अभीष्ट, वांछित, स्वीकार किया हुआ; (पुं.) अभिलाषा, सम्मति, विचार।
अभिमति–(सं.स्त्री.) अभिमान, अहंकार, अभिलाषा, आदर, सम्मान, मिथ्या-ज्ञान।
अभिमन्यु–(सं.पुं.) अर्जुन के पुत्र का नाम।
अभिमर्दन–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई, शत्रु द्वारा देश का नाश।
अभिमर्दी–(सं. पुं.) कष्ट पहुँचानेवाला, पीड़ा, देनेवाला।
अभिमर्श, अभिमर्ष–(सं.पुं.) घर्षण, स्पर्श।
अभिमर्षक–(सं. पुं.) स्पर्श करनेवाला, छूनेवाला।
अभिमर्षण–(सं. पुं.) स्पर्श, पराभव।
अभिमाद–(सं. पुं.) मद, नशा।
अभिमान–(सं. पुं.) अहंकार, मिथ्या ज्ञान, गर्व, घमंड, श्रृंगार रस की एक विशेष अवस्था।
अभिमानता–(सं. स्त्री.) धृष्टता, दर्प।
अभिमानशून्य–(सं. वि.) गर्वरहित, बिना घमंड का।
अभिमानित–(सं. वि.) अभिमानयुक्त, घमंडी।
अभिमानी–(सं. वि.) गर्वयुक्त, अहंकारी, घमंडी।
अभिमुख–(सं. अव्य.) समक्ष, सन्मुख, सामने।
अभिमुखता–(सं.स्त्री.) सम्मुखता।
अभियाता–(सं. पुं.) सामने से धावा करनेवाला।
अभियान–(सं. पुं.) आक्रमण, चढ़ाई।
अभियुक्त–(सं. वि.) आक्रमण किया हुआ, निन्दित, जिस पर अभियोग चलाया गया हो, प्रतिवादी, मुलजिम।
अभियोक्ता–(सं. पुं.) अभियोगकर्त्ता, वादी।
अभियोग–(सं. पुं.) किसी के किये हुए अपकार के निवारण के लिए न्यायालय में प्रार्थना, नालिश, युद्ध के लिए आक्रमण, उद्योग, दोषारोपण।
अभियोगी–(सं. पुं.) अभियोगकर्त्ता, आक्रमण करनेवाला, आग्रही।
अभिरक्षण–(सं.पुं.), **अभिरक्षा**–(स.स्त्री.) मन्त्र पढ़कर राक्षसादि से सुरक्षित रहने के लिये चारों दिशाओं में सरसों, जल इत्यादि फेंकना, सुरक्षा।
अभिरक्षित–(सं.वि.) चारों ओर से सुरक्षित।
अभिरत–(सं. वि.) प्रीतियुक्त, प्रसन्न, आसक्त।
अभिरति–(सं. स्त्री.) अत्यन्त आसक्ति, प्रसन्नता।

अभिरना–(हिं. क्रि. अ.) सामना करना, भिड़ना, पिटना, मिलाना।
अभिरमण–(सं. पुं.) अनुराग, हर्ष।
अभिरमणीय, अभिरम्य–(सं. वि.) रमणीय, मनोरम, क्रीड़ा करने योग्य।
अभिराम–(सं. वि.) सुन्दर, प्रिय, प्रसन्न करनेवाला।
अभिरामता–(सं. स्त्री.) सौंदर्य, मनोहरता, मोहकता।
अभिरामी–(सं.वि.) आनन्द करनेवाला।
अभिरुचि–(सं. स्त्री.) अत्यन्त रुचि, इच्छा, स्वाद।
अभिरूप–(सं. वि.) सुन्दर, मनोहर, प्रिय, उचित।
अभिलक्ष्य–(सं. वि.) लक्ष्य करने योग्य।
अभिलषण–(सं. पुं.) उत्कंठा, लालच।
अभिलषित–(सं. वि.) इच्छित, वांछित, चाहा हुआ।
अभिलाख–(हिं. स्त्री.) अभिलाषा, वांछा।
अभिलाखना–(हिं. क्रि. स.) उत्कण्ठित होना, इच्छा करना।
अभिलाखा–(हिं. स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा।
अभिलाखी–(हिं. वि.) अभिलाषा करनेवाला, अभिलाषी।
अभिलाष–(सं. पुं.) इच्छा, मनोकामना, अनुराग, लोभ, लालच।
अभिलाषक–(सं. वि.) इच्छा करनेवाला, आकांक्षी।
अभिलाषा–(सं.स्त्री.) देखें 'अभिलाष'।
अभिलाषी–(सं.वि.) देखें 'अभिलाषक'।
अभिलास, अभिलासा–(हिं. स्त्री) देखें 'अभिलाष'।
अभिलिखित–(हिं. वि.) नियमित रूप से अक्षरों में लिखा हुआ।
अभिलीन–(सं.वि.) चिपटा हुआ, हृदय से लगाया हुआ।
अभिलुप्त–(सं.वि.) उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।
अभिलेख (न)–(सं.पुं.) पत्थर पर अक्षरों की खुदाई, शिलालेख, लेख।
अभिवंदन–(सं. पुं.) प्रणाम, नमस्कार।
अभिवंदना–(सं.स्त्री.) अभिनन्दन, प्रणाम।
अभिवचन–(सं.पुं.) सत्य वचन, प्रतिज्ञा।
अभिवदन–(सं.पुं.) अनुकूल वाक्य; (वि.) अनुकूल वार्ता करनेवाला, प्रसन्नमुख।
अभिवर्ती–(सं. वि.) सन्मुख जानेवाला।
अभिवांछित–(सं. वि.) अभिलाषा किया हुआ, आकांक्षित।
अभिवाद–(सं. पुं.) प्रणाम, नमस्कार।
अभिवादक–(सं.वि.) प्रणाम करनेवाला।
अभिवादन–(सं. पुं.) नमस्कार, प्रणाम, स्तुति, वन्दना।
अभिवादित–(सं. वि.) अभिवादन या नमस्कार किया हुआ।
अभिवाद्य–(सं.वि.) नमस्कार करने योग्य।
अभिवास, अभिवासन–(सं.पुं.) आवरण, ओढ़ना।
अभिविनीत–(सं. वि.) सुशील, सज्जन।
अभिवृद्धि–(सं. स्त्री.) समृद्धि, बढ़ती।
अभिव्यंजक–(सं.वि.) प्रकाशक, निर्देशक।
अभिव्यंजन–(सं.पुं.) प्रकाशन, अभिव्यक्ति।
अभिव्यक्त–(सं. वि.) प्रकट, स्पष्ट, प्रकाशित, बतलाया हुआ।
अभिव्यक्ति–(सं. स्त्री.) प्रकाशन, घोषणा, ढिंढोरा, साक्षात्कार, सांख्यमत से अप्रत्यक्ष, सूक्ष्म रूप से कार्य का आविर्भाव, किसी पदार्थ का एक रूप से दूसरे में परिवर्तन।
अभिव्यापक–(सं. वि.) सब दिशाओं में अथवा शरीर के सब अवयवों में व्यापक।
अभिव्याप्त–(सं. वि.) सम्मिलित, मिला हुआ, सर्वव्यापक।
अभिव्याप्ति–(सं. स्त्री.) सब दिशाओं में व्याप्ति, सर्वव्यापकता।
अभिव्याहृत–(सं.वि.) उच्चारित, बोला हुआ, कथित।
अभिशंक–(सं.वि.) सब तरह से शंकायुक्त।
अभिशंका–(सं. स्त्री.) भ्रम, संशय।
अभिशंकित–(सं. वि.) शंकायुक्त, भयग्रस्त, त्रस्त।
अभिशप्त–(सं. वि.) श्राप दिया हुआ, निन्दित, अभियोग लगाया हुआ।
अभिशस्त–(सं. वि.) झूठा अपवाद लगाया हुआ, अभिशाप से ग्रस्त।
अभिशाप–(सं.पुं.) शाप, मिथ्यावाद, झूठा दोष, कोसना।
अभिशापित–(सं. वि.) अभिशाप दिया हुआ, कोसा हुआ।
अभिषंग–(सं. पुं.) शपथ, अभिशाप, पराजय, हार, आसक्ति, व्यसन, संगति, पूर्ण संयोग, आलिंगन, मिथ्या दोषारोपण, शोक, प्रतिवाधा।
अभिषक्त–(सं. वि.) पराजित, निन्दित।
अभिषिक्त–(सं.वि.) विधिपूर्वक नहलाया हुआ, अभिषेक किया हुआ, मन्त्र पढ़कर जल से मार्जन किया हुआ।
अभिषेक–(सं.पुं.) सिंहासनारोहण, शान्ति के निमित्त विधिपूर्वक सेचन, अधिकारी बनने के लिये स्नान, मन्त्र से मार्जन, पुरश्चरण के अन्त में मन्त्र द्वारा सिर पर जल डालना, दोलायन्त्र में जल भरकर मन्त्र पढ़ते हुए शिवलिंग पर धीरे-धीरे पानी टपकाना।
अभिषेक-शाला–(सं.स्त्री.) वह भवन जिसमें राज्याभिषेक का संस्कार किया जाता है।
अभिषेचन–(सं. पुं.) देखें 'अभिषेक'।
अभिष्टुत–(सं.वि.) प्रशंसित, स्तुति किया हुआ।
अभिष्यंद–(सं. पुं.) अति वृद्धि, बहाव, जल का गिरना, आँख का एक रोग, आँख आना या उठना।
अभिसंतप्त–(सं. वि.) अति व्यथित, दुःखित, पीड़ित।
अभिसंधक–(सं. वि.) आक्षेप करनेवाला।
अभिसंधान–(सं. पुं.) अन्तिम आशय।
अभिसंधि–(सं. स्त्री.) धोखा, ऐंठना।
अभिसंवृत–(सं. वि.) आच्छादित, ढपा हुआ, आवृत।
अभिसंपन्न–(सं.वि.) पूर्ण रूप से सफल।
अभिसंस्तुत–(सं. वि.) अति प्रशंसित।
अभिसन्नद्ध–(सं.वि.) अलंकृत, सजा हुआ।
अभिसम्मुख–(सं.वि.) मुख आगे किये हुए।
अभिसर–(हिं. पुं.) अनुचर, भृत्य।
अभिसरण–(हिं.पुं.) सम्मुख गमन, अभिगमन।
अभिसरना–(हिं. क्रि. अ.) गमन करना, जाना, निर्दिष्ट स्थान में पहुँचना।
अभिसार–(सं. पुं.) युद्ध, चढ़ाई, आक्रमण, सम्मिलन, बल, सहारा, सहाय, नायक का नायिका से मिलने के लिये संकेत-स्थान को जाना।
अभिसारना–(हिं. क्रि. स.) चले जाना, किसी संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिये प्रस्थान करना।
अभिसारिका–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो काम-पीड़ित होकर अपने प्रियतम को संकेतस्थल में भेजे अथवा स्वयं जावे।
अभिसारिणी–(हिं. स्त्री.) अनुचरी, नौकरानी, अभिसारिका।
अभिसारी–(हिं. वि.) सम्मुख जानेवाला, आक्रमण करनेवाला, साधक, सहायक।
अभिहत–(हिं. वि.) मारा-पीटा हुआ, सन्तप्त, गणित में गुणन किया हुआ।
अभिहर–(हिं. वि.) उठा ले जानेवाला।
अभिहरणीय–(हिं.वि.) पास ले आने योग्य।
अभिहर्ता–(हिं. पुं.) हरण करनेवाला, उठा ले जानेवाला।
अभिहार–(हिं. पुं.) आलिंगन, बन्धन, अभियोग।
अभिहित–(हिं. वि.) नामित, कथित, कहा हुआ, नाम का।

अभी–(हिं. वि.) भयरहित, निर्भय; (हिं. अव्य.) इसी समय, तुरन्त।
अभीक–(हिं. वि.) निर्भीक, निडर, क्रूर, निष्ठुर, चिन्तायुक्त, उत्सुक।
अभीत–(हिं.वि.) निर्भय, भयरहित, निडर।
अभीति–(हिं. स्त्री.) भय का अभाव।
अभीप्सित–(हिं. वि.) वांछित, इच्छा किया हुआ।
अभीम–(हिं. वि.) जो भयंकर न हो, जिसको डर न लगता हो।
अभीर–(हिं. पुं.) ग्वाला, अहीर, एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में ग्यारह मात्राएँ होती हैं।
अभीरी–(हिं. स्त्री.) अहीरों की भाषा।
अभीरु–(हिं. वि.) निर्भय, निडर; (पुं.) शिव, भैरव।
अभीष्ट–(हिं. वि.) वांछित, ईप्सित, चाहा हुआ, प्रिय; (पुं) मनोरथ, चाही हुई बात।
अभीष्टता–(हिं. स्त्री.) प्रियता, चाह।
अभीष्ट-लाभ–(सं.पुं.), अभिष्ट-सिद्धि–(सं.स्त्री.) अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति।
अभुआना–(हिं. क्रि. अ.) अधीर होना, अधिक चेष्टा करना, हाथ-पैर पटकना और सिर को नचाना।
अभुक्त–(हिं. वि.) अभक्षित, न खाया हुआ, व्यवहार में न लाया हुआ।
अभुक्तमूल–(सं.पुं.) ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त के तथा मूल नक्षत्र के आदि के दो दण्ड जिसमें उत्पन्न बालक पितृ-धन का भोग नहीं करता।
अभुग्न–(हिं. वि.) आरोग्य, रोगरहित, स्वस्थ, अकुटिल।
अभुज–(हिं. वि.) बाहुहीन, लूला।
अभू–(हि. पुं.) विष्णु, नारायण।
अभूत–(सं. वि.) अविद्यमान, विलक्षण, अपूर्व, वर्तमान, प्राणहीन।
अभूतपूर्व–(हिं. वि.) पहिले न होनेवाला, जो पहिले न हुआ हो।
अभूतशत्रु–(हिं.वि.) जिसके वैरी न हों।
अभूति–(हिं. स्त्री.) सम्पत्ति का अभाव, शक्ति का अभाव; (वि.) सम्पत्तिहीन, निर्धन।
अभूमि–(सं.पुं.) अनाश्रय, भूमिहीन; (सं.वि.) भूमिशून्य।
अभूरि–(सं. वि.) कुछ, थोड़ा।
अभेद–(सं. पुं.) भेद का अभाव, ऐक्य, एकरूपता, बराबरी, मेल, संगठन; (वि.) अभिन्न, समान, न बाँटा हुआ।
अभेदक–(सं. वि.) न बाँटनेवाला।
अभेदनीय–(सं.वि.) जिसका भेद न किया जा सके, विभक्त न होनेवाला, अच्छेद्य।
अभेदवादी–(सं.पुं.) जो मनुष्य परमात्मा और जीवात्मा में भेद नहीं देखता।
अभेद्य–(सं. वि.) जो तोड़ा या छेद न किया जा सके, जिसका विभाग न हो सके, अविभाज्य।
अभेद्यता–(सं. स्त्री.) अविच्छेद्यता, टुकड़े न होने की स्थिति।
अभेरना–(हिं.क्रि.स.) भिड़ाना, सटाना, मिलाना।
अभेरा–(हिं. पुं.) युद्ध, लड़ाई, झगड़ा, टक्कर, सामना, मुठभेड़।
अभेषज–(सं. पुं.) विपरीत औषधि।
अभै–(हिं.) देखें 'अभय'।
अभैर–(हिं.पुं.) वह रस्सी जिसमें करगह की कंघी लटकाई जाती है।
अभोक्ता–(सं. पुं.) आनन्द न लेनेवाला।
अभोग–(सं. पुं.) भोग या आनन्द का अभाव।
अभोगी–(सं. वि.) देखें 'अभोक्ता'।
अभोग्य–(सं. वि.) न भोगने योग्य, काम में न लाने योग्य।
अभोजन–(सं. पुं.) भोजन का अभाव, उपवास।
अभोजित–(सं.वि.) भोजन न किया हुआ।
अभोज्य–(सं. वि.) अभक्ष्य, भोजन करने के लिये निषिद्ध।
अभौतिक–(सं. वि.) पंचभूत से सम्बन्ध न रखनेवाला।
अभौम–(सं. वि.) भूमि से उत्पन्न न होनेवाला।
अभ्यंग–(सं. पुं.) शरीर में तेल का मर्दन, लीपना, पोतना।
अभ्यंजन–(सं. पुं.) तेल का मर्दन, आँखों में सुरमा या काजल लगाना, सजावट, आभूषण।
अभ्यंजनीय–(सं.वि.) मर्दन करने योग्य।
अभ्यंतर–(सं. पुं.) अन्तराल, बीच का स्थान, अन्तःकरण, हृदय; (वि.) भीतरी, मध्य का।
अभ्यंतर कला–(सं.स्त्री.) विलास संबंधी गुप्त विद्या।
अभ्यधिक–(सं.वि.) अधिक परिमाण का।
अभ्यर्चन–(सं. पुं.) पूजन, पूजा।
अभ्यर्थना–(सं. स्त्री.) सम्मुख प्रार्थना, अगवानी, आदरसहित प्रार्थना।
अभ्यर्चित–(सं. वि.) पूजित, प्रशंसित।
अभ्यर्थनीय–(सं. वि.) प्रार्थना करने योग्य, अगवानी करने योग्य।
अभ्यर्थित–(सं. वि.) प्रार्थना किया हुआ, अगवानी किया हुआ।
अभ्यर्थी–(सं. वि.) प्रार्थना करनेवाला।
अभ्यर्हित–(सं. वि.) पूजित, प्रतिष्ठित।
अभ्यवकाश–(सं. पुं.) खुला स्थान।
अभ्यसन–(सं. पुं.) अभ्यास, व्यायाम।
अभ्यसनीय–(सं.वि.) अभ्यास करने योग्य।
अभ्यसित–(सं. वि.) अभ्यास किया हुआ।
अभ्यस्त–(सं. वि.) अभ्यास किया हुआ, बारंबार किया हुआ, निपुण, शिक्षित।
अभ्याख्यात–(सं. वि.) झूठा अभियोग लगाया हुआ।
अभ्यागत–(सं. वि.) सम्मुख आया हुआ; (पुं) अतिथि, पाहुन, युद्ध, लड़ाई, रण-क्षेत्र, पड़ोस।
अभ्याघात–(सं. पुं.) ताड़न, मार।
अभ्याघाती–(सं.पुं.) आक्रमण करनेवाला।
अभ्यारंभ–(सं. पुं.) प्रथम आरम्भ।
अभ्यारूढ़–(सं. वि.) बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ।
अभ्यारोह–(सं.पुं.) ऊपर का चढ़ाव, उन्नति।
अभ्याश–(सं.पुं.) निकटता, पड़ोस।
अभ्यास–(सं.पुं.) किसी काम को बार-बार करना, पुनरावृत्ति, साधन, अनुशीलन, शिक्षा, बान, स्वभाव, आवृत्ति, दोहराव।
अभ्यासी–(सं वि.) अभ्यास करनेवाला।
अभ्याहत–(सं.वि.) आहत, चोट खाया हुआ।
अभ्युक्त–(सं. वि.) सामने कहा हुआ, प्रकाशित।
अभ्युत्थान–(सं. पुं.) किसी का आदर करने के लिये उठकर खड़े हो जाना, उठना, उद्भव, उन्नति, अधिकार-प्राप्ति, उदय, उच्च पद की प्राप्ति।
अभ्युत्थायी–(सं. वि.) उठनेवाला।
अभ्युत्थित–(सं. वि.) जिसका अभ्युत्थान हुआ हो।
अभ्युदय–(सं. पुं.) मनोरथ की सिद्धि, वृद्धि, उन्नति, बढ़ती, आनन्द, शुभ फल, आरम्भ, ग्रहों का उदय, दैवगति, शुभ अवसर।
अभ्युदित–(सं.वि.) अच्छी तरह से निकला हुआ, बढ़ा हुआ, प्रसिद्ध किया हुआ।
अभ्युन्नत–(सं. वि.) उठा हुआ, बढ़ा-चढ़ा।
अभ्युन्नति–(सं. स्त्री.) अच्छी उन्नति।
अभ्युपगमन–(सं. पुं.) प्रतिज्ञा, स्वीकार, नियम, विश्वास, न्याय में बिना देखी-सुनी किसी बात के खण्डन होने पर उसकी विशेष परीक्षा करना।
अभ्युपयुक्त–(सं. वि.) नियुक्त, काम में लगा हुआ।

अभ्युषित–(सं. वि.) सम्मुख रहनेवाला।
अभ्रंलिह–(सं. वि.) गगनस्पर्शी, बहुत ऊँचा; (पुं.) वायु, हवा।
अभ्र–(सं. पुं.) अभ्रक, धातु, सुवर्ण, बादल, आकाश।
अभ्रक–(सं. पुं.) अबरख धातु।
अभ्रपुष्प–(सं. पुं.) बेंत का फूल।
अभ्रम–(सं.पुं.) सन्देह या भ्रम का न होना; (वि.) अभ्रान्त, न भूलनेवाला।
अभ्रमातंग–(सं.पुं.) इन्द्र का हाथी ऐरावत।
अभ्रमाला–(सं. स्त्री.) घटा, बादलों का समूह।
अभ्रलिप्त–(सं.वि.) बादलों से भरा हुआ।
अभ्रसार–(सं. पुं.) भीमसेनी कपूर।
अभ्रांत–(सं.वि.) प्रमादरहित, न घबड़ाया हुआ, अशुद्धिरहित।
अभ्रांतबुद्धि–(सं.वि.) जिसकी बुद्धि न बिगड़ी हो, अभ्रांत।
अभ्रांति–(सं. स्त्री.) भ्रांति का अभाव, घबड़ाहट का न होना।
अभ्रातृ, अभ्रातृक–(सं. वि.) भ्रातृहीन, बिना भाई का।
अमंगल–(सं.वि.) अशुभ, अकुशल, मङ्गल-शून्य; (पुं.) अकल्याण, रेंड का वृक्ष।
अमंड–(सं. वि.) बिना माँड़ का, आभूषण-रहित।
अमंडित–(सं. वि.) आभूषित न किया हुआ, न सजाया हुआ।
अमंद–(सं. वि.) जो मन्द न हो, तीव्र, उद्योगी, श्रेष्ठ, उत्तम।
अमचूर–(हिं. पुं.) सूखे आम की बुकनी।
अमड़ा–(हिं. पु.) एक वृक्ष जिसमें बेर के बराबर फल लगते हैं जो खट्टे होते हैं और अचार बनाने के काम में आते हैं, अमरा, अमारी।
अमत–(सं. पुं.) रोग, मृत्यु, बीमारी; (वि.) अज्ञात, असम्मत।
अमति–(सं. स्त्री.) ज्ञान का अभाव, मूर्खता; (वि.) ज्ञानहीन।
अमत्त–(सं. वि.) निर्मद, मदरहित, जिसको गर्व न हो।
अमत्सर–(सं. पुं.) ईर्ष्या का अभाव।
अमधुर–(सं.वि.) जो मीठा न हो, कड़ुवा।
अमध्यम–(सं. वि.) जो बीच का न हो।
अमन–(अ. पुं.) शान्ति, आनन्द, चैन, बचाव, रक्षा।
अमनस्क–(सं. वि.) ज्ञानहीन, अचेतन, अमना, अन्यमनस्क।
अमना–(सं. वि.) अन्यमनस्क, नासमझ, कारवाह।

अमनिया–(हिं.वि.) शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र, जो छुआ न गया हो, अछूता।
अमनुष्य–(सं. पुं.) मनुष्य से भिन्न प्राणी, देवता, यक्ष, आदि।
अमनुष्यता–(सं. स्त्री.) पुरुषहीनता, नपुंसकता।
अमनैक–(हिं. पुं.) सरदार, अवध के एक विशेष प्रकार के कृषक।
अमनोगत–(सं.वि.) ध्यान में न लाया हुआ।
अमनोज्ञ–(सं. वि.) चित्त को प्रसन्न न करनेवाला।
अमनोनीत–(सं.वि.) अनीप्सित, नापसन्द।
अमनोहर–(सं. वि.) जो सुन्दर न हो, भद्दा, कुरूप।
अममता–(सं. स्त्री.), **अममत्व**–(सं. पुं.) ममता का अभाव, उदासीनता।
अमर–(सं. वि.) न मरनेवाला, चिरस्थायी; (पुं.) देवता, पारा, सेहुँड़ का पौधा, सोना, रुद्राक्ष, हाथी, अमरकोश के रचयिता का नाम।
अमर-काष्ठ–(सं. पुं.) देवदारु।
अमरकुसुम–(सं. पुं.) लवंग, लौंग।
अमरण–(सं. पुं.) अमरत्व, अनश्वरता, नित्यता।
अमरणीय–(सं. वि.) अमर, कभी न मरनेवाला।
अमरता–(सं. स्त्री.) अनश्वरता, कभी न मरने की स्थिति, देवत्व, चिरजीवन।
अमरत्व–(सं. पुं.) देखें 'अमरता'।
अमरपक्ष (–पख)–(सं. हिं. पुं.) पितृपक्ष।
अमरपति–(सं. पुं.) देवताओं के स्वामी, इन्द्र।
अमर-पद–(सं. पुं.) स्वर्ग, मोक्ष, मुक्ति।
अमरपुर–(सं. पुं.) देवताओं का नगर, अमरावती।
अमर-पुष्प–(सं. पुं.) कल्पवृक्ष, केतकी।
अमरबेल–(हिं.स्त्री.) अमरवल्ली, बिना जड़ और पत्ती की एक लता जो वृक्ष पर फैलती है।
अमरभर्ता–(सं. पुं.) देवताओं के स्वामी, इन्द्र।
अमररत्न–(सं. पुं.) स्फटिक, बिल्लौर।
अमरलोक–(सं. पुं.) देवलोक, स्वर्ग।
अमरवल्ली–(सं.स्त्री.) अमरबेल, आकाश-बँवर।
अमरस–(हिं. पुं.) अमावट।
अमर-सरित–(सं. स्त्री.) जाह्नवी, गंगा।
अमरसी–(हिं.वि.) आम के रस के सदृश।
अमर-स्त्री–(सं. स्त्री.) देवांगना, अप्सरा।
अमरांगना–(सं.स्त्री.) इन्द्रपुरी की अप्सरा।

अमरा–(सं. स्त्री.) दूर्वा, दूब, घृतकुमारी, इन्द्रपुरी, गर्भनाड़ी, अमड़ा।
अमराई–(हिं. स्त्री.) आम की वारी, आम का बगीचा।
अमराधिप–(सं.पुं.) देवताओं के स्वामी इन्द्र।
अमरापगा–(सं. स्त्री.) जाह्नवी, गंगा।
अमरालय–(सं. पुं.) देवताओं का भवन, स्वर्ग, देवलोक।
अमरावती–(सं. स्त्री.) देवताओं की नगरी, इन्द्रपुरी।
अमरी–(हिं.स्त्री.) देवपत्नी, देवता की स्त्री।
अमरुत्–(सं. वि.) वायुरहित, बिना हवा का।
अमरूत, अमरूद–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिसका गोल-गोल फल मीठा होता है।
अमरेश, अमरेश्वर–(सं. पुं.) इन्द्र, शिव।
अमरोत्तम–(सं. वि.) देवताओं में सब से उत्तम।
अमर्त्य–(सं. वि.) जो कभी न मरता हो।
अमर्दित–(सं.वि.) पैरों से न कुचला हुआ।
अमर्याद–(सं. वि.) सीमा-रहित, अप्रतिष्ठित।
अमर्यादा–(सं. स्त्री.) प्रगल्भता, निर्लज्जता, अप्रतिष्ठा।
अमर्ष–(सं. पुं.) क्रोध, रोष, सहनशीलता का अभाव, असहिष्णुता, साहस।
अमर्षण–(सं.पुं.) क्रोध, अक्षमा, रोष।
अमर्ष-हास–(सं. पुं.) क्रोध की हँसी।
अमर्षित–(सं. वि.) क्षमारहित, क्रुद्ध।
अमर्षी–(सं. वि.) क्रोधी, असहनशील।
अमल–(सं. वि.) निर्मल, स्वच्छ, दोषरहित; (पुं.) अभ्रक, कपूर, परमात्मा, आत्मा, (अ.पुं.) व्यवहार, व्यसन, टेव, शासन, प्रभाव, समय।
अमलता–(सं.स्त्री.) निर्मलता, निर्दोषता, स्वच्छता।
अमलतास–(हिं. पुं.) एक चमकीले पीले फूल का वृक्ष जिसमें डेढ़ फुट लम्बी गोल फलियाँ लगती हैं जिसके भीतर का गूदा औषधियों में प्रयोग किया जाता है।
अमलतासिया–(हिं. वि.) अमलतास के फूल के समान, गन्धकी रंग का।
अमलपट्टा–(हिं. पुं.) वह अधिकारपत्र जो किसी को कार्य पर नियुक्त करने के लिये दिया जाता है।
अमलपतत्री–(सं. पुं.) वनकुक्कुट, जंगली हंस।
अमलबेत–(हिं. पुं.) चूक, पालक, अम्लवेत, एक लता जिसकी डाली [illegible] [illegible] में मिलाई जाती है।

अमलमणि, अमलरत्न–(सं. पुं.) स्फटिक, विल्लौर।
अमला–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, आमलकी, आँवला; (अ. पुं.) कर्मचारी-वृन्द, अधिकारी-वर्ग।
अमलान–(सं. पुं.) एक सदाबहार क्षुप विशेष।
अमलिन–(सं. वि.) निष्कलंक, निर्मल, स्वच्छ।
अमली–(हिं. स्त्री.) इमली; (अ. वि.) कार्य करनेवाला, व्यवहार में लानेवाला, नशेबाज।
अमलूक–(हिं. पुं.) एक पहाड़ी वृक्ष जिसका फल खाया जाता है।
अमलोनी–(हिं. स्त्री.) नोनियाँ घास जिसकी पत्ती खट्टी होती है।
अमसृण–(सं. वि.) जो कोमल या चिकना कठोर।
अमस्तक–(सं. वि.) विना मस्तक का, बे-सिर का।
अमहर–(हिं. स्त्री.) छीले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
अमहल–(हिं. वि.) भवनहीन, जिसके पास रहने के लिये घर न हो, व्यापक।
अमांस–(सं. वि.) मांसहीन, दुर्बल।
अमा–(सं. स्त्री.) अमावस्या, अमावस; (पुं.) आत्मा, घर, यह संसार।
अमातना–(हिं. क्रि. स.) निमन्त्रण देना, बुला भेजना।
अमातृक–(सं. वि.) मातृहीन, विना माता का।
अमात्य–(सं. पुं.) मन्त्री, सचिव।
अमात्र–(सं. वि.) मात्रा-रहित, असम्पूर्ण, असीम।
अमान–(सं. वि.) विना नाप का, अभिमानरहित, अप्रतिष्ठित, गर्वरहित; (पुं.) बचाव, पनाह।
अमानत–(अ. स्त्री.) थाती, धरोहर, अमीन का पद; (मुहा.)–में खयानत–जमानत की रकम खा जाना।
अमानतदार–(अ.) पुं.) अमानत रखनेवाला, अमीन।
अमानव–(सं. वि.) अमानुष, जो मनुष्य न हो।
अमानवीय–(सं वि.) जो मानवीय न हो।
अमाना–(हिं. क्रि. अ.) पूरी तरह से भरा जाना, समाना, अटना, अभिमान दिखलाना, वह चलना, प्रसन्न होना।
अमानिता–(सं. स्त्री.) लज्जाशीलता, नम्रता।
अमानी–(हिं. वि.) अभिमानरहित, विना गर्व का; (स्त्री.)-वह भूमि जिसका स्वामी सरकार हो और उसकी ओर से कलक्टर प्रबंध करता हो, भूमि का कोई कार्य जो अपने ही प्रबन्ध में हो, ठेकेदार आदि को न दिया गया हो, भूमिकर जो कृपिफल के अनुसार कम किया गया हो, मनमानी कार्यवाही, अबेर।
अमानुष–(सं. वि.) मनुष्य की शक्ति के बाहर, मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध, पैशाचिक; (पुं.) मनुष्य से भिन्न प्राणी, देवता, राक्षस आदि।
अमानुषी–(सं. वि.) मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध, पैशाची, पाशविक।
अमान्य–(सं. वि.) जो मान, आदर आदि के योग्य न हो।
अमाय–(सं.वि.) मायाशून्य, कपटरहित।
अमाया–(सं. स्त्री.) भ्रम का अभाव, शुचि, सचाई; (हिं. वि.) निश्छल, कपटहीन, मायारहित।
अमार्ग–(सं. पुं.) मार्ग का अभाव, कुमार्ग, बुरी चाल; (वि.) मार्गरहित, बेराह।
अमार्जित–(सं. वि.) अशुद्ध, मलिन, स्वच्छ न किया हुआ।
अमावट–(हिं.स्त्री.) आम का सूखा रस जो अनेक तहों में जमाया रहता है, अमरस।
अमावना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'अमाना'।
अमावस–(हिं. स्त्री.) अमावस्या।
अमावसी–(हिं. स्त्री.) देखें 'अमावस्या'।
अमावस्या, अमावास्या–(सं. स्त्री.) किसी महीने के कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि।
अमाह–(हिं.पुं.) आँख का एक रोग जिसमें लाल मांस निकल आता है, नाखूना।
अमाही–(हिं. वि.) नाखूना रोग संबंधी।
अमिट–(हिं. वि.) न मिटनेवाला, अवश्य होनेवाला, स्थायी, अटल।
अमित–(सं. वि.) असीम, अपरिमित, वहुत अधिक।
अमितलाभ–(सं. पुं.) बुद्ध विशेष; (वि.) असीम प्रभायुक्त।
अमितवीर्य–(सं. पुं.) असीम शक्तियुक्त।
अमित्र–(सं.पुं.) वैरी, मित्रहीन; (वि.) जिसका कोई मित्र न हो।
अमित्रता–(सं. स्त्री.) शत्रुता, वैर।
अमिथ्या–(सं. अव्य.) सचमुच।
अमिय–(हिं. पुं.) अमृत।
अमिय मूरि–(हिं. स्त्री.) अमृतमूल, संजीवनी बूटी।
अमिरती–(हिं. स्त्री.) देखें 'इमरती'
अमिल–(हि.वि.) न मिलनेवाला, पृथक्।
अमिलतास–(हि. पुं.) देखें 'अमलतास'।
अमिलपट्टी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चौड़ी सिलाई।
अमिलित–(सं.वि.) न मिला हुआ, पृथक्।
अमिली–(हिं. स्त्री.) इमली, विरोधी, अनुकूलता का अभाव।
अमिश्र–(सं.वि.) संयोगहीन, न मिला हुआ
अमिश्रण–(सं.पुं.) मिलावट का न होना।
अमिश्रणीय–(सं. वि.) न मिलाने योग्य।
अमिश्र राशि–(सं. स्त्री.) गणित में एक से नव तक की संख्या।
अमिश्रित–(सं. वि.) न मिलाया हुआ, विना मिलावट का।
अमिष–(सं. पुं.) संसारी सुख, अकपट, सत्य; (वि.) विना छल का, निश्छल।
अमी–(हिं. पुं.) अमृत।
अमीकर–(हि. पुं.) अमृत वरसानेवाला, चन्द्रमा।
अमीत–(हिं. पुं.) जो मित्र न हो, शत्रु।
अमुक–(हिं. वि.) जब किसी व्यक्ति या पदार्थ का नाम नहीं लिया जाता तब उसके स्थान में 'अमुक' शब्द का प्रयोग होता है, कोई।
अमुक्त–(सं. वि.) सम्बद्ध, बँधा हुआ।
अमुक्ति–(सं. स्त्री.) मोक्ष का अभाव, स्वतन्त्रता न होना।
अमुख–(सं. वि.) मुखरहित, विना मुख का, अव्यग्र, जो व्याकुल न हो।
अमुख्य–(सं. वि.) अप्रधान, अधीन।
अमूक–(सं. वि.) जो गूंगा न हो, वाचाल, बोलनेवाला, प्रवीण।
अमूढ़–(सं.वि.) बुद्धिमान्, जो व्यग्र न हो।
अमूर्त–(सं. वि.) जिसका कोई आकार न हो, आकाररहित; (पुं.) परमेश्वर, आत्मा, शिव, आकाश, काल, वायु, दिशा।
अमूर्ति–(सं. वि.) मूर्तिरहित, आकृतिहीन, निराकार; (पुं.) विष्णु।
अमूर्तिमान्–(सं.वि.) (स्त्री. अमूर्तिमती) मूर्तिरहित, निराकार, अप्रत्यक्ष।
अमूल–(सं. वि.) मूलरहित, जिसका आदि कारण न हो, विना जड़ का।
अमूलक–(सं.वि.) निर्मूल, मिथ्या, असत्य।
अमूल्य–(सं. वि.) मूल्यरहित, जिसका दाम स्थिर न हो, बहुमूल्य, अनमोल।
अमृत–(सं. वि.) मरणशून्य, जो मरता न हो, प्रिय, सुन्दर; (पुं.) देवता, इन्द्र, सूर्य, आत्मा, शिव, जल, सुवर्ण, घी, दूध, अन्न, अति स्वादिष्ट पदार्थ, रोग-

नाशक औषधि, धन, बछनाग, वैकुण्ठ, मुक्ति, चमत्कार; **–कर–** (सं. पुं.) चन्द्रमा; **–कुंडली–** (सं. स्त्री.) एक प्रकार का बाजा, एक प्रकार का छन्द; **–गीत–**(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द; **–गर्भ–**(हिं. पुं.) जीव, ब्रह्मा; (सं.वि.) अमृत से भरा हुआ; **–त्व–** (सं. पुं.) मुक्ति, मरण का अभाव, मोक्ष; **–दान–**(हिं. पुं.) खाने की वस्तु रखने का ढपनेदार वर्तन; **–धारा–**(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके पहिले पद में आठ तथा द्वितीय पद में दस अक्षर होते हैं; **–धुनि–**(हिं.स्त्री.) देखें 'अमृतध्वनि'; **–ध्वनि–**(सं.स्त्री.) चौबीस मात्राओं का एक छन्द विशेष; **–फल–** (सं. पुं.) परवर, आँवला; **–बान–**(हिं. पुं.) लाह का रंग किया हुआ मिट्टी का पात्र जो घी, तेल आदि रखने के काम में आता है; **–मय–**(सं.वि.)अमृत से परिपूर्ण, अमर; **–मालिनी–**(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी; **–योग–**(सं. पुं.) फलित ज्योतिष का एक शुभ फल देनेवाला योग; **–रश्मि–** (सं. पुं.) चन्द्रमा; **–रसा–**(सं. स्त्री.) काला अंगूर; **–लोक–**(सं. पुं.) स्वर्ग; **–वल्लरी–**(सं.स्त्री.) गुरुच; **–संजीवनी–** (सं. स्त्री.) गोरखमुण्डी; **–सार–** (सं. पुं.) मक्खन, घी।

अमृतांशु–(सं. पुं.) चन्द्रमा।

अमृता–(सं. स्त्री.) आँवला, तुलसी, पीपल, पान, फिटकिरी।

अमृताक्षर–(सं. वि.) अविनश्वर।

अमृताशन–(सं. पुं.) देवता।

अमृतेश–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

अमृत्यु–(सं. वि., पुं.) अमर, अमरत्व।

अमृषा–(सं. अव्य.) सचमुच, वस्तुतः।

अमेघ–(सं.वि.) मेघरहित, विना बादल का।

अमेजना–(हिं. क्रि. अ., स.) मिलावट होना, मिला देना।

अमेठना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'उमेठना'।

अमेध्य–(सं. वि.) अपवित्र, अशुद्ध, यज्ञादिक के काम में न आनेवाला; (पुं.) मल, विष्ठा, मूत्र आदि।

अमेध्यता–(सं स्त्री.) अपवित्रता, अशुद्धता।

अमेध्यत्व–(सं. पुं.) देखें 'अमेध्यता'।

अमेय–(सं. वि.) असीम, समझ में न आनेवाला।

अमेव–(हिं. वि.) देखें 'अमेय'।

अमोक्ष–(सं. पुं.) बन्धन, स्वतन्त्रता का अभाव।

अमोघ–(सं. वि.) अधिक उत्पन्न करनेवाला, अव्यर्थ, सफल; **–दंड–**(सं.पुं.) शिव; **–बल–**(सं. पुं.) महान् शक्ति।

अमोचन–(सं. पुं.) बन्धन।

अमोचनीय–(सं. वि.) छुटकारा न पाने योग्य।

अमोचित–(सं. वि.) आवद्ध, बँधा हुआ।

अमोद–(हिं. पुं.) देखें 'आमोद'

अमोरी–(हिं. स्त्री.) आम का कच्चा फल।

अमोल–(हिं. वि.) देखें 'अमूल्य'।

अमोलक–(हिं. वि.) अमूल्य, बहुमूल्य।

अमोला–(हिं. पुं.) आम का भूमि से निकला हुआ नया पौधा।

अमोही–(हिं. वि.) निर्मोही, कठोर-हृदय, दयाहीन।

अमौआ–(हिं. पुं.) आम के रस के सदृश रंग; (वि.) इस रंग का।

अमौलिक–(सं. वि.) जो मौलिक न हो, निर्मूल, मिथ्या, झूठा। 84786

अमौवा–(हिं. पुं.) देखें 'अमौआ'।

अम्मा–(हिं. स्त्री.) माँ, माता, महतारी।

अम्मारी–(हिं.स्त्री.) देखें 'अंवारी'।

अम्र–(सं. पुं.) आम का फल; **–वेतस–** (पुं.) अमलवेत।

अम्ल–(सं. वि.) खट्टा; (पुं.) खटाई।

अम्लका–(सं.स्त्री.) खट्टे पालक का शाक।

अम्लकेशर–(सं. पुं.) अनार का वृक्ष।

अम्लता–(सं. स्त्री.) खट्टापन, खटाई।

अम्लपादप–(सं. पुं.) इमली का वृक्ष।

अम्लपित्त–(सं. पुं.) एक रोग जिसमें पित्त के दोष से खाया हुआ पदार्थ खट्टा हो जाता है।

अम्लवृक्ष–(सं. पुं.) इमली का पेड़।

अम्लवेतस–(सं. पुं.) देखें 'अमलवेत'।

अम्लसार–(सं. पुं.) नीवू, चुक, काँजी, अमलवेत।

अम्लाक्त–(सं. वि.) खट्टा किया हुआ।

अम्लान–(सं. वि.) जो कुम्हलाया न हो, प्रफुल्ल, निर्मल, स्वच्छ, मेघरहित।

अम्लोद्गार–(सं. पुं.) खट्टी डकार।

अम्हौरी–(हिं. स्त्री.) छोटी-छोटी फुन्सी जो ग्रीष्म ऋतु में पसीना रुकने से शरीर में सर्वत्र होती है, घमौरी।

अयं–(सं. सर्व.) यह, उसका।

अय–(सं. पुं.) पासा, लोहा, अग्नि, शस्त्र, हथियार; (अव्य. संबोधन) अरे, ओ।

अयत–(सं. वि.) यत्न न करनेवाला।

अयतेंद्रिय–(सं. वि.) इन्द्रियों को वश में न रखनेवाला।

अयत्न–(सं. पुं.) यत्न का अभाव; (वि.) यत्नशून्य, प्रयत्न न करनेवाला; **–कारी–** (वि.) शिथिल।

अयथा–(सं. वि.) अयोग्य, विना यत्न का, मिथ्या, झूठ; (पुं.) अयोग्य कार्य।

अयथापूर्व–(सं. वि.) अभूतपूर्व, साधारण।

अयथार्थ–(सं.वि.) असत्य, मिथ्या, अयोग्य।

अयथेष्ट–(सं. वि.) इच्छा के विरुद्ध।

अयथोचित–(सं. वि.) जो उचित न हो, अनुपयुक्त।

अयन–(सं. पुं.) गमन, गति, चाल, पथ, अंश, सूर्य तथा चन्द्रमा का दक्षिण से उत्तर तथा उत्तर से दक्षिण की ओर गमन, जो उत्तरायण तथा दक्षिणायन कहलाता है।

अयनकाल–(सं. पुं.) वह समय जो एक अयन में लगे, छः महीने का समय।

अयन-मंडल–(सं. पुं.) राशिचक्र तथा राशिचक्र में स्थित सूर्य के गमन का मार्ग।

अयन-वृत्त–(सं. पुं.) देखें 'अयन-मंडल'।

अयन-संक्रम–(सं. पुं.) अयन-संक्रांति, मकर और कर्क की संक्रांति।

अयन-संक्रांति–(सं. स्त्री.) कर्क संक्रांति तथा मकर संक्रांति।

अयन-संपात–(सं. पुं.) अयनांश का पतन या योग।

अयनांश–(सं. पुं.) सूर्य की गति का विशेष भाग।

अयश–(सं.पुं.) अपयश, अपवाद, अपकीर्ति।

अयशस्कर–(सं. वि.) अपवादजनक।

अयशस्वी, अयशी–(सं. वि.) अपवादित, दुर्नाम।

अयस्कांड–(सं. पुं.) लोहे का तीर।

अयस्कांत–(सं. पुं.) चुंबक लोहा।

अयस्कार–(सं. पुं.) लोहार।

अयाचक–(सं.वि.) न माँगनेवाला, संतुष्ट।

अयाचित–(सं. वि.) अप्रार्थित, न माँगा हुआ।

अयाची–(सं. वि.) अयाचक, न माँगनेवाला, सन्तुष्ट, सम्पन्न, धनिक।

अयाच्य–(सं. वि.) न माँगने योग्य, संतृप्त, सन्तुष्ट।

अयान–(सं. पुं.) प्रकृति, स्वभाव; (वि.) गतिहीन, न चलनेवाला, विना सवारी का, ज्ञानरहित।

अयानप–(हिं. पुं.) अज्ञानता, भोलापन।

अयानपन–(हिं. पुं.) देखें 'अयानप'।

अयानो–(हिं. वि.) अज्ञानी, अनजान।

अयि–(सं. अव्य.) क्यों! अरे! यह शब्द सम्बोधन में प्रयुक्त होता है।

अयुक्त–(सं. वि.) अनुचित, अयोग्य,

असंयुक्त, न लगा हुआ, वहिर्मुख, युक्तिशून्य, आपद्ग्रस्त, गँवार।
अयुक्तता–(सं.स्त्री.),**अयुक्तत्व**–(सं.पुं.) अयुक्ति, अप्रयोग, काम से अलग रहना, अनौचित्य।
अयुक्ति–(सं. स्त्री.) युक्ति का अभाव, अयोग्यता, अप्रवृत्ति, अन्याय।
अयुग–(सं. वि.) युग्म से भिन्न, जो जूस न हो, ताक, अकेला।
अयुगू–(सं. स्त्री.) जिस स्त्री को एक ही सन्तान उत्पन्न हो।
अयुग्म–(सं. पुं.) विषम, ताक, अकेला, जो जोड़ा न हो।
अयुग्मवाण–(सं. पुं.) कामदेव।
अयुत–(सं.वि.)असम्वद्ध, न मिला हुआ; (पुं.) दस हजार की संख्या।
अयुद्ध–(सं. पुं.) युद्ध का अभाव, शान्ति, मेल; (वि.) युद्ध न करता हुआ।
अयोग–(सं. पुं.) योग का अभाव, जुदाई,रोग के निदान के विरुद्ध चिकित्सा, ज्योतिष के अनुसार तिथि, वार इत्यादि का वुरा योग, कुसमय, अकाल, विक्षेप, अयोग्यता, संकट, कष्ट; (वि.)असंयुक्त, अप्रशस्त, वुरा, जिस वाक्य का अर्थ स्पष्ट विदित न हो; (हिं. वि.)अयोग्य।
अयोगी–(सं.पुं.)योग न जाननेवाला मनुष्य।
अयोगू–(सं. पुं.) लोहे का काम करनेवाला, लोहार।
अयोग्य–(सं. वि.) जो योग्य न हो, अक्षम, अनुचित, अनुपयुक्त, निष्प्रयोजन, निरवयव, अमूर्त, नित्य।
अयोग्यता–(सं. स्त्री.) अक्षमता।
अयोजन–(सं. पुं.) वियोग।
अयोघन–(सं. पुं.)लोहार का वड़ा हथौड़ा।
अयोध्य–(सं. वि.) जिससे कोई युद्ध न कर सके।
अयोनि–(सं.वि.)योनि से उत्पन्न न होनेवाला, अजन्य, नित्य; (पुं.)ब्रह्मा, शिव।
अयौक्तिक–(सं.वि.)अयुक्तिपूर्ण, अयोग्य, असमान।
अरंड–(हिं. पुं.) एरंड, रेंड़, रेंड़ी।
अर–(हि. स्त्री.) हठ, जिद।
अरइल–(हिं. वि.) अड़ियल, ठिठकनेवाला, रुकनेवाला।
अरई–(हिं. स्त्री.) गाड़ी हाँकनेवाले की लोहे की नोकवाली छोटी छड़ी।
अरकटी–(हि. पुं.) पतवार घुमानेवाला, माँझी।
अरकना–(हिं.क्रि.अ.)टक्कर खाना, फट जाना, लुढ़क जाना।
अरकना-वरकना–(हिं. क्रि. अ.) टालमटोल करना, खींचातानी करना, ध्यान न देना।
अरकला–(हिं.पुं.)अर्गला, रोक, सिकड़ी।
अरकाटी–(हिं. पुं.) टापुओं में भेजे जानेवाले कुली।
अरक्त–(सं. पुं.) लाक्षा, लाह।
अरक्षित–(सं. वि.) रक्षा न किया हुआ, अपोषित, अनाश्रय।
अरग, अरगजा–(हिं. पुं.) पीले रंग का एक सुगन्धित द्रव्य जो केशर, चन्दन, कपूर इत्यादि को मिलाने से बनता है। इसको लोग मस्तक और शरीर में लगाते हैं।
अरगजी–(हिं. वि.) अरगजा के समान रंगवाला।
अरगट–(हिं.वि.)पृथक्,भिन्न,अलग,जुदा।
अरगनी–(हिं. स्त्री.) वस्त्र इत्यादि टाँगने की रस्सी या लकड़ी।
अरगल–(हिं. पुं.) देखें 'अर्गला'।
अरगाना–(हिं. क्रि. अ., स.) पृथक् करना, जुदा होना, देखें 'अलगाना'।
अरघ–(हिं. पुं.) देखें 'अर्घ'।
अरघट्ट–(सं. पुं.) कुएँ से जल निकालने का यन्त्र, रहट।
अरघा–(हिं. पुं.) अर्घ देने का पात्र, शिवलिंग की जलधरी, कुएँ की जगत पर से पानी निकालने की नाली।
अरघान–(हिं.पुं.)आघ्राण, गन्ध, महँक।
अरचन–(हिं. पुं.) देखें 'अर्चन'; (हिं. स्त्री.) अड़चन, झमेला।
अरचना–(हिं.क्रि.स.) पूजा करना।
अरज–(हिं. स्त्री.) देखें 'अर्ज'।
अरजुन–(हिं. पुं.) देखें 'अर्जुन'।
अरझना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'अरुझना'।
अरणि, अरणी–(सं. पु., स्त्री.) वढ़ई के वरमे के समान एक यन्त्र जो मथानी की तरह घुमाया जाता है और छेद के नीचे रक्खा हुआ कुशा जल उठता है, चकमक पत्थर।
अरण्य–(सं.पुं.)वन,जंगल; **–कदली**–(सं. स्त्री.)जंगली केला; **–गत**–(सं.वि.)वन में पहुँचा हुआ; **–चंद्रिका**–(सं. स्त्री.) व्यर्थ की सजावट; **–चर**–(सं. वि.)वनचर, जंगल में रहनेवाला; **–मार्जार**–(सं.पुं.)वनविलाव; **–रोदन**–(सं.पुं.) निरर्थक रुलाई, निष्फल वात, ऐसी वात जिस पर कोई ध्यान न दे; **–वासी**–(सं. वि.) वनवासी, जंगल का रहनेवाला।
अरण्याध्यक्ष–(सं. पुं.) वन-रक्षक।
अरत–(सं. वि.) मन्द, धीमा।
अरति–(सं. स्त्री.) राग का अभाव, चिन्ता, अनिच्छा, वियोग।
अरथ–(सं. वि.) रथरहित, विना रथ का; (हिं. पुं.) अर्थ, अभिप्राय।
अरथाना–(हिं. क्रि. स.) अर्थ लगाना, व्याख्या करना।
अरथी–(हिं. स्त्री.)शव ले जाने का सीढ़ी के आकार का लकड़ी का ढाँचा,टिकठी।
अरद–(सं. वि.) दन्तहीन, पोपला, विना दाँत का।
अरदना–(हिं. क्रि. स.) पैर से कुचलना, रौंदना, लात मारना, वध करना।
अरदली–(हिं. पुं.) किसी हाकिम का चपरासी।
अरदास–(हिं. स्त्री.) प्रार्थना-पत्र, निवेदनयुक्त उपहार।
अरधंग–(हिं. पुं.) देखें 'अर्धांग'।
अरधंगी–(हिं. वि.) देख "अर्धांगी"।
अरध–(हिं. पुं.) देखें 'अर्ध'।
अरन–(हिं. पुं.) नोकदार निहाई, देखें 'अरण्य'।
अरना–(हिं. पुं.) जंगली भैंसा; (हिं. क्रि. अ.) अड़ना, रुकना।
अरनी–(हिं.स्त्री.)अरणी, एक पहाड़ी वृक्ष।
अरपन–(हिं. पुं.) देखें 'अर्पण'।
अरपना–(हिं.क्रि.स.)अर्पण करना,भेंट देना।
अरव–(हिं.वि.)अर्वुद,सौ करोड़ की संख्या; (पुं.) घोड़ा, इन्द्र, एक देश का नाम।
अरबर–(हिं. वि.) क्रमरहित, असाधारण अड़वड़।
अरबराना–(हिं. क्रि. अ.) व्याकुल होना, घवड़ाना, भयभीत होना, डावाँडोल होना, लड़खड़ाना।
अरवरी–(हिं. स्त्री.) भय, घवड़ाहट।
अरबी–(हिं. वि.) अरव देश का; (पुं.) अरव देश का निवासी; (स्त्री.) अरव देश की भाषा।
अरवीला–(हिं. वि.) साधारण, वेसमझ।
अरभक–(हिं. पुं.) देखें 'अर्भक'।
अरमण–(सं. वि.) आनन्द न लेनेवाला।
अरमणीयता–(सं. स्त्री.) अप्रियता।
अरर–(हिं. अव्य.) आश्चर्यसूचक शव्द।
अरराना–(हिं. क्रि. अ.) अरर शव्द के साथ गिर पड़ना, फिसलना, टूट पड़ना, एकाएक गिर जाना, भहराना।
अरवन–(हिं. पुं.)कच्ची कटनेवाली फसल।
अरवल–(हिं. पुं.) घोड़े की वह अशुभ भौंरी जो उसके कान की जड़ में गर्दन के पास होती है।

अरवा–(हिं. पुं.) बिना उबाले धान से निकाला हुआ चावल।
अरवाती–(हिं. स्त्री.) ओरी।
अरविंद–(सं. पुं.) पद्म, कमल, सारस पक्षी; –नाभि–(पुं.) विष्णु; –बंधु–(पुं.) सूर्य; –योनि–(पुं.) ब्रह्मा।
अरवी–(हिं. स्त्री.) एक कन्द विशेष जिसकी तरकारी बनाकर खाई जाती है।
अरस–(सं. वि.) बिना स्वाद का, नीरस, रसशून्य, असार, अनाड़ी; (पुं.) आलस्य, सुस्ती।
अरसना–(हिं. क्रि. अ.) शिथिल होना, मन्द होना; –परसना–(हिं. क्रि. स.) भेंट करना, आलिंगन करना।
अरस-परस–(हिं. पुं.) देखादेखी, आँख मुदौवल का खेल।
अरसात–(हिं. पुं.) चौबीस अक्षरों का एक छन्द विशेष।
अरसाना–(हिं. क्रि. अ.) अलसाना, निद्रामग्न होना, नींद लगना।
अरसिक–(सं. वि.) अरसज्ञ, जो कविता के रस को न समझता हो।
अरसी–(हिं. स्त्री.) अलसी, तीसी।
अरसीला–(हिं. वि.) अलस, आलस्य से भरा हुआ।
अरहट–(हिं. पुं.) देखें 'रहट'।
अरहन–(हिं. पुं.) बेसन या आटा जो तरकारी इत्यादि में डाला जाता है।
अरहना–(हिं. स्त्री.) पूजा।
अरहर–(हिं. स्त्री.) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती है, तुवरी।
अरहित–(सं. वि.) पूरा, भरा हुआ, सम्पन्न।
अराग–(सं. वि.) उदासीन, विरक्त, धीमा।
अराज–(हिं. वि.) बिना राजा का; (पुं.) अराजकता।
अराजक–(सं. वि.) बिना राजा का, राजशून्य।
अराजकता–(सं. स्त्री.) राजा न रहने की स्थिति, शासन का अभाव, विप्लव, अशान्ति।
अरात, अराति–(सं. पुं.) शत्रु, रिपु, काम, क्रोधादि ६ रिपु, ६ की संख्या; –भंग–(पुं.) शत्रु का पराभव।
अराधना–(हिं. क्रि. स.) उपासना करना, पूजा करना, जप करना।
अरारुट, अरारोट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष, तीखुर।
अराल–(सं. पुं.) मतवाला हाथी; (वि.) वक्र, टेढ़ा।
अराला–(सं. स्त्री.) पुंश्चली स्त्री।
अरावल–(हिं. पुं.) देखें 'हरावल'।
अरि–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी, चक्र, ६ की संख्या, जन्मकुण्डली में छठा स्थान, ईश्वर, दुर्गन्धी, खैर; –कुल–(पुं.) शत्रु का वंश; –केशी–(पुं) श्रीकृष्ण; –घ्न (पुं.) शत्रु का नाश करनेवाला; –ता–(स्त्री.) शत्रुता; –त्व–(पुं.) देखें 'अरिता'; –मर्दन–(वि.) शत्रु को दमन करनेवाला; –मित्र–(पुं.) शत्रु का सहायक; –लोक–(पुं.) शत्रु का देश; –हन–(हिं. पुं.) शत्रुघ्न; –हा–(वि.) शत्रु का नाश करनेवाला; (पुं.) शत्रुघ्न।
अरियाना–(हिं. क्रि. स.) तिरस्कारयुक्त शब्द का प्रयोग करना, अरे या तू-तू कहकर बोलना।
अरिल्ल–(हिं. पुं.) सोलह मात्राओं का एक छन्द।
अरिवन–(हिं. पुं.) रस्सी का फन्दा जिसको लोटे आदि में लगाकर कुएँ से पानी खींचा जाता है।
अरिष्ट–(सं. पुं.) अशुभ चिह्न, दुर्भाग्य, विपत्ति, पीड़ा, दुःख, मारणकारक योग, रीठे का वृक्ष, लहसुन, औषधियों से बना हुआ क्वाथ, मठा, सूतिकागृह; (वि.) अशुभ, विनाशी, बुरा।
अरिष्टक–(सं. पुं.) रीठे का पेड़, नीम का वृक्ष, मद्य।
अरिष्टनेमी–(सं. पुं.) विनता से उत्पन्न कश्यप ऋषि का पुत्र।
अरिष्ट लक्षण–(सं. पुं.) मृत्यु के लक्षण।
अरिष्टा–(सं. स्त्री.) कुटकी, मद्य।
अरिष्टिका–(सं. स्त्री.) रीठी, कुटकी।
अरी–(हिं. अव्य.) स्त्रियों के लिये सम्बोधन का शब्द; (वि.) अटकी हुई।
अरीठा–(हिं. पुं.) अरिष्ट, रीठी।
अरीत–(हिं. स्त्री.) कुरीति, बुरी चाल।
अरुंधती–(सं. स्त्री.) वसिष्ठ ऋषि की पत्नी, सप्तर्षि-मंडल के पास का एक छोटा सा तारा।
अरु–(हिं. अव्य.) और।
अरुई–(हिं. स्त्री.) देखें 'अरवी'।
अरुचि–(सं. स्त्री.) भोजन की अनिच्छा, घृणा; (वि.) इच्छाहीन, निस्पृह, अभिलाषा न रखनेवाला।
अरुचिकर–(सं. वि.) जो अच्छा न लगे, जिसको खाने की इच्छा न हो।
अरुचिर–(सं. वि.) घृणित, घिनौना।
अरुज–(सं. वि.) रोगशून्य, स्वस्थ।
अरुझना–(हिं. क्रि. अ.) एक में एक मिल जाना, उलझना, झगड़ना, चलते-चलते रुक जाना।
अरुझाना–(हिं. क्रि. स.) उलझाना, फन्दा लगाना।
अरुण–(सं. पुं.) सूर्य का सारथी, गरुड़, एक दानव का नाम, लाल रंग, प्रातःकाल, तड़का, पुच्छल तारा, सिन्दूर, केसर, लाल कमल, अफीम, मजीठ, गुड़, एक प्रकार का विषैला कीड़ा, सेंहुड़ का वृक्ष।
अरुणचूड़–(सं. पुं.) कुक्कुट, मुर्गा।
अरुणता–(सं. स्त्री.) सुर्खी, लाली।
अरुणनाग–(सं. पुं.) मुर्दाशंख।
अरुणनेत्र–(सं. पुं.) कोयल, कबूतर।
अरुणप्रिया–(सं. स्त्री.) सूर्य की भार्या, अप्सरा।
अरुण-लोचन–(सं. पुं.) कबूतर, कोयल; (वि.) लाल आँखोंवाला।
अरुणशिखा–(सं. पुं.) कुक्कुट, मुर्गा।
अरुणा–(सं. स्त्री.) कदंब का फूल, घुंमची, गोरखमुण्डी, लाल रंग की गाय।
अरुणाई–(हिं. स्त्री.) अरुणता, ललाई।
अरुणाग्रज–(सं. पुं.) गरुड़।
अरुणित–(सं. वि.) रक्तवर्ण का, लाल रँगा हुआ।
अरुणिमा–(सं. स्त्री.) लाली, रक्तता।
अरुणीकृत–(सं. वि.) लाल रँगा हुआ।
अरुणोदधि–(सं. पुं.) लाल सागर।
अरुणोदय–(सं. पुं.) सूर्योदय से चार दण्ड पहिले का समय, तड़का, पौ फटने का समय, ब्राह्ममुहूर्त।
अरुणोपल–(सं. पुं.) पद्मराग मणि, लाल।
अरुद्ध–(सं. वि.) अनिवारित, न रोका हुआ।
अरुनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) लाल होना, लाली चढ़ाना।
अरुनाई–(हिं. स्त्री.) अरुणाई, लालिमा।
अरुनारा–(हिं. वि.) अरुण, लाल।
अरुनोदय–(हिं. पुं.) देखें 'अरुणोदय'।
अरुरना–(हिं. क्रि. अ.) लचकना, मुड़ना।
अरुवा–(हिं. पुं.) एक लता जिसकी जड़ में कन्द बैठता है जो खाया जाता है, उल्लू पक्षी।
अरुष–(सं. पुं.) सूर्य, ज्वाला, दिन, मेघ।
अरुषी–(सं. स्त्री.) उषाकाल, तड़का।
अरुस–(हिं. पुं.) देखें 'अड़ूसा'।
अरूक्ष–(सं. वि.) जो रूखा न हो, चिकना।
अरूक्षता–(सं. स्त्री.) स्निग्धता, चिकनाहट।
अरूझना–(हिं. क्रि. स.) उलझना।
अरूप–(सं. वि.) कुरूप, भद्दा।

अरूपक–(स. वि.) अलंकाररहित ।
अरूपता–(स. स्त्री.) असमानता ।
अरूरना–(हिं.क्रि.अ.) क्लेश उठाना, पीड़ा होना ।
अरुलना–(हिं. क्रि. अ.) छेदना, विदारित होना, पीड़ित होना ।
अरूस–(हि. पुं.) देखें 'अड़ूसा' ।
अरे–(सं. अव्य.) ए ! ओ ! देख ! आश्चर्यसूचक अव्यय, (नीच व्यक्ति के लिये संबोधित होता है ।)
अरेरना–(हि.क्रि.स.) रगड़ना, घिसना, मलना।
अरेरे–(स. अव्य.) अबे ! ओबे ! आश्चर्यसूचक अव्यय ।
अरोक–(हिं. वि.) विना रोक का, जो रुकता न हो ।
अरोग–(सं. वि.) रोग-शून्य, आरोग्य ।
अरोच–(हिं. पुं.) अरुचि ।
अरोचक–(सं. पुं.) वह रोग जिसमें इच्छा और क्षुधा रहने पर भी खाया न जाय; (वि.) अरुचिकर ।
अरोड़ा–(हि. पुं.) पंजाब की क्षत्री जाति ।
अरोदन–(सं.पुं.) रोने का अभाव, न रोना ।
अरोपण–(सं. पुं.) न रोपने की स्थिति ।
अरोष–(सं. वि.) क्रोधरहित, रोष न दिखलानेवाला ।
अरोहना–(हिं. क्रि. अ.) आरोहण करना, चढ़ना ।
अरौद्र–(सं. वि.) जो भयंकर न हो, सुन्दर, ललित ।
अर्क–(सं. पुं.) सूर्य, इन्द्र, विष्णु, क्वाथ, काढ़ा, अन्न, वज्र, रविवार, पंडित, वृक्ष, मन्त्र, वारह की संख्या, अग्नि, किरण, मदार का वृक्ष, स्फटिक, ताँवा, लाल फल; (अ. पु.) अरक, रस ।
अर्ककांता–(सं.स्त्री.) अड़हुल का फूल, पद्म ।
अर्कक्षीर–(सं. पुं.) मदार का दूध ।
अर्कचंदन–(सं. पुं.) लाल चन्दन ।
अर्कज–(सं. पुं.) यम, शनि, दोनों अश्विनीकुमार, कर्ण ।
अर्कजा–(सं.स्त्री.) यमुना नदी, ताप्ती नदी ।
अर्क-तनय–(सं. पुं.) कर्ण, वैवस्वत मनु ।
अर्कतनया–(सं. स्त्री.) देखें 'अर्कजा' ।
अर्कत्व–(सं. पुं.) चमक, लाली ।
अर्कदिन–(सं.पु.) सूर्य का दिन, रविवार ।
अर्कपाद–(सं. पुं.) सूर्यकान्तमणि ।
अर्कबंधु–(सं. पुं.) पद्म, कमल ।
अर्कवेध–(सं.पुं.) सूर्यवेधी गृह, जिस घर का सहन पूरव-पश्चिम लम्बा होता है ।
अर्कव्रत–(सं. पुं.) माघ शुक्ला सप्तमी को किया जानेवाला व्रत, प्रजा की वृद्धि के लिये राजा का कर लेना ।
अर्कसुता–(सं. स्त्री.) यमुना नदी ।
अर्कीय–(सं. वि.) सूर्य सम्वन्धी ।
अर्कोपल–(सं. पुं.) सूर्यकान्तमणि, पद्मरागमणि ।
अर्गजा–(हिं.पुं.) देखें 'अरगजा' ।
अर्गल–(सं. पु.) किवाड़ के पीछे लगाने का डंडा, अगरी, व्योंड़ा, रोक, प्रतिवन्ध, चटखनी, कपाट, किवाड़, रंगदार वादल जो प्रातःकाल तथा संध्या को पूर्व में देख पड़ता है, मांस ।
अर्गला–(सं. स्त्री.) किवाड़ वन्द करके इसके पीछे अड़ाने की लकड़ी, व्योंड़ा, अगरी, हाथी वाँधने की लोहे की सिकड़ी, रुकावट, अवरोध, देवीमाहात्म्य के पाठ में पहिला स्तोत्र ।
अर्गलिका–(सं. स्त्री.) चटखनी, विल्ली, कपाट वन्द करने का खटका ।
अर्गलित–(सं.वि.) सिकड़ी से वन्द किया हुआ ।
अर्गलीय–(सं. वि.) अर्गला संबंधी ।
अर्घ–(सं. पुं.) मूल्य, दाम, पूजा का उपचार, जलदान, सम्मुख पानी गिराना, उपहार, भेंट, हाथ धोने के लिये जल देना, एक प्रकार का मोती; –दान– (सं. पुं.) अर्घ-समर्पण, भेंट; –पात्र– (सं.पुं.) अर्घ देने का पात्र, अर्घा ।
अर्घा–(हिं.पुं.) अर्घ देने का पात्र, जलधरी ।
अर्घ्य–(सं. वि.) पूजनीय, मूल्यवान्, उपहार देने योग्य; (पुं.) पूजा करने के लिये जल, दूर्वा इत्यादि उपकरण ।
अर्चक–(सं.वि.) पूजक, पूजा करनेवाला ।
अर्चन–(सं. पुं.) पूजन, पूजा, सत्कार ।
अर्चना–(सं.स्त्री.) पूजा, आदर, सत्कार ।
अर्चनीय–(सं. वि.) पूजा करने योग्य, पूजनीय, सत्कार करने योग्य ।
अर्चमान–(सं. वि.) अर्चनीय ।
अर्चा–(सं. स्त्री.) प्रतिमा, मूर्ति, पूजा ।
अर्चि–(सं.स्त्री.) अग्नि की लपट, चमक ।
अर्चित–(सं.वि.) पूजित, आदर किया हुआ ।
अर्चिमान–(सं. वि.) प्रकाशमान; (पुं.) सूर्य ।
अर्च्य–(सं. वि.) पूजनीय, आदरणीय ।
अर्जन–(सं. पुं.) उपार्जन, संग्रह, धरोहर, संग्रह करना, कमाना ।
अर्जनीय–(सं. वि.) अर्जन करने योग्य, संग्रहणीय ।
अर्जित–(सं.वि.) संगृहीत, उपार्जन किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, कमाया हुआ ।
अर्जुन–(सं. पुं.) एक वड़ा वृक्ष, करवीर, काहू, मोर, श्वेतवर्ण, नेत्र का एक रोग, श्वेत कनेर, पाण्डु के तृतीय पुत्र का नाम, पार्थ, सहस्रार्जुन ।
अर्जुनक–(सं. वि.) अर्जुन संबंधी ।
अर्जुनी–(सं. स्त्री.) दूती, कुटनी, श्वेत गाय, उषा ।
अर्ण–(सं. पुं.) साखू का पेड़, तरंग, लहर, अक्षर, जल, एक प्रकार का छन्द ।
अर्णभव–(सं. पुं.) शंख ।
अर्णव–(सं. पुं.) सूर्य, इन्द्र, समुद्र, तरङ्ग, वायुमण्डल, चार की संख्या; (वि.) व्याकुल, आनन्दरहित, फेनयुक्त ।
अर्णव पोत–(सं. पुं) समुद्र में चलनेवाला जहाज ।
अर्णवोद्भव–(सं.पुं.) चन्द्रमा, अमृत ।
अर्णवोद्भवा–(सं.स्त्री.) लक्ष्मी ।
अर्णा–(सं. स्त्री.) नदी ।
अर्ति–(सं. स्त्री.) पीड़ा ।
अर्थ–(सं. पुं.) शब्द की शक्ति द्वारा बोधित पदार्थ, अभिप्राय, प्रयोजन, धन, निमित्त, प्रकार, फल, अभिलाषा, इन्द्रियो का विषय, वस्तु ।
अर्थकर–(सं. वि.) धन का साधक, लाभकारी, उपयोगी, रुपया देनेवाला ।
अर्थकृच्छ्र–(सं. पुं.) धन का कष्ट ।
अर्थचिंतक–(सं. पुं.) राज्य के आय-व्यय की चिन्ता करनेवाला मन्त्री ।
अर्थजात–(सं. वि.) धनाढय ।
अर्थज्ञ–(सं. वि.) प्रयोजन जाननेवाला ।
अर्थदंड–(सं.पुं.) वह धन जो अपराधी से दण्ड के रूप में लिया जावे ।
अर्थना–(सं. स्त्री.) भिक्षा, भीख ।
अर्थनीय–(सं. वि.) याचना के योग्य ।
अर्थपति–(सं.पुं.) अधीश्वर, कुवेर, धनिक ।
अर्थपिशाच–(सं. वि.) वहुत वड़ा कृपण ।
अर्थप्राप्ति–(सं. स्त्री.) धन का आगम, अभिप्राय-सिद्धि ।
अर्थबुद्धि–(सं. वि.) स्वार्थी, अपना अभिप्राय साधनेवाला ।
अर्थभावना–(सं. स्त्री.) धन की चिन्ता ।
अर्थमंत्री–(सं. पुं.) देखें 'अर्थसचिव' ।
अर्थलाभ–(सं. पुं.) धन की प्राप्ति ।
अर्थलोभ–(सं. पुं.) धन की अभिलाषा ।
अर्थवाद–(सं.पुं.) प्रशंसनीय वाक्य, निन्दार्थ कथन, चित्त को अन्य विषय की ओर आकर्षित करने के लिये कहा हुआ वाक्य ।
अर्थविज्ञ–(सं. पुं.) अर्थशास्त्रज्ञ ।
अर्थवृद्धि–(सं. स्त्री.) धन-संचय ।
अर्थवेद–(सं.पुं.) शिल्पशास्त्र, कारीगरी ।
अर्थशास्त्र–(सं. पुं.) अर्थनीति-विषयक

वह शास्त्र जिसमें धन के उपार्जन, रक्षण और वृद्धि के सिद्धान्त बतलाये गये हों।
अर्थसंचय–(सं.पुं.) धन एकत्रित करना।
अर्थसचिव–(सं. पुं.) राज्य के आर्थिक विषयों की देखभाल करनेवाला मंत्री।
अर्थसमाहार–(सं. पुं.) शब्द या वाक्य के अर्थ का संक्षेप।
अर्थसिद्धि–(सं. स्त्री.) तात्पर्य की सिद्धि, धन की सिद्धि।
अर्थहर–(सं. पुं.) तस्कर, चोर।
अर्थहीन–(सं. वि.) धनहीन, दरिद्र, अभिप्रायरहित।
अर्थांतर–(सं.पुं.) दूसरा अर्थ या आशय।
अर्थांतरन्यास–(सं.पुं.) वह अलंकार जिसमें एक प्रकार के अर्थ द्वारा अन्य प्रकार के अर्थ का समर्थन करने का प्रयत्न होता है।
अर्थागम–(सं. पुं.) धनोपार्जन, आय।
अर्थात्–(सं. अव्य.) यह आशय है, अन्य विषयों में, वस्तुतः।
अर्थाधिकार–(सं.पुं.) कोषाध्यक्ष का काम।
अर्थाधिकारी–(सं. पुं.) कोषाध्यक्ष।
अर्थाना–(हि. क्रि.स.) अर्थ लगाना, समझाना।
अर्थानुवाद–(सं.पुं.) अर्थ का अनुवाद, उल्था।
अर्थापत्ति–(सं. स्त्री.) मीमांसा मत के अनुसार वह प्रमाण जिसमें प्रगट रूप से किसी विषय को प्रकाशित न करके केवल शब्द द्वारा ही विषय की सिद्धि होती है, वह अलंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाती है।
अर्थालंकार–(सं. पुं.) वह अलंकार जिसमें अर्थ का गौरव दिखलाया जाता है।
अर्थित–(सं. वि.) याचित, माँगा हुआ।
अर्थिता–(सं.स्त्री.) याचना, भिक्षुकवृत्ति।
अर्थी–(सं. वि.) याचक, माँगनेवाला, इच्छा करनेवाला, प्रयोजन की आकांक्षा करनेवाला; (पुं.) वादी, सेवक, अनुजीवी, धनी।
अर्थोपार्जन–(सं. पुं.) धन या सम्पत्ति की प्राप्ति।
अर्दन–(सं. पुं.) याचन, पीड़ा, हत्या, गमन, जाना।
अर्दना–(हि.क्रि.स.) पीड़ा देना, कष्ट देना।
अर्दली–(हि. पु.) देखें 'अरदली'।
अर्दित–(सं. वि.) पीड़ित।
अर्द्ध, अर्ध (सं. वि.) दो समान टुकड़ों में से एक, आधा।
अर्धक–(सं. पुं.) जलसर्प, डोंड़हा।
अर्धकृत–(सं. वि.) आधा किया हुआ।
अर्धकोटि–(सं. स्त्री.) आधा करोड़।
अर्धकोश–(सं.पुं.) आधा कोस, एक मील।
अर्धगोल–(सं. पुं.) वृत्त का आधा भाग।
अर्धचंद्र–(सं. पुं.) आधा चन्द्रमा, नख का चिह्न, गलहस्त गरदनियाँ, एक प्रकार का बाण, मोर के पंख की आँख, चन्द्रबिंदु, अष्टमी का चन्द्रमा।
अर्ध-चंद्राकार–(सं.वि.) आधे चन्द्रमा के आकार का।
अर्धजल–(हि. पुं.) शव को नहलाना।
अर्धतनु–(सं. पु.) आधा शरीर।
अर्धदग्ध–(सं. वि.) आधा जला हुआ, झुलसा हुआ।
अर्ध-दिन, अर्ध-दिवस–(सं.पुं.) आधा दिन, दोपहर।
अर्ध-नयन–(सं. पुं.) दिव्य चक्षु, ज्ञानचक्षु, तीसरी आँख जो देवताओं के भ्रूमध्य में होती है।
अर्ध-नारीश्वर–(सं. पुं.) आधे पुरुष और आधे स्त्री की आकृति वाले शिव।
अर्धनिशा–(सं.स्त्री.) अर्धरात्रि, आधी रात।
अर्ध-पल–(सं.पुं.) चार तोले का परिमाण।
अर्ध-पारावत–(सं.पुं.) वनकुक्कुट, तीतर।
अर्धपूर्ण–(सं. वि.) आधा भरा हुआ।
अर्ध-प्रहर–(सं. पुं.) आधा पहर, डेढ़ घंटे का समय।
अर्ध-प्रादेश–(सं.पुं.) आधे बित्ते की नाप।
अर्ध-भाग–(सं.वि.) खण्ड, टुकड़ा, आधा अंश या भाग।
अर्ध-भाज्–(सं. वि.) आधे का अंशधारी।
अर्ध-मागधी–(सं. स्त्री.) प्राकृत भाषा जो प्राचीन समय में मथुरा और पटना के बीच में बोली जाती थी।
अर्धमात्रा–(सं. स्त्री.) आधा परिमाण।
अर्ध-मास–(सं.पुं.) आधा महीना, एक पक्ष।
अर्धमुष्टि–(सं. स्त्री.) आधी मुट्ठी।
अर्ध-याम–(सं.पुं.) दिन या रात का आठवाँ भाग, डेढ़ घंटा।
अर्ध-रात्र–(सं. पुं.) आधी रात।
अर्ध-व्यास–(सं.पु.) वृत्त की त्रिज्या।
अर्ध-शत–(सं. पुं.) पचास की संख्या।
अर्ध-शब्द–(सं. वि.) धीमे शब्दवाला।
अर्ध-शेष–(सं.वि.) आधा बाकी बचा हुआ।
अर्ध-समवृत्त–(सं. वि.) एक वृत्त विशेष जिसके पहिले, तीसरे तथा दूसरे और चौथे पाद समान होते हैं, सोरठा।
अर्धांग–(सं. पुं.) शरीर का आधा भाग, पक्षाघात, लकवा रोग जिसमें आधा अंग चेतनाशून्य हो जाता है।
अर्धांगिनी–(सं. स्त्री.) स्त्री, पत्नी।
अर्धांगी–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
अर्धांश–(सं. पुं.) अर्ध भाग, आधा अंश।
अर्धाकार–(सं. पुं.) 'अ' अक्षर का आधा भाग (ऽ)।
अर्धार्ध–(सं. पुं.) आधे का आधा, चौथाई भाग।
अर्धाली–(सं. पुं.) चौपाई का आधा भाग।
अर्धेन्दु–(सं.पुं.) आधा चन्द्रमा, गरदनियाँ।
अर्धोक्त–(सं. वि.) आधा कहा हुआ, स्पष्ट न बतलाया हुआ।
अर्धोक्ति–(सं. स्त्री.) आधा कथन।
अर्धोदक–(सं. पुं.) कमर तक पहुँचनेवाला जल।
अर्धोदय–(सं.पुं.) एक पर्व जो माघ मास की अमावस्या को रविवार, व्यतीपात और श्रवण नक्षत्र पड़ने पर होता है।
अर्धोदित–(सं. वि.) आधा निकला हुआ, आधा कहा हुआ।
अर्पण–(सं.पुं.) दान, भेंट, स्थापन, त्याग।
अर्पणीय–(सं. वि.) अर्पण करने योग्य।
अर्पित–(सं. वि.) दिया हुआ, स्थापित।
अर्बदर्ब–(हि. पुं.) सम्पत्ति, विभव।
अर्बुद–(सं. पुं.) दस करोड़ की संख्या, मेघ, एक असुर का नाम, एक पर्वत का नाम, दो मास का गर्भ, शरीर के किसी भाग में गुल्म या गाँठ पड़ जाना।
अर्भक–(सं. पुं.) बालक, बच्चा; (वि.) सूक्ष्म, कृश, मूर्ख, दुबला, पतला।
अर्रबर्र–(हि. पुं.) व्यर्थ की वार्ता।
अर्यमा–(सं. पुं.) सूर्य, मदार का पेड़, यम, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, बारह आदित्यों में से एक।
अर्वती–(सं. स्त्री.) घोड़ी, कुटनी।
अर्वाक्–(सं. अव्य.) इधर, इस ओर, बगल में, समीप, नीचे, पहिले।
अर्वाक्-काल–(सं. पुं.) पिछला समय।
अर्वाचीन–(सं.वि.) हाल का, आधुनिक, नूतन, नया।
अर्वाचीनता–(सं.स्त्री.) नवीनता, नयापन।
अर्श–(सं. वि.) अश्लील, फूहड़; (पुं.) हानि, बवासीर रोग; (अ. पुं.) स्वर्ग, आकाश; –सूदन–(सं.पुं.) सूरन।
अर्शोज–(सं. पुं.) भगन्दर रोग।
अर्ह–(सं. पुं.) इन्द्र, विष्णु, पूजा, मूल्य, सुवर्ण; (वि.) योग्य, पूजनीय, मूल्यवान्।
अर्हण–(सं. पुं.) पूजा, सम्मान।
अर्हणा–(सं. स्त्री.) पूजा।
अर्हणीय–(सं. वि.) पूजनीय, पूजा करने योग्य।
अर्हत–(सं.वि.) पूजनीय, प्रसिद्ध, जिनदेव, जैनियों के देवता।

अर्हा–(सं. स्त्री.) पूजा ।
अर्हित–(सं.वि.) पूजित, पूजा किया हुआ।
अर्ह्य–(सं. वि.) पूज्य, मान्य, योग्य ।
अलंकरण–(सं. पुं.) सजाना, सजावट, आभूषण ।
अलंकर्त्ता–(सं. वि., पुं.) सजानेवाला ।
अलंकार–(सं. पुं.) सजाना, आभूषण, गहना, वाक्य-रचना में आर्थिक चमत्कार लाने की क्रिया या शैली—उपमा, रूपक आदि ।
अलंकार-शास्त्र–(सं. पुं.) अलंकारों का वर्णन-विवेचन करनेवाला शास्त्र ।
अलंकृत–(सं. वि.) सजाया हुआ, अलंकार-युक्त ।
अलंकृति–(सं. स्त्री.) देखें 'अलंकरण' ।
अलँग–(हिं. पुं.) पार्श्व, ओर, बगल ।
अलंघनीय–(सं. वि.) जो न लाँघा जा सके।
अलंघ्य–(सं. वि.) देखें 'अलंघनीय' ।
अलंवुषा–(सं. स्त्री.) छुई-मुई नामक पौधा।
अल–(हिं. पुं.) विच्छू का डंक ।
अलक–(सं. पुं.) मस्तक के लटकते हुए वाल, लट, केश, पागल कुत्ता; –प्रभा–(स्त्री.) कुवेरपुरी ।
अलका–(सं. स्त्री.) कुवेरपुरी, आठ-दस वर्ष की कन्या।
अलकाधिप, अलकाधिपति, अलकापति–(सं. पुं.) कुवेर ।
अलक्त–(सं. पुं.) लाक्षा, लाख ।
अलक्षण–(सं. पुं.) अशुभ चिह्न ; (वि.) अशुभ-सूचक, खराव ।
अलक्षता–(हिं. स्त्री.) उद्देश्यहीनता ।
अलक्षित–(सं. वि.) अज्ञात, न देखा हुआ, अप्रगट, अदृश्य ।
अलक्ष्य–(सं. वि.) अज्ञेय, अदृश्य, जो देख न पड़े, अचिह्नित, लक्षणरहित ।
अलख–(हिं. वि.) अलक्ष्य, अदृश्य, जो देख न पड़ता हो, अगोचर; (मुहा.) –जगाना–चिल्लाकर ईश्वर का नाम लेना, ईश्वर के नाम पर भीख माँगना ।
अलखधारी, अलखनामी–(हिं. पुं.) एक प्रकार के साधु जो अलख अलख पुकारते और भीख माँगते फिरते हैं ।
अलग–(हिं. वि.) अलग्न, पृथक्, भिन्न; (क्रि.प्र.) –करना या होना–दूर करना या होना, हटना, हटाना ।
अलगनी–(हिं.स्त्री.) कपड़ा टाँगने की डोरी।
अलगाना–(हिं.क्रि.स.) पृथक् करना, अलग करना, हटा देना ।
अलगाव, अलगावा–(हिं. पुं.) वियोग, पार्थक्य ।
अलग्न–(सं. वि.) न मिला हुआ, पृथक्; (पुं.) ज्योतिष में पापग्रहयुक्त लग्न ।
अलघु–(सं. वि.) भारी, लंबा ।
अलज्ज–(हिं. वि.) निर्लज्ज, लज्जाहीन ।
अलता–(हिं. पुं.) अलक्तक, लाल रंग जिसको स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।
अलबला–(हिं. वि.) अनुपम, अनोखा, अनूठा, वेजोड़, बाँका, छैला, सुन्दर ।
अलबेलापन–(हिं. पुं.) सजधज, ठाट-बाट, छैलापन, सुन्दरता।
अलब्ध–(सं. वि.) अप्राप्त, हाथ में न आया हुआ ।
अलभ्य–(सं. वि.) अप्राप्य, जो प्राप्त न हो सके, दुर्लभ, अमूल्य, कठिनता से मिलनेवाला ।
अलम्–(सं. अव्य.) पर्याप्त रूप में, अतिशय, प्रचुर, पूरा ।
अलर्क–(सं.पुं.) पागल कुत्ता, श्वेत मदार।
अललटप्पू–(हिं. वि.) मनमाना, अटकल-पच्चू, वेहिसाव, वाहियात ।
अलल-बछेड़ा–(हिं. पुं.) घोड़े का छोटा वच्चा, अनभिज्ञ वालक ।
अललाना–(हिं. क्रि. अ.) चिल्लाना ।
अलवाँती–(हिं. स्त्री.) प्रसूता, जिस स्त्री ने हाल में वच्चा जना हो ।
अलवाई–(हिं. वि.) दो-एक महीने की व्यायी हुई गाय या भैंस।
अलस–(सं. वि.) दीर्घसूत्री, आलसी, सुस्त ।
अलसता–(सं.स्त्री.), अलसत्व–(सं.पुं.) आलस्य, सुस्ती ।
अलसान–(हिं.स्त्री.) आलस्य, शिथिलता, सुस्ती ।
अलसाना–(हिं. क्रि. अ.) सुस्त पड़ना, शिथिलता मालूम करना, झपकी लेना ।
अलसी–(हिं. स्त्री.) अतसी, तीसी ।
अलसेट–(हिं. पुं.) विलम्ब, देर, ढिलाई, विघ्न, धोखा-धड़ी, हेरफेर, अड़चन ।
अलसेटिया–(हिं. वि.) रोकने या अड़चन डालनेवाला, वाधक, झगड़ालू, व्यर्थ में अड़ंगा डालनेवाला ।
अलसौंहाँ–(हिं. वि.) आलस्ययुक्त, सुस्त ।
अलहदा–(अ. वि.) अलग, जुदा ।
अलहदी–(हिं. वि.) देखें 'अहदी' ।
अलहिया–(हिं. स्त्री.) एक रागिनी विशेष ।
अलाई–(हिं. वि.) आलसी, सुस्त ।
अलात–(सं. पुं.) अंगारा, कोयला ।
अलान–(हिं. पुं.) हाथी वाँधने का खूँटा या सिक्कड़, वेड़ी, वन्धन ।
अलानिया–(अ. अव्य.) खुले आम ।
अलाप–(हिं. पुं.) देखे 'आलाप' ।
अलापना–(हिं.क्रि.अ.,स.) वोलना, वातचीत करना, ऊँचे स्वर में गाना ।
अलापी–(हिं. वि.) वोलनेवाला, अलापनेवाला ।
अलावू–(सं. पुं.) कद्दू, लौकी, तुम्वी ।
अलाभ–(सं. पुं.) लाभ का अभाव, हानि ।
अलाम–(हिं. वि.) वातूनी, झूठ वोलनेवाला, मिथ्यावादी ।
अलायक–(हिं. वि.) अयोग्य ।
अलार–(सं. पुं.) कपाट, किवाड़; (हिं. पुं.) भट्ठी, आवाँ ।
अलाल–(हिं. वि.) आलसी, निकम्मा ।
अलाव–(हिं. पुं.) अलात, कौड़ा, जाड़े में तापने के लिये जलाई हुई आग ।
अलावज–(हिं.पुं.) एक प्रकार का ढोलक ।
अलावनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का तार से वजनेवाला वाजा ।
अलिंग–(सं. वि.) लिंग रहित, विना चिह्न का, विना पहचान का; (पुं.) परमात्मा ।
अलिंगी–(सं. वि.) सच्चा ।
अलिंजर–(सं. पुं.) पानी रखने का मिट्टी का छोटा पात्र, झंझर, घड़ा ।
अलिंद–(सं. पुं.) दरवाजे के सामने का चवूतरा, एक प्राचीन जनपद ।
अलि–(सं. पुं.) भ्रमर, भौरा, कौवा, कोयल, शराव, विच्छ; (हिं. स्त्री.) सखी, सहेली ।
अलिक–(सं. पुं.) ललाट, माथा ।
अलिजिह्वा, अलिजिह्विका–(सं. स्त्री.) गले के भीतर की घाँटी, कौवा ।
अलिदूर्वा–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की दूव ।
अलिप्रिय–(सं. पुं.) आम का पेड़, लाल कमल ।
अलिया–(हिं. स्त्री.) आलय, ताखा, अरवा ।
अली–(हिं. स्त्री.) सखी, सहेली, पंक्ति; (पुं.) भौंरा ।
अलीक–(सं. पुं.) मिथ्या, झूठ; (वि.) अप्रिय, झूठा; (हिं. स्त्री.) कुरीति, अप्रतिष्ठा; –ता–(स्त्री.) झूठ ।
अलीह–(हिं.वि.) मिथ्या, झूठ, अनुपयुक्त ।
अलुटना–(हिं. क्रि.अ.) लड़खड़ाना, डगमगाना ।
अलुप्त–(सं. वि.) जो लुप्त न हो ।
अलुब्ध–(सं. वि.) लोभरहित, जो लालची न हो ।
अलूना–(हिं. वि.) विना नमक मिला हुआ ।
अलूला–(हिं. पुं.) तरंग, लहर, वुलवुला ।
अले–(हिं.अव्य.) देखें 'अरे' ।
अलेख–(हिं. वि.) अलक्ष्य, दुर्बोध,

जिसका हिसाव न हो सके, अनगिनती, वहुत अधिक।
अलेखा–(हिं. वि.) निरर्थक।
अलेखी–(हिं.वि.) न्यायविहीन, अन्यायी, अंधेर मचानेवाला।
अलोक–(सं. पुं.) जगत् का अन्त, अदृश्य वस्तु; (हिं. पुं.) मिथ्या कलंक; (वि.) निर्जन, न दीखनेवाला, अदृश्य।
अलोकना–(हिं. क्रि.स.) देखना, दृष्टि डालना, ताकना।
अलोना–(हिं. वि.) अलवण, विना नमक का, स्वादरहित।
अलोप–(सं. वि.) जिसका लोप न हो।
अलोभ–(सं. पुं.) लोभ का अभाव; (वि.) लोभरहित।
अलोभी–(हिं. वि.) लोभशून्य, जिसको लालच न हो।
अलोल–(सं. वि.) अचंचल, स्थिर।
अलोलिक–(हिं.पुं.) अचंचलता, स्थिरता, ठहराव।
अलोलुप–(सं. वि.) लोभशून्य, लालच न करनेवाला।
अलोहित–(सं.वि.) अरक्त, जो लाल न हो।
अलौकिक–(सं. वि.) लोक में अविदित, लोकोत्तर, अमानुषी, अद्भुत, विलक्षण।
अलौकिकत्व–(सं. पुं.) विलक्षणता।
अल्प–(सं.वि.) छोटा, कम, थोड़ा; **–क्रीत**–(वि.) सस्ता; **–चेष्टित**–(वि.) मन्द; **–जीवी**–(वि.) अल्पायु, कम आयुवाला; **–ज्ञ**–(वि.) थोड़े ज्ञानवाला; **–ता**–(स्त्री.) थोड़ी वुद्धि या समझ; **–तनु**–(वि.) वामन, वौना, दुर्वल; **–ता**–(स्त्री.) न्यूनता, सूक्ष्मता, कमी, छोटाई; **त्व**–(पुं.) अल्पता; **–दृष्टि**–(वि.) परिमित ज्ञानवाला; **–धी**–(वि.) अज्ञान, कम वुद्धि का; **–प्राण**–(पुं.) व्याकरण में व्यंजन वर्ण के प्रत्येक वर्ग का पहिला, तीसरा तथा पाँचवाँ अक्षर और य, र, ल, व तथा स्वर; **–वल**–(वि.) निर्वल; **वुद्धि**–(वि.) मूर्ख; **–भाषी**–(वि.) कम वोलनेवाला; **–मूर्ति**–(वि.) छोटे शरीरवाला; **–मूल्य**–(वि.) सस्ता, कम मूल्य का; **–वयस्क**–(वि.) छोटी अवस्था का; **–वादी**–(वि.) कम वोलनेवाला। **–शः**–(अव्य.) थोड़ा-थोड़ा, धीरे-धीरे, कुछ, कम।
अल्पायु–(हिं. वि.) थोड़ी आयुवाला।
अल्पाहार–(सं.पुं.) लघु भोजन, हल्का खाना।
अल्पाहारी–(सं. वि.) कम भोजन करनेवाला।
अल्ल–(हिं. पुं.) वंश का नाम, उपगोत्र (तिवारी, पांडे, मिश्र आदि)।
अल्लम-गल्लम–(हिं. पुं.) कूड़ा-कर्कट, अलर-वलर, व्यर्थ की वात, प्रलाप।
अल्लाना–(हिं. क्रि. अ.) गला फाड़कर चिल्लाना, शोर करना।
अल्लामा–(अ. वि.) दैवज्ञ, पंडित।
अल्लाह–(अ. पुं.) मुसलमानों के धर्मानुसार परमेश्वर, सृष्टिकर्त्ता।
अल्हड़–(हिं. वि.) अकुशल, अनुभवहीन, उजड्ड, उद्धत, गँवार, अनाड़ी; (पुं.) छोटा वछड़ा; **–पन**–(पुं.) अनुभवहीनता, अनाड़ीपन, उजड्डपन।
अवंति, अवंतिका, अवंती–(सं. स्त्री.) प्राचीन उज्जैन राज्य की राजधानी।
अवंश–(सं. वि.) वंशहीन।
अवकंपित–(सं. वि.) विचलित, घवड़ाया हुआ।
अवकलन–(सं. पुं.) ज्ञान, समझ, दृष्टि।
अवकलना–(हिं. क्रि. स.) ज्ञान होना, समझ में आना।
अवकाश–(सं. पुं.) विश्राम लेने का समय, अवसर, समय, स्थान, अन्तर, दूरी, दृष्टिपात।
अवकिरण–(सं. पुं.) विखेरना, विस्तार, फलाव, छितराव।
अवकीर्ण–(सं. वि.) व्याप्त, चूर्ण किया हुआ, नाश किया हुआ, छितराया हुआ।
अवकुंचन–(सं. पुं.) समेटना, वटोरना।
अवक्तव्य–(सं. वि.) न वोलने योग्य, अश्लील।
अवक्र–(सं. वि.) सरल, सीधा, जो टेढ़ा न हो।
अवक्रम–(सं.पुं.) निम्न गति, नीचे जाना।
अवक्रोश–(सं. पुं.) निन्दा, गाली।
अवगणन–(सं. पुं.) अपमान, निन्दा, तिरस्कार।
अवगणित–(सं. वि.) अपमानित, निंदित।
अवगत–(सं. वि.) प्रतिपन्न, ज्ञात, विदित, जाना हुआ, नीचे गया हुआ, गिरा हुआ।
अवगति–(सं. स्त्री.) वुद्धि, धारणा, नीचगति, कुगति।
अवगर्हित–(सं. वि.) निन्दित।
अवगारना–(हिं. क्रि. स.) जताना, समझाना, वुझाना।
अवगाह–(सं. पुं.) स्नान, अन्तःप्रवेश, अवगति; (वि.) ज्ञान से जाना हुआ, गहन, गहरा, अथाह, क्लिष्ट, कठिन।
अवगाहन–(सं.पुं.) निमज्जन, पानी में घुसकर स्नान, प्रवेश, चाह, छानवीन, खोज।
अवगाहना–(हिं. क्रि. अ., स.) घुसकर स्नान करना, डूवना, धँसना, मथना, नहाना, छानवीन करना, हिलाना, डोलाना, विचारना, समझना, लीन होना।
अवगाहित–(सं. वि.) नहाया हुआ।
अवगुंठन–(सं. पुं.) ढाँपना, छिपाना, घूँघट डालना, घूँघट।
अवगुंठित–(सं.वि.) आच्छादित, छिपाया हुआ।
अवगुंफित–(सं. वि.) गुथा हुआ।
अवगुण–(सं.पुं.) दोष, अपराध, वुराई, ऐव।
अवग्रह–(सं. पुं.) प्रतिवन्ध, रुकावट, वाधा, अनावृष्टि, वर्षा का अभाव, प्रकृति, स्वभाव, शाप, कोसना।
अवघट–(सं.पुं.) पीसने का यन्त्र, जाँता; (वि.) कठिन, दुर्गम, विकट, गड़वड़।
अवघट्टित–(सं.वि.) चालित, चलाया हुआ।
अवघाती–(सं. वि.) चोट पहुँचानेवाला, मारनेवाला।
अवचट–(हिं. पुं.) अनजान, अचक्का, अंडस, कठिनाई; (अव्य.) अकस्मात्।
अवचन–(सं. वि.) मूक, गूँगा।
अवचनीय–(सं. वि.) अश्लील, फूहड़।
अवच्छिन्न–(सं. पुं.) पृथक् किया हुआ, अलगाया हुआ, विशिष्ट अर्थ का।
अवच्छेद–(सं. पुं.) छेदन, भेद, अलगाव, सीमा, व्याप्ति, निश्चय, अन्वेषण, छानवीन, परिच्छेद, विभाग।
अवच्छेदक–(सं. पुं.) अलग करनेवाला, सीमा वाँधनेवाला, निश्चय करनेवाला।
अवजनित–(सं. वि.) जनित, उत्पन्न।
अवज्ञा–(सं. स्त्री.) अनादर, अपमान, आज्ञा न मानना, पराजय, हार, वह अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी वस्तु के गुण-दोष को नहीं लेती।
अवज्ञान–(सं. पुं.) अपमान, तिरस्कार।
अवज्ञात–(सं.वि.) अपमानित, तिरस्कृत।
अवज्ञेय–(सं. वि.) अनादरणीय, तिरस्कार के योग्य।
अवटना–(हिं.क्रि.स.) मथना, किसी द्रव पदार्थ को जलाकर गाढ़ा करना।
अवडेर–(हिं. पुं.) झंझट, वखेड़ा; (वि.) फेरवट का, झंझटी, वेढंगा।
अवडेरना–(हिं.क्रि.स.) झंझट में डालना, कष्ट देना।
अवतंस–(सं. पुं.) सिर का आभूषण, कान का आभूषण, कर्णपूर, किरीट, मुकुट, टीका, हार, माला, पाली, भ्रातृपुत्र, भतीजा, दुल्हा।
अवतरण–(सं. पुं.) ऊपर से नीचे

आना, पार करना, जन्म लेना, प्रादुर्भाव, प्रतिकृति, सोपान, सीढ़ी, घाट ।
अवतरणिका, अवतरणी–(सं. स्त्री.) ग्रन्थ की प्रस्तावना, भूमिका, उपोद्घात, रीति, परिपाटी ।
अवतरना–(हिं. क्रि. अ.) अवतार लेना, जन्म लेना ।
अवतार–(सं. पुं.) नीचे आना, उतरना, शरीर धारण करना, जन्म, देवताओं का मनुष्यादि का शरीर धारण करना, तीर्थ, सोपान, सीढ़ी ।
अवतारण–(सं. पुं.) उतारना, जन्म लेना, ग्रन्थ की प्रस्तावना ।
अवतारना–(हिं. क्रि. स.) उत्पन्न करना, रचना, उतारना, जन्म देना ।
अवतारित–(सं. वि.) आरोपित, रक्षित ।
अवतारी–(हिं. वि.) उतरनेवाला, अवतार ग्रहण करनेवाला, देवांशधारी, अलौकिक ।
अवतीर्ण–(सं. वि.) ऊपर से नीचे को आया हुआ, अवतारी ।
अवदत्त–(सं. वि.) फेरकर लिया हुआ ।
अवदरित–(सं.वि.) टूटा, फूटा, चिटका हुआ ।
अवदाघ–(सं. पुं.) धूप, ग्रीष्मकाल ।
अवदात–(सं. पुं.) शुभ्रता, श्वेतवर्णता; (वि.) स्वच्छ, निर्मल, सुन्दर, पीला, वसन्ती रंग का ।
अवदान–(सं.पुं.) प्रशस्त आचरण, अच्छा काम, खण्डन, पराक्रम, शक्ति, अतिक्रम, निर्मल करना ।
अवदान्य–(सं. वि.) कृपण, पराक्रमी, उल्लंघन करनेवाला ।
अवदारक–(सं. वि.) विदारण करनेवाला; (पुं.) कुदाली, फावड़ा ।
अवदारण–(सं. पुं.) विदारण, टुकड़े-टुकड़ करना ।
अवदाह–(सं. पुं.) शरीर की जलन, अग्नि से जल जाना ।
अवदीर्ण–(सं. वि.) विदीर्ण, पिघला हुआ ।
अवद्य–(सं. वि.) जो न कहा जा सके, अधम, पापी, निन्द्य ।
अवध–(सं.पुं.) कौशल देश, अयोध्या; (वि.) जो वध के योग्य न हो ।
अवधान–(सं. पुं.) मनोयोग, चित्त लगाना, चित्तवृत्ति का निरोध करके एक ओर लगाना, ध्यान, समाधि, सावधानी ।
अवधारण–(सं. पुं.) निरूपण, निश्चय, विचारसहित निर्धारण ।
अवधारणीय–(सं. वि.) निरूपण करने योग्य ।
अवधारना–(हिं. क्रि. स.) धारण करना, ग्रहण करना ।
अवधारित–(सं. वि.) निर्धारित, निश्चित ।
अवधार्य–(सं. वि.) निर्णय करने योग्य, विचारणीय ।
अवधि–(सं. स्त्री.) सीमा, काल, निर्धारित काल, अन्त समय, पर्यन्त, तक ।
अवधिमान–(हिं. पुं.) समुद्र ।
अवधी–(सं.वि.) अवध संबंधी; (स्त्री.) अवध की भाषा ।
अवधूत–(सं.वि.) कंपित, हिलाया हुआ; (पुं.) एक प्रकार के सन्यासी ।
अवधृत–(सं. वि.) नियमित, निश्चित ।
अवधेय–(सं. वि.) श्रद्धा के योग्य, जानने योग्य ।
अवध्वंस–(सं. पुं.) नाश, निन्दा, कलंक ।
अवध्वस्त–(सं.वि.) त्यागा हुआ, निन्दित ।
अवन–(हिं.पुं.) रक्षा, प्रसन्न करने का कार्य ।
अवनत–(सं. वि.) नीचा, झुका हुआ, पतित, कम, नमस्कार किया हुआ ।
अवनति–(सं. स्त्री.) विनय, नम्रता, न्यूनता, घाटा, अधोगति, हीन दशा ।
अवनम्र–(सं. वि.) अति नम्र ।
अवनि, अवनी–(सं. स्त्री.) भूमि, पृथ्वी ।
अवनिनाथ, अवनीपाल, अवनीश–(स. पुं.) राजा ।
अवपतन–(सं. पुं.) उतार, गिराव, फैलाव, हाथी पकड़ने का गड्ढा ।
अवप्लुत–(सं. वि.) आर्द्र, भीगा हुआ ।
अवबोध–(सं. पुं.) ज्ञान, शिक्षा, बोध ।
अवबोधक–(सं.पुं.) सूर्य, रात का पहरुवा ।
अवबोधन–(सं.पुं.) चेतावनी ।
अवभासित–(सं. वि.) प्रकाशित, लक्षित ।
अवभृथ–(सं. पुं.) प्रधान यज्ञ समाप्त होने पर दूसरे यज्ञ का आरम्भ, यज्ञ के अन्त का स्नान ।
अवम–(सं. वि.) अधम, निकृष्ट; (पुं.) दिनक्षय, पितृगण विशेष, मलमास ।
अवमत–(सं. वि.) तिरस्कृत, अपमानित ।
अवमर्दन–(सं. पुं.) दलन, मर्दन ।
अवमर्दित–(सं. वि.) मला हुआ, कुचला हुआ ।
अवमर्श–(सं. पुं.) स्पर्श, संयोग ।
अवमर्षण–(सं.पुं.) असहनशीलता, अधैर्य ।
अवमान–(सं. पुं.) अनादर, तिरस्कार ।
अवमानना–(हिं.क्रि.स.) तिरस्कार करना ।
अवमानित–(सं. वि.) अपमानित ।
अवमोचन–(सं.पुं.) उन्मोचन, स्वतन्त्रता-प्रदान ।
अवयव–(सं.पुं.) अंश, भाग, टुकड़ा, अङ्ग, शरीर का कोई भाग, वाक्य का अंश ।
अवयवी–(सं. वि.) अवयव रखनेवाला, अंगी; (पुं.) शरीर, देह ।
अवर–(सं. वि.) अवम, नीच, पीछे रहनेवाला, अतिश्रेष्ठ, दूसरा ।
अवरज–(सं. पुं.) छोटा भाई, शूद्र ।
अवरत–(सं. वि.) विरत, विश्रान्त, पृथक्, स्थिर ।
अवरति–(सं. स्त्री.) विश्राम, ठहराव, छुटकारा ।
अवराधक–(हिं. वि.) आराधना करनेवाला, दास, सेवक ।
अवराधन–(सं. पुं.) आराधना, उपासना, पूजा, सेवा ।
अवराधना–(हिं.क्रि.स.) उपासना करना, सेवा करना ।
अवराधी–(सं.वि., पुं.) आराधक, उपासक, पूजक ।
अवरावर–(सं. वि.) बहुत छोटा ।
अवरुग्ण–(सं. वि.) रुग्ण, रोगी ।
अवरुद्ध–(सं. वि.) प्रतिरुद्ध, गुप्त, छिपा हुआ ।
अवरुद्धा–(सं. स्त्री.) रखनी, उढरी ।
अवरूढ़–(सं. वि.) उतारा हुआ, उखाड़ा हुआ ।
अवरूप–(सं. वि.) कुरूप, भद्दा ।
अवरेखना–(हिं.क्रि.स.) चित्रित करना देखना-भालना, अनुमान करना, सोचना, मानना, समझना, बूझना, स्वीकार करना ।
अवरेब–(हिं. पुं.) वक्र चलन, तिरछी चाल, फन्दा, कपड़े की तिरछी काट, कठिनाई, विवाद, झगड़ा ।
अवरेबदार–(हिं.वि) तिरछी काट का, पेचीला ।
अवरेबी–(हिं. वि.) देखें 'अवरेबदार' ।
अवरोध–(सं. पुं.) रोक, रुकावट, विरोध, निषेध, झगड़ा, घेरा, राजा का अन्तःपुर ।
अवरोधक–(सं.वि., पुं.) रोकनेवाला, रक्षक ।
अवरोधन–(सं. पुं.) विरोध, रोक-टोक, उतार, राजा का अन्तःपुर ।
अवरोधना–(हिं.क्रि.स.) रोकना, बाँधना, विरोध करना ।
अवरोधित–(सं.वि.) घेरा हुआ, रोका हुआ ।
अवरोधी–(सं. वि.) रोकनेवाला, ढाँकनेवाला; (पुं.) अन्तःपुर का रक्षक ।
अवरोपण–(सं. पुं.) उतार, गिराव ।
अवरोपणीय–(सं. वि.) उखाड़ने योग्य ।
अवरोपित–(सं. वि.) उतारा हुआ, उखाड़ा हुआ ।

अवरोह–(सं. पुं.) अवतरण, उतार, गिराव, शाखा का अग्र-भाग, वृक्ष के ऊपर चढ़नेवाली बेल।
अवरोहण–(सं. पुं.) अवतरण, चढ़ाव, उतार।
अवरोहना–(हिं. क्रि. अ., स.) उतरना, उतारना, चढ़ना, खींचना, रोकना, आड़ना, लगाना।
अवरोही–(सं. पुं.) बरगद का वृक्ष, संगीत में उतरता हुआ स्वर।
अवर्ग–(सं.वि.) वर्गशून्य, विना समूह का।
अवर्ण–(सं.वि.) वर्णरहित, विना रंग का, कुरूप, गुण-भिन्न, वर्ण-धर्म से रहित, अंगराग-भिन्न, प्रशंसा-भिन्न, नीच।
अवर्ण्य–(सं. वि.) वर्णन न करने योग्य; (पुं.) प्रधान विषय, उपमान।
अवर्त–(सं. पुं.) पानी का भँवर, चक्कर।
अवर्तमान–(सं.वि.) अनुपस्थित, अप्रस्तुत।
अवर्धमान–(सं. वि.) वृद्धिशून्य, क्षीण होनेवाला।
अवर्षण–(सं. पुं.) अनावृष्टि, वर्षा का न होना।
अवलंब, अवलंबन–(सं. पुं.) आश्रय, सहारा।
अवलंबना–(हि. क्रि. स.) सहारा लेना, आश्रय लेना, ठहराना, टिकना।
अवलंबित–(सं. वि.) आश्रित, सहारा लिया हुआ, निर्भर।
अवलंबी–(सं. वि.) सहारा लेनेवाला, अवलंबन करनेवाला।
अवलग्न–(सं. वि.) लगा हुआ, संलग्न।
अवलिप्त–(सं. वि.) गर्वित, घमंडी, लेप किया हुआ।
अवलिप्तता–(सं. स्त्री.) गर्व, घमंड।
अवली–(हि. स्त्री.) पंक्ति, समूह, झुण्ड, वह अन्न जो पहले-पहले खेत में से काटा जाता है।
अवलीक–(हि. वि.) पापशून्य, अपराधरहित, निष्कलंक, शुद्ध।
अवलीढ़–(सं. वि.) चाटा हुआ, व्याप्त।
अवलीला–(सं. स्त्री.) अनादर, अपमान।
अवलुंठित–(सं. वि.) लेटा हुआ।
अवलेप–(सं. पुं.) उबटन, भूषण, लेप, गर्व, घमण्ड।
अवलेपन–(सं. पुं.) विलेपन, लीपना, पोतना, उबटन, सम्बन्ध, गर्व, अभिमान।
अवलेह–(सं. पुं.) चटनी।
अवलेह्य–(सं. वि.) चाटने योग्य।
अवलोक–(सं. पुं.) दर्शन, देखना।
अवलोकक–(सं. वि.) देखनेवाला।
अवलोकन–(सं. पुं.) दर्शन, देखना, अनुसन्धान करना, देख-भाल करना।
अवलोकना–(हिं. क्रि. स.) अनुसन्धान करना, जाँच-पड़ताल करना।
अवलोकनि–(हिं. स्त्री.) नेत्र, दृष्टि, चितवन।
अवलोकनीय–(सं. वि.) देखने योग्य।
अवलोकित–(सं. वि.) देखा हुआ, दृष्ट।
अवलोकी–(सं. वि.) दर्शक, अनुसन्धान करनेवाला।
अवश–(सं.वि.) पराधीन, विवश, लाचार।
अवशता–(सं. स्त्री.) पराधीनता।
अवशिष्ट–(सं. वि.) अतिरिक्त, परिशिष्ट, बचा हुआ, अल्प।
अवशेष–(सं. वि.) बचा हुआ, शेष; (पुं.) बची हुई वस्तु, अन्त।
अवश्यं–(सं. अव्य.) देखें 'अवश्य'।
अवश्यंभावी–(सं वि.) अवश्य होनेवाला।
अवश्य–(सं. वि.) अनधीन, स्वतन्त्र रहनेवाला; (अव्य.) निश्चय, निःसन्देह।
अवश्यमेव–(सं. अव्य.) निस्संदेह।
अवश्या–(सं. स्त्री.) अवशीभूत स्त्री।
अवष्टंभ–(सं. पुं.) प्रारम्भ, अवलम्बन, सहारा, रोक, ठहराव, अनम्रता।
अवसंजन–(सं. पुं.) आलिंगन।
अवस–(हिं. अव्य.) अवश्य।
अवसक्त–(सं. वि.) संलग्न, लगा हुआ।
अवसक्थिका–(सं. स्त्री.) योग करने का एक आसन, लँगोटी।
अवसथ–(सं. पुं.) गाँव, पाठशाला, मकान।
अवसन–(हिं. वि.) वस्त्रहीन।
अवसन्न–(सं. वि.) अनुपयुक्त, समाप्त, आलसी, नष्ट होनेवाला, दुःखी।
अवसन्नता–(सं.स्त्री.), **अवसन्नत्व**–(सं.पुं.) अनुत्साह, समाप्ति।
अवसर–(सं. पुं.) प्रस्ताव, समय, काल, मौका, अवकाश, उतार, वर्षा का होना, वह अलंकार जिसमें सामयिक घटना का वर्णन रहता है।
अवसर्ग–(सं. पुं.) अप्रतिबन्ध, स्वतंत्रता।
अवसर्प–(सं. पुं.) चर, दास, भृत्य।
अवसर्पण–(सं. पुं.) अधोगमन, नीचे को उतार।
अवसर्पिणी–(सं. स्त्री.) जैनियों का युग विशेष।
अवसर्पी–(सं.वि.) अधोगामी, नीचे जानेवाला।
अवसाद–(सं. पुं.) विषाद, क्षय, नाश, दीनता, समाप्ति, अवसन्नता, थकावट।
अवसादक–(सं. वि.) काम बिगाड़नेवाला, थकानेवाला, समाप्त होनेवाला।
अवसादन–(सं. पुं.) नाश।
अवसादित–(सं. वि.) थकाया हुआ।
अवसान–(सं. पुं.) विराम, समाप्ति, सीमा, परिणाम, शेष, मृत्यु, सन्ध्या, दहन-स्थान, मरघट।
अवसायक–(सं. वि.) पूरा करनेवाला, निश्चय करनेवाला।
अवसायी–(सं. वि.) निवासी।
अवसि–(हि. अव्य.) अवश्य, निश्चय।
अवसिक्त–(सं. वि.) सींचा हुआ।
अवसी–(हि.पुं.) कच्चा काटा हुआ अन्न, गद्दर।
अवसुप्त–(सं. वि.) सोया हुआ।
अवसृष्ट–(सं. वि.) दिया हुआ, छोड़ा हुआ।
अवसेक–(सं. पुं.) चारों ओर छिड़काव या सिंचाई।
अवसेचन–(सं. पुं.) सब दिशाओं में सिंचाई, पसीजना, पसीना निकालना, रोगी के शरीर में से रक्त निकालने की क्रिया।
अवस्कंद–(सं. पुं.) सेना के लड़ने का स्थान, शिविर, आक्रमण, धावा।
अवस्कंदन–(सं. पुं.) सम्पूर्ण शरीर को डुबाकर स्नान, आक्रमण।
अवस्कंदित–(सं. वि.) आक्रमण किया हुआ, नहाया हुआ।
अवस्कर–(सं.पुं.) पुरीष, विष्ठा, गोबर, मल।
अवस्तार–(सं. पुं.) परदा, ढकना।
अवस्तु–(सं. पुं.) तुच्छ वस्तु।
अवस्त्र–(सं. वि.) वस्त्रहीन, नंगा।
अवस्था–(सं. स्त्री.) दशा, स्थिति, आयु, आकार।
अवस्थान–(सं. पुं.) स्थान, स्थिति, स्थितिकाल, ठहराव, ठिकाना।
अवस्थित–(सं. वि.) स्थित, ठहरा हुआ, वर्तमान, दृढ़, जमा हुआ।
अवस्थिति–(सं. स्त्री.) अवस्थान, ठहराव।
अवस्यंदन–(सं. पुं.) चूना, आलिंगन।
अवह–(सं. वि.) जो वहन न किया जा सके।
अवहरण–(सं. पुं.) लूट, चोरी।
अवहार्य–(सं. वि.) दूसरे स्थान में ले जाने योग्य।
अवहास–(सं. पुं.) उपहास, ठट्ठा।
अवहित–(सं. वि.) प्रसिद्ध, सावधान।
अवहेलना–(सं. स्त्री.) अनादर, अपमान, तिरस्कार; (हि. क्रि. स.) बात न मानना, तिरस्कार करना।
अवहेला–(सं. स्त्री.) अवहेलना।
अवहेलित–(सं. वि.) अनादर किया हुआ, तिरस्कृत।
अवाँ–(हि. पुं.) देखें 'आवाँ'।

अवांतर-(सं. वि.) प्रांत के मध्य का, प्रसंग के बीच का; -देश(पुं.)प्रान्त के बीच का प्रदेश।
अवांमुख-(सं. वि.) अधोमुख, मुख लटकाये हुए, लज्जित।
अवांसी-(हि.स्त्री.)कृषिफल में सब से पहले काटे हुए अन्न का बोझ, अवली।
अवाई-(हि.स्त्री.)आगमन,
अवाक्-(सं. वि.) निस्तव्व, मौन, चुप, चकित, घबड़ाया हुआ।
अवाक्य-(सं.वि.)सम्भाषण न करता हुआ।
अवागी-(हि. वि.) मौन, चुप।
अवाग्र-(सं.वि.) अवनत, झुका हुआ, नम्र।
अवाची-(सं. स्त्री.) दक्षिण दिशा।
अवाचीन-(सं.वि.)दक्षिणीय,दाक्षिणात्य।
अवाच्य-(सं. पुं.) जो वचन कहने योग्य न हो, गाली-गलौज, निन्दा; (वि.) निन्दित, नीच।
अवाच्यता-(सं.स्त्री.)अश्लीलता,फूहड़पन।
अवादी-(सं. वि.) विवाद न करनेवाला, न झगड़नेवाला।
अवाध-(सं. वि.) विना वाधा या रुकावट का।
अवाध्य-(सं.वि.)रोकने से न माननेवाला।
अवापित-(सं. वि.) न वोया हुआ।
अवाप्त-(सं. वि.) अप्राप्त, जो प्राप्त न हुआ हो।
अवाम-(सं. वि.) दक्षिण, दाहिना।
अवार-(सं. पुं.) नदी के इस पार का किनारा।
अवारण-(सं. वि.) विना निषेध का।
अवारणीय-(सं. वि.) निषेध न किया जानेवाला।
अवारना-(हि. क्रि. स.) रोकना, मना करना; (पुं.) किनारा, छेद, मोड़।
अवारित-(सं. वि.) निवारण न किया हुआ, अनिवारित।
अवारी-(हि.स्त्री.)वागडोर,तट,किनारा।
अवार्य-(सं. वि.) अनिवार्य, अवारणीय।
अवास-(हि. पुं.) देखें 'आवास'।
अवास्तव-(सं. वि.) अयथार्थ, मिथ्या, झूठ, निराधार।
अवाह्य-(सं. वि.) न ले जाने योग्य।
अवि-(सं. पुं.) सूर्य, मेंड़, पर्वत, वायु, कम्बल, मदार का वृक्ष।
अविकच-(हि. वि.) विना खिला हुआ।
अविकट-(सं. वि.) जो भयंकर न हो, अविस्तृत, न फैला हुआ।
अविकल-(सं. वि.) चिन्ताशून्य, निश्चल, शान्त, अभग, व्याकुल न रहनेवाला।
अविकल्प-(सं.वि.)असन्दिग्ध,सन्देहरहित।
अविकार-(सं.वि.)विकाररहित, निर्दोष।
अविकारी-(सं. वि.) निर्विकार, जो विकारजनक न हो।
अविकृत-(सं. वि.) प्रकृत-गुणयुक्त, जो विगड़ा न हो।
अविक्रीत-(सं.वि.) जो वेचा न गया हो।
अविक्रेय-(सं. वि.) न वेचने योग्य।
अविगत-(सं. वि.) अज्ञात, अनिर्वचनीय, न वर्णन करने योग्य, नित्य, जिसका नाश न हो।
अविगर्हित-(सं.वि.)प्रशंसित,अनिन्दनीय।
अविग्रह-(सं. वि.) निरवयव, निराकार।
अविघ्न-(सं. वि.)विना विघ्न का, विघ्न-शून्य।
अविचर-(हि. वि.) स्थिर, अटल।
अविचल-(सं.वि.) अचल, स्थिर, अटल।
अविचार-(सं. पुं.)अज्ञान,अन्याय, अत्याचार, अविवेक।
अविचारित-(सं.वि.)विना विचारा हुआ।
अविचारी-(सं.वि.)अविवेकी, अत्याचारी, अन्यायी।
अविचेतन-(सं. वि.) संज्ञारहित।
अविच्छिन्न-(सं. वि.) सतत, निरन्तर।
अविजित-(सं. वि.) अजेय।
अविच्छेद-(सं. पुं.) विच्छेद का अभाव; (वि.) निरन्तर।
अविज्ञ-(सं. वि.) अनिपुण।
अविज्ञात-(सं. वि.) अज्ञात, अनजाना, विना समझा-बूझा।
अविज्ञेय-(सं.वि.)दुर्ज्ञेय, न जानने योग्य।
अवितत्-(सं.वि.)प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा।
अवितथ्य-(सं.वि.) असत्य, मिथ्या, झूठ।
अवितथ-(सं. वि.) सत्य, सच्चा।
अवितर्कित-(सं. वि.) तर्कशून्य, विना तर्क किया हुआ।
अवित्त-(सं. वि.) धनरहित, निर्धन।
अविद-(सं. वि.) मूर्ख, अज्ञानी।
अविदग्ध-(सं.वि.)न जलाया हुआ, कच्चा।
अविदित-(सं. वि.) अज्ञात, अप्रकट, गुप्त, न जाना हुआ।
अविद्ध-(सं.वि.)न वेधा हुआ,न छेदा हुआ।
अविद्य-(सं. वि.) मूर्ख, लंठ।
अविद्यमान-(सं. वि.) अनुपस्थित, जो उपस्थित न हो, असत्, मिथ्या।
अविद्या-(सं. स्त्री.) अज्ञान, ज्ञान का अभाव, मिथ्या ज्ञान, मोह।
अविद्यता-(सं. स्त्री.) अज्ञान, मूर्खता।
अविद्वान्-(हि. पुं.) मूर्ख, अपण्डित।
अविद्वेष-(सं.पुं.)विरोध का अभाव,अनुराग।
अविधवा-(सं.स्त्री.) सधवा, सोहागिन।
अविधान-(हि. वि.) विधानशून्य, विना तरीके का।
अविधि-(सं. स्त्री.) नियम का विरोध; (वि.) नियम के प्रतिकूल।
अविनय-(हि. स्त्री.) विनय का अभाव, धृष्टता, उद्दण्डता।
अविनश्वर-(हि. वि.)अविनाशी,नाश न होनेवाला, चिरस्थायी; (पुं.)परमेश्वर।
अविनाश-(हि.पुं.) अक्षयता, विनाश का अभाव, रक्षा।
अविनाशी-(सं. वि.) नाश न होनेवाला, अविनश्वर, अक्षय।
अविनासी-(हि. वि.) देख 'अविनाशी'।
अविनीत-(सं. वि.)विनयशून्य, अशिक्षित, दुष्ट, उद्धत, धृष्ट, ढीठ।
अविनीता-(स. वि.) पुंश्चली, कुलटा, व्यभिचारिणी।
अविपन्न-(सं. वि.) विशुद्ध, स्वच्छ।
अविपर्यय-(सं. पुं., वि.) विपर्यय का अभाव, विना क्रम का।
अविपुल-(सं. वि.) क्षुद्र, छोटा।
अविभक्त-(सं. वि.)विभागरहित, मिला हुआ, अभिन्न, अलग न किया हुआ।
अविमुक्त-(सं. वि.) जो मुक्त न हो, जिसने मुक्ति न प्राप्त की हो, वद्ध; (पुं.) काशी क्षेत्र, कनपटी।
अवियोग-(सं. पुं.) संयोग, मिलाप।
अविरत-(सं. वि.) अनवरत, निरन्तर, नित्य, विरामहीन, कार्य में लीन; (अव्य.) लगातार, सर्वदा।
अविरति-(सं. स्त्री.)निरंतरता, लीनता, विषयासक्ति।
अविरल-(सं. वि.) सघन, निविड, मिला हुआ।
अविराम-(सं. पुं.) विराम का अभाव; (वि., अव्य.) निरन्तर।
अविरुद्ध-(सं. वि.)वन्धनरहित, अनुकूल।
अविरोध-(सं. पुं.) विरोध का अभाव, समानता, अनुकूलता, मैत्री, मेल; (वि.) अनुकूल।
अविरोधी-(सं.वि.,पुं.) विरोध न करनेवाला, मित्र।
अविलंबित-(सं. वि.) देर न किया हुआ; (अव्य.) शीघ्र।
अविलास-(सं. पुं.) विलास का अभाव, हावभाव न दिखलाना।
अविवक्षित-(सं. वि.)असंवद्ध विषय का।
अविवर-(सं. वि.) घना, विना छिद्र का।
अविवाद-(सं.वि.)निर्विवाद,विवाद-रहित।

अविवाहित–(सं. वि.) जिसका व्याह न हुआ हो, कुँवारा।
अविवाही–(सं. वि.) विवाह न करनेवाला, ब्रह्मचारी।
अविवेक–(सं. पुं.) विवेक-ज्ञान का अभाव, अविचार, अज्ञान, मूर्खता, अन्याय।
अविवेकता–(सं.स्त्री.),**अविवेकत्व**–(सं.पुं.) विवेक का अभाव, अज्ञानता, मूर्खता।
अविवेकी–(सं. वि.) अज्ञानी, मूर्ख, अविचारी, अन्यायी।
अविवेचक–(सं. वि.) जिसको अपने कर्तव्य का ज्ञान न हो।
अविवेचना–(सं.स्त्री.)अविवेकता, मूर्खता।
अविशंका–(सं. स्त्री.) विश्वास, भरोसा।
अविशुद्ध–(सं. वि.) अपवित्र, अस्वच्छ।
अविशेष–(सं. पुं.) भेद का अभाव, अभेद, ऐक्य; (वि.) तुल्य, समान, बराबर।
अविश्रांत–(सं. वि.) विरामरहित, न थका हुआ।
अविश्वसनीय–(सं. वि.) विश्वास न करने योग्य, संदिग्ध।
अविश्वस्त–(सं. वि.) अविश्वसनीय, सन्दिग्ध, संदेहयुक्त।
अविश्वास–(सं. पुं.) विश्वास का अभाव, सन्देह, नास्तिकता।
अविश्वासी–(सं.वि.)विश्वास न करनेवाला, जिस पर कोई विश्वास न करे।
अविषम–(सं. वि.) सुगम, सीधा।
अविषय–(सं. वि.) अगोचर, अदृश्य, इन्द्रियातीत।
अविषाद–(सं. पुं.) प्रसन्नता, आनन्द।
अविस्तर–(सं.वि.)संकुचित, न फैला हुआ।
अविस्तार–(सं.पुं.) विस्तार का अभाव।
अविस्तीर्ण–(सं. वि.) न फैला हुआ, संकुचित।
अविस्तृत–(सं.वि.) संलग्न, मिला हुआ।
अविहित–(सं.वि.)निषिद्ध, न किया हुआ।
अविह्वल–(सं. वि.) जो व्याकुल न हो, स्वस्थ, अव्यग्र।
अवीक्षित–(सं.वि.) अदृष्ट, न देखा हुआ।
अवीज–(सं. वि.) वीजशून्य, विना वीज का, शुक्रहीन, नामर्द।
अवीर–(सं. वि.) जो वीर या पराक्रमी न हो, कायर।
अवीरा–(सं. स्त्री.) पुत्र तथा पति से रहित स्त्री, स्वतन्त्र महिला।
अवृत्ति–(सं वि.) जीविकाशून्य, विना रोजगार का।
अवृहत्–(सं.वि.) जो बड़ा न हो, छोटा।
अवेक्षक–(सं. पुं.) दर्शक, निरीक्षक।
अवेक्षण–(सं. पुं.) अवलोकन, दर्शन।
अवेक्षणीय–(सं.वि.)दर्शनीय, देखने योग्य।
अवेक्षित–(सं.वि.) पर्यालोचित, निरीक्षण किया हुआ।
अवेद्य–(सं.वि.) अलभ्य, न जानने योग्य।
अवेला–(सं.स्त्री.)अनुचित काल,कुसमय।
अवेष्ट–(सं. वि.) वेष्टनरहित, विना छपने का।
अवैतनिक–(सं. वि.) विना वेतन का, विना कुछ लिये काम करनेवाला।
अवैदिक–(सं. वि.) वेद से सम्बन्ध न रखनेवाला, वेद-विरुद्ध।
अवैध–(सं. वि.) विधि-विहीन, निषिद्ध।
अवैधव्य–(सं. पुं.) सधवापन, सोहाग।
अवैर–(सं. पुं.) वैर का अभाव, शत्रुता न होना।
अवैराग्य–(सं. पुं.) वैराग्य का अभाव, विषयासक्ति।
अव्यक्त–(सं.पुं.) अज्ञात बात, कामदेव, आत्मा, प्रकृति, सूक्ष्म शरीर, ब्रह्म; (वि.) अज्ञात, अगोचर, अप्रत्यक्ष, अस्पष्ट; **–गणित**–(पुं.) बीजगणित; **–गति**–(वि.)गुप्त रूप से जानेवाला; **–मूर्ति**–(वि.)जिसका रूप देख न पड़े; **–राशि**–(स्त्री.)बीजगणित में अज्ञात परिमाण; **–लिंग**–(पुं.) जो पहिचाना न जा सके, संन्यासी।
अव्यग्र–(सं. वि.) न घबड़ाया हुआ, शान्त, सन्तुष्ट।
अव्यथ–(सं.वि.)व्यथा या पीड़ा-रहित।
अव्यथा–(सं. स्त्री.) व्यथा का अभाव, आरोग्य।
अव्यभिचार–(सं. पुं.) व्यभिचार का अभाव, निष्ठा।
अव्यय–(सं. पुं.) व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप अविकारी ही रहता है, शिव, विष्णु, परब्रह्म; (वि.) विकारशून्य, सर्वदा समान रहनेवाला, नाश न होनेवाला, नित्य, विना आदि-अन्त का, व्ययहीन, विना खर्च का, अक्षय।
अव्ययीभाव–(सं.पुं.)व्याकरण में समास का एक भेद।
अव्यर्थ–(सं.वि.)सार्थक, सफल, जो व्यर्थ न हो, अवश्य प्रभाव डालनेवाला।
अव्यलीक–(सं.वि.)प्रिय, सत्य, सच्चा।
अव्यवधान–(सं.पुं.) निकटता, समीपता।
अव्यवसाय–(सं. पुं.) उद्यम का अभाव, व्यवसाय का न होना।
अव्यवसायी–(सं. वि.) उद्यमरहित, निरुद्यमी।
अव्यवस्था–(सं. स्त्री.) नियम का अभाव, शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था, मर्यादा न होना; (वि.) स्थिरता-रहित, चञ्चल।
अव्यवस्थित–(सं. वि.) विना मर्यादा का, वठिकाने का, अस्थिर, चंचल।
अव्यवहार्य–(सं. वि.) व्यवहार में न आनेवाला, पतित।
अव्यवहित–(सं. वि.) व्यवधानरहित सटा हुआ।
अव्यसन–(सं. पुं.)बुरी टेव का न होना।
अव्यस्त–(सं. वि.) पूरा, समूचा।
अव्याकुल–(सं. वि.) जो घबड़ाया न हो, स्वस्थ।
अव्याकृत–(सं. वि.) अप्रकाशित, गुप्त, विकाररहित, वेदान्त मत के अनुसार संसार का बीजरूप कारण।
अव्याख्येय–(सं. वि.) व्याख्या न करने योग्य।
अव्याज–(सं.पुं.) छल या कपट का अभाव।
अव्यापक–(सं. वि.) व्यापक न होनेवाला, घिरा हुआ, परिच्छिन्न।
अव्यापार–(सं. पुं.) निरर्थक व्यापार, जो अपना कार्य न हो।
अव्यापी–(सं. वि.) देखें 'अव्यापक'।
अव्याप्त–(सं. वि.) जो व्याप्त न हो, परिच्छिन्न।
अव्याप्ति–(सं. स्त्री.)व्याप्ति का अभाव।
अव्याप्य–(सं. वि.) व्याप्त न होनेवाला, अद्भुत।
अव्याहत–(सं. वि.) बेरोक, सच्चा, हताश न होनेवाला।
अव्युत्पन्न–(सं.वि.)अनुभवशून्य,अनभिज्ञ, व्याकरण न जाननेवाला।
अव्रण–(सं. वि.) क्षतरहित।
अव्वल–(अ.वि.)पहला,प्रथम, सर्व-श्रेष्ठ।
अशंक–(सं. वि.) शंकाशून्य।
अशंका–(सं. स्त्री.) शंका का अभाव।
अशंकित–(सं. वि.) जो शंका न माने।
अशकुन–(सं. पुं.)बुरा सगुन, दुर्निमित्त।
अशक्त–(सं.वि.)अयोग्य, असमर्थ, निर्बल।
अशक्तता–(सं.स्त्री.)असमर्थता,निर्बलता।
अशक्ति–(सं.स्त्री.) अयोग्यता, निर्बलता, नपुंसकता।
अशक्य–(सं. वि.) असाध्य, असम्भव, जो वश में न किया जा सके; (पुं.) एक अलंकार जिसमें साधारण किसी कार्य के न होने का भाव दिखलाया जाता है।
अशठ–(सं. वि.) जो दुष्ट न हो, सच्चा, सज्जन।

अशत्रु–(सं.पुं.) मित्र, चन्द्रमा; (वि.) शत्रुरहित।
अशन–(सं. पुं.) भोजन, आहार, अन्न, व्याप्ति।
अशनाया–(सं.स्त्री.) भोजन की इच्छा।
अशनि–(सं.पुं.) इन्द्र, विद्युत, अग्नि, हीरा।
अशनीय–(सं. वि.) भोजन करने या कराने योग्य।
अशब्द–(सं.वि.) शब्दहीन, विना शब्द का।
अशरण–(सं.वि.) बिना शरण का, अनाथ।
अशरीर–(सं. वि.) देहशून्य, विना शरीर का; (पुं.) परमात्मा, कामदेव।
अशरीरत्व–(सं. पुं.) मोक्ष, निर्वाण।
अशरीरी–(सं.वि.) देहशून्य, विना शरीर का।
अशर्म–(सं. वि.) सुखरहित, दुःखी।
अशस्त्र–(सं.वि.) शस्त्ररहित, विना शस्त्र का।
अशांत–(सं. वि.) जो शान्त न हो, असन्तुष्ट, अधीर।
अशांतता, अशांति–(सं. स्त्री.) शान्ति का अभाव, चंचलता, असन्तोष, अस्थिरता।
अशाखा–(सं. वि.) विना शाखा का।
अशाश्वत–(सं. वि.) अनित्य, अस्थिर।
अशासन–(सं. पुं.) शासन का अभाव।
अशिक्षित–(सं. वि.) शिक्षाशून्य, विना पढ़ा-लिखा, अनाड़ी, गँवार, मूर्ख।
अशित–(सं. वि.) भक्षित, खाया हुआ।
अशिथिल–(सं.वि.) जो शिथिल न हो, दृढ़।
अशिव–(सं. वि.) अमङ्गल, अशुभ।
अशिशु–(सं. वि.) शिशुरहित, विना सन्तान का।
अशिष्ट–(सं. वि.) अविनीत, उजड्ड।
अशिष्टता–(सं.स्त्री.) दुःशीलता, ढिठाई।
अशीत–(सं. पुं.) उष्णता, गर्मी।
अशीतल–(सं. वि.) जो ठंडा न हो, गरम।
अशील–(सं.पुं.) दुष्ट शील, बुरा स्वभाव।
अशुचि–(सं. वि.) अपवित्र, मैला-कुचैला; (स्त्री.) अपवित्रता।
अशुचित्व–(सं. पुं.) देखें 'अशुचिता'।
अशुद्ध–(सं. वि.) दोषयुक्त, अपवित्र।
अशुद्धता–(सं.स्त्री.) अपवित्रता, गलती।
अशुद्धि–(सं. स्त्री.) दोष।
अशुन–(हि. पुं.) अश्विनी नक्षत्र।
अशुभ–(सं.पुं.) अमङ्गल, पाप, अपराध; (वि.) बुरा।
अशुभ्र–(सं. वि.) कृष्ण, काला।
अशुष्क–(सं. वि.) जो सूखा न हो, हरा, तर।
अशून्य–(सं. वि.) पूर्ण, अहीन, भरा हुआ।
अशृंग–(सं. वि.) विना सींग का।
अशेष–(सं. वि.) समूचा, शेषरहित, पूरा, समाप्त, विना छोर या अन्त का।
अशेषता–(सं. स्त्री.) पूर्णता।
अशोक–(सं. पुं.) एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ आम की पत्तियों की तरह लंबी तथा लहरियादार होती हैं; (वि.) शोक-रहित; –पुष्प (पुं.), –मंजरी– (स्त्री.) दण्डक छन्द का एक भेद; –वाटिका –(स्त्री.) अशोक की वाटिका, रम्य उद्यान, रावण का इस नाम का बगीचा जिसमें उसने सीता को ले जाकर रक्खा था।
अशोच–(सं. पुं.) शोक का न होना।
अशोधन–(सं. पुं.) अशुद्धता, मैलापन।
अशोधित–(सं. वि.) न शोधा हुआ, शुद्ध न किया हुआ।
अशोभित–(सं. वि.) कुरूप, कुत्सित।
अशोष्य–(सं. वि.) न सुखाने योग्य।
अशौच–(सं. पुं.) अशुद्धता, अपवित्रता, वह अशुद्धि जो परिवार में जन्म या मृत्यु होने पर हिन्दुओं में मानी जाती है; (वि.) जो शौच या शुद्ध न हो।
अशौर्य–(सं. पुं.) वीरता का अभाव; (वि.) पराक्रमशून्य।
अश्म–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़, पत्थर।
अश्मक–(सं. पुं.) भारतवर्ष के दक्षिण के एक देश का नाम, त्रिवांकुर।
अश्मकर–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना।
अश्मगर्भ–(सं. पुं.) मरकतमणि, पन्ना।
अश्मरी–(सं. स्त्री.) मूत्रकृच्छ्र, पथरी नामक रोग।
अश्मांतक–(सं.पुं.) चूल्हा, भट्ठी, दीवट।
अश्रद्धा–(सं.स्त्री.) श्रद्धा का अभाव, अभक्ति
अश्रद्धेय–(सं. वि.) आदर न करने योग्य।
अश्रम–(हि. पुं.) श्रम का अभाव, सुस्ती।
अश्रांत–(सं.वि.) न थका हुआ; (अव्य.) निरन्तर, लगातार, सर्वदा।
अश्रु–(सं. पुं.) नेत्र-जल, आँसू।
अश्रुत–(सं. वि.) जो सुना न गया हो, जो सुन न पड़ता हो, श्रुति-विरुद्ध।
अश्रुतपूर्व–(सं. वि.) जो पहिले न सुना गया हो, विलक्षण, अद्भुत।
अश्रुपात–(सं. पुं.) रुलाई, आँसू गिराना, रोना।
अश्रुपूर्ण–(सं. वि.) आँसू से भरा हुआ।
अश्रेयस्–(सं. वि.) अकल्याण, हीन, बुरा।
अश्रेष्ठ–(सं.वि.) अनुत्तम, कुत्सित, बुरा।
अश्रौत–(सं. वि.) श्रुतिविरुद्ध।
अश्लाघनीय–(सं.वि.) अप्रशंसनीय, निन्द्य।
अश्लिष्ट–(सं. वि.) असंगत, असंबद्ध।
अश्लील–(सं. वि.) कुत्सित, भद्दा, फूहड़, लज्जाजनक; (स्त्री.) गँवारू बोली।
अश्लीलता–(सं. स्त्री.) गाली-गलौज, फूहड़पन।
अश्लेषा–(सं. स्त्री.) सत्ताईस नक्षत्रों में से नवाँ नक्षत्र।
अश्व–(सं. पुं.) घोटक, घोड़ा, तुरंग।
अश्वकर्ण–(सं. पुं.) एक प्रकार का शाल का वृक्ष।
अश्वकुटी–(सं.स्त्री.) अस्तवल, घुड़साल।
अश्वगंधा–(सं. स्त्री.) असगन्ध नामक पौधा-विशेष।
अश्वगोष्ठ–(सं.पुं.) अश्वशाला, अस्तवल।
अश्व-चिकित्सक–(सं.पुं.) अश्ववैद्य, सलोतरी।
अश्व-जीवन–(सं. पुं.) चणक, चना।
अश्वतर–(सं.पुं.) खच्चर, एक सर्प-विशेष।
अश्वत्थ–(सं. पुं.) पीपल का वृक्ष।
अश्वत्थामा–(सं. पुं.) द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम।
अश्वदूत–(सं. पुं.) घोड़सवार दूत।
अश्वपति–(सं. पुं.) घोड़े का मालिक, घुड़सवार, सईस, केकय देश के राजाओं की उपाधि।
अश्वपाल–(सं.पुं.) घोड़े का रक्षक, साईस।
अश्वबंधन–(सं. पुं.) घोड़ा बाँधने की अगाड़ी-पिछाड़ी।
अश्वमेध–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक प्रधान यज्ञ विशेष, (इसमें घोड़े के कपाल में जयपत्र बाँधा जाता था और इसको भूमण्डल में अपनी इच्छानुसार घूमने के लिए छोड़ देते थे, बाद में घोड़े की बलि चढ़ाई जाती थी।)
अश्वयान–(सं. पुं.) घोड़े की सवारी।
अश्वयुज्–(सं. पुं.) आश्विन (कुँआर) का महीना।
अश्वरक्षक–(सं. पुं.) घोड़े का रक्षक, साईस।
अश्वरथ–(सं. पुं.) जिस गाड़ी में घोड़ा जुता हो।
अश्ववाह–(सं. पुं.) घुड़सवार।
अश्ववैद्य–(सं. पुं.) अश्व-चिकित्सक।
अश्वशाला–(सं. पुं.) घुड़साल, अस्तवल।
अश्वारूढ़–(सं. वि., पुं.) घोड़े पर चढ़ा हुआ, घुड़सवार।
अश्वारोहण–(सं. पुं.) घोड़े की सवारी।
अश्वारोही–(सं. पुं.) घोड़े का सवार।
अश्विनी–(सं. स्त्री.) सत्ताईस नक्षत्रों के अन्तर्गत पहला नक्षत्र, घोड़ी।
अश्विनीकुमार–(सं. पुं.) सूर्य के दो पुत्रों के नाम जो प्रभा नाम की पत्नी से उत्पन्न हुए थे। ये देवताओं के वैद्य कहे जाते हैं।
अषाढ़–(सं. पुं.) देखें 'आषाढ़'।

अष्ट–(सं. वि., पुं) आठ की संख्या, ८।
अष्टक–(सं. पुं.) आठ पदार्थों का संग्रह, आठ श्लोकों का स्तोत्र या काव्य।
अष्टकर्ण–(सं. पुं.) चतुर्मुख ब्रह्मा।
अष्टकमल–(सं. पुं.) हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक भिन्न-भिन्न स्थानों में आठ कमल माने गये हैं, इनके नाम–मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूर, स्वाधिष्ठान, अनाहत, आज्ञाचक्र, सहस्रार चक्र और ब्रह्मरन्ध्र हैं।
अष्टका–(सं. स्त्री.) अष्टमी, इस तिथि के दिन का कृत्य, योग, श्राद्ध इत्यादि।
अष्टकुल–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार सर्प के आठ कुल–शेष, वासुकि, कम्बल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख तथा कुलिक।
अष्टकृष्ण–(सं. पुं.) वल्लभ-कुल के अनुसार कृष्ण की आठ मूर्तियाँ–श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्रमा और मदनमोहन।
अष्टकोण–(सं. पुं.) आठ कोने का क्षेत्र।
अष्टगंध–(सं. पुं.) आठ सुगन्धित द्रव्य।
अष्टगुण–(सं. वि.) अठगुना।
अष्टतारिणी–(सं.स्त्री.) भगवती की आठ मूर्तियाँ–तारा, उग्रा, महोग्रा, वज्रा, काली, सरस्वती, कामेश्वरी और चामुण्डा।
अष्टद्रव्य–(सं. पुं.) हवन में प्रयुक्त होनेवाले आठ द्रव्य; यथा–अश्वत्थ (पीपल), गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, खीर और घृत।
अष्टधाती–(हिं. वि.) आठ धातुओं से निर्मित, पुष्ट, दृढ़, उपद्रवी।
अष्टधातु–(सं. पुं.) आठ धातुएँ; यथा–सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा।
अष्टपदी–(सं.स्त्री.) आठ पदवाला गीत।
अष्टपाद–(सं.पुं.) शरभ, टिड्डी, मकड़ी।
अष्टभाव–(सं. पुं.) वैद्यक के अनुसार–स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, ऐश्वर्य, कम्प, वैवर्ण्य तथा अश्रुपात–ये ८ भाव शरीर के होते हैं।
अष्टभुजा–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।
अष्टमंगल–(सं.पुं.) आठ प्रकार के मंगल-द्रव्य, यथा–सिंह, वृष, हाथी, कलश, चामर, वैजयन्ती, भेरी और दीपक।
अष्टम–(सं. वि.) आठवाँ।
अष्टमी–(सं. स्त्री.) किसी महीने के कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष की आठवीं तिथि।
अष्टमूर्ति–(सं. पुं.) शिव की आठ मूर्तियाँ, यथा–शर्व, भव, रुद्र, भीम, उग्र, पशुपति, ईशान और महादेव।
अष्टयोग–(सं.पुं.) योग की क्रियाओं के आठ भेद– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं।
अष्टवंश–(सं.पुं.) काशी में सारस्वतों का एक समूह।
अष्टवर्ग–(सं. पुं.) आठ प्रकार की औषधियों का वर्ग, इनके नाम ये हैं–मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, जीवक, ऋषभक, काकोली और क्षीरकाकोली।
अष्टसिद्धि–(सं. स्त्री.) आठ प्रकार की सिद्धियाँ जिनके नाम–अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और कामावशायिता हैं।
अष्टांग–(सं.पुं.) प्रणाम करने में–घुटना, पैर, हाथ, छाती, सिर, वचन, दृष्टि, और बुद्धि का विधान रहता है; दोनों पाँव, दोनों हाथ, दोनों घुटने, छाती और मस्तक को भूमि में टिकाकर प्रणाम करने को साष्टांग प्रणाम कहते हैं; आयुर्वेद में–शल्य, शालाक्य, काय-चिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगद-तन्त्र, रसायन-तन्त्र और वाजीकरण–अष्टांग कहलाते हैं; (वि.) अष्ट भाग का, अठपहला।
अष्टांगी–(सं. वि.) आठ अंगोंवाला।
अष्टाक्षर–(सं. पुं.) आठ अक्षरों का मन्त्र; (वि.) आठ अक्षरों का।
अष्टादश–(सं. वि., पुं.) अठारह, १८।
अष्टाध्यायी–(सं. स्त्री.) पाणिनीय व्याकरण का ग्रन्थ जिसमें आठ अध्याय हैं।
अष्टापद–(सं. पुं.) सुवर्ण, धतूरा, मकड़ी, कैलास, सिंह।
अष्टावक्र–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, टेढ़े शरीर का मनुष्य।
अष्टाह–(सं. वि.) आठ दिन ठहरनेवाला।
अष्ठीला–(सं. स्त्री.) एक गुल्म रोग, गुठली, पथरी।
असंकीर्ण–(सं. वि.) जो संकीर्ण न हो, विशुद्ध, बेमेल।
असंकुल–(सं. वि.) विस्तीर्ण, खुला हुआ।
असंकेतित–(सं. वि.) संकेत न किया हुआ, न बुलाया हुआ।
असंक्रांत मास–(सं.पुं.) अधिमास, मलमास।
असंक्षेप–(सं. वि.) संक्षेप न होनेवाला।
असंख्य–(सं वि.) अगणनीय, अनगिनत।
असंख्यता–(सं.स्त्री.) अमितता, अगणनीयता।
असंख्यात–(सं.वि.) अनेक, बहुसंख्य, बहुत।
असंग–(सं.पुं.) असंबद्धता; (वि.) न्यारा।
असंगत–(सं.वि.) असम्बद्ध, अनुचित, बेठीक।
असंगति–(सं. स्त्री.) अनुपयुक्तता, एक अलंकार का नाम।
असंगम–(सं. पुं.) संगम का अभाव; (वि.) बिना मेल का।
असंज्ञा–(सं. स्त्री.) संज्ञा का अभाव, अचेत अवस्था।
असंत–(सं. वि.) खल, दुष्ट।
असंतान–(सं. वि.) वंशरहित।
असंताप–(सं. पुं.) सन्ताप या कष्ट का न होना।
असंतुष्ट, असंतोषित–(सं. वि.) संतोषरहित, अतृप्त।
असंतोष–(सं.पुं.) तृप्ति का अभाव, अधैर्य।
असंतोषी–(सं.वि.) सन्तोष न करनेवाला।
असंदिग्ध–(सं. वि.) सन्देह से रहित, प्रकट, स्पष्ट।
असंधि–(सं. पुं.) सन्धि या जोड़ का अभाव, सटे रहना।
असंपत्ति–(सं. स्त्री.) धन का अभाव।
असंपन्न–(सं. वि.) संपत्तिरहित।
असंपर्क–(सं. पुं.) सम्बन्ध का अभाव।
असंपूर्ण–(सं. वि.) जो पूर्ण न हो, अधूरा।
असंप्राप्य–(सं. वि.) बिना पहुँच का।
असंबद्ध–(सं. वि.) सम्बन्धशून्य, अयथार्थ।
असंभव–(सं. वि.) जो संभव न हो, असंगत, विरुद्ध; (पुं.) एक काव्यालंकार जिसमें अनहोने विषय का होना दरसाया जाता है।
असंभार–(हिं. वि.) विशाल, विस्तृत।
असंभावना–(सं.स्त्री.) सम्भावना का अभाव
असंभावनीय–(सं. वि.) असंभव, असंगत, ऊटपटाँग।
असंभ्रम–(सं. पुं.) भ्रम का अभाव, सन्देह न होना।
असंयत–(सं. वि.) अबद्ध, बन्धनशून्य।
असंयुक्त–(सं.वि.) वियुक्त, जो मिला न हो।
असंयोग–(सं. पुं.) संयोग का अभाव, मेल न होना।
असंरुद्ध–(सं. वि.) बिना रोका का, बिना घिरा हुआ।
असंलग्न–(सं.वि.) असम्बद्ध, पृथक्, अलग।
असंवृत–(सं.वि.) जो ढका न हो, खुला हुआ।
असंशय–(सं.पुं.) सन्देह का अभाव; (अव्य.) निःसन्देह।
असंश्लिष्ट–(सं.वि.) असंगत, जुदा, बिखरा।
असंसक्त–(सं. वि.) पृथक्, विलग।
असंसर्ग–(सं. पुं.) संसर्ग का अभाव, साथ न होना।
असंसारी–(सं. वि.) अलौकिक, अद्भुत,

निराला, जो संसार से दूर रहता हो।
असंसिद्ध–(सं. वि.) अपूर्ण, जो पूरा न हो।
असंसृष्ट–(सं.वि.) संसर्गरहित, जुदा, अलग।
असंस्कृत–(सं. वि.) गर्भाधान इत्यादि संस्कार न किया हुआ, परिष्कार न किया हुआ।
असंस्तुत–(सं. वि.) स्तुति न किया हुआ, अपरिचित।
असंस्थित–(सं. वि.) चंचल, चुलबुला।
असंहत–(सं. वि.) असंलग्न, इकट्ठा न होनेवाला।
अस–(हिं. अव्य.) ऐसे, इस प्रकार; (वि.) इस प्रकार का।
असकताना–(हिं. क्रि. अ.) आलस्य में पड़े रहना, ऊँघना, जँभाई लेना।
असकल–(सं. वि.) असम्पूर्ण, अधूरा।
असकृत–(सं. अव्य.) अनेक बार, बारंबार।
असक्त–(हिं. वि.) शक्तिरहित, निर्बल।
असगंध–(हिं. पुं.) अश्वगन्धा, एक सीधी झाड़ी जिसकी मोटी जड़ औषधियों में प्रयुक्त होती है।
असगोत्र–(सं. वि.) भिन्न गोत्र का, जो एक ही गोत्र का न हो।
असगुन–(हिं. पुं.) देखें 'अशकुन'।
असज्जन–(सं. वि.) दुर्जन, दुष्ट, खल।
असढिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चित्तीदार सर्प।
असती–(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी, कुलटा, पुंश्चली।
असत्–(सं. त्रि.) जो सच्चा न हो, निन्दित, अनित्य, जड़; –कर्म–(पुं.) निन्दित कार्य।
असत्कार–(सं. पुं.) अपमान।
असत्ता–(सं. पुं.) अविद्यमानता, अनस्तित्व, असाधुता।
असत्त्व–(सं. पुं.) जो द्रव्य न हो।
असत्य–(सं. वि.) मिथ्या, झूठा; (पुं.) झूठी बात।
असत्यता–(सं. स्त्री.) मिथ्यात्व, झुठाई।
असत्यवाद–(सं. पुं.) मिथ्यावाद, झूठी बात।
असत्यवादी–(सं. वि.) झूठ बोलनेवाला।
असत्संगी–(सं. वि.) कुसंग में पड़ा हुआ।
असदाचार–(सं. पुं.) सदाचार का अभाव।
असदृश–(सं. वि.) असमान।
असद्भाव–(सं. पुं.) दुष्ट अभिप्राय।
असद्-व्यवहार–(सं. पुं.) दुष्ट व्यवहार।
असन–(हिं. पुं.) देखें 'असन'।
असना–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी मकान के किवाड़ आदि में लगाई जाती है।
असनान–(हिं. पुं.) स्नान, नहाना।
असनायी–(हिं. स्त्री.) प्रेम।
असन्नद्ध–(सं. वि.) अतत्पर, अहंकारी, घमण्डी।
असन्निधान–(सं. पुं.) दूर होने की स्थिति।
असन्निहित–(सं. वि.) दूर का, जो पास न हो।
असन्मान–(सं. पुं.) अपमान, ढिठाई।
असपिंड–(सं वि.) जो सपिण्ड न हो।
असफल–(सं. वि.) जो सफल न हो, नाकामयाब।
असफलता–(सं. स्त्री.) निष्फलता।
असभ्य–(सं. वि.) अशिष्ट, गँवार, दुष्ट, उजड्ड।
असभ्यता–(सं. स्त्री.) अशिष्टता, गँवारपन, जंगलीपन।
असमंजस–(सं. पुं.) अनुपयुक्त विषय, अड़चन, कठिनाई, (वि.) असंगत, असदृश, अतुल्य,।
असमंजस्–(सं. पुं.) इक्ष्वाकु वंश के राजा सगर के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।
असम–(सं. वि.) अतुल्य, असदृश, ऊँचा-नीचा, एक काव्यालंकार जिससे उपमान की अव्याप्ति दिखलाई जाती है।
असमक्ष–(सं. पुं.) अप्रत्यक्ष; (वि.) देख न पड़नेवाला।
असमग्र–(सं. वि.) असम्पूर्ण, जो पूरा न हो।
असमत–(अ. स्त्री.) पवित्रता, सतीत्व।
असमता–(हिं. पुं.) बराबर न होना।
असमय–(सं. पुं.) अनिर्दिष्ट काल, बुरा काल, कुसमय।
असमर्थ–(सं. वि.) अशक्त, दुर्बल, अयोग्य, कार्य में अक्षम, सामर्थ्यहीन।
असम-बाण–(सं. पुं.) पंचशर, कामदेव।
असम-सायक–(सं. पुं.) देखें 'असम-बाण'।
असमस्त–(सं. वि.) असम्पूर्ण, अधूरा।
असमान–(सं. वि.) अतुल्य, जो बराबर न हो; (हिं. पुं.) देखें 'आसमान'।
असमानता–(सं. वि.) विरोध, विषमता।
असमापित, असमाप्त–(सं. वि.) असम्पूर्ण, अधूरा।
असमाप्ति–(सं. स्त्री.) अधूरापन।
असमीक्ष्य–(सं. अव्य.) बिना सोचे-विचारे।
असमीचीन–(सं. वि.) अनुचित, अयुक्त।
असमूचा–(हिं. वि.) असम्पूर्ण, अधूरा।
असमृद्ध–(सं. वि.) जो धनवान् न हो, दरिद्र, गरीब।
असम्मत–(सं. वि.) अस्वीकृत, पृथक्, विरुद्ध, मतभेद-युक्त।
असम्मति–(सं. स्त्री.) अस्वीकृति।
असम्मान–(सं. पुं.) अपमान, निरादर।
असम्मोह–(सं. पुं.) यथार्थ ज्ञान।
असयाना–(हिं. वि.) (स्त्री. असयानी) मूर्ख, अनाड़ी।
असर–(अ. पुं.) खोज, तलाश, पदचिह्न, प्रभाव।
असरन–(हिं. पुं.) देखें 'अशरण'।
असरार–(हिं. अव्य.) लगातार।
असल–(अ. वि.) जो नकल किया हुआ न हो, विशुद्ध, सही।
असली–(हिं. वि.) असल, मुख्य, सच्चा, विशुद्ध।
असवर्ण–(सं. वि.) असजातीय, विभिन्न वर्ण का।
असवार–(हिं. पुं.) देखें 'सवार'।
असवारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सवारी'।
असह–(सं. वि.) अक्षम, न सहने योग्य।
असहनशील–(सं. वि.) असहिष्णु, न सहनेवाला।
असहनशीलता–(सं. स्त्री.) चिड़चिड़ापन।
असहनीय–(सं. वि.) दुःसह, असह, न सहने योग्य।
असहयोग–(सं. पुं.) मिलकर काम न करना, महात्मा गांधी का प्रचार किया हुआ आन्दोलन जो राज्य से असन्तोष प्रगट करने के लिये किया जाता था।
असहाय–(सं. वि.) निरवलम्ब, निःसहाय, अनाथ, जिसको किसी का सहारा न हो।
असहायता–(सं. स्त्री.) निराश्रयता।
असहित–(सं. वि.) निःसंग, बिना सहाय का।
असहिष्णु–(सं. वि.) असहनशील, कलहप्रिय, झगड़ालू, चिड़चिड़ा।
असहिष्णुता–(सं. स्त्री.) असहनशीलता।
असही–(हिं. वि.) ईर्ष्यालु, दूसरे की बढ़ती देखकर जलनेवाला।
असह्य–(सं. वि.) असहनीय, न सहन करने योग्य।
असाँच–(हिं. वि.) असत्य, झूठा, जो सच्चा न हो।
असांप्रतम्–(सं. अव्य.) अयोग्य, अनुचित।
असा–(अ. पुं.) डंडा, सोंटा, चाँदी या सोने के पत्र से मढ़ा हुआ डंडा जो बारात इत्यादि में सेवक लोग लेकर चलते ह।
असाई–(हिं. वि.) अशिष्ट, असभ्य।
असाक्षात्–(सं. अव्य.) परोक्ष में।
असाढ–(हिं. पुं.) आषाढ़ मास, वर्ष का चौथा महीना।
असाढा–(हिं. पुं.) बटे हुए रेशम का तागा।
असाढ़ी–(हिं. पुं.) आषाढ़ महीने में होनेवाला; (स्त्री.) आषाढ़ में बोया जानेवाला अन्न, गुरुपूर्णिमा।
असाध–(हिं. वि.) असाध्य।

असाधारण–(सं. वि.) असामान्य, विशेष।
असाधु–(सं. वि.) दुर्जन, अशिष्ट, दुष्ट, अविनीत।
असाधुता, असाधुत्व–(सं.स्त्री.,पुं.) दुष्टता।
असाध्य–(सं. वि.) कठिन, दुष्कर, न करने योग्य।
असान्निध्य–(सं. पुं.) अन्तर, दूरी।
असामर्थ्य–(सं. पुं.) अक्षमता।
असामयिक–(सं. वि.) असमयोचित, अकालिक, बिना समय का।
असामान्य–(सं. वि.) असाधारण, विशेष।
असामी–(हिं. पुं.) व्यक्ति, प्राणि, पुरुष, कृषक, ऋणी, लगान देकर खेत जोतनेवाला, अधिवासी, अपराधी, देनदार, कोई काम देनेवाला मनुष्य।
असार–(सं. वि.) सारशून्य, निःसार, शक्तिरहित, व्यर्थ, तुच्छ, निर्बल।
असारता–(सं.स्त्री.) निःसारता, अयोग्यता।
असावधान–(सं. वि.) जो सचेत न हो।
असावधानता–(सं. स्त्री.), असावधानी–(हिं. स्त्री.) प्रमाद, उपेक्षा।
असावरी–(हिं.स्त्री.) एक रागिणी विशेष।
असाहस–(सं. पुं.) साहस का अभाव।
असाहसिक–(सं. वि.) जो साहसी न हो, शान्त।
असाहाय्य–(सं.वि.) बिना सहायता का।
असि–(सं. पुं.) खड्ग, तलवार।
असिजीवी–(सं. वि.) खड्ग से जीविका चलानेवाला मनुष्य।
असित–(सं. वि.) काले रंग का, कुटिल, दुष्ट, टेढ़ा।
असित-ग्रीव–(सं.पुं.) अग्नि, मोर।
असिता–(सं. स्त्री.) यमुना नदी।
असितानन–(सं.पुं.) लंगूर।
असिद्ध–(सं. वि.) निष्फल, अपक्व, अपूर्ण, कच्चा, असफल, अप्रमाणित, व्यर्थ, अधूरा, योग में सिद्धि-रहित।
असिद्धि–(सं. स्त्री.) अप्राप्ति, अनिष्पत्ति, कच्चापन, अपूर्णता।
असिधारा–(सं. स्त्री.) तलवार की धार।
असिपत्र–(सं.पुं.) ईख का पौधा, तलवार का कोष्ठ या वेष्टन, एक नरक विशेष।
असिपत्र-वन–(सं.पुं.) एक नरक का नाम।
असी–(सं. स्त्री.) एक नदी जो काशी में गंगा से मिलती है।
असीम–(सं. वि.) सीमारहित, अनन्त, अगाध, अपार।
असीस–(हिं. स्त्री.) देखें 'आशिस्'।
असीसना–(हिं. क्रि.स.) आशीर्वाद देना।
असुंदर–(सं. वि.) कुरूप, अनुचित।

असु–(सं. पुं.) प्राणवायु।
असुकर–(सं. वि.) दुष्कर, कठिन।
असुख–(सं. पुं.) दुःख, कष्ट।
असुखी–(सं. वि.) सुखरहित, दुःखी।
असुग–(हिं. वि.) शीघ्रगामी, आशुग; (पुं.) वायु, तीर।
असुगम–(सं. वि.) दुर्गम, दुर्बोध, क्लिष्ट।
असुचि–(हिं.) देखें 'अशुचि'।
असुप्त–(सं. वि.) न सोता हुआ, अनिद्र।
असुविधा–(सं. स्त्री.) कठिनाई, अड़चन।
असुभ–(हिं. वि.) देखें 'अशुभ'।
असुर–(सं. पुं.) राक्षस, दैत्य, प्रेत, सूर्य, राहु, बादल, खल, दुष्ट, पृथ्वी, एक प्रकार का उन्माद रोग।
असुरक्ष्य–(सं. वि.) अरक्ष्य, कठिनता से बचाने योग्य।
असुर-गुरु–(सं.पुं.) असुरों के गुरु, शुक्राचार्य।
असुर-माया–(सं. स्त्री.) भूतों का जादू।
असुर-रिपु–(सं. पुं.) विष्णु।
असुरसेन–(सं. पुं.) एक दैत्य जिसकी देह पर गया नामक नगर बसा है।
असुराई–(हिं. स्त्री.) नीचता, दुष्टता।
असुराधिप–(सं. पुं.) असुरों का अध्यक्ष।
असुरारि–(सं. पुं.) देवता, विष्णु।
असुलभ–(सं. वि.) असाध्य, दुष्प्राप्य।
असुविधा–(हिं. स्त्री.) अड़चन, कष्ट।
असुहाती–(हिं. वि.) अशोभन, बुरा।
असुहृद्–(सं. वि.) शत्रु, रिपु।
असूक्ष्म–(सं. वि.) स्थूल, मोटा।
असूझ–(हिं. वि.) अपार, विस्तृत, जो देख न पड़े, अन्धकारपूर्ण, कठिन, विकट।
असूत–(हिं. वि.) प्रतिकूल, विरुद्ध।
असूया–(सं. स्त्री.) दूसरे के गुण में दोष लगाना, ईर्ष्या, शत्रुता, डाह।
असूर्यपश्या–(सं. स्त्री.) अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री, साध्वी स्त्री।
असृक्–(सं. पुं.) रक्त, लोहू।
असृग्धारा–(सं. स्त्री.) रक्त का प्रवाह।
असेग–(हिं. वि.) असह्य, न सहने योग्य।
असेवन–(सं. पुं.) उपेक्षा।
असेवित–(सं. वि.) अनपेक्षित, भूला हुआ।
असेव्य–(सं. वि.) सेवा के अयोग्य, काम में न आने योग्य।
असेसमेंट–(अं. पुं.) आय-कर, भूमिकर आदि लगाने का कार्य।
असेसमेंट-आफिसर–(अं. पुं.) कर-निर्धारण अधिकारी।
असैला–(हिं. वि.) शैली (रीति) के विरुद्ध काम करनेवाला, कुमार्गी, अनुचित व्यवहार करनेवाला।

असों, असौं–(हिं. अव्य.) इस साल, वर्तमान वर्ष में।
असोक–(हिं. वि.) देखें 'अशोक'।
असोकी–(हिं. वि.) शोक न करनेवाला।
असोच–(हिं. वि.) शोच न करनेवाला, चिन्तारहित।
असोज–(हिं. पुं.) आश्विन मास, क्वार का महीना।
असोस–(हिं. वि.) शुष्क न होनेवाला, जो सूखता न हो।
असौंदर्य–(सं. पुं.) सौन्दर्य का अभाव।
असौंध–(हिं. स्त्री.) दुर्गन्ध।
असौच–(हिं. पुं.) देखें 'अशौच'।
असौम्य–(सं. वि.) अप्रिय, डरावना।
अस्खलित–(सं. वि.) जो फिसलता न हो, स्थायी, टिकाऊ।
अस्तंगत–(सं. वि.) अदृश्य, डूबा हुआ।
अस्त–(सं. वि.) फेंका हुआ, निकाला हुआ, हटाया हुआ, नष्ट, अदृश्य, डूबा हुआ, छिपा हुआ; (पुं.) लोप, अदर्शन।
अस्तकोप–(सं.वि.) जो क्रोध करके ठंडा पड़ गया हो।
अस्तमन–(सं. पुं.) सूर्यादि ग्रहों के अस्त होने का काल।
अस्तमित–(सं. वि.) छिपा हुआ।
अस्तव्यस्त–(सं. वि.) अव्यवस्थित, उलटा-पुलटा, बिखरा हुआ।
अस्ताचल–(सं. पुं.) पश्चिमाचल पर्वत।
अस्ति–(सं. स्त्री.) स्थिति, विद्यमानता।
अस्तित्व–(सं. पुं.) विद्यमानता।
अस्तीन–(हिं. स्त्री.) देखें 'आस्तीन'।
अस्तु–(सं. अव्य.) ऐसा ही हो, अच्छा, भला, जो हो।
अस्तुति–(सं.पुं.) अपकीर्ति, निन्दा, बुराई; (हिं. स्त्री.) स्तुति, प्रशंसा।
अस्तेय–(सं.पुं.) चोरी न करना, साहूकारी।
अस्त्र–(सं. पुं.) शत्रु के ऊपर फेंककर चलाने का हथियार, आयुध, तलवार, चिकित्सक का शस्त्र।
अस्त्रकार–(सं. वि) अस्त्र बनानेवाला।
अस्त्र-चिकित्सक–(सं. पुं.) चीर-फाड़ करनेवाला, शल्य-चिकित्सक।
अस्त्र-चिकित्सा–(सं. स्त्री.) शरीर की चीरफाड़, शल्य-चिकित्सा।
अस्त्रजीवी–(सं. पुं.) अस्त्रादि से युद्ध करके जीविका चलानेवाला।
अस्त्रधारी–(सं. पुं.) अस्त्र धारण करनेवाला मनुष्य।
अस्त्रविद्–(सं.पुं.) अस्त्र विद्या में निपुण व्यक्ति।
अस्त्रविद्या–(सं. स्त्री.) वह शास्त्र जिसमें

युद्ध इत्यादि करने के नियम बतलाये जाते हैं, बाण-विद्या ।
अस्त्रवेद–(सं. पुं.) धनुर्वेद ।
अस्त्रवैद्य–(सं. पुं.) अस्त्र-चिकित्सक ।
अस्त्र-शस्त्र–(सं. पुं.) युद्ध करने के सब प्रकार के हथियार ।
अस्त्र-शाला–(सं. स्त्री.) अस्त्रागार, हथियार रखने का स्थान ।
अस्त्र-शिक्षा–(सं. स्त्री.) अस्त्रों के चलाने की शिक्षा ।
अस्त्रागार–(सं. पुं.) हथियारघर ।
अस्त्राहत–(सं. वि.) हथियार से मारा हुआ, बाण-विद्ध ।
अस्त्रि–(सं. पुं.) अस्त्रधारी मनुष्य ।
अस्त्री–(हिं. वि.) हथियारबन्द ।
अस्थान–(सं.पुं.) कुठौर, बुरा स्थान; (हिं. पुं.) स्थान ।
अस्थायी–(सं. वि.) अस्थिर, चंचल ।
अस्थावर–(सं. वि.) जो चल-फिर सकता हो, जंगम ।
अस्थि–(सं. स्त्री.) हाड़, हड्डी ।
अस्थिति–(सं. स्त्री.) स्थिति का अभाव, अस्थिरता ।
अस्थि-पंजर–(सं. पुं.) हड्डी की ठठरी ।
अस्थिमय–(सं. वि.) अस्थिनिर्मित, जिसमें केवल हड्डी ही बच गई हो ।
अस्थिमाला–(सं. स्त्री.) हड्डी की बनी हुई माला ।
अस्थिमाली–(सं. पुं.) शिव ।
अस्थिसार–(हिं. पुं.) मज्जा ।
अस्थिर–(सं. वि.) कम्पायमान, चंचल, अनिश्चित; (हिं.वि.) स्थिर, टिका हुआ ।
अस्थिरता–(सं.स्त्री.) अस्थिति, अनिश्चितता, चंचलता ।
अस्थि-शेष–(सं. वि.) जिसके शरीर में केवल हड्डी ही दीख पड़े ।
अस्थिसंचय–(सं. पुं.) शवदाह के बाद बची हुई हड्डियों को इकट्ठा करना ।
अस्थि-संधि–(सं. स्त्री.) हड्डी का जोड़ ।
अस्थूल–(सं. वि.) सूक्ष्म, पतला; (हिं.) स्थूल, मोटा ।
अस्थैर्य–(सं. पुं.) चपलता, चंचलता ।
अस्नान–(हि.पुं.) देखें 'स्नान' ।
अस्निग्ध–(सं.वि.) कर्कश, जो चिकना न हो, निर्दय ।
अस्नेह–(सं. पुं.) स्नेह का अभाव ।
अस्पताल–(हिं. पुं.) चिकित्सालय ।
अस्पर्श–(सं. पुं.) स्पर्श का अभाव, बिलगाव; (हि.पुं.) स्पर्श ।
अस्पर्शनीय–(सं. वि.) स्पर्श न करने योग्य ।
अस्पर्शित–(सं. वि.) न छूआ हुआ ।
अस्पृश्य–(सं. वि.) न छूने योग्य ।
अस्पृष्ट–(सं. वि.) स्पर्श न किया हुआ ।
अस्पृह–(सं. वि.) इच्छा न रखनेवाला, विरक्त, निस्पृह ।
अस्पृहा–(सं. स्त्री.) इच्छा का अभाव ।
अस्फुट–(सं. वि.) अव्यक्त, जो स्पष्ट न हो, गुप्त, गूढ़ ।
अस्फुटता–(सं. स्त्री.) अस्पष्टता ।
अस्मदीय–(सं. वि.) हमारा, हम लोगों का ।
अस्मरणीय–(सं. वि.) याद न आनेवाला ।
अस्मित–(सं.वि.) अविकसित, न खिला हुआ ।
अस्मिता–(सं. स्त्री.) आत्मश्लाघा, अहंकार, मोह ।
अस्र–(सं. पुं.) कोना, केश, रक्त, आँसू ।
अस्रज–(सं. पुं.) मांस ।
अस्रप–(सं. पुं.) राक्षस, जोंक, खटमल, मूलनक्षत्र; (वि.) लोहू पीनेवाला ।
अस्रु–(सं. पुं.) देखें 'अश्रु' ।
अस्ल, अस्ली–(अ.वि.) देखें 'असल, 'असली' ।
अस्लोक–(हिं. पुं.) देखें 'श्लोक' ।
अस्वच्छ–(सं. वि.) कलुष, धुंधला ।
अस्वतंत्र–(सं. वि.) पराधीन ।
अस्वप्न–(सं. पुं.) निद्रा का अभाव, देवता ।
अस्वस्थ–(सं. वि.) रुग्ण, रोगी ।
अस्वस्थता–(सं. स्त्री.) व्यथा, पीड़ा ।
अस्वातंत्र्य–(सं. पुं.) पराधीनता ।
अस्वादु–(सं. वि.) नीरस, विना स्वाद का ।
अस्वाभाविक–(सं. वि.) प्रकृति-विरुद्ध, कृत्रिम, बनावटी ।
अस्वार्थ–(सं. पुं.) स्वार्थ का अभाव, निस्पृहता; (वि.) निस्वार्थ ।
अस्वास्थ्य–(सं. पुं.) रुग्णता ।
अस्वीकार–(सं. पुं.) स्वीकार का अभाव ।
अस्वीकृत–(सं.वि.) स्वीकार न किया हुआ ।
अस्सी–(हिं. वि., पुं.) सत्तर और दस; यह संख्या, ८० ।
अहं–(सं. पुं.) मैं; (हिं. पुं.) अभिमान, अहंकार ।
अहंकार–(सं. पुं.) आत्माभिमान, गर्व, घमंड, आत्म-सत्ता ।
अहंकारी–(सं. पुं.) अभिमानी, घमंडी ।
अहंता–(हिं. स्त्री.) अभिमान, गर्व ।
अहंमति–(सं. स्त्री.) अहंकार, गर्व ।
अहंवाद–(सं. पुं.) धृष्टता, व्यक्तिवाद ।
अह–(सं. पुं.) दिन, सूर्य; (हिं. अव्य.) दुःख, आश्चर्य इत्यादिसूचक शब्द ।
अहक–(हिं. स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा ।
अहकना–(हिं. क्रि. अ.) लालसा करना, उत्कट इच्छा होना ।
अहटाना–(हिं. क्रि. स.) आहट लेना, पता लगाना, ढूंढ़ना, खोजना ।
अहदी–(अ. पुं.) योद्धा, सिपाही; (वि.) सुस्त, आलसी; –खाना–(पुं.) अहदियों के रहने का स्थान ।
अहन्–(सं. पुं.) दिन ।
अहनिसि–(हि. अव्य.) देखें 'अहर्निश' ।
अहमेव–(सं. पुं.) अहंकार, गर्व, घमंड, आत्मश्लाघा ।
अहर–(सं. पुं.) गणित में वह राशि जो बँट न सकती हो ।
अहरणीय–(सं.वि.) अहार्य, हरण न किया जानेवाला ।
अहरन–(हिं. स्त्री.) स्थूला, निहाई ।
अहरना–(हिं. क्रि. स.) लकड़ी को गढ़ना, डौलना ।
अहरनि–(हिं. पुं.) देखें 'अहरन' ।
अहरहः–(सं. अव्य.) प्रतिदिन ।
अहरा–(हिं. पुं.) सुलगाये जानेवाले कंडों का ढेर, ठहरने का स्थान, पानी पीने का अड्डा ।
अहरागम–(सं.पुं.) प्रातःकाल की उपस्थिति ।
अहरी–(हिं. स्त्री.) पशुओं के पानी पीने का जलागार ।
अहर्निश–(सं. अव्य.) दिनरात, सर्वदा ।
अहर्मुख–(सं. पुं.) प्रातःकाल, सवेरा ।
अहर्ष–(सं. वि.) मन्द-भाग्य ।
अहर्षित–(सं. वि.) जो प्रसन्न न हो ।
अहलाद–(हिं.पुं.) देखें 'आहलाद' ।
अहल्य–(सं. वि.) जो हल से न जोता जाता हो, अकर्ष्य, अकर्षणीय ।
अहल्या–(सं. वि.) गौतम ऋषि की पत्नी का नाम ।
अहवनीय–(सं. वि.) हवन के अयोग्य ।
अहवात–(हिं. पुं.) अहिवात, सोहाग ।
अहस्पति–(सं. पुं.) सूर्य ।
अहह–(सं. अव्य.) क्लेश, शोक, आश्चर्य इत्यादि सूचक अव्यय, हाय ! अरे !
अहा–(हिं.अव्य.) प्रसन्नतासूचक अव्यय ।
अहार–(हिं.वि.) देखें 'आहार' ।
अहारना–(हिं. क्रि. स.) भोजन करना, चिपकाना, माँड़ी लगाना, लकड़ी छीलना ।
अहारी–(हिं.वि.) देखें 'आहारी' ।
अहार्य–(सं.वि.) अभेद्य, न चोरी होने योग्य ।
अहाहा–(हिं. अव्य.) हर्षसूचक अव्यय ।
अहिंसक–(सं. वि.) हिंसा न करनेवाला ।
अहिंसा–(सं. स्त्री.) अद्रोह, किसी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट न देना ।
अहिंस्र–(सं. वि.) हिंसा न करनेवाला ।
अहि–(सं. पुं.) सर्प, सूर्य, राहु, पथिक,

जल, बादल, अश्लेषा नक्षत्र,पृथ्वी, गौ; (वि.) प्रसिद्ध, व्याप्त ।

अहिक–(सं. पुं.)अन्धा सर्प,सेमर का वृक्ष।

अहिगण–(सं. पुं.) एक वृत्त जिसके आदि में एक गुरु और अन्त में तीन लघु मात्राएँ रहती हैं।

अहिच्छत्र–(सं. पुं.) भारतवर्ष के दक्षिण का एक प्राचीन देश, मथुरा ।

अहिजिह्वा–(सं.स्त्री.) नागफनी का पौधा।

अहित–(सं.पुं.) शत्रु, वैरी, अपकार, हानि; (वि.) हानिकारक, अयोग्य, प्रतिकूल ।

अहितकारी–(सं.वि.) भलाई न करनेवाला।

अहिनाथ–(सं. पुं.) सर्पों का राजा, सर्पराज, शेषनाग ।

अहिपति–(सं. पुं.) शेषनाग ।

अहिफेन–(सं.पुं.) साँप की लार या विष, अफीम ।

अहिफेनबीज–(सं. पुं.) पोस्ते का दाना ।

अहिबेल–(हिं. स्त्री.) नागबेल (पान), अहिवल्ली ।

अहिम–(सं. वि.) जो ठंढा न हो, गरम ।

अहिमान–(हिं. पुं.) चाक के बीच का गड्ढा जो चूल पर रक्खा जाता है ।

अहिर–(हिं. पुं.) देखें 'अहीर' ।

अहिरिपु–(सं. पुं.) गरुड़, नकुल, मयूर ।

अहिलव–(हिं. पुं.) अधिकता, बढ़ती ।

अहिवर–(हिं. पुं.) दोहे का एक भेद ।

अहिवल्ली–(सं. स्त्री.) नागवल्ली, पान ।

अहिवात–(हिं. पुं.) स्त्री का सौभाग्य, सोहाग ।

अहिवातिन, अहिवाती–(हिं. स्त्री.) सौभाग्यवती स्त्री, सधवा, सोहागिन ।

अहीन–(सं. वि.)समग्र, पूरा, भरा हुआ ।

अहीर–(सं. पुं.) आभीर, ग्वाला, यादव ।

अहीश–(सं. पुं.) सर्पराज, शेषनाग ।

अहुटना–(हिं. क्रि.अ.)निवृत्त होना, हट जाना, भागना ।

अहुटाना–(हिं. क्रि. स.)भगाना, निकाल देना, दूर करना ।

अहुठ–(हिं. वि.) साढ़े तीन, साढ़े तीन फेरा खाया हुआ ।

अहुत–(सं. वि.) होम न किया हुआ ।

अहूठन–(हिं. पुं.) ठीहा जिस पर चारा काटा जाता है ।

अहे–(हिं. अव्य.) अरे ! अहो !

अहेड़–(सं. वि.) माननीय, प्रतिष्ठित ।

अहेतु–(सं. वि.) बिना कारण का, व्यर्थ, हेतुशून्य ।

अहेतुक–(सं. वि.) देखें 'अहेतु' ।

अहेर–(हिं. पुं.) आखेट, मृगया ।

अहेरी–(हिं.पुं.) आखेट करनेवाला,व्याध ।

अहो–(सं. अव्य.) हाय, धिक्कार, अरे, वाहवाह, क्यों ।

अहोरात्र–(सं. पुं.) दिनरात; (अव्य.) सर्वदा, निरन्तर ।

अहोर-बहोर–(हिं. अव्य.) फिर-फिर, बारंबार ।

अहोरा-बहोरा–(हिं. पुं.) विवाह की वह रीति जिसमें नववधू ससुराल पहुँचकर उसी दिन अपने घर वापस आ जाती है ।

आ

आ–हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर (स्वर) । यह 'अ' का दीर्घ रूप है; (पुं.) महेश्वर; (स्त्री.) लक्ष्मी ।

आँ–(हिं.) आश्चर्यसूचक अव्यय; (पुं.) बालक के रोने का शब्द ।

आँक–(हिं. पुं.) अंक, चिह्न, वर्ण, अक्षर, भाग, हिस्सा, अंश, कुल, पहिये के धुरे का ढपना, क्रोड़, गोद ।

आँकड़ा–(हिं. पुं.)अंक,संख्या,पेंच, फन्दा ।

आँकना–(हिं. क्रि. स.) अंकित करना, कूतना, ठहराना, दाम लगाना, अनुमान करना, लिखना ।

आँकनी–(हिं. स्त्री.) लेखनी, कलम ।

आँकर–(हिं. वि.) गहरा, बहुत, अधिक, महँगा ।

आँकुस–(हिं. पुं.) देखें 'अंकुश' ।

आँकू–(हिं. पुं.) कूतनेवाला, दाम लगानेवाला, आँकनेवाला ।

आँख–(हिं. स्त्री.) देखने की इन्द्रिय जिससे रूप, रंग, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है, चक्षु, नेत्र, दृष्टि, ध्यान, विवेक, कृपा, सन्तति, सूई का छिद्र, ईख, आलू इत्यादि में वह स्थान जहाँ से अँखुआ निकलता है; (मुहा.)–**आना (उठना)**–आँख लाल होना तथा सूजन होना; –**उठाना**–देखना, कष्ट देने का प्रयत्न करना; –**का तारा**–अति प्रिय व्यक्ति; –**का अंधा गाँठ का पूरा**–बहुत धनी पर मूर्ख व्यक्ति; –**का अंधा नाम नयनसुख**–व्यर्थ का शौकीन; –**का काँटा**–आँखों में खटकनेवाली बात या व्यक्ति; –**का काजल चुराना**–सामने रखी हुई चीज चुरा ले जाना; –**का जाला**–एक नेत्र-रोग; –**कान खुला रखना**–सतर्क या सावधान रहना; –**का परदा उठना**–भ्रम या मोह दूर होना; –**की किरकिरी**–आँख का काँटा; –**की पुतली**–कनीनिका, अति प्रिय पदार्थ या व्यक्ति; –**के डोरे**–आँख में की महीन नसें; –**खुलना**–जागना,नींद टूटना, ज्ञान होना, भ्रम हट जाना; –**खोलना**–देखना, ताकना, सावधान होना; –**गड़ना**–किरकिरी पड़ने पर आँख दुखना प्राप्ति की तीव्र लालसा होना; –**गड़ाना**–टकटकी लगाकर देखना; –**चढ़ना**–उन्माद या नींद न आने से पलकों का तन जाना; –**चमकाना**–आँखों से इशारा करना; –**चरने जाना**–नजर गायब होना; –**चीर-चीरकर देखना**–देखें 'आँख गड़ाना'; –**चुराना**–लज्जा से सामने न ताकना; –**झपना**–आँख बन्द हो जाना; –**झेंपना**–लज्जित या अपमानित होना; –**टेढ़ी करना**–अकृपादृष्टि करना; –**डबडबाना**–आँख में आँसू भर जाना; –**तरेरना**–क्रोध से देखना; –**दिखाना**–क्रोध दिखलाना; –**न ठहरना**–चमक से आँख झिप जाना; –**न पसीजना**–कृपा या दया न होना; –**निकालना**–क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखना; –**नीची करना या होना**–लज्जावश मुँह नीचा कर लेना; –**पथराना**–आँख का प्रकाश चला जाना; –**पर पर्दा पड़ना**–भ्रम में पड़ना, ज्ञानरहित होना; –**पसारना या फैलाना**–दूरदर्शी बनना; –**फड़कना**–पलक में स्फुरण होना; –**फाड़कर देखना**–भली-भाँति आँख खोलकर देखना; –**फिर जाना**–चित्त हटा लेना, कृपा दृष्टि फेर लेना; –**फूटना**–अन्धा होना, कुढ़ना, बुरा लगना; –**फेरना**–प्रतिकूल आचरण करना, कृपादृष्टि हटा लेना; –**फोड़ना**–अन्धा बना देना; बहुत देर तक पढ़ते रहना या महीन सूई-कारी आदि करते रहना; –**बंद किए हुए**–बिना सोचे-विचारे; –**बंद होना**–मरण को प्राप्त होना; –**बचाना**–सामना न करना; –**बनाना**–शल्य-क्रिया द्वारा मोतियाबिंद आदि रोगों का उपचार करना; –**बिछाना**–आदर या स्नेहपूर्वक स्वागत करना; –**बैठना**–आँख का अन्धा बन जाना; –**भर आना**–नेत्र सजल होना; –**भर देखना**–पूर्ण रूप से आँख खोलकर देखना; –**मचकाना**–बार बार पलक गिराना, संकेत करना; –**मारना**–आँख से संकेत करना; इस प्रकार मना करना –**मिलाना**–आँख सामने करके देखना; –**मूँद लेना**–देखी अनदेखी करना, मर जाना; –**में खटकना**–आँख में गड़ना; –

–में खून उतरना–क्रोध से आँखें लाल हो जाना; –में गड़ना (चुभना)–बुरा लगना; –में चर्बी चढ़ना–अहंकार के कारण किसी पर ध्यान न देना; –में धूल डालना–प्रत्यक्ष रूप से छलना या धोखा देना; –रखना–चौकसी रखना; –लगना–नींद आ जाना, प्रीति होना; –लाल करना–क्रोध दिखलाना; –सेंकना–प्रिय को देखकर आँखों का सुख लेना; –से आँख मिलाना–नजर बराबर करना; –होना–परख होना, विवेक या पहिचान होना, समझ होना; आँखें घुलना–आँखें चार होना या करना; आँखें चढ़ना–नींद आदि के कारण पलकों का चढ़ जाना; आँखें चार करना–आँख मिलाकर देखना; आँखें ठंढी होना–जी भरना, तृप्त होना; आँखें डबडबाना–आँखों में आँसू छलछला जाना; आँखें तरेरना–क्रोध की दृष्टि से देखना; आँखें दौड़ाना–नजर दौड़ाना, इधर-उधर देखना; आँखें फिर जाना–बेमुरौवत होना; आँखें बदल जाना–आँखें फिर जाना; आँखों की ठंढक–प्रिय व्यक्ति या वस्तु; आँखों के आगे अँधेरा छाना या होना–सिर चकरा जाना, मूर्छित-प्राय होना, विपत्ति आदि में चारों ओर निराशा ही निराशा दिखाई पड़ना; आँखों के आगे या सामने नाचना या फिरना–सामने प्रकट होना, किसी की याद बराबर बनी रहना; आँखों देखा हुआ–प्रत्यक्ष देखा; आँखों पर पट्टी बाँध लेना–ध्यान न देना; आँखों पर परदा पड़ना–भ्रम होना, समझ में न आना; आँखों पर रखना–बड़ी खातिर या स्नेहपूर्वक अपने यहाँ रखना; आँखों में खून उतरना–आँखें लाल हो जाना; आँखों में चढ़ना–पसंद आना, जँचना; आँखों में चरबी छा जाना–घमंड से किसी की ओर ध्यान न देना; आँखों में चुभना–देखें 'आँख में गड़ना'; आँखों में टेसू, तीसी या सरसों फूलना–जो बात ध्यान में बनी हो वही सर्वत्र दिखाई पड़ना; आँखों में धूल झोंकना, डालना, देना या फेंकना–धोखा देना, ठगकर ले लेना; आँखों में नाचना–किसी की छवि बराबर मानस-पटल पर दिखाई देना; आँखों में बसाना या समाना–प्रेम-भावना में घर कर लेना; आँखों में शील होना–मुरौवत होना; आँखों से उतरना–प्रेम की भावना से गिर जाना; आँखों से ओझल होना–सामने न रहना, दृष्टि से परे होना; आँखों से गिरना–आँखों से उतरना।

आकंप, आकंपन–(सं. पुं.) कंपन।

आकंपित–(सं. वि.) काँपता हुआ।

आँखा–(हिं. पुं.) चलनी।

आंग–(सं. वि.) शारीरिक, अंगधारी, अंग देश में उत्पन्न।

आँग–(हिं. पुं.) अंक, कुच, स्तन।

आँगन–(हिं.पुं.) अँगना, घरके भीतर का चौक

आंगिक–(सं.वि.) अंग या शरीर संबंधी।

आंगार–(सं.वि.) अंगार का, अंगार से बना।

आंगारिक–(सं. वि.) देखें 'आंगार'।

आंगिरस–(सं.वि.) अंगिरा ऋषि से उत्पन्न।

आँगी–(हिं. स्त्री.) आँखा, अँगिया, महीन आँटा चालने की चलनी।

आँघी–(हिं.स्त्री.) मैदा चालने की चलनी।

आँच–(हिं. स्त्री.) आग की लपट, अग्नि, ताप, तेज, चोट, हानि, सङ्कट, विपत्ति, प्रेम या काम का ताप; (मुहा.)–**आना**–हानि होना, कष्ट होना; –**खाना**–आँच पर रखना–**दिखाना**–गरम करना।

आँचना–(हिं. क्रि. स.) आँच देना, सुलगाना।

आँचर–(हिं. पुं.) अंचल।

आँचल–(हिं. पुं.) धोती या डुपट्टे का छोर, पल्ला, स्त्रियों की साड़ी का छाती पर रहनेवाला किनारा; (मुहा.) –**देना**–बच्चे को दूध पिलाना; –**में बाँधना**–सर्वदा साथ रखना, किसी बात को याद रखना; –**लेना**–आँचल छूकर अभिवादन करना।

आंजन–(सं. पुं.) अंजन, अंजनी के पुत्र हनुमान जी; (वि.) अंजन संबंधी।

आँजन–(हिं. पुं.) देखें 'अंजन'।

आँजना–(हिं.क्रि.स.) आँखोंमें अंजनलगाना।

आंजनेय–(सं. पुं.) हनुमान।

आँट–(हिं. स्त्री.) हथेली में तर्जनी और अँगूठे के मध्य का स्थान, दाँव, बैर, गाँठ, गट्ठर, पूल; (मुहा.)–**पर चढ़ना**–दाँव पर आना।

आँटना–(हिं. क्रि. अ.) समाना, अँटना, आना, पहुँचना।

आँट-साँट–(हिं. स्त्री.) गुप्त अभिसन्धि।

आँटी–(हिं. स्त्री.) लंबी घास इत्यादि का छोटा गट्ठा, लड़कों के खेलने की गुल्ली, लड़ने का एक पेंच, सूत का लच्छा, धोती की ऐंठन, टेंट।

आँठी–(हिं. स्त्री.) गाँठ, बीज, गुठली, दही मलाई आदि का लच्छा।

आंड–(सं.वि.) अंड या डिंब से उत्पन्न, अंडज।

आंड–(हिं. पुं.) अंडकोश।

आँड़ी–(हिं. स्त्री.) गाँठ, सूत की प्योनी, कोल्हू के जाठ का गोला।

आँड़ू–(हिं. पुं.) अण्डकोशयुक्त, जो पशु बधिया न किया गया हो।

आँत–(हिं. स्त्री.) अन्त्र, अँतड़ी, प्राणियों के पेट में गुदा तक जानेवाली लंबी नली जिसमें से होकर मल बाहर निकलता है, लाद; (मुहा.)–**सूखना**–भूख से छटपटाना।

आंतर–(सं.वि.) अन्तर का, भीतरी, अंतरंग

आँतर–(हिं. पुं.) अन्तर, दो पदार्थों के बीच का स्थान, फासला।

आंतराल–(सं. वि.) आंतरिक।

आंतरिक–(सं. वि.) अंतर्गत, भीतरी, मानसिक।

आंत्र–(सं. वि.) अंत्र-संबंधी, आँतों में उत्पन्न या रहनेवाला।

आंत्रिक–(सं. वि.) अंत्र का, अंत्र संबंधी।

आँदू–(हिं.पुं.) लोहे का कड़ा, बेड़ी, सिकड़ी।

आंदोलन–(सं. पुं.) उपद्रव, कंपन, हलचल, प्रकंप, उद्वेग, भावावेश।

आंदोलित–(सं. वि.) आंदोलन से युक्त, कंपित।

आँधना–(हिं.क्रि.अ.) वेग से धावा करना, टूट पड़ना।

आँधर, आँधरा–(हिं.वि.) अन्धा, नेत्रहीन।

आँधारंभ–(हिं. पुं.) अन्धेरखाता, मनमानी बात।

आँधी–(हिं. स्त्री.) धूलिपूर्ण प्रचण्ड वायु, अंधड़; (वि.) आँधी के समान तीव्र।

आंध्र–(सं. पुं.) तामिल देश, आधुनिक आंध्र प्रदेश, यहाँ के निवासी।

आँबाहल्दी–(हिं. स्त्री.) देखें 'आमाहल्दी'।

आँय-बाँय–(हिं. पुं.) असम्बन्ध प्रलाप, व्यर्थ की बात, अंडबंड, अनाप-शनाप।

आँव–(हिं. पुं.) अन्न न पचने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का उदर-रोग।

आँवठ–(हिं. पुं.) किनारा, कपड़े का छोर, बरतन का बार।

आँवड़ना–(हिं. क्रि.अ.) उमड़ना, ऊपरको उठना।

आँवड़ा–(हिं. वि.) गहन, गहरा।

आँवन–(हिं. पुं.) पहियेके मध्यभाग में जड़ी हुई लोहे की सामी जिसमें धुरे का डंडा घूमता है।

आँवरा–(हिं. पुं.) देखें 'आँवला'।

आँवल–(हिं. स्त्री.) खेड़ी जिससे गर्भ में बच्चा लपेटा रहता है।

आँवला–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिसके गोल फल कसैलापन लिये कुछ खट्टे होते हैं।
आँवलासार-गंधक–(हिं. स्त्री.) स्वच्छ की हुई पारदर्शक गन्धक।
आँवाँ–(हिं. स्त्री.) गड्ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के पात्र पकाते हैं, आवाँ।
आंशिक–(हिं. वि.) अंश संबंधी, हिस्से का।
आंशुकजल–(हिं. पुं.) धूप की किरण दिखलाया हुआ जल, ताँबे के पात्र में रखा हुआ जल जो दिन भर धूप में तथा रात में चाँदनी में रख दिया जाता है और औषधि में प्रयुक्त होता है।
आँस–(हिं. स्त्री.) पीड़ा, सुतली, डोरी, रेशा; (पुं.) आँसू।
आँसी–(हिं. स्त्री.) मिठाई आदि जो इष्ट मित्रों के घर भेजी जाती है, बैना।
आँसू–(हिं. पुं.) अश्रु, नेत्र से निकलनेवाला जल; (मुहा.) –गिराना या ढालना–रोना; –पीकर रह जाना–मसोसकर रह जाना; –पोंछना–आश्वासन देना, ढाढ़स देना; आँसुओं से मुँह धोना–बहुत अधिक रोना; –ढाल–(पुं.) एक प्रकार का पशुओं का रोग जिसमें इनकी आँखों से आँसू गिरा करता है।
आँहड़–(हिं. पुं.) भाण्ड, पात्र।
आँहाँ–(हिं. अव्य.) नहीं।
आ–(सं. उप.) जो ईषद् (थोड़ा), मर्यादा, अभिव्याप्ति तथा अतिक्रम अर्थ में प्रयुक्त होता है—यथा, आरक्त–थोड़ा लाल; आमरण–जीवन पर्यन्त; आकालिक–विना समय का।
आइंदा–(अ. अव्य.) आगे चलकर; (वि.) आनेवाला।
आइ–(हिं. स्त्री.) देखें 'आयु'।
आइना–(हिं. पुं.) देखें 'आईना'।
आइस, आईस–(हिं. पुं.) देखें 'आयसु'।
आई–(हिं. स्त्री.) मृत्यु, मौत, आयुष्य।
आईन–(अ. पुं.) विधि, कानून, विधान, नियम; –ने-अकबरी–(पुं.) सम्राट् अकबर के शासन-प्रबंध का प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ।
आउ–(हिं. पुं.) आयुष्य, जीवन।
आउबाउ–(हिं. पुं.) निरर्थक बकवाद।
आक–(हिं. पुं.) अर्क, मदार, अकवन।
आकटि–(सं. अव्य.) कमर तक।
आकबाक–(हिं. पुं.) वृथा की बकवाद, बकझक।
आकर–(सं. पुं.) समूह, ढेर, भण्डार, उत्पत्ति-स्थान, खान, किसी द्रव्य के रहने का स्थान, तलवार चलाने की रीति।
आकरकरा, आकरकहा–(सं. पुं.) अकरकरा, एक जड़ी।
आकरखना–(हिं. क्रि. स.) आकृष्ट करना।
आकरिक–(सं. वि.) खान खोदनेवाला।
आकरी–(सं. वि.) आकरिक।
आकर्णन–(सं. पुं.) श्रवण, सुनाई देना।
आकर्णित–(सं. वि.) सुना हुआ।
आकर्ष–(सं. पुं.) वितान, खिंचाव, तनाव, चौपड़ का खेल, कसौटी, फल तोड़ने की लग्गी, अँकुसी, इन्द्रिय, तीर चलाने का अभ्यास, चुंबक।
आकर्षक–(सं. पुं.) खींचनेवाला, चुम्बक।
आकर्षण–(सं. पुं.) किसी स्थान से किसी वस्तु का बलपूर्वक दूसरे स्थान पर खिंचा जाना, खिंचाव; –शक्ति–(सं. स्त्री.) भौतिक पदार्थों में वह शक्ति जिसके द्वारा वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींच लेते हैं।
आकर्षन–(हिं. पुं.) देखें 'आकर्षण'।
आकर्षना–(हिं. क्रि. स.) अपनी ओर खींचना, आकृष्ट करना।
आकर्षित–(सं. वि.) आकृष्ट, खिंचा हुआ।
आकलन–(सं. पुं.) आशंका, सन्देह, ग्रहण, लेना, संग्रह, संचय, गणना, अनुसन्धान, खोज, बन्धन।
आकलित–(सं. वि.) सम्पादित, गिना हुआ, जाँचा हुआ।
आकलीय–(सं. वि.) एकत्र करने योग्य, गणना करने योग्य।
आकस्मिक–(सं. वि.) विना किसी कारण के होनेवाला, अचानक होनेवाला।
आकांक्षक–(सं. वि.) अभिलाषा करनेवाला, आकांक्षी।
आकांक्षा–(सं. स्त्री.) इच्छा, अभिलाषा, चाह, वांछा, अभिप्राय, अपेक्षा, अनुसन्धान, योग्यता, व्याकरण में अर्थ की पूर्ति के लिये शब्द की अपेक्षा।
आकांक्षित–(सं. वि.) ईप्सित, इच्छित, अपेक्षित, पूछा हुआ, ध्यान किया हुआ।
आकांक्षी–(सं. वि.) इच्छुक, चाहनेवाला।
आका–(हिं. पुं.), आकाय–(सं. पुं.) भट्ठी, पैजावा, आँवाँ।
आकार–(सं. पुं.) स्वरूप, आकृति, चेष्टा, सूरत, डीलडौल, चिह्न, चेष्टा, 'आ' अक्षर।
आकारित–(सं. वि.) आकृतिक।
आकारी–(हिं. वि.) आकार बनानेवाला।
आकालिक–(सं. वि.) असामयिक।
आकाली–(हिं. स्त्री.) व्याकुलता, घबराहट।
आकाश–(सं. पुं.) नभ, गगन, अभ्रक, बहुत ऊँचा स्थान; (मुहा.) –पाताल एक करना–हलचल मचाना, बड़ा उद्योग करना; –कक्षा–(सं. स्त्री.) आकाश से लगा हुआ भूमि का किनारा क्षितिज; –कुसुम या पुष्प–(सं. पुं.) आकाश में फला हुआ पुष्प, असम्भव वार्ता, अनहोनी बात; –गंगा–(सं. स्त्री.) मन्दाकिनी, गगन-पथ, अनेक छोटे-छोटे तारों का मण्डल जो आकाश में उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है; –चारी–(सं. वि.) आकाश में विचरनेवाला (पक्षी, देवता, पवन आदि); –गामी–(सं. वि.) आकाश में फिरनेवाला, (पुं) वायु, देवता, पक्षी, राक्षस; –चोटी–(हिं. स्त्री.) शीर्ष-बिंदु, सिर के ठीक ऊपर पड़नेवाला कल्पित बिंदु; –जल–(सं. पुं.) वृष्टि का जल, मेघ का पानी, तुषार, ओस; –दीप–(सं. पुं.) देखें 'आकाशप्रदीप'; –धुरी (हिं. स्त्री.), –ध्रुव–(स. पुं.) खगोल का ध्रुव; –नदी–(सं. स्त्री.) देखें 'आकाशगंगा'; –नीम–(हिं. स्त्री.) नीम पर फैलनेवाली बेल; –पुष्प–(सं. पुं.) देखें 'आकाश-कुसुम; –प्रदीप–(सं. पुं.) कार्तिक मास में प्रतिदिन ऊँचे स्थान पर जलाने का दीपक, आकासदीया; –बेल–(हिं. स्त्री.) देखें 'अमरबेल'; –भाषित–(सं. पुं.) देववाणी, जो बात देवता आकाश में अदृश्य रूप में रहकर कहते हों; –मंडल–(सं. पुं.) गगनमण्डल, खगोल; –मुखी–(सं. पुं.) शैव सम्प्रदाय के संन्यासी जो सर्वदा आकाश की ओर मुख करके तप करते हैं; –यान–(सं. पुं.) वायुयान, हवाई जहाज; –लोचन–(सं. पुं.) जिस स्थान से ग्रहों की स्थिति, गति इत्यादि देखी जाती है, मानमन्दिर; –वचन–(सं. पुं.) देखें 'आकाश-भाषित'; –वल्ली–(सं. स्त्री.) आकाश-बेल, अमरबेल; –वाणी–(सं. स्त्री.) देववाणी, वह वाक्य जो देवता आकाश में अदृश्य रूप में रहकर कहते हों; भारत का रेडियो प्रसारण विभाग; –वायु–(सं. स्त्री.) वायुमण्डल जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है; –वृत्ति–(सं. स्त्री.) सन्दिग्ध जीविका, मनुष्य की अस्थिर आय; –सलिल–(सं. पुं.) वर्षा का पानी।
आकाशी–(हिं. स्त्री.) वह चाँदनी जो आतप आदि से बचने के लिये तानी जाती है।
आकाशीय–(सं. वि.) आकाश-सम्बन्धी, आकाश में होनेवाला।
आकीर्ण–(सं. वि.) व्याप्त, फैला हुआ।

आकुंचन–(सं. पुं.) संकोचन, संचय, मरोड़, टेढ़ापन, सिमटन।
आकुंचनीय–(सं. वि.) सिकोड़ने योग्य, सिमटनेवाला।
आकुंचित–(सं. वि.) सिकोड़ा हुआ, वक्र, टेढ़ा, घुँघराले (बाल)।
आकुंठन–(सं. पुं.) भोथरा होने की स्थिति, लज्जा, शर्म।
आकुंठित–(सं. वि.) कुन्द, लज्जित।
आकुल–(सं. वि.) व्यग्र, घबड़ाया हुआ, विह्वल, प्रतिकूल, उद्विग्न, व्याप्त।
आकुलता–(सं. स्त्री.), आकुलत्व–(सं. पुं.) व्यग्रता, घबराहट।
आकुलित–(सं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, क्षुब्ध, दुःखित।
आकुलीकृत–(सं. वि.) व्याकुल किया हुआ।
आकुलीभूत–(सं. वि.) जो स्वयं व्याकुल हो गया हो।
आकूत–(सं. पुं.) आशय, अभिप्राय।
आकूति–(हिं. स्त्री.) अभिप्राय, आशय।
आकृति–(सं. स्त्री.) आकार, लक्षण, मूर्ति, रूप, बनावट, चेष्टा, व्यवहार, चाल-चलन।
आकृष्ट–(सं. वि.) खींचा हुआ।
आकृष्टि–(सं. स्त्री.) आकर्षण, खिचाव, गुरुत्वाकर्षण।
आक्रंद, आक्रंदन–(सं. पुं.) चिल्लाहट सहित रुलाई, पुकार, ललकार, प्रबलता।
आक्रंदित–(सं. वि.) चिल्लाता हुआ।
आक्रम–(सं. पुं.) शक्ति, बल, पराक्रम।
आक्रमण–(सं. पुं.) अग्रगमन, चढ़ाई, धावा, प्रसारण, फैलाव।
आक्रमणीय–(सं. वि.) आक्रमण करने योग्य, धावा करने योग्य।
आक्रमित–(सं. वि.) जिस पर आक्रमण किया गया हो।
आक्रमिता–(सं. स्त्री.) वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक को सब प्रकार से वश में कर लेती है।
आक्रांत–(सं. वि.) पराभूत, हारा हुआ, घिरा हुआ, अधीन किया हुआ, विह्वल, घबड़ाया हुआ, व्याप्त, पीड़ित।
आक्रांति–(सं. स्त्री.) विवशता।
आक्रीड़–(सं. पुं.) क्रीड़ा-स्थान।
आक्रीड़न–(सं. पुं.) विहार, खेल।
आक्रोश–(सं. पुं.) शाप, कोसना, निन्दा, अपवाद, गाली।
आक्रोशनीय–(सं. वि.) कोसने योग्य।
आक्रोशित–(सं. वि.) शापित, कोसा हुआ।
आक्लांत–(सं. वि.) लगा हुआ, लिपटा हुआ, आवेष्टित।

आक्षिक–(सं. वि.) द्यूत या पासा सम्बन्धी।
आक्षिप्त–(सं. वि.) फेंका या उछाला हुआ, उभाड़ा हुआ, निन्दा किया हुआ, अपमानित।
आक्षेप–(सं. पुं.) फेंकना, खींचना, गिराना, अपमान, अपवाद, भर्त्सना, गाली, झिड़की, ताना।
आक्षेपक–(सं. वि.) आकर्षक, खींचनेवाला, निन्दा करनेवाला।
आक्षेपण–(सं. पुं.) आक्षेप करना।
आक्षेपी–(सं. वि.) आकर्षण करनेवाला, खींचनेवाला।
आक्षोट–(सं. पुं.) अखरोट का वृक्ष।
आक्साइड–(अं. पुं.) आक्सिजन और धातु के मेल से बना पदार्थ।
आक्सिजन–(अं. पुं.) जीवन के लिए आवश्यक गैस।
आखत–(हिं. पुं.) अक्षत जो देवताओं पर चढ़ाने के उपयोग में आता है, विवाहादि शुभ कार्य के समय परिजनों को दिया जाने का अन्न।
आखन–(हिं. अव्य.) क्षण-क्षण, बार-बार।
आखना–(हिं. क्रि. स.) वर्णन करना, कहना, चाहना, देखना, ताकना।
आखर–(हिं. पुं.) अक्षर।
आखा–(हिं. पुं.) चालने का पात्र, महीन कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी; (वि.) समग्र, समूचा।
आखिर–(फा. पुं.) अंत, समाप्ति; (वि.) पिछला, अंत का।
आखिरकार–(फा. अव्य.) अंत में।
आखिरी–(अ. वि.) अंत का, अन्तिम।
आखु–(सं. पुं.) मूषक, चूहा, सुअर, चोर, देवदार का वृक्ष।
आखेट–(सं. पुं.) अहेर, मृगया।
आखेटक–(सं. पुं.) मृगया; (वि.) अहेर खेलनेवाला।
आखेटिक–(सं. पुं.) आखेटक कुत्ता।
आखेटी–(सं. वि.) अहेरी, शिकारी।
आखोट–(सं. पुं.) अखरोट का वृक्ष।
आख्या–(सं. स्त्री.) व्याख्या, नाम, संज्ञा, रुढ़िवाचक शब्द।
आख्यात–(सं. वि.) कथित, कहा हुआ, पढ़ा हुआ, प्रसिद्ध, प्रकाशित।
आख्याता–(सं. पुं.) बोलनेवाला, उपदेशक।
आख्याति–(सं. स्त्री.) कीर्ति, यश, कथन, नामकरण।
आख्यान–(सं. पुं.) कथन, वर्णन, बोली, कथा, किस्सा, कहानी, उपन्यास विशेष जिसमें आख्याता स्वयं अपने मुख से सब बातें कहता है।

आख्यानक–(सं. पुं.) कथा, छोटा किस्सा।
आख्यानकी–(सं. स्त्री.) दण्डक वृत्त का एक भेद।
आख्यायक–(सं. वि.) कहनेवाला; (पुं.) दूत।
आख्यायिका–(सं. स्त्री.) उपन्यास, गल्प, सच्ची कहानी।
आख्येय–(सं. वि.) वर्णन करने योग्य।
आगंतु, आगंतुक–(सं. पुं.) अतिथि, पाहुन; (वि.) आनेवाला, दैवयोग से प्राप्त।
आग–(हिं. स्त्री.) अग्नि, दाह, जलन, गरमी, कामाग्नि, वात्सल्य प्रेम, ईर्ष्या, ईख का अग्रभाग, हल का डंडा; (मुहा.)–का पुतला–क्रोधी; –देना–अग्नि-दाह करना; –पर पानी डालना–क्रुद्ध को शांत करना; –पर लोटना–तड़पना, बेचन होना; –पानी का बैर–सहज शत्रुता; –बबूला होना–क्रोध से मुख लाल हो जाना; –बरसना–बहुत गरमी पड़ना; –बरसाना–लड़ाई में गोलों की वर्षा करना; –बोना–झगड़ा-बखेड़ा मचाना; –भड़काना–हलचल मचाना; –में कूदना–जान-बूझकर महा-विपत्ति मोल लेना; –में घी छोड़ना या डालना–क्रोध भड़काना; –लगना–किसी पदार्थ का जलना, अति क्रुद्ध होना, मँहगी पड़ना; –लगाकर तमाशा देखना–झगड़ा खड़ा करके उसमें आनंद लेना; –लगाना–उद्वेग बढ़ाना, क्रोध उत्पन्न करना, भड़काना; –से पानी होना–क्रोध शांत होना; –होना–परितप्त होना, अति क्रुद्ध होना; पानी में आग लगाना–असंभव बात करना।
आगड़ा–(हिं. पुं.) मुरझाई हुई बाल जिसके दाने सूख गये हों।
आगत–(सं. वि.) उपस्थित, आया हुआ, रहनेवाला, हुआ, प्राप्त; (पुं.) आगमन।
आगतपतिका–(सं. स्त्री.) वह नायिका जिसका पति परदेश से वापस आया हो।
आगत-स्वागत–(सं. पुं.) आदर-सत्कार।
आगम–(सं. पुं.) आगमन, आय, प्राप्ति, उत्पत्ति, चार प्रमाणों में से एक, उपस्थिति, पहुँच, योग, जोड़, मार्ग, समागम, व्याकरण के शब्द-साधन में जो वर्ण बाहर से लाया जाय, वेद, शास्त्र, नीतिशास्त्र, नदी का मुहाना, होनहार, भविष्य; (मुहा.)–करना–प्रबंध या इंतजाम करना; –जानना–आनेवाली बातें जान लेना; –बाँधना–आनेवाली बात का निश्चय करना।
आगमजानी–(हिं. वि.) आगम या भविष्य जाननेवाला।

आगमज्ञानी-(सं.वि.) होनहार को जाननेवाला, आगमजानी।
आगमन-(सं. पुं.) अवाई, प्राप्ति।
आगमवक्ता-(सं. पुं.) भविष्य वतलानेवाला ज्योतिषी।
आगमवाणी-(सं. स्त्री.) भविष्यवाणी।
आगमविद्या-(सं. स्त्री.) वेदविद्या।
आगम-सोची-(सं. वि.) दूरदर्शिता की बातें सोचनेवाला।
आगमिक-(सं. वि.) आया हुआ, आ पहुँचनेवाला, तन्त्र जाननेवाला।
आगमित-(सं.वि.) पढ़ा हुआ, समझा हुआ।
आगमी-(सं.वि.) भविष्य-वक्ता, ज्योतिषी।
आगर-(हिं. पुं.) आकर, खान, ढेर, समूह, कोप, निधि, अर्गला, व्योंड़ा, नमक वनाने का गड्ढा, घर, छप्पर; (वि.) श्रेष्ठ, कुशल, वढ़िया, उत्तम, चतुर, दक्ष।
आगरी-(हिं. पुं.) नमक वनानेवाला, लोनियाँ।
आगल-(हिं. पुं.) अर्गल, व्योंड़ा; (अव्य.) आगे की ओर, सामने; (वि.) अगला।
आगला-(हिं. वि.) देखें 'अगला'।
आगलित-(सं. वि.) मुरझाया हुआ।
आगवन-(हिं. पुं.) आगमन, आना।
आगस्त्य-(सं. वि.) अगस्त्य ऋषि का; (पुं.) अगस्त ऋषि के वंशज।
आगा-(हिं. पुं.) अग्रभाग, अगला हिस्सा, वक्षस्थल, छाती, ललाट, मुख, लिंग, वस्त्र (कुरते आदि का) अगला भाग, नाव का अगला भाग, घर के सामने की भूमि, वस्त्र का पल्ला जो आगे की ओर रहता है, परिणाम, सेना का अगला भाग, आगे आनेवाला मनुष्य, अफगानिस्तान का रहनेवाला, सरदार, मालिक; (मुहा.)-**काटना**-किसी अपशकुन-सूचक प्राणी का यात्री के रास्ते को आर-पार कर जाना; -**भारी होना**-गर्भवती होना; - **रोकना** -हमला रोकना, किसी वड़े काम को सँभालना, वाधक होना।
आगान-(हि. पुं.) वर्णन, वृत्तान्त।
आगा-पीछा-(हि. पुं.) सोच-विचार, द्विविधा, परिणाम, हिचक, शरीर का अगला और पिछला भाग; (मुहा.) -**करना**-टालमटोल करना।
आगामि, आगामी-(सं. वि.) आगे आनेवाला, भावी।
आगार-(सं. पुं.) घर, मकान, स्थान, कोष, खजाना।

आगि-(हिं. स्त्री.) अग्नि, आग।
आगिल-(हिं. वि.) अगला, आगे होनेवाला, होनहार।
आगी-(हिं. स्त्री.) अग्नि, आग।
आगू-(हिं. अव्य.) आगे, आगे की ओर।
आगे-(हिं. अव्य.) अग्र भाग में, और दूर पर, वढ़कर, सम्मुख, भविष्य में, वाद, पीछे, जीवित अवस्था में, अनन्तर, पूर्व, पहिले, अधिक, क्रोड़ में, गोद में; (मुहा.) -**आगे-सामने**; - **आना** -सम्मुख होना, घटित होना; -**करना**-उपस्थित करना, नेता वनाना; -**को**,-**जाकर**-भविष्य में; -**निकलना**-वढ़ जाना; -**पीछे**-एक के वाद दूसरा; -**से**-सामने से, भविष्य में; -**होना**-अग्रसर होना, मुखिया वनना।
आगौन-(हिं. पुं.) देखें 'आगमन'।
आग्निक-(सं. वि.) अग्नि सम्वन्धी।
आग्नीध्र-(सं. पुं.) यज्ञ में अग्नि प्रज्वलित करनेवाला, पुरोहित।
आग्नेय-(सं. वि.) अग्नि देवता संवंधी, अग्नि विषयक, अग्नि से निकाला हुआ, आग लगने से शीघ्र जलनेवाला, भूख वढ़ानेवाला, अग्नि के समान; (पुं.) सोना, लोहा, कृत्तिका नक्षत्र, दीपन औषधि, ज्वालामुखी पर्वत, आग लगने से चलनेवाले शस्त्र, तोप, वन्दूक इ०, अग्नि के पुत्र कार्त्तिकेय, प्रतिपदा तिथि, भारतवर्ष के दक्षिण के एक प्राचीन देश का नाम।
आग्नेयास्त्र-(सं. पुं.) प्राचीन काल का अस्त्र विशेष जिसके प्रयोग से अग्नि की वृष्टि होती थी।
आग्नेयी-(सं. स्त्री.) पूर्व और दक्षिण के वीच की दिशा।
आग्रस्त-(सं.वि.) वेधा हुआ, छेदा हुआ।
आग्रह-(सं. पुं.) विनय, अनुरोध, आसक्ति, अनुग्रह, कृपा, तत्परता, आवेश, साहस, हठ।
आग्रहायण-(सं. पुं.) मार्गशीर्ष मास, अगहन का महीना, मृगशिरा नक्षत्र।
आग्रहायणी-(सं.स्त्री.) अगहन की पूर्णिमा।
आग्रही-(सं.वि.) आग्रह करनेवाला, हठी।
आघ-(हिं. पुं.) मूल्य, दाम।
आघर्ष-(सं. पुं.) मर्दन, मन्थन।
आघर्षणी-(सं. स्त्री.) वालों की कूँची।
आघर्षित-(सं.वि.) मार्जित, रगड़ा हुआ।
आघात-(सं. पुं) वध, ठोकर, धक्का, क्षत, प्रहार, चोट, मारपीट, आक्रमण, अभाग्य, वधस्थान।

आघातन-(सं.पुं.) आघात करने की क्रिया।
आघी-(हिं. स्त्री.) व्याज के वदले में दिया जानेवाला अन्न।
आघूर्ण, आघूर्णित-(सं. वि.) चलित, घूमता हुआ, भ्रान्त, चक्कर खाता हुआ।
आघ्राण-(सं. वि.) सूँघा हुआ; (पुं.) सूँघना, तृप्ति।
आघ्रात-(सं. वि.) सूँघा हुआ।
आघ्रेय-(सं. वि.) घ्राण करने (सूँघने) योग्य जो सूँघा जाय।
आचमन-(सं. पुं.) भोजन के वाद मुख धोना, पूजा के पूर्व दाहिने हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़कर पीना।
आचमनी-(हिं. स्त्री.) छोटे चम्मच के आकार का पात्र जिससे आचमन किया जाता है।
आचमनीय-(सं.वि.) आचमन करने योग्य।
आचय-(सं. पुं.) समूह, ढेर, संचय।
आचरज-(हिं. पुं.) आश्चर्य, अचरज।
आचरण-(सं. पुं.) आचार, चाल-चलन, व्यवहार, चिह्न, लक्षण, आचार के नियम।
आचरणीय-(सं. वि.) अनुष्ठेय, व्यवहार करने योग्य।
आचरन-(हिं. पुं.) देखें 'आचरण'।
आचरना-(हिं. क्रि. अ.) व्यवहार करना, आचरण करना।
आचरित-(सं. वि.) अनुष्ठित, व्यवहार किया हुआ।
आचार-(सं. पुं.) नैतिक आचरण, अनुष्ठान, नियम, चाल-चलन, पद्धति, चरित्र, सदाचार, शुद्धि।
आचार-तंत्र, आचारशास्त्र-(सं. पुं) नैतिक आचरण का ज्ञान, शास्त्र आदि।
आचारपतित-(सं. वि.) आचारभ्रष्ट, अनैतिक।
आचारभ्रष्ट-(सं.वि.) देखें 'आचारपतित'।
आचारवान्-(सं. वि.) शुद्ध आचरण का, पवित्रता से रहनेवाला।
आचार-विचार-(सं. पुं.) शुद्ध आचरण, पवित्रता।
आचारविरुद्ध-(सं.वि.) पद्धति के प्रतिकूल।
आचारहीन-(सं.वि.) देखें 'आचारभ्रष्ट'।
आचारी-(सं. वि.) आचारवान्; (पुं.) रामानुज सम्प्रदाय का वैष्णव।
आचार्य-(सं. पुं.) गायत्री मन्त्र का उपदेश देनेवाला, वेद पढ़ानेवाला, यज्ञादि के कर्म का उपदेशक, अध्यापक, गुरु, पुरोहित, वेद का भाष्यकार।
आचार्यता-(सं. स्त्री.) आचार्य या गुरु का पद या कर्म।

आचार्यत्व-(सं. पुं.) आचार्यता।
आचिंत्य-(हि.वि.)अचिन्त्य, सोचने योग्य।
आच्छद-(सं. पुं.) ढाँपने का वस्त्र।
आच्छन्न-(सं.वि.)ढँपा हुआ, छिपा हुआ।
आच्छादक-(सं. वि.) ढाँपनेवाला, छिपानेवाला; (पुं.) ढक्कन।
आच्छादन-(सं. पुं.) आवरण, ढपना, परदा, छिपाव, वस्त्र, कपड़ा, ओहार, लबादा, झूल।
आच्छादित-(सं. वि.) आवृत, ढँपा हुआ, गुप्त, आच्छन्न।
आच्छिन्न-(सं.वि.)छीना हुआ, कटा हुआ।
आच्छेद, आच्छेदन-(सं. पुं.) काट-छाँट, कटाई।
आच्छोटन-(सं. पुं.) चुटकी बजाना।
आछत-(हि. पुं.) देखें 'अक्षत'; (हि. अव्य.) रहते या होते हुए, सामने, अतिरिक्त, सिवाय।
आछना-(हि. क्रि. अ.) रहना, ठहरना, होना, विद्यमान होना।
आछी-(हि.वि.स्त्री.)अच्छी;(वि.)खानेवाला।
आछे-(हि. अव्य.) अच्छी तरह से।
आछेप-(हि. पुं.) देखें 'आक्षेप'।
आछो-(हि. वि.) देखें 'अच्छा'।
आज-(हि. अव्य.) अद्य, वर्तमान दिन में, इन दिनों, इस समय; (मुहा.) -कल-(हि.अव्य.) इन दिनों, सम्प्रति, इस समय, वर्तमान काल में; -कल करना या बताना-टालमटोल करना, हीला-हवाली करना; -कल का-आधुनिक, इस समय का; -कल में-बहुत जल्दी, दो-एक दिन में; -कल लगना-मौत करीब होना; -तक-इस समय या घड़ी तक।
आज-काल-(हि.अव्य.) देखें 'आजकल'।
आजगव-(सं. पुं.) शिव का धनुष।
आजन्म-(सं. अव्य.) जन्म से।
आजमाइश-(फा. स्त्री.) जाँच, परीक्षा।
आजमाइशी-(फा. वि.)आजमाइश का।
आजमाना-(हि.क्रि.स.)आजमाइश करना।
आजाद-(फा. वि.) स्वतंत्र, स्वाधीन।
आजादी-(फा.स्त्री.)स्वतंत्रता,स्वाधीनता।
आजा-(हि. पुं.) पितामह, पिता का पिता, दादा।
आजानु-(सं. अव्य.)जाँघ या घुटने तक; -बाहु-(वि.)घुटने तक लंबे हाथवाला।
आजि-(हि. पुं.) युद्ध, लड़ाई।
आजीव-(सं. पुं.) जीवन का उपाय, रोजी, व्यवसाय।
आजीवन-(सं. पुं.) वृत्ति का उपाय; (अव्य.) जीवन पर्यन्त।
आजीविका-(सं.स्त्री.)जीवन का उपाय।
आजु-(हि. अव्य.) देखें 'आज'।
आज्ञप्त-(सं.वि.)आदिष्ट, आज्ञा दिया हुआ
आज्ञप्ति-(सं. स्त्री.)आदेश, आज्ञा।
आज्ञा-(सं. स्त्री.) आदेश, अनुमति।
आज्ञाकारिता-(सं. स्त्री.)आज्ञा का पालन।
आज्ञाकारी-(सं.वि.) आज्ञा माननेवाला, आज्ञापालक सेवक।
आज्ञाचक्र-(सं. पुं.) तन्त्रानुसार सुषुम्ना नाड़ी के मध्यगत पद्माकार चक्र।
आज्ञानुगामी-(सं. वि.) आज्ञानुसारी।
आज्ञानुसारी-(सं. वि.)आज्ञा के अनुसार चलनेवाला।
आज्ञापक, आज्ञाता-(सं. वि.)आज्ञा देनेवाला, हुक्म देनेवाला; (पुं.)स्वामी, प्रभु।
आज्ञापत्र-(सं. पुं.) आदेशपत्र।
आज्ञापन-(सं. पुं.) आदेश, इत्तला।
आज्ञापालक-(सं. वि.)आज्ञा पालन करनेवाला, आज्ञाकारी; (पुं.)दास।
आज्ञापित-(सं. वि.)आदेश दिया हुआ।
आज्ञाभंग-(सं. पुं.) आज्ञा न मानना।
आज्ञावह-(सं. वि.) आज्ञानुसार काम करनेवाला।
आज्य-(सं. पुं.) घृत, घी, हवि; -पात्र-(पुं.)घी रखने का पात्र।
आटना-(हि. क्रि. सं.) मूँदना, छिपाना, तोपना।
आटविक-(सं. वि.)जंगल में रहनेवाला, लकड़हारा।
आटा-(हि. पुं.) अन्न का चूर्ण, पिसान, बुकनी; (मुहा.) -कर देना-चूर्ण करना; -गीला होना-गरीबी में खर्च अधिक सिर पर आ पड़ना; आटे के साथ घुन पीसना-बड़े के साथ छोटे का भी नुकसान होना; आटे-दाल का भाव मालूम होना-कठिनाई या विकटता का सही-सही ज्ञान होना; आटे-दाल की चिन्ता-आजीविका के विषय में चिन्ता।
आटी-(हि.स्त्री.)रोक, अटक, पच्चड़,टेक।
आटोप-(सं. पुं.) दर्प, घमंड, आडंबर, तड़क-भड़क, विस्तार, फैलाव, सूजन।
आठ-(हि. वि.) अष्ट, चार की दूनी संख्या, ८; (मुहा.) आठ आँसू रोना-अति विलाप करना; आठो गाँठ कुम्मैद-सब गुणों से युक्त; आठों पहर-दिन-रात।
आठक-(हि. वि.) आठ के बराबर।
आठवाँ-(हि. वि.) अष्टम।
आडंबर-(सं.पुं.)हर्ष, दर्प, गम्भीर शब्द, तुरही का शब्द, युद्ध की घोषणा ललकार, आरम्भ, युद्ध का शब्द, मेघ, हाथी की गर्जना, चिग्घाड़, आच्छादन, तम्बू, बरौनी, दिखावट, ठाट-बाट।
आडंबरी-(सं. वि.) अभिमानी, घमंडी, ठाटबाट रखनेवाला।
आड़-(हि. स्त्री.) परदा, रोक, रक्षा, अड़ान, थूनी, करछुल, ईंट या पत्थर का टुकड़ा, बिच्छू का डंक, स्त्रियों के मस्तक पर लगाने की लंबी टिकुली, स्त्रियों का एक आभूषण।
आड़गीर-(हि. पुं.) खेत के किनारे पर उगनेवाली घास।
आड़न-(हि. स्त्री.) ढाल।
आड़ना-(हि. क्रि. स.) रोकना, छेंकना, बाँधना, अटकाना।
आड़बंद-(हि. पुं.) जाँघिये पर बाँधने की पट्टी।
आड़ा-(हि. पुं.) धारीदार वस्त्र, मोटी लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा, लट्ठा; (वि.) तिरछा; (मुहा.)आड़े आना-प्रतिबन्ध करना, रुकावट डालना; आड़े हाथों लेना-व्यंग्य बोल कर लज्जित करना।
आडिटर-(अं. पुं.) कंपनियों आदि का हिसाब-किताब जाँचनेवाला।
आड़ी-(हि. स्त्री.) एक ताल विशेष, चमारों की छुच्छी, ओर; (वि.) सहायक, तिरछी।
आड़ू-(हि. पुं.) एक प्रकार का खट मिट्ठा फल, सतालू।
आढ़-(हि. पुं.) आढक, चार सेर की तौल; (स्त्री.) आड़, परदा, आश्रय, अन्तर, बीच; (वि.) भरा हुआ।
आढ़क-(हि. पुं.) चार सेर की तौल, आढ़, अरहर।
आढ़की-(सं. स्त्री.) अरहर की दाल, सुगन्धित मिट्टी।
आढ़त-(हि. स्त्री.) किसी व्यापारी का माल बिक्री कराने का व्यापार, जो धन किसी के माल की बिक्री करा देने पर मिलता है।
आढ़तदार, आढ़तिया-(हि. पुं.) देखें 'अढ़तिया'।
आढ़ती-(हि. वि.) आढ़त-सम्बन्धी।
आढ्य-(सं. वि.) युक्त, विशिष्ट, धनी, सम्पन्न, भरा-पूरा।
आढ्यता-(सं. स्त्री.) विभव, ऐश्वर्य।
आणक-(सं. पुं.) एक रुपये का सोलहवाँ अंश, आना।
आतंक-(सं. पुं.) रोग, सन्ताप, कष्ट

सन्देह, भय, ज्वर, निक्षेप, वेग, उपद्रव।
आत–(हिं. पुं.) शरीफे का फल।
आततायिता–(सं. स्त्री.) वध, चोरी।
आततायी–(सं. वि., पुं.) जान मारने को उद्यत, घर में आग लगानेवाला, विष देनेवाला, चोरी करनेवाला, स्त्री-हरण करनेवाला।
आतप–(सं. पुं.) धूप, घाम, उष्णता, गरमी।
आतपत्र–(सं.पुं.) धूप से बचाने का छाता।
आतप-शुष्क–(सं.वि.) धूप में सुखाया हुआ।
आतपी–(सं.वि.) सूर्य या घाम संबंधी।
आतम–(हिं. वि.) देखें 'आत्म'।
आतमा–(हिं. पुं.) देखें 'आत्मा'।
आतापि–(सं. पुं.) एक असुर।
आतापी–(सं. पुं.) देखें 'आतापि'।
आतिथय–(सं. पुं.) अतिथि की सेवा, जिसके यहाँ अतिथि आवे।
आतिथ्य–(सं. पुं.) अतिथि की परिचर्या, पहुनाई; **–सत्कार**–(पुं.) अतिथि की खातिरदारी।
आतिशय्य–(सं. पुं.) आधिक्य, प्राधान्य, वहुलायत।
आतीपाती–(हिं. स्त्री.) लड़कों का एक खेल।
आतुर–(सं. वि.) आहत, पीड़ित, व्यग्र, व्याकुल, रोगी, अधीर, दुःखी, उत्सुक।
आतुरता–(सं. स्त्री.) पीड़ा, रोग, व्यग्रता, व्याकुलता, शीघ्रता, जल्दी।
आतुरताई–(हिं. स्त्री.) आतुरता।
आतुर-संन्यास–(सं. पुं.) वह संन्यास जो मरने के कुछ दिन पहले लिया जाता है।
आतुराना–(हिं. क्रि.अ.) उत्सुक होना।
आतुरी–(हिं. स्त्री.) आतुरता, व्यग्रता, घबड़ाहट, उतावलापन।
आतुर्य–(सं.पुं.)आतुरता,व्यग्रता,घबड़ाहट।
आत्त–(सं. वि.) गृहीत, स्वीकृत।
आत्त-लक्ष्मी–(सं. वि.) जिसने धन गँवा दिया हो।
आत्म–(सं.वि.) अपना, निजी, स्वकीय।
आत्मक–(सं. वि.) प्रकृति से सम्बन्ध रखनेवाला, (समस्त पदों में); यथा–विषयात्मक, पंचात्मक इ०।
आत्म-कथा–(सं.स्त्री.)स्वलिखित जीवनी।
आत्म-कल्याण–(सं.पुं.)अपना ही भला।
आत्म-कार्य–(सं. पुं.) निजी काम।
आत्म-कृत–(सं. वि.) स्वयं अपने हाथ से किया हुआ।
आत्मगत–(सं. वि., अव्य.) स्वगत, आप ही आप।
आत्मगुप्त–(सं. वि.) अपनी शक्ति द्वारा रक्षित।
आत्मगौरव–(सं. पुं.) स्वकीय प्रभाव, अपने मान का विशेष ध्यान।
आत्म-ग्राही–(सं. वि.) स्वार्थी, लालची।
आत्मघात–(सं. पुं.) आत्महत्या, स्वयं विष खाकर या फाँसी लगाकर प्राणत्याग करना।
आत्मघातक, आत्म-घाती–(सं. वि.) अपने हाथों से अपने को मार डालनेवाला, आत्महत्या करनेवाला।
आत्म-चरित,–चरित्र–(सं.पुं.) देखें 'आत्म-कथा'।
आत्मज–(सं. पुं.) पुत्र, बेटा, कामदेव।
आत्मजा–(सं. स्त्री.) कन्या, बेटी, पुत्री।
आत्मजात–(सं. वि.) देखें 'आत्मज'।
आत्मज्ञ–(सं. पुं.) ब्रह्मज्ञ, सिद्ध, अपने स्वरूप को भली भाँति जाननेवाला।
आत्मज्ञान–(सं. पुं.) आत्मा का यथार्थ रूप में ज्ञान, सच्चा ज्ञान।
आत्मज्ञानी–(सं. पुं.) देखें 'आत्मज्ञ'।
आत्मतत्व–(सं. पुं.) आत्मा का यथार्थ स्वरूप, वेदांत।
आत्मतत्वज्ञ–(सं. पुं.) वेदान्ती।
आत्म-तुष्टि–(सं. वि.) आत्मज्ञान द्वारा तुष्टि पानेवाला; (स्त्री.) आत्मा का सन्तोष, आत्मिक संतुष्टि।
आत्म-त्याग–(सं.पुं.) स्वार्थत्याग, दूसरे की भलाई के लिये अपना स्वार्थ छोड़ देना।
आत्म-त्यागी–(सं.वि.) स्वार्थत्यागी, दूसरे के लिये अपना स्वार्थ त्यागनेवाला।
आत्म-दर्शन–(सं. पुं.) देखें 'आत्म-ज्ञान'।
आत्म-दान–(सं. पुं.) आत्मा का दान, आत्म-त्याग।
आत्मद्रोही–(सं. वि.) वक्र प्रकृति का, चिड़चिड़ा, अपनी बुराई करनेवाला।
आत्मनिंदा–(सं.स्त्री.) स्वकीय तिरस्कार।
आत्मनिवेदन–(सं. पुं.) आत्मसमर्पण, अपना सर्वस्व देवता को अर्पण कर देना।
आत्म-निष्ठ–(सं. वि.) ब्रह्मनिष्ठ, मोक्ष चाहनेवाला।
आत्म-निरीक्षण–(सं. वि.) अपनी सत्ता, भावना, वृत्ति आदि जानना।
आत्म-परित्याग–(सं. वि.) देखें 'आत्म-निवेदन', आत्म-दान।
आत्म-प्रबोध–(सं. पुं.) आत्मा का ज्ञान।
आत्म-प्रभव–(सं. पुं.) तनुज, पुत्र, बेटा, कामदेव।
आत्म-प्रशंसा–(सं. स्त्री.) अपनी प्रशंसा स्वयं करना।
आत्म-बंधु–(सं.पुं.) ममेरा, मौसेरा तथा फुफेरा भाई।
आत्म-बुद्धि–(सं. स्त्री.) स्वीय ज्ञान, आत्मा के विषय में ज्ञान।
आत्म-बोध–(सं.पुं.) स्वीय ज्ञान, आत्म-प्रबोध।
आत्मभव–(सं. वि.) स्वयं उत्पन्न, अपने आप निकला हुआ।
आत्मभू–(सं.पुं.) अपने शरीर या आत्मा से उत्पन्न, आप से आप उत्पन्न; (पुं.) पुत्र, बेटा, कामदेव, ब्रह्मा, शिव, विष्णु।
आत्मयोनि–(सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव।
आत्मरक्षक–(सं. वि.) अपनी रक्षा करनेवाला।
आत्मरक्षण–(सं. पुं.) अपनी रक्षा।
आत्मरक्षा–(सं. स्त्री.) अपनी रक्षा या बचाव।
आत्मरत–(सं.वि.) आत्मा से प्रेम रखनेवाला।
आत्म-रति–(सं. स्त्री.) आत्मा का आनन्द, ब्रह्मज्ञान।
आत्म-वंचक–(सं. वि.) अपने ही को धोखा देनेवाला, कृपण।
आत्म-वंचना–(सं. स्त्री.) अपने आपको धोखा देना।
आत्मवत्–(सं. अव्य.) अपनी तरह।
आत्मवध–(सं. पुं.) देखें 'आत्मघात'।
आत्मवश–(सं.वि.) स्वाधीन, जितेन्द्रिय।
आत्मवाद–(सं. पुं.) आध्यात्मिकता।
आत्म-विक्रय–(सं. पुं.) स्वदेह-विक्रय, किसी के हाथ अपने शरीर को बेच देना।
आत्मविक्रयी, आत्मविक्रेता–(सं.पुं.) अपने आपको बेचकर दास बननेवाला।
आत्म-विज्ञान–(सं. पुं.) योगाभ्यास द्वारा परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान।
आत्म-विद्या–(सं. स्त्री.) ब्रह्म-विद्या, योगशास्त्र, वह विद्या जिसके द्वारा आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो।
आत्म-विस्मृति–(सं.स्त्री.) अपने आप को भूल जाना, अपना ध्यान न रखना।
आत्म-वृत्तांत–(सं.पुं.) निजी उपाख्यान, स्वीय (अपनी) कथा।
आत्म-वृत्ति–(सं. स्त्री.) अपने जीवन का उपाय।
आत्मशुद्धि–(सं.स्त्री.) देहशुद्धि, चित्तशुद्धि।
आत्म-श्लाघा–(सं. स्त्री.) अपने गुण का प्रकाशन, स्वकीय प्रशंसा, अपने मुँह से अपना गुण वर्णन करना।
आत्मश्लाघी–(सं. वि.) अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करनेवाला।

आत्मसंभव–(सं. पुं) हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, परमात्मा।
आत्म-संभवा–(सं.स्त्री) आत्म-समुद्भवा।
आत्म-संयम–(सं. पुं.) अपनी चित्तवृत्ति को वश में करना।
आत्मसमुद्भव–(सं.पुं.) पुत्र, वेटा, कामदेव, विष्णु, ब्रह्मा।
आत्मसमुद्भवा–(सं. स्त्री.) आदिशक्ति, कन्या, पुत्री, बुद्धि।
आत्मसात्–(सं. अव्य.) सब प्रकार से अपने अधीन।
आत्मसिद्ध–(सं.वि.) अपने आप बना हुआ।
आत्मसिद्धि–(सं.स्त्री.) मोक्ष, निर्वाण।
आत्म-स्तुति–(सं.स्त्री.) स्वकीय प्रशंसा, आत्मश्लाघा।
आत्म-हत्या–(सं.स्त्री.) आत्मघात, स्ववध।
आत्म-हिंसा–(सं. स्त्री.) आत्महत्या।
आत्म-हित–(सं. वि.) अपने को लाभ देनेवाला; (पुं.) अपना हित।
आत्मा (सं. पुं.) जीवात्मा, चित्त, चैतन्य, मन, स्वभाव, बुद्धि, ब्रह्म, हृदय, अंतः-करण, धृति, सूर्य, अग्नि, वायु, जीव, धर्म, पुत्र, वेटा।
आत्मादिष्ट–(सं. वि.) अपने आप उपदेश पाया हुआ।
आत्माधीन–(सं. वि.) स्वाधीन, स्वतंत्र।
आत्मानंद–(सं. पुं.) आत्मा का आनन्द, आत्मा में लीन होने का आनन्द।
आत्मानुरूप–(सं. वि.) अपने तुल्य।
आत्माभिमान–(सं. पुं.) स्वकीय अहंकार, अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान।
आत्मार्पण–(सं. पुं.) आत्मा का उत्सर्ग या बलिदान करना।
आत्माभिमानी–(सं. वि.) अपने अभिमान का ध्यान रखनेवाला।
आत्माराम–(सं. पुं.) वह योगी जो सम्पूर्ण विश्व को आत्मरूप समझता है, ब्रह्म, तोते के लिये प्रयुक्त प्रेम का नाम।
आत्मावलंबी–(सं. वि.) अपने सहारे सब काम करनेवाला।
आत्मिक–(सं. वि.) आत्मा से सम्बन्ध रखनेवाला, स्वकीय, अपना, मानसिक।
आत्मीय–(सं. वि.) आत्मा-सम्बन्धी, निजी, अपना, स्वकीय, दैवी; (पुं.) सम्बन्धी, रिश्तेदार।
आत्मीयता–(सं. स्त्री.) आत्म-संबंध, निजता, अपना खास रिश्ता।
आत्मोत्कर्ष–(सं. पुं.) आत्मोन्नति।
आत्मोत्सर्ग–(सं. पुं.) स्वार्थ का परित्याग, दूसरे के हित के लिये अपना स्वार्थ त्याग देना।
आत्मोद्धार–(सं. पुं.) आत्मा का उद्धार, मुक्ति, सांसारिक विषयों का त्याग तथा पारमार्थिक पदार्थों का ग्रहण।
आत्मोद्भव–(सं. पुं.) पुत्र, वेटा, कामदेव।
आत्मोद्भवा–(सं. स्त्री.) कन्या, वेटी, बुद्धि।
आत्मोन्नति–(सं. स्त्री.) स्वकीय उन्नति।
आत्मोपम–(सं. वि.) अपने सदृश।
आत्म्य–(सं. वि.) आत्मा सम्बन्धी।
आत्यंतिक–(सं. वि.) अतिशय, बहुत ज्यादा, प्रधान।
आत्रय–(सं. पुं.) अत्रि के पुत्र, आत्रेयी नदी के तटपर बसा हुआ देश, शिव, शरीर के रस, धातु; (वि.) अत्रि सम्बन्धी, अत्रि गोत्र का।
आत्रेयी–(सं. स्त्री.) अत्रिवंश की स्त्री।
आथना–(हिं. क्रि. अ.) होना, रहना।
आथर्वण–(सं. पुं.) अथर्व-वेद जाननेवाला ब्राह्मण, पुरोहित, अथर्ववेदी धर्म।
आथी–(हिं. स्त्री.) पूंजी।
आदंश–(सं. पुं.) दाँत, डंक, दंशन।
आदत–(अ. स्त्री.) अभ्यास, स्वभाव, भली या बुरी लत, व्यसन।
आदत्त–(सं. वि.) गृहीत, पकड़ा हुआ, स्वीकृत।
आदर–(सं. पुं.) सम्मान, प्रतिष्ठा, मर्यादा, अनुराग, प्रेम, आसक्ति।
आदरणीय–(सं. वि.) सम्मान करने योग्य, ध्यान देने योग्य।
आदरना–(हिं.क्रि.स.) सम्मान करना, मानना, इज्जत करना।
आदर-भाव–(सं. पुं.) आदर-सत्कार, सम्मान।
आदर्य–(सं. वि.) देखें 'आदरणीय'।
आदर्श–(सं. पुं.) दर्पण, शीशा, प्रतिलिपि, टीका, मानक चित्र, अनुकरण करने योग्य पदार्थ।
आदर्शन–(सं. पुं.) दिखलाना, प्रदर्शित करना, आईना।
आदर्शित–(सं. वि.) दिखलाया हुआ।
आदहन–(सं. पुं.) दाह, हिंसा, मार-काट।
आदाता–(सं. पुं.) लेने या पानेवाला।
आदान–(सं. पुं.) ग्रहण, पकड़।
आदान-प्रदान–(सं. पुं.) लेन-देन।
आदापन–(सं. पुं.) निमन्त्रण, न्योता।
आदाय–(सं. पुं.) लेना, पाना।
आदि–(सं. पुं.) आरम्भ, प्रथम, पहिला, प्रकार, अवयव, मूल कारण; (वि.) पहिले का, आरंभ का; (अव्य.) आदिक।
आदिक–(सं. अव्य.) आदि, इत्यादि।
आदिकर्त्ता–(सं.पुं.) आदिकारक, परमेश्वर।
आदिकवि–(सं. पुं.) सबसे पहला महान् कवि, वाल्मीकि।
आदिकारण–(सं. पुं.) मूल कारण, सब कारणों का मूल, परमेश्वर, प्रकृति।
आदिकाल–(सं. पुं.) प्राचीन समय।
आदिकेशव–(सं. पुं.) विष्णु भगवान्।
आदिता–(सं. स्त्री.) पूर्वता, प्रथमता।
आदितेय–(सं. पुं.) अदिति की सन्तान, देवता, सूर्य।
आदित्य–(सं. पुं.) अदिति की सन्तान, देवता, सूर्य, इन्द्र, वामन, वसु, विश्वदेवा, मदार का पौधा, वारह मात्राओं का छन्द; (वारह आदित्यों के नाम-विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, रुद्र और उरुक्रम हैं।)
आदित्य-मंडल–(सं. पुं.) सूर्य का वृत्त।
आदित्य-पुराण–(सं.पुं.) एक पुराण का नाम।
आदित्यवार–(सं. पुं.) रविवार, एतवार।
आदिदेव–(सं. पुं.) नारायण, शिव, सूर्य।
आदिपुरुष–(सं. पुं.) हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा, नारायण।
आदिभव–(सं.पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, परमेश्वर।
आदिभूत–(सं. पुं.) देखें 'आदिभव'।
आदिम–(सं. वि.) आदि काल में उत्पन्न, पहिला, अगला।
आदिमा–(सं. स्त्री.) भूमि, पृथ्वी।
आदिरस–(सं. पुं.) शृंगाररस।
आदिवंश–(सं. पुं.) प्रथम कुल।
आदिविपुला–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का आर्या छन्द।
आदिशक्ति–(सं. स्त्री.) परमेश्वर की मायारूप शक्ति, देवी-मूर्त्ति।
आदिष्ट–(सं. वि.) आज्ञा दिया हुआ, उपदेश किया हुआ।
आदी–(हिं. स्त्री.) अदरख; (अ. वि.) जिसे आदत पड़ी हो, अभ्यस्त।
आदीपक–(सं. वि.) उद्दीपक, प्रकाशक।
आदीपित–(सं. वि.) उद्दीपित, प्रकाशित।
आदीप्त–(सं. वि.) जलाया हुआ।
आदृत–(सं. वि.) सम्मानित, पूजित, आदर किया हुआ।
आदेय–(सं. वि.) ग्राह्य, लेने योग्य।
आदेश–(सं. पुं.) उपदेश, आज्ञा, प्रमाण, आरोप, समाचार, भविष्यवाणी।
आदेशक–(सं. वि.) आदेश देनेवाला।
आद्यंत–(सं. अव्य.) आदि से अन्त तक।
आद्य–(सं. वि.) आदि में उत्पन्न, प्रधान, बड़ा, पूर्वगामी; (पुं.) आरंभ।

आद्यबीज–(सं.पुं.) मूल कारण, ईश्वर।
आद्या–(सं. स्त्री.) तन्त्रोक्त दुर्गा देवी, (यह सत्ययुग में सुन्दरी, त्रेता में भुवनेश्वरी, द्वापर में तारिणी और कलियुग में काली कहलाती हैं।)
आद्योत–(सं.पुं.) प्रकाश, उजाला, रोशनी।
आद्योपांत–(सं. पुं.) आदि से शेष तक।
आद्रा–(हिं. स्त्री.) देखें 'आर्द्रा'।
आध–(हिं. वि.) दो बराबर भागों में एक, आधा, (बाटवाले कुछ शब्दों के आदि में प्रयुक्त होता है;) यथा–आध सेर, आध मन।
आधर्षित–(सं.वि.) अपमानित, तिरस्कृत।
आधा–(हिं. वि.) अर्ध, दो बराबर भागों से एक; (मुहा.) आधे-आध–दो बराबर भाग किया हुआ; –तीतर –बटेर–बेजोड़, बेमेल; –साझा–(हिं. पुं.) बराबर भाग या हिस्सा; –होना–क्षीण होना, दुर्बल होना; आधी बात कहना–किसी के अनादर की थोड़ी-सी बात कहना।
आधाता–(सं. वि., पुं.) आधान करनेवाला, बंधक रखनेवाला।
आधान–(सं. पुं.) ग्रहण, पकड़, प्राप्ति, समाई, गर्भ, बंधक, प्रतिभू, आधार-पात्र, वृत्त, घेरा।
आधायक–(सं. वि.) देखें 'आधाता'।
आधार–(सं. पुं.) सहारा, आश्रय, अवलम्ब, थाला, पात्र, नहर, सम्बन्ध, व्याकरण में अधिकरण कारक, पानी का बाँध, नींव, मूल; (वि.) आश्रय देनेवाला, अपने ऊपर धारण करनेवाला।
आधारशक्ति–(सं. स्त्री.) शक्ति का रूप, माया, प्रकृति।
आधार-स्तंभ–(सं. पुं.) मुख्य आधार या सहारा।
आधारी–(सं.वि.) आधार संबंधी, सहारा लेनेवाला; (हि.स्त्री.) सहारा लेने की लकड़ी जिसको साधु लोग टेकने के काम में लाते हैं।
आधासीसी–(हि.स्त्री.) अर्धकपाली, आधे मस्तक में पीड़ा।
आधि–(सं. स्त्री.) मानसिक व्यथा, चिन्ता, दुर्भाग्य, आशा, बन्धक, लक्षण, निर्देश, अधिष्ठान।
आधिक–(हि. वि.) प्रायः आधा।
आधिकरणिक–(सं. पुं., वि.) न्यायाधीश, न्यायालय संबंधी।
आधिकारिक–(सं. वि.) प्रधान, श्रेष्ठ, अधिकार या पद सम्बन्धी।
आधिक्य–(सं. पुं.) अधिकता, बहुतायत।
आधिदैविक–(सं. वि.) देवताधिकृत, देवता द्वारा होनेवाला।
आधिपत्य–(सं. पुं.) स्वामित्व, प्रभुत्व, सरदारी।
आधिभोग–(सं. पुं.) बंधक की वस्तु को काम में लाना।
आधिभौतिक–(सं. वि.) व्याघ्र, सर्पादि द्वारा प्राप्त, भूमि से उत्पन्न, जीवन-संबंधी।
आधिराज्य–(सं.पुं.) साम्राज्य, आधिपत्य, स्वामित्व।
आधी–(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'आधा'।
आधीकृत–(सं. वि.) बन्धक रखा हुआ।
आधीन–(हिं. वि.) देखें 'अधीन'।
आधीनता–(हिं. स्त्री.) देखें 'अधीनता'।
आधीरात–(हिं. स्त्री.) अर्धरात्रि, रात के बारह बजने का समय।
आधुनिक–(सं. वि.) अर्वाचीन, नया, वर्तमान समय का, हाल का।
आधूलित–(सं. वि.) धुएँ से आवृत।
आधृष्ट–(सं. वि.) निवारित, रोका हुआ।
आधेक–(हिं. वि.) आधे के बराबर, आधे से अधिक नहीं।
आधेय–(सं. वि.) दिया जानेवाला, रखा हुआ, बताया हुआ, बन्धक में रखा जानेवाला।
आध्मात–(सं. वि.) बजाया हुआ, जलाया हुआ।
आध्या–(सं. स्त्री.) चिन्ता।
आध्यात्मिक–(सं. वि.) आत्मा-संबंधी, परमात्मा-संबंधी।
आध्वरिक–(सं. वि.) सोमयज्ञ संबंधी।
आनंद–(सं. पुं.) हर्ष, सुख, प्रसन्नता, विष्णु, शिव, बलराम, मद्य।
आनंदक–(सं.वि.,पुं.) आनन्द देनेवाला।
आनंदकर–(सं. वि.) देखें 'आनंदक'।
आनंदज–(सं.वि.) आनन्द देनेवाला।
आनंदना–(हि. क्रि. अ.) प्रसन्न होना।
आनंदपट–(सं. पुं.) दुलहिन का पहिनने का वस्त्र।
आनंद-बधाई–(हिं. स्त्री.) मंगल-उत्सव, आनन्द का बाजा।
आनंदयिता–(सं. पुं.) आनंदक, आनन्द देनेवाला मनुष्य।
आनंदवन–(सं. पुं.) काशी क्षेत्र, बनारस।
आनंदव्रत–(सं. पुं.) चैत्रादि चार महीने का एक व्रत।
आनंदसम्मोहिता–(सं. स्त्री.) आनन्द में भली भाँति मोहित होनेवाली नायिका।
आनंदा–(सं. स्त्री.) विजया, भाँग।
आनंदित–(सं.वि.) हर्षयुक्त, प्रसन्न, सुखी।
आनंदी–(सं. वि.) प्रसन्न रहनेवाला।
आनंदमत्ता–(सं. स्त्री.) देख 'आनंद-सम्मोहिता'।
आनंदमय–(सं. वि.) आनंदपूर्ण।
आन–(सं. पुं.) प्राणवायु का नाक द्वारा बाहर निकलना, मुख, श्वास; (हिं. स्त्री.) सीमा, हद, शपथ, क्षण, बनावट, भय, लज्जा, प्रतिज्ञा, विचार, हठ, ढंग; (वि.) अन्य दूसरा; (मुहा.) –की–में–बात की बात में; –तोड़ना–प्रतिज्ञा-भंग करना; –रखना–अपनी बात रखना।
आनक–(सं. पुं.) नगाड़ा, भेरी, मृदंग, गरजनेवाला बादल।
आनक दुंदुभि–(सं. पुं.) बड़ा नगाड़ा, वासुदेव का नाम।
आनत–(सं. वि.) अधोमुख, विनय से मुख नीचा किये हुए।
आनतान–(हि.स्त्री.) ऊटपटांग या अंड-बंड बात, हठ।
आनति–(सं. स्त्री.) झुकाव, झुकना।
आनद्ध–(सं. वि.) बद्ध, बँधा हुआ, गुथा हुआ; (पुं.) चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा।
आनन–(सं. पुं.) मुँह, मुख, मस्तक, चेहरा, मुखड़ा।
आनना–(हि.क्रि.स.) लाना, लिवा लाना।
आनबान–(हि. स्त्री.) चमक-दमक, सज-धज, ठाट-बाट।
आनमन–(सं. पुं.) विनय, झुकाव।
आनमित–(सं. वि.) झुका हुआ, व्याकुल किया हुआ।
आनरेरी–(अं. वि.) अवैतनिक।
आनयन–(सं.पुं.) लाना, उपनयन संस्कार।
आनर्त–(सं. पुं.) नृत्यशाला, नाच-घर, युद्ध, काठियावाड़ का प्राचीन नाम, इस देश का निवासी।
आनर्तक–(सं. वि.) नचैया, नाचनेवाला।
आना–(हि. पुं.) एक रुपये का सोलहवाँ भाग, किसी वस्तु का सोलहवाँ भाग; (हि. क्रि. अ.) आगमन करना, होना, बीतना, लौटना, आरंभ होना, लगना, उत्पन्न होना, निकलना, पकना, टीला होना, समाना, चढ़ना, देख पड़ना, पहुँचना, बिकना, मिलना, तैयार होना, हाथ लगना, फल-फूल लगना, फलना; (मुहा.) आता-जाता–आने-जानेवाला, बटोही; आना-जाना–मिलना-जुलना, भेंट-मुलाकात; आया-गया–अतिथि, पाहुन; कुछ न आना–ज्ञानरहित होना;

आ धमकना या पड़ना–अचानक आ जाना; आनिकलना–अचानक पहुँचना; आ बनना–अवसर हाथ लगना।
आनाकानी–(हि. स्त्री.) अनाकनी, अनसुनी करना, गुप्त वार्ता, कानाफूसी।
आनाय–(सं.पुं.) मछली पकड़ने का जाल।
आनायी–(सं. पुं.) धीवर, मछुवा।
आनाह–(सं. पुं.) दैर्घ्य, लंबाई, मल-मूत्र रुकने का रोग।
आनि–(हि. स्त्री.) देखें 'आन'।
आनीत–(सं. वि.) गृहीत, लाया हुआ।
आनुगत्य–(हि. पुं.) अनुसरण।
आनुपूर्व–(सं.पुं.) एक के बाद एक होना।
आनुपूर्वी–(सं.वि.) क्रमानुसार, यथास्थित।
आनुमानिक–(सं. वि.) अनुमान संबंधी।
आनुरूप्य–(सं.पुं.) सादृश्य, बराबरी।
आनुलोमिक–(सं.वि.) अपने से छोटी जाति से विवाह करनेवाला।
आनुशासनिक–(सं. वि.) शासन-संबंधी।
आनुश्रविक–(सं. वि.) वेद-विहित, बड़ों के मुख से सुना जानेवाला।
आनुषंगिक–(सं. वि.) अनुरूप, बराबर का, अप्रधान, संघटित, लागू, प्रासंगिक।
आनूप–(सं. वि.) अनूप देश में उत्पन्न, अनूप देशवासी।
आनूप-भूमि–(सं. पुं.) सजल भूमि।
आने–(हि. वि. बहु.) दूसरे, भिन्न।
आनेता–(सं. पुं.) लानेवाला।
आन्वहिक–(सं.वि.) दैनिक, प्रतिदिन का।
आन्वीक्षकी–(सं. स्त्री.) आत्मविद्या, तर्कविद्या।
आप–(सं.पुं.) आठों वसुओं में से चौथा, जल का समूह, आकाश, समास के अन्त में इस शब्द का अर्थ 'पानेवाला' होता है, यथा–दुराप; (हि. सर्व.) स्वयं, (तीनों पुरुषों में प्रयुक्त होता है); (मुहा.)–आप करना–आदर दिखलाना; –आप की पड़ना–अपने ही स्वार्थ में लगे रहना; –आप को–अलग-अलग, पृथक्-पृथक्; –काज–(पुं.) अपना कार्य; –काजी–(वि.) अपना मतलब साधनेवाला; –बीती–(वि.) अपने ऊपर गुजरा हुआ; –रूप–(वि.) स्वयं, साक्षात्; –से या आप ही आप–स्वयं, बिना प्रेरणा के; –स्वार्थी–(वि.) खुदगर्ज, मतलबी।
आपक्व–(सं. वि.) कुछ पका हुआ।
आपगा–(सं. स्त्री.) नदी।
आपटव–(सं. पुं.) भद्दापन।
आपण–(सं. पुं.) हाट, बेचने का स्थान।
आपणिक–(सं. वि.) वाणिज्य संबंधी।
आपत्–(सं. स्त्री.) देखें 'आपद'।
आपतन–(सं.पुं.) अवतरण, उतार, प्राप्ति।
आपत्कल्प–(सं. पुं.) आपत्ति-काल में किया जानेवाला कार्य।
आपत्काल–(सं. पुं.) विपत्ति का समय, क्लेश, दुष्काल।
आपत्कालिक–(सं. वि.) विपत्ति के समय होनेवाला।
आपत्ति–(सं.स्त्री.) क्लेश, विपत्ति, संकट या कष्ट का काल, प्राप्ति, जीविका का कष्ट, रोगग्रस्त अवस्था।
आपत्य–(सं. वि.) सन्तान संबंधी।
आपद–(सं. स्त्री.) विपत्ति, दुःख, कष्ट, दुर्घटना।
आपदा–(हि. स्त्री.) दुःख, विपत्ति, क्लेश, कष्ट का समय।
आपद्ग्रस्त–(सं. वि.) विपत्ति से पीड़ित, हतभाग्य।
आपद्धर्म–(सं. पुं.) विपत्ति के समय विधान करने का धर्म।
आपन–(हि. सर्व.) अपना, निजी।
आपनिधि–(हि. पुं.) समुद्र, जलनिधि।
आपनय–(हि.वि.) प्राप्त किये जाने योग्य।
आपनो–(हि. सर्व.) देखें 'अपना'; (पुं.) अहंकार, आत्मभाव।
आपन्न–(सं. वि.) दुःखी, संकट में पड़ा हुआ, प्राप्त, पाया हुआ।
आपराह्णिक–(सं.वि.) तीसरे पहर होनेवाला।
आपवर्ग्य–(सं. वि.) मोक्ष देनेवाला।
आपस–(हि. स्त्री.) आत्मीयता, मेल-जोल; (मुहा.)–का–एक दूसरे का, परस्पर का; –में–एक दूसरे के साथ; –दारी–(स्त्री.) भाईचारा; –वाले–स्वजन, संबंधी, मेली।
आपसी–(हि.वि.) आत्मीय, संबंधी, मेली।
आपस्तंब–(सं. पुं.) कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि।
आपा–(हि. पुं.) स्वीयभाव, अपनी सत्ता, अपना अस्तित्व, दर्प, घमंड, (महाराष्ट्र देश के लोग बड़े भाई को आपा पुकारते हैं); –(मुहा.)–खोना–विनीत भाव ग्रहण करना; आपे में आना–सचेत होना; आपे में न रहना–अधिकार के बाहर होना; अति क्रोध दिखलाना; उत्तेजना या आवेश में विवेक खो देना।
आपात–(सं.पुं.) पड़ना, धावा, पहुँच, वर्तमान काल, उपक्रम, समीप आगमन, घटना, धक्का।
आपाततः–(सं. अव्य.) पहिली बार, तुरत, हठात्।
आपातलतिका–(सं.स्त्री.) एक वृत्त विशेष।
आपाती–(सं. वि.) अधोगामी, उतारू।
आपाद–(सं. अव्य.) पैर तक।
आपादमस्तक–(सं. वि., अव्य.) सिर से पैर तक।
आपाधापी–(हि. स्त्री.) अपने-अपने कार्य की चिन्ता, खींचातानी, लड़ाई-झगड़ा।
आपान–(सं. पुं.) मद्य पीने का स्थान या दुकान।
आपापंथी–(हि. वि.) अपनी ही राह चलनेवाला, मनमानी करनेवाला।
आपायत–(हि. वि.) आप्यायित, सन्तुष्ट।
आपालि–(सं. पुं.) केशकीट, जूँ।
आपी–(सं. स्त्री.) पूर्वाषाढा नक्षत्र; (हि. सर्व.) आप ही आप, स्वयं।
आपीड़–(सं. वि.) पीड़ा देनेवाला; (पुं.) शिर का आभूषण, हार।
आपीड़न–(सं. पुं.) संकोचन, दबाव।
आपीड़ित–(सं. वि.) कष्ट दिया हुआ, दबाया हुआ।
आपु–(हि. सर्व.) देखें 'आप'।
आपुन–(हि. सर्व.) अपना, निजी।
आपुस–(हि. पुं.) देखें 'आपस'।
आपूप–(सं. पुं.) टिकिया, रोटी, माल-पूआ।
आपूर–(सं. वि.) व्याप्त, भरा, पूरा।
आपूरना–(हि. क्रि. स.) आपूरण करना, भरना।
आपूरित–(सं. वि.) भरा हुआ।
आपेक्षिक–(सं. वि.) तुलना द्वारा प्राप्त, तुलना से निर्धारित होनेवाला, निर्भर होनेवाला।
आप्त–(सं. वि.) प्राप्त, पाया हुआ, विश्वस्त, ठीक, कुशल, संबंधी, सम्पूर्ण, सत्य, बराबर, प्राकृतिक, अभियुक्त, प्रामाणिक, सामान्यरूप से प्रयोग में आनेवाला; (पुं.) योग्य पुरुष, मित्र।
आप्तकाम–(सं. वि.) तृप्त, संतुष्ट, जिसकी सब कामनाएँ पूरी हुई हों।
आप्तकारी–(सं. पुं.) उचित रीति से काम करनेवाला।
आप्तगर्भा–(सं. स्त्री.) गर्भिणी स्त्री।
आप्ति–(सं. स्त्री.) प्राप्ति।
आप्य–(सं. वि.) जल-संबंधी, जलमय।
आप्यान–(सं. पुं.) वृद्धि, बढ़ती।
आप्यायन–(सं. पुं.) वृद्धि, तृप्ति, प्रीति, बढ़ती, अगवानी, उत्तम अवस्था उत्पन्न करने का भाव, दीक्षा देने के मन्त्र का संस्कार विशेष।
आप्यायित–(सं. वि.) वर्धित, आनन्दित।

आप्रच्छन्न–(सं. वि.) अत्यन्त गुप्त।
आप्लव, आप्लवन–(सं.पुं.) जल में गोता लगाना, स्नान।
आप्लावित–(सं. वि.) भीगा हुआ, स्नान किया हुआ।
आप्लुत–(सं. वि.) डूबा हुआ।
आफत–(अ. स्त्री.) विपद्, दुःख, संकट; (मुहा.)–**का मारा**–विपद्-ग्रस्त;–**ढाना**–उपद्रव मचाना;–**मोल लेना,–सिर पर लेना**–कोई झंझट-बखेड़ा अपने सिर लेना।
आफिस–(अं. पुं.) कार्यालय।
आफिसर–(अं. पुं.) अधिकारी, अफसर।
आफू–(सं. पुं.) अफीम।
आफूक–(सं. पुं.) अहिफेन, अफीम।
आबंध (न)–(सं. पुं.) ग्रन्थि, गाँठ।
आबद्ध–(सं. वि.) प्रतिबद्ध, बँधा हुआ।
आबर्ह–(सं. पुं.) मारकाट, हिंसा।
आबोधन–(सं. पुं.) विद्या, बुद्धि, शिक्षा।
आब्द–(सं.वि.) मेघजात, मेघ से उत्पन्न।
आब्दिक–(सं. वि.) वार्षिक।
आभ–(हिं.पुं.) अभ्र, आसमान, आप, जल।
आभरण–(सं. पुं.) अलंकार, आभूषण, पालन-पोषण।
आभरन–(हिं. पुं.) देखें 'आभरण'।
आभरित–(सं.वि.) अलंकृत, सजा हुआ।
आभा–(सं. स्त्री.) दीप्ति, चमक, शोभा, कान्ति, प्रतिबिम्ब, छाया।
आभार–(सं. पुं.) भार, गृहस्थी का भार, उपकार, एक वर्णवृत्त।
आभारी–(सं.वि.) उपकार माननेवाला।
आभाषण–(सं.पुं.) वार्तालाप, बातचीत।
आभास–(सं. पुं.) प्रतिबिंब, परछाँही, झलक, संकेत, झूठा दिखावा, तुल्यता, प्रकाश, मिथ्या ज्ञान।
आभास्वर–(सं. वि.) चमकनेवाला।
आभिधानिक–(सं.वि.) कोष बनानेवाला।
आभिरूप्य–(सं. पुं.) सौंदर्य, पांडित्य।
आभीर–(सं. पुं.) गोप, अहीर, ग्वाल।
आभीर-पल्ली–(सं.स्त्री.) अहीरों के रहने की वस्ती, अहिरान।
आभीरी–(सं. स्त्री.) अहिरिन, अहीरों की भाषा।
आभूषण–(सं. पुं.) अलंकार।
आभूषित–(सं. वि.) अलंकृत, आभरित।
आभोग–(सं. पुं.) परिपूर्णता, यत्न, गाने के अन्त में कवि का नाम-कथन।
आभोगी–(सं. वि.) परिपूर्ण, सुख भोगनेवाला।
आभ्यंतर–(सं. वि.) मध्यवर्ती, भीतरी।
आभ्यंतरिक–(सं. वि.) भीतरी।
आभ्याशिक–(सं. वि.) समीपस्थ, पड़ोस का, पड़ोसी।
आभ्यासिक–(सं. वि.) अभ्यास का।
आभ्युदयिक–(सं. वि.) अभ्युदय संबंधी, मांगलिक, सुख-सौभाग्य बढ़ानेवाला; (पुं.) नान्दीमुख श्राद्ध।
आमंत्रण–(सं. पुं.) निमन्त्रण, नेवता, विवेचन, गौर।
आमंत्रित–(सं. वि.) न्योता पाया हुआ।
आम–(सं. वि.) अपक्व, जो पका न हो, कच्चा, जो (भोजन) पचा न हो, बिना पचा हुआ मल, आँव; (हिं.पुं.) आम्र, रसाल वृक्ष तथा फल दोनों के लिए व्यवहृत होता है; (अ.वि.) साधारण, सामान्य; (मुहा.)–**के आम गुठली के दाम**–दोहरा लाभ; **दरबार आम**–(पुं.) राजसभा जिसमें सर्वसामान्य जा सकते हैं;–**अख्तियार**–(पुं.) सामान्य अधिकार;–**खास**–(पुं.) राजमहल का वह भीतरी भाग जहाँ राजा का आसन रहता है;–**जलसा**–(पुं.) सार्वजनिक उत्सव;–**पाक**–(सं.पुं.) जलोदर नामक रोग;–**रक्त**–(सं.पुं.) रक्त अतिसार;–**वात**–(सं. पुं.) एक वातरोग जिसम अंग में पीड़ा, आलस्य तथा शूल होता है और अन्न का भली-भाँति परिपाक नहीं होता, गठिया;–**शूल**–(सं. पुं.) आँव के कारण पेट में ऐंठन और पीड़ा होना।
आमड़ा–(हिं. पुं.) आम्रातक, एक बड़ा आम के बराबर का वृक्ष जिसके फल बेर के बराबर तथा खट्टे होते और अचार बनाने के काम में आते हैं।
आमन–(हिं. पुं.) एक-फसला खेत।
आमनाय–(हिं. पुं.) देखें 'आम्नाय'।
आमना-सामना–(हिं. पुं.) सन्मुख होने का भाव, भेंट।
आमनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'आमन'।
आमने-सामने–(हिं.अव्य.) प्रत्यक्ष, सन्मुख।
आमय–(सं. पुं.) आघात, चोट, रोग, बीमारी।
आमरक्तातिसार–(सं. पुं.) वह रोग जिसमें आंव के साथ लोहू गिरता है।
आमरण, आमरणांत–(सं. वि, अव्य.) मृत्यु-पर्यन्त, जीवन भर।
आमरणांतिक–(सं. वि.) मरने तक रहनेवाला, आमरण।
आमरस–(सं. पुं.) अपक्व रस; (हिं. पुं.) अमरस।
आमर्द–(सं. पुं.) संकोचन, दबाव, रौंद, टक्कर।
आमर्दन–(सं. पुं.) देखें 'आमर्द'।
आमर्श–(सं. पुं.) अनुमति।
आमर्ष–(सं. पुं.) अक्षमा, असहन, बेचैनी, क्रोध।
आमलक–(सं. पुं.) आमले का फल, आँवला।
आमलकी–(सं. स्त्री.) छोटी जाति का आँवला, आँवली।
आमला–(हिं. पुं.) आँवला।
आमाँ–(हिं. पुं.) देखें 'आवाँ'।
आमाजीर्ण–(सं. पुं.) आँव के कारण भोजन न पचना।
आमातिसार–(सं.पुं.) आँव-लोहू का शौच।
आमात्य–(सं.पुं.) मन्त्री, नायक, सरदार।
आमालक–(सं. पुं.) पर्वत के निकट की भूमि, तराई।
आमाशय–(सं. पुं.) जठर, कोष्ठ, पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाया हुआ अन्न जाता और पचता है।
आमाहल्दी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का कन्द जो हल्दी की तरह का होता है और औषधि में प्रयुक्त होता है।
आमित्र–(सं. वि.) शत्रु-संबंधी।
आमिल–(अ. वि., पुं.) अमल करनेवाला, काम करनेवाला, कर्मचारी।
आमिष–(सं. पुं.) मांस, भोग्य वस्तु, भोजन, लाभ, तृष्णा, लालच।
आमिषप्रिय–(सं.पुं.) मांसभक्षक, कौवा।
आमिषाशी–(सं. पुं.) मांस खानेवाला।
आमी–(हिं. स्त्री.) छोटा कच्चा आम, गेहूँ या जौ की भुनी हुई बाल; (अ. अव्य.) एवमस्तु, ऐसा ही हो।
आमीलन–(सं. पुं.) नेत्रों का बन्द करना।
आमुक्त–(सं. वि.) अबद्ध, विमुक्त, खोला हुआ।
आमुक्ति–(सं. स्त्री.) मोक्ष; (अव्य.) मोक्ष पर्यन्त।
आमुख–(सं. पुं.) आरम्भ, प्रस्तावना।
आमूल–(सं. अव्य.) मूल पर्यन्त।
आमोचन–(सं. पुं.) वियोग, विलगाव।
आमोद–(सं. पुं.) प्रसन्नता, हर्ष, तीव्र गन्ध।
आमोदन–(सं. पुं.) प्रसन्न करने का कार्य।
आमोद-प्रमोद–(सं. पुं.) भोग-विलास, रागरंग।
आमोदा–(सं. स्त्री.) मसालची, मसावर।
आमोदित–(सं. वि.) प्रसन्न, सौरभित, सुवासित, सोंधा।
आमोदी–(सं. वि.) हर्षयुक्त, प्रसन्न रहनेवाला, गन्धयुक्त, सोंधा।

आम्नाय–(सं. पुं.) वेद, श्रुति, तर्क-शास्त्र, अभ्यास, सम्प्रदाय, उपदेश, कुल।
आम्र–(सं. पुं.) आम का वृक्ष या फल।
आम्रकूट–(सं. पुं.) अमरकण्टक पर्वत का प्राचीन नाम।
आम्ल–(सं. पुं.) इमली का वृक्ष, अम्ल-वेत, खटाई; (वि.) अम्ल संबंधी; –फल–(सं. पुं.) कपित्थ, कैथ।
आय–(सं. स्त्री.) लाभ, धनागम; –कर–(पुं.) अधिक आय पर लगनेवाला कर।
आयत–(सं. वि.) विस्तृत, दीर्घ, विशाल, लम्बा-चौड़ा, दृढ़; (पुं.) ज्यामिति का समकोण चतुर्भुज।
आयतन–(सं. पुं.) क्षेत्रफल, आश्रय, हेतु, विश्राम-स्थान, मठ, मन्दिर, घर, प्रतिमा, यज्ञ-स्थान।
आयताक्ष–(सं. वि.) बड़ी-बड़ी आँखवाला।
आयति–(सं. स्त्री.) उत्तर-काल, प्रभाव, संगम।
आयत्त–(सं. वि.) वशीभूत, अधीन।
आयत्ति–(सं. स्त्री.) सामर्थ्य, स्नेह, प्रभाव, सीमा, अधीनता।
आयस–(सं. वि.) लोहमय; (पुं.) लोहा, लोहे का हथियार।
आयसी–(सं. वि.) लोहे का बना हुआ; (स्त्री.) कवच।
आयसु–(हिं. पुं.) आज्ञा।
आयस्कार–(सं. पुं.) लोहकार, लोहार।
आयस्थान–(सं. पुं.) लाभ-स्थान, आम-दनी की जगह।
आया–(हिं. क्रि. अ.) उपस्थित हुआ, आ पहुँचा; (स्त्री.) धाय।
आयाचित–(सं. वि.) माँगा हुआ।
आयात–(सं. वि.) आगत, आया हुआ; (पुं.) विदेशों से माल मँगाने का व्यापार।
आयान–(सं. पुं.) आगमन, स्वभाव।
आयाम–(सं. पुं.) विस्तार, लंबाई, नियम।
आयास–(सं. पुं.) अति यत्न, परिश्रम, कोशिश।
आयु–(सं. स्त्री.) आयुष्य, उम्र।
आयुक्त–(सं. वि.) नियुक्त।
आयुत–(सं. वि.) आर्द्रीभूत, पिघला हुआ।
आयुध–(सं. पुं.) शस्त्र, हथियार।
आयुधजीवी–(सं. पुं.) भट, योद्धा।
आयुधागार–(सं. पुं.) शस्त्रालय।
आयुधी–(सं. पुं.) योद्धा, सिपाही।
आयुर्बल–(सं. पुं.) आयु का बल, आयुष्य।
आयुर्वेद–(सं. पुं.) धन्वन्तरि-प्रणीत चिकित्सा-शास्त्र।
आयुर्वेदिक–(सं. वि.) आयुर्वेद (चिकित्सा) संबंधी।
आयुर्वेदी–(सं. पुं.) चिकित्सक, वैद्य।
आयुष्कर–(सं. वि.) आयुष्य बढ़ानेवाला।
आयुष्मान्–(सं. वि.) दीर्घजीवी, वृद्ध, चिरंजीवी।
आयुष्य–(सं. पुं.) आयु, उम्र।
आयोग–(सं. पुं.) व्यापार, नियुक्ति, अवरोध।
आयोगव–(सं. पुं.) वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति, बढ़ई।
आयोजन–(सं. पुं.) संग्रह का कार्य, प्रबंध, नियुक्ति, उद्योग, सामग्री, आहरण, धर-पकड़।
आयोजित–(सं. वि.) सम्पादित, रचा हुआ।
आयोधन–(सं. पुं.) रणक्षेत्र, लड़ाई का मैदान, युद्धभूमि।
आरंभ–(सं. पुं.) शुरू, श्रीगणेश।
आरंभिक–(सं. पुं.) आरम्भ करनेवाला।
आरंभी–(सं. वि.) आरंभ करनेवाला, आरंभ का।
आरंभना–(हिं. क्रि. स.) आरंभ करना।
आर–(सं. पुं.) मंगल ग्रह, प्रान्त, भाग, गमन, दूरी, एक प्रकार का लोहा, पीतल, कोना, पहिये का आरा, हरताल; (हिं. पुं.) ईख का रस निकालने का करछुला, मिट्टी का लोंदा, आग्रह; (स्त्री.) लोहे की कील, डंक, चमड़ा छेदने का सुवा, टेकुवा; (अ. स्त्री.) शर्म, लज्जा, तिरस्कार, वैर।
आरक्त–(सं. वि.) कुछ लाल रंग का; (पुं.) लाल चंदन।
आरक्ति–(हिं. स्त्री.) लालिमा, अनुराग।
आरक्षक–(सं. वि.) रक्षा करनेवाला।
आरग्वध–(सं. पुं.) अमलतास का वृक्ष।
आरणि–(सं. पुं.) जल का आवर्त, भँवर।
आरण्य–(सं. वि.) वनजात, जंगली।
आरण्यक–(सं. वि.) अरण्य संबंधी, जंगली, योगाभिलाषी पुरुष का योग-शास्त्र।
आरत–(सं. वि.) शान्त, सीधा; (हिं वि.) देखें 'आर्त'।
आरति–(हिं. स्त्री.) देखें 'आरती'।
आरती–(सं. स्त्री.) निवृत्ति, ठहराव, नीरा-जन, आरती का पात्र, देवता की प्रतिमा के चारों ओर दीपक घुमाना, आरती उतारने का पात्र, आरती के समय पढ़ने का स्तोत्र।
आरद्ध–(सं. वि.) संसिद्ध।
आर-पार–(हिं. अव्य.) तीरान्तर, एक किनारे से दूसरे किनारे तक; (पुं.) यह किनारा और वह किनारा; (क्रि. प्र.) –करना–बेधना, सालना।
आरब्ध–(सं. वि.) आरंभ किया हुआ।
आरब्धमान–(सं. वि.) आरम्भ होने-वाला, आरम्भ करनेवाला।
आरभट–(सं. पुं.) शूरवीर, बहादुर।
आरभटी–(सं. स्त्री.) वीर रस युक्त नाटक की रचना, माया, इन्द्रजाल, युद्ध, क्रोध, वध, वंचना आदि युक्त वृत्ति, धृष्टता।
आरव–(सं. पुं.) शब्द, पुकार, आहट।
आरस–(हिं. पुं.) आलस्य, सुस्ती।
आरसी–(हिं. स्त्री.) दर्पण, शीशा जड़ी हुई अँगूठी जिसको स्त्रियाँ अँगूठे में पहिनती हैं।
आरा–(सं. पुं.) चमड़ा छेदने का टेकुआ, कोड़ा, लकड़ी चीरने की दाँतेदार लोहे की चौड़ी पट्टी, पहिये में बेलन से पुट्ठी तक जड़ी हुई लकड़ी की पटरी।
आराइश–(अ. स्त्री.) सजावट।
आराकश–(हिं. पुं.) आरे से लकड़ी चीरनेवाला।
आराजी–(फा. स्त्री.) देखें 'अराजी'।
आराति–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी।
आराधक–(सं. वि.) उपासना करने-वाला, पूजा-पाठ करनेवाला।
आराधन–(सं. पुं.) उपासना, सेवा, पूजा, अर्चन, प्राप्ति, पूजा-पाठ।
आराधना–(सं. स्त्री.) सेवा, पूजा, उपा-सना; (हिं. क्रि. स.) आराधना करना, पूजा करना।
आराधनीय–(सं. वि.) आराधन किये जाने योग्य।
आराधित–(स. वि.) अर्चित, सेवित, पूजा किया हुआ।
आराध्यमान–(सं. वि.) पूजा जानेवाला।
आराम–(सं. पुं.) उपवन, फुलवाड़ी, बगीचा, एक प्रकार का दण्डक वृत्त।
आरामिक–(सं. पुं.) बागवान, माली।
आरि–(हिं. स्त्री.) जिद, हठ।
आरिया–(हिं. स्त्री.) पतली ककड़ी।
आरी–(हिं. स्त्री.) बढ़ई का लकड़ी चीरने का अस्त्र, छोटा आरा, चमड़ा छेदने का टेकुआ, छोर, किनारा, गाड़ी हाँकनेवाले के पैने में लगी हुई लोहे की कील; (क्रि.प्र.) –आना–थक जाना।
आरु–(सं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष, कर्कट, केंकड़ा।
आरुण्य–(सं. पुं.) अरुणता, लाली।

आरुद्ध–(सं. त्रि.) प्रतिरुद्ध, बँधा हुआ।
आरूढ़–(सं. वि.) चढ़नेवाला, चढ़ा हुआ, दृढ़, स्थिर, तत्पर, सन्नद्ध।
आरूढ़-यौवना–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की मध्या नायिका जो स्वामी के सहवास से प्रसन्न रहती है।
आरे–(हिं. अव्य.) समीप, पास।
आरेस–(हिं. पुं.) ईर्ष्या।
आरो–(हिं. पुं.) देखें 'आरव'।
आरोग–(हिं.वि.,पुं.) देखें 'आरोग्य'।
आरोगना–(हिं. क्रि. स.) भोजन करना, खाना।
आरोग्य–(सं. पुं.) रोगशून्यता; (वि.) स्वस्थ, नीरोग।
आरोग्यता–(हिं. स्त्री.) स्वास्थ्य।
आरोग्यशाला–(हिं. स्त्री.) चिकित्सालय।
आरोधक–(सं. स्त्री.) प्रतिबन्धक, रोकनेवाला, बाधक।
आरोधना–(हिं. क्रि. स.) अवरोध करना, रोकना।
आरोधनीय–(सं. वि.) रोके जाने योग्य।
आरोप–(सं. पुं.) निवेशन, स्थापन, लगाव, जोड़, मिथ्या ज्ञान, झूठी कल्पना, रोपना, बैठाना, एक स्थान से किसी पौधे को उखाड़कर दूसरे स्थान में बैठाना।
आरोपक–(सं. वि.) आरोपण करनेवाला।
आरोपण–(सं. पुं.) पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में बैठाना, स्थापित करना, ऊपर को उठाना, झूठा ज्ञान, मढ़ना, लगाना, विश्वास।
आरोपणीय–(सं. वि.) स्थापनीय, रक्खा जानेवाला।
आरोपना–(हिं. क्रि. स.) स्थापित करना, लगाना, बैठाना, ऊपर को चढ़ाना।
आरोपित–(सं. वि.) स्थापन किया हुआ, रोपा हुआ।
आरोह–(सं. पुं.) चढ़ना, नीचे से ऊपर को उठना, अँखुवा निकलना, हाथी या घोड़े की सवारी, लंबान, ऊँचाई, अवतरण, उतार, दर्प, घमंड, विकास, नितंब, चूतड़।
आरोहक–(सं.वि.) उठनेवाला, चढ़ने या चढ़ानेवाला; (पुं.) सवार।
आरोहण–(सं. पुं.) सवार होना, चढ़ना, नीचे से ऊपर को जाना, अँखुवा फूटना, सोपान, सीढ़ी।
आरोहणीय–(सं. वि.) चढ़ने योग्य।
आरोही–(सं. वि.) ऊपर जानेवाला, चढ़नेवाला; (पुं.) वह पौधा जिसकी टहनियाँ लिपट जाती हैं, बेल।

आर्क–(सं.वि.) सूर्य संबंधी, मदार संबंधी।
आर्गल–(सं. पुं.) अर्गला, चटखनी।
आर्जव–(सं. पुं.) सरलता, सीधापन, सदाचार, सच्चाई।
आर्ट–(अं. पुं.) कला, शिल्प, दस्तकारी।
आर्डर–(अं. पुं.) आज्ञा, आदेश।
आर्त–(सं. वि.) पीड़ित, दुःखित, अस्वस्थ, आहत, चोट खाया हुआ।
आर्तता–(सं. स्त्री.) पीड़ा, कष्ट, दुःख।
आर्तनाद–(सं.पुं.) पीड़ा से निकला हुआ शब्द।
आर्तबंधु–(सं. पुं.) दुखियों का सहायक।
आर्तव–(सं. पुं.) ऋतु में होनेवाला पुष्प, ऋतुमती स्त्री का रक्त; (वि.) ऋतु संबंधी।
आर्तस्वर–(सं. पुं.) देखें 'आर्तनाद'।
आर्ति–(सं. स्त्री.) पीड़ा, मनोव्यथा।
आर्तिहर–(सं. वि.) पीड़ा हरनेवाला।
आर्थिक–(सं.वि.) धन संबंधी, द्रव्य संबंधी।
आर्थी–(सं.वि.) अर्थ संबंधी; (स्त्री.) व्यंजना, एक प्रकार का उपमालंकार।
आर्द्र–(सं. वि.) भीगा हुआ, ओदा।
आर्द्रक–(सं. पुं.) अदरख, आदी।
आर्द्रता–(सं.स्त्री.) गीलापन, तरी, कोमलता।
आर्द्रनयन–(सं.वि.) आँखों में आँसू भरे हुए।
आर्द्रा–(सं. स्त्री.) सत्ताइस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र, (इस नक्षत्र में सूर्य के आने से वर्षा का आरम्भ होता है।)
आर्द्रावीर–(सं. पुं.) शक्ति का उपासक, वाममार्गी।
आर्धमासिक–(सं. वि.) आधे महीने रहनेवाला।
आर्य–(सं. पुं.) कुलीन, सभ्य, सज्जन, पूज्य, श्रेष्ठ, उच्च कुल में उत्पन्न, स्वामी, मित्र, वेदोक्त प्राचीन सभ्य जाति।
आर्यता–(सं. स्त्री.) माननीय आचरण, भलमनसी।
आर्यत्व–(सं. पुं.) देखें 'आर्यता'।
आर्य-धर्म–(सं. पुं.) सदाचार, अच्छी चाल-चलन।
आर्यपथ–(सं. पुं.) सदाचार।
आर्यपुत्र–(सं. पुं.) उपाध्याय का पुत्र, नाट्यभाषा में पति को पुकारने का शब्द।
आर्यरूप–(सं. वि.) कपटी, दम्भी।
आर्यलिंगी–(सं. वि.) देखें 'आर्यरूप'।
आर्यवृत्ति–(सं. स्त्री.) सदाचार, सज्जनता।
आर्यवेश–(सं. वि.) सुन्दर वस्त्र पहिने हुए
आर्य समाज–(सं. पुं.) स्वामी दयानंद का प्रचार किया हुआ आर्यों का एक धार्मिक समाज।
आर्या–(सं. स्त्री.) दुर्गा, पार्वती, सास, श्रेष्ठ स्त्री, पितामही, दादी, एक अर्धमात्रिक छन्द का नाम।

आर्यावर्त–(सं.पुं.) भारत का उत्तरी भाग।
आर्ष–(सं. वि.) ऋषि संबंधी, ऋषिकृत, प्राचीन वैदिक; –धर्म–(पुं.) मनु आदि स्मृतिकारों का कहा हुआ धर्म; –प्रयोग–(पुं.) शब्दों का व्यवहार जो व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करके ऋषियों ने प्रयोग किया है; –विवाह–(पुं.) स्मृतियों में कहे हुए आठ प्रकार के विवाहों में से एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या का पिता वर से दो बैल लेकर कन्या देता था।
आर्हत–(सं.वि.) जैन धर्म संबंधी; (पुं.) जैन।
आलंग–(हिं.पुं.) कामवेग, मस्ती; (क्रि. प्र.)–पर आना–घोड़ी का मस्त होना।
आलंब–(सं. पुं.) आश्रय, सहारा, आधार, टेक, थूनी, लंब।
आलंबन–(सं.पुं.) आश्रय, सहारा, कारण।
आलंबित–(सं. वि.) गृहीत, पकड़ा हुआ, रक्षित, आश्रित।
आलंबी–(सं. वि.) आश्रयी, सहारा लेनेवाला, अधीन।
आलंभ, आलंभन–(सं. पुं.) स्पर्श।
आल–(सं. पुं.) हरताल, मछली या मेढक का अण्डा; (वि.) अधिक भीगा, गीला, ज्यादा, श्रेष्ठ; (हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिससे रंग बनता है, लौकी; (पुं.) उपद्रव, झगड़ा, अश्रु, आँसू, गाँव के बाहर का भाग।
आलक–(सं. पुं.) हरताल, पीली संखिया।
आलकसी–(हिं. वि.) आलसी, सुस्त।
आलथी-पालथी–(हिं. स्त्री.) दाहिने पैर की एड़ी बायें पैर पर तथा बायें पैर की एड़ी दाहिनी जांघ पर रखकर बैठने का आसन।
आलन–(हिं. पुं.) मिट्टी का गारा, गोबर के गोहरे में मिलाया जानेवाला सानी; साग में मिलाया जानेवाला बेसन।
आलना–(हिं.पुं.) पक्षी का स्थान, घोंसला।
आलपाका–(हिं.पुं.) देखें 'अलपाका'।
आलपीन–(हिं. स्त्री.) पत्र आदि में लगाने की घुंडीदार सुई।
आलवाल–(हिं. पुं.) वृक्ष के चारों ओर का थाला।
आलब्ध–(सं. वि.) संयुक्त, मिला हुआ।
आलय–(सं. पुं.) घर, मकान, हवेली, आधार-स्थान।
आलवाल–(सं. पुं.) वृक्ष के चारों ओर का थाला, थांवला।

आलस–(हिं. पुं.) आलस्य।
आलसी–(हिं. वि.) आलस्ययुक्त।
आलस्य–(सं. पुं.) काम करने में अनुत्साह, सुस्ती, काहिली।
आला–(हिं.वि.) तर, गीला, मवाद या पीव देनेवाला; (पुं.) ताखा, मोखा, अरवा, कुम्हार का आवाँ, हथियार; (अ. वि.) ऊँचा, श्रेष्ठ, अव्वल।
आलात–(सं. पुं.) अंगारा, कोयला, आवाँ, पाजावा।
आलान–(सं. पुं.) हाथी को बाँधने का खूँटा, बाँधने का रस्सा, गाँठ, बन्धन, शिव के एक मन्त्री का नाम।
आलाप–(सं. पुं.) संभाषण, कथन, बोलचाल, परस्पर कथन, गणित के प्रश्न का निर्देश, संगीत में सातों स्वरों का रागसहित उच्चारण।
आलापक–(सं. वि., पुं.)आलाप करनेवाला, गानेवाला।
आलापचारी–(सं.स्त्री.) स्वर-साधन, तान लगाने का काम।
आलापन–(सं. पुं.) परस्पर वार्तालाप, आलाप लेना।
आलापना–(हिं. क्रि. स.) सुर खींचना, तान लगाना।
आलापनीय–(सं.वि.)आलाप करने योग्य।
आलापित–(सं.वि.)बोला हुआ, गाया हुआ।
आलापी–(सं. वि.) बोलनेवाला, तान लगानेवाला, गानेवाला।
आलिंग, आलिंगन–(सं. पुं.) गले से गला लगाना, अँकवारी।
आलिंगना–(हिं. क्रि. स.) आलिंगन करना, लपटाना, गले लगाना।
आलिंगित–(सं. वि.) आलिंगन किया हुआ, गले से गला लगाया हुआ।
आलिंगी–(सं. वि.)आलिंगन करनेवाला।
आलिंजर–(सं. पुं.)मिट्टी का जल रखने का बड़ा घड़ा।
आलिंद–(सं. पुं.)घर के सामने का मंच।
आलि–(सं. स्त्री.)सखी, सहेली, पंक्ति, सतर, सन्तति, नाला; (पुं.)बिच्छू, भौंरा।
आलिप्त–(सं. वि.) लीपा-पोता हुआ।
आली–(सं. स्त्री.) सखी, सहेली, पंक्ति; (हिं.वि.स्त्री.)भीगी हुई, गीली।
आलीन–(सं.वि.)गला हुआ, पिघला हुआ।
आलुंचन–(सं.पुं.)नोच-खसोट, चीर-फाड़।
आलुंचित–(सं. वि.) नोचा-खसोटा हुआ।
आलुंठन–(सं. पुं.) लूटपाट,छीना-छीनी।
आलु–(सं. पुं.) उल्लू, जमीकन्द, सूरन।
आलुकी–(सं. स्त्री.) रतालू, घुइयाँ।

आलू–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कन्द जो तरकारी बनाकर खाया जाता है।
आलून–(सं.वि.)कुछ कटा या छँटा हुआ।
आलूबालू–(हिं.पुं.)एक प्रकार का आलूचा।
आलेख–(सं. पुं.) लिखावट, लेख, पत्र लिखने का कागज।
आलेखन–(सं.पुं.) देखें 'आलेख'।
आलेख्य–(सं. पुं.) चित्र, तस्वीर।
आलेख्यलेखा–(सं. स्त्री.)चित्रविद्या।
आलेप–(सं. पुं.) उपलेप, तिला।
आलोक–(सं. पुं.) प्रकाश, उजाला, चमक, दर्शन, दीपक, उल्लास।
आलोकनीय–(सं. वि.) ध्यान दिया जानेवाला, देखने योग्य।
आलोकित–(सं. वि.) दृष्ट, देखा हुआ।
आलोचक–(सं. वि.) देखनेवाला, विवेचक, आलोचना करनेवाला।
आलोचन–(सं.पुं.), आलोचना–(सं.स्त्री.) कलाकृति, कार्य आदि के गुण-दोष का विवेचन, दर्शन, विवेक, अन्तःकरण की एक वृत्ति।
आलोचनीय–(सं. वि.) आलोचना करने योग्य, देखभाल करने लायक।
आलोचित–(सं. वि.) देखा हुआ, समझा हुआ, आलोचना किया हुआ।
आलोच्य–(सं. वि.) देखें 'आलोचनीय'।
आलोड़न–(सं. पुं.) मिश्रण, मिलावट, मन्थन, मथना।
आलोड़ना–(हिं.क्रि.स.)मंथन करना, मथना।
आलोड़ित–(सं. वि.) मंथित, मथा हुआ।
आलोल–(सं. वि.) विचलित, कंपित, हिलता हुआ।
आलोलित–(सं. वि.) हिलाया हुआ, घबड़ाया हुआ।
आल्हा–(हिं. पुं.) एक विख्यात वीर जो पृथ्वीराज के समय में महोबे में थे, इकतीस मात्राओं का एक छन्द।
आव–(हिं. पुं.) आयुष्य।
आव-आदर–(हिं. पुं.) आदर, सत्कार।
आवज–(हिं. पुं.) एक प्रकार का ताशे के समान पुराना बाजा।
आवटना–(हिं. पुं.) आवर्तन, अस्थिरता, धूमधाम, हलचल; (क्रि. स.) रींधना, औटाना।
आवन–(हिं.पुं.)आगमन, अवाई, आना।
आव-भगत–(हिं.स्त्री.)देखें 'आव-आदर'।
आवनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'आवन'।
आव-भाव–(हिं. पुं.) आदर, सत्कार।
आवरक–(सं. पुं.) आच्छादन, ढांपने का वस्त्र।

आवरण–(सं. पुं.) आच्छादन, ढँपना, वेष्टन, लपेट, परदा, ढाल, चहारदीवारी, आवृत्ति।
आवरण-पत्र–(सं.पुं.)पुस्तक इत्यादि की रक्षा के लिये इस पर लपेटा हुआ पत्र।
आवरण-शक्ति–(सं.स्त्री.)अज्ञान।
आवरित–(सं. वि.) ढँपा हुआ।
आवर्जित–(सं. वि.)त्यक्त, छोड़ा हुआ।
आवर्त–(सं. पुं.) जल का भँवर. लाजवर्दमणि, मेघ का अधिप, सोनामक्खी, धातु, चक्कर, चिन्ता, संशय; (सं.वि.) घूमा हुआ, मुड़ा हुआ।
आवर्तन–(सं. पुं.) चक्कर, घुमाव, घेरा, वेष्टन, दोहराव, अभ्यास, गुणन।
आवर्तनीय–(सं. वि.)गुणन करने योग्य, दोहराने योग्य, आवर्ती।
आवर्तित–(सं. वि.) अभ्यस्त, दोहराया हुआ, गुणन किया हुआ।
आवर्ती–(सं. वि.) वापस आनेवाला, आवर्त्तन करनेवाला।
आवल्गित–(सं.वि.)कुछ चंचल,मुड़ा हुआ।
आवली–(सं. स्त्री.) परंपरा, पंक्ति, श्रेणी, वह विधि जिससे खेत की उपज का अनुमान किया जाता है।
आवश्यक–(सं. वि.) नियत, जरूरी।
आवश्यकता–(सं.स्त्री.)प्रयोजन, अपेक्षा।
आवसथ–(सं. पुं.) घर, हवेली, मकान, विश्राम-स्थान।
आवसित–(सं. वि.) समाप्त, निर्णीत, पका हुआ।
आवाँ–(हिं. वि.) वह गड्ढा जिसमें कोहार वर्तन पकाते हैं, पाजावा।
आवागमन–(सं. पुं.) आना-जाना, वार-वार जन्म लेना और मरना, जन्म-मरण का चिर आवर्तन।
आवागमनी–(हिं. वि.) आने-जानेवाला, मरने और उत्पन्न होनेवाला।
आवाज–(फा. स्त्री.) ध्वनि, शब्द, पुकार, शोर, हल्ला; (मुहा.) –उठना, उठाना या ऊँची करना–पक्ष या विपक्ष में बोलना, –गिरना–स्वर का क्षीण या मंद होना; –देना–शब्द निकलना, –फटना–आवाज या गला बैठना,–भारी होना या भर्राना –गला बैठना; – मारना–जोर से पुकारना।
आवाजाही–(हिं. स्त्री.) आवागमन, आना-जाना।
आवाल–(सं. पुं.) देखें 'आलवाल'।
आवास–(सं. पुं.) वासस्थान, रहने का स्थान, निवास।

आवासी–(सं. वि.) रहनेवाला, वास करनेवाला।
आवाहन–(सं. पुं.) मन्त्र द्वारा देवता को बुलाना, निमन्त्रण, पुकार, बुलावा।
आविक–(सं. वि.) भेड़ संबंधी, ऊनी।
आविद्ध–(सं. वि.) विद्ध, भेदा हुआ, छेदा हुआ, फेंका हुआ; (पुं.) तलवार घुमाकर शत्रु को मारने की कला।
आविर्भाव–(सं.पुं.) प्रकाश,संचार,उत्पत्ति।
आविर्भूत–(सं. वि.) प्रकाशित, उत्पन्न हुआ, प्रकट किया हुआ।
आविल–(हिं. वि.) भ्रष्ट, मलिन।
आविष्करण–(सं.पुं.) प्रकट करना, कोई प्राकृतिक या वैज्ञानिक रहस्य का खोजकर पता लगाना, वैज्ञानिक खोज, दिखावा।
आविष्कर्ता–(सं. पुं.) प्रकाशक, आविष्कार करनेवाला।
आविष्कार–(सं. पुं.) देखें 'आविष्करण'।
आविष्कारक–(सं.पुं.) देखें 'आविष्कर्ता'।
आविष्कृत–(सं. वि.) आविष्कार किया हुआ, प्रकट किया।
आवीत–(सं.वि.) गुथा हुआ,लटकाया हुआ।
आवृत–(सं.वि.) गुप्त, छिपा हुआ, घिरा हुआ, फैला हुआ, व्याप्त, लपेटा, हुआ।
आवृत्त–(सं. वि.) वापस आया हुआ, मागा हुआ।
आवृत्ति–(सं.स्त्री.) वारंवार अभ्यास करना, दोहराना, वारंवार एक ही काम करना।
आवृष्टि–(सं. स्त्री.) अच्छी वर्षा।
आवेग–(सं. पुं.) उत्कंठा सहित मन का वेग, उद्वेग, हड़बड़ी, घबड़ाहट।
आवेदक–(सं. वि.) आवेदन करनेवाला, विज्ञापक, निवेदक, प्रार्थी।
आवेदन–(सं. पुं.) प्रार्थना, विज्ञापन, निवेदन, नालिश।
आवेदनपत्र–(सं.पु.) प्रार्थना-पत्र।
आवेदनीय,आवेद्य–(सं. वि.) सूचना योग्य, कहने योग्य, निवेदनीय।
आवेदित–(सं. वि.) निवेदन किया हुआ।
आवेदी–(सं. वि., पुं.) सूचना देनेवाला, आज्ञाकारी, प्रार्थी।
आवेश–(सं. पुं.) मन की प्रेरणा, अहंकार, क्रोध, आन्तरिक यत्न, गर्व, पहुँच, मृगी का रोग, भूत-संचार, प्रेत-बाधा-संचार।
आवेष्ट, आवेष्टक–(सं. पुं.) घेरा।
आवेष्टन–(सं. पुं.) आवरण, लपेट, लपेटने या ढाँपने की वस्तु, बस्ता।
आवेष्टित–(सं. वि.) घिरा हुआ, लपेटा हुआ, ढका।

आशंकनीय–(सं. वि.) शंका किये जाने योग्य, समझने योग्य।
आशंकमान–(सं.वि.) शंकित, डरा हुआ।
आशंका–(सं. स्त्री.) भय, सन्देह, त्रास, अविश्वास।
आशंकित–(सं. वि.) भयभीत, सन्देह-युक्त, डरा हुआ।
आशंसा–(सं. स्त्री.) अप्राप्य वस्तु पाने की इच्छा, महत्वाकांक्षा।
आशंसित–(सं.वि.) इच्छा किया हुआ।
आश–(सं. पुं.) भोजन खाना, आहार; (हिं. स्त्री.) आशा।
आशय–(सं. पुं.) अभिप्राय, आश्रय, आधार, इच्छा, तात्पर्य, उद्देश्य, विभव, स्थान, जगह, गड्ढा।
आशर–(हिं. पुं.) राक्षस, अग्नि।
आशव–(सं. पुं.) गुड़ का मद्य।
आशा–(सं. स्त्री.) दिशा, किसी पदार्थ के मिलने की इच्छा, उम्मीद, अभिलाषा, तृष्णा, लालच, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम।
आशाढ़–(सं. पुं.) आषाढ़ महीना।
आशातीत–(सं.वि.) आशा से अधिक।
आशान्वित–(सं. वि.) आशायुक्त।
आशाप्राप्त–(सं. वि.) कृतकार्य, सफल।
आशाबंध–(सं. पुं.) मकड़ी का जाला, आश्वासन।
आशावरी–(सं.स्त्री.) संगीतकीएकरागिणी।
आशावह–(सं. वि.) आशाधारी।
आशाहीन–(सं. वि.) आशाशून्य।
आशिर्वाद–(हिं.पुं.) देखें 'आशीर्वाद'।
आशिक–(अ. वि.) इश्क या प्रेम करनेवाला, प्रेमी; –माशूक–प्रेमी-प्रेमिका।
आशिष–(सं. स्त्री.) आशीर्वाद आसीस, एक अलंकार जिसमें न मिले हुए पदार्थ को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की जाती है।
आशी–(सं. स्त्री.) सर्प का विषैला दाँत, सर्प का विष, आशीर्वाद; (वि.) भक्षक, खानेवाला; (हिं. वि.) इच्छुक।
आशीर्वचन–(सं. पुं.) देख 'आशीर्वाद'।
आशीर्वाद–(सं. पुं.) मंगल-कामना-सूचक वाक्य, आशिष, दुआ।
आशीविष–(हिं. पुं.) सर्प, साँप।
आशु–(सं. वि.) शीघ्र; –कवि–(सं.पुं.) वह कवि जो तत्क्षण कविता बनाता हो; –कारी–(सं. वि.) शीघ्र काम करनेवाला; –कोपी–(सं. वि.) जल्दी क्रुद्ध होनेवाला; –क्रिया–(सं. स्त्री.) जल्दी का काम; –ग–(सं. पुं.) वायु, सूर्य, बाण; –गामी–(सं. वि.) शीघ्र चलनेवाला, सूर्य, वायु; –तोष–(सं. पुं.) शिव; (वि.) शीघ्र प्रसन्न होनेवाला; –त्व–(सं. पुं.) शीघ्रता, जल्दी।

आशौच–(सं. पुं.) अपवित्रता।
आश्चर्य–(सं. पुं.) विस्मय, अचंभा, अनोखापन, अद्भुत रस।
आश्चर्यता–(सं. स्त्री.), आश्चर्यत्व–(सं. पुं.) विस्मय।
आश्चर्यभूत–(सं. वि.) अद्भुत, अनोखा।
आश्चर्यमय–(सं. वि.) आश्चर्यपूर्ण।
आश्चर्यित–(सं.वि.) विस्मयाकुल,चकित
आश्मरिक–(सं.वि.) अश्मरी रोग संबंधी; (पुं.) गुरदे में पथरी पड़ने का रोग।
आश्रम–(सं. पुं.) ऋषि-मुनि का वास-स्थान, तपोवन, मठ, विश्राम-स्थान, पाठशाला, ठहरने की जगह, शास्त्रोक्त चार प्रकार का धर्म विशेष, यथा– ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास; –भ्रष्ट–(सं. वि.) जो अपने आश्रम को छोड़ बैठा हो; –वास–(सं. पुं.) मुनिजनों का तपोवन में निवास; –वासिक, –वासी–(सं. वि.) आश्रम में रहनेवाला; –स्थान (सं. पुं.) मुनिजन का निवास-स्थान।
आश्रमी–(सं. वि.) आश्रम या तपोवन संबंधी, आश्रम में रहनेवाला।
आश्रय–(सं. पुं.) अवलम्बन, सहारा, आधार, सहारा देने का पदार्थ, विषय, शरण, गृह, अधिकार, संपर्क, बहाना, संबंध, संयोग, मूल, जड़, भरोसा, जीवनोपाय का हेतु।
आश्रयणीय–(सं. वि.) आसरा लेने योग्य।
आश्रयत्व–(सं. पुं.) आधारत्व, सहारा लेने का कार्य।
आश्रयभूत–(सं. वि.) सहारा लेनेवाला।
आश्रयी–(सं. वि.) आश्रय या सहारा लेनेवाला, शरणागत।
आश्रित–(सं. वि.) आश्रयप्राप्त, टिका हुआ, वशीभूत, शरणागत, सेवक, अधीन, अवलंबित।
आश्रुत–(सं.वि.) अच्छी तरह सुना हुआ।
आश्रेय–(सं. वि.) सहारा देने लायक।
आश्लिष्ट–(सं.वि.) सम्बद्ध, मिला हुआ।
आश्लेष, आश्लेषण–(सं. पुं.) हार्दिक संबंध, आलिंगन, अश्लेषा नक्षत्र।
आश्लेषा–(सं. स्त्री.) अश्लेषा नक्षत्र।
आश्वत्थ–(सं.वि.) अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) संबंधी।
आश्वमेधिक–(सं.वि.) अश्वमेध यज्ञ संबंधी।

आश्वसित–(सं.वि.) आश्वासन (भरोसा) दिया हुआ।
आश्वस्त–(सं. वि.) आश्वासनयुक्त।
आश्वास–(सं.पुं.) भय-निवृत्ति, सान्त्वना।
आश्वासक–(सं.वि.) सान्त्वना देनेवाला।
आश्वासन–(सं. पुं.) देख 'आश्वास'।
आश्वासनीय–(सं.वि.) सान्त्वना देने योग्य।
आश्वासित–(सं. वि.) सान्त्वना दिया हुआ।
आश्वासी–(सं. वि.) सान्त्वना देनेवाला, प्रसन्न करनेवाला।
आश्विन–(सं. पुं.) क्वार का महीना, जिस महीने की पूर्णिमा को अश्विनी-नक्षत्र पड़ता है।
आश्विनी–(सं. स्त्री.) आश्विन मास की पूर्णिमा; (वि.) आश्विन का।
आषाढ़–(सं. पुं.) आषाढ़ा नक्षत्रयुक्त पूर्णमासीवाला महीना, आषाढ़ महीना।
आषाढ़क–(सं. पुं.) आषाढ़ मास, परास का बीज।
आषाढ़ा–(सं. स्त्री.) पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।
आषाढ़ी–(सं. स्त्री.) आषाढ़ मास की पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा।
आसंग–(हिं. अव्य.) निरन्तर, सतत; (पुं.) अनुरक्ति, संबंध।
आसंजन–(सं.पुं.) बाँधना, धारण करना।
आसंजित–(सं. वि.) संबद्ध या संलग्न।
आस–(सं. पुं.) आसन, स्थिति, बैठका, धनुष, धूलि; (हिं. स्त्री.) आशा, भरोसा, कामना, लालसा, आधार, टेक।
आसकत–(हिं. पुं.) आलस्य।
आसकती–(हिं. वि.) आलसी।
आसक्त–(सं.वि.) लिप्त, लीन, चाहनेवाला, मुग्ध, मोहित।
आसक्ति–(सं. स्त्री.) अन्य विषयों को त्यागकर एक ही विषय का अवलम्बन, लगन, अनुराग, प्रेम।
आसति–(हिं. स्त्री.) मुक्ति, सत्य।
आसते–(हिं. अव्य.) धीरे-धीरे।
आसत्ति–(सं.स्त्री.) संगम, मेल, लाभ, निकटता, न्यायमत के अनुसार दो शब्द और उनके अर्थ का संबंध।
आसन–(सं. पुं.) स्थिति, बैठने का ढंग, बैठक, बैठने की वस्तु (यथा–कम्बल, चटाई इ०), योग का ढंग विशेष, निवास, डेरा, नितम्ब, चूतड़, महावत के बैठने का हाथी का स्कन्ध, शत्रु के सम्मुख सेना का स्थिर रहना; (मुहा.) –उखड़ना–जमकर न बैठ सकना, स्थान छूटना; –उठना–स्थान छूटना; –छोड़ना–उठकर चल देना; –जमना–एक ही आसन में जमकर बैठना; –जमाना–अडिग भाव से बैठना; –डिगना, डोलना–अपनी स्थिति का डगमगाना; –देना–आदरपूर्वक बैठाना; –बाँधना–जाँघों से जकड़ना; –मारना, –लगाना–आसन जमाना।
आसना–(हिं. क्रि. अ.) उपस्थित रहना, होना, अस्तित्व रहना।
आसनी–(सं. स्त्री.) छोटा आसन।
आसन्न–(सं. वि.) निकटस्थ, समीप, लगा या सटा हुआ।
आसन्न-काल–(सं. पुं.) समीप का समय, मृत्युकाल।
आसन्नता–(सं. स्त्री.) समीपता।
आसन्न-प्रसवा–(सं. स्त्री.) शीघ्र बच्चा जननेवाली स्त्री।
आसन्नभूत–(सं. पुं.) वर्तमान भूतकाल की क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता तथा वर्तमान से उसकी समीपता विदित हो; यथा–मैंने पुस्तक उठाई है।
आसपास–(हिं. अव्य) समीप, इधर-उधर; (पुं.) पड़ोस।
आसमान–(फा. पुं.) आकाश, स्वर्ग; (मुहा) –के तारे तोड़ना–बहुत मुश्किल और दुस्साध्य काम करना; –छूना–बहुत ऊँचा या गगनचुंबी होना; –टूटना–एकाएक कोई बड़ी विपत्ति आ पड़ना; –पर चढ़ना या उड़ना–गर्वोन्मत होना, बहुत बड़प्पन का प्रदर्शन करना; –पर चढ़ाना–अति प्रशंसा करना; –पर थूकना–किसी महान की निंदा करना, अपने को निंदित करना; –फटना–देखें 'आसमान टूटना'; –सिर पर टूट पड़ना–अचानक कोई विपत्ति सिर पर आ पड़ना; –से गिरना या टपकना–(किसी चीज का) अपने आप उपस्थित होना; –से बातें करना–देखें 'आसमान छूना'।
आसमानी–(फा. वि.) आसमान का, आसमान संबंधी।
आसमुद्र–(सं. अव्य.) समुद्र पर्यन्त, समुद्र के तट तक।
आसय–(हिं. पुं.) देखें 'आशय'।
आसर–(हिं. पुं.) आशर, राक्षस।
आसरना–(हिं. क्रि. स.) आश्रय लेना, सहारा लेना।
आसरा–(हिं. पुं.) आशा, भरोसा, अवलम्ब, सहारा, रक्षा, शरण, साहाय्य सहायक, भरण-पोषण की आशा; (मुहा.) –ताकना (देखना)–प्रतीक्षा करना, राह देखना।
आसव–(सं. पुं.) फलों के रस को निचोड़कर बनाया हुआ मद्य; गुड़, या चीनी की ताजी शराब, अरिष्ट।
आसा–(हिं. पुं.) आशा, उम्मीद, सोना चाँदी मढ़ा हुआ डंडा जिसको चोबदार उत्सव में लेकर आगे-आगे चलते हैं।
आसाढ़–(हिं. पुं.) देखें 'आषाढ़'।
आसादन–(सं. पुं.) प्राप्ति, स्थापन।
आसादित–(सं. वि.) प्राप्त, संपादित लगाया हुआ।
आसान–(फा. वि.) सहज, सरल।
आसानी–(फा. स्त्री.) सरलता।
आसाम–(पुं.) भारत का एक राज्य।
आसामी–(हिं. वि.) आसाम देश का; (स्त्री.) आसाम देश की भाषा; (पुं.) आसाम का निवासी।
आसावरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की कबूतरी, रागिणी विशेष, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
आसिक–(हिं. वि.) देखें 'आंशिक'।
आसिक्त–(सं. वि.) भिगाया हुआ, सींचा हुआ, सिंचित।
आसिख–(हिं. स्त्री.) देखें 'आशिष'।
आसिन–(हिं. पुं) आश्विन मास, क्वार का महीना।
आसीन–(सं. वि.) उपविष्ट, बैठा हुआ, विराजमान।
आसीरु–(हिं. पुं.) आशीर्वाद।
आसीसा–(हिं. पुं.) तकिया।
आसु–(हिं. सर्व.) इसका; (अव्य.) शीघ्र, जल्दी।
आसुग–(हिं. पुं.) देखें 'आशुग'।
आसुतोख–(हिं. पुं.) देखें 'आशुतोष'।
आसुर–(सं. वि.) असुर संबंधी, पैशाची।
आसुर विवाह–(सं. पुं.) वह विवाह जो कन्या के माता-पिता को शुल्क देकर किया जावे।
आसुरी–(सं. वि.) असुर संबंधी, राक्षसी; –माया–(स्त्री.) राक्षसों की चाल-ढाल, राक्षस की स्त्री।
आसुरीय–(सं. वि.) राक्षस संबंधी।
आसेक–(सं. पुं.) वृक्ष को जल से थोड़ा सींचना, भिगाना।
आसेध–(सं. पुं.) रोक रखना।
आसेवित–(सं. वि.) बारंबार सेवा किया हुआ, सतत सेवित।

आसोज–(हिं. पुं.) आश्विन मास, क्वार का महीना।
आसौं–(हिं. अव्य.) इस वर्ष इस साल।
आस्कंद–(सं. पुं.) आक्रमण, झिड़की।
आस्कंदन–(सं. पुं.) देखें 'आस्कंद'।
आस्कंदी–(सं. वि.) आक्रमण करनेवाला, झपटनेवाला।
आस्तर–(सं. पुं.) हाथी की झूल, बिछौना, चटाई, एक अस्त्र विशेष।
आस्तरण–(सं. पुं.) विस्तर, बिछौना, पलंग, हाथी की पीठ पर की झूल।
आस्तार–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव।
आस्तिक–(सं. वि.) ईश्वर और परलोक का अस्तित्व माननेवाला, धार्मिक।
आस्तिकता–(सं. स्त्री.) वेद, ईश्वर तथा परलोक में विश्वास।
आस्तिकपन–(हिं.पुं.) देखें 'आस्तिकता'।
आस्तिक्य–(सं. पुं.) देखें 'आस्तिकता'।
आस्तीक–(सं. पुं.) जरत्कारु मुनि के पुत्र जिन्होंने जनमेजय के सर्प-यज्ञ में तक्षक का प्राण बचाया था।
आस्तीर्ण–(सं.वि.) विस्तीर्ण, फैला हुआ।
आस्तेय–(सं. पुं.) अस्तेय, साहूकारी।
आस्था–(सं. स्त्री.) आलम्बन, सहारा, श्रद्धा, स्थिति, यत्न, आदर, सभा।
आस्थान–(सं. पुं.) विश्राम-स्थान, बैठने की जगह, सभा।
आस्थान-गृह–(सं.पुं.) सभा-भवन।
आस्थापन–(सं.पुं.) अच्छी तरह से स्थापन।
आस्थायिका–(सं. स्त्री.) सभा।
आस्थायी–(हिं. स्त्री.) गीत का टेक जो दोहराया जाता है।
आस्थित–(सं. वि.) स्थित, प्राप्त, आश्रित, विस्तृत।
आस्थिति–(सं. स्त्री.) स्थिति, ठहरने का स्थान, हालत।
आस्पंदन–(सं. पुं.) कम्पन, कँपकँपी।
आस्पद–(सं. पुं.) स्थान, पद, काम, प्रतिष्ठा, प्रमुत्व, अवलंबन, सहारा, ठहरने का स्थान।
आस्फालन–(सं. पुं.) फटकार, फड़फड़ाहट, दम्भ, गर्व।
आस्फालित–(सं. वि.) फड़फड़ाया हुआ, रगड़ा हुआ।
आस्फोट–(सं. पुं.) मदार का वृक्ष।
आस्फोटन–(सं.पुं.) कुश्ती में ताल ठोंकने का शब्द, कम्पन, फड़फड़ाहट।
आस्यंदन–(सं.पुं.) बहना, स्खलित होना।
आस्य–(सं. पुं.) मुख, मुँह, आकृति।
आस्र–(सं. पुं.) रुधिर, लोहू।
आस्राव–(सं. पुं.) क्षत, बहाव।
आस्वनित–(सं. वि.) शब्द किया हुआ।
आस्वाद–(सं. पुं.) रस, स्वाद, रस का अनुभव, मजा।
आस्वादक–(सं. वि.) स्वाद लेनेवाला।
आस्वादन–(सं. पुं.) आस्वाद लेना।
आस्वादनीय–(सं. वि.) चखने योग्य।
आस्वादित–(सं. वि.) स्वाद लिया हुआ, चखा हुआ।
आह–(हिं. अव्य.) हाय; (स्त्री.) शोक, पीड़ा, दुःख, खेद, दीर्घ श्वास, ठंडी साँस, शोकसूचक शब्द; (मुहा.)–पड़ना–किसी को क्लेश पहुँचाने का फल मिलना; –लेना–कष्ट देना, सताना।
आहक–(सं. पुं.) नाक सूजने का रोग।
आहट–(हिं. स्त्री.) चलने में पैर या दूसरे अंग से उत्पन्न शब्द, पैर की खटक, खटका, वह शब्द जिससे किसी स्थान में किसी के रहने का अनुमान हो, टोह, पता; (मुहा.)–लेना–आहट पाकर सचेत रहना।
आहत–(सं. वि.) चोट खाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ, मिथ्या कहा हुआ; (पुं.) ढोल, नवीन वस्त्र।
आहति–(सं. स्त्री.) आघात, चोट, मार-पीट, आगमन, गुणन, मर्दन।
आहनन–(सं.पुं.) ताड़न, मारपीट, पशुवध।
आहर–(सं.पुं.) उच्छ्वास, आह, ठंडी साँस।
आहरण–(सं. पुं.) हरना, छीनना, अपहरण, ग्रहण, छीना-छीनी, आयोजन, किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।
आहरणीय–(सं. वि.) आयोजन करने योग्य, छीने जाने योग्य।
आहरन–(हिं. स्त्री.) स्थूणा, लोहार या सोनार की निहाई।
आहरी–(हिं. स्त्री.) छोटा तालाब, थाला, जलागार जिसमें बैल इत्यादि पानी पीते हैं।
आहर्ता–(सं. वि.) हरण करनेवाला, लानेवाला, लेनेवाला।
आहला–(हिं. पुं.) पानी की बाढ़।
आहव–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई, ललकार।
आहवन–(सं. पुं.) यज्ञ, हवन, होम, अच्छी तरह से हवन करना।
आहवनीय–(सं. पुं.) यज्ञ में जलनेवाली अग्नि; (वि.) हवन करने योग्य।
आहा–(हिं. अव्य.) हर्ष तथा आश्चर्य-सूचक शब्द।
आहार–(सं. पुं.) भोजन-द्रव्य, खाने की वस्तु, भोजन, अन्न।
आहारक–(सं. वि.) लानेवाला।
आहारपाक–(सं. पुं.) भोजन का पचना।
आहार-विरह–(सं. पुं.) भोजन का कष्ट, रोटी का लाला।
आहार-विहार–(सं. पुं.) खाना-पीना आदि शारीरिक व्यवहार, रहन-सहन।
आहार-शुद्धि–(सं. स्त्री.) भक्ष्य अन्नादि का शोधन।
आहारार्थी–(सं. वि.) आहार के लिये भिक्षा माँगनेवाला।
आहारी–(सं. वि.) आहार करनेवाला, भोजन करनेवाला।
आहार्य–(सं. वि.) भोजन करने योग्य, व्याप्य, कृत्रिम, बनावटी, खाने योग्य, समझने योग्य, लाने योग्य, औपासनिक अग्नि, नाटक का सुन्दर अभिनय।
आहार्याभिनय–(सं.पुं.) नाटक का ऐसा अभिनय जिसमें कोई पात्र न कुछ कहता-सुनता है और न अंग-संचालन करता है, केवल उसकी वेष-भूषा से ही काम चल जाता है।
आहाव–(सं.पुं.) जल का कुंड, पात्र, अग्नि।
आहि–(हिं. क्रि. अ.) 'आसना' क्रिया का वर्तमान काल का रूप।
आहिक–(सं. पुं.) केतु ग्रह।
आहित–(सं. वि) रक्खा हुआ, डाला हुआ, स्थापित, रक्षित, उत्पन्न किया हुआ, अर्पण किया हुआ, धरोहर रक्खा हुआ; (पुं.) अपने स्वामी से एक साथ अधिक धन लेकर उसकी सेवा करनेवाला दास।
आहुत–(सं. पुं.) आतिथ्य, सत्कार, बलि, वैश्वदेव, मनुष्य यज्ञ।
आहुति–(सं. स्त्री.) मन्त्र द्वारा अग्नि में घृतादि फेंकना।
आहुती–(हिं. स्त्री.) देखें 'आहुति'।
आहूत–(सं. वि.) बुलाया हुआ, पुकारा हुआ, निमन्त्रित।
आहूति–(सं. स्त्री.) पुकार, बुलाहट, घृत, तिल इत्यादि से हवन।
आहृत–(सं. वि.) लाया हुआ।
आहै–(हिं. क्रि. अ.) है, 'आसना' क्रिया का वर्तमान काल एक वचन का रूप।
आह्निक–(सं. पुं.) दैनिक, प्रतिदिन का।
आह्लाद–(सं. पु.) आनन्द, प्रसन्नता।
आह्लादक–(सं. पुं.) प्रसन्न करनेवाला।
आह्लादित–(सं.वि.) आनन्दयुक्त, खुश।
आह्लादी–(सं. वि.) आनन्दकारी।
आह्व–(सं. पुं.) नाम, संज्ञा, पुकारने का नाम, पण लगाकर भेड़े, तीतर, बटेर आदि की लड़ाई करना।
आह्वर–(सं. वि.) कुटिल, टेढ़ा।

आह्वान–(सं. पुं.) निमन्त्रण, पुकार, बुलावा, देवता का निमन्त्रण, ललकार।
आह्वायक–(सं. पुं.) दूत, हरकारा।

इ

इ–हिन्दी वर्णमाला का तीसरा स्वर वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है तथा विवृत प्रयत्न है। इसका दीर्घ होता है; (पुं) इन्द्र।
इंग–(सं. पुं.) ज्ञान, इंगित, इशारा।
इंगन–(सं. पुं.) हृदय का भाव, इशारा।
इंगनी–(हि.स्त्री.) जिसको अंग्रेजी में मैंगनीज कहते हैं, यह एक प्रकार का धातु का मोरचा होता है जो कांच के हरेपन को हटाने के काम में लाया जाता है।
इंगलिस्तान–(अ. पुं.) इंगलैंड।
इंगलिस्तानी–(अ. वि.) इंगलैंड का।
इंगित–(सं. वि.) अभिप्राय का प्रकाशन, संकेत, अन्वेषण, खोज, इशारा; (वि.) संकेत किया हुआ।
इंगितज्ञ–(स.पुं.) संकेत समझनेवाला।
इंगुदी–(सं. स्त्री.) हिंगोट का वृक्ष, मालकँगनी।
इंगुर–(हि. पुं.) देखें 'इंगुर'।
इंगुरौरी–(हि. स्त्री.) ईंगुर रखने की डिबिया, सिन्धोरा।
इंगुरौटी–(हि. स्त्री.) ईंगुर या सेंदुर रखने की डिबिया।
इंगुवा–(हि.पुं.) देखें 'इंगुदी'।
इंचना–(हि.क्रि.अ.) आकर्षित होना, खिचना।
इंजन–(अं. पुं.) कल, यंत्र, रेल का इंजन।
इंजीनियर–(अं. पुं.) मकान, नहर, पुल आदि बनानेवाला।
इंजीनियरिंग–(अं. पुं.) इंजीनियर का काम, यंत्र-निर्माण विद्या।
इंजील–(यू. स्त्री.) ईसाइयों की धर्मपुस्तक, बाइबिल।
इंडहर–(हि. पुं.) उड़द और चने की दाल का बना हुआ एक प्रकार का सालन।
इंडुरी–(हि. स्त्री.) गेंडुरी, कुंडली।
इंडुवा–(हि. पुं.) कपड़ा लपेट कर बनाई हुई गेंडुरी जिसको माथे पर रखकर उस पर बोझ ले जाते हैं।
इंति(त)खाब–(अ. पुं.) खसरा-खतौनी की पटवारी द्वारा लिखित नकल।
इंति(त)जाम–(अ.पुं.) प्रबन्ध, व्यवस्था।
इंति(त)जामी–(अ. वि.) इंतजाम करनेवाला, प्रबंधक।
इंति(त)जार–(अ.पुं.) प्रतीक्षा, आसरा, राह देखना।
इंदारा–(हि. पुं.) कूप, कुआँ।
इंदिया–(सं. पुं.) मत, अभिप्राय।
इंदिरा–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, श्री।
इंदीवर–(सं. पुं.) नील कमल।
इंदु–(सं. पुं.) चन्द्रमा, एक की संख्या, कपूर; –कर (सं.पुं) चन्द्र-किरण; –कला (सं. स्त्री.) चन्द्रमा की कला; –मणि,–रत्न-(सं. पुं.) चंद्रकांत मणि; –भ–(सं. पुं.) मृगशिरा, नक्षत्र; –मती–(सं.स्त्री.) पूर्णिमा, राजा अज की पत्नी; –मुखी–(सं. स्त्री.) पद्मिनी; –वदना–(सं. स्त्री.) चन्द्रमुखी, चौदह अक्षरों का एक छन्द; –शेखर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
इंदुर–(सं. पुं.) मूषक, चूहा।
इंद्र–(सं. पुं.) देवराज, देवताओं के राजा, (चौदहों इन्द्रों के नाम ये हैं–इन्द्र, विश्वभुक्, विपश्चित्, विभु, प्रभु, शिखि, मनोजव, तेजस्वी, वलिर्माव्य, त्रिदिव, सुशान्ति, सुकीर्ति, ऋतधाता और दिवस्पति, इन्द्र का घोड़ा उच्चैः-श्रवा, इन्द्र का सारथी मातलि, इन्द्र का महल वैजयन्त, इन्द्र का बागीचा नन्दनवन, इन्द्र का भण्डारी–कुवेर); –गुप्त–(सं. पुं.) उशीर, खस; –गोप–(सं. पुं.) बीरबहूटी नाम का कीड़ा; –चाप–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष; –जव–(हि. पुं.) देखें 'इंद्रयव'; –जाल–(सं. पुं.) छल, धोखा, माया, बाजीगरी; –जालिक–(सं. पुं.) बाजीगर, मायावी; –जित्–(सं. पुं.) मेघनाद, रावण का बेटा; –जीत–(हि. पुं.) देखें 'इंद्रजित्'; –तरु–(सं. पुं.) अर्जुन वृक्ष; –त्व–(सं. पुं.) इन्द्र की शक्ति; –दमन–(सं. पुं.) नदी में बाढ़ आने पर इसका किसी निर्धारित स्थान पर पहुँचना, जो एक पर्व समझा जाता है; –धनुष–(सं. पुं.) वर्षाकाल में सूर्योदय के समय आकाश में देख पड़ता हुआ सात रंगों का बना हुआ एक अर्धवृत्त; –नील–(सं. पुं.) मरकत-मणि, नीलम; –पुरी–(सं. स्त्री.) अमरावती; –प्रस्थ–(सं. पुं.) पाण्डवों का खाण्डवारण्य के मध्य में बसाया हुआ एक नगर; –यव–(सं. पुं.) कुटज का बीज, इन्द्रजौ; –लोक–(सं. पुं.) अमरावती, स्वर्ग, इन्द्र का स्थान; –वंशा-(सं. स्त्री.) एक वृत्त विशेष जिसके चार पाद होते हैं और प्रत्येक पाद में बारह वर्ण रहते हैं; –वज्रा–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसमें चार पाद होते हैं और प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं; –वधू–(सं. स्त्री.) वीरबहूटी नामक कीड़ा; –वारुणी–(सं. स्त्री.) इन्द्रायन लता; –शत्रु–(सं. पुं.) वृत्रासुर; –सुत–(सं. पुं.) अर्जुन, बाली; –सेना–(सं. स्त्री.) नल की कन्या का नाम।
इंद्राणी–(सं. स्त्री.) इन्द्र की स्त्री, शची, दुर्गाशक्ति, छोटी इलायची, इन्द्रायन।
इंद्रायन–(हि. पुं.) एक लाल फल की लता, इनारुन।
इंद्रायुध–(सं. पुं.) इन्द्र का वज्र, इन्द्रधनुष, इद्रचाप।
इंद्राशन–(सं. पुं.) गुंजा, घुंघची।
इंद्रासन–(सं. पुं.) इन्द्र का सिंहासन, राजा का सिंहासन।
इंद्रिय–(सं.स्त्री.) शारीरिक शक्ति, बल, शुक्र, शरीर के अवयव जिनके द्वारा रूप, रस, गन्ध, शब्द तथा स्पर्श का ज्ञान होता है, ज्ञानेन्द्रिय, भिन्न-भिन्न कर्म करने के अंग, पाँच की संख्या, कर्मेन्द्रिय, गुह्य भाग; –ज–(सं. वि.) इन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाला; –जित्–(सं. वि.) इन्द्रियों को वश में करनेवाला; –ज्ञान–(सं. पुं.) इन्द्रियजनित अथवा प्रत्यक्ष ज्ञान; –दमन–(सं. पुं.) इन्द्रियों को वश करने का कार्य; –निग्रह–(सं. पुं.) देखें 'इंद्रियदमन'।
इंद्रियागोचर, इंद्रियातीत–(सं.वि.) अज्ञेय।
इंद्री–(हि. पुं.) देखें 'इंद्रिय'; –जुलाब–(हि. पुं.) मूत्र लानेवाली औषधि।
इंद्रोपल–(सं. पुं.) नीले रंग का हीरा।
इंधन–(सं. पुं.) आग जलाने की लकड़ी, तृण इत्यादि।
इकंग–(हि. वि.) एक ओर का।
इकंगा–(हि. वि.) अकेला, निर्जन।
इक–(हि. पुं.) एक संख्या, एक।
इकआँक–(हि. अव्य.) अवश्य, निःसंदेह।
इकइस–(हि. वि.) देखें 'इक्कीस'।
इकटक–(हि. वि.) स्थिर, अचल, टकटकी लगाया हुआ।
इकट्ठा–(हि. वि.) एकत्र, मिला हुआ; (अव्य.) साथ मिलकर।
इकतरफा–(हि. वि.) एक ओर का; (अव्य.) एक तरफ से।
इकतरा–(हि. पुं.) एक दिन के बाद

आनेवाला ज्वर।
इकताई–(हिं. स्त्री.) एकता, अकेलापन।
इकतान–(हिं. वि.) सदृश, अभिन्न।
इकतार–(हिं. वि.) समान, बराबर।
इकतारा–(हिं. पुं.) सितार के समान एक ही तार का बाजा, हाथ से बुना हुआ एक प्रकार का वस्त्र।
इकताला–(हिं. वि.) देखें 'एकताला'।
इकतालीस–(हिं. वि., पुं.) चालीस और एक, यह संख्या, ४१।
इकतीस, इकत्तीस–(हिं. वि., पुं.) तीस और एक (की संख्या), ३१।
इकपेचा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की पगड़ी।
इकबारगी–(हिं. अव्य.) देख 'एकबारगी'।
इकरार–(अ. पुं.) हाँ करना, स्वीकृति, वचन, प्रतिज्ञा; **–नामा**–(पुं.) प्रतिज्ञा-पत्र।
इकलड़ा–(हिं. वि.) एक ही डोरी में बँधा हुआ; (पुं.) एक लर का हार।
इकलाई–(हिं. स्त्री.) एक पाट की बनी हुई महीन वस्त्र की चादर, सारी आदि, अकेलापन।
इकलोई–(हिं. वि., स्त्री.) एक ही टुकड़े की बनी हुई (चादर आदि)।
इकलौता–(हिं. वि.) (स्त्री. इकलौती) अपने माँ-बाप का एक ही (पुत्र), अकेला, बिना भाई-बहिन का।
इकल्ला–(हिं. वि.) अकेला, इकहरा।
इकवाई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की निहाई।
इकसठ–(हिं. वि., पुं.) साठ और एक, ६१।
इकसर–(हिं. वि.) अकेला; (अव्य.) अकसर, प्राय:।
इकसार–(हिं. वि.) समान, सदृश, बराबर; (क्रि. प्र.) **–करना**–समतल करना, बराबर करना।
इकहत्तर–(हिं. वि., पुं.) सत्तर और एक, ७१।
इकहरा–(हिं. वि.) अकेला, एक ही टुकड़े या परत का।
इकहाई–(हिं. अव्य.) साथ-साथ, सब मिलकर, एकबारगी।
इकांत–(हिं. वि.) देखें 'एकांत'।
इकाई–(हिं. स्त्री.) गिनती में पहला अंक, दो या अधिक अंकों से बनी संख्या में पहला अंक, वह मान या माप जो नाप-जोख में काम दे; जैसे–गज, सेर आदि।
इकार–(सं. पुं.) 'इ' स्वर (से युक्त)।
इकारांत–(सं. वि.) (शब्द) जिसका आखिरी वर्ण 'इ' हो।
इकैठ–(हिं. वि.) इकट्ठा।
इकोतर–(हिं. वि.) एक अधिक।
इकौंज–(हिं. स्त्री.) केवल एक बार सन्तान उत्पन्न करनेवाली स्त्री।
इकौता–(हिं. पुं.) अँगुलियों में होनेवाला फोड़ा।
इकौना–(हिं. पुं.) मिश्रित अन्न।
इकौनी–(हिं. वि., स्त्री.) अभिन्न।
इकौसा–(हिं. वि.) पृथक्, अलग।
इक्का–(हिं. वि.) अकेला, अनोखा, निराला; (पुं.) कान की बाली जिसमें एक मोती रहता है, अकेला लड़नेवाला योद्धा, दुपहिया गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जुतता है, ताश का पत्ता जिसमें एक ही बूटी होती है; **–दुक्का**–(हिं. वि.) दो-एक, अकेला-दुकेला।
इक्कावन–(हिं. वि.) देखें 'इक्यावन'।
इक्कासी–(हिं. वि.) देखें 'इक्यासी'।
इक्की–(हिं. स्त्री.) एक बूटी का ताश, इक्का।
इक्कीस–(हिं. वि., पुं.) बीस और एक, बीस और एक की संख्या, २१। (मुहा.) **–होना**–बढ़कर हो जाना।
इक्यानवे–(हिं. वि., पुं.) नब्बे और एक (की संख्या), ९१।
इक्यावन–(हिं. वि., पुं.) पचास और एक (की संख्या), ५१।
इक्यासी–(हिं. वि., पुं.) अस्सी और एक, अस्सी और एक की संख्या, ८१।
इक्षु–(सं. पुं.) ईख, गन्ना।
इक्षुकंडिका–(सं. स्त्री.) काकोली, काँस, मूँज।
इक्षुकीय–(सं. वि.) ईख संबंधी।
इक्षुपाक–(सं. पुं.) गुड़।
इक्षुभक्षिका–(सं. स्त्री.) ईख पेरने का कोल्हू, एक प्रकार का कीड़ा।
इक्षु-रस–(सं. पुं.) ईख का रस।
इक्षु-सार–(सं. पुं.) शीरा, गुड़।
इक्ष्वाकु–(सं. पुं.) वैवस्वत मनु के पुत्र, एक सूर्यवंशी राजा का नाम।
इख्तियार–(अ. पुं.) पसंद करना, ग्रहण, अधिकार, वश।
इख्तियारी–(अ. वि.) इख्तियार संबंधी।
इगारह–(हिं. वि., पुं.) देखें 'ग्यारह'।
इग्यारह–(हिं. वि., पुं.) दस और एक, ११।
इच्छक–(सं. पुं.) इच्छायुक्त पुरुष; (वि.) अभिलाषी।
इच्छना–(हिं. क्रि. स.) इच्छा या लालसा करना, चाहना।
इच्छा–(सं. स्त्री.) वांछा, चाह, लालसा, उत्साह, अभिलाषा; **–चारी**–(वि.) अपनी इच्छानुसार चलनेवाला; **–दान**–(पुं.) मुँहमाँगी वस्तु का दान; **–निवृत्ति**–(स्त्री.) इच्छा का दमन; **फल**–(पुं.) गणित में फल की उत्पत्ति; **–भोजन**–(पुं.) इच्छा के अनुसार भोजन पसन्द का खाना।
इच्छानुगत–(सं. वि.) स्वतन्त्र, मनमाना।
इच्छान्वित–(सं. वि.) इच्छा-युक्त।
इच्छित–(सं. वि.) वांछित, चाहा हुआ।
इच्छु, इच्छुक–(सं. वि.) इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला।
इजराय–(अ. पुं.) डिगरी जारी करना।
इजलास–(अ. पुं.) बैठना, बैठक (हाकिम या अधिकारी का), न्यायालय।
इजहार–(अ. पुं.) जाहिर करना, प्रकट करना, बयान।
इज्जत–(अ. स्त्री.) मान, प्रतिष्ठा, आदर; **–दार**–(वि.) प्रतिष्ठित; (मुहा.) **–उतारना, बिगाड़ना या लेना**–अपमानित करना।
इज्य–(सं. पुं.) पूज्य, पूजनीय व्यक्ति, विष्णु, परमेश्वर।
इज्या–(सं. स्त्री.) यज्ञ, दान, पूजा।
इठलाना–(हिं. क्रि. अ.) इतराना, गर्व के साथ चलना, स्पष्ट न बोलना, ठसक दिखलाना, टेढ़ी बात बोलना, मटकना, झगड़ा लगाना।
इठलाई, इठलाहट–(हिं. स्त्री.) इठलाने का भाव, ठसक।
इठाई–(हिं. स्त्री.) अभिलाषा, चाह, प्रीति, मित्रता।
इड़–(सं. स्त्री.) भूमि, अन्न, वर्षाकाल।
इड़ा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि, गाय, सरस्वती, शीघ्रता, स्तुति, सन्तोष, भोजन, अन्न, हवि, आकाश, देवता, पार्वती, स्वर्ग, दक्ष प्रजापति की पुत्री, हठयोग के अनुसार बाईं ओर की रक्तवाही नाड़ी।
इत–(हिं. अव्य.) इस ओर, इधर, यहाँ।
इत-उत–(हिं. अव्य.) इधर-उधर, जहाँ-तहाँ; (पुं.) छल, कपट।
इतकाद–(अ. पुं.) विश्वास।
इतना–(हिं. वि) (स्त्री. इतनी) इस मात्रा का; (मुहा.) **इतने में**–इसी बीच या अरसे में।
इतर–(सं. वि.) अन्य, दूसरा, अवशेष, बाकी, नीच, साधारण; (हिं. पुं.) अतर; **–जन**–(पुं.) सामान्य लोग, साधारण जन।
इतराज–(अ. पुं.) विरोध, आपत्ति।
इतराजी–(हिं. वि.) विरोध करनेवाला।
इतराना–(हिं. क्रि. अ.) अभिमान दिखलाना, ठसक करना, इठलाना।
इतराहट–(हिं. स्त्री.) अभिमान, घमंड, दर्प, ठसक।
इतरेतर–(सं. वि.) [illegible], परस्पर।

इतरेतर-योग–(सं. पुं.) परस्पर संबंध।
इतरेतराभाव–(सं.पुं.) अन्योन्याभाव, एक का गुण दूसरे में न होना।
इतरेतराश्रय–(सं.पुं.) तर्क में वह दोष जिसमें एक पदार्थ की सिद्धि दूसरे पदार्थ की सिद्धि पर निर्भर रहती है तथा उस पदार्थ की सिद्धि भी पहले पदार्थ की सिद्धि पर निर्भर होती है।
इतरौंहा–(हिं. वि.) इठलानेवाला, इतरानेवाला, गर्वसूचक।
इतवार–(हिं. पुं.) आदित्यवार, रविवार, एतवार।
इतस्ततः–(सं. अव्य.) इधर-उधर।
इताति–(हिं.स्त्री.) अधीनता।
इति–(सं.अव्य.) समाप्तिसूचक अव्यय; (स्त्री.) पूर्णता, समाप्ति।
इतिकर्तव्य–(सं. पुं.) नियमानुसार करने योग्य कर्म, कर्तव्य।
इतिकर्तव्यता–(सं. स्त्री.) धर्म।
इतिमात्र–(सं. वि.) केवल इतना ही।
इतिवृत्त–(सं. पुं.) कथा, कहानी।
इतिहास–(सं. पुं.) प्राचीन प्रसिद्ध घटनाओं का काल-क्रम के अनुसार वर्णन, प्राचीन आख्यान।
इतेक–(हिं. वि.) इतना।
इतो–(हिं. वि.) इतना, इस मात्रा में।
इत्ता, इत्तो–(हि. वि.) देखें 'इतना'।
इत्थं–(सं. अव्य.) इस प्रकार, इस तरह से; –भाव–(सं.पुं.) ऐसी अवस्था; –भूत–(सं. पुं.) ऐसा बना हुआ, ऐसा।
इत्यमेव–(सं. वि.) ऐसा ही; (अव्य.) इस प्रकार से।
इत्यर्थ–(सं. अव्य.) इस निमित्त।
इत्यादि–(सं. अव्य.) इसी प्रकार, यही सब, अन्य।
इत्यादिक–(सं.वि.) इसी प्रकार से दूसरा।
इत्युक्त–(सं. वि.) ऐसा कहा हुआ।
इदं–(सं. सर्व.) यह।
इदानीं–(सं. अव्य.) अधुना, अभी, अब।
इद्ध–(सं. वि.) प्रदीप्त, दग्ध, जला हुआ, निर्मल।
इधर–(हिं. अव्य.) यहाँ, इस ओर, इस दुनिया में; (मुहा.)–उधर (अव्य.)–यहाँ-वहाँ, चारों तरफ, नीचे-ऊँचे; –उधर करना–उलट-पलट करना, अन्य स्थान में रख देना, तितर-बितर करना, हटाना, टालना; –उधर की बात–असंबद्ध वार्तालाप; –उधर में रहना–व्यर्थ समय नष्ट करना; –उधर होना–खो जाना, चूकना; –की दुनिया उधर होना–अनहोनी बात होना; –या उधर–इस पक्ष में या उस पक्ष में।
इन–(हिं. सर्व.) 'इस' का बहुवचन।
इनकलाब–(अ. पुं.) भारी सामाजिक उलट-फेर, क्रान्ति; –जिंदाबाद–(पद) क्रांति चिर जीवित रहे।
इनकार–(अ. पुं.) अस्वीकृत करना, नाहीं करना, मुकरना।
इनकारी–(अ. वि.) नकारात्मक, अस्वीकृति-सूचक।
इनाम–(अ. पुं.) पुरस्कार।
इनायत–(अ. स्त्री.) कृपा, अनुग्रह।
इनारा–(हिं. पुं.) कूप, कुआँ।
इनारुन–(हिं. पुं.) इन्द्रायण का फल।
इनेगिने–(हिं. वि. बहु.) अल्प, थोड़े, चुने हुए, गिने-गिनाये।
इन्नर–(हिं. पुं.) तुरत की ब्याई हुई गाय का मसाला मिलाया हुआ दूध।
इब्राहीम–(अ. पुं.) यहूदी जाति के आदि पुरुष, ईसाई धर्मानुसार एक पैगंबर।
इभ–(सं. पुं.) हाथी, आठ की संख्या; –राज–(पुं.) ऐरावत हाथी।
इमदाद–(अ. पुं.) सहायता, मदद।
इमदादी–(अ. वि.) मदद पानेवाला, सहायता-प्राप्त।
इमरती–(हिं. स्त्री.) उड़द की पीठी की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।
इमली–(हिं. स्त्री.) एक बड़ा वृक्ष जिसका फल और पत्तियाँ खट्टी होती हैं, (इसके फल के बीज को चियाँ कहते हैं)।
इमामदस्ता–(हिं. पुं.) लोहे या पीतल का खरल, उलूखल।
इमामबाड़ा–(हिं. पुं.) ताजिया रखने और गाड़ने का स्थान।
इमामा–(हिं. पुं.) पगड़ी।
इमारत–(अ. स्त्री.) बड़ा पक्का मकान, महल, प्रासाद।
इमि–(हिं. अव्य.) इस तरह से, ऐसे।
इम्तिहान–(अ. पुं.) परीक्षा।
इयत्ता–(सं. स्त्री.) इतना परिमाण, अन्दाज।
इरसी–(हिं. स्त्री.) चक्र का धुरा।
इरा–(सं. स्त्री.) भूमि, रात्रि, जल, अन्न, शराब, सरस्वती, कश्यप ऋषि की पत्नी।
इराक–(पुं.) पश्चिमी एशिया का एक मुस्लिम राज।
इराकी–(हिं. वि.) इराक संबंधी; (पुं.) इराक का निवासी।
इरादा–(अ. पुं.) संकल्प, इच्छा।
इरावती–(सं. स्त्री.) ब्रह्म देश की प्रधान नदी, एक पौधा।
इर्द-गिर्द–(अ.अव्य.) आसपास, चारों ओर
इर्षना–(हिं. स्त्री.) एषण, प्रबल इच्छा।
इलजाम–(अ. पुं.) अपराध, कसूर।
इला–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, वाक्य, गाय, पार्वती, सरस्वती, वाणी।
इलाका–(अ. पुं.) जमीदारी, रियासत।
इलाची–(हिं. पुं.) एक प्रकार का रेशम और सूत मिला हुआ वस्त्र; (स्त्री.) देखें 'इलायची'।
इलाज–(अ. पुं.) चिकित्सा।
इलाम–(हि.पुं.) सूचनापत्र, आज्ञा, हुक्मनामा।
इलायची–(हिं. स्त्री.) एला, इलाची, एक सदाबहार पौधा जिसके फल के बीज में सुगन्ध होती है, यह मसालों में पड़ती है; –दाना–(हिं. पुं.) इलाची का बीज, चीनी में पागा हुआ इलायची का दाना, लाचीदाना।
इलावृत्त–(सं. पुं.) जम्बूद्वीप के नव खण्डों में से चौथा।
इल्म–(अ.पुं.) ज्ञान, शास्त्र, विद्या, जानकारी
इल्मी–(हिं. वि.) इल्म संबंधी, गुणी।
इल्लत–(अ. स्त्री.) रोग, दोष, झंझट, दुर्व्यसन; (मुहा.)–पालना–कोई झंझट, बुरी आदत आदि लगना।
इल्ला–(हिं. पुं.) त्वचा के ऊपर निकली हुई मसे के तरह की फुन्सी, अर्बुद।
इव–(सं. अव्य.) सदृश, तरह, नाईं, इस प्रकार, समान।
इशारा–(अ. पुं.) संकेत, सैन; –(रे)-बाज–(पुं.) इशारा करनेवाला, इशा(रे)बाजी–(स्त्री.) इशारा करने की क्रिया या भाव।
इश्क–(अ. पुं.) प्रेम, प्रणय, यौन-प्रेम; –बाज–(वि.) प्रेमी, रसिक।
इश्ति(श्त)हार–(अ.पुं.) विज्ञापन, सूचना।
इश्ति(श्त)हारी–(अ. वि.) जिसक इश्तहार निकला हो, विज्ञप्त।
इषिका–(सं. स्त्री.) रंगसाज की बाल की बनी हुई कूँची।
इषु–(सं.पुं.) बाण, तीर; –कार–(पुं.) तीर बनानेवाला; –धर–(पुं.) तीर चलानेवाला, तीरंदाज; –धि–(स्त्री.) तूण, तरकस।
इष्ट–(सं.वि.) अभिलषित, प्रिय, वांछित, चाहा हुआ; (पुं.) इष्ट देवता, कुलदेवता, कृपा, अधिकार, विष्णु, शुभ कर्म, मित्र।
इष्टक–(सं. पुं.) ईंट।
इष्टका–(सं. स्त्री.) ईंट।
इष्टकारी–(सं. वि.) हितकारी, भलाई चाहनेवाला।

इष्टकाल–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार सन्तान के उत्पन्न होने का समय।
इष्टजन–(सं. पुं.) प्रिय व्यक्ति, प्रियतम।
इष्टतम–(सं. वि.) अतिशय प्रिय, बहुत प्यारा, प्रियतम।
इष्टतर–(सं. वि.) अधिक प्यारा।
इष्टता–(सं. स्त्री.), **इष्टत्व**–(सं. पुं) स्पृहणीयता, पसन्दगी।
इष्टदेव, इष्टदेवता–(सं. पुं.) आराध्य देवता, जो देवता बराबर पूजा जाता हो।
इष्टसाधन–(सं. पुं.) अभीष्ट की सिद्धि।
इष्टा–(सं. स्त्री.) हवन में लगाने की लकड़ी, यज्ञ-काष्ठ।
इष्टापत्ति–(सं. स्त्री.) इष्ट-सिद्धि, लाभ, फायदा, वांछित फल।
इष्टि–(सं. स्त्री.) यज्ञ, अभिलाषा, इच्छा, संग्रह, निमन्त्रण, बुलावा।
इष्टिका–(सं. स्त्री.) ईंट।
इस–(हिं. सर्व.) 'यह' शब्द का रूप विशेष जो विभक्ति जुड़ने पर हो जाता है; यथा–इसका, इसको आदि।
इसपात–(हिं. पुं.) कड़ा और पक्का लोहा।
इस पार–(हिं. अव्य.) इस ओर, इस तरफ।
इसबगोल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बीज जो औषध के रूप में प्रयोग होता है।
इसलिए–(हिं. अव्य.) इस कारण या वजह से।
इसायी–(हिं. वि.) देखें 'ईसाई'।
इसीका–(हिं. सर्व.) "यह" का सम्बन्ध कारक एकवचन रूप।
इसे–(हिं. सर्व.) इसको, इसके लिये।
इस्तिगासा–(अ. पुं.) न्याय की प्रार्थना, नालिश, अभियोग-पत्र।
इस्तिमरारी–(अ. वि.) चिरस्थायी; **–बंदोबस्त**–(पुं.) कृषि भूमि का चिरस्थायी बंदोबस्त या व्यवस्था।
इस्तिरी–(हिं. स्त्री.) कपड़े की तह जमाने का धोबी या दरजी का एक उपकरण; इससे कपड़े को चिकना बनाना; (हिं. स्त्री.) स्त्री, पत्नी।
इस्तीफा–(अ. पुं.) त्यागपत्र।
इह–(हिं. अव्य.) इस स्थान पर, यहाँ, इस लोक में, इस स्थान में, इस अवस्था में।
इहकाल–(सं. पुं.) वर्तमान समय, यह जिन्दगी, जीवन-काल।
इहलोक–(सं. पुं.) यह संसार।
इहवाँ–(हिं. अव्य.) इस स्थान पर, यहाँ।
इहसान–(हिं. पुं.) देखें 'एहसान'।
इहाँ–(हिं. अव्य.) यहाँ, इस स्थान में।
इहागत–(सं. पुं.) यहाँ पर आया हुआ।

ई

ई–हिन्दी वर्णमाला का चौथा स्वर वर्ण, यह इकार का दीर्घ रूप है। प्रत्यय जो विशेष रूप से विशेषण तथा विशेष्य बनाने में काम आता है; यथा–लक्ष्मी, गुणी, त्रिशूली आदि।
ईंगुर–(हिं. पुं.) सिन्दूर, सिंगरफ, (सौभाग्यवती स्त्रियाँ इसको अपनी माँग में भरती हैं।)
ईंग–(हिं. अव्य.) इस ओर।
ईंचना–(हिं. क्रि. स.) खींचना, ऐंठ लेना, बाँधना।
ईंट–(हिं. स्त्री.) साँचे में गीली मिट्टी को दबाकर बनाया हुआ टुकड़ा जो दीवार आदि बनाने के काम में आता है, ताश का एक रंग; **–कारी**–(हिं. स्त्री.) ईंट की जोड़ाई; (मुहा.) **–पत्थर**–(हिं. पुं.) कुछ नहीं; **–का छल्ला देना**–दीवार की मजबूती के लिए ईंट जुड़वाना; **–गढ़ना या पाथना**–ईंट बनाना; **–चुनना**–ईंट की जोड़ाई करना; **–से ईंट बजना**–मकान ढह जाना।
ईंटा–(हिं. पुं.) देखें 'ईंट'।
ईंडरी, ईंडुरी–(हिं. स्त्री.) गेंडुरी।
ईंडवा–(हिं. पुं.) गेंडुरी जिसको सिर पर रखकर बोझ उठाते हैं।
ईंडवी–(हिं. स्त्री.) पगड़ी।
ईंत–(हिं. पुं.) ईंट का टुकड़ा।
ईंदर–(हिं. पुं.) हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस के दूध से बनी हुई मिठाई।
ईंदुर–(हिं. पुं.) चूहा, मूसा।
ईंधन–(हिं. पुं.) इंधन, जलाने की लकड़ी, तृण, घास-फूस।
ईकार–(सं. पुं.) चतुर्थ वर्ण "ई"।
ईकारांत–(सं. वि.) (शब्द) जिसका आखिरी वर्ण 'ई' (ी) हो।
ईक्षक–(सं. पुं.) देखनेवाला मनुष्य।
ईक्षण–(सं. पुं.) दर्शन, देखना, आंख, चौकसी, जाँच, विचार।
ईक्षित–(सं. वि.) देखा हुआ, समझा हुआ।
ईख–(हिं. स्त्री.) इक्षु, गन्ना, ऊख।
ईखना–(हिं. क्रि. स.) देखना।
ईछन–(हिं. पुं.) ईक्षण, आंख।
ईछना–(हिं. क्रि स.) इच्छा करना, चाहना।
ईठ–(हिं. पुं.) इष्ट, मित्र।
ईठना–(हिं. क्रि. स.) इच्छा करना।
ईठि–(हिं. स्त्री.) इष्टि, प्रीति, चेष्टा, यत्न।
ईठी–(हिं. स्त्री.) बरछी, भाला।
ईडा–(सं. स्त्री.) स्तुति, प्रशंसा।
ईढ़, ईढ़ा–(हिं. स्त्री.) हठ।
ईढ़ी–(हिं. वि.) हठी।
ईंत–(हिं. स्त्री.) डाँस, वनमक्खी।
ईतर–(हिं. पुं.) इतरानेवाला, आत्मश्लाघा करनेवाला।
ईति–(सं. स्त्री.) झगड़ा, छूत का रोग, खेती को हानि पहुँचानेवाली आपत्ति; यथा–अधिक वर्षा, वर्षा न होना, टिड्डी लगना, चूहे लगना, पक्षियों का बढ़ना तथा दूसरे राजा का आक्रमण होना, पीड़ा, कष्ट, दुःख।
ईथर–(अं. पुं.) आकाशीय तत्त्व, व्योम।
ईद–(अ. स्त्री.) खुशी का दिन, मुसलमानों का त्योहार; **–गाह**–(पुं) वह मैदान जहाँ त्योहार के दिन मुसलमान लोग एकत्रित होकर नमाज पढ़ते हैं।
ईदुज्जुहा–(अ. स्त्री.) मुसलमानों का बकरीद त्योहार।
ईदुल-फितर–(अ. स्त्री.) रमजान की समाप्ति पर मनाया जानेवाला त्योहार।
ईदृक्–(सं. वि.) ऐसा, इस प्रकार का।
ईदृश–(सं. अव्य.) इस प्रकार, इस तरह।
ईप्सा–(सं. स्त्री.) अभिलाषा, वांछा, इच्छा।
ईप्सित–(सं. वि.) वांछित, चाहा हुआ।
ईबीसीबी–(हिं. स्त्री.) सीसी का शब्द, सिसकार, सीत्कार।
ईमन–(हिं. पुं.) एक रागिणी जो रात्रि के पहिले प्रहर में गाई जाती है।
ईमान–(अ. पुं.) आस्तिकता, सचाई, नीयत; **–दार**–(वि.) सच्चा, विश्वसनीय; **–दारी**–(स्त्री.) सच्चाई; (मुहा.) **–डिगना या बिगड़ना**–नीयत बिगड़ना; **–न रहना**–धर्म भ्रष्ट होना; **–में फर्क आना**–नीयत बिगड़ना।
ईरन–(अ. पुं.) पारस का देश।
ईरानी–(अ. वि.) ईरान संबंधी; (पुं.) ईरान का निवासी; (स्त्री.) ईरान की भाषा।
ईरित–(सं. वि.) प्रेषित, कहा हुआ, हटाया हुआ।
ईर्षणा–(हिं. स्त्री.) देखें 'ईर्षा'।
ईर्षा–(सं. स्त्री.) क्रोध, डाह।
ईर्षालु–(सं. वि.) ईर्ष्या करनेवाला, दूसरे की वृद्धि देखकर जलनेवाला, डाह करनेवाला, ईर्षी।
ईर्षी–(सं. वि.) डाह करनेवाला।
ईर्ष्यमाण–(सं. वि.) देखें 'ईर्षालु'।
ईर्ष्या–(सं. स्त्री.) देखें 'ईर्षा'।
ईर्ष्यालु–(सं. वि.) देखें 'ईर्षालु'।
ईश–(सं. वि.) अधिकारयुक्त, योग्य,

प्रधान, बड़ा; (पुं.) स्वामी, मालिक, शिव, नेता, राजा, आर्द्रा नक्षत्र, पारा, ग्यारह की संख्या।
ईशता–(सं. स्त्री.), ईशत्व–(सं. पुं) प्रधानता, बड़ाई।
ईशान–(सं. पुं.) महादेव, शिव, प्रभु, मालिक, आर्द्रा नक्षत्र, ग्यारह की संख्या, पूरब और उत्तर के बीच की दिशा।
ईशानी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, शमी वृक्ष।
ईशिता–(सं. स्त्री.) सब पर प्रभाव डालनेवाली शक्ति, ईश्वरत्व।
ईशित्व–(सं. पुं.) ऐश्वर्य, बड़प्पन, ईशिता।
ईश्वर–(सं. पुं.) शिव, ब्रह्मा, स्वामी, मालिक, राजा, पारा, परमेश्वर, योगसूत्र के अनुसार जो आत्मा से स्वतन्त्र रहता है, जो कालत्रय से न्यारा है और जिसको क्लेश, कर्म, विपाक तथा आशय स्पर्श नहीं कर सकता।
ईश्वरनिष्ठ–(सं. वि.) ईश्वर को माननेवाला, ईश्वरभक्त।
ईश्वर-परायण–(सं. वि.) केवल ईश्वर का सहारा लेनेवाला।
ईश्वर-प्रणिधान–(सं. पुं.) प्रगाढ़ समाधियोग, यह योगाभ्यास के पाँच नियमों में से अन्तिम है।
ईश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सब प्रकार की शक्ति।
ईश्वरीय–(सं. वि.) ईश्वर सम्बन्धी, दिव्य, दैवी।
ईषणा–(सं. स्त्री.) त्वरा, शीघ्रता।
ईषत्–(सं. अव्य.) अल्प, किंचित, थोड़ा, कम।
ईषत्स्पृष्ट–(सं. वि.) थोड़ा छुआ हुआ, अर्धस्वर 'य, र, ल, तथा व' के लिये प्रयुक्त होता है।
ईषद्–(सं. अव्य.) देखें 'ईषत्'।
ईषदुष्ण–(सं. वि.) थोड़ा गरम, मन्दोष्ण।
ईषद्दर्शन–(सं. पुं.) कटाक्ष, चितवन।
ईषद्धास–(सं. पुं.) मुसकुराहट, थोड़ी हँसी।
ईषना–(हि. स्त्री.) प्रबल इच्छा, एषणा।
ईस–(हि. पुं.) ईश, ईश्वर।
ईसन–(हि. स्त्री.) ईशान कोण।
ईसरगोल–(हि. पुं.) देखें 'इसबगोल'।
ईसार–(हि. पुं.) नम्रता, स्वार्थ-त्याग।
ईहग–(सं. वि.) इच्छानुसार चलनेवाला।
ईहा–(सं. स्त्री.) उद्यम, व्यवसाय, वांछा, चेष्टा, लोभ, इच्छा; –मृग–(पुं.) रूपक नाटक का एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं।
ईहित–(सं. वि.) अपेक्षित, चाहा हुआ।

उ

उ–हिन्दी वर्णमाला का पाँचवाँ स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है; (अव्य.) हाँ, ठीक, भी; (पुं.) शिव, ब्रह्मा, मनुष्य।
उँ–(हि. अव्य.) एक अव्यक्त उच्चारण जो मुख बन्द रहते ही किया जाता है, क्या, नहीं, अरे।
उँकौत–(हि. पुं.) वर्षाकाल में पैर में होनेवाला चर्म रोग।
उँखारी–(हि. स्त्री.) ईख (गन्ने) का खेत।
उँगनी–(हि. स्त्री.) गाड़ी के पहिये में तेल देने का काम।
उँगली–(हि. स्त्री.) अँगुलि; (मुहा.) –उठना–निन्दा होना; –उठाना–अपमान करना, लांछन लगाना; –चटकाना–उँगलियों को मर्दन के बाद चट-चट पुटकाना; –चमकाना–उँगलियाँ दिखाकर व्यंग्य करना; –पकड़ना–सहारा लेना; –पकड़ते पहुँचा पकड़ना–थोड़ा-सा सहारा पा जाने पर अधिक प्राप्ति होने के लिये आकांक्षित होना; उँगलियाँ नचाना–उँगलियाँ चमकाना; उँगलियों पर नचाना–जिस तरह का काम चाहे करा लेना; पाँचों उगलियाँ घी में होना–सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना; कानी उँगली–हाथ या पैर की सबसे छोटी उँगली।
उँघाई–(हि. स्त्री.) निद्रा, झपकी।
उंचन–(हि. पुं.) उदंचन, खाट की बिनावट कसने की डोरी, अदवाइन।
उंचना–(हि.क्रि.स.) उचन कसना, अदवाइन कसना।
उँचाई–(हि. स्त्री.) उच्चता, विशिष्टता।
उँचान–(हि. पुं.) देखें 'उँचाई'।
उँचाना–(हि.क्रि.स.) ऊँचा करना।
उँचाव–(हि. पुं.) ऊँचाई।
उँचास–(हि. पुं.) उँचाई, ऊँचापन।
उँचौनी–(हि. स्त्री.) भावी, होनहार।
उंछ–(सं. पुं.) कृषिफल काटे जाने पर गिरे हुए दानों को इकट्ठा करना; वृत्ति–(स्त्री.) गिरते हुए अन्न के दानों को बटोरने का कार्य; –शील–(वि.) उंछ वृत्ति का।
उँजरिया–(हि. स्त्री.) उँजेली, उँजियार, उँजेरा, प्रकाश।
उँजियार–(हि. पुं.) प्रकाश; (वि.) प्रकाशमान।
उँजेला–(हि. पुं.) उजेला।
उँदर–(हि. पुं.) चूहा।
उँदरी–(हि. स्त्री.) गंज, बालखोरा।
उँह–(हि. अव्य.) हाय, नहीं।
उअना–(हि.क्रि.अ.) उदय होना, निकलना।
उआना–(हि.क्रि.स.) उठाना, जगाना, मारने को उद्यत होना।
उऋण–(हि. वि.) ऋण-निर्मुक्त, जो ऋण दे चुका हो।
उकचन–(हि. पुं.) मुचकुन्द का पुष्प।
उकचना–(हि.क्रि.अ.) निकल जाना, अलग होना, उखड़ना, भागना, दूर होना, परत अलग होना।
उकटना–(हि.क्रि.स.) उखाड़ना, तोड़ना, ढूँढ़ना, याद करना, लूटना, अपमानित करना, भेद लेना, गाली देना।
उकटा–(हि. वि.) बारम्बार उपकार को याद दिलानेवाला, तुच्छ, हलका; –पुरान–(पुं.) बीती हुई बात को बारम्बार सविस्तार कहना।
उकठना–(हि.क्रि.अ.) शुष्क होना, सूखना।
उकठा–(हि. वि.) शुष्क, सूखा हुआ।
उकठापन–(हि.पुं.) सूख जाने की स्थिति।
उकड़ूँ–(हि.पुं.) बैठने की एक मुद्रा जिसमें घुटने मोड़कर दोनों पैर के तलुवे भूमि पर जमाते हैं और चूतड़ एँड़ियों से लग जाते हैं; (क्रि.प्र.) –बैठना–घुटने ऊपर उठाकर एँड़ियों के बल बैठना।
उकताना–(हि. क्रि.अ.) ऊबना, घबड़ाना, जल्दी करना।
उकताव–(हि. पुं.) व्यग्रता, घबड़ाहट।
उकति–(हि. स्त्री.) देखें 'उक्ति'।
उकलना–(हि.क्रि.अ.) तह अलग होना, उचड़ना, अलग होना, उधड़ना।
उकलवाना–(हि.क्रि.स.) तह अलग करवाना।
उकलाई–(हि.स्त्री.) वमन, उलटी, मचली।
उकलाना–(हि.क्रि.अ.) अकुलाना, उकताना, घबड़ाना, वमन करना, ओकाना।
उकवथ–(हि. पुं.) उँकौत, एक प्रकार का चर्मरोग।
उकवाँ–(हि. अव्य.) अनुमान से।
उकसना–(हि.क्रि.अ.) उछलना, फूलना, फूटना, उभड़ना, निकलना, बाहर निकलने की चेष्टा करना, टूटने लगना।
उकसनि–(हि. स्त्री.) उत्तेजना, उभाड़, घबड़ाहट।
उकसवाना–(हि.क्रि.स.) निकलवा देना।
उकसाई–(हि. स्त्री.) देखें 'उकसनि'।
उकसाना–(हि.क्रि.स.) उभाड़ना, चढ़ाना, उत्तेजित करना, हटाना, आगे बढ़ाना, सुलगाना, भड़काना, प्रलोभन दिखलाना, छेड़ना।
उकसौंहा–(हि. वि.) उभरता हुआ।

उकार–(सं.पुं.) 'उ' (ु) स्वर या उसका उच्चारण ।

उकारांत–(सं. वि.) जिस शब्द के अन्त में 'उकार' हो ।

उकालना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उकेलना' ।

उकासना–(हि.क्रि.स.) उभाड़ना, खोलना, ऊपर को फेंकना ।

उकासी–(हि.स्त्री.) खुल जाने की स्थिति ।

उकिलना–(हि.क्रि.अ.) देखें 'उकलना' ।

उकीरना–(हि.क्रि.स.) खोदना, उखाड़ना, नोचना ।

उकुति–(हि. स्त्री.) देखें 'उक्ति' ।

उकुसना–(हि.क्रि.स.) उजाड़ना, उवेड़ना ।

उकेलना–(हि.क्रि.स.) परत अलगाना, उवेड़ना, छिलका निकालना ।

उकेला–(हि. पुं.) रस्से की ऐंठन, परत, कम्वल का वाना ।

उकौथ–(हि.पुं.) देखो 'उँकौत' ।

उकौना–(हि.पुं.) दोहद, गर्भिणी की लालसा ।

उक्त–(सं.वि.) कहा हुआ, कथित ।

उक्ति–(सं.स्त्री.) कथन ।

उक्ष–(सं. वि.) वृहत्, वड़ा, शुद्ध ।

उक्षित–(सं. वि.) सींचा हुआ, भीगा हुआ ।

उखटना–(हि.क्रि.अ.,स.) लड़खड़ाना, ठोकर खाना, धीरे-धीरे चलना, तोड़ लेना ।

उखड़ना–(हि.क्रि.अ.) निर्मूल होना, जड़ से टूट जाना, निकल पड़ना, अलग होना, छूटना, गिरना, विगड़ना, वंद होना, रुकना, लड़खड़ाना, हाँफना, हारना, लुप्त होना, भागना, हटना, वाहर होना, मुड़ना, कलंकित होना, अप्रसन्न होना, हताश होना, वेसुरा हो जाना, जोड़ से हटना, तितर-वितर होना; (मुहा.) उखड़ी वातें करना–उदासीनता दिखलाना; पांव उखड़ना–पैर न जमना, ठहर न सकना ।

उखड़वाना–(हि.क्रि.स.) दूसरे से उखाड़ने का काम कराना ।

उखड़ाई–(हि. स्त्री.) उखाड़ने का कार्य ।

उखमज–(हि. वि.) उष्मज, गरमी से उत्पन्न; (पुं.) उपद्रव ।

उखर–(हि. पुं.) हल की पूजा जो किसान गन्ना वोने के वाद करते हैं ।

उखलना–(हि.क्रि.अ.) खौलना, गरम होना ।

उखली–(हि. स्त्री.) उलूखल, पत्थर या लकड़ी का वह पात्र जिसमें अन्न डालकर मूसल से कूटकर इसकी भूसी अलगाई जाती है, ओखली ।

उखाड़–(हि. पुं.) उच्छेदन, उखाड़ने का काम, लड़ाई का एक दांव, किसी युक्ति को नष्ट करने का कार्य ।

उखाड़ना–(हि. क्रि. स.) निर्मूल करना, छिन्न-भिन्न करना, तोड़ना, निकालना, अलग करना, उलटाना, भगाना, हटाना, टालना, नष्ट करना, भड़काना, असन्तुष्ट करना; (मुहा.) गड़े मुर्दे उखाड़ना–वीती हुई वात को फिर से कहना ।

उखाड़-पछाड़–(हि. पुं.) वैमनस्य की वातें, उलट-पुलट ।

उखाड़ू–(हि.वि.) उखाड़नेवाला, निर्मूल करनेवाला ।

उखारना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उखाड़ना' ।

उखारी–(हि. स्त्री.) ऊख का खेत ।

उखालिया–(हि. पुं.) सवेरे का भोजन, कलेवा ।

उखेड़–(हि. पुं.) देखें 'उखाड़' ।

उखेड़ना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उखाड़ना' ।

उखेरना–(हि. क्रि. स.) देखें 'उखाड़ना' ।

उखेलना–(हि.क्रि.स.) लिखना, चित्र वनाना ।

उगटना–(हि.क्रि.अ.,स.) उद्घाटन करना, उवेड़ना, उपहास करना, हँसी उड़ाना ।

उगना–(हि. क्रि. अ.) निकलना, प्रगट होना, देख पड़ना, अंकुरित होना, जमना, उत्पन्न होना, उपजना ।

उगलना–(हि.क्रि.स.) पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से वाहर निकालना, गुप्त वात को प्रगट करना, फेरना, वान्ति करना; (मुहा.) उगल पड़ना–सहसा वाहर निकल पड़ना, एकाएक छिपी वातें कह देना; जहर उगलना–दूसरे को मर्मभेदी वात सुनाना ।

उगलवाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उगलाना' ।

उगलाना–(हि. क्रि. स.) मुँह से वाहर निकलवाना, परिवर्तन करना, दोष स्वीकार करवाना ।

उगवाना–(हि.क्रि.स.) उत्पन्न कराना ।

उगसाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उकसाना' ।

उगसारना–(हि. क्रि. स.) प्रगट करना, वर्णन करना, कहना ।

उगाना–(हि. क्रि. स.) उपजाना, उत्पन्न करना, उठाना, निकालना, प्रगट करना ।

उगार–(हि. पुं.) थूक, खखार, निचोड़कर इकट्ठा हुआ जल ।

उगारना–(हि.क्रि.स.) कुएँ में जमी मिट्टी खुदवाना ।

उगाल–(हि. पुं.) देखें 'उगार'; –दान–(हि. पुं.) थूकने का पात्र ।

उगाला–(हि. पुं.) पौधे को खा जानेवाला एक कीड़ा ।

उगाहना–(हि. क्रि. स.) वसूल करना, किसानों से अन्न इत्यादि अलग-अलग लेकर इकट्ठा करना ।

उगाही–(हि. स्त्री.) आयत्त या वसूल किया हुआ अन्न-धन इत्यादि ।

उगिलना, उगिलवाना, उगिलाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'उगलना, उगलवाना' ।

उग्र–(सं. वि.) उत्कट, प्रचण्ड, तीव्र, निर्दय कार्य करनेवाला, गरम; (पुं.) शिव, महादेव, विष्णु, सूर्य, सहजन का वृक्ष, केरल देश, मालावार ।

उग्रगंध–(सं.वि.,पुं.) तीखी गन्धवाला, हींग ।

उग्रगंधा–(सं. स्त्री.) वच, कुलंजन ।

उग्रता–(सं. स्त्री.) उग्रभाव, प्रचण्डता, कड़वापन ।

उग्रह–(हि. पुं.) उद्धार ।

उग्रा–(सं. स्त्री.) दुर्गा, कर्कशा स्त्री, धनिया, अजवाइन ।

उघटना–(हि. क्रि. स.) उद्घाटन करना, खोलना, ताल देना, उभाड़ना, हँसी उड़ाना, निन्दा करना, भली-वुरी सुनाना ।

उघटवाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उघटाना' ।

उघटा–(हि. वि.) उद्घाटन करनेवाला, खोलनेवाला, किये हुए उपकार को वार-वार कहने या वखानने वाला ।

उघटाई–(हि. स्त्री.) खोलने का कार्य ।

उघटाना–(हि. क्रि. स.) खोलवाना, कहलवाना ।

उघड़ना–(हि. क्रि. अ.) खुलना, नंगा हो जाना, प्रकाशित होना, प्रगट होना, आच्छादन हटना ।

उघड़ाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उघटाना' ।

उघन्नी–(हि. स्त्री.) चाभी, कुंजी ।

उघरना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'उघड़ना' ।

उघाई–(हि. स्त्री.) कर का संग्रह, संग्रह किया जानवाला धन ।

उघाड़ना–(हि. क्रि. स.) खोलना, कपड़ा उतार देना ।

उघाड़ा–(हि.वि.) प्रगट, प्रकाशित, नंगा ।

उघाना–(हि.क्रि.स.) संग्रह करना, इकट्ठा करना, कर-संग्रह करना ।

उघारना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उघाड़ना' ।

उघारा–(हि. वि.) खुला हुआ, नंगा ।

उघेलना–(हि.क्रि.स.) उघाड़ना, खोलना ।

उचकन–(हि. पुं.) आड़, ओट, टेक, उठँगन, ईंट इत्यादि का टुकड़ा जिसको पात्र के न उलटने के लिये नीचे रखते हैं ।

उचकना–(हि. क्रि. अ., स.) छीनना, दवाना, ले भागना, कूदना, उछलना, पंजों के वल खड़ा होना, भड़कना, ललचाना, अधिक मूल्य देना ।

उचकवाना–(हि. क्रि. स.) उचकाने का

काम दूसरे से कराना।

उचका–(हिं. अव्य.) यकायक।

उचकाना–(हि.क्रि.अ.,स.) पंजों के बल खड़ा होकर भागना,ऊपर की ओर करना।

उचकौना–(हि. वि.) छीननेवाला, पंजों के बल खड़ा होनेवाला।

उचक्का–(हि. पुं.) धूर्त, वंचक, ठग, वस्तु लेकर भाग जानेवाला मनुष्य।

उचक्कापन–(हि.पुं.) धूर्तता, ठगी, हस्त-लाघव।

उचटना–(हि. क्रि. अ.) अलग होना, गिरना, पलटना, कूदना, सरकना, भड़कना, विरक्त होना, अप्रसन्न होना, चिपका न रहना।

उचटवाना–(हि.क्रि.स.) उचटने का काम दूसरे से लेना।

उचटाई–(हि.स्त्री.) उचाटने का कार्य।

उचटाना–(हि. क्रि. स.) बाँटना, अलग करना, नोचना,छोड़ना, घुमाना, फेरना, हताश करना, भड़काना।

उचड़ना–(हि. क्रि. अ.) सटी हुई वस्तु का अलग होना, उचटना।

उचड़वाना–(हि. क्रि. स.) उचाड़ने का काम दूसरे से करवाना।

उचड़ाई–(हि.स्त्री.) उचाड़ने का काम।

उचना–(हि.क्रि.अ.,स.) ऊँचा जाना,ऊपर उठना, उचकना, ऊपर को उठाना।

उचनि–(हि.स्त्री.)उठान, उभाड़, उचकाई।

उचरंग–(हि.पुं.)उड़नेवाला कीड़ा,फतिंगा।

उचरना–(हि. क्रि. अ., स.) उच्चारण करना, बोलना, उचड़ना, छूटना।

उचरवाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'उचराना'।

उचराई–(हि.स्त्री.) उच्चारण करने की क्रिया, उचड़ाई।

उचराना–(हि.क्रि.स.)कहलाना,उचड़वाना।

उचाट–(हि. वि.) अलग किया हुआ, विरक्त,श्रान्त,खिन्न,हताश,चित्त न लगना।

उचाटन–(हि. पुं.) देखें 'उच्चाटन'।

उचाटना–(हि.क्रि.स.) उच्चाटन करना, चित्त हटाना, भगा देना।

उचाटी–(हि. स्त्री.) उच्चाटन, उदासीनता, उचाट, हटाव।

उचाटू–(हि. वि.)उच्चाटन करनेवाला।

उचाड़ना–(हि.क्रि.स.) चिपकी हुई वस्तु को अलग करना, उखाड़ना, नोचना।

उचाना–(हि.क्रि.स.) ऊँचा करना, ऊपर को उठाना।

उचार–(हि.पु.) देखें 'उच्चारण'।

उचारना–(हि.क्रि.स.) उच्चारण करना, कहना, उखाड़ना, उचाड़ना।

उचाल–(हि. पुं.) देखें 'उच्चाट'।

उचावा–(हि. पुं.) स्वप्न में बड़बड़।

उचित–(सं. वि.) ठीक, योग्य, कर्त्तव्य, व्यवस्थित, दुरुस्त।

उचेड़ना, उचेलना–(हि. क्रि. स.) देखें 'उचारना'।

उचौंहा–(हि. वि.) ऊँचा किया हुआ, उमड़ा हुआ।

उच्चंड–(सं. वि.) तीव्र।

उच्च–(सं. वि.) उन्नत, ऊँचा, श्रेष्ठ।

उच्च कुल–(सं. पुं.) कुलीनता।

उच्चटा–(सं. स्त्री.) गुंजा, लाल घुँघची।

उच्चतम–(सं. वि.) सब से ऊँचा।

उच्चतर–(सं. वि.) दो पदार्थों में ऊँचा।

उच्चतरु–(सं.पुं.)नारियल या वर का वृक्ष।

उच्चता–(सं.स्त्री.)उन्नत अवस्था,ऊँचाई।

उच्चपद–(सं. पुं.) सम्मान का पद।

उच्चभाषी–(सं. वि.)जोर से बोलनेवाला।

उच्चय–(सं. पुं.) इकट्ठा करने का काम, समूह, ढेर, त्रिकोण या पार्श्व भाग।

उच्चयापचय–(सं. पुं.) बढ़ती-घटती।

उच्चरण–(सं.पुं.) बाहर आने का कार्य, कथन, कंठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ तथा नासिकासे निकलनेवाला शब्द।

उच्चरना–(हि. क्रि. अ., स.) उच्चारण करना, बोलना।

उच्चरित–(सं. वि.) कहा हुआ,उच्चारण किया हुआ।

उच्चलित–(सं. वि.) ऊपर या बाहर पहुँचा हुआ।

उच्चाट–(हि. पुं.) देखें 'उच्चाटन'।

उच्चाटन–(सं. पुं.) मिली या संयुक्त वस्तु का पृथक् होना, उखाड़, खसोट, डावाँडोल बनाने का काम, उत्कण्ठा, विवाद, तन्त्र के प्रयोगों में से एक जिसके करने से किसी का मन कहीं से हट जाता है।

उच्चाटनीय–(सं.वि.)उखाड़ डालने योग्य।

उच्चाटित–(सं. वि.) उच्चाटन किया हुआ, उखाड़ा हुआ, हटाया हुआ।

उच्चार–(सं. पुं.) उच्चारण, कथन, विष्ठा, मल।

उच्चारक–(सं.वि.) उच्चारण करनेवाला।

उच्चारण–(सं. पुं.) कथन, शब्द-प्रयोग, बोलने का काम।

उच्चारण-स्थान–(सं.पुं.) कण्ठ,तालु, मूर्धा, दाँत,ओठ,नाक, जिह्वामूल और उपध्मा–आठ उच्चारण के स्थान हैं।

उच्चारणीय–(सं. वि.) उच्चारण किया जानेवाला।

उच्चारना–(हि. क्रि.स.)उच्चारण करना, बोलना।

उच्चारित–(सं. वि.) उच्चारण किया हुआ, बोला या कहा हुआ।

उच्चार्य–(सं. वि.)उच्चारण करने योग्य।

उच्चार्यमान–(सं. वि.) उच्चारण किया जानेवाला।

उच्चावच–(सं.वि.)ऊँच-नीच, भला-बुरा।

उच्चैःश्रवा–(सं. पुं.) खड़े कान, सफद रंग तथा सात मुँहवाला इन्द्र का घोड़ा जो समुद्र-मंथन में निकला था; (वि.) बहिरा, कम सुननेवाला।

उच्छन्न–(सं. वि.) नष्ट, उजड़ा हुआ।

उच्छरना, उच्छलना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'उछलना'।

उच्छलन–(सं. पुं.) उछाल।

उच्छलित–(सं. वि.) उछाला हुआ।

उच्छास–(हि. पुं.) देखें 'उच्छ्वास'।

उच्छाह–(हि. पुं.) देखें 'उत्साह'।

उच्छित्ति–(सं. स्त्री.) विनाश, ध्वंस।

उच्छिन्न–(सं. वि.) जड़ सहित उखाड़ा हुआ, नष्ट, नीच।

उच्छिष्ट–(सं. वि.) किसी के खाने से बचा हुआ, जूठा, दूसरे के व्यवहार में लाया हुआ, अपवित्र; (पुं.) जूठा पदार्थ, मधु, शहद।

उच्छिष्टता–(सं. स्त्री.) जूठन, अपवित्रता।

उच्छिष्ट-भोजन–(सं. पुं.) जूठन खाना।

उच्छिष्टभोजी–(सं. वि.) दूसरे का जूठा खानेवाला।

उच्छू–(हि. स्त्री.) उच्छ्वास-विकार, एक प्रकार की खाँसी जो खाते-पीते समय गले में कुछ रुक जाने से आने लगती है, सुरहुरी।

उच्छृंखल–(सं. वि.) क्रमहीन, निरंकुश, उद्दण्ड, नियमरहित, मनमाना काम करनेवाला, स्वेच्छाचारी।

उच्छृंखलता–(सं. स्त्री.) उद्दंडता।

उच्छेद, उच्छेदन–(सं.पुं.) उत्पाटन, उखाड़, खंडन, ध्वंस, विनाश, नोच-खसोट।

उच्छेदनीय–(सं. वि.) उखाड़ने योग्य।

उच्छेदित–(सं. वि.) उखाड़ा हुआ।

उच्छेदी–(सं. वि.) उच्छेद करनेवाला।

उच्छ्वसित–(सं. वि.) विकसित, खिला हुआ, फूला हुआ, कम्पित, हाँफता हुआ।

उच्छ्वास–(सं. पुं.)ऊपर को खींचा हुआ श्वास, उसाँस, स्फूर्ति, प्रकरण, अध्याय, ग्रन्थ का विभाग।

उच्छ्वासित–(सं.वि.) थका हुआ, प्राण-हीन, विभक्त, असंयुक्त।

उछंग–(हिं.पुं.)उत्सङ्ग, गोद, क्रोड, हृदय।
उछकना–(हिं. क्रि. अ.) चौंकना, विस्मित होना, चकित होना।
उछटना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'उचटना'।
उछ़ना,उछरना–(हिं.क्रि.अ.)देख'उछलना'
उछल-कूद–(हिं. स्त्री.) दौड़-धूप, खेल-कूद, क्रीड़ा-कौतुक।
उछलना–(हिं. क्रि. अ.) छलाँग मारना, कूदना, फाँदना, ऊपर को कूदकर नीचे को आना, वेग से वाहर आना, आनन्द करना, आनन्द से फूलना, उमड़ना, उतरना, क्रोधसे उत्तेजित होना, तड़पना।
उछलवाना–(हिं. क्रि. स.) उछालने का काम किसी से करवाना।
उछलाना–(हिं. क्रि. स.) उछालने के लिये प्रवृत्त करना।
उछाँटना–(हिं. क्रि. स.) उँच्चाटन करना, हटाना, भगाना।
उछार, उछाल–(हिं. स्त्री.) कूद-फाँद, उत्तेजना, क्रोध, फेंक-फाँक, युद्ध, लड़ाई, उलटी, वमन, जल का छींटा।
उछारना–(हिं.क्रि.स.)देखें 'उछालना'।
उछालना–(हिं. क्रि. स.) ऊपर की ओर फेंकना, वमन करना, उचकाना, अपमानित करना।
उछाव–(हिं. पुं.) देखें 'उत्साह'।
उछाव-वधाव–(हिं.पुं.) धूमधाम, आनंद।
उछास–(हिं. पुं.) देखें 'उच्छ्वास'।
उछाह–(हिं. पुं.) देखें 'उत्साह'।
उछाही–(हिं. वि.) देखें 'उत्साही'।
उछिन्न, उछिष्ट–(हिं.वि.)देखें'उच्छिष्ट'।
उछीनना–(हिं. क्रि. स.) उच्छिन्न करना, नोचना, उखाड़ना।
उछीर–(हिं. पुं.) अवकाश, स्थान।
उछोर–(हिं. अव्य.)उस ओर, उस तरफ।
उजट–(हिं. पुं.) घास-फूस की बनी हुई झोपड़ी, उटज।
उजड़ना–(हिं. क्रि. अ.) जड़ से उखड़ना, सूख जाना, गिरना, नष्ट होना, लुटना, जनशून्य होना, अपव्यय होना, खो जाना, उदास पड़ना, किसी काम का न होना, तुच्छ देख पड़ना, तितर-वितर होना, अपमानित होना, पति या पत्नी का मर जाना, ('वसना' का विपर्यय)
उजड़वाना–(हिं. क्रि. स.) विनष्ट कराना, किसी को उजाड़ने में नियुक्त करना।
उजड़वाई–(हिं. स्त्री.) उजाड़ने का काम।
उजड़ा–(हिं. वि.) नष्ट, अधम।
उजड़ा-पुजड़ा–(हिं. वि.)टूटा-फूटा, फटा-टूटा, ध्वस्त।
उजड़ाई–(हिं. स्त्री.) उजाड़ने का कार्य।
उजड्ड–(हिं. वि.) नितान्त मूर्ख, असभ्य, अशिष्ट, तुच्छ, उद्दण्ड, निरंकुश, गँवार।
उजड्डता–(सं. स्त्री.),उजड्डपन–(हिं.पुं.) उद्दण्डता, अशिष्टता, मूर्खता, तुच्छता।
उजरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'उजड़ना'।
उजरा–(हिं. वि.) देखें 'उजड़ा, उजला'।
उजराई–(हिं. स्त्री.) शुक्लता, निर्मलता, गोराई, सफेदी।
उजराना–(हिं. क्रि. स.) उज्ज्वल करना।
उजला–(हिं. वि.) उज्ज्वल, निर्मल, चमकीला, स्वच्छ, पवित्र, दीप्तिमान्।
उजवाना–(हिं. क्रि. स.) ढालना, खाली करवाना।
उजागर–(हिं. वि.) दीप्तिमान्, प्रकाशित, चमकीला, विख्यात, प्रसिद्ध।
उजाड़–(हिं. वि.) नष्ट, उच्छिन्न, निर्जन, शून्य)स्थान), जंगल,जनशून्य; (पुं.) उजड़ा हुआ स्थान, निर्जन स्थान; वीरान या परित्यक्त स्थान।
उजाड़ना–(हिं. क्रि. अ.) उखाड़ना, नाश करना, निकालना, लूटना, निर्जन करना, दरिद्र वनाना, उधेड़ना, तोड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना।
उजाड़ू–(हिं. वि.) नाश करनेवाला, विगाड़नेवाला।
उजार–(हिं.वि.) देखें 'उजाड़'।
उजारना–(हिं. क्रि. स.)प्रकाशित करना, उलटना, चमकाना, निर्मल या स्वच्छ करना, रगड़ना, माँजना।
उजारा–(हिं. वि.) देखें 'उजाला'।
उजारी–(हिं. स्त्री.) प्रकाश, चाँदनी।
उजाला–(हिं. पुं.) प्रकाश, दिन, चमक, महिमा, एकलौता वेटा; (वि.) प्रकाशवान्; (मुहा.)–होना–सवेरा होना।
उजाली–(हिं. स्त्री.) चन्द्रिका, चाँदनी।
उजास–(हिं. पुं.) उजाला, प्रकाश, चमक।
उजासना–(हिं. क्रि. अ.) प्रकाशित होना।
उजियरिया–(हिं. पुं.) देखें 'उजाला'।
उजियाना–(हिं. क्रि. स.) प्रकट करना।
उजियार–(हिं. पुं.) देखें 'उजाला'।
उजियारना–(हिं. क्रि. स.) प्रकाशित करना, जलाना।
उजियारा–(हिं. पुं.) उजाला, प्रकाश।
उजियारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'उजाली'।
उजियाला–(हिं. वि.) देखें 'उजाला'।
उजीर–(हिं. पुं.) वजीर, मन्त्री।
उजुर–(हिं. पुं.) विरोध।
उजेरा, उजेला–(हिं. पुं., वि.) प्रकाश, उजला, स्वच्छ।
उज्जर–(हिं. वि.) देखें 'उज्ज्वल'।
उज्जल–(हिं.वि.)उज्ज्वल,श्वेत; (अव्य.) नदी के चढ़ाव की ओर।
उज्जयिनी–(सं. स्त्री.) मालवा देश की प्राचीन राजधानी।
उज्जीवित–(सं. वि.) पूर्णरूप से जीवित।
उज्जृम्भण–(सं. पुं.) जम्हाई, उवासी।
उज्जैन–(हिं. पुं.) उज्जयिनी।
उज्ज्वल–(सं. वि.) दीप्तिमान्, चमकीला, विमल, खिला हुआ, सुन्दर।
उज्ज्वलता–(सं. स्त्री.) सफेदी, दीप्ति, चमक, सुन्दरता।
उज्ज्वला–(सं.स्त्री.)दीप्ति, जगती छन्द का एक भेद।
उज्ज्वलित–(सं.वि.)दीप्तिमान्,चमकीला।
उज्यारा–(हिं. वि.) देखें 'उजाला'।
उझकना–(हिं. क्रि. अ.)उचककर झाँकना, उभड़ना, ऊँचा होना, चौंकना, उछलना, कूदना, फाँदना।
उझकुन–(हिं.पुं.) देखें 'उचकन'।
उझपना–(हिं. क्रि. स.) खुलना।
उझरना–(हिं.क्रि.अ,स.) ऊपर की ओर उठना या उठाना।
उझलना–(हिं.क्रि.अ..स.)एक पात्र से दूसरे पात्र में ऊपर से गिरना, उँड़ेलना, ढालना, वढ़ना, उमड़ उठना।
उझाँकना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'उझकना'।
उझालना, उझिलना–(हिं.क्रि.अ.,स.) देखें 'उझलना'।
उझिला–(हिं. स्त्री.) खेत की मिट्टी जो ऊँची जगह से निकाली गई हो।
उटंग–(हिं. वि.) ऊँचा ही रहनेवाला जो नीचा न हो, वुरी तरह से काटा-छाँटा हुआ, पहनने में छोटा।
उटंगन–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास जिसका साग खाया जाता है।
उटकना–(हिं. क्रि. अ.)उछलना, फुदकना, अनुमान करना।
उटकनाटक–(हिं. वि.) अद्भुत्, अनोखा।
उटज–(सं. पुं.) पर्णशाला, झोंपड़ी।
उटड़ंपा–(हिं. पुं.) वैलगाड़ी के आगे वाँधा हुआ डंडा जो उसको खड़ा रखने के लिये काम में आता है।
उटारी–(हिं. स्त्री.) लकड़ी जिस पर चारा काटा जाता है, ठीहा।
उटेव–(हिं.पुं.)मकान में लगनेवाली धरन के नीचे की लकड़ी।
उठँगन–(हिं.पुं.) आड़, टेक, टेकनी, थूनी।
उठँगना–(हिं. क्रि. अ.) आश्रय लेना, टेकना, तकिया लगाना।

उठँगल–(हिं. वि.) मन्द, मूर्ख।

उठँगवाना–(हिं. क्रि. स.) उठँगने का काम दूसरे से लेना।

उठँगाना–(हिं. क्रि. स.) टेक पहुँचाना, कपाट बन्द करना।

उठक–(हिं. स्त्री.) उत्थान, उठान।

उठगन–(हिं. पुं.) देखें 'उठँगन'।

उठना–(हिं. क्रि. अ.) आरंभ होना, निकलना, उगना, बढ़ना, फट पड़ना, उमड़ आना, चढ़ना, उपस्थित होना, ऊँचा पड़ना, जाना, जागना, खड़ा होना, बनना, गरम होना, यौवन प्राप्त होना, उबलना, देख पड़ना, फैलना, उतरना, खिचना, कटना, रगड़ खाना, गूथना, किराये पर दिया जाना, प्राप्त होना, सिखलाया जाना, आरोग्य होना, पकना, हिलना, स्थापित होना, पूर्ण होना, नष्ट होना, त्यागना, छोड़ना, भड़कना, कूदना, उछलना, तैयार होना, किसी प्रथा का दूर होना, व्यय होना, बिकना, पशुओं में कामोद्दीपन होना; (मुहा.) उठ खड़ा होना–आसन से उठकर चलने को तैयार हो जाना; दुनिया से उठ जाना–मर जाना, चल बसना; उठती बैठक–एक प्रकार की बैठक; उठती जवानी–(हिं. स्त्री.) नवयौवन; उठते-बैठते-सोते-जागते, अबेर-सबेर, बात की बात में, सर्वदा; –बैठना–साथ, मेल-जोल; उठा-उठी–दंड-बैठक (कसरत)।

उठल्लू–(हिं. वि.) एक स्थान पर न रहनेवाला, बिना प्रयोजन इधर-से उधर घूमनेवाला, आवारा; (मुहा.) –का चूल्हा–(पुं.) व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला, आवारा।

उठवाई–(हिं. स्त्री.) उठने या उठाने का काम या मजदूरी।

उठवाना–(हिं. क्रि. स.) उठाने का काम दूसरे से लेना।

उठवैया–(हिं. वि.) भार उठाने में सहायता देनेवाला।

उठाईगीर–(हिं. पुं.) आँख बचाकर वस्तु चुरानेवाला, उचक्का, चोर, मोषक, चाई, दुष्ट व्यक्ति, उठल्लू, आवारा।

उठान–(हिं. पुं.) उभाड़, चढ़ाव, वृद्धि, ऊँचाई, आकार, वृद्धि-क्रम, यौवन की अवस्था, बनावट, अभिमान, आरंभ, क्रम, आकस्मिक उन्नति।

उठाना–(हिं. क्रि. स.) ऊँचा करना, जगाना, स्थापित करना, खड़ा करना, चुनना, खींचना, खोलना, प्रबन्ध करना, व्यय प्राप्त करना, सहना, लगाना, चन्दा देना, रगड़ना, मिटाना, बन्द करना, फेंकना, दूर करना, उजाड़ना, जगाना, भड़काना, छेड़ना, पकड़ना, हाथ में लेना, आविष्कार करना, धारण करना, भीत आदि बनाना, अनुभव कराना, मानना; (मुहा.) उठा रखना–कसर न छोड़ना।

उठाव–(हिं. पुं.) देखें 'उठान'।

उठावनी–(हिं. स्त्री.) उठाने का काम या पारिश्रमिक, अग्रिम दक्षिणा, विवाह के पहिले दिया जानेवाला धन।

उठौआ–(हिं. वि.) जो उठाया जा सके, उठाकर ले जाने योग्य; –चूल्हा–(पुं.) वह चूल्हा जो जहाँ चाहे वहाँ रखा जा सके; –पाखाना–(पुं.) वह पाखाना जिसमें से मैला उठाकर भंगी बाहर फेंकते हैं।

उड़ंकू–(हिं. वि.) खूब उड़नेवाला, शीघ्र कार्य करनेवाला, दौड़-धूप करनेवाला।

उड़ंत–(हिं. पुं.) कुश्ती का एक दावँ, उड़ने या उड़ा कर फेंकने वाला।

उड़द–(हिं. पुं.) माष, एक अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।

उड़न–(हिं. स्त्री.) उड़ान, उड़ने का कार्य; –खटोला–(हिं.पुं.) उड़नेवाला खटोला, वायुयान; –गोला–(हिं. पुं.) उड़नेवाला गोला; –छू–(हिं. वि.) लुप्त, देख न पड़नेवाला; –बीमारी–(हिं. स्त्री.) संक्रामक रोग, छूत की बीमारी।

उड़ना–(हिं. क्रि. अ.) आकाश में परों की सहायता से चलना, हवा में ऊपर की ओर उठना, शीघ्र दौड़ना, भागना, आगे-आगे चलना, नष्ट होना, समाप्त होना, उठ जाना, लुटना, मरना, भाप बनना, फटना, भड़कना, फैलना, छलना, बहाना करना, फूलना, खिलना, प्राप्त होना, कुम्हलाना, हवा में फैलना, झटके से अलग होना, व्यय होना, धीमा पड़ना, फलाँग मारना, किसी भोग्य पदार्थ का आनन्द लेना; उड़ती खबर–(स्त्री.) जनश्रुति, अफवाह; उड़ती बैठक–(स्त्री.) एक तरह की बैठक; (मुहा.) उड़ चलना–खूब वेग से जाना।

उड़प–(हिं. पुं.) नाचने की एक विधि।

उड़पति–(हिं. पुं.) उडुपति, चन्द्रमा।

उड़री–(हिं. स्त्री.) देखें 'उड़द'।

उड़व–(हिं. पुं.) एक राग जिसमें केवल पाँच स्वरों का प्रयोग होता है, ओड़व।

उड़वाना–(हिं. क्रि. अ., स.) उड़ाने का काम दूसरे से कराना।

उड़सना–(हिं.क्रि.अ.) खाँसना, उठना, ठूँसना, भरना, तह सिमटना, नष्ट होना।

उड़ांकू–(हिं.वि.) देखें 'उड़ाकू'।

उड़ाऊ–(हिं.वि.) पैसा बरबाद करनेवाला; –पन–(पुं.) अमितव्यय, फिजूलखर्ची।

उड़ाक, उड़ाका, उड़ाकू–(हिं.वि.) उड़नेवाला, (पुं.) वायुयान चलानेवाला।

उड़ान–(हिं. पुं.) उड़ने का कार्य, कुदान, छलाँग, चढ़ाव, कूद-फाँद, मलखंभ का एक व्यायाम, मणिबन्ध, कलाई।

उड़ाना–(हिं क्रि. स.) उड़ने में प्रवृत्त करना, हवा में फैलाना, भोजन करना, क्रीड़ा करना, काटना, गिराना, भगा ले जाना, छिपाना, व्यय कर देना, हटाना, दूर करना, चोराना, मारना, बहलाना, काटना, नष्ट करना, भुलावा देना, गुप्त रूप से किसी विद्या को प्राप्त कर लेना।

उड़ायक–(हिं.वि.) उड़वैया, उड़ानेवाला।

उड़ाल–(हिं. पुं.) कचनार के वृक्ष का छिलका या छाल।

उड़ास–(हिं. स्त्री.) वासस्थान, रहने का स्थान, निवास-स्थान।

उड़ासना–(हिं.क्रि.स.) बिछावन लपेटना, समेटना, उठाना, उजाड़ना, नष्ट करना।

उड़िया–(हिं. पुं., स्त्री.) उत्कल देश (उड़ीसा) का निवासी, वहाँ की भाषा।

उड़ियाना–(हिं.पुं.) बाइस मात्राओं का एक छन्द।

उड़िल–(हिं. पुं.) बालदार भेंड़।

उड़ी–(हिं.पुं.) मलखम्भ का एक व्यायाम।

उड़ीसा–(हिं. पुं.) उत्कल देश।

उडु–(सं.पुं.) नक्षत्र, तारा, पक्षी, पानी।

उडुचक्र–(सं. पुं.) नक्षत्र-मण्डल।

उडुप–(सं. पुं.) चन्द्रमा, चमड़े का बना हुआ पात्र, एक प्रकार का नाच, डोंगी।

उडुपति–(सं. पुं.) चन्द्रमा, समुद्र, वरुण।

उडुप्रिया–(सं. स्त्री.) कमलिनी।

उडुराज–(सं. पुं.) चन्द्रमा।

उड़ुस–(हिं. पुं.) उद्दंश, मत्कुण, खटमल।

उड़ेरना, उड़ेलना–(हिं.क्रि.स) एक पात्र से दूसरे पात्र में ढालना, त्यागना, छोड़ना।

उड़ेनी–(हिं. स्त्री.) खद्योत, जुगनू।

उड़ौहाँ–(हिं. वि.) उड़नेवाला।

उड्डयन–(सं. पुं.) उड़ान।

उड्डीन–(सं. वि.) उड़ता हुआ।

उड्डीयन–(सं. पुं.) उड्डयन, उड़ान।

उड्डीयमान–(सं. वि.) उड़ता हुआ, उड़नेवाला।

उढ़क–(हिं.पुं.) उढ़कने से लगनेवाला ठोकर, उढ़कना।

उढ़कन–(हिं.स्त्री.) आश्रय, सहारा, तकिया।
उढ़कना–(हिं. क्रि. अ.) रुकना, ठोकर लगना, आगे न बढ़ सकना, ठहरना, सहारा लेना, टेक लगाना।
उढ़काना–(हिं. क्रि. स.) किसी के सहारे रखना, टेक पर ठहराना, भिड़ाना।
उढ़रना–(हिं.क्रि.अ.) अपने विवाहित पति को छोड़कर चोरी से दूसरे पुरुष के साथ निकल भागना।
उढ़री–(हिं.स्त्री.) उपपत्नी, रखनी, सुरैतिन।
उढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) ओढ़ाना, ढाँपना।
उढ़ारना–(हिं. क्रि.स.) किसी की स्त्री को भगा ले जाना।
उढ़ावनी–(हिं. स्त्री.) ओढ़नी, चादर।
उतंक–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
उतंग–(हिं.वि.) ऊँचा, बड़ा, ऊँचे दरजे का।
उत–(हिं.अव्य.) उधर, उस ओर, वहाँ।
उतन–(हिं. अव्य.) उस ओर, उधर।
उतना–(हिं. वि.) उस परिमाण का, उसके बराबर; (अव्य.) उस मात्रा में।
उतन्ना–(हिं.पुं.) कान में पहिनने की बाली।
उतपन्न–(हिं. वि.) देखें 'उत्पन्न'।
उतपात–(हिं. पुं.) देखें 'उत्पात'।
उतमंग–(हिं.पुं.) उत्तमांग, मस्तक, माथा।
उतरंग–(हिं. पुं.) दरवाजे के ऊपरी ढाँचे पर रखी जानेवाली लकड़ी।
उतरन–(हिं. स्त्री.) उतरंग, वस्त्र जो पहिनते-पहिनते जीर्ण हो गया हो, फटा-पुराना वस्त्र।
उतरना–(हिं. क्रि. अ.) ऊँचे स्थान से नीचे को आना, नदी-नाला पार करना, निगल जाना, उपजना, प्रवेश करना, लाँघना, आना, निकलना, कम होना, घटना, घिस जाना, कुम्हलाना, वृद्ध होना, समाप्त होना, स्थान छोड़ना, ठहरना, टिकना, खिंचना, संचारित होना, उखड़ना, तैयार होना, कसाव हट जाना, ढालकर या साँचे में बनाया जाना, उद्वेग या अशान्ति हट जाना, शरीर के जोड़ का हटना, अवतार लेना, आदाय होना, किसी पदार्थ को शरीर के चारों ओर घुमाना; (मुहा.) **चित से उतरना**–अप्रिय लगना, भूल जाना; **चेहरा उतरना**–मुख मलिन होना, उदास होना; **उतर पड़ना**–किसी काम में तन-मन से लग जाना।
उतरवाना–(हिं. क्रि. स.) उतारने का काम किसी दूसरे से कराना।
उतरहा–(हिं. वि.) उत्तर संबंधी, उत्तरी।
उतरा–(हिं. वि.) अधोगत, घटा हुआ।
उतराई–(हिं. स्त्री.) नीचे जाने का काम, नदी पार करने का कर।
उतराना–(हिं. क्रि. अ., स.) नीचे से ऊपर को आना, उतारने का काम दूसरे से कराना, उतरवाना।
उतलाना–(हिं. क्रि. अ.) आतुर होना, जल्दी मचाना, हड़बड़ी करना।
उतल्ला–(हिं. वि.) देखें 'उतावला'।
उतान–(हिं. वि., अव्य.) अपनी पीठ जमीन में लगाये हुए, उलटा, औंधा, चित।
उतायल–(हिं.अव्य.) जल्दी-जल्दी, शीघ्र।
उतायली–(हिं. स्त्री.) देखें 'उतावली'।
उतार–(हिं. पुं.) ऊपर से नीचे जाने का कार्य, घटाव, कमी, मूल्य का कम होना, व्यय की कमी, नाश, विष उतारने की औषधि, उतरने योग्य स्थान, किसी पदार्थ की मोटाई का क्रम से कम होना, समुद्र का भाटा, पानी में हलकर पार करने का स्थान, एक टोटका, न्योछावर, अनुसरण, उतारन, प्रतिलेख।
उतार-चढ़ाव–(हिं. पुं.) घटती-बढ़ती, भलाई-बुराई।
उतारन–(हिं. पुं.) पहिना हुआ वस्त्र जो पुराना हो गया हो, न्योछावर, उतारा, तुच्छ पदार्थ।
उतारना–(हिं. क्रि. स.) ऊपर से नीचे को लाना, लिखना, प्रतिरूप बनाना, चित्र खींचना, छोड़ना, ठहराना, घुमाना, उधेड़ना, उपजाना, घटाना, अलग करना, अलगाना, टिकाना, तौलना, नदी पार ले जाना, घुसाना, निकालना, न्योछावर करना, निगल जाना, स्थान से हटाना, बिगाड़ना, रगड़ना, घसना, लूटना, ढीला करना, इकट्ठा करना, भरना, भेजना, अर्क खींचना, नदी पार ले जाना; (मुहा.) **आरती उतारना**–पूजा करना, अत्यधिक आदर करना।
उतारा–(हिं. पुं.) प्रेत-बाधा या संताप के निवारणार्थ किया जानेवाला टोना-टोटका; कुछ पदार्थ किसी के शरीर के चारों ओर घुमाकर चौराहे या नदी के किनारे ले जाकर रखना, संस्थान, पड़ाव, नदी पार करने का स्थान, प्रतिलेख, निष्कर भूमि; (वि.) उतारा हुआ।
उतारू–(हिं. वि.) उतरनेवाला, उद्यत।
उतावल–(हिं.वि., अव्य.) व्यग्र, बेचैनी से, उतायल, शीघ्र, शीघ्रता से।
उतावला–(हिं. वि.) जल्दी करनेवाला, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
उतावली–(हिं. स्त्री.) शीघ्रता, जल्दी, व्यग्रता, चपलता।
उताहल–(हिं. अव्य) जल्दी से।
उतृण–(हिं. वि.) उऋण, ऋणमुक्त, उपकार का बदला चुकानेवाला।
उतै–(हिं. अव्य.) उधर, वहाँ पर।
उत्कंठ–(सं. वि.) ऊपर उठी हुई गरदन-वाला, उत्कंठित।
उत्कंठा–(सं. स्त्री.) उत्सुकता, तीव्र अभिलाषा, शीघ्रता से किसी कार्य करने की तीव्र इच्छा।
उत्कंठित–(सं. वि.) उत्सुक, उद्विग्न, चिन्ता में पड़ा हुआ।
उत्कंठिता–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो अपने प्रिय के संकेत-स्थान पर न आने पर दुःखी होती है।
उत्कंप–(सं. पुं.) कम्प, थरथराहट।
उत्कंपी–(सं. वि.) काँपनेवाला, झकोरा खानेवाला।
उत्कट–(सं. वि.) तीव्र, व्यग्र, मतवाला, अधिक, श्रेष्ठ, विषम, कठिन, क्षुद्र, विकट।
उत्कटा–(सं. स्त्री.) सफेद घुँघची।
उत्कर्ष–(सं. पुं.) श्रेष्ठता, बड़ाई, वृद्धि, प्रशंसा, अधिकता, अभिमान, समृद्धि।
उत्कर्षक–(सं. वि.) उत्कर्ष करनेवाला, उन्नति करनेवाला।
उत्कर्षण–(सं.पुं.) ऊपर को खिंचाव, उत्कर्ष।
उत्कर्षित–(सं. वि.) उत्कर्ष-युक्त।
उत्कल–(सं. पुं.) उड़ीसा प्रदेश।
उत्कलित–(सं. वि.) खिला हुआ, प्रसन्न, उत्सुक, विकसित।
उत्का–(हिं. स्त्री.) उत्कंठिता।
उत्कीर्ण–(सं. वि.) लगाया हुआ, लिखा हुआ, खोदा हुआ।
उत्कीर्तन–(सं.पुं.) घोषणा, प्रचार, प्रशंसा।
उत्कुण–(सं. पुं.) मत्कुण, खटमल, जूँ।
उत्कृत–(सं. वि.) काटा हुआ, खोदा हुआ।
उत्कृति–(सं. स्त्री.) छब्बीस अक्षरों का एक छन्द।
उत्कृष्ट–(सं. वि.) श्रेष्ठ, उत्तम, ऊँचे पद का, खींचा हुआ।
उत्कृष्टता–(सं. स्त्री.) श्रेष्ठता, बड़प्पन।
उत्कोच–(सं. पुं.) उपायन, घूस।
उत्कोचक–(सं. वि.) घूस देनेवाला।
उत्क्रम–(सं.पुं.) व्यतिक्रम, विपरीत क्रम।
उत्क्रांत–(सं. वि.) उभड़ा हुआ, लाँघा हुआ, चला गया, मृत।
उत्क्रांति–(सं. स्त्री.) उल्लंघन, उभाड़, आगे बढ़ने की स्थिति।
[illegible]–(सं. पुं.) [illegible]।
उत्क्रोश–(सं. पुं.) चिल्लाहट, [illegible]।

उत्क्षिप्त–(सं. वि.) उछाला हुआ, हटाया हुआ।
उत्खनन–(सं. पुं.) खोदने का काम।
उत्खाता–(सं. पुं.) खोदनेवाला।
उत्तंग–(हि. वि.) ऊँचा।
उत्तंभ–(सं.पुं.) निवृत्ति, अवलम्ब, सहारा।
उत्तंभित–(सं.वि.) रोका हुआ, पकड़ा हुआ।
उत्तंस–(सं.पुं.) कान का एक आभूषण।
उत्त–(सं. पुं.) आश्चर्य, सन्देह।
उत्तप्त–(सं. वि.) तपा हुआ, गरम, सन्तप्त, चिन्तित, दुःखी।
उत्तम–(सं.वि.) उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, बढ़िया।
उत्तमतया–(सं. अव्य.) भली-भाँति, अच्छी तरह से।
उत्तमता–(सं. स्त्री.) उत्कृष्टता, श्रेष्ठता, बड़ाई, भलाई।
उत्तमपद–(सं. पुं.) ऊँचा स्थान या पद।
उत्तम पुरुष–(सं. पुं.) श्रेष्ठ मनुष्य, व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष के लिए प्रयुक्त होता है।
उत्तमर्ण–(सं. पुं.) ऋणदाता, ऋण देनेवाला, महाजन।
उत्तमांग–(सं. पुं.) मस्तक, सिर, मुख।
उत्तमा–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो प्रियतम की सर्वदा हितकारिणी रहती है।
उत्तमाधम–(सं.वि.) उच्च-नीच, भला-बुरा।
उत्तमोत्तम–(सं. वि.) अच्छा से अच्छा।
उत्तर–(सं. पुं.) दक्षिण की उलटी दिशा, प्रतिवाक्य, ऊपरी तल, मिली हुई वस्तु का अन्तिम भाग, बड़ाई, बदला, एक प्रकार का गीत; (वि.) ऊँचा, बड़ा, प्रधान, उत्तर का, बायाँ, पिछला, ऊपर का, बाद का; (अव्य.) पीछे, बाद में।
उत्तररामचरित–(सं. पुं.) कवि भवभूति रचित प्राचीन संस्कृत महाकाव्य।
उत्तरकांड–(सं.पुं.) रामायण का शेषांश।
उत्तरकाय–(सं.पुं.) शरीर का ऊपरी भाग।
उत्तरकाल–(स. पुं.) भविष्य काल।
उत्तर कोशल–(सं. पुं.) अयोध्या प्रदेश।
उत्तर क्रिया–(सं. स्त्री.) उत्तर काल का कार्य, अन्त्येष्टिक्रिया।
उत्तरण–(सं. पुं.) नदी के पार जाना, उतराई, पार उतरना।
उत्तरदाता–(सं. पुं.) जिसको किसी कार्य के बिगड़ने-बनने पर भले-बुरे का उत्तर देना पड़े, जिम्मेदार।
उत्तरदायक–(सं. वि.) प्रत्युत्तरदाता, प्रश्न का उत्तर देनेवाला।
उत्तरदायित्व–(सं. पुं.) भारवाहिता, जिम्मेदारी।
उत्तरदायी–(सं.वि.) भारवाहक, जिम्मेदार।
उत्तरपक्ष–(सं. पुं.) शास्त्रार्थ में विचार पक्ष जो पूर्वपक्ष के सिद्धान्त को काट डालता है, कृष्णपक्ष।
उत्तरपट–(सं. पुं.) उपरना, ओढ़ना।
उत्तरपथ–(सं. पुं.) उत्तरीय मार्ग, देवयान।
उत्तरपद–(सं. पुं.) किसी समास का अंतिम पद।
उत्तर-प्रत्युत्तर–(सं. पुं.) वाद-विवाद, झगड़ा, सवाल-जवाब।
उत्तरमीमांसा–(सं. पुं.) वेदान्तदर्शन, ब्रह्मसूत्र।
उत्तरवादी–(सं. वि.) प्रतिवादी।
उत्तरसाधक–(सं. वि.) बचे हुए काम को पूरा करनेवाला, सहायक।
उत्तरा–(सं. स्त्री.) विराटराज की कन्या जिसका विवाह अभिमन्यु से हुआ था एक नक्षत्र, उत्तर दिशा।
उत्तराखंड–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत के पास का उत्तरीय भाग
उत्तराधिकार–(सं. पुं.) सम्पत्ति के पूर्व स्वामी की मृत्यु पर उसकी संपत्ति का हक या क्रमिक स्वत्व, बपौती।
उत्तराधिकारी–(सं. पुं.) सम्पत्ति के पूर्वस्वामी के मरने पर जो इसका अधिकारी हो, वारिस।
उत्तराफाल्गुनी–(सं.स्त्री.) बारहवाँ नक्षत्र।
उत्तराभाद्रपद–(सं.पुं.) छब्बीसवाँ नक्षत्र।
उत्तराभास–(सं. पुं.) दुष्ट उत्तर, झूठा या अंडबंड उत्तर।
उत्तरायण–(सं. पुं.) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, मकर संक्रान्ति से छः महीने तक का समय।
उत्तरायणी–(सं. स्त्री.) संगीत में मूर्छना का एक भेद।
उत्तरार्ध–(सं. पुं.) पीछे का आधा भाग, शेषार्ध।
उत्तराषाढ़ा–(सं.स्त्री.) इक्कीसवाँ नक्षत्र।
उत्तरीय–(सं. पुं.) उपरना, ओढ़नी, चद्दर; (वि.) उत्तर दिशा सम्बन्धी।
उत्तरीयक–(सं.पुं.) उत्तरीय।
उत्तरोत्तर–(सं. वि.) एक के बाद दूसरा, अधिक से अधिक; (अव्य.) क्रम-क्रम से, धीरे-धीरे।
उत्ता–(हि. वि.) देखें 'उतना'।
उत्तान–(सं. वि.) मुंह ऊपर किया हुआ, चित, सीधा फैला हुआ, खुला हुआ।
उत्तानपाद–(सं. पुं.) स्वयंभू मनु के पुत्र और ध्रुव के पिता।
उत्ताप–(सं. पुं.) उष्णता, गरमी, तपन, दुःख, चिन्ता, उत्तेजना, शोक, चेष्टा, प्रयत्न।
उत्तापन–(सं. पुं.) गरम करने का काम।
उत्तापित–(सं. वि.) तपाया हुआ, गरम किया हुआ, दुःख पाया हुआ।
उत्तापी–(सं. वि.) उत्तापयुक्त।
उत्तारक–(सं. वि.) पार लगानेवाला।
उत्ताल–(सं. वि.) श्रेष्ठ, उत्कट, भारी, तीव्र, कठिन।
उत्तीर्ण–(सं. वि.) उतरा हुआ, पार गया हुआ, निकला हुआ, लाँघा हुआ, उपस्थित, कृतकार्य, परीक्षा में सफल, मुक्त, छूटा हुआ।
उत्तुंग–(सं. वि.) बहुत ऊँचा।
उत्तुंगता–(सं. स्त्री.) ऊँचाई।
उत्तू–(हिं. पुं.) चुनन, कपड़े में चुनन तथा बेल-बूटा काढ़ने का काम।
उत्तूगर–(फा.पुं.) कपड़े में चुनन डालनेवाला।
उत्तेजक–(सं. वि.) प्रोत्साहक, उसकानेवाला, भड़कानेवाला।
उत्तेजन–(सं.पुं.), उत्तेजना–(सं.स्त्री.) प्रोत्साहन, प्रेरणा, भड़काव, बढ़ावा, धमकी, तीव्र करने का काम; **–जनक–**(वि.) उत्तेजना देनेवाला।
उत्तेजित–(सं. वि.) प्रेरित, उभाड़ा हुआ, भड़काया हुआ।
उत्तोलन–(सं.पुं.) उठाना, चढ़ाना, तौलना
उत्तोलित–(सं. वि.) उठाया हुआ, चढ़ाया हुआ।
उत्थवना–(हिं. क्रि. स.) आरंभ करना, उठाना, लगाना।
उत्थान–(सं. पुं.) ऊँचा होने की स्थिति, उद्यम, उन्नति, उठाव, निकास, युद्ध, त्याग, सीमा; **–एकादशी–**(स्त्री.) कार्तिक शुक्ला एकादशी; (नये गुड़ का प्रसाद चढ़ाया जाता है।)
उत्थापक–(सं.वि.) उत्तेजक, उभाड़नेवाला।
उत्थानि–(हिं. स्त्री.) आरम्भ।
उत्थापन–(सं. पुं.) उठान, भड़काव, प्रबोधन, हिलाना, जगाना, गणित के प्रश्न का उत्तर निकालना।
उत्थापित–(सं. वि.) प्रेरित, प्रबोधित, उठाया हुआ, उभाड़ा हुआ।
उत्थित–(सं. वि.) उपजा हुआ, निकला हुआ, फैला हुआ।
उत्पतन–(सं.पुं.) उत्थान, उदय, उत्पत्ति।
उत्पत्ति–(सं. स्त्री.) उद्भव, जन्म, उपज, आरम्भ, सृष्टि, लाभ।
उत्पन्न–(सं. वि.) जात, जन्मा हुआ, प्राप्त, पाया हुआ।
उत्पल–(सं. पुं.) पद्म, सरसिज, कमल।

उत्पाट–(सं. पुं.) उत्पाटन, उखाड़ना।
उत्पाटन–(सं. पुं.) उन्मूलन, उखाड़।
उत्पाटित–(सं. वि.) उखाड़ा हुआ।
उत्पात–(सं. पुं.) अशुभसूचक दैवी दुर्घटना, उपद्रव, उड़ान, उछाल, हलचल; –केतु–(सं. पुं.) उल्कापात।
उत्पाती–(सं. वि.) उपद्रव करनेवाला, ऊधम मचानेवाला।
उत्पादक–(सं. वि.) उत्पन्न करनेवाला, पैदा करनेवाला।
उत्पादन–(सं. पुं.) उत्पन्न करना, पैदा करना, उपजाना।
उत्पादित–(सं. वि.) उत्पन्न किया हुआ।
उत्पीड़–(सं. पुं.) मदिरा का झाग, फेन, बाधा, कष्ट।
उत्पीड़क–(सं. वि.) सतानेवाला।
उत्पीड़न–(सं. पुं.) उत्तेजना, भड़काव, प्रवर्तन, अधिकता, बढ़ती, उपद्रव।
उत्प्रक्षण–(सं.पुं.) ऊर्ध्वदृष्टि, संभावना।
उत्प्रेक्षा–(सं. स्त्री.) उपेक्षा, आरोप, उलटा विचार, एक काव्यालंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु में अन्य प्रकार की संभावना की जाती है।
उत्प्रेक्षित–(सं. वि.) सदृश किया हुआ, मिलाया हुआ।
उत्प्रेक्षोपमा–(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें किसी एक वस्तु के गुण का अनेक वस्तुओं में पाया जाना वर्णन किया जाता है।
उत्प्लवन–(सं. पुं.) उछल-कूद।
उत्फुल्ल–(सं. वि.) प्रफुल्ल, खिला हुआ, उतान, चित।
उत्संग–(सं. पुं.) क्रोड़, अंक, गोद, पहाड़ की चोटी, ऊपरी भाग, बीच का भाग, अटारी, संगम, मिलाप, आलिंगन, विवाह, गर्भ।
उत्स–(हिं. पुं.) स्रोत, सोता।
उत्सन्न–(सं.वि.) उखड़ा हुआ, नष्ट, बढ़ा हुआ।
उत्सर्ग–(सं.पुं.) त्याग, दान, न्याय, समाप्ति।
उत्सर्गित–(सं. वि.) उत्सर्ग किया हुआ।
उत्सर्गी–(सं.वि.) त्यागी, त्याग करनेवाला; –कृत–(वि.) उत्सर्गित।
उत्सर्जन–(सं. पुं.) दान।
उत्सर्पण–(सं. पुं.) ऊर्ध्व गमन, चढ़ाव, उल्लंघन, त्याग, दान।
उत्सर्पिणी–(सं. स्त्री.) जैनमत के अनुसार काल का वह विभाग जिसमें जीवों की आयु, शरीर, सम्पत्ति, सुख आदि की क्रम-क्रम से वृद्धि होती है।
उत्सर्गी–(सं. वि.) ऊर्ध्वगामी, ऊपर को चढ़ता हुआ।
उत्सव–(सं. पुं.) आनन्दजनक व्यापार, आनन्द, अभ्युदय, उन्नति, पर्व, त्योहार।
उत्सवशाला–(सं. स्त्री.) उत्सव-भवन।
उत्सादक–(सं. वि.) नाश करनेवाला।
उत्सादन–(सं. पुं.) विनाश, नाश करना।
उत्सादित–(सं. वि.) विनष्ट।
उत्सादी–(हिं. वि.) नाश करनेवाला।
उत्साह–(सं. पुं.) उद्यम, हर्ष, कल्याण, उमंग, वीर रस का स्थायी भाव।
उत्साही–(सं. वि.) उत्साह रखनेवाला।
उत्सुक–(सं. वि.) उत्कण्ठित, इच्छुक, चाहनेवाला, व्याकुल।
उत्सुकता–(सं. स्त्री.) व्याकुलता, प्यार, पछतावा, व्यग्रता।
उत्सृष्ट–(सं. वि.) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।
उत्सेक–(सं. पुं.) अहंकार, वृद्धि, घमण्ड।
उत्सेकी–(सं. वि.) अहंकारी, घमण्डी।
उत्सेध–(हिं. पुं.) उन्नति।
उथपना–(हिं. क्रि. स.) उठाना, निकालना, हटाना।
उथल–(हिं. वि.) तुच्छ, छिछोरा, भेद को गुप्त न रखनेवाला।
उथलना–(हिं. क्रि. अ.) चलायमान होना, स्थिर न रहना, डाँवाडोल होना।
उथल-पुथल–(हिं. स्त्री.) उलट-पुलट, क्रम का भंग; (वि.) विपर्यस्त, अंड-बंड।
उथला–(हिं. वि.) कम गहरा, छिछला।
उथलाना–(हिं. क्रि. स.) इधर-उधर लगाना, गड़बड़ करना।
उद्–(सं. उप.) यह शब्द ऊपर, अभाव, दोष, उत्कर्ष, आश्चर्य, प्रकाश, शक्ति-प्राधान्यादि अर्थों में उपसर्ग की तरह संज्ञा तथा क्रिया के पहिले लगता है।
उदंक–(सं. पुं.) घी, तेल इत्यादि रखने का चमड़े का बड़ा पीपा।
उदंच–(सं.वि.) ऊपर को घूमा या उठा हुआ।
उदंड–(हिं. वि.) देखें 'उद्दंड'।
उदंत–(सं. पुं.) वार्ता, समाचार, खबर; (हिं. वि.) दन्तहीन, बिना दाँत का।
उदक–(सं. पुं.) जल, पानी, हाथी बाँधने की सिकड़ी; –अद्रि–(हिं. पुं.) हिमालय; –कार्य–(सं. पुं.) देहशुद्धि, मृतक के निमित्त जल देने का कार्य; –क्रिया–(सं. स्त्री.) शास्त्र-विहित रीति से तर्पण; –परीक्षा–(सं. स्त्री.) जल में डुबाकर शपथ लेना।
उदकना–(हिं. क्रि. अ.) ऊपर उठना, निकलना, कूदना।
उदगरना–(हिं. क्रि. अ.) भीतर से बाहर निकलना, खुल जाना, प्रकाशित होना, उत्तेजित होना।
उदगार–(हिं. पुं.) देखें 'उद्गार'।
उदगारना–(हिं.क्रि.स.) बाहर निकालना, उभाड़ना, भड़काना।
उदगारी–(हिं. वि.) वमन करनेवाला।
उदग्र–(सं. वि.) विशाल, ऊँचा, दीर्घ, उद्धत।
उदघटना–(हिं. क्रि. अ.) निकलना, प्रकट होना, खुलना।
उदघाटना–(हिं. क्रि. स.) शुभारंभ करना, खोलना, प्रकाशित करना।
उदजन–(सं. पुं.) अंग्रेजी हाइड्रोजन के लिये पर्याय।
उदय–(हिं. पुं.) सूर्य, सूरज।
उदधि–(सं. पुं.) समुद्र, मेघ, बादल, तट, किनारा, झील, घड़ा; –राज–(पुं.) समुद्र; –सुत–(पुं.) चन्द्रमा, शंख, अमृत, कमल; –सुता–(स्त्री.) लक्ष्मी।
उदबस–(हिं. वि.) शून्य, सूना, खाली, उजाड़, किसी स्थान से हटाया हुआ।
उदबासना–(हिं. क्रि.स.) खलल करना, किसी स्थान से हटा देना, सूना करना, उजाड़ देना, भगा देना।
उदवेग–(हिं. पुं.) देखें 'उद्वेग'।
उदभट–(हिं. वि.) देखें 'उद्भट'।
उदभव–(हिं. पुं.) देखें 'उद्भव'।
उदभार–(हिं. पुं.) मेघ, बादल।
उदमदना–(हिं. क्रि. अ.) उन्मत्त होना, पागल होना।
उदमाद–(हिं. पुं.) देखें 'उन्माद'।
उदमादी–(हिं. वि.) देखें 'उन्मादी'।
उदमात–(हिं. वि.) उन्मत्त।
उदमानना–(हिं. क्रि. अ.) उन्मत्त होना, पागल बनना।
उदय–(सं. पुं.) सूर्य का उगना, प्रकट होना, मंगल, दीप्ति, लाभ, उन्नति, वृद्धि, उदयाचल पर्वत; –से अस्त तक–सुबह से साँझ तक, सम्पूर्ण समय, सारी पृथ्वी में।
उदयगिरि–(सं. पुं.) उदयाचल पर्वत।
उदयन–(सं. पुं.) अगस्त्य, उत्थान, निकास, उठान, अन्त, वत्सराज, उदयनाचार्य।
उदयना–(हिं. क्रि. अ.) उदय होना।
उदयाचल–(सं. पुं.) देखें 'उदयगिरि'।
उदयातिथि–(सं. स्त्री.) जिस तिथि में सूर्य उदय होते हैं।
उदयाद्रि–(सं. पुं.) देखें 'उदयाचल'।
उदर–(सं. पुं.) जठर, पेट, किसी पदार्थ का मध्य या भीतरी भाग; –ज्वाला–(स्त्री) जठराग्नि, भूख।
उदरना–(हिं. क्रि. अ.) विदरना, टुकड़े-टुकड़े होकर उजड़ना।

उदरपरायण–(सं. वि.) पेटू, मुक्खड़।
उदरपिशाच–(सं. वि.) सर्वान्न भक्षक, सब प्रकार की चीजें खानेवाला, पिशाच की तरह खानेवाला।
उदरिणी–(सं. स्त्री.) गर्भवती स्त्री।
उदर्क–(सं. पुं.) उत्तर काल, भविष्य फल।
उदवना–(हिं.क्रि.अ.)उदय होना, देख पड़ना।
उदवेग–(हिं. पुं.) देखें 'उद्वेग'।
उदसना–(हिं.क्रि.अ.)उजड़ना, नष्ट होना।
उदस्त–(सं. वि.)फेंका हुआ, निकाला हुआ।
उदात्त–(सं. वि.) ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ, समर्थ, दाता, देनेवाला, सुन्दर, प्रिय, बड़ा; (पुं.) मुख के अर्व भाग से उच्चारण किया हुआ स्वर, एक प्रकार का बाजा, एक अलंकार जिसमें किसी संभावित विषय का बढ़ाकर वर्णन किया जाता है।
उदान–(सं. पुं.) कण्ठवायु जो गले से निकलकर सिरा पर जाती है।
उदाम–(हिं. पुं.) देखें 'उद्दाम'।
उदायन–(हिं. पुं.) उद्यान, बगीचा।
उदार–(सं. वि.) दाता, देनेवाला, ऊँचा, बड़ा, श्रेष्ठ, गंभीर, सरल, सीधा, महात्मा, शिष्ट, अनोखा, एक काव्यालंकार जिसमें निर्जीव पदार्थ में शिष्टता दिखलाई जाती है।
उदारचरित–(सं. वि.) शीलवान्, उदार चित्त का।
उदारता–(सं. स्त्री.) दानशीलता, उच्च विचार या स्वभाव।
उदारचेता–(सं. वि.) उदारमना।
उदारमना–(सं. वि.) शाहखर्च।
उदारना–(हिं. क्रि. स.)ओदारना, गिराना, तोड़ना।
उदाराशय–(हिं. वि.)उच्च विचार का।
उदावर्त–(सं.पुं.) पेट का एक रोग जिसमें मल-मूत्र निकलने में बहुत कष्ट होता है।
उदास–(सं. पुं.) विराग, उपेक्षा; (वि.) उदासीन, विरक्त, दुःखी, निरपेक्ष, तटस्थ।
उदासना–(हिं. क्रि. अ., स.)उठाना, समेटना, लोटना, उदास होना।
उदासी–(सं. पुं.) विरक्त पुरुप, संन्यासी, त्यागी, नानकपंथी साधु; (हिं. स्त्री.) खिन्नता, दुःख।
उदासीन–(सं. वि.)वैरागी, तटस्थ, झगड़े में न पड़नेवाला, अपरिचित, निराला, निष्पक्ष, सम्पर्करहित।
उदासीनता–(सं. स्त्री.) त्याग, खिन्नता, उदासी, विरक्ति।
उदाहट–(हिं. स्त्री.) नीले रंग में लाली की आभा।
उदाहरण–(सं.पुं.) दृष्टान्त, न्याय के अनुसार साध्य-साधर्म्य से धर्मादि का प्रकाशन, कथा-प्रसंग, नाटक का गर्भांक।
उदाहृत–(सं. वि.) वर्णन किया हुआ, वर्णित, कहा हुआ।
उदित–(सं. वि.) उन्नत, उठा हुआ, चढ़ा हुआ, उत्पन्न, निकला हुआ, प्रादुर्भूत, कहा हुआ, स्वच्छ, प्रसन्न, ज्योतिष के अनुसार राशि का उदय।
उदितयौवना–(सं. स्त्री.) मुग्धा नायिका का एक भेद।
उदीचि–(सं. स्त्री.) उत्तर दिशा।
उदीच्य–(सं. वि.) उत्तर दिशा संबंधी, उत्तर दिशा में रहनेवाला।
उदीपन–(हिं. पुं.) देखें 'उद्दीपन'।
उदीरित–(सं. वि.) कहा हुआ, समझाया हुआ, भेजा हुआ।
उदीर्ण–(सं.वि.) उदित, बढ़ा हुआ, प्रवल।
उदुंबर–(सं. पुं.) गूलर, देहली, चौखट, नपुंसक, एक प्रकार का कुष्ठ रोग, दो तोले की तौल।
उदूखल–(सं. पुं.) देखें 'उलूखल'।
उदेग–(हिं. पुं.) देखें 'उद्वेग'।
उदै, उदो–(हिं. पुं.) देखें 'उदय'।
उदोत–(हिं. पुं.) उद्योत, प्रभा, प्रकाश; (वि.) प्रकाशित, चमकीला, स्वच्छ, शुभ्र; –कर–(वि.)प्रकाश देनेवाला।
उदोती–(हिं. वि.) प्रकाश देनेवाला।
उद्गत–(सं. वि.) उत्पन्न, उदित, निकला हुआ, फेंका हुआ।
उद्गता–(सं. स्त्री.)विषमवृत्ति छन्द का एक भेद।
उद्गति–(सं.स्त्री.) उदय, उत्पत्ति, उपज।
उद्गम–(सं. पुं.) उत्थान, उत्पत्ति, उत्पत्ति का स्थान, ऊर्ध्वगति, नदी के निकलने का स्थान।
उद्गाता–(सं.पुं.) सामवेद का ऋत्विक्।
उद्गाथा–(सं.स्त्री.)आर्या छन्द का एक भेद।
उद्गार–(सं. पुं.) वमन, उलटी, डकार, टपकना, चूना, थूक, उच्चारण, बढ़ती, बाढ़, अधिकता।
उद्गारी–(सं. वि.)बाहर निकलनेवाला।
उद्गीत–(सं.वि.)ऊँचे स्वर में गाया हुआ।
उद्गीति–(सं. स्त्री.) ऊँचे स्वर के गायन का एक अवयव।
उद्गीरण–(हिं. पुं.)वमन, व्यक्त करने की क्रिया।
उद्गीर्ण–(सं.वि.)कहा हुआ, निकला हुआ।
उद्ग्रीव–(सं. वि.) गरदन उठाये हुए।
उद्घटन–(सं. पुं.) आघात, रगड़।
उद्घटित–(सं. वि.)उन्मुक्त, खुला हुआ।
उद्घाट–(सं. पुं.) पहरा, चौकी, चुंगीघर।
उद्घाटक–(सं. पुं.) खोलनेवाला, कुंजी।
उद्घाटन–(सं. पुं.) शुभारंभ, प्रकाशन, प्रकट करना, उन्मोचन, खोलाई।
उद्घाटित–(सं.वि.)उद्घाटन किया हुआ, प्रकाशित, खोला हुआ, उठाया हुआ।
उद्घात–(सं. पुं.) निदर्शन, दिखाना, सूचना, आरम्भ, बाधा, ठोकर, आघात।
उद्घातक–(सं. वि.) ठोकर मारनेवाला; (पुं.) नाटक की प्रस्तावना जिसमें कोई पात्र सूत्रधार या नटी की बात सुनकर दूसरा अर्थ जोड़ता है।
उद्दंड–(सं.)प्रचण्ड, अक्खड़, बखेड़िया, उद्धत
उद्दांत–(सं. वि.) अति शान्त, बहुत दबा हुआ, विनम्र।
उद्दाम–(सं. वि.) उच्छृंखल, निरंकुश।
उद्दालक–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
उद्दिष्ट–(सं. वि.) समझाया हुआ, दिखलाया हुआ, लक्ष्य किया हुआ, ढूँढा हुआ; (पुं.) छन्द में मात्रा-प्रस्तार के भेद का वर्णन।
उद्दीपक–(सं. वि.) प्रकाश देनेवाला, उत्तेजक, उभाड़नेवाला।
उद्दीपन–(सं. पुं.) प्रकाश, उत्तेजन, बढ़ाना, काम-क्रोधादि को बढ़ाने का काम, अलंकार में शृंगार रस को बढ़ानेवाली वस्तु।
उद्दीप्त–(सं. वि.)प्रज्वलित, बढ़ा हुआ।
उद्देश–(सं. पुं.) अभिलाषा, लक्ष्य, इशारा, अनुसन्धान, उपदेश, वार्ता, नाम-कथन, हेतु, संक्षेप, उदाहरण।
उद्देश्य–(सं. वि.) लक्ष्य, मतलब का, कहने योग्य; (पुं.) विशेष्य, तात्पर्य मनशा, मतलब, वांछित अर्थ, इष्ट।
उद्दोत–(हिं. वि.) देखें 'उद्योत'।
उद्ध–(हिं. अव्य.) ऊर्व्व, ऊपर।
उद्धत–(सं. वि.) उत्कट, उग्र, प्रचण्ड, भड़काया हुआ, अविनीत, अक्खड़।
उद्धतपन–(हिं. पुं.) उग्रता, प्रचण्डता, अक्खड़पन।
उद्धरण–(सं. पुं.) उद्धार, छुटकारा, ऋण का चुकाना, उखाड़, उठाव, अलगाव, पढ़े हुए पाठ को दोहराना, किसी लेख के अंश को दूसरे लेख में उद्धृत करना, व्यसनों से मुक्त होना।
उद्धरणी–(हिं. स्त्री.) पढ़े हुए पाठ को दोहराने का कार्य।

उद्धरणीय–(सं. वि.) उद्धरण के योग्य।
उद्धरना–(हि. क्रि. स.) उद्धार करना, बचाना, उबारना।
उद्धर्षिणी–(सं.स्त्री.) वसन्ततिलक नामक वर्णवृत्त का भेद; (वि.स्त्री.) उमंग देनवाली।
उद्धव–(सं. पुं.) यज्ञ की अग्नि, उत्सव।
उद्धार–(सं. पुं.) मुक्ति, छुटकारा, समाज से निकाले हुए पुरुष का पुनर्ग्रहण, सुधार, उन्नति, ऋणमुक्ति।
उद्धारक–(सं. वि.) उद्धार करनेवाला।
उद्धारना–(हि. क्रि. स.) उद्धार करना, छोड़ाना, उबारना।
उद्धारित–(सं. वि.) उद्धार किया हुआ, छोड़ाया हुआ, उबारा हुआ।
उद्धृत–(सं. वि.) ज्यों का त्यों लिखा हुआ।
उद्ध्वंस–(सं. पुं.) भंग, फटना।
उद्ध्वस्त–(सं. वि.) नष्ट, टूटा-फूटा।
उद्वंधन–(सं. पुं.) गले में फाँसी लगाकर टँग जाना।
उद्वद्ध–(सं. वि.) ऊपर बँधा हुआ, टँगा हुआ, लटका हुआ।
उद्वाहु–(सं. वि.) ऊर्ध्ववाहु, हाथ ऊपर उठाये हुए।
उद्वुद्ध–(सं. वि.) खिला हुआ, फूला हुआ, प्रवुद्ध, उदित, उठा हुआ, जागा हुआ, चैतन्य, उद्दीपित, ज्ञान प्राप्त किया हुआ।
उद्वुद्धा–(सं. स्त्री.) परकीया नायिका जो अपनी इच्छा से परपुरुष से स्नेह बढ़ाती है, उद्वोधिता।
उद्वोध–(सं. पुं.) अल्प ज्ञान, थोड़ी समझ, भूली हुई बात की याद।
उद्वोधक–(सं. वि.) उद्वोधन करनेवाला, जागृत करनेवाला, चेतानेवाला, प्रकाशक, सूचित करनेवाला, उद्दीपक।
उद्वोधन–(सं. पुं.) ज्ञान कराना, चेताना, याद दिलाना, जगाना।
उद्वोधिता–(सं. स्त्री.) वह परकीया नायिका जो पर-पुरुष के प्रेम दिखलाने पर उस पर मुग्ध होती है।
उद्भट–(सं. वि.) श्रेष्ठ, बड़ा, प्रबल, उदार, उच्च आशय का; (पुं.) कछुआ, सूप, सूर्य।
उद्भव–(सं. पुं.) उत्पत्ति, वृद्धि, जन्म।
उद्भाव–(सं. पुं.) कल्पना, उत्पत्ति, चित्त की उदारता।
उद्भावना–(सं. स्त्री.) कल्पना, उत्पत्ति।
उद्भास–(सं. पुं.) प्रकाश, चमक, शोभा।
उद्भासमान–(हि. वि.) प्रकाशवान्।
उद्भासित–(सं. वि.) शोभित, सजाया हुआ, विदित, प्रकट किया हुआ।
उद्भिज, उद्भिज्ज, उद्भिद्–(सं.वि.,पुं.) भूमि को भेदकर जन्म लेनेवाला (वनस्पति, वृक्ष, लता इत्यादि)।
उद्भिद् विद्या–(सं.स्त्री.) वनस्पति शास्त्र।
उद्भिन्न–(सं. वि.) उत्पन्न, तोड़ा हुआ, निकला हुआ।
उद्भूत–(सं. वि.) ऊँचा, उत्पन्न।
उद्भेद–(सं. पुं.) फोड़कर निकलना, विस्फोट, उदय, आविष्कार, प्रकाशन, उद्घाटन, रोमांच, मिलाप, अंकुर, अलंकार का वह भेद जिसमें चतुराई के साथ गुप्त किये हुए विषय को कारणवश प्रकाशित करते हैं।
उद्भेदन–(सं. पुं.) फोड़कर निकल आना, प्रकाशन, छेद करके पार जाना।
उद्भ्रम–(सं. पुं.) उद्वेग, व्याकुलता।
उद्भ्रांत–(सं. वि.) व्याकुल, भ्रान्तियुक्त, भौचक्का, हतवुद्धि, व्यस्त, चक्कर खाता हुआ, भटका हुआ, उच्छृंखल; (पुं.) तलवार का वार।
उद्यत–(सं. वि.) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ, प्रस्तुत, उछला हुआ, ताना हुआ, काम करनेवाला।
उद्यम–(सं. पुं.) प्रयोग, उद्योग, प्रयत्न, उत्साह, मेहनत, व्यवसाय।
उद्यमित–(सं. वि.) यत्न से किया हुआ।
उद्यमी–(सं. वि.) उद्योगी, तत्पर, प्रयत्न करनेवाला।
उद्यान–(सं. पुं.) वगीचा, उपवन।
उद्यापन–(सं. पुं.) आरंभ, किसी व्रत के समाप्त होने पर किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।
उद्यापित–(सं. वि.) पूर्ण किया हुआ।
उद्याम–(सं. पुं.) रज्जु, रस्सी।
उद्योग–(सं. पुं.) प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, उद्यम, अध्यवसाय।
उद्योगी–(सं. वि.) उद्योग करनेवाला, उत्साही, परिश्रमी।
उद्योजक–(सं. वि.) प्रवर्तक, काम में लगानेवाला, नियोक्ता।
उद्योत, उद्योतन–(सं. पुं.) प्रकाश, चमक, उजाला करना।
उद्रिक्त–(सं. वि.) फूटा हुआ, सिक्त।
उद्रेक–(सं. पुं.) बढ़ती, वृद्धि, अधिकता, उपक्रम, आरंभ, वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी से बहुत तुच्छ दिखाई जाती है।
उद्वमन–(सं. पुं.) वमन, कै।
उद्वर्तक–(सं. वि.) बढ़ानेवाला।
उद्वर्तन–(सं. पुं.) विलेपन, उवटन।
उद्वर्तित–(सं. वि.) आवर्तित, सुगन्धित किया हुआ।
उद्वह–(सं. पुं.) पुत्र, वेटा, सात वायुओं में से एक जो प्रवह वायु के ऊपर रहता है।
उद्वहन–(सं. पुं.) कंधे पर वोझा ढोना, उठाना, आकर्षण, खिंचाव, विवाह, लवाई का काम।
उद्वहा–(सं. स्त्री.) पुत्री, वेटी।
उद्वास–(सं. पुं.) अपने स्थान को छोड़कर अलग होना।
उद्वासन–(सं. पुं.) संस्कार का एक भेद, विसर्जन, खदेड़ना, भगाना, रहने के स्थान से हटाना, मारण, वध।
उद्वाह–(सं. पुं.) विवाह।
उद्वाहन–(सं.पुं.) उठाव, छोड़ने का काम, चिन्ता हटाना, ऊपर ले जाना, विवाह।
उद्वाहनी–(सं. स्त्री.) डोरी, रस्सी।
उद्वाहिक–(सं. वि.) विवाह सम्बन्धी।
उद्वाहित–(सं. वि.) विवाह किया हुआ।
उद्वाहिनी–(सं. स्त्री.) देखें 'उद्वाहनी'।
उद्विग्न–(सं. वि.) व्याकुल, चिन्तित, व्यग्र, घवड़ाया हुआ।
उद्विग्नता–(सं.स्त्री.) घवड़ाहट, व्याकुलता।
उद्वीक्षण–(सं. पुं.) ऊर्ध्व दृष्टि, ऊपर की ओर दृष्टि।
उद्वृत्त–(सं. वि.) उत्तोलित, दुर्वृत्त, व्यग्र, घवड़ाया हुआ।
उद्वेग–(सं. पुं.) चित्त की व्याकुलता, घवड़ाहट, चिन्ता, भय, आश्चर्य, चमत्कार।
उद्वेगी–(सं. वि.) चिन्ताकारक, चिन्तित।
उद्वेजक–(सं.वि.) दुःखदायी, कष्ट देनेवाला।
उद्वेजित–(सं. वि.) व्यग्र, घवड़ाया हुआ।
उधड़ना–(हि.क्रि.अ.) उचड़ना, टूटना, उजड़ना, छूट जाना, नष्ट होना, दैत पड़ना।
उधम–(हि. पुं.) देखें 'ऊधम'।
उधर–(हि. अव्य.) वहाँ, उस ओर।
उधरना–(हि. क्रि. अ., स.) उद्धार होना, छूटना, अलग होना, उद्धार करना, छोड़ाना, उबड़ना।
उधराना–(हि. क्रि. अ.) हवा से उड़कर बिखर जाना, मदोन्मत्त होना।
उधलना–(हि.क्रि.अ.) नष्ट होना, कामातुर होना, नष्ट होना, बिगड़ना, परपुरुष के साथ भाग जाना।
उधली–(हि.स्त्री.) व्यभिचारिणी, छिनाल।
उधाड़–(हि.पुं.) उघाड़, कुश्ती का एक पेंच
उधार–(हि.पुं.) ऋण, देन, मँगनी, उद्धार, छुटकारा।
उधारक–(हि. वि.) देखें 'उद्धारक'।

उपनगर—(सं. पुं.) शहर या नगर के चारों ओर बिखरे बाजार।
उपनत—(सं. वि.) नम्र, झुका हुआ।
उपनति—(सं. स्त्री.) झुकाव, उपस्थिति।
उपनय—(सं. पुं.) समीप पहुँचाने का कार्य, बालक को गुरु के पास ले जाने का कार्य, उपनयन संस्कार, जनेऊ, न्याय मत से सिद्ध ज्ञान का लक्षण।
उपनयन—(सं.पुं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य के यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार, जनेऊ।
उपनागरिका—(सं. स्त्री.) वृत्ति अनुप्रास का एक भेद।
उपनाम—(सं. पुं.) उपाधि, पदवी, नाम, प्यार का नाम।
उपनायक—(सं. पुं.) नाटक में प्रधान नायक का मित्र।
उपनिधाता—(सं. वि.) धरोहर रखनेवाला।
उपनिधि—(सं. स्त्री.) धरोहर, बंधक, थाती।
उपनिबंध—(सं. पुं.) रचना, बनावट, गूँथन।
उपनिविष्ट—(सं. वि.) नई आवादी में आकर बसा हुआ।
उपनिवेश—(सं. पुं.) दूर देश से आकर नये स्थान में बसना, नगर के समीप की छोटी बस्ती।
उपनिषत् (द्)—(सं. स्त्री.) समीप बैठना, रहस्य, निर्जन स्थान, वेद का शिरोभाग, वेदान्त, ब्रह्म-विद्या, वह विद्या जिससे अज्ञान का नाश होता है तथा जिसके द्वारा परमात्मा प्राप्त होते हैं।
उपनिहित—(सं.वि.) स्थापित, रक्खा हुआ।
उपनीत—(सं. वि.) पास लाया हुआ, प्राप्त, उपस्थित, पहुँचा हुआ, जिसका उपनयन-संस्कार हो गया हो।
उपनीता—(सं.स्त्री.) व्याह कर लाई हुई स्त्री।
उपनीयमान—(सं. वि.) पास में लाया हुआ।
उपनेता—(सं.पुं.) ले जानेवाला, भेंट चढ़ानेवाला, उपनयन करानेवाला, गुरु या आचार्य।
उपन्यास—(सं. पुं.) वाक्य का प्रयोग, वाक्य को आरंभ करना, प्रस्ताव, विचार, धरोहर, उपाख्या, रोचक कहानी, किस्सा।
उपपति—(सं. पुं.) दूसरे की स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष, जार, यार।
उपपत्ति—(सं. स्त्री.) युक्ति, संगति, निवृत्ति, हेतु, उपाय, सिद्धि, प्राप्ति, न्यायमत में ज्ञान, गणित शास्त्र के अनुसार प्रमाण, कारण।
उपपत्नी—(सं. स्त्री.) किसी पुरुष से फँसी हुई दूसरे की स्त्री।
उपपद—(सं. पुं.) पहले या समीप में प्रयोग किया हुआ पद, उपाधि।
उपपन्न—(सं. वि.) संस्कारयुक्त, जाँचा हुआ, लगा हुआ, आया हुआ, उचित, सम्पन्न, उत्पन्न, प्राप्त, उपयुक्त।
उपपात—(सं.पुं.) एकाएक आगमन, नाश।
उपपातक—(सं. पुं.) छोटा पाप, यथा—परस्त्रीगमन, आत्मविक्रय, निन्दित खाद्य का भोजन इत्यादि।
उपपाद—(सं. पुं.) उपपत्ति, ठहराव।
उपपादक—(सं. वि.) संपादक, ठहरानेवाला।
उपपादन—(सं. पुं.) सिद्ध करना, ठहराना, सम्पादन।
उपपादित—(सं. वि.) सम्पादित, ठहराया हुआ, युक्ति द्वारा समर्थन किया हुआ।
उपपाद्य—(सं. वि.) युक्ति या तर्क द्वारा संपादन करने योग्य।
उपपाप—(सं. पुं.) देखें 'उपपातक'।
उपपालित—(सं. वि.) रक्षित, पाला हुआ।
उपपीड़ित—(सं. वि.) पीड़ित, सताया हुआ।
उपपुराण—(सं. पुं.) व्यास के अतिरिक्त अन्य ऋषियों द्वारा लिखा हुआ पुराण—इनकी संख्या भी अठारह है।
उपप्रदर्शन—(सं.पुं.) निर्देश, सूचना, देखाव।
उपप्लव—(सं. पुं.) आकाश से तारा टूटना, विप्लव, विपत्ति।
उपप्लुत—(सं. वि.) उपद्रवयुक्त, राहुग्रस्त, विपद्ग्रस्त।
उपबद्ध—(सं. वि.) संलग्न, लगा हुआ।
उपबाहु—(सं. पुं.) हाथ का पंजे से केहुनी तक का भाग
उपभाषा—(सं. स्त्री.) गौण भाषा।
उपभुक्त—(सं. वि.) व्यवहार में लाया हुआ, जूठा, खाया हुआ, उच्छिष्ट।
उपभुक्ति—(सं. स्त्री.) उपभोग।
उपभोक्ता—(सं.पुं.) उपभोग करनेवाला।
उपभोग—(सं. पुं.) व्यवहार, सुख की सामग्री, किसी पदार्थ के व्यवहार का सुख।
उपभोगी—(सं. वि.) उपभोग करनेवाला।
उपभोग्य—(सं. वि.) उपभोग करने योग्य।
उपभोजी—(सं. वि.) उपभोग करनेवाला।
उपमंत्रण—(सं. पुं.) निमन्त्रण, नेवता।
उपमा—(सं. स्त्री.) तुलना, अर्थालंकार का एक भेद जिसमें साधारण धर्म विशिष्ट भिन्न जाति की तुलना दो वस्तुओं में दिखाई जाती है।
उपमाता—(सं. स्त्री.) धाय, माता तुल्य स्त्री, बच्चे को दूध पिलानेवाली स्त्री; (वि.) उपमा देनेवाला।
उपमान—(सं. पुं.) सादृश्य, बराबरी, वह वस्तु जिससे उपमा दी जाती है, सादृश्य के ज्ञान का साधन।
उपमाना—(हिं. क्रि. स.) उपमा देना।
उपमा रूपक—(सं. पुं.) उपमा अलंकार का एक प्रकार।
उपमालिनी—(सं.स्त्री.) छन्द का एक भेद।
उपमित—(सं. वि.) जिसकी उपमा दी गई हो, सदृश, बराबर।
उपमिति—(सं. स्त्री.) उपमालंकार, न्याय के अनुसार अनुभव-सिद्ध ज्ञान विशेष।
उपमेय—(सं. वि.) उपमा का विषय वर्णन करने योग्य, जिसकी उपमा दी जावे।
उपमेयोपमा—(सं. स्त्री.) अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमेय और उपमेय की उपमान से उपमा दी जाती है।
उपयम—(सं. पुं.) विवाह, शादी।
उपयमन—(सं. पुं.) देखें 'उपयम'।
उपयाचक—(सं. वि.) पास में जाकर माँगनेवाला।
उपयाचित—(सं. वि.) समर्पित, प्रार्थना किया हुआ।
उपयान—(सं. पुं.) निकट में गमन।
उपयुक्त—(सं. वि.) योग्य, उचित, भुक्त, रचित, बना हुआ।
उपयुक्तता—(सं.स्त्री.) यथार्थता, योग्यता।
उपयोग—(सं. पुं.) व्यवहार, काम, योग्यता, आवश्यकता, भोग, प्रयोजन, औषधि-क्रिया।
उपयोगिता—(सं. स्त्री.) आवश्यकता, साहाय्य, मदद, उपयुक्तता।
उपयोगी—(सं. वि.) योग्य, अनुकूल, उपयुक्त, उपकारी, लाभकारी, काम में आनेवाला।
उपयोज्य—(सं. वि.) उपयोग में लाने योग्य, व्यवहार्य।
उपरक्षक—(सं. वि.) रक्षा के लिए पास पहरा देनेवाला।
उपरत—(सं. वि.) हटा हुआ, निकला हुआ, उदासीन, मरा हुआ।
उपरति—(सं. स्त्री.) विरति, त्याग, संन्यास, उदासी, वैराग्य, वासना का त्याग, निवारण, मृत्यु।
उपरत्न—(सं. पुं.) कम मूल्य के रत्न।
उपरना—(हिं. पुं.) ऊपरी वस्त्र, दुपट्टा, चादर; (हिं. क्रि. अ.) उखड़ना।
उपरफट्, उपरफट्ट—(हिं. वि.) अनावश्यक, ऊपरी, बिना ठिकाने का, व्यर्थ।
उपरमण—(सं. पुं.) निवृत्ति, वैराग्य।
उपरवार—(हिं. स्त्री.) उच्च भूमि।
उपरस—(सं. पुं.) गौण रस, उपधातु, वैद्यक के अनुसार—पारद, गंधक, अभ्रक,

सिन्दूर, गैरिक, क्षितिज और शैलेय –ये उपरस कहलाते हैं ।
उपराँठा–(हिं. पुं.) पराँठा, घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई रोटी ।
उपरांत–(सं. अव्य.) अनंतर, इसके बाद, तदनंतर ।
उपरा–(हिं. पुं.) गोल उत्पल, उपला ।
उपराग–(सं. पुं.) राहु-ग्रस्त चन्द्रमा, व्यसन, संबंध, रंग, वासना, प्रवृत्ति, निन्दा, गौण रूप ।
उपराचढ़ी–(हिं.स्त्री.) चढ़ाचढ़ी, प्रतिस्पर्धा ।
उपराज–(सं. पुं.) राजा का प्रतिनिधि, राजा के तुल्य शासक ।
उपराजना–(हिं. क्रि. स.) उत्पन्न करना, जन्माना, निर्माण करना, बनाना, उपार्जन करना, कमाना ।
उपराना–(हिं. क्रि. अ.,स.) ऊपर चढ़ना, प्रगट होना, देख पड़ना, उठाना ।
उपराम–(सं. पुं.) निवृत्ति, मृत्यु, संन्यास ।
उपरि–(सं. अव्य.) ऊपर, अनन्तर, बाद ।
उपरिचित–(सं. वि.) ऊपर रखा या जमा किया हुआ ।
उपरी–(हिं. स्त्री.) छोटी गोल गोहरी, उपली; (वि.) ऊपरी ।
उपरूपक–(सं. पुं.) एक छोटा नाटक जिसके निम्नलिखित १८ भेद होते हैं–नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सट्टक, नाट्य रासक, प्रस्थान, लाप्य, काव्य, प्रेङ्खण, रासक, संलापक, श्रीगदित, शिल्पक, विलासिका, दुर्मल्लिका, प्रकरणी, हल्लीश और भाण ।
उपरोक्त–(हिं. वि.) उपर्युक्त, पहिले या ऊपर कहा हुआ ।
उपरोध–(सं. पुं.) आवरण, ढपना, प्रतिबन्ध, रोक, अनुरोध ।
उपरोधक–(सं. वि.) प्रतिबन्धक, रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला; (पुं.) घर का भीतरी कमरा ।
उपरोधन–(सं. पुं.) प्रतिबन्धन, रोक ।
उपरोधी–(सं. वि.) प्रतिरोधक ।
उपरोहित–(हिं. पुं.) देखें 'पुरोहित' ।
उपरोहिती–(हिं. स्त्री.) देखें 'पौरोहित्य' ।
उपरौंछा–(हिं. अव्य.) ऊपर की ओर ।
उपरौटा–(हिं. पुं.) ऊपरी भाग, ऊपरी पल्ला ।
उपरौठा–(हिं. वि.) ऊपर का, ऊपरी ।
उपर्युक्त–(हिं. वि.) ऊपर कहा हुआ ।
उपलंभ–(सं. पुं.) अनुभव, ज्ञान ।
उपल–(सं. पुं.) पत्थर, पाषाण, रत्न, जवाहर, मेघ, बादल ।
उपलक्षक–(सं. वि.) अनुमान करनेवाला, दर्शक, उपादान के लक्षण से भिन्न बोधक (शब्द) ।
उपलक्षण–(सं. पुं.) अपनी तरह दूसरी वस्तु को बता देनेवाला शब्द, विशेष लक्षण, ध्यान, देखभाल ।
उपलक्षित–(सं.वि.) चिह्न से प्रकाशित ।
उपलक्ष्य–(सं. पुं.) अवलंबन, टेक, प्रयोजन, उद्देश्य, प्रमाण; (वि.) प्रमाण देने योग्य ।
उपलब्ध–(सं. वि.) प्राप्त, मिला हुआ, विचारा हुआ, समझा हुआ ।
उपलब्धि–(सं. स्त्री.) ज्ञान, प्राप्ति, समझ, अनुमान ।
उपलभ्य–(सं. वि.) प्राप्य, मिलनेवाला ।
उपलभ्यमान–(सं. स्त्री.) पाया जानेवाला, मिलनेवाला ।
उपला–(सं. स्त्री.) शक्कर, चीनी, बालू; (हिं. पुं.) गोहरा, कंडा ।
उपलिप्त–(सं. वि.) लपेटा हुआ, चुपड़ा हुआ, लीपा हुआ ।
उपली–(हिं. स्त्री) छोटी गोल गोहरी ।
उपलेप–(सं. पुं.) गोबर इत्यादि से लेप, प्रतिबन्ध ।
उपलेपन–(सं.पुं.) लीपने-पोतने का काम ।
उपलेपक–(सं. वि.) लीपने-पोतनेवाला ।
उपलेपी–(हिं. वि.) उपलेपक ।
उपल्ला–(हिं. पुं.) ऊपरी भाग या तह ।
उपवन–(सं. पुं.) छोटा जंगल, उद्यान, बगीचा ।
उपवास–(सं. पुं.) भोजन का अभाव, अनशन, वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता ।
उपवासक–(सं. वि.) अनाहारी ।
उपवासी–(सं. वि.) अनाहारी, उपवास करनेवाला ।
उपविद्या–(सं. स्त्री.) गौण विद्या ।
उपविष–(सं. पुं.) हलका विष, बनावटी विष, आयुर्वेद के अनुसार–थूहर, मदार, करियारी, घुगची, कनेर, कुचला, जमालगोटा, धतूरा और अफीम–ये उपविष कहलाते है ।
उपविष्ट–(सं. वि.) बैठा हुआ ।
उपवीत–(सं. पुं.) बायें कन्धे पर रक्खा हुआ यज्ञसूत्र, जनेऊ ।
उपवृंहित–(सं. वि.) उछला हुआ, बढ़ा हुआ, बढ़ाया हुआ ।
उपवेद–(सं. पुं.) वेद से निकली हुई विद्या; यथा–आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद आदि ।
उपवेश–(सं. पुं.) स्थिति, बैठक ।
उपवेशन–(सं. पुं.) आसन, स्थापन, बैठना ।
उपवेशित–(सं. वि.) स्थापित, बैठा हुआ ।
उपवेशी–(सं. वि.) बैठनेवाला ।
उपशम–(सं. पुं.) इन्द्रियों का निग्रह, तृष्णा का नाश, निवृत्ति, छुटकारा, रोगों के उपद्रव की शान्ति ।
उपशमक–(सं. वि.) शान्ति देनेवाला ।
उपशमनीय–(सं. वि.) शान्त किये जाने योग्य ।
उपशांत–(सं. वि.) शान्त किया हुआ, घटा हुआ ।
उपशांति–(सं. स्त्री.) उपशम, निवृत्ति, आरोग्य, निवारण ।
उपशाखा–(सं.स्त्री.) छोटी शाखा, डाल ।
उपशायी–(सं. वि.) निद्रा लानेवाला ।
उपशास्त्र–(सं. पुं.) सामान्य विद्या ।
उपशिक्षित–(सं. वि.) शिक्षाप्राप्त ।
उपशिष्य–(सं. पुं.) शिष्य का शिष्य, चेले का चेला ।
उपशोभित–(सं. वि.) शोभायुक्त, अलंकृत ।
उपश्रुत–(सं. वि.) सुना हुआ, माना हुआ ।
उपसंयोग–(सं. पुं.) निकट संबंध ।
उपसंवाद–(सं. पुं.) प्रतिज्ञा ।
उपसंहार–(सं. पुं.) समाप्ति, संग्रह, हरण, नाश, आक्रमण, संकोच, निवर्तन, निकास, सारांश, किसी पुस्तक के अन्त का अध्याय जिसमें संक्षेप रूप से इसका उद्देश्य दिखलाया जाता है ।
उपसना–(हिं.क्रि.अ.) दुर्गन्ध होना, सड़जाना
उपसन्न–(सं. वि.) उपस्थित, पहुँचा हुआ ।
उपसन्नता–(सं. स्त्री.) निकटता, पड़ोस ।
उपसरण–(सं. पुं.) बहिर्निगमन, बहाव ।
उपसर्ग–(सं.पुं.) भूकम्प इत्यादि उत्पात, अनिष्ट, रोग का विकार, दुःख, क्लेश, अपशकुन, व्याकरणोक्त वह अव्यय जो शब्द के पहिले जोड़ा जाता है और इनके अर्थ में विशेषता लाता है ।
उपसागर–(सं. पुं.) छोटा समुद्र, खाड़ी ।
उपसाना–(हिं. क्रि. स.) बासी बनाना, सड़ाना ।
उपसुंद–(सं. पुं.) निसुन्द नामक दैत्य का पुत्र (पुराण) ।
उपसृष्ट–(सं.वि.) व्याप्त, युक्त, लगा हुआ ।
उपसेचन–(सं पुं.) पानी से सिंचाई, पानी छिड़कना, तर करना ।
उपसेवक–(सं. वि.) पर-स्त्री-गमन करनेवाला, सेवा करनेवाला ।
उपसेवन–(सं. पुं.) समीप रह कर सेवा करना ।

उपसेवा–(सं. स्त्री.) पूजा, प्रतिष्ठा।
उपसेवी–(सं. वि.) सेवा करनेवाला।
उपस्कर–(सं. पुं.) उपकरण, सहारा।
उपस्कृत–(सं.वि.) विभूषित, सजाया हुआ।
उपस्तंभ–(सं. पुं.) अवलम्ब, सहारा।
उपस्थ–(सं. पुं.) नीचे का भाग, पदा, पुलिंग, योनि, मलद्वार, अंक, गोद, पेडू, स्थिति; (वि.) समीपस्थित, पास बैठा हुआ।
उपस्थल–(सं. पुं.) नितंब, चूतड़, ककुद, कुल्हा।
उपस्थाता–(सं.वि.,पुं.) उपासक, झुका हुआ
उपस्थान–(सं. पुं.) उपस्थिति, आगमन, उपासना, पूजा के निमित्त निकट आना, उपसर्पण, खड़े होकर स्तुति करना, प्राप्ति, तीर्थस्थान।
उपस्थायी–(सं. वि.) उपस्थित होनेवाला।
उपस्थित–(सं. वि.) समीप का, पास आया हुआ, प्राप्त, वर्तमान, याद किया हुआ, सेवा किया हुआ।
उपस्थिता–(सं. स्त्री.) दस दस अक्षरों के चार पादों का एक छन्द।
उपस्थिति–(सं. स्त्री.) उपस्थान, पहुँच, वर्तमानता, उपासना, स्मृति, याददाश्त।
उपस्नेह–(सं. पुं.) उपलेप, लीपना-पोतना।
उपस्पर्श–(सं. पुं.) स्पर्श, स्नान, आचमन।
उपस्मृति–(सं. स्त्री.) धर्मशास्त्र संबंधी गौण पुस्तक।
उपस्वत्व–(सं. पुं.) किसी सम्पत्ति से प्राप्त होनेवाले आय का अधिकार।
उपहत–(सं. वि.) चोट खाया हुआ, आपत्ति में पड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ, बिगड़ा हुआ, तिरस्कार किया हुआ, दूषित, अशुद्ध, रुका हुआ।
उपहतात्मा–(सं. वि.) विचलित-हृदय, घबड़ाया हुआ।
उपहरण–(सं.पुं.) पास में लाने का काम।
उपहसित–(सं. वि.) उपहास किया हुआ; (पुं.) उपहास, हँसी-ठट्ठा।
उपहार–(सं. पुं.) भेंट, आहुति, सम्मान, अतिथि को दिया जानेवाला भोजन, (शिव की उपासना में अट्टहास, नृत्य, गीत, वृषभवत् गर्जन, नमस्कार और भजन —ये उपहार के अंग हैं।)
उपहारी–(सं. वि.) आहुति देनेवाला, यज्ञ करनेवाला।
उपहास–(सं. पुं.) निन्दासूचक हास, हँसी-ठट्ठा।
उपहासक–(सं. वि.) दूसरों की हँसी उड़ानेवाला।
उपहासास्पद–(सं. वि.) हँसी उड़ाने योग्य, निन्दनीय।
उपहासी–(हिं. स्त्री.) हँसी, ठट्ठा।
उपहित–(सं. वि.) अर्पित, दिया हुआ, रक्खा हुआ।
उपहृत–(सं. वि.) लाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ।
उपांग–(सं. पुं.) तिलक, टीका, प्रत्यंग, अंग का अंग, विद्या का गौण भाग (पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र), छोटा भाग।
उपांत–(सं. वि.) निकट, समीप; (पुं.) प्रान्त भाग, तीर, किनारा, कोना, अन्तिम अक्षर के पहले का अक्षर।
उपांतिक–(सं. वि.) समीप का, पड़ोसी।
उपाकरण–(सं. पुं.) आरंभ, समीप लाने का कार्य।
उपाकर्म–(सं.पुं.) संस्कारपूर्वक वेद-ग्रहण।
उपाक्ष–(सं. पुं.) उपनेत्र।
उपाक्ष्य–(सं.वि.) आँख से देखा जानेवाला।
उपाख्यान–(सं. पुं.) पुरानी कथा, पूर्व वृत्तान्त, वर्णन, उपन्यास, झूठी कथा।
उपाटना, उपाड़ना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'उखाड़ना'।
उपादान–(सं. पुं.) प्राप्ति, वर्णन, इन्द्रियों का निग्रह, अभिप्राय, बोध, छिपा अर्थ, बौद्धमत के अनुसार शरीर या वाणी की चेष्टा, न्यायमत से समवायी कारण (समीप का कारण), वह सामग्री जिससे कोई पदार्थ तैयार हो, सांख्य मत से कार्य से अभिन्न कारण।
उपादेय–(सं. वि.) ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।
उपाधान–(सं. पुं.) उपधान, तकिया।
उपाधि–(सं. स्त्री.) विशेष जाति, वंश इत्यादि को बतलानेवाला शब्द, धर्म, चिन्ता, छल, आधार, कारण, समृद्धि, बढ़ती, न्याय के मत से जाति से भिन्न धर्म, सम्मान-सूचक शब्द, उपद्रव, उत्पात।
उपाधी–(सं. वि.) उत्पाती, ऊधम मचानेवाला।
उपाध्या–(हिं. पुं.) देखें 'उपाध्याय'।
उपाध्याय–(सं. पुं.) वेद-वेदांग पढ़ानेवाला, अध्यापक, ब्राह्मण की एक उपाधि।
उपाध्याया–(सं.स्त्री.) अध्यापिका, पढ़ानेवाली स्त्री।
उपाय–(सं. पुं.) समीप पहुँचना, निकट आना, साधन, युक्ति, द्रव्य का उपार्जन, शत्रु पर विजय प्राप्त करने की विधि; (ये चार हैं—साम, दाम, दण्ड और भेद); रोकने की विधि, उपक्रम, सिलसिला।
उपायन–(सं. पुं.) उपगमन, भेंट देने की वस्तु, उपहार।
उपारंभ–(सं. पुं.) आरम्भ।
उपारना–(हिं.क्रि.स.) देख 'उपाड़ना'।
उपारूढ़–(सं. वि.) बढ़ा हुआ।
उपार्जक–(सं. वि.) कमानेवाला।
उपार्जन–(सं. पुं.) कमाई, लाभ, वाणिज्यादि से लाभ।
उपार्जनीय–(सं. वि.) कमाने योग्य।
उपार्जित–(सं. वि.) प्राप्त, कमाया हुआ।
उपालंभ–(सं. पुं.) निन्दापूर्वक तिरस्कार, गाली-गलौज, विलंबन, ओरहना।
उपालंभन–(सं. पुं.) देखें 'उपालंभ'।
उपालभ्य–(सं. वि.) निंदनीय।
उपाश्रय–(सं.पुं.) आश्रय का स्थान, सहायता
उपाश्रित–(सं. वि.) आश्रित, सहारा लिया हुआ।
उपास–(हिं. पुं.) देखें 'उपवास'।
उपासक–(सं. वि., पुं.) सेवक, पूजा या आराधना करनेवाला, भक्त।
उपासना–(सं. स्त्री.) समीप बैठने का कार्य, पूजा, परिचर्या, आराधना, ध्यानादि द्वारा इष्ट देवता का चिन्तन।
उपासनीय–(सं. वि.) उपासना किये जाने योग्य, आराध्य, पूजनीय।
उपासा–(हिं. पुं.) अन्न-जल न ग्रहण करनेवाला।
उपासित–(सं. वि.) पूजित, आराधित।
उपासी–(हिं. वि.) देखें 'उपासा'।
उपासीन–(सं. वि.) पास में बैठा हुआ।
उपास्थि–(सं. स्त्री.) कोमलास्थि, कोमल हड्डी।
उपास्य–(सं. वि.) चिन्तनीय, सेवा करने योग्य, आराध्य।
उपेंद्र–(सं. पुं.) इन्द्र के छोटे भाई, वामन, विष्णु।
उपेंद्रवज्रा (सं. स्त्री.) ग्यारह अक्षरों के चार पादों का एक छन्द।
उपेक्षक–(सं. वि.) उपेक्षा करनेवाला।
उपेक्षण–(सं. पुं.) अनादर, उदासीनता, घृणा, तिरस्कार।
उपेक्षणीय–(सं.वि.) उपेक्षा के योग्य, उपेक्ष्य
उपेक्षा–(सं. स्त्री.) त्याग, विरक्ति, उदासीनता, घृणा, तिरस्कार, अवहेलना अनादर।
उपेक्षित–(सं. वि.) अनादर किया हुआ, अस्वीकृत, त्यक्त, छोड़ा हुआ।
उपेक्ष्य–(सं. वि.) उपेक्षा के योग्य।
उपेखना–(हिं. क्रि. स.) उपेक्षा करना।

उपेत–(सं. वि.) समीप आया हुआ, पहुँचा हुआ, यज्ञोपवीत किया हुआ।
उपेय–(सं. वि.) उपाय-साध्य, मिलने योग्य।
उपैना–(हि. वि.) नंगा, उघाड़ा, खुला हुआ।
उपोत्थित–(सं. वि.) ऊपर को उठा हुआ।
उपोद्ग्रह–(सं. पुं.) ज्ञान, समझ।
उपोद्घात–(सं. पुं.) उपक्रम, भूमिका, आरम्भ, उदाहरण, पुस्तक के आरम्भ का कथन।
उपोष, उपोषण–(सं. पुं.) उपवास, दिनरात कुछ न खाने की स्थिति, निराहार, व्रत।
उपोषित–(सं. वि.) उपवास किया हुआ।
उप्ति–(सं. स्त्री.) वपन, बोवाई।
उफनना–(हि. क्रि. अ.) फेन देना, झगड़ने के लिये उद्यत होना।
उफनाना–(हि. क्रि. अ.) उबलना, उमड़ना, जल्दी करना।
उफान–(हि. पुं.) फेन, उबाल, झाग।
उफाल–(हि. पुं.) लंबा डग।
उबकना–(हि. क्रि. स.) वमन करना, उगलना।
उबका–(हि. पुं.) सरकनेवाली गाँठ या फन्दा।
उबकाई–(हि. स्त्री.) वमन का उद्गार, ओकाई, मचली।
उबछना–(हि. क्रि. स.) जल को ऊपर की ओर फेंकना।
उबट–(हि. पुं.) कुमार्ग, ऊँची-नीची भूमि।
उबटन–(हि. पुं.) अभ्यंग, अंगराग, शरीर पर मलने का लेप, बुकवा।
उबटना–(हि. क्रि. स.) उबटन मलना, अंगराग लगाना।
उबडुब करना–(हि. क्रि. अ.) पानी में डूबना या गोते खाना।
उबरना–(हि. क्रि. अ.) मुक्ति पाना, उद्धार होना, छूटना, बच जाना, निस्तार पाना।
उबलना–(हि. क्रि. अ.) ऊपर को उठना, उफनना, उमड़ना, खौलना।
उबसन–(हि. पुं.) उद्वसन, बरतन माँजने का खर-कतवार, जूना।
उबसना–(हि. क्रि. अ., स.) चिपचिपा होना, मैला होना, शिथिल पड़ना, बरतन मलना।
उबहन–(हि. पुं.) पानी खींचने का रस्सा।
उबहना–(हि. क्रि. अ., स.) हथियार उठाना, मियान से तलवार खींचना, उलचना, उमड़ना, जोतना, ऊपर की ओर उठना; (वि.) बिना जूता पहिने हुए।
उबहनी–(हि. स्त्री.) रस्सी।
उबांत–(हि. स्त्री.) वमन, कय, उलटी।
उबाई–(हि. स्त्री.) ऊब जाने की स्थिति, रुखता।
उबाना–(हि. क्रि. स.) ऊबने का कारण होना, बोना, उगाना, बढ़ाना; (वि.) नंगा।
उबार–(हि. पुं.) मोक्ष, उद्धार, निस्तार, छुटकारा, झूल, ओहार।
उबारना–(हि. क्रि. स.) मुक्ति देना, छुटकारा देना, छोड़ाना।
उबारा–(हि. पुं.) पशु के पानी पीने का कुण्ड, जलाधान।
उबाल–(हि. पुं.) आँच लगने पर फेन के साथ ऊपर को उठना, उद्वेग।
उबालना–(हि. क्रि. स.) गरम करना, खौलाना, उसिनना, सिझाना, पानी, दूध आदि खौलाना, जोश उत्पन्न करना।
उबासी–(हि. स्त्री.) जृम्भा, जँभाई।
उबाहना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'उबहना'।
उबिठना–(हि. क्रि. अ.) जी भर जाने पर अच्छा न लगना, फीका मालूम होना, विरक्त होना, घबड़ा जाना।
उबीठना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'उबिठना'।
उबीधना–(हि. क्रि. अ.) फँस जाना, उलझना, धँसना, लगना, छिदना।
उबीधा–(हि. वि.) फँसा हुआ, गड़ा हुआ, धँसा हुआ, कँटीला, काँटों से भरा हुआ।
उबना–(हि. वि.) जूता न पहिने हुए, नंगे पैर का।
उबेरना–(हि. क्रि. स.) देखें 'उबारना'।
उबौना–(हि. वि.) उबानेवाला।
उबौवा–(हि. वि.) ऊब जानेवाला।
उभड़ना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'उभरना'।
उभयंकर–(सं. वि.) दो काम करनेवाला।
उभय–(सं. वि.) हर दो, दोनों।
उभयचर–(सं. वि.) जल तथा स्थल दोनों में रहनेवाला।
उभयतः–(सं. अव्य.) दोनों ओर, दोनों तरफ।
उभयतोमुख–(सं. वि.) दो मुखवाला।
उभयतोमुखी गौ–(सं. स्त्री.) वह गाय जिसके गर्भ से बच्चे का मुख बाहर आ गया हो।
उभयविद्या–(सं. स्त्री.) धार्मिक और आर्थिक विज्ञान।
उभयविध–(सं. वि.) दो प्रकार का।
उभयविपुला–(सं. स्त्री.) आर्या छंद का एक भेद।
उभयव्यंजक–(सं. वि.) दोनों लिंगों के चिह्न रखनेवाला।
उभरना–(हि. क्रि. अ.) उठना, बढ़ना, जवानी पर आना, उछलना, उत्तेजित होना, फिर से निकलना, फूलना, उद्धार पाना, चले जाना, प्रकाशित होना, उतरना, गुजरना, उत्पन्न होना।
उभाड़–(हि. पुं.) उठान, ऊँचाई, वृद्धि।
उभाड़दार–(हि. वि.) उभड़ा हुआ, भड़कीला।
उभाड़ना–(हि. क्रि. स.) उत्तेजित करना, उसकाना, बहकाना।
उभाना–(हि. क्रि. स.) सिर हिलाते हुए हाथ-पैर पटकना।
उभार–(हि. पुं.) उठान, ऊँचाई, वृद्धि, सूजन।
उभारदार–(हि. वि.) उन्नत, ऊँचा, निकला हुआ।
उभारना–(हि. क्रि. स.) उभाड़ना, उठाना, खोलना, निकालना, उड़ाना, चुराना, निकाल ले जाना, आग्रह करना, मिला लेना, पीछे पड़ना।
उभिटना–(हि. क्रि. अ.) ठहरना, रुकना, हिचकना।
उभै–(हि. वि.) देखें 'उभय'।
उमंग–(हि. स्त्री.) आह्लाद, इच्छा, लहर, मौज, पूर्णता, अधिकता, उभाड़मजा।
उमँगना–(हि. क्रि. अ.) बढ़ना, प्रसन्न होना फूले न समाना।
उमंगी–(हि. वि.) आह्लादित, इच्छुक।
उमँड़–(हि. स्त्री.) चढ़ाव, उठान।
उमँड़ना–(हि. क्रि. अ.) चढ़ना, बह चलना, आह्लादित होना, इकट्ठा होना, भरना, छा जाना।
उमकना–(हि. क्रि. अ.) उखड़ना, ऊपर को आना, उमड़ना, जड़ छोड़ देना।
उमग, उमगन–(हि. पुं.) देखें 'उमंग'।
उमगना–(हि. क्रि. अ.) उमड़ना, भरकर ऊपर को उठना, हुलसना।
उमचना–(हि. क्रि. अ., स.) पैर से कुचलना, दबाना, हुमचना, चौकन्ना होना, चकित होना।
उमड़–(हि. स्त्री.) बाढ़, उभाड़, भराव, धावा, चढ़ाव, घिराव।
उमड़ना–(हि. क्रि. अ.) उठकर फैल जाना, चक्कर देना, फैलना, घेरना, आवेग में आ जाना।
उमड़ाना–(हि. क्रि. स.) फैलवाना, बिखराना।
उमदना–(हि. क्रि. अ.) उन्माद में आना, मस्त होना, उत्तेजित होना, उठ खड़ा होना, उमड़ना।
उमदा–(अ. वि.) देखें 'उम्दा'।
उमदाना–(हि. क्रि. अ.) मस्त होना, उमंग में आना।
उमर–(हि. स्त्री.) उम्र, अवस्था, वय, आयुष्य।
उमस–(हि. स्त्री.) अंतरिक्ष उत्ताप, जो गरमी पानी न बरसने से पड़ती है।

उमसना–(हि. क्रि. अ.) उमस की गरमी पड़ना।
उमहना–(हि. क्रि. अ.) वह चलना, उत्तेजित होना, छा जाना, भावविभोर होना, उमंग में आना, उमड़ना।
उमहाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'उमड़ाना'।
उमा–(सं. स्त्री.) शिव की पत्नी, पार्वती, दुर्गा, अलसी, हलदी, कान्ति, कीर्ति, शान्ति, ब्रह्मविद्या।
उमाकना–(हि. क्रि. स.) जड़ से उखाड़ना, नष्ट करना, फेंकना।
उमाकिनी–(हि. वि.) उखाड़नेवाली।
उमाचना–(हि. क्रि. स.) उखाड़ना, निकालना, उभाड़ना, ऊपर को उठाना।
उमाद–(हि. पुं.) देखें 'उन्माद'।
उमाधव–(सं. पुं.) उमापति, शंकर।
उमापति–(सं. पुं.) पार्वती के पति, महादेव।
उमाह–(हि. पुं.) उत्सुकता, उत्साह, उमंग।
उमाहना–(हि. क्रि. अ.) वह चलना, उत्सुक होना, छटपटाना।
उमाहल–(हि. वि.) उत्साहयुक्त, उमंग से भरा हुआ।
उमेठन–(हि. स्त्री.) ऐंठन, बल, मरोड़।
उमेठना–(हि. क्रि. स.) मरोड़ना, ऐंठना।
उमेलना–(हि. क्रि. स.) उन्मीलन करना, प्रकट करना, खोलना।
उमेश–(सं. पुं.) उमापति, शिव।
उम्दगी–(अ. स्त्री.) अच्छाई, खूबी।
उम्दा–(अ. वि.) अच्छा, बढ़िया, उत्तम।
उम्मस–(हि. स्त्री.) पीड़ा।
उम्मीद–(फा. स्त्री.) आशा, अपेक्षा, आकांक्षा; –वार–(पुं.) अपेक्षा रखनेवाला, नौकरी या पद पर नियुक्त होनेवाला प्रत्यार्थी; (मुहा.)–से होना–गर्भवती होना।
उम्मेद, उम्मैद–(फा. स्त्री.) देखें 'उम्मीद'।
उरंग, उरंगम–(हि. पुं.) सर्प।
उर–(सं. पुं.) वक्षःस्थल, हृदय, छाती, मन, चित्त।
उरक्षत–(सं. पुं.) छाती का घाव, क्षयरोग।
उरकना–(हि. क्रि. अ.) ठिठकना, ठहरना, रुकना।
उरग–(सं. पुं.) सर्प, साँप।
उरगड्डी–(हि. स्त्री.) जुलाहे की भूमि में छेद करने की खूँटी।
उरगना–(हि. क्रि. अ., स.) सहन करना, स्वीकार करना।
उरगाद, उरगारि–(सं. पुं.) सर्पों का शत्रु, गरुड़, मोर।
उरगिनी–(सं. स्त्री.) सर्पिणी।
उरज–(हि. पुं.) देखें 'उरोज'।
उरजात–(हि. वि.) देखें 'उरोज'।
उरझना–(हि. क्रि. स.) उलझना, फँसना, गाँठ डालना।
उरझाना–(हि. क्रि. स.) फँसाना।
उरण–(सं. पुं.) भेड़ा, मेढ़ा, मेघ, बादल।
उरणक–(सं. पुं.) देखें 'उरण'।
उरणी–(सं. स्त्री.) भेड़ी।
उरद–(हि. पुं.) एक पौधा जिसकी फलियों के दाने दाल बनाने के काम में आते हैं, उड़द।
उरदी–(हि. स्त्री.) माष, छोटा उड़द, सिपाहियों की पोशाक, वर्दी।
उरधारना–(हि. क्रि. अ.) छिटकाना।
उरमना–(हि. क्रि. अ.) झूमना, लटकना।
उरमाना–(हि. क्रि. स.) लटकाना, डालना।
उरमाल–(हि. पुं.) रुमाल, अँगौछा।
उरला–(हि. वि.) पिछला, जो आगे का न हो।
उरश्छद–(सं. पुं.) कवच।
उरस–(हि. वि.) नीरस; (पुं.) हृदय, छाती।
उरसना–(हि. क्रि. अ.) चंचल होना, हिलना-डोलना, ऊपर-नीचे करना।
उरसाना–(हि. क्रि. स.) उद्वेग बढ़ाना।
उरसिज–(सं. पुं.) स्तन, औरतों की छाती।
उरसिल–(सं. वि.) चौड़ी छातीवाला।
उरस्त्राण–(सं. पुं.) उरश्छद।
उरस्य–(सं. वि.) उर में स्थित, पेट संबंधी, औरस।
उरस्थल–(सं. पुं.) हृदय, छाती।
उरहना–(हि. पुं.) उलाहना।
उराना–(हि. क्रि. अ.) चुक जाना।
उराव–(हि. पुं.) हृदय का उद्गार, अभिलाषा, उमंग, उत्साह।
उराश–(हि. वि.) दीर्घ, बड़ा।
उराहना–(हि. पुं.) देखें 'उलाहना'।
उरिण–(हि. वि.) देखें 'उऋण'।
उरिन–(हि. वि.) देखें 'उऋण'।
उरु–(सं. वि.) विस्तीर्ण, फैला हुआ, बड़ा, अधिक मूल्यवान; (हि. पुं.) जंघा, जाँघ।
उरुजना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'उलझना'।
उरुताप–(सं. पुं.) अधिक उष्णता।
उरुत्व–(सं. पुं.) वृद्धि, बढ़ती।
उरूज–(अ. पुं.) उन्नति, उठान, बढ़ती।
उरे–(हि. अव्य.) उस ओर, आगे, दूर।
उरेखना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'अवरेखना'।
उरेह–(हि. पुं.) चित्रकारी, नक्काशी।
उरेहना–(हि. क्रि. स.) चित्र खींचना, रंग भरना।
उरोज–(सं. पुं.) स्तन, पयोधर, कुच।
उर्णा–(सं. स्त्री.) भेड़ का बाल, ऊन।
उर्द–(हि. पुं.) देखें 'उरद'।
उर्दू–(हि. स्त्री.) सेना, सेना की हाट, फारसी-अरबी मिली हुई भाषा जो फारसी लिपि में लिखी जाती है।
उर्दू-बाजार–(हि. पुं.) फौजी हाट, बड़ी बाजार।
उर्ध–(हि. वि.) देखें 'ऊर्ध्व'।
उर्मि–(हि. स्त्री.) देखें 'ऊर्मि'।
उर्मिला–(सं. स्त्री.) लक्ष्मणजी की पत्नी का नाम।
उर्वर–(हि. वि.) उपजाऊ।
उर्वरा–(सं. स्त्री.) उपजाऊ भूमि, एक अप्सरा का नाम, घुँघराले बाल; (वि. स्त्री.) उपजाऊ।
उर्वशी–(सं. स्त्री.) स्वर्ग की एक वेश्या, एक परी का नाम।
उर्वा–(सं. स्त्री.) शीर्षक, सीस।
उर्विजा–(सं. स्त्री.) देखें 'उर्वीजा'।
उर्वी–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि।
उर्वीजा–(सं. स्त्री.) सीताजी जो पृथ्वी से उत्पन्न हुई थीं।
उर्वीधर–(सं. पुं.) पर्वत, शेषनाग।
उलंग–(हि. वि.) बिना ढका हुआ, नंगा।
उलंघन–(हि. पुं.) देखें 'उल्लंघन'।
उलँघना–(हि. क्रि. स.) उल्लंघन करना, लाँघना, डाँकना, स्वीकार न करना, टालना।
उलका–(हि. पुं.) देखें 'उल्का'।
उलचना–(हि. क्रि. अ., स.) देखें 'उलीचना'।
उलछना–(हि. क्रि. अ., स.) छितराना, इधर-उधर फेंकना, बिखराना।
उलछा–(हि. पुं.) खेत में बीज बोने का काम।
उलझन–(हि. स्त्री.) अटकाव, फँसाव, गड़बड़ी, फेरवट, पेंच, व्यग्रता, चिन्ता, कलह, कठिनता।
उलझना–(हि. क्रि. अ.) फँसना, कठिनाई में पड़ना, फँसना, अटकना, लिपटना, विलंब करना, काम में लगना, गुँथ जाना, मोहित होना, प्रेमासक्त होना, अडचन में पड़ना, लड़ना-झगड़ना, टेढ़ा होना, काम में लीन होना।
उलझा–(हि. पुं.) देखें 'उलझन'।
उलझाना–(हि. क्रि. स.) फँसाना, गाँठ डालना, गड़बड़ मचाना, भ्रान्ति में डालना, झगड़ना, बाँधना, फन्दे में फँसाना, लोभ दिखाना, मोहित करना, रखना, चित्त हटाना, बुरे मार्ग पर

लगाना, टेढ़ा करना, लिप्त करना, विवाह करना।
उलझाव-(हि. पुं.) फेरफार, फँसाव, चिन्ता, उत्पात, गड़बड़, कठिनता, कलह, चक्कर, फेरवट।
उलझौंहा-(हि. वि.) उलझाने या फँसानेवाला।
उलट-(हि. पुं.) परिवर्तन।
उलटना-(हि. क्रि. अ.,स.) ऊपर का नीचे होना, पलटना, फेर देना, चित करना, जीतना, वमन करना, उड़ेलना, विचारना, सोचना, अनुवाद करना, अस्वीकार करना, झूठा समझना, लौटाना, पीना, मतवाला करना, निर्बल करना, नाश करना, निर्धन होना, दोहराना, पढ़ने का बहाना करना, उमड़ना, बिगड़ना, उन्मत्त होना, बदल जाना, दुर्दिन आना, लौट आना, बात काटना, आज्ञा भंग करना, घमंड करना, अंडवंड करना, विपरीत करना, टूट पड़ना; -पलटना-(सं. क्रि. स.) फेरना-फारना, ऊपर-नीचे बदलना।
उलट-पलट, उलट-पुलट-(हि.पुं.) फेरफार, अव्यवस्था, गड़बड़ी।
उलट-फेर-(हि.पुं.) अदल-बदल, हेरफेर, परिवर्तन।
उलटा-(हि. वि.) विपरीत, नीचे का ऊपर किया हुआ; -पलटा-उलट-पलट; (मुहा.)-चला आना-जाकर तुरत लौट आना; -जमाना-अंधेर का जमाना, विपरीत स्थिति; -सीधा-बिना क्रम का; -हाथ-बायाँ हाथ; -उलटीखोपड़ी का-अति मूर्ख; उलटी गंगा बहाना-अनहोनी बात करना; उलटी माला फेरना-बुरा चाहना; उलटी सीधी सुनाना-खरी-खोटी कहना; उलटी सांस लेना-जल्दी-जल्दी साँस लेना, मरणासन्न होना; उलटी हवा बहना-उलटी रीति चलना; उलटे छूरे से मूड़ना-मूर्ख बनाकर छलना।
उलटी-(हि. स्त्री.) वमन, कलैया।
उलटे-(हि. अव्य.) विरुद्ध क्रम से, विरुद्ध न्याय से।
उलथना-(हि. क्रि. अ., स.) ऊपर-नीचे करना, उलट-पलट होना, उलटना।
उलथा-(हि. पुं.) अनुवाद, एक प्रकार का नाच जिसमें ताल पर उछला जाता है, कलैया खाते हुए पानी में कूदना, करवट बदलना।
उलथाना-(हि. क्रि. स.) देखें 'उलटना'।
उलद-(हि. स्त्री.) वर्षा की झड़ी, उँडेल, गिराव।
उलदना-(हि. क्रि. स.) डालना, उड़ेलना, गिराना, ढालना, अच्छा पानी बरसना।
उलमना-(हि. क्रि.स.) सहारा लेना, झुक पड़ना, लटक जाना।
उलरना-(हि. क्रि. स.) फाँदना, कूदना, नीचे-ऊपर होना, झपटना।
उलरुआ-(हि.पुं.) बैलगाड़ी को उलरने या उलटने से रोकने के लिये पीछे बँधी हुई लकड़ी।
उललना-(हि. क्रि. अ.) गिरना-पड़ना, ढलना, इधर-उधर होना, पलटा खाना।
उलसना-(हि. क्रि. अ.) उल्लसित होना, चमकना।
उलहना-(हि. क्रि. अ.) अंकुरित होना, निकलना, फूटना, प्रफुल्लित होना, फूलना, उमड़ना; (पुं.) निन्दा।
उला-(हि. स्त्री.) भेड़ का बच्चा।
उलाटना-(हि. क्रि. स.) देखें 'उलटना'।
उलार-(हि. वि.) (गाड़ी-एक्का इत्यादि) पीछे की ओर भार से दबा हुआ।
उलारना-(हि. क्रि. स.) ऊपर को फेंकना, उछालना, पीछे की ओर भार करना।
उलाहना-(हि. पुं.) उपालंभ, निन्दा।
उलिचना, उलीचना-(हि. क्रि. स.) हाथ या किसी दूसरी वस्तु से जल फेंकना।
उलूक-(सं. पुं.) उल्लू चिड़िया, इन्द्र, ओखली, विश्वामित्र का एक पुत्र, दुर्योधन का एक दूत।
उलूखल-(सं. पुं.) ओखली, गुग्गुल।
उलेटना-(हि. क्रि. स.) देखें 'उलटना'।
उलेड़ना-(हि. क्रि. स.) उड़ेलना, ढरकाना, ढारना।
उलेल-(सं. स्त्री.) आह्लाद, उन्नति, उछल-कूद, वेग; (वि.) मूर्ख।
उल्का-(सं. स्त्री.) प्रकाश, ज्वाला, तेज, मसाल, तेजपुंज, आकाश से गिरी हुई अग्नि, टूटता तारा; -चक्र-(पुं.) उपद्रव, हलचल, गड़बड़, विघ्न; -पात-(पुं.) आकाश से तारे टूटना, विघ्न, आपत्ति; -पाती-(वि.) उपद्रव मचानेवाला; -मुख-(पुं.) मुँह से आग फेंकनेवाला प्रेत; -मुखी-(स्त्री.) शृगाली, लोमड़ी।
उल्टा-(हि. वि.) देखें 'उलटा'।
उल्था-(हि. पुं.) भाषान्तर, अनुवाद।
उल्बण-(सं.वि.) प्रबल, उद्भट, अगाड़।
उल्लंघन-(सं. पुं.) अतिक्रमण, लाँघना, डाँकना, पार जाना, आज्ञा का पालन न करना।
उल्लंघना-(हि.क्रि.स.) अतिक्रमण करना।
उल्लंघनीय-(सं. वि.) लाँघने योग्य।
उल्लंघित-(सं. वि.) लाँघा हुआ।
उल्लंबित-(सं. वि.) सीधा खड़ा हुआ।
उल्लसता-(सं. स्त्री.) प्रसन्नता।
उल्लसन-(सं. पुं.) हर्षजनक व्यापार, रोमांच, रोवें खड़े होना।
उल्लसित-(सं. वि.) फड़कनेवाला, उठा हुआ, आनन्दित।
उल्लाप-(सं. पुं.) शोक।
उल्लापन-(सं. पुं.) समझाकर शास्त्र की व्याख्या करना, ठकुरसोहाती।
उल्लापी-(सं. वि.) चिल्लानेवाला।
उल्लाप्य-(सं. पुं.) प्रेम अथवा हास्य विषयक नाटक जो स्वर्गीय घटना के आधार पर बनाया जाता है।
उल्लाल-(सं. पुं.) एक छन्द जिसके पहिले और तृतीय चरण में पन्द्रह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह मात्राएँ होती हैं।
उल्लाला-(हि.पुं.) एक छन्द-विशेष जिसके प्रत्येक चरण में तेरह मात्राएँ होती हैं।
उल्लास-(सं. पुं.) आनन्द, हर्ष, प्रकाश, चमक, रोशनी, उठान, सफेदी, वृद्धि, एक काव्यालंकार जिसमें एक के गुण-दोष से दूसरे का गुण-दोष दरसाया जाता है।
उल्लासक-(सं. वि.) आनन्द देनेवाला, आनन्दी।
उल्लासन-(सं. पुं.) प्रकट करना, आनन्दित होना, दीप्ति, चमक, नाच-कूद।
उल्लासना-(हि. क्रि. स.) प्रसन्न करना।
उल्लासित-(सं. वि.) प्रसन्न, उल्लासी, चमकदार, आनन्दी।
उल्लिखित-(सं. वि.) खोदा हुआ, छीला हुआ, चित्र बनाया हुआ, रँगा हुआ, उठाया हुआ, ऊपर लिखा हुआ।
उल्लुंठन-(सं. पुं.) अपने अभिप्राय को छिपाकर दूसरे रूप से प्रगट करना।
उल्लू-(हि. पुं.) उलूक, यह पक्षी दिन में अन्धा रहता है; (वि.) मूर्ख; (मुहा.) -का पट्ठा-महामूर्ख; -बनाना-बेवकूफ बनाना, ठगना; -बोलना-उजाड़ होना, वीरान होना।
उल्लेख-(सं. पुं.) लिखना, वर्णन, लेख, वर्णन, नकल, नोटिस, एक काव्यालंकार जिसमें अनुमान और विचार के भेद के अनुसार एक वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन होता है।
उल्लेखन-(सं. पुं.) खोदाई [illegible]-

रण, खोदाई, निर्देश, चित्रकारी।
उल्लेखनीय,उल्लेख्य–(सं.वि.) लिखनेयोग्य।
उल्व–(सं. पुं.) गर्भाशय की झिल्ली जिसमें बच्चा लिपटा हुआ रहता है, खेड़ी।
उवना–(हिं. क्रि. अ.) उदित होना, निकल आना।
उवनि–(हिं.स्त्री.) उदय, निकास, उठाव।
उशीनर–(सं. पुं.) गन्धार देश।
उशीर–(सं. पुं.) शीत-मूलक, खस।
उषा–(सं.स्त्री.) वेद की एक देवी, प्रत्यूष, सवेरा, बाण राजा की कन्या जो अनिरुद्ध को व्याही थी, अरुणोदय की लाली।
उषापति–(सं. पुं.) अनिरुद्ध।
उषीर–(सं. पुं.) देखें 'उशीर'।
उष्ट्र–(सं. पुं.) ऊँट।
उष्ट्रपक्षी–(सं. पुं.) भूमि पर तीव्र गति से चलनेवाला एक पक्षी, शुतुरमुर्ग।
उष्ण–(सं. वि.) तप्त, गरम, तीव्र; (पुं.) आतप, धूप, गरमी की ऋतु, अग्नि, जलन, सूर्य, ज्वर; –कटिबंध–(पुं.) पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है; –कर–(वि.) गरम करनेवाला; –कारी–(पुं.) सूर्य; –काल–(पुं.) गरमी की ऋतु; –ता–(स्त्री.) आतप, गरमी; –त्व–(पुं.) देखें 'उष्णता'; –वाष्प–(पुं.) गरम भाप, आँसू।
उष्णांशु–(सं. पुं.) सूर्य।
उष्णा–(सं.स्त्री.) क्षयरोग,सन्ताप,गरमी।
उष्णिमा–(सं. स्त्री.) उत्ताप, गरमी।
उष्णीष–(सं. पुं.) पगड़ी, साफा, मुकुट।
उष्म–(सं. पुं.) ग्रीष्म काल, उत्ताप, धूप, तीव्रता, क्रोध, श,ष, स, ह–ये चार वर्ण।
उष्मज–(सं. वि.) गरमी में उत्पन्न होनेवाला; (पुं.) छोटे-छोटे कीड़े (मच्छड़, खटमल इ०) जो गरमी से उत्पन्न होते हैं।
उष्मता–(सं. स्त्री.) उष्णता, गरमी।
उष्मा–(सं. स्त्री.) ग्रीष्मकाल, गरमी की ऋतु।
उष्मान्वित–(सं.वि.) उत्तेजित,भड़का हुआ।
उस–(हिं. सर्व.) 'वह' का रूप जो विभक्ति लगने से बनता है।
उसकन–(हिं. पुं.) उबसन, पात्र माँजने का घास-पात का मुट्ठा, उभाड़, उठाव।
उसकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'उकसना'।
उसकाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'उकसाना'।
उसनना–(हिं.क्रि. स.) उबालना, पकाना, पानी डालकर सिझाना।
उसरना–(हिं.क्रि.अ.) सरकना, अलग होना, दूर होना, बीतना, पूरा होना, भूल जाना, बनकर खड़ा होना।
उसाँस–(हिं.स्त्री.) देखें 'उसास'।
उसाना–(हिं.क्रि.स.) पछोरना, फटकारकर भूसी अलगाना।
उसारना–(हिं. क्रि. स.) नाश करना, मिटाना, हटाना, टालना।
उसारा–(हिं. पुं.) छत्ता, ओसारा।
उसालना–(हिं.क्रि.स.) उखाड़ना, मिटाना, हटाना।
उसास–(हिं. स्त्री.) उच्छ्वास, साँस, ऊपर को खींचा हुआ श्वास।
उसासना–(हिं.क्रि.अ.) श्वास लेना, आह भरना।
उसासी–(हिं.स्त्री.) श्वास लेने का समय।
उसिनना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'उसनना'।
उसीजना–(हिं.क्रि.अ.) धीरे-धीरे पकना।
उसीर–(हिं. पुं.) देखें 'उशीर'।
उसीसा–(हिं. पुं.) सिरहाना, तकिया।
उसूल–(अं. पुं.) सिद्धान्त, मत।
उसेना–(हिं.क्रि.स.) पकाना, उबालना।
उहदा–(हिं. पुं.) देख 'ओहदा'।
उहदेदार–(हिं. पुं.) पदाधिकारी।
उहवाँ, उहाँ–(हिं. अव्य.) देखें 'वहाँ'।
उहार–(हिं. पुं.) देखें 'ओहार'।
उहि–(हिं. सर्व.) देखें 'वह'।
उही–(हिं. सर्व.) देख 'वही'।
उहै–(हिं. सर्व.) देखें 'वही'।

ऊ

ऊ–संस्कृत तथा हिन्दी स्वर वर्ण का छठा अक्षर। यह 'उ' का दीर्घ रूप है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है; (पुं.) महादेव, इन्द्र, रक्षक; (अव्य.) ए, अरे, भी; (सर्व.) वह।
ऊँख–(हिं. स्त्री.) देखें 'ऊख'।
ऊँग–(हिं. स्त्री.) देखें 'ऊँघ'।
ऊँगना–(हिं. पुं.) चौपायों का एक रोग।
ऊँगा–(हिं. पुं.) अपामार्ग, चिचिड़ा।
ऊँघ–(हिं. स्त्री.) ऊँघाई, झपकी, धुरे में लपेटी हुई सूत की गेंडुरी।
ऊँघन–(हिं.स्त्री.) निद्रागम, झपकी।
ऊँघना–(हिं. क्रि.अ.) झपकी लेना, निद्रागम होना, आँखें झिपना।
ऊँच–(हिं. वि.) उच्च, ऊँचा।
ऊँच-नीच–(हिं.वि.) छोटा-बड़ा, भला या बुरा, छोटी अथवा बड़ी जाति का।
ऊँचा–(हिं.वि.) उच्च, श्रेष्ठ, उन्नत, उठा; हुआ; –नीचा–(वि.) भला-बुरा, बड़ा-छोटा; (मुहा.)–सुनना–कुछ बहिरा होना; –सुनाना–खरी-खोटी सुनाना; **ऊँची दुकान फीका पकवान**–विख्याति के अनुसार काम, गुण आदि न होना।
ऊँचाई–(हिं. स्त्री.) उच्चता, गौरव, बड़ाई, श्रेष्ठता, उठान।
ऊँचे–(हिं. अव्य.) ऊपर को, ऊँची ओर; (मुहा.) **–नीचे पर पड़ना**–बुरे काम में प्रवृत्त होना।
ऊँछ–(हिं. पुं.) एक राग विशेष।
ऊँछना–(हिं. क्रि.स.) बाल झाड़ना, कंघी करना।
ऊँट–(हिं. पुं.) उष्ट्र, ऊँची गर्दन का वह चौपाया जो बोझ लादने और सवारी के काम में आता है; (मुहा.)–**किस करवट बैठता है**–मामले का नतीजा या परिणाम क्या होता है।
ऊँटकटारा, ऊँटकटीरा–(हिं. पुं.) एक काँटेदार पौधा जो झाड़ियों में उगता है।
ऊँटगाड़ी–(हिं. स्त्री.) ऊँट से खींची जानेवाली गाड़ी।
ऊँटनी–(हिं. स्त्री.) मादा ऊँट।
ऊँटवान–(हिं. पुं.) ऊँट हाँकनेवाला।
ऊँड़ा–(हिं. पुं.) वह पात्र जिसमें भरकर रुपया-पैसा, गहना इ० भूमि में गाड़ा जाता है; (वि.) गहरा।
ऊँदर–(हिं. पुं.) इन्दुर, चूहा।
ऊँधा–(हिं. वि.) औंधा, उलटा।
ऊँहूँ–(हिं. अव्य.) नहीं, कभी नहीं, यह नहीं हो सकता।
ऊअना–(हिं. क्रि. अ.) उदय होना, निकलना, उगना।
ऊआबाई–(हिं. स्त्री.) निरर्थक वार्ता; (वि.) निरर्थक, अंडबंड, व्यर्थ।
ऊक–(हिं.पुं.) उल्का, टूटता तारा, लुक; (स्त्री.) आग, लुआठी, जलन, ताप, चूक।
ऊकना–(हिं. क्रि. अ., स.) चूकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, ताप देना, जलाना।
ऊख–(हिं. स्त्री.) इक्षु, ईख, गन्ना, गरमी, उमस; (वि.) गरमी से व्याकुल।
ऊखल–(हिं. पुं.) उलूखल, ओखली जिसमें अन्न की भूसी मूसल से कूटकर अलगाई जाती है।
ऊगना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'उगना'।
ऊगरा–(हिं.पुं.) उबाला हुआ खाद्य पदार्थ।
ऊचर–(हिं. वि.) नीरस।
ऊज–(हिं. पुं.) उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा।
ऊजड़–(हिं. वि.) जनशून्य, न बसा हुआ, उजाड़।
ऊजर–(हिं. वि.) उजला, उजाड़।
ऊजरा–(हिं. वि.) उजला, स्वच्छ।

ऊटक-नाटक–(हिं. पुं.) वृथा का कार्य, निरर्थक इधर-उधर करना, बेकाम का काम।
ऊटना–(हिं. क्रि. अ.) सोचना, विचारना, मन बढ़ाना, उत्साहित होना, अभिमान करना, उमंग में आना।
ऊटपटांग–(हिं. वि.) बेढंगा, व्यर्थ, निरर्थक, अंडबंड, टेढ़ा-मेढ़ा।
ऊड़ना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'ऊढ़ना'।
ऊड़ा–(हिं. पुं.) न्यूनता, कमी, घाटा, अकाल, विनाश।
ऊड़ी–(हिं. स्त्री.) जुलाहे की फिरकी, डुबकी।
ऊढ़–(सं. वि.) व्याहा हुआ, उठाया हुआ, पकड़ा हुआ, स्वीकार किया हुआ।
ऊढ़ना–(हिं. क्रि. स.) चिन्तन करना, अनुमान करना, सोचना, व्याह करना।
ऊढ़ा–(सं. स्त्री.) भार्या, विवाहिता स्त्री, वह व्याही हुई स्त्री जो निज पति को छोड़कर अन्य पुरुष से प्रेम करती है।
ऊत–(सं. वि.) बुना हुआ, गुथा हुआ, सिला हुआ; (हिं. वि.) पुत्रहीन, निःसन्तान, मूर्ख, गँवार; (पुं.) वह जो मरने पर पिंड आदि न पाकर प्रेत होता है।
ऊताताई–(हिं. वि.) उजड्ड, अव्यवस्थित।
ऊद–(अं. पुं.) अगर का वृक्ष, ऊदबिलाव।
ऊदबत्ती–(हिं. स्त्री.) धूपबत्ती जो पूजा-पाठ के समय में धूप देने के लिए सुलगाई जाती है।
ऊदबिलाव–(हिं. पुं.) जल-स्थल दोनों में रहनेवाला नेवले के आकार का एक जन्तु।
ऊदल–(हिं. पुं.) आल्हा के छोटे भाई जो महोबे के राजा परमाल के मुख्य सरदार थे।
ऊदा–(हिं. वि.) लाली मिला हुआ काले रंग का, बैंगनी; (पुं.) बैंगनी रंग का घोड़ा।
ऊदीसेम–(हिं. स्त्री.) केंवाच।
ऊधम–(हिं. पुं.) उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा।
ऊधमी–(हिं. वि.) उपद्रवी, उत्पाती।
ऊधव–(हिं. पुं.) कृष्ण का सखा।
ऊधो–(हिं. पुं.) देखें 'ऊधव'।
ऊन–(सं. वि.) छोटा, न्यून, कम, असंपूर्ण; (हिं. पुं.) भेड़-बकरी का कोमल रोयाँ जिससे कम्बल और पहिनने के गरम कपड़े बीने जाते हैं।
ऊनक–(सं. वि.) छोटा, न्यून, हीन।
ऊनता–(हिं. स्त्री.) न्यूनता, कमी।
ऊना–(हिं. वि.) छोटा, कम, न्यून, तुच्छ, हीन।
ऊनित–(सं. वि.) घटाया या कम किया हुआ।

ऊनी–(हिं. वि.) ऊन का बना हुआ; (स्त्री.) घटी, कमी, उदासी, दुःख, खेद।
ऊप–(हिं. पुं.) अनाज का सूद जो किसान महाजन को बोने के लिये अन्न लेने पर उसका सवाई देता है।
ऊपना–(हिं. क्रि. स.) सूद पर (सवाई) अन्न का ऋण देना।
ऊपर–(हिं. वि., अव्य.) उपरि, ऊँचे स्थान में, ऊँचाई पर, आगे, अधिक, पीछे, प्रतिकूल, अतिरिक्त, किनारे पर, उच्च कोटि में, सहारे पर, पहिले (पूर्वगत); (मुहा.)–ऊपर–दिखावटी रूप से;–की आमदनी–वेतन के अतिरिक्त इधर-उधर से मिला हुआ धन;–से–जाहिरा, प्रकट में।
ऊपरी–(हिं. वि.) बहिरंग, बाहरी, बनावटी, अपरिचित, शिथिल, ढीला, दिखौवा, अयोग्य, ऊपर का, बाहर का, पराया।
ऊब–(हिं. स्त्री.) व्यग्रता, घबड़ाहट, उद्वेग, अरुचि, उमंग।
ऊबट–(हिं. पुं.) कठिन मार्ग; (वि.) ऊँचा-नीचा।
ऊबड़-खाबड़–(हिं. वि.) ऊँचा-नीचा, असमतल, अटपटा।
ऊबना–(हिं. क्रि. अ.) उद्विग्न होना, उकताना, घबड़ाना, अकुलाना, घृणा करना।
ऊबर–(हिं. वि.) अधिक।
ऊबरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'उबरना'।
ऊभ–(हिं. वि.) ऊँचा-नीचा, उठा हुआ, उमड़ा हुआ; (स्त्री.) व्याकुलता, घबड़ाहट, उमंग, उष्मा, गरमी, उमस, श्वास रोग।
ऊभना–(हिं. क्रि. अ.) उद्विग्न होना, घबड़ाना, उठना, जल्दी-जल्दी साँस लेना।
ऊभर–(हिं. वि.) देखें 'ऊबट'।
ऊभा–(हिं. पुं.) पोखरी, गड्ढा।
ऊभा-साँसी–(हिं. स्त्री.) उद्वेग, घबड़ाहट।
ऊमक–(हिं. स्त्री.) उठान, उभाड़, बाढ़, वेग, झपट।
ऊमना–(हिं. क्रि. स.) उठना, बढ़ना, उमड़ना।
ऊमस–(हिं. स्त्री.) देखें 'उमस'।
ऊमा–(हिं. स्त्री.) जव या गेहूँ की हरी बाल।
ऊरज–(हिं. वि.) देखें 'ऊर्ज'।
ऊरध–(हिं. वि.) देखें 'ऊर्ध्व'।
ऊरी–(हिं. स्त्री.) जुलाहे की सलाका।
ऊरु–(सं. पुं.) जानु, जाँघ।
ऊरुग्राह–(सं. पुं.) ऊरुस्तम्भ।
ऊरुसंभव–(सं. पुं.) वैश्य, बनिया।

ऊरुस्तंभ–(सं. पुं.) वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।
ऊर्ज–(सं. वि.) बलिष्ठ, शक्तिमान्, बलवान्; (पुं.) बल, शक्ति, कार्तिक का महीना, उत्साह, निश्वास, जीवन, वीर्य, जल, एक काव्यालंकार जिसमें किसी के सहायकों की कमी हो जाने पर भी गर्व का त्याग न करना वर्णन किया जाता है।
ऊर्जवाहु–(सं. पुं.) शची के एक पुत्र का नाम।
ऊर्जस्विनी–(सं. स्त्री.) प्रियव्रत की कन्या का नाम।
ऊर्जस्वी–(सं. पुं.) एक अलंकार जिसमें अतिशय अहंकार दरसाया जाता है; (वि.) अति बलवान्, तेजस्वी, पराक्रमी।
ऊर्जा–(सं. स्त्री.) बल, उत्साह, वृद्धि।
ऊर्ण–(सं. पुं.) भेड़ या बकरी का बाल, ऊन।
ऊर्णपट–(सं. पुं.) लूता, मकड़ा।
ऊर्णा–(सं. स्त्री.) चित्ररथ गन्धर्व की पत्नी।
ऊर्दर–(सं. पुं.) वीर, बहादुर, योद्धा।
ऊर्ध्व–(सं. वि.) उच्च, ऊँचा, ऊपरी, छोड़ा हुआ; (पुं.) ऊँचाई, उच्चता।
ऊर्ध्वकर्ण–(सं. वि.) गर्दन उठाये हुए, कान खड़ा किये हुए।
ऊर्ध्वकर्म–(सं. पुं.) मृत व्यक्ति के निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध इत्यादि।
ऊर्ध्वकाय–(सं. वि.) उन्नत शरीरवाला।
ऊर्ध्वकेतु–(सं. वि.) उड़ती हुई ध्वजावाला।
ऊर्ध्वकेश–(सं. वि.) जिसके बाल खड़े हों।
ऊर्ध्वक्रिया–(सं. स्त्री.) ऊर्ध्वकर्म।
ऊर्ध्वग–(सं. वि.) स्वर्गगामी, ऊँचा जानेवाला।
ऊर्ध्वगत–(सं. वि.) ऊपर गया हुआ।
ऊर्ध्वगति–(सं. स्त्री.) चढ़ाई, स्वर्गारोहण, मुक्ति।
ऊर्ध्वगमन–(सं. पुं.) देखें 'ऊर्ध्वगति'।
ऊर्ध्वगामी–(सं. वि.) ऊपर जानेवाला, मुक्त।
ऊर्ध्वचरण–(सं. पुं.) भूमि में सिर गाड़कर तथा पैर ऊपर उठाकर तपस्या करनेवाला साधु।
ऊर्ध्वता–(सं. स्त्री.) उच्चता, ऊँचाई।
ऊर्ध्वतिलक–(सं. पुं.) [illegible]।
ऊर्ध्वदृष्टि–(सं. वि.) ऊर्ध्वनेत्र, ऊँचे आदर्श पर दृष्टि रखनेवाला; (स्त्री.) ऊँची दृष्टि।
ऊर्ध्ववेग–(सं. पुं.) ऊपरी भाग।
ऊर्ध्वदेह–(सं. पुं.) मरने के बाद प्राप्त होनेवाला शरीर।
ऊर्ध्वद्वार–(सं. पुं.) [illegible]।

ऊर्ध्वपथ–(सं. पुं.) ऊपरी मार्ग, आकाश।
ऊर्ध्वपुंड्र–(सं. पुं.) चन्दन आदि से मस्तक पर लगाया हुआ लम्बा तिलक।
ऊर्ध्वबाहु–(सं. पुं.) वह साधु जो सर्वदा अपना एक या दोनों हाथ ऊपर को उठाये रहता है।
ऊर्ध्वभाक्–(सं. पुं.) बड़वानल।
ऊर्ध्वमुख–(सं. पुं.) अग्नि; (वि.) उन्नत, मुख ऊपर किया हुआ।
ऊर्ध्वरेखा–(सं. स्त्री.) चरण की वह रेखा जो अँगूठे या उसके पास की अँगुली से आरम्भ होकर एड़ी तक पहुँचती है, (जिसको यह रेखा होती है वह अंशावतारी समझा जाता है। हाथ में भी पूर्ण या अपूर्ण मणिबन्ध से निकलकर ऊपर जाती है।)
ऊर्ध्वरेता–(सं. पुं.) महादेव, भीष्म, हनुमान, सनकादि मुनि, संन्यासी; (वि.) जो वीर्य को कभी न गिराता हो, पूर्ण ब्रह्मचारी।
ऊर्ध्वरोमा–(सं.वि.) जिसके रोंगटे खड़े हों।
ऊर्ध्वलिंग–(सं. पुं.) महादेव।
ऊर्ध्वलोक–(सं.पुं.) स्वर्ग, वैकुण्ठ, आकाश।
ऊर्ध्वशायी–(सं. वि.) उतान सोनेवाला; (पुं.) महादेव।
ऊर्ध्वश्वास–(सं. पुं.) लंबी साँस, मरते समय का श्वास।
ऊर्ध्वस्थित–(सं. वि.) ऊपर रहनेवाला।
ऊर्ध्वांग–(सं. पुं.) मस्तक, सिर।
ऊर्मि–(सं. स्त्री.) तरंग, लहर, उभाड़, प्रकाश, वेग, भंग, भ्रान्ति, भूल, समूह, शीघ्रता, पीड़ा, कष्ट, वेदना, उत्कण्ठा, छ की संख्या, घोड़े की लहरिया चाल, (शोक, मोह, जरा, मृत्यु, क्षुधा और प्यास को ऊर्मि कहते हैं)।
ऊर्मिका–(सं.स्त्री.) अँगूठी, भौंरे का गुंजन।
ऊर्मिमाली–(सं. पुं.) समुद्र।
ऊर्मिला–(सं. स्त्री.) सीताजी की बहिन और लक्ष्मण की पत्नी।
ऊर्वरा–(सं. वि.) देखें 'उर्वरा'।
ऊर्वशी–(सं. स्त्री.) देखें 'उर्वशी'।
ऊर्वस्थि–(सं. पुं.) जांघ की हड्डी।
ऊलंग–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की चाय।
ऊल-जलूल–(हिं. वि.) ऊटपटांग, असम्बद्ध, बेसिर-पैर का, असभ्य, मूर्ख, गँवार, अशिष्ट।
ऊलना–(हिं. क्रि. अ.) उछलना।
ऊलर–(हिं. स्त्री.) काश्मीर की एक झील का नाम।
ऊलूक–(सं. पुं.) देखें 'उलूक'।

ऊषःकाल–(सं. पुं.) अरुणोदय, सवेरा।
ऊष–(सं. पुं.) खारी मिट्टी, कान का छेद, तड़का।
ऊषक–(सं. पुं.) प्रत्यूष समय, सवेरा।
ऊषर–(सं. पुं.) नोनी भूमि, रेह की भूमि, ऊसर।
ऊषा–(सं. स्त्री.) अरुणोदय, सवेरा, पौ फटने का समय, अनिरुद्ध की पत्नी जो बाणासुर की कन्या थी।
ऊष्म–(सं. पुं.) गरमी, ग्रीष्म काल, धूप, भाप; (वि.) गरम।
ऊष्मवर्ण–(सं.पुं.) श, ष, स और ह—ये चार अक्षर व्याकरण में ऊष्म कहलाते हैं।
ऊष्मांतःस्थ–(सं.पुं.) अर्धस्वर, जो पूरा न हो।
ऊष्मा–(सं.स्त्री.) गरमी, ग्रीष्मकाल, तपन।
ऊसर–(हिं. पुं.) वह भूमि जो नोनी हो, जिसमें रेह हो और जिसमें अन्न न उत्पन्न होता हो।
ऊह–(सं. पुं.) उत्पत्ति, तर्क, परीक्षा, आरोप; (हिं. अव्य.) विस्मयादि-सूचक शब्द, क्लेशसूचक शब्द।
ऊहन–(सं. पुं.) तर्क-वितर्क, वाद।
ऊहापोह–(सं. वि.) तर्क द्वारा संशय मिटाया हुआ, बेधड़क दान देनेवाला।
ऊहित–(सं. वि.) तर्क किया हुआ, छिपा हुआ, अनुमान किया हुआ।

ऋ

ऋ–स्वर वर्ण का सातवाँ अक्षर, मूर्धास्थान से इसका उच्चारण होता है; (सं. स्त्री.) देवमाता, अदिति, निन्दा, प्राप्ति; (अव्य.) हँसी, ठिठोली।
ऋक्–(सं. स्त्री.) ऋग्वेद, ऋग्वेदोक्त मन्त्र, स्तुति, पूजा।
ऋक्थ–(सं. पुं.) धन, सुवर्ण, उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।
ऋक्ष–(सं. पुं.) नक्षत्र, तारा, राशि, भालू।
ऋक्षजिह्व–(सं.पुं.) एक प्रकारका कुष्ठ रोग।
ऋक्षनाथ–(सं. पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा।
ऋक्षनेमि–(सं. पुं.) विष्णु।
ऋक्षपति–(सं. पुं.) ऋक्षनाथ।
ऋक्षराज–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
ऋक्षवान्–(सं. पुं.) ऋक्षपर्वत जो नर्मदा नदी के किनारे से गुजरात तक फैला है।
ऋक्षेश–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
ऋग्वेद–(सं.पुं.) चारों वेदों में से पहला वेद।
ऋग्वेदी–(सं. वि.) ऋग्वेद का पढ़नेवाला या जाननेवाला।
ऋचा–(सं. स्त्री.) वेदमन्त्र, स्तुति, पूजा।

ऋच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'ऋक्ष'।
ऋच्छका–(सं. स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा।
ऋजीक–(सं. वि.) मिला हुआ, बिगाड़ा हुआ, बिगड़ा हुआ; (पुं.) इन्द्र, धुआँ।
ऋजु–(सं. वि.) सीधा (जो टेढ़ा न हो), सरल, अनुकूल, प्रसन्न, सुन्दर, सुगम; (पुं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।
ऋजुता–(सं. स्त्री.) सरलता, सीधापन, सुगमता, सचाई।
ऋजुनीति–(सं. स्त्री.) सीधी चाल।
ऋजुहस्त–(सं. वि.) हाथ फैलाया हुआ।
ऋण–(सं. वि.) उधार, गणित में क्षय राशि; (क्रि. प्र.) –उतारना–ऋण मुक्त होना; –पटाना–लिया हुआ ऋण चुका देना।
ऋणकर्ता–(सं. वि.) ऋण लेनेवाला।
ऋणग्रस्त–(सं. वि.) वह ऋणयुक्त, ऋण से लदा हुआ।
ऋणग्रह–(सं. पुं.) ऋण लेनेवाला।
ऋणग्राहक–(सं. वि.) ऋण लेनेवाला।
ऋणद–(सं. वि.) ऋण चुकानेवाला।
ऋणदाता, ऋणदायक–(सं. वि.) ऋण देनेवाला।
ऋणमुक्त–(सं.वि.) कर्ज अदा किया हुआ।
ऋणमुक्ति–(सं. स्त्री.) ऋण-परिशोधन।
ऋणमोक्ष–(सं. पुं.) ऋण से छुटकारा।
ऋणशुद्धि (सं. स्त्री.), ऋणशोधन–(सं. पुं.) ऋण चुकाना।
ऋतंभर–(सं. वि.) सचाई रखनेवाला; (पुं.) परमेश्वर।
ऋतंभरा–(सं. स्त्री.) बुद्धि, ज्ञान।
ऋत–(सं. पुं.) सत्य, सचाई, व्यवस्था, धर्मनीति, सूर्य; (वि.) सत्य, पूजित।
ऋतधामा–(सं. पुं.) विष्णु, परमेश्वर; (वि.) शुद्ध प्रकृतिवाला।
ऋतस्पति–(सं. पुं.) यज्ञपति, वायु।
ऋति–(सं. स्त्री.) कल्याण, भलाई, आक्रमण, रीति।
ऋतु–(सं. स्त्री.) कालविशेष, गरमी, बरसात या जाड़े का दिन, हिम, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा और शरत्–ये छः ऋतुएँ हैं, स्त्रीरज, चमक; –कर–(सं. पुं.) महादेव, शंकर; –काल–(सं. पुं.) ऋतु का समय, स्त्री के रजोदर्शन की पहली रात्रि से सोलहवीं रात्रि तक का काल; –गमन–(सं. पुं.) ऋतुकाल में स्त्री से सम्भोग; –गामी–(सं. वि.) ऋतुकाल में स्त्री-सम्भोग करनेवाला; –चर्या–(सं. स्त्री.) ऋतुओं के अनुसार आहार-

विहार का आचरण; –मती–(सं. स्त्री.) रजस्वला स्त्री; –मुख–(सं. पुं.) पूर्ण चान्द्र मास का पहिला दिन; –राज–(सं. पुं.) वसन्त काल; –वती–देखें 'ऋतुमती'; –विपर्यय–(सं. पुं.) ऋतु का उलट-पलट; –संधि –(सं. पुं.) दो ऋतुओं के मिलन का काल; –समय–(सं.पुं.) देखें 'ऋतुकाल'; –स्नाता–(सं. स्त्री.) ऋतुकाल के चौथे दिन स्नान करनेवाली स्त्री; –स्नान–(सं. पुं.) रजोदर्शन के चौथे दिन किया जानेवाला स्नान।

ऋत्विक्–(सं. पुं.) पुरोहित, वेद के मंत्रों से यज्ञ में कर्मकाण्ड करनेवाला।

ऋत्विज–(सं. पुं.) देखें 'ऋत्विक'।

ऋद्ध–(सं. वि.) सम्पन्न, समृद्ध, धनी।

ऋद्धि–(सं. पुं.) वृद्धि, बढ़ती, समृद्धि, सिद्धि, वैद्यक में कही हुई अष्टवर्ग के अन्तर्गत एक औषधि।

ऋद्धि-सिद्धि–(सं. स्त्री.) सुख-सम्पत्ति, समृद्धि और सफलता–ये गणेशजी की दासियाँ कही गई हैं।

ऋभु–(सं. पुं.) यज्ञदेवता, देवगण विशेष।

ऋषभ–(सं.पुं.) वृषभ, बैल, (कुछ शब्दों के पीछे लगने से श्रेष्ठता सूचित करता है), गायन में सात स्वरों में से दूसरा, एक औषधि विशेष।

ऋषि–(सं. पुं.) शास्त्रप्रणेता, वेद-मन्त्रों का प्रकाशन, ज्ञान द्वारा संसार पार करनेवाला; –तर्पण–(पुं.) ऋषियों को दी जानेवाली श्रद्धाञ्जलि; –पंचमी–(स्त्री.) भाद्रपद शुक्ला पंचमी का व्रत।

ऋष्यमूक–(सं. पुं.) भारतवर्ष के दक्षिण का एक पर्वत जिसका वर्णन रामायण में किया गया है।

ऋष्यश्रृंग–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, (ये विभाण्डक के पुत्र थे।)

ए

ए–स्वर वर्ण का ग्यारहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालु है; (पुं.) विष्णु; (हि. सर्व.) यह; (अव्य.) संबोधन या बुलाने में प्रयुक्त होता है।

ऐंच–(हि. स्त्री.) न्यूनता, कमी, विलम्ब।

ऐंचना–(हि. क्रि. स.) खिंचना, लकीर खींचना, निकालना, लेना, रखना, सुनाना, लगाना।

ऐंच-पेंच–(हि. पुं.) हेर-फेर, उलझन, घुमाव, टेढ़ी चाल।

ऐंचाताना–(हि.वि.) तिरछा देखनेवाला।

ऐंचातानी–(हि. स्त्री.) कठिनता, खींच-खाँच, कलह, युद्ध।

ऐंड़बेंड़ा–(हि. वि.) उलटा-पुलटा, अंड-बंड, ऊँचा-नीचा।

ऐंड़ी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो रेंड़ के पत्ते खाता है, इस कीड़े से निकला हुआ रेशम, अंडी।

ऐंड़ुआ–(हि. पुं.) सिर पर बोझ के नीचे रखने की कपड़े की गद्दी, बिड़ुआ, गेंडुरी।

एकंग–(हि. वि.) एकाकी, अकेला।

एकंगा–(हि. वि.) एक ही दिशा में रहनेवाला।

एकंगी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का गदका।

एक–(सं. वि.) प्रधान, अद्वितीय, सच्चा, समान, केवल, अकेला, अन्य, थोड़ा, बराबर, पहिला, कोई; (पुं.) परमेश्वर, पहला अंक, १; (मुहा.) –अनार सौ बीमार–थोड़ी सी चीज पर बहुत से खानेवाले; –आँख से सब को देखना–एक-सा मानना या व्यवहार करना; –एक–(वि.) हरेक, प्रत्येक; (अव्य.) एक के बाद एक; –एक करके–क्रम से, एक के बाद दूसरा; –और एक ग्यारह होते हैं–दो के मेल से शक्ति आती है; –कलम–एक बारगी, बिलकुल, पूरे तौर पर; –की चार लगाना–बहुत सा झूठ-सच कहकर जोड़ना; –के दस सुनाना–एक कड़ी बात के बदले दस कड़ी बातें सुनाना; –चना भाँड़ नहीं फोड़ सकता–अकेला आदमी बहुत कुछ करने में असमर्थ होता है; –चने की दाल–बिलकुल एक सा; –टक–टकटकी बाँध कर; –तवे की रोटी–एक घराने के व्यक्ति; –तार–सदृश, समान, तुल्य; –थैली के चट्टे-बट्टे–दो व्यक्तियों का एकसा मिजाज या स्वभाव होना; –तो–पहिली तो यह है कि; –दम–तुरत, बिलकुल; –दिल होना–अच्छी तरह से मिल जाना; –दूसरे को–परस्पर, आपस में; न चलना–सफलता प्राप्त न करना; –पंथ दो काज–एक उपाय से दो काम सिद्ध होना; –पेट के–सहोदर; –बात–यथार्थ बात, पक्की बात; –राय–(हि. स्त्री.) एकमति; –से एक–एक से एक बढ़कर; –से दो होना–ब्याह होना या करना; –होना–मिल जाना।

एकक–(सं. वि.) असहाय, अकेला।

एककालीन–(सं. वि.) समकालीन, एक ही समय उत्पन्न होनेवाला।

एकचक्र–(सं. पुं.) सूर्य का रथ, एक असुर का नाम; (वि.) चक्रवर्ती।

एकचर–(सं. पुं.) गैंडा; (वि.) अकेला घूमनेवाला, एक ही अनुचरवाला।

एकचरण–(सं.पुं.) एक पैरवाला मनुष्य; (वि.) एक पैरवाला।

एकचर्या–(सं.स्त्री.) अकेले चलने की स्थिति।

एकचारिणी–(सं. स्त्री.) पतिव्रता स्त्री।

एकचारी–(सं. वि.) अकेला चलनेवाला।

एकचिंतन–(सं. वि.) एक ही विषय पर ध्यान रखनेवाला।

एकचित–(हि. वि.) देखें 'एकचित्त'।

एकचित्त–(सं. वि.) अनन्यचेता, एक ही ओर ध्यान लगानेवाला।

एकचित्तता–(सं.स्त्री.) ध्यान की स्थिरता।

एकचोबा–(हि. पुं.) एक ही खंभे के सहारे खड़ा होनेवाला तंबू।

एकछत्र–(सं. वि.) बिना दूसरे मालिक का, अभिन्न शासन का; (पुं.) अनन्य शासन, जहाँ पूरी आज्ञा एक ही राजा की होती है; (अव्य.) एक की आज्ञापर।

एकज–(सं. वि.) अकेला उत्पन्न होने-वाला, निराला, एकही; (पुं.) शूद्र, राजा

एकजन्मा–(सं. पुं.) राजा, शूद्र।

एकजात–(सं. वि.) सहोदर, एक ही माँ-बाप से उत्पन्न, एक ही वस्तु से उत्पन्न।

एकजाति–(सं. वि.) समान जातिवाला, एक वंश में उत्पन्न होनेवाला।

एकजातीय–(सं. वि.) एक ही जाति से सम्बन्ध रखनेवाला।

एकज्या–(सं. स्त्री.) किसी वृत्त के व्यासार्ध का चिह्न।

एकटंगा–(सं. पुं.) एक पैर लँगड़ा।

एकटकी–(हि.स्त्री.) निश्चल दृष्टि टकटकी।

एकट्ठा–(हि. वि.) एकत्र, जमा किया हुआ।

एकडाल–(हि. वि.) अभिन्न; (पुं.) वह छुरा जिसका फल और बेंट एक ही लोहे के टुकड़े से बनी होती है।

एकतः–(सं. अव्य.) एक पक्ष में, एक ओर से, अकेले।

एकतरा–(हि. पुं.) एक दिन के अन्तर पर आनेवाला ज्वर।

एकता–(सं. स्त्री.) मेल, मेलजोल, बराबरी, समानता, अभिन्नता।

एकतान–(सं. वि.) एक ही ध्यान में लिप्त लगाये हुए, एकाग्रचित्त, तन्मय, लीन; (पुं.) स्वर और ताल की एकता, गाने-

बजाने का मेल ।
एकतारा–(हिं. पुं.) एक तारवाला सितार के समान बाजा ।
एकताल–(सं. वि.) गीत-वाद्य के सुरीलापन से युक्त ।
एकताला–(हिं. पुं.) एक ही ताल का गाना-बजाना जिसमें दूसरे ताल की आवश्यकता न हो ।
एकतालीस–(हिं. वि.) चालीस और एक; (पुं.) चालीस और एक की संख्या, ४१ ।
एकतीस–(हिं. वि.) तीस और एक; (पुं.) तीस और एक की संख्या, ३१ ।
एकत्र–(सं. वि., अव्य.) समवेत, एक ही स्थान में, एक साथ, मिल-जुलकर ।
एकत्रित–(सं. वि.) इकट्ठा किया हुआ ।
एकत्व–(सं. पुं.) एकता, मेल, बराबरी, एकाई ।
एकदंत–(सं. पुं.) गणेशजी ।
एकदंष्ट्र–(सं. पुं.) देखें 'एकदंत' ।
एकदरा–(हिं. पुं.) वह दालान जिसमें एक ही द्वार हो ।
एकदस्ती–(फा. स्त्री.) कुश्ती की एक युक्ति ।
एकदा–(सं. अव्य.) एक ही समय, एक बार, किसी दिन ।
एकदृष्टि–(सं. स्त्री.) एक ही पदार्थ पर स्थिर दृष्टि; (वि.) काना; (पुं.) कौवा ।
एकदेव–(सं. पुं.) परमेश्वर ।
एकदेश–(सं. पुं.) एक स्थान ।
एकदेशी, एकदेशीय–(सं. वि.) एक देशवासी, जो सर्वत्र व्यापक न हो, एक ही अवसर के लिए होनेवाला ।
एकधर्मी–(सं. वि.) समान धर्मवाला ।
एकधा–(सं. अव्य.) साधारण रूप से एक-सा या कए जैसा ।
एकनयन–(सं. वि.) एकाक्ष, काना; (पुं.) कुबेर, कौवा
एकनिष्ठ–(सं. वि.) एकासक्त, एक ही में लीन ।
एकनेत्र–(हिं. वि.) देखें 'एकनयन' ।
एकपक्ष–(सं. वि.) एक ही पक्षवाला, पक्षपाती ।
एकपक्षीय–(सं. वि.) एक तरफा ।
एकपटा–(हिं. वि.) एक ही पाटवाला, बिना जोड़ का ।
एकपतिका–(सं. स्त्री.) एकही पति की स्त्री ।
एकपत्नी–(सं. स्त्री.) पतिव्रता स्त्री, सपत्नी ।
एकपद–(सं. वि.) एक पैरवाला; (पुं.) साधारण शब्द, वैकुण्ठ ।
एकपदी–(सं. वि., स्त्री.) एक-पदात्मक छन्द, एक पगडंडी ।
एकपिंड–(सं. वि.) सपिण्ड, नातेदार ।
एकपुत्र–(सं. वि.) जिसको एकही बेटा हो ।
एकपुरुष–(सं. पुं.) प्रधान पुरुष, परमेश्वर ।
एकप्रभुत्व–(सं. पुं.) साम्राज्य ।
एक-ब-एक–(हिं. अव्य.) अकस्मात, अचानक, यकायक ।
एकबद्धी–(हिं. स्त्री.) एक परत की रस्सी ।
एकभार्या–(सं. स्त्री.) साध्वी, पतिव्रता स्त्री ।
एकभाव–(सं. पुं.) समभाव, एकरूप, एक स्वभाव, अभेद, बराबरी; (वि.) एक प्रकृतिवाला ।
एकभुक्त–(सं. वि.) दिन-रात में एक ही बार भोजन करनेवाला ।
एकभूत–(सं. वि.) अविभक्त, मिला हुआ ।
एकमत, एकमति–(सं. वि.) एक रायवाला, समान मत का ।
एकमात्र–(सं. वि.) एक मात्रा का, अकेला ।
एकमुँहाँ–(हिं. वि.) केवल एक मुखवाला ।
एकमुख–(सं. वि.) एक मुखवाला, एक मुँहा ।
एकरंग–(हिं. वि.) तुल्य, बराबर, स्वच्छ हृदय का, चारों ओर समान ।
एकरदन–(सं. पुं.) एकदन्त, गणेश ।
एकरस–(सं. वि.) एक ढंग का, समान ।
एकरात्रिक–(सं. वि.) एक रात में होनेवाला ।
एकरूप–(सं. वि.) समान आकृति का, एक ही ढंग का ।
एकरूपता–(सं. स्त्री.) तुल्यता, बराबरी, सायुज्य मुक्ति ।
एकरूपी–(सं. वि.) समान रूप का ।
एकलंगा–(हिं. पुं.) कुश्ती का एक दाँव ।
एकलव्य–(सं. पुं.) निषादराज, हिरण्यधेनु के पुत्र ।
एकलिंग–(सं. पुं.) महादेव, कुबेर, एकलिंग का मन्दिर जो उदयपुर राज्य में है ।
एकलौता–(हिं. वि.) अपने माता-पिता का एक (पुत्र) ।
एकवचन–(सं. पुं.) एक व्यक्ति का बोध करनेवाला व्याकरण का वचन ।
एकवर्ण–(सं. पुं.) एक वर्ण या जाति का, एक-सा ।
एकवाँज–(हिं. स्त्री.) जिस स्त्री को एक ही सन्तान हुई हो ।
एकवाक्य–(सं. पुं.) एक अर्थबोधक वाक्य, राय की बात ।
एकवाक्यता–(सं. स्त्री.) वाक्य का ऐक्य, मेल की बातचीत ।
एकवाद्या–(सं. स्त्री.) डाइन, चुड़ैल ।
एकविध–(सं. वि.) एक ही प्रकार का, साधारण ।
एकवेणी–(सं. स्त्री.) वियोगिनी की लट, वह स्त्री जिसका पति दूर देश में गया हो, विधवा ।
एकशृंग–(सं. पुं.) एक सींगवाला पशु, विष्णु ।
एकसठ–(हिं. वि.) साठ और एक; (पुं.) साठ और एक की संख्या, ६१ ।
एकसर–(हिं. वि.) अकेला, एकहरा ।
एकस्थ–(सं. वि.) एक स्थान में रक्खा हुआ ।
एकहत्तर–(हिं. वि.) सत्तर और एक; (वि.) सत्तर और एक की संख्या, ७१ ।
एकहत्था–(हिं. वि.) एक ही हाथ से काम करनेवाला ।
एकहरा–(हिं. वि.) एक परत का, जो दोहरा न हो, एक लड़ी का; **एकहरे शरीर का**–दुबला-पतला ।
एकांग–(सं. पुं.) बुध ग्रह ।
एकांत–(सं. पुं.) छिपा हुआ स्थान, अकेलापन; (वि.) अकेला, अत्यन्त निराला, निर्जन, सूना ।
एकांतकैवल्य–(सं. पुं.) जीवनमुक्ति ।
एकांतचारी–(सं. वि.) निर्जन स्थान में घूमनेवाला ।
एकांतता–(सं. स्त्री.) निर्जनता, अकेलापन ।
एकांतर–(सं. वि.) एक दिन के अंतरे का ।
एकांतवास–(सं. पुं.) निर्जन स्थान में बिना किसी साथी के रहना ।
एकांतवासी–(सं. वि.) एकान्त में निवास करनेवाला ।
एकांतविहारी–(सं. वि.) अकेला घूमनेवाला, एकान्तचारी ।
एकांतिक–(सं. वि.) फलस्वरूप, अन्तिम ।
एकांती–(सं. पुं.) वह भक्त जो एकान्त में बैठकर विष्णु को भजता है, एक ही को माननेवाला ।
एकांश–(सं. पुं.) एक भाग या हिस्सा ।
एका–(सं. स्त्री.) दुर्गा; (वि.) अद्वितीय, अकेला; (हिं. पुं.) ऐक्य, मेलजोल ।
एकाई–(हिं. स्त्री.) एकत्व, एक का मान, नियमित मान, गणना में प्रथम स्थान या अंक, इकाई ।
एकाएक, एकाएकी–(हिं. अव्य.) अकस्मात्, अचानक ।
एकाकार–(सं. वि.) एक ही आकृति का ।
एकाकी–(सं. वि.) असहाय, अकेला ।
एकाक्ष–(सं. वि.) एक नेत्रवाला, काना; (पुं.) कौवा, शुक्राचार्य ।
एकाक्षर–(सं. पुं.) एक-स्वर वर्ण, ओंकार ।
एकाक्षरी–(सं. वि.) एक अक्षरवाला; **–कोश**–(पुं.) वह कोश जिसमें प्रत्येक अक्षर के अलग-अलग अर्थ लिखे हों ।

एकाग्र–(सं. वि.) अनन्यचित्त, एक ही ओर मन लगाया हुआ, जो व्यग्र या चंचल न हो, एक ही कोन या कोर का।
एकाग्रचित्त–(सं. वि.) स्थिरचित्त, एक ही ओर मन लगाये हुए।
एकाग्रता–(सं. स्त्री.) एक ही विषय में आसक्ति, मन का स्थिर होना।
एकाग्रत्व–(सं. पुं.) देखें 'एकाग्रता'।
एकाग्रदृष्टि–(सं. वि.) एक ही विषय पर दृष्टि डालनेवाला।
एकात्मता–(सं. स्त्री.) अभेद, एकता, एक ही आत्मा का भाव।
एकात्मवादी–(सं. वि.) वेदान्त मत का अवलम्बन करनेवाला।
एकात्मा–(सं. पुं.) अद्वितीय आत्मा; (वि.) एकरूप।
एकादश–(सं. वि.) ग्यारह, ग्यारहवाँ।
एकादशाह–(सं. पुं.) ग्यारह दिन में कर्तव्य श्राद्ध, मरने के दिन से ग्यारहवें दिन पर किया जानेवाला कृत्य।
एकादशी–(सं. स्त्री.) प्रत्येक चान्द्र मास के शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन होता है।
एकादेश–(सं. पुं.) एक आज्ञा, व्याकरण में दो शब्दों के स्थान में एक ही आदेश।
एकाधिपति–(सं. पुं.) सम्राट्, बड़ा राजा।
एकाधिपत्य–(सं. पुं.) एकमात्र अधिकार, प्रधान आधिपत्य।
एकार–(सं. पुं.) स्वर वर्ण का ग्यारवाँ अक्षर 'ए'।
एकार्थ, एकार्थक–(सं. वि.) समानार्थक, एक ही अर्थ का।
एकार्थता–(सं. स्त्री.) अर्थ की अभिन्नता।
एकावली–(सं. स्त्री.) एक लर की माला, एक अलंकार जिसमें पूर्व पद के प्रति पर (बाद के) पद का विशेषण रूप से स्थापित होना या निषेध दिखलाया जाता है।
एकाश्रम–(सं. पुं.) निर्जन स्थान।
एकाह–(सं. वि.) एक दिन में समाप्त होनेवाला।
एकाहार–(सं. पुं.) दिन में केवल एक बार भोजन।
एकाहारी–(सं. वि.) दिन में एक बार भोजन करनेवाला।
एकीकरण–(सं. पुं.) इकट्ठा करने का काम, इकट्ठा करना।
एकीकृत–(सं. वि.) इकट्ठा किया हुआ।
एकीभूत–(सं. वि.) मिश्रित, मिला हुआ।
एकेन्द्रिय–(सं. वि., पुं.) इन्द्रियों को भली-बुरी बातों से अलग रखते हुए मन को ओर लीन करनेवाला, वह प्राणी (यथा, जोंक इ०) जिसको एक ही इन्द्रिय अर्थात् त्वचा होती है।
एकेक्षण–(सं. वि.) एक आँख का, काना।
एकैक–(सं. वि.) एकाकी, अकेला।
एकोत्तरसौ–(हिं. वि., पुं.) एक सौ एक, १०१।
एकोदर–(सं. वि., पुं.) सहोदर, एक ही पेट से उत्पन्न।
एकोद्दिष्ट–(सं. पुं.) किसी एक मृत व्यक्ति के उद्देश्य से किया जानेवाला श्राद्ध।
एकौझा–(हिं. वि.) अकेला।
एक्का–(हिं. वि.) अकेला, एक से सम्बन्ध रखनेवाला; (पुं.) दुपहिया गाड़ी जिसको एक बैल या घोड़ा खींचता है, ताश का पत्ता जिसमें एक बूटी रहती है, झुंड को छोड़कर अकेला रहनेवाला पशु, अद्वितीय योद्धा।
एक्कावान–(हिं. पुं.) एक्का हाँकनेवाला पुरुष।
एक्कावानी–(हिं. स्त्री) एक्का हाँकने का काम।
एक्की (हिं. स्त्री.) एक बैल से खींची जानेवाली गाड़ी, ताश का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो।
एक्यानवे–(हिं. वि.) नव्वे और एक; (पुं.) नव्वे और एक की संख्या, ९१।
एक्यावन–(हिं. वि.) पचास और एक; (पुं.) पचास और एक की संख्या, ५१।
एक्यासी–(हिं. वि.) अस्सी और एक; (पुं.) अस्सी और एक की संख्या, ८१।
एजेंट–(अं. पुं.) देखें 'अभिकर्त्ता'।
एजेंसी–(अं. स्त्री.) अभिकर्त्ता के अधिकार, कर्त्तव्य आदि।
एटर्नी (अं. पुं.) बड़ा वकील।
एडवोकेट–(अं. पुं.) वरिष्ठ, वकील।
एड़ी–(हिं. स्त्री.) पार्ष्णि, पैर के पंजे के पीछे का उभड़ा हुआ भाग।
एढ़ा–(हिं. वि.) आढ्य, बलवान्।
एतद्–(सं. सर्व.) यह।
एतदनंतर–(सं. अव्य.) इसके बाद।
एतदर्थ–(सं. अव्य.) इस निमित्त।
एतदवधि–(सं. अव्य.) यहाँ तक।
एतदेव–(सं. अव्य.) यही, दूसरा नहीं।
एतद्देशीय–(सं. वि.) इस देश से सम्बन्ध रखनेवाला, इस देश का।
एतना–(हिं. वि.) देखें 'इतना'।
एतवार–(हिं. पुं.) देखें 'इतवार'।
एतवारी–(हिं. वि.) इतवार को होने वाला।
एता–(हिं. वि.) इस परिमाण का, इतना।
एतादृश–(सं. वि.) ऐसा, इसके सदृश।
एतावत्–(सं. वि.) इस परिमाण का।
एतिक–(हिं. वि.) इस परिमाण का, इतना।
एमन–(हिं. पुं.) एक राग विशेष; –कल्याण–(पुं) एमन और कल्याण के योग से बना हुआ राग।
एरंड–(हिं. पुं.) रेंड़, रेंड़ी; –तैल–(पुं.) रेंड़ी के बीज का तेल।
एला–(सं. स्त्री.) इलायची।
एलुवा–(हिं. पुं.) मुसब्बर।
एवं–(सं. अव्य.) इसी प्रकार से, ऐसे ही।
एव–(सं. अव्य.) इसी प्रकार से, ऐसे ही।
एवमस्तु–(सं. पद) ऐसा ही हो; (अव्य.) ऐसे ही और।
एशियाई–(हिं. वि.) एशिया महाद्वीप से सम्बन्ध रखनेवाला।
एषणा–(सं. स्त्री.) इच्छा।
एषिता–(सं. वि.) अभिलाषायुक्त, चाहनेवाला।
एहि–(हिं. सर्व.) यह।
एहो–(हिं. अव्य.) संबोधन का शब्द अरे, हे, ओ।

ऐ

ऐ–संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का बारहवाँ अक्षर। इसका उच्चारण कण्ठ और तालु है; (अव्य.) आह्वान या पुकारने का शब्द; (पुं.) महेश्वर, महादेव।
ऐं–(हिं. अव्य.) भली भाँति न सुनी या समझी हुई बात के लिए प्रयुक्त होता है, एक आश्चर्यसूचक अव्यय।
ऐंचना–(हिं. क्रि. स.) खींचना, तानना, ओढ़ना।
ऐंचाताना–(हिं. वि.) फिरी हुई आँखवाला, भेंगा देखनेवाला।
ऐंचातानी–(हिं. स्त्री.) खींचा-खाँची नोच-खसोट, खिंचाव, आग्रह।
ऐंचीला–(हिं. वि.) खिंचीला।
ऐंछना–(हिं. क्रि. स.) झाड़ना, बालों में कंघी करना, साफ करना।
ऐंठ–(हिं. स्त्री.) मरोड़, मरोड़, अभिमान, अकड़, विरोध, द्वेष, घमंड, बुरा भाव, ठसक।
ऐंठन–(हिं. स्त्री.) पेंच, घुमाव, मरोड़, खिंचाव, तनाव।
ऐंठना–(हिं. क्रि. स.) [illegible], [illegible], मरोड़ना, बल देना, बल खाना, [illegible], खिंचना, [illegible], [illegible], अकड़ना, [illegible], घमंड दिखलाना।

ऐंठवाना-(हिं.क्रि.स.) ऐंठने का काम दूसरे से करवाना।
ऐंठा-(हिं. पुं.) रस्सी ऐंठने का एक यन्त्र, घोंघा।
ऐंठाना-(हिं.क्रि.स.) देखें 'ऐंठवाना'।
ऐंठा-बैंठा-(हिं. वि.) अंडबंड, तिरछा, ऐंड़-बेंड।
ऐंठी-(हिं.वि.स्त्री.) फिरी हुई, मुड़ी हुई।
ऐंठू-(हिं. पुं.) अभिमानी पुरुष।
ऐंड़-(हिं. स्त्री.) अभिमान, तनाव, अकड़, पानी का भँवर; (वि.) घूमा हुआ, निकम्मा, घमंडी।
ऐंड़दार-(हिं. वि.) अभिमानी, गर्वीला, घमंडी, कुटिल, बाँका, नोक-झोंकवाला, ठसकवाला।
ऐंड़ना-(हिं.क्रि.अ.) घूम जाना, बल खाना, ऐंठना, अँगड़ाई आना, अभिमान करना, इतराना, घुमाना, देह टूटना।
ऐंड़बेंड़-(हिं. वि.) तिरछा-बाँका, बल खाया हुआ।
ऐंड़ा-(हिं. वि.) ऐंठा हुआ, घुमौवा; (पुं.) गड्ढा, सेंध।
ऐंड़ाना-(हिं. क्रि. अ.) अँगड़ाई लेना, अकड़ दिखलाना, नाक-भौंह चढ़ाना, शरीर तोड़ना, इठलाना।
ऐंढ़ा-(हिं. पुं.) एक प्रकार का गड़ासा।
ऐंद्रजालिक-(सं. पुं.) जादूगर; (वि.) इन्द्रजाल संबंधी, मायावी।
ऐंद्रिय-(सं. वि.) इन्द्रिय सम्बन्धी, इन्द्रिय द्वारा ज्ञात।
ऐंद्री-(सं. स्त्री.) इन्द्र की पत्नी, दुर्गा।
ऐकपत्य-(सं.पुं.) देख 'एकाधिपत्य'।
ऐकमत्य-(सं.पुं.) समान सम्मति, एक-राय।
ऐकवाक्य-(सं. पुं.) एक-वाक्यता।
ऐकाहिक-(सं.वि.) एक दिन में होनेवाला।
ऐक्य-(सं.पुं.) एकता, सादृश्य, बराबरी।
ऐगुन-(हिं. पुं.) देखें 'अवगुण'।
ऐच्छिक-(सं. वि.) इच्छा के अनुसार।
ऐतरेय-(सं. पुं.) ऋग्वेद की एक शाखा।
ऐतरेयी-(सं.पुं.) ऐतरेय ब्राह्मण पढ़नेवाला।
ऐतिहासिक-(सं. वि.) इतिहास सम्बन्धी, जो इतिहास से मालूम हो, इतिहास पढ़नेवाला।
ऐतिह्य-(सं.पुं.) परंपरागत बात, जो बात बहुत दिनों से सुनने में आती है।
ऐन-(अ. वि.) उपयुक्त, पूरा, ठीक।
ऐनक-(अ. स्त्री.) उपनेत्र, आँख में लगाने का चश्मा।
ऐना-(हिं. पुं.) आईना, दर्पण।
ऐपन-(हिं. पुं.) हल्दी के साथ चावल को पीस कर बनाया हुआ लेप जो कलश आदि पर थापा या लगाया जाता है।
ऐब-(अ. पुं.) दोष, अवगुण, बुराई, कलंक, बुरा अभ्यास।
ऐबदार-(अ. वि.) ऐबवाला, दोषयुक्त।
ऐबारा-(हिं. पुं.) भेंड़-बकरी बाँधने का बाड़ा या घेरा।
ऐबी-(फा. वि.) ऐबदार।
ऐयार-(फा. पुं.) धूर्त।
ऐयारी-(फा. स्त्री.) धूर्तता।
ऐयाश-(फा. पुं.) विलासी।
ऐयाशी-(फा. स्त्री.) विलासिता।
ऐरागैरा-(हिं. वि.) अपरिचित, तुच्छ, छोटे पद का।
ऐरापति-(हिं. पुं.) ऐरावत।
ऐरावत-(सं. पुं.) इन्द्र का हाथी, इन्द्रधनुष, बिजली, पूर्व दिशा का हाथी, नारंगी, बड़हर।
ऐरावती-(सं. स्त्री.) ऐरावत की स्त्री, बिजली, रावी नदी।
ऐल-(सं.पुं.) इला का पुत्र पुरूरवा, मंगल ग्रह, खाद्य वस्तु; (हिं.पुं.) प्रचुरता, बाढ़, आधिक्य।
ऐश-(सं. वि.) ईश या परमात्मा से संबंधित, ईश्वरीय; (अ.पुं.) विलास, विषय-भोग; -पसंद-(वि.) विलासी, आराम-तलब; -व आराम-(पुं.) भोग-विलास।
ऐशान-(सं. वि.) शिव संबंधी।
ऐशानी-(सं. स्त्री.) ईशानकोण संबंधी, दुर्गा, देवी।
ऐशिक-(सं. वि.) ऐशान।
ऐश्वर-(सं. वि.) शक्तिशाली, शिव-सम्बन्धी, ईश्वरीय।
ऐश्वर्य-(सं. पुं.) ईश्वरता, प्रभुत्व, धन, संपत्ति, आधिपत्य, अणिमादि आठ सिद्धियाँ; -कर्मा-(वि.) बड़े-बड़े काम करनेवाला; -वान्-(वि.) सम्पन्न, वैभवयुक्त; -शाली-(वि.) ऐश्वर्य-वाला, धनवान।
ऐष्टिक-(सं. वि.) इष्टि यज्ञ से संबंधित।
ऐसा-(हिं. अव्य.) इस प्रकार से, इस तरह से; (वि.) इस ढंग का, इस प्रकार का; -तैसा-(वि.) तुच्छ, निकृष्ट; (मुहा.) किसी की ऐसी-तैसी-गाली; ऐसे में जाय-चूल्हे या भाड़ में जाय, बरबाद हो जाय।
ऐसे-(हिं. अव्य.) इस रीति या प्रकार से।
ऐहिक-(सं. वि.) इस लोक से सम्बन्ध रखनेवाला, संसारी।

ओ

ओ-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ तथा ओष्ठ है; (सं. पुं.) ब्रह्मा; (अव्य.) विस्मय तथा आश्चर्य-सूचक शब्द।
ओं-(सं. पुं.) ॐकार, परब्रह्म-वाचक शब्द, प्रणव, तथास्तु, बहुत अच्छा।
ओइँछना-(हिं. क्रि.) वारना, न्योछावर करना।
ओंकना-(हिं.क्रि.अ.) वमन या कै करना।
ओंकार-(सं. पुं.) देखें 'ओं'।
ओंगना-(हिं. क्रि. स.) गाड़ी के पहिये के धुरे में तेल लगाना जिसमें पहिया सहज में घूम सके।
ओंगा-(हिं. पुं.) अपामार्ग, चिचिड़ा।
ओंठ-(हिं. पुं.) ओष्ठ, होंठ; (मुहा.)-उखाड़ना-परती को पहले-पहल जोतना; -चबाना-क्रोध दिखलाना; -चाटना-लालच से होठों पर जीभ फ़ेरना; -चूसना-अधर का चुंबन करना; -पपड़ाना-ओठों के चमड़े का रूखा होना; -फरकना-क्रोध से ओठों का काँपना; ओठों पर-जबान पर, (बात का) मुँह से प्रकट होना; ओठों में कहना-बहुत धीमे स्वर में कहना।
ओंड़ा-(हिं.वि.) गहरा; (पुं.) गड्ढा, सेंध।
ओंध-(हिं. पुं.) छप्पर बाँधने की रस्सी।
ओआ-(हिं. पुं.) हाथी फँसाने का गड्ढा।
ओक-(हिं.स्त्री.) ओकाई, मचली; (सं.पुं.) आश्रय, रहने का ठिकाना, घर, पक्षी, शूद्र, अँगुली।
ओकना-(हिं. क्रि. अ.) वमन करना, कय करना, भैंस की तरह चिल्लाना।
ओकपति-(सं. पुं.) सूर्य या चन्द्रमा।
ओकाई-(हिं. स्त्री.) वमन की प्रवृत्ति।
ओकार-(सं.पुं.) 'ओ' अक्षर या उसकी ध्वनि।
ओकारांत-(सं.वि.) जिस शब्द के अन्त में 'ओ' रहे।
ओकी-(हिं. स्त्री.) देखें 'ओकाई'।
ओखरी-(हिं. स्त्री.) देखें 'ओखली'।
ओखल-(हिं. पुं.) उलूखल, ओखली।
ओखली-(हिं. स्त्री.) उदूखल; (मुहा.) -में सिर डालना या देना-कष्ट सहने के लिये तैयार होना।
ओखा-(हिं. पुं.) बहाना, मिस; (वि.) सूखा, टेढ़ा, दूषित, खोटा, विरल, जो घना न हो, झीना।
ओग-(हिं. पुं.) कर, चन्दा, लगान।

ओगरना–(हि. क्रि. अ.) चूना, पसीजना, कुआँ आदि की सफाई के लिए उसमें जमा पंक निकालना।

ओगारना–(हि. क्रि. स.) कीचड़ आदि निकालकर कुएँ की सफाई करना।

ओगल–(हि.पुं.) ऊसर भूमि, परती भूमि।

ओघ–(सं. पुं.) समूह, ढेर, घनत्व, पानी का बहाव, बाढ़, परम्परा, पुरानी चाल, उपदेश।

ओछना–(हि. क्रि. स.) ऊँछना।

ओछा–(हि. वि.) गंभीरताहीन, छिछोरा, क्षुद्र, तुच्छ, छोटा, हलका, छिछला, शक्ति-हीन, कम पड़नेवाला।

ओछाई–(हि. स्त्री.) देखें 'ओछापन'।

ओछापन–(हि. पुं.) छिछोरापन, क्षुद्रता, नीचता, हलकापन।

ओज–(सं. पुं.) बल, प्रताप, तेज, वीर्य, क्रांति, चमक, सहारा, प्रकाश, शस्त्रादि में कुशलता, वैद्यक के अनुसार रसादि का सार-भाग, काव्य में पदाडम्बर का गुण।

ओजना–(हि. क्रि. स.) सहना, अँगेजना, मार लेना।

ओजस्विता–(सं.स्त्री.) तेजस्विता, प्रकाश, चमक, प्रभाव, प्रताप।

ओजस्वी–(सं. वि.) प्रतापी, प्रभावशाली, शक्तिमान्।

ओझ–(हि. पुं.) उदर, पेट, आँत।

ओझइत–(हि. पुं.) देखें 'ओझा'।

ओझड़ी–(हि.स्त्री.) उदर, पेट, पेट की थैली।

ओझरी–(हि. स्त्री.) देखें 'ओझड़ी'।

ओझल–(हि. स्त्री.) छाया, परछाई, ओट, परदा, आड़; (वि.) गुप्त, छिपा हुआ।

ओझला–(हि. पुं.) बच्चे का दूध पीकर उगलना।

ओझा–(हि. पुं.) भूत-प्रेत उतारनेवाला पुरुष, मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि, बाजीगर, चालाक।

ओझाइन–(हि.स्त्री.) ओझा की स्त्री।

ओझाई–(हि.स्त्री.) ओझा की वृत्ति, झाड़-फूंक।

ओझती–(हि. स्त्री.) देखें 'ओझाई'।

ओट–(हि. स्त्री.) अवरोध, रोक, आड़, छाया, परछाई, गुप्त स्थान, घूंघट, बचाव, सहारा; –में–बहाने से, छिपकर।

ओटन–(हि.स्त्री.) कपास के बिनौले अलग करने की चर्खी।

ओटना–(हि. क्रि. स.) कपास के बिनौले अलगाना, बीच-बीच में रोकना, अपनी ही बात कहते रहना।

ओटनी, ओटी–(हि.स्त्री.) कपास के बिनौले निकालने की चर्खी।

ओठँगन–(हि. पुं.) आधार, सहारा।

ओठँगना–(हि. क्रि. अ.) किसी वस्तु के सहारे बैठना या लेटना, सहारा लेना, थोड़ी देर के लिए आराम करना।

ओठँगाना–(हि.क्रि स.) सहारे से टिकाना, किवाड़ बन्द करना।

ओठ–(हि. पुं.) ओष्ठ, होंठ।

ओड़–(हि. स्त्री.) ओट, आड़।

ओड़चा–(हि.पुं.) खेत सींचने का काठ का टोकरी के आकार का पात्र।

ओड़न–(हि. स्त्री.) अवरोध, रुकावट, बचाव का पदार्थ, ढाल।

ओड़ना–(हि. क्रि. स.) अवरोध लगाना, रोकना, पसारना, फैलाना।

ओड़व–(सं. पुं.) एक राग विशेष जिसमें केवल पाँच ही स्वर लगते हैं।

ओड़ा–(हि. पुं.) टोकरा, खाँचा, गड्ढा, सेंध; (वि.) गहरा, न्यून।

ओड्र–(सं. पुं.) उड़ीसा देश; –देश–(पुं.) उत्कल देश।

ओढ़न–(हि. स्त्री.) वस्त्र से शरीर को ढाँपने का काम, ओढ़ने का वस्त्र।

ओढ़ना–(हि. क्रि. स.) लपेटना, वस्त्र से शरीर को ढाँपना, रोकना, अपने ऊपर किसी कार्य का भार ले लेना; (पुं.) शरीर ढाँपने का वस्त्र, चादर; (मुहा.) –उतारना–अपमानित या लांछित करना; –बिछौना बना लेना–हर वक्त काम में लाना।

ओढ़नी–(हि. स्त्री.) स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र, छोटी चादर।

ओढ़र–(हि. पुं.) छल, धोखा, बहाना।

ओढ़वाना–(हि. क्रि. स.) ढँपवाना, ओढ़ाने का काम किसी दूसरे से करवाना।

ओढ़ाना–(हि. क्रि. स.) दूसरे के शरीर को वस्त्र से ढाँपना।

ओढ़ौनी–(हि. स्त्री.) ओढ़नी।

ओत–(सं. वि.) भरा हुआ, बुना हुआ; (हि. स्त्री.) कपड़े के ताने का सूत, सुख, विश्राम, आराम, आलस्य, सुस्ती, लाभ, बचत।

ओतप्रोत–(सं. वि.) संघटित, एक दूसरे से मिला हुआ; (पुं.) तानाबाना।

ओता–(हि.वि.) उस परिमाण का, उतना।

ओती–(हि. वि., स्त्री.) उतनी।

ओत्ता–(हि. वि.) उतना।

ओद–(हि. पुं.) तरी, गीलापन; (वि.) गीला, तर।

ओदन–(सं.पुं.) पका हुआ चावल, भात।

ओदनीय–(सं. वि.) खाने योग्य।

ओदर–(हि. पुं.) देखें 'उदर'।

ओदरना–(हि. क्रि. अ.) छिन्न-भिन्न होना, फटना।

ओदा–(हि. वि.) तर, गीला।

ओदारना–(हि. क्रि. स.) तोड़ना, फोड़ना, छिन्न-भिन्न करना, फाड़ डालना, नष्ट करना।

ओधना–(हि. क्रि. अ.) बंधन में पड़ना, अटकना।

ओनंत–(हि. वि.) अवनत, झुका हुआ।

ओनचन–(हि. स्त्री.) खटिये के पायताने में कसने की रस्सी, अदवायन।

ओनचना–(हि.क्रि.स.) अदवायन कसना।

ओनवना–(हि. क्रि. स.) देखें 'उनवना'।

ओना–(हि. पुं.) गड्ढे, तालाब आदि का पानी निकलने का मार्ग।

ओनाड़–(हि. वि.) शक्तिमान्, पुष्ट।

ओनाना–(हि. क्रि. स.) सुनना, कान लगाना।

ओनामासी–(हि. स्त्री.) ओं नमः सिद्धम्, (विद्यारम्भ के समय का मांगलिक वाक्य) आरंभ।

ओप–(हि. स्त्री.) चमक, शोभा, रंग, कलई।

ओपची–(हि. पुं.) कवचधारी योद्धा।

ओपना–(हि. क्रि. स.) चमकाना।

ओपनिवारी–(हि.वि.स्त्री.) चमकनेवाली।

ओपनी–(हि. स्त्री.) तलवार आदि को चमकाने का साधन।

ओबरी–(हि. स्त्री.) छोटी कोठरी।

ओर–(हि. स्त्री.) दिशा, पक्ष, अलंग; (पुं.) छोर, किनारा, अन्त, आरम्भ; (मुहा.) –निबहना या निभाना–अंत तक अपनी जिम्मेदारी या कर्त्तव्य पूरा करना।

ओरती–(हि. स्त्री.) देखें 'ओलती'।

ओरमना–(हि. क्रि. अ.) सहारा लेना, लटकना।

ओरमा–(हि. पुं.) कपड़े के किनारे पर की एक प्रकार की सिलाई।

ओरमाना–(हि.क्रि.स.) [illegible], लटकाना।

ओरवना–(हि. क्रि. अ.) गाय-भैंस के थन में दूध उतरना।

ओरहना–(हि. पुं.) देखें '[illegible]'।

ओरांग-उटांग–(पुं.) [illegible], सुमात्रा, आदि देशों में पाया जानेवाला एक प्रकार का वनमानुष।

ओराना–(हि.क्रि.अ.) [illegible]।

ओराहना–(हि. पुं.) देखें '[illegible]'।

ओरिया–(हि. स्त्री.) [illegible] लकड़ी, ओरी।

ओरी–(हि. स्त्री.) ओलती; (अव्य.) संबोधन का शब्द जो स्त्रियों के लिये प्रयुक्त होता है।
ओरौता–(हि. वि.) अन्त का, चुकौता।
ओरौती–(हि. स्त्री.) ओलती, छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान।
ओलंबा, ओलंभा–(हि. पुं.) ओलहना।
ओल–(सं. पुं.) सूरन; (हि. स्त्री.) गोद, आड़, रक्षा, वहाना, शरण।
ओलचा–(हि. पुं.) लकड़ी का उपकरण जो सिंचाई में खेत छिड़कने के काम आता है।
ओलती–(हि. स्त्री.) छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान, ओरी; (मुहा.) –तले का भूत–पड़ोस का आदमी जो घर का भेदी हो।
ओलना–(हि. क्रि. स.) छिपाना, आड़ करना, परदा करना, सहन करना, रोकना, ऊपर लेना, भोंकना।
ओलमना–(हि. क्रि.अ.) लटकना, झुकना, सहारा लेना।
ओलरना–(हि. क्रि. अ., स.) लेट जाना, ओलारना, लेटा देना।
ओलराना–(हि. क्रि. स.) लेटा देना।
ओल(ला)हना–(हि.पुं.) देखें 'उलाहना'।
ओला–(हि. पुं.) वर्षा के साथ गिरा हुआ हिम का टुकड़ा, बिनौली, मिश्री का बना हुआ लड्डू, परदा, आड़, छिपी हुई वात; (वि.) बहुत ठंढा, सफेद।
ओलाना–(हि. क्रि. स.) भूनना, सेंकना।
ओलारना–(हि.क्रि. स.) लेटा देना।
ओलियाना–(हि. क्रि. स.) घुसाना।
ओली–(हि. स्त्री.) क्रोड़, गोदी, अंचल, पल्ला, झोली।
ओलीना–(हि. पुं.) उदाहरण, दृष्टान्त।
ओल्या–(हि. पुं.) वहाना।
ओषव–(हि. स्त्री.) देखें 'औषध'।
ओषधि–(सं. स्त्री.) औषधि, वनस्पति, जड़ी-बूटी।
ओषधिपति–(सं.पुं.) चन्द्रमा, वैद्य, कपूर।
ओषधी–(सं. स्त्री.) देखें 'ओषधि'।
ओषधीश–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कपूर।
ओष्ठ–(सं. पुं.) दन्तच्छद, होंठ।
ओष्ठगतप्राण–(सं.वि.) मरणासन्न, मृतप्राय।
ओष्ठ्य–(सं. वि.) ओष्ठ संबंधी, होंठ से उच्चारण किया जानेवाला; –वर्ण–(पुं.) उ, ऊ, प, फ, ब, भ तथा म अक्षर।
ओष्ण–(सं. वि.) थोड़ा गरम।
ओस–(हि. स्त्री.) रात्रि में आकाश से भूमि पर गिरनेवाला वाष्पीय जल, (गहरी ओस पाला कहलाती है); (मुहा.)–का मोती–क्षणभंगुर वस्तु; –चाटने से प्यास नहीं बुझती–थोड़ी सी चीज के मिलने या खाने से परितृप्ति नहीं होती।
ओसनना–(हि. क्रि. स.) आटा सानना, गूंधना।
ओसर–(हि. स्त्री.) गर्भ धारण करने योग्य गाय या भैंस।
ओसरी–(हि. स्त्री.) अवसर, समय, पारी।
ओसाई–(हि. स्त्री.) ओसाने का काम, गल्ला उड़ाने या ओसाने की भृति।
ओसाना–(हि. क्रि. स.) दाँये हुए गल्ले को हवा में उड़ाकर भूसा और अन्न अलग करना, हवा में फेंकना।
ओसार–(हि. पुं.) विस्तार, चौड़ाई, फैलाव, ओसारा।
ओसारा–(हि. पुं.) दालान, छप्पर।
ओसीला–(हि. पुं.) देखें 'वसीला'।
ओसीसा–(हि. पुं.) बिछावन का ऊपरी भाग, सिरहाना, उपधान, तकिया।
ओसूल–(हि. पुं.) देखें 'वसूल'।
ओसेका–(हि. पुं.) देखें 'वसीका'।
ओह–(हि. अव्य.) दुःख अथवा आश्चर्य-सूचक अव्यय, अरे! हाय!
ओहदा–(अ. पुं.) पद, मर्यादा।
ओहदेदार–(अ. पुं.) पदारूढ़ अधिकारी।
ओहरना–(हि. क्रि. अ.) ऊपर से नीचे की ओर आना, घट जाना।
ओहरी–(हि. स्त्री.) म्लानता, थकावट।
ओहरवा–(हि. पुं.) झालर, परदा, ओहार।
ओहार–(हि. पुं.) गाड़ी, पालकी इत्यादि के ऊपर ढांपने का वस्त्र, परदा।
ओहो–(हि. अव्य.) विस्मय तथा आनन्द प्रकट करने के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है, अरे! अहो! अहा!

औ

औ–संस्कृत स्वर वर्ण का चौदहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कण्ठ है; (पुं.) शेषनाग, अनन्त, पृथ्वी; (हि. अव्य.) और।
औंगना–(हि. क्रि. स.) पहिये के धुरे में तेल देना, ओंगना।
औंगा–(हि. वि.) मौन, गूंगा, चुपचाप।
औंगी–(हि. स्त्री.) गूंगापन, चुप्पी।
औंघ–(हि. स्त्री.) औंघाई, झपकी, हलकी नींद।
औंघना–(हि.क्रि.अ.) झपकी लेना, ऊँघना।
औंघाना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'ऊँघना'।
औंघाई–(हि. स्त्री.) ऊँघ, झपकी।
औंजना–(हि.क्रि.अ.) घबड़ाना, अकुलाना, उकताना।
औंटन–(हि. पुं.) चारा काटने का ठीहा, चुरकर गाढ़ा होना।
औंटना–(हि. क्रि. स.) उबलना, खौलना, जलना।
औंटाना–(हि. क्रि.स.) उबालना, पकाना, खौलाना।
औंठ–(हि. स्त्री.) उठा हुआ या उभड़ा हुआ किनारा; (मुहा.)–उठाना–परती खेत को जोतना।
औंड़–(हि. पुं.) वेलदार, मिट्टी खोदनेवाला श्रमिक।
औंड़ा–(हि. वि.) गहरा, खोदा हुआ, उभड़ा हुआ।
औंदना–(हि. क्रि. अ.) उन्मत्त होना, घबड़ाना, बेसुध होना, खाना, उड़ाना।
औंदाना–(हि.क्रि.अ.) घबड़ाना, उगताना।
औंधना–(हि.क्रि.अ.,स.) उलट जाना, मुँह के बल गिर पड़ना, उलटा कर देना।
औंधा–(हि. वि.) उलटा, मुँह के बल पड़ा हुआ, टेढ़ा; (अव्य.) उलटकर; (पुं.) मूर्ख; (मुहा.)–हो जाना–बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ना; औंधी खोपड़ी या समझ–निपट या जड़ मूर्ख; औंधे मुँह गिरना–बड़ा धोखा खाना।
औंधाना–(हि. क्रि. स.) उलटाना, पात्र का मुँह नीचे को करना, उँड़ेलना।
औंस–(अं. पुं.) दो या सवा दो तोले के बराबर अंग्रेजी तौल।
औकात–(अ. पुं.) वक्त का बहुवचन, समय, जमाना।
औकान–(हि. पुं.) कटे हुए अन्न का ढेर।
औकास–(हि. पुं.) देखें 'अवकाश'।
औखद–(हि. पुं.) देखें 'औषध'।
औखा–(हि. पुं.) गाय-बैल का चमड़ा।
औखी–(हि.स्त्री.) गँवारू भाषा, टेढ़ीबात।
औगढ़–(हि.वि.) बेढंगी रीति से बनाया हुआ।
औगत–(हि. स्त्री.) दुर्गति, दुर्दशा; (वि.) अवगत, जाना-बूझा हुआ।
औगल–(हि. स्त्री.) भूमि के नीचे की तरी।
औगाह–(हि. वि.) गहरा।
औगाहना–(हि.क्रि.अ.) प्रवेश करना, धुसना, नहाना।
औगी–(हि. स्त्री.) हाथी फँसाने का गड्ढा, बैलगाड़ी हाँकने की छड़ी, पैना,

बटी हुई रस्सी का बना हुआ कोड़ा।
औगुन–(हिं. पुं.) देखें 'अवगुण'।
औगुनी–(हिं. वि.) गुणरहित।
औघ–(सं. पुं.) जल-समूह, बाढ़।
औघट–(हिं. वि.) दुस्तर, कठिन, ढालुवाँ।
औघड़–(हिं. वि.) फूहड़, अनाड़ी, उलटा-पुलटा; (पुं.) अघोरी, अघोरपंथी।
औघर–(हिं. वि.) विपरीत, अनगढ़, अटपटा।
औचक–(हिं. अव्य.) अचानक, धोखे से।
औचट–(हिं. अव्य.) अचानक, धोखे से, तुरन्त, झटपट, भूल से; (सं. स्त्री.) कठिनता, संकट, संकुचित स्थान, फँसाव।
औचित–(हिं. वि.) चिन्तारहित।
औचित्य–(सं. पुं.) उपयुक्तता, सत्य, सचाई।
औजड़–(हिं. वि.) फूहड़, असभ्य, गँवार।
औजार–(अ. पुं.) उपकरण, हथियार।
औझक–(हिं. अव्य.) एकाएक, झट से।
औझड़–(हिं. स्त्री.) प्रहार, धक्का; (अव्य.) झटके के साथ, उछलकर, निरन्तर।
औटन–(हिं. स्त्री.) औटने की क्रिया, उबाल, ताव।
औटना–(हिं. क्रि. अ., स.) उबालना, गरम करके गाढ़ा करना, भ्रमण करना, घूमना-फिरना, क्रोध से लाल होना।
औटनी–(हिं. स्त्री.) हलवाई का चाशनी घोटने का डंडा।
औटा–(हिं. वि.) औटाया या खौलाया हुआ, उबाला हुआ।
औटाई–(हिं. स्त्री.) औटाने का काम।
औटाना–(हिं. क्रि. स.) पकाकर गाढ़ा करना।
औटी–(हिं. स्त्री.) औटाकर या उबालकर गाढ़ी की हुई औषधि।
औड्र–(सं. पुं.) उड़ीसा का निवासी।
औढब–(हिं. वि.) बेढंगा, ऊटपटांग।
औढर–(हिं. वि.) इधर-उधर घूमनेवाला, मनमौजी।
औतंस–(हिं. पुं.) देखें 'अवतंस'।
औतरना–(हिं. क्रि. अ.) अवतार लेना।
औतार–(हिं. पुं.) देखें 'अवतार'।
औत्तर–(सं. वि.) उत्तरी।
औत्तानपाद, –पादि–(सं. पुं.) ध्रुव, ध्रुवतारा।
औत्तापिक–(सं. वि.) उत्ताप संबंधी।
औत्पत्तिक–(सं. वि.) उत्पत्ति से संबंधित।
औत्पातिक–(सं. वि.) उत्पात संबंधी।
औत्स–(सं. वि.) उत्स या झरने से उत्पन्न।
औत्सर्गिक–(सं. वि.) उत्सर्ग संबंधी।
औत्सुक्य–(सं. पुं.) उत्कण्ठा, उत्सुकता, चिन्ता, अलंकार में अप्राप्ति से उत्पन्न निराशा भाव।
औमला–(हिं. वि.) देखें 'उमला'।

औदक–(सं. वि.) उदक संबंधी।
औदकना–(हिं. क्रि. अ.) चौंक पड़ना।
औदनिक–(सं. पुं.) रोटी बनानेवाला, रसोईदार।
औदयिक–(सं. वि.) उदय संबंधी।
औदर–(सं. वि.) उदर संबंधी।
औदरिक–(सं. वि.) उदर संबंधी, भूखा, बहुभोजी, पेटू।
औदर्य–(सं. वि.) उदर संबंधी।
औदस–(हिं. पुं.) अपयश, दुर्नाम।
औदसा–(हिं. स्त्री.) अवदशा, दुर्भाग्य।
औदात–(हिं. वि.) देखें 'अवदात'।
औदान–(हिं. पुं.) देखें 'अवदान'।
औदार्य–(सं. पुं.) उदारता, वाक्य के अर्थ का गौरव, वेदान्त के अनुसार मनोवृत्ति।
औदास्य, औदासीन्य–(सं. पुं.) उदासीनता।
औदीच्य–(सं. वि.) उदीचि या उत्तर संबंधी, उत्तरी।
औदुंबर–(सं. वि.) गूलर का बना हुआ, ताँबे का बना हुआ; (पुं.) गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञ-पात्र, ओखरी, ताँबा।
औद्धत्य–(सं. पुं.) अविनीत भाव, धृष्टता, अक्खड़पन।
औद्भिद–(सं. वि.) पृथ्वी को फोड़कर निकलनेवाला।
औद्योगिक–(सं. वि.) उद्योग से संबंध रखनेवाला।
औध–(हिं. पुं.) देखें 'अवध'; (स्त्री.) काल, अवधि।
औधारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'अवधारना'; प्रारंभ करना।
औधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'अवधि'।
औधिया–(हिं. पुं.) तस्कर, चोर, ठग, अवध का रहनेवाला।
औनत–(हिं. वि.) देखें 'अवनत'।
औनापौना–(हिं. वि.) प्रायः तीन अंश का, आधा-तीहा, थोड़ा-बहुत; (अव्य.) कुछ कम दाम पर, कमती-बढ़ती पर।
औनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'अवनि'।
औनिप–(हिं. पुं.) राजा।
औपकार्य–(सं. पुं.) मकान, डेरा, रावटी।
औपचारिक–(सं. वि.) उपचार सम्बन्धी, अलंकारयुक्त, दिखावटी।
औपटी–(हिं. वि. स्त्री.) विकट, अटपटी।
औपदेशिक–(सं. वि.) उपदेश से मिला हुआ, उपदेश-संबंधी।
औपद्रविक–(सं. वि.) उपद्रव सम्बन्धी।
औपनिधिक–(सं. वि.) उपनिधि या धरोहर संबंधी।

औपनिवेशिक–(सं. वि.) उपनिवेश संबंधी; –स्वराज्य–(पुं.) ब्रिटिश राष्ट्र-कुल में कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि को प्राप्त स्वराज्य।
औपनिषद–(सं. वि.) उपनिषद् संबंधी।
औपन्यासिक–(सं. वि.) उपन्यास सम्बन्धी, विलक्षण, अनोखा।
औपनिषदिक–(सं. वि.) देखें 'औपनिषद'।
औपपत्तिक–(सं. वि.) उपपत्ति संबंधी, स्वार्थसाधक; (पुं.) लिंग, शरीर।
औपमिक–(सं. वि.) उपमा द्वारा कहा हुआ।
औपम्य–(सं. पुं.) सादृश्य, बराबरी।
औपयोगिक–(सं. वि.) उपयोग संबंधी।
औपराजिक–(सं. वि.) उपराज संबंधी।
औपवासिक–(सं. वि.) उपवास संबंधी, उपवास का।
औपशमिक–(सं. वि.) ठंडा करनेवाला।
औपश्लेषिक–(सं. वि.) उपश्लेष संबंधी, मेली; –आधार–(पुं.) अधिकरण कारक में वह आधार जिसका लगाव किसी अंश से ही हो।
औपसर्गिक–(सं. वि.) उपसर्ग संबंधी।
औपस्थिका–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
औपहारिक–(सं. वि.) उपहार के उपयोग का।
औपाधिक–(सं. वि.) उपाधि सम्बन्धी।
औपेंद्र–(सं. वि.) उपेंद्र-संबंधी।
औम–(हिं. स्त्री.) अवम तिथि।
और–(हिं. वि.) अन्य, दूसरा, केवल, अधिक; (सर्व.) अन्य पुरुष; (अव्य.) तथा; (मुहा.) –का और–सर्वथा भिन्न; –क्या–ऐसा ही है; –तो और–दूसरों की बात ही क्या; –ही कुछ–भिन्न या जुदा, निराला।
औरग–(सं. वि.) उरग या साँप का।
औरत–(अ. स्त्री.) स्त्री, पत्नी।
औरना–(हिं. क्रि. अ.) अग्रसर होना।
औरस–(सं. वि.) समान जाति की विवाहिता स्त्री से उत्पन्न (पुत्र)।
औरेब–(हिं. पुं.) तिरछापन, कपड़े की तिरछी काट; –दार–(वि.) तिरछी काटवाला।
और्वशेय–(सं. वि.) उर्वशी संबंधी; (पुं.) उर्वशी से उत्पन्न।
औलना–(हिं. क्रि. अ.) गरमी पड़ना, गरम या उष्ण होना।
औलाद–(अ. स्त्री.) संतान, बेटा-बेटी।
औला-दौला–(हिं. वि.) लापरवाह, मौजी।
औलिया–(अ. पुं.) सिद्ध महात्मा, सिद्ध मुसलमान फकीर (वली का बहु.)।
औवल–(अ. वि.) पहला, प्रथम, प्रधान।

औंवलन–(अ. अव्य.) सबसे पहले।
औषध–(स.स्त्री.) दवा, ओषधि, जड़ी-बूटी।
औषधालय–(सं. पुं.) दवाखाना, अस्पताल।
औषधि, औषधी–(सं. स्त्री.) देखें 'ओषधि'।
औष्ट्र–(सं. वि.) उष्ट्र संबंधी।
औष्ट्रिक–(सं. वि.) औष्ट्र।
औष्ठ्य–(सं. वि.) ओष्ठ संबंधी।
औसत–(अ.वि.,अव्य.) साधारण, प्रशम; (पुं.) राशियों के जोड़ को राशियों की संख्या से भाग देने पर प्राप्त संख्या, परता; –दर्जे का–प्रसम, न अच्छा न खराब।
औसना–(हिं. क्रि. अ.) ऊमस होना।
औसाना–(हिं. क्रि. स.) औसने को प्रवृत्त करना, फल आदि भूसे में पकाना।

क

क–हिन्दी वर्णमाला का प्रथम व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, कामदेव, किरण, रुद्र, मन, शरीर, काल, धन, प्रकाश, शब्द, अग्नि, वायु, प्रजापति, मोर, जल, सुख, केश, मस्तक।
कंकड़–(हिं. पुं.) मिट्टी और चूने के योग से बने हुए रोड़े जिनको फूंककर चूना बनता है, ये सड़कों पर भी पीटकर जमाये जाते हैं, किसी वस्तु का पीसने योग्य छोटा टुकड़ा, पीने की सूखी तम्बाकू, रत्न।
कंकड़ी–(हिं. स्त्री.) छोटा कंकड़, छोटा टुकड़ा।
कंकड़ीला–(हिं. वि.) कंकड़ मिला हुआ।
कंकण–(सं. पुं.) कंगन, वर-कन्या के हाथ में बांधा जानेवाला धागा।
कंकन–(हिं. पुं.) देखें 'कंकण'।
कंकर–(हिं. पुं.) देखें 'कंकड़'।
कंकरीट–(अं. स्त्री.) कंकड़, सीमेंट, बालू आदि के मेल से बना हुआ गृह-निर्माण का मसाला।
कंकरीला–(हिं. वि.) देखें 'कंकड़ीला'।
कंकरेत–(हिं. स्त्री.) देखें 'कंकरीट'।
कंकाल–(सं. पुं.) हड्डियों का ढांचा, ठठरी; –शेष–(वि.) जिसका शरीर ठठरी मात्र रह गया हो।
कंकाली–(हिं. पुं.) भीख मांग कर जीनेवाली एक जाति।
कंकोल–(सं.पुं.) एक प्रकारकी शीतलचीनी।
कंखवारी, कंखौरी–(हिं. स्त्री.) कांख, कांख में होनेवाला फोड़ा।
कंगन–(हिं. पुं.) कंकण, सिखों का हाथ में डालने का लोहे का छल्ला।
कँगना–(हिं. पुं.) देखें 'कंगन'।
कँगनी–(हिं. स्त्री.) छोटा कंगन, लाख की बनी मोटी चूड़ी, छत के नीचे का उभड़ा हुआ भाग, खंभे का छल्ले के आकार का उभड़ा हुआ भाग, एक प्रकार का चावल के समान अन्न, ककुनी।
कँगला–(हिं. वि.) देखें 'कंगाल'; –पन–(पुं.) दैन्य भाव, निर्धनता।
कँगसी–(हिं. स्त्री.) गाँठ, कन्दा, मलखंभ का एक व्यायाम।
कँगही–(हिं. स्त्री.) देखें 'कंघी'।
कंगारू–(अं. पुं.) आस्ट्रेलिया देश में पाया जानेवाला एक जंगली जंतु।
कंगाल–(हिं.वि.) निर्धन, दरिद्र, भुक्खड़; –गुंडा या बांका–निर्धन शौकीन।
कंगाली–(हिं. स्त्री.) दरिद्रता, निर्धनता।
कंगुरिया–(हिं. स्त्री.) सबसे छोटी अँगुली।
कंगूरा–(हिं.पुं.) प्रासाद की चोटी, गुंबद, शिखर, मुकुटमणि, आभूषण का कंगूरे के आकार का दाना।
कंगूरेदार–(हिं. वि.) शिखायुक्त, चोटीदार।
कंघा–(हिं. पुं.) बाल झारने की बड़ी कंघी, जुलाहों का एक यंत्र जिससे वे करगह में भरती के तागों को कसते हैं।
कंघी–(हिं. स्त्री.) छोटा कंघा, जुलाहे का एक यंत्र, अतिबला नामक वृक्ष।
कँघेरा–(हिं. पुं.) कंघा बनानेवाला कारीगर।
कंच–(हिं. पुं.) कांच।
कंचन–(हिं. पुं.) सुवर्ण, सोना।
कंचनी–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
कंचुक–(हिं. पुं.) कवच, चोली।
कंचुकी–(हिं. स्त्री.) चोली, केंचुली।
कचुली–(हिं. स्त्री.) केंचुली।
कँचेरा–(हिं.पुं.) कांच का काम करनेवाला कारीगर।
कँचेली–(हिं. पुं.) वृक्ष की कोमल शाखा।
कंज–(हिं. पुं.) ब्रह्मा, कमल, केश।
कंजई–(हिं. वि.) धुँएँ के रंग का; (पुं.) वह घोड़ा जिसकी आँखें कंजई रंग की होती हैं।
कंजड़, कंजड़ा–(हिं. पुं.) एक घूमनेवाली जाति, इस जाति के लोग रस्सा इत्यादि बनाकर बेचते हैं, (इनकी स्त्री को कंजड़िन कहते हैं); मैला या डरपोक मनुष्य, मड़ुवा।
कंजन–(सं. पुं.) ब्रह्मा, कामदेव।
कंजा–(हिं. वि.) कंजई; (पुं.) कंजी आंखवाला मनुष्य, एक कँटीली झाड़ी।
कँजियाना–(हिं. क्रि. अ.) धीमा पड़ना, मन्द होना।
कंजूस–(हिं. वि.) कृपण, कम व्यय करनेवाला, सूम।
कंजूसी–(हिं. स्त्री.) कृपणता, सूमपन।
कंटक–(सं. पुं.) कांटा, सूई की नोंक, खटकने या परेशान करनेवाली बात, रोमांच, घड़ियाल।
कंटकाकीर्ण–(सं. वि.) कांटों से भरा।
कंटकारिका, कंटकारी–(सं. स्त्री.) भटकटैया।
कंटकित–(सं. वि.) कँटीला।
कंटकी–(सं. स्त्री.) भटकटैया; (सं. वि.) कांटोंवाला, कष्टदायक।
कँटबांस–(हिं. पुं.) एक तरह का कांटोंवाला बांस।
कंटाइन–(हिं. स्त्री.) चुड़ैल, डाइन, दुष्टा स्त्री; (अव्य.) पूर्ण रूप से, भली भांति।
कँटिया–(हिं. स्त्री.) कांटी, छोटी कील, मछली फँसाने की लोहे की पतली टेढ़ी अँकुसी, लोहे की अँकुसियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरे हुए गगरे, लोटे इत्यादि निकाले जाते हैं, सिर पर पहिनने का एक आभूषण।
कँटीला–(हिं. वि.) (स्त्री. कँटीली) कांटेदार, जिसमें कांटे हों।
कंटोप–(हिं. पुं.) सिर तथा कानों को ढांपने की एक प्रकार की टोपी।
कंठ–(सं. पुं.) गला, स्वर, आवाज, घड़े आदि का गला; (हिं. वि.) याद, कंठस्थ; –गत–(वि.) गले में आया हुआ; –त्राण–(पुं.) गले में पहना जानेवाला, कवच; –माला–(स्त्री.) गले का एक रोग जिसमें दुःसाध्य फोड़े निकलते रहते हैं; –ला–(हिं. पुं.) बच्चों के गले में पहिनाने का एक आभूषण; –सिरी–(हिं. स्त्री.) गले का आभूषण; –स्थ–(वि:) कंठ में स्थित, कंठगत, याद; –हार–(पुं.) गले का हार; (मुहा.) –खुलना या फूटना–आवाज निकलना; –बैठना–गला बैठना।
कंठा–(हिं.पुं.) गले का चिह्न जो तोते के कण्ठ के चारों ओर पड़ जाता है, गले का एक आभूषण, फूलों का हार, हँसुली, कुरते का गले पर का चन्द्राकार कटाव।
कंठी–(हिं. स्त्री.) छोटे दाने का कंठा, तुलसी आदि की माला; (मुहा.) –देना–गुरुमुख बनाना, चेला मूड़ना; –लेना–वैष्णव धर्मावलम्बी बनना।
कंठीधारी, कंठीबंद–(हिं. वि.) कंठी पहननेवाला (वैष्णव)।

कंठ्य–(सं.वि.) कंठ संबंधी; –**वर्ण**–(पुं.) वे वर्ण जिनका उच्चारण कंठ से होता हो (अ, आ, क, ख, ग) आदि।
कंडरा–(हि. पुं.) मूली, सरसों आदि का मोटा डंठल जो तरकारी बनाकर खाया जाता है।
कंडा–(हि. पुं.) गोबर का पाथा हुआ लंबा टुकड़ा; (मुहा.)–**होना**–सूख जाना, मर जाना।
कंडाल–(हि.पुं.) सिंघा, तुरही, पानी रखने का बड़ा पात्र जिसका मुँह खुला होता है।
कंडी–(हि. स्त्री.) छोटा कंडा, गोहरी, गोइँठा, टोकरी, एक प्रकार की टोकरी जिसमें पहाड़ी लोग बोझ ले जाते हैं, गोलाकार सूखा मल, गोटा।
कंडील–(हि. स्त्री.) कंदील, लालटेन, यह कागज या अबरख की बनी होती है।
कंडीलिया–(हि. स्त्री.) प्रकाश-गृह या ऊँचा घरहरा।
कंडु, कंडू–(सं. पुं.) खाज, दाद।
कंडेरा–(हि. पुं.) धुनियाँ।
कंत–(हि. पुं.) कान्त, प्रभु, मालिक, पति।
कंथ–(हि. पुं.) देखें 'कंत'।
कंद–(हि. पुं.) गूदेदार जड़, सूरन, गाँठ, शोथ; –**मूल**–(पुं.) कन्दा, मूली।
कंदर (सं. पुं.), **कंदरा, कंदरी**–(सं.स्त्री.) गुफा, घाटी।
कंदर्प–(सं. पुं.) कामदेव, प्रणय, एक ताल (संगीत में); –**ज्वर**–(पुं.) एक प्रकार का ज्वर; –**दहन,–मथन**–(पुं.) शिव।
कंदला–(हि. पुं.) तार खींचने के काम आनेवाली चाँदी की गुल्ली; –**कश**–(पुं.) तारकशी का काम करनेवाला।
कंदा–(हि. पुं.) शकरकन्द, घुइयाँ, अरुई।
कंदालु–(हि. पुं.) वनकंद।
कंदील–(अ. स्त्री.) मिट्टी या अबरक का लंप; –**ची**–(पुं.) मसजिद में चिराग जलानेवाला।
कंदुक–(सं. पुं.) गेंद, सुपारी, एक वर्ण-वृत्त; –**क्रीड़ा**–(स्त्री.) गेंद का खेल।
कंदैल, कंदैला–(हि. वि.) मैलाकुचैला।
कंध–(हि. पुं.) स्कन्ध, कन्धा, डाल।
कंधनी–(हि. स्त्री.) करधनी, कमर में पहिनने का आभूषण।
कंधर (हि. पुं.) स्कंध, मोथा।
कंधा–(हि. पुं.) गरदन और बाहुमूल के बीच का भाग, स्कंध, बैल की गरदन के ऊपर का भाग जिसपर जुआ रखा जाता है; (मुहा.)– डाल देना–बैल का कंधे पर जुआ न लेना, कोई भार या जिम्मेदारी लेने से भागना; –**देना**–अरथी ढोने में कंधा देना, मदद करना; –**बदलना**–पालकी के कहारों का बोझ एक कंधे से दूसरे कंधे पर लेना।
कंधार–(हि. पुं.) अफगानिस्तान का एक प्रदेश, कर्णधार, मल्लाह, केवट।
कंधारी–(हि. वि.) कंधार देश का; (पुं.) कन्धार देश का घोड़ा।
कँधावर–(हि. स्त्री.) वर के कन्धे पर रखने का दुपट्टा या चादर, वह रस्सी जिसमें ताशा बाँधकर छाती पर लटकाया जाता है।
कँधियाना–(हि.क्रि.स.) कन्धा देना, कंधे पर रखना।
कँधेला–(हि. पुं.) स्त्रियों के कन्धे पर रहनेवाला वस्त्र का भाग।
कँधेली–(हि. स्त्री.) अंडाकार गद्दी जो गाड़ी में जुते हुए घोड़े की गरदन पर रक्खी जाती है।
कँधैया–(हि. पुं.) देखें 'कन्हैया'।
कंप–(सं. पुं.) काँपना, हिलना।
कँपकँपी–(हि. स्त्री.)- कम्प, थरथराहट।
कंप ज्वर–(सं. पुं.) जूड़ी-बुखार।
कंपन–(सं. पुं.) कंप।
कँपना–(हि. क्रि. अ.) थरथराना, कंपित होना, काँपना।
कंपनी–(अं. स्त्री.) व्यापारियों का दल, व्यावसायिक मण्डली।
कंपा–(हि. पुं.) लासा लगी हुई बाँस की लग्गी जिससे चिड़ीमार पक्षियों को फँसाकर पकड़ते हैं, कंपन, भय।
कँपाना–(हि. क्रि. स.) इधर-उधर चलाना, हिलाना, डराना, भय दिखाना।
कंपास–(अं. स्त्री.) कुतुबनुमा, परकाल, नापने का यन्त्र।
कंपित–(सं. वि.) काँपता या हिलता हुआ।
कंपू–(हि. पुं.) सेना के रहने का स्थान, छावनी, शिविर, डेरा।
कंबख्त–(अ. वि.) कमबख्त, पाजी।
कंबर–(हि. पुं.) देखें 'कंबल'।
कंबल–(हि. पुं.) ऊन का बना ओढ़ना।
कंबु–(सं. पु.) शंख, हाथी, गला।
कंबोज–(सं. पु.) एक प्राचीन जनपद।
कँवल–(हि.पुं.) देखें 'कमल', कामला रोग।
कँवलगट्टा–(हि. पुं.) कमल का बीज।
कंस–(सं. पुं.) बरतन, काँसा, प्याला, कटोरा, आठ सेर की तौल, श्रीकृष्ण के मामा का नाम।
कंसक–(सं. पुं.) लोहे का मल, कसीस।
कंसकार–(सं. पुं.) कसेरा।
कंसताल–(सं. पुं.) झाँझ, मजीरा।
कँसुला–(हि. पुं.) काँसे का गड्ढा किया हुआ पासा जिसमें ठोंककर सोनार घुँघरू आदि बनाते हैं।
कँसुली–(हि. स्त्री.) छोटा कँसुला।
कँसुवा–(हि. पुं.) एक कीड़ा जो ईख की फसल को नष्ट करता है।
ककई–(हि. स्त्री.) दोनों ओर दाँते का छोटा कंघा, पुरानी छोटे आकार की ईंट।
ककड़ी–(हि. स्त्री.) भूमि पर फैलनेवाली एक लता जिसका लंबा फल खाया जाता है; (मुहा.)–**का चोर**–बहुत ही छोटा अपराध करनेवाला।
ककना–(हि.पुं.) कंकण, इमली का फल।
ककनी–(हि. स्त्री.) छोटा कंगन, इमली का छोटा फल, एक प्रकार की मिठाई।
ककनू–(हि. पुं.) एक पक्षी जिसके विषय में कहा जाता है कि इसके गाने से घोंसला जल जाता है।
ककराली–(हि.स्त्री.) काँख का कड़ा फोड़ा।
ककरी–(हि. स्त्री.) देखें 'ककड़ी'।
ककरौल–(हि. पुं.) खेखसा।
ककवा–(हि. पुं.) एक यन्त्र जिससे जुलाहे करगह में भरनी के तागे भरते हैं।
ककहरा–(हि. पुं.) वर्णसमूह, 'क' से 'ह' तक अक्षर।
ककही–(हि. स्त्री.) कंघी, एक प्रकार की कपास।
ककुत्स्थ–(सं.पुं.) इक्ष्वाकु वंश का एक राजा।
ककुद(द)–(सं.पुं.) बैल के कंधे पर का कूबड़, डिल्ला, ध्वज, राजचिह्न, चोटी, शिखर।
ककुभ–(सं.पुं.) अर्जुनवृक्ष, कुटज; (स्त्री.) दिशा, एक रागिणी का नाम।
ककुभा–(सं. स्त्री.) दिशा, मालकोस की पाँचवीं रागिणी।
ककुह–(सं. पुं.) गाड़ी का वह भाग जिस पर गाड़ीवान बैठता है।
ककेड़ा–(हि. पुं.) चिचिड़ा, खेखसा।
ककैया–(हि. स्त्री.) ककैया ईंट।
ककोड़ा–(हि. पुं.) तमाखू की गेंडी या सूखी पत्ती जो छोटी चिलम में रखकर पी जाती है।
कक्का–(हि. पुं.) काका।
कक्ष–(सं. पुं.) बाहुमूल, कमर, काँख, [illegible], कच्छ, [illegible], सूखी घास, पाप, [illegible], [illegible] का [illegible], [illegible], [illegible] के [illegible] का [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], दोनों ओर का भाग, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] का [illegible]

कक्षप–(सं. पुं.) कच्छप, कछुआ।

कक्षा–(सं. स्त्री.) हाथी को बांधने का रस्सा, कोठरी, बराबरी, काछ, लाँग, विरोध, राजा का अन्तःपुर, अंचल, तुलना, श्रेणी, दरजा; –पट–(सं. पुं.) कौपीन, काछ।

कखवाली, कखौरी–(हिं. स्त्री.) कांख की फोड़िया।

कगर–(हिं. पुं.) ऊँचा किनारा, ओंठ, सीमा, मेड़, बारी, कँगनी, भीत में उभड़ी हुई पट्टी; (अव्य.) किनारे पर, अलग।

कगार–(हिं. पुं.), कगरी–(हिं. स्त्री.) ऊँचा किनारा, नदी का करारा, भूमि का ऊँचा भाग, टीला।

कच–(सं. पुं.) केश, बाल, सूखा हुआ व्रण, मेघ, बन्धन, झुंड, शोभा, बालक, बृहस्पति के पुत्र का नाम, कपड़े का किनारा; (हिं. वि.) कच्चा; (पुं.) धँसने या चुभने का शब्द।

कचक–(हिं. स्त्री.) दबने या कुचल जाने से उत्पन्न चोट।

कचकच–(हिं. स्त्री.) बकझक, बातों का झगड़ा, किचकिच।

कचकचाना–(हिं. क्रि. अ.) कचकच करना, क्रुद्ध होना, बातों का झगड़ा करना, दाँत पीसना।

कचकड़(ा)–(हिं. पुं.) कछुवे की खोपड़ी।

कचकना–(हिं. क्रि. अ.) दबना, कुचलना, ठोकर लगना।

कचकाना–(हिं. क्रि. स.) चुभाना, धँसाना, तोड़ना।

कचकोल–(हिं. पुं.) कपाल, खोपड़ी, खप्पर, नारियल का बना हुआ भिक्षापात्र।

कचट–(हिं. स्त्री.) कचक या टक्कर, ठेस, एक प्रकार का शाक।

कचड़-पचड़–(हिं. पुं.) कचपच, बकझक।

कचड़ा–(हिं. पुं.) कूड़ा-करकट, झाड़न, मृत्तिकायुक्त अन्न, कपास, बिनौला।

कचदिला–(हिं. वि.) दुर्बल हृदय का, डरपोक, भीरु।

कचनार–(हिं. पुं.) सुगन्धित फूलों का एक वृक्ष, इसकी कलियों की तरकारी भी बनती है।

कचपच–(हिं. पुं.) भीड़भाड़, कचकच, गुत्थमगुत्था।

कचपचिया, कचपची–(हिं. स्त्री.) कृत्तिका नक्षत्र जिसमें अनेक छोटे-छोटे नक्षत्र रहते हैं, स्त्रियों के माथे में लगाने की चमकीले बुंदों की टिकुली।

कचपेंदिया–(हिं. वि.) कच्ची पेंदी का, हीन, अस्थिर विचार का, ऊटपटांग बकनेवाला।

कचबची–(हिं. स्त्री.) देख 'कचपची'।

कचर-कचर–(हिं. पुं.) कच्चा फल खाने पर मुख से निकलनेवाला शब्द, कचपच, बकझक।

कचरकूट–(हिं. पुं.) मारपीट, लात-जूता, पेट भरकर भोजन।

कचरघान–(हिं. पुं.) भीड़भाड़, गुत्थमगुत्था, मारपीट।

कचरना–(हिं. क्रि. स.) पैर से कुचलना, रौंदना, खूब पेट भर भोजन करना।

कचर-पचर–(हिं. पुं.) कचपच, गिचपिच।

कचरा–(हिं. पुं.) कूड़ा-करकट, ककड़ी, फूट का कच्चा फल, उड़द या चने की ककड़ी, समुद्री सेवार, छिलका लगी हुई दाल।

कचरी–(हिं. स्त्री.) ककड़ी की जाति की एक लता, पेहटा, छिलकेदार दाल, रूई का बिनौला।

कचलंपट–(हिं. वि.) व्यभिचारी।

कचला–(हिं. स्त्री.) काली चिकनी मिट्टी।

कचलोंदा–(हिं. पुं.) कच्चे आटे का बना हुआ पेड़ा, साने हुए आटे की लोई।

कचलोन–(हिं. पुं.) काँच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बना हुआ नमक।

कचलोहा–(हिं. पुं.) कच्चा लोहा।

कचलोहू–(हिं. पुं.) व्रण में से निकलनेवाला पंछा।

कचवाँसी–(हिं. स्त्री.) एक बिस्वे का बीसवाँ भाग।

कचहरी–(हिं. स्त्री.) न्यायालय, कार्यालय, राजसभा, दरबार, गोष्ठी, जमघट।

कचाई–(हिं. स्त्री.) कच्चापन, अनुभवहीनता।

कचाकची–(हिं. स्त्री.) विवाद, झगड़ा।

कचाना–(हिं. क्रि. अ.) कच्चा पड़ना, साहस हारना।

कचायँध–(हिं. स्त्री.) कच्चेपन की गन्ध।

कचायन–(हिं. स्त्री.) बकझक, कहा-सुनी।

कचार–(हिं. पुं.) नदी के किनारे का छिछला पानी।

कचारना–(हिं. क्रि. स.) कपड़ा धोना।

कचालू–(हिं. पुं.) घुइयाँ, अरुई, बंडा, एक प्रकार की चाट; (मुहा.) –करना या बनाना–खूब पीटना।

कचावट–(सं. स्त्री.) आम की खटाई।

कचास–(हिं. स्त्री.) देखें 'कचाई'।

कचिया–(हिं. स्त्री.) हँसुवा, हँसिया।

कचियाना–(हिं. क्रि. अ.) हताश होना, भयभीत होना, सकुचाना, लज्जा मानना।

कचीची–(हिं. स्त्री.) कृत्तिका नक्षत्र, दाढ़, जबड़ा; (मुहा.)–बाँधना–दाँत बैठ जाना।

कचुल्ला–(हिं. पुं.) चौड़ी पेंदी का कटोरा।

कचूमर–(हिं. पुं.) कुचलकर बनाया हुआ अचार, भर्ता, कुचली हुई वस्तु; (मुहा.)–करना या निकालना–कुचलना, कूटना, खूब पीटना।

कचूर–(हिं. पुं.) हलदी के समान एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर के समान तीव्र गन्ध होती है, कटोरा।

कचेरा–(हिं. पुं.) काँच का काम करनेवाला, कँचेरा।

कचोटना–(हिं. क्रि. अ.) गड़ना, चुभना, संताप होना।

कचोना–(हिं. क्रि. अ.) चुभाना, धँसाना।

कचोरा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का धान्य; (हिं. पुं.) कटोरा, प्याला।

कचोरी–(हिं. स्त्री.) कटोरी, प्याली।

कचौड़ी, कचौरी–(हिं. स्त्री.) उड़द की पीठी आदि में मसाला मिलाकर आटे की लोई के भीतर भरकर घी या तेल में पकाई पूरी।

कच्चर–(सं. वि.) मलिन, मैला, दुष्ट।

कच्चा–(हिं. वि.) अपक्व बिना पका हुआ, हरा, बिना रस का, अप्रस्तुत, अस्थायी, अयुक्त, न्यून, अपूर्ण, नियमरहित, अनभ्यस्त, अपरिपुष्ट, प्रमाणों से दृढ़ न किया हुआ, अदृढ़; (पुं.) धागा, दूर-दूर की सीयन, ढाँचा, जबड़े का जोड़, दाढ़, ताँबे का छोटा सिक्का, सच्चा वृत्तान्त जिसको कच्चा चिट्ठा कहते हैं; –कागज–(पुं.) जो लेख्य प्रामाणिक न हो; –चिट्ठा–(पुं.) पूरा विवरण, सच्चा हाल, –चूना–(पुं.) पानी में न बुझनेवाला चूना; –टाँका–(पुं.) राँगे का जोड़; –तागा–(पुं.) बिना बटा हुआ धागा; –पक्का–(वि.) सिझा और अनसिझा, अपरिपक्व; –बाना का माल–(पुं.) नकली गोटे-पट्टे का माल; –पैसा–(पुं.) न चलनेवाला पैसा; –माल–(पुं.) व्यवहार की वस्तुएँ बनाने की सामग्री; यथा–तेलहन, रूई, धातु इत्यादि; –सेर–(पुं.) सेर जो प्रामाणिक तौल से कम हो; –हाथ–(हिं. पुं.) अभ्यास न होने के कारण किसी काम को करने के लिए हाथ का न बैठना; कच्ची घड़ी–(स्त्री.) चौबीस मिनट का

काल; **कच्ची चीनी**–(स्त्री.) गलाकर स्वच्छ न की हुई चीनी; **कच्ची जबान**–(स्त्री.) गाली, अपशब्द; **कच्ची जाकड़**–(स्त्री.) ठीक तौर पर न बिके हुए माल के लेन-देन की वही; **कच्ची नकल**–(स्त्री.) लेख्य की अप्रमाणिक नकल; **कच्ची नींद**–(स्त्री.) अधूरी नींद; **कच्ची वही**–(स्त्री.) पूर्ण रूप से निश्चित न किये हुए हिसाब लिखने की व्यापारी की वही; **कच्ची मिती**–(स्त्री.) पक्की मिती से पहिले का या रुपया मिलने या चुकाने का दिन; **कच्ची रसोई**–(हिं. स्त्री.) केवल जल में पका हुआ भोजन, (दाल, भात, रोटी इत्यादि); **कच्ची रोकड़**–(स्त्री.) प्रतिदिन के आय-व्यय लिखने की वही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा जाता है जो पूर्ण रूप से स्थिर न हो; **कच्ची शक्कर**–(स्त्री.) राव से जूसी अलगाकर बनाई हुई चीनी; **कच्ची सड़क**–(स्त्री.) कंकड़-पत्थर से न पिटी हुई सड़क; **कच्ची सिलाई**–(स्त्री.) दूर-दूर पर टाँका लगाई हुई सिलाई; **कच्चे-बच्चे**–(पुं.) छोटे बच्चे, बहुत-से बच्चे; (मुहा.) **–करना**–बात काटना, कच्ची सिलाई करना; **–पड़ना**–गलत या कमजोर ठहरना; **कच्ची करना**–चौसर आदि में अपनी लाल या पक्की गोटी को फिर बाहर करना; **कच्ची गोटी खेलना**–अनाड़ी या अनुभवहीन होना; **कच्चे घड़े पानी भरना**–कठिन या दुष्कर कार्य करना।

कच्चू–(हिं. स्त्री.) अरुई, बंडा, घुइयाँ।

कच्छ–(सं. पुं.) जल के पास की भूमि, कछार, अनूपदेश, नदी या तालाब के सामने का मैदान, वस्त्र का अञ्चल, पानी से भरा हुआ स्थान, एक प्राचीन नगर का नाम; (पुं.) छप्पय छन्द जिनमें १५२ मात्राएँ होती हैं, कछुआ, धोती की लाँग।

कच्छप–(सं. पुं.) कूर्म, कछुआ, विष्णु का एक अवतार, कुबेर की एक निधि, मल्ल-युद्ध की एक युक्ति, ममका, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, दोहे का एक भेद; **–यंत्र**–(पुं.) औषधि बनाने का एक यन्त्र।

कच्छपिका–(सं. स्त्री.) छोटी-छोटी फुन्सियों का एक रोग।

कच्छपी–(सं. स्त्री.) मादा कच्छप, कछुई, सरस्वती की वीणा।

कच्छांत–(सं. पुं.) नदी या झील का किनारा।

कच्छा–(हिं. पुं.) बड़ी नाव जिसके सिरे चिपटे और चौड़े होते हैं, कई नावों को मिलाकर बना हुआ बेड़ा।

कच्छी–(हिं. वि.) कच्छदेशीय, कच्छ देश में उत्पन्न, कच्छ देश का घोड़ा जिसकी पीठ गहरी होती है; (पुं.) कच्छ देश का निवासी; (स्त्री.) वहाँ की भाषा।

कच्छू–(हिं. पुं.) कच्छप, कछुआ, खुजली।

कछकोल–(हिं. पुं.) भीख माँगने का खप्पर, भिक्षापात्र।

कछना–(हिं. पुं.) घुटने तक चढ़ाकर पहिनी हुई धोती, कछनी।

कछनी–(हिं. स्त्री.) छोटी धोती, घुटने तक चढ़ाकर पहिनने की धोती, खाद्य-वस्तु का काछकर निकाला जानेवाला यत्किंचित शेष-भाग।

कछरा–(हिं. पुं.) चौड़े मुँह का घड़ा।

कछरी–(हिं. स्त्री.) छोटा कछरा, गगरी।

कछवारा–(हिं. पुं.) साग, तरकारी बोने का खेत।

कछवाहा–(हिं. पुं.) राजपूतों की एक जाति।

कछान, कछाना–(हिं. पुं.) घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहिनना।

कछार–(हिं. पुं.) नदी या समुद्र के किनारे की नीची भूमि।

कछियाना–(हिं. पुं.) काछियों की बस्ती।

कछु–(हिं. वि.) देखें 'कुछ'।

कछुआ–(हिं. पुं.) देखें 'कच्छप'।

कछुई–(हिं. स्त्री.) कच्छपी।

कछुक–(हिं. वि.) कुछ, थोड़ा-सा।

कछुवा–(हिं. पुं.) देखें 'कच्छप'।

कछोटा, कछौटा–(हिं. पुं.) काछ, कछनी, लाँग।

कजनी–(हिं. स्त्री.) पात्र खुरचने का एक साधन।

कजरा–(हिं. पुं.) काजल, काली आँख का बैल; (वि.) जिसकी आँखें काजल लगी हुई सी देख पड़ें।

कजराई–(हिं. स्त्री.) श्यामता, कालापन।

कजरारा–(हिं. वि.) कज्जलयुक्त, काजल लगा हुआ, श्यामवर्ण का, काला।

कजरी–(हिं. स्त्री.) बरसात में गाने की एक रागिनी, एक त्योहार जिसमें स्त्रियाँ कजरी गाती हैं, कजली, काले रंग की गाय।

कजरौटा–(हिं. पुं.) काजल रखने की डंडी लगी हुई डिबिया।

कजरौटी–(हिं. स्त्री.) छोटा कजरौटा।

कजला–(हिं. पुं.) कज्जल, काजल; (वि.) काली आँखवाला।

कजलाना–(हिं. क्रि. अ., स.) काला पड़ना, कम पड़ना, बुझना, सँदाना, काजल लगाना, आँजना।

कजली–(हिं. स्त्री.) श्यामता, कालिख, पारा और गन्धक पीसकर बनाई हुई बुकनी, काली आँख की गाय, भादों बदी तीज का त्योहार, जव के नये अंकुर, एक प्रकार की ईख, बरसात में गाने का एक गीत।

कजली तीज–(हिं. स्त्री.) भादों बदी तीज।

कजा–(अ. स्त्री.) ईश्वरीय या दैवी आदेश, भाग्य, मौत; (मुहा.) **–आना**–मौत आना।

कजाक–(हिं. पुं.) देखें 'कज्जाक'।

कजाकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कज्जाकी'।

कजावा–(फा. पुं.) ऊँट की पीठ पर रखने की काठी।

कजी–(फा. स्त्री.) टेढ़ाई, ऐब, दोष, कसर।

कज्जल–(सं. पुं.) अञ्जन, काजल, सुरमा, कालिख, मेघ, बादल, चौदह मात्राओं का एक छन्द।

कज्जलित–(सं. वि.) काजल लगा हुआ।

कज्जली–(सं. स्त्री.) पारा तथा गन्धक घोंटी हुई बुकनी, एक प्रकार की मछली, स्याही।

कज्जाक–(तु. पुं.) एशियाई रूस की एक तुर्क जाति, डाकू, लुटेरा।

कज्जाकी–(तु. स्त्री.) लुटेरापन, राहजनी।

कट–(सं. पुं.) हाथी की कनपटी, कमर, घास, सरपत, शव, समय, नरकट की चटाई, घासफूस की टट्टी, अधिकता, खस, सरकंडा आदि घास, अरथी, श्मशान, घोड़दौड़ का मैदान; (हिं. पुं.) काला रंग, काट, तराश।

कटक–(सं. पुं.) पहाड़ के बीच का स्थान, चक्र, चूड़ी, सेना, हाथी के दाँत का गहना, सेंधा नमक, राजधानी, शिविर, डेरा, रस्सी, पहाड़ की [illegible] भूमि, समूह, कंकण, पुआल की बनी हुई चटाई, गोंदरी, उड़ीसा प्रान्त के एक नगर तथा जिले का नाम।

कटकई–(हिं. स्त्री.) सेना।

कटकट–(हिं. स्त्री.) दाँतों के बजने का शब्द, लड़ाई, झगड़ा।

कटकटाना–(हिं. क्रि. अ.) दाँतों का शब्द होना, दाँत पीसना।

कटकटिका–(हिं. स्त्री.) [illegible]।

कटकाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'कटकई'।

कटकार–(सं. पुं.) [illegible], चटाई

वगैरह बनानेवाला।
कटकी–(सं. पुं.) गज, हाथी, सेना; (वि.) कटक नगर का; (पुं.) कटक का वासी।
कटकुटी–(सं. स्त्री.) पर्णशाला, झोपड़ी।
कटखना–(हि.वि.) दाँत से काटनेवाला; (पुं.) काट-छाँट, युक्ति।
कटघरा–(हि. पुं.) जंगले का लगा हुआ काठ का घर, बड़ा पिंजड़ा।
कटजीरा–(हि. पुं.) काला जीरा।
कटड़ा–(हि.पुं.) भैंस का नर बच्चा, पँड़वा।
कटताल–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का बाजा, करताल।
कटती–(हि. स्त्री.) बिक्री, माँग, (धन, गल्ले आदि) में से काटा जानेवाला भाग, छूट।
कटना–(हि. क्रि. अ.) दो टुकड़े होना, प्रवेश करना, घुसना, महीन चूर्ण होना, अलग होना, छूटना, गुजरना, बीतना, समाप्त होना, छीजना, कतरा जाना, धोखा देकर चल देना, लज्जित होना, डाह करना, मोहित होना, प्राप्ति होना, खपना, मिटना, व्यर्थ होना, नष्ट होना, मिट जाना, धँसना, पूरा-पूरा भाग होना (जिसमें शेष न बचे); (मुहा.) कटती कहना–मर्मभेदी बातें करना; कट मरना–कटकर मर जाना; कटे पर नमक छिड़कना–दुखिया को और अधिक कष्ट देना।
कटनास–(हि. पुं.) नीलकंठ पक्षी।
कटनि–(हि. स्त्री.) काट-छाँट।
कटनी–(हि. स्त्री.) कतरनी, कटाई, तिरछी दौड़, काटने का औजार।
कटर–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
कटरा–(हि. पुं.) छोटा चौकोर हाट, भैंस का पँड़वा।
कटरिया–(हि. पुं.) एक प्रकार का धान।
कटरी–(हि. स्त्री.) नदी के किनारे की नीची भूमि।
कटरेती–(हि. स्त्री.) लकड़ी रेतने का एक औजार, रेती।
कटल्लू–(हि.पुं.) व्याध, मांस बेचनेवाला।
कटवाँ–(हि. वि.) कटा हुआ, काटकर बना हुआ।
कटवाना–(हि.क्रि. स.) काटने या कटने में प्रवृत्त करना।
कटसरैया–(हि.स्त्री.) एक काँटेदार पौधा।
कटहर–(हि. पुं.) देखें 'कटहल'।
कटहरा–(हि. पुं.) कटघरा, काठ का जंगलेदार घर।
कटहल–(हि. पुं.) एक वृक्ष जिसमें हाथ भर लंबे मोटे फल लगते हैं, पनस।
कटहा–(हि. वि.) दाँत से काटनेवाला (जानवर)।
कटा–(हि.स्त्री.) वध, मारकाट, हत्या; (वि.) टूटा-फूटा, कटा हुआ।
कटाइक–(हि. पुं.) काटनेवाला।
कटाई–(हि. स्त्री.) प्रहार, काटने का काम, अन्न का काटा जाना, काटने का शुल्क।
कटाऊ–(हि.वि.) काट-छाँट किया हुआ।
कटाकट–(हि. पुं.) कटकट का शब्द, लड़ाई-झगड़ा।
कटाकटी–(हि. स्त्री.) वध, मार-काट।
कटाक्ष–(सं.पुं.) तिरछी चितवन, आक्षेप।
कटाछनी–(हि. स्त्री.) वध, युद्ध, मारकाट, तर्क।
कटान–(हि. स्त्री.) काटने का कार्य।
कटाना–(हि.क्रि.स.) छेद कराना, काटने का काम दूसरे से कराना, घुमाना, बचाना, (गाड़ी आदि) जरा बचा कर या घुमाकर ले जाना।
कटार–(हि. स्त्री.) दोनों ओर धार का छोटा अस्त्र, एक तरह का वन-बिलाव।
कटारा–(हि.पुं.) बड़ी कटार, इमली का फल।
कटारिया–(हि. पुं.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
कटारी–(हि. स्त्री.) कटार, एक प्रकार का छोटा अस्त्र।
कटाली–(हि. स्त्री.) भटकटैया।
कटाव–(हि. पुं.) काटछाँट, बनावटी बेल-बूटे जो कपड़ा काटकर बनाये जाते हैं; –दार–(वि.) जिस पत्थर या लकड़ी पर बेलबूटे खोदकर या काटकर बनाये गये हों।
कटावन–(हि. पुं.) कटाव का काम, कतरन, कटा हुआ भाग।
कटास–(हि. पुं.) कटार, एक प्रकार की जंगली बिल्ली, वनबिलाव।
कटासी–(हि.स्त्री.) शव गाड़ने का स्थान।
कटाह–(सं. पुं.) कछुवे की खोपड़ी, तेल या घी रखने का पात्र, नरक विशेष, भैंस का सींग, निकलता हुआ बच्चा, सूर्य, कुआँ, ऊँचा टीला, बड़ी कड़ाही।
कटि–(सं. स्त्री.) शरीर का मध्य भाग, कमर, हाथी की कनपटी, मन्दिर का द्वार, घुमची।
कटिका–(सं.स्त्री.) पतली कमरवाली स्त्री।
कटिकूप–(सं. पुं.) चूतड़ का गड्ढा।
कटिजेब–(हि. स्त्री.) कमर का आभूषण, करधनी, मेखला।
कटितट–(सं. पुं.) कमर, नितम्ब, चूतर।
कटित्र–(सं. पुं.) कमरबंद, करधनी।
कटिदेश–(सं. पुं.) श्रोणी, कमर।
कटिबंध–(सं. पुं.) कमरबंद, पृथ्वी का वह भाग जो शीतलता और उष्णता के अनुसार निर्धारित होता है।
कटिबद्ध–(सं. वि.) कमर कसकर तैयार, तत्पर, उद्यत।
कटिया–(हि. पुं.) नगीने बनानेवाला; (स्त्री.) पशुओं का चारा जो ज्वार, मकई इत्यादि के डंठलों को काटकर बनाया जाता है, मस्तक का एक अलंकार, मछली फँसाने का काँटा, कँटिया।
कटियाना–(हि.क्रि.अ.) रोमांचित होना, रोएँ खड़े होना।
कटियाली–(हि. स्त्री.) भटकटैया।
कटिशूल–(सं. पुं.) कमर की पीड़ा।
कटिसूत्र–(सं. पुं.) कमर में पहिनने का आभूषण, करधनी।
कटीरा–(हि. पुं.) देखें 'कतीरा'।
कटील–(हि.स्त्री.) एक प्रकार की कपास।
कटीला–(हि. वि.) काटनेवाला, तीक्ष्ण, पैना, प्रभावशाली, हृदयग्राही, नोकदार, मोहित करनेवाला, काँटेदार; (पुं.) एक नोकदार लकड़ी जो गाय-भैंस के बच्चों की नाक पर बाँध दी जाती है जिसमें वे माँ का दूध न पी सकें।
कटु–(सं. वि.) कड़ुवा, तीता, कसैला, अप्रिय, तीक्ष्ण, उष्ण, कुत्सित, विरस; –कंद–(सं.पुं.) लशुन, लहसुन; –ग्रंथि–(सं. पुं.) पिपलामूल, सोंठ, लहसुन; –ता–(सं. स्त्री.) उग्रता, तीक्ष्णता, कड़ापन, अप्रियता, तेजी; –तुंबी–(सं. स्त्री.) कड़ुवी लौकी; –तैल–(सं. पुं.) कड़ुवा तेल, सरसों का तेल; –त्व–(सं. पुं.) कड़ुवापन, चरपराहट; –फल–(सं.पुं.) कायफल, कड़ुवी ककड़ी, करेला; –भाषी–(सं.वि.) कर्कश शब्द बोलनेवाला।
कटुआ–(हि. पुं.) व्यापारी के पास प्रतिदिन आनेवाली वस्तु जिसका मूल्य बाद में इकट्ठा होता है।
कटुक–(सं. वि.) अप्रिय, नागवार।
कटुकत्व–(सं. पुं.) कटुता।
कटुरा–(सं. स्त्री.) कच्ची हल्दी।
कटूक्ति–(सं.स्त्री.) अप्रिय वार्ता, विघ्नकारक बात।
कटूमर–(हि. पुं.) जंगली गूलर।
कटेरी–(हि. स्त्री.) भटकटैया।

कटेली—(हि.स्त्री.) एक प्रकार की कपास।
कटैया—(हि. पुं.) काटनेवाला।
कटैला—(हि. पुं.) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।
कटोरदान—(हि. पुं.) पका हुआ भोजन रखने का ढपनेदार कटोरा।
कटोरा—(हि.पुं.) (स्त्री. कटोरी) चौड़ी पेंदी तथा खुले मुँह का बड़ा प्याला।
कटोरिया—(हि. स्त्री.) छोटा कटोरा।
कटोरी—(हि. स्त्री.) छोटा कटोरा, तलवार की मुठिया का उभड़ा हुआ गोल भाग, फूल के ऊपर का गोल भाग, चोली का वह भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं।
कटौती—(हि. स्त्री.) (रकम आदि में से) काटकर निकाला जानेवाला अंश, अन्न बेचते समय अथवा खेत से घर ले जाते समय उसमें का वह अंश जो धर्मार्थ देने के लिए निकाल दिया जाता है;—**का प्रस्ताव**—(पुं.) किसी विभाग म होनेवाले अधिक व्यय को कम करने के लिए विधान सभा द्वारा पेश होनेवाला प्रस्ताव।
कटौनी—(हि.स्त्री.) अन्न काटने का काम।
कट्टर—(हि. वि.) काट खानेवाला, कटहा, हठी, अन्धविश्वासी, दूसरे की बात को न माननेवाला।
कट्टहा—(हि. पुं.) महाब्राह्मण, महापात्र।
कट्टा—(हि. वि.) स्थूल, मोटा, पुष्ट, बलवान्, कड़ा; (पुं.) जबड़ा; (मुहा.) **कट्टे लगना**—अपनी वस्तु का दूसरे के कब्जे में चले जाना।
कट्ठा—(हि. पुं.) भूमि की एक नाप जो पाँच हाथ चार अंगुल होती है, धातु गलाने की भट्ठी, अन्न नापने का पात्र।
कट्याना—(हि.क्रि.अ.) रोमांचित होना।
कट्वार—(सं. पुं.) कटार, कटारी।
कठंगर—(हि.वि.) स्थूल, मोटा, कठोर, कड़ा।
कठ—(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, यजुर्वेद का एक उपनिषद्, एक वैदिक मन्त्र, ब्राह्मण, देवता, कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा; (हि. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा, समस्त पदों में इस शब्द का अर्थ 'काठ का बना हुआ' होता है, जैसे—कठपुतली।
कठकोली—(हि. स्त्री.) काठ की फन्नी या पच्चड़।
कठकेला—(हि. पुं.) जंगली केला जिसका फल रूखा और फीका होता है।
कठफोरा—(हि. पुं.) कठफोड़वा पक्षी।

कठगुलाब—(हि. पुं.) जंगली गुलाब जिसमें छोटे फूल होते हैं।
कठड़ा, कठघरा—(हि.पुं.) काठ का घेरा, लकड़ी का बड़ा सन्दूक या बड़ा पात्र, कठौता।
कठताल—(हि.पुं.) लकड़ी का करताल।
कठपुतली—(हि. स्त्री.) लकड़ी की गुड़िया जिसमें तार बाँधकर नचाते हैं, दूसरे के कहने पर चलनेवाले पुरुष।
कठफला—(हि. पुं.) कुकुरमुत्ता, छत्रक।
कठफोड़वा—(हि. पुं.) भूरे रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच लंबी होती है। यह पेड़ों की छाल को छेदती और इसमें के कीड़े-मकोड़े खाती है।
कठबंधन—(हि. पुं.) लकड़ी की बेड़ी, हाथी के पैर में डालने का अंदुवा।
कठबाप—(हि. पुं.) सौतेला पिता।
कठबेल—(हि. पुं.) कपित्थ, कैथ।
कठबैद—(हि. पुं.) अनाड़ी वैद्य।
कठमलिया—(हि. पुं.) काठ की माला पहिननेवाला, वैष्णव, बनावटी साधु।
कठमस्त—(हि. वि.) हृष्टपुष्ट, हट्टा-कट्टा, व्यभिचारी।
कठमस्ती—(हि. स्त्री.) गुण्डई, मस्ती, तगड़ापन।
कठमाटी—(हि. स्त्री.) कीचड़ की मिट्टी जो सूखने पर बहुत कड़ी हो जाती है।
कठरा—(हि. पुं.) काठ का बड़ा सन्दूक, काठ का पात्र, कठौता, कठघरा।
कठरी—(हि. स्त्री.) छोटा कठरा।
कठला—(हि.पुं.) बच्चों के पहिनने का गले का एक आभूषण जो आधि-व्याधि से रक्षा करने के लिये इनको पहिनाया जाता है।
कठवत, कठवता—(हि.पुं.) देखें 'कठौता'।
कठवल्ली—(सं. स्त्री.) कृष्ण यजुर्वेद के कठ-शाखा का एक उपनिषद्।
कठारा—(हि. पुं.) नदी या तालाब का किनारा, कछार।
कठारी—(हि. स्त्री.) लकड़ी का पात्र, कमण्डलु।
कठिका—(सं. स्त्री.) खटिका, खड़िया।
कठिन—(सं. वि.) दृढ़, कड़ा, कठोर, निष्ठुर, तीक्ष्ण, दुःसह।
कठिन चित्त—(सं. वि.) निर्दयी, क्रूर।
कठिनता, कठिनताई—(सं., हि. स्त्री.) दृढ़ता, कठोरता, तीक्ष्णता, कड़ापन, असाध्यता, निर्दयता, पुष्टता।
कठिनत्व—(सं. पुं.) देखें 'कठिनता'।
कठिनपृष्ठ—(सं. पुं.) कच्छप, कछुआ।
कठिनहृदय—(सं.वि.) कठोरहृदय, निर्दय।
कठिना—(सं.स्त्री.) शक्कर, चीनी, [illegible]।

कठिनाई—(हि. स्त्री.) कठोरता, दृढ़ता, कड़ापन, क्लिष्टता, असुविधा, दिक्कत।
कठिनी—(सं. स्त्री.) खटिका, खड़िया।
कठिया—(हि. वि.) कड़े छिलकेवाला; (पुं.) एक प्रकार का गेहूँ।
कठियाना—(हि.क्रि.अ.) कड़ा होना, सूखना काठ बन जाना, सूखकर कड़ा होना।
कठुला—(सं. स्त्री.) बच्चों के गले में, पहिनने की माला।
कठुवाना—(हि. क्रि. अ.) सूखकर कड़ा हो जाना, तरी निकल जाना, ठंढक से हाथ-पैर ठिठुरना।
कठेठ, कठेठा—(हि. वि.) कड़ा, पुष्ट।
कठेल—(हि. पुं.) धुनियों की कमान जिससे रूई धुनी जाती है।
कठैला—(हि. पुं.) कठौता।
कठैली—(हि. स्त्री.) छोटा कठौता।
कठोदर—(हि. पुं.) वह रोग जिसमें पेट काठ की तरह कड़ा होता है।
कठोर—(सं. वि.) कठिन, कड़ा, निष्ठुर, निर्दय, क्रूर कर्म करनेवाला, दारुण, तीक्ष्ण, अवरोधी; **—ता—**(सं. स्त्री.) कठिनता, कड़ापन, निर्दयता, कड़ाई **—ताई—**(हि. स्त्री.) **—पन—**(हि. पुं.) देखें 'कठोरता'।
कठौत—(हि. स्त्री.), कठौता—(हि. पुं.) लकड़ी का बड़ा पात्र, कठरा।
कठौती—(हि. स्त्री.) छोटा कठौता।
कड़—(हि. पुं.) कमर, कुसुम का बीज।
कड़क—(सं. पुं.) समुद्री लवण; (हि. स्त्री.) कठोर शब्द, बिजली, तड़प, घोड़े की एक चाल, इन्द्रियों में दाह होने का एक रोग, कठोरता, कड़ापन, रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, रुक-रुक कर जलन के साथ मूत्र निकलना।
कड़कड़—(हि. पुं.) दो वस्तुओं के परस्पर टकराने का शब्द, कठोर शब्द, कड़े पदार्थ का टूटने का शब्द।
कड़कड़ाता—(हि.वि.) कड़कड़ शब्द करता हुआ, चटकता हुआ, तीव्र, घोर, कड़ा।
कड़कड़ाना—(हि. क्रि. अ., स.) कड़कड़ शब्द होना, ऐसे शब्द के साथ तोड़ना, घी-तेल इत्यादि को तपाना, तंग करना, चिल्लाना।
कड़कड़ाहट—(हि. स्त्री.) कर्कश शब्द, कठोर शब्द, गरज।
कड़कना—(हि. क्रि. अ.) गरजना, कड़कड़ाना, चटकना, कड़ा शब्द बोलना, टूटना-फूटना, डाटना, चौंकना, भड़कना, निकलना।

कड़कनाल–(हिं.स्त्री.) चौड़े मुँह की तोप।
कड़कबाँका–(हिं.पुं.) बलवान् युवा पुरुष।
कड़क-बिजली–(हि. स्त्री.) कान में पहिनने का स्त्रियों का एक आभूषण, चाँदवाला।
कड़का–(हिं. पुं.) कठोर शब्द।
कड़खा–(हिं. पुं.) युद्ध-संगीत, लड़ाई के समय गाया जानेवाला गीत।
कड़खैत–(हिं. पुं.) कड़खा गानेवाला, बन्दी, भाट।
कड़बड़ा–(हिं. वि.) कुछ सफेद और कुछ काले रंग का।
कड़रा–(हिं.पुं.) कबरी दाढ़ीवाला मनुष्य।
कड़वा–(हिं. पुं.) (स्त्री. कड़वी) हल के फार पर बाँधी जानेवाली कोई गोल वस्तु; (हिं. वि.) कटु, झालदार।
कड़वी–(हिं. स्त्री.) मकई और ज्वार के पौधे जो काटकर पशुओं को खिलाये जाते हैं।
कड़हन–(हिं. पुं.) जंगली धान।
कड़ा–(हिं. पुं.) हाथ या पैर में पहिनने का कंगन या चूड़ा, छल्ला, लोहे का कुंडा, एक प्रकार का कबूतर; (वि.) न दबनेवाला, कठोर, कठिन, ठोस, रूखा, उग्र, जो ढीला न हो, जो गीला न हो, दृढ़, तीक्ष्ण, सबल, सहनशील, दुष्कर, दुःसाध्य, प्रचण्ड, तीव्र, असह्य, कर्कश, बुरा लगनेवाला; (मुहा.)–पड़ना–न दबना, तीव्र होना।
कड़ाई–(हिं. स्त्री.) कठोरता, कड़ापन।
कड़ाका–(हिं. पुं.) किसी कड़े पदार्थ के टूटने का शब्द, उपवास, लंघन; कड़ाके का– तीव्र, प्रचण्ड, अति।
कड़ाबीन–(हिं. स्त्री.) चौड़े मुँह की बन्दूक, छोटी बन्दूक, तमंचा।
कड़ाहा–(हिं. पुं.) (स्त्री. कड़ाही) लोहे की बड़ी कड़ाही, कड़ाह, (इसमें उठाने के लिए दोनों ओर कड़े लगे होते हैं।)
कड़ाही–(हिं. स्त्री.) छोटा कड़ाहा।
कड़ियल–(हिं. पुं.) मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ टुकड़ा।
कड़िया–(हिं. स्त्री.) अरहर का सूखा डंठल जो दाना निकाल लेने पर बच जाता है।
कड़ियाली–(सं.स्त्री.) घोड़े की लगाम।
कड़ी–(हिं. स्त्री.) जंजीर की लड़ी का एक छल्ला, छोटा छल्ला, छोटी धरन, कठिनता, अड़चन, संकट, दुःख, गीत का एक भाग, घोड़े की लगाम, पशु की छाती पर की हड्डी; (वि.) सख्त, कठोर; –दार–(हिं. वि.) छल्लेदार, जिसमें कड़ियाँ लगी हों; (मुहा.)–सुनाना–कड़ी या अप्रिय बातें कहना; –कैद–(स्त्री.) वह कारावास का दंड जिसमें कैदी से कठिन परिश्रम करवाया जाता है।
कड़ुआ–(हिं. वि.) कटु, स्वाद में तीखा, तीक्ष्ण प्रकृति का, क्रोधी, भला न मालूम होनेवाला, अप्रिय, कठिन, टेढ़ा; –घूँट–(पुं.) कठिन कार्य; –तेल–(पुं.) सरसों का तेल।
कड़ुआना–(हिं. क्रि. अ.) कड़ुवा लगना, क्रोध करना, नाक-भौंह चढ़ाना, बिगड़ना, पीड़ा देना, किरकिराना।
कड़ुआहट–(हिं.स्त्री.) कटुता, कड़ुआपन।
कड़ुई–(हिं. वि. स्त्री.) कटु, चरपरी।
कड़ुई रोटी–(हिं. स्त्री.) मृतक के संबंधियों को इस उपलक्ष्य में कराया जानेवाला भोजन।
कड़ूक–(हिं. वि.) देखें 'कटु'।
कड़ेरा–(हिं. पुं.) खरादकर पदार्थ बनानेवाला।
कड़ोड़ा–(हिं. पुं.) उच्च पदाधिकारी।
कड्ढा–(हिं. वि.) ऋण लेकर अपना काम चलानेवाला।
कढ़ना–(हिं. क्रि. अ.) बाहर आना, निकलना, उदय होना, चढ़ना, देख पड़ना, खिंचना, बढ़ जाना, अग्रसर होना, घनीभूत होना, गाढ़ा होना, स्त्री का अपने यार के साथ घर छोड़कर भाग जाना।
कढ़नी–(हिं. स्त्री.) मथानी की रस्सी।
कढ़लाना–(हिं. क्रि. स.) हाथ या पैर पकड़कर घसीटना, लथेड़ना।
कढ़ाई–(हिं. स्त्री.) निकालने का काम, सूई का काम, कसीदा, कसीदा काढ़ने का पारिश्रमिक, कड़ाही।
कढ़ाना, कढ़वाना–(हिं. क्रि. स.) बाहर करना, बाहर निकालना।
कढ़ाव–(हिं. पुं.) कसीदे का काम, सूई से बेल-बूटे बनाने का काम, कड़ाह।
कढ़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सालन जो बेसन को पानी में पतला घोलकर कड़ाही में उबालकर तथा गाढ़ा करने से बनता है।
कढ़ुआ(वा)–(हिं. पुं.) मटके आदि में से पानी निकालने या नापने के काम में आनेवाला बरतन।
कढ़ेवा–(हिं.पुं.) निकाला हुआ या रात का रक्खा हुआ भोजन, ऋण, मिट्टी का पुरवा।
कढ़ैया–(हिं. वि.) निकालनेवाला, अलग करनेवाला, उद्धारकर्ता; (स्त्री.) कड़ाही।
कढ़ोरना–(हिं. क्रि.स.) घसीटना, खींचना।
कण–(सं. पुं.) किनका, लेश, रवा, धूल का अत्यन्त छोटा टुकड़ा, जलबिन्दु, चिन-गारी, चावल का महीन टुकड़ा, अन्न की बाल, परमाणु, रत्नमुख, भिक्षा।
कणगच–(हिं.पुं.) केवाँच, करंज, करौंदा।
कणप–(सं. पुं.) बरछा, भाला।
कणाद–(सं. पुं.) वैशेषिक दर्शन के प्रणेता का नाम।
कणान्न–(सं. वि.) अन्न के कण खाकर जीविका चलानेवाला।
कणिका–(सं. स्त्री.) अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु, कण, टुकड़ा, किनका।
कणित–(सं. पुं.) पीड़ायुक्त शब्द।
कणिष्ठ–(सं. वि.) अन्य की अपेक्षा कम वय का, छोटा।
कणी–(सं. स्त्री.) कणिका, टुकड़ा, कनी।
कणेरा–(सं. स्त्री.) हाथी, वेश्या, रंडी।
कण्व–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
कतई–(अ. अव्य.) बिलकुल, एकदम।
कतकवृक्ष–(सं. पुं.) निर्मली का वृक्ष।
कतना–(हिं. क्रि. अ.) काता जाना, तैयार होना।
कतनी–(हिं. स्त्री.) सूत कातने की टेकुरी।
कतन्ना–(हिं. पुं.) कतरने की बड़ी कैंची।
कतन्नी–(हिं. स्त्री.) कतरनी, कैंची।
कतरछाँट–(हिं. स्त्री.) काँट-छाँट।
कतरन–(हिं. स्त्री.) कपड़े, कागज इत्यादि का कटा हुआ रद्दी टुकड़ा।
कतरना–(हिं. क्रि. स.) कैंची से काटना, छाँटना, टुकड़े करना।
कतरनी–(हिं. स्त्री.) बाल, कपड़े आदि काटने की कैंची, धातु की चद्दर काटने की सँड़सी के आकार की कैंची।
कतरब्योंत–(हिं. पुं.) काट-छाँट, कतराई, हेर-फेर, उलट-पलट, फेरफार, सोच-विचार, युक्ति, निकास, चोरी, जोड़-तोड़, ढंग, दूसरे के लिए कुछ मोल लेने में अपने लिये कुछ निकाल लेना।
कतरबाई–(हिं. स्त्री.) कतरने का काम, कटाई का शुल्क।
कतरा–(हिं. पुं.) खण्ड, अंश, टुकड़ा, कटा हुआ भाग, पत्थर का छोटा टुकड़ा, बड़ी नाव।
कतराई–(हिं. स्त्री.) कतरने का काम, कटाई का पारिश्रमिक।
कतराना–(हिं. क्रि. स.) कटाना, कतरवाना, बचकर निकल जाना।

कतरी–(हि. स्त्री.) कोल्हू का पाट जिस पर बैठकर मनुष्य बैल को हांकता है, कातर, हाथ में पहिनने का पीतल का एक गहना, राजगीर की लकड़ी की पट्टी, कतरनी, कैंची।
कतल–(हि. पुं.) देखें 'कत्ल'।
कतला–(हि. पुं.) किसी वस्तु का पतला टुकड़ा।
कतवाना–(हि. क्रि. स.) कातने का काम दूसरे से कराना।
कतली–(हि. स्त्री.) चौकोर कटी हुई मिठाई।
कतवार–(हि. पुं.) बेकाम का घास-फूस, कूड़ा-करकट।
कतहुँ, कतहूँ–(हि. अव्य.) किस ओर, किस स्थान पर।
कताई–(हि. स्त्री.) कातने का काम, कतौनी।
कतान–(हि. पुं.) एक प्रकार का रेशम जिस पर कलाबत्तू बनता है, इससे बीना हुआ वस्त्र।
कताना–(हि. क्रि. स.) किसी दूसरे से कातने का काम कराना।
कतार–(अ. स्त्री.) पंक्ति, पाँत, क्रम।
कतारा–(हि. पुं.) एक प्रकार की लाल छिलके की मोटी ईख जिसका गुद्दा बहुत मीठा होता है।
कतारी–(हि. स्त्री.) पंक्ति, कतारे की जाति की छोटी ईख।
कति–(सं. वि.) कौन-सी संख्या का, कितना, बहुत से, अनगिनत।
कतिक–(हि. वि.) किस परिमाण का, कितना, बहुत-सा, अनेक।
कतिपय–(सं. वि.) कुछ, कितना ही, थोड़ा-सा, कई एक।
कतीरा–(हि. पुं.) एक वृक्ष का गोंद जो औषधि में प्रयुक्त होता है।
कतेक–(हि. वि.) कितने, कतिक।
कतौनी–(हि. स्त्री.) कातने की क्रिया, बहुत देर तक प्रतीक्षा।
कत्तर–(हि. पुं.) स्त्रियों की चोटी बांधने का डोरा।
कत्तल–(हि.पुं.)पत्थर का टुकड़ा, कतरा।
कत्ता–(हि. वि.) बांस चीरने का एक अस्त्र, एक प्रकार की तलवार, पासा।
कत्ती–(हि. स्त्री.) छुरी, छोटी तलवार, कटारी, एक प्रकार की कैंची जिनका सोनार व्यवहार करते हैं, एक प्रकार की पगड़ी।
कत्था–(हि. पुं.) देखें 'कत्या'।
कत्थई–(हि. वि.) खैर के रंग का।
कत्थक–(हि. पुं.) एक जाति विशेष के लोग जो नाचते-गाते हैं;–नृत्य–(पुं). कत्थकों में प्रचलित एक नृत्य।
कत्या–(हि. पुं.) खैर की लकड़ी को उबालकर निकाला हुआ सत्व जो पान में खाया जाता है।
कत्ल–(अ. पुं.) जान से मार डालना, खून, हत्या;–की रात–(स्त्री.) मुहर्रम की दसवीं रात; कत्ले आम–(पुं). सामूहिक वध जनवध।
कथं–(सं. अव्य.) किस रीति से, किस प्रकार से, क्यों, कहां से।
कथ–(हि. पुं.) देखें 'कत्था'।
कथक–(सं.पुं.) पौराणिक कथा बांचकर जीविका निर्वाह करनेवाला, पौराणिक कथावाचक।
कथन–(सं.पुं.)कथा, वाक्य, बयान, बात।
कथना–(हि. क्रि. स.) बोलना, कहना, काव्य-रचना करना, निन्दा करना।
कथनी–(हि. स्त्री.) कथन, बातचीत, बकवाद, बड़बड़ाहट।
कथनीय–(सं. वि.) वर्णन करने योग्य, कहने योग्य, निन्दनीय, खराब।
कथमपि–(सं. अव्य.) किसी प्रकार से, किसी रूप से।
कथरी–(सं.स्त्री.) नागफनी; (हि.स्त्री.) पुराने चीथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना, गुदड़ी।
कथांत–(सं.पुं.) बातचीत की समाप्ति।
कथांतर–(सं. पुं.) दूसरी वार्ता, कलह, झगड़ा।
कथा–(सं. स्त्री.) किस्सा, कहानी, तर्क, वार्ता, विवरण, वाक्य, धर्म-विषयक व्याख्यान, प्रसंग, चर्चा, उपन्यास, झगड़ा, वाद-विवाद।
कथानक–(सं. पुं.) गल्प, कहानी, कथा, छोटा किस्सा।
कथानुराग–(सं. पुं.) बातचीत में मन लगना।
कथामय–(सं.वि.) किस्सों से भरा हुआ।
कथामुख–(सं.पुं.) कथा-ग्रन्थ की प्रस्तावना या भूमिका।
कथायोग–(सं. पुं.) कथाप्रसङ्ग।
कथारंभ–(सं. पुं.) कथा का आरम्भ।
कथालाप–(सं.स्त्री.) वार्तालाप, बातचीत।
कथावस्तु–(सं.स्त्री.) उपन्यास या कथा का ढांचा, कहानी का मूल विषय।
कथावार्ता–(सं. स्त्री.) तरह-तरह की बातचीत, कहानी।
कथाशेष–(सं. पुं.) कथा की समाप्ति।
कथिक–(हि. पुं.) देखें 'कथक'।
कथित–(सं.वि.) उच्चारित, कहा हुआ।
कथीर–(हि. पुं., सं.) कस्तीर, रांगा।
कथोदय–(सं. पुं.) कथा का उत्थापन।
कथोद्घात–(सं. पुं.) नाटक की प्रस्तावना, कथा का आरम्भ।
कथोपकथन–(सं. पुं.) कथा पर कथा, विविध वार्ता, बातचीत।
कथ्यमान–(सं. वि.) कहा जानेवाला।
कदध्व–(हि. पुं.) निन्दित पथ, बुरा (खोटा) मार्ग।
कदंब–(हि. पुं.) एक सदाबहार पेड़ जिसके फूल गेंद जैसे गोल होते हैं।
कदंबक–(सं. पुं.) समूह, झुण्ड; (पुं.) हल्दी का पौधा।
कदंबका–(सं. स्त्री.) कलहंसी।
कदंश–(सं. पुं.) सारहीन भाग।
कद–(हि. स्त्री.) ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता, हठ, अनबन; (अव्य.) कब, किस समय; (पुं.)देह की ऊँचाई, डीलडौल।
कदक्षर–(सं. पुं.) बुरी लिखावट।
कदन–(सं. पुं.) पाप, कुचलना, युद्ध, लड़ाई, मरण, दुःख, हिंसा।
कदन्न–(सं. पुं.) कुत्सित अन्न, बुरा अन्न, मोटा अनाज।
कदभ्यास–(सं.पुं.)बुरा अभ्यास या आदत।
कदम–(हि. पुं.) कदंब वृक्ष; (अ. पुं.) डग, पग, पांव, चाल में दोनों पैरों के बीच का फासला; (मुहा.)–उखड़ना–पांव उखड़ना, भाग जाना; –उठाना–पैर उठाना; –चूमना–पांव छूना;–बढ़ाना–तेज चलना।
कदमा–(हि.पुं.) एक प्रकार की मिठाई।
कदर–(अ. स्त्री.) देखें 'कद्र'।
कदरई–(हि. स्त्री.) भीरुता, कायरता।
कदरज–(हि. पुं.) कदर्य, कंजूस व्यक्ति, एक पापी का नाम।
कदरमस–(हि. स्त्री.) मारपीट, लड़ाई-झगड़ा।
कदराई–(हि. स्त्री.) कदरई।
कदराना–(हि. क्रि.अ.) कातरित होना, डरना।
कदरी–(हि. स्त्री.) मैना के प्रकार का एक पक्षी।
कदर्थ–(सं. पुं.) कुत्सित पदार्थ, कूड़ा-करकट; (वि.) निरर्थक।
कदर्थन–(सं. पुं.) पीड़ा, [illegible]।
कदर्थना–(सं. स्त्री.) दुर्गति, निन्दा, दुर्दशा, बुराई।

कदर्थित–(सं. वि.) दूषित, दुर्दशा किया हुआ, घृणित, विडम्बित।

कदर्य–(सं. वि.) क्षुद्र, कृपण, कंजूस।

कदर्यता–(सं. स्त्री.) क्षुद्रता, बुराई, लोभ, कंजूसी।

कदर्यभाव–(सं. पुं.) अश्लील वार्ता।

कदली–(सं. स्त्री.) केला, रंभाफल, एक प्रकार का हिरन।

कदा–(सं. अव्य.) किस समय, किस वक्त पर।

कदाकार–(सं.वि.) कुरूप, बुरे आकार का।

कदाच–(हि. अव्य.) कदाचित्, कभी।

कदाचन–(सं. अव्य.) किसी दिन, एक दिन, एक बार।

कदाचार–(सं. पुं.) कुत्सित व्यवहार, बुरा चाल-चलन।

कदाचारी–(सं. वि.) बुरे चाल-चलनवाला।

कदाचित्–(सं. अव्य.) एक बार, कभी।

कदापि–(सं. अव्य.) कभी-कभी, जब तब, समय-समय पर।

कदाहार–(सं. पुं.) बुरा भोजन।

कदी–(हिं. वि.) हठ करनेवाला।

कदे–(हि. अव्य.) कभी।

कद्दू–(फा. पुं.) एक प्रसिद्ध तरकारी, लौकी।

कद्रु, कद्रू–(सं. स्त्री.) नागों की माता का नाम।

कबी–(हि. अव्य.) कभी, किसी समय।

कबी-कबार–(हि. अव्य.) कभी-कभी, जब-तब।

कन–(हिं. पुं.) कण, बहुत छोटा टुकड़ा, अन्न का दाना, अन्न के दाने का टुकड़ा, भिक्षा, भीख माँगा हुआ अन्न, जूठन, बिन्दु, बूँद, प्रसाद, चावल की धूल, कना, शक्ति, यौगिक शब्दों में 'कन' से 'कर्ण' शब्द का बोध होता है, यथा–कनटोप, कनफटा इत्यादि।

कनई–(हि. स्त्री.) नई शाखा, कनखा, कोपल, कीचड़, गीली मिट्टी।

कनउँगली–(हि. स्त्री.) कनिष्ठिका, कानी अँगुली।

कनक–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, टेसू का वृक्ष, धतूरा, नागकेसर, चम्पा का वृक्ष, कचनार का पेड़, पलास; (हि.पुं.) गेहूँ का आटा, नजर, छप्पय छंद का एक भेद।

कनक-कली–(हि. स्त्री.) कान में पहनने का एक आभूषण।

कनककशिपु–(सं. पुं.) हिरण्यकश्यप, एक दैत्य।

कनकक्षार–(सं. पुं.) सोहागा।

कनकचंपा–(सं.पुं.) एक प्रकार का चम्पा का वृक्ष।

कनकजीर–(हि.पुं.) एक प्रकार का धान।

कनकजीरा–(हि. पुं.) एक प्रकार का धान।

कनकटा–(हि. वि.) जिसका कान कटा हो, बूचा, कान काटनेवाला।

कनकध्वज–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

कनकना–(हिं. वि.) भंगुर, धीरे से चोट लगने पर टूटनेवाला, कनकनाहट करनेवाला, चुनचुनाहट लानेवाला, असह्य, खाने में बुरा लगनेवाला, असहनशील, चिड़चिड़ा।

कनकनाना–(हि. क्रि. अ.) चुनचुनाना, मुख का स्वाद बिगड़ना, बुरा लगना, भड़कना, चकित होना, रोमाञ्चित होना।

कनकनाहट–(हि. स्त्री.) कनकनाने की अवस्था, कनकनी।

कनकपल–(सं. पुं.) सोना तौलने की सोलह माशे की तौल।

कनकपुरी–(सं. स्त्री.) स्वर्णपुरी, लंका।

कनकप्रभा–(सं. स्त्री.) बड़ी रतनजोत, तेरह अक्षरों के चार पदों का एक छन्द।

कनकफल–(सं. पुं.) धतूरे का फल, जमालगोटा, जायफल।

कनकमय–(सं.वि.) सुवर्ण-निर्मित, सुनहला।

कनकमृग–(सं. पुं.) सोने का मृग।

कनकरस–(सं.पुं.) हड़ताल, गला हुआ सोना।

कनकबीज–(सं. पुं.) धतूरे का बीज।

कनकशक्ति–(सं. पुं.) कार्तिकेय।

कनकस्थली–(सं. स्त्री.) सोने की खान।

कनका–(हि. पुं.) कण, कनकी।

कनकाचल–(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत, सोने का पर्वत।

कनकानी–(हि.पुं.) एक जाति का घोड़ा।

कनकायु–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

कनकी–(हिं. स्त्री.) छोटा टुकड़ा, चावल का महीन टुकड़ा।

कनकूत–(हि. पुं.) कृषिफल के दानों का अनुमान।

कनकैया–(हि. स्त्री.) छोटा कनकौवा, गुड्डी, पतंग।

कनकौवा–(हि. पुं.) कागज का बड़ा पतंग, बड़ी गुड्डी।

कनखजूरा–(हि. पुं.) शतपदी, गोजर।

कनखना–(हि. क्रि. अ.) अप्रसन्न होना।

कनखिया–(हि. स्त्री.) कनखी, कटाक्ष।

कनखियाना–(हि.क्रि.स.) कनखी मारना, कटाक्ष करना।

कनखी–(हि. स्त्री.) कटाक्ष, आँख का संकेत, नजर; (मुहा.)–मारना–आँख से संकेत करना।

कनखैया–(हिं. स्त्री.) कनखी, कटाक्ष; (वि.) कटाक्ष करनेवाला।

कनखोदनी–(हि. स्त्री.) लोहे का एक पतला उपकरण जो कान से मैल निकालने के काम आता है।

कनगुज–(हि. पुं.) कान का एक रोग।

कनगुरिया–(हिं. स्त्री.) हाथ की सबसे छोटी अँगुली।

कनछेदन–(हि. पुं.) देखें 'कर्णवेध'।

कनटोप–(हि.पुं.) दोनों कानों को ढाँपने की बड़ी टोपी।

कनपट–(हि. पुं.) कान और आँख के बीच का स्थान, कनपटी, थप्पड़।

कनपटी–(हिं. स्त्री.) कान और आँख के बीच का स्थान।

कनपेड़ा–(हि. पुं.) कान का एक रोग।

कनफटा–(हि.पुं.) शैव सम्प्रदाय के योगी जो दोनों कानों को फड़वाकर इनमें स्फटिक की मुद्रा पहिनते हैं, गोरखपंथी।

कनफुंकवा–(हि.वि.,पुं.) कान फूँकनेवाला, मन्त्रोपदेशक।

कनफुंका–(हि.वि.) मन्त्रोपदेश करनेवाला, दीक्षा देनेवाला; (पुं.) गुरु।

कनफुसका–(हि. पुं.) धीरे-धीरे बोलनेवाला, निन्दक।

कनफुसकी–(हिं. स्त्री.) कान में धीरे-धीरे बोलना, निन्दा की बात।

कनफूल–(हि. पुं.) करनफूल, कान का एक गहना।

कनफेड़(ड़ा)–(हिं. पुं.) कान के पास होनेवाली गिलटी।

कनबिधा–(हि.वि.) कान छिदाया हुआ।

कनमनाना–(हि. क्रि.अ.) सोये हुए प्राणी का धीरे-धीरे सचेत होना और हिलना-डोलना, किसी के विरुद्ध कोई बात करना।

कनमैलिया–(हि. पुं.) कान का मैल निकालनेवाला।

कनरश्याम–(हि. पुं.) एक राग विशेष।

कनरस–(हि. पुं.) संगीत का आनन्द, गाने-बजाने का स्वाद, संगीत सुनने का व्यसन।

कनरसिया–(हि. पुं.) संगीत-प्रेमी, गाने-बजाने का रसिक।

कनवई, कनवा–(हिं. स्त्री.) एक छटांक का परिमाण।

कनवाँसा–(हि. पुं.) दौहित्र का पुत्र, नाती का पुत्र।

कनवास–(अं.पुं.) सन या पटुवे का बना मोटा कपड़ा, टाट।

कनवी–(हि.स्त्री.) एक प्रकार की कपास।

कनसलाई–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का कनखजूरे की आकृति का छोटा कीड़ा।

कनसार–(सं. पुं.) ताँबे के पत्र पर खोदकर लेख बनानेवाला।

कनसाल–(हि. पुं.) चारपाई का टेढ़ा छेद जिसके कारण चारपाई कुछ टेढ़ी हो जाती है।

कनसुई–(हि. स्त्री.) खटका, टोह, आहट।

कनसुर–(हि. वि.) मन्द स्वरयुक्त, अप्रसन्न।

कनस्तर–(अं.पुं.) टीन का बड़ा आधान।

कनहा–(हि. पुं.) अन्न की उपज का अनुमान करनेवाला।

कनहार–(हि.पुं.) कर्णधार, केवट, मल्लाह।

कना–(हि. पुं.) कन, कण, दाना।

कनाई–(हि.स्त्री.) कोमल शाखा, पतली डाल, टहनी।

कनउड़ा–(हि. पुं.) देखें 'कनौड़ा'।

कनागत–(हि.पुं.) पितृपक्ष, कुवार महीने का कृष्णपक्ष, श्राद्ध।

कनार–(हि. पुं.) घोड़े का एक रोग।

कनारी–(हि.स्त्री.) किनारी, गोंट, मद्रास प्रान्त के कनाड़ा जिले की भाषा; (पुं.) इस देश का निवासी।

कनावड़ा–(हि. वि.) कनौड़ा, कृतज्ञ।

कनासी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की आरा, चोखा करने की बड़ी रेती।

कनिआरी–(हि.स्त्री.) कनकचंपा का वृक्ष।

कनिक–(हि. पुं.) गेहूँ का मोटा आटा।

कनिका–(हि. स्त्री.) देखें 'कणिका'।

कनिगर–(हि. पुं.) अपनी कीर्ति स्थायी रखनेवाला।

कनियाना–(हि.क्रि.अ.) साथ छोड़ना, आँख बचाकर भाग जाना, पतंग का एक ओर झुकना, कन्नी खाना, गोद लेना।

कनियार–(हि. पुं.) देखें 'कणिकार', कनकचम्पा।

कनिष्क–(सं. पुं.) भारत के एक प्राचीन राजा का नाम।

कनिष्ठ–(सं. वि.) बहुत छोटा, अत्यन्त लघु वय का, पीछे से उत्पन्न, वय में कम, निकृष्ट; (पुं.) छोटा भाई।

कनिष्ठता–(सं. स्त्री.) अति युवावस्था, अल्पता, छोटाई, कमी।

कनिष्ठा–(सं. स्त्री.) कानी अँगुली, वह नायिका जो अपने स्वामी का अल्प प्रेम पाती है; (वि.) निकृष्ट, सबसे छोटी।

कनिष्ठिका–(सं. स्त्री.) सबसे छोटी अँगुली, कानी अँगुली।

कनिहार–(हि. पुं.) कर्णधार।

कनी–(हि. स्त्री.) छोटा टुकड़ा, किनका, हीरे का छोटा कण, चावल का मध्य भाग जो प्रायः कम गलता है, बिन्दु, बूँद; (मुहा.)–खा लेना—हीरे का कण खाकर मर जाना।

कनीनक–(सं. पुं.) आँख की पुतली।

कनीनिका–(सं. स्त्री.) आँख की पुतली, कन्या, गुड़िया, कठपुतली, कानी अँगुली।

कनीर–(हि. पुं.) कनेर।

कनु–(हि. पुं.) कण, दाना, टुकड़ा, शक्ति, बल।

कनूका–(हि. पुं.) अन्न का दाना।

कने–(हि. अव्य.) निकट, पास, ओर, समीप, अधिकार में।

कनेखी–(हि. स्त्री.) कटाक्ष, कनखी, आँख का इशारा।

कनेठा–(हि. पुं.) कोल्हू में लगी हुई वह लकड़ी जो इसके चारों ओर घूमती है; (वि.) काना, भेंगा, घूमी हुई आँखवाला।

कनेठी–(हि.स्त्री.) कान उमेठने का दण्ड।

कनेर–(हि. पुं.) सफेद, लाल या पीले फूल का एक छोटे आकार का वृक्ष।

कनेरिया–(हि. वि.) कुछ कालापन लिये हुए लाल रंग का।

कनोई–(हि. पुं.) कान का मैल, खूँट।

कनोखा–(हि. वि.) कटाक्षयुक्त।

कनोज–(हि. पुं.) देखें 'कन्नौज'।

कनौजिया–(हि.वि.) कन्नौज का निवासी, कन्नौज में रहनेवाला; (पुं.) कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

कनौठा–(हि. पुं.) कोण, कोना; (वि.) कनिष्ठ, छोटा।

कनौड़ा–(हि. वि.) काना, कलंकित, अपंग, निन्दित, लज्जित, मोल लिया हुआ (दास), कृतज्ञ (मनुष्य)।

कनौती–(हि. स्त्री.) पशुओं के दोनों कानों का छोर, कान हिलाने का ढंग, कान में पहिनने की छोटी बाली।

कन्ना–(हि.पुं.) पतंग की डोरी का वह भाग जो इसके बीच में बँधा होता है, किनारा, चावल की कनी, पौधों का एक रोग।

कन्नी–(हि. स्त्री.) पतंग को सीधी रखने के लिये इसके एक ओर बाँधी हुई वस्तु, राजगीरों की करनी; (मुहा.) –काटना–अलग से निकल जाना; –खाना–पतंग का उड़ान में एक ओर झुकना; –दबाना–वश में रखना।

कन्नौज–(पुं.) एक इतिहास-प्रसिद्ध आधुनिक नगर जो फर्रुखाबाद जिले में स्थित है।

कन्यका–(सं. स्त्री.) कुमारी कन्या, लड़की, बिना ब्याही हुई पुत्री, तन्त्रानुसार–कुमारी, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, कालिका, शाम्भवी, दुर्गा, चंडिका और सुभद्रा–नव कन्यकाएँ हैं।

कन्या–(सं. स्त्री.) दस वर्ष की लड़की, अविवाहिता स्त्री, पुत्री, बेटी, घृतकुमारी, बड़ी इलायची, मेषादि के अन्तर्गत छठीं राशि, चार अक्षरों का छन्द, पुराणों के अनुसार अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी पंचकन्या कहलाती हैं।

कन्याकुमारी–(सं. स्त्री.) कुमारिका अंतरीप, यह भारतवर्ष के दक्षिण रामेश्वर तीर्थ के समीप है, दुर्गादेवी।

कन्याग्रहण–(सं. पुं.) विवाह, शादी।

कन्यादाता–(सं. पुं.) कन्यादान करनेवाला व्यक्ति।

कन्यादान–(सं. पुं.) हिन्दुओं में वर को विवाह के समय कन्या को दान देने की रीति।

कन्याधन–(सं पुं.) अविवाहिता स्त्री का स्त्रीधन, दहेज।

कन्यापति–(सं.पुं.) जामाता, दामाद।

कन्यारत्न–(सं. पुं.) असाधारण रूप और गुण की कन्या।

कन्याराशि–(हि. वि.) जिसके जन्म के समय कन्या राशि का चन्द्रमा हो, निर्बल, क्षुद्र, नपुंसक।

कन्यिका–(सं. स्त्री.) कन्या।

कन्हाई–(हि. पुं.) श्रीकृष्ण, कन्हैया, बड़ा सुन्दर लड़का।

कन्हावर–(हि. पुं.) दुपट्टे का वह भाग जो कन्धे पर डाला जाता है।

कन्हैया–(हि. पुं.) श्रीकृष्ण, प्रिय व्यक्ति, सुन्दर बालक।

कपट–(सं.पुं.) मिथ्या व्यवहार, धोखा, छल।

कपटचारी–(सं.वि.) [illegible], धोखेबाज।

कपटता–(सं. स्त्री.) कपट व्यवहार।

कपटधारी–(सं. वि.) [illegible]।

कपटना–(हि.क्रि.स.) [illegible], [illegible], काटकर अलग करना, छाँटना।

कपट-प्रबंध–(सं.पुं.) छल या धोखे की [illegible] बात, [illegible]।

कपट-लेख–(सं. पुं.) झूठा लिखित पत्र।

कपटवेश–(सं. पुं.) छद्मवेश, [illegible] [illegible] का वेश; (वि.) [illegible] [illegible] हुए, भेष बदले हुए।

कपटा–(हिं. पुं.) धान को नष्ट करनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
कपटी–(सं. वि.) वंचक, छली।
कपड़–(हि.पुं.) 'कपड़ा' का संयुक्त पद में व्यवहृत रूप; –कोट–(पुं.)खेमा,तंबू; –छान–(पुं.) किसी चूर्ण को कपड़े से छानने का काम; –द्वार–(पुं.)कपड़ा रखने का भंडार; –धूलि–(स्त्री.) एक प्रकार का महीन रेशमी वस्त्र; –मिट्टी–(स्त्री.) कपड़ौटी, किसी धातु या अन्य औषधि को फूंकने के लिये संपुट के चारों ओर मिट्टी चिपकाकर कपड़ा लपेटने की विधि; –विदार–(पुं.) फटे कपड़ों की मरम्मत करनेवाला।
कपड़ा–(हिं. पुं.) रूई, ऊन, रेशम या सन का बना हुआ वस्त्र, पोशाक, पहिनने का वस्त्र; –लत्ता–(पुं) पहिनने के वस्त्र; (मुहा.) –उतार लेना–सब कुछ छीन लेना; कपड़ों से होना–स्त्री का रजस्वला होना।
कपड़ौटी, कपरौटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कपड़मिट्टी'।
कपर्द, कपर्दक–(सं. पुं.) शिव का जटाजूट, कौड़ी।
कपर्दा,कपर्दि,कपर्दिका–(सं.स्त्री.)कौड़ी।
कपर्दिनी–(सं. स्त्री.)जटाधारिणी दुर्गा।
कपर्दी–(सं.पुं.)ग्यारह रुद्रों में एक, शिव।
कपसा–(हि. स्त्री.) चिकनी गीली मिट्टी।
कपाट–(सं. पुं.) किवाड़, द्वार; –बद्ध–(स. पुं.) चित्र काव्य के अन्तर्गत छन्द विशेष जिसके अक्षरों के लिखने पर कपाट के समान चित्र बन जाता है; –संधि–(स्त्री.) दरवाजे में पल्लों का जोड़।
कपार–(हिं. पुं.) देखें 'कपाल'।
कपाल–(सं. पुं.) खोपड़ी की हड्डी, मस्तक, माथा, अदृष्ट, खप्पर, घड़े का टुकड़ा, भिक्षा-पात्र, मिट्टी का पात्र, वह पात्र जिसमें यज्ञ का पुरोडाश पकाया जाता है, समूह, ढेर, आवरण, ढपना; –दा–(हिं.पुं.)देखें 'कापालिक'; –क्रिया–(स्त्री.) जलाते समय शव की खोपड़ी फोड़ने का कार्य; –मालिका–(स्त्री.)खोपड़ी, काली; –मालिनी–(स्त्री.) दुर्गा; –माली–(पुं.) शिव, महादेव।
कपालि–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
कपालिका–(सं. स्त्री.) कर्पर, खपड़ा।
कपालिनी–(सं. स्त्री.) दुर्गा।
कपाली–(सं. पुं.) भैरव, शिव, महादेव, हठयोग की एक क्रिया जो माथे के बल पैर ऊपर करके की जाती है, एक वर्णसंकर जाति।
कपास–(हि. स्त्री.) कर्पास, रूई।
कपासी–(हिं. वि.) कपास के फूल के रंग का, हलके पीले रंग का।
कपिंजल–(सं. पुं.) चातक, पपीहा, तीतर, एक मुनि का नाम; (वि.) पीले रंग का, पीत।
कपि–(सं. पुं.) बन्दर, हाथी, सूर्य, वाराह, करंज, आमड़ा, शिलारस, भूरे रंग का धूप।
कपिका–(सं. पुं.) मदार का पौधा।
कपिकेतन, कपिकेतु–(सं. पुं.) अर्जुन का नाम।
कपित्थ–(सं. पुं.) कैथ का वृक्ष या फल।
कपिध्वज–(सं. पुं.) अर्जुन।
कपिप्रभा–(सं. स्त्री.) केवाँच, अपामार्ग, चिचिड़ा।
कपिप्रभु–(सं.पुं.) रामचन्द्र, वालि, सुग्रीव।
कपिप्रिय–(सं.वि.)आमड़ा, कैथ।
कपिरोमा–(सं. स्त्री.) केवाँच, रेणुका।
कपिल–(सं. वि.) भूरा, तामड़ा, मटमैला; (पुं.) अग्नि, भूरा रंग, कुत्ता, विष्णु, महादेव, सूर्य, शिलाजीत, चूहा, सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक ऋषि।
कपिलच्छाया–(सं. स्त्री.) मृगनाभि, कस्तूरी।
कपिलता–(सं. स्त्री.) केवाँच, भूरापन, पीलापन।
कपिलवस्तु–(सं. पुं.) प्राचीन शाक्य राजाओं की राजधानी, गौतम बुद्ध का जन्म-स्थान।
कपिला–(सं. स्त्री.) शुभ्र वर्ण की गाय, दक्षकन्या, पुण्डरीक नामक दिग्गज की पत्नी, कामधेनु, मध्य प्रदेश की एक नदी का नाम, श्यामलता; (वि. स्त्री.) भूरे रंग की, मटमैली।
कपिलाक्षी–(सं. स्त्री.) सफेद हरिन।
कपिलिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की चींटी।
कपिवल्ली–(सं. स्त्री.) गजपिप्पली, कैथ का वृक्ष।
कपिश–(सं. पुं.) मटमैला रंग, लोहबान, शिव; (वि.) मटमैला, भूरे रंग का।
कपिस–(हिं. पुं.) रेशमी वस्त्र।
कपी–(हि. स्त्री.) घिरनी, चरखी, रस्सी लपेटने की गड़ारी।
कपीन्द्र–(सं. पुं.) हनुमान्, कपींद्र, वालि, सुग्रीव, विष्णु।
कपीशा, कपिशा–(सं.स्त्री.) सुरा, चमेली, एक नदी का नाम, कसाई, पिशाचों की माता जो कश्यप की पत्नी थी।
कपूत–(हिं.पुं.) कुपुत्र, बुरे आचरण का पुत्र।
कपूती–(हि.स्त्री.) पुत्र का बुरा आचरण।
कपूर–(सं. पुं.) एक सफेद रंग का सुगंधित द्रव्य जो हवा लगने से उड़ जाता है।
कपूरकचरी–(हिं.स्त्री.) एक सुगंधित लता की जड़ जो औषधि में प्रयुक्त होती है।
कपूरकाट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सुगंधित धान।
कपूरा–(हिं. पुं.) भेड़, बकरे आदि का अण्डकोष।
कपूरी–(हिं. वि.) कपूर के रंग का, हलके पीले रंग का, कपूर का बना हुआ; (पुं.) हलका पीला रंग, एक प्रकार का कड़ुवा पान।
कपोत–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, कबूतर, घुग्घू, एक प्रकार का चूहा, पारा, सज्जीखार, भूरा रंग; –क–(पुं.) भूरा सुरमा, छोटी जाति का कबूतर, हाथ जोड़ने की एक रीति; –पालिका–(स्त्री.) कबूतर का दरबा; –वृत्ति–(स्त्री.) सञ्चय-शून्य जीविका; –व्रत–(वि.) दूसरे के अत्याचारों को चुपचाप सहन करनेवाला; (पुं.) मौन व्रत; –सार–(पुं.) स्रोतोञ्जन, सुरमा।
कपोती–(सं. स्त्री.) कबूतरी, पेंडुकी; (वि.) कबूतर के समान, भूरे रंग का।
कपोतेश्वरी–(सं. स्त्री.) पार्वती, दुर्गा।
कपोल–(सं. पुं.) गण्डस्थल, गाल; –कल्पना–(स्त्री.) अमूलक कल्पना, मनगढ़ंत, झूठी बात; –कल्पित–(वि.) असत्य, झूठ, बनावटी; –गेंदुवा–(हिं. पुं.) गल तकिया, गाल के नीचे रखन का तकिया।
कप्तान–(अं. पुं.) जल या स्थल सेना का उच्च अधिकारी, पुलिस विभाग का क्षेत्रीय या जिला अधिकारी।
कप्तानी–(हिं. स्त्री.) अध्यक्षता, सरदारी।
कप्पर–(हिं. पुं.) कर्पट, कपड़ा।
कप्फा–(हिं.पुं.) अफीम का अर्क या पसेव।
कप्यास–(सं. पुं.) बन्दर की गुदा का स्थान; (वि.) सूर्य द्वारा उगाया हुआ।
कफ–(सं. पुं.) बलगम, श्लेष्मा, शरीर के भीतर की एक धातु; –कर, –कारक–(वि.) कफ पैदा करनेवाला; –क्षय–(पुं.) यक्ष्मा, क्षयरोग; –गुल्म–(पुं.) पेट का एक रोग; –घ्न, –हर–(वि.) कफ का नाश करनेवाला; –ज्वर–(पुं.) कफ-विकार से उत्पन्न ज्वर

कफ-(अं. पुं.) कमीज के आस्तीन का छोर जिसमें बटन लगता है।

कफन-(अ. पुं.) मुर्दे को ओढ़ाया जानेवाला कपड़ा; (मुहा.)-को कौड़ी न होना या बचना-कुछ भी न बचाना या बचा पाना, अकिंचन होना।

कफनखसोट-(हिं. वि.) शव पर डाले हुए वस्त्र में से टुकड़ा फाड़नेवाला, कृपण, कंजस, दरिद्र का धन हरनेवाला।

कफनखसोटी-(हिं. स्त्री.) डोम का कर जो वे श्मशान में शव पर डाले हुए वस्त्र में से थोड़ा अंश फाड़ लेते हैं, अयोग्य रीति से दरिद्र का धन हरण करना, कृपणता, कंजूसी।

कफनचोर-(हिं.पुं.) क्षुद्र द्रव्य चुरानेवाला।

कफनाना-(हिं.क्रि.स.) गाड़ने या जलाने के लिये शव को कपड़ा ओढ़ाना।

कफनी-(हिं. स्त्री.) शव के गले में डालने का वस्त्र, साधु के पहिनने का बिना सिला हुआ वस्त्र जिसमें गला डालने के लिये एक छिद्र होता है।

कफिल्ला-(हिं. पुं.) जहाज के शहतीर में जोड़ने का लोहा, तख्ता आदि।

कबंध-(सं. पुं.) जल, पानी, उदर, पेट, राहु, मेघ, बादल, बिना मस्तक का धड़, एक राक्षस का नाम, एक गन्धर्व का नाम, लकड़ी का बड़ा पीपा।

कब-(हिं.अव्य.) किस समय, किस वक्त; (मुहा.) -का-देर या विलम्ब से; -नहीं-सर्वदा, हमेशा।

कबड्डी-(हिं. स्त्री.) बालकों का एक खेल जिसमें वे दो दल बनाकर खेलते हैं, कांपा, कंपा।

कबर-(हिं. पुं.) देखें 'कब्र'।

कबरा-(हिं. वि.) कर्बुर, श्वेत वर्ण पर काले, लाल, पीले या दूसरे रंग के धब्बे।

कबरिस्तान-(हिं. पुं.) देखें 'कब्रिस्तान'।

कबरी-(हिं. स्त्री.) वेणी, चोटी।

कबाड़-(हिं. पुं.) निरर्थक पदार्थ, कूड़ा-करकट, निरर्थक कार्य, तुच्छ व्यवसाय।

कबाड़ा-(हिं. पुं.) निरर्थक व्यापार, झगड़ा-झंझट।

कबाड़िया, कबाड़ी-(हिं. पुं.) टूटी-फूटी वस्तुएँ बेचनेवाला, तुच्छ व्यवसाय करनेवाला, झगड़ालू मनुष्य; (वि.) नीच।

कबाब-(फा. पुं.) कुटे या बारीक पिसे हुए मांस की गोली या टिकिया जो आग पर लाल सेकी गई हो।

कबाबचीनी-(हिं. स्त्री.) शीतलचीनी, मिर्च की जाति की एक लता।

कबार-(हिं. पुं.) छोटा व्यवसाय या काम-काज, देखें 'कबाड़'।

कबारना-(हिं.क्रि.स.) उखाड़ना, नोचना।

कबाल-(हिं. स्त्री.) खजूर का रेशा जिसकी रस्सी बनती है।

कबाला-(अ. पुं.) अचल संपत्ति का हस्तांतरण या विक्रय लेख्य या दस्तावेज, बयनामा; कबालेदार-(पुं.) कबाला लेनेवाला; (मुहा.)-करना या लिखना-अचल संपत्ति को कानूनी निबंधन के नियमों के अनुसार बेचना।

कबाहट-(हिं. स्त्री.) तरद्दुद, अड़चन, बुराई, कठिनता।

कवित्थ-(हिं. पुं.) कैथ का फल।

कबीर-(अ.वि.) प्रतिष्ठित; (पुं.) एक प्रसिद्ध भक्त का नाम जो पहिले जुलाहे थे; (हि.पुं.) अश्लील गीत जो होली के अवसर पर गाया जाता है।

कबीरपंथी-(हिं.पुं.) कबीर के सम्प्रदाय का अनुयायी।

कबीला-(अ. स्त्री.) पत्नी, जोरू; (हिं. पुं.) एक छोटा वृक्ष, यह दवा के उपयोग में आता है।

कबुलवाना, कबुलाना-(हिं. क्रि. स.) स्वीकार करवाना, कबूल करवाना।

कबूतर-(हिं. पुं.) एक प्रसिद्ध पक्षी जो जंगली और पालतू दोनों होते हैं; -खाना-(पुं.) कबूतरों के रहने का दरबा; (मुहा.)-की तरह लोटना-तड़पना या छटपटाना।

कबूतरी-(हिं. स्त्री.) मादा कबूतर।

कबूल-(अ. पुं.) मानना, स्वीकृति।

कब्ज-(अ. पुं.) अवरोध, मलबद्धता; (क्रि.प्र.)-करना-कोष्ठबद्धता होना।

कब्जा-(अ. पुं.) दखल, अधिकार, काबू, वश, लोहे या पीतल का उपकरण जिससे दरवाजे आदि जोड़ने पर वे घूम सकते हैं।

कब्जादार-(अ. पुं.) कब्जा या दखल रखनेवाला।

कब्जियत-(हिं. स्त्री.) देखें 'कब्ज'।

कब्र-(अ. स्त्री.) मुर्दा गाड़ने का गड्ढा या समाधि; (मुहा.) अपनी कब्र खोदना-अपने सर्वनाश का उपाय करना; -से उठकर आना-मौत के मुख से बचकर आना।

कब्रिस्तान-(अ. पुं.) वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जायें।

कभी-(हिं.अव्य.) किसी समय; (मुहा.) -कभी-(अव्य.) [illegible]; -का-[illegible]; -न कभी-किसी न किसी अवसर पर, [illegible]।

कभू-(हिं. अव्य.) देखें 'कभी'।

कमंचा-(हिं. पुं.) बढ़इयों का कमान के आकार का एक औजार।

कमंडल-(हिं. पुं.) देखें 'कमंडलु'।

कमंडली-(हिं. वि.) कमंडलधारी।

कमंडलु-(सं.पुं.) साधुओं का धातु या तुंबी आदि का बना पात्र; -धर-(पुं.) शिव, साधु, संन्यासी।

कम-(फा. वि.) थोड़ा, अल्प, छोटा, बुरा; -अक्ल-(वि.) अल्प-बुद्धि; -उम्र-(वि.) थोड़ी उम्र का; -कीमत-(वि.) अल्प मूल्य का, सस्ता; -खर्च-(वि.) किफायतसार, मितव्ययी; -खुराक-(वि.) कम खानेवाला; -से कम-(अव्य.) थोड़ा बहुत, अल्पतम।

कमकस-(हिं. वि.) कामचोर।

कमचा-(हिं. पुं.) छोटी कमान, सारंगी, लोहे की कमानी, चंद्राकार छत, लचीली पतली डाल।

कमची-(हिं. स्त्री.) बांस की पतली डाल, पतली छड़ी, तीली।

कमच्छा-(हिं. पुं.) देखें 'कामाख्या'।

कमजोर-(फा. वि.) कम ताकत या शक्तिवाला, दुर्बल।

कमजोरी-(फा. स्त्री.) दुर्बलता।

कमठ-(सं. पुं.) कछुआ, दांत, तुंबी या नारियल का पात्र, एक प्रकार का बाजा।

कमठी-(सं. स्त्री.) कछुई, बांस की पतली पट्टी।

कमती-(हिं. वि.) कम, अल्प; (स्त्री.) कमी, अल्पता।

कमना-(हिं. क्रि. अ.) कम होना, घटना।

कमनी-(हिं. वि.) कमनीय।

कमनीय-(सं. वि.) कामना या इच्छा करनेवाला, चाहने योग्य, मनोहर, रुचिर, सुन्दर, प्रिय।

कमनीयता-(सं. स्त्री.) सौन्दर्य।

कमनैत-(हिं. पुं.) धनुर्धारी, कमान बांधनेवाला।

कमनैती-(हिं. स्त्री.) धनुर्विद्या, तीर-कमान की विद्या।

कमर-(फा. स्त्री.) पेट और पेडू के दोनों का भाग, कटि, मध्य भाग, [illegible]; -बन्द-(पुं.) कमर में [illegible]।

कमरकोट, कमरकोठा-(हिं. पुं.) [illegible]

कमरख–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिसके फाँक-वाले लंबे-लंबे फल होते हैं जो खाने में खट्टे होते हैं, इसका फल।
कमरखी–(हिं. वि.) कमरख के समान फाँकदार; (स्त्री.) फाँकदार कटाव।
कमरटूटा–(हिं. वि.) ढीली कमरवाला, कुबड़ा, नपुंसक।
कमरतेगा–(हिं. पुं.) मल्ल-युद्ध की एक युक्ति या पेंच।
कमरपट्टी–(हिं. स्त्री.) कटिबन्ध, कमर पर बाँधने की पट्टी।
कमरपेटा–(हिं. पुं.) मलखंभ का एक व्यायाम या कसरत।
कमरबल्ला–(हिं. पुं.) खपड़े की छाजन की वह लकड़ी जो लम्बे बल बँड़ेर के नीचे रक्खी जाती है।
कमरा–(हिं. पुं.) कोष्ठ, कोठा, कोठरी।
कमरिया–(हिं. स्त्री.) छोटा कम्बल, कटि, कमर, बौना हाथी; (पुं.) घोड़े का एक रोग।
कमरी–(हिं. स्त्री.) छोटा कम्बल।
कमल–(सं. पुं.) पद्म, पानी में होने वाला सुन्दर फूल का एक पौधा, इस पौधे का फूल, जल, ताँबा, क्लोम, पेट में का कमल के आकार का मांस-पिंड, एक प्रकार का हिरन, सारस पक्षी, आकाश, ब्रह्मा, मूत्राशय, रोरी, कुंकुम, एक प्रकार का मात्रिक छन्द, आँख का ढेला, गर्भाशय का अग्रभाग, मोमबत्ती जलाने का गिलास, काँवला रोग, पांडु रोग।
कमलकंद–(सं. पुं.) कमल की जड़।
कमलगट्टा–(हिं. पुं.) पद्मबीज, कमल का बीज।
कमलज–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
कमलनयन–(सं. वि.) कमल की पँखुड़ी के सदृश सुन्दर नेत्रवाला; (पुं.) विष्णु, रामचन्द्र, कृष्ण।
कमलनाभ–(सं. पुं.) विष्णु।
कमलनाल–(सं.पुं.) मृणाल,कमल की डंडी।
कमलबंध–(सं. पुं.) एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसके अक्षरों को नियम-पूर्वक लिखने से कमल का चित्र बन जाता है।
कमलबंधु–(सं. पुं.) सूर्य।
कमलबाई–(हिं. स्त्री.) एक रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है।
कमलबीज–(सं. पुं.) कमल-गट्टा।
कमलभव–(सं. पुं.) कमलज, ब्रह्मा।
कमलभू–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
कमलयोनि–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
कमला–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, सुन्दर स्त्री, नारंगी, गंगा, नाचनेवाली रंडी, एक प्रकार का छन्द, उत्तर बिहार की एक नदी; (हिं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा जिसके काटने से खुजली होती है, ढोला, झांझा।
कमलाकर–(सं. पुं.) पद्म-समूह।
कमलाकांत–(सं. पुं.) लक्ष्मीपति, विष्णु।
कमलाकार–(सं. वि.) कमल के आकार का; (पुं.) छप्पय का एक भेद।
कमलाक्ष–(सं. वि.) पद्म के समान सुन्दर नेत्रवाला; (पुं.) कमलगट्टा, पद्मबीज।
कमलाग्रजा–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हलदी।
कमलापति–(सं.पुं.) लक्ष्मी के पति, विष्णु।
कमलालया–(सं. स्त्री.) कमल में रहने-वाली लक्ष्मी।
कमलावती–(सं. स्त्री.) पद्मावती छन्द।
कमलासन–(सं. पुं.) ब्रह्मा, हठ योग का पद्मासन।
कमलिनी–(सं.स्त्री.) छोटा कमल, कोईं।
कमली–(सं. पुं.) ब्रह्मा; (हिं. स्त्री.) छोटा कम्बल, कमरी।
कमलेश–(सं. पुं.) विष्णु।
कमवाना–(हिं.क्रि.स.) दूसरे से कमाने का काम कराना, लाभ करवाना, बाल बनवाना, सुधरवाना।
कमसमझी–(हिं. स्त्री.) मूर्खता।
कमहा–(हिं.वि.) काम करनेवाला, श्रमी।
कमाइच–(हिं. स्त्री.) सारंगी बजाने की कमानी।
कमाई–(हिं.स्त्री.) कमाया हुआ धन, कमाने का काम, उद्यम, व्यवसाय, काम-धंधा।
कमाऊ–(सं. वि.) कमानेवाला, धनो-पार्जन करनेवाला।
कमाच–(हिं.पुं.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
कमाची–(हिं. स्त्री.) कमान की तरह झुकी हुई तीली।
कमाना–(हिं.क्रि.स.) उपार्जन करना, परि-श्रम करना, अभ्यास बढ़ाना, सुधारना, खाद से भरना, मल-मूत्र उठाना, बोने के लिये भूमि तैयार करना, छिनारा करके पेट भरना, परिश्रम करना, बाल मूड़ना, अभ्यास बढ़ाना, कम करना, घटाना।
कमानिया–(हिं. पुं.) धनुष चलानेवाला; (वि.) अर्ध-चंद्राकार।
कमानी–(फा. स्त्री.) कोई लचीली वस्तु, लोहे की लचकनेवाली तीली, मेखला जो आँत उतरनेवाले कमर में कसते हैं, धनुषाकार लकड़ी, बांस की फट्टी; –बालकमानी– (स्त्री.) जेबी घड़ी की बाल के समान महीन कमानी; –दार– (वि.) कमानी लगा हुआ।
कमायज–(हिं. स्त्री.) सारंगी बजाने की कमानी।
कमाल–(अ. पुं.) पूर्णता, पराकाष्ठा, चमत्कारपूर्ण कार्य, निपुणता, कुशलता; (वि.) बहुत सुन्दर, सर्वोत्तम; (मुहा.) –करना–अद्‌भुत योग्यता, सफलता आदि प्राप्त करना।
कमासुत–(हिं.वि.) धन कमानेवाला, उद्यमी।
कमी–(हिं. स्त्री.) अल्पता, न्यूनता, त्रुटि, घाटा; –बेशी–(स्त्री.) कम या ज्यादा होना, अल्पता-अधिकता।
कमीज–(हिं. स्त्री.) कफ और कालर-दार पहनावा।
कमीन–(फा. वि.) देखें 'कमीना'; –पन–(पुं.) कमीनापन।
कमीना–(फा. वि.) नीच, क्षुद्र, खोटा; –पन–(पुं.) नीचता, दुष्टता।
कमीला–(हिं. पुं.) देखें 'कबीला'।
कमुआ–(हिं. पुं.) नाव चलाने के डाँड़े की मूठ।
कमेरा–(हिं. पुं.) कमकार, खेत में काम करनेवाला।
कमेला–(हिं. पुं.) पशुओं का वध करने का स्थान।
कमेहरा–(हिं. पुं.) कसकुट की चूड़ियाँ ढालने का साँचा।
कमोदन–(हिं. स्त्री.) कुमुदिनी।
कमोदिक–(हिं. पुं.) कामोद राग गाने-वाला, गवैया।
कमोदिन–(हिं. स्त्री.) कुमुदिनी।
कमोरा–(हिं. पुं.) चौड़े मुँह का मिट्टी का घड़ा, कछरा।
कमोरी–(हिं.स्त्री.) छोटा कमोरा, कछरी।
कम्मल–(हिं. पुं.) कंबल।
कम्मा–(हिं. पुं.) ताड़-पत्र पर लिखा हुआ लेख।
कम्र–(हिं. वि.) इच्छुक, कामुक।
कयपूती–(हिं. स्त्री.) एक वृक्ष, इसके पत्तों में से सुगंधित तेल निकलता है।
कया–(हिं. स्त्री.) देखें 'काया'।
कयामत–(अ. स्त्री.) इस्लाम तथा ईसाई धर्मानुसार मनुष्य द्वारा किये गये पाप-पुण्य के निर्णय का अंतिम दिन, प्रलय, हंगामा; (मुहा.)–की घड़ी–प्रलयकाल, महान् संकट का समय।
करंक–(हिं. पुं.) अस्थिपंजर, ठठरी।
करंगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।

करंज–(हिं. पुं.) एक वृक्ष ।
करंजा–(हिं. पुं.) कंजा; (वि.) भूरी आंखवाला ।
करंजुवा–(हिं. पुं.) करंज का वृक्ष, कंजा, जव के पौधे को नष्ट करनेवाला एक रोग; (वि.) भूरी आंखवाला ।
करंड–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बहुत कड़ा पत्थर (कुरुल) जिसपर सान चढ़ाया जाता है, पिटारा, कोष ।
करंडी–(हिं. स्त्री.) कच्चे रेशम की चादर, अंडी ।
कर–(सं. पुं.) हाथ, हाथी की सूंड़, ओला, प्रत्यय, विषय, काम, महसूल, मालगुजारी, छल, युक्ति, चौबीस अंगुल की नाप; (विभ.) संबंध कारक का चिह्न; (हिं. प्रत्य.) प्रत्यय की तरह शब्द में प्रयुक्त होने से इसका अर्थ "करनेवाला" होता है, यथा–कष्टकर, सुखकर इत्यादि।
करइत–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा, एक प्रकार का सर्प ।
करई–(हिं. स्त्री.) जल रखने का टोंटीदार पात्र ।
करकंटक–(सं. पुं.) नख ।
करक–(सं. पुं.) कमण्डल, करवा, करंज का वृक्ष, मौलसिरी, कचनार, नारियल की खोपड़ी, गोबर पर उगनेवाला छत्रक, अनार, ओला, करंक, ठठरी ।
करक–(हिं. स्त्री.) देखें 'कड़क' ।
करकच–(सं. पुं.) समुद्र से निकाला हुआ नमक; (हिं. पुं.) उपद्रव ।
करकट–(हिं. पुं.) असार वस्तु, कूड़ा-कतवार, झाड़न ।
करकटिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लंबी पूंछ की चिड़िया ।
करकना–(हिं. क्रि. अ.) चटचटाना, फूटना, पीड़ा होना, कसकना ।
करकमल–(सं. पुं.) कमल की भांति सुन्दर हाथ ।
करकर–(हिं. पुं.) समुद्र से निकाला हुआ नमक; (वि.) गड़नेवाला ।
करकरा–(हिं. वि.) खुरखुरा, गड़नेवाला, कठोर।
करकराहट–(हिं. स्त्री.) कड़ापन, कठोरता, खुरखुराहट, पीड़ा ।
करकस–(हिं. वि.) कर्कश, कड़ा ।
करवा चतुर्थी–(सं. स्त्री.) कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, करवा चौथ, इस दिन स्त्रियां व्रत रखती हैं।
करचायु–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

करखना–(हिं. क्रि. अ.) उत्तेजित होना ।
करखा–(हिं. पुं.) युद्ध-संगीत, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक पाद में सैंतीस मात्राएं होती हैं, उत्तेजना, कलंक, काजल ।
करगता–(हिं. स्त्री.) सोनेयाचांदीकीकरधनी
करगस–(हिं. पुं.) तीर ।
करगह–(हिं. पुं.) वह नीचा स्थान जहां पैर लटकाकर जुलाहे कपड़ा बुनते हैं, जुलाहों का करघा, कपड़ा बुनने का यन्त्र ।
करगहना–(हिं. पुं.) पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा जिसको द्वार या खिड़की के चौखट पर रखकर जोड़ाई करते हैं, भरेठा ।
करगही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का अगहनिया मोटा धान ।
करगी–(हिं. स्त्री.) चीनी बटोरने की खुरचनी ।
करग्रह–(सं. पुं.) विवाह, पाणि-ग्रहण ।
करग्राह–(सं. पुं.) कर लेनेवाला राजा ।
करघा–(हिं. पुं.) देखें 'करगह' ।
करचंग–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा डफ ।
करछा–(हिं. पुं.) बड़ी करछी ।
करछाल–(हिं. स्त्री.) उछाल, छलांग, कूद-फांद ।
करछी, करछुल–(हिं. स्त्री.) देखें 'कलछी' ।
करछुला–(हिं. पुं.) बड़ी कलछुल ।
करछुली–(हिं. स्त्री.) छोटी कलछुल ।
करछैयां–(हिं. स्त्री.) कुछ काली गौ ।
करछौंह–(हिं. वि.) थोड़ा काला (रंग) ।
करज–(सं. पुं.) नख, अंगुली, व्याघ्रनख नामक सुगन्धित द्रव्य; (वि.) हाथ से उत्पन्न ।
करट–(सं. पुं.) कौवा, हाथी की कनपटी, दुष्ट मनुष्य, एकादशाह श्राद्ध, कट्टर नास्तिक, कौआ ।
करटक–(सं. पुं.) कौवा, चौर-शास्त्र के प्रवर्तक कर्णी के पुत्र ।
करटा–(सं. स्त्री.) दूध दुहाने में छटकनेवाली गाय, हाथी की कनपटी ।
करटिनी–(सं. स्त्री.) हस्तिनी, हथिनी ।
करटी–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी ।
करण–(सं. पुं.) व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है, तृतीया विभक्ति, इन्द्रिय, शरीर, साधन, कार्य, क्रिया, एक प्रकार का गान, स्थान, बैठना, ज्योतिष के गणित की एक क्रिया, योगियों का आसन, गणित में वह संख्या जिसका वर्गमूल पूरा-पूरा न निकल सके; गणित में अति सूक्ष्म संख्या जिसका वर्गमूल नहीं निकाला जा सकता; –त्व–(पुं.) [illegible] ।

करणीय–(सं. वि.) करने योग्य ।
करतब–(हिं. पुं.) कर्तव्य, काम, कला, जादू, चालाकी ।
करतबिया, करतबी–(हिं. वि.) करतब करनेवाला, निपुण, गुणी ।
करतरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कर्तरी' ।
करतल–(हिं. पुं.) हथेली, एक प्रकार का छप्पय ।
करतलगत–(सं. वि.) हाथ में आया हुआ ।
करतली–(हिं. स्त्री.) हथेली, ताली, गाड़ीवान के बैठने का स्थान ।
करतव्य–(हिं. पुं.) देखें 'कर्तव्य' ।
करता–(हिं. पुं.) कर्ता, करनेवाला, एक वृत्त विशेष; –धरता–(पुं.) घर का मालिक, सारा प्रबंध या व्यय करनेवाला मालिक ।
करतार–(हिं. पुं.) कर्तार, विधाता, करताल ।
करतारी–(हिं. स्त्री.) हथेलियों से ताली बजाने का शब्द, एक प्रकार का बाजा ।
करताल–(सं. पुं.) दोनों हाथों से ताली बजाने का शब्द, करतल-ध्वनि, झांझ, मँजीरा, हाथ से बजाने का लकड़ी या कांसे का एक यन्त्र ।
करती–(हिं. स्त्री.) मरे बच्चे का चमड़ा जिसमें भूसा भरकर गाय को दिखाकर दूध दुहा जाता है ।
करतूत, करतूति–(हिं. स्त्री.) कर्तव्य, काम, करनी, करतब, कला, गुण, कुकर्म ।
करद–(सं. वि.) राजकर देनेवाला, आश्रय देनेवाला ।
करदक्ष–(सं. वि.) शिल्पी, हाथ का कारीगर ।
करदम–(हिं. पुं.) देखें 'कर्दम' ।
करदा–(हिं. पुं.) गर्दा, कूड़ा-करकट, अन्न में मिली हुई मिट्टी इत्यादि, बट्टा, कटौती, मूल्य में वह कमी जो किसी वस्तु में कूड़ा-करकट निकालने पर हो ।
करदौना–(हिं. पुं.) देखें 'दौना' ।
करधन, करधनी–(हिं. स्त्री.) कमर में पहिनने का आभूषण, कमर में पहिनने का लड़ीदार सूत, एक प्रकार का धान ।
करधर–(हिं. पुं.) मेघ, बादल, [illegible] ।
करधृत–(सं. वि.) हाथ में पकड़ा हुआ ।
करन–(हिं. पुं.) देखें 'कर्ण', [illegible] ।
करनधार–(हिं. पुं.) देखें 'कर्णधार' ।
करनफूल–(हिं. पुं.) [illegible] कान का एक गहना ।
करनबेध–(हिं. पुं.) कर्णवेध, कानों के छेदने का एक संस्कार ।
करना–(हिं. पुं.) सफेद फूलों का एक पौधा, सुदर्शन, एक प्रकार का बड़ा

नींबू, कार्य, काम; (क्रि. स.) समाप्ति पर लाना, निवटाना, बनाना, पकाना, भेजना, पहुँचाना, लगाना, व्यवसाय चलाना, भाड़ा ठहराना, रूप बदलना, उठाना, दीपक बुझाना, मारना, रँगना, राँधना, ले जाना, पति या पत्नी बनाना, भाड़े पर सवारी लेना, कोई पद देना; (इस शब्द को अधिकांश संज्ञाओं या विशेषणों के साथ लगा देने से उन शब्दों का क्रिया-प्रयोग बन जाता है।)

करनाई–(हिं. स्त्री.) तुरही।

करनाटक–(हिं. पुं.) मद्रास प्रान्त का एक प्रदेश।

करनाटकी–(हिं. पुं.) करनाटक प्रदेशवासी, नट, इन्द्रजाल दिखलानेवाला।

करनाल–(हिं. पुं.) नरसिंघा, भोंपा, बड़ा ढोल, एक प्रकार की तोप।

करनी–(हिं. स्त्री.) कर्म, करतूत, कार्य, करतव, अन्त्येष्टिक्रिया, मृतक-संस्कार, राजगीरों का वह यंत्र जिससे वे मसाला उठाते और भीत पर लगाकर इसको चिकनाते हैं; –धरनी–(स्त्री.) करतूत, विवाह, कन्या की विदाई आदि संस्कारों में दिया जानेवाला धन, उपहार आदि।

करन्यास–(सं. पुं.) तन्त्रोक्त मन्त्र उच्चारण करते हुए अँगुली तथा हाथ के भिन्न भागों को स्पर्श करना।

करपंकज–(सं. पुं.) कमल के समान हाथ।

करपर–(हिं. पुं.) खोपड़ी; (वि.) कृपण, कंजूस।

करपरी–(हिं. स्त्री.) वरी, मुंगौरी।

करपलई–(हिं. स्त्री.) देखें 'करपल्लवी'।

करपल्लव–(सं. पुं.) अँगुली, हाथ।

करपल्लवी–(सं. स्त्री.) अँगुलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करने की विद्या, हाथ के संकेत की बातचीत।

करपात्र–(सं. पुं.) हस्तरूप पात्र।

करपाल–(सं. पुं.) खड्ग, तलवार।

करपालिका, करपाली–(सं. स्त्री.) हाथ की छोटी छड़ी, छुरा, मुद्गर।

करपीड़न–(सं. पुं.) विवाह, पाणिग्रहण।

करपुट–(सं. पुं.) श्रद्धांजलि, अंजलि।

करपृष्ठ–(सं. पुं.) हाथ का पिछला भाग।

करप्रद–(सं. वि.) कर देनेवाला।

करप्राप्त–(सं. वि.) हाथ में आया हुआ।

करबच–(हिं. स्त्री.) बल या घोड़े पर लादने की खुरजी।

करबला–(अ. स्त्री.) अरब का वह स्थान जहाँ इमाम हुसैन अपने साथियों के साथ शहीद हुए थे।

करबस–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चाबुक।

करबाल–(सं. पुं.) नख, तलवार।

करबी–(हिं. स्त्री.) चौपायों का खाना, चरी, ज्वार या मकई के हरे पौधे जो काटकर चौपायों को खिलाया जाता है।

करबूस–(हिं. पुं.) रस्सी (या तस्मा) जो घोड़े के जीन में शस्त्र लटकाने के लिये लगी होती है।

करभ, करभक–(सं. पुं.) करपृष्ठ, हथेली के पीछे का भाग, हाथी की सूँड़, हाथी का बच्चा, ऊँट या ऊँट का बच्चा, नखी नामक सुगन्धित औषधि, कटि, कमर, एक प्रकार का दोहा जिसमें सोलह गुरु और सोलह लघु वर्ण होते हैं।

करभी–(सं. स्त्री.) हथिनी, ऊँटनी।

करभीरु–(सं. पुं.) सिंह, शेर।

करभूषण–(सं. पुं.) हाथ का आभूषण।

करभोरु–(सं. स्त्री.) गोल जाँघवाली स्त्री।

करम–(हिं. पुं.) कर्म, काम, भाग्य, प्रारब्ध; (मुहा.) –का धनी–भाग्यवान्; –फूटना–भाग्यहीन होना; –रेख–(पुं.) भाग में लिखा हुआ भोग।

करमई–(हिं. स्त्री.) कचनार के समान एक वृक्ष।

करमकल्ला–(हिं. पुं.) बन्दगोभी, एक प्रकार की गोभी जिसमें पत्ते पुष्पाकार होते हैं, पातगोभी।

करमछंद–(हिं. पुं.) कर्म, भाग्य, प्रारब्ध।

करमट्ठा–(हिं. वि.) कृपण, कंजूस।

करमठ–(हिं. वि.) कर्मनिष्ठ, कर्मकाण्ड करानेवाला।

करमनासा–(हिं. स्त्री.) देखें 'कर्मनाशा'।

करमर्द, करमर्दक–(सं. पुं.) करंज, करौंदा।

करमाल–(हिं. पुं.) कर्म, भाग्य; (सं. पुं.) धुआँ, मेघ, बादल।

करमाला–(सं. स्त्री.) अँगुलियों के पोर की जपनी।

करमाली–(सं. पुं.) सूर्य।

करमी–(हिं. वि.) कर्मकार, काम करनेवाला, कर्मठ।

करमुँहा–(हिं. वि.) काले मुखवाला, कलंकयुक्त।

करमुक्त–(सं. वि.) हाथ से छूटा हुआ, बिना कर का; (पुं.) बरछा।

करमूल–(सं. पुं.) मणिबन्ध, कलाई।

करमैस–(हिं. पुं.) करगह के ऊपर बँधा हुआ काठ।

करमोद–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।

करर–(हिं. पुं.) एक विषैला कीड़ा जिसका शरीर ग्रन्थिमय होता है, जंगली कुसुम का वृक्ष, एक विशेष रंग का घोड़ा।

करररा, कररराना–(हिं. क्रि. अ.) कर्कश शब्द करना, मरमराना, चरचराना, कठोर शब्द कहना।

कररान–(हिं. स्त्री.) धनुष चढ़ाने का शब्द।

कररी–(हिं. स्त्री.) वनतुलसी, कुररी पक्षी।

कररुद्ध–(सं. वि.) हाथ से रोका हुआ।

कररुह–(सं. पुं.) नख, अँगुली, तलवार, नखी नामक सुगन्धित औषधि।

कररेखा–(सं. स्त्री.) हाथ में की लकीर।

करल–(सं. पुं.) कैथ का वृक्ष; (हिं. पुं.) कड़ाहा।

करला–(हिं. पुं.), करली–(हिं. स्त्री.) अंकुर, कल्ला।

करवट–(हिं. स्त्री.) दाहिने या बायें बल लेटने की स्थिति, करपत्र, आरा; (मुहा.) –बदलना–पलटा खाना, भिन्न स्थिति में होना; –लेना–देखें 'करवट बदलना'।

करवत–(हिं. पुं.) करपत्र, आरा।

करवर–(हिं. स्त्री.) विपद, आपत्ति, संकट।

करवरना–(हिं. क्रि. अ.) कोलाहल करना, चहकना।

करवल–(हिं. स्त्री.) काँसा मिली हुई चाँदी।

करवा–(हिं. पुं.) धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा, गड़ुवा, बधना, कोनिया, धोरिया।

करवा चौथ–(हिं. स्त्री.) कार्तिक बदी चौथ का दिन, सौभाग्यवती स्त्रियाँ इस चतुर्थी को गौरी का व्रत करती हैं।

करवाना–(हिं. क्रि. स.) किसी काम को करने के लिये दूसरे को प्रवृत्त करना।

करवार, करवाल–(सं. पुं.) कृपाण, तलवार, नख।

करवालिका–(सं. स्त्री.) छोटी गदा।

करवाली–(हिं. स्त्री.) छोटी तलवार, करौली।

करवीर–(सं. पुं.) कृपाण, तलवार, श्मशान, मरघट, कनेर या करील का वृक्ष।

करवैया–(हिं. पुं., वि.) कर्ता, करनेवाला।

करशाखा–(हिं. स्त्री.) अँगुली।

करष–(हिं. पुं.) कर्ष, खिंचाव, तनाव, द्रोह, ताव, लड़ने का उत्साह।

करषक–(हिं. पुं.) देखें 'कर्षक'।

करषना–(हिं. क्रि. स.) घसीटना, तानना, खींचना, समेटना, सुखाना, सोख लेना, निमन्त्रित करना, न्योता देना।

करस–(हिं. पुं.) कंडे का चूर, करसी।

करसना–(हिं. क्रि. स.) खींचना, घसीटना, सोखना, एकत्र करना, समेटना।

करसा–(हि. पुं.) देखें 'करस'।
करसान–(हि. पुं.) कृपाण, किसान।
करसायर, करसायल–(सं. पुं.) कृष्ण-सार, काला हिरन।
करसी–(हि. स्त्री.) कंडे का चूरखार, उपला, गोहरी।
करसूत्र–(सं. पुं.) मंगलार्थ हाथ में बाँधा हुआ सूत्र, रक्षा-बंधन, कंगन।
करस्वन–(सं. पुं.) हस्तध्वनि, ताल।
करहंस–(सं.पुं.)एक प्रकार का वर्णवृत्त।
करह–(हि. पुं.) करभ, ऊँट।
करहनी–(हि. पुं.) एक अगहनी धान।
करहा–(हि. पुं.) श्वेत सिरिस का वृक्ष।
करहाट, करहाटक–(सं. पुं.) मैनफल।
करही–(हि.स्त्री.)अन्न की बाल का दाना जो कूटने-पीसने पर भी बच जाता है।
करांकुल–(हि.पुं.)देखें 'कलांकुर', क्रौंच।
करांत–(हि. पुं.) करपत्र, आरा।
करांती–(हि. पुं.) आराकश, आरा चलानेवाला।
कराइत–(हि. पुं.) एक काली जाति का विषैला सर्प।
कराई–(हि. स्त्री.) मूंग, उर्द, रहर इत्यादि की दाल पर की भूसी, दाल का छिलका, श्यामता, कालापन, किसी कार्य के कराने या करने का भाव।
कराग्र–(सं. पुं.) हाथ का अग्र भाग, हाथी की सूंड़ का सिरा।
कराघात–(सं. पुं.) हाथ की मार, घूँसा, थप्पड़।
कराट–(सं. पुं.) थप्पड़, तमाचा।
कराड़–(हि. पुं.) माल मोल लेनेवाला महाजन।
करात–(हि. पुं.) चार जव की तौल जो सोना-चांदी तथा दवा तौलने में प्रयुक्त होती है; (अं.कॅरेट) सोने आदि की तौल।
कराना–(हि. क्रि. स.) कार्य में लगाना, करवाना।
करायल–(हि. पुं.) मूंग या उड़द का छिलका, कलौंजी।
करार–(हि. पुं.) नदी का ऊँचा तट, कगार; (अ. पुं.) इकरार, प्रतिज्ञा।
करारना–(हि.क्रि.अ.)कर्कश शब्द करना।
करारा–(हि. पुं.)नदी का ऊँचा तट जो धारा द्वारा काटे जाने पर बनता है, टीला, दूह, कौवा, एक प्रकार की मिठाई; (वि.)कठोर, कड़ा, तीक्ष्ण, स्थिर-चित्त, कड़ा सेंका हुआ, कुरकुरा, उग्र, चोखा, खरा, बड़ा भारी, बलवान, अधिक गहरा।

करारापन–(हि. पुं.) अधिक गहराई, कड़ापन।
करारी–(हि. वि.) प्रतिज्ञा करनेवाला, वचनबद्ध।
करार्पित–(सं. वि.) हाथ में दिया हुआ।
कराल–(सं. वि.) बड़े दाँतवाला, ऊँचा, भयंकर, डरावना, प्रशस्त, खुला हुआ; (पुं.) कस्तूरी मृग, गन्धर्व विशेष, काला बबूल।
करालवदना–(सं. स्त्री.) काली भयंकर मुखवाली स्त्री।
करालित–(सं. वि.) भयंकर किया हुआ।
कराली–(सं.स्त्री.)अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक; (वि.स्त्री.) भयंकरी, डरावनी।
कराव, करावा–(हि. पुं.) विवाहादि कर्म, सगाई।
कराह–(सं. पुं.) वेदनासूचक शब्द, पीड़ा का शब्द, कड़ाह, लोहे की बड़ी कड़ाही।
कराहना–(हि. क्रि. अ.) पीड़ित शब्द से बोलना, काँखना, हाय-हाय करना।
कराहा–(हि. पुं.) बड़ी कड़ाही।
कराही–(हि.स्त्री.)छोटा कड़ाहा,कड़ाही।
करिंगा–(हि. पुं.) ठिठोलिया।
करिंद–(हि. पुं.) देखें 'करींद्र'।
करि–(हि. पुं.) करी, हाथी।
करिकर–(सं. पुं.) हाथी की सूंड़।
करिकुंभ–(सं. पुं.) गजकुम्भ, हाथी के मस्तक का भाग।
करिखई–(हि. स्त्री.) कालिख, कलंक।
करिखा–(हि. पुं.) कालिख, कलंक।
करिगह–(हि. पुं.) देखें 'करगह'।
करिणी–(सं. स्त्री.) हस्तिनी, हथिनी।
करिपोत–(सं. पुं.) हाथी का बच्चा, हाथी बाँधने का खूंटा।
करिबू–(हि.पुं.)एक प्रकार का बारहसिंगा।
करिभ–(सं. पुं.)अश्वत्थ,पीपल का वृक्ष।
करिया–(हि. पुं.) पतवार, कर्णधार, मल्लाह; (वि.) काला।
करियाई–(हि. स्त्री.) नीलता, कालापन।
करियाद–(सं. पुं.) दरियायी घोड़ा।
करियारी–(हि. स्त्री.) कलियारी, एक विष, लगाम।
करिल–(हि. पुं.) कोंपल, कोमल पत्ता; (वि.) काला।
करिवदन–(सं. पुं.) गणेशजी।
करिवर–(सं.पुं.)श्रेष्ठ हस्ती, उत्तम हाथी।
करियारी–(हि. वि.) कृष्णवर्ण, काला।
करिष्णु–(सं.वि.)करनेवाला, करणशील।
करिष्यमाण–(सं. वि.) करने के लिये उद्यत, भावी कार्य में लगा हुआ।

करिहांव–(हि. पुं.) कटि, कमर, कोल्हू का मध्य भाग।
करींद्र–(सं.पुं.) इन्द्र का हाथी, ऐरावत।
करी–(सं. पुं.) हाथी, आठ की संख्या; (हि. स्त्री.) कड़ी, धरन, कली, पन्द्रह मात्राओं का एक छन्द।
करीना–(हि. पुं.) छेनी, पत्थर गढ़ने की टांकी, मसाला, करीना।
करीर–(सं. पुं.) बांस का अँखुवा या कल्ला, घड़ा, करील का वृक्ष।
करील–(हि पुं.) एक कँटीली झाड़ी; देखें 'करीर'।
करीश–(सं.पुं.)गजराज,हाथियों का राजा।
करीष–(सं. पुं.) सूखा गोबर, जंगल में सूखा हुआ गोबर, कण्डा, अरना।
करुआ–(हि. वि.) देखें 'कड़वा'।
करुआई–(हि. स्त्री.) कड़वापन।
करुआ(वा)ना–(हि.क्रि.अ.)दुखाना,गड़ना, बुरा लगना।
करुखी–(हि.स्त्री.)कनखी,तिरछी चितवन।
करुण–(सं.पुं.) एक प्रकार के नीबू का वृक्ष, श्रृंगारादि आठ रसों के अन्तर्गत तीसरा रस, बन्धु-बान्धवों के वियोग से उत्पन्न भाव, दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा, परमेश्वर, एक बुद्ध का नाम; (वि.) दयनीय,दयालु।
करुणा–(सं. स्त्री.) दूसरे का दुःख हटाने की इच्छा, दया, तरस, कृपा शोक, गंगाजी का एक नाम।
करुणाकर–(सं. वि.) अत्यन्त दयालु।
करुणादृष्टि–(सं.स्त्री.) दया की दृष्टि।
करुणानिधान, करुणानिधि–(हि. वि.) बड़ा दयालु।
करुणामय–(सं. वि.) अत्यन्त दयालु।
करुणायुक्त–(सं.वि.) देखें 'करुणामय'।
करुना–(हि. स्त्री.) देखें 'करुणा'।
करुर, करुवा–(हि. वि.) कटु, कड़ुआ।
करुवाई–(हि. स्त्री.) कटुता, कड़ुवापन, तीतापन।
करुवार–(हि. पुं.) नाव की पतवार।
करुला–(हि. पुं.) हाथ का एक प्रकार का कंकण।
करूष–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश जो रामायण के अनुसार [illegible] पर एक राक्षस ने बसाया था, ताड़का राक्षसी यहीं रहती थी, [illegible]।
करूषक–(सं. पुं.) वैवस्वत मनु के पुत्र का नाम, [illegible]।
करेजा–(हि. पुं.) [illegible], देखें 'कलेजा'।
करेजी–(हि.स्त्री.)पशु के कलेजे का मांस।

करेट—(सं. पुं.) नख।
करेणु—(सं.पुं.)गज, हाथी,कनेर का वृक्ष।
करेणुका—(सं.स्त्री.) हस्तिनी, हथिनी।
करेव—(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का पतला रेशमी वस्त्र जिसको अंग्रेजी में 'क्रेप' कहते हैं।
करेम, करेमू—(हिं. पुं.) जल में उत्पन्न होनेवाली एक घास जो शाक बनाकर खाई जाती है।
करेर(रा)—(हिं. वि.) कठोर, कड़ा।
करेरुवा—(हिं. पुं.) एक प्रकार की काँटेदार लता।
करेल—(हिं.पुं.)एक प्रकार का वड़ा मुद्गर।
करेला—(हिं.पुं., सं.कारवेल्ल)एक प्रकार की लता जिसमें हरे कड़वे फल लगते हैं जो तरकारी बनाने के काम में आते हैं, हुमेल की लंबी गुरिया, एक प्रकार की अग्नि-क्रीड़ा।
करेली—(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का छोटा करेला।
करैत—(हिं. पुं.) एक काली जाति का बहुत विषैला सर्प, करइत।
करैल—(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की काली मिट्टी जो गरमी के दिनों में तालाव का पानी सूखने पर निकलती है, यह वड़ी कड़ी तथा लसदार होती है; **करैली मिट्टी**—(स्त्री.) काली मिट्टी।
करैला—(हिं. पुं.) देखें 'करेला'।
करोंट—(हिं. पुं.) करवट।
करोट—(सं. पुं.) मस्तक की हड्डी; (हिं. पुं.) देखें 'करवट'।
करोड़—(हिं.वि.,पुं.)एक कोटि, सौ लाख की संख्या; —पति—(वि. पुं.) जिसके पास करोड़ों की संपत्ति हो, वहुत धनी।
करोड़ी—(हिं. पुं.) कोषाध्यक्ष, रोकड़िया।
करोत—(हिं. पुं.) आरा, करपत्र।
करोदक—(सं.पुं.)हाथ में रक्खा हुआ जल।
करोदना—(हिं.क्रि.स.)खुरचना, करोना।
करोना—(हिं.क्रि.स.)किसी चोखी चीज से रगड़ना, खुरचना।
करोनी—(हिं. स्त्री.) खुरचन, करोचन, खुरचने का यन्त्र।
करोर—(हिं. वि., पुं.) देखें 'करोड़'।
करोला—(हिं.पुं.)करवा,गडुवा,रीछ,भालू।
करौंछा—(हिं.वि.)कुछ श्याम वर्ण का,साँवला।
करौंजी—(हिं. स्त्री.)कलौंजी,स्याहजीरा।
करौट—(हिं. पुं.) देखें 'करवट'।
करौंदा—(हिं. पुं.) करमर्द वृक्ष, एक कटीला पौधा जिसके छोटे खट्टे फल अचार, चटनी इ० में प्रयुक्त होते हैं, कान के नीचे निकलनेवाली गिलटी।

करौंदिया—(हिं.वि.) करौंदे के रंग का।
करौत—(हिं. पुं.)करपत्र, आरा; (स्त्री.) उढ़री स्त्री।
करौता—(हिं. पुं.) करावा, बड़ी शीशी; (स्त्री.) उढ़री स्त्री।
करौती—(हिं. स्त्री.) करपत्र, आरी, छोटी शीशी, कांच गलाने की भट्ठी।
करौना—(हिं. पुं.) कसेरे की छोटी छेनी।
करौल—(हिं. पुं.) आखेट हाँकनेवाला।
करौली—(हिं. स्त्री.) नोकदार भोंकने की छुरी।
कर्कंधु—(सं.पुं.) झरवेर का वृक्ष, इसका फल, वेर।
कर्क—(सं. पुं.) श्वेत घोड़ा, केकड़ा, अग्नि, दर्पण, तिल, काँटा, काकड़ासिंगी, घड़ा, वेल का वृक्ष, गन्धक, कर्कट राशि; (वि.) श्रेष्ठ, उत्तम; —रेखा—(स्त्री.) भूमध्य रेखा से २३½° उत्तर की ओर कल्पित वृत्त रेखा।
कर्कट—(सं. पुं.) ककड़िया का वृक्ष, केकड़ा, कमल की जड़, तुम्वी, लौकी, वारह राशियों में से चौथी राशि, कलश, घड़ा, काँटा, सेम्हर का वृक्ष, वड़ी सँड़सी, एक प्रकार का नाच।
कर्कटक—(सं. पुं.) केकड़ा, कर्कट राशि, हड्डी टूटने का रोग, एक प्रकार का विष, जंगली आँवला।
कर्कटकी—(सं. स्त्री.)काकड़ासिंगी, मादा केकड़ा।
कर्कट क्रांति—(सं. स्त्री.)भूमध्य रेखा से साढ़े तेईस अंश उत्तर-स्थित अक्षरेखा।
कर्कटा—(सं. स्त्री.) काकड़ासिंघी, खेखसा की लता।
कर्कटी—(सं. स्त्री.) ककड़ी, सेम्हर का वृक्ष, फूट, गगरी, तरोई, एक प्रकार का वृक्ष।
कर्कर—(सं. पुं.) कंकड़, हथौड़ा, एक प्रकार का साँप, दर्पण, हड्डी, कुरंज पत्थर जिसका सान वनता है; (वि.) दृढ़, कड़ा, पुष्ट।
कर्कश—(सं. पुं.) कमीले का वृक्ष, परवर, एक प्रकार की ईख, खड्ग या तलवार, दालचीनी; (वि.) निर्दय, कठोर, कड़ा, काँटेदार, क्रूर, दुर्बोध, कृपण।
कर्कशता—(सं. स्त्री.) देखें 'कर्कशत्व'।
कर्कशत्व—(सं. पुं.) कठोरता, कड़ापन।
कर्कशा—(सं. स्त्री.) झगड़ालू स्त्री; (वि. स्त्री.) लड़ाकी।
कर्कारुक—(सं.पुं.)कूष्माण्ड,कुम्हड़ा,तरबूज।
कर्की—(सं. स्त्री.) ककड़ी।

कर्कोट—(सं.पुं.)नागराज,सर्पों का राजा।
कर्कोटक—(सं. पुं.) वेल का वृक्ष, नागराज, ईख, कोड़ा, खखसा।
कर्चूरिका—(सं. स्त्री.) कचौड़ी।
कर्चूर—(सं. पुं.) सोना, कचूर, आमाहल्दी, जंगली अदरक।
कर्ज—(अ.पुं.)ऋण,उधार; (मुहा.)—खाना ऋण लेना।
कर्जदार—(अ. पुं.) ऋण लेनेवाला।
कर्जा—(हिं. पुं.) ऋण, उधार।
कर्जी—(हिं. वि.) जिसने ऋण लिया हो।
कर्ण—(सं. पुं.) श्रवणेन्द्रिय, कान, पतवार, कुन्ती के सबसे बड़े पुत्र का नाम जो वड़ा दानी था, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा; —क—(पुं.) तने को फोड़कर निकलनेवाला पत्ता, सन्निपात रोग का एक भेद, कर्णधार, माझी; —कटु—(सं.वि.)अप्रिय, कान में कर्कश लगनेवाला; —किट्ट—(पुं.) कान का खूँट; —कुहर—(पुं.) कान का छेद; —गोचर—(वि.) कान से सुनाई पड़नेवाला; —ग्राह—(पुं.)कर्णधार, मल्लाह, माँझी; —जाप—(पुं.)गुप्तवार्ता, काना-फूसी; —जीरक—(पुं.) छोटाजीरा; —धार—(पुं.)नाविक, मल्लाह, दुःखादि का निवारक, पतवार; —धारता—(स्त्री.) नाविक का काम; —नाद—(पुं.) कान में सुनाई देनेवाला शब्द; —परंपरा—(स्त्री.) एक कान से दूसरे कान तक सुनी हुई पुरानी वात; —पाक—(पुं.) कान का एक रोग; —पाली—(स्त्री.) कान की वाली, एक प्रकार का गीत; —पिशाची—(स्त्री.) एक देवी जिसके सिद्ध करने पर साधक जो चाहे सो सुन सकता है; —पुट—(पुं.) कान का छेद; —पुरी—(स्त्री.) चम्पा नगरी, आधुनिक भागलपुर; —पूर—(पुं.) कान का आभूषण, करनफूल; —मूल—(पुं.) कान का एक रोग जिसमें इसकी जड़ में सूजन आ जाती है; —लता, लतिका—(स्त्री.) कान की वाली; —वेध—(स्त्री.) वालकों के कान छेदने का संस्कार या विधि; —वेधनी—(स्त्री.) कान छेदने की सूई; —शष्कुली—(स्त्री.)कान का परदा।
कर्णाट, कर्णाटक—(सं. पुं.) भारतवर्ष के दक्षिण का एक देश, एक राग विशेष जो रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।
कर्णाटी—(सं. स्त्री.) कर्णाटक देश की स्त्री, एक प्रकार की रागिणी, कर्णाटक देश की भाषा।

कर्णि–(सं. पुं.) एक प्रकार का तीर ।
कर्णिका–(सं. स्त्री.) कान का एक आभूषण, हाथ के बीच की अँगुली, हाथी की सूँड़ की नोक, कमल का छत्ता, लेखनी, सेवती, श्वेत गुलाब, डंठल, तीव्र वेदना, एक अप्सरा का नाम ।
कर्णिकार–(सं.पुं.) कनकचम्पा का वृक्ष ।
कर्णी–(सं. पुं.) एक प्रकार का तीर, कनपटी; (वि.) ग्रन्थियुक्त ।
कर्तन–(सं. पुं.) छेदन, काट-छाँट, सूत कातने का काम ।
कर्तनी–(सं. स्त्री.) कतरनी, कैंची ।
कर्तब–(हि. पुं.) देखें 'करतब', कर्तव्य ।
कर्तरिका–(सं. स्त्री.) कतरनी, कैंची, कटारी, छोटा कृपाण ।
कर्तरी–(सं. स्त्री.) कैंची, कटारी, एक प्रकार का बाजा ।
कर्तव्य–(सं. वि.) करने योग्य, किये जाने योग्य; (पुं.) करने योग्य कार्य, धर्म, उचित काम; –ता–(स्त्री.) विधेयता, औचित्य, उपयुक्त उपाय; –विमूढ़ (वि.) जिसको अपना कर्तव्य न सूझे ।
कर्तव्याकर्तव्य–(सं. पुं.) भला बुरा काम ।
कर्ता–(सं. पुं.) ब्रह्मा, काम करनेवाला, बनानेवाला, ईश्वर, व्याकरण में वह कारक जो क्रिया को करता है ।
कर्तार–(हि.पुं.) कर्ता, करनेवाला, विधाता, परमेश्वर, संसार को बनानेवाला ।
कर्तित–(सं. वि.) काटा-छाँटा हुआ, कतरा हुआ ।
कर्तृक–(सं. वि.) करनेवाला, प्रतिनिधि ।
कर्तृका–(सं.स्त्री.) छोटी तलवार, कटारी ।
कर्तृत्व–(सं. पुं.) कर्ता का धर्म ।
कर्तृवाचक–(सं. वि.) व्याकरण में कर्ता का बोध करानेवाला (क्रिया-प्रयोग) ।
कर्तृवाच्य–(सं. पुं.) क्रियापद द्वारा कर्ता का सूचित करनेवाला वाक्य ।
कर्तृवाच्य क्रिया–(सं. स्त्री.) वह क्रिया जिससे कर्ता का बोध स्पष्ट रूप से विदित हो ।
कर्त्री–(सं.स्त्री.) कतरनी, कैंची; (वि. स्त्री.) काम करनेवाली ।
कर्द–(सं. पुं.) कर्दम, कीचड़, चहला ।
कर्दम–(सं. पुं.) पंक, कीचड़, चहला, कीच, पाप, छाया, परछाहीं, स्वायम्भुव मन्वन्तर के विशेष प्रजापति, मिट्टी, मल, गूदा, मांस, नेत्र का एक रोग ।
कर्दन–(सं. पुं.) पेट की गुड़गुड़ाहट का शब्द ।
कर्दमित–(सं. वि.) कीचड़ मिला हुआ ।
कर्नैता–(हि.पुं.) एक विशेष रंग का घोड़ा ।
कर्पट–(सं. पुं.) पुराना कपड़ा, गूदड़ ।
कर्पटी–(सं. वि.) फटा-पुराना वस्त्र पहिननेवाला भिक्षुक ।
कर्पर–(सं. पुं.) कपाल, खोपड़ी, कड़ाह, कड़ाहा, कछुवे की खोपड़ी, खप्पर, खपड़ा, गूलर का वृक्ष, कपोल, गाल, चीनी, शर्करा ।
कर्पराशी–(सं. पुं.) बटुक भैरव ।
कर्परी–(सं. स्त्री.) दारुहल्दी, तूतिया, खपड़िया ।
कर्पास–(सं. पुं.) कपास का पौधा; –फल–(पुं.) बिनौला ।
कर्पूर–(सं. पुं.) कपूर ।
कर्पूरक–(सं. पुं.) कच्ची हल्दी, कचूर ।
कर्पूरगौर–(सं. वि.) कपूर जैसा गोरा ।
कर्पूरगौरी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी ।
कर्बर–(सं. पुं.) कर्बर, सोना, धतूरे का वृक्ष, व्याघ्र ।
कर्बुर–(सं. पुं.) स्वर्ण, धतूरे का पौधा, कचूर, आमाहल्दी, जल, राक्षस, पाप, हरताल, जड़हन धान; (वि.) अनेक वर्णों का, चितकबरा ।
कर्बुरित–(सं. वि.) चित्रित, चितकबरा ।
कर्म (सं. पुं.) कार्य, क्रिया, जो किया जावे, काम, प्रारब्ध, भाग्य, मृतक-संस्कार, व्याकरण में वह शब्द जिस पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़ता है, वैशेषिक के छः पदार्थों में से एक, मीमांसा के अनुसार यज्ञ आदि कार्य या कर्तव्य; जैसे–ब्राह्मणों के छः कर्म शास्त्रों में कहे हैं; यथा–अध्ययन, यजन, दान देना, अध्यापन, याजन और दान लेना ।
कर्मकर–(सं. वि.) वेतन पर काम करनेवाला; (पुं.) यम ।
कर्मकरी–(सं.स्त्री.) दासी, बाँदी, एक लता का नाम ।
कर्मकर्ता–(सं. पुं.) कार्यकारक, काम करनेवाला, व्याकरण में वह वाच्य जिसमें कर्तृत्व की विवक्षा से दूसरा शब्द कर्ता होता है ।
कर्मकांड–(सं.पुं.) धर्म संबंधी कर्म, यज्ञादि ।
कर्मकांडी–(सं. वि.) विधिवत् यज्ञादि कर्म करानेवाला ब्राह्मण ।
कर्मकार–(सं.वि.) बिना वेतन का काम करनेवाला, काम करनेवाला; (पुं.) लोहार ।
कर्मकुशल–(सं.वि.) काम करने में चतुर ।
कर्मक्षेत्र–(सं. पुं.) कर्म करने की भूमि, भारतवर्ष ।
कर्मचारी–(सं. वि.) कार्य करनेवाला, वेतन पर काम करनेवाला ।
कर्मठ–(सं. वि.) काम करने में निपुण ।
कर्मण्य–(सं.वि.) कर्मठ, उद्यमी, प्रयत्न करनेवाला ।
कर्मण्यता–(सं. स्त्री.) कार्य-तत्परता ।
कर्मदक्ष–(सं.वि.) काम करने में निपुण ।
कर्मधारय–(सं.पुं.) संस्कृत व्याकरण में वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण होता है ।
कर्मनाशा–(सं. स्त्री.) बिहार प्रान्त की एक प्रसिद्ध नदी ।
कर्मनिरत, कर्मनिष्ठ–(सं. वि.) योगादि कर्म में आसक्त ।
कर्मपंचम–(सं.पुं.) एक रागिणी का नाम ।
कर्मपाक, कर्मफल–(सं. पुं.) धर्म या अधर्म करने से सुख-दुःख मिलने का परिणाम ।
कर्म-बंधन–(सं.पुं.) जन्म-मरण ।
कर्मभू–(सं. स्त्री.) आर्यावर्त ।
कर्मभूमि–(सं.स्त्री.) वह स्थान जहाँ मनुष्य को कार्य करना पड़ा हो, आर्यावर्त ।
कर्मभोग–(सं. पुं.) कर्म के फल के अनुसार सुख-दुःख का भोग, कर्म का फल ।
कर्ममास–(सं. पुं.) श्रावण का महीना ।
कर्ममीमांसा–(सं.स्त्री.) पूर्वजन्म-कृत कर्म के सम्बन्ध में निर्णय करनेवाला शास्त्र विशेष ।
कर्मयुग–(सं. पुं.) कलियुग ।
कर्मयोग–(सं. पुं.) चित्त शुद्ध करने का वैदिक धर्म जिसके बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता ।
कर्मयोगी–(सं. पुं.) ईश्वर प्राप्ति की अभिलाषा से यज्ञ, ध्यान आदि वैदिक धर्म करनेवाला ।
कर्मरंग–(सं.पुं.) कमरख का वृक्ष या फल ।
कर्मर, कर्मरक–(सं. पुं.) कमरख का फल ।
कर्मरेख (खा)–(सं.स्त्री.) कर्म की रेखा, भाग्य या तकदीर ।
कर्मवश–(हि. अव्य.) कर्म के अधीन ।
कर्मवशता–(सं. स्त्री.) काम में लगे रहने की अवस्था, होनहार ।
कर्मवाच्य क्रिया–(सं. स्त्री.) जिस क्रिया में कर्म प्रधान होकर मुख्य रूप से कर्ता की तरह प्रयोग किया गया हो ।
कर्मवाद–(सं. पुं.) मीमांसावाद ।
कर्मवादी–(सं. वि., पुं.) मीमांसक, कर्म को सर्वप्रधान माननेवाला ।
कर्मवान(न्)–(सं. वि.) काम करनेवाला, कर्मनिष्ठ ।

कर्म-विपर्यय–(सं. पुं.) कर्म का व्यतिक्रम, काम को उलट-फेर।
कर्मविपाक–(सं. पुं.) पूर्व जन्म में किये हुए शुभाशुभ कर्मों का भला-बुरा फल।
कर्मशाला–(सं. स्त्री.) शिल्पादि कार्य का गृह, कारखाना।
कर्मशील–(सं. वि.) परिणाम की ओर न विचार करके स्वभाव ही से काम करनेवाला, उद्योगी, यत्न करनेवाला, परिश्रमी।
कर्मशूर–(सं. वि.) कार्यदक्ष, चतुर, तत्परता से काम करनेवाला।
कर्मष–(सं. पुं.) कल्मष, पाप।
कर्मसंन्यास–(सं. पुं.) कर्म-त्याग, काम छोड़कर बैठना, कर्मफल का त्याग।
कर्मसंभव–(सं. वि.) कर्म से उत्पन्न; (पुं.) कर्म की उत्पत्ति।
कर्मसमाप्ति–(सं. पुं.) कर्म का शेष, मुक्ति।
कर्मसाक्षी–(सं. पुं.) कर्म को प्रत्यक्ष करनेवाला, सूर्य, यम, काल, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश; (वि.) जिसके सामने कोई कार्य हुआ हो।
कर्म-साधक–(सं. वि.) काम बनानेवाला।
कर्म-साधन–(सं. पुं.) कार्य की सिद्धि।
कर्मसिद्धि–(सं. स्त्री.) देखें 'कर्मसाधन'।
कर्म-स्थान–(सं. पुं.) कर्मक्षेत्र, ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली में अष्टम स्थान।
कर्महीन–(सं. वि.) शुभ कर्म न करनेवाला, मन्दभाग्य, अभागा।
कर्मारंभ–(सं. पुं.) कार्य का आरम्भ।
कर्मार–(सं. पुं.) कर्मकार, लोहार।
कर्माशय–(सं. पुं.) कर्म के धर्माधर्म का गुण।
कर्मिक–(सं. वि.) कर्मनिष्ठ, कामकाजी।
कर्मिष्ठ–(सं. वि.) काम में लगा रहनेवाला, काम करने में चतुर।
कर्मनिष्ठता–(सं. स्त्री.) काम में लगे रहने की अवस्था या भाव।
कर्मी–(सं. वि.) कर्मनिष्ठ, कामकाजी, फल की आकांक्षा से यज्ञादि कार्य करनेवाला।
कर्मीर–(सं. वि.) चित्रित, चितकबरा।
कर्मेंद्रिय–(सं. पुं.) शरीर की कर्म करनेवाली पाँच इन्द्रियाँ; यथा–हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।
कर्मोद्योग–(सं. पुं.) उद्योग का कार्य, प्रयत्न।
कर्रा–(हिं. पुं.) जुलाहे का सूत फैलाने का काम; (वि.) कठोर, कड़ा।
कर्राना–(हिं. क्रि. अ.) कड़ा पड़ना, कठोर होना।
कर्बुर–(सं. पुं.) व्याघ्र, राक्षस, पाप।
कर्शन–(सं. पुं.) दुर्बल बनाना।
कर्शित–(सं. वि.) दुर्बल किया हुआ, कृशीकृत।
कर्ष–(सं. पुं.) सोलह माशे का परिमाण, अस्सी रत्तियों की तौल, सुवर्ण, सोना, आकर्षण, जोताई, हल से बनी हुई रेखा, खरोंच, खेती का काम।
कर्षक–(सं. वि.) खींचनेवाला, हल जोतनेवाला; (पुं.) किसान, कृषक।
कर्षण–(सं. पुं.) खींचना, जोतना, जुताई, कूँड़।
कर्षणीय–(सं. वि.) खींचे या जोते जाने योग्य।
कर्षन–(हिं. पुं.) खिंचना, आकर्षण।
कर्षना–(हिं. क्रि. स.) खींचना।
कर्षिणी–(सं. स्त्री.) खिरनी का पेड़।
कर्षित–(सं. वि.) आकर्षित, खींचा हुआ, जोता हुआ।
कर्षी–(सं. वि.) खींचनेवाला, मन को प्रलोभित करनेवाला, मनोहर, सुन्दर; (पुं.) हलवाहा, खेत जोतनेवाला।
कलंक–(सं. पुं.) चिह्न, धब्बा, दोष, अपवाद, दुर्नाम, लांछन, लोहे का मोरचा।
कलंककर–(सं. वि.) चिह्न लगानेवाला, अपमानित करनेवाला।
कलंकधर–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
कलंकमय–(सं. वि.) चिह्नित, धब्बेदार।
कलंकित–(सं. वि.) चिह्नयुक्त, अपमानित, दोषयुक्त, लांछित।
कलंकी–(सं. वि.) चिह्नयुक्त, अपमानित, कलंकित, अपराधी, दोषी; (पुं.) कल्कि अवतार।
कलंगड़ा–(हिं. पुं.) तरबूज, एक प्रकार का गाना।
कलँगा–(हिं. पुं.) लोहे की ठठेरों की नकाशी करने की छेनी।
कलँगी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कलगी'।
कलंदर–(सं. पुं.) एक वर्णसंकर जाति।
कलंदरी–(हिं. स्त्री.) छोटा खेमा, रेशमी वस्त्रों की छोलदारी।
कल–(सं. वि.) अस्पष्टतया मधुर, मंद, श्रुतिमधुर, कोमल; (पुं.) अस्पष्ट मधुरध्वनि, वीर्य, साल वृक्ष।
कल–(हिं. अव्य.) आनेवाला या बाद का दिन, बीता हुआ या पिछला दिन; (मुहा.)–का–कुछ दिनों का, बिलकुल हाल का;–का छोकरा–उम्र में छोटा, नादान; –की कल पर छोड़ना–आगे का काम आगे के लिए टालना या छोड़ना; –को–कल, कल के दिन।
कल–(हिं वि.) काला का आदिपदिक रूप (जैसे–कलमुँहा)।
कल–(हिं. स्त्री.) आराम, चैन, शांति, युक्ति, कौशल, यंत्र, मशीन, पेंच या पुरजा; –बल–(पुं.) दाँव-पेंच; (मुहा.) –ऐंठना या घुमाना–यंत्र चलाना, किसी को अभीष्ट दिशा में प्रेरित करना; –बेकल होना–बेचैन होना; –हाथ में होना–किसी की गतिविधि अपने वश में रखना।
कलइया–(हिं. स्त्री.) कलाबाजी, कलैया।
कलई–(अ. स्त्री.) राँगा, राँगे का मुलम्मा जो ताँबे या पीतल के बरतन पर चढ़ाया जाता है, लेप, मुलम्मा, चूने की पोताई, सफेदी, वास्तविकता को छिपानेवाली बात, बनावट; –गर–(पुं.) कलई करनेवाला; –दार–(वि.) जिस पर कलई की गई हो; (मुहा.)–खुलना–किसी का पोल खुलना, वास्तविकता का पता चलना।
कलकंठ–(सं. पुं.) कोकिल, कोयल, हंस, कबूतर, तोता, मीठा शब्द; (वि.) मीठा शब्द करनेवाला।
कलकना–(हिं. क्रि. अ.) चीत्कार करना, चिल्लाना, चिघाड़ना।
कलकफल–(सं. पुं.) दाड़िम वृक्ष, अनार का पेड़।
कलकल–(सं. पुं.) कोलाहल, पानी के झरने का शब्द, झगड़ा, हल्ला।
कलकली–(हिं. स्त्री.) क्रोध, रोष।
कलकान, कलकानि–(हिं. स्त्री.) कोलाहल, कष्ट, दुःख।
कलकि, कलकी–(हिं. पुं.) देखें 'कल्कि'।
कलकूजिका–(सं. वि. स्त्री.) मधुर स्वर में बोलनेवाली, विलासिनी।
कलक्टर–(अं. पुं.) जिले का सर्वप्रधान प्रशासनिक अधिकारी, जिला मजिस्ट्रेट।
कलक्टरी–(हिं. स्त्री.) कलक्टर का पद, कलक्टर की कचहरी; (वि.) कलक्टर सम्बन्धी।
कलगट–(हिं. पुं.) बड़ी कुल्हाड़ी, कुल्हाड़ा।
कलगा–(हिं. पुं.) जटाधारी का पौधा।
कलगी–(फा. स्त्री.) टोपी, पगड़ी का फुँदना, मोर या मुर्गे के सिर पर की चोटी, सिर का एक आभूषण, ऊँची इमारत का शीर्ष।
कलघोष–(सं. पुं.) कोकिल, कोयल।
कलचिड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मधुर ध्वनि में बोलनेवाली चिड़िया।
कलचुरी–(सं. पुं.) भारतवर्ष का एक प्राचीन राजवंश, कार्तवीर्य राजा।
कलछा–(हिं. पुं.) बड़ा चम्मच, बड़ी डाँड़ी की करछुल।

कलछी-(हिं.स्त्री.) बड़ी डाँडी का चम्मच।
कलछुल-(हिं.स्त्री.) करछुल, इसमें बड़ी डाँडी के किनारे पर एक कटोरी होती है।
कलछुला-(हिं. पुं.) बड़ी करछुल।
कलछुली-(हिं. स्त्री.) छोटी करछुल।
कलजिब्भा-(हिं. वि.) काली जीभवाला, अनिष्ट विषयों का बोलनेवाला, जिसकी कही हुई अशुभ बात सत्य हो।
कलजीहा-(हिं. वि.) कलजिब्भा; (पुं.) काली जीभ का हाथी।
कलझँवाँ-(हिं.वि.) श्याम वर्ण का, साँवला।
कलट-(सं.पुं.) छाजन, छप्पर; (हिं.पुं.) दुःख, संताप।
कलटोरा-(हिं.पुं.) एक प्रकार का कबूतर।
कलत्र-(सं. पुं.) भार्या, पत्नी, स्त्री; -वान-(वि.) सस्त्रीक।
कलदार-(हिं. वि.) पेंचदार; (पुं.) टकसाल का बना हुआ रुपया।
कलदुमा-(हिं. वि.) काली पूँछवाला; (पुं.) काली दुम का कबूतर।
कलघूत-(सं. पुं.) चाँदी; (वि.) मधुर स्वर से भरा हुआ।
कलधौत-(सं. पुं.) सोना, चाँदी, अव्यक्त मधुर ध्वनि, मीठी बोली।
कलध्वनि-(सं.स्त्री.) कपोत, कबूतर, कोयल, मोर, मधुर ध्वनि।
कलन-(सं. पुं.) चिह्न, दोष, ग्रहण, ग्रास, कवर, ज्ञान, आचरण, संबंध, गणित की एक क्रिया, गर्भवेष्टन, गर्भ में शुक्र और रज का मिलकर एकरूप होना, एक महीने का गर्भ।
कलनाद-(सं. पुं.) कलहंस, मधुर ध्वनि, मीठी बोली।
कलप-(हिं. पुं.) देखें 'कल्प' और 'कलफ', खिजाब।
कलपना-(हिं.क्रि. अ.,स.) विलाप करना, दुःख करना, कल्पना करना, अटकल लगाना, काट-छाँट करना; (हिं. स्त्री.) देखें 'कल्पना'।
कलपाना-(हिं. क्रि., स.) तरसाना, दुःखी करना, रुलाना।
कलफ-(हिं.पुं.) चावल या अरारूट का पतला लेप जो वस्त्र को कड़ा करने के लिए उस पर पोता जाता है, माड़ी, चेहरे का कालापन, झाँई; -दार-(वि.) जिसमें कलफ दिया गया हो।
कलफा-(हिं. स्त्री.) दारचीनी, छाल।
कलब-(हिं. पुं.) टेसू के फूल से निकाला हुआ रंग।
कलबोर-(हिं. पुं.) गाँव की तरह का एक पौधा, इसकी जड़ रेशम रँगने के काम में आती है।
कलबूत-(हिं. पुं.) कालबूत, साँचा, ढाँचा, जूता सीने का ढाँचा, गोलंबर, टोपी बनाने या पगड़ी बाँधने का गावदुम ढोल ढाँचा, कालिब।
कलभ-(सं.पुं.) हाथी, ऊँट, धतूरे का वृक्ष।
कलभाषण-(सं. पुं.) मीठी बोली, बच्चों की बोली।
कलभी-(सं.स्त्री.) चंचु, चोंच, एक प्रकार का पौधा।
कलम-(अ. स्त्री.) लिखने का उपकरण, लेखनी, किसी पेड़ की हरी टहनी से उगाया जानेवाला पौधा या इसका ढंग, कनपटियों पर के बाल या छुरे से उनकी सीध में कटाई, चित्रकार की कूँची, लिखावट, लिपि, आदेश, हुक्म; -कारी-(स्त्री.) कलम की कारीगरी; -दान-(पुं.) कलम रखने का आधान; -बंद-(वि.) लिखा हुआ, लिपिबद्ध; (मुहा.) -करना-टहनी छाँटना या गाड़ना; -खींचना-लिखा हुआ कोई अंश काटना; -घसीटना या चलाना-लिखना; -तोड़ना-लिखने में भावों की अभिव्यक्ति में पराकाष्ठा प्रदर्शित करना।
कलमकीली-(हिं. स्त्री) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
कलमख-(हिं. पुं.) देखें 'कल्मष'।
कलमना-(हिं. क्रि. स.) कलम काटना, टुकड़े करना।
कलमस-(हिं. पुं.) देखें 'कल्मष'।
कलमलना-(हिं.क्रि.अ.) संकुचित स्थान में अंग को इधर-उधर घुमाना, कुलबुलाना।
कलमलाना-(हिं. क्रि. अ.) कुलबुलाना, कसमसाना।
कलमी-(हिं.वि.,पुं.) कलम काटकर लगाया हुआ (पेड़)।
कलमुहाँ-(हिं.वि.) काले मुँहवाला, कलंकित।
कलरव-(सं. पुं.) कबूतर, कोयल, मीठी वाणी, कूजना, मधुर ध्वनि।
कलरिन-(हिं. स्त्री.) जोंक लगानेवाली स्त्री।
कलल-(सं. पुं.) गर्भ में लिपटी हुई झिल्ली, जरायु।
कलवरिया-(हिं. स्त्री.) कलवार की दुकान, मधुशाला।
कलवार-(हिं. पुं.) एक जाति जो मद्य बनाती और बेचती है।
कलविंक-(सं. पुं.) चटक पक्षी, गौरैया, चँवर, कलंक, [illegible], [illegible], तरबूज।
कलश-(सं. पुं.) घड़ा, गगरा, घरों के शिखर पर का कँगूरा, सिरा, चोटी, आठ सेर की तौल।
कलशी-(सं. स्त्री.) छोटा घड़ा, गगरी।
कलस-(सं. पुं.) देखें 'कलश'।
कलसरा-(हिं. स्त्री.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
कलसा-(हिं. पुं.) पानी रखने का घड़ा, गगरा, शिवालय इत्यादि का कँगूरा।
कलसिरी-(हिं. स्त्री.) झगड़ालू स्त्री।
कलसी-(हिं. स्त्री.) छोटी गगरी, छोटा कँगूरा।
कलहंस-(सं. पुं.) राजहंस, जलकुक्कुट, श्रेष्ठ राजा, परमात्मा, ब्रह्म, ब्राह्मण, एक प्रकार का राग, एक वर्णवृत्त।
कलह-(सं. पुं.) विवाद, झगड़ा, पथ, तलवार का खोल, धोखा, झिड़की, छल, लड़ाई।
कलहकार, कलहकारक, कलहकारी-(सं. वि.) झगड़ालू, विवादप्रिय।
कलहप्रिय-(सं.वि.) जिसको कलह बहुत अच्छा लगता हो, झगड़े से प्रसन्न रहनेवाला, झगड़ालू।
कलहप्रिया-(सं. स्त्री.) सारिका, मैना; (वि. स्त्री.) झगड़ालू।
कलहांतरिता-(सं. स्त्री.) वह नायिका जो नायक को क्रुद्ध करने के बाद में स्वयं पछताती है।
कलहारी-(सं.वि.स्त्री.) कलह करनेवाली, झगड़ालू, कर्कशा।
कलहास-(सं. पुं.) मधुर तथा अस्फुट ध्वनियुक्त हँसी।
कलहिनी-(सं. स्त्री.) विवाद करनेवाली स्त्री, झगड़ालू स्त्री।
कलही-(सं. वि.) कलहयुक्त, झगड़ालू।
कला-(सं. स्त्री.) गुण, ब्याज, शिल्प, कारीगरी, अंश, तीस काष्ठा का समय, नाच, कपट, राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग, चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग-इन सोलहों का नाम अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा और पूर्णामृता है; अग्निमण्डल के दस भागों में से एक-इनके नाम धूम्रा, अर्चि, उष्मा, ज्वलिनी, विस्फुलिंगिनी, सुश्री, सुरूपा, कपिला और हव्यकव्यवहा है, दिन का १८०० वाँ भाग, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], इसके मुख्य-

तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरीचि, ज्वालिनी, रुचि, सुषुम्ना, भोगदा, विश्वा, बोधिनी, धारिणी और क्षमा हैं; जिह्वा, छन्द की मात्रा, स्त्री का रज, छटा, शोभा, प्रभा, शौर्यादि गुण, विभूति, कौतुक, खेल, मात्रायुक्त एक लघु वर्ण, कपट, छल, करतब, युक्ति, ढंग, आयुर्वेद के अनुसार शरीर के सोलह भागों में से एक, इनके नाम—प्राण, श्रद्धा, व्योम, वायु, चल, पृथ्वी, मन, इन्द्रिय, अन्न, वीर्य, तप, कर्म, लोक और मान हैं; नटों का व्यायाम, कसरत, यन्त्र, एक वर्णवृत्त का नाम, तन्त्र के अनुसार चौसठ कलाओं के नाम ये हैं—गायन, वाद्य, नृत्य, चित्रकारी, तिलक लगाना, तंडुल कुसुमावली, पुष्पास्तरण, अंगराग, मणि, भूमिकर्म, शयनरचना, उदकवाद्य, पिचकारी छोड़ना (उदकापात), चित्रयोग, माल्यग्रथन, वाल सँवारना, चोटी गूँथना, नेपथ्य प्रयोग, कर्णपत्रभंग, गंधयुक्ति, अलंकारयोग, ऐन्द्रजाल, स्वरूप वनाना, हस्तलाघव, रसोई वनाना, पान आदि भोजन, सूई का काम, कसीदा, वीणा-वाद्य, प्रहेलिका, अन्त्याक्षरी, कूटक योग, पुस्तक-वाचन, नाट्यकला, समस्यापूर्ति, विनाई का काम, तक्षकर्म (मरम्मत करना), वढ़ईगिरी, राजगीर का काम, धातुपरीक्षा, धातुवाद, मणिराग ज्ञान, वृक्षायुर्वेद, सजीवद्यूत, चिड़ीवाजी, अभ्यंग, संक्षप में वात, सांकेतिक अर्थ समझना, देशभाषाविज्ञान, पुष्पशकटिका, शुभाशुभ ज्ञान, यंत्रमंत्रिका, धारणमंत्रिका, मानसी संपाद्य, काव्यक्रिया, अभिधानकोश, छन्दज्ञान, क्रियाकल्प, ठगी, वस्त्रगोपन, द्यूतक्रीड़ा, चौपड़ पासे का क्रीड़न, नम्रता, मल्लयुद्ध और व्यायाम हैं।

कलाई—(हिं. स्त्री.) हथेली का ऊपरी जोड़, मणिबन्ध, गट्टा, एक प्रकार का व्यायाम, पूला, सूत की लच्छी, हाथी के कण्ठ में बाँधने का कलावा, करछा, अलान, सीकड़।

कलाकंद—(हिं. पुं.) एक प्रकार की बहुत स्वादिष्ट बरफी।

कलाकार—(हिं. पुं.) किसी कला को जाननेवाला, चन्द्रमा।

कलाकुल—(सं. पुं.) विष।

कलाकुशल—(सं. वि.) किसी कला में निपुण।

कलाकृति—(सं. स्त्री.) कलापूर्ण रचना।

कलाकेलि—(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।

कला-कौशल—(सं.पुं.) कलाकी चातुरी, शिल्प

कलात्मक—(हिं. वि.) कलापूर्ण।

कलाजंग—(हिं.पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

कलाद(क)—(सं.पुं.) स्वर्णकार, सोनार।

कलादा—(हिं. पुं.) हाथी के मस्तक पर महावत के बैठने का स्थान।

कलाधर—(सं. पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा, शिव, दण्डक वृत्त का एक भेद; (वि.) कलाओं का ज्ञाता।

कलानाथ, कलानिधि—(सं. पुं.) चन्द्रमा, एक गन्धर्व का नाम।

कलाप—(सं. पुं.) समूह, ढेर, मोर की पूंछ, मेखला, चन्द्रहार, अलंकार, तरकश, चन्द्रमा, शिव, पूला, मुट्ठा, कमर-वन्द, करधनी, कातन्त्र व्याकरण, गौ, व्यापार, वाण।

कलापक—(सं.पुं.) हाथी के गले का रस्सा, समूह, झुण्ड, चार श्लोकों का समूह।

कलापट्टी—(हिं. स्त्री.) नाव की पेंदी के छेद में सन वगैरह भरना।

कलापिनी—(सं. स्त्री.) रात्रि, मयूरी, मोरनी, नागरमोथा।

कलापी—(सं. पुं.) पीपल का वृक्ष, मोर, कोयल, मोर के पर फलाकर नाचने का समय; (वि.) तरकश वाँधनेवाला, समूह में रहनेवाला।

कलापूर—(सं.पुं.) एक प्रकार का वाजा।

कलाबत्तू—(हिं. पुं.) रेशम पर लपेटा हुआ सोने-चाँदी का तार जो धाग के समान पतला होता है, इसके वेल-वूटे साड़ियों पर वनाये जाते हैं।

कलावाज—(हिं.वि.) नट-क्रिया करनेवाला।

कलावाजी—(हिं. स्त्री.) उछलने-कूदने की विद्या।

कलामृत—(सं. पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा।

कलामोचा—(हिं. पुं.) एक प्रकार का वंगाल में उपजनेवाला धान।

कलार—(हिं. पुं.) कलवार।

कलाल—(हिं.पुं.) मद्य वनानेवाला, कलवार।

कलालाप—(सं. पुं.) भ्रमर, भौंरा।

कलावंत—(हिं. वि.) देखें 'कलावान्'।

कलावती—(सं. स्त्री.) एक परी का नाम, गंगा; (वि. स्त्री.) शोभायुक्त।

कलावा—(हिं. पुं.) टेकुवे में लपेटा हुआ सूत का लच्छा, विवाहादि शुभ अवसर पर पीला रँगा हुआ सूत का डोरा, हाथी की गरदन।

कलावान—(सं. पुं.) नट, चन्द्रमा; (वि.) कला जाननेवाला।

कलासी—(हिं. स्त्री.) पत्थर या लकड़ी के जोड़ में की रेखा।

कलिंग—(सं. पुं.) इन्द्रजव, भूरे रंग का एक पक्षी, कुटज वृक्ष, सिरिस का पेड़, कुरैया, अश्वत्थ वृक्ष, पीपल का पेड़, भारतवर्ष का एक जनपद (उड़ीसा)।

कलिंगक—(सं. पुं.) इन्द्रजव, कुटज का पेड़, तरवूज, पाकर का वृक्ष, पपीहा, वहेड़े का वृक्ष।

कलिंगड़ा—(हिं. पुं.) एक राग जो रात के चौथे प्रहर में गाया जाता है।

कलिंद—(सं.पुं.) सूर्य, वहेड़े का पेड़, एक पर्वत जिसमें से यमुना नदी निकली है।

कलिंदक—(सं. पुं.) कुम्हड़ा, तरवूज।

कलिंदकन्या, कलिंदजा, कलिंदनंदिनी—(सं. स्त्री.) यमुना।

कलिंदा—(सं. पुं.) तरवूज।

कलि—(सं. पुं.) वहेड़े का वृक्ष, शूरवीर, विवाद, लड़ाई-झगड़ा, चौथा युग जिसमें अनीति, पाप इत्यादि की अधिकता रहती है, क्लेश, दुःख, युद्ध, लड़ाई, छन्द में रगण का एक भेद।

कलिका—(सं. स्त्री.) विना खिला हुआ फूल, कली, गुंजा, घुँघची, वीन या सितार की जड़ का भाग, एक प्रकार का प्राचीन काल का वाजा, छन्द विशेष।

कलिकान—(हिं. वि.) व्यग्र।

कलिकाल—(सं. पुं.) कलियुग।

कलित—(सं. वि.) विदित, प्राप्त, गिना हुआ, अलग किया हुआ, अर्जित, आश्रित, समझा हुआ, कहा हुआ, वँधा हुआ, गृहीत, पकड़ा हुआ, सुन्दर, सजाया हुआ।

कलिमल—(सं. पुं.) पाप।

कलियाना—(हिं. क्रि. अ.) कली निकलना, अंकुरित होना, पक्षियों के नये पर या पंख निकलना।

कलियारी—(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है।

कलियुग—(सं.पुं.) चौथा युग, वर्तमान युग।

कलियुगाद्या—(सं. स्त्री.) कलियुग की पहली तिथि, माघी पूर्णिमा जिस दिन कलियुग का आरम्भ हुआ था।

कलियुगी—(सं. वि.) कलियुग में उत्पन्न होनेवाला, पापी, दुराचारी।

कलिल—(सं. वि.) मिश्रित, मिला हुआ, घना, भरा हुआ।

कलिवर्ज्य—(सं. वि.) कलियुग में न करने योग्य (कर्म)।

कलिहारी—(हिं. स्त्री.) देखें 'कलियारी'।

कलींदा—(हिं. पुं.) तरवूज।

कली–(सं. स्त्री.) बिना खिला हुआ फूल, कलिका, मुंह बंधा हुआ फूल पक्षी का नया पर, अक्षतयोनि कन्या; (हि. स्त्री.) हुक्के के नीचे का भाग, अंगरखे, कुरते इत्यादि में लगाने का तिकोना कटा हुआ कपड़ा, वैष्णवों का एक तिलक, पत्थर या सीप का फूंका हुआ छोटा टुकड़ा; (मुहा.) दिल की कली फूटना–या खिलना–अति प्रसन्न होना।

कलीसिया–(हि. स्त्री.) ईसाइयों या यहूदियों की एक धार्मिक मण्डली।

कलुआबीर–(हि. पुं.) जादू-टोने के एक प्रधान देवता।

कलुख–(हि. पुं.) देखें 'कलुष'।

कलुखाई–(हि. स्त्री.) देखें 'कलुषता'।

कलुखी–(हि. वि.) देखें 'कलुषी'।

कलुष–(सं. पुं.) मलिनता, मैलापन, पाप, क्रोध; (वि.) मलिन, निन्दित, कुत्सित, दुःखित, पापी, क्षुब्ध, घबड़ाया हुआ, असमर्थ।

कलुषता, कलुषाई–(सं., हि. स्त्री.) मलिनता, अंधेरा, घबड़ाहट, पाप, दोष।

कलुषित–(सं. वि.) मलिन, मैला, दूषित, पापयुक्त, असमर्थ, दुःखित, क्षुब्ध, घबड़ाया हुआ, कषाय, कसैला।

कलुषी–(सं. वि.) मलिन, पापी; (वि. स्त्री.) पापिनी, मैली।

कलूटा–(हि. वि.) बहुत काले रंग का।

कलूना–(हि. पुं.) एक प्रकार का मोटा धान।

कलूला–(हि. पुं.) कुल्ली।

कलेउ–(हि. पुं.) कलेवा, विवाह के समय वर का भोजन।

कलेजई–(हि. पुं.) एक प्रकार का बगनी रंग।

कलेजा–(हि. पुं.) छाती के भीतर का भाग, वक्षःस्थल, छाती; (मुहा.) –उछलना–हर्ष, आनंद आदि के कारण भावावेग होना; –कटना–दिल को चोट पहुंचना; –कांपना–भयभीत होना; –काढ़ना या निकालना–दुःख पहुंचाना; –खाना–अत्यधिक संताप देना; –छिदना या बिंधना–कड़ी बात से दिल को दुःख होना; –जलना–बहुत दुःख होना, बदहज़मी के कारण कलेजे में जलन होना; –जलाना–अत्यन्त कष्ट देना; –टूक-टूक होना–हृदय विदीर्ण होना; –ठंडा करना–सन्तुष्ट करना; –थाम कर रह जाना–अपार कष्ट को बिना आह किये सह लेना; –धक धक करना या धड़कना–भय से हृत्गति का असाधारण तीव्र होना; –धक से हो जाना–एकाएक भय या विस्मय से सुन्न हो जाना; –निकालकर रखना–अपनी अत्यन्त प्रिय वस्तु को देना; –पक जाना–किसी के उत्पीड़न से ऊब जाना; –पत्थर का करना–जी कड़ा करना; –फटना–किसी का दुःख देखकर घबड़ा जाना; –बांसों उछलना–आनंदित भावावेश में विह्वल होना; –मुंह को आना–कष्ट आदि से बहुत व्याकुल होना; कलेजे पर छुरी चल जाना–हृदय पर गहरा आघात होना; कलेजे पर सांप लोटना–किसी बात या व्यवहार पर बहुत संताप होना; पूर्व घटना को स्मरण करके शोकाकुल होना; कलेजे पर हाथ फेरना या रखना–किसी बात को औचित्य के निदर्शन के लिए अपनी अंतरात्मा पर आधारित करना; कलेजे में आग लगना–द्वेष होना, शोक होना; कलेजे में डालना–प्यार से पास में रखना; कलेजे में तीर लगना–दिल में गहरी चोट लगना; कलेजे में पैठना–भेद लेने के लिए मेल बढ़ाना; कलेजे से लगना–आलिंगन करना; कलेजे से लगाना–छाती से लगाना।

कलेजी–(हि. स्त्री.) भेड़-बकरे के कलेजे का मांस।

कलेवर–(सं. पुं.) शरीर, देह, चोला; (मुहा.)–बदलना–एक शरीर या रूप छोड़कर दूसरा ग्रहण करना।

कलेवा–(हि. पुं.) प्रातराश, प्रातःकाल का लघु भोजन, जलपान, विवाह के समय वर को ससुराल में भोजन कराना; (क्रि. प्र.)–करना–निगल जाना।

कलेश–(हि. पुं.) देखें 'क्लेश'।

कलैया–(हि. स्त्री.) नीचे सिर और ऊपर पैर करके उलट जाने की क्रिया।

कलोर–(हि. वि.) जवान बछिया जो ब्याई या गाभिन न हुई हो।

कलोल–(हि. पुं.) केलि, क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।

कलोलना (हि. क्रि. अ.) कल्लोल करना, क्रीड़ा करना।

कलौंजी–(हि. स्त्री.) काला जीरा, मंगरैला, एक प्रकार की तरकारी जो परवल, करैला इत्यादि के फल को फाड़कर इनमें मसाला भरकर तैयार की जाती है।

कलौंस–(हि. वि.) कालापन लिये हुए; (पुं.) कालापन, कलंक।

कल्क–(सं. पुं.) पत्थर पर पीसी हुई वस्तु, चूर्ण, बुकनी, पीठी, गीली या भिगोई हुई औषधियों को पीसकर बनाई हुई चटनी, घृत या तैल का बचा हुआ भाग, अवलेह, दम्भ, घमंड, बहेड़े का वृक्ष, किट्ट, मैल, कान का मैल, लोहबान, हाथीदांत, पापी।

कल्कि–(सं. पुं.) विष्णु का दसवां अवतार; –पुराण–(पुं.) अठारह पुराणों के अतिरिक्त इस नाम का पुराण।

कल्की–(सं. वि.) पापों से युक्त; (पुं.) देखें 'कल्कि'।

कल्प–(सं. पुं.) विधान, विधि, रीति, चौदह मन्वन्तर का काल अर्थात् ४३२००००००० वर्ष, प्रलय, कल्पवृक्ष, विकल्प, वेद के षडंग के अन्तर्गत वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि करने का विधान है, वाञ्छा, पक्ष, अभिप्राय, प्रलय, विभाग, प्रकरण, आयुर्वेद के अनुसार रोगनिवृत्ति का एक प्रधान उपाय।

कल्पक–(सं. पुं.) नापित, कचूर, ग्रन्थकर्ता; (वि.) बनानेवाला, रचनेवाला।

कल्पकतरु–(सं. पुं.) देखें 'कल्पतरु'।

कल्पकार–(सं. पुं.) नापित; (वि.) वेश सजानेवाला, आरोपक, लगानेवाला।

कल्पक्षय–(सं. पुं.) प्रलय, संसार का नाश।

कल्पगा–(सं. स्त्री.) गंगा नदी।

कल्पतरु, कल्पद्रुम–(सं. पुं.) स्वर्ग का वह वृक्ष जो मांगने से सकल पदार्थ देता है, मुंहमांगी वस्तु देनेवाला, सुपारी का वृक्ष, वैद्यक का एक रस विशेष।

कल्पन–(सं. पुं.) रचना, बनावट, विधान।

कल्पना–(सं. स्त्री.) अनुमान, अटकल, रचना, बनावट, सजावट, अर्थापत्ति, प्रमाण, अध्यारोप, नये विषय का उद्भावन, काव्य, उपन्यास, चित्र आदि को मन से रचना; –चित्र–(पुं.) कल्पना में सोचा हुआ चित्र; –प्रसूत–(वि.) कल्पना से उपजा हुआ; –शक्ति–(स्त्री.) मन की वह शक्ति जो अनुमान करती है; –सृष्टि–(स्त्री.) कल्पना की रचना।

कल्पनी–(सं. स्त्री.) कतरनी, कैंची।

कल्पनीय–(सं. वि.) कल्पना करने योग्य, अनुमान के योग्य।

कल्पलता–(सं. स्त्री.) [illegible]।

कल्पवास–(सं. पुं.) [illegible]।

कल्पविटप, कल्पवृक्ष–(सं. पुं.) [illegible]।

कल्पसूत्र–(सं. पुं.) वैदिक कर्मों के अनुष्ठान बतलानेवाला ग्रन्थ।
कल्पांत–(सं. पुं.) प्रलय, ब्रह्मा के दिन का अन्त।
कल्पांतर–(सं.पुं.) संसार की दूसरी उत्पत्ति।
कल्पातीत–(सं.पुं.) कल्प काल की अपेक्षा अधिक दिनों तक रहनेवाला देवता।
कल्पित–(सं. वि.) रचित, कल्पना किया हुआ, माना हुआ, सज्जित, सजा हुआ, लगाया हुआ, ठीक किया हुआ, दिया हुआ, बनावटी, कृत्रिम।
कल्पितोपमा–(सं.स्त्री.) ऐसी उपमा जिसमें प्रकृत उपमा न मिलने से कल्पना की आवश्यकता होती है।
कल्मष–(सं.पुं.) मलिनता, मैलापन, पाप, एक नरक विशेष, पीव, मवाद; (वि.) पापी, दोषी, गंदा।
कल्माष–(सं. वि.) काला, चितकबरा।
कल्माषी–(सं.स्त्री.) कालिन्दी, यमुना नदी।
कल्य–(सं. पुं.) प्रातःकाल, सवेरा, मधु, सुरा, शुभ समाचार, बधाई; (वि.) चतुर, दक्ष, नीरोग, प्रस्तुत।
कल्यपाल–(सं.पुं.) कलवार, मद्य बनानेवाला।
कल्या–(सं. स्त्री.) मद्य, कल्याण-वाक्य।
कल्याण–(सं. पुं.) शुभ, मंगल, भलाई, सोना, एक रोग विशेष; (वि.) भला; –कर–(वि.) भलाई करनेवाला; –कारक–(वि.) कल्याणप्रद।
कल्याणी–(सं. वि. स्त्री.) कल्याण करनेवाली, सुन्दरी; (स्त्री.) गाय, प्रयाग की एक प्रसिद्ध देवी।
कल्यान–(हि. पुं.) देखें 'कल्याण'।
कल्लर–(हि. पुं.) काली मिट्टी, रेह, नोना, ऊसर भूमि।
कल्ला–(हि. पुं.) अंकुर, अँखुआ, कोंपल हरी टहनी, कपोल के भीतर का अंग, जबड़ा, जबड़े के नीचे गले तक का भाग, विवाद, झगड़ा; (मुहा.) –दबाना–बोलने से रुकना; –फुलाना–मुंह फुलाना; –बजाना–झगड़ना; –मारना–गाल बजाना।
कल्लातोड़–(हि. वि.) प्रबल, बराबरी करनेवाला।
कल्लाना–(हि. क्रि. अ.) चमड़े के ऊपरी भाग में जलन होना।
कल्लू–(हि. वि.) काले रंगवाला।
कल्लोल–(सं. पुं.) बड़ी लहर, तरंग, हर्ष, आनन्द।
कल्लोलित–(सं. वि.) तरंगयुक्त।
कल्लोलिनी–(सं. स्त्री.) नदी।
कल्लोलिनी-वल्लभ–(सं. पुं.) समुद्र।
कल्ह–(हि. पुं., अव्य.) देखें 'कल'।
कल्हार–(हि. पुं.) एक प्रकार का फूल।
कल्हारना–(हि. क्रि. अ., स.) थोड़े घी या तेल में भूनना, दुख से कराहना, चिल्लाना, पीड़ा का शब्द करना।
कवच–(सं. पुं.) उरश्छद, आवरण, छिलका, सन्नाह, भूर्जपत्र, नगाड़ा, पटह, दारचीनी, मंत्र द्वारा शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों की रक्षा, यंत्र।
कवचधर–(सं. वि.) कवच धारण करनेवाला।
कवचपत्र–(सं. पुं.) भूर्जपत्र, भोजपत्र।
कवटी–(सं. स्त्री.) कपाट, केवाड़ी।
कवन–(हि. सव.) देखें 'कौन'।
कवर–(हि.पुं.) ग्रास, कौर; (सं.पुं.) केश-पाश; (अं.पुं.) आच्छादन, ढपना, पुटक।
कवरना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'कौरना'।
कवरा, कवरी–(हि. स्त्री.) चोटी, जूड़ा।
कवर्ग–(सं. पुं.) ककारादि पाँच वर्णों का समूह; क, ख, ग, घ, ङ अक्षरों का नाम।
कवर्गीय–(सं. वि.) 'क' वर्ग के अक्षरों से निकला हुआ।
कवल–(हि. पुं.) ग्रास, कौर, वह मात्रा जो मुख में सहज में चली जाती है, कुल्ली, कोण, किनारा, प्रतिज्ञा, एक कुजाति का घोड़ा।
कवलित, कवलीकृत–(सं. वि.) खाया हुआ, निगला हुआ।
कवाट–(सं. पुं.) कपाट, किवाड़ा।
कवाम–(अ. पुं.) पकाकर मधु के समान बनाया हुआ रस, किमाम, चाशनी।
कवायद–(अ. पुं.) नियमावली, कार्य-विधि; (स्त्री.) सेना या सिपाहियों के दल का कसरत करना।
कवि–(सं. पुं.) कविता, गान इत्यादि का रचयिता, छन्द बनानेवाला पण्डित, शुक्र, सूर्य, ब्रह्मा, ऋषि, वैद्य।
कविक–(सं. पुं.) कवि, लगाम।
कविका–(सं.स्त्री.) लगाम, केवड़े का फूल।
कविता–(सं. स्त्री.) पद्यमय वर्णन, काव्य।
कविताई–(हि. स्त्री.) कविता, कवित्व।
कवित्त–(हि. पुं.) दण्डक के अन्तर्गत चार पदों का काव्य जिसके प्रत्येक चरण में इकतीस-इकतीस अक्षर होते हैं; इसको घनाक्षरी भी कहते हैं।
कवित्व–(सं. पुं.) कविता रचने की शक्ति, ज्ञान, काव्य का गुण।
कविनासा–(हि. स्त्री.) देखें 'कर्मनाशा'।
कविपुत्र–(सं. पुं.) शुक्राचार्य, भार्गव ऋषि।
कविराज–(सं. पुं.) श्रेष्ठ कवि, वंग-देशीय वैद्य की उपाधि।
कविराजी–(हि. स्त्री.) वंगदेशीय वैद्य चिकित्सा।
कविराय–(हि. पुं.) देखें 'कविराज', भाट, श्रेष्ठ कवि।
कविलास–(हि. पुं.) कैलास, स्वर्ग।
कविवर–(सं. पुं.) श्रेष्ठ कवि।
कवेरा–(हि. पुं.) ग्रामीण, देहाती।
कवेला–(हि. पुं.) चक्करदार कील, कौवे का बच्चा।
कवोष्ण–(सं.वि.) थोड़ा गरम, गुनगुना।
कव्य–(सं. पुं.) जो अन्न पितरों के निमित्त दिया जावे; –वाह–(पुं.) अग्नि, आग।
कश, कशा–(सं. पुं., स्त्री.) चाबुक, कोड़ा।
कशाघात–(सं. पुं.) चाबुक की मार।
कशिक–(सं. पुं.) नकुल, नेवला।
कशिका–(सं. स्त्री.) चमड़े का चाबुक।
कशीदा–(फा. पुं.) सुई-धागे से कपड़े पर बनाया हुआ बेल-बूटा।
कशेरु, कशेरुक, कशेरुका–(सं. पुं.) पीठ की हड्डी, रीढ़, एक प्रकार की घास की जड़ जिसका ठोस भाग खाया जाता है।
कश्चित्–(सं. अव्य.) कोई, एक न एक।
कश्मल–(सं. पुं.) मूर्छा रोग; (वि.) मलिन, पापी।
कश्मीर–(सं. पुं.) काश्मीर देश जो पंजाब के उत्तर में पहाड़ों से घिरा हुआ है; –ज–(पुं.) केसर।
कश्मीरी–(हि. वि.) कश्मीर देश सम्बन्धी, कश्मीर में उत्पन्न।
कश्यप–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, एक प्रजापति, कच्छप, कछुवा, एक प्रकार का हिरन, सप्तर्षिमण्डलांतर्गत एक तारा।
कष–(सं. पुं.) कसौटी, सान, घिसाव, जाँच, परीक्षा।
कषण–(सं. पुं.) कसौटी, घर्षण, रगड़।
कषा–(सं. स्त्री.) कशा, चाबुक।
कषाय–(सं. पुं.) कसलापन, कल्क, काढ़ा, निर्यास, उबटन, आसक्ति, लाल रंग, कलियुग, निर्विकल्प समाधि का एक विघ्न; (वि.) रँगा हुआ, कसैला, खुशबूदार, अनुभवहीन, रंगदार; (पुं.) जैनशास्त्र में क्रोध, मान, माया तथा लोभ कषाय कहलाते हैं।
कषायता–(सं. स्त्री.) कसैलापन।
कषायफल–(सं. पुं.) पुंगीफल, सुपारी।
कषायित–(सं. वि.) लाल रँगा हुआ।
कषित–(सं.वि.) परीक्षित, चोट खाया हुआ।

कष्ट–(सं. पुं.) पीड़ा, व्यथा, क्लेश, दुःख, संकट, आपत्ति; (वि.) दुःखकर; –कर–(वि.)दुःखजनक, पीड़ा देनेवाला; –कल्पना–(स्त्री.)कठोर अनुमान जिसके स्थिर करने में बड़ा कष्ट होता है; –कारक–(वि.) दुःखजनक, क्लेश देनेवाला; –जीव–(वि.) कष्ट से जीविका निर्वाह करनेवाला; –तर–(वि.)अधिक कष्ट देनेवाला; –लभ्य–(वि.) कठिनता से प्राप्त होनेवाला; –सह–(वि.) कष्ट या दुःख सहन करनेवाला; –साध्य–(वि.) कष्ट से आरोग्य होनेवाला, कठिनाई से होनेवाला।

कष्टार्जित–(सं.वि.)कष्ट से कमाया हुआ।

कष्टार्तव–(सं. पुं.) स्त्री को रजोधर्म में अत्यधिक पीड़ा होना।

कष्टी–(सं. स्त्री.) प्रसव का दुःख उठानेवाली स्त्री।

कस–(सं.,हि.पुं.) कसौटी, जांच, परीक्षा, शक्ति, वश, रोक, अवरोध, सार, निचोड़, तलवार की लचक, बांधने की रस्सी, मल्लयुद्ध की युक्ति, कसाव, तत्त्व; (हि. अव्य.) किस प्रकार से, कैसे; (मुहा.)––में रखना या लाना–वश में करना।

कसक–(हि. स्त्री.) पीड़ा जो आघात पड़ने पर हलकी-सी उठती है, पुराना वैर, सहानुभूति, अभिलाषा; (मुहा.) –निकालना-पुरानी शत्रुता का बदला लेना।

कसकना–(हि.क्रि.अ.)पीड़ा होना,दुखना, रह-रहकर पीड़ा उठना, बुरा लगना।

कसकुट–(हि. पुं.) एक मिश्र धातु जो तांबा और जस्ता बराबर भागों में मिलाकर बनती है, कांसा।

कसगर–(हि. पुं.) एक जाति के लोग जो प्रायः मुसलमान होते हैं।

कसढंड–(हि. पुं.) कांसे के टूटे-फूटे पात्रों का अंश।

कसन–(सं. पुं.) कास, खांसी, वेदना, पीड़ा; (हि. स्त्री.) बन्धन, कसाई, कसने की रस्सी, कसने की विधि।

कसना–(हि.क्रि.स.) बांधने समय रस्सी इत्यादि को कसकर खींचना, तानना, जकड़ना, दबाना, बंधन बैठाना, [illegible] [illegible], घोड़े-गाड़ी को सज्जित करना, दबाना, तैयार होना, [illegible], [illegible], [illegible], परीक्षा करना, कष्ट देना, भर आना, सोने की परीक्षा करने के लिये कसौटी पर घिसना; कसाव–(अ.पुं.) [illegible]; कसा-[illegible]–(पुं.) [illegible]; [illegible]–

प्रस्थान करने के लिये उद्यत।

कसनि–(हि. स्त्री.) बंधन, बँधाई।

कसनी–(हि. स्त्री.) रस्सी, चोली, बेठन, खोल, कसौटी, परीक्षा, जांच, परख, हथौड़ा, कसैलापन, काढ़ा।

कसबल–(हि.पुं.) पराक्रम, साहस, हिम्मत।

कसबाती–(हि.वि.) कसबे का रहनेवाला।

कसबिन, कसबी–(हि. स्त्री.) वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री, पतुरिया।

कसम–(अ. स्त्री.) शपथ, सौगंध, शपथपूर्वक की हुई प्रतिज्ञा; (मुहा.)–खाना–प्रतिज्ञा करना; –खाने को–नाममात्र को।

कसमसाना–(हि.क्रि.अ.) हिलना, डोलना, उसकना, ऊबना, घबड़ा जाना, हिचकना, बेचैन होना, उकताना, आगापीछा करना।

कसमसाहट, कसमसी–(हि. स्त्री.) व्यग्रता, घबड़ाहट।

कसर–(अ. स्त्री.) कमी, न्यूनता, घाटा; (मुहा.)–करना या रखना–किसी बात के करने में कोताही रखना; –खाना–घाटा सहना; –निकलना–बदला मिलना; –निकालना–वैर फेरना, बदला लेना।

कसरत–(अ. स्त्री.) व्यायाम, कवायद।

कसरती–(हि. वि.) परिश्रमी, व्यायाम करनेवाला।

कसरवानी–(हि. पु.) विहार के बनियों की एक शाखा।

कसरहट्टा–(हि. पुं.) वह हाट जहां कसेरे बरतन बनाकर बेचते हैं।

कसली–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा फावड़ा।

कसवाना–(हि क्रि. स.) कसने का काम दूसरों से कराना।

कसवार–(हि. पुं.) एक प्रकार की मोटी जाति की ईख।

कसहँड़–(हि.पुं.) कांसे के बरतनों के टुकड़े।

कसाई–(हि. पुं.) वधिक, घातक; (वि.) निष्ठुर, निर्दय, क्रूर-[illegible]।

कसाना–(हि. क्रि. अ., स) किसी पदार्थ में कसैलापन आ जाना, कसैला स्वाद पड़ना, [illegible], [illegible]।

कसार–(हि. पुं.) घी में भुना हुआ तथा चीनी मिला हुआ आटा।

कसाला–(हि.पु.) क्लेश, कष्ट, परिश्रम।

कसाव–(हि. पुं.) कसैलापन, आकर्षण, खिंचाव।

कसावट–(हि. स्त्री.) आकर्षण, खिंचाव।

कसिया–(हि. पु.) [illegible]

कसियाना–(हि. क्रि. अ.) [illegible] होना,

कसाव आ जाना।

कसी–(हि. स्त्री.) भूमि नापने की उनचास इंच की रस्सी।

कसीटना–(हि. क्रि. स.) कसना।

कसीदा–(हि. पुं.) देखो 'कशीदा'।

कसीस–(हि. पुं.) लोहे का एक प्रकार का मुरचा।

कसेरहट्टा–(हि. पुं.) कसेरों का हाट।

कसेरा–(हि. पुं.) कांसे, फूल इत्यादि के पात्र बनाने तथा बेचनेवाला बनिया।

कसेरु–(हि. पुं.) एक प्रकार के मोथे की गँठीली जड़ जो खाने में मीठी होती है।

कसैया–(हि. वि.) कसकर बांधनेवाला, परीक्षक, जांचने या परखनेवाला, गोघातक।

कसैला–(हि. वि.) कषाय स्वाद का, कसानेवाला, जीभ को ऐंठनेवाला; –पन–(पुं.) कषाय रस या स्वाद।

कसैली–(हि. स्त्री.) पुंगीफल, सुपारी।

कसोरा–(हि.पुं.) कटोरा, मिट्टी का कटोरा।

कसौंदा–(हि. पुं.) हरफा रेवड़ी का फल।

कसौटी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर सोना रगड़कर उसके रंग से उसकी परीक्षा की जाती है, परीक्षा जांच, परख।

कस्तरी–(हि. स्त्री.) दूध पकाकर रखने का मिट्टी का पात्र।

कस्तूरा–(हि. पुं.) कस्तूरी मृग, लोमड़ी के समान एक पशु, जिस सीप में से मोती निकलता है, एक पुष्टिदायक दवा।

कस्तूरिका–(सं. स्त्री.) कस्तूरी।

कस्तूरिया–(हि. पुं.) कस्तूरी मृग, कस्तूरा; (वि.) कस्तूरी मिश्रित, कस्तूरी के रंग का।

कस्तूरी–(सं. स्त्री.) मृगनाभि से निकलनेवाला एक सुगन्धित द्रव्य; –मृग–(पुं.) एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि में से कस्तूरी निकलती है।

कस्मात्–(सं.अव्य.) किस कारण से, क्यों।

कस्सा–(हि. पुं.) एक प्रकार की [illegible]।

कस्सी–(हि. स्त्री.) [illegible] का छोटा फावड़ा।

कह–(हि. [illegible]) को; ([illegible]) कहाँ।

कहकहा–([illegible]) [illegible],

[illegible]।

कहगिल–(हि. स्त्री.) दीवार में [illegible] मिट्टी का [illegible]।

[illegible]–(हि. [illegible]) [illegible]।

[illegible]–[illegible]।

[illegible]–(हि. [illegible]) [illegible], [illegible], [illegible]।

कहना–(हि.क्रि.स.) बोलना, बताना, समझाना, वर्णन करना, उच्चारण करना, संवाद सुनाना, सिखाना, पढ़ाना, अयोग्य बात बोलना, बहकाना, धोखा देना, कविता बनाना, सूचना देना, नाम रखना; (पुं.) अनुरोध, आज्ञा, कथन; (मुहा.) कह-बदकर–दृढ़तापूर्वक; –सुनना–वार्तालाप करना; कहने को–केवल नाम मात्र से; कहने की बात–झूठी बात; (किसी के) कहने में आना–किसी के बहकाने में आना; (किसी के) कहने में होना–किसी के वश या आज्ञाकारिता में होना।

कहनावत–(हि. स्त्री.) कहावत, कथन, किंवदन्ती, कहासुनी।

कहनि–(हि. स्त्री.) देखें 'कहन'।

कहनूत–(हि.स्त्री.) मसला, कहावत, दृष्टान्त।

कहरना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'कराहना'।

कहरवा–(हि. पुं.) पाँच मात्राओं का एक ताल, एक गीत विशेष, दादरा, एक प्रकार का नाच, पानी भरनेवाला कहार।

कहरी–(अ. वि.) आपत्ति लानेवाला।

कहल–(हि. पुं.) गरमी, ऊमस, ताप, ज्वर, कष्ट।

कहलना–(हि. क्रि. अ.) गरमी से व्याकुल होना, घबड़ाना।

कहलवाना–(हि. क्रि. स.) कहने का काम दूसरे से करवाना, कहलाना।

कहलाना–(हि. क्रि. स.) कहने का काम दूसरे से कराना, पुकारा जाना, कहा जाना, संदेश भेजना।

कहवाँ–(हि. अव्य.) कहाँ, किस स्थान पर।

कहवा–(अ. पुं.) एक पेड़ का बीज जो चाय की तरह पेय होता है।

कहवाना–(हि.क्रि.स.) कहलाना, कहाना।

कहवैया–(हि. वि.) कहनेवाला।

कहाँ–(हि.अव्य.) किस जगह, किस स्थान पर; (पुं.) तुरंत के उत्पन्न शिशु की चिल्लाहट; (मुहा.) –का–बड़ा विकट, व्यर्थ का; –का कहाँ–कहाँ से कहाँ; –की बात–कभी अनहोनी बात।

कहा–(हि.पुं.) कथन, बातचीत; (अव्य.) कैसे, किस प्रकार से; (सर्व.) क्या, कौन; –कही–(स्त्री.) तकरार; –सुनी–(स्त्री.) कहा-कही।

कहाना–(हि.क्रि.स.) कहलाना, कहा जाना।

कहानी–(हि. स्त्री.) कथा, मिथ्या वचन, झूठी बात।

कहार–(हि. पुं.) एक जाति जो पानी भरने और डोली या पालकी ढोने का काम करती है।

कहारा–(हि. पुं.) टोकरा, दौरा।

कहावत–(हि. स्त्री.) लोकोक्ति, कथित विषय, कही हुई बात।

कहिया–(हि. अव्य.) किस समय, कब; (पुं.) रांगे से जोड़ने का एक अस्त्र।

कहीं–(हि. अव्य.) किसी अनिश्चित स्थान में, प्रश्न रूप में 'नहीं' अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, यदि, कदाचित्, बहुत, बहुत अधिक, कहीं और, किसी दूसरे स्थान पर; (मुहा.) –कहीं–कुछ स्थानों में; –का–किसी जगह का; –का न रहना–किसी काम का न होना; –न कहीं–किसी न किसी स्थान पर।

कहुँ–(हि. अव्य.) कहीं।

कहूँ–(हि. अव्य.) कहीं।

काँइयाँ–(हि. वि.) धूर्त, वंचक।

काँकड़ा–(हि.पुं.) कपास का बीज, बिनौला।

काँकर–(हि. पुं.) कंकड़।

काँकरी–(हि.स्त्री.) छोटा कंकड़; (मुहा.) –चुनना–शोक या दुःख से चित्त किसी काम में न लगना।

कांक्षनीय–(सं.वि.) अभिलाषा करने योग्य।

कांक्षा–(सं. स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा।

कांक्षी–(सं. वि.) आकांक्षा करनेवाला, चाहनेवाला।

काँख–(हि. स्त्री.) बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, बगल।

काँखना–(हि.क्रि.अ.) पीड़ा की अवस्था में दुःखसूचक उच्चारण करना, कराहना, मल या मूत्र निकालने के लिये उदर की वायु को दबाना।

काँखासोती–(हि. स्त्री.) दुपट्टे को बायें कन्धे पर रखकर पीठ पर से लपेटते हुए दाहिनी बगल के नीचे पहुँचाकर रखना, उत्तरीय।

काँगड़ा–(हि. पुं.) पजाब प्रान्त के एक जिले का नाम।

काँगड़ी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी अँगीठी जिसको जाड़े के दिनों में काश्मीरवासी अपनी गरदन में से लटकाये रहते हैं।

काँगही–(हि. स्त्री.) कंघी।

काँगुरा–(हि. पुं.) कंगूरा।

काँच–(हि. स्त्री.) धोती का छोर जो कमर के पीछे खोंसा जाता है, गुदा का भीतरी भाग जो कभी-कभी जोर से काँखने पर बाहर निकल आता है; (पुं.) शीशा; (मुहा.) –निकलना–एक रोग जिसमें मल-त्याग के समय काँच बाहर निकल आती है।

कांचन–(सं. पुं.) सोना, दीप्ति, प्रभा, धतूरा, चंपा, पद्मकेसर; –गिरि–(पुं.) सुमेरु पर्वत; –प्रभ–(वि.) सोने के समान कान्तिमय।

काँचरी–(हि. स्त्री.) साँप की केंचुली।

काँचा–(हि. वि.) देखें 'कच्चा'।

काँची–(हि. स्त्री.) करधनी, घुंघची।

काँचुली–(हि. स्त्री.) केंचुली।

काँचू–(हि. पुं.) साँप का केंचुल; (वि.) जिस रोगी को काँच निकलती हो।

काँछना–(हि.क्रि.स.) लाँग बाँधना, धोती खोंसना।

काँछा–(हि. पुं) कमर के पीछे खोंसने का धोती का भाग, धोती का किनारा, लँगोट; (स्त्री.) आकांक्षा।

काँजी–(हि. स्त्री) एक प्रकार का खट्टा किया हुआ जल, मट्ठा, दही या फटे हुए दूध का पानी, छाछ।

काँजीवरम्–(हि. पुं.) भारत का एक दक्षिणी नगर।

काँट–(हि. पुं.) देख 'काँटा'।

काँटा–(हि. पुं.) कंटक, किसी पौधे या वृक्ष का कड़ा तथा नुकीला अंकुर, अँकुसी, अँकुडी, गले का एक रोग, लोहे की कील, मछली मारने की कँटिया, लोहे की झुकी हुई कीलों का गुच्छा, कोई नुकीली वस्तु, गूँथने का यन्त्र, सोना-चाँदी तौलने की छोटी तुला, नाक या कान का एक आभूषण, त्रिशूल के आकार का यन्त्र जिसको भोंककर अंग्रेज लोग रोटी खाते है, सूजा, घड़ी की सूई, गणित में गुणनफल जाँचने की एक विधि, दुःखदायी मनुष्य; (मुहा.) –निकल जाना–बाधक का हट जाना; –बनना–अड़चन डालना; –हो जाना–अति दुर्बल होना; काँटे की तौल–ठीक-ठीक तौल; –काँटे पर घसीटा जाना–योग्यता से कहीं अधिक प्रशंसा किया जाना; (राह में) काँटे बिछाना या बोना–रोड़े अटकाना; काँटों पर लोटना–अति कष्ट उठाना।

काँटी–(हि. स्त्री.) छोटा महीन काँटा।

काँटेदार–(हि. वि.) काँटा लगा हुआ।

काँठा–(हि. पुं.) कण्ठ, गला, गले की रेखा, तट, किनारा, जुलाहे की बाना चढ़ाने की लकड़ी।

कांड–(सं. पुं.) अंश, विभाग, वृक्ष का स्कंध, ग्रंथ का विभाग।

काँड़ना–(हि. क्रि. स.) रौंदना, कूटना, लतियाना।

कांड़ा–(हिं. पुं.) वृक्षों का एक रोग, दांत में लगनेवाला एक कीड़ा।

कांड़ी–(हि. स्त्री.) ओखली का गड्ढा, लकड़ी का लट्ठा या वल्ला, भारी बोझ उठाने-बैठाने का डंडा, बांस, अरहर की सूखी डंठी, रहठा, दियासलाई।

कांत–(सं. वि.) प्रिय, मनोरम; (पुं.) पति, प्रेमी, चंद्रमा, वसंत, एक तरह का लोहा।

कांता–(सं.स्त्री.) प्रिया, पत्नी, सुंदरी स्त्री।

कांति–(सं. स्त्री.) मुख-सौन्दर्य, चमक, शृंगार, चंद्रमा की कला; –कर–(वि.) शोभा या सौन्दर्य बढ़ानेवाला।

कांती–(हिं. स्त्री.) तीव्र पीड़ा, बिच्छू का डंक।

कांथरि–(हिं. स्त्री.) कथरी।

कांदना–(हिं.क्रि.अ.) चीख मारकर रोना, विलाप करना।

कांदा–(हिं. पुं.) कंदली, एक पौधा जिसका गुल्म प्याज के सदृश होता है, इससे मांड़ी बनती है।

कांदू–(हिं. पुं.) बनियों की एक जाति जो हलवाई का काम करती है, भड़भूंजा।

कांदो–(हिं. पुं.) कर्दम, कीचड़।

कांध–(हिं. पुं.) स्कन्ध, कन्धा, कोल्हू का एक भाग; (मुहा.) –देना–सहारा देना।

कांधना–(हिं. क्रि. स.) कन्धे पर रखना, उठाना, नाधना, स्वीकार करना, मानना, बोझ उठाना।

कांधर–(हिं. पुं.) कृष्ण, कान्हा।

कांधा–(हिं.पुं.) स्कन्ध, कन्धा, कृष्ण, कान्हा।

कांप–(हिं. स्त्री.) तीली, पतली छड़, कनकौवे की पतली तीली, सुअर के पैर का कांटा, सांग, हाथी का दांत, कान का एक आभूषण, कंप, कँपकँपी।

कांपना–(हि.क्रि.अ.) कम्पित होना, थरथराना, थर्राना, डर से कंपित होना।

कांयकांय, कांवकांव–(हि.पुं.) कौवे का शब्द।

कांवर–(हि. स्त्री.) बहंगी, बांस का डंडा जिसके दोनों किनारों पर छींके लटकाकर पदार्थों को ले जाते हैं।

कांवरा–(हिं. वि.) व्याकुल, उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

कांवरिया–(हि. पुं.) कांवर ले जानेवाला यात्री।

कांवरू–(हिं. पुं.) कामरूप, कामला रोग।

कांवारथी–(हि. पुं.) तीर्थयात्री, कांवर लेकर यात्रा करनेवाला।

कांस–(हि.पुं.) एक प्रकार की लम्बी घास।

कांसा–(हि. पु.) कांस्य, तांबे और जस्ते को मिलाकर बनी हुई धातु, भीख मांगने का खप्पर।

कांसागर–(हिं. पुं.) कांस्यकार, कांसे के पात्र बनानेवाला, ठठेरा।

कांसिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का अन्न, मोठ।

कांसी–(हिं. स्त्री.) धान के पौधे का एक रोग, कास रोग, खांसी।

कांसुल–(हिं. पुं.) कांसे का बना हुआ एक चौकोर टुकड़ा जिसमें चारों ओर छोटे-बड़े गड्ढे होते हैं, सुनार लोग इस पर पीटकर गोल कटोरिया बनाते हैं।

कांस्य–(सं.पुं.) कांसा, कसकुट, एक प्रकार का बाजा, घड़ियाल, एक प्रकार की तौल; –ताल–(पुं.) करताल, मजीरा।

का–(हिं. प्रत्य.) षष्ठी कारक का चिह्न, स्त्रीलिंग का रूप 'की'; (सर्व.) क्या।

काइयां–(हिं. वि.) धूर्त, अर्थ, स्वार्थसाधक।

काई–(हिं. अव्य.) क्यों, किस लिये; (सर्व.) किसका।

काई–(हिं. स्त्री.) जल तथा तरी में होनेवाली एक घास, मल, धातु पर लगनेवाला मुरचा, फेन, मांड़, मैल; (मुहा.) –छुड़ाना–जमा हुआ मैल छुड़ाना; –सा फटना–बिखर जाना।

काऊ–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी खूंटी; (सर्व.) कोई, कुछ; (अव्य.) कभी; (पुं.) काक, कौवा।

काक–(हिं. पुं.) एक अन्न, कगनी।

काक–(सं. पुं.) वायस, कौवा।

काकगोलक–(सं. पुं.) कौवे की आंख की पुतली।

काकचरित्र–(सं. पुं.) शकुन शास्त्र का अंग विशेष।

काकचिंचा–(सं. स्त्री.) गुंजा, घुंघची।

काकजंघा–(सं. स्त्री.) एक औषधि, चकसेनी, मसी, मुद्गपर्णी लता।

काकचेष्टा–(सं. स्त्री.) कौए का प्रयत्न करना।

काकजात–(सं. पुं.) कौवे द्वारा पालन-पोषण की हुई कोयल।

काकड़ासिंगी–(हिं. स्त्री.) काकड़ा नामक पेड़ में लगी लाही जो दवा के काम आती है।

काकण–(सं. पुं.) काले तथा लाल धब्बे का कुष्ठ रोग।

काकतंद्रा–(सं. स्त्री.) हलकी नींद की झपकी।

काकता–(सं. स्त्री.) कौए का स्वभाव।

काकतालीय–(सं. पुं.) संयोगवश होनेवाला कार्य; (वि.) आकस्मिक।

काकतुंडी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का पीला फूल, कौवाठोंठी।

काकदंत–(सं. पुं.) कोई असम्भव बात, निरर्थक वार्ता।

काकध्वज–(सं. पुं.) समुद्र के भीतर की अग्नि, बड़वानल।

काकनिद्रा–(सं. स्त्री.) अति सतर्क निद्रा।

काकपक्ष–(सं. पुं.) मस्तक के दोनों ओर के बालों की रचना, पट्टा।

काकपद–(सं.पुं.) चिह्न विशेष (‸) जो छूटे हुए शब्द का स्थान सूचित करने के लिये पंक्ति के नीचे लगाया जाता है।

काकपच्छ–(हिं. पुं.) देखो 'काकपक्ष'।

काकपाली–(हिं. स्त्री.) कोयल।

काकवंध्या–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसको एक ही सन्तान उत्पन्न हुई हो।

काकबलि–(सं. पुं.) श्राद्ध में कौवे को दिया जानेवाला भोजन का अंश।

काकभीरु–(सं. पुं.) कौवे से डरनेवाला पक्षी, उल्लू।

काकभुशुंडि–(सं. पुं.) एक ब्राह्मण जो राम के सच्चे भक्त थे, लोमश ऋषि के शाप से इनको काक होना पड़ा था।

काकमाची–(सं. स्त्री.) मकोय का पौधा।

काकरव–(सं. पुं.) कोलाहल करनेवाला, डरपोक मनुष्य।

काकरासिंगी–(हिं. स्त्री.) देखो 'काकड़ासिंगी'।

काकरी–(हिं. स्त्री.) ककड़ी, ककड़ी।

काकरुत–(सं. पुं.) कौवे की बोली।

काकरेजा–(हिं. पुं.) काले तथा लाल मिले हुए रंग का वस्त्र।

काकल–(सं. पुं.) कण्ठमणि, गले का हार, जंगली काला कौवा; (स्त्री.) सेंध लगाने की सबरी।

काकली–(सं.स्त्री.) धीमी मधुर ध्वनि, एक प्रकार का बाजा, सेंध लगाने की सबरी।

काकसेन–(हिं. पुं.) कलक्टरी के कर्मचारियों का निरीक्षण करनेवाला जमादार, (अं. कॉन्स्टेबिल का अपभ्रंश)।

काका–(सं. स्त्री.) मोर की बोली, कौवा-ठोंठी, घुंघची; (हिं. पुं.) पिता का भाई, चाचा।

काकाकौआ–(हिं. पुं.) बड़ा तोता, काकातुआ।

काकाक्षिगोलक न्याय–(सं. पुं.) किसी शब्द या वाक्य को उलट-फेर कर दो अर्थ अलग-अलग लगाना।

काकातुआ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चोटीदार सुग्गा।

काकाल—(सं. पुं.) पहाड़ी कौवा, वच्छनाग का वृक्ष।
काकिणी—(सं. स्त्री.) गुंजा, घुंघची, पण का चौथा भाग जो पाँच गंडे कौड़ियों के बराबर होता है, एक मासे का चौथा भाग, एक कौड़ी।
काकी—(सं. स्त्री.) वायसी, मादा कौवा; (हि. स्त्री.) चाची।
काकीय—(सं. वि.) काक सम्बन्धी।
काकु—(सं. स्त्री.) शोक, भय इत्यादि से स्वरूप बदल जाना, विरुद्ध अर्थ बोधक स्वर, उल्लाप, व्यंग्य, ताना, दीनता का वाक्य, अलंकार में व्यंग्योक्ति का एक भेद जिसमें शब्द की ध्वनि से भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण किया जाता है।
काकुवाद—(सं. पुं.) गिड़गिड़ाकर कही हुई बात, शोक या भय से विकृत ध्वनि।
काकूक्ति—(सं.स्त्री.) देख 'काकुवाद'।
काकोल—(सं. पुं.) पहाड़ी कौवा, जंगली सुअर, कोंहार।
काकोली—(सं. स्त्री.) एक कन्द विशेष जो औषधि में प्रयुक्त होता है।
काग—(हि. पुं.) देखें 'काक'; (पं., अं. कार्क) बोतल में लगाने का डट्टा।
कागज—(अ. पुं.) सन, बाँस, चीथड़े या घास से बनाई जानेवाली वस्तु जिसपर लिखा जाता है, लेख्य, दस्तावेज, रुक्का, ऋणपत्र, अखबार, समाचार पत्र; —पत्र—(पुं.) किसी विषय से संबद्ध लिखे कागज, सबूत के कागज; (मुहा.)—काला करना—बेकार की बातें लिखना; —की नाव—क्षणभंगुर वस्तु; —के घोड़े दौड़ाना—लंबी लिखापढ़ी करना; कागजी कार्रवाई करना।
कागजात—(अ. पुं.) कागज-पत्र।
कागजी—(अ. वि.) कागज का बड़ा, लिखित (प्रमाण), एक तरह का पतले छिलकेवाला (बादाम या नीबू); —कारखाई— (स्त्री.) लिखा-पढ़ी; —सबूत— (पुं.) लिखित प्रमाण-पत्र।
कागद—(हि. पुं.) पत्र, कागज।
कागभुसुंड—(हि. पुं.) देखे 'काकभुसुंडि'।
कागर—(हि. पुं.) पत्र, कागज, पक्षियों के झड़ जानेवाले कोमल पर।
कागरी—(हि. वि.) तुच्छ, ओछा।
कागा—(हि. पुं.) कौआ।
कागा-बासी—(हि. स्त्री.) प्रातःकाल पी जानेवाली भांग।
कागारोल—(हि.पुं.) काकरव, कोलाहल।
कागौर—(हि. पुं.) श्राद्धादि में कौवे को दिया जानेवाला ग्रास।
काच—(सं. पुं.) लाख, चपड़ा, कचिया नोन, कालानमक, शीशा; —कूपी—(स्त्री.) शीशे की बोतल।
काचरी—(हि. स्त्री.) केंचुली।
काचा—(हि. वि.) कच्चा, भीरु, मृदु।
काची—(हि. स्त्री.) दूध रखने का मिट्टी का पात्र, तीखुर आदि का हलुआ।
काछ—(हि. पुं.) जाँघ का ऊपरी भाग, धोती की लाँग; (मुहा.)—खोलना—नंगा होना; —लगना—चाल में जंघों की रगड़ के कारण चमड़े का छिल जाना या फुंसियाँ निकलना।
काछना—(हि. क्रि.स.) धोती को कमर में खोंसना, शृंगार करना, सँवारना, तरल पदार्थ को हाथ से पोंछकर किसी पात्र के किनारे पर धरना।
काछनी—(हि.स्त्री.) वह धोती जो ऊपर चढ़ाकर पहिनी जाती है, कछनी, जाँघिये के ऊपर पहिनने का वस्त्र।
काछी—(हि. स्त्री.) लाँग, उठी हुई धोती; (पुं) एक कृषक जाति।
काज—(हि. पुं.) कार्य, काम, व्यवसाय, प्रयोजन, उद्देश्य, निमित्त, बटन लगाने का छेद।
काजर—(हि. पुं.) कज्जल, आँख में लगाने की धुएँ की कालिख।
काजरी—(हि. स्त्री.) वह गाय जिसकी आँखों के किनारे पर काला घेरा होता है।
काजल—(हि. पुं.) कज्जल, आँखों में लगाने की धुएँ की कालिख; (मुहा.)—की कोठरी—(स्त्री.) ऐसा स्थान जहाँ जाने से मनुष्य को कलंक लगता है; —पारना—दीपक के धुएँ को किसी पात्र में जमाना।
काजी—(अ. पुं.) मुसलमान शासनतंत्र का न्यायाधीश, मौलवी।
काजू—(हि. पुं.) एक वृक्ष जिसकी फली खाई जाती है, इस वृक्ष के फल की गरी; —भोज—(वि.) देखौवा, काम में न आनेवाला।
काट—(हि. स्त्री.) छेदन, कटाई, कटा हुआ अंश, पीड़ा, मल्लयुद्ध का कौशल, ताश के खेल में तुरुप का रंग, कीट, मल, कपट, छल, धूर्तता, घाव; —कपट—(स्त्री.) छिपाकर या चुराकर रखना; —कूट—(स्त्री.) मारकाट; —छाँट—(स्त्री.) घटाव, संशोधन।
काटकी—(हि. स्त्री.) बन्दर या भालू नचानेवाले नट की छड़ी।
काटन—(हि. स्त्री.) खण्ड, टुकड़ा, एक प्रकार का सूती धागा (अं. 'काटन' का अपभ्रंश)।
काटना—(हि. क्रि.स.) तीखे शस्त्र से टुकड़ा करना, पीसना, रगड़ना, बनाना, निकालना, तैयार करना, भाग लगाना डँस लेना, फाड़ना, देख पड़ना, मारना असिद्ध या अप्रमाणित करना, छाँटना, मिटाना, समय बिताना, चलना, नष्ट करना, छेंकना तोड़ना, अलग करना, स्वच्छ करना, सहन न होना, धँसाना, घाव करना, कतरना, बुरे ढंग से धन कमाना, लकीर खींचकर लिखावट काटना, गणित में एक संख्या से दूसरी संख्या को ऐसा भाग देना जिससे शेष न बचे, कारावास में समय बिताना, शरीर में कीड़े के काटने से छरछराना; (मुहा.) काटो तो खून नहीं—बिलकुल स्तब्ध हो जाना; काटने दौड़ना—बहुत क्रोध से बोलना।
काटर—(हि. वि.) देखें 'कट्टर'।
काटू—(हि. वि.) काटनेवाला, भयानक, डरावना।
काठ—(हि. पुं.) काष्ठ, लकड़ी, ईंधन, लकड़ी की बनी हुई बेड़ी; —कबाड़—(पुं.) निरर्थक टूटी-फूटी सामग्रियाँ; —का उल्लू—(पुं.) बहुत मूर्ख मनुष्य; (मुहा.) —की हाँड़ी—ऐसा पदार्थ जो केवल एक बार ही धोखा दे सके; —होना—स्तब्ध होना।
काठड़ा—(हि. पुं.) काठ की बनी हुई बड़ी परात, कठौता।
काठमांडू—(पुं.) नेपाल राज्य की राजधानी का नाम।
काठिन्य—(सं. पुं.) कठिनता, कड़ापन, निष्ठुरता।
काठी—(हि. स्त्री.) घोड़े या ऊँट की पीठ पर रखने का जीन (गद्दी) जिसके नीचे काठ लगा होता है, डील-डौल, शरीर की गठन, ढाँचा, तलवार का खोल; (वि.) काठियावाड़ संबंधी।
काठों—(हि.पुं.) एक प्रकार का पंजाबी धान।
काढ़ना—(हि.क्रि.स.) खींचना, निकालना, दिखाना, प्रत्यक्ष करना, अलग करना, चित्रकारी करना, सूई से बेल-बूटे बनाना, ऋण लेना, पकाना, छानना।
काढ़ा—(हि. पुं.) क्वाथ, उबाली हुई औषधि।
काण—(सं. पुं.) कौवा; (वि.) एक आँखवाला, काना।

काणत्व–(सं. पुं.) कानापन ।
कात–(हि.पुं.) मेंड़ के बाल काटने की कैंची ।
कातना–(हि. क्रि. स.) रुई को बटकर तागा बनाना, चरखा चलाना ।
कातर–(सं. वि.) व्याकुल, भयभीत, डरा हुआ, विवश, चंचल, अधीर, डाँवाडोल, दुःखित; (हि. स्त्री.) कोल्हू का पटरा जिस पर बैठकर हाँकनेवाला बैलों को चलाता है, कतरी।
कातरता–(सं. स्त्री.) व्याकुलता, घबड़ाहट, अधीरता, भीरुता, चंचलता ।
कातर्य–(सं. पुं.) देखें 'कातरता' ।
काता–(हि. पुं.) सूत, डोरा, तागा, एक प्रकार की मिठाई जो तागे के समान होती है ।
कातिक–(हि. पुं.) कार्तिक का महीना ।
कातिकी–(हि. स्त्री.) कार्तिक महीने की पूर्णमासी ।
काती–(हि. स्त्री.) कैंची, कतरनी, चाकू, छुरी, छोटी तलवार ।
कात्यायन–(सं. पुं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम, एक बौद्ध आचार्य।
कात्यायनी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, गेरुवा वस्त्र पहिने हुए अधेड़ विधवा, कात्यायन ऋषि की पत्नी ।
काथ–(हि. पुं.) कत्था ।
काथरी–(हि. स्त्री.) कंथा, कथरी, गुदड़ी।
काथिक–(सं. वि.) अच्छी-अच्छी कथा बनानेवाला, कथा-संबंधी ।
कादंब–(सं.पुं.) कलहंस, कदम का फूल, बाण ।
कादंबरी–(सं. स्त्री.) मद्य, कोयल, सरस्वती, वाणी, मैना, बाणभट्ट-विरचित गद्यकाव्य और उसकी नायिका ।
कादंबिक–(सं. वि.) भोजन बनानेवाला ।
कादंबिनी–(सं. स्त्री.) मेघमाला, घटा ।
कादर–(हि. वि.) देखें 'कातर' ।
कादा–(हि. पुं.) जलपोत की पटरी ।
कादिरी–(अ. स्त्री.) चोली।
कान–(हि. पुं.) सुनने की इन्द्रिय, कर्ण, श्रवण, सुनने की शक्ति, हल के आगे कूँड़ चौड़ा करने के लिये लगाया हुआ लकड़ी का टुकड़ा, कान के आकार का किसी पदार्थ का भाग, कला, सोने का कान में पहिनने का एक आभूषण, टेढ़ा या भद्दा कोना, चारपाई का टेढ़ापन, तराजू का पसँगा, नाव की पतवार, तोप या बंदूक की रंजकदानी, प्याली; (मुहा.) –उठाना–आहट लेना, चौकन्ना होना; –उमेठना–प्रतिज्ञा करना; –कतरना या काटना–किसी से बढ़ जाना; –करना–सुनना; –काटना–बढ़कर होना; –का पतला–बिना सोचे-विचारे किसी के कहे को सच्चा मान लेनेवाला; –खड़े करना–सावधान होना; –खाना–कोलाहल करना; –गरम करना–कान मलना; –देना–ध्यान देना; –पकड़ना–अपनी अशुद्धि को मान लेना; –पकड़कर उठना-बैठना–बच्चों को दी जानेवाली एक सजा; –पकड़कर निकाल देना–अनादरपूर्वक निकाल देना; –पर जूँ न रेंगना–बिलकुल ध्यान न देना; –पर हाथ धरना–सर्वथा अस्वीकार करना; –पूँछ दबाकर चल देना–चुपके से भाग जाना; –फुंकवाना–गुरुमुख होना, मंत्र की दीक्षा लेना; –फूँकना–गुरुमुख करना, चेला बनाना; किसी का मन किसी के विरुद्ध बातें करके फेर देना; –बहना–कान से पीब बहना; –भर जाना–सुनते-सुनते ऊब जाना; –भरना–किसी के बारे में शिकायत करके किसीको उसके विरुद्ध करना; –में डालना–सुनाना; –में तेल डाले बैठना–सुनकर भी ध्यान न देना, उपेक्षा करना; –कानों कान खबर न होना–किसी विषय को अत्यन्त गुप्त रखना; कानों पर हाथ धरना–अनभिज्ञता प्रकट करना ।
कानक–(सं.पुं.) जायफल, धतूरे का बीज ।
कानड़ा–(सं. स्त्री.) एक रागिणी का नाम; (हि. वि.) काना ।
कानन–(सं. पुं.) वन, जंगल, गृह, घर ।
काना–(हि. वि.) काण, एक आँखवाला, एकाक्ष, कीड़े से खाया हुआ (फल), कन्ना, वक्र, टेढ़ा, तिरछा; (पुं.) आकार की मात्रा जो अक्षरों में लगाई जाती है, पासे पर की बिन्दी ।
कानाकानी–(हि. स्त्री.) गुप्त वार्ता, कानाफूसी ।
कानाफूसी–(हि. स्त्री.) गुप्त बात, कान में धीरे से कही गई बात ।
कानाबाती–(हि.स्त्री.) देखें 'काना-फूसी' ।
कानाबेज–(हि.पुं.) एक प्रकार का महीन वस्त्र ।
कानि–(हि. स्त्री.) लोकलज्जा, मर्यादा, शिक्षा, सीख ।
कानिद–(हि.पुं.) [illegible] ।
कानी–(हि. स्त्री.) एक आँखवाली स्त्री, हाथ की सबसे छोटी अँगुली; –उँगली–(स्त्री.) छोटी उँगली; –कौड़ी–(स्त्री.) फूटी हुई कौड़ी, अति तुच्छ पदार्थ ।
कानीन–(सं. पुं.) अविवाहित कन्या का पुत्र ।
कानून–(अ. पुं.) विधि, राजाज्ञा, विधान, नियम ।
कानूनगो–(अ. पुं.) माल महकमे का एक क्षेत्रीय अधिकारी जिसके अधीन कई पटवारी होते हैं ।
कानूनिया–(हि. वि.) नियम-व्यवस्था या कानून जाननेवाला ।
कान्यकुब्ज–(सं. पुं.) आधुनिक कन्नौज का प्राचीन नाम, इस देश का निवासी, इस देश का ब्राह्मण ।
कान्ह–(हि. पुं.) श्रीकृष्ण ।
कान्हड़ा–(हि. पुं.) एक राग का नाम ।
कान्हर, कान्हरा–(हि. पुं.) कान्हड़ा, कोल्हू की वह लकड़ी जो इसकी कातर में बँधी होती है ।
कापटिक–(सं. पुं.) दूसरे का मर्म जाननेवाला, वंचक ।
कापट्य–(सं. पुं.) कपटता, धूर्तता ।
कापाटिक–(सं. पुं.) छोटा कपाट या किवाड़ ।
कापालिक–(सं. पुं.) वाममार्गी तान्त्रिक साधु जो मद्य-मांस खाते हैं तथा हाथ में मनुष्य का कपाल रखते हैं ।
कापाली–(सं.स्त्री.) कौवाठोंठी; (पुं.) शिव।
कापिक–(सं. वि.) बंदर-जैसा ।
कापिल–(सं. पुं.) सांख्य दर्शन जाननेवाला, कपिल मुनि का बनाया हुआ ग्रन्थ, भूरा रंग; (वि.) कपिल मुनि संबंधी, भूरे रंग का ।
कापिश–(सं. पुं.) माधवी के फूलों की बनी हुई मदिरा ।
कापुरुष–(सं. पुं.) निन्दित पुरुष, डरपोक आदमी ।
कापुरुषता–(सं.स्त्री.) भीरुता, निरुत्साह ।
कापुरुषत्व–(सं. पुं.) देखें 'कापुरुषता' ।
कापोत–(सं.वि.) कबूतर वर्ण का, कपोत जैसा ।
काफिर–(अ. पुं.) ईश्वर का अस्तित्व न माननेवाला, [illegible] ।
काफिला–(अ. पुं.) यात्रियों का समूह ।
काफी–(अं. स्त्री.) कहवा; (वि.) पूरा, पर्याप्त; –से ज्यादा–आवश्यकता से अधिक ।
काबर–(हि. वि.) चित्रित, चितकबरा, अनेक रंगों का ।
काबला–(हि. पुं.) [illegible] (अं. [illegible]), बड़ी डिबरी ।

काबा–(अ. पुं.) चौकोर इमारत, मक्के की प्रसिद्ध मसजिद या इमारत।
काबिज–(अ. वि.) कब्जा करने या रखनेवाला।
काबिल–(अ.वि.) योग्य, लायक, विद्वान्।
काबिस–(हि. पुं.) एक रंग जिससे रँगकर मिट्टी के बरतन पकाये जाते हैं।
काबो–(हि. स्त्री.) मल्लयुद्ध का एक पेंच, युक्ति।
काबुल–(पुं.) अफगानिस्तान की राजधानी, अफगानिस्तान की एक नदी जिस पर यह नगर बसा है।
काबुली–(हि. वि., पुं.) काबुल संबंधी, काबुल का निवासी।
काबू–(तु. पुं.) वश, नियंत्रण, अधिकार।
काम–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य, यथेष्ट वार्ता, वाञ्छा, स्वीकार, वाक्य, अनुमति, इच्छा, महादेव, विष्णु, कामदेव, तृष्णा, सहवास की इच्छा, चतुर्वर्ग में से एक।
काम–(हि. पुं.) कार्य, कर्म, कठिन कार्य, उद्देश्य, व्यवहार, सम्बन्ध, व्यवसाय, रचना, प्रयोजन, नकाशी; (मुहा.) –का–उपयोगी; –आना–उपयोगी होना; –चलना–निरन्तर काम का होना; –तमाम करना–काम पूरा करना, जान से मार डालना; –तमाम होना–मृत्यु प्राप्त होना; –निकलना–कार्य सिद्ध होना; –पड़ना–पाला पड़ना; –में लाना–व्यवहार करना।
कामकला–(सं. स्त्री.) कामदेव की पत्नी, रति, मथुन, चन्द्रमा की सोलह कलाएँ, तन्त्रोक्त विद्या विशेष।
कामकाज–(हि.पुं.) काम-धंधा, व्यवसाय।
कामकाजी–(हि.वि.) व्यवसायी, कारबारी।
कामकेलि–(सं. स्त्री.) कामक्रीड़ा, रति।
कामकूट–(सं. पुं.) वेश्यावृत्ति, रंडीबाज।
कामग–(सं.वि.) इच्छानुसार चलनेवाले।
कामगार–(हि. पुं.) राज्य के कार्यों का प्रबन्ध करनेवाला, कामदार।
कामचर–(सं. वि.) स्वेच्छाचारी।
कामचलाऊ–(हि. वि.) किसी-न-किसी प्रकार से काम चला देनेवाला।
कामचार–(सं.वि.) स्वच्छन्द विचरनेवाला।
कामचारी–(सं. वि.) कामुक, स्वेच्छाचारी।
कामचोर–(हि. वि.) काम करने से चित्त चुरानेवाला, आलसी, सुस्त।
कामज–(सं. वि.) वासना या अभिलाषा से उत्पन्न।
कामज ज्वर, कामज्वर–(सं. पुं.) एक प्रकार का ज्वर जो अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन करने से स्त्री-पुरुष को होता है।
कामजित्–(सं. पुं.) काम को जीतनेवाले महादेव, कार्तिकेय, जिनदेव।
कामठ–(सं. वि.) कमण्डल-सम्बन्धी कछुआ-सम्बन्धी।
कामड़िया–(हि. पुं.) रामदेव मत के चमार साधु।
कामतरु–(सं. पुं.) कल्पवृक्ष।
कामता–(हि. पुं.) चित्रकूट।
कामतिथि–(सं. स्त्री.) त्रयोदशी, तेरस।
कामद–(सं. वि.) कामना या मनोरथ पूर्ण करनेवाला।
कामद गिरि–(सं. पुं) चित्रकूट पर्वत।
कामद मणि–(सं. पुं.) चिन्तामणि।
कामदहन–(सं. पुं.) कामदेव को भस्म करनेवाले शिव।
कामदा–(सं. स्त्री.) कामधेनु, नागवल्ली, पान, दस अक्षरों का एक छन्द।
कामदानी–(हि. स्त्री.) बादले के तार या सलमे-सितारे की कपड़े पर कढ़ाई।
कामदार–(हि. पुं.) राज्य का प्रबंध करनेवाला, कारिन्दा; (वि.) कामदानी या कलाबत्तू के बेल-बूटे बना हुआ।
कामदुघा, कामदुहा–(सं. स्त्री.) कामधेनु।
कामदूती–(सं.स्त्री.) परवल की लता, कोयल।
कामदेव–(सं. पुं.) कन्दर्प, मदन, अनंग।
कामधाम–(हि. पुं.) कामकाज, धन्धा, व्यवसाय।
कामधेनु–(सं. स्त्री.) सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाली गाय, स्वर्ग की गाय।
कामध्वज–(सं. पुं.) मत्स्य, मछली।
कामना–(सं. स्त्री.) मनोरथ, इच्छा।
कामनाशक–(सं.पुं.) काम का नाश करनेवाले शिव।
कामबाण–(सं. पुं.) कामदेव के पांच बाण; यथा–मोहन, उन्मादन, सन्तापन, शोषण और निश्चेष्टन।
कामभूरुह–(सं.पुं.) कल्पवृक्ष।
काममर्दन–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
काममाली–(सं. पुं.) गणेश।
कामयाब–(फा. वि.) सफल-प्रयत्न, सफल-मनोरथ।
कामयाबी–(फा.स्त्री.) सफलता, कृतकार्यता।
कामरिपु–(सं. पुं.) कामदेव के शत्रु, महादेव, शिव।
कामरि, कामरी–(हि. स्त्री.) छोटा कम्बल, कमरी, काँवर।
कामरुचि–(सं. स्त्री.) एक अस्त्र जिसको विश्वामित्र ने अन्य शस्त्रों को विफल करने के लिये रामचन्द्र को दिया था।
कामरू–(हि. पुं.) देखें 'कामरूप'।
कामरूप–(सं. पुं.) आसाम प्रदेश का विस्तृत भूभाग जो पुण्य-तीर्थ माना जाता है, यहाँ कामाख्या देवी का प्राचीन मन्दिर है; –त्व–(पुं.) एक सिद्धि विशेष जिसके प्रभाव से साधक मनमाना रूप धारण कर सकता है।
कामरूपी–(सं. वि.) इच्छानुसार रूप बदलने या धारण करनेवाला।
कामरेखा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
कामल–(सं. पुं.) कमल रोग जिसमें सम्पूर्ण शरीर पीला पड़ जाता है।
कामला–(सं. स्त्री.) पाण्डु रोग, कामल।
कामली–(सं.वि.) कामला रोग से पीड़ित, पांडुरोगी; (हि. स्त्री.) छोटा कम्बल, कमली।
कामवती–(सं. स्त्री.) मैथुन की अभिलाषा करनेवाली स्त्री।
कामवल्लभ–(सं. पुं.) आम का वृक्ष, वसन्त ऋतु।
कामवान्–(सं. वि.) सम्भोग की इच्छा करनेवाला।
कामविद्ध–(सं. वि.) मैथुन की इच्छा से व्याकुल।
कामशर–(सं. पुं.) कामदेव के बाण।
कामशास्त्र–(सं. पुं.) वह शास्त्र जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर समागम आदि व्यवहारों का वर्णन हो, अभीष्ट-संपादक शास्त्र, रतिशास्त्र।
कामसखा–(सं. पुं.) वसन्त ऋतु, आम का वृक्ष।
कामहा–(सं. पुं.) महादेव, विष्णु।
कामांकुश–(सं. पुं.) शिश्न, उपस्थ।
कामांध–(सं. वि.) काम के वेग से हिताहित का ज्ञान न रखनेवाला।
कामा–(हि.स्त्री.) सुन्दरी स्त्री, कामिनी।
कामाक्षी–(सं. स्त्री.) एक तंत्रोक्त देवी का नाम।
कामाख्या–(सं.स्त्री.) एक देवी का नाम।
कामातुर–(सं. वि.) काम के वेग से व्याकुल।
कामानुज–(सं. पुं.) क्रोध, रोष।
कामायुध–(सं. पुं.) आम का वृक्ष, शिश्न, उपस्थ।
कामारि–(सं. पुं.) कामदेव के शत्रु, शिव।
कामार्त–(सं. वि.) काम-पीड़ित।
कामावतार–(सं. पुं.) छः-छः मात्राओं का चार पादों का छन्द।
कामावशायिता–(सं. स्त्री.) सत्य-संकल्प, अणिमादि आठ सिद्धियों में से एक।

कामाशन—(सं. पुं.) इच्छानुसार भोजन।

कामासक्त—(सं. वि.) काम के वशीभूत।

कामिनी—(सं. स्त्री.) कामयुक्ता स्त्री, सुन्दरी, भीरु स्त्री, मद्य, एक रागिणी; —कांत—(पुं.) एक छन्द जिसमें छः छः मात्राओं के चार पाद होते हैं; —मोहन—(पुं.) स्रग्विणी छंद।

कामी—(सं. पुं.) चकवा, कपोत, चन्द्रमा, विष्णु, सारस पक्षी; (वि.) इच्छुक, कामुक, प्यार करनेवाला, अभिलाषी, प्रेमी; (हि. स्त्री.) काँसे या अन्य धातु की ढली हुई छड़।

कामुक—(सं. वि.) कामी, अभिलाषी, इच्छुक, चाहनेवाला, विषयी।

कामुकता—(सं. स्त्री.) विषय-वासना।

कामुका—(सं.स्त्री.) धन चाहनेवाली स्त्री।

कामुकी—(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री।

कामेश्वरी—(सं. स्त्री.) तन्त्र के अनुसार एक भैरवी का नाम, कामाख्या की पाँच मूर्तियों में से एक।

कामोद—(सं.पुं.) एक प्रकार की रागिणी।

कामोद्दीपक—(सं. वि.) मैथुन की इच्छा प्रबल करनेवाला।

कामोद्दीपन—(सं. पुं.) मैथुन की इच्छा को तीव्र करना।

कामोपहत—(सं. वि.) कन्दर्प के बाणों से व्याकुल।

काम्य—(सं. वि.) कमनीय, सुन्दर, कामनायुक्त, कर्तव्य, करने योग्य, अभीष्ट; —कर्म—(पुं.) अभीष्ट सिद्धि के लिये किया हुआ कर्म; —ता—(स्त्री.) कमनीयता, कर्तव्यता।

काम्येष्टि—(सं. स्त्री.) कामना की सिद्धि के लिये किया जानेवाला यज्ञ।

काय—(सं. पुं.) शरीर, देह, मूर्ति, समूह, स्वभाव, प्रजापति, तीर्थ, गृह, ब्रह्मा, लक्ष्य, प्राजापत्य विवाह, मूलधन, वृक्ष का तना; —क—(वि.) शारीरिक देह संबंधी; —चिकित्सा—(स्त्री.) शरीर के प्रत्येक अङ्ग पर कुप्रभाव डालनेवाले रोगों की चिकित्सा।

कायदा—(अ. पुं.) नियम, विधान, क्रम।

कायफल—(सं. पुं.) एक वृक्ष जिसकी छाल औषधि में प्रयुक्त होती है।

कायबंधन—(सं. पुं.) करधनी, कमरबंद।

कायम—(अ. वि.) स्थित, खड़ा, विद्यमान, स्थिर, स्थायी।

कायर—(हि. वि.) भीरु, कातर, डरपोक; —ता—(स्त्री.) भीरुता।

कायल—(अ. वि.) माननेवाला, निरुत्तर; (मुहा.)—करना—निरुत्तर कर देना; —होना—मान लेना, निरुत्तर हो जाना।

कायली—(हि. स्त्री.) ग्लानि, शर्म।

कायव्यूह—(सं. पुं.) शरीर में वात, पित्त, श्लेष्मा, रक्त इत्यादि सात धातुओं का विन्यास अर्थात् इनके स्थान और विभाग का क्रम, कर्मभोग के लिये योगियों द्वारा चित्त में कल्पित इंद्रिय-विन्यास।

कायसौख्य—(सं. पुं) शरीर का सुख।

कायस्थ—(सं. पुं.) शरीर में रहनेवाला, अन्तर्यामी, परमेश्वर, एक जाति विशेष जो चित्रगुप्तदेव को अपना आदि पुरुष मानती है।

कायस्था—(सं. स्त्री.) बड़ी इलायची, तुलसी, आमला, हर्रे।

काया—(सं. स्त्री.) तनु, शरीर; (मुहा.) —पलटना—नया रूप धारण करना।

कायाकल्प—(हि. पुं.) औषधियों के प्रभाव से वृद्ध शरीर को युवा बनाने की विधि।

कायापलट—(हि. स्त्री.) काया-परिवर्तन, बहुत बड़ा परिवर्तन, बड़ा हेर-फेर, एक शरीर के रूप को दूसरे शरीर में पलटना।

कायिक—(सं. वि.) शरीर संबंधी, शरीर से किया हुआ, शरीर से उत्पन्न।

कार—(सं.पुं.) वध, निश्चय, कार्य, क्रिया, करने या बनानेवाला, कुछ संज्ञाओं के साथ लगकर 'कार' शब्द 'कर्ता' अर्थ में आता है; यथा—कर्मकार, सुवर्णकार इत्यादि; वर्णमाला के अक्षरों के बाद जोड़ने से उस अक्षर का स्वतन्त्र बोध करता है; यथा—अकार, ककार, इत्यादि।

कारक—(सं. वि.) करनेवाला, (यथा—आनन्दकारक, हितकारक इत्यादि); (पुं.) वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध को कारक कहते हैं।

कारकदीपक—(सं. पुं.) दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें कई क्रियाओं का एक ही कर्ता रहता है।

कारक हेतु—(सं. पुं.) प्रधान कारक।

कारकुन—(हि. पुं.) काम करनेवाला।

कारखाना—(फा. पुं.) बड़ी उद्योग-संस्था, फैक्टरी, कारबार।

कारखानेदार—(फा. पुं.) कारखाने का मालिक, उद्योगपति, मिल-मालिक।

कारगर—(फा. वि.) असर या प्रभाव करनेवाला।

कारगुजार—(फा.वि.) काम-धंधे में कुशल।

कारगुजारी—(फा. स्त्री.) कार्यशीलता, [illegible]।

कारज—(हि. पुं.) कार्य, काम।

कारटा—(हि. पुं.) करट, कौवा।

कारण—(सं. पुं.) हेतु, निमित्त, साधन, उद्देश्य, इन्द्रिय, प्रमाण, मूल, जड़, आदि शरीर, कर्म, काम, कार्यवाही; —जल—(पुं.) ब्रह्माण्ड की सृष्टि का कारण जल; —ता—(स्त्री.) हेतुता, कारण का भाव; —त्व—(सं. पुं.) कारणता; —भूत—(वि.) कारण-स्वरूप; —माला—(स्त्री.) हेतुओं की श्रेणी, एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न कोई कार्य बाद में कहे हुए कथनों का हेतु वर्णन करता है; —वादी—(पुं.) सम्पूर्ण सृष्टि के आदि कारण को स्वीकार करनेवाला; —विहीन—(वि.) कारण-रहित; —शरीर—(पुं.) आनन्दमय कोष, सुषुप्ति की अवस्था में वह कल्पित शरीर जिसमें शरीर की इन्द्रियाँ तो काम नहीं करतीं परन्तु इसमें अहंकार आदि का संस्कार बना रहता है।

कारणा—(सं. स्त्री.) यातना, तीव्र वेदना, नरक-यंत्रणा।

कारणिक—(सं. वि.) परीक्षक, जाँच करनेवाला।

कारतूस—(हि. पुं.) (अं. 'कार्ट्रिज' का अपभ्रंश) पीतल आदि की एक नली जिसमें गोली, छर्रा तथा बारूद भरी रहती है।

कारन—(हि.पुं.) कारण, [illegible]; (मुहा.) —[illegible]—जादू-टोना [illegible]।

कारनामा—(फा. पुं.) प्रशंसनीय काम।

कारनी—(हि. पुं.) प्रेरक, भेदक, भेदिया, ईश्वर।

कारपरदाज—(फा. वि.) काम में प्रवीण।

कारपरदाजी—(फा. स्त्री.) काम में प्रवीणता या कौशल, प्रबंध-चातुर्य।

कारबन—(अं. पुं.) एक मौलिक मूल तत्त्व जो हीरा, कोयले आदि में पाया जाता है; —पेपर—(पुं.) [illegible] रंग का कागज जिसे दो कागजों के बीच में रख कर लिखने का [illegible]।

कार[illegible]—(फा. वि.) [illegible]; (पुं.) [illegible]।

कार[illegible]—(फा. वि.) [illegible]।

कार[illegible]—[illegible]।

कार[illegible]—(सं. स्त्री.) [illegible]।

कारागार, कारागृह–(सं. पुं.) बंदीगृह।
कारापाल–(सं. पुं.) बंदीगृह का रक्षक।
कारावास–(सं. पुं.) कारावास में बंद रहने की स्थिति, कैद।
कारावेश्म–(सं. पुं.) कारागार।
कारिक–(हि. स्त्री.) करगह का ताना ठीक करने की चिकनी लकड़ी।
कारिका–(सं. स्त्री.) अभिनेत्री, काम, विवरण, श्लोक, विशिष्ट कविता, बहुअर्थबोधक शब्द, नटी, मर्यादा, सीमा, किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या, एक रागिणी।
कारिख–(हि. स्त्री.) कालिमा, कालापन, काजल, कलंक, धब्बा।
कारिणी–(सं. स्त्री.) अपना काम करनेवाली स्त्री।
कारित–(सं.वि.) दूसरे के द्वारा कराया हुआ।
कारिता–(सं.स्त्री.) अधिक वृद्धि, अधिक व्याज।
कारी–(हि.वि.) करनेवाला, बनानेवाला।
कारीगर–(फा. पुं.) दस्तकार, शिल्पी।
कारीगरी–(फा. स्त्री.) शिल्प, दस्तकारी, बारीकी।
कारु–(सं. पुं.) शिल्पी, शिल्पकार।
कारुणिक–(हि. वि.) दयावान्।
कारुण्य–(सं. पुं.) करुणा, दया।
कारुनी–(हि. पुं.) एक विशेष जाति का घोड़ा।
कारौंछ–(हि. स्त्री.) कालिमा, धुएँ की कारिख, कालौंछ।
कारो–(हि. वि.) देखें 'काला'।
कारोबार–(हि. पुं.) कारबार।
कार्ड–(अं. पुं.) मोटे कागज का टुकड़ा।
कार्णिक–(सं. वि.) कान संबंधी।
कार्तवीर्य–(सं. पुं.) चन्द्रवंशी राजा कृतवीर्य का पुत्र, हैहय, सहस्रार्जुन।
कार्तिक–(सं. पुं.) जिस महीने में पूर्णमासी कृत्तिका नक्षत्रयुक्त रहती है, आश्विन और अगहन के बीच का महीना; –शाली –(पुं.) कार्तिक के महीने में पकनेवाला धान।
कार्तिकेय–(सं. वि.) कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाला; (पुं.) षडानन।
कार्दम–(सं. वि.) पंकिल, कीचड़ से भरा हुआ।
कार्पट–(सं. पुं.) पुराने वस्त्र का टुकड़ा, चिथड़ा।
कार्पण्य–(सं. पुं.) कृपणता, कंजूसी।
कार्पास–(सं. पुं.) कपास का वृक्ष, रूई का पौधा।
कार्पासिक–(सं. वि.) रूई का बना हुआ।
कार्मण–(सं. पुं.) जादू, टोना, मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोग; (वि.) कर्मदक्ष, काम में चतुर; –त्व–(पुं.) जादू, टोना।
कार्मना–(हि. पुं.) मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग, कार्मण।
कार्मार–(सं. पुं.) कर्मकार, लोहार।
कार्मिक–(सं. वि.) कर्म में नियुक्त, काम में लगा हुआ, निर्मित, बनाया हुआ।
कार्मुक–(सं. पुं.) धनुष, धनुष के आकार का एक शस्त्र, चाप, बाँस, इन्द्रधनुष, नवीं राशि, रूई धुनने का यन्त्र, बकाइन, स्वच्छ खैर; (वि.) कार्यक्षम, कामकाजी।
कार्य–(सं. पुं.) कर्म, काम, कर्तव्य, व्यापार, धन्धा, हेतु, फल, प्रयोजन, परिणाम, उद्देश्य; (वि.) करने योग्य, कराया जानेवाला।
कार्यकर–(सं. वि.) काम चलानेवाला।
कार्यकर्ता–(सं. पुं.) कार्य या काम करनेवाला, कर्मचारी।
कार्यकारण–(सं. पुं.) मिला हुआ कार्य और कारण।
कार्यकारणभाव–(सं. पुं.) कार्य और कारण का संबंध, कारण और परिणाम की मिली हुई स्थिति।
कार्यकारी–(सं. पुं.) काम करनेवाला।
कार्यकुशल–(सं. वि.) काम करने में निपुण।
कार्यक्षम–(सं. वि.) देखें 'कार्यकुशल'।
कार्यभ्रष्ट–(सं. वि.) काम से चूका हुआ।
कार्यवश–(सं. अव्य.) काम के कारण से।
कार्यशेष–(सं. पुं.) काम का अवशेष।
कार्यसम–(सं. पुं.) न्याय-मत के अनुसार चौबीस भ्रांतियों के अन्तर्गत एक भ्रांति।
कार्यसागर–(सं. पुं.) गुरुकार्य, बड़ा काम।
कार्यसाधक–(सं. वि.) काम पूरा करनेवाला।
कार्यसाधन–(सं. पुं.) कार्यसिद्धि, अभीष्ट सिद्धि।
कार्यहंता–(सं. वि.) काम बिगाड़नेवाला।
कार्यांतर–(सं. पुं.) अन्य कार्य, दूसरा काम।
कार्याधिकारी–(सं. पुं.) पदाधिकारी।
कार्याध्यक्ष–(सं. पुं.) देखें 'कार्याधिकारी'।
कार्यार्थ–(सं. अव्य.) काम के लिये।
कार्यार्थी–(सं. वि.) कार्य की सिद्धि चाहनेवाला।
कार्यालय–(सं. पुं.) कार्य का स्थान, आफिस, दफ्तर।
कार्षापण–(सं. पुं.) प्राचीन समय की एक मुद्रा।
कालंजर–(सं. वि.) मृत्यु-निवारक, मृत्युनाशक; (पुं.) एक पर्वत का नाम।
काल–(सं. पुं.) लोहा, मृत्यु, महाकाल, समय, शनि ग्रह, शिव, विष्णु, यम, अवसर, दुर्भिक्ष, अकाल, महँगी, अन्तिम काल, कृष्णवर्ण, काला रंग, लाल चीते का वृक्ष; (हि. अव्य.) कल।
कालकंठ–(सं. पुं.) शिव, महादेव, मयूर, मोर, खंजन पक्षी, जलकुक्कुट, कौवा।
कालकर्णिका–(सं. स्त्री.) दुर्भाग्य, दरिद्रता।
कालकर्मा–(सं. पुं.) मृत्यु।
कालकवि–(सं. पुं.) अग्नि, आग।
कालका–(सं.स्त्री.) कश्यप की पत्नी का नाम।
कालकुंठ–(सं. पुं.) यम।
कालकूट–(सं. पुं.) एक भयंकर विष, हलाहल, वत्सनाभ, बछनाग, एक पर्वत का नाग।
कालकूटक–(सं. पुं.) कुचले का वृक्ष, शिव।
कालकेतु–(सं. पुं.) एक राक्षस का नाम।
कालकेशी–(सं. स्त्री.) काले बालवाली स्त्री।
कालकोठरी–(हि. स्त्री.) वन्दीगृह की एक संकुचित और अँधेरी कोठरी जिसमें एकांतिक कारावास वाले बंदी वन्द किये जाते हैं।
कालक्रम–(सं. पुं.) समय का प्रवाह।
कालक्रिया–(सं. स्त्री.) समय पर किया हुआ काम, समय का प्रभाव।
कालक्षेप–(सं. पुं.) समय का बीतना, समय नष्ट करना।
कालखंज–(सं. पुं.) यकृत।
कालखंड–(सं. पुं.) यकृत, कलेजा, कलेजे का एक रोग।
कालगंगा–(सं. स्त्री.) यमुना नदी।
कालगंडैत–(हि. पुं.) काली चित्तियोंवाला सर्प।
कालगंध–(सं. पुं.) काला चन्दन, एक प्रकार का सर्प।
कालग्रंथि–(सं. पुं.) वर्ष, साल।
कालग्रास–(सं. पुं.) मृत्यु।
कालचक्र–(सं. पुं.) समय का उलटफेर, एक अस्त्र विशेष।
कालज्ञ–(सं. पुं.) कुक्कुट, मुर्गा, ज्योतिषी; (वि.) उचित समय को जाननेवाला।
कालज्ञान–(सं. पुं.) ज्योतिष शास्त्र, उपयुक्त समय का ज्ञान, ठीक समय की पहिचान, मृत्युबोधक चिह्न, मरने का समय जान लेना।
कालतुल्य–(सं. वि.) मृत्यु के समान।
कालतुष्टि–(सं. स्त्री.) समयापेक्षा, सन्तोष, सांख्य मत के अनुसार समय आने पर स्वतः कार्यसिद्धि हो जाने का सिद्धान्त।

कालत्रय–(सं. पुं.) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल ।
कालदंड–(सं.पुं.) मृत्युदण्ड, मृत्यु का चपेटा ।
कालदमनी–(सं. स्त्री.) मृत्यु-निवारिणी दुर्गा ।
कालधर्म–(सं. पुं.) समयानुसार व्यवहार, समय का स्वभाव, मृत्यु, विनाश, समय का काम ।
कालनाग–(सं. पुं.) काला सर्प जिसके काटने से अवश्य मृत्यु होती है ।
कालनाथ–(सं. पुं.) महादेव, कालभैरव ।
कालनाभ–(सं.पुं.) हिरण्यकशिपु का पुत्र ।
कालनिधि–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
कालनिरूपण–(सं. पुं.) समय का स्थिर करना ।
कालनिर्णय–(सं.पुं.) समय का निर्धारण ।
कालनिशा–(सं. स्त्री.) दीवाली की रात, भयंकर रात, अँधेरी रात ।
कालनेमि–(सं. पुं.) रावण के मामा का नाम, एक राक्षस जिसने देवताओं को जीतकर स्वर्ग में अधिकार जमाया था; –रिपु–(पुं.) विष्णु, हनुमान् ।
कालपक्व–(सं. वि.) अपने आप समय पर पकनेवाला ।
कालपर्णी–(सं. स्त्री.) काली तुलसी ।
कालपाश–(सं. पुं.) समय का बन्धन, फाँसी, समय का वह नियम जिसके द्वारा भूत-प्रेत बँधे रहते हैं और किसी प्रकार का उपद्रव नहीं कर पाते ।
कालपुरुष–(सं. पुं.) परमेश्वर का विराट रूप, यम ।
कालप्रभात–(सं.पुं.) शरद्‌ऋतु, बुरा दिन ।
कालबंजर–(हि. पुं.) पुरानी परती, जो भूमि बहुत दिनों तक जोती-बोयी न गई हो ।
कालबूत–(हि. पुं.) कच्चा भराव जिसके ऊपर मेहराब बनाई जाती है, काठ का साँचा, जूता सीने का मोची का फरमा, रस्सी बटने का उपकरण ।
कालभक्ष–(सं. पुं.) महादेव, शिव ।
कालभैरव–(सं. पुं.) शिव के मुख्य गणों में से एक ।
कालमल्लिका–(सं. स्त्री.) काली तुलसी ।
कालमहिमा–(सं. स्त्री.) समय का माहात्म्य, समय की गति ।
कालमूर्ति–(सं.स्त्री.) यम-मूर्ति काल ।
कालमेष–(सं. पुं.) एक पौधा जो औषधि में प्रयुक्त होता है ।
कालयवन–(सं. पुं.) यवनों का एक राजा जिसने मथुरा में जरासन्ध से युद्ध किया था ।

कालयापन–(सं. पुं.) समय बिताना, कालक्षेप, निर्वाह ।
कालयोग–(सं. पुं.) समय का योग, भाग्य ।
कालर–(अं. पुं.) कमीज या कोट के गले में लगी हुई दुहरी पट्टी ।
कालरात्रि–(सं. स्त्री.) प्रलयरात्रि जिसमें सारी सृष्टि का प्रलय हो जाता है, अँधेरी और भयावनी रात, मृत्युसूचक रात्रि, दीवाली की रात, दुर्गा की एक मूर्ति, यम की बहिन, मनुष्य की आयु में ७७ वर्ष ७वें महीने ७वें दिन की रात, इसके बाद मनुष्य नित्य तथा नैमित्तिक कर्म से छुटकारा पाता है ।
कालरूप–(सं. वि.) काल के सदृश, मृत्यु के समान ।
कालवाचक, कालवाची–(सं. वि.) समय का ज्ञान करानेवाला, समय बतलानेवाला ।
कालवृंत–(सं. पुं.) कुलत्थ, कुलथी ।
कालशुद्धि–(सं. स्त्री.) शुभ काल, शुभ कर्म सम्पादन करने का समय ।
कालसार–(सं. पुं.) काला हिरन, काली तुलसी, हरताल, राम नाम की पोथी ।
कालसिर–(हि.पुं.) नाव के मस्तूल का सिरा ।
कालसूक्त–(सं. पुं.) वेद का एक सूक्त जिसमें काल का वर्णन किया गया है ।
कालसूत्र–(सं. पुं.) फाँसी की रस्सी ।
कालहर–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
कालहानि–(सं. स्त्री.) समय-क्षति, व्यर्थ समय बिताना ।
कालांजन–(सं. पुं.) एक तरह का सुरमा ।
कालांतक–(सं. पुं.) यम, मृत्यु ।
कालांतर–(सं. पुं.) दूसरा समय; –विष (पुं.) ऐसा विष जिसका प्रभाव कुछ समय बीतने के बाद होता है; (जैसे–पागल कुत्ता या सियार के काटने का विष ।)
काला–(हि. वि.) कृष्ण, कोयले के रंग का, कलुषित, बुरा, प्रचण्ड, भारी, कालसर्प, काला साँप; (मुहा.) मुँह काला करना–अपमानित करना, पाप करना, व्यभिचार करना; मुँह काला होना–कलंकित होना ।
कालाकंद–(हि. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान ।
काला-कलूटा–(हि. वि.) [illegible] वर्ण, बहुत काले रंग का ।
[illegible]–(सं. वि.) [illegible] ।
[illegible]–(सं. वि.) [illegible] ।

कालाग्नि–(सं. पुं.) प्रलय काल की अग्नि, इस अग्नि के अधिष्ठाता रुद्र, पंचमुखी रुद्राक्ष ।
कालाचोर–(हि. पुं.) चतुर चोर, कापुरुष, बुरा आदमी ।
काला जीरा–(हि. पुं.) स्याह जीरा, एक प्रकार का धान ।
कालातिक्रम(ण)–(सं. पुं.) समय का बीतना, अवसर जाने देने का कार्य ।
कालातिरेक–(सं. पुं.) निर्दिष्ट समय का बीतना ।
कालातीत–(सं. वि.) जिसका समय टल गया हो, जो अपना समय बिता चुका हो; (पुं.) न्याय मत के अनुसार पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, मिथ्या तर्क, बहाना, आनुमानिक न्याय में साध्य के आधार में साध्य का अभाव कालातीत कहलाता है । इसे हेत्वाभास से बाधित भी कहते हैं ।
कालात्मक–(सं.पुं.) काल-स्वरूप परमेश्वर ।
कालात्यय–(सं.पुं.) समय को नष्ट करना ।
काला दाना–(हि. पुं.) एक प्रकार की लता जिसमें नीला फूल होता है, इसके फूल के बीज रेचक होते हैं ।
कालाध्यक्ष–(सं. पुं.) सूर्य ।
काला नमक–(हि. पुं.) सोंचर नमक ।
कालानाग–(हि. पुं.) काला सर्प, कुटिल मनुष्य ।
कालाप–(सं. पुं.) सर्प का फन, राक्षस ।
काला पहाड़–(हि.पुं.) अत्यन्त भयानक वस्तु ।
काला पान–(हि.पुं.) ताश में हुकुम का रंग ।
काला पानी–(हि. पुं.) देश से निकाले जाने का दण्ड, अंडमान और निकोबार टापू जहाँ पर आजीवन कैद के कैदी भेजे जाते हैं, मद्य ।
[illegible]–(हि.वि.) [illegible] ।
[illegible]–(हि.वि.) [illegible] ।
[illegible]–(सं.पुं.) [illegible] ।
काला [illegible]–(हि. पुं.) [illegible] ।
[illegible]–(सं. पुं.) [illegible] ।
[illegible]–(सं. पुं.) [illegible] ।
[illegible]–(सं. पुं.) [illegible] का नाम ।
[illegible]–(सं. वि.) [illegible] (पुं.) [illegible] ।
[illegible]–(सं. पुं.) [illegible] ।

कालिंद–(सं.वि.) कलिंद पर्वत या कालिंदी नदी से संबद्ध।
कालिंदी–(सं. स्त्री.) (कलिंद पर्वत से निकलनेवाली) यमुना नदी।
कालि–(हि. अव्य.) बीता हुआ दिन, आगामी दिन, कल।
कालिक–(सं. वि.) काल सम्बन्धी, समयोचित, सामयिक।
कालिका–(सं. स्त्री.) काली, चंडी, कृष्णता, कालिमा, मादा कौआ, जटामासी, बादलों की पंक्ति, शृगाली, दूब का कीड़ा, मसी, मद्य, कुहरा, सुवर्ण का दोष, काकड़ासिंगी, बिछुआ पौधा, ककड़ी की लता, नील का पौधा, बिच्छू; –पुराण–(पुं.) एक पुराण जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य का वर्णन है।
कालि काला–(हि. अव्य.) कदाचित्, किसी समय।
कालिख–(हि. स्त्री.) कालिमा, कलौंछ, धुएँ की जमी हुई बुकनी; (मुहा.) मुंह में कालिख लगना या लगाना–ऐसा अपमानित होना या करना कि किसी को मुंह दिखलाने योग्य न रह जाना।
कालिदास–(सं.पुं.) भारत के अति प्रसिद्ध प्राचीन महाकवि का नाम।
कालिनी–(सं. स्त्री.) आर्द्रा नक्षत्र।
कालिमा–(सं. स्त्री.) कालापन, मलिनता, मैल, कलंक, दोष, लांछन।
कालिय–(सं. पुं.) एक सर्प जिसको श्रीकृष्ण ने अपने वश में किया था, कलियुग; (वि.) काल संबंधी; –दमन–(पुं.) श्रीकृष्ण।
काली–(सं.स्त्री.) दुर्गा, पार्वती, कालिका, दश महाविद्याओं में से एक, अग्नि, रात्रि, घटा, काली औरत, निन्दा, काला बेंत, काला जीरा।
काली आंधी–(हि. स्त्री.) वह आंधी जिसमें चारों ओर अँधेरा छा जाय।
कालीक–(सं. पुं.) क्रौंच पक्षी, एक प्रकार का बकुला।
काली घटा–(सं. स्त्री.) उमड़ते हुए काले बादल।
काली जबान–(हि. स्त्री.) अशुभ भाषा, वह जिह्वा जिससे उच्चारित किया हुआ अशुभ वाक्य सच्चा निकल जावे।
काली जीरी–(सं. स्त्री.) छोटी जीरी, एक औषधि।
कालीदह–(हि. पुं.) वृन्दावन में यमुना का वह स्थान जिसमें कालिया नाग रहता था।
कालीन–(सं. वि.) काल संबंधी, (समासान्त में) काल या युग का, काल से संबद्ध; यथा–पूर्वकालीन, उत्तरकालीन, बहुकालीन इत्यादि; (अ.पुं.) बड़ा या बढ़िया गलीचा।
कालीपुराण–(सं.पुं.) एक उपपुराण जिसमें काली-विषयक वर्णन किया हुआ है।
काली मिर्च–(हि. स्त्री.) मिरिच, गोल मिर्च।
कालीयक–(सं. पुं.) एक पीले रंग का सुगंधित काष्ठ, पीला चंदन, अगरु।
काली शीतला–(हि. स्त्री.) शीतला या चेचक रोग जिसमें शरीर पर काले दाने निकलते हैं।
कालुष्य–(सं. पुं.) कलुषता, मैल।
कालेय–(सं. पुं.) सूर्य, शिव, महादेव।
कालेश–(सं. पुं.) काला चंदन, दारुहल्दी, कुकुरमुत्ता, अगर।
कालोत्पादित–(सं.वि.) यथासमय उत्पन्न।
कालोपयुक्त–(सं.वि.) यथासमय आवश्यक।
कालौंछ–(हि. स्त्री.) कृष्णवर्ण, कालापन, धुएँ की कालिख, काला जाला।
काल्पनिक–(सं. वि.) कल्पना से उत्पन्न, कल्पित, माना हुआ।
काल्य–(सं. वि.) प्रातःकाल किया जानेवाला।
काल्ह, काल्हिक–(हि. अव्य.) देखें 'कल'।
कावर–(हि.पुं.) एक अस्त्र विशेष, छोटा बरछा।
कावरी–(हि.स्त्री.) रस्से का फन्दा, मुट्ठी।
कावा–(फा. पुं.) घोड़े का चक्कर, वृत्त; (मुहा.)–काटना–चक्कर मारना, किसी परिस्थिति से बचने के लिए चक्कर काटना।
कावेर–(सं. पुं.) कुंकुम, रोरी।
काव्य–(सं.पुं.) कविता, कविता-ग्रन्थ, रसयुक्त वाक्य, मीठी बोली, कुशल-क्षेम, बुद्धिमानी, चित्त में विशेष आनन्द लानेवाले वाक्य, मनोहर तथा चमत्कारी वाक्य-रचना; (वि.) कवि के गुण रखनेवाला, कविता-संबंधी; –चोर–(पुं.) दूसरे के रचे हुए काव्य को अपना बतलानेवाला; –लिंग–(पुं.) वह अर्थालंकार जिसमें कोई कही हुई बात का कारण वाक्य अथवा पद के द्वारा दिखलाया जाता है; –सुधा–(स्त्री.) काव्यरूप अमृत, वह परम आनन्द जो काव्य सुनने पर होता है; –हास्य–(पुं.) प्रहसन।
काव्यार्थापत्ति–(सं. स्त्री.) अर्थापत्ति नामक अलंकार, देखें 'अर्थापत्ति'।
काश–(सं. पुं.) एक प्रकार की घास, काँस, क्षय, खाँसी का रोग।
काशिका–(सं. स्त्री.) काशी, जयादित्य और वामन की बनाई हुई पाणिनीय व्याकरण की एक वृत्ति का नाम; (वि. स्त्री.) चित्त को परम शान्ति देनेवाली, प्रकाश करनेवाली, प्रदीप्त।
काशिखंड, काशीखंड–(सं. पुं.) स्कन्दपुराण का एक उपपुराण।
काशिप–(सं. पुं.) शिव, महादेव, काशी के राजा।
काशी–(सं. स्त्री.) वाराणसी, बनारस।
काशीकरवट–(हि. पुं.) इस नाम का एक तीर्थ जो काशी में है जहाँ पुराने समय में लोग आरे के नीचे जाकर अपना प्राण देना मुक्तिकारक समझते थे।
काशीश–(सं. पुं.) देखें 'काशिप'।
काशेय–(सं. वि.) काशी में उत्पन्न।
काश्मरी–(सं. स्त्री.) गंभारी नामक वृक्ष जिसकी जड़ औषधि में प्रयुक्त होती है।
काश्मीर–(सं. पुं.) एक देश का नाम, देखें 'कश्मीर; (वि.) कश्मीर में उत्पन्न, कश्मीर में उपजनेवाला।
काश्मीरा–(हि. पुं.) मोटे ऊन से तैयार किया हुआ वस्त्र।
काश्मीरी–(हि. वि., पुं., स्त्री.) कश्मीर देशवासी, इस देश की भाषा, कश्मीर देश संबंधी।
काश्यप–(सं. पुं.) कणाद ऋषि, एक गोत्र विशेष; (वि.) कश्यप संबंधी।
काश्यपि–(सं. पुं.) सूर्य के सारथि अरुण, गरुड़।
काषाय–(सं.वि.) कषाय (गेरू) से रँगा हुआ, गेरुआ।
काष्ठ–(सं. पुं.) लकड़ी, काठ, ईंधन, जलाने की लकड़ी।
काष्ठपुष्पा–(सं. स्त्री.) केतकी का पौधा।
काष्ठफलक–(सं. पुं.) लकड़ी का पटरा।
काष्ठभूत–(सं. वि.) लकड़ी की तरह कड़ा और निर्जीव।
काष्ठलेखक–(सं. पुं.) घुण, घुन।
काष्ठा–(सं. स्त्री.) स्थिति, अवधि, सीमा, उत्कर्ष, बड़ाई, कश्यप की स्त्री, हलदी, १५ निमिष का काल, चन्द्रमा की एक कला, दिशा, ओर।
काष्ठागार–(सं.पुं.) लकड़ी का घर।
काष्ठासन–(सं. पुं.) लकड़ी की चौकी, पीढ़ा इत्यादि।
कास–(सं. पुं.) खांसी, कफ, एक घास, कांस।

कासनी—(हिं. स्त्री.) एक पौधा जो औषधियों में प्रयुक्त होता है, नीला रंग।
कासर—(सं. पुं.) काली भेंड़ जिसके पेट के रोयें लाल होते हैं, भैंसा।
कासा—(हिं. पुं.) दरियाई नारियल का पात्र जो भिक्षुक रखते हैं, कटोरा, प्याला।
कासार—(सं. पुं.) बड़ा तालाब, झील, ताल, एक प्रकार का दण्डक वृत्त।
कासीस—(सं. पुं.) उपधातु, कसीस, तुत्थ, तूतिया।
काह—(हि.अव्य.) क्या, कौन-सी (वस्तु)।
काहि—(हिं. सर्व.) किसको, किसे।
काहिल—(अ. वि.) सुस्त, आलसी, कामचोर।
काहिली—(अ. स्त्री.) सुस्ती, आलस्य।
काहीं—(हिं. अव्य.) पास, द्वारा।
काही—(हिं. वि.) घास के रंग का, काले-हरे रंग का।
काहु, काहू—(हिं. सर्व.) किसी को।
काहे—(हिं. अव्य.) क्यों, किस लिये, किस निमित्त।
किं—(सं. अव्य.) क्या।
किंकणी—(सं. स्त्री.) छोटा घुंघरू।
किंकर—(सं. पुं.) दास, नौकर, भृत्य।
किंकरी—(सं. स्त्री.) दासी, नौकरानी।
किंकर्तव्यता—(सं. स्त्री.) यह चिन्ता कि क्या करना होगा।
किंकर्तव्यविमूढ़—(सं. वि.) कर्तव्य का निश्चय करने में असमर्थ, भौचक्का, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
किंकिनी—(सं. स्त्री.) कमर का आभूषण, करधनी, लड़ाई का एक अस्त्र।
किंकिर—(सं. पुं.) हाथी का मस्तक, भौंरा, कोयल, घोड़ा, कामदेव।
किंगरी, किंगिरी—(हिं. स्त्री.) छोटी सारंगी के आकार का एक बाजा।
किंगोरा—(हि. पुं) एक प्रकार की झाड़ी।
किंचित्—(सं. वि.) कुछ, थोड़ा।
किंचिन्मात्र—(सं. वि.) अल्प, परिमित, थोड़ा-सा।
किंज, किंजल, किंजल्क—(सं. पुं.) कमल का केसर।
किंतु—(सं. अव्य.) लेकिन, परन्तु, बल्कि।
किंपुरुष—(सं. पुं.) किन्नर, नीच मनुष्य।
किंवदंती—(हि. स्त्री.) जनप्रवाद।
किंवा—(सं. अव्य.) अथवा, अथवा।
किंशुक—(सं. पुं.) पलाश का वृक्ष, टेसू।
कि—(हिं. अव्य.) जैसे, किस प्रकार, क्या एक संयोजक शब्द जो क्रियाओं के बाद प्रयुक्त होता है, अथवा, या, तत्क्षण।
किकियाना—(हिं. क्रि. अ.) रोना, चिल्लाना।
किचकिच—(हिं. स्त्री.) झूठा झगड़ा, व्यर्थ की बकवाद।
किचकिचाना—(हिं. क्रि. अ., स.) क्रोध से दाँत पीसना, पूरा बल लगाना, क्रुद्ध होना।
किचकिचाहट—(हिं. स्त्री.) क्रोध, गुस्सा, क्रोध में दाँत-पिसाई।
किचकिची—(हिं. स्त्री.) किचकिचाहट, क्रोध।
किचड़ाना—(हिं. क्रि. अ.) आँखों में कीचड़ आना।
किचपिच—(हिं. वि.) क्रमरहित, अस्पष्ट।
किचरपिचर—(हि. वि.) देखें 'किचकिच'।
किटकिट—(हि. पुं.) वादविवाद, झंझट, झगड़ा।
किटकिटाना—(हिं. क्रि. अ., स.) दाँत पीसना, किचकिचाना, (खाते समय) दाँतों के नीचे कंकड़ पड़ना।
किटकिना—(हिं. पुं.) वह लिखित पत्र जिसके द्वारा ठीकेदार अपना ठेका दूसरे के नाम कर देता है, सोनार का ठप्पा, चतुराई; —(ने)दार—(पुं.) वह व्यक्ति जो ठकेदार से ठेके पर कुछ लेता हो; —(ने)बाज—(वि.) मितव्यय या चतुराई से काम करनेवाला।
किटकिरा—(हिं. पुं.) देखें 'किटकिना'।
किटिभ—(सं. पुं.) बालों में का जूँ।
किट्ट, किट्टक—(सं. पुं.) धातु का मैल, मोरचा, कीट, कान का खूँट।
किड़कना—(हिं. क्रि. अ.) चल देना, खिसक जाना।
किड़किड़ाना—(हि. क्रि. अ., स.) किटकिटाना, दाँतों तले लगना (कंकड़ी)।
किण—(सं. पुं.) मांस-ग्रन्थि, घट्ठा, घुन।
कित—(हि. अव्य.) कहाँ, किस ओर, किधर।
कितक—(हिं. अव्य.) कितना।
कितना—(हिं. वि.) किस मात्रा, परिमाण या संख्या का; (अव्य.) किस मात्रा या परिमाण में, कहाँ तक, बहुत अधिक या ज्यादा।
कितने—(हि. वि.) 'कितना' का बहुवचन।
कितव—(सं. पुं.) जुआरी, दुष्ट, पंचक, धूर्त, दुष्ट।
किताब—(अ. स्त्री.) ग्रंथ, पुस्तक, पोथी, हिसाब की बही।
किताबी—(हि. वि.) किताब से संबंध, पुस्तकीय, [illegible]; —चेहरा—(पुं.) किताब की तरह [illegible] चेहरा, [illegible]।
कितिक, कितेक—(हिं. वि.) कितना, बहुत, असंख्य।
कितेब—(हिं. पुं.) पुस्तक, धर्मग्रन्थ।
कितै—(हिं. अव्य.) कहाँ।
कितो—(हिं. वि.) देखें 'कितना'।
कित्ता—(हिं. वि.) कितना।
कित्ति—(हिं. स्त्री.) कीर्ति, बड़ाई, यश।
किधर—(हिं. अव्य.) कहाँ, किस ओर; (मुहा.)—से चाँद निकला?—कहाँ से भूलकर आ पड़े? (किसी मित्र के बहुत दिनों के बाद आगमन पर उक्त कथन।)
किधौं—(हिं. अव्य.) अथवा, या, न जाने।
किन—(हिं. सर्व.) 'किस' शब्द का बहुवचन; (अव्य.) क्या नहीं, अवश्य क्यों न; (पुं.) रगड़ का चिह्न।
किनका—(हि. पुं.) कण, अनाज का टुकड़ा।
किनहा—(हिं. वि.) कृमियुक्त, कीड़ा पड़ा हुआ।
किनार—(हिं. पुं.) देखें 'किनारा'।
किनारदार—(हिं. वि.) जिस वस्त्र में किनारा लगा हो।
किनारपेच—(हिं. पुं.) दरी के ताने की मोटी डोरी।
किनारा—(फा. पुं.) नदी का तट, तीर, हाशिया, छोर, गोट; —कशी—(स्त्री.) किनारा खींचना, दूर या बचकर निकल जाना; (मुहा.) —करना, —खींचना—अलग होना, दूर होना; —कश होना—किनारा खींचना।
किनारी—(हिं. स्त्री.) सुनहला या रुपहला गोटा, गोट।
किनारे—(हिं. अव्य.) कोर, सीमा या तट पर, पृथक् या अलग।
किन्नर—(सं. पुं.) देवयोनि विशेष, इनका शरीर मनुष्य के समान पर सिर घोड़े के जैसा होता है, गान-वाद्य-वाली एक जाति; किंपुरुष, नीच विचार वाला मनुष्य।
किन्नरी—(सं. स्त्री.) किन्नर जाति की स्त्री, एक प्रकार का तम्बूरा।
किन्निमित्त—(सं. अव्य.) किस कारण, किसलिए।
किफायत—(अ. स्त्री.) कमखर्ची, बचत, [illegible]; —[illegible]।
[illegible]—([illegible]) [illegible]।
किमु—(सं. अव्य.) [illegible]।
किमर्थ—([illegible]) [illegible]।
किमरिक—([illegible]) [illegible]।

किमर्थम्–(सं. अव्य.) किस कारण, क्यों, किस लिये।
किमाच–(हिं. पुं.) केवाँच।
किमि–(हिं. अव्य.) किस ढंग से, कैसे, किस प्रकार से।
किमु–(सं. अव्य.) क्यों, किस लिये।
किमुत–(सं.अव्य.) क्यों, अथवा या बहुत।
किम्मत–(हिं. स्त्री.) चातुरी।
कियत्–(सं.अव्य.) किस परिमाण में, कितना।
कियारी–(हिं. स्त्री.) खेतों या बगीचों में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर छोटी-छोटी मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें बीज या पौधे बोये जाते हैं, क्यारी, बड़ा कड़ाहा जिसमें समुद्र का खारा पानी जमने के लिये रक्खा जाता है, खटिया, चारपाई, चौका।
कियाह–(सं.पुं.) लाल रंग का घोड़ा, सियार।
किरंटा–(हिं. पुं.) छोटे दरजे का क्रिस्तान, किरानी।
किरक–(सं.पुं.) लेखक, लिखनेवाला, कातिब।
किरका–(हिं. पुं.) कंकड़, किरकिरी, छोटा टुकड़ा।
किरकिटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'किरकिरी'।
किरकिन–(हिं.पुं.) गदहे या घोड़े का चमड़ा।
किरकिरा–(हिं. वि.) कँकरीला, कंकड़दार, जिसमें छोटे-छोटे कड़े रवे हों, बुरा; (मुहा.)–होना–आनन्द में विघ्न पड़ जाना।
किरकिराना–(हिं. क्रि. अ.) पीड़ा देना, दुखना, बुरा लगना, अच्छा न लगना, किटकिटाना।
किरकिराहट–(हिं. स्त्री.) आँख में धूल इत्यादि पड़ने की पीड़ा, दाँतों के तले कंकड़ पड़ जाने का शब्द, कँकड़ीलापन।
किरकिरी–(हिं. स्त्री.) धूल या तिनके का छोटा टुकड़ा, अपमान, हेठी।
किरकिल–(हिं. पुं.; सं.कृकलास) गिरगिट, शरीर में की एक वायु जो छींक लाती है।
किरकी–(हिं स्त्री.) एक प्रकार का आभूषण।
किरच–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पतली तलवार जो नोंक के बल भोंकी जाती है, नोंकदार टुकड़ा।
किरचिया–(हिं. पुं.) बगुले के समान एक पक्षी।
किरची–(हिं. स्त्री.) रेशम का लच्छा।
किरण–(सं.स्त्री.) किरन, सूर्य की रश्मि, मयूख, प्रकाश।
किरणमाली–(सं. पुं.) सूर्य।
किरन–(हिं. स्त्री.) किरण, प्रकाश की रेखा, झालर, ज्योति, कलाबत्तू की झालर जो कपड़ों में लगाई जाती है;
(मुहा.)–फूटना–सूर्योदय होना।
किरपा–(हिं. स्त्री.) देखें 'कृपा'।
किरपान–(हिं. पुं.) देखें 'कृपाण'।
किरम–(हिं. पुं) कृमि, कीड़ा।
किरमई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लाह।
किरमाल–(हिं. पुं.) खड्ग, तलवार, अमलतास का वृक्ष।
किरमिच–(हिं. पुं.) एक प्रकार का महीन टाट या मोटा ठस बिना हुआ कपड़ा। (यह जूते, परदे, थैले इत्यादि बनाने के काम में आता है।)
किरमिज–(हिं. पुं.) एक प्रकार का रंग, मटमैले रंग का घोड़ा।
किरमिजी–(हिं. वि.) मटमैले करौंदिया रंग का।
किरयात–(हिं. पुं.) किरात, चिरायता।
किरराना–(हिं. क्रि. अ.) दाँत पीसना, क्रोध करना, किरकिर शब्द करना।
किरवान, किरवार–(हिं. पुं.) कृपाण।
किराँची–(हिं. स्त्री.) अनाज, भूसा, इत्यादि लादने की चौपहिया गाड़ी, रेलगाड़ी का माल लादने का डब्बा।
किरात–(सं. पुं.) एक प्राचीन जंगली जाति, व्याध बहेलिया; (हिं. स्त्री.) रत्न इत्यादि तौलने का एक परिमाण जो चार जव के बराबर होता है, अंग्रेजी आउन्स का चौबीसवाँ भाग।
किरातार्जुनीय–(सं. पुं.) कवि भारवि-कृत एक महाकाव्य।
किरातिनी–(सं. स्त्री.) किरात की स्त्री, जटामासी।
किराना–(हिं. पुं.) प्रतिदिन के उपयोग में आनेवाली चीजें मसाले आदि जो पँसारियों दुकान पर बिकते हैं; (क्रि. स.) पछोरना, सूप से बनाना या स्वच्छ करना।
किरानी–(हिं.पुं.) लिपिक, करंटा, दोगला, यूरोपियन।
किराया–(हिं.पुं.) दूसरे के मकान में रहने या सवारी में यात्रा करने आदि के लिए मकान-मालिक या सवारीवाले को उपभोग कर्त्ता द्वारा दिया जानेवाला धन, भाड़ा; (मुहा.)–उतारना–मकान आदि का भाड़ा वसूल करना।
किरायदार–(हिं. पुं.) किराये पर उपभोग करनेवाला।
किरायेदारी–(हिं. स्त्री.) किराये पर देने या लेने की क्रिया या स्थिति, किराये पर देने तथा लेनेवाले के बीच होनेवाला इकरारनामा या लिखापढ़ी।
किराव–(हिं. पुं.) मटर।
किरावल–(हिं.पुं.) लड़ाई के मैदान में आगे जानेवाली फौज, बन्दूक से आखेट करनेवाला मनुष्य।
किरासन–(हिं.पु) (अं. 'केरोसीन' का अपभ्रंश) मिट्टी का तेल।
किरिच–(हिं. स्त्री.) नोकदार टुकड़ा, देखें 'किरच'।
किरिन–(हिं. स्त्री.) देखें 'किरण'।
किरिम–(हिं. स्त्री.) देखें 'कृमि'।
किरिमदाना–(हिं. पुं.) किरमिज नाम का कीड़ा जो थूहर के पेड़ पर फैल जाता है। (सुखाकर इसका रंग बनाया जाता है।)
किरिया–(हिं. स्त्री.) शपथ, कसम, सौगन्ध, कर्तव्य, काम, मृतक-कर्म।
किरीट–(सं. पुं.) एक प्रकार का सिर का भूषण, मुकुट, कुसुम का वृक्ष, एक छन्द जिसमें केवल भगण रहते हैं, व्यापारी।
किरीटमाली, किरीटी–(सं. पुं.) अर्जुन, किरीटधारी।
किरीरा–(हिं. स्त्री.) क्रीड़न।
किरोर–(हिं. पुं.) देखें 'करोड़'।
किरोलना–(हिं. क्रि.स.) कतरना, खुरचना।
किरौना–(हिं. पुं.) कृमि, कीड़ा।
किर्च–(हिं. स्त्री.) देखें 'किरच'।
किर्तनिया–(हिं. पुं.) कीर्तन करनेवाला।
किर्मिज–(हिं. पुं.) एक प्रकार का रंग, किरमिज, किरमिजी रंग का घोड़ा।
किर्रा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की धातु पर खोदने की छेनी।
किल–(सं. अव्य.) वास्तव में, सचमुच, संभवतः, अर्थात्।
किलक–(हिं. स्त्री.) हर्षध्वनि, प्रसन्नता का शब्द, आनन्द; एक प्रकार का नरकट जिसकी लेखनी बनाई जाती है।
किलकना–(हिं. क्रि.अ.) हर्षध्वनि करना, किलकार मारना।
किलकार–(हिं. स्त्री.) हर्षध्वनि।
किलकारना–(हिं. क्रि.अ.) देखें 'किलकना'।
किलकारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'किलकार'।
किलकिंचित्–(सं. पुं.) शृंगार–भावजन्य क्रिया, नायक के समागम से अति प्रसन्न होकर नायिका द्वारा अल्पहास, रोदन, भय, क्रोध इत्यादि भाव मिश्रित रूप से दिखलाना है।
किलकिल–(हिं. स्त्री.) विवाद, झगड़ा।
किलकिला–(सं. स्त्री.) हर्षध्वनि, किलकार, वीरों की ललकार; (हिं.स्त्री.) मछली खानेवाला एक पक्षी; (पुं.) समुद्र का वह भाग जहाँ लहरें भयंकर शब्द करती हैं।
किलकिलाना–(हिं. क्रि. अ.) हर्षध्वनि

करना, चिल्लाना, कोलाहल करना, वाद-विवाद करना, झगड़ना, क्रोध करना, खुजलाना।
किलकिलाहट–(हि. स्त्री.) हर्षध्वनि खुजली, क्रोध, विवाद, झगड़ा।
किलकी–(हि. स्त्री.) बढ़ई का चिह्न लगाने का एक औजार।
किलकैया–(हि. पुं., वि.) पशुओं के खुर में कीड़े पड़ने का रोग, हर्षध्वनि करने वाला, किलकनेवाला।
किलटा–(हि.पुं.) एक प्रकार का टोकरा।
किलना–(हि.क्रि.अ.) नियन्त्रित होना, वश में लाया जाना, गति में रुकावट होना, कीला जाना।
किलनी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का कीड़ा जो मवेशियों के शरीर पर चिपका रहता है और इनका लोहू चूसता है।
किलबिलाना–(हि. क्रि.अ.) कुलबुलाना, धीरे-धीरे रेंगना, इधर-उधर डोलना।
किलभी–(हि.पुं.) नाव का पिछला भाग।
किलवांक–(हि. पुं.) एक प्रकार का काबुली घोड़ा।
किलवा–(हि. पुं.) भूमि खोदने का बड़ा फावड़ा।
किलवाई–(हि. स्त्री.) सूखी घास बटोरने की फरुही।
किलवाना–(हि.क्रि.स.) कील लगवाना।
किलवारी–(हि.स्त्री.) पतवार, छोटा डाँड़ा।
किलविष–(हि. पुं.) किल्विष, पाप।
किलहेंटा–(हि. पुं.) सिरोही पक्षी।
किलहा–(हि. पुं.) तेल में बनाया हुआ आम का अचार।
किला–(अ.पुं.) वह लंबी-चौड़ी इमारत जिसके भीतर सैनिक रहते हैं और जो विविध रक्षात्मक उपायों द्वारा बाहरी आक्रमण से सुरक्षित होता है, शतरंज के खेल में बादशाह के लिए शह से बचने का स्थान; (मुहा.)–बाँधना– शतरंज में बादशाह के इर्द-गिर्द मोहरों को इस प्रकार रखना कि जल्दी शह न पड़े।
किलात–(सं. वि.) वामन, बौना, छोटा।
किलाना–(हि.क्रि.सं.) देखें 'किलवाना'।
किलावा–(हि. पुं.) सोनार का एक औजार या उपकरण।
किलिंज–(सं.पुं.) पतली पट्टी, चटाई, परदा।
किलिन–(हि. पुं.) नाव का पिछला भाग जहाँ पर खड़े हुए पटरे जड़े होते हैं।
किलिनी–(हि. स्त्री.) देखें 'किलनी'।
किलेदार–(अ. पुं.) किले में स्थित सेना का प्रधान अधिकारी, ब्रिगेडियर।
किलेदारी–(अ. स्त्री.) किलेदार का पद।
किलेबंदी–(अ. स्त्री.) किसी स्थान को सैनिक प्रतिरक्षात्मक उपायों से संरक्षित करना।
किलोमीटर–(अं. पुं.) दूरी की 5/8 मील के बराबर नाप।
किलोल–(हि. पुं.) देखें 'कल्लोल'।
किलौनी–(हि. स्त्री.) देखें 'किलनी'।
किल्ला–(हि. पुं.) मेख, खूंटा, जाँते की मेख, अंकुर; (मुहा.)–गाड़कर बैठना–अटल होकर बैठना।
किल्लाना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'किलकिलाना', कल्लोल करना।
किल्ली–(हि. स्त्री.) कील, मेख, खूंटी, सिटकिनी, बिल्ली, मुठिया जिसके घुमाने से कल चलता है; (मुहा.) –ऐंठना या घुमाना–युक्ति लगाना; –हाथ में होना–किसी का वश में होना।
किल्विष–(सं. पुं.) पाप, अपराध, रोग।
किल्विषी–(सं. वि.) पापी, अपराधी।
किवाँच–(हि. पुं.) केवाँच।
किवाड़–(हि. पुं.) कपाट, द्वार का पल्ला; (मुहा.)–देना–दरवाजा बंद करना; –बंद हो जाना–घर छोड़कर गृहवासियों का रोजी के लिए परदेश चला जाना; घर के सब आदमियों का मर जाना।
किशटा–(हि.पुं.) एक प्रकार का शफतालू।
किशमिश–(हि. स्त्री.) सुखाया हुआ छोटा अंगूर।
किशमिशी–(हि. वि.) किशमिश का, एक तरह का रंग।
किशल, किशलय–(सं. पुं.) कोंपल, कोमल नया पत्ता।
किशोर–(सं. पुं.) घोड़े का बच्चा, सूर्य, तरुण अवस्था, ग्यारह से पन्द्रह वर्ष के वय का बालक, शिशु, लड़का; (वि.) छोटे वय का।
किशोरी–(सं. स्त्री.) ग्यारह से पंद्रह वर्ष के वय की स्त्री।
किश्त–(फा. स्त्री.) शतरंज के खेल में बादशाह को शह लगना।
किश्ती–(फा. स्त्री.) नाव, डोंगी।
किष्किंध–(सं. पुं.) एक पर्वत का नाम।
किष्किंधा–(सं. स्त्री.) देखें 'किष्किंध'।
किस–(हि. सर्व.) 'कौन' का रूपान्तर जो विभक्ति लगने से उसे प्राप्त होता है।
किसनई–(हि. स्त्री.) कृषि, खेती का काम।
किसमिस–(हि. स्त्री.) देखें 'किशमिश'।
किसल, किसलय–(हि.पुं.) देखें 'किसलय'।
किसान–(हि. पुं.) कृषक, खेतिहर।
किसानी–(हि. स्त्री.) कृषिकर्म, खेती का काम; (वि.) कृषि-सम्बन्धी।
किसी–(हि. सर्व., वि.) 'कोई' का वह रूपान्तर जो विभक्ति लगाने से इसको प्राप्त होता है।
किसू–(हि. सर्व.) देखें 'किसी'।
किस्त–(अ. स्त्री.) अंश, भाग; (देन, लगान, मालगुजारी, ऋण आदि का) सामयिक देय-धन; –खिलाफी–(स्त्री.) किस्त नियत समय पर चुकता न करना; –बंदी–(स्त्री.) किस्त बाँधना; –ब-किश्त–(अव्य.) किस्त-किस्त करके, कई अंशों में; –वार–(अव्य.) किस्त-ब-किस्त।
किस्म–(अ. स्त्री.) प्रकार, भेद, तरह।
किस्मत–(अ. स्त्री.) भाग्य, तकदीर; –आजमाई–(स्त्री.) भाग्य की परीक्षा; (मुहा.)– आजमाना–भाग्य के भरोसे सफलता प्राप्त करने की आशा से काम करना; –का धनी या दरिद्र–भाग्यवान या अभागा; –का फेर–भाग्य का विपर्यय या उलट-फेर; –का लिखा, –में बदा–जो भाग्य में हो; –चमकना या जागना–भाग्योदय होना; – पलटना – स्थिति बदल जाना; –फूटना–दुर्भाग्य-ग्रस्त होना; –लड़ना–सौभाग्य-पूर्ण स्थिति में होना, भाग्य का अनुकूल होना।
किस्सा–(अ. पुं.) कथा, दास्तान, कहानी, वृत्तान्त; –कहानी–कथा-कहानी, मनगढ़ंत बात; (मुहा.) –खत्म, तमाम या पाक होना–कोई बात का अंत होना, मिटना, मरना।
की–(हि. प्रत्य.) 'का' का स्त्रीलिंग रूप; (क्रि.स.) 'किया' का स्त्रीलिंग [illegible]; (अव्य.) [illegible]।
कीक–(हि. स्त्री.) चीत्कार, चीख।
कीकट–(सं. पुं.) घोड़ा, मगध देश का प्राचीन नाम, एक अनार्य जाति।
कीकना–(हि. क्रि. अ.) [illegible], [illegible]।
[illegible]–(हि. पुं.) [illegible]।
[illegible]–(सं. पुं.) [illegible]।
[illegible]–(हि. पुं.) [illegible]।
[illegible]–(हि. पुं.) [illegible]।
[illegible]–(सं. पुं.) [illegible] [illegible]

कीचड़–(हिं. पुं.) पानी में सनी मिट्टी, कर्दम, पंक, आँख का मैल।

कीट–(सं. पुं.) कीड़ा-मकोड़ा, रेंगने या उड़नेवाला छोटा प्राणी, लोहे का मैल, विष्ठा; (वि.) निष्ठुर; (हिं. पुं.) तेल, घी इत्यादि के नीचे बैठी हुई तलछट।

कीटजा–(सं. स्त्री.) लाक्षा, लाह, लाख।

कीटभृंग–(सं. पुं.) एक न्याय विशेष जो उस समय कहलाता है जब अनेक वस्तुएँ मिलकर एक रूप हो जाती हैं।

कीटमणि–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू, तितली।

कीटाणु–(सं. पुं.) अति सूक्ष्म कीड़ा जो आँख से देख नहीं पड़ता।

कीड़ा–(हिं. पुं.) उड़ने या रेंगनेवाला कीट, कृमि, मकोड़ा, सर्प, जूं, खटमल, छोटा बच्चा; (मुहा.) **कीड़े काटना**–व्यग्र होना, घबड़ाना; **कीड़े पड़ना**–दोषयुक्त होना, सड़ना।

कीड़ी–(हिं. स्त्री.) अति सूक्ष्म कीड़ा, छोटा कीड़ा, चींटी।

कीदृश–(सं. वि.) किस प्रकार का, कैसा।

कीनखाब–(हिं. पुं.) रेशमी वस्त्र विशेष।

कीनना–(हिं. क्रि. स.) मोल लेना, क्रय करना, खरीदना।

कीप–(हिं. स्त्री.) छोटे मुंह के पात्र में तरल पदार्थ भरने की छुच्छी, चोंगी।

कीमत–(अ. स्त्री.) मूल्य, दाम, योग्यता, गुण।

कीमती–(अ. वि.) मूल्यवान, दामी।

कीमा–(अ. पुं.) छोटे-छोटे महीन टुकड़ों में कटा मांस; (मुहा.)–**करना**–बहुत छोटे-छोटे टुकड़े करना।

कीमिया–(अ. स्त्री.) रसायन विद्या, सोना-चांदी बनाने की रहस्यमय-विद्या, अकसीर रसायन, कार्य सफल करनेवाली युक्ति; –**गर**–(पुं.) रसायनविद्, लोहे-पत्थर आदि से सोना-चांदी बनाने के तरीकों का जानकार; –**गरी**–(स्त्री.) कीमियागर की विद्या; –**साज**–देखें 'कीमियागर'।

कीर–(सं. पुं.) मांस, शुक, तोता, सुवा, कश्मीर देश, इस देश का वासी।

कीरट–(सं. पुं.) वंग धातु, रांगा।

कीरति–(हिं. स्त्री.) देखें 'कीर्ति'।

कीरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कीड़ी'।

कीर्ण–(सं. वि.) ढका हुआ, फैला हुआ, बिखरा हुआ, भरा हुआ।

कीर्तक–(सं. वि.) कीर्तन करनेवाला।

कीर्तन–(सं. पुं) वर्णन, यश का प्रकाशन, गुण-कथन, कृष्णलीला-विषयक संगीत और भजन।

कीर्तनिया–(हिं. पुं.) कृष्णलीला-विषयक संगीत करने और भजन गानेवाला, कीर्तन करनेवाला।

कीर्तनीय–(सं. वि.) कीर्तन करने योग्य।

कीर्ति–(सं. स्त्री.) पुण्य, ख्याति, यश, दीप्ति, चमक, शब्द, प्रसाद, विस्तार, फैलाव, सीता की एक सखी, राधा की माता, आर्या छन्द का एक भेद जिसमें १४ गुरु और १९ लघु वर्ण लगते हैं, एकादशाक्षरी वृत्त विशेष; –**कर**–(वि.) यशकारक; –**धर**–(वि.) कीर्तिमान्, प्रसिद्ध; –**मान्**, –**शाली**–(वि.) कीर्तियुक्त, विख्यात, प्रसिद्ध; –**स्तंभ**–(पुं.) किसी की कीर्ति स्मरण कराने के लिये बनाया हुआ स्तम्भ, यश स्थापित करने का कार्य।

कीर्तित–(सं. वि.) कहा हुआ, प्रसिद्ध।

कील–(सं. स्त्री.) मेख, खूंटी, स्तम्भ, खंभा, लेश, बहुत छोटा टुकड़ा, केहुनी के नीचे का भाग, मूढ़-गर्भ जो योनि में अटक जाता है; (हिं. स्त्री.) कुम्हार के चाक की खूंटी, नाक में पहिनने का एक आभूषण, फोड़े आदि की कड़ी पीप, एक प्रकार की कपास, जांते के बीच की खूंटी।

कीलक–(सं. पुं.) पशुओं को बांधने का खूंटा, परेग, तन्त्रोक्त देवता विशेष, दूसरे मन्त्र की शक्ति को नाश करनेवाला मंत्र।

कील-कांटा–(हिं. पुं.) औजार, साज-सामान, हरबा–हथियार।

कीलन–(सं. पुं.) बन्धन, रोक, रुकावट, मन्त्र को कीलने का कार्य।

कीलना–(हिं. क्रि. स.) कील लगाना, मेख ठोकना, कील देना, मंत्र के प्रभाव को दूर करना, मुंह बन्द करना, डट्टा लगाना, सर्प को वश में करना, वशीभूत करना, अधीन करना।

कीलशायी–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।

कीला–(हिं. पुं.) कील, मेख, बड़ी कील।

कीलाक्षर–(सं. पुं.) एक प्रकार की प्राचीन फारसी लिपि जिसके अक्षर कील के समान होते थे।

कीलाल–(सं. पुं.) रक्त, अमृत, मधु, बांधा जानेवाला पशु।

कीलित–(सं. वि.) मन्त्र से बँधा हुआ, कीला हुआ।

कीलिया–(हिं. पुं.) पुरवट हांकनेवाला।

कीली–(हिं. स्त्री.) किसी चक्र के बीच में लगी हुई खूंटी जिस पर चक्र घूमता है, कील, किल्ली।

कीश–(हिं. पुं.) वानर, बन्दर, पक्षी, सूर्य; (वि.) नंगा; –**फल**–(पुं.) कल्लोल, अंकोल, शीतलचीनी।

कीस–(हिं. पुं.) गर्भ की थली, जेब, कीश, बन्दर।

कुँअर–(हिं. पुं.) राजकुमार, राजपुत्र, बालक, लड़का, कुमार; –**विलास**–(पुं.) एक प्रकार का धान या चावल।

कुँअरि–(हिं. स्त्री.) कुमारी, राजकुमारी।

कुँअरेटा–(हिं. पुं.) छोटा कुँवर, कुमार।

कुँआरा–(हिं. वि.) अविवाहित, जिसका विवाह न हुआ हो।

कुँआरी–(हिं. स्त्री.) अविवाहिता कन्या, बिना ब्याही हुई लड़की।

कुँइयाँ–(हिं. स्त्री.) छोटा कुआँ।

कुँई–(हिं. स्त्री.) कुमुदिनी, कोई, कुईं।

कुंकुम (मा)–(हिं. पुं.) लाख का बना हुआ पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिन लोग एक दूसरे पर फेंकते हैं।

कुंचन–(पुं. सं.) सिकुड़ना, बाल का घुंघरूदार होना, टेढ़ा होना।

कुंचित–(सं. वि.) मुड़ा या सिकुड़ा हुआ।

कुंज–(हिं. पुं.) पौधों या लताओं से ढँका हुआ स्थान, दुशाले के कोने का बेलबूटा, कोनियाँ, छप्पर छाजने की एक लकड़ी।

कुंजगली–(हिं. स्त्री.) पौधों या लताओं से ढँका हुआ मार्ग, पतली सँकरी गली।

कुंजड़–(हिं. पुं.) पिस्ते का गोंद।

कुंजड़ा–(हिं. पुं.) एक जाति जो फल और तरकारी बेचती है।

कुंजविहारी–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।

कुंजी–(हिं. स्त्री.) ताली, अर्थ-बोधक-पुस्तक, व्याख्या की पुस्तक।

कुंठ–(सं. वि.) अकर्मण्य, मूर्ख, मुड़ा या सिकुड़ा हुआ, भोथरा।

कुंठता–(सं. स्त्री.) मूर्खता, भोथरापन।

कुंठित–(सं. वि.) लज्जित, भोंथरा।

कुंड़–(हिं. पुं.) कूंड, हल चलाने से पड़नेवाली जोत की गहरी लकीर; –**पुजी**–(हिं. स्त्री.) कुँड़ का पूजन।

कुंड–(सं. पुं.) पानी रखने का कुंडा, जलपात्र, जलाशय, हांड़ी, होम करने के लिए बना गड्ढा, जारज या दोगली संतान, एक प्रकार का सर्प, बटलोही।

कुंडकील–(सं. पुं.) पतिता ब्राह्मणी का पुत्र।

कुंडज–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

कुंडल–(सं. पुं.) कान का एक अलंकार,

कान का बाला, बाली, वलय, पाश, गोल फंदा, मेखला, बदली में सूर्य या चाँद के चारों ओर मंडलाकार प्रकाश, घेरा, फेंटी, गेंडुरी, एक प्रकार का साँप।
कुंडलाकार–(सं.वि.) वृत्ताकार, मंडलाकार।
कुंडलिका–(सं. स्त्री.) छंद विशेष, कुंडलिया छंद, मंडलाकार प्रकाशवृत्त।
कुंडलिनी–(सं.स्त्री.) तंत्र तथा हठयोग के अनुसार हृदयगर्भ में स्थित सूक्ष्म और मूलाधार शक्ति।
कुंडली–(सं. पुं.) सर्प, वरुण, मोर, चित्र-मृग, विष्णु, अमलतास का वृक्ष; (स्त्री.) कुंडलिनी शक्ति, जन्मपत्रिका, सर्पिणी, गुरुच, कचनार, साँप का वृत्ताकार में सिमटना, गेंडुरी; –कृत–(वि.) कुंडल के आकार का, गेंडुरी बनाया हुआ।
कुंडलिया–(हिं.स्त्री.) एक छन्द विशेष जो दोहा और रोला छन्द के योग से बनता है।
कुंडा–(हिं. पुं.) चौड़े मुंह का जल इत्यादि रखने का मिट्टी का बड़ा तथा गहरा पात्र, द्वार में लगाने का कोंढ़ा, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
कुंडिका–(सं.स्त्री.) मिट्टी की कुंडी या पथरी।
कुंडिया–(हिं. स्त्री.) कठौती, कूंड़ी।
कुंडी–(हिं. स्त्री.) पत्थर या लकड़ी का छोटा पात्र, किवाड़ की जंजीर या की कड़ी, लंगर का बड़ा छल्ला; (मुहा.)–खटखटाना–दरवाजे की कुंडी को हिलाकर आवाज करना।
कुंढ़वा–(हिं.पुं.) मिट्टी का कसोरा या पुरवा।
कुंतल–(सं. पुं.) केश, बाल, पीने का पात्र, एक देश का नाम, हल; (अं. पुं.) १०० किलोग्राम की तौल।
कुंती–(सं. स्त्री.) यदुवंशीय शूरराज की कन्या और पांडुराज की पत्नी, वसुदेव की बहिन।
कुंतली–(हिं. स्त्री.) छोटी जाति की मधुमक्खी।
कुंद–(सं. पुं.) विष्णु मकरंद पुष्प।
कुंद–(फा. वि.) भोथरा, मंद; –बुद्धि–(हिं.वि.)–जेहन–(वि.) मंद-बुद्धि; (मुहा.)–छुरी से हलाल करना–बहुत कष्ट देना या सताना।
कुंदन–(हिं. पुं.) परिष्कृत किये हुए सोने का महीन पत्र जो नगीना जड़ने के उपयोग में आता है, शुद्ध सोना; –साज–(पुं.) नगीना जड़नेवाला।
कुंदरु–(हिं. स्त्री.) रक्तफला, एक प्रकार की लता जिसमें परवल के समान फल लगते हैं।
कुंदलता–(सं. स्त्री.) एक छंद का नाम।
कुंदला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का तंबू।
कुंदा–(हिं. पुं.) लकड़ी का मोटा टुकड़ा, बन्दूक का पिछला भाग, मूठ, लकड़ी की बड़ी मुंगरी जिससे कपड़े पर कुंदी की जाती है, हैना, रद्दा, घस्सा, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
कुंदिनी–(सं. स्त्री.) पद्मसमूह, पद्मिनी।
कुंदी–(हिं. स्त्री.) कपड़े की कुटाई जो इसकी सिकुड़न तथा रुखाई दूर करने के लिये की जाती है; कड़ी मार; –गर–(पुं.) कपड़े पर कुंदी करनेवाला।
कुँदेरना–(हिं. क्रि. स.) खुरचना, छीलना, खरादना।
कुँदेरा–(हिं. पुं.) खरादनेवाला।
कुंबी–(हिं. स्त्री.) जायफल, जलकुंभी।
कुंभ–(सं. पुं.) मिट्टी का घड़ा, कलश, ग्यारहवीं राशि, सोलह सेर की तौल, हाथी के मस्तक का मध्य भाग, योग की एक क्रिया, एक प्रकार की रागिणी, जायफल का वृक्ष, कुंभकर्ण के पुत्र का नाम; –क–(पुं.) प्राणायाम में नाक के छिद्र को दबाकर वायु-बंधन की क्रिया; –कर्ण–(पुं.) लंकाधिप रावण के मझले भाई का नाम; –कार–(पुं.) कोहार जो मिट्टी के बरतन बनाते और बेचते हैं; –जन्मा–(पुं.) अगस्त्य मुनि का एक नाम; –पर्णी–(स्त्री.) कोंहड़े की लता; –पाद–(पुं.) मोटे पैर-वाला; –मेला–(हिं. पुं.) मकर राशि में बृहस्पति और सूर्य का योग होने पर प्रयाग, हरिद्वार और पुष्कर तीर्थों में लगनेवाला विशाल मेला; –रेता–(पुं.) अगस्त्य ऋषि, अग्नि; –संभव–(पुं.) अगस्त्य, वशिष्ठ, द्रोणाचार्य।
कुंभा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, तुंबी, द्रोणपुष्पी।
कुंभिका–(सं. स्त्री.) श्वेतपर्णी, एक नेत्र-रोग, गुग्गुल।
कुंभिल–(सं. पुं.) अपूर्ण गर्भ की संतान।
कुंभिलाना–(हिं. क्रि. अ.) मलीन होना, मुरझाना।
कुंभी–(सं. पुं.) हाथी, घड़ियाल, एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
कुंभीर–(सं. पुं.) घड़ियाल, नक्र।
कुंवर–(हिं. पुं.) देखो 'कुमार'।
कुंवरि–(हिं. स्त्री.) राजकुमारी, राजा की पुत्री।
कुंआरा–(हिं. वि.) देखो 'कुँआरा'।
कुंकुह–(हिं. पुं.) कुंकुम, केसर।
कु–(सं. उप.) हीनता, नीचता, कुत्सित आदि अर्थों में प्रयुक्त होनेवाला उपसर्ग; जैसे–कुकर्म, कुफल, कुयोग आदि।
कुआं–(हिं. पुं.) कूप, इंदारा; (मुहा.) –खोदना–जीविका के लिये उद्योग करना; (किसी के लिये)–खोदना–किसी को हानि पहुँचाने की चेष्टा करना; –झंकाना–परेशान या तंग करना; –झांकना–किसी वस्तु की खोज में बहुत हैरान होना; कुएँ पर से प्यासे आना–सफलता पाते-पाते विफल हो जाना; कुएँ में गिरना–जान-बूझकर विपत्ति में फँसना; कुएँ में गिराना, डालना या ढकेलना–लड़की का विवाह गरीब घर में या कुपात्र से करना; उसकी जिंदगी बरबाद करना। कुएँ में भाँग पड़ना–सबकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाना।
कुआड़ी–(हिं. स्त्री.) संगीत की एक लय।
कुआर–(हिं. पुं.) आश्विन मास।
कुइंदर–(हिं. पुं.) कुएं के बैठ जाने से बना हुआ गड्ढा।
कुइयां–(हिं. स्त्री.) छोटा कूप, कुआं।
कुकटी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की कपास जिसकी रुई कुछ लाली लिये हुए सफेद होती है।
कुकड़ना–(हिं. क्रि. अ.) संकुचित होना, सिकुड़ना।
कुकड़ बेल–(हिं. स्त्री.) बंदाल।
कुकड़ी–(हिं. स्त्री.) चर्खे से कातकर उतारा हुआ कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, अंटी, मुट्ठा, गुण्डी।
कुकरी–(हिं. स्त्री.) जंगली मुर्गी, वनमुर्गी।
कुकरौंधा–(हिं. पुं.) एक छोटा पौधा जिसके पत्ते बड़े होते हैं और उनमें से उग्र गन्ध निकलती है।
कुकर्म–(सं. पुं.) बुरा काम, खोटा-निन्दित कर्म।
कुकर्मकारी–(सं. वि.) बुरा काम करनेवाला, कुकर्मी।
कुकर्मी–(सं.वि.) कुत्सित काम करनेवाला।
कुकीर्ति–(सं. स्त्री.) अपमान, निन्दा।
कुक्कुर–(सं. पुं.) कुत्ता, यदुवंशीय एक राजा के पुत्र, एक जनपद, एक प्रकार का सर्प; –खाँसी, –[illegible]–(स्त्री.) एक प्रकार की बहुत कष्टदायक सूखी खाँसी; –दंत–(पुं.) [illegible] साधारण दाँतों से कुछ [illegible] हैं; –[illegible]–(वि.) [illegible] उगा हो; –निद्रा–([illegible]) [illegible]

निद्रा, कुत्ते के सदृश सतर्क और क्षणिक निद्रा; –माछी–(स्त्री.) कुत्ते को लगनेवाली एक बड़ी माछी; –मुत्ता–(पुं.) लकड़ियों पर बरसात में उगनेवाला छत्रक पौधा।
कुकुरौंछी–(हिं. स्त्री.) कुकुरमाछी।
कुक्कुट–(सं. पुं.) मुर्गा, स्फुलिंग, चिनगारी; –नाड़ी–(स्त्री.) एक टेढ़ी नली जिसके द्वारा भरे हुए पात्र में से खाली पात्र में जल इत्यादि भरा जाता है; –व्रत–(पुं.) सन्तान की कामना से भाद्रपद मास की शुक्ला सप्तमी को स्त्री द्वारा किया जानेवाला व्रत।
कुक्कुटी–(सं. स्त्री.) छिपकली, मुरगी।
कुक्कुभ–(सं. पुं.) जंगली मुरगा, एक छन्द विशेष।
कुक्कुर–(सं.पुं.) कुत्ता, यदुवंशीय अंधक राज के पुत्र, एक प्रकार का सर्प, एक प्राचीन देश का नाम।
कुक्कुरी–(सं. स्त्री.) स्वानी, कुतिया।
कुक्रिय–(सं. वि.) कुकर्म करनेवाला।
कुक्रिया–(सं.स्त्री.) दुष्कार्य, बुरा काम।
कुक्ष–(सं. पुं.) जठर, पेट, कोख।
कुक्षि–(सं.स्त्री.) जठर,पेट,कोख, सन्तति, किसी पदार्थ का मध्य भाग, गुहा, खोह; (पुं.) एक प्राचीन देश का नाम, एक दानव, इक्ष्वाकु के पुत्र का नाम।
कुखेत–(हिं. पुं.) बुरी जगह, कुठाँव, कुत्सित स्थान।
कुख्यात–(सं. वि.) निन्दित, बदनाम।
कुख्याति–(सं. स्त्री.) निन्दा, अपमान, बदनामी।
कुगठन–(हिं. स्त्री.) बुरी बनावट।
कुगति–(सं.स्त्री.) दुर्दशा, बुरी अवस्था।
कुगहनि–(हिं. स्त्री.) अनुचित आग्रह, बुरी अड़ या हठ।
कुगुणी–(सं. वि.) कुत्सित लोगों में गिना जानेवाला।
कुग्रह–(सं.पु.) अशुभ फल देनेवाला ग्रह।
कुघा–(हिं. स्त्री.) दिशा, ओर।
कुघात–(हिं.पुं.) अशुभ अवसर, छल, कपट।
कुच–(सं. पुं.) स्तन, स्त्री की छाती; (वि.) सिकुड़ा हुआ।
कुचकुंभ–(सं.पुं.) कलश की भाँति ऊँचे स्तन।
कुचकुचवा–(हिं. पुं.) कुच-कुच शब्द करनेवाली चिड़िया, उल्लू।
कुचकुचाना–(हिं. क्रि. स.) बारंबार कोंचना या पैनी वस्तु धँसाना, थोड़ा-सा कुचलना।
कुचक्र–(सं. पुं.) कुमन्त्रणा, दुरभिसंधि, षड्यन्त्र।
कुचक्री–(सं. वि.) दूसरों को बुरी सम्मति देनेवाला, कुचक्र करनेवाला।
कुचना–(हिं.क्रि.अ.) सिकुड़ना, संकुचित होना, छिदना।
कुचर–(सं. वि.) नीच कर्म करनेवाला, दूसरे की निन्दा करनेवाला, बुरे स्थान में फिरनेवाला, आवारा।
कुचरा–(हिं.पुं.) झाड़ू, बढ़नी।
कुचर्या–(सं. स्त्री.) निन्दनीय आचरण, बुरी चाल।
कुचलना–(हिं. क्रि. स.) पैर से रौंदना, दबाना।
कुचला–(हिं.पुं.) एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषधियों में प्रयुक्त होते हैं।
कुचली–(हिं. स्त्री.) वे दाँत जो राजदन्त और दाढ़ के बीच होते हैं, कुचलनेवाले दाँत, कीला।
कुचाग्र–(सं.पुं.) स्तन का अग्रभाग, चूचुक।
कुचाल–(हिं. स्त्री.) बुरा अभ्यास, बुरी टेव, दुष्टता, कुत्सित आचरण।
कुचाली–(हिं. वि.) बुरी चाल चलनेवाला, बदचलन, कुमार्गी, दुष्ट।
कुचाह–(हिं.स्त्री.) अशुभ विषय, बुरी इच्छा।
कुचिंता–(सं. स्त्री.) बुरी चिन्ता।
कुचिकित्सक–(सं. पुं.) बुरा वैद्य।
कुचिया–(हिं. स्त्री.) छोटी टिकिया।
कुचिलना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'कुचलना'।
कुचिला–(हिं. पुं.) देखें 'कुचला'।
कुचील–(हिं.वि.) मैला वस्त्र पहिननेवाला।
कुचीला–(हिं. वि.) देखें 'कुचला'।
कुचेल–(सं. वि.) मैला वस्त्र पहिने हुए; (पुं.) जीर्ण वस्त्र।
कुचेष्ट–(सं.वि.) निन्दित कार्य करनेवाला।
कुचेष्टा–(सं. स्त्री.) दुष्ट प्रयत्न, बुरी चाल, मुख का बुरा भाव।
कुचैन–(हिं. पुं.) कष्ट, व्याकुलता, दुःख।
कुचैला–(हिं. वि.) मलिन वस्त्रवाला, मलिन, गन्दा।
कुच्ची–(हिं. स्त्री.) तेली की तेल नापने की कुप्पी।
कुच्छित–(हिं. वि.) देखें 'कुत्सित'।
कुछ–(हिं. वि.) किञ्चित, थोड़ा; (सर्व.) किंचित्, कोई; (अव्य.) थोड़े परिमाण में, थोड़ा-सा; –एक–(वि.) थोड़ी संख्या में; –ऐसा–(वि.) विचित्र, विलक्षण; –कुछ–(अव्य.) थोड़ा, किसी तरह; –न कुछ–(पुं. वि., अव्य.) थोड़ा-बहुत; –भी–सभी अवस्था में; –हो–चाहे जो हो; (मुहा.)–का कुछ–(पुं.) उलटा-पुलटा; –कहना–कठोर वचन का प्रयोग करना; –कर देना–जादू-टोने का उपयोग करना; –खा लेना–विष खा लेना; –न चलना–वश न चलना; –न पूछिए–कहने की बात नहीं; –होना–भूत-प्रेत लगना; –समझना–श्रेष्ठ मानना; –हो जाना–प्रतिष्ठित होना।
कुजंत्र–(हिं. पुं.) बुरा यन्त्र, जादू-टोना, टोटका।
कुज–(सं.पुं.) मंगल ग्रह, वृक्ष, पेड़, नरकासुर।
कुजन–(सं. पुं.) बुरा आदमी।
कुजप–(सं.वि.) उलटी माला फेरनेवाला।
कुजस–(हिं. पुं.) कुख्याति।
कुजा–(सं. स्त्री.) सीता देवी, जानकी।
कुजाति–(सं. स्त्री.) नीच जाति; (वि.) नीच जाति का (पुरुष), अधम (आदमी)।
कुजिया–(हिं.स्त्री.) छोटा पात्र, घरिया।
कुजून–(हिं. स्त्री. वा पुं.) कुवेला, कुसमय।
कुज्जन–(सं. पुं.) एक प्रकार का नेत्र-रोग, सिकुड़न।
कुटंगक–(सं. पुं.) छानी, छप्पर।
कुट–(सं.पुं.) कलश, गगरा, कोट, पत्थर तोड़ने का घन, वृक्ष, पर्वत, पहाड़; (हिं. स्त्री.) एक मोटी झाड़ी जिसकी गन्ध सुन्दर होती है; (हिं.पुं.) खण्ड, टुकड़ा।
कुटका–(हिं. पुं.) छोटा टुकड़ा, कसीदे का तिकोना बूटा।
कुटकी–(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसकी ग्रन्थिमय जड़ दवा में प्रयुक्त होती है, एक छोटा कीड़ा जो बिल्ली, कुत्ते आदि के रोयें में घुसकर इनको काटता है।
कुटज–(सं. पुं.) कुरैया का पेड़, कमल, इन्द्रयव, द्रोणाचार्य का नाम; –गति–(स्त्री.) तेरह अक्षरों का एक छन्द।
कुटनई–(हिं.स्त्री.) कुटनपन, नायक और नायिका के बीच सन्देश पहुचाने की क्रिया।
कुटनपन–(हिं. पुं.) दूती-कर्म, पिशुनता, झगड़ा लगाने का काम।
कुटनपेशा–(हिं. पुं.) कुटनपन द्वारा जीविका-निर्वाह।
कुटनहारी–(हिं. स्त्री.) धान कूटनेवाली स्त्री।
कुटना–(हिं. पुं.) स्त्री को परपुरुष से मिलानेवाला, स्त्रियों को बहकानेवाला, वंचक, कूटने-पीटने का

यन्त्र; (क्रि. अ.) कूटा जाना, मारा जाना, मार खाना।
कुटनाना–(हिं.क्रि.स.) व्यभिचारी बनाना, बहकाना, भड़काना।
कुटनापन,कुटनापा–(हिं.पुं.) देखें 'कुटनपन'।
कुटनी–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों को बहकाकर परपुरुष से मिलानेवाली स्त्री, चुगली खानेवाली, झगड़ा लगानेवाली।
कुटनीपन–(हिं.पुं.) देखें 'कुटनपन'।
कुटप–(सं. पुं.) घर के पास का बगीचा, पद्म, कमल।
कुटुरकुट्टुर–(हिं. पुं.) कोई कड़ी वस्तु को दाँतों से तोड़ने का शब्द।
कुटल–(सं. पुं.) छाजन, छानी, छप्पर।
कुटवाना–(हिं. क्रि. स.) कूटने की किया दूसरे से कराना।
कुटाई–(हिं. स्त्री.) कूटने का काम, कूटने का वेतन या मजदूरी।
कुटास–(हिं. स्त्री.) ताड़ना, मारपीट।
कुटिचर–(सं. पुं.) घड़ियाल, सोंइस।
कुटिया–(हिं.स्त्री.) छोटा घर या झोपड़ी।
कुटिल–(सं. वि.) वक्र, टेढ़ा, घूमा हुआ, घुंघराला, दुष्ट, पाजी, छली, कपटी; (पुं) दुष्ट, शठ, शंख, घोंघा, चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त; –कीट–(पुं.) सर्प, साँप, –गति–(पुं.) सर्प, साँप; –ता–(स्त्री.) तिरछापन, टेढ़ापन, छल; –पन–(हिं. पुं.) कुटिलता।
कुटिला–(सं. स्त्री.) सरस्वती नदी, राधिका की ननद।
कुटिलाई–(हिं.स्त्री.) टेढ़ापन, छल, कपट।
कुटिहा–(हिं.वि.) कटूक्ति बोलनेवाला।
कुटी–(हिं. स्त्री.) घास-फूस की बनी हुई झोपड़ी, पर्णशाला, मुरा नामक गन्ध-द्रव्य, कुटनी।
कुटीचक–(सं. पुं.) चार प्रकार के संन्यासियों में से एक जो संन्यास लेकर अपने भाई-बन्धु के घर में रहते और भिक्षा माँगकर भोजन करते हैं।
कुटीचर–(सं.पुं) एक प्रकार का संन्यासी; (हिं. वि.) छली, कपटी, दुष्ट।
कुटीर–(सं.पुं) कुटी।
कुटुंब–(सं.पुं.) कुल, परिवार, भाई-बन्धु।
कुटुंबिक–(सं. वि.) परिवार सहित घर में रहनेवाला।
कुटुंबिता–(सं.स्त्री.) पारिवारिक सम्बन्ध।
कुटुंबिनी–(सं.स्त्री.) [illegible]वाली स्त्री।
कुटुंबी–(सं. वि.) गृही, परिवारवाला; (पुं.) परिवार के लोग, सम्बन्धी, नाते-दार, कृषक, किसान।
कुटुम–(हिं. पुं.) देखें 'कुटुंब'।
कुटुवा–(हिं. पुं.) कुटैया, कूटनेवाला।
कुटेक–(हिं. स्त्री.) बुरा हठ।
कुटेव–(हिं.स्त्री.) बुरी या कुत्सित आदत।
कुटौनी–(हिं. स्त्री.) कूटने का काम, कूटने का वेतन।
कुट्टनी–(सं. स्त्री.) देखें 'कुटनी'।
कुट्टमित–(सं. वि.) संयोग-काल में स्त्रियों का आनन्द लेते हुए भी कष्ट दिखलाना।
कुट्टा–(हिं. पुं.) परकटा कबूतर।
कुट्टित–(सं. वि.) कटा हुआ, चूर्ण किया हुआ, टुकड़े किया हुआ।
कुट्टिनी–(सं. स्त्री.) देखें 'कुटनी'।
कुट्टी–(हिं. स्त्री.) कटाई, गड़ासे से काटा हुआ चारा, कूटा और सड़ाया हुआ कागज जिसके अनेक पदार्थ बनते हैं, मैत्री-भंग (बालक इस अर्थ में प्रयोग करते हैं), परकटा कबूतर।
कुठ–(सं. पुं.) चीते की झाड़ी या पौधा।
कुठर–(सं.पुं.) मथानी का डंडा।
कुठला–(हिं. पुं.) अन्न रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र।
कुठाँऊ, कुठाँय–(हिं. पुं.) देखें 'कुठाँव'।
कुठाँव–(हिं.पुं.) कुत्सित स्थान; (मुहा०) –मारना–मर्म-स्थान में चोट लगाना।
कुठाट–(हिं. पुं.) बुरा ठाट, बुरा सामान, बुरा प्रबंध, कुप्रबंध, काम नष्ट करने का उद्योग।
कुठार–(सं. पुं.) कुल्हाड़ी, फरसा, नाश करनेवाली वस्तु।
कुठारपाणि–(सं.पुं.) कुठार हाथ में लिये हुए परशुराम।
कुठाराघात–(सं.पुं.) कुल्हाड़ी का आघात, गहरी चोट।
कुठारी–(सं.स्त्री.) कुल्हाड़ी, टाँगी; (वि.) नाश करनेवाली।
कुठारु–(सं.पुं.) शस्त्रकार, शस्त्र बनानेवाला।
कुठाली–(हिं. स्त्री.) सोनार की सोना-चाँदी गलाने की घरिया।
कुठाहर–(हिं. पुं.) कुत्सित स्थान, कुठौर, बुरा अवसर।
कुठिला–(हिं. पुं.) अन्न रखने का मिट्टी का पात्र, कुठला।
कुठौर–(हिं.पुं.) बुरा स्थान, अनुचित जगह।
कुड़–(हिं. पुं.) कुट नाम की औषधि, [illegible]।
कुड़कुड़–(हिं. पुं.) [illegible] शब्द।
कुड़कुड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) [illegible], कुढ़ना, कुड़बुड़ाना।
कुड़कुड़ी–(हिं. स्त्री.) उदर में होनेवाला शब्द जो भूख लगने पर या अजीर्ण के समय होता है, गुड़गुड़ाहट।
कुड़प–(सं. पुं.) बत्तीस तोले का एक परिमाण।
कुड़बुड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) झुंझलाना, मन ही मन कुढ़ना, कुड़कुड़ाना।
कुड़री–(हिं. स्त्री.) गेंडुरी, नदी के घुमाव से तीन ओर पानी से घिरी हुई भूमि।
कुड़ल–(हिं. पुं.) रक्त कम होने या ठंढा पड़ने से उत्पन्न हुई शरीर की ऐंठन।
कुड़व–(सं. पुं.) एक पुरानी तौल जो प्रस्थ का चतुर्थांश होती थी, बत्तीस या सोलह तोले का बटखरा।
कुड़ा–(हिं. पुं.) कुटज वृक्ष, कुरैया।
कुड़ाली–(हिं. स्त्री.) कुठार, कुल्हाड़ी।
कुड़ुक–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाजा; (स्त्री.) अण्डा न देनेवाली मुरगी; (वि.) निरर्थक, व्यर्थ।
कुड़ेर–(हिं.स्त्री.) राब में से जूसी निकालने की विधि।
कुड़ेरना–(हिं. क्रि. स.) राब में से जूसी बहाना; (वि.) कुढंगा, बेढौंग, भद्दा।
कुड्मल–(सं.पुं.) मुकुल, खिलती हुई कली।
कुढंग–(हिं. पुं.) बुरा आचरण, कुचाल; (वि.) बेढंगा, भद्दा, अनभिज्ञ, असभ्य।
कुढंगा, कुढंगी–(हिं. वि.) बुरे आचरण का, कुमार्गी।
कुढ़न–(हिं. स्त्री.) मन-ही-मन रहनेवाला क्रोध या दुःख, चिढ़।
कुढ़ना–(हिं. क्रि. अ.) मन-ही-मन क्रोध करना, चिढ़ना, दुःखी होना, मन-ही-मन मसोसना, जलना।
कुढ़ब–(हिं. वि.) बेढब, कठिन।
कुढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) क्रोध दिलाना, चिढ़ाना, दुःखी करना, खिझाना।
कुणक–(सं. पुं.) [illegible]।
कुणप–(सं. पुं.) [illegible], बरछी, सीसा, [illegible]।
कुणपाशी–(सं. वि.) [illegible]।
कुतंत्री–(सं.स्त्री.) [illegible]।
कुतः–(सं. [illegible]) [illegible]।
कुतक–(सं. पुं.) [illegible]।
कुतका–(हिं. पुं.) [illegible], [illegible]।
कुतना–(हिं. क्रि. अ.) [illegible]।
कुतनु–(सं. वि.) [illegible]।
कुतप–(सं. पुं.) [illegible], [illegible],

कुतप, दिनमान का आठवाँ मुहूर्त, मध्याह्न, एक प्रकार का बाजा, लड़की का बेटा, नाती, छोटा घड़ा; (वि.) थोड़ा गरम, गुनगुना।
कुतपस्वी-(सं. पुं.) निन्दित तपस्वी, अच्छी तपस्या न करनेवाला।
कुतरन-(हिं. स्त्री.) देखें 'कतरन'।
कुतरना-(हि.क्रि.स.) दाँत से छोटे टुकड़े काटना, कोई भाग बीच में से काट कर निकाल लेना।
कुतर्क-(सं. पुं.) निन्दनीय तर्क।
कुतर्की-(सं. वि.) कुतर्क करनेवाला, बकवादी।
कुतला-(हिं. पुं.) हँसिया, चारा काटने का एक हथियार।
कुतवार(ल)-(हिं. पुं.)क्षेत्र की उपज का कूत करनेवाला, कोतवाल।
कुतवारी(ली)-(हि.स्त्री.)देखें'कोतवाली'
कुतार-(हिं. पुं.) असुविधा, अड़चन, कुप्रबंध।
कुतिया-(हिं. स्त्री.) कुक्कुरी, कुत्ते की मादा, कुत्सित स्त्री, बुरी स्त्री।
कुतुक-(सं. पुं.) कौतुक, कौतूहल।
कुतूहल-(सं. पुं.) किसी वस्तु को देखने या सुनने की बड़ी लालसा, कौतुक, क्रीड़ा, खेल, आश्चर्य, अचंभा, खेलवाड़, नायिका का अलंकार विशेष जिसमें वह मनोहर पदार्थ को देखने की अधिक आकांक्षा करती है।
कुतूहलित-(सं.वि.)आश्चर्य में पड़ा हुआ।
कुतूहली-(सं. वि.) कौतुकी, किसी वस्तु को देखने की बड़ी लालसा करनेवाला।
कुत्ता-(हिं. पुं.) कुक्कुर, श्वान, यंत्र में किसी घूमनेवाले भाग को रोकने का साधन, कपाट को न खुलने के लिये लगाया हुआ अवरोध, बंदूक का घोड़ा, तुच्छ या नीच मनुष्य; (मुहा.) -काटना-सनक जाना; कुत्ते की तरह या कुत्ते की मौत मरना-बुरी तरह से मृत्यु होना; कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती-दुष्ट प्रकृतिवाला मनुष्य कभी ठीक आचरण नहीं करता; कुत्ते की नींद-सतर्क और क्षणिक नींद; कुत्ते के भूँकने से हाथी नहीं डरता-पुरुषार्थी व्यक्ति तुच्छ व्यक्तियों के उपहास, बातों आदि पर ध्यान नहीं देता।
कुत्ती-(हि. स्त्री.) कुक्कुरी, कुतिया।
कुत्र-(सं. अव्य.) कहाँ, किस अवस्था में।
कुत्रचित्-(सं. अव्य.) किसी स्थान में।
कुत्सन-(सं. पुं.) निन्दा, दुर्नाम।
कुत्सा-(सं.स्त्री.)निन्दा,जुगुप्सा,अपवाद।
कुत्सित-(सं.वि.)निन्दित, गर्हित,अधम,नीच।
कुथ-(सं.पुं.)कन्था,कथरी, हाथी की झूल।
कुथित-(सं. वि.) सड़ा-गला।
कुदंग-(सं. पुं.)मचान के ऊपर की मड़ई।
कुदंड-(सं. पुं.) अनुचित दण्ड।
कुदई-(हिं. पुं.) धान्य विशेष, कोदो।
कुदकना-(हिं. क्रि. अ.) आनन्द में उछलना, कूदना।
कुदक्का-(हिं. पुं.) उछल-कूद, कूद-फाँद।
कुदरत-(अ. स्त्री.) ईश्वरीय शक्ति, प्रकृति; -का खेल (पुं.) ईश्वरी लीला।
कुदरती-(अ. वि.) ईश्वरीय, प्राकृतिक।
कुदरा-(हिं. पुं.) कुदाल, फावड़ा।
कुदर्शन-(सं. वि.) कुरूप, भद्दा।
कुदलाना-(हिं.क्रि.अ.) उछलना, कूदना, कूदते चलना।
कुदाँव-(हिं. पुं.) धोखा, विश्वासघात, संकट की अवस्था, बुरी अवस्था, भयंकर स्थान, मर्म-स्थान।
कुदाई-(हिं. वि.) विश्वासघाती, छली, कपटी, बुरा दाँव लगानेवाला; (स्त्री.) कुदान या छलांग।
कुदान-(सं. पुं.) अयोग्य पुरुष को दिया जानेवाला दान, कुत्सित दान लेना, यथा-शय्यादान, गजदान, इ०; (हिं. स्त्री.) उछल-कूद, कुदाई, छलाँग, कूदने का स्थान, कूदने की दूरी।
कुदाना-(हिं. क्रि. स.) कूदने में लगाना, दौड़ाना।
कुदाम-(हिं. पुं.) खोटा पैसा या रुपया।
कुदाय-(हिं. पुं.) देखें 'कुदाँव'।
कुदार-(सं. स्त्री.) भूमि खोदने का एक साधन, कुदाली।
कुदारी-(हिं. स्त्री.) देखें 'कुदाली'।
कुदाल-(सं. स्त्री.)भूमि खोदने का अस्त्र, कुदाली।
कुदाली-(हिं. स्त्री.) देखें 'कुदार'।
कुदाव-(हिं. पुं.) कुदाई, कुदान।
कुदास-(हि.पुं.)नाव की पतवार का डण्डा।
कुदिन-(सं. पुं.) सावन का दिन, बुरा दिन, आपत्ति का समय, ऋतु-विरुद्ध कष्टकारक दिन, पानी बरसने या दिन भर बादल छाये रहने का दिन।
कुदिष्ट-(हिं. स्त्री.) कुदृष्टि, बुरी दृष्टि, पापदृष्टि।
कुदृश्य-(सं. वि.) देखने के अयोग्य।
कुदृष्टि-(सं. स्त्री.) मन्द या बुरी दृष्टि, नजर।
कुदेव-(सं. पुं.)भूदेव,ब्राह्मण,दैत्य,दानव।
कुदेश-(सं. पुं.) कुत्सित देश, बुरा देश।
कुदेह-(सं. पुं.) कुत्सित देह, बुरा शरीर।
कुद्दार, कुद्दाल-(सं. पुं.) कुदार, कुदाली।
कुद्मल-(सं. पुं.) फूल की कली।
कुद्रव-(सं. पुं.) कोद्रव अन्न, कोदो।
कुधातु-(सं.स्त्री.) कुत्सित धातु,लोहा।
कुधान्य-(सं. पुं.) क्षुद्र धान्य, घास इ० में का धान्य, पापार्जित धान्य।
कुधी-(सं. वि.) निर्बोध, निर्लज्ज।
कुनकुना-(हिं. वि.) मन्दोष्ण, थोड़ा गरम, गुनगुना।
कुनख-(सं. पुं.) नख गिरने का एक रोग।
कुनखी-(सं. वि.) नख गिरने के रोगवाला।
कुनट-(सं.पुं.)बुरा खेलाड़ी,सनई का पौधा।
कुनप-(हिं. पुं.) देखें 'कृपण'।
कुनबा-(हिं. पुं.) कुटुम्ब, घराना।
कुनबी-(हिं. पुं.) खेती करनेवाली एक हिन्दू जाति, कुरमी, कुर्मी।
कुनवा-(हिं. पुं.) धातु के पात्र खरादनेवाला, खरादिया।
कुनह-(सं.वि.)बुरा फन्दा डालनेवाला; (हि.पुं.)द्वेष, मनमोटाव, पुरानी शत्रुता।
कुनही-(हिं.वि.)द्वेष करनेवाला, कुढ़नेवाला।
कुनाई-(हिं.स्त्री.)बुरादा, बुकनी, खुरचने या खरादने से निकला हुआ चूर्ण, खरादने का काम या वेतन।
कुनाथ-(सं. पुं.) बुरा स्वामी या पति।
कुनाम-(सं. पुं.) अपनाम, दुर्नाम।
कुनायक-(सं. पुं.) देखें 'कुनाथ'।
कुनास-(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट।
कुनित-(हिं. वि.) देखें 'क्वणित'।
कुनिया-(हिं. पुं.) खरादनेवाला, अनुमान से कूत करनेवाला।
कुपंथ-(हिं. पुं.) कुपथ।
कुपंथी-(हिं. वि.) कुपथगामी।
कुपट-(सं. पुं.) फटा-पुराना वस्त्र।
कुपढ़-(हिं. वि.) अशिक्षित, अनपढ़ा।
कुपत्थी-(हिं. वि.) कुपथ्य करनेवाला।
कुपथ-(सं.पुं.)बुरा मार्ग, बुरी चाल, बुरा आचरण; (हि.पुं.) कुपथ्य, स्वास्थ्य के लिये हानिकर कार्य या भोजन; -गामी-(वि.)बुरा आचरण करनेवाला
कुपथ्य-(सं. पुं.) स्वास्थ्य बिगाड़नेवाला आहार-विहार।
कुपना-(हिं. क्रि. अ.) क्रोध करना।
कुपरीक्षक-(सं. पुं.) परीक्षा के समय भले-बुरे का विचार न करनेवाला।
कुपाट-(सं. पुं.) बुरी मंत्रणा या राय।
कुपाठी-(सं. वि.) अशुद्ध रूप से पाठ करनेवाला, कुमंत्री।

कुपाणि–(सं. वि.) वक्रहस्त, टेढ़े-मेढ़े हाथवाला।
कुपात्र–(सं. वि.,पुं.) अयोग्य या अनधिकारी (व्यक्ति), दान देने के लिये शास्त्र द्वारा निषिद्ध (व्यक्ति)।
कुपार–(हिं. पुं.) समुद्र।
कुपित–(सं. वि.) क्रुद्ध, अप्रसन्न।
कुपिनी–(सं.स्त्री.) मछली रखने का पात्र।
कुपुत्र–(सं. पुं.) माता-पिता की आज्ञा न माननेवाला बेटा, कुपथगामी या नालायक पुत्र।
कुपुरुष–(सं. पुं.) वह मनुष्य जो संसार में कोई भला काम न करे।
कुप्पा–(हिं. पुं.) चमड़े का घी, तेल इत्यादि रखने का बड़ा पात्र; (मुहा.) **–सा मुँह करना या फुलाना**–मुँह फुलाना; **–होना**–फूल जाना, मोटा होना, कुढ़ना, रूठना; **–साज**–(पुं.) कुप्पा बनानेवाला चमार।
कुप्पी–(हिं.स्त्री.) तेल-फुलेल रखने का चमड़े का पात्र, छोटा कुप्पा।
कुप्य–(सं. पुं.) जस्ता, सीसा और राँगा मिलाकर बनी हुई धातु विशेष, सोना-चाँदी से भिन्न धन।
कुप्रिय–(सं. वि.) अप्रिय।
कुफुर–(हिं. पुं.) अधर्म।
कुबंड–(हिं. पुं.) कोदण्ड, कमान; (वि.) विकृतांग, लोंड़ा।
कुबजा–(हिं. वि.) देखें 'कुब्जा'।
कुबड़ा–(हिं. पुं.) कुब्ज, वह मनुष्य जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई हो; (वि.) टेढ़ा, मुड़ी हुई पीठवाला।
कुबड़ी–(हिं. वि.) कुब्जा, टेढ़ी पीठवाली (स्त्री); (स्त्री.) झुकी हुई मूठ की छड़ी, टेढ़िया।
कुबत–(हिं. स्त्री.) कुवाक्य, बुरी बात, कुचाल, शक्ति।
कुबरी–(हिं. स्त्री.) कुब्जा, कंस की एक दासी, झुकी मूठ की छड़ी।
कुबाक–(हिं. पुं.) देखें 'कुवाक्य'।
कुबानि–(हिं. स्त्री.) बुरा अभ्यास, दुष्ट भाव, बुरी लत।
कुबानी–(हिं. स्त्री.) बुरा व्यवहार।
कुबाहुल–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट।
कुबुद्धि–(सं. वि.) मन्दबुद्धि, मूर्ख।
कुबेला–(हिं. स्त्री.) बुरा अवसर, बुरा समय, असमय।
कुबोल–(हिं. पुं.) कटु या अप्रिय वचन।
कुबोलनी–(हिं. वि. स्त्री.) बुरी बात कहनेवाली।

कुब्ज–(सं. वि.) टेढ़ी पीठवाला, कुबड़ा; (पुं.) एक वायुरोग जिसमें पीठ बीच में से उभड़ आती है।
कुब्जत्व–(सं. पुं.) कुबड़ापन।
कुब्जा–(सं. स्त्री.) कैकेयी की कुबड़ी दासी जिसका नाम मन्थरा था, कंस की एक कुबड़ी दासी जिसका नाम त्रिवक्रा था, कुबड़ी स्त्री।
कुब्जित–(सं. वि.) वक्र,टेढ़ा किया हुआ।
कुब्बा–(हिं. पुं.) कुब्ज, कुबड़ा, डिल्ला।
कुभा–(सं. स्त्री.) काबुल नदी का प्राचीन नाम, पृथ्वी की छाया; (वि.) न चमकनेवाला।
कुभार्या–(सं. स्त्री.) निन्द्य स्त्री।
कुभाव–(सं.पुं.) बुरा भाव, द्वेष।
कुभुक्त–(सं. पुं.) कुखाद्य, बुरा भोजन।
कुभृत्–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़।
कुभृत्य–(सं. पुं.) बुरा भृत्य या नौकर।
कुमंठी–(हिं. स्त्री.) पतली लचकनेवाली टहनी।
कुमंत्र–(सं.पुं.) कुमंत्रणा, बुरी सम्मति।
कुमंत्रणा–(सं. स्त्री.) देखें 'कुमंत्र'।
कुमंत्री–(सं. पुं.) निन्द्य मन्त्री,बुरा मंत्री।
कुमकी–(हिं. वि.) सहायता संबंधी; (स्त्री.) हाथियों के पकड़ने में सहायता देनेवाली सिखलाई हुई हथिनी।
कुमकुम–(हिं. पुं.) देखें 'कुंकुम'।
कुमकुमा–(सं. पुं.) लाह का पोला गोला जिसमें गुलाल भरकर होली के त्योहार पर लोग एक दूसरे के ऊपर फेंकते हैं, काँच का बना हुआ पोला गोला, सोनार की दाना बैठाने की टाँकी,लोटा।
कुमकुमी–(हिं. स्त्री.) छोटे मुँह का लोटा।
कुमति–(सं. स्त्री.) दुर्बुद्धि।
कुमाच–(हिं. पुं.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, गंजीफे का एक रंग, कैवान।
कुमार–(सं. पुं.) निर्मल सुवर्ण, खरा सोना, पाँच वर्ष का बालक, पुत्र, युवराज, कार्तिकेय, तोता, सिन्धुनद; सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार–ये ऋषि कुमार कहलाते हैं; मंगल ग्रह, पुरुष की कुमारावस्था का काल जो १० वर्ष से १६ वर्ष पर्यन्त रहता है, एक ग्रह विशेष जिसका प्रभाव बालकों पर ही होता है, अग्नि।
कुमारक–(सं. पुं.) राजकुमार, बालक, लड़का, आँख का डेला या पुतली।
कुमारग–(हिं. पुं.) देखें 'कुमार्ग'।
कुमारतंत्र–(सं.पु.) बालकों की चिकित्सा का शास्त्र।

कुमारराज–(हिं. पु.) जुआ खेलनेवाला, जुआरी।
कुमारभृत्या–(सं.स्त्री.) प्रसव करानेवाली तथा गर्भिणी की परिचर्या करनेवाली स्त्री, बच्चों को पालनेवाली धाय।
कुमारललिता–(सं.स्त्री.) सात मात्राओं का एक छन्द।
कुमारसंभव–(सं.पुं.) महाकवि कालिदास-कृत एक काव्य का नाम।
कुमारिका–(सं. स्त्री.) अविवाहिता कन्या, कुमारी लड़की, घीकुआर।
कुमारिया–(हिं.पुं.) एक प्रकार का बड़ा हाथी।
कुमारिल भट्ट–(सं. वि.) एक प्रसिद्ध मीमांसक जिन्होंने 'मीमांसा-वार्तिक' लिखा है।
कुमारी–(सं. स्त्री.) बारह वर्ष की कन्या, घीकुआर, बड़ी इलायची, अविवाहिता कन्या, सीता, दुर्गा, पार्वती, नवमल्लिका, चमेली, पक्षी, भारत के दक्षिण-स्थित कुमारिका अन्तरीप, सोलह अक्षरों का एक छन्द; **–पूजन** (पुं.),**–पूजा** (स्त्री.) तन्त्र मत के अनुसार अविवाहिता कन्या का पूजन।
कुमार्ग–(सं. पुं.) नीतिविरुद्ध कार्य, कुपथ, अधर्म, बुरी चाल।
कुमार्गगामी, कुमार्गी–(सं. वि.) कुपथ पर जानेवाला, अधर्मी, धर्मभ्रष्ट।
कुमित्र–(सं. पुं.) अपकारी बन्धु।
कुमुख–(सं. पुं.) सुअर, रावण का एक योद्धा; (वि.) बुरे मुखवाला।
कुमुद–(सं. पुं.) पद्म, कमल, सफेद कुईं, चाँदी, कपूर, विष्णु, एक प्रकार का बन्दर, एक प्रकार का गुग्गुल, एक केतु विशेष जिसके उदय होने से दुर्भिक्ष होता है, कृष्ण के छोटे भाई गद के पुत्र का नाम; **–नाथ,–प्रिय, –बंधु**–(पुं.) चन्द्रमा।
कुमुदिनी–(सं. स्त्री.) कुईं का फूल, चाँदनी; **–नायक**–(पुं.) चन्द्रमा।
कुमेध–(सं. वि.) दुर्बुद्धि, मूर्ख।
कुमेरु–(सं. पु.) [illegible] दक्षिणी ध्रुव।
कुमोद–(हिं. पु.) देखें 'कुमुद'।
कुम्मैत, कुमैद–(हिं. पु.) [illegible]
[illegible] **कुम्मैद**–(हिं.) [illegible]
कुम्हड़ा–(हिं. पु.) [illegible]
[illegible]
[illegible] **कुम्हड़ौरी**–(हिं.) [illegible]

कुम्हड़ौरी-(हि.स्त्री.) वरी जिसमें कोंहड़े के महीन टुकड़े मिला दिये जाते हैं।
कुम्हलाना-(हि.क्रि.अ.) मुरझाना, पीला पड़ना, सूखना, तेजहीन होना, वनस्पति का सूखने लगना।
कुम्हार-(हि. पुं.) कुम्भकार, मिट्टी के पात्र बनानेवाला।
कुम्ही-(हि. स्त्री.) जलकुम्भी, पानी पर फैलनेवाला एक पौधा।
कुयाजी-(सं. वि.) निन्द्य यज्ञ कराने या करनेवाला।
कुयोग-(सं. पुं.) ग्रह-नक्षत्र आदि का अनिष्टकारक संयोग, कुलग्न।
कुरंग-(सं.पुं.) हिरन, एक छंद; (हि.पुं.) बुरा लक्षण या हाल; -नयना, -नयनी-(वि.) मृगनयना।
कुरंट-(सं. पुं.) कटसरैया, मकोय।
कुरंट-(हि. पुं.) एक प्रकार का कड़ा पत्थर, मानिकरेत।
कुरंड-(सं. पुं.) अखरोट का वृक्ष, मुष्क-वृद्धि रोग, अण्डकोष बढ़ने का रोग।
कुरकी-(हि.स्त्री.) जायदाद का जब्त किया जाना।
कुरकुट-(हि. पुं.) छोटा टुकड़ा।
कुरकुटा-(हि. पुं.) कटा हुआ रवा, रोटी का टुकड़ा।
कुरकुर-(हि. पुं.) किसी खरी वस्तु के दबकर टूटने से उत्पन्न शब्द।
कुरकुरा-(हि. वि.) कुरकुर शब्द करने-वाला, खरा और करारा।
कुरकुराहट-(हि. स्त्री.) कुरकुर करने का शब्द, कुरकुर होने की स्थिति।
कुरकुरी-(हि. स्त्री.) कोमल पतली हड्डी, घोड़े की एक बीमारी।
कुरगरा-(हि. पुं.) कारनिस इत्यादि महीन काम बनाने की छोटी थापी।
कुरट-(सं. पुं.) चर्मकार, चमार।
कुरडा-(हि.पुं.) एक जाति का अरबी घोड़ा।
कुरता-(हि. पुं.) कमीज की तरह का मरदाना पहनावा।
कुरती-(हि. स्त्री.) छोटा कुरता, स्त्रियों के पहिनने का एक वस्त्र।
कुरथी-(हि. स्त्री.) कुलत्थ, कुलथी।
कुरन-(हि. पुं.) देखें 'कुरंट'।
कुरना-(हि. क्रि. अ., स.) इकट्ठा होना, ढेर लगाना, मीठी बोली बोलना।
कुरबनही-(हि. स्त्री.) बढ़ई का कोर या कोना सुधारने का एक अस्त्र।
कुरबान-(अ. पुं.) बलि, बलिदान, निछावर; (मुहा.)-होना-बलिदान करना।
कुरबानी-(अ. स्त्री.) मुसलमानों का बकरीद के दिन पशु-बलि करना।
कुरमा-(हि.पुं.) कुनबा, कुटुम्ब, घराना।
कुरमी-(हि. पुं.) देखें 'कुनबी'।
कुरर-(सं. पुं.) क्रौंचपक्षी, गिद्ध जाति की एक चिड़िया, एक जलचर पक्षी।
कुररा-(हि. पुं.) देखें 'कुरर', टिटिहरी।
कुररी-(सं. स्त्री.) मादा टिटिहरी, आर्या छन्द का एक भेद जिसमें ४ गुरु और ९ लघु वर्ण होते हैं।
कुरल-(सं. पुं.) कुन्तल, काकुल।
कुरलना-(हि. क्रि. अ.) मधुर स्वर में बोलना, चहकना।
कुरला-(हि. पुं.) कुल्ला, कुन्तल, काकुल।
कुरव-(सं. पुं.) कटसरैये का शाक, बुरी बोली; (वि.) कर्कश या बुरी बोली बोलनेवाला।
कुरवना-(हि. क्रि. अ.) राशि लगाना।
कुरवारना-(हि.क्रि.स.) काटना, खरोचना।
कुरस-(सं. पुं.) बुरा रस, आसव, मदिरा।
कुरसा-(हि. पुं.) एक वृक्ष जिसका काठ कड़ा तथा लाल रंग का होता है।
कुरसी-(हि. स्त्री.) चार पायेवाला एक प्रकार का ऊँचा आसन जो एक आदमी के बैठने के लिए होता है, मकान की सतह ऊँची करने के लिए बनाया गया चबूतरा, पीढ़ी, पुश्त; -नामा-(पुं.) वंशावली, पुश्तनामा; (मुहा.)-देना-आदर करना।
कुरा-(हि.पुं.) पुराने घाव में पड़ी हुई गाँठ।
कुराई-(हि. पुं.) पैर में डालने का काठ, काठ की बेड़ी।
कुराज्य-(सं. पुं.) निन्द्य राज्य।
कुरान-(अ. पुं.) मुसलमानों का धर्म-ग्रन्थ जिसमें हजरत मुहम्मद के उपदेश लिपिबद्ध हैं; -मजीद, शरीफ-(पुं.) कुरान का आदरसूचक नाम; (मुहा.)-उठाना, -पर हाथ रखना-कुरान की कसम खाना।
कुरानी-(अ. वि.) कुरान से संबद्ध।
कुरान-(सं. स्त्री.) पानी से भूमि पोली पड़ जाने से बना हुआ गड्ढा, कुराह।
कुराह-(हि. स्त्री.) कुमार्ग, बुरा मार्ग, बुरा आचरण।
कुराहर-(हि. पुं.) देखें 'कोलाहल'।
कुराही-(हि. वि.) कुमार्गी, बुरे मार्ग पर चलनेवाला, बदचलन; (स्त्री.) दुराचार।
कुरिया-(हि. स्त्री.) मड़ई, झोंपड़ी, छोटा गाँव, ढेर, बोरों में भरकर राब की जूसी निकालने का काम।
कुरियाल-(हि. स्त्री.) पक्षियों का आनन्द से बैठकर पर खुजलाना; (मुहा.)-में आना-आनंद में मस्त होना।
कुरी-(हि. स्त्री.) वंश, घराना, ढेर।
कुरीति-(सं. स्त्री.) कुप्रथा, कुचाल।
कुरु-(सं. पुं.) अग्नीध्र राजा के पुत्र का नाम, धृतराष्ट्र और पाण्डवों के पूर्व पुरुष का नाम, एक प्राचीन जनपद का नाम, भात, पुरोहित, कुरु-जनपद-निवासी।
कुरुई-(हि. स्त्री.) बाँस या मूँज की बनी हुई छोटी डलिया, मोनी।
कुरुक्षेत्र-(सं. पुं.) एक अति प्राचीन पुण्यस्थान। (यह अंबाला और दिल्ली के बीच में है। महाभारत का युद्ध इसी स्थान पर हुआ था।)
कुरुख-(हि. वि.) क्रुद्ध, कुपित, मुँह बनाये हुए।
कुरुखेत-(हि. पुं.) देखें 'कुरुक्षेत्र'।
कुरुजांगल-(सं. पुं.) पाञ्चाल देश के पश्चिम का एक देश।
कुरुम-(हि. पुं.) देखें 'कूर्म'।
कुरुविंद-(सं. पुं.) कुलथी, नागरमोथा, उड़द, मानिक, काला नमक, दर्पण।
कुरूप-(सं. वि.) निन्द्यरूप, भद्दा; -ता-(स्त्री.) बेढंगापन।
कुरेदना-(हि. क्रि. स.) खुरचना, खोदना, किसी वस्तु के ढेर को इधर से उधर हटाना, खुलेड़ना।
कुरेदनी-(सं. स्त्री.) भट्ठी की आग हटाने का सीकचा।
कुरेभा-(हि. पुं.) वर्ष में दो बार ब्याने-वाली गाय।
कुरेर-(हि. स्त्री.) हँसी, खेल-कूद।
कुरेलना-(हि. क्रि.स.) कुरेदना, खोदना।
कुरैत-(हि. पुं.) साझी, हिस्सेदार।
कुरैना-(हि. पुं.) राशि, ढेर।
कुरैया-(हि.स्त्री.) एक जंगली वृक्ष जिसका फल इन्द्रजव कहलाता है, कुटज।
कुरौना-(हि.क्रि.स.) राशि या ढेर करना।
कुर्ता-(हि. पुं.) देखें 'कुरता'।
कुर्पर-(सं. पुं.) केहुनी, घुटना।
कुर्मी-(हि. पुं.) देखें 'कुनबी'।
कुर्री-(हि.स्त्री.) हेंगी, सोहागा, कुरकुरी, कोमल हड्डी, गोल टिकिया।
कुर्स-(हि. पुं.) एक घास जिसकी जड़ से रस्सी, चटाई इत्यादि बनती है।
कुल-(हि. वि.) सम्पूर्ण, पूरा; (सं. पुं.) वंश, घराना, घर, जाति, देह, समूह, झुण्ड, शक्ति, समुदाय, वाम-मार्ग, कौल-धर्म, वंश की मर्यादा, व्यापारियों

का समूह या संघ, मूलाधार चक्र; -जमा-(वि.) सब मिलाकर।
कुलकंटक-(सं.पुं.) वंश का कण्टक-स्वरूप व्यक्ति, जो मनुष्य कुल का काँटा हो।
कुलक-(सं. पुं.) कुचला, परवर की लता, हरा साँप, दीमक की निकाली हुई मिट्टी, समूह, भोग्य-वस्तु, परस्पर, सम्बन्ध।
कुलकना-(हिं. क्रि. अ.) प्रसन्न होना, आनन्द से हँसना, बोलना।
कुलकर्त्ता-(सं. पुं.) वंश-स्थापक, वंश चलानेवाला।
कुलकलंक-(सं.पुं.) वंश में धब्बा लगानेवाला, वंश को अपमानित करनेवाला।
कुल-कलंकिनी-(सं. स्त्री.) बाप या ससुर के घराने को अपमानित करनेवाली स्त्री।
कुलकानि-(हिं. स्त्री.) वंश की मर्यादा, कुल की लज्जा।
कुलकुलाना-(हिं. क्रि.अ.) कुलकुल करना, धीरे-धीरे बोलना, प्रसन्न होना।
कुलक्रिया-(सं.स्त्री.) कुल का कार्य, घराने का काम।
कुलक्षण-(सं. पुं.) बुरा लक्षण, कुरीति, बुरी चाल; (वि.) दुराचारी।
कुलक्षय-(सं. पुं.) वंश का अधःपतन और ध्वंस।
कुलगरिमा-(सं. स्त्री.) वंश-गौरव, वंश का बड़प्पन।
कुलघ्न-(सं. वि.) वंश-नाशक, परिवार को बिगाड़नेवाला।
कुलचा-(हिं. पुं.) खमीर की रोटी, तम्बू के डंडे के ऊपर लगाने का लट्टू।
कुलच्युत-(सं. वि.) जाति से बहिष्कृत किया हुआ।
कुलच्छन-(हिं. पुं.) देखें 'कुलक्षण'।
कुलच्छनी-(हि.स्त्री.) बुरे लक्षणवाली स्त्री।
कुलज-(सं. पुं.) अपने घराने को त्यागकर दूसरे के कुल में रहनेवाला, व्यभिचारी, गुप्त के अतिरिक्त क्षेत्रज, दत्तक या क्रीत पुत्र।
कुलटा-(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली, अनेक पुरुषों से प्रेम करनेवाली परकीया नायिका।
कुलतारन-(हिं. वि.) वंश को पवित्र करनेवाला, कुल को तारनेवाला।
कुलतिथि-(सं. स्त्री.) तन्त्रमत से चतुर्थी, अष्टमी, दशमी तथा चतुर्दशी तिथि।
कुलतिलक-(सं. पुं.) वंश में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति।
कुलत्थ-(सं. पुं.) कुलथ, कुलथी, जंगली उड़द।

कुल्य-(हिं. पुं.), कुलथी-(सं. स्त्री.) उड़द के प्रकार का एक मोटा अन्न।
कुलदीप-(सं. वि.) कुलश्रेष्ठ।
कुलदूषण-(सं.वि.) वंश में दोष लगानेवाला।
कुलदेवता-(सं. पुं.) वंश के आराध्य देवता, जिस देवता की वंश में परंपरा से पूजा होती हो।
कुलदेवी-(सं. स्त्री.) वंश परंपरा से पूजित देवी।
कुलधर्म-(सं. पुं.) परंपरा से चला आता हुआ वंश का कर्तव्य, वंशधर्म।
कुलनंदन-(सं. पुं.) अपने अच्छे आचरण से वंश को प्रसन्न करनेवाला पुरुष।
कुलन-(हिं. स्त्री.) पीड़ा, कष्ट।
कुल-नक्षत्र-(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार भरणी, रोहिणी, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़, श्रवण और उत्तरा भाद्रपद।
कुलना-(हिं.क्रि.अ.) दुखना, टीसना।
कुलपति-(सं.पुं.) वंश का स्वामी, विद्यार्थियों का भरण-पोषण करनेवाला तथा उनको शिक्षा देनेवाला गुरु, दस हजार मुनियों को अन्नदानादि देकर पढ़ानेवाला ऋषि।
कुलपूज्य-(सं. वि.) जो परंपरा से वंश में पूजित होता चला आया है।
कुलफा-(हिं. पुं.) एक प्रकार का शाक।
कुलफी-(हिं. स्त्री.) धातु का बना हुआ चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बरफ जमाया जाता है, पेंच, छोटा कुलफ, पीतल या ताँबे की टेढ़ी नली।
कुलबधू-(हिं.स्त्री.) भले घराने की स्त्री।
कुलबाँसा-(हिं. पुं.) करगह का बाँस जिसमें जुलाहे कंघी बाँधते हैं।
कुलबुल-(हिं. पुं.) छोटे-छोटे कीड़ों की गति का शब्द।
कुलबुलाना-(हिं.क्रि.अ.) धीरे-धीरे हिलना-डोलना, छोटे-छोटे जीवों का सरकना, चंचल होना, रेंगना।
कुलबुलाहट-(हिं. स्त्री.) हिलना-डोलना, चंचलता।
कुलबोरन-(हिं. वि.) वंश को डुबानेवाला, मर्यादा का नाश करनेवाला, कुल-कलंक।
कुलभूषण-(सं. पुं.) देखें 'कुलतिलक'।
कुलवंत-(सं. पुं.) कुलवान्, कुलीन।
कुलवर्धन-(सं. वि.) वंश की उन्नति करनेवाला।
कुलवान-(सं. वि.) [illegible]
[illegible]
कुल्हड़-(हिं. स्त्री.) [illegible]

वाले पक्षियों की आँख ढाँपने की टोपी, अँधियारी, ढक्कन।
कुलहा-(हिं. पुं.) देखें 'कुल्हा'।
कुलही-(हिं. स्त्री.) बच्चों का कनटोप।
कुलांगना-(सं. स्त्री.) कुलवधू।
कुलांगार-(सं. पुं.) कुल का गौरव नष्ट करनेवाला।
कुलाँच-(हिं.स्त्री.) दोनों हाथों के बीच का अन्तर, उछाल, छलाँग, चौकड़ी।
कुलाँचना-(हिं. क्रि. अ.) छलाँग मारना।
कुलाँट-(हिं. स्त्री.) देखें 'कुलाँच'।
कुलाचल-(सं.पुं.) पर्वत विशेष, कुल पर्वत।
कुलाचार-(सं. पुं.) वंश का उचित धर्म।
कुलाचार्य-(सं.पुं.) कुलगुरु, कुल पुरोहित।
कुलाधि-(हिं. स्त्री.) पाप, दोष, छिद्र।
कुलावा-(हिं. पुं.) किवाड़ को चौखटे में जकड़ने का काँटा, मछली फँसाने का काँटा।
कुलाभिमान-(सं. पुं.) वंश का अभिमान।
कुलाल-(सं. पुं.) कुम्भकार, कोहार, जंगली मुर्गा, कुम्भीर, घड़ियाल।
कुलाली-(सं. स्त्री.) कुम्हारिन, जंगली कुलथी, दृष्टदर्शक यन्त्र।
कुलाह-(सं. पुं.) कुछ पीले रंग का घोड़ा जिसके पैर काले हों, लाल तालमखाना।
कुलाहल-(हिं. पुं.) देखें 'कोलाहल'।
कुलिंग-(सं. पुं.) चटक पक्षी, गौरैया, कोई चिड़िया या पक्षी।
कुलिंद-(सं. पुं.) एक जनपद विशेष।
कुलि-(हिं. अव्य.) सम्पूर्ण, सब।
कुलिक-(सं. वि.) शिल्पकार, कारीगर।
कुलिज-(सं. पुं.) नाप, नाद।
कुलिश-(सं. पुं.) वज्र, बिजली, कुठार, फरसा, हीरा, मकरन्द की बेल।
कुलिशपाणि-(सं. पुं.) वज्रधर, इन्द्र।
कुली-(हिं. पुं.) बोझ उठानेवाला मजदूर, मोटिया; -कबारी (ड़ी)-(पुं.) नीच जाति का मनुष्य।
कुलीन-(सं. वि.) अच्छे वंश का, अच्छे घराने का, विद्वान्।
कुलीना-(सं. स्त्री.) [illegible] आर्या छन्दों का नाम।
कुलीरक-(सं. पुं.) [illegible]
[illegible]
[illegible]

कुलेश्वर–(सं.पुं.) कुलपति, शिव, महादेव।
कुलेश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।
कुल्थी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कुलथी'।
कुल्फ–(हिं. पुं.) कुलुफ, ताला।
कुल्फी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कुलफी'।
कुल्माष–(सं. पुं.) कुलथी, उड़द, बाँस, जटामासी, एक प्रकार का धान, दो दालोंवाला अन्न, खिचड़ी, काँजी।
कुल्य–(सं. वि.) अच्छे कुल का, माननीय।
कुल्या–(सं. स्त्री.) कृत्रिम नदी, नहर, परनाला, कुलस्त्री।
कुल्लक–(सं. पुं.) देखें 'कुलुक'।
कुल्ला–(हिं. पुं.) मुख में पानी भरकर तथा चारों ओर घुमाकर बाहर फेंकने का कार्य, मुँह में भरा हुआ जल, गरारा, ऊख के खेत की सिंचाई, कुन्तल, काकुल, पीठ की रीढ़ पर काले रंग की धारीवाला घोड़ा।
कुल्ली–(हिं. स्त्री.) देखें 'कुल्ला'।
कुल्लुक–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाँस।
कुल्लूक–(सं. पुं.) मनुसंहिता के प्रसिद्ध टीकाकार।
कुल्हड़–(हिं. पुं.) पुरवा, चुक्कड़।
कुल्हाड़ा–(हिं. पुं.) लकड़ी चीरने-फाड़ने का एक अस्त्र, कुठार।
कुल्हाड़ी–(हि.स्त्री.) छोटा कुल्हाड़ा, टाँगी।
कुल्हिया–(हिं. स्त्री.) छोटा पुरवा या कुल्हड़।
कुवद–(सं.पुं.) निन्दा, बुरी बात, बुराई।
कुवल–(सं. पुं.) बेर का फल, जल, सर्प का पेट।
कुवलय–(सं. पुं.) नीलपद्म, कुईं, कोका, भूमण्डल, एक प्रकार के असुर।
कुवलयानंद–(सं. पुं.) अलंकार का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।
कुवलयापीड–(सं. पुं.) एक दैत्य जिसने हाथी का रूप धारण करके कृष्ण पर आक्रमण किया था और उनके द्वारा मारा गया था।
कुवलयाश्व–(सं. पुं.) धुन्धमार राजा का नाम, शत्रुजित् राजा का पुत्र, मुनियों के यज्ञ को नाश करनेवाला असुर पातालकेतु को मारने के लिये आकाश से सूर्य का भेजा हुआ घोड़ा।
कुवलयेशय–(सं.पुं.) कुवलय पर सोनेवाले विष्णु।
कुवाँ–(हिं. पुं.) कूप, कुआँ।
कुवाँर–(हिं. पुं.) जंगली गुलाब, खेत से काटकर [illegible] अन्न।
कुवाक्य–(सं. पुं.) कुत्सित वाक्य, दुर्वचन, बुरी बात, गाली।
कुवाच्य–(सं. वि.) जो कहने योग्य न हो; (पुं.) दुर्वचन।
कुवाट–(सं. पुं.) कपाट, द्वार, किवाड़।
कुवाण–(हिं. पुं.) धनुष, कमान।
कुवाद–(सं. पुं.) परिवाद, बुरी बात।
कुवार–(हिं. पुं.) आश्विन का महीना।
कुवारी–(हिं. वि.) आश्विन संबंधी।
कुवासना–(सं. स्त्री.) बुरा अभिप्राय।
कुविचार–(सं. पुं.) बुरा विचार।
कुविचारी–(सं. वि.) बुरे विचारवाला।
कुविंद–(सं. पुं.) जुलाहा, कोरी।
कुविंदक–(सं. पुं.) कांस्यकार, कसेरा।
कुविवाह–(सं.पुं.) शास्त्र के विरुद्ध विवाह।
कुवृत्ति–(सं. स्त्री.) निन्दित आचरण।
कुवेर–(सं. पुं.) यक्षों का राजा तथा इन्द्र की नवनिधियों के भण्डारी तथा महादेव के मित्र।
कुवेरक–(सं. पुं.) शहतूत का वृक्ष।
कुवेराचल–(सं. पुं.) कैलास पर्वत।
कुवैद्य–(सं. पुं.) कुत्सित वैद्य।
कुश–(सं. पुं.) काँस जाति की एक घास जिसका उपयोग यज्ञादि में होता है, रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र का नाम, जल, सर्प का पेट; (वि.) पापिष्ठ, पापी।
कुशकंडिका–(सं. स्त्री.) वेदी का एक वैदिक संस्कार।
कुशद्वीप–(सं. पुं.) पुराणों के अनुसार एक टापू जो चारों ओर से घृत-समुद्र से घिरा है।
कुशध्वज–(सं. पुं.) राजा जनक के छोटे भाई जिनकी दो पुत्रियाँ भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थीं।
कुशरीर–(सं. वि.) बुरे शरीरवाला।
कुशल–(सं. पुं.) कल्याण, मंगल, शिव; (वि.) पुण्यशील, चतुर, शिक्षित, दक्ष, प्रवीण; –क्षेम–(पुं.) राजीखुशी; –ता–(स्त्री.) कौशल, चालाकी, निपुणता, दक्षता, योग्यता, कुशल-क्षेम; –प्रश्न–(पुं.) राजी-खुशी की पूछताछ; –बुद्धि–(वि.) शिक्षित, चतुर, निपुण।
कुशलाई–(हिं. स्त्री.) कुशल, कुशलता, निपुणता।
कुशा–(हिं. पुं.) देखें 'कुश'।
कुशाक्ष–(सं. पुं.) बन्दर, वानर।
कुशाग्र–(सं. पुं.) कुश का आगे का भाग, कुश की नोक के समान पतला और तीक्ष्ण।
कुशाग्रबुद्धि–(सं. वि.) तीक्ष्ण बुद्धिवाला।
कुशासन–(सं. पुं.) यज्ञ-उपासना इत्यादि के लिये कुश का बना हुआ आसन, बुरा राज्य-प्रबन्ध।
कुशिक–(सं. पुं.) विश्वामित्र के दादा का नाम, फाल, तेल का किट्ट, भेलावे का तेल, बेर।
कुशिका–(सं. स्त्री.) हल का फाल।
कुशी–(सं. स्त्री.) देखें 'कुशिका'।
कुशीद–(सं.पुं.) लालचन्दन, हल का फाल।
कुशीनगर–(सं. पुं.) बुद्धदेव का निर्वाण-स्थान।
कुशीनार–(हिं. पुं.) देखें 'कुशीनगर'।
कुशील–(सं. वि.) मन्द स्वभाव का, असभ्य।
कुशीलव–(सं. पुं.) नट, भाट, गायक गानेवाला, कथक, वाल्मीकि मुनि।
कुशीवश–(सं. पुं.) वाल्मीकि ऋषि।
कुशूलधान्य–(सं. पुं.) तीन वर्ष तक के आहार के लिये संचित धान्य।
कुशूलधान्यक–(सं. पुं.) कुशूलधान्य संचित करनेवाला मनुष्य।
कुश्ती–(फा. स्त्री.) दो पहलवानों का मल्लयुद्ध, दो की भिड़कर होनेवाली लड़ाई, –बाज–(पुं.) कुश्ती लड़नेवाला; (मुहा.) –खाना–कुश्ती में हार जाना; –मारना–कुश्ती में जीतना।
कुश्रुत–(सं. वि.) स्पष्ट न सुना हुआ।
कुष्ठ–(सं. पुं.) कोढ़ रोग, कुट नामक औषधि।
कुष्ठित–(सं. वि.) कुष्ठ रोगयुक्त।
कुष्ठी–(सं. वि.) कुष्ठरोगयुक्त, कोढ़ी।
कुष्मांड–(सं. पुं.) कुम्हड़ा, सीताफल।
कुष्मांडक–(सं. पुं.) कुम्हड़ा, शिव के अनुचर।
कुष्मांडी–(सं. स्त्री.) कुष्माण्ड की लता, योग की एक क्रिया, दुर्गा देवी का एक नाम, पार्वती।
कुसंग–(सं. पुं.) कुत्सित संग।
कुसंगति–(सं. स्त्री.) कुसंग।
कुसंस्कार–(सं. पुं.) बुरा संस्कार, मन में बुरी बातों का जमना।
कुसगुन–(सं. पुं.) अपशकुन, बुरा लक्षण, असगुन।
कुसमय–(सं. पुं.) कुत्सित समय, संकट का समय, बुरा समय, दुःख के दिन।
कुसर–(हिं. पुं.) पानी में उगनेवाली एक लता की जड़ जो औषधि में व्यवहृत होती है।
कुसल–(हिं. पुं.) देखें 'कुशल'।
कुसलई–(हिं. स्त्री.) क्षेम, निपुणता।
कुसलछेम–(हिं. पुं.) देखें 'कुशल-क्षेम'।
कुसलता–(हिं. पुं.) कुशलता।

कुसलाई–(हि. स्त्री.) निपुणता, कुशलता, कुशलक्षेम।

कुसली–(हि. स्त्री.) आम की गुठली, एक पकवान, गोझा, पिराक, अश्मांतक, क्षुद्रामलकी।

कुसवा–(हि.पुं.) धान में लगनेवाला एक रोग।

कुसवारी–(हि. पुं.) रेशम का जंगली कीड़ा, रेशम का कोया।

कुसहाय–(सं.पुं.) बुरा साथी, कुत्सित संगी।

कुसाइत–(हि. स्त्री.) कुसमय, कुमुहूर्त।

कुसाखी–(हि. पुं.) कुत्सित साक्षी।

कुसिया–(हि. स्त्री.) बेल-बूटा बनाने की सुई।

कुसियार–(हि. पुं.) एक प्रकार की कोमल ऊख।

कुसी–(हि. स्त्री.) हल का फाल।

कुसीद–(सं. पुं.) ब्याज के लिये रुपया उधार देने का काम, ब्याज के लिये ऋण देनेवाला।

कुसुंब–(हि. पुं.) देखें 'कुसुंभ'।

कुसुंभ–(सं. पुं.) कुसुम नामक पुष्प विशेष।

कुसुंभा–(हि. पुं.) कुसुम का रंग, घुली हुई अफीम।

कुसुंभी–(हि. वि.) लाल रंग का।

कुसुम–(सं. पुं.) पुष्प, फूल, मेवा, स्त्री का मासिक धर्म, आँख का रोग, छोटे-छोटे वाक्योंवाला गद्य, एक प्रकार का छन्द, पीले फूलों का एक पेड़, बर्रे, कुसुंभ।

कुसुमचाप,-धन्वा–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।

कुसुमपुर–(सं.पुं.) पाटलिपुत्र, पटना नगर।

कुसुमफल–(सं. पुं.) जातीफल, जायफल।

कुसुमबाण–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।

कुसुममय–(सं. वि.) फूलों से भरा हुआ।

कुसुमरेणु–(सं. पुं.) फूल का पराग।

कुसुमवती–(सं. स्त्री.) रजस्वला स्त्री।

कुसुमविचित्रा–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त।

कुसुमशयन–(सं. पुं.) फूलों का बिछौना।

कुसुमशर–(सं. पुं.) कामदेव का पुष्पबाण।

कुसुमस्तबक–(सं. पुं.) फूलों का गुच्छा, दण्डक जाति का एक छन्द।

कुसुमांजलि–(सं.स्त्री.) हाथ की अंजलि में फूल भरकर देवता पर चढ़ाना, पुष्पाञ्जलि।

कुसुमा–(सं. स्त्री.) [illegible] का वृक्ष, [illegible]।

कुसुमाकर–(सं. पु.) बगीचा, कुंज, [illegible]।

कुसुमागम–(सं. पुं.) [illegible]।

कुसुमाधिप–(सं. पुं.) चम्पा का वृक्ष।

कुसुमायुध–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।

कुसुमासव–(सं. पुं.) मधु।

कुसुमास्त्र–(सं. पुं.) कामदेव का बाण।

कुसुमावली–(सं. स्त्री.) फूलों का गुच्छा।

कुसुमित–(सं. वि.) पुष्पित, फूला हुआ।

कुसुमितलता-वेल्लिता–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।

कुसूत–(हि. पुं.) बुरा धागा, बुरा प्रबंध।

कुस्तुभ–(सं. पुं.) विष्णु, समुद्र।

कुस्त्री–(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी।

कुस्वप्न–(सं. पुं.) बुरा सपना।

कुस्वामी–(सं. पुं.) बुरा मालिक या पति।

कुस्सा–(सं. पुं.) कुदाल, कुदाली।

कुहक–(सं.पुं.) प्रतारक, धोखा देनेवाला, ऐन्द्रजालिक, बन्दी, धोखा, फरेब, धूर्तता, मेढ़क।

कुहकना–(हि. क्रि. अ.) मीठा बोलना, पिहिकना, (मोर या कोयल की बोली के लिये प्रयोग होता है।)

कुहकी–(सं. वि.) मायावी, धनी।

कुहना–(हि. क्रि. अ.) मार-मारकर कचूमर निकालना।

कुहनी–(हि. स्त्री.) हाथ और बाँह के जोड़ की हड्डी, टेढ़ी बनी हुई नली; (पुं.)–उड़ान–मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

कुहप–(हि. पुं.) रात्रिचर, राक्षस।

कुहर–(सं. पुं.) छिद्र, गड्ढा, सूना हुआ अन्न, कान का छिद्र, कण्ठ, गला; (हि. स्त्री.) बहरी नामक पक्षी जो चिड़ियों को पकड़ लेता है।

कुहरा–(हि. पुं.) जल का अत्यन्त सूक्ष्म कण जो ठंडक पाकर वायु में भाप सा जम जाता है और धीरे-धीरे भूमि पर उतरता है।

कुहरान–(हि. पुं.) कोलाहल, विलाप का शब्द, उपद्रव, हाय हाय।

कुहाना–(हि. क्रि. अ.) मन ही मन [illegible] होना, रूठना।

कुहारा–(हि. पुं.) कुठार, कुल्हाड़ी।

कुहासा–(हि. पु.) देखें 'कुहरा'।

कुही–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की शिकारी चिड़िया, कुहर।

कुहू–(सं. स्त्री.) अमावस्या, कोयल [illegible] बोली या कूक।

कुहुक–(हि. पुं.) पक्षियों का [illegible] शब्द, [illegible]।

कुहुकना–(हि. क्रि. अ.) पक्षियों का [illegible] स्वर में बोलना।

कुहुकबान–(हि. पुं.) [illegible], और या बाण जिसको छोड़ने से मधुर शब्द होता है।

कुहू–(सं. स्त्री.) कोयल की ध्वनि, जिस अमावस्या को चन्द्रमा बिल्कुल नहीं देख पड़ता।

कुहूक, कुहूकंठ–(सं.पुं.) कोकिल, कोयल।

कुहूमुख, कुहूरव–(सं.पुं.) देखें 'कुहूकंठ'।

कुहेड़ी, कुहेलिका–(सं. स्त्री.) कुहरा।

कूख–(हि. स्त्री.) कोख, कोंख।

कूखना–(हि.क्रि.अ.) पीड़ित अवस्था में करुणाजनक शब्द निकालना, काँखना।

कूंग(गा)–(हि.पुं.) कनेरे का गराड़ने का यन्त्र, बबूल की छाल का काढ़ा जिसमें चमड़ा पकाया जाता है।

कूंच–(हि. स्त्री.) जुलाहे की कूंची, लोहार की बड़ी सँड़सी, एड़ी के ऊपर की बड़ी नस।

कूंचना–(हि.क्रि.अ.) टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना, कुचलना, मारना-पीटना।

कूंचा–(हि. पुं.) झाड़ू, बुहारी।

कूंची–(हि. स्त्री.) छोटी कूंची, छोटी झाड़ू, चित्रकार की रंग पोतने की कलम; (मुहा.) –देना–कूंची से साफ करना।

कूंज–(हि.पुं.) क्रौंच पक्षी, करांकुल पक्षी।

कूंजड़ा–(हि. पुं.) साग, भाजी तथा फल बेचनेवाली एक जाति, कुंजड़ा।

कूंजड़ी–(हि. स्त्री.) कूंजड़े की स्त्री।

कूंड़–(हि. पुं.) युद्ध में पहिनने की लोहे की टोपी, पानी भरने का लोहा या मिट्टी का गहरा पात्र, खेत में हल से बनी हुई लकीर, कठौता, मोमबत्ती जलाने की पीतल के आकार की [illegible] की बनी [illegible]।

कूंडा–(हि. पुं.) [illegible] लोहे [illegible] का मिट्टी का पात्र जिसमें [illegible] [illegible], पौधे लगाने का [illegible], दीपक जलाने की [illegible], [illegible], कठौता।

कूंडी–(हि. स्त्री.) पत्थर की [illegible], पथरी, छोटी नाँद, कोल्हू के बीच का गड्ढा।

कूंदना–(हि. क्रि. स.) [illegible], [illegible], मारना, पीटना, [illegible]।

[illegible]–(हि. स्त्री.) कुमुदनी, [illegible]।

[illegible]–(हि. स्त्री.) [illegible]

[illegible]

[illegible]

भोजन का अंश, तुच्छ वस्तु; –निदिया–(स्त्री.) कुत्ते के समान हलकी नींद।
कूका–(हिं.पुं.) एक नानकपन्थी सम्प्रदाय।
कूकी–(हिं. स्त्री.) क्षेत्र की उपज को बिगाड़नेवाला एक कीड़ा।
कूकुर–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।
कूच–(सं.पुं.) प्रस्थान, रवानगी; (मुहा.) –कर जाना–दुनिया से चले जाना, मर जाना; –बोलना–प्रस्थान करना।
कूचिका–(सं. स्त्री.) छोटी चाभी, चित्रकार की कूँची।
कूची–(हिं.स्त्री.) चित्र बनाने की लेखनी, छोटी झाड़ू, कूँची।
कूज–(हिं. स्त्री.) ध्वनि, बोली; –क–(वि.) अव्यक्त शब्द बोलनेवाला।
कूजन–(सं.पुं.) चिड़ियों की बोली, पेट की गुड़गुड़ाहट, गाड़ी के पहियों का शब्द।
कूजना–(हिं. क्रि. अ.) कूकना, चहकना, मधुर ध्वनि करना।
कूजा–(हिं. पुं.) बेले या मोतिये का फूल।
कूजित–(सं. वि.) ध्वनित, शब्द किया हुआ, कूजन से गुंजित।
कूट–(सं. पुं.) पहाड़ का शिखर, कँगूरा, मुकुट, अग्र-भाग, समूह, लोहे की मुंगरी, हल का फाल, हरिन के पकड़ने का जाल, गुप्ती छड़ी, मिथ्या, झूठ, टूटा हुआ सींग, नगर का द्वार, घर, छोटा पेड़, लोहसार, टूटे सींग का बैल, पीतल, छल, ढेर, गुप्त रहस्य, गूढ़ार्थ, व्यंग्य; (वि.) निश्चल, ठहरा हुआ, कृत्रिम, बनावटी, भ्रष्ट किया हुआ, विशिष्ट, प्रधान; (हिं. पुं.) कूट नामक औषधि, कुटी, झोपड़ा।
कूटकर्म–(सं. पुं.) छल, धोखा, छिपाकर किया हुआ काम।
कूटकर्मा–(सं.पुं.) छली, कपटी।
कूटकार–(सं. वि.) वंचक, झूठी गवाही देनेवाला।
कूटता–(सं.स्त्री.) काठिन्य, कड़ाई, असत्य, छल, कपट, झूठापन।
कूटत्व–(सं. पुं.) देखें 'कूटता'।
कूटधर्मा–(सं. वि.) मिथ्या व्यवहार को धर्मकार्य बतलानेवाला।
कूटना–(हिं. क्रि. स.) किसी पदार्थ को ऊपर से धड़ाधड़ पीटना, ठोंकना, मारना-पीटना, पत्थर की सिल, जाँते इत्यादि में टाँकी से छोटे-छोटे गड्ढे बनाना, चिन्हित करना; (मुहा.) कूट-कूटकर भरना–अच्छी तरह कसकर भरना।
कूटनीति–(सं. स्त्री.) कपटनीति, धोखे की चाल।
कूटपाश–(सं.पुं.) पक्षियों को पकड़ने का यंत्र।
कूटमान–(सं. पुं.) पसँगेवाला तराजू।
कूटयुद्ध–(सं. पुं.) शत्रु को धोखा देनेवाली लड़ाई।
कूटयोधी–(सं. वि.) छिपकर लड़नेवाला।
कूटलेख–(सं. पुं.) समझ में न आनेवाली लिखावट।
कूटशासन–(सं. पुं.) मिथ्या शासन, धोखे का राज्य।
कूटसाक्षी–(सं.पुं.) झूठ बोलनेवाला साक्षी।
कूटस्थ–(सं. वि.) श्रेष्ठ, सबसे ऊपर रहनेवाला, निश्चल, सर्वदा या सब कालों में एक-सा रहनेवाला, गुप्त, अविनाशी।
कूटागार–(सं. पुं.) घर के ऊपरी खण्ड का मण्डप, क्रीड़ागृह।
कूटू–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिसके फल के बीजों का आटा पीसकर फलाहार में व्रत के दिन व्यवहार किया जाता है।
कूड़ा–(हिं. पुं.) झाड़न, मैल, कतवार, व्यर्थ वस्तु; –खाना–(पुं.) कूड़ा फेंकने का स्थान, घूर।
कूढ–(हिं. पुं.) परिहत, हल का वह भाग जिसमें एक ओर मुठिया और दूसरी ओर खोंपा रहता है, हल की गड़ारी में से बीज बोने की रीति; (वि.) अज्ञान, मूर्ख; –मग्ज–(पुं.) मन्दबुद्धि, बात न समझनेवाला।
कूणि–(सं. वि.) वक्रहस्त, टेढ़े हाथवाला।
कूत–(हिं. स्त्री.) अनुमान, किसी वस्तु की संख्या, मूल्य अथवा परिमाण का बिना गिने या नापे निर्धारण।
कूतना–(हिं.क्रि.स.) अटकल से किसी वस्तु की संख्या, परिमाण इत्यादि बतलाना।
कूद–(हिं.स्त्री.) कूदने की क्रिया, कुदाई।
कूदना–(हिं.क्रि.अ.,स.) उछलना, फाँदना, छलाँग मारना, हस्तक्षेप करना, क्रम भंग करना, अत्यन्त प्रसन्नता दिखलाना, उल्लंघन करना, लाँघना, विघ्न डालना।
कूनी–(हिं. स्त्री.) कोल्हू का गड्ढा जिसमें पेरने के लिये ऊख डाली जाती है।
कूप–(सं. पुं.) कुआँ, इनारा, गर्त, छेद, खात, गड्ढा; –कार–(पुं.) कुआँ खोदनेवाला; –ज–(पुं.) लोम, केश, बाल; –दर्दुर–(पुं.) कुएँ का मेढक, अनुभवहीन मनुष्य; –मंडूक–(पुं.) देखें 'कूपदर्दुर'।
कूपी–(सं. स्त्री.) छोटा कुआँ, नाभि, छोटा पात्र, कुप्पी।
कूबड़–(हिं. पुं.) पीठ का उभड़ा हुआ टेढ़ापन, वक्रभाव, टेढ़ापन।
कूबर–(हिं. पुं.) कूबड़।
कूबरी–(सं. पुं.) रथ, गाड़ी, सग्गड़; (हिं. वि. स्त्री.) कुब्जा, कुबड़ी।
कूबा–(हिं. पुं.) कूबड़, बँड़ेरा रखने को टेढ़ी लकड़ी।
कूर–(हिं. पुं.) देखें 'कूरा', ढेर; (वि.) क्रूर, निर्दय, दुष्ट, दयारहित, भयावना, डरावना, मूर्ख, जड़बुद्धि।
कूरता–(हिं. स्त्री.) देखें 'क्रूरता'।
कूरपन–(हिं. पुं.) देखें 'क्रूरता'।
कूरम–(हिं. पुं.) देखें 'कूर्म'।
कूरा–(हिं. पुं.) राशि, ढेर, भाग, अंश।
कूरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास, छोटा ढेर।
कूर्च–(सं. पुं.) दोनों भौंहों के बीच का स्थान, मोर-पंख, दाढ़ी-मूंछ, धोखा, छल, घमंड, झूठी बात, कपट, मस्तक, भण्डार; –शेखर–(पुं.) नारियल का वृक्ष।
कूर्चिका–(सं.स्त्री.) चाभी, सूई, फूल की कली, फटा हुआ दूध, चित्रकार की कूँची।
कूर्दन–(सं. पुं.) बालकों का खेलकूद।
कूर्प–(सं. पुं.) भौंहों के बीच का भाग।
कूर्पर–(सं. पुं.) केहुनी, घुटना।
कूर्म–(सं. पुं.) कच्छप, कछुवा, पृथ्वी, प्रजापति का एक अवतार, विष्णु का दूसरा अवतार, तन्त्र शास्त्र के अनुसार एक मुद्रा, एक आसन विशेष, शरीर में की वह वायु जो पलकों को खोलती और बन्द करती है; –पुराण–(पुं.) अठारह प्रसिद्ध पुराणों में से एक का नाम; –पृष्ठ–(पुं.) कछुवे की पीठ।
कूर्मी–(सं. पुं.) एक प्रकार की वीन।
कूल–(सं. पुं.) नदी का किनारा, खंभा, तालाब, सेना का पिछला भाग, समीप, पास, नहर; –चर–(वि.) नदी के तीर पर घूमनेवाला पशु।
कूला–(हिं.पुं.) कृत्रिम जलप्रवाह, नाली।
कूलिनी–(सं. स्त्री.) नदी।
कूली–(हिं. पुं.) देखें 'कुली'।
कूल्हना–(हिं. क्रि.अ.) काँखना, कराहना, आह भरना।
कूल्हा–(हिं. पुं.) पेड़ू के दोनों ओर उभड़ी हुई हड्डी, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
कूष्मांड–(सं. पुं.) कुम्हड़े की लता।
कूष्मांडिनी, कूष्मांडी–(सं. स्त्री.) एक देवी का नाम।
कूह–(हिं. स्त्री.) हाथी का चिग्घाड़, चिल्लाहट, चीख।
कूहा–(सं. स्त्री.) कुहरा।
कृक–(सं. पुं.) कण्ठ, गला।

कृकर–(सं. पुं.) शिव, शरीर की वायु जो छींक लाती है, कनेर का वृक्ष।
कृकलास–(सं. पुं.) गिरगिट।
कृच्छ्र–(सं. पुं.) दुःख, कष्ट, पाप; सन्तापन आदि व्रत जिसमें पहिले निराहार रहकर दूसरे दिन पञ्चगव्य पीकर उपवास किया जाता है, मूत्रकृच्छ्र रोग; (वि.) कष्ट देनेवाला, क्लेशयुक्त; –कर्म–(पुं.) कष्टसाध्य कर्म, कठिनता से होनेवाला कार्य; –साध्य–(वि.) कष्टसाध्य, कठिनता से होनेवाला।
कृत–(सं. वि.) सम्पादित, किया हुआ, प्रस्तुत, तैयार, प्राप्त, यथेष्ट, अभ्यस्त, समीप का, पर्याप्त, बनाया हुआ; (पुं.) चार युगों में से पहिला युग।
कृतकर्मा–(सं.वि.) दक्ष, चतुर, जो अपना काम कर चुका हो; (पुं.) परमेश्वर।
कृतकार्य–(सं.वि.) कृतार्थ, सफल।
कृतकाल–(सं. पुं.) निर्धारित समय।
कृतकीर्ति–(सं.वि.) यश लाभ करनेवाला।
कृतकृत्य–(सं. वि.) सम्पूर्ण रूप से अपने कार्य का साधन करनेवाला, चतुर, संतुष्ट, मुक्त।
कृतकृत्यता–(सं. स्त्री.) सफलता।
कृतकौतुक–(सं.वि.) खेलाड़ी, खेलनेवाला।
कृतघ्न–(सं.वि.) पहिले किए हुए उपकार को भूल जानेवाला; –ता–(स्त्री.) उपकार भूलने की अवस्था।
कृतघ्नी–(हि. वि.) देखें 'कृतघ्न'।
कृतज्ञ–(सं. वि.) किये हुये उपकार को माननेवाला; –ता–(स्त्री.) नेकी या उपकार मानना।
कृतदंड–(सं. पुं.) यमराज।
कृतनिश्चय–(सं.वि.) दृढ़संकल्प किया हुआ।
कृतपर्व–(सं. पुं.) कृतयुग, सत्ययुग।
कृतपुण्य–(सं.वि.) पुण्य-कार्य करनेवाला।
कृतपूर्व–(सं. वि.) पहिले से किया हुआ।
कृतबुद्धि–(सं. वि.) बुद्धि स्थिर किया हुआ।
कृतयुग–(सं. पुं.) सत्ययुग।
कृतविद्य–(सं. वि.) पण्डित, ज्ञानी, जिसने विद्या पढ़ी हो।
कृतवेश–(सं.वि.) अलंकृत, सजा हुआ।
कृतांक–(सं. वि.) चिह्नित, चिह्न या निशान किया हुआ।
कृतांजलि–(सं.स्त्री.) श्रद्धाञ्जलि; (वि.) हाथ जोड़े हुए।
कृतांत–(सं. वि.) समाप्तिकारक; (पु.) [illegible] यमराज, यम, सिद्धान्त, मृत्यु, पाप, शनि, [illegible], दो की संख्या, देवता।

कृतात्यय–(सं.पुं.) सांख्य दर्शन के अनुसार भोग द्वारा कर्म का नाश।
कृतान्न–(सं.पुं.) पक्वान्न, मिठाई आदि।
कृतापकार–(सं.वि.) अपकार करनेवाला।
कृतापराध–(सं. वि.) दोषी, अपराधी।
कृतार्थ–(सं. वि.) कृतकार्य, जिनका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट, दक्ष, कुशल, मुक्त; –ता–(स्त्री.) सफलता।
कृतावधान–(सं. वि.) सावधान, चतुर।
कृतावधि–(सं. वि.) सीमाबद्ध, नियत।
कृति–(सं. स्त्री.) क्रिया, कार्य, करनी, करतूत, काम, यत्न, क्षति, हिंसा, मार-काट, माया, अनुष्टुप् के समान एक छन्द, बीस की संख्या, गणित में वर्ग संख्या, विष्णु।
कृतिकर–(सं.पुं.) बीस हाथोंवाला, रावण।
कृती–(सं. वि.) शिक्षित, पुण्यवान्, भला काम करनेवाला, कुशल, प्रवीण, दक्ष।
कृत्ति–(सं.स्त्री.) मृगचर्म, भूर्जपत्र, भोजपत्र।
कृत्तिका–(सं.स्त्री.) तीसरा नक्षत्र, चन्द्रमा की पत्नी, गाड़ी, मृगचर्म, खाल, भोजपत्र।
कृत्तिवास–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
कृत्य–(सं. वि.) किया जानेवाला, कर्त्तव्य, वेदविहित आवश्यक (कर्म), घूस (उत्कोच) देकर वश में किया जानेवाला; (पुं.) जादू-टोना के देवता, कार्य।
कृत्यक–(सं. पुं.) हानि पहुँचानेवाला।
कृत्यका–(सं. स्त्री.) डाइन, चुड़ैल।
कृत्या–(सं. स्त्री.) अभिचारादि कार्य, जादू-टोना, अभिचार के निमित्त आराधित देवी।
कृत्रिम–(सं.वि.) बनावटी, अस्वाभाविक, कार्यजात, काम से निकाला हुआ।
कृत्स्न–(सं. वि.) सम्पूर्ण, सब।
कृदंत–(सं. पुं.) धातु से 'कृत्' प्रत्यय लगाकर बना हुआ शब्द।
कृप–(सं.पुं.) भारद्वाज ऋषि के पुत्र का नाम, कृपाचार्य।
कृपण–(सं. वि.) कंजूस, सूम, अदाता, न देनेवाला, क्षुद्र।
कृपणता–(सं. स्त्री.) कंजूसी, क्षुद्रता।
कृपनाई–(हि. स्त्री.) कृपणता।
कृपया–(सं. अव्य.) कृपापूर्वक।
कृपा–(सं. स्त्री.) दया, अनुग्रह, क्षमा।
कृपाकर–(सं. वि.) दयालु।
कृपाण–(सं. पु.) खड्ग, तलवार, [illegible] का एक भेद।
कृपाणिका–(सं. स्त्री.) छुरी, कैंची, चाकू, कटारी।
कृपानिधि–(सं. पुं.) दयावान्।

कृपापात्र–(सं.पुं.) दयाभाजन, जिस व्यक्ति पर दया की जावे, दया किये जाने योग्य।
कृपायतन–(सं. पुं.) कृपानिधि।
कृपाल–(हि. वि.) देखें 'कृपालु'।
कृपालु–(सं.वि.) दयालु, कृपा करनेवाला।
कृपालुता–(सं. स्त्री.) दयालुता।
कृपावान्–(सं. वि.) दया करनेवाला।
कृपासिंधु–(सं.पुं.) दयासागर, कृपानिधि।
कृमि–(सं.पुं.) कीट, कीड़ा, उड़नेवाला कीड़ा, चींटी, लाह, मकड़ा, कृमि रोग।
कृमिका–(सं. स्त्री.) [illegible]
कृमिघ्न–(सं. पुं.) वायविडंग, प्याज, भिलावाँ, नीम।
कृमिज–(सं. वि.) कीड़ों से उत्पन्न होनेवाला; (पुं.) लाह, अगुरु काष्ठ।
कृमिजा–(सं.स्त्री.) लाह, रेशम, हिरमिजी, अगर।
कृमिफल–(सं. पुं.) गूलर का फल।
कृमिभोजन–(सं.पुं.) एक नरक का नाम।
कृमिरोग–(सं. पुं.) पेट में कृमि पड़ने का रोग।
कृमीलक–(सं. पुं.) जंगली मूंग।
कृश–(सं. वि.) दुर्बल, क्षीण, दुबला पतला, थोड़ा, दरिद्र, थोड़ा।
कृशता–(सं. स्त्री.) क्षीणता, दुर्बलता, दुबलापन, अल्पता, कमी।
कृशन–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना; (वि.) सुवर्ण-निर्मित।
कृशर–(सं.पुं.) तिल-चावल की खिचड़ी, केसर।
कृशरा–(सं. स्त्री.) खिचड़ी।
कृशांग–(सं. वि.) दुबला।
कृशांगी–(सं.स्त्री.) [illegible]
कृशाक्ष–(सं. पुं.) मकड़ा।
कृशानु–(सं. पु.) अग्नि, आग।
कृशित–(सं. वि.) दुर्बल, दुबला-पतला।
कृशोदरी–(सं.स्त्री.) [illegible]
कृषक–(सं. पु.) किसान, खेतिहर, हल का फाल।
कृषि–(सं. स्त्री.) खेती, किसानी, [illegible], खेतीबारी का काम।
कृषीवल–(सं. पु.) किसान।
कृष्ट–(सं. वि.) कर्षित, जोता हुआ, खींचा हुआ।
कृष्टिमा–(सं. पु.) [illegible]
कृष्ण–(सं. वि.) काला, [illegible]; (पु.) [illegible] के पुत्र, [illegible], कोयल, [illegible]

वृक्ष, काला जीरा, राई, महीने का काला पाख, अशुभ काल, एक वेदोक्त असुर जिसको इन्द्र ने मारा था, एक ऋषि का नाम, अथर्ववेद का एक उपनिषद्, वेदव्यास, कलियुग, चन्द्रमा का कलंक, छप्पय छन्द का एक भेद।

कृष्णक–(सं.पुं.) काले हरिन का चमड़ा, काली सरसों।

कृष्णकाय–(सं.पुं.) भैंसा; (वि.) काले शरीर का।

कृष्णगति–(सं. पुं.) अग्नि।

कृष्णग्रीव–(सं. पु.) नीलकण्ठ, महादेव।

कृष्णचंद्र–(सं. पु.) श्रीकृष्ण।

कृष्णजिह्व–(सं. पुं.) काली जीभ का अशुभ घोड़ा।

कृष्णद्वैपायन–(सं. पुं.) पराशर ऋषि के पुत्र वेदव्यास।

कृष्णपक्ष–(सं. पुं.) चन्द्रक्षय का पक्ष, अँधेरा पाख, प्रतिपदा से अमावस्या तक का काल।

कृष्णपिंगला–(सं. स्त्री.) दुर्गा।

कृष्णभुजंग–(सं. पुं.) काला साँप, करैत।

कृष्णमणि–(सं. पुं.) नीलम।

कृष्णसार–(सं. पु.) थूहर, सेंहुड़, काला हरिन।

कृष्णस्कंद–(सं. पुं.) तमाल वृक्ष, तमाखू का पेड़।

कृष्णा–(सं. स्त्री.) द्रौपदी, किशमिश, काला जीरा, कुटकी, राई, पीपल, दक्षिण देश की एक नदी, परवर, दूब, कस्तूरी, अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, काली तुलसी।

कृष्णाभिसारिका–(सं. स्त्री.) एक नायिका जो अँधेरी रात में अपने प्रियतम के पास जाती है।

कृष्णाभ्र–(सं. पुं.) काला अवरख, काला वादल।

कृष्णायस–(सं. पुं.) इस्पात, पक्का लोहा।

कृष्णावास–(सं. पुं.) द्वारकापुरी।

कृष्णाष्टमी–(सं. स्त्री.) भादों वदी अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।

कृष्णिमा–(सं. स्त्री.) कृष्णत्व, कालापन।

कृष्य–(सं. वि.) जोतने योग्य भूमि।

केंकें–(हिं. स्त्री.) चिड़ियों का दुःख-सूचक शब्द, झगड़े की बोली।

केंचुल–(हिं. स्त्री.) साँप की अपने आप गिर जानेवाली खाल।

केंचुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'केंचुल'।

केंचुआ–(हिं. पुं.) वर्षा ऋतु का एक कीड़ा, पेट में पड़ जानेवाला कीड़ा जो केंचुआ के आकार का होता है।

केंत–(हिं. पुं.) मोटी वेत।

केंद्र–(सं. पुं.) वृत्त का मध्यबिंदु, नाभि, मध्यवर्ती स्थान, मुख्य पीठ या स्थल।

केंद्रग, केंद्रगामी–(स.वि.) केंद्र की ओर जानेवाला।

केंद्रस्थ–(सं. वि.) केंद्र या मध्य में स्थित।

केंद्रस्थान–(सं. पुं.) मुख्य स्थान।

केउआ–(हिं. पुं.) घुइयाँ, चोकन्दर।

केउटा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का विषैला सर्प।

केकड़ा–(हिं. पुं.) कर्कट, पानी में रहनेवाला आठ टाँगों और दो पंजोंवाला एक जंतु।

केकय–(सं. पुं.) एक प्राचीन जनपद का नाम जो काश्मीर देश के अन्तर्गत था, इस देश में रहनेवाला, दशरथ के ससुर का नाम।

केकयी–(सं. स्त्री.) दशरथ की मझली पत्नी, भरत की माता।

केकल–(सं. पुं.) नर्तक, नाचनेवाला।

केका–(सं. स्त्री.) मोर की बोली।

केकी–(सं. पुं.) मयूर, मोर।

केचित्–(सं. अव्य.) कोई-कोई।

केड़वारी–(हिं. स्त्री.) शाक, फल आदि वोने का वगीचा, नये बोये हुए वृक्षों का वगीचा।

केड़ा–(हिं. पुं.) कोंपल, कल्ला, नया पौधा, गट्टा, नवयुवक।

केत–(सं. पुं.) घर, स्थान, वस्ती, ध्वज, पताका, संकल्प, प्रतिज्ञा।

केतक–(सं. पुं.) केवड़ा; (हिं. वि.) कितने, वहुत, वहुत-कुछ।

केतकी–(सं. स्त्री.) एक छोटा वृक्ष जिसमें तलवार के आकार के पत्तों के पुट में एक सुगंधित फूल होता है, केवड़ा।

केतन–(सं. पुं.) निमन्त्रण, वुलावा, चिह्न, ध्वजा, घर, स्थान।

केता–(हिं. वि.) कितना।

केतिक–(हिं. वि.) कितना।

केतु–(सं. पुं.) पुराणानुसार राहु राक्षस का धड़, प्रज्ञा, चमक, पताका, चिह्न, पीड़ा, उत्पात, पुच्छल तारा, नवग्रहों में से एक।

केतुमती–(सं. स्त्री.) सुमाली राक्षस की स्त्री जो रावण की नानी थी, एक अर्ध-समवृत्त।

केतुमान्–(सं. वि.) चिह्नयुक्त, प्रज्ञायुक्त, वुद्धिमान्, तेजस्वी, ध्वजायुक्त; (पुं.) धन्वन्तरि का पुत्र।

केतुरत्न–(सं.पुं.) वैदूर्यमणि, लहसुनिया।

केतुवृक्ष–(सं. पुं.) मेरु-पर्वत के चारों ओर के पर्वतों पर कदम्ब, जामुन, पीपल और वरगद के वृक्ष।

केदार–(सं. पुं.) हिमालय के अन्तर्गत एक पर्वत, पानी रोकने के लिये चारों ओर मेड़ वना हुआ खेत, उपजाऊ भूमि, आलवाल, थाला, एक राग विशेष।

केदारनाथ–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत के अन्तर्गत एक पर्वत की चोटी जिस पर इस नाम का शिवलिंग है।

केदारा–(हिं. पु.) एक राग।

केदारी–(सं.स्त्री.) एक रागिणी का नाम।

केन–(सं. पुं.) सामवेद का एक उपनिषद् जिसका पहिला मन्त्र 'केन' शब्द से आरम्भ होता है।

केना–(हिं. पुं.) शाक-भाजी मोल लेने के लिये दिया हुआ थोड़ा-सा अन्न, एक प्रकार की घास जिसकी पकौड़ी वनती है।

केयूर–(सं. पुं.) वाँह में पहिनने का आभूषण, भुजवन्ध, अंगद।

केयूरी–(सं. वि.) केयूर या विजायठ पहिने हुए।

केर–(हिं. प्रत्य.) संवंधसूचक विभक्ति या प्रत्यय, का।

केरल–(सं. पुं.) दक्षिण भारत का एक देश, मलावार, इस देश का निवासी, एक ज्योतिष-शास्त्र जिसको दिव्यचूड़ामणि ने लिखा था।

केरा–(हिं. पुं.) देखें 'केला'।

केराना–(हिं. क्रि. स.) अन्न के छोटे-वड़े दाने सूप से अलगाना; (पुं.) हलदी, मिर्चा, धनिया आदि मसाला।

केरानी–(हिं. पुं.) लिपिक, युरेशियन, दोगला यूरोपियन, किरानी।

केराया–(हिं. पुं.) देखें 'किराया'।

केराव–(हिं. पुं.) मटर।

केरि–(हिं.प्रत्य.,स्त्री.) देखें 'केरी', 'केलि'।

केरी–(हिं.प्रत्य.) 'केर' विभक्ति का स्त्रीलिंग रूप, आम का छोटा कच्चा फल।

केलक–(सं. पुं.) नर्तक, नाचनेवाला।

केला–(हिं.पुं.) कदली वृक्ष या उसका फल।

केलास–(सं. पुं.) स्फटिक; (हिं. पुं.) देखें 'कैलास'।

केलि–(सं. स्त्री.) परिहास, हँसी, ठट्ठा, क्रीड़ा, मैथुन, स्त्री-प्रसंग, पृथ्वी।

केलिकला–(सं. स्त्री.) रतिक्रीड़ा, सरस्वती की वीणा।

केली–(सं. स्त्री.) देखें 'केलि'।

केवट–(हिं. पुं.) नाव चलानेवालों की

एक जाति, मल्लाह ।

केवटी दाल–(हि. स्त्री.) दो या अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दाल ।

केवटी मोथा–(हि. पुं.) एक प्रकार का सुगन्धित मोथा ।

केवड़ई–(हि. वि.) केवड़े के रंग का, हलके पीले-हरे रंग का ।

केवड़ा–(हि. पुं.) श्वेत केतकी का पौधा, इस पौधे का फूल, केवड़ा जल ।

केवल–(सं. वि.) एकमात्र, अकेला, शुद्ध, श्रेष्ठ, उत्तम, उत्कृष्ट; (पुं.) भ्रान्तिशून्य ज्ञान; (अव्य.) सिर्फ, मात्र; –**ज्ञान**–(पुं.) इन्द्रियों की सहायता के विना केवल आत्मा से उत्पन्न हुआ ज्ञान; –**ज्ञानी**–(पुं.) तत्वज्ञानी; –**व्यतिरेकी**–(पुं.) केवल व्यतिरेक द्वारा ज्ञान अर्थात् प्रत्यक्ष कारण देखकर अनुमान; जैसे–जहाँ 'उष्णत्वाभाव है वहाँ वह्नि के अभाव' का अनुमान ।

केवलात्मा–(सं. पुं.) पुण्य-पाप से रहित ईश्वर; (वि.) शुद्ध स्वभाववाला ।

केवलान्वयी–(सं.पुं.) वह अनुमान जिसका विपक्ष नहीं होता तथा जो केवल अन्वय-व्याप्ति द्वारा ही जाना जाता है; ऐसा अनुमान ।

केवली–(सं. स्त्री.) ज्ञान, समझ; (पुं.) केवल-ज्ञानी पुरुष ।

केवाँच–(हि. स्त्री.) देखें 'कौंच' ।

केवा–(सं. पुं.) कमल की तरह का एक पुष्प, केतकी, केवड़ा, बहाना ।

केवाड़–(हि. पुं.) देखें 'किवाड़' ।

केश–(सं.पुं.) विष्णु, सूर्य तथा अग्नि की किरण, परब्रह्म की शक्ति, कुन्तल, सिर का बाल, बन्धन, बान्धव, छटा, रश्मि ।

केशकलाप–(सं. पुं.) बालों का गुच्छा ।

केशकार–(सं.पुं.) बालों को सँवारनेवाला ।

केशग्रह–(सं.पुं.) बलपूर्वक झोंटा खींचना ।

केशपाश–(सं. पुं.) बालों की लट ।

केशबंध–(सं. पुं.) नाच में हाथों की एक चाल ।

केशमार्जन–(सं.पुं.) बालों को धोना ।

केशमार्जनी–(सं. स्त्री.) कंघी ।

केशर–(सं. पुं.) देखें 'केसर' ।

केशरंजन–(सं.पुं.) भृंगराज, भँगरैया ।

केशराज–(सं. पुं.) भृंगराज, भँगरैया, भुजंगा पक्षी ।

केशरी–(सं.पुं.) सिंह, घोड़ा, नाग-केसर, एक [illegible] पक्षी, [illegible], एक प्रकार का बन्दर ।

केशव–(सं.पुं.) परमात्मा, विष्णु, नारा-

केसर, कौवा, नदी में बहाया हुआ मुर्दा; –**प्रिया**–(सं.स्त्री.) राधिका, गोरोचन ।

केशविन्यास–(सं.पुं.) बालों को सँवारना ।

केशहंत्री–(सं. स्त्री.) शमी वृक्ष ।

केशांत–(सं. पुं.) केश का अग्र भाग, दाढ़ी, मूड़न का एक संस्कार, मुंडन ।

केशि–(सं. पुं.) एक दानव जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।

केशिका–(सं. स्त्री.) सतावर ।

केशिनी–(सं. स्त्री.) बड़े-बड़े बालोंवाली स्त्री, दमयन्ती की दूती, रावण की माता, एक अप्सरा, पार्वती की एक सहेली का नाम, वन्ध्या, बाँझ ।

केशी–(सं. पुं.) एक गृहपति का नाम, एक दैत्य जिसको कृष्ण ने मारा था, घोड़ा, सिंह; (वि.) घने बालवाला, बालदार, किरणयुक्त ।

केसर–(सं. पुं.) फूलों के बीच के महीन तन्तु, कुमकुम, घोड़े या शेर की गरदन पर के बाल, नागकेसर, बकुल वृक्ष, मौलसिरी, सोना, कसीस, हींग ।

केसरिया–(हि. वि.) केसर के रंग का, पीला, जर्द, केसर डाला हुआ, केसर जैसी सुगंधवाला ।

केसरी–(सं. पुं.) सिंह, घोड़ा, नागकेसर, एक प्रकार का बन्दर, हनुमान् के पिता; (वि.) केसरिया; –**सुत**, –**सुवन**–(पुं.) हनुमान ।

केसारी–(हि. स्त्री.) मटर की जाति का एक अन्न, लतरी, खेसारी ।

केसू–(हि. पुं.) देखें 'टेसू' ।

केहरी–(हि. पुं.) केसरी, शेर, घोड़ा ।

केहा–(हि. पुं.) मयूर, मोर, एक छोटा जंगली पक्षी ।

केहि–(हि. वि., सर्व.) किस, किसको ।

केहूँ–(हि. अव्य.) किसी प्रकार ।

केहू–(हि. सर्व.) कोई ।

कैंचा–(हि. वि.) टेढ़ी आँखवाला, भेंगा, ऐंचा-ताना; (पुं.) बड़ी कैंची ।

कैंची–(हि. स्त्री.) सिलाई के कपड़े, बाल आदि काटने का यंत्र, कतरनी, मकान के छाजन में दोनों दीवालों पर स्थापित कैंची के सदृश लगी लकड़ियाँ ।

कैंडल–(हि. पुं.) [illegible] ।

कैंड़ा–(हि. पुं.) [illegible] ठीक करने का [illegible], ढब, [illegible], चतुराई ।

कैना–(हि. पुं.) [illegible] ।

कै–(हि. वि.) [illegible]; (अव्य.) [illegible], (प्रत्य.) का; (अ. स्त्री.) वमन, उल्टी ।

कैकय–(सं. पुं.) केकय नरेश ।

कैकयी–(हि. स्त्री.) देखें 'कैकेयी' ।

कैकस–(सं. पुं.) राक्षस, दानव ।

कैकसी–(सं. स्त्री.) रावण की माता का नाम ।

कैकेयी–(सं. स्त्री.) केकयराज की कन्या, दशरथ की मझली पत्नी, भरत की माता ।

कैटभ–(सं. पुं.) एक दैत्य जो विष्णु के द्वारा मारा गया था ।

कैटभारि–(सं. पुं.) विष्णु ।

कैटभी–(सं.स्त्री.) महाकाली, योग-निद्रा ।

कैतव–(सं. पुं.) घटना, छल, धोखा, जुआ, वैदूर्यमणि, लहसुनिया, कुमुद, कोक; (वि.) जुआरी, शठ, दुष्ट ।

कैतवापह्नुति–(सं. स्त्री.) एक शब्दालंकार जिसमें असली बात खुले शब्दों में नहीं परन्तु व्याज (बहाने) से छिपाई जाती है ।

कैथ, कैथा–(हि.पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसमें गोल खट्टे फल लगते हैं, कपित्थ ।

कैथिन–(हि.स्त्री.) कायस्थ जाति की स्त्री ।

कैथी–(हि. स्त्री.) एक प्राचीन लिपि जो नागरी से बहुत मिलती-जुलती है । (इसमें अक्षरों पर मात्रा नहीं भरा जाता । बिहार प्रान्त में इसका व्यवहार होता है ।)

कैद–(अ. स्त्री.) कारावास, कारागार, बंधन, शर्त, प्रतिबंध; –**तनहाई**–(स्त्री.) कैदी को अकेला बंद रखने का कठोर दंड ।

कैदी–(अ. पुं.) कारागार या जेल की सजा काटनेवाला बंदी ।

कैधों–(हि. अव्य.) या, वा, अथवा ।

कैफियत–(फा. स्त्री.) हाल, समाचार, विवरण, [illegible]; (मा.)–[illegible] [illegible] [illegible] पर असर मानना ।

कैमा–(हि. पुं.) एक प्रकार का [illegible] का वृक्ष जिसकी लकड़ी [illegible] [illegible] होती है ।

कैमुतिकन्याय–(सं. पुं.) [illegible] [illegible] [illegible] ।

कैया–(हि.पुं.) [illegible] ।

कैय्यट–(सं. पुं.) [illegible] ।

कैरव–(सं. पुं.) शत्रु, जुआरी, श्वेत कमल।
कैरा–(हिं. पुं.) भूरा रंग, बैल जिसका चमड़ा लाल और बाल सफेद होता है; (वि.) भूरी आँखवाला, कंजा।
कैरी–(हिं. वि. स्त्री.) भूरे रंग की।
कैलास–(सं. पुं.) हिमालय की एक चोटी का नाम, महादेव और यक्षाधिप कुबेर का वासस्थान, शिवलोक; –नाथ–(पुं.) शिव, कुबेर; –पति–(पुं.) महादेव; –वास–(पुं.) मृत्यु।
कैलासी–(हिं. वि.) कैलास पर रहनेवाला।
कैवर्त–(सं. पुं.) केवट की जाति, मल्लाह।
कैवर्तमुस्तक–(सं. पुं.) पानी में उत्पन्न होनेवाला मोथा, केवटी मोथा।
कैवल्य–(सं. पुं.) मुक्ति, विशेष निर्वाण, छुटकारा, कृष्ण यजुर्वेद के अन्तर्गत एक उपनिषद्, अद्वितीय स्वरूप, एकता, शुद्धता।
कैशिकी–(सं. स्त्री.) छेदने योग्य तलवार की धार, नाटक की एक वृत्ति जिसमें नाचने, गाने, बजाने और भोग-विलास की बातें होती है।
कैसा–(हिं. वि.) किस तरह का।
कैसे–(हिं. अव्य.) किस प्रकार से, किस कारण से, क्यों, किस लिये।
कोंई–(हिं. स्त्री.) देखें 'कुई'।
कोंकण–(सं. पुं.) दक्षिण भारत का एक प्रदेश, यहाँ का निवासी।
कोंचना–(हिं. क्रि. स.) छेदना, गड़ाना, चुभाना।
कोंचा–(हिं. पुं.) क्रौंचपक्षी, बहेलियों की लंबी लग्गी जिसके सिरे पर लासा लगाकर वे चिड़ियों को पकड़ते है।
कोंछ–(हिं. पुं.) स्त्रियों की ओढ़नी या आँचल का कोना।
कोंछना–(हिं. क्रि. स.) साड़ी के अगले भाग को चुनना।
कोंछियाना–(हिं. क्रि. स.) कोंछ में कोई वस्तु रखकर कमर म खोंसना, साड़ी के उस भाग को चुनना जो पेट पर खोंसा जाता है।
कोंढ़ा–(हिं. पुं.) कुण्डल, धातु का किसी वस्तु को अटकाने का छल्ला या कड़ा।
कोंढ़ी–(हिं. स्त्री.) छोटा कोंढ़ा, कली।
कोंथना–(हिं. क्रि. अ.) कराहना, कूंथना।
कोंपना–(हिं. क्रि. अ.) कोंपल लगना।
कोंपर–(हिं. पुं.) डाल का पका हुआ आम, बांस का कोमल अंकुर।
कोंपल–(सं. स्त्री.) अंकुर, वृक्ष की नई कोमल पत्ती।
कोंवर–(हिं. वि.) नरम, मुलायम, मृदु।
कोंहड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'कुम्हड़ा'।
कोंहड़ौरी–(हिं. स्त्री.) पेठे को मिलाकर उड़द की बनी हुई बरी।
को–(हिं. सर्व.) कौन; (विभ.) कर्म तथा सम्प्रदान कारक की विभक्ति।
कोआ–(हिं. पुं.) कोष, रेशम के कीड़े का कोश, टसर का कीड़ा, महुए का पका हुआ फल, धुने हुए ऊन की प्यूनी, कटहल के पके हुए फल का बीजकोष, आँख का डेला।
कोइड़ार–(हिं. पुं.) वह खेत जिसमें साग, तरकारियाँ लगी हों।
कोइना–(हिं. पुं.) महुए के फल की गुठली।
कोइरी–(हिं. पुं.) कृषिजीवी एक जाति, काछी, कुर्मी।
कोइला–(हिं. पुं.) देखें 'कोयला'।
कोइली–(हिं. स्त्री.) कच्चा आम, आम की गुठली, कोयल।
कोई–(हिं. सर्व.) अज्ञात व्यक्ति विशेष, अनजानी वस्तु, चाहे जो एक, एक भी; –न कोई–(सर्व.) एक न एक; –भी–(सर्व.) कोई।
कोउ, कोउक, कोऊ–(हिं. सर्व.) कोई, कुछ लोग।
कोक–(सं. पुं.) चक्रवाक, चकवा, मेढक, विष्णु, भेड़िया, छिपकली, कमल।
कोकई–(हिं. वि., पुं.) गुलाबी, नीला रंग, कौड़ियाला।
कोककला–(सं. स्त्री.) रतिविद्या, संभोग-शास्त्र।
कोकदेव–(सं. पुं.) रतिरहस्य या रति-शास्त्र के एक पण्डित।
कोकनद–(सं. पुं.) लाल पद्म, लाल कोंई।
कोकना–(हिं. क्रि. स.) कच्चा करना, बखिया करने के लिये सूई से दूर-दूर पर तागा डालना, लंगर डालना।
कोकनी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का तीतर, एक प्रकार का रंग; (वि.) छोटा, कम मूल्य का, घटिया।
कोकबंधु–(सं. पुं.) सूय।
कोकवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बांस।
कोकशास्त्र–(सं. पुं.) कोकदेव नामक पण्डित का बनाया हुआ रतिशास्त्र।
कोका–(हिं. पुं.) कबूतर; (स्त्री.) कुमुदिनी; (पुं.) दक्षिण अमेरिका में उपजनेवाला एक वृक्ष और उसकी पत्तियाँ जो चाय के सदृश पेय के रूप में काम आती हैं।
कोकाबली–(हिं. स्त्री.) नीली कुमुदिनी।
(इसके बीज का आटा व्रत मे खाया जाता है।)
कोकाह–(सं. पुं.) श्वेत घोड़ा।
कोकिल–(सं. पुं.) पिक, कोयल, परभृत, जलता हुआ अंगारा, एक विषैला कीड़ा, बेर का फल, छप्पय छन्द का एक भेद।
कोकिला–(सं. स्त्री.) मादा कोयल, बहुत मधुर गायिका।
कोकिलाक्ष–(सं. पुं.) तालमखाना।
कोकलासन–(सं. पुं.) हठयोग का एक आसन।
कोकीन, कोकेन–(हिं. पुं.) कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से बना एक बहुत उत्तेजक और मादक रसायन या चूर्ण जो पान में खाया जाता, अत्यधिक विषैला होता और अंग पर लगाने से उतना स्थान सुन्न कर देता है।
कोको–(हिं. स्त्री.) मादा कौवा; (पुं.) कौवे का शब्द; (पुं.) कोका नामक एक पेय।
कोख–(हिं. स्त्री.) पेट, उदर, पेट के दोनों ओर का स्थान, गर्भाशय; (मुहा.)–उजड़ना–गर्भपात होना या बच्चा जनमकर मर जाना; –बंद होना–सन्तान का न होना, बाँझ होना; –जली–(स्त्री.) वह स्त्री जिसकी संतान मर गई या मर जाती हो।
कोगी–(हिं. पुं.) लोमड़ी की तरह का एक पशु।
कोचकी–(हिं. पुं.) लाली लिये भूरा रंग, मकोइया रंग।
कोचना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'कोंचना', चुभाना, गड़ाना।
कोचनी–(हिं. स्त्री.) चुभाने का कोई नुकीला साधन, हाँकने की छड़ी।
कोचवान–(हिं. पुं.) बग्गी हाँकनेवाला।
कोचा–(हिं. पुं.) तलवार इत्यादि का गड़ाना, चुभाव, ताना।
कोचिला–(हिं. पुं.) देख 'कुचिला'।
कोची–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली बबूल।
कोजागर–(सं. पुं.) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरद्पूर्णिमा।
कोट–(सं. पुं.) दुर्ग, गढ़, प्राचीर, राजमहल; (हिं. वि., पुं.) कोटि, अनेक, यूथ; (अं. पुं.) अंग्रेजी ढंग का एक पहनावा; –पतलून–(अं. पुं) अंग्रेजों का या साहबी पहनावा; –पाल–(सं. पुं.) दुर्ग की रक्षा करनेवाला।

कोटर–(सं. पुं.) वृक्ष-गह्वर, पेड़ का खोतला भाग, दुर्ग की रक्षा के लिये इसके चारों ओर लगाया हुआ जंगल।

कोटरी–(सं.स्त्री.) वस्त्र रहित नंगी स्त्री, चण्डी, दुर्गा।

कोटि–(सं. स्त्री.) तलवार की धार, धनुष का अगला भाग, सौ लाख की संख्या, करोड़, वाद-विवाद का पूर्वपक्ष, श्रेणी, उत्तमता, ढेर, समूह, जत्था, राशि-चक्र का तीसरा भाग; (वि.) सौ लाख, करोड़।

कोटिक–(सं.पुं.) वीरबहूटी नामक कीड़ा; (हिं. वि.) करोड़ों, अनगिनत, संख्या में बहुत अधिक।

कोटिज्या–(सं. स्त्री.) ग्रहों की स्थिति-सूचक धनुष के आकार का क्षेत्र।

कोटिशः–(सं. अव्य.) करोड़ों, अनेक प्रकार से।

कोटू–(हिं. पुं.) देखें 'कूटू'।

कोठरी–(हिं. स्त्री.) भीत से चारों ओर घिरा हुआ छोटा कमरा।

कोठा–(हिं. पुं.) लंबी-चौड़ी कोठरी, बड़ा कमरा, भण्डारघर, अटारी, उदर, पेट, गर्भाशय, पक्वाशय, घर; (मुहा.) –बिगड़ना–अपच होना; –साफ होना–पेट साफ होना; कोठे पर बैठना–वेश्या-वृत्ति करना; –दार–(पुं.) कोठेवाला; कोठेवाली–(स्त्री.) शहर की वेश्या।

कोठार–(हिं. पुं.) अन्न, धन आदि रखने का स्थान, भण्डारघर।

कोठारी–(हिं. पुं.) भण्डारघर का प्रबंधकर्ता, भण्डारी।

कोठिला–(हिं. पुं.) देखें 'कुठिला'।

कोठी–(हिं.स्त्री.) हवेली, पक्का बड़ा घर, बंगला, कारबार का स्थान, थोक बिक्री की दुकान, कुठिला, कुएँ की दीवार या पुल के खंभे पर की ईंट या पत्थर की जोड़ाई जो पानी के भीतर चली जाती है, बांस का मण्डलाकार समूह; –वाल–(हिं. पुं.) महाजन, साहूकार, बड़ा व्यापारी; –वाली–(स्त्री.) महाजनी, साहूकारी, मुड़िया लिपि; (मुहा.) –चलाना–महाजनी का रोजगार करना।

कोड़ना–(हिं. क्रि. स.) खेत की मिट्टी को गहरी खोदकर उलटना, गोड़ना।

कोड़ा–(हिं. पुं.) सोंटा, चाबुक, पशुओं को मारने का डंडा जिसमें चमड़ा या सूत बँधा होता है, उत्तेजना, चोट, [illegible], मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

कोड़ाई–(हिं. स्त्री.) कोड़ने का काम, कोड़ने की मजदूरी।

कोड़ार–(हिं. पुं.) कोल्हू की लकड़ी में जड़ा हुआ लोहे का छल्ला।

कोढ़–(हिं. पुं.) कुष्ठ, एक प्रकार का रक्त तथा त्वचा संबंधी संक्रामक रोग; (मुहा.) –चूना–शरीर के अंग का गल-गल कर गिरना।

कोढ़ा–(हिं. पुं.) गोबर इकट्ठा करने के लिये बाड़ा जहाँ पशु बांधे जाते हैं।

कोढ़िया–(हिं.पुं.) तमाकू के पत्तों का एक रोग।

कोढ़ी–(हिं. पुं.) कुष्ठ रोगग्रस्त व्यक्ति।

कोण–(सं. पुं.) नोक, कोना, दिशाओं के मध्य की दिशा; यथा–अग्नि, नैर्ऋत्य, ईशान और वायव्य, घर का एक भाग, डंडा, सोंटा, दो सीधी रेखाओं के परस्पर मिलने के बीच का स्थान।

कोण-कुण–(सं. पुं.) मत्कुण, खटमल।

कोतल–(तु. पुं.) जुलूस आदि में सजा-सजाया बिना सवार का घोड़ा।

कोतवाल–(हिं. पुं.) नगरपाल, नगर का बड़ा थानेदार, प्रबन्धकारक, पंचायत, सभा इत्यादि का नियन्त्रण करनेवाला।

कोतवाली–(हिं. स्त्री.) कोतवाल के रहने का स्थान, शहर का बड़ा थाना, कोतवाल का पद।

कोता–(हिं. वि.) कम, छोटा, तंग।

कोताह–(फा. वि.) थोड़ा, अल्प, तंग।

कोताही–(फा. स्त्री.) कमी, त्रुटि।

कोथला–(हिं. पुं.) थैला, उदर, पेट।

कोथली–(हिं. स्त्री.) लंबी थैली जिसमें रुपये-पैसे भरकर कमर में बांध लेते हैं।

कोदंड–(सं. पुं.) धनुष, कमान, भ्रू, भौंह, धनु राशि।

कोद–(हिं. स्त्री.) दिशा, ओर, कोना।

कोदई–(हिं. पुं.) देखें 'कोदव'।

कोदव–(हिं. पुं.) देखें 'कोदो'।

कोदो–(हिं. पुं.) सांवा की तरह का एक अन्न, कदन्न; (मुहा.) –देकर पढ़ना–अधूरी या अशुद्ध विद्या पढ़ना; छाती पर कोदो दलना–प्रत्यक्ष रूप से ऐसा काम करना जो दूसरे को बुरा लगे।

कोद्रव–(सं. पुं.) देखें 'कोदो'।

कोन–(हिं. पुं.) कोण, कोना; (मुहा.) –छानना या मारना–[illegible] के कोनों को छानना।

कोनसिला–(हिं. पुं.) कोनिया की आकृति में तिरछी लगी हुई लकड़ी।

कोना–(हिं. पुं.) कोण, कोर, गोशा, किनारा, खूंट, एकांत स्थान, दो दीवारों के मिलने का स्थान; (मुहा.) –झांकना–भय या लज्जा से मुंह सामने न करना; –दबना–कोर दबना; कोने में बैठ रहना–कोने में छिपकर निकम्मा समय गवांना।

कोना-अंतरा–(हिं. पुं.) घर का कोना और अंतरा, अंतरंग स्थान।

कोनिया(यां)–(हिं.स्त्री.) लकड़ी या पत्थर की पटिया जो वस्तु रखने के लिये भीत के कोने पर बैठाई जाती है, पटनी, छाजन में दीवालों के जोड़ के ऊपर बरेठ से लगाकर बना हुआ तिकोना मचान।

कोप–(सं. पुं.) क्रोध, रोष, गुस्सा, शृंगार रस में नायिका का नायक के प्रति बनावटी क्रोध।

कोपन–(सं. पुं.) कोपना, कुपित होना; (वि.) क्रोधी।

कोपना–(हिं.क्रि.अ.) क्रोध करना, रोष करना।

कोपनीय–(सं. वि.) जिस पर क्रोध किया जावे, जिसे क्रुद्ध किया जा सके।

कोपभवन–(सं. पुं.) वह कोठरी जिसमें क्रोध में आकर कोई मनुष्य बैठता है।

कोपर–(हिं.पुं.) टपका या डाल का पका आम।

कोपल–(हिं. स्त्री.) पल्लव, नई पत्ती जो किसी पौधे में से निकलती है, कोंपल।

कोपली–(हिं.वि.) बैंगनी या लाल रंग का।

कोपवती–(सं.स्त्री.) क्रोध करनेवाली स्त्री।

कोपवान्–(सं. वि.) कोपयुक्त।

कोपि–(सं. सर्व.) कोई भी।

कोपित–(सं. वि.) कुपित, क्रुद्ध।

कोपी–(सं.वि.) कोप करनेवाला, क्रोधी।

कोपीन–(हिं. पुं.) देखें 'कौपीन'।

कोफ्ता–(फा. पुं.) मांस का कबाब।

कोबी–(हिं. स्त्री.) गोभी का फूल।

कोमल–(सं. वि.) मृदुल, नरम, सुकुमार, सुन्दर, मनोहर, संगीत में बारीक मीठी ध्वनि; –ता–(स्त्री.) मधुरता, सुकुमारता।

कोमला–(सं. स्त्री.) खिरनी, खजूर, अलंकार में एक अक्षर-योजना जिसमें कोमल पद हों।

कोय–(हिं. सर्व.) कोई।

कोयर–(हिं. पुं.) साग-सब्जी, तरकारी, पशुओं को खिलाने का हरा चारा।

कोयल–(हिं.स्त्री.) कोकिल, काले रंग की सुन्दर बोलनेवाली चिड़िया, [illegible] और नीले फूलवाली लता, अपराजिता।

कोयला–(हिं. पुं.) जली हुई लकड़ी का

वह भाग जो पूरी तरह से राख न हुआ हो और काला पड़ गया हो, कोयले के स्तर का एक खनिज पदार्थ जो पत्थर का कोयला कहलाता है; (मुहा.) कोयले की दलाली में हाथ काला—बुरे काम में बदनामी ही हाथ लगती है।
कोया—(हि. पुं.) आँख का डेला, आँख का कोना, पके कटहल का गूदेदार बीजकोष जो खाया जाता है।
कोरंगा—(हि. पुं.) एक प्रकार की दौरी या टोकरी।
कोरंजा—(हि. पुं.) मजूरी में दिया जानेवाला अन्न।
कोर—(हि. स्त्री.) प्रान्त, भाग, किनारा, कोना, वस्त्रादि का छोर, अनी, नोक, धार, श्रेणी, द्वेष, बुराई, वैमनस्य, पंक्ति, कतार।
कोरक—(सं. पुं.) फूल की कली, मुकुल, कमल की डंठी, मृणाल, काकोली, शीतल चीनी; (हि.पुं.) एक प्रकार का बेंत।
कोर-कसर—(हि. स्त्री.) न्यूनता, कमी-बेशी, काट-छाँट।
कोरना—(हि. क्रि. स.) पत्थर या काष्ठ पर खुदाई करना।
कोरनी—(हि. स्त्री.) पत्थर की खोदाई।
कोरमा—(तु. पुं.) भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा न हो।
कोरहन—(हि. पुं.) एक प्रकार का धान।
कोरहा—(हि. वि.) किनारदार, नोकीला।
कोरा—(हि. वि.) व्यवहार में न लाया हुआ, चिह्नरहित, मूर्ख, अपढ़, निरक्षर, धनहीन, नया, अछूत, बिना धुला हुआ, जिस पर कुछ लिखा न हो, सादा, रहित, केवल; —पन— (पुं.) नयापन, अछूतापन; —जवाब—(पुं.) स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार।
कोरि—(हि.वि.) देखें 'कोटि'।
कोरी—(हि. पुं.) हिन्दू बुनकर या जुलाहा।
कोल—(सं. पुं.) शूकर, सूअर, बेड़ा, क्रोड़, गोद, शनि ग्रह, आलिंगन, बेर का फल, दो टंक (एक तोले) की तौल, काली मिर्च, कुलथी, पुरुवंशीय एक राजा, प्राचीन दक्षिण भारत का कोल-राज्य; भारत की एक असभ्य जंगली जाति।
कोलक—(सं.पुं.) अखरोट का वृक्ष, लिसोड़ा; (हि. पुं.) आरी चोखी करने की रेती।
कोलना—(हि. क्रि. स.) छेदना, बीच में काटकर पोला करना।
कोलमूल—(हि. पुं.) पिप्पलीमूल।
कोला—(सं. स्त्री.) पिप्पली, पीपल, गोरखमुंडी; (हि. पुं.) शृगाल, गीदड़।
कोलाहल—(सं. पुं.) कलकल ध्वनि, हल्ला, चिल्लाहट।
कोलियाना—(हि.क्रि.अ.) सँकरे मार्गसे जाना।
कोली—(हि.स्त्री.) आलिंगन; (पुं.) जुलाहा।
कोल्हाड़—(हि. पुं.) वह स्थान जहाँ किसान ईख पेरते और गुड़ बनाते हैं।
कोल्हुआ—(हि. पुं.) कुश्ती का एक पेंच।
कोल्हू—(हि. पुं.) तेल या ऊख पेरने का यन्त्र; (मुहा.) —का बैल—धीरज धरकर कठिन परिश्रम करनेवाला; —में डालकर पेरना—अति कष्ट देना।
कोविद—(सं. पुं.) पण्डित, विद्वान्, वेद को जाननेवाला।
कोविदार—(सं. पुं.) कचनार का वृक्ष।
कोश—(सं. पुं.) अण्ड, अंडा, खान से निकला हुआ विशुद्ध सोना या चाँदी, फूल की बँधी हुई कली, तलवार की मियान, समूह, ढेर, आवरण, खोल, थैली, संचित धन, अण्डकोश, रेशम का कोया, कटहल का कोया, जातिकोष, जावित्री, पेशी, पुट्ठा, अकारादि क्रम से लिखी हुई पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ दिये हों, शब्दकोश।
कोशकार—(सं. पुं.) तलवार की मियान बनानेवाला, शब्दकोष बनानेवाला, रेशम का कीड़ा।
कोशपति, कोशपाल—(सं. पुं.) संचित धन का संरक्षक, कोषाध्यक्ष।
कोशफल—(सं. पुं.) खीरा, बर।
कोशफली—(सं. स्त्री.) खीरा, फूट।
कोशल—(सं. पुं.) काशी के उत्तर अयोध्यासहित सरयू नदी के दोनों किनारों का सम्पूर्ण भूमि-भाग, इस प्रान्त का निवासी, अयोध्या नगर, एक क्षत्रिय जाति, एक राग विशेष; —सुता—(स्त्री.) रामचंद्र की माता, कौशिल्या।
कोशला—(सं. स्त्री.) अयोध्या नगरी, राम की राजधानी।
कोशवान्—(सं. वि.) कोशयुक्त।
कोशवृद्धि—(सं. स्त्री.) अण्डकोष की वृद्धि, धनसंचय।
कोशवेश्म—(सं. पुं.) कोशागार।
कोशांबी—(सं. स्त्री.) देखें 'कौशांबी'।
कोशागार—(सं. पुं.) धनागार।
कोशाध्यक्ष—(सं. पुं.) कुबेर, खजानची।
कोशिका—(सं.स्त्री.) कोशी, छोटा बरतन।
कोशिश—(फा. स्त्री.) चेष्टा, प्रयत्न।
कोशी—(सं. स्त्री.) अन्न की बाल, व्याघ्र-नख, एक सुगन्धित द्रव्य, कौशिकी नदी।
कोष—(सं. पुं.) देखें 'कोश'।
कोष्ठ—(सं. पुं.) पेट का भीतरी भाग, आमाशय, घर का भीतरी भाग, कोठा, बखार, भंडार, चहारदीवारी।
कोष्ठक—(सं. पुं.) घिरा हुआ स्थान, कोठी, अण्डा, अण्डकोष, अनेक खानों का चक्र, एक चिह्न जो लिखने में प्रयुक्त होता है और जिसके भीतर अंक या वाक्य लिखे जाते हैं [ ], { }, ( )।
कोष्ठबद्धता—(सं.स्त्री.) मल की रुकावट।
कोष्ठाग्नि—(सं.स्त्री.) जठर की पाचनाग्नि।
कोष्ठी—(सं. स्त्री.) जन्म-पत्रिका।
कोष्ण—(सं. वि.) थोड़ा गरम, गुनगुना।
कोस—(हि. पुं.) क्रोश, दो मील की दूरी जो पहिले चार हजार या आठ हजार हाथ की मानी जाती थी।
कोसना—(हि. क्रि. स.) अभिशाप देना, गाली देना।
कोसली—(सं.स्त्री.) एक प्रकार की रागिणी।
कोसा—(हि. पुं.) एक प्रकार का मोटा रेशम, मिट्टी का बड़ा दीया, कसोरा।
कोसा-काटी—(हि. स्त्री.) गाली दे-देकर कोसना।
कोसिया—(हि.स्त्री.) मिट्टी का छोटा पात्र।
कोसू—(हि. पुं.) कोसनेवाला।
कोसों—(हि.अव्य.) कई कोस की दूरी पर।
कोहँड़ौरी—(हि. स्त्री.) कोहँड़े और उड़द की बरी।
कोह—(हि. पुं.) अर्जुन का वृक्ष, क्रोध; (फा. पुं.) पर्वत, पहाड़।
कोहना—(हि.क्रि.अ.) क्रुद्ध होना, रिसियाना।
कोहनी—(हि. स्त्री.) देखें 'कुहनी'।
कोहनूर—(फा. पुं.) भारत का एक इतिहास-प्रसिद्ध हीरा जो १८४६ में पंजाब-विजय के बाद ब्रिटेन के राजा की सम्पत्ति बना।
कोहबर—((हि. पुं.) वह स्थान जहाँ विवाह के समय कुल-देवता की स्थापना होती है।
कोहरा—(हि. पुं.) धुएँ के रूप में प्रातः-काल गिरनेवाली ओस, कुहरा।
कोहल—(सं. पुं.) नाट्यशास्त्र-प्रणेता एक गन्धर्व।
कोहाँर—(हि. पुं.) देखें 'कुम्हार'।
कोहा—(हि. पुं.) चौड़े मुँह का मिट्टी का बड़ा पात्र जो नाद के आकार का होता है।
कोहान—(हि.पुं.) ऊँट की पीठ पर का कूबड़।
कोहाना—(हि. क्रि. अ.) क्रुद्ध होना, गुस्सा होना, रूठना, रीसना।
कोही—(हि. वि.) क्रोधी।

कौंच–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लता जिसमें रोएँदार सेम की तरह की फलियाँ होती हैं जिसकी तरकारी खाई जाती है, कपिकच्छु, केवाँच ।

कौंचा–(हिं. पुं.) देखें 'कमची' ।

कौंतेय–(सं. वि.) कुंती के पुत्र, अर्जुन ।

कौंछ–(हिं. स्त्री.) देखें 'कौंच' ।

कौंध–(हिं.स्त्री.) बिजली की चमक ।

कौंधना–(हिं. क्रि. अ.) बिजली का चमकना ।

कौंला–(हिं.पुं.) एक प्रकार का मीठा नीबू ।

कौ–(हिं. प्रत्य.) सम्प्रदान और संबंध कारक की विभक्ति ।

कौआ–(हिं.पुं.) एक साधारण काला पक्षी, गले के भीतर की घाँटी, धूर्त मनुष्य ।

कौआठोठी–(सं.स्त्री.) एक लता जिसका फूल कौए की चोंच के आकार का होता है, काकतुंडी, काकनासा ।

कौआना–(हिं. क्रि. अ.) अंडबंड बकना, बर्राना, भौचक्का होना, निश्चेष्ट होना ।

कौआ-परी–(हिं.स्त्री.) काली-कलूटी स्त्री ।

कौआ-रोर–(हिं.पुं.) हल्ला, कोलाहल ।

कौआल–(हिं. पुं.) देखें 'कौवाल' ।

कौआली–(हिं. स्त्री.) देखें 'कौवाली' ।

कौटल्य–(सं. पुं.) वात्स्यायन ऋषि ।

कौटिक–(सं. पुं.) मांस-विक्रेता, व्याध ।

कौटिल्य–(सं. पुं.) कुटिलता, क्रूरता, टेढ़ापन, चाणक्य का एक नाम ।

कौटुंबिक–(सं. वि.) कुटुम्ब के पालन-पोषण में लगा हुआ, कुटुंब संबंधी ।

कौड़ा–(हिं.पुं.) बड़ी कौड़ी, जाड़ के दिनों में गड्ढे में जलाई हुई आग, अलाव ।

कौड़िया–(हिं.वि., पुं.) कौड़ी के रंग का, कुछ कालापन लिये हुए श्वेत, कौड़िल्ला ।

कौड़ियाला–(हिं.वि., पुं.) कोकई, हलका नीला रंग जिसमें गुलाबी की कुछ आभा हो, कृपण, कंजूस, छोटे-छोटे फलों का एक पौधा ।

कौड़ियाही–(हिं. स्त्री.) कौड़ियों में चुकाया जानेवाला शुल्क; (वि.स्त्री.) कौड़ियों पर काम करनेवाली ।

कौड़िल्ला–(हिं. पुं.) मछली खानेवाली एक चिड़िया ।

कौड़ी–(हिं. स्त्री.) कपर्दिका, घोंघे की तरह का एक समुद्री कीड़ा जिसका अस्थिकोष सिक्के की तरह काम में आता था, द्रव्य, रुपया-पैसा, कर, आँख का ढेला, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; (मुहा.)–का–निकम्मा, तुच्छ; –का दो–व्यर्थ का; –का नहीं–निष्फल, बेकार; –के तीन तीन होना–बहुत सस्ता होना, तुच्छ होना; –कौड़ी को मुहताज–बहुत गरीब हालत; –कौड़ी जोड़ना–थोड़ा-थोड़ा करके संचय करना; –कौड़ी बेबाक करना–पूरा ऋण चुकाना; –फिरना–जुएँ में किसी का दाँव फिरना; कानी कौड़ी–(स्त्री.) टूटी कौड़ी; चित्ती कौड़ी–(स्त्री.) वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभड़ी गाँठ हो ।

कौड़ेना–(हिं. पु.) कसेरे का नक्काशी करने का एक यंत्र ।

कौणप–(सं.पुं.) राक्षस; (वि.) अधर्मी ।

कौतिग–(हिं.पु.) देखें 'कौतुक' ।

कौतुक–(सं. पुं.) आश्चर्य, अचंभा, परिहास, आनन्द, हँसी-ठिठोली, विनोद, कुतूहल, नाच-गाना, प्रसन्नता; –कर्ता –(पुं) तमाशा दिखलानेवाला ।

कौतुकिया–(हिं. वि.) तमाशा करनेवाला, विवाह सम्बन्ध स्थिर करनेवाला (नाऊ, पुरोहित इत्यादि ।)

कौतुकी–(सं.वि.) तमाशा दिखलानेवाला ।

कौतूहल–(सं.पु.) किसी नये या अपरिज्ञात विषय के जानने-सुनने या देखने का आग्रह ।

कौथ–(हिं. स्त्री.) कौन-सी तिथि । (यह शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम की तरह प्रयुक्त होता है ।)

कौथा–(हिं. वि.) किस संख्या का, किस स्थान का ।

कौन–(हिं. सर्व.) प्रश्नवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु पूछी जाती है, विभक्ति लगने से "कौन" का रूप "किस" हो जाता है, कैसा, किस प्रकार का; (मुहा.)–होना–कौन-सा सम्बन्ध या रिश्ता होना या लगना ।

कौनप–(सं. पुं.) देखें 'कौणप' ।

कौपीन–(सं. पुं.) संन्यासी इत्यादि के पहिनने की लँगोटी, काछा, कफनी ।

कौबेर–(सं. वि.) कुबेर संबंधी ।

कौबेरी–(सं. स्त्री.) कुबेर की शक्ति ।

कौम–(अ. स्त्री.) जाति, वंश, राष्ट्र ।

कौमार–(सं. पुं.) बचपन, जन्म से पाँच वर्ष तक की अवस्था, मनु के अनुसार सोलह वर्ष तक का वय, कुमार, पति, दामाद, अविवाहित पुरुष ।

कौमारभृत्य–(सं.पु.) आयुर्वेद का एक अंग जिसमें बालकों के लालन-पालन तथा चिकित्सा का वर्णन है ।

कौमारिक–(सं. वि.) कुमार-संबंधी ।

कौमारी–(सं. स्त्री.) पहिली स्त्री, कार्तिकेय की शक्ति, एक मातृका का नाम, वाराहीकन्द, घीकुआर ।

कौमी–(अ.वि.) कौम या जाति से संबद्ध ।

कौमुदिक–(सं. वि.) कुमुद संबंधी ।

कौमुदी–(सं. स्त्री.) ज्योत्स्ना, चाँदनी, कार्तिक या आश्विन की पूर्णिमा, दीपोत्सव की तिथि या उत्सव, धूमधाम, कुमुदिनी; –जीवन–(पुं.) चकोर पक्षी; –पति–(पुं.) चन्द्रमा ।

कौमोदकी–(सं.स्त्री.) विष्णु की गदा का नाम ।

कौमोदी–(सं. स्त्री.) देखें 'कौमोदकी' ।

कौर–(हिं. पुं.) कवल, निवाला, एक बार मुँह में डाली जानेवाली खाने की वस्तु, ग्रास, चक्की में एक बार पीसने के लिये डाला जानेवाला अन्न ।

कौरना–(हिं. क्रि. स.) थोड़ा भूनना, आँच पर किसी वस्तु को सेंकना ।

कौरव–(सं. पुं.) कुरु राजा की सन्तति, कुरुदेश का राजा; (वि.) कुरु सम्बन्धी; –पति–(पुं.) दुर्योधन ।

कौरा–(हिं. पुं.) द्वार का दोनों ओर का भाग, कौड़ा, अलाव, कुत्ते आदि को दिया जानेवाला रोटी का टुकड़ा ।

कौरी–(हिं. स्त्री.) कोड़, गोद, अंकवार, अनाज के कटे हुए पौधे जो [illegible] को दिये जाते हैं ।

कौलंज–(हिं. पुं.) पसलियों के नीचे की पीड़ा, वायुशूल ।

कौल–(सं. वि.) उत्तम कुल में उत्पन्न, तान्त्रिक कुलाचार माननेवाला, वाममार्गी; (हिं.पुं.) एक प्रकार का गाना, ग्रास, कवल; (अ.पुं.) प्रतिज्ञा, प्रण, [illegible] ।

कौलाई–(हिं. वि.) नारंगी रंग का, लाल पीले रंग का ।

कौल-करार–(अ.पुं.) परस्पर की जानेवाली दृढ़ प्रतिज्ञा ।

कौलदेय–(सं. वि.) कुलटा का पुत्र, जारजात ।

कौला–(हिं. पु.) [illegible], नारंगी, [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।

कौलिक–(सं.पु.) जुलाहा; (वि.) [illegible], [illegible] ।

कौलीन–(सं. वि.) कुलीन, वाममार्गी ।

कौलीन्य–(सं. पु.) कुलीनता ।

कौल्य–(सं. वि.) अच्छे कुल में उत्पन्न, [illegible] ।

कौवा–(हिं. पुं.) देखें 'कौआ'; –डोंड़ी–(स्त्री.) [illegible]; –परी–(स्त्री.)

देखें 'कौआ-परी'; **–रोर**–(पुं.) देखें 'कौआरोर'।

क़ौवाल–(हि. पुं.) कौवाली गानेवाला।

क़ौवाली–(हि. स्त्री.) सूफियाना गजल या गीत जो मजलिसों में गाया जाता है।

कौशल–(सं. पुं.) कुशलता, चातुरी, कारीगरी, भलाई, कोशल देश का निवासी।

कौशलेय–(सं. पुं.) दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र, श्रीरामचन्द्र।

कौशल्या–(सं. स्त्री.) कोशल देश के राजा की कन्या, दशरथ की प्रधान रानी, राम की माता।

कौशांबी–(सं. स्त्री.) एक प्राचीन नगर। (कुश के पुत्र कौशाम्ब ने इसको बसाया था।)

कौशिक–(सं. पुं.) इन्द्र, विश्वामित्र, कुशिक राजा के पुत्र गाधि, कोषाध्यक्ष, रेशम का कीड़ा, घड़ियाल, मगर, सर्प, नेवला, गुग्गुल, उल्लू पक्षी, एक प्रकार का राग, रेशमी वस्त्र, शृंगार रस, एक उपपुराण का नाम, अथर्व वेद का एक सूत्र।

कौशिका–(सं. स्त्री.) पानी पीने का पात्र, एक प्रकार की मदिरा।

कौशिकी–(सं.स्त्री.) चण्डिका, कुशिक राजा की पौत्री जो ऋचीक मुनि को व्याही थी, रामायण में कही हुई एक नदी, एक नाटकीय रचना, एक रागिणी का नाम।

कौशिल्य–(सं. पुं.) इस गोत्र के प्रवर्तक एक ऋषि विशेष।

कौशीलव–(सं. पुं.) खेल-तमाशे का व्यवसाय।

कौशेय–(सं. वि., पुं.) रेशमी, रेशम का वस्त्र।

कौषिक–(सं. पुं.) देखें 'कौशिक'।

कौषिकी–(सं. स्त्री.) देखें 'कौशिकी'।

कौषीतकी–(सं. स्त्री.) ऋग्वेद के अन्तर्गत ब्राह्मण; आरण्य और उपनिषद् का भेद।

कौसल–(हि.पुं.) देखें 'कौशल'।

कौसलेय–(सं.पुं.) देखें 'कौशलेय'।

कौसल्या–(सं.स्त्री.) देखें 'कौशल्या'।

कौसीद–(सं. वि.) व्याज लेनेवाला।

कौसुंभ–(सं. पुं.) जंगली कुसुम।

कौसुम–(सं. वि.) कुसुम संबंधी।

कौस्तुभ–(सं. पुं.) विष्णु का हृदयभूषण मणि जो समुद्र-मन्थन में समुद्र से निकला था, हठयोग की एक मुद्रा।

क्या–(हि. सर्व.) प्रश्नवाचक शब्द, कौन वस्तु है, (इस शब्द के द्वारा किसी विषय में प्रश्न किया जाता है। इसमें कोई विभक्ति नहीं लगती); (वि.) कितना, ऐसा कैसा, इतना, अनोखा, निराला, अच्छा; (अव्य.) क्यों नहीं, काहे को; **–कहना है या क्या खूब**–धन्य है; **–चीज है**–तुच्छ है; **–जाता है**– क्या हानि होती है; **–जाने**–मालूम नहीं है; **और क्या**–हाँ, ऐसा ही है।

क्यारी–(हि. स्त्री.) कियारी।

क्यों–(हि. अव्य.) किस कारण, किस लिये, (इस शब्द से किसी व्यापार या घटना का कारण व्यक्त होता है); कैसे, किस प्रकार; **–कर**–(अव्य.) किस प्रकार से; **–कि**–(अव्य.) इसलिये कि; **–नहीं**–ऐसा ही ठीक है।

क्रंद–(सं. पुं.) घोड़े की हिनहिनाहट, चीख।

क्रंदन–(सं. पुं.) रुलाई, लड़ाई में ललकार।

क्रंदित्–(सं. वि.) ललकारा हुआ।

क्रकच–(सं.पुं.) करील का वृक्ष, आरा, केतकी, केवड़ा, वातादि-जनित सन्निपात ज्वर, ज्योतिषशास्त्र का एक अशुभ योग।

क्रतु–(सं. पुं.) सप्त ऋषियों में से एक, सोमरस, विष्णु, आषाढ़ मास, अश्वमेघयज्ञ, संकल्प, निश्चय, इच्छा, अभिलाषा; **–कर्म**–(पुं.) याग, यज्ञ; **–पति**–(पुं.) यज्ञेश्वर, विष्णु; **–ध्वंसी**–(पुं.) दक्ष का यज्ञ विध्वंस करनेवाले शिव; **–पशु**–(पुं.) घोड़ा; **–फल**–(पुं.) यज्ञ का फल, स्वर्गादि; **–भुक्**–(पुं.) देवता।

क्रम–(सं. पुं.) वैदिक विधान, शक्ति, चरण, शैली, प्रणाली, आक्रमण, पैर रखने का काम, अनुक्रम, आगे-पीछे रहने की स्थिति, चाल, परिपाटी, वह अलंकार जिसमें किसी बात का वर्णन क्रम से किया जाता है; **–क**–(पुं.) क्रम से अध्ययन करनेवाला; **–ज्या**–(स्त्री.) गणित ज्योतिष में क्रान्तिज्या; **–ण**–(पुं.) एक स्थान या स्थिति से दूसरे में जाना; **–णीय**–(वि.) आक्रमण करने योग्य; **–प्राप्त**–(वि.) क्रम से मिला हुआ; **–बद्ध**–(वि.) क्रमयुक्त, सिलसिलेवार; **–विकास**–(पुं.) धीरे-धीरे विकास होना; **–भंग**–(पुं.) क्रम का टूटना; **–शः**–(अव्य.) क्रम-क्रम से, धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके; **–संन्यास**–(पुं.) वह सन्यास जो क्रम से अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ आश्रम के बाद लिया जावे।

क्रमांक–(सं. पुं.) क्रम-संख्या।

क्रमागत–(सं. वि.) क्रम से प्राप्त, वंश परंपराक्रम से प्राप्त।

क्रमानुसार–(सं.अव्य.) क्रमानुकूल, क्रम से।

क्रमात्–(सं. अव्य.) क्रम या सिलसिले से, यथानुक्रम।

क्रमानुकूल–(सं.अव्य.) देखें 'क्रमानुसार'।

क्रमिक–(सं. वि.) क्रमवर्ती, क्रमयुक्त, परंपरा-प्राप्त, कुलक्रम से प्राप्त।

क्रमुक–(सं. पुं.) पुंगीफल, सुपारी, नागरमोथा, कपास का बिनौला, देवदारु, शहतूत, एक प्राचीन जनपद का नाम।

क्रमेल–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट।

क्रमेलक–(सं.पुं.) देखें 'क्रमेल'।

क्रय–(सं. पुं.) मोल लेने या खरीदने का काम; **–कर्ता**–(पुं.) क्रेता, मोल लेनेवाला; **–लेख्य**–(पुं.) बयनामा, कबाला; **–विक्रय**–(पुं.) मोल लेने और बेचने का काम, वाणिज्य।

क्रयी–(सं. पुं.) क्रेता।

क्रय्य–(सं. वि.) बेचने के लिये रक्खा हुआ (सामान), बिकनेवाला।

क्रव्य–(सं. पुं.) मांस, गोश्त।

क्रव्यभुक्त–(पुं.) राक्षस, मांस-भोगी।

क्रव्याद–(सं. पुं.) मांस खानेवाला जीव, राक्षस, सिंह, श्येन पक्षी, अग्नि।

क्रांत–(सं. वि.) आक्रान्त, दबा हुआ, अतीत, बीता हुआ, ग्रस्त, बढ़ा हुआ।

क्रांति–(सं. स्त्री.) पाद-विक्षेप, पैर, रखने की स्थिति, नक्षत्र की गति, राशिचक्र की मध्यरेखा, विषुवत् रेखा से उत्तर कर्कट क्रान्ति तक अथवा दक्षिण में मकर क्रांति तक सूर्य की दूरी, परिवर्तन, हेर-फेर, उलट-फेर; **–क्षेत्र**–(पुं.) नक्षत्र की गति जानने के लिये खींचा हुआ क्षेत्र; **–ज्या**–(स्त्री.) क्रान्तिवृत्त में स्थित अर्धक्षेत्र का एक अवयव; **–पात**–(पुं.) विषुवत् रेखा तथा अयन-मण्डल के मिलाप का स्थान जहाँ पर पृथ्वी के आने से दिन-रात बराबर होते हैं; **–भाग**–(पुं.) क्रान्तिज्या का चिह्न; **–मंडल**–(पुं.) वह वृत्त जिसमें सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ दिखाई पड़ता है; **–वलय**–(स्त्री.) देखें 'क्रांतिमंडल'; **–वृत्त**–(पुं.) सूर्य का मार्ग; **–साम्य**–(पुं.) ग्रहों की तुल्य क्रान्ति; **–सूत्र**–(पुं.) ध्रुव नक्षत्र को स्पर्श करनेवाला क्रान्तिसमूह का एक योग।

क्रिमि–(सं. पुं.) देखें 'कृमि'।

क्रिमिजा–(सं. स्त्री.) लाख।

क्रियमाण–(सं.वि.) प्रस्तुत किया जानेवाला।

क्रिया–(सं. स्त्री.) कार्य, क्रम, आरम्भ, निपटारा, ठहराव, शिक्षा, पूजा, उपाय,

अनुष्ठान, चिकित्सा, प्रयोग, श्राद्ध, शौच, प्रयत्न, गति, चेष्टा, हिलना-डोलना, व्याकरण में किसी व्यापार के होने या करने का अर्थसूचक शब्द।
क्रियाकर्म–(सं. पुं.) अन्त्येष्टि क्रिया।
क्रियाकलाप–(सं.पुं.) संपूर्ण शास्त्रविहित कर्म।
क्रियाकल्प–(सं. पुं.) चिकित्सा का नियम।
क्रियाकार–(सं. पुं.) कर्म करनेवाला, नया छात्र।
क्रियाचतुर–(सं. पुं.) अपना काम पूरा करने में निपुण नायक।
क्रियातंत्र–(सं. पुं.) कर्माधिकार, काम में लगा रहना।
क्रियातिपत्ति–(सं.स्त्री.) काव्यालंकार में अतिशयोक्ति का एक भेद, एक क्रिया के न होने से दूसरी क्रिया का न होना।
क्रियातियोग–(सं.पुं.) वमन आदि अतियोग।
क्रियाद्वेषी–(सं. वि.) विवाद को न माननेवाला, कर्मकाण्ड से द्वेष करनेवाला।
क्रियानिष्ठ–(सं. वि.) सन्ध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करनेवाला, कर्मनिष्ठ।
क्रियान्वित–(सं. वि.) सत्कर्म करनेवाला।
क्रियापथ–(सं.पुं.) चिकित्सा का नियम।
क्रियापद–(सं. पुं.) क्रिया का सिद्ध रूप; यथा–पढ़ता है, खेलता है, लिखता है इत्यादि।
क्रियाफल–(सं. पुं.) यज्ञादि कर्मों का पुण्य और पाप।
क्रियावाचक–(सं.वि.) जिसका अर्थ क्रिया हो।
क्रियावान्–(सं. वि.) क्रियायुक्त, कामकाजी, कर्मनिष्ठ, सत्क्रियान्वित।
क्रियाविदग्धा–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो नायक को अपना भाव किसी क्रिया द्वारा दिखलाती है।
क्रिया-विशेषण–(सं. पुं.) क्रिया का विशेषण, क्रिया का भाव प्रकाशित करनेवाला अव्यय।
क्रियाशक्ति–(सं. स्त्री.) परमेश्वर की वह शक्ति जिसके द्वारा वह ब्रह्मांड की सृष्टि करता है।
क्रिस्तान–(हि.पुं.) ईसाई धर्म का अनुयायी।
क्रिस्तानी–(हि. वि.) ईसाइयों का, ईसाई मत का।
क्रीट–(हि. पुं.) किरीट, मुकुट।
क्रीड़क–(सं. वि.) खेल करनेवाला, खिलाड़ी।
क्रीड़न–(सं. पुं.) खेल।
क्रीड़नीय–(सं. वि.) खेलने में [illegible] [illegible]।
क्रीड़ा–(सं. स्त्री.) आमोद-प्रमोद, खेल-कूद; –कानन–(पुं.) उपवन, बगीचा; –कौतुक–(पुं.) खेल-तमाशा; –गृह–(पुं.) खेल का घर; –चक्र–(पुं.) एक छन्द जिसके चारों चरण समान होते हैं; –नारी–(स्त्री) वेश्या, रंडी; –रत्न–(पुं.) रतिक्रिया, मैथुन; –शील–(वि.) खेलाड़ी।
क्रीत–(सं. वि.) मोल लिया हुआ; (पुं.) मोल लिया हुआ दास, क्रीतपुत्र।
क्रीतक–(सं. पुं.) क्रीतपुत्र, मोल लिया हुआ पुत्र; (वि.) माता-पिता को धन देकर मोल लिया हुआ।
क्रुद्ध–(सं. वि.) कोपयुक्त, कुपित।
क्रुष्ट–(सं. वि.) बुलाया हुआ, शाप दिया हुआ।
क्रूर–(सं. वि.) दूसरे से द्रोह करनेवाला, निर्दय, नृशंस, कठिन, कड़ा, उष्ण, गरम; (पुं.) पाप-ग्रह; –कर्मा–(वि.) निर्दयता का काम करनेवाला; –ता–(स्त्री.) पर-द्रोह, दूसरे की बुराई, निर्दयता, कठिनता, निष्ठुरता, दुष्टता, कठोरता, उष्णता, तीक्ष्णता; –दंती–(स्त्री.) दुर्गा देवी का एक नाम; –दृक्–(पुं.) शनि या मंगल ग्रह; (वि.) दुष्ट; –स्वर–(पुं.) कर्कश शब्द।
क्रूरा–(सं. स्त्री.) क्रूर स्वभाववाली स्त्री।
क्रूरात्मा–(सं.पुं.) निर्दय प्रकृतिवाला मनुष्य।
क्रूराशय–(सं. पुं.) बुरा आशय।
क्रूस–(हि.पुं.) (अं. क्रॉस) सूली, सलीब, ईसाइयों का धर्म-चिह्न जो सूली के आकार का होता है।
क्रेता–(सं. पुं.) खरीदनेवाला।
क्रेय–(सं. वि.) मोल लेने योग्य।
क्रोड़–(सं. पुं.) शूकर, दोनों बाहु के बीच का भाग, अँकवार, गोद, भुजान्तर, उत्संग, वृक्ष का कोटर, शनि ग्रह।
क्रोड़कंद–(सं. पुं.) वाराहीकन्द।
क्रोड़पत्र–(सं. पुं.) अतिरिक्त पत्र, पुस्तक या समाचारपत्र का वह अंश जो छूटे हुए भाग की पूर्ति के लिये जोड़ दिया जाता है, परिशिष्ट।
क्रोड़पर्णी–(सं. स्त्री.) भटकटैया।
क्रोड़पाद–(सं. पुं.) कच्छप, कछुवा।
क्रोड़मल्लक–(सं. पुं.) भिक्षुक, भिखारी।
क्रोड़ांक–(सं. पुं.) कच्छप, कछुवा।
क्रोड़ा–(सं. स्त्री.) सूअरिन, अँकवार।
क्रोड़ीमुख–(सं. पुं.) गण्डा पशु, गैंडा।
क्रोध–(सं. पुं.) चित्तवृत्ति का वह उग्र भाव जो अनुचित घटना के उपस्थित होने पर उत्पन्न होता है, कोप, रोष, अमर्ष, ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार एक संवत्सर का नाम; –ज–(वि.) क्रोध से उत्पन्न; –न–(पुं.) कौशिक के एक पुत्र का नाम, एक तन्त्रोक्त भैरव; –नीय–(वि.) क्रोध दिलाने योग्य; –वश–(क्रि. अव्य.) क्रोध के कारण; –हा–(वि.) कोप मिटानेवाला।
क्रोधान्वित–(सं. वि.) क्रोधयुक्त।
क्रोधालु–(सं. वि.) क्रोधी।
क्रोधित–(सं. वि.) क्रुद्ध।
क्रोधी–(सं.वि.) जल्दी क्रुद्ध होनेवाला।
क्रोश–(सं. पुं.) चिल्लाहट, आह्वान, बुलावा, कोस।
क्रोष्टु–(सं. पुं.) शृगाल, सियार, यदुवंशी एक राजा का नाम।
क्रौंच–(सं. पुं.) करांकुल नामक चिड़िया, पद्मबीज, कमलगट्टा, एक पर्वत का नाम, एक द्वीप का नाम।
क्रौंचपदा–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके चारों चरण समान होते हैं।
क्रौर्य–(सं. पुं.) क्रूरता, दुष्टता।
क्लब–(अं. पुं.) पाठनालय रीडिंगरूम आमोद-प्रमोद के लिए बनी सदस्यता-निहित संस्था।
क्लर्क–(अं. पुं.) कार्यालय में लिखने का काम करनेवाला कर्मचारी, लिपिक।
क्लर्की–(हि. स्त्री.) क्लर्क का काम, पद आदि।
क्लांत–(सं.वि.) थका हुआ, मुरझाया हुआ।
क्लांति–(सं. स्त्री.) परिश्रम, थकावट।
क्लिन्न–(सं.वि.) आर्द्र, तर, भीगा हुआ।
क्लिप–(अं.स्त्री.) कागज या कपड़ा को दबा रखने की छोटी-सी कमानी।
क्लिशित–(सं. वि.) क्लेशयुक्त, कष्ट में पड़ा हुआ।
क्लिष्ट–(सं. वि.) क्लेशयुक्त, दुःखी, पीड़ित, रोगी, विरुद्ध, बेमेल, कठिन, गूढ़, कठिनाई से समझ में आनेवाला।
क्लिष्टता–(सं.स्त्री.) [illegible], कठिनाई।
क्लिष्टत्व–(सं. पुं.) कठिनता, कठिनाई, काव्य का वह दोष जिससे पाठक का अर्थ समझने में कठिनाई होती है।
क्लीब–(सं. पुं.) [illegible]
क्लेद–(सं. पुं.) [illegible]

क्लेश–(सं. पुं.) दुःख, कष्ट, पीड़ा, वेदना, कलह ; **–कारी**–(वि.) कष्ट देनेवाला।

क्लेशित–(सं. वि.) क्लेशयुक्त, पीड़ित।

क्लैव्य–(सं. पुं.) क्लीवता, नपुंसकता।

क्लोम–(सं.पुं.) फुप्फुस, दाहिना फेफड़ा।

क्वचित्–(सं.अव्य.) कभी, शायद ही कोई।

क्वण–(सं.पुं.) वीणा का शब्द, कलकल शब्द।

क्वणन–(सं. पुं.) झनझन शब्द निकलना।

क्वणित–(सं. वि.) वीणा की तरह गूंजता हुआ।

क्वथ–(सं. पुं.) काढ़ा, क्वाथ।

क्वथन–(सं.पुं.) काढ़ा बनाने की क्रिया।

क्वथित–(सं. वि.) पकाया हुआ, उबाला हुआ।

क्वथिता–(सं. स्त्री.) कढ़ी।

क्वाथ–(सं.पुं.) कषाय, काढ़ा, औषधियों को पानी में उबाल कर गाढ़ा किया हुआ रस।

क्वारछल, क्वारपन–(हि.पुं.) अविवाहित अवस्था, क्वारापन।

क्वारा–(हि. वि.) जिसका विवाह न हुआ हो, अविवाहित; **–पन**–(पुं.) देखें 'क्वारपन'।

क्षंतव्य–(सं. वि.) देखें 'क्षम्य'।

क्षण–(सं. पुं.) छन, निमेष का चतुर्थांश, बहुत अल्प समय, अवसर, प्रशस्त मुहूर्त, उत्सव, पर्व का दिन, आनन्द, अवकाश; **–क्षण**–(अव्य.) बार-बार, छिन-छिन।

क्षणदा–(सं. स्त्री.) रात, रात्रि।

क्षणद्युति, क्षणप्रकाशा, क्षणप्रभा–(सं.स्त्री.) विद्युत्, बिजली।

क्षणन–(सं.पुं.) हिंसा, वध, चूर्ण करना, पिसाई।

क्षणभंगुर–(सं. वि.) अनित्य, क्षण भर में नष्ट हो जानेवाला।

क्षणविध्वंसी–(सं.वि.) क्षणिक, क्षणभंगुर।

क्षणिक–(सं. वि.) क्षणमात्र ठहरनेवाला, अनित्य, क्षणभंगुर; **–वाद**–(पुं.) बौद्ध दार्शनिकों का यह सिद्धांत कि प्रत्येक वस्तु एक क्षण में नष्ट हो जाती है।

क्षणिका–(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली।

क्षणी–(सं. वि.) क्षणस्थायी।

क्षत–(सं. वि.) पीड़ित, घाव लगा हुआ, क्षतियुक्त, घिसा हुआ; (पुं.) दुःख, पीड़ा, घाव, व्रण, फोड़ा, मारना, काटना; **–ज**–(पुं.) रक्त, लोहू, पीव; (वि.) क्षत या चोट से उत्पन्न, लाल; **–व्रण**–(पुं.) चोट से उत्पन्न घाव; **–योनि**–(वि.) वह योनि जिसका पुरुष से सम्बन्ध हो चुका हो; **–विक्षत**–(वि.) बुरी तरह घायल, लहूलुहान; **–व्रत**–(वि.) जिसका नियम भंग हो गया हो।

क्षता–(सं. स्त्री.) वह कन्या जो विवाह के पहले क्षतयोनि हो चुकी हो।

क्षति–(सं. स्त्री.) हानि, घाटा, नाश, कमी; **–ग्रस्त**–(वि.) जिसकी क्षति हुई हो; **–पूर्ति**–(स्त्री.) हानि का पूरा होना, घाटे की पूर्ति।

क्षतोदर–(सं. पुं.) पेट का एक रोग।

क्षत्र–(सं. पुं.) क्षत्रिय, राष्ट्र, राज्य, आधिपत्य, बल, धन, शरीर, जल; **–कर्म**–(पुं.) क्षत्रियों का काम, शूरता, पराक्रम इत्यादि; **–धर्म**–(पुं.) क्षत्रियों का अवश्य-पालनीय धर्म; **–प**–(पुं.) सौराष्ट्र का एक प्राचीन राजवंश; **–पति**–(पुं.) क्षत्रियों का पालक राजा; **–योग**–(पुं.) अथर्ववेदोक्त राजयोग विशेष; **–वर्धन**–(वि.) धन तथा बल बढ़ानेवाला; **–विद्या**–(स्त्री.) धनुर्वेद; **–वेद**–(पुं.) क्षत्रविद्या।

क्षत्रिय–(सं. पुं.) द्विजातियों के अन्तर्गत दूसरा वर्ण, राजा।

क्षत्रिया, क्षत्रियाणी–(सं.स्त्री.) क्षत्री की स्त्री।

क्षत्री–(सं. पुं.) देखें 'क्षत्रिय'।

क्षपणक–(सं. पुं.) नास्तिक मत प्रचारक बौद्ध संन्यासी; (वि.) निर्लज्ज।

क्षपा–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात; **–कर**–(पुं.) चन्द्रमा, कर्पूर, कपूर; **–चर**–(पुं.) निशाचर, राक्षस; **–चरी**–(स्त्री.) राक्षसी, डाइन; **–नाथ**–(पुं.) क्षपाकर; **–पति**–(पुं.) निशापति, चन्द्रमा।

क्षम–(सं. वि.) योग्य, उपयुक्त, समर्थ, कर सकनेवाला, हितकारी, भला, क्षमायुक्त, क्षमा करनेवाला; (पुं.) बल, सामर्थ्य, शक्ति।

क्षमणीय–(सं. वि.) क्षमा करने योग्य।

क्षमता–(सं. स्त्री.) सामर्थ्य, योग्यता।

क्षमना–(हि. क्रि. स.) क्षमा करना।

क्षमनीय–(हि. वि.) देखें 'क्षमणीय'।

क्षमवाना–(हि.क्रि. स.) क्षमा कराना।

क्षमा–(सं. स्त्री.) दूसरे से कष्ट पाकर चुपचाप सहन करने की चित्तवृत्ति, क्षान्ति, सहिष्णुता, पृथ्वी, दुर्गा, राधिका की एक सखी, खैर का वृक्ष।

क्षमाई–(हि.स्त्री.) क्षमा करने की क्रिया।

क्षमाना–(हि. क्रि.स.) क्षमा करना या करवाना।

क्षमान्वित–(सं. वि.) क्षमा-युक्त।

क्षमापन–(हि.पुं.) क्षमा करने का अभ्यास।

क्षमायुक्त–(सं. वि.) क्षमा करने की प्रवृत्ति-युक्त।

क्षमावान्–(सं. वि.) क्षमायुक्त, सहिष्णु, गमखोर।

क्षमाशील–(सं. वि.) क्षमा करने की प्रवृत्ति-युक्त।

क्षमितव्य–(सं. वि.) क्षमा करने योग्य।

क्षमी–(सं. वि.) क्षमाशील, सहिष्णु।

क्षम्य–(सं. वि.) क्षन्तव्य, क्षमा किया जानेवाला।

क्षय–(सं. पुं.) प्रलय, अपचय, ह्रास, कल्पान्त, नाश, घर, निवासस्थान, राजयक्ष्मा रोग, सुखंडी, सूखा रोग, समाप्ति, अन्त, ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वह महीना जिसमें दो रवि-संक्रांतियाँ पड़ती हैं। (क्षयमास केवल कार्तिक, अगहन और पूस में ही पड़ता है। जिस वर्ष में क्षयमास आता है, उसके तीन महीने पहिले और तीन महीने बाद एक अधिक मास होता है); **–कर**–(वि.) नाश करनेवाला; **–काल**–(पुं.) प्रलय काल; **–कास**–(पुं.) क्षयरोग की खांसी; **–कासी**–(पुं.) क्षयकास से पीड़ित; **–ग्रंथि**–(स्त्री.) क्षय रोग में अंत्रों में होनेवाली ग्रंथि; **–मास**–(पुं.) ज्योतिषी गणनानुसार एक मास; **–रोग**–(पुं.) फेफड़ों में जख्म हो जाने का दुस्साध्य रोग; **–रोगी**–(वि.) क्षय रोग से पीड़ित; **–वायु**–(पुं.) प्रलय काल की वायु।

क्षयिक–(सं. वि.) क्षय रोग से पीड़ित।

क्षयित–(सं. वि.) बिगाड़ा या नाश किया हुआ।

क्षयित्व–(सं. पुं.) नाश।

क्षयिष्णु–(सं. वि.) क्षयशील, नष्ट होनेवाला।

क्षयी–(सं. वि.) नष्ट होनेवाला, यक्ष्मा का रोगी; (पुं.) चन्द्रमा; (हि.स्त्री.) क्षयरोग।

क्षय्य–(सं. वि.) नष्ट किये जाने योग्य।

क्षर–(सं. वि.) नाश होनेवाला; (पुं.) जल, मेघ, जीवात्मा, देह, अज्ञान।

क्षरण–(सं. पुं.) स्रवण, टपकना, चूना, नाश, छुटकारा।

क्षरित–(सं. वि.) चुआया हुआ, टपकाया हुआ।

क्षांत–(सं. वि.) क्षमाशील।

क्षांति–(सं. स्त्री.) क्षमा।

क्षांतिमान–(सं. वि.) क्षमाशील।

क्षात्र-(सं. पुं.) क्षत्रियों का कर्म, क्षत्रियत्व, क्षत्रियों का समूह; (वि.) क्षत्रिय सम्बन्धी।
क्षाम-(सं. वि.) कृश, क्षीण, गला हुआ, दुर्बल; (पुं.) विष्णु।
क्षाम्य-(सं. वि.) क्षमा करने योग्य।
क्षार-(सं. पुं.) लवण-रस, एक प्रकार का खनिज अथवा जान्तव पदार्थ से उत्पन्न द्रव्य, खार, सज्जीखार, शोरा, सोहागा, राख, भस्म; (वि.) खारा।
क्षारक-(सं. पुं.) देखें 'क्षार', चिड़ियों को फँसाने का जाल।
क्षारण-(सं. पुं.) खार बनाना, टपकाना, पारा भस्म करने की क्रिया।
क्षारलवण-(सं. पुं.) खारी नमक।
क्षारिका-(सं. स्त्री.) क्षुधा, भूख।
क्षारित-(सं. वि.) दूषित, दुर्नाम।
क्षालन-(सं. पुं.) शुद्ध करने या धोने का कार्य, प्रक्षालन, शुद्धता।
क्षालित-(सं. वि.) धोया या शुद्ध किया हुआ।
क्षिति-(सं. स्त्री.) पृथ्वी, रहने का ठौर, क्षय, नाश, महाप्रलय, गोरोचन; -कंप-(पुं.) भूकम्प, भुईंडोल; कण-(पुं.) धूलि; -ज-(पुं.) मंगलग्रह, केंचुवा, वृक्ष, नरकासुर, खगोल में आकाश के मध्य में नव्वे अंश की दूरी पर स्थित तिरछा वृत्त, वह स्थान जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिले हुए देख पड़ते हैं; -देव-(पुं.) भूदेव, ब्राह्मण; -देवता-(सं.) क्षितिदेव; -धर-(पुं.) पर्वत, पहाड़, कछुआ, हाथी, सर्प; -रुह-(पुं.) वृक्ष; -वृत्ति-(स्त्री.) सहिष्णुता; -सुत-(पुं.) मंगल ग्रह, नरकासुर।
क्षितीश-(सं. पुं.) भूमिपति, विष्णु।
क्षितीश्वर-(सं. पुं.) देखें 'क्षितीश'।
क्षिपक-(सं. वि.) फेंकनेवाला, क्षेपक।
क्षिपण-(सं. पुं.) फेंकने की क्रिया।
क्षिपा-(सं. स्त्री.) रात्रि, रात।
क्षिप्त-(सं. वि.) त्यक्त, छोड़ा हुआ, विकीर्ण, फेंका गया हुआ, अपमानित किया हुआ, उलटा हुआ, पतित, नाश हुआ, [illegible] किया हुआ, [illegible] हुआ, वायु रोग से ग्रस्त; (पुं.) चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक; -चित्त-(वि.) भ्रान्तचित्त।
क्षिप्ति-(सं. स्त्री.) फेंकना।
क्षिप्र-(सं. वि.) [illegible], फेंकनेवाला; (अव्य.) जल्दी से; -कारी-(वि.) शीघ्र काम करनेवाला; -हस्त-(वि.) शीघ्र हाथ चलानेवाला।
क्षीण-(सं. वि.) सूक्ष्म, निर्बल, क्षयप्राप्त, घटा हुआ, दुबला-पतला; -कर-(वि.) दुर्बल करनेवाला; -चंद्र-(पुं.) कृष्णपक्ष की अष्टमी के बाद शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चन्द्रमा; -ता-(स्त्री.) दुर्बलता, निर्बलता, सूक्ष्मता; -बल-(वि.) दुर्बल, निर्बल; -शक्ति-(स्त्री.) देखें 'क्षीणबल'।
क्षीर-(सं. पुं.) दुग्ध, दूध, जल, पानी, पेड़ का रस या दूध, खीर; -कंठ-(पुं.) दूध पीनेवाला बच्चा; -कांडक-(पुं.) मदार, थूहर; -कीट-(पुं.) दूध का कीड़ा; -ज-(पुं.) दूध से उत्पन्न, दही; -जा-(स्त्री.) लक्ष्मी; -तोयधि-(पुं.) क्षीरसमुद्र; -धात्री-(स्त्री.) शिशु को दूध पिलानेवाली धाय; -धि-(पुं.) क्षीरसागर; -निधि-(पुं.) क्षीरसागर; -पुष्पी-(स्त्री.) क्षीरकाकोली नामक जड़ी; -रस-(पुं.),-वारिधि-(पुं.) क्षीरसागर; -वृक्ष-(पुं.) गूलर, पीपल, बरगद, महुआ, -व्रत-(पुं.) केवल दूध पीकर रहने का व्रत; -समुद्र,-सागर-(पुं.) दुग्धसागर, दूध का समुद्र।
क्षीरिका-(सं. स्त्री.) वंशलोचन, खिरनी का वृक्ष।
क्षीरिणी-(सं.स्त्री.) क्षीरकाकोली, खिरनी।
क्षीरोद-(सं. पुं.) दुग्धसमुद्र; -तनय-(पुं.) चन्द्रमा; -तनया-(स्त्री.) लक्ष्मी; -धि-(पुं.) क्षीरसमुद्र।
क्षीव-(सं. वि.) उन्मत्त, मतवाला; -ता-(स्त्री.) उन्मत्तता, पागलपन।
क्षुणि-(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
क्षुणी-(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि।
क्षुण्ण-(सं. वि.) खंडित, दलित, चूर-चूर किया हुआ चोट खाया हुआ, टुकड़ा किया हुआ, अभ्यस्त।
क्षुत्-(सं. स्त्री.) क्षुधा, भूख, छिक्का, छींक।
क्षुत्क्षाम-(सं. वि.) क्षुधा से पीड़ित।
क्षुद्र-(सं. वि.) कृपण, कंजूस, अधम, तुच्छ, नीच, अल्प, क्रूर, खोटा, दरिद्र, छोटा; -कंद-(पुं.) सिंघाड़ा; -घंटिका-(स्त्री.) छोटे-छोटे घुंघरू वाली करधनी, छोटे-छोटे घुंघरू; -जंतु-(पुं.) कीड़ा-मकोड़ा; -ता-(स्त्री.) नीचता, ओछापन, छोटाई; -[illegible]-(पुं.) [illegible]; -दृष्टि-(स्त्री.) [illegible]; -प्रकृति-(वि.) नीच स्वभाव का [illegible]; -[illegible]-(वि.) [illegible]; -[illegible]- (वि.) नीच प्रकृति का, क्रूर; -मुस्ता-(स्त्री.) कसेरुक, कसेरू; -शुक्ति, शुक्तिका-(स्त्री.) छोटी सीप।
क्षुद्रांत्र-(सं. पुं.) कलेजे के पास की छोटी आंत।
क्षुद्रा-(सं. स्त्री.) वेश्या, नटी, मधुमक्खी, अमलोनी, लोनी, भटकटैया।
क्षुद्रात्मा-(सं. वि.) नीच भावनावाला।
क्षुद्रावली-(सं.स्त्री.) घुंघरूदार करधनी।
क्षुद्राशय-(सं. वि.) नीच प्रकृति का; -ता-(स्त्री.) नीचता, ओछापन।
क्षुधा-(सं. स्त्री.) बुभुक्षा, भूख, भोजन करने की इच्छा।
क्षुधा-निवृत्ति-(सं.स्त्री.) भूख की शांति।
क्षुधार्त-(सं. वि.) क्षुधातुर, क्षुधालु।
क्षुधालु-(सं. वि.) क्षुधायुक्त, भूखा।
क्षुधावंत-(हि. वि.) देखें 'क्षुधावान्'।
क्षुधावान्-(सं. वि.) क्षुधायुक्त, भूखा।
क्षुधित-(सं. वि.) बुभुक्षित, भूखा।
क्षुप-(सं. पुं.) छोटा वृक्ष, पौधा, झाड़ी, सत्यभामा से उत्पन्न कृष्ण के पुत्र का नाम।
क्षुपा-(सं. स्त्री.) छोटी झाड़ी।
क्षुब्ध-(सं. वि.) घबड़ाया हुआ, अधीर, व्याकुल, भयभीत, डरा हुआ; (पुं.) मथानी।
क्षुभित-(सं. वि.) देखें 'क्षुब्ध'।
क्षुर-(सं. पुं.) नापित का छुरा, पशु का खुर, एक प्रकार का तीर; -क-(पुं.) तालमखाना, गोखरू; -कर्म-(पुं.) क्षौर, हजामत; -क्रिया-(स्त्री.) देखें 'क्षुरकर्म'; -धार-(पुं.) एक नरक का नाम; (वि.) छुरे के समान तीक्ष्ण धारवाला; -प्र-(पुं.) खुरपी, एक प्रकार का बाण।
क्षुरिका-(सं. स्त्री.) पालक, छुरी, यजुर्वेदान्तर्गत एक उपनिषद् का नाम।
क्षुरी-(सं. पुं.) नापित, नाऊ; (स्त्री.) छुरी, चाकू।
क्षुल्लक-(सं.वि.) छोटा, थोड़ा, दरिद्र, [illegible]।
क्षेत्र-(सं. पुं.) अन्न बोने का स्थान, खेत, शरीर, अन्तःकरण, समतल भूमि, [illegible], पत्नी, सिद्धस्थान, तीर्थ, रेखाओं से घिरा हुआ स्थान, [illegible]; -[illegible]-(वि.) [illegible]; -[illegible]-(पुं.) [illegible]; -गणित-(पुं.) [illegible] [illegible]

खेत में उत्पन्न होनेवाला; –जात–(वि.) खेत में उत्पन्न होनेवाला; –ज्ञ–(पुं.) शरीर का अधिष्ठाता, जीवात्मा, सर्वज्ञ, परमेश्वर, विष्णु, साक्षी; (वि.) रसिक, ज्ञाता, खेत के विषय का जानकार; –द–(वि.) खेत का दान करनेवाला; –प–(पुं.) वटुक भैरव, ईश्वर, क्षेत्ररक्षक, खेत की रखवाली करनेवाला; –पति–(पुं.) खेत का रखवाला, किसान, परमात्मा; –पाल–(वि.पुं.) खेत का रक्षक, देवता विशेष, द्वारपाल, भैरव विशेष, प्रधान प्रबन्धकर्ता; –फल–(पुं.) क्षेत्रान्तर्गत स्थान का परिमाण; –भक्ति–(स्त्री.) खेत का बँटवारा, –भूमि–(स्त्री.) खेत की भूमि; –विद्–(वि.) मर्म को जाननेवाला; (पुं.) क्षेत्रज्ञ, जीवात्मा; –व्यवहार–(पुं.) कर्ण तथा लम्ब के मान की सहायता से क्षेत्र-परिमाण का निर्णय, यह ज्यामिति तथा क्षेत्रमिति के नियमों से ज्ञात होता है; –संभूत–(वि.) खेत से उत्पन्न।

क्षेत्राधिप–(सं. पुं.) खेत का मालिक, बारह राशियों के अधिपति ग्रह।

क्षेत्रिक–(सं. पुं.) खेतवाला, किसान।

क्षेत्री–(सं.पुं.) स्वामी, पति, कृषक, किसान।

क्षेप–(सं. पुं.) निन्दा, बुराई, ठोकर, फेंकना, गर्व, घमंड, विलम्ब, देर, लंघन, दूरी, विस्तार, गुच्छा, अक्षांश, बिताना, गुजारना; –क–(वि.) फेंकनेवाला, मिश्रित, निन्दनीय; (पुं.) किसी ग्रन्थ में पीछे से मिलाया हुआ अंश, गुच्छा; –ण–(पुं.) लंघन, अपवाद, विक्षेप, फेंकना, मारण, रस्सी का बना हुआ सिकहर, परित्याग, फन्दा; –णीय–(वि.) फेंकने योग्य; –पात–(पुं.) ज्योतिष में ग्रहकक्षा और क्रान्तिमण्डल का योग।

क्षेपणिक–(सं.पुं.) बल्ले से नाव खेनेवाला।

क्षेप्ता–(सं. पुं.) फेंकनेवाला।

क्षेमंकर–(सं. वि.) मंगल करनेवाला।

क्षेमंकरी–(सं. स्त्री.) देवी-विशेष।

क्षेम–(सं. पुं.) चण्डा (सोवा) नामक औषधि, चन्द्रवंशीय शुचि राजा के पुत्र का नाम, लब्ध वस्तु का रक्षण, सुरक्षा, मुक्ति, छुटकारा, कुशल-मंगल, आनन्द, ज्योतिष-शास्त्र में जन्म-नक्षत्र से गणना का चौथा नक्षत्र; –क–(पुं.) एक नाग का नाम, एक राक्षस का नाम, शिव; –कार–(वि.) मंगलकारक, भलाई करनेवाला; **कर्ण**–(पुं.) अर्जुन के पौत्र का नाम; –कर्मा–(वि.) पालनेवाला; –कार–(वि.) भलाई करनेवाला; –कृत्–(वि.) मंगलकारक; –दर्शी–(वि.) भलाई देखनेवाला; –वान्–(वि.) मंगलयुक्त, भला, अच्छा।

क्षेमा–(सं. स्त्री.) कात्यायनी देवी।

क्षेमासन–(सं. पुं) हठयोग का एक आसन।

क्षेमिका–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हलदी।

क्षेम्य–(सं.वि) मंगलकर, हितकर, भला।

क्षेय–(सं. वि.) नाश करने योग्य।

क्षैण्य–(स. पुं.) क्षीणता।

क्षैरेय–(सं. वि.) दूध से बना हुआ।

क्षोड़–(सं. पुं.) हाथी बाँधने की सिकड़ी।

क्षोणि–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि, एक की संख्या।

क्षोणिप–(सं. पुं.) पृथ्वीपति, राजा।

क्षोणी–(सं.स्त्री.) देखें 'क्षोणि'।

क्षोदित–(सं. वि.) खोदा हुआ, चूर्णित।

क्षोभ–(सं. पुं.) संचलन, विचलना, हलचल, चित्त की चंचलता, घबराहट, भय, डर, क्रोध; –ण–(वि.) घबड़ानेवाला; (पुं.) संचालन, कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

क्षोभित–(सं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, भयभीत, डरा हुआ, क्रुद्ध।

क्षोभी–(सं.वि.) चंचल, उद्विग्न, व्याकुल।

क्षौणि–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि।

क्षौणी–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, एक की संख्या।

क्षौद्र–(सं.पुं.) जल, पानी, धूलि, चम्पावृक्ष, ओछापन, छोटी मधुमक्खी का शहद।

क्षौद्रेय–(सं. पुं.) मोम।

क्षौम–(सं. पुं.) रेशमी कपड़ा, सन के तन्तु से बना हुआ वस्त्र, अटारी।

क्षौमिका–(सं. स्त्री.) सन की करधनी।

क्षौमी–(सं. स्त्री.) गुदड़ी, कथरी।

क्षौर–(सं. पुं.) मुण्डन कर्म।

क्षौरिक–(सं. पुं.) नापित, नाऊ।

क्ष्मा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, धरती, एक की संख्या; –ज–(पुं.) मंगल ग्रह; –तल–(पुं.) भूतल, पृथ्वी की सतह; –पति, –पाल–(पुं.) राजा; –भृत्–(पुं.) पर्वत, राजा।

क्ष्मायित–(सं. वि.) काँपनेवाला,

क्ष्वेड़–(सं. पुं.) अव्यक्त ध्वनि, कान का एक रोग, विष, स्निग्धता, चिकनाई, मोचन, त्याग; (वि.) कुटिल, दुष्ट।

ख

ख–व्यञ्जन वर्ण का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (सं.पुं.) इन्द्रिय, सूर्य, आकाश, नगर, क्षेत्र, शून्य बिन्दु, गर्त, गड्ढा, निर्गमन, मार्ग, निकास, सुख, कर्म, देवलोक, गले की प्राणवायु जाने की नली, जन्मलग्न से दशम राशि, कुआँ, गड्ढा, स्वर्ग, तीर का घाव, चिदानन्दमय ब्रह्माकाश, मोक्ष।

खंख–(हि.वि.) रिक्त, छूछा, उजाड़, निर्जन।

खँखरा–(हिं. पुं.) चावल पकाने का बड़ा पात्र; (वि.) जिसमें बहुत छेद हों, छिद्रमय, जिसकी बुनावट घनी न हो, झीना।

खँखार–(हिं. पुं.) देखें 'खखार'।

खँखारना–(हिं. क्रि.अ.) देखें 'खखारना'।

खंग–(हिं.पुं.) तलवार, खड्ग, गैंडा पशु।

खंगड़–(हिं. वि.) झगड़ालू, गँवार; (पुं.) कूड़ा-करकट।

खँगना–(हिं. क्रि.अ.) कम होना, घटना।

खँगारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'खँगालना'।

खँगालना–(हिं.क्रि.स.) केवल जल डालकर किसी पात्र को धोना, खाली करना, सब कुछ उठा ले जाना या चुराना।

खँगी–(हिं. स्त्री.) त्रुटि, कमी, घटी।

खँगैल–(हिं. वि.) खाँगवाला, दँतैल।

खँघारना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'खँगालना'।

खँचना–(हिं.क्रि.अ.) चिह्न पड़ना, खिंच जाना, बनना।

खँचाना–(हिं. क्रि. स.) चिह्न बनाना, शीघ्रता से लिखना।

खँचिया–(हिं. स्त्री.) रहठे की बनी हुई डलिया।

खँजड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'खँजरी'।

खंजन–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध काली और सफेद पेटवाली चिड़िया जो उत्तर प्रदेश के मैदानी भागों में शीत-ऋतु के आरंभ में दिखायी पड़ती है और जाड़े के बाद फिर दूसरे ठिकाने उड़ जाती ह, खिडरिच, एक प्रकार का मात्रिक छन्द।

खंजर–(अ. पुं.) कटार, तलवार।

खँजरी–(हि. स्त्री.) डफली की तरह का एक छोटा बाजा, धारीदार कपड़ा।

खंजरीट–(सं. पुं.) खंजन पक्षी।

खंड–(सं.पुं.) टुकड़ा, भाग, ग्रंथ का भाग, प्रदेश, अंचल, समूह, बीजगणित की एक क्रिया, खाँडसारी, चीनी; (वि.) टुकड़ा किया हुआ, कटा हुआ, अपूर्ण,

खंडित; –कंद–(पुं.) शकरकंद या जमीकंद; –कथा–(स्त्री) छोटी कथा या कथानक; –काव्य–(पुं.) महाकाव्य से छोटा काव्य; –प्रलय–(पुं.) पुराणानुसार सहस्राब्दि चतुर्युग बीतने के बाद होनेवाला आंशिक सृष्टि-नाश या प्रलय; (क्रि. प्र.) –करना–टुकड़े-टुकड़े करना।

खंडक–(सं. पुं., वि.) खंड या टुकड़े करनेवाला, काटनेवाला।

खंडन–(सं. पुं.) काटना, टुकड़े करने की क्रिया, निराकरण, बात काटना।

खंडन-मंडन–(हि.पुं.) बहस, विवाद।

खंडना–(हिं. क्रि. स.) खंड-खंड करना।

खंडनीय–(सं. वि.) खंडन या टकड़े करने योग्य।

खँडपूरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मेवा और शक्कर भरी हुई पूरी।

खँड़रना–(हिं.क्रि.स.) खंड-खंड या टुकड़े-टुकड़े कर देना।

खँड़रा–(हिं. पुं.) वेसन का तेल में छाना हुआ पकवान।

खँडरिच–(हिं. स्त्री.) खिडिरिच, खंजन।

खंडला–(हि.पुं.) किसी वस्तु का बड़ा टुकड़ा

खँडसार–(हि.स्त्री.) शक्कर बनाने का स्थान

खँडसारी–(हिं. स्त्री.) देशी चीनी, इसके निर्माण का लघु उद्योग-केन्द्र।

खंडशः–(सं. अव्य.) खंड-खंड करके।

खँडहर–(हिं. पुं.) टूटा-फूटा मकान।

खंडित–(सं. वि.) खंड किया हुआ, टूटा हुआ, भग्न, निराकृत।

खँडौरा–(हिं. पुं.) शक्कर का बना हुआ लड्डू, ओला

खंतरा–(हिं. पुं.) छेद, दरार, कोना।

खंता–(हि.पुं.) भूमि खोदने का फरसा, गड्ढा जिसमें से कुम्हार मिट्टी लेते हैं।

खंदक–(अ.स्त्री.) खाई, गहरा गड्ढा, गर्त।

खंदा–(हिं. पुं.) देखो 'खंदक'

खंधा–(हिं. पुं.) आर्या छन्द का एक भेद।

खंभ–(हिं. पुं.) स्तम्भ, खंभा, सहारा।

खंभा–(हिं. पुं.) स्तम्भ, खड़े बल आधार के लिये लगाया हुआ पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा।

खँभार–(हिं. पुं.) चिन्ता, व्याकुलता, घबराहट, भय, डर, शोक।

खँभारी–(हिं. स्त्री.) देखो 'गंभारी'।

खंभावती–(हिं. स्त्री.) आधी रात को गाने की एक रागिनी।

खंभिया–(हिं. स्त्री.) छोटा पतला खंभा।

खई–(हिं. स्त्री.) क्षय, नाश, लड़ाई-झगड़ा।

[illegible]–(अ. स्त्री.) [illegible] की परिधि।

खकामिनी–(सं. स्त्री.) दुर्गा की एक मूर्ति।

खकुंतल–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

खक्खा–(हिं. पुं.) अट्टहास, जोर की हँसी, अनुभवी पुरुष, बड़ा हाथी।

खक्खासाह–(हिं. पुं.) चतुर व्यापारी।

खखरा–(हिं. पुं.) बड़ा डेग, बाँस का टोकरा; कुएँ के लिए खोदा हुआ गड्ढा; (वि.) छिद्रमय।

खखरिया–(हिं. स्त्री.) बेसन या मैदे की पतली पूरी।

खखसा–(हिं. पुं.) खेकसा, वनकरेला।

खखार–(हिं. पुं.) गाढ़ा कफ या थूक जो खखारने से मुँह से बाहर निकलता है।

खखारना–(हिं. क्रि. अ.) वेग से थूकना या खाँसना, वेग से कफ बाहर निकालना।

खखेटना–(हिं. क्रि. स.) भगाना, मारना, दबाना।

खखोरना–(हिं. क्रि. स.) खुरचना, भली भाँति ढूँढ़ना।

खगंगा–(सं.स्त्री.) आकाशगंगा, मन्दाकिनी।

खग–(सं. पुं.) सूर्य, ग्रह, चन्द्रमा, देवता, बाण, पक्षी, वायु, टिड्डी, लवा पक्षी, पारा; (वि.) आकाश में चलनेवाला।

खगकेतु–(सं. पुं.) गरुड़।

खगकोटर–(सं. पुं.) वृक्ष का कोटर।

खगगति–(सं. स्त्री.) पक्षी की गति, ग्रहों की गति।

खगना–(हिं. क्रि. अ.) धँसना, चुभना, मन में धँसना, अच्छा लगना, लिप्त होना, लगना, चिपकना, उतर आना, बन जाना, खड़े रहना, अटकना, चिह्नित होना।

खगपति–(सं. पुं.) सूर्य, गरुड़।

खगवती–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।

खगहा–(हिं. पुं.) गैंड़ा।

खगाधिप–(सं. पुं.) गरुड़।

खगासन–(सं. पुं.) विष्णु।

खगुण–(सं. वि.) जिसका गुणक शून्य हो।

खगेश, खगेश्वर, खगेंद्र–(सं. पुं.) गिद्ध, गरुड़।

खगोल–(सं. पुं.) आकाशमण्डल, खगोल-विद्या।

खग्ग–(हिं. पुं.) खड्ग, तलवार।

खगोल-विद्या–(सं. स्त्री.) नक्षत्र, ग्रह आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त कराने की विद्या, गणित ज्योतिष।

खग्रास–(सं. पुं.) सम्पूर्ण ग्रहण, सूर्य या चन्द्र का वह ग्रहण जिसमें उनका सम्पूर्ण अंग ढका पड़ जाय और अंधकार हो जाय।

खचन–(हिं. पुं.) अंकित करने, जोड़ने या बाँधने की क्रिया।

खचना–(हिं.क्रि.अ.) जड़ना, अंकित होना, बनना, उतरना, टिकना, रहना, फँसना, अटकना।

खचर–(सं. पुं.) मेघ, बादल, वायु, हवा, सूर्य, राक्षस, ग्रह, नक्षत्र, बाण, पक्षी; (वि.) आकाश में चलनेवाला।

खचरा–(हिं.वि.) दुष्ट, वर्णसंकर, दोगला।

खचाखच–(हिं. अव्य.) ठसाठस, बिल्कुल भरा हुआ।

खचाना–(हिं. क्रि. स.) खींचना, बनाना, लिखना।

खचारी–(सं. वि.) आकाशगामी, आकाश में चलनेवाला; (पुं.) कार्तिकेय, [illegible]।

खचावट–(हिं. स्त्री.) खींचने की क्रिया

खचित–(सं. वि.) खींचा हुआ, चित्रित लिखित।

खचिया–(हिं. स्त्री.) छोटी टोकरी, दौरी, खँचिया।

खच्चर–(हिं. पुं.) गदहे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु।

खज–(सं. पुं.) मथानी, युद्ध; (हिं. वि.) खाद्य, खाने योग्य।

खजक–(सं. पुं.) मथानी।

खजल–(सं. पुं.) तुषार, पाला, मेघ का जल

खजला–(हिं. पुं.) खाजा नाम की मिठाई।

खजहजा–(हिं.वि.) खाने योग्य मेवा या फ

खजाक–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

खजानची–(फा. पुं.) खजाने का अधिकारी, कोशाध्यक्ष।

खजाना–(फा. पुं.) कोश, धन-भंडार, धनागार; –अफसर–(पुं.) खजाने का मुख्य प्रशासकीय अधिकारी।

खजुआ–(हिं. पुं.) देखें 'खाजा'।

खजुरा–(हिं. पुं.) स्त्रियों की चोटी में बाँधने की डोरी।

खजुराहो–(हिं. स्त्री.) [illegible]।

खजुरिया–(हिं. स्त्री.) छोटा खजूर, एक प्रकार की मिठाई, [illegible]।

खजुला–(हिं. पुं.) खाजा नाम की मिठाई।

खजुलाना–(हिं. क्रि. स.) देखें '[illegible]'।

खजूरी–(हिं. स्त्री.) [illegible] एक प्रकार का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मिठाई।

खजूर–(हिं. पुं., स्त्री.) [illegible] का एक [illegible] [illegible] [illegible] आकार के [illegible], एक प्रकार की मिठाई।

खजूरा–(हिं. पुं.) खजूर का बँड़ेर, कनखजूरा।
खजूरी–(हिं. वि.) खजूर संबंधी, खजूर के आकार का, तीन लड़ों को गूँथकर बनाया हुआ।
खज्योति–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
खट–(सं. पुं.) कफ, हल, तृण, घास; (हिं. पुं.) दो पदार्थों के टकराने का शब्द, किसी पदार्थ के टूटने से उत्पन्न शब्द; (हिं. वि.) अम्ल, खट्टा; –से–तुरत।
खटक–(हिं.स्त्री.) खट का शब्द, खटका।
खटकना–(हिं.क्रि.अ.) खटखट शब्द होना, रह-रहकर दुखना, टपकना, बुरा जान पड़ना, अलग होना, भय खाना, डरना, झगड़ा लगना, दिल धड़कना, उचटना, विरक्त होना, ठीक न ज्ञात होना, अनिष्ट की आशंका होना।
खटका–(हिं. पुं.) खटखट शब्द, आशंका, चिन्ता, सिटकिनी, कोई पेंच जिसके दवाने से 'खट' शब्द होता है, पक्षियों को उड़ाने के लिये पेड़ में लटकाया हुआ बाँस का टुकड़ा।
खटकाना–(हिं. क्रि. स.) खटखट करना, वजाना, छेड़ना, डराना, ठोंकना, फेंकना, विगाड़ कराना।
खटकीड़–(सं. स्त्री.) खटमल।
खटखट–(हिं. स्त्री.) ठोंकने-पीटने से उत्पन्न शब्द, फँसाव, झंझट, उलझन, विवाद, वखेड़ा, झगड़ा।
खटखटा–(हिं. पुं.) चिड़ियों को भगाने के लिए पेड़ में रस्सी से बाँधा हुआ बाँस का टुकड़ा।
खटखटाना–(हिं.क्रि.स.) खटखट करना, वारंवार चोट मारना, खड़खड़ाना, चेताना।
खटना–(हिं. क्रि. अ., स.) धन व्यय करना, काम में लगे रहना।
खटपट–(हिं. स्त्री.) लड़ाई, झगड़ा, वाद-विवाद, अनवन, खटखट शब्द।
खटपटिया–(हिं. वि.) झगड़ालू, लड़ाका।
खटपद–(हिं. पुं.) देखें 'षट्पद'।
खटपाटी–(हिं. स्त्री.) खटिये की पाटी।
खटपूरा–(हिं.पुं.) ढेले तोड़ने की मुँगरी।
खटवुना–(हिं.पुं.) चारपाई वीननेवाला।
खटमल–(हिं. पुं.) एक चिपटा कीड़ा जो खाट इत्यादि में उत्पन्न हो जाता है, (यह मनुष्यों का रक्त चूसता है।)
खटमिट्ठा–(हिं. वि.) मधुराम्ल, खटाई और मिठाई दोनों स्वादवाला।
खटमुख–(हिं. पुं.) देखें 'षण्मुख'।
खटराग–(हिं. पुं.) व्यर्थ की वस्तुएँ, झगड़ा, झंझट, सामग्री।
खटला–(हिं. पुं.) स्त्रियों के कान में वाली पहिनने का छिद्र, आश्रम।
खटाई–(हिं. स्त्री.) अम्लता, खट्टापन, खट्टी वस्तु, वैरभाव, अनवन; (मुहा.)–में डालना–वना-वनाया काम विगाड़ देना।
खटाका–(हिं. पुं.) खट का शब्द; (अव्य.) खट से।
खटाखट–(हिं. स्त्री.) ठोंकने-पीटने का निरन्तर शब्द; (अव्य.) खटखट करके, झटपट, जल्दी से, विना रुकावट के।
खटाना–(हिं. क्रि. अ., स.) खट्टा पड़ना, खटाई आना, निभना, टिकना, लगा रहना, काम लेना, विगड़ना, ठहरना, निर्वाह होना, जाँच करने पर पूरा उतरना।
खटापट, खटापटी–(हिं. स्त्री.) खटपट।
खटाल–(हिं. पुं.) समुद्र की ऊँची लहर, गाय-भैंस का गिरोह या रहने का अड्डा।
खटाव–(हिं. पुं.) निर्वाह, नाव बाँधने का खूँटा।
खटास–(हिं. स्त्री.) खटाई, खट्टापन, गन्ध-विलाव, अनवन, वैरभाव, विगाड़।
खटिक–(हिं. पुं.) (स्त्री. खटकिन) एक नीच हिन्दू जाति, (ये लोग प्रायः फल और तरकारी वेचते हैं।)
खटिका–(सं. स्त्री.) खड़िया मिट्टी, छोटा खटोला।
खटिया–(हिं. स्त्री.) चारपाई, छोटी खाट, खटोला।
खटी–(सं. स्त्री.) खड़िया।
खटोलना, खटोला–(हिं. पुं.) छोटी चारपाई या खटिया।
खट्टन–(सं.वि.) छोटा, नाटा, वौना।
खट्टा–(हिं. वि.) अम्ल, जिसमें खटाई हो; (पुं.) नीवू की जाति का एक खट्टा फल, गलगल; (मुहा.) जी खट्टा हो जाना–चित्त अप्रसन्न होना; –चूक–(वि.) स्वाद में वहुत खट्टा; –मीठा–(वि.) कुछ खट्टा कुछ मीठा।
खट्टू–(हिं. वि.) काम में लगा रहनेवाला, खटनेवाला।
खट्वांग–(सं. पुं.) खटिये का पाया या पाटी, शिव का एक अस्त्र, प्रायश्चित्त करनेवाले का भिक्षा माँगने का पात्र।
खड़ंजा–(हिं. पुं.) ईंटों की खड़ी जोड़ाई जो भूमि पर की जाती है, कई प्रकार के मोटे अन्नों का मिश्रण।
खड़–(सं. पुं.) तृण, खर, कतवार, एक ऋषि का नाम।
खड़क–(हिं. स्त्री.) खटक, धीमा शब्द।
खड़कना–(हिं. क्रि. अ.) खड़खड़ होना, खटकना।
खड़का–(हिं. पुं.) देखें 'खटका'।
खड़काना–(हिं.क्रि.स.) खटकाना, लड़ाना, वजाना।
खड़खड़ा–(हिं. पुं.) पक्षियों को उड़ाने का बाँस का ढाँचा; (वि.) खड़खड़ करनेवाला।
खड़खड़ाना–(हिं.क्रि.अ., स.) खड़खड़ शब्द होना या करना, दो वस्तुओं का परस्पर टकराना।
खड़खड़ाहट–(हिं. स्त्री.) खड़खड़ाने का शब्द, खटपट।
खड़खड़िया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पालकी, पीनस।
खड़ग–(हिं. पुं.) देखें 'खड्ग'।
खड़गी–(हिं. वि.) तलवार लिये हुए; (पुं.) गैंड़ा।
खड़जी–(हिं. पुं.) देखें 'खड़गी'।
खड़वड़–(हिं. स्त्री.) खटपट, उत्तेजना, चहल-पहल, गड़वड़, उलट-फेर।
खड़वड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) व्याकुल होना, घवड़ाना, विगड़ना, उलट-पलट होना, क्रम टूटना, खटकाना, खड़खड़ाना, क्रम विगाड़ना, घवड़ाहट में डालना।
खड़वड़ाहट–(हिं. स्त्री.) देख 'खड़वड़ी'।
खड़वड़ी–(हिं. स्त्री.) व्यतिक्रम, खड़वड़, घवड़ाहट, हलचल, खलवली।
खड़विड़ा–(हिं. वि.) ऊँचा-नीचा, जो समतल न हो।
खड़वीहड़–(हिं. वि.) देखें 'खड़विड़ा'।
खड़मंडल–(हिं. पुं.) व्यतिक्रम, गड़वड़, गोलमाल।
खड़ा–(हिं. वि.) सीधा उठा हुआ, स्थिर, टिका हुआ, प्रस्तुत, प्रचलित, तैयार, स्थापित, रक्खा हुआ, उपस्थित, कच्चा, पूरा, समूचा, अचल, जो टूटा न हो, दण्डायमान, उद्यत, निर्मित, वनाया हुआ; –खेत–(पुं.) फसल या अनाज लगा हुआ खेत; (मुहा.) –करना–तैयार करना, वनाना, ढाँचा खड़ा करना; –होना–तैयार होना, वनना, चुनाव में उम्मेदवार होना।
खड़ाऊँ–(हिं. पुं.) पादुका, काठ के तल्ले का विना एड़ी और पंजे का जूता।
खड़ाका–(हिं. पुं.) खटाका, खड़खड़ाहट; (अव्य.) जल्दी से।
खड़िका–(सं. स्त्री.) खड़िया मिट्टी।

खड़िया–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की श्वेत मिट्टी, खरिया।

खड़ी–(हि. स्त्री.) खड़िया मिट्टी।

खड़ी बोली–(हि. स्त्री.) पश्चिमी हिन्दी जो दिल्ली के आसपास बोली जाती है और जिस भाषा में आधुनिक गद्य लिखा जाता है।

खड़ुवा–(हि. पुं.) हाथ या पैर में पहिनने का चूड़ा।

खड़े-खड़, खड़ेघाट–(हि.अव्य.) झटपट, तुरंत।

खड्ग–(सं. पुं.) गैंडा, गैंडे का सींग, एक प्रकार की तलवार, पशुओं की बलि चढ़ाने का खाँड़ा; –पत्र–(पुं.) तलवार के सदृश पत्तियों की एक लता, तलवार की धार; –पाणि–(वि.) हाथ में तलवार लिये हुए; –पुत्रिका–(स्त्री.) कटार, छुरी; –मुद्रा–(स्त्री.) एक तन्त्रोक्त मुद्रा का नाम।

खड्गी–(सं. पुं.) गैंडा, महादेव; (वि.) खड्गधारी, जिसके पास खड्ग हो।

खड्ड–(हि. पुं.) खात, गड्ढा।

खड्ढा–(हि. पुं.) खात, गड्ढा, शरीर में अधिक रगड़ से बना हुआ चिह्न।

खणक–(हि. पुं.) मूषक, चूहा।

खतना–(अ. पुं.) मुसलमानी करने का रस्म या संस्कार, सुन्नत।

खतम–(हि. वि.) समाप्त।

खतरनाक–(हि. वि.) खतरे से भरा हुआ, जोखिम से पूर्ण।

खतरा–(अ. पुं.) डर, भय, जोखिम।

खतरानी–(हि.स्त्री.) खत्री जाति की स्त्री।

खतरेटा–(हि. पुं.) खत्री जाति का युवा पुरुष।

खतियाना–(हि.क्रि.स.) प्रतिदिन के आय-व्यय या क्रय-विक्रय के हिसाबों को अलग-अलग लिखना।

खतियौनि–(हि. स्त्री.) खाता, वह बही जिसमें हिसाब खतियाकर लिखा गया हो, पटवारी की वह बही जिसमें हर एक कृषक की भूमि का क्षेत्रफल तथा लगान लिखा रहता है।

खत्ता–(हि. पुं.) गर्त, गड्ढा, अन्न रखने का गड्ढा।

खत्ती–(हि. स्त्री.) देखो 'खत्ता'।

खत्री–(हि. पुं.) हिन्दुओं की एक जाति जो अपने को क्षत्रिय कहते हैं।

खदबदाना–(हि.क्रि.अ.) [illegible]।

खदरा–(हि. पुं.) [illegible]; (वि.) [illegible]।

खदान–(हि. स्त्री.) किसी वस्तु को खोदकर निकालने के लिये बना हुआ गड्ढा, खान।

खदिर–(सं. पुं.) खैर का वृक्ष, कत्था, चन्द्रमा, इन्द्र, एक ऋषि का नाम।

खदिरपत्री–(सं.स्त्री.) लाजवंती का पौधा।

खदिरसार–(सं. पुं.) खैर, कत्था।

खदुका–(हि. पुं.) ऋण लेकर व्यापार करनेवाला, ऋणग्रस्त व्यापारी।

खदुहा–(हि. पुं.) खोटा मनुष्य।

खदेड़ना–(हि. क्रि. स.) भगाना, हटाना, पीछे पड़ना।

खदेरना–(हि. क्रि. स.) खदेड़ना।

खद्दड़, खद्दर–(हि. पुं.) हाथ के कते हुए सूत का बिना हुआ कपड़ा, खादी, गजी, गाढ़ा।

खद्योत–(सं.पुं.) जुगनू नामक कीड़ा, सूर्य।

खद्योतक, खद्योतन–(सं. पुं.) सूर्य।

खन–(हि. पुं.) क्षण, खण्ड, (घर का) तल्ला, रुपये का शब्द।

खनक–(सं. पुं.) मूसा, चूहा, सेंध लगानेवाला चोर, खान या भूमि खोदनेवाला; (हि. पुं.) रुपये के बजने का शब्द।

खनकना–(हि. क्रि. अ.) खनखन करना, धातु के टुकड़े का बजना।

खनकाना–(हि. क्रि. स.) खनखन करना, इस प्रकार बजाना।

खनकार–(हि.पुं.) खनखन करने का शब्द।

खनखना–(हि.वि.) खनखन शब्द करनेवाला।

खनखनाना–(हि.क्रि.अ.) खनखन शब्द होना, इस प्रकार बजना।

खनना–(हि. क्रि. स.) खोदना, गोड़ना, कोड़ना।

खननीय–(सं. वि.) खोदे जाने योग्य।

खनवाना, खनाना–(हि. क्रि. स.) खनने का काम दूसरे से कराना।

खनि–(सं. स्त्री.) गड्ढा, सोने इत्यादि की खान।

खनिज–(सं. वि.) खान से उत्पन्न, खान से निकाला हुआ।

खनित्र–(सं.पु.) खोदने का शस्त्र, [illegible] गैंती।

खनिहाना–(हि. क्रि. स.) खाली करना, उझिलना।

खप–(हि. पु.) [illegible] का शब्द; –[illegible] करना–[illegible]।

खपचा–(हि.पु.) [illegible]।

खपची, खपच्ची–(हि. स्त्री.) [illegible]।

खपटा–(हि. वि.) [illegible], दुबला-पतला; (पुं.) खपड़ा।

खपटी–(हि. स्त्री.) छोटा खपड़ा।

खपड़ा–(हि.पुं.) मिट्टी का गढ़ा और पकाया हुआ टुकड़ा जो मकान छाने के काम में आता है, भिखमंगों का भीख माँगने का पात्र, खप्पर, ठिकड़ा, टूटे हुए मिट्टी के पात्र का टुकड़ा, कछुए की पीठ का भाग, इसका बना हुआ टपरा।

खपड़ी–(हि. स्त्री.) भड़भूजे की नांद, खोपड़ी।

खपड़ैल–(हि. स्त्री.) खपड़े की छत या छाजन, खपरैल।

खपत, खपती–(हि.स्त्री.) समाई, बिक्रय, माल की बिक्री।

खपना–(हि.क्रि.अ.) लगना, व्यय होना, चलना, निकलना, बिकना, घटना, काम में आना, निभना, मरना, मिटना।

खपरा–(हि. पुं.) देखो 'खपड़ा'।

खपरिया–(हि.स्त्री.) खपरी, भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ, छोटा खपड़ा, धान की उपज को नष्ट करनेवाला एक कीड़ा।

खपरैल–(हि.स्त्री.) खपड़े से छाई हुई छत, खपड़ैल।

खपाची–(हि. स्त्री.) देखो 'खपची'।

खपाट–(हि. स्त्री.) [illegible] के भीतर के छोटे [illegible]।

खपाना–(हि.क्रि.स.) व्यय करना, [illegible] काम में लाना, निर्वाह करना; (मुहा.) माथा खपाना–सोचने-सोचने व्यग्र होना।

खपुआ–(हि. वि.) भीरु, भयभीत, डर-पोक।

खपुर–(सं.पुं.) गन्धर्वनगर, सुपारी, [illegible], [illegible], आकाशगामी दैत्यपुर, राजा हरिश्चन्द्र की आकाशस्थित नगरी।

खपुष्प–(सं.पुं.) आकाशकुसुम, असम्भव बात।

खप्पड़–(हि. पुं.) देखो 'खप्पर'।

खप्पर–(हि. पुं.) [illegible] के आकार का मिट्टी का पात्र, भीख माँगने का पात्र, खोपड़ा।

खफा–(फा. वि.) क्रुद्ध, नाराज।

खफीफा–(अ. स्त्री.) [illegible] छोटे-मोटे [illegible]।

खबर–(अ. स्त्री.) [illegible]।

सहायता या मदद देना।
खवरदार-(फा. वि.) होशियार, सजग।
खवरदारी-(फा.स्त्री.) सावधानी, होशियारी।
खब्त-(अ. पुं.) झक्क, सनक, धुन।
खब्ती-(अ. वि.) सनकी, झक्की।
खभरना-(हिं. क्रि. स.) मिश्रित करना, मिलाना, उलट-पुलट करना, क्रम बिगाड़ना।
खभरुआ-(हिं. वि.) व्यभिचारिणी स्त्री से उत्पन्न।
खमणि-(सं. पुं.) सूर्य, सूरज।
खमसना-(हिं.क्रि.स.) मिलाना, डालना।
खमीर-(अ. पु.) पानी मे भिगोकर या उबालकर देर तक रखे हुए किसी मिश्रण मे उत्पन्न होनेवाला खट्टापन और फेन जैसी परत या पपड़ी; (मुहा.) -उठना-किसी मिश्रण का खमीर उत्पन्न होने से उभड़ जाना।
खमीरा-(अ.वि.,पु) खमीरवाला, चासनी मे बनाया हुआ अवलेह; कटहल आदि का खमीर उतारकर बना हुआ पीने का तंबाकू।
खमीरी-(अ.वि.,स्त्री.) खमीर वाली (रोटी)।
खमोश-(हिं. वि.) देखे 'खामोश'।
खम्माच-(हिं. पुं.) मालकोस राग की दूसरी रागिनी।
खय-(हि. पुं.) देखे 'क्षय'।
खयाल-(हिं. पु.) देखे 'ख्याल'।
खरंजा-(हिं.पुं.) देखें 'खड़ंजा'।
खर-(सं. पुं.) गर्दभ, गदहा, खच्चर, रावण के भाई का नाम, कौआ, पश्चिम मुंह के द्वार का घर, संवत्सरों मे से एक, छप्पय छंद का एक भेद; (वि.) करारा, कठिन, कड़ा, तीक्ष्ण, हानिकारक, निष्ठुर, निर्दय, अमांगलिक।
खरक-(हिं. पु.) पशुओं को बन्द करने का वाड़ा, टट्टर, घेरा, वाँस की पट्टियों से बना हुआ किवाड़।
खरकना-(हिं.क्रि.अ.) खुरखुराना, दुखना, पीड़ा होना, सरकना, चले जाना, काँटा चुभ जाने पर पीड़ा होना।
खरका-(हिं. पुं.) सीक या लकड़ी का पतला छोटा टुकड़ा, तिनका; (मुहा.) -करना-भोजन करने के बाद दाँतों में से अन्न आदि के कण निकालना।
खरकोण-(सं. पुं.) तीतर पक्षी।
खरकोमल-(सं.पु.) जेठ का महीना।
खरखरा-(हिं.वि.) खुरदरा, जो चिकना न हो।
खरग-(हिं. पुं.) देखे 'खड्ग'।
खरच-(हिं. पु.) व्यय।
खरचना-(हिं.क्रि.स.) व्यय करना, व्यवहार या उपयोग मे लाना।
खरचा-(हिं. पुं.) व्यय।
खरची-(स. स्त्री.) जीविका-निर्वाह के लिए आवश्यक अन्न, धन आदि, खाने-पीने की वस्तु।
खरतर-(सं.वि.) अति तीक्ष्ण, बहुत पैना।
खरतल-(हिं. वि.) खरा, स्पष्टवादी।
खरदला-(सं. स्त्री.) बे-स्वाद गूलर कठगूलर।
खरदा-(हिं. पुं.) अंगूर की पत्तियों को खा जानेवाला एक कीड़ा।
खरदूषण-(सं. पुं.) खर और दूषण नाम के दो राक्षस जो रावण के भाई थे।
खरधार-(सं.वि.) तीखी धारवाला (अस्त्र)।
खर(रा)ना-(हिं.क्रि.स.) घी को आँच पर तपाकर परिष्कार करना।
खरब-(हि.पुं.,वि) सौ अरबों की संख्या, खर्व।
खरबूजा-(हिं. पुं.) ककड़ी की जाति की एक लता जिसमे गोल मीठे फल गरमी के दिनों में फलते है, इसके फल का नाम।
खरभर-(हिं. पुं.) खड़खड़ाहट, कोलाहल, हलचल।
खरभराना-(हि.क्रि.अ.) हलचल मचना, घबड़ाना, व्याकुल होना, सामग्रियों को उलट-पुलट करने में शब्द उत्पन्न करना।
खरभराहट-(हिं.स्त्री.) देखें 'खरभर'।
खरभरी-(हिं.स्त्री.) खलबली, उत्तेजना।
खरमास-(हिं. पुं.) देखें 'खरवाँस'।
खरमिटाव-(हिं. पुं.) प्रातराश, कलेवा, जलपान।
खरल-(हिं. पुं.) औषध इत्यादि घोंटने की पत्थर या लोहे की कूँड़ी।
खरवट-(हिं. स्त्री.) लोहारों का रेतने का एक यन्त्र।
खरवाँस-(हिं.पुं.) मास जो सूर्य के धनु और मीन राशि पर आने से होता है।
खरशब्द-(सं. पुं.) गदहे का रेंकना, कर्कश शब्द।
खरसा-(हिं. पुं.) गरमी की ऋतु, दुर्भिक्ष, खुजली, एक प्रकार का पक्वान्न।
खरसान-(हिं. स्त्री.) तलवार इत्यादि पैनी करने का एक प्रकार का सान।
खरसुमा-(हिं. वि.) ऊपर उठे हुए सुमों का घोड़ा।
खरहर-(हिं. पुं.) कूड़ा-करकट फेंकने का स्थान।
खरहरा-(हिं. पुं.) मेहतरों की झाड़, एक दाँतेदार कंघी जिससे घोड़े के रोयें स्वच्छ किये जाते है।
खरहा-(हिं. पुं.) शशक।
खरांशु-(सं. पु.) सूर्य, सूरज।
खरा-(हिं. वि.) तीक्ष्ण, तीखा, विशुद्ध, कुरकुरा, अच्छी तरह पका हुआ, कड़ा, कठिन, बढ़िया, करारा, बिना मिलावट का, चीमड़, निश्छल, स्पष्ट कहनेवाला, सच्चा, अधिक; (मुहा.) रुपये खरे होना-रुपयों का हाथ लगना, लाभ होना।
खराई-(हिं. स्त्री.) खरापन, करारापन, प्रातःकाल देर तक कुछ भोजन न करने से अस्वस्थ होना (पित्त बिगड़ना)
खराद-(हिं. पुं.) गोलाई मे घूमनेवाला एक यन्त्र जिस पर चढ़ाकर काठ या धातु की वस्तुएँ सुडौल और चिकनी बनाई जाती है, खरादन का काम, गढ़न, बनावट।
खरादना-(हिं.क्रि.स.) खराद पर चढ़ाकर चिकनाना और सुडौल बनाना।
खरादी-(हिं. पुं.) खरादनेवाला।
खरापन-(हिं. पुं.) सचाई, सत्यता।
खराब-(अ. वि.) बुरा, अशुभ, अहितकर, हीन, हानिकारक।
खराबी-(अ. स्त्री.) बुराई, दोष, अवगुण, तबाही।
खरायँध-(हिं. स्त्री.) मूत्र या क्षार के समान दुर्गन्ध।
खरारि-(सं. पुं.) श्रीरामचन्द्र, विष्णु।
खरिक-(हिं. पु.) एक प्रकार की ऊख।
खरिया-(हिं. स्त्री.) पतली रस्सी का बना हुआ जाल, पाँसी, झोली, कण्डे की राख, खड़िया मिट्टी।
खरियाना-(हिं. क्रि. स.) झोली या थैली में भरना, अपने अधिकार में ले लेना, थैली या झोली में से गिराना।
खरिहान-(हिं. पुं.) कटे हुए अनाज का ढेर, इन्हें रखने का स्थान।
खरी-(हिं. स्त्री.) खली, खड़िया मिट्टी; (वि.स्त्री.) खूब सेकी हुई, विशुद्ध, स्पष्ट।
खरीद-(फा. स्त्री.) खरीदने की क्रिया या भाव।
खरीदना-(हिं. क्रि. स.) मोल लेना, क्रय करना।
खरीदार-(फा. वि.) खरीदनेवाला।
खरीदारी-(फा.स्त्री.) खरीदने की क्रिया।
खरीफ-(अ. स्त्री.) धान, मकई, बाजरे आदि की फसल जो असाढ़-सावन में बोई और अगहन में काटी जाती है।
खरेठ-(हिं. पुं.) एक प्रकार का अग-

हनियाँ धान ।
खरोंच–(हिं. स्त्री.) छिल जाने या रगड़ का चिह्न, एक प्रकार की पकौड़ी ।
खरोंचना–(हिं. क्रि.स.) छीलना, खुरचना, वेग से खुजलाना ।
खरोंचा–(हि. पुं.) खरोंच, गहरी रगड़ ।
खरोष्ट्री, खरोष्ठी–(सं. स्त्री.) फारसी की तरह लिखी जानेवाली एक लिपि जो अशोक के समय में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में चलती थी ।
खरौंट–(हिं. स्त्री.) देखें 'खरोंच' ।
खरौंहा–(हिं. वि.) खारा, थोड़ा नमकीन ।
खर्च–(फा. पुं.) देखें 'खरच' ।
खर्चना–(हिं. क्रि.स.) व्यय करना ।
खर्चा–(हिं. पुं.) देखें 'खर्च' ।
खर्ची–(हिं.स्त्री.) खरची, शुल्क, पारिश्रमिक ।
खर्चीला–(हि.वि.) अधिक व्यय करनेवाला ।
खर्जु(र्जू)र–(सं. पुं.) खजूर का वृक्ष या फल, विच्छू ।
खर्पर–(सं. पुं.) भिक्षा माँगने का खप्पड़, मिट्टी के वरतन का टूटा हुआ भाग, कपाल, खोपड़ा, छत, छाता, तूतिया, खपड़िया नामक उपधातु ।
खर्व–(सं. पुं.) कुवेर की निधि, सौ अरव की संख्या; (वि.) छोटा, न्यून अंग का, वामन, बौना, खर्व ।
खर्वित–(सं. वि.) ह्रस्व, कटा हुआ ।
खर्रा–(हि. पुं.) लम्वा चिट्ठा, वह लम्वा कागज जिसमें वहुत-सा हिसाव लिखा हो, पीठ पर छोटी-छोटी फुंसियों के निकलने का रोग ।
खर्राच–(हिं पुं.) अमितव्ययी ।
खर्राटा–(हिं. पुं.) निद्रा की अवस्था में नाक से निकलनेवाला शब्द; (मुहा.) –भरना, मारना या लेना–घोर निद्रा में सो जाना ।
खर्व–(सं. वि., पुं.) विकृतांग, ठिगना, छोटा, सौ अरव (की संख्या) ।
खर्वित–(सं. वि.) विकृतांग वना या किया हुआ, छोटा किया हुआ ।
खल–(सं. पुं.) खलिहान, धूल का ढेर, भूमि, स्थान, सूर्य, तमाल वृक्ष, औषध घोंटने का पात्र, धतूरे का पौधा; (वि.) नीच, दुष्ट, अधम, दुर्जन, क्रूर ।
खल-खल–(हिं. पुं.) वोतल आदि में से पानी उँड़ेलने से होनेवाला शब्द ।
खलखलाना–(हिं. क्रि. अ.) उवलना, खौलना, खुदखुदाना, खगारना ।
खलड़ी–(हि.स्त्री.) त्वचा, छाल, चमड़ा ।
खलता–(सं. स्त्री.) दुष्टता, दुर्जनता ।
खलधान्य–(सं. पुं.) देखें 'खलिहान' ।
खलना–(हिं. क्रि. अ.) चुभना, मुड़ना, झुकना, वुरा लगना, अप्रिय जान पड़ना ।
खलनी–(हिं. स्त्री.) सोनार का पोला करने का अस्त्र ।
खलवल, खलभल–(हिं. पुं.) हलचल, गड़बड़ी, कोलाहल, कुलवुलाहट, हल्ला, उवाल ।
खलवलाना, खलभलाना–(हिं. क्रि. अ.) उवलना, खौलना, खदवदाना, घवड़ाना, विचलित होना, चलना-फिरना ।
खलवलाहट, खलभलाहट–(हिं. स्त्री.) खलवल होने का शब्द ।
खलवली, खलभली–(हिं. स्त्री.) व्यग्रता, हलचल, व्याकुलता, घवड़ाहट, उवाल ।
खलल–(अ. पुं.) वाधा, अड़चन, रोक; –दिमाग–(वि.) विगड़ा दिमागवाला, सनकी, वद-दिमागी ।
खलसा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मछली ।
खलाई–(हिं. स्त्री.) दुष्टता ।
खलाना–(हिं. क्रि. स.) खाली करना, खोदना, गड्ढा करना, फले हुए भाग को नीचे की ओर दवाना ।
खलार–(हिं. वि., पुं.) गहरा (स्थान), नीचा, खाली ।
खलासी–(हि. पुं.) गाड़ी के इंजन के अग्नि-भट्टे में आग झोंकनेवाला मजदूर ।
खलित–(हिं. वि.) चंचल, चलायमान ।
खलिया(हा)न–(हि. पुं.) अन्न काटकर रखने का स्थान, खरिहान, राशि, ढेर ।
खलियाना–(हिं. क्रि.स.) खाल खींचना, चमड़ा उतारना, खाली करना ।
खली–(हि. स्त्री.) तेल निकलने पर वची हुई सीठी ।
खलीता–(हिं. पुं.) खरीता, जेव ।
खलीफा–(अ. पुं.) हजरत मुहम्मद का उत्तराधिकारी शासक, वूढ़ा दरजी, नाई आदि, उस्ताद का संगी या सहायक, वावर्ची ।
खलु-खलु–(सं. अव्य.) नहीं, शब्दालंकार में निश्चय, अव, इस समय । (यह शब्द पाद-पूरण करने के लिये भी व्यवहृत होता है ।)
खलेल–(हिं. पुं.) तेल में मिली हुई खली ।
खल्ल–(सं. पुं.) गड्ढा, चमड़ा, मसक ।
खल्लकी–(सं. स्त्री.) शक्कर, खाँड़ ।
खल्लड़–(हि.पुं.) वह पुरुष जिसकी खाल लटक गई हो ।
खल्ला–(हि. पुं.) खलिहान, जूता, नाचने की एक चाल ।
खल्व–(सं. पुं.) सिर के वाल झड़ने का रोग, गंजापन ।
खल्वाट–(हिं. पुं.) गंजा; (वि.) जिसके सिर के वाल झड़ गये हों ।
खवा–(हि. पुं.) स्कन्ध, कन्धा ।
खवाई–(हिं. स्त्री.) खाने-पीने का काम, नाव में मस्तूल गाड़ने का गड्ढा ।
खवाना–(हिं. क्रि. स.) खिलाना, भोजन कराना ।
खवैया–(हिं. पुं.) भोजन करनेवाला, खानेवाला ।
खशा–(सं. स्त्री.) दक्ष की कन्या, कश्यप की पत्नी ।
खश्वास––(सं. पुं.) वायु, हवा ।
खस–(फा. स्त्री.) एक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़ ।
खसकंत–(हिं.पुं.) खिसकने या भाग जाने का कार्य; (वि.) खसक जानेवाला ।
खसकना–(हिं. क्रि. अ.) सरकना, हटना, जगह छोड़ देना, चुपके से भाग जाना ।
खसकाना–(हिं.क्रि.स.) सरकाना, हटाना, चुपके से निकाल देना, खसकने का काम कराना ।
खसखस–(हिं. वि.) भुरभुरा, सहज में चूर होनेवाला, वहुत ही छोटा; (पुं.) पोस्ते का दाना ।
खसखास–(हिं. पुं.) देखें 'खसखस' ।
खसखासी–(हिं. वि.) खसखस (पोस्ते) के फूल के समान रंग का, नीलापन लिये हुए श्वेत ।
खसना–(हिं.क्रि.अ.) सरकना, अपने आप नीचे को हट जाना ।
खसरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की गीली खुजली; पटवारी के भूमिधरों की काश्तों की क्रमवद्ध क्षेत्र संख्यावाली वही, क्षेत्रफल आदि के विवरण का लेखा या वही ।
खसाना–(हिं.क्रि.स.) खिसकाना, गिराना, नीचे की ओर धक्का देना ।
खसिया–(हिं.वि.) वधिया, खस्सी, आसाम प्रान्तवासी, नपुंसक; (पुं.) छाग, वकरा ।
खसियाना–(हिं. क्रि. स.) वधिया करना, नपुंसक वनाना ।
खसी–(हिं. पुं.) वकरा ।
खसोट, खसोटी–(हिं.स्त्री.) वुरी तरह से नोचना, झटके से तोड़ना, झपट ।
खसोटना–(हिं. क्रि.स.) नोचना, उखाड़ना, वलपूर्वक खींच लेना, छीन लेना ।
खस्ता–(फा.वि.,पुं.) जरा सा दवाने पर चूर हो जानेवाला, मैदे में मोयन डालकर वना पकवान ।

ख-स्वस्तिक–(सं. पुं.) शीर्षविन्दु, वह कल्पित विन्दु जो आकाश में सिर के ठीक ऊपर पड़ता है।
खस्सी–(हिं.पुं.) वकरा; (वि.) वधिया, नपुंसक।
खहर–(सं. पुं.) गणित में वह संख्या जिसका हर शून्य हो; यथा–४/०।
खाँ–(फा. पुं.) किसी जाति का नायक या सरदार, पठानों के नाम के पहले लगनेवाला उपनाम।
खाँई–(हिं. स्त्री.) किसी स्थान के चारों ओर खोदा हुआ गड्ढा, खाई।
खाँख–(हिं. स्त्री.) छिद्र, छेद, पोलापन।
खाँखर–(हिं. वि.) छिद्रयुक्त, दूर-दूर वीना हुआ, पोला, रिक्त, खोखला; (स्त्री.) कूप वनाने के लिये गड्ढा।
खाँग–(हिं. पुं.) काँटा, तीतर आदि के पैर का काँटे के समान नाखून, गैंड़े का सींग, जंगली सूअर का वड़ा दाँत, त्रुटि, अभाव, कमी।
खाँगड़, खाँगड़ा–(हिं. वि.) खाँग रखनेवाला, सशस्त्र, उद्दण्ड, वलवान्, अक्खड़।
खाँगना–(हिं. क्रि अ.) लँगड़ाना, घटना, वेग से बोलना।
खाँगी–(हिं. स्त्री.) त्रुटि, न्यूनता, कमी, घटी।
खाँच–(हिं. पुं.) कीचड़।
खाँचना–(हिं.क्रि.स.)चिह्न वनाना,अंकित करना, खींचना, शीघ्रता से लिखना।
खाँचा–(हिं. पुं.) झावा, वड़ा टोकरा, वड़ा पिंजड़ा।
खाँड़–(हिं. स्त्री.) कच्ची शक्कर।
खाँड़ना–(हिं. क्रि. स.) कूँचना, तोड़ना, चवाना।
खाँड़ा–(हिं. पुं.) खड्ग, तलवार, छुरा, खण्ड, टुकड़ा।
खाँभ–(हिं. पुं.) स्तम्भ, खंभा।
खाँभना–(हिं. क्रि. स.) लिफाफे में वन्द करना।
खाँवाँ–(हिं. पुं.) गहरी लंवी खाईं, खेत की चौड़ी मेड़।
खाँसना–(हिं.क्रि.अ.) गले में अटके हुए कफ या दूसरी वस्तु को निकालने के लिये हवा को शब्द के साथ वाहर फेंकना, खखारना, खोंखना।
खाँसी–(हिं. स्त्री.) खाँसने का रोग या शब्द, कास रोग।
खाई–(हिं. स्त्री.) दुर्ग आदि की रक्षा के लिये उसके चारों ओर खोदा हुआ गढ्ढा, खन्दक।

खाऊ–(हिं. वि.) अधिक खानेवाला, मरभुखा, पेटू।
खाक–(फा. स्त्री.) राख, धूल, मिट्टी; (मुहा.)– करना–जलाकर राख या भस्मावशेष वना देना;– चाटना–धूल चाटना; –छानना–मारा-मारा घूमना-फिरना; –में मिलना–मर जाना, नष्ट हो जाना।
खाका–(फा. पुं.) नक्शा, मानचित्र।
खाकी–(फा. वि.) मिट्टी के रंग का, भूरा।
खागना–(हिं.क्रि.अ.) खाँगना, चुभना, गड़ना।
खाज–(हिं. स्त्री.) शरीर के भिन्न भागों में खुजली होना, खुजली।
खाजा–(हिं. पु.) खाद्य, एक प्रकार की मिठाई।
खाजी–(हिं. स्त्री.) भोजन का पदार्थ।
खाट–(सं. पुं.) चारपाई, खटिया, खटोला, पलंग।
खाड़–(हिं. पुं.) गर्त, गड्ढा।
खाड़व–(हिं. पुं.) देखें 'षाड़व'।
खाड़ी–(हिं. स्त्री.) आघात, तीन ओर से भूमि से घिरा हुआ समुद्र का भाग।
खात–(सं. पुं.) खोदना, खोदाई, पुष्करिणी,तालाव,कुआँ, गर्त, गड्ढा; (हिं. स्त्री.) महुवे का ढेर, खाद; (वि.) खोदा हुआ, मैला।
खाता–(हिं. पुं.) वड़ी खत्ती, हिसाव-किताव की वही, अन्न रखने का गड्ढा, मद, विभाग; (मुहा.)–खोलना–नया व्यवहार किसी से आरम्भ करना।
खाति–(सं. स्त्री.) खोदाई, खोदने का काम।
खातिर–(अ. स्त्री.) आदर, सम्मान; (अव्य.) के लिये, वास्ते।
खातिरदार–(हिं.पुं.) आदर करनेवाला।
खातिरदारी–(अ. स्त्री.) खातिर।
खातिरन–(अ. अव्य.) के खातिर।
खातिरी–(हिं. स्त्री.) खातिरदारी।
खाती–(हिं. स्त्री.) खत्ती, गड्ढा, खोदी हुई भूमि, भूमि खोदनेवाली एक जाति, वढ़ई।
खाद–(हिं. स्त्री.) उपज वढ़ाने के लिये खेतों में डाली हुई वस्तु, पाँस, पौधों की उपज वढ़ानेवाली वस्तु।
खादक–(सं. वि.) भक्षक, खानेवाला, ऋण लेनेवाला।
खादन–(सं. पुं.) दाँत, आहार, भोजन।
खादनीय–(सं. वि.) भोजनीय, खाया जानेवाला।

खादर–(हिं. पुं.) नीची भूमि जिस पर पानी वहुत दिनों तक ठहरता है, कछार, चरागाह, तराई।
खादित–(सं. वि.) भक्षित, खाया हुआ।
खादिर–(सं. वि.) खदिर से उत्पन्न।
खादी–(सं. वि.) भक्षक, खानेवाला, शत्रुओं की हिंसा करनेवाला; (हिं. स्त्री.) एक प्रकार का हाथ का वुना मोटा कपड़ा, गजी, खद्दर; (हिं. वि.) दूषित।
खादुक–(सं. वि.) हिंसालु, जिसकी प्रवृत्ति सदा मारकाट करने की हो।
खाद्य–(सं. वि.) भक्षणीय, खाया जानेवाला; (पुं.) आहार, खाने की वस्तु।
खाध–(हिं. पुं.) भोजन का पदार्थ।
खान–(हिं.पुं.) भोजन, खाना, खाने की क्रिया,भोजन की सामग्री; (स्त्री.)खनन, खोदाई, मार-काट, आकर, जिस स्थान को खोदकर पत्थर,धातु इत्यादि निकाली जाती है, खदन, कोल्हू का वह भाग जिसमें तेलहन डालकर तेल निकाला जाता है।
खानक–(सं.वि.)खनक,खोदनेवाला,राज।
खानगी–(फा. वि.) घर का, घरेलू, निजी; (स्त्री.) वेश्या, रंडी।
खानदान–(फा. पुं.) कुल, परिवार।
खानदानी–(फा.वि.) पैत्रिक, वंशानुगत, ऊँचे कुल का।
खान-पान–(हिं. पुं.) खाना-पीना, खाने-पीने का व्यवहार या ढंग, संवंध।
खानसामा–(फा. पुं.) अँगरेजों, मुसलमानों आदि के वड़े घरानों का वावरची।
खाना–(हिं. क्रि. स.) भोजन करना, पेट भरना, मुँह में डालना, मार डालना, काटना, कुतरना, चवाना, विगाड़ना, उड़ाना, व्यय करना, घूस लेना, अँटना, छोड़ना, भलना, झलना, हड़पना, कष्ट देना,अधर्म से रुपया कमाना, दूर करना, सहन करना; खाता-कमाता–(वि.) केवल पेट भरने के लिये धनोपार्जन करनेवाला; –पीना–(हिं. पुं.) देखें 'खान-पान'; (मुहा.)–कमाना–अपने व्यवसाय में लगे रहना; –न पचना–खाना हजम न होना; खा-पका डालना–सव कुछ व्यय कर देना; कच्चा खा जाना–प्राण ले लेना; खाने दौड़ना–अत्यन्त क्रोध दिखलाना; मुँहकी खाना–हार जाना।
खाना–(फा. पुं.) सूचियों, तालिकाओं आदि में वने कोष्ठक, रिक्त वर्गाकार

अथवा आयताकार चिह्नित अंश; -तलाशी-(स्त्री.) पुलिस अधिकारियों द्वारा किसी खोई वस्तु, अपराधी आदि को अपने कब्ज म लेने के लिए खोज-पड़ताल; -पुरी-(हिं. स्त्री.) किसी चक्र या सारणी के रिक्त स्थानों का भराव, मानचित्र इत्यादि में यथास्थान नाम भरना।

खानाबदोश-(फा. वि., पुं.) जिसका कोई घर, ठौर-ठिकाना न हो, घुमक्कड़ गरीब जाति, कंजड़।

खानि-(हिं. स्त्री.) खान, ओर, प्रकार।

खानिक-(सं. पुं.) भीत का गड्ढा, रत्न।

खापट-(हिं. स्त्री.) वह भूमि जिसमें रेह का भाग अधिक रहता है।

खाबड़-खूबड़-(हिं. वि.) ऊँचा-नीचा, असमतल।

खाभा-(हिं.पुं.) चौड़े मुँह का मिट्टी का पात्र।

खाम-(हिं. पुं.) टाँका, जोड़, लिफाफा।

खामखाह-(हिं.अव्य.) अपने आप, स्वतः।

खामना-(हिं.क्रि.स.) लिफाफे में डालकर वन्द करना, गीली मिट्टी या आटे से किसी पात्र का मुँह वन्द करना।

खामी-(फा. स्त्री.) कमी, त्रुटि, दोष।

खामोश-(फा. वि.) चुप, धैर्यवान्।

खामोशी-(फा. स्त्री.) चुप्पी, धैर्य।

खार-(हिं. पुं.) क्षार, नमक, सज्जी, रेह, धूलि, एक प्रकार की झाड़ी; (फा. पुं.) ढाह, जलन; (मुहा.) -खाना-स्वभावतः वैर रखना।

खारक-(हिं. पुं.) छोहारा।

खारा-(हिं वि.) नमकीन, कड़ुवा, स्वाद में बुरा लगनेवाला; (पुं.) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा, घास-भूसा वाँधने का जाल, आम तोड़ने का जालीदार थैला, झावा, खाँचा, बड़ा पिंजड़ा।

खारिक-(सं.पुं.) छोहारे का वृक्ष या फल।

खारिज-(अ.वि.) न्यायालय द्वारा अभियोग या मुकदमा रद्द किया हुआ; नाम आदि काटकर वाहर निकाला गया।

खारी-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का नोन; (वि. स्त्री.) खारा, नमकीन।

खारुआँ-(हिं. वि., पुं.) एक प्रकार का लाल रंग जो मोटे कपड़ों के रँगने में प्रयुक्त होता है, इस रंग में रँगा हुआ मोटा कपड़ा।

खाल-(हिं. स्त्री.) त्वचा, चमड़ा धाधा चरसा, भाथी की धौंकनी, शव, नीची भूमि, खाड़ी, गहराई, नाला; (मुहा.) -उधेड़ना या खींचना-बहुत मारना।

खालसा-(हिं. वि.) जो एक ही के अधिकार में हो, सरकारी, राज्य का; (पुं.) गुरु नानक का चलाया हुआ एक सिक्ख सम्प्रदाय; (मुहा.)-करना-राज्य द्वारा अपने अधिकार में किया जाना।

खाला-(हिं वि.) निम्न, नीचा।

खालिस-(अ.वि.) शुद्ध, विशुद्ध, अमिश्रित।

खाली-(अ. वि.) रिक्त, अपूर्ण, जो भरा न हो, रीता, रिक्त; (मुहा.) **निशाना या वार खाली जाना**-तीरंदाज या वंदूकची का निशाना चूकना; हाथ खाली होना-हाथ म रुपया-पैसा न होना; -दिन-(पुं.) अशुभ या अलाभकर दिन; -पेट-(वि.) भूखा; -हाथ-(पुं.) पास में पैसे न होने की स्थिति।

खास-(अ. वि.) अपना, निजी, मुख्य, प्रधान; -कर-(अव्य.) विशेषतः।

खासगी-(हिं. वि.) निजी, अपना।

खासा-(हिं. वि.) उत्तम, अच्छा, नीरोग, स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल, मध्यम श्रेणी का, सम्पूर्ण, पूरा, भरपूर, उपयोगी।

खासियत-(अ. स्त्री.) निजी प्रकृति, स्वभाव, दोष, गुण आदि।

खिंगरी-(हिं. स्त्री.) मोयनदार छोटी पतली नमकीन पूरी, मठरी।

खिंचना-(हिं. क्रि. अ.) आकर्षित होना, घसीटा जाना, निकलना, वाहर होना, तनना, चढ़ना, महँगा होना, विगड़ना, पहुँचना, वन्द होना, रुकना, जाना, खपना, अर्क निकलना, प्रवृत्त होना, चुसना, चित्रित होना, प्रेम कम होना, माल का चलान होना, अच्छा न लगना।

खिंचवाना-(हिं. क्रि. स.) खींचने का काम दूसरे से कराना।

खिंचाई-(हिं. स्त्री.) खींचने की क्रिया, खींचने का वेतन।

खिंचाना-(हिं.क्रि.स.) देखें 'खिंचवाना'।

खिंचाव-(हिं. पुं.) देखें 'खिंचाई'।

खिचड़वार-(हिं.पुं.) खिचड़ी दान करने का दिन, मकर संक्रान्ति।

खिचड़ी-(हिं. स्त्री.) दाल और चावल का मेल, दाल और चावल मिलाकर पकाया हुआ भोजन, विवाह की एक प्रथा जिसमें वरातियों को कच्ची रसोई खिलाई जाती है, दो मिली हुई वस्तुएँ, मकर संक्रान्ति; (वि.) मिश्रित, मिला हुआ; (मुहा.) -पकाना-गुप्त रूप से कोई सलाह करना; -बोली या भाषा-(स्त्री.) दो या अधिक भाषाओं का मिश्रण या ऐसा प्रयोग।

खिच्चड़-(हिं. पुं.) देखें 'खिचड़ी'।

खिजमत-(हिं. स्त्री.) देख 'खिदमत'।

खिजलाना-(हिं. क्रि. अ., स.) खीजना, चिढ़ाना, छेड़ना।

खिजाब-(अ. पुं.) पके वालों को काला करनेवाला अस्थायी लेप।

खिझ-(हिं. स्त्री.) देखें 'खीझ'।

खिझना-(हिं. क्रि. अ.) खीझना, चिढ़ना; (वि.) चिढ़नेवाला।

खिझाना-(हिं.क्रि.स.) चिढ़ाना, तंग करना।

खिड़कना-(हिं. क्रि. अ.) खिसकना, सरकना, चले जाना।

खिड़काना-(हिं.क्रि.स.) हटाना, टालना।

खिड़की-(हिं. स्त्री.) छोटा गुप्तद्वार, झरोखा; -दार-(वि.) जिसमें खिड़की या खिड़कियाँ हों।

खिताब-(अ. पुं.) पदवी, उपाधि।

खिताबी-(फा. वि.) खिताब-संबंधी।

खिदमत-(फा. स्त्री.) सम्मान, सेवा, आवभगत।

खिदमतगार-(फा. पुं.) खिदमत या सेवा करनेवाला नौकर।

खिदमती-(फा. वि.) खिदमत करनेवाला, सेवक।

खिन्न-(सं. वि.) उदासीन, खेदयुक्त, अप्रसन्न, चिन्तित, असहाय।

खिपना-(हिं. क्रि. अ.) लीन होना, खपना।

खियाना-(हिं.क्रि.अ.,स.) घिस जाना, रगड़ खाना, मिटना, खिलाना, भोजन कराना।

खिरनी-(हिं. स्त्री.) क्षीरिणी वृक्ष, एक ऊँचा वृक्ष जिसके निमकौड़ी के समान फल खाये जाते हैं।

खिरैंटी-(हिं. स्त्री.) वरियारा, वीजवन्ध।

खिलकौरी-(हिं.स्त्री.) खेल-कूद, खिलवाड़।

खिलखिलाना-(हिं. क्रि अ.) अट्टहास करना, सशब्द हँसना।

खिलजी-(पुं.) पठानों का एक राजवंश जिसने १२वीं से १४वीं शताब्दी तक भारतवर्ष पर शासन किया था; -वंश-(पुं.) खिलजी राजवंश।

खिलना-(हिं. क्रि. अ.) फूलना, कली की पंखुड़ियाँ खुलना, विकसित होना, अच्छा लगना, शोभित होना, उचित जान पड़ना, अलग-अलग होना, बीच से फटना

खिलवाड़-(हिं. पुं.) हँसी-खेल, ठट्ठा।

खिलवाना-(हिं. क्रि. स.) भोजन कराना, खाना दिलवाना, प्रसन्न करना, अच्छी तरह भूनना।

खिलाई-(हिं. स्त्री.) भोजन-क्रिया

खाना-पीना, खिलाने की क्रिया, बच्चों को खेलानेवाली दाई।
खिलाड़ी–(हिं. पुं.) खेल करनेवाला, खेलनेवाला, जादूगर।
खिलाना–(हिं. क्रि. स.) भोजन कराना, फुलाना, विकसित करना, खेल में लगाना; –पिलाना–(क्रि.स.) खूब खाने-पीने को देना।
खिलाफ–(अ. वि.) उलटा, विपरीत।
खिलाफत–(अ. स्त्री.) खलीफा का पद।
खिलौना–(हिं.पुं.) क्रीड़ा-द्रव्य, लड़कों के खेलने का पदार्थ।
खिलौरी–(हिं. स्त्री.) भूने हुए अनेक प्रकार के बीज जो नमक-मिर्च मिलाकर खाये जाते हैं।
खिल्ली–(हिं. स्त्री.) हँसी, ठिठोली, पान का बीड़ा, गिलौरी, कील, काँटा; (मुहा.)–उड़ाना–उपहास करना।
खिसकना–(हिं.क्रि.अ.) खसकना, हट जाना।
खिसाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'खिसियाना'।
खिसियाना–(हिं. क्रि. अ.) लजाना, क्रोध करना; (वि.) लज्जित।
खिसी–(हिं. स्त्री.) लज्जा, शर्म, ढिठाई।
खिसौंहा–(हिं. वि.) लज्जित के सदृश।
खींच–(हिं. स्त्री.) आकर्षण, खिंचाव; –तान–(स्त्री.) उलट-पलट, धींगा-धींगी, दो मनुष्यों की परस्पर छीना-छीनी।
खींचना–(हिं.क्रि.स.) आकर्षण करना, घसीटना, निकालना, खोलना, भरना, हिलाना, वशीभूत करना, चलाना, लगाना, पीना, चुवाना, टपकाना, निःसार करना, रोकना, चित्र बनाना, माँगना, लिखना, तानना, ऐंचना, भभके से अर्क निकालना; (मुहा.) दर्द खींचना–पीड़ा हटाना; हाथ खींचना–कोई कार्य करना रोक देना।
खींचा-खींची–(हिं.स्त्री.) देखें 'खींचा-तानी'।
खींचा-तानी–(हिं. स्त्री.) देखें 'खींचतान'।
खीज–(हिं. स्त्री.) चिढ़, झल्लाहट, चिढ़ाने की बात।
खीजना–(हिं.क्रि.अ.) चिढ़ना, झुंझलाना, खिजलाना।
खीझ–(हिं. स्त्री.) देखें 'खीज'।
खीझना–(हिं.क्रि.अ.) चिढ़ना, खिजलाना।
खीन–(हिं. वि.) देखें 'क्षीण'।
खीर–(हिं. स्त्री.) एक खाद्य पदार्थ जो दूध में चावल पकाकर तथा चीनी, मेवे आदि डालकर बनता है; (मुहा.) –चटाना–बालक का अन्नप्राशन संस्कार जिसमें उसको खीर चटाई जाती है;
–मोहन–(पुं.) छेने की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।
खीरा–(हिं.पुं.) ककड़ी की जाति का एक फल।
खील–(हिं. स्त्री.) कील, काँटा, लाई भूना हुआ धान, लावा, एक प्रकार का गहना जो कान या नाक में पहिना जाता है, बहुत दिनों पर जोती जाने-वाली भूमि।
खीलना–(हिं.क्रि.स.) खील लगाना, गाँठना।
खीला–(हिं. पुं.) बड़ा काँटा या कीला।
खीली–(हिं. स्त्री.) पान का बीड़ा, खिल्ली, गिलौरी।
खीवन–(हिं.स्त्री.) उन्मत्तता, पागलपन।
खीवर–(हिं. पुं.) वीर पुरुष।
खीस–(हिं. वि.) नष्ट, उजाड़; (स्त्री.) अप्रसन्नता, चिढ़, क्रोध, बिगाड़, लज्जा, ओंठ, ओंठ के बाहर निकले हुए दाँत, खिसियाहट; (मुहा.) –काढ़ना,–निकालना–बेढंगी हँसी हँसना।
खीसा–(हिं.पुं.) थैला, जेब, थैली, खीस।
खुँटकढ़वा–(हिं. पुं.) कान का खूँट निकालनेवाला।
खुँडला–(हिं. पुं.) गिरा-पड़ा झोपड़ा।
खुँदाना–(हिं.क्रि.स.) कुदाना, नचाना।
खुक्ख, खुक्खा–(हिं. वि.) खाली, छूछा, जो धनहीन हो गया हो।
खुखड़ी–(हिं.स्त्री.) कुकड़ी, नेपाली कटार।
खुचुर–(हिं.स्त्री.) व्यर्थ का दोष लगाना।
खुजलाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) रगड़ना, नख से घिसना, खुजली उठना, सुरसुरी होना।
खुजलाहट–(हिं.स्त्री) खुजली, सुरसरी।
खुजाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'खुजलाना'।
खुटक–(हिं.स्त्री.) खटका, चिन्ता, आशंका।
खुटकना–(हिं.क्रि.अ.,स.) किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ लेना, सिरा कपटना, खुटका होना।
खुटका–(हिं. पुं.) देखें 'खुटक'।
खुटचाल–(हिं. स्त्री.) बुरी चाल, दुष्टता।
खुटचाली–(हिं. वि.) दुष्ट, उपद्रवी, दुराचारी।
खुटना–(हिं.क्रि.अ.) खुलना, अलग रहना, साथ छोड़ना, पूरा या समाप्त होना।
खुटपन, खुटपना–(हिं.पुं.) खोटापन, बुराई।
खुटाई–(हिं. स्त्री.) खोटापन, बुराई।
खुटाना–(हिं. क्रि. अ.) समाप्त होना।
खुटिला–(हिं.पुं.) कान का एक आभूषण, करनफूल।
खुटेरा–(हिं. पुं.) खैर का वृक्ष।
खुट्ट–(हिं. वि.) पृथक्, अलग।
खुट्टी–(हिं. स्त्री.) रेवड़ी नामक मिठाई।
खुट्ठी–(हिं.स्त्री.) घाव पर जमी हुई पपड़ी।
खुड्डी, खुड्ढी–(हिं. स्त्री.) पायखाने में का गड्ढा।
खुत्था–(हिं. पुं.) ठूंठ, बोटा, पेड़ को काट डालने पर इसका भूमि के ऊपर का भाग।
खुत्थी–(हिं. स्त्री.) ज्वार, अरहर इत्यादि के पौधे का वह अंश जो पौधा कट जाने पर खेत में रह जाता है, खूँटी, धरोहर, थाती, रुपया रखने की थैली, सम्पत्ति, धन।
खुद–(फा. अव्य.) स्वयं, आप।
खुदकाश्त–(फा. स्त्री.) भूमिधर की निजी जोत की जमीन।
खुदगरज–(फा. वि.) अपना स्वार्थ या मतलब साधनेवाला।
खुदगरजी–(फा. स्त्री.) स्वार्थपरता।
खुदना–(हिं. क्रि. अ.) खोदा जाना।
खुद-ब-खुद–(फा. अव्य.) आपसे आप।
खुदरा–(हिं.पुं.) क्षुद्र वस्तु, फुटकर पदार्थ।
खुदवाई–(हिं. स्त्री.) खुदवाने का काम खुदवाने का वेतन।
खुदवाना–(हिं. क्रि. स.) खोदने का काम दूसरे से कराना।
खुदा–(फा. पुं.) ईश्वर, स्वयंभू।
खुदाई, खुदाव–(हिं. स्त्री., पुं.) खोदने का काम या वेतन।
खुद्दी–(हिं. स्त्री.) कण, किनका, अन्न के छोटे टुकड़े।
खुनखुना–(हिं. पुं.) बालकों का बजने-वाला खिलौना, झुनझुना, घुनघुना।
खुनस–(हिं.स्त्री.) क्रोध, बिगाड़, अनबन।
खुनसाना–(हिं. क्रि. अ.) क्रुद्ध होना।
खुनसी–(हिं. वि.) क्रोधी।
खुफिया–(फा. वि.,पुं.) गुप्त, गुप्तचर; –पुलिस–(पुं.) अपराध का गुप्त रूप से पता लगानेवाले पुलिस अधिकारी।
खुभना–(हिं.क्रि.अ.) चुभना, धँसना, घुसना।
खुभराना–(हिं.क्रि.अ.) उपद्रव करने के लिये इधर-उधर घूमना।
खुभी–(हिं.स्त्री.) कान में पहिनने की लौंग।
खुमान–(सं.वि.) दीर्घायु, बड़ी आयुवाला।
खुमार–(हिं. पुं.) देखें 'खुमारी'।
खुमारी–(हिं. स्त्री.) रातभर जागने या नशा उतरने पर आनेवाला आलस्य।
खुमी–(हिं. स्त्री.) क्षुद्र उद्भिजों की एक जाति जिसमें पत्ते या फूल नहीं लगते; यथा–भुईंफोड़, कुकुरमुत्ता इत्यादि।
खुरंड–(हिं.स्त्री.) घाव पर की सूखी पपड़ी।
खुर–(सं. पुं.) सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप, नखी नामक औषधि।

खुरक–(हिं.स्त्री.) खटका, सोच-विचार।
खुरखुर–(हिं.पुं.) कण्ठ का घरघर शब्द।
खुरखुरा–(हिं. वि.) ऊँचा-नीचा, खुरदरा, गड़नेवाला।
खुरखुराना–(हिं.क्रि.अ.) खुरखुर करना, घरघराना, गड़ना, ऊँचा-नीचा होना।
खुरखुराहट–(हिं. स्त्री.) कण्ठ से होनेवाला शब्द जो गले में कफ रुकने से होता है, खुरखुरापन।
खुरचन–(हिं.स्त्री.) खुरचकर निकाली हुई वस्तु, दूध की कड़ी मलाई जो औटाते समय कड़ाही में चिपक जाती है।
खुरचना–(हिं. क्रि. स.) किसी जमी हुई वस्तु को छुरी इत्यादि से अलगाना, खरोचना, करोना।
खुरचनी–(हिं. स्त्री.) खुरचने का औजार, खुरचकर निकाला हुआ पदार्थ।
खुरचाल–(हिं. स्त्री.) बुरा आचरण।
खुरचाली–(हिं.वि.) उपद्रवी, बखेड़िया।
खुरजी–(हिं. स्त्री.) अवारी, बड़ा थैला, घोड़े, बैल आदि की पीठ पर सामग्रियाँ लादने का थैला।
खुरतार–(हिं. स्त्री.) खुर का आघात, टाप की चोट।
खुरपका–(हिं. पुं.) चौपायों का एक रोग जिसमें इनके मुख तथा खुर में दाने निकल आते हैं।
खुरपा–(हिं.पुं.) घास छीलने की बड़ी खुरपी।
खुरमा–(फा. पुं.) एक प्रकार की मैदे की मिठाई।
खुर(रा)सानी–(सं. स्त्री.) खुरासान की अजवाइन।
खुरहर–(हिं.स्त्री.) मार्ग में खुर का चिह्न, पगडंडी।
खुराई–(हिं. स्त्री.) चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी।
खुराक–(फा.स्त्री.) भोजन, खाना, आहार।
खुराकी–(फा. वि., स्त्री.) खुराक के लिए दिया जानेवाला (अन्न)।
खुराफात–(अ. स्त्री.) झगड़ा, बखेड़ा, गाली-गलौज, बेहूदगी।
खुरायल–(हिं. पुं.) बोने के लिये तैयार किया हुआ खेत।
खुराही–(हिं. स्त्री.) ऊँचा-नीचा रास्ता।
खुरिया–(हिं.स्त्री.) कटोरी, छोटा प्याला।
खुरी–(हिं. स्त्री.) खुर का चिह्न।
खुरुक–(हिं. स्त्री.) देखें 'खुरक'।
खुरुचनी–(हिं. स्त्री.) खुरची जानेवाली या खुरचनेवाली वस्तु, खुरचनी।
खुर्राट–(हिं. वि.) वृद्ध, बूढ़ा, पुराना, अनुभवी, चतुर।
खुलना–(हिं. क्रि. अ.) उद्घाटित होना, हटना, उघड़ना, वन्द न रहना, विदीर्ण होना, फटना, चिरना, कटना, निकलना, जारी होना, टूटना, सरकना, ठहरना, जान पड़ना, देखने में अच्छा लगना, भला जान पड़ना, भेद कहना, सजना, कार्य आरम्भ होना।
खुलवा–(हिं. पुं.) गली हुई धातु को ढालने के लिये साँचे में भरनेवाला।
खुलवाना–(हिं.क्रि.स.) खोलने का काम दूसरे से कराना।
खुला–(हिं. वि.) अबद्ध, जो बँधा या बंद न हो, अवरोधहीन, बिना रुकावट का, स्पष्ट, प्रकट, जो छिपा न हो।
खुलेआम–(हिं. अव्य.) सब के सम्मुख, प्रकट में।
खुल्लक–(सं. वि.) कनिष्ठ, छोटा, दरिद्र, निष्ठुर।
खुल्लम-खुल्ला–(अ. अव्य.) प्रकट रूप से, सब के सामने।
खुश–(फा.वि.) प्रसन्न, सुखी, आनन्दित।
खुशकिस्मत–(फा. वि.) भाग्यवान्।
खुशकिस्मती–(फा. स्त्री.) सौभाग्य।
खुशखबरी–(फा. स्त्री.) शुभ या अच्छी खबर।
खुशदिल–(फा. वि.) प्रसन्न रहनेवाला।
खुशबू–(फा. स्त्री.) सुगन्ध।
खुशबूदार–(फा. वि.) सुगंधित।
खुशमिजाज–(फा. वि.) प्रसन्नचित्त।
खुशमिजाजी–(फा. स्त्री.) मानसिक प्रसन्नता, खुशी।
खुशहाल–(फा. वि.) सुखी, संपन्न।
खुशामद–(फा. स्त्री.) चापलूसी, खुश करने की बातें, झूठी प्रशंसा।
खुशामदी–(फा. वि.) चापलूस, खुशामद करनेवाला; (मुहा.) –टट्टू–खुशामद करके जीविका अर्जन करनेवाला।
खुशी–(फा. स्त्री.) प्रसन्नता, मरजी, इच्छा; -खुशी–(अव्य.) प्रसन्नतापूर्वक; (मुहा.)–से फूल उठना–अति प्रसन्न होना।
खुश्क–(फा. वि.) सूखा, रूखा।
खुश्की–(फा. स्त्री.) सूखापन, रूखापन, [illegible]
खुसाल–(हिं. वि.) आनन्दित, [illegible]
खूँखार–(फा. वि.) खून [illegible] जंगली पशु, क्रूर, निर्दय। [illegible]
खूँट–(हिं. पुं.) प्रान्त, भा[illegible] कोनों पर भारी पत्थर जो [illegible] लगाया जाता है [illegible]
की मैल; (स्त्री.) रोकटोक।
खूँटना–(हिं. क्रि. स.) टोकना, पूछताछ करना, छेड़ना, घटना, कम होना, खोंटना।
खूँटा–(हिं. पुं.) मेख, पशु बाँधने के लिये भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी या बाँस का टुकड़ा; (मुहा.)–गाड़ना–अड्डा जमा लेना।
खूँटी–(हिं. स्त्री.) छोटा खूँटा या मेख, डंठल, गुल्ली, अंटी, निकलनेवाले बालों का सिरा, सीमा, छोर, मेख के आकार की लकड़ी।
खूँथी–(हिं. स्त्री.) कटे पौधे की छोटी खूँटी, खुत्थी।
खूँद–(हिं. पुं.) थोड़े स्थान में घोड़े का इधर-उधर चलना या पैर पटकना।
खूँदना–(हिं. क्रि अ., स.) पैर उठा-उठाकर उसी जगह पटकना, नाचना, रौंदना, कुचलना।
खूखी–(हिं. स्त्री.) पौधों को नाश करनेवाला एक कीड़ा, गेरुई।
खूझा–(हिं. पुं.) फल के भीतर का रेशेदार भाग।
खूटना–(हिं. क्रि. अ., स.) खण्डित होना, रुकना, चुकना, कम पड़ना, चिढ़ाना, हँसी उड़ाना, दिक करना, बन्द होना।
खूद, खूदड़, खूदर–(हिं.पुं.) मैल, तलछट।
खून–(फा. पुं.) रक्त, रुधिर, हत्या, कतल; (मुहा.) (आँखों में) खून उतरना–क्रोध से आँखें लाल होना; –उबलना या खौलना–गुस्सा चढ़ना; –का जोश–युवावस्था, प्रेम, वंश या कुल के कारण उत्पन्न होनेवाला उमंग; –का दौरा–रक्त का संचार; –का प्यासा–जान मारने को उद्यत; –के आँसू रोना–बहुत अधिक रोना; –के घूँट पीना–अत्यधिक क्रोध को दबा लेना; –पानी एक करना–नृशंस जनहत्या करना; –बहाना–रक्तपात करना; –सिर पर चढ़ना–खूनी के चेहरे से उसके अपराध का इंगित मिलना।
खून-खराबा(बी)–(फा. पुं., स्त्री.) रक्तपात, हत्या।
खूनी–(फा. वि.) जान मारनेवाला, हत्यारा, कातिल; –बवासीर–(स्त्री.) वह बवासीर जिसमें मस्से से खून निकलता है।
खूब–(फा. वि.) अच्छा, उमदा, उत्तम।
खूबसूरत–(फा. वि.) सुन्दर।
खूबसूरती–([illegible]स्त्री.) सुन्दरता।
खूबी–([illegible]) अच्छाई, भलाई,

विशेषता, गुण।
खूसट–(हिं. पुं.) उल्लू, घुघ; (वि.) गँवार, अरसिक।
खेक(ख)सा–(हिं. पुं.)परवर के आकार का फल जिसकी तरकारी खाई जाती है।
खेचर–(सं.पुं.) शिव, विद्याधर, पारा, सूर्य आदि ग्रह, मेष आदि राशियाँ, कसीस, पक्षी, चिड़िया, घोड़ा, वायु, देवता, बादल, राक्षस; (वि.) आकाशगामी।
खेचरी गुटिका–(सं. स्त्री.) एक मन्त्र-सिद्ध गोली जिसको मुँह में रखने पर मनुष्य पक्षी की तरह उड़ सकता है।
खेचरी मुद्रा–(सं.स्त्री.)एक तन्त्रोक्त मुद्रा जिसमें जीभ उलटकर तालु में लगाई जाती है तथा दृष्टि दोनों भौंहों के बीच में स्थिर की जाती है।
खेट–(सं. पुं.) सूर्य आदि ग्रह, चमड़ा, आखेट, कफ, घोड़ा, किसानों का गाँव, खेड़ा।
खेटक–(सं. पुं.) गाँव, ढाल, आखेट।
खेटकी–(सं. पुं.) ज्योतिषी, बहेलिया।
खेड़ा–(हिं. पुं.) छोटा गाँव।
खेड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का देशी लोहा, मांस का टुकड़ा जो जरायुज जीवों के प्रसूत बच्चों के नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।
खेत–(हिं. पुं.) क्षेत्र, जोतने-बोने की भूमि, स्थान, जगह, समर-भूमि, कृषि, फसल, तलवार का फल;(मुहा.)–**आना**–युद्धक्षेत्र में वीरगति प्राप्त करना; –**कमाना**–जुताई करके खाद आदि डालकर खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाना; **करना**–भूमि समतल बनाना;–**काटना**–खड़ी फसल चोरी से काटना; –**रहना**–युद्ध में मारा जाना।
खेतिहर–(हिं. पुं.) कृषक, किसान, खेती करनेवाला।
खेती–(हिं. स्त्री.) खेत में अन्न बोने का कार्य, कृषि, किसानी, खेत में लगा हुआ कृषिफल।
खेतीबारी–(हि.स्त्री.)कृषिकार्य,किसानी।
खेद–(सं.पुं.)अप्रसन्नता,शोक,थकावट, रोग, शिथिलता; –**जनक**–(वि.) खेदकर, दुःखदायी, शोचनीय।
खेदना–(हिं. क्रि. स.)खदेड़ना, भगाना, मारकर हटाना, पीछा करना।
खेदा–(हिं. पुं.) शिकार में किसी जंगली पशु को पकड़ने या वध करने के लिये खदेड़कर किसी निर्धारित स्थान पर ले जाना, शिकार, आखेट।
खेदाई–(हिं. स्त्री.) खदेड़ने का कार्य।
खेदित–(सं. वि.) दुःखित, शिथिल।
खेना–(हिं.क्रि.स) नाव चलाने के लिये डाँड़े को पानी में चलाना,निर्वाह करना, पार लगाना,समय बिताना।
खेप–(हिं.स्त्री.) बोझ, लदान, चलान, उतनी वस्तु जो एक बार ढोकर ले जाई जाती है, फेरा या खेवा।
खेपना–(हिं. क्रि. स.)काटना,बिताना।
खेमटा–(हिं.पुं.)छः या चार मात्राओं का एक ताल, इस ताल पर होनेवाला नाच या गाना।
खेमा–(अ. पुं.) तंबू, डेरा, पड़ाव।
खेल–(हिं. पुं.) केलि, क्रीड़ा, उछल-कूद, दौड़-धूप, काम, हलका काम, खिलवाड़, स्वाँग, अभिनय, विचित्र लीला, निरालापन; (मुहा.)–**खेलना**–चालबाजी करना; **खेलना-खालना**–निर्द्वन्द्व जीवन बिताना; –**खेलाना**–बेकार का काम करना, कष्ट देना, तंग करना; –**बिगाड़ना**–बना-बनाया काम चौपट करना; –**समझना या जानना**–कोई काम बहुत सहज या आसान समझना।
खेलक–(हिं. पुं.) खेलनेवाला, खेलाड़ी।
खेल-कूद–(हिं. स्त्री.) खेल, क्रीड़ा।
खेलन–(सं. पुं.) क्रीड़ा, खेल, खेलने की वस्तु।
खेलना–(हिं. क्रि. अ.) खेल करना, भूत चढ़ना, विहार करना, घूमना-फिरना, अभिनय दिखलाना, स्वाँग बनाना; (मुहा.) **जान पर खेलना**–ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो।
खेलवाड़–(हिं. पुं.) हँसी, खेलकूद, क्रीड़ा, खेल।
खेलवाड़ी–(हिं. वि.) बहुत खेलकूद करनेवाला।
खेलाड़ी–(हिं. वि.) खेलनेवाला, खेलैया, जुआरी, खेल में सम्मिलित होनेवाला, संसार को बनाने-बिगाड़नेवाला परमेश्वर।
खेलाना–(हिं.क्रि.स.)क्रीड़ा में किसी को प्रवृत्त करना, खेल में लगाना, बहकाना; (मुहा.)**खेला-खेलाकर मारना**–बहुत साँसत देकर मारना।
खेलौना–(हिं. पुं.) देखें 'खिलौना'।
खेवक–(हिं. पुं.) नाव खेनेवाला, केवट, मल्लाह।
खेवट–(हिं. पुं.) पटवारी का एक कागज जिसमें हर एक जमीदार की भूमि का हिसाब लिखा रहता था।
खेवनहार–(हिं. पुं.) खेनेवाला, पार लगानेवाला।
खेवा–(हिं. पुं.) नाव का किराया, बार, भरी हुई नाव।
खेवाई–(हिं. स्त्री.) नाव चलाने का काम, नाव पर चढ़ने का किराया, नाव खेने का शुल्क।
खेस–(हिं. पुं.) मोटे सूत का लंबा चदरा।
खेसारी–(हिं. स्त्री.) एक कदन्न, लतरी।
खेह–(हिं.स्त्री.) धूल, मिट्टी; (मुहा.) –**खाना**–वृथा समय नष्ट करना।
खैंचना–(हिं. क्रि.स.) खींचना।
खैबर–(हिं. पुं.) हिन्दुस्तान और अफगानिस्तान के बीच यातायातोपयोगी पहाड़ी दर्रा।
खैर–(हिं. पुं.) खदिर वृक्ष, बबूल की जाति का एक वृक्ष, इसकी लकड़ी से निकला हुआ रस, कत्था, बित्ता भर लंबा एक भूरे रंग का पक्षी।
खैर–(अ. स्त्री.) कुशल, भलाई, नेकी।
खैरखाह–(फा.वि.) शुभचिंतक, कुशलाकांक्षी।
खैरा–(हिं. वि.) खैर के रंग का, कत्थई रंग का; (पुं.) धान का एक रोग।
खैरात–(फा.स्त्री.)दान-पुण्य,भिक्षादान।
खैराती–(फा. वि.) धर्मार्थ संचालित, दातव्य।
खैरि(रीं)यत–(फा.स्त्री.) कुशल-मंगल, कल्याण, भलाई।
खैलर–(हिं. स्त्री.) मन्थन-दण्ड, मथानी।
खैला–(हिं. स्त्री.) खैलर।
खोंइछा–(हिं. पुं.) स्त्रियों का आँचल।
खोंखना–(हिं. क्रि अ.) खाँसना, खों खों करना।
खों-खों–(हिं. पुं.) खाँसने की आवाज।
खोंगाह–(हिं. पुं.) पीलापन लिये हुए सफेद रंग का घोड़ा।
खोंच–(हिं. स्त्री.) खरोंट, किसी नुकीली वस्तु से शरीर पर आघात, खरोंच, काँटे आदि में फँसकर वस्त्र का फट जाना।
खोंचा–(हिं.पुं.) बहेलिये की लासा लगी हुई लग्गी।
खोंची–(हिं. स्त्री.) मुट्ठीभर द्रव्य, भिक्षुक को दिया जानेवाला थोड़ा-सा अन्न।
खोंट–(हिं. स्त्री.) नोचने या खोंटने की क्रिया, नोचने का चिह्न, खरोंच।
खोंटना–(हिं. क्रि.स.) कपटना, फुनगी तोड़ लेना।

खोंड़र–(हि. पुं.) वृक्ष के भीतर का पोला भाग, कोटर।
खोंड़ा–(हि. वि.) भग्न अंगवाला, जिसके दो-चार दाँत टूट गये हों।
खोंता–(हि. पुं.) नीड़, चिड़िया का घोंसला।
खोंप–(हि. स्त्री.) पसूज, सिलाई का लंवा टाँका, खोंच।
खोंपना–(हि. क्रि. स.) गड़ाना, चुभाना, धँसाना।
खोंपा–(हि. पुं.) हल की लकड़ी, छप्पर का कोना, नारियल का आधा टुकड़ा, गुच्छा या लच्छा।
खोंसना–(हि. क्रि.स.) अटकाना, लगाना, घुसाना।
खोआ–(हि. पुं.) देखें 'खोया'।
खोई–(हि. स्त्री.) रस निकले हुए ऊख के छोटे-छोटे टुकड़े, कम्वल की घोघी, धान का लावा।
खोखल–(हि.वि.) खोखला, पोला।
खोखला–(हि. वि.) पोला, जिसके भीतर कुछ न हो; (पुं.) वृक्ष का कोटर।
खोखा–(हि. पुं.) हुण्डी लिखा हुआ कागज, वालक (वँगला)।
खोज–(हि. स्त्री.) अनुसन्धान, चिह्न, पता, पैर का चिह्न; (मुहा.)–खबर लेना–सुध-बुध लेना या पूछना।
खोजना–(हि. क्रि.स.) अनुसन्धान करना, ढूंढ़ना, पता लगाना।
खोजवाना–(हि. क्रि.स.) ढूंढ़ने का काम दूसरे से कराना।
खोजा–(हि. पुं.) मुसलमान राजाओं के रनवास का नपुंसक नौकर, सेवक, सरदार, मुखिया।
खोजी–(हि. वि.) अनुसन्धान करनेवाला।
खोट–(हि. स्त्री.) दूपण, बुराई, अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु की मिलावट; (वि.) खोटा, बुरा।
खोटा–(हि वि.) दोष या ऐव से भरा, दूषित, घटिया, अशुद्ध; –खरा–(वि.) भला-बुरा; –सिक्का–(पुं.) जाली या नकली सिक्का; (मुहा.) खरी खोटी सुनाना–डाँटना-डपटना, गालियाँ देना।
खोटाई–(हि. स्त्री.) दुष्टता, बुराई, छल-कपट।
खोटापन–(हि.पुं.) दोप, क्षुद्रता, ओछापन।
खोड़–(हि.स्त्री.) दैवकोप, भूत-प्रेत लगना।
खोड़रा–(हि. पुं.) कोटर, दाँत आदि का खोखला भाग।
खोदना–(हि.क्रि.स.) गड्ढा करना, खनकर किसी स्थान की मिट्टी निकालना, खनना, कोंचना, उसकाना, नकाशी करना, छेड़ना, उत्तेजित करना, उभाड़ना; (मुहा.) खोद-खोदकर पूछना-एक-एक वात पूछना।
खोदनी–(हि.स्त्री.) खोदने का छोटा अस्त्र।
खोद-बिनोद–(हि. स्त्री.) जाँच-पड़ताल, छानवीन।
खोदवाना–(हि.क्रि.स.) खोदने का काम दूसरे से कराना।
खोदाई–(हि. स्त्री.) खोदने का काम या वेतन, खोदने का भाव।
खोनचा–(हि. पुं.) थाल या परात जिसम फेरीवाले मिठाई आदि रखकर वेचते हैं।
खोना–(हि.क्रि.स.) पास की वस्तु गँवाना, विगाड़ना, नष्ट करना, भूल से कोई वस्तु कहीं पर छोड़ देना; (मुहा.)–खोया-खोया रहना–बहुत चिंतित और वेसुध रहना।
खोपड़ा–(हि. पुं.) कपाल, सिर, नारियल, नारियल की गरी, नारियल का गोला, भीख माँगने का पात्र।
खोपड़ी–(हि. स्त्री.) कपाल, सिर, मस्तक की हड्डी; (मुहा.) अंधी या औंधी खोपड़ी का–मूर्ख; –खाना या चाट जाना–अधिक वकवाद करके व्यग्र करना; –खाली हो जाना–दिमाग का वेहद थक जाना; –गंजी होना–सिर के वाल झड़ जाना।
खोपा–(हि. पुं.) छप्पर या घर का कोना, स्त्रियों की गुथी हुई चोटी जो तिकोनी होती है, वेणी, जूड़ा, नारियल या गरी का गोला।
खोवा–(हि. पुं.) थापी, पलस्तर करने का एक औजार।
खोभ–(हि. पुं.) देखे 'क्षोभ'।
खोभार–(हि.पुं.) कूड़ा-करकट फेंकने का गड्ढा।
खोया–(हि. पुं.) खूब औटाया हुआ दूध जो पिण्ड-सा हो जाता है, मावा, खोवा।
खोर–(हि. स्त्री.) सँकरी गली, कूचा, पशुओं को चारा खिलाने की नाँद।
खोरना–(हि.क्रि.अ.) स्नान करना, नहाना।
खोरा–(हि. पुं.) कटोरा, पानी पीने का पात्र; (वि.) लँगड़ा, लूला।
खोराक–(हि.स्त्री.) देखे 'खुराक' भोजन।
खोराकी–(हि. स्त्री.) देखें 'खुराकी'।
खोरि, खोरी–(हि. स्त्री.) सँकरा मार्ग, पतली गली, छोटी कटोरी।
खोरिया–(हि. स्त्री.) कटोरी, प्याली।
खोल–(हि. पुं.) आवरण, झूल, ऊपर का आवरण, कीड़े का ऊपरी चमड़ा, मोटे कपड़े की चादर।
खोलना–(हि. क्रि.स.) उद्घाटन करना, अवरोध हटाना, उघाड़ना, विगाड़ना, छेदना, स्थापन करना, आरंभ करना, चलाना, मुक्त करना, तोड़ना, काटना, प्रकाशित करना, वतलाना, प्रश्न पूछना, दरार करना, दनिक कार्य आरंभ करना, गूढ़ वात को प्रगट करना; खोलकर–(अव्य.) स्पष्ट रूप से।
खोली–(हि. स्त्री.) आवरण।
खोवा–(हि. पुं.) देखें 'खोया'।
खोह–(हि. स्त्री.) गुफा, कन्दरा, दो पहाड़ों के वीच का संकुचित भाग।
खोही–(हि. स्त्री.) पत्तों का बना हुआ छाता, घोघी।
खौं–(हि. स्त्री.) गड्ढा, अन्न रखने की खत्ती।
खौंचा–(हि. पुं.) साढ़े छः का पहाड़ा, मिठाई आदि रखने का सन्दूक।
खौर–(हि.स्त्री. वा पुं.) त्रिपुण्ड, चन्दन का टीका, स्त्रियों का मस्तक पर पहिनने का एक आभूषण।
खौरना–(हि.क्रि.स.) खौर लगाना, चंदन का तिलक लगाना, नष्ट करना।
खौरहा–(हि. वि.) गंजा, जिसके सिर के वाल झड़ गय हों, जिस पशु के शरीर में खुजली हुई हो।
खौरा–(हि. वि., पुं.) एक प्रकार की खुजली जिसमें चमड़ा रूखा पड़ जाता है, खौरा से पीड़ित (पशु)।
खौलना–(हि.क्रि.अ.) गरम होकर चुरना; उवलना।
खौलाना–(हि. क्रि. स.) उवालना, जल, दूध आदि खूब गरम करना।
ख्यात–(सं. वि.) कथित, प्रसिद्ध।
ख्याति–(सं. स्त्री.) प्रशंसा, प्रसिद्धि, प्रकाश, ज्ञान।
ख्यापक–(सं. वि.) ख्यापन करनेवाला।
ख्यापन–(सं. पुं.) प्रकट या प्रकाशित करने की क्रिया, शुहरत।
ख्याल–(अ. पुं.) ध्यान, स्मरण, विचार, भाव, आदर; (मुहा.)–रखना–ध्यान या याद रखना; –से उतरना–भूल जाना।
ख्याली–(हि.वि.) कल्पित, फर्जी; (मुहा.) –पुलाव पकाना–हवाई किला बनाना, असंभव, रँगीले दिवा-स्वप्न देखना।
ख्रिष्टान–(हि. पुं.) ईसाई, क्रिस्तान।
ख्रिष्टीय–(हि. वि.) ईसाई धर्म-संवंधी।
ख्रीष्ट–(हि. पुं.) ईसामसीह, हजरत ईसा।

ख्वाजा–(फा. पुं.) सरदार, मालिक, मुसलमान फकीर, खोजा।
ख्वाब–(फा. पुं.) सपना, स्वप्न।
ख्वाहिश–(फा.स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा; –मंद–(वि.) इच्छुक, आकांक्षी।

ग

ग–कवर्ग का तीसरा व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (सं.पुं.) गीत, गणेश, गन्धर्व, एक गुरु वर्ण; (वि.) गानेवाला, जानेवाला।
गंग–(हिं. स्त्री.) गंगा; (पुं.) भक्ति-काल के एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि।
गंगबरार–(हिं. पुं.) गंगा या अन्य नदी की धारा या बाढ़ के हटने से निकली हुई भूमि या रेती।
गंगशिकस्त–(हिं. पुं.) वह जमीन जिसको नदी की बाढ़ ने काट दी।
गंगा-गति–(सं. स्त्री.) गंगा में अन्त्येष्टि क्रिया।
गंगा-जमुनी–(हिं. वि.) दो-रंगा, दो-धातुओं का बना हुआ।
गंगा-जल–(सं. पुं.) गंगा का पानी।
गंगाजली–(हिं. स्त्री.) गंगा का जल भरने का पात्र; (मुहा.)–उठाना–गंगाजली हाथ में लेकर कसम खाना।
गंगाधर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
गंगापुत्र–(सं. पुं.) भीष्म, गंगा के किनारे दान लेनेवाले ब्राह्मण।
गंगालाभ–(सं. पुं.) गंगा-गति।
गंगा-सागर–(सं. पुं.) हिन्दुओं का एक तीर्थ जहाँ गंगा का सागर-संगम होता है।
गंगोटी–(हिं. स्त्री.) गंगा नदी की मिट्टी।
गंगोदक–(सं. पुं.) गंगा जल।
गंगोलिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नीबू।
गंज–(हिं. पुं.) सिर के बाल गिरने का रोग, चँदलाई; (फा. स्त्री.) कोश, खजाना, गल्ले की मंडी, बाजार।
गंजन–(सं. पुं.) तिरस्कार, कष्ट, नाश।
गंजा–(हिं. पुं.) गंज रोग।
गंजाना–(हिं.क्रि.स.) गांजने का काम दूसरे से कराना।
गंजिया–(हिं. स्त्री.) घसियारे की घास भरने की जालीदार थैली।
गंजी–(हिं. स्त्री.) कमीज के नीचे पहनने की बनियाइन या छोटी और कम कुर्ती; (पुं.) देखें 'गंजेड़ी'।
गंजेड़ी–(हिं. वि., पुं.) गांजा पीनेवाला।
गंठकटा–(हिं. पुं.) कपड़े काटकर रुपये-पैसे निकाल लेनेवाला चोर, गिरहकट।
गँठबंधन–(हिं. पुं.) ग्रन्थिबन्धन, विवाह की एक रीति, विवाह, मैत्री, दोस्ती।
गंड–(सं. पुं.) गाल, कपोल, कनपटी, गंडा जो गले में पहना जाता है, मंडलाकार चिह्न, गंडारी, गाँठ।
गंडमाला–(सं. स्त्री.) देखें 'कंठमाला'।
गंडस्थल–(सं. पुं.) कनपटी, कपोल।
गंडा–(हिं. पुं.) मंत्र पढ़कर बाहु में बाँधा जानेवाला सूता, तोते आदि का कंठा; –तावीज–(पुं.) यंत्र-मंत्र, टोटका।
गँड़ासा–(हिं.पुं.) चारा काटने का अस्त्र।
गँडेरी–(हिं. स्त्री.) ऊख के छोटे-छोटे टुकड़े।
गँडोरा–(हिं. पुं.) हरी तथा कच्ची खजूर।
गँदला–(हिं.वि.) गंदा, मैला, अपवित्र।
गंदा–(फा. वि.) मैला, घिनौना, बुरा, ग़लीज़ से भरा।
गँदीला–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
गंध–(सं. स्त्री.) सुगंध, वास, महक।
गंधक–(सं. पुं., स्त्री.) एक जलनेवाला पीला पदार्थ या खनिज।
गंधकी–(हिं. वि.) गंधक के रंग का, हल्का पीला।
गंधबिलाव–(सं. पुं.) नेवले से कुछ बड़ा एक मांसभक्षी पशु।
गंध-मार्जार–(सं. पुं.) गंधबिलाव।
गंधर्व–(सं. पुं.) एक देवयोनि, गायक, कस्तूरी मृग, सूर्य, कोकिल; –विद्या–(स्त्री.) संगीत; –विवाह–(पुं.) आपसी पसंद के द्वारा होनेवाला विवाह; –वेद–(पुं.) संगीत शास्त्र।
गँधाना–(हिं. क्रि. अ.) दुर्गन्ध निकलना।
गँधिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।
गंधी–(सं. पुं.) तेल, इत्र आदि सुगंधित द्रव्य बेचनेवाला, अत्तार, गँधिया कीड़ा।
गँधीला–(हिं. वि.) बुरी गंध देनेवाला।
गंभारी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष।
गंभीर–(सं.वि.) जो बहुत कम बोलता हो, शान्त-चित्त, गहरा, गहन, गूढ़, जटिल; –ता–(स्त्री.) गंभीर होने का भाव।
गँवँ–(हिं. स्त्री.) मौका, अवसर, उपाय, युक्ति, ढंग।
गँवई–(हिं. स्त्री.) गाँव, गाँव की बस्ती।
गँवर-मसला–(हिं. पुं.) ग्रामीण कहावत।
गँवाना–(हिं. क्रि. स.) समय, धन आदि व्यय करना, खोना, बिताना।
गँवार–(हिं. वि.) गाँव का रहनेवाला, ग्राम्य या ग्रामीण, बेवकूफ, अनाड़ी।
गँवारी–(हिं. स्त्री.) गँवारपन, देहातीपन; (वि.) गँवार का-सा, भद्दा।
गँवारू–(हिं. वि.) गाँव का, मोटी रहन-सहन का।
गँसना–(हिं.क्रि.स.) अच्छी तरह कसना, जकड़ना, गाँठना, घनी बुनावट करना।
गँसीला–(हिं. वि.) नोकदार, चुभनेवाला।
गँह–(हिं. पुं.) पकड़ना, ग्रहण।
गई करना–(हिं. क्रि. अ.) तरह देना, छोड़ देना।
गई-बहोर–(हिं. वि.) खोई हुई वस्तु को प्राप्त करानेवाला।
गगन–(सं. पुं.) आकाश, शून्य।
गगन-चर–(सं. वि., पुं.) पक्षी, गगन में विचरनेवाला।
गगन-चुंबी–(सं. वि.) आकाश को छूनेवाला, बहुत ऊँचा (महल)।
गगनभेदी–(सं. वि.) गगनचुंबी।
गगनसिंधु–(सं.पुं.) मन्दाकिनी, आकाश गंगा।
गगन-स्पर्शी–(सं. वि.) गगनभेदी।
गगनांग–(सं.पुं.) मात्रावृत्त का एक भेद।
गगनांगना–(सं.स्त्री.) दिवाङ्गना, अप्सरा।
गगनांबु–(सं.पुं.) गगनोदक, बरसाती पानी।
गगनेचर–(सं. पुं.) देवता, सूर्यादि ग्रह, शशिचक्र।
गगरा–(हिं. पुं.) कलश, कलसा, घड़ा, धातु का अथवा मिट्टी का घड़ा।
गगरी–(हिं. स्त्री.) कलसी, छोटा घड़ा।
गगोरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा।
गच–(हिं.स्त्री.) सीमेन्ट से बनी हुई पक्की भूमि; –कारी–(स्त्री.) गच बनाने का काम; –गीर–(पुं.) गच बनानेवाला।
गचना–(हिं.क्रि.स.) किसी पात्र में कोई वस्तु कसकर भरना।
गचाका–(हिं. पुं.) गिरने का शब्द।
गछना–(हिं. क्रि. अ., स.) चलना, चलाना, अपने ऊपर लेना, निबाहना।
गज–(सं. पुं.) हस्ति, हाथी, एक राक्षस का नाम, रामचन्द्र की सेना का एक बन्दर, आठ की संख्या; (फा. पुं.) लंबाई की एक माप जो तीन फुट के बराबर होती है।
गजकर्ण–(सं. पुं.) एक असुर का नाम, एक प्रकार का पलाश।
गजकर्णी–(सं. स्त्री.) गजपीपल।
गजकुंभ–(हिं. पुं.) हाथी के मस्तक पर का दोनों ओर का उभड़ा हुआ भाग।
गजकुसुम–(सं. पुं.) नागकेशर।
गजकृष्णा–(सं. स्त्री.) बड़ी पीपल।
गजक्रीड़ित–(सं. पुं.) एक प्रकार का नाच।
गजगति–(सं. स्त्री.) हाथी की मन्द

चाल, एक वर्णवृत्त का नाम।
गजगमन–(सं. पुं.) हाथी की तरह मन्द गति।
गजगामिनी–(सं. स्त्री.) हाथी के समान मन्द गति से चलनेवाली स्त्री।
गजगाह–(हिं. पुं.) हाथी की झूल, पाखर।
गजगौन–(हिं. पुं.) देखें 'गजगमन'।
गजचर्म–(सं. पुं.) एक रोग जिसमें शरीर का चमड़ा मोटा और रूखा हो जाता है।
गजचिर्भिट–(सं.पुं.) एक प्रकार का तरबूज।
गजच्छाया–(सं. स्त्री.) सूर्यग्रहण का काल।
गजट–(अ. पुं.) सूचना-पत्र, राजपत्र; (क्रि. प्र.)–**होना**–किसी सूचना का गजट में प्रकाशित होना।
गजदंत–(सं. पुं.) गणेश, नागदन्त, भीत में लगाई हुई खूँटी, हाथी के दाँत के ऊपर जमनेवाला दाँत, वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों।
गजदान–(सं. पुं.) हाथी का मद।
गजना–(हिं. क्रि. अ.) गरजना।
गजनाल–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बड़ी तोप जो प्राचीन काल में हाथी द्वारा खींची जाती थी।
गजनासा–(सं. स्त्री.) हाथी की सूँड।
गजपति–(सं. पुं.) श्रेष्ठ हाथी।
गजपाल–(सं. पुं.) हाथीवान, महावत।
गजपिप्पली–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की बड़ी पीपल।
गजपीपर, गजपीपल–(हिं स्त्री.) देख 'गजपिप्पली।'
गजपुट–(सं. पुं.) एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा तथा एक हाथ गहरा गड्ढा जिसमें कंडा जलाकर वैद्य लोग धातु का भस्म बनाते हैं।
गजप्रिया–(सं. स्त्री.) शल्लकी वृक्ष, साल का पेड़।
गजबदन–(हिं. पुं.) गजानन, गणेश।
गजबंध–(सं.पुं.) एक प्रकार का चित्रकाव्य।
गजब–(अ.पुं.) विलक्षण बात, आफत, आपत्ति, विपत्ति, अंधेर; –**का**–(वि.) विलक्षण।
गजबला–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की झाड़ी।
गजबाग–(हिं. पुं.) हाथी का अंकुश।
गजभंजन–(सं. पुं.) हाथी का अलंकार।
गजमणि–(सं. पुं.) गजमुक्ता, गजमोती।
गजमुक्ता–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का मोती जो हाथी के मस्तक में पाया जाता है।
गजमुख–(सं. पुं.) गणेश।
गजमोती–(हिं. पुं.) देखें 'गजमुक्ता'।
गजर–(हिं. पुं.) पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द, पारी, प्रातःकाल का घंटा; –**दम**–(अव्य.) बड़े सबेरे, तड़के।
गजर-बजर–(हिं.पुं.) अंडबंड, गोलमाल।
गजरा–(हिं. पुं.) फूलों की माला, कलाई में पहिनने का एक आभूषण, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, गाजर।
गजराज–(सं. पुं.) बड़ा हाथी।
गजल–(अ. स्त्री.) फारसी या उर्दू में प्रेम-विषयक काव्य या गीत।
गजलोल–(हिं. पुं.) एक ताल-भेद।
गजवदन–(सं.पुं.) हाथी का मुख, गणेश।
गजवान–(हिं. पुं.) महावत, हाथीवान।
गजशाला–(सं.स्त्री.) हाथी बाँधने का बाड़ा।
गजही–(हिं. स्त्री.) दूध में से मक्खन निकालने की मथानी।
गजा–(हिं.पुं.) नगाड़ा बजाने का डंडा।
गजाधर–(हिं. पुं.) देखें 'गदाधर'।
गजानन–(सं. पुं.) पार्वती के पुत्र, गणेश।
गजारि–(सं. पुं.) सिंह।
गजारोह–(सं. पुं.) महावत।
गजिया–(हिं.स्त्री.) बिटाई (फैलाने) का एक यंत्र।
गजेंद्र–(सं. पुं.) बड़ा हाथी, ऐरावत।
गजेंद्रगुरु–(सं. पुं.) संगीत में रुद्रताल का एक भेद।
गज्जूह–(हिं.पुं.) हाथियों का झुंड।
गझिन–(हिं. वि.) सघन, घना, मोटा, ठस बिना हुआ।
गट–(हिं.पुं.) पानी, शरबत आदि घोंटने से होनेवाला शब्द; –**गट**–(अव्य.) गट-गट की आवाज के साथ, जल्दी-जल्दी।
गटकना–(हिं. क्रि. स.) खाना, निगलना, दबा लेना।
गटना–(हिं. क्रि. अ.) जकड़ जाना।
गटपट–(हिं. स्त्री.) मेल, मिलावट, संयोग, प्रसंग, सहवास, घनिष्ठता।
गटरमाला–(हिं. स्त्री.) बड़े-बड़े दानों की माला।
गटागट–(हिं. अव्य.) देखें 'गटगट'।
गटी–(सं. स्त्री.) ग्रन्थि, गाँठ।
गट्टा–(हिं.पुं.) हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़, कलाई, गाँठ, ग्रन्थि, एक प्रकार की मिठाई।
गट्ठर, गट्ठा–(हिं. पुं.) बड़ी गठरी, बोझा।
गट्ठी–(हिं. स्त्री.) गाँठ।
गठकटा–(हिं. पुं.) गाँठ काटकर रुपया चुरानेवाला, गिरहकट।
गठन–(हिं. स्त्री.) बनावट, रचना, शरीर का कसाव।
गठना–(हिं.क्रि.अ.) मिलकर एक होना, जुड़ना, छटना, बिनावट का पुष्ट होना, अनुकूल होना, गुप्त बात में सहमत होना, अधिक मेल होना, संभोग करने के लिये जुटना; **गठा शरीर**–(पुं.) कसावदार बदन।
गठरी–(हिं. स्त्री.) बड़ी पोटरी, बुकचा; –**मुटरी**–(स्त्री.) सामानों का गट्ठर; (मुहा.) –**कटना**–अच्छी खासी रकम हाथ से निकल जाना; –**मारना**–किसी का धन छल करके हर लेना।
गठवाँसी–(हिं. स्त्री.) बिस्वे का बीसवाँ अंश, बिस्वाँसी।
गठवाना, गठाना–(हिं. क्रि. स.) जुड़वाना, जोड़ मिलवाना, सिलवाना।
गठाव–(हिं. पुं.) देख 'गठन', बनावट।
गठित–(हिं. वि.) गठा हुआ।
गठिबंध–(हिं. पुं.) गँठबंधन, विवाह।
गठिया–(हिं. स्त्री.) बोरा जिसमें अन्न भरकर व्यापारी लोग बैल या घोड़े पर लादते हैं, पोटली, छोटी गठरी, कपड़े की गाँठ, एक प्रकार का वात-रोग जिसमें घुटने में सूजन और पीड़ा होती है।
गठियाना–(हिं.क्रि.स.) गाँठ लगाना, गाँठ बाँधना।
गठिवन–(हिं. पुं.) नीले रंग के फूल का वृक्ष, एक सुगन्धित फूल वाला पौधा।
गठीला–(हिं. वि.) गाँठ दार, दृढ़, प्रसिद्ध, सुडौल, गठा हुआ।
गठुवा–(हिं.पुं.) भूसे की गाँठ।
गठौंद–(हिं. स्त्री.) गाँठ की बँधाई, धरोहर।
गठौत, गठौती–(हिं. स्त्री.) मित्रता, घनिष्ठता, मेलजोल, निश्चित की हुई बात।
गडंत–(हिं.स्त्री.) टोटका गाड़ने का काम।
गड़–(सं. पुं.) रुकावट अवरोध, ओट, आड़, घेरा, खोह, गढ़, विघ्न, गड्ढा।
गड़गड़–(हिं.स्त्री.) बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द, पेट में वायु का शब्द।
गड़गड़ा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हुक्का।
गड़गड़ाना–(हिं.क्रि.अ.) गरजना, कड़कना, गड़गड़ शब्द करना।
गड़गड़ाहट–(हिं. स्त्री.) गड़गड़ाने का शब्द, हुक्का पीने का शब्द।
गड़गड़ी–(हिं. स्त्री.) नगाड़ा, डुग्गी।
गड़गूदड़–(हिं. पुं.) लत्ता, चियड़ा, फटा-पुराना कपड़ा।
गड़दार–(हिं. पुं.) मतवाले हाथी के साथ-साथ भाला लेकर चलनेवाला नौकर।
गड़ना–(हिं. क्रि. अ.) चुभना, धँसना,

घुसना, शरीर में किसी वस्तु का धँसना, दुखना, पीड़ा होना, दबना, स्थिर होना; (मुहा.) गड़ जाना–लज्जित होना; गड़ा मुर्दा या गड़े मुर्दे उखाड़ना–पुरानी भूली हुई बातों की चर्चा छेड़ना।
गड़प–(हि. स्त्री.) पानी या कीचड़ में धँसने का शब्द।
गड़पना–(हि. क्रि.स.) निगलना, खा जाना, दूसरे की वस्तु पर अधिकार करना।
गड़प्पा–(हि. पुं.) गड्ढा, छले जाने का स्थान।
गड़बड़–(हि. वि.) ऊँचा-नीचा, अनियमित, अंडबंड, ठीक समय पर न किया जानेवाला; (पुं., स्त्री.) आपत्ति, उपद्रव, दंगा, अव्यवस्था, बुरा प्रबंध।
गड़बड़झाला–(हि. पुं.) अव्यवस्था, उपद्रव।
गड़बड़ा–(हि. पुं.) गर्त, गड्ढा।
गड़बड़ाना–(हि. क्रि. अ., स.) भूल या भ्रम में पड़ना, चक्कर में आ जाना, अव्यवस्थित होना, बिगड़ना, भुलवाना, बिगाड़ना, भ्रम में डालना, क्रम-भंग होना, गड़बड़ी में पड़ना।
गड़बड़िया–(हि. वि.) उपद्रव करनेवाला, नंगा, छली।
गड़बड़ी–(हि.स्त्री.) अव्यवस्था, गोलमाल।
गड़रिया–(हि. पुं.) एक जाति जो भेड़ पालती और उनके बाल के कम्बल आदि बनाती है।
गड़हा–(हि.पुं.) गर्त, गहरी भूमि, गड्ढा।
गड़ही–(हि. स्त्री.) छोटा गड़हा।
गड़ा–(हि. पुं.) ढर, राशि, समुदाय।
गड़ाना–(हि.क्रि. स.) धँसाना, चुभाना, भोंकना, धँसाने का काम दूसरे से कराना।
गड़ाप–(हि. पुं.) देख 'गड़प'।
गड़ायत–(हि. वि.) गड़ने या धँसनेवाला।
गड़ारी–(हि. स्त्री.) मण्डलाकार रेखा, वृत्त, घरा, पास-पास बनी हुई धारियाँ, घिरनी, कुएँ में से पानी खींचने की चरखी; –दार–(वि.) जिस पर पास-पास अनेक धारियाँ पड़ी हों, घेरदार।
गड़ुई–(हि. स्त्री.) पानी पीने का छोटा टोंटीदार पात्र, झारी।
गड़ुवा–(हि.पुं.) टोंटी लगा हुआ लोटा।
गड़ेरिन–(हि. स्त्री.) गड़रिया की स्त्री।
गड़ेरिया–(हि. पुं.) देखें 'गड़रिया'।
गड़ोना–(हि. क्रि. स.) देखें 'गड़ाना'।
गड़ौना–(हि. पुं.) एक प्रकार का मीठा पान, काँटा।
गड्ड–(हि. पुं.) वस्तुओं का ढेर जो एक के ऊपर दूसरा रखा हो, गंज; –वड्ड–(पुं.) बेमेल की मिलावट, घालमेल।
गड्डर–(सं. पुं.) मेष, भेड़ा।
गड्डरिक–(सं. पुं.) भेंड़ पालनेवाला, गड़ेरिया।
गड्डी–(हि. स्त्री.) ढेर, पुंज, राशि।
गड्ढा–(हि. पुं.) गर्त, गड़हा, भूमि में गहरा स्थान; (मुहा०) किसी के लिये गड्ढा खोदना–किसी की बुराई करने का प्रयत्न करना।
गढ़ंत–(हि. स्त्री.) कल्पित वार्ता, बनावटी बात।
गढ़–(हि. पुं.) खाईं, कोट।
गढ़न–(हि. स्त्री.) आकृति, गठन, बनावट।
गढ़ना–(हि.क्रि.स.) काट-छाँटकर बनाना, सुडौल करना, बातें बनाना, ठोंकना, मारना-पीटना, कल्पना करना।
गढ़पति, गढ़वइ, गढ़वै–(हि. पुं.) कोटाध्यक्ष, सरदार, राजा।
गढ़वाल–(हि. पुं.) वह जिसके अधीन में गढ़ हो, उत्तर प्रदेश के कमाऊँ विभाग का एक जिला।
गढ़ा–(हि. पुं.) गड्ढा, गड़हा।
गढ़ाई–(हि. स्त्री.) गढ़ने का काम, गढ़ने का पारितोषिक।
गढ़ाना–(हि.क्रि.स.) गढ़ने का काम दूसरे से कराना, गढ़वाना, कठिन जान पड़ना।
गढ़िया–(हि. पुं.) किसी वस्तु को गढ़कर बनानेवाला।
गढ़ी–(हि. स्त्री.) छोटा गढ़।
गढ़ैया–(हि.वि.) गढ़नेवाला, बनानेवाला।
गढ़ोई–(हि. पुं.) गढ़पति।
गण–(सं. पुं.) समूह, ढेर, प्रमथ, शिवसेवक, अनुचर, जत्था, श्रेणी, कोटि, बनियों का समूह, तीन गुल्मों का सेनाविभाग, एक असुर का नाम, छंदःशास्त्र में तीन वर्णों का समूह जो लघु-गुरु के भेद से आठ प्रकार का होता है।
गणक–(सं. पुं.) दैवज्ञ, मुहूर्तज्ञ, ज्योतिषी।
गणकार–(सं. पुं.) गणना करनेवाला, भीमसेन।
गणतंत्र–(सं. पुं.) राजनीतिक पद्धति या व्यवस्था जिसमें जनता के प्रतिनिधियों के द्वारा शासन होता है।
गणता–(सं. स्त्री.) समूह, ढेर।
गणदेवता–(सं. पुं.) समूहचारी देवता।
गणद्रव्य–(सं. पुं.) सर्व साधारण की सम्पत्ति।
गणन–(सं.पुं.) गणना, गिनती, निश्चय।
गणना–(सं.स्त्री.) गिनती, हिसाब, संख्या।
गणनाथ–(सं. पुं.) शिव, महादेव, गणेश।
गणनायक–(सं. पुं.) देखें 'गणनाथ'।
गणनायिका–(सं. स्त्री.) दुर्गा, भगवती।
गणनीय–(सं. वि.) गिनने योग्य, प्रसिद्ध।
गणपति–(सं. पुं.) गणेश, शिव।
गणमुख्य–(सं. पुं.) गाँव का मुखिया।
गणराज्य–(सं. पुं.) जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा शासित राज्य।
गणाचार्य, गणाधिप, गणाध्यक्ष–(सं. पुं) गणों के स्वामी, शिव, गणेश, लोकगुरु, शिक्षक।
गणिका–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
गणिकारी–(सं. स्त्री.) गनियार का वृक्ष जो वसन्त में फूलता है, दशमूल।
गणित–(सं. पुं.) गणन, गणना, गिनती, अङ्कशास्त्र, हिसाब जिसके अन्तर्गत व्यक्त गणित और बीजगणित है; –ज्ञ–(पुं.) गणित शास्त्र जाननेवाला, ज्योतिषी।
गणेरुका–(सं. स्त्री.) कुटनी, दूती।
गणेश–(सं. पुं.) पार्वतीनन्दन जिनका सिर हाथी का है, (शुभ कार्यो के आरंभ करने में पहिले इनका ध्यान और पूजन किया जाता है); –क्रिया–(स्त्री.) योग की क्रिया जिसमें गुदा में अँगुली आदि की सहायता से मल निकाल दिया जाता है; –चतुर्थी–(स्त्री.) भाद्रपद तथा माघ की शुक्ला चतुर्थी जिस दिन गणेश का व्रत और पूजन किया जाता है।
गण्य–(सं. वि.) गिनने योग्य, प्रतिष्ठित, माननीय; –मान्य–(वि.) सम्मानित।
गत–(सं. वि.) गया हुआ, बीता हुआ, प्राप्त, पाया हुआ, समाप्त, पूरा किया हुआ, पतित, ज्ञात, रहित, मरा हुआ; (स्त्री.) अवस्था, दशा, वेश, दुर्गति, नाश, दुर्दशा, रंगरूप, नाचने-गाने का ढंग, सितार आदि बजाने में कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान; (मुहा.)–बनाना–दुर्दशा करना।
गतका–(हि. पुं.) लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े का खोल चढ़ा रहता है।
गतकार्य–(सं. वि.) जिसका कार्य नष्ट हो गया हो।
गतकाल–(सं. पुं.) बीता हुआ समय।
गतकीर्ति–(सं. वि.) जिसका यश समाप्त हो गया हो।
गतनासिका–(सं. वि.) बिना नाक का, नकटा।
गतपुण्य–(सं. वि.) जिसका पुण्य नष्ट हो गया हो।

गतप्रभ–(सं. वि.) निष्प्रभ, तेज-रहित।
गतप्राण–(सं. वि.) मृत, मरा हुआ।
गतबुद्धि–(सं. वि.) निर्बोध, अज्ञान।
गतरात्रि–(सं. स्त्री.) बीती हुई रात।
गतलज्ज–(सं. वि.) निर्लज्ज।
गतश्री–(सं. वि.) जिसकी शोभा नष्ट हो गई हो, श्रीहत।
गताक्ष–(सं. वि.) नेत्रहीन, अन्धा।
गतागत–(सं. पुं.) आवागमन, याता-यात; (वि.) आया-गया।
गतायु–(सं. वि.) जिसकी आयु शेष न हो, मरनेवाला।
गतार्थ–(सं. वि.) जिसका अर्थ ज्ञात हो, चरितार्थ।
गति–(सं. स्त्री.) गमन, चाल, परि-णाम, ज्ञान, प्रमाण, मुक्ति, मोक्ष, कर्मफल, दशा, यात्रा, स्वरूप, स्थान, ग्रहों की चाल, पहुँच, रूप, रंग, वेष, उपाय, सहारा, ढंग, चेष्टा, रीति, मृत्यु के बाद जीवात्मा का अन्य शरीर धारण करना; –भंग–(पुं.) क्रम का टूटना; –विज्ञान, –शास्त्र–(पुं.) विज्ञान की वह शाखा जिसमें भौतिक पदार्थों की गति, ऊर्जा आदि का विवेचन होता है; –विधि–(स्त्री.) चेष्टा, सक्रियता; –शील–(वि.) जिसमें गति हो; –हीन–(वि.) गति से रहित।
गतिक–(सं. पुं.) गति, अवस्था, आश्रय।
गतिया–(हिं. पुं.) तबला बजानेवाला; (स्त्री.) बच्चों के गले में बांधने का रूमाल।
गत्ता–(हिं. पुं.) कागज की कई परतों को साटकर बनी हुई दफ्ती।
गत्तालखाता–(हिं. पुं.) अप्राप्य ऋण, बट्टा-खाता।
गत्वर–(सं. वि.) चलनेवाला, क्षणिक।
गथ, गत्थ–(हिं. पुं.) पूँजी, जमा, माल, झुंड, समुदाय।
गथना–(हिं. क्रि. स.) एक को दूसरे से मिलाना, आपस में गूँथना, बातें बनाना।
गद–(सं. पुं.) रोग, मेघ का शब्द, कुष्ठ, कोढ़, श्रीकृष्ण के छोटे भाई का नाम, राम की सेना का एक बन्दर, एक असुर का नाम; (हिं. पुं) देखें 'गद्द'।
गदका–(हिं. पुं.) देखें 'गतका'।
गदकारा–(हिं. वि.) कोमल, गुलगुला।
गदगद–(सं. पुं.) गद्गद भाषण, पुलकित वचन।
गदना–(हिं. क्रि.स.) बोलना, कहना।
गदर–(अ पुं.) विद्रोह, बगावत, बलवा।
गदरा–(हिं. पुं.) हरी मटरफली, हरा चना आदि के दाने; (वि.) अधपका।
गदराना–(हिं. क्रि. अ.) पकने के समीप पहुँचना, जवानी में अंगों का भरना, आँख में कीचड़ आना।
गदहपचीसी–(हिं. स्त्री.) सोलह वर्ष से पचीस वर्ष तक की अवस्था जब मनुष्य की बुद्धि कम अनुभव होने के कारण अपरिपक्व रहती है।
गदहपन–(हिं. पुं.) मूर्खता।
गदहपूरना–(हिं. स्त्री.) पुनर्नवा नाम का पौधा जिसका औषध में प्रयोग होता है।
गदहलोट–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
गदहा–(हिं. पुं.) गर्दभ, घोड़े के आकार का पर इससे छोटा एक चौपाया; (सं.पुं.) वैद्य, चिकित्सक; (वि.) मूर्ख; (मुहा.) गदहे का हल चलाना–नाश को प्राप्त होना।
गदहिला–(हिं. पुं.) ईंट, सुर्खी इत्यादि ढोनेवाले गदहे।
गदांबर–(सं. पुं.) मेघ, बादल।
गदा–(सं. स्त्री.) एक प्राचीन अस्त्र जिसमें लोहे के डंडे के छोर पर एक बड़ा लट्टू लगा होता था, बड़प्पन।
गदाग्रज–(सं. पुं.) बलराम, श्रीकृष्ण।
गदाधर–(सं. पुं.) विष्णु, भगवान; (वि.) गदा धारण करनेवाला।
गदापाणि–(सं. पुं.) विष्णु।
गदागद–(हिं. अव्य.) एक पर एक लगातार मार।
गदाला–(हिं. पुं.) हाथी की पीठ पर रखने का गद्दा, मोटा ओढ़ना या बिछौना।
गदित–(सं. वि.) कहा हुआ, कथित।
गदेला–(हिं. पुं.) रुई आदि से भरा हुआ बहुत मोटा बिछौना, बालक।
गदोरी–(हिं. स्त्री.) हाथ की हथेली।
गद्गद–(सं. पुं.) अव्यक्त शब्द, अस्पष्ट, शब्द, अति अधिक हर्ष, प्रेम इत्यादि के कारण गला भर आना; (वि.) प्रसन्न, आनन्दित, पुलकित; –कंठ–(पुं.) भाव से भरा स्वर; –स्वर–(पुं.) गद्गद कंठ।
गद्द–(हिं.पुं.) कोमल वस्तु पर किसी पदार्थ के गिरने का शब्द, अजीर्ण के कारण पेट का भारीपन।
गद्दर–(हिं.वि.) अपक्व, अधपका; (पुं.) गद्दा।
गद्दा–(हिं. पुं.) रुई आदि से भरा हुआ मोटा बिछौना, गदेला, हाथी की पीठ पर रखने का टाट का मोटा बिछावन जिसके ऊपर हौदा रखा जाता है, घास, (पयाल, रुई आदि) का बोझ, किसी कोमल पदार्थ पर मार।
गद्दी–(हिं. स्त्री.) छोटा गद्दा, वह गद्दा जो घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर रखा जाता है, हाथ या पैर की हथेली, व्यव-सायी का बैठने का स्थान, सिंहासन, बड़े अधिकारी आदि का पद, किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य की शिष्य-परम्परा; –नशीन–(वि.) जिसे सिंहासन प्राप्त हो; –नशीनी–(स्त्री.) सिंहासनारोहण; (मुहा.)–चलना–वंश-परंपरा का क्रम जारी रहना; –पर बैठना–सिंहासन पर बैठना।
गद्य–(सं. वि.) कथनीय, कहने योग्य; (पुं.) छन्दरहित वाक्य, काव्य-लक्षण-रहित पद-समूह, संगीत में शुद्ध राग का एक भेद; –काव्य–(पुं.) गद्य में काव्या-त्मक रचना।
गद्यात्मक–(सं.वि.) गद्य में रचा हुआ।
गधा–(हिं. पुं.) गर्दभ, गदहा; –पन–(पुं.) मूर्खता, बेवकूफी; (मुहा.) गधे को बाप बनाना–काम निकालने के लिए मूर्ख या हीन की भी खुशामद करना; गधे से हल चलवाना–बिलकुल उजाड़ देना।
गधी–(हिं. स्त्री.) मादा गधा, गदही।
गनक–(हिं. पुं.) देखें 'गणक'।
गनगन–(हिं. स्त्री.) काँपने की अवस्था।
गनगनाना–(हिं. क्रि. अ.) शीत से शरीर का काँपना या थरथराना।
गनगौर–(हिं. स्त्री.) चैत्र शुक्ला तृतीया जिस दिन गणेश और गौरी की पूजा होती है।
गनती–(हिं. स्त्री.) देखें 'गिनती'।
गनना–(हिं.क्रि.स.) गणना करना, गिनना।
गननायक–(हिं. पुं.) देखें 'गणनायक'।
गनपति–(हिं. पुं.) देखें 'गणपति'।
गनाना–(हिं. क्रि. स.) गिनने का काम दूसरे से कराना।
गनिका–(हिं. स्त्री.) गणिका, वेश्या।
गनियारी–(हिं. स्त्री.) अरनी की तरह का एक कांटेदार पौधा जिसकी पत्तियाँ बकुल की तरह होती हैं।
गनीमत–(अ. स्त्री.) संतोष की बात।
गन्ना–(हिं. पुं.) ईख, ऊख।
गप–(हिं. स्त्री.) इधर-उधर की बात, मन को प्रसन्न करने-वाली बात, बकवाद, झूठा समाचार; (पुं.) जल्दी से निगलने का शब्द; –गप–(अव्य.) जल्दी-जल्दी; –शप–(स्त्री.) इधर-उधर की बातें; –(मुहा.) उड़ाना–

झूठी बात का प्रचार होना; -मारना या हाँकना-डींग मारना, झूठी-मूठी बातें करना; -लड़ाना-गपशप करना।
गपकना-(हिं. क्रि. स.) चटपट निगलना, जल्दी से खाना।
गपड़चौथ-(हिं.पुं. वा स्त्री.) व्यर्थ की बातचीत जो चार आदमी मिलकर करते हैं।
गपना-(हिं.क्रि. अ.) गप मारना, बकबक करना।
गपागप-(हिं. अव्य.) गपगप।
गपिया, गप्पिहा-(हिं. वि.) गप मारनेवाला, झूठ बोलनेवाला।
गपोड़, गपोड़ा, गपोड़िया-(हिं. पुं.) झूठी बातें करनेवाला।
गपोड़बाजी-(हिं. स्त्री.) झूठी बकवाद।
गपोड़ी-(हिं. वि.) गप्पी।
गप्प-(हिं. स्त्री.) देखें 'गप'।
गप्पी-(हिं. वि.) बकवादी, डींग मारनेवाला, झूठ बोलनेवाला।
गप्फा-(हिं. पुं.) बहुत बड़ा ग्रास, बड़ा कौर, लाभ।
गफ-(हिं. वि.) घना, ठस, घनी बिनावट का।
गफलत-(अ. स्त्री.) असावधानी, लापरवाही।
गबदी-(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा पौधा; (वि.) सुस्त, मूर्ख, बुद्धिहीन।
गबद्द-(हिं. वि.) मूर्ख, जड़, बुद्धिहीन।
गबन-(अ. पुं.) दूसरे के सौंपे हुए धन को हड़प लेने का अपराध।
गबर-(हिं.पुं.) जहाज का सब से ऊपर का पाल।
गबरगंड-(हिं. पुं.) अज्ञानी, मूर्ख।
गबरहा-(हिं. वि.) गोबर लगा हुआ।
गबरा-(हिं. वि.) अहंकारी, घमंडी।
गभ-(सं. पुं.) भग, योनि।
गभस्ति-(सं. पुं.) किरण, प्रकाश, सूर्य, शिव, अग्नि की स्त्री, स्वाहा, अँगुली, हाथ, बाँह; -पाणि-(पुं.) सूर्य; -मान्-(पुं.) एक पाताल, एक द्वीप; (वि.) किरणयुक्त।
गभीर-(सं. वि.) गहरा, गहन, घना, दुर्बोध, कठिन, प्रचण्ड।
गभुआर-(हिं. वि.) बच्चों का गर्भ का बाल, जिस बाल का मुण्डन न हुआ हो, नादान, छोटा, अनजान।
गम-(सं. पुं.) गमन, यात्रा, पहुँच, उपभोग, मैथुन; (अ. पुं.) दुःख, शोक, फिक्र; (मुहा.) -खाना-सहन करना, धीरज धरना।
गमक-(सं. वि.) गमयिता, जानेवाला, बोधक, बतलानेवाला; (हिं.स्त्री.) संगीत में स्वरभेद, तबले का गंभीर शब्द, सुगन्ध।
गमकना-(हिं. क्रि. अ.) सुगंध निकलना, महँकना।
गमकीला-(हिं.वि.) सुगन्धित महँकनेवाला।
गमखोर-(अ. वि.) सहनशील, धीर।
गमखोरी-(अ. स्त्री.) सहनशीलता।
गमत-(सं. पुं.) मार्ग, व्यवसाय।
गमथ-(सं. पुं.) पथिक, बटोही।
गमन-(सं. पुं.) प्रस्थान, प्रयाण, यात्रा, उपभोग, मैथुन, रथ, गाड़ी इ०।
गमना-(हिं. क्रि. अ.) चले जाना, दुःखी होना, ध्यान देना।
गमनीय-(सं. वि.) गम्य, जाने योग्य।
गमला-(हिं. पुं.) बालटी की आकृतिवाला मिट्टी का आधार जिसमें छोटे-छोटे फूलदार पौधे लगाये जाते हैं।
गमागम-(सं. पुं.) आना-जाना।
गमाना-(हिं. क्रि. स.) गँवाना, खोना।
गमार-(हिं. पुं.) गँवार, देहाती, गाँव में रहनेवाला।
गमी-(अ.स्त्री.) मृत्यु-शोक, मातम, मरण।
गम्य-(सं. वि.) गमनीय, जाने योग्य।
गम्यमान-(सं.वि.) जाने योग्य।
गम्या-(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करना शास्त्र के विरुद्ध नहीं है।
गयंद-(हिं. पुं.) बड़ा हाथी, दोहे का एक भेद जिसमें तेरह गुरु और बाइस लघु वर्ण होते हैं।
गय-(सं. पुं.) रामचन्द्र की सेना का एक बन्दर, धन, सन्तान, घर, आकाश, प्राण, एक असुर का नाम, गया तीर्थ।
गयशिर-(सं. पुं.) अन्तरिक्ष, आकाश, गया के समीप का एक पर्वत।
गया-(सं. पुं.) बिहार का एक तीर्थ जहाँ हिन्दू पिण्डदान करते हैं; (मुहा.) -करना-गया में जाकर पितरों को पिंडदान करना; (क्रि.अ.) 'जाना' क्रिया का भूतकाल का रूप; (मुहा.)-गुजरा या बीता-हीन दशा को पहुँचा हुआ।
गयावाल-(हिं. पुं.) गया तीर्थ का पण्डा।
गरंड-(हिं. पुं.) आटा पीसने की चक्की के चारों ओर बनाई हुई मेड़।
गर-(सं. पुं.) विष, वत्सनाम, वछनाग, रोग; (हिं.पुं.) गरदन, गला; (फा.प्रत्य.) बनानेवाला; यथा-बाजीगर, कलईगर इत्यादि।
गरगज-(हिं. पुं.) गढ़ की भीत, तोप रखने का शिखर जो गढ़ की भीत पर बना रहता है, युद्ध की सामग्रियाँ रखने का टीला, पटरों से बनी हुई नाव की छत, फाँसी की टिकठी; (वि.) अति विशाल, बहुत बड़ा।
गरज-(हिं. स्त्री.) बहुत गंभीर शब्द, बादल सिंह आदि का शब्द।
गरज-(अ. स्त्री.) जरूरत, मतलब, प्रयोजन; -मंद-(वि.) जिसे गरज हो; (मुहा.) -का बावला-अपना स्वार्थ साधने के लिए सब कुछ करने को तैयार।
गरजना-(हिं.क्रि.अ.) बड़ा गंभीर शब्द करना, तड़कना, फटना; (वि.) गंभीर शब्द करनेवाला।
गरट्ट-(हिं.पुं.) समूह, झुण्ड।
गरद-(सं. पुं.) विष देनेवाला; (हिं. स्त्री.) गरदा, धूल।
गरदन-(फा.स्त्री.) धड़ और सिर जोड़नेवाला अंग, ग्रीवा; (मुहा.)-उठाना-विरोध करना; -काटना-सिर काट लेना, अपमानित करना; -झुकना-अधीन या लज्जित होना; -नापना-गरदन पकड़कर निकाल बाहर करना।
गरदना-(हिं. पुं.) मोटी गरदन, झटका या धौल जो गरदन पर पड़े।
गरदनियाँ-(हिं. स्त्री.) गरदन पकड़कर किसी मनुष्य को बाहर निकालने की क्रिया।
गरदनी-(हिं. स्त्री.) कुरते आदि का गला, गले का एक आभूषण, हँसुली, गरदनियाँ, घोड़े की गरदन पर बाँधने का कपड़ा, मल्ल-युद्ध की एक युक्ति।
गरदा-(हिं. पुं.) धूल, खाक, गर्द।
गरदुआ-(हिं. पुं.) पशुओं का एक रोग जिसमें उनका शरीर जकड़ जाता है।
गरना-(हिं.क्रि.अ.) गलना, गड़ना, निचुड़ना।
गरनाल-(हिं.स्त्री.) बहुत चौड़े मुँह की तोप।
गरब-(हिं.पुं.) देख 'गर्व', हाथी का मद।
गरबई-(हिं. स्त्री.) अभिमान, घमण्ड।
गरबगहेला-(हिं. वि.) गर्वी, अभिमानी।
गरबाना-(हिं. क्रि.अ.) अभिमान करना।
गरबित-(हिं. वि.) देखें 'गर्वित'।
गरबीला-(हिं. वि.) घमण्डी, अभिमानी।
गरभ- (हिं. पुं.) देखें 'गर्भ'।
गरभाना-(हिं. क्रि.अ.) गर्भिणी होना, गाभिन होना, धान, गेहूँ आदि में बाल लगना।
गरम-(फा. वि.) तप्त, उष्ण, जलता हुआ (बरतन आदि); -कपड़ा-(पुं.) ऊनी वस्त्र; -खबर-(स्त्री.) वह खबर

जिसकी बहुत चर्चा हो; –चोट–(स्त्री.) तुरंत लगा घाव; –मसाला–(पुं.) धनियाँ, लवंग, जीरा आदि मिश्रित मसाले; –मिजाज–(वि.) जल्दी क्रुद्ध होनेवाला; (मुहा.)–होना–क्रुद्ध होना।

गरमागरम–(हिं. वि.) ताजा और गरम, तप्त।

गरमागरमी–(हिं. स्त्री.) उत्साह, मुस्तैदी, लड़ाई-झगड़ा, कहा-सुनी।

गरमाना–(हिं. क्रि. अ., स.) गरम होना, उमंग में आना, आवेश में आना, क्रोध करना, तपाना, औटाना।

गरमाहट–(हिं. स्त्री.) उष्णता, गरमी।

गरमी–(फा. स्त्री.) ताप, उष्णता, तेजी, क्रोध, आवेश, उमंग, उपदंश रोग, आतशक; (मुहा.)–निकलना या पचना –धन आदि का घमंड चूर होना।

गररा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का भूरे रंग का घोड़ा।

गरराना–(हिं. क्रि. अ.) भयंकर ध्वनि करना, गरजना।

गररी–(हिं. स्त्री.) सिरोही पक्षी।

गरल–(सं. पुं.) विष, जहर, सर्प का विष; –धर–(पुं.) शिव, महादेव।

गरसना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'ग्रसना'।

गरह–(हिं. पुं.) देखें 'ग्रह'।

गरहन–(हिं. पुं.) देखें 'ग्रहण'।

गरांव–(हिं. पुं.) चौपायों के गले में बांधने की रस्सी या फन्दा।

गरा–(हिं. पुं.) देखें 'गला'।

गराड़ी–(हिं. स्त्री.) घिरनी, चरखी, सौंट।

गराना–(हिं. क्रि. स.) गारने का काम दूसरे से कराना।

गरारा–(हिं. वि.) गर्वयुक्त, प्रबल, प्रचंड, बलवान्; (पुं.) कुल्ली, कुल्ली करने की औषध, बड़ा थैला, चौड़ी मोहरी का पायजामा।

गरास–(हिं. पुं.) ग्रास, कवर।

गरासना–(हिं. क्रि. स.) ग्रसना, कष्ट देना, दिक करना।

गरिमा–(सं. स्त्री.) गुरुता, गौरव, भारीपन, महिमा, भार, अहंकार, घमण्ड, आठ सिद्धियों में से एक।

गरियाना–(हिं. क्रि. स.) दुर्वचन कहना, गाली देना।

गरियार–(हिं. वि.) वह मनुष्य या पशु जो जल्दी से अपने स्थान से न हटे, मट्ठर, सुस्त, आलसी।

गरियालू–(हिं. पुं.) ऊन रँगने का एक प्रकार का रंग।

गरिष्ठ–(सं. वि.) अत्यन्त गुरु, बहुत भारी, बहुत बड़ा, प्रतिष्ठित, सहज में न पचने योग्य।

गरी–(हिं. स्त्री.) नारियल के फल के भीतर का गूदा, बीज के भीतर का कोमल भाग, मींगी।

गरीब–(अ. वि.) निर्धन, धनहीन, अकिंचन, दीन-हीन; –गुरबा–(पुं.) दरिद्र लोग; –परवर–(वि.) गरीबों का पालन करनेवाला।

गरीबाना–(अ. वि.) गरीब व्यक्ति की भांति या स्तर का।

गरीबी–(अ. स्त्री.) दीनता, निर्धनता।

गरु–(हिं. वि.) भारी, बड़े भार का, प्रतिष्ठित।

गरुआई–(हिं. स्त्री.) गुरुता, भारीपन।

गरुआना–(हिं. क्रि. अ.) भारी होना।

गरुड़–(सं. पुं.) विष्णु के वाहन जो पक्षिराज कहलाते हैं, एक प्रकार की सेना की व्यूह-रचना, छप्पय छन्द का एक भेद; –गामी–(पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण; –ध्वज–(पुं.) विष्णु, एक प्रकार का स्तम्भ जिसके माथ पर गरुड़ बना हो; –पाश–(पुं.) एक प्रकार का फन्दा या फाँस; –पुराण–(पुं.) अठारह पुराणों के अन्तर्गत सत्रहवाँ पुराण; –रुत–(पुं.) गरुड़ का शब्द, एक वर्ण-वृत्त जिसमें सोलह अक्षर होते हैं; –व्यूह–(पुं.) गरुड़ की आकृति की एक सैन्य-रचना।

गरुड़ाग्रज–(सं. पुं.) विनता के ज्येष्ठ पुत्र अरुण जो सूर्य के सारथी हैं।

गरुत्मान्–(सं. पुं.) गरुड़।

गरुवाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'गरुआई'।

गरू–(हिं. वि.) गुरु, भारी।

गरूर–(अ. पुं.) गर्व, अभिमान।

गरूरी–(अ. वि.) घमंडी, अभिमानी; (स्त्री.) अभिमान, घमंड।

गरेरना–(हिं. क्रि. स.) घेरना, रोकना, छेंकना।

गरेरा–(हिं. पुं.) घेरा।

गरेरी–(हिं. स्त्री.) गराड़ी, घिरनी।

गरैयाँ–(हिं. स्त्री.) पशु के गले में बांधने का फन्दा, गरांव।

गर्ग–(सं. पुं.) बृहस्पति के वंश में उत्पन्न एक ऋषि, संगीत में एक ताल, बैल, साँड़, एक पर्वत का नाम।

गर्गर–(सं. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

गर्गरी–(सं. स्त्री.) दहेंड़ी, मथानी, कलसी, गगरी।

गर्ज–(सं. पुं.) हाथी का चिग्घाड़, गर्जन, मेघ का शब्द।

गर्ज–(हिं. स्त्री.) देखें 'गरज'।

गर्जन–(सं. पुं.) जोर का शब्द, भीषण ध्वनि, गरज, क्रोध, रोष; –तर्जन–(पुं.) गर्जना, घुमड़ना।

गर्जमान–(सं. वि.) गरजनेवाला।

गर्जना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'गरजना'; (सं. स्त्री.) गर्जन।

गर्जित–(सं. वि.) भयंकर शब्द या गर्जन किया हुआ।

गर्त–(सं. पुं.) भूमि का छिद्र, दरार, गड्ढा, घर, रथ, एक नरक का नाम।

गर्द–(फा. स्त्री.) धूल, राख; –खोर, –खोर–(वि.) ऐसा कपड़ा जो जल्दी मैला न हो।

गर्दन–(हिं. स्त्री.) देखें 'गरदन'।

गर्दभ–(सं. पुं.) रासभ, खर, गदहा।

गर्दभी–(सं. स्त्री.) गदही, सफेद भटकटैया।

गर्नाल–(हिं. स्त्री.) देखें 'गरनाल'।

गर्भ–(सं. पुं.) पेट के भीतर का बच्चा, भ्रूण, गर्भाशय, कुक्षि, कोख, पनस, नाटक का सन्धिभेद, उदर, पेट, भीतरी भाग, अन्न, अग्नि, पुत्र; –कर, कारी–(वि.) गर्भाधान करनेवाला; –केसर–(पुं.) फूल के सूत जैसे रेशे जो गर्भनाल के भीतर होते हैं; –कोष–(पुं.) गर्भाशय, बच्चेदानी; –क्षय–(पुं.) गर्भ का नाश; –गृह–(पुं.) घर के बीच की कोठरी, घर का मध्य भाग, आँगन, मन्दिर के बीच की वह प्रधान कोठरी जिसमें देवता की प्रतिमा रखी जाती है; –नाल–(स्त्री.) फूलों के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होता है; –पत्र–(पुं.) कोमल पत्ता, कोंपल; –पात–(पुं.) गर्भ का अपरिपक्व अवस्था में गिर जाना; –भवन–(पुं.) प्रसूतिका-गृह, सौरी; –मास–(पुं.) वह महीना जिसमें गर्भाधान हो; –वती–(स्त्री.) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी; –व्यूह–(पुं.) युद्ध में सेना की एक प्रकार की रचना; –संधि–(स्त्री.) नाटक के पाँच प्रकार की सन्धियों में से एक; –स्थ–(वि.) जो गर्भ में स्थित हो; –स्थान–(पुं.) गर्भाशय; –स्राव–(पुं.) चार महीने तक का

गर्भ गिरना; -हत्या-(स्त्री.) भ्रूण-हत्या, गर्भपात ।
गर्भाङ्क-(सं.पुं.) अभिनय के अङ्क का एक भाग जिसमें केवल एक ही दृश्य होता है ।
गर्भाधान-(सं. पुं.) सोलह संस्कारों में से पहिला संस्कार जो गर्भ आने पर होता है, गर्भ-धारण ।
गर्भाशय-(सं. पुं.) स्त्रियों के पेट में गर्भ धारण करने का स्थान या थैली, बच्चादानी ।
गर्भिणी-(सं.वि.स्त्री.) गर्भवती, गाभिन ।
गर्भित-(सं.वि.) पूर्ण, पूरित, भरा हुआ ।
गर्म-(फा. वि.) देखें 'गरम' ।
गर्रा (हिं. वि.) लाह के रंग का; (पुं.) इस रंग का घोड़ा, लाही रंग का कबूतर, चरखी, गड़ारी, सतलज नदी का नाम ।
गर्व-(सं.पुं.) अहंकार, अभिमान, घमंड ।
गर्ववंत-(हिं. वि.) अभिमानी, घमण्डी ।
गर्वाना-(हिं. क्रि. अ.) गर्व करना, घमण्ड करना ।
गर्वित-(सं. वि.) गर्वयुक्त, अभिमानी ।
गर्विता-(सं. स्त्री.) वह नायिका जिसको अपने रूप-गुण का तथा पति के प्रेम का घमण्ड हो ।
गर्विष्ट-(सं. वि.) गर्वयुक्त, अहंकारी, घमंडी ।
गर्वी-(हिं. वि.) अहंकारी, घमण्डी ।
गर्वीला-(हिं. वि.) अभिमान से भरा हुआ, घमंडी ।
गर्हण-(सं. पु.) निन्दा ।
गर्हणा-(सं. स्त्री.) देखें 'गर्हण' ।
गर्हणीय-(सं. वि.) निन्दनीय, निन्दा करने योग्य ।
गर्हा-(सं. स्त्री.) निन्दा ।
गर्हित-(सं. वि) निंदित, दूषित ।
गर्ही-(सं. वि.) निन्दा करनेवाला ।
गर्ह्य-(सं. वि.) अधम, निन्दनीय, नीच ।
गलंश-(हिं. पुं.) वह सम्पत्ति जिसका स्वामी मर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो ।
गल-(सं.पुं.) गला, कण्ठ; (हि.पुं.) गाल ।
गलकंबल-(सं. पुं.) गाय के गले की लटकती हुई झालर ।
गलका-(हिं. पुं.) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग पर होता है ।
गलकोड़ा-(हि.पुं.) एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक, मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।
गलगंज-(हि. पुं.) कोलाहल, हल्ला ।
गलगंजना-(हिं. क्रि. अ.) शोर करना, कोलाहल करना ।
गलगंड-(सं. पुं.) गले का एक रोग, गण्डमाला, घेघा रोग ।
गलगल-(हिं. पुं.) मना की जाति की एक चिड़िया, एक प्रकार का बड़ा नीबू जो बहुत खट्टा होता है ।
गलगला-(हि वि.) आर्द्र, भींगा हुआ ।
गलगलाना-(हिं.क्रि.अ.) भिगाना, आर्द्र करना ।
गलगलिया-(हिं. स्त्री.) सिरोही के प्रकार का एक पक्षी ।
गलगाजना-(हि.क्रि.अ.) आनन्द से गरजना, गाल बजाना ।
गलगुच्छा-(हिं. पुं.) देखें 'गलमुच्छा' ।
गलगुथना-(हिं. वि.) हृष्टपुष्ट, जिसका शरीर भरा तथा गाल फूले हों ।
गलग्रह-(सं. पुं.) मछली का काँटा जो गले में धँस जाता है, सहज में न हटनेवाली आपत्ति ।
गलग्राह-(सं. पुं.) मगर ।
गलचुमनी-(हिं. स्त्री.) कान का गाल तक लटकनेवाला आभूषण ।
गलछट-(हिं. स्त्री. वा पुं.) गलफड़ा ।
गलजंदड़ा-(हिं. पुं.) सर्वदा साथ देनेवाला, गले का हार, रूमाल या कपड़े की पट्टी जो हाथ की चोट या घाव पर सहारा देने के लिये गले से बाँधी जाती है ।
गलजोड़, गलजोत-(हि. स्त्री.) एक बैल को दूसरे बैल के गले में लगाकर बाँधने की रस्सी, गले का हार ।
गलझंप-(हिं.पुं.) हाथी के गले में पहिनाने की लोहे की झूल या सिकड़ी ।
गलतंग-(हिं. वि.) अचेत, बसुध ।
गलतंस-(हिं. पुं.) देख 'गलंश' ।
गलत-(अ. वि.) जो ठीक न हो, अशुद्ध ।
गलतकिया-(हि पुं.) गले के नीचे रखने का कोमल गोल तकिया ।
गलत-फहमी-(फा.स्त्री.) गलत समझ, भ्रम ।
गलतान-(हि. वि.) लुढ़कता हुआ, जर्जर, फटा-पुराना ।
गलती-(अ. स्त्री.) भूल, चूक ।
गलथन(ना)-(हिं.पुं.) बकरियों की गरदन की दोनों ओर लटकती हुई थैलियाँ ।
गलथैली-(हिं. स्त्री.) बन्दरों के गाल के नीचे की थैली जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं ।
गलदेश-(सं. पुं.) ग्रीवा, गला, गरदन ।
गलन-(सं. पुं.) गलकर गिरना, पतन ।
गलनहाँ-(हिं. पुं.) हाथी के नख का एक रोग जिसमें ये झड़ जाते हैं ।
गलना-(हिं. क्रि.अ.) किसी पदार्थ का घनत्व नष्ट होना, जीर्ण होना, शरीर का दुर्बल होना, किसी काम का न रहना, ठंढक से हाथ-पैर ठिठुरना, निष्फल होना, शरीर में सड़न होना ।
गलनीय-(सं.वि.) गलने या सड़ने योग्य ।
गलफड़ा-(हि. पुं.) जल-जन्तुओं में पानी के भीतर साँस लेने का अवयव जो मस्तक के दोनों ओर रहता है, गालों के दोनों जबड़ों के बीच का मांस ।
गलफाँस-(हिं. स्त्री.) मलखंभ का एक व्यायाम ।
गलफाँसी-(हि. स्त्री.) गले की फाँसी, कष्टदायक काय, जंजाल ।
गलफूट-(हिं.स्त्री.) बड़बड़ाने का अभ्यास ।
गलफूला-(हिं. वि.) जिसका गाल या गला फूला हो; (पुं.) गाल या गला फूलने का एक रोग ।
गलबंदनी-(हि स्त्री.) गले का एक गहना ।
गलबल-(हिं. पुं.) कोलाहल, गड़बड़ी, खलबली ।
गलबाँही, गलबहियाँ-(हिं. स्त्री.) गले में प्रेम से बाँह डालना ।
गलभंग-(सं.पुं.) गले का एक रोग, स्वरभंग
गलमंदरी-(हि. स्त्री.) गाल बजाना जो शिवजी के पूजन में किया जाता है, गाल बजाना, व्यर्थ की गप मारना ।
गलमुच्छा-(हिं. पुं.) दोनों गालों पर बढ़ाये हुए बाल ।
गलमुद्रा-(सं. स्त्री) देखें 'गलमंदरी' ।
गलमेखला-(सं.स्त्री.) गले का हार, माल,
गलवाना-(हिं.क्रि.स.) गलाने का काम दूसरे से कराना ।
गललग्न-(सं. वि.) गले से लिपटा हुआ ।
गलव्रत-(सं. पुं.) मयूर, मोर ।
गलशुंडी-(सं. स्त्री.) जीभ की जड़ के पास गले के भीतर होनेवाला एक रोग जिसमें मांस का टुकड़ा निकल आता है ।
गलसिरी-(हिं. स्त्री.) गले में पहिनने का एक आभूषण ।
गलसुआ-(हिं.पुं.) गाल के नीचे का भाग सूजने का एक रोग ।
गलसुई-(हिं. स्त्री.) गलत किया ।
गलस्तन-(सं. पुं.) बकरे के गले के दोनों ओर लटकती हुई स्तन के आकार की थैली, गलथन ।
गलहंड-(हिं.पुं.) गला फूलने का रोग, घेघा
गलही-(हिं. स्त्री) नाव का अगला ऊपरी भाग ।
गला-(हिं. पुं.) शरीर का वह भाग जो

सिर को धड़ से जोड़ता है, गलदेश, गरदन, कंठ, गले के भीतर की नाली जिसमें से शब्द निकलता है और आहार पेट के भीतर जाता है, कंठस्वर, गले का शब्द, कुरते, अँगरखे इत्यादि का गले पर का भाग, पात्र का ऊपरी पतला भाग; (मुहा.) –कटना–खून किया जाना, बड़ी हानि होना; –काटना–बहुत हानि पहुँचाना, गले में खुजली उत्पन्न करना; –खुलना–अवरुद्ध आवाज या स्वर का साफ हो जाना; –घुँटना–साँस लेने में कष्ट होना; –घोंटना–गला दबा कर मार डालना; –छुड़ाना–परेशानी से अपनी जान बचाना; –छूटना–छुटकारा मिल जाना; –दबाना–दबाव डलकर कोई काम कराना; –फँसना–ऋण-ग्रस्त होना, संकट में फँसना; –फाड़ना–वेग से चिल्लाना; **गले का हार**–अत्यन्त प्रिय व्यक्ति या वस्तु; **गले के नीचे उतरना**–मन म बैठ जाना; **गले पड़ना**–इच्छा नहोते हुए मिल जाना; **गले मढ़ना**–हठ करके देना; **गले मिलना या लगना**–आलिंगन करना; **गले लगाना**–आलिंगन करना ।

गलाऊ–(हिं. वि.) जो गलता हो, गलनेवाला ।

गलाना–(हिं. क्रि. स.) गलने में प्रवृत्त करना, पिघलाना, (कोठी) धँसाना, रुपए खर्च करना ।

गलानि–(हिं. स्त्री.) देखें 'ग्लानि' ।

गलावट–(हिं. स्त्री.) गलने का भाव या क्रिया, गलनेवाली वस्तु ।

गलित–(सं. वि.) भ्रष्ट, ध्वस्त, पतित, द्रवित, गला हुआ, नीति-भ्रष्ट, महापातकी, जीर्ण, खंडित, परिपक्व, जो पुराना हो गया हुआ; –कुष्ठ–(पुं.) वह कोढ़ का रोग जिसमें अंग गल-गल कर गिरने लगते हैं; –यौवना–(स्त्री.) ढलती जवानी की स्त्री ।

गलिया–(हिं. स्त्री.) चक्की का छेद जिसमें पीसने के लिये अन्न डाला जाता है; (वि.) मट्ठर, आलसी ।

गलियारा–(हिं. पुं.) छोटी गली, तंग या संकीर्ण मार्ग ।

गलियारी–(हिं. स्त्री.) मार्ग, गली ।

गली–(हिं. स्त्री.) पतला मार्ग जो घरों की दो पंक्तियों के बीच में रहता है, छोटा मोहल्ला, कूचा; (मुहा.) –गली मारा फिरना–जीविका प्राप्त करने के लिये इधर-उधर घूमना ।

गलीचा–(हिं. पुं.) सूत या ऊन का बना मोटा विछौना ।

गलीज–(अ. वि.) गंदा, मैला; (पुं.) कूड़ा-करकट, गंदगी ।

गलेबाज–(हिं. वि.) सुरीले शब्द का, अच्छा गानेवाला ।

गलैचा–(हिं. पुं.) देखें 'गलीचा' ।

गलौआ–(हिं. पुं.) बन्दरों के गले के भीतर की थैली जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं ।

गल्प–(हिं. पुं., स्त्री.) छोटी कहानी, मिथ्या प्रवाद, डींग ।

गल्ल–(हिं. पुं.) गाल ।

गल्लई–(हिं. पुं.) गल्ले के रूप में दिया हुआ खेत का लगान, बँटाई ।

गल्ला–(हिं. पुं.) कोलाहल; (अ. पुं.) अनाज, रोजाना बिक्री की आमदनी ।

गवँ–(हिं. स्त्री.) आश्रय, घात, अवसर; –से–(अव्य.) अवसर देखकर ।

गवन–(हिं. पुं.) प्रस्थान, चलना, जाना, वधू का पति के घर पहिले जाना, गौना; –चार–(पुं.) गौने की विधि ।

गवनना–(हिं. क्रि. अ.) प्रस्थान करना, जाना ।

गवना–(हिं. पुं.) वधू का पहले-पहल पति के घर जाना, गौना ।

गवय–(सं. पुं.) गाय की जाति का एक पशु, नील गाय, रामजी की सेना के एक बन्दर का नाम, एक प्रकार का छन्द ।

गवल–(सं. पुं.) जंगली भैंसा, अरना ।

गवाँना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना, खोना ।

गवाक्ष–(सं. पुं.) झरोखा, छोटी खिड़की, रामजी के सेना का एक वानर सेनापति ।

गवाख–(हिं. पुं.) देखें 'गवाक्ष' ।

गवामृत–(सं. पुं.) गाय का दूध, गो-दुग्ध ।

गवाशन–(सं. पुं.) गोमांस खानवाला, गोमक्षक ।

गवास–(हिं. पुं.) कसाई, हत्यारा ।

गवाह–(फा. पुं.) न्यायालय में मुकदमे का साक्षी ।

गवाही–(फा. स्त्री.) गवाह का बयान या कथन, साक्ष्य ।

गविष्ठ–(सं. वि.) स्वर्गस्थित; (पुं.) सूर्य ।

गवीश–(सं. पुं.) साँड़, विष्णु ।

गवेजा–(हिं. पुं.) गपशप, वार्तालाप ।

गवेधु–(सं. पुं.) एक प्रकार का धान्य ।

गवेरुक–(सं. पुं.) लाल मिट्टी, गेरू ।

गवेल–(हिं. वि.) गँवार, देहाती ।

गवेष, गवेषणा–(सं. पुं., स्त्री.) अन्वेषण, खोज ।

गवेषी–(सं. वि.) खोज करनेवाला ।

गवहाँ–(हिं. वि.) ग्रामीण, गाँव में रहनेवाला, देहाती ।

गवैया–(हिं. वि.) गायक, गानेवाला ।

गव्य–(सं. वि.) गौ से उत्पन्न, गौ से प्राप्त; (पुं.) गाय का झुंड, पञ्चगव्य यथा–दूध, दही, घी, गोबर, गो-मूत्र आदि, धनुष की डोरी ।

गव्यूत, गव्यूति–(सं. पुं., स्त्री.) दो सहस्र धनुष की दूरी, दो कोस ।

गश्त–(फा. स्त्री.) फिरना, भ्रमण, चक्कर ।

गश्ती–(फा. वि.) गश्त करनेवाला, फिरनेवाला ।

गसना–(हिं. क्रि. स.) जकड़ना, गाँठना ।

गसीला–(हिं. वि.) जकड़ा हुआ, गठा हुआ ।

गस्सा–(हिं. पुं.) ग्रास, कौर ।

गह–(हिं. स्त्री.) पकड़, पकड़ने या थामने की क्रिया, किसी शस्त्र की मूठ; (मुहा.)–बैठना–मूठ पर पूरी तरह से हाथ बैठना ।

गहकना–(हिं. क्रि. अ.) लालसा से पूर्ण होना, ललकना, उमंग से पूर्ण होना ।

गहगड्ड–(हिं. वि.) गहरा, भारी, घोर ।

गहगह–(हिं. वि.) प्रफुल्लित, आनन्द से भरा हुआ; (अव्य.) गहगहे ।

गहगहा–(हिं. वि.) आनन्द से भरा हुआ ।

गहगहाना–(हिं. क्रि. अ.) आनन्द में मग्न होना, अति प्रसन्न होना, लहलहाना ।

गहगहे–(हिं. अव्य.) धूम-धाम से, बड़ी प्रसन्नता से ।

गहडोरना–(हिं. क्रि. स.) पानी को घँघोलकर गंदा करना ।

गहन–(सं. पुं.) वन, जंगल, दुःख, कष्ट, गहराई, दुर्गम स्थान, जल, पानी; (वि.) दुर्गम, गहरा, घना, अथाह; (हिं. स्त्री.) ग्रहण, दोष, कलंक, कष्ट, विपत्ति ।

गहनता–(सं. स्त्री.) गहन होने का भाव ।

गहना–(हिं. पुं.) आभूषण, बंधक; (क्रि. स.) पकड़ना, धरना ।

गहनि–(हिं. स्त्री.) टेक, हठ, पकड़ ।

गहनी–(हिं. स्त्री.) पशुओं के दाँत हिलने का रोग ।

गहबर–(हिं. वि.) विषम, आवेगपूर्ण, उद्विग्न, व्याकुल ।

गहबरना–(हिं. क्रि. अ.) व्याकुल होना, घबड़ाना ।

गहरना–(हिं. क्रि. अ.) विलंब करना, देर करना ।

गहरवार–(हिं. वि.) एक क्षत्रिय वंश का नाम ।

गहरा–(हिं. वि.) जिसका भूमितल बहुत

नीचे जाकर पाया जावे, जो पृथ्वीतल के भीतर बहुत दूर तक चला गया हो, गंभीर, प्रचण्ड, अधिक, भारी, निम्न, दृढ़, गाढ़ा, कठिन; (मुहा.)–हाथ मारना–भारी रकम मार लेना; शस्त्र की भरपूर मार; गहरी छनना या घुटना–खूब भाँग घुटना; गहरी साँस भरना–ठंढी साँस लेना; गहरे पेट का–रहस्य को गुप्त रखनेवाला; गहरा असामी–धनी मनुष्य; गहरे लोग–धूर्त लोग।

गहराई–(हिं. स्त्री.) गंभीरपन, गहरापन।

गहराना–(हिं. क्रि. अ., स.) गहरा होना या करना।

गहराव–(हिं. पुं.) गहराई, गहरापन।

गहरू–(हिं. स्त्री.) विलंब, देर।

गहरेबाजी–(हिं. स्त्री.) एक्के के घोड़े की तीव्र गति।

गहलोत–(हिं. पुं.) राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा।

गहवा–(हिं. पुं.) सँड़सी।

गहवाना–(हिं. क्रि. स.) पकड़ने का काम दूसरे से कराना।

गहवारा–(हिं. पुं.) झूला, हिंडोला।

गहाई–(हिं.स्त्री.) पकड़ने का काम, पकड़।

गहागड्ड–(हिं. वि.) देखें 'गहगड्ड'।

गहागह–(हि.अव्य.) देखें 'गहगहे'।

गहाना–(हिं. क्रि. स.) पकड़ाना, धराना।

गहिराव–(हिं. पुं.) देखें 'गहराई'।

गहीर–(हिं. वि.) गहरा।

गहीला–(हिं. वि.) अभिमानी, मदोन्मत्त, पागल।

गहुआ–(हिं.पुं.) छोटे आकार की सँड़सी।

गहेलरा–(हिं. वि.) पागल, मूर्ख, गँवार।

गहेला–(हिं. वि.) हठी, अहंकारी, घमण्डी, पागल, मूर्ख, अज्ञानी।

गहैया–(हिं. वि.) पकड़नेवाला, ग्रहण करनेवाला, अंगीकार करनेवाला।

गह्वर–(सं.पुं.) गर्त, विल; (वि.) निविड़, दुर्गम, विषम।

गाँकर–(हिं. स्त्री.) वाटी, लिट्टी।

गांगेय–(सं. पुं.) भीष्म, कार्त्तिकेय।

गाँछना–(हिं. क्रि. स.) गाँथना, गूँथना।

गांज–(हिं. पुं.) अनाज आदि का ढेर।

गाँजना–(हिं. क्रि. स.) ढेर लगाना, एक के ऊपर एक लादना, राशि लगाना।

गांजा–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसकी कली तमाकू की तरह चिलम पर पीते हैं, यह बहुत उन्मादक होता है।

गाँठ–(हिं. स्त्री.) ग्रन्थि, गिरह जो डोरी, धागे आदि में पड़ जाती है, बोरा, गठरी, शरीर के अंग का जोड़, पर्व, ऊख की पोर, गट्ठा, घास-फूस का बँधा हुआ बोझ; (मुहा.)–का पूरा–धनवान्, धनी; –खोलना–रहस्य उद्घाटित करना; –जोड़ना–विवाह की रीति पूरी करना; –में बाँधना–अच्छी तरह स्मरण रखना; मन की गाँठ खोलना–बिना कुछ छिपाये बातें करना; मन में गाँठ पड़ना–बिगाड़ होना।

गाँठकट–(हिं. पुं.) गिरहकट, ठग, चोर।

गाँठ-गोभी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की गोभी जिसमें गूदेदार गाँठ होती है।

गाँठदार–(हिं.वि.) जिसमें बहुत-सी गाँठें हों।

गाँठना–(हिं. क्रि. स.) गाँठ देना, बाँधकर मिला देना, मिलाना, साटना, जोड़ना, अनुकूल करना, वश में लाना, आक्रमण रोकना, पेवन या चकती लगाना; (मुहा.) मतलब गाँठना–अपना काम निकाल लेना।

गाँठी–(हिं. स्त्री.) देखें 'गाँठ'।

गाँड़–(हिं. स्त्री.) किसी पदार्थ का नीचे का भाग, गुदा, मलद्वार।

गाँडर–(हिं. स्त्री.) मूँज की तरह की एक लंबी घास।

गाँड़ा–(हिं. पुं.) किसी वृक्ष या पौधे का कटा हुआ भाग, ऊख की कटी हुई गँड़ेरी जो कोल्हू में पेरने या खेत में बोने के लिये डाली जाती है।

गाँड़ू–(हिं. वि., पुं.) गुदा मैथुन करने या करानेवाला, कायर, नीच, डरपोक।

गाँती–(हिं. स्त्री.) देखें 'गाती'।

गाँथना–(हिं. क्रि. स.) गूँथना, मिलाना, जोड़ना, मोटी सिलाई करना।

गांधर्व–(सं. वि.) गंधर्व संबंधी।

गांधार–(सं. पुं.) भारतवर्ष का एक प्राचीन जनपद।

गांधारी–(सं.स्त्री.) गांधार की राजकुमारी।

गांधी–(हिं. पुं.) गुजराती वैश्यों का एक संप्रदाय।

गांभीर्य–(सं. पुं.) गंभीरता।

गाँव–(हिं. पुं.) किसानों के रहने का स्थान, छोटी बस्ती, ग्राम।

गाँस–(हिं. स्त्री.) ग्रन्थन, बन्धन, फन्दा, प्रतिरोध, वैर, ईर्ष्या, हृदय की गुप्त बात, तीर या बरछी का फल, अस्त्र का नुकीला भाग, अधिकार, शासन, गठन, देखरेख, कठिनता।

गाँसना–(हिं. क्रि. स.) गूथना, गाँठना, कसना, ठस करना, ठूसना, भरना, वश में रखना, चुभाना।

गाँसी–(हिं. स्त्री.) तीर या बरछी का फल, किसी अस्त्र का अगला भाग, गाँठ, छल, कपट।

गाँहक–(हिं. पुं.) देखें 'ग्राहक'।

गाइ, गाई–(हिं. स्त्री.) गाय।

गाऊघप्प–(हिं. वि.) दूसरे की वस्तु या धन अपनानेवाला।

गागर–(हिं. स्त्री.) गगरी, छोटा घड़ा।

गागरी–(हिं. स्त्री.) घड़ा, गगरी।

गाच–(हिं. पुं.) महीन जालीदार कपड़ा जिसपर रेशम के बेल-बूटे कढ़े होते है।

गाछ–(हिं. पुं.) छोटा वृक्ष, पौधा, वृक्ष।

गाछी–(हिं. स्त्री.) खजूर की कोमल पत्ती, छोटे वृक्षों की वारी या बाग।

गाज–(हिं. स्त्री.) गर्जन, गरज, बिजली गिरने का शब्द, बिजली, वज्र; (पुं.) झाग; (मुहा.)–पड़ना–आपत्ति आना, वज्रपात होना, नाश होना।

गाजना–(हिं.क्रि.अ.) गरजना, चिल्लाना, प्रसन्न होना, प्रफुल्ल होना।

गाजर–(हिं. पुं.) एक मीठे कन्द का पौधा; (मुहा.)–मूली समझना–तुच्छ समझना।

गाजी–(अ. पुं.) काफिरों से लड़नेवाला मुसलमान योद्धा।

गाड़–(हिं. स्त्री.) गर्त, गड्ढा, अन्न भरने का गड्ढा, कुएँ की ढाल, खत्ती, खेत की मेड़, भगाड़।

गाड़ना–(हिं.क्रि.स.) पृथ्वी में गड्ढा खोदकर उसमें कोई वस्तु रखकर मिट्टी से ढाँपना, तोपना, जमाना, धँसाना, छिपाना, गुप्त रखना।

गाडर–(हिं. स्त्री.) भेंड़; (अं. स्त्री.) लोहे की धरन।

गाड़ा–(हिं. पुं.) छकड़ा, बैलगाड़ी, गड्ढा जिसमें प्राचीन काल में लोग छिपकर शत्रु, ठग आदि का अन्वेषण करते थे।

गाड़ी–(हिं. स्त्री.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर मनुष्य आदि को पहुँचाने का पहियेदार यन्त्र, यान, शकट; –खाना–(पुं.) गाड़ी रखने का स्थान; –वान–(पुं.) गाड़ी हाँकनेवाला, कोचवान।

गाढ़–(सं. पुं.) अतिशय, दृढ़ता; (वि.) घना, गाढ़ा, गहरा, अथाह, विकट, कठिन, दुर्गम, अधिक, बहुत, दृढ़; (हिं. पुं.) संकट, आपत्ति, कठिनाई; –मुष्टि–(वि.) कंजूस।

गाढ़ा–(हिं. वि.) जो बिलकुल पतला न हो, जिसके तन्तु परस्पर सटे हों, मोटा (वस्त्र), गाढ़, गूढ़, घनिष्ठ, गहरा,

विकट, कठिन; (पुं.) खद्दर; **गाढ़ी कमाई**–(स्त्री.) बड़े परिश्रम से कमाया हुआ धन; **गाढ़े का साथी**–(पुं.) संकटकाल में साथ देनेवाला; **गाढ़े दिन**–(पुं.) संकटकाल।
गाणपत, गाणपत्य–(सं. वि., पुं.) गणपति संबंधी, गणेश का उपासक।
गाणिक्य–(सं. पुं.) वेश्याओं का झुंड।
गात–(हिं. पुं.) गात्र, शरीर का अंग, स्तन, कुच, गर्भ।
गाता–(सं. पुं.) गानेवाला, गवैया।
गाती–(हिं. स्त्री.) गले में लपेटने का वस्त्र, बच्चों के गले में लपेटने का रूमाल।
गात्र–(सं. पुं.) शरीर, देह, अंग, इन्द्रिय; **–मार्जनी**–(स्त्री.) गमछा, तौलिया; **–रुह**–(पुं.) लोम, बाल; **–वती**–श्रीकृष्ण की कन्या का नाम।
गाथ–(सं. पुं.) गान, स्तोत्र; (हिं. स्त्री.) यश, प्रशंसा।
गाथक–(सं. पुं.) गायक, गानेवाला।
गाथांतर–(स. पुं.) एक कल्प का नाम।
गाथा–(सं. स्त्री.) स्तुति, एक प्रकार का छन्द जिसमें तुक का नियम नहीं रहता और सुनने में गद्य के सदृश जान पड़ता है, एक प्रकार का मात्रावृत्त आर्या छन्द, प्राकृत भाषा, संस्कृत तथा प्राकृत मिला हुआ श्लोक; **–कार**–(पुं.) महाकाव्य का रचयिता।
गाथिका–(सं. स्त्री.) स्तुति के निमित्त श्लोक।
गाथी–(सं. वि.) सामवेद गानेवाला।
गाद–(हिं. स्त्री.) तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई वस्तु, तलछट, कोई गाढ़ी वस्तु।
गादड़–(हिं. वि.) डरपोक, कायर, सुस्त; (पुं.) गीदड़, सियार, मेढ़ा।
गादर–(हिं. वि.) आलसी, भीरु, डरपोक।
गादा–(हिं. पुं.) खेत का कच्चा या अधपका अन्न, पेड़ से टपका हुआ महुवे का फल।
गादी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पक्वान्न, देखें 'गद्दी'।
गादुर–(हिं. पुं.) चमगादड़।
गाध–(सं. पुं.) स्थान, लोभ, प्राप्त करने की लालसा, तलस्पर्श, थाह, जल के नीचे का स्थान, नदी का बहाव; (वि.) अल्प, थोड़ा, हल कर पार करने योग्य, छिछला।
गाधि–(सं. पुं.) विश्वामित्र के पिता का नाम।
गान–(सं. पुं.) गाने की क्रिया, गीत, संगीत; **–विद्या**–(स्त्री.) संगीत विद्या।
गाना–(हिं. क्रि. स.) ताल-सुर सहित मुख से मधुर ध्वनि निकालना, विस्तार सहित वर्णन करना, स्तुति करना; (पुं.) गाने की क्रिया, गान; (मुहा.) **अपनी ही गाना**–अपने ही संबंध की बातें करते रहना; **–बजाना**–(पुं. क्रि. अ.) धूमधाम या राग-रंग, उत्सव मनाना।
गाभ–(हिं. पुं.) पशुओं का गर्भ।
गाभा–(हिं. पुं.) हलके रंग का नया निकला हुआ पत्ता, कोंपल, केले आदि पौधे के भीतर का भाग, तोशक के भीतर से निकाली हुई पुरानी रूई, कच्चा अन्न।
गाभिन, गाभिनी–(हिं. वि. स्त्री.) गर्भिणी, जिसके पेट में बच्चा हो।
गाफिल–(अ. वि.) गफलत करनेवाला, असावधान।
गाम–(हिं. पुं.) गाँव, ग्राम।
गामिनी–(सं. स्त्री.) 'गामी' का स्त्री. रूप।
गामी–(सं. वि.) चलनेवाला, जानेवाला, यात्रा करनेवाला, संभोग करनेवाला।
गाय–(हिं. स्त्री.) गौ, बहुत सीधा-सादा मनुष्य।
गायक–(सं. पुं.) गवैया, गानेवाला।
गायकवाड़–(मं. पुं.) बड़ोदा नरेश की उपाधि।
गायकी–(सं. स्त्री.) गानेवाली स्त्री।
गायगोठ–(हिं. स्त्री.) गोशाला।
गायताल–(हिं. पुं.) निकृष्ट पदार्थ।
गायत्री–(सं. स्त्री.) एक वैदिक मन्त्र जिसमें सूर्य की उपासना की जाती है, यह द्विजो का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है, चौबीस अक्षरों का एक वैदिक छन्द, दुर्गा, गंगा; (पुं.) खदिर, खैर।
गायन–(सं. पुं.) गाने का व्यवसाय करनेवाला, गीत गाकर जीविका का निर्वाह करनेवाला, कार्तिकेय, गाना।
गायनी–(सं. स्त्री.) गानेवाली स्त्री, एक मात्रिक छन्द।
गायब–(अ. वि.) लुप्त, अदृश्य।
गार–(हिं. स्त्री.) गाली; (फा. प्रत्य.) करनेवाला; (जैसे–खिदमतगार)।
गारत–(अ. वि.) नष्ट, बरबाद।
गारद–(अं. गार्ड से, स्त्री.) सिपाहियों या सैनिकों का छोटा दस्ता या टुकड़ी, प्रहरी, रक्षक, पहरा; (मुहा.)–**में रखना**–पहरेदार नियुक्त करना, बंदीगृह में कैदकर रखना।
गारना–(हिं. क्रि. स.) दबा कर पानी निकालना, निचोड़ना, निकालना, कष्ट देना।
गारा–(हिं. पुं.) मिट्टी या चूना-सुर्खी आदि में जल मिलाकर बनाया हुआ लेप जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।
गारी–(हिं. स्त्री.) दुर्वचन, गाली, कलंक का आरोपण, स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला एक प्रकार का लोकगीत।
गारुड़–(सं. पुं.) सर्प का विष उतारने का मन्त्र, गरुड़ के आकार की व्यूह-रचना, सुवर्ण, अस्त्र विशेष।
गारुड़िक, गारुड़ी–(सं. पुं.) सर्प का विष उतारनेवाला, विष-वैद्य।
गारो–(हिं. पुं.) गर्व, अहंकार, घमंड, अभिमान, प्रतिष्ठा, सम्मान।
गार्ग–(सं. वि.) गर्ग संबंधी।
गार्गी–(सं. स्त्री.) गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री, दुर्गा, याज्ञवल्क्य की स्त्री।
गार्ड–(अ. पुं.) रेलगाड़ी की रक्षा, आदि के लिए उसके साथ-साथ चलनेवाला एक कर्मचारी।
गार्भिक–(सं. वि.) गर्भ संबंधी।
गार्हपत्याग्नि–(सं. स्त्री.) छः प्रकार की अग्नियों में से प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए।
गार्हस्थ्य–(सं. पुं.) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ के पाँच प्रधान कर्तव्य।
गाल–(हिं. पुं.) कपोल, गण्ड, मुख का मध्य भाग, जितना खाद्य पदार्थ एक बार मुँह में डाला जाय; (मुहा.) **काल के गाल में जाना**–मृत्यु को प्राप्त होना, मरना; **–करना**–बढ़बढ़कर बातें करना; **–फुलाना**–रूठन की मुद्रा अपनाना; **–बजाना**–व्यर्थ बकवास या बढ़चढ़ कर बातें करना; **–मारना**–गाल बजाना।
गालगूल–(हि.पुं.) व्यर्थ की बकवाद, गपशप।
गालन–(सं.पुं.) गलाने का काम।
गालमसूरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का पकवान।
गालव–(सं.पुं.) लोध का वृक्ष, एक ऋषि का नाम, एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्रकार का नाम।
गाला–(हिं. पुं.) धुनी हुई रूई का गोला जो सूत कातने के लिये बनाया जाता है, पूनी, बकबक करने का अभ्यास।
गालित–(सं.वि.) द्रवीकृत, गलाया हुआ।
गाली–(हिं. स्त्री.) दुर्वचन, निन्दा, कलंकसूचक वाक्य; (मुहा.) **–खाना**–दुर्वचन सुनना; **–देना**–दुर्वचन का प्रयोग करना; **गालियों पर उतरना**–गाली-गलौज करना।
गाली-गलौज, गाली-गुफ्ता–(हिं. स्त्री.) दुर्वचन, परस्पर गाली देना।
गाल्लू–(हिं.वि.) गाल बजानेवाला, बकवादी।
गाल्हना–(हिं.क्रि.स.) बोलना, बात करना।

गुंजन–(सं. पुं.) भौंरों की भनभनाहट, मधुर ध्वनि।
गुंजना–(हिं. क्रि. अ.) भनभनाना, गुनगुनाना, भौंरों की तरह शब्द करना।
गुंजरना–(हिं.क्रि.अ.) गुंजार करना, भौंरों का गूंजना, शब्द करना, भनभनाना।
गुंजा–(हिं. स्त्री.) घुंघची नाम की लता।
गुंजाइश–(फा. स्त्री.) स्थान, अवकाश, समान भर को स्थान, सफाई।
गुंजायमान–(हिं. पुं.) गुंजन
गुंजार–(हिं. पुं.) गुंजन।
गुंजारना–(हिं. क्रि. अ.) गूंजना।
गुंजारित, गुंजित–(हिं. वि.) गुंजनपूर्ण।
गुंजियाँ–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों के कान म पहिनने का आभूषण।
गुंठा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नाटा घोड़ा, टट्टू; (वि.) नाटा, बौना।
गुंड–(हिं. वि.) पीसा हुआ; (हिं. पुं.) मलार राग का एक भेद।
गुंडई–(हिं. स्त्री.) गुंडापन।
गुंडली–(हिं. स्त्री.) कुण्डली, गेंडुरी।
गुंडा–(हिं. वि.) कुमार्गी, पापी, छैल-चिकनियाँ, दुष्ट मनुष्य; **–पन**–(पुं.) दुष्टता, नीचता, वदमाशी।
गुंथना–(हिं.क्रि.अ.) बालआदिका गुंथकर लच्छेदार वनना, नत्थी होना, लड़ी बनाकर बाँधा जाना, गुंधना।
गुंदला–(हिं. पुं.) मोथा नाम की घास।
गुंधना–(हिं.क्रि.अ.) जल मिलाकर आटा का सनना, गुंथना।
गुंथवाना–(हिं. क्रि.स.) गूंथने का काम दूसरे से कराना।
गुंधाई–(हिं. स्त्री.) गूंथने का काम या गूंथन का शुल्क।
गुंधावट–(हिं.स्त्री.) गूंधने या गूंथने की क्रिया, गुंधने की रीति।
गुंफ–(सं. पुं.) उलझने की अवस्था, उलझन, फँसाव, गुत्थम-गुत्था, दाढ़ी, मोंछ, गलमुच्छा, वाजूवंद।
गुंफन–(सं. पुं.) उलझन, गुत्थमगुत्था, गूंथना, सजाना।
गुंफित–(सं. वि.) उलझा हुआ, गूंथा हुआ।
गुंबज–(हिं. पुं.) देख 'गुंवद'।
गुंवद–(फा. पुं.) छत की गोलाकार रचना।
गुंवददार–(हिं. वि.) गुंवद-युक्त, जिस पर गुंवद हो।
गुंबा–(हिं. पुं.) मस्तक पर चोट लगने से सूजन आना, गुलमा।
गुंभी–(हिं. स्त्री.) अंकुर, गाभ, पाल खींचने की रस्सी।
गुंमज–(हिं. पुं.) देखें 'गुंवद'।
गुआ–(हिं. स्त्री.) सुपारी, पुंगीफल।
गुआरि, गुआलिन–(हिं.स्त्री.) देखें 'ग्वालिन'।
गुइयाँ–(हिं.पुं.) साथी, सहचर; (स्त्री.) सखी।
गुग्गुल–(सं. पुं.) एक काँटेदार वृक्ष जिसका गोंद सुगंध के लिए जलाया जाता है और दवाओं में प्रयुक्त होता है, सलई का पेड़।
गुच्ची–(हिं. स्त्री.) सौ पान का गुच्छा, आधी ढोली।
गुच्ची–(हिं.स्त्री.) लड़कों का गुल्ली-डंडा खेलते समय भूमि में खोदा हुआ छोटा गड्ढा; (वि.स्त्री.) बहुत छोटी, नन्हीं।
गुच्चीपारा–(हिं. स्त्री.) लड़कों का कौड़ी फेंकने का गड्ढा।
गुच्छ, गुच्छक–(सं. पुं.) एक में बँधे हुए फूलों या पत्तों का समुदाय, गुच्छा, घास का मुट्ठा, वह पौधा जिसमें केवल पत्ते और लचीली टहनियाँ निकलें, बत्तीस लड़ों का हार, मोती का हार, मोर की पूंछ।
गुच्छा–(हिं. पुं.) एक डाल में लगे हुए पत्ते, फलों या फूलों का समूह, फूल का झब्बा, एक साथ बँधी हुई वस्तुओं का समूह, फुंदना, झब्बा।
गुच्छी–(हिं. स्त्री.) करंज, रीठा, एक तरह का पौधा जिसके फूलों की तरकारी बनती है।
गुच्छेदार–(हिं. वि.) गुच्छों से युक्त, गुच्छेवाला।
गुजर–(फा. पुं.) निर्वाह, गुजारा, पहुँच, प्रवेश, जाना, व्यतीत होना; (मुहा.) **–होना या करना**–निर्वाह होना या करना।
गुजरना–(हिं. क्रि. अ.) (समय का) बीतना या कटना, (आदमी, सवारी आदि का) आना-जाना, निर्वाह होना, जीविका चलना; (मुहा.) **किसी पर गुजरना**–किसी पर आफत या संकट आना; **गुजर जाना**–मर जाना।
गुजर-बसर–(फा. पुं.) जीविका चलना, निर्वाह होना।
गुजरात–(हिं. पुं.) भारतवर्ष का एक पश्चिमी राज्य।
गुजराती–(हिं. वि.) गुजरात देश का; (स्त्री.) इस देश की भाषा, इलायची; (पुं.) इस देश का निवासी।
गुजरान–(हिं. पुं.) निर्वाह, जीविका।
गुजरिया–(हिं. स्त्री.) गूजर जाति की स्त्री, गूजरी, ग्वालिन।
गुजरी–(हिं. स्त्री.) कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची, दीपक राग की एक रागिनी, गूजरी।
गुजरेटी–(हिं. स्त्री.) गूजर जाति की कन्या, ग्वालिन।
गुजारा–(फा. पुं.) जीविका, निर्वाह, निर्वाह के लिए दी जानेवाली रकम, गुजर, गुजरान।
गुजारिश (फा. स्त्री.) निवेदन, प्रार्थना।
गुज्झा–(हिं.पुं.) बाँस की कील, रेशेदार गूदा।
गुझरौट–(हिं. पुं.) वस्त्र की सिकुड़न, स्त्रियों की नाभि के पास का भाग।
गुझिया–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई।
गुट–(हिं.पुं.) गुट्ट, दल, समूह; **–बंदी**–(स्त्री.) दल बनाना; (मुहा.) **–बाँधना**–दल बनाना।
गुटकना–(हिं.क्रि.अ., स.) कबूतर की तरह शब्द करना, निगल जाना, खा जाना।
गुटका–(हिं. पुं.) छोटे आकार की पुस्तक, गुटिका, गुपचुप नाम की मिठाई।
गुटकाना–(हिं. क्रि. स.) तवला बजाना।
गुटरगूं–(हिं. स्त्री.) कबूतर की बोली।
गुटिका–(सं. स्त्री.) वटिका, गोली, गोल (वर्तुलाकार) पदार्थ।
गुट्ट–(हिं. पुं.) समूह, झुंड, दल, जत्था।
गुट्टा–(हिं.पुं.) लाह की बनी हुई गोटी।
गुट्ठल–(हिं. वि.) जिसमें बड़ी गुठली के आकार की जड़ या बीज हो, मूर्ख; (पुं.) गाँठ, गिल्टी।
गुठली–(हिं. स्त्री.) किसी फल का कड़ा और बड़ा बीज।
गुड़ंबा–(हिं.पुं.) गुड़ में पकाया हुआ आम का गूदा, फरुही का गुड़ म बना लड्डू।
गुड़–(हिं. पुं.) कड़ाहे में ऊख का रस उबालकर गाढ़ा किया हुआ तथा जमाया हुआ पिंड, भेली; (मुहा.) **कुल्हिया में गुड़ फटना**–गुप्त रीति से कोई कार्य होना।
गड़करी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी
गुड़गुड़–(हिं. पुं.) जल में नली आदि द्वारा वायु-प्रवेश होने का शब्द।
गुड़गुड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) गुड़गुड़ शब्द होना, हुक्का पीना।
गुड़गुड़ाहट–(हिं.स्त्री.) गुड़गुड़ शब्द होना।
गुड़गुड़ी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का हुक्का।
गुड़धनियाँ, गुड़धानी–(हिं. स्त्री.) भुने हुए गेहूँ के साथ गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू।
गुड़च, गड़ची–(हिं. स्त्री.) देखें 'गुरुच'।
गुड़फला–(सं. स्त्री.) छोटी मकोय।
गुड़हर, गड़हल–(हिं. पुं.) अड़हुल का पौधा या फूल, जपा वृक्ष या पुष्प।
गुड़ाकू(खू)–(हिं.पुं.) गुड़ मिला हुआ पीने का

तंवाकू ।
गुड़ाकेश–(सं. पुं.) अर्जुन, शिव, महादेव ।
गुड़िया–(हि. स्त्री.) कपड़े की बनी हुई लड़कियों के खेलने की पुतली; (मुहा.) गुड़ियों का खेल–अति सहज कार्य ।
गुड़ी–(हि. स्त्री.) पतंग, कनकैया, गुड्डी।
गुडुरू–(हि.स्त्री.) केवाड़ की चूल, छोटा छिद्र।
गुड़्वा–(हि. पुं.) कपड़े का बना हुआ पुतला, गुड्डा ।
गुड़ूची–(सं. स्त्री.) गुरुच, गिलोय ।
गुड्डा–(हि. पुं.) वड़ा पतंग, वड़ी गुड़िया।
गुड्डी–(हि. स्त्री.) पतंग, कनकैया, घुटने की हड्डी, एक प्रकार का छोटा हुक्का ।
गुड्रु–(हि. पुं.) एक प्रकार का धूल में रहनेवाला कीड़ा, गुडरू।
गुढ़–(हि. पुं.) छिपने का स्थान ।
गुढ़ना–(हि. क्रि. अ.) छिपना ।
गुण–(सं. पुं.) धनुष की प्रत्यंचा, रस्सी, डोरी, शौर्यादि गुण, धर्म, प्रकृति के सत्त्व, रज, तम–ये तीन भाव, प्रवीणता, सद्वृत्ति, अच्छा स्वभाव, शील, ज्ञान, विद्या आदि उत्कर्ष, वड़ाई, कला, प्रभाव, विशेषण, विशेषता, सूद, व्याज, इन्द्रिय, त्याग, मलाई, प्रकृति, तीन की संख्या, गणित, तन्तु, डोरा, व्याकरण में 'अ' 'ए' और 'ओ' वर्ण, 'गुना' अर्थ का प्रत्यय; यथा–त्रिगुण इत्यादि; (मुहा.) **–गाना**–प्रशंसा करना; **–मानना**–उपकार मानना; **–क**–(पुं.) वह अंक जिससे कोई अंक गुणा किया जावे, इन्द्रिय, गुण; **–कथन**–(पुं.) गुणवर्णन; **–कर**–(वि.) लाभदायक, गुण करनेवाला; **–कार**–(वि.) रसोई वनानेवाला; (पुं.) भीमसेन, संगीत विद्या का जानकार; **–कारक, कारी**–(वि.) लाभदायक; **–किरी, –केली**–(स्त्री.) एक रागिनी का नाम; **–केशी**–(स्त्री.) इन्द्र के सारथी की कन्या; **–गान**–(पुं.) गुण-कीर्तन; **–गौरी**–(स्त्री.) पतिव्रता स्त्री, सोहागिन, पति के सदृश गुण वाली स्त्री, स्त्रियों का एक व्रत; **–ग्राम**–(पुं.) गुणों का समूह; **–ग्राहक, –ग्राही**–(वि.) गुणों को ग्रहण करनेवाला; **–ज्ञ**–(वि.) गुणों को समझनेवाला, गुणों को परखनेवाला, गुणी; **–०ता**–(स्त्री.) गुण की परख या जाँच; **–ता**–(स्त्री.) गुणत्व, अधीनता; **–त्व**–(पुं.) गुण का भाव, अधीनता; **–त्रय**–(पुं.) सत्त्व, रज और तम–ये तीन गुण; **–न**–(पु.) मन्त्रणा, अभ्यास, एक अंक को दूसरे से गुणा करना, गुणा, आवृत्ति, वर्णन, सोचना, मनन करना; **–०फल**–(पुं.) वह संख्या जो दो अंकों को गुणा करने से प्राप्त हो; **–निधि**–(वि.) गुणों का भंडार; **–नीय**–(वि.) गुणा करने योग्य, गुण्य; **–प्रिय**–(वि.) गुणानुरागी; **–मय**–(वि.) गुणपूर्ण, गुणाढ्य; **–वाचक**–(वि.) गुण को प्रगट करनेवाला; **–०संज्ञा**–(पुं.) भाववाचक संज्ञा; **–वाद**–(पुं.) मीमांसा के अनुसार अर्थवादविशेष; **–वान्**–(वि.) गुणी, गुणवाला; **–शब्द**–(पुं.) गुणबोधक शब्द; **–शील**–(वि.) सच्चरित्र, अच्छे गुण का; **–संकीर्तन**–(पुं.) गुणानुवाद, गुणकथन; **–सागर**–(पुं.) एक प्रकार का राग; (वि.) गुण-निधि; **–हीन**–(वि.) गुणशून्य, जिसमें कोई गुण न हो ।
गुणांक–(सं. पुं.) वह अंक जिसको गुणा करना हो ।
गुणा–हि. पुं.) गणित की एक क्रिया, गुणन।
गणाकर–(सं. पुं.) गुण-निधि, महादेव ।
गुणाख्यान–(सं. पुं.) गुण-कीर्तन ।
गुणाढ्य–(सं. वि.) गुणयुक्त, गुणवान् ।
गुणातीत–(सं. वि.) सुख-दुःख से रहित, जीवन्मुक्त ।
गुणानुवाद–(सं. पुं.) प्रशंसा, बड़ाई ।
गुणान्वित–(सं. वि.) गुणयुक्त, गुणवान् ।
गुणापवाद–(सं. पुं.) गुण की निन्दा ।
गुणावली–(सं.स्त्री.) गुणा करने की प्रणाली।
गुणित–(सं. वि.) गुणन किया हुआ ।
गुणी–(सं. पुं.) धनुष, झाड़-फूंक करनेवाला ओझा; (वि.) गुणवान्, निपुण ।
गुणीभूत व्यंग्य–(सं.पुं.) वह काव्य जिसमें व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ से कम या समान हो, अधिक न हो ।
गुणेश्वर–(सं.पुं.) गुण के अधिपति, परमेश्वर।
गुण्य–(सं. वि.) गुणनीय, प्रशस्त, गुणयुक्त, जिसमें अच्छे गुण हों; (पुं.) वह अंक जिसको गुणा करना हो।
गुण्यांक–(सं. पुं.) वह अङ्क जो गुणा किया जावे ।
गुत्थमगुत्था–(हि. पुं.) उलझन, फँसाव, भिड़न्त, लड़ाई, हाथावाँही ।
गुत्थी–(हि. स्त्री.) कई वस्तुओं को एक में गूंथने की गाँठ, गिरह, उलझन ।
गुथना–(हि. क्रि. अ.) गुथा जाना, टाँका लगना, भद्दी तरह से सिला जाना, लड़ने के लिए दो मनुष्यों का परस्पर लिपट जाना।
गुथवाना–(हि. क्रि. स.) गूंथने का काम दूसरे से कराना ।
गुथवां–(हि. वि.) गूंथकर बनाया हुआ ।
गुद–(सं.पुं.) अपान, मलत्याग का द्वार, गुदा।
गुदकार–(हि. वि.) गूदेदार, गुदगुदा, गुदार, मांसल ।
गुदकील–(सं. पुं.) अर्श रोग, बवासीर ।
गुदगुदा–(हि. वि.) गूदेदार, मांसयुक्त, कोमल, जिसका तल दबाने से दब जावे ।
गुदगुदाना–(हि. क्रि. स.) बच्चों को प्रसन्न करने के लिये उनकी काँख, पैर के तलवे, पेट आदि को सहलाना, मन बहलाना, चित्त को चलायमान करना ।
गुदगुदाहट–(हि. स्त्री.) काँख, पेट आदि मांसल स्थानों पर अँगुली द्वारा सहलाने से उत्पन्न सुरसुराहट या मंद खुजली, आह्लाद, उत्कण्ठा, उमंग, हुलास ।
गुदगुदी–(हि. स्त्री.) देखें 'गुदगुदाहट' ;
गुदग्रह–(सं. पुं.) कोष्ठबद्धता का रोग ।
गुदड़िया–(हि. पुं.) गुदड़ी पहिनने या ओढ़नेवाला ।
गुदड़ी–(हि. पुं.) फटे-पुराने वस्त्रों का बना हुआ ओढ़ना या विछौना; **–बाजार**–(पुं.) वह हाट जिसमें टूटे-फूटे पदार्थ तथा फटे-पुराने वस्त्र आदि विकते हैं; (मुहा.) **–का लाल**–(पुं.) गरीब की तरह रहनेवाला असाधारण प्रतिमान्वित व्यक्ति ।
गुदना–(हि. क्रि. अ.) गड़ना, चुभना; (पुं) देखें 'गोदना' ।
गुदभ्रंश–(सं. पु.) गुदा से काँच निकलने का रोग ।
गुदमा–(हि. पुं.) एक प्रकार का नरम मोटा कम्बल ।
गुदर–(हि. पुं.) राज-सभा में उपस्थिति ।
गुदरना–(हि. क्रि. अ.) निवेदन करना ।
गुदरानना–(हि. क्रि. स.) सूचित करना ।
गदरी–(हि. स्त्री.) देखें 'गुदड़ी' ।
गुदरैन–(हि. स्त्री.) पढ़ा हुआ पाठ भली भाँति सुनाना, परीक्षा ।
गुदवाना–(हि. क्रि. स.) गुदाना।
गुदस्तंभ–(सं. पुं.) कठिनता से मल निकलने का रोग।
गुदांकुर–(सं. पुं.) अर्शरोग ।
गुदा–(सं. स्त्री.) मलद्वार, गाँड़ ।
गुदाना–(हि. क्रि. स.) गोदने की क्रिया कराना, गुदवाना ।
गुदाम–(हि. पुं.) अनेक पदार्थों के रखने का स्थान, गोला, गोदाम ।
गुदार–(हि. वि.) गूदेदार, जिसमें गुदा अधिक हो ।
गुदारना–(हि. क्रि. स.) पढ़कर सुनाना ।
गुदारा–(हि. वि.) गूदेदार ।

गुदुरी–(हिं. स्त्री.) मटर की फली, मटर की उपज को नष्ट करनेवाला कीड़ा।
गुद्दा–(हिं. पुं.) फल आदि के भीतर का गूदा।
गुद्दी–(हिं. स्त्री.) किसी फल के बीच का गूदा, गिरी, मींगी, मस्तक का पिछला भाग, हथेली का मांस।
गुन–(हिं. पुं.) देखें 'गुण'।
गुनकारी–(हिं. वि.) गुणकारक।
गुनगुना–(हिं.वि.) कुनकुना, थोड़ा गरम।
गुनगुनाना–(हिं. क्रि. अ.,स.) गुनगुन शब्द बोलना, नाक से बोलना, अस्पष्ट स्वर में गाना।
गुनना–(हिं. क्रि. स.) गुणा करना, मनन करना, सोचना-विचारना, गिनना, रटना।
गुनवंत–(हिं.वि.) गुणी, जिसमें कोई गुण हो।
गुनहगार–(फा. वि.) दोषी, अपराधी।
गुनहगारी–(फा. स्त्री.) दोष, अपराध।
गुना–(हिं. पुं.) संख्या सूचित करने के लिये शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है, जिसका अर्थ *"उतनी बार और होना"* होता है; *यथा*—दस-गुना, बीस-गुना इत्यादि; गणित में गुणा करने की क्रिया।
गुनावन–(हिं.पुं.) विचार।
गुनाह–(फा. पुं.) दोष, कसूर, दुष्कर्म; –गार–(वि.) देखें 'गुनहगार'।
गुनाही–(हिं. वि.) देखें 'गुनहगार'।
गुनिया–(हिं.वि.) गुणी, गुणवान; (स्त्री.) राजगीर का समकोण नापने का यन्त्र, गोनिया; (पुं.) नाव की रस्सी खींचनेवाला मल्लाह।
गुनियाला–(हिं. वि.) गुणी।
गुनी–(हिं. वि.) देखें 'गुणी'।
गुन्नी–(हिं. स्त्री.) कपड़ा ऐंठकर बना हुआ कोड़ा।
गुपचुप–(हिं. स्त्री.) एक तरह की मिठाई जो मुख में रखते ही गल जाती है; (अव्य.) चुपचाप, गुप्त रीति से।
गुपाल–(हिं. पुं.) देखें 'गोपाल'।
गुपुत–(हिं. वि.) देखें 'गुप्त'।
गुप्त–(सं. वि.) गूढ़, रक्षित, छिपा हुआ, कठिनता से जानने योग्य; (पुं.) वैश्यों की एक उपाधि; –चर–(पुं.) जो दूत किसी बात का चुपचाप भेद लेता है, जासूस, भेदिया; –दान–(पुं.) वह दान जिसको देनेवाले के सिवाय दूसरा कोई नहीं जानने पाता; –मार–(हिं.स्त्री.) भीतरी मार, छिपकर किया हुआ अनिष्ट; –वेश–(पुं.) ऐसा पहनावा जिससे मनुष्य पहिचाना न जा सके।
गुप्ता–(सं. स्त्री.) वह परकीया नायिका जो सुरति छिपाने का उद्योग करती है, रक्षिता स्त्री, रखनी।
गुप्ति–(सं. स्त्री.) छिपाने की क्रिया, रक्षण, आच्छादन, कारागार, कन्दरा, गड्ढा, तन्त्र के अनुसार मन्त्र का संस्कार, अहिंसा आदि योग के अंग, नाक का छिद्र।
गुप्ती–(हिं. स्त्री.) एक तरह की किरिच या तलवार जो छड़ी के भीतर छिपी रहती है।
गुप्फा–(हिं. पुं.) फुंदना, झब्बा, फूलों का गुच्छा।
गफा–(हिं. स्त्री.) गुहा, कन्दरा।
गुबरैला–(हिं.पुं.) गोबर में से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का काले रंग का कीड़ा।
गुबार–(अ. पुं.) मन में जमा हुआ क्रोध, द्वेष आदि की भावना; (मुहा.)–निकालना–द्वेष आदि के कारण बदला चुकाना, कसर लेना या काढ़ना।
गुबारा–(हिं. पुं.) देखें 'गुब्बारा'।
गुबिंद–(हिं. पुं.) देखें 'गोविंद'।
गुब्बाड़ा, गुब्बारा–(हिं. पुं.) कागज, रबर आदि की बनी हुई वह गोल या लंबी थैली जो गरम वायु या किसी प्रकार की गैस भरकर आकाश में उड़ाई जाती है।
गुम–(फा. वि.) खोया हुआ, गायब, गुप्त, छिपा हुआ, लापता।
गुमकना–(हिं. क्रि. अ.) भीतर ही भीतर गूंजना।
गुमजी–(हिं. स्त्री.) छोटा गुंबद।
गुमटा–(हिं. पुं.) गोल सूजन जो मस्तक में चोट लगने से उत्पन्न होती है, गुलमा।
गुमटी–(हिं. स्त्री.) घर की सबसे ऊपर की छत या सीढ़ी, रेल-लाइन के किनारे चौकीदार की कोठरी, टीन और लकड़ी से बनी हुई छोटी दुकान।
गुमना–(हिं.क्रि.अ.) लुप्त हो जाना, खो जाना।
गुमनाम–(फा. वि.) अप्रसिद्ध, अज्ञात, जिस पर नाम आदि न लिखा हो।
गुमान–(फा. पुं.) घमंड, अहंकार, अनुमान, कु-धारणा।
गुमाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'गँवाना'।
गुमानी–(हिं. वि.) अहंकारी, घमण्डी।
गुमाश्ता–(फा. पुं.) बड़े रोजगारी की ओर से बेचने और खरीदने का काम करनेवाला, अभिकर्त्ता।
गुमाश्तागीरी–(फा. स्त्री.) गुमाश्ते का पद या काम।
गुमिटना–(हिं.क्रि.अ.) लिपटना, लपेटा जाना।
गुम्मट–(हिं. पुं.) गुंबद।
गुम्मा–(हिं. वि.) कम बोलनेवाला, चुप्पा; (पुं.) एक किस्म की बड़ी ईंट।
गुरंब(बा)–(हिं. पुं.) गुड़ंबा।
गुर–(हिं. पुं.) किसी कार्य की सिद्धि के लिये मूलमन्त्र, युक्ति, भेद, तीन की संख्या, देखें 'गुड़' और 'गुरु'।
गुरअई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का बन्धक।
गुरगा–(हिं. पुं.) गुरु का शिष्य, चेला, अनुचर, अनुगामी, टहलुआ, नौकर, भेदिया, जासूस।
गुरच–(हिं. स्त्री.) देखें 'गुड़ुच'।
गुरचियाना–(हिं.क्रि.अ.) सिकुड़न पड़ना, अरुझना।
गुरची–(हिं. स्त्री.) सिकुड़न, वल, बटन।
गुरचों–(हिं. स्त्री.) आपस में धीरे-धीरे बात करना, कानाफूसी।
गुरदा–(फा. पुं.) रीढ़दार प्राणियों में स्थित कलेज के पास का एक अंग, वृक्क, साहस, हिम्मत।
गुरवी–(हिं. वि.) अभिमानी।
गुरमुख–(हिं. वि.) गुरु से मन्त्र की दीक्षा या शिक्षा लिया हुआ, गुरुमुख।
गुरमुखी–(हिं. स्त्री.) गुरुमुखी।
गुरवार–(हिं. पुं.) गुरुवार, बृहस्पतिवार।
गुरवी–(हिं. वि.) अहंकारी, घमण्डी।
गुरसल–(हिं. पुं.) सिरोही नामक पक्षी।
गुरसी–(हिं. स्त्री.) अँगीठी।
गुरसुन–(हिं. पुं.) सोनारों की एक प्रकार की छेनी।
गुराई–(हिं. स्त्री.) देखें 'गोराई'।
गुराव(व)–(हिं.पुं.) तोप लादने की एक प्रकार की गाड़ी, एक मस्तूल की नाव, चारा काटने का एक शस्त्र।
गुरिया–(हिं. स्त्री.) किसी माला या लड़ी का एक दाना, मनका, कटा हुआ गोल छोटा टुकड़ा, हेंगी में बँधी हुई रस्सी जिसका एक छोर जुए के बीच में बँधा रहता है।
गुरिल्ला–(अं. पुं.) गोरिल्ला, छापामार सेना का दस्ता या सैनिक, गोरिल्ला।
गुरिल्ला युद्ध–(हिं. पुं.) वह युद्ध जिसमें छिपे-छिपे सैनिकों के दस्ते एक दूसरे पर अवसर पाकर अज्ञात रूप से आक्रमण करते रहते हैं।
गुरु–(सं. पुं.) देवताओं के गुरु बृहस्पति, शिव, परमेश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, तान्त्रिक अथवा अन्य मंत्र का उपदेश देनेवाला पुष्य नक्षत्र, आचार्य, विद्या या कला सिखलानेवाला अध्यापक दो मात्राओं

फल और उसका वृक्ष ।
गुलाब वाड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का उत्सव जिसमें शोभा के लिये गुलाब के फूल सजाये जाते हैं ।
गुलाबी–(हिं. वि.) गुलाब के रंग का, गुलाब संबंधी, थोड़ा हल्का; (पुं.) एक प्रकार का लाल रंग ।
गुलाम–(अ. पुं.) मोल लिया हुआ या क्रीत, दास खरीदा हुआ नौकर, पराधीन व्यक्ति, ताश का गुलाम-छाप पत्ता ।
गुलामी–(अ. स्त्री.) गुलाम होने का भाव या स्थिति, दासता, दासत्व, पराधीनता, परतंत्रता, नौकरी ।
गुलाल–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लाल बुकनी जो होली में एक दूसरे के मुख पर मलते हैं ।
गुलिका–(सं. स्त्री.) गुटिका, गोली ।
गुलिया–(हिं. वि.) महुवे के बीज से निकाला हुआ ।
गुलूबंद–(फा. पुं.) गले का एक गहना, ऊनी पट्टी जो जाड़े में लोग गले या मस्तक पर लपेटते हैं ।
गुलेटन–(हिं. पुं.) सान की बट्टी ।
गुलेला–(हिं. पुं.) गुलेल, इसमें प्रयुक्त गोली या छर्रा ।
गुलैंदा–(हिं. पुं.) महुवे का फल, कोइना ।
गुल्फ–(सं. पुं.) एँड़ी के ऊपर की गाँठ ।
गुल्म–(सं. पुं.) सेना का एक अंश जिसमें ९ रथ, ९ हाथी, ४५ पैदल और २७ घोड़े रहते हैं, रक्षाव्यूह, प्लीहा रोग, वृक्ष जिसमें तना न हो, पेट का एक रोग; –मूल–(पुं.) आर्द्रक, अदरक ।
गुल्लक–(हिं. पुं.) देखें 'गोलक', प्रतिदिन की आमदनी रखने की थैली या संदूक ।
गुल्लर–(हिं. पुं.) देखें 'गूलर' ।
गुल्ला–(हिं. पुं.) गुलेल में फेंकने की मिट्टी की गोली, एक तरह की मिठाई, रसगुल्ला, ईख की गँड़ेरी, रस्सी का फंदा ।
गुल्ली–(हिं. स्त्री.) बीज, फल की गुठली, महुवे का फल, गोलाकार लंबोतरा छोटा टुकड़ा, लड़कों का डंडे से खेलने का काठ का छोटा टुकड़ा, केवड़े का फूल, छोटा गोल पासा, ईख की गड़ेरी ।
गुल्ली-डंडा–(हिं. पुं.) लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जो गुल्ली और डंडे से खेला जाता है ।
गुवाक–(सं. पुं.) सुपारी या उसका वृक्ष ।
गुवाल–(हिं. पुं.) देखें 'ग्वाल', अहीर ।
गुविंद–(हिं. पुं.) देखें 'गोविंद' ।
गुसल–(हिं. पुं.) देखें 'गुस्ल', स्नान; –खाना–(पु.) स्नानगृह ।
गुसाँई–(हिं. पुं.) गोसाईं, गोस्वामी ।
गुसा–(हिं. पुं.) गुस्सा, क्रोध, रोष ।
गुसैयाँ–(हिं. पुं.) ईश्वर, स्वामी ।
गुस्ताख–(फा. वि.) बड़ों का संकोच न रखनेवाला, उद्दंड, अशिष्ट ।
गुस्ताखी–(फा. स्त्री.) उद्दंडता, अशिष्टता ।
गुस्ल–(अ. पुं.) स्नान, नहाना ।
गुस्लखाना–(अ. पुं.) स्नानागार ।
गुस्सा–(अ. पुं.) क्रोध, कोप; (मुहा.)–उतरना या निकलना–क्रोध शांत होना; –उतारना–बदला लेकर अपना क्रोध शांत करना; –चढ़ना–क्रोध चढ़ना ।
गुस्सैल–(हिं. वि.) चिड़चिड़ा, क्रोधी ।
गुह–(सं. पुं.) कार्तिकेय, घोड़ा, परमेश्वर, विष्णु, श्रृङ्गवेरपुर का एक मल्लाह राजा जो राम का मित्र था, गुफा, कन्दरा, हृदय, माया; (हिं. पुं.) विष्ठा, गू ।
गुहड़ा–(हिं. पुं.) चौपायों का एक रोग ।
गुहना–(हिं. क्रि. स.) गूथना ।
गुहराना–(हिं. क्रि. स.) पुकारना, चिल्लाकर बुलाना ।
गुहवाना–(हिं. क्रि. स.) गूथने का काम दूसरे से कराना, गुँथवाना ।
गुहाँजनी–(हिं. स्त्री.) आँख की पलक पर होनेवाली फोड़िया, बिलनी ।
गुहा–(सं. स्त्री.) गड्ढा, गुफा, कन्दरा, हृदय ।
गुहाई–(हिं. स्त्री.) गूथने की क्रिया या वेतन ।
गुहाचर–(सं. पुं.) ब्रह्म, परमात्मा ।
गुहामुख–(सं. पुं.) कन्दरा का द्वार ।
गुहार–(हिं. स्त्री.) रक्षा के लिये पुकार, दोहाई ।
गुहाल–(हिं. पुं.) गोशाला, गाय रखने का घर ।
गुहाशय–(सं. पुं.) परमात्मा, प्राण ।
गुहिन–(सं. पुं.) वन, जंगल ।
गुह्य–(सं. वि.) गोपनीय, छिपा हुआ, गूढ़, छिपाने योग्य, गुप्त, जिसका अर्थ सहज में स्पष्ट न हो; (पुं.) कछुवा, शिव, महादेव, विष्णु, गुप्तांग; –क–(पुं.) कुवेर के धन की रक्षा करनेवाला यक्ष; –दीपक–(पुं.) खद्योत, जुगनू; –देश–(पुं.) गुदा, मलद्वार; –पति–(पुं.) वज्रधर, कुवेर ।
गुह्येश्वरी–(सं. स्त्री.) काली, आद्या, विद्या ।
गूंगा–(फा. वि.) जो बोल न सके, मूक, जिसके मुख से शब्द स्पष्ट न निकले; (मुहा.) गूंगे का गुड़–ऐसी वस्तु जिसका अनुभव हो पर जिह्वा से कहा न जा सके ।
गूंगी–(हिं. स्त्री.) बोल न सकनेवाली स्त्री, एक प्रकार की बिछिया, दो-मुहाँ साँप ।
गूंज–(हिं. स्त्री.) भौरों के गूंजने का शब्द, कल-ध्वनि, प्रतिध्वनि, व्याप्त ध्वनि, लट्टू की कील जिस पर वह घूमता है, वाली का पतला भाग जो इसमें मुड़ा रहता है ।
गूंजना–(हिं. क्रि. अ.) भौरों का भनभनाना, प्रतिध्वनित होना ।
गूँठ–(हिं. पुं.) पहाड़ी टट्टू ।
गूँथना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'गूथना' 'गूंधना' ।
गूँधना–(हिं. क्रि. स.) आटे को पानी से सानकर हाथों से मलना, मसलना, माड़ना, पिरोना, गूँथना ।
गू–(हिं. पुं.) विष्ठा, मल; –मूत–(पुं.) मल-मूत्र, छोटे शिशु का मलमूत्र फेंकना; (मुहा.) –उछालना–बदनामी करना; का बोझ; –गू का कीड़ा–बहुत मैला-कुचैला या घिनौना व्यक्ति; –का टोकरा–बदनामी –खाना–अत्यन्त अनुचित काम करना; –मूत करना–छोटे शिशु का मल-मूत्र साफ करना; –में घसीटना, –में नहलाना–अत्यन्त कलंकित या अपमानित करना; –में ढेला फेंकना–नीच के मुंह लगना ।
गूगल–(हिं. पुं.) देखें 'गुग्गुल' ।
गूजर–(हिं. पुं.) अहीरों या ग्वालों की एक जाति, देखें 'गुर्जर' ।
गूजरी–(हिं. स्त्री.) गुजरात की स्त्री, गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन, पैर में पहिनने का आभूषण, एक रागिनी का नाम ।
गूजी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का काला कीड़ा ।
गूझा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्वान्न, बड़ी गुझिया, गूदा, फल के भीतर का तन्तु ।
गूढ़–(सं. वि.) गुप्त, छिपा हुआ, जिसमें बहुत-सा अभिप्राय गुप्त हो, जटिल, कठिन; (पुं.) एक अलंकार, गुप्तांग, रहस्य ।
गूढ़गेह–(सं. पुं.) यज्ञगृह ।
गूढ़कामी–(सं. पुं.) काक, कौवा ।
गूढ़चारी–(सं. वि.) गुप्तचर, भेदिया ।
गूढ़ज–(सं. वि.) गुप्त जार से विवाहिता स्त्री को अपने घर में उत्पन्न पुत्र ।
गूढ़ता–(सं. स्त्री.) गुप्तता, छिपाव, गम्भीरता, कठिनता, रहस्य ।
गूढ़त्व–(सं. पुं.) गंभीरता, कठिनता ।
गूढ़पथ–(सं. पुं.) अंतःकरण, अंतरात्मा ।

गूढ़पुरुष–(सं. पुं.) गुप्तचर, भेदिया।
गूढ़मार्ग–(सं.पुं.) गुप्तपथ, सुरंग।
गूढ़ांग–(सं. पुं.) उपस्थ, भग, लिंग, गोपनीय अंग।
गूढ़ोक्ति–(सं. स्त्री.) एक अलंकार जिसमे कोई गुप्त वार्ता किसी तीसरे मनुष्य के प्रति दूसरे को लक्ष्यकर कही जाती है।
गूढ़ोत्तर–(सं. पुं.) किसी गूढ़ अभिप्राय का उत्तर।
गूढ़ोत्पन्न–(सं. पु.) देखें 'गूढ़ज'।
गूथ–(सं. पुं.) विष्ठा, मैला।
गूथना–(हिं. क्रि.स.) कई वस्तुओं को एक डोरे में पिरोना, ताग में अटकाना, गूंथना, भद्दी सिलाई करना।
गूदड़, गूदर–(हिं. पुं.) फटा-पुराना वस्त्र या चिथड़ा।
गूदा–(हिं. पुं.) किसी फल के छिलके के नीचे का सार भाग, गरी, मींगी, खोपड़ी का सार भाग।
गदेदार–(फा. वि.) जिसमें खूब गूदा हो।
गून–(हिं. स्त्री.) नाव खींचने की रस्सी।
गूना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्वान्न, एक प्रकार का सुनहला रंग।
गूनी–(हिं. स्त्री.) गोनी।
गूमा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पौधा जो औषध में प्रयोग होता है, द्रोणपुष्पी।
गूरा–(हिं. पुं.) गुल्ला, ढेला।
गूलर–(हिं.पुं.) उदुंबर, पीपल और बरगद की जाति का एक बड़ा वृक्ष; उसका फल; (मुहा.)–**का कीड़ा**–कूप-मंडूक; –**का फूल**–कोई अलभ्य पदार्थ।
गूलू–(हिं. पु.) एक वृक्ष जिसमें से सफेद गोंद निकलता है।
गृध्नु–(सं. वि.) लुब्ध, लोभयुक्त।
गृध्र–(सं. पुं.) गिद्ध, जटायु पक्षी; (वि.) लोभी।
गृध्रसी–(सं. स्त्री.) एक वात रोग जिसमें कमर, पीठ तथा जाँघ में पीड़ा होती है।
गृष्टि–(सं. स्त्री.) पहली बार तुरंत ब्याई हुई गाय।
गृह–(सं. पुं.) मिट्टी या ईंट का बना हुआ वासस्थान, घर, कुटुम्ब, वंश, कलत्र, भार्या।
गृह-उद्योग–(सं.पुं.) घर में फुरसत के समय हाथ से किये जानेवाले छोटे-मोटे उद्योग या धंधे।
गृह-कलह–(सं.पुं.) घर का विरोध या झगड़ा।
गृहजात–(स.पुं.) दासीपुत्र, घर की दासी से उत्पन्न पुत्र।
गृहप, गृहपति–(सं. पुं.) घर का स्वामी, मन्त्री, धर्म, यजमान, अग्निविशेष।
गृहपत्नी–(सं.स्त्री.) गृह-स्वामिनी, गृहिणी।
गृहपशु–(सं.पुं.) कुक्कुर।
गृहप्रवेश–(स. पुं.) शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में होमादि करके नये घर में प्रवेश।
गृहमंत्री, –सचिव–(सं. पुं.) वह मंत्री जिसके हाथ में गृह-विभाग का शासन-प्रबंध हो।
गृहयुद्ध–(सं. पुं.) घर के भीतर का झगड़ा, देश के भीतर आपस में युद्ध होना।
गृहलक्ष्मी–(सं.स्त्री.) सच्चरित्रा स्त्री।
गृहविभाग–(सं. पुं.) शासन-व्यवस्था में वह विभाग जो देश की आंतरिक व्यवस्था या प्रबंध से संबंधित हो।
गृहस्थ–(सं. पुं.) गृही, द्वितीय आश्रम-वाला मनुष्य जो ब्रह्मचर्य के बाद विवाह करके घर में बसे, घरबारवाला, खेतिहर, किसान।
गृहस्थाश्रम–(सं. पुं.) चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके घर में रहते हैं।
गृहस्थी–(हिं. स्त्री.) गृहस्थ का कर्तव्य, घरबार, कुटुम्ब, लड़का-बाला, परिवार, घर का सामान, खेती-बारी, किसानी का काम।
गृहस्वामी–(सं. पुं.) घर का मालिक।
गृहाक्ष–(सं. पुं.) गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की।
गृहागत–(सं. वि., पुं.) दूसरे के घर आया हुआ (मनुष्य), अतिथि।
गृहाधिप–(सं.पुं.) गृहस्वामी, घर का रक्षक।
गृहिणी–(सं. स्त्री.) घर की स्वामिनी, भार्या, पत्नी।
गृही–(सं. पुं.) गृहस्थाश्रमी, गृहस्थ।
गृहीत–(सं.वि.) स्वीकृत, प्राप्त किया हुआ।
गृहोत्पात–(सं.पुं.) घर का विघ्न या उपद्रव।
गृह्य–(सं.वि.) विनीत, वश्य, घर में उत्पन्न।
गृह्यसूत्र–(सं. पुं.) वैदिक पद्धति जिसके अनुसार द्विजों के संस्कार होते हैं।
गेंगटा–(हिं. पुं.) कर्कट, केंकड़ा।
गेंठी–(हिं. स्त्री.) वाराहीकन्द।
गेंड़, गेंडा–(हिं. पुं.) ऊख के ऊपर का पत्ता, अगौरा।
गेंड़ना–(हिं.क्रि.स.) खावें से खेत घेरना, अन्न रखने के लिये मेड़ बनाना, घेरना, कुल्हाड़ी से काटना।
गेंड़ली–(हिं.स्त्री.) कुंडली, फेंटा, गेंड़ुरी।
गेंड़ुआ–(हिं.पुं.) तकिया, सिरहाना, बड़ा गेंद।
गेंड़ुरी–(हिं. स्त्री.) घड़ा रखने का मेंड़रा, विड़वा, फेंटा, कुंडली, सर्पों का वर्तुलाकार बैठना।
गेंद–(हिं. पुं. वा स्त्री.) कपड़े, रबर आदि का बना हुआ खेलने का गोला, कन्दुक।
गेंदई–(हिं. वि.) गेंदे के फूल के रंग का।
गेंदतड़ी–(हिं. स्त्री.) एक दूसरे को गेंद से मारने का खेल।
गेंदवा–(हिं.पुं.) तकिया, सिरहाना, गेंडुआ।
गेंदा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लाल या पीले रङ्ग के फूल का पौधा, इसका फूल, गेंद।
गेंदुक–(सं. पुं.) देखें 'गेंद'।
गेंदुर–(हिं. पुं.) चमगादड़।
गेंडुवा–(हिं. पुं.) गेंडुआ, तकिया।
गेगला–(हिं. वि.) मूर्ख, जड़।
गेड़ना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'गेंडना'।
गेदा–(हिं. पुं.) चिड़िया का छोटा बच्चा जिसके पर न निकले हों।
गेतुर–(हिं. पुं.) चारे के रूप में पशुओं को खिलाने की एक प्रकार की घास।
गेय–(सं.पुं.) गीत, गान; (वि.) गाने योग्य।
गेरना–(हिं. क्रि. स.) गिराना, डालना।
गेराँव–(हिं. पुं.) गाय-बैलों को बाँधनेवाले पगहे का वह भाग जो गले में रहता है।
गेरुआ–(हिं. वि.) गेरू के रंग का, मटमैलापन लिये लाल रंग का, जोगिया रंग का; –**बाना**–(पुं.) योगियों का गेरुआ वस्त्र।
गेरुई–(हिं. स्त्री.) कृषि का एक रोग।
गेरू–(हिं. स्त्री.) खान से निकलनेवाली एक प्रकार की लाल मिट्टी, गैरिक।
गेह–(सं. पुं.) गृह, घर।
गेहनी–(हिं. स्त्री.) गृहिणी, घरनी, भार्या, पत्नी।
गेहिनी–(सं. स्त्री.) गृहिणी, भार्या।
गेही–(सं. पुं.) गृहस्थ।
गेहुँअन–(हिं. पुं.) एक बहुत विषैला भूरे रंग का सर्प।
गेहुँआ–(हिं.वि.) गहूँ के रंग का, बदामी।
गेहूँ–(हिं. पुं.) गोधूम, एक प्रसिद्ध अन्न जिसका आटा खाया जाता है।
गैंड़ा–(हिं. पुं.) भैंसे के आकार का एक पशु जिसकी नाक पर सींग होता है; (यह विशेषतः कीचड़ में रहता है।)
गैती–(हिं. स्त्री.) भूमि खोदने का एक अस्त्र, कुदाल।
गैन–(हिं. पुं.) गैल, मार्ग।
गैना–(हिं. पुं.) छोटा नाटा बैल।
गैबी–(हिं. वि.) अजनबी, बिना जान-पहचान का, अज्ञात।

गैया–(हि. स्त्री.) गो, गाय, गऊ।

गैर–(अ. वि.) दूसरा या अन्य, भिन्न; –जरूरी–(वि.) जो आवश्यक न हो, अनावश्यक; –जिम्मेदार–(वि.) लापरवाह, दायित्वहीन; –मुनासिब–(वि.) अनुचित; –मुस्तकिल–(वि.) अस्थायी; –वाजिब–(वि.) अनुचित; –सरकारी–(वि.) जो सरकारी न हो; –हाजिर–(वि.) अनुपस्थित; –हाजिरी–(स्त्री.) अनुपस्थिति।

गैरसी–(हि. स्त्री.) गले में पहिनने की हँसुली।

गैरिक–(सं. पुं.) गेरू मिट्टी, सुवर्ण, सोना।

गैरेय–(सं. पुं.) शिलाजतु, शिलाजीत।

गैल–(हि. स्त्री.) मार्ग, रास्ता, गली।

गैलड़–(हि. पुं.) स्त्री के पहिले पति का पुत्र जिसको लेकर वह दूसरे पति के पास जाय।

गैला, गैलारा–(हि. पुं.) गाड़ी के पहिये की लीक।

गैस–(अं. स्त्री.) वायु की तरह का बहुत ही फैलनेवाला भौतिक तत्त्व जिसके संयोग से जल, वायु आदि तत्त्व बने हैं।

गोंइठा–(हि. पुं.) जलाने का गोबर का सुखाया हुआ गोल चिपटा टुकड़ा, उपला, गोहरा।

गोंइड़–(हि. पुं.) गाँव की बस्ती के आसपास की भूमि, गाँव की सीमा।

गोंइयाँ–(हि. पुं.) साथ रहनेवाला, साथी, सहचर।

गोंई–(हि. स्त्री.) बैलों की जोड़ी।

गोंऊ–(हि. वि.) चुराने या छिपानेवाला।

गोंछ–(हि. स्त्री.) गलमुच्छा, मोंछ।

गोंठ–(हि. स्त्री.) गोष्ठ, कमर पर की धोती की लपेट, मुर्री।

गोंठना–(हि. क्रि. स.) चारों ओर रेखा खींचना, घेरना या परिक्रमा करना, गुझिया आदि की कोर मोड़ना।

गोंठनी–(हि. स्त्री.) गुझिया बनाने का उपकरण।

गोंड़–(हि. पुं.) एक शूद्र जाति, कहार जाति।

गोंड़रा–(हि. पुं.) गोल लकड़ी जो मोट के मुख पर बाँधी जाती है, परिधि, घेरा।

गोंड़री–(हि. स्त्री.) मेंडरा, इँडुरी।

गोंड़ा–(हि. पुं.) घेरा हुआ स्थान, बाड़ा, गाँव, बड़ी चौड़ी सड़क, एक जिला।

गोंद–(हि. पुं.) वृक्षों से निकलनेवाला [illegible] निर्यास।

गोंद-दानी–(हि. स्त्री.) वह बरतन जिसमें गोंद रखा जाता है।

गोंद-पंजीरी–(हि. स्त्री.) गोंद मिली हुई पंजीरी जिसे प्रसूता स्त्रियों को खिलाया जाता है।

गोंद-पाग–(हि. पुं.) गोंद और चीनी के संयोग से बनी एक मिठाई।

गोंदरा–(हि. पुं.) कोमल घास या पुआल की बनी मोटी चटाई।

गोंदरी–(हि. स्त्री.) घास-पात की बनी हुई चटाई।

गोंदा–(हि. पुं.) गूँधा हुआ सत्तू।

गोंदीला–(हि. वि.) जिस वृक्ष में से गोंद निकलता हो।

गो–(सं. स्त्री.) गाय, गऊ, पृथ्वी, जल, माता, स्वर्ग, इंद्रिय, चक्षु, आँख, सरस्वती, वाणी, दिशा, बिजली, किरण, वृषराशि; (पुं.) हीरा, नव की संख्या, रोयाँ, घोड़ा, गवैया, आकाश, प्रशंसा करनेवाला, बैल, नंदी नामक शिव-गण, वज्र।

गोकंटक–(सं. पुं.) गोखरू का पौधा।

गोकर्ण–(सं. पुं.) सर्प, खच्चर, मृगविशेष;

गोकर्णी–(सं. स्त्री.) मूर्वालता।

गोकिल–(सं. पुं.) मूसल, लाङ्गल, हल।

गोकुल–(सं. पुं.) गोसमूह, गोशाला, एक प्राचीन गाँव जो मथुरा से पूर्व-दक्षिण की ओर स्थित था।

गोकोस–(हि. पुं.) उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुनाई पड़े।

गोकि–(हि. अव्य.) यद्यपि।

गोक्षुर–(सं. पुं.) गोखरू नामक पौधा, उसका फल।

गोखग–(हि. पुं.) थलचर, पशु, जानवर।

गोखरू–(हि. पुं.) एक पौधा, गोटा तथा बादला गूँथकर बनाया हुआ साज, कलाई में पहिनने का एक आभूषण, पैर या हाथ के तलवे में होनेवाला एक रोग जिसमें रूखे, कड़े घट्ठे पड़ जाते हैं।

गोखा–(हि. पुं.) मोखा, झरोखा।

गोगृष्टि–(सं. स्त्री.) केवल एक बार व्याई हुई गाय।

गोग्रास–(सं. पुं.) श्राद्धादि में गौ को देने के लिये निकाला हुआ भोजन का अंश।

गोघातक–(सं. पुं.) गाय की हत्या करनेवाला, कसाई।

गोचंदन–(सं. पुं.) एक प्रकार का चंदन।

गो-चंदना–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की जहरीली जोंक।

गोचना–(हि. क्रि. स.) रोकना, छेंकना; (पुं.) गेहूँ मिला हुआ चना।

गोचनी–(हि. स्त्री.) महीन छेद करने का यंत्र।

गोचर–(सं. वि., पुं.) इन्द्रियों द्वारा ज्ञेय (विषय), ज्ञान-विषय, गौ के चरने का स्थान, चरागाह।

गोचरी–(हि. स्त्री.) भिक्षावृत्ति, भीख माँगने का व्यवसाय।

गोजई–(हि. स्त्री.) जव मिश्रित गेहूँ।

गोजर–(हि. पुं.) कनखजूरा।

गोजल–(सं. पुं.) गाय का मूत्र, गोमूत्र।

गोजला–(सं. पुं.) तण्डुल, चावल, धान; (हि. पुं.) चरवाहे का चौपायों को हाँकने का डंडा।

गोजित्–(सं. पुं.) पृथ्वी को जय करनेवाला।

गोजी–(हि. स्त्री.) गाय हाँकने की छड़ी, बड़ी लाठी, लट्ठ।

गोझनवट–(हि. स्त्री.) अंचल, स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो सिर और पीठ पर रहता है।

गोझा–(हि. पुं.) एक प्रकार का पक्वान्न, गुझिया, एक प्रकार की कँटीली घास, खलीता।

गोट–(हि. स्त्री.) कपड़े के किनारे पर शोभा के लिये लगाई जानेवाली पट्टी, किनारी, समुदाय, टोली, मण्डली, चौपड़ का मोहरा, गोटी, बाग-बगीचे की सैर; (पुं.) गाँव।

गोटा–(हि. पुं.) बादले की बिनी हुई सुनहली या रुपहली पट्टी जो कपड़ों के किनारे पर सिली जाती है, सूखा हुआ मल, कंडी, सुद्दा।

गोटी–(हि. स्त्री.) लड़कों के खेलने का गोल टुकड़ा या कंकड़, चौपड़ का मोहरा, उपाय, लाभ, युक्ति; (मुह.) **–जमना या बैठना**–उपाय या युक्ति सफल होना; **–मरना**–किसी की गोटी का खेल में काम न आ सकना; **–लाल होना**–चौसर आदि की गोटी का सब खानों से फिरकर उठ जाना, कामयाबी होना।

गोठ–(हि. स्त्री.) गोष्ठ, गोशाला, श्राद्ध, सैर।

गोठिल–(हि. वि.) कुण्ठित, कुन्द, जिसकी धार पैनी न हो।

गोड़–(हि. पुं.) पैर, पाँव; (मुहा.) –भरना–पाँव में महावर लगाना; –लगना–पाँव छूना।

गोड़इत–(हि. पुं.) गाँव में पहरा देनेवाला पहरेदार।

गोड़गाव–(हि. पुं.) घोड़े के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी।

गोड़न–(हि. पुं.) मिट्टी से नमक बनाने

की क्रिया ।
गोड़ना–(हि.क्रि.स.) मिट्टी खोदकर या उलट-पलटकर पोली करना, कोड़ना ।
गोड़ली–(हि. पुं.) नाचने में प्रवीण पुरुष ।
गोड़वाँस–(हि. पुं.) रस्सा जिससे पशु का पैर खूँटे से बाँधा जाता है ।
गोड़वाना–(हि.क्रि.स.) गोड़ने का काम दूसरे से कराना ।
गोड़सांकरा–(हि. पुं.) स्त्रियों के पैर का एक आभूषण ।
गोड़ा–(हि. पुं.) पलंग आदि का पाया, घोड़िया ।
गोड़ाई–(हि. स्त्री.) गोड़ने की क्रिया या शुल्क ।
गोड़ाना–(हि.क्रि.स.) गोड़ने का काम दूसरे से कराना ।
गोड़ापाई(ही)–(हि. स्त्री.) वारंवार आना-जाना ।
गोड़ारी–(हि. स्त्री.) पलंग का वह सिरा जिधर पैर रहता है, पैताना, जूता ।
गोड़िब–(सं. पुं.) शृगाल, सियार, गीदड़ ।
गोड़िया–(हि.स्त्री.) उपाय करनेवाला; (स्त्री.) छोटा पाया या गोड़ा ।
गोड़ी–(हि. स्त्री.) लाभ, वकरे आदि के पैर की नली ।
गोण–(सं. पुं.) वृषभ, वैल ।
गोणी–(सं. स्त्री.) वोरा, मोटा वस्त्र, टाट, एक प्राचीन परिमाण ।
गोत–(हि.पुं.) गोत्र, कुल, समूह, वेहोशी ।
गोतम–(सं. पुं.) न्याय-दर्शन के रचयिता गौतम ऋषि ।
गोतमी–(सं.स्त्री.) अहल्या, गौतम ऋषि की पत्नी, गोदावरी नदी ।
गोता–(हि. पुं.) जल आदि में डूवने की क्रिया, डुव्वी; **–खोर**–(वि.) डुवकी लगानेवाला; (मुहा.)**–खाना**–धोखे में पड़ना; **–मारना**–डुवकी लगाना, लुप्त होना ।
गोतिया, गोती–(हि.वि., पुं.) अपने गोत्र के (भाई-वन्धु जिनके साथ शौचाशौच का सम्वन्ध हो ।)
गोतीत–(सं. वि.) अगोचर, जो इन्द्रियों से न जाना जा सके ।
गोत्र–(सं. पुं.) वंश का नाम, पर्वत, क्षेत्र, मार्ग, समूह, वृद्धि, वढ़ती, धन, राजा का छत्र, भाई-वन्धु, वंश, सन्तति, कुल, एक प्रकार का जाति-विभाग; **–ज**–(वि.) एक ही गोत्र में उत्पन्न, एक ही पूर्वज की सन्तान; **–सुता**– (स्त्री.) पर्वत-नन्दिनी, पार्वती ।
गोत्रा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, गो-समूह ।
गोत्री–(सं.वि.) समान गोत्रवाला, गोतिया ।
गोदंती–(सं.स्त्री.) कच्ची या सफेद हरताल ।
गोद–(हि.स्त्री.) उत्संग, क्रोड़, कोरा, वक्षस्थल के पास का स्त्रियों की साड़ी का भाग, अंचल; (मुहा.)**–विठाना**–दत्तक वनाना; **–वैठना**–दत्तक वनाया जाना; **–भरना**–सोहागिन स्त्री के अंचल में नारियल आदि डालना, संतान उत्पन्न होना; **–लेना**–दत्तक ग्रहण करना ।
गोद-नशीन–(हि. पुं.) वह जिसे किसी ने गोद लिया हो, दत्तक ।
गोद-नशीनी–(हि. स्त्री.) दत्तक वनना, दत्तक-ग्रहण ।
गोदनहार–(हि. पुं.) शीतला का टीका लगानेवाला ।
गोदनहारी–(हि. स्त्री.) गोदना गोदनेवाली स्त्री ।
गोदना–(हि. क्रि. स.) गड़ाना, चुभाना, किसी काम के लिये वारंवार प्रयत्न करना, हाथी को अंकुश लगाना, ताना मारना, मर्मवेधी वात कहना; (पुं.) तिल के आकार का काला चिह्न जो शरीर के किसी भाग पर वनाया जाता है ।
गोदनी–(हि.स्त्री.) गोदना गोदने की सूई ।
गोदा–(हि. पुं.) वड़, पीपल या पाकर का पका फल; (सं.स्त्री.) गोदावरी नदी ।
गोदान–(सं. पुं.) द्विजाति का केशान्त संस्कार, गाय या वैल का विधिवत् दान ।
गोदाम–(हि.पुं.) व्यापार के माल सुरक्षित रखने का स्थान ।
गोदावरी–(सं. स्त्री.) भारतवर्ष के दक्षिण भाग की एक वड़ी नदी ।
गोदी–(हि. स्त्री.) देखें 'गोद' ।
गोध–(हि. स्त्री.) गोह नामक सरीसृप ।
गोधन–(सं. पुं.) गौओं का समूह, गौरूपी सम्पत्ति, चौड़े फल का तीर ।
गोधर–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़ ।
गोधा–(हि. स्त्री.) गोह नामक जन्तु ।
गोधूम–(सं. पुं.) गेहूँ ।
गोधूलि–(सं. स्त्री.) सन्ध्या का समय, गाय के खुर से उड़ती हुई धूलि जो इनके सूर्यास्त के करीव जंगल से चरकर लौटते समय उठती है ।
गोन–(हि. स्त्री.) वैलों की पीठ पर लादने के लिये अन्न भरने का चमड़े, टाट इत्यादि का वोरा, सामान्य वोरा, टाट का थैला, नाव खींचने की रस्सी ।
गोनरखा–(हि. पुं.) नाव का मस्तूल ।
गोनरा–(हि. पुं.) एक प्रकार की लम्वी घास ।
गोनर्द–(सं. पुं.) सारस पक्षी, नागरमोथा नाम की घास, महादेव, शिव, पतञ्जलि की जन्मभूमि ।
गोनस–(सं. पुं.) एक प्रकार का सर्प, वैक्रान्त-मणि ।
गोना–(हि.क्रि.स.) गुप्त रखना, छिपाना ।
गोनिया–(हि. स्त्री.) भीत की सीध अथवा कोना नापने का एक यंत्र, (पुं.) वोरा ढोनेवाला, रस्सी वाँधकर नाव खींचनेवाला ।
गोनी–(हि. स्त्री.) टाट का थैला, वोरा, पटुआ, सन ।
गोप–(सं. पुं.) गौ की रक्षा करनेवाला, ग्वाला, अहीर, गाँव का मालिक, राजा, गोशाला का प्रवंध करनेवाला, उपकारक, वीर, एक गन्धर्व का नाम, गले में पहिनने का एक आभूषण ।
गोपक–(सं. पुं.) गोप, ग्वाला, रक्षक ।
गोपति–(सं.पुं.) शिव, महादेव, कृष्ण, विष्णु, राजा, इन्द्र, गोपाल, ग्वाला ।
गोपद–(सं. पुं.) गाय के खुर का चिह्न ।
गोपन–(सं. पुं.) छिपाव, दुराव, रक्षा, घृणा, व्याकुलता, दीप्ति ।
गोपना–(हि. क्रि. स.) छिपाना ।
गोपनीय–(सं.वि.) छिपाने योग्य, रक्षणीय ।
गोपांगना–(सं. स्त्री.) गोप-स्त्री, ग्वाला की स्त्री ।
गोपा–(सं. स्त्री.) श्यामा लता, गाय पालनेवाली ग्वालिन ।
गोपाल–(सं. पुं.) गोरक्षक, श्रीकृष्ण, अहीर, ग्वाला, पन्द्रह मात्राओं का एक छन्द ।
गोपाली–(सं.स्त्री.) गोप-पत्नी, ग्वालिन ।
गोपाष्टमी–(सं.स्त्री.) कार्तिक सुदी अष्टमी ।
गोपिका–(सं. स्त्री.) गोप की स्त्री, अहिरिन ।
गोपित–(सं. वि.) गुप्त, छिपाया हुआ ।
गोपित्त–(सं.पुं.) गोरोचन नामक गंध-द्रव्य ।
गोपिया–(हि. स्त्री.) ढेलवाँस ।
गोपी–(सं. स्त्री.) गोपपत्नी, अहिरिन, गोपन करनेवाली; **–चंदन**–(हि.पुं.) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसको वैष्णव लोग शरीर और मस्तक पर लगाते हैं ।
गोपीत–(हि.पुं.) एक प्रकार का खंजन पक्षी ।
गोपीनाथ–(सं. पुं.) गोपियों के स्वामी, श्रीकृष्ण ।
गोपुच्छ–(सं. पुं.) गाय की पूँछ, एक प्रकार का हार, प्राचीन काल का एक प्रकार का वाजा ।
गोपुर–(सं. पुं.) गढ़ या नगर का

फाटक, स्वर्ग, गोलोक ।
गोपुरीष–(सं. पुं.) गोमय, गोबर ।
गोपेंद्र–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण ।
गोप्य–(सं. वि.) गोपनीय, छिपाने योग्य; (पुं.) दास, सेवक, दासी-पुत्र ।
गोफन(ना)–(हि. पुं.) ढेलवाँस ।
गोफा–(हि. पुं.) नया निकला हुआ पत्ता, गाभा ।
गोबर–(हि. पुं.) गौ की विष्ठा, गौ का मल; –का चोंथ या चोथ–(पुं.) निपट मूर्ख, निर्बुद्धि व्यक्ति; –गणेश–(हि. वि.) भद्दा, मूर्ख; –हारा–(हि. पुं.) गोबर उठाने या पाथनेवाला नौकर; (क्रि.प्र.) –पाथना–गोबर के गोहरे बनाना ।
गोबरी–(हि. स्त्री.) कंडा, उपला, गोहरा, गोबर का लेप ।
गोबरैला, गोबरौरा, गोबरौला–(हि. पुं.) गोबर में रहनेवाला एक प्रकार का कीड़ा, गुबरैला ।
गोभ–(हि. पुं.) पौधे का एक रोग ।
गोभा–(हि. पुं.) अंकुर ।
गोभिल–(सं. पुं.) सामवेदी गृह्यसूत्र के रचयिता एक ऋषि का नाम ।
गोभी–(हि. स्त्री.) फूल गोभी, एक प्रकार की तरकारी, एक प्रकार की घास, वनगोभी ।
गोमंडल–(सं.पुं.) भूमण्डल, किरण-समूह ।
गोम–(हि. पुं.) घोड़ों की एक भौंरी ।
गोमती–(सं. स्त्री.) उत्तर प्रदेश की एक नदी, वासिष्ठी (प्राचीन नाम), ग्यारह मात्राओं का एक छन्द ।
गोमय–(सं. पुं.) गोविष्ठा, गोबर ।
गोमर–(हि. पुं.) कसाई ।
गोमल–(सं. पुं.) गोबर ।
गोमायु–(सं. पुं.) शृगाल, सियार ।
गोमुख–(सं. पुं.) गौ का मुख, नरसिंगा नाम का बाजा, टेढ़ामेढ़ा घर, गौ के मुख के आकार का एक प्रकार का शंख, गोमुखी ।
गोमुखी–(सं. स्त्री.) हिमालय पर्वत पर गंगा के उद्गम स्थान पर की गुहा या कन्दरा, जप माला की थैली ।
गोमूत्र–(सं. पुं.) गौ का मूत्र ।
गोमूत्रिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का चित्र काव्य ।
गोमृग–(सं. पुं.) गवय, नीलगाय ।
गोमेद, गोमेदक–(सं. पुं.) एक प्रकार का मणि जो कुछ ललाई लिये पीला होता है, पीतमणि ।
गोमेध–(सं पुं.) गोयज्ञ, एक वैदिक यज्ञ जिसमें गोमांस का हवन होता था ।
गोयँड़–(हि. पुं.) गोइँड़, वस्ती के पास सटा हुआ खेत ।
गोयंदा–(फा. पुं.) जासूस, भेदिया ।
गोया–(फा. अव्य.) मानो, जैसे ।
गोरक–(सं. पुं.) एक प्रकार का विषैला साँप ।
गोरक्षक–(सं. वि.) गोपालक, ग्वाला ।
गोरख–(हि. पुं.) गोरखनाथ ।
गोरख-इमली–(हि. स्त्री.) दक्षिण भारत में होनेवाला एक बहुत बड़ा वृक्ष ।
गोरखधंधा–(हि.पुं.) पहेली; अनेक तारों, कड़ियों या काठ के टुकड़ों का समूह, झगड़ा या उलझन का व्यापार, पेंच, झगड़ा, झमेला ।
गोरखनाथ–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध हठयोगी का नाम ।
गोरखपंथी–(हि. वि.) गोरखनाथ के सम्प्रदाय का ।
गोरखमुंडी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की घास जिसमें गुलाबी रंग के छोटे गोल फूल निकलते हैं ।
गोरखर–(फा. पुं.) गधे की जाति का एक जंगली पशु ।
गोरखा–(हि. पुं.) नेपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश, इस प्रान्त का निवासी ।
गोरज–(सं. पुं.) गौ के खुरों से उड़ी हुई धूलि ।
गोरटा–(हि. वि.) गोरे रंग का, गोरा ।
गोरस–(सं. पुं.) गाय का दूध, दही, मठा, छाछ, इन्द्रिय-सुख ।
गोरसा–(हि. पुं.) गाय के दूध से पला हुआ बच्चा ।
गोरसी–(हि. स्त्री.) दूध गरम करने की अँगीठी ।
गोरा–(हि. वि.) गौर-वर्ण, श्वेत और स्वच्छ रंग का (मनुष्य); (पुं.) यूरोप, अमेरिका आदि का निवासी ।
गोराई–(हि. स्त्री.) गोरापन, सुन्दरता ।
गोराटी–(सं. स्त्री.) सारिका पक्षी, मैना ।
गोरी–(हि.वि.,स्त्री.) सुन्दर गौर वर्ण की (स्त्री)
गोरू–(हि. पुं.) सींगवाला पशु, चौपाया ।
गोरूप–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
गोरोचन–(सं.पुं.) एक प्रकार का पीला गंध-द्रव्य जो गौ के पित्त से निकलता है ।
गोर्खा–(हि. पुं.) देखें 'गोरखा' ।
गोलंदाज–(हि. पुं.) गोला चलानेवाला सैनिक, तोपची ।
गोलंदाजी–(हि. स्त्री.) गोला चलाना, गोलंदाज का काम ।
गोलंबर–(हि. पुं.) गुंबद, गोलाई, बगीचे में बना हुआ गोल चबूतरा ।
गोल–(सं. पुं.) वृत्ताकार पदार्थ, विधवा का जारज पुत्र, आकाश-मंडल, वृत्त, गोलाकार पिण्ड; (हि. वि.) सब ओर वर्तुल, गेंद के आकार का; –गोल–(अव्य.) स्थूल तौर पर, मोटे हिसाब से, अस्पष्ट रूप से; –बात–(स्त्री.) अस्पष्ट या संदेहपूर्ण बात; –मटोल–(वि.) जिसका कोई साफ अर्थ न हो, अस्पष्ट; –माल–(पुं.) गड़बड़, घपला; –मिर्च–(स्त्री.) काली मिर्च ।
गोल–(अं. पुं.) फुटबाल, हाकी आदि खेल में वह स्थान जिसके भीतर गेंद चले जाने से हार-जीत मानी जाती है ।
गोल–(फा पुं.) मंडली, झुंड; (क्रि. प्र.) –बाँधना–गुटबंदी करना ।
गोलक–(सं. पुं.) माणिक, गुण, मटर, गोल पिण्ड, बोल नामक औषधि; आँख का डेला, आँख की पुतली, गोलोक वैकुंठ-धाम, मिट्टी का बड़ा कुण्डा, विधवा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र; (हि.पुं.) गुम्बद, प्रतिदिन के आय का धन रखने की थैली, गुल्लक, गल्ला, किसी विशेष कार्य के लिये धन-संग्रह रखन का गुल्लक
गोलगप्पा–(हि. पुं.) एक तरह का खाने का पकवान जो खटाई के रस में डुबाकर खाया जाता है ।
गोलदार–(हि.पुं.) क्रय-विक्रय करनेवाला
गोलयंत्र–(सं. पुं.) ग्रह-नक्षत्र आदि की गति जानने का यन्त्र विशेष ।
गोलयोग–(सं. पुं.) ज्योतिष का एक बुरा योग, गोलमाल, गड़बड़ी ।
गोलविद्या–(सं. स्त्री.) ज्योतिर्विद्या। ज्योतिष शास्त्र का एक अंग ।
गोला–(हि. पुं.) किसी पदार्थ का वर्तुलाकार पिण्ड, तोप का गोला, वायुगोला, नारियल या बेल का खोखला किया हुआ खोपड़ा, नारियल की समूची गरी, अन्न आदि रखने का गोदाम, घास का गट्ठर किराने की मण्डी, छाजन का लंब लट्ठा, सूत आदि की लपेटी हुई पिंडी,
गोलाई–(हि.स्त्री.) गोलापन, गोल आकार
गोलाकार, गोलाकृति–(सं. वि.) गोल आकृतिवाला ।
गोलाधार–(हि. वि.) मूसलधार ।
गोलार्ध–(सं. पुं.) पृथ्वी का आधा भाग जो उसके एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बीचोबीच रेखा खींचने से बनता है।
गोलियाना–(हि. क्रि. स.) किसी वस्तु को

गोल बनाना ।
गोली–(हि.स्त्री.) वर्तुलाकार छोटा पिण्ड, वटिका, टिकिया, दवा की वटी, लड़कों के खेलने का काँच या मिट्टी का छोटा गोलाकार पिण्ड, गोली का खेल, छोटा घड़ा, बंदूक में भरकर छोड़ने का सीसे या लोहे का छोटा गोल पिण्ड ।
गोलोक–(सं.पुं.) वह सुन्दर पवित्र स्थान जहाँ देवता लोग रहते हैं, परम-धाम ।
गोलोकेश–(सं. पुं.) श्रीकृष्णचन्द्र ।
गोलोचन–(हि. पुं.) देखें 'गोरोचन' ।
गोवत्स–(सं. पुं.) गाय का बछड़ा ।
गोवना–(हि.क्रि.स.) छिपाना, ढकना ।
गोवर्धन–(सं. पुं.) गाय की वृद्धि, वृन्दावन का एक पर्वत जिसको श्रीकृष्ण ने गोपों को बचाने के लिये अपनी कानी अँगुली पर उठाया था ।
गोविंद–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण, गौवों का अध्यक्ष, परब्रह्म, वेदान्तवेत्ता, तत्त्वज्ञ, गोमेदमणि ।
गोविट्–(सं. स्त्री.) गोमय, गोबर ।
गोविसर्ग–(सं. पुं.) प्रातःकाल, तड़का ।
गोशकृत्–(सं. पुं.) गाय का गोबर ।
गोशाला–(सं. स्त्री.) गौ के रहने का स्थान, गोष्ठ ।
गोश्त–(फा. पुं.) मांस ।
गोष्ठ–(सं. पुं.) गोशाला, गौ के रहने का स्थान, गोष्ठी, परामर्श, सलाह, दल, मण्डली ।
गोष्ठी–(सं.स्त्री.) बहुत से लोगों का समूह, सभा, वार्तालाप, बातचीत, परामर्श, मण्डली, एक ही अंक का नाटक या रूपक ।
गोष्पद–(सं. पुं.) गौ के खुर का बना गड्ढा, गोपद ।
गोसा–(हि. पुं.) गोइँठा, उपला ।
गोसाईं–(हि. पुं.) गौवों का स्वामी, गोस्वामी, जिसने इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो, ईश्वर, विरक्त, साधु, मालिक, प्रभु, संन्यासियों का एक सम्प्रदाय ।
गोसयाँ–(हि. पुं.) मालिक, प्रभु, ईश्वर ।
गोस्तना–(सं. पुं.) अंगूर का गुच्छा, चार लड़ियों का हार ।
गोस्तनी–(सं.स्त्री.) द्राक्षा, दाख, मुनक्का ।
गोस्थान–(सं. पुं.) गौ के रहने का स्थान, गोशाला ।
गोस्वामी–(सं. पुं.) गौवों का मालिक, एक उपाधि जो उन यति लोगों को पूर्वकाल में दी जाती थी जो इन्द्रियों को अपने वश में कर लेते थे, वैष्णव संप्रदाय का आचार्य ।
गोह–(हि. स्त्री.) छिपकली की जाति का एक जंगली जन्तु ।
गोहन–(हि. पुं.) साथी, संग रहनेवाला, संग-साथ ।
गोहनियाँ–(हि. पुं.) संगी, साथी ।
गोहर–(हि. पुं.) बिसखोपड़ा नामक जन्तु जो सर्प और गोह से पैदा होता है ।
गोहरा–(हि. पुं.) सुखाया हुआ गोबर जो जलाने के काम में आता है, उपला ।
गोहराना–(हि.क्रि.स.) पुकारना, बुलाना, शब्द करना ।
गोहरौर–(हि. पुं.) पाथे हुए गोहरों का ढेर ।
गोहार–(हि. स्त्री.) पुकार, दोहाई, शोरगुल, चिल्लाहट, हल्लागुल्ला ।
गोहारि(री)–(हि. स्त्री.) गोहार, हानिपूर्ति करने के लिये दिया हुआ धन ।
गोही–(हि. स्त्री.) गुप्त वार्ता, छिपी बात, छिपाव, महुए के फल का बीज ।
गोहुअ(ब)न–(हि. पुं.) एक प्रकार का विषधर सर्प, गेहुँअन ।
गोह्य–(सं.वि.) अप्रकाश्य, छिपाने योग्य ।
गौं–(हि.स्त्री. वा पु.) सुयोग, अवसर, दाँव, घात, प्रयोजन, ढंग, पक्ष; –**का यार**–(पुं.) अपना अर्थ साधनेवाला; –**घात**–(पुं.) अच्छा अवसर; –**से**–(अव्य.) चुपके से; (मुहा.)–**पड़ना**–गरज होना ।
गौंटा–(हि. पुं.) छोटा गाँव या बस्ती ।
गौ–(सं. स्त्री.) गाय, गैया ।
गौख–(हि.स्त्री.) खिड़की, झरोखा, दालान ।
गौखा–(हि. पुं.) झरोखा, अरवा, आला, गाय का चमड़ा ।
गौगा–(अ. पुं.) हल्ला, शोर ।
गौचरी–(हि. स्त्री.) गाय चराने का कर ।
गौड़–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम जो आधुनिक वंग देश या बंगाल कहलाता है, ब्राह्मणों की एक जाति, कायस्थों का एक भेद, (गौड़, सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल और मैथिल–ये पंचगौड़ ब्राह्मण कहलाते हैं), देवगिरि और गान्धार के योग से उत्पन्न एक राग ।
गौड़ी–(सं.स्त्री.) गुड़ से बनी हुई मदिरा ।
गौड़ीय, गौड़िया–(सं.वि.) गौड़ देश का ।
गौण–(सं. वि.) अप्रधान, अमुख्य, साधारण, गुणसंबंधी ।
गौणी–(सं. स्त्री.) विविध प्रकार की लक्षणाओं में से एक जिसमें केवल एक वस्तु का गुण लेकर दूसरे में आरोपित किया जाता है; (वि. स्त्री.) अप्रधान, साधारण, जो मुख्य न हो ।
गौतम–(सं. पुं.) गोतम ऋषि के वंशज, भारद्वाज मुनि, सप्तर्षि तारामण्डल में से एक, बुद्धदेव, कृपाचार्य, न्यायशास्त्र के प्रवर्तक ऋषि ।
गौतमी–(सं.स्त्री.) गौतम ऋषि की पत्नी, अहल्या, गोदावरी नदी, दुर्गा, गोरोचन ।
गौदुमा–(हि. वि.) गाय की पूँछ के आकार का, गावदुम ।
गौधूम–(सं. वि.) गेहूँ का बना हुआ (पकवान, रोटी इत्यादि) ।
गौन–(हि. पुं.) देखें 'गमन', गौना ।
गौनई–(हि. स्त्री.) गायन, गीत ।
गौनहाई–(हि. वि.) जिसका गौना हाल में हुआ हो ।
गौनहार–(हि. स्त्री.) दुलहिन के साथ उसके ससुराल जानेवाली स्त्री ।
गौनहारिन, गौनहारी–(हि. स्त्री.) वह स्त्री जिसका गाने का व्यवसाय हो ।
गौना–(हि. पुं.) द्विरागमन, विवाह के बाद की एक प्रथा जिसमें वर ससुराल जाता है और वहाँ कुछ रस्म पूरी करके वधू को अपने साथ घर लाता है ।
गौपायन–(सं. पुं.) गोप की सन्तान ।
गौमुख–(हि. पुं.) देखें 'गोमुख' ।
गौमुखी–(हि. स्त्री.) देखें 'गोमुखी' ।
गौर–(सं. वि.) सफेद रंग का, गोरा, उज्ज्वल, स्वच्छ, निर्मल; (पुं.) चन्द्रमा, सफेद सरसों, पीला रंग, धव का पौधा, सोना, केसर; (हि. पुं.) विवाह-मंडप में गोबर का बना हुआ शिवलिंग ।
गौरता–(सं. स्त्री.) गोराई, गोरापन ।
गौरव–(सं.पुं.) महत्त्व, बड़प्पन, भारीपन, सम्मान, आदर, उत्कर्ष, अभ्युत्थान; (वि.) गुरुसंबंधी; –**शाली**–(वि.) गौरवयुक्त ।
गौरवान्वित–(सं. वि.) गौरव से युक्त ।
गौरवित–(सं. वि.) पूज्य, आदरणीय ।
गौरांग–(सं. पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण, शची के पुत्र, चैतन्य महाप्रभु; (वि.) गोरे शरीरवाला ।
गौरांगी–(सं. स्त्री.) छोटी इलायची ।
गौरा–(सं. स्त्री.) गोरे रंग की स्त्री, पार्वती, हरिद्रा, हलदी, एक रागिनी का नाम; (पुं.) नर गौरैया पक्षी ।
गौरिया–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का जलपक्षी, मिट्टी का बना हुआ छोटा हुक्का, एक प्रकार का मोटा वस्त्र ।
गौरी–(सं. स्त्री.) गोरी स्त्री, पार्वती, आठ वर्ष की कन्या, हल्दी, पृथ्वी, एक नदी का नाम, गोरोचन, दारुहल्दी, तुलसी, सफेद रंग की गाय, गंगा

नदी, सफेद दूब, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, चमेली, एक रागिनी का नाम।
गौरीकांत–(सं. पुं.) महादेव, शिव।
गौरीचंदन–(सं. पुं.) लाल चन्दन।
गौरीशंकर–(सं. पुं.) शिव, महादेव, •हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी।
गौरीश–(सं. पुं.) महादेव, शंकर।
गौरया–(हि.स्त्री.) देखें 'गौरिया', चटक।
गौल्मिक–(सं. पुं.) चौकसी रखने या पहरा देनेवाला सिपाही।
गौल्य–(सं. पुं.) मीठापन, एक तरह की मदिरा।
गौहर–(फा. पुं.) मोती।
ग्यान–(हिं. पुं.) देखें 'ज्ञान'।
ग्यारस–(हिं. स्त्री.) एकादशी तिथि।
ग्यारह–(हिं. वि.) दस और एक; (पुं.) दस और एक की संख्या, ११।
ग्रंथ–(सं. पुं.) गाँठ देना, शास्त्र, पुस्तक, अनुष्टुप् छन्द, श्लोक, धन, सम्पत्ति, सिक्खों का धर्मशास्त्र।
ग्रंथकरण–(सं. पुं.) ग्रन्थ की रचना।
ग्रंथकर्ता–(सं. पुं.) ग्रन्थ बनानेवाला।
ग्रंथकार–(सं. पुं.) पुस्तक लिखनेवाला।
ग्रंथचुंबक–(सं.पुं.) जिसने बहुत-सी पुस्तकें पढ़ी हों परन्तु जो पूर्ण विद्वान् न हो।
ग्रंथचुंबन–(सं. पुं.) पुस्तक का सामान्य रूप से किया गया अध्ययन।
ग्रंथन–(सं. पुं.) गुम्फन, गाँठ, गूँथना।
ग्रंथना–(हि. क्रि. स.) नाथना, गूँथना।
ग्रंथसंधि–(सं. स्त्री.) ग्रन्थ का विभाग, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय, अंग, काण्ड, पर्व, प्रकरण।
ग्रंथ-साहब–(हि.पुं.) सिक्खों का धर्म-ग्रन्थ जिसमें समस्त गुरुओं के उपदेश लिखे हैं।
ग्रंथालय–(सं. पुं.) पुस्तकालय।
ग्रंथावलि(ली)–(सं. स्त्री.) ग्रंथों का समूह, किसी ग्रंथकार की संपूर्ण रचनाओं का संग्रह।
ग्रंथि–(सं. स्त्री.) गाँठ, बन्धन, कुटिलता, छल, मायाजाल, एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर पर सूजन हो जाती है और गाँठ की तरह के फोड़े निकल आते हैं।
ग्रंथिच्छेदक–(सं. पुं.) गाँठ काटनेवाला, गिरहकट।
ग्रंथित–(सं. वि.) गूँथा हुआ, जोड़ा हुआ, गाँठ दिया हुआ।
ग्रंथित्व–(सं. पुं.) गूँथने की क्रिया।
ग्रंथिपर्ण–(सं.पुं.) गठिवन नामक पौधा।
ग्रंथिफल–(सं. पुं.) कपित्थ, कैथ का पेड़।
ग्रंथिबंधन–(सं. पुं.) विवाह के समय वर और कन्या के वस्त्रों के किनारों को परस्पर बाँधने की क्रिया, गँठबंधन।
ग्रंथिमत्–(सं. वि.) ग्रन्थि-युक्त, गाँठदार।
ग्रंथिल–(सं. वि.) गाँठदार, गँठीला।
ग्रंथिला–(सं. स्त्री.) गाडर दूब।
ग्रंस–(हिं. पुं.) छल, छिद्र, ग्रन्थि।
ग्रथन–(सं. पुं.) गूँथना, ग्रंथन।
ग्रथित–(सं. वि.) गूँथा हुआ, ग्रंथित।
ग्रसन–(सं. पुं.) भक्षण, निगलना, पकड़, ग्रास, कौर, राहु द्वारा सूर्य या चन्द्रमा का ग्रास।
ग्रसना–(हिं.क्रि.स.) कष्ट देना, पकड़ना।
ग्रसमान–(सं. वि.) ग्रास करनेवाला।
ग्रसित–(सं. वि.) देखें 'ग्रस्त।
ग्रस्त–(सं. वि.) भक्षित, पीड़ित, पकड़ा हुआ, खाया हुआ।
ग्रस्तास्त–(सं. पुं.) ग्रहण लगने पर सूर्य या चन्द्रमा का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।
ग्रस्तोदय–(सं. पुं.) चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगे हुए उदय होना।
ग्रस्य–(सं. वि.) ग्रसन के योग्य।
ग्रह–(सं. पुं.) सूर्यादि ग्रह, सूर्य की परिक्रमा करनेवाला तारा, बालकों के अनिष्टकारक स्कन्द आदि रोग, ग्रहण, राहु, सूर्य या चन्द्र ग्रहण, रुकावट, नव की संख्या; (वि.) अधिक कष्ट देनेवाला; (मुहा.) अच्छे ग्रह होना–शुभ ग्रह होना; बुरे ग्रह होना–कष्ट देनेवाले प्रतिकूल ग्रहों का होना।
ग्रहकक्षा–(सं. स्त्री.) वह वृत्ताकार पथ जिस पर ग्रह भ्रमण करता है।
ग्रहचिंतक–(सं. पुं.) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
ग्रहण–(सं.पुं.) स्वीकार, मंजूरी, ज्ञान, समझ, आदर, पृथ्वी की छाया (पुराणानुसार राहु) द्वारा सूर्य या चन्द्र का आच्छादन।
ग्रहणी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का रोग जिसमें खाया हुआ अन्न नहीं पचता, और ज्यों का त्यों निकल जाता है, अतिसार।
ग्रहणीय–(सं. वि.) ग्रहण करने योग्य।
ग्रहदशा–(सं. स्त्री.) ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था, अभाग्य।
ग्रहदोष–(सं. पुं.) ग्रह विशेष का रखना।
ग्रहनायक–(सं. पुं.) सूर्य, शनैश्चर, मन्दार का वृक्ष।
ग्रहपति–(सं. पुं.) सूर्य, शनि, ग्रह का स्वामी, चन्द्र।
ग्रहवेध–(सं. पुं.) ग्रह की स्थिति का ज्ञान।
ग्रहाधीश–(सं. पुं.) सूर्य।
ग्रहीत–(सं. वि.) गृहीत।
ग्रहीतव्य–(सं.वि.) ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य।
ग्राम–(सं. पुं.) गाँव, छोटी बस्ती, ढेर, समूह, संगीत में सातों स्वरों का समूह, सप्तक।
ग्रामज–(सं. वि.) गाँव में उत्पन्न।
ग्रामणी–(सं. पुं.) प्रधान, अगुआ, गाँव का मुखिया।
ग्राम-देवता–(सं. पुं.) गाँव में किसी की स्थापित की हुई देवमूर्ति, गाँव की रक्षा करनेवाला देवता।
ग्राम-पंचायत–(हि. स्त्री.) गाँव के छोटे-मोटे झगड़े निपटाने के लिए बनी पंचायत।
ग्रामवासी–(सं. पुं.) गाँव का रहनेवाला, देहाती।
ग्रामस्थ–(सं. वि.) ग्रामवासी, देहाती।
ग्रामिक–(सं. वि.) ग्रामसंबंधी, गाँव का।
ग्रामीण–(सं. वि.) देहाती, गँवार।
ग्राम्य–(सं. वि.) ग्राम संबंधी, प्राकृत, मूढ़; मैथुन, संबंधी; (पुं.) अश्लील शब्द या वाक्य, काव्य का दोष जिसमें गँवारू विषयों का वर्णन हो; **–ता–** (स्त्री.) असभ्यता, गँवारपन; **–धर्म–** (पुं.) मैथुन, स्त्री-प्रसङ्ग।
ग्राव–(सं. पुं.) पत्थर, ओला, बनौरी, मेघ, बादल।
ग्रास–(सं. पुं.) कौर, निवाला, पकड़, सूर्य या चन्द्र का ग्रहण लगना।
ग्रासक–(सं. वि.) पकड़नेवाला, निगलने या छिपानेवाला।
ग्रासना–(हिं. क्रि. स.) पकड़ना, धरना, निगलना, कष्ट देना, सताना।
ग्रासित–(सं. वि.) देखें 'ग्रस्त'।
ग्राह–(सं. पुं.) ग्रहण, पकड़, मगर, घड़ियाल, ज्ञान, आग्रह, हठ, स्वीकार।
ग्राहक–(सं. वि., पुं.) ग्रहण करनेवाला, मोल लेनेवाला, गाहक, खरीदार, ज्ञापक, चाहनेवाला, मल बाँधने की औषध।
ग्राही–(सं. पुं.) ग्राहक; (वि.) मल रोकनेवाला, स्वीकार करनेवाला।
ग्राह्य–(सं. वि.) स्वीकार करने योग्य, मानने योग्य।
ग्रीवा–(सं. स्त्री.) कन्धा, गरदन, गला।
ग्रीवी–(सं.वि.) लंबी सुन्दर गरदन वाला।
ग्रीषम–(हि. पुं.) देखें 'ग्रीष्म'।
ग्रीष्म–(सं.पुं.) गरमी की ऋतु; (वि.) गरम, उष्ण; **–कालीन–**(वि.); ग्रीष्म ऋतु का।
ग्रेन–(अं. पुं.) एक अँगरेजी तौल।
ग्रेही–(हिं. वि.) संसारी।
ग्रैव–(सं. वि.) ग्रीवा (गरदन) संबंधी;

(पुं.) गले में पहिनने का एक आभूषण ।
ग्रैवेयक–(सं. पुं.) गले का अलंकार, हार, माला, हँसुली ।
ग्रैष्म–(सं. वि.) ग्रीष्म संबंधी, गरमी के ऋतु का ।
ग्लपन–(सं. पुं.) ग्लानि, निन्दा, क्लांति, शिथिलता ।
ग्लपित–(सं.वि.) लज्जित, क्लांत ।
ग्लहन–(सं. पुं.) द्यूतक्रीड़ा, जुए का खेल ।
ग्लान–(सं. वि.) रोगी, थका हुआ ।
ग्लानि–(सं. स्त्री.) दुर्बलता, अनुत्साह, खिन्नता, अरुचि, शिथिलता, अपने कार्य में अयोग्यता या बुराई देखकर अनुत्साह होना ।
ग्वार–(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसके फल की तरकारी और बीज की दाल होती है, कुलथी, देखें 'ग्वाल' ।
ग्वारपाठा–(हिं.पुं.) घृतकुमारी, घीकुआर ।
ग्वारिन–(हिं.स्त्री.) गोप की स्त्री, ग्वालिन ।
ग्वाल–(हिं. पुं.) गोप, ग्वाल, अहीर ।
ग्वालककड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का जंगली चिचड़ा ।
ग्वालिन–(हिं. स्त्री.) ग्वाला की स्त्री, अहीरिन, एक प्रकार का बरसाती कीड़ा, गिंजाई, तरकारी विशेष ।
ग्वैंठना–(हिं.क्रि.स.) ऐंठना, मरोड़ना ।
ग्वैंड़, ग्वैंड़ा–(हिं. पुं.) गाँव के समीप की भूमि, गोइँड़ ।
ग्वैंड़े–(हिं. अव्य.) निकट, पास, समीप ।

घ

घ–हिन्दी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चतुर्थ वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (सं.पुं.) घण्टा, घड़ी, घर्घर शब्द, वर्ष, साल ।
घँघरा–(हिं. पुं.) घघरा ।
घँघरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'घघरी' ।
घँघोरना, घँघोलना–(हिं.क्रि.स.) हिलाकर घोलना, जल को हिलाकर उसमें कुछ मिला देना, जल को हिलाकर गन्दा करना ।
घंट–(हिं. पुं.) घड़ा, घंटा, मृतक-क्रिया के सबंध में जो घड़ा पीपल के वृक्ष पर बाँधा जाता है ।
घंटा–(हिं.पुं.) साठ मिनट या अढ़ाई घड़ी का समय, बड़ी घंटी, ठेंगा, कुछ नहीं ।
घंटाकरन–(हिं. पुं.) एक तरह की घास ।
घंटाघर–(हिं.पुं.) वह ऊँचा महल जिस पर चारों ओर से दिखाई पड़नेवाली विद्युच्चालित घड़ी लगी हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई पड़ता हो ।
घंटिका–(सं.स्त्री.) बहुत छोटी घंटी, घुँघरू ।
घंटी–(हिं. स्त्री.) छोटा घंटा, धातु की छोटी लोटिया, घुँघरू, घंटी बजने का शब्द, जीभ की जड़ के पास लटकती हुई मांस की छोटी ग्रन्थि, कौआ ।
घई–(हिं. स्त्री.) पानी में का भँवर या चक्कर; (वि.) बहुत गहरा, अथाह, देखें 'गंभीर' ।
घकार–(सं. पुं.) "घ" अक्षर ।
घघरबेल–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लता, बंदाल ।
घघरा–(हिं. पुं.) स्त्रियों का लहँगा ।
घघरी–(हिं.स्त्री.) छोटा घघरा या लहँगा ।
घचाघच–(हिं. पुं.) नरम पदार्थ में नुकीली वस्तु के चुभने का शब्द ।
घट–(सं. पुं.) मिट्टी का पात्र, घड़ा, जलपात्र, कलसा, कुम्भराशि, पिण्ड, शरीर, मन, हृदय; (वि.) न्यून, कम, घटा हुआ ।
घटक–(सं. पुं.) मध्यस्थ, बिचवई, विवाह-संबंध निश्चित करानेवाला, चतुर मनुष्य, दलाल, संयोजक, घड़ा, वंश-परंपरा को बतलानेवाला ।
घटकर्ण–(सं. पुं.) कुम्भकर्ण ।
घटकना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'गटकना' ।
घटका–(हिं. पुं.) मृत्युकाल की वह स्थिति जब साँस लेने में घरघर शब्द होता है, गले में कफ रुकने की अवस्था ।
घटकार–(सं. पुं.) कुम्भकार, कोंहार ।
घटज–(सं. पुं.) अगस्त्य मुनि ।
घटती–(हिं. स्त्री.) न्यूनता, कमी, कसर ।
घटदासी–(सं.स्त्री.) कुटनी, रंडी की दासी ।
घटन–(सं. पुं.) योजना, सम्मेलन, गढ़ा जाना, उपस्थित होना ।
घटना–(हिं.क्रि.अ.) उपस्थित होना, ठीक से बैठना, मेल में होना, मेल में मिल जाना, ठीक उतरना, कम होना, क्षीण होना, पर्याप्त न होना; –**बढ़ना**–(क्रि.अ.) कम-बेशी होना; (स्त्री.) अकस्मात् किसी बात का होना, दैवगति, व्यापार ।
घटनीय–(सं. वि.) घटित होने योग्य ।
घटबढ़–(हिं. स्त्री.) न्यूनाधिकता ।
घटभव, घटयोनि–(सं.पुं.) अगस्त्य मुनि ।
घटवाना–(हिं.क्रि.स.) कम कराना, घटाने का काम कराना ।
घटवाई–(हिं. पुं.) घाट का कर लेनेवाला; (स्त्री.) कम करवाई ।
घटवार–(हिं. पुं.) घाट का कर लेनेवाला, मल्लाह, माँझी, घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण ।
घटसंभव–(सं.पुं.) कुम्भसंभव, अगस्त्य मुनि ।
घटस्थापन–(सं. पुं.) मन्त्र पढ़कर घट की स्थापना, मन्त्र पढ़कर जल से घड़ा भरकर रखना ।
घटहा–(हिं. पुं.) घाट का ठेकेदार, घाट पर चलनेवाली नाव ।
घटा–(सं. स्त्री.) समूह, झुण्ड, ढेर, घटना, गोष्ठी, धूमधाम, समारोह, उमड़ते हुए मेघों का समूह; (मुहा.) –**उठना**–काले मेघों का आकाश में छा जाना; –**घिरना या छाना**–मेघमाला का आकाश को ढक लेना ।
घटाई–(हिं. स्त्री.) दीनता, अप्रतिष्ठा ।
घटाकाश–(सं. पुं.) घड़े के भीतर का खाली स्थान ।
घटाटोप–(सं. पुं) आडंबर, पाखण्ड, तड़क-भड़क, गाड़ी या पालकी का ओहार, चारों ओर घिरी हुई बादलों की घटा ।
घटाना–(हिं. क्रि. स.) न्यून करना, कम करना, काटना, बाकी निकालना, अप्रतिष्ठा करना ।
घटाव–(हिं.पुं.) न्यूनता, कमी, अवनति ।
घटावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'घटाना' ।
घटिका–(सं. स्त्री.) एक दण्ड या चौबीस मिनट का समय, छोटा घड़ा, गगरी, घटीयंत्र, घड़ी ।
घटिकायंत्र–(सं.पुं.) समय बतलाने का यन्त्र ।
घटित–(सं.वि.) रचित, निर्मित, बनाया हुआ ।
घटितव्य–(सं. वि.) जिसके होने की संभावना हो ।
घटिया–(हिं. वि.) कम मूल्य का, सस्ता, तुच्छ, नीच, अधम ।
घटिहा–(हिं. वि.) दाँव पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला, व्यभिचारी, लम्पट, दुष्ट, नीच, छली ।
घटी–(सं. स्त्री.) घड़ी, चौबीस मिनट का काल, मुहूर्त, समयसूचक यन्त्र, छोटा घड़ा, गगरी; (हिं. स्त्री.) न्यूनता, कमी, घाटा, हानि ।
घटोत्कच–(सं. पुं.) हिडिम्बा के गर्भ से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र ।
घटोद्भव–(सं. पुं.) अगस्त्य मुनि ।
घटोर–(हिं. पुं.) मेढ़ा, भेड़ा ।
घट्ट–(सं. पुं.) घाट, घाट का कर लेने का स्थान ।
घट्टित–(सं. वि.) निर्मित, बनाया हुआ ।
घट्ठा–(हिं. पुं.) शरीर पर का उमड़ा हुआ चिह्न जो रगड़ लगने से पड़ जाता है; (क्रि. प्र.) –**पड़ना**–आदत पड़ना,

काष्ठ आदि गढ़ने का अभ्यास होना, घट्ठे का चिह्न पड़ना।

घड़घड़–(हिं. पुं.) बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द, घड़घड़ाहट, बादल की गरज।

घड़घड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) घड़घड़ शब्द होना।

घड़घड़ाहट–(हिं. स्त्री.) घड़घड़ शब्द होना, मेघों की गर्जना।

घड़ना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'गढ़ना'।

घड़नैल–(हिं. पुं.) बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढांचा जिस पर चढ़कर छोटी नदी पार करते है।

घड़ा–(हिं. पुं.) मिट्टी का गगरा, गगरी, कलसा, जलपात्र; (मुहा.) घड़ों पानी पड़ जाना–लज्जा के मारे सिर झुक जाना।

घड़ाई–(हि. स्त्री.) देखें 'गढ़ाई'।

घड़िया–(हिं. स्त्री.) सोना-चाँदी गलाने का सोनार का पात्र, मिट्टी का छोटा पात्र, मधु का छत्ता, बच्चादानी, गर्भाशय।

घड़ियाल–(हिं. पुं.) पूजा के समय बजाया जानेवाला घण्टा, एक हिंसक जलजन्तु, ग्राह।

घड़ियाली–(हिं. पुं.) घण्टा बजानेवाला मनुष्य।

घड़ी–(हिं. स्त्री.) समय बतलानेवाला यन्त्र, समय, काल, अवसर, चौबीस मिनट का समय; (मुहा.) घड़ियाँ गिनना–घबराहट के कारण किसी घटना का आसरा देखना; –टलना–साइत या समय बीत जाना; –में घड़ियाल–क्षणभर में जाने क्या हो जाय; –साइत का मेहमान– जो मर रहा हो, आसन्न-मृत्यु; –घड़ी– (अव्य.) बारम्बार, थोड़ी-थोड़ी देर पर; –दिआ–(पुं.) वह घड़ा जो किसी मनुष्य के मरने पर घर में रक्खा जाता है; –साज–(पुं.) घड़ियों की मरम्मत करनेवाला; –साजी–(स्त्री.) घड़ी मरम्मत करने का काम।

घड़ोला–(हिं. पुं.) छोटा घड़ा, झंझर।

घड़ौंची–(हिं. स्त्री.) भरा हुआ जल का घड़ा रखने की तिपाई।

घतिया–(हिं. वि.) धोखा देनेवाला।

घतियाना–(हिं.क्रि.स.) अपने दांव या घात में लाना, चुराना, छिपाना।

घन–(सं. पुं.) मेघ, समूह, विस्तार, शरीर, झुण्ड, अभ्रक, लोहार का गरम लोहा पीटने का बड़ा हथौड़ा, समुद्र, काँसे का बाजा, घड़ियाल, घंटा, लोहा, किसी अंक को उसी अंक से गुणा करने से लब्ध पिण्ड, ताल देने का बाजा, लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई का गुणन-फल; (वि.) ठोस, घना, गझिन, दृढ़, गठा हुआ, अभेद्य।

घनक–(हिं. स्त्री.) गड़गड़ाहट।

घनकना–(हिं.क्रि.अ.) गरजना, घन-घन शब्द करना।

घनकारा–(हिं. वि.) गरजनेवाला।

घनकाल–(सं. पुं.) वर्षा ऋतु।

घनकोदंड–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष।

घनक्षेत्र–(सं. पुं.) लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई का गुणन-फल या घन-फल।

घनगरज–(हिं. स्त्री.) बादल के गरजने का शब्द, एक प्रकार की तोप।

घनघनाना–(हिं. क्रि. अ.) घंटे के समान शब्द करना या होना।

घनघनाहट–(हिं.स्त्री.) घन घन का शब्द।

घनघोर–(हिं. पुं.) घनघनाहट, भीषण ध्वनि, बादल की गरज; (वि.) बहुत घना, भयंकर; –घटा–(स्त्री.) काली घटा।

घनचक्कर–(हिं. पुं.) चंचल बुद्धि का मनुष्य, मूढ़, मूर्ख, व्यर्थ घूमनेवाला मनुष्य, सूर्यमुखी का फूल, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा, चक्कर, जंजाल।

घनज्वाला–(सं.स्त्री.) बिजली की चमक।

घनताल–(हिं. पुं.) झाँझ।

घनतिमिर–(सं. पुं.) गहरा अन्धकार।

घनत्व–(सं.पुं.) घनापन, ठोसपन, सघनता, लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई–तीनों का गुणन-फल।

घननाद–(सं. पुं.) गरज, रावण का पुत्र, मेघनाद।

घनपति–(सं.पुं.) मेघों के अधिपति इन्द्र।

घनप्रिय–(सं. पुं.) मयूर, मोर।

घनफल–(सं. पुं.) लंबाई, चौड़ाई और मोटाई, (गहराई या ऊँचाई)–तीनों का गुणन-फल, वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।

घनबान–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाण जिसके चलने से बादल छा जाते हैं।

घनबेल–(हिं.वि.) जिस पर बेलबूटे बने हों।

घनमूल–(सं. पुं.) गणित में घन राशि का मूल अङ्क–यथा ६४ का घनमूल ४ है।

घनरस–(सं. पुं.) जल, पानी, कपूर।

घनवाही–(हिं. स्त्री.) घन से तपे हुए लोहे को पीटने का काम, घन चलानेवाले के खड़े होने का गड्ढा।

घनश्याम–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण, काला बादल; (वि.) मेघ के समान काला।

घनसार–(हिं. पुं.) घनरस।

घनस्वन–(सं. पुं.) मेघ-गर्जन।

घना–(हिं. वि.) सघन, गझिन, गुंजान, निकट का, गाढ़ा, अधिक।

घनाक्षरी–(सं. स्त्री.) दण्डक या मनोहर छन्द, कवित्त।

घनाघन–(हिं.पुं.) बरसनेवाला बादल, इन्द्र।

घनात्मक–(सं. वि.) जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई, (ऊँचाई या गहराई) समान हों।

घनानंद–(सं. पुं.) गद्य काव्य का एक भेद।

घनाली–(हिं. स्त्री.) मेघमाला।

घनिष्ठ–(सं. वि.) घना, गाढ़ा, निकट या समीप का, अंतरंग।

घनिष्ठता–(सं. स्त्री.) घनिष्ठ होने का भाव या दशा, गहरी मित्रता।

घनीभाव, घनीभवन–(सं. पुं.) घन होने का भाव या अवस्था, जमना, ठोस रूप धारण करना।

घनीभूत–(सं.वि.) घन या ठोस बना हुआ।

घने–(हिं. वि.) अनेक, बहुत।

घनेरा–(हिं.वि.) अत्यधिक, अतिशय, बहुत।

घनेरे–(हिं.वि.) अगणित, अत्यन्त, बहुत।

घनोपल–(सं. पुं.) ओला, बनौरी।

घपचिआना–(हिं. क्रि.अ.) व्यग्र होना, घबड़ाना।

घपची–(हिं. स्त्री.) दोनों हाथों से कसकर पकड़ना।

घपला–(हिं. पुं.) गड़बड़, गोलमाल।

घपुआ–(हिं. वि.) मूर्ख, लंठ।

घप्पू–(हिं. वि.) मूर्ख, उल्लू।

घबड़ाना, घबराना–(हिं. क्रि. अ.) व्यग्र होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, चंचल होना, भय से त्रस्त होना, भौचक्का होना, जी उचटना, आतुर होना, जल्दी मचाना, जी न लगना, अधीर होना; (क्रि. स.) व्यग्र करना।

घबराहट–(हिं. स्त्री.) व्याकुलता, उतावलापन, अशान्ति, उद्विग्नता।

घमंका–(हिं. पुं.) घूंसा, मुक्का।

घमंड–(हिं. पुं.) गर्व, अहंकार, अभिमान, भरोसा, सहारा, वीरता।

घमंडी–(हिं. वि.) अहंकारी, अभिमानी, शेखीबाज।

घम–(हिं. पुं.) कोमल वस्तु पर कड़ा आघात पड़ने का शब्द।

घमकना–(हिं.क्रि.अ.,स.) गंभीर शब्द होना या करना, घूंसा मारना, गरजना, धमकना।

घमका–(हिं. पुं.) गदा या घूंसे का शब्द, आघात का शब्द, ऊमस।

घमघमाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) घमघम शब्द करना, घूँसा मारना, प्रहार करना ।
घमड़ना–(हिं. क्रि. अ.) घुमड़ना ।
घमर–(हिं. पुं.) नगाड़े, ढोल इत्यादि की गंभीर ध्वनि ।
घमरौल–(हिं.स्त्री.) ऊधम, गड़बड़, उपद्रव।
घमस, घमसा–(हिं.पुं.) ऊमस, धूप की गरमी।
घमसान–(हिं. पुं.) देखें 'घमासान'।
घमाका–(हिं. पुं.) बहुत जोर का शब्द (मकान आदि गिरने का) ।
घमाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) घाम लेना, धूप में बैठना या डालना ।
घमाघम–(हिं. अव्य.) घमाका सहित।
घमाघमी–(हिं. स्त्री.) देखें 'घमाघम'।
घमायल–(हिं.वि.) धूप में पका हुआ (फल)।
घमासान–(हिं. पुं.) गहरी लड़ाई, भयंकर युद्ध; (वि.) प्रचण्ड, भयंकर ।
घमाह–(हिं. पुं.) धूप या घाम खाया हुआ।
घमोई–(हिं. स्त्री.) बाँस का एक रोग जिसके लगने से इसमें नये अंकुर नहीं निकलते ।
घमोय–(हिं. पुं.) एक कटीले पत्तों का पौधा, भड़भाँड़, सत्यानाशी ।
घमोरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'अम्हौरी' ।
घर–(हिं. पुं.) गृह, मनुष्यों के रहने का स्थान, स्वदेश, जन्मभूमि, वंश, घराना, कार्यालय, छिद्र, छेद, गृहस्थी, कमरा, उत्पत्ति-स्थान; (मुहा.) **अपना घर समझना**–मन में संकोच न लाना; **–आबाद होना**–घर बसना; **–उजड़ना**–परिवार का नाश होना; **–उठना या उठाना**–मकान बनना या बनाना; **–करना**–बसना, स्थान बना लेना, गड्ढा करना; **–का**–निजी, अपना, आपस का; (**अच्छे**) **घर का**–भले या अच्छे कुल का; **–का आदमी**–कुटुम्बी; **–का उजाला**–कुल का यश बढ़ानेवाला; (**अँधेरे**) **–का उजाला**–अति सुंदर; **–का घर**–सम्पूर्ण परिवार; **–का न घाट का**–जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान नहीं हो; **–की खेती**–अपनी ही वस्तु; **–के घर**–गुप्त रूप से; **–घलना**–परिवार की दुर्दशा होना; **–घालना**–कुल की मर्यादा नष्ट करना; **–जमाना**–गृहस्थी की सामग्रियाँ इकट्ठा करना; **–पीछे**–प्रत्येक घर में; **–फूंक तमाशा देखना**–स्वयं घर की सम्पत्ति नाश करना; **–फोड़ना**–परिवार में कलह उत्पन्न करना; **–बनाना**–घर को समृद्ध करना; **–बसना**–घर का आबाद होना; **–बसाना**–विवाह करना; **–बैठे**–बिना कुछ काम किये; **–बैठना**–एकांतवासी होना; नौकरी या रोजी छोड़कर घर बैठना; (**किसी के**) **–बैठना**–किसी की पत्नी या रखेली बनना; **–भर**–सारा परिवार; **–भरना**–घर का बाल-बच्चों, धन-धान्य से पूर्ण होना; **–भाँय भाँय करना**–घर का सूना-सूना लगना; **–में**–पत्नी, स्त्री; **–से**–अपने पास से; **–सेना**–सदा घर में पड़े रहना; **–से पाँव निकालना**–स्त्री का दुश्चरित्र होना ।
घरऊ–(हिं. वि.) घर का, अपना ।
घरगयी–(हिं. वि. स्त्री.) जिसका घर बरबाद हो गया हो, निगोड़ी ।
घर-गिरस्ती–(हिं.स्त्री.) देखें 'घर-गृहस्थी'।
घरघराना–(हिं.क्रि.अ.) घरघर शब्द करना।
घर-घराना–(हिं.पुं.) परिवार, कुटुम्ब, वंश।
घरघराहट–(हिं. स्त्री.) घरघर शब्द ।
घर-घाट–(हिं. पुं.) तौर-तरीका, रहन-सहन, कुल-मर्यादा आदि ।
घरघाल, घरघालन–(हिं. वि.) परिवार का नाश करनेवाला ।
घर-घुसड़ा, घरघुसना–(हिं.पुं.) वह व्यक्ति जो सदा घर के भीतर घुसा रहे ।
घर-जँवाई–(हिं. पुं.) वह दमाद जो अपनी ससुराल में ही रहे ।
घरजाया–(हिं. पुं.) घर का दास ।
घर-जुगत–(हिं. पुं.) घर-गृहस्थी का चतुर प्रबंध ।
घर-झँकनी–(हिं. स्त्री.) वह स्त्री जो दूसरों के घर घूमा करती हो ।
घरदासी–(हिं.स्त्री.) गृहिणी, भार्या, पत्नी।
घरद्वार–(हिं. पुं.) रहने का स्थान, ठौर-ठिकाना, गृहस्थी, सम्पत्ति ।
घरनाल–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की प्राचीन समय की तोप ।
घरनी–(हिं. स्त्री.) घरवाली, गृहिणी, पत्नी, भार्या ।
घरपत्ती–(हिं. स्त्री.) प्रत्येक घर से लेने का चन्दा, बेहरी, अंशदान ।
घरफोड़ना, घरफोरा–(हिं.वि.) परिवार में कलह उत्पन्न करनेवाला ।
घरफोड़नी, घरफोरी–(हिं. वि. स्त्री.) घर घर में झगड़ा लगानेवाली ।
घरबसा–(हिं.पुं.) उपपति, जार, यार, पति ।
घरबार–(हिं. पुं.) रहने का स्थान, ठौर-ठिकाना, गृहस्थी, किसी की निजी सम्पत्ति।
घरबारी–(हिं. पुं.) गृहस्थ, कुटुम्बी, बाल-बच्चोंवाला ।
घर-बारू–(हिं. पुं.) देखें 'घरबारी' ।
घरवाला–(हिं. पुं.,स्त्री. घरवाली) घर का मालिक, स्वामी, पति ।
घरसा–(हिं. पुं.) रगड़, घस्सा।
घरहोई–(हिं. स्त्री.) परिवार में कलह उत्पन्न करनेवाली स्त्री, निन्दा या अपमान फैलानेवाली ।
घराऊ–(हिं.वि.) घर का, गृह-संबंधी, आपस का, निजी ।
घराती–(हिं. पुं.) विवाह में कन्या के पक्ष के मनुष्य ।
घराना–(हिं. पुं.) वंश, कुल ।
घरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'घड़िया'।
घरियाना–(हिं. क्रि. स.) कपड़े को तह करके लपेटना ।
घरियार–(हिं. पुं.) देखें 'घड़ियाल'।
घरियारी–(हिं. पुं.) घंटा बजानेवाला।
घरी–(हिं. स्त्री.) घड़ी, तह, परत ।
घरीक–(हिं.अव्य.) घड़ी भर, थोड़ी देर तक।
घरुआ–(हिं.पुं.) गृहस्थी का उचित प्रबंध।
घरू–(हिं. वि.) गृहस्थी-संबंधी, घर का।
घरेलू–(हिं.वि.) घर में रहनेवाला, पलुआ, पालतू, घर का, निज का, घर का बना हुआ, घरू; **–उद्योग**–(**पुं.**) सूत कातना, करघा चलाना आदि छोटे-मोटे धंधे ।
घरैया–(हिं. वि.) परिवार संबंधी, अति घनिष्ठ ।
घरो–(हिं. पुं.) घड़ा, कलश ।
घरौंदा, घरौंधा–(हिं. पुं.) छोटे बच्चों के खेलने का कागज, मिट्टी, लकड़ी आदि का बना हुआ छोटा घर, नन्हा-सा घर।
घरौना–(हिं. पुं.) देखें 'घरौंदा'।
घर्घर–(सं. पुं.) घड़घड़ाहट का शब्द ।
घर्म–(स.पुं.) आतप, धूप, घाम; **–बिंदु**–(पुं.) पसीना ।
घर्रा–(हिं. पुं.) आँख में लगाने का एक प्रकार का अंजन, कफ के कारण गले से घरघराहट का शब्द ।
घर्राटा–(हिं. पुं.) गहरी नींद में साँस लेने का शब्द, खर्राटा; (मुहा.) **–मारना**–गहरी नींद सोना ।
घर्षण–(सं. पुं.) रगड़, घिस्सा ।
घर्षणी–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हलदी ।
घर्षित–(सं. वि.) रगड़ा हुआ, रगड़ खाया हुआ ।
घलना–(हिं. क्रि. अ.) फेंका जाना, गिर पड़ना, तीर-गोली आदि का छूटना, मारपीट होना ।
घलाघल, घलाघली–(हिं.स्त्री.) मारपीट।
घलुआ–(हिं. पुं.) वह अधिक वस्तु जो ग्राहक को उचित तौल के अतिरिक्त दी

जाय, घाल।
घवद–(हिं. स्त्री.) देखें 'घौद'।
घवरि–(हिं.स्त्री.) फलों का गुच्छा।
घसकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'खिसकना'।
घसखुदा–(हिं.पुं.) घास खनेवाला, मूर्ख।
घसना–(हिं. क्रि. अ.) रगड़ना, घिसना।
घसिटना–(हिं.क्रि.अ.) घसीटा जाना।
घसियारा–(हिं. पुं. स्त्री. घसियारिन) घास छीलनेवाला, घास बेचनेवाला।
घसीट–(हिं.स्त्री.) जल्दी लिखन का काम, जल्दी में लिखा हुआ लेख।
घसीटना–(हिं. क्रि. स.) जोर लगाकर खींचना, जल्दी से लिखकर काम चालू करना, जबरदस्ती से शामिल करना।
घस्सा–(हिं. पुं.) घिस्सा, रगड़।
घहनाना–(हिं. क्रि. अ.) घण्टे आदि का टनटन करना, घहराना।
घहरना–(हिं.क्रि.अ.) गम्भीर शब्द करना।
घहराना–(हिं.क्रि.अ.) गरजना, चिग्घाड़ना।
घहरानि–(हिं.स्त्री.) गम्भीर शब्द, गरज।
घहरारा–(हिं. पुं.) गम्भीर शब्द।
घहरारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'घहरारा'।
घाँ–(हिं. स्त्री.) दिशा, ओर।
घाँघरा–(हिं. पुं.) घाघरा, लहँगा।
घाँघरी–(हिं.स्त्री.) देखें 'घाँघरा'।
घाँटी–(हिं. स्त्री.) गले के भीतर की घंटी, कौआ।
घाँटो–(हिं. पुं.) एक गाना जो चैत्र मास में गाया जाता है।
घाँह–(हिं. पुं.) ओर।
घा–(हिं. स्त्री.) ओर।
घाइ–(हिं. पुं. वा स्त्री.) देखें 'घाव'।
घाइल–(हिं. वि.) आहत।
घाई–(हिं. स्त्री.) ओर, सन्धि, बार, दफा, पानी में का भँवर।
घाई–(हिं. स्त्री.) दो अंगुलियों के बीच का कोना प्रहार, चोट, छल, धोखा, आघात; (मुहा.) घाइयाँ बतलाना–टालमटूल करना।
घाउ–(हिं. पुं.) घाव।
घाऊघप–(हिं. वि.) गुप्त रूप से किसी का धन हरण करनेवाला, चुपके से अपना अर्थ साधनेवाला।
घाएँ–(हिं. अव्य.) ओर।
घाघ–(हिं.पुं.) अति चतुर मनुष्य, सयाना।
घाघरा–(हिं.पुं.) स्त्रियों का लहँगा, सरजू नदी; –पलटन–(स्त्री.) गोरों की सेना जिनका कमर के नीचे का पहिनावा घाघरे के आकार का होता है।
घाघी–(हिं. स्त्री.) मछली पकड़ने का बड़ा जाल।
घाट–(हिं.पुं.) नदी आदि का वह स्थान जहाँ लोग नहाते-धोते या नाव पर चढ़ते हैं, पहाड़, नीचा-ऊँचा पहाड़ी मार्ग, दिशा, डीलडौल, रीति, तलवार की धार; (स्त्री.) बुराई, छल, कपट; (वि.) कम, थोड़ा; (मुहा.)–घाट का पानी पीना–घूम-घूमकर अनुभव प्राप्त करना; –धरना–मार्ग रोकना; –नहाना–अन्त्येष्टि क्रिया के १० दिनों तक मृतक के सगे-संबंधियों का स्नान करके तिलांजलि देना; –लगना–ठिकाना पाना; –कप्तान–(पुं.) बन्दरगाह का अध्यक्ष; –बंदी–(स्त्री.) किसी निर्धारित स्थान से नाव या जहाज ले जाने की मनाही; –वाल–(पुं.) घाट पर बैठकर दान लेनेवाला घाटिया, गंगापुत्र।
घाटा–(हिं. पुं.) हानि, घटी।
घाटारोह–(हिं. पुं.) घाट से किसी को उतरने न देना, घाटबंदी।
घाटि–(हिं. वि.) न्यून, कम, घटकर; (स्त्री.) नीच कार्य, पाप।
घाटिया–(हिं. पुं) घाटों पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण, गंगापुत्र।
घाटी–(हिं.स्त्री.) पर्वतों के बीच की भूमि, पहाड़ का ढालुआ स्थान, दर्रा।
घात–(हिं. पुं.) धक्का, प्रहार, चोट, वध, हत्या, बुराई, गणित में गुणनफल; (स्त्री.) दाँव, ताक, अनुकूल अवस्था, रंगढंग, छल-कपट; (मुहा.)–करना–छलना; –पर चढ़ना,–में आना–अभिप्राय सिद्ध होने के अनुकूल होना, चाल में फँसना, दाँव में आना; –में–ताक में; –में बैठना–छिपकर आक्रमण करने के लिये तयार रहना; –लगना–सुअवसर प्राप्त होना; –लगाना–तरकीब भिड़ाना।
घातक–(सं. वि., पुं.) मार डालनेवाला, शत्रु, हत्यारा।
घातन–(सं. पुं.) वध करना, जान से मारना; (वि.) वध करनेवाला।
घातकी–(हिं. पुं.) घातक, हत्यारा।
घातिनी–(हिं.स्त्री.) वध करनेवाली, हत्यारी।
घाती–(सं. पुं.) मारनेवाला, घातक, हत्यारा, संहारक, नाश करनेवाला।
घातुक–(सं. वि.) हिंसक, क्रूर, हत्यारा।
घात्य–(सं. वि.) घात करने योग्य, वध्य।
घान–(हिं. पुं.) जितनी वस्तु एक बार कोल्हू या चक्की में डाली जाती है अथवा पकाई जाती है, आघात, चोट, प्रहार, बड़ा हथौड़ा।
घाना–(हिं.क्रि.स.) मारना, नाश करना, पकड़ना।
घानी–(हिं.स्त्री.) देखें 'घान'; समूह, ढेर।
घाम–(हिं. पुं.) आतप, धूप।
घामड़, घामर–(हिं.वि.) घाम से व्याकुल, मूर्ख, आलसी।
घायक–(हिं. वि.) नाश करनेवाला, मारनेवाला।
घायल–(हिं.वि.) जिसे चोट लगी हो, आहत।
घार–(हिं.स्त्री.) पानी के बहाव से कटकर बना हुआ मार्ग।
घाल, घाला–(हिं. पुं.) देखें 'घलुआ'।
घालक–(हिं.पुं.) नाश करनेवाला, मारनेवाला
घालकता–(हिं.स्त्री.) नाश करने का कार्य।
घालना–(हिं.क्रि.स.) किसी वस्तु के भीतर या ऊपर रखना, गिराना, डालना, रखना, फकना, छोड़ना, नाश करना, बिगाड़ना, मार डालना।
घालमेल–(हिं. पुं.) अनेक प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट, मेल-जोल।
घालिका–(हिं.स्त्री.) नाश करनेवाली स्त्री।
घालिनी–(हिं.स्त्री.) मार डालनेवाली स्त्री।
घाव–(हिं. पुं.) शरीर का वह स्थान जहाँ पर चोट लगी हो या कट गया हो, क्षत; (मुहा.)–खाना–चोट लगना; –पर नमक छिड़कना–दुःख के समय और कष्ट देना; –पूजना या भरना–घाव का सूख जाना।
घावपत्ता–(हिं.पुं.) एक लता जिसके पत्ते घाव पर बाँधे जाते हैं।
घावरिया–(हिं.पुं.) घावों का चिकित्सक, जर्राह।
घास–(सं. स्त्री.) भूमि पर उगनेवाला छोटा तृण, पशुओं का चारा; –पात, –फूँस–(पुं.) खर-पतवार, कूड़ा-करकट; (मुहा.)–काटना, छीलना या खोदना–तुच्छ कार्य या सहज कार्य करना; –खाना–पशु के समान हो जाना।
घासलेटी–(हिं. वि.) रद्दी, निकृष्ट।
घासी–(हिं. स्त्री.) घास, तृण।
घाह–(हिं. पुं.) अँगुलियों की सन्धि, देखें 'घाई'।
घिआँड़ा–(हिं. पुं.) घी रखने का पात्र।
घिग्घी–(हिं. स्त्री.) रोते-रोते साँस लेने में रुकावट होना, हिचकी, भय के कारण बोलने में रुकावट; (मुहा.)–बँधना–भय के कारण मुँह से बोली न निकलना।
घिघियाना–(हिं.क्रि.अ.) रो-रोकर प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना, चिल्लाना।
घिचपिच–(हिं.स्त्री.) स्थान की संकीर्णता, सँकरापन, थोड़े स्थान में अनेक पदार्थों का ढेर, भीड़; (वि.) अस्पष्ट, गिचपिच।

घिचपिचाना–(हिं.क्रि.अ.) सिटपिटाना, आगा-पीछा करना।
घिन–(हिं. स्त्री.) घृणा, अरुचि, किसी घृणित वस्तु को देखकर चित्त बिगड़ना, जी मिचलाना।
घिनाना–(हिं. क्रि. अ.) घृणा होना।
घिनावना–(हिं. वि.) घृणित, घिनौना।
घिनौना–(हिं.वि.) घृणा उत्पन्न करनेवाला।
घिनौरी–(हिं. स्त्री.) ग्वालिन नाम का बरसाती कीड़ा।
घिन्नी–(हिं. स्त्री.) देखें 'घिरनी', 'गिन्नी'।
घिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है. लौकी।
घियाकश–(हिं. पुं.) देखें 'कद्दूकश'।
घियातरोई, घियालोरई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है; नेनुआँ, सतपुतिया।
घिरना–(हिं.क्रि.अ.) चारों ओर से घेरा जाना या व्याप्त होना, चारों ओर से एकत्रित होना।
घिरनी–(हिं. स्त्री.) गराड़ी, चक्कर, फेरा, रस्सी बटने की चरखी।
घिराई–(हिं. स्त्री.) घेरने की क्रिया, पशुओं को चराने का काम या मजदूरी।
घिराव–(हिं. पुं.) घेरने का काम, घेरा।
घिर्राना–(हिं. क्रि. स.) घसीटना, गिड़गिड़ाना।
घिर्री–(हिं. स्त्री.) देखें 'घिरनी'।
घिसकना–(हिं.क्रि.स.) सरकना, खसकना।
घिसघिस–(हिं. स्त्री.) शिथिलता के कारण विलम्ब, अनिश्चय, गड़बड़ी।
घिसटना–(हिं. क्रि. अ.) घसीटा जाना।
घिसन–(हिं.स्त्री.) रगड़, घिसने का कार्य।
घिसना–(हिं. क्रि. अ., स.) रगड़ना, रगड़ खाकर कम होना।
घिसपिस–(हिं. स्त्री.) मेलजोल, सट्टाबट्टा।
घिसवाना–(हिं.क्रि.स.) घिसने का काम दूसरे से कराना, रगड़वाना।
घिसाई–(हिं. स्त्री.) घिसने की क्रिया।
घिसाना–(हिं. क्रि. स.) रगड़वाना।
घिसाव, घिसावट–(हिं. पुं.) रगड़।
घिसिर-पिसिर–(हिं. स्त्री.) घिसपिस।
घिस्सा–(हिं. पुं.) रगड़, धक्का, ठोकर, कुन्दा, रद्दा, लड़कों का एक खेल।
घींच–(हिं. स्त्री.) गरदन।
घींचना–(हिं. क्रि. स.) खींचना, ऐंचना।
घी–(हिं. पुं.) घृत, तपाया हुआ मक्खन; (मुहा.)–**का कुप्पा लुढ़कना**–बड़ी हानि होना; –**के दिये जलाना**–मनोरथ पूर्ण होना; **पाँचों अँगुलियाँ घी में होना**–अत्यन्त सुख या लाभ होना; –**खिचड़ी होना**–खूब घुलमिल जाना, गहरी दोस्ती होना।
घीकुआ(वा)र–(हिं. पुं.) घृतकुमारी, ग्वारपाठा।
घीसा–(हिं. पुं.) देखें 'घिस्सा'।
घुंगची, घुंघची–(हिं.स्त्री.) गुंजा, गुंजिका, कांची।
घुँघनी–(हिं.स्त्री.) तेल या घी में तला हुआ या पानी में भिगाया हुआ चना, मटर आदि।
घुंघरारा(रे), घुंघराला(ले)–(हिं.वि.) कुंचित या घूमे हुए (बाल), छल्लेदार या बल खाये हुए (बाल)।
घुंघरू–(हिं. पुं.) धातु की बनी हुई पोली गुरिया जिसके परस्पर टकराने से घुनघुन शब्द होता है, ऐसी गुरियों का बना हुआ आभूषण, मंजीर, चौरासी, –**दार**–(वि.) जिसमें घुंघरू लगे हों।
घुंडी–(हिं.स्त्री.) कपड़े का बना हुआ मटर के समान गोल बटन, गोपक, कड़े, जोशन आदि के छोरों पर की गाँठ; –**दार**–(वि.) जिसमें घुंडी लगी हो।
घुआ–(हिं. पुं.) देखें 'घूआ'।
घुइँयाँ–(हिं.स्त्री.) अरुई नाम की तरकारी।
घुग्घी–(हिं.स्त्री.) तिकोना लपेटा हुआ कम्बल जिसको किसान लोग जाड़े से बचने के लिये सिर पर ओढ़ते हैं, घोघी, पंडुक या पेडुकी नामक पक्षी।
घुग्घू–(हिं.पुं.) उलूक, उल्लू नामक पक्षी।
घुघुआ–(हिं. पुं.) उल्लू, घुग्घू।
घुघुआना–(हिं. क्रि. अ.) उल्लू की तरह बोलना, बिल्ली की तरह गुर्राना।
घुघुनी, घुघुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'घुंघनी'।
घुटकना–(हिं.क्रि.स.) घूंट घूंट करके पी जाना, निगल जाना।
घुटकी–(हिं. स्त्री.) गले की वह नली जिसके द्वारा पेट में खाना-पानी जाता है; आसन्न मृत्यु के समय गले में से निकलने वाला घरघर शब्द, घटका; (मुहा.)–**लगना**–प्राण का कंठगत होना।
घुटना–(हिं. पुं.) पाँव के बीच का जोड़, टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ; (क्रि.अ.) सांस का भीतर रुक जाना, फँसना, रुकना, कड़ा पड़ना, रगड़ाकर चिकना होना, घनिष्ठता या मित्रता होना, मिल-जुलकर बात करना; (मुहा.) **घुटने टेकना**–घुटने के बल बैठना, हार मानना; **घुट-घुट कर मरना या जान देना**–बहुत कष्ट झेलते हुए मरना; **घुटा हुआ**–चतुर, प्रवीण।
घुटन्ना–(हिं.पुं.) घुटने तक का पायजामा।
घुटरूँ–(हिं. पुं.) घुटना।
घुटवाना–(हिं. क्रि. स.) घोटने का काम दूसरे से कराना, बाल मुड़वाना।
घुटाई–(हिं. स्त्री.) घोटने या रगड़ने का काम, रगड़कर चिकना करने का पारिश्रमिक।
घुटाना–(हिं.क्रि.स.) घोटने का काम कराना।
घुटुरुअन, घुटरुन–(हिं.अव्य.) घुटने के बल।
घुटुरूँ–(हिं. पुं.) घुटना।
घुट्टी–(हिं. स्त्री.) छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलानेवाली दवा।
घुड़कना–(हिं.क्रि.स.) क्रोध में डराने के लिये कोई बात कहना, कड़ककर बोलना, डाँटना, डपटना।
घुड़की–(हिं. स्त्री.) क्रोध में आकर डराने के लिये कड़ककर कही हुई बात, डाँट-डपट, घुड़कने की क्रिया; **बंदर-घुड़की**–(स्त्री.) झूठमूठ भय दिखलाने का कार्य।
घुड़चढ़ा–(हिं. पुं.) अश्वारोही, घोड़े पर चढ़ा हुआ मनुष्य।
घुड़चढ़ी–(हिं. स्त्री.) विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढ़कर कन्या के घर जाता है, एक प्रकार की छोटी तोप जो घोड़े पर रखकर चलाई जाती है, घुड़नाल।
घुड़दौड़–(हिं. स्त्री.) घोड़ों की दौड़, घोड़ा दौड़ाने का स्थान, एक प्रकार की नाव जिसका अगला भाग घोड़े के मुख के आकार का बना रहता है, एक प्रकार का जुए का खेल जिसमें बाजी बदकर अनेक घोड़े दौड़ते हैं।
घुड़नाल–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की छोटी तोप जो घोड़े पर रखकर चलाई जाती है।
घुड़बहल–(हिं. स्त्री.) वह रथ जिसमें घोड़ जुते रहते हैं।
घुड़मक्खी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मक्खी जो घोड़ों को काटती है।
घुड़मुँहाँ–(हिं. वि., पुं.) लम्बे, भद्दे मुखवाला (मनुष्य)।
घुड़सवार–(हिं. पुं.) अश्वारोही।
घुड़सार, घुड़साल–(हिं. स्त्री.) घोड़ों को बाँधने का स्थान, अस्तबल।
घुड़ुकना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'घुड़कना'।
घुण–(सं. पुं.) घुन।
घुणाक्षरन्याय–(सं. पुं.) ऐसी रचना जो अनजान में वैसे ही हो जाय जैसे घुन के खाते-खाते लकड़ी में अक्षर की तरह की आकृतियाँ बन जाती हैं।
घुन–(हिं. पुं.) घुण, छोटा कीड़ा जो अन्न, लकड़ी आदि में लगता है; (मुहा.)

–लगना–घुन द्वारा अन्न आदि का खाया जाना, भीतर-भीतर क्षय होना।
घुनघुना–(हि. पुं.) देखें 'झुनझुना'।
घुनना–(हि. क्रि. अ.) घुन द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना, भीतर ही भीतर क्षय होना।
घुन्ना–(हि. वि.) अपने चित्त के भावों को मन में ही रखनेवाला, मन में बुरा माननेवाला, चुप्पा।
घुन्नी–(हि. वि. स्त्री.) मन का आवेग मन में रखनेवाली, चुप्पी।
घुप–(हि. वि.) गहरा (अन्धकार)।
घुमँड़ना–(हि.क्रि.अ.) बादलों का मँड़राना।
घुमक्कड़–(हि. वि.) बहुत घूमनेवाला।
घुमची–(हि. स्त्री.) गुंजा, घुंघची।
घुमटा–(हि. पुं.) सिर में चक्कर आना, सिर घूमना।
घुमड़–(हि. स्त्री.) बरसनेवाले बादलों का घेरना।
घुमड़ना–(हि.क्रि.अ.) बादलों का इकट्ठा होना, मेघों का छा जाना।
घुमड़ा, घुमरा–(हि. स्त्री.) चक्कर की तरह घूमना, सिर में चक्कर आना।
घुमड़ी–(हि.स्त्री.) सिर का चक्कर खाना।
घुमना–(हि. वि.) अधिक घूमनेवाला, घुमक्कड़।
घुमनी–(हि. स्त्री.) पशुओं का एक रोग; (स्त्री.) घूमनेवाली स्त्री (समस्त पदों में अंत में)।
घुमरना–(हि.क्रि.अ.) तीव्र शब्द करना, जोर से बजना, घुमड़ना।
घुमराना–(हि.क्रि.अ.) देखें 'घुमरना'।
घुमरी–(हि.स्त्री.) भँवर, चक्कर, घुमड़ी।
घुमाना–(हि.क्रि.स.) चारों ओर फिराना, चक्कर देना, सैर कराना, टहलाना, मरोड़ना, ऐंठना, किसी अन्य विषय में प्रवृत्त करना।
घुमाव–(हि. पुं.) घूमने का कार्य, चक्कर, फेरा, मार्ग का मोड़।
घुमावदार–(हि. वि.) जिसमें घुमाव हो, चक्करदार।
घुम्मरना–(हि.क्रि.अ.) देखें 'घुमरना'।
घुरकना–(हि. क्रि. स.) देखें 'घुड़कना'।
घुरका–(हि. पुं.) चौपायों का एक रोग।
घुरघुरा–(हि. पुं.) झींगुर।
घुरघुराना–(हि.क्रि.अ.) कण्ठ से घुरघुर शब्द निकलना।
घुरघुराहट–(हि. स्त्री.) घुरघुर शब्द।
घुरना–(हि.क्रि.अ.) घुलना, शब्द करना, बजना।
घुरबिनिया–(हि. स्त्री.) घूर पर से अन्न आदि बटोरने का कार्य, सड़क या गली में से टूटी-फूटी वस्तुएँ बटोरकर इकट्ठा करने का काम।
घुर(रु)हुरी–(हि. स्त्री.) पगडंडी।
घुराना–(हि. क्रि.अ.) भर आना।
घुर्मित–(हि. वि.) घूमता या चक्कर खाता हुआ।
घुर्राना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'गुर्राना'।
घुलना–(हि.क्रि.अ.) तरल पदार्थों में गल कर परस्पर मिल जाना, गलना, द्रवित होना, अधिक पककर पिलपिला या नरम होना, मृदु होना, रोग से शरीर का क्षीण होना, दुर्बल होना, कष्ट से समय बीतना; **घुल-घुल कर बात करना**–बड़ी घनिष्ठता से हृदय खोलकर बातें करना; **घुल-मिलकर**–मेल-जोल के साथ; **घुल-घुल कर मरना**–अधिक समय तक कष्ट भोगकर मरना।
घुलवाना–(हि. क्रि. स.) गलवाना, द्रवित करना, आँखों में सुरमा लगवाना, क्षीण कराना।
घुलाना–(हि.क्रि.स.) गलाना, शरीर दुर्बल करना, मुख में रखकर रस चूसना, चुभलाना, कोमल करना, सुरमा लगाना, समय बिताना।
घुलावट–(हि. स्त्री.) घुलाने की क्रिया।
घुवा–(हि. पुं.) देख 'घूआ'।
घुसड़ना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'घुसना'।
घुसना–(हि. क्रि. अ.) प्रवेश करना, भीतर जाना, चुभना, धँसना, गड़ना, बिना अधिकार के कोई कार्य करना, किसी विषय में पूरा ध्यान लगाना; (मुहा.) **घुसकर बैठना**–छिपे रहना, मुँह न दिखलाना।
घुसपैठ–(हि. स्त्री.) प्रवेश, गति, पहुँच, रसोई।
घुसवाना–(हि. क्रि. स.) घुसाने का काम दूसरे से कराना।
घुसाना–(हि. क्रि. स.) भीतर प्रवेश करना, चुभाना, धँसाना, पैठाना।
घुसेड़ना–(हि. क्रि. स.) घुसाना, धँसाना, पैठाना।
घूंघट–(हि. पुं.) वस्त्र का वह भाग जिससे स्त्रियाँ अपना मुख ढाँप लेती हैं, बाहरी किवाड़ के सामने की भीत जो आँगन को बाहर से छिपाए रहती है, ओट।
घूंघर–(हि. पुं.) बालों में पड़े हुए मरोड़ या कुंचन; **–वाले**–(वि.) घुंघराले, कुंचित, लच्छेदार, छबरीले।
घूंघरी–(हि. स्त्री.) घुंघरू, क्षुद्रघण्टिका।
घूंघरू–(हि.पुं) देखें 'घुंघरू'।
घूंट–(हि. पुं.) पानी, दूध इत्यादि द्रव पदार्थ का उतना अंश जो एक बार गले से नीचे उतारा जाय।
घूंटना–(हि. क्रि. स.) किसी द्रव पदार्थ को गले से नीचे उतारना, पीना।
घूंटी–(हि. स्त्री.) छोटे बच्चों का पाचन सुधारने की औषध जो उनको नित्य पिलाई जाती है; **जनम-घूंटी**–(स्त्री.) वह औषध जो बच्चों का पेट साफ रखने के लिये जन्म से ही पिलाई जाती है।
घूंस–(हि. स्त्री.) उत्कोच, घूस।
घूंसा–(हि. पुं.) बँधी हुई मुट्ठी, मुक्का; (क्रि. प्र.)–**चलाना**–घूंसा मारना; **घूंसेबाजी**–(स्त्री.) घूंसे की लड़ाई।
घूआ–(हि. पुं.) मूंज, सरकंडे आदि का रूई की तरह का फूल, एक प्रकार का कीड़ा।
घूक–(हि. पुं.) उल्लू पक्षी, घुग्घू।
घूका–(हि. पुं.) सँकरे मुँह की डलिया।
घूगस–(हि. पुं.) ऊँचा बुर्ज, गरगज।
घूघ–(हि. पुं.) लोहे या पीतल की टोपी जो लड़ाई में सिर पर चोट बचाने के लिये पहनी जाती है।
घूघी–(हि. स्त्री.) जेब, खरीता, पेंड़ुकी।
घूघू–(हि. पुं.) देखें 'घुग्घू'।
घूटना–(हि. क्रि. अ.) घूंटना।
घूम–(हि. स्त्री) घुमाव, मोड़, चक्कर।
घूम-घुमारा–(हि.वि.) उन्मत्त, मतवाला।
घूमना–(हि. क्रि.अ.) इधर-उधर फिरना, चक्कर लगाना, यात्रा करना, मंडराना, कावा काटना, मुड़ना, लौटना, उन्मत्त होना; **घूम पड़ना**–एकाएक क्रुद्ध होना।
घूमनी –(हि. स्त्री.) सिर का चक्कर।
घूर–(हि. पुं.) कूड़ा-करकट फेंकने का स्थान, कूड़े का ढेर।
घूरना–(हि. क्रि. स.) आँख गड़ाकर देखना, बुरी दृष्टि से देखना, क्रोध से एकटक देखना, घूमना, टहलना।
घूरा–(हि. पुं.) कूड़ा-करकट का ढेर, कतवार रखने का स्थान।
घूस–(हि. स्त्री.) उत्कोच; (पुं.) एक प्रकार का चूहा; **–खोर**–(पुं.) उत्कोच लेनेवाला; **–खोरी**–(स्त्री.) घूस लेने का कार्य।
घृणा–(सं. स्त्री.) घिन, बीभत्स रस का भाव।
घृणित–(सं.वि.) घृणा करने योग्य।
घृत–(सं. पुं.) घी।

घृतकुमारी–(सं.स्त्री.) घीकुआर, ग्वारपाठा।
घृतपूर–(सं. पुं.) घेवर नामक पक्वान्न।
घृताची–(सं. स्त्री.) स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम।
घेंघ, घेंघा–(हिं. पुं.) भिगोये हुए चने और चावल का बना हुआ खाद्य पदार्थ, गले का एक रोग जिसमें कण्ठ फूल आता है।
घेंटा–(हि. पुं.) सुअर का छोटा बच्चा।
घेघा–(हिं. पुं.) गले की नली जिससे भोजन तथा पानी पेट में जाता है, घेंघा रोग, गलगंड।
घेर–(हिं.पुं.) परिधि, चारों ओर का फैलाव।
घेरघार–(हि. पुं.) चारों ओर से घेरने की क्रिया, चारों ओर बादल छा जाना, विस्तार, अनुरोध।
घेरना–(हिं. क्रि.स.) चारों ओर हो जाना, चारों ओर से छेंकना, बाँधना, रोकना, ग्रसना, पशुओं को चराना, फँसाये रखना, अनुरोध करना, विनय करना।
घेरा–(हि. पुं.) चारों ओर की सीमा, परिधि का मान, फैलाव, चारों ओर घेरनेवाली वस्तु, मण्डल, घिरा हुआ स्थान, चारों ओर से सेना द्वारा छेंकने का काम।
घेराई–(हिं. स्त्री.) देखें 'घिराई'।
घेराव–(हि. पुं.) देखें 'घिराव'।
घलौना–(हि. पुं.) घेलुआ, घाल।
घवर–(हि. पुं.) एक प्रकार की मिठाई।
घया–(हिं.स्त्री.) विना मथे हुए दूध के ऊपर का मक्खन इकट्ठा करने का कार्य, वृक्ष में से रस निकालने के लिये कुल्हाड़ी आदि से उसे थोड़ा सा काटना; (स्त्री.) ओर।
घैर, घरू, घरो–(हि.पुं.) अपमान, अपयश, चुगली, गुप्त रूप से दुर्नाम करना।
घैला–(हिं. पुं.) कलश, घड़ा, गगरा।
घैहल–(हि. वि.) घाव लगा हुआ।
घैहा–(हिं. वि.) देखें 'घैहल'।
घोंघ–(हि. पुं.) एक प्रकार की चिड़िया।
घोंघा–(हि. पुं.) शंख के आकार का एक कीड़ा जो जलाशयों में पाया जाता है, शम्बूक; (वि.) मूर्ख, जिसमें कुछ तत्त्व न हो; **–बसंत**–(पुं.) बड़ा मूर्ख।
घोंची–(हिं. स्त्री.) वह गाय जिसकी सींग मुड़कर कान में जाकर मिल जाती है।
घोंचुआ (वा)–(हिं. पुं.) नीड़, घोंसला।
घोंचू–(हि. पुं.) मूर्ख, जड़बुद्धि।
घोंट–(हि.पुं.) घोंटने का काम, घूंट, एक प्रकार का वृक्ष।
घोंटना–(हि.क्रि.स.) पानी-दूध इत्यादि को थोड़ा-थोड़ा करके गले के नीचे उतारना, पचा जाना, गला मरोड़ना या ऐंठना।
घोंपना–(हिं. क्रि.स.) गड़ाना, धँसाना, चुभाना, गाँथना, बुरी तरह से सिलाई करना।
घोंसला–(हिं. पुं.) पक्षी के रहने का घास-फूस से बनाया हुआ घर, नीड़, खोंता।
घोंसुआ–(हिं. पुं.) घोंसला।
घोखना–(हिं. क्रि.स.) पाठ को याद करने के लिये उसको बारंबार दोहराना, रटना, घोटना।
घोखवाना–(हिं. क्रि.स.) रटवाना।
घोघा–(हिं. पुं.) चने के फल को नष्ट करनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
घोघी–(हि. स्त्री.) देखें 'घुग्घी'।
घोट, घोटक–(सं. पुं.) अश्व, घोड़ा।
घोटना–(हिं.क्रि.स.) चिकना और महीन करने के लिये रगड़ना, सिल पर बट्टे से रगड़ देना, रगड़कर चमकाना, अभ्यास करना, रटना, डाँट-फटकार देना, मूड़ना, गला मरोड़ना; (पुं.) घोंटने का औजार।
घोटनी–(हि. स्त्री.) घोटने की कोई छोटी वस्तु।
घोटवाना–(हि. क्रि.स.) घोटने का काम दूसरे से कराना, रगड़वाना, चमकवाना, सिर या दाढ़ी के बाल मुड़वाना।
घोटा–(हिं. पुं.) घोटने का साधन, घुटा हुआ चमकीला वस्त्र, रगड़, घोटाई।
घोटाई–(हिं. स्त्री.) घोटने की क्रिया या शुल्क।
घोटाला–(हिं. पुं.) गड़बड़, उपद्रव।
घोटू–(हिं. वि.) घोटनेवाला।
घोड़-चढ़ा, घोड़दौड़–(हि. वि., पुं.) देखें 'घुड़चढ़ा' 'घुड़दौड़'।
घोड़राई–(हि.स्त्री.) बड़े-बड़े दाने की राई।
घोड़साल–(हिं. स्त्री.) घोड़ा बाँधने का स्थान, घुड़साल।
घोड़ा–(हिं. पुं.) घोटक, अश्व, बंदूक में गोली चलाने का खटका, शतरंज का एक मोहरा; (मुहा.) **–उठाना**–घोड़ा दौड़ाना; **–कसना**–घोड़े की पीठ पर सवारी के लिये जीन कसना; **–निकालना**–सिखाकर घोड़े को सवारी के योग्य बनाना; **–फेंकना**–घोड़ा दौड़ाना; **–बेचकर सोना**–निश्चिन्त होकर सोना।
घोड़ा-गाड़ी–(हि.स्त्री.) घोड़े से चलनेवाली गाड़ी।
घोड़ानस–(हिं. स्त्री.) वह बड़ी और मोटी नस जो एड़ी के पीछे से ऊपर को जाती है।
घोड़ाबच–(हिं. पुं.) खुरासानी बच।
घोड़िया–(हिं.स्त्री.) भीत में लगाई हुई खूँटी, छोटा घोड़ा।
घोड़ी–(हिं.स्त्री.) मादा घोड़ा, चीजें रखने की लम्बी पटरी, विवाह का एक गीत।
घोर–(सं. वि.) भयंकर, विकराल, डरावना, घना, कठिन, दुर्गम, गाढ़ा, गहरा, बुरा, अत्यन्त; (स्त्री.) गरज, ध्वनि।
घोरा–(हि. पुं.) घोड़ा।
घोरना–(हि.क्रि.अ.) भयंकर शब्द करना, गरजना।
घोरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'घोड़िया'।
घोरिला–(हिं. पुं.) लड़कों के खेलने का मिट्टी का घोड़ा।
घोरी–(हिं. स्त्री.) घोड़ी।
घोल–(हिं. पुं.) घोलकर बनाया हुआ पदार्थ, मट्ठा।
घोलना–(हि.क्रि.स.) किसी द्रव पदार्थ में कोई वस्तु हिलाकर मिलाना, हल करना; (मुहा.) **घोलकर पी जाना**–किसी विषय में पारंगत ज्ञान अर्जन करना, निगल जाना।
घोष–(सं. पुं.) अहीरों की बस्ती अहीर, गोशाला, शब्द, किनारा, तट, गरज, व्याकरण में शब्दों के उच्चारण का एक बाह्य प्रयत्न।
घोषणा–(सं. स्त्री.) ऊँचे स्वर में सूचना, मुनादी, डुग्गी, ध्वनि, आवाज।
घोसना–(हि. क्रि. स.) घोषित करना, उच्चारण करना।
घोसी–(हिं. पुं.) अहीर ग्वाला।
घौद–(हिं. पुं.) फलों का गुच्छा।
घौर, घौरा–(हि.पुं.) फलों का गुच्छा, घौद
घ्राण–(सं. पुं) सूँघने की शक्ति, सुगन्ध, नाक।
घ्राणेंद्रिय–(सं. पुं.) नाक।
घ्रात–(सं. वि.) सूँघा हुआ।
घ्रातव्य–(सं. वि.) सूँघने योग्य।
घ्राता–(सं. वि.) सूँघनेवाला।
घ्रेय–(सं. वि.) सूँघने योग्य।

ङ

ङ–व्यञ्जन वर्णों का पाँचवाँ तथा कवर्ग का अन्तिम वर्ण, इसका उच्चारण कण्ठ और नासिका से होता है; (सं. पुं.) घ्राण-शक्ति, गन्ध, सुगन्ध, गौरव, महत्त्व।

च

च–हिन्दी वर्णमाला का वाईसवाँ अक्षर तथा छठवाँ व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान तालु है।
चंक–(हिं.वि.) पूर्ण, पूरा, समस्त, समूचा।
चंक्रमण–(सं. पुं.) वारम्वार घूमना, टहलना।
चंग–(फा.पुं.) एक छोटा वाजा जो डफ के आकार का होता है, गँजीफ का एक रंग; (स्त्री.) गुड्डी, कनकैया, पतंग; (मुहा.) –चढ़ना–जोरों की वातें होना, खूब जोर होना; –पर चढ़ाना–इधर-उधर की वातें समझाकर अपने अनुकूल करना।
चँगना–(हिं.क्रि.स.) कष्ट देना, तंग करना, खींचना, कसना।
चँगवाई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वात रोग जिसमें हाथ-पाँव जकड़ जाते हैं।
चंगा–(हिं. वि.) आरोग्य, स्वस्थ, नीरोग, भला, सुन्दर, शुद्ध, निर्मल।
चंगु, चंगुल–(हिं. पुं.) पंजा, पकड़, पशुओं या पक्षियों का पंजा, अँगुलियों की पकड़; (मुहा.) –में फँसना–वश में आना, पंजे में फँस जाना।
चँगर, चँगेरी–(हिं. स्त्री.) वाँस की वनी हुई छिछली चौड़ी टोकरी, फूल रखने की डलिया, छोटे वच्चे का झूला, मशक।
चूँगली–(हिं. स्त्री.) देख 'चंगेर', 'चंगेरी'।
चंच–(हिं. स्त्री.) देखें 'चंचु'।
चंचरी–(हिं. स्त्री.) पानी का भँवर, होली में गाने का एक गीत, हरिप्रिया छन्द, एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक पद में छव्वीस मात्राएँ होती हैं।
चंचरीक–(सं. पुं.) भँवरा, भ्रमर।
चंचल–(सं.वि.) (स्त्री. चंचला) एक जगह या एक स्थिति में न रहनेवाला, अस्थिर, उद्विग्न, नटखट, चुलवुला, शोख, कामुक।
चंचलता–(सं. स्त्री.) चंचल होने का भाव या अवस्था, चपलता।
चंचला–(सं. स्त्री.) विद्युत्, विजली, लक्ष्मी, पिप्पली।
चंचलताई, चंचलाई–(हिं. स्त्री.) चपलता, चंचलता।
चंचलाहट–(हिं.स्त्री.) चपलता, चंचलता।
चंचा–(हिं. स्त्री.) पक्षियों आदि को डराने के लिये खेतों में रखा हुआ घास-फूस, काली हाँड़ी आदि का पुतला।
चंचु–(सं. पुं.) एक प्रकार का साग, रेंड, हिरन; (स्त्री.) चोंच।
चंचोरना–(हिं. क्रि. स.) दाँतों से दवाकर चूसना, चिचोरना।
चंट–(हिं. वि.) धूर्त, सयाना, चतुर।
चंड–(सं. वि.) तेज, तीक्ष्ण, प्रखर, उग्र, दुर्दमनीय, कठोर, उद्धत, क्रोधी, गुस्सावर।
चंडता–(सं. स्त्री.) उग्रता, प्रखरता, तीव्रता, वल, प्रताप।
चंड-मुंड–(सं. पुं.) दो राक्षसों के नाम जो दुर्गा देवी के हाथों से मारे गये थे।
चंडाई–(हिं. स्त्री.) शीघ्रता, उतावलापन, प्रवलता, अत्याचार।
चंडाल–(हिं. पुं., स्त्री. चंडालिन) श्वपच, डोम।
चंडालत्व–(सं. पुं.) देखें 'चंडालता'।
चंडालपन–(हिं. पुं.) अधमता, नीचता।
चंडालिनी–(सं. स्त्री.) चंडाल की स्त्री, दुष्टा स्त्री।
चंडावल–(हिं. पुं.) सेना के पीछे का भाग, वीर, योधा, पहरेदार, चौकीदार।
चंडाह–(हिं.पुं.) एक प्रकार का मोटा वस्त्र।
चंडि, चंडिका–(सं. स्त्री.) दुर्गा।
चंडी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, उग्र स्वभाव की झगड़ालू और कर्कशा स्त्री।
चंडीश–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
चंडू–(हिं. पुं.) एक मादक पदार्थ जो तंवाकू की तरह पीया जाता है।
चंडूखाना–(हिं. पुं.) वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठा होकर चंडू पीते हैं; (मुहा.) चंडूखाने की गप–(स्त्री.) विलकुल झूठ वात।
चंडूवाज–(हिं. पुं.) चंडू पीनेवाला मनुष्य।
चंडूल–(हिं. पुं.) एक भूरे रंग की चिड़िया जो वड़ा मधुर वोलती है; मूर्ख या भद्दा मनुष्य; पुराना चंडूल–(पुं.) भद्दा मनुष्य।
चंडोल–(हिं.पुं.) हौदे के आकार की पालकी।
चंद–(सं. पुं.) चंद्रमा, कपूर।
चंद–(फा. वि.) कुछ, थोड़े से, दो चार; –रोजा–(वि.) थोड़ दिन टिकनेवाला।
चंदक–(हिं. पुं.) चन्द्रमा, चाँदनी, चांद, मछली, एक अर्ध चन्द्राकार गहना जो माथे पर पहना जाता है, नथिया में जड़ा हुआ छोटा नग।
चंदन–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी लकड़ी वहुत सुगंधित होती है, इसकी लकड़ी, इसकी लकड़ी घिसकर वनाया हुआ लेप।
चंदनगिरि–(सं. पुं.) मलयाचल।
चंदनपुष्प–(सं. पुं.) चंदन का फूल।
चंदन-सार–(सं.पुं.) चंदन का लेप।
चंदनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चाँदनी'।
चंदनीया–(हिं. स्त्री.) गोरोचन।
चंदनौता–(हिं.पुं.) एक प्रकार का लहँगा।
चंदवाण–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वाण जिसके सिरे पर अर्धचन्द्राकार फल लगा रहता है।
चँदराना–(हिं. क्रि. स.) वहकाना, वहलाना, जान-वूझकर अनजान वनना।
चँदला–(हिं. वि.) जिसके सिर पर के वाल झड़ गये हों, खल्वाट, गंजा।
चँदवा–(हिं. पुं.) सिंहासन या गद्दी के ऊपर लगाया हुआ छोटा मण्डप, चँदोवा, वितान, गोलाकार चकती, मोर की पूँछ पर का अवचन्द्राकार चिह्न, चंद्रिका।
चंदा–(हिं. पुं.) चन्द्रमा, दान के रूप में वहुतों से लिया जानेवाला थोड़ा-थोड़ा धन, वेहरी, किसी धार्मिक संस्था को समय-समय पर सदस्यों द्वारा सहायतार्थ दिया जानेवाला धन।
चंदामामा, चंदामामू–(हिं. पुं.) चंद्रमा (वच्चों को वहलाने के लिए कहा जाता है)।
चंदावत–(हिं. पुं.) क्षत्रियों की एक जाति।
चंदावती–(हिं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
चंदिका–(हिं. स्त्री.) देखें 'चंद्रिका'।
चंदिनि, चंदिनी–(हिं. स्त्री.) चंद्रिका, चाँदनी, उजेली चाँदनीवाली रात।
चँदिया–(हिं. स्त्री.) कपाल का मध्य भाग, खोपड़ी; (मुहा.) –खाना–व्यर्थ की वकवाद करके सिर खाना; –पर वाल न छोड़ना–सव कुछ ले लेना।
चंदिर–(हिं. पुं.) चन्द्रमा, गज, हाथी।
चंदेरी–(हिं. स्त्री.) ग्वालियर राज्य के नरवार जिले का एक प्राचीन नगर।
चंदेरीपति–(हिं. पुं.) चंदेरी का राजा, शिशुपाल।
चंदेल–(हिं. पुं.) क्षत्रियों की एक शाखा, (परमाल राजा इसी वंश के थे।)
चंदोया, चंदोवा–(हिं. पुं.) देखें 'चदवा'।
चंद्र–(सं. पुं.) चंद्रमा, कपूर, जल, मोर की पूँछ पर के चिह्न, सोना, सुवर्ण, वह विंदी (ँ) जो आनुनासिक उच्चारण-वाले अक्षर पर लगाई जाती है, (समस्त पदों के अन्त में) श्रेष्ठ।
चंद्रकर–(सं. पुं.) चाँदनी, चंद्र-किरण।
चंद्रकला–(सं.स्त्री.) चंद्रमा की सोलह कला।
चंद्रकलाधर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
चंद्रकांत–(सं. पुं.) एक रत्न जिसके विषय में यह प्रसिद्धि है कि यह चंद्र-किरण में पसीजता है।
चंद्रकांता–(सं. स्त्री.) चन्द्रमा की पत्नी, चाँदनी रात।
चंद्रकांति–(सं. स्त्री.) चाँदनी, चाँदी।
चंद्रकी–(सं. पुं.) मोर, मयूर।

चंद्रगुप्त–(सं. पुं.) मौर्य वंश का संस्थापक सम्राट् जिसने ईसा-पूर्व चौथी शताब्दी में भारत पर शासन किया, गुप्त वंश का एक सम्राट् ।
चंद्रग्रहण–(सं. पुं.) चंद्रमा का ग्रहण ।
चंद्रचूड़–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
चंद्र-जोत–(हिं. स्त्री.) चाँदनी ।
चंद्र-धनु–(सं. पुं.) चाँदनी में दिखाई पड़नेवाला इंद्र-धनुष ।
चंद्र-धर–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
चंद्र-प्रभा–(सं. स्त्री.) चंद्रमा की किरण या ज्योति ।
चंद्रबिं(वि)दु–(सं. पुं.) अर्ध आनुस्वारिक बिंदु चिह्न (ँ) ।
चंद्र-बिंब–(सं. पुं.) चंद्रमा का मंडल ।
चंद्र-भाल–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
चंद्र-मणि–(सं. पुं.) चंद्रकांत मणि ।
चंद्रमा–(सं. पुं.) चाँद, चंद्र ।
चंद्रमौलि–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
चंद्ररेखा, चंद्रलेखा–(सं. स्त्री.) चाँदनी, चाँद की कलाएँ, एक वर्णवृत्त, एक अप्सरा ।
चंद्रलोक–(सं. पुं.) चंद्रमा का लोक ।
चंद्रवार–(सं. पुं.) सोमवार ।
चंद्रहार–(सं. पुं.) गले में पहनने का एक रत्नजटित हार ।
चंद्रहास–(स. पुं.) तलवार, रावण की तलवार ।
चंद्रातप–(सं. पुं.) चंद्रकिरण, चँदोवा ।
चंद्रिका–(सं. स्त्री.) चाँदनी, कौमुदी, मोर के पंख पर का गोल चिह्न, एक देवी, एक वर्णवृत्त ।
चंद्रोदय–(सं. पुं.) चंद्रमा का उदय ।
चंप–(हिं. पुं.) चंपा, कचनार का वृक्ष ।
चंपई–(हिं. वि.) चंपा के रंग का, पीला ।
चंपक–(सं. पुं.) चंपा का फूल ।
चंपत–(हिं. वि.) अन्तर्धान, गायब ।
चँपना–(हिं. क्रि. अ.) भार से दबना, लज्जित होना, उपकार से दब जाना ।
चंपा–(हिं. स्त्री.) एक सुगंधित पीला फूल ।
चंपाकली–(हिं. स्त्री.) गले का एक आभूषण जिसमें सोने के चंपा की कली के समान दाने रेशम में पिरोकर गूँथे होते हैं ।
चंपारण्य–(हिं. पुं.) चम्पारन जिला ।
चंबल–(हिं. स्त्री.) एक नदी जो इटावे के पास बहती है, सिंचाई के लिये नहर का पानी ऊपर चढ़ाने की लकड़ी, पानी की बाढ़ ।
चंबल–(हिं. पुं.) भिक्षा माँगने का खप्पर, चिलम का सरपोश ।
चंबली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा प्याला ।
चंबी–(हिं. स्त्री.) चिप्पड़, पट्टी, कतरन ।
चंबू–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान, टोंटीदार छोटा गड़ुआ, झारी ।
चँवर–(हिं. पुं.) चामर, सुरा गाय की पूंछ के बालों का गुच्छा जो मक्खी, मच्छड़ उड़ाने के लिये राजाओं या देव-मूर्तियों के सिर पर डोलाया जाता है, घोड़ा या हाथी के सिर पर लगाने की कलँगी, फुँदना, झालर; –ढार–(पुं.) चँवर डोलानेवाला नौकर ।
चँवरी–(हिं. स्त्री.) डाँड़ी में बँधा हुआ घोड़े की पूंछ के बाल ।
चंसुर–(हिं. पुं.) हालिम नामक पौधा ।
चइत–(हिं. पुं.) चैत, चैत का महीना ।
चइन–(हिं. पुं.) देखें 'चैन' ।
चउ–(हिं.) उपसर्ग जो "चौ" के अर्थ में कुछ शब्दों में प्रयुक्त होता है; यथा–चउक–चौक; चउथा–चौथा; चउपाई–चौपाई इत्यादि ।
चउतरा–(हिं. पुं.) देखें 'चबूतरा' ।
चउर–(हिं. पुं.) चमर, मोरछल ।
चउहट्ट–(हिं. पुं.) चौहट्टा, चौहद्दा, चौहुमानी ।
चक–(हिं. पुं.) चकई नाम का लड़कों का खिलौना, चकवा पक्षी, चक्र नामक अस्त्र, चक्का, पहिया, भूमि का बड़ा खंड, पट्टी, छोटा गाँव, पुरवा, किसी बात की अधिकता, अधिकार; (पुं.) चोटी में बाँधने का सोने का चक्र; (वि.) अधिक व्यग्र, भौचक्का, घबड़ाया हुआ ।
चकई–(हिं. स्त्री.) घिरनी के आकार का एक खिलौना, मादा चकवा ।
चकचक–(हिं. वि.) भौंचक्का, हक्का-बक्का ।
चकचकाना–(हिं. क्रि. अ.) किसी द्रव पदार्थ का रसकर बाहर निकलना, भींग जाना ।
चकचकी–(हिं. स्त्री.) करताल नामक बाजा
चकचाना–(हिं. क्रि. अ.) चकाचौंध लगना, चौंधियाना ।
चकचाल–(हिं. पुं.) चक्कर, भ्रमण ।
चकचाव–(हिं. पुं.) चकाचौंध, चकचौंव ।
चकचून–(हिं. वि.) चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ ।
चकचूरना–(हिं. क्रि. स.) चूर चूर करना ।
चकचोहा–(हिं. वि.) चिकनी-चुपड़ी ।
चकचौंध–(हिं. पुं.) देखें 'चकाचौंध'
चकचौंधना–(हिं. क्रि. अ., स.) अधिक प्रकाश के कारण आँखों का स्थिर न रहना, आँख तिलमिलाना, आँखों में तिलमिलाहट उत्पन्न करना ।
चकचौह–(हिं. पुं.) देखें 'चकाचौंध' ।
चकचौहना–(हिं. क्रि. अ.) टकटकी बाँधे हुए देखना ।
चकड़वा–(हि. पुं.) उपद्रव, बखेड़ा ।
चकडोर–(हिं. स्त्री.) चकई नामक खिलौने में लपेटा हुआ डोर, जुलाहे के करघे में लगी हुई डोरी ।
चकता–(हिं. पुं.) देखें 'चकत्ता' ।
चकती–(हिं. स्त्री.) चमड़े, धातु या कपड़े का गोल या चौकोर चुकड़ा, पट्टी, धज्जी, फटे कपड़े, चमड़ आदि में छेद बंद करने के लिए लगाया हुआ छोटा टुकड़ा, थिगली; (मुहा.) **बादल में चकती लगाना**–असंभव कार्य करने की चेष्टा करना ।
चकत्ता–(हिं. पुं.) शरीर के किसी भाग पर पड़ा हुआ धब्बा, चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन, ददोरा, दाँत काटने का चिह्न, चकताई वंश का पुरुष ।
चकदार–(हिं. पुं.) चक या खेत के बड़े खंड का स्वामी ।
चकना–(हिं. क्रि. अ.) भौचक्का होना, चकित होना, चौंकना, चकपकाना ।
चकनाचूर–(हिं. वि.) टूट-फूटकर जिसके छोटे टुकड़े हो गये हों, टुकड़-टुकड़े किया हुआ, अति श्रान्त, बहुत थका हुआ ।
चकपक, चकबक–(हिं. वि.) चकित ।
चकपकाना–(हिं. क्रि. अ.) चकित होकर इधर-उधर ताकना, भौंचक्का होना ।
चकफरी–(हिं. स्त्री.) परिक्रमा, भँवरी ।
चकबंदी–(हिं. स्त्री.) खेतों का बड़े टुकड़ों या चकों में बँटवारा ।
चकमक–(हिं. पुं.) एक तरह का पत्थर जिसपर आघात करने से चिनगारी निकलती है ।
चकमा–(हिं. पु.) धोखा, छल, भुलावा ।
चकर–(हिं. पुं.) चक्रवाक, चकवा, चक्कर ।
चकरबा–(हिं. पुं.) कठिन अवस्था, चक्कर, असमंजस, बखेड़ा, झगड़ा ।
चकरा–(हिं. पुं.) पानी का भँवर; (वि.) फैला हुआ, चौड़ा ।
चकराना–(हिं. क्रि. अ., स.) (सिर) चक्कर देना, घूमना, चकित होना, भूलना, चकपकाना, व्यग्र होना, घबड़ाना, हैरान होना, आश्चर्य में डालना ।
चकरानी–(हिं. स्त्री.) दासी ।
चकरिया–(हिं. पुं.) सेवक, नौकर ।
चकरी–(हिं. स्त्री.) दाल दरने या आटा पीसने की चक्की, चकई नामक लड़कों का खिलौना; (वि. स्त्री.) अस्थिर, चंचल, इधर-उधर घूमनेवाली, चौड़ी ।

चकलई–(हि. स्त्री.) चौड़ाई।
चकला–(हि. पुं.) पत्थर या काठ का गोल चिकना पटरा जिस पर रोटी बेली जाती है, चौका, जिला, रंडियों के रहने का मोहल्ला; (वि.) चौड़ा।
चकलाना–(हि. क्रि. स.) चौड़ा करना।
चकली–(हि. स्त्री.) गड़ारी, घिरनी, छोटा चकला।
चकलेदार–(हि. पुं.) किसी प्रान्त का अधिकारी, कर वसूल करनेवाला।
चकल्लस–(हि. स्त्री.) बखेड़ा, झंझट।
चकवँड़–(हि. पुं.) एक प्रकार का बरसाती पौधा, कुम्हार का चाक के पास रखने का जल का पात्र।
चकवा–(हि. पुं.) चक्रवाक पक्षी, हंस की जाति की एक चिड़िया। (इसके विषय में कहा जाता है कि वह रात में अपने जोड़े से बिछुड़ जाता है।)
चकवाना–(हि. क्रि. अ.) चकित होना, चकपकाना।
चकवारि–(हि. पुं.) कच्छप, कछुवा।
चकवी–(हि. स्त्री.) चकई।
चकवाह–(हि. पुं.) देखें 'चकवा'।
चकहा–(हि. पुं.) चक्का, पहिया।
चका–(हि. पुं.) चाक, पहिया, चक्का, चकवा पक्षी।
चकाचक–(हि. स्त्री.) निरन्तर प्रहार का शब्द; (अव्य., वि.) तर-बतर, लथपथ, भरपूर, पेट भरकर।
चकाचौंध–(हि. स्त्री.) तीव्र प्रकाश के कारण आँखों का झपकना, तिलमिलाहट।
चकाचौंधी–(हि. स्त्री.) देखें 'चकाचौंध'।
चकाना–(हि. क्रि. अ.) चकराना, चकपकाना।
चकाबू–(हि. पुं.) चक्रव्यूह, सेना की मण्डलाकार पंक्तियों में स्थिति; (मुहा.) –में पड़ना–चक्कर में आ पड़ना।
चकार–(सं. पुं.) वर्णमाला का 'च' अक्षर।
चकावल–(हि. स्त्री.) घोड़े के अगले पैर की हड्डी का उभड़ आना।
चकासना–(हि. क्रि. अ.) चमकना।
चकित–(सं. वि.) विस्मित, आश्चर्य में पड़ा हुआ, भौंचक्का, चकपकाया हुआ, व्यग्र, घबड़ाया हुआ, भीरु, कायर, डरा हुआ, डरपोक; (पुं. क्वचित्) विस्मय, कायरता, स्वयं का डर।
चकितवंत–(हि. वि.) आश्चर्ययुक्त।
चकिताई–(हि. स्त्री.) आश्चर्य।
चकुंदा–(हि. पुं.) देखें 'चकवँड़'।
चकुला–(हि. पुं.) पक्षी का छोटा बच्चा।
चकृत–(हि. वि.) देखें 'चकित'।
चकेठ–(हि. पुं.) कुम्हार का चाक घुमाने का डंडा।
चकैया–(हि. स्त्री.) चकई।
चकोटना–(हि. क्रि. स.) चुटकी से मांस नोचना, चुटकी काटना, बकोटना।
चकोतरा–(हि. पुं.) एक प्रकार का खटमीठा जँबीरी नीबू।
चकोता–(हि. पुं.) देखें 'चकत्ता'।
चकोर–(हि. पुं.) एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जिसके विषय में यह प्रसिद्धि है कि वह चन्द्रमा को टकटकी लगाकर देखता है और अंगारा खा जाता है, एक प्रकार का सवैया छंद।
चकोरी–(हि. स्त्री.) मादा चकोर।
चकोह–(हि. पुं) पानी का भँवर।
चकौटा–(हि. पुं.) ऋण के बदले में दिया जानेवाला पशु।
चकौंध–(हि. स्त्री.) देखें 'चकाचौंध'।
चक्क–(हि. पुं.) चक्रवाक, चकवा, चाक, दिशा।
चक्कर–(हि. पुं.) घूमनेवाली चक्राकार कोई वस्तु, मण्डलाकार कोई पदार्थ, चाक, गोल घेरा, मण्डलाकार मार्ग, पहिये का फेरा, घेरा, घुमाव, पहिये का केन्द्र पर घूमना, जटिलता, हैरानी, सिर घूमना, मूर्छा, पानी का भँवर, व्यग्रता; (मुहा.)–काटना–इधर-उधर या गोलाई में घूमना; –खाना–भटकना; –देना–परिक्रमा करना; –मारना–इधर-उधर घूमना; –में आना–हैरान होना; –में पड़ना–व्यग्र होना; –लगाना–परिक्रमा करना।
चक्कवइ–(हि. पुं.) चक्रवर्ती राजा।
चक्कवा–(हि. पुं.) देखें 'चकवा'।
चक्कव–(हि. वि.) चक्रवर्ती (राजा)।
चक्कस–(हि. पुं.) बुलबुल या श्येन पक्षी के बैठने का अड्डा।
चक्का–(हि. पुं.) पहिया, पहिये के आकार की कोई वस्तु, ईंटे या पत्थर का बड़ा चिपटा टुकड़ा, जमा हुआ टुकड़ा, थक्का, बड़ा कतरा।
चक्की–(हि. स्त्री.) दाल दलने या आटा पीसने का यन्त्र, जाँता, पैर के घुटने की गोल हड्डी, बिजली; (क्रि. प्र.)–पीसना–चक्की में आटा पीसना, बहुत परिश्रम करना।
चक्कू–(हि. पुं.) देखें 'चाकू'।
चक्खी–(हि. स्त्री.) खाने की चटपटी वस्तु, चाट।
चक्र–(सं. पुं.) पहिया, जाँता, कुम्हार का चाक, तेल पेरने का कोल्हू, वर्तुलाकार कोई वस्तु, पहिये के आकार का लोहे का एक अस्त्र, जल का भँवर, वायु का भँवर, बवंडर, मण्डली, समूह, दल, सेना चक्रव्यूह, ग्राम या नगर का समूह, प्रदेश, राज्य, एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश, चकवा पक्षी, योग के अनुसार शरीर के भीतर का एक पद्म, वृत्त, घेरा, घुमाव, दिशा, चक्कर, भुलावा, एक वर्णवृत्त का नाम, तन्त्र-मन्त्र का कोई यन्त्र जिसमें अनेक कोष्ठ बने होते है।
चक्रगुच्छ–(सं. पुं.) अशोका का वृक्ष।
चक्रगोप्ता–(सं. पुं.) राज्यरक्षक, सेनापति।
चक्रचर–(सं. पुं.) तेली, कुम्हार।
चक्रतीर्थ–(सं. पुं.) भारत के दक्षिण का एक प्रसिद्ध तीर्थ, नैमिषारण्य के एक कुण्ड का नाम, मणिकर्णिका कुण्ड का नाम।
चक्रदंड–(सं. पुं.) एक प्रकार का व्यायाम।
चक्रदंती–(सं. स्त्री.) जमालगोट।
चक्रदंष्ट्र–(सं. पुं.) शूकर, सूअर।
चक्रधर, चक्रधारी–(सं. वि.) चक्र को धारण करनेवाला; (पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण, बाजीगर, अनेक नगरों या गाँवों का स्वामी, गाँव का पुरोहित, सर्प, एक प्रकार का राग।
चक्रपर्णी–(सं. स्त्री.) पिठवन नामक ओषधि।
चक्रपाणि–(सं. पुं.) हाथ में चक्र धारण करनेवाले विष्णु।
चक्रपाद–(सं. पुं.) गाड़ी, रथ।
चक्रपानि–(हि. पुं.) देखें 'चक्रपाणि'।
चक्रपाल–(सं. पुं.) सूबेदार, चकलेदार।
चक्र-पूजा–(सं. स्त्री.) तान्त्रिकों का एक विशिष्ट प्रकार का पूजन।
चक्रफल–(सं. पुं.) गोल फल लगा हुआ एक अस्त्र।
चक्रबंध–(सं. पुं.) एक प्रकार का चित्र-काव्य।
चक्रबंधु, चक्रबांधव–(सं. पुं.) सूर्य।
चक्रभृत्–(सं. पुं.) चक्र धारण करनेवाले विष्णु।
चक्रमंडल–(सं. पुं.) एक प्रकार का नाच।
चक्रमर्द–(हि. पुं.) देखें 'चकवँड़'।
चक्रमुख–(सं. पुं.) शूकर, सूअर।
चक्रमुद्रा–(सं. स्त्री.) विष्णु के चक्र या आयुध का चिह्न जिसको वैष्णव लोग अपने अंग पर छापते हैं, तान्त्रिकों की एक अंगमुद्रा।
चक्रयंत्र–(सं. पुं.) ज्योतिष का एक यन्त्र।

चक्रवर्तिनी–(सं. स्त्री.) किसी चक्र की अधिष्ठात्री ।
चक्रवर्ती–(सं. वि.) एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक राज्य करनेवाला भूपति, सार्वभौम राजा ।
चक्रवाक–(सं. पुं.) चकवा पक्षी ।
चक्रवाकबंधु–(सं. पुं.) सूर्य ।
चक्रवात–(सं.पुं.) चक्कर में घूमनेवाली वेग की हवा, ववंडर ।
चक्रवाल–(सं. पुं.) मण्डल, घेरा ।
चक्रवृत्ति–(सं.स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम ।
चक्रवृद्धि–(सं. स्त्री.) ब्याज को मूल में जोड़कर उस पर सूद लगाना ।
चक्रव्यूह–(सं. पुं.) युद्ध के समय किसी व्यक्ति या स्थान को सुरक्षित रखने के लिये उसके चारों ओर कई घेरों में सेना स्थापित करना जिससे उसके पास सहज में शत्रु-सेना न पहुँच सके ।
चक्रांक–(सं. पुं.) चक्रादि का वह चिह्न जो वैष्णव लोग अपने शरीर पर दगवाते हैं।
चक्रांकित–(सं. वि.) चक्र का चिह्न छापा या दागा हुआ ।
चक्रांत–(सं. पुं.) गुप्त मन्त्रणा, षड्यन्त्र ।
चक्रांश–(सं.पुं.) राशि चक्र का ३६० वाँ अंश ।
चक्राकार–(सं. वि.) मण्डलाकार, गोल ।
चक्राट–(सं. पुं.) बाजीगर, मदारी, सर्प का विष झाड़ने या उतारनेवाला ।
चक्रायुध–(सं. पुं.) चक्र धारण करनेवाले विष्णु ।
चक्रावल–(हिं. पुं.) घोड़ों के पैर का एक रोग ।
चक्रिक–(सं. पुं.) चक्र धारण करनेवाला ।
चक्रिका–(सं. स्त्री.) घुटने की गोल हड्डी ।
चक्रित–(हिं. वि.) देख 'चकित' ।
चक्री–(सं. पुं.) चक्र धारण करनेवाले विष्णु, गाँव का पुरोहित, चकवा पक्षी, आर्या छन्द का एक भेद, रथ पर चढ़नेवाला, कौवा, गदहा, कुम्हार, सर्प, बकरा, दूत, गुप्तचर, व्याघ्रनख नामक ओषधि, तेली, चक्रवर्ती ।
चक्रेश्वर–(सं. पुं.) चक्रवर्ती ।
चक्षण–(सं. पुं.) कृपादृष्टि, अनुग्रह ।
चक्षुःश्रवा–(सं. पुं.) सर्प, साँप ।
चक्षु–(सं. पुं.) देखने की इन्द्रिय, आँख ।
चक्षुरिंद्रिय–(सं. स्त्री.) चक्षु, आँख ।
चक्षुष्पति–(सं. पुं.) सूर्य ।
चक्षुष्य–(सं. वि.) नेत्रों के लिये हितकर (औषध), नेत्र संबंधी, देखने में सुन्दर, नेत्रों से उत्पन्न; (पुं.) केवड़ा, अंजन, सुरमा, तूतिया ।
चख–(हिं. पुं.) चक्षु, आँख, झगड़ा ।
चखचख–(हिं. स्त्री.) झगड़ा, बकझक, कहासुनी ।
चखचौंध–(हिं. स्त्री.) देखें 'चकाचौंध' ।
चखना–(हिं.क्रि.स.) स्वाद लेने के लिये मुंह में डालना, स्वाद लेना, स्वाद लेते हुए खाना ।
चखाचखी–(हिं. स्त्री.) झगड़ा, विरोध, वर ।
चखाना–(हिं. क्रि. स.) स्वाद दिलाना, खिलाना ।
चखिया–(हिं. वि.) झगड़ा करनेवाला, झगड़ालू ।
चखोड़ा–(हिं. पुं.) बच्चों के मस्तक पर का काला टीका जो दृष्टि न लगने के लिये लगाया जाता है, दिठौना ।
चखौती–(हिं.स्त्री.) चटपटा स्वादिष्ट भोजन।
चगड़–(हिं. वि.) धूर्त, चतुर ।
चचर–(हिं. स्त्री.) बहुत दिनों तक परती पड़ी हुई भूमि जो एक बार बोई जाती है ।
चचा–(हिं. पुं.) पिता का भाई, पितृव्य; (मुहा.)–**बनाना**–अच्छी तरह बदला लेना ।
चचिया–(हिं. वि.) चचा से संबंध रखनेवाला; –**ससुर**–(पुं.) पत्नी का चाचा ।
चचींड़ा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी खाई जाती है, अपामार्ग, चिचड़ा ।
चची–(हिं. स्त्री.) चाचा की स्त्री ।
चचेरा–(हिं. वि.) चाचा से उत्पन्न, चाचा-संबंधी ।
चचोड़ना–(हिं. क्रि. स.) दाँतों से दबाकर चूसना ।
चचोड़वाना–(हिं. क्रि.स.) दबाकर चूसने देना ।
चच्छु–(हिं. पुं.) देखें 'चक्षु' ।
चट–(हिं. अव्य.) शीघ्र, जल्दी से, झटपट, तुरत; (पुं.) धब्बा, कलंक, दोष, घाव, चकोता; (स्त्री.) चटचट का शब्द; (वि.) चाट-पोछकर कुल खाया हुआ; –**चट**–(पुं.) चट-चट का शब्द; (मुहा.) –**कर जाना**–सब खा जाना, कुछ न छोड़ना, दूसरे की वस्तु अपहरण करना ।
चटक–(सं. पुं.) गौरैया पक्षी, चिड़ा; (स्त्री.) चमक, चटकीलापन, जल्दी, शीघ्रता; (अव्य.) झटपट, शीघ्रता से, तुरत; (वि.) तीक्ष्ण स्वाद, चटपटा, चरपरा, चमकीला, गहरे रंग का ।
चटकई–(हिं.स्त्री.) शीघ्रता, तीव्रता ।
चटकदार–(हिं.वि.) चटकीला, भड़कीला ।
चटकन–(हिं.पुं.) टूटने का शब्द, तमाचा ।
चटकना–(हिं. क्रि. अ.) चट् शब्द करके टूटना, हलकी चोट से टूट जाना, तड़कना, चिड़चिड़ाना, झुँझलाना, झल्लाना, धूप से लकड़ी आदि में दरार पड़ना, उँगलियों को फोड़ना, चट चट शब्द करना, कलियों का फूटना, अनबन होना, खटकना; (पु.) थप्पड़ ।
चटकनी–(हिं. स्त्री.) किवाड़ बन्द करने की सिटकिनी ।
चटक-मटक–(हिं.स्त्री.) आकर्षक वेशभूषा, आडम्बर, सिंगार, ठसक, चमक-दमक ।
चटकवाही–(हिं. स्त्री.) जल्दी ।
चटका–(हिं. पुं.) शीघ्रता, जल्दी, धब्बा, चटपटा स्वाद ।
चटकाना–(हिं. क्रि. अ.) तोड़ना, उँगलियाँ फोड़ना, अलग करना, दूर करना, कुपित करना, चिढ़ाना; (मुहा.) **जूतियाँ चटकाना**–जूता घसीटते फिरना, मारे-मारे फिरना, दरिद्र हो जाने पर नगर की सड़क पर पैदल चलना ।
चटकारा–(हिं.वि.) चमकीला, चटकीला, चंचल, तीक्ष्ण; (पुं.) स्वादिष्ट वस्तु को खाते समय तालु से जीभ लगने का शब्द ।
चटकारी–(हिं. स्त्री.) चुटकी ।
चटकाली–(हिं. स्त्री.) गौरैया पक्षियों का झुण्ड, पक्षियों की पंक्ति ।
चटकाहट–(सं. स्त्री.) चटकने या टूटने का शब्द, फलियों के चटकने का शब्द ।
चटकी–(हिं. स्त्री.) बुलबुल की तरह की एक चिड़िया, चौड़े मुँह की गगरी ।
चटकीला–(हिं. वि.) भड़कीला, चमकीला, गहरे रंग का, चमकदार, चरपरा, चटपटा ।
चटकीलापन–(हिं.पुं.) चमक-दमक, ठसक ।
चटखना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'चटकना' ।
चटखनी–(हिं. स्त्री.) चटकनी, सिटकिनी ।
चटचट–(हिं. पुं.) चटकने या टूटने का शब्द, अँगुली फोड़ने का शब्द; (अव्य.) जल्दी से, चटपट ।
चटचटाना–(हिं. क्रि. अ.) चट चट शब्द करते हुए टूटना, गँठीली लकड़ी या कोयले का चट चट शब्द करते हुए जलना
चटचेटक–(हिं. पुं.) इन्द्रजाल, जादू ।
चटनी–(हिं. स्त्री.) चाटने की वस्तु, अवलेह, भोजन का स्वाद बढ़ानेवाली खाद्य वस्तु; (पुं.) बच्चों के चूसने का खिलौना; (मुहा.) –**करना**–पीसकर महीन (बारीक) करना ।
चटपट–(हिं. अव्य.) शीघ्र, जल्दी, झट-

पट, तुरंत।

चटपटा–(हि. वि.) तीक्ष्ण स्वाद का, चरपरा।

चटपटाना–(हि. क्रि. अ.) शीघ्रता करना, हड़बड़ाना।

चटपटी–(हि. स्त्री.) आतुरता, उतावलापन, शीघ्रता, व्यग्रता, घबराहट, बेचैनी।

चटरी–(हि. स्त्री.) एक मोटा अन्न, लतरी।

चटवाना–(हि. क्रि. स.) चाटने में प्रवृत्त करना, चटाना।

चटशाला, चटसार(ल)–(हि. स्त्री.) बच्चों को पढ़ाने की पाठशाला।

चटाई–(हि. स्त्री.) तृण, बाँस की सींक, ताड़ के पत्ते आदि का बना हुआ बिछावन, सायरी, चाटने की क्रिया।

चटाक(ख)–(हि. पुं.) टूटने-फूटने का शब्द, दाग, धब्बा; –पटाक–(अव्य.) तुरन्त।

चटाका(खा)–(हि. पुं.) लकड़ी या किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।

चटाचट–(हि. स्त्री.) किसी वस्तु के टूटने का शब्द।

चटान–(हि. स्त्री.) देखें 'चट्टान'।

चटाना–(हि. क्रि. स.) चटाने का काम कराना, थोड़ा-थोड़ा करके किसी के मुँह में डालना, घूस देना, तलवार, छुरी आदि पर सान देना।

चटापटी–(हि. स्त्री.) जल्दी, शीघ्रता।

चटावन–(हि. पुं.) बच्चों को प्रथम बार अन्न चटाने का संस्कार, अन्नप्राशन।

चटिक–(हि. अव्य.) चटपट, उसी क्षण।

चटियल–(हि. वि.) बिलकुल सपाट, वृक्ष-शून्य (मैदान), निचाट।

चटी–(हि. स्त्री.) चटसार, बच्चों की पाठशाला।

चटु–(सं. पुं.) प्रिय वाक्य।

चटुक–(हि. वि.) चपल, चंचल, सुन्दर, मनोहर, प्रियदर्शन।

चटुकार–(स. वि.) खुशामदी।

चटुल–(हि. वि.) चंचल।

चटुला–(सं. स्त्री.) बिजली।

चटोरा–(हि. वि.) अच्छी-अच्छी वस्तुएँ खाने का लालची, लोभी, लोलुप।

चटोरापन–(हि. पुं.) अच्छे पदार्थ खाने की लोलुपता।

चट्ट–(हि. वि.) चाट-पोंछकर खाया हुआ, समाप्त, लुप्त, गायब।

चट्टा–(हि. पुं.) शिष्य, चेला, बाँस की चटाई, खुला मैदान जिसमें वृक्ष न हों, शरीर पर का चकत्ता, ढेर, राशि, समूह।

चट्टान–(हि. स्त्री.) पत्थर का बड़ा टुकड़ा, शिला-खण्ड, कोई दीर्घकाय पदार्थ।

चट्टा-बट्टा–(हि. पुं.) लड़कों के खेलने के खिलौने आदि का समूह, बाजीगर के थैले में की विविध सामग्रियाँ; (मुहा.) एक ही थली के चट्टे-बट्टे–एक ही प्रकृति के मनुष्य; चट्टे-बट्टे लड़ाना–आपस में लड़ाने की बात करना, चुटकुला छोड़ना।

चट्टी–(हि. स्त्री.) टिकान, पड़ाव, चप्पल, स्लिपर, घाटा, टोटा, हानि।

चट्टू–(हि. वि.) चटोरा; (पुं.) पत्थर का बड़ा खरल।

चड़चड़–(हि. पुं.) सूखी लकड़ी के टूटने का शब्द।

चड़बड़–(हि. स्त्री.) निरर्थक बकवाद।

चड्डा–(हि. वि.) मूर्ख; (पुं.) जाँघ का ऊपरी भाग।

चड्डी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का लड़कों का खेल।

चढ़त–(हि. स्त्री.) देवता को चढ़ाई हुई वस्तु, चढ़ावा।

चढ़ता–(हि. वि.) (स्त्री. चढ़ती) ऊपर को उभड़ा हुआ, आगे को बढ़ता हुआ।

चढ़न–(हि. स्त्री.) चढ़ने की क्रिया।

चढ़ना–(हि. क्रि. अ.) नीचे से ऊपर को जाना, ऊपर उठना, ऊपर की ओर जाना, उड़ना, बढ़ना, उन्नति करना, एक वस्तु के ऊपर दूसरे का सटना, नदी में बाढ़ आना, चढ़ाई करना, दल बाँधकर जाना, गाने में स्वर का ऊँचा होना, बहाव के विरुद्ध जाना, देवता या महात्मा को भेंट देना, ऊँट, हाथी, घोड़ा आदि पर सवार होना, वर्ष, मास आदि का आरम्भ होना, ऋणी होना, बही-खाते में लिखना, बुरा प्रभाव होना, पकाने के लिये आँच पर रखना, लेप होना; (मुहा.) दिन चढ़ना–दिन का प्रकाश फैलना, गर्भ-धारण करना; चढ़-बढ़कर होना–श्रेष्ठ होना; चढ़ा-बढ़ा–अधिक श्रेष्ठ; नस चढ़ना–शरीर की किसी नस का स्थान से हट जाना; पाप चढ़ना–पाप से बुद्धि नष्ट होना; चढ़ बैठना–सवार होना।

चढ़वाना–(हि. क्रि. स.) चढ़ने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई–(हि. स्त्री.) चढ़ने की क्रिया, ऊपर का चढ़ाव, आक्रमण, देवता को भेंट चढ़ाने की क्रिया।

चढ़ा-उतरी–(हि. स्त्री.) बारबार चढ़ने-उतरने की क्रिया।

चढ़ा-उपरी–(हि. स्त्री.) एक दूसरे से बढ़ने का उद्योग, लाग-डाट।

चढ़ाचढ़ी–(हि. स्त्री.) चढ़ा-उपरी, लागडाट।

चढ़ाना–(हि. क्रि. स.) नीचे से ऊपर को ले जाना, ऊँचाई पर पहुँचाना, चढ़ने का काम करवाना, ऊपर की ओर समेटना, चढ़ाई करने को प्रेरित करना, मूल्य बढ़ाना, सुर ऊँचा करना, देवता को अर्पण करवाना, सवार होना, पी जाना, पुस्तक में लिखना, ऋणी ठहराना, पकने के लिये आँच पर रखना, मढ़ना।

चढ़ानी–(हि. स्त्री.) ऊपर की ओर उठता हुआ तल।

चढ़ाव–(हि. पुं.) चढ़ने की क्रिया या भाव, वृद्धि, दुलहिन को विवाह के दिन पहिनाया हुआ ससुराल का गहना, वह दिशा जिधर से नदी की धारा आई हो; –उतार–(पुं.) ऊँचा-नीचा स्थान, गावदुम आकृति।

चढ़ावा–(हि. पुं.) वर की ओर से कन्या को विवाह के दिन पहिनाया हुआ गहना, देवता को अर्पण करने की सामग्री, पुजापा, बढ़ावा, उत्साह; (मुहा.) –देना–प्रोत्साहित करना, उसकाना।

चढ़त–(हि. पुं.) चढ़नेवाला, सवार होनेवाला।

चढ़ौवाँ–(हि. वि.) उठी हुई एँड़ी का जूता।

चणक–(स. पुं.) चना।

चणकात्मज–(सं. पुं.) चाणक्य।

चतुरंग–(स. पुं.) एक प्रकार का चलता गाना, चतुरंगिणी सेना का अधिपति; सेना के चार अंग; यथा––हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल, शतरंज का खेल।

चतुरंगिणी–(स. वि.) जिस सेना में हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल सैनिक हों।

चतुरंगिनी–(हि. स्त्री.) देखें 'चतुरंगिणी'।

चतुरंता–(स. स्त्री.) पृथ्वी, मेदिनी।

चतुर–(स. वि.) टेढ़ी चाल चलनेवाला, वक्रगामी, फुरतीला, प्रवीण, आलस्य-रहित, निपुण, धूर्त; (पुं.) श्रृंगार रस का एक नायक जो अपनी चतुराई से प्रेमिका से संभोग का साधन करता है।

चतुरई–(हि. स्त्री.) चतुरता, चतुराई; –तौलना–कपट व्यवहार करना।

चतुरता–(सं. स्त्री.) चतुराई, प्रवीणता।

चतुरनीक–(हि. पुं.) चतुरानन, ब्रह्मा।

चतुरपन–(हि. पुं.) चतुराई, चतुरता।

चतुरभुज–(हि. पुं.) देखें 'चतुर्भुज'।

चतुरमास–(हि. पुं.) देखें 'चातुर्मास'।

चतुरमुख–(हि. वि.) देखें 'चतुर्मुख'।

चतुरशीति–(स. वि.) चौरासी (संख्या)।

चतुरस्र–(सं. वि.) चौकोर, चतुष्कोण।

चतुरह–(सं. पुं.) चार दिन में समाप्त होनेवाला यज्ञ।

चतुरा-(सं.वि.स्त्री.) चतुर, प्रवीण, धूर्त।
चतुराई-(हिं. स्त्री.) निपुणता, धूर्तता।
चतुरात्मा-(सं. पुं.) ईश्वर, विष्णु।
चतुरानन-(सं. पुं.) चार मुखवाले ब्रह्मा।
चतुरापन-(हिं. पुं.) निपुणता, चतुराई।
चतुरिंद्रिय-(सं.पुं.) चार इन्द्रियोंवाले जीव।
चतुर्गुण-(सं.वि.) चौगुना, चार गुणोंवाला।
चतुर्णवति-(सं.स्त्री.) चौरानवे की संख्या।
चतुर्थ-(सं. वि.) चौथा, चौथी संख्या का।
चतुर्थक-(पुं.) चौथे दिन आनेवाला ज्वर।
चतुर्थांश-(सं. पुं.) चौथाई भाग, चार अंशों में से एक अंश।
चतुर्थाश्रम-(सं. पुं.) संन्यास।
चतुर्थी-(सं. स्त्री.) महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि, चौथ, विवाह के चौथे दिन होनेवाला संस्कार।
चतुर्दंत-(सं. पुं.) ऐरावत, हाथी।
चतुर्दश-(सं.पुं.) चौदह; (वि.) चौदहवाँ।
चतुर्दशी-(सं. स्त्री.) महीने के किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि, चौदस।
चतुर्दिक्-(सं. स्त्री.) चारों दिशायें; (अव्य.) चारो ओर।
चतुर्दिश-(सं.पुं.,अव्य.) देखें 'चतुर्दिक्'।
चतुर्दोल-(सं. पुं.) चार कहारों से ढोयी जानेवाली सवारी।
चतुर्धाम-(सं. पुं.) चारों मुख्य तीर्थ-जगन्नाथ पुरी, द्वारका, बदरिकाश्रम और रामेश्वरम्।
चतुर्बाहु-(सं.पुं.) शिव, महादेव, विष्णु।
चतुर्भद्र-(सं. पुं.) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-इन चारों का समुदाय।
चतुर्भुज-(सं. वि.) चार भुजाओंवाला; (पुं.) विष्णु, वह क्षेत्र या आकृति जिसमें चार भुजायें और चार कोण हों।
चतुर्भुजा-(सं. स्त्री.) गायत्री-रूप-धारिणी देवी।
चतुर्भुजी-(हिं. पुं.) एक वैष्णव सम्प्रदाय का नाम।
चतुर्मास-(सं. पुं.) चातुर्मास, बरसात के चार महीन-असाढ़, सावन, भादों और कुआर।
चतुर्मुख-(सं.वि.) चार मुखोंवाला; (पुं.) ब्रह्मा; (अव्य.) चारो ओर।
चतुर्युगी-(सं. स्त्री.) चारों युगों का समय, चौकड़ी।
चतुर्वक्त्र-(सं. पुं.) चार मुखवाले ब्रह्मा।
चतुर्वर्ग-(सं.पुं.) धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष।
चतुर्वर्ण-(सं. पुं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
चतुर्वाही-(सं. पुं.) चार घोड़े की गाड़ी, चौकड़ी।
चतुर्विंश-(सं. वि.) चौबीसवाँ।
चतुर्विंशति-(सं. स्त्री.) चौबीस।
चतुर्विद्या-(सं.स्त्री.) चारो वेदों की विद्या।
चतुर्वीर-(सं.पुं.) चार दिनों में होनेवाला एक यज्ञ।
चतुर्वेद-(सं.पुं.) ईश्वर,परमेश्वर,चारों वेद।
चतुर्वेदी-(सं.वि.) चारों वेदों का जाननेवाला; (पुं.) ब्राह्मणों की एक पदवी।
चतुर्व्यूह-(सं. पुं.) चार मनुष्यों या पदार्थों का समुच्चय, विष्णु, योगशास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, (वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध।)
चतुष्क-(सं. वि.) चौपहल; (पुं.) एक प्रकार का गृह, चौक।
चतुष्कर-(सं. पुं.) पंजवाला पशु।
चतुष्कल-(सं.वि.) जिसमें चार कलाएँ हों।
चतुष्की-(सं. स्त्री.) चौकी, मसहरी।
चतुष्कोण-(सं. वि.) चार कोणवाला, चौकोना, (पुं.) जिस आकृति में चार कोण हों।
चतुष्टय-(सं. पुं.) चार की संख्या, चार पदार्थों का समुदाय।
चतुष्टोम-(सं. पुं.) अश्वमेध यज्ञ का एक अंग।
चतुष्पथ-(सं. पुं.) चौराहा, चौमुहानी।
चतुष्पद-(सं. पुं.) चार पैरोंवाला पशु, चौपाया; (वि.) चार पैरोंवाला।
चतुष्पदा-(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्यक चरण में तीस मात्राएँ होती हैं।
चतुष्पदी-(सं. स्त्री.) चौपाई छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में गुरु वर्ण होता है, चार पदों का एक गीत।
चतुष्पाठी-(सं. स्त्री.) विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान, पाठशाला।
चतुष्पाणि-(सं. वि., पुं.) चार हाथ वाले (नारायण)।
चतुष्फल-(सं. वि.) चौपहला।
चतुस्सीमा-(सं. स्त्री.) चौहद्दी, चारों ओर की सीमा।
चत्वर-(सं. पुं.) चौमुहानी, चौरास्ता, चबूतरा, यज्ञ के लिये स्वच्छ किया हुआ स्थान, वेदी, आँगन।
चत्वाल-(सं. पुं.) होमकुण्ड, वेदी, चत्वर।
चदरा-(हिं. पुं.) देखें 'चादर'।
चदिर-(सं.पुं.) चन्द्रमा, कपूर, सर्प, हाथी।
चद्दर-(हिं. स्त्री.) देखें 'चादर', किसी धातु की लंबी-चौड़ी पत्तर, ऊपर से गिरनेवाली पानी की चौड़ी धारा।
चनक-(हिं. पुं.) चणक, चना।
चनकट-(हिं. स्त्री.) तमाचा, थप्पड़।
चनकना-(हिं. क्रि. अ.) देखें 'चिटकना'।
चनखना-(हिं.क्रि.अ.) रुष्ट होना, चिढ़ना, चिटकना।
चनन-(हिं. पुं.) देखें 'चंदन'।
चनवर-(हिं. पुं.) ग्रास, कवर।
चनसित-(सं. पुं.) महान्, श्रेष्ठ।
चना-(हिं. पुं.) चणक, बूट, रहिला; (मुहा.) नाकों चने चबवाना-बहुत व्यग्र करना, बड़ा कष्ट देना; लोहे का चना-अत्यन्त दुष्कर काम; लोहे का चना चबाना-बड़ा कठिन काम करना।
चनाखार-(हिं.पुं.) चने की पत्तियों और डंठल में से निकाला हुआ क्षार।
चनार-(हिं. पुं.) एक बड़ा पहाड़ी वृक्ष जिसकी पुष्ट लकड़ी घर बनाने के काम में लाई जाती है।
चनियारी-(हिं. पुं.) सुन्दर परोंवाला एक जलपक्षी।
चनोरी-(हिं. स्त्री.) सफेद रोएँ की भेंड़।
चपकन-(हिं.स्त्री.) अंगा, अँगरखा, किवाड़ या सन्दूक में ताला बन्द करने की कड़ी।
चपकना-(हिं.क्रि.अ.) देखें 'चिपकना'।
चपकाना-(हिं.क्रि.स.) देखें 'चिपकाना'।
चपट-(हिं. पुं.) तमाचा, चपत।
चपटना-(हिं.क्रि.अ.) चिपकना, चिमटना।
चपटा-(हिं. वि.) चिपटा।
चपटाना-(हिं.क्रि.स.) चिपकाना, चिमटाना
चपटी-(हिं. वि. स्त्री.) चिपटी; (स्त्री.) ताली थपोड़ी।
चपड़गट्टू-(हिं. वि.) आपदग्रस्त।
चपड़-चपड़-(हिं. स्त्री.) जीभ से चट चट करने का शब्द।
चपड़ा-(हिं.पुं.) शोधी हुई लाह का पत्तर, लाल रंग का एक कीड़ा।
चपड़ी-(हिं. स्त्री.) पटिया।
चपत-(हिं.स्त्री.) थप्पड़, तमाचा, धक्का, हानि, नुकसान; (मुहा.) -बैठना या लगना-हानि या नुकसान होना।
चपना-(हिं.क्रि.अ.) दबना, कुचल जाना, लज्जित होना, सिर नीचा होना, नष्ट होना, चौपट होना।
चपनी-(हिं.स्त्री.) छोटी छिछली कटोरी, दरियाई नारियल का कमण्डल हांड़ी का ढक्कन, घुटने की हड्डी, चक्की।
चपरगट्टू-(हिं. वि.) दुर्भाग्य, अभागा, उलझा हुआ।
चपरना-(हिं. क्रि. अ. स.) आपस में मिलना या मिलाना, चुपड़ना, सानना।

चपरा–(हि. अव्य.) तुरत, झटपट, (पुं.) देखें 'चपड़ा'; (वि.) झूठा ।
चपराना–(हि. क्रि. स.) चपरना ।
चपरास–(हि. स्त्री.) पेटी या परतले में लगाने की पट्टी, मुलम्मा करने की कलम, मलखम का एक व्यायाम, आरी का दाहिने-बायें झुकाव ।
चपरासी–(हि.पुं.) सिपाही, अर्दली, प्यादा ।
चपरि–(हि. अव्य.) शीघ्रता से, जल्दी से ।
चपरी–(हि. स्त्री.) एक कदन्न, खेसारी ।
चपल–(सं. वि.) चंचल, बहुत हिलने-डोलनेवाला, चतुर, चुलबुला, क्षणिक, अभिप्राय साधने में तत्पर; (पुं.) पारा, पपीहा, एक प्रकार का चूहा ।
चपलता–(सं.स्त्री.) चंचलता, उतावलापन, धृष्टता ।
चपलत्व–(सं. पुं.) चपलता, चंचलता ।
चपला–(सं.वि.स्त्री.) चपल; (स्त्री.) मदिरा, बिजली, पुंश्चली, जीभ, भाँग, लक्ष्मी, आर्या छन्द का एक भेद ।
चपलाई–(हि. स्त्री.) चपलता, चंचलता ।
चपलाना–(हि. क्रि. अ., स.) हिलना, डोलना, चलना, हिलाना ।
चपवाना–(हि. क्रि. स.) दबवाना ।
चपाट–(हि. पुं.) चौरस तल्ले का जूता जिसकी एड़ी उठी न हो ।
चपाती–(हि. स्त्री.) हाथ से बेलकर बनाई हुई रोटी ।
चपाना–(हि.क्रि.स.) दबाने का काम दूसरे से कराना, दबवाना, फँसाना, जोड़ना, लज्जित करना ।
चपेट–(हि. स्त्री.) रगड़, धक्का, आघात, झोंका, दबाव, थप्पड़, संकट ।
चपेटना–(हि.क्रि.स.) दबाना, रगड़ा देना, मारते-पीटते हुए हटाना, फटकारना ।
चपेटा–(हि. पुं.) देखें 'चपेट' ।
चपेटी–(हि. स्त्री.) भादों सुदी छठ ।
चपेरना–(हि. क्रि.स.) दबाना, चापना ।
चपोटी–(हि. स्त्री.) सिर में चिपकी हुई छोटी टोपी ।
चपोर–(हि. पुं.) चपाट जूता ।
चप्पड़–(हि. पुं.) देखें 'चिप्पड़' ।
चप्पन–(हि. पुं.) नीची बारी का छोटा कटोरा ।
चप्पल–(हि. पुं.) चिपटी एड़ी का जूता, वह जूता जिसमें एड़ी न हो ।
चप्पा–(हि. पुं.) चतुर्थांश, चौथाई भाग, थोड़ा भाग, थोड़ा स्थान ।
चप्पी–(हि.स्त्री.) हाथ-पैर दबाने की सेवा ।
चप्पू–(हि. पुं.) चौड़े पटरे का डाँडा, किलवारी ।
चबक–(हि. स्त्री.) पीड़ा, टीस; (वि.) डरपोक ।
चबकना–(हि.क्रि.अ.) टीसना, चिलकना ।
चबवाना–(हि. क्रि. स.) चबाने का काम कराना ।
चबाना–(हि.क्रि.स.) दाँतों से कुचलना, दाँत से काटना, कूँचना; (मुहा.) चबा चबाकर बातें करना–धीरे-धीरे रुक-रुककर बोलना; चबे को चबाना–बार-बार एक ही काम को करना ।
चबारा–(हि. पुं.) घर के ऊपर का कमरा, चौबारा ।
चबूतरा–(हि. पुं.) चौरस ऊँचा स्थान, बड़ा थाना, कोतवाली ।
चबना, चबना–(हि.पुं.) सूखा भुना हुआ अन्न, चवण, भूँजा ।
चबनी, चबनी–(हि. स्त्री.) जलपान की सामग्री, मजदूरों का दोपहर का कलेवा ।
चब्बू, चभ्भू–(हि. वि.) अधिक भोजन करनेवाला ।
चभक–(हि. पुं.) किसी वस्तु का पानी में गिरने का शब्द, डंक मारने की क्रिया ।
चभकना–(हि. क्रि. स.) पेट भर खाना, डटकर खाना ।
चभड़-चभड़–(हि. स्त्री.) खाते समय मुख से निकलने का शब्द ।
चभाना–(हि. क्रि. स.) भोजन कराना, खिलाना ।
चभोक–(हि. वि.) मूर्ख, निर्बुद्धि ।
चभोरना–(हि. क्रि. स.) गोता देना, डुबाना, भिगाना ।
चमक–(हि. स्त्री.) प्रकाश, ज्योति, आभा, दीप्ति, कान्ति, झलक, लचक, शरीर के किसी अंग की पेशियों में झटके आदि से एकाएक दर्द होना ।
चमक-चाँदनी–(हि. स्त्री.) बनी-ठनी दुश्चरित्रा स्त्री ।
चमक-दमक–(हि. स्त्री.) दीप्ति, झलक, तड़क-भड़क, ठाटबाट ।
चमकदार–(हि.वि.) चमकीला, भड़कीला ।
चमकना–(हि. क्रि. अ.) दीप्तियुक्त देख पड़ना, प्रकाशित होना, कान्तियुक्त होना, दमकना, जगमगाना, भड़कीला होना, प्रसिद्ध होना, कीर्ति प्राप्त करना, उन्नति करना, समृद्ध होना, चौंकना, भड़क उठना, जल्दी से निकल भागना, मटकना, झटके आदि से मांसपेशी में एकाएक पीड़ा उत्पन्न होना, हावभाव दिखलाना, मटकना ।
चमकनी–(हि. वि. स्त्री.) जल्दी से चिढ़ जानेवाली ।
चमकवाना–(हि. क्रि. स.) चमकाने का काम दूसरे से कराना ।
चमकाना–(हि. क्रि. स.) चमकीला करना, चमक लाना, उज्ज्वल करना, निर्मल करना, चिढ़ाना, चौंकाना, भड़काना, मटकाना ।
चमकारा–(हि. पुं.) चमक, प्रकाश ।
चमकारी–(हि. स्त्री.) चमक, प्रकाश ।
चमकी–(हि. स्त्री.) कारचोबी में लगाने के छोटे-छोटे चिपटे गोल बूटे, सितारा ।
चमकीला–(हि. वि.) चमकदार, चमकनेवाला, भड़कीला ।
चमकौवल–(हि.स्त्री.) चमकने या मटकने की क्रिया, मटकौवल ।
चमक्को–(हि. स्त्री.) चमकनेवाली स्त्री, निर्लज्ज चंचल स्त्री, कुलटा, पुंश्चली, झगड़ालू स्त्री, जल्दी से चिढ़नेवाली स्त्री ।
चमगादड़–(हि. पुं.) एक उड़नेवाला जन्तु जिसकी आकृति चूहे के समान होती है । (इसके कान होते हैं और यह बच्चा देता है । इसका पर झिल्लीदार होता है ।)
चमचम–(हि. पुं.) छेने की एक बँगला मिठाई; (अव्य.) चमाचम ।
चमचमाना–(हि. क्रि. अ., स.) चमकाना, प्रकाशित होना, चमक लाना, झलकना ।
चमचिच्चड़–(हि. वि.) किलनी की तरह चमड़े में चिपटनेवाला, पीछा न छोड़नेवाला ।
चमची–(हि. स्त्री.) छोटा चिम्मच, आचमनी
चमजुई,-जोई–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की बहुत छोटी किलनी, चिमटनेवाली वस्तु ।
चमटना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'चिमटना' ।
चमटा–(हि. पुं.) देखें 'चिमटा' ।
चमड़ा–(हि.पुं.) शरीर का बाहरी आवरण चर्म, त्वचा, खाल, छाल, छिलका; (मुहा.), –खींचना या उधेड़ना–शरीर में से चमड़ा अलगाना, बहुत मार मारना; –सिझाना–उबालकर चमड़ा मृदु करना ।
चमड़ी–(हि. स्त्री.) त्वचा, चमड़ा, खाल ।
चमत्करण–(सं. पुं.) चमत्कृत करने का कोई अद्भुत काम करने का भाव या स्थिति, विस्मयीकरण ।
चमत्कार–(सं. पुं.) आश्चर्य, आश्चर्य का विषय, विस्मय, अद्भुत व्यापार, विचित्र घटना, विचित्रता, अनूठापन, विलक्षणता ।
चमत्कारक–(सं. वि.) आश्चर्यजनक, अनूठा ।
चमत्कारी–(सं. वि.) विलक्षण, अद्भुत,

आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला।
चमत्कृत–(सं. वि.) आश्चर्ययुक्त, विस्मित।
चमत्कृति–(सं. स्त्री.) आश्चर्य, अनूठापन।
चमन–(फा. पुं.) फुलवारी, हरा-भरा मैदान।
चमर–(सं. पुं.) सुरागाय, सुरागाय की पूँछ का बना हुआ चँवर।
चमरख–(हिं. स्त्री.) चमड़े की चकती जिसमें से होकर चरखे का टेकुआ घूमता है; (वि. स्त्री.) दुबली-पतली।
चमरशिखा–(हिं. स्त्री.) घोड़े की कलँगी।
चमरस–(हिं. पुं.) चमड़े या त्वचा पर रगड़ से उत्पन्न घाव।
चमरी–(सं. स्त्री.) सुरागाय, चँवरी।
चमरौट–(हिं. पुं.) कृपि-फल का अंश जो चमारों को मजदूरी में दिया जाता है।
चमरौटी–(हिं. स्त्री.) चमारों की बस्ती या गाँव।
चमरौघा–(हिं. पुं.) देखें 'चमौवा'।
चमला–(हिं. पुं.) भीख माँगने का खप्पर।
चमस–(सं. पुं.) लकड़ी का चम्मच के आकार का एक यज्ञपात्र, चम्मच, उर्द का आटा, धुआँस, एक ऋषि का नाम।
चमसा–(हिं. पुं.) चमचा, चम्मच।
चमाऊ–(हिं. पुं.) चामर, चँवर, चमर।
चमाक–(हिं. पुं.) प्रकाश, चमक।
चमाचम–(हिं. वि.) झलकता हुआ, उज्ज्वल, कान्तियुक्त; (अव्य.) चमक के साथ।
चमार–(हिं. पुं.) चर्मकार, चमड़े का काम करनेवाला, अन्त्यज।
चमार-चौदस–(हिं. पुं.) चमारों का उत्सव।
चमारिन, चमाइन–(हिं. स्त्री.) चमार की स्त्री।
चमारी–(हिं. स्त्री.) चमार की स्त्री, चमार का व्यवसाय।
चमीकर–(सं. पुं.) वह खान जिसमें से सोना निकलता है।
चमू–(सं. पुं.) सेना, वह सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़-सवार और ३६४५ पदल सिपाही रहते थे; **–चर**–(पुं.) सेनापति; **–हर**–(पुं.) शिव, महादेव।
चमेलिया–(हिं. वि.) चमेली के रंग का।
चमेली–(हिं. स्त्री.) एक लता जिसमें सुगन्धित श्वेत पुष्प (फूल) होता है, इस लता का फूल, जाति पुष्प; **–का तेल**–(पुं.) चमेली के फलों से सुगंधित किया हुआ तिल का तेल।
चमोटा–(हिं. पुं.) मोटे चमड़े का छोटा टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार तेज करते हैं।
चमोटी–(हिं. स्त्री.) कोड़ा, चाबुक, पतली छड़ी, बेंत, कमची, छोटा चमोटा।
चमौवा–(हिं. पुं.) जूता जिसका तल्ला कच्चे चमड़े से सिला हो, चमरौवा जूता।
चय–(सं. पुं.) ढेर, समूह, राशि, टीला, धुस्स, गढ़, कोट, प्राकार, नीवँ, चौकी, चबूतरा, ऊँचा स्थान।
चयन–(सं. पुं.) संग्रह, संचय, चुनने का कार्य, चुनाई, यज्ञ के लिये अग्नि का संस्कार; **–शील**–(वि.) संग्रही।
चयनिका–(सं. स्त्री.) चुने हुए पद्यों, कहानियों, निबंधों आदि का संग्रह।
चयनीय–(सं. वि.) चयन करने योग्य।
चर–(सं. पुं.) गूढ़ पुरुष, भेदिया, चलनेवाला, खंजन पक्षी, कौड़ी, मंगल ग्रह, पासे का जुआ, कीचड़, दलदल, नदी के बीच में बालू का बना हुआ टापू, रेता, नदी के बहाव से बहकर आई हुई मिट्टी; (वि.) अस्थिर, जंगम, आप से आप चलनेवाला, आहार करनेवाला, खानेवाला; (हिं. पुं.) कपड़े के फटने का शब्द।
चरई–(हिं. स्त्री.) चौपायों को चारा-पानी देने का गड्ढा।
चरक–(सं. पुं.) गुप्तचर, भेदिया, दूत, आयुर्वेद के एक प्रधान आचार्य, पथिक, बटोही, भिक्षुक, भिखमंगा, श्वेतकुष्ठ; **–संहिता**–(स्त्री.) चरकमुनि का बनाया हुआ चिकित्सा-ग्रंथ।
चरकटा–(हिं. पुं.) हाथी या ऊँट के लिये चारा काटनेवाला, तुच्छ मनुष्य।
चरकना–(हिं. क्रि. अ.) टूटना-फूटना।
चरका–(हिं. पुं.) हलका घाव, जख्म, गरम धातु से दागने का निशान।
चरकाह–(हिं. पुं.) (लकड़ी) जिसमें चीर हो।
चरख–(फा. पुं.) चरखी, घिरनी, चाक, चरखा।
चरखपूजा–(हिं. स्त्री.) चैत्र की संक्रान्ति को की जाने वाली एक पूजा।
चरखा–(हिं. पुं.) गोल घूमनेवाला चक्कर, ऊन, कपास या रेशम कातकर सूत निकालन का यन्त्र, कुएँ से पानी निकालने का रहट, सोना-चाँदी का तार खींचने का पहिया, सूत लपेटने की गड़ारी, बड़ा पहिया, वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकाला जाता है, झगड़े या बखेड़े का काम।
चरखी–(हिं. स्त्री.) छोटा चरखा, सूत लपेटने की फिरकी, कपास ओटने का उपकरण, घिरनी, कुएँ की गड़ारी, कुम्हार का चाक, एक प्रकार की घूमनेवाली अग्निक्रीड़ा।
चरचना–(हिं. क्रि. स.) शरीर में चन्दन पोतना, लेपना, अनुमान करना, समझ लेना।
चरचरा–(हिं. वि.) एक पक्षी।
चरचराना–(हिं. क्रि. अ.) चरचर शब्द करते हुए टूटना, घाव का सूख कर पीड़ा उत्पन्न करना, चर्राना।
चरचराहट–(हिं. स्त्री.) शब्द निकलते हुए किसी पदार्थ का टूटना, चर्राना।
चरचा–(हिं. स्त्री.) देखें 'चर्चा'।
चरचारी–(हिं. वि.) निन्दक, निन्दा करनेवाला।
चरजना–(हिं. क्रि. अ., स.) भुलावा देना, बहकाना, अनुमान करना।
चरट–(सं. पुं.) खंजन पक्षी।
चरण–(सं. पुं.) पग, पाँव, पैर, बड़ों का साथ, किसी पदार्थ का चौथा भाग, किसी पद्य के आदि का पद, घूमने का स्थान, क्रम, गोत्र, झूल, गमन, सूर्यादि की किरण, आचार, भक्षण; **–कमल**–(पुं.) पद्म जैसा सुंदर चरण; **–गत**–(वि.) पैरों पर गिरा हुआ; **–गुप्त**–(पुं.) एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसके कई भेद होते हैं; **–चिह्न**–(पुं.) पैर के तलवे की रेखा, पैर के आकार का चिह्न; **–तल**–(पुं.) पैर का तलवा; **–दासी**–(स्त्री.) स्त्री, पत्नी, जूता, पनही; **–पव**–(पुं.) गुल्फ, एड़ी, टखना, **–पादुका**–(स्त्री.) खड़ाऊँ, चरण-चिह्न, पत्थर आदि पर बना हुआ पर का चिह्न जिसका पूजन होता है; **–पीठ**–(पुं.) चरण-पादुका; **–सेवा**–(स्त्री.) बड़ों की सेवा, शुश्रूषा; **–सेवी**–(पुं.) टहलू, सेवक; (मुहा.) **–छूना**–पाँव छूकर प्रणाम करना; **–पड़ना**–आगमन होना; **–लेना**–पाँव पड़ना।
चरणाक्ष–(सं. पुं.) अक्षपाद, गौतम।
चरणानुग–(सं. वि.) अनुगामी, शरणागत।
चरणामृत–(सं. पुं.) वह जल जिसमें किसी महात्मा के चरण धोये गये हों, पादोदक, एक में मिला हुआ दूध, दही, घी, शहद और शक्कर जिससे देव-मूर्ति स्नान कराई जाती है।
चरणायुध–(सं. पुं.) अरुण-शिखा, मुरगा।
चरणारविंद–(सं. पुं.) चरण-कमल।
चरणार्घ–(सं. वि.) किसी पदार्थ का आठवाँ भाग, श्लोक के पद का आधा भाग।
चरणोदक–(सं. पुं.) चरणामृत।
चरता–(हिं. स्त्री.) चलने का भाव, पृथ्वी, भूमि।
चरती–(हिं. पुं.) वह जो व्रत के दिन उपवास न करता हो।

चरथ–(सं. वि.) चलनेवाला, जंगम।
चरन–(हि. पुं.) देखें 'चरण'।
चरनचर–(हि. पुं.) पैदल सिपाही।
चरनदासी–(हि.स्त्री.) जूता, पनही, पत्नी।
चरन-बरदार–(हि. पुं.) जूता उठाने और रखनेवाला नौकर।
चरना–(हि.क्रि.अ.,स.) पशुओं का घूम-घूमकर चारा या घास खाना, इधर-उधर घूमना, विचरना; (पुं.) धोती का काछा, नक्काशी करने का सोनार का एक अस्त्र।
चरनायुध–(हि. पुं.) देखें 'चरणायुध'।
चरनि–(हि. स्त्री.) चाल, गति।
चरनी–(हि. स्त्री.) पशुओं के चरने का स्थान, नांद जिसमें चौपायों को खाने के लिये चारा दिया जाता है, पशुओं का आहार, घास इत्यादि।
चरन्नी–(हि. स्त्री.) चवन्नी।
चरपट–(हि. पुं.) चपत, थप्पड़, तमाचा, चाई, उचक्का, एक प्रकार का छन्द।
चरपर–(हि. वि.) देखें 'चरपरा'।
चरपरा–(हि. वि.) स्वाद में तीखा, चटपटा, तीता, तीव्र, तेज।
चरपराना–(हि. क्रि. अ.) घाव के सूखने से उसमें पीड़ा होना।
चरपराहट–(हि.स्त्री.) स्वाद की तीक्ष्णता, घाव में जलन होना, द्वेष, ईर्ष्या।
चरफरा–(हि. वि.) देखें 'चरपरा'।
चरफराना–(हि.क्रि.अ.) तड़फड़ाना, तड़पना।
चरबन–(हि. पुं.) भुना हुआ अन्न, चबैना।
चरबाँक, चरबाक–(हि. वि.) चतुर, निडर, निर्भय, चंचल, ढीठ।
चरबाना–(हि. क्रि. स.) ढोल पर चमड़ा मढ़ाना।
चरबी–(सं. स्त्री.) शरीर में के सात धातुओं में से एक जो मांस से बनता है, मेद, वसा; (मुहा.)–चढ़ना–स्थूल होना, मोटा होना, घमंड होना; (आँखों में) –छाना–मदान्ध होना, घमंड करना।
चरभ–(सं. पुं.) ज्योतिष में चर राशि।
चरम–(सं. वि.) अन्तिम, सबसे बढ़ा हुआ, पश्चिमी, अन्त का।
चरमकाल–(सं. पुं.) अन्तकाल मृत्यु।
चरम-गिरि–(सं. पुं.) अस्ताचल।
चरमर–(हि. पुं.) किसी तनी हुई वस्तु के दबने से उत्पन्न शब्द।
चरमराना–(हि.क्रि.अ.,स.) चरमर शब्द उत्पन्न होना या करना।
चरराशि–(सं. स्त्री.) फलित ज्योतिष में मेष, कर्क, तुला और मकर राशि का नाम।
चरवाँक–(हि. वि.) देखें 'चरबाँक'।
चरवाई–(हि. स्त्री.) चराने का कार्य।
चरवाना–(हि. क्रि. स.) चराने का काम दूसरे से कराना।
चरवाहा–(हि. पुं.) चौपायों को चरानेवाला, चौपायों का रक्षक।
चरवाही–(हि. स्त्री.) पशुओं को चराने का काम, चराने का शुल्क।
चरवैया–(हि. पुं.) चरने या चरानेवाला।
चरव्य–(सं. वि.) चरु बनाने योग्य।
चरस–(हि. पुं.) बैल या भैंस के चमड़े का बना हुआ बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिये कुएँ से पानी खींचा जाता है, पुरवट, मोट, भूमि नापने का एक परिमाण, गाँज के पेड़ से निकाला हुआ गोंद जिसको लोग गाँजे की तरह पीते हैं, वनमयूर, एक प्रकार का पक्षी।
चरसा–(हि. पुं.) बैल, भैंस आदि का चमड़ा, इसका बना हुआ मोट।
चरसी–(हि. पुं.) चरस द्वारा खेत सींचनेवाला, चरस पीनेवाला।
चरही–(हि. स्त्री.) देखें 'चरनी'।
चराई–(हि. स्त्री.) चराने की क्रिया, चराने का काम।
चराऊ–(हि. स्त्री.) वह स्थान जहाँ पशु चरते हैं, चरागाह।
चराग–(हि. पुं.) देखें 'चिराग', दीपक।
चरागाह–(फा. पुं.) घास का मैदान जहाँ मवेशियाँ चराई जाती हैं।
चराचर–(सं. वि., पुं.) चर और अचर, स्थावर और जंगम, जड़ और चेतन, संसार, जगत्।
चराचरगुरु–(सं. पुं.) ब्रह्मा, परमेश्वर।
चरान–(हि.पुं.) चौपायों के चरने का स्थान।
चराना–(हि.क्रि.स.) चौपायों को चरने के लिए मैदान में छोड़ना, छलना, धोखा देना, बहकाना।
चराव–(हि. पुं.) चरनी, चरागाह।
चरावर–(हि. स्त्री.) व्यर्थ का वार्तालाप, बकवाद।
चरित–(सं. पुं.) आचरण, कृत्य, करतूत, चरित्र, किसी मनुष्य के जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन; –कार, –लेखक–(पुं.) जीवन-चरित्र का लेखक; –नायक–(पु.) वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र के आधार पर कोई पुस्तक लिखी जावे; –वान्–(पुं.) देखें 'चरित्रवान्'।
चरितव्य–(सं. वि.) आचरण करने योग्य।
चरितार्थ–(सं. वि.) जिसकी अभिलाषा पूर्ण हो चुकी हो, कृतार्थ, कृतकृत्य, जो ठीक-ठीक घटे, यथार्थ; –ता–(स्त्री.) कृतार्थता।
चरितार्थी–(स. वि.) सफलता की कामना करनेवाला।
चरितावली–(सं. स्त्री.) बहुत चरितों या जीवनियों का संग्रह।
चरित्तर–(हि. पुं.) धूर्तता, बहाना, ढोंग, चरित्र।
चरित्र–(सं. पुं.) स्वभाव, करनी, करतूत, चरित, कार्य जो कुछ किया जाये; –वान्–(वि.) अच्छे चरित्र या आचरण का, सदाचारी; –हीन–(वि.) खराब या अनैतिक चरित्रवाला, दुश्चरित्र।
चरिष्णु–(सं.वि.) चलनेवाला, चर, जंगम।
चरी–(हि. स्त्री.) पशुओं के चरने की भूमि, ज्वार के हरे पौधे जो चौपायों को काटकर खिलाये जाते हैं; (सं.स्त्री.) सन्देश पहुँचानेवाली दूती, दासी।
चरु–(सं. पुं.) हवन के लिये पकाया हुआ अन्न, वह पात्र जिसमें यह पकाया जाता है, माड़ न निकाला हुआ भात, पशुओं के चरने की भूमि, यज्ञ, मेघ।
चरुआ–(हि.पुं.) चौड़ मुख का मिट्टी का पात्र।
चरुका–(हि. पुं.) एक प्रकार का धान।
चरुपात्र–(सं. पुं.) चरु पकाने या रखने का पात्र।
चरुव्रण–(सं. पुं.) एक प्रकार का पक्वान्न।
चरुस्थाली–(सं.स्त्री.) चरु रखने का पात्र।
चरेर, चरेरा–(हि. वि.) कर्कश, कड़ा, रूखा, खुरदरा।
चरेरू–(हि. पुं.) पक्षी, चिड़िया।
चरेली–(हि. स्त्री.) ब्राह्मी बूटी।
चरया–(हि.वि.) चरनेवाला, चरानेवाला।
चरैला–(हि. पुं.) एक साथ चार चीजें पकाने का चूल्हा।
चरोखर–(हि. पुं.) चौपायों के चरने का स्थान या मैदान।
चरोतर, चरौवा–(हि. पुं.) किसी मनुष्य को जीवन भर के लिये दी हुई भूमि।
चर्ख–(हि. पुं.) खराद; –कश–(पुं.) खराद की डोरी खींचनेवाला।
चर्खा–(हि. पुं.) देखें 'चरखा'।
चर्खी–(हि. स्त्री.) देख 'चरखी'।
चर्चक–(सं. पुं.) चर्चा करनेवाला।
चर्चन–(सं. पुं.) चर्चा, सुगंधित रागों (चंदनादि) का लेपन।
चर्चर–(सं. वि.) गमनशील, चलनेवाला।
चर्चरिका–(सं. स्त्री.) नाटक में वह गाना जो किसी विषय के समाप्त होने पर और दूसरे विषय के आरम्भ होने के पहिले होता है।

चर्चरी–(सं. स्त्री.) वह गान जो वसन्त में गाया जाता है, फाग, होली का उत्सव, हथेली पीटना, प्राचीन काल का ढोल, चर्चरिका, एक प्रकार का वर्णवृत्त, आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, सामूहिक गान ।
चर्चरीक–(सं. पुं.) महाकाल भैरव ।
चर्चा–(सं. स्त्री.) वर्णन, कथन, बयान, बातचीत, वार्तालाप, जनश्रुति, लेप, दुर्गा, गायत्रीरूप देवी ।
चर्चिका–(सं.स्त्री.) वर्णन, चर्चा, एक देवी ।
चर्चित–(सं. वि.) राग लगाया या पोता हुआ, जिसकी चर्चा की जाती हो ।
चर्पट–(सं. पुं.) थप्पड़, चपत, खुली हुई हथेली; (वि.) अधिक ।
चर्पटी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की चपाती ।
चर्परा–(हिं.वि.) देखें 'चरपरा' ।
चर्वी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चरबी' ।
चर्भट–(सं. पुं.) ककड़ी ।
चर्भटी–(सं. स्त्री.) चर्चरी गीत, चर्चा, आमोद-प्रमोद ।
चर्म–(सं. पुं.) चमड़ा, ढाल ।
चर्मकशा (षा)–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का सुगंध-द्रव्य, एक प्रकार का थूहर ।
चर्मकार–(सं. पुं.) चमड़े का काम करनेवाला, चमार, रैदास ।
चर्मकार्य–(सं. पुं.) चमड़े की सिलाई का काम ।
चर्मकील–(सं.स्त्री.) ववासीर नामक रोग ।
चर्मग्रीव–(सं. पुं.) शिव का एक अनुचर ।
चर्मचक्षु–(सं.पुं.) स्थूल दृष्टि का मनुष्य ।
चर्मचटका–(सं. स्त्री.) चमगादड़ ।
चर्मचित्रक–(सं.पुं.) कुष्ठ रोग, फूल, कोढ़ ।
चर्मज–(सं. पुं.) रक्त, लोहू, रोम ।
चर्मण्वती–(सं. स्त्री.) चंबल नदी, कदली वृक्ष, केले का पौधा ।
चर्मतरंग–(सं.पुं.) चमड़े पर पड़ी हुई झुर्री ।
चर्मदंड–(सं. पुं.) चमड़े का चाबुक ।
चर्मदूषिका–(सं. स्त्री.) दाद का रोग ।
चर्मदृष्टि–(सं. पुं.) देखें 'चर्मचक्षु' ।
चर्मदेहा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का मुंह से बजाने का प्राचीन बाजा ।
चर्मद्रुम–(सं. पुं.) भोजपत्र का वृक्ष ।
चर्मनालिका, चर्मनासिका–(सं. स्त्री.) देखें 'चर्मदंड' ।
चर्मपत्रा, चर्मपत्री–(सं. स्त्री.) देखें 'चर्मचटका' ।
चर्मपादुका–(सं. स्त्री.) चमड़े का जूता ।
चर्मपोड़िका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का शीतला रोग ।
चर्मपुट, चर्मपुटक–(सं. पुं.) चमड़े का बड़ा कुप्पा जिसमें घृत, तैल इत्यादि रक्खा जाता है ।
चर्मप्रभेदिका–(सं. स्त्री.) चमड़ा काटने की रुखानी, सुतारी ।
चर्मबंध–(सं.पु.) चमड़े की बनी हुई चमोटी ।
चर्ममसूरिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का शीतला रोग ।
चर्ममुंडा–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी, चर्चिका ।
चर्मयष्टि–(सं. स्त्री.) चमड़े की छड़ी ।
चर्मवंश–(सं. पुं.) एक प्रकार का मुंह से फूंककर बजाने का प्राचीन काल का बाजा ।
चर्मवसन–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
चर्मवृक्ष–(सं. पुं.) देखें 'चर्मद्रुम' ।
चर्मसंभवा–(सं. स्त्री.) इलायची ।
चर्मरी–(सं. स्त्री.) एक लता जिसका फल बहुत विषैला होता है ।
चर्मार–(सं. पुं.) चर्मकार, चमार ।
चर्मिक–(सं. पुं.) हाथ में ढाल लेकर लड़नेवाला योद्धा ।
चर्य–(सं. वि.) करने योग्य, जिसका करना आवश्यक है, कर्तव्य ।
चर्या–(सं. स्त्री.) जो किया जावे, आचरण, चाल-चलन, वृत्ति, व्यवसाय, कामकाज, सेवा, भक्षण, गमन, चलने की क्रिया, भोजन, जीविका ।
चर्राना–(हिं.क्रि.अ.) लकड़ी का टूटते समय चरचर शब्द करना, शरीर में हलकी पीड़ा होना, चमड़े का रूखा होने से पपड़ी पड़ना, तीव्र अभिलाषा होना ।
चर्री–(हिं. स्त्री.) व्यंग्यपूर्ण बात, लगती हुई बात ।
चर्वण–(सं. पुं.) दाँतों से चबाने का कार्य, दबाई जानेवाली वस्तु, भुना हुआ अन्न, चबना, बहुरी ।
चर्वित–(सं. वि.) दाँतों से चबाया हुआ ।
चर्वित-चर्वण–(सं. पुं.) पिष्टपेषण, किये हुए काम को दुबारा करना ।
चर्व्य–(सं. वि.) चबाने योग्य, जो चबाकर खाया जाय ।
चर्षणि–(सं. पुं.) मनुष्य, नर, आदमी ।
चर्षणी–(सं. स्त्री.) कुलटा स्त्री ।
चर्स–(हिं. पुं.) देखें 'चरस' ।
चलंता–(हिं.वि.) चलता हुआ, चलनेवाला ।
चलंदरी–(हिं. स्त्री.) पानी का पौसरा ।
चल–(सं. वि.) चलायमान, अस्थिर, चंचल; (पुं.) कंपन, पारा, दोष, भल-चूक, धोखा, कपट, छल, दोहा छन्द का एक भेद, नाचने में एक प्रकार की चेष्टा ।
चलकना–(हिं. क्रि.अ.) चमकना ।
चलकर्ण–(सं.वि.) सर्वदा कान हिलानेवाला; (पुं.) हाथी ।
चलकेतु–(सं.पुं.) एक प्रकार का पुच्छल तारा ।
चलचंचु–(सं. पुं.) चकोर पक्षी ।
चल-चलाव–(हिं.पुं.) यात्रा, प्रस्थान, मृत्यु ।
चलचाल–(हिं. वि.) अस्थिर, चंचल ।
चलचित्र–(सं. पुं.) सिनेमा, बायस्कोप ।
चलचूक–(हिं. स्त्री.) छल, कपट, धोखा ।
चलता–(हिं. वि.) गतिमान, चलता हुआ, चलनेवाला, बिना क्रम-भंग का, जिसका प्रचार अधिक हो, काम करने योग्य, व्यवहार में निपुण; (स्त्री.) चंचलता, अस्थिरता; –खाता या लेखा–(पुं.) वह हिसाब जिसमें बराबर लेन-देन चालू रहे, बन्द न किया जावे; –गाना–(पुं.) सामान्य गाना जिसमें संगीतशास्त्र के अनुसार राग-रागिनी की शुद्धतापर विशेष ध्यान न दिया जाय; –पुरजा–(वि.) व्यवहार पटु; (मुहा.)–करना–भेजना, निबटाना, तय करना; –बनना–प्रस्थान करना ।
चलती–(हिं.स्त्री.) मान-मर्यादा, अधिकार ।
चलतू–(हिं.वि.) चलता ।
चलदल–(हिं.पुं.) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष ।
चलन–(हिं. पुं.) गति, चाल, व्यवहार, रीति, भ्रमण, नाच में एक प्रकार की चेष्टा; (मुहा.)–से चलना–मर्यादा के अनुसार काम करना; –समीकरण–गणितीय क्रिया जिसमें एक ज्ञात राशि की सहायता से दूसरी अज्ञात राशि निकाली जाती है ।
चलन-कलन–(सं. पुं.) ज्योतिष का वह गणित जिसके द्वारा पृथ्वी की गति के अनुसार दिन के बढ़ने-घटने का हिसाब किया जाता है ।
चलनदरी–(हिं.स्त्री.) पुण्यार्थ जल पिलाने का स्थान, पौसरा ।
चलन समीकरण–(सं. पुं.) गणित की एक विशेष क्रिया ।
चलनसार–(हिं.वि.) व्यवहार में प्रचलित चालू, अधिक दिनों तक चलनेवाला ।
चलना–(हिं. क्रि. अ.) गमन करना, जाना, प्रस्थान करना, हिलना-डोलना, स्फुरित होना, बहना, टिकना, ठहरना, प्रचलित होना, व्यवहार में आना, प्रयुक्त होना, अच्छी तरह काम देना; तीर, गोली आदि का छूटना, शत्रुता या विरोध होना, व्यवसाय में वृद्धि होना, सफल होना, निर्वाह होना, उपाय लगना, अग्रसर होना, बढ़ना, आरंभ होना, छिड़ना, भोजन करने के लिए रखाजाना, निगल; जाना, लेन-देन के काम में आना, हटना, बढ़ना, पढ़ा जाना, निकल जाना, सड़ना

(पुं.) चलनी के आकार का हलवाई का उपकरण, छन्ना; (मुहा.) पेट चलना—अधिक शौच होना; मन चलना—इच्छा होना, लालसा होना; मुँह चलना—भक्षण करना, बकवाद करना; चल निकलना—उन्नति करना, आगे बढ़ना, सफलता प्राप्त करना; चल बसना—मृत्यु होना; अपने चलते—यथा-शक्ति; किसी की न चलना—किसी का प्रभाव न पड़ना।

चलनि—(हिं. स्त्री.) देखें 'चलन'।

चलनिका—(हिं. स्त्री.) स्त्रियों का घाघरा।

चलनी—(हिं. स्त्री.) आटा आदि महीन चालने की चलनी।

चलनौस—(हिं. पुं.) चोकर, चालन।

चलपत्र—(सं. पुं.) अश्वत्थ, पीपल का पेड़।

चलबाँक—(हिं. वि.) शीघ्रगामी, तीव्र चलनेवाला।

चल-बिचल—(हिं. वि.) देखें 'चल-विचल'।

चलवंत—(हिं. पुं.) पैदल सिपाही।

चलवाना—(हिं. क्रि. स.) चलाने का काम दूसरे से कराना।

चल-विचल—(हिं. वि.) अपने स्थान से हटा हुआ, बेठिकाने, अव्यवस्थित, अंडबंड; (स्त्री.) व्यतिक्रम, नियम का उल्लंघन।

चलवैया—(हिं. पुं.) चलनेवाला।

चला—(सं. स्त्री.) बिजली, भूमि, पृथ्वी, लक्ष्मी, पिप्पली; (पुं.) व्यवहार, प्रचार, रीति, अधिकार।

चलाऊ—(हिं. वि.) बहुत दिनों तक टिकनेवाला, पुष्ट, टिकाऊ।

चलाक—(हिं. वि.) दक्ष, पटु।

चलाका—(हिं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली।

चलाकी—(हिं. स्त्री.) दक्षता।

चलाचल—(सं. वि.) चंचल, अस्थिर।

चलाचली—(हिं. स्त्री.) गति, चाल, चलते समय की व्यग्रता, धूमधाम, तैयारी, हड़बड़ी, बहुत से लोगों का प्रस्थान, चलने की तैयारी; (वि.) जो चलने को तैयार हो, चपल, चंचल।

चलातंक—(सं. पुं.) कम्प-वायु, वात-रोग।

चलान—(हिं. स्त्री.) चालान, भेजे जाने या चलने का कार्य, अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायालय में विचार के लिये भेजा जाना, सामग्रियों का एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान भेजी हुई सामग्री, माल की सूची या विवरण, रवन्ना; —दार—(पुं.) चलान के साथ जानेवाला मनुष्य, चालानदार।

चलाना—(हिं. क्रि. स.) चलने में लगाना या प्रेरित करना, हिलाना-डोलाना, कार्य निर्वाह के योग्य करना, मुकदमा करना, व्यापार में वृद्धि करना, किसी शस्त्र से मारना, तीर या गोली छोड़ना, प्रेरित करना, उन्नति करना, अगुआ बनना, आरंभ करना, बनाये रखना, टिकाना, काम में लाना, प्रचलित करना, व्यवहार में लाना; (मुहा.) मन चलाना—लालसा करना; मुँह चलाना—खाना; हाथ चलाना—मारने के लिये हाथ उठाना।

चलायमान—(सं. वि.) चंचल, चलनेवाला, विचलित।

चलाव—(हिं. पुं.) चलने का भाव, प्रयाण, यात्रा।

चलावा—(हिं. पुं.) रीति, चाल, द्विरागमन, गौना।

चलित—(सं. वि.) चलायमान, अस्थिर, चलता हुआ।

चलिष्णु—(सं. वि.) चलने को उद्यत, गमनशील।

चलैया—(हिं. वि.) चलनेवाला।

चलौना—(हिं. पुं.) चरखा चलाने का डंडा, दूध चलाने का करछा।

चलौवा—(हिं. पुं.) देखें 'चलावा,' उतारा।

चवकी—(हिं. स्त्री.) देखें 'चौकी'।

चवन्नी—(हिं. स्त्री.) चार आने के मूल्य का सिक्का।

चवर—(हिं. पुं.) देखें 'चँवर'।

चवर्ग—(सं. पुं.) 'च' से 'ञ' तक के पाँच अक्षरों का समूह।

चवा—(हिं. स्त्री.) चारों ओर से बहनेवाली हवा।

चवाई—(हिं. पुं.) दुर्नाम फैलानेवाला, निन्दक, झूठी बात कहनेवाला।

चवाव—(हिं. पुं.) प्रवाद, निन्दा की चर्चा, पीठ पीछे की निन्दा।

चव्य, चव्यक—(सं. पुं.) एक औषधि।

चशक—(हिं. पुं.) देखें 'चसका'।

चशम—(हिं. स्त्री.) आँख, नेत्र।

चशमा—(हिं. पुं.) चश्मा।

चश्मा—(फा. पुं.) स्रोत, सोत, ऐनक।

चष—(हिं. पुं.) चक्षु, नेत्र, आँख।

चषक—(सं. पुं.) मदिरा पीने का पात्र, मधु, शहद।

चषचोल—(हिं. पुं.) आँख की पलक।

चषण—(सं. पुं.) भोजन, वध करना, क्षय, नाश।

चसक—(हिं. स्त्री.) हलकी पीड़ा, मगजी के आगे लगाने की पतली गोट।

चसकना—(हिं. क्रि. अ.) मन्द पीड़ा होना, टीसना, चसका लगना।

चसका—(हिं. पुं.) दुर्व्यसन, लत, चाट।

चसना—(हिं. क्रि. अ.) प्राण त्यागना, मरना, दो पदार्थों का परस्पर सटना, चपकना, लगना।

चसम—(हिं. स्त्री.) देखें 'चश्म'।

चसमा—(हिं. पुं.) देखें 'चश्मा'।

चस्का—(हिं. पुं.) देखें 'चसका'।

चह—(हिं. पुं.) नदी के कच्चे घाट पर बल्ले गाड़कर उस पर बनाया हुआ मचान जिस पर से मनुष्य नाव पर चढ़ते हैं, इसी तरह का बना हुआ पुल, गड्ढा।

चहक—(हिं. स्त्री.) पक्षियों का मधुर कलरव।

चहकना—(हिं. क्रि. अ.) पक्षियों का मधुर शब्द करना, चहचहाना, उमंग में बकवाद करना।

चहका—(हिं. पुं.) पत्थर या ईंट का बना फर्श, लुआठी, जलती हुई लकड़ी, बनेठी, चहला, कीचड़।

चहकार—(हिं. स्त्री.) देखें 'चहक'।

चहकारना—(हिं. क्रि. अ.) देखें 'चहकना'।

चहकारा—(हिं. वि.) मधुर ध्वनि करनेवाला, चहकनेवाला।

चहचहा—(हिं. पुं.) चहक, हँसी-ठट्ठा; (वि.) आनन्द उत्पन्न करनेवाला, अति मनोहर, ताजा।

चहचहाना—(हिं. क्रि. अ.) पक्षियों का शब्द करना, चहकना।

चहटा—(हिं. पुं.) पंक, कीचड़, चहला।

चहनना—(हिं. क्रि. स.) पर से कुचलना, रौंदना।

चहना—(हिं. क्रि. स.) देखें 'चाहना'।

चहनि—(हिं. स्त्री.) चाह, अभिलाषा, इच्छा।

चहबच्चा—(हिं. पुं.) मले पानी का गड्ढा, धन गाड़ने का छोटा तहखाना।

चहर—(हिं. स्त्री.) आनन्द का उत्सव, हल्ला, उपद्रव; (वि.) उत्तम, चंचल, तीव्र, तेज।

चहरना—(हिं. क्रि. अ.) प्रसन्न होना, आनन्दित होना।

चहर-पहर—(हिं. स्त्री.) चहल-पहल।

चहराना—(हिं. क्रि. अ.) तड़कना, फटना, चटकना, प्रसन्न होना।

चहल—(हिं. स्त्री.) कीच, कीचड़, पानी में सनी हुई चिकनी मिट्टी, आनन्द का उत्सव, धूमधाम।

चहल-कदमी—(हिं. स्त्री.) धीरे-धीरे टहलना।

चहल-पहल—(हिं. स्त्री.) अनेक मनुष्यों के आने-जाने की धूम, आनन्द की धूम-धाम।

चहला—(हिं. पुं.) पंक, कीचड़।

चहली—(हिं. स्त्री.) कुएँ से पानी खींचने की गड़ारी।

चहलुम–(हि. पुं.) देखें 'चेहलुम'।
चहार-दीवारी–(फा. स्त्री.) मकान आदि के चारों ओर आड़ या बचाव के लिए बनी हुई दीवार, परकोटा।
चहुँ–(हि. वि.) चार, चारों।
चहुँक–(हि. स्त्री.) देखें 'चिहुँक'।
चहुँदिस–(हि. अव्य.) चारों ओर।
चहुँधा–(हि. अव्य.) चारों ओर।
चहूँ–(हि. वि.) देखें 'चहुँ'।
चहूँटना–(हि.क्रि.अ.) सटना, मिलना, लगना।
चहेटना–(हि.क्रि.स.) दवाकर रस निचोड़ना, चपेटना, दौड़ाकर पीछा करना।
चहेता–(हि.वि.) जिससे प्रेम हो, प्यारा।
चहेती–(हि. स्त्री.) प्रियतमा, प्यारी।
चहेल–(हि.स्त्री.) चहला, कीचड़, दलदल।
चहोरना–(हि.क्रि.स.) पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरी जगह बैठाना, रोपना, देखभाल करना, सँभालना।
चहोरा–(हि. पुं.) जड़हन धान।
चाँइयाँ, चाँईं–(हि. पुं.) ठग, उचक्का; (वि.) कपटी, छली; (स्त्री.) सिर पर फुंसियां होने और वाल झड़ने का रोग।
चाँक–(हि. पुं.) खलिहान में अन्न के ढेर पर चिह्न करने की लकड़ी की थापी, अन्न-राशि के चारों ओर खींचा हुआ घेरा।
चाँकना–(हि.क्रि.स.) खलिहान में अनाज के ढेर पर चिह्न लगाना, सीमा बाँधने के लिये चिह्नित करना; हद्द बाँधना, पहिचानने के लिये किसी प्रकार का चिह्न लगाना।
चाँगला–(हि. वि.) आरोग्य, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, चतुर।
चाँगेरी–(हि.स्त्री.) खट्टी लोनी का शाक।
चाँचर, चाँचरि–(हि. स्त्री.) एक राग जो वसन्त ऋतु में गाया जाता है, भूमि जो कई वर्षों से परती पड़ी हुई हो, मड़ती भूमि।
चांचल्य–(सं. पुं.) चंचलता, चपलता।
चाँचु–(हि. पु.) चंचु, चोंच।
चाँटा–(हि. पुं.) चिउँटा, थप्पड़, तमाचा।
चाँटी–(हि. स्त्री.) चींटी।
चाँड़–(हि. वि.) बलवान, प्रवल, उद्धत, तृप्त, अघाया हुआ; (स्त्री.) पाख का वाँस या वल्ला; भार सँभालने की थूनी, टेक, आकुलता, व्याकुलता, वड़ी लालसा, संकट, दवाव, प्रवल इच्छा, अधिकता; (मुहा.)–**सरना**–इच्छा पूर्ण होना।
चाँड़ना–(हि.क्रि.स.) खोदकर गिराना, उजाड़ना।
चांडाल–(सं. पुं.) श्वपच, डोम, अंत्यज, नीच जाति, दुष्ट, दुरात्मा, क्रूर, निष्ठुर, पतित मनुष्य।
चांडालिका–(सं. स्त्री.) दुर्गा, एक पौधा।
चांडालिनी–(सं. स्त्री.) एक तंत्रोक्त देवी का नाम।
चांडाली–(सं.स्त्री.) चांडाल की स्त्री, डोमिन।
चाँद–(हि. पुं.) चन्द्रमा, दूज के चन्द्रमा के आकार का गहना, ढाल के ऊपर का पुष्पाकार काँटा, घोड़े के सिर पर की भँवरी, एक प्रकार का गोदना; (स्त्री.) मस्तक के बीच का भाग; –**का कुंडल**–(पु.) चन्द्रमा के चारों ओर का प्रभा-मण्डल; –**का टुकड़ा**–(पुं.) अति सुन्दर मनुष्य; –**दीखे**–(अव्य.) शुक्ल पक्ष की दुइज के बाद; –**सा-मुखड़ा**–(पुं.) अति सुन्दर मुख; (मुहा.)–**पर थूकना**–किसी महात्मा को कलंकित करना; –**पर धूल डालना**–किसी निर्दोष व्यक्ति पर लांछन लगाना; –**पर बाल न छोड़ना**–सिर पर खूब जूते लगाना; **किधर चाँद निकला**–आप किधर से दिखाई पड़े।
चाँदतारा–(हि. स्त्री.) बूटीदार, बारीक, या महीन मलमल, एक प्रकार की गुड्डी या पतंग।
चाँदना–(हि. पुं.) प्रकाश, उजाला।
चाँदनी–(हि. स्त्री.) चन्द्रिका, चन्द्रमा का प्रकाश, कौमुदी, ज्योत्स्ना, विछाने की उज्ज्वल चादर, श्वेत चँदवा, छतगीर, तगर, गुलचाँदनी; (मुहा.)–**छिटकना**–चन्द्रमा का स्वच्छ प्रकाश फैलना; –**मारना**–घोड़ों पर चन्द्रिका का बुरा प्रभाव पड़ना; **चार दिन की चाँदनी**–थोड़े दिनों का वैभव या आनन्द।
चाँदवाला–(हि. पुं.) कान में पहिनने का एक आभूषण।
चाँदमारी–(हि. स्त्री.) दीवार, पटरे इत्यादि पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।
चाँदला–(हि. वि.) वक्र, कुटिल, टढ़ा।
चाँदा–(हि. पुं.) वह निर्धारित स्थान जहाँ से भूमि की नाप की जाती है, छप्पर का पाखा।
चाँदी–(हि.स्त्री.) एक श्वेत, नरम और चमकीली धातु, रजत, रौप्य, आर्थिक लाभ, खोपड़ी का मध्य भाग; (मुहा.) –**कर देना**–जलाकर राख करना; –**का जूता**–उत्कोच, घूस; –**काटना**–खूब आय करना; –**का पहरा**–समृद्धि का समय।
चांद्र–(सं. वि.) चंद्र संबंधी।
चांद्र-मास–(सं. पुं.) चंद्रमा की गति के अनुसार होनेवाला माह या महीना।
चांद्र-वत्सर–(सं. पुं.) चंद्रमा की गति के अनुसार माना जानेवाला वर्ष।
चांद्र-व्रतिक–(सं.वि.) चांद्रायण व्रत संबंधी।
चांद्रायण–(सं. पुं.) एक-मास-व्यापी व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन की मात्रा घटायी-वढ़ायी जाती है।
चाँप–(हि. पुं.) चाँपना, दवाव, भूमि पर पैर पड़ने का शब्द, धक्का; वह पुरजा जिससे बन्दूक की नली कुन्दे से जुड़ी रहती है, चम्पा का फूल, तीव्र प्रेरणा।
चाँपना–(हि. क्रि. स.) दवाना।
चाँयँचाँयँ–(हि. पुं.) व्यर्थ की वकवक।
चाँवँचाँव–(हि. पुं.) देखें 'चाँयँचाँयँ'।
चाइ–(हि. पुं.) देखें 'चाव'।
चाउ–(हि. पुं.) देख 'चाव'।
चाउर–(हि. पुं.) देखें 'चावल'।
चाक–(हि. पुं.) कुम्हार का गोल पत्थर जिसको घुमाकर तथा मिट्टी का लोंदा रखकर वह पात्र आदि बनाता है, कुलालचक्र, गाड़ी या रथ का पहिया, कुएँ से पानी खींचने की चरखी, मिस्री जमाने की घरिया, चाकू, सान, ऊख का रस रखने का पात्र, मण्डलाकार चिह्न।
चाकचक–(हि.वि.) चारों ओर से रक्षित, दृढ़
चाकचक्य–(सं. स्त्री.) चमचमाहट, उज्ज्वलता, सुन्दरता, शोभा।
चाकना–(हि.क्रि.स.) सीमावद्ध करने के लिये चारों ओर रेखा खींचना, हद बनाना, अन्न के ढेर पर मिट्टी या गोवर रखना, पहिचान के लिए चिह्न लगाना।
चाकरनी, चाकरानी–(हि.स्त्री.) नौकरानी, दासी।
चाकसू–(हि. पुं.) वन कुलथी का पौधा।
चाका–(हि. पुं.) चाक, चीनी का वड़ा वतासा।
चाकी–(हि.स्त्री.) आटा पीसने की चक्की, वज्र, विजली।
चाक्रायण–(स. पुं.) चक्र ऋषि का वंशज।
चाक्रिक–(सं. पुं.) स्तुति-गायक, वन्दी, भाट, तेली, गाड़ीवान, कुम्हार; (वि.) चक्राकार, चक्र-संबंधी।
चाक्षुष–(सं. वि.) चक्षु संबंधी, जिसका ज्ञान देखने से हो, न्याय में ऐसा प्रमाण जिसका बोध आँखों से देखने से हो, स्वयंभुव मनु के पुत्र का नाम।
चाखना–(हि. क्रि.स.) देखें 'चखना'।
चाचर, चाचरि–(हि. स्त्री.) होली में गाने का गीत, होली का खेल और स्वाँग, उपद्रव, हुल्लड़।

चाचरी–(हिं. स्त्री.) योग की एक मुद्रा ।
चाचा–(हिं. पुं.) पितृव्य, पिता का भाई ।
चाची–(हिं. स्त्री.) चाचा की स्त्री ।
चाट–(हिं.स्त्री.) चरपरी वस्तुएँ खाने की उत्कट अभिलाषा, स्वाद लेने की इच्छा, चसका, लालसा, लोलुपता, व्यसन, टेव, गजक; (पुं.) ठग, उचक्का; –की टँगड़ी–(स्त्री.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।
चाटना–(हिं.क्रि.स.) स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाना, जीभ लगाकर खाना, पोंछकर खा जाना, (पशुओं का) प्रेम से जीभ फेरना, कीड़ों द्वारा खाया जाना; (मुहा.) चूमना-चाटना–प्यार करना; चाट जाना–खा जाना, चाट डालना, (किसी को) तबाह कर देना ।
चाटु–(सं. पुं.) मीठी बात, प्रिय वार्ता, झूठी प्रशंसा; –कार–(पुं.) झूठी प्रशंसा या चापलूसी करनेवाला; –कारी–(स्त्री.) चापलूसी; –बटु–(पुं.) भाँड़, विदूषक ।
चाड़–(हिं. स्त्री.) तीव्र अभिलाषा, प्रेम, चाह, चाँड़ ।
चाड़ी–(हिं. स्त्री.) पीठ पीछे निन्दा ।
चाढ़ा–(हिं.पुं.) प्रेम-पात्र, प्यारा, आसक्त, चाहनेवाला ।
चाणक्य–(सं. पुं.) अनेक नीति-ग्रन्थों के रचनेवाले प्रसिद्ध मुनि जो कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध हैं । (वे पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त के मन्त्री थे ।)
चाणूर–(सं. पुं.) कंस का योद्धा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।
चातक–(सं. पुं.) एक पक्षी जो वर्षा ऋतु में बहुत बोलता है, पपीहा ।
चातकानंदन–(सं. पुं.) वर्षाकाल, मेघ ।
चातर–(हिं. पुं.) मछली पकड़ने का बड़ा जाल, षड्यन्त्र ।
चातुर–(सं. वि.) चतुर, धूर्त; (पुं.) चार पहियों की गाड़ी; –ई (स्त्री.)–देखें 'चतुरई', चातुरी; –ता (स्त्री.) देखें 'चतुरता' ।
चातुराश्रम–(सं. पुं.) हिन्दू धर्म के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास–ये चार आश्रम ।
चातुरिक–(सं.पुं.) सारथी, रथ हाँकनेवाला ।
चातुरी–(हिं. स्त्री.) चतुराई, धूर्तता ।
चातुर्थक, चातुर्थिक–(सं. पुं.) चौथे दिन आनेवाला ज्वर ।
चातुर्दश–(सं. वि., पुं.) चतुर्दशी को उत्पन्न, एक राक्षस का नाम ।
चातुर्भद्र–(सं. पुं.) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–ये चार पदार्थ ।
चातुर्महाराजिक–(सं.पुं.) विष्णु भगवान् ।
चातुर्मास–(सं. पुं.) वर्षा के चार मास; (वि.) चार मास में होनेवाला ।
चातुर्मासिक–(सं.वि.,पुं.) चार महीने में होनेवाला (यज्ञ) ।
चातुर्मासी–(सं. स्त्री.) पौर्णमासी ।
चातुर्मास्य–(सं. पुं.) चौमासे में होनेवाला एक वैदिक यज्ञ ।
चातुर्य–(सं. पुं.) चतुराई, दक्षता, निपुणता ।
चातुर्वर्ण्य–(सं. पुं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र–ये चार वर्ण ।
चात्र–(सं.पुं.) अग्निमन्थन की खैर की लकड़ी
चादर–(फा. स्त्री.) औरतों का साड़ी पर ओढ़ने का लंबा-चौड़ा दुपट्टा, बिछौने आदि पर बिछाने का वस्त्र, पिछौरी, धातु का पत्तर, चद्दर; (मुहा.) –उतारना–इज्जत लेना (किसी स्त्री की); –ओढ़ाना या डालना–विधवा स्त्री से विवाह करना; –देखकर पाँव फैलाना–आय के अनुसार व्यय करना ।
चादरा–(हिं. पुं.) मरदानी चादर ।
चानक–(हिं. अव्य.) अकस्मात् ।
चानन–(हिं. पुं.) चन्दन ।
चानस–(हिं.पुं.) ताश का एक खेल। (यह शब्द अं.चान्स् का अपभ्रंश है ।)
चाप–(सं. पुं.) धनुष, कमान, रेखागणित में अर्धवृत्त क्षेत्र, वृत्त की परिधि का अंश, धनु राशि; (हिं. स्त्री.) दबाव, पैर की आहट ।
चाप जरीब–(हिं. पुं.) खेत की लंबाई की नाप ।
चापट–(हिं.वि.,स्त्री.) देखें 'चापड', चोकर ।
चापड़–(हिं. वि.) जो दबकर चिपटा हो गया, समतल, बराबर, चौपट, उजाड़, नष्ट-भ्रष्ट; (हिं. स्त्री.) चोकर, भूसी ।
चापदंड–(सं.पुं) वह डंडा जिससे कोई वस्तु आगे की ओर ढकेली जावे ।
चापना–(हिं.क्रि. स.) दबाना, दाबना ।
चापर–(हिं. वि.) देखें 'चापड़' ।
चापल–(सं. पुं.) अस्थिरता, चंचलता; (वि.) चंचल ।
चापल्य, चापलता–(सं.पुं.स्त्री.) चंचलता, चपलता ।
चापलूस–(फा. वि.) झूठी प्रशंसा करनेवाला, खुशामद या चाटुकारी करनेवाला ।
चापलूसी–(फा. स्त्री.) झूठी प्रशंसा, खुशामद, चाटुकारी ।
चापी–(हिं. वि., पुं.) धनुष धारण करनेवाला, शिव, महादेव, धनु राशि ।
चापफंद–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मछली पकड़ने का जाल ।
चाव–(हिं. स्त्री.) चव्य, एक पौधा जिसकी जड़ और डाल औषधियों के काम में आती है, एक प्रकार का बाँस, चौभड़ का दाँत, डाढ़ ।
चावना–(हिं. क्रि. स.) दाँतों से कुचलकर खाना, चबाना ।
चावी–(हिं. स्त्री.) कुंजी, ताली, यन्त्र के किसी भाग को दृढ़ करने का पेच; (मुहा.) –देना–कुंजी घुमाकर ताला बन्द करना; –भरना–चावी देना ।
चाबुक–(फा. पुं.) कोड़ा, हंटर, साँटा ।
चाबुक-सवार–(फा.पुं.) घोड़े को सधाने या निकालनेवाला सवार ।
चाभना–(हिं. क्रि. स.) भोजन करना, खाना; (मुहा.) माल चाभना–नाना प्रकार का स्वादिष्ट भोजन करना ।
चाभा–(हिं. पुं.) बैलों की जीभ का एक रोग जिसके होने पर उनसे कुछ खाया नहीं जाता ।
चाभी–(हिं.स्त्री.) देखें 'चावी', ताली, कुंजी ।
चाम–(हिं. पुं.) चर्म, चमड़ा, खाल; –के दाम–(पुं.) चमड़े के सिक्के; (मुहा.) –के दाम चलाना–अन्धेर मचाना ।
चामचोरी–(हिं. स्त्री.) गुप्त रूप से पर-स्त्री-गमन ।
चामड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चमड़ी' ।
चामर–(सं. पुं.) चँवर, मोरछल, एक वर्ण-वृत्त का नाम ।
चामरपुष्प–(सं. पुं.) सुपारी का वृक्ष, आम, केतकी ।
चामरी–(सं. स्त्री.) सुरा गाय ।
चामारिक–(सं. पुं.) चँवर डोलानेवाला ।
चामीकर–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, धतूर; (वि.) सोनहला ।
चामुंडा–(सं. स्त्री.) शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्यों को मारनेवाली देवी, भैरवी ।
चाय–(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसकी पत्तियों को उबालकर इसमें दूध और चीनी मिलाकर सर्वत्र लोग पीते हैं; –पानी–(पुं.) जलपान, कलेवा ।
चायक–(हिं. वि., पुं.) चाहनेवाला, प्रेमी, इकट्ठा करनेवाला ।
चार–(हिं.वि.,पुं.) तीन और एक की संख्या (का), अनेक, कई एक, थोड़ा-सा, थोड़े-बहुत; (हिं. पुं.) गति, चाल, गमन, गुप्तचर, जासूस, कारागृह, बन्धन, सेवक, दास, रीति, आचार, व्यवहार; (मुहा.) –आँखें करना–आँखें मिलाना; –आँखें होना–साक्षात्कार होना; –के कंधे चढ़ना–मर जाना; –दिन–थोड़े दिन; –दिन की चाँदनी–अस्थायी सुख, वस्तु, गौरव

आदि; -पाँच-हीला-हवाला; -पाँच करना-हीला-हवाला या टाल-मटोल करना; -पैसे-(पुं.) कुछ धन; चारों खाना चित्त गिरना-हाथ-पाँव फैलाये हुए पीठ के बल गिरना।
चारक-(सं. पुं.) चरवाहा, चालक, सहचर, साथी, जासूस, भेदिया।
चारकान-(हिं. पुं.) चौसर या पासे का एक दाँव।
चारखाना-(हिं. पुं.) एक प्रकार का कपड़ा जिसमें ताने और बाने के रंगीन डोरों से चौखूँटे खाने बने होते हैं।
चारण-(सं. पुं.) कीर्तिगायक, भाट, वन्दी, घूमनेवाला मनुष्य।
चारन-(हिं. पुं.) देखें 'चारण'।
चारना-(हि.क्रि. स.) पशुओं को चराना।
चारपाई-(हि. स्त्री.) छोटा पलंग, खटिया, खाट; (मुहा.)-पकड़ना -इतना रोगी होना कि चारपाई पर से उठ न सकना; -पैर पड़ना-खाटपर लेटना, रोगी होना।
चारयारी-(हिं. स्त्री.) चार मित्रों की मण्डली, मुसलमानों में सुन्नी सम्प्रदाय की मण्डली, चाँदी का चौकोर सिक्का जिस पर खलीफाओं का नाम अथवा कलमा खोदा रहता है।
चारवा-(हि. पुं.) चौपाया, पशु।
चारवायु-(सं.पुं.) गरमी के दिनों की हवा, लू।
चारा-(हिं. पुं.) पशुओं के खाने की घास-पात, जिस वस्तु को वंसी में लगाकर मछली फँसाई जाती है।
चारि-(हिं. वि.) देखें 'चार'।
चारिका-(सं. स्त्री.) सेविका।
चारिणी-(सं. वि. स्त्री.) आचरण करनेवाली।
चारित-(सं. वि.) जो चलाया गया हो, चलाया हुआ।
चारित्र-(स. पुं.) परम्परा का आचार-व्यवहार, चाल-चलन, स्वभाव, मरुद्गणों में से एक; -वती-(सं. स्त्री.) एक प्रकार की समाधि; -विनय-(पुं.) शिष्टाचार, नम्रता।
चारित्र्य-(सं. पुं.) चरित्र।
चारी-(हि.वि.) चलनेवाला, आचरण या व्यवहार करनेवाला; (पुं.) पदल सिपाही।
चारु-(सं. वि.) सुन्दर, रुचिर, मनोहर; (पुं.) बृहस्पति, कृष्ण के पुत्र का नाम जो रुक्मिणी से उत्पन्न थे, कुंकुम, केसर।
चारुक-(सं. पुं.) सरपत का बीज।
चारुकेसरा-(सं. स्त्री.) सेवती का पुष्प।
चारुचित्र-(सं.पुं.) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम।
चारुता-(सं. स्त्री.) मनोहरता, सुन्दरता।
चारुधारा-(सं.स्त्री.) इन्द्र की पत्नी, शची।
चारुनालक-(सं.पुं.) लाल कमल, कोकनद।
चारुनेत्र-(सं.पुं.) हरिन; (वि.) सुन्दर नेत्रों का।
चारुफला-(सं. स्त्री.) अंगूर की लता।
चारुरावा-(सं. स्त्री.) इन्द्र की पत्नी, शची।
चारुहासिनी-(सं.वि., स्त्री.) सुन्दर मुसकानेवाली, वैताली छन्द का एक भेद।
चारुहासी-(सं. वि.) सुन्दर हँसनेवाला।
चार्वाक-(सं. पुं.) एक अनीश्वरवादी तथा नास्तिक तार्किक का नाम; -दर्शन या मत-(पुं.) चार्वाकरचित नास्तिक दर्शन।
चार्वी-(सं. स्त्री.) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, दीप्ति, बुद्धि, सुन्दर स्त्री।
चाल-(हिं. स्त्री.) गति, गमन, चलने का ढंग, आचरण, व्यवहार, आकृति, बनावट, कार्य करने की रीति, छलने की युक्ति, कपट, छल, धूर्तता; आहट, आन्दोलन; (पुं.) किराये का बड़ा घर, छप्पर, घर की छत; (मुहा.)-चलना-छल से अपना कार्य सिद्ध करना, धूर्तता करना; -फँसना-शतरंज के खेल में अपने किसी मुहरे का फँसना; -में आना-धोखे में पड़ना; -सुधारना-कुटव ठीक करना।
चालक-(हिं. वि.) चलानेवाला, सचालक, छल करनेवाला, धूर्त, चतुर।
चाल-चलन-(हिं. पुं.) आचरण, व्यवहार, शील, चरित्र।
चालढाल-(हिं.स्त्री.) आचरण, व्यवहार, ढंग।
चालन-(हि. पुं.) चलने या चलाने की क्रिया, गति, गमन।
चालनहार-(हि.पुं.) चलानेवाला, ले जानेवाला।
चालना-(हि.क्रि.अ., स.) चलाना, एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना, वधू को विदा कराके अपने घर लाना, हिलाना-डुलाना, कार्य निभाना, प्रसंग छेड़ना, चलनी में आटे को हिलाकर चोकर अलगाना, गति में होना, विदा होकर आना।
चालनी-(हिं. स्त्री.) चलनी, छलनी।
चाल-बाज-(हि. वि.) धूर्त, कपटी, धोखा देनेवाला।
चाल-बाजी-(हिं. स्त्री.) धूर्तता, धोखा।
चाला-(हिं. पुं.) प्रस्थान, प्रस्थान करने का शुभ मुहूर्त; -देखना-यात्रा करने के लिये शुभ मुहूर्त का विचार करना।
चालाक-(फा. वि.) चतुर, धूर्त।
चालाकी-(फा. स्त्री.) चतुराई, धूर्तता।
चालान-(हिं. पुं.) भेजे हुए माल की सूची, बीजक, भेजे हुए माल का ब्योरेवार हिसाब, रवन्ना, अपराधी का विचार के लिये अदालत में भेजा जाना।
चालानदार-(हि. पुं.) जमादार जो चालान के साथ भेजा जाता है।
चालिया-(हि. वि.) धूर्त, छली।
चालिस-(हिं.वि., पुं.) देख 'चालीस'।
चाली-(हिं. वि.) धूर्त, उपद्रवी, नटखट।
चालीस-(हिं.वि., पुं.) तीस और दस की संख्या (का); -वाँ-(वि.) उनतालीस के बाद का।
चालीसा-(हिं. पुं.) चाली सवस्तुओं का समूह, चालीस दिन का समय, चालीस पद्यों का काव्य; (पुं.) मृतक-कर्म में चालीसवें दिन का कृत्य।
चालुक्य-(सं.पुं.) दक्षिण भारत के एक अति प्रतापी प्राचीन राजवंश का नाम।
चाल्ह-(हिं.स्त्री) चेल्हवा नामक मछली।
चाल्ही-(हि. स्त्री.) नाव में खेनेवाले मल्लाह के बैठने का स्थान।
चाव-(हिं.पुं.) अभिलाषा, लालसा, उत्कट इच्छा, अनुराग, प्रेम, चाह, दुलार, प्यार, उमंग, उत्साह, आनंद; -चोचला-(पुं.) लाड़-प्यार, नखरा।
चावड़ी-(हिं. स्त्री.) यात्रियों के ठहरने का स्थान, चट्टी, पड़ाव।
चावल-(हि. पुं.) तण्डुल, धान के भीतर से निकाला हुआ अन्न, रत्ती के आठवें भाग के बराबर का परिमाण।
चाशनी-(हिं. स्त्री.) मिस्री, चीनी अथवा गुड़ का अग्नि पर पकाकर गाढ़ा हुआ रस जिसमें डुबाकर अनेक मिठाइयाँ बनती हैं, थोड़े से मीठे की मिलावट, चसका, नमूने का सोना जो सोनार को गहना बनाने के लिये देनेवाला ग्राहक बने हुए गहने के सोने को मिलाने के लिये अपने पास रख लेता है; (मुहा.) -में पागना-चाशनी में डुबोकर मिठाई तैयार करना।
चाष-(सं. पुं.) नीलकण्ठ पक्षी, चाहा, नेत्र, आँख।
चास-(हि. स्त्री.) खेती।
चासना-(हि.क्रि.स.) खेत जोतना।
चासनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'चाशनी'।
चासा-(हि.पुं.) हलवाहा, किसान, खेतिहर।
चाह-(हिं.स्त्री.) इच्छा, अभिलाषा, प्रीति, प्रेम, आदर, आवश्यकता, समाचार, मर्म, गुप्त भेद, चाय, चाव।
चाहक-(हिं. वि.) चाहनेवाला, प्रेम करनेवाला।
चाहत-(हि. स्त्री.) चाह, प्रेम।
चाहना-(हि. क्रि.स.) प्रेम करना, अभि-

लाषा करना, प्यार करना, इच्छा करना, पाने की इच्छा करना, माँगना, प्रयत्न करना, निहारना, ताकना, खोजना, ढूँढ़ना; (स्त्री.) आवश्यकता, चाह।
चाहा–(हिं. पुं.) एक जलपक्षी जो बगुले के सदृश होता है।
चाहि–(हिं. अव्य.) अपेक्षा, से।
चाहिए–(हिं. अव्य.) उचित है, ठीक है।
चाही–(हिं.वि., स्त्री.) चाही हुई, चहेती, प्यारी, कुएँ के पानी से सींची जानेवाली (भूमि)।
चाहे–(हिं.अव्य.) इच्छा हो, मन में आवे, होवे तो, या तो, होनेवाला हो तो।
चिआँ–(हिं. पुं.) इमली का बीज।
चिआँसी–(हिं वि.) छोटी-सी, नन्हीं-सी।
चिउँटा–(हिं.पुं.) एक काले रंग का कीड़ा जो मीठे (गुड़ आदि) के पास बहुत आता है और उसको जल्दी नहीं छोड़ता; (मुहा.) गुड़ चिउँटा होना–एक-दूसरे से चिमट जाना, सहज में अलग न होना; चिउँटे के पर जमना–ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो।
चिउँटी–(हिं. स्त्री.) चींटी, पिपीलिका; –की चाल–(स्त्री.) अत्यन्त मन्द गति।
चिंगट–(सं. पुं.) झिंगवा या झींगा मछली।
चिंगना–(हिं. पुं.) पक्षी का छोटा बच्चा, छोटा बालक।
चिंगारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चिनगारी'।
चिंगुरना–(हिं. क्रि. अ.) अंग या किसी नस का संकुचित होना या जकड़ना।
चिंगुरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बगला।
चिंघाड़–(हिं. स्त्री.) पशु के चीखने का शब्द, चिल्लाहट, हाथी का शब्द।
चिंघाड़ना–(हिं.क्रि.अ.) चीखना, हाथी का चिल्लाना।
चिंचिनी–(सं. स्त्री.) इमली का वृक्ष या फल।
चिंजा–(हिं. पुं.) पुत्र, बेटा, लड़का।
चिंजी–(हिं. स्त्री.) बेटी, पुत्री।
चिंट–(हिं. पुं.) नाच का एक भेद।
चिंत–(हिं. स्त्री.) चिंता, याद, व्यग्रता।
चिंतक–(सं. वि.) चिंता या चिंतन करनेवाला, मनन करनेवाला।
चिंतन–(सं.पुं.) सोचने या ध्यान करने की क्रिया, मनन, सोचना-विचारना, ध्यान।
चिंतनीय–(सं. वि.) चिंतन करने योग्य, विचारणीय, ध्येय।
चिंता–(सं. स्त्री.) चिंतन, फिक्र, सोच, ध्यान, परवाह।
चिंताजनक–(सं.वि.) चिंताकारक, चिंतित करनेवाला।
चिंतामग्न–(सं. वि.) चिंता में मग्न या खोया हुआ, ध्यानस्थ, विचारमग्न।
चिंतामणि–(सं. स्त्री.) वह कल्पित मणि जो सब कामनाएं पूरी करनेवाली मानी गई हैं; परमेश्वर, सरस्वती का एक मंत्र।
चिंताकुल–(सं. वि.) चिंतामग्न।
चिंतातुर–(सं.वि.) चिंता के कारण उद्विग्न।
चिंतित–(सं. वि.) सोचा हुआ, चिंतामग्न, सोच में पड़ा हुआ।
चिंत्य–(सं. वि.) चिंतन करने योग्य।
चिंदी–(हिं. स्त्री.) टुकड़ा; (मुहा.) –करना–टुकड़े करना; हिंदी की चिंदी निकालना–अशुद्धियाँ करना, कुतर्क करना।
चिंपांजी–(अं.पुं.) अफ्रीका में पाया जानेवाला एक बड़ा डीलडौलवाला वनमानुस।
चिउँटा–(हिं. पुं.) चींटा।
चिउँटी–(हिं.स्त्री.) चींटी; (मुहा.)–की चाल–बहुत मंद या धीमी चाल; –के पर जामना या निकलना–शामत आना, मरने या विनाश का समय सिर पर आना।
चिउड़ा, चिउरा–(हिं. पुं.) हरे धान को कूटकर बनाया हुआ चिपटा चावल, चिड़वा, चूड़ा।
चिउली–(हिं. स्त्री.) महुए की जाति का एक जंगली वृक्ष, एक प्रकार का रंगीन रेशमी वस्त्र, चिकनी सुपारी।
चिक–(हिं. स्त्री.) बाँस आदि की पतली तीलियों का बना परदा; (पुं.) कसाई।
चिकट–(हिं. वि.) मैल जमा हुआ, बहुत मैला; (पुं.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
चिकटना–(हिं. क्रि. अ.) जमी हुई मैल के कारण लसीला होना।
चिकटा–(हिं. वि.) देखें 'चिकट'।
चिकन–(फा. पुं.) उभड़े हुए कशीदेवाला महीन सूती वस्त्र; –कारी, –दोजी–(स्त्री.) चिकन काढ़ने का काम।
चिकना–(हिं. वि.) चिक्कण, जो रूखा न हो, जिस पर से पैर फिसल जावे, स्निग्ध तेल लगा हुआ, स्वच्छ, साफ-सुथरा, मीठी-मीठी बातें करनेवाला, अनुरागी, प्रेमी; (पुं.) स्निग्ध पदार्थ, यथा–तेल, घी, चरबी आदि; (मुहा.) –देख फिसल पड़ना–धन या रंग-रूप देखकर लुब्ध होना; चिकने घड़े पर पानी पड़ना–सदुपदेश का कुछ प्रभाव न पड़ना; –घड़ा–(वि.) निर्लज्ज, बेहया; –चुपड़ा–(वि.) ठाट-बाट बनाये हुए सिंगार किये हुए; चिकनी-चुपड़ी बातें–(स्त्री.) मीठी-मीठी बातें जो धोखा देने के लिये कही जायें; चिकने मुँह का ठग–(पुं.) धूर्त जो देखने में शिष्ट मनुष्य ज्ञात होता है।
चिकनाई–(हिं.स्त्री.) स्निग्धता, चिकनापन।
चिकनाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) चिकना करना, तैल-मर्दन करना, सँवारना, चिकना होना, मोटा होना, अनुरक्त होना, स्नेह-युक्त होना, प्रेमपूर्ण होना, रूखा न होने देना।
चिकनापन–(हिं. पुं.) चिकनाई, चिकनाहट, चिकनावट।
चिकनाह(व)ट–(हिं.स्त्री.) देखें 'चिकनापन'।
चिकनिया–(हिं. वि.) छैला, बाँका, बना-ठना, रँगीला।
चिकनी मिट्टी–(हिं. स्त्री.) लसदार मिट्टी, करैली मिट्टी।
चिकनी सुपारी–(हिं. स्त्री.) खैर के जल में उबाली हुई चिपटी सुपारी।
चिकरना–(हिं.क्रि.अ.) चीखना, चिंघाड़ना, चिल्लाना।
चिकवा–(हिं.पुं.) मांस बेचनेवाला, कसाई।
चिकार–(हिं.पुं.) चीत्कार, चिंघाड़, चीख।
चिकारना–(हिं.क्रि.अ.) चीखना, चिंघाड़ना
चिकारा–(हिं. पुं.) सारंगी की तरह का एक बाजा, हरिन की जाति का एक जंगली पशु।
चिकारी–(हिं.स्त्री.) छोटा चिकारा, एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
चिकित्सक–(सं. पुं.) चिकित्सा या दवा करनेवाला, वैद्य, हकीम, डॉक्टर।
चिकित्सन–(सं. पुं.) चिकित्सा की पद्धति, ढंग आदि।
चिकित्सा–(सं. स्त्री.) रोग दूर करने तथा शरीर को निरोग करने की विधि, रोग-शान्ति का उपाय, वैद्य का व्यवसाय या कार्य।
चिकित्सालय–(सं.पुं.) रोगियों की भली-भाँति चिकित्सा करने का स्थान।
चिकित्सित–(सं.वि.) चिकित्सा किया हुआ
चिकित्स्य–(सं.वि.) चिकित्सा-योग्य, साध्य
चिकिल–(सं.पुं.) कीचड़, पंक।
चिकीर्षा–(सं. स्त्री.) करने की इच्छा।
चिकीर्षित–(सं. वि.) जिसे करने की इच्छा या कामना की गई हो।
चिकीर्षु–(सं.वि.) करने की इच्छा रखनेवाला।
चिकुटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चुटकी'।
चिकुर–(सं. पुं.) सिर के बाल, केश, पर्वत, रेंगनेवाले जन्तु, छछूँदर, गिलहरी; (वि.) चपल, चंचल।
चिकोटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चुटकी'।
चिक्क–(सं. पुं.) छछूँदर; (वि.) चिपटी नाकवाला।
चिक्कट–(हिं.पुं.) तेल आदि की या गर्द की जमी हुई मैल, कीट; (वि.) मैला-कुचैला।

चिक्कण–(सं.वि.) चिकना; (पुं.) सुपारी का वृक्ष या फल।
चिक्कणा–(सं. स्त्री.) सुपारी।
चिक्कन–(हिं. वि.) चिक्कण, चिकना।
चिक्करना–(हिं. क्रि. अ.) चिंघाड़ना।
चिक्कस–(सं.पुं.) जव का आटा, वुलवुल के बैठने का लोहे, पीतल आदि का वना हुआ अड्डा।
चिक्का–(सं. स्त्री.) सुपारी, चूहा; (हिं. पुं.) चक्का।
चिक्कार–(हिं. पुं.) देखें 'चिकार'।
चिक्कारा–(हिं. पुं.) देखें 'चिकारा'।
चिखना–(हिं. पुं.) चाट।
चिखर–(हिं.पुं.) चने का छिलका या भूसी।
चिखुरन–(हिं. स्त्री.) घास जो खेत से निराकर निकाली जाती है।
चिखुरना–(हिं.क्रि.स.) जोते हुए खेत में से घास-पात हटाना।
चिखुरा–(हिं. पुं.) गिलहरी।
चिखुरी–(हिं. स्त्री.) मादा गिलहरी।
चिखौनी–(हि.स्त्री.) स्वाद लेने की क्रिया, स्वाद लेने की वस्तु, स्वाद की थोड़ी-सी वस्तु।
चिचड़ा–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसकी जड़ तथा पत्तियाँ औषधों में प्रयुक्त होती है, अपामार्ग, लटजीरा, एक कोड़ा जो चौपायों के शरीर में चिपटकर उनका लोहू चूसता है, किलनी।
चिचड़ी–(हिं. स्त्री.) किलनी, कुकुरौंछी, अपामार्ग।
चिचान–(हिं. पुं.) श्येन, वाज पक्षी।
चिचाना–(हिं. क्रि. अ.) चिचियाना।
चिंचिगा–(हिं. पुं.) देखें 'चिंचिडा'।
चिंचिडा–(हिं.पुं.) एक लता जिसमें लंवे फल लगते हैं और जिसकी तरकारी वनती है, चिचड़ा।
चिचियाना–(हिं.क्रि.अ.) चिल्लाना, चीखना।
चिचियाहट–(हिं.स्त्री.) देखें 'चिल्लाहट'।
चिचुकना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'चुचुकना'।
चिचोड़ना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'चचोड़ना'।
चिजारा–(हिं. पुं.) राजगीर, मेमार।
चिट–(हिं. स्त्री.) कागज, कपड़े आदि के छोटे टुकड़े।
चिटकना–(हिं.क्रि.अ.) रूक्षता या ताप से ऊपरी तल पर दरार होना, गँठीली लकड़ी का जलते समय चिट-चिट करना, चिढ़ना, विगड़ना।
चिटकाना–(हिं.क्रि.स.) किसी सूखे पदार्थ को तोड़ना या तड़काना, खिजलाना, चिढ़ाना।
चिटनवीस–(हिं. पुं.) चिट्ठी-पत्री, हिसाव-किताव लिखनेवाला लिपिक।
चिटुकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चुटकी'।
चिट्टा–(हिं. स्त्री.) देखें 'चिट'।
चिट्टा–(हिं. पुं.) झूठा वढ़ावा, किसी को कोई कार्य करने के लिये ऐसी उत्तेजना देना जिससे उसकी हानि हो; (मुहा.) –लड़ाना–उत्तेजना देना, वढ़ावा देना।
चिट्ठा–(हिं. पुं.) हिसाव का वही-खाता, साल भर का हिसाव-किताव का लेखा, सूची, खर्च का विवरण, व्योरा, वेतन या मजदूरी; (मुहा.) –वाँधना–लेखा तैयार करना; कच्चा चिट्ठा–(पुं.) विस्तारपूर्वक वर्णन जिसमें कोई वात न छिपाई गई हो।
चिट्ठी–(हिं. स्त्री.) कागज की वह टुकड़ी जिसमें कहीं भेजने के लिये समाचार इत्यादि लिखा हो, माल का दाम लिखा हुआ पुरजा, छोटा कागज का टुकड़ा जिस पर कुछ लिखा हो, आज्ञापत्र, निमन्त्रण-पत्र, किसी वस्तु आदि के अधिकार का निर्णय करने के लिये लोगों के नाम अलग-अलग छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर, इनको मोड़कर और गोली वनाकर किसी वालक से एक गोली उठवाली जाती है और जिसके नाम की गोली उठती है वह व्यक्ति कोई निर्दिष्ट वस्तु या धन पाता है; -पत्री–(स्त्री.) पत्रव्यवहार; –रसाँ–(पुं.) चिट्ठी वाँटनेवाला डाकिया।
चिड़चिड़ा–(हिं. पुं.) चिचड़ा, अपामार्ग, एक भूरे रंग का छोटा पक्षी; (वि.) थोड़ी-सी वात पर अप्रसन्न होनेवाला, जल्दी चिढ़नेवाला।
चिड़चिड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) गीली लकड़ी का जलते समय चिट-चिट शब्द करना, सूखकर फट जाना, चिढ़ना, झुंझलाना।
चिड़चिड़ापन–(सं. पुं.) चिढ़ने का स्वभाव या प्रवृत्ति।
चिड़चिड़ाहट–(हिं. स्त्री.) चिढ़ने की क्रिया या भाव।
चिड़वा–(हिं. पुं.) हरे धान को कूटकर चिपटा किया हुआ दाना, चिउड़ा।
चिड़ा–(हिं. पुं.) चटक, गौरैया पक्षी।
चिड़िया–(हिं. स्त्री.) पक्षी, आकाश में उड़नेवाला जीव, पंछी, पखेरू, चिड़िया के आकार का लकड़ी का टुकड़ा जो लँगड़ों की टेकने की वैसाखी पर जड़ा रहता है, ताश में चिड़ी के पत्ते, तराजू की डंडी में लगा हुआ लोहे का टुकड़ा; (मुहा.) –का दूध–अलभ्य पदार्थ; सोने की चिड़िया–अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति, खूव धन देनेवाला असामी; –खाना–(पुं.) वह स्थान जिसमें नाना प्रकार के पशु-पक्षी देखने के लिये पाले जाते हैं; –वाला–(पुं.) मूर्ख, जड़, निर्वुद्धि।
चिड़िहार, चिड़ीमार–(हिं. पुं.) वहेलिया, व्याध।
चिड़ी–(हिं. स्त्री.) चिड़िया, ताश का एक रंग।
चिढ़–(हिं. स्त्री.) क्रोध सहित अप्रसन्नता, कुढ़न, खिजलाहट, विरक्ति; (मुहा.) –निकालना–कुढ़ाना, खिजलाने या चिढ़ाने का ढंग निकालना।
चिढ़कना–(हिं. क्रि.अ.) देखें 'चिढ़ना'।
चिढ़काना–(हिं.क्रि.स.) देख 'चिढ़ाना'।
चिढ़ना–(हिं.क्रि.अ.) अप्रसन्न होना, कुढ़ना, विरक्त होना, झल्लाना, वुरा मानना, द्वेष करना।
चिढ़वाना–(हिं. क्रि. स.) चिढ़ाने का काम दूसरे से कराना।
चिढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) अप्रसन्न करना, कुढ़ाना, खिझाना, कुपित और खिन्न करना, किसी को खिझाने के लिये मुँह वनाना, हाथ चमकाना या और किसी प्रकार की चेष्टा करना, उपहास करना, ठट्ठा करना; (मुहा.) मुँह चिढ़ाना–किसी को कुढ़ाने या खिझाने के लिये मुँह की व्यंग्यपूर्ण आकृति वनाना।
चित्–(सं. स्त्री.) चेतना, ज्ञान, चित्तवृत्ति, अग्नि; (पुं.) संस्कृत का अनिश्चयसूचक शब्द।
चित–(सं. वि.) इकट्ठा या ढेर किया हुआ, ढका हुआ; (हिं. पुं.) चित्त, चितवन, दृष्टि; (हिं.वि.) पीठ के वल पड़ा हुआ, उत्तान; (मुहा.)–करना–मल्लयुद्ध में पटकना; चित-पट करना–तै कर डालना, निपटा देना; –होना–अचेत होना; चारों खाने चित–हाथ पैर फैलाये हुए पीठ के वल पड़ा हुआ, हक्का-वक्का, वेहोश।
चितकवरा–(हिं.वि.) रंग-विरंगा, कवरा, चितला।
चितकूट–(हिं. पुं.) देखें 'चित्रकूट'।
चितचोर–(हिं. पुं.) चित्त को चुरानेवाला, मन को लुभानेवाला, प्यारा, प्रिय, मनोहर।
चितपट–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध।
चितभंग–(हिं. पुं.) ध्यान न लगना, उदासी, मतिभ्रम, वुद्धि का नाश मन, का ठिकाने न रहना।
चितरनहार–(हिं. पुं.) चित्रण करनेवाला।
चितरना–(हिं. क्रि. स.) चित्र वनाना, नकाशी करना।
चितरवा–(हिं. पुं.) चित्रक पक्षी, एक

प्रकार की लाल चिड़िया।
चितला–(हिं. वि.) चितकबरा, रंग-बिरंगा, एक प्रकार का लखनौवा खरबूजा, एक प्रकार की मछली।
चितवन–(हिं. स्त्री.) देखने का ढंग, दृष्टि, कटाक्ष; (मुहा.)–चढ़ाना–भौं चढ़ाना।
चितवना–(हिं.क्रि.स.) दृष्टि डालना, देखना।
चितवनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'चितवन'।
चितवाना–(हिं.क्रि.स.) दिखाना, तकाना।
चिता–(सं. स्त्री.) लकड़ी का ढेर जिस पर शव जलाया जाता है, श्मशान, मरघट; (मुहा.)–पर चढ़ना–सती होना।
चिताना–(हिं. क्रि. स.) सचेत करना, सावधान करना, किसी ओर चित्त आकर्षण करना, स्मरण कराना, याद दिलाना, जलाना, आग सुलगाना।
चिताभूमि–(सं. स्त्री.) श्मशान।
चितारोहण–(सं. पुं.) सती होने के लिए चिता पर चढ़ना।
चितावनी–(हिं. स्त्री.) सावधान करने की क्रिया, पहिले से सावधान होने के लिये कही गयी बात।
चिति–(सं. स्त्री.) चिता, ढेर, संग्रह, एकत्र करने का कार्य, यज्ञ में अग्नि का एक संस्कार, ईंटों की जोड़ाई, चैतन्य, दुर्गा।
चितिका–(सं. स्त्री.) मेखला, करधनी।
चितिव्यवहार–(सं. पुं.) गणित द्वारा घर में लगी हुई ईंटों की संख्या निकालने की विधि।
चितु–(हिं. पुं.) देखें 'चित्त'।
चितेरा–(हिं.पुं.) चित्रकार, चित्र बनानेवाला।
चितेरिन, चितेरी–(हिं. स्त्री.) चित्र बनानेवाली स्त्री, चित्रकार की पत्नी।
चितेला–(हिं. पुं.) देखें 'चितेरा'।
चितौन, चितौनि–(हिं.स्त्री.) देखें 'चितवन'।
चित्कार–(हिं. पुं.) देखें 'चीत्कार'।
चित्त–(सं. पुं.) अंतःकरण की एक वृत्ति, जी, मन; (मुहा.)–उचटना–मन न लगना; –करना–जी चाहना; –चोराना–मोहित करना; –देना–ध्यान लगाना; –धरना–ध्यान देना; –बँटना–चित्त एकाग्र न रहना; –बँटाना–ध्यान एक ओर न रहना; –लगना–जी चाहना; –से उतरना–भूल जाना; –होना–इच्छा करना।
चित्तज–(सं. पु.) चित्त से उत्पन्न, कामदेव।
चित्तभू–(सं. पु.) कामदेव।
चित्तभूमि–(सं. स्त्री.) योग में चित्त की पाँच अवस्थाएँ–क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।
चित्तल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हरिन, चीतल।
चित्तवान्–(सं. वि.) उदार चित्त का।
चित्तविक्षेप–(सं. पुं.) मन की चंचलता या अस्थिरता।
चित्तविप्लव–(सं. पुं.) उन्माद।
चित्तविभ्रम–(सं.पुं.) भ्रम, भ्रान्ति, उन्माद।
चित्तवृत्ति–(सं. स्त्री.) चित्त की गति, चित्त की अवस्था।
चित्ताकर्षक–(सं. वि.) मन को आकर्षण करने या लुभानेवाला।
चित्तापहारक–(सं. वि.) रुचिर, सुन्दर, मनोहर।
चित्ति–(सं. स्त्री.) ख्याति, बुद्धि।
चित्ती–(हिं. स्त्री.) छोटा धब्बा या चिह्न, बुंदकी, मादा लाल पक्षी, अजगर की जाति का एक प्रकार का मोटा साँप, कुम्हार के चाक का गड्ढा जिसमें डंडा डालकर यह घुमाया जाता है, चिपटी पीठ की कौड़ी; (क्रि. प्र.) –पड़ना–काले धब्बे पड़ना।
चित्तौर–(हिं.पुं.) उदयपुर के महाराजाओं की प्राचीन राजधानी।
चित्य–(सं.वि.) चिता संबंधी; (पुं.) अग्नि।
चित्र–(सं. पुं.) मस्तक पर चन्दन आदि से लगाया हुआ चिह्न, तिलक, कागज, कपड़े आदि पर अनेक रंगों के मेल से बनी हुई आकृति, काव्य के तीन अंगों में से एक, पदों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाने की विधि जिससे हाथी, घोड़ा, रथ आदि का आकार बन जावे, एक प्रकार का वर्णवृत्त, आकाश, एक प्रकार का कुष्ठ रोग, चित्रगुप्त, अशोक का वृक्ष; (वि.) अद्भुत, विलक्षण, आश्चर्यजनक, रंग-बिरंगा, चितकबरा, अनेक प्रकार का; (क्रि.प्र.)–उतारना–चित्र बनाना; –कंठ–(पुं.) कपोत, कबूतर; –क–(पुं.) चीते का वृक्ष, चित्त, व्याघ्र, चिरायता, शूरवीर, चित्रकार; –कर–(पुं.) चित्रकार; –कर्मा–(पुं.) चित्रकार; –कला–(स्त्री.) चित्र बनाने की विद्या; –कार–(पुं.) चित्र बनानेवाला; –कारी–(हिं.स्त्री.) चित्रविद्या, चित्र बनाने की कला, चित्र बनाने का व्यवसाय; –काव्य–(पुं.) एक प्रकार का काव्य जिसके चरणों को क्रम से लिखने पर कोई विशेष चित्र बन जाता है; –कुंडल–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –कूट–(पुं.) एक पर्वत जिसपर सीता और राम ने वनवास के समय बहुत दिनों तक निवास किया था; –केतु–(पुं.) लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम; –कोण–(पुं.) कुटकी नामक औषधि; –गंध–(पुं.) हरताल; –गुप्त–(पुं.) चौदह यमदूतों में से एक जो प्रत्येक प्राणी के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं; –घंटा–(स्त्री.) नव दुर्गाओं में से एक का नाम; –चाप–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –जल्प–(पुं.) वे अभिमानपूर्ण वाक्य जो नायक और नायिका रूठकर आपस में कहते हैं; –तंडुल–(पुं.) वायविड़ंग; –ताल–(पुं.) संगीत में एक प्रकार का चौताला ताल; –तैल–(पुं.) रेंड़ी का तेल; –देव–(पुं.) कार्तिकेय का अनुचर; –धाम–(पुं.) अनेक रंगों से भरा हुआ सर्वतोभद्र नामक चौखूंटा चक्र; –नेत्रा–(स्त्री.) सारिका, मैना; –पक्ष–(पुं.) तित्तिर पक्षी, तीतर; –पट–(पुं.) रजत-पट, कागज या कपड़े का टुकड़ा जिसपर चित्र बनाया जाता है; –पत्र–(पुं.) आँख की पुतली के पीछे मस्तिष्क का वह भाग जिसपर दिखाई देनेवाले पदार्थों का प्रतिबिम्ब पड़ता है; (वि.) रंग-बिरंगे परोंवाला; –पदा–(स्त्री.) एक प्रकार का छन्द, सारिका, मैना, लजालू या छुईमुई नामक पौधा; –पर्णी–(स्त्री.) मजीठ, जलपिप्पली; –पादा–(स्त्री.) सारिका, मैना; –पिच्छक–(पुं.) मयूर, मोर; –पुंख–(पुं.) वाण, तीर; –पुट–(पुं.) एक प्रकार का छताला ताल; –पुष्प–(पुं.) एक प्रकार की घास; –पृष्ठ–(पुं.) चटक, गौरैया पक्षी; –फल–(पुं.) एक प्रकार की मछली, तरबूज; –फला–(स्त्री.) ककड़ी, बैंगन, भटकटैया; –बर्हं–(पुं.) मयूर, मोर; –भानु–(पुं.) अग्नि, सूर्य, मंदार का वृक्ष, भैरव, अश्विनीकुमार, एक युग का नाम; –मद–(पुं.) नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रियतम का चित्र देखकर विरह-भाव दिखलाना; –मृग–(पुं.) चितकबरा हिरन; –मेखल–(पुं.) मयूर, मोर; –योग–(पुं.) वृद्ध को युवा अथवा युवा को वृद्ध या नपुंसक बनाने की कला; –योधी–(वि.) विचित्र युद्ध करनेवाला; (पुं.) अर्जुन, अर्जुन नामक वृक्ष; –रथ–(पुं.) सूर्य, एक गन्धर्व का नाम, श्रीकृष्ण के एक पौत्र का नाम; –रेखा–(स्त्री.) वाणासुर की कन्या उषा की एक सहेली का नाम; –ल–(वि.) रंग-बिरंगा, चितकबरा; –लिखन–(पुं.) सुन्दर अक्षरों की लिखावट, चित्र बनाने का कार्य; –लेखनी–(स्त्री.) चित्र बनाने की लेखनी

या कूँची; –लेखा–(स्त्री.) देखें 'चित्र-रेखा', एक अप्सरा का नाम, तसवीर वनाने की कूँची, एक वर्णवृत्त का नाम; –लोचना–(स्त्री.) सारिका, मैना; –वर्मा–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –विचित्र–(वि.) रंग-विरंगा, अनेक रंगों का, वेल-वूटेदार; –विद्या–(स्त्री.) चित्र वनाने की कला या विद्या; –शाला–(स्त्री.) वह घर जहाँ चित्र वनाये जाते हों अथवा विकने या देखने के लिये रखे हों; –शिखंडी–(पुं.) सप्त ऋपियों के नाम जो–मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु और वसिष्ठ हैं; –शिर–(पुं.) एक गन्धर्व का नाम; –संग–(पुं.) सोलह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त; –सारी–(हिं. स्त्री.) वह कमरा जिसमें चित्र टँगे हों, विलास-भवन, सजा हुआ सोने का कमरा; –सेन–(पुं.) एक गन्धर्व का नाम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –हस्त–(पुं.) शस्त्र से आक्रमण करने का एक हाथ।

चित्रना–(हिं. क्रि. स.) चित्र वनाना।

चित्रांग–(सं. वि.) जिसका अंग चित्र-विचित्र हो, जिससे अङ्ग पर धारियाँ या चित्तियाँ हों; (पुं.) चित्रक नाम की औषधि, ईंगुर, हरताल।

चित्रांगद–(सं. पुं.) राजा शान्तनु के एक पुत्र का नाम जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

चित्रांगदा–(सं. स्त्री.) चित्रवाहन की पुत्री जो अर्जुन को व्याही थी, रावण की एक स्त्री का नाम।

चित्रांगी–(सं. स्त्री.) मजीठ, कनखजूरा नामक कीड़ा।

चित्रा–(हिं. स्त्री.) सत्ताईस नक्षत्रों में से चौदहवाँ नक्षत्र, दन्ती नामक वृक्ष, चित-कवरी गाय, सुभद्रा, वायविडंग, अज-वाइन, एक अप्सरा का नाम, संगीत में मूर्छना, एक रागिणी का नाम, पन्द्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, प्राचीन काल का तार का एक प्रकार का वाजा, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।

चित्राक्ष–(सं. वि.) विचित्र अथवा सुन्दर नेत्रोंवाला।

चित्राक्षी–(सं. स्त्री.) सारिका, मैना।

चित्राटीर–(सं. पुं.) चन्द्रमा, शिव के एक अनुचर का नाम।

चित्रायुध–(सं. पुं.) विलक्षण अस्त्र।

चित्रावसु–(सं. स्त्री.) नक्षत्रों से मंडित रात्रि।

चित्रिक–(सं. पुं.) चैत का महीना।

चित्रिणी–(सं. स्त्री.) स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

चित्रित–(सं. वि.) चित्र द्वारा दिखलाया हुआ, चित्र वना हुआ, जिस पर वेल-वूटे वने हों या नकाशी हो, जिस पर धारियाँ या चित्तियाँ हों।

चित्री–(सं. वि.) चित्रयुक्त, चितकवरा।

चित्रीकरण–(सं. पुं.) चित्रण करने की क्रिया, चित्रित करना।

चित्रेश–(सं. पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा।

चित्रोक्ति–(सं. स्त्री.) अलंकारिक भाषा में वर्णन।

चित्रोत्तर–(सं. पुं.) वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न के शब्दों में उत्तर हो अथवा अनेक प्रश्नों का उत्तर एक ही में हो।

चित्र्य–(सं. वि.) पूज्य, इकट्ठा करने योग्य।

चियड़ा–(हिं. पुं.) फटा-पुराना वस्त्र, लत्ता, कपड़े की धज्जी; (मुहा.) –लपेटना–फटे-पुराने वस्त्र पहिनना।

चियाड़ना–(हिं. क्रि. स.) चीरना, फाड़ना, धज्जी करना, टुकड़े-टुकड़ करना, लज्जित करना।

चिदाकाश–(सं. पुं.) परम ज्ञानस्वरूप परमेश्वर।

चिदात्मा–(सं. पुं.) चैतन्य रूप परब्रह्म।

चिदानंद–(सं. पुं.) चैतन्य और आनन्द-रूप परब्रह्म।

चिदाभास–(सं. पुं.) चैतन्यरूप परब्रह्म का आभास या वोध जो मनुष्य के अन्तःकरण में होता है, जीवात्मा।

चिद्रूप–(सं. पुं.) ज्ञानमय परब्रह्म।

चिद्विलास–(सं. पुं.) चैतन्य रूप ईश्वर की माया, शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम।

चिन–(हिं. पुं.) एक वहुत वड़ा पहाड़ी वृक्ष, एक घास जिसको चौपाये वड़ी रुचि से खाते हैं।

चिनक–(हिं. पुं.) जलनयुक्त पीड़ा, चुन-चुनाहट।

चिनगटा–(हिं. पुं.) चिथड़ा।

चिनगारी–(हिं. स्त्री.) जलती हुई अग्नि का छोटा कण, स्फुलिङ्ग, अग्निकण; (मुहा.) आँखों से चिनगारी छूटना–क्रोध के कारण आँखें लाल होना; –छोड़ना–ऐसी वात कहना जिससे कोई झगड़ा खड़ा हो जावे; –डालना–आग लगाना, झगड़ा लगाना।

चिनगी–(हिं. स्त्री.) चिनगारी; (पुं.) चतुर वालक, नट के साथ का लड़का।

चिनना–(हिं. क्रि. स.) भीत उठाना, चुनना।

चिनाना–(हिं. क्रि. स.) विनवाना, चुन-वाना, ईंट की जोड़ाई कराना।

चिनिया–(हिं. वि.) चीनी के रंग का, सफेद, चीन देश का, चीनी; –केला–(पुं.) छोटी जात का वहुत मीठा केला; –घोड़ा–(पुं.) वह घोड़ा जिसके चारों पैर श्वेत हों और शरीर में लाल और श्वेत धव्वे हों; –वादाम–(पुं.) मूँगफली।

चिन्न–(सं. पुं.) चणक, चना।

चिन्मय–(सं. वि.) ज्ञानमय; (पुं.) परमेश्वर।

चिन्ह–(हिं. पुं.) देखें 'चिह्न'।

चिन्हवाना, चिन्हाना–(हिं. क्रि. स.) परिचित कराना, पहिचनवाना, ठीक-ठीक लक्षण वतला देना।

चिन्हाटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चिह्नानी'।

चिन्हानी–(हिं. स्त्री.) पहिचान, लक्षण, चिह्नाने की वस्तु, स्मारक, चिह्न, धारी, लकीर।

चिन्हार–(हिं. वि.) परिचित, जिससे जान-पहिचान हो, जान-पहिचान का।

चिन्हारी–(हिं. स्त्री.) परिचय।

चिन्हित–(हिं. वि.) देखें 'चिह्नित'।

चिपकना–(हिं. क्रि. अ.) दो पदार्थों का परस्पर जुटना या सटना, चिमटना, लिपटना, व्यवसाय में लगना, स्त्री-पुरुष का परस्पर प्रेम में फँसना।

चिपकाना–(हिं. क्रि. स.) दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना या सटाना, चिमटाना, लिपटाना, आलिङ्गन करना, काम-धंधे में लगाना।

चिपचिप–(हिं. पुं.) लसदार वस्तु के छूने से चिपकने का शव्द या अनुभव।

चिपचिपा–(हिं. वि.) लसदार, लसीला, चिपकनेवाला।

चिपचिपाना–(हिं. क्रि. अ.) लसदार ज्ञात होना, छूने से चिपचिपा मालूम होना।

चिपचिपाहट–(हिं. स्त्री.) लसलसाहट, चिपचिपा होना।

चिपटना–(हिं. क्रि. अ.) चिपकना, चिम-टना, सटना।

चिपटा–(हिं. वि.) जिसका कोई भाग उभड़ा न हो, जिसका तल या स्तर दवा हुआ तथा वरावर फैला हो।

चिपटाना–(हिं. क्रि. स.) चिपकाना, सटाना, लिपटाना, आलिंगन करना, चिपटा करना।

चिपटी–(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'चिपटा'; (स्त्री.) एक प्रकार की कान में पहिनने

की ताली, भग, योनि; (मुहा.) -खेलना-कामातुर होकर दो स्त्रियों का परस्पर योनि से योनि घिसना।
चिपड़ा-(हि. वि.) जिसकी आँख से अधिक कीचड़ निकलता हो।
चिपड़ी, चिपरी-(हि. स्त्री.) गोबर को पाथकर सुखाये हुए टुकड़े, उपली, गोहरी।
चिपिट, चिपिटक-(हि. वि., पुं.) चिपटी नाक का (मनुष्य), चिड़वा।
चिपीटक-(सं. पुं.) चिउड़ा, चिडवा।
चिप्प-(सं.पुं.) एक प्रकार का नख का रोग।
चिप्पड़-(हि. पुं.) छाल आदि का छोटा चिपटा टुकड़ा, पपड़ी, छीलकर निकाला हुआ टुकड़ा।
चिप्पिका-(सं. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
चिप्पी-(हि. स्त्री.) देखें 'चिप्पड़'।
चिबिल्ला-(हि. वि.) देखें 'चिलबिला'।
चिबुक-(सं. पुं.) ठुड्डी, ठोड़ी।
चिमगादड़-(हि. पुं.) देखें 'चमगादड़'।
चिमटना-(हि. क्रि. अ.) चिपकना, सटना, लिपटना, आलिंगन करना, गुथना, कसकर पकड़ना, पीछा न छोड़ना, पीछे पड़ना।
चिमटवाना-(हि. क्रि. स.) चिमटाने का काम दूसरे से कराना।
चिमटा-(हि. पुं.) धातु की दो पट्टियों से बना हुआ औजार जो जलते हुए अंगारे इत्यादि उठाने के काम आता है।
चिमटाना-(हि. क्रि. स.) सटाना, आलिंगन करना, लिपटाना, चिपकाना।
चिमटी-(हि.स्त्री.) छोटा चिमटा, सोनारों का तार इत्यादि मोड़ने का उपकरण।
चिमड़ा-(हि. वि.) देखें 'चीमड़'।
चिमनी-(अं. स्त्री.) इंजन, मकान, कारखाने आदि में से धुआँ बाहर निकालनेवाली नली, लालटेन में की छेददार बनावट।
चिमोटा-(हि. पुं.) देखें 'चमोटा'।
चिरंजीव-(सं. वि.) चिरंजीवी, अनेक वर्षों तक जीवित रहनेवाला; (पुं.) आशीर्वाद का शब्द।
चिरंजीवी-(हि. वि.) देखें 'चिरंजीव'।
चिरंटी-(हि. स्त्री.) पिता के घर रहनेवाली अधिक वय की कन्या, युवती।
चिरंतन-(सं. वि.) पुरातन, बहुत दिनों का पुराना।
चिर-(सं. वि.) बहुत दिनों तक रहनेवाला, दीर्घ, चिराय; (अव्य.) अधिक समय तक; (पुं.) तीन मात्राओं का एक गण जिसका पहिला वर्ण लघु हो।
चिरई-(हि. स्त्री.) चिड़िया, पक्षी।
चिरकढांस-(हि. स्त्री.) हमेशा रोगी रहने की अवस्था।
चिरकना-(हि. क्रि. अ.) कई बार थोड़ा-थोड़ा करके मल निकलना।
चिरकांक्षित-(सं. वि.) जिसकी चाह या कामना बहुत दिनों से मन में हो।
चिरकारी-(सं. वि.) दीर्घसूत्री, सब कामों में देर करनेवाला।
चिरकाल-(सं.पुं.) दीर्घकाल, बहुत समय।
चिरकालिक, चिरकालीन-(सं. वि.) बहुत दिनों का, सदा बना रहनेवाला।
चिरकुट-(हि. पुं.) फटा-पुराना वस्त्र, गूदड़, चिथड़ा।
चिरकुमार-(सं. वि.) आजीवन अविवाहित रहनेवाला।
चिरक्रियता-(सं. स्त्री.) दीर्घसूत्रता।
चिरक्रिया-(सं. वि.) दीर्घसूत्री, काम में विलम्ब करनेवाला।
चिरचना-(हि. क्रि. अ.) चिड़चिड़ाना।
चिरचिटा-(हि.पुं.) चिचड़ा, अपामार्ग।
चिरचिरा-(हि. वि.) देखें 'चिड़चिड़ा'।
चिरजीवक-(सं. वि.) देखें 'चिरजीवी'।
चिरजीवी-(सं.वि.) दीर्घजीवी, बहुत दिनों तक जीनेवाला, अमर; (पुं.) विष्णु, कौवा, मार्कण्डेय ऋषि, सेमल का वृक्ष।
चिरत्न-(सं.वि.) पुरातन, प्राचीन, पुराना।
चिरना-(हि.क्रि.अ.) फटना, एक सीध या लकीर में कटना, लकीर की तरह फटना; (पुं.) चीरने का अस्त्र।
चिरनिद्रा-(सं. स्त्री.) महानिद्रा, मृत्यु।
चिरनूतन-(सं.वि.) जो सदा नूतन बना रहे।
चिर-परिचित-(सं. वि.) बहुत दिनों का परिचित।
चिरपाकी-(सं. पुं.) कपित्थ, कैथ।
चिरपुष्प-(सं. पुं.) मौलसिरी, बकुल।
चिरपोषित-(सं. वि.) चिरकांक्षित।
चिर-प्रचलित-(सं. वि.) बहुत दिनों से प्रचलित।
चिरवत्ती-(हि.वि.) टुकड़ा-टुकड़ा; (क्रि. प्र.) -कर देना-फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करना।
चिरमिटी-(हि. स्त्री.) गुंजा, घुंघची।
चिर-रोगी-(सं.वि.) बहुत दिनों का रोगी।
चिरवल-(हि. पुं.) एक पौधा जिसकी जड़ की छाल से सुन्दर लाल रंग निकलता है।
चिरवाई-(हि. स्त्री.) चीरने या चिरवाने का कार्य या पारिश्रमिक।
चिरवाना-(हि.क्रि.स.) फड़वाना, चीरने का कार्य दूसरे से कराना।
चिर-विरह-(सं. पुं.) चिरकाल से बना हुआ विरह।
चिर-विस्मृत-(सं. वि.) बहुत दिनों का भूला हुआ।
चिर-वैर-(सं. पुं.) पुरानी दुश्मनी।
चिर-शत्रु-(सं. पुं.) पुराना शत्रु।
चिर-शत्रुता-(सं. स्त्री.) चिर-वैर।
चिर-शांति-(सं. स्त्री.) स्थायी शांति।
चिर-संगी-(सं. पुं.) सदा का साथी।
चिरस्थायी-(सं. वि.) बहुत दिनों या चिर काल तक ठहरनेवाला।
चिरस्मरणीय-(सं. वि.) बहुत दिनों तक याद रखने योग्य, प्रशंसा-योग्य, पूजनीय।
चिरहँटा-(हि. पुं.) चिड़ीमार, व्याध, बहेलिया।
चिराँदा-(हि. वि.) थोड़ी-सी बात पर चिढ़नेवाला।
चिराइता-(हि. पुं.) देखें 'चिरायता'।
चिराइन-(हि. स्त्री.) चिरायँध।
चिराई-(हि. स्त्री.) चीरने की क्रिया या मजदूरी, चिरवाई।
चिराक-(हि. पुं.) देखें 'चिराग'।
चिराग-(फा. पुं.) दीया, दीपक; -जले-(अव्य.) दीया लगने के बाद।
चिराग-दान-(फा. पुं.) दीया रखने का आधान, दीपाधार।
चिरागी-(फा. स्त्री.) कब्र, मस्जिद आदि में दीया जलाने की क्रिया का खर्च, मजार पर चढ़ाई जानेवाली भेंट।
चिरातन-(हि. वि.) फटा-पुराना।
चिराद-(सं. पुं.) गरुड़, बत्तक की जाति का एक पक्षी।
चिरान-(हि. पुं.) चीरी हुई लकड़ी, चीरने की क्रिया।
चिराना-(हि. क्रि. स.) चिरवाना।
चिरायँध-(हि. स्त्री.) चमड़े, बाल आदि के जलने से उत्पन्न दुर्गन्ध; (मुहा.) -फैलाना-बदनाम करना।
चिरायता-(हि. पुं.) एक कड़ुआ पौधा जो औषध में प्रयोग होता है।
चिरायु-(सं. वि.) अधिक वय का, दीर्घायु, बहुत दिनों तक जीनेवाला।
चिरारी-(हि. स्त्री.) चिरौंजी का वृक्ष।
चिराव-(हि. पुं.) चीरने का भाव या क्रिया, चीरने से उत्पन्न घाव या क्षत।
चिरिया-(हि. स्त्री.) चिड़िया, पक्षी।
चिरिहार-(हि. पुं.) व्याध, बहेलिया।
चिरी-(हि. स्त्री.) देखें 'चिड़िया'।
चिरु-(सं.पुं.) कन्धे और बाँह का जोड़, मोढ़ा।

चिरैता–(हिं. पुं.) देखें 'चिरायता'।
चिरैया–(हिं. स्त्री.) देखें 'चिड़िया'।
चिरौंटा–(हिं. पुं.) गौरैया पक्षी।
चिरौंजी–(हिं. स्त्री.) पियाल नामक वृक्ष के फलों के बीज की गिरी।
चिरौरी–(हिं. स्त्री.) दीनतापूर्ण विनती।
चिर्भटी–(सं. स्त्री.) ककड़ी।
चिलक–(हिं. स्त्री.) द्युति, कान्ति, आभा, झलक, चमक, टीस, रह-रहकर होनेवाली पीड़ा।
चिलकना–(हिं.क्रि.अ.) रह-रहकर पीड़ा होना, चमकना, चमचमाना।
चिलका–(हिं. पुं.) चमकता हुआ चाँदी का रुपया।
चिलकाना–(हिं.क्रि.स.) चमकाना, माँजकर सफेद करना।
चिलचिल–(हिं. पुं.) अभ्रक, अबरख।
चिलचिलाना–(हिं. क्रि. अ.) चमकना।
चिलड़ा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्वान्न, उलटा।
चिलता–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कवच।
चिलविल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
चिलबिला, **चिलबिल्ला**–(हिं. वि.) चपल, चंचल।
चिलम–(फा. स्त्री.) मिट्टी या धातु का कटोरीनुमा नलीदार पात्र जिसपर तंबाकू जलाकर धुआँ पीते हैं।
चिलमचट–(हिं. वि.) अधिक तमाकू पीनेवाला, चिलम पर का सब तमाकू पी जानेवाला।
चिलमची–(फा. स्त्री.) देग के आकार का एक पात्र या बरतन।
चिलमिलिका–(सं. स्त्री.) गले में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण, जुगनू, बिजली।
चिलमीलिका–(सं. स्त्री.) खद्योत, जुगनू, बिजली।
चिलवाँस–(हिं. पुं.) चिड़ियों को फँसाने का एक प्रकार का फन्दा।
चिल्लड़–(हिं. पुं.) पसीने से गंदे कपड़ों में पड़नेवाला जूँ की तरह का एक सफेद कीड़ा।
चिल्ल-पों–(हिं. स्त्री.) चिल्लाने का शब्द, दोहाई, पुकार, जनरव।
चिल्लवाना–(हिं.क्रि.स.) चिल्लाने में प्रवृत्त करना, चिल्लाने का काम दूसरे से कराना।
चिल्लाना–(हिं. क्रि.अ.) हल्ला मचाना।
चिल्लाहट–(हिं.स्त्री.) कोलाहल, हल्ला।
चिल्लिका–(सं. स्त्री.) दोनों भौहों के बीच का स्थान, भृकुटी।
चिल्ली–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का कीड़ा, बिजली, वज्र, बथुआ नामक शाक जिसके पत्ते छोटे होते हैं।
चिल्ही–(हिं. स्त्री.) चील नामक पक्षी।
चिवि–(सं. स्त्री.) चिबुक, ठुड्डी।
चिविट–(सं. पुं.) चिउड़ा, चिड़वा।
चिबुक–(सं. पुं.) ठुड्डी, ठोडी।
चिहुक–(हिं. पुं.) पक्षी की बोली।
चिहुँकार–(हिं. स्त्री.) चहक।
चिहुँक–(हिं. स्त्री.) डर, खटका।
चिहुँकना–(हिं. क्रि.अ.) चौंकना।
चिहुँटना–(हिं. क्रि.स.) चिकोटी काटना, लिपटना, चिपटना; (मुहा.) –चित्त चिहुँटना–मन में क्षोभ उत्पन्न होना, मर्म को बेधना।
चिहुँटनी–(हिं. स्त्री.) गुंजा, घुँघची।
चिहुँटी–(हिं. स्त्री.) चुटकी, चिकोटी।
चिहुर–(हिं. पुं.) सिर के बाल, केश।
चिह्न–(सं. पुं.) किसी वस्तु को पहिचानने का लक्षण, निशान, झण्डा, पताका, धब्बा।
चिह्नित–(सं. वि.) चिह्न किया हुआ।
चीं, चीं-चीं–(हिं. स्त्री.) पक्षियों के बच्चों का धीमा शब्द, मधुर, धीमे शब्द में बोलना; (मुहा.) –बोलना–हार मानना, अयोग्यता प्रकट करना।
चीं-चपड़–(हिं. स्त्री.) किसी बड़े के विरोध में कुछ कहना या करना।
चींटवा–(हिं. पुं.) चींटा, च्यूँटा।
चींटा–(हिं. पुं.) चिउँटी से बड़े आकार का कीड़ा, चिउँटा।
चींटी–(हिं. स्त्री.) एक कीड़ा जो मीठी वस्तुओं पर बहुत जल्द लगता है, पिपीलिका, चिउँटी।
चींतना–(हिं. क्रि. स.) चित्रित करना।
चींथना–(हिं. क्रि. स.) चीथना, फाड़ना।
चीक–(हिं. स्त्री.) चित्कार, चीखने का शब्द, चिल्लाहट, कीच, कीचड़; (पुं.) कसाई, मांस बेचनेवाला।
चीकट–(हिं. पुं.) तेल की मैल, तलछट, लसदार मिट्टी, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र; (वि.) बहुत मैला।
चीकड़–(हिं. पुं.) देखें 'कीचड़'।
चीकना–(हिं. क्रि. अ.) पीड़ा के कारण चिल्लाना, ऊँचे स्वर में बोलना।
चीकर–(हिं. पुं.) नहाने का हौद जिसमें कुएं से खींचा हुआ पानी भरा जाता है।
चीख–(हिं. स्त्री.) जोर से चिल्लाने की आवाज, चिल्लाहट।
चीखना–(हिं. क्रि. अ., स.) स्वाद लेने के लिये किसी पदार्थ को थोड़ा-सा खाना या पीना, चीकना, जोर से चिल्लाना।
चीखल–(हिं. पुं.) कीच, कीचड़।
चीखुर–(हिं. पुं.) चिखुरा, गिलहरी।
चीज–(फा. स्त्री.) वस्तु, सामग्री, सामान, द्रव्य, पदार्थ, महत्त्व की या विलक्षण वस्तु, बात आदि।
चीठ–(हिं. स्त्री.) कीट, मैल।
चीठा–(हिं. पुं.) देख 'चिट्ठा'।
चीठी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चिट्ठी'।
चीड़–(हिं. पुं.) एक प्रकार का देशी लोहा, एक पहाड़ी वृक्ष जिसमें से विरोजा निकलता है।
चीढ़–(हिं. पुं.) एक पहाड़ी ऊँचा वृक्ष जिसमें से विरोजा नामक गोंद निकलता है, चीड़।
चीत–(हिं. पुं.) चित्त, मन, चित्रा नक्षत्र, सीसा नामक धातु, एक औषधि।
चीतकार–(हिं. पुं.) देखें 'चीत्कार', 'चित्रकार'।
चीतना–(हिं. क्रि. स.) सोच-विचार करना, याद करना, चेत करना, चित्रित करना, बेलबूटे काढ़ना।
चीतर, चीतल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मृग जिसके शरीर पर श्वेत बिन्दियाँ होती हैं, एक प्रकार का छोटा अजगर, एक प्रकार का सिक्का।
चीता–(हिं. पुं.) चित्रक, एक प्रकार का बाघ जिसकी पीठ पर चित्तियाँ या धब्बे होते हैं; एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल और जड़ ओषधों में प्रयुक्त होती है, हृदय, मन, होश-हवास; (वि.) सोचा-विचारा हुआ।
चीत्कार–(सं. पुं.) चिल्लाने का शब्द, चिल्लाहट, हल्ला।
चीथड़ा–(हिं.पुं.) फटे-पुराने वस्त्र का छोटा टुकड़ा, चिथड़ा; (मुहा.)–लपेटना–फटा-पुराना वस्त्र पहनना।
चीथना–(हिं. क्रि. स.) फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना।
चीथरा–(हिं. पुं.) देखें 'चीथड़ा'।
चीन–(सं. पुं.) झंडा, पताका, एक प्रकार का हिरन, एक प्रकार का अन्न, सूत, तागा, सीसा धातु, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पूर्व का एक प्रसिद्ध देश; –की दीवार–(हिं. स्त्री.) चीन देश की १५०० मील लंबी इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन दीवार।
चीनक–(सं. पुं.) चेना या कँगनी नामक अन्न, चीनी कपूर।
चीनना–(हिं. क्रि. स.) चीन्हना, पहि-

जानना।
चीनपिष्ट–(सं. पुं.) सिन्दूर, सेंदुर।
चीनांशुक–(सं. पुं.) चीन से आनेवाला रेशमी वस्त्र, एक प्रकार की लाल रंग की बनात जो पहिले चीन से आती थी।
चीना–(हि. वि.) चीन देश का; (पुं.) चीनी, चीन का निवासी; –बादाम–(पुं.) मूंगफली।
चीनिया–(हि. वि.) चीन देश संबंधी, चीन देश का।
चीनी–(हि. पुं.) चीन देश का रहनेवाला, चीना, चीनी कपूर, एक प्रकार का श्वेत कबूतर; (वि.) चीन देश का, चीन सम्बन्धी; –कबाब–(स्त्री.) देखें 'कबाबचीनी'; –का खिलौना–चीनी मिट्टी का बना हुआ खिलौना; –चंपा–(पुं.) एक प्रकार का अति मधुर छोटे आकार का केला; –मिट्टी–(स्त्री.) एक प्रकार की शुभ्र मिट्टी जिसके पात्र, खिलौने आदि बनते हैं।
चीनी–(हि. स्त्री.) ईख आदि के रस से बनाया हुआ चूर्ण, शक्कर।
चीन्ह–(हि. स्त्री.) देखें 'चिह्न'।
चीन्हना–(हि. क्रि. स.) पहचानना, परिचय प्राप्त करना।
चीन्हा–(हि. पुं.) देखें 'चिह्न'।
चीप–(हि. स्त्री.) चिप्पड़।
चीपड़–(हि. पुं.) आँख का कीचड़।
चीमड़–(हि. वि.) जो खींचने या मोड़ने से न टूटे, चिमड़ा, लचीला।
चीमर–(हि. वि.) देखें 'चीमड़', चिमड़ा।
चीयां–(हि. पुं.) चियां, इमली का बीज।
चीर–(सं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा, पुराने कपड़े का टुकड़ा, लत्ता, चिथड़ा, गाय का थन, वृक्ष की छाल, चीड़ का पेड़, सीसा नामक धातु, चार लड़ियों की माला; (हि. स्त्री.) चीरने का भाव या क्रिया, दरार, मल्ल-युद्ध की एक युक्ति; –फाड़–(स्त्री.) फाड़, अंग आदि चीरने-फाड़ने का काम, शल्यकर्म।
चीरक–(सं. पुं.) विकृत लेख।
चीरना–(हि. क्रि. स.) विदीर्ण करना, फाड़ना; (मुहा.) माल चीरना–अनुचित रीति से धन कमाना।
चीरपर्ण–(सं. पुं.) साल का वृक्ष।
चीरवासा–(सं. पुं.) शिव, महादेव, यक्ष।
चीरा–(हि. पुं.) एक प्रकार का लहरियादार रंगीन वस्त्र जिसकी पगड़ी बनती है, गाँव की सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर, चीरकर बनाया हुआ घाव; (मुहा.) –उतारना–पुरुष का स्त्री के साथ पहिली बार का समागम।
चीरिका–(सं. स्त्री.) झींगुर, झिल्ली।
चीरी–(सं. पुं.) झींगुर; (हि. स्त्री.) पक्षी, चिड़िया।
चीर्ण–(सं. वि.) फटा या चिरा हुआ, किया हुआ, कृत।
चील–(हि. स्त्री.) बाज की जाति की एक चिड़िया; –झपट्टा–(पुं.) किसी वस्तु को झपटकर ले जाना, बच्चों का खेल विशेष।
चीलड़, चीलर–(हि. पुं.) जूं की तरह का एक छोटा कीड़ा, चिल्लड़।
चीलवा, चीला–(हि. पुं.) चिलड़ा, उलटा नामक पक्वान्न।
चीलिका–(सं. स्त्री.) झींगुर।
चीलू–(हि. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी मेवा।
चील्ह–(हि. स्त्री.) देखें 'चील'।
चील्हड़, चील्हर–(हि. पुं.) देखें 'चीलर'।
चील्ही–(हि. स्त्री.) बच्चों के कल्याण के लिये किया जानेवाला एक तन्त्रोपचार।
चीवर–(सं. पुं.) संन्यासियों या भिक्षुकों का फटा-पुराना वस्त्र।
चीवरी–(सं. पुं.) भिक्षुक, भिखमंगा।
चुंगना–(हि. क्रि. स.) देखें 'चुगना'।
चुंगल–(हि. पुं.) पक्षियों का टेढ़ा या मुड़ा हुआ पंजा, मनुष्य का बटोरा हुआ पंजा; (मुहा.) –में फँसना–वश में आना।
चुंगली–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का नाक का आभूषण।
चुंगवाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'चुगवाना'।
चुंगाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'चुगाना'।
चुंगी–(हि. स्त्री.) चुटकी भर वस्तु, नगर के भीतर आनेवाली सामग्रियों पर का कर; –कचहरी–(स्त्री.) नगरपालिका का कार्यालय; –घर–(पुं.) चुंगी दफ्तर।
चुंघाना–(हि. क्रि. स.) चुसाना, चुसाकर पिलाना।
चुंच, चुंचरी–(हि. स्त्री.) चंचु, चोंच।
चुंटा, चुंडा–(हि. पुं.) छोटा कुआँ।
चुंडित–(हि. वि.) चुंडी या चोटीवाला।
चुंडी–(हि. स्त्री.) चुटिया।
चुंदरी–(हि. स्त्री.) देखें 'चुनरी'।
चुंदी–(हि. स्त्री.) दूती, शिखा, सिर के बीच के बालों की चुटिया।
चुंधलाना, चुंधियाना–(हि. क्रि. अ.) अधिक प्रकाश के कारण आँखों का चौंधना, आँखों का तिलमिलाना।
चुंबक–(सं. पुं.) चुंबन करनेवाला, कामी, कामुक, ग्रंथों का सामान्य अध्ययन करनेवाला, एक प्रकार का पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचता है।
चुंबकत्व–(सं. पुं.) चुंबक पत्थर की वह शक्ति या गुण जिससे वह लोहे को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है, आकर्षण।
चुंबकीय–(सं. वि.) चुंबक जैसा गुण या आकर्षणवाला।
चुंबन–(सं. पुं.) चूमने की क्रिया, बोसा, चूमा।
चुंबना–(हि. क्रि. स.) चूमना।
चुंबा–(सं. स्त्री.) चुंबन।
चुंबित–(सं. वि.) चूमा हुआ, छुआ हुआ, स्पृष्ट।
चुंबी–(सं. वि.) चुंबन करनेवाला, छूनेवाला।
चुंभना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'चुभना'।
चुअना–(हि. क्रि. अ.) चूना, रसकर बहना।
चुआ–(हि. पुं.) चोआ।
चुआई–(हि. स्त्री.) चुआने या टपकाने का काम, चुआने का शुल्क।
चुआन–(हि. स्त्री.) सोता, नहर, खाई, गड्ढा।
चुआना–(हि. क्रि. स.) टपकाना, बूंद-बूंद करके गिराना, चिंकनाना, चुपड़ना।
चुआव–(हि. स्त्री.) चुआने की क्रिया या भाव।
चुकंदर–(हि. पुं.) शलजम के प्रकार की एक तरकारी।
चुकचुकाना–(हि. क्रि. अ.) किसी द्रव पदार्थ का रसकर बाहर आना, पसीजना।
चुकचुहिया–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया, चूं-चूं करनेवाला बालकों का एक खिलौना।
चुकटा–(हि. स्त्री.) भीख, चुटकी।
चुकटी–(हि. स्त्री.) देखें 'चुटकी'।
चुकता–(हि. वि.) चुकाया हुआ, ऋणशोध किया हुआ।
चुकती–(हि. वि. स्त्री.) देखें 'चुकता'।
चुकना–(हि. क्रि. अ.) समाप्त होना, निःशेष होना, बच न जाना, निबट जाना, भूल-चूक करना, अवसर पर काम न करना, निष्फल होना, व्यर्थ होना।
चुकरी–(हि. स्त्री.) रबंदचीनी।
चुकरड़–(हि. पुं.) दोमुँहा सर्प।
चुकवाना–(हि. क्रि. स.) अदा कराना, निबटाना, दिलवाना।
चुकाई–(हि. स्त्री.) चुकता होने का भाव।
चुकाना–(हि. क्रि. स.) ऋण निःशेष करना, चुकता करना, निबटाना।
चुकिया–(हि. स्त्री.) छोटा कुल्हड़ या पुरवा।

चुकौता–(हिं. पुं.) ऋण का परिशोध; (मुहा.)–**लिखना**–ऋण चुकता पाने की रसीद लिखना।
चुक्कड़–(हिं. पुं.) मिट्टी का छोटा पात्र, पुरवा।
चुक्कार–(हिं.पुं.) शेर की चिघाड़, गरज।
चुक्की–(हिं. स्त्री.) छल, कपट।
चुक्र–(सं. पुं.) चूक नाम की खटाई, एक प्रकार का खट्टा शाक, अमलबेंत, काँजी; **–फल**–(पुं.) इमली।
चुक्षा–(सं. स्त्री.) हत्या, हिंसा।
चुखाना–(हिं. क्रि. स.) गाय पेन्हाने के पहिले बछवे को पिलाना, चखाना।
चुगद–(फा. पुं.) उल्लू की तरह एक छोटी चिड़िया, मूर्ख व्यक्ति।
चुगना–(हिं. क्रि. स.) पक्षी का चोंच से दाना उठाकर खाना।
चुगल–(फा.पुं.) निंदा, पीठ पीछे शिकायत।
चुगलखोर–(फा. पुं.) चुगली या शिकायत करनेवाला।
चुगलखोरी–(फा.स्त्री.) शिकायत, चुगली।
चुगली–(फा. स्त्री.) निंदा, शिकायत, चुगली खाना, निंदा करना।
चुगलाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'चुभलाना'।
चुगा–(हिं.पुं.) चिड़ियों के चुगने का चारा।
चुगाई–(हिं. स्त्री.) चुगने की क्रिया।
चुगाना–(हिं. क्रि. स.) चिड़ियों को दाना खिलाना।
चुगुल–(हिं. पुं.) देखें 'चुगल'।
चुगुलखोर–(हिं. पुं.) देखें 'चुगलखोर'।
चुगुलखोरी–(हिं.स्त्री.) देखें 'चुगलखोरी'।
चुगुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'चुगली'।
चुचकारना–(हिं.क्रि.स.) चुमकारना, पुचकारना, प्यार करना, दुलार करना, प्रेम दिखलाना।
चुचकारी–(हिं. स्त्री.) चुमकारने की क्रिया या भाव।
चुचाना–(हिं.क्रि.अ.) बूँद-बूँद करके टपकना, रसना, निचुड़ना, चूना।
चुचुआना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'चुचाना'।
चुचुक–(सं.पुं.) स्तन का अग्रभाग या घुंडी।
चुचुकना–(हिं. क्रि. अ.) संकुचित होना, सूखकर सिकुड़ जाना।
चुटक–(हिं. पुं.) एक प्रकार का गलीचा, कोड़ा, चाबुक।
चुटकना–(हिं.क्रि.स.) कोड़े या चाबुक से मारना, चुटकी से तोड़ना, साँप का काटना।
चुटकला–(हिं. पुं.) देखें 'चुटकुला'।
चुटका–(हिं. पुं.) बड़ी चुटकी।
चुटकी–(हिं. स्त्री.) अँगूठे और बीच की अँगुली के मिलने की स्थिति, इन दोनों उँगलियों से त्वचा को नोचना, इन्हें आपस में रगड़कर चटकाना; भीख, बन्दूक का घोड़ा, पैर की अँगुलियों का गहना, कपड़ा छापने की एक विधि, कागज आदि पकड़ने की काठ की चिमटी; (मुहा.) **–देना**–चुटकी बजाना; **–बजाना**–बीच की अँगुली पर अँगूठा छटकाकर शब्द करना; **–बजाते-बजाते**–बात की बात में, बहुत थोड़े समय में; **–बजानेवाला**–चापलूस; **–बैठना**–कोई काम करने का अभ्यास होना; **–भर**–बहुत थोड़े परिमाण का; **–भरना**–चुटकी काटना, मर्मभेदी बात कहना; **–माँगना**–भिक्षा माँगना; **–लेना**–हँसी उड़ाना; **चुटकियों में**–बहुत जल्द; **चुटकियों पर उड़ाना**–तुच्छ समझना।
चुटकुला–(हिं. पुं.) कोई विलक्षण वार्ता, विनोदपूर्ण बात, अधिक गुण करनेवाली विशिष्ट औषध; (मुहा.)–**छोड़ना**–विलक्षण बात कहना, कोई ऐसी बात कहना जिससे कोई नई स्थिति उपस्थित हो जाय।
चुटफुट–(हिं. स्त्री.) फुटकर वस्तु।
चुटला–(हिं. पुं.) चोटी, चूड़ा, चोटी पर पहिनने का कोई गहना।
चुटिया–(हिं. स्त्री.) सिर के बीचो-बीच रखी जानेवाली बालों की लट, शिखा, चुंदी; (मुहा.) **किसी की चुटिया हाथ में होना**–किसी को अपने अधिकार या वश में रखना।
चुटियाना, चुटीलना–(हिं. क्रि. स.) चोट पहुँचाना, घायल करना, काटना, डँसना।
चुटीला–(हिं. वि.) घायल, चोट खाया हुआ, सबसे उत्तम, भड़कीला; (पुं.) पतली छोटी चोटी।
चुटुकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चुटकी'।
चुटैल–(हिं. वि.) जिसको चोट लगी हो, आक्रमण करनेवाला।
चुड़िया–(हिं. स्त्री.) देखें 'चूड़ी'।
चुड़िहारा–(हिं. पुं.) चूड़ी बनाने और बेचनेवाला।
चुडुक्का–(हिं.पुं.) लाल की तरह की एक छोटी चिड़िया।
चुड़ैल–(हिं. स्त्री.) प्रेतनी, भूतनी, डायन, पिशाचिनी, क्रूर स्वभाव की स्त्री, कुरूपा, भयंकर स्त्री।
चुत–(हिं. वि.) देखें 'च्युत'।
चुत्यल–(हिं. वि.) ठिठोलिया, मसखरा।
चुदक्कड़–(हिं. वि.) अत्यन्त कामी, अधिक स्त्री-प्रसंग करनेवाला।
चुदना–(हिं. स्त्री.) स्त्री का पुरुष से संभोग होना।
चुदवाई–(हिं. स्त्री.) मैथुन, इसके लिए दिया जानेवाला धन।
चुदवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'चुदाना'।
चुदवास–(हिं. स्त्री.) मैथुन की कामना।
चुदवासी–(हिं. स्त्री.) मैथुन कराने की इच्छा करनेवाली स्त्री।
चुदवैया–(हिं पुं.) स्त्री-प्रसंग करनेवाला, कामुक।
चुदाई–(हिं. स्त्री.) स्त्री-प्रसंग, मैथुन, मैथुन के बदले मिलनेवाला धन।
चुदाना–(हिं. क्रि. स.) पुरुष से प्रसंग कराना, मैथुन कराना।
चुदास–(हिं. स्त्री.) प्रसंग-कामना।
चुदासा–(हिं. पुं.) स्त्री-प्रसंग करने की कामनावाला मनुष्य।
चुन–(हिं.पुं.) आटा, चूर्ण, बुकनी, पिसान।
चुनचुना–(हिं. पुं.) कसेरे का एक अस्त्र, सफेद महीन कीड़े जो बच्चों के पेट में पड़ जाते हैं, चुन्ना; (वि.) जिसके स्पर्श से चुनचुनाहट उत्पन्न हो; (मुहा.) **–लगना**–बहुत बुरा लगना।
चुनचुनाना–(हिं.क्रि.अ.) चुभने के समान जलन और खुजली होना, ठिनकना, बालकों का रोना।
चुनचुनाहट–(हिं. स्त्री.) शरीर पर जलन और चुभने की-सी पीड़ा।
चुनट(त)–(हिं. स्त्री.) चुनन, बल।
चुनन–(हिं. स्त्री.) कपड़े या कागज पर की सिकुड़न, शिकन; **–दार**–(वि.) जिसमें चुनन पड़ी हो, जो चुना गया हो।
चुनना–(हिं.क्रि.स.) एक एक करके दाना उठाना, बीनना, छाँटकर अलगाना, इच्छानुसार ढेर में से कुछ लेना, क्रम में या सजाकर रखना, तरतीब से रखना, भीत उठाना, कपड़े में सिकुड़न डालना, चुटकी से नोचकर अलगाना; **चुना हुआ**–(वि.) उत्तम, श्रेष्ठ; (मुहा.) **दीवार में चुनना**–जीवित आदमी को भीत में गड़वा देना।
चुनरी–(हिं. स्त्री.) रंगीन कपड़ा जिसके बीच-बीच में सफेद बुंदकियाँ हों, लाल रंग का नगीना, चुन्नी।
चुनवाँ–(हिं. वि.) चुना हुआ; बढ़िया।
चुनवाना–(हिं. क्रि. स.) चुनने का काम दूसरे से कराना।

चुनाई—(हि.स्त्री.) चुनने की क्रिया, बिनने का काम, भीत की जोड़ाई, चुनने का शुल्क।
चुनाला—(हि.पुं.) परकाल, कंपास।
चुनाना—(हि. क्रि. स.) बिनाना, इकट्ठा करवाना, अलगवाना, छँटवाना, भीत में गड़दाना, भीत की जोड़ाई करवाना, चुनन डलवाना।
चुनाव—(हि. पुं.) चुनने या बिनने का काम, अनेक वस्तुओं में से किसी एक को चुनने का काम; (मुहा.)—लड़ना—चुनाव के लिए उम्मीदवार के रूप में खड़ा होना।
चुनावट—(हि. स्त्री.) देखें 'चुनन'।
चुनिंदा—(हि. वि.) चुना हुआ, छाँटा हुआ, बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम।
चुनिया गोंद—(हि. पुं.) परास या ढाक का गोंद।
चुनी-भूसी—(हि.स्त्री.) मोटे अन्न का पिसा हुआ चूर्ण।
चुनटी—(हि. स्त्री.) देखें 'चुनौटी'।
चुनौटिया—(हि.पुं.) एक प्रकार का खैरा रंग।
चुनौटी—(हि. स्त्री.) पान पर लगाने या सुरती में मिलाने का चूना रखने का छोटा पात्र।
चुनौती—(हि. स्त्री.) उत्तेजना, बढ़ावा, ललकार, लड़ने के लिये पुकार।
चुन्नन—(हि. स्त्री.) देखें 'चुनन'।
चुन्ना—(हि. पुं.) देखें 'चूना'।
चुन्नी—(हि.स्त्री.) मानिक आदि रत्न का टुकड़ा, अन्न का चूरा, स्त्रियों की ओढ़नी, लकड़ी का बारीक चूर, कुनाई।
चुप—(हि.वि.) मूक, मौन, अवाक्; —चाप—(अव्य.) शान्त भाव से, बिना कुछ बोले हुए, गुप्त रूप से; (मुहा.)—मारना—मौन होना; —लगाना—खामोश रहना।
चुपका—(हि. वि.) चुप, मौन; चुपके से—(अव्य.) छिपकर, बिना कुछ कहे, गुप्त रूप से।
चुपकाना—(हि. क्रि. स.) मौन करना, बोलने न देना।
चुपकी—(हि.स्त्री.) मौन, खामोशी।
चुपड़ना—(हि. क्रि. स.) घी, मक्खन आदि पोतना, दोष छिपाना, चापलूसी की बातें कहना।
चुपड़ा—(हि. पुं.) वह जिसकी आँखें कीचड़ से भरी हों।
चुपाना—(हि.क्रि.अ.) चुप हो रहना, न बोलना।
चुप्पा—(हि. वि.) कम बोलनेवाला, जो किसी बात का उत्तर जल्दी न दे।
चुप्पी—(हि. स्त्री.) मौनता; (मुहा.) —साधना—चुप रहना, मौन रहना।
चुबलाना—(हि. क्रि. स.) स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को मुख में रखकर जीभ से इधर-उधर डुलाना।
चुभकना—(हि. क्रि. अ.) पानी में डूबना-उतराना, गोता खाना।
चुभकाना—(हि.क्रि.स.) पानी में गोते देना।
चुभकी—(हि. स्त्री.) डुबकी, गोता।
चुभन—(हि. स्त्री.) चुभने का आभास, अनुभव या क्रिया, खटक, दर्द।
चुभना—(हि.क्रि.अ.) किसी नुकीली वस्तु का कोमल पदार्थ में घुसना, गड़ना, धँसना, मन में खटकना, चित्त को सालना, मग्न या लीन होना।
चुभर-चुभर—(हि. पुं.) बच्चों के दूध पीने का शब्द।
चुभलाना—(हि.क्रि.स.) देखें 'चुबलाना'।
चुभवाना—(हि.क्रि.स.) चुभने का काम दूसरे से कराना।
चुभाना—(हि.क्रि.स.) धँसाना, गड़ाना।
चुभीला—(हि. वि.) चुभनेवाला।
चुभोना—(हि. क्रि. स.) चुभाना, गड़ाना।
चुमकार—(हि. स्त्री.) चूमने जैसा शब्द, पुचकार।
चुमकारना—(हि.क्रि.अ.स.) प्रेम दिखलाने के निमित्त मुख से चूमने के समान शब्द निकालना, दुलार दिखलाना, पुचकारना।
चुमकारी—(हि. स्त्री.) देखें 'चुमकार'।
चुमवाना—(हि.क्रि.स.) चूमने का काम दूसरे से कराना।
चुम्मक—(हि. पुं.) देखें 'चुंबक'।
चुम्मा—(हि. पुं.) चुम्बन, बोसा।
चुर—(हि. पुं.) शेर, बाघ आदि की माँद, चार-पाँच मनुष्यों के बैठने का स्थान; (वि.) अधिक, बहुत।
चुरकना—(हि.क्रि.अ.) चिड़ियों का चहचहाना, चें-चें करना, चूर होना, टूटना, फटना।
चुरकी—(हि.स्त्री.) चोटी, चुटिया, शिखा।
चुरकुट,—कुस—(हि.वि.) चूर्णित, चूरचूर।
चुरचुरा—(हि. वि.) थोड़े से दबाव में चुर-चुर करके टूटनेवाला।
चुरचुराना—(हि. क्रि. अ.) चुरचुर शब्द करके टूटना।
चुरट—(हि. पुं.) देखें 'चुरुट'।
चुरना—(हि.क्रि.अ.) किसी वस्तु का पानी में खौलना, परस्पर गुप्त मन्त्रणा होना; (पुं.) पेट में उत्पन्न होनेवाले महीन कीड़े।
चुरमुर—(हि. पुं.) कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।
चुरमुरा—(हि. वि.) चुरमुर शब्द करके सहज में टूटनेवाला, कुरकुरा।
चुरमुराना—(हि.क्रि.अ.,स.) चुरमुर शब्द करके टूटना या तोड़ना।
चुरवाना—(हि. क्रि. स.) पकाने या चुराने का काम दूसरे से कराना, देखें 'चोरवाना'।
चुरस—(हि. स्त्री.) वस्त्रादि की सिकुड़न या शिकन।
चुरा—(हि. पुं.) देखें 'चूरा'।
चुराई—(हि. स्त्री.) चुराने की क्रिया या भाव, पकाने या चुराने का काम।
चुराना—(हि.क्रि.स.) परोक्ष में किसी की वस्तु का अपहरण करना, चोरी करना, लोगों की दृष्टि से छिपाना, किसी द्रव पदार्थ को उबलने तक पकाना; (मुहा.) आँख चुराना—सम्मुख मुँह न करना; चित्त चुराना—मन को मोहित करना।
चुरिहारा—(हि. पुं.) देखें 'चुड़िहारा'।
चुरी—(हि. स्त्री.) देखें 'चूड़ी'।
चुरुट—(अं. पुं.) सिगरेट, बड़ा सीगार।
चुरू—(हि. पुं.) चुल्लू।
चुल—(हि. स्त्री.) खुजलाहट, कामोद्वेग; (मुहा.)—उठना—खुजली होना; काम का आवेग होना; —मिटना—कामोद्वेग का तृप्त होना।
चुलचुलाना—(हि.क्रि.अ.) खुजलाहट होना।
चुलबुल—(हि.स्त्री.) चंचलता, चपलता।
चुलबुला—(हि.वि.) चपल, चंचल, नटखट।
चुलबुलाना—(हि. क्रि. अ.) रह-रहकर हिलना-डोलना, चंचल होना, चपलता दिखाना।
चुलबुलापन—(हि.पुं.) चंचलता, चपलता।
चुलबुलाहट—(हि.स्त्री.) देखें 'चुलबुलापन'।
चुलबुलिया—(हि. वि.) देखें 'चुलबुला'।
चुलबुली—(हि. स्त्री.) खुजलाहट, चुल।
चुलाव—(हि. पुं.) बिना मांस का पुलाव।
चुलियाला—(हि. पुं.) एक मात्रिक छन्द।
चुलुक—(हि. पुं.) विस्तृत दलदल, गहरा कीचड़, चुल्लू, एक प्रकार का नापने का पात्र।
चुलूक—(हि. पुं.) चुल्लू।
चुल्लकी—(सं.स्त्री.) सूंस नामक जल-जन्तु।
चुल्ला—(हि. वि.) दुष्ट, नटखट, पाजी।
चुल्ली—(सं. स्त्री.) चूल्हा; (वि.) नटखट।
चुल्लू—(हि. पुं.) हाथ की हथेली का गड्ढा; (मुहा.) —भर पानी में डूब मरना—लज्जावश प्राण दे देना; —में उल्लू बनना—थोड़ी-सी भाँग पीकर बेसुध हो जाना; —चुल्लुओं रोना—अधिक अश्रुपात करना।

चुल्हौना–(हिं. पुं.) देखें 'चूल्हा'।
चुवना–(हिं.क्रि.अ.) चूना, रसकर बहना।
चुवा–(हिं. पुं.) मज्जा, हड्डी के भीतर का रस, भेजा।
चुवाना–(हिं. क्रि. स.) बूंद-बूंद करके गिराना, टपकाना, थोड़ा थोड़ा करके गिराना।
चुसकी–(हिं. स्त्री.) चपक, मद्य पीने का पात्र, ओंठों से किसी वस्तु को चूसने की क्रिया, घूंट।
चुसना–(हिं.क्रि.अ.) चूसा जाना, चिचोड़ा जाना, निचोड़ा जाना, खोखला होना, शक्तिहीन होना, निर्धन होना।
चुसनी–(हिं. स्त्री.) बच्चों का चूसने का खिलौना।
चुसवाना–(हिं. क्रि. स.) चूसने का काम दूसरे से कराना।
चुसाई–(हिं. स्त्री.) चूसने की क्रिया या भाव।
चुसाना–(हिं. क्रि. स.) चूसने का काम कराना, चूसन देना।
चुसौअल, चुसौवल–(हिं. पुं.) चूसने की क्रिया।
चुस्त–(फा. वि.) कसा हुआ, जो ढीला न हो, फुरतीला, जो आलसी न हो, फवता हुआ।
चुस्ती–(फा. स्त्री.) फुरतीलापन, कसाव, दृढ़ता, मजबूती।
चुहँटी–(हिं. स्त्री.) चुटकी।
चुहचुहा, चुहचुहाता–(हिं. वि.) चहचहाता हुआ, चटकीला, तेज रंग का, रसीला।
चुहचुहाना–(हिं.क्रि. अ.) चटकीला जान पड़ना, रस टपकना, चिड़ियों का बोलना, कलरव करना।
चुहचुही–(हिं.स्त्री.) एक चमकीले रंग की फूलों पर बैठनेवाली बहुत छोटी चिड़िया।
चुहटना–(हिं. क्रि. स.) पैरों से कुचलना, रौंदना।
चुहड़ा–(हिं. पुं.) श्वपच, डोम, चाण्डाल, भंगी।
चुहना–(हिं. क्रि. स.) दाँतों से चबाकर रस चूसना।
चुहल–(हिं. स्त्री.) हँसी-ठट्ठा, ठिठोली, विनोद; –**पन**–(पुं.) ठिठोली; –**बाजी**–(स्त्री.) हँसी, उपहास, विद्रूप।
चुहिया–(हिं.स्त्री.) मादा चूहा, छोटा चूहा।
चुहुँटना–(हिं. क्रि. अ.) चिपकना।
चुहुटनी–(हिं. स्त्री.) घुंघची।
चूँ–(हिं. पुं.) छोटी चिड़िया का बोलने का शब्द; (मुहा.)–**चूँ का मुरब्बा**–(पुं.) बे-मेल चीजों का संग्रह; –**न करना**–जरा सा भी एतराज न करना।
चूँकि–(फा. अव्य.) इस कारण, इसलिए कि।
चूँच–(हिं. स्त्री.) चोंच।
चूँचरा–(हिं. पुं.) विरोध, बहाना।
चूँची–(हिं. स्त्री.) चूची, चूचुक।
चूँ-चूँ–(हि.पुं.) चिड़ियों के बोलने का शब्द।
चूँदरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चुनरी'।
चूँनी–(हिं. स्त्री.) अन्न का कण।
चूक–(हिं. स्त्री.) भूल, दरार, फटन, कपट, छल, धोखा, एक प्रकार का खट्टा साग, खट्टे फल के रस को गाढ़ा करके बनाया हुआ एक खाद्य पदार्थ; (वि.) अत्यन्त खट्टा।
चूकना–(हिं.क्रि.अ.) अशुद्धि करना, भूल करना, अवसर गवाँ देना।
चूका–(हिं.पुं.) एक प्रकार का खट्टा शाक।
चूची–(हिं. स्त्री.) चूचुक, कुच के ऊपर की घुंडी, स्तन, स्त्री की छाती; –**पीता**–(वि.) बहुत छोटा, माँ का दूध पीनेवाला (बच्चा), नादान; (मुहा.) –**पीना**–स्तनपान करना; –**मलना**–स्त्री का स्तन मर्दन करना।
चूचुक–(सं. पुं.) देखें 'चूची'।
चूड़, चूड़क–(सं.पुं.) शिखा, चोटी, सिर पर की कलँगी, खम्भे या घर का ऊपरी भाग, कंकण।
चूड़ांत–(सं.पुं.) पराकाष्ठा, अन्तिम सीमा।
चूड़ा–(सं. स्त्री.) शिखा, चोटी, चुरकी, मोर या मुरगे के सिर पर की कलँगी, कुआँ, घुंघची, बाँह में पहिनने का एक गहना, शिखर, मस्तक, हाथ म पहिनने का हाथी-दाँत का कड़ा।
चूड़ाकरण–(सं. पुं.) बालक का पहिली बार सिर मुण्डन करने का संस्कार।
चूड़ाकर्म–(सं. पुं.) देखें 'चूड़ाकरण'।
चूड़ामणि–(सं. पुं.) सिर में पहिनने का एक आभूषण, सीसफूल, अग्रगण्य, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, गुञ्जा, घुंघची।
चूड़ाम्ल–(सं. पुं.) इमली का फल।
चूड़ाला–(सं. स्त्री.) सफेद घुंघची, नागरमोथा।
चूड़िया–(हिं.पुं.) एक प्रकार का धारीदार वस्त्र।
चूड़ी–(हिं. स्त्री.) कोई वृत्ताकार पदार्थ, हाथ में पहिनने का काँच आदि का गहना, रेशम स्वच्छ करने का एक अस्त्र; (मुहा.) **चूड़ियाँ ठंढी करना**–पति के मरने पर स्त्री का चूड़ियाँ तोड़ना या उतारना; **चूड़ियाँ पहिनना**–स्त्री का भेस धारण करना।
चूड़ीदार–(हिं. वि.) जिसमें चूड़ी जैसी लकीरें या घेरे पड़े हों।
चूत–(सं. पुं.) आम का वृक्ष; (हिं. स्त्री.) भग, योनि।
चूतक–(सं. पुं.) आम का वृक्ष।
चूतड़, चूतर–(हिं. पुं.) कमर के नीचे तथा जाँघ के ऊपर का मांसल भाग, नितम्ब; (मुहा.) – **दिखाना** – पीठ दिखाना, कठिन समय पर भाग जाना; –**पीटना या बजाना**–बहुत प्रसन्न होना।
चूतिया–(हिं. वि.) मूर्ख, फूहड़; –**खाता**, –**चक्कर**–(पुं.) चूतिया, बहुत ही मूर्ख व्यक्ति; –**पंथी**–(स्त्री.) मूर्खता।
चून–(हिं. पुं.) चूर्ण, आटा, पिसान, एक प्रकार का थूहड़।
चूनर, चुनरी–(हि.स्त्री.) देखें 'चुंदरी'।
चूना–(हिं. पुं.) पत्थर, कंकड़ आदि को फूंककर बनाया हुआ तीक्ष्ण भस्म; (क्रि.अ.) किसी वस्तु का ऊपर से नीचे अचानक गिरना, छिद्र से रसकर बहना; (वि.) छिद्र द्वारा टपकनेवाला; (मुहा.)–**फेरना**–पानी में चूना घोलकर भीत पर पोतना; –**चूना लगाना**–धोखा देना, लजाना, हानि पहुँचाना; –**दानी**–(स्त्री.) चुनौटी, चूना रखने की डिबिया।
चूनी–(हिं. स्त्री.) अन्न का कण या छोटा टुकड़ा, माणिक रत्न का छोटा टुकड़ा, चुनी चुन्नी; –**भूसी**–(स्त्री.) चुन्नी और भूसी।
चूपड़ी–(हिं. वि. स्त्री.) चुपड़ी हुई।
चूमना–(हिं. क्रि. स.) ओंठों से शरीर के किसी अंग को या किसी पदार्थ को दबाना या स्पर्श करना; (मुहा.) **चूमकर छोड़ देना**–किसी कार्य को आरंभ करके बिना समाप्त किये छोड़ना।
चूमा–(हिं. पुं.) चुम्बन, चुम्मा; –**चाटी** –(स्त्री.) प्रेम से चूमन की क्रिया।
चूर–(हिं. पुं.) किसी पदार्थ के छोटे-छोटे टुकड़े, महीन कण, चूर्ण; (वि.) निमग्न, लीन, उन्मत्त; (मुहा.)–**चूर करना**–किसी पदार्थ के छोटे-छोटे टुकड़े करना, चूर्ण करना।
चूरण (सं. पुं.), **चूरन**–(हिं. पुं.)–चूर्ण, महीन पिसी हुई औषध।
चूरना–(हिं. क्रि. स.) चूर-चूर करना, तोड़ना, टुकड़-टुकड़ करना, चूर्ण करना।
चूरमा–(हिं. पुं.) एक पकवान जो रोटी या पूरी को चूर-चूर करके घी में भून-

कर चीनी मिलाकर बनाया जाता है।
चूरा–(हि. पुं.) किसी वस्तु का पीसा हुआ भाग, बुरादा, चूर्ण।
चूरामनि–(हि. पुं.) देखें 'चूड़ामणि'।
चूरी–(हि. स्त्री.) चूरा, चूर, चूड़ी।
चूरु–(हि. पुं.) एक प्रकार का चरस।
चूर्ण–(सं. पुं.) महीन पिसा हुआ पदार्थ, बुकनी, धूल, खड़िया, अबीर, चूना; (वि.) तोड़ा-फोड़ा हुआ, पीसा हुआ।
चूर्णक–(सं. पुं.) सत्तू, सतुआ, छोटे-छोटे शब्दों से बना हुआ गद्य, एक प्रकार का वृक्ष
चूर्णकार–(सं. पुं.) चूर्ण करनेवाला, आटा पीसनेवाला।
चूर्णकुंतल–(सं. पुं.) अलक, लट।
चूर्णखंड–(सं. पुं.) कंकड़।
चूर्णा–(सं. स्त्री.) आर्या छन्द का एक भेद।
चूर्णि–(सं. स्त्री.) कपर्दक, कौड़ी।
चूर्णिका–(सं. स्त्री.) सत्तू, सतुआ, देखें 'चूर्णक'।
चूर्णित–(सं. वि.) चूर्ण किया हुआ।
चूर्मा–(हि. पुं.) देखें 'चूरमा'।
चूल–(सं. पुं.) चोटी, शिखा; (हि. स्त्री.) लकड़ी का गढ़ा हुआ पतला सिरा जो किसी छेद में पहिनाया या ठोंका जाता है अथवा जिस पर कोई पदार्थ घूमता है; (मुहा.) चूलें ढीली होना–अधिक परिश्रम से थक जाना।
चूलक–(सं. पुं.) हाथी की कनपटी, खंभे का ऊपरी भाग।
चूलदान–(हि. पुं.) पाकशाला, रसोईघर।
चूलिक–(सं. पुं.) पूरी, लूची।
चूलिका–(सं. स्त्री.) नाटक का वह अंग जिसमें किसी घटना के होने की सूचना नेपथ्य में दी जाती है।
चूल्हा–(हि. पुं.) मिट्टी का अथवा लोहे का बना हुआ वह आधान जिसमें आँच रखकर पकाने का काम होता है; (मुहा.) –जलाना–भोजन पकाने का प्रबन्ध करना; –फूंकना–भोजन बनाना; चूल्हे में जाना–नष्ट-भ्रष्ट हो; –चूल्हे में डालना–नाश करना; चूल्हे से निकलकर भट्ठी में पड़ना–छोटी सी आपत्ति से बचकर बड़ी आपत्ति में जा पड़ना।
चूषण–(सं. पुं.) चूसने की क्रिया।
चूषणीय–(सं. वि.) चूसने योग्य।
चूषा–(सं. स्त्री.) हाथी की कमर में बांधने की पेटी, चूसना।
चूष्य–(सं. वि.) चूसने योग्य।
चूसना–(हि. क्रि. स.) ओठों और जीभ को मिलाकर किसी पदार्थ का रस खींचना, किसी वस्तु का सार भाग लेना।
चूहड़, चूहड़ा–(हि. पुं.) श्वपच, भंगी, मेहतर।
चूहरी–(हि. स्त्री.) चूड़ी बेचने या पहिनानेवाली स्त्री, चुड़िहारिन।
चूहा–(हि. पुं.) मूषक, मूसा; –दंती–(स्त्री.) स्त्रियों के पहिनने की एक प्रकार की पहुँची; (वि.) चूहे के दाँत के आकार का; –दान, चूहेदानी–(पुं., स्त्री.) चूहों को फँसाने का पिंजड़ा।
चें–(हि. स्त्री.) पक्षी के बोलने का शब्द; (मुहा.) –चें करना– व्यर्थ बकवाद करना।
चेंगड़ा–(हि. पुं.) छोटा बालक, बच्चा।
चेंगी–(हि. स्त्री.) चमड़े की गोल छेद की हुई चकती जो गाड़ी के धुरे में पहिनाई रहती है।
चेंच–(हि. पुं.) एक प्रकार का बरसाती शाक, पटुआ की एक किस्म।
चेंचर–(हि. वि.) बकवाद करनेवाला।
चेंचरा–(हि. पुं.) चातक पक्षी का बच्चा।
चेंचला–(हि. पुं.) एक प्रकार का पक्वान्न।
चें-चें–(हि. स्त्री.) चिड़ियों के बोलने का शब्द।
चेंटुआ–(हि. पुं.) पक्षिशावक, चिड़िया का बच्चा।
चेंप–(हि. स्त्री.) चीं-चपड़, व्यर्थ की बकवाद।
चेंफ–(हि. पुं.) ऊख का छिलका।
चेउरी–(हि. पुं.) कुम्हार का चाक पर के गढ़े हुए पात्र को काटने का डोरा।
चेकितान–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
चेचक–(हि. स्त्री.) एक छुतहा रोग जिसमें ज्वर के साथ-साथ सारे शरीर पर लाल-लाल छोटे दानें निकल आते हैं, शीतला रोग, माता; –का टीका–(पुं.) गो-बीज टीका जो चेचक के निवारणार्थ लगाया जाता है।
चेजा–(हि. पुं.) छिद्र, छेद।
चेट, चेटक–(सं. पुं.) सेवक, दास, पति, नायक, नायिका को मिलानेवाला पुरुष, भड़ुआ, विदूषक, भांड़, दूत, जल्दी, चसका, इन्द्रजाल, जादू का खेल।
चेटका–(हि. स्त्री.) चिता, श्मशान, मरघट।
चेटकी–(सं. पुं.) इन्द्रजाली, जादूगर, कौतुकी।
चेटिका, चेटिकी–(हि. स्त्री.) दासी नौकरानी।
चेटिया–(हि. पुं.) शिष्य, चेला।
चेटी–(सं. स्त्री.) दासी, लौंडी।
चेटुवा–(हि. पुं.) चिड़िया का बच्चा।
चेड़क–(हि. पुं.) देखें 'चेटक'।
चेत्–(स. अव्य.) कदाचित्, यदि।
चेत–(हि. पुं.) चित्तवृत्ति, चेतना, ज्ञान, बोध, सावधानी, स्मरण, सुध, चौकसी, चित्त।
चेतक–(सं. वि.) चेत या होश में लाने या करानेवाला, चेतन।
चेतकी–(सं. स्त्री.) हरीतकी, छोटी हर्रे, चमेली का पौधा, एक रागिनी का नाम।
चेतन–(सं. पुं.) जीव, आत्मा, मनुष्य, प्राणी, जीवधारी, मन; (वि.) चेतनयुक्त, चेतक।
चेतनता (सं. स्त्री.), चेतनत्व–(सं. पुं.)– चैतन्य, सज्ञानता।
चेतना–(सं. स्त्री.) मनोवृत्ति, बुद्धि, स्मृति, स्मरण, सुध, संज्ञा, चेतनता, होश; (हि. क्रि. अ., स.) समझना, विचारना, होश में आना, सावधान या सतर्क होना।
चेतनीय–(सं. वि.) जानने योग्य, ज्ञेय।
चेतन्य–(हि. पुं.) देखें 'चैतन्य'।
चेतवनि–(हि. स्त्री.) देखें 'चेतावनी' 'चितवन'।
चेतव्य–(सं. वि.) इकट्ठा करने योग्य, चयन करने योग्य।
चेतावनी–(हि. स्त्री.) चेतने या सावधान होने की सूचना।
चेतिका–(हि. स्त्री.) श्मशान, चिता।
चेतोजन्मा–(सं. पुं.) कामदेव।
चेतोहर–(सं. वि.) चेत या चेतना हरण करनेवाला।
चेतौनी–(हि. स्त्री.) देखें 'चेतावनी'।
चेत्य–(सं. वि.) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
चेदि–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम, इस देश का राजा, इस देश का निवासी; –राज–(पुं.) शिशुपाल नामक राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
चेना–(हि. पुं.) सावाँ की किस्म का एक अन्न।
चेप–(हि. पुं.) कोई गाढ़ा चिपचिपा रस, चिड़ियों को फँसाने का लासा, उत्साह; –दार–(वि.) लसदार, चिप-चिपा।
चेपना–(हि. क्रि. स.) सटाना, चिपकाना।
चेय–(सं. वि.) संग्रह करने योग्य।
चेर–(हि. पुं.) दास, सेवक।
चेरा–(हि. पुं.) नौकर, दास, चेला, विद्यार्थी।
चेराई–(हि. स्त्री.) दासत्व, नौकरी, सेवा।
चेरायता–(हि. पुं.) देखें 'चिरायता'।
चेरि, चेरी–(हि. स्त्री.) दासी, नौकरानी।
चेरु–(सं. वि.) संग्रह करनेवाला।
चेरुई–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का मिट्टी का बड़ा घड़ा।
चेल–(सं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा।
चेलकाई–(हि. स्त्री.) शिष्यवर्ग, चेलों का

समूह।
चेलहाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'चेलकाई'।
चेला–(हि.पुं.) वह जिसने गुरु से कोई दीक्षा ली हो अथवा कोई धार्मिक उपदेश ग्रहण किया हो, शिष्य, छात्र, विद्यार्थी; (मुहा.)–**मूँड़ना**–शिष्य बनाना।
चेलान–(सं. पुं.) तरबूज की लता; (हिं. पुं.) चेलों का समूह।
चेलिका–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
चेलिकाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'चेलहाई'।
चेलिन, चेली–(हिं. स्त्री.) शिष्या, छात्रा।
चेलुक–(सं.पुं.) एक प्रकार का बौद्ध भिक्षुक।
चेल्हवा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी मछली।
चेवी–(हि. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
चेष्टक–(सं. पुं.) चेष्टा करनेवाला।
चेष्टा–(सं. स्त्री.) शरीर की वह स्थिति जिससे चित्त का भाव प्रगट होता है, इच्छा, कामना, कार्य, प्रयत्न, उद्योग, परिश्रम; –**नाश**–(पुं.) सृष्टि का अन्त, प्रलय, गतिहीन होना।
चेहरई–(हिं. पुं.) हलका गुलाबी रंग।
चेहरा–(फा. पुं.) मुख की बनावट या आकृति, मुखाकृति, मुख, किसी वस्तु का अगला भाग, आगा, मिट्टी, कागज आदि की मुखाकृति जिसे नाटक के समय पात्र मुख पर लगाते हैं; (मुहा.)–**उतरना**–उदास होना, मुख का म्लान होना; –**पीला पड़ जाना**–रक्ताल्पता आदि के कारण मुख का पीला या कांतिहीन होना, चेहरा उतरना; –**सफेद हो जाना**–भय आदि के कारण मुख पर सफेदी छा जाना।
चेहलुम–(फा. पुं.) मुहर्रम के चालीसवें दिन पड़नेवाला एक मुसलमानी त्योहार।
चैत–(हि. पुं.) चैत्र, हिन्दुओं के वर्ष का पहिला महीना, वह चान्द्र मास जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़ता है।
चैतन्य–(सं.पुं.) चित् स्वरूप आत्मा, ज्ञान, वैष्णवों के एक संप्रदाय के प्रवर्त्तक गौरांग महाप्रभु जिनका जन्म १५वीं शताब्दि में बंगाल के नदिया जिले में हुआ था, सचेता, सावधानी।
चैता–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी, एक प्रकार का लोकगीत।
चैती–(हिं. स्त्री.) चैत में काटा जानेवाला अन्न, रबी, चैत्र मास में गाने का एक चलता गाना, चैता; (वि.) चैत्र संबंधी।
चैत्त, चैत्तिक–(सं. वि.) चित्त का।
चैत्य–(सं. पुं.) मन्दिर, देवालय, यज्ञशाला, बुद्ध की मूर्ति, पीपल का वृक्ष, बौद्ध भिक्षुक, बौद्ध संन्यासियों का मठ, विहार, चिता; (वि.) चिता सम्बन्धी।
चैत्यक, चैत्यतरु–(सं.पुं.) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।
चैत्यपाल–(सं.पुं.) चैत्य का प्रधान अधिकारी
चैत्यमुख–(सं. पुं.) कमण्डलु।
चैत्यवंदन–(सं. पुं.) जनियों या बौद्धों का मन्दिर।
चैत्यविहार–(सं. पुं.) बौद्धों का मठ।
चैत्यवृक्ष–(सं. पुं.) देखें 'चैत्यतरु'।
चैत्यस्थान–(सं. पुं.) वह मन्दिर जिसमें बुद्धदेव की मूर्ति स्थापित हो।
चैत्र–(सं. पुं.) चैत का महीना, संवत् का पहिला महीना, बौद्ध भिक्षुक, यज्ञभूमि, देवालय, मन्दिर, चैत्य,; –**क**–(पुं.) चैत्र मास, चैत का महीना; –**गौड़ी**–(स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी; –**रथ**–(पुं.) कुबेर के बगीचे का नाम; –**सख**–(पुं.) मदन, कामदेव।
चैत्रावली–(सं.स्त्री.) चैत्रमास की पूर्णिमा।
चैत्री–(सं.स्त्री.) चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा।
चैदिक–(सं. वि.) चेदि देश संबंधी।
चैन–(हिं. पुं.) आनन्द, सुख; (मुहा.) –**उड़ाना**–आनन्द करना; –**की बंशी बजाना**–आराम से खाते-पीते जीवन व्यतीत करना; –**से कटना या गुजरना**–आनन्दपूर्वक समय बीतना।
चैपला–(हिं.पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
चैयाँ–(हिं. पुं.वा स्त्री.) बाहु।
चैल–(सं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा, पहिनावा।
चैला–(हिं. पुं.) कुल्हाड़ी से चीरे हुए लकड़ी के टुकड़े जो जलाने के काम में आते हैं।
चैलिक–(सं. पुं.) कपड़े का टुकड़ा।
चैली–(हि. स्त्री.) चीरी हुई लकड़ी का छोटा चैला।
चोंक–(हिं. स्त्री.) चुम्बन से गाल पर पड़ा हुआ दाँत का चिह्न।
चोंकर–(हिं. पुं.) देखें 'चोकर'।
चोंका–(हिं.पुं.) चूसने की क्रिया (विशेषत: स्तन); (मुहा.)–**पीना**–शिशु का माँ का स्तन चूसना।
चोंगा–(हि.पुं.) बाँस, कागज आदि की एक ओर बंद तथा दूसरी ओर खुली हुई पोली नली।
चोंगी–(हिं. स्त्री.) भाथी में की हवा निकलने की नली।
चोंघना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'चुगना'।
चोंच–(हिं. स्त्री.) पक्षी के मुख का नुकीला अगला भाग, चंचु, तुण्ड, ठोर, मुँह; (मुहा.) **दो दो चोंच होना**–कहा-सुनी या झगड़ा होना।
चोंचला–(हिं. पुं.) देखें 'चोचला'।
चोंटना–(हिं. क्रि. स.) नोचना, खोंटना।
चोंड़ा–(हिं.पुं.) स्त्रियों के सिर का बाल, झोंटा, खेत के पास खोदा हुआ कच्चा छोटा कुआँ, सिर, मस्तक, माथा।
चोंथ–(हि.पुं.) गाय, भैंस आदि का उतना गोबर जितना वह एक बार करे।
चोंथना–(हिं. क्रि.स.) नोचना, चोथना।
चोंधर, चोंधरा–(हिं. वि.) बहुत छोटी आँखोंवाला, मूर्ख।
चोंप–(हिं. पुं.वा स्त्री.) देखें 'चोप'।
चोआ–(हिं. पुं.) एक सुगन्धित द्रव पदार्थ जो चन्दन और देवदार के बुरादे तथा सुगंधित फूलों को मिलाकर और खौलाकर चुआने से बनता है, तौलने में किसी बाट की कमी पूरी करने के लिए जो कंकड़-पत्थर का टुकड़ा प्रयोग किया जाता है।
चोई–(हिं. स्त्री.) मछली के शरीर पर के कड़े और सीप जैसे चिकने टुकड़े।
चोई–(हिं. स्त्री.) दाल का छिलका जो उबाल के समय इसमें से अलग होता है।
चोक–(सं. पुं.) भड़भाँड़ की जड़ जो औषधों में प्रयुक्त होती है।
चोकर–(हिं. पुं.) पीसे हुए अन्न की भूसी या छिलका जो आटे को चालने पर निकलता है।
चोका–(हिं. पुं.) चूसने की क्रिया, चोंका।
चोक्ष–(सं. वि.) शुद्ध, पवित्र, तीक्ष्ण, प्रशंसनीय।
चोख–(हिं.वि.) वेग, फ़ुरती; (वि.) चोखा।
चोखना–(हि. क्रि. स.) चूसना, चूसकर स्तन पीना।
चोखा–(हिं. वि.) शुद्ध, बिना मिलावट का, उत्तम, सच्चा, पैनी धार का, चतुर, खाद्य; (पुं.) बैंगन या अरुई का भरता; –**ई**–(स्त्री.) चुसाई, चोखापन।
चोगर–(हिं. पुं.) उल्लू के समान आँख-वाला घोड़ा।
चोच–(सं. पुं.) छाल, वल्कल, केला, नारियल।
चोचला–(हि. पुं.) अपने प्रिय को मोहित करने के लिये स्त्रियों का नखरा, अपने अंगों की गति या चेष्टा, हावभाव।
चोचलेबाजी–(हिं. स्त्री.) नखरा करना, नखरेबाजी।

चोज–(हि. पुं.) दूसरों को हँसानेवाली वार्ता, हँसी, ठट्ठा, व्यंग्य-पूर्ण उक्ति, सुभाषित ।

चोट–(हि. स्त्री.) प्रहार, आघात, टक्कर, मार, घाव, आघात का प्रभाव, आक्रमण, मानसिक व्यथा, शोक, सन्ताप, दुःख, व्यंग्य-पूर्ण विवाद, ताना, धोखा; (मुहा.)–उभड़ना–चोट में फिर से पीड़ा होना; –खाना–प्रहार से आहत होना; –खाली जाना–आक्रमण व्यर्थ होना; –पर चोट पड़ना–संकट पर संकट या हानि पर हानि होना; –बचाना–चोट न लगने देना ।

चोटइल–(हि. वि.) चुटैल, चोट खाया हुआ ।

चोटहा–(हि. वि.) जिसके अंग पर आघात का चिह्न हो ।

चोटा–(हि. पुं.) राब का पसेव जो कपड़े से छानने पर उसमें से निकलता है, शीरा ।

चोटाना–(हि. क्रि. अ.) चोट खाना ।

चोटार–(हि. वि.) चोट पहुँचानेवाला, चुटैल ।

चोटारना–(हि. क्रि. स.) चोट करना ।

चोटिया–(हि. स्त्री.) चोटी ।

चोटियाना–(हि. क्रि. स.) चोट मारना, बल प्रयोग करना, चोटी पकड़ना ।

चोटी–(हि. स्त्री.) शिखा, चुन्दी, स्त्रियों के एक में एक गुँथे हुए बाल, इसमें बाँधने का डोरा, जूड़े में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण, पक्षियों के सिर पर की कलँगी, शिखर, उठा हुआ ऊपर का भाग; (मुहा.)–फटाना–वश में या अधीनता में आना; –करना–बालों को गूँथकर चोटी बनाना; –हाथ में होना–वश में होना; –का–(वि.) सर्वश्रेष्ठ; –दार–(वि.) जिसके चोटी हो, चोटीवाला; –पोटी–(स्त्री.) झूठी बात, प्रशंसा से भरी हुई हुई बात, बनावटी बात; –वाला–(पुं.) पिशाच, प्रेत ।

चोट्टा–(हि. पुं.) तस्कर, चोरी करनेवाला ।

चोड़–(सं. पुं.) उत्तरीय वस्त्र, उपरना ।

चोड़प–(हि. पुं.) एक प्रकार का पहिनने का वस्त्र ।

चोड़ी–(हि. स्त्री.) स्त्रियों की पहिनने की साड़ी ।

चोप–(हि. पुं.) देखें 'चोंप' ।

चोद–(सं. पुं.) चाबुक, नुकीले सिरे की छड़ी ।

चोदक–(सं. वि.) प्रेरणा करनेवाला, उसकानेवाला ।

चोदक्कड़–(हि. पुं.) अधिक स्त्री-प्रसंग करनेवाला ।

चोदना–(सं. स्त्री.) विधि-वाक्य, प्रेरणा; (हि. क्रि. स.) स्त्री-प्रसंग करना ।

चोदाई–(हि. स्त्री.) स्त्री के साथ संभोग, मैथुन ।

चोदास–(हि. स्त्री.) मैथुन की इच्छा, कामेच्छा ।

चोदासा–(हि. वि.) संभोग की अधिक इच्छावाला ।

चोद्य–(सं. वि.) प्रेरणा करने योग्य; (पुं.) छोटा प्रश्न ।

चोप–(हि. पुं.) इच्छा, चाह, उमंग, उत्साह, उत्तेजना, बढ़ावा, वह चिपचिपा रस जो कच्चे आम की ढेपुनी तोड़ने पर निकलता है ।

चोपदार–(हि. पुं.) द्वारपाल ।

चोपना–(हि. क्रि. अ.) मोहित होना, मुग्ध होना ।

चोपी–(हि. स्त्री.) देखें 'चोप'; (वि.) इच्छा करनेवाला, उत्साही ।

चोबचीनी–(हि. स्त्री.) एक लता की जड़ जो औषध के काम में आती है ।

चोभाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'चुभाना' ।

चोभा–(हि. पुं.) वह पोटली जिसमें दवा बाँधकर शरीर का कोई अंग सेंका जाता है; (मुहा.)–देना–ऐसी पोटली से सेंकना ।

चोया–(हि. पुं.) देख 'चोआ' ।

चोर–(सं. पुं.) छिपकर पराये की वस्तु हरण करनेवाला, तस्कर, घाव आदि का दूषित विकार जो शरीर में रह जाता है, अनिष्टकारक पदार्थ, छिपाया हुआ बुरा भाव, चोरक नामक गन्ध-द्रव्य; (वि.) छिपा हुआ, गुप्त; (मुहा.)–पड़ना–चोर का आकर कुछ चुरा ले जाना; –पर मोर पड़ना–धूर्त के साथ धूर्तता करना; मन में चोर पैठना–मन में कोई खटका उत्पन्न होना; काम-चोर–(वि.) काम करने में आलस्य करनेवाला ।

चोर उड़द–(हि. पुं.) उड़द का कड़ा दाना जो कंकड़ के समान होता है ।

चोरक–(सं. पुं.) एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य ।

चोरकट–(हि. पुं.) चोर, उचक्का ।

चोरखाना–(हि. पुं.) सन्दूक आदि में लगा हुआ गुप्त स्थान या खाना जिसका पता सबको न लग सके या जो गुप्त विधि से खुल सके ।

चोर खिड़की–(हि. स्त्री.) छोटा गुप्तद्वार ।

चोर गली–(हि. स्त्री.) वह पतली गली जिसमें से बहुत कम लोग चलते हैं, पायजामे का वह भाग जो जाँघों के बीच में रहता है ।

चोर चकार–(हि. पुं.) चोर, उचक्का ।

चोरछिद्र–(सं. पुं.) गुप्त छिद्र, सन्धि, दरज ।

चोर जमीन–(हि. स्त्री.) वह भूमि जो ऊपर से ठोस जान पड़े पर नीचे से पोली हो ।

चोर ताला–(हि. पुं.) वह ताला जो पेचीले ढंग से खुलता और बंद होता है ।

चोरथन–(हि. पुं.) (गाय या भैंस) जो दूध चुरा लेती हो ।

चोरदंत–(सं. पुं.) वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त निकलता है ।

चोरदरवाजा–(हि. पुं.) गुप्तद्वार ।

चोरना–(हि. क्रि. स.) चोराना ।

चोरपहरा–(हि. पुं.) गुप्त रूप से बैठाया हुआ पहरा ।

चोरपुष्पिका, चोरपुष्पी–(सं. स्त्री.) अंधाहुली, शंखाहुली नामक पौधा ।

चोरपेट–(हि. पुं.) अरसे तक पता न चलनेवाला गर्भ ।

चोरबदन–(हि. पुं.) वह बलवान पुरुष जो देखने में दुर्बल तथा बलहीन जान पड़े ।

चोर-महल–(हि. पुं.) वह बड़ा घर जिसमें राजा या रईस रखनी या प्रेमिका को रखते हैं ।

चोर मिहींचिनी–(हि. स्त्री.) आँख-मिचौनी का खेल ।

चोररस्ता–(हि. पुं.) देखें 'चोरगली' ।

चोरहटिया–(हि. पुं.) वह दुकानदार जो चोरों से माल मोल लेता हो ।

चोररूप–(हि. पुं.) चतुर चोर ।

चोरसीढ़ी–(हि. स्त्री.) छिपी सीढ़ी ।

चोरस्नायु–(सं. पुं.) कौवाठोंठी ।

चोरा-चोरी–(हि. अव्य.) छिपे-छिपे, चुपके से ।

चोराना–(हि. क्रि. स.) देखें 'चुराना' ।

चोरिका–(सं. स्त्री.) चराने का काम, चोरी ।

चोरित–(सं. वि.) चुराया हुआ ।

चोरी–(हि. स्त्री.) चुराने का काम, चुराने का भाव, छिपाव; –की काम की बात–वह काम या बात जो छिपाकर किया जाय या कही जाय; –छिनाला–(स्त्री.) चोरी और व्यभिचार, (पर-स्त्री या पर-पुरुष-गमन); –चोरी–(अव्य.) गुप्त रूप से; (मुहा.) –लगना–चोरी करने का दोषारोपण होना; –लगाना–चोरी करने का दोष आरोपित करना ।

चोल–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के दक्षिण में था, इस देश का

निवासी, अँगिया, चोली, वल्कल, कवच।
चोलकी–(हिं. पुं.) नारंगी का वृक्ष, हाथ की कलाई।
चोलना–(हिं. पुं.) देखें 'चोला' (साधुओं का लंबा कुरता)।
चोलरंग–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्का लाल रंग।
चोल सुपारी–(हिं. स्त्री.) चिकनी सुपारी।
चोला–(हिं. पुं.) साधुओं का पहिनने का ढीला लंबा कुरता, बच्चों को पहली बार नवीन वस्त्र पहिनाने की रीति; (मुहा.) **चोले-दामन का साथ**–देखें 'चोली-दामन' का साथ; –बदलना–रूप बदलना, एक शरीर त्याग कर दूसरा शरीर धारण करना, मरना।
चोली–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों की एक प्रकार की अँगिया; (मुहा.)–**दामन का साथ**–अधिक घनिष्ठता।
चोली मार्ग–(सं.पुं.) वाममार्ग का एक भेद।
चोल्ला–(हिं. पुं.) देखें 'चोला'।
चोवा–(हिं. पुं.) देखें 'चोआ'।
चोषक–(सं. वि.) चूसनेवाला।
चोषण–(सं.पुं.) चूसने की क्रिया, चूसना।
चोषना–(हिं. क्रि. स.) चूसना, दूध पीना।
चोष्य–(सं. वि.) चूसने योग्य, चूसने लायक।
चोसा–(हिं. पुं.) लकड़ी रदने का रंदा।
चोस्क–(सं. पुं.) उत्तम जाति का घोड़ा।
चोहान–(हिं. पुं.) देखें 'चौहान'।
चौंक–(हिं. स्त्री.) चौंकने का भाव, आश्चर्य, पीड़ा या भय के कारण शरीर का झटके से हिल उठना तथा जी घबड़ाना, भड़क, झिझक।
चौंकना–(हिं. क्रि अ.) आश्चर्य, भय, पीड़ा आदि के कारण शरीर काँप उठना, भड़कना, झिझकना, चकित होना, भौंचक्का होना, विस्मित या हैरान होना, हिचकना, चौकन्ना होना, सचेत होना, खबरदार होना।
चौंकाना–(हिं. क्रि.स.) एकाएक भय उत्पन्न करके कँपा देना, भड़काना, जी धड़काना, सतर्क करना, चौकन्ना करना, आश्चर्य में डालना, विस्मित करना।
चौंचा–(हिं. पुं.) सिंचाई के लिए पानी से भरा हुआ गड्ढा जिसमें से पानी खेत में चढ़ाया जाता है।
चौंटना–(हिं. क्रि.स.) चुटकी से तोड़ना।
चौंडल–(हिं.पुं.) परदेदार डोली।
चौंतरा–(हिं. पुं.) देखें 'चबूतरा'।
चौंतिस–(हिं. वि. पुं.) देखें 'चौंतीस'।
चौंतीस–(हिं. वि. पुं.) तीस और चार (की संख्या), ३४; –वाँ–(वि.) तैंतीस संख्या के बाद का।
चौंध–(हिं. स्त्री.) अधिक प्रकाश या चमक के कारण दृष्टि की अस्थिरता, चकाचौंध, तिलमिलाहट।
चौंधना–(हिं. क्रि. अ.) बिजली का चमकना, कौंधना।
चौंधियाना–(हिं. क्रि. अ.) अधिक प्रकाश या चमक के कारण दृष्टि को स्थिर न रख सकना, चकाचौंध होना।
चौंधी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चकाचौंध'।
चौंबक–(सं. वि.) चुम्बक की शक्ति का, आकर्षण करनेवाला, जिसमें चुम्बक मिला हो।
चौंर–(हिं. पुं.) चँवर, झालर, फुंदना।
चौंरगाय–(हिं. स्त्री.) सुरा-गाय।
चौंरा–(हिं.पुं.) अन्न रखने का गड्ढा, गाड़।
चौंराना–(हिं. क्रि. स.) चँवर डोलाना, झाड़ू देना, बुहारना।
चौंरी–(हिं. स्त्री.) मक्खी हाँकने का छड़ी में बँधा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा, वह डोरी जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल गूँथ कर बाँधती हैं, सफेद पूँछ की गाय।
चौंसठ–(हिं. वि., पुं.) साठ और चार (की संख्या), ६४; –वाँ–(वि.) संख्या में तिरसठ के बाद का।
चौंह–(हिं. पुं.) गलफड़ा।
चौंही–(हिं. स्त्री.) हल की एक लकड़ी जिसको परिहत भी कहते हैं।
चौ–(हिं. वि.) चार; (पुं.) जौहरियों का मोती तौलने का एक परिमाण।
चौआ–(हिं. पुं.) चौपाया, चार अंगुल की नाप, ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
चौआई, चौवाई–(हिं. स्त्री.) चारों ओर से बहनेवाली हवा, अफवाह।
चौआना–(हिं. क्रि. अ.) चकित होना, भौंचक्का होना, विस्मित होना, चकपकाना, व्यग्र होना, घबड़ाना।
चौक–(हिं.पुं.) चौकोर भूमि, घर के बीच का चौखूंटा स्थान जिसके ऊपर छाजन न हो, मांगलिक अवसर पर अबीर, आटे इत्यादि से बनाया हुआ चित्रित स्थान जहाँ देवता का स्थापन तथा पूजन होता है, नगर का बाजार जहाँ बड़ी-बड़ी दुकानें हों, चौराहा, चौमुहानी, चौसर खेलने का कपड़ा, सामने के चार दाँतों की पंक्ति; (मुहा.)–पूरना–समतल भूमि पर आटे से चौकोर क्षेत्र बनाना।
चौकठ, चौकठा–(हिं.पुं.) देखें 'चौखट'।
चौकड़–(हिं. वि.) उत्तम, बढ़िया, अच्छा।
चौकड़ा–(हिं. पुं.) कान में पहिनने की बाली जिसमें दो मोती होते हैं, उपज की बँटाई जिसमें स्वामी को चौथा भाग मिलता है।
चौकड़ी–(हिं. स्त्री.) हरिन की वह गति जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता हुआ दौड़ता है, छलांग, कुदान, चार मनुष्यों का गुट्ट, पलथी, चार युगों का समूह, एक प्रकार का आभूषण, एकसाथ चार-चार रस्सियोंकी लड़ियों से चारपाई बुनने की शैली, चार घोड़े की गाड़ी; (मुहा.)–भूल जाना–बुद्धि काम में न आना, सब उपाय या तरकीब भूल जाना; चंडाल-चौकड़ी–(स्त्री.) उपद्रवी मनुष्यों का समूह।
चौकन्ना–(हिं. वि.) सावधान, सजग, सचेत, चौकस, चौंका हुआ।
चौकरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'चौकड़ी'।
चौकल–(सं.पुं.) चार मात्राओं का समूह।
चौकस–(हिं. वि.) सावधान, सचेत, चौकन्ना, ठीक।
चौकसाई, चौकसी–(हिं.स्त्री.) सावधानी।
चौका–(हिं.पुं.) पत्थर का चौकोर टुकड़ा, रोटी बेलने का काठ या पत्थर का गोल टुकड़ा, चकला, सामने के चार दाँतों की पंक्ति, सिर पर पहिनने का एक आभूषण, सीसफूल, चौकोर ईंट, हिन्दुओं के रसोई बनाने का स्थान, स्वच्छता के लिये मिट्टी-गोबर का लेप, पूजन का चौक, एक साथ मिले हुए या एक-से चार पदार्थ, चार बूटियों का ताश का पत्ता, एक प्रकार का ठस बिना हुआ वस्त्र; (मुहा.)–**बरतन करना**–रसोई-घर को लीपने-पोतने तथा जूठे पात्रों को माँजने का काम करना; –लगाना–चौपट या बरबाद करना, नष्ट करना।
चौकिया सोहागा–(हिं. पुं.) छोटे-छोटे टुकड़ोंवाला स्वच्छ किया हुआ सोहागा जो औषधों में प्रयुक्त होता है।
चौकी–(हिं. स्त्री.) काठ या पत्थर का चार पायोंवाला आसन, कुरसी, खंभे के ऊपर या नीचे का चौकोर भाग, पड़ाव का स्थान, अड्डा, सराय, पुलिस का छोटा थाना जहाँ थोड़े से सिपाही रहते हैं, सिपाहियों की नियुक्ति जो कहीं रक्षा के लिये की जाती है, पहरा, देवता की भेंट जो उनको चढ़ाई जाती है, जादू-टोना, गले में पहिनने का एक

आभूषण, पटरी, रोटी बेलने का चकला, मेड़ों या रात में किसी खेत में रखना; (मुहा.)–देना–किसी के बैठने के लिये कुर्सी रखना, रखवाली करना, पहरा देना; –बैठना–रक्षा के निमित्त पहरेदार नियुक्त होना; –दार–(पुं.) पहरा देनेवाला, गोइँत; –दारी–(स्त्री.) पहरा देने का काम, रखवाली, चौकीदार का पद, वह धन जो चौकीदार रखने के लिये दिया जाय।

चौकोन, चौकोना, चौकोर–(हि. वि.) चतुष्कोण, चौखूंटा।

चौखंड–(हि.वि.) चार खंडों का, चार आंगन या चौक का (मकान)।

चौखट–(हि. स्त्री.) चार लकड़ियों से बना हुआ ढांचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे होते हैं, देहली; (मुहा.) –न झांकना–कभी न आना; –लांघना–घर के भीतर जाना या बाहर आना।

चौखटा–(हि. पुं.) देखें 'चौखट'।

चौखना–(हि.वि.) चार खंडों का।

चौखा–(हि. पुं.) वह स्थान जहाँ चार गांवों की सीमाएँ मिलती हैं।

चौखानि–(हि. स्त्री.) चार प्रकार के जीव; यथा–अण्डज, पिण्डज, स्वेदज और उद्भिज।

चौखूंट–(हि. पुं.) चारों दिशाएँ, चारों ओर; (वि.) चौकोर।

चौखूंटा–(हि.वि.) चौकोर, चौखूंट, चौकोना।

चौगड़ा–(हि. पुं.) देखें 'चौघड़', शशक, खरहा।

चौगड्डा–(हि. पुं.) देखें 'चौखा'।

चौगड्डी–(हि. स्त्री.) पशुओं को फँसाने का बांस की फट्टियों का बना हुआ ढांचा।

चौगिर्द–(हि.अव्य.) चारों ओर।

चौगान–(फा. पुं.) पोलो के खेल-जैसा एक खेल।

चौगुन–(हि. वि.) चौगुना, चतुर्गुण।

चौगुना, चौगून–(हि.वि.) चतुर्गुण; (मुहा.) मन चौगुना होना–उत्साह बढ़ना, चित्त अति प्रसन्न होना।

चौगोड़ा–(हि.वि.) चार पैरोंवाला; (पुं.) शशक, खरहा।

चौगोड़िया–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की चार पायों की ऊंची चौकी जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ियाँ लगी होती हैं, व्याध या बहेलिये का बांस की फट्टियों का बना हुआ चिड़ियों को फँसाने का टोना।

चौगोशा–(हि. पुं.) मिठाई आदि भेजने की चौकोर थाली।

चौघड़–(हि. पुं.) दाढ़ का वह चौड़ा दांत जो चिपटा होता है और जिससे आहार को चबाने और कूँचने का काम लिया जाता है, चौभड़।

चौघड़ा–(हि. पुं.) एक प्रकार का चार खानों का डिब्बा जिसमें मसाला आदि रखा जाता है; लवंग, इलायची, सुपारी आदि रखने का चांदी का चार खानोंवाला डिब्बा, पत्ते का पुट जिसमें चार बीड़े पान लपेटकर रखे होते हैं।

चौघड़ी–(हि. वि.) चार तहों या परतोंवाला।

चौघर–(हि. पुं.) घोड़े की एक चाल, सरपट।

चौघरा–(हि. पुं.) देखें 'चौघड़ा'; (वि.) चार खानों का।

चौघोड़ी–(हि. स्त्री.) चार घोड़ों की गाड़ी या रथ।

चौचंद–(हि. पुं.) निन्दा की चर्चा, अपवाद; (मुहा.)–पारना–अपवाद करना; –हाई–(वि.स्त्री.) अपवाद फैलानेवाली।

चौजुगी–(हि. स्त्री.) चार युगों का काल।

चौड़–(सं. पुं.) चौल-संस्कार, मुण्डन।

चौड़ा–(हि. वि.) लंबाई से भिन्न दिशा में विस्तृत; (पुं.) अन्न रखने का गड्ढा।

चौड़ाई, चौड़ान–(हि. स्त्री.) लंबाई से भिन्न दिशा का फैलाव, पाट।

चौड़ाना–(हि.क्रि.स.) चौड़ा करना, फैलाना।

चौड़ाव–(हि. पुं.) देखें 'चौड़ान'।

चौड़ोल–(हि. पुं.) एक बाजा, चौघड़ा।

चौतगी–(हि. वि.) चार तागा मिलाकर बटा हुआ डोरा।

चौतनियाँ–(हि. स्त्री.) बच्चों की टोपी जिसमें चार बंद लगे होते हैं, अँगिया, चोली।

चौतनी–(हि. स्त्री.) देखें 'चौतनियाँ'।

चौतरफा–(हि. पुं.) एक प्रकार का तम्बू; (अव्य.) चारों ओर, चतुर्दिक।

चौतरा–(हि. पुं.) देखें 'चबूतरा'।

चौतहा–(हि. वि.) चार तहोंवाला।

चौतही–(हि. स्त्री.) चार तह करके बिछाने की मोटी चांदनी।

चौतारा–(हि. पुं.) एक बाजा जिसमें चार तार लगे होते हैं।

चौताल–(हि. पुं.) मृदंग का एक ताल, होली में गाने का एक प्रकार का गीत।

चौताला–(हि. वि.) चार तालवाला।

चौताली–(हि. स्त्री.) कपास की ढोंड़ी जिसमें से रुई निकलती है।

चौथ–(हि. स्त्री.) महीने के प्रत्येक पक्ष का चौथा दिन, चतुर्थांश, चौथाई भाग, मराठा शासन-काल में वह कर जिसमें आय का चौथाई अंश राजा को मिलता था; (मुहा.)–का चाँद–भादों सुदी चौथ का चन्द्रमा जिसके विषय में यह बात प्रसिद्ध है कि जो उसको देखता है उसको झूठा कलंक लगता है; (वि.) चौथा।

चौथपन–(हि. पुं.) मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था, वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

चौथा–(हि.वि.) क्रम में तीसरे के बाद का।

चौथाई–(हि. पुं.) चतुर्थांश, चतुर्थ या चौथा भाग।

चौथिया–(हि. पुं.) चौथे दिन आनेवाला ज्वर; (वि.) चौथाई का हकदार।

चौथी–(हि. स्त्री.) विवाह के चौथे दिन होनेवाली एक रीति जिसमें वर और कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं।

चौथैया–(हि. पुं.) चतुर्थांश, चौथा भाग।

चौदंता–(हि. वि.) चार दांतोंवाला, उग्र, उद्दण्ड।

चौदंती–(हि. स्त्री.) धृष्टता, उद्दण्डता।

चौदस–(हि. स्त्री.) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि।

चौदह–(हि.वि.,पुं.) (संख्या) जो गिनती में दस और चार हो १४; –वाँ–(वि.) क्रम में तेरह के बाद का।

चौदांत–(हि. पुं.) दो हाथियों की लड़ाई।

चौदानी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की कान में पहिनने की बाली।

चौधराई–(हि. स्त्री.) चौधरी का काम या पद।

चौधराना–(हि. पुं.) वह धन जो चौधरी को उसके काम के लिये दिया जाय।

चौधरी–(हि. पुं.) किसी जाति या समाज का मुखिया।

चौना–(हि. पुं.) कुएँ की जगत पर का ढाल, पौदर।

चौप–(हि. पुं.) देखें 'चोंप'।

चौपई–(हि. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह मात्राएँ होती हैं।

चौपखा–(हि. पुं.) चहारदीवारी।

चौपग–(हि. पुं.) चारों पैरों का प्राणी, चौपाया।

चौपट–(हि. वि.) चारों ओर से खुला हुआ, नष्ट-भ्रष्ट, विध्वस्त; –चरण–(पुं.) वह व्यक्ति जिसके पहुँचते ही सर्वनाश हो।

चौपटहा–(हि. वि.) नष्ट करनेवाला, सर्वनाशी।

चौपटा–(हि. वि.) देखें 'चौपटहा'।

चौपड़–(हि. पुं.) चौसर का खेल।

चौपत–(हिं. स्त्री.) कपड़े की तह; (पुं.) वह पत्थर का टुकड़ा जिसमें कील जड़ी होती है और जिस पर कुम्हार का चाक घूमता है।
चौपतना–(हिं.क्रि.स.) कपड़े की तह लगाना।
चौपतिया–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का साग।
चौपथ–(हिं. पुं.) चौराहा, चौमुहानी।
चौपद–(हिं. पुं.) चौपाया, पशु।
चौपर–(हिं. पुं.) देख 'चौपड़'।
चौपरतना–(हिं.क्रि.स.) कपड़े की तह लगाना, चौपतना।
चौपल–(हिं. पुं.) देखें 'चौपत'।
चौपहरा–(हिं. वि.) चार पहरों का।
चौपहल–(हिं. वि.) जिसमें चार पहल हों, वर्गात्मक।
चौपहला, चौपहलू–(हिं. वि.) वर्गात्मक, चार पहलों का।
चौपहिया–(हिं. वि.) जिसमें चार पहिये हों; (स्त्री.) चार पहियों की गाड़ी।
चौपाई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं, चारपाई, खटिया।
चौपाया–(हिं. पुं.) चार पैरोंवाला पशु, गाय, बैल, भैंस आदि।
चौपाल–(हिं. पुं.) बैठने-उठने का स्थान जो ऊपर से ढपा तथा चारों ओर से खुला हो, दालान, एक प्रकार की खुली पालकी।
चौपुरा–(हिं. पुं.) वह बड़ा कुआँ जिस पर चार पुर एक साथ चल सकें।
चौपया–(हिं. पुं.) देखें 'चौपाई'।
चौफला–(हिं. वि.) जिसमें चार फल या धार हों।
चौफेर–(हिं. अव्य.) चारों ओर।
चौफेरी–(हिं. स्त्री.) चारों ओर घूमना, परिक्रमा।
चौबंदी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मिरजई, राजस्व, कर, घोड़े के चारों सुमों की नालबन्दी।
चौबंसा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का वर्णवृत्त।
चौबगला–(हिं. पुं.) कुरता, फतुही इत्यादि में बगल के नीचे तथा कली के ऊपर का भाग; (वि.) चारों ओर का।
चौबगली–(हिं.स्त्री.) बगलबन्दी, चौबंदी।
चौबच्चा–(हिं. स्त्री.) देखें 'बहबच्चा'।
चौबरदी–(हिं.स्त्री.) चार बैलों की गाड़ी।
चौबरसी–(हिं.स्त्री.) वह श्राद्ध या उत्सव जो संबद्ध घटना से चार वर्ष बाद किया जावे।
चौबाइन–(हिं. स्त्री.) चौबे की स्त्री।
चौबाई–(हिं.स्त्री.) चारों ओर बहनेवाली हवा, चौआई, किंवदंती।
चौबारा–(हिं. पुं.) घर के ऊपर की वह कोठरी जिसमें चारों ओर खिड़कियाँ हों, खुली बैठक, बालाखाना; (अव्य.) चौथी बार।
चौबिस, चौबीस–(हिं.वि., पुं.) बीस और चार (की संख्या), २४; **–वाँ**–(वि.) संख्या में तेईस के बाद का।
चौबे–(हिं. पुं.) ब्राह्मणों की एक शाखा, चतुर्वेदी। (मथुरा के पंडे इसी नाम से पुकारे जाते हैं।)
चौबोला–(हिं.पुं.) एक प्रकार का मात्रिक छंद।
चौभड़–(हिं. पुं.) देखें 'चौघड़'।
चौमंजिला–(हिं. वि.) चार खण्डों का (घर)।
चौमसिया–(हिं. वि.) वर्षा ऋतु के चार महीनों में होनेवाला; (पुं.) चार माशे का बाट।
चौमहल–(हिं. वि.) देखें 'चौमंजिला'।
चौमार्ग–(हिं.पुं.) चौरास्ता, चौमुहानी।
चौमासा–(हिं.पुं.) चातुर्मास, वर्षा के चार महीने, वर्षा ऋतु के संबंध की कविता।
चौमासी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का चौमासे का गाना।
चौमुख–(हिं. अव्य.) चारों ओर।
चौमुखा(हिं. वि.) चारों ओर मुखवाला; (मुहा.)**–दिया जलाना**–दिवाला निकालना।
चौमुहानी–(हिं. स्त्री.) चतुष्पथ, चौराहा, चौरास्ता।
चौमेंड़ा–(हिं.पुं.) चार सीमाएँ मिलने का स्थान।
चौरंग–(हिं. पुं.) तलवार चलाने का एक हाथ; (वि.) तलवार से कई टुकड़े किया हुआ।
चौरंगा–(हिं. वि.) जिसमें चार रंग हों, चार रंगों का।
चौरंगिया–(हिं. पुं.) मलखम्भ का एक व्यायाम।
चौर–(सं. पुं.) दूसरे की वस्तु चुरानेवाला, चोर, तस्कर, चोरपुष्पी, एक गन्ध द्रव्य।
चौरस–(हिं. वि.) जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल, बराबर, वर्गात्मक, चौपहला; (पुं.) एक प्रकार का वर्णवृत्त, ठठेरे का पात्र चिकनाने का उपकरण।
चौरसा–(हिं.पुं.) चार रुपये भर का बाट।
चौरसाई–(हिं. स्त्री.) समतल होने की अवस्था।
चौरसाना–(हिं. क्रि. स.) समतल करना, बराबर करना।
चौरसी–(हिं. स्त्री.) चौरस करने का उपकरण।
चौरस्ता–(हिं. पुं.) चौराहा, चौमुहानी।
चौरहा–(हिं. पुं.) चतुष्पथ।
चौरा–(हिं. पुं.) चबूतरा, वेदी, चौपाल, चौबारा, बाड़ा, अरवा, सफेद पूँछ का बैल।
चौराई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का शाक, चौलाई।
चौरानबे–(हिं.वि., पुं.) नब्बे और चार (की संख्या), ९४।
चौरासी–(हिं. वि., पुं.) अस्सी और चार (की संख्या), ८४, एक हजार घुंघरू, एक प्रकार की रुखानी, चौरासी लक्ष योनि; (मुहा.)**–में पड़ना या भरमना**–अनेक बार शरीर धारण करना और मरना।
चौराहा–(हिं. पुं.) चार रास्तों का संगम-स्थल, चौक।
चौरी–(हिं. स्त्री.) छोटा चबूतरा या वेदी, चउरी।
चौरेठा–(हिं. पुं.) पानी के साथ पीसा हुआ चावल।
चौर्य–(सं. पुं.) स्तेय, चोरी।
चौलकर्म–(हिं. वि.) चूड़ा संस्कार, मुण्डन।
चौलड़ा–(हिं. वि.) जिस माला में चार लड़ियाँ हों।
चौलाई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का शाक।
चौली–(हिं. पुं.) बोड़ा।
चौवन–(हिं. वि., पुं.) पचास और चार (की संख्या) ५४।
चौवा–(हिं. पुं.) हाथ की चार अंगुलियों का समूह, चार अंगुलियों में लपेटा हुआ तागा, चार अंगुल की नाप, ताश का पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों, चौपाया।
चौवालीस–(हिं.वि., पुं.) चालिस और चार (की संख्या), ४४।
चौसई–(हिं. स्त्री.) हाथ का बुना मोटा कपड़ा।
चौसर–(हिं. पुं.) एक खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार-चार गोटियों से दो मनुष्यों द्वारा खेला जाता है, चौपड़, इस खेल की बिसात, चार लड़ों का हार।
चौहट्ट, चौहट–(हिं. पुं.) वह स्थान जहां चारों ओर दुकानें हों, चौक, चौरस्ता, चौमुहानी।
चौहत्तर–(हिं. वि., पुं.) सत्तर और चार (की संख्या), ७४।
चौहद्दी–(हिं. स्त्री.) चारों ओर की सीमा।

चौहरा-(हि.वि.) चार तहों या परतों का, चौगुना; (पुं.) चौघड़ा।
चौहान-(हि.पुं.) क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।
चौहँ-(हि. अव्य.) चारों ओर।
च्यवन-(सं. पुं.) टपकना, चूना, रसना, झरना, एक ऋषि का नाम; -प्राश-(पुं.) आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध अवलेह जो शरीर को पुष्ट करता है।
च्युत-(सं. वि.) गिरा हुआ, चुआ हुआ, भ्रष्ट, पतित, पराङ्मुख, अपने स्थान से हटा हुआ।
च्युति-(सं. स्त्री.) पतन, स्खलन, झड़ना, गिरना, स्थान से हटना, चूक, अभाव, गुदाद्वार, भग।
च्यूँटा-(हि. पुं.) चींटा।
च्यूँटी-(हि. स्त्री.) चींटी।
च्यूड़ा-(हि. पुं.) चिड़वा, चूड़ा।
च्योंना-(हि. पुं.) घरिया।

छ

छ-हिन्दी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसका उच्चारण तालु से होता है; (सं.पुं.) आच्छादन, घर, खण्ड, टुकड़ा; (वि.) स्वच्छ, तरल, निर्मल।
छ, छः-(हि. वि., पुं.) पांच से एक अधिक संख्या (का), गिनती में पांच से एक अधिक, ६, जोतिष में ७ की संख्या।
छंग-(हि. पुं.) उत्संग, गोद, अंक।
छंगा-(हि. वि.) छः अँगुलियोंवाला, जिसके एक पंजे में छः अँगुलियाँ हों।
छंगुनिया-(हि. वि.) छगुनी।
छँटौरी-(हि. स्त्री.) छाँछ में बनाया हुआ एक पकवान।
छँटना-(हि. क्रि. अ.) कटकर अलग होना, समूह से अलग होना, अलग होना, छितराना, साथ छोड़ना, चुनकर अलग किया जाना, मल निकलना, दुर्बल होना; (मुहा.) छँटे छँटे फिरना-दूर-दूर रहना, कुछ संबंध न रखना; छँटा हुआ-(वि.) धूर्त, चतुर।
छँटनी-(हि. स्त्री.) छाँटने की क्रिया, कर्मचारियों की संख्या में बचत के लिए सामूहिक कमी करना।
छँटवाना-(हि. क्रि. स.) किसी वस्तु का अनावश्यक भाग कटवा देना, कटवाना, छिलवाना।
छँटाई-(हि. स्त्री.) छाँटने या अलग करने का काम, चुनने का काम।
छँटाना-(हि. क्रि. स.) देखें 'छँटवाना'।
छँटाव-(हि. पुं.) छँटनी, छाँटने का काम।
छँटैल-(हि. वि.) छँटा हुआ, धूर्त।
छँड़ना-(हि. क्रि. स.) त्यागना, छोड़ना, छाँटना, वमन या कै करना।
छँड़ाना (हि.क्रि.स.) छीनना, चुरा ले जाना।
छँड़ुआ-(हि. वि.) छोड़ा हुआ, मुक्त; (पुं.) देवता को समर्पण करके छोड़ा हुआ पशु, व्याज की छूट।
छंद-(सं. पुं.) युक्ति, चाल, रंग-ढंग, अभिप्राय, कविता, पद्य, विष; (हि.पुं.) स्त्रियों का हाथ में पहिनने का एक आभूषण; छलछंद-(पुं.) कपट, छल।
छँदना-(हि.क्रि.स.) पैरों में रस्सी लगाकर बाँधा जाना।
छंदबंद-(हि. पुं.) छलकपट, धोखा।
छंदी-(हि. स्त्री.) स्त्रियों का हाथ में पहिनने का एक आभूषण।
छंदोबद्ध-(सं. वि.) पद्य रूप में रचित।
छंदोभंग-(सं. पुं.) छंद में दोष।
छई-(हि. स्त्री.) देखें 'क्षयी'।
छक-(हि. स्त्री.) तृप्ति।
छकड़ा-(हि.पुं.) बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी; (वि.) टूटा-फूटा, जिसका ढाँचा ढीला हो गया हो।
छकड़िया-(हि. स्त्री.) छः कहारों द्वारा ढोने की पालकी।
छकड़ी-(हि. स्त्री.) छः का समूह, जिसके छः अवयव हों, देखें 'छकड़िया'।
छकना-(हि.क्रि.स.) खा-पीकर तृप्त होना, अघाना, उन्मत्त होना, चकराना।
छकाछक-(हि. वि.) परिपूर्ण, भरा हुआ, अघाया हुआ, तृप्त, उन्मत्त।
छकाना-(हि. क्रि. स.) खिला-पिलाकर तृप्त करना, उन्मत्त करना, अचंभे में डालना, कष्ट देना, परास्त करना।
छकीला-(हि. वि.) छका हुआ।
छकुर-(हि. पुं.) कृषिफल की बँटाई जिसमें भूस्वामी छठाँ भाग पाता है।
छक्का-(हि.पुं.) छः का समूह, पासे का दाँव जिसमें छः बिन्दियाँ ऊपर पड़ें, जुए का दाँव जिसमें छः कौड़ियाँ चित पड़ें, वह तारा जिसमें छः बूटियाँ हों, सुधबुध, चेतना; -पंजा-(पुं.) दाँव-पेच; (मुहा.) -पंजा भूलना-बुद्धि काम न करना, चाल न चलना; छक्के छूटना या छुड़ाना- साहस छूटना या छुड़ाना।
छग-(सं. पुं.) छाग, बकरा।
छगड़ा-(हि. पुं.) छाग, बकरा।
छगण-(सं. पुं.) सूखा गोबर, कंडा।
छगन-(हि. पुं.) छोटा बालक, प्रिय बालक; -मगन-(पुं) हँसने-खेलनेवाले प्यारे बच्चे।
छगरी-(हि. स्त्री.) छोटी बकरी।
छगल-(सं. पुं.) छाग, बकरा।
छगुनी-(हि. स्त्री.) हाथ की सबसे छोटी या कानी अँगुली।
छछिआ, छछिया-(हि. स्त्री.) छाँछ पीने का छोटा पात्र, छाछ, मट्ठा, तक्र।
छछूँदर, छछुंदर-(हि. पुं.) चूहे की जाति का जन्तु जिसका थूथन अधिक नुकीला होता है, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा; (मुहा.)-के सिर पर चमेली का तेल-किसी निरा अयोग्य व्यक्ति या कुपात्र को अच्छी चीज मिलना; -छोड़ना-हलचल मचाने की बात कहना।
छजना-(हि.क्रि.अ.) शोभा देना, अच्छा लगना, सजना, उचित जान पड़ना, ठीक जँचना।
छजाना-(हि. क्रि. स.) सजाना, सज्जित करना।
छज्जा-(हि. पुं.) छाजन या छत का भीत के बाहर निकला हुआ भाग, ओलती, ओरी, द्वार के ऊपर की पत्थर की पटिया जो बाहर की ओर निकली रहती है, टोपी के किनारे का निकला हुआ भाग।
छटंकी-(हि. स्त्री.) एक छटाँक का बटखरा, बहुत छोटी वस्तु।
छटक-(हि. पुं.) रुद्रताल का एक भेद।
छटकना-(हि.क्रि.अ.) वेग के साथ निकल जाना, सरकना, अलग-अलग रहना, दाँव से निकल जाना, हाथ न आना, उछलना, कूदना।
छटका-(हि.पुं.) मछली फँसाने का गड्ढा।
छटकाना-(हि. क्रि. स.) छटकने देना, बन्धन से छुड़ाना, बलपूर्वक अलग करना।
छटना-(हि. क्रि. अ.) देखें 'छँटना'।
छटपट-(हि. पुं.) पीड़ा या बन्धन के कारण पैर फटकने की क्रिया; (वि.) चंचल, चपल।
छटपटाना-(हि. क्रि. अ.) तड़फड़ाना, व्याकुल होना, घबड़ाना, बेचैन होना, उत्कंठित होना।
छटपटी-(हि. स्त्री.) व्याकुलता, घबड़ाहट, तीव्र उत्कंठा।
छटाँक-(हि. स्त्री.) एक सेर का सोलहवाँ भाग; -भर-पाव भर का चौथाई, बहुत थोड़ा-सा।

छटा–(सं. स्त्री.) प्रकाश, प्रभा, झलक, शोभा, सौन्दर्य, छवि, बिजली।
छटाफल–(सं.पुं.) ताड़ या सुपारी का वृक्ष।
छटाभा–(सं. स्त्री.) बिजली की चमक।
छटैल–(हिं.वि.) छँटा हुआ, चतुर, चालाक।
छट्ठ,छट्ठी–(हिं.स्त्री.) देखें 'छठ, छठी'।
छठ–(हिं. स्त्री.) पक्ष की छठवीं तिथि।
छठा, छठवाँ, छठाँ–(हिं.वि.) क्रम में पाँच वस्तु के बाद का; **छठे-छमासे**–(अव्य.) कभी-कभी, बहुत दिनों के बाद।
छठी–(हिं. स्त्री.) जन्म से छठे दिन अथवा छठे मास का पूजन, षष्ठी देवी का पूजन; **–बरही**–(स्त्री.) बच्चे के जन्म से छठे और नौवें दिन होनेवाला उत्सव; (मुहा.)– **का दूध निकलना**–बहुत अधिक परिश्रम करके रोजी कमाना; **–का दूध याद पड़ना**–बहुत हैरानी में पड़ना; **–का राजा**–जन्म का अमीर; (व्यंग्य) जन्म-दरिद्र।
छड़–(हिं., स्त्री., पुं.) धातु या लकड़ी का लंबा और पतला टुकड़ा या गज।
छड़ना–(हिं.क्रि.स.) अन्न की भूसी अलगाने के लिये ओखली में रखकर मूसल से कूटना, छाँटना।
छड़ा–(हिं. पुं.) स्त्रियों के पैर में पहिनने का गहना; (वि.) अकेला।
छड़िया–(हिं. पुं.) दरवान, द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
छड़ियाल–(हिं.पुं.) एक प्रकार का बरछा।
छड़ी–(हिं. स्त्री.) पतली लकड़ी या लाठी, पैजामे आदि की सीधी टँकाई, झंडी; (वि.स्त्री.) अकेली; **–दार**–(वि.) छड़ी लिये हुए, लकीरदार, सीधी लकीरोंवाला; (पुं.) द्वारपाल, दरवान, चोबदार; **–बरदार**–(पुं.) चोबदार।
छड़ीला–(हिं. पुं.) देखें 'छरीला'।
छण–(हिं. पुं.) देखें 'क्षण'।
छत–(सं.स्त्री.) चूना, कंकड़ आदि डालकर बनाई हुई घर की छाजन, पाटन, घर में का खुला हुआ कोठा, चँदवा, घाव, जख्म; (अव्य.) रहते हुए, होते हुए; (मुहा.) **–पाटना**–चूना आदि पीटकर छत बनाना; **–बँधना**–बादलों का छा जाना।
छतना–(हिं.पुं.) पत्तों का बना हुआ छाता।
छतनार–(हिं.वि.) छाते की तरह फैला हुआ।
छतवंत–(हिं. वि.) क्षतयुक्त।
छतरी–(हिं. स्त्री.) छाता, पत्तों का बना हुआ छाता, मण्डप, राजाओं की चिता अथवा साधुओं की समाधि के ऊपर बना हुआ मण्डप, कबूतरों के बैठने का टट्टर जो बाँस पर बँधा रहता है, टट्टर, एक्के के ऊपर की छाजन, कुकुरमुत्ता।
छतलोट–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का व्यायाम।
छतिया–(हिं. स्त्री.) वक्षःस्थल, छाती।
छतियाना–(हिं.क्रि.स.) छाती के पास ले जाना, बन्दूक तानना।
छतिवन–(हिं. पुं.) सप्तपर्णी नाम का का बड़ा वृक्ष।
छतीसा–(हिं. वि.) चतुर, सयाना, धूर्त; **–पन**–(पुं.) धूर्तता।
छतीसी–(हिं. वि. स्त्री.) ढोंग-नखरे में चतुर, छली, चालाक।
छतौना–(हिं. पुं.) छाता, छत्रक।
छत्तर–(हिं. पुं.) छाता, कंडे के ढेर पर पोतने का गोबर, छप्पर जो भूसे के ढेर पर रखा जाता है, देखें 'छत्र' तथा 'सत्र'।
छत्ता–(हिं. पुं.) छाता, छतरी, पटाव जिसके नीचे से मनुष्यों के चलने का मार्ग हो, मधुमक्खियों के रहने का मोम का बना हुआ घर, छतनार या फैली हुई वस्तु, कमल का बीजकोष।
छत्तीस–(हिं.पुं., वि.) तीस और छः (की संख्या), ३६; **–वाँ**–(वि.) पैंतीस के बाद की संख्या का।
छत्तीसा–(हिं. पुं.) नाई, हज्जाम; (वि.) धूर्त, चतुर, चालाक।
छत्तीसी–(हिं. वि. स्त्री.) छल-छंदवाली, छिनाल, छतीसी।
छत्र–(सं. पुं.) छाता, छतरी, राजाओं का छाता, छत्रक की तरह का एक पौधा, कुकुरमुत्ता; **–क**–(पुं.) भुँरफोर, कुकुरमुत्ता, एक प्रकार का पक्षी, शहद का छत्ता, शिवमन्दिर, मिस्री का कूजा, मन्दिर; **–चक्र**–(पुं.) शुभाशुभ फल निकालने के लिये फलित ज्योतिष का एक चक्र; **–धर**–(पुं.) छत्र धारण करनेवाला मनुष्य, राजा, राजा के ऊपर छत्र लगानेवाला सेवक, सेवक; **–धारी**–(वि.) देखें 'छत्रधर'; **–पति**–(पुं.) छत्र का अधिपति, राजा; **–पत्र**–(पुं.) भोजपत्र का वृक्ष; **–बंधु**–(पुं.) नीच कुल का क्षत्रिय; **–भंग**–(पुं.) ज्योतिष का एक योग जिसमें राजा का नाश होता है, अराजकता; **–वती**–(स्त्री.) पांचाल देश के उत्तर का एक प्राचीन राज्य; **–वृक्ष**–(पुं.) मुचकुंद का पेड़।
छत्रांग–(सं. पुं.) गोदन्ती, हरताल।
छत्रा, छत्राक–(सं. स्त्री.) छत्रक, धनिया, मजीठ।
छत्रिक–(सं. पुं.) छत्रधर।
छत्री–(सं. वि.) छत्र धारण करनेवाला, छत्रयुक्त; (पुं.) नापित, क्षत्रिय।
छत्वर–(सं. पुं.) घर, कुंज।
छदंब–(हिं. पुं.) गोपन, छल।
छद–(सं.पुं.) आवरण, ढपना, छाल, पत्ता, पक्षियों का पर, तमाल वृक्ष, तेजपत्ता।
छदन–(सं. पुं.) आवरण, ढपना, पत्ता, पक्षियों का पर।
छदाम–(हिं. पुं.) पैसे का चतुर्थांश।
छद्दर–(हिं. पुं.) उपद्रवी बालक, नटखट लड़का।
छद्म–(सं.पुं.) छिपाव, बहाना, मिस, छल, धोखा, कपट; **–वेश**–(पुं.) दूसरों को ठगने के लिये धारण किया हुआ वेश; **–वेशी**–(वि.) रूप या भेस बदले हुए।
छद्मी–(हिं. वि.) बनावटी रूप या भेस करनेवाला, कपटी, छली।
छन–(हिं. पुं.) देखें 'क्षण'।
छनक–(हिं. स्त्री.) झनझनाहट, छनकार, जलती हुई वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द, भड़क; (पुं.) एक क्षण।
छनकना–(हिं. क्रि. अ.) तपी हुई वस्तु पर पानी पड़ने से छनछन शब्द करके पानी उड़ जाना, झनकार करना, चौकन्ना होना, भड़कना।
छनक-मनक–(हिं. स्त्री.) आभूषणों की झनकार, सजधज, सजधज।
छनकाना–(हिं. क्रि. स.) छनछन शब्द करना, चौकन्ना करना, भड़काना, चौंकाना।
छनकार–(हिं. पुं.) छनछन शब्द।
छनछनाना–(हिं.क्रि.अ., स.) छन छन शब्द करना, छन छन शब्द होना, झनझनाना, झनकार करना।
छनछवि–(हिं. स्त्री.) क्षणप्रभा, बिजली।
छनदा–(हिं. स्त्री.) देखें 'क्षणदा', रात्रि, रात।
छनन-मनन–(हिं. पुं.) खौलते हुए तेल या घी में गीली वस्तु पड़ने से उत्पन्न शब्द।
छनना–(हिं. क्रि. अ.) महीन छिद्रों में से किसी पदार्थ का नीचे गिरना, छोटे-छोटे छेदों में से होकर आना, छाना जाना, कोई मादक पदार्थ का पिया जाना, स्थान-स्थान पर छेद हो जाना, निर्णय होना, छानबीन होना; (पुं.) छानने का महीन वस्त्र, छन्ना; (मुहा.) **गहरी छनना**–गाढ़ी मैत्री होना, रहस्य की बातें होना, आपस में खूब मेल होना।

छनभंगु–(हि. वि.) क्षणभर में नष्ट होनेवाला, क्षणभंगुर।

छनवाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'छनाना'।

छनाका–(हि. पुं.) झनकार, ठनाका, रुपयों के बजने का शब्द, ठनकार।

छनाना–(हि. क्रि. स.) किसी दूसरे से छानने का काम कराना, मादक द्रव्य पिलाना।

छनिक–(हि. वि.) क्षणिक, अल्प काल का; (पुं.) एक क्षण।

छन्न–(सं. वि.) आवृत, ढपा हुआ, लुप्त; (हि. पुं.) तप्त स्थान या किसी तपी हुई वस्तु पर पानी पड़ने का शब्द, ठनकार, छनकार; (मुहा.)–होना–सूख जाना, उड़ जाना।

छन्नमति–(हि. वि.) मूर्ख, अज्ञान।

छन्ना–(हि. पुं.) देखें 'छनना'।

छप–(हि. स्त्री.) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।

छपकना–(हि. क्रि. अ., स.) पतली लचीली छड़ी से मारना, छिन्न करना, तलवार से किसी वस्तु को काट डालना, पानी के छींटे छोड़ते हुए पानी में चलना या तैरना।

छपका–(हि. पुं.) सिर में पहिनने का एक आभूषण, पतली लचीली छड़ी, पानी का भरपूर छींटा, कबूतर फँसाने का एक प्रकार का जाल, पानी में हाथ-पाँव मारने का काम, छपाका।

छपछपाना–(हि. क्रि. अ., स.) पानी में छपछप शब्द करना, छपकना।

छपद–(हि. पुं.) षट्पद, भ्रमर, भौंरा।

छपन–(हि. वि.) गुप्त; (पुं.) विनाश, संहार।

छपनहार–(हि. वि.) नाश करनेवाला।

छपना–(हि. क्रि. अ.) छापा जाना, अंकित होना, शीतला का टीका लगना या छापा जाना।

छपरखट, छपरखाट–(हि. पुं.) मसहरी-दार पलंग।

छपरछपर–(हि. वि.) तराबोर।

छपरबंद–(हि. पुं.) वह जिसका काम घर बनाना हो, छप्पर छानेवाला।

छपरबंदी–(हि. स्त्री.) छप्पर छाने का काम।

छपरा–(हि. पुं.) पत्तों से बना हुआ पान रखने का टोकरा, छप्परवाला गाँव।

छपरिया–(हि. स्त्री.) छोटा छप्पर, छपरी।

छपरी–(हि. स्त्री.) झोपड़ी, मड़ई।

छपवाई–(हि. स्त्री.) देखें 'छपाई'।

छपवाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'छपाना'।

छपवैया–(हि. वि.) छापने या छपवानेवाला।

छपा–(हि. स्त्री.) क्षपा, रात्रि, रात, हल्दी।

छपाई–(हि. स्त्री.) छापने का काम या ढंग, मुद्रण, छापने की मजदूरी।

छपाकर–(हि. पुं.) क्षपाकर, चन्द्रमा, कपूर।

छपाका–(हि. पुं.) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द, वेग से फेंका हुआ पानी का छींटा।

छपाना–(हि. क्रि. स.) छापने का काम कराना, छापेखाने में मुद्रित कराना, शीतला का टीका लगवाना, वस्तु को छिपाने के लिए तोपना।

छपानाथ–(हि. पुं.) देखें 'क्षपानाथ', चन्द्रमा।

छपाव–(हि. पुं.) देखें 'छिपाव'।

छप्पन–(हि. वि., पुं.) पचास और छः (की संख्या), ५६।

छप्पय–(हि. पुं.) एक मात्रिक छन्द जिसमें छः चरण होते हैं।

छप्पर–(हि. पुं.) लकड़ी, फूस आदि की बनाई हुई छाजन, पोखरी, बरसाती पानी इकट्ठा होने का गड्ढा, तलैया; (मुहा.)–पर फूस न होना–कंगाल होना; –पर रखना–अलग करना, दूर हटाना; –फाड़कर देना–अनायास देना; –रखना–कलंक लगाना; –बंद–(पुं.) छप्पर बनानेवाला; –बंदी–(स्त्री.) छप्पर छाने का काम।

छब–(हि. स्त्री.) देखें 'छवि'।

छबड़ा–(हि. पुं.) छितना, झावा, खाँचा, टोकरा।

छबतख्ती–(हि. स्त्री.) गठन की सुंदरता, सजधज।

छबरा–(हि. पुं.) देखें 'छबड़ा'।

छबि–(हि. स्त्री.) शोभा, सुन्दरता; –घर, –मान, –वंत–(वि.) सुन्दर।

छबीला–(हि. वि.) सुन्दर, सोहावना, छैला, बाँका, सजधज का।

छबुंदा–(हि. पुं.) गोबरैले की तरह का एक कीड़ा जिसकी पीठ पर बुंदियाँ रहती हैं, एक विषैला कीट।

छब्बीस–(हि. वि., पुं.) बीस और छः (की संख्या), २६; –वाँ–(वि.) संख्या में पच्चीस के बाद का।

छब्बीसी–(हि. स्त्री.) छब्बीस गाहियों का समूह (फलों की गिनती में)।

छमंड–(हि. पुं.) पितृहीन बालक।

छम–(हि. स्त्री.) घुंघरू बजने का शब्द।

छमक–(हि. स्त्री.) ठमक, ठाटबाट।

छमकना–(हि. क्रि. अ.) घुंघरू आदि का बजना, झनकार करना, ठसक दिखलाना।

छमछम–(हि. स्त्री.) घुंघरू, पायल आदि के बजने का शब्द; (अव्य.) ऐसे शब्द के साथ।

छमछमाना–(हि. क्रि. अ., स.) छमछम शब्द करना, छमछम शब्द करते हुए चलना।

छमना–(हि. क्रि. स.) क्षमा करना।

छमा–(हि. स्त्री.) देखें 'क्षमा'।

छमाई–(हि. स्त्री.) क्षमा करने का कार्य।

छमाछम–(हि. स्त्री.) गहने के बजने या पानी बरसने का शब्द; (अव्य.) निरन्तर छमछम शब्द के साथ।

छमाना–(हि. क्रि. स.) क्षमा करवाना।

छमावान–(हि. वि.) देखें 'क्षमावान्'।

छमाशी–(हि. स्त्री.) छः माशे का बटखरा।

छमासी–(हि. स्त्री.) मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला श्राद्ध।

छमुख–(हि. पुं.) षडानन, कार्तिकेय।

छय–(हि. पुं.) क्षय, नाश, विनाश।

छयना–(हि. क्रि. अ.) क्षय को प्राप्त होना, नष्ट होना।

छर–(हि. वि.) देखें 'क्षर'; (पुं.) छर्रों के वेग से निकलने का शब्द।

छरछा–(हि. पुं.) छल।

छरकना–(हि. क्रि. अ.) छिटकना, बिखरना।

छरकीला–(हि. वि.) लंबा तथा सुडौल।

छरछंद, छरछंदी–(हि. पुं., वि.) देख 'छलछंद, छलछंदी'।

छरछर–(हि. पुं.) कणों के वेग से निकलने का शब्द, लचीली पतली लकड़ी के पटकने का शब्द।

छरछराना–(हि. क्रि. अ.) घाव पर नमक लगने से पीड़ा होना, किसी वस्तु पर कणों का वेग से गिरना।

छरछराहट–(हि. स्त्री.) छर्रों या कणों के वेग से निकलने का शब्द, शरीर के कटे भाग पर या घाव पर नमक या क्षार लगने से होनेवाली पीड़ा।

छरना–(हि. क्रि. अ., स.) टपकना, चूना, झरना, क्षीण होना, चकचकाना, बहना, धोखा देना, ठगना, मोहित करना, लोभाना।

छरपुरी–(हि. स्त्री.) छड़ीला, एक सुगन्धित द्रव्य।

छरभार–(हि. पुं.) कार्य का भार, बखेड़ा, झंझट।

छरहरा–(हि. वि.) इकहरे शरीर का, हलका, फुरतीला।

छरहरापन–(हि. पुं.) फुरती।

छरा–(हि. पुं.) छड़ा, लड़ी, रस्सी, पैजामे की नीवी, नारा, रस्सी।

छरिंदा–(हि. वि.) देखें 'छरीदा'।

छरिया–(हि. पुं.) छड़िया, चोबदार।

छरिला–(हि. पुं.) देखें 'छड़ीला'।

छरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'छड़ी'।
छरीदा–(हिं. वि.) बिना संग-साथ का, अकेला, बिना किसी प्रकार का बोझ लिये हुए।
छरीदार–(हिं. वि.) चोबदार।
छरीला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पौधा, पत्थरफूल (मसाला विशेष)।
छरोरा–(हिं.पुं.)शरीर पर पड़ी हुई खरोंच।
छर्दन–(सं. पुं.) वमन, कै करना।
छर्दि–(सं. स्त्री.) वमन, कै, उलटी।
छर्रा–(हिं. पुं.) कंकड़ आदि का छोटा टुकड़ा, बन्दूक में भरने के सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े, पानी का छींटा।
छलंक, छलंग–(हिं. स्त्री.) देखें 'छलाँग'।
छल–(सं. पुं.) दूसरे को धोखा देने का कार्य, धूर्तता, वंचना, व्याज, मिस, बहाना, कपट; (हिं. पु.) जल के छींटों के गिरने का शब्द।
छलक–(हिं. स्त्री.) छलकने का भाव या क्रिया।
छलकन–(हिं. स्त्री.) पानी आदि का छलकना, उद्गार, स्फुरण।
छलकना–(हिं. क्रि. अ.) किसी द्रव पदार्थ का बरतन से उछलकर बाहर गिरना, बाहर होना, उमड़ना।
छलकाना–(हिं. क्रि. स.) किसी भरे हुए पात्र से द्रव पदार्थ को हिलाकर बाहर गिराना।
छल-कपट–(सं. पुं.) धोखेबाजी।
छल-छंद–(हिं. पुं.) छल-कपट।
छलछंदी–(हिं. वि.) धूर्त, कपटी।
छलछलाना–(हिं. क्रि. अ., स.) भरे हुए किसी पात्र से छलक करके जल आदि गिरना या गिराना, आँसू भर आना।
छलछात–(हिं. पुं.) देखें 'छलछिद्र'।
छलछाया–(हिं. स्त्री.) कपट, जाल।
छलछिद्र–(सं. पुं.) कपट व्यवहार, धूर्तता।
छलछिद्री–(हिं. वि.) कपटी, छली।
छलन–(हिं. पुं.) छल करने का कार्य।
छलना–(हिं. क्रि. स.) प्रतारित करना, धोखा देना; (स्त्री.) छल, कपट, धोखा।
छलनी–(हिं. स्त्री.) आटा चालने का उपकरण, चलनी; (मुहा.)–**करना**–छिद्र-पूर्ण करना; **कलेजा छलनी होना**–निरन्तर कष्ट सहते-सहते जी ऊब जाना, हृदय जर्जर होना।
छलहाई–(हिं. वि. स्त्री.) धूर्त, छली, कपटी, धोखेबाज।
छलांग–(हिं.स्त्री.) फलाँग, कुदान, चौकड़ी; (मुहा.)–**भरना**–चौकड़ी मारना।
छलाँगना–(हिं. क्रि. अ.) कूदकर आगे बढ़ना, फलाँग मारना।
छला–(हिं. पुं.) अँगुली में पहिनने का छल्ला या अँगूठी; (स्त्री.) आभा, चमक, झलक।
छलाई–(हिं. स्त्री.) छल, कपट।
छलाना–(हिं.क्रि.स.) प्रतारित करना, धोखे में डालना।
छलावा–(हिं. पुं.) भूत-प्रेत की छाया जो एकबारगी दिखलाई पड़ती है परन्तु तुरत लुप्त हो जाती है, दलदल के किनारे दिखाई पड़नेवाली रोशनी, अगिया-बैताल; –**सा**–(वि.) चपल, चंचल; अति भ्रामक; (मुहा.) –**खलना**–प्रेत-छाया आदि का इधर से उधर दौड़ते दिखाई देना।
छलिक–(सं. पुं.) नाटयशास्त्र में नाट्य का एक भेद।
छलित–(सं.वि.) वंचित, धोखा खाया हुआ।
छलिया–(हिं. वि.) छल करनेवाला, कपटी, धोखेबाज।
छली–(हिं. वि.) कपटी।
छलौरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का अँगुलियों का रोग।
छल्ला–(हिं. पुं.) अँगुली में पहिनने की सादी अँगूठी, मुंदरी, कड़ा, वलय, कोई मण्डलाकार वस्तु, कुण्डली, एक प्रकार की पक्की भीत।
छल्ली–(हिं. स्त्री.) छाल, छोटा छल्ला, सन्तति।
छल्लेदार–(हिं. वि.) जिसमें छल्ले लगे हों, जिसमें मण्डलाकार चिह्न हों।
छवड़–(हिं. पुं.) टोकरा।
छवड़ी–(हिं. स्त्री.) टोकरी।
छवना–(हिं.पुं.) बच्चा, सूअर का बच्चा।
छवा–(हिं.पुं.) सूअर का बच्चा, बछड़ा, एड़ी।
छवाई–(हिं. स्त्री.) छाने का काम या पारिश्रमिक।
छवाना–(हिं. क्रि.स.) छाने का काम कराना।
छवि–(सं. स्त्री.) शोभा, कान्ति, सौन्दर्य, प्रभा, चमक, प्रतिकृति, चित्र।
छवैया–(हिं. पुं.) छप्पर छानेवाला।
छहरना–(हिं.क्रि. अ.) बिखरना, फैलना, छिटकना।
छहरा–(हिं.वि.) छः परतों का, छः पल्लों का।
छहराना–(हिं. क्रि. स.) छितराना, चारों ओर फैलाना, बिखराना, भस्म करना।
छहरीला–(हिं. वि.) छरहरा।
छहियाँ–(हिं. स्त्री.) छाँह, छाया।
छांक–(हिं. पुं.) खण्ड, टुकड़ा।
छाँगना–(हिं.क्रि. स.) डाल, टहनी आदि काटना, छाँटना।
छांगुर–(हिं. पुं.) वह जिसके पंजे में छः अँगुलियाँ हों, छः अँगुलियोंवाला।
छाँछ–(हिं. स्त्री.) देखें 'छाछ', मट्ठा।
छाँट–(हिं. स्त्री.) काटने-छाँटने की क्रिया, छाँटने का ढंग, कतरन, अन्न की भूसी, अलग की हुई बेकार चीजें, वमन, कै।
छाँटन–(हिं. स्त्री.) अलग की हुई बेकार चीज, कतरन।
छाँटना–(हिं. क्रि. स.) काट कर अलग करना, चुनकर अलगाना, अन्न स्वच्छ करने के लिये कूटना, चुन लेना, छाँटकर निकाल देना, हटाना, संक्षिप्त करना, अलग करना, बढ़-बढ़कर बातें करना।
छाँड़ना–(हिं. क्रि. स) त्यागना, छोड़ना।
छाँद–(हिं. स्त्री.) पशुओं के पैर बाँधने की छोटी रस्सी, गाय दुहते समय बछवे को गाय के पैर से बाँधने की रस्सी, छान, नोई।
छाँदना–(हिं. क्रि. स.) रस्सी से बाँधना, कसना, जकड़ना, पशुओं के पैर बाँधना।
छांदस–(सं. वि.) छंद-संबंधी, छंदात्मक; (पुं.) वेदपाठी, ब्राह्मण।
छांदसीय–(सं. पुं.) वेद-शास्त्र का पंडित।
छाँदा–(हिं. पुं.) बखरा, बाँट, हिस्सा, उत्तम भोजन।
छांदोग्य–(सं.पुं.) दस उपनिषदों में से एक।
छाँव–(हिं. स्त्री.) छाँह।
छाँवड़ा–(हिं. पुं.) बालक, पशु का छोटा बच्चा, छौना।
छाँस–(हिं. स्त्री.) भूसी, कूड़ा-करकट।
छाँह–(हिं. स्त्री.) जिस स्थान में धूप या चाँदनी न पड़ती हो, छाया, छाया हुआ स्थान, शरण, परछाहीं, प्रतिबिम्ब, भूत-प्रेत का प्रभाव; (मुहा.)–**छूना**–पास में आना; –**न छूने देना**–पास में न आने देना; –**बचाना**–दूर-दूर रहना; –**में होना**–छिपना।
छाँहगीर–(हिं.पुं.) राजछत्र, दर्पण, आईना।
छाँहीं–(हिं. स्त्री.) देखें 'छाँह'।
छाई–(हिं. स्त्री.) राख, खाद।
छाक–(हिं.स्त्री.) इच्छा-पूर्ति, सन्तोष, काम करनेवालों का दोपहर का भोजन, कलेवा, मद, मादकता, एक प्रकार का पक्वान्न।
छाकना–(हिं. क्रि. अ.) खा-पीकर तृप्त होना, छकना, अघाना, अफरना, मद्य पीकर मस्त होना, चकित होना, भौचक्का रह जाना।

छाग–(हि. पुं.) बकरा।
छागन–(सं. पुं.) गोहरी या उपले की आग।
छागल–(सं.पुं.) बकरा; (स्त्री) बकरे की खाल की बनी हुई वस्तु, मशक, चांदी का बना, स्त्रियों का पैर में पहिनने का एक गहना, झांझ।
छागिका, छागी–(सं. स्त्री.) बकरी।
छाछ–(हि. स्त्री.) मक्खन निकाला हुआ दूध या दही, मट्ठा, मही।
छाछठ–(हि. वि.) देखें 'छासठ'।
छाज–(हि. पुं.) सूर्य, सूप, छाजन, छप्पर; (मुहा.) छाजों मेह बरसना–मूसलधार वृष्टि होना।
छाजन–(हि. स्त्री.) आच्छादन, वस्त्र, कपड़ा, छप्पर, खपरैल की छवाई, अपरस रोग; भोजन-छाजन–(पुं.) अन्न-वस्त्र।
छाजना–(हि.क्रि.अ.) उपयुक्त जान पड़ना, अच्छा लगना, शोभा देना, सुशोभित होना, भला लगना।
छाजा–(हि. पुं.) छज्जा, छाजन।
छाजित–(हि. वि.) शोभित, सजा हुआ।
छात–(हि. पुं.) राजछत्र, छाता, आधार, आश्रय; (वि.) कृश, दुर्बल।
छाता–(हि. पुं.) आतपत्र, छत्र, छतरी, छत्ता; (क्रि. प्र.)–लगाना– छाते का व्यवहार करना।
छाती–(हि. स्त्री.) वक्षस्थल, कलेजा, हृदय, मन, स्तन, कुच, साहस, दृढ़ता, छाती की चौड़ाई; (मुहा.)–उड़ी जाना–जी दहलना; –उमड़ आना–प्रेम या करुणा से गद्गद होना; –फटना–देखें 'छाती पीटना'; –छलनी होना–दुःख सहते-सहते कलेजा पक जाना; –जलना–अनपच के कारण हृदय में जलन मालूम होना, सन्ताप होना; –जलाना–चिढ़ाना, कुढ़ाना; –जुड़ाना–चित्त का प्रसन्न और शान्त होना; –ठोकना–साहसपूर्वक प्रतिज्ञा करना; –ठंडी होना–चित्त का उद्वेग शान्त होना; –तले रखना–सर्वदा अपनी रक्षा में रखना; –तले रहना–आंखों के सामने रहना; –थामकर रह जाना–शोक के कारण ठक हो जाना; –देना–बच्चे को स्तन पिलाना; –धड़कना–भय आदि से हृदय-गति तीव्र होना; आशंका से जी दहलना; –निकालकर चलना–अकड़कर चलना; सीना तानकर चलना; –पत्थर की करना–कष्ट सहने के लिये हृदय कठोर करना; –पर का पत्थर–चिन्ता उत्पन्न करनेवाली वस्तु; –पर कोदो दरना–किसी को दिखाकर ऐसा काम करना जिससे उसको बड़ा कष्ट हो; –पर चढ़ना–कष्ट पहुंचाने के लिये पास आना; –पर पत्थर रखना–किसी भारी शोक के आघात को सहन करना; –पर बाल होना–उदारता के लक्षण होना; –पर सांप लोटना–मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या होना; –फटना–अत्यन्त सन्ताप होना; –फुलाना–तनकर चलना; –भर आना–स्तनों का दूध से भर जाना; –मसोसना–मन ही मन संतप्त होना; –से लगाना–आलिंगन करना।
छात्र–(सं. पुं.) विद्यार्थी, शिष्य, चेला।
छात्रक–(सं.पुं.) छात्र, मधु-छत्र में संचित मधु-भंडार।
छात्रदशन–(सं. पुं.) ताजा मक्खन।
छात्रवृत्ति–(सं. स्त्री.) विद्यार्थियों को विद्याभ्यास के काल में आर्थिक सहायता।
छात्रा–(सं. स्त्री.) स्त्री छात्र।
छात्रालय–(सं. पुं.) विद्यार्थियों के रहने का स्थान।
छाद–(हि. पुं.) छत, छप्पर।
छादक–(सं. पुं.) खपरैल या छप्पर छानेवाला।
छादन–(सं. पुं.) आवरण, ढकने का काम, छिपाव, आच्छादन, जिससे छाया की जाय।
छादित–(सं. वि.) आच्छादित, ढका हुआ।
छादी–(सं. वि.) आच्छादन करनेवाला।
छाद्मिक–(सं.वि.पुं.) पाखंडी, बहुरुपिया।
छान–(हि. स्त्री.) घास-फूस की छाजन, खपरल, पशु के पैर में बांधने की रस्सी, बन्धन।
छानगीर–(हि. पुं.) छानेवाला।
छानना–(हि.क्रि.स.) किसी तरल पदार्थ या चूर्ण को महीन कपड़े आदि के पार निकालना, मिली हुई वस्तु को अलगाना, जांचना, पड़ताल करना, देखभाल करना, छेदकर पार निकालना, तलना, रस्सी से बांधना।
छान-फटक, छान-बिनान–(हि. स्त्री.) देखें 'छानबीन'।
छानबीन–(हि. स्त्री.) भली भांति अनुसन्धान, जांच-पड़ताल, सूक्ष्म विचार, पूर्ण विवेचना।
छानबे–(हि.वि., पुं.) नब्बे और छः की संख्या का, नब्बे से छः अधिक, ९६।
छाना–(हि. क्रि. अ., स.) ऊपर से आच्छादित करना, ढांपना, धूप, पानी आदि से बचाने के लिये ऊपर से कोई वस्तु फैलाना, बिछाना, रक्षा करना, पसरना, भर जाना, आच्छादित होना, डेरा डालना, टिकना।
छानी–(हि. स्त्री.) छप्पर।
छानेछाने–(हि. अव्य.) गुप्त रूप से।
छाप–(हि. स्त्री.) किसी उभड़े या खुदे हुए ठप्पे का चिह्न, अक्षर खुदी हुई अँगूठी, कवियों का उपनाम, माल पर का छापा, सिंचाई में पानी उछालने की टोकरी; असर, प्रभाव।
छापना–(हि.क्रि.स.) ठप्पे आदि में स्याही या रंग लगाकर चिह्नित करना, ठप्पे से निशान लगाना, मुद्रित करना, छापे के यन्त्र में दबाकर अक्षर या चिह्न अंकित करना।
छापा–(हि. पुं.) ठप्पा, मुद्रा, व्यापार के माल पर डाला हुआ चिह्न, शंख, चित्र आदि का चिह्न जिससे वैष्णव लोग अपने शरीर को अंकित करते हैं भीत पर बना पंजे का चिह्न या छाप, मुद्रा, प्रतिकृति, असावधान शत्रु पर रात्रि में आक्रमण; (मुहा.) –मारना–रात में सोते हुए शत्रु पर सहसा धावा करना।
छापाखाना–(हि. पुं.) पुस्तक, समाचार-पत्र आदि छापने का स्थान, मुद्रालय, प्रेस।
छापा-मार–(हि.पुं.) शत्रु सेना पर छापा मारनेवाला सैनिक।
छाम–(हि. पुं.) क्षाम, दुर्बल, कृश।
छामोदरी–(हि. वि. स्त्री.) कृशोदरी, छोटे पेटवाली।
छायल–(हि.पुं.) स्त्रियों का एक पहिनावा या कुरती।
छायांक–(हि. पुं.) चन्द्रमा।
छाया–(सं. स्त्री.) प्रकाश का अभाव, प्रकास देनेवाली वस्तु के सामने अन्य वस्तु के आने पर उत्पन्न होनेवाली कालिमा, प्रकाश को रोकनेवाली वस्तु, परछाईं, छांह, साया, प्रतिबिम्ब, सदृश वस्तु, प्रतिकृति, अनुहार, अनुकरण, सूर्य की पत्नी, कान्ति, रक्षा, अन्धकार, पंक्ति, भूतप्रेत का प्रभाव, एक रागिनी का नाम, आर्या-छन्द का एक भेद; –गणित–(पुं.) गणित की एक क्रिया जिसमें छाया की सहायता से ग्रहों की गति, अयनांश आदि का निरूपण किया जाता है; –ग्रह–(पुं.) दर्पण, आईना; –ग्राहिणी–(स्त्री.) एक राक्षसी का नाम जिसने समुद्र

लाँघते समय हनुमान जी की छाया को पकड़कर उनको खींच लिया था; **-तनय**-(पुं.)शनैश्चर; **-दान**-(पुं.) घी या तेल में अपने मुख की छाया देखकर इसमें कुछ दक्षिणा डालकर दान करने की विधि; **-नट**-(पुं.) एक राग का नाम; **-पथ**-(पुं.) आकाश-गंगा, देवपथ, आकाश; **-पद**-(पुं.) सूर्य की छाया द्वारा समय जानने का यन्त्र, सूर्य-घड़ी; **-पुरुष**-(पुं.) हठयोग के अनुसार मनुष्य की छाया-रूप आकृति जो उसको स्थिर दृष्टि से आकाश की ओर अधिक काल तक देखने पर दृष्टि-गोचर होती है **-मान**-(पुं.)चन्द्रमा; **-मित्र**- (पुं.); छाता, छतरी; **-यंत्र**- (पुं.) धूपघड़ी; **-लोक**-(पुं.) अदृश्य जगत्; **-वाद**-(पुं.) रहस्यवाद, प्रकृति और सृष्टि के रहस्यों को अति गूढ़ भावों में व्यंजित करने की काव्यशैली; **-वादी**-(वि.)छायावाद से संबद्ध; (पुं.) छायावाद का अवलंबन करनेवाला कवि; **-वान्**-(वि.) छायायुक्त, छाँहवाला।

छायान्वित-(सं.वि.) छायायुक्त, छाया-दार।

छार-(हिं. पुं.) वनस्पतियों को जलाकर इससे निकाला हुआ नमक, क्षार, भस्म, राख, धूर; (मुहा.)-**खार करना**-नष्ट-भ्रष्ट करना।

छाल-(सं. स्त्री.) वृक्षों के ऊपर का आवरण, वल्कल, बोकला, एक प्रकार की मिठाई।

छालटी-(हिं. स्त्री.) छाल का बना हुआ वस्त्र, सन या पटुवे का बना हुआ कपड़ा।

छालना-(हिं. क्रि. स.) छलनी में रखकर आटा आदि छानना, चालना, झँझरा करना, छेद करना।

छाला-(हिं. पुं) छाल या चमड़े के ऊपर की झिल्ली का उभड़ आना, आवला, झलका, फफोला।

छालित-(हिं. वि.) धोया हुआ।

छालिया-(हिं. पुं.) काँसे का प्याला जिसमें घी या तेल भरकर छायादान किया जाता है, सुपारी।

छाली-(हिं. स्त्री.) कटी हुई सुपारी का चिपटा टुकड़ा, सुपारी का फल।

छावँ-(हिं. स्त्री.) छाँह, छाया, शरण।

छावना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'छाना'।

छावनी-(हिं. स्त्री.)छान, छप्पर, पड़ाव, शिविर, सेना के ठहरने का स्थान।

छावर-(हिं. पुं.) मछलियों के बच्चों का झुंड।

छावरा-(हिं.पुं.) पशु का बच्चा, छौना।

छावा-(हिं. पुं.) पुत्र, बेटा, बच्चा।

छासठ-(हिं. वि.) गिनती में साठ और छः; (पुं.) यह संख्या, ६६।

छिउँका-(हिं. पुं.)एक प्रकार का छोटा चींटा।

छिउँकी-(हिं. स्त्री.)एक प्रकार की छोटी चींटी, एक प्रकार का छोटा उड़नेवाला कीड़ा, रस्सी का एक प्रकार का फन्दा।

छिकाना-(हिं. क्रि. स.) छींक लाना।

छिगुनिया, छिगुनी-(हिं. स्त्री.) कानी अँगुली।

छिछ, छिछि-(हिं. स्त्री.) छींटा, धार, फुहारा।

छिटुआ, छिटुवा-(हिं. पुं.)बीज बोने की एक रीति।

छिड़ाना-(हिं. क्रि. स.) छीनना, जबर-दस्ती ले लेना।

छिः, छि-(हिं. अव्य.) घृणा, तिरस्कार अथवा अरुचि-सूचक शब्द।

छिउला-(हिं. पुं.) छोटा पेड़ या पौधा।

छिकनी-(हिं. स्त्री.)एक प्रकार की घास जिसके घुंडी के आकार के फूलों को सूँघने से बहुत छींक आती है, नकछिकनी।

छिकरा-(हिं. पुं.) हरिन की जाति का एक पशु।

छिक्का-(सं. स्त्री.) छींक।

छिगुनी-(हिं. स्त्री.) हाथ की सब से छोटी अँगुली, कनिष्ठिका।

छिच्छ-(हिं. स्त्री.) छींटा, बूंद।

छिछकारना-(हिं. क्रि. स.) छिड़कना।

छिछड़ा-(हिं. पुं.) देखें 'छीछड़ा'।

छिछला-(हिं. वि.) पानी का तल जो गहरा न हो, उथला।

छिछलाई-(हिं. स्त्री.) छिछला होने का भाव।

छिछली-(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'छिछला'।

छिछोरपन, छिछोरापन-(हिं. पुं.)क्षुद्रता, ओछापन, नीचता।

छिछोरा-(हिं. वि.) क्षुद्र, ओछा, नीच प्रकृति का।

छिजना-(हिं. क्रि. अ.) देखें 'छीजना'।

छिजाना-(हिं. क्रि. स.) छीजने देना, नष्ट होने देना।

छिटक-(हिं. पुं.) पालकी के ओहार का द्वार के सामने का भाग।

छिटकना-(हिं. क्रि. अ.) छितराना, चारों ओर बिखरना, चारों ओर प्रकाश फैलना।

छिटकाना-(हिं.स्त्री.)चारों ओर फैलाना, बिखराना।

छिटकी-(हिं. स्त्री.) छींट, छींटा।

छिटनी-(हिं.स्त्री.) बाँस की छोटी टोकरी, डलिया।

छिटवा-(हिं. पुं.) बड़ी टोकरी, टोकरा।

छिड़कना-(हिं. क्रि. स.) पानी के छींटे फेंकना, भिगोकर पानी बिखेरना, न्योछावर करना।

छिड़कवाना-(हिं. क्रि. स.) छिड़कने का काम दूसरे से कराना।

छिड़काई-(हिं. स्त्री.) छिड़कने का काम या पारिश्रमिक।

छिड़काना-(हिं.क्रि.स.)देखें 'छिड़कवाना'।

छिड़काव-(हिं. पुं.) पानी आदि छिड़कने की क्रिया।

छिड़ना-(हिं.क्रि. अ.)आरंभ होना, लड़ाई शुरू होना।

छिड़ाना-(हिं. क्रि.स.) 'छिड़ना' का प्रेर-णार्थक रूप।

छिण-(हिं. पुं.) देखें 'क्षण'।

छितनी-(हिं. स्त्री.) बांस की छिछली टोकरी, छिटनी।

छितर-बितर-(हिं. वि.) देखें 'तितर-बितर'।

छितराना-(हिं. क्रि. अ., स.)तितर-बितर होना, बिखरना, इधर-उधर डालना, इधर-उधर फैलाना, छीटना, दूर-दूर करना, सटी हुई वस्तुओं को अलग-अलग करना।

छितराव-(हिं. पुं.) छितराने की क्रिया या भाव।

छिति-(हिं. स्त्री.)क्षिति, भूमि, पृथ्वी, एक का अंक; **-कांत**-(पुं.) भूपति, राजा; **-पाल**-(पुं.) क्षितिपाल, राजा; **-रुह**-(पुं.) क्षितिरुह, वृक्ष, पेड़।

छितीस-(हिं. पुं.) क्षितीश, भूपति, राजा।

छित्वर-(सं. वि.) धूर्त, छेदक, वैरी।

छिदना-(हिं. क्रि. अ.) छिद्रयुक्त होना, सूराखदार होना, भिदना, घायल होना, घावों से मर जाना, चुभना।

छिदरा-(हिं. वि.) छितराया हुआ, विरल, झीना, फटा हुआ, जर्जर।

छिदवाना, छिदाना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'छेदाना'।

छिद्र-(सं. पुं.) छेद, सूराख, गड्ढा, बिल, अवकाश, दोष, त्रुटि, नौ की संख्या; **-दर्शी**--दूसरे का दोष ढूंढनेवाला।

छिद्रात्मा-(सं.वि.)खल स्वभाव का, दुष्ट।

छिद्रान्वेषण-(सं. पुं.) दोष ढूंढना, नुक्स करना या निकालना।

छिद्रान्वेषी–(सं. वि.) पराया दोष ढूँढ़नेवाला, नुक्स निकालनेवाला ।
छिद्रफल–(सं. पुं.) माजूफल ।
छिद्रित–(सं. वि.) छिद्र-युक्त, छेदा हुआ, बेधा हुआ ।
छिद्रोदर–(सं. पुं.) एक प्रकार का पेट का रोग ।
छिन–(हि. पुं.) देखें 'क्षण' ।
छिनक–(हि. अव्य.) क्षण-भर, दम-भर ।
छिनकना–(हि. क्रि.अ., स.) नाक का मल साँस बाहर छोड़ते हुए निकालना, चमकना, भड़ककर भागना ।
छिनछवि–(हि. स्त्री.) विद्युत्, बिजली ।
छिनदा–(हि. स्त्री.) देखें 'क्षणदा' ।
छिनना–(हि. क्रि. अ.) छीन लिया जाना, हृत होना, कटा जाना ।
छिनभंग–(हि. वि.) क्षण-भर में नष्ट होनेवाला, क्षणभंगुर ।
छिनरा–(हि. पुं.) परस्त्रीगामी, लम्पट पुरुष ।
छिनवाना–(हि. क्रि. स.) छीनने का काम कराना ।
छिनाना–(हि. क्रि. स.) छिनवाना, हरण करवाना, पत्थर आदि को टाँकी से कटवाना ।
छिनार, छिनाल–(हि. स्त्री.) पर-पुरुषगामिनी, व्यभिचारिणी, कुलटा ।
छिनालपन, छिनालपना–(हि.पुं.) अवैध संयोग, छिनाला, व्यभिचार ।
छिनाला–(हि. पुं.) व्यभिचार ।
छिन्न–(सं. वि.) खण्डित, काटकर अलग किया हुआ; –भिन्न–(वि.) खंडित, टूटा-फूटा, नष्ट-भ्रष्ट, तितर-बितर; –मस्ता–(सं. वि.) जिसका मस्तक कटा हो; (स्त्री.) दस महाविद्याओं में एक देवी; –व्रण–(सं. पुं.) किसी शस्त्र से कटा हुआ घाव ।
छिन्ना–(सं. स्त्री.) पुंश्चली, छिनाल ।
छिपकली–(हि.स्त्री.) गोह की जाति का एक जन्तु जो घरों में रहता है, गृहगोधिका, भित्तिका, कान का एक आभूषण ।
छिप-छिप–(हि. अव्य.) गुप्त रीति से, छिपकर, चुपचाप ।
छिपना–(हि.क्रि.अ.) ओट में आना, दिखाई न पड़ना, लुप्त होना, गुप्त रहना या होना ।
छिपाना–(हि. क्रि.स.) ओट में करना, ढाँकना, गोपन करना, गुप्त रखना, प्रकट न करना ।
छिपा रुस्तम–(हि. पुं.) वह व्यक्ति जो गुणों में बड़ा हो परन्तु विख्यात न हो, छिपा रोस्तम ।
छिपाव–(हि. पुं.) भेद छिपाने का भाव ।
छिपे-छिपे–(हि. अव्य.) छिप-छिपकर ।
छिप्र–(हि.वि.) देखें 'क्षिप्र'; (पुं.) अँगूठे और उसके पास की अँगुली के बीच का स्थान ।
छिबड़ी–(हि. स्त्री.) छोटा टोकरा, खाँची ।
छिमा–(हि. स्त्री.) देखें 'क्षमा' ।
छिया–(हि. पुं.) घृणित वस्तु, मल; (वि.) गंदा, मैला; (मुहा.) –छरद करना–मल के समान घृणित समझना ।
छियानवे–(हि. वि., पुं.) देखें 'छानवे' ।
छियालिस, छियालीस–(हि. वि., पुं.) चालिस और छः, यह संख्या, ४६ ।
छियासी–(हि. वि., पुं.) अस्सी और छः, यह संख्या, ८६ ।
छिरकना–(हि. क्रि.स.) देखें 'छिड़कना' ।
छिरहटा–(हि. वि.) छिरेटा ।
छिरेटा–(हि. पुं.) एक प्रकार की लता जिसका रस जल में डालने से वह जम जाता है, छिरहिंड ।
छिलका–(हि. पुं.) फल, कन्द आदि के ऊपर का आवरण, फलों की त्वचा या झिल्ली, बोकला, वकला ।
छिलछिला–(हि. वि.) छिछला ।
छिलना–(हि. क्रि. अ.) छिलके या चमड़े का कटकर अलग होना, उचड़ना, खरोंचा जाना, त्वचा के ऊपर खरोंच-सा होना ।
छिलवा–(हि. वि.) ऊख की पत्तियों को छीलकर अलग करनेवाला ।
छिलवाना–(हि. क्रि. स.) छीलने का काम दूसरे से कराना ।
छिलाव, छिलावट–(हि. स्त्री.) छीलने का काम या भाव, छिलाई ।
छिलौरी–(हि. स्त्री.) शरीर पर का छोटा छाला ।
छिहत्तर–(हि. वि., पुं.) सत्तर और छः, यह संख्या, ७६ ।
छिहरना–(हि.क्रि.अ.) छितराना, फैलना ।
छिहाना–(हि. क्रि. अ.) ढेर लगाना, गाँजना ।
छिहानी–(हि. पुं.) मरघट, श्मशान ।
छींक–(हि. स्त्री.) वेग के साथ नाक और मुँह से एकाएक निकलनेवाला वायु का झोंका; (मुहा.) –होना–अपशकुन होना ।
छींकना–(हि.क्रि. अ.) शब्द करते हुए नाक और मुँह से वायु का झटके में निकलना; (मुहा.) छींकते नाक काटना–थोड़ी-सी बात पर जोर से चिढ़ना ।
छींट–(हि.स्त्री.) जल का छोटा कण, जलबिंदु, रंग-बिरंगी बूटियोंवाला वस्त्र ।
छींटना–(हि.क्रि.स.) बिखराना, छितराना ।
छींटा–(हि. पुं.) किसी द्रव पदार्थ को उछालने से उत्पन्न महीन बूँद, जलकण, महीन बूँदों की वृष्टि, बौछार, बूँद का चिह्न, मदक आदि की एक मात्रा, दंम, गुप्त रूप से किया हुआ ताना; (मुहा.) –छोड़ना या फेंकना–आक्षेप या व्यंग्य करना ।
छींदा, छींवी–(हि. स्त्री.) छीमी, फली ।
छी–(हि. अव्य.) घृणासूचक शब्द; (पुं.) वह शब्द जो धोबी लोग कपड़ा पछाड़ते समय बोलते हैं; (मुहा.)–छी करना–घृणा या अरुचि दिखलाना ।
छीउल–(हि. पुं.) पलास का वृक्ष, ढाक का पेड़ ।
छीका–(हि. पुं.) रस्सियों का बना हुआ गोल जाल जो वस्तुओं को रखने के लिये छत से लटका दिया जाता है, सिकहर, बैलों के मुख पर बाँधने का जाल या खोंता, झूले का पुल, बड़े-बड़े छिद्रों का टोकरा, खँचिया, छितना; (मुहा.)–टूटना–अनायास किसी के लाभ के लिये कोई घटना होना ।
छीछड़ा–(हि. पुं.) मांस का बेकाम टुकड़ा, पशुओं के पेट की मल की थैली ।
छीछल–(हि. वि.) देखें 'छिछला' ।
छीछालेदर–(हि.स्त्री.) दुर्गति, दुर्दशा, खराबी ।
छीज–(हि. स्त्री.) कमी, घाटा, टोटा ।
छीजना–(हि. क्रि. अ.) क्षीण होना, कम होना, घटना ।
छीट–(हि. स्त्री.) देखें 'छींट' ।
छीटा–(हि. पुं.) बाँस का टोकरा, खाँचा, झावा ।
छीतना–(हि.क्रि.स.) बिच्छू, बर्रे इत्यादि का डंक मारना ।
छीती–(हि. स्त्री.) क्षति, हानि, बुराई; –छान–(वि.) तितर-बितर, छिन्न-भिन्न ।
छीदा–(हि.वि.) झंझरा, अनेक छिद्रोंवाला ।
छीन–(हि. वि.) क्षीण, कृश, दुबला-पतला, शिथिल, मंद; –चंद, –चंद्र–द्वितीया का चन्द्रमा; –ता–(स्त्री.) देखें 'क्षीणता' ।
छीनना–(हि. क्रि. स.) काटकर अलगाना, छिन्न करना, बलपूर्वक किसी की वस्तु ले लेना, छेनी से पत्थर काटना, सिल, चक्की आदि को खुरदरा करना, पुरवट का पानी मोट से गिराना ।
छीन-झपट–(हि.स्त्री.) देखें 'छीना-झपटी' ।
छीना–(हि. क्रि. स.) स्पर्श करना, छूना; (पुं.) कुम्हार का मिट्टी गढ़ने का साँचा यह जो नीचे का भाग ।

छीनाछीनी, छीनाझपटी–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु को झपट कर छीन लेना।

छीप–(हिं. वि.) क्षिप्र, वेगवान्; (स्त्री.) छाप, चिह्न, शरीर पर के छोटे चिह्न, मछली फँसाने की वंसी, खीप नामक वनस्पति।

छीपना–(हिं. क्रि. स.) वंसी से मछली को फँसाकर जल से बाहर फेंकना।

छीपा–(हिं. पुं.) दूध रखने की मटकी।

छीपी–(हिं. पुं.) वस्त्र पर छींटें छापनेवाला; (स्त्री.) छोटी सी तश्तरी।

छीवर–(हिं.स्त्री.) वह वस्त्र जिस पर वेल-वूटे छपे हों।

छीमी–(हिं. स्त्री.) मटर आदि की फली।

छीर–(हिं. पुं.) देखें 'क्षीर', कपड़े का वह किनारा जहाँ उसकी लंवाई समाप्त होती है, छोर, कपड़े की बुनावट में कोर-कसर; (मुहा.)–**डालना**–किनारे का तागा निकालकर झालर बनाना।

छीरज–(हिं. पुं.) क्षीरज, दधि, दही।

छीरधि–(हिं.पुं.) क्षीरसागर, दूध का समुद्र।

छीरप–(हिं. पुं.) वालक, वच्चा।

छीरफन–(हिं. पुं.) दूध की मलाई।

छीरसागर–(हिं. पुं.) देखें 'क्षीर-सागर'।

छीलक–(हिं. पुं.) छिलका।

छीलना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु का छिलका उतारना, खुरच कर अलगाना, गले के भीतर चुनचुनाहट उत्पन्न करना।

छीलर–(हिं.पुं.) छिछला गड्ढा, लिलार, तलैया।

छीव–(हिं. पुं.) देखें 'क्षीव'।

छुंगली–(हिं.स्त्री.) घुंघुरू लगी हुई अँगूठी।

छुआई–(हिं. स्त्री.) छुआने की क्रिया या भाव, लेश, स्पर्श।

छुआना–(हिं.क्रि.स) देखें 'छुलाना'।

छुआछूत–(हिं. स्त्री.) अस्पृश्य का स्पर्श, छूत का विचार, छूतछात।

छुईमुई–(हिं. स्त्री.) एक छोटा कँटीला पौधा, लजालू, लज्जावती, वहुत ही लजाधुर या चिड़चिड़ा आदमी।

छुगनू–(हिं. पुं.) घुंघरू।

छुच्छा–(हिं. वि.) देखें 'छछा'।

छुच्छी–(हिं. स्त्री.) पोली पतली नली, नरकट का टुकड़ा, नाक में पहिनने का एक गहना, वह पतली नली जिसका एक छोर कटोरी के आकार का होता है, कीप।

छुछकारना–(हिं.क्रि.स.) कुत्ते को आखेट के पीछे लगाना, ललकारना, डाँट-फटकार सुनाना।

छुछमछली–(हिं. स्त्री.) अंडे से फूटा हुआ मेढक का वच्चा जिसका आकार मछली सा होता है।

छुछहँड़–(हिं. स्त्री.) छूछी हाँड़ी।

छुछुंदर–(हिं. पुं.) देख 'छछूंदर'।

छुछुआना–(हिं.क्रि.अ.) व्यर्थ इधर-उधर घूमना, वनावटी प्रेम दिखलाना।

छुट–(हिं. अव्य.) अतिरिक्त, सिवाय, छोड़कर।

छुटकाना–(हिं. क्रि. स.) अलग करना, छोड़ना, पकड़े न रहना, साथ न लेना, मुक्त करना, छुटकारा देना।

छुटकारा–(हिं. पुं.) वन्धन से मुक्ति, वाधा, आपत्ति या चिन्ता से निस्तार, किसी काम से छुट्टी।

छुटना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'छूटना'।

छुटपन–(हिं. पुं.) लघुता, छोटाई, लड़कपन, वचपन।

छुटवाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'छोड़वाना'।

छुटाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'छोटाई'।

छुटाना–(हिं. क्रि. स.) छुड़ाना, वंधन से मुक्त करना।

छुटौती–(हिं. स्त्री.) व्याज की वह रकम जो छोड़ी जाय।

छुट्टा–(हिं.वि.) जो वँधा न हो, अकेला, जिसके पास असवाव न हो; –**पान**–(पुं.) पान का पत्ता, विना लगा पान; –**छरिंदा**–(वि.) अकेला, जिसके पास यात्रा की कोई सामग्री न हो; **छुट्टे हाथ**–खाली हाथ।

छुट्टी–(हिं. स्त्री.) मुक्ति, छुटकारा, अवकाश, कार्यालय के वन्द रहने का दिन, काम से निवृत्ति, प्रस्थान करने की आज्ञा; (मुहा.)–**पर जाना**–अवकाश ग्रहण करना; –**पाना**–पिंड छूटना, झंझट से वरी होना; –**मनाना**–अवकाश के दिनों में आनन्द लेना; –**होना**–काम समाप्त होना।

छुड़वाना–(हिं. क्रि. स.) छोड़ने का काम कराना, छोड़ने के लिये उद्यत करना।

छुड़ाई–(हिं. स्त्री.) छोड़ने या छुड़ाने की क्रिया, छोड़ाई, मुक्ति।

छुड़ाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे की पकड़ से अलग करना, फँसी या उलझी हुई वस्तु को पृथक् करना, दूसरे के अधिकार से मुक्त करना, नौकरी से हटाना, किसी प्रवृत्ति को दूर कराना, कार्य से अलग करना, किसी वस्तु पर पोते हुए रंग आदि को दूर करना।

छुड़ौती–(हिं. स्त्री.) वंधन से मुक्त करने के लिये दिया हुआ धन, ऋण का शेष जो छोड़ दिया जाय।

छुत–(हिं. स्त्री.) क्षुधा, भूख।

छुतिहर–(हिं. पुं.) वह पात्र जो अशौच या छूत से अशुद्ध हो गया हो, कुपात्र।

छुतिहा, छुतहा–(हिं.वि.) अस्पृश्य, दूषित, कलंकित, जिसमें छूत लगे या हो, स्पर्शज (रोग); (पुं.) शोरे का नमक।

छुद्र–(हिं. पुं.) देखें 'क्षुद्र'।

छुद्रावलि–(हिं. स्त्री.) करधनी।

छुधा–(हिं. स्त्री.) क्षुधा, भूख।

छुधित–(हिं. वि.) क्षुधित, भूखा।

छुनछुनाना–(हिं.क्रि.अ.) छुनछुन करना।

छुनमुन, छुनन-मुनन–(हिं. पुं.) वच्चे के पैर के आभूषण का शब्द।

छुप–(हिं.पुं.) क्षुप, झाड़ी, वायु, स्पर्श।

छुपना, छुपाना–(हिं. क्रि. अ., स.) देख 'छिपना, छिपाना'।

छुबुक–(हिं. पुं.) चिवुक, ठुड्डी।

छुभित–(हिं. वि.) क्षुभित, चंचल-चित्त, घवड़ाया हुआ।

छुभिराना–(हिं.क्रि.अ.) क्षुव्ध होना, चंचल होना।

छुरधार–(हिं. स्त्री.) छुरे की धार।

छुरा–(हिं.पुं.) नाई का उस्तरा, वेंट लगा हुआ आक्रमण करने का एक धारदार अस्त्र।

छुरित–(सं. पुं.) लास्य नामक नृत्य का एक भेद, विजली की चमक; (वि.) जटित, खचित।

छुरी–(हिं. स्त्री.) फल, तरकारी आदि काटने का वेंटदार चाकू; (मुहा.)–**चलाना**–छुरी से आक्रमण करना, किसी को अधिक कष्ट देना; –**तेज करना**–हानि पहुँचाने की तैयारी करना; –**फेरना**–किसी का अनिष्ट करना।

छुरेवाजी–(हिं. स्त्री.) छुरे की लड़ाई, दंगे आदि में लुक-छिपकर छुरा भोंकना।

छुलछुलाना–(हिं. क्रि. अ.) थोड़ा-थोड़ा करके पानी डालना, इतराना।

छुलाना–(हिं. क्रि. स.) स्पर्श कराना।

छुवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'छूना'।

छुवाछुत–(हिं. स्त्री.) देखें 'छुआछूत'।

छुवाना–(हिं.क्रि.स.) छुलाना, स्पर्श कराना।

छुवाव (हिं. पुं.) संसर्ग, संबंध, लगाव।

छुहना–(हिं. क्रि. अ., स.) छुआ जाना, रंगा जाना, लीपा-पोता जाना, छूना।

छुहाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) स्नेह या अनुग्रह करना, छोह करना, चूना, रंग आदि

पोता जाना; रंग, चूना आदि पोतवाना, सफेदी कराना।

छुहारा–(हि. पुं.) एक प्रकार का खजूर, पिंड-खजूर का फल।

छुही–(हि. स्त्री.) सफेद मिट्टी, खड़िया।

छूँछा–(हि. वि.) रिक्त, पोला, निःसत्व, निःसार, निर्धन; (मुहा.) छूँछ हाथ–बिना हथियार का हाथ, द्रव्य से खाली हाथ।

छूँछी–(हि. स्त्री.) देखें 'छुच्छी'।

छू–(हि. पुं.) मन्त्र पढ़कर मुख से हवा फेंकने का शब्द, मन्त्र की फूंक; (मुहा.) –बनाना–मूर्ख बनाना; –मंतर होना–जल्दी से लुप्त होना; –होना–चले जाना।

छूछू–(हि. वि.) मूर्ख।

छूट–(हि. स्त्री.) मुक्ति, छुटकारा, अवकाश, देनदार के ऋण की छुटौती, किसी कार्य या उसके किसी अंग को भूल जाने का भाव, स्वतन्त्रता, गाली-गलौज, स्त्री-पुरुष का परस्पर संबंध-त्याग, छींटा या व्यंग्य, का एक व्यायाम।

छूट-छुटाव–(हि. पुं.) संबंध या नाता का भंग, नाता-तोड़।

छूटना–(हि. क्रि. अ.) किसी बंधी या फँसी हुई वस्तु का अलग होना, लगाव में न रहना, दूर होना, किसी बाँधनेवाली वस्तु का अलग होना, छुटकारा होना, प्रस्थान करना, विमुक्त होना, बिछुड़ना, बन्द होना, दूर तक जानेवाले अस्त्र का चल पड़ना, किसी वस्तु का वेग से निकलना, रस-रसकर निकलना, शेष रहना, किसी काम का मूल से न किया जाना, नौकरी से हटाया जाना, जीविका का न रहना, पशुओं का जोड़ा खाने से अलग होना, नियम भंग होना, किसी वस्तु का वेग के साथ निकलना; (मुहा.) –शरीर या नाड़ी छूटना–मृत्यु होना, नाड़ी की गति बन्द होना; बंदूक छूटना–बंदूक से गोली निकल कर शब्द होना।

छूत–(हि. स्त्री.) स्पर्श, संसर्ग, छुआई, अस्पृश्य का संसर्ग, अपवित्र वस्तु के छूने का दोष, भूत-प्रेत लगने का बुरा प्रभाव; –का रोग–संक्रामक रोग; (मुहा.) –उतारना–अस्पृश्यता दूर करना; –झाड़ना–भूत-प्रेत की बाधा का झाड़-फूंक से निवारण करना।

छूना–(हि. क्रि. स.) स्पर्श करना, उँगलियों से स्पर्श करना, दौड़ में किसी को पकड़ना, थोड़ा सा काम में लाना, दौड़ना, धोना, गेंद से मारना, दुर्गति में किसी के बराबर पहुँचना; (मुहा.) आकाश छूना–बहुत ऊँचाई तक पहुँचना; छून से होना–ऋतुमती या रजस्वला होना।

छूरा–(हि. पुं.) देखें 'छुरा'।

छूरी–(हि. स्त्री.) देखें 'छुरी'।

छेंकना–(हि. क्रि. स.) आच्छादित करना, घेरना, गति का अवरोध करना, रोकना, रेखाओं से घेरना, लिखे हुए अक्षर या वाक्य को लकीर खींचकर काटना।

छेक–(हि. पुं.) छिद्र, विभाग, कटाव, घर का पालतू पशु।

छेकानुप्रास–(सं. पुं.) वह अनुप्रास जिसके एक ही चरण में दो या अधिक वर्णो की आवृत्ति कुछ अन्तर पर होती है।

छेकापह्नुति–(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें दूसरे के यथोचित अनुमान का खंडन अयथार्थ उक्ति से किया जाता है।

छेकोक्ति–(सं. स्त्री.) वह लोकोक्ति जिससे दूसरे अर्थ की ध्वनि निकलती हो।

छेटा–(हि. स्त्री.) बाधा, अवरोध, रुकावट।

छेड़–(हि. स्त्री.) संकुचित करने की क्रिया, हँसी-दिल्लगी करने या कुढ़ाने का काम, चिढ़ानेवाली बात, विरोध, आपस का झगड़ा, चुटकी बजाने के लिये सितार आदि के तारों का स्पर्श; (मुहा.) –निकालना–चिढ़ानेवाली बात की खोज करना।

छेड़खानी, छेड़छाड़–(हि. स्त्री.) छेड़ने या चिढ़ाने की बात या हरकत।

छेड़ना–(हि. क्रि. स.) छूना, दबाना, कोंचना, भड़काना, व्यग्र करना, चिढ़ाना, कुढ़ाना, चुटकी लेना, कोई कार्य आरंभ करना, बाजे को बजाने के लिये स्पर्श करना, छेद करना, फोड़ा चीरना।

छेड़वाना–(हि. क्रि. स.) छेड़ने का काम दूसरे से कराना।

छेड़ा–(हि. पुं.) रस्सी, सांट।

छेत्र–(हि. पुं.) देखें 'क्षेत्र'।

छेद–(सं. पुं.) काटने या छेदने का काम, ध्वंस, नाश, गणित में भाजक, खंड, टुकड़ा, विवर, छिद्र, कुहर, दोष, बिल।

छेदक–(सं. वि.) छेद करनेवाला, विभाजक, छेद।

छेदन–(सं. पुं.) काटने या चुभाने की क्रिया, चीरफाड़, नाश, विध्वंस, काटने का अस्त्र।

छेदना–(हि. क्रि. स.) किसी नुकीली वस्तु को चुभाकर छिद्र करना, बेधना, भेदना, काटना, घाव करना, छिद्र करना।

छेदा–(हि. पुं.) घुन नामक कीड़ा।

छेद्य–(सं. वि.) छेदनीय, छेद करने योग्य।

छेना–(हि. पुं.) फटा हुआ दूध जिसका पानी निचोड़कर अलगा दिया गया हो, फटे दूध का खोया, पनीर; (क्रि. स.) घाव करना, काटना।

छेनी–(हि. स्त्री.) पत्थर, धातु आदि काटने का अस्त्र, टाँकी, पोस्ते को चीरने की नहरनी।

छेमंड–(हि. वि.) बिना माँ-बाप का लड़का।

छेम–(हि. पुं.) देखें 'क्षेम'।

छेमकरी–(हि. स्त्री.) क्षेमकरी, सफेद चील।

छेरना–(हि. क्रि. अ.) अपच के कारण बारंबार शौच होना।

छेरी, छेली–(हि. स्त्री.) बकरी, अजा।

छेव–(हि. पुं.) वार, चोट, घाव, आनेवाली आपत्ति, अनिष्ट; छल-छेव–(पुं.) कपट व्यवहार।

छेवन–(हि. पुं.) कुम्हार का डोरा जिससे वह चाक पर के बरतन काटता है।

छेवना–(हि. पुं.) ताड़ी; (क्रि. स.) छिन्न करना, चिह्नित करना, काटना, फेंकना, मिलाना, ऊपर डालना।

छेवर–(हि. पुं.) वल्कल, छिलका, त्वचा, छाल, चमड़ा।

छेवा–(हि. पुं.) छीलने या काटने का काम, घाव, छेव।

छेह–(हि. पुं.) देखें 'छेव', खंडन, नाश, नाच का एक भेद; (वि.) न्यून, टुकड़ा किया हुआ; (स्त्री.) राख।

छेहर–(हि. पुं.) छाया, साया।

छै–(हि. वि.) देखें 'छः'; (पुं.) देखें 'क्षय'।

छैना–(हि. क्रि. अ.) क्षीण होना, नष्ट होना, कम होना।

छैया–(हि. पुं.) बच्चों के लिये प्यार का शब्द।

छैल–(हि. पुं.) छैला, बना-ठना सुन्दर मनुष्य, बाँका; –चिकनियाँ–(पुं.) बना-ठना मनुष्य; –छबीला–(पुं.) छैला, बना-ठना युवा पुरुष।

छैला–(हि. पुं.) सुन्दर वस्त्र पहिना हुआ मनुष्य, बाँका।

छोंकर, छोंकरा–(हि. पुं.) शमी का वृक्ष।

छोंड़ा–(हि. पुं.) दही मथने की लकड़ी, मथानी।

छोंड़ि–(हि. स्त्री.) देखें 'छोंड़ा'।

छो–(हि. पुं.) छोह, प्रीति, दया, क्षोभ।

छोई–(हि. पुं.) ऊख की पत्ती, बिना रस की ऊख की गँडेरी, सीठी।

छोकड़(रा)–(हि. पुं.) बालक, लड़का,

अनुभवहीन युवक; **-पन**-(पु.) लड़कपन, नादानी।

छोकरी, छोकड़ी-(हिं. स्त्री.) लड़की, बेटी।

छोकला-(हिं. पुं.) वल्कल, छिलका।

छोटपन-(हिं. पुं.) देखें 'छोटापन'।

छोटफन्नी-(हि.स्त्री.) छोटे मुँह की गगरी।

छोट भैया-(हिं. पुं.) पद में छोटा मनुष्य, कम हैसियत का आदमी।

छोटा-(हिं. वि.) विस्तार या आकार में न्यून, डील-डौल में कम, अल्पवय का, पद या प्रतिष्ठा में कम, जो महत्त्व का न हो, जिसमें गम्भीरता तथा शिष्टता का अभाव हो; **-ई**-(स्त्री.) लघुता, क्षुद्रता, छोटापन, नीचता; **-कपड़ा**-(पु.) चोली, अँगिया; **-पन**-(पुं.) लघुता, छोटाई, लड़कपन; **-पाट**-(पुं.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा; **-मोटा**-(वि.) छोटा-सा, सामान्य।

छोटी-(वि. स्त्री.) 'छोटा' का स्त्री. रूप; **-इलायची**-(स्त्री.) सफेद गुजराती, इलायची; **-जाति**-(स्त्री.) नीच जाति; **-बात**-(स्त्री.) ओछेपन या क्षुद्रता की सूचक बात; **-हाजिरी**-(स्त्री.) भारत में रहनेवाले अँगरेजों का प्रातःकाल का भोजन।

छोड़-चिट्ठी-(हि.स्त्री.) नाता या संबंध का त्याग।

छोड़ना-(हि.क्रि.स.) पकड़ से अलग करना, चिपकी हुई वस्तु को पृथक् करना, किसी स्थान पर पड़े रहने देना, साथ न ले जाना, परित्याग करना, पास न रखना, ग्रहण न करना, छूट देना, अपराध क्षमा करना, बंधन से निर्मुक्त करना, छुटकारा देना, प्रस्थान करना, दूर तक जानेवाले अस्त्र को फेंकना, आगे बढ़ जाना, बचा रखना, भीतर से वेग सहित बाहर आना, किसी काम को बन्द करना, किसी कार्य को मूल से न करना, ऊपर से गिराना, किसी व्याधि का दूर होना; (मुहा.) **स्थान छोड़ना**-किसी स्थान से अन्यत्र चले जाना; **किसी के पीछे छोड़ना**-पकड़ने के लिये दौड़ाना; **छोड़कर**-(अव्य.) अतिरिक्त, सिवाय।

छोड़वाना-(हि.क्रि.स.) छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छोड़ाना-(हि.क्रि.स.) देखें 'छुड़ाना'।

छोत-(हि. स्त्री.) छूत।

छोनिप-(हि. पुं.) भूपति, राजा।

छोनी-(हिं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि।

छोप-(हिं. पुं.) किसी गीली वस्तु की मोटी परत जो किसी वस्तु के ऊपर चढ़ाई जाती है, मोटा लेप चढ़ाने का काम, प्रहार, आघात, वार, छिपाव, बचाव; **छोप-छाप**-((पुं.) मरम्मत, टूटा-फूटा भाग भरना।

छोपना-(हिं. क्रि. स.) मोटी तह चढ़ाना, लेप करना, गीली मिट्टी का लोंदा रखना, थोपना, किसी बात को छिपाना, आक्रमण से रक्षा करना, आच्छादित करना, छेकना, ढाँपना, ग्रसना, घर दबाना; (मुहा.) **-छापना**-मरम्मत करना, टूटा-फूटा भाग भरना।

छोपा-(हिं. पुं.) पाल के चारों कोनों पर की रस्सियाँ जो इसे ऊपर चढ़ाती हैं।

छोपाई-(हिं. स्त्री.) छोपने की क्रिया या पारिश्रमिक।

छोभ-(हिं. पुं.) क्षोभ, चित्त की खलबली।

छोभना-(हिं. क्रि. अ.) क्षुब्ध होना, चित्त का विचलित होना।

छोभित-(हिं. वि.) विचलित, चंचल।

छोम-(हिं. वि.) चिकना, कोमल।

छोर-(हिं. पुं.) किसी वस्तु का किनारा जहाँ उसकी लम्बाई का अन्त हो, विस्तार का सीमांत, नोक, किनारे पर का सूक्ष्म भाग; **ओर-छोर**-(पुं.) आदि-अन्त।

छोरना-(हि.क्रि.स.) बन्धन अलग करना, बंधन मुक्त करना, उलझन हटाना, छीनना, हरण करना।

छोरा-(हिं. पुं.) बालक, लड़का, छोकड़ा।

छोरा-छोरी-(हिं. स्त्री.) नोच-खसोट, बखेड़ा, छीना-छीनी, झंझट।

छोरी-(हिं. स्त्री.) लड़की, छोकड़ी।

छोल-(हि.स्त्री.) छिल जाने का चिह्न, घाव।

छोलदारी-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा खेमा या तंबू।

छोलना-(हिं. क्रि. स.) छीलना।

छोलनी-(हिं. स्त्री.) छोलने का उपकरण, हलवाई की खुरचनी।

छोला-(हिं. पुं.) ऊख छोलनेवाला, चना।

छोह-(हि.पुं.) स्नेह, प्रेम, ममता, दया, कृपा।

छोहना-(हिं. क्रि. अ.) क्षुब्ध होना, चंचल होना, प्रेम दिखलाना।

छोहरा-(हि.पुं.) बालक, लड़का, छोकड़ा।

छोहरी-(हिं. स्त्री.) बालिका, लड़की।

छोहाना-(हिं. क्रि. अ.) प्रेम दिखलाना, अनुग्रह करना, दया दिखलाना।

छोहारा-(हिं. पुं.) देखें 'छुहारा'।

छोहिनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'अक्षौहिणी'।

छोही-(हिं. वि.) प्रेमी, स्नेही, अनुरागी; (स्त्री.) रस निकाली हुई ऊख की सीठी।

छौंक-(हिं. स्त्री.) तड़का, बघार।

छौंकना-(हि.क्रि.स.) हींग, जीरा, मरचा आदि से बघार देना।

छौंड़ा-(हि. पुं.) अन्न रखने का खत्ता, गाड़।

छौकना-(हि.क्रि.अ.) किसी पशु का चारों पैर उठाकर किसी की ओर झपटना।

छौना-(हिं. पुं.) पशु का बच्चा।

छौर-(हिं. पुं.) देखें 'क्षौर'।

छौलदारी-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा तंबू या खेमा।

ज

ज-हिन्दी भाषा का एक व्यंजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है। इसका उच्चारण-स्थान तालु है; (सं. पुं.) मृत्युंजय, विष्णु, पिता, जन्म, विष, तेल, पिशाच, वेग, मुक्ति; (वि.) वेगयुक्त, जीतनेवाला; (प्रत्य.) में उत्पन्न।

जंकशन-(अं. पुं.) वह स्टेशन जहाँ दो या अधिक रेल लाइनें मिली हों।

जंग-(फा. स्त्री.) युद्ध, लड़ाई; (फा. पुं.) मोरचा, धातु पर जमा मल।

जंगम-(सं. वि.) चल (प्राणी, संपत्ति आदि), स्थावर का उलटा।

जँगरा-(हिं. पुं.) मूँग, मटर, उर्द इत्यादि के डंठल जो दाना निकाल लेने पर बच जाते हैं।

जँगरैत-(हिं. वि.) परिश्रमी।

जंगल-(हिं. पुं.) वन, अरण्य; **-में मंगल**-(पुं.) निर्द्वंद्व शांति या चैन।

जँगला-(हि.पुं.) खिड़की आदि में लगी हुई छड़ों की पंक्ति, जालीदार खिड़की, साड़ी, दुपट्टे आदि के किनारे पर काढ़ा हुआ बेल-बूटा, एक राग का नाम, जँगरा।

जंगली-(हिं. वि.) जंगल में होनेवाला, जंगल-संबंधी, आपसे आप उगनेवाले (पौधे), जंगल में रहनेवाला, बनैला, जो पालतू न हो; **-जानवर**-(पुं.) वन्य पशु

जंगा-(हिं. पुं.) घुँघरू का दाना।

जंगार-(फा. पुं.) ताँबे का कसाव, तूतिया, ऐसा रंग।

जंगारी-(हिं. वि.) नीले रंग का, नीला।

जंगाल-(हिं. पुं.) देखें 'जंगार'।

जंगाली-(हिं. पुं.) नीले रंग का एक प्रकार का चमकीला रेशमी वस्त्र।

जंगी-(फा. वि.) युद्ध-संबंधी, सैनिक, फौजी; **-जहाज**(पुं.) युद्धपोत; **-बेड़ा**-(पुं.) जंगी जहाजों का बेड़ा

जंघा–(हि. स्त्री.) जांघ।
जंघार–(हि. स्त्री.) जांघ का फोड़ा।
जंघारा–(हि. पुं.) राजपूतों की एक जाति।
जंघिया–(हि. स्त्री.) जांघ तक का चुस्त पायजामा।
जँचना–(हि. क्रि. अ.) जांचा जाना, जांच में ठीक ठहरना, उचित जान पड़ना या प्रतीत होना, पसंद आना।
जँचा–(हि. वि.) सुपरीक्षित, जँचा हुआ, अचूक, ठीक-ठीक।
जंजर, जंजल–(हि.वि.)पुराना और जर्जर।
जंजाल–(हि. पु.) झंझट, प्रपंच, बखेड़ा, फँसाव, उलझन, पानी का भँवर, एक प्रकार की लंबी नली की बंदूक, बड़ा जाल, बड़े मुंह की तोप; (मुहा.)–में पड़ना–संकट में पड़ना।
जंजालिया, जंजाली–(हि. वि.) उपद्रवी, झगड़ालू, बखेड़िया।
जंजीर–(फा.स्त्री.) बेड़ी, शृंखला, सांकल।
जंजीरा–(हि.पुं.) जंजीर के समान सिलाई।
जंजीरी–(हि.वि.) जिसमें जंजीर लगी हो।
जंतर–(हि. पुं.) यन्त्र, गले में पहिनने का एक गहना, जंतर-मंतर, बीन बाजा; –मंतर–(पुं.) यंत्र-मंत्र, जादू-टोना, वेधशाला।
जंतरी–(हि.स्त्री.) सोनार का तार महीन करने का यंत्र, तिथि-पत्र, पंजिका; (पुं.) जादूगर, बीन आदि बाजा बजानेवाला; (मुहा.)–में खींचना–तार को जंतरी में खींचकर पतला करना।
जंतसार–(हि.स्त्री.) जांता गाड़ने का स्थान।
जंता–(हि. पुं.) पक्के लोहे की छेद की हुई पटरी जिससे तार खींचकर महीन किया जाता है; (वि.) दंड देनेवाला।
जंताना–(हि.क्रि.अ.) जांते में पिस जाना।
जंती–(हि.स्त्री.) देखें 'जंतरी', माता, मां।
जंतु–(सं.पुं.) पशु, प्राणी, जानवर, जीव।
जंत्र–(हि. पु.) कल, यंत्र, ताला; –मंत्र–(पु.) देखें 'जंतर-मंतर'।
जंत्रना–(हि. क्रि. स.) ताला लगाना, यंत्र में बन्द करना।
जंत्रित–(हि.वि.) बंद किया हुआ, बंधा हुआ।
जंत्री–(हि. पु.) बीन आदि बाजा बजानेवाला, [illegible], बाजा; (वि.) जकड़बंद करनेवाला; (स्त्री.) देखें 'जंतरी'।
जंदरा–(हि. पु.) यंत्र, जांता, ताला।
जंपान–(हि. पु.) [illegible]।
जंबाल–(हि. स्त्री.) केतकी का फूल।
[illegible]–(हि. स्त्री.) [illegible]।

जंबीर–(हि. पुं.) बड़ा नीबू, वनतुलसी।
जंबु, जंबुक–(सं. पुं.) जामुन का पेड़, इसका फल, सियार, शृगाल।
जंबूरा–(हि. पुं.) जिस चर्खे पर तोप चढ़ाई जाती है, भँवरकली, एक तरह की छोटी सँड़सी, बांक।
जंभ–(हि. पुं.) जबड़ा, दाढ, जँभीरी (कागजी) नीबू, जँभाई।
जंभन–(सं. पुं.) जम्हाई।
जंभा–(सं. स्त्री.) जम्हाई।
जँभाई–(हि. स्त्री.) आलस्य आदि के कारण मुख खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया, उवासी।
जँभाना–(हि.क्रि.अ.) जँभाई लेना, उवासी लेना।
जँभारि–(हि.पुं.) इन्द्र, विष्णु, वज्र, अग्नि।
जई–(हि.पुं.) जव की जाति का एक अन्न, जव का छोटा अंकुर; (मुहा.)–डालना–अँखुवा निकलने के लिये किसी अन्न को तर करना; –लेना–यह देखने के लिये किसी अन्न को बोना कि उसमें अँखुआ निकलता है या नहीं।
जईफ–(अ. वि.) बूढ़ा, अशक्त।
जईफी–(अ. स्त्री.) वृद्धावस्था, अशक्यता।
जऊ–(हि. अव्य.) यद्यपि।
जकंदना–(हि. क्रि. अ.) उछाल मारना, कूदना, टूट पड़ना।
जकंदनि–(हि.स्त्री) दौड़-धूप।
जक–(हि. पुं.) भूत, प्रेत, यक्ष, कंजूस आदमी; (स्त्री.) हठ, जिद, धुन; (मुहा.)–बंधना–धुन लगना।
जकड़–(हि. स्त्री.) जकड़ने का भाव; (मुहा.)–बंद करना–कसकर बांधना।
जकड़ना–(हि.क्रि.स.) कसकर बांधना, अंग का टस से मस न होना, अकड़ना।
जकना–(हि. क्रि. अ.) भौचक्का होना।
जकित–(हि. वि.) विस्मित, चकित, व्यग्र।
जकुट–(हि. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।
जक्की–(हि.स्त्री.) एक प्रकार की बुलबुल।
जक्त–(हि. पुं.) देखें 'जगत्'।
जक्ष–(हि. पुं.) देखें 'यक्ष'।
जक्षण–(सं. पुं.) भक्षण, भोजन।
जक्ष्मा–(हि. पुं.) देखें 'यक्ष्मा'।
जखम–(हि. पुं.) घाव, मानसिक क्लेश; (मुहा.)–ताजा या हरा होना–बीती हुई आपत्ति का पुनरागमन।
जखमी–(हि.वि.) घाव लगा हुआ, घायल।
जखीरा, जखेड़ा–(हि. पुं.) समूह, जमाव।
जग्म, जख्मी–(फा.पुं.वि.) देखें 'जखम', 'जखमी'।

जग–(हि.पुं.) जगत्, संसार, जन-समुदाय, संसार के लोग, देखें 'यज्ञ'।
जगकर–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
जगच्चक्षु–(सं. पुं.) सूर्यनारायण।
जगजगा–(हि. पुं.) पन्नी; (वि.) जगमगाता हुआ, चमकीला।
जगजगाना–(हि. क्रि. अ.) चमकना, जगमगाना।
जगजीवन–(सं. पुं.) जगत् के जीवन स्वरूप परमेश्वर।
जगजोनि–(हि. पुं.) जगयोनि, ब्रह्मा।
जगज्जननी–(सं.स्त्री.) संसार की जननी।
जगज्जयी–(सं.वि.) संसार को जीतनेवाला
जगझंप–(हि. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन ढोल।
जगड्वाल–(हि. पुं.) व्यर्थ का आडम्बर।
जगण–(सं. पुं.) पिंगल शास्त्र के अनुसार तीन अक्षरों का एक गण जिसके आदि-अन्त के अक्षर लघु तथा मध्य का अक्षर गुरु होता है।
जगत–(हि. स्त्री.) कुएँ के ऊपर का चारों ओर का चबूतरा।
जगतसेठ–(हि. पुं.) बहुत बड़ा धनवान्, महाजन।
जगतारन–(हि.वि.) संसार को तारनेवाला।
जगती–(सं. स्त्री.) संसार, पृथ्वी, एक वैदिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
जगतीतल–(सं. पुं.) भूमि, पृथ्वी।
जगत्–(सं. पुं.) संसार, दुनिया; –कर्त्ता–(पुं.) संसार का स्वामी; –कारण–(पुं.) सृष्टि का कारण-स्वरूप; –तारण–(पुं.) संसार को तारनेवाले परमेश्वर; –प्रसिद्ध–(वि.) विश्व-विख्यात; –साक्षी–(पुं.) सूर्य; –स्रष्टा–(पुं.) संसार के सृष्टि-कर्त्ता, परमेश्वर।
जगदंतक–(सं. पुं.) मृत्यु, यम।
जगदंबा, जगदंबिका–(सं. स्त्री.) दुर्गा।
जगद–(हि. पुं.) रक्षक, पालक।
जगदादि–(सं. पुं.) परमेश्वर, ब्रह्मा।
जगदाधार–(सं.पुं.) परमेश्वर, वायु, हवा।
जगदानंद–(सं. पुं.) परमेश्वर।
जगदीश, जगदीश्वर–(सं. पुं.) परमेश्वर, विष्णु, जगन्नाथ।
जगदीश्वरी–(सं. स्त्री.) भगवती, दुर्गा।
जगद्गुरु–(सं. पुं.) परमेश्वर, महादेव, नारद, अत्यन्त पूजनीय पुरुष, शंकराचार्य की गद्दी के महन्त की उपाधि, [illegible]

धार्मिक संप्रदाय के आचार्य की उपाधि ।
जगद्गौरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा ।
जगद्धाता–(सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ।
जगद्धात्री–(सं. स्त्री.) दुर्गा, सरस्वती ।
जगद्वल–(सं. पुं.) वायु, हवा ।
जगद्योनी–(सं. पुं.) शिव, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, परमेश्वर, पृथ्वी ।
जगद्वहा (सं. पुं.) पृथ्वी, भूमि ।
जगद्विनाश–(सं. पुं.) प्रलय-काल ।
जगना–(हि. क्रि. अ.) नींद से उठना, सावधान होना, सचेत होना, देवी-देवता का अधिक प्रभाव दिखलाना, चमकना, जगमगाना, अग्नि का जलना, उत्तेजित होना, उभड़ना ।
जगन्नाथ–(सं. पुं.) संसार का स्वामी, ईश्वर, विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति ।
जगन्नियंता–(सं. पुं.) ईश्वर, परमात्मा ।
जगन्निवास–(सं. पुं.) परमेश्वर, विष्णु ।
जगन्मय–(सं. पुं.) विष्णु ।
जगन्मयी–(सं. स्त्री.) सम्पूर्ण विश्व को चलानेवाली शक्ति, लक्ष्मी ।
जगन्माता–(सं. स्त्री.) दुर्गा ।
जगन्मोहिनी–(सं. स्त्री.) महामाया, दुर्गा ।
जगप्रान–(हि. पुं.) वायु ।
जगमग–(हि. वि.) प्रकाशित, चमकीला ।
जगमगाना–(हि. क्रि. अ.) प्रकाश से किसी वस्तु का चमकना, झलकना ।
जगमगाहट–(हि. स्त्री.) चमक, चमचमाहट ।
जगर–(सं. पुं.) कवच ।
जगरनाथी–(हि. पुं.) देखें 'जगन्नाथी' ।
जगर-मगर–(हि. वि.) देखें 'जगमग' ।
जगरा–(हि. स्त्री.) खजूर की खाँड़ ।
जगल–(सं. पुं.) कल्क, मद्य, गोबर ।
जगवाना–(हि. क्रि. स.) निद्रा भंग कराना, नींद से जगाना ।
जगह–(हि. स्त्री.) स्थान, स्थल, अवकाश या खाली स्थान, अवसर, समाई, नौकरी, पद, ओहदा ।
जगहर–(हि. स्त्री.) जगने की अवस्था ।
जगात–(हि. पुं.) दान, कर ।
जगाती–(हि. पुं.) दान या कर उगाहनेवाला कर्मचारी ।
जगाना–(हि. क्रि. स.) जागने के लिये किसी को प्रेरित करना, चैतन्य करना, होश दिलाना, उत्तेजित करना, सुलगाना, फिर से ठीक स्थिति में लाना ।
जगार–(हि. स्त्री.) जागरण, जागृति ।
जगीर–(हि. स्त्री.) देखें 'जागीर' ।
जगीला–(हि. वि.) जागने से अलसाया हुआ, उनींदा ।
जग्धि–(सं. स्त्री.) खाने की क्रिया, भोजन ।
जग्मि–(सं. पुं.) वायु, हवा ।
जग्य–(हि. पुं.) देखें 'यज्ञ' ।
जघन–(सं. पुं.) कमर के नीचे का भाग, नितंब, चूतड़; –**चपला**–(स्त्री.) कुलटा स्त्री, आर्या छन्द का एक भेद ।
जघन्य–(सं. वि.) अन्तिम, आखिरी, त्याज्य, क्षुद्र, नीच, निकृष्ट, बहुत बुरा; (पुं.) शूद्र जाति, हीन वर्ण; –**ज**–(पुं.) अन्त्यज, शूद्र ।
जघ्नि–(सं. पुं.) वध करनेवाला, वह अस्त्र जिससे वध किया जाय ।
जचना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'जँचना' ।
जच्चा–(फा. स्त्री.) वह स्त्री जिसे हाल ही में बच्चा पैदा हुआ हो, सद्यःप्रसूता; –**खाना**–(पुं.) प्रसव-गृह, सौरी ।
जच्छ–(हि. पुं.) देखें 'यक्ष' ।
जज (अं. पुं.) जिले का प्रधान न्यायाधीश ।
जजबा–(हि. पुं.) धोखा, रोष ।
जजमान–(हि. पुं.) देखें 'यजमान' ।
जजी–(हि. स्त्री.) जज की कचहरी, जज की अदालत, जज का काम, जज का पद ।
जटना–(हि. क्रि. स.) ठगना, धोखा देकर कुछ ले लेना, देखें 'जड़ना' ।
जटल–(हि. स्त्री.) झूठमूठ की बात, बकवाद ।
जटा–(सं. स्त्री.) एक में एक उलझे हुए सिर के बाल, लट, जड़ के पतले सूत्र, केवाँच, कौंछ, जटामासी, बालछड़, उलझे हुए रेशे ।
जटा-चीर–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
जटाजूट–(सं. पुं.) जटा का समूह, महादेव जी की जटा ।
जटाटक, जटाटीर–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
जटाधर–(सं. पुं.) महादेव, शिव ।
जटाधारी–(सं. वि.) जिसके जटा हो; (पुं.) शिव, महादेव ।
जटाना–(हि. क्रि. अ.) ठगा जाना, धोखे में आकर हानि उठाना ।
जटामाली–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
जटामासी–(हि. स्त्री.) एक वनस्पति की सुगन्धित जड़, बालछड़ ।
जटायु–(सं. पुं.) वह गृध्र जो रावण से लड़ा था जब रावण सीता को हरण करके ले जा रहा था ।
जटाल–(सं. वि.) जटाधारी; (पुं.) बरगद का वृक्ष ।
जटाव–(हि. स्त्री.) कुम्हार की पात्र गढ़न की मिट्टी ।
जटासुर–(सं. पुं.) एक राक्षस जिसको भीम ने मार डाला था ।
जटित–(सं. वि.) जड़ा हुआ, खचित ।
जटिल–(सं. वि.) जटावाला, अत्यन्त कठिन, क्रूर, हिंसक, दुर्बोध; (पुं.) सिंह, महादेव ।
जटिलता–(सं. स्त्री.) कठिनाई, दुर्बोधता, उलझन ।
जटिला–(सं. स्त्री.) ब्रह्मचारिणी, पिप्पली ।
जटी–(सं. स्त्री.) जटामासी ।
जटुल–(सं. पुं.) शरीर पर का धब्बा, लच्छन ।
जठर–(सं. पुं.) पेट, कुक्षि, एक देश का नाम, शरीर, उदर का एक रोग; (वि.) वृद्ध, बूढ़ा, कठिन ।
जठराग्नि–(हि. स्त्री.) अन्न को पचाने की पेट में की अग्नि या गरमी ।
जठरामय–(सं. पुं.) अतिसार, जलोदर रोग ।
जठल–(सं. पुं.) वैदिक काल का एक जलपात्र ।
जठेरा–(हि. वि.) जेठा, वय में बड़ा ।
जड़–(सं. वि.) अचेतन, जिसमें चेतना न हो, स्तब्ध, चेष्टाहीन, मूर्ख, मन्दबुद्धि, जिसके चित्त में मोह हो, अनजान, मूक, गूँगा, बहरा, सरदी से ठिठुरा हुआ; (हि. स्त्री.) जल, पानी, कारण, हेतु, आधार, वृक्ष का वह भाग जो भूमि के भीतर रहता है, नीवँ; (मुहा.)–**उखाड़ना या खोदना**–समूल नाश करना; –**जमना**–स्थायी होना; –**पकड़ना**–जमना; –**क्रिया**–(स्त्री.) दीर्घसूत्रता; –**ता**–(स्त्री.) अचेतन अवस्था, मूर्खता, अचलता, स्तब्धता, चित्त के विवेक-शून्य होने की अवस्था में उत्पन्न एक संचारी भाव; –**ताई**–(हि. स्त्री.) देखें 'जड़ता'; –**त्व**–(पुं.) अचेतन स्थिति, स्वयं हिल-डोल न सकने की स्थिति, गति का अभाव ।
जड़ना–(हि. क्रि. स.) बैठाना या पच्ची करना किसी पदार्थ से ठोंकना, किसी के विरुद्ध कुछ कहना ।
जडभरत–(सं. पुं.) अंगिरस गोत्र के एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे ।
जड़वाना–(हि. क्रि. स.) जड़ने का काम दूसरे से कराना ।
जड़वी–(हि. स्त्री.) धान का छोटा पौधा ।
जड़ाई–(हि. स्त्री.) जड़ने का काम, पच्चीकारी ।
जड़ाऊ–(हि. वि.) जिन पर रत्न जड़े हों, पच्चीकारी किया हुआ ।
जड़ान–(हि. स्त्री.) जड़ने का काम, जड़ाई ।
जड़ाना–(हि. क्रि. अ., स.) जड़ने का काम दूसरे से कराना, ठंढ खाना, शीत लगना ।

जड़ाव–(हि. पुं.) जड़ने का काम।
जड़ावट–(हि. स्त्री.) देखें 'जड़ाव'।
जड़ावर–(हि. पुं.) जाड़े में पहिनने के कपड़े।
जड़ावल–(हि. पुं.) देखें 'जड़ावर'।
जड़ित–(हि. वि.) जड़ा हुआ, जिसमे रत्न जड़े हों।
जड़िमा–(सं. स्त्री.) अज्ञान, जड़त्व।
जड़िया–(हि. पुं.) आभूषणों में नगीने जड़नेवाला।
जड़ी–(हि. स्त्री.) औषधि की जड़ जो औषधों में प्रयोग की जाती है; –बूटी–(स्त्री.) वनौषधि।
जड़ीभूत–(सं. वि.) जो बिलकुल जड़वत् हो गया हो, संज्ञाहीन, अचेत।
जड़ीला–(हि. वि.) जड़दार, जिसमें जड़ हो।
जड़ुला–(हि. पुं.) अँगूठे में पहिनने का चाँदी का छल्ला।
जड़ैया–(हि. स्त्री.) वह ज्वर जिसके आरंभ में जाड़ा लगता है, जूड़ी।
जड़ाना–(हि. क्रि. अ.) जड़ हो जाना, हठ करना।
जत–(हि. वि.) जिस मात्रा का, जितना।
जतन–(हि. पुं.) देखें 'यत्न'।
जतनी–(हि. पुं.) यत्न करनेवाला, चतुर, चालाक।
जतलाना, जताना–(हि. क्रि. स.) पहिले से सूचना देना, बतलाना।
जति, जती–(हि. पुं.) यति, संन्यासी।
जतु–(सं. पुं.) गोंद, लाह, शिलाजीत।
जतुक–(सं. पुं.) हींग, लाक्षा, लाह, शरीर पर का धब्बा या चिह्न, लक्षण।
जतुका–(सं. स्त्री.) पर्पटी नामक लता, चमगादड़।
जतुगृह–(सं. पुं.) जल्दी से जल जानेवाला घास-फूस का बना हुआ घर।
जतु-पुत्रक–(सं. पुं.) शतरंज का मोहरा, चौसर की गोटी।
जतुमुख–(सं. पुं.) एक प्रकार का धान।
जतुरस–(सं. पुं.) लाह का बना हुआ रंग।
जतूका–(हि. स्त्री.) देखें 'जतुका'।
जतेक–(हि. वि.) जितना।
जत्था–(हि. पुं.) अनेक जीवों का झुंड, समूह, दल।
जत्रु–(सं. पुं.) कंधा और बाँह का जोड़, हँसली।
जथा–(हि. अव्य.) यथा, जिस प्रकार; –(पुं.) समूह, मंडली।
जद–(हि. अव्य.) जब, जब कभी, यदि, अगर।
जदपि–(हि. अव्य.) यद्यपि।
जदबद–(हि. पुं.) देखें 'जद्दबद्द'।
जदवर, जदवार–(अ. पुं.) निर्विषी, निर्विसी।
जदुपति, जदुपाल–(हि. पुं.) यदुपति, श्रीकृष्ण।
जदुपुर–(हि. पुं.) मथुरा।
जदुबंसी–(हि. पुं.) देखें 'यदुवंशी'।
जदुराई–(हि. पुं.) यदुपति, श्रीकृष्ण।
जदुराज, जदुराय, जदुवर, जदुवीर–(हि. पुं.) श्रीकृष्ण।
जद्दपि–(हि. अव्य.) यद्यपि।
जद्दबद्द–(हि. पुं.) न कहने योग्य बात, दुर्वचन।
जनंगम–(हि. पुं.) चांडाल।
जन–(सं. पुं.) लोक, लोग, समूह, समुदाय, प्रजा, अनुयायी, गँवार, दास, अनुचर, ऊपर के सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।
जनक–(सं. पुं.) जन्मदाता, पिता, बाप, सीता के पिता का नाम, संवरासुर के पुत्र का नाम; –ता–(स्त्री.) उत्पन्न करने की शक्ति; –नंदिनी–(स्त्री.) जानकी, सीता; –पुर–(पुं.) मिथिला की प्राचीन राजधानी।
जन-कल्याण–(सं. पुं.) लोगों की भलाई, परोपकार।
जनकौर–(हि. पुं.) जनक का स्थान, जनक नगर, राजा जनक का वंश।
जनखा–(हि. पुं.) हिजड़ा, स्त्रैण।
जनचक्षु–(सं. पुं.) सूर्य।
जनचर्चा–(सं. स्त्री.) जनप्रवाद, लोकप्रवाद।
जन-जागरण–(सं. पुं.) लोगों में राजनैतिक अधिकारों के प्रति लिप्सा।
जनता–(सं. स्त्री.) जनसमूह, सर्वसाधारण लोग।
जनदेव–(सं. पुं.) नरपति, राजा।
जनधा–(सं. पुं.) अग्नि, आग।
जनन–(सं. पुं.) उत्पत्ति, जन्म, आविर्भाव, तंत्र के अनुसार मंत्रों का प्रथम संस्कार, कुल, वंश, पिता, ईश्वर।
जनना–(हि. क्रि. स.) प्रसव करना, सन्तान उत्पन्न करना।
जननाशौच–(सं. पुं.) जन्म होने पर अशुचि, सूतक, अशौच।
जननी–(सं. स्त्री.) उत्पन्न करनेवाली, माता, जूही का पेड़, मजीठ, कुटकी, जटामासी, दया, कृपा, चमगादड़।
जननेंद्रिय–(सं. स्त्री.) भग, योनि।
जनपद–(सं. पुं.) देश, देशवासी, प्रजा।
जनपद कल्याणी–(हि. स्त्री.) वेश्या।
जनपाल, जनपालक–(सं. पुं.) मनुष्यों का पालन-पोषण करनेवाला।
जनप्रवाद–(सं. पुं.) लोकनिन्दा, लोकप्रवाद, किंवदन्ती, जनश्रुति।
जनप्रिय–(सं. वि.) सर्वप्रिय, सब का प्यारा।
जनप्रियता–(सं. स्त्री.) सर्वप्रियता।
जनम–(हि. पुं.) उत्पत्ति, जन्म, आयु जीवन; (मुहा.) –गँवाना–व्यर्थ समय नष्ट करना; –बिगड़ना–धर्म नष्ट होना; –घूँटी–(स्त्री.) वह घूँटी जो बच्चों को जन्म-काल से दो-तीन वर्ष तक पिलाई जाती है; –दिन–(पुं.) उत्पत्ति का दिन, जन्मदिन; –संघाती–(पुं.) जन्म से साथ देनेवाला, बहुत दिनों से साथ रहनेवाला, जिसका साथ जन्म भर रहे।
जनमना–(हि. क्रि. अ.) उत्पन्न होना, जन्म लेना।
जनमाना–(हि. क्रि. स.) प्रसव करना।
जनमारो–(हि. पुं.) जन्म।
जनमेजय–(सं. पुं.) देखें 'जन्मेजय'।
जनयिता–(सं. पुं.) जन्म देनेवाला, पिता, बाप।
जनयित्री–(सं. स्त्री.) जन्म देनेवाली, माता।
जनरव–(सं. पुं.) जनश्रुति, लोकनिन्दा, किंवदन्ती, दुर्नाम, कोलाहल।
जनवल्लभ–(सं. पुं.) जनप्रिय, लोकप्रिय।
जनवाई–(हि. स्त्री.) देखें 'जनाई'।
जनवाद–(हि. पुं.) देखें 'जनरव'।
जनवाना–(हि. क्रि. स.) प्रसव कराना, सन्तति उत्पन्न कराना, समाचार दिलवाना, किसी के द्वारा सूचित कराना।
जनवास–(सं. पुं.) लोगों के ठहरने का स्थान, बरातियों के ठहरने का घर, सभा, समाज।
जनवासा–(हि. पुं.) देखें 'जनवास'।
जनश्रुत–(सं. वि.) विख्यात, प्रसिद्ध।
जनश्रुति–(सं. स्त्री.) किंवदन्ती।
जन-साधारण–(सं. पुं.) जनता, सभी लोग।
जनस्थान–(सं. पुं.) दण्डकारण्य, दण्डकवन।
जनसंख्या–(सं. स्त्री.) नगर, देश आदि के निवासियों की गणना, आबादी।
जनहरण–(सं.) दंडकवृत्त का एक भेद।
जनांत–(सं. वि. पुं.) जिसकी सीमा निश्चित हो, वह मनुष्यों के रहने का स्थान।
जनांतिक–(सं. पुं.) संकेत द्वारा वार्तालाप।
जना–(हि. स्त्री.) उत्पत्ति; (वि.) उत्पन्न किया हुआ।
जनाई–(हि. स्त्री.) जनानेवाली दाई, पैदा कराई।
जनाउ–(हि. पुं.) देखें 'जनाव'।

जनाचार–(सं. पुं.) देश या समाज में प्रचलित रीति, लोकाचार।
जनाधिनाथ–(सं.पुं.) ईश्वर, राजा।
जनाना–(हिं. क्रि. स.) जताना, मालूम कराना, उत्पन्न कराना, (धाई का) प्रजनन का काम कराना; (फा.वि.,पुं.) स्त्री-जैसा, डरपोक, हिजड़ा।
जनानापन–(हिं. पुं.) स्त्री-जैसा स्वभाव, हिजड़ापन, नामर्दी।
जनानी–(हिं.वि.) स्त्री का,स्त्री से संबंधित।
जनाब–(सं.पुं.) सम्मान-सूचक संबोधन, श्री, श्रीमान् आदि।
जनार्दन–(सं.पुं.) विष्णु; (वि.) दुखदायी।
जनाव–(हिं.पुं.) सूचना।
जनावर–(हिं.पुं.) देखें 'जानवर'।
जनाशन–(सं.पुं.) मनुष्य-भक्षक, भेड़िया।
जनाश्रय–(सं. पुं.) यात्रियों के ठहरने का स्थान, धर्मशाला।
जनि–(सं. स्त्री.) उत्पत्ति, जन्म, माता, स्त्री, पुत्रवधू, पतोह, भार्या, जन्मभूमि; (अव्य.) नहीं, मत।
जनिका–(सं. स्त्री.) देखें 'जनि'।
जनित–(सं. वि.) उत्पन्न, जनमा हुआ, उत्पन्न किया हुआ।
जनिता–(हिं.पुं.) उत्पन्न करनेवाला, पिता।
जनित्र–(सं.पुं.) जन्मस्थान, जन्म-भूमि।
जनित्री–(सं. स्त्री.) उत्पन्न करनेवाली, माता।
जनियाँ–(हिं. स्त्री.) प्रियतमा, प्राण-प्यारी, जानी।
जनी–(सं.स्त्री.) उत्पन्न करनेवाली, माता, स्त्री, अनुचरी, पुत्री, कन्या, दासी, वधू।
जनु–(हिं. अव्य.) मानो; (सं. स्त्री.) जन्म, उत्पत्ति।
जनून–(अ. पुं.) पागलपन, उन्माद।
जनूनी–(अ. वि.) पागल।
जनेंद्र–(सं. पुं.) भूपति, राजा।
जनेऊ–(हिं. पुं.) ब्रह्मसूत्र, यज्ञोपवीत, यज्ञोपवीत संस्कार।
जनेत–(हिं. स्त्री.) वरयात्रा, बारात।
जनेता–(हिं. पुं.) पिता, बाप।
जनेरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाजरा जिसके पौधे बहुत लम्बे होते हैं, मक्का।
जनेव–(हिं. पुं.) देखें 'जनेऊ'।
जनेश–(सं. पुं.) भूपति, नरेश, राजा।
जनण्टा–(सं.स्त्री.) हल्दी, पर्पटी, पपरी।
जनैया–(हिं.वि.) जाननेवाला, जानकार।
जनौ–(हिं.पुं.) जनेऊ; (अव्य.) मानो।
जन्म–(सं. पुं.) उत्पत्ति, उद्भव, जीवन, आविर्भाव; (क्रि. प्र.)–लेना–उत्पन्न होना; –काल–(पुं.) उत्पन्न होने का समय; –कील–(पुं.) विष्णु; –कुंडली–(स्त्री.) एक प्रकार का चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता लगता है; –क्षेत्र–(पुं.) जन्म-भूमि, जन्म-स्थान; –ग्रहण–(पुं.) उत्पत्ति; –ज्येष्ठ–(वि.) प्रथम-जात, जो पहले उत्पन्न हुआ हो; –तिथि–(स्त्री.) जन्म-दिन, वह तिथि जिसमें किसी का जन्म हुआ हो; –द–(वि.) जन्म देनेवाला, पिता; –दिन–(पुं.) जन्म का दिन, वर्षगाँठ; –नक्षत्र–(पुं.) जिस नक्षत्र में किसी का जन्म हुआ हो; –पति–(पुं.) जन्म-राशि के अधिपति; –पत्र–(पुं.) किसी वस्तु के आदि से अन्त तक का विवरण, जीवन-चरित्र, जन्मपत्री; –पत्रिका, –पत्री–(स्त्री.) वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, दशा, अन्तर्दशा आदि दिये हों; –भाज–(पुं.) प्राणी, जीव; –भूमि–(स्त्री.) वह देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो, जन्मस्थान; –राशि–(पुं.) वह राशि जिसमें किसी का जन्म हुआ हो; –रोगी–(पुं.) वह जो जन्मकाल से ही रोगी हो; –वसुधा–(स्त्री.) जन्मस्थान, जन्मभूमि; –विधवा–(स्त्री.) वह स्त्री जिसका पति उसके बचपन में ही मर गया हो; –शय्या–(स्त्री.) वह चारपाई जिस पर किसी का जन्म हुआ हो; –स्थान–(पुं.) जन्मभूमि, माता का गर्भ, कुंडली में वह स्थान जिसमें जन्म-समय के ग्रह रहते हैं।
जन्मांतर–(सं.पुं.) अन्य जन्म, लोकान्तर।
जन्मांध–(सं. वि.) जन्म का अन्धा।
जन्मा–(हिं. वि.) जन्म लेनेवाला, उत्पन्न।
जन्माधिप–(सं. पुं.) जन्म-लग्न का स्वामी, शिव।
जन्माशौच–(सं.पुं.) जन्मसंबंधी अशौच।
जन्माष्टमी–(सं. स्त्री.) श्रीकृष्ण के जन्म की अष्टमी तिथि।
जन्मास्पद–(सं. पुं.) जन्मस्थान, जन्म-भूमि।
जन्मेजय–(हिं. पुं.) राजा परीक्षित के पुत्र का नाम जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था, जनमेजय, विष्णु।
जन्मेश–(सं.पुं.) जन्म राशि का स्वामी।
जन्मोत्सव–(सं. पुं.) किसी के जन्म का स्मारक उत्सव।
जन्य–(सं. पुं.) हाट, बाजार, निन्दा, संग्राम, युद्ध, जनक, पिता, शिव, महादेव, शरीर, किंवदन्ती, नव-विवाहितों के भाईबंधु या मित्र, सामान्य मनुष्य, बराती लोग, वर का सखा; (वि.) उत्पादक, जन्म देनेवाला, जातीय, राष्ट्रीय, जन-संबंधी, मनुष्यों का हितकर, जो उत्पन्न हुआ हो।
जन्या–(सं. स्त्री.) प्रीति, प्रेम, वधू की सहेली।
जन्यु–(सं. पुं.) अग्नि, ब्रह्मा, प्राणी, जन्म।
जप–(सं. पुं.) पाठ, अध्ययन, मन्त्र आदि का बारंबार उच्चार या आवृत्ति, मन्त्र का संख्यापूर्वक पाठ।
जपजी–(हिं. पुं.) सिक्खों का एक पवित्र धर्म-ग्रन्थ।
जपतप–(हिं. पुं.) पूजा-पाठ।
जपन–(सं.पुं.) जप करने का काम।
जपना–(हिं. क्रि. स.) किसी वाक्य या वाक्य-खंड को धीरे-धीरे देर तक दोहराना, किसी मन्त्र का संख्यानुसार धीरे-धीरे बारंबार उच्चारण करना, खा जाना, जल्दी-जल्दी निगल जाना।
जपनी–(हिं. स्त्री.) जपने की माला, गोमुखी।
जपनीय–(सं. वि.) जप करने योग्य।
जपपरायण–(सं. वि.) जप करने में आसक्त।
जपमाला–(सं. स्त्री.) जप के निमित्त व्यवहार होनेवाली माला।
जपा–(सं.स्त्री.) अड़हुल का वृक्ष या पुष्प।
जपिया, जपी–(हिं.,सं.पुं.) जप करनेवाला।
जप्त–(हिं.वि.) राज्य द्वारा अपहरण, जब्त।
जप्ती–(हिं. स्त्री.) देखें 'जब्ती'।
जप्य–(सं. वि.) जपनीय, जपने योग्य।
जब–(हिं.अव्य.) जिस समय, जिस वक्त।
जबड़ा–(हिं. पुं.) कल्ला, गाल के भीतर का भाग।
जबर–(फा. वि.) अधिक बलवान या मजबूत।
जबरदस्त–(फा. वि.) बलवान, प्रबल।
जबरदस्ती–(फा. स्त्री.) बल-प्रयोग, धींगा-धींगी।
जबरन–(फा. अव्य.) बल प्रयोग करके।
जबरा–(हिं.वि.) शक्तिमान, बली; (पुं.) एक प्रकार का अन्न रखने का बड़ा पात्र; (अं. जबा,) एक प्रकार का घोड़े के आकार का पशु जिसके शरीर पर काली लंबी धारियाँ होती हैं।
जबान–(फा. स्त्री.) जीभ, रसना, भाषा, बोली, बात; (मुहा.)–खींचना–बुरी

या अश्लील बातों के व्यवहार के कारण कठोर दंड देना; –खुलना–बोल निकलना,–खोलना–कुछ बोलना; तेजीसेबोलना; –चलना,–चलाना–तेजी से बोलना;–पकड़ना–अपनी बात कहने से किसी को रोकना;–पर लगाम न होना–बिना समझे-बूझे जो चाहे सो कहना;–पर लाना–कहना, बयान करना;–पर होना–सदा याद रहना;–पलटना–बात कहकर मुकर जाना; – सँभालना–खूब सँभलकर बातें कहना;–हारना–बात हारना, वचनबद्ध होना।

जबानी–(फा. वि.) जबान से संबद्ध, मौखिक, अलिखित; –जमा-खर्च–(पुं.) वह बात जो कही जाय पर की न जाय।

जब्त–(फा. वि.) राज्य द्वारा किसी संपत्ति का स्वायत्तीकरण।

जब्ती–(फा. स्त्री.) राज्य द्वारा किसी संपत्ति का राज्यसात्करण।

जबाला–(सं. स्त्री.) सत्यकाम जाबाल ऋषि की माता का नाम।

जभन–(सं. पुं.) स्त्री-प्रसंग, मैथुन।

जम–(हि. पुं.) देखें 'यम'।

जमक–(हि. पुं.) देखें 'यमक'।

जमकात, जमकातर–(हि. पुं.) पानी का भँवर; (स्त्री.) यमराज का छुरा।

जमघंट–(हि. पुं.) देखें 'यमघंट'।

जमघट–(हि. पुं.) मनुष्यों की भीड़भाड़, जमावड़ा।

जमज–(हि. वि.) देखें 'यमज, जुड़वाँ।

जमडाढ़–(हि. स्त्री.) कटारी की तरह का एक अस्त्र।

जमदग्नि–(सं. पुं.) एक वैदिक ऋषि का का नाम।

जमदिसा–(हि. स्त्री.) दक्षिण दिशा।

जमधर–(हि. पुं.) देखें 'जमडाढ़'।

जमन–(सं. पुं.) भोजन, खाद्य पदार्थ; (हि. पुं.) देखें 'यवन'।

जमना–(हि.क्रि.अ.) किसी तरल पदार्थ का गाढ़ा होना, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में दृढ़तापूर्वक बैठ जाना, एकत्र होना, अधिक चोट पड़ना, कोई काम करने में हाथ बैठना, स्थिर होना, निश्चल होना, संगीत, नाटक आदि जलसों का यथेष्ट रोचक होना; किसी काम का अच्छी तरह चलने योग्य होना, उत्पन्न होना, उगना।

जमनिका–(हि. स्त्री.) जवनिका, परदा।

जमनौता–(हि. पुं.) प्रतिभू के बदले में दिया जानेवाला धन।

जमवार–(हि. पुं.) यम का द्वार।

जमराज–(हि. पुं.) देखें 'यमराज'।

जमवट–(हि. स्त्री.) लकड़ी का गोल चक्कर जो कुएँ की पेंदी में रखकर इस पर ईटों की जोड़ाई की जाती है।

जमा–(अ.स्त्री.) समूह, जमात, पूँजी, धन, हिसाब-बहीका वह मद या भाग जिसमें आमदनी लिखी जाती है; –खर्च–(स्त्री.) आमदनी और खर्च; –दार–(पुं.) सिपाहियों, भंगियों आदि का मुखिया; –पूँजी–(स्त्री.) जो कुछ धन किसी के पास बचा हुआ हो; (मुहा.) –खर्च करना–किसी रकम को जमा में लिखकर फिर खर्च में लिखना।

जमाई–(हि. पुं.) जामाता, दामाद, जँवाई; (स्त्री.) जमने की क्रिया, जमाने का पारिश्रमिक।

जमाजथा–(हि. स्त्री.) धन, सम्पत्ति।

जमानत–(अ. स्त्री.) किसी के द्वारा कोई काम कराने, रुपए जमा करने, कचहरी में उपस्थित होने आदि के विषय में कानूनी जिम्मेदारी; अदालत के विश्वास के लिए एतदर्थ जमा की गई रकम, वह व्यक्ति जो जमानत दे; –नामा–(पुं.) जमानत का कानूनी लेख्यपत्र।

जमानती–(अ. वि.) जमानत से संबद्ध, जमानत के योग्य।

जमाना–(अ. पुं.) काल, समय, युग, अवधि, बहुत समय; (मुहा.) –उलटना–समय का एकबारगी बदल जाना; –बदलना या पलटना–समय का परिवर्तन होना।

जमाना–(हि.क्रि.सं.) किसी तरल पदार्थ को गाढ़ा करना, एक पदार्थ को दूसरे में दृढ़ता-पूर्वक बैठाना, प्रहार करना, हाथ से होनेवाले काम का अभ्यास करना, उत्पन्न करना, उपजाना।

जमामार–(हि. वि.) अनुचित रूप से दूसरे का धन दबा लेनेवाला।

जमालगोटा–(हि. पुं.) एक पौधे का फल जो अत्यन्त रेचक औषध है।

जमाव–(हि. पुं.) जमने या जमाने का भाव।

जमावट–(हि. स्त्री) जमने का भाव।

जमावड़ा–(हि.पुं.) मनुष्यों की भीड़, जत्था।

जमीकंद–(फा. पुं.) सूरन, ओल।

जमींदार–(हि. पुं.) भू-स्वामी।

जमींदारी–(हि. स्त्री.) भू-स्वामित्व।

जमीन–(फा. स्त्री.) पृथ्वी, धरती, भूमि, स्थल-भाग, खेत, चित्रकारी, कशीदे आदि में कागज या वस्त्र आदि की सतह; (मुहा.)–आसमान का फ़र्क–बहुत अधिक अंतर;–का पाँव तले से खिसक जाना–भय आदि के कारण खड़ा रहने में असमर्थ होना; –पर पाँव न पड़ना—बहुत इतराना या गर्व होना;–में गड़ जाना–बहुत लज्जित होना।

जमुकना–(हि.क्रि.अ) अति समीप होना।

जमुना–(हि. स्त्री.) देखें 'यमुना'।

जमुनियाँ–(हि. वि.) जामुन के रंग का, जामुनी।

जमुहाना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'जँभाना'।

जमोग–(हि. पुं.) स्वीकार करने की क्रिया।

जमोगना–(हि.क्रि.स.) हिसाब-किताब की जाँच कराना, भार सौंपना, सरेखना, जाँच कराना।

जम्हाई–(हि. स्त्री.) देखें 'जृंभा'।

जम्हाना–(हि.क्रि.अ.) उबासी लेना।

जयंती–(सं. स्त्री.) किसी के जन्म-दिन, वर्ष-गाँठ आदि पर होनेवाला समारोह या उत्सव; **स्वर्ण जयंती**–(स्त्री.)पचासवें वर्ष होनेवाला समारोह; **हीरक जयंती**–(स्त्री.) साठवें वर्ष होनेवाला उत्सव।

जय–(सं.स्त्री.) युद्ध आदि में शत्रु का पराजय, जीत; (पुं.) युधिष्ठिर, विष्णु के एक पार्षद का नाम, विष्णु, एक राजर्षि का नाम, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, महाभारत, अर्जुन, इन्द्र, सूर्य, अयन, लाभ, इन्द्र का पुत्र जयन्त; (मुहा०) –मनाना–विजय की कामना करना।

जयक–(स. वि.) जयकर्त्ता।

जयकरी–(सं.स्त्री.) चौपाई नामक छन्द।

जयकोलाहल–(सं.पुं.) जयध्वनि, कोलाहल की ध्वनि।

जयखाता–(हि. पुं.) बनियों की आय-व्यय लिखने की बही।

जयघोष–(सं.पुं.) जीतकीघोषणा, जयध्वनि।

जयजयवंती–(हि. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।

जयजीव–(सं. पद) अभिवादन का पद।

जयती–(हि. स्त्री.) श्री राग के अन्तर्गत एक रागिणी का नाम।

जयद–(सं. वि.) जयदाता, जीतनेवाला।

जयदुर्गा–(सं. स्त्री.) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम।

जयदेव–(स. पुं.) गीत गोविंद आदि के रचयिता प्रसिद्ध संस्कृत कवि।

जयद्रथ–(सं. पुं.) सिन्धु या सौवीर देश के राजा जो दुर्योधन के बहनोई थे।

जयध्वज–(सं. पुं.) अवन्ती के राजा का नाम, जयपताका।
जयना–(हि. क्रि.स.) जीतना।
जयपत्र–(सं. पुं.) वह पत्र जिस पर किसी विवाद के निर्णय के बाद न्यायिक मन्तव्य लिखा जाता है।
जयपाल–(सं. पुं.) विधि, विष्णु, भूपाल।
जयप्रिय–(सं. पुं.) विराट राजा के भाई का नाम, ताल का एक भेद।
जयमंगल–(सं.पुं.) राजा की सवारी का हाथी।
जयमाल (ला)–(हि., सं. स्त्री.) विजय प्राप्त करने पर विजयी को पहिनाने की माला, वह माला जिसको स्वयंवर के समय कन्या अपने चुने हुए पति के गले में डालती थी।
जययज्ञ–(सं. पुं.) अश्वमेध यज्ञ।
जयलेख–(सं.पुं.) वह पत्र जो हारा हुआ राजा अपने जीतनेवाले को लिख देता है।
जयवाहिनी–(सं. स्त्री.) इन्द्राणी, शची।
जयशब्द–(सं. पुं.) जयध्वनि।
जयश्री–(सं. स्त्री.) विजयलक्ष्मी, विजय, एक रागिनी का नाम।
जयस्तंभ–(सं. पुं.) जयसूचक स्तंभ, वह स्तंभ जिसको विजयी राजा किसी देश को जीतने पर विजय के स्मारक रूप में बनवाता था।
जयांजन–(सं. पुं.) स्रोतोंजन, सुरमा।
जया–(सं. स्त्री.) दुर्गा, पार्वती, त्रयोदशी, अष्टमी और तृतीया तिथि का नाम, हड़, हरी दूब, पताका, ध्वजा, भाँग, अड़हुल का फूल, सोलह 'मातृकाओं' में से एक, केंवाच; (वि.स्त्री.) जय देनेवाली।
जयावती–(सं. स्त्री.) एक संकर रागिनी
जयिष्णु–(सं. वि.) जयशील, जीतनेवाला।
जयी–(हि. वि.) विजयी, जयशील।
जर–(सं. पुं.) जरा, वृद्धावस्था; (हि. पुं.) देखें 'ज्वर'।
जरई–(हि. पुं.) जई, जौ का अँखुआ।
जरकटी–(हि. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
जरजर–(हि. वि.) देखें 'जर्जर'।
जरठ–(सं. वि.) कर्कश, कठोर, कड़ा, वृद्ध, जीर्ण, पुराना; (पुं.) जरा, बुढ़ापा।
जरठाई–(हि. स्त्री.) वृद्धावस्था।
जरण–(सं. पुं.) हिंगु, हींग।
जरणा–(सं. स्त्री.) हींग, जीरा, काला नमक, बुढ़ापा।
जरत्–(सं. वि.) वृद्ध, पुराना; (पुं.) बुड्ढा मनुष्य।
जरतार–(हि.पुं.) सोने-चाँदी का तार, जरी।
जरतारी–(हि. स्त्री.) जरी का काम।
जरती–(सं. स्त्री.) बुड्ढी औरत।
जरतुश्त–(पुं.) प्राचीन पारसी धर्म के प्रवर्त्तक और जंद-अवेस्ता के रचयिता।
जरत्कारु–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
जरद्गव–(सं. पुं.) बुड्ढा बैल, वृद्धावस्था, एक गिद्ध का नाम।
जरद्दृष्टि–(सं. वि.) दीर्घजीवी, बूढ़ा।
जरन–(हि. स्त्री.) देखें 'जलन'।
जरना–(हि.क्रि.अ.,स.) देखें 'जलना', 'जड़ना'।
जरनि–(हि. स्त्री.) दहन।
जरमुँहा–(हि. वि.) (स्त्री. जरमुँही) अधिक ईर्ष्या करनेवाला, जलनेवाला।
जरर–(अ. पुं.) हानि, क्लेश।
जरांकुश–(हि. पुं.) एक प्रकार की सुगंधित घास।
जरा–(अ. वि.) अल्प, थोड़ा-सा; –जरा–(अव्य.) थोड़ा-थोड़ा; –सा–(वि.) थोड़ा सा।
जरा–(सं. स्त्री.) वृद्धावस्था, बुढ़ापा, वार्धक्य।
जराउ–(हि. वि.) देखें 'जड़ाऊ'।
जराग्रस्त–(सं. वि.) जराभिभूत, वृद्ध, बुड्ढा।
जरातुर–(सं. वि.) जीर्ण, पुराना, बहुत दिनों का।
जराना–(हि. क्रि. स.) देखें 'जलाना'।
जराभीरु–(सं. पुं.) कामदेव; (वि.) वृद्धावस्था से डरनेवाला।
जराय, जराव–(हि. वि.) जड़ाऊ।
जरायु–(सं. पुं.) गर्भ की झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ उत्पन्न होता है, गर्भाशय, कलल, खेड़ी, भग, योनि, जटायु पक्षी; –ज–(पुं.) वह प्राणी जो खेड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से पैदा होता है।
जरासंध–(सं. पुं.) चन्द्रवंशीय राजा बृहद्रथ के पुत्र का नाम।
जरी–(फा. वि.) सुनहरे तारों का बना हुआ; (स्त्री.) ऐसा वस्त्र, ताश; –का काम–कलाबत्तू या सलमे-सितारे का काम।
जरीब–(फा. स्त्री.) वह जंजीर जिससे खेत या जमीन की नाप होती है।
जरीवाना–(हि. पुं.) देखें 'जुरमाना'।
जरूर–(अ. अव्य.) अवश्य, निःसंदेह।
जरूरत–(अ. स्त्री.) आवश्यकता।
जरूरी–(फा.वि.) आवश्यक, प्रयोजनीय।
जरौट–(हि. वि.) देखें 'जड़ाऊ'।
जर्जर–(सं. पुं.) शैलज, पत्थर-फूल, इन्द्र की ध्वजा का नाम, शैवाल, सेवार; (वि.) जीर्ण, बहुत पुराना, टूटा-फूटा, वृद्ध, बुड्ढा; –ता–(स्त्री.) जीर्णता।
जर्जरित–(सं. वि.) खंडित, टूटा-फूटा।
जर्राह–(अ. पुं.) चीर-फाड़ के द्वारा घावों की चिकित्सा करनेवाला।
जलंधर–(हि. पुं.) पेट में पानी भर आने का रोग।
जल–(सं.पुं.) पानीय, पानी, अप्, उशीर, खस, नेत्रवाला, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।
जल-अलि–(सं. पुं.) पानी का भँवरा, जल के तल पर तैरनेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा।
जलई–(हि. स्त्री.) दोनों ओर मुड़ा हुआ काँटा।
जलक–(सं. पुं.) शंख, कपर्दक, कौड़ी।
जलकंटक–(सं. पुं.) शृंगाटक, सिंघाड़ा, जलकुंभी।
जलकंद–(सं. पुं.) कदली, केला, सिंघाड़ा।
जलकपि–(सं.पुं.) शिशुमार, सूँस नामक जलजन्तु।
जलकरंक–(सं. पुं.) नारियल, कमल, शंख, मेघ।
जलकर–(हि.पुं.) जल से होनेवाली आय पर कर।
जलकल्क–(सं. पुं.) कर्दम, कीचड़, काई।
जलकांत–(सं.पुं.) जल के अधिष्ठाता वरुण।
जलकामुक–(सं. पुं.) जलाभिलाषी।
जलकिराट–(सं.पुं.) मगर, घड़ियाल, सूँस।
जलकुंतल–(सं. पुं.) शैवाल, सेवार।
जलकुंभी–(हि. पुं.) जल के तल पर होनेवाली एक वनस्पति, कुंभी।
जलकुक्कुट–(सं. पुं.) एक जलपक्षी।
जलकूपी–(सं. स्त्री.) कुआँ, तालाब।
जलकेतु–(सं. पुं.) पश्चिम दिशा में उदय होनेवाला एक पुच्छल तारा।
जलकेलि–(सं. स्त्री.) जलक्रीड़ा, जल में तैरने की क्रीड़ा।
जलकेश–(सं. पुं.) शैवाल, सेवार।
जलक्रिया–(सं. स्त्री.) पित्रादि का तर्पण।
जलक्रीड़ा–(सं. स्त्री.) जल में तैरना या नाव खेने की क्रीड़ा, जलविहार।
जलखग–(सं. पुं.) जल के किनारे रहनेवाला पक्षी।
जलखरी–(हि. स्त्री.) फल, तरकारी आदि रखने की जालीदार थैली।
जलगुल्म–(सं.पुं.) जल का भँवर, कछुआ, चौखूँटा तालाब।
जलघड़ी–(हि. स्त्री.) समय जानने का एक साधन जिसमें नाँद में भरे जल में एक महीन छिद्र की कटोरी डाल दी जाती है जो एक घंटे में जल से भरकर डूब जाती है।

जलचर–(सं.पुं.) जल में रहनेवाला जन्तु; –जीव–(पुं.) मत्स्यजीवी, मछली खाकर निर्वाह करनेवाला मनुष्य।
जलचादर–(हिं.स्त्री.) पानी का ऊँचाई से गिरनेवाला विस्तृत प्रवाह।
जलचारी–(सं. वि.) देखें 'जलचर'।
जलज–(सं. वि.) जो पानी में उत्पन्न हो; (पुं.) कमल, मछली, जलजन्तु, शंख, मोती।
जलजात–(स. वि.) देखें 'जलज'; (पुं.) कमल, पद्म।
जलडमरूमध्य–(सं. पुं.) दो बड़े समुद्रों को जोड़नेवाला जल का पतला भाग।
जलडिंब–(सं. पुं.) शंबूक, घोंघा।
जलतरंग–(सं.पुं.) जल की तरंग, लहर, धातु की छोटी-बड़ी कटोरियों में जल भरकर लकड़ी की छड़ी से बजाने का एक बाजा।
जलतापी–(सं. पुं.) हिलसा नामक बड़ी समुद्री मछली।
जलताल–(सं. पुं.) सलई का वृक्ष।
जलत्रा–(सं. स्त्री.) छत्र, छाता, जंगम-कुटी जो एक स्थान से दूसरे स्थान में हटाई जा सकती है।
जलत्रास–(सं. पुं.) पागल कुत्ते, सियार आदि के काटने पर जल देखकर होनेवाला भय, जलातंक रोग।
जलथंभ–(हिं.पुं.) देखें जलस्तंभ'।
जलद–(सं. वि.) जल देनेवाला; (पुं.) मेघ, बादल, कपूर, मोथा, कुचले का वृक्ष; –काल–(पुं.) वर्षाऋतु, बरसात; –क्षय–(पुं.) शरद्-ऋतु।
जलदागम–(सं. पुं.) वर्षाकाल।
जलदेव–(सं. पुं.) पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, वरुण।
जलदेवता–(सं. पुं.) वरुण।
जलधर–(सं. पुं.) मेघ, बादल, मोथा, समुद्र।
जलधरमाला–(सं. स्त्री.) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
जलधरी–(सं. स्त्री.) पत्थर, धातु आदि का बना हुआ अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है।
जलधारा–(सं. स्त्री.) जल-प्रवाह, पानी की धारा, जल की धारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या।
जलधारी–(सं. वि.) जल धारण करनेवाला; (पुं.) मेघ, बादल।
जलधि–(सं. पुं.) समुद्र, चार की संख्या; –गा–(स्त्री.) नदी, लक्ष्मी; –ज–(पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा।
जलन–(हिं. स्त्री.) बहुत अधिक ईर्ष्या, जलने का कष्ट या पीड़ा।
जल-नकुल–(सं. पुं.) ऊदबिलाव।
जलना–(हिं. क्रि. अ.) दग्ध होना, भस्म होना, बलना, अग्नि के कारण भाप बनना या कोयला हो जाना, झुलसना, अधिक डाह के कारण चिढ़ना; (मुहा०) जले पर नमक छिड़कना–दुःखित को और कष्ट देना; –जली-कटी–(स्त्री.) मर्मवेधी वार्ता, लगती हुई बात।
जलनिधि–(सं.पुं.) समुद्र, चार की संख्या।
जलनिर्गम–(सं. पुं.) पानी का निकास।
जलपक्षी–(सं. पुं.) जल के आस-पास रहनेवाली चिड़िया।
जलपति–(सं. पुं.) समुद्र, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।
जलपथ–(सं. पुं.) जल बहने का मार्ग, प्रणाली, नाली।
जलपना–(हिं. क्रि. अ.) डींग मारना; (स्त्री.) व्यर्थ की बात।
जलपाटल–(हिं. पुं.) कज्जल, काजल।
जलपादप–(सं. पुं.) हंस।
जलपान–(हिं. पुं.) प्रातराश, कलेवा।
जलपीपल–(हिं.स्त्री.) मत्स्यगंधा नामक औषधि।
जलपूर–(सं. पुं.) जल से भरी हुई नदी।
जलप्रदान–(सं. पुं.) प्रेत, पितर आदि का तर्पण।
जलप्रपा–(सं. स्त्री.) पौसरा, प्याऊ।
जलप्रपात–(सं. पुं.) किसी नदी के स्रोत का ऊँचे स्थान से नीचे को गिरना।
जलप्रवाह–(सं.पुं.) पानी का बहाव, नदी में शव आदि को बहा देने की क्रिया।
जलप्रांत–(सं. पुं.) नदी, जलाशय आदि के आसपास का स्थान।
जलप्राय–(सं. पुं.) अनूप-देश, जिस देश में जल की अधिकता हो।
जलप्रिय–(सं. पुं.) चातक पक्षी, पपीहा, मछली; (वि.) जो जल बहुत चाहता हो।
जलप्लव–(सं. पुं.) जल-नकुल, ऊदबिलाव।
जलप्लावन–(सं. पुं.) बाढ़, पानी से किसी स्थान का डूब जाना।
जलप्लावित–(सं. वि.) जल में मग्न, बाढ़ में डूबा हुआ।
जलफल–(सं. पुं.) शृंगाटक, सिंघाड़ा।
जलबंधु–(सं. पुं.) मत्स्य, मछली।
जलबालिका–(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली।
जलबिंब–(सं. पुं.) पानी का बुलबुला।
जलबिल्व–(सं. पुं.) कर्कट, केकड़ा।
जलबे(बें)त–(हि. पुं.) एक प्रकार का बेंत जो जलाशयों के पास उत्पन्न होता है।
जलभँवरा–(हिं. वि.) एक प्रकार का काला कीड़ा जो पानी पर बड़े वेग से तैरता है, जल-अलि।
जलभाजन–(सं.पुं.) पानी रखने का पात्र।
जलभालू–(हिं. पुं.) सील की जाति का एक प्रकार का जलजन्तु।
जलभू–(सं. पुं.) मेघ, बादल, कपूर।
जलभृत्–(सं. पुं.) मेघ, बादल, पानी रखने का पात्र।
जलमग्न–(सं. वि.) बाढ़ में डूबा हुआ, जल-प्लावित।
जलमय–(सं. वि.) जलपूर्ण, पानी से भरा हुआ, जलमग्न।
जलमापकयंत्र–(सं.पुं.) जल की गहराई, अंश आदि नापने का यन्त्र।
जलमानुष–(सं. पुं.) परीरू नामक जल-जन्तु जिसका नाभि के ऊपर का भाग मनुष्य के समान तथा नीचे का भाग मछली जैसा कहा गया है।
जलमार्ग–(सं. पुं.) जलपथ, पानी बहने की नाली।
जलमार्जार (सं. पुं.) ऊदबिलाव।
जलमुच्–(सं. पुं.) मेघ, बादल, कपूर।
जलमूर्ति–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
जलमूर्तिका–(सं. स्त्री.) करका, ओला।
जलमोद–(सं. पुं.) उशीर, खस।
जलयंत्र–(सं. पुं.) धारायन्त्र, जलघड़ी।
जलयात्रा–(सं. स्त्री.) अभिषेक आदि शुभ कार्य के लिय जल लाने की यात्रा, समुद्री यात्रा।
जलयान–(सं. पुं.) वह यान जो जल में चलता है, जहाज, नाव आदि।
जलरंक–(सं. पुं.) बक पक्षी, बगला।
जलराशि–(सं. पुं.) जलसमूह, समुद्र।
जलरुह–(सं. पुं.) पद्म, कमल।
जलरूप–(सं. पुं.) जल का आकार, मकर राशि।
जललता–(सं. स्त्री.) पानी की लहर।
जलवल्ली–(सं. स्त्री.) शृंगाटक, सिंघाड़ा।
जलवाद्य–(सं. पुं.) एक बाजा, जल-तरंग।
जलवाना–(हिं.क्रि.स.) जलाने का काम दूसरे से कराना।
जलवानीर–(सं. पुं.) देखें 'जलबेंत'।
जलवास–(सं. पुं.) उशीर, खस।
जलवाह–(सं. पुं.) मेघ, बादल; (वि.) जल ले जानेवाला।
जलवाहक–(सं. पुं.) पानी ढोनेवाला।
जल-वाहन–(सं. पुं.) देखें 'जलवाहक'।
जलविडाल–(सं. पुं.) ऊदबिलाव।

जलवीर्य–(सं.पुं.) भरत के एक पुत्र का नाम।
जलव्याघ्र–(सं. पुं.) सील के प्रकार का एक जलजन्तु।
जलव्याल–(सं. पुं.) पानी में का सर्प, डोंड़हा।
जलशयन, जलशायी–(सं. पुं.) विष्णु।
जलशुचि–(सं. पुं.) शृंगाटक, सिंघाड़ा।
जलसंध–(सं.पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
जलसंस्कार–(सं.पुं.) स्नान करना, जल-प्रवाह।
जलसर्पिणी–(सं. स्त्री.) जलौका, जोंक।
जलसा–(अ. पुं.) सभा, अधिवेशन, बैठक, समारोह।
जलसुत–(हि. पुं.) कमल, मोती।
जलसूचि–(सं. पुं.) सूँस, जलौका, जोंक, कछुआ।
जलसेना–(सं. स्त्री.) समुद्र में जहाजों पर लड़नेवाली सेना।
जलस्तंभ–(सं.पुं.) एक भौतिक घटना जिसमें जलीय वाष्प स्तंभ के रूप में दिखाई पड़ता है।
जलस्तंभन–(सं. पुं.) मन्त्रों के बल से जल की गति रोकना।
जलस्थान–(सं. पुं.) जलाशय।
जलहर–(हि. वि.) जलमय, जल से भरा हुआ; (पुं.) जलाशय।
जलहरण–(सं.पुं.) एक स्थान से दूसरे स्थान को जल ढोना, एक प्रकार का छन्द जिसके चार चरणों में बत्तीस अक्षर होते हैं।
जलहरी–(हि. स्त्री.) पत्थर या धातु का बना हुआ शिवलिंग स्थापित करने का अर्घा, छिद्र किया हुआ पात्र जिसमें से बूँद-बूँद करके पानी टपकता है, (यह शिवलिंग के ऊपर गरमी में टाँग दिया जाता है।)
जलहस्ती–(सं. पुं.) सील की जाति का एक बड़ा समुद्री जलजन्तु।
जलहार, जलहारी–(सं. वि.) जलवाहक, पानी भरनेवाला।
जलहास–(सं. पुं.) समुद्र का फेन।
जलांचल–(सं.पुं.) पानी की नहर, सेवार।
जलांजलि–(सं. स्त्री.) प्रेत-पितर आदि का जल से तर्पण।
जलाक–(हि. पुं.) उदर की ज्वाला।
जलाकर–(सं.पुं.) समुद्र, नदी आदि, जलाशय।
जलाका–(सं. स्त्री.) जलौका, जोंक।
जलाकाश–(सं. पुं.) बादल और ताराओं सहित जल में प्रतिबिंबित आकाश।
जलाखु–(सं. पुं.) जल-नकुल, ऊदबिलाव।
जलाजल–(हि.पुं.) गोट आदि की झालर।
जलातंक–(सं. पु.) देखें 'जलत्रास'।
जलातन–(हि. वि.) क्रोधी, ईर्ष्यालु, रूक्ष प्रकृति का।

जलात्मिका–(सं. स्त्री.) जोंक, कुआँ।
जलाद–(हि. पुं.) घातक, जल्लाद।
जलाधर–(सं.पुं.) वरुण, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।
जलाधिप–(सं.पुं.) जल के अधिपति वरुण।
जलाना–(हि. क्रि. स.) प्रज्वलित करना, दहकाना, भस्म करना, अधिक गरमी से किसी पदार्थ को भाफ या कोयले के रूप में बदलना, गरमी से पीड़ित करना, झुलसाना, किसी के चित्त को सन्तप्त करना, डाह उत्पन्न करना।
जलापा–(हि. पुं.) डाह या ईर्ष्या के कारण उत्पन्न होनेवाला दुःख।
जलापात–(सं. पुं.) देखें 'जलप्रपात'।
जलायुका–(सं. स्त्री.) जलौका, जोंक।
जलार्क–(सं.पुं.) पानी में सूर्य का प्रतिबिम्ब।
जलार्णव–(सं. पुं.) वर्षाकाल, बरसात।
जलार्थी–(सं.वि.) जलाभिलाषी, प्यासा।
जलार्द्र–(सं. वि.) पानी से भींगा हुआ।
जलालुक–(सं. पुं.) पद्मकन्द, भसींढ़।
जलाव–(हि. पुं.) खमीर उठना, खमीर।
जलावन–(हि.पुं.) इन्धन, जलानेकी लकड़ी, किसी वस्तु का जल जानेवाला अंश।
जलावर्त–(सं. पुं.) पानी का भँवर।
जलाशय–(सं.पुं.) स्थान जहाँ पानी जमा हो।
जलासुका, जलुका–(हि. स्त्री.) जोंक।
जलाहल–(हि.वि.) जलमय, पानी से भरा हुआ
जलेंद्र–(सं. पुं.) वरुण, महासमुद्र।
जलेचर–(सं. पुं.) जलचर पक्षी; (वि.) जो पानी में चलता हो।
जलेज, जलेजात–(सं. पुं.) पद्म, कमल; (वि.) पानी में होनेवाला।
जलेतन–(हि. वि.) जल्दी क्रुद्ध होनेवाला, चिड़चिड़ा।
जलेबा–(हि. पुं.) बड़ी जलेबी।
जलेबी–(हि.स्त्री.) इमरती की तरह की एक प्रकार की कुंडलाकार मिठाई, कुंडली, गोल घेरा, लपेट, एक प्रकार की आतिशबाजी।
जलेरुह–(सं. वि.) जलजात, पानी में होनेवाला।
जलेवाह–(सं. पुं.) पानी में गोता लगाकर पदार्थों को निकालनेवाला।
जलेश–(सं.पुं.) वरुण, समुद्र, जलाधिपति।
जलेशय–(सं.वि.,पुं.) जल में सोनेवाला, विष्णु।
जलेश्वर–(सं. पुं.) वरुण, समुद्र।
जलोका, जलौकिका–(सं. स्त्री.) जोंक।
जलोच्छ्वास–(सं. पुं.) पानी की बाढ़।
जलोदर–(सं. पुं.) एक रोग जिसमें पेट में पानी भर जाता है।
जलोदरी–(हि. स्त्री.) [illegible], पेट का एक राजरोग।

जलोद्भव–(सं. वि.) जल में उत्पन्न होनेवाला।
जलौकस, जलौका–(सं. पुं.) जोंक।
जल्द–(अ. वि., अव्य.) शीघ्र, अविलंब, शीघ्रता से।
जल्दी–(हि. स्त्री.) शीघ्रता; (अव्य.) शीघ्रता से।
जल्प–(सं. पुं.) कथन, कहना, प्रलाप, व्यर्थ की बातचीत, बकवाद।
जल्पक–(सं. पुं.) वाचाल, बकवादी।
जल्पन–(सं. पुं.) वाचालता, प्रलाप, बकवाद, डींग।
जल्पना–(हि. क्रि. अ.) व्यर्थ की बकवाद करना, डींग मारना।
जल्पित–(सं.वि.) कहा हुआ (डींग के रूप में)।
जल्लाद–(अ. पुं.) राजाज्ञा से प्राण-दंड-प्राप्त अभियुक्त को फाँसी पर लटकानेवाला व्यक्ति।
जव–(सं. पुं.) वेग; (हि. पुं.) यव, जौ।
जवन–(सं. पुं.) वेग; (वि.) वेगयुक्त; (पुं.) अरब देश, यवन।
जवनिका–(हि. स्त्री.) देखें 'यवनिका'।
जवनी–(हि. स्त्री.) यवन स्त्री, मुसलमान स्त्री, ग्रीस देश की स्त्री।
जवा–(सं. स्त्री.) जपा पुष्प, अड़हुल, लहसुन; –कुसुम–(पुं.) अड़हुल का फूल।
जवाई–(हि. स्त्री.) जाने की क्रिया, गमन, जाने के लिये दिया हुआ धन।
जवाइन–(हि. स्त्री.) देखें 'अजवाइन'।
जवाखार–(हि. पुं.) यवक्षार, जौ से निकाला हुआ क्षार या नमक।
जवादि–(हि. पुं.) एक सुगंधित पदार्थ।
जवाधिक–(सं.वि.) बहुत तीव्र दौड़नेवाला।
जवान–(फा. वि.) युवा, तरुण, वीर, बलवान; (पुं.) वीर सिपाही या सैनिक।
जवानी–(फा. स्त्री.) युवावस्था, यौवन; (मुहा.) –चढ़ना–यौवनावस्था का आना; –ढलना–उम्र का बुढ़ापे की ओर ढलना; –दीवानी है–जवानी के आवेग में [illegible] होती हैं।
जवापुष्प–(सं. पुं.) देखें 'जपा'।
जवाब–(फा. पुं.) उत्तर, सवाल का हल, पत्र का उत्तर; (मुहा.) –तलब करना–(किसी बात का) स्पष्टीकरण के लिए मांग करना; –देना–नौकरी से हटा देना; –तलबी–(स्त्री.) स्पष्टीकरण की मांग; –देही–(स्त्री.) उत्तरदायित्व, स्पष्टीकरण; –सवाल–(पुं.) प्रश्नोत्तर।
जवाबी–(फा. वि.) [illegible] उत्तर के रूप में किया [illegible]।

जवार–(हिं.स्त्री.) जुआर।
जवारा–(हिं. पुं.) जौ के नये अंकुर, जरई।
जवारी–(हिं. स्त्री.) सितार, सारंगी आदि में का लकड़ी का वह छोटा टुकड़ा जिस पर से तार खूँटी तक जाता है, एक प्रकार की माला।
जवाल–(हिं. पुं.) झंझट, जंजाल।
जवास, जवासा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का काँटेदार पौधा जो औषध में प्रयुक्त होता है।
जवाहर, जवाहिर–(अ. पुं.) रत्न, मणि।
जवाहिरात–(अ. पुं.) कई प्रकार के रत्न।
जवैया–(हिं. वि.) गमनशील, जानेवाला।
जस–(हि.पुं.) देखें 'यश'; (अव्य.) जैसा।
जसद–(सं. पुं.) जस्ता नामक धातु।
जसवंत–(हिं. पुं.) एक प्रकार का फूल।
जसोदा, जसोवै–(हिं.स्त्री.) देखें 'यशोदा'।
जस्त–(हिं. पुं.) देखें 'जस्ता'; –ई–(वि.) जस्ते के रंग का, खाकी।
जस्ता–(हिं. पुं.) खाकी वर्ण की एक भारी धातु।
जहँ–(हि.अव्य.) जहाँ, जिस स्थान पर।
जहँड़(ड़ा)ना–(हिं.क्रि.अ.) धोखे में गँवाना।
जहक–(सं. पुं.) काल, समय; (वि.) निर्मोह।
जहकना–(हिं. क्रि.अ.) वहकना, विगड़कर अंड-वंड वकना।
जहतिया–(हिं. पुं.) भूमि का कर उगाहनेवाला।
जहत्स्वार्था–(हि.स्त्री.) लक्षणा का एक भेद।
जहदना–(हिं. क्रि. अ.) कीचड़ होना, दल-दल होना, शिथिल पड़ना, थक जाना।
जहदा–(हिं. पुं.) कीचड़, दलदल।
जहना–(हिं. क्रि. स.) छोड़ना, त्यागना।
जहन्नम, जहन्नुम–(अ. पुं.) नरक, गहरा अँधेरा कुआँ; (मुहा.)–में जाना–वरवाद होना।
जहमत–(अ. स्त्री.) कष्ट, तकलीफ।
जहर–(फा. पुं.) विष, स्वाद में अति कटु, अति अप्रिय (वात); –दार–(वि.) विषैला; –वाद–(पुं.) एक विषैला फोड़ा; –मोहरा–(पुं.) एक तरह का पत्थर जिसमें साँप के तथा कुछ अन्य विषों को सोख लेने का गुण होता है; (मुहा.)–उगलना–जली-कटी या लगनेवाली वात कहना; –कर देना–कड़वी कर देना (तरकारी आदि); –का घूंट–अति अप्रिय वात या अनुभव; –का घूंट पीना या पीकर रह जाना–क्रोध को अंदर ही दवा लेना; –की पुड़िया–बहुत मर्मघातक स्वभाव का; –होना–(तरकारी आदि) बहुत तिक्त होना।
जहरी, जहरीला–(हिं. वि.) विषैला, जिसमें जहर हो।
जहल–(हिं. स्त्री.) ताप, गरमी।
जहल्लक्षणा–(सं.पुं.) वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने अर्थ को विलकुल छोड़े हो।
जहाँ–(हिं. अव्य.) जिस स्थान पर, जिस जगह; –का तहाँ–जिस स्थान पर हो उसी स्थान पर; –तहाँ–यहाँ-वहाँ, इधर-उधर, सर्वत्र।
जहाँ–(फा. पुं.) देखें 'जहान'।
जहाँगीर–(फा.वि.,पुं.) दुनिया का शासक, विश्व-विजयी, भारत का एक मुगल सम्राट्।
जहाँगीरी–(फा.वि.) जहाँगीर का, जहाँगीर से संवद्ध।
जहाँपनाह–(फा. वि.) दुनिया का रक्षक या शासक; (पुं.) वादशाह, सम्राट्।
जहाज–(अ. पुं.) जलपोत, जलयान; –रानी–(स्त्री.) जहाजों का यातायात।
जहाजी–(अ. वि.) जहाज का, जहाज से होनेवाला (रोजगार)।
जहान–(फा. पुं.) संसार, दुनिया, लोक; –आरा–(वि.) दुनिया को सजानेवाला।
जहिया–(हिं. अव्य.) जिस दिन, जिस समय, जव।
जहीं–(हिं. अव्य.) जिस स्थान पर।
जह्नु–(सं. पुं.) विष्णु, कुरु के पुत्र का नाम, एक राजर्षि का नाम, (इन्होंने गंगा को पी लिया था और भगीरथ की वड़ी स्तुति करने पर कान से निकाल दिया था। इसी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा); –कन्या, –तनया, –सुता–(स्त्री.) गंगा।
जाँ–(हिं.स्त्री.) माता, मा, देवर की स्त्री, देवरानी; (वि.) उत्पन्न, जात, संभूत; (फा. वि.) उचित।
जाँग–(हिं.पुं.) घोड़ की एक जाति, (स्त्री.) ऊरु, जाँघ।
जाँगड़ा–(हिं.पुं.) वन्दी, भाट, राजाओं का यश गानेवाला।
जाँगर–(हिं. पुं.) पौरुष, देह, हाथ-पैर, वल।
जाँगरा–(हि. पुं.) भाट, वन्दी, जाँगड़ा।
जाँगी–(हिं. पुं.) नगाड़ा।
जाँघ–(हिं. स्त्री.) ऊरू, जंघा, घुटने और कमर के वीच का अंग।
जाँघा–(हि. पुं.) हल, कुएँ पर गड़ा हुआ खंभा।
जाँघिया (हिं. पुं.) पैजामे की तरह का घुटने तक नीचा एक पहिनावा, काछा।
जाँघिल–(हिं. पुं.) वह वल जिसका पिछला पैर चलने में लँगड़ाता है।
जाँच–(हिं. स्त्री.) परीक्षा, परख, खोज; –पड़ताल–(स्त्री.) तहकीकात छानवीन।
जाँचक–(हिं.पुं.) देखें 'याचक'।
जाँचना–(हिं.क्रि.स.) सचाई-झुठाई का पता लगाना, परीक्षा करना, माँगना।
जाँजरा–(हिं. वि.) देखें 'जाजरा,' जर्जर।
जाँत, जाँता–(हिं. पुं.) आटा पीसने की चक्की।
जाँपना–(हिं. क्रि. स.) चाँपना।
जांव–(हि. पुं.) जामुन।
जांववंत, जांववान्–(सं. पुं.) सुग्रीव का मंत्री एक वानर।
जांवव–(सं. पुं.) जामुन का सिरका, जामुन, सुवर्ण।
जांववती–(सं.स्त्री.) जांववान् की कन्या।
जांवूनद–(हिं. पुं.) धतूरा।
जाँवत–(हिं. वि., अव्य.) जितना।
जाँवर–(हिं. पुं.) प्रस्थान।
जा–(हिं.सर्व.) जिस; (फा.वि.) उचित।
जाइ–(हिं. वि.) देखें 'जा'।
जाई–(हिं. स्त्री.) जाया, पुत्री, वेटी।
जाउर–(हिं. स्त्री., पुं.) खीर।
जाक–(हिं. पुं.) यक्ष।
जाकड़–(हिं. पुं.) दुकानदार से इस शर्त पर लिया माल कि नापसन्द हो तो वापस होगा; –वही–(स्त्री.) जाकड़ दिये हुए माल का व्योरा लिखने का खाता।
जाखिनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'यक्षिणी'।
जाग–(हिं. पुं.) यज्ञ; (स्त्री.) स्थान, जागने की क्रिया।
जागत–(सं. पुं.) जगती छन्द।
जागता–(हिं. वि.) प्रकाशित, प्रत्यक्ष।
जागती कला, –जोत–(हिं. स्त्री.) किसी देवी या देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार, दीपक।
जागना–(हिं.क्रि. अ.) निद्रा त्यागना, सोकर उठना, निद्रा-विरत होना, उदित होना, चमक उठना, जलना, प्रसिद्ध होना।
जागरक–(सं. वि.) निद्रा-रहित, जागता हुआ।
जागरण–(सं. पुं.) निद्रा का अभाव, जागना, किसी पर्व के उपलक्ष में रात भर जागते रहना।
जागरा–(सं. स्त्री.) जागरण।
जागरित–(सं. पुं.) जागरण, नीद का न आना, सांख्य और वेदान्त मत से वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इन्द्रियों द्वारा सव प्रकार के व्यवहार और कार्यों का

अनुभव होता रहता है ; (वि.) जाग्रत।
जागरिता–(सं.वि.) जागरणशील, जिसको नींद न आती हो, सचेत।
जागरी–(सं. वि.) जागरिता।
जागरूक–(हिं. वि.) जो जागृत अवस्था में हो।
जागरूप–(सं. वि.) जो बिलकुल प्रत्यक्ष और स्पष्ट हो (देवता)।
जागर्ति–(सं. स्त्री.) जागरण, नींद का न आना।
जागवलिक–(हिं.पुं.) देखें 'याज्ञवल्क्य'।
जागा–(हिं. स्त्री.) स्थान।
जागी–(हिं. पुं.) भाट, बन्दी।
जागीर–(फा.स्त्री.) वह जमीन जो सरकार या राजा अपने किसी राज-कर्मचारी को उसकी महत्वपूर्ण सेवाओं के बदले उसको पुरस्कार-स्वरूप देता है।
जागीरदार–(फा. पुं.) जागीर का स्वामी, जिसे जागीर मिली हो।
जागीरदारी–(फा. स्त्री.) जागीरदार का स्वामित्व, संपत्ति, पद आदि।
जागीरी–(हिं. वि.) जागीर संबंधी; (स्त्री.) जागीरदारी।
जागृत–(सं.वि.) जागरण की अवस्था का, जाग्रत, जिसे सब बातों का ज्ञान हो, सचेत।
जागृति–(सं. स्त्री.) जागरण, जगाने की क्रिया।
जाग्रत (त्)–(सं. वि.) जागता हुआ, जो जागृति की अवस्था में हो, सचेत, सावधान; **-स्वप्न**–(पुं.) दिवास्वप्न, कल्पना-चित्रण।
जाग्रति–(सं. स्त्री.) जागने की अवस्था, जागरण, सचेतता।
जाचक–(हिं. पुं.) याचक, भिक्षुक, भिखारी; **-ता**–(स्त्री.) भीख माँगने की क्रिया, भिखमंगी।
जाचना–(हिं.क्रि.स.) याचना, माँगना।
जाज मलार–(हिं. पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
जाजरा–(हिं.वि.) जर्जर, टूटा-फूटा।
जाजलि–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
जाज्वल्य–(सं. वि.) प्रकाशयुक्त, प्रज्वलित, तेजवान्; **-मान**–(वि.) दीप्तिमान, तेजस्वी, तेजवान्, प्रज्वलित।
जाट–(हिं. पुं.) भारत की एक प्रसिद्ध हिन्दू जाति या उसके लोग।
जाठ–(हिं. पुं.) तालाब आदि के बीच में गड़ा हुआ लकड़ी का मोटा लट्ठा, कोल्हू की कूँड़ी के बीच में लगा हुआ लट्ठा।
जाठर–(सं. पुं.) पेट की वह अग्नि जिसकी सहायता से खाया हुआ अन्न पचता है, उदर, पेट, क्षुधा; (वि.) जठर संबंधी, जठर में उत्पन्न।
जाठराग्नि–(सं. स्त्री) जठराग्नि।
जाठरानल–(सं. पुं.) जठरानल।
जाड़, जाड़ा–(हिं. पुं.) शीतकाल।
जाड्य–(सं. पुं.) जड़ता, मूर्खता, आलस्य।
जात–(सं. वि.) उत्पन्न, जन्मा हुआ, व्यक्त, प्रकट, प्रशस्त, अच्छा, ग्रहण किया हुआ; (पुं.) वह जिसने जन्म लिया हो, पुत्र, प्राणी, जीव; (हिं स्त्री.) देखें 'जाति'।
जातक–(सं. पुं.) वह ग्रंथ जिसमें उत्पन्न हुए बालक के शुभाशुभ लक्षणों का वर्णन रहता है, वह ग्रंथ जिसमें बुद्धदेव के पूर्व जन्मों का विवरण लिखा है; (पुं.) शिशु, बच्चा, भिक्षुक, भिखारी।
जातकर्म–(सं. पुं.) हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से चौथा संस्कार।
जातकाम–(सं. वि.) जिसके मनमें कामेच्छा उत्पन्न हुई हो।
जातकोप–(सं. वि.) जो क्रुद्ध हो गया हो।
जातना–(हिं. स्त्री.) देखें 'यातना'।
जात-पाँत–(हिं. स्त्री.) जाति, बिरादरी।
जातपुत्रा–(सं. स्त्री.) जिस स्त्री को पुत्र उत्पन्न हुआ हो।
जातबल–(सं. वि.) शक्तिमान्।
जातवेदस्–(सं.पुं.) अग्नि, सूर्य, परमेश्वर।
जातवेश्म–(सं. पुं.) जिस घर में बालक का जन्म हो, सूतिका-गृह, सौरी।
जातश्रम–(सं. वि.) विश्रान्त, थका हुआ।
जातस्नेह–(सं. वि.) जो प्रेमासक्त हो।
जाता–(सं. स्त्री.) कन्या, बेटी, पुत्री; (वि. स्त्री.) उत्पन्न।
जातापत्य–(सं.वि.,पुं.) (वह) जिसके पुत्र हुआ हो।
जातापत्या–(सं. स्त्री.) प्रसूता स्त्री।
जाताश्रु–(सं. वि.) जिसकी आँखों से आँसू टपकता हो।
जाति–(सं. स्त्री.) जन्म, गोत्र, एक प्रकार का छन्द, मालती, चमेली, चूल्हा, सप्तम स्वर, व्याकरण में किसी शब्द का प्रतिपाद्य अर्थ, आकृति आदि जिससे पदार्थ का ज्ञान हो; मनुष्यों का धर्म, आकृति आदि की समानता से किया हुआ विभाग, निवास-स्थान आदि के विचार से मनुष्य-समाज का विभाग, वर्णाश्रम-विभाग।
जातिकोश–(सं.पुं.) जातीफल, जायफल।
जातिच्युत–(सं. वि.) जो जाति से अलग कर दिया गया हो।
जातित्व–(सं. पुं.) जाति का भाव, जातीयता।
जातिधर्म–(सं. पुं.) ब्राह्मण आदि चारों वर्णों का धर्म।
जातिपत्र–(सं. पुं.), **जातिपत्री**–(सं. स्त्री) जायफल, जावित्री।
जातिपाँति–(हिं.स्त्री.) जाति, वर्ण आदि।
जातिवैर–(सं. पुं.) स्वाभाविक शत्रुता, सहज-वैर।
जातिसंकर–(सं. पुं.) वर्णसंकर।
जातिसंपन्न–(सं. वि.) उच्च कुल का।
जातिहीन–(सं. वि.) जाति-रहित, नीच जाति का।
जाती–(सं. स्त्री.) चमेली का फूल, आँवला, मालती, जायफल; (अ.वि.) निज का, निजी, अपना।
जातीय–(सं. वि.) जातिसंबंधी, जातिवाला; **-ता** (स्त्री.) जाति का भाव।
जातुक–(सं. पुं.) हिंगु, हींग।
जातुकपर्णी–(सं. स्त्री.) एक वृक्ष का नाम।
जातुज-(सं.पुं.) दोहद, गर्भिणीस्त्रीकीइच्छा।
जातुधान–(सं. पुं.) राक्षस, असुर।
जात्यंध–(सं. वि.) जन्म का अन्धा।
जात्य–(सं. वि.) कुलीन, श्रेष्ठ, सुन्दर, समकोण; **-त्रिभुज**–(पुं.) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसमें का एक कोण समकोण हो।
जात्रा–(हिं. स्त्री.) देखें 'यात्रा'।
जात्री–(हिं. पुं.) यात्री।
जायका–(हिं. स्त्री.) राशि।
जादव–(हिं. पुं.) देख 'यादव'; **-पति**–(पुं.) देखें 'यादवपति', श्रीकृष्ण।
जादसपति–(हिं.पुं.) जल का स्वामी, वरुण।
जादा–(हिं. वि.) अधिक, ज्यादा।
जादू–(फा. पुं.) इंद्रजाल, नजरबंदी, टोना, टोटका, दूसरे को मोहित करने की शक्ति, मोहनी।
जादूगर–(फा. पुं.) जादू करनेवाला, ऐंद्रजालिक।
जादूगरी–(फा. स्त्री.) जादूगर का कौशल, इन्द्रजाल।
जादौं–(हिं. पुं.) देखें 'यादव'; **-राय**–(पुं.) श्रीकृष्ण।
जान–(हिं. स्त्री., पुं.) जानने का भाव जानकारी, समझ, ख्याल; विज्ञता, अभिज्ञता, परिचय; (वि.) जाननेवाला, विज्ञ; **-पहचान**–(स्त्री.) परिचय; (पुं.) मान।
जान–(फा. स्त्री.) जीवन, प्राण, प्राणवायु, आधारभूत गुण, प्रेरणा, ओज आदि, अति प्यारी वस्तु; (मुहा.) **अआना**–

संकट के बाद कुछ फुरसत मिलना; -का गाहक-जान मारने पर उतारू; -की पड़ना-अपने प्राण बचाने की फिक्र या चिंता होना; -के लाले पड़ना-प्राण बचाना मुश्किल होना; -खाना-याचना या तकादे से बार-बार परेशान करना; -छुड़ाना-पिंड छुड़ाना, जी बचाना; (किसी पर) -देना-किसी से रुष्ट होकर प्राण-त्याग या आत्म-हत्या करना; -पर आ बनना-जान जाने का खतरा होना; -पर खेलना-किसी बात या प्रण के लिए जान देने को तैयार होना; -में जान आना-कुछ राहत मिलना; -सूखना-डर से सुन्न हो जाना।

जानकार-(हिं.वि.) जाननेवाला, चतुर, दक्ष।

जानकारी-(हिं. स्त्री.) अभिज्ञता, परिचय, विज्ञता, निपुणता।

जानकी-(सं. स्त्री.) राजा जनक की पुत्री, रामचन्द्र की पत्नी; -जानि-(पुं.) श्रीरामचन्द्र; -नाथ-(पुं.) श्रीरामचन्द्र।

जानदार-(फा. वि.) सजीव, जीवधारी; (पुं.) प्राणी।

ज़ाननहार-(हिं. वि.) जाननेवाला।

जानना-(हिं.क्रि.स.) ज्ञान प्राप्त करना, अभिज्ञ होना, सूचना पाना, परिचित होना, अनुमान करना, पता पाना, मालूम करना; (मुह.) जानकर अनजान बनना-किसी बात को जानते हुए भी अनभिज्ञता दिखलाना; जान-बूझकर-जानते या समझते हुए; जाने-अनजाने-अभिज्ञता में या न जानने में।

जानपद-(सं. वि.) जनपद सम्बन्धी, देशस्थ, जनपद में रहनेवाला; (पुं.) लोक, देश, कर।

जानपदिक-(सं. वि.) जनपद सम्बन्धी।

जानपदी-(हि. स्त्री.) वृत्ति, एक अप्सरा का नाम।

जानपना-(हिं. पुं.) जानकारी, चतुराई।

जानपनी-(हिं.स्त्री.) चतुराई, बुद्धिमानी।

जानमनि-(हिं. पुं.) ज्ञानियों में श्रेष्ठ, बड़ा ज्ञानी पुरुष।

जानराय-(हिं. पुं.) अत्यन्त ज्ञानी पुरुष।

जानवर-(फा. पुं.) पशु, जंतु।

जानहार-(हिं. वि.) नष्ट होनेवाला।

जानहु (हुँ)-(हिं. अव्य.) मानो।

जानाहु-(हिं.क्रि.अ.) प्रस्थान करना, गमन करना, अलग होना, दूर होना, नष्ट होना, खो जाना, व्यतीत होना, बिगड़ना, मरना, भ्रष्ट होना, बढ़ना, हटना, अधिकार से निकल जाना, बहना; (क्रि.स.) उत्पन्न करना; जाने दो-क्षमा करो।

जानि-(सं. स्त्री.) भार्या, पत्नी।

जानी-(फा. वि.) जान से संबंध रखनेवाला, जान का; (स्त्री.) प्राण-प्यारी; -दुश्मन-(पुं.) घातक शत्रु।

जानु-(सं. पुं.) ऊरुसन्धि, घुटना, जाँघ, रान, चक्रिका, पैर की चक्की।

जानुपाणि-(सं.अव्य.) घुटनों और हाथों के बल।

जानो-(हिं. अव्य.) मानो, जैसे।

जाप-(सं. पुं.) मन्त्र की विधिपूर्वक आवृत्ति, मन्त्र का जप करना, जपने की माला या गोमुखी; -क-(वि.) जपसंबंधी, जप करनेवाला।

जापन-(सं. पुं.) निरसन, परिहार, जप।

जापा-(हिं. पुं.) सूतिकागृह, सौरी।

जापानी-(हिं. वि.) जापान देश का; (पुं.) जापान का निवासी; (स्त्री.) जापान की भाषा।

जापी-(सं. वि.) जप करनेवाला।

जाप्य-(सं. वि.) जपने योग्य।

जाफरान-(अ. पुं.) केसर।

जाफरानी-(अ. वि.) केसरिया।

जाबाल-(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, (इनके पुत्र का नाम सत्यकाम था।)

जाबालि-(सं. पुं.) कश्यप वंश के एक मुनि जो राजा दशरथ के गुरु थे।

जाबिर-(फा. वि.) जुल्म करनेवाला।

जाब्ता-(अ. पुं.) विधि, कानून; (स्त्री.) -दीवानी-(स्त्री.) दीवानी मामलों से संबंधित कानून।

जाम-(हिं.पुं.) जामुन, प्रहर, तीन घंटे या साढ़े सात घड़ी का काल; (वि.) अवरुद्ध (मार्ग)।

जामगी-(हिं.पुं.) तोप या बन्दूक का पलीता।

जामदग्न्य-(सं. पुं.) जमदग्नि के पुत्र, परशुराम।

जामन-(हिं. पुं.) दूध को जमाने के लिये प्रयुक्त होनेवाला थोड़ा-सा दही या अन्य खट्टा पदार्थ।

जामना-(हिं. क्रि. अ.) देखें 'जमना'।

जामनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'यावनी'।

जामल-(सं. पुं.) एक प्रकार का तन्त्र।

जामवंत-(सं. पुं.) देखें 'जांबवान्'।

जामा-(हिं. स्त्री.) दुहिता, कन्या, बेटी; (फा. पुं.) कपड़ा, पहनावा, दूल्हे का लंबा कुरता; (मुहा.) जामें में फूला न समाना-बहुत प्रसन्न होना; जामे से बाहर होना-बहुत क्रुद्ध होना।

जामाता-(हिं.पुं.) दामाद, कन्या का पति।

जामि-(सं. स्त्री.) भगिनी, बहिन, दुहिता, कन्या, पुत्रवधू, पतोहू।

जामिक-(हिं. पुं.) पहरुआ, रक्षक।

जामित्व-(सं. पुं.) रिश्ता, सम्बन्ध।

जामिन-(फा. पुं.) जमानत करनेवाला, जिम्मा या उत्तरदायित्व लेनेवाला।

जामिनदार-(फा. पुं.) जमानतदार।

जामिनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'यामिनी'।

जामी-(हिं. स्त्री.) भूमि।

जामुन-(हिं. पुं.) जम्बू, एक सदाबहार वृक्ष जिसके बेर के समान बैंगनी रंग के खट-मीठे फल होते हैं।

जामुनी-(हिं.वि.) जामुन के रंग का, बैंगनी।

जामेय-(सं. पुं.) भानजा, बहिन का बेटा।

जामेवार-(हिं. पुं.) दुशाला जिसमें सर्वत्र बेलबूटे कढ़े होते हैं, इसी तरह छपी हुई छींट जो दुशाले के समान दीख पड़ती है।

जायँ-(हिं. वि.) उचित, उपयुक्त, न्याय्य।

जायक-(सं. पुं.) पीला चन्दन।

जायपत्री-(हिं. स्त्री.) देखें 'जावित्री'।

जायका-(अ. पुं.) स्वाद, मजा, रसास्वादन।

जायकेदार-(अ. वि.) स्वादिष्ट, मजेदार।

जायज-(अ. वि.) उचित, न्याय्य।

जायद-(अ. वि.) ज्यादा, अधिक।

जायदाद-(फा. स्त्री.) संपत्ति, भू-संपत्ति, जगह-जमीन।

जायफर, जायफल-(हिं. पुं.) एक सुगंधित गोल फल जो सुपारी के आकार का होता है, जातीफल।

जाया-(सं. स्त्री.) पत्नी, विवाहिता स्त्री, ज्योतिष में सातवें लग्न का नाम, उपजाति वृत्त का सातवाँ भेद।

जायाजीव-(सं. पुं.) नट, वेश्यापति; (वि.) पत्नी की कमाई खानेवाला।

जायात्व-(सं. पुं.) पत्नीत्व, स्त्री का धर्म।

जायी-(सं. वि.) जययुक्त; (पुं.) ध्रुपद जाति का एक ताल।

जार-(सं. पुं.) पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष, उपपति, यार, परस्त्रीगामी; (वि.) नाश करनेवाला, मारनेवाला।

जारक-(सं. वि.) पाचन करनेवाला।

जारकर्म-(सं. पुं.) व्यभिचार, छिनाला।

जारज-(सं. पुं.) किसी स्त्री की उसके उपपति से जनमी हुई सन्तान; -योग-(पुं) फलित ज्योतिष में कहा हुआ वह योग जिससे यह सिद्धान्त निकाला जाता है कि बालक अपनी माता के उपपति से उत्पन्न है।

जारजन्मा, जारजात-(सं. पुं.) उपपति से उत्पन्न पुत्र।

जारण-(सं. पुं.) धातु इत्यादि का भस्म बनाना, जलाना।

जारणी–(सं. स्त्री.) सफेद जीरा।
जारता–(सं. स्त्री.) उपपतित्व।
जारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जलाना'।
जारा–(हिं. पुं.) सोनार की सोना-चाँदी गलाने की भट्ठी।
जारिणी–(सं. स्त्री.) दुश्चरित्रा स्त्री, पुंश्चली, छिनाल स्त्री।
जारित–(सं. वि.) शुद्ध किया हुआ, शोधित।
जारी–(अ. वि.) प्रचलित।
जालंधर–(सं. पुं.) शतद्रु और चन्द्रभागा नदियों के बीच का देश।
जालंधरी विद्या–(हि. स्त्री.) इन्द्रजाल।
जालंध्र–(सं. पुं.) झरोखे की जाली।
जाल–(सं. पुं.) पशु-पक्षी या मछली पकड़ने के लिये तार, सूत आदि का दूर-दूर पर बुना हुआ पट, गवाक्ष, झरोखा, समूह, किसी को फँसाने की युक्ति, दम्भ, घमंड, अहंकार, इन्द्रजाल, कदम्ब वृक्ष, लोहे के तार की बनी हुई जाली, एक प्रकार की तोप, मकड़ी का जाला; (मुहा.) **–फैलाना या बिछाना**–किसी को फँसाने की युक्ति करना; (अ. पुं.) किसी को ठगने के अभिप्राय से बनाया हुआ झूठा लिखित लेख्य-पत्र आदि, झूठी कारवाई।
जालक–(सं. पुं.) गवाक्ष, झरोखा।
जालकारक–(सं. पुं.) जाल बनानेवाला।
जालकिरिच–(हिं. स्त्री.) परतला लगी हुई पेटी या पट्टी।
जालकीट–(सं. पुं.) मकड़ा, मकड़ी के जाल में फँसा हुआ कीड़ा।
जालजीवी–(सं. पुं.) धीवर, मछुआ।
जालदार–(हिं. वि.) जिसमें जाल के समान बहुत-से छेद हों।
जालना–(हिं. क्रि. स.) जलाना।
जालपाद–(सं. पुं.) हंस, जाबालि ऋषि के एक शिष्य का नाम।
जालबंद–(हिं. पुं.) एक प्रकार का गलीचा जिसमें जाल की तरह बेल बनी होती है।
जालसाज–(अ. पुं.) वह जो दूसरों को ठगने के लिए बनावटी लेख्य-पत्रादि बनावे या और कोई जाल करे; जालिया।
जालसाजी–(फ़ा. स्त्री.) जाल करने का काम, फरेब।
जाला–(हिं. पुं.) मकड़ी का बनाया हुआ जाल, आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर झिल्ली पड़ जाती है, माँड़ा, पानी रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र।
जालाक्ष–(सं. पुं.) गवाक्ष, झरोखा।
जालिक–(सं. पुं.) धीवर, मछुआ, मकड़ी मदारी।
जालिका–(सं. स्त्री.) कवच, बख्तर, चिड़ियों को पकड़ने का जाल, मकड़ी।
जालिनी–(सं. स्त्री.) तरोई, घिया।
जालिम–(अ. वि.) जुल्म करनेवाला, अत्याचारी।
जालिया–(हिं. वि.) धोखा देनेवाला; (पुं.) जाल से मछली पकड़नेवाला, धीवर।
जाली–(अ. वि.) नकली (दस्तावेज, लेख्य आदि।)
जाली–(हि. स्त्री.) पत्थर, धातु आदि के पट्ट पर बने हुए छोटे-छोटे छिद्र, एक प्रकार का कसीदे का काम, महीन छेदवाला वस्त्र, कच्चे आम की गुठली के ऊपर के रेशे; **–दार**–(हिं. वि.) जिसमें जाली बनी हो।
जालीलेट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जालीदार वस्त्र।
जाल्म–(सं. वि.) नीच, पामर, मूर्ख।
जावक–(सं. पुं.) लाह से बना हुआ लाल रंग, अलता, महावर।
जावत–(हिं. अव्य.) देखें 'यावत्'।
जावन–(हिं. पुं.) देखें 'जामन'।
जावन्य–(सं. पुं.) द्रुत गति।
जावित्री–(हिं. स्त्री.) जायफल के ऊपर का छिलका जो सुगन्धित होता है। (यह औषधों में प्रयुक्त होती है।)
जाषनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'यक्षिणी'।
जासु–(हिं. सर्व.) जिसका।
जासू–(हिं. पुं.) अफीम और पान के पत्ते से बना मादक द्रव्य।
जासूस–(हिं. पुं.) छिपकर अपराधों का भेद लेनेवाला पुलिस कर्मचारी, खुफिया पुलिस।
जासूसी–(हिं. स्त्री.) जासूस का काम।
जाहक–(सं. पुं.) घोंघा, जोंक, गिरगिट।
जाहिर–(अ. वि.) प्रकट, व्यक्त, खुला हुआ।
जाहिरा–(अ. अव्य.) ऊपर से, प्रकट रूप से।
जाहिल–(अ. वि.) मूर्ख, जड़, अज्ञान।
जाहिली–(अ. स्त्री.) मूर्खता, जड़ता।
जाही–(हिं. स्त्री.) चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगन्धित फूल, एक प्रकार की आतिशबाजी।
जाह्नवी–(सं. स्त्री.) जह्नुतनया, गंगा नदी।
जिंदगी–(फा. स्त्री.) जीवन, आयु, जीवन-काल।
जिंदा–(फा. वि.) जीता हुआ, जीवित।
जिवाना–(हिं. क्रि. स.) जिमाना, भोजन कराना।
जिंस–(अ. स्त्री) वस्तु, रोजगार का माल, गल्ला, असबाब।
जिंसवार–(अ. वि.) वर्ग के अनुसार; (पुं.) पटवारियों की एक बही।
जिंसवारी–(अ. स्त्री.) वर्गीकरण।
जिआना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जिलाना'।
जिउ–(हिं. पुं.) देखें जीव।
जिउका–(हिं. स्त्री.) देखें 'जीविका'।
जिउकिया–(हिं. पुं.) जीविका कमानेवाला, व्यवसायी, रोजगारी, पहाड़ी लोग जो जंगलों से वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।
जिउतिया–(हिं. स्त्री.) आश्विन मास की अष्टमी के दिन होनेवाला एक व्रत, जिताष्टमी।
जिकिर–(हिं. पुं.) देखें 'जिक्र'।
जिक्र–(अ. पुं) चर्चा, प्रसंग, हवाला, संकेत।
जिगमिषा–(सं. स्त्री.) गमन करने की इच्छा।
जिगर–(फा. पुं.) यकृत, कलेजा, सार, साहस।
जिगरा–(हिं. पुं.) साहस।
जिगरी–(फा. वि.) जिगर का, दिली, हार्दिक, घनिष्ट।
जिगीषा–(सं. स्त्री.) विजय प्राप्त करने की इच्छा, उद्यम, उद्योग।
जिगीषु–(सं. वि.) जो श्रेष्ठता चाहता हो, परिश्रमी, मेहनती।
जिघत्सा–(सं. स्त्री.) भोजन करने की इच्छा, भूख।
जिघांसक–(सं. वि.) हिंसक, हत्यारा।
जिघांसी–(सं. वि.) वध करनेवाला।
जिघांसु–(सं. वि.) मारनेवाला, जिघांसी।
जिच, जिच्च–(हिं. स्त्री.) विवशता, शतरंज के खेल में वह स्थिति जब एक पक्ष के खेलाड़ी को कोई मोहरा चलने की जगह नहीं रहती, गतिरोध; (वि.) विवश।
जिजीविषा–(सं. स्त्री.) जीने की इच्छा।
जिजीविषु–(सं. वि.) जीने की इच्छा करनेवाला।
जिज्ञासन–(सं. पुं.) जानने की इच्छा से पूछना, पूछताछ।
जिज्ञासमान–(सं. वि.) जिज्ञासु, पूछताछ करनेवाला।
जिज्ञासा–(सं. स्त्री.) ज्ञान प्राप्त करने की कामना, जानने की इच्छा, प्रश्न।
जिज्ञासित–(सं. वि.) जो पूछा गया हो।
जिज्ञासु–(सं. वि.) ज्ञान प्राप्त करने के लिये इच्छुक, जानने की इच्छा रखने वाला, खोजी, मुमुक्षु।
जिज्ञास्यमान–(सं. वि.) जो विषय पूछा जाता हो।
जिठानी–(हिं. स्त्री.) पति के बड़े भाई की स्त्री, जेठानी।
जित्–(सं. वि.) जीतनेवाला, जेता।

संकट के बाद कुछ फुरसत मिलना; –का गाहक–जान मारने पर उतारू; –की पड़ना–अपने प्राण बचाने की फिक्र या चिंता होना; –के लाले पड़ना–प्राण बचाना मुश्किल होना; –खाना–याचना या तकादे से बार-बार परेशान करना; –छुड़ाना–पिंड छुड़ाना, जी बचाना; (किसी पर) –देना–किसी से रुष्ट होकर प्राण-त्याग या आत्म-हत्या करना; –पर आ बनना–जान जाने का खतरा होना; –पर खेलना–किसी बात या प्रण के लिए जान देने को तैयार होना; –में जान आना–कुछ राहत मिलना; –सूखना–डर से सुन्न हो जाना।
जानकार–(हिं.वि.) जाननेवाला, चतुर, दक्ष।
जानकारी–(हिं. स्त्री.) अभिज्ञता, परिचय, विज्ञता, निपुणता।
जानकी–(सं. स्त्री.) राजा जनक की पुत्री, रामचन्द्र की पत्नी; –जानि–(पुं.) श्रीरामचन्द्र; –नाथ–(पुं.) श्रीरामचन्द्र।
जानदार–(फा. वि.) सजीव, जीवधारी; (पुं.) प्राणी।
जाननहार–(हिं. वि.) जाननेवाला।
जानना–(हिं.क्रि.स.) ज्ञान प्राप्त करना, अभिज्ञ होना, सूचना पाना, परिचित होना, अनुमान करना, पता पाना, मालूम करना; (मुह.) **जानकर अनजान बनना**–किसी बात को जानते हुए भी अनभिज्ञता दिखलाना; **जान-बूझकर**–जानते या समझते हुए; **जाने-अनजाने**–अभिज्ञता में या न जानने में।
जानपद–(सं. वि.) जनपद सम्बन्धी, देशस्थ, जनपद में रहनेवाला; (पुं.) लोक, देश, कर।
जानपदिक–(सं. वि.) जनपद सम्बन्धी।
जानपदी–(हिं. स्त्री.) वृत्ति, एक अप्सरा का नाम।
जानपना–(हिं. पुं.) जानकारी, चतुराई।
जानपनी–(हि.स्त्री.) चतुराई, बुद्धिमानी।
जानमनि–(हिं. पुं.) ज्ञानियों में श्रेष्ठ, बड़ा ज्ञानी पुरुष।
जानराय–(हिं. पुं.) अत्यन्त ज्ञानी पुरुष।
जानवर–(फा. पुं.) पशु, जंतु।
जानहार–(हिं. वि.) नष्ट होनेवाला।
जानहु (हुँ)–(हिं. अव्य.) मानो।
जानाहु–(हिं.क्रि.अ.) प्रस्थान करना, गमन करना, अलग होना, दूर होना, नष्ट होना, खो जाना, व्यतीत होना, बिगड़ना, मरना, भ्रष्ट होना, बढ़ना, हटना, अधिकार से निकल जाना, बहना; (क्रि.स.) उत्पन्न करना; **जाने दो**–क्षमा करो।
जानि–(सं. स्त्री.) भार्या, पत्नी।
जानी–(फा. वि.) जान से संबंध रखनेवाला, जान का; (स्त्री.) प्राण-प्यारी; –दुश्मन–(पुं.) घातक शत्रु।
जानु–(सं. पुं.) ऊरुसन्धि, घुटना, जाँघ, रान, चक्रिका, पैर की चक्की।
जानुपाणि–(सं.अव्य.) घुटनों और हाथों के बल।
जानो–(हिं. अव्य.) मानो, जैसे।
जाप–(सं. पुं.) मन्त्र की विधिपूर्वक आवृत्ति, मन्त्र का जप करना, जपने की माला या गोमुखी; –क–(वि.) जपसंबंधी, जप करनेवाला।
जापन–(सं. पुं.) निरसन, परिहार, जप।
जापा–(हिं. पुं.) सूतिकागृह, सौरी।
जापानी–(हिं. वि.) जापान देश का; (पुं.) जापान का निवासी; (स्त्री.) जापान की भाषा।
जापी–(सं. वि.) जप करनेवाला।
जाप्य–(सं. वि.) जपने योग्य।
जाफरान–(अ. पुं.) केसर।
जाफरानी–(अ. वि.) केसरिया।
जाबाल–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, (इनके पुत्र का नाम सत्यकाम था।)
जाबालि–(सं. पुं.) कश्यप वंश के एक मुनि जो राजा दशरथ के गुरु थे।
जाबिर–(फा. वि.) जुल्म करनेवाला।
जाब्ता–(अ. पुं.) विधि, कानून; (स्त्री.) –दीवानी–(स्त्री.) दीवानी मामलों से संबंधित कानून।
जाम–(हि.पुं.) जामुन, प्रहर, तीन घंटे या साढ़े सात घड़ी का काल; (वि.) अवरुद्ध (मार्ग)।
जामगी–(हिं.पुं.) तोप या बन्दूक का पलीता।
जामदग्न्य–(सं. पुं.) जमदग्नि के पुत्र, परशुराम।
जामन–(हि. पुं.) दूध को जमाने के लिये प्रयुक्त होनेवाला थोड़ा-सा दही या अन्य खट्टा पदार्थ।
जामना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'जमना'।
जामनी–(हि. स्त्री.) देखें 'यावनी'।
जामल–(सं. पुं.) एक प्रकार का तन्त्र।
जामवंत–(सं. पुं.) देखें 'जांबवान्'।
जामा–(हिं. स्त्री.) दुहिता, कन्या, बेटी; (फा. पुं.) कपड़ा, पहनावा, दूल्हे का लंबा कुरता; (मुहा.) **जामे में फूला न समाना**–बहुत प्रसन्न होना; **जामे से बाहर होना**–बहुत क्रुद्ध होना।
जामाता–(हिं.पुं.) दामाद, कन्या का पति।
जामि–(सं. स्त्री.) भगिनी, बहिन, दुहिता, कन्या, पुत्रवधू, पतोहू।
जामिक–(हिं. पुं.) पहरुआ, रक्षक।
जामित्व–(सं. पुं.) रिश्ता, सम्बन्ध।
जामिन–(फा. पुं.) जमानत करनेवाला, जिम्मा या उत्तरदायित्व लेनेवाला।
जामिनदार–(फा पुं.) जमानतदार।
जामिनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'यामिनी'।
जामी–(हिं. स्त्री.) भूमि।
जामुन–(हिं. पुं.) जम्बू, एक सदाबहार वृक्ष जिसके बेर के समान बैंगनी रंग के खट-मीठे फल होते हैं।
जामुनी–(हिं.वि.) जामुन के रंग का, बैंगनी।
जामेय–(सं. पुं.) भानजा, बहिन का बेटा।
जामेवार–(हिं. पुं.) दुशाला जिसमें सर्वत्र बेलबूटे कढ़े होते हैं, इसी तरह छपी हुई छींट जो दुशाले के समान दीख पड़ती है।
जायँ–(हिं. वि.) उचित, उपयुक्त, न्याय्य।
जायक–(सं. पुं.) पीला चन्दन।
जायपत्री–(हिं. स्त्री.) देखें 'जावित्री'।
जायका–(अ. पुं.) स्वाद, मजा, रसास्वादन।
जायकेदार–(अ. वि.) स्वादिष्ट, मजेदार।
जायज–(अ. वि.) उचित, न्याय्य।
जायद–(अ. वि.) ज्यादा, अधिक।
जायदाद–(फा. स्त्री.) संपत्ति, भू-संपत्ति, जगह-जमीन।
जायफर, जायफल–(हि. पुं.) एक सुगंधित गोल फल जो सुपारी के आकार का होता है, जातीफल।
जाया–(सं. स्त्री.) पत्नी, विवाहिता स्त्री, ज्योतिष में सातवें लग्न का नाम, उपजाति वृत्त का सातवाँ भेद।
जायाजीव–(सं. पुं.) नट, वेश्यापति; (वि.) पत्नी की कमाई खानेवाला।
जायात्व–(सं. पुं.) पत्नीत्व, स्त्री का धर्म।
जायी–(सं. वि.) जययुक्त; (पुं.) ध्रुपद जाति का एक ताल।
जार–(सं. पुं.) पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष, उपपति, यार, परस्त्रीगामी; (वि.) नाश करनेवाला, मारनेवाला।
जारक–(सं. वि.) पाचन करनेवाला।
जारकर्म–(सं. पुं.) व्यभिचार, छिनाला।
जारज–(सं. पुं.) किसी स्त्री की उसके उपपति से जनमी हुई सन्तान; –योग–(पुं.) फलित ज्योतिष में कहा हुआ वह योग जिससे यह सिद्धान्त निकाला जाता है कि बालक अपनी माता के उपपति से उत्पन्न है।
जारजन्मा, जारजात–(सं. पुं.) उपपति से उत्पन्न पुत्र।
जारण–(सं. पुं.) धातु इत्यादि का भस्म बनाना, जलाना।

जारणी–(सं. स्त्री.) सफेद जीरा।
जारता–(सं. स्त्री.) उपपतित्व।
जारना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'जलाना'।
जारा–(हिं. पुं.) सोनार की सोना-चाँदी गलाने की भट्ठी।
जारिणी–(सं. स्त्री.) दुश्चरित्रा स्त्री, पुंश्चली, छिनाल स्त्री।
जारित–(सं. वि.)शुद्ध किया हुआ, शोधित।
जारी–(अ. वि.) प्रचलित।
जालंधर–(सं. पुं.) शतद्रु और चन्द्रभागा नदियों के बीच का देश।
जालंधरी विद्या–(हिं. स्त्री.) इन्द्रजाल।
जालंध्र–(सं. पुं.) झरोखे की जाली।
जाल–(सं.पुं.)पशु-पक्षी या मछली पकड़ने के लिये तार, सूत आदि का दूर-दूर पर बुना हुआ पट, गवाक्ष, झरोखा, समूह, किसी को फँसाने की युक्ति; दम्भ, घमंड, अहंकार, इन्द्रजाल, कदम्ब वृक्ष, लोहे के तार की बनी हुई जाली, एक प्रकार की तोप, मकड़ी का जाला; (मुहा.)–**फैलाना या बिछाना**–किसी को फँसाने की युक्ति करना; (अ. पुं.) किसी को ठगने के अभिप्राय से बनाया हुआ झूठा लिखित लेख्य-पत्र आदि, झूठी कारस्वाई।
जालक–(सं. पुं.) गवाक्ष, झरोखा।
जालकारक–(सं.पुं.) जाल बनानेवाला।
जालकिरिच–(हिं. स्त्री.) परतला लगी हुई पेटी या पट्टी।
जालकीट–(सं. पुं.) मकड़ा, मकड़ी के जाल में फँसा हुआ कीड़ा।
जालजीवी–(सं. पुं.) धीवर, मछुआ।
जालदार–(हिं. वि.) जिसमें जाल के समान बहुत-से छेद हों।
जालना–(हिं. क्रि. स.) जलाना।
जालपाद–(सं. पुं.) हंस, जाबालि ऋषि के एक शिष्य का नाम।
जालबंद–(हिं.पुं.) एक प्रकार का गलीचा जिसमें जाल की तरह बेल बनी होती है।
जालसाज–(अ. पुं.) वह जो दूसरों को ठगने के लिए बनावटी लेख्य-पत्रादि बनावे या और कोई जाल करे; जालिया।
जालसाजी–(फा. स्त्री.) जाल करने का काम, फरेब।
जाला–(हिं. पुं.)मकड़ी का बनाया हुआ जाल, आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर झिल्ली पड़ जाती है, माँड़ा, पानी रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र।
जालाक्ष–(सं. पुं.) गवाक्ष, झरोखा।
जालिक–(सं.पुं.) धीवर, मछुआ, मकड़ी मदारी।
जालिका–(सं. स्त्री.) कवच, बख्तर, चिड़ियों को पकड़ने का जाल, मकड़ी।
जालिनी–(सं. स्त्री.) तरोई, घिया।
जालिम–(अ. वि.) जुल्म करनेवाला, अत्याचारी।
जालिया–(हिं. वि.) धोखा देनेवाला; (पुं.)जाल से मछली पकड़नेवाला, धीवर।
जाली–(अ. वि.)नकली (दस्तावेज, लेख्य आदि।)
जाली–(हिं. स्त्री.) पत्थर, धातु आदि के पट्ट पर बने हुए छोटे-छोटे छिद्र, एक प्रकार का कसीदे का काम, महीन छेदवाला वस्त्र, कच्चे आम की गुठली के ऊपर के रेशे; –**दार**–(हिं.वि.) जिसमें जाली बनी हो।
जालीलेट–(हिं. पुं.)एक प्रकार का जालीदार वस्त्र।
जाल्म–(सं. वि.) नीच, पामर, मूर्ख।
जावक–(सं. पुं.) लाह से बना हुआ लाल रंग, अलता, महावर।
जावत–(हिं. अव्य.) देखें 'यावत्'।
जावन–(हिं. पुं.) देखें 'जामन'।
जावन्य–(सं. पुं.) द्रुत गति।
जावित्री–(हिं. स्त्री.) जायफल के ऊपर का छिलका जो सुगन्धित होता है। (यह औषधों में प्रयुक्त होती है।)
जाषनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'यक्षिणी'।
जासु–(हिं. सर्व.) जिसका।
जासू–(हिं.पुं.)अफीम और पान के पत्ते से बना मादक द्रव्य।
जासूस–(हिं.पुं.)छिपकर अपराधों का भेद लेनेवाला पुलिस कर्मचारी, खुफिया पुलिस।
जासूसी–(हिं. स्त्री.) जासूस का काम।
जाहक–(सं. पुं.) घोंघा, जोंक, गिरगिट।
जाहिर–(अ. वि.)प्रकट; व्यक्त, खुला हुआ।
जाहिरा–(अ. अव्य.)ऊपर से, प्रकट रूप से।
जाहिल–(अ. वि.) मूर्ख, जड़, अज्ञान।
जाहिली–(अ. स्त्री.) मूर्खता, जड़ता।
जाही–(हिं. स्त्री.) चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगन्धित फूल, एक प्रकार की आतिशबाजी।
जाह्नवी–(सं.स्त्री.) जह्नुतनया, गंगा नदी।
जिंदगी–(फा. स्त्री.) जीवन, आयु, जीवन-काल।
जिंदा–(फा. वि.) जीता हुआ, जीवित।
जिंवाना–(हिं. क्रि. स.) जिमाना, भोजन कराना।
जिंस–(अ. स्त्री) वस्तु, रोजगार का माल, गल्ला, असबाब।
जिंसवार–(अ. वि.) वर्ग के अनुसार; (पुं.) पटवारियों की एक बही।
जिंसवारी–(अ. स्त्री.) वर्गीकरण।
जिआना–(हिं. क्रि. स.)देखें 'जिलाना'।
जिउ–(हिं. पुं.) देखें जीव।
जिउका–(हिं. स्त्री.) देखें 'जीविका'।
जिउकिया–(हिं.पुं.)जीविका कमानेवाला, व्यवसायी, रोजगारी, पहाड़ी लोग जो जंगलों से वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।
जिउतिया–(हिं. स्त्री.)आश्विन मास की अष्टमी के दिन होनेवाला एक व्रत, जिताष्टमी।
जिकिर–(हिं. पुं.) देखें 'जिक्र'।
जिक्र–(अ. पुं)चर्चा, प्रसंग, हवाला, संकेत।
जिगमिषा–(सं. स्त्री.)गमन करने की इच्छा।
जिगर–(फा. पुं.) यकृत, कलेजा, सार, साहस।
जिगरा–(हिं. पुं.)साहस।
जिगरी–(फा. वि.) जिगर का, दिली, हार्दिक, घनिष्ट।
जिगीषा–(सं. स्त्री.) विजय प्राप्त करने की इच्छा, उद्यम, उद्योग।
जिगीषु–(सं. वि.) जो श्रेष्ठता चाहता हो, परिश्रमी, मेहनती।
जिघत्सा–(सं. स्त्री.) भोजन करने की इच्छा, भूख।
जिघांसक–(सं. वि.) हिंसक, हत्यारा।
जिघांसी–(सं. वि.) वध करनेवाला।
जिघांसु–(सं. वि.)मारनेवाला, जिघांसी।
जिच, जिच्च–(हिं. स्त्री.)विवशता, शतरंज के खेल में वह स्थिति जब एक पक्ष के खेलाड़ी को कोई मोहरा चलने की जगह नहीं रहती, गतिरोध; (वि.) विवश।
जिजीविषा–(सं.स्त्री.) जीने की इच्छा।
जिजीविषु–(सं. वि.) जीने की इच्छा करनेवाला।
जिज्ञासन–(सं. पुं.) जानने की इच्छा से पूछना, पूछताछ।
जिज्ञासमान–(सं. वि.)जिज्ञासु, पूछताछ करनेवाला।
जिज्ञासा–(सं. स्त्री.) ज्ञान प्राप्त करने की कामना, जानने की इच्छा, प्रश्न।
जिज्ञासित–(सं. वि.) जो पूछा गया हो।
जिज्ञासु–(सं. वि.) ज्ञान प्राप्त करने के लिये इच्छुक, जानने की इच्छा रखने वाला, खोजी, मुमुक्षु।
जिज्ञास्यमान–(सं. वि.) जो विषय पूछा जाता हो।
जिठानी–(हिं. स्त्री.) पति के बड़े भाई की स्त्री, जेठानी।
जित्–(सं. वि.) जीतनेवाला, जेता।

जित–(सं. वि.) पराजित, जीता हुआ; (हिं. वि.) जीतनेवाला; (हिं. अव्य.) जिधर, जिस ओर।
जितक्रोध–(सं. वि.) जिसको क्रोध न हो; (पुं.) विष्णु।
जितना–(हिं. वि.) जिस मात्रा का, जिस परिमाण का।
जितमन्यु–(सं. वि.) क्रोधशून्य; (पुं.) विष्णु।
जितवना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'जिताना'।
जितवाना–(हिं. क्रि.स.) जीतने में समर्थ करना, जिताना।
जितवार, जितवैया–(हिं. वि.) जीतनेवाला।
जितशत्रु–(सं. पुं.) विजयी, जिसने शत्रु को पराजित किया हो।
जितात्मा–(सं.वि.) देखें 'जितेंद्रिय'।
जिताना–(हिं.क्रि.स.) जीतने में सहायता देना।
जितारि–(सं. पुं.) कामादि शत्रुओं को जीतनेवाला; (पुं.) बुद्ध।
जिताष्टमी–(सं. स्त्री.) जिउतिया, आश्विन कृष्णा अष्टमी का व्रत, (हिन्दुओं की पुत्रवती स्त्रियाँ यह व्रत रखती हैं।)
जिताहार–(सं.पुं.) वह जिसने क्षुधा को वश में कर लिया हो।
जितेंद्रिय–(सं. वि., पु.) जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो, शान्त स्वभाववाला मनुष्य।
जितेंद्रियता–(सं.स्त्री.) जितेन्द्रिय होने का भाव।
जिते–(हिं. वि.) (संख्या में) जितने।
जितै–(हिं. अव्य.) जिधर, जिस ओर।
जितैया–(हिं. वि.) जीतनेवाला।
जितो–(हिं. वि.) जितना; (अव्य.) जिस मात्रा में।
जित्वर–(सं. वि.) जेता, जीतनेवाला।
जिद–(फा. स्त्री.) हठ, अड़, दुराग्रह, वैर, शत्रुता।
जिद्दन–(अ. अव्य.) जिदवश।
जिद्दी–(फा. वि.) हठी, दुराग्रही।
जिधर–(हिं. अव्य.) जहाँ, जिस ओर।
जिन–(सं. पुं.) बुद्ध, विष्णु, सूर्य, जैनों के तीर्थंकर; (हिं.सर्व.) 'जिस' का बहुवचन; (अ. पुं.) भूत, प्रेत; (मुहा.) –सवार होना–क्रोध में आपे से बाहर होना।
जिनि–(हिं. अव्य.) जनि, मत, नहीं।
जिनिस–(हिं. स्त्री.) देखें 'जिंस'।
जिन्नाती–(अ. वि.) जिन का, जिन संबंधी।
जिन्ह–(हिं. सर्व.) देखें 'जिन'।
जिब्भा, जिभ्या–(हिं.स्त्री.) देखें 'जिह्वा'।
जिमाना–(हिं. क्रि. स.) भोजन कराना, खाना खिलाना।
जिमि–(हिं. अव्य.) ज्यों, जैसे, जिस प्रकार से।
जिमींदार–(हिं. पुं.) जमींदार, भूस्वामी।
जिम्मा–(अ. पुं.) उत्तरदायित्व, सपुर्दगी, देखरेख; (मुहा.) –लेना–उत्तरदायित्व लेना; (किसी के) जिम्मे–किसी के नाम।
जिम्मेदार–(अ. वि.) उत्तरदायी, जवाबदेह।
जिम्मेदारी–(अ. स्त्री.) उत्तरदायित्व, जवाबदेही।
जिय–(हिं. पुं.) जी, चित्त, मन।
जियन–(हिं. पुं.) जीवन।
जियबधा–(हिं. पुं.) हत्यारा, जल्लाद।
जियरा–(हिं. पुं.) जी, जीव।
जियाना–(हिं. क्रि. स.) जिलाना, जीवित रखना, पालना।
जियारी–(हिं. स्त्री.) जीवन, जीविका, चित्त की दृढ़ता, जीवट।
जिरह–(अ. स्त्री.) साक्षी से वकील द्वारा की जानेवाली पूछताछ, बहस; (फा. स्त्री.) कवच।
जिरिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अच्छा पतला धान।
जिरियान–(हिं. पुं.) प्रमेह (रोग)।
जिला–(अ. पुं.) प्रशासनिक सुविधा के लिए प्रांत के विभाजित खंड, प्रदेश।
जिलाट–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक बाजा।
जिलाना–(हिं. क्रि. स.) जीवित करना, प्राणदान करना, मरने न देना, पालना-पोसना।
जिलाह–(हिं. पुं.) अत्याचारी।
जिलेदार–(हिं.पुं.) जमींदार का कारिंदा जो गाँव का लगान वसूल करता है, सिंचाई महकमे का एक कर्मचारी।
जिलेदारी–(हिं. स्त्री.) जिलेदार का पद या कार्य।
जिलेबी–(हिं. स्त्री.) देखें 'जलेबी'।
जिल्द–(अ. स्त्री.) पुस्तक का आवरण, पुस्तक की एक प्रति, खाल, त्वचा, ऊपर का चमड़ा, पुस्तक का अलग-अलग प्रकाशित भाग या खंड।
जिल्ददार–(अ. वि.) जिसकी जिल्द बंधी हो।
जिल्दबंदी–(अ. स्त्री.) जिल्द मढ़ने का काम या धंधा।
जिल्दसाज–(अ. पुं.) जिल्द मढ़नेवाला।
जिल्दसाजी–(अ. स्त्री.) जिल्दबंदी।
जिल्लत–(अ. स्त्री.) अनादर, अपमान, दुर्गति; (मुहा.)–उठाना–अपमानित होना।
जिल्हौर–(हिं.पुं.) एक प्रकार का अच्छा अगहनिया धान।
जिव–(हिं. पुं.) देखें 'जीव'।
जिवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जिलाना'।
जिष्णु–(सं. पुं.) विष्णु, इन्द्र, अर्जुन, सूर्य, वसु।
जिस–(हिं. सर्व.) "जो" का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त होने से प्राप्त होता है।
जिसिम–(हिं. पुं.) जिस्म, शरीर।
जिस्ता–(हिं. पुं.) देखें 'जस्ता' और 'दस्ता'।
जिस्म–(अ. पुं.) शरीर, बदन।
जिस्मी–(अ. वि.) शरीर का, देह संबंधी, शारीरिक।
जिहाद–(अ. पुं.) मुसलमानों का अन्य धर्मावलंबियों के विरुद्ध युद्ध या लड़ाई, धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।
जिहादी–(सं. वि.) जिहाद का, जिहाद संबंधी।
जिहान–(सं. वि.) जानेवाला; (पुं.) गमन।
जिहानक–(सं.पुं.) संसार का नाश, प्रलय।
जिहासा–(सं.स्त्री.) त्याग करने की इच्छा।
जिहीर्षु–(सं. वि.) हरण करने की इच्छा करनेवाला।
जिह्म–(सं. वि.) कुटिल, कपटी, दुष्ट, अप्रसन्न; –गति–(पुं.) सर्प; (वि.) टेढ़ी चाल चलनेवाला; –गामी–(वि.) कुटिल, टेढ़ी चाल चलनेवाला, मन्दगति; –ता–(स्त्री.) कुटिलता, मन्दता, टेढ़ापन।
जिह्मित–(सं. वि.) घूमा हुआ, फिरा हुआ, चकित।
जिह्व–(सं. पुं.) जिह्वा, जीभ, जबान।
जिह्वल–(सं. वि.) भोजन-लोलुप, चटोरा।
जिह्वा–(सं. स्त्री.) रसना, जीभ, जबान।
जिह्वाग्र–(सं. पुं.) जीभ का अग्रभाग, जीभ की नोक; (क्रि. प्र.) –करना–कंठस्थ करना।
जिह्वातल–(सं. पुं.) जिह्वा का पृष्ठ या तल भाग।
जिह्वामल–(सं. पुं.) जीभ पर की मैल।
जिह्वामूल–(सं. पुं.) जीभ की जड़, जीभ का पिछला भाग।
जिह्वामूलीय–(सं. पुं.) वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा के मूल

जित–(सं. वि.) पराजित, जीता हुआ; (हिं. वि.) जीतनेवाला; (हिं. अव्य.) जिधर, जिस ओर।
जितक्रोध–(सं. वि.) जिसको क्रोध न हो; (पुं.) विष्णु।
जितना–(हिं. वि.) जिस मात्रा का, जिस परिमाण का।
जितमन्यु–(सं. वि) क्रोधशून्य; (पुं.) विष्णु।
जितवना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'जिताना'।
जितवाना–(हिं. क्रि.स.) जीतने में समर्थ करना, जिताना।
जितवार, जितवैया–(हिं. वि.) जीतनेवाला।
जितशत्रु–(सं. पुं.) विजयी, जिसने शत्रु को पराजित किया हो।
जितात्मा–(सं.वि.) देखें 'जितेंद्रिय'।
जिताना–(हिं.क्रि.स.) जीतने में सहायता देना।
जितारि–(सं.पुं.) कामादि शत्रुओं को जीतनेवाला; (पुं.) बुद्ध।
जिताष्टमी–(सं. स्त्री.) जिउतिया, आश्विन कृष्णा अष्टमी का व्रत, (हिन्दुओं की पुत्रवती स्त्रियाँ यह व्रत रखती हैं।)
जिताहार–(सं.पुं.) वह जिसने क्षुधा को वश में कर लिया हो।
जितेंद्रिय–(सं. वि., पु.) जिसने अपनी इन्द्रियों को अपन वश म कर लिया हो, शान्त स्वभाववाला मनुष्य।
जितेंद्रियता–(सं.स्त्री.) जितेन्द्रिय होने का भाव।
जिते–(हिं. वि.) (संख्या में) जितने।
जितै–(हिं. अव्य.) जिधर, जिस ओर।
जितैया–(हिं. वि.) जीतनेवाला।
जितो–(हिं. वि.) जितना; (अव्य.) जिस मात्रा में।
जित्वर–(सं. वि.) जेता, जीतनेवाला।
जिद–(फा. स्त्री.) हठ, अड़, दुराग्रह, वैर, शत्रुता।
जिद्दन–(अ.अव्य.) जिदवश।
जिद्दी–(फा. वि.) हठी, दुराग्रही।
जिधर–(हिं. अव्य.) जहाँ, जिस ओर।
जिन–(सं. पुं.) बुद्ध, विष्णु, सूर्य, जैनों के तीर्थंकर; (हिं.सर्व.) 'जिस' का बहुवचन; (अ. पुं.) भूत, प्रेत; (मुहा.) –**सवार होना**–क्रोध में आपे से बाहर होना।
जिनि–(हिं. अव्य.) जनि, मत, नहीं।
जिनिस–(हिं. स्त्री.) देखें 'जिंस'।
जिन्नाती–(अ. वि.) जिन का, जिन संबंधी।
जिन्ह–(हिं. सर्व.) देखें 'जिन'।
जिब्भा, जिभ्या–(हिं.स्त्री.) देखें 'जिह्वा'।
जिमाना–(हिं. क्रि. स.) भोजन कराना, खाना खिलाना।
जिमि–(हिं. अव्य.) ज्यों, जैसे, जिस प्रकार से।
जिमींदार–(हिं. पुं.) जमींदार, भूस्वामी।
जिम्मा–(अ. पुं.) उत्तरदायित्व, सपुर्दगी, देखरेख; (मुहा.) –**लेना**–उत्तरदायित्व लेना; (**किसी के**) **जिम्मे**–किसी के नाम।
जिम्मेदार–(अ. वि.) उत्तरदायी, जवाबदेह।
जिम्मेदारी–(अ. स्त्री.) उत्तरदायित्व, जवाबदेही।
जिय–(हिं.पुं.) जी, चित्त, मन।
जियन–(हिं. पुं.) जीवन।
जियबधा–(हिं.पुं.) हत्यारा, जल्लाद।
जियरा–(हिं. पुं.) जी, जीव।
जियाना–(हिं. क्रि. स.) जिलाना, जीवित रखना, पालना।
जियारी–(हिं. स्त्री.) जीवन, जीविका, चित्त की दृढ़ता, जीवट।
जिरह–(अ. स्त्री.) साक्षी से वकील द्वारा की जानेवाली पूछताछ, बहस; (फा. स्त्री.) कवच।
जिरिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अच्छा पतला धान।
जिरियान–(हिं. पुं.) प्रमेह (रोग)।
जिला–(अ. पुं.) प्रशासनिक सुविधा के लिए प्रांत के विभाजित खंड, प्रदेश।
जिलाद–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक बाजा।
जिलाना–(हिं. क्रि. स.) जीवित करना, प्राणदान करना, मरने न देना, पालना-पोसना।
जिलाह–(हिं. पुं.) अत्याचारी।
जिलेदार–(हिं.पुं.) जमींदार का कारिंदा जो गाँव का लगान वसूल करता है, सिंचाई महकमे का एक कर्मचारी।
जिलेदारी–(हिं. स्त्री.) जिलेदार का पद या कार्य।
जिलेबी–(हिं. स्त्री.) देखें 'जलेबी'।
जिल्द–(अ. स्त्री.) पुस्तक का आवरण, पुस्तक की एक प्रति, खाल, त्वचा, ऊपर का चमड़ा, पुस्तक का अलग-अलग प्रकाशित भाग या खंड।
जिल्ददार–(अ. वि.) जिसकी जिल्द बंधी हो।
जिल्दबंदी–(अ. स्त्री.) जिल्द मढ़ने का काम या धंधा।
जिल्दसाज–(अ. पुं.) जिल्द मढ़नेवाला।
जिल्दसाजी–(अ. स्त्री.) जिल्दबंदी।
जिल्लत–(अ. स्त्री.) अनादर, अपमान, दुर्गति; (मुहा.) –**उठाना**–अपमानित होना।
जिल्होर–(हिं.पुं.) एक प्रकार का अच्छा अगहनिया धान।
जिव–(हिं. पुं.) देखें 'जीव'।
जिवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जिलाना'।
जिष्णु–(सं. पुं.) विष्णु, इन्द्र, अर्जुन, सूर्य, वसु।
जिस–(हिं. सर्व.) "जो" का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त होने से प्राप्त होता है।
जिसिम–(हिं. पुं.) जिस्म, शरीर।
जिस्ता–(हिं. पुं.) देखें 'जस्ता' और 'दस्ता'।
जिस्म–(अ. पुं.) शरीर, बदन।
जिस्मी–(अ. वि.) शरीर का, देह संबंधी, शारीरिक।
जिहाद–(अ. पुं.) मुसलमानों का अन्य धर्मावलंबियों के विरुद्ध युद्ध या लड़ाई, धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।
जिहादी–(सं. वि.) जिहाद का, जिहाद संबंधी।
जिहान–(सं. वि.) जानेवाला; (पुं.) गमन।
जिहानक–(सं.पुं.) संसार का नाश, प्रलय।
जिहासा–(सं.स्त्री.) त्याग करने की इच्छा।
जिहीर्षु–(सं. वि.) हरण करने की इच्छा करनेवाला।
जिह्म–(सं. वि.) कुटिल, कपटी, दुष्ट, अप्रसन्न; –**गति**–(पुं.) सर्प; (वि.) टेढ़ी चाल चलनेवाला; –**गामी**–(वि.) कुटिल, टेढ़ी चाल चलनेवाला, मन्दगति; –**ता**– (स्त्री.) कुटिलता, मन्दता, टेढ़ापन।
जिह्मित–(सं. वि.) घूमा हुआ, फिरा हुआ, चकित।
जिह्व–(सं. पुं.) जिह्वा, जीभ, जबान।
जिह्वल–(सं. वि.) भोजन-लोलुप, चटोरा।
जिह्वा–(सं.स्त्री.) रसना, जीभ, जबान।
जिह्वाग्र–(सं. पुं.) जीभ का अग्रभाग, जीभ की नोक; (क्रि. प्र.) –**करना**–कंठस्थ करना।
जिह्वातल–(सं. पुं.) जिह्वा का पृष्ठ या तल भाग।
जिह्वामल–(सं. पुं.) जीभ पर की मैल।
जिह्वामूल–(सं. पुं.) जीभ की जड़, जीभ का पिछला भाग।
जिह्वामूलीय–(सं. पुं.) वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा के मूल

जित–(सं. वि.) पराजित, जीता हुआ; (हिं. वि.) जीतनेवाला; (हिं. अव्य.) जिधर, जिस ओर।
जितक्रोध–(सं. वि.) जिसको क्रोध न हो; (पुं.) विष्णु।
जितना–(हिं. वि.) जिस मात्रा का, जिस परिमाण का।
जितमन्यु–(सं. वि) क्रोधशून्य; (पुं.) विष्णु।
जितवना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'जिताना'।
जितवाना–(हिं. क्रि.स.) जीतने में समर्थ करना, जिताना।
जितवार, जितवैया–(हिं. वि.) जीतनेवाला।
जितशत्रु–(सं. पुं.) विजयी, जिसने शत्रु को पराजित किया हो।
जितात्मा–(सं.वि.) देखें 'जितेंद्रिय'।
जिताना–(हिं.क्रि.स.)जीतने में सहायता देना।
जितारि–(सं. पुं.) कामादि शत्रुओं को जीतनेवाला; (पुं.) बुद्ध।
जिताष्टमी–(सं. स्त्री.) जिउतिया, आश्विन कृष्णा अष्टमी का व्रत, (हिन्दुओं की पुत्रवती स्त्रियाँ यह व्रत रखती हैं।)
जिताहार–(सं.पुं.)वह जिसने क्षुधा को वश में कर लिया हो।
जितेंद्रिय–(सं. वि., पु.) जिसने अपनी इन्द्रियों को अपन वश म कर लिया हो, शान्त स्वभाववाला मनुष्य।
जितेंद्रियता–(सं.स्त्री.) जितेन्द्रिय होने का भाव।
जिते–(हिं. वि.) (संख्या में) जितने।
जितै–(हिं. अव्य.) जिधर, जिस ओर।
जितैया–(हिं. वि.) जीतनेवाला।
जितो–(हिं. वि.) जितना; (अव्य.) जिस मात्रा में।
जित्वर–(सं. वि.) जेता, जीतनेवाला।
जिद–(फा. स्त्री.) हठ, अड़, दुराग्रह, वैर, शत्रुता।
जिद्दन–(अ.अव्य.) जिदवश।
जिद्दी–(फा. वि.) हठी, दुराग्रही।
जिधर–(हिं.अव्य.) जहाँ, जिस ओर।
जिन–(सं. पुं.)बुद्ध, विष्णु, सूर्य, जैनों के तीर्थंकर; (हिं.सर्व.) 'जिस'का बहुवचन; (अ. पुं.) भूत, प्रेत; (मुहा.) –सवार होना–क्रोध में आपे से बाहर होना।
जिनि–(हिं. अव्य.) जनि, मत, नहीं।
जिनिस–(हिं. स्त्री.) देखें 'जिंस'।
जिनाती–(अ. वि.) जिन का, जिन संबंधी।
जिन्ह–(हिं. सर्व.) देखें 'जिन'।
जिब्भा, जिभ्या–(हिं.स्त्री.) देखें 'जिह्वा'।
जिमाना–(हिं. क्रि. स.) भोजन कराना, खाना खिलाना।
जिमि–(हिं. अव्य.) ज्यों, जैसे, जिस प्रकार से।
जिमींदार–(हिं. पुं.) जमीदार, भूस्वामी।
जिम्मा–(अ. पुं.) उत्तरदायित्व, सपुर्दगी, देखरेख; (मुहा.) –लेना–उत्तरदायित्व लेना; (किसी के) जिम्मे–किसी के नाम।
जिम्मेदार–(अ. वि.) उत्तरदायी, जवाबदेह।
जिम्मेदारी–(अ. स्त्री.) उत्तरदायित्व, जवाबदेही।
जिय–(हिं. पुं.) जी, चित्त, मन।
जियन–(हिं. पुं.) जीवन।
जियबधा–(हिं. पुं.) हत्यारा, जल्लाद।
जियरा–(हि. पुं.) जी, जीव।
जियाना–(हिं. क्रि. स.) जिलाना, जीवित रखना, पालना।
जियारी–(हिं. स्त्री.) जीवन, जीविका, चित्त की दृढ़ता, जीवट।
जिरह–(अ. स्त्री.) साक्षी से वकील द्वारा की जानेवाली पूछताछ, बहस; (फा. स्त्री.) कवच।
जिरिया–(हिं. पुं.)एक प्रकार का अच्छा पतला धान।
जिरियान–(हिं. पुं.) प्रमेह (रोग)।
जिला–(अ. पुं.) प्रशासनिक सुविधा के लिए प्रांत के विभाजित खंड, प्रदेश।
जिलाट–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक बाजा।
जिलाना–(हिं. क्रि. स.) जीवित करना, प्राणदान करना, मरने न देना, पालना-पोसना।
जिलाह–(हिं. पुं.) अत्याचारी।
जिलेदार–(हिं.पुं.) जमींदार का कारिंदा जो गाँव का लगान वसूल करता है, सिंचाई महकमे का एक कर्मचारी।
जिलेदारी–(हिं. स्त्री.) जिलेदार का पद या कार्य।
जिलेबी–(हिं. स्त्री.) देखें 'जलेबी'।
जिल्द–(अ. स्त्री.) पुस्तक का आवरण, पुस्तक की एक प्रति, खाल, त्वचा, ऊपर का चमड़ा, पुस्तक का अलग-अलग प्रकाशित भाग या खंड।
जिल्ददार–(अ. वि.) जिसकी जिल्द बंधी हो।
जिल्दबंदी–(अ. स्त्री.) जिल्द मढ़ने का काम या धंधा।
जिल्दसाज–(अ. पुं.) जिल्द मढ़नेवाला।
जिल्दसाजी–(अ. स्त्री.) जिल्दबंदी।
जिल्लत–(अ. स्त्री.) अनादर, अपमान, दुर्गति; (मुहा.)–उठाना–अपमानित होना।
जिल्होर–(हिं.पुं.) एक प्रकार का अच्छा अगहनिया धान।
जिव–(हिं. पुं.) देखें 'जीव'।
जिवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जिलाना'।
जिष्णु–(सं. पुं.) विष्णु, इन्द्र, अर्जुन, सूर्य, वसु।
जिस–(हिं. सर्व.) "जो" का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त होने से प्राप्त होता है।
जिसिम–(हिं.पुं.) जिस्म, शरीर।
जिस्ता–(हिं.पुं.) देखें 'जस्ता' और 'दस्ता'।
जिस्म–(अ.पुं.) शरीर, बदन।
जिस्मी–(अ. वि.)शरीर का, देह संबंधी, शारीरिक।
जिहाद–(अ. पुं.) मुसलमानों का अन्य धर्मावलंबियों के विरुद्ध युद्ध या लड़ाई, धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।
जिहादी–(सं. वि.) जिहाद का, जिहाद संबंधी।
जिहान–(सं. वि.)जानेवाला; (पुं.)गमन।
जिहानक–(सं.पुं.)संसार का नाश, प्रलय।
जिहासा–(सं.स्त्री.)त्याग करने की इच्छा।
जिहीर्षु–(सं. वि.) हरण करने की इच्छा करनेवाला।
जिह्म–(सं. वि.) कुटिल, कपटी, दुष्ट, अप्रसन्न; –गति–(पुं.) सर्प; (वि.) टेढ़ी चाल चलनेवाला; –गामी–(वि.) कुटिल, टेढ़ी चाल चलनेवाला, मन्दगति; –ता– (स्त्री.) कुटिलता, मन्दता, टेढ़ापन।
जिह्मित–(सं. वि.) घूमा हुआ, फिरा हुआ, चकित।
जिह्व–(सं. पुं.) जिह्वा, जीभ, जबान।
जिह्वल–(सं. वि.) भोजन-लोलुप, चटोरा।
जिह्वा–(सं. स्त्री.) रसना, जीभ, जबान।
जिह्वाग्र–(सं. पुं.) जीभ का अग्रभाग, जीभ की नोक; (क्रि. प्र.) –करना–कंठस्थ करना।
जिह्वातल–(सं. पुं.) जिह्वा का पृष्ठ या तल भाग।
जिह्वामल–(सं. पुं.) जीभ पर की मैल।
जिह्वामूल–(सं. पुं.)जीभ की जड़, जीभ का पिछला भाग।
जिह्वामूलीय–(सं. पुं.) वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा के मूल

से होता है; यथा—क, ख, ग, घ तथा ङ।
जिह्वा-लिह—(सं.पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।
जिह्वा-लौल्य—(सं.स्त्री.) भुक्खड़पन।
जींगन—(हिं.पुं.) जुगनू।
जी—(हिं.पुं.) चित्त, मन, दम, जीवट, इच्छा, संकल्प; (अव्य.) एक सम्मान-सूचक शब्द जो किसी व्यक्ति के नाम के पीछे लगाया जाता है; यह शब्द बड़ों के प्रतिहामी भरने या स्वीकृतिमें भी प्रयुक्त होता है; (मुहा.) (किसी पर)—**आना**—प्रेमासक्त होना; —**उचटना**—मन न लगना; —**उड़ जाना**—चित्त व्यग्र होना; —**करना**—साहस करना; —**की लगी**—मन में समायी बात (प्रेम); —**को लगना**—दिल को चोट पहुँचना; —**खट्टा होना**—घृणा उत्पन्न होना; —**खोलकर**—विना संकोच के, यथेष्ट; —**चलना**—अभिलाषा होना; —**चुराना**—काम करने में आलस्य करना; —**छोटा करना**—उदारता न दिखलाना; —**जान देना**—अति प्रेम करना; —**टँगा रहना**—चिन्तित रहना; —**ठंडा होना**—कलेजा जुड़ाना; —**तरसना**—मन का ललचना; —**दुखना**—मन में कष्ट होना; —**धड़कना**—कलेजा धड़कना; —**पर आ बनना**—जान बचाना कठिन हो जाना; **पर खेलना**—प्राणों को संकट में डालकर काम करना; —**बहलाना**—मनोरंजन का उपाय करना; —**बिगड़ना**—मचली आना; —**भर आना**—दया, कृपा आदि का प्रादुर्भाव होना; —**भरकर**—यथेष्ट; —**भरना**—सन्तुष्ट होना; —**मचलाना**—वमन करने की मचली होना; —**में आना**—इच्छा होना, विचार उठना; —**में बसना**—सदा याद रहना; —**में रखना**—सदा याद रखना; —**लगना**—चित्त एकाग्र होना, प्रेम होना; —**से**—ध्यानपूर्वक; —**से उतर जाना**—चित्त से हट जाना, अच्छा न लगना; —**से जाना**—मर जाना।
जीअ, जीउ—(हिं. पुं.) देखें 'जीव'।
जीगन—(हिं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
जीजा—(हिं. पुं.) बड़ी बहिन का पति, बहनोई।
जीजी—(हिं. स्त्री.) बड़ी बहिन।
जीत—(हिं. स्त्री.) जय, विजय, लाभ, ऐसे कार्य में सफलता जिसमें अन्य प्रतियोगी या विपक्षी हों।
जीतना—(हिं.क्रि.स.) विजय प्राप्त करना, शत्रु को हराना, किसी ऐसे कार्य में सफलता प्राप्त करना जिसमें अन्य प्रतियोगी या विपक्षी हों।
जीतल—(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की ताँबे की प्राचीन मुद्रा।
जीता—(हिं. वि.) जीवित, तौल या नाप में कुछ अधिक; —**जागता**—(वि.) प्रत्यक्ष शक्ति,-संपन्न, शक्तिमान्, सचेत; —**लोहा**—(पुं.) चुम्बक; **जीते जी**—(अव्य.) प्राण रहते हुए; **जीते-मरते**—(अव्य.) बड़ी कठिनाई या दिक्कत से।
जीतालू—(हिं. पुं.) अरारूट।
जीति—(सं. स्त्री.) जय, जीत, हानि।
जीन—(सं.वि.) जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बुड्ढा।
जीन—(फा. पुं.) घोड़े पर की काठी, पलान, एक मोटा कपड़ा; —**साज**—(पुं.) जीन बनानेवाला।
जीना (हिं.क्रि.अ.) जीवित रहना, प्रसन्न या प्रफुल्लित होना; (मुहा.)—**भारी होना**—जीवन दुःखमय होना।
जीना—(फा. पुं.) सीढ़ी, सोपान।
जीभ—(हिं.स्त्री.) जिह्वा, रसना; (मुहा.) —**चलना**—स्वादिष्ट पदार्थों को खाने को मन चलना; —**पकड़ना**—बोलने न देना; —**हिलाना**—मुँह से शब्द निकालना।
जीभी—(हिं. स्त्री.) जीभ के आकार की कोई वस्तु, जीभ की मैल हटाने की पतली धनुपाकार पट्टी, लोहे या पीतल की निब, छोटी जीभ, गलशुण्डी; —**चाभा**—(पुं.) चौपायों का एक रोग।
जीमट—(हिं. पुं.) पेड़-पौधों की शाखा के भीतर का गूदा।
जीमना—(हिं. क्रि. स.) भोजन करना।
जीमूत—(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़, मेघ, बादल, मोथा, इन्द्र, सूर्य, एक प्रकार का दंडक वृत्त; —**वाहन**—(पुं.) मेघवाहन, इन्द्र; —**वाही**—(पुं.) धम्र, धुआँ।
जीय—(हिं. पुं.) देखें 'जी'।
जीयट—(हिं. पुं.) देखें 'जीवट'।
जीयति—(हिं. स्त्री.) देखें 'जीवन'।
जीयदान—(हिं. पुं.) प्राणदान, जीवनदान।
जीर—(सं. पुं.) जीरक, जीरा, खड्ग, तलवार, केसर, पुष्प का जीरा; (वि.) शीघ्रगामी, शत्रु को हानि पहुँचानेवाला, जीर्ण, पुराना।
जीरक—(सं. पुं.) सौंफ के आकार का एक पदार्थ, जीरा।
जीरण—(हिं. वि.) देखें 'जीर्ण'।
जीरना—(हिं.क्रि.अ.) जीर्ण होना, मुरझाना।
जीरा—(हिं. पुं.) देखें 'जीरक'।
जीरी—(हिं. पुं.) अगहन में पकनेवाला एक प्रकार का धान।
जीर्ण—(सं. वि.) जरायुक्त, बुड्ढा, पुराना, फटा-पुराना, बहुत दिनों का, पेट में पचा हुआ; —**ज्वर**— (पुं.) पुराना ज्वर, (ज्वर बारह दिन से अधिक रह जाने पर जीर्ण ज्वर कहलाता है); —**ता**—(स्त्री.) वृद्धत्व, बुढ़ापा, पुरानापन; —**देह**—(पुं.) वृद्ध शरीर, जीर्ण कलेवर; —**संस्कार**—(पुं.) पुरानी वस्तुओं की मरम्मत।
जीर्णोद्धार—(सं. पुं.) देखें 'जीर्ण-संस्कार'।
जीला—(हिं. वि.) महीन, पतला।
जीलानी—(अ. पुं.) एक प्रकार का लाल रंग।
जीवंत—(सं. वि.) जीवित, जीता हुआ।
जीव—(सं.पुं.) प्राणी, जीवधारी, जानवर, बृहस्पति, कर्ण, वृत्ति, आजीविका, जीवात्मा, प्राणियों का चेतन-तत्त्व, आत्मा, अश्लेषा नक्षत्र।
जीवक—(सं. पुं.) प्राणधारक, व्याज लेकर जीविका निर्वाह करनेवाला, सेवक, क्षपणक, सँपेरा, पीतसाल वृक्ष, एक जैन मुनि का नाम।
जीवग्राह—(सं. पुं.) बन्दी, कैदी।
जीवज—(सं. वि.) जिसने जीवन ग्रहण किया हो।
जीवजीव—(सं. पुं.) चकोर पक्षी।
जीवट—(हिं. पुं.) साहस, जिगरा।
जीवति—(हिं. स्त्री.) जीविका।
जीवत्पति—(सं. स्त्री.) सौभाग्यवती स्त्री, सोहागिन।
जीवत्व—(सं.पुं.) जीव का भाव।
जीवद—(सं.पुं.) वैद्य; (वि.) जीवनदाता।
जीवदाता—(सं. वि.) जीवनदायी, जीव-देनेवाला।
जीवदान—(सं.पुं.) अपने वश में आये हुए शत्रु को प्राणदान देना, प्राण-रक्षा।
जीवधन—(सं. पुं.) पशुओं के रूप में सम्पत्ति, देखें 'जीवनधन'।
जीवधारी—(सं. पुं.) प्राणी, चेतन, जन्तु, जानवर।
जीवन—(सं. पुं.) वृत्ति, जीविका, प्राण-धारण, पानी, परमेश्वर, गंगा, वायु, पुत्र, मज्जा, घी, जन्म और मरण के बीच का काल, जीवित रखनेवाली वस्तु, प्राणप्यारा, परम प्रिय व्यक्ति, फूल का केसर।
जीवन-क्रम—(सं. पुं.) जीवन-यात्रा, रहन-सहन का ढंग।
जीवनचरित—(सं.पुं.) जीवन का वृत्तान्त, जीवन-वृत्तान्त ग्रन्थ, जीवनी।
जीवनधन—(सं. पुं.) जीवन का सर्वस्व, प्राणाधार, प्राणप्रिय, प्यारा।

जीवनधार–(हिं. वि.) जीवरक्षक।
जीवनबूटी, जीवनमूरि–(हि. स्त्री.) संजीवनी नामक पौधा जिसके विषय में यह प्रसिद्धि है कि वह मरे को भी जिला देता है।
जीवनवृत्त–(सं.पुं.) जीवनचरित्र, जीवनी।
जीवनवृत्तांत–(सं.पुं.) देखें 'जीवन-चरित्र'।
जीवनवृत्ति–(सं. वि.) जीविका।
जीवनसाधन–(सं.पुं.) देखें 'जीवन-वृत्ति'।
जीवनहेतु–(सं.पुं.) देखें 'जीवन-साधन'।
जीवना–(हिं क्रि. अ.) देखें 'जीना'।
जीवनाघात–(सं. पुं.) विष, गरल।
जीवनावास–(सं. पुं.) वरुण; (वि.) जल में रहनेवाला।
जीवनि–(हिं.स्त्री.) संजीवनी बूटी, प्राणाधार।
जीवनी–(सं. स्त्री.) काकोली नामक औषधि; (हिं. स्त्री.) जीवन-चरित्र, जीवन का वृत्तान्त।
जीवनीय–(सं. पुं.) जल, पानी; (त्रि.) जीविका चलाने योग्य।
जीवनोपाय–(सं. पुं.) जीविका।
जीवन्मुक्त–(सं. वि.) जो आत्मज्ञान के हेतु माया के बन्धन से छूट गया हो।
जीवन्मृत–(सं. वि.) जो जीवित दशा में मृतक के समान हो, जिसका जीना-मरना दोनों समान हो।
जीवन्यास–(सं. पुं.) मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा का मन्त्र।
जीवपति–(सं.स्त्री.) सधवा स्त्री, सोहागिन।
जीवप्रभा–(हिं. स्त्री.) आत्मा।
जीवबंधु–(हि. पुं.) गुलदुपहरिया।
जीवमंदिर–(सं. पुं.) शरीर, देह।
जीवमातृका–(सं. स्त्री.) सात देवियाँ जो माता के समान जीवों का पालन करती हैं, उनके नाम–कुमारी, धनदा, नन्दा, विमला, मंगला, वला और पद्मा–हैं।
जीवयाज–(सं. पुं.) पशु-वलि देकर किया जानेवाला यज्ञ।
जीवयोनि–(सं.स्त्री.) सजीव जन्तु, जानवर।
जीवरत्न–(सं.पुं.) पुष्पराग, पुखराज मणि।
जीवरा–(हि. पुं.) प्राण।
जीवरि–(हि.पुं.) प्राण धारण की शक्ति।
जीवलोक–(सं.पुं.) मर्त्यलोक, भूलोक, पृथ्वी।
जीव-विज्ञान–(सं. पुं.) प्राणियों की शारीरिक रचना, जीवन-ढंग आदि से संबंधित विज्ञान, प्राणि-शास्त्र।
जीव-विज्ञानी–(सं. पुं.) जीव-विज्ञान का ज्ञाता।
जीववृत्ति–(सं. स्त्री.) पशु पालने का व्यवसाय।
जीव-संक्रमण–(सं. पुं.) जीव का एक शरीर से दूसरे शरीर में गमन।
जीवसुता (सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित हो।
जीवस्थान–(सं. पुं) शरीर का मर्म-स्थान, हृदय।
जीवहत्या, जीवहिंसा–(सं.स्त्री.) प्राणियों का वध, ऐसे वध का दोष।
जीवांतक–(सं. पुं.) व्याध, बहेलिया।
जीवा–(सं. स्त्री.) ज्या, धनुष की डोरी, जीविका, जीवन, प्राण, हरीतकी।
जीवागार–(सं.पुं.) शरीर का मर्मस्थान।
जीवाजून–(हिं. पुं.) पशुपक्षी, कीटादि जीव।
जीवात्मा–(सं. पुं.) देहस्थे आत्मा, चैतन्य स्वरूप एक पदार्थ, जीव।
जीवाधान–(सं. पुं.) शरीर, देह।
जीवाधार–(सं.पुं.) हृदय, आत्मा का स्थान।
जीवानुज–(सं. पुं.) गर्गाचार्य मुनि।
जीविका–(सं. स्त्री.) जीवन का उपाय, भरण-पोषण का साधन, वृत्ति, रोजी।
जीवित–(सं. वि.) जीता हुआ।
जीवित काल–(सं. पुं.) आयु, वय।
जीवितघ्न–(सं. वि.) प्राणनाशक।
जीवितांतक–(सं. वि.) जीवों का वध करनेवाला।
जीवी–(सं. वि.) प्राणधारी, जीनेवाला, जीविका कमानेवाला।
जीवेश–(सं.पु.) परमात्मा, ईश्वर।
जीवेष्टि–(सं. स्त्री.) ग्रह-शांति के लिये किया जानेवाला यज्ञ।
जीह–(हि. स्त्री.) देख 'जीभ', जिह्वा।
जुंवली–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की पहाड़ी भैंस।
जु–(हि. अव्य., सर्व.) देखें 'जो'।
जुअती–(हिं. स्त्री.) देखें 'युवती'।
जुआँ–(हि. पुं.) देखें 'जूँ'।
जुआ–(हिं. पुं.) बाजी लगाकर हार-जीत का खेल, वह लकड़ी का ढाँचा जो बैल के कन्धे पर रखा जाता है, जाँते की मुठिया।
जुआचोर–(हिं. पुं.) वह जुआरी जो दाँव जीतकर भाग जाता है, ठग, वंचक, धोखेबाज।
जुआचोरी–(हिं. स्त्री.) ठगी।
जुआड़ी–(हिं. पुं.) जुआ खेलनेवाला।
जुआर–(हि. स्त्री.) देखें 'ज्वार'।
जुआरा–(हिं. पुं.) एक जोड़ी बैल से एक दिन में जोती जानेवाली जमीन।
जुआरी–(हिं. पुं.) जुआ खेलनेवाला।
जुइँ–(हिं. स्त्री.) छोटी जूँ; सेम, मटर आदि में लगनेवाला छोटा कीड़ा।
जुकाम–(अ. पुं.) सरदी से होनेवाला एक रोग जिसमें नाक बहती, हल्का-सा बुखार बना रहता, तथा सिर भारी-भारी रहता है, सरदी; (मुहा.) **मेंढकी को जुकाम होना**–दीन अवस्था होते हुए भी बड़ों की सी मनमानी या चेष्टा।
जुग–(हिं. पुं.) देखें 'युग', जोड़ा, युग्म, पीढ़ी, चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही कोष्ठ में इकट्ठा होना।
जुगजुगाना–(हि. क्रि. अ.) जगमगाना, मन्द प्रकाश से चमकना, टिमटिमाना, क्रमशः उन्नति की दशा को प्राप्त होना।
जुगजुगी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
जुगत–(हिं. स्त्री.) युक्ति, उपाय, व्यवहार में कुशलता, चतुराई, विनोदपूर्ण उक्ति, चुटकुला।
जुगनी–(हिं. स्त्री.) खद्योत, जुगनू, एक प्रकार का हार।
जुगनू–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बरसाती छोटा कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह रह-रहकर चमकता है, खद्योत, पान के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ गले में पहिनती हैं।
जुगम–(हिं. वि.) देखें 'युग्म'।
जुगल–(हिं. वि.) देखें 'युगल'।
जुगवना–(हिं. क्रि. स.) संचित करना, इकट्ठा करना, सुरक्षित करना, सँभालकर रखना।
जुगादरी–(हिं. वि.) जीर्ण, बहुत पुराना।
जुगाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जुगवना'।
जुगार–(हिं. स्त्री.) जुगाली।
जुगालना–(हिं.क्रि.अ.) चौपायों का पागुर करना।
जुगाली–(हिं.स्त्री.) पशुओं का निगले हुए चारे को गले से थोड़ा-थोड़ा निकालकर दाँत से चबाने की क्रिया, रोमन्थ, पागुर।
जुगुत, जुगुति–(हि. स्त्री.) युक्ति, उपाय।
जुगुप्सक–(सं. वि.) दूसरे की व्यर्थ निन्दा करनेवाला।
जुगुप्सन–(हिं.पुं.) घृणा, निन्दा, बुराई।
जुगुप्सा–(सं.स्त्री.) निन्दा, बुराई, घृणा।
जुगुप्सित–(सं. वि.) घृणित, निन्दित।
जुगुप्सु–(सं. त्रि.) निन्दक, बुराई करनेवाला।
जुगुल–(हिं. वि.) युग्म, जोड़ा।
जुज–(फा.पुं.) अंश, टुकड़ा, भाग, छपे ताव का ८ या १६ पृष्ठों का भँजा हुआ, फार्म;

–बंदी–(स्त्री.) किताब के अलग-अलग फर्मों को सीकर होनेवाली जिल्द-बँधाई।
जुज्झ–(हिं. पुं.) देखें 'युद्ध'।
जुझवाना–(हिं.क्रि.स.) जुझाना, लड़ा देना।
जुझाऊ–(हिं. वि.) युद्ध संबंधी, लड़ाई में काम आनेवाला।
जुझाना–(हिं. क्रि. स.) जूझने को प्रेरित करना।
जुझार–(हिं. वि.) लड़नेवाला, लड़ाका, वीर; (पुं) लड़ाई।
जुट–(हिं. स्त्री.) दो वस्तुओं का समूह, जोड़ी, मंडली, जत्था, दल।
जुटक–(सं. पुं.) सिर के उलझे हुए वाल, जटा।
जुटना–(हिं.क्रि.अ.) संवद्ध होना, संश्लिष्ट होना, सटना, चिपकना, लगा रहना, प्रसंग करना, मैथुन करना, एकत्र होना, प्रवृत्त होना, किसी कार्य में सम्मिलित होना, इकट्ठा होना, मिलना, सहमत होना।
जुटली–(हिं. वि.) लंबे वालों की जटा रखनेवाला।
जुटाना–(हिं.क्रि.स.) दो या अधिक वस्तुओं को परस्पर दृढ़तापूर्वक जोड़ना, भिड़ाना, सटाना, एकत्र करना, जमा करना।
जुटिका–(सं.स्त्री.) शिखा, चुटैया, चुन्दी।
जुट्टी–(हिं. स्त्री.) घास, पुआल आदि का मुट्ठा, अँटिया, सूरन आदि के नये कल्ले, एक ही प्रकार की वस्तुओं का ढेर जो नीचे-ऊपर रखी हों, गड्डी, गाँज; (वि.स्त्री.) संयुक्त, मिली हुई।
जुठार(ल)ना–(हिं. क्रि. स.) उच्छिष्ट करना, किसी खाने-पीने की वस्तु से कुछ खाकर छोड़ देना, जूठा करना, किसी वस्तु में हाथ लगाकर दूसरे के व्यवहार के अयोग्य कर देना।
जुठिहारा–(हिं.पुं.) जूठा खानेवाला मनुष्य।
जुड़ना–(हिं. क्रि.अ.) संयुक्त होना, संभोग करना, एकत्र होना, किसी काम में सहायता देने के लिये तैयार होना, उपलब्ध होना, मिलना, जुरना।
जुड़पित्ती–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर भर चकत्ते पड़ जाते हैं और इनमें खुजली होती है।
जुड़वाँ (हिं.वि., पुं.) एक ही साथ उत्पन्न दो वच्चे, यमल, युग्म।
जुड़वाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'जोड़वाई'।
जुड़ाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'जोड़ाई'।
जुड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) शीतल होना, ठंढा होना, ठंडा करना, प्रसन्न करना।
जुड़वाना–(हिं. क्रि. स.) शान्त करना, ठंढा करना, देखें 'जोड़वाना'।
जुड़ावना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'जुड़ाना'।
जुत–(हिं. वि.) देखें 'युक्त'।
जुतना–(हिं. क्रि.अ.) वैल, घोड़े आदि को हल, गाड़ी आदि में रस्सी से नाधना, कोई काम करने में सपरिश्रम लग जाना, लड़ाई में प्रवृत्त होना, जुटना, हल से भूमि का जोता जाना।
जुतवाना–(हिं.क्रि.स.) दूसरेसे हल चलवाना।
जुताई–(हिं. स्त्री.) देखें 'जोताई', जोतने का काम।
जुताना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जोताना'।
जुतियाना–(हिं. क्रि. स.) जूतों से मारना, निरादर करना, अपमानित करना, तिरस्कार करना।
जुतियौवल, जुतिऔवल–(हिं. स्त्री.) आपस में जूतों की मार।
जुत्थ–(हिं. पुं.) देखें 'यूथ'।
जुथौली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
जुदा–(फा.वि.) अलग, भिन्न, पृथक, निराला।
जुदाई–(फा. स्त्री.) अलग होने का भाव, विलगाव, वियोग।
जुद्ध–(हिं. पुं.) देखें 'युद्ध', लड़ाई।
जुन्हरी–(हिं. स्त्री.) ज्वार नामक अन्न।
जुन्हाई–(हिं. स्त्री.) चन्द्रिका, चाँदनी, चन्द्रमा।
जुबराज–(हिं. पुं.) देखें 'युवराज'।
जुबान–(हिं. स्त्री.) भाषा, जीभ।
जुबानी–(हिं. वि.) मौखिक।
जुमना–(हिं. पुं.) खेत में खाद देने की एक विधि। ,
जुमला–(फा. वि.) कुल, सव।
जुमा–(अ. पुं.) शुक्रवार।
जुमेरात–(अ. स्त्री.) गुरुवार।
जुरझुरी–(हिं. स्त्री.) ज्वर की कँपकँपी, ज्वरांश।
जुरना–(हिं. क्रि.अ.) देखें 'जुड़ना'।
जुरमाना–(हिं. पुं.) देखें 'जुर्माना'।
जुरा–(हिं. स्त्री.) देखें 'जरा'।
जुराना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'जुड़ाना'।
जुराफा–(हिं. पुं.) अफ्रीका का एक पशु।
जुर्म–(अ. पुं.) अपराध, कसूर।
जुर्माना–(अ. पुं.) अपराधी पर न्यायतः लगाया गया अर्थदंड।
जुल–(हिं. पुं.) धोखा, छल, दम-पट्टी।
जुलना–(हिं. क्रि. स.) भटकरना।
जुलबाज–(हिं. पुं.) धूर्त, छली।
जुलबाजी–(हिं. स्त्री.) धूर्तता।
जुलाई–(अं.स्त्री.) अँगरेजी वर्ष का सातवाँ महीना।
जुलाव–(फा. पुं.) दस्त लानेवाली दवा, विरेचन, रेचक औषध।
जुलाहा–(हिं. पुं.) कपड़ा विननेवाला मुसलमान, तन्तुकार, मूर्ख, एक प्रकार का वरसाती कीड़ा।
जुलू–(पुं.) दक्षिण अफ्रीका की एक असभ्य जाति।
जुलूस–(अ. पुं.) वहुत से लोगों का किसी समारोह या उत्सव के सिलसिले में गान-वजाने आदि के साथ-साथ चलना, शोभा-यात्रा, जलूस।
जुलोक–(हिं. पुं.) द्युलोक, वैकुण्ठ।
जुल्फ–(फा. स्त्री.) सिर के लंबे वाल, पट्टा।
जुल्म–(अ. पुं.) अत्याचार।
जुल्मी–(अ. वि.) अत्याचारपूर्ण, उत्पीड़नपूर्ण।
जुवराज–(हिं. पुं.) देखें 'युवराज'।
जुवा–(हिं. पुं.) देख 'जुआ,' द्यूत।
जुवारी–(हिं. पुं.) देखें 'जुआरी'।
जुषाण–(सं. पुं.) यज्ञ सम्वन्धी मन्त्र।
जुष्ट–(सं. पुं.) उच्छिष्ट, जूठन; (वि.) सेवा किया हुआ, प्रसन्न, खुश।
जुहाना, जुहावना–(हिं. क्रि.स.) एकत्रित करना, जुटाना, संचित करना।
जुहार–(हिं. स्त्री.) राजपूतों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन।
जुहारना–(हिं. क्रि. स.) किसी से कुछ सहायता माँगना।
जुही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वड़ा पौधा जिसमें वरसात में सुगन्धित फूल लगते हैं, जूही।
जुहु–(सं. पुं.) प्राची दिशा, पूर्व दिशा।
जुहुराण–(सं. पुं.) चन्द्रमा; (वि.) कपट व्यवहार करनेवाला।
जुहू–(सं.स्त्री.) देख 'जुहु', स्रुवा, यज्ञपात्र।
जुहूवान्–(सं.पुं.) यज्ञ की अग्नि।
जूँ–(हिं. स्त्री.) वालों में पड़नेवाला एक छोटा स्वेदज कीड़ा, ढील।
जूँठ, जूँठन–(हिं.पुं. वि.) देखें 'जूठ', 'जूठा'।
जूँदन–(हिं. पुं.) वन्दर, वानर।
जूँमुँहाँ–(हिं. वि.) धूर्त मनुष्य जो देखने में सीधा-सादा भला आदमी जान पड़े।
जू–(सं. स्त्री.) आकाश, सरस्वती, गमन, गति।
जू–(हिं. अव्य.) एक आदरसूचक शब्द जो व्रज, राजपूताना, वुंदेलखंड आदि स्थानों में वड़े लोगों के नाम के साथ लगाया जाता है, जी।
जूआ–(हिं. पुं.) हार-जीत का खेल, द्यूत,

चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसको पकड़कर यह चलाई जाती है, रथ या गाड़ी के अगले भाग में लगा हुआ वह काठ जो गाड़ी खींचनेवाले बैलों के कंधों पर रहता है।
जूजू–(हिं. पुं.) एक कल्पित भयंकर, जीव; (लोग बच्चों को इसके नाम से डराते हैं); हाऊ।
जूझ–(हिं. पुं., स्त्री.) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।
जूझना–(हिं.क्रि.अ.) लड़ना, रणक्षेत्र म प्राण त्यागना।
जूट–(सं. पुं.) जटा की गाँठ, जूड़ा, लट, (अं.पुं.) पटुआ, पटसन, इसका बना वस्त्र।
जूटक–(सं. पुं.) जटा, केशबन्ध, लट।
जूटना–(हिं. क्रि. स.) जोड़ना।
जूटि–(हिं. स्त्री.) जोड़ी।
जूठन–(हिं. स्त्री.) उच्छिष्ट भोजन, वह भोजन जिसमें से कुछ अंश किसी ने मुँह लगाकर खाया हो, वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने दो-एक बार कर लिया हो, भुक्त पदार्थ।
जूठा–(हिं. वि.) उच्छिष्ट, किसी के खाने से बचा हुआ (भाग), भुक्त, भोग करके अपवित्र किया हुआ; (पुं.) उच्छिष्ट भोजन, जूठन।
जूठी–(हिं. वि.स्त्री.) देखें 'जूठा'।
जूड़–(हिं. वि.) ठंढा, प्रसन्न।
जूड़ा–(हिं.पुं.) सिर के बालों की ग्रन्थि, चोटी, कलँगी, मूँज आदि का पूला, पगड़ी के पीछे का भाग, घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गडुरी जिस पर पानी का घड़ा रखा जाता है।
जूड़ी–(हिं. स्त्री.) जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।
जूत–(सं. वि.) बीता हुआ, खींचा हुआ दिया हुआ।
जूता–(हिं. पुं.) पादत्राण, उपानह, पनहीं, देखें 'पादुका'; (मुहा.) –उठाना–चापलूसी करना, नौकरी करना; –चलाना–लड़ाई-झगड़ा करना, मारपीट करना; जूतों से खबर लेना या बात करना–जूते लगाना या मारना।
जूताखोर–(हिं. वि.) जो जूते खाया करे, निर्लज्ज।
जूती–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों के पहिनने का जूता।
जूतीकारी–(हिं. स्त्री.) जूतों की मार।
जूतीखोर–(हिं. वि.) निर्लज्ज, मार और गाली की परवाह न करनेवाला।
जूती-पैजार–(हिं.स्त्री.) मारपीट, लड़ाई-झगड़ा, जूतों की मार।
जूथ–(हिं.पुं.) देखें 'यूथ'।
जून–(हिं. पुं.) समय, काल, तृण, घास; (अं. पुं.) अँगरेजी वर्ष का छठा महीना।
जूना–(हिं. पुं.) बोझ बाँधने की रस्सी, उसकन।
जूप–(हिं.पुं.) द्यूत, जुआ, विवाह में होनेवाली एक प्रथा जिसमें वर और वधू परस्पर जुआ खेलते हैं, पासा।
जूमना–(हिं.क्रि.अ.) जुटना, इकट्ठा होना
जूर–(हिं. पुं.) संचय, जोड़ाई।
जूरना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'जोड़ना'।
जूरा–(हिं. पुं.) देखें 'जूड़ा'।
जूरी–(हिं.स्त्री.) घास, पत्तों या टहनियों का एक में बँधा हुआ पूला, एक प्रकार का पकवान, सूरन आदि के नये कल्ले।
जूष–(सं.पुं.) झोल, कढ़ी, रसा, पकी या चुरी हुई दाल का पानी।
जूस–(हिं. पुं.) मूँग, अरहर आदि की पकी हुई दाल का पानी, उबाली हुई वस्तु का रसा, युग्म संख्या; –ताक–(पुं.) छोटे लड़कों के खेलने का एक प्रकार का जुआ जिसमें एक लड़का अपनी मुट्ठी में कुछ कौड़ियों को छिपाकर दूसरे से पूछता है कि ये जूस हैं या ताक। यदि वह ठीक बताता है तो उसकी जीत होती है।
जूसी–(हिं. स्त्री.) वह गाढ़ा लसदार रस जो राव से अलग हो जाता है, खाँड़ का पसेव, चोटा।
जूह–(हिं. पुं.) देखें 'यूथ'।
जूहर–(हिं. पुं.) जौहर, राजपूतों की वह प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार जब स्त्रियों को निश्चय हो जाता था कि शत्रुओं का दुर्ग में प्रवेश रोका नहीं जा सकता तो वे चिता पर भस्म हो जाती थीं और पुरुष लोग दुर्ग के बाहर लड़ने के लिए चले जाते थे।
जूही–(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसमें चमेली के समान सुगन्धित फूल होते हैं, सेम, मटर आदि की फलियों में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
जृंभ–(सं. पुं.) जँभाई, जम्हाई, उबासी, आलस्य।
जृंभक–(सं. वि) जो सर्वदा जँभाई लेता हो; (पुं.) रुद्रगणों में से एक।
जृंभण–(सं. पुं.) जँभाई लेना, जम्भा।
जृंभमाण–(सं. वि.) जँभाई लेता हुआ।
जृंभा–(सं. स्त्री.) जृंभ, जँभाई, आलस्य।
जृंभित–(सं. वि.) चेष्टा किया हुआ, विकसित।
जेंगना–(हिं. पुं.) जुगनू।
जेंवना–(हिं.क्रि.स.) भक्षण करना, खाना।
जेंवनार–(हिं स्त्री.) देखें 'जेवनार'।
जेंवाना–(हिं. क्रि. स.) भोजन कराना, खिलाना।
जे–(हिं. सर्व.) "जो" का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जेऊ–(हिं. सर्व.) जो।
जेट–(हिं. स्त्री.) समूह, ढेर, मिट्टी का पात्र, रोटियों की तह।
जेटी–(अं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ जहाजों पर माल लादा जाता या उस पर से उतारा जाता है।
जेठ (हिं. पुं.) वैशाख और आषाढ़ के बीच का चान्द्रमास, पति का बड़ा भाई, भसुर; (वि.) अग्रज, वय या उम्र में बड़ा।
जेठरा–(हिं. वि.) जेठा, बड़ा।
जेठवा–(हिं.पुं.) जेठ में होनेवाली कपास।
जेठा–(हिं. वि.) अग्रज, बड़ा, सबसे उत्तम, श्रेष्ठ; –ई–(स्त्री.) जेठापन, वय की बड़ाई।
जेठानी–(हिं. स्त्री.) पति के बड़े भाई (जेठ) की स्त्री।
जेठी–(हिं.वि.) (एक प्रकार का धान) जो चैत में बोया जाता और जेठ में काटा जाता है; –मधु–(स्त्री.) यष्टि-मधु, मुलेठी।
जेठौत, जेठौता–(हिं. पुं.) पति के बड़े भाई (जेठ) का पुत्र।
जेतव्य–(सं.वि.) जेय, जो जीता जा सके।
जेता–(सं. वि.) जयशील, विजयी, जीतनेवाला; (पुं.) विष्णु; (हिं. वि.) जितना।
जेतिक–(हिं.वि.) जितना, जिस परिमाण का।
जेते–(हिं. वि.) जितने।
जेतो–(हिं. वि.) जितना।
जेब–(फा. पुं.) कमीज, कोट आदि में चीजें रखने के लिए लगी हुई थैली, खीसा, पाकिट।
जेबकट–(हिं. पुं.) वह जो चुपके से जेब काटकर उसमें का धन चुरा लेता है, पाकिटमार।
जेबकतरा–(हिं. पुं.) देखें 'जेबकट'।
जेब-खर्च–(हिं. पुं.) निजी खर्च के लिए प्राप्त धन।
जेबघड़ी–(हिं. स्त्री.) पाकिट में रखने की घड़ी।
जेबरा–(अं. पुं.) घोड़े या गधे से मिलता-जुलता एक जंगली पशु।
जेबी–(हिं. वि.) जो जेब में रखा जा सके।

जेमन–(सं. पुं.) भक्षण, भोजन, जीमना।
जेय–(सं. वि.) जेतव्य, जीतने योग्य।
जेर–(हिं. पुं.) वह झिल्ली जिसमें गर्भ का बालक रहता और पुष्ट होता है, आँवल।
जेरी–(हिं. स्त्री.) चरवाहे की लाठी जिससे वह कँटीली झाड़ियाँ काटता है, फरुही के आकार का एक उपकरण।
जेल–(अं. पुं.) वह स्थान जहाँ न्यायतः दंडित अपराधी कैद की अवधि तक बंद रखे जाते हैं कैदखाना, कारा; (मुहा.) –काटना–जेल की सजा भुगतना।
जेलखाना–(हिं. पुं.) जेल।
जेली–(हिं. स्त्री.) घास-भूसा जमा करने का एक साधन या औजार।
जेवड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'जेवरी'।
जेवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'जीमना'।
जेवनार–(हिं. स्त्री.) बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना, पंगत, भोज, दावत।
जेवर–(फा. पुं.) गहना, आभूषण।
जेवरा–(हिं. पुं.) रस्सा।
जेवरात–(फा. पुं.) 'जेवर' का बहु. रूप।
जेवरी–(हिं. स्त्री.) डोरी, रस्सी।
जेष्ठ–(हिं.पुं.,वि.) जेठ महीना, अग्रज, बड़ा।
जेष्ठा–(हिं. स्त्री.) देखें 'ज्येष्ठा'।
जेहड़–(हिं. स्त्री.) पानी से भरे हुए अनेक घड़े जो एक के ऊपर एक रखे रहते हैं।
जेहन–(अ. पुं.) बुद्धि, मेधा, दिमाग।
जेहनदार–(अ. वि.) बुद्धिमान, मेधावी।
जेहर–(हिं. पुं.) स्त्रियों के पैर का एक आभूषण, पायजेब।
जेहल, जेहलखाना–(हिं. पुं.) देखें 'जेल, जेलखाना'।
जेहि–(हिं. सर्व.) जिसको, जिससे।
जै–(हिं. स्त्री.) देखें 'जय'; (वि.) जितने, जितनी संख्या में।
जैजैकार–(हिं. स्त्री.) देखें 'जयजयकार'।
जैजैवंती–(हिं. स्त्री.) प्रातःकाल में गाई जानेवाली एक रागिनी, जयजयवंती।
जैढक–(हिं. पुं.) जंगी ढोल, विजय-ढोल।
जैत–(हिं. पुं.) अगस्त्य की जाति का एक वृक्ष; (स्त्री.) जीत।
जैतपत्र–(हिं. पुं.) देखें 'जयपत्र'।
जैतवार–(हिं. वि.) विजयी, जीतनेवाला।
जैती–(हिं. स्त्री.) खेत में होनेवाली एक प्रकार की घास।
जैतून–(हिं. पुं.) एक सदाबहार वृक्ष जिसके फल और उससे निकाला हुआ तेल दवा के काम आता है।
जैत्र–(सं. वि.) विजयी, जीतनेवाला; (पुं.) पारा।
जैत्री–(सं. स्त्री.) जातीकोष, जावित्री।
जैन–(सं. पुं.) भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय जिसमें अहिंसा परम धर्म माना जाता है। (यह दिगम्बर और श्वेताम्बर दो श्रेणियों में विभक्त है। इस धर्म में ईश्वर नहीं माना जाता); जैनी।
जैनी–(हिं. पुं.) जैन मतावलम्बी; (वि.) जैनों का।
जैनु–(हिं. पुं.) भोजन।
जैन्य–(सं. वि.) जैन संबंधी।
जैपत्र–(हिं. पुं.) देखें 'जयपत्र'।
जैपाल–(हिं. पुं.) जमालगोटे का बीज।
जैमाल––(हिं. स्त्री.) देखें 'जयमाला'।
जैमाला–(हिं. स्त्री) देखें 'जयमाला'।
जैमिनि–(सं. पुं.) कृष्णद्वैपायन के शिष्य, (पूर्व मीमांसा नामक दर्शन इन्हीं के द्वारा प्रणीत है)।
जैव–(स. वि.) जीव या जीवन संबंधी, बृहस्पति संबंधी।
जैसा–(हिं. वि.) जिस आकृति या गुण का, जिस प्रकार का, जितना, जिस परिमाण का, सदृश, तुल्य, समान, बराबर; (अव्य.) जिस मात्रा में, जिस तरह; जैसे का तैसा–ज्यों का त्यों; जैसा चाहिये–जैसा उचित हो, उपयुक्त।
जैसी–(हिं.वि.) 'जैसा' का स्त्रीलिंग रूप।
जैसे–(हिं. अव्य.) जिस प्रकार या ढंग से; (मुहा.)–तैसे–(अव्य.) किसी न किसी प्रकार से, कठिनाई से।
जैसो–(हिं. वि.) देखें 'जैसा'।
जों–(हिं. अव्य.) देखें 'ज्यों'।
जोंक–(हिं. स्त्री.) पानी का एक कीड़ा जो जीवों के शरीर से चिपककर उनका रक्त चूसता है, सेवार से बनाया हुआ चीनी शोधने का छन्ना, वह मनुष्य जो अपना स्वार्थ निकालने के लिये पिंड न छोड़े।
जोंकी–(हिं. स्त्री.) दोहरी नोक का काँटा जो दो पटरों को जोड़ने के काम में आता है, देखें 'जोंक'।
जोंदरी, जोंधरी–(हिं. स्त्री.) छोटी ज्वार, बाजरा।
जोंधया–(हिं. स्त्री.) चन्द्रिका, चाँदनी।
जो–(हिं. सर्व.) एक संबंधवाचक सर्वनाम जो दो उपवाक्यों को जोड़ता है; (अव्य. यदि, अगर।
जोअना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'जोवना'।
जोइ–(हिं. स्त्री.) जाया, पत्नी, स्त्री; (सर्व.) जो।
जोइसी–(हिं. पुं.) ज्योतिषी।
जोउ–(हिं. सर्व.) जो।
जोख–(हिं.स्त्री.) तौल, जोखने की क्रिया।
जोखना–(हिं.क्रि.स.) तौलना, जाँचना।
जोखा–(हिं. पुं.) लेखा, हिसाब-किताब।
जोखिम–(हिं. स्त्री.) विपत्ति की आशंका, वह काम जिसमें बड़ी आपत्ति आने की संभावना हो; (मुहा.)–उठाना–ऐसा कार्य करना जिसमें कोई बड़ी आपत्ति आने का भय हो; जान जोखिम होना–जान जाने की आशंका होना।
जोखों–(हिं. स्त्री.) देखें 'जोखिम'।
जोगंधर–(हिं. पुं.) शत्रु के चलाये हुए अस्त्र से अपना बचाव करने की युक्ति, (विश्वामित्र से श्रीरामचन्द्रजी ने यह युक्ति सीखी थी।)
जोग–(हिं. पुं.) देखें 'योग'; (हिं. अव्य.) के समीप, के वास्ते।
जोगड़ा–(हिं.पुं.) पाखंडी, ढोंगी।
जोगता–(हिं. स्त्री.) योग्यता।
जोगवना (हिं. क्रि. स.) यत्न से रखना, रक्षित रखना, संचित करना, बटोरना, सत्कार करना, जाने देना, पूरा करना।
जोगसाधन–(हिं. पुं.) देखें 'योग-साधन'।
जोगानल–(हिं. पुं.) योगानल, योग से उत्पन्न अग्नि।
जोगिंद–(हिं. पुं.) देखें 'योगींद्र'।
जोगिन–(हिं. स्त्री.) जोगी की स्त्री, विरक्त स्त्री, पिशाचिनी, रणदेवी, देखें 'योगिनी'।
जोगिनिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लाल रंग की ज्वार, एक प्रकार का अगहनियाँ धान।
जोगिनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'योगिनी'।
जोगिया–(हिं. वि.) जोगी संबंधी, गैरिक, गेरू के रंग में रँगा हुआ, गेरू के रंग का।
जोगी–(हिं. पुं.) योग करनेवाला, योगी, एक प्रकार के भिक्षुक जो गेरुआ वस्त्र पहिने रहते हैं और सारंगी बजाकर भिक्षा माँगते हैं।
जोगीड़ा–(हिं. पुं.) वसन्त ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का चलता गाना, जोगीड़ा-गायकों की मंडली।
जोगीश्वर–(हिं. पुं.) देखें 'योगीश्वर'।
जोगू–(हिं. वि.) स्तुति करनेवाला।
जोगेश्वर–(हिं. पुं.) देखें 'योगेश्वर'।
जोग्य–(हिं. वि.) देखें 'योग्य'।
जोटा–(हिं. पुं.) जोड़ा, युग्म।
जोटिंग–(सं. पुं.) महाव्रती, महादेव।
जोटी–(हिं.स्त्री.) जोड़ी, बराबरी का साथी।
जोड़–(हिं.पुं.) बन्धन, युग्म, तुल्य, वस्तु,

गणित में कई संख्याओं का योग, जोड़ने की क्रिया, योगफल, जोड़ने का टुकड़ा, शरीर का सन्धिस्थान, मेल, समानता, बराबरी, जोड़ा, एक प्रकार की दो वस्तुएँ, छल, कपट, संधि-स्थान, वह स्थान जहाँ दो टुकड़े जुटे हों, किसी कार्य में प्रयुक्त होनेवाली आवश्यक सामग्री, मेल-मिलाप; -तोड़-(पुं.) छल-कपट, दावँ-पेच।

जोड़ती-(हिं. स्त्री.) अनेक संख्याओं का योग, जोड़।

जोड़(र)न-(हिं. स्त्री.) जामन जो दही जमाने के लिये दूध में डाला जाता है।

जोड़ना-(हिं. क्रि. स.) टूटे हुए पदार्थ के टुकड़ों को मिलाकर एक करना, संबद्ध करना, दो वस्तुओं को दृढ़ता से एक करना, सामग्रियों को क्रम से रखना, एकत्र करना, संग्रह करना, प्रज्वलित करना, जड़ना, संबंध स्थापित करना, गिनती में शामिल करना।

जोड़वाँ-(हिं. वि.) एक ही साथ उत्पन्न, एक ही माता के दो बच्चे, यमज, जुड़वाँ।

जोड़वाई-(हिं. स्त्री.) जोड़ने की क्रिया, जोड़वाने का शुल्क।

जोड़वाना-(हिं. क्रि. स.) जोड़ने का काम दूसरे से कराना।

जोड़ा-(हिं. पुं.) एक तरह के दो पदार्थ, दोनों पैरों के जूते, एक साथ पहिने जाने-वाले दो कपड़े, एक आकार की दो वस्तुएँ, स्त्री-पुरुष, नर-मादा, वर-कन्या, जोड़।

जोड़ाई-(हिं. स्त्री.) दो या अधिक वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया, शुल्क आदि, दीवार बनाने में ईंट या पत्थर के टुकड़ों को जोड़ने की क्रिया।

जोड़ी-(हिं. स्त्री.) एक ही तरह के दो पदार्थ, एक साथ पहिनने के वस्त्र, स्त्री-पुरुष, नर-मादा, दो घोड़ों से खींची जानेवाली गाड़ी, मँजीरा, मुगदर का जोड़ा, जोते जानेवाले दो बैल।

जोत-(हिं. स्त्री.) बैल, घोड़े आदि जोते जानेवाले पशुओं के गले की रस्सी जिसका एक छोर पशु के गले में बँधा रहता है तथा दूसरा हल या गाड़ी में बँधा होता है, तराजू के पलरों में बँधी हुई रस्सी, उतनी भूमि जितनी किसी असामी को जोतने-बोने के लिये दी गई हो, जोतने की क्रिया; -दार-(पुं.) वह असामी जिसको जोतने-बोने के लिए कुछ भूमि मिली हो, काश्तकार।

जोतना-(हिं. क्रि. स.) रथ, गाड़ी, कोल्हू आदि चलाने के लिये उसमें बैल आदि बाँधना, हल चलाना, किसी को कोई काम करने के लिए लगाना, गाड़ी आदि में बैल आदि नाधकर तैयार करना, खेत में हल चलाना।

जोता-(हिं. पुं.) जुए में की वह पतली रस्सी जो बैल की गरदन में फँसाई जाती है, बड़ी घरन, हल जोतनेवाला हलवाहा।

जोताई-(हिं. स्त्री.) जोतने का काम, जोतने का पारिश्रमिक।

जोति-(हिं. स्त्री.) देखें 'ज्योति', देवी-देवता के सामने जलाने का घी का दीपक।

जोतिक, जोतिसी-(हिं. पुं.) ज्योतिषी।

जोतिर्लिंग-(हिं. पुं.) देखें 'ज्योतिर्लिंग'।

जोती-(हिं. स्त्री.) ज्योति, घोड़े की लगाम, तराजू के पल्ले की रस्सी।

जोतन-(हिं. स्त्री.) वह रस्सी जिससे जुए की ऊपर-नीचे की लकड़ियाँ बँधी होती हैं।

जोधा-(हिं. पुं.) देखें 'योद्धा', लड़नेवाला।

जोना-(हिं. क्रि. स.) देखना।

जोनि-(हिं. स्त्री.) देख 'योनि'।

जोन्ह, जोन्हाई-(हिं. स्त्री.) चन्द्रिका।

जोप-(हिं. पुं.) देखें 'यूप'।

जोपै-(हिं. अव्य.) यदि, यद्यपि।

जोबन-(वि. पुं.) यौवन, युवावस्था, उभरा स्तन।

जोम-(अ. पु.) गर्व, घमंड, जोश।

जोय-(हिं. स्त्री.) जोरू, पत्नी; (सर्व.) जो, जिस।

जोयसी-(हिं. पुं.) देखें 'ज्योतिषी'।

जोर-(फा. पु.) बल, शक्ति, वेग, तेजी, प्रभाव, प्रभुत्व, सहारा, जबरदस्ती, मेहनत, श्रम; -जुल्म-(पुं.) अन्याय-अत्याचार; (मुहा.) -आजमाना-बल की परीक्षा करना; -करना-(किसी रोग आदि का) बढ़ना; -चलना-वश चलना; -दिखाना-अपनी शक्ति या प्रभुता दिखाना; -देना-आग्रह करना, सहारा देना; -पकड़ना-बढ़ना, बल प्राप्त करना; -बाँधना-बल प्राप्त करना; -मारना-बहुत श्रम या बल लगाना; जोरों से-बहुत आग्रहपूर्वक।

जोरई-(हिं. स्त्री.) बहुत भारी लंबी बरन, बोझ आदि को बाँस के मजबूत टुकड़ों और मोटे रस्सों के सहारे कई मनुष्यों द्वारा ढोने की क्रिया; एक प्रकार का हरा कीड़ा जो फसल की पत्तियों को खा जाता है।

जोरदार-(फा. वि.) जोर या बलवाला, वेगवान्।

जोर-शोर-(फा. पुं.) बहुत अधिक जोर या बल।

जोरना-(हिं. क्रि. स.) जोड़ना, मिलाना।

जोराजोरी-(हिं. स्त्री.) शक्ति, बलप्रयोग; (अव्य.) बलपूर्वक।

जोरी-(हिं. स्त्री.) जोड़ी।

जोरू-(हिं. स्त्री.) भार्या, पत्नी, घरवाली, स्त्री।

जोल-(हिं. पु.) झुंड, समूह।

जोलाहल-(हिं. स्त्री.) अग्नि, अग्नि की ज्वाला।

जोलाहा-(हिं. पुं.) देखें 'जुलाहा'।

जोली-(हिं. स्त्री.) जोड़ी, बराबरी।

जोवना-(हिं. क्रि. स.) देखना, जोहना, ढूँढ़ना, आसरा देखना।

जोश-(फा. पुं.) उमंग, उत्साह, आवेग, उफान, उबाल; (मुहा.) -में आना-क्रोधित होना।

जोशन-(फा. पु.) भुजाओं में पहनने का गहना।

जोशाँदा-(फा. पु.) काढ़ा, क्वाथ।

जोशीला-(हिं. वि.) जिसम खूब जोश हो, आवेगपूर्ण।

जोसी-(हिं. पुं.) देखें 'ज्योतिषी'।

जोष-(हिं. स्त्री.) स्त्री, नारी; (सं. पुं.) सुख, आराम।

जोषक-(सं. पु.) सेवक, टहलुआ।

जोषण-(सं. पु.) आराम, सेवा।

जोषिका-(सं. स्त्री.) कलियों का समूह।

जोषिता-(सं. स्त्री.) स्त्री, नारी।

जोषी-(हिं. पु.) ज्योतिषी, गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।

जोह-(हिं. स्त्री.) खोज, प्रतीक्षा, कृपा-दृष्टि।

जोहन-(हिं. स्त्री.) प्रतीक्षा, खोज।

जोहना-(हिं. क्रि. स.) देखना, ताकना, प्रतीक्षा करना, राह देखना, ढूँढ़ना, पता लगाना।

जोहार-(हिं. स्त्री.) अभिवादन, नमस्कार, प्रणाम, जुहार।

जोहारना-(हिं. क्रि. स.) जोहार करना।

जौं-(हिं. अव्य.) यदि, जो, ज्यों।

जौंकना-(हिं. क्रि. अ.) क्रोध में चिल्लाकर बोलना।

जौंची-(हिं. स्त्री.) गेहूँ या जौ की उपज में होनेवाला एक रोग।

जौंराभौंरा-(हिं. पुं.) महल या गढ़ के

भीतर की वह गुप्त कोठरी जिसमें कोष आदि रहता है; (पुं.) दो बालकों का जोड़ा।
जौ–(हि. पुं.) गेहूँ की तरह का एक अन्न, यव, एक तौल जो छः राई के बराबर होती है; (अव्य.) जब, यदि।
जौ-केराई–(हि. स्त्री.) जौ जिसमें मटर मिला हो।
जौख–(हि. पुं.) सेना, झुंड, जत्था, पक्षि-समूह।
जौगढवा–(हि. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।
जौचना–(हि. पुं.) चना मिला हुआ जव।
जौजा–(अ. स्त्री.) जोरू, पत्नी।
जौतुक–(हि. पुं.) यौतुक, दहेज।
जौधिक–(सं. पुं.) खड्ग के बत्तीस हाथों में से एक।
जौन–(हि. सर्व.) जो; (वि.) जो; (पुं.) यवन।
जौ पै–(हि. अव्य.) यदि।
जौवति–(हि. स्त्री.) युवती।
जौरा–(हि. पुं.) नाऊ-बारी आदि को उनके काम के बदले दिया जानेवाला अन्न।
जौशन–(फा. पुं.) देखें 'जोशन'।
जौहर–(हि. पुं.) दुर्ग में राजपूत स्त्रियों के जलने के लिये बनाई हुई चिता, प्रबल शत्रु द्वारा गढ़ के पराजय की संभावना देखकर राजपूत स्त्रियों का जलती हुई चिता में प्रवेश करके एक साथ प्राण देना, आत्म-दाह; (अ. पुं.) रत्न, मणि, गुण, सार; –दार–(वि.) जिसमें जौहर हो, रत्न-जटित।
जौहरी–(हि. पुं.) रत्न बेचनेवाला, रत्नों की परख करनेवाला, गुणग्राहक, किसी वस्तु के गुणदोष को पहिचाननेवाला, पारखी।
ज्ञ–(यह संयुक्त अक्षर 'ज' और 'ञ' के योग से बनता है; (सं. पुं., वि.) ज्ञानी, जाननेवाला, ब्रह्मा, पंडित, बुधग्रह, मंगल ग्रह।
ज्ञक–(सं. वि.) ज्ञाता, जाननेवाला।
ज्ञपित–(सं. वि.) जाना हुआ, तुष्ट किया हुआ, देखा हुआ, ज्ञात किया हुआ।
ज्ञप्त–(सं. वि.) ज्ञापित, जाना हुआ।
ज्ञप्ति–(सं. स्त्री.) बुद्धि, तुष्टि, स्तुति, विज्ञप्ति, जतलाने की क्रिया।
ज्ञा–(सं. स्त्री.) जानकारी, (कविता में) आज्ञा।
ज्ञात–(सं. वि.) विदित, प्रतीत, अवगत, जाना हुआ।
ज्ञातक–(सं. वि.) विदित, जाना हुआ।
ज्ञात-यौवना–(सं. स्त्री.) वह मुग्धा नायिका जिसको अपनी युवावस्था का ज्ञान हो।
ज्ञातव्य–(सं. वि.) ज्ञेय, जो जाना जा सके।
ज्ञात-सिद्धांत–(सं. पुं.) वह जो शास्त्रों को अच्छी तरह जानता हो।
ज्ञातसार–(सं. पुं.) वह जो किसी विषय के तत्व को जानता हो।
ज्ञाता–(हि. पुं.) जानकार, जाननेवाला।
ज्ञाति–(सं. पुं.) एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य, बान्धव, गोती, सपिंड; (स्त्री.) जाति।
ज्ञातित्व–(सं. पुं.) ज्ञाति का धर्म, कर्म या व्यवहार।
ज्ञातिभेद–(सं. पुं.) ज्ञाति से विच्छेद, आपस की फूट।
ज्ञातृत्व(सं. पुं.) ज्ञात होना, जानकारी, विज्ञता।
ज्ञातेय–(सं. पुं.) ज्ञाति, कुल, वंश।
ज्ञान–(सं. पुं.) बोध, प्रतीति, जानकारी, बुद्धि, तत्त्वज्ञान, यथार्थ ज्ञान, परब्रह्म, विष्णु; –कल्प–(पुं.) शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम; –कांड–(पुं.) वेद के तीन विभागों में से एक, इसमें ब्रह्म आदि का विचार है; –कृत–(वि.) बुद्धिपूर्वक या जानबूझकर किया हुआ; –केतु–(पुं.) ज्ञान का चिह्न; –गर्भ–(वि.) ज्ञानयुक्त, जिसमे ज्ञान हो; –गोचर–(वि.) ज्ञानेन्द्रियों से जानने योग्य; –चक्षु–(पुं.) पण्डित, विद्वान्; –द–(वि.) ज्ञानदायक, ज्ञान देनेवाला; –दाता–(पुं.) ज्ञानदेनेवाला गुरु; –दुर्बल–(वि.) ज्ञानहीन, मूर्ख; –पति–(पुं.) ज्ञान का उपदेश करनेवाला, गुरु, परमेश्वर; –मद–(पुं.) ज्ञानी होने का गर्व; –मय–(वि.) ज्ञान से पूर्ण; (पुं.) परमेश्वर; –यज्ञ–(पुं.) ब्रह्मज्ञान; –योग–(पुं.) ज्ञान-प्राप्ति का उपाय, ब्रह्मप्राप्ति के लिये निष्ठा विशेष; –वान्–(वि.) ज्ञानी, जिसको ज्ञान हो; –वापी–(स्त्री.) काशी में इस नाम का एक तीर्थ; –वृद्ध–(वि.) जिसको अधिक ज्ञान हो; –साधन–(पुं.) तत्वज्ञान का साधन; –हत–(वि.) जिसका ज्ञान भ्रष्ट हो गया हो।
ज्ञानापन्न–(सं. वि.) ज्ञान-प्राप्त, ज्ञानी, बुद्धिमान्।
ज्ञानी–(सं. वि., पुं.) ज्ञानयुक्त, ब्रह्मज्ञानी, आत्मज्ञानी, जिसको सच्चा ज्ञान हो।
ज्ञानेंद्रिय–(सं. पुं.) वे इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का ज्ञान होता है, ये पाँच हैं—श्रोत्रेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय, दर्शनेन्द्रिय, रसना और घ्राणेन्द्रिय।
ज्ञानोदय–(सं. पुं.) ज्ञान की उत्पत्ति।
ज्ञापक–(सं. वि.) बोधक, सूचक, जतानेवाला।
ज्ञापन–(सं. पुं.) जताने या बतलाने का कार्य, सूचना।
ज्ञापनीय–(सं. वि.) निवेदनीय, जो बतलाने के योग्य हो।
ज्ञापयिता–(सं. वि.) ज्ञापक।
ज्ञापित–(सं. वि.) सूचित, बतलाया हुआ।
ज्ञाप्ति–(सं. स्त्री.) ज्ञापन, सूचित करने का कार्य।
ज्ञेय–(सं. वि.) ज्ञातव्य, ज्ञानयोग्य, जिसका जानना योग्य हो, जानने योग्य।
ज्ञेय-ज्ञ–(सं. वि.) आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञ, सिद्ध।
ज्ञेयता–(सं. स्त्री.), **ज्ञेयत्व**–(सं. पुं.) बोध।
ज्या–(सं. स्त्री.) धनुष की डोरी, चिल्ला, किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा, पृथ्वी, माता, वह लम्ब-रेखा जो किसी चाप के एक छोर से दूसरे छोर तक बढ़ाने से मिलती है; –घोष–(पुं.) धनुष की टंकार।
ज्यादती–(हि. स्त्री.) आधिक्य, उत्पीड़न, अत्याचार, जुल्म।
ज्यादा–(फा. वि.) अधिक, बहुत।
ज्याना–(हि. क्रि. स.) जीवित करना।
ज्यामिति–(सं. स्त्री.) गणित शास्त्र का वह विभाग जिसके द्वारा भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण, समतल, घन-परिमाण आदि विषयों का निरूपण होता है।
ज्यायस्–(सं. वि.) वृद्ध, जीर्ण, पुराना, प्रशस्त, बढ़िया।
ज्यावना–(हि. क्रि. स.) देखें 'जिलाना'।
ज्यूँ–(हि. अव्य.) देखो 'ज्यों'।
ज्येष्ठ–(सं. वि.) अति वृद्ध, बूढ़ा, बड़ा, उत्तम; (पुं.) जेठ का महीना, परमेश्वर, प्राण।
ज्येष्ठतम–(सं. वि., पुं.) सब से बड़ा, इन्द्र।
ज्येष्ठता–(सं. स्त्री.) श्रेष्ठता, बड़प्पन, बड़ाई।
ज्येष्ठतात–(सं. पुं.) पिता के बड़े भाई।
ज्येष्ठत्व–(सं. पुं.) ज्येष्ठता, बड़ाई।

ज्येष्ठा–(सं. स्त्री.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से अठारहवाँ नक्षत्र, (यह तीन तारों से बना हुआ कुंडल के आकार का है), छिपकली, बीच की (मध्यमा) अँगुली, गंगा, वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा पति को अधिक प्यारी हो, अलक्ष्मी, केले का पेड़; (वि.स्त्री.) बड़ी।
ज्येष्ठामलक–(सं.पुं.) निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़।
ज्येष्ठाश्रम–(सं. पुं.) उत्तमाश्रम, गृहस्थ।
ज्यों–(हि. अव्य.) जिस प्रकार, जिस रूप से, जैसे, जिस ढंग से, जिस क्षण में; **-त्यों**–किसी न किसी प्रकार से; **-त्यों-करके**–जैसे-तैसे; **–ज्यों–** जितना; **–ही**–जिस क्षण।
ज्योतिःशास्त्र–(सं. पुं.) सूर्यादि ग्रह, काल आदि का बोध करानेवाला शास्त्र, ज्योतिष।
ज्योतिःशिखा–(सं. स्त्री.) विषम वर्ण-वृत्तों का भेद।
ज्योति–(सं. स्त्री.) प्रकाश, उजाला, अग्निशिखा, ज्वाला, सूर्य, नक्षत्र, आँख की पुतली के बीच का बिंदु, दृष्टि, मेथी, विष्णु का एक नाम।
ज्योतिक–(हि. पु.) देख 'ज्योतिषी'।
ज्योतित–(हिं. वि.) प्रकाशित।
ज्योतिरिंगण–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
ज्योतिरीश–(सं. पुं.) सूर्य, परमेश्वर।
ज्योतिर्मय–(सं. वि.) प्रकाशमय, जगमगाता हुआ।
ज्योतिर्माली–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
ज्योतिर्मुख–(सं. पुं.) श्रीरामजी के एक अनुचर का नाम।
ज्योतिर्लता–(सं. स्त्री.) मालकँगनी।
ज्योतिर्लिंग–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
ज्योतिर्लोक–(सं. पु.) ध्रुवलोक।
ज्योतिर्विद्–(सं. पुं.) ज्योतिष जाननेवाला, ज्योतिषी।
ज्योतिर्विद्या–(सं. स्त्री.) ज्योतिष।
ज्योतिर्बीज–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
ज्योतिर्हस्ता–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।
ज्योतिश्चक्र–(सं. पुं.) नभमंडल में स्थित मेषादि बारह राशियों तथा नक्षत्रों का मंडल।
ज्योतिष–(सं. पुं.) वह विद्या या शास्त्र जिससे आकाशस्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिक्रमा, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है।
ज्योतिषिक–(सं. पुं.) ज्योतिष शास्त्र का पढ़नेवाला; (वि.) ज्योतिष संबंधी;
ज्योतिषी–(हिं. पुं.) ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला मनुष्य, दैवज्ञ, गणक।
ज्योतिष्क–(सं. पुं.) मेथी, चीता, ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह।
ज्योतिष्का–(सं. स्त्री.) मालकँगनी।
ज्योतिष्टोम–(सं. पुं.) एक यज्ञ जिसमें सोलह ब्राह्मणों की आवश्यकता होती है।
ज्योतिष्ना–(हिं. स्त्री.) ज्योत्स्ना।
ज्योतिष्पथ–(सं. पुं.) आकाश, अंतरिक्ष।
ज्योतिष्पुंज–(सं. पुं.) नक्षत्र-समूह।
ज्योतिष्मती–(सं. स्त्री.) एक लता का नाम, मालकँगनी, योगशास्त्रोक्त सत्व-प्रधान एक चित्तवृत्ति, रात्रि, एक वैदिक छन्द का नाम।
ज्योतिष्मान्–(सं.वि.) प्रकाशयुक्त; (पुं.) सूर्य।
ज्योतीरथ–(स. पुं.) ध्रुव नक्षत्र।
ज्योतीरस–(सं. पुं.) एकप्रकार का रत्न।
ज्योत्स्ना–(सं. स्त्री.) कौमुदी, चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी रात, दुर्गा, प्रभात-काल; **–कोली**–(स्त्री.) वरुण के पुत्र पुष्कर की पत्नी; **–प्रिय**–(पुं.) चकोर, चकवा; **–वृक्ष**–(पुं.) दीपाधार, दीयट।
ज्योत्स्नेश–(सं. पुं.) ज्योत्स्ना के अधिपति चन्द्र।
ज्योनार–(हिं. स्त्री.) पका हुआ भोजन, रसोई, भोज।
ज्योरा–(हिं. पुं.) खेती तैयार हो जाने पर कृषक द्वारा गाँव के नाई, धोबी आदि को दिया जानेवाला अन्न।
ज्योहत, ज्योहर–(हिं. पुं.) देखें 'जौहर'।
ज्यौ–(हिं. अव्य.) यदि, जो, (यह शब्द बहुधा कविता में प्रयुक्त होता है।)
ज्यौतिष–(सं. वि.) ज्योतिष संबंधी।
ज्यौतिषिक–(सं. पुं.) ज्योतिष शास्त्र जाननेवाला।
ज्यौत्स्न–(सं.वि.) दीप्त, जगमगाता हुआ।
ज्यौत्स्निका–(सं. स्त्री.) चाँदनी रात।
ज्वर–(सं. पुं.) शरीर की अस्वस्थता में उत्पन्न गरमी, ताप, बुखार; **–घ्न**–(वि.) ज्वरनाशक, ज्वर हटानेवाली।
ज्वरांकुश–(सं. पुं.) ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि।
ज्वराग्नि–(सं. पुं) ज्वर रूप अग्नि।
ज्वरार्त–(सं. वि.) ज्वर से पीड़ित।
ज्वरित–(सं. वि.) ज्वर-ग्रस्त, ज्वर से पीड़ित।
ज्वलंत–(सं. वि.) देदीप्यमान, प्रकाशमान, जलता हुआ, अत्यन्त स्पष्ट।
ज्वल–(सं. पुं.) दीप्ति, ज्वाला, प्रकाश।
ज्वलका–(स. स्त्री.) ज्वाला, आग की लपट।
ज्वलन–(सं. वि.) दीप्तिमान, जगमगाता हुआ; (पुं.) अग्नि, ज्वाला, जलन, दाह।
ज्वलिनी–(सं. स्त्री.) मुर्वा नामक लता।
ज्वान–(हिं. पुं.) देखें 'जवान'।
ज्वार–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की फसल जिसके दाने मोटे अन्न में गिने जाते हैं, जुंधरी, समुद्र के जल का उमाड़, भाटा का उलटा।
ज्वारभाटा–(हिं. पु.) समुद्र के जल का चढ़ाव-उतार जो चन्द्रमा के आकर्षण से होता है, (चढ़ाव को ज्वार और उतार को भाटा कहते हैं।)
ज्वाल–(सं. पुं.) अग्नि-शिखा, अग्नि की लौ, आँच, दीप्ति, प्रकाश; (वि.) प्रकाशयुक्त, चमकता हुआ, जलता हुआ; **–माली**–(पुं.) सूर्य।
ज्वाला–(सं. स्त्री.) अग्निशिखा, आग की लपट, ताप, दाह, विष की गरमी।
ज्वालाजिह्व–(सं. पुं.) अग्नि, एक प्रकार का चित्रक वृक्ष, चीता।
ज्वालादेवी–(सं. स्त्री.) शारदा-पीठ (पंजाब) मे स्थित एक देवी, (इनका स्थान काँगड़ा जिले के अन्तर्गत देरा इस्माइल में विद्यमान है।)
ज्वालामुखी–(सं.पुं.) वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, तप्त राख तथा अग्नि-तप्त पिघले हुए पदार्थ समय समय पर अथवा निरन्तर निकलते रहते हैं।
ज्वालावक्त्र–(सं. पुं.) महादेव, शिव।
ज्वाला हलदी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की हलदी जो वस्त्र आदि रँगने के काम में आती है।
ज्वाली–(सं. पुं.) शिव, महादेव, दीप्ति, प्रभा, तेज, चमक; (वि.) शिखा-युक्त।
ज्वालेश्वर–(सं. पुं.) एक प्राचीन तीर्थ विशेष।

झ

झ-संस्कृत और हिन्दी व्यंजन वर्ण का नवाँ वर्ण तथा च-वर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान तालु है।
झंकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'झींखना'।
झंकार–(हि. स्त्री.) झनकार, झींगुर आदि के बोलने का शब्द।
झंकारना–(हि. क्रि. अ., स.) झनझन शब्द उत्पन्न करना या होना।

झंकृत–(हिं. वि.) ध्वनित, झंकार-युक्त।
झंकृति–(सं. स्त्री.) झंकार।
झंखना–(हिं.क्रि.अ.) झींखना, पश्चात्ताप करना।
झंखाड़–(हिं. पुं.) एक प्रकार का घना काँटेदार पौधा, काँटदार पौधों का समूह, जिस पौधे के पत्ते झड़ गये हों, कूड़ा-करकट का ढेर।
झंगा–(हिं. पुं.) देखें 'झगा'।
झँगुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'झगा'।
झंझ–(हिं. पुं.) झाँझ।
झंझट–(हिं. स्त्री.) व्यर्थ का झगड़ा, प्रपंच, टंटा, बखेड़ा।
झंझनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) झंकारना, झनझन शब्द करना।
झंझर–(हिं. पुं.) मिट्टी का पात्र, घड़ा।
झँझरा–(हिं.वि.) झीना, महीन छेदोंवाला।
झँझरी–(हिं. स्त्री.) वह जाली जिसमें बहुत से छोटे छेद हों, भीत में लगी हुई जालीदार खिड़की, दमचूल्हे की पेंदी की जाली, आटा चालने की चलनी; **–दार**–(वि.) जालीदार।
झंझा–(हिं.स्त्री.) वर्षा सहित तीव्र आँधी।
झंझार–(हिं. पुं.) अग्निशिखा, आग की लपट।
झंझावात–(हिं. पुं.) देखें 'झंझा'।
झंझी–(हिं. स्त्री.) फूटी कौड़ी।
झँझोड़ना–(हिं.क्रि.स.) किसी वस्तु को तोड़ने या नष्ट करन की इच्छा से हिलाना, झकझोरना, किसी शिकारी पशु का अपने शिकार को दाँतों से पकड़कर मार डालन के निमित्त झटका देना।
झंडा–(हिं. पुं.) कपड़े का तिकोना या चौकोर टुकड़ा जिसका एक कोना डंडे में लगा रहता है, (इसका व्यवहार संकेत करने, राज्य के प्रतीक के रूप में, उत्सव आदि में होता है), ध्वजा, पताका, फरहरा; (मुहा.) **–खड़ा करना**–सैनिकों को इकट्ठा करने के लिये आह्वान करना; **–गाड़ना**–किसी स्थान में विजय सूचित करने के लिये झंडा फहराना; **–झुकाना**–राजा, राष्ट्रपति आदि की मृत्यु पर राज्य की ओर से शोक-प्रकाशनार्थ झंडे का झुकाया जाना; **झंडे तले आना या जमा होना**–किसी पक्ष, दल आदि की ओर से लोगों का संग्राम, आंदोलन आदि करन के लिए एकत्र होना।
झंडी–(हिं. स्त्री.) छोटा झंडा; **–दार**–(वि.) झंडीवाला, जिसमें झडी लगी हो।
झँडूला–(हिं. वि., पुं.) (वह बच्चा) जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों, जिसका मुंडन न हुआ हो, सघन वृक्ष, मुंडन-संस्कार के पहिले का, सघन, जिसमें असंख्य पत्तियाँ हों।
झंप–(हिं. पुं.) फलाँग, उछाल, कुदान, कूदना, घोड़े के गले का एक प्रकार का गहना।
झँपना–(हिं. क्रि. अ.) ढकना, छिपना, उछलना, कूदना, आक्रमण करना, टूट पड़ना, लज्जित होना, झेंपना।
झँपरिया, झँपरी–(हिं. स्त्री.) वह कपड़ा जिससे पालकी ढाँपी जाती है, ओहार।
झंपान–(हिं. पुं.) एक प्रकार की खटोली जो पहाड़ पर सवारी के काम में आती है, झप्पान।
झंपित–(हिं. वि.) छिपा हुआ।
झँपोला–(हिं. पुं.) छोटा झाँपा, टोकरा।
झंब–(हिं. पुं.) गुच्छा।
झँबकार–(हिं. वि.) झाँवरे रंग का, काला।
झँबराना–(हिं. क्रि. अ.) कुछ काला पड़ जाना, कुम्हलाना, फीका पड़ना।
झँवा–(हिं. पुं.) देखें 'झाँवा'।
झँवाना–(हिं. क्रि. अ.) झाँवर रंग का होना, कुछ काला पड़ जाना, अग्नि का मन्द होना, न्यून होना, घटना, कम होना, कुम्हलाना, मुरझाना; (क्रि.स.) झाँवे से रगड़ा जाना, कुछ काला करना, घटाना, आग वुझाना, मुरझा देना।
झँसना–(हिं. क्रि. स.) सिर या तलवे में तेल की मालिश करना, किसी को बहकाकर उसका धन छीन लेना।
झई–(हिं. स्त्री.) देखें 'झाँई'।
झउआ–(हिं. पुं.) टोकरा, खाँचा, झाबा।
झक–(हिं. स्त्री.) धुन, सनक, झख; (वि.) स्वच्छ, चमकीला।
झकझक–(हिं. स्त्री.) व्यथ की वकवाद, फजूल झगड़ा, वकवक, किचकिच।
झकझका–(हिं.वि.) चमकीला, चमकदार।
झकझकाहट–(हिं. स्त्री.) जगमगाहट, चमकीलापन।
झकझेलना–(हिं. क्रि. स.) झकझोरना।
झकझोर–(हिं. पुं.) झटका, झोंका; (वि.) तेज, जिसमें बहुत झोंका हो।
झकझोर(ल)ना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को पकड़कर झटका देना।
झकझोरा–(हिं. पुं.) झटका, झोंका।
झकड़–(हिं. पुं.) आँधी।
झकना–(हिं. क्रि. अ.) व्यर्थ की बातें करना, वकवक करना, क्रोध में आकर अनुचित बात बोल बठना।
झकाझक–(हिं. वि.) चमकता हुआ, उज्ज्वल, चमकीला।
झकार–(सं. पुं.) 'झ' वर्ण।
झकोर–(हिं.पुं.) हवा का झोंका या झटका।
झकोरना–(हिं.क्रि.अ.) झकोरा मारना।
झकोरा–(हिं. पुं.) वायु का वेग, हवा का झोंका।
झकोल–(हिं. पुं.) देखें 'झकोर'।
झक्क–(हिं. वि.) चमकीला, जगमगाता हुआ; (स्त्री.) झक।
झक्कड़–(हिं. पुं.) तीव्र वायु, अंधड़; (वि.) झक्की।
झक्का–(हिं. पुं.) वायु का तीव्र झोंका।
झक्की–(हिं. वि.) व्यर्थ की वकवाद करनेवाला, जो अपनी धुन में दूसरे की बात न सुने, सनकी।
झखना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'झींखना'।
झख–(हिं. स्त्री.) झींखन का भाव या क्रिया; **–केतु**–(पुं.) कामदेव; **–राज**–(पुं.) मगर; (मुहा.) **–मारना**–व्यर्थ समय विताना।
झखना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'झींखना'।
झखी–(हिं. स्त्री.) मत्स्य, मछली।
झगड़ना–(हिं. क्रि. अ.) वाद-विवाद करना, झगड़ा करना, लड़ना।
झगड़ा–(हिं. पुं.) लड़ाई, बखेड़ा, टंटा।
झगड़ालू–(हिं. वि.) कलहप्रिय, वात-वात में झगड़ा करनेवाला।
झगड़ी–(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'झगड़ालू'।
झगर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
झगरा–(हिं. पुं.) देखें 'झगड़ा'।
झगराऊ–(हिं. वि.) झगड़ालू।
झगरी–(हिं. वि. स्त्री.) झगड़ालू।
झगला, झगा–(हिं. पुं.) छोटे बच्चों के पहिनने का ढीला वस्त्र।
झगुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'झगा'।
झग्गर–(हिं. पुं.) कँटिया, कुएँ में गिरी वस्तुएँ निकालने का साधन।
झझक–(हिं. स्त्री.) भय की आशंका से भड़कने की क्रिया, झिझक, चमक, कुछ क्रोध से बोलना, झुँझलाहट, रह-रहकर होनेवाली सनक या आनेवाली दुर्गन्ध, भड़कना, हिचकना, हिचक।
झझकना–(हिं.क्रि.अ.) डर से भड़कना या बोलना, झुँझलाना, खिजलाना, चौंकना।
झझकाना–(हिं.क्रि.स.) झुँझलाना, खिजलाना, चौकाना, भड़काना, भयभीत करके किसी काम से रोक देना।
झझकार–(हिं. स्त्री.) झझकारने का भाव या क्रिया।

झझकारना–(हि.क्रि.स.) डाँटना, डपटना, दुरदुराना, किसी को अपने आगे तुच्छ बना देना।
झट–(हि.अव्य.) तत्क्षण, तुरंत, उसी समय।
झटक–(हि. पुं.) देख 'झटका'।
झटकना–(हि.क्रि.स.) झटका देना, हलका धक्का देना, झोंका देना, बलपूर्वक किसी वस्तु को लेना, ऐंठना।
झटका–(हि. पुं.) झोंका, झटकने की क्रिया, इस प्रकार किसी पशु का वध करना कि खड्ग के एक ही आघात से वह मर जावे, कुश्ती की एक युक्ति।
झटकारना–(हि. क्रि.स.) झटकना, जमी हुई धूल झाड़ने के लिए वस्त्र को झटका देना।
झटपट–(हि. अव्य.) अति शीघ्र, जल्दी।
झटा–(सं. स्त्री.) शीघ्रता, भुइँआँवला।
झटाका–(हि. अव्य.) देखें 'झटपट।
झटिका–(हि. स्त्री.) झाड़ी।
झटिति–(सं. अव्य.) शीघ्र, जल्दी, झटपट, तत्क्षण।
झड़–(हि. स्त्री.) ताले के भीतर का खटका जो ताली से हटता और ताले को खोलता है, देख 'झड़ी'।
झड़न–(हि. स्त्री.) झड़ने की क्रिया या भाव, झड़ी हुई वस्तु।
झड़ना–(हि.क्रि.अ.) कण, बूंद आदि के रूप में गिरना, अधिक संख्या में गिरना, वीर्यपतन होना, झाड़ा जाना।
झड़प–(हि. स्त्री.) आवेश, लड़ाई, मुठभेड़, क्रोध।
झड़पना–(हि.क्रि.अ.,स.) वेगसे किसी पर टूट पड़ना, आक्रमण करना, लड़ना, झगड़ना, झटकना, किसी से कुछ छीन लेना।
झड़पा-झड़पी–(हि. स्त्री.) हाथा-पाई।
झड़बेरी–(हि. स्त्री.) जंगली बेर।
झड़वाना–(हि.क्रि.स.) झाड़ने का काम दूसरे से कराना।
झड़ाई–(हि. स्त्री.) झाड़ने की क्रिया।
झड़ाक–(हि.अव्य.) तुरत।
झड़ाका–(हि. पुं.) दो लोगों की परस्पर मुठभेड़; (अव्य.) शीघ्रता से, झटपट।
झड़ाझड़–(हि.अव्य.) अविरत, लगातार।
झड़ी–(हि.स्त्री.) बूंद-बूंद करके गिरने का कार्य, महीन-महीन बूंदों की वर्षा, निरन्तर वर्षा, ताले के भीतर का खटका जो चाभी से हटता-बढ़ता है, निरन्तर बहुत-सी बातें कहते जाना, वाक्-प्रवाह।
झणत्कार–(सं. पुं.) झनझन का शब्द।
झन–(हि. स्त्री.) किसी धातुखंड को आघात करने से उत्पन्न शब्द।
झनक–(हि. स्त्री.) धातु आदि के परस्पर टकराने का शब्द, झंकार।
झनकना–(हि. क्रि. अ.) झनकार का शब्द करना, क्रोध में हाथ-पैर पटकना, झुंझलाना।
झनक-मनक–(हि. स्त्री.) आभूषण आदि का मधुर शब्द।
झनकार–(हि. स्त्री.) देख 'झंकार'।
झनझन–(हि.स्त्री.) झनकार, झनझन शब्द।
झनझना–(हि. वि.) झनझन शब्द करनेवाला।
झनझनाना–(हि.क्रि.अ.,स.) झनझन शब्द करना या होना।
झनझनाहट–(हि. स्त्री.) झंकार, झनझन शब्द, झुनझुनी।
झनस–(हि. पुं.) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का प्राचीन बाजा।
झनाझन–(हि. स्त्री.) झंकार, झनझन शब्द; (अव्य.) झनझन शब्द सहित।
झन्नाना–(हि. क्रि. अ.) झनझनाना।
झन्नाहट–(हि.स्त्री.) झनकार, झनझनाहट।
झप–(हि.अव्य.) शीघ्रता से, तुरत, झटपट।
झपक–(हि. स्त्री.) बहुत थोड़े समय तक पलक गिरना, हलकी नींद, झपकी, लज्जा।
झपकना–(हि.क्रि.अ.) पलक गिरना, झपटना, वेग से आगे को बढ़ना, ऊँघना, झपकी लेना, सहमना, लज्जित होना।
झपका–(हि. पुं.) हवा का झोंका, वायु का वेग।
झपकाना–(हि.क्रि.अ.) पलकों को बन्द करना।
झपकी–(हि. स्त्री.) अल्प निद्रा, हलकी नींद, आँख झपकने की क्रिया, चकमा, धोखा।
झपकौंहाँ–(हि. वि.) निद्रा से भरा हुआ, झपकता हुआ, मस्त, निंदासा, नशे में चूर।
झपट–(हि. स्त्री.) झपटन की क्रिया या भाव।
झपटना–(हि.क्रि.अ.) आक्रमण करना, धावा करना, टूट पड़ना; (क्रि. स.) वेग से आगे बढ़कर कोई वस्तु ले लेना।
झपटाना–(हि.क्रि.स.) आक्रमण कराना, उसकाना।
झपट्टा–(हि. पुं.) झपटने का भाव; –मार–(वि.) झपटनेवाला (शेर, बाज आदि की भाँति); (मुहा.) –मारना–(बाज, चील आदि का) अपने शिकार पर अचानक टूट पड़ना।
झपताल–(हि.पुं.) संगीत में पाँच मात्राओं का एक ताल।
झपना–(हि.क्रि.अ.) पलकों का बन्द होना, झुकना, लज्जित होना।
झपवाना–(हि. क्रि. स.) झपने का काम दूसरे से कराना।
झपस–(हि.स्त्री.) गुंजान होने की क्रिया, घनी हरियाली।
झपसना–(हि.क्रि.अ.) वृक्ष या लता की शाखाओं का सघन रूप से फैलना।
झपाका–(हि. पुं.) शीघ्रता, जल्दी; (अव्य.) शीघ्रता से।
झपाटा–(हि. पुं.) झपट, आक्रमण, धावा।
झपाना–(हि.क्रि.स.) आखें बन्द करना, मूंदना।
झपाव–(हि. पुं.) घास काटने का एक प्रकार का यन्त्र।
झपित–(हि. वि.) झपा हुआ, मुंदा हुआ, लज्जित, नींद में भरी हुई (आँखें), झपकौंहा।
झपिया–(हि. स्त्री.) स्त्रियों का गले में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
झपेट–(हि. स्त्री.) देख 'झपट'।
झपेटना–(हि. क्रि. स.) दबोचना, झपट कर दबा लेना।
झपेटा–(हि.पुं.) चपेट, भूत-प्रेत की बाधा।
झपोला–(हि. पुं.) देख 'झँपोला'।
झप्पड़–(हि. पुं.) झापड़, थप्पड़।
झप्पान–(हि. पुं.) चार आदमियों द्वारा ढोने की एक प्रकार की पहाड़ी डोली।
झप्पानी–(हि. पुं.) झप्पान या झंपान ढोनेवाला।
झबझबी–(हि. स्त्री.) कान में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
झबड़ा–(हि. वि.) देखें 'झबरा'।
झबरा, झबरीला–(हि. वि.) जिसके बाल बिखरे हुए तथा लंबे हों।
झबरैरा–(हि. वि.) झबरीला, बिखरे हुए (बाल)।
झबा–(हि. पुं.) देखें 'झब्बा'।
झबार–(हि. स्त्री.) लड़ाई, झगड़ा, बखेड़ा, टंटा।
झबिया–(हि.स्त्री.) छोटा झब्बा या फुंदना।
झब्बा–(हि. पुं.) एक में बँधे हुए रेशम, कलाबत्तू, सूत, घुंघरू आदि का गुच्छा, एक में गुँथी हुई अनेक वस्तुओं का समूह, गुच्छा।
झमक–(हि. स्त्री.) चमक, प्रकाश, उजेला, झमझम शब्द, ठसक की चाल।
झमकना–(हि. क्रि. अ.) झमझम शब्द

करना, दमकना, प्रज्वलित होना, प्रकाश करना, युद्ध में अस्त्रों का चमकना, गहनों को झंकृत करते हुए नाचना, रह-रहकर चमकना, झनकार होना।
झमकाना–(हिं.क्रि.स.) युद्ध में शस्त्रों को चमकाना, चमक उत्पन्न करना, चलते समय गहनों को बजाना या चमकाना।
झमकारा–(हिं. वि.) झमाझम बरसनेवाला (बादल)।
झमकीला–(हिं. वि.) चंचल।
झमझम–(हिं.स्त्री.) घुंघरू आदि के बजने का शब्द, वर्षा होने का शब्द, छमकछम; (वि.) प्रकाशयुक्त, जगमगाता हुआ; (अव्य.) झम-झम के साथ।
झमझमाना–(हिं. क्रि. अ., स.) चमकाना, जगमगाना, झम-झम शब्द होना।
झमझमाहट–(हिं. स्त्री.) झमझम शब्द होने की क्रिया, चमकने का भाव।
झमना–(हिं.क्रि.अ.) नम्र होना, झुकना, दबना।
झमाका–(हिं. पुं.) पानी बरसने अथवा आभूषणों के बजने का शब्द, ठसक, मटक।
झमाझम–(हिं.स्त्री.) घुंघरू आदि के बजने का शब्द; (अव्य.) झमाझम शब्द सहित।
झमाट–(हिं. पुं.) एक में गुँथे हुए अनेक झाड़, झुरमुट।
झमाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) ढकना, छाना, घेरना, झँवाना।
झमेला–(हिं.पुं.) झंझट, झगड़ा, भीड़-भाड़।
झमेलिया–(हिं. पुं.) झगड़ालू, झगड़ा करनेवाला।
झर–(सं. पुं.) निर्झर, पानी गिरने का स्थान, पहाड़ से निकला हुआ झरना, सोता; (हिं. स्त्री.) झुंड, समूह, वेग, पानी की झड़ी, लगातार वृष्टि, ज्वाला, लपट, ताले के भीतर का वह खटका जो ताली से खुलता है।
झरकना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'झलकना, झिड़कना'।
झरझर–(हिं.स्त्री., अव्य.) वह शब्द जो पानी बरसने या वायु चलने से उत्पन्न होता है।
झरझराना–(हिं.क्रि.अ., स.) किसी पदार्थ का (को) झर-झर शब्द करते हुए गिर (रा) ना।
झरन–(हिं. स्त्री.) झरने की क्रिया, झड़न, वह जो झरा हो।
झरना–(हिं. पुं.) जल-प्रवाह, सोता, लोहे आदि की बनी हुई बड़ी चलनी या छलनी एक प्रकार की कलछी जिसका अगला भाग चिपटा तथा छिद्रपूर्ण होता है, पौना; (वि.) झरनेवाला, जो झरता हो; (क्रि. अ.) सोते का ऊँचे स्थान से गिरना, झड़ना।
झरनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'झरन'।
झरप–(हिं. स्त्री.) झकोरा, वेग, झोंका, टेक, चाँड़, परदा, झड़प।
झरपना–(हिं.क्रि.अ.) झोंका देना, झड़पना।
झरबेर, झरबेरी–(हिं. स्त्री.) जंगली बेर।
झरसना–(हिं.क्रि.अ.,स.) झुलसना, झुलसाना।
झरहराना–(हिं.क्रि.अ.,स.) हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना, झटकना, झाड़ना।
झरहरा–(हिं. वि.) देखें 'झँझरा'।
झरा–(हिं. पुं.) पानी से भरे हुए खेत में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का धान।
झराझर–(हिं. अव्य.) झरझर शब्द करते हुए, लगातार।
झरापना–(हिं. क्रि. स.) झड़पना।
झरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'झड़ी'।
झरी–(सं. स्त्री.) स्रोत, पानी का झरना; (हिं. स्त्री.) दरार, वह कर जो किसी हाट या बाजार में सौदा बेचनेवालों से लिया जाता है, झड़ी।
झरुआ–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
झरोखा–(हिं.पुं.) भीत में बनी हुई जालीदार छोटी खिड़की या मोखा, गवाक्ष।
झर्झर–(सं. पुं.) डिंडिम, डमरू, बड़ा ढोल, लोहे का झरना, झाँझ।
झर्झरक–(सं. पुं.) कलियुग।
झर्झरा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, पानी का शब्द; (हिं. स्त्री.) देखें 'झरझर'।
झर्झरावती–(सं. स्त्री.) गंगा, कटसरैया।
झर्झरिका–(सं. स्त्री.) तारादेवी।
झर्झरी–(सं. स्त्री.) झाँझ नामक बाजा।
झर्झरीक–(सं.पुं.) शरीर, देह, देश, चित्र।
झर्रा–(हिं. पुं.) बया पक्षी।
झल–(हिं.पुं.) दाह, जलन, उत्कट इच्छा, संभोग की कामना, क्रोध, रोष, समूह, झुंड।
झलक–(हिं. स्त्री.) आभा, द्युति, चमक, दमक, आकृति का आभास, प्रतिबिम्ब; –**दार**–(वि.) जिससे चमक-दमक हो, चमकीला।
झलकना–(हिं.क्रि.अ.) चमकना, थोड़ा-सा प्रगट होना।
झलकनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'झलक'।
झलका–(हिं. पुं.) शरीर पर पड़ा हुआ छाला, फफोला।
झलकाना–(हिं. क्रि. अ., स.) चमकना, आभास देना, दिखलाना, दरसाना।
झलकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'झलक'।
झलझल–(हिं. स्त्री.) चमक-दमक; (अव्य.) रह-रहकर होनेवाली चमक के साथ।
झलझलाना–(हिं. क्रि. अ., स.) चमकना, चमचमाना, झल्लाना।
झलझलाहट–(हिं. स्त्री.) चमक-दमक, झल्लाने का भाव।
झलना–(हिं.क्रि.अ., स.) किसी पदार्थ से हवा करने के लिये पंखा डुलाना, इधर-उधर हिलना, गर्व करना, किसी छेद को राँगे से भरना, देखें 'झेलना'।
झलमल–(हिं. पुं.) अल्प प्रकाश, चमक, देखें 'झलझल'।
झलमला–(हिं. वि.) चमकीला, चमकता हुआ।
झलमलाना–(हिं.क्रि. अ., स.) चमचमाना, रह-रहकर चमकना, फैलते हुए प्रकाश का हिलना-डोलना, ज्योति का अस्थिर होना।
झलरा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का पकवान।
झलराना–(हिं. क्रि.अ.) फलकर छा जाना।
झलरी–(हिं. स्त्री.) हुडुक नाम का बाजा, झाँझ।
झलवाना–(हिं.क्रि.स.) झलने या झालने का काम किसी दूसरे से कराना।
झलहाया–(हिं. पुं.) ईर्ष्या करनेवाला मनुष्य।
झला–(सं. स्त्री.) कन्या, बेटी, धूप, घाम।
झलाझल–(हिं. वि.,अव्य.) खूब चमकता हुआ, खूब झलमलाता हुआ, चमाचम।
झलाझली–(हिं. वि.) चमकीला, चमकदार
झलाबोर–(हिं. पुं.) साड़ी, डुपट्टे आदि का कलाबत्तू का बुना चौड़ा अंचल, कारचोबी, एक प्रकार की अग्नि-क्रीड़ा, चमक-दमक; (वि.) चमकीला।
झलामल–(हिं. स्त्री.) चमक-दमक; (वि.) चमकीला।
झलि–(सं. स्त्री.) सुपारी।
झल्ल–(सं. पुं.) एक वर्णसंकर जाति, विदूषक, भाँड़, हुडुक नाम का बाजा, सनक, पागलपन।
झल्लकंठ–(सं. पुं.) पारावत, कबूतर।
झल्लक–(सं. पुं.) काँसे आदि धातु का बना हुआ करताल, झाल।
झल्लरा–(सं. स्त्री.) हुडुक नाम का बाजा, झाँझ, छोटे बच्चों के बाल, स्वेद, पसीना।
झल्लरी–(सं. स्त्री.) देखें 'झल्लरा'।
झल्ला–(हिं. पुं.) बड़ी टोकरी, खाँचा, वृष्टि, वर्षा, बौछार; (वि.) जो बहुत गाढ़ा न हो, सनकी, पागल।
झल्लाना–(हिं. क्रि. अ., स.) झुंझलाना, खिजलाना, चिढाना।

झल्लिका–(हिं. स्त्री.) शरीर पोंछने का अँगोछा, तौलिया, शरीर की मैल जो उबटन लगाने से निकले, झिल्ली, दीप्ति।
झल्ली–(सं. स्त्री.) हुडुक, झाँझ ।
झवर–(हिं. स्त्री.) झगड़ा ।
झष–(सं. पुं.) मत्स्य, मीन, मछली, मगर, मीनराशि, ग्रीष्म, ताप, गरमी, देखें 'झख'; **–केतु**–(पुं.) मदन, कामदेव; **–निकेत**–(पुं.) जलाशय, समुद्र; **–राज**–(पुं.) मकर, मगर ।
झषांक–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव ।
झषाशन–(सं. पुं.) शिशुमार, सूंस ।
झसना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'झँसना' ।
झहनना–(हिं. क्रि. अ.) झनझन शब्द होना, रोंगटे खड़े होना; सन्नाटे में आना ।
झहनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) झनझन करना, झनकारना ।
झहरना–(हिं. क्रि. अ., स.) झरझर शब्द करना, शिथिल होना, ढीला पड़ना, झिड़कना, झल्लाना ।
झहराना–(हिं. क्रि. अ., स.) झल्लाना, खिजलाना, शिथिल होकर या झल्लाते हुए गिरना, हिलाना, झकझोरना ।
झाँई–(हि. स्त्री.) प्रतिबिंब, परछाईं, छाया, छल, अन्धकार, प्रतिध्वनि, मनुष्य के मुख पर पड़नेवाले हलके काले धब्बे; (मुहा.) **–आना**–सिर चकराने के कारण आँखों के सामने अँधेरा छा जाना; **–बताना**–छलना, धोखा देना ।
झाँक–(हिं. स्त्री.) झाँकने की क्रिया या भाव ।
झाँकना–(हिं. क्रि. अ.) आड़ से देखना, इधर-उधर देखना ।
झाँकनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'झाँकी' ।
झाँका–(हिं. पुं.) जालीदार खाँचा, झरोखा ।
झाँकी–(हि. स्त्री.) झाँकने की क्रिया, झलक, क्षणिक और अपूर्ण दर्शन, झरोखा, खिड़की ।
झाँख–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा जंगली हरिन ।
झाँखना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'झींखना, झाँकना' ।
झाँखर–(हिं. पुं.) झंखाड़, कँटीली झाड़ियों का झुरमुट ।
झाँगला–(हिं. वि.) ढीलाढाला (पोशाक) ।
झाँगा–(हिं. पुं.) देखें 'झगा' ।
झाँझ–(हि. स्त्री.) काँसे के ढले हुए दो गोलाकार टुकड़ों का बाजा जो मजीरे से बड़ा होता है, क्रोध, दुष्टता, पाजीपन, चित्त का बुरा आवेग, अड़ियलपन, झाँझन ।
झाँझड़ी, झाँझन–(हिं. स्त्री.) पैर में पहिनने का घुँघरूदार गहना, पैजनी, पायल ।
झाँझर–(हिं. वि.) जर्जर, पुराना, छिन्न-भिन्न, छिद्रमय; (स्त्री.) पैजनी, झाँझन ।
झाँझरी–(हिं. स्त्री.) झाँझन नामक आभूषण।
झाँझा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का फसल में लगनेवाला कीड़ा, झंझट, बखेड़ा, झाँझ ।
झाँझिया–(हिं. पुं.) झाँझ बजानेवाला ।
झाँट–(हिं. स्त्री.) पुरुष या स्त्री के मूत्रेन्द्रिय पर के बाल, पशम, अति क्षुद्र पदार्थ ।
झाँप–(हिं. स्त्री.) किसी आधान को ढकने की वस्तु, नींद, झपकी, पर्दा, चिक; (पुं.) उछल-कूद ।
झाँपना–(हिं. क्रि. स.) आवरण डालना, ढकना, पकड़कर दबा लेना, लज्जित करना ।
झाँपी–(हिं. स्त्री.) ढकने की डलिया या टोकरी, मूँज की बनी हुई पिटारी ।
झाँवना–(हिं. क्रि. स.) झाँवे से रगड़कर साफ करना ।
झाँवर–(हिं. स्त्री.) नीची भूमि जहाँ पानी रुकता हो; (वि.) मलिन, मैला, मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, शिथिल, मन्द, श्याम वर्ण का ।
झाँवली–(हिं. स्त्री.) झलक, आँख की कनखी ।
झाँवा–(हिं. पुं.) ईंट जो अधिक पकने के कारण काली हो गई हो जिससे रगड़कर मैल छोड़ाई जाती है ।
झाँसना–(हिं. क्रि. स.) धोखा देना, ठगना, स्त्री को व्यभिचार में प्रवृत्त करना ।
झाँसा–(हिं. पुं.) बहकाने का कार्य, छल, धोखाधड़ी; **–पट्टी**–(स्त्री.) धोखा-धड़ी ।
झाँसिया–(हिं. पुं.) धोखा देनेवाला, धोखेबाज ।
झाँसी–(हिं. पुं.) उत्तर प्रदेश का एक जिला, एक प्रकार का कीड़ा ।
झाँसू–(हिं. पुं.) छल करनेवाला ।
झा–(हिं. पुं.) मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि ।
झाईं–(हिं. स्त्री.) देखें 'झाँई' ।
झाऊ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा झाड़, एक वृक्ष ।
झाग–(हिं. पुं.) जल आदि का फेन, गाज ।
झागड़–(हिं. पुं.) झगड़ा, तकरार ।
झागना–(हिं. क्रि. अ.) फेन उत्पन्न होना ।
झाट–(सं. पुं.) लतागृह, ऐसा स्थान जो घनी लताओं से घिरा हो, झाड़ी ।
झाटल–(सं. पुं.) मोखा नामक वृक्ष ।
झाड़–(हिं. पुं.) छोटा वृक्ष जिसकी डालियाँ जड़ के पास से निकलकर चारों ओर फैली हुई होती हैं, प्रकाश करने का काँच का आधान जो छत से लटकाया जाता है, झाड़-फूंक, झाड़ने या फटकारने की क्रिया, डाँट-डपट, फटकार।
झाड़-खंड–(हिं. पुं.) जंगल, वन ।
झाड़-झंखाड़–(हिं. पुं.) अनेक काँटेदार झाड़ियाँ, व्यर्थ या बेकार वस्तुओं का समूह ।
झाड़दार–(हिं. वि.) काँटेदार, कँटीला, घना, सघन; (पुं.) बड़े-बड़े बेल-बूटों का कशीदा ।
झाड़न–(हिं. स्त्री.) धूर इत्यादि झाड़ने का कपड़ा, झाड़ू देने पर निकली हुई धूल।
झाड़ना–(हिं. क्रि. स.) धूल इत्यादि साफ करना, झटकारना, झारना, फटकारना, झटके से किसी वस्तु को गिराना, छल-बल से किसी का धन ले लेना, झटकना, भूत-प्रेत दूर करने के लिये मन्त्र पढ़कर फूंकना, डाँटना, डपटना, चिढ़कर किसी को दुर्वचन कहना ।
झाड़-फानस–(हिं. पुं.) शीशे के बने प्रकाश और सजावट के सामान ।
झाड़-फूंक–(हिं. स्त्री.) मन्त्र पढ़कर भूत-प्रेत दूर करने की क्रिया ।
झाड़-बुहार–(हिं. स्त्री.) परिष्कार, शुद्धता, सफाई ।
झाड़ा–(हिं. पुं.) मन्त्र आदि का उच्चारण, झाड़-फूंक, अनुसन्धान, विष्ठा, मैला, पुरीष ।
झाड़ी–(हिं. स्त्री.) छोटा झाड़, पौधा, अनेक छोटे पेड़ों का समूह, सूअर के बालों की कूँची, बरौंछी; **–दार**–(वि.) झाड़ी के समान, काँटेदार ।
झाड़ू–(हिं. पुं.) कूँचा, बुहारी, पुच्छल तारा, केतु; (मुहा.) **–फिरना**–सब कुछ नष्ट हो जाना, कुछ न रहना; **–मारना**–तिरस्कार करना; **–बरदार**–(पुं.) झाड़ देनेवाला मनुष्य, चमार, भंगी, मेहतर ।
झापड़–(हिं. पुं.) थप्पड़, तमाचा ।
झाबर–(हिं. पुं.) दलदल भूमि ।
झाबा–(हिं. पुं.) टोकरा, खाँचा, देखें 'झब्बा'।
झाबी–(हिं. स्त्री.) छोटा झाबा, टोकरी ।
झाम–(हिं. पुं.) झब्बा, गुच्छा, डाँट-डपट, घुड़की, छल, कपट, धोखा, कुएँ की मिट्टी खोदने का यंत्र ।

झामक–(सं. पुं.) जली हुई ईंट, झाँवा।
झामर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पर का गहना, टेकुआ रगड़ने की सिल्ली।
झामी–(हिं. पुं.) छली, कपटी।
झायँ-झायँ–(हिं. स्त्री.) झनझन शब्द, झनकार, सुनसान स्थान में वायु का शब्द; (मुहा.)–करना–सूना या डरावना लगना।
झार–(हिं. वि.) एकमात्र, केवल, कुल, सम्पूर्ण, सब, समूह, झुण्ड; (स्त्री.) ईर्ष्या, डाह, जलन, दाह, ज्वाला, अग्निशिखा, लपट, झाल, चरपराहट; (पुं.) झरना, पौना।
झारखंड–(हिं. पुं.) वैद्यनाथ से जगन्नाथ पुरी तक फैला हुआ एक जंगल; देखें 'झाड़खंड'।
झारझरस–(हिं. स्त्री.) उष्णता, गरमी।
झारन–(हिं. स्त्री.) देखें 'झाड़न'।
झारना–(हिं. क्रि. स.) बालों को सँवारने और मैल निकालने के लिये कंघी करना, पृथक् करना, अलग करना, देखें 'झाड़ना'।
झारफूंक–(हिं. स्त्री.) देखें 'झाड़फूंक'।
झारा–(हिं. पुं.) अन्न को स्वच्छ करने की चलनी, झरना।
झारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की टोंटी लगी हुई लोटिया।
झारू–(हिं. पुं., स्त्री.) देख 'झाड़ू'।
झार्झर–(सं. वि.) झरझर शब्द करनेवाला।
झाल–(हिं. पुं.) काँसे का बना हुआ ताल देने का बाजा, झाँझ; (स्त्री.) खाँचा, टोकरी, निरन्तर वृष्टि, तीक्ष्णता, चरपराहट, झालने की क्रिया, तरंग, लहर, कामेच्छा; (वि.) देखें 'झार'।
झालड़–(हिं. स्त्री.) पूजा आदि के समय बजाया जानेवाला घड़ियाल, झालर।
झालना–(हिं. क्रि. स.) धातु की वस्तुओं को टाँका देकर जोड़ना।
झालर–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु के छोर पर लटकता हुआ किनारा जो शोभा के लिये लगाया जाता है, इस आकार की कोई वस्तु, किनारा, छोर, झाँझ; –दार–(वि.) जिसमें झालर लगी हो।
झालरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'झलराना'।
झाला–(हिं. पुं.) मकड़ी का जाल या जाला।
झालि–(हिं. स्त्री.) वर्षा की झड़ी; एक प्रकार की काँजी।
झावँ-झावँ–(हिं. पुं.) कलह, बकवाद।
झावु–(सं. पुं.) झाऊ नामक पौधा।
झिंगन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्तों से लाल रंग बनता है।
झिंगवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की छोटी मछली, झींगा।
झिंगाक–(सं. पुं.) कर्कटी, ककड़ी।
झिंगिनी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष।
झिंगुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'झगा'।
झिंझिया–(हिं. स्त्री.) अनक छोटे-छोटे छिद्रोंवाला घड़ा जिसमें दीपक रखकर लड़कियाँ कुवार के महीने में घुमाती हैं।
झिंझो (ौ) टी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी का नाम।
झिंटिका, झिंटी–(सं. स्त्री.) कटसरैया।
झिंटीश–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
झिझकना–(हिं. क्रि. अ., स.) देख 'झझकना'।
झिझकार–(हिं. स्त्री.) देखें 'झझकार'।
झिझकारना–(हिं. क्रि. स.) झटकना, झझकारना।
झिझिट–(हिं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
झिड़कना–(हिं. क्रि. स.) तिरस्कार अथवा अवज्ञापूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना, झटकना, किसी वस्तु को दूर फेंक देना।
झिड़की–(हिं. स्त्री.) झिड़ककर कही हुई बात, डाँट-फटकार।
झिड़झिड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) कटु वचन कहना, चिड़चिड़ाना, भला-बुरा कहना।
झिड़झिड़ाहट–(हिं. स्त्री.) झिड़झिड़ाने की क्रिया।
झिनवा–(हिं. पुं.) महीन चावल का धान।
झिपना–(हिं. क्रि. अ.) देख 'झपना', लज्जित होना'।
झिपाना–(हिं. क्रि. स.) लज्जित करना, लजवाना।
झिरकना–(हिं. क्रि. स.) डपटना, फेंक देना।
झिरझिर–(हिं. अव्य.) धीरे-धीरे, झिरझिर शब्द सहित।
झिरझिरा, झिरहर–(हिं. वि.) बहुत पतला या बारीक (वस्त्र), झँझरा, झीना।
झिरिका, झिरीका, झिरी–(सं. स्त्री.) झिल्ली, झींगुर।
झिरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'झरना'; (पुं.) छिद्र, छेद।
झिरी–(हिं. स्त्री.) छोटा छेद, दराज, कुएँ में का सोता जिसमें नीचे से पानी आता है, नाली आदि में पानी रोकने के लिये बनाया हुआ गड्ढा।
झिलँगा–(हिं. पुं., वि.) टूटी हुई खटिया या उसका बाध, (वह खटिया) जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।
झिलना–(हिं. क्रि. अ.) बलपूर्वक प्रवेश करना, सन्तुष्ट होना, अघा जाना, सहन होना, झेला जाना।
झिलम–(हिं. स्त्री.) लोहे का जालीदार टोप या शिरस्त्राण; –टोप–(पुं.) देखें 'झिलम'।
झिलमा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।
झिलमिल–(हिं. स्त्री.) झिलमिलाता हुआ प्रकाश, प्रकाश की चंचलता, रह-रह कर प्रकाश की घटने-बढ़ने की क्रिया, एक प्रकार का सुन्दर महीन वस्त्र, झिलम; (वि.) रह-रहकर चमकनेवाला।
झिलमिला–(हिं. वि.) जो सघन न हो, छिद्रयुक्त, जिसमें अनेक छोटे-छोटे छिद्र हों, झँझरा, झीना, रह-रहकर हिलता हुआ प्रकाश देनेवाला, चमकता हुआ, जो बहुत स्पष्ट न हो।
झिलमिलाना–(हिं. क्रि. अ.) रह-रहकर चमकना, जुगजुगाना, प्रकाश का हिलना।
झिलमिलाहट–(हिं. स्त्री.) झिलमिलाने की क्रिया।
झिलमिली–(हिं. स्त्री.) अनेक पतली आड़ी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों आदि में प्रकाश आने, धूल आदि रोकने के लिये जड़ा रहता है, चिक, चिलमन, कान म पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
झिलवाना–(हिं. क्रि. स.) झेलने का काम दूसरे से कराना, झेलने को बाध्य करना।
झिल्ल–(सं. पुं.) नील की जाति का एक प्रकार का पौधा।
झिल्लड़–(हिं. वि.) पतला और झँझरा।
झिल्लि–(सं. पुं.) एक प्रकार का बाजा।
झिल्लिका–(सं. स्त्री.) कीट विशेष, झींगुर।
झिल्ली–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु की पतली तह, महीन छाल, आँख का जाला, झींगुर, उबटने की मैल।
झिल्लीकंठ–(सं. पुं.) पालतू कबूतर।
झिल्लीक–(सं. पुं.) झिल्ली, झींगुर।
झिल्लीदार–(हिं. वि.) जिसके ऊपर की तह बहुत पतली हो, जिस पर झिल्ली हो।
झींक–(हिं. स्त्री.) देखें 'झींका'।
झींकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'झींखना'।
झींका–(हिं. पुं.) अन्न का वह परिमाण जो पीसने के लिये चक्की में एक बार डाला जाता है।
झींख–(हिं. स्त्री.) झींखने का भाव, कुढ़न।
झींखना–(हिं. क्रि. अ.) दुखी होकर पछताना और चिढ़ना, अपनी विपत्ति का हाल सुनाना, खीजना; (पुं.) दुःख का वर्णन, दुखड़ा।
झींगट–(हिं. पुं.) कर्णधार, मल्लाह, केवट।

झींगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मछली, एक प्रकार के धान का नाम।
झींगुर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो मिट्टी की दीवारों में रहता है और वरसात में झन-झन शव्द करता है, झिल्ली।
झींसी–(हिं. स्त्री.) छोटी बूंदों की वर्षा, फूही, फुहार।
झीना–(हिं. वि.) वहुत महीन (वस्त्र), छिद्रयुक्त, जिसमें वहुत से छेद हों, झँझरा, दुर्बल, दुवला, धीमा, मन्द।
झीमना–(हिं. क्रि. अ.) झूमना।
झीमर–(हिं. पुं.) धीवर।
झील–(हिं. स्त्री.) चारों ओर भूमि से घिरा हुआ वहुत वड़ा प्राकृतिक जलाशय, वहुत वड़ा तालाव।
झीलर–(हिं. पुं.) छोटी झील।
झीली–(हिं. स्त्री.) दूध से निकाली हुई मलाई।
झीवर–(हिं.पुं.) कर्णधार, माझी, मल्लाह।
झुंकवाना–(हिं. क्रि. स.) देख 'झोंकवाना'।
झुंगना–(हिं. पुं.) जुगनू।
झुंझना–(हिं. पुं.) झुनझुना, घुनघुना।
झुंझलाना–(हिं. क्रि. अ.) चिढ़ना, चिड़चिड़ाना, खिजलाना।
झुंझलाहट–(हिं. स्त्री.) झुंझलाने का भाव, चिढ़।
झुंड–(हिं. पुं.) प्राणियों का समुदाय, यूथ, गिरोह; –के झुंड–दल के दल।
झुंडी–(हिं. स्त्री.) पौधों को काट लेने के वाद वची हुई खूंटी।
झुकना–(हिं.क्रि.अ.) किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का नीचे को लटकना, नवना, निहुरना, किसी वस्तु के एक या दोनों सिरों का नवना, किसी सीधी वस्तु का एक ओर लटक जाना, प्रवृत्त होना, क्रुद्ध होना, रिसाना, विनीत होना, नम्र होना, किसी वस्तु को लेने के लिये अग्रसर होना, दत्तचित्त होना, मर जाना, हीनता या हार स्वीकार करना।
झुकमुख–(हिं. पुं.) ऐसा अन्धकार जव कोई वस्तु अस्पष्ट दिखाई पड़े, झुटपुटा।
झुकरना–(हिं. क्रि. अ.) क्रुद्ध होना, खिजलाना, चिढ़ना।
झुकराना–(हिं. क्रि. अ.) झोंका खाना।
झुकवाई–(हिं. स्त्री.) झुकवाने की क्रिया।
झुकवाना–(हिं.क्रि.स.) झुकाने का काम दूसरे से कराना।
झुकाई–(हिं. स्त्री.) झुकाने का काम या पारिश्रमिक।
झुकाना–(हिं.क्रि.स.) निहुराना, किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों को किसी ओर नवाना, प्रवृत्त करना, नम्र करना, विनीत करना।
झुकामुखी–(हिं. स्त्री.) देखें 'झुकमुख'।
झुकार–(हिं. पुं.) हवा का झोंका या झकोरा।
झुकाव–(हिं. पुं.) किसी ओर नवने या झुकने की क्रिया, झुकने का भाव, चित्त का किसी ओर लगना, प्रवृत्ति, ढाल, उतार।
झुकावट–(हिं. स्त्री.) झुकने का भाव, प्रवृत्ति, झुकाव, चाह।
झुटपुटा–(हिं.पुं.) सवेरे या शाम का समय जव थोड़ा अन्धकार और कुछ प्रकाश हो।
झुटुंग–(हिं. वि.) जटावाला, झोंटेवाला।
झुठकाना–(हिं. क्रि. स.) झूठी वात द्वारा दूसरे को धोखा देना।
झुठलाना–(हिं. क्रि. स.) झूठा ठहराना, झूठा वनाना, असत्य कहकर ठगना, झुठकाना।
झुठाई–(हिं. स्त्री.) असत्यता, झूठापन।
झुठाना–(हिं. क्रि. स.) झूठा ठहराना।
झुठालना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'झुठलाना', 'जुठारना'।
झुन–(हिं. स्त्री.) एक चिड़िया, झुनझुनी।
झुनक–(हिं. पुं.) नूपुर का शव्द, पैंजनी का शव्द।
झुनकना–(हिं. क्रि. अ.) झुनझुन शव्द करना, झुनझुन वजना।
झुनकारा–(हिं.वि.) महीन, वारीक, पतला।
झुनझुन–(हिं. पुं.) नूपुर आदि के वजने का झुनझुन शव्द।
झुनझुना–(हिं. पुं.) छोटे लड़कों का झुनझुन शव्द करनेवाला खिलौना, घुनघुना।
झुनझुनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) झुनझुन शव्द होना या उत्पन्न करना।
झुनझुनियाँ–(हिं. स्त्री.) सनई का पौधा, एक प्रकार का झुनझुन शव्द करनेवाला गहना, वेड़ी।
झुनझुनी–(हिं. स्त्री.) हाथ या पांव में उत्पन्न एक प्रकार की सनसनाहट।
झुपरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'झोंपड़ी'।
झुप्पा–(हिं. पुं.) झव्वा, गुच्छा, झुंड।
झुवझुवी–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों का कान में पहिनने का एक गहना।
झुमका–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कान में पहिनने का छोटी गोल कटोरी के आकार का गहना, एक पौधा।
झुमरा–(हिं. पुं.) लोहारों का वड़ा हथोड़ा, घन।
झुमरि–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी
झुमरी–(हिं. स्त्री.) लकड़ी की मुंगरी, छत पीटने का एक प्रकार का पिटना।
झुमाऊ–(हिं.वि.) झूमनेवाला, जो झूमता हो।
झुमाना–(हिं. क्रि. स.) झूमने में किसी को प्रवृत्त करना।
झुमिरना–(हिं. क्रि. अ.) झूमना।
झुरकुट–(हिं. वि.) कुम्हलाया हुआ, सूखा, दुर्वल।
झुरकुटिया–(हिं.वि.) कृश, दुवला-पतला।
झुरझुरी–(हिं. स्त्री.) कम्प, कँपकँपी।
झुरना–(हिं. क्रि.अ.) झुराना, सूखना, दुःखाकुल होना, चिन्ता के कारण दुवला होना, अधिक पछतावा करना।
झुरमुट–(हिं. पुं.) एक में एक गुँथे हुए पौधे, घनी झाड़ी, मनुष्यों का समूह या जत्था, शरीर को चारों ओर से ढाँप लेने की क्रिया।
झुरवन–(हिं. स्त्री.) किसी पदार्थ के सूखने से कम होनेवाला अंश।
झुरवाना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को सुखाने का काम दूसरे से कराना।
झुरसना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'झुलसना'।
झुरसाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'झुलसाना'।
झुरहुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'झुरझुरी'।
झुराना–(हिं. क्रि. अ., स.) शुष्क करना, सुखाना, दुःख से व्याकुल होना, क्षीण होना, दुवला होना।
झुरावन–(हिं.स्त्री.) किसी वस्तु को सुखाने के कारण उसमें होनेवाली कमी।
झुर्री–(हिं. स्त्री.) वह चिह्न जो किसी वस्तु के सूख जाने या मुड़ने पर पड़ जाता है, सिकुड़न, शिकन।
झुलका–(हिं. पुं.) देखें 'झुनझुना'।
झुलना–(हिं. पुं.) स्त्रियों के पहिनने का ढीला कुरता, पालना, झूला; (वि.) झूलनेवाला।
झुलनी–(हिं. स्त्री.) तार में गुँथा हुआ छोटे-छोटे मोतियों का गुच्छा जिसको स्त्रियां नाक की नथ में पहिनती हैं, झूमर।
झुलमुला–(हिं. वि.) देखें 'झिलमिला'।
झुलवा–(हिं. पुं.) देखें 'झूला', पालना।
झुलवाना–(हिं. क्रि. स.) झुलाने का काम दूसरे से कराना।
झुलसना–(हिं. क्रि. अ.) किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का आधा जल जाना, झौंसना, धूप या लू के कारण किसी पदार्थ का ऊपरी भाग सूखकर काला पड़ना, मुरझाना; (क्रि. स.) झुलसाना।

झुलसवाना–(हिं. क्रि. स.) झुलसने का काम दूसरे से कराना ।
झुलसाना–(हिं. क्रि. स.) किसी पदार्थ के ऊपरी अंश को आधा जला देना ।
झुलाना–(हिं. क्रि. स.) किसी को झूलने में प्रवृत्त करना, झोंका देकर लगातार हिलाना, अनिश्चित अवस्था में रखना, आसरे में रखना, किसी को हिंडोले में बैठाकर हिलाना ।
झुहिरना–(हिं. क्रि. अ.) लदना या लादा जाना ।
झूंक–(हि. पुं.) झोंका ।
झूंक(ख)ना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'झींखना' ।
झूंकटी–(हि. स्त्री.) छोटी झाड़ी ।
झूंका–(हि. पुं.) देख 'झोंका', धक्का ।
झूंझल–(हि. स्त्री.) देख 'झुंझलाहट' ।
झूंसना–(हि. क्रि. अ., स.) झुलसना, किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को आधा जला देना ।
झूझ–(हि. पुं.) युद्ध ।
झूझना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'जूझना' ।
झूट–(हि. पुं.) देखें 'झूठ', असत्य ।
झूठ–(हि. वि., पुं.) जो (बात) यथार्थ न हो, असत्य (बात); (मुहा.)–**का पुल बाँधना**–बिलकुल झूठ बोलना; –**सच कहना, बोलना या लगाना**–निन्दा करना ।
झूठन–(हि. स्त्री.) देखें 'जूठन' ।
झूठमठ–(हि. अव्य.) योंही, असत्य रूप में, निष्प्रयोजन, व्यर्थ ।
झूठ-सच–(हिं. पुं.) सच्ची और झूठी बातों का घालमेल ।
झूठा–(हिं. वि.) असत्य, मिथ्या, झूठ बोलनेवाला, कृत्रिम, बनावटी, (पुरजा या अंग) जो बिगड़ जाने से ठीक-ठीक काम न दे सके; देखें 'जूठा' ।
झूठों–(हिं. अव्य.) नाम मात्र के लिये, वृथा, योंही ।
झूम–(हिं. स्त्री.) झूमने की क्रिया, झपकी ।
झूमक–(हिं. पुं.) होली में गाया जानेवाला एक गीत जिसको स्त्रियाँ एक घेरे में नाचती हुई झूमझूम कर गाती हैं, झूमर गीत के साथ होनेवाला नाच, एक प्रकार का गीत जो विवाहादि मंगल अवसरों पर गाया जाता है, गुच्छा, साड़ी आदि के पल्ले में सिला हुआ मोतियों का गुच्छा; –**साड़ी**–(स्त्री.) जिस साड़ी के पल्ले में मोतियों के गुच्छे लगे हों ।
झूमका–(हिं. पुं.) देखें 'झूमक', 'झुमका' ।
झूमड़–(हि. पुं.) देखें 'झूमर'; –**झामड़**–(पुं.) झूठा बखेडा, निरर्थक प्रपंच ।
झूमड़ा–(हि पुं.) देखें 'झूमरा' ।
झूमना–(हि. क्रि. अ.) किसी वस्तु का इधर-उधर हिलना या झोंके खाना, लहराना, सिर और धड़ को बारम्बार आगे-पीछे तथा नीचे-ऊपर हिलाना ।
झूमर–(हिं. पुं.) सिर में पहिनने का एक प्रकार का सोने का आभूषण जिसमें घुंघरू या झब्बे लटके रहते हैं, एक प्रकार का कान में पहिनने का गहना, होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत, इस गीत के साथ होनेवाला नाच, बहुत-सी स्त्रियों या पुरुषों का मंडलाकार घेरे में घूम-घूम कर नाचना, बच्चों का एक प्रकार का खिलौना, झूमरा ताल ।
झूमरा–(हिं. पुं.) चौदह मात्राओं का एक प्रकार का ताल ।
झूमरी–(हिं. स्त्री.) शालक राग का एक भेद ।
झूर–(हिं. स्त्री.) जलन, दुःख, दाह, परिताप; (वि.) शुष्क, सूखा, व्यर्थ ।
झूरना–(हिं. क्रि. अ.) सूखना, याद करना ।
झूरा–(हि. वि.) शुष्क, सूखा; (पुं.) सूखा स्थान, पानी न बरसना, अवर्षण, न्यूनता, कमी ।
झूरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'झूर' ।
झूरें–(हि. अव्य.) निरर्थक, व्यर्थ, झूठ-मूठ; (वि.) देखें 'झूर' ।
झूल–(हि. स्त्री.) हाथी-घोड़े की पीठ पर शोभा के लिए डालने का चौकोर वस्त्र, वह कपड़ा जो पहिनने पर ढीला और भद्दा जान पड़े, देखें 'झूला' ।
झूलदंड–(हि. पुं.) वर्षा ऋतु में श्रावण शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक होनेवाला एक उत्सव जिसमें मूर्तियाँ झूले पर बैठाकर झुलाई जाती हैं ।
झूलना–(हिं. क्रि. अ.) किसी आधार के सहारे लटककर बार-बार इधर-उधर हिलना, झूले पर बैठकर पेंग लेना, अनिर्णीत अवस्था में रहना, अस्थिर रहना, आसरे में देर तक पड़े रहना; (वि.) झूलनवाला; (पुं.) छब्बीस मात्राओं का एक छन्द, हिंदोल, झूला ।
झूलनी बगली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का व्यायाम ।
झूलनी बैठक–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की बैठक या व्यायाम ।
झूलरि–(हिं. स्त्री.) वह छोटा गुच्छा या झुमका जो सर्वदा झूलता रहता है ।
झूला–(हिं. पुं.) हिंडोला, बिना खंभे का पुल जो पुष्ट रस्सों, जंजीरों या तारों का बना होता है, जाड़े में पशुओं की पीठ पर ओढ़ाया जानेवाला वस्त्र, एक प्रकार का स्त्रियों के पहिनने का ढीला कुरता, झोंका, झटका, वह विस्तर जिसके दोनों छोर दो खूँटियों में बँध रहते हैं ।
झूलि–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की सुपारी ।
झूली–(हिं. स्त्री.) वह चादर जिससे हवा करके अनाज ओसाया जाता है ।
झेंपना, झपना–(हिं. क्रि. अ.) लज्जित होना ।
झेंपू, झेपू–(हिं. वि.) लज्जित होनेवाला, लजाधुर ।
झेर–(हि. स्त्री.) देर, विलंब, झगड़ा, बखेड़ा ।
झेरना–(हि. क्रि. स.) झेलना, आरंभ करना ।
झेरा–(हिं. पुं.) प्रपंच, झंझट, बखेड़ा ।
झेल–(हि. स्त्री.) वह क्रिया जो तैरने में पानी में हाथ-पैर चलाकर की जाती है, हलका धक्का, हिलोरा, झेलने की क्रिया, विलंब, देर ।
झेलना–(हि. क्रि. स.) सहन करना, ऊपर लेना, तैरने में पानी में हाथ पैर चलाना, ढकेलना, हलकर पार करना, पचाना, ग्रहण करना ।
झेलनी–(हिं. स्त्री.) कान के आभूषण का भार सँभालने के लिये बालों में अटकाई जानेवाली जंजीर ।
झेली–(हिं. स्त्री.) बच्चा जनमते समय प्रसूता को हिलाने-डोलाने की क्रिया ।
झोंक–(हिं. स्त्री.) प्रवृत्ति, झुकाव, तराजू के किसी पलड़े का नीचा-ऊँचा होना, प्रचंड गति, बोझ, भार, वेग, कार्य की गति, किसी कार्य को बड़े समारोह से आरम्भ करने की क्रिया, सजावट, ठाटबाट, पानी का हलरा, बैलगाड़ी की मजबूती के लिय दोनों ओर लगाये हुए लट्ठे; **नोक-झोंक**–(पुं.) ठाट-बाट ।
झोंकना–(हिं. क्रि. स.) आग में फेंकना, वेग से आगे की ओर बढ़ाना, बिना सोचे-विचारे अधिक व्यय करना, अधिक कार्यभार किसी पर डालना, किसी को आपत्ति में डालना, बिना विचारे दोषारोपण करना, ठेलना, ढकेलना, बुरे स्थान में डालना; (मुहा.) **भाड़ झोंकना**–नीच कार्य करना ।
झोंकवा–(हि. पुं.) भट्टी या भाड़ में इन्धन झोंकनेवाला ।
झोंकवाई–(हिं. स्त्री.) झोंकने की क्रिया या वेतन ।
झोंकवाना–(हि. क्रि. स.) झोंकने का काम किसी से कराना ।
झोंका–(हिं. पुं.) झोकने की क्रिया, तेज

हवा का झकोरा, झकझोरा, वायु का आघात, पानी का हिलोरा, ऐसा धक्का जिससे कोई पदार्थ गिर पड़े, झपट्टा, सजावट, ठाट, व्यायाम की एक युक्ति।
झोंकाई–(हिं. स्त्री.) झोंकने की क्रिया या पारिश्रमिक।
झोंकिया–(हिं.पुं.)भाड़ म पत्ते झोंकनेवाला।
झोंकी–(हिं. स्त्री.) उत्तरदायित्व, भार, वोझ, अनिष्ट की आशंका, जोखिम।
झोंझ–(हिं. पुं.) घोंसला, खोंता, कुछ पक्षियों के गले से लटकता हुआ मांस या थैली, खुजली, सुरसुराहट।
झोंझल–(हिं.पुं.)क्रोध,रोष,कुढ़न,गुस्सा।
झोंझा–(हिं.स्त्री.)बया पक्षी का घोंसला।
झोंट–(हिं. पुं.) झाड़ी, झाड़, झुरमुट।
झोंटा–(हिं. पुं.) बड़े-बड़े बालों का समूह, एक बार हाथ में आ जानेवाला लंबी पतली वस्तुओं का समूह, जुट्टा, झूले को इधर-उधर हिलाने के लिये दिया हुआ धक्का, झोंका, पग।
झोंटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'झोंटा'।
झोंपड़ा–(हिं. पुं.) कच्ची मिट्टी की भीत बनाकर घास-फूस से छाया हुआ घर, पर्णशाला, कुटी; **अंधा झोंपड़ा**–(पुं.) उदर, पेट।
झोंपड़ी–(हिं.स्त्री.)छोटा झोंपड़ा, कुटिया।
झोंपा–(हिं.पुं.) झब्बा, गुच्छा।
झोंटिंग–(हिं. वि.) जिसके माथे पर बड़े-बड़े और खड़े बाल हों, झोंटेवाला; (पुं.) भूत, प्रेत, पिशाच।
झोड़–(हिं. पुं.) गुल्म, सुपारी का वृक्ष।
झोपड़ा, झोपड़ी–(हिं. पुं., स्त्री.) देखें 'झोंपड़ा, झोंपड़ी'।
झोर–(हिं. पुं.) देखें 'झोल'।
झोरई–(हिं. वि., स्त्री.) झोलदार (रसेदार) (तरकारी)।
झोरना–(हिं.क्रि.स.)झटका देकर कँपाना या हिलाना, एकत्र करना।
झोरा–(हिं.पुं.) झब्बा,गुच्छा,देखें 'झोला'।
झोरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'झोली'।
झोरी–(हिं. स्त्री.) झोली, एक प्रकार की रोटी।
झोल–(हिं. पुं.) तरकारी आदि का गाढ़ा रसा, एक प्रकार की पतली लेई, एक प्रकार की कढ़ी, पीच, माँड़, धातु पर चढ़ाया जानेवाला मुलम्मा, झूल की तरह लटकती हुई वस्तु, आँचल, पल्ला, आड़, ओट, परदा, गर्भ से निकले हुए बच्चे या अंडे की झिल्ली, गर्भ, भस्म, राख, दाह, जलन, अशुद्धि, भूल; (हिं. वि.) ढीला (वस्त्र), निकम्मा; **–दार**–(वि.) रसे से भरा हुआ, रसायुक्त, मुलम्मा किया हुआ, ढीला-ढाला, झोल संबंधी।
झोलना–(हिं.क्रि.स.)जलाना,दाह करना।
झोला–(हिं. पुं.) कपड़े की बड़ी थैली, एक प्रकार का वात रोग, आघात, झोंका, बाधा, खोली, चोला, साधुओं का ढीला-ढाला कुरता, फसल का एक रोग, आपत्ति, धक्का, झटका।
झोली–(हिं. स्त्री.) कपड़ा मोड़कर बनाई हुई थैली, धोकरी, घास आदि बाँधने का जाल, चरसा, मोट, ओसाने का कपड़ा, पेच, सफरी बिस्तर जिसके चारों कोनों पर रस्सियाँ बँधी रहती हैं, एक तरह का फन्दा, राख, भस्म; (मुहा.) **–बुझाना**–करने का समय गुजर जाने के बाद कुछ करना, शव जल जाने के बाद उसकी राख बुझाना।
झौंझट–(हिं. पुं.) देखें 'झंझट'।
झौंद–(हिं. पुं.) उदर, पेट।
झौंर–(हिं. पुं.) समूह, झुंड, पेड़ों या झाड़ियों का समूह, कुंज, कलियों, पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा, झब्बा, एक प्रकार का गहना जिसम मोतियों या चाँदी-सोने के दानों के गुच्छ लटकाये रहते हैं।
झौंरना–(हिं. क्रि. अ.)गूँजना, गुंजारना।
झौंराना–(हिं. क्रि. अ.) झूमना, इधर-उधर हिलना, कुम्हलाना, मुरझाना, झाँवर होना।
झौंसना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'झुलसना', 'झुलसाना'।
झौर–(हिं. पुं.) प्रपंच, वादविवाद, कहा-सुनी, डाँट-डपट।
झौरना–(हिं. क्रि. स.) झपटकर पकड़ लेना, छोप लेना, दबोच लेना।
झौरा–(हिं. पुं.) झंझट, बखेड़ा।
झौरे–(हिं. अव्य.) संग, साथ, समीप।
झौवा–(हिं. पुं.) खँचिया, रहठे की बनी हुई दौरी।
झौहाना–(हिं. क्रि. अ.) जोर से डाँटना, चिड़चिड़ाना, गुर्राना।

ञ

ञ–हिन्दी और संस्कृत व्यंजन वर्ण का दसवाँ अक्षर, चवर्ग का पाँचवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है; (सं. पुं.) गानेवाला, घर-घर शब्द, बैल, अधर्मी।
ञकार–(सं. पुं.) 'ञ' स्वरूप वर्ण।

ट

ट–संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन तथा टवर्ग का पहला अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।
टंक–(सं. पुं.) चार माशे के बराबर तौल, एक पुरातन मुद्रा, पत्थर गढ़ने का उपकरण या औजार।
टंकक–(सं. पुं.) चाँदी का सिक्का, टंकण करनेवाला।
टंकण–(सं. पुं.) सुहागा, टाँका देने की क्रिया, टाइप करना।
टँकना–(हिं. क्रि. अ.) कील आदि जड़ना, जड़ा जाना, सिला जाना, सिलाई से जुड़ना, सिलाई द्वारा अटकाया जाना, रेती के दाँतों का पैना होना, अंकित होना लिखा जाना, कुटना, रेता जाना।
टँकवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'टँकाना'।
टंका–(हिं. पुं.) पुराने काल की तौल जो तोले के बराबर मानी जाती थी, ताँबे की एक पुरानी मुद्रा; (स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी।
टँकाई–(हिं. स्त्री.) टाँकने की क्रिया या वेतन।
टँकाना–(हिं.क्रि.स.)टाँकों से जुड़वाना या सिलवाना, सिलाकर लगवाना, कुटाना, खुरदुरा करना, मुद्रा की जाँच करवाना।
टंकार–(हिं. स्त्री.) तार पर उँगुली मारने पर उत्पन्न टनटन शब्द, धनुष की कसी हुई डोरी खींचने से उत्पन्न शब्द, धातुखंड पर चोट पड़ने से उत्पन्न शब्द, ठनाका, झनकार।
टँकारना–(हिं. क्रि. स.) धनुष की डोरी तानकर टंकार उत्पन्न करना, चिल्ला खींचकर झनकारना।
टंकी–(हिं. स्त्री.) श्री राग की एक रागिनी, पानी रखने का कुंड, टाँका।
टंकोर–(हिं. पुं., स्त्री.) देखें 'टंकार'।
टंकोरना–(हिं. क्रि. स.) धनुष की डोरी खींचकर ध्वनि उत्पन्न करना, देखें 'टंकारना'।
टंको (कौ) री–(हिं. स्त्री.) सोना-चाँदी तौलने का छोटा तराजू, काँटा।
टँगड़ी–(हिं. स्त्री.) घुटने से लेकर एड़ी तक का भाग, टाँग।
टँगना–(हिं. क्रि. अ.) लटकना, फाँसी पर

चढ़ना या लटकाया जाना; (पुं.) कपड़ा रखने की अलगनी; (मुहा.) **टँग जाना**–फाँसी पर चढ़ना।
टँगरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टगड़ी'।
टँगारी–(हिं. स्त्री.) छोटा टाँगा।
टंच–(हिं. वि.) कृपण, कंजूस, कठोर-हृदय, निष्ठुर।
टंटघंट–(हिं. पुं.) शंख, घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या आडम्बर, झूठा प्रपंच, काठ-कवाड़।
टंटा–(हिं. पुं.) प्रपंच, आडम्बर, खटराग, उपद्रव, लड़ाई-झगड़ा।
टंडल–(हिं. पुं.) मजदूरों का जमादार।
टँडिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का बाँह में पहिनने का आभूषण।
टंडुलिया–(हिं. स्त्री.) काँटेदार वन-चौराई।
टंडैल–(हिं. पुं.) देख 'टंडल'।
टई–(हिं. स्त्री.) युक्ति।
टक–(हिं. स्त्री.) स्थिर दृष्टि, लकड़ी, घास आदि तौलने की तराजू का चौखूँटा पलड़ा; (मुहा.) **–टक देखना**–विना पलक गिराये देर तक देखना; **–बँधना**–टकटकी बाँधकर देखना; **–लगाना**–प्रतीक्षा करते रहना।
टकटका–(हिं. पुं.) स्थिर दृष्टि, टकटकी।
टकटकाना–(हिं. क्रि. स.) टकटकी बाँधकर देखना, टकटक शब्द करना।
टकटकी–(हिं. स्त्री.) निर्निमेष दृष्टि; (क्रि. प्र.) **–बाँधना**–स्थिर दृष्टि से देखना।
टकटोना, टकटोरना, टकटोलना–(हिं. क्रि. स.) उँगलियों से छूकर पता लगाना, टटोलना, ढूँढ़ना।
टकटोहन–(हिं. पुं.) उँगलियों से छूकर या टटोलकर देखने की क्रिया।
टकटोहना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'टटोलना'।
टकराना–(हिं. क्रि. अ., स.) वेग से ठोकर लगना, भिड़ना, धक्का खाना, मारा-मारा फिरना, इधर-उधर घूमना, पटकना, भिड़ाना।
टकसरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाँस।
टकसाल(र)–(हिं. स्त्री.) टंकशाला, मुद्रा ढालने का कारखाना, प्रामाणिक वस्तु, जँची हुई वस्तु।
टकसाली–(हिं. वि.) टकसाल का बना हुआ, खरा, चोखा, जँचा हुआ, परीक्षित, प्रामाणिक, सर्वसम्मत, माना हुआ; (पुं.) टकसाल का अध्यक्ष।
टकहाई–(हिं. वि., स्त्री.) वेश्याओं में निकृष्ट।
टका–(हिं. पुं.) चाँदी की पुरानी मुद्रा, धन, रुपया-पैसा, तीन तोले का ताँबे का पुराना अधन्ना, दो पैसे का ताँबे का पुराना सिक्का; (मुहा.) **–सा जवाब देना**–स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना; **–सा मुँह लेकर रह जाना**–अति लज्जित होना, खिसिया जाना; **टके गज की चाल**–थोड़े व्यय में निर्वाह, मोटी चाल।
टकाई–(हिं. वि.) देख 'टकाही'।
टकाटकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टकटकी'।
टकातोप–(हिं. स्त्री.) जहाज पर लगी हुई तोप।
टकाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'टँकाना'।
टकार–(सं. पुं.) 'ट' अक्षर का स्वरूप।
टकासी–(हिं. स्त्री.) दो पैसे प्रति रुपये का व्याज।
टकाही–(हिं. वि.) नीच और पुंश्चली (स्त्री)।
टकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टकटकी'।
टकुआ–(हिं. पुं.) चरखे में लगाने का सूजा, तकला जिस पर सूत काता और लपेटा जाता है, वह तागा जो छोटे तराजू या काँटे में बाँधा जाता है।
टकुली–(हिं. स्त्री.) पत्थर काटने की टाँकी, छेनी, बेल-बूटे बनाने या नकाशी करने का उपकरण।
टकैत–(हिं. वि.) जिसके पास धन हो, अमीर।
टकोर–(हिं. स्त्री.) प्रहार, आघात, हलकी चोट, थपेड़ा, ठेस, नगाड़े का शब्द, धनुष की टंकार, दवा भरी हुई पोटली से सेंकने की क्रिया, तीक्ष्णता, चरपराहट, खट्टी वस्तु खाने से दाँतों की टीस।
टकोरना–(हिं. क्रि. स.) ठोकर लगाना, हलकी चोट लगाना, बजाना, घाव सेंकना।
टकोरा–(हिं. पुं.) डंके की चोट, (नगाड़े पर) आघात।
टकोरी–(हिं. स्त्री.) आघात, टक्कर।
टकौरी–(हिं. स्त्री.) वह छोटा तराजू (काँटा) जिससे सोना-चाँदी तौला जाता है।
टक्कर–(हिं. स्त्री.) दो वस्तुओं का वेग से परस्पर भिड़ना, ठोकर, लड़ाना, भिड़न्त, क्षति, हानि, सिर से मारने का आघात; **–का**–तुल्य, समान, बराबरी का; (मुहा.) **–खाना या झेलना**–मारा-मारा फिरना, टकराना; **–मारना**–हैरान होना; **–लड़ाना**–सिर से सिर पर आघात करना; **–लेना**–वार का मुकाबला करना।
टखना–(हिं. पुं.) एड़ी के ऊपर उभड़ी हुई हड्डी की गाँठ।
टगण–(सं. पुं.) छः मात्राओं का एक गण।
टगर–(सं. पुं.) टंकण, क्षार, सोहागा, विलास, क्रीडा; (वि.) ऐंचाताना, भेंगा।
टगरा–(हिं. वि.) भेंगा ऐंचाताना।
टघरना–(हिं. क्रि. अ.) द्रवित होना, पिघलना।
टघराना–(हिं. क्रि. स.) पिघलाना।
टचटच–(हिं. अव्य.) धायँ-धायँ करते हुए।
टचनी–(हिं. स्त्री.) कसेरे की नक्काशी करने की टाँकी।
टटका–(हिं. वि.) नया, कोरा, ताजा, हाल का, तुरत का तैयार किया हुआ।
टटल-बटल–(हिं. वि.) अस्तव्यस्त, ऊटपटाँग।
टटाना–(हिं. क्रि. अ.) सूखकर कड़ा हो जाना।
टटावली–(हिं. स्त्री.) टिटिहरी, कुररी।
टटिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'टट्टी'।
टटीबा–(हिं. पुं.) चक्कर, घिरनी।
टटीरी–(हिं. स्त्री.) टिटिहरी, कुररी।
टटुआ–(हिं. पुं.) देखें 'टट्टू'।
टटुई–(हिं. स्त्री.) मादा टट्टू, छोटे कद की घोड़ी।
टटोल–(हिं. स्त्री.) टटोलने का काम।
टटोना, टटोरना–(हिं. क्रि. स.) टटोलना।
टटोलना–(हिं. क्रि. स.) उँगलियों से छूकर किसी वस्तु को मालूम करना, ढूँढ़ने के लिये इधर-उधर हाथ रखना, बोल-चाल से ही किसी के मन के भाव का पता लगा लेना, जाँच करना, आजमाना, परखना।
टट्टनी–(सं. स्त्री.) छिपकली।
टट्टर–(हिं. पुं.) बाँस की फट्टियों आदि का बना हुआ ढाँचा या पल्ला जो आड़ के लिये कहीं पर लगाया जाता है।
टट्टरी–(सं. स्त्री.) ढोल का शब्द, डींग, शेखी।
टट्टी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टट्टर', चिक, परदा, चिलमन, आड़ करने की पतली भीत, मचान जिस पर लता चढ़ाई जाती है; (मुहा.) **–की आड़ में शिकार करना**–गुप्त रूप से व्यभिचार या अनहित करना; **धोखे की टट्टी**–छलने का उपाय।
टट्टर–(सं. पुं.) तुरही बजने का शब्द।
टट्टू–(हिं. पुं.) छोटे कद का घोड़ा, टाँगन; (मुहा.) **भाड़े का टट्टू**–धन लेकर किसी का काम करनेवाला।
टठिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'टाटी'।
टड़िया–(हिं. स्त्री.) बाँह पर पहिनने का स्त्रियों का एक गहना।
टन–(हिं. स्त्री.) धातु के पात्र पर आघात करने से उत्पन्न शब्द, झनकार।
टनकना–(हिं. क्रि. अ.) टनटन बजना सिर में पीड़ा होना।

टनटन–(हिं. स्त्री.) घंटा वजने का शब्द ।
टनटनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) टनटन शब्द निकालना, घंटा वजाना, घंटा वजना ।
टनमन–(हिं.पुं.) तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना ।
टनमना–(हिं. वि.) स्वस्थ, चंगा, जो सुस्त न हो ।
टना–(हिं. पुं.) योनि, भग, योनि के बीच की उमड़ी हुई मांस की ग्रन्थि ।
टनाका–(हिं. पुं.) घंटा वजने का शब्द; (वि.) कड़ी (धूप) ।
टनाटन–(हिं. पुं., स्त्री.) निरन्तर घंटा वजने का शब्द ।
टप–(हिं. स्त्री. पुं.) फिटिन, टमटम आदि गाड़ियों में लगा हुआ चमड़े या कपड़े का ओहार, कलंदरा, लटकानेवाले लम्प के ऊपर की छतरी; नांद के आकार का पानी रखने का बड़ा पात्र, टाँका, कान में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण, बूंद-बूंद करके टपकने का शब्द, एकाएक किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।
टपक–(हिं. स्त्री.) टपकने का भाव, बूंद-बूंद करके गिरने का शब्द, रह-रहकर होनेवाली पीड़ा ।
टपकना–(हिं. क्रि. अ.) बूंद-बूंद करके गिरना, रसकर बहना, चूना, पके हुए आम का वृक्ष से आप से आप गिरना, टूट पड़ना, किसी भाव का अधिकता से प्रकट या आभास होना, फिसलना, चोट आदि के कारण शरीर में पीड़ा होना, टीस मारना, चिलकना, युद्ध में घायल होकर गिर पड़ना; (मुहा.) **टपक पड़ना**–अकस्मात आ जाना ।
टपका–(हिं.पुं.) बूंद-बूंद करके गिरने का भाव, रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, पककर आप से आप गिरा हुआ फल, टपकी हुई वस्तु, रसाव ।
टपका-टपकी–(हिं. स्त्री.) वर्षा की बूंदा-बूंदी, किसी वस्तु को लेने के लिए मनुष्यों का एक पर एक टूटना, (महामारी में) एक के बाद दूसरे की लगातार मृत्यु; (वि.) भूला-भटका, थोड़ा-सा, एक-आध ।
टपकाना–(हिं.क्रि.स.) बूंद-बूंद करके गिराना, चुआना, भभके से अर्क उतारना ।
टपकाव–(हिं. पुं.) टपकाने की क्रिया ।
टपना–(हिं. क्रि. अ., स.) विना खाये-पीये रहना, निराहार रहना, व्यर्थ किसी के आसरे बैठे रहना, आच्छादित करना, ढाँपना ।
टपमाल–(हिं. पुं.) जहाजों पर काम में आनेवाला लोहे का व॰ ॰ धन ।
टपाटप–(हिं. अव्य.) लगातार टप-टप शब्द के साथ, शीघ्रता से, झटपट ।
टपाना–(हिं.क्रि.स.) निराहार पड़ा रहने देना, आसरे में रखना ।
टप्पर–(हिं. पुं.) छाजन, छप्पर ।
टप्पा–(हिं. पुं.) दो स्थानों के बीच का विस्तृत और सुनसान मैदान, भूमि का छोटा भाग, अन्तर, दूर-दूर की सिलाई, पाल से चलनेवाली नावों का वेड़ा, एक प्रकार का हुक या काँटा, वह ठहराव जहाँ पालकी के कहार बदले जाते हैं, वह दूरी जहाँ फेंकी हुई चीज गिरे, उछलकर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच का टिकान ।
टमकी–(हिं. स्त्री.) छोटा नगाड़ा, डुगडुगी ।
टमटम–(अं. पुं.) दो पहियों की एक घोड़े-वाली खुली गाड़ी ।
टमटी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पात्र ।
टमाटर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का विला-यती बैंगन जो खट्टा होता है ।
टर–(हिं. पुं.) कर्कश शब्द, कड़ुई बोली, मेढक की बोली, अहंकारपूर्ण वचन, हठ, तुच्छ वार्ता, अकड़, ऐंठन; (क्रि.प्र.) **–टर करना**–रूक्षता से बोलना ।
टरकना–(हिं.क्रि.अ.) टल जाना, हट जाना ।
टरकाना–(हिं. क्रि. स.) स्थान से हटा देना, हटाना, खिसकाना, टाल देना, धता बताना ।
टरकुल–(हिं. वि.) अति सामान्य ।
टरगी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की घास ।
टरटराना–(हिं. क्रि. अ.) व्यर्थ की बातें करना, वकवक करना, टरटर करना ।
टरना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'टलना' ।
टरनि–(हिं.स्त्री.) टरने का ढंग या भाव ।
टर्रा–(हिं. वि.) धृष्टता से बोलनेवाला, कटुवादी, घमंड से बातें करनेवाला ।
टर्राना–(हिं.क्रि. अ.) उद्दंडता और घमंड के साथ उत्तर देना, कठोर वचन वोलना ।
टर्रापन–(हिं. पुं.) कटुवादिता, वात करने में धृष्टता ।
टर्रू–(हिं. पुं.) चिढ़कर बोलनेवाला, मेढक, एक प्रकार का खिलौना ।
टलन–(सं. पुं.) व्यग्रता ।
टलना–(हिं.क्रि.अ.) अपने स्थान से सर-कना, हटना, अनुपस्थित होना, किसी स्थान पर न रह जाना, चलता होना, दूर होना, मिटना, अन्यथा होना, ठीक न ठहरना. समय वढ़ना, उल्लंघित होना, पूरा न किया जाना समय वीतना; (मुहा.) **वात से टलना**–प्रतिज्ञा भंग करना ।
टलमल–(हिं. वि.) हिलता हुआ ।
टलहा–(हिं. वि.) खोटा (सिक्का इ०) ।
टलाटली–(हिं. स्त्री.) टाल-मटोल, योंही बहानेवाजी ।
टवर्ग–(सं. पुं.) ट, ठ, ड, ढ, ण–इन पाँच वर्णों का समूह ।
टवाई–(हिं. स्त्री.) व्यर्थ की घुमाई ।
टस–(हिं. स्त्री.) टसकने का शब्द, कपड़े आदि के फटने का शब्द; (मुहा.) **–से मस न होना**–किसी भारी पदार्थ का स्थान से थोड़ा-सा भी न खिसकना, विनती आदि का कुछ प्रभाव न पड़ना ।
टसक–(हिं.स्त्री.) डुग्गी, रह-रहकर होने-वाली पीड़ा, टीस, चसक, पीड़ा ।
टसकना–(हिं.क्रि.अ.) किसी भारी वस्तु का स्थान से खिसकना, हटना, टीस मारना, रुक-रुककर पीड़ा होना, प्रभा-वित होना ।
टसकाना–(हिं.क्रि.स.) खिसकाना, किसी भारी वस्तु को स्थान से हटाना ।
टसर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कड़ा तथा मोटा रेशम ।
टसुआ–(हिं. पुं.) अश्रु, आँसू ।
टहकना–(हिं. क्रि.अ.) रह-रहकर पीड़ा होना, पिघलना ।
टहना–(हिं. पुं.) वृक्ष की शाखा, डाल ।
टहनी–(हिं. स्त्री.) वृक्ष की पतली डाली ।
टहल–(हिं. स्त्री.) सेवा, शुश्रूषा, काम-धंधा, चाकरी; (मुहा.) **–बजाना**–सेवा करना ।
टहलना–(हिं.क्रि.अ.) मन्द गति से भ्रमण करना, धीरे-धीरे चलना; (मुहा.) **टहल जाना**–चला जाना, सरक जाना ।
टहलनी–(हिं. स्त्री.) दासी, नौकरानी, लौंडी, वत्ती उसकाने की लकड़ी ।
टहलाना–(हिं.क्रि.स.) धीरे-धीरे चलाना-फिराना, दूर करना ।
टहलुआ–(हिं. पुं.) टहल करनेवाला, सेवक, चाकर ।
टहलुई–(हिं. स्त्री.) दासी, लौंडी ।
टहलुवा–(हिं. पुं.) देखें 'टहलुआ' ।
टहलू–(हिं. पुं.) चाकर, नौकर, सेवक ।
टही–(हिं. स्त्री.) मतलव साधने का ढंग, प्रयोजन सिद्ध करने की युक्ति ।
टहूका–(हिं. पुं.) पहेली, चुटकुला ।
टहोका–(हिं. पुं.) धक्का, झटका; (मुहा.) **–खाना**–ठोकर खाना; **–देना**–ढकेलना ।

टाँक–(हिं. स्त्री.) चार माशे की एक तौल जिसका प्रचार जौहरियों में है, लिखावट, लेखनी की नोक, जाँच, हिस्सेदारों का बखरा।

टाँकना–(हिं.क्रि.स.) कील या काँटे से जड़ना या जोड़ना, वहीं पर लिखना या चढ़ाना, सिलाई करके जोड़ना, रेती तीक्ष्ण करना, चट कर जाना, उड़ा जाना, सिल, चक्की आदि के तल को खुरदुरा बनाना, कूटना, अनुचित रूप से घन ले लेना।

टाँका–(हिं. पुं.) जोड़ मिलाने का काँटा या कील, सिलाई का अलग-अलग भाग, डोभ, सिलाई, सीवन, चिप्पी, चकती, शरीर के घाव या कटे स्थान की सिलाई, वह मसाला जिससे धातु के पात्र जोड़े जाते हैं, पानी रखने का खुले मुँह का बड़ा पात्र, कंडाल।

टाँकी–(हिं. स्त्री.) पत्थर गढ़ने की छेनी, काटकर बनाया हुआ छेद, आरी का दाँत, एक प्रकार का फोड़ा, छोटा हौज, छोटा कंडाल, छोटा टाँका।

टाँग–(हिं. स्त्री.) जाँघ से लेकर एड़ी तक का शरीर का अंग, मल्लयुद्ध की एक युक्ति; (मुहा.) **–अड़ाना**–बिना अधिकार के हस्तक्षेप करना; विघ्न डालना; **–के नीचे से निकलना**–हार मानना; **–पसारकर सोना**– निश्चिन्त होकर सोना।

टाँगन–(हिं. पुं.) कम ऊँचाई का घोड़ा, टट्टू।

टाँगना–(हिं. क्रि. स.) किसी पदार्थ को खूंटी आदि पर लटकाना, फाँसी देना।

टाँगा–(हिं पुं.) बड़ी कुल्हाड़ी, एक घोड़े से खींची जानेवाली एक प्रकार की दो पहियोंवाली गाड़ी जिसका पिछला भाग बहुत झुका रहता है।

टाँगी–(हिं. स्त्री.) छोटी कुल्हाड़ी।

टाँगु(मु)न–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का गरीबों के खाने का अन्न।

टाँच–(हिं. स्त्री.) दूसरे का काम बिगाड़ने की बात, टाँका, सिलाई, डोभ, वह टुकड़ा जो किसी फटे कपड़े में सिला जाय, चकती।

टाँचना–(हिं.क्रि.स.) टाँकना, सीना, डोभ लगाना, काटना, छाँटना, छीलना, तराशना।

टाँची–(हिं. स्त्री.) कपड़े की लंबी-पतली थैली जिसमें रुपये भरकर लोग कमर में बाँधते है।

टाँट–(हिं. पु.) कपाल, खोपड़ी।

टाँठ, टाँठा–(हिं. वि.) कठोर, दृढ़, हृष्ट-पुष्ट।

टाँड़–(हिं. स्त्री.) सामान रखने की पाटन, परछत्ती, मचान जिस पर बैठकर किसान खेत की रखवाली करता है, स्त्रियों का बाँह में पहिनने का एक आभूषण, ढेर, राशि, घरों की पंक्ति।

टाँड़ाँ–(हिं. पुं.) बनजारों के बैलों का झुंड जिन पर अन्न लदा होता है, व्यापारियों के माल का चालान, व्यापारियों का झुंड, परिवार, कुटुम्ब।

टाँड़ी–(हिं. स्त्री.) शलभ, टिड्डी।

टाँय टाँय–(हिं. स्त्री.) अप्रिय शब्द, टें-टें, बकवाद; (मुहा.) **–फिस**–निरर्थक आडंबर जिसका कुछ परिणाम न हो।

टाँस–(हिं. स्त्री.) हाथ-पैर की नसों की सिकुड़न।

टाइप–(अं. पुं.) छपाई के काम आनेवाले सीसे के ढले अक्षर।

टाकू–(हिं. पुं.) टेकुआ, तकला।

टाट–(हिं. पुं.) सन या पटुए का बना हुआ मोटा कपड़ा, बिरादरी, साहूकार के बैठने की गद्दी; (मुहा.)**–उलटना**–महाजन का दिवाला बोलना; **–बाफी जूता**–(स्त्री.) कामदार बढ़िया जूता।

टाटर–(हिं. पुं.) टट्टर, टट्टी, मस्तक की हड्डी, कपाल, खोपड़ी।

टाटिक, टाटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टट्टी'।

टान–(हिं. स्त्री.) फैलाव, तनाव, खिंचाव; (पुं.) मचान।

टानना–(हिं. क्रि. स.) खींचना, तानना।

टाप–(हिं. पुं.) घोड़े के पैर का सबसे निचला भाग, खुर, वह शब्द जो चलते समय घोड़े के पैर से होता है, झावा जिससे मछलियाँ पकड़ी जाती है, मुरगियों को बन्द करने का झावा।

टापड़–(हिं. पुं.) ऊसर मैदान।

टापदार–(हिं. वि.) जिसका ऊपरी या नीचे का भाग फैला हुआ हो।

टापना–(हि.क्रि.अ.,स.) घोड़े का पैर पटकना, इधर-उधर व्यर्थ घूमना, उछलना, कूदना, टक्कर मारना, निराहार पड़ा रहना, वृथा किसी की प्रतीक्षा करना, पछताना।

टापा–(हिं.पुं.) टप्पा, उजाड़ मैदान, किसी वस्तु को ढकने का टोकरा या झावा।

टापू–(हिं. पुं.) वह भूमिखंड जो चारों ओर से पानी से घिरा हो, द्वीप।

टाबर–(हिं.पुं.) लड़का, बालक, छोकरा।

टामक–(हिं. पुं.) डुग्गी, डुगडुगी।

टामन–(हिं. पुं.) तन्त्र-मंत्र, टोटका।

टार–(सं. पुं.) तुरंग, घोड़ा, कुटना; (हिं. पुं.) राशि, ढेर; (स्त्री.) टाल।

टारन–(हिं. पुं.) सरकाने की वस्तु, कोल्हू में लगा हुआ लकड़ी का डंडा।

टाल–(हिं. स्त्री.) बड़ी राशि, ऊँचा ढेर, गंज, अटाला, लकड़ी, भूसे आदि की दुकान,; टालने की क्रिया या भाव; (पुं.) स्त्री-पुरुष का समागम करानेवाला, कुटना, भडुआ।

टाल-टूल–(हिं.स्त्री.) देखें 'टाल-मटूल'।

टालना–(हिं.क्रि.स.) उल्लंघन करना, न मानना, समय व्यतीत करना, किसी कार्य को पूरा करने की झूठी आशा देना, किसी को निराश करके लौटा देना, पलटना, फेरना, तरह देना, हटाना, सरकाना, स्थगित करना, भगा देना, दूर करना, मिटाना, नियत समय से आगे टरकाना।

टालमटूल–(हिं. स्त्री.) मिस, बहाना।

टालमटोल–(हि. स्त्री.) देखें 'टाल-मटूल', बहाना।

टाला–(हिं. वि.) अर्ध, आधा।

टाली–(हिं. स्त्री.) गाय-बैल की गरदन में बाँधने की घंटी, जवान बछिया जो तीन वर्ष से कम उम्र की हो और बहुत उछलती-कूदती हो।

टाहली–(हिं. पुं.) देखें 'टहलुआ'।

टिंड, टिंडा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है।

टिंडर–(हिं.पुं.) रहट में लगी हुई बालटी।

टिंडिश–(सं. पुं.) देखें 'टिंड'।

टिंडी–(हिं. स्त्री.) हल की मूठ, जांता घुमाने की मूठ।

टिक–(हिं. पुं.) टिक्कर, लिट्टी।

टिकट–(अं. पुं.) रेलगाड़ी आदि से यात्रा करने, सिनेमा आदि देखने के लिये पैसा देकर जो कागज या दफ्ती का अंकित टुकड़ा प्राप्त किया जाता है, डाक विभाग द्वारा चिट्ठियों आदि पर सटाने के लिये बेचा जानेवाला अंकित तथा चित्रित कागज का खंड, लेख्यपत्रों पर लगा हुआ मूल्यांकित तथा राज-चिन्ह चित्रित कागज का खंड, मुद्रा-पत्र।

टिकटिक–(हिं. स्त्री.) घोड़ा हाँकते समय मुख से किया जानेवाला शब्द, घड़ी के चलने से उत्पन्न शब्द।

टिकटिकी, टिकठी–(हिं. स्त्री.) लकड़ी का बना हुआ वह ढाँचा जिसमें बाँध-

कर अपराधी को कोड़ा या बेंत लगाया जाता है या फाँसी का फन्दा बाँधा जाता है, शव ढोने की अरथी, ऊँची तिपाई।
टिकड़ा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु का गोल चिपटा टुकड़ा, आँच पर सेंकी हुई मोटी रोटी, बाटी।
टिकड़ी–(हिं. स्त्री.) छोटा टिकड़ा।
टिकना–(हिं. क्रि.अ.) डेरा डालना, कुछ काल के लिये कहीं पर ठहरना, तलछट के रूप में नीचे बैठना, स्थायी रहना, कुछ दिनों तक काम देना, अड़ा रहना, ठहरना, स्थित रहना, न गिरना।
टिकरी–(हिं. स्त्री.) टिकिया, एक प्रकार का नमकीन पकवान।
टिकली–(हिं.स्त्री.) छोटी टिकिया, कांच या पन्नी की बनी हुई छोटी टिकिया जिसको स्त्रियाँ माथे पर चिपकाती हैं, टिकुली, छोटी बिन्दी, सूत कातने का एक उपकरण, तकली।
टिकस–(हिं. पुं.) कर, महसूल, टिकट।
टिकाई–(हिं. स्त्री.) टिकने का भाव।
टिकाऊ–(हिं. वि.) कुछ दिनों तक काम देनेवाला, टिकनेवाला।
टिकान–(हिं. स्त्री.) टिकने का स्थान, बोझ उतारने का स्थान, चट्टी, पड़ाव।
टिकाना–(हिं. क्रि.स.) रहने के लिये स्थान या आश्रय देना, स्थित करना, ठहराना, अड़ाना।
टिकाव–(हिं. पुं.) स्थायित्व, ठहरने का स्थान, पड़ाव, ठहराव।
टिकिया–(हिं. स्त्री.) छोटा गोल टुकड़ा, कोयले की बुकनी का बना हुआ छोटा गोल टुकड़ा जो सुलगाकर चिलम पर रखा जाता है, एक प्रकार की रोटी, एक प्रकार की गोल चिपटी मिठाई।
टिकुरा–(हिं. पुं.) टीला, भीटा।
टिकुरी–(हिं. स्त्री.) सूत कातने की फिरकी, तकली।
टिकुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'टिकली', तकली, बिंदी।
टिकैत–(हिं.पुं.) राज्य का उत्तराधिकारी राजकुमार, युवराज, अधिष्ठाता, सरदार।
टिकोर–(हिं. स्त्री.) देखें 'टकोर'।
टिकोरा–(हिं.पुं.) आम का कच्चा छोटा फल, अँबिया।
टिक्कड़–(हिं. पुं.) बड़ी टिकिया, आँच पर सेंकी हुई छोटी-मोटी रोटी, लिट्टी।
टिक्का–(हिं. पुं.) देखें 'टीका'।
टिक्की–(हिं. स्त्री.) गोल चिपटा टुकड़ा, टिकिया, लिट्टी, बाटी, गोल टीका, बिंदी, ताश की बूटी, भीत पर अँगुलियों से लगाया हुआ चिह्न।
टिखटिख–(हिं. स्त्री.) देखें 'टिकटिक'।
टिघलना–(हिं.क्रि.अ.) गलना, पिघलना।
टिघलाना–(हिं.क्रि.स.) गलाना, पिघलाना।
टिचन–(हिं.वि.) प्रस्तुत, उद्यत, ठीक, तैयार।
टिटकारना–(हिं. क्रि. अ., स.) टिकटिक करके किसी पशु को हाँकना।
टिटिह–(हिं.पुं.) टिटिहरी नाम का पक्षी।
टिटिहरी–(हिं.स्त्री.) एक छोटी चिड़िया जो प्राय: पानी के किनारे पर रहती है।
टिटिहा–(हिं.पुं.) टिटिहरी।
टिटिहारोर–(हिं.पुं.) चिल्लाहट, शोरगुल।
टिट्टिभ–(सं.पुं.) कुररी, टिटिहरी, टिड्डी।
टिड्डा–(हिं. पुं.) पंखयुक्त एक प्रकार का कीड़ा।
टिड्डी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो दल बाँधकर चलता है, (यह पत्ती खाता और कृषि को हानि पहुँचाता है।)
टिढबिडंगा, टिढबिंगा–(हिं. वि.) वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा।
टिपका–(हिं. पुं.) पानी की बूँद।
टिपटिप–(हिं.स्त्री.) बूँद-बूँद पानी गिरने का शब्द।
टिपवाना–(हिं. क्रि. स.) धीरे-धीरे प्रहार करवाना, पिटवाना, दबवाना, टीपने का काम दूसरे से कराना।
टिपारा–(हिं. पुं.) मुकुट के आकार की कलँगीदार टोपी।
टिपुर–(हिं.पुं.) अभिमान, घमंड, पाखंड, आडम्बर।
टिप्पणी–(हिं. सं.) देखें 'टिप्पनी'।
टिप्पन–(सं.पुं.) टीका, व्याख्या, जन्मपत्रिका।
टिप्पनी–(सं. स्त्री.) व्याख्या, टीका।
टिप्पी–(हिं.स्त्री.) वह चिह्न जो उँगली म रंग पोतकर बनाया जाता है, ताश की बूटी।
टिबरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया।
टिमटिमाना–(हिं. क्रि. अ.) कम प्रकाश देना, मन्द जलना, झिलमिलाना, बुझन पर होना, मरणासन्न होना।
टिमाक–(हिं.स्त्री.) श्रृंगार, बनाव, ठसक।
टिर–(हिं. स्त्री.) देखें 'टर'।
टिरफिस–(हिं. स्त्री.) प्रतिवाद, विरोध, चीं-चपड़।
टिर्राना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'टर्राना'।
टिलटिलाना–(हिं.क्रि.अ.) पतलादस्तआना।
टिलवा–(हिं. पुं.) लकड़ी का टेढ़ा-मेढ़ा गँठीला टुकड़ा, नाटा मनुष्य, चापलूस आदमी।
टिल्ला–(हिं. पुं.) धक्का, ठोकर, चोटा।
टिल्लेनवीसी–(हिं. स्त्री.) नींच सेव, व्यर्थ का काम, बहाना, कुटनपन।
टिसुआ–(हिं. पुं.) अश्रु, आँसू।
टिहुक–(हिं. स्त्री.) चमक।
टिहुकना–(हिं.क्रि.अ.) ठिठकना, चौंकना, रूठना।
टिहुनी–(हिं. स्त्री.) घुटना, कोहनी।
टींड–(हिं. पुं.) रहट में बाँधने की बालटी।
टींडसी–(हिं.स्त्री.) एक लता जिसके फल की तरकारी खाई जाती है।
टींडा–(हिं. पुं.) वह मूठ जिससे जाँत घुमाया जाता है।
टीक–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों का गले में पहिनने का एक आभूषण।
टीकन–(हिं. पुं.) वह खंभा जो भार रोकने के लिये नीचे की ओर लगाया जाता है, चाँड़, थूनी।
टीकना–(हिं. क्रि. स.) टीका या तिलक लगाना, दीवार आदि पर उँगलियों का चिह्न बनाना।
टीका–(सं. स्त्री.) व्याख्या-ग्रन्थ, किसी वाक्य या पद का अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य।
टीका–(हिं. पुं.) वह चिह्न जो गीले चन्दन, रोली, केशर आदि से मस्तक, बाहु आदि अंगों पर शोभा के लिये अथवा पूजा-पाठ आदि अनुष्ठानों में लगाया जाता है, तिलक, राजतिलक, वह भेट जो असामी राजा को देता है, मस्तक पर पहिनने का एक गहना, धब्बा, चिह्न, किसी रोग से बचने के लिये उसी रोग का जीवाणु-तत्व लेकर शरीर में सूई से प्रविष्ट कराना, विवाह-संबंध के आधारिक रस्म में वर के मस्तक पर तिलक लगाने तथा कुछ धन आदि देने की प्रथा, दोनों भौंहों के बीच का मस्तक का भाग, सिर का मध्य भाग, श्रेष्ठ मनुष्य, शिरोमणि, राजगद्दी, राज्य का उत्तराधिकारी, युवराज।
टीकाकार–(सं.पुं.) व्याख्याकार, वह जो किसी ग्रन्थ की टीका लिखता हो।
टीन–(अं.पुं.) राँग की कलई की हुई लोहे की चद्दर, इसका बना पात्र, कनस्तर।
टीप–(हिं.स्त्री.) टीपने की क्रिया, हलका प्रहार, छत की पिटाई, धनुष के चिल्ले

से उत्पन्न ध्वनि, ऊँचा स्वर, दूध और पानी का शीरा, वह लकीर जो विना पलस्तर की भीत पर ईंटों के जोड़ों में मसाला देकर वनाई जाती है, जन्मपत्री, कुंडली, गंजीफे का एक खेल, अँगूठे का निशान, हुंडी, स्मरण रखने के लिये किसी वात को टाँक लेने की क्रिया; **–टाप**–(स्त्री.) आडंवर, ठाट-वाट, दिखावट ।

टीपन–(हिं. स्त्री.) गाँठ, टाँका, घट्ठा, जन्मपत्री ।

टीपना–(हिं.क्रि.स.) अंकित करना, गंजीफे की खेल जीतना, ऊँचे स्वर में गाना, टीप लगाना, प्रहार करना, धीरे-धीरे ठोंकना, चाँपना ।

टीमटाम–(हिं. स्त्री.) शृंगार, सजावट, तड़क-भड़क, आडंवर ।

टीला–(हिं. पुं.) पृथ्वी के तल से ऊँचा भाग, भीटा, मिट्टी या वालू का ऊँचा ढेर, छोटी पहाड़ी ।

टीस–(हिं. स्त्री.) रह-रहकर होनेवाली जोर की पीड़ा, कसक ।

टीसना–(हिं. क्रि.अ.) रह-रहकर पीड़ा होना कसक होना ।

टुंगना–(हिं. क्रि. अ..) कोमल पत्तियाँ आदि दाँत से कुतरकर खाना, कुतरना ।

टुंच–(हिं. वि.) क्षुद्र, नीच, तुच्छ ।

टुंटा–(हिं. वि.) विना हाथवाला, लूला ।

टुंड–(हिं. पुं.) वह वृक्ष जिसकी शाखा कट गई हो, ठूँठ, विना पत्तियों का वृक्ष, कटे हुए हाथवाला, लूला ।

टुंडा–(हिं. वि.) ठूँठा, जिसमें शाखा और पत्तियाँ न हों, लूला, लुंजा, एक सींग का बल, डूंड़ा; (पुं.) लूला मनुष्य ।

टुंडी–(हिं. स्त्री.) वाहुदंड, भुजा; (वि. स्त्री.) जिसके हाथ न हो, लूली ।

टुइयाँ–(हिं. स्त्री.) छोटी जाति का सुग्गा, सुग्गी; (वि.) नाटा, वौना, ठिंगना ।

टुइल–(अं. पुं.) एक प्रकार मोटा पर चिकना कपड़ा ।

टुक–(हिं. वि.) किंचित्, तनिक, थोड़ा ।

टुकड़गदा–(हिं. पुं.) घर-घर रोटी का टुकड़ा माँगनेवाला, भिखारी; (वि.) तुच्छ, नीच, निर्धन, कंगाल ।

टुकड़गदाई–(हिं. पुं.) देखें 'टुकड़गदा'; (स्त्री.) भीख माँगने का काम ।

टुकड़तोड़–(हिं. वि., पुं.) पराश्रित (मनुष्य), (वह मनुष्य) जो दूसरे का दिया हुआ अन्न खाकर रहता है ।

टुकड़ा–(हिं. पुं.) काटा हुआ अंश, खंड, भाग, हिस्सा, रोटी का टुकड़ा, ग्रास; (मुहा.)–**तोड़ जवाब देना**–स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना; **–तोड़ना**–पराश्रित रहना, दूसरे के दिये हुए अन्न पर निर्वाह करना; **–माँगना**–भिक्षा माँगना ।

टुकड़ी–(हिं. स्त्री.) खंड, छोटा टुकड़ा, मंडली, समुदाय, दल, झुंड, जत्था, सेना का एक भाग, कपड़े का टुकड़ा ।

टुकनी–(हिं. स्त्री.) देख 'टोकनी' ।

टुकरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टुकड़ी' ।

टुघलाना–(हिं. क्रि. स.) मुख में रखकर धीरे-धीरे कुचलना, चुभलाना, पागुर करना।

टुच्चा–(हिं. वि.) तुच्छ, नीच, ओछा ।

टुटका–(हिं. पुं.) देखें 'टोटका' ।

टुटनी–(हिं.स्त्री.) पतली नली, छोटी टोंटी ।

टुटपुंजिया–(हिं. वि.) थोड़ी पूँजी का ।

टुटरूँ–(हिं. पुं.) छोटी पेंडुकी; **–टूँ**–(स्त्री.) पेंडुकी की वोली; (वि.) अकेला, दुर्बल, दुवला-पतला ।

टुड़ी–(हिं. स्त्री.) चमड़े से मढ़ा हुआ एक प्रकार का वाजा; (स्त्री.) नाभि, ढोंढ़ी, टुकड़ी, डली ।

टुनका–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मूत्र रोग ।

टुनकी–(हिं. स्त्री.) एक परदार कीड़ा जो धान की उपज को हानि पहुँचाता है ।

टुनगा–(हिं. पुं.) टहनी का आगे का भाग ।

टुनगी–(हिं. स्त्री.) टहनी का अगला भाग जिसकी पत्तियाँ छोटी और कोमल होती हैं, फुनगी ।

टुनहाया–(हिं. वि.) जादू-टोना करनेवाला ।

टुनि(न)हाई–(हिं. स्त्री.) टोना करने-वाली स्त्री ।

टुन्ना–(हिं. पुं.) वृक्ष का वह डंठल जिसमें फल लगता है ।

टुपकना–(हिं. क्रि. स.) धीरे से काटना या डंक मारना, चुगली खाना ।

टुम्मा–(हिं. पुं.) वह रसीद जो रुपया मिलने पर लिखी जाती है ।

टुर्रा–(हिं. पुं.) कण, टुकड़ा, दाना, डली ।

टुसकना–(हिं. क्रि. अ.) देख 'टसकना' ।

टूँ–(हिं.स्त्री.) गुदा से वायु निकलन का शब्द ।

टूँगना–(हिं. क्रि.स.) कोमल पत्तियों को दाँत से कुतरना, थोड़ा-थोड़ा करके खाना ।

टूँड़–(हिं. पुं.) डँसनेवाले कीड़ों के मुख के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिनको चुभाकर वे रक्त चसते हैं, गेहूँ, जव, धान आदि की वालों के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अवयव, सींग ।

टूँड़ी–(हिं.स्त्री.) छोटा टूँड़, नाभि, ढोंढ़ी, गाजर, मूरई आदि की नोक, किसी पदार्थ की नोक जो दूर तक निकली हो ।

टूक–(हिं. पुं.) टुकड़ा, खंड ।

टूकर–(हिं. पुं.) टुकड़ा, खंड ।

टूका–(हिं. पुं.) खंड, टुकड़ा, रोटी के चार भागों में से एक भाग, रोटी का टुकड़ा, भीख ।

टूट–(हिं. स्त्री.) टूटकर अलगाया हुआ अंश, खंड, टुकड़ा, टूटने का भाव, भूल, त्रुटि, भूल से छूटा हुआ वह शब्द या वाक्य जो पुस्तक के किनारे पर पीछे से लिखा जाता है; (पुं.) घाटा, टोटा ।

टूटना–(हिं. क्रि. अ.) खंडित होना, भग्न होना, टुकड़े-टुकड़े होना, चलते हुए क्रम का भंग होना, किसी अंग के जोड़ का उखड़ या हट जाना, अँगड़ाना, झपटना, आक्रमण करना, अकस्मात् कहीं से आ जाना, क्षीण होना, दुर्वल होना, अलग होना, रुपये का वाकी पड़ना, हानि होना, टोटा होना, निर्धन होना, शरीर में पीड़ा होना, संवंध छूटना, युद्ध में दुर्ग का लिया जाना; (मुहा.)–**टूट कर वरसना**–मूसलधार वृष्टि होना ।

टूटा–(हिं. वि.) खंडित, भग्न, टुकड़ा किया हुआ, शिथिल, दुवल, निर्धन; **–फटा**–(वि.) जीर्ण-शीर्ण; **टूटी-फूटी वोली**–(स्त्री.) असंवद्ध वार्ता, वच्चों जैसी अस्पष्ट वोली ।

टूठना–(हिं.क्रि.अ.) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना ।

टूठनि–(हिं. स्त्री.) सन्तोष, तुष्टि ।

टूम–(हिं. स्त्री.) आभूषण, गहना, अलंकार, जेवर, व्यंग्य, ताना; **–टाम**–(पुं.) साज-शृंगार, वस्त्र तथा गहना ।

टूमना–(हिं.क्रि.स.) धक्का देना, ताना मारना ।

टूसा–(हिं. पुं.) खंड, नुकीली कली ।

टूसी–(हिं. स्त्री.) छोटा टूसा या कली ।

टें–(हिं. स्त्री.) सुग्गे की वोली; (मुहा.) **–टें करना**–व्यर्थ की वकवाद करना; **–वोलना**–मर जाना ।

टेंकिका–(हिं. स्त्री.) ताल का एक भेद ।

टेंगरा, टेंगना–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मछली ।

टेंघुना–(हिं. पुं.) घुटना ।

टेंघुनी–(हिं. स्त्री.) घुटने पर की चक्की ।

टेंट–(हिं. स्त्री.) कमर पर लपेटी हुई धोती की मुर्री, कपास का डोंडा ।

टेंटड़, टेंटर–(हिं. पुं.) आँख के ढेले पर चोट या रोग के कारण मांस का उमड़ा हुआ भाग, ढेंढ़र ।

टेंटा, टेंटार–(हिं. पुं.) एक प्रकार की वड़ी चिड़िया ।

टँटी–(हिं. स्त्री.) करील का वृक्ष; (वि.) व्यर्थ झगड़नेवाला ।
टँटुवा–(हिं. पुं.) गला, अँगूठा ।
टँटँ–(हिं. स्त्री.) सुग्गे की बोली, व्यर्थ बकवाद ।
टँड़, टँड़सी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टिंड' ।
टेउकी–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिये लगाई हुई वस्तु, चाँड़, रोक ।
टेक–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु को अड़ाये रखने के लिये नीचे से लगाया हुआ खंभा, थूनी, चाँड़, आश्रय, सहारा, बैठने का ऊँचा चबूतरा, अवलम्ब, हठ, जिद, अभ्यास, गीत का स्थायी पद, छोटी पहाड़ी,ऊँचा टीला; (मुहा.)–**निभना**–प्रतिज्ञा पूर्ण होना; –**पकड़ना**–हठ करना।
टेकड़ी–(हिं. स्त्री.) टीला ।
टेकन–(हिं. पुं.) टेकनी, रोक, चाँड़ ।
टेकना–(हिं.क्रि.स.)सहारा देना,ठहराना, हाथ का सहारा देना, सहारे के लिए थामना, बीच में पकड़ना या रोकना, जिद् करना; (मुहा.) **माथा टेकना**–पैर छूना, प्रणाम करना ।
टेकनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टेकन' ।
टेकर, टेकरा–(हिं. पुं.) टीला, भीटा, छोटी पहाड़ी ।
टेकरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'टेकर' ।
टेकला–(हिं. स्त्री.) धुन, रट ।
टेकली–(हिं. स्त्री.) वह साधन जिससे भारी चीज उठाई जाती है ।
टेकान–(हिं. पुं.) टेक, चाँड़, खंभा, ऊँचा चबूतरा जिस पर ढोनेवाला अपना बोझ रखकर कुछ काल के लिए सुसताता है ।
टेकाना–(हिं.क्रि.स.)किसी वस्तु को ले जाने में सहारा देने के लिए थामना, सहारा देने के लिए पकड़ना ।
टेकानी– (हिं. स्त्री.)वह लोहे की कील जो गाड़ी के पहिए को धुरे में रोकने के लिए लगाई जाती है, किल्ली ।
टेकी–(हिं. पुं.) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला मनुष्य; (वि.) हठी, दुराग्रही ।
टेकुआ–(हिं. पुं.) कते हुए सूत को लपेटने का चरखे का तकला, वह लकड़ी जिस पर कोई वस्तु अड़ाई जाती है ।
टेकुरी–(हिं. स्त्री.) सुआ लगी हुई फिरकी जिससे रस्सी या सूत बटा जाता है, सूत कातने का तकला, तागा खींचने और निकालने का चमार का सुआ, जुलाहे की फिरकी ।
टेघरना–(हिं.क्रि.अ.) पिघलना, गलना ।
टेटका–(हिं. पुं.)कान का एक प्रकार का गहना ।
टेढ़–(हिं. स्त्री.) वक्रता, टेढ़ापन, ऐंठन; –**बिड़ंगा**–(वि.)टेढ़ा, बेढंगा,टेढ़ा-मेढ़ा ।
टेढ़ा–(हिं. वि.) वक्र, कुटिल, जो एक सीध में न हो, तिरछा, इधर-उधर घूमा हुआ, झुका हुआ, जो समानान्तर न हो, उद्धत, पेचीला,कठिन; –**मेढ़ा**–(वि.) वक्र, जो सीधा न हो; **टेढ़ी खीर**–(स्त्री.) कठिन कार्य; (मुहा.)–**होना**–बिगड़ना, उग्र रूप धारण करना, क्रुद्ध होना; **टेढ़ी-सीधी सुनाना**–भली-बुरी बातें सुनाना ।
टेढ़ाई–(हिं. स्त्री.) टेढ़ापन ।
टेढ़ापन–(हिं. पुं.) टेढ़ा होने का भाव ।
टेढ़े–(हिं.अव्य.)घुमाव-फिराव के साथ, पेचीली तरह से; (मुहा.)– **टेढ़े जाना**–इतराकर चलना ।
टेना–(हिं. क्रि. स.) शस्त्र को पैना या तेज करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना, मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना ।
टेनिस–(अं. पुं.) एक अंग्रेजी खेल ।
टेनी–(हिं.स्त्री.)छोटी अँगुली; (मुहा.) –**मारना**–तराजू को उँगलियों से दबाकर कम तौलना ।
टेम–(हिं. स्त्री.) दीपक की ज्योति, दीपशिखा, लौ; (पुं.) समय ।
टेर–(हिं. स्त्री.) गान में ऊँचा स्वर, तान, टीप, दूर से पुकारने का शब्द, पुकार, हाँक ।
टेरक–(सं. पुं.) ऐंचाताना, भेंगा ।
टेरना–(हिं.क्रि.स.) तान लेना, पुकारना, बुलाना,पूरा करना, निवाहना, बिताना ।
टेरवा–(हिं. पुं.) हुक्के की नली ।
टेरा–(हिं.पुं.) वृक्षस्तम्भ, पेड का धड़; (वि.) ऐंचाताना ।
टेलिग्राफ–(अं. पुं.) तार भेजने का यंत्र या व्यवस्था ।
टेलिग्राम–(अं. पुं.) टेलिग्राफ के द्वारा भेजा हुआ समाचार, तार ।
टेलिप्रिंटर–(अं. पुं.) वह यंत्र जिससे तार से भेजे गये समाचार टाइप पर स्वयं छपते जाते हैं ।
टेलिफोन–(अं. पुं.) वह यंत्र जो तार के संबंध के द्वारा दूर-दूर रहनेवाले लोगों में परस्पर बातचीत करने, सूचना भेजने आदि में सहायक होता है ।
टेलिविजन–(अं. पुं.) सैकड़ों मील दूरी पर रहनेवाली चीज या व्यक्ति को यंत्र के पट्ट पर प्रत्यक्ष दिखलानेवाला यंत्र ।
टेव–(हिं. स्त्री.) अभ्यास, बान ।
टेवकी–(हिं.स्त्री.) नाव का सब से ऊपर का छोटा पाल ।
टेवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'टेना' ।
टेवा–(हिं. पुं.) जन्मकुंडली, लग्नपत्रिका, जन्मपत्री, वह लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति,दिन,घटी,पल आदि लिखा रहता है।
टेवैया–(हिं. वि.) हथियार चोखा करनेवाला ।
टेसू–(हिं. पुं.) पलाश का फूल, ढाक का फूल, लड़कों का एक उत्सव जिसमें वे विजया-दशमी के दिन गाते हुए द्वार-द्वार घूमते हैं ।
टैयाँ–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी चिपटी कौड़ी, चित्ती ।
टैक्सी–(अं. पुं.) किराये पर चलनेवाली मोटरकार ।
टैन–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास जो चमड़ा सिझाने के काम में आती है ।
टोंक–(हिं. पुं.) रोक, विघ्न ।
टोंक(का)–(हिं.पुं.) किनारा,सिरा,नोक।
टोंग–(हिं. पुं.) एक प्रकार की झाड़ी जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है।
टोंचना–(हिं. क्रि. स.) चुभाना, गड़ाना ।
टोंट–(हिं. स्त्री.) पक्षी की चोंच, ठोर ।
टोंटा–(हिं. पुं.) पक्षी की चोंच के आकार की पानी आदि गिराने के लिये पात्र में लगी हुई नली, टोंटी ।
टोंटी–(हिं. स्त्री.) झारी या पात्र में लगी हुई नली, पशुओं का थूथन ।
टोआ–(हिं. पुं.) गर्त, गड्ढा ।
टोइयाँ–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा सुग्गा जिसका ठोर पीला तथा कंठ बैंगनी रंग का होता है ।
टोई–(हिं. स्त्री.) अँगुली की पोर।
टोक–(हिं. स्त्री.) टोकने की क्रिया, रोक, बाधा, प्रश्न करके बात-चीत में बाधा डालना, बुरी दृष्टि का प्रभाव; –**टाक**–(स्त्री.) पूछताछ करके बाधा डालना; **रोक-टोक**–निषेध, रुकावट ।
टोकना–(हिं. क्रि. स.) प्रश्न आदि करके किसी कार्य में बाधा डालना, बीच में बोल उठना, बुरी दृष्टि डालना, नजर लगाना, आपत्ति या विरोध करना; (पुं.) एक प्रकार का टोकरा, हंडा ।
टोकनी–(हिं.स्त्री.)टोकरी,डलिया, पानी रखने का हंडा, पात्र, बटलोई, डेगची ।
टोकरा–(हिं. पुं.) खाँचा, झाबा, डला ।

टोकरी–(हिं. स्त्री.) छोटा डला, झाँपी, झँपोली, बटलोई, देगची ।
टोकवा–(हिं. पुं.) नटखट बालक ।
टोकसी–(हिं. स्त्री.) नारियल की आधी खोपड़ी ।
टोका–(हिं. पु.) एक प्रकार का कीड़ा जो उर्द की उपज को हानि पहुँचाता है ।
टोकारा–(हिं.पुं.) स्मरण दिलाने के लिये कही हुई कोई बात ।
टोटक–(हिं. पुं.) देखें 'टोटका' ।
टोटका–(हिं. पुं.) तान्त्रिक प्रयोग, तंत्र-मन्त्र, टोना, लटका, वह काली हाँडी जो उपज में कुदृष्टि न लगने के लिये टाँग दी जाती है; (मुहा.)–**करने आना**–आकर तुरंत चला जाना ।
टोटकेहाई–(हिं.स्त्री.) जादू-टोना करनेवाली स्त्री ।
टोटा–(हिं. पुं.) बाँस का खंड, मोमबत्ती आदि का जलकर बचा हुआ शेष, कारतूस, घाटा, हानि, कमी, अभाव ।
टोड़ा–(हिं. पुं.) दीवार में गड़ी हुई खूँटी जो आगे की ओर लटकी हुई छाजन को सहारा देने के लिये लगाई जाती है,टोंटा ।
टोड़ी–(हिं.स्त्री.) रागिनी का एक भेद ।
टोनहा–(हिं.वि.)जादू-टोना करनेवाला ।
टोनहाई–(हिं. स्त्री.) जादू-टोना करनेवाली स्त्री, जो स्त्री मंत्र पढ़कर झाड़-फूंक करती है, कुदृष्टि लगानेवाली स्त्री ।
टोनहाया–(हि. पुं.) जादू-टोना करनेवाला मनुष्य, टोनहा ।
टोना–(हिं. पुं.) मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग, जादू-टोना, एक प्रकार का गीत जो विवाह के अवसर पर गाया जाता है, एक प्रकार की आखेटी चिड़िया; (क्रि.स.) छूना, हाथ से टटोलना ।
टोनाहाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'टोनहाई' ।
टोप–(हिं.पुं.) सिर पर पहनने का बड़ा पहनावा, बड़ी टोपी, वह लोहे की टोपी जो लड़ाई के समय सिर की रक्षा के लिये पहिनी जाती है, शिरस्त्राण, कूँड़, खोल, अँगली पर पहिनने की धातु की टोपी, बुदा, बूंद ।
टोपन–(हिं. पुं.) टोकरा, खाँचा ।
टोपा–(हिं.पुं.) बड़ी टोपी, स्वाँग करनेवालों की लंबी टोपी, टोकरा, टाँका, डोभ ।
टोपी–(हिं. स्त्री.) शिर पर का पहनावा, राजमुकुट, ताज, कोई गोल ढक्कन जो टोपी जैसा हो, धातु की बनी हुई कटोरी जिसमें बंदूक के घोड़े का आघात होने पर आग लगती है, बन्दूक का पड़ाका, आखेटी पशु के मुख पर चढ़ाई जानेवाली थली, –**दार**–(वि.) जिसमें टोपी लगी हुई हो; –**वाला**–(पुं.) वह दरजी जो टोपियाँ बनाता है, अहमद शाह और नादिर शाह की सेना के सिपाही जो टोपियाँ पहनकर भारतवर्ष में आये थे ।
टोभ–(हि. पुं.) टाँका ।
टोर–(हिं. स्त्री.) शोरे की मिट्टी का पानी, कटारी ।
टोरना–(हिं.क्रि.स.)अलगाना, तोड़ना; (मुहा.) आँख **टोरना**–लज्जावश आँख छिपा लेना ।
टोरा–(हिं. पुं.) जुलाहे का रेशम तौलने का तराजू ।
टोर्रा–(हिं.पुं.) छिलका सहित अरहर का खड़ा दाना जो दाल में रह जाता है ।
टोल–(हिं. स्त्री.) समूह, मंडली, जत्था, झुंड, चटसाल, पाठशाला, सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
टोला–(हिं. पुं.) महल्ला, बड़ी वस्ती का एक भाग, रोड़ा,पत्थर या ईट का टुकड़ा, चोट से पड़ा हुआ चिह्न, बड़ी कौड़ी ।
टोलिया–(हिं.स्त्री.)छोटा मोहल्ला,टोली ।
टोली–(हि. स्त्री.) वस्ती का छोटा भाग, समूह, झुंड, मंडली, जत्था, पत्थर की चौकोर पटिया,सिल,एक प्रकार का बाँस ।
टोवना–(हिं.क्रि. स.) टोना, टटोलना ।
टोह–(हिं. स्त्री.) अन्वेषण, खोज, ढूँढ़, देख-भाल; (मुहा.)–**में रहना**–खोज या फिराक म रहना;–**लगाना या लेना**–पता लगाना ।
टोहना–(हिं. क्रि. स.) खोजना, पता लगाना ।
टोहाटाई–(हिं. स्त्री.) अन्वेषण, छानबीन, देख-भाल ।
टोहिया, टोही–(हिं.वि.,पुं.) ढूँढ़नेवाला, भदिया, जासूस ।
टौरना–(हिं. क्रि. स.) जाँच करना, थाह लेना, पता लगाना ।
ट्राम–(अं. पुं.) बड़े नगरों में सड़कों पर बिजली से चलनेवाली गाड़ी ।
ट्रेन–(अं. स्त्री.) रेलगाड़ी ।

ठ

ठ–संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का बारहवां अक्षर, टवर्ग का द्वितीय वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है; अर्थात् इसका उच्चारण जीभ के मध्य भाग को तालू में लगान से होता है;–(सं. पुं.) शिव, महादेव, महाध्वनि, चन्द्रमण्डल, शून्य स्थान, लोक, गोचर या इन्द्रियग्राह्य वस्तु ।
ठंठ–(हिं. वि.) जिस वृक्ष की शाखा और पत्तियाँ कटकर या सूखकर गिर गई हों, ठूँठा, सूखा, परिवारशून्य, असहाय ।
ठंठनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) ठनठन शब्द होना या करना ।
ठंठार–(हिं. वि.) रिक्त, छूंछा, खाली ।
ठंठी–(हिं. स्त्री.) दाना पीटने के बाद वालों में लगा हुआ अनाज; (वि.स्त्री.) जिस गाय या भैंस को बच्चा न हो और जो दूध न देती हो, ठाँठ ।
ठंठपाल–(हिं. वि.) निर्धन, धनहीन ।
ठंड, ठंडक–(हिं. स्त्री.) देखें 'ठंढ, ठंढक' ।
ठंडा–(हिं. वि.) देख 'ठंढा' ।
ठंडई–(हिं. स्त्री.) देख 'ठंढई' ।
ठंढ–(हिं. स्त्री.) शीत, जाड़ा, ठंढक; (मुहा.)–**पड़ना**–शीत का जोर बढ़ना; –**लगना**–जाड़ा लगना ।
ठंढई–(हिं. स्त्री.) शरीर में ठंढक पहुँचानेवाले पदार्थ, भाँग, विजया, ठंढाई ।
ठंढक–(हिं. स्त्री.) उष्णता का अभाव, जाड़ा, तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता, रोग या उपद्रव की शान्ति; (मुहा.)–**पड़ना**–शीत का आधिक्य होना, तृप्त होना, किसी उपद्रव की शान्ति होना ।
ठंढा–(हिं. वि.) शीतल, जिसमें उष्णता न हो, उद्गार-रहित, बुझा हुआ, उत्साहहीन, नपुंसक, मन्द, उदासीन, गंभीर, शान्त, जिसको शीघ्र क्रोध न आता हो, विरोध न करनेवाला, धीमा, प्रसन्न, तृप्त, निश्चेष्ट, जड़, मरा हुआ, जिसमें चमक-दमक न हो; (मुहा.)–**करना**–शीतल करना, क्रोध के आवेग को शांत करना, तोड़ना, फेंकना, दीपक बुझाना, उपद्रव के आवेग को दवा देना; –**होना**–अन्त होना, मर जाना, चहल-पहल न होना, काम-काज मन्दा पड़ना ।
ठंढाई–(हिं.स्त्री.)शरीर की गरमी को शान्त करनेवाली दवा, ठंढई,पीसी हुई भाँग ।
ठंढा मुलम्मा–(हिं. पुं) धातु को विना तपाये हुए उस पर सोना-चाँदी चढ़ाना ।
ठंढी–(हिं. वि. स्त्री.) शीतल; (स्त्री.) शीतला रोग, चेचक; (मुहा.)–**साँस**–(स्त्री.) दुःखभरी साँस; –**ढलना**–शीतला के दानों का धीरे-धीरे सूखना; –**निकलना**–शीतला रोग के दाने शरीर

पर निकल आना।
ठंढे-ठंढे–(हि. अव्य.) विना विरोध के, आनन्द-से, बड़े तड़के।
ठई–(हि. पु.) स्थिति।
ठक–(हि. स्त्री.) दो वस्तुओं के परस्पर टकराने का शब्द; (वि.) स्तब्ध, भौचक्का; (पुं.) चंडूबाजों की अफीम का किमाम लगाने की सलाई; (मुहा.) –हो जाना–स्तब्ध होना, आश्चर्य या व्यग्रता से अवाक् हो जाना।
ठकठक–(हि. स्त्री.) ठकठक का शब्द, प्रपंच, झंझट, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा।
ठकठकाना–(हि. क्रि. अ., स.) ठोंकना, पीटना, ठकठक करना, खटखटाना।
ठकठकाहट–(हि. स्त्री.) ठकठक शब्द।
ठकठकिया–(हि. वि.) टंटा करनेवाला, बखेड़िया, झगड़ालू।
ठकठौआ (वा)–(हि. पुं.) एक प्रकार का करताल जिसको बजाकर भिखमंगे भीख माँगते हैं, एक प्रकार की छोटी हलकी नाव।
ठकार–(सं. पुं.) "ठ" स्वरूप वर्ण।
ठकुरई–(हि. स्त्री.) देखें 'ठकुराई'।
ठकुरसुहाती–(हि. स्त्री.) दूसरों को प्रसन्न करने के लिये कही जानेवाली बातें, चाटूक्ति, चापलूसी।
ठकुराइत–(हि. स्त्री.) देखें 'ठकुरायत'।
ठकुराइन–(हि. स्त्री.) ठाकुर की स्त्री, स्वामिनी, गृहिणी, क्षत्रिय की स्त्री, क्षत्राणी, नाइन, नाउन।
ठकुराई–(हि. स्त्री.) आधिपत्य, प्रभुत्व, सरदारी, प्रधानता, ठाकुर या जमीदार का अधिकार, उच्चता, महत्त्व, श्रेष्ठता, बड़ाई, बड़प्पन, राज्य।
ठकुरानी–(हि. स्त्री.) ठाकुर की स्त्री, सरदारिन, रानी, स्वामिनी, अधीश्वरी, क्षत्रिय की स्त्री, क्षत्राणी।
ठकुराय–(हि. पुं.) क्षत्रिय जाति का एक भेद।
ठकुरायत–(हि. स्त्री.) प्रभुत्व, आधिपत्य, सरदारी, अधिकार, ठकुराई।
ठकोरी–(हि. स्त्री.) साधुओं की कमर टेकने की विशिष्ट प्रकार की लकड़ी, वैरागिन।
ठक्कर–(हि. स्त्री.) दो पदार्थों का परस्पर आघात, टक्कर।
ठक्कुर–(हि. पुं.) देवप्रतिमा, पूजा करने की किसी देवता की मूर्ति, मैथिल तथा गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि, देवता तथा ब्राह्मण तुल्य पूजनीय व्यक्ति।
ठग–(हि. पुं.) डाकू, धोखा देकर किसी का धन हरनेवाला, धूर्त, छली, वंचक; (मुहा.)–लगना–यात्रा में यात्रियों का ठगों द्वारा पीछा किया जाना, ठगों का आधिक्य होना।
ठगई–(हि. स्त्री.) ठगों का कार्य, छल, धूर्तता।
ठगण–(सं. पुं.) पाँच मात्राओं का एक गण जो मात्रिक छन्दों में प्रयुक्त होता है।
ठगना–(हि. क्रि. अ., स.) धोखा देकर किसी का धन छीन लेना, धूर्तता करना, छलना, धोखा देना, भुलावा देना, कोई माल बेचने में उचित से अधिक दाम लेना, ठगा जाना, धोखा खाना, लुट जाना, आश्चर्य से स्तब्ध होना, दंग होना; **ठगा-सा**–(वि.) भौचक्का, स्तब्ध, चकित, धोखा खाया हुआ।
ठगनी–(हि. स्त्री.) ठग की स्त्री, वह स्त्री जो दूसरे को भुलावा देकर उसका माल छीन लेती है, धूर्त स्त्री, कुटनी।
ठगपन, ठगपना–(हि. पुं.) ठगने या छलने का कार्य या भाव, कपट, छल, धूर्तता।
ठगमूरी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की विषैली जड़ी-बूटी जिसको खिलाकर पथिकों को अचेत करके ठग लोग लूटते थे; (मुहा.)–खाना–मतवाला होना, सुध-बुध खो बैठना, बेसुध होना।
ठगमोदक, ठगलाड़ू–(हि. पुं.) मादक पदार्थों को मिलाकर बनाया हुआ लड्डू जिसको ठग लोग किसी बहाने पथिकों को खिला देते थे और जब उसके खाने से पथिक मूर्छित हो जाता था तब उसका सर्वस्व हरण कर लेते थे; (मुहा.)–खाना–बेसुध होना, स्तब्ध होना।
ठगवाई–(हि. पुं.) ठगपन।
ठगवाना–(हि. क्रि. स.) किसी को दूसरे से धोखा दिलवाना।
ठगविद्या–(हि. स्त्री.) छल, कपट, धूर्तता।
ठगहाई–(हि. स्त्री.) वंचकता, ठगपना।
ठगहारी–(हि. स्त्री.) ठगपन, ठगी।
ठगाई–(हि. स्त्री.) ठगपन, ठगी।
ठगाठगी–(हि. स्त्री.) धूर्तता, ठगपना।
ठगाना–(हि. क्रि. अ.) धोखे में आ जाना, ठगा जाना।
ठगाही–(हि. स्त्री.) देखें 'ठगाई', ठगहाई।
ठगिन, ठगिनी–(हि. स्त्री.) वह स्त्री जो दूसरे को धोखा देकर उसका धन लूटती है, ठग की स्त्री, धूर्त स्त्री, लुटेरिन।
ठगिया–(हि. पु.) धूर्त, छली, वंचक, ठग।
ठगी–(हि. स्त्री.) ठग का काम, ठगने या लूटने का भाव, धूर्तता, चालबाजी।
ठगोरी–(हि. स्त्री.) मोहित करने की शक्ति, जादू, टोना, छल, भुलावा, वंचकता।
ठट–(हि. पुं.) भीड़, झुंड, जमावड़ा, समूह, पंक्ति, रचना, सजावट, बनावट; –के ठट–झुंड के झुंड, समुदाय म; (मुहा.) –लगाना–भीड़ लगना, ढेर लगना।
ठटकीला–(हि. वि.) ठाटदार, तड़क-भड़कवाला।
ठटना–(हि. क्रि. अ., स.) स्थिर करना, निश्चित करना, ठहराना, सुसज्जित करना, आरंभ करना, छेड़ना, तैयार करना, गीत आरंभ करना, डरना, अड़ना; (मुहा.)–ठटकर बोलना–प्रत्येक शब्द पर जोर दे-देकर बोलना।
ठटनि–(हि. स्त्री.) आडंबर, सजावट, बनाव।
ठटरी–(हि. स्त्री.) अस्थिपंजर, हड्डियों का ढाँचा, किसी वस्तु का ढाँचा, घास-भूसा बाँधने का जाल, खरिया, मुरदा उठाने की अरथी; (मुहा.)–होना–अति दुर्बल होना, शरीर में केवल अस्थि-मात्र रह जाना।
ठट्ट–(हि. पुं.) ठाटबाट, सजावट, शृंगार।
ठट्ट–(हि. पुं.) समुदाय, समूह, झुंड, ठाट
ठट्टी–(हि. स्त्री.) ढाँचा, ठटरी, अस्थि-पंजर।
ठट्ठई–(हि. स्त्री.) हँसी, परिहास, दिल्लगी, उपहास।
ठट्ठा–(हि. पुं.) हँसी, दिल्लगी, उपहास; (मुहा.) –उड़ाना–उपहास करना; –मारना या लगाना–खिलखिलाकर हसना।
ठट्ठेबाज–(हि. वि.) उपहासक।
ठट्ठेबाजी–(हि. स्त्री.) उपहास।
ठठ–(हि. पुं.) झुंड, जमावड़ा, समूह, ठट; –ई–(स्त्री.) उपहास, ठट्ठा।
ठठक–(हि. स्त्री.) अवरोध, रुकावट, भय।
ठठकना–(हि. क्रि. अ.) सहसा रुकना या ठहर जाना, बिलकुल स्थिर हो जाना, स्तंभित होना, भौचक रह जाना।
ठठकान–(हि. स्त्री.) रुकावट, अवरोध।
ठठना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'ठटना'।
ठठरा–(हि. पुं.) टट्टर, ओट।
ठठरी–(हि. स्त्री.) देखें 'ठटरी'।
ठठवा–(हि. पुं.) एक प्रकार का मोटा वस्त्र, गजी।
ठठा–(हि. पुं.) देखें 'ठट्ठा'।
ठठाई–(हि. स्त्री.) मारपीट, प्रहार।

ठठाना–(हिं. क्रि.अ.,स.) आघात करना, पीटना, ठोंकना, ठट्ठा मारकर हँसना।
ठठिरिन–(हिं. स्त्री.) देखें 'ठठेरिन', ठठेरे की स्त्री।
ठठेरा–(हिं. पुं.) पीतल, ताँबे आदि के पात्र बनानेवाला, कसेरा, ज्वार-बाजरे का डंठल; (मुहा.) **ठठेरे-ठठेरे बदलाई**–जैसे को तैसा व्यवहार, दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार; **ठठेरे की बिल्ली**–ऐसा मनुष्य जो किसी खटके से नहीं डरता या घबड़ाता।
ठठेरिन–(हिं. स्त्री.) ठठेरे की स्त्री।
ठठेरी–(हिं. पुं.) बरतन बनाने का काम, ठठरे का काम; **–बाजार**–(पुं.) जिस बाजार में ठठेरे पात्र आदि बनाते और बेचते हैं।
ठठोल–(हिं.वि.,पुं.) हँसी, उपहास, मसखरा, परिहास करनेवाला।
ठठोली–(हिं. स्त्री.) उपहास, ठट्ठा।
ठड़कना–(हिं. क्रि. अ.) ठठकना।
ठड़ा–(हिं. वि.) खड़ा, सीधा स्थित।
ठड़िया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नैचा।
ठड्डा–(हिं. पुं.) पीठ की रीढ या हड्डी, पतंग (गुड्डी) के बीच की खड़ी सींक या तीली।
ठढा–(हिं. वि.) ठड़ा, खड़ा।
ठढिया–(हिं.स्त्री.) काठ की ऊँची ओखली जिसमें खड़ा होकर धान कूटा जाता है।
ठढियाना–(हिं. क्रि. अ.) खड़ा होना।
ठन–(हिं.स्त्री.) धातु के किसी पदार्थ पर आघात का शब्द।
ठनक–(हिं. स्त्री.) ढोल, मृदंग आदि की ध्वनि, रह-रहकर चोट आदि में होनेवाली पीड़ा, टीस।
ठनकना–(हिं. क्रि.अ.) ठनठन शब्द होना, ढोल, तबला आदि बाजों का बजना, रह-रहकर पीड़ा होना, टीसना; (मुहा.) **माथा ठनकना**–बुरा लक्षण देखकर चित्त व्यग्र होना, खटका उत्पन्न होना।
ठनका–(हिं. पुं.) धातु के टुकड़े पर चोट मारने का शब्द, ठनक, टीस, एक-एककर होनेवाली पीड़ा।
ठनकाना–(हिं. क्रि. स.) किसी धातु के टुकड़े, ढोल, मृदंग आदि पर चोट मारकर शब्द उत्पन्न करना, बजाना, रुपये को बजाकर परख करना; (मुहा.) **रुपया ठनका लेना**–बजाकर रुपया लेना, रुपया वसूल कर लेना।
ठनकार–(हिं. पुं.) ठनका शब्द, धातु के टुकड़े से उत्पन्न शब्द।
ठनगन–(हिं. पुं.) अड़, हठ, दुलार के कारण हठ।
ठनठन–(हिं पुं.) धातु-खंड के बजने का शब्द; **–गोपाल**–(पुं.) निःसार वस्तु, तुच्छ पदार्थ, निर्धन मनुष्य।
ठनठनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) ठनठन शब्द निकालना, ढोल आदि बजाना, रुपये को पटककर शब्द करना, ठनठन शब्द होना।
ठनना–(हिं. क्रि. अ.) दृढ़ संकल्प से किसी कार्य को आरम्भ करना, पक्का होना, छिड़ना, तैयार होना, ठहरना, उद्यत होना, लगना, जमना, निश्चित होना।
ठनाका–(हिं.पुं.) ठनकार, ठनठन का शब्द।
ठनाठन–(हिं. अव्य.) निरन्तर ठनकार के साथ, ठनठन शब्द करते हुए।
ठनाना–(हिं.क्रि.स.) ('ठनना' का प्रेरणार्थक रूप, अ. क्वचित्) प्रयुक्त करना, लगाना, स्थापित करना, ठहराना, स्थित करना, जमाना, छेड़ाना, आरम्भ करना, निश्चित करना, पक्का करना, तैयार करना।
ठप–(हिं. वि.) बंद।
ठपका–(हिं.पुं.) ठोकर, आघात, धक्का।
ठप्पा–(हिं. पुं.) साँचा, छापा, बेलबूटा आदि खुदा हुआ लकड़ी या धातु का टुकड़ा जिसमें रंग पोतकर कपड़े आदि पर छापा जाता है, एक प्रकार का गोटा।
ठमक–(हिं.स्त्री.) चलते-चलते रुक जाने का भाव, रुकावट, ठहराव, लचक की चाल।
ठमकना–(हिं.क्रि.अ.) ठठकना, ठिठकना, चलते चलते रुक जाना, रुक-रुककर मटकते हुए चलना, हाव-भाव दिखलाते हुए चलना।
ठमकाना, ठमकारना–(हिं. क्रि.स.) ढोल आदि बजाना, चलते-चलते रोकना।
ठयना–(हिं. क्रि. अ., स.) स्थिर करना, ठानना, पूरी तरह से करना, चित्त में दृढ़ करना, निश्चित करना, दृढ़ निश्चय से आरम्भ करना, स्थापित करना, लगाना, नियुक्त करना, तैयार होना, जमना, लगना, प्रयुक्त होना, ठनना।
ठरन–(हिं. स्त्री.) ठिठुरना, अधिक जाड़ा।
ठरना–(हिं.क्रि.अ.) अधिक शीत से ठिठुरना, अधिक ठंढ पड़ना, अधिक शीत के कारण हाथ-पैर सुन्न या चेतना-शून्य होना।
ठर्रा–(हिं. पुं.) बटा हुआ मोटा सूत, अधपकी ईंट, अँगिया का बन्द, टेढ़ा-मेढ़ा और भद्दा मोती, देशी शराब।
ठलाना–(हिं. क्रि. स.) गिराना।
ठवन–(हिं. स्त्री.) अंग-संचालन की मुद्राएँ, बैठने, चलने आदि का ढंग।
ठवना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'ठयना'।
ठवनि–(हिं. स्त्री.) ठवन, बैठने का ढंग, मुद्रा, आसन, स्थिति।
ठवर–(हिं. पुं.) ठौर, स्थान, जगह।
ठस–(हिं. वि.) कड़ा, ठोस, भीतर से भरा हुआ, घनी बिनावट का, दृढ़, भारी, सुस्त, मट्ठर, कृपण, कंजूस, हठी, धनाढ्य, खोटा (रुपया) जिसमें से ठीक ठनकार न निकले।
ठसक–(हिं. स्त्री.) अभिमानपूर्ण चेष्टा, गर्व, अहंकार, एठन; **–दार**–(वि.) अभिमानी, घमंडी, शानदार तड़क-भड़कवाला।
ठसका–(हिं. पुं.) सूखी खाँसी जिसमें कफ नहीं निकलता, धक्का, ठोकर।
ठसमठस, ठसाठस–(हिं. अव्य.) ठूँसकर भरा हुआ, खचाखच।
ठस्सा–(हिं. स्त्री.) नक्काशी करने की छोटी रुखानी, ठसक, अहंकार, गर्व, हावभाव, ठाटबाट, शान, अभिमान।
ठहना–(हिं.क्रि.अ.) घोड़े का हिनहिनाना, घंटे का बजना, ठनठनाना, रुक-रुक तथा सँभलकर कोई काम करना, सँवारना, बनाना; **ठहकर**–सँभलकर।
ठहनाना–(हिं. क्रि. अ.) हिनहिनाना, ढोलक, तबले आदि का बजना, सँभल-सँभलकर आगे बढ़ना।
ठहर–(हिं. पुं.) ठौर, स्थान, जगह, भोजन बनाने का स्थान, चौका, चूल्हे या चौके की लिपाई-पोताई; (मुहा.) **–देना**–चौका लगाना।
ठहरना–(हिं. क्रि. अ.) गति बंद करना, रुकना, टिकना, स्थिर रहना, विश्राम करना, डेरा डालना, इधर-उधर न डोलना, एक ही स्थान पर बना रहना, जमा रहना, टिका रहना, नष्ट न होना, प्रतीक्षा करना, पेंदी में जम जाना, थिराना, आसरा देखना, निश्चित होना।
ठहराई–(हिं. स्त्री.) अधिकार, ठहरने की क्रिया या मजदूरी।
ठहराऊ–(हिं. वि.) टिकाऊ, ठहरनेवाला, पुष्ट, अधिक काल तक रहनेवाला, निश्चय करानेवाला, दृढ़।
ठहराना–(हिं. क्रि. स.) टिकाना, आश्रय देना, गति रोकना, डेरा देना, रहने के लिये स्थान देना, हिलने-डोलने न देना, स्थिर करना, तय करना, अड़ाना, मूल्य स्थिर करना, विवाह सम्बन्ध पक्का करना।
ठहराव–(हिं. पुं.) स्थिरता, दृढ़ विचार,

निश्चय।
ठहरौनी–(हिं. स्त्री.) विवाह-संबंध में तिलक, दहेज इत्यादि का लेन-देन स्थिर करना।
ठहाका–(हिं. पुं.) अट्टहास, जोर की हँसी, कहकहा।
ठहियां–(हि.स्त्री.) ठाँव, ठिकाना, जगह।
ठां–(हि.पुं.) बंदूक का शब्द, ठाँव, ठौर, स्थान, जगह।
ठाईं–(हि.स्त्री.) स्थान, जगह; (अव्य.) निकट, पास, प्रति, तईं।
ठाउँ–(हि.पुं.) ठिकाना, ठाँव; (अव्य.) समीप, पास, निकट।
ठांठ–(हिं. वि.) शुष्क, रसहीन, नीरस, दूध न देनेवाली (गाय, भैंस आदि)।
ठांठर–(हि. पु.) ठटरी।
ठांयें–(हि.पुं.,स्त्री.)ठौर,स्थान, ठिकाना, समीप, पास, बंदूक छूटने का शब्द।
ठांयें ठांयें–(हि. स्त्री.) बंदूक छूटन का शब्द, विवाद, कलह, झगड़ा।
ठांव–(हि.स्त्री.) ठाँउँ, ठिकाना, जगह।
ठांसना–(हि.क्रि.अ.,स.) कसकर ठूंसना, दबा-दबाकर भरना, रोकना; मना करना, ढांसना, ठनठन शब्द करते हुए खांसना।
ठांहीं–(हि. पुं.) देखें 'ठांईं'।
ठाकुर–(हि. पुं.) देवता, देवता की मूर्ति, परमेश्वर, पूज्य व्यक्ति, स्वामी, मालिक, अधिष्ठाता, सरदार, भूस्वामी, क्षत्रियों की एक उपाधि, नाऊ की एक उपाधि; **–द्वारा**–(पुं.) देवस्थान, किसी देवता का मन्दिर; **–बाड़ी**–(स्त्री.)देवस्थान, देवालय, मन्दिर; **–सेवा**–(स्त्री.) किसी देवता का पूजन, देवता को उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति।
ठाकुरी–(हिं. स्त्री.) ठकुराई, शासन, अधिकार, स्वामित्व।
ठाट–(हि. पुं.) ढांचा, टट्टर, लकड़ी या बांस की फट्टियों का बना हुआ टट्टर या परदा, श्रृंगार, वेश-रचना, प्रकार, शैली, ढव, आडंबर, धूमधाम, रचना, सजावट, दिखावट, सामग्री, सुख-सामग्री, उपाय, युक्ति, समूह, झुंड, अधिकता; (मुहा.) **–खड़ा करना**–ढांचा तैयार करना; **–बदलना**–नया वेश धारण करना; **–मारना**–चैन से दिन बिताना।
ठाटना–(हि.क्रि.स.)निर्माण करना, बनाना, ठानना, साजना, सँवारना, ठाट बनाना।
ठाटबंदी–(हि. स्त्री.) खपरैल से छान के लिये बांस का छाजन तैयार करना।
ठाटबाट–(हि.पुं.) सजधज, शोभा, सजावट, श्रृंगार, तड़क-भड़क, आडम्बर।
ठाटर–(हिं. पुं.) टट्टी, ढांचा, टट्टर, ठाटबाट, श्रृंगार, कबूतर के बैठने की छतरी।
ठाठ–(हि. पुं.) देखें 'ठाट'।
ठाठर–(हि. पुं.) नदी का वह गहरा भाग जहाँ पर मल्लाह की लग्गी नहीं पहुँचती, देखें 'ठाटर'।
ठाड़ा–(हिं. वि.) खड़ा, सीधा, खड़े बल का।
ठाढ़, ठाढ़ा–(हिं. वि.) दंडायमान, सीधा, खड़ा, समूचा, उत्पन्न; (मुहा.)**–देना**–ठहरने का स्थान देना, ठहराना, टिकाना।
ठाढ़ेश्वरी–(हिं.पुं.)एक प्रकार के साधु जो अहोरात्र खड़े रहने की तपस्या करते हैं।
ठादर–(हि. पुं.) राढ़, झगड़ा।
ठान–(हिं. स्त्री.) किसी कार्य का आरंभ, छिड़ा हुआ काम, अनुष्ठान, हठ, दृढ़ संकल्प, चेष्टा, मुद्रा, आयोजन।
ठानना–(हि.क्रि.स.)तत्परतासहित किसी काम को आरंभ करना, स्थिर करना, पक्का करना, ठहराना, चित्त में कोई विचार स्थिर करना।
ठाना–(हिं. क्रि.स.) ठानना, दृढ़ता के साथ आरंभ करना, निश्चित करना, स्थापित करना।
ठाम–(हि. पुं.) स्थान, ठाँव, अंग-स्थिति, मुद्रा।
ठायँ–(हि. स्त्री.) ठाँव, ठायँ।
ठार–(हिं. पुं.) अधिक शीत, गहरा जाड़ा, पाला, हिम।
ठाल–(हि. स्त्री.) अवकाश, ठाला।
ठाला–(हिं. पुं.) काम-काज का न रहना, आमदनी बंद होना; (वि.) व्यवसायहीन; (मुहा.) **बैठा ठाला**–जिसके पास कोई काम करने के लिये न हो।
ठाली–(हि. वि.) ठाला, बेकाम, निठल्ला।
ठावँ–(हि. स्त्री.) स्थान, जगह।
ठावना–(हि. क्रि.स.) देख 'ठाना'।
ठासना–(हि. क्रि.स.) देखें 'ठांसना'।
ठासा–(हि. पुं.) धातु की चद्दर मोड़ने का उपकरण।
ठाहर–(हि. स्त्री.) स्थान, डेरा, रहने का स्थान, ठिकाना।
ठाहरूपक–(हि. पुं.) मृदंग का एक ताल।
ठिंगना–(हि. वि.) छोटे डील-डौल का, नाटा।
ठिकठैन–(हि. पुं.) ठीकठाक व्यवस्था या प्रबंध।
ठिकठौर–(हि. स्त्री.) ठीकरों से भरा हुआ स्थान।
ठिकड़ा–(हि. पुं.) ठीकरा, मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ अंश।
ठिकना–(हि. क्रि. अ.) रुकना, अड़ना, ठहरना।
ठिकरा–(हिं. पुं.) देखें 'ठिकड़ा'।
ठिकरी–(हि.स्त्री.) मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ छोटा खंड।
ठिकरौर–(हि.स्त्री.) वह स्थान जहाँ टूटे खपड़ों का बहुत-सा ढेर पड़ा हो।
ठिकाना–(हिं. पुं.) निवासस्थान, पता, आश्रयस्थान, ठौर, प्रबन्ध, स्थिरता, सीमा, निश्चय, उपाय, आयोजन; (क्रि.स.) ठहराना; (मुहा.)**–करना**–ठहरने की व्यवस्था करना, अन्त करना, सन्देह मिटाना; **–ढूँढ़ना**–रहने के लिये जगह ढूँढ़ना; व्यापार की खोज करना; **ठिकाने आना**–निर्धारित स्थान पर पहुँचना; **ठिकाने की बात**–समझ की बात; **ठिकाने न रहना**–(मन) चंचल हो जाना; **ठिकाने पहुँचना या लगना**–निर्धारित स्थान पर पहुँचना; **–लगाना**–न रहने देना, हत्या करना, नष्ट करना।
ठिठक–(हिं. स्त्री.) भयभीत अवस्था, घबड़ाहट।
ठिठकना–(हिं. क्रि. अ.) एकाएक रुक जाना, ठमकना, ठक रह जाना, न हिलना, न डोलना, स्तब्ध होना।
ठिठुर, ठिठुरन–(हिं. स्त्री.) अधिक ठंढ के कारण अकड़ या सिकुड़न।
ठिठुरना–(हिं. क्रि.अ.) ठंढ के कारण काँपना या सिकुड़ जाना।
ठिठुरा–(हि. वि.) पाले से अकड़ा हुआ, सिकुड़ा हुआ।
ठिठोलिया–(हि.वि.) मसखरा, उपहासी; **–पन**–(पुं.) उपहास।
ठिठोली–(हि. स्त्री.) हँसी।
ठिनकना–(हिं. क्रि. अ.) छोटे बालकों का रुक-रुककर रोना।
ठिर–(हि. स्त्री.) गहरी ठंढ, पाला।
ठिरना–(हि. क्रि. अ.) ठंढ से ठिठुरना, अधिक शीत से अकड़ना, अधिक शीत पड़ना।
ठिलना–(हिं. क्रि.अ.) ठेला जाना, ढकेला जाना, घुसना, धँसना, जमना, बलपूर्वक खिसकाया जाना।
ठिलवा–(हि. पुं.) मिट्टी का घड़ा।
ठिलाठिल–(हिं. अव्य.) एक पर एक गिरते हुए, एक दूसरे को धक्का देते हुए।

ठिलिया–(हिं. स्त्री.) मिट्टी की छोटी गगरी, मटकी।
ठिलुआ–(हिं. वि.) निकम्मा, निठल्ला।
ठिल्ला–(हिं. पुं) घड़ा, गगरा, पानी रखने का मिट्टी का पात्र।
ठिल्ली–(हिं.स्त्री.) ठिलिया, छोटी गगरी।
ठिहार–(हिं. वि.) विश्वसनीय, विश्वास के योग्य।
ठिहारी–(हिं. स्त्री.) ठहरौनी, ठहराव, निश्चय।
ठीक–(हिं.वि.) उपयुक्त, यथार्थ, यथोचित, प्रामाणिक, उचित, निश्चित, अच्छा, शुद्ध, विना त्रुटि का, (काँटा आदि) अच्छी तरह से बैठनेवाला, ठहराया हुआ, निर्दिष्ट, पक्का, स्थिर, जो बिगड़ा न हो, योग्य, जोड़ का, सीधा, नम्र; (मुहा.) **–आना**–बराबर होना, ढीला या कसा हुआ न होना; **–उतरना**–न्यूनाधिक न होना; **–करना**–सुधारना, शोधना, शुद्ध करना; **–देना**–चित्त में स्थिर करना, जोड़ना; **–बनाना**–दुरुस्त करना; (अव्य.) व्यवस्थित रूप से, उचित रीति से, अच्छी तरह से।
ठीक-ठाक–(हिं. पुं.) व्यवस्था, उचित प्रबन्ध, पक्की बात, ठौर, ठिकाना; (वि.) प्रस्तुत, बनकर तैयार; (मुहा.)–**करना**–व्यवस्था करना।
ठीकड़ा, ठीकरा–(हिं.पुं.) मिट्टी के पात्र का टूटा-फूटा अंश, टूटा-फूटा पात्र, भीख माँगने का पात्र; (मुहा.) (**सिर पर**) **–फोड़ना**–कलंक लगाना, दोषी ठहराना; **–समझना**–तुच्छ समझना।
ठीकरी–(हिं. स्त्री.) टूटे हुए मिट्टी के बरतन का छोटा टुकड़ा, योनि का उभड़ा हुआ तल, उपस्थ, तुच्छ पदार्थ।
ठीका–(हिं.पुं.) किसी व्यक्ति को किसी निर्धारित समय में कोई काम पूरा करने के लिये उत्तरदायी बनाना, कुछ समय के लिये किसी को कर, लगान आदि वसूल करने का अधिकार देना, पट्टा।
ठीकुरी–(हिं.स्त्री.) परदा।
ठीकेदार–(हिं पुं.) ठीका लेनेवाला मनुष्य।
ठीकेदारिन–(हिं.स्त्री.) ठीकेदार की स्त्री।
ठीठी–(हिं. स्त्री.) हँसी का शब्द।
ठीलना–(हिं. क्रि.स.) ठेलना, ढकेलना।
ठीवन–(हिं.पुं.) थूक, खखार।
ठीहँ–(हिं.स्त्री.) घोड़े की हिनहिनाहट।
ठीहा–(हिं.पुं.) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिसपर वस्तुओं को रखकर कसेरा, बढ़ई, सोनार आदि पीटने या ठोंकने का काम करते हैं, बढ़इयों का लकड़ी गढ़ने का आधार, बैठने के लिये ऊँचा किया हुआ स्थान, सीमा, गद्दी, हद; (मुहा.) **–जमना**–काम ठीक-ठीक होने की सुविधा होना।
ठुंठ–(हिं.पुं.) वृक्षस्तंभ, वह वृक्ष जिसकी डाल और पत्तियाँ गिर गई हों या काटी गई हों, कटे हुए हाथवाला मनुष्य, लूला।
ठुकना–(हिं.क्रि.अ.) आघात सहना, पीटा जाना, मार खाना, मारा जाना, गड़ना, दबना, चोट खाकर धँसना, हानि होना, गले पड़ना, फँसना, पैर में बेड़ी पड़ना, घाटा लगना।
ठुकराना–(हिं.क्रि.स.) ठोकर मारना, लात से मारना, पैर से मारकर हटाना, तुच्छ समझना, तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।
ठुकवाना–(हिं.क्रि.स.) पिटवाना, दूसरे से मार खिलवाना, गड़वाना, धँसवाना, ठोंकने का काम करवाना।
ठुड्डी–(हिं. पुं.) चिबुक, निचले ओठ की जड़, ठोड़ी, अन्न का भुना दाना जिसका छिलका अलग न हुआ हो, ठोर्री।
ठुनक–(हिं. स्त्री.) बच्चों की सिसकी।
ठुनकना–(हिं. क्रि. अ., स.) ठुनकाना, अँगुली से ठोंकना, ठिनकना।
ठुनकाना–(हिं. क्रि. स.) अँगुली से धीरे-धीरे आघात करना या ठोकना।
ठुनठुन–(हिं.पुं.) बच्चों के रोने का शब्द।
ठुमक–(हिं.वि.) पैर पटकते हुए बच्चों-सी (चाल), ठसक भरी हुई (चाल)।
ठुमकना–(हिं. क्रि. अ.) प्रसन्नता-पूर्वक या नाचने में धीरे-धीरे पैर पटक-पटक-कर चलना, कूदते हुए चलना।
ठुमका–(हिं. वि.) छोटे डीलडौल का, नाटा, ठिंगना; (पुं.) पतंग (गुड्डी) की डोर को झटका देना।
ठुमकारना–(हिं.क्रि. स.) गुड्डी की डोरी को झटका देना।
ठुमकी–(हिं. स्त्री.) ठुमका, झटका, ठिठक, मन्द गति; (वि. स्त्री.) छोटे कद, नाटी।
ठुमरी–(हिं.स्त्री.) दो बोलों का छोटा गीत।
ठुर्री–(हिं.स्त्री.) छिलकेदार न खेला हुआ भूना दाना, ठोर्री।
ठुर्रियाना–(हिं. क्रि. अ.) ठुर्री बन जाना, (सर्दी से) सिकुड़ना।
ठुसकना–(हिं. क्रि. अ.) ठिनककर रोना, मन्द स्वर में या धीरे से बोलना।
ठुसकी–(हिं. स्त्री.) अपान वायु का धीरे से निकलना, धीरे से पादना।
ठुसना–(हिं.क्रि.अ.) कसकर प्रविष्ट किया या भरा जाना।
ठुसवाना–(हिं. क्रि.स.) कसकर भरवाना।
ठुसाना–(हिं. क्रि.स.) भरवाना, कसाना, ठुसवाना, अधिक भोजन कराना।
ठुस्सी–(हिं. स्त्री.) देखें 'ठुसकी', एक प्रकार का गले का आभूषण।
ठूँग–(हिं. स्त्री.) चोंच, चोंच मारने की क्रिया।
ठूँठ–(हिं. पुं.) शाखा तथा पत्रहीन वृक्ष, सूखा हुआ पेड़, कटा हुआ हाथ, जुआर, बाजरा आदि की उपज काट लेने के बाद बची हुई खुत्थी।
ठूँठा–(हिं.वि., पुं.) विना शाखा और पत्तियों का (वृक्ष), विना हाथ का, लूला।
ठूँठिया–(हिं. वि.) लूला, लँगड़ा, हिजड़ा।
ठूँठी–(हिं. स्त्री.) अरहर, बाजरा आदि को जड़ से काटने पर बची हुई खूंटी।
ठूँसना–(हिं. क्रि.स.) देख 'ठूसना', घुसाना, अच्छी तरह कसकर भरना, बलपूर्वक डालना, पेट भर खाना।
ठूसना–(हिं. क्रि. स.) कसकर भरना, देखें 'ठूँसना'।
ठेंउना–(हिं. पुं.) ठेहुना, घुटना।
ठेंगना–(हिं. वि.) छोटे डील का, नाटा।
ठेंगा–(हिं. पुं.) अँगूठा, डंडा, सोंटा; (मुहा.) **–दिखाना**–निराश करना; अशिष्टतापूर्वक अस्वीकार करना; **–बजना**–लड़ाई-झगड़ा होना, लाठी चलना; **ठेंगे से**–बला से।
ठेंगाठेंगी–(हिं.अव्य.) आपस की मार-पीट।
ठेंगुर–(हिं.पुं.) उत्पाती चौपायों के गले में बाँधने का लकड़ी का बड़ा टुकड़ा।
ठेंघा–(हिं.पुं.) देखें 'ठगा'।
ठेंठ–(हिं. वि.) देखें 'ठेंठ'।
ठेंठी–(हिं.स्त्री.) कान का मैल, कान के छेद को बन्द करने की रूई आदि; बोतल म लगाने का डट्टा, काग; (मुहा.) **कान को ठेंठी लगाना**–किसी की बात न सुनना।
ठेंपी–(हिं. स्त्री.) काग, डाट, टेंठी।
ठेक–(हिं. पुं.) सहारा, टेक, अवलंब, चाँड़, पच्चड़, तल, पेंदी, टट्टियों से घिरा हुआ अन्न रखने का स्थान, लाठी में लगी हुई सामी, घोड़े की एक विशेष चाल, पच्चड़, चकती।
ठेकना–(हिं.क्रि.अ.) टेकना, सहारा लेना, ठहरना, रहना, टिकना।
ठेका–(हिं. पुं.) देखें 'ठीका', सहारा लेने का अवलंब, ठहरने का स्थान, अड्डा, टेक, चाँड़, रुकने का स्थान, धक्का,

ठोकर, तवले का वायाँ डुग्गी, मृदंग, तबले आदि का एक बोल; (मुहा.)–भरना–उछल-कूद मचाना।
ठेकाई–(हि.स्त्री.) काले किनारे की छपाई।
ठेकाना–(हि.पुं.) निवास-स्थान।
ठेकी–(हि.स्त्री.) टेक, चाँड़, सहारा।
ठेगना–(हि. क्रि. अ., स.) सहारा लेना, विश्राम के लिये सिर के बोझ को टकना, रोकना, मना करना।
ठेगनी–(हि.स्त्री.) सहारा लेने या टेकने की लकड़ी।
ठेघना–(हि. स्त्री.) देखें 'ठेगना'।
ठेघनी–(हि.स्त्री.) देखें 'ठेगनी'।
ठेघा–(हि.पुं.) सहारा, थूनी, चाँड़।
ठेठ–(हि. वि.) विना मेल का, निर्मल, असाहित्यिक, अकृत्रिम; (स्त्री.) सीधी-सादी वोली जिसम साहित्यिक शब्दों का प्रयोग न हो।
ठेपी–(हि. स्त्री.) वोतल, शीशी आदि का मुँह वन्द करने का डट्टा।
ठेलना–(हि. क्रि. स.) ढकेलना, रेलना, धक्का देकर आगे बढ़ाना।
ठेलमठेल–(हि. अव्य.) एक के ऊपर एक गिरते हुए; (स्त्री.) ठेलाठेल।
ठेला–(हि. पुं.) टक्कर, धक्का, पीछे की ओर से आघात, एक प्रकार की गाड़ी जिसको आदमी ठेलकर चलाते हैं, भीड़-भाड़, धक्कमधक्का।
ठेलाठेल, ठेलाठेली–(हि. स्त्री.) भीड़ में मनुष्यों का एक के ऊपर दूसरे का गिरना, धक्कमधक्का।
ठेवका–(हि.पुं.) खेत सींचने के लिये दौरी का पानी गिराने का गड्ढा।
ठेवकी–(हि.स्त्री.) ओट, गिरने से रोकने या टिकाने के लिये प्रयुक्त वस्तु।
ठेवना–(हि. पुं.) जानु, घुटना।
ठेस–(हि.स्त्री.) आघात, ठोकर, चोट, धक्का।
ठेसना–(हि.क्रि.स.) ठूसना, दवाकर भरना।
ठेहरी–(हि. स्त्री.) किवाड़ की चूल के नीचे लगी हुई लकड़ी, आश्रय, सहारा।
ठेहुका–(हि.पुं.) वह चौपाया जिसके पिछले पैर चलने में आपस में टकराते है।
ठेहुना–(हि. पुं.) देखें 'घुटना'।
ठैकर–(हि. पुं.) नीवू की तरह का एक खट्टा फल।
ठैन–(हि. स्त्री.) जगह, स्थान।
ठैयाँ–(हि. स्त्री.) स्थान।
ठोंक–(हि. स्त्री.) आघात, प्रहार, चोट।
ठोंकना–(हि.क्रि.स.) पीटना, आघात करना, मारना-पीटना, थपथपाना, वेड़ी लगाना, गाड़ना, अभियोग लगाना, खटखटाना, कसकर जकड़ना, हाथ से मारकर शब्द उत्पन्न करना; (मुहा.) ठोंक-ठोंककर लड़ना–ताल ठोंक-ठोंककर लड़ना; –वजाना–जाँचना, परखना।
ठोंग–(हि. स्त्री.) चोंच, चोंच की मार, मुड़ी हुई उँगलियों से मार।
ठोंगा–(हि.पुं.) कागज का वना थैली जैसा पात्र जिसमें दुकानदार सामान देते हैं।
ठोंठा–(हि.पुं.) ज्वार, वाजरा तथा ऊख की उपज को हानि पहुँचानेवाला कीड़ा।
ठोंठी–(हि. स्त्री.) फली, वोंड़ी, हरे चने के दाने का कोष।
ठो–(हि.अव्य.) पूरवी हिंदी का संख्या-वाचक शब्दों के साथ लगनेवाला शब्द।
ठोकना–(हि. क्रि. स.) देखें 'ठोंकना'।
ठोकर–(हि. स्त्री.) किसी कड़ी वस्तु से टकराने से अंग में चोट लगना, ठेस, जूते का नुकीला भाग, मार्ग में पड़ा हुआ कंकड़-पत्थर जिससे टकराने से पैर म चोट लग जाती है, पर से धक्का या आघात; (मुहा.)–उठाना–कष्ट झेलना; –खाते फिरना–व्यर्थ मारा-मारा फिरना; –खाना–असाववानी के कारण कष्ट उठाना; –निकलना–गाल की हड्डी का उभड़ आना; –लगना–ठेस खाना, किसी वस्तु से टकराकर गिर पड़ना।
ठोकरा–(हि.वि.) कठिन, कड़ा।
ठोकराना–(हि.क्रि.अ.,स.) जूते की नोक से प्रहार करना, ठोकर खाना।
ठोकवा–(हि. पुं.) चीनी, गुड़ आदि की वनी मोटी पूरी।
ठोट–(हि. वि.) निःसत्व, नीरस, मूर्ख।
ठोठरा–(हि. वि.) रिक्त, पोला।
ठोड़ी, ठोढ़ी–(हि. स्त्री.) चिवुक, ठुड्डी, दाढ़ी।
ठोप–(हि. पुं.) विन्दु, वूँद।
ठोर–(हि.पुं.) चंचु, चोंच, एक प्रकार का मीठा पकवान।
ठोली–(हि.स्त्री.) ठिठोली।
ठोस–(हि. वि.) जो भीतर से खोखला न हो, घन, पुष्ट, दृढ़; (पुं.) ईर्ष्या, डाह।
ठोसा–(हि. पुं.) हाथ का अँगूठा, ठेंगा; (मुहा.)–दिखाना–अस्वीकार करना।
ठोहना–(हि. क्रि. स.) पता लगाना, ठिकाना खोजना।
ठोहर–(हि. पुं.) अकाल, महँगी।
ठौका–(हि. पुं.) खेत में वह गड्ढा जहाँ दौरी से उछालकर सिंचाई का पानी गिराया जाता है।
ठौनि–(हि. स्त्री.) स्थिति, स्थान, देखें 'ठवनि'।
ठौर–(हि. पुं.) ठिकाना, स्थान, अवसर, ठोर नामक मीठा पकवान; –ठिकाना–पता-ठिकाना; –कुठौर–भले तथा बुरे स्थान पर; (मुहा.)–न आना–पास में न आना; –रखना–उसी स्थान पर मारकर गिरा देना; –रहना–जहाँ का तहाँ रहना, मर जाना; किसी के ठौर–किसी के स्थानापन्न, किसी के समान।

ड

ड–संस्कृत तथा देवनागरी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यंजन तथा ट-वर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण मूर्धा से होता है अर्थात् जीभ के मध्य भाग को तालु में लगाने से होता है।
डंक–(हि. पुं.) वह विषैला काँटा जो विच्छू, मधुमक्खी, वर्रें आदि कीड़ों के पीछे की ओर होता है और जिसको वे जीवों के शरीर में चुभा देते हैं, लेखनी की जीभी, वह स्थान जहाँ डंक मारा गया हो; –दार–(वि.) जिसमें डंक हो।
डंकना–(हि. क्रि. अ.) गरजना, डरावना शब्द उत्पन्न करना।
डंका–(हि. पुं.) एक प्रकार का नगाड़ा, जहाज के ठहरने का स्थान; (मुहा.) डंके की चोट कहना–सव के सम्मुख स्पष्ट शब्दों में कहना।
डंकिनी–(हि. स्त्री.) देखें 'डाकिनी'।
डंकी–(हि. स्त्री.) मलखंभ का एक व्यायाम, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
डंकुर–(हि. पुं.) प्राचीन समय का एक प्रकार का वाजा।
डंगर–(हि.पुं.) चौपाया, गाय, भैंस आदि; (वि.) दुवल-पतला, निर्वल।
डँगरी–(हि. स्त्री.) लंवी ककडी, एक प्रकार का मोटा वेंत, चुड़ैल, डाइन।
डँगवारा–(हि. पुं.) वह सहायता जो किसान जोआई-वोआई में परस्पर लेते-देते हैं, हूँड़।
डंगोरी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का कड़ी लकड़ी का वृक्ष।
डँटैया–(हि. वि.) डाँटने या घुड़कनेवाला, धमकानेवाला।
डंठल–(हि. पुं.), डंठी–(हि. स्त्री.) पौधों की शाखा या पेड़ी।

ढंड–(हिं. पुं.) लाठी, सोंटा, डंडा, वाहु-दंड, वाँह, एक प्रकार का व्यायाम जो हाथ-पैर के पंजों तथा पेट के वल किया जाता है, अर्थदंड, हानि, देखें 'दंड'; **–पेल**–(पुं.) व्यायाम करनेवाला, पहलवान, वलवान मनुष्य; (मुहा.)**–पेलना**–व्यायाम करना।

डँड़–(हिं.पुं.) देखें 'डंड'।

डंडक–(हिं. पुं.) देखें 'दंडक'।

डंडल–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मछली।

डंडवत–(हिं. पुं.) देखें 'दंडवत्'।

डँडवारा–(हिं. पुं.) वह नीची भीत जो किसी स्थान को घेरने के लिये वनाई जाती है, चहारदीवारी।

डँडवारी–(हिं. स्त्री.) किसी स्थान को घेरने के लिए उठाई हुई नीची भीत।

डँड़हरा–(हिं. स्त्री.) द्वार में ताला लगाने के लिये जड़ा हुआ लोहे या पीतल का छड़ या डंडा।

डँड़वी–(हिं. पुं.) दंड या कर देनेवाला।

डँड़हिया–(हिं. पुं.) वह डंडा जिसमें वैल की पीठ पर दोनों ओर लदे हुए वोरे फँसाये जाते हैं।

डंडा–(हिं. पुं.) लकड़ी, वाँस आदि का लंवा सीधा टुकड़ा, सोंटा, लाठी, मोटी छड़ी, डाँड़ा, डँड़वारा।

डंडाकरन–(हिं. पुं.) देखें 'दंडक-वन'।

डंडाल–(हिं. पुं.) दुन्दुभी, नगाड़ा।

डँडिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की साड़ी जिसमें गोट सिलकर लंबी लकीरों-जैसी वनी हों, गेहूँ के पौधे की लंवी सींक जिसमें वाल लगती हैं; (पुं.) कर उगाहनेवाला मनुष्य।

डँड़ियाना–(हिं. क्रि. स.) दो कपड़ों को लंवाई के वल एक में सिलना।

डंडी–(हिं. स्त्री.) छोटी, पतली और लंवी लकड़ी, किसी अस्त्र की मुठिया, हत्था, तराजू की वह लकड़ी जिसमें रस्सियों से पलड़े वँधे हुए होते हैं, पत्ता, फूल या फल लगा हुआ वृक्ष का डंठल, नाल, हर्रसिंगार का फूल, एक प्रकार की पहाड़ी सवारी, झंपान, लिंगेन्द्रिय, वह संन्यासी जो दण्ड धारण करता हो, दंडी; (वि.) झगड़ा लगानेवाला, चुगलखोर; **–मार**–(पुं.) टेनी मारनेवाला; (मुहा.)**–मारना**–टेनी मारना, कम सौदा तौलना।

डँडीर–(हिं. स्त्री.) सीधी रेखा या लकीर।

डँडोरना–(हिं. क्रि. स.) उलट-पुलटकर खोजना या ढूँढ़ना।

डंडौत–(हिं. पुं.) देखें 'दंडवत्'।

डंवर–(हिं. पुं.) ढकोसला, आडम्वर, एक प्रकार का चँदवा, विस्तार; **अंवर-डंवर**–(पुं.) सन्ध्या के समय आकाश में दिखाई पड़नेवाली लाली।

डँवरुआ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वात-रोग, गठिया।

डँवरू–(हिं. पुं.) डमरू।

डँवाडोल–(हिं. वि.) चंचल, घवड़ाया हुआ।

डंस–(हिं. पुं.) जंगली मच्छड़, डाँस, वह स्थान जहाँ पर विषैले कीड़े या जंतु का डंक चुभा हो या दाँत चुभा हो।

डँसना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'डसना'।

डकइत–(हिं. पुं.) डकैत।

डकरना–(हिं. क्रि. अ.) डकार लेना, साँड़ या वैल जैसा वोलना।

डकरा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की काली मिट्टी।

डकराना–(हिं.क्रि.अ.) डकरना, वैल या भैंस का वोलना।

डकार–(सं.पुं.) 'ड' स्वरूप अक्षर, 'ड' वर्ण।

डकार–(हिं.स्त्री.) मुख से वायु का निकलनेवाला उद्गार, सिंह, वाघ आदि की गरज, दहाड़, सिंह-नाद; (मुहा.)**–जाना**–किसी का धन दवा लेना; **–न लेना**–चुप्पी साध लेना।

डकारना–(हिं. क्रि. अ.) मुख से पेट की वायु का निकलना, डकार लेना, किसी का धनपचा जाना, व्याघ्र, सिंह आदि का गरजना।

डकैत–(हिं. पुं.) वलपूर्वक दूसरे का माल छीननेवाला, लुटेरा, डाकू।

डकैती–(हिं. स्त्री.) डाकू का काम, लूटमार, छापा।

डकौत–(हिं.पुं.) ढोंगी ज्योतिषी।

डक्कारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा ढोल।

डग–(हिं. पुं.) उतनी दूरी जितने पर एक पग से दूसरे पग पर पैर पड़े, फाल, कदम; (मुहा.)**–देना**–चलते समय आगे की ओर पैर रखना; **–मारना**–लंवे-लंवे पग डालना।

डगडगाना–(हिं.क्रि.अ.) लड़खड़ाना, डगमग होना, हिलना, डोलना, काँपना।

डगडोलना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'डगमगाना'।

डगडौर–(हिं. वि.) चलायमान, हिलनेवाला, देखें 'डाँवाडोल'।

डगण–(सं. पुं.) छन्दःशास्त्र के अनुसार पाँच भागों में विभक्त एक गण।

डगना–(हिं. क्रि. अ.) हिलना, खिसकना, स्थान छोड़ना, डिगना।

डगमगाना–(हिं. क्रि. अ.) इधर-उधर डोलना, विचलित होना, किसी वात पर स्थिर न रहना, थरथराना।

डगर–(हिं. स्त्री.) मार्ग, पथ।

डगरना–(हिं. क्रि. अ.) चलना, लुढ़कना।

डगरा–(हिं. पुं.) मार्ग, टोकरा, वाँस का वना हुआ छिछला पात्र, छवड़ा।

डगा–(हिं. पुं.) नगाड़ा वजाने की लकड़ी।

डगाना–(हिं. क्रि. स.) देख 'डिगाना'।

डग्गर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हिंस्र पशु, लंवे तथा पतले पैर का घोड़ा।

डटना–(हिं. क्रि. अ., स.) स्थिर रहना, अड़ना, ठहरा रहना, स्पर्श होना, छू जाना, भिड़ना, देखना, लग जाना।

डटाई–(हिं. स्त्री.) डटाने का काम।

डटाना–(हिं. क्रि. स.) डटने को प्रेरित करना, एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना, खड़ा करना, जमाना, सटाना।

डट्टा–(हिं. पुं.) हुक्का का नचा, डाट, काग, वड़ी मेख, ठप्पा, साँचा।

डड्ढार–(हिं. वि.) वड़ी दाढ़ीवाला, दढ़ियल, साहसी, वीर।

डढ़न–(हिं. स्त्री.) देखें 'जलन', संताप।

डढ़ना–(हिं. क्रि.अ.) जलना, झुलसना।

डढ़ार, डढ़ारा–(हिं. वि., पुं.) वह जिसके डाढ़ें हों, डाढ़वाला, जिसके दाढ़ी हो।

डढ़ियल–(हिं. वि.) जिसके वड़ी दाढ़ी हो, दाढ़ीवाला।

डढ्योरा–(हिं. वि.) दढ़ियल, दाढ़ीवाला।

डपट–(हिं. स्त्री.) डाँट, झिड़की, घुड़की, घोड़े की सरपट चाल।

डपटना–(हिं. क्रि.स.) क्रोध में कठोर स्वर में वोलना, डाँटना, वेग से दौड़ना।

डपोरशं(सं)ख–(हिं. पुं.) अपनी झूठी वड़ाई करनेवाला, वह जो देखने में वड़े डीलडौल का हो परन्तु निर्वुद्धि हो, वह जो कहे पर करे नहीं।

डफ–(हिं. पुं.) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का वाजा, डफला, चंग वाजा, (जिसको वजाकर लोग लावनी गाते हैं।)

डफला–(हिं. पुं.) डफ नाम का वाजा।

डफली–(हिं. स्त्री.) छोटा डफ, खँजड़ी; (मुहा.) **अपनी अपनी डफली अपना अपना राग**–अलग अलग आदमियों की अलग-अलग सम्मतियाँ।

डफार–(हिं. स्त्री.) चिल्लाने या रोने का शब्द, चिंघाड़।

डफारना–(हिं. क्रि. अ.) जोर से चिल्लाना या रोना।

डफालची, डफाली–(हिं. पुं.) वह जो डफ

वजाता हो।
डफोरना–(हि.क्रि.अ.)ललकारना,पुकारना।
डव–(हि. पुं.) थैला, जेव, वह चमड़ा जिससे कुप्पा वनाया जाता है।
डवकना–(हि. क्रि. अ., स.) धातु की चद्दर को कटोरी के आकार का गहरा वनाना, पीड़ा होना, टीसना, टपकना।
डवकौहाँ–(हि. वि.) आँसू भरा हुआ, डवडवाया हुआ।
डवडवाना–(हि. क्रि. अ.) अश्रुपूर्ण होना, आँखों में आँसू भर आना; (मुहा.) आँखें डवडवाना–आँखों में आँसू भर आना।
डवरा–(हि. पुं.) पानी जमा रहने का छिछला गड्ढा, कुंड, खेत का खलार भाग।
डवरी–(हि. स्त्री.) छोटा गड़हा।
डवल–(हि. पुं.) पैसा; **–रोटी**–(स्त्री.) पावरोटी।
डवला–(हि. पुं.) कुल्हड़, मिट्टी का छोटा पात्र।
डवी–(हि. स्त्री.) डिव्वी, डिविया।
डवोना–(हि. क्रि. स.) वोरना, डुवाना, नष्ट करना, विगाड़ना।
डव्वा–(हि. पुं.) किसी वस्तु को रखने का ढपनेदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी की एक कोठरी।
डव्वू–(हि. पुं.) खाने-पीने की वस्तु परोसन का डंडी लगा हुआ एक प्रकार का कटोरा।
डभकना–(हि. क्रि. अ.) पानी में डूवना-उतराना।
डभका–(हि. पुं.) कौरा हुआ चना या मटर, कुएँ से निकाला हुआ ताजा पानी।
डभकौरी–(हि. स्त्री.) उडद की पीठी की वरी।
डमर–(सं. पुं.) डर के कारण भगदड़, उपद्रव, हलचल।
डमरु(रू)–(सं.पुं.)एक वाजा जो वीच में पतला तथा किनारों पर चौड़ा होता है; (इन्हीं चौड़े भागों पर चमड़ा मढ़ा होता है। इसके वीच में एक डोरी वँधी रहती है तथा डोरियों के सिरोंपर दो कौड़ियाँ वँधी रहती हैं। इसको इधर-उधर हिलाने से शब्द होता है); वह वस्तु जो वीच में पतली तथा दोनों ओर वरावर चौड़ी होती गई हो, वत्तीस लघुवर्ण-युक्त एक प्रकार का दंडक वृत्त, विस्मय, आश्चर्य।
डमरुका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का तन्त्रोक्त आसन।
डमरुमध्य–(सं. पुं.) भूमि या जल का वह संकीर्ण भाग जो दो वड़े भू या जल खंडों को मिलाता है; **जल-डमरुमध्य**–(पुं.) जल का वह पतला भाग जो जल के दो वड़े-वड़े भागों को मिलाता है।
डमरु(रू)-यंत्र–(सं.पुं.)दो घड़ों के मुखों को मिलाकर वनाया हुआ यन्त्र जो अर्क खींचने, सिगरफ में से पारा अलगाने आदि के काम आता है।
डयन–(सं. पुं.) पालकी, डोली, उड़ने की क्रिया।
डर–(हि. पुं.) भीति, भय, आशंका, अनिष्ट की भावना, त्रास।
डरना–(हि. क्रि. अ.) भयभीत होना, आशंका करना।
डरपना–(हि. क्रि. अ.) भयभीत होना, डरना।
डरपोक–(हि. वि.) भीरु, कायर, जो बहुत डरता हो।
डरवाना–(हि. क्रि.स.) देखें 'डराना'।
डराक–(हि. वि.) डरपोक।
डराडरी–(हि. स्त्री.) भय, त्रास, डर।
डराना–(हि. क्रि. स.) भयभीत करना, भय दिखलाना।
डरावना–(हि. वि.) डर उत्पन्न करने-वाला, भयानक, भयंकर।
डरावा–(हि. पुं.) फलवाले वृक्षों में वँधी हुई एक लकड़ी जो पक्षियों को उड़ाने के लिये खटखट करती है, डराने के निमित्त कही हुई वात।
डरी–(हि. स्त्री.) देख 'डली'।
डरील, डरीला–(हि.वि.) जिसमें शाखाएँ हों, डारवाला, शाखायुक्त।
डरैला–(हि. वि.) डरावना, भयंकर।
डल–(हि. पुं.) खण्ड, अंश, टुकड़ा; (स्त्री.) झील।
डलई–(हि. स्त्री) देखें 'डलिया'।
डलना–(हि.क्रि.अ.) डाला जाना, पड़ना।
डलवा–(हि. पुं.) देखें 'डला'।
डलवाना–(हि. क्रि. स.) डालने का काम दूसरे से कराना।
डला–(हि. पुं.) खण्ड, टुकड़ा, वेंत, वाँस आदि की फट्टियों का वना हुआ पात्र, दौरा, टोकरा।
डलिया–(हि.स्त्री.) छोटा टोकरा, दौरी।
डली–(हि. स्त्री.) खण्ड, छोटा टुकड़ा, छोटा ढेला, सुपारी, डलिया।
डल्लक–(सं. पुं.) वेंत, वाँस आदि का वना हुआ पात्र, डला, दौरा।
डवँरू–(हि. पुं.) देखें 'डमरू'।
डवरा–(हि.पुं.) एक प्रकार का वड़ा कटोरा।
डस–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की मदिरा, तराजू के पलड़े की डोरी, कपड़े का छोर।
डसन–(हि.स्त्री.) डसन की क्रिया या ढंग।
डसना–(हि. क्रि. स.) साँप तथा विषैले कीड़ों का काटना, डंक मारना।
डसवाना, डसाना–(हि. क्रि.स.) डसने को प्रेरित करना।
डहकना–(हि. क्रि. अ., स.) ठगना, छल करना, फैलना, छितराना, ललचाना, विलाप करना, गरजना।
डहकाना–(हि. क्रि. अ.,स.) नष्ट करना, गँवाना, छल करना, ठगना।
डहडहा–(हि. वि.) हराभरा, लहलहाता हुआ, आनन्दित, प्रसन्न, प्रफुल्लित, टटका।
डहडहाना–(हि.क्रि.अ.) लहलहाना, हरा-भरा होना, प्रसन्न होना।
डहडहाव–(हि. पुं.) प्रसन्नता, प्रफुल्लता।
डहन–(हि. पुं.) पंख, पर, डैना; (स्त्री.) दाह, जलन।
डहना–(हि.क्रि.अ.,स.) भस्म होना, जलना, द्वेष करना, कुढ़ना, चिढ़ना, वुरा मानना, क्लेश पहुँचाना, जलाना।
डहर–(हि.स्त्री.) पथ, मार्ग, आकाशगंगा।
डहरना–(हि. क्रि. अ.) चलना, घूमना, फिरना।
डहराना–(हि.क्रि.स.) चलाना, फिराना।
डहार–(हि. पुं.) कष्ट देनेवाला।
डाँक–(हि.स्त्री.) ताँवे या चाँदी का वहुत महीन पत्तर जो नगीनों के नीचे वैठाया जाता है, वमन; (पुं.) देखें 'डंका'।
डाँकना–(हि. क्रि. अ., स.) कूदकर पार करना, फाँदना, वमन करना।
डाँग–(हि. पुं.) डंका।
डाँगर–(हि. पुं.) चौपाया (गाय, भैंस आदि), एक नीच जाति; (वि.) कृश, दुवला-पतला, मूर्ख, जड़।
डाँगा–(हि. पुं.) जहाज के मस्तूल में लगाया हुआ वेंड़े वल का वल्ला।
डाँट–(हि. स्त्री.) क्रोध का शब्द, घुड़की, डपट, शासन, दवाव; (मुहा.)**–में रखना**–शासन या वश में रखना (वच्चों, नौकरों आदि को)।
डाँटना–(हि. क्रि. स.) क्रोधपूर्वक कठोर शब्द कहना, डपटना, घुड़कना।
डाँठ–(हि. पुं.) देखें 'डंठल'।
डाँड़–(हि. पुं.) डंडा, सीधी लकड़ी, गदका, लकीर, भीटा, टीला, सीमा, समुद्र का तंग ढालुआँ किनारा, जंगल काटकर वनाया हुआ स्थान, अर्थदंड, हरजाना, नुकसान का वदला, नाव

खेने का पटरा लगा हुआ डंडा, अंकुश का हत्था, खेत के चारों ओर बनाई हुई मेंड़।
डाँड़ना–(हिं. क्रि. स.) अर्थदण्ड लगाना।
डाँड़र–(हिं. पुं.) बाजरे आदि की खूँटी जो फसल काट लेने पर खेत में रह जाती है।
डाँड़ा–(हिं. पुं.) नाव खेने का पटरा लगा हुआ बाँस का डंडा, सीमा, हद, डाँड़, छड़, गदका।
डाँड़ा-मेंड़ा–(हिं. पुं.) आपस की अति समीपता या लगाव, मेंड़, झगड़ा, टंटा।
डाँड़ी–(हिं. स्त्री.) लंबा पतला डंडा, लंबा हत्था, अस्त्र की मुठिया, तराजू की डंडी, पतली शाखा, फूल या फल में लगा हुआ डंठल, टहनी, चिड़ियों के बैठने का स्थान, फूल के नीचे का पतला भाग, सीधी रेखा, लकीर, एक प्रकार की पहाड़ी सवारी, झंपान, हिंडोले में लगाने की लकड़ी।
डाँवरा–(हिं. पुं.) पुत्र, बेटा, लड़का।
डाँवरी–(हिं. स्त्री.) पुत्री, कन्या, बेटी।
डाँवरू–(हिं. पुं.) बाघ का बच्चा।
डाँवाडोल–(हिं. वि.) स्थिर न रहनेवाला, चंचल, विचलित।
डाँश-पाहिड़–(हिं.पुं.) रुद्र ताल के ग्यारह भेदों में से एक।
डाँस–(हिं.पुं.) बड़ा मच्छड़, दंश, चौपायों को काटनेवाली एक प्रकार की मक्खी।
डाइन–(हिं. स्त्री.) कुरूपा स्त्री, जिस स्त्री की बुरी दृष्टि से बच्चे मर जाते हैं, चुड़ैल, भूतनी।
डाक–(हिं.स्त्री.) वह स्थान जहाँ पर गाड़ी के घोड़े बदले जाते ह, चिट्ठियों के आने-जाने की राजकीय व्यवस्था, इस प्रबन्ध से चिट्ठी-पत्री आदि जो भेजी जावे, वमन, कै, उलटी; **–खाना**–(पुं.) वह सरकारी स्थान जहाँ पर मनुष्य भिन्न-भिन्न स्थानों को पत्र आदि भेजने के लिये इनको छोड़ते हैं तथा भिन्न-भिन्न स्थानों से आये हुए पत्र आदि जहाँ से बाँटे जाते हैं; **–गाड़ी**–(स्त्री.) वह रेलगाड़ी जो डाक ले जाती है; **–घर**–(पुं.) देखें 'डाकखाना'; **–चौकी**–(स्त्री) वह पड़ाव जहाँ सवारी के घोड़े बदले जाते हैं; **–बँगला**–(पुं.) वह राजकीय गृह जो एक स्थान से दूसरे स्थान को जानेवाले राजकर्मचारियों की सुविधा और विश्राम के लिये बना होता है; **–मुंशी**–(पुं.) डाकघर का प्रबंध करनेवाला, पोस्टमास्टर; **–व्यय**–(पुं.) डाक महसूल, डाक का खर्च।
डाकना–(हिं.क्रि.अ.,स.) लाँघना, फाँदना, कूदना, उलटी करना, वमन करना।
डाकर–(हिं. पुं.) सूखे हुए तालाब की मिट्टी जो धूप से फट जाती है।
डाका–(हिं. पुं.) किसी का धन छीनने के लिये आक्रमण या धावा, बटमारी।
डाकाजनी–(हिं. स्त्री.) डकैती करने का काम, डाका।
डाकिन, डाकिनी–(स. स्त्री.) काली के एक गण का नाम, पिशाची, डाइन, चुड़ैल, शिव और पार्वती की अनुचरी जो संहार-शक्ति का अङ्गविशेष कही जाती है।
डाकिया–(हिं.पुं.) डाक ढोनेवाला, पोस्ट-मैन।
डाकी–(हिं. स्त्री.) उलटी, वमन, कै; (पुं.) पेटू मनुष्य।
डाकू–(हिं. पुं.) वह जो अन्याय से दूसरे का माल लूट लेता है, लुटेरा, बटमार, डकैत।
डाक्टर–(अं. पुं.) पश्चिमी चिकित्सा-प्रणाली द्वारा चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक, विद्वत्ता की एक उच्च उपाधि।
डाक्टरी–(हिं. स्त्री.) पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र, आयुर्वेद विद्या।
डाक्तर–(हिं. पुं.) देखें 'डाक्टर'।
डागा–(हिं. पुं.) वह डंडा जिससे नगाड़ा बजाया जाता है, चोब।
डागुर–(हिं. पुं.) जाटों की एक जाति।
डाट–(हिं. स्त्री.) टेक, चाँड़, छेद बन्द करने के लिए प्रयुक्त कोई वस्तु, बोतल का मुँह बन्द करने की वस्तु, डट्टा, काग, देखें 'डाँट'।
डाटना–(हिं. क्रि. स.) एक वस्तु को दूसरे के ऊपर रखकर जोर से दबाना, चाँड़ लगाना, टेकना, ठेपी लगाना, छेद बन्द करना, ठूँस-ठूँसकर भरना, पेटभर भोजन करना, डटाना, भिड़ाना, मिलाना।
डाढ़–(हिं. स्त्री.) चबाने के चौड़े दाँत, दाढ़, वट आदि वृक्षों की जटा, बरोह।
डाढ़ना–(हिं.क्रि.स.) जलाना, झुलसाना।
डाढ़ा–(हिं. स्त्री.) दावानल, जंगल की आग, अग्नि, जलन, दाह।
डाढ़ी–(हिं. स्त्री.) चिबुक और गण्ड-स्थल पर के बाल, दाढ़ी, चिबुक, ठुड्डी।
डाब–(हिं. पुं.) कच्चा नारियल, तल-वार लटकाने की चौड़ी पट्टी, परतला।
डाबर–(हिं. पुं.) पोखरी, गड्ढा, ताल, हाथ धोने तथा कुल्ला करने का पात्र, चिलमची; (वि.) मटमैला (जल)।
डाबा–(हिं. पुं.) डब्बा।
डाभ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कुश, आम का बौर, कच्चा नारियल।
डामर–(सं. पुं.) महादेवजी का कहा हुआ एक तन्त्रशास्त्र, आडम्बर, चम-त्कार, गर्व, अहंकार, एक प्रकार का चक्र जो दुर्ग के शुभाशुभ जानने के लिये बनाया जाता है, एक क्षेत्रपाल का नाम, धूमधाम, हलचल; (हिं. पुं.) साखू के वृक्ष का गोंद, राल, एक प्रकार की राल जो छोटी मधुमक्खियों के छत्तों में से निकलती है, मधुमक्खी जो ऐसी राल बनाती है।
डामल–(हिं.पुं.,स्त्री.) जीवनभर के लिए कारावास, जन्मभर के लिये बंदी, 'देशनिकाला' का राजकीय दण्ड।
डामाडोल–(हिं. वि.) देखें 'डाँवाडोल'।
डायन–(हिं. स्त्री.) कुरूपा, भयंकर स्त्री, डाकिनी, पिशाचिनी, वह स्त्री जिसकी कुदृष्टि से बच्चे मर जाते हैं।
डार–(हिं. स्त्री.) डलिया, टोकरी, शाखा, डाल, फानूस की खूँटी जो भीत में लगाई जाती है।
डारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'डालना'।
डाल–(हिं. स्त्री.) शाखा, तलवार का फल, डलियों में सजाकर भट में भजे जानेवाले खाद्य पदार्थ, फानूस टाँगन की खूँटी, डलिया, चँगेरी, विवाह के समय वर पक्ष की ओर से वधू को दिया जानेवाला वस्त्र और आभूषण।
डालना–(हिं.क्रि.स.) नीचे गिराना, फेंकना, छोड़ना, ऊपर से गिराना, रखना, मिलाना, भीतर घुसाना, सुध न लेना, भुला देना, चिह्नित करना, फैलाना, शरीर पर धारण करना, सौंपना, वमन करना, उपयोग करना, लगाना, गर्भ-पात करना, मिश्रित करना, पत्नी की तरह रखना, बिछाना, सुसज्जित करना, खोज करना; (मुहा.) डाल रखना–रख छोड़ना।
डाली–(हिं. स्त्री.) फूल, फल या खाने-पीने की वस्तुएँ सजाकर भेंट में भजी जानेवाली सौगात, छितनी, छोटी शाखा।
डावड़ा, डावरा–(हिं. पुं.) पुत्र, बेटा।
डावरी–(हिं. स्त्री.) कन्या, बेटी, पुत्री।
डास–(हिं. पुं.) चमार का चमड़ा साफ करने का एक यन्त्र।
डासन–(हिं.पुं.) बिस्तर, बिछावन, बिछौना।
डासना–(हिं. क्रि.स.) फैलाना, बिछाना।
डासनी–(हिं.स्त्री.) चारपाई, पलंग, खाट।

डाह–(हिं. स्त्री.) ईर्ष्या द्वेष, जलन।
डाहना–(हिं.क्रि.स.) कष्ट देना, जलाना।
डाही–(हिं. पुं.) कष्ट देनेवाला।
डिंगल–(हिं. वि.) दूषित, घृणित, नीच, अधम; (स्त्री.) राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य तथा वंशावली आदि लिखते हैं।
डिंड़स–(हिं.पुं.), डिंड़सी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की तरकारी।
डिंब–(सं. पुं.) बलवा, दंगा, कोलाहल, अंडा, प्लीहा, फेफड़ा, कीड़े का छोटा बच्चा।
डिंभ–(सं. पुं.) शिशु; (हिं.पुं.) आडंबर, अभिमान, घमंड।
डिंभज, डिंबज–(सं. पुं.) जो जीव अंडे से उत्पन्न हो।
डिंभिया–(हिं. वि.) पाखण्डी, अभिमानी, घमण्डी।
डिगना–(हिं. क्रि.अ.) विचलना, हटना।
डिगरी–(अं. स्त्री.) दीवानी अदालत का निर्णयादेश।
डिगरीदार–(हिं. पुं.) जिसके पक्ष में डिगरी मिली हो।
डिगलाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'डिगाना'।
डिगाना–(हिं. क्रि.स.) जगह से हटाना, खिसकाना, सरकाना, बात पर स्थिर न रहने देना, विचलित करना।
डिग्गी–(हिं.स्त्री.) तालाब, पोखरी, साहस।
डिठार, डिठिया(आ) र–(हिं. वि.) आँखवाला, जिसको सुझाई दे।
डिठोरी–(हिं. स्त्री.) बालमुग्रा नामक औषधि, एक वृक्ष का बीज।
डिठोहरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'डिठोरी'।
डिठौना–(हिं. पुं.) काजल का टीका जिसको स्त्रियाँ नजर न लगने के लिये बच्चों के सिर पर लगाती है।
डिडकारी–(हिं.स्त्री.) दहाड़ मारकर रोना।
डिडिका–(सं. स्त्री.) युवावस्था में मुख पर होनेवाला रोग, मुहाँसा।
डिढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) दृढ़ करना।
डिबिया–(हिं. स्त्री.) ढक्कनदार छोटा डिब्बा।
डिबिया टँगड़ी–(हिं. स्त्री.) कुश्ती का एक पेंच, मल्ल-युद्ध की एक युक्ति।
डिब्बा–(हिं.पुं.) ढक्कनदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी का एक कमरा, संपुट, छोटे बच्चों की पसली दूखने का रोग, पलई।
डिभगना–(हिं. क्रि.स.) मोहित करना।
डिम–(सं.पुं.) दृश्य काव्य या रूपक नाटक का एक भेद जिसमें माया, इन्द्रजाल, लड़ाई आदि का समावेश विशेष रूप से होता है, (यह रौद्ररस-प्रधान होता है और इसमें चार अंक होते हैं।)
डिमडिमी–(हिं.स्त्री.) डुगडुगी, डुग्गी।
डिल–(हिं.पुं.) मोथा, घास, ऊन की लच्छी।
डिल्ला–(सं.पुं.) एक प्रकार का वर्णवृत्त; (हिं. पुं.) बैल के कंधे पर का उठा हुआ कूबड़, ककुत्थ, बढ़े हुए मांस का पिंड।
डींग–(हिं. स्त्री.) अपनी बड़ाई की झूठी बातें; (मुहा.)–हाँकना–लंबी-चौड़ी बातें करना।
डीठ–(हिं. स्त्री.) दृष्टि, देखने की शक्ति, समझ, सूझ।
डीठना–(हिं.क्रि. अ., स.) दृष्टिगोचर होना, देख पड़ना, दृष्टि लगाना, दिखाना।
डीठबंध–(हिं. पुं.) इन्द्रजाल, वह जादूगर जो इन्द्रजाल दिखलाता हो।
डीठिमूठि–(हिं. स्त्री.) जादू, टोना, कुदृष्टि, नजर।
डीतर–(सं. वि.) दूसरे का पीछा करनेवाला।
डीन–(सं. पुं.) पक्षियों की गति, उड़ान, आगम-शास्त्र; (अं.पुं.) विश्वविद्यालय का एक प्रबंधकर्त्ता।
डीबुआ–(हिं. पुं.) डबल, पैसा।
डीमडाम–(हिं. पुं.) ठाटबाट, आडम्बर, ऐंठ, ठसक, धूमधाम।
डील–(हिं.पुं.) शरीर का विस्तार, कद, शरीर, देह, व्यक्ति, प्राणी, मनुष्य।
डीलडौल–(हिं. पुं.) शरीर की लंबाई-चौड़ाई, शरीर का ढाँचा, काठी।
डीह–(हिं. पुं.) गाँव की बस्ती का स्थान, गाँव के समीप का ऊँचा टीला, गाँव का देवता।
डीहदारी–(हिं. स्त्री.) जमींदारों का एक प्रकार का अधिकार।
डुंग–(हिं. पुं.) अटाला, ढेर, राशि, भीटा, छोटी पहाड़ी, टीला।
डुंड–(हिं.पुं.) पेड़ की सूखी शाखा, ठूँठ।
डुक–(हिं. पुं.) घूँसा, मुक्का।
डुकिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'डोकिया'।
डुकियाना–(हिं. क्रि. स.) घूँसा मारना, मुक्का लगाना।
डुगडुगी–(हिं. स्त्री.) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा, डुग्गी; (मुहा.) –पीटना–डुगडुगी पीटकर ऐलान या घोषित करना, मुनादी करना।
डुग्गी–(हिं. स्त्री.) देखें 'डुगडुगी'।
डुगडुगाना–(हिं. क्रि. स.) नगाड़ा, ताशा आदि लकड़ी से बजाना।
डुपटना–(हिं.क्रि.स.) कपड़े को चुनना, चुनियाना।
डुपट्टा–(हिं. पुं.) देखें 'दुपट्टा'।
डुबकी–(हिं. स्त्री.) जल में डूबने का कार्य, बुड़की, एक तरह की बिना तली हुई बड़ी।
डुबवाना–(हिं. क्रि. स.) डुबाने का काम दूसरे से कराना।
डुबाना–(हिं.क्रि.स.) मग्न करना, गोता देना, बोरना, नष्ट करना, सत्यानाश करना; (मुहा.) नाम डुबाना–अपनी मान-मर्यादा को नष्ट करना; लुटिया डुबाना–प्रतिष्ठा खो बैठना।
डुबाव–(हिं. पुं.) डूबनेभर की जल की गहराई।
डुबोना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'डुबाना', बोरना।
डुब्बी–(हिं. स्त्री.) डुबकी।
डुभकौरी–(हिं. स्त्री.) झोल में पकाई हुई बिना तली हुई बरी।
डुलना–(हिं. क्रि.अ.) डोलना।
डुलाना–(हिं. क्रि. स.) हिलाना, (पंखा) झलना, घुमाना-फिराना।
डुलि–(सं.स्त्री.) कच्छपी, कछुई।
डुलिका–(सं. स्त्री.) खंजन के प्रकार का एक पक्षी।
डुली–(सं. स्त्री.) साग विशेष, बथुआ।
डूंगर–(हिं. पुं.) ढूह, टीला, भीटा, छोटी पहाड़ी; –फल–(पुं.) बंदाल का फल।
डूंगरी–(हिं. स्त्री.) छोटी पहाड़ी, छोटा टीला।
डूंगा–(हिं.पुं.) चम्मच, चमचा, टीला भीटा।
डूंडा–(हिं. वि., पुं.) एक सींगवाला (बैल)।
डूबना–(हिं. क्रि. अ.) पानी में मग्न होना, गोता खाना; सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह आदि का अस्त होना, सत्यानाश होना, मारा जाना, तन्मय या लीन होना, अच्छी तरह ध्यान लगाना, दरिद्र के घर कन्या का विवाह होना, दिये हुए अथवा व्यवसाय में लगाये हुए धन का नष्ट या चौपट होना; (मुहा.) डूब मरना–लज्जावश किसी को मुँह न दिखलाना; चुल्लू भर पानी में डूब मरना–लाज के मारे मुँह न दिखलाना; –उतराना–चिन्तित रहना; जी डूबना–जी घबड़ाना; नाम डूबना–मान-मर्यादा नष्ट होना।
डॅंड़सी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की तरकारी जो ककड़ी की तरह की होती है, टिंडसी।

डेग,डेगची–(हिं.पुं.,स्त्री.) देखें 'देग, देगची'।
डेड़हा–(हिं. पुं.) जल का सर्प ।
डेढ़–(हि.वि.,पुं.) एक पूरा और आधा, १½; (मुहा.) **–ईंट की मसजिद बनाना**–अपने अभिमान में सब से अलग रहना; **–चावल की खीर पकाना**–अपनी चाल सब से निराली रखना।
डेढ़ा–(हिं.वि.,पुं.) डेढ़गुना, एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।
डेढ़ी–(हिं. स्त्री.) अंजही में लिये गये बीज का आधा और देना।
डेरा–(हिं. पुं.) ठहराव, पड़ाव, टिकान, ठहरने का स्थान, छावनी, खेमा, तम्बू, शामियाना, निवासस्थान, घर, मकान, नाचने या गानेवालों की मंडली, ठहराव का आयोजन; (मुहा.) **–डालना**–कहीं पर टिकने के लिये सामान फैलाना; **–पड़ना**–टिकना, ठहरना।
डेराना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'डराना', डरना।
डेल–(हिं.स्त्री.) रबी की उपज के लिये जोती हुई भूमि; (पुं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, उल्लू पक्षी, पत्थर या मिट्टी का टुकड़ा, ढेला, रोड़ा, पक्षियों को बन्द करने का झावा या टोकरा।
डेला–(हिं. पुं.) आँख का कोया, वह काठ का टुकड़ा जो मरकहे पशु के गले में बाँधा जाता है।
डेली–(हिं.स्त्री.) बांस की बनी हुई डलिया।
डेवढ़–(हिं. वि.) डेढ़गुना, डेवढ़ा; (पुं.) क्रम, सिलसिला।
डेवढ़ना–(हिं.क्रि.अ.,स.) रोटी का आँच पर फूलना, कपड़े की तह लगाना, हिसाब बन्द करना।
डेवढ़ा–(हि. वि.) एक और आधा, डेढ़गुना; (पुं.) डेढ़गुनी संख्या का पहाड़ा, डेढ़ा।
डेवढ़ी–(हि. स्त्री.) देखें 'ड्योढ़ी'।
डेहरी–(हि. स्त्री.) दहलीज, देहली।
डेहल–(हि. पुं.) देखें 'डेहरी'।
डैगना–(हि. पुं.) नटखट चौपायों के गले में बाँधने का लकड़ी का टुकड़ा, ठेंगुर।
डैना–(हि. पुं.) पंख, पाँख।
डोंगर–(हि. पुं.) पहाड़ी टीला, भीटा।
डोंगा–(हि. पुं.) वह नाव जिसमें पाल नहीं लगाई जाती, बड़ी नाव।
डोंगी–(हि. स्त्री.) बिना पाल की छोटी नाव, छोटी नौका, लोहार का वह पानी का पात्र जिसमें वह लोहा लाल करके बुझाता है।
डोंड़ा–(हिं. पुं.) बड़ी इलायची, टोटा, कारतूस।
डोंड़ी–(हिं. स्त्री.) पोस्ते का फल जिसके छिलके को चीरकर अफीम निकाली जाती है, टोंटी, किसी पात्र का उभड़ा हुआ मुँह, छोटी नाव।
डोई–(हिं. स्त्री.) कटोरे में बेंट जड़ी हुई करछी जिससे हलवाई लोग घी, चाशनी आदि कड़ाहे से निकालते हैं।
डोकर, डोकरा–(हिं. पुं.) अशक्त बुड्ढा आदमी।
डोकरी–(हिं.स्त्री.) वृद्धा स्त्री, बुड्ढी औरत।
डोका–(हिं. पुं.) तेल, घी आदि रखने का काठ का छोटा पात्र।
डोकिया, डोकी–(हिं. स्त्री.) तेल आदि रखने का काठ का छोटा बरतन।
डोड़हा–(हिं. पुं.) जल में रहनेवाला सर्प।
डोड़ी–(हिं. स्त्री.) मटर, सेम आदि की कच्ची फली, जीवन्ती नाम की लता।
डोडो–(हिं. पुं.) बत्तक के आकार का एक पक्षी।
डोब, डोबा–(हिं. पुं.) गोता, डुबकी।
डोबना–(हिं. क्रि. स.) डुबाना।
डोम–(हिं. पुं.) भारतवर्ष की एक अस्पृश्य नीच जाति, (ये लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को आते जाते, श्मशान में चिता जलाते और बाँस के सूप, दौरे आदि बनाते और बेचते हैं); **–कौआ**–(पुं.) एक प्रकार का बड़ा कौआ जिसका रंग बहुत काला होता है।
डोमड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'डोम'।
डोमनी–(हिं. स्त्री.) डोम जाति की स्त्री, डोमिन।
डोमा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सर्प।
डोमिन–(हिं.स्त्री.) डोम जाति की स्त्री।
डोर–(हिं. पुं.) मोटा रस्सा, सूत्र, डोरा, सूत; (मुहा.) **–पर लगाना**–किसी व्यवस्थित कार्य में नियुक्त करना।
डोरना–(हिं. क्रि. अ.) हाथ पकड़कर ले चलना।
डोरा–(हिं. पुं.) सूत, तागा, धारी, लकीर, आँखों की पतली लाल नसें जो नशे में उभड़ आती हैं, तलवार की धार, एक प्रकार की बड़ी करछी, पौनी, अनुसन्धान-सूत्र, स्नेहसूत्र, प्रेम का बन्धन, काजल या सुरमे की लकीर, नाचने में कंठ की गति, पोस्ते की डोंड़ी, तपाये हुए घी की धार; (मुहा.) **–डालना**–स्नेह-सूत्र में बाँधना, परचाना।
डोरिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सूती कपड़ा जिसमें मोटे सूत की लम्बी धारियाँ बनी रहती हैं, हरे पैर का एक प्रकार का बगला, एक नीच जाति।
डोरियाना–(हिं.क्रि.स.) पगहा लगाकर पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना।
डोरिहार–(हिं. पुं.) पटवा जो रेशम के सूत में गहने गूँथता है, एक प्रकार के शैव योगी।
डोरी–(हिं. स्त्री.) रज्जु, पाश, रस्सी, बंधन, कड़ाही से दूध, चाशनी आदि निकालने की डाँड़ीदार कटोरी, डोई; (मुहा.) **–ढीली करना**–चौकसी करने में कमी करना।
डोरे–(हिं. अव्य.) संग-संग, साथ-साथ।
डोल–(हिं. पुं.) कुएँ से पानी खींचने का लोहे का गोल बरतन, हिंडोला, झूला, पालना, पालकी, डोली, हलचल; (वि.) डोलने या हिलनेवाला।
डोलक्–(सं. पुं.) ताल देने का एक प्रकार का प्राचीन बाजा।
डोलची–(हिं. स्त्री.) छोटा डोल।
डोलडाल–(हिं. पुं.) चलना-फिरना, टट्टी जाना।
डोलना–(हिं.क्रि.अ.) गति में होना, हिलना, टहलना, चलना, घूमना, फिरना, हटना, दूर चला जाना, विचलित होना, स्थिर न रहना।
डोला–(हिं. पुं.) सवारी, पालकी, डोली, मियाना, झूले में दिया जानेवाला झोंका, पेंग; (मुहा.) **–देना**–अपनी बहू-बेटी को किसी राजा को भेंट देना, कन्या को वर के घर ले जाकर ब्याहना।
डोलाना–(हिं.क्रि.स.) गतियुक्त करना, हिलाना, चलाना, भगाना, हटाना, दूर करना, अलग करना।
डोलायंत्र–(हिं. पुं.) देखें 'दोलायंत्र'।
डोली–(हिं. स्त्री.) सवारी, पालकी।
डोही–(हिं. स्त्री.) देखें 'डोई'।
डौंड़ी–(हिं. स्त्री.) ढिंढोरा, घोषणा, डुगडुगी; (मुहा.) **–देना**–ढिंढोरा पीटना, मुनादी करना; **–बजना**–घोषणा या मुनादी होना, जयजयकार होना।
डौंरा–(हिं. पुं.) खेत में उगनेवाली एक प्रकार की घास।
डौंरू–(हिं. पुं.) देखें 'डमरु'।
डौआ–(हिं. पुं.) काठ का बना बड़ा कलछा या चम्मच।
डौल–(हिं. पुं.) प्रारंभिक रूप, ढाँचा,

कद, गठन, शैली, ढव, भाँति, प्रकार, उपाय, खेत की मेड़, डाँड़, लक्षण, रंग-ढंग, सामान; (मुहा.)–पर लाना–सुडौल बनाना; –बाँधना–उपाय करना; –डाल–(पुं.) युक्ति, उपाय; –दार–(वि.) सुन्दर।

डौलियाना–(हिं. क्रि. स.) ढंग पर लाना, दुरुस्त करना।

ड्योढ़ा–(हिं. वि.) पूरा और आधा, डेवढ़ा; (पुं.) डेढ़-गुनी संख्या का पहाड़ा, गीत का ऊँचा स्वर।

ड्योढ़ी–(हि. स्त्री.) फाटक, चौखट, द्वार में प्रवेश करते समय घर का पहला बाहरी कमरा, पौरी।

ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान–(हिं. पुं.) दरवान, चौकीदार।

ढ

ढ–संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण तथा टवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।

ढँकन–(हिं. पुं.) देखें 'ढक्कन'।

ढँकना–(हिं.क्रि.अ.,स.;पुं.) देख 'ढकना'।

ढंख–(हिं. पुं.) ढाक, पलाश।

ढंग–(हिं. पुं.) प्रणाली, पद्धति, शैली, रीति, प्रकार, भाँति, रचना, बनावट, उपाय, युक्ति, आचरण, चाल-ढाल, लक्षण, आभास, स्थिति, अवस्था, दशा, व्यवहार, पाखंड, बहाना; (मुहा.)–पर चढ़ना–अनुकूल होना; –पर लाना–अपने अभिप्राय के अनुसार करना; रंग-ढंग–(पुं.) लक्षण; –उजाड़–(पुं.) घोड़े की दुम के नीचे की एक भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

ढँगलाना–(हिं क्रि. स.) लुढ़काना।

ढंगी–(हिं. वि.) चतुर, धूर्त, छली।

ढंढस–(हिं. पुं.) ढोंग, पाखंड।

ढढार–(हि.वि.) अत्यन्त जीर्ण, बहुत बेडौल।

ढँढोर–(हि. पुं.) ज्वाला, आग की लपट, लौ, काले मुँह का बन्दर, लंगूर।

ढँढोरची–(हि. पुं.) ढिंढोरा फेरनेवाला, मुनादी करनेवाला।

ढँढोरना–(हि. क्रि. स.) इधर-उधर ढूँढना।

ढँढोरा–(हि.पुं.) घोषणा करने का ढोल, डुगडुगी, ढोल बजाकर की हुई घोषणा।

ढँढोरिया–(हि. पुं.) डुग्गी बजाकर घोषणा करनेवाला।

ढपना–(हिं.क्रि.अ., स.) ढकना; (पुं.) वह वस्तु जिससे कोई चीज ढाँकी जाती है।

ढई–(हिं. स्त्री.) किसी के घर पर जाकर जब तक अपना काम पूरा न हो तब तक धरना देना; (मुहा.)–देना–धरना देना।

ढकना–(हि. पुं.) ढापने की वस्तु, ढक्कन; (क्रि. अ., स.) छिपना, ढाँकना।

ढकनियाँ, ढकनी–(हि. स्त्री.) ढाँपने की वस्तु।

ढकेलना–(हिं. क्रि. स.) धक्का देकर आगे बढ़ाना, ठेलना।

ढकोसना–(हि.क्रि.स.) बड़े-बड़े घूँटों में पीना।

ढकोसला–(हिं. पुं.) पाखंड।

ढक्कन–(हि. पुं) एक प्रकार का गोदना जो हथेली के पीछे गोदवाया जाता है, ढकना, ढाँकने की वस्तु।

ढक्का–(हि.पुं.) बड़ा ढोल, नगाड़ा, डंका।

ढक्कारी–(सं. स्त्री.) तारा देवी।

ढक्की–(हि.स्त्री.) पहाड़ की ढालवाँ भूमि।

ढगण–(सं. पुं.) एक मात्रिक गण जिसमें तीन मात्राएँ होती हैं, तांडव।

ढचर–(हि.पुं.) प्रपंच, टंटा, बखेड़ा, आडम्बर, झूठा आयोजन।

ढटींगड़(र), ढटींगडा–(हि. वि.) बड़े डीलडौल का।

ढट्ठा–(हि.पुं.) कानतक ढाँपनेवाला मुरेठा।

ढट्ठी–(हि. स्त्री.) दाढ़ी बाँधने की कपड़े की पट्टी, छेद-बंद करने की ठेंपी, डाट।

ढड्ढा–(हि. वि.) आवश्यकता से अधिक या बहुत बड़ा; (पुं.) ढाँचा, आडम्बर, झूठा ठाटबाट।

ढड्ढो–(हि.स्त्री.) बुड्ढी स्त्री, बकवादी स्त्री।

ढनमनाना–(हिं. क्रि. अ.) लुढ़कना।

ढप–(हिं. पुं.) लकड़ी से बजाने का चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा, डफ।

ढपना–(हिं. पुं.) ढक्कन, ढकने की वस्तु; (क्रि. अ., स.) ढका होना, ढकना।

ढप्पू–(हिं. वि.) अत्यन्त दीर्घ, बहुत बड़ा।

ढफ–(हिं. पुं.) देखें 'डफ'।

ढव–(हिं. पुं.) ढंग, युक्ति, रीति, प्रकार, बनावट, गढ़न; (मुहा.)–पर चढ़ना–अपना आशय सिद्ध होने की अवस्था पर होना; –पर लगाना–आशय सिद्ध होने की स्थिति पर लाना।

ढवैला–(हिं. वि.) कीचड़ मिला हुआ, पंकिल, गँदला।

ढमढम–(हि.पुं.) नगाड़े या ढोल का शब्द।

ढयना–(हिं. क्रि. अ.) घर, मकान आदि का ध्वस्त होना या गिर पड़ना।

ढरकना–(हिं. क्रि. अ.) ढलना, गिरकर बहना, द्रव पदार्थ का नीचे की ओर बहना, अस्त होना।

ढरका–(हिं.पुं.) आँख का एक रोग जिसमें आँसू बहा करता है, चौपायों को दवा पिलाने की बाँस की पोली नली।

ढरकाना–(हिं. क्रि. स.) पानी आदि गिराना, बहाना।

ढरकी–(हिं. स्त्री.) बाने का सूत फेंकने का जुलाहे का एक साधन।

ढरना–(हि. क्रि. अ.) देख 'ढलना'।

ढरनि–(हिं. स्त्री.) पतन, गिरने की क्रिया, हिलने-डोलने की क्रिया, चित्त-वृत्ति, झुकाव, स्वाभाविक करुणा, दया-शीलता, कृपा।

ढरहरना–(हि. क्रि. अ.) झुकना, गिरना, ढरकना, सरकना।

ढरहरा–(हिं. वि.) ढालुआँ।

ढरहरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पक्वान्न, पकौड़ी।

ढराना–(हिं. क्रि. स.) ढरकाना।

ढरारा–(हिं. वि.) ढरकनेवाला, गिरकर बह जानेवाला, लुढ़कनेवाला, शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला, आकर्षित होनेवाला।

ढर्रा–(हिं. पुं.) पथ, मार्ग, शैली, ढंग, उपाय, युक्ति, आचरण।

ढलकना–(हिं. क्रि. अ.) ढलना, बहना, सरकना, लुढ़कना।

ढलका–(हिं. पुं.) देखें 'ढरका'।

ढलकाना–(हिं. क्रि. स.) ढरकाना, बहाना, गिराना, लुढ़काना।

ढलकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'ढरकी'।

ढलना–(हिं. क्रि. अ.) पानी या किसी द्रव पदार्थ का एक पात्र से दूसरे में डाला, जाना, गिरकर बहना, बीतना, लुढ़कना लहराना, साँचे में ढालकर बनाया जाना प्रसन्न होना, प्रवृत्त होना, झुक जाना; (मुहा.) दिन ढलना–सूर्यास्त होना, साँझ होना; सूरज या चाँद ढलना–इनका अस्त होना; साँचे में ढला हुआ–बड़ा सुडौल, अति सुन्दर।

ढलमल–(हिं. वि.) शिथिल।

ढलवाँ–(हि.वि.) साँचे में ढालकर बनाया हुआ।

ढलवाना–(हिं. क्रि. स.) ढालने का काम दूसरे से कराना।

ढलाई–(हिं. स्त्री.) ढालने का काम, ढालन का शुल्क या पारिश्रमिक।

ढलाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'ढलवाना'।

ढलुवाँ–(हिं. वि.) ढालकर बनाया हुआ।

ढलैत–(हि.पुं.) ढालधारी, सैनिक।

ढवरी–(हिं. स्त्री.) धुन, रट, लगन।

ढहना–(हिं.क्रि.अ.) घर आदि का गिरना

नष्ट होना, ध्वस्त होना, निर्मूल होना।
ढहरी–(हिं. स्त्री.) देहली।
ढहवाना–(हिं. क्रि. स.) ढहने का काम दूसरे से कराना, मकान आदि गिरवाना।
ढहाना–(हिं. क्रि. स.) मकान आदि को ध्वस्त कराना, गिराना।
ढाँक–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
ढाँकना–(हिं. क्रि. स.) छिपाना, आड़ में रखना, किसी वस्तु को ऊपर फैलाकर उसके नीचे की वस्तु को छिपाना।
ढाँचा–(हिं. पुं.) किसी रचना की आदि की आकृति, डौल, ठाट, ठठरी, पंजर, बनावट, गढ़न, रचना, तरह, प्रकार, लोहे आदि की छड़ों या बल्लों का परस्पर इस प्रकार जड़ा होना कि उनके बीच में कोई दूसरी वस्तु लगाई, जमाई या जड़ी जा सके।
ढाँपना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'ढकना'।
ढाँस–(हिं. स्त्री.) गले का वह शब्द जो सूखी खाँसी के साथ निकलता है।
ढाँसना–(हिं. क्रि. अ.) सूखी खाँसी खाँसना।
ढाँसी–(हिं. स्त्री.) सूखी खाँसी।
ढाई–(हिं. वि., पुं.) दो से आधा अधिक, २½।
ढाक–(हिं. पुं.) पलाश का वृक्ष, बड़ा ढोल जो लड़ाई में बजाया जाता है; (मुहा.)–**के तीन पात**–सर्वदा एक समान।
ढाका पाटन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का महीन मलमल जिसमें फूल के चित्र बने रहते हैं।
ढाटा (ठा)–(हिं. पुं.) दाढ़ी बाँधने की कपड़े की पट्टी, वह बड़ा मुरेठा जिसका एक फेरा दाढ़ी और गाल पर भी लपेटा रहता है।
ढाड़ (ढ़)–(हिं. स्त्री.) चिल्लाहट, गरज, चिंघाड़, चीख; (मुहा.)–**मारना**–चीखकर रोना।
ढाढ़ना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'डाढ़ना'।
ढाढ़स–(हिं. पुं.) आश्वासन, धैर्य, सान्त्वना, दृढ़ता, साहस।
ढाढ़िन–(हिं. स्त्री.) ढाढ़ी की स्त्री।
ढाढ़ी–(हिं. पुं.) एक प्रकार की नीच जाति, ये लोग जन्मोत्सव के अवसर पर लोगों के घरों पर जाते और बधाई का गीत गाते हैं।
ढाढ़ौन–(हिं. पुं.) जलसिरिस का वृक्ष।
ढाना–(हिं. क्रि. स.) ढहवाना, ध्वस्त करना, गिराना।
ढापना–(हिं. क्रि. स.) ढकना, बन्द करना, ढांपना।
ढाबर–(हिं. वि.) मटमैला।
ढाबा–(हिं. पुं.) ओलती, जाल, रोटी की दुकान, बाहरी बारहदरी।
ढामक–(हिं. पुं.) नगाड़ा, ढोल आदि का शब्द।
ढामना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का साँप।
ढामरा–(सं. स्त्री.) मादा हंस, हंसी।
ढार–(हिं. पुं.) उतार, ढालुवाँ भूमि या मार्ग, रचना, ढाँचा; (स्त्री.) स्त्रियों का कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना, बिरिया।
ढारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'ढालना', गिराना।
ढारस–(हिं. पुं.) देखें 'ढाढ़स', आश्वासन।
ढाल–(सं. स्त्री.) थाली के आकार का चमड़े का बना हुआ एक अस्त्र जो तलवार, भाले आदि के आक्रमण को रोकने के लिये धारण किया जाता है; (पुं.) उतार, ढालुवाँ भूमि, ढार, प्रकार, रीति, ढंग।
ढालना–(हिं. क्रि. स.) किसी तरल पदार्थ को एक पात्र से दूसरे में गिराना, उड़ेलना, मदिरा पीना, बिक्री करना, कम दाम पर माल बेचना, व्यंग्य बोलना, ताना मारना, पिघली हुई धातु आदि को साँचे में ढालकर कोई वस्तु तैयार करना।
ढालवाँ–(हिं. वि.) ढालू, जो बराबर नीचा होता गया हो, ढालुवाँ।
ढालिया–(हिं. पुं.) साँचे में ढालकर पात्र आदि बनानेवाला, कसेरा।
ढाली–(हिं. पुं.) ढालधारी, ढाल बाँधनेवाला।
ढालुवाँ (आँ), ढाल–(हिं. वि.) देखें 'ढालवाँ'।
ढास–(हिं. पुं.) ठग, लुटेरा, डाकू।
ढासना–(हिं. पुं.) सहारा लेने की वस्तु, टेक, ओट, सहारा।
ढाहना–(हिं. क्रि. स.) ढाना, ध्वस्त करना।
ढिंढोरना–(हिं. क्रि. स.) अनुसन्धान करना, खोजना, हाथ डालकर ढूँढ़ना।
ढिंढोरा–(हिं. पुं.) घोषणा करने का ढोल, डुगडुगी, ढोल बजाकर की हुई घोषणा।
ढिकुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'ढेंकुली'।
ढिग–(हिं. अव्य.) समीप, निकट, पास, (स्त्री.) तट, किनारा, कोर, पाढ।
ढिठाई–(हिं. स्त्री.) अनुचित व्यवहार, धृष्टता, उद्दंडता, निर्लज्जता, अशिष्ट साहस।
ढिबरी–(हिं. स्त्री.) वह मिट्टी की डिबिया जिसमें बत्ती और किरासन तेल डालकर जलाते हैं, लोहे का चूड़ीदार डाट जो पुरज आदि में कसा जाता है, चरखे में लगाने की गोल चकती।
ढिमका–(हिं. सर्व.) अमुक, कोई।
ढिलढिला–(हिं. वि.) ढीलाढाला, तरल, पतला।
ढिलाई–(हिं. स्त्री.) ढीला होने का भाव, आलस्य, शिथिलता।
ढिलाना–(हिं. क्रि. स.) ढीलने का काम दूसरे से कराना, ढीला करना।
ढिल्लड़–(हिं. वि.) मट्ठर, आलसी।
ढिसरना–(हिं. क्रि. अ.) प्रवृत्त होना, झुकना, सरकना, फिसलना, फलों का पकना आरंभ होना।
ढींगर–(हिं. पुं.) हृष्टपुष्ट मनुष्य, जार।
ढींढ़, ढींढा–(हिं. पुं.) निकला हुआ पेट, गर्भ।
ढींढस–(हिं. पुं.) एक प्रकार की तरकारी।
ढीच–(हिं. स्त्री.) कूबड़।
ढीट–(हिं. स्त्री.) लकीर, रेखा।
ढीठ–(हिं. वि.) जो बड़ों के सामने संकोच न करता हो, धृष्ट, उद्दंड, भयरहित, साहसी, निडर; –**ता**–(स्त्री.) धृष्टता, ढिठाई।
ढीठा, ढीठ्यो–(हिं. वि.) ढीठ, धृष्ट।
ढीम, ढीमा–(हिं. पुं.) पत्थर आदि का टुकड़ा, ढेला, ढोंका।
ढील–(हिं. स्त्री.) शिथिलता, बंधन को ढीला करने का भाव; (पुं.) बालों में पड़नेवाला कीड़ा, जूँ।
ढीलना–(हिं. क्रि. स.) तना न रखना, ढीला करना, बंधन से छुटकारा देना, छोड़ देना, कुएँ में लटकाना।
ढीला–(हिं. वि.) जो तना न हो, जो दृढ़ता से बँधा न हो, जो जकड़कर पकड़े न हो, जिसमें जल का भाग अधिक हो, बहुत गीला, पनीला, जो गाढ़ा न हो, जो कसा न हो (वस्त्र), जो अपने संकल्प पर दृढ़ न हो, शिथिल, आलसी, नपुंसक; **ढीली आँख**–मदोन्मत्त दृष्टि।
ढीलापन–(हिं. पु.) ढीला होने का भाव, शिथिलता।
ढीह–(हिं. पु.) ऊँचा टीला, भीटा।
ढुंढ़–(हिं. पुं.) ठग, चोर, उचक्का।
ढुंढ़पाणि–(हिं. पुं.) दण्डपाणि, शिव के एक गण का नाम।
ढुंढ़वाना–(हिं. क्रि. स.) अन्वेषण कराना, ढूंढन का काम कराना।
ढुंढा–(सं. स्त्री.) हिरण्यकश्यप की बहिन का नाम जो एक राक्षसी थी, लावा आदि को गुड़ में पागकर बना लड्डू।
ढुंढिराज–(सं. पुं.) गजानन, गणेश।
ढुंढी–(हिं. स्त्री.) बाहु, बाँह; (मुहा.)–**ढुंढ़ियाँ चढ़ाना**–बाँह मरोड़ना।
ढुकना–(हिं. क्रि. अ.) प्रवेश करना, घुसना,

आक्रमण करना, धावा करना, टूट पड़ना, घात में रहना, छिपकर कोई बात सुनना।
ढुक्का–(हिं. पुं.) देख 'ढूँका'।
ढुटौना–(हिं. पुं.) लड़का।
ढुनमुनिया–(हिं.स्त्री.) ढुलकने की क्रिया या भाव।
ढुरकना–(हिं. क्रि. अ.) फिसलकर गिर पड़ना, लुढ़कना, झुकना।
ढुरना–(हिं. क्रि. अ.) ढलना, ढरकना, गिरकर बहना, इधर-उधर डोलना, डगमगाना, हिलना-डोलना, लुढकना, फिसलना, झुकना, प्रवृत्त होना, प्रसन्न होना अनुकूल होना।
ढुरहुरी–(हिं. स्त्री.) फिसलने की क्रिया, पगडंडी, नथ में लगे हुए सोने के गोल दाने।
ढुराना–(हिं.क्रि.स.) ढरकाना, लुढ़काना, ढुलकाना, हिलाना, डोलाना।
ढुलकना–(हिं क्रिअ.) गिरना, सरकना, लुढ़कना।
ढुलकाना–(हिं.क्रि.स.) सरकाना, लुढ़काना।
ढुलढुल–(हिं. वि.) लुढ़कनेवाला।
ढुलना–(हि.क्रि.अ.) गिरकर बहना, लुढ़कना, फिसलना, प्रसन्न होना, झुकना, प्रवृत्त होना, लहराना, इधर-उधर हिलना-डोलना, प्रसन्न होना।
ढुलवाई–(हिं. स्त्री.) ढोने का काम, ढोने का शुल्क।
ढुलवाना–(हिं. क्रि. स.) ढोने का काम दूसरे से कराना।
ढुलाना–(हिं. क्रि. स.) ढरकाना, ढालना, नीचे को गिराना, लुढ़काना, सरकाना, प्रवृत्त करना, झुकाना, इधर-उधर हिलाना, फहराना, चलाना-फिराना, अनुकूल करना, प्रसन्न करना, ढोने का काम दूसरे से कराना, फेरना।
ढुलुआ (वा)–(हिं.स्त्री.) खजूर से निकाली हुई चीनी।
ढुल्ला–(हिं. पुं.) ढोला, अन्न में लगनेवाला कीड़ा, घुन।
ढूँकना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'ढुकना'।
ढूँका–(हिं. पुं.) कुछ सुनने या देखने के लिये छिपने का काम।
ढूढ़–(हिं. स्त्री.) अन्वेषण, खोज।
ढूँढ़ना–(हिं. क्रि.स.) अन्वेषण करना।
ढूका–(हिं. पुं.) घासपात, डंठल आदि के बोझ का एक मान।
ढूसो–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
ढूह, ढूहा–(हिं. पुं.) अटाला, राशि, ढेर, भीटा, टीला।
ढेंक–(सं. पुं.) एक प्रकार की चिड़िया जो सदा पानी के पास रहती है।
ढेंकली–(हिं. स्त्री.) सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक यन्त्र, धान कूटने का एक प्रकार का लकड़ी का यन्त्र, ढकी, कलैया, भभके से अर्क उतारने का यन्त्र।
ढेंका–(हिं. पुं.) कोल्हू में लगा हुआ बाँस।
ढेंकी, ढेकुली–(हिं. स्त्री.) धान कूटने की ढेंकली।
ढेंढ़–(हि. पुं.) चूहा, नेवला आदि मरे हुए जन्तुओं को खानेवाली एक प्रकार की नीच जाति, मूढ़, मूर्ख, कपास आदि का डोंड़ा।
ढेंढ़र–(हि. पुं.) आँख के डेले पर का उभड़ा हुआ मांस, टटर।
ढेंढ़वा–(हिं.पुं.) काले मुँह का बन्दर, लंगूर।
ढेंढ़ा–(हि. पुं.) देखें 'ढेढ़'।
ढेढ़ी–(हिं. स्त्री.) कपास, पोस्ते आदि की फली, ढेंढ़, कान में पहिनने का एक गहना, तरकी।
ढेंप, ढेंपी–(हिं. स्त्री.) टहनी से लगा हुआ फल या पत्ते के छोर का भाग या डंठल।
ढेबरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'ढिबरी'।
ढेबुका–(हिं. पुं.) पैसा।
ढेर–(हिं. पुं.) अटाला, राशि, पुंज, समूह, टाल, गाँज; (वि.) अधिक, बहुत; (मुहा.)–**करना**–मार डालना; –**हो जाना**–गिरकर मर जाना, बहुत थक जाना।
ढेरा–(हिं. पुं.) रस्सी या सुतली बटने की फिरकी, मोट के मुँह पर लगा हुआ घेरा या मेंडरा।
ढेरी–(हिं.स्त्री.) ढेर, समूह, टाल, राशि।
ढेल–(हिं. पुं.) देखें 'ढेला'।
ढेलवाँस–(हिं. पुं. स्त्री.) ढेला फकने की रस्सी का बना हुआ फन्दा।
ढेला–(हिं. पुं.) पत्थर, ईंट आदि का छोटा टुकड़ा, खण्ड, टुकड़ा, चक्का, धान का एक भेद; –**चौथ**–(स्त्री.) भाद्रपद की शुक्ला चतुर्थी (कहा जाता है कि इस तिथि को चन्द्रमा देखने से कलंक लगता है। यदि कोई गाली सुन ले तो कलंक नही लगता। इसी से लोग दूसरों के घर पर ढेला फेंकते हैं।)
ढैंचा–(हिं. पुं.) एक पौधा (जयन्ती) जिसकी छाल से रस्सी बनाई जाती है।
ढैया–(हिं. पुं., स्त्री.) ढाई सेर तौलने का बटखरा, ढाई गुने का पहाड़ा, शनैश्चर का एक राशि पर ढाई वर्ष तक रहने का अरिष्ट।
ढोंकना–(हिं. क्रि. स.) पीना, पी जाना।
ढोंका–(हिं. पुं.) पत्थर आदि का बड़ा टुकड़ा, कोल्हू का बाँस, चार सौ या दो ढोली पानों की गड्डी।
ढोंग–(हिं. पुं.) आडंबर, पाखंड, ढकोसला; धूर्तविद्या, बहाना, छल; –**बाजी**–(स्त्री.) आडम्बर, धूर्त-विद्या, पाखंड।
ढोंगी–(हिं. वि.) पाखंडी, झूठा आडंबर करनेवाला, ढकोसला करनेवाला।
ढोंढ़–(हिं. पुं.) कपास, पोस्ते आदि की कली, डोंडा।
ढोंढ़ी–(हिं. स्त्री.) नाभि।
ढोका–(हिं. पुं.) देखें 'ढोंका'।
ढोटा–(हिं. पुं.) पुत्र, लड़का, बेटा।
ढोटी–(हिं. स्त्री.) पुत्री, बेटी, लड़की।
ढोटौना–(हिं. पुं.) देखें 'ढोटा'।
ढोना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना, बोझ ले चलना या पहुँचाना, निर्वाह करना, उठा ले जाना।
ढोर, ढोरा–(हिं. पुं.) मवेशी, चौपाया।
ढोरना–(हिं.क्रि.स.) ढालना, लुढ़काना।
ढोरी–(हिं. स्त्री.) ढालने की क्रिया या भाव, धुन, लगन, रट।
ढोल–(सं.पुं.) कान का परदा; (हिं. पुं.) एक प्रकार का दोनों ओर चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा जो गले में लटकाकर बजाया जाता है, एक राग विशेष; (मुहा.)–**पीटना**–चारों ओर कोई बात या समाचार फैलाते फिरना।
ढोलक–(हिं. स्त्री.) छोटा ढोल।
ढोलकिया–(हिं. पुं.) ढोल बजानेवाला मनुष्य।
ढोलकी–(हिं. स्त्री.) छोटी ढोलक।
ढोलना–(हिं. पुं.) ढोलक के आकार का गले में पहिनने का जंतर, सड़क पीटने का ढोल के आकार का बड़ा बेलन, बच्चों का छोटा झूला, पालना; (क्रि. स.) ढरकाना, ढालना।
ढोलनी–(हिं. स्त्री.) बच्चों का छोटा झूला, पालना।
ढोला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तुओं में पड़ जाता है, सीमा सूचित करने का चिह्न, गोल मेहराब बनाने का पटाव, लदाव, शरीर, देह, पिण्ड, प्रियतम, पति, एक प्रकार का

गीत, मूर्ख मनुष्य ।
ढौलिनी–(हिं. स्त्री.) ढोल बजानेवाली स्त्री, डफालिन ।
ढौलिया–(हिं.पुं.) ढोल बजानेवाला पुरुष ।
ढौली–(सं. वि.) ढोल बजानेवाला; (हिं. स्त्री.) दो सौ पानों की गड्डी, परिहास, हँसी, दिल्लगी, ठिठोली ।
ढौव–(हिं. पुं.) वह पदार्थ जो मंगल अवसर पर राजा, सरदार आदि को भेंट के रूप में दिया जाता है, नजर, डाली, भेंट ।
ढौवा–(हिं. पुं.) लूट ।
ढौहना–(हिं. क्रि. स.) खोजना ।
ढौंचा–(हिं. पुं.) वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक गिनती की साढ़े चार गुनी संख्या दोहराई जाती है ।
ढौंसना–(हिं.क्रि.अ.) आनन्द ध्वनि करना ।
ढौकन–(सं. पुं.) भट, उत्कोच, घूस ।
ढौरी–(हिं. स्त्री.) रट, लगन, धुन ।

ण

ण–संस्कृत तथा हिन्दी के व्यंजन वर्णों का पंद्रहवाँ अक्षर तथा टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान मर्धा है। (सं.पुं.) बिन्दुदेव या एक बुद्ध का नाम, आभूषण, निर्णय, शिव का एक नाम, ज्ञान, दान, जलीय गृह; (वि.) गुणरहित, गुणशून्य ।
णकार–(सं. पुं.) 'ण' स्वरूप वर्ण ।
णगण–(सं. पुं.) दो मात्राओं का एक मात्रिक गण ।

त

त–संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का सोलहवाँ अक्षर तथा तवर्ग का पहिला वर्ण; इसका उच्चारण-स्थान दन्त है ।
तं–(सं.स्त्री.) नौका, नाव, पवित्रता, पुण्य ।
तंक–(सं. पुं.) भय, डर, आतंक, वियोग-दुःख, टाँकी, छेनी ।
तंकन–(सं. पुं.) कष्टमय जीवनयापन ।
तंग–(फा. पुं.) जीन कसने की पेटी; (वि.) संकीर्ण, विस्तार में कम, चुस्त, कसा, हुआ, हरान या परेशान; (मुहा.) **–आना या होना**–परेशान होना, घबरा जाना; **–करना**–परेशान करना; **–होना** –पास में धन का अभाव होना ।
तंगदस्त, तंगहाल–(फा.वि.) निर्धन, गरीब ।
तंगदस्ती–(फा. स्त्री.) अर्थाभाव, पैसे की कमी ।
तंगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष ।
तंगी–(हिं. स्त्री.) तंग या चुस्त होने की अवस्था, संकीर्णता, पैसे का अत्यधिक अभाव, निर्धनता, गरीबी, कमी ।
तंजेब–(फा. स्त्री.) बहुत महीन और बढ़िया मलमल ।
तंड–(हिं. पुं.) नृत्य, नाच ।
तंडव–(हिं. पुं.) एक नृत्य विशेष, देखें 'तांडव' ।
तंडुल–(सं. पुं.) चावल ।
तंत–(हिं. पुं., स्त्री) तार लगा हुआ एक प्रकार का बाजा, क्रिया, तन्त्रशास्त्र, आतुरता, प्रबल इच्छा, अधीनता, परवशता; (वि.) जो तौल में ठीक हो ।
तंतमंत–(हिं. पुं.) देख 'तंत्र-मंत्र' ।
तंतरी–(हिं. पुं.) वह जो तारवाले बाजे बजाता हो, देखें 'तंत्री' ।
तंतु–(सं. पुं.) रेशा, सूत, तागा, विस्तार, ताँत, वंशपरंपरा, मकड़ी का जाला ।
तंतुकीट–(हिं.पुं.) रेशम का कीड़ा, मकड़ा ।
तंतुवादक–(हिं. पुं.) तार के बाजे बजानेवाला, देखें 'तंत्री' ।
तंतुवाय–(हिं. पुं.) कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा ।
तंत्र–(हिं. पुं.) ताँत, सूत, कपड़ा, धन, सम्पत्ति, प्रमाण, कारण, औषध, शासन-प्रणाली, झाड़ने-फूकने का मंत्र, शक्ति-पूजा और अभिचार का शास्त्र ।
तंत्रण–(हिं. पुं.) शासन-प्रबंध।
तंत्र-मंत्र–(पुं. सं.) जादू-टोना, युक्ति-उपाय ।
तंत्री–(हिं. स्त्री.) वीणा आदि तार के बाजे, शरीर की नस, रस्सी, बाजा बजानेवाला, देख 'तंतरी' ।
तंदरा–(हिं. स्त्री.) देखें 'तंद्रा' ।
तंदुरुस्त–(फा. वि.) स्वस्थ, नीरोग ।
तंदुरुस्ती–(फा. स्त्री.) स्वास्थ्य, नीरोग अवस्था ।
तंदुल–(हिं. पुं.) देखें 'तंडुल', चावल ।
तंदूर–(फा. पुं.) रोटी सेंकने का मिट्टी का बड़ा चूल्हा ।
तंदूरी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का उत्तम महीन रेशम; (वि.) तंदूर में बनाई हुई (रोटी), तंदूर-संबंधी ।
तंदेही–(हिं. स्त्री.) आज्ञा, चेतावनी, प्रयत्न, प्रयास, परिश्रम ।
तंद्रा–(सं. स्त्री.) ऊँध, उँघाई, नींद ।
तंद्रालु–(हिं. वि.) जिसको नींद आती हो, ऊँघनेवाला ।
तंबा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चौड़ी मोहरी का पायजामा ।
तंबाकू–(हिं. पुं.) देखें 'तमाखू' ।
तंबाकूफरोश–(हिं.पुं.) तमाखू बेचनेवाला मनुष्य ।
तँबिया–(हिं. पुं.) ताँबे का बना हुआ एक प्रकार का छोटा तसला ।
तँबियाना–(हिं. क्रि. अ.) ताँबे के रंग का होना, ताँबे के पात्र में किसी पदार्थ को रखने से इसमें ताँबे-सा रंग और गन्ध आ जाना ।
तंबीह–(फा. स्त्री.) चेतावनी, शिक्षा ।
तंबू–(हिं. पुं.) मोटे कपड़े, टाट आदि का बना हुआ घर, खेमा, डेरा, शिविर ।
तंबूर–(फा.पुं.) एक प्रकार का छोटा ढोल ।
तंबूरची–(फा. पुं.) तंबूर बजानेवाला ।
तंबूरा–(हिं. पुं.) सितार की तरह का एक बाजा जो केवल सुर को सहारा देने के लिये बजाया जाता है, तानपूरा।
तंबूरा-तोप–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बड़ी तोप ।
तंबूल–(हिं. पुं.) पान, देखें 'तांबूल'।
तँबोर–(हिं. पुं.) देख 'तमोर' ।
तंबोल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्ते लिसोड़े के आकार के होते हैं; बारात के समय वर को दिया जानेवाला टीका ।
तँबोलिन–(हिं. स्त्री.) पान बेचनेवाली स्त्री, तमोलिन ।
तँबोलिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मछली जो गंगा तथा यमुना नदी में पाई जाती है ।
तँबोली–(हिं. पुं.) पान बेचनेवाला मनुष्य, बरई ।
तंभ, तंभन–(हिं. पुं.) शृंगार रस का स्तंभ नाम का भाव, देखें 'स्तंभन' ।
तँवार–(हिं. स्त्री.) सिर में आनेवाला चक्कर, घुमटा ।
तइसा–(हिं. वि.) वैसा ।
तइँ–(हिं. प्रत्य.) को, प्रति, से; (अव्य.) के लिए, वास्ते ।
तई–(हिं. स्त्री.) छिछली कड़ाही ।
तउ, तऊ–(हिं. अव्य.) तब, तो भी ।
तक–(हिं. अव्य.) किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करनेवाला एक शब्द, पर्यन्त; (स्त्री.) तराजू का पल्ला ।
तकड़ी–(हिं.स्त्री.) रेतीली भूमि में उत्पन्न होनेवाली एक प्रकार की घास ।
तकदीर–(अ. स्त्री.) भाग्य, किस्मत;

(मुहा.) –जागना–भाग्य का उदय होना; –फूटना–किस्मत बिगड़ना।
तकदीरी–(अ.वि.) भाग्य का या संबंधी।
तकन–(हिं. स्त्री.) ताकने की क्रिया, दृष्टि।
तकना–(हिं.क्रि.स.) अवलोकन करना, निहारना, देखना, आश्रय लेना, पनाह लेना।
तकमा–(हिं. पुं.) तमगा, तुकमा।
तकरार–(अ.स्त्री.) झगड़ा, हुज्जत, विवाद।
तकरारी–(अ. वि.) तकरार करनेवाला।
तकला–(हिं.पुं.) लोहे की सलाई जो चरखे में सूत कातने के लिये लगी होती है, टेकुआ, टेकुरी जिससे रस्सी बनाई जाती है।
तकली–(हिं.स्त्री.) छोटा तकला, टेकुरी।
तकलीफ–(अ. स्त्री.) कष्ट, दुःख, क्लेश, मुसीबत, विपत्ति।
तकल्लुफ–(अ. पुं.) शिष्टाचार, शिष्ट व्यवहार, बनावट।
तकवाना–(हिं.क्रि.स.) ताकने का काम दूसरे से कराना।
तकाई–(हिं. स्त्री.) देखने की क्रिया या भाव, जो धन देखने के बदले में दिया जाय।
तकाजा–(अ.पुं.) तगादा, पावना, माँगना, आदेश, अनुरोध।
तकान–(हिं.स्त्री.) देखें 'थकान', थकावट।
तकाना–(हिं.क्रि.स.) ताकने में दूसरे को प्रवृत्त करना, दिखाना, बतलाना।
तकार–(सं.पुं.) 'त' स्वरूप अक्षर, त अक्षर।
तकावी–(अ.स्त्री.) राज्य द्वारा किसानों को समय-समय पर कृषि-साधनों के लिए दिया जानेवाला ऋण।
तकिल–(सं. वि.) धूर्त।
तकिला–(सं. स्त्री.) औषध, दवा।
तकुआ–(हिं.पुं.) देखनेवाला, तकला।
तक्कोल–(सं.पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
तक्र–(सं.पुं.) मठा, छाछ, मथित द्रव्य; **–कूचिका**–(स्त्री.) फटा हुआ दूध, छेना; **–जननी**–(स्त्री.) मठा; **–जन्म**–(पुं.) दही; **–पिंड**–(पुं.) छेना; **–भिद्**–(पुं.) कपित्थ, कैथ; **–मांस**–(पुं.) अखनी; **–मेह**–(पुं.) एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्र सफेद होता है और इसमें मठे के समान गन्ध रहती है; **–वामन**–(पुं.) नारंगी; **–संधान**–(पुं.) एक प्रकार की कांजी; **–सार**–(पुं.) मक्खन।
तक्वा–(सं.वि.) गतिशील, जल्दीजानेवाला।
तक्ष–(सं. पुं.) रामचन्द्र के भाई भरत के ज्येष्ठ पुत्र का नाम, एक नाग।
तक्षक–(सं.पुं.) कद्रु के गर्भ से उत्पन्न एक सर्प का नाम, (शृङ्गी ऋषि के शाप को सफल करने के लिए इसने राजा परीक्षित् को काटा था), विश्वकर्मा, एक प्राचीन अनार्य जाति, बढ़ई, प्रसेनजित् के पुत्र का नाम, सूत्रधार, सर्पत्।
तक्षकीय–(सं. वि.) सर्प सम्बन्धी।
तक्षण–(सं.पुं.) लकड़ी को रँदकर स्वच्छ करने का काम, पत्थर, लकड़ी आदि को गढ़कर मूर्ति बनाने का काम।
तक्षणी–(सं. स्त्री.) बढ़ई का रन्दा।
तक्षन्–(सं. पुं.) बढ़ई, विश्वकर्मा, चित्रा नक्षत्र।
तक्षशिला–(सं.स्त्री.) भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी का नाम, (यह अत्यन्त प्राचीन नगर रावलपिंडी के पास था। यहीं पर राजा जनमेजय ने सर्पयज्ञ किया था।)
तख्त–(फा. पुं.) राजा का सिंहासन, राजगद्दी।
तख्त-ताऊस–(फा.पुं.) शाहजहाँ का बनवाया प्रसिद्ध रत्नजटित मयूराकार सिंहासन।
तख्तनशीन–(फा. वि.) सिंहासनारूढ़।
तख्तपोश–(फा. पुं.) चौकी पर बिछाने की चादर, बड़ी चौकी।
तख्ता–(हिं. पुं.) लकड़ी का चीरा हुआ बड़ा पटरा या पल्ला; (मुहा.) **–उलटना**–बरबाद हो जाना।
तख्ती–(हिं. स्त्री.) छोटा तख्ता, छोटी पटरी, पटिया।
तगड़ा–(हिं.वि.) बलवान्, सबल, पुष्ट, बड़ा।
तगड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तागड़ी'।
तगण–(सं. पुं.) छन्द-शास्त्र में तीन वर्णो का समूह जिसमें पहिले दो गुरु और अन्तिम लघु वर्ण होता है।
तगना–(हिं.क्रि.अ.) तागा चलाया जाना, सिला जाना।
तगमा–(हिं. पुं.) देखें 'तमगा'।
तगर–(सं. पुं.) नदी के समीप होनेवाला एक वृक्ष जिसकी सुगन्धित लकड़ी औषधों में प्रयुक्त होती है।
तगला–(हिं. पुं.) तकला, सरकंडे की दो हाथ लंबी छड़ी जिससे जुलाहे साँथी मिलाते हैं।
तगाई–(हिं. स्त्री.) सिलाई का काम।
तगाड़, तगाड़ा–(हिं.पुं.) वह कुण्ड जिसमें मसाला, चूना आदि जोड़ाई करने के लिये साने जाते हैं।
तगादा–(हिं. पुं.) देखें 'तकाजा'।
तगाना–(हिं. क्रि. स.) तागने या सिलाने का काम दूसरे से कराना।
तगार–(हिं.पुं.,स्त्री.) ओखली गाड़ने का गढ़ा; गारा, चूना आदि रखने, बनाने या मिलाने का स्थान, हलवाइयों का मिठाई बनाने का पीतल का पात्र।
तगारी–(हिं. स्त्री.) छोटा तगार।
तगियाना–(हिं. क्रि. स.) देख 'तागना'।
तगीर–(हिं. पुं.) परिवर्तन।
तगीरी–(हिं. स्त्री.) देख 'तगीर'।
तघार, तघारी–(हिं.पुं.,स्त्री.) देख 'तगार(री)'।
तचना–(हिं. क्रि. अ.) तपना, जलना।
तचाना–(हिं. क्रि. स.) परितप्त करना, जलाना, दुखी करना।
तचित–(हिं. वि.) दुःखित।
तच्छक–(हिं. पुं.) देखें 'तक्षक'।
तच्छिन–(हिं. अव्य.) तत्क्षण, उसी समय, तत्काल।
तज–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जो दारचीनी की जाति का होता है, (इसके पत्त को तेजपत्ता कहते हैं। इसकी सुगंधित छाल तज है जो औषधों में प्रयुक्त होती है।)
तजन–(हिं.पुं.) त्याग, परित्याग की क्रिया।
तजना–(हिं. क्रि. स.) त्यागना, छोड़ना।
तजरबा–(अ. पुं.) अनुभव, वैज्ञानिक प्रयोग; **–कार**–(वि.) अनुभवी।
तजरुबा–(हिं. पुं.) देखें 'तजरबा'।
तजरुबाकार–(हिं.वि.) देख 'तजरबाकार'।
तज्जनित–(सं. वि.) उससे उत्पन्न।
तज्जन्य–(सं. वि.) उससे उत्पन्न, उससे लगा हुआ।
तज्ञ–(सं.वि.) तत्व को जाननेवाला, ज्ञानी।
तटंक–(हिं. पुं.) कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना, कर्णफूल, देखें 'ताटंक'।
तट–(सं. पुं.) नदी आदि का किनारा, तीर, कूल, ऊँची भूमि, क्षेत्र, प्रदेश, महादेव, शिव; (वि.) उन्नत, उठा हुआ; (अव्य.) पास-पास, निकट।
तटका–(हिं. वि.) देखें 'टटका', ताजा।
तटग–(सं. पुं.) तड़ाग, सरोवर; (वि.) तट की ओर जानवाला।
तटनी–(हिं. स्त्री.) तटिनी, नदी, सरिता।
तटस्थ–(सं. वि.) समीप, किनारे पर का, अलग रहनेवाला, निरपेक्ष, उदासीन प्रकृति का, व्यस्त, आश्चर्यान्वित, विस्मित; (पुं.) वह लक्षण जो किसी पदार्थ के स्वरूप को न वर्णन करके उसके गुण और धर्म का वर्णन करता है।
तटाक–(सं. पुं.) सरोवर, तडाग, तालाब।
तटाघात–(सं. पुं.) पशुओं का सींगों से भूमि खोदना।

तटिनी–(सं. स्त्री.) नदी, सरिता।
तटी–(सं. स्त्री.) तीर, किनारा, नदी, तराई, घाटी।
तट्य–(सं. पुं.) महादेव, शिव।
तड़–(हि.पुं.) पक्ष, एक ही जाति में होनेवाला विभाग, दल, थप्पड़ आदि मारने या किसी वस्तु के पटकने से उत्पन्न शब्द, लाभ का अवसर; **–बंदी–** (स्त्री.) दलबंदी, गुटबंदी।
तड़क–(हि. स्त्री.) तड़कने की क्रिया, वह चिह्न जो तड़कने के कारण लकड़ी पर पड़ जाता है, स्वाद लेने की इच्छा, छाजन के नीचे लगाया जानेवाला वल्ला; **–भड़क–**(पुं.) ठाट-बाट।
तड़कना–(हि.क्रि.अ.) चटकना, कड़कना, तड़तड़ शब्द करके फटना या टूटना, तीव्र शब्द करना, चिढ़ना, झुंझलाना, बिगड़ना, उछलना, कूदना।
तड़का–(हि. पुं.) प्रभात-काल, सवेरा, घी या तेल में मिर्च आदि को भूनकर तरकारी आदि में डालना, बघार।
तड़काना–(हि. क्रि. स.) किसी सूखी वस्तु को इस प्रकार तोड़ना कि 'तड़' शब्द निकले, तीव्र शब्द करना, खिजलाना।
तड़क्का–(हि. अव्य.) देखें 'तड़ाका'।
तड़ग–(सं. पुं.) तडाग, सरोवर।
तड़तड़ाहट–(हि.स्त्री.) तड़तड़ाने की क्रिया।
तड़प–(हि.स्त्री.) चमक, कड़क, तड़पने का काम; **–दार–**(वि.) चमकीला, भड़कीला।
तड़पना–(हि. क्रि. अ.) व्याकुल होना, अधिक पीड़ा के कारण तड़फड़ाना, गरजना, चिल्लाना।
तड़पवाना–(हि.क्रि.स.) तड़पाने का काम दूसरे से कराना।
तड़पाना–(हि. क्रि.स.) कष्ट या वेदना से व्याकुल करना, किसी को तड़पन में प्रवृत्त करना।
तड़फड़ाना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'तड़पना'।
तड़फना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'तड़पना'।
तड़ाक–(सं.पुं.) तडाग, ह्रद।
तड़ाक–(हि.स्त्री.) किसी पदार्थ के तड़क के साथ टूटने का शब्द; (अव्य.) तड़ाक शब्द के साथ, चटपट, जल्दी से, तुरन्त।
तडाका–(सं. स्त्री.) नदी या समुद्र का तट, आघात, चोट, प्रभा।
तड़ाका–(हि. पुं.) तड़तड़ शब्द; (अव्य.) तुरत।
तडाग–(सं. पुं.) तालाब, सरोवर, पुष्कर।
तड़ागना–(हि. क्रि. अ.) कूद-फांद करना, डींग हांकना।
तड़ातड़–(हि. अव्य.) तड़ तड़ शब्द करते हुए; (मुहा.) **–जवाब देना–** बेधड़क जवाब देना; **–पड़ना–** खूब पीटा जाना।
तड़ाना–(हि. क्रि. स.) ताड़ने के लिये किसी दूसरे को प्रवृत्त करना।
तड़ावा–(हि. पुं.) दिखावटी तड़क-भड़क, आडम्बर, छल-कपट, धोखा।
तडि–(सं. स्त्री.) आघात, चोट; (वि.) चोट पहुँचानेवाला।
तड़ित (ता)–(हि. स्त्री.) देखें 'तडित्', बिजली।
तडित्–(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली; **–कुमार–**(पुं.) जैनों के एक देवता का नाम; **–पति–**(पुं.) मेघ, बादल; **–प्रभा–**(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; (वि.) जिसमें बिजली के समान चमक हो; **–वत्, –वान्** (पुं.) मेघ, बादल, नागरमोथा; (वि.) जिसमें बिजली के सदृश चमक हो।
तडिद्गर्भ–(सं. पुं.) मेघ, बादल।
तडिन्मय–(सं.वि.) बिजली के स्वरूप का।
तड़ी–(हि. स्त्री.) चपत, धौल, छल, कपट, धोखा, बहाना।
तत–(सं. पुं.) एक प्रकार का तार का बाजा जो बीन के सदृश होता है; वायु, विस्तार, पिता, पुत्र, बेटा; (वि.) फैला हुआ, व्याप्त; (हि. वि.) तपा हुआ, गरम; (हि. पुं.) तत्त्व।
ततकाल–(हि. अव्य.) देखें 'तत्काल'।
ततताथेई–(हि. स्त्री.) नाचने का शब्द या बोल।
ततपत्री–(सं. स्त्री.) केले का पेड़।
ततबाउ–(हि. पुं.) देखें 'तंतुवाय'।
ततबीर–(हि. स्त्री.) देखें 'तदबीर'।
ततरी–(हि. स्त्री.) एक फलवाला वृक्ष।
ततसार–(हि.स्त्री.) लोहा तपाने का स्थान।
तताई–(हि. स्त्री.) उष्णता, गरमी।
ततारना–(हि. क्रि.स.) गरम पानी से धोना, तपाकर धोना।
तति–(स. स्त्री.) श्रेणी, पंक्ति, तांता, समूह, विस्तार, उतना परिमाण।
ततैया–(हि. स्त्री.) हड्डा, भिड़, बर्रे; (वि.) तीव्र, कष्ट देनेवाला।
तत्–(सं. अव्य.) हेतु, लिये; (सर्व.) वह, उस; (पुं.) परब्रह्म या परमात्मा का एक नाम, वायु, हवा।
तत्काल–(सं. पुं.) वर्तमान काल; (अव्य.) उसी समय, तुरंत।
तत्कालधी–(सं. वि.) उपस्थित बुद्धिवाला, प्रत्युत्पन्नमति।
तत्काल-संभूत–(सं. वि.) उसी समय उत्पन्न या होनेवाला।
तत्कालीन–(सं.वि.) उसी काल या समय का।
तत्क्रिय–(सं. वि.) बिना कुछ लिये कार्य करनेवाला।
तत्क्षण–(सं.अव्य.) उसी समय, तत्काल, तुरत।
तत्त–(हि. पुं.) देखें 'तत्त्व'।
तत्ता–(हि. वि.) उष्ण, गरम, जलता हुआ।
तत्ताथेई–(हि.स्त्री.) नाच का शब्द या बोल।
तत्तुल्य–(सं. वि.) उसके समान।
तत्तोथंबो–(हि. पुं.) दम-दिलासा, बहलावा, झगड़ा शान्त करना, बीच-बचाव।
तत्त्व–(सं. पुं.) यथार्थता, वास्तविक स्थिति या स्वरूप, आरोपित स्वरूप, परमात्मा, चेतन वस्तु, सार वस्तु, सारांश, पंचभूत, यथा–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, संसार का मूल कारण, सत्व, रज और तम।
तत्त्वज्ञ–(सं. पुं.) तत्त्वज्ञानी, जिसको ईश्वर विषयक ज्ञान उत्पन्न हुआ हो, ब्रह्मज्ञानी, दार्शनिक।
तत्त्वज्ञान–(सं.पुं.) ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान, यथार्थ रूप से प्रकृति और पुरुष (ब्रह्म) के भेद का ज्ञान।
तत्त्वज्ञानी–(सं. पुं.) तत्त्वज्ञ, दार्शनिक, जिसको ब्रह्म, आत्मा, सृष्टि आदि के संबंध में यथार्थ ज्ञान हो।
तत्त्वतः–(सं.अव्य.) वस्तुतः, यथार्थ रूप में।
तत्त्वता–(सं.स्त्री.) यथार्थता, तत्त्व का भाव या गुण।
तत्त्वदर्श–(सं. वि., पुं.) (वह) जिसको तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ हो।
तत्त्वदर्शिन्, तत्त्वदर्शी–(सं. वि., पुं.) दर्शनशास्त्र जाननेवाला, तत्त्वज्ञानी।
तत्त्वदीपन–(सं.पुं.) तत्त्वज्ञान का संचार।
तत्त्वदृष्टि–(सं. स्त्री.) वह दृष्टि जो तत्त्वज्ञान प्राप्त करने में सहायक हो, दिव्य-चक्षु, ज्ञान-दृष्टि।
तत्त्वनिरूपण–(सं. पुं.) तत्त्व का निर्णय।
तत्त्वप्रकाश–(सं.पुं.) तत्त्वज्ञान की ज्योति।
तत्त्वबोधिनी–(सं. स्त्री.) वह साधना जिसके द्वारा तत्त्वज्ञान प्राप्त हो।
तत्त्वभाव–(सं. पुं.) प्रकृति, स्वभाव।
तत्त्वभाषी–(सं.वि.) यथार्थवादी, स्पष्ट रूप से कहनेवाला।
तत्त्ववत्–(सं. वि.) तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण।
तत्त्ववाद–(सं.पुं.) दर्शनशास्त्रसंबंधी विचार।
तत्त्ववादी–(सं. पुं.) यथार्थवादी, वह जो तत्त्वज्ञान को जानता हो और उसका समर्थन करता हो, यथार्थ बात कहनेवाला।

तत्त्वविद्–(सं.पुं.) तत्त्ववेत्ता, परमेश्वर।
तत्त्वविद्या–(सं. स्त्री.) दर्शनशास्त्र।
तत्त्ववेत्ता–(सं.पुं.)तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक।
तत्त्वशास्त्र–(सं. पुं.) दर्शनशास्त्र।
तत्त्वसंचय–(सं. पुं.) वौद्ध दर्शन-शास्त्र का एक भेद।
तत्त्वानुसंधान–(सं.पुं.)तत्त्व या यथार्थताका अन्वेषण, सच्ची बात की जाँच-पड़ताल।
तत्त्वानुसंधानी–(सं. वि.) तत्त्व का अनुसंधान करनेवाला।
तत्त्वावधान–(सं. पु.) निरीक्षण, जाँच-पड़ताल, देखरेख।
तत्त्वावधारक–(सं.पुं.) तत्त्व का निरूपण करनेवाला।
तत्त्वावधारण–(सं. पुं.) यथार्थ बोध, तत्त्वनिर्णय।
तत्त्वाववोध–(सं. पुं.) देखें 'तत्त्वज्ञान'।
तत्पत्री–(सं. स्त्री.) कदली वृक्ष, केले का पेड़।
तत्पद–(सं. पुं.) परम-पद, निर्वाण।
तत्पदार्थ–(सं.पुं.)सृष्टिकर्ता, परमात्मा।
तत्पर–(सं. वि.) काम में लगा हुआ, उद्यत, उन्नद्ध, तैयार, निविष्ट, यत्न करनेवाला, निपुण, दक्ष, चतुर, सतर्क; **–ता**–(स्त्री.) निपुणता, दक्षता, चतुराई, यत्न, आग्रह।
तत्परायण–(सं. वि.)काम में लगा हुआ, काम में तत्पर।
तत्पुरुष–(सं.पुं.) व्याकरण में एक प्रकार का समास जिसमें उत्तर पद की प्रधानता होती है; एक रुद्र का नाम, ईश्वर, परमेश्वर, एक कल्प का नाम।
तत्पूर्व–(सं.वि.)सर्वप्रथम, सब से पहला।
तत्प्रकार–(सं.वि.,अव्य.)उसी तरह(का)।
तत्फल–(सं.पुं.) नील कमल, कूट नामक औषधि।
तत्र–(सं. अव्य.) उस स्थान पर, वहाँ; **–भवान्**–(वि.)पूज्य,मान्य, प्रशंसनीय।
तत्रापि–(सं.अव्य.) तथापि, तोभी।
तत्व–(सं.पुं.) देखें 'तत्त्व'।
तत्सदृश–(सं.वि.)तथाविध, उसके समान।
तत्सम–(सं.पुं.)हिन्दी,प्राकृत आदि भाषाओं में प्रयुक्त होनेवाला संस्कृत का शब्द।
तत्समानांतर–(सं. अव्य.) तदनन्तर, उसके बाद।
तत्स्वरूप–(सं. वि.) उसके समान, उसी के सदृश।
तथा–(सं. अव्य.) इसी तरह, ऐसे ही, और, निकट, समीप; (पुं.) पहिले कही हुई बात, सत्य, समानता,।
तथागत–(सं. पुं.) गौतम बुद्ध; (वि.) उसी रूप में आये हुए।
तथागुण–(सं. वि.) वसा ही गुणवान्।
तथाच–(सं. अव्य.) तथापि, तोभी।
तथापि–(सं. अव्य.) तिस पर भी, तोभी।
तथाभावी–(सं. वि.) उसी स्वभाव का।
तथाभूत–(सं. वि.) जो उस प्रकार से हुआ हो।
तथामुख–(सं.अव्य.)उस ओर मुख करके।
तथारूप–(सं.वि.)तदनुरूप,उस प्रकार का।
तथाविध–(सं.वि.)तादृश,उस प्रकार का।
तथाविधेय–(सं. वि.) उस प्रकार किया जानेवाला।
तथास्तु–(सं. अव्य.) वैसा ही हो।
तथास्वर–(सं. वि.) उस तरह के उच्चारणवाला।
तथैव–(सं. अव्य.) उस तरह, वैसे ही।
तथ्य–(सं. पुं.) यथार्थता, सत्य, सचाई; **–ज्ञान**–(पुं.) यथार्थ ज्ञान, तत्त्वज्ञान; **–बोध**–(पुं.) तथ्यज्ञान, तत्त्वज्ञान; **–भाषी**, **–वादी**–(वि.)यथार्थ या सच्ची बात कहनेवाला।
तथ्यानुसंधान–(सं.पुं.)तत्त्वज्ञान का अन्वेषण
तदंत–(स. वि.) उस प्रकार समाप्त; (पुं.) अभिप्राय।
तदंतर, तदनंतर–(सं. अव्य.) उसके उपरान्त, उसके बाद।
तदंश–(सं. पुं.) उसका भाग या हिस्सा।
तदतिरिक्त–(सं.अव्य.)उसके अतिरिक्त, उसके सिवाय।
तदधिक–(सं. अव्य.) उसके अतिरिक्त, उसके अलावा।
तदनु–(सं. अव्य.) तदन्तर, उसी तरह, उसके बाद।
तदनुरूप–(सं. अव्य., वि.)उसी के समान रूप का, उसके अनुसार।
तदनुसार–(सं. वि.) उसके अनुसार।
तदनुसारी–(सं. वि.) उसके अनुसार चलनेवाला।
तदन्य–(सं. वि.) उससे भिन्न या पृथक्।
तदपि–(सं. अव्य.) तथापि, तोभी।
तदबीर–(अ. स्त्री.) यत्न, प्रयास, उपाय, युक्ति, प्रबंध।
तदभिन्न–(हिं. वि.) उसके समान, उसके जैसा।
तदर्थ–(सं. अव्य.) उसके लिये, उस प्रयोजन से।
तदर्पण–(सं. पुं.) उस पदार्थ का अर्पण।
तदवधि–(सं. अव्य.) तब तक।
तदा–(सं. अव्य.) उस समय, तब।
तदाकार–(सं. वि.) तद्रूप, उसी आकार का, तन्मय, तल्लीन।
तदात्मा–(सं. वि.) उसके सदृश, तत्स्वरूप।
तदानीं–(सं. अव्य.) उस समय, तब; **–तन**–(वि.) उस समय का।
तदाप्रभृति–(सं. अव्य) उस समय से।
तदामुख–(सं. पुं.) आरम्भ, शुरू।
तदीय–(सं. वि.) उससे सम्बन्ध रखनेवाला, तत्सम्बन्धी, उसका।
तदुपरांत–(स. अव्य.) उसके पीछे, उसके बाद।
तदुपरि–(सं. अव्य.) उसके ऊपर।
तदेक–(सं.वि.) तत्स्वरूप, उसके समान।
तदेकात्मा–(सं.वि.) उसके समान, उसके जसा।
तदौजस्य–(सं.वि.)उसके समान बलवान्
तद्–(सं. वि.) वह; (अव्य.) तब, उस समय, तदन्तर, तदनन्तर।
तद्गत–(सं. वि.) उससे सम्बन्ध रखनेवाला, उसके अन्तर्गत।
तद्गुण–(सं. पुं.) वह अर्थालङ्कार जिसमें कोई पदार्थ अपने गुण को त्यागकर समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ के गुण को ग्रहण करता हुआ वर्णन किया जाता है; (वि.) उसके जैसे गुणवाला।
तद्दिन–(सं. पुं.) वह दिन, वह समय।
तद्धन–(सं. वि.) कृपण, कंजूस।
तद्धित–(सं. पुं.) व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसको संज्ञा में जोड़कर नया शब्द बनाया जाता है; जैसे–'ता', त्व आदि।
तद्भव–(सं. पुं.) संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रूप जो हिंदी भाषा में प्रयुक्त होता है; जैसे–चक्र से चक्कर।
तद्भाव–(सं. पुं.) उसका असाधारण धर्म, विषय की चिन्ता।
तद्भिन्न–(सं.वि.)उससे भिन्न या पृथक्।
तद्यपि–(हिं. अव्य.) तथापि, तोभी।
तद्रूप–(स.वि.) सदृश, समान, वैसा ही; **–ता**–(स्त्री.) सादृश्य, समानता।
तद्वत्–(सं.वि.,अव्य.) तत्सदृश, उसी के समान, ज्यों का त्यों, उसी तरह।
तद्वत्ता–(सं.स्त्री.) सदृशता, समानता।
तद्विध–(सं.वि.)तथाविध,उसी तरह का।
तद्व्यतिरिक्त–(सं.वि.) उसके सिवाय।
तन–(सं.पुं.) वंशज, सन्तान; (हिं. पुं.) शरीर, देह, मूत्रेन्द्रिय, योनि; (मुहा.) **–को लगना**–चित्त पर प्रभाव पड़ना;

—देना—ध्यान लगाना; —मन मारना—इन्द्रियों को अपने वश में करना।
तन—(हिं.अव्य.) ओर; (वि.) थोड़ा-सा।
तनक—(हिं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
तनकना—(हिं.क्रि.अ.) देखें 'तिनकना'।
तनख्वाह—(हिं. स्त्री) वेतन।
तनगना—(हिं. क्रि. अ.) क्रोध करना।
तनजेब—(हिं. स्त्री., पुं.) तंजेब।
तनतनाना—(हिं. क्रि. अ.) रोष दिखलाना, क्रोध करना।
तनत्राण—(हिं. पुं.) कवच।
तनधर—(हिं. वि.) देखें 'तनुधारी'।
तनना—(हिं.क्रि.अ.) झटके या खिंचाव के कारण किसी पदार्थ का फैलना, वेग से खिंचना, अकड़कर खड़ा होना, गर्व से ऐंठना, रुष्ट होना।
तनपात—(हिं. पुं.) देखें 'तनुपात'।
तनपोषक—(हिं.वि.) स्वार्थपरायण, स्वार्थी।
तनमय—(हिं. वि.) देखें 'तन्मय'।
तनय—(सं. पुं.) पुत्र, लड़का, बेटा, चन्द्रवंशी राजा कुश के पुत्र का नाम।
तनया—(सं. स्त्री.) कन्या, पुत्री, बेटी, घृतकुमारी, काली तुलसी।
तनराग—(हिं. पुं.) देख 'तनुराग'।
तनरुह—(हिं. पुं.) रोयाँ, पंख।
तनवाना—(हिं. क्रि. स.) तानने का काम दूसरे से कराना।
तनसुख—(हिं. पुं.) एक प्रकार का सुन्दर फूलदार कपड़ा।
तनहा—(फा. वि.) अकेला, बिना संग-साथ का; (अव्य.) अकेले।
तनहाई—(फा.स्त्री.) अकेलापन, एकांत।
तना—(सं. स्त्री.) धन-दौलत; (फा. पुं.) वृक्ष का धड़; (अव्य.) ओर।
तनाउ—(हिं. पुं.) देखें 'तनाव'।
तनाकु—(हिं. अव्य.) तनिक, थोड़ा।
तनाजा—(अ. पुं.) झगड़ा, बखेड़ा।
तनाना—(हिं. क्रि. स.) तानने का काम दूसरे से कराना।
तनाय, तनाव—(हिं. पुं.) तानने का भाव या क्रिया, धोबी की कपड़े सुखाने की रस्सी।
तनि, तनिक—(हिं. वि.) अल्पमात्र, थोड़ा, कम, छोटा; (अव्य.) थोड़ा, जरा।
तनिका—(सं. स्त्री.) किसी वस्तु को बाँधने की रस्सी।
तनियाँ—(हिं. स्त्री.) लँगोट, कौपीन, कछनी, जाँघिया, चोली।
तनिष्ठ—(सं. वि.) अति दुर्बल।
तनी—(हिं. स्त्री.) अँगरखे आदि में पल्ला बाँधने के लिये लगा हुआ बन्द, बन्धन; (अव्य.) तनिक, थोड़ा।
तनु—(सं. पुं.) शरीर, देह, चमड़ा, त्वचा; जन्म-कुण्डली में लग्न का स्थान, प्रकृति; (वि.) कृश, दुबला-पतला, अल्प, थोड़ा, सुन्दर, कोमल।
तनुक—(सं. पुं.) शरीर, देह, दारचीनी।
तनुकूप—(सं. पुं.) शरीर का रोमकप।
तनुगृह—(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का घर।
तनुच्छद—(सं. पुं.) शरीर की रक्षा करनेवाला कवच।
तनुच्छाय—(सं. पुं.) शरीर की परछाईं; (वि.) थोड़ी छायावाला।
तनुज—(सं. पुं.) पुत्र, लड़का, बेटा।
तनुजा—(सं. स्त्री.) पुत्री, बेटी, लड़की।
तनुता—(सं. स्त्री.) कृशता, दुर्बलता, लघुता, छोटाई।
तनुत्यज—(सं. वि.) शरीर का त्याग करनेवाला।
तनुत्याग—(सं. पुं.) शरीर-त्याग, मरण।
तनुत्र, तनुत्राण—(सं. पुं.) वह वस्तु जिससे आक्रमण से रक्षा हो, कवच।
तनुत्वच्—(सं. वि.) पतली छालवाला।
तनुधारी—(सं. वि.) शरीरधारी, देह धारण करनेवाला।
तनुपत्र—(सं.पुं.) इंगुदी का वृक्ष; (वि.) जिसमें बहुत कम पत्ते हों।
तनुपात—(सं. पुं.) मृत्यु, मौत।
तनुबीज—(सं.वि.) जिसके बीज छोटे हों।
तनुभव—(सं. पुं.) पुत्र, बेटा।
तनुभवा—(सं स्त्री.) कन्या, बेटी।
तनुभस्त्रा—(सं. स्त्री.) नासिका, नाक।
तनुभाव—(सं. पुं.) दुर्बल मनुष्य।
तनुभृत्—(सं. वि.) देहधारी, शरीर धारण करनेवाला।
तनुमध्या—(सं. स्त्री.) कृशमध्या, जिस स्त्री की कमर पतली हो, चौरस नामक वर्णवृत्त।
तनुरस—(सं. पुं.) घर्म, पसीना।
तनुराग—(सं. पुं.) केसर, कस्तूरी, चन्दन, अगर आदि मिलाकर बनाया हुआ उबटन।
तनुरुह—(सं.पुं.) शरीर पर के बाल या रोएँ।
तनुल—(सं. वि.) विस्तृत, फैला हुआ।
तनुवात—(सं. पुं.) एक नरक का नाम, वह स्थान जहाँ वायु कम हो।
तनुवार—(सं. पुं.) कवच, बख्तर।
तनुवीज—(सं. वि.) जिसके बीज छोटे हों।
तनुव्रण—(सं. पुं.) वल्मीक रोग।
तनुसर—(सं. पुं.) घर्म, स्वेद, पसीना।
तनुह्रद—(सं. पुं.) मलद्वार, गुदा।
तनू—(सं. पुं.) पुत्र, बेटा, शरीर, प्रजापति, गाय, जल, पानी।
तनूकरण—(सं.पुं.) छोटा करने की क्रिया।
तनूकृत—(सं. वि.) छोटा किया हुआ।
तनूज—(सं. पुं.) तनुज, पुत्र, बेटा।
तनूजा—(सं. स्त्री.) कन्या, पुत्री, बेटी।
तनूत्यज—(सं. वि.) शरीर छोड़नेवाला।
तनूदेश—(सं.पुं.) शरीर का अंग-प्रत्यंग।
तनूद्भव—(सं. पुं.) पुत्र, बेटा।
तनूद्भवा—(सं. स्त्री.) कन्या, पुत्री।
तनूनप—(सं. पुं.) घृत, घी।
तनूपा—(सं. पुं.) जठराग्नि; (वि.) शरीर का पालन-पोषण करनेवाला।
तनूबल—(सं. पुं.) शरीर का बल।
तनूरुह—(सं. पुं.) रोम, रोयाँ, पुत्र, बेटा।
तनेना, तनैन—(हिं. वि.) तिरछा, खिंचा हुआ, टेढ़ा, क्रुद्ध।
तनै—(हिं. पुं.) देखें 'तनय', बेटा।
तनैला—(हिं. पुं.) एक प्रकार का सुगन्धित सफेद फलों का पौधा।
तनोज—(हिं. पुं.) रोम, पुत्र।
तनोरुह—(हिं. पुं.) देख 'तनूरुह'।
तन्ना—(हिं. पुं.) बुनाई में लंबे बल का सूत जो ताना जाता है, ऐसा पदार्थ जिस पर सूत आदि ताना जाता है।
तन्निमित्त—(सं.अव्य.) तदर्थ, उसके लिये।
तन्नी—(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लोहे की मल खुरचने की छेनी, जहाज के मस्तूल की जड़ में बँधा हुआ रस्सा, तराजू की रस्सी जिसमें पल्ले बँधे होते हैं।
तन्मध्यस्थ—(सं. वि.) उसके बीच का।
तन्मय—(सं. वि.) दत्तचित्त, मन लगाये हुए, लवलीन, लगा हुआ; —ता—(स्त्री.) एकाग्रता, लीनता, लगन।
तन्मनस्क—(सं. वि.) तन्मय।
तन्मयासक्ति—(सं. स्त्री.) भगवान में दत्तचित्त होने की अवस्था।
तन्मात्र—(सं. पुं.) सांख्य मत के अनुसार पंचभूत अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध का सूक्ष्म अमिश्र रूप।
तन्मात्रा—(सं. स्त्री.) देखें 'तन्मात्र'।
तन्मात्रिक—(सं. वि.) तन्मात्र संबंधी।
तन्वंग—(सं. वि.) सुकुमार शरीरवाला।
तन्वंगी—(सं. वि. स्त्री.) सुकुमार अंगोंवाली।
तन्वी—(सं. स्त्री.) कृशांगी, वह स्त्री जो दुर्बल और कोमल हो, श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम, एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस वर्ण होते ह।

तपःकृश–(सं. वि.) जिसका शरीर तपस्या करने से दुर्बल हो गया हो।
तपःप्रभाव–(सं.पुं.) तपस्या का प्रभाव।
तपःशील–(सं.वि.,पुं.) (वह) जो तपस्या में लीन हो।
तपःसिद्ध–(सं. वि., पुं.) (वह) जिसने तपस्या करके सिद्धि प्राप्त की हो।
तप–(सं.पुं.) शरीर को कष्ट देकर चित्त को एकाग्र करने की क्रिया, तपस्या, ग्रीष्मकाल, ज्वर, अग्नि, नियम।
तपकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'टपकना,' उछलना, धड़कना।
तपती–(सं. स्त्री.) सूर्य की कन्या का नाम।
तपन–(सं. पुं.) सूर्य, भिलावाँ का वृक्ष, मदार, ग्रीष्मकाल, एक नरक का नाम, सूर्यकान्त मणि, अरणी का वृक्ष, जलन, दाह, ताप, आँच, धूप, शिव, महादेव, वह हाव-भाव या क्रिया जो नायिका अपने प्रमी के वियोग में दिखलाती है।
तपनक–(सं. पुं.) एक प्रकार का धान।
तपनकर–(सं. पुं.) सूर्य की किरण।
तपनच्छद–(सं. पुं.) मदार का पेड़।
तपन-तनय–(सं. पुं.) सूर्य के पुत्र यम, शनि, सुग्रीव।
तपन-तनया–(सं. स्त्री.) शमी वृक्ष, यमुना नदी।
तपनमणि–(सं. पुं.) सूर्यकान्त मणि।
तपनांशु–(सं. पुं.) सूर्य की किरण।
तपना–(हिं.क्रि.अ.) सन्तप्त होना, कष्ट सहना, तप्त होना, गरम होना, गरमी फलाना, प्रबलता दिखलाना, तपस्या करना, बुरे काम में धन व्यय करना।
तपनात्मज–(सं.पुं.) सूय के पुत्र, यम, कर्ण।
तपनात्मजा–(सं. स्त्री.) यमुना, गोदावरी।
तपनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'तपन'।
तपनी–(हिं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ पर बठकर जाड़े के दिनों में लोग आग तापते हैं, कौड़ा, तपस्या, तप।
तपनीय–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, धतूरा।
तपनेष्ट–(सं. पुं.) ताम्र, ताँबा।
तपनेष्टा–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का शमीवृक्ष
तपनोपल–(सं. पुं.) सूर्यकान्त मणि।
तपभूमि–(हिं. स्त्री.) देखें 'तपोभूमि'।
तपराशि–(हिं. पुं.) देखें 'तपोराशि'।
तपलोक–(हिं. पुं.) देख 'तपोलोक'।
तपवाना–(हिं. क्रि. स.) गरम करने का काम दूसरे से कराना, निष्प्रयोजन व्यय करवाना।
तपवृद्ध–(हिं. वि.) देखें 'तपोवृद्ध'।
तपश्चरण, तपश्चर्या–(सं. पु., स्त्री.) तप, तपस्या।
तपस–(सं. पुं.) सूर्य, चन्द्रमा, पक्षी।
तपसा–(हिं.स्त्री.) तप, तपस्या, ताप्ती नदी।
तपसाली–(हिं. वि., पुं.) तपस्वी।
तपसी–(हिं. पुं.) तपस्या करनेवाला।
तपस्पति–(सं. पुं.) विष्णु, हरि।
तपस्या–(सं. स्त्री.) तप, व्रतचर्या, कठिन साधना।
तपस्विता–(स. स्त्री.) तपस्वी होने की अवस्था।
तपस्विनी–(सं. स्त्री.) तपस्या करनेवाली स्त्री, जटामासी, कुटकी, दीन-दुखिया स्त्री, पतिव्रता स्त्री, तपस्वी की स्त्री।
तपस्वी–(सं. वि., पुं.) तपस्या करनेवाला मनुष्य, दीन, दुखिया, घीकुआर, नारद।
तपस्वीपत्र–(सं. पुं.) दौने का पौधा।
तपा–(सं.पुं.) ग्रीष्मऋतु; (हिं.पुं.) तपस्वी।
तपाक–(फा. पुं.) उत्साह, आवेश, जोश।
तपात्यय–(सं. पुं.) वर्षाकाल, बरसात।
तपाना–(हिं. क्रि. स.) तप्त करना, गरम करना, क्लेश देना, दुःख देना।
तपाव–(हिं. पुं.) ताप, गरम करना।
तपित–(सं. वि.) तप्त, उष्ण, गरम, तपा हुआ; (पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
तपिया–(हिं. पुं.) तपस्वी।
तपिष्ठ–(सं. वि.) अधिक तपा हुआ।
तपिष्णु–(सं.वि.) जलन उत्पन्न करनेवाला।
तपी–(हिं. पुं.) तपस्वी, ऋषि, सूय।
तपु–(सं. वि.) तप्त, गरम; (पुं.) सूर्य, अग्नि, शत्रु।
तपुषी–(सं. स्त्री.) क्रोध, रोष, गुस्सा।
तपेदिक–(फा.पुं.,स्त्री.) यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर।
तपोज–(सं. वि.) अग्निजात, अग्नि से उत्पन्न।
तपोजा–(सं. स्त्री.) जल, पानी।
तपोड़ी–(हिं.स्त्री.) काठ का बना हुआ पात्र।
तपोधन–(सं. पुं.) तपोरत, बड़ा तपस्वी।
तपोधना–(सं. स्त्री.) गोरखमुण्डी।
तपोधर्म–(सं.पुं.) तपस्या का धम, तपस्वी।
तपोधाम–(सं.पुं.) एक प्रधान तीथ का नाम।
तपोधृत–(सं. पुं.) तपोरत, तपस्वी।
तपोनिधि–(सं. पुं.) देखें 'तपोधन'।
तपोनिष्ठ–(सं. पुं.) तपोरत, तपस्वी।
तपोबल–(सं.पुं.) तप का प्रभाव या शक्ति।
तपोभूमि–(सं. स्त्री.) तपस्या करने का स्थान, तपोवन।
तपोमय–(सं.पुं.) तपवाला, परमेश्वर।
तपोमयी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसने बहुत तपस्या की हो।
तपोमूर्ति–(सं. पुं.) परमेश्वर, तपस्वी।
तपोयुक्त–(सं. वि.) तपस्या से पूर्ण।
तपोरत–(सं.वि.) जो तपस्या में लीन हो।
तपोरवि–(सं. पुं.) जो सूर्य के समान तेजयुक्त हो।
तपोराशि–(सं. पुं.) बड़ा तपस्वी।
तपोलोक–(सं. पुं.) उर्ध्व-स्थित सात लोकों में, छठा लोक।
तपोवन–(सं. पुं.) मुनियों का आश्रय-स्थान, वह निर्जन स्थान जहाँ ऋषि लोग कुटी बनाकर तपस्या करते हैं।
तपोवृद्ध–(सं. वि.) जो तपस्या के विचार से श्रेष्ठ हो।
तपौनी–(हिं. स्त्री.) ठगों की एक रस्म।
तप्त–(सं. वि.) दग्ध, तपा हुआ, जलता हुआ, उष्ण, गरम, दुःखित, पीड़ित; –क–(पुं.) सोना, चाँदी, सुवर्णमाक्षिक; –कांचन–(पुं.) अग्नि में तपाकर शुद्ध किया हुआ सोना; –कुंड–(पुं.) प्राकृतिक उष्ण जलधारा, गरम पानी का सोता, एक भयानक नरक का नाम; –कृच्छ्र–(पुं.) बारह दिनों में समाप्त होनेवाला एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित के रूप में किया जाता है; –खल्ल–(पुं.) औषध कूटने का गरम किया हुआ खरल; –माष–(पुं.) प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा जो किसी मनुष्य को अपराधी या निरपराध सिद्ध करने के लिये की जाती थी; –मुद्रा–(स्त्री.) शंख, चक्र आदि के छापे जिनको लोहा या पीतल तपाकर वैष्णव लोग अपने शरीर पर दागते हैं; –रूपक–(पुं.) तपायी हुई चाँदी; –लोमश–(पुं.) कसीस नामक धातु; –लोह–(पुं.) एक नरक का नाम; –शूर्मी–(पुं.) एक नरक का नाम।
तप्तांभ–(सं. पुं.) गरम जल।
तप्तान्न–(सं. पुं.) गरम भात, तप्त अन्न।
तप्प–(हिं. पुं.) देखें 'तप', तपस्या।
तफरीह–(अ.स्त्री.) मनबहलाव, आमोद, दिल्लगी, हँसी।
तब–(हिं. अव्य.) उस समय, उस वक्त, इस कारण से, इसलिय।
तबक–(अ. पुं.) परत, तह, चाँदी-सोने के पत्तरों को पीटकर बनाया हुआ वरक।
तबदील–(अ. वि.) परिवर्तित, बदला हुआ।
तबदीली–(अ. स्त्री) परिवर्तन, स्थानांतरण।
तबलची–(हिं. पुं.) तबला बजानेवाला।
तबला–(हिं. पुं.) ताल देने का चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रसिद्ध बाजा।

तबलिया–(हिं. पुं.) तबलची ।
तबाह–(फा. वि.) बरबाद, नष्ट ।
तबाही–(फा. स्त्री.) नाश, बरबादी ।
तबादला–(अ. पुं.) बदला जाना, परिवर्तन, कर्मचारी का स्थानांतरण ।
तबीअ(य)त–(अ. स्त्री.) चित्त, मन, दिल; (मुहा.) **–आना**–किसी पर आसक्त होना; **–फिरना**–जी हटना ।
तबीअ(य)तदार–(फा. वि.) सहृदय, रसिक, भावुक, प्रेमी, समझदार ।
तबेला–(हिं. पुं.) घोड़साल ।
तब्बर–(हिं. पुं.) पुत्र, टाबर ।
तभी–(हिं.अव्य.) उसी समय, इस कारण से।
तमंग, तमंगक–(सं. पुं.) मचान ।
तमंचर–(हिं. पुं.) निशाचर, राक्षस, उल्लू पक्षी ।
तमःप्रभ(भा)–(सं.पुं.,स्त्री.) जैन शास्त्र के अनुसार छठा नरक जहाँ घोर अन्धकार है।
तम–(सं. पुं.) अन्धकार, अँधेरा, पैर का अगला भाग, राहु ।
तमक–(सं. पुं.) श्वास-रोग का एक भेद, (हिं.पुं.) उद्वेग, जोश, तीव्रता, क्रोध, तमतमाहट ।
तमकना–(हिं. क्रि. अ.) क्रोध का आवेश दिखलाना, क्रोध के कारण उछल पड़ना।
तमकश्वास–(सं. पुं.) श्वास का एक भयंकर रोग जिसमें कण्ठ रुद्ध हो जाता है।
तमका–(सं. स्त्री.) तमाल वृक्ष, मुइँआँवला।
तमगा–(तु. पुं.) सोने या चाँदी का पदक।
तमगुन–(हिं. पुं.) देखें 'तमोगुण' ।
तमचुर, तमचोर–(हिं. पुं.) ताम्रचूड, कुक्कुट, मुरगा ।
तमत–(सं. वि.) इच्छुक, प्यासा ।
तमतमाना–(हिं. क्रि. अ.) अधिक गरमी या क्रोध के कारण चेहरा लाल होना, चमकना, दमकना ।
तमतमाहट–(हिं.स्त्री.) तमतमाने का भाव।
तमन्ना–(अ. स्त्री.) इच्छा, मनोकामना ।
तमप्रभ(भा)–(सं. पुं.,स्त्री.) एक नरक का नाम ।
तमरंग–(हिं.पुं.) एक प्रकार का नीबू, नीम।
तमर–(सं. पुं.) वंग धातु, राँगा; (हिं. पुं.) अन्धकार, अंधेरा ।
तमलेट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का टीन या लोहे का छोटा पात्र ।
तमस–(सं. पुं.) अन्धकार, अज्ञान, पाप, तमसा नदी ।
तमसाकृत–(सं.वि.) अन्धकार से घिरा हुआ।
तमस्क–(सं. वि.) तमःस्वरूप ।
तमस्कांड–(सं. पुं.) घना अन्धकार ।
तमस्तति–(सं. स्त्री.) तमिस्र, अन्धकार।
तमस्वती–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात, हल्दी।
तमहर–(हिं. पुं.) देखें 'तमोहर' ।
तमा–(सं. स्त्री.) काकोली, मुइँआँवला, रात्रि, रात, तमाल वृक्ष ।
तमाई–(हिं. पुं.) खेत जोतने के पहिले उसमें की घास आदि निकालने की क्रिया ।
तमाकू, तमाखू–(हिं. पुं.) एक प्रकार का प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते तथा डंठल को लोग खाते और जलाकर धूम्रपान करते हैं, तंबाकू ।
तमाचा–(हिं. पुं.) थप्पड़ ।
तमाचारी–(सं. पुं.) निशाचर, राक्षस ।
तमादी–(अ. स्त्री.) मुकदमे की या किसी अधिकार की अवधि या मुद्दत बीत जाना ।
तमाम–(अ. वि.) पूरा, संपूर्ण, समाप्त, खतम; (मुहा.) **काम तमाम होना**–मर जाना ।
तमामी–(हिं. स्त्री.) तमाम होने का भाव या स्थिति, समाप्ति ।
तमारि–(सं. पुं.) दिनकर, सूर्य ।
तमाल–(सं. पुं.) एक बड़ा सदाबहार सुन्दर वृक्ष, पत्रक, तेजपात, तिलक का वृक्ष, एक तरह की तलवार, काले खर का वृक्ष, बाँस की छाल, काला तिल, दारचीनी; **–क**–(पुं.) पत्रक, तेजपात, एक प्रकार का भूमि में होनेवाला कमल; **–च्छद**–(पुं.) तेजपत्र, तेजपात; **–पत्र**–(पुं.) दारचीनी ।
तमाली–(सं. स्त्री.) वरुण वृक्ष, मजीठ ।
तमाशबीन–(हिं. पुं.) तमाशा देखनेवाला, वेश्यागामी ।
तमाशबीनी–(हिं. स्त्री.) वेश्यागमन, रंडीबाजी ।
तमाशा–(अ. पुं.) मनोरंजक दृश्य, खेल, प्रदर्शन आदि, अनोखी बात ।
तमि–(सं. पुं.) रात्रि, रात, मोह, हरिद्रा, हल्दी ।
तमिनाथ–(सं. पुं.) निशानाथ, चन्द्रमा ।
तमिस्र–(सं. पुं.) अन्धकार, क्रोध, गुस्सा, एक नरक का नाम; **–पक्ष**–(पुं.) कृष्णपक्ष ।
तमिस्रा–(सं. स्त्री.) अँधेरी रात, अमावस्या की रात, हरिद्रा, हल्दी ।
तमी–(सं.स्त्री.) रात्रि, रात, हरिद्रा, हल्दी।
तमीचर–(सं. पुं.) निशाचर, दैत्य ।
तमीज–(अ. स्त्री.) विवेक पहचान, अदब, कायदा ।
तमीपति, तमीश–(सं.पुं.) निशाकर, चन्द्रमा
तमेरु–(सं. वि.) ग्लानियुक्त, जिसको लज्जा आती हो ।
तमोग–(सं. पुं.) राहु ग्रह ।
तमोगामी–(सं.वि.) अन्धकार में जानेवाला।
तमोगुण–(सं. पुं.) प्रकृति का तृतीय गुण, (इसके प्राधान्य से मनुष्य बुरे से बुरा काम करता है ।)
तमोगुणी–(सं. वि.) जिसमें तमोगुण की अधिकता हो ।
तमोघ्न–(सं. वि.) अन्धकार का नाश करनेवाला; (पुं.) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, बुद्ध, विष्णु, महादेव, ज्ञान, दीपक ।
तमोज्योति–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू ।
तमोदर्शन–(सं. पुं.) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर ।
तमोनुद–(सं. पुं.) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीपक; (वि.) जिसमें अन्धकार न हो; अज्ञाननाशक ।
तमोभिद्–(सं.पुं.) खद्योत, जुगनू; (वि.) अँधेरा दूर करनेवाला ।
तमोभूत–(सं. वि.) अँधेरा छाया हुआ, अज्ञानी, मूर्ख ।
तमोमणि–(सं.पुं.) जुगनू, गोमेदक मणि ।
तमोमय–(सं. वि.) अन्धकारपूर्ण, तमोगुण-युक्त, अज्ञानी, मूर्ख; (पुं.) राहु ग्रह ।
तमोर–(हिं. पुं.) ताम्बूल, पान ।
तमोरि–(सं. पुं.) सूर्य, भानु ।
तमोरी–(हिं.पुं.) तमोली, पान बचनेवाला ।
तमोल–(हिं.पुं.) पान का बीड़ा, ताम्बूल ।
तमोलिन–(हिं. स्त्री.) तमोली की स्त्री ।
तमोली–(हिं.पुं.) तँबोली, पान बेचनेवाला ।
तमोविकार–(सं.पुं.) तमोगुण का विकार, तमिस्र, रात्रि, रात ।
तमोहन–(सं. वि.) अज्ञाननाशक; (पुं.) सूर्य, चन्द्र ।
तमोहर–(सं. वि.) अज्ञाननाशक, अन्धकार दूर करनेवाला; (पुं.) सूर्य, चन्द्रमा।
तमोहारी–(सं. पुं.) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, ज्ञान ।
तय–(अ. वि.) पूरा किया हुआ, समाप्त ।
तयना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'तपना' ।
तयार–(हिं. वि.) देखें 'तैयार' ।
तरंग–(सं. पुं.) लहर, हिलोरा, वस्त्र, कपड़ा, चित्त की उमंग, मन की मौज, संगीत में स्वरों का उतार-चढ़ाव, हाथ में पहिनने की एक प्रकार की चूड़ी ।
तरंगक–(सं. पुं.) देखें 'तरंग' ।
तरंगवती–(सं. स्त्री.) तरंगिणी, नदी ।
तरंगिणी–(सं. स्त्री.) सरिता, नदी ।
तरंगित–(सं. वि.) लहराता हुआ, हिलोरा मारता हुआ, चंचल, चपल

नीचे-ऊपर उठता हुआ।
तरंगी-(सं. वि.) तरंगयुक्त, जिसमें लहर हो, आनन्द लेनेवाला, मनमौजी।
तर-(सं. पुं.) पार करने की क्रिया, अग्नि, वृक्ष, पथ, गति, नाव की उतराई।
तर-(सं. प्रत्य.) यह गुणवाचक विशेषणों में दो वस्तुओं में से एक का उत्कर्ष या अपकर्ष सूचित करने के लिये प्रयुक्त होता है, यथा-श्रेष्ठतर, वृहत्तर।
तर-(फा. वि.) भीगा हुआ; (हि. अव्य.) नीचे।
तरई-(हि. स्त्री.) तारा, नक्षत्र।
तरक-(हि. स्त्री.) देख 'तड़क'; (पुं.) सोच-विचार, ऊहापोह, तर्क, चतुराई की उक्ति, व्यतिक्रम, भूलचूक, वह अक्षर या शब्द जो पृष्ठ के समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर लिखा जाता है।
तरकना-(हि. क्रि. अ.) तर्क करना, सोच-विचार करना, झपटना, उछलना, कूदना, देखें 'तड़कना'।
तरकश, तरकस-(फा., हि. पुं.) तीर रखने का चोंगा।
तरकसी-(हि. स्त्री.) छोटा तरकश।
तरकारी-(हि. स्त्री.) वह पौधा जिसके फल, फूल, पत्ते आदि पकाकर खाये जाते हों, पकाकर तैयार इस प्रकार की खाद्य वस्तु, शाक, सब्जी।
तरकी-(हि. स्त्री.) कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना।
तरकीब-(अ. स्त्री.) उपाय, तरीका, ढंग।
तरकुला-(हि. पुं.) कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना।
तरकुली-(हि. स्त्री.) कान का एक प्रकार का गहना।
तरक्की-(अ. स्त्री.) उन्नति, पद-वृद्धि, बढ़ती।
तरक्षु-(सं. पुं.) व्याघ्र विशेष, लकड़बग्घा।
तरखा-(हि. पुं.) जल का तीव्र प्रवाह, नदी के पानी का बहाव।
तरखान-(हि. पुं.) वह जो लकड़ी का काम करता हो, बढ़ई।
तरगुलिया-(हि. स्त्री.) एक प्रकार का अक्षत रखने का छिछला बरतन।
तरचरवी-(हि. स्त्री.) एक प्रकार का सुन्दर पत्तियोंवाला पौधा।
तरछट-(हि. स्त्री.) देखें 'तलछट'।
तरछा-(हि. पुं.) वह स्थान जहाँ तेली गोबर जमा करता है।
तरज-(हि. पुं.) विधि, प्रकार, देखें 'तर्ज'।
तरजना-(हि. क्रि. अ.) डाँटना, डपटना, ताड़ना देना, भला-बुरा कहना, बिगड़ना।
तरजनी-(हि. स्त्री.) तर्जनी, अँगूठे के पास की अँगुली, भय, डर।
तरजीला-(हि. वि.) क्रोधयुक्त।
तरजुई-(हि. स्त्री.) छोटा तराजू।
तरजुमा-(अ. पुं.) उल्था, अनुवाद।
तरट-(सं. पुं.) चकवँड़ का क्षुप।
तरण-(सं. पुं.) पानी पर तैरना, तरना, बड़ा, स्वर्ग, बेड़े पर बैठकर दूर देश को जाना, नदी पार करने की क्रिया, निस्तार, उद्धार।
तरणि-(सं. पुं.) सूर्य, मदार का वृक्ष, बेड़ा, किरण, ताँबा, नाव, घीकुआर; (वि.) उद्धार करनेवाला, शीघ्र जानेवाला; -कुमार-(पुं.) देखें 'तरणिसुत'; -जा-(स्त्री.) सूर्य की कन्या, यमुना, एक वर्णवृत्त का नाम; तनय-(पुं.) सूर्य के पुत्र, यम, शनि, कर्ण; -तनूजा-(स्त्री.) देखें 'तरणिजा'; -धन्य-(पुं.) शिव, महादेव; -पेटक-(पुं.) नाव का पानी फेंकने का पात्र; -रत्न-(पुं.) पद्मराग मणि; -सुत-(पुं.) देखें 'तरणितनय'।
तरणी-(सं. स्त्री.) नौका, नाव, स्थल-कमलिनी, घृतकुमारी, घीकुआर।
तरणीय-(सं. वि.) पार करने योग्य।
तरतम-(सं. वि.) न्यूनाधिक, थोड़ा-बहुत।
तरतराता-(हि. वि.) घी से तर (पकवान)।
तरतराना-(हि. क्रि. अ.) तड़तड़ शब्द करना, तड़तड़ाना, घी से तर होना।
तर्तीब-(अ. स्त्री.) क्रम, सिलसिला।
तरन-(हि. पुं.) देखें 'तरण'; -तार-(पुं.) निस्तार, मुक्ति, मोक्ष; -तारन-(पुं.) वह जो भवसागर से पार करे, मोक्ष, निस्तार, उद्धार।
तरना-(हि. क्रि. अ., स.) पार करना, मुक्त होना, उद्धार होना, देखें 'तलना'।
तरनाग-(हि. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
तरनाल-(हि. पुं.) पाल में बाँधने का रस्सा।
तरनी-(हि. स्त्री.) नौका, नाव, मिठाई का थाल या खोमचा रखन का छोटा मोढ़ा, तन्नी।
तरपण्य-(सं. पुं.) नदी की उतराई, नदी पार करने का शुल्क।
तरपर-(हि. वि.) नीचे-ऊपर, क्रमानुगत, एक के पीछे दूसरा।
तरपरिया-(हि. वि.) नीचे-ऊपर या आगे-पीछे का।
तरपीला-(हि. वि.) चमकदार।
तरफू-(हि. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।
तरफ-(अ. स्त्री.) ओर, दिशा, पार्श्व, पक्ष।
तरफदार-(अ. वि.) पक्षपाती, सहायक।
तरफदारी-(अ. स्त्री.) पक्षपात, सहायता।
तरफराना-(हि. क्रि. अ.) देख 'तड़फड़ाना'।
तरब-(हि. पुं.) सारंगी के तार जो ताँत के नीचे लगे रहते हैं।
तरबहना-(हि. पुं.) देवी-देवता की मूर्ति को स्नान कराने का पात्र।
तरबूज-(फा. पुं.) एक प्रकार की वालू में होनेवाली बेल और उसके बड़े-बड़े गोल फल जो खाये जाते हैं।
तरबूजिया-(हि. वि.) तरबूज के छिलके के रंग का, गहरा हरा।
तरमीम-(अ. स्त्री.) संशोधन, सुधार, रद्दोबदल।
तरबोना-(हि. क्रि. स.) भिगाना, तर करना।
तरभर-(हि. स्त्री.) तड़ातड़ का शब्द।
तररांना-(हि. क्रि. अ., स.) ऐंठना।
तरल-(सं. पुं.) हार, तल, पेंदी, मधुमक्खी, लोहा, घोड़ा; (वि.) चंचल, हिलता हुआ, चपल, विस्तीर्ण, फैला हुआ, चमकीला, क्षणभंगुर, अनित्य, बहनेवाला, द्रव; -ता-(स्त्री.) द्रवत्व, चपलता, चंचलता; -नयन-(पुं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण होते हैं; -नयनी-(स्त्री.) चंचलाक्षि, एक प्रकार का छन्द; -भाव-(पुं.) चंचलता, चपलता, पतलापन; -लोचन-(वि.) चंचल नेत्रोंवाला; (पुं.) चंचल या चपल आँख; -लोचना-(स्त्री.) वह स्त्री जिसकी आँखें चंचल हों।
तरला-(सं. स्त्री.) मदिरा, मधुमक्खी।
तरलाई-(हि. स्त्री.) द्रवत्व, चंचलता, चपलता।
तरलित-(सं. वि.) काँपता हुआ, थरथराता हुआ।
तरवन-(हि. पुं.) कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना, तरकी, कर्णफूल।
तरवर-(हि. पुं.) तरुवर, बड़ा वृक्ष।
तरवरिया-(हि. पुं.) खड्ग चलानेवाला।
तरवा-(हि. पुं.) देखें 'तलवा'।
तरवार-(हि. स्त्री.) तलवार, खड्ग।
तरवारि-(सं. स्त्री.) तलवार, खड्ग।
तरस-(हि. पुं.) दया, करुणा; (मुहा.) -खाना-दया करना, करुणा दिखलाना।
तरसना-(हि. क्रि. अ.) किसी पदार्थ के अभाव का दुःख सहना।
तरसान-(सं. पुं.) नौका, नाव।
तरसाना-(हि. क्रि. स.) अभाव का क्लेश देना, योंही या व्यर्थ किसी को ललचाना।
तरस्वत्-(सं. वि.) शूर-वीर, बहादुर, वेगयुक्त।
तरस्वी-(सं. वि.) शूर-वीर; (पुं.)

वरुण, वायु, गरुड़, शिव ।
तरह–(अ. स्त्री.) प्रकार, भाँति, किस्म, बनावट; (मुहा.)–देना–ख्याल न करना, उपेक्षा करना ।
तरहटी–(हिं. स्त्री.) पहाड़ की तराई, नीची भूमि ।
तरहदार–(फा.वि.)अच्छे ढंग या तर्ज का ।
तरहदारी–(फा. स्त्री.) सजीलापन ।
तरहर–(हिं. अव्य.) नीचे की ओर; (वि.) नीचे का, निकृष्ट, अधम, बुरा ।
तरहा–(हिं. पुं.) एक हाथ की नाप जो कुआँ खोदने में प्रयुक्त होती है, एक प्रकार का वस्त्र ।
तरहारि–(हिं.अव्य.) नीचे ।
तरहेल–(हिं. वि.) अधीन, पराजित, जीता हुआ ।
तराई–(हिं. स्त्री.) पहाड़ के आसपास की निम्नभूमि जहाँ तरी रहती है, पहाड़ की घाटी, मूंज का मुट्ठा जो छाजन में खपरैल के नीचे लगाया जाता है ।
तराजू–(फा. पुं.) सामान तौलने का एक उपकरण जिसमें डाँड़ी के दोनों सिरों से दो पलड़े लटके हुए होते हैं, काँटा ।
तराप–(हिं. स्त्री.) तोप, बन्दूक आदि का तड़ाके का शब्द ।
तरापा–(हिं. पुं.) त्राहि त्राहि, कुहराम, हाहाकार ।
तराबोर–(हिं. वि.) भीगा हुआ, तर ।
तराभर–(हिं. स्त्री.) तड़ातड़ शब्द ।
तरामल्ल–(हिं. पुं.) जुए की लकड़ी ।
तरामीरा–(हिं. पुं.) सरसों की तरह का एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है ।
तरायल–(हिं. वि.) नीचे का, निम्नस्थ ।
तरायला–(हिं. वि.) चपल, तीव्र ।
तरारा–(हिं. पुं.) उछाल, छलाँग, किसी वस्तु पर निरन्तर गिरनेवाली जल की धारा ।
तरालु–(सं. पुं.) एक प्रकार की नाव ।
तरावट–(फा. स्त्री.) गीलापन, नमी, शीतलता, ठंडक, ठंडक पहुँचानेवाला भोजन ।
तराश–(फा. स्त्री.) काटने का भाव, काट, काट-छाँट ।
तराशना–(फा.क्रि.स.)काटना, कतरना ।
तरासना–(हिं.क्रि.स.)त्रास या भय दिखाना ।
तरि–(सं. स्त्री.) नौका, नाव, कपड़े का किनारा ।
तरिक–(सं. पुं.) मल्लाह, केवट, माँझी ।
तरिको–(हिं.पुं.)कान में पहिनने का एक गहना, तरकी; (स्त्री.)विद्युत्, बिजली ।
तरिणी–(सं. स्त्री.) नौका, नाव ।
तरित–(सं.वि.)उत्तीर्ण, पार किया हुआ ।
तरिता–(सं. स्त्री.) कानी अँगुली, गाँजा, लहसुन ।
तरियाना–(हिं.क्रि.अ.,स.)तह में बैठाना, छिपाना, पेंदी या तल में बैठना ।
तरिवन–(हिं. पुं.) स्त्रियों का कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना, तरकी, करनफूल ।
तरिवर–(हिं. पुं.) देखें 'तरुवर', श्रेष्ठ वृक्ष ।
तरिहँत–(हिं. अव्य.) तल में, नीचे ।
तरी–(सं. स्त्री.) नौका, नाव, गदा, धुआँ, छोटी नाव; (हिं स्त्री.) कछार, कपड़े का किनारा, गीलापन, तरावट, नमी, शीतलता ।
तरीका–(अ. पुं.) रीति, उपाय, ढंग ।
तरीष–(सं. पुं.) सूखा गोबर, नौका, नाव, समुद्र, स्वर्ग, पानी में चलनेवाला बड़ा, सामर्थ्य ।
तरीषी–(सं. स्त्री.) इन्द्र की कन्या का नाम ।
तरु–(सं. पुं.) वृक्ष, पादप, पेड़, एक प्रकार का चीड़ का पेड़ ।
तरुखंड–(सं. पुं.) वृक्षों का समूह ।
तरुज–(सं. वि.) वृक्ष से उत्पन्न; (पुं.) सफेद कत्था ।
तरुजीवन–(सं. पुं.) वृक्ष का मूल, पेड़ की जड़ ।
तरुण–(सं. पुं.) मोतिया का फल, बड़ा जीरा, रेंड़ का पेड़, युवा पुरुष; (वि.) युवा, जवान, नूतन, नया ।
तरुणक–(सं. पुं.) सद्यःजात अंकुर ।
तरुणज्वर–(सं. पुं.) वह ज्वर जो सात दिन का हो गया हो ।
तरुण-तरणि–(सं. पुं.) तरुण सूर्य, दोपहर का सूर्य ।
तरुणदारु–(सं. पुं.) विधारा की लता ।
तरुणपीतिका–(सं. स्त्री.) मनःशिल, मैनसिल ।
तरुणसूर्य–(सं. पुं.) दोपहर का सूर्य ।
तरुणाई–(हिं.स्त्री.)युवावस्था, जवानी ।
तरुणाना–(हिं. क्रि. अ.) युवावस्था को प्राप्त करना ।
तरुणास्थि–(सं. स्त्री.) पतली लचीली हड्डी ।
तरुणी–(सं.स्त्री.)युवती, जिसकी अवस्था सोलह से बत्तीस वर्ष तक की हो, घृतकुमारी, जमालगोटा, एक प्रकार का बड़ा काला जीरा, मेघराग की एक रागिनी ।
तरुतूलिका–(सं. स्त्री.) चमगादड़ ।
तरुत्र–(सं. वि.) तारक, तारनेवाला ।
तरुनख–(सं. पुं.) वृक्ष का काँटा ।
तरुन–(हिं. वि., पुं.) देखें 'तरुण' ।
तरुनई, तरुनाई–(हिं. स्त्री.) युवावस्था, जवानी ।
तरुनापा–(हिं. पुं.) युवावस्था, जवानी ।
तरुपंक्ति–(सं. स्त्री.) वृक्षों की पंक्ति ।
तरुपतिका–(हिं. स्त्री.) लता ।
तरुबाँही–(हिं. स्त्री.) वृक्ष की शाखा या डाल ।
तरुभुज्–(सं. पुं.) वृक्ष पर उगनेवाला परगाछा, बंदाक ।
तरुमूल–(सं.पुं.)वृक्ष-मूल,पेड़ की जड़
तरुमृग–(सं. पुं.) शाखामृग, बन्दर ।
तरुराग–(सं. पुं.) किसलय, कोमल नया पत्ता ।
तरुराज–(सं. पुं.) ताल-वृक्ष, कल्प-वृक्ष ।
तरुरुहा, तरुरोहिणी–(सं.पुं., स्त्री.) देखें 'तरुभुज्' ।
तरुवल्ली–(सं.स्त्री.)जतुका लता, पानड़ी
तरुविलासिनी–(सं. स्त्री.) नवमल्लिका, चमेली ।
तरुश–(सं. वि.) वृक्षों से घिरा हुआ ।
तरुशायी–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया ।
तरुसार–(सं. पुं.) कपूर, गोंद ।
तरुस्थ–(सं. वि.) वृक्ष पर टिका हुआ ।
तरेंदा–(सं. पुं.) जल के तल पर तैरता हुआ काठ,बेड़ा,पानी पर तैरनेवाली वस्तु ।
तरे–(हिं. अव्य.) नीचे की ओर, नीचे ।
तरेटी–(हिं. स्त्री.) तराई, घाटी ।
तरेरना–(हिं.क्रि.स.)क्रुद्ध दृष्टि से देखना, आँख के संकेत से असन्तोष प्रकट करना ।
तरैनी–(हिं. स्त्री.) हल में हरिस लगाने का पच्चड़ ।
तरया–(सं. स्त्री.) नक्षत्र, तारा ।
तरैला–(हिं. पुं.) किसी स्त्री का वह पुत्र जो उसके पूर्व पति से उत्पन्न हो ।
तरैली–(हिं. स्त्री.) देख 'तरैनी' ।
तरौंच–(हिं. स्त्री.) कंघी के दाँतों के नीचे का भाग ।
तरौंडा–(हिं.पुं.) हलवाहे आदि को देने के लिये निकाला हुआ अन्न ।
तरोई–(हिं.स्त्री.)देखें'तुरई',एक तरकारी ।
तरोवर–(हिं.पुं.)देखें 'तरुवर', श्रेष्ठ वृक्ष ।
तरौंछ–(हिं. स्त्री.) तलछट ।
तरौंछी–(हिं. स्त्री.) वह लकड़ी जो बैलगाड़ी में नीचे लगी होती है ।

तरौंटा–(हि.पुं.) चक्की का निचला चाक।
तरौंता–(हि. पुं.) छाजन के नीचे लगाने की लकड़ी।
तरौंस–(हिं. पुं.) तट, किनारा।
तरौना–(हि. पुं.) स्त्रियों की कान में पहिनने की तरकी, कर्णफूल, मिठाई का खोनचा रखने का मोढा।
तर्क–(सं.पुं.) किसी विषय के अज्ञात तत्त्व को निश्चित करने की युक्ति या सिद्धांत, आगम-प्रमाण, इच्छा, विचार, दलील, मीमांसा शास्त्र, न्यायशास्त्र, व्यंग्य, ताना; **–क**–(वि.) याचक, माँगनेवाला, तर्क करनेवाला; **–कारी**–(वि.) तर्क करनेवाला; **–ण**–(पु., चिन्तन, तर्क करने की क्रिया; **–णा**–(स्त्री.) विचार, युक्ति, उपाय; **–णीय**–(वि.) चिन्तनीय, तर्क करने योग्य; **–वागीश**–(पुं.) वह जो तर्क-शास्त्र को भली भांति जानता हो; **–वितर्क**–(पुं.) विवेचना, सोच-विचार, वादविवाद; **–विद्या**–(स्त्री.) न्यायशास्त्र, तर्क शास्त्र; **–शास्त्र**–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें ठीक तरह से तर्क करने के नियम आदि निरूपित होते है, न्यायशास्त्र।
तर्कना–(हिं. क्रि.अ.) तर्क करना।
तर्कश–(हि. पुं.) देखें 'तरकश'।
तर्कसी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तरकसी'।
तर्काभास–(सं. पुं.) कुतर्क, एसा तर्क जो ठीक न हो।
तर्किण–(सं. पुं.) चकवँड़ का पौधा
तर्कित–(सं. वि.) आलोचित, संभावित, विचारा हुआ, अनुमान किया हुआ।
तर्की–(सं. वि.) तर्क करनेवाल।
तर्कीब–(हिं. स्त्री.) देखें 'तरकीब'।
तर्कु–(सं. स्त्री.) तकला, टकुआ।
तर्कुट–(सं. पुं.) कर्तन, कातना।
तर्कुटी–(सं. स्त्री.) तकला, टकुआ।
तर्कुल–(हि. पुं.) ताड़ का वृक्ष।
तर्क्य–(सं. वि.) विचार्य, जिस विषय पर कुछ सोच-विचार करना आवश्यक हो।
तर्क्षु–(सं. पुं.) तेंदुआ, चीता बाघ।
तर्क्ष्य–(सं. पुं.) यवक्षार, जवाखार।
तर्ज–(अ.पुं.) रीति, शली, प्रकार, ढंग।
तर्जन–(सं. पुं.) तिरस्कार, फटकार, घृणा करने का भाव, धमकाने क काम, ताड़ना क्रोध-प्रदर्शन, डाँट-डपट।
तर्जना–(हि. क्रि. स.) डांटना-डपटना, धमकाना।
तर्जनी–(सं. स्त्री.) अँगूठे के पास की हाथ की अंगुली।
तर्जित–(सं. वि.) अनादृत, अपमानित किया हुआ।
तर्ण–(सं.पुं.) एक प्रकार का धान, बछवा।
तर्णक–(सं. पुं.) तुरत का जनमा हुआ गाय का बछवा, शिशु, बच्चा।
तर्णि–(सं. पुं.) सूर्य, प्लव, बड़ा।
तर्तरीक–(सं. पुं.) नौका, नाव; (वि.) पार जानेवाला।
तर्द्मन्–(सं. पुं.) छेद, सूराख।
तर्पण–(सं. पुं.) तृप्त करने की क्रिया, देवता, पितर आदि को सन्तुष्ट करने के लिये अंजलि में पानी भरकर जलदान देने की क्रिया।
तर्पणी–(सं. स्त्री.) खिरनी का वृक्ष, गंगा; (वि. स्त्री.) तृप्ति देनेवाली।
तर्पणीय–(सं. वि.) तर्पण करने योग्य, तृप्ति के योग्य।
तर्पिणी–(सं. स्त्री.) भूमि-कमलिनी।
तर्पित–(सं. वि.) सन्तुष्ट किया हुआ।
तर्पितव्य–(सं. वि.) तृप्ति के योग्य।
तर्पी–(सं. वि.) तर्पण करनेवाला, सन्तुष्ट करनेवाला।
तर्बट–(सं. पुं.) वर्ष, चकवँड़ का पौधा।
तर्बूज–(हि. पुं.) देखें 'तरबूज'।
तर्रा–(हिं. पुं.) चाबुक में लगी हुई डोरी।
तर्राना–(हि. पुं.) एक प्रकार का गाना।
तर्री–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
तर्ष–(सं.पुं.) समुद्र, सूर्य, अभिलाषा, चाह।
तर्षण–(सं पुं.) प्य स अभिलाषा, इच्छा।
तर्षित–(सं. वि) अभिलषित, चाहा हुआ, प्यासा।
तर्हि–(सं.अव्य.) उस समय, तब।
तल–(सं. पुं.) नीचे का भाग, अधोभाग, पेंदी, निम्नता, जंगल, गड्ढा, घर की छत, थप्पड़, तमाचा, ताड़ का वृक्ष, पाताल, पृष्ठ-देश, मूल भाग, हथेली, पैर का तलवा, तलवार की मूठ, धरातल, सतह, एक नरक का नाम, सहारा, आधार, जल के नीचे की भूमि, वक्षःस्थल, छाती, वित्ता, महादेव, सात पातालों में से पहिला पाताल।
तलक–(सं. पुं.) ताल, पोखरा; (हि. अव्य.) पर्यन्त, तक।
तलकर–(हि. पुं.) वह कर या लगान जो भूस्वामी सूखे तालाव की भूमि पर लगाता है।
तलकीट–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष।
तलगू–(हिं. स्त्री.) तैलंग देश की भाषा।
तलघरा–(हिं. पुं.) भूमिगृह, तहखाना।
तलछट–(हिं. स्त्री.) किसी द्रव पदार्थ के नीचे बैठा हुआ मैल, तलौंछ, गाद।
तलताल–(सं. पुं.) हथेली से बजाने का एक प्रकार का बाजा।
तलत्र, तलत्राण–(सं. पुं.) चमड़े का बना हुआ दस्ताना।
तलध्वनि–(सं. पुं.) हथेली बजाने का शब्द, ताली।
तलना–(हिं.क्रि.स.) घी या तेल म छानना या पकाना।
तलप–(हिं. पुं.) देखें 'तल्प'।
तलपट–(हिं. वि.) नष्ट, बरबाद, चौपट।
तलप्रहार–(सं. पुं.) थप्पड़ तमाचा।
तलफना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'तड़पना'।
तलब–(अ. स्त्री.) पाने की इच्छा, चाह, आवश्यकता, माँग, बुलाना, वेतन।
तलबनामा–(अ. पुं.) अदालत में हाजिर होने का लिखित आज्ञा-पत्र।
तलबाना–(फा.पुं.) अदालत में गवाहों के हाजिर होने के लिए जमा किया जानेवाला खर्च।
तलबी–(फा. स्त्री.) बुलावा, माँग, आवश्यकता।
तलबेली–(हिं. स्त्री.) उत्कण्ठा, आतुरता, छटपटी, बेचैनी।
तलमलाना–(हिं. क्रि. अ.) छटपटाना।
तलमलाहट–(हिं. स्त्री.) व्याकुलता, बेचैनी।
तललोक–(सं. पुं.) पाताल।
तलवकार–(सं. पुं.) सामवेद की एक शाखा, एक उपनिषद् का नाम।
तलवा–(हिं. पुं.) पादतल, पैर के नीचे का भाग; (मुहा.) **तलवे चाटना**–चापलूसी करना; **तलवे छलनी होना**–चलते चलते पैर थक जाना या शिथिल होना; **तलवों से आग लगना**–बहुत क्रोध चढ़ना।
तलवार–(हिं. स्त्री.) करवाल, असि, खड्ग, कृपाण; (मुहा.) **–का खेत**–रणभूमि; **–का घाट**–खड्ग का वह भाग जहां से इसकी वक्रता या टेढ़ापन आरंभ होता है; **–का पानी**–तलवार की चमक; **–की छाँह में**–रणक्षत्र में; **–खींचना**–युद्ध करने के लिये तलवार को म्यान से बाहर निकालना।
तलवारण–(सं. पुं.) तलवार, खड्ग।
तलसारक–(सं. पुं.) घोड़े की छाती में बँधी हुई रस्सी, तोवड़ा।
तलस्थित–(सं. वि.) निम्नस्थित, नीचे रहनेवाला।
तलहटी–(हि.स्त्री.) पहाड़ की तराई, घाटी।
तला–(सं. स्त्री.) चमड़े का दस्ताना जो

धनुष की डोरी की रगड़ से बचाने के लिये वाईं बाँह में पहिना जाता है; (हिं. पुं.) किसी वस्तु के नीचे का तल, पेंदी, जूते के तलवे का चमड़ा।
तलाई–(हिं. स्त्री.) छोटा ताल, तलैया।
तलाक–(अ. पुं.) वैधानिक रीति से विवाह-संबंध का विच्छेद।
तलाची–(सं. स्त्री.) बेंत या बाँस की फट्ठियों की बनी हुई चटाई।
तलातल–(सं. पुं.) सात पातालों में से एक पाताल का नाम।
तलाब–(हिं. पुं.) देखें 'तालाब', ताल।
तलाश–(तु. स्त्री.) खोज, चाह, अन्वेषण।
तलाशना–(हिं.क्रि.स.) खोजना, ढूँढ़ना।
तलाशी–(फा.स्त्री.) खोज, जाँच-पड़ताल।
तलिका–(सं. स्त्री.) घोड़े की छाती में बँधी हुई रस्सी, तोबड़ा, तंग।
तलित्–(सं.स्त्री.) देखें 'तडित्', बिजली।
तलित–(सं. पुं.) तला हुआ मांस।
तलिन–(सं. पुं.) शय्या, पलंग; (वि.) थोड़ा, कम, शुद्ध, दुर्बल, दुबला-पतला।
तलिम–(सं. पुं.) शय्या, खड्ग, चँदवा।
तलिया–(हिं. स्त्री.) समुद्र का थाह।
तली–(हिं.स्त्री.) तल, पेंदी, तलछट, तलौंछ।
तलुन–(सं. पुं.) वायु, हवा, युवा मनुष्य।
तलुनी–(सं. स्त्री.) युवती स्त्री।
तले–(हिं. अव्य.) नीचे, नीचे की ओर।
तलेक्षण–(सं. पुं.) शूकर, सूअर।
तलेटी–(हिं. स्त्री.) पेंदी, तलहटी, तराई, तघाटी।
तलैया–(हिं. स्त्री.) छोटा ताल।
तलोदरी–(सं. स्त्री.) भार्या, पत्नी।
तलोदा–(सं. स्त्री.) नदी, दरिया।
तलौंछ–(हिं. स्त्री.) तरल पदार्थ के नीचे जमा हुआ मैल, तलछट।
तल्क–(सं. पुं.) वन, जंगल।
तल्प–(सं.पुं.) पलंग, शय्या, अटारी, स्त्री।
तल्पक–(सं. पुं.) पलंग बिछानेवाला भृत्य या नौकर।
तल्पकीट–(सं. पुं.) मत्कुण, खटमल।
तल्पज–(सं. पुं.) क्षेत्रज पुत्र।
तल्पन–(सं. पुं.) पीठ की हड्डी पर का मांस।
तल्पशीवन्–(सं. वि.) सर्वदा पलंग पर पड़ा रहनेवाला।
तल्ल–(सं. पुं.) बिल, गड्ढा, पोखरी; (वि.) उसमें लगा हुआ।
तल्लज–(सं. पुं.) सम्मानसूचक शब्द।
तल्ला–(हिं. पुं.) अस्तर, जूते की पेंदी का चमड़ा, मकान की मंजिल, पास।
तल्लिका–(सं.स्त्री.) कुंजी, ताली।
तल्ली–(सं. स्त्री.) नौका, नाव, युवती, वरुण की स्त्री; (वि.) तल्लीन, निमग्न।
तल्लीन–(सं. वि.) ध्यान, विचार आदि में लीन, निमग्न।
तल्व–(सं. पुं.) वह सुगन्ध जो किसी पदार्थ की रगड़ से उत्पन्न हो।
तल्वकार–(सं.पुं.) सामवेद की एक शाखा।
तव–(सं. सर्व.) तुम्हारा।
तवक्का–(हिं. पुं.) भरोसा।
तवक्षीर–(सं. पुं.) तवाखीर, तीखुर, वंशलोचन।
तवना–(हिं.क्रि.अ.) तपना, गरम होना, ताप से पीड़ित होना, क्रोध से लाल होना, कुढ़ना।
तवनी–(हिं. स्त्री.) छोटा तवा।
तवर्ग–(सं.पुं.) त, थ, द ध, न–ये पाँच अक्षर।
तवर्गीय–(सं. वि.) तवर्ग संबंधी।
तवा–(हिं. पुं.) रोटी सेंकने का छिछला लोहे का गोल पात्र, खपड़े का गोल ठीकरा जिसको चिलम पर रखकर तंबाकू पीया जाता है, एक प्रकार की लाल मिट्टी; (मुहा.) **तवे की बूंद**–केवल क्षणभर ठहरनेवाला, जो चिरस्थायी न हो।
तवाखीर–(हिं. पुं.) वंशलोचन।
तवाना–(हिं.क्रि.स.) गरम कराना।
तवायफ–(अ. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
तवारीख–(अ. स्त्री.) इतिहास।
तवालत–(अ. स्त्री.) बखेड़ा, झंझट, तकलीफ।
तविष–(सं. पुं.) स्वर्ग, समुद्र, शक्ति, सोना; (वि.) बलवान्, बुड्ढा, बड़ा।
तविषी–(सं. स्त्री.) देवकन्या, भूमि, नदी।
तविषीवत्–(सं. वि.) साहसी, पराक्रमी।
तशरीफ–(अ.स्त्री.) इज्जत, आदर, सम्मान।
तश्त–(फा. पुं.) ताँबे की छोटी थाली जिसमें मूर्तियाँ नहलाई जाती हैं।
तश्तरी–(फा.स्त्री.) छोटी थाली या रकाबी।
तष्ट–(सं. वि.) दो टुकड़े किया हुआ, छीला हुआ, पीटा हुआ, गुणा किया हुआ।
तष्टा–(सं. पुं.) एक आदित्य का नाम, विश्वकर्मा, छील-छीलकर गढ़नेवाला।
तस–(हिं. वि., अव्य.) तैसा, वैसा।
तसगर–(हिं. पुं.) जुलाहे की ताने में लगाने की लकड़ी।
तसदीक–(अ. स्त्री.) सचाई या सही होने का साक्ष्य या प्रमाण, समर्थन, साक्ष्य, गवाही।
तसमा–(फा.पु.) चमड़े या सूत की चौड़ी पट्टी या पेटी।
तसर–(सं. पुं.) जुलाहे की ढरकी, एक प्रकार का कीड़ा, मोटा रेशम।
तसला–(हिं. पुं.) कटोरे के आकार का बड़ा पात्र।
तसली–(हिं. स्त्री.) छोटा तसला।
तसलीम–(अ. स्त्री.) अभिवादन, स्वीकृति।
तसल्ली–(अ. स्त्री.) ढाढ़स, दिलासा।
तसवीर–(अ. स्त्री.) चित्र।
तसू–(हिं. पुं.) इमारती गज का चौबीसवाँ अंश जो प्रायः सवा इंच के बराबर होता है।
तस्कर–(सं. पुं.) चोर, चोट्टा, एक प्रकार का शाक, श्रवणेंद्रिय, कान, चोर नामक गन्ध द्रव्य।
तस्करता–(सं. स्त्री.) चोर का काम, चोरी।
तस्करस्नायु–(सं. पुं.) कौवाठोंठी।
तस्करी–(सं. स्त्री.) चोर की स्त्री, चोरी करनेवाली स्त्री, चोरी का काम, कौवाठोंठी।
तस्थिवन्–(सं. वि.) स्थित, ठहरा हुआ।
तस्थु–(सं.वि.) एक स्थान पर रहनेवाला।
तस्मा–(हिं. पुं.) देखें 'तसमा'।
तस्मात्–(सं. अव्य.) इस कारण से, इसलिये।
तहँ, तहँवाँ–(हिं. अव्य.) उस स्थान पर।
तह–(हिं. स्त्री.) परत, तल, पेंदी, थाह, झिल्ली, महीन पटल; (मुहा.) **–करना या लगाना**–किसी वस्त्र को चौपतकर या मोड़कर समेटना; **–की बात**–रहस्य, गुप्त वार्ता; **–तक पहुँचना**–रहस्य का पता लगा लेना; **–तोड़ना**–झगड़ा तय करना; **–देना**–हलका रंग चढ़ाना।
तहकीकात–(अ. स्त्री.) न्यायिक या विधिक जाँच-पड़ताल।
तहखाना–(फा. पुं.) जमीन के नीचे बना हुआ कमरा या घर, भुइँधरा।
तहबंद–(फा. पुं.) लुंगी।
तहरीर–(अ. स्त्री.) लिखावट, लिखित प्रमाण, लिखने का पारिश्रमिक।
तहरीरी–(अ.वि.) लिखा हुआ, लिपिबद्ध।
तहलका–(अ. पुं.) खलबली, हलचल।
तहस-नहस–(हिं. वि.) नष्ट-भ्रष्ट।
तहसील–(अ. स्त्री.) रुपए की वसूली, उगाही, तहसीलदार का कार्यालय, जिले का प्रशासनिक उपखंड।
तहसीलदार–(फा. पुं.) तहसील का प्रशासनिक तथा मालगुजारी वसूल करनेवाला अधिकारी।

तहसीलदारी–(फा. स्त्री.) तहसीलदार का पद या काम।
तहसीलना–(हिं.क्रि.स.) चन्दा, लगान, आदि उगाहना।
तहाँ–(हिं. अव्य.) वहाँ, उस स्थान पर।
तहाना–(हिं.क्रि.स.) लपेटना, तह करना।
तहिया–(हिं. अव्य.) उस समय, तब।
तहियाना–(हिं.क्रि.स.) तह लगाना, तहाना।
ताँगा–(हिं. पुं.) देख 'टाँगा'।
तांडव–(सं. पुं.) शिव का प्रसिद्ध नृत्य।
ताँत–(हिं. स्त्री.) चमड़े या पशुओं की नसों से बनी हुई डोरी, धनुष की डोरी, सूत, सारंगी का तार, जुलाहों का राछ (उपकरण विशेष)।
ताँतड़ी–(हिं. स्त्री.) ताँत, तन्तु।
तांतव–(सं. वि.) तंतुओं से बना हुआ।
ताँतवा–(हिं.पुं.) आँत उतरने का रोग।
ताँता–(हिं.पुं.) पंक्ति; (मुहा.)–**लगना**–एक के बाद दूसरे का चला चलना।
ताँतिया–(हिं. वि.) जो ताँत की तरह पतला हो।
ताँती–(हिं. स्त्री.) पंक्ति, क्रम, बाल-बच्चे; (पुं.) जुलाहा।
तांत्रिक–(सं. वि.) तंत्र संबंधी; (पुं.) तंत्र-शास्त्र का ज्ञाता।
ताँबा–(हिं. पुं.) ताम्र, लाल रंग की एक मुलायम धातु जो पीटने से बढ़ सकती है।
ताँबिया, ताँबी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा पात्र जिसका मुँह चौड़ा होता है, ताँबे की करछी।
तांबूल–(सं. पुं.) पान, सुपारी; –**पत्र**–(पुं.) पान का पत्ता; –**राग**–(पुं.) पान की होंठों पर पड़ी लाली।
ताँवरी–(हिं. स्त्री.) ताप, जूड़ी, मूर्छा।
ताँसना–(हिं.क्रि.स.) डाँटना, डपटना, धमकाना, कष्ट देना, सताना, दुःखी करना।
ता–(सं. प्रत्य.) एक भाववाचक प्रत्यय।
ताई–(हिं.अव्य.) ताँई, तक, पर्यंत, पास, समीप, निकट, लिए, वास्ते; (हिं. स्त्री.) जेठी चाची, छिछली कड़ाही।
ताईद–(अ. स्त्री.) अनुमोदन, समर्थन।
ताऊ–(हिं. पुं.) बाप का बड़ा भाई, जेठा चाचा।
ताऊन–(अ. पुं.) प्लेग नामक घातक और संक्रामक रोग।
ताऊस–(अ. पुं.) मोर, मयूर।
ताक–(हिं. स्त्री.) अवलोकन, देखने की क्रिया, खोज, स्थिर दृष्टि, टकटकी, किसी अवसर की प्रतीक्षा, घात; (मुहा.)–**में रहना**–अवसर देखते रहना; –**लगाना**–घात में रहना, अवसर की प्रतीक्षा करते रहना।
ताक–(अ.पुं.) दीवाल में बना हुआ ताखा, आला; (मुहा.)–**पर धरना या रखना**–पड़ा रहने देना, उपयोग में न लाना।
ताकझाँक–(हिं.स्त्री.) रह-रहकर बारंबार देखने की क्रिया, निरीक्षण, देखभाल, छिपकर देखने की क्रिया, अन्वेषण, खोज।
ताकत–(अ. स्त्री.) बल, शक्ति।
ताकतवर–(अ.वि.) बलवान्, शक्तिशाली।
ताकना–(हिं.क्रि.स.) देखना, अवलोकन करना, स्थिर दृष्टि से देखना, टकटकी लगाना, लखना, समझ जाना, सोचना, विचारना, चाहना।
ताकि–(फा. अव्य.) इसलिए कि, जिससे।
ताकीद–(अ. स्त्री.) खूब चेताकर कहा हुआ अनुरोध, चेतावनी।
ताख–(हिं. पुं.) ताक, ताखा।
ताखा–(हिं. पुं.) सामग्रियाँ रखने के लिए दीवार में बना हुआ स्थान, आला।
ताग–(हिं. पुं.) देखें 'तागा'; (मुहा.) –**डालना**–वर के बड़े भाई का वधू को ताग-पाट पहनाना।
तागड़ी–(हिं. स्त्री.) कमर में पहिनने का गहना, कटिसूत्र, करधनी, कमर में पहिनने का रंगीन डोरा।
तागना–(हिं.क्र.स.) सिलाई करना, दूर दूर की सिलाई करना, लंगर डालना।
तागपाट–(हिं. पुं.) रेशम के तागे में पिरोया हुआ एक गहना जो विवाह में वधू को पहिनाया जाता है।
तागा–(हिं.पुं.) सूत, डोरा, धागा, वह कर जो प्रति मनुष्य के हिसाब से लगाया जाता है।
ताज–(अ.पुं.) बादशाह का मुकुट, कलगी, शिखा, ताजमहल का संक्षिप्त नाम।
ताजगी–(फा. स्त्री.) ताजा होने का भाव, ताजापन, शारीरिक या मानसिक स्फूर्ति, नयापन।
ताजदार–(फा. पुं.) बादशाह, राजा।
ताजपोशी–(फा.स्त्री.) सिंहासन पर बैठने और राजमुकुट धारण करने का उत्सव।
ताजमहल–(अ. पुं.) बादशाह शाहजहाँ द्वारा बनवाया हुआ अपनी पटरानी मुमताजमहल की कब्र पर संगमरमर का मकबरा।
ताजा–(फा. वि.) हरा-भरा, हाल का पकाया हुआ (अन्न), अभी-अभी तोड़े गये (फल), जो बहुत दिनों का न हो (समाचार), नया।
ताजिया–(अ. पुं.) मकबरे के स्वरूप की बनी प्रतिमा जो मुसलमान लोग मुहर्रम के दिन इमाम हसन और इमाम हुसेन की स्मृति में जुलूस के साथ निकालते और दफनाते हैं।
ताजीर–(अ. स्त्री.) दंड, सजा।
ताजीरात–(अ. स्त्री.) 'ताजीर' का बहुवचन रूप।
ताजीरात-हिंद–(अ. स्त्री.) भारतीय दंड-विधान।
ताजीरी–(अ. वि.) ताजीर संबंधी।
ताज्जुब–(हिं. पुं.) आश्चर्य, अचंभा।
ताटंक–(सं. पुं.) कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना, तरकी, करनफूल, छप्पय छन्द का एक भेद।
ताटस्थ्य–(सं.पुं.) निकट में होने का भाव, समीपता, उदासीनता, तटस्थता।
ताडंक–(सं.पुं.) कान का एक गहना, तरकी।
ताड़–(सं. पुं.) ताड़न, प्रहार, आघात, चोट, गुणन, ध्वनि का शब्द, घास आदि का जुट्टा, पर्वत, पहाड़, हाथ का एक आभूषण, शाखारहित एक बड़ा वृक्ष, ताल वृक्ष।
ताड़क–(सं. वि.) प्रहार करनेवाला, ताड़न करनेवाला।
ताड़का–(सं. स्त्री.) एक राक्षसी जिसको रामचन्द्र ने मारा था; –**फल**–(पुं.) बड़ी इलायची।
ताड़कायन–(सं. पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
ताड़कारि–(सं. पुं.) ताड़का के शत्रु श्रीरामचन्द्र।
ताड़केय–(सं.पुं.) ताड़का का पुत्र, मारीच।
ताड़न–(सं. पुं.) आघात, प्रहार, माँग, शासन, दण्ड, डाँट-डपट, घुड़की।
ताड़ना–(सं. स्त्री.) ताड़न, मार, प्रहार, कष्ट; (हिं. क्रि. स.) डाँटना, डपटना, दण्ड देना, मारना, पीटना, मारपीटकर भगाना, हटा देना, छिपी हुई बात का पता लगा लेना, भाँपना, लख लेना।
ताड़नी–(सं. स्त्री.) कोड़ा, चाबुक।
ताड़नीय–(सं. वि.) ताड़न करने योग्य, दण्ड देने योग्य।
ताड़पत्र–(सं. पुं.) कर्णफूल, कान का एक गहना, ताड़ का पत्ता।
ताड़बाज–(हिं. वि.) छिपी हुई बात को समझ जानेवाला, ताड़नेवाला।
ताड़ित–(सं. वि.) आहत, मार खाया हुआ, तिरस्कार किया हुआ, दण्डित; (पुं) विद्युत्, बिजली।

ताड़ी–(हि.स्त्री.) वह मादक रस जो ताड़ के तने से निकलता है।
ताड्य–(सं. वि.) ताड़ने के योग्य, डाँटने-डपटने योग्य; **–मान**–(वि.) जो डाँटा जाता हो, जो पीटा जाता हो; (पुं.) ढक्का, ढोल।
तात–(सं. पुं.) पिता, बाप, प्यार का शब्द जो भाई-बन्धु विशेषकर अपने से छोटे के लिये व्यवहार किया जाता है, दया; (वि.) आदर के योग्य, पूज्य; (हिं. वि.) गरम, उष्ण।
तातगु–(सं. पुं.) पितृव्य, चाचा।
तातन–(सं. पुं.) खंजन पक्षी।
तातल–(सं.वि.) पितातुल्य, पिता-सम्बन्धी, अति वेगवान्, तप्त, गरम।
ताता–(हिं. वि.) तपा हुआ, उष्ण, गरम।
ताताथेई–(हिं. स्त्री.) नाचने में पाद-विक्षेप का शब्द।
ताति–(सं. स्त्री.) उन्नति, वृद्धि।
तातील–(अ. स्त्री.) अवकाश, छुट्टी।
तात्कालिक–(सं. वि.) तत्कालीन, उस समय का।
तात्काल्य–(सं.पुं.) तात्कालिक का भाव, वह जो उसी समय का हो।
तात्पर्य–(सं. पुं.) आशय, अभिप्राय, मतलब, तत्परता।
तात्पर्यक–(सं. वि.) अर्थबोधक भाव उत्पन्न करनेवाला।
तात्त्वि(त्वि)क–(सं. वि.) तत्त्व-ज्ञान सम्बन्धी, यथार्थ।
तात्य–(सं.वि.) तत्कालीन, उस समय का।
ताथेई–(हिं. स्त्री.) देखें 'ताताथेई'।
तादर्थिक–(सं. वि.) उसी अर्थ का, उसी तरह का।
तादर्थ्य–(सं. पुं.) तन्निमित्तता, तदर्थता।
तादात्म्य–(सं.पुं.) तत्स्वरूपता, एक वस्तु का दूसरे में मिलकर उसी के रूप का हो जाना।
तादाद–(अ.स्त्री.) संख्या, गिनती, अदद।
तादृश–(सं. वि.) उस तरह का, उसके समान, तत्तुल्य।
तादृशी–(सं.वि.स्त्री.) उसी के समान, वैसी।
ताधर्म्य–(सं.पुं.) तुल्य धर्म, समान गुण।
ताधा–(हिं. स्त्री.) देखें 'ताताथेई'।
तान–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव, सूत्र, ज्ञान का विषय; (हिं. स्त्री.) गाने का एक लय जिसमें सुर को अनेक विभाग करके खींचा जाता है, लय का विस्तार, आलाप वह पदार्थ जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा होता है, पलंग या हौदे को पुष्ट करने के लिये लगाया हुआ लोहे का छड़, एक प्रकार का वृक्ष; (मुहा.) **–उड़ाना**–गीत गाना।
तान-तरंग–(सं. स्त्री.) लय की लहर।
तानना–(हिं. क्रि. स.) जोर से खींचना, वढ़ाना, कारागार में भेजना, किसी के विरुद्ध चिट्ठी-पत्री या प्रार्थना-पत्र भेजना, प्रहार के लिये अस्त्र उठाना, किसी पदार्थ को एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक ले जाकर बाँधना; तानकर-वल के साथ; (मुहा.) **–तानकर सोना**–वेफिक्र सोना।
तानपूरा–(हिं. पुं.) चार तारों का सितार के आकार का एक बाजा जो गायक के सुर मिलाने में सहायक होता है, तंबूरा।
तानबान–(हिं. पुं.) देखें 'तानाबाना'।
तानसेन–(पुं.) अकबर के समय का एक अति प्रसिद्ध गवैया, (यह पहिले कट्टर हिन्दू थे परन्तु बाद में मुसलमान हो गये थे।)
ताना–(हिं. पुं.) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लंबाई के वल रहता है, करघा जिस पर दरी या कालीन बुना जाता है; (हि.क्रि.स.) तप्त करना, तपाना, गरम करना, सोना-चाँदी को गरम करके परीक्षा करना, पिघलाना, जाँचना, गीली मिट्टी से पात्र का मुँह बन्द करना, मूँदना; (अ. पुं.) व्यंग्य, चुटीली बात।
ताना-बाना–(हिं. पुं.) कपड़े की बुनावट में लंबाई तथा चौड़ाई के वल फैलाये हुए सूत।
तानारीरी–(हिं. स्त्री.) सामान्य गायन, मामूली गाना, राग, आलाप।
तानाशाह–(फा. पुं.) निरंकुश बादशाह या राजा, अधिनायक।
तानाशाही–(फा. स्त्री.) तानाशाह का पद या अत्याचार, अधिनायकता।
तानी–(हिं. स्त्री.) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लंबाई के वल हो।
ताप–(सं. पुं.) जलन जो उष्ण वस्तु के स्पर्श से उत्पन्न होती है, उष्णता, आँच, लपट, ज्वर, यातना, हृदय का दुःख, मानसिक कष्ट, आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक क्लेश, वह प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों को पिघलाने, वाष्प बनाने आदि में देखा जाता है।
तापक–(सं. पुं.) तापकारक, ताप उत्पन्न करनेवाला, ज्वर, रजोगुण।
तापक्रम–(सं. पुं.) वायुमंडल, शरीर आदि की उष्णता का उतार-चढ़ाव।
तापचालक–(सं. पुं.) वह पदार्थ जो बिजली के प्रवाह को अपने एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचाता हो।
तापचालकता–(सं. स्त्री.) तापचालक पदार्थ का स्वाभाविक गुण या धर्म।
तापतिल्ली–(हिं. स्त्री.) प्लीहा रोग, प्लीहा वढ़ जाने का रोग।
तापती–(सं. स्त्री.) सूर्य की कन्या, ताप्ती नदी जो सतपुरा पर्वत से निकलकर पश्चिम की ओर बहती हुई खंभात की खाड़ी में जा मिली है।
तापत्य–(सं. पुं.) तापती के वंशज, कुरु।
तापत्रय–(सं. पुं.) तीन प्रकार के दुःख; यथा–आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।
तापन–(सं. पुं.) ताप देनेवाला, सूर्य, सूर्यकान्त मणि, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, मदार का वृक्ष, ढोलक बाजा, एक नरक का नाम, तन्त्र का वह प्रयोग जिसके अभिचार से शत्रु को पीड़ा होती है।
तापना–(हिं. क्रि. अ., स.) अग्नि की गरमी से अपने शरीर को गरम करना, शरीर गरम करने के लिये आग जलाना, फूंकना, नष्ट करना।
तापनीय–(सं. स्त्री.) एक उपनिषद् का नाम; (वि.) सुवर्णमय, गरम होने योग्य।
तापमान–(सं. पुं.) वायुमंडल, शरीर आदि की किसी समय की उष्णता या तापक्रम की मात्रा।
तापमान यंत्र–(सं.पुं.) तापमान की मात्रा नापने का यन्त्र जिसको अँगरेजी में थर्मामीटर कहते हैं।
तापश्चित–(सं. स्त्री.) यज्ञ की अग्नि का एक भेद, एक यज्ञ का नाम।
तापस–(सं. पुं.) तपस्या करनेवाला, तपस्वी, दौना नामक पौधा, तमालपत्र, तेजपत्ता, एक प्रकार का बगला।
तापसक–(सं. पुं.) सामान्य योगी, छोटा तपस्वी।
तापसज–(सं. पुं.) तमालपत्र, तेजपत्ता।
तापसतरु–(सं. पुं.) हिंगोट का वृक्ष।
तापसद्रुम–(सं. पुं.) देखें 'तापसतरु'।
तापसपत्री–(सं. स्त्री.) दमनक, दौना।
तापसप्रिय–(सं. पुं.) चिरौंजी का वृक्ष।
तापसप्रिया–(सं. स्त्री.) द्राक्षा, मुनक्का।
तापसवृक्ष–(सं. पुं.) देखें 'तापसतरु'।
तापसी–(सं. स्त्री.) तपस्या करनेवाली स्त्री, तपस्वी की स्त्री।
तापस्य–(सं. पुं.) तापस धर्म।
तापस्वेद–(सं. पुं.) आँच आदि की सेंक

के द्वारा पसीना निकालने की विधि।
तापहर–(सं. वि.) तापनाशक, ज्वर को दूर करनेवाला।
तापहरी–(सं. स्त्री.) उरदी की वरी और चावल की बनी हुई खिचड़ी।
तापा–(हि.पुं.) मछली मारने का साधन, मुरगी का दरबा।
तापिक–(सं.वि.) ताप या गरमी से उत्पन्न होनेवाला।
तापिच्छ–(सं. पुं.) तमालवृक्ष, एक प्रकार का फल।
तापित–(सं. वि.) तापयुक्त, जो तपाया गया हो, दुःखित, पीड़ित।
तापी–(सं. वि.) तापक, ताप देनेवाला, तापयुक्त, जिसमें ताप हो; (स्त्री.) सूर्य की कन्या, ताप्ती नदी, यमुना नदी।
तापेश्वर–(सं. पुं.) एक तीर्थ का नाम।
ताब–(फा. स्त्री.) हिम्मत, सामर्थ्य, धैर्य।
ताबड़-तोड़–(हि. अव्य.) लगातार, क्रम से, बराबर।
ताबे–(अ. वि.) वशीभूत, अधीन, मातहत।
ताबेदार–(फा. वि.,पुं.) आदेश का पालन करनेवाला, सेवक, दास।
ताबेदारी–(फा. स्त्री.) आज्ञा-पालन, सेवा, दासता।
ताम–(सं.वि.) भयंकर, डरावना; (पुं.) दोष, विकार, दुःख, क्लेश, कष्ट, व्याकुलता, घबड़ाहट, ग्लानि, पाप; (हि. पुं.) क्रोध, अन्धकार, अँधेरा।
तामजान–(हि. पुं) बिना छत्र की एक प्रकार की खुली पालकी।
तामड़ा–(हि. वि.) ताँबे के समान रंग का; (पुं.) ऊदे (बैंगनी) रंग का एक प्रकार का पत्थर, एक प्रकार का कागज, गंजी खोपड़ी।
तामर–(सं. पुं.) जल, घृत, घी।
तामरस–(सं. पुं.) पद्म, कमल, सोना, ताँबा, धतूरा, सारस पक्षी, एक प्रकार का छन्द जिसमें बारह अक्षर होते हैं।
तामरसी–(सं.स्त्री.) पद्मिनी, कमलिनी।
तामलकी–(सं. स्त्री.) भुइँआँवला।
तामलूक–(हि.पुं.) ताम्रलिप्त, बंग देश के एक प्रान्त का नाम।
तामलेट–(हि.पुं.) (अंगरेजी 'टम्बलर' शब्द का अपभ्रंश) टीन या लोहे के गिलास के आकार का पात्र।
तामस–(सं. पुं.) सर्प, साँप, दुष्ट, उल्लू, क्रोध, अज्ञान, मोह, अन्धकार, अँधेरा, चतुर्थ मनु का नाम, शिव के एक अनुचर का नाम; (वि.) जिसमें तमोगुण प्रधान हो; –बाण–(पुं.) एक शस्त्र का नाम; –मद्य–(पुं.) मदिरा जो कई बार खींची (चुआई) गई हो; –संन्यासी–(पुं.) गृहस्थाश्रम त्यागकर मोक्ष की कामना से जंगल-जंगल घूम-घूमकर तपस्या करनेवाला मनुष्य।
तामसिक–(सं. पुं.) तमोगुण का भाव; (वि.) तामसी।
तामसी–(सं. वि. स्त्री.) तमोगुणवाली; (स्त्री.) अँधेरी रात, महाकाली, जटामासी, बालछड़, एक प्रकार की महाविद्या।
तामिल–(पुं., स्त्री.) दक्षिण भारत की एक जाति और उनकी भाषा, द्रविड़ भाषा।
तामिस्र–(सं. पुं.) एक नरक का नाम जहाँ सर्वदा घोर अन्धकार बना रहता है, क्रोध, द्वेष, वह क्रोध जो भोग की इच्छा-पूर्ति न होने पर आता है।
तामील–(अ. स्त्री.) आज्ञा का पालन, अमल करना।
तामेसरी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का तामड़ा रंग जो ताँबे के योग से बनाया जाता है।
ताम्र–(सं.पुं.) ताँबा नामक धातु; महिषासुर के एक प्रधान सेनापति का नाम; –क–(पुं.) ताम्र, ताँबा; –कर्णी–(पुं.) ताँबे का पात्र बनानेवाला; –कार–(पुं.) कसेरा जाति; –कीट–(पुं.) बीरबहूटी नामक कीड़ा; –कुंड–(पुं.) वह ताँबे का पात्र जिसमें पूजा का जल गिराया जाता है; –कुट्ट–(पुं.) तमाखू का पौधा; –कूट–(पुं.) तमाखू का पौधा; –कृमि–(पुं.) देखें 'ताम्र-कीट', बीरबहूटी; –गर्भ–(पुं.) तुत्थ, तूतिया; –चक्षु–(पुं.) कपोत, कबूतर; (वि.) लाल नेत्रोंवाला; –चूड़–(पुं.) कुक्कुट, कुकरौंधा, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम; –तनु–(वि.) जिसके शरीर का रंग ताँबे के समान हो; –तुंड–(पुं.) लाल मुँह का एक प्रकार का बन्दर; –त्व–(पुं.) रक्तवर्ण, लाली; –द्रु–(पुं.) रक्त चन्दन, लाल चंदन; –धातु–(पुं.) ताम्र, ताँबा; –धूम्र–(पुं.) तामड़ा, लाल रंग; –ध्वज–(पुं.) मयूरध्वज के पुत्र का नाम जिन्होंने श्रीकृष्ण और अर्जुन को युद्ध में हराया था; –पक्षा–(स्त्री.) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम; –पक्षी–(पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; –पट्ट, –पत्र–(पुं.) लाल रंग के पत्तोंवाला एक प्रकार का वृक्ष; ताँबे की चद्दर का टुकड़ा जिस पर प्राचीन समय में दानपत्र आदि खुदवाये जाते थे; लाल रंग की नई पत्ती; –पत्रक–(पुं.) देखें 'ताम्रपत्र'; –पर्ण–(पुं.) सिंहलद्वीप का प्राचीन नाम; –पर्णी–(स्त्री.) मद्रास के अन्तर्गत तिन्नेवेलि जिले की एक नदी, सिंहल द्वीप का एक नगर, सरोवर, तालाव, मजीठ; –पल्लव–(पुं.) अशोक वृक्ष; –पाकी–(पुं.) पाकर का वृक्ष; –पात्र–(पुं.) तर्पण आदि करने का ताँबे का पात्र; –पादी–(स्त्री.) हंसपदी नामक लता; –पुष्प–(पुं.) लाल फूल का कचनार; –पुष्पी–(स्त्री.) धव का वृक्ष, नारंगी का पेड़; –फल–(पुं.) लाल रंग का फल; –फलक–(पुं.) ताँबे की चद्दर का टुकड़ा; –मुख–(वि.) जिसका मुख लाल रंग का हो; –मूला–(स्त्री.) जवासा, लजालू, कवाच, मजीठ, लाल जड़वाला वृक्ष; –मृग–(पुं) लाल रग का हिरन; –लिप्त–(पुं.) तमलक नामक स्थान का प्राचीन नाम; –वर्ण–(पुं.) लाल रंग, सिंहल द्वीप, लंका; –वर्णी–(स्त्री.) अड़हुल का फूल; –वल्ली–(स्त्री.) मञ्जिष्ठा, मजीठ; –वीज–(पुं.) कुलथी, वह वृक्ष जिसके फल लाल होते हों; –वृंत–(पुं.) कुलथी का पौधा या बीज; –वृक्ष–(पुं.) लाल चन्दन का वृक्ष, कुलथी; –शासन–(पुं.) राजा का अनुशासन जो ताँबे की चद्दर पर खुदा हो; –शिखी–(पुं.) कुक्कुट; –सार–(पुं.) रक्तचन्दन, रक्तसार; –सारक–(पुं.) लाल खैर।
ताम्रा–(सं.स्त्री.) दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम, गुंजा, घुंघची की लता।
ताम्राक्ष–(सं. पुं.) कोकिल, कोयल; (वि.) जिसकी आँखें लाल हों।
ताम्राभ–(सं. पुं.) लाल चन्दन; (वि.) जिसमें लाल रंग की आभा हो।
ताम्रार्ध–(सं. पुं.) काँसा नामक धातु।
ताम्रावती–(सं.स्त्री.) एक नदी का नाम।
ताम्राश्म–(सं.पुं.) पद्मराग नामक मणि।
ताम्रिक–(सं. पुं.) कसेरा; (वि.) ताँबे का बना हुआ।
ताम्रिका–(सं. स्त्री.) घुंघची, एक प्रकार का प्राचीन बाजा।
ताम्री–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का बाजा, प्राचीन काल की समय बतलाने की जल-घड़ी।
ताम्रेश्वर–(सं. पुं.) पारद के योग से बना

हुआ ताम्र का भस्म।
ताम्रोपजीवी–(सं.पुं.) कांस्यकार, कसेरा।
ताम्रोष्ठ–(सं. पुं.) जिसके ओठ लाल रंग के हों।
तायँ–(हि. अव्य.) तक।
ताय–(हि. पुं.) ताप, गरमी, धूप, उष्णता, जलन; (सर्व.) देखें 'ताहि'।
तायदाद–(हि. स्त्री.) देखें 'तादाद'।
तायना–(हि. क्रि. स.) तपाना, गरम करना।
ताया–(हि. पुं.) पिता का बड़ा भाई, बड़ा चाचा।
तायु–(सं. पुं.) दस्यु, चोर।
तार–(सं. पुं.) रूपा, चाँदी, प्रणव, ॐकार मन्त्र, एक प्रकार का बन्दर, शुद्ध मोती, तारण, उद्धार, विष्णु, शिव, नक्षत्र, तारा, तीव्र शब्द, तीर, किनारा, ऊँचा स्वर, वह वर्णवृत्त जिसमें अठारह अक्षर होते हैं; (वि.) निर्मल, स्वच्छ; (हि. पुं.) धातु को खींचकर बनाया हुआ सूत, वह तार जिससे बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान को समाचार भेजा जाता है, समाचार जो इस प्रकार आता-जाता है, सूत्र, तागा, परम्परा, क्रम, युक्ति, उपाय, कार्य-सिद्धि का सुयोग, व्यवस्था, सुविधा, संगीत का एक सप्तक, करताल, मजीरा, तल, सतह, कान म पहिनने का एक गहना तरकी; (मुहा.)–**तार करना**–सूत-सूत अलगाना; –**बँधना**–किसी कार्यक्रम का आरंभ होना; –**बैठना**–सुविधा होना।
तारक–(सं. पुं.) चक्षु, आँख, आँख की पुतली, नक्षत्र, तारा, तारकासुर, वह जो पार उतारता हो, भवसागर से पार करनेवाला, राम का षडक्षर मन्त्र, एक वणवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं, भिलावाँ; –**जित्**–(पुं.) स्कंद या कार्तिकेय जिन्होंने तारकासुर का वध किया था; –**टोड़ी**–(हि. स्त्री.) एक राग का नाम; –**तीर्थ**–(पुं.) गया तीर्थ; –**ब्रह्म**–(पुं.) राम का षडक्षर मन्त्र 'ॐरामाय नमः'; रामतारक मन्त्र।
तार-कमानी–(हि. स्त्री.) तार लगा हुआ धनुष जो नगों के काटने के काम में आता है, जेब घड़ी की महीन कमानी।
तारकश–(हि. पुं.) वह जो धातु के तार खींचता हो।
तारकशी–(हि. स्त्री.) तार खींचने का व्यवसाय।
तारकांत–(सं. पुं.) कुमार कार्तिकेय।
तारका–(सं. स्त्री.) तारा, नक्षत्र, आँख की पुतली, इन्द्रवारुणी नामक लता, मुक्ता, मोती, देवताड़ नामक वृक्ष, वालि की स्त्री तारा, नाराच नामक छन्द का नाम, देखें 'ताड़का'।
तारकाक्ष, तारकाख्य–(सं. पुं.) तारकासुर के बड़े पुत्र का नाम।
तारकामय–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
तारकायण–(सं. पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
तारकासुर–(सं. पुं.) एक असुर का नाम जो शिव के पुत्र स्कंद या कार्तिकेय द्वारा मारा गया था।
तारकित–(सं. वि.) नक्षत्रयुक्त, जो तारों से सुशोभित हो।
तारकिनी–(सं.स्त्री.) नक्षत्रों से पूर्ण रात्रि।
तारकूट–(हि. पुं.) चाँदी और पीतल के योग से बनी हुई एक धातु।
तारकेश्वर–(सं. पुं.) हुगली जिला के अन्तर्गत एक पुण्य स्थान, महादेव, शिव।
तारकोल–(हि. पुं.) अलकतरा।
तारघर–(हि. पुं.) वह घर जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजा जाता और प्राप्त होता है।
तारघाट–(सं. पुं.) कार्यसिद्धि का उपाय, व्यवस्था।
तारण–(सं. पुं.) तेली, विष्णु, पार उतरने की क्रिया, उद्धार, निस्तार, साठ संवत्सरों में से अठारहवाँ वर्ष; (वि.) तारण या उद्धार करनेवाला।
तारणि–(सं. स्त्री.) नौका, नाव।
तारणी–(सं. स्त्री.) तारणि, कश्यप की एक पत्नी का नाम।
तारतम्य–(सं. पुं.) न्यूनाधिक्य, कमी-बढ़ती का हिसाब, कमी-बेशी के हिसाब का क्रम; परिमाण, गुण आदि का परस्पर मेल; –**बोध**–(पुं.) अनक पदार्थों में से अच्छे-बुरे की पहिचान।
तारतोड़–(हि. पुं.) कारचोबी का काम।
तारदी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का काँटे-दार वृक्ष।
तारन–(हि. पुं.) छत या छाजन का ढालुआँ भाग, देखें 'तारण'।
तारना–(हि.क्रि.स.) पार लगाना, उद्धार करना, मुक्त करना, भवसागर से पार करना, सब क्लेशों से निवृत्त करना।
तारनाद–(सं. पुं.) उच्चनाद।
तारपीन–(हि. पुं.) एक प्रकार का तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।
तारपुष्प–(सं. पुं.) कुन्द का पुष्प।
तारबर्की–(हि.स्त्री.) वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार भेजा जाता है।
तारमाक्षिक–(सं. पुं.) चाँदी के योग से बनी एक उपधातु।
तारयिता–(सं.पुं.) उद्धार करनेवाला, तारनेवाला, निस्तार करनेवाला।
तारल्य–(सं. पुं.) तरल का गुण, द्रवत्व।
तारा–(सं. स्त्री.) वानरराज वालि की पत्नी का नाम, अश्विनी नक्षत्र, दस महाविद्याओं में से एक का नाम; (पुं.) आँख की पुतली, नक्षत्र, तारका, भाग्य, सितारा; (मुहा.)–**टूटना**–उल्का-पात, तारे का आकाश से टूटकर पृथ्वी पर गिरना; –**डूबना**–शुक्रास्त होना; **तारे गिनना**–चिन्ता के कारण रात में नींद न आना; **तारे तोड़ लाना**–किसी बड़े कठिन कार्य को पूरा करना; **तारों की छाँह**–सवेरे, बहुत तड़के।
ताराकूट–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष में विवाह स्थिर करने के लिए वर और कन्या के शुभाशुभ फल को सूचित करनेवाला एक योग।
ताराक्ष–(सं. पुं.) एक दैत्य का नाम।
ताराग्रह–(सं. पुं.) मंगल, बुध, शुक्र, गुरु और शनैश्चर ग्रह।
ताराचक्र–(सं. पुं.) एक तन्त्रोक्त चक्रभेद।
तारादेवी–(सं. स्त्री.) एक महाविद्या का नाम।
ताराधिप, ताराधीश, तारानाथ–(सं. पुं.) चन्द्रमा, शिव, महादेव, बृहस्पति, वालि और सुग्रीव, नक्षत्रों के अधिपति, तारापति।
तारापथ–(सं. पुं.) आकाश, आसमान।
तारापीड–(सं. पुं.) चन्द्रमा, राजा चन्द्रापीड के एक पुत्र का नाम।
ताराभ–(सं. पुं.) पारद।
ताराभ्र–(सं. पुं.) कर्पूर, कपूर।
तारामंडल–(सं. पुं.) नक्षत्र-मण्डल, नक्षत्रों का समूह, एक प्रकार की अग्नि-क्रीड़ा।
तारामयी–(सं. वि. स्त्री.) तारा-जटित।
तारामृग–(सं. पुं.) मृगशिरा नक्षत्र।
तारायण–(सं. पुं.) आकाश, आसमान।
तारावती–(सं.स्त्री.) इक्ष्वाकु-वंशी राजा चन्द्रशेखर की पत्नी का नाम; एक दुर्गा।
तारावर्ष–(सं. पुं.) ताराओं का गिरना, उल्कापात।

तारावली–(सं. स्त्री.) मणिभद्र यक्ष की कन्या का नाम, तारों का समूह।

तारिका–(सं.स्त्री.) ताड़ी नामक मदिरा।

तारिणी–(सं. स्त्री.) बौद्धों की एक देवी का नाम; (वि. स्त्री.) उद्धारिणी, उद्धार या निस्तार करनेवाली।

तारी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का पक्षी; समाधिस्थान, देख 'ताली'; (सं. वि.) तारनवाला।

तारीख–(अ. स्त्री.) दिनांक, दिन, निश्चित किया हुआ दिन; (मुहा.) **–टलना**–किसी काम का निश्चित दिन पर न होकर दूसरे दिन के लिए स्थगित होना; **–डालना**–तारीख निश्चित करना; **–पड़ना**–तारीख निश्चित होना।

तारीफ–(अ. स्त्री.) प्रशंसा, बड़ाई, परिचय, विशेषता।

तारुण–(सं. वि.) तरुण, युवा अवस्था का।

तारुण्य–(सं. पुं.) युवावस्था, यौवन, जवानी।

तारेश–(सं. पुं.) चन्द्रमा।

तार्किक–(सं. वि., पुं.) तर्कशास्त्र का जाननवाला, तर्क शास्त्र संबंधी।

तार्क्ष–(सं. पुं.) कश्यप ऋषि, गरुड़।

तार्क्षी–(सं.स्त्री.) गरुड़, छिरेटा की लता।

तार्क्ष्य–(सं. पुं.) गरुड़, घोड़ा, सोना, रथ, महादेव; **–केतन**– (पुं.) गरुड़ध्वज, विष्णु; **–ध्वज**–(पुं.) देखें 'तार्क्ष्यकेतन'; **–प्रसव**–(पुं.) एक प्रकार का साल का वृक्ष; **–शैल**–(पुं.) रसाञ्जन, रसवत।

तार्ण–(सं. वि.) घास से संबंध रखनेवाला, घास का बना हुआ; (पुं.) घास से उत्पन्न अग्नि।

तार्य–(सं. वि.) पार करने योग्य।

ताल–(सं. पुं.) करतल, हथेली, करतल-ध्वनि, ताली, हरताल, तालीशपत्र, हाथी के कान फटकारने से उत्पन्न शब्द, दुर्गा के सिंह का नाम, ताड़ का पेड़, महादेव, एक नरक का नाम, तलवार की मूट, बेल का फल, उपनेत्र (चश्मे) के पत्थर या काँच का एक पल्ला, एक वित्ते की नाप, ताला, मजीरा, झांझ, वह शब्द जो जाँघ या बाहु पर हथेली से मारने पर उत्पन्न होता है, नाचने-गाने में तान के काल और क्रिया का परिमाण जो हाथ से हाथ पर ठोंक कर सूचित किया जाता है; (हिं. पुं.) तालाव; (मुहा.) **–ठोंकना**–लड़ने के लिये ललकारना।

तालकंद–(सं. पुं.) तालमूली, मूसली।

तालक–(सं.पुं.) हरताल, ताड़ का वृक्ष, गोपीचन्दन, ताला, द्वार का कपाट।

तालकरीर–(सं.पुं.) ताड़का कोमल पत्ता।

तालकाभ–(सं.पु.) हलदी का पीला रंग।

तालकी–(सं. स्त्री.) तालरस, ताड़ी।

तालकूटा–(हि.पुं.) झाँझ बजाकर भजन गानेवाला।

तालकेतु–(सं. वि., पुं.) जिसके पताका पर ताड़ का चिह्न हो, भीष्म, बलराम।

तालकोश–(सं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।

तालक्षीर–(सं.पुं.) खजूर की चीनी, ताड़ी।

तालगर्भ–(सं. पुं.) ताड़ का गूदा।

तालजंघ–(सं.पु.) एक प्राचीन देश का नाम।

तालजटा–(सं.स्त्री.) ताड़ के वृक्ष की जटा।

तालध्वज–(सं. वि., पुं.) देखें 'तालकेतु', बलराम।

तालनवमी–(सं. स्त्री.) भादों सुदी नवमी।

तालपत्र–(सं. पुं.) कान में पहिनने की तरकी, ताड़ का पत्ता।

तालपत्रिका–(सं.स्त्री.) तालमूली, मूसली।

तालपर्णी–(सं. स्त्री.) सौंफ, कपूरकचरी, मूसली, सोआ का साग।

तालपुष्प, तालपुष्पक–(सं. पुं.) ताड़ के पेड़ की जटा।

तालबंद–(हिं. पुं.) वह हिसाब जिसमें आय का प्रत्येक मद अलग-अलग दिखलाई जाती है।

ताल-बेताल–(हिं.पुं.) दो यक्ष या देवता जिनको राजा विक्रमादित्य ने अपने वश म कर लिया था और वे सर्वदा उनकी सेवा में रहा करते थे।

तालमखाना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा काँटेदार वृक्ष जिसके बीज औषध में प्रयुक्त होते हैं; देखें 'मखाना'।

तालमर्दक–(सं.पुं.) एक प्रकार का बाजा।

तालमूलिका, तालमूली–(सं.स्त्री.) मसली।

तालमेल–(हि.पु.) ताल-सुर का मिलान, मेलजोल, अनुकूल संयोग, सुअवसर।

तालयंत्र–(सं. पुं.) एक प्रकार का यन्त्र जो नाक, कान तथा नाड़ी के शल्य-कर्म में प्रयुक्त होता था।

तालरस–(सं. पुं.) ताड़ का मद्य, ताड़ी।

ताललक्षण–(सं.पुं.) बलराम, तालध्वज।

तालवन–(सं. पुं.) ताड़ के पेड़ों का वन या जंगल, मधुवन के पास व्रज के एक जंगल का नाम।

तालवाही–(सं.वि.) (वह बाजा) जिससे ताल दिया जाय।

तालवृंत–(सं. पुं.) ताड़ के पत्ते का बना हुआ पंखा।

तालव्य–(सं. वि.) तालु से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण)–इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य और श–ये वर्ण तालव्य हैं।

तालशस्य–(सं. पुं.) ताड़ के फल के भीतर का गूदा।

तालसत्व–(सं. पुं.) हरताल का भस्म।

तालस्कंध–(सं. पुं.) एक प्राचीन अस्त्र का नाम, तमाल-वृक्ष।

ताला–(हिं.पुं.) किवाड़, सन्दूक आदि को बन्द करने का वह यन्त्र जो विशिष्ट ताली से ही खुलता है; (मुहा.) **–तोड़ना**–किसी की वस्तु चुराने के लिये बंद ताले को तोड़ना।

ताला-कुंजी–(हिं. स्त्री.) वह यन्त्र जिससे किवाड़, सन्दूक आदि बन्द किया जाता है, लड़कों का एक खेल।

तालाब–(हिं. पुं.) जलाशय, सरोवर।

तालावली–(हिं. स्त्री.) व्याकुलता।

तालावचर–(सं. पुं.) नट।

तालि–(सं. स्त्री.) सुनने में रुकावट, आघात।

तालिक–(सं. पुं.) तमाचा, चपत, ताल-पत्रों को बाँधने का डोरा।

तालिका–(सं. स्त्री.) मूसली, मजीठ, तालपत्र अथवा कागज का पुलिन्दा, सूची, ताली, कुंजी।

तालित–(सं. पुं.) रँगा हुआ वस्त्र, डोरी, रस्सी।

तालिश–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़।

ताली–(सं. स्त्री.) भुइँआमला, मूसली, अरहर, एक प्रकार का छोटा ताड़ का वृक्ष, ताला खोलने का यन्त्र, कुंजी, मेहराब के बीचोबीच पत्थर की पटिया, एक प्रकार का वर्णवृत्त, ताड़ का मद्य, ताड़ी, हथलियों को परस्पर पीटने की क्रिया, करतल-ध्वनि; (हिं.स्त्री.) छोटा ताल या गड़ही; (मुहा.) **–पीटना या बजाना**–उपहास करना, हँसी उड़ाना।

तालीपत्र–(सं. पुं.) देख 'तालीशपत्र'।

तालीम–(अ. स्त्री.) शिक्षा।

तालीयक–(सं. पुं.) करताल, मँजीरा।

तालीश, तालीशपत्र–(सं. पुं.) तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती है; एक प्रकार का भुइँआँवला।

तालु–(सं. पुं.) मुख के भीतर ऊपर की ओर की पूरी छत; **–कंटक**–(पुं.) बच्चों का एक रोग जिसमें तालु धँस जाता है और पतला दस्त होता है;

-क-(पुं.)एक प्रकारका तालु का रोग; **-जिह्व**-(पुं.)कुम्भीर,घड़ियाल, अलि-जिह्वा, गले का कौवा; **-पाक** (पुं.) तालू का एक प्रकार का रोग; **-पात**-(पुं.) बच्चोंके तालु में होनवाला एक रोग; **-यंत्र**-(पुं.) देखें 'तालयंत्र'; **-शोष**-(पुं.) तालू सूखने का रोग।

तालू-(हिं.पुं.)तालु,मुख के भीतर की ऊपरी छत, खोपड़ी के नीचे का भाग; (मुहा.) **-चटकना**-प्यास से मुँह सूखना; **-में दाँत जमना**-कोई अनहित होना; **-से जीभ न लगना**-निरन्तर बकते जाना।

तालूफाड़-(हिं. पुं.) हाथी के तालु में होनेवाला एक रोग।

तालूर-(सं.पुं.) पानी का भँवर, आवर्त।

तालेवर-(हिं.वि.)धनाढ्य,अमीर,धनी।

तालवर्बुद-(सं. पुं.) एक प्रकार का रोग जिसमें तालू में व्रण निकल आता है।

ताव-(हिं. पुं.) वह उष्णता जो किसी वस्तु को गरम करने या पकाने के लिये पहुँचाई जाय, क्रोध का आवेश जिसम अधिकार की झलक हो, अहङ्कार, तत्काल होनेवाली उत्कट इच्छा, कागज का एक तख्ता; (मुहा.) **-आना**-गरम होना; **-खाना**-अग्नि पर गरम होना; **-चढ़ना**-उत्कट इच्छा होना; **-देना**-गरम करना, हथियार आदि पर पानी चढ़ाना; **(मूछों पर)-देना**-गव के कारण मूछों पर हाथ फेरना; **-दिखलाना**-अभिमान सहित क्रोध दिखलाना; **-में आना**-उत्तेजित होना।

तावत्-(सं.अव्य.) उतने परिमाण तक, उतना, उतनी देर तक, वहाँ तक।

तावना-(हिं. क्रि. स.) तपाना, गरम करना, कष्ट देना।

तावन्मात्र-(सं. वि.) उतने ही परिमाण का, उतना।

तावबंद-(हिं.पुं.) एक प्रकार का रासायनिक द्रव्य जिसके प्रयोग से तपाने पर भी चाँदी के खोटापन का पता नहीं चलता।

तावभाव-(हिं.पुं.)परिस्थिति, उपयुक्त अवसर, मौका।

तावर-(सं.पुं.)धनुष की डोरी,चिल्ला।

तावरी-(हिं. स्त्री.) दाह, ताप, घर्म, धूप, घाम, ज्वर, मूर्च्छा, सिर का चक्कर।

तावान-(फा. पुं.) हरजाना, अर्थ-दंड।

ताविष-(सं. पुं.) स्वर्ग, समुद्र।

ताविषी-(सं.स्त्री.)देवकन्या,पृथ्वी, नदी।

तावीज-(अ. पुं.) यंत्र-मंत्र का संपुट जो किसी अनिष्ट से रक्षा के लिए अंग पर धारण किया जाय, जंतर।

तावीषी-(सं.स्त्री.)इन्द्र की कन्याका नाम।

ताश-(हि.पुं.)खेलने के लिये मोटे कागज के आयताकार ५२ टुकड़े जिनपर लाल या काले रंग की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं, ताश का खेल,एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा, तागा लपेटने की मोटे कागज की छोटी दफ्ती।

ताशा(सा)-(हिं.पुं.) चमड़ा मढ़ा हुआ खपचियों से बजाया जानेवाला एक बाजा।

तासला-(हिं. पुं.) भालू के गले में बँधी हुई रस्सी जिसको पकड़कर कलन्दर उसको नचाते हैं।

तासीर-(अ. स्त्री.) असर, प्रभाव।

तासु-(हिं. सर्व.) उसका।

तासों-(हिं. सव.) उससे।

तास्कर्य-(सं. पुं.) तस्करता, चोरी।

ताहम-(फा. अव्य.) तो भी।

ताहि-(हिं. सर्व.) उसको, उसे।

ताहीं-(हिं. अव्य.) ताईं, तई।

तितिडी-(सं. स्त्री.) इमली।

ति-(हिं. आदि पद.) कुछ यौगिक पदों के आरंभ म तीन का सूचक शब्द, जैसे-तिकोना, तिआह आदि।

तिआ-(हिं. स्त्री.) देखें 'तिया'।

तिआह-(हिं.वि.,पुं.) (जिस पुरुष) का तीसरा विवाह होने को हो।

तिकड़म-(हिं. पुं.) युक्ति, उपाय।

तिकड़मी-(हिं. वि.) तिकड़म करनेवाला।

तिकड़ी-(हिं. स्त्री.) वह जिसमें तीन कड़ियाँ हों, तीन-तीन रस्सियों को एक साथ लेकर चारपाई बिनन की विधि।

तिकोन-(हिं. वि.) तिकोना।

तिकोना-(हिं.वि.)तीन कोनोंवाला;(पुं.) एक प्रकार का नमकीन पकवान, समोसा।

तिकोनिया-(हिं. वि.) तीन कोनों का, त्रिकोण।

तिक्का-(हिं. पुं.) वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ रहती हैं।

तिक्की-(हिं.स्त्री.)ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ रहती हैं।

तिक्ख-(हिं. वि.) तीक्ष्ण, तीखा, चोखा, चतुर।

तिक्त-(सं. पुं.) पित्तपापड़ा, कुटज वृक्ष; (वि.) कटु स्वादवाला, तीता, कड़ुआ, नीम या चिरायते के स्वाद का; **-कंदिका**-(स्त्री.)वनकचूर; **-क**-(पुं.) परवल, चिरायता, काला खैर, नीम का वृक्ष, तीता रस, इंगुदी वृक्ष, कुटज; **-कांड**-(पुं.) भूनिंब, चिरायता; **-का**-(स्त्री.)कड़ुआ कद्दू,का कजंघा; **-कोशातकी**-(स्त्री.) कड़ुई तरोई; **-गंधा**-(स्त्री.) वाराहीकन्द, सफेद सरसों; **-गुंजा**-(स्त्री.) करंज; **-तंडुला**-(स्त्री.) पिप्पली, पीपल; **-ता**-(स्त्री.) तीतापन, कड़ुआपन; **-तुंडी**-(स्त्री.)कड़ुई तरोई की लता; **-तुंबी**-(स्त्री.) तितलौकी; **-दुग्धा**-(स्त्री.) खिरनी, मेढ़ासिंगी; **-धातु**-(पुं.)पित्त; **-पत्र**-(पुं.)ककोड़ा,खखसा, कड़ुई पत्ती; **-पर्णिका, -पर्णी**-(स्त्री.)कचरी, पेंहटा; **-पर्वा**-(स्त्री.) गुरुच,मुलेठी,दूब; **-पुष्पा**-(स्त्री.)पाठा; **-फल**-(पुं.) केतक का वृक्ष, रीठा; (वि.) कड़वे फलवाला; **-फला**-(स्त्री.) भटकटैया; **-भद्रक**-(पुं.)पटोल,परवल; **-यवा**-(स्त्री.)शंखिनी लता; **-रोहिणी**-(स्त्री.)कुटकी; **-वल्ली**-(स्त्री.)मरोड़ फली, मूर्वा; **-बीजा**-(स्त्री.) तितलौकी; **-शाक**-(पुं.) एक प्रकार का कड़ुआ साग; **-सार**-(पुं.) खदिर, खैर।

तिक्ता-(सं. स्त्री.) कुटकी, पाठा, नकछिकनी।

तिक्तिका-(सं.स्त्री.) कुटकी, तितलौकी।

तिक्ष-(हिं. वि.) तीक्ष्ण, तीखा, चोखा।

तिक्षता-(हिं.स्त्री.) तीक्ष्णता, चोखापन, तेजी।

तिखाई-(हिं. स्त्री.)तीक्ष्णता, तीखापन।

तिखारना-(हिं. क्रि. अ.) सहेजना, कई बार कहना।

तिखूंटा-(हिं. वि.) त्रिकोण, जिसमें तीन कोन हों, तिकोना।

तिगुना-(हिं. वि.) तीन बार अधिक, तीन गुना।

तिग्म-(सं. पुं.) वज्र, पिप्पली, पीपल; (वि.) तीक्ष्ण, तेज; **-कर**-(पुं.) सूर्य, तेज प्रकाश; **-जंभ**-(वि.) तेज तापवाला; **-ता**-(स्त्री.) तीक्ष्णता; **-दीधिति**-(पुं.)तिग्मांशु,सूर्य; **-मन्यु**-(वि.)जिसको अधिक क्रोध हो; (पुं.) शिव, महादेव; **-रश्मि**-(पुं.) सूर्य; (वि.) जिसकी किरण तीव्र हो; **-श्रृंग**-(वि.) नुकीला सींगवाला; **-हेति**-(स्त्री.) तीक्ष्ण ज्वाला।

तिग्मांशु-(सं. पुं.) सूर्य, तीव्र प्रकाश; (वि.) जिसकी किरण तीव्र हो।

तिग्मायुध-(सं. पुं.) पैना शस्त्र।

तिच्छ-(हिं. वि.) तीक्ष्ण।

तिच्छन-(हिं. वि.) तीक्ष्ण, तेज।

तिजरा–(हिं. पुं.) तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, तिजारी।
तिजहरिया, तिजहरी–(हिं. स्त्री.) तीसरा पहर।
तिजारत–(अ. स्त्री.) व्यापार, रोजगार।
तिजारी–(हिं. स्त्री.) जाड़ा देकर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।
तिजिल–(सं. पुं.) चन्द्रमा, राक्षस।
तिजोरी–(हिं. स्त्री.) लोहे का सन्दूक।
तिड़ी–(हिं. स्त्री.) ताश का वह पत्ता जिसम तीन बूटियाँ हों; (मुहा.) **–करना**–हटा देना, छितराना।
तिड़ीबिड़ी–(हिं. वि.) अस्तव्यस्त, छितराया हुआ, तितर-बितर।
तित–(हिं. अव्य.) तहाँ, वहाँ, उधर की ओर, उस ओर।
तितउ–(सं. पुं.) छलनी, चलनी, छाता।
तितना–(हिं. वि.) उतने परिमाण का, उतना।
तितर-बितर–(हिं. वि., अव्य.) अव्यवस्थित, बिखरा हुआ, छितराया हुआ, तिड़ी-बिड़ी।
तितरोखी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा पक्षी।
तितली–(हिं. स्त्री.) एक उड़नेवाला रंग-बिरंगे परों का कीड़ा या फतिंगा जो फलों के पराग और रस चूसकर जीता है, एक प्रकार की घास जो गेहूँ, जव आदि के साथ उपजती है।
तितलौआ–(हिं.पुं.) कड़ुआ कद्दू, तितलौकी।
तितलौकी–(हिं. स्त्री.) कड़ुआ कद्दू।
तितारा–(हिं. पुं.) सितार के प्रकार का बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते है, खेत की तीसरी बार की सिंचाई।
तितिक्ष–(सं. वि.) जो सरदी-गरमी को समान भाव से सहन करता हो, सहनशील; (पुं.) एक ऋषि का नाम।
तितिक्षा–(सं. स्त्री.) सरदी-गरमी सहन करने की सामर्थ्य, क्षमा, शान्ति।
तितिक्षित–(सं. वि.) सहिष्णु, क्षान्त।
तितिक्षु–(सं. वि.) क्षमाशील, क्षान्त, सहिष्णु।
तितिभ–(सं.पुं.) इन्द्रगोप, बीरबहूटी, जुगनू।
तितिर–(सं. पुं.) तीतर नाम का पक्षी।
तितिल–(सं. पुं.) मिट्टी की नाँद, एक प्रकार का तिल का पक्वान्न, ज्योतिष में एक करण का नाम।
तितीर्षा–(सं.स्त्री.) तैरने की अभिलाषा, तर जाने की इच्छा।
तितीर्षु–(सं. वि.) तरने की इच्छा करनेवाला, जो निस्तार प्राप्त करने की इच्छा करता हो।
तित्तिर–(सं. पुं.) तीतर नामक पक्षी, तितली नाम की घास।
तित्तिरि–(सं. पुं.) तीतर नाम का पक्षी, यजुर्वेद की एक शाखा।
तित्तिरीक–(सं. पुं.) आँख में लगाने का एक प्रकार का अंजन जो तीतर के परों को जलाकर बनाया जाता है।
तिते–(हिं. वि.) उतने, उतनी संख्या के।
तितेक–(हिं. वि.) उतना।
तितै–(हिं. अव्य.) वहाँ, उधर, वहीं।
तितो–(हिं. वि.) उतना।
तिथि–(सं. स्त्री.) चान्द्रमास के अलग-अलग दिन, अमावस्या से पूर्णिमा तक तथा पूर्णिमा से अमावस्या तक की चन्द्रमा की कलायें, दिन, मिति, पन्द्रह की संख्या; **–क्षय**–(पुं.) किसी तिथि की हानि, दिन का क्षय; **–पति**–(पुं.) तिथियों के अधिपति; **पत्र**–(पुं.) जंत्री, पंचांग; **– प्रणी –** (पुं.) चन्द्रमा; **–युग्म**–(पुं.) तिथि का जोड़ा, दो तिथियाँ; **–संधि**–(पुं.) दो तिथियों का एक में मिलना।
तिदरी–(हिं. स्त्री.) वह कोठरी जिसमें तीन खिड़कियाँ या दरवाजे हों।
तिदारी–(हिं. स्त्री.) बत्तक के प्रकार का एक पक्षी।
तिधर–(हिं. अव्य.) उस ओर, उधर।
तिधारा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सेंहुड़ जिसमें पत्ते नहीं होते और जिसकी डालियाँ तिकोनी होती हैं।
तिन–(हिं. सर्व.) 'तिस' का बहुवचन; (पुं.) तृण, तिनका।
तिनकना–(हिं. क्रि. अ.) चिढ़ना, क्रुद्ध होना, चिड़चिड़ाना, नाराज होना।
तिनका–(हिं. पुं.) तृण, सूखी घास का टुकड़ा; (मुहा.) **–तोड़ना**–सम्बन्ध का त्याग करना; **तिनके का सहारा**–थोड़ा-सा अवलम्ब; **तिनके को पहाड़ करना**–छोटी-सी बात को बढ़ाकर बखेड़ा करना; **दाँतों में तिनका पकड़ना**–गिड़गिड़ाना, विनय करना।
तिनगना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'तिनकना'।
तिनगरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का पक्वान्न।
तिनपहल, तिनपहला–(हिं. वि.) जिसमें तीन पहल हों, तीन पहलोंवाला।
तिनिश–(सं. पुं.) शीशम की जाति का एक वृक्ष।
तिनुका–(हिं. पुं.) तृण, तिनका।
तिन्ना–(हिं. पुं.) तिन्नी नामक धान, रोटी के साथ खाने की रसेदार तरकारी, एक वर्णवृत्त का नाम।
तिन्नी–(हिं. स्त्री.) तालों में होनेवाला एक प्रकार का छोटा धान, नीवार।
तिन्ह–(हिं. सर्व.) देखें 'तिन'।
तिपति–(हिं. स्त्री.) देखें 'तृप्ति'।
तिपल्ला–(हिं.वि.) जिसमें तीन पल्ले हों।
तिपाई–(हिं. स्त्री.) तीन पायों की छोटी ऊँची चौकी।
तिपाड़–(हिं. पुं.) तीन किनारे या तीन पल्लों की कोई वस्तु, तीन पाट जोड़कर बना हुआ ओढ़ना।
तिबारा–(हिं.वि.,अव्य.) तीसरी बार(का); (पुं.) वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों, तीन बार उतारा हुआ अर्क या मद्य।
तिबासी–(हिं.वि.) (वह खाद्य पदार्थ) जो तीन दिन का बासी हो।
तिब्बत–(पुं.) हिमालय पर्वत के उत्तर के एक देश का नाम, भोट।
तिब्बती–(हिं. वि.) तिब्बत में उत्पन्न, तिब्बत सम्बन्धी; (स्त्री.) तिब्बत की भाषा; (पुं.) तिब्बत देश का रहनेवाला।
तिमंजिला–(हिं. वि.) तीन खण्डों का (गृह आदि)।
तिमिंगिल–(सं. पुं.) ह्वेल नामक मछली, एक प्राचीन द्वीप का नाम।
तिमि–(सं. पुं.) समुद्र में रहनेवाला सब से बड़ा स्तनपायी मत्स्य, ह्वेल मछली, समुद्र, रतौंधी का रोग; (हिं. अव्य.) उस प्रकार से।
तिमिज–(सं. पुं.) तिमि नामक मछली से निकलनेवाला मोती।
तिमित–(सं. वि.) निश्चल, स्थिर, भीगा हुआ, आर्द्र।
तिमिध्वज–(सं. पुं.) एक दानव का नाम जिसको इंद्र ने मारा था।
तिमिर–(सं. पुं.) अन्धकार, अँधेरा, आँखों के आगे धुंधला दिखाई पड़ने का रोग; **–भिद्**–(वि.) अन्धकार को नाश करनेवाला; **–रिपु**–(पुं.) सूर्य, दीपक; **–हर**–(पुं.) सूर्य, दीपक।
तिमिरारि–(सं.पुं.) अन्धकार का शत्रु, सूर्य।
तिमिरारी–(हिं.स्त्री.) अन्धकार का समूह।
तिमिरावलि–(सं. स्त्री.) देखें 'तिमिरारी'।
तिमुहानी–(हिं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ तीन सड़कें या नदियाँ मिली हों।
तिय–(हिं. स्त्री.) स्त्री, पत्नी।
तियला–(हिं. पुं.) स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा।

तिया–(हिं.स्त्री.)वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ हों, देख 'तिय'।
तिरकना–(हिं. क्रि. अ.) तड़कना।
तिरकुटा–(हिं. पुं.) त्रिकटु–सोंठ, मिर्च, पीपल; इन तीनों कटु औषधियों का समुदाय।
तिरखा–(हिं. स्त्री.) तृषा, प्यास।
तिरखित–(हिं. वि.) देखें 'तृषित'।
तिरखूँटा–(हिं.वि.) त्रिकोणयुक्त,तिकोना, जिसमें तीन कोन हों।
तिरछई–(हिं. स्त्री.) तिरछापन।
तिरछा–(हिं. वि.) जो सीधा न हो, टेढ़ा, जो ठीक सीधा न होकर एक ओर झुक गया हो; (पुं.) एक प्रकार का वस्त्र जो अस्तर में लगाया जाता है;–**तिरछा छैला; तिरछी चितवन**–तिर्यक्दृष्टि,सिर को विना घुमाये हुए कनखी से देखना; **तिरछी बात**–अप्रिय या कटु वचन; **तिरछी बैठक**–मलखंभ का एक व्यायाम।
तिरछाई–(हिं. स्त्री.) तिरछापन।
तिरछाना–(हिं. क्रि.अ.) तिरछा होना।
तिरछापन–(हिं.पुं.) तिरछा होने का भाव।
तिरछी–(हिं.स्त्री.) रहर के विना दल के दाने।
तिरछे–(हिं. अव्य.) तिरछी स्थिति, गति आदि में।
तिरछौंहाँ–(हिं. वि.) जो कुछ तिरछापन लिये हो।
तिरछौंहें–(हिं. अव्य.) वक्रता से, तिरछापन लिये हुए।
तिरना–(हिं.क्रि.अ.) पानी के तल के ऊपर रहना, उतराना, तैरना, परना, पार होना, मुक्त होना, उद्धार होना।
तिरनी–(हिं. स्त्री.) घाघरा बाँधने की डोरी, नीवी, तिन्नी, घाघरे या धोती का नाभि के नीचे लटकता हुआ भाग।
तिरप–(हिं.स्त्री.) नाच में एक प्रकार का ताल।
तिरपट, तिरपटा–(हिं. वि.) तिरछा, टेढ़ा।
तिरपन–(हिं. वि.) पचास और तीन की संख्या का; (पुं.) यह संख्या, ५३।
तिरपाई–(हिं. स्त्री.) तीन पायों की छोटी ऊँची चौकी।
तिरपाल–(हिं. पुं.) छाजन में खपड़ों के नीचे विछाने के फूस या सरकंडे के लंबे पूले, मुट्ठा, रंग चढ़ा हुआ टाट।
तिरपित–(हिं. वि.) देख 'तृप्त'।
तिरपौलिया–(हिं. पुं.) वह बड़ा स्थान जिसमें तीन बड़े फाटक हों तथा जिनसे होकर हाथी, ऊँट, घोड़ा आदि सवारियाँ आ सकें।
तिरफला–(हिं. पुं.) देखें त्रिफला; हर्रा, बहेड़ा तथा आँवला।
तिरवेनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'त्रिवेणी'।
तिरमिरा–(हिं. पुं.) दृष्टि का वह दोष जो शरीर की दुर्बलता से उत्पन्न होता है, तीव्र प्रकाश में दृष्टि का स्थिर न रहना, चकाचौंध।
तिरमिराना–(हिं.क्रि.अ.)तीव्र प्रकाश के कारण आँखों का न ठहरना या झपना, चौंधियाना।
तिरश्चीन–(सं. वि.) कुटिल, तिरछा, टेढ़ा;–**गति**–(स्त्री.) मल्ल-युद्ध की एक युक्ति।
तिरसठ–(हिं. वि.) साठ और तीन संख्या का;(पुं.) साठ और तीन की संख्या,६३।
तिरसा–(हिं. पुं.) वह पाल जिसका एक छोर चौड़ा तथा दूसरा सकरा होता है।
तिरस्कर–(सं. पुं.) आच्छादक, परदा; (वि.) ढकनेवाला, ढाँपनेवाला।
तिरस्करिणी–(सं. स्त्री.) परदा, कनात, चिक, ओट, आड़।
तिरस्करी–(हिं. पुं.) परदा, चिक।
तिरस्कार–(सं. पुं.) अपमान, भर्त्सना, अनादर, अपमानपूर्वक त्याग।
तिरस्कारी–(सं.वि.) अपमान करनेवाला।
तिरस्कृत–(सं. वि.) अनादृत, अपमानित किया हुआ, अनादरपूर्वक छोड़ा हुआ, छिपा हुआ; (पुं.) तन्त्रयोग का एक मन्त्र।
तिरस्क्रिया–(सं. स्त्री.) तिरस्कार, अपमान, आच्छादन, वस्त्र, पहिनावा।
तिरहुत–(हिं.पुं.) मिथिला प्रदेश जिसका प्राचीन नाम तीरभुक्ति था।
तिरहुतिया–(हिं. वि. पुं., स्त्री.) तिरहुत सम्वन्धी, तिरहुत देश का निवासी, तिरहुत की भाषा।
तिरानबे–(हिं. वि.) नव्बे और तीन की संख्या का; (पुं.) नव्बे और तीन की संख्या, ९३।
तिराना–(हिं. क्रि. स.) पानी के तल पर ठहराना, उतराना, तैराना, पार करना, निस्तार करना।
तिरासी–(हिं. वि.) अस्सी और तीन की संख्या का; (पुं.) अस्सी और तीन की संख्या, ८३।
तिराहा–(हिं. पुं.) वह स्थान जहाँ तीन मार्ग मिले हों, तिरमुहानी।
तिरिन–(हिं.पुं.) तृण, घास।
तिरिम–(सं. पुं.) एक प्रकार का धान।
तिरिया–(हिं.स्त्री.) स्त्री;–**चरित्तर या चरित्र**–(पुं.) वह चतुराई जो स्त्रियों में स्वाभाविक होती है।
तिरोफल–(हिं.पुं.) दन्ती नामक वृक्ष।
तिरौंदा–(हिं. पुं.) समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिए छिछले पानी में या जहाँ चट्टान रहती है वहाँ रखा जाता है, मछली मारने की वंसी में वँधी हुई छोटी लकड़ी जिसके डूबने से मछली फँसने का पता लगता है।
तिरोगत–(सं. वि.) अदृश्य।
तिरोध–(हिं. स्त्री.) अन्तर्धान।
तिरोधान–(सं. पुं.) अन्तर्धान, अदर्शन।
तिरोधायक–(सं. पुं.) छिपानेवाला, गुप्त करनेवाला।
तिरोभाव–(सं. पुं.) अदर्शन, अन्तर्धान, आच्छादन, गुप्तभाव, गोपन, छिपाव।
तिरोभूत–(सं. वि.) अन्तर्हित, गुप्त, छिपा हुआ।
तिरोहित–(सं. वि.) अन्तर्हित, अदृश्य, छिपा हुआ, आच्छादित, ढपा हुआ।
तिरौंछा–(हिं.वि.) देखें 'तिरछा', तिर्यक्।
तिर्य–(सं. वि.) तिल का वना हुआ।
तिर्यक्–(स. वि.) वक्र, तिरछा, टेढ़ा, आड़ा; (पुं.) पशु-पक्षी आदि जीव, पारद-धातु, पारा; (अव्य.) तिरछा झुका हुआ, तिरछे, आड़े।
तिर्यक्ता–(सं.स्त्री.) तिरछापन, टेढ़ापन।
तिर्यक्त्व–(सं. पुं.) वक्रता, तिरछापन।
तिर्यक्-प्रमाण–(सं. पुं.) विस्तार, चौड़ाई।
तिर्यक्-प्रेक्षण–(सं. पुं.) तिरछी दृष्टि से देखना।
तिर्यक्प्रेक्षी–(सं. वि.) तिरछी दृष्टि से देखनेवाला, ऐंचाताना।
तिर्यक्भेद–(सं.पुं.) दो आधारों पर रखी हुई वस्तु का बीच से टूट जाना।
तिर्यक्लोक–(सं. पुं.) जैन मत के अनुसार वह लोक जहाँ मनुष्य, देव आदि रहते हों।
तिर्यग, तिर्यगीक्ष–(सं. वि.) तिरछी नजर से देखनेवाला।
तिर्यगीश–(सं.पुं.) श्रीकृष्ण का एक नाम।
तिर्यग्ज–(सं.वि.) पशुपक्षी आदि से उत्पन्न।
तिर्यग्गति–(सं.स्त्री.) वक्रगति, तिरछी चाल।
तिर्यग्गमन–(सं.पुं.) वक्र गति, टेढ़ी चाल।
तिर्यग्जन–(सं.पुं.) कुटिलया, कपटी मनुष्य।
तिर्यग्जाति–(सं. स्त्री.) पशु-पक्षियों की जाति।
तिर्यग्दिश–(सं. स्त्री.) उत्तर दिशा।
तिर्यग्धार–(सं. वि.) तीव्र धारवाला।
तिर्यग्नासा–(सं. वि.) टेढ़ी नाकवाला।
तिर्यग्यान–(सं. पुं.) केकड़ा।
तिर्यग्योनि–(सं. स्त्री.) पशु, पक्षी, मृग,

सर्प आदि जीव ।
तिलंगा–(हिं. पुं.) अँगरेजी सेना का देशी सिपाही, एक प्रकार की बड़ी कनकैया या पतंग ।
तिलंगाना–(हिं. पुं.) तैलंग देश ।
तिलंगी–(हिं. वि.) तैलंग देश का; (स्त्री.) एक प्रकार की कनकैया, पतंग, गुड्डी ।
तिल–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसमें काले या सफेद दाने होते हैं और इनको पेरकर तेल निकाला जाता है, बहुत छोटा टुकड़ा या कण, शरीर पर का काले रंग का छोटा धब्बा, गोदना जो काली बिन्दी के आकार का होता है, आँख की पुतली के बीच की गोल बिन्दी; (मुहा.)–**का ताड़ करना**–कोई छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा देना; –**की ओट पहाड़**–किसी छोटी-सी बात के अन्तर्गत बड़ी बात; –**तिल**–(अव्य.) थोड़ा थोड़ा करके; –**धरने की जगह न होना**–स्थान का सर्वथा अभाव होना; –**भर**–(अव्य.) थोड़ा सा ।
तिलक–(सं. पुं.) ललाट या माथा पर चन्दनादि का बनाया हुआ चिह्न जो अंगों की शोभा अथवा धार्मिकता के प्रतीक के रूप में लगाया जाता है, टीका, लोध का वृक्ष, घोड़े की एक जाति, पीपल के वृक्ष का एक भेद, पेट की तिल्ली का एक रोग, संगीत में ध्रुवक का एक भेद, पुन्नाग जाति का एक वृक्ष, राज्याभिषेक, राजगद्दी, स्त्रियों के मस्तक पर धारण करने का एक आभूषण, विवाह-संबंध स्थिर करने की एक रीति, किसी ग्रन्थ की अर्थबोधक व्याख्या, एक प्रकार की छोटी कुरती; (वि.) श्रेष्ठ, शिरोमणि, किसी सम्प्रदाय का श्रेष्ठ (व्यक्ति) ।
तिलककामोद–(सं. पुं.) एक रागिनी का नाम ।
तिलकट–(सं. पुं.) तिल का चूर्ण ।
तिलकना–(हिं. क्रि. अ.) ताल आदि की मिट्टी का सूखकर फटना ।
तिलकमुद्रा–(सं. पुं.) चन्दन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि का छापा जो वैष्णव लोग लगाते हैं ।
तिलकराज–(सं. पुं.) कश्मीर के एक राजा का नाम ।
तिलकल्क–(सं. पुं.) तिल का चूर्ण ।
तिलकहार–(हिं. पुं.) वह मनुष्य जो कन्या की ओर से वर का तिलक चढ़ाने के लिए जाता है ।
तिलका–(सं. स्त्री.) कंठ में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण, हार, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छः अक्षर होते हैं ।
तिलकालक–(सं. पुं.) शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न ।
तिलकाश्रय–(सं. पुं.) ललाट, माथा ।
तिलकिट्ट–(सं. पुं.) तिल की खली ।
तिलकित–(सं. वि.) अंकित, छपा हुआ ।
तिलकी–(सं. वि.) जो तिलक लगाये हुए हो ।
तिलकुट–(हिं. पुं.) तिल को कूटकर चीनी मिलाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई ।
तिलखलि–(सं. स्त्री.) तिल की खली ।
तिलखा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की चिड़िया ।
तिलचटा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का झींगुर, चपड़ा नामक कीट ।
तिलचावली–(हिं. स्त्री.) तिल और चावल की खिचड़ी; (वि. स्त्री.) जो कुछ काली और सफेद हो ।
तिलचूर्ण–(सं. पुं.) तिलकुट ।
तिलच्छद–(सं. पुं.) ईहामृग, भेड़िया ।
तिलछना–(हिं. क्रि. अ.) व्यग्र होना, घबड़ाना, छटपटाना ।
तिलज–(सं. पुं.) तिल का तैल ।
तिलजटा–(सं. स्त्री.) तिल की मंजरी ।
तिलड़ा–(हिं. वि.) तीन लड़ोंवाला, जिसमें तीन लड़ें हों; (पुं.) एक प्रकार की नक्काशी करने की छेनी ।
तिलड़ी–(हिं. स्त्री.) तीन लड़ियों की बनी हुई माला ।
तिल-तैल–(सं. पुं.) तिल्ली का तैल ।
तिलदानी–(हिं. स्त्री.) कपड़े की थैली जिसमें दरजी सुई, तागा आदि रखते हैं ।
तिलनामा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का धान ।
तिलनी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का धान ।
तिलपट्टी, तिलपपड़ी–(हिं. स्त्री.) खाँड़ या गुड़ में पगे हुए तिलों की पपड़ी ।
तिलपर्ण–(सं. पुं.) लाल चन्दन, तिल के पौधे का पत्ता ।
तिलपर्णिका, तिलपर्णी–(सं. स्त्री.) लाल चन्दन ।
तिलपिच्चट–(सं. पुं.) तिल की पीठी ।
तिलपिष्टक–(सं. पुं.) तिल की पीठी ।
तिलपीड़–(सं. पुं.) तैलिक, तेली ।
तिलपुष्प–(सं. पुं.) तिल का फूल, व्याघ्र-नख नामक गंधद्रव्य ।
तिलपुष्पक–(सं. पुं.) बहेड़ा, तिल का फूल, नासिका, नाक ।
तिलबटा–(हिं. पुं.) चौपायों के मुख का एक रोग ।
तिलबर–(हिं. पुं.) एक प्रकार की चिड़िया ।
तिलभाविनी–(सं. स्त्री.) चमेली का पौधा या फूल ।
तिलभुंजा–(हिं. पुं.) तिलकुट ।
तिलभेद–(सं. पुं.) पोस्ते का दाना, खसखस ।
तिलमयूर–(सं. पुं.) एक प्रकार का मोर जिसके पंख पर तिल के समान काले चिह्न होते हैं ।
तिलमिल–(हिं. स्त्री.) तिलमिलाहट, चकाचौंध ।
तिलमिलाना–(हिं. क्रि.अ.) बेचैन होना, चकाचौंध होना ।
तिलमिलाहट–(हिं. स्त्री.) तिलमिलाने की क्रिया या भाव, बेचैनी ।
तिलमोदक–(सं. पुं.) तिल का बना हुआ लड्डू ।
तिलरस–(सं. पुं.) तिल का तेल ।
तिलरा–(हिं. पुं.) टाँकी, रेखा बनाने की कसेरों की छेनी ।
तिलवट–(हिं. पुं.) तिलपट्टी, तिलपपड़ी ।
तिलवन–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिसमें सफेद या नीले फूल लगते हैं ।
तिलवा–(हिं. पुं.) तिल का लड्डू ।
तिलवासिनी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का धान ।
तिलशकरी–(हिं. स्त्री.) तिलपपड़ी ।
तिलशालि–(सं. पुं.) एक प्रकार का सुगन्धित धान ।
तिलस्तुद–(सं. पुं.) तिल का तेल पेरने-वाला, तेली ।
तिलस्नेह–(सं. पुं.) तिल का तेल ।
तिलस्म–(अ. पुं.) जादू, इंद्रजाल, करा-मात, चमत्कार ।
तिलस्मी–(अ. वि.) तिलस्म संबंधी ।
तिलहन–(हिं. पुं.) वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकाला जाता है, सरसों, राई आदि ।
तिलांजलि–(सं. स्त्री.) मृतक संस्कार का एक अंग जो शव जल जाने के बाद स्नान करते समय किया जाता है, इसमें अंजली में पानी भरकर तथा तिल डालकर मृतक के नाम पर तर्पण किया जाता है ।
तिलांबु–(सं. पुं.) तिल मिला हुआ जल ।
तिला–(हिं. पुं.) वह तेल या लेप जो लिङ्गेन्द्रिय की शिथिलता को दूर करने के लिये लगाया जाता है ।
तिलाक–(अ. पुं.) पति-पत्नी के संबंध का विधिक विच्छेद, विवाह-विच्छेद, तलाक ।
तिलान्न–(सं. पुं.) तिल की खिचड़ी ।

तिलार्ध–(सं. पुं.) तिल का आधा भाग, बहुत छोटा परिमाण।
तिलावा–(हिं. पुं.) बड़ा कुआँ।
तिलित्स–(सं. पुं.) एक प्रकार का सर्प।
तिलिया–(हिं. पुं.) सरपत, सरकंडा।
तिली–(हिं. स्त्री.) तिल, तिल्ली।
तिलेती–(हिं. स्त्री.) तेलहन के पौधों को काट लेने पर बचा हुआ डंठल।
तिलोक–(हिं. पुं.) देखें 'त्रिलोक'; **–पति**–(पुं.) त्रैलोक्यपति, विष्णु।
तिलोकी–(हिं. पुं.) देखें 'त्रिलोकी', उपजाति छन्द का एक भेद।
तिलोचन–(हि.पुं.)देखें 'त्रिलोचन',महादेव।
तिलोत्तमा–(स. स्त्री.) स्वर्ग की एक परम सुन्दरी अप्सरा जिसको ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड के सब उत्तम पदार्थों में से थोड़ा-थोड़ा अंश लेकर बनाया था।
तिलोदक–(सं. पुं.) तिल मिला हुआ जल, देखें 'तिलांजलि'।
तिलोरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मैना।
तिलौंछना–(हिं. क्रि. स.) तेल पोतकर चिकना करना।
तिलौंछा–(हिं. वि.) जिसमें तेल लगा हो, जिसमें तेल का स्वाद हो।
तिलौरी–(हिं. स्त्री.) तिल मिलाकर बनायी हुई बरी।
तिल्य–(सं. वि.) तिल उत्पन्न करनेवाला।
तिल्ला–(अ. पुं.) कलाबत्तू का काम, पगड़ी, दुपट्टे या साड़ी के अंचल या छोर पर किया हुआ कलाबत्तू का काम।
तिल्ली–(हिं. स्त्री.) पेट के भीतर का एक अवयव, प्लीहा, तिल नामक अन्न।
तिल्व, तिल्वक–(सं. पुं.) लोध का वृक्ष।
तिल्विल–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ पर देवता का पूजन किया जाता है।
तिवाड़ी, तिवारी–(हिं. पुं.) त्रिपाठी, ब्राह्मण जाति की एक उपाधि।
तिवास–(हिं. पुं.) तीन दिनों का काल।
तिवासी–(हिं. वि.), देखें 'तिबासी'।
तिवी–(हिं. स्त्री.) खेसारी नामक अन्न।
तिष्ठना–(हिं. क्रि. अ.) ठहरना।
तिष्ठा–(सं. स्त्री.) एक नदी का नाम जो हिमालय से निकलकर गंगा में मिली है।
तिष्य–(सं. पुं.) पुष्य नक्षत्र।
तिष्यक–(सं.पुं.) पौष मास, पूस का महीना।
तिष्यपुष्पा–(सं. स्त्री.) आमला।
तिष्या–(सं. स्त्री.) आँवला का पेड़।
तिस–(हिं. सर्व.) सर्व 'ता' का एक रूप; **–पर**–(अव्य.) ऐसा होने पर भी, ऐसी स्थिति में।
तिसना–(हिं. स्त्री.) देखें 'तृष्णा'।
तिसरायत–(हिं. स्त्री.) तीसरा होने का भाव।
तिसरैत–(हिं. पुं.) एक तीसरा मनुष्य जो झगड़ा तय करता है, मध्यस्थ, तीसरे अंश का मालिक।
तिसाना–(हिं. क्रि. अ.) प्यासा होना।
तिसा–(सं.स्त्री.) शंखपुष्पी नामक वनस्पति।
तिस्स–(सं. पुं.) सम्राट् अशोक के सगे भाई का नाम।
तिहत्तर–(हिं. वि.) सत्तर और तीन की संख्यावाला; (पुं.) सत्तर और तीन की संख्या, ७३।
तिहद्दा–(हिं. पुं.) वह स्थान जहाँ तीन सीमाएँ मिली हों।
तिहरा–(हिं. वि.) देखें 'तेहरा'; (पुं.) दही जमाने का मिट्टी का बरतन।
तिहराना–(हि.क्रि.स.) तेहराना, तिबारा करना, तीन बार करना।
तिहरी–(हिं. स्त्री.) तीन लड़ों की माला, दही जमाने का मिट्टी का बरतन।
तिहवार–(हिं. पुं.) त्योहार, पर्व का दिन।
तिहवारी–(हिं. स्त्री.) त्योहारी, मिष्टान्न, फल आदि जो उत्सव के दिन सम्बन्धियों के घर भेजे जाते हैं।
तिहाई–(हिं. पुं.) तृतीयांश, तीसरा भाग, खेत की उपज।
तिहानी–(हिं. स्त्री.) वह लकड़ी जिस पर चुड़िहारे चूड़ियाँ बनाते हैं।
तिहायत–(हिं. पुं.) तिसरैत, मध्यस्थ।
तिहारा, तिहारो–(हिं. सर्व.) तुम्हारा।
तिहाव–(हिं.पुं.) रोष, क्रोध, गुस्सा, झगड़ा।
तिहि–(हिं. सर्व.) देखें 'तेहि'।
तिहूँ–(हिं. वि.) तीन, तीनों।
तिहैया–(हिं. पुं.) तृतीयांश, तीसरा भाग।
ती–(हिं. स्त्री.) स्त्री, पत्नी, मनहरण छन्द, भ्रमरावली।
तीकुर–(हिं. पुं.) खेत की उपज की बँटाई जिसमें तीसरा भाग जमींदार लेता है।
तीक्षण, तीक्षन–(हिं. वि.) तीक्ष्ण, तेज।
तीक्ष्ण–(सं. पुं.) तीव्रता, उष्णता, गरमी, विष, युद्ध, शस्त्र, मरण, समुद्र, लवण, महामारी, लोध का पेड़, लोहा, यवक्षार, आर्द्रा, अश्लेषा और मूल नक्षत्र; (वि.) उग्र, प्रचंड, तीव्र, प्रखर, तीखा, तेज धारवाला, असह्य, जो सुनने में अप्रिय हो, जिसको आलस्य न हो, चरपरे स्वाद का; **–कंटक**–(पुं.) धतूरा, बबूल का वृक्ष; (वि.) जिसमें तीखे काँटे हों; **–कंद**–(पुं.) प्याज; **–क**–(पुं.) पीली सरसों; **–कर्मा**–(वि.) जो काम करने में दक्ष हो; **–कल्क**–(पुं.) धनिया; **–कांता**–(स्त्री.) तारादेवी; **–की** (पुं.) अकरकरा; **–क्षीरी**–(स्त्री.) वंशलोचन; **–गंध**–(पुं.) सहिजन का वृक्ष, लाल तुलसी, सफेद मुसली; **–गंधा**–(स्त्री.) राई, बच, सफेद जीरा, छोटी इलायची; **–तंडुला**–(स्त्री.) पिप्पली पीपल; **–ता**–(स्त्री.) तीव्रता; **–ताप**–(पुं.) महादेव, शिव; **–तैल**–(पुं.) सरसों का तेल, मदिरा, राल; **–त्वक्**–(पुं.) धनिया, व्याघ्र; **–दंत**–(वि.) देखें 'तीक्ष्णदंष्ट्र'; **–दंष्ट्र**–(वि.) जिसके दाँत तीखे हों; **–दृष्टि**–(स्त्री.) सूक्ष्म दृष्टि; (वि.) जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व पर पड़ती हो; **–धार**–(पुं.) खड्ग, तलवार; (वि.) पैनी धारवाला; **–पत्र**–(पुं.) धनिया; (वि.) जिसके पत्तों में पैनी धार हो; **–पुष्प**–(पुं.) लवङ्ग, लौंग; (वि.) जिसके फूल में तीव्र गंध हो; **–पुष्पा**–(स्त्री.) केतकी, केवड़ा; **–प्रिय**–(पुं.) यव, जौ; **–फल**–(पुं.) धनिया; **–फला**–(स्त्री.) राई; **–बुद्धि**–(पुं.) प्रखर बुद्धि; (वि.) अति बुद्धिमान, जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो; **–मंजरी**–(स्त्री.) पान का पौधा; **–मूल**–(पुं.) कुलंजन; **–रश्मि**–(पुं.) सूर्य; (वि.) जिसकी किरण तीव्र हो; **–रस**–(पुं.) यवक्षार, जवाखार; (वि.) जिसका रस बहुत तीक्ष्ण हो; **–लौह**–(पुं.) पक्का लोहा, इस्पात; **–वल्क**–(पुं.) धनिया; **–वेग**–(वि.) अधिक वेगयुक्त; **–शूक**–(पुं.) पैनी नोक या टूँड़; **–सारा**–(स्त्री.) महुवा का पेड़, लोहा; (वि.) जिसका रस बहुत तीक्ष्ण हो।
तीक्ष्णांशु–(सं. पुं.) सूर्य; **–तनय**–(पुं.) सूर्य के पुत्र।
तीक्ष्णा–(सं. स्त्री.) केवाँच, जोंक, मिर्च, तारा देवी का एक नाम।
तीक्ष्णाग्नि–(सं. पुं.) जठराग्नि, अजीर्ण का रोग।
तीक्ष्णाग्र–(सं. वि.) तीखी नोकवाला, जिसकी नोक तेज हो।
तीक्ष्णायस–(सं.पुं.) पक्का लोहा, इस्पात।
तीख–(हिं. वि.) देखें 'तीक्ष्ण', तीखा।
तीखन–(हिं. वि.) देखें 'तीक्ष्ण'।
तीखा–(हिं. वि.) जिसकी नोक या धार पैनी हो, तीक्ष्ण, तीव्र, प्रखर, प्रचंड, उग्र, क्रुद्ध स्वभाव का, उत्तम, बढ़िया, सुनने में अप्रिय।

तीखुर, तीखुल–(हिं. पुं.) तवक्षीर, हल्दी की जाति का एक प्रकार का पौधा, (इसकी जड़ से अरारूट तैयार किया जाता है), देखें 'तिखुर'।
तीछन–(हिं. वि.) देखें 'तीक्ष्ण'।
तीज–(हिं. स्त्री.) प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथी, भादों सुदी तीज, हरितालिका तृतीया।
तीजा–(हिं. पुं.) मुसलमानों में किसी व्यक्ति के मरने के दिन से तीसरा दिन; (वि.) तीसरा।
तीतर–(हिं. पुं.) वेग से दौड़नेवाला एक छोटा पक्षी जो एक स्थान में स्थिर नहीं रहता, तित्तिर।
तीता–(हिं. वि.) तिक्त, तीखा, चरपरे स्वाद का, कटु, कड़वा, गीला, नम; (पुं.) भूमि का गीलापन, ऊसर भूमि, ढेंकी या रहट का अगला भाग।
तीतुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तितली'।
तीतुल–(हिं. पुं.) देखें 'तितिर,'तित्तर।
तीन–(हिं.वि.) जो दो से एक अधिक हो; (पुं.) दो और एक के योग से वनी हुई संख्या,३; (मुहा.)–**तेरह करना**–पृथक् करना, छितराना; –**पाँच करना**–फेरवट की बात करना; **न तीन में न तेरह में**–जो नगण्यता उपेक्षित हो।
तीनपान–(हिं. पूं.) एक प्रकार का वहुत मोटा रस्सा।
तीनलड़ी–(हिं.स्त्री.) तीन लड़ों की माला।
तीनि–(हिं. वि) देखें 'तीन'।
तीपड़ा–(हिं.पुं.) रेशमी वस्त्र बुनने के काम में आनेवाला एक उपकरण।
तीमारदार–(फा. पुं.) रोगियों की सेवा करनेवाला।
तीमारदारी–(फा. स्त्री.) रोगियों की सेवा-सुश्रूषा।
तीय, तीया–(हिं. स्त्री.) स्त्री, औरत।
तीरंदाज–(फा. पुं.) तीर चलानेवाला।
तीरंदाजी–(फा. स्त्री.) तीर चलाने की विद्या या क्रिया, वहादुरी।
तीर–(सं.पुं.) नदी आदि का किनारा, तट, पास, समीप, वाण, शर, राँगा; (मुहा.) –**चलाना या फेंकना**–युक्ति लगाना।
तीरण–(सं. पुं.) करंज की लता।
तीरथ–(हिं. पुं.) देखें 'तीर्थ'।
तीरभुक्ति–(सं.पुं.) तिरहुत देश, विदेह।
तीरवर्त्ती–(सं. वि.) तट पर रहनेवाला, पास रहनेवाला, पड़ोसी।
तीरस्थ–(सं. वि.) तीरस्थित, तीर पर रहनेवाला, (मरणासन्न व्यक्ति) जो नदी के तीर पर लाया गया हो।
तीरांतर–(सं. पुं) दूसरा पार।
तीरु–(सं. पुं.) शिव, महादेव, शिव की स्तुति।
तीर्ण–(सं. वि.) उत्तीर्ण, जो पार हो गया हो, हराया हुआ, भीगा हुआ, उल्लंघन करनेवाला।
तीर्णपदा, तीर्णपदी–(सं. स्त्री.) तालमूली, मूसली।
तीर्णा–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम।
तीर्थंकर–(सं. पुं.) दिगम्वर जैनियों के आराध्य देवता।
तीर्थ–(सं.पुं.) पुण्य स्थान या इसका दर्शन, ब्राह्मण, अग्नि, आगम, रोग का निदान, योनि, भग, मंत्री, गुरु, उपाध्याय, पत्रा, शास्त्र, यज्ञ, क्षेत्र, स्थान, उपाय, रजस्वला स्त्री का रज, अवतार, ऋषियों के सेवन करने का जल, हाथ के कई विशिष्ट स्थानों के नाम, राष्ट्र की अठारह सम्पत्तियाँ, पुण्यकाल, तारक, मोक्ष देनेवाला, ईश्वर, माता, पिता, अतिथि, संन्यासियों की एक उपाधि, अवसर, वैर त्यागकर परस्पर मित्रता का व्यवहार; –**क**–(वि.) योग्य, तीर्थयात्रा करनेवाला; (पुं.) ब्राह्मण, तीर्थङ्कर; –**कर**–(पुं.) विष्णु; –**काक**–(पुं.) वह मनुष्य जो गुरुकुल में चिरकाल नहीं रह सकता, वह मनुष्य जो तीर्थस्थान में जाकर अपनी जीविका खोजता है; –**कृत्**–(पुं.) जिनदेव, शास्त्रकार; –**तम**–(पुं.) श्रेष्ठ तीर्थ, तीर्थराज; –**देव**–(पुं.) शिव, महादेव; –**पति**–(पुं.) देखें 'तीर्थराज'; –**पद**–(पुं.) हरि, विष्णु; –**पदीय**–(पुं.) वैष्णव; –**भूत**–(वि.) तीर्थ स्वरूप; –**यात्रा**–(स्त्री.) तीर्थ (पवित्र) स्थान में स्नान, दर्शन आदि के लिए जाना, तीर्थाटन; –**राज**–(पुं.) प्रयाग तीर्थ; –**राजि**–(स्त्री.) काशी क्षेत्र; –**वाक**–(पुं.) केश, वाल; –**वायस**–(पुं.) देखें 'तीर्थकाक'; –**सेनि**–(स्त्री.) कार्तिकेय, की एक मातृका का नाम; –**सेवा**–(स्त्री.) तीर्थाटन, तीर्थयात्रा; –**सेवी**–(वि.) तीर्थयात्रा करनेवाला; (पुं.) वक पक्षी, वगुला।
तीर्थाटन–(सं. पुं.) तीर्थयात्रा, तीर्थसेवा।
तीर्थिक–(सं. पुं.) तीर्थङ्कर, तीर्थकारी ब्राह्मण, तीर्थ का पंडा, वौद्ध धर्म का द्वेष करनेवाला ब्राह्मण।
तीर्थिया–(हिं. पुं.) तीर्थङ्करों को माननेवाला जैनी।
तीर्थ्य–(सं. पुं.) एक रुद्र का नाम, सहपाठी।
तीलखा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
तीवर–(सं. पुं.) समुद्र, मछुआ, व्याध, बहेलिया, एक वर्णसंकर नीच जाति।
तीवरी–(सं. स्त्री.) तीवर जाति की स्त्री, व्याधपत्नी।
तीव्र–(सं. वि.) अत्यन्त तीक्ष्ण, अति उष्ण, वहुत गरम, तेज, असह्य, न सहन करने योग्य, तीखा, प्रचंड, वेगयुक्त, कटु, कड़आ; (पुं.) इस्पात, लोहा, नदी, तट, राँगा, टीन, शिव, महादेव; –**कंठ**; –**कंद**–(पुं.) जमीकन्द, प्याज; –**गंध**–(वि.) जिसकी गन्ध तेज हो; –**गंधा**–(पुं.) अजवाइन; –**गंधिका**–(स्त्री.) देखें 'तीव्रगंधा'; –**गति**–(वि.) वेग की गतिवाला; (पुं.) वायु, हवा; –**ज्ञानी**–(वि.) बुद्धिमान्; –**ज्वाला**–(स्त्री.) धव का फूल, तेज जलन; –**ता**–(स्त्री.) तेज, उष्णता, तीक्ष्णता; –**बंध**–(पुं.) तामसगुण, तमोगुण; –**वेदना**–(स्त्री.) अत्यधिक पीड़ा; –**संताप**–(पुं.) वहुत वड़ा कष्ट, श्येन पक्षी; –**संवेग**–(पुं.) वैराग्य की भावना।
तीव्रा–(सं. स्त्री.) कुटकी, राई, मालकँगनी, तुलसी, खुरासानी अजवाइन।
तीव्रानंद–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
तीस–(हिं. वि.) वीस और दस की संख्या का; (पुं.) वीस और दस की संख्या,३०;
तीसों दिन–(अव्य.) हमेशा।
तीसमार खाँ–(हिं.पुं.) (व्यंग्योक्ति) बड़ा वीर।
तीसरा–(हिं. वि.) जो दो के वाद आता हो, संवंधित व्यक्तियों से भिन्न; –**पहर**–(पुं.) अपराह्ण।
तीसी–(हिं. स्त्री) एक प्रकार का तेलहन, अलसी।
तुंग–(सं. पुं.) पुन्नाग वृक्ष, पर्वत, पहाड़, नारियल का पेड़, शिव, कमल, केसर, एक प्रकार का वर्णवृत्त; (वि.) उन्नत, ऊँचा, उग्र, प्रचंड, प्रधान।
तुंगक–(सं. पुं.) एक तीर्थ का नाम।
तुंगकूट–(सं. पुं.) ऊँची चोटी का पहाड़।
तुंगता–(सं. स्त्री.) उच्चता, ऊँचाई।
तुंगत्व–(सं. पुं.) तुंगता।
तुंगनाथ–(सं. पुं.) हिमालय पर स्थित एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।
तुंगनाभ–(सं. पुं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

तुंगप्रस्थ–(सं. पुं.) रामगिरि के समीप का एक पर्वत ।
तुंगबीज–(सं. पुं.) पारद, पारा ।
तुंगभद्र–(सं. पुं.) मतवाला हाथी ।
तुंगभद्रा–(सं. स्त्री.) दक्षिण भारत की एक बड़ी नदी ।
तुंगमुख–(सं. पुं.) गंडक, गैंडा ।
तुंग-वृक्ष–(सं. पुं.) नारियल का पेड़ ।
तुंग-शेखर–(सं. पुं.) पहाड़, पर्वत की ऊँची चोटी ।
तुंगा–(सं.स्त्री.) शमी वृक्ष, वंशलोचन ।
तुंगारि–(सं. पुं.) सफेद कनेर का वृक्ष ।
तुंगनी–(सं. स्त्री.) बड़ी सतावर।
तुंगी–(सं.स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी, रात्रि, रात।
तुंगीनास–(सं. पुं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा ।
तुंगीपति–(सं. पुं.) चन्द्रमा, रजनीपति ।
तुंगीश–(सं. पुं.) कृष्ण, सूर्य, चन्द्रमा, शिव ।
तुंड–(सं. पुं.) मुख, मुँह, महादेव, एक राक्षस का नाम, चोंच, थूथन, तलवार का अगला भाग ।
तुंडकेरिका–(सं. स्त्री.) कपास का पौधा ।
तुंडकेरी–(सं. स्त्री.) मुख का एक रोग जिसमें तालु फूल जाता है ।
तुंडिका–(सं. स्त्री.) नाभि, ढोंढ़ी, कुँदरू ।
तुंडिभ–(सं.वि.) जिसकी नाभि उभरी हो।
तुंडिल–(सं. वि.) तोंदीला, तोंदवाला, बकवादी ।
तुंडी–(सं. वि.) चोंचवाला, मुखवाला, थूथनवाला; (पुं.) गणेश; (स्त्री.) नाभि, ढोंढ़ी ।
तुंतुभ–(सं. पुं.) सरसों का पौधा ।
तुंद–(सं. पुं.) उदर, पेट, तोंद ।
तुंदकूपिका, तुंदकूपी–(सं. स्त्रीं.) ढोंढ़ी ।
तुंदवत्–(सं. वि.) तोंदवाला, तोंद निकला हुआ ।
तुंदिक, तुंदिकर–(सं. वि.) बड़े पेटवाला, तोंदवाला ।
तुंदिका–(सं. स्त्री.) नाभि, ढोंढ़ी ।
तुंदित–(सं. वि.) उभड़े हुए पेटवाला ।
तुंदिभ, तुंदिल–(सं. वि.) स्थूलोदर, तोंदीला ।
तुंदिलफला–(सं. स्त्री.) ककड़ी की लता ।
तुंदी–(सं. स्त्री.) नाभि, ढोंढ़ी ।
तुंदैला–(हिं. वि.) लम्बोदर, तोंदवाला ।
तुंब–(सं. पुं.) गोल लौकी, लौआ, तूंबा, घनिया ।
तुंबड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष, तुंबा।
तुंबर–(सं. पुं.) एक प्रकार का बाजा ।
तुंबरू–(सं. पुं.) एक गन्धर्व का नाम ।
तुंबा–(सं.स्त्री.) कड़ुआ कद्दू, एक प्रकार का जंगली धान; (हिं. पुं.) कद्दू का बना हुआ जलपात्र ।
तुंबिका–(सं. स्त्री.) कड़ुआ कद्दू ।
तुंबिनी–(सं. स्त्री.) कटुतुम्बी, तितलौकी ।
तुंबी–(सं.स्त्री.) छोटा कद्दू, बहेड़े का वृक्ष; **–तैल**–(पुं.) कद्दू के बीज का तेल ।
तुंबुकी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा ।
तुंबुर–(सं. पुं.) विन्ध्य पर्वत पर रहनेवाली एक जाति ।
तुंबुरी–(सं.स्त्री.) कुक्कुरी, कुतिया, धनिया ।
तुंबुरी-वीणा–(सं. स्त्री.) तानपुरा ।
तुंबुरु–(सं. पुं.) धनिया; (पुं.) एक तपस्वी का नाम, एक गन्धर्व का नाम ।
तु–(सं.अव्य.) निरर्थक पादपूरक शब्द, तो ।
तुअ–(हिं. सर्व.) तुव, तव, तुम्हारा ।
तुअना–(हिं.क्रि.अ.) गिर पड़ना, गर्भपात होना ।
तुअर–(हिं. पुं.) अरहर, आढ़की ।
तुई–(हिं. स्त्री.) कपड़े पर बनी हुई एक प्रकार की बेल ।
तुक–(हिं. स्त्री.) गीत या पद्य का कोई टुकड़ा या कड़ी, पादों के अन्त में होनेवाली अक्षर-मत्री, अन्त्यानुप्रास, पद्य के दो चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल; (मुहा.)**–जोड़ना या मिलाना**–भद्दी कविता करना; **–बंदी**–(स्त्री.) भद्दी कविता करने की क्रिया, भद्दा काव्य, ऐसी कविता जिसमें काव्य के गुण न हों ।
तुकांत–(हिं. पुं.) पद्य के अंश के चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल, अन्त्यानुप्रास ।
तुकाक्षीरी–(सं. स्त्री.) वंशलोचन ।
तुकार–(हिं. स्त्री., पुं.) अशिष्ट संबोधन, 'तू-तू' करके बोलने की आदत ।
तुकारना–(हिं.क्रि.स.) तू तू करके पुकारना।
तुक्कड़–(हिं. पुं.) वह जो भद्दी कविता बनाता हो ।
तुख–(सं. पुं.) छिलका, भूसी, अंडे के ऊपर का छिलका ।
तुखार–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम, (यहाँ के घोड़े प्राचीन काल में बहुत अच्छे समझे जाते थे ।)
तुच, तुचा–(हिं. स्त्री.) देखें 'त्वचा' ।
तुचार–(हिं. वि.) तीखा, पैना ।
तुच्छ–(सं. पुं.) भूसी, छिलका; (वि.) क्षुद्र, हीन, शून्य, निःसार, खोखला, अल्प, थोड़ा, ओछा; **–ज्ञान**–(पुं.) सामान्य बोध; **–ता**–(स्त्री.) नीचता, हीनता, अल्पता, ओछापन; **–त्व**–(पुं.) ओछापन; **–द्रुम**–(पुं.) रेंड़ का पेड़; **–धान्यक**–(पुं.) भूसी, छिलका ।
तुच्छा–(सं.स्त्री.) नील का पौधा, तुत्थ, तूतिया।
तुच्छातितुच्छ–(सं. वि.) अत्यन्त क्षुद्र ।
तुच्छीकृत–(सं. वि.) अपमानित, तिरस्कार किया हुआ ।
तुजुक–(हिं. पुं.) वैभव, ऐश्वर्य ।
तुज्य–(सं. वि.) वध करने योग्य ।
तुझ–(हिं. सर्व.) 'तू' शब्द का वह रूप जो प्रथमा और षष्ठी विभक्ति के सिवाय अन्य विभक्तियों में होता है ।
तुझे–(हिं. सर्व.) तू का कर्म और सम्प्रदान कारकों का रूप ।
तुट–(हिं. वि.) अल्पमात्रा में, थोड़ा-सा ।
तुट्ठना–(हिं. क्रि. अ., स.) सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना ।
तुड़वाना–(हिं. क्रि. स.) तोड़ने का काम दूसरे से कराना ।
तुड़ाई–(हिं. स्त्री.) तोड़ने की क्रिया या भाव, तोड़वान का शुल्क ।
तुड़ाना–(हिं. क्रि. स.) तोड़ने का काम किसी दूसरे से कराना, तुड़वाना, बन्धन छुड़ाना, सम्बन्ध तोड़ना, बड़ी मुद्रा के बदले छोटी मुद्राएँ लेना, भुनाना ।
तुड़ि–(सं. स्त्री.) तोड़ने की क्रिया ।
तुणि, तुणिक–(सं. पुं.) तून का पेड़ ।
तुतरा–(हिं. वि.) देखें 'तोतला' ।
तुतराना–(हिं.क्रि.अ.) तोतलाकर बोलना।
तुतरौंहाँ–(हिं. वि.) देख 'तोतला' ।
तुतलाना–(हिं.क्रि.अ.) शब्दों तथा अक्षरों का शुद्ध उच्चारण न करना, अस्पष्ट, टूट-फूटे शब्दों में बोलना ।
तुतरी–(सं. स्त्री.) शृंगी, सिंगा बाजा ।
तुतली–(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'तोतली' ।
तुत्थ–(सं. पुं.) पत्थर, अग्नि, नील का पौधा, तूतिया नमक उपधातु, नीला-थोथा ।
तुत्थक–(सं. पुं.) नीला थोथा ।
तुत्था–(सं. स्त्री.) नील का पौधा, छोटी इलायची ।
तुथ–(सं. पुं.) हत्या करनेवाला, वध करनेवाला ।
तुदन–(सं. पुं.) पीड़ा देने की क्रिया, व्यथा, पीड़ा, चुभाने या गड़ाने की क्रिया ।
तुन–(हिं. पुं.) एक बहुत बड़ा वृक्ष ।
तुनतुनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का तुनतुन शब्द करनेवाला बाजा ।
तुनी–(हिं. स्त्री.) तुन का वृक्ष ।

तुनीर–(हिं. पुं.) देखें 'तूणीर'।
तुन्न–(हिं. पुं.) तुन का वृक्ष, फटे हुए वस्त्र की चीर; (वि.) पीड़ित, दुःखित, फटा हुआ।
तुन्नवाय–(सं.पुं.) कपड़ा सीनेवाला, दरजी।
तुपक–(हिं. स्त्री.) छोटी तोप या बंदूक, कड़ाबीन।
तुफंग–(हिं. स्त्री.) हवाई बंदूक, वह लंबी नली जिसमें मिट्टी या आटे की गोली रखकर मुख से फूँककर चलाते हैं।
तुभना–(हिं.क्रि.अ.) स्तब्ध होना, चकित हो जाना।
तुम–(हिं.सर्व.) 'तू' शब्द का बहुवचन रूप।
तुमड़ी–(हिं. स्त्री.) गोल कद्दू का सूखा हुआ फल, इस फल का बना हुआ पात्र, सूखे कद्दू का बना हुआ बाजा जिसको सँपेरे बजाते हैं, महुअर।
तुमतड़ाक–(हिं. पुं.) देखें 'तू-तड़ाक'।
तुमरा–(हिं. सर्व.) देखें 'तुम्हारा'।
तुमल–(हिं. वि.) देखें 'तुमुल'।
तुमाना–(हिं क्रि. स.) रूई तूनने का काम दूसरे से कराना।
तुमुती–(हिं.स्त्री.)एक प्रकार का छोटा पक्षी।
तुमुर, तुमुल–(सं. पुं.) सेना का कोलाहल, लड़ाई का शब्द, मुठभेड़, क्षत्रियों की एक जाति का नाम; (वि.) प्रचंड, उग्र; **–युद्ध**–(पुं.) घमासान लड़ाई।
तुम्ह–(हिं. सर्व.) देखें 'तुम'।
तुम्हारा–(हिं. सर्व.) 'तू' का सम्बन्ध कारक का रूप।
तुम्हें–(हिं. सर्व.) तुमको।
तुरंग, तुरंगक–(सं. पुं.) घोड़ा, चित्त, सेंधा नमक, सात की संख्या; (वि.) शीघ्र चलनेवाला।
तुरंगद्वेषिणी–(सं. स्त्री.) महिषी, भैंस।
तुरंगप्रिय–(सं. पुं.) यव, जौ।
तुरंगम–(सं. पुं.) घोड़ा, चित्त, एक वर्णवृत्त (वि.) शीघ्र चलनेवाला।
तुरंगमशाला–(सं. स्त्री.) अश्वशाला।
तुरंगमेध–(सं. पुं.) अश्वमेध।
तुरंगवक्त्र, तुरंगवदन–(सं. पुं.) घोड़े के मुखवाला किन्नर।
तुरंगारि–(सं.पुं.)करवीर, कनेर का वृक्ष।
तुरंगी–(सं.वि.) अश्वारोही, घुड़सवार; (स्त्री.) असगन्ध, घोड़ी।
तुरंत–(हिं. अव्य.)अत्यन्त शीघ्र, झटपट, जल्दी से।
तुरंता–(हिं. पुं.) गाँजा।
तुर–(सं. वि.) वेगवान्, जल्दी चलनेवाला; (हिं.पुं.) जुलाहों की वह लकड़ी जिस पर वे कपड़ा बुनकर लपेटते जाते हैं, वह बेलन जिस पर गोटा बीनकर लपेटा जाता है।
तुरई–(हिं. स्त्री.) एक लता जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है।
तुरक–(हिं. पुं.) देखें 'तुर्क'।
तुरकटा–(हिं.पुं.) मुसलमान, (यह घृणा-सूचक शब्द है।)
तुरकाना–(हिं. वि., पुं.) तुर्क के समान, तुर्क देश, तुर्कों की बस्ती।
तुरकानी, तुरकिन–(हिं.स्त्री.)तुर्क की स्त्री।
तुरकिस्तान–(हिं. पुं.) तुर्क देश।
तुरग–(सं. पुं.) घोड़ा, चित्त; (वि.) शीघ्रगामी; **–गंधा**–(स्त्री.) अश्वगन्धा, असगन्ध; **–दानव**–(पुं.) केशी नामक दैत्य; **–प्रिय**–; (पुं.) यव, जौ; **–रक्षक**– (पुं.) अश्वरक्षक, साईस; **–लीलक**–(पुं.) संगीत में एक ताल का नाम।
तुरगानन–(सं. पुं.) एक किन्नर जाति जिनका मुख घोड़े के समान और शेष अंग मनुष्य के समान हो।
तुरगारोह–(सं.पुं.)अश्वारोही, घुड़सवार।
तुरगी–(सं. स्त्री.) असगन्ध, घोड़ी।
तुरगीय–(सं.वि.) अश्वसंबंधी, घोड़े का।
तुरगुला–(हिं. पुं.) झुमका, लोलक, कर्णफूल।
तुरण–(सं. पुं.)जल्दी से जाने की क्रिया।
तुरण्य–(सं. पुं.) त्वरा, शीघ्रता।
तुरत–(हिं.अव्य.)तत्क्षण,शीघ्र,जल्दी से।
तुरपई–(हिं. स्त्री.) कपड़ा मोड़कर सीने की विधि।
तुरपन–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की सिलाई, लुढ़ियाना।
तुरपना–(हिं. क्रि. स.) तुरपन की सिलाई करना, लुढ़ियाना।
तुरपवाना–(हिं. क्रि.स.) तुरपान, तुरपन का काम दूसरे से कराना।
तुरपाना–(हिं. क्रि. स.)देखें 'तुरपवाना'।
तुरम–(हि. पुं.) तुरही बाजा।
तुरमती–(हिं.स्त्री.)एक प्रकार की चिड़िया।
तुरमनी–(हिं. स्त्री.) नारियल रेतने की रेती।
तुरय–(हिं. पुं.) तुरंग, घोड़ा।
तुरया–(हिं.अव्य)शीघ्रता से, जल्दी से।
तुरसिला–(हिं. वि.) पैना, तीखा।
तुरही–(हिं.स्त्री.) मुँह से फूँककर बजाने का एक बाजा।
तुरा–(हिं. स्त्री.) देखें 'त्वरा'।
तुराई–(हिं. स्त्री.) रूई भरा हुआ गद्दा।
तुराना–(हिं. क्रि. अ., स.) व्यग्र होना, घबड़ाना, देखें 'तुड़ाना'।
तुराय–(हिं. अव्य.) आतुरता से।
तुरायण–(सं. पुं.) एक प्रकार का यज्ञ अनासक्ति।
तुरावती–(हिं.वि.स्त्री.)वेगयुक्त, वेग से बहनेवाली।
तुरावान–(हिं. वि.) वेगयुक्त, वेगवाला।
तुराषाट्–(सं. पुं.) इन्द्र का एक नाम।
तुरास–(हिं. पुं.) वेग।
तुरि–(सं. स्त्री.) जुलाहों का काठ का एक यन्त्र।
तुरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'तुरीय'।
तुरी–(सं. स्त्री.) फूलों का गुच्छा, मोती की लड़ी या गुच्छा जो पगड़ी में कान के पास लटकाया जाता है; देखें 'तुरि'; (वि.) वेगयुक्त; (हिं. स्त्री.) घोड़ी, लगाम; (पुं.) घुड़सवार।
तुरीयंत्र–(सं. पुं.) सूर्य की गति जानने का एक यन्त्र।
तुरीय–(सं. वि.)गतियुक्त, चतुर्थ, चौथा, उद्धार करनेवाला, तारक; (पुं.) वेदांत के अनुसार आत्मा की वह अवस्था जब वह ब्रह्म में लीन हो जाती है, समाधि की अन्तिम अवस्था।
तुरीयक–(सं. वि.) चतुर्थ, चौथा।
तुरीय वर्ण–(सं. पुं.) चतुर्थ वर्ण, शूद्र।
तुरुप–(हिं. पुं.)ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रंग प्रधान मान लिया जाता है।
तुरुपना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'तुरपना'।
तुरुष्क–(सं. पुं.) एशिया और यूरोप के मध्यस्थित एक देश का नाम, तुर्क, तुर्क जाति, इस देश का निवासी, इस देश का घोड़ा।
तुरुही–(हिं. स्त्री.) देखें 'तुरही'।
तुरैया–(हिं. स्त्री.) तुरही बाजा।
तुर्क–(हिं.पुं.)तुरकिस्तान (का निवासी)।
तुर्किनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तुरकिन'।
तुर्की–(हि. वि.)तुर्क देश का या संबंधी।
तुर्फरी–(सं. पुं.) अंकुश मारने का भाला जिसकी नोक सीधी होती है।
तुर्य–(सं. वि.) चतुर्थ, चौथा, तुरी-यंत्र, समय जानने का एक प्राचीन यन्त्र।
तुर्यवाह–(सं. पुं.) चार वर्ष का पशु।
तुर्या–(सं. स्त्री.) वह ज्ञान जिससे मुक्ति प्राप्त होती है, तुरीया।
तुर्याश्रम–(सं.पुं.)चतुर्थाश्रम,संन्यासाश्रम।
तुर्रा–(अ. पुं.) घुँघराले बालों की लट, काकुल, कलगी, गोशवारा।
तुर्वन्–(सं. पुं.) शत्रु की हत्या करना।

तुर्वश–(सं.पुं.)राजा ययाति के पुत्र का नाम।
तुर्वसु–(सं.पुं.) राजा ययाति का एक पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
तुल–(हिं. वि.) देखें 'तुल्य', बराबर।
तुलना–(हिं.क्रि.अ.)तौला जाना, उद्यत होना, पूरा या समान होना, नियमित होना, तुल्य होना, तौल में बराबर होना, गाड़ी के पहिये के धुरे में घी, तेल, चर्बी आदि पोतना, साधकर शस्त्र चलाया जाना, बँधना; (सं.स्त्री.) सादृश्य, उपमा, समता, तारतम्य, मिलान, बराबरी।
तुलनात्मक–(सं. वि.) जिससे किसी की तुलना की जाय।
तुलनी–(हिं. स्त्री.) वह लोहा जो तराजू के काँटे के दोनों ओर लगा रहता है।
तुलबुली–(हिं. स्त्री.) शीघ्रता।
तुलवाई–(हिं. स्त्री.) तौलने का पारिश्रमिक, पहिये को औंगने का शुल्क।
तुलवाना–(हिं. क्रि. स.) तौल कराना, गाड़ी के पहिये को औंगवाना।
तुलसारिणी–(सं. स्त्री.) तूण, तरकश।
तुलसी–(सं. स्त्री.) एक छोटा पौधा जिसको हिन्दू लोग अति पवित्र मानते हैं; **–दल**–(पुं.) तुलसी की पत्ती; **–दाना**–(हिं.पुं.)एक प्रकार का गहना; **–दास**–(पुं.) हिन्दी के सर्वप्रधान भक्त कवि जो सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनका जन्म संवत् १५८९ में राजापुर (बाँदा जिले) में हुआ था। इनके बनाये हुए रामचरित-मानस का भारतवर्ष में घर-घर में प्रचार है; **–पत्र**–(पुं.)तुलसी की पत्ती; **–बास**–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सुगन्धित अगहनिया धान; **–माला**–(स्त्री.) तुलसी की माला; **–वन**–(पुं.) तुलसी का जंगल, वृन्दावन।
तुला–(सं. स्त्री.)सादृश्य, तुलना, तराजू, काँटा, मान,तौल, प्राचीन काल की एक तौल जो लगभग पाँच सेर के बराबर होती थी, अन्न आदि नापने का पात्र, सातवीं राशि जिसका आकार हाथ में तराजू लिये हुए मनुष्य के सदृश माना जाता है; **–कूट**–(पुं.) तौलने में कमी करनेवाला, डाँड़ी मारनेवाला; **–कोटि**–(स्त्री.) तराजू की डंडी के दोनों ओर जिसमें पलड़े बँधे होते हैं, अर्बुद की संख्या; **–कोष**–(पुं.) तुला-परीक्षा; **–दंड**–(पुं.) मानदंड, तराजू की डंडी; **–दान**–(पुं.)एक महादान जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य का दान होता है; **–धट**–(पुं.) तराजू की डंडी जिसमें पलड़ें बँधे रहते हैं; **–धर**–(पुं.) तुला राशि, तराजू की डोरी; (वि.) तराजू से तौलनेवाला; **–धार**–(पुं.) तराजू की डोरी जिससे पलड़े बँधे रहते हैं, तुला राशि, वाराणसी निवासी एक व्याध जो सर्वदा माता-पिता की सेवा में तत्पर रहता था, वाराणसी निवासी एक बनिया जिसने महर्षि जाजलि को मोक्ष का उपदेश दिया था; **–परीक्षा**–(स्त्री.) प्राचीन काल में प्रचलित अभियुक्त की एक परीक्षा जिसमें उसको एक बार तराजू के पलड़े पर बैठाकर मिट्टी आदि से तौलते थे, फिर उतारकर उसे दुबारा तौलते थे। यदि दुबारा तौलने में वह घट जाता था तो अभियुक्त दोषी माना जाता था; **–प्रग्रह**–(पुं.) तुलादंड, तराजू में बँधी हुई डोरी; **–बीज**–(पुं.) घुंघची के दाने जो तौलने के काम में आते हैं; **–मान**–(पुं.) तुलादंड, वह मान जो तौलकर लिया जावे, बाट, बटखरा; **–यंत्र**–(पुं.) तराजू; **–यष्टि**–(स्त्री.)तराजू में बँधी हुई डाँड़ी; **–सूत्र**–(पुं.) तराजू की रस्सी जिससे पलड़े बँधे रहते हैं।
तुलाई–(हिं.स्त्री.)तौलने का भाव या काम, रूई से भरा हुआ दोहरा ओढ़ना, दुलाई।
तुलाना–(हिं. क्रि. अ.,स.) बराबर होना, समीप आना, पूरा होना, गाड़ी के पहिये के धुरे में चिकनाई लगाना।
तुलावा–(हिं.पुं.) वह लकड़ी जिसके सहारे गाड़ी उठाकर पहिया निकाला जाता है और धुरे में चिकनाई पोती जाती है।
तुलि–(सं. स्त्री.) जुलाहे की कूँची, चित्रकार की कूँची।
तुलिका–(स. स्त्री.) खंजन पक्षी, कूँची।
तुलित–(सं. वि.) परिमित, तुला हुआ, बराबर, समान।
तुलिनी–(सं. स्त्री.) शाल्मली, सेमल का पेड़।
तुली–(सं. स्त्री.)तुलि, जुलाहे की कूँची।
तुलूली–(हिं. स्त्री.) मूत्र की बँधी हुई धार जो दूर पर जा पड़ती है।
तुल्य–(सं. वि.) सदृश, समान, बराबर; **–कोणिक**–(वि.) जिस क्षेत्र के सब कोण बराबर हों; **–ज्ञ**–(पुं.) तुल्य ज्ञानवाला; **–ता**–(स्त्री.) सादृश्य, समता, बराबरी; **–दर्शन**–(वि.) समदर्शी; **–पान**–(पुं.) स्वजाति के लोगों के साथ मिल-जुलकर खाना-पीना; **–प्रधान व्यंग्य**–(पुं.) वह व्यंग्य जिसमें वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ बराबर होते हैं; **–बल**–(वि.) सम-शक्तिवाला; (पुं.) बराबर का बल; **–भावन**–(पुं.) ज्योतिष में एक प्रकार की राशियों का मिलान; **–मूल्य**–(वि.) बराबर दामवाला, समान; **–योगिता**–(स्त्री.) एक काव्यालंकार जिसमें अनेक प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत विषयों का (उपमेयों और उपमानों का) समान धर्म बतलाया जाता है; **–योगी**–(वि.) समान सम्बन्ध रखनेवाला; **–रूप**–(वि.) एकरूप, सदृश; **–वृत्ति**–(वि.)एक व्यवसाय का।
तुल्याकृति–(सं. वि.) जो देखने में समान आकृति के हों।
तुव–(हिं. सर्व.) देखें 'तव'।
तुवर–(सं. पुं.) कसैला रस, एक प्रकार का धान, अरहर, एक प्रकार का पौधा; (वि.) कसैला, तीता, बिना मूँछ-दाढ़ी का।
तुवरिका–(सं.स्त्री.)गोपीचन्दन, अरहर।
तुवरी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का धान, अरहर; **–शिव**–(पुं.)चकवँड़ का पौधा।
तुष–(सं. पुं.) अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी, अंडे के ऊपर का छिलका, बहेड़े का वृक्ष; **–ग्रह**–(पुं.) अग्नि, आग; **–ज**–(वि., पुं.) भूसी से जलाई हुई (आग); **–धान्य**–(पुं.) छिलका सहित धान।
तुषांबु–(सं.पुं.) तुषोदक,एक प्रकार की काँजी।
तुषाग्नि, तुषानल–(सं. पुं.) भूसी या करसी की आँच।
तुषार–(सं. पुं.) हिम, हिमकण, पाला, हिम-स्पर्श, चीनिया कपूर, हिमालय के उत्तर का एक देश, इस देश में बसनेवाली जाति; (वि.) जो स्पर्श करने में अति शीतल ज्ञात हो; **–कण**–(पुं.) हिमकण; **–काल**–(पुं.) शीतकाल; **–किरण**–(पुं.) चन्द्रमा; **–गिरि**–(पुं.) हिमालय पर्वत; **–गौर**–(पुं.) कपूर; **–पाषाण**–(पुं.) ओला; **–मूर्ति**–(पुं.) हिमकर,चन्द्रमा; **–रश्मि**–(पुं.) चन्द्रमा
तुषाराद्रि–(सं. पुं.) हिमालय-पर्वत।
तुषित–(सं. पुं.)एक प्रकार के गण-देवता।
तुषोदक–(सं. पुं.) एक प्रकार की काँजी जो छिलका समेत जव को पानी में कूटकर बनाई जाती है।
तुष्ट–(सं. वि.) संतुष्ट, तृप्त, प्रसन्न; (पुं.) विष्णु; **–ता**–(स्त्री.) सन्तोष,

तृप्ति ।
तुष्टना–(हिं. क्रि.अ.) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना ।
तुष्टि–(सं. स्त्री.) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, कंस के आठ भाइयों में से एक का नाम, गौरी आदि सोलह मातृकाओं में से एक शक्ति विशेष, बौद्धमत के अनुसार स्वर्ग का नाम; –कर–(वि.) सन्तोष देनेवाला; –जनक–(वि.) सन्तोष-जनक; –मान–(पुं.) कंस के भाई का नाम ।
तुष्टु–(सं.पुं.) कान में पहिनने की मणि ।
तुष्य–(सं.पुं.) शिव, महादेव ।
तुस–(सं.पुं.) तुष, भूसी ।
तुसार–(सं.पुं.) देखें 'तुषार' ।
तुसी–(हिं. स्त्री.) अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी ।
तुस्त–(सं.स्त्री.) धूल, गरदा ।
तुहमत–(फा. स्त्री.) दोष, कलंक ।
तुहमती–(फा. वि.) कलंक लगानेवाला ।
तुहर–(सं. पुं.) कुमार कार्तिकेय का एक अनुचर ।
तुहार–(हिं. सर्व.) तुम्हारा ।
तुहि–(हिं. सर्व.) तुझको, तुमको ।
तुहिन–(सं. पुं.) हिम, पाला, कुहरा, ठंढक, तुषार, चन्द्रिका, चाँदनी; (वि.) शीतल, ठंढा; –कण–(पुं.) हिमकण; –कर–(पुं.) चन्द्रमा; –किरण–(पुं.) चन्द्रमा; –गिरि–(पुं.) हिमालय पर्वत; –दीधिति–(पुं.) चन्द्रमा; –द्युति–(पुं.) चन्द्रमा; –रश्मि–(पुं.) चन्द्रमा; –शैल–(पुं.) हिमालय पर्वत ।
तुहिनांशु–(सं.पुं.) चन्द्रमा, कपूर ।
तुहिनाचल, तुहिनाद्रि–(सं.पुं.) हिमालय पर्वत ।
तूं–(हिं. सर्व.) देखें 'तू' ।
तूंबड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'तूंबा' ।
तूंबना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'तूमना' ।
तूंबा–(हिं. पुं.) गोल लौकी, तितलौकी, सूखे कद्दू का बनाया हुआ जलपात्र ।
तूंबी–(हिं. स्त्री.) कड़वा गोल कद्दू, सूखे कद्दू का बनाया हुआ जलपात्र ।
तू–(हिं. सर्व.) यह शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है जिसको सम्बोधन करके कुछ कहा जाता है; (स्त्री.) कुत्ते को पुकारने का शब्द; (मुहा.) –तू करना–अशिष्ट वाक्यों का प्रयोग करना ।
तूख–(हिं. पुं.) देखें 'तुष', तिनका, सींक का टुकड़ा ।
तूटना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'टूटना' ।

तूठना–(हिं.क्रि.अ.) तृप्त होना, प्रसन्न होना ।
तूण–(सं. पुं.) तूणीर, तीर रखने का चोंगा, तरकश, चामर नामक वृत्त ।
तूणक–(सं. पुं.) एक प्रकार का छन्द ।
तूणधार–(सं. पुं.) तूणधारी, तीर धारण करनेवाला ।
तूणव–(सं. वि.) बाँसुरी के आकार का एक प्राचीन बाजा ।
तूणी–(सं. पुं.) देखें 'तूणधार' ।
तूणी–(सं. स्त्री.) तून का वृक्ष, तूण, तरकश, एक वात रोग जिसमें मूत्राशय के पास पीड़ा होती है ।
तूणीक–(सं. पुं.) तून का वृक्ष ।
तूणीर–(सं. पुं.) तीर रखने का चोंगा, तरकश ।
तूत–(फा. पुं.) एक प्रकार का पेड़ और उसका मीठा फल ।
तूतक–(सं. पुं.) तूतिया, नीलाथोथा ।
तूतिया–(हिं. पुं.) नीला थोथा ।
तूती–(फा. स्त्री.) छोटी जाति का तोता, कनेरी चिड़िया, मैना; (मुहा.) **किसी की तूती बोलना**–किसी का खूब बोलबाला होना; **नक्कारखाने में तूती की आवाज**–शोरगुल में धीमी आवाज, बड़ों के आगे छोटे लोगों की बात ।
तूतुम–(सं. पुं.) शीघ्रता, वेग, जल्दी ।
तूद–(सं.पुं.) शहतूत का वृक्ष, इसके फल ।
तूदी–(सं.स्त्री.) एक प्राचीन देश का नाम ।
तून–(हिं. पुं.) तुन का वृक्ष, एक प्रकार का लाल मोटा वस्त्र, तूल, देखें 'तूण' ।
तूना–(हिं. क्रि. अ.) चूना, टपकना, गिरना, खड़ा न रहना, गर्भपात होना ।
तूनीर–(हिं. स्त्री.) देखें 'तूणीर' ।
तूफान–(फा. पुं.) वर्षा के साथ अंधड़, आँधी, आपत्ति, आफत, उत्पात, झगड़ा-बखेड़ा; (मुहा.) **–उठाना या खड़ा करना**–उपद्रव मचाना ।
तूफानी–(फा. वि.) तूफान का, उत्पाती, उपद्रवी, झगड़ा-बखेड़ा करनेवाला, वेगयुक्त ।
तूबर–(सं. पुं.) बिना सींग का बैल, बिना दाढ़ी-मूँछ का मनुष्य, कसैला रस; (वि.) जिसमें कसैलापन हो ।
तूमड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तुंबी', एक प्रकार का सूखे कद्दू का बना हुआ बाजा जिसको सँपेरे बजाते हैं ।
तूमना–(हिं. क्रि. स.) रूई के रेशों को अलग-अलग करना, उधेड़ना, धज्जी-धज्जी करना, हाथों से मलना, पोल खोलना, गुप्त बात को प्रकट करना ।

तूमा-पलटी, तूमा-फेरी–(हिं. स्त्री.) हेर-फेर, अदला-बदली ।
तूय–(सं. पुं.) जल, पानी, शीघ्रता, जल्दी ।
तूया–(हिं. स्त्री.) काली सरसों ।
तूर–(सं. पुं.) नगाड़ा, तुरही नामक बाजा; (हिं. पुं.) जुलाहे की करघे की लंबी लकड़ी जिसमें तानी लपेटी जाती है, अरहर का पौधा ।
तूरज–(हिं.पुं.) देखें 'तूर्य' ।
तूरण, तूरन–(हिं. अव्य.) देखें 'तूर्ण' ।
तूरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'तोड़ना'; (पुं.) तुरही ।
तूरी–(सं. स्त्री.) धतूरे का पौधा ।
तूर्ण–(सं. अव्य.) जल्दी से, शीघ्र, तुरन्त; (पुं.) मल, विष्ठा, त्वरा, शीघ्रता; (वि.) शीघ्रगामी ।
तूर्त–(सं. अव्य.) शीघ्र, जल्दी ।
तूर्य–(सं. पुं.) तुरही, मृदंग ।
तूर्यखंड–(सं. पुं.) एक प्रकार का ढोल ।
तूर्यजीव–(सं. वि.) जो तूर्य बजाकर अपनी जीविका निर्वाह करता हो ।
तूल–(सं. पुं.) आकाश, शहतूत का वृक्ष, कपास, सेमल आदि के डोंड़े के भीतर का धूआ, रूई; (हिं.पुं.) एक प्रकार का मोटा लाल रंग का कपड़ा, गहरा लाल रंग; (हिं. वि.) तुल्य, सदृश, समान; –क–(पुं.) तूल, कपास; –कार्मुक–(पुं.) रूई धुनने का यन्त्र, धुनकी; –चाप–(पुं.) रूई धुनन का यन्त्र, धुनकी; –ता–(स्त्री.) समता, बराबरी; –नालिका, –नाली–(स्त्री.) रूई की प्यूनी या पूनी जिसमें से कातकर सूत निकाला जाता है; –पिचु–(स्त्री.) रूई, कपास का पौधा; –फल–(पुं.) अर्क वृक्ष, अकवन का पेड़; –फला–(स्त्री.) शाल्मली, सेमल का पेड़; –वृक्ष–(पुं.) देख 'तूलफला'; –शर्करा–(स्त्री.) कपास का बीज, बिनौला; –सेचन–(पुं.) रूई से सूत कातन का काम ।
तूलना–(हिं.क्रि.अ.,स.) गाड़ी के पहिये के धुरे में चिकनाई पोतना, बराबर होना ।
तूला–(सं. स्त्री.) कपास, रूई ।
तूलि, तूलिका–(सं. स्त्री.) चित्रकार की रंग भरने की कूँची ।
तूलिका–(सं. स्त्री.) सोना ढालने का पात्र, लालटेन आदि की बत्ती, रूई भरा हुआ गद्दा ।
तूलिनी–(सं. स्त्री.) शाल्मली, सेमल का वृक्ष ।
तूली–(सं.स्त्री.) नील का पौधा, चित्र-

कार की रंग भरने की कूँची, जुलाहे की कूँची।
तूवर–(सं.पुं.) कसैलो रस; (वि.) कसैले रस का, तूबर।
तूवरक–(सं. पुं.) विना सींग का वैल, विना दाढ़ी-मूँछ का मनुष्य, तूबरक।
तूवरिका, तूवरी–(सं. स्त्री.) गोपीचन्दन, अरहर।
तूष्णी–(हिं. वि.) मौन, चुप।
तूष्णीक–(सं. वि.) मौन साधनेवाला।
तूष्णीभूत–(सं. वि.) मौन, चुप।
तूस–(हिं. पुं.) भूसी, भूसा, पहाड़ी वकरे का ऊन, तूस का जमाया हुआ कम्बल; **–दान**–(पुं.) कारतूस।
तूसना–(हिं. क्रि.अ., स.) सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, तृप्त होना।
तृख–(सं. पुं.) जातीफल, जायफल।
तृखा–(हिं. स्त्री.) देखें 'तृषा'।
तृजग–(हिं. वि.) देखें 'तिर्यक्', टेढ़ा।
तृण–(सं.पुं.) नरकट, सरपत, घास, एक प्रकार का कपूर; (मुहा.) **–गहना या पकड़ना**–दीनता दिखलाना; **–तोड़ना**–संबंध तोड़ना।
तृणकांड–(सं. पुं.) घास का ढेर।
तृणकीय–(सं. वि.) घास से उत्पन्न।
तृणकुंकुम–(सं. पुं.) एक प्रकार की सुगन्धित घास।
तृणकुटी–(सं. स्त्री.) तृण से छाई हुई मड़ई।
तृणकूट–(सं. पुं.) घास का ढेर।
तृणकूर्म–(सं. पुं.) श्वेत तुम्बी या लौकी।
तृणकेतकी–(सं. स्त्री.) वंशलोचन।
तृणकेतु, तृणकेतुक–(सं. पुं.) ताल वृक्ष, वाँस।
तृणकेसर–(सं. पुं.) एक प्रकार की सुगन्धित घास।
तृणगंधा–(सं. स्त्री.) शालपर्णी वृक्ष।
तृणगण–(सं. पुं.) एक प्रकार का समुद्री केकड़ा।
तृणगोधा–(सं. स्त्री.) छिपकली, एक प्रकार की जोंक।
तृणग्राही–(स. पुं.) नीलमणि, एक प्रकार का रत्न।
तृणचर–(सं. पुं.) गोमेदक मणि।
तृणजंभन्–(सं. वि.) घास चरनेवाला; (वि.) तृणतुल्य।
तृणजलौका–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की जोंक।
तृणजलौका-न्याय–(सं.पुं) दार्शनिक लोग इस वाक्य का प्रयोग तव करते हैं जव वे आत्मा का एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाने का दृष्टान्त देते हैं।
तृणजीवन–(सं. वि.) जो (प्राणी) घास खाकर जीते हैं।
तृणता–(सं. स्त्री.) धनुष, कमान, तृणत्व।
तृणद्रुह–(सं. पुं.) वड़वानल।
तृणद्रुम–(सं. पुं.) नारियल, ताड़ का पेड़, सुपारी, केतकी, केवड़ा, खजूर का वृक्ष।
तृणधान्य–(सं.पुं.) तिन्नी का चावल, सावाँ।
तृणध्वज–(सं. पुं.) ताड़ का पेड़।
तृणनिंब–(सं. पुं.) चिरायता।
तृणप–(सं. पुं.) एक गन्धर्व का नाम।
तृणपति–(सं. पुं.) काला कपूर।
तृणपत्रिका, तृणपत्री–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
तृणपदी–(सं. स्त्री.) घास के समान एक औषधी।
तृणपाणि–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
तृणपीड़–(सं. पुं.) एक प्रकार का युद्ध।
तृणपुष्प–(सं. पुं.) ग्रन्थिपर्णी, गठिवन।
तृणपुष्पी–(सं. स्त्री.) सिन्दूरपुष्पी नामक घास।
तृणपूली–(सं.स्त्री.) घास की वनी हुई चटाई।
तृणप्राय–(सं. वि.) निकृष्ट, निकम्मा, बुरा।
तृणबिंदु–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
तृणबीज–(सं. पुं.) तिन्नी का धान।
तृणमणि–(सं. पुं.) एक रत्न का नाम।
तृणमत्कुण–(सं. पुं.) प्रतिभू, जामिन।
तृणमय–(सं. वि.) घास का वना हुआ, तृणपूर्ण।
तृणमयी–(सं. वि. स्त्री.) तृण-निर्मिता, घास की वनी हुई।
तृणमल्लिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का चमेली का फूल।
तृणमुद्ग–(सं.पुं.) एक प्रकार का काला धान।
तृणमुस्तिका–(सं.स्त्री.) मोथा नामक घास।
तृणमेरु–(सं. पुं.) रुद्राक्ष का पेड़।
तृणराज–(सं. पुं.) नारियल या ताड़ का वृक्ष, वाँस, ऊख, खजूर।
तृणवृक्ष–(सं. पुं.) नारियल, ताड़, सुपारी, केतकी, खजूर।
तृणशय्या–(सं. स्त्री.) घास का विछौना, चटाई।
तृणशीत–(सं. पुं.) रोहित घास जिसमें से नींबू के समान गन्ध निकलती है।
तृणशीता–(सं. स्त्री.) जल पिप्पली।
तृणशून्य–(सं. पुं.) केवड़ा, चमेली, नारंगी; (वि.) विना घास का।
तृणशूली–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की लता।
तृणशोणित–(सं. पुं.) रोहित घास।
तृणशोषक–(सं. पुं.) एक प्रकार का साँप।
तृणषट्पद–(सं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा।
तृणसारा–(सं. स्त्री.) केले का पेड़।
तृणसिंह–(सं. पुं.) कुठार, कुल्हाड़ी।
तृणस्कंद–(सं. वि.) चंचल स्वभाव का।
तृणहर्म्य–(सं. पुं.) वह कुटिया जिस पर फूस की छाजन हो।
तृणाग्नि–(सं. स्त्री.) घास-फूस की आग।
तृणाढ्य–(सं.पुं.) पर्वत पर उगनेवाली घास।
तृणान्न–(सं. पुं.) तिन्नी का चावल।
तृणाम्ल–(सं. पुं.) नोनिया नामक घास।
तृणारणिन्याय–(सं. पुं.) न्यायभेद, तृण और अरणि से अग्नि उत्पन्न होने के समान अलग-अलग कारणों का संयोग; (अग्नि उत्पन्न होने में तृण और अरणि दोनों कारण है, परन्तु ये परस्पर निरपेक्ष ह।)
तृणावर्त–(सं. पुं.) चक्रवात, घूर्ण वायु, ववंडर, एक दैत्य का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
तृणेंद्र–(सं. पुं.) ताड़ का पेड़।
तृणोत्तम–(सं.पुं.) एक सुगन्धित घास, रोहित।
तृणोद्भव–(सं. पुं.) तिन्नी का धान; (वि.) जो घास से उत्पन्न हुआ हो।
तृणोल्का–(सं.स्त्री.) घास-फूस की मशाल।
तृणौषध–(सं. पुं.) एक गन्ध-द्रव्य।
तृण्या–(सं. स्त्री.) घास-फूस का ढेर।
तृण्यमान–(सं. वि.) तृणयुक्त, तृण से भरा हुआ।
तृतीय–(सं. वि.) तीसरा।
तृतीयक–(सं. पुं.) तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, तिजरा।
तृतीयता–(सं.स्त्री.) तृतीयत्व, तीन का भाव।
तृतीय-प्रकृति–(सं. पुं.) क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा।
तृतीयांश–(सं.पुं.) तीसरा भाग या हिस्सा।
तृतीया–(सं. स्त्री.) प्रत्यक पक्ष की तीसरी तिथि, तीज, व्याकरण में करण-कारक।
तृतीयाकृष्ट–(सं. वि.) तीन-चार वार जोता हुआ खेत।
तृतीयाप्रकृति–(सं.पुं.) देखें 'तृतीय-प्रकृति'।
तृतीयाश्रम–(सं. पुं.) वानप्रस्थ आश्रम।
तृन–(हिं. पुं.) देखें 'तृण'।
तृपत्–(सं. पुं.) इन्द्र, चन्द्रमा, छत्र।
तृपति–(हिं. स्त्री.) देखें 'तृप्ति'।
तृपल–(सं. वि.) चंचल, तीव्र।
तृपला–(सं. स्त्री.) देखें 'त्रिफला'।
तृपित–(हिं. वि.) देखें 'तृप्त', संतुष्ट।
तृपिता–(हिं. स्त्री.) तृप्ति।
तृप्त–(सं.वि.) तृप्तियुक्त, जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो, प्रसन्न, अघाया हुआ।
तृप्ताना–(हिं. क्रि. स.) तृप्त करना।
तृप्ति–(सं. स्त्री.) सन्तोप, वह आनन्द और शान्ति जो इच्छा पूर्ण होने पर

प्राप्त होती है प्रसन्नता, आकांक्षा की निवृत्ति; –कर–(वि.) सन्तोष देनेवाला; –दा–(स्त्री.) गायत्री का एक भेद; –वत्–(वि.) तृप्तियुक्त; (पुं.) जल।
तृप्र–(सं. पुं.) घृत, घी, पुरोडाश; (वि.) सन्तुष्ट करनेवाला।
तृफला–(हिं. स्त्री.) त्रिफला, हर्रा, बहेड़ा और आमला–ये तीन फल।
तृफू–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का सर्प।
तृमा–(हिं. पुं.) भूसी, चोकर।
तृषा–(सं. स्त्री.) आकांक्षा, वासना, अभिलाषा, इच्छा, लोभ, प्यास, कामदेव की कन्या; –लु–(वि.) पिपासित, प्यासा; –वंत–(हिं. वि.) प्यासा।
तृषाह–(सं. पुं.) जल, पानी, एक प्रकार की सौंफ।
तृषित–(सं. वि.) प्यासा, लोभी, लालची, अभिलाषी, इच्छायुक्त।
तृष्ट–(सं. वि.) तृषित, प्यासा।
तृष्णज–(सं. वि.) लोभी, प्यासा।
तृष्णा–(सं. स्त्री.) प्यास, अपूर्ण अभिलाषा, लिप्सा, लोभ, लालच; –क्षय–(पुं.) शान्ति; –घ्न–(वि.) तृष्णानाशक; (पुं.) जल।
तृष्णातुर–(सं. वि.) पिपासायुक्त, प्यासा।
तृष्णार्त–(सं. वि.) प्यास के मारे छटपटाता हुआ, प्यासा।
तृष्णारि–(सं. पुं.) पित्तपापड़ा।
तृष्णालु–(सं. वि.) लोभी, लालची, प्यासा।
तृसी–(हिं. वि.) भूसे के रंग का, करंजई।
तृस्त–(सं. पुं.) धूलि, धनुष, अणु, कण।
तें–(हिं. प्रत्य.) से, द्वारा।
तेंतरा–(हिं. पुं.) बैलगाड़ी के फड़ के नीचे लगी हुई लकड़ी।
तेंतालीस–(हिं. वि.) चालीस और तीन की संख्या का; (पुं.) चालीस और तीन की संख्या, ४३।
तेंतालीसवाँ–(हिं. वि.) जो क्रम में तेंतालीस के स्थान पर हो।
तेंतीस–(हिं. वि.) तीस और तीन की संख्या का; (पुं.) तीस और तीन की संख्या, ३३।
तेंतीसवाँ–(हिं. वि.) जो क्रम से तेंतीस के स्थान पर हो।
तेंदुआ–(हिं. पुं.) चीते की जाति का एक हिंसक पशु।
तेंदू–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष, (इस वृक्ष की काली लकड़ी आवनूस कहलाती है।)
ते–(हिं. सर्व.) वे लोग।
तेईस–(हिं. वि., पुं.) बीस और तीन, यह संख्या, २३।
तेखना–(हिं. क्रि. अ.) रोष दिखलाना, क्रुद्ध होना।
तेग, तेगा–(फा. स्त्री. पुं.) बड़ी तलवार, कुश्ती का एक दाँव।
तेजःपुंज–(सं. पुं.) तेज का समूह।
तेज–(सं. पुं.) दीप्ति, कान्ति, चमक, प्रभाव, बल पराक्रम, वीर्य, शरीर की चमक-दमक, मक्खन, पित्त, अग्नि, सोना, प्रताप, साहस, सामर्थ्य, शत्रु का वह गुण जिससे उस पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, वह आज्ञा जो उल्लंघित नहीं की जा सकती, चैतन्यात्मक ज्योति, लिंग-शरीर, पंच महाभूतों में से तीसरा।
तेजधारी–(हिं. वि.) तेजस्वी, प्रतापी।
तेजन–(सं. पुं.) सरपत, मूँज, तेज उत्पन्न करने की क्रिया, भोजन, चटाई।
तेजनक–(सं. पुं.) शरतृण, सरपत।
तेजनाख्य–(सं. पुं.) मूँज।
तेजनी–(सं. स्त्री.) एक औषधि, मूर्वा लता, मालकँगनी।
तेजपत्र, तेजपात, तेजपत्ता–(सं. हिं. पुं.) दारचीनी की जाति का एक वृक्ष जिसकी जड़ और छाल में सुगन्ध होती है।
तेजबल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी काँटेदार वृक्ष।
तेजवंत, तेजवान्–(हिं. वि.) तेजयुक्त, तेजस्वी, वीर्यवान्, बली, चमकीला।
तेजवती–(सं वि. स्त्री.) देखें 'तेजवंत'।
तेजस्–(सं. पु.) देखें 'तेज'।
तेजली–(हिं. वि.) तेजयुक्त, तेजस्वी।
तेजस्कर–(सं. वि.) तेज की वृद्धि करनेवाला।
तेजस्य, तेजस्व–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
तेजस्वत्–(सं. वि.) तेजयुक्त, तेजस्वी।
तेजस्वती–(सं. स्त्री.) गजपीपल, मालकँगनी।
तेजस्विता–(सं. स्त्री.) प्रभावशालिता, तेजस्वी होने का भाव।
तेजस्वित्व–(सं. पुं.) तेजस्विता, बलवान होने का भाव।
तेजस्विनी–(सं. स्त्री.) मालकँगनी।
तेजस्वी–(सं. वि.) तेजयुक्त, प्रतापी, प्रभावशाली, जिसमें तेज हो; (पुं.) इन्द्र के पुत्र का नाम।
तेजाब–(फा. पुं.) रासायनिक प्रक्रिया से तैयार किया हुआ द्रव अम्ल जिसमें गलाने या जलाने की बहुत घातक शक्ति होती है।
तेजाबी–(फा. वि.) तेजाब संबंधी; –सोना–(पुं.) तेजाब से साफ किया हुआ सोना।
तेजारत–(हिं. स्त्री.) देखें 'तिजारत'।
तेजिका–(सं. स्त्री.) मालकँगनी।
तेजित–(सं. वि.) जो सान पर चढ़ाकर चोखा किया गया हो।
तेजिष्ठ–(सं. वि.) अत्यन्त प्रभावशाली।
तेजीयस्–(सं. वि.) तेजयुक्त, तेजस्वी।
तेजोद्वेष–(सं. पुं.) पित्त के बिगड़ने से उत्पन्न रोग।
तेजोधातु–(सं. पुं.) पित्त।
तेजोबीज–(सं. पुं.) मज्जा।
तेजोमंडल–(सं. पुं.) चन्द्र अथवा सूर्य का मण्डल।
तेजोमंथ–(सं. पुं.) गनियारी का वृक्ष।
तेजोमय–(सं. वि.) ज्योतिर्मय, जिसमें खूब चमक हो।
तेजोमात्रा–(सं. स्त्री.) चमकीला भाग।
तेजोमूर्ति–(सं. पुं.) सूर्य; (वि.) जिसमें अधिक तेज हो, तेज से परिपूर्ण।
तेजोराशि–(सं. स्त्री.) तेज का समूह।
तेजोरूप–(सं. पुं.) जो अग्नि या तेज जैसा हो, ब्रह्म।
तेजोवती–(सं. स्त्री.) गजपिप्पली, मालकँगनी।
तेजोबिंदु–(सं. पुं.) एक उपनिषद् का नाम।
तेजोवृक्ष–(सं. पुं.) अरणी का वृक्ष।
तेतना–(हिं. वि.) तितना, उतना।
तेता–(हिं. वि.) उस परिमाण का, उतना।
तेतिक–(हिं वि.) उतना, उस परिमाण का।
तेतो–(हिं. वि.) देखें 'तेता'।
तेन–(सं. पुं.) गाना का एक अंग।
तेम–(सं. पुं.) आर्द्रता, गीलापन।
तेमन–(सं. पुं.) गीला करने की क्रिया, पका हुआ भोजन।
तेमनी–(सं. स्त्री.) चूल्हा।
तेमरू–(हिं. पुं.) तेंदू का पेड़, आवनूस।
तेरज–(हिं. पुं.) पटवारी की खतियौनी।
तेरस–(हिं. स्त्री.) किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।
तेरह–(हिं. वि.) दस और तीन का; (पुं.) दस और तीन की संख्या, १३; –वाँ–(वि., पुं.) जो क्रम में तेरह के स्थान में हो, तेरही।
तेरहीं–(हिं. स्त्री.) किसी मनुष्य की मृत्यु के दिन से तेरहवीं तिथि जिस दिन हिंदू लोग पिण्ड-दान, ब्राह्मण भोजनादि कराते हैं और उस दिन दाह करनेवाला और मृतक व्यक्ति के परिवार के लोग शुद्ध होते हैं।
तेरा–(हिं. सर्व.) 'तू' का संबंध कारक, मध्यम पुरुष, एक वचन रूप।
तेरुस–(हिं. पुं.) देखें 'त्योरुस'।
तेरे–(हिं. प्रत्य.) से; (सर्व.) 'तेरा' का

बहुवचन रूप ।
तेरो–(हिं. सर्व.) तेरा ।
तेलंग–(सं. पुं.) एक देश, इस देश के मनुष्य ।
तेल–(हिं. पुं.) किसी बीज या वनस्पति आदि से निकाला हुआ स्निग्ध पदार्थ, तैल, विवाह-काल में वर और कन्या के शरीर में हल्दी और तेल मिलाकर लगाने की रीति; (मुहा.)–**उठना (चढ़ना)**–तेल-हल्दी लगाने की रीति पूरी होना ।
तेलगू–(हिं. स्त्री.) तैलंग देश की भाषा ।
तेलवाई–(हिं. पुं.) विवाह के समय तेल-हल्दी लगाने की प्रथा ।
तेलसुर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष ।
तेलहँड़ा–(हिं.पुं.)तेल रखने का बड़ा पात्र।
तेलहँड़ी–(हिं.स्त्री.)तेल रखने का छोटा पात्र।
तेलहन–(हिं. पुं.) वे बीज जिनमें से तेल निकाला जाता है, तिलहन, सरसों, राई।
तेलहा–(हिं. वि.) तेलयुक्त, जिसमें तेल पड़ा हो; (पुं.) एक प्रकार का अचार ।
तेला–(हिं. पुं.) तीन दिन तक रात का उपवास ।
तेलिन–(हिं. स्त्री.) तेली की स्त्री, एक प्रकार का बरसाती कीड़ा जिसके स्पर्श से शरीर में छाला पड़ जाता है ।
तेलियर–(हिं. पुं.)काले रंग का एक पक्षी ।
तेलिया–(हिं. वि.) जो तेल की तरह चिकना और चमकीला हो; (पुं.) काला चमकीला रंग, काले चमकीले रंग का घोड़ा, एक प्रकार का बबूल, एक प्रकार की छोटी मछली, सिंगिया नामक विष ।
तेलियाकंद–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कन्द, देखें 'तैलकंद' ।
तेलियाकत्था–(हिं. पुं.) एक प्रकार का काला खैर ।
तेलिया-कुमैत–(हिं. पुं.) घोड़े का रंग जो अधिक कालापन लिये लाल होता है, इस रंग का घोड़ा ।
तेलिया-पखान–(हिं. पुं.) चिकना काला पत्थर ।
तेलिया-पानी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बहुत खारा पानी ।
तेलिया-सुरंग–(हिं. पुं.) देख 'तेलिया-कुमैत' ।
तेलिया-सोहागा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चिकना सोहागा ।
तेली–(हिं. पुं.) हिन्दुओं में एक शूद्र जाति जो सरसों, तीसी, तिल आदि कोल्हू में पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करती है; (मुहा.)–**का बैल**–वह मनुष्य जो सर्वदा किसी न किसी काम में पिसता रहता है ।
तेवट–(हिं. स्त्री.) एक ताल का नाम जिसमें सात दीर्घ अथवा चौदह लघु मात्राएँ होती हैं ।
तेवन–(सं. पुं.) क्रीड़ा, खेल, प्रमोद-वन, आमोद-प्रमोद का स्थान; (हिं. पुं.) कुपित दृष्टि, भृकुटी; (स्त्री.) एक प्रकार का लहँगा ।
तेवर–(हिं. पुं.) क्रोधपूर्ण दृष्टि या भ्रू-भंगिमा; (मुहा.)–**चढ़ना या बदलना**–क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखना ।
तेवरसी–(हिं. स्त्री.) ककड़ी, खीरा, फूट।
तेवरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तेवर' ।
तेवहार–(हिं. पुं.) देखें 'त्योहार' ।
तेवाना–(हिं.क्रि.अ.) सोचना, विचारना, चिन्ता करना ।
तेह–(हिं. पुं.) क्रोध, अहंकार, घमंड, प्रचंडता, तीव्रता ।
तेहरा–(हिं. वि.) तीन परत किया हुआ, जिसकी एक साथ तीन प्रतियाँ हों, जो दो बार होकर या किया जाकर तीसरी बार फिर किया जाय, त्रिगुणित, तिगुना।
तेहराना–(हिं. क्रि.स.)तीन परत करना, किसी काम को तीसरी बार करना ।
तेहवार–(हिं. पुं.) देखें 'त्योहार'।
तेहा–(हिं. पुं.)घमंड, अहंकार, शेखी, क्रोध।
तेहि–(हिं. सर्व.) उसको, उसे ।
तेही–(हिं. वि.) अभिमानी, घमंडी, क्रोध करनेवाला ।
तैं–(हिं. प्रत्य.) से, ते; (सर्व.) तू ।
तैंतालीस–(हिं. वि., पुं.) देखें 'तेंतालीस' ।
तैंतीस–(हिं. वि., पुं.) देखें 'तेंतीस' ।
तै–(हिं. वि.) जिसका निर्णय हो चुका हो, समाप्त, जो पूरा हो चुका हो; –**तमाम**–समाप्त ।
तैक्त–(सं. पुं.) तिक्तता, चरपराहट ।
तैक्ष्ण्य–(सं. पुं.) तीक्ष्णता, कठोरता, क्रूरता, कड़ाई, निष्ठुरता ।
तैखाना–(हिं. पुं.) तहखाना।
तैग्म्य–(सं. पुं.) तिग्मता, तीक्ष्णता ।
तैजस–(सं. पुं.) कोई चमकीली वस्तु, घृत, घी, एक तीर्थ का नाम, पराक्रम शरीर की वह शक्ति जो आहार को पचाकर धातु में परिणत कर देती है; सुमति के एक पुत्र का नाम, भगवान, शक्ति, पराक्रम, कांति; वह अहंकार जो राजस अवस्था में उत्पन्न होता है; (वि.) तेज संबंधी, तेज से उत्पन्न ।
तैजसावर्तिनी–(सं. स्त्री.) सोना-चाँदी गलाने की घरिया ।
तैजसी–(सं. स्त्री.) गजपिप्पली ।
तैतल–(हिं. पुं.) एक ऋषि का नाम ।
तैतिक्ष–(सं. वि.) क्षमाशील ।
तैतिर–(सं. पुं.) तीतर पक्षी, गैंड़ा ।
तैतिल–(सं. पुं.) गंडक, गैंड़ा, फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से चौथा करण, देवता ।
तैत्तिर–(सं. पुं.) तीतर पक्षी, गैंड़ा ।
तैत्तिरि–(सं. पुं.) कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम ।
तैत्तिरीय–(सं. पुं.) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा, इस शाखा की उपनिषद् ।
तैत्तिरीयक–(सं. पुं.) तैत्तिरीय-शाखा को पढ़नेवाला ।
तैत्तिरीया–(सं.स्त्री.)यजुर्वेद की एक शाखा।
तैत्तिरीयारण्यक–(सं.पुं.)तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमें वानप्रस्थों के लिये अनेक उपदेश लिखे हैं।
तैनात–(हिं.वि.) किसी काम पर नियुक्त।
तैनाती–(हिं. स्त्री.) नियुक्ति ।
तैमिर–(सं. पुं.) आँख का एक रोग।
तैमिरिक–(सं. वि.) जिसको तिमिर रोग हुआ हो ।
तैया–(हिं पुं.) मिट्टी का छोटा बरतन जिसमें छीपी रंग रखते हैं ।
तैयार–(अ. वि.) खाने, पहनने या अन्य व्यवहार आदि के पूर्णतः योग्य अवस्था को प्राप्त, हर प्रकार से दुरुस्त ।
तैयारी–(हिं. स्त्री.) तत्परता, समारोह, सजावट, धूमधाम, शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना ।
तैयो–(हिं.अव्य.) देखें 'तऊ', तोभी ।
तैरना–(हिं.क्रि.अ.)पानी के ऊपर ठहरना, उतराना, हाथ-पैर हिलाते हुए पानी पर बहना।
तैराई–(हिं. स्त्री.) तैरने की क्रिया ।
तैराक–(हिं. वि., पुं.)तैरनेवाला, जो तैरना अच्छी तरह जानता हो ।
तैराना–(हिं.क्रि. सं.) तैरने का काम दूसरे से कराना, घुसाना, धँसाना ।
तैर्थ–(सं. वि.) तीर्थ सम्बन्धी ।
तैर्थिक–(सं.वि.)तीर्थ से उत्पन्न होनेवाला; (पुं.) कपिल, कणाद आदि शास्त्रकार ।
तैलंग–(हिं. पुं.) दक्षिण भारत के एक देश का नाम जहाँ की भाषा तेलगू कहलाती है ।
तैलंगी–(हिं. पुं.) तैलंग देश का निवासी; (स्त्री.) इस देश की भाषा ।

तैल–(सं. पुं.) तेलहन से निकाला हुआ तरल पदार्थ, तेल।
तैलक–(सं. पुं.) थोड़ा सा तेल।
तैलकंद–(सं. पुं.) तेलकंद।
तैलकल्कज–(सं. पुं.) तैलकिट्ट, खली।
तैलकार–(स.पुं.) तेल पेरनेवाला, तेली।
तैलकिट्ट–(स. पुं.) तेल का मल, खली।
तैलकीट–(सं. पुं.) तेलिन नामक कीड़ा।
तैल-चोरिका, तैलचौरिका–(सं. स्त्री.) तैलकीट, तेलचट्टा।
तैलत्व–(सं. पुं.) तेल का स्नेहन या गुण।
तैलद्रोणी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का काठ का वड़ा पात्र जिसमें प्राचीन काल में चिकित्सा के लिये मनुष्य लिटा दिये जाते थे और इसमें औषध या तेल भर दिया जाता था।
तैलधान्य–(सं. पुं.) सरसों, राई, खसखस और कुसुम का वीज।
तैल-निर्यास–(सं. पुं.) गन्धराज।
तैलनी–(सं. स्त्री.) तैलकिट्ट, खली।
तैलपक–(सं. पुं.) तेलिन नाम का कीड़ा।
तैलपर्णक–(सं.पुं.) ग्रन्थिपर्णी (गठिवन) वृक्ष।
तैलपर्णिक–(सं. पुं.) लाल चन्दन।
तैलपर्णी–(सं. स्त्री.) सलई का गोंद, चन्दन, तुरुष्क नामक गन्ध-द्रव्य।
तैलपा–(सं. पुं.) तेल का कीड़ा।
तैलपायिन्, तैलपायी–(सं. पुं.) झींगुर, चपड़ा।
तैलपिंज–(सं. पुं.) तिल का वह वृक्ष जिसमें फल-फूल नहीं लगते।
तैलपिष्टक–(सं. पुं.) खली।
तैलफल–(सं. पुं.) इंगुदी, वहेड़ा।
तैलभाविनी–(सं. स्त्री.) चमेली का पेड़।
तैलमर्दन–(सं. पुं.) शरीर में तेल मलना।
तैलमाली–(सं.स्त्री.) दीया की वत्ती, पलीतीं
तैलयंत्र–(सं पुं) तेल पेरने का कोल्हू।
तैलवल्ली–(.सं. स्त्री.) छोटी सतावर।
तैलसाधन–(सं. पुं.) शीतलचीनी।
तैलस्फटिक–(सं.पुं.) अम्बर नामक गन्धद्रव्य
तैलांग–(सं.पुं.) वकुल, मौलसिरी का वृक्ष।
तैलाक्त–(सं.वि.) जिसमें तेल पोता हुआ हो
तैलागुरु–(सं. पुं.) अगर की लकड़ी।
तैलाटी–(सं. स्त्री.) वर्रै, मिड़।
तैलाधार–(सं. पुं.) तेल रखने का पात्र।
तैलाभ्यंग–(सं.पुं.) शरीर में तेल मलना।
तैलिक–(सं. पुं.) तेल पेरनेवाला, तेली; **–यंत्र**–(सं. पुं.) तेल पेरने का कोल्हू।
तैलिन–(सं.वि.) तेल मिला हुआ, तैलयुक्त।
तैलिनी–(सं.स्त्री.) तैलकिट्ट, दीया की वत्ती।
तैलिशाला–(सं.स्त्री.) तेल पेरने का स्थान।

तैलीन–(सं. पुं.) तिल का तेल।
तैष–(सं.पुं.) पौष मास, पूस का महीना।
तैषी–(सं. स्त्री.) पूस महीने की पूर्णिमा।
तैसा–(हिं. वि.) उस प्रकार का, वैसा।
तैसे–(हि. अव्य.) उस प्रकार से, वैसे।
तों–(हिं. अव्य.) देखें 'त्यों'।
तोंअर–(हिं. पुं.) देख 'तोमर'।
तोंद–(हि. स्त्री.) पेट के आगे का उमड़ा हुआ भाग, पेट का फुलाव।
तोंदल–(हिं. वि.) सोंदवाला, जिसका पेट आगे की ओर निकाला हुआ।
तोंदा–(हि. पुं.) तालाव का पानी निकालन का मार्ग, लक्ष्य का अभ्यास करने के लिये मिट्टी की भीत या टीला, राशि, ढेर।
तोंदी–(हिं. स्त्री.) नाभि, ढोंढी।
तोंदीला, तोंदैल–(हिं. वि.) देखें 'तोंदैल'।
तोंबा–(हि. पुं.) देखें 'तुंवा'।
तोंबी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तुंबी'।
तो–(हिं. सर्व.) तेरा, तुझ, (ब्रजभाषा में प्रयुक्त होता है); (अव्य.) उस स्थिति में, तब; किसी शब्द पर जोर देने के लिये भी इस शव्द का प्रयोग होता है।
तोइ–(हिं. पुं.) तोय, जल, पानी।
तोई–(हि.स्त्री.) वह पट्टी जो कुरती आदि के कमर के भाग में लगाई जाती है, चादर आदि में लगाने की गोट।
तोक–(सं. पुं.) अपत्य, लड़का या लड़की, छोटा वालक।
तोकक–(सं. पुं.) नीलकंठ पक्षी।
तोकरा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लता।
तोख–(हिं. पुं.) देखें 'तोष'।
तोखना–(हि. क्रि. स.) सन्तुष्ट करना।
तोटक–(सं. पुं.) एक वृत्त का नाम।
तोटका–(हिं. पुं.) देखें 'टोटका'।
तोड़–(हिं. पुं.) तोड़ने की क्रिया, नदी की तीव्र धारा, प्रतिकार, मारक, दही का पानी, मल्लयुद्ध की वह युक्ति जो किसी दाँव या पेंच को रद्द कर देती हो, वार; **–जोड़**–(पुं.) युक्ति, विधि, चाल।
तोड़न–(सं. पुं.) छेद करने की क्रिया, चीरने का काम, मारने का काम।
तोड़ना–(हिं. क्रि. स.) भग्न करना, टुकड़े करना, किसी वस्तु के खडों को अलग करना, किसी अंग को वेकाम करना, किसी संस्था या संगठन को नष्ट करना, स्थिर न रहने देना, संवंध न निभाना, दूर करना, वादे के विरुद्ध आचरण करना, दुर्वल करना, सेंध लगाना, कुमारीत्व नष्ट करना, कोई वस्तु खरीदने में दाम घटाकर सौदा करना।

तोड़वाना, तोड़ाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'तुड़ाना'।
तोड़ाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'तुड़ाई'।
तोड़ी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी; (हिं. स्त्री.) एक प्रकार की सरसों।
तोण–(हिं. पुं.) तूण, तरकश।
तोत–(हिं. पुं.) राशि, ढेर।
तोतई–(हि.वि.) तोते के रंग का, धानी रंग का।
तोतकर–(हिं. पुं.) पपीहा।
तोतरंगी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
तोतर, तोतरा–(हिं. वि.) देखें 'तोतला'।
तोतराना–(हिं.क्रि अ.) देखें 'तुतलाना'।
तोतला–(हिं. वि.) तुतलाकर बोलनेवाला, अस्पष्ट बोलनेवाला।
तोतलाना–(हिं. क्रि. अ.) तुतलाकर बोलना, तुतलाना।
तोता–(फा.पुं.) सुग्गा नाम का प्रसिद्ध पक्षी, वंदूक का घोड़ा; (मुहा.) **–पालना**–किसी दुर्व्यसन, रोग आदि को वढ़ाना; **तोते की तरह आँख फेरना या वदलना**–वहुत वेमुरौवत होना।
तोताचश्म–(फा. पुं.) तोते की तरह आँख फेर लेनवाला, वमुरौवत।
तोती–(हिं. स्त्री.) तोते की मादा, सुग्गी, उपपत्नी, रखनी।
तोत्र–(सं. पुं.) जानवरों को हाँकने की छड़ी या चाबुक।
तोद–(सं. पुं.) व्यथा, पीड़ा; (वि.) कष्ट पहुँचानेवाला।
तोदन–(सं. पुं.) अंकुश, चाबुक, कोड़ा, व्यथा, पीड़ा, एक प्रकार का वृक्ष।
तोदपत्री–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का खराव धान।
तोप–(तु. स्त्री.) वड़े-वड़े गोले दूर तक फेंकनेवाला प्रसिद्ध क्षेप्यास्त्र।
तोपखाना–(तु. फा. पुं.) तोप रखने का आयुधागार।
तोपची–(तु. फा. पु.) तोप चलानेवाला, गोलन्दाज।
तोपना–(हिं. क्रि. स.) ढांकना।
तोपा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की सिलाई।
तोपाना–(हिं.क्रि.स.) ढांकने का काम दूसरे से कराना।
तोबा–(फा. पुं.) कोई घृणित काम देखकर कहा जानेवाला निंदा या घृणासूचक शव्द; (मुहा.) **–तिल्ला मचाना**–चीखना, चिल्लाना; **–वुलवाना**–किसी को इतना तंग करना कि वह पनाह या शरण माँगने लगे।
तोम–(हिं. पुं.) समूह, ढेर।

तोमड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'तूंवड़ी'।
तोमर–(सं.पुं.) भाले की तरह का भारत का एक प्राचीन अस्त्र, बाँस की मूठ का बछार, एक प्राचीन देश का नाम, एक प्रकार का छन्द जिसमें १२ मात्राएँ होती है, राजस्थान का एक प्राचीन राजपूत (क्षत्रिय) राजवंश।
तोमरधर–(सं. पुं.) तोमरधारी योद्धा।
तोमरिका–(सं. स्त्री.) गोपीचन्दन।
तोय–(सं. पुं.) जल, पानी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र; **–कर्म**–(पुं.) तर्पण; **–काम**–(पुं.) एक प्रकार का बेंत; **–कुंभ**–(पुं.) शैवाल, सेवार; **–कृच्छ्र**–(पुं.) एक व्रत जिसमें जल के सिवाय कोई आहार नहीं किया जाता; **–क्रीड़ा**–(स्त्री.) जलक्रीड़ा; **–चर**–(पुं.) जलचर प्राणी; **–ज**–(पुं) जल में उत्पन्न; **–डिंब**–(पुं) ओला, तुषार; **–द**–(पु.) मेघ, बादल, नागरमोथा, घृत, घी; (वि.) जल देनेवाला; **–दागम**–(पुं.) वर्षाकाल, बरसात; **–धर, –धार**–(पुं) मेघ, वादल, मोथा, साग; **–धारा**–(स्त्री.) जल की धारा; **–धि**–(पुं.) समुद्र, सागर; **–प्रिय**–(पु.) लवंग, लौंग; **–पर्णी**–(स्त्री.) एकप्रकार का घान; **–पिप्पली**–(स्त्री.) जलपिप्पली; **–पुष्पी**–(स्त्री.) जलकुम्भी; **–प्रसादन**–(पुं.) निर्मली; **–फला**–(स्त्री.) तरबूज की लता, ककड़ी; **–बिंब**–(पुं.) जल में की परछाई; **–मल**–(पुं.) समुद्र का फन; **–मुच्**–(पुं.) मेघ, बादल, मोथा; **–यंत्र**–(पुं.) जलघड़ी, फौवारा; **–राज, –राशि**–(पुं.) समुद्र, सागार; **–वल्लिका, –वल्ली**–(स्त्री.) करैला; **–वृक्ष**–(पुं.) शैवाल, सेवार; **–शाला**–(स्त्री.) वारिशाला, पौसरा; **–शूक**–(पुं.) शैवाल, सेवार; **–सर्पिका**–(स्त्री.) मेढक; **–सूचक**–(पुं.) ज्योतिष का वह योग जिसमें वर्षा की सूचना मिले।
तोयात्मा–(सं. पुं.) परमेश्वर।
तोयाधार–(सं. पुं.) जलाशय, तालाव।
तोयेश–(सं. पुं.) वरुण, शतभिषा नक्षत्र।
तोर–(हिं.पुं.) अरहर, तोड़; (सर्व.) तेरा।
तोरई–(हिं. स्त्री.) देखें 'तुरई'।
तोरण–(सं. पुं.) किसी घर या नगर का बाहरी फाटक, सजावट के लिये खंभों या दीवारों पर लटकाई जानेवाली मालाएँ, बन्दनवार, ग्रीवा, गला, गरदन, शिव महादेव।
तोरन–(हिं. पुं.) देखें 'तोरण'।
तोरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'तोड़ना'।
तोरश्रवा–(सं.पुं.) अङ्गिरा ऋषि का नाम।
तोरा–(हिं. सर्व.) तेरा।
तोराई–(हिं. स्त्री.) देखें 'तोड़ाई'।
तोराना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'तुड़ाना'।
तोरिया–(हिं.स्त्री.) गोटा बनानेवालों का बलन जिस पर वे किनारी, गोटा आदि लपेटते हैं, एक प्रकार की सरसों, वह गाय या भैंस जिसका बच्चा मर गया हो।
तोरी–(हिं. स्त्री.) देख 'तुरई'।
तोल–(हिं. स्त्री.) देखें 'तौल'; (पुं.) नाव का डाँड़ा।
तोलक–(सं. पुं.) एक तोले का परिमाण।
तोलन–(सं.पुं.) तौलने की क्रिया, उत्तोलन, उठाने की क्रिया; (हिं.स्त्री.) चाँड़ जो छत में लगाया जाता है; **–यंत्र**–(पुं.) तौलने का यंत्र, तराजू, धर्म-काँटा।
तोलना–(हिं. क्रि. स.) देख 'तौलना'।
तोलवाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'तौलवाना'।
तोला–(हिं. पुं.) वारह माशे या छानवे रत्तियों की तौल, इस तौल का बाट।
तोशक–(तु. स्त्री.) मजबूत सूती कपड़े के खोल में रूई भरकर बनाया हुआ गद्दा या बिछौना।
तोष–(सं. पुं.) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, आनन्द, श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम; (वि.) अल्प, थोड़ा; **–क**–(वि.) तुष्टिकारक, सन्तुष्ट करनेवाला; **–ण**–(पुं.) तृप्ति, सन्तोष, सन्तुष्ट करने की क्रिया; (वि.) सन्तोषजनक।
तोषना–(हिं.क्रि.अ.,स.) सन्तुष्ट होना या करना, तृप्त होना।
तोषयितव्य–(सं.वि.) सन्तुष्ट करने योग्य।
तोषल–(सं. पुं.) कंस के एक योद्धा का नाम जो असुर था, और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
तोषित–(सं. वि.) तृप्त, सन्तुष्ट।
तोषी–(सं. वि.) जो सन्तुष्ट करता हो, तृप्त करनेवाला।
तोष्य–(सं. वि.) सन्तुष्ट करने योग्य।
तोस–(हिं. पुं.) देखें 'तोष'।
तोसक–(हिं. पुं.) रूईदार गद्दा, तोशक।
तोसल–(हिं. पुं.) देखें 'तोषल'।
तोसा–(हिं. पुं.) पाथेय।
तोहफा–(अ. वि.) सुंदर, आकर्पक, मनोरम; (पुं.) उपहार, भेंट, सौगात।
तोहरा–(हिं. सर्व.) तुम्हारा।
तोहि–(हिं. सर्व.) तुझको, तुमको, तुझे।
तौंकना–(हिं.क्रि.अ.) आँच से तपना।
तौंस–(हिं. स्त्री.) धूप लगने से उत्पन्न प्यास जो किसी तरह न बुझे।
तौंसना–(हिं. क्रि. अ.) गरमी के कारण प्यास या ताप लगना।
तौंसा–(हिं. पुं.) अधिक गरमी या ताप, बहुत प्यास।
तौ–(हिं. अव्य.) तो; (हिं.क्रि.अ.) था।
तौक्षिक–(सं. पुं.) धनु राशि।
तौंचा–(हिं. पुं.) सिर पर पहिनने का एक प्रकार का गहना।
तौतिक–(सं. पुं.) मोती, मोती का सीप।
तौदी–(सं. स्त्री.) घृतकुमारी, घीकुआर।
तौन–(हिं. सर्व.) वह, जो; (हिं.स्त्री.) वह रस्सी जिससे गाय दूहते समय बछवा उसके पैर में बाँध दिया जाता है।
तौनी–(हिं. स्त्री.) रोटी सेंकने का छोटा तवा, तई।
तौबा–(हिं स्त्री.) देखें 'तोबा'।
तौरि–(हिं. स्त्री.) घुमटा, चक्कर।
तौर्य–(सं. पुं.) ढोल, मजीरा आदि बाजे की ध्वनि।
तौल–(सं.पुं.) तुला, तराजू, तुला राशि; (हिं. स्त्री.) किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण, तौलन की क्रिया; **–कर**–(सं.पुं.) तौलनेवाला।
तौलना–(हिं.क्रि.स.) जोखना, तारतम्य जानना, साधना, मिलान करना, गाड़ी के पहियों को औंगना, धुरे में तेल पोतना
तौलवाई–(हिं. स्त्री.) देख 'तौलाई'।
तौलाई–(हिं. स्त्री.) तौलने का कार्य, तौलने का शुल्क।
तौलाना, तौलवाना–(हिं.क्रि.स.) तौलने का काम दूसरे से कराना।
तौलिक–(सं. पुं.) चित्रकार, रंगसाज।
तौलिया–(हिं. पुं.,स्त्री.) शरीर पोंछने के काम में आनेवाला मोटा अँगौछा।
तौली–(हिं. स्त्री.) चौड़े मुँह का मिट्टी का पात्र; (सं.पुं.) तुला राशि' बंगाल की तेली जाति।
तौषार–(सं. पुं.) पाला तुषार; (वि.) पाला संबंधी।
तौसना–(हि.क्रि.अ.,स.) गरमी या ताप से व्याकुल होना या करना।
तौहीन–(अ. स्त्री.) अनादर, अपमान, बेइज्जती।
तौहीनी–(हि. स्त्री.) तौहीन, अनादर।
त्यक्त–(सं. वि.) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, उच्छिष्ट; **–व्य**–(वि.) त्याग देने योग्य।
त्यक्ता–(सं. वि., पुं.) त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला।

त्यजन–(सं.पुं.) त्याग, छोड़ने का काम ।
त्यजनीय–(सं. वि.) त्याग करने योग्य ।
त्यज्यमान–(सं.वि.) जो छोड़ दिया जाय ।
त्याग–(सं. पुं.) उत्सर्ग, किसी पदार्थ पर से अपना अधिकार हटा लेने की क्रिया, छोड़ने का काम, दान, विवेकी पुरुष का वैराग्य उत्पन्न होने पर सब सांसारिक विषयों को छोड़ने की क्रिया, सम्बन्ध न रखने की क्रिया, कन्यादान ।
त्यागना–(हिं.क्रि.स.) त्याग देना, छोड़ना ।
त्यागपत्र–(सं. पुं.) दानपत्र, वह पत्र जिसमें नौकरी, पद आदि के त्याग करने का उल्लेख हो, इस्तीफा ।
त्यागवान्–(सं.वि.) त्यागी, जिसने त्याग किया हो ।
त्यागशील–(सं.वि.) दानशील, उदार, दानी ।
त्यागी–(सं. वि., पुं.) सांसारिक सुख को छोडनेवाला, विरक्त, दाता, दानी, शूर ।
त्याज्य–(सं. वि.) वर्जनीय, छोड़ने योग्य, त्याग के योग्य ।
त्यूं, त्यों–(हिं. अव्य.) उसी प्रकार से, उसी तरह से, उसी समय, तत्काल ।
त्योर(रु)स–(हिं. पुं.) पिछला अथवा आगामी तीसरा वर्ष ।
त्योरी–(हिं. स्त्री.) तेवर, दृष्टि, चितवन, अवलोकन; (मुहा.)–**चढ़(ढ़ा)ना या बदलना**–आँखें चढ़ाना, ऐसे देखना जिससे क्रोध जान पड़े ।
त्योहार–(हिं. पुं.) धार्मिक अथवा जातीय उत्सव का दिन, पर्व का दिन ।
त्योहारी–(हिं. स्त्री.) त्योहार के उपलक्ष में छोटे लड़कों, बहू-बेटियों को अथवा नौकरों को मिठाई, धन इत्यादि देना ।
त्यौं–(हिं.अव्य.) देखें 'त्यों', उसी प्रकार से ।
त्यौनार–(हिं. पुं.) ढंग, विधि ।
त्यौरस–(हिं. पुं.) देखें 'त्योरस' ।
त्यौहार–(हिं.पुं.) देखें 'त्योहार', पर्व दिन ।
त्यौहारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'त्योहारी' ।
त्रपा–(सं. स्त्री.) लज्जा, लाज, कुटिला, छिनाल स्त्री, कीर्ति, यश, कुल, वंश; (वि.) लज्जित ।
त्रपाक–(सं. पुं.) नीच, या म्लेच्छ जाति ।
त्रपानिरस्त–(सं. वि.) लज्जाहीन ।
त्रपान्वित–(सं. वि.) लज्जायुक्त ।
त्रपारंडा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
त्रपावान्–(सं. वि.) लज्जाशील ।
त्रपित–(सं. वि.) लज्जित ।
त्रपिष्ठ–(सं. वि.) अत्यन्त लज्जित ।
त्रपु–(सं. पुं.) सीसा नामक धातु ।
त्रपुटी–(सं. स्त्री.) छोटी इलायची ।
त्रपुल, त्रपुष–(सं. पुं.) सीसा, राँगा ।
त्रपुषी–(सं. स्त्री.) ककड़ी, खीरा ।
त्रय–(सं.वि.,पुं.) त्रि, तीन, तीसरी संख्या ।
त्रयी–(सं. स्त्री.) तीन वस्तुओं का समूह, ऋक् और यजु और साम–ये तीनों वेद, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सोमराजी लता, भवानी, दुर्गा; –**धर्म**–(पुं.) वैदिक धर्म; –**मय**–(पुं.) सूर्य, परमेश्वर; –**मुख**–(पुं.) ब्राह्मण ।
त्रयोदशी–(सं. स्त्री.) प्रत्येक पक्ष की तेरहवीं तिथि, तेरस ।
त्रष्टा–(सं. पुं.) तष्टा, तश्तरी ।
त्रस–(सं. पुं.) वन, जंगल ।
त्रसन–(सं. पुं.) उद्वेग, भय, डर ।
त्रसरेणु–(सं. पुं.) वे सूक्ष्म कण जो छोटे-छोटे छेदों में से आनेवाली धूप में नाचते हुए दिखाई पड़ते हैं, परमाणु; (स्त्री.) सूर्य की एक पत्नी का नाम ।
त्रसाना–(हि.क्रि.स.) धमकाना, डराना ।
त्रसित–(सं.वि.) भयभीत, डरा हुआ, पीड़ित ।
त्रसुर–(सं. वि.) भीरु, डरपोक ।
त्रस्त–(सं. वि.) त्रासयुक्त, डरा हुआ ।
त्राटक–(सं. पुं.) योग के षट्कर्मों में से छठा साधन ।
त्राण–(सं. पुं.) रक्षण, रक्षा, बचाव, रक्षा करने का साधन, कवच; –**कर्ता**–(पुं.) रक्षक, रक्षा करनेवाला ।
त्रात–(सं. वि.) रक्षित, रक्षा किया हुआ; –**व्य**–(वि.) रक्षा करने योग्य ।
त्राता, त्रातार–(सं.हि.पुं.) रक्षक, बचानेवाला ।
त्रापुष–(सं.पुं.) राँगे का बना हुआ पात्र ।
त्रायमाण–(सं.वि.) रक्ष्यमाण, बचानेवाला; (स्त्री.) एक प्रकार की लता का नाम ।
त्रायमाणा–(सं.स्त्री.) बलभद्रा नामक लता ।
त्रायवृंत–(सं. पुं.) एक प्रकार का शाक ।
त्रास–(सं. पुं.) डर, भय, कष्ट ।
त्रासक, त्रासकर–(सं. पुं.) भयभीत करनेवाला, डरानेवाला, निवारक, दूर करनेवाला ।
त्रासदायी–(सं.वि.) भयदाता, डरानेवाला ।
त्रासन–(सं.पुं.) भयोत्पादन, डराने का काम ।
त्रासनीय–(सं.वि.) ताड़नीय, दंड देने योग्य ।
त्रासना–(हिं. क्रि. स.) भय दिखलाना, डराना ।
त्रासित–(सं. वि.) त्रस्त, भयभीत, डराया हुआ ।
त्राहि–(सं. क्रि. स.) रक्षा करो, बचाओ ।
त्रि–(सं. वि.) तीन ।
त्रिकंट–(सं. पुं.) गोखरू, थूहर ।
त्रिकंटक–(सं. वि.) जिसमें तीन काँटे हों ।
त्रिक–(सं. पुं.) तीन का समूह, रीढ़ के बीच का भाग, कटि भाग, कमर, त्रिफला, त्रिकटु, तिमुहानी, गोखरू, तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, कूल्हे का जोड़ ।
त्रिककुद–(सं. पुं.) त्रिकूट पर्वत, विष्णु, दस दिन में होनेवाला एक यज्ञ; (वि.) तीन सींगोंवाला ।
त्रिककुभ–(सं. पुं.) उदान वायु जिससे छींक और डकार आती है ।
त्रिकग्रह–(सं.पुं.) एक प्रकार का वात रोग ।
त्रिकट–(सं. पुं.) गोक्षुरक, गोखरू ।
त्रिकटु–(सं. पुं.) सोंठ, मिर्च, पीपल–ये तीन कटु पदार्थ ।
त्रिकल–(सं. पुं.) तीन मात्राओं का शब्द, दोहे का एक भेद ।
त्रिकशूल–(सं.पुं.) एक प्रकार का वात रोग ।
त्रिकांड–(सं. पुं.) अमरसिंह कृत कोष का नाम, निरुक्त जिसमें नैघंटुक, नैगम और दैवत नाम के तीन कांड हैं ।
त्रिकांडी–(सं. पुं.) वह ग्रन्थ जिसमें कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों का वर्णन हो ।
त्रिका–(सं. स्त्री.) कुएँ के मुख पर का वह खंभा जिसमें गराड़ी लगाई जाती है ।
त्रिकाम, त्रिकाय–(सं. पुं.) बुद्धदेव ।
त्रिकाल–(सं. पुं.) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल, प्रातः, मध्याह्न तथा सन्ध्या; –**ज्ञ**–(पुं.) सर्वज्ञ; (वि.) भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञाता; –**दर्शक**–(वि.) जो तीनों कालों की बातें जानता हो, त्रिकालज्ञ; –**दर्शी**–(पुं.) ऋषि, मुनि; (वि.) भूत, भविष्य तथा वर्तमान को जाननेवाला ।
त्रिकुटी–(सं. स्त्री.) दोनों भौंहों के बीच के ऊपर का स्थान ।
त्रिकूट–(सं. पुं.) तीन शिखरोंवाला पर्वत, वह पर्वत जिस पर लंकापुरी बसी थी; (पुं.) सेंधा नमक ।
त्रिकूटा–(सं. स्त्री.) तान्त्रिकों की एक भैरवी ।
त्रिकूर्चक–(सं. पुं.) शल्य-चिकित्सा के एक प्राचीन यंत्र का नाम ।
त्रिकोण–(सं. पुं.) योनि, भग, ज्योतिष में लग्न-स्थान से पाँचवाँ और नवाँ स्थान, त्रिभुज क्षेत्र, तीन कोनोंवाला क्षेत्र, मोक्ष; –**घंटा**–(पुं.) एक प्रकार का बाजा; –**फल**–(पुं.) शृङ्गाटक, सिंघाड़ा, त्रिभुज का क्षेत्रफल; –**भवन**–(पुं.) फलित ज्योतिष में लग्न से पाँचवाँ और नवाँ स्थान; –**भूमि, –मंडल**(पुं., स्त्री.)

नदी के मुहाने पर बालू, आदि जमने बनी हुई त्रिकोण भूमि, डेल्टा; –मिति–(स्त्री.) वह गणित शास्त्र जिसमें त्रिकोण, त्रिभुज, चतुर्भुज आदि क्षेत्रों के क्षेत्र फल, विस्तार आदि का मान निकालने की विधियाँ वतलाई जाती है।

त्रिकोणा–(सं. स्त्री.) शृङ्गाटक, सिंघाड़े की लता, योनि, भग।

त्रिक्षार–(सं. पुं.) जवाखार, सज्जीखार और सोहाग का समूह।

त्रिक्षुर–(सं. पुं.) तालमखाना।

त्रिख–(सं. पुं.) खीरा।

त्रिखा–(हिं. स्त्री.) देखें 'तृषा', प्यास।

त्रिगंग–(सं. पुं.) एक तीर्थ का नाम।

त्रिगंभीर–(सं. पुं.) जिसका सत्त्व, स्वर और नाभि गम्भीर हो।

त्रिगण–(सं. पुं.) धर्म, अर्थ और काम, त्रिवर्ग।

त्रिगर्त–(सं. पुं.) आधुनिक जालन्धर का प्राचीन नाम।

त्रिगर्ता–(सं. स्त्री.) कामुकी स्त्री, पुंश्चली, छिनाल स्त्री।

त्रिगर्तिक–(सं. पुं.) त्रिगर्त देश।

त्रिगुण–(सं. पुं.) सत्व, रज तथा तम–इन तीनों गुणों का समूह।

त्रिगुणा–(सं. स्त्री.) दुर्गा, माया, एक तन्त्रोक्त बीज का नाम; –कृत–(वि.) तीन बार जोता हुआ (खेत)।

त्रिगुणात्मक–(सं. वि.) जिसमें सत्व, रज और तम–ये तीनों गुण हों।

त्रिगुणित–(सं. वि.) तीन बार या तिगुना किया हुआ।

त्रिगुणी–(सं. स्त्री.) विल्ववृक्ष, वेल का पेड़।

त्रिगूढ़–(सं. पुं.) स्त्रियों के वेश में पुरुष का नाच।

त्रिग्रामी–(सं. पुं.) तीन गाँवों का समूह।

त्रिघंटा–(सं. पुं.) वह पर्वत जहाँ विद्याधर रहते हैं।

त्रिचक्र–(सं. पुं.) अश्विनी कुमारों का रथ।

त्रिचक्षु–(सं. पुं.) त्रिनेत्र, महादेव, शिव।

त्रिजग–(सं. वि., पुं.) देखें 'तिर्यक्', पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े, तीनों लोक।

त्रिजगत्–(सं. पुं.) स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल–ये तीनों लोक।

त्रिजट–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

त्रिजटा–(सं. स्त्री.) इस नाम की राक्षसी जो विभीषण की बहिन थी, (अशोक-वाटिका में वह जानकी के पास रहने के लिये रावण द्वारा नियुक्त की गई थी), वेल का वृक्ष।

त्रिजटी–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

त्रिजड़–(हिं. पुं.) कटार, तलवार, खड्ग।

त्रिजातक–(सं. पुं.) इलायची, दारचीनी और तेजपत्ता–इन तीनों औषधियों का समूह।

त्रिजामा–(हिं. स्त्री.) देखें 'त्रियामा', रात्रि।

त्रिजीवा–(सं. पुं.) चाप की ज्या जो नव्वे अंशों तक फैली हो।

त्रिज्या–(सं. स्त्री.) वह रेखा जो वृत्त के केन्द्र से परिधि तक खींची गई हो, व्यासार्ध रेखा।

त्रितंत्री–(सं. स्त्री.) तीन तारों की वीणा।

त्रित–(सं. पुं.) गौतम मुनि के पुत्र का नाम।

त्रितय–(सं. पुं.) धर्म, अर्थ तथा काम-इन तीनों का समुदाय, सन्निपात ज्वर; (वि.) तीन प्रकार का।

त्रितल–(सं. वि.) तीन खंडों का (घर)।

त्रिताप–(सं. पुं.) आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक–इन तीनों प्रकार के दुःख।

त्रिदंड, त्रिदंडक–(सं. पुं.) संन्यास आश्रम का चिह्न, संन्यासी का बाँस के तीन दंड जो एक-दूसरे में बँधे रहते हैं।

त्रिदंडी–(सं. पुं.) त्रिदंडधारी यति, वह संन्यासी जो ज्ञानबल से मन, वचन और कर्म–इन तीनों को वश में कर सकता है, यज्ञोपवीत, जनेऊ, वैष्णव संन्यासी।

त्रिदल–(सं. पुं.) बिल्व वृक्ष, वेल का पेड़।

त्रिदश–(सं. पुं.) देवता; (वि.) तीस।

त्रिदशगुरु–(सं. पुं.) देवताओं के गुरु, वृहस्पति।

त्रिदशगोप–(सं. पुं.) वीरबहूटी नामक कीड़ा।

त्रिदशत्व–(सं. पुं.) देवत्व।

त्रिदशदीर्घिका–(सं. स्त्री.) आकाश-गंगा।

त्रिदशपति–(सं. पुं.) इन्द्र, देवताओं का राजा

त्रिदशमंजरी–(सं. स्त्री.) तुलसी।

त्रिदश-वधू–(सं. स्त्री.) अप्सरा।

त्रिदशवर्त्म–(सं. पुं.) नभ, आकाश।

त्रिदशांकुश–(सं. पुं.) इन्द्र का वज्र।

त्रिदशाचार्य–(सं. पुं.) देवताओं के गुरु, वृहस्पति।

त्रिदशाधिप–(सं. पुं.) देवताओं के राजा, इन्द्र।

त्रिदशाध्यक्ष–(सं. पुं.) विष्णु।

त्रिदशायन–(सं. पुं.) देखें 'त्रिदशाध्यक्ष'।

त्रिदशायुध–(सं. पुं.) वज्र, इन्द्र का धनुष।

त्रिदशारि–(सं. पुं.) देवताओं का शत्रु, असुर।

त्रिदशालय–(सं. पुं.) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत।

त्रिदशावास–(सं. पुं.) देखें 'त्रिदशालय'।

त्रिदशाहार–(सं. पुं.) अमृत, सुधा।

त्रिदशेश्वर–(सं. पुं.) देवताओं के राजा, इन्द्र।

त्रिदशेश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।

त्रिदिनस्पृश्–(सं. पुं.) वह तिथि जो तीन दिनों को स्पर्श करती है अर्थात् जिसका थोड़ा-थोड़ा अंश तीन दिनों में रहता है।

त्रिदिव–(सं. पुं.) स्वर्ग आकाश, सुख।

त्रिदिवा–(सं. स्त्री.) एला, इलायची।

त्रिदिवाधीश–(सं. पुं.) इन्द्र।

त्रिदिवेश–(सं. पुं.) देवता।

त्रिदिवोद्भवा–(सं. स्त्री.) गंगा, बड़ी इलायची।

त्रिदिवौकस्–(सं. पुं.) देवता।

त्रिदृश्–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

त्रिदोष–(सं. पुं.) वात, पित्त और कफ; –घ्न–(वि.) त्रिदोषनाशक; –ज–(पुं.) सन्निपात रोग।

त्रिधनी–(सं. पुं.) एक प्रकार की रागिनी।

त्रिधर्मा–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

त्रिधा–(सं. अव्य.) तीन प्रकार से, तीन तरह से।

त्रिधातु–(सं. पुं.) सोना, चाँदी और ताँबा-ये तीन धातुएँ।

त्रिधात्व–(सं. पुं.) त्रिधा का भाव।

त्रिधामन्–(सं. पुं.) अग्नि, मृत्यु, शिव, विष्णु, तीनों धाम, स्वर्ग।

त्रिधामूर्ति–(सं. पुं.) परमेश्वर जिनके अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं।

त्रिधारक–(सं. पुं.) नागरमोथा, कसेरू की जड़।

त्रिधारस्नुही–(सं. स्त्री.) त्रिधारा, सेंहुड़।

त्रिधारा–(सं. स्त्री.) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल–तीनों लोकों में वहनेवाली गंगा, तीन पहलोंवाला सेंहुड़।

त्रिनयन–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

त्रिनयना–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।

त्रिनाक–(सं. पुं.) स्वर्ग, पुण्य लोक।

त्रिनाभ–(सं. पुं.) विष्णु।

त्रिनेत्र–(सं. पुं.) शिव, महादेव, सुवर्ण, सोना; –चूड़ामणि–(पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा।

त्रिनेत्रा–(सं. स्त्री.) वाराही कन्द।

त्रिपट–(सं. पुं.) काँच; सेंधा या काला नमक।

त्रिपत्र–(सं. पुं.) विल्व वृक्ष, वेल का पेड़।

त्रिपत्रक–(सं. पुं.) पलाश का वृक्ष।

त्रिपत्रा–(सं. स्त्री.) तिनपतिया घास।

त्रिपथ–(सं. पुं.) कर्म, ज्ञान और उपासना–इन तीनों मार्गों का समूह, तिमुहानी।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी–(सं. स्त्री.) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल-इन तीनों लोकों में वहनेवाली गंगा।
त्रिपद–(सं.पुं.) त्रिविक्रम, परमेश्वर, तिपाई।
त्रिपदा–(सं.वि.) तीन पदयुक्त, जिसमें तीन चरण हों।
त्रिपदिका–(सं. स्त्री.) हंसपदी लता, त्रिपादयक्त गायत्री।
त्रिपदी–(सं. स्त्री.) गायत्री छन्द जिसके प्रत्येक पद में आठ अक्षर होते हैं, हाथी के पैर में बाँधने की रस्सी, तिपाई।
त्रिपन्न–(सं. पुं.) चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक।
त्रिपर्ण–(सं. पुं.) पलास का वृक्ष; (वि.) जिसमें तीन पत्त संलग्न हों।
त्रिपर्णिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की मूली, आम्ल-वल्ली।
त्रिपर्णी–(सं.स्त्री.) शालपर्णी, पिठवन लता।
त्रिपर्याय–(सं.स्त्री.) जिसके तीन पर्याय हों।
त्रिपाठी–(सं. पुं.) जिसने तीन वेदों का अध्ययन किया हो, त्रिवेदी, ब्राह्मणों की एक जाति, तिवारी।
त्रिपाण–(सं. पुं.) वल्कल।
त्रिपाद–(सं.पुं.) बुखार, परमेश्वर, विष्णु।
त्रिपादिका–(सं. स्त्री.) हंसपदी लता, लाल रंग का लज्जालु, तिपाई।
त्रिपापचक्र–(सं. पुं.) ज्योतिष का वर्ष भर का एक चक्र।
त्रिपिंड–(सं.पुं.) पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह और प्रपितामह के उद्देश्य से दिये हुए पिण्ड।
त्रिपिटक–(सं. पुं.) वौद्धों का एक धर्म-ग्रन्थ जिसमें अनेक उपदेशों का संग्रह है।
त्रिपिब–(सं. पुं.) लंबे कानवाला बकरा।
त्रिपिष्टप–(सं.पुं.) स्वर्ग, आकाश।
त्रिपिष्टपसद–(सं. पुं.) देवता।
त्रिपुंड–(सं. पुं.) भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग ललाट पर लगाते हैं।
त्रिपुट–(सं. पुं.) तीर, किनारा, ताला, शर, खेसारी, गोखरू का पौधा।
त्रिपुटक–(सं.पुं.) त्रिभुज।
त्रिपुटा–(सं.स्त्री.) चमेली, वेल का वृक्ष, छोटी इलायची, निसोथ, कुलथी, एक तंत्रोक्त देवी।
त्रिपुटी–(सं.स्त्री.) खेसारी, रेंड़ का पेड़, छोटी इलायची।
त्रिपुर–(सं. पुं.) मय दानव के वनाये हुए असुरों के तीन नगर; वाणासुर का एक नाम।
त्रिपुरघ्न, त्रिपुरदहन–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
त्रिपुरभैरवी–(सं.स्त्री.) एक देवी का नाम।
त्रिपुरमल्लिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की चमेली की लता।
त्रिपुरांतक, त्रिपुरारि–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
त्रिपुरा–(सं. स्त्री.) कामाख्या देवी की एक मूर्ति का नाम।
त्रिपुरासुर–(सं. पुं.) देखें 'त्रिपुर'।
त्रिपुरुष–(सं. पुं.) पिता, पितामह और प्रपितामह; (वि.) जो तीन पीढ़ियों से चला आ रहा हो।
त्रिपुष–(सं. पुं.) ककड़ी, खीरा।
त्रिप्रश्न–(सं. पुं.) दिशा, देश और काल सम्बन्धी प्रश्न।
त्रिफला–(सं. स्त्री.) हर्रा, वहेड़ा और आमला का फल।
त्रिफलीकृत–(सं. वि.) वह चावल जिसकी भूसी तीन बार निकाली गई हो।
त्रिवली–(सं. स्त्री.) पेट पर पड़नेवाले तीन वल या रेखाएँ।
त्रिवलीक–(सं.पुं.) वायु, मलद्वार, गुदा।
त्रिवाहु–(सं.पुं.) रुद्र के एक अनुचर का नाम।
त्रिभंग–(सं.वि.) जिसमें तीन स्थानों पर वल पड़े हों, श्रीकृष्ण की वह मूर्ति जिसमें ग्रीवा, कटि और जानु कुछ वक्र भाव से बने होते हैं।
त्रिभंगी–(सं. पुं.) एक मात्रिक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस मात्राएँ होती हैं, एक राग का नाम; (वि.) जो तीन स्थानों में टेढ़ा हो।
त्रिभ–(सं. पुं.) तीन राशियों का समुदाय, लग्नादि तीनों राशियाँ।
त्रिभजीवा–(सं.स्त्री.) अर्ध-व्यास, त्रिज्या।
त्रिभद्र–(सं.पुं.) स्त्रीप्रसंग, रतिक्रिया।
त्रिभाग–(सं.पुं.) तृतीय भाग, तीसरा हिस्सा।
त्रिभुक्ति–(स.स्त्री.) तिरहुत, मिथिला देश।
त्रिभुज–(स. पुं.) तीन भुजाओं का क्षेत्र, वह समतल जो तीन रेखाओं से घिरा हो।
त्रिभुवन–(सं. पुं.) त्रिलोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल; –**सुंदरी**–(स्त्री.) दुर्गा, पार्वती।
त्रिभूम–(सं. पुं.) तीन खंडोंवाला (तिमंजिला) घर।
त्रिमंडला–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की मकड़ी।
त्रिमद–(सं.पुं.) परिवार, विद्या और धन –इन तीन कारणों से उत्पन्न अभिमान, मोथा, चीता और वायविडंग–इन तीनों का समुदाय।
त्रिमधु, त्रिमधुर–(सं. पुं.) घी, चीनी और शहद का समुदाय, ऋग्वेद का एक यज्ञ।
त्रिमात्रिक–(सं. वि.) जिसमें तीन मात्राएँ हों, प्लुत।
त्रिमार्ग–(सं. पुं.) तिमुहानी, जहाँ तीन मार्ग मिलते हों।
त्रिमार्गगा–(सं.स्त्री.) गंगा।
त्रिमार्गगामिनी–(सं. स्त्री.) गंगा नदी।
त्रिमार्गा–(सं. स्त्री.) गंगा, तिमुहानी।
त्रिमुकुट–(सं. पुं.) जिस पहाड़ में तीन शिखर हों।
त्रिमुखा–(सं. स्त्री.) माया देवी।
त्रिमुखी–(सं. स्त्री.) बुद्ध की माता, माया देवी।
त्रिमुनि–(सं. पुं.) पाणिनी, कात्यायन और पतंजलि –ये तीन मुनि।
त्रिमूर्ति–(सं.पुं.) ब्रह्मा, विष्णु और शिव–ये तीन देवता, सूर्य, ब्रह्मा की एक शक्ति।
त्रिमूर्ध–(सं.वि.) जिसके तीन मस्तक हों।
त्रियंबक–(सं. पुं.) त्रिनेत्र, महादेव।
त्रियव–(सं. पुं.) एक परिमाण जो तीन यव के बराबर होता है।
त्रियष्टि–(सं. स्त्री.) पित्तपापड़ा।
त्रिया–(हिं. स्त्री.) स्त्री, औरत; –**चरित्र**–(पुं.) वे छल-कपट जो स्त्रियों में स्वाभाविक होते हैं।
त्रियामक–(सं. पुं.) पाप।
त्रियामा–(सं. स्त्री.) निशा, रात्रि, हरिद्रा, हलदी, यमुना नदी, नील का पौधा।
त्रियुग–(सं. पुं.) विष्णु, वसन्त आदि तीन ऋतुएँ; सतयुग, त्रेता और द्वापर–ये तीनों युग।
त्रियूह–(सं. पुं.) सफेद रंग का घोड़ा।
त्रिरात्र–(सं. पुं.) एक प्रकार का व्रत जिसमें तीन दिनों तक उपवास करना पड़ता है।
त्रिरूप–(सं. पुं.) अश्वमेघ का घोड़ा।
त्रिरेख–(सं. पुं.) शंख; (वि.) तीन रेखाओं से युक्त।
त्रिलघु–(सं. वि.) जिसकी गरदन, जाँघ और लिंगेन्द्रिय छोटी हो; (ये शुभ लक्षण हैं।)
त्रिलवण–(सं. पुं.) सेंधा, साँभर और सोंचर नमक।
त्रिलिंग–(सं.पुं.) अहंकार, गर्व, तैलंग देश।
त्रिलोक–(सं. पुं.) त्रिभुवन; स्वर्ग, मर्त्य और पाताल–ये तीनों लोक; –**नाथ**–परमेश्वर; –**पति**–(पुं.) परमेश्वर।
त्रिलोकी–(सं. स्त्री.) देखें 'त्रिलोक'।
त्रिलोकीनाथ–(सं.पुं.) परमेश्वर, ईश्वर।

त्रिलोकेश–(सं. पुं.) परमेश्वर, सूर्य ।
त्रिलोचन–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
त्रिलोचना, त्रिलोचनी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, भगवती ।
त्रिलोह–(सं.पुं) सोना, चाँदी और ताँबा ।
त्रिवण–(सं.पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
त्रिवणी–(हिं.स्त्री.) एक संकर रागिनी ।
त्रिवत्स–(सं.पुं.) तीन वर्ष का बालक ।
त्रिवर्ग–(सं. पुं.) धर्म, अर्थ और काम, त्रिफला, त्रिकटु; वृद्धि, स्थिति और क्षय, सत्त्व, रज और तम–ये तीनों गुण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य–ये प्रधान जातियाँ, सुनीति, गायत्री ।
त्रिवर्ण–(सं. पुं.) तीन प्रधान रंग–काला, लाल और पीला रंग ।
त्रिवर्णक–(सं. पुं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य–ये तीन प्रधान जातियाँ, त्रिफला, गोखरू, त्रिकटु ।
त्रिवर्णा–(सं. स्त्री.) जंगली कपास ।
त्रिवर्त–(सं. पुं.) एक प्रकार का मोती ।
त्रिवर्त्म–(सं. पुं.) त्रिपथ, तिमुहानी ।
त्रिवर्त्मगा–(सं. स्त्री.) त्रिपथगा, गंगा ।
त्रिवर्ष–(सं. वि.) तीन वर्ष का जीव ।
त्रिवर्षा–(सं.स्त्री.) तीन वर्ष की गाय ।
त्रिवर्षीय–(सं. वि.) तीन वर्ष का, तीन वर्ष ठहरनेवाला ।
त्रिवल्ली–(सं.स्त्री.) इंदीवर, नील कमल ।
त्रिवल्य–(सं. पुं.) एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा ।
त्रिवार–(सं. अव्य.) तीन बार; (पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।
त्रिविक्रम–(सं.पुं.) विष्णु, वामन अवतार ।
त्रिविद–(सं. वि.) तीनों वेदों को जाननेवाला ।
त्रिविद्य—(सं.पुं.) तीनों वेदों को जाननेवाला द्विज ।
त्रिविध–(सं. वि.) तीन प्रकार का ।
त्रिविष्टप–(सं. पुं.) स्वर्ग, तिब्बत देश ।
त्रिविस्तीर्ण–(सं. पुं.) जिसका ललाट, कमर और छाती–ये तीनों अंग चौड़े हों ।
त्रिवीज–(सं. पुं.) श्यामक, सावाँ ।
त्रिवृत्–(सं. पुं.) करधनी, तेज, यज्ञ; (वि.) तिगुना ।
त्रिवृत्करण–(सं. पुं.) तेज, जल और अन्न का योग; पृथ्वी, जल और तेज का मिश्रण ।
त्रिवृत्पर्णी–(सं.स्त्री) हुरहुर का पौधा या फूल ।
त्रिवेणी–(सं. स्त्री.) तीन नदियों का सगम, प्रयाग में वह स्थान जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम है, हठ-योग के अनुसार इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना–इन तीनों नाड़ियोंका एक स्थान में मिलना ।
त्रिवेणु–(सं.पुं.) रथ के अगले भाग का नाम ।
त्रिवेद–(सं. पुं.) ऋक्, यजु और साम–ये तीनों वेद, वेदत्रय में बतलाये हुए कर्म ।
त्रिवेदी–(सं. पुं.) तीनों वेदों को जाननेवाला, ब्राह्मणों का एक भेद, त्रिपाठी, तिवारी ।
त्रिवेनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'त्रिवेणी' ।
त्रिशंकु–(सं. पुं.) मार्जार, बिल्ली, पतंग, टिड्डी, चातक पक्षी, पपीहा, एक पर्वत का नाम, जुगनू, सूर्यवंशी एक राजा का नाम जिन्होंने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था, (देवताओं को उसके ऐसा करने में विरोध था। अतएव वे आकाश में लटके रह गये) ; एक नक्षत्र का नाम जिसके विषय में यह बात प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु राजा है जिसको आकाश से इन्द्र गिरा रहे थे परन्तु विश्वामित्र ने अपने योगबल से उन्हें शून्य में ही रोक दिया था ।
त्रिशक्ति–(सं. स्त्री.) काली, तारा और त्रिपुरा–ये तीन देवियाँ, राजा का प्रभाव, उत्साह और तंत्र–य तीन शक्तियाँ, गायत्री ।
त्रिशत–(सं. वि., पुं.) तीन सौ ।
त्रिशरण–(सं.पुं.) जैनियों के एक आचार्य ।
त्रिशर्करा–(सं. स्त्री.) गुड़, चीनी और मिश्री–इन तीनों का समुदाय ।
त्रिशाख–(सं. वि.) तीन शाखायुक्त, जिसम स्कंध या तने से तीन शाखाएँ निकली हों; –पत्र–(पुं.) बेल का पेड़ ।
त्रिशालक–(सं. पुं.) वह घर जिसके उत्तर की ओर दूसरा घर न हो ।
त्रिशिख–(सं. पुं.) त्रिशूल, किरीट, रावण के एक पुत्र का नाम; (वि.) तीन शिखाओंवाला ।
त्रिशिखर–(सं. पुं.) वह पहाड़ जिसमें तीन चोटियाँ हों ।
त्रिशिरस्–(सं. पुं.) कुबेर, रावण के एक पुत्र का नाम, खर के एक सेनापति का नाम, एक असुर का नाम; (वि.) तीन सिरोंवाला ।
त्रिशीर्ष–(सं. वि.) तीन चोटियोंवाला ।
त्रिशीर्षक–(सं. पुं.) त्रिशूल ।
त्रिशुच–(सं. पुं.) वह जिसको दैहिक, दैविक और भौतिक–तीनों प्रकार के दुःख हों ।
त्रिशूल–(सं. पुं.) एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं, यह महादेवजी का अस्त्र माना जाता है, दैविक, दैहिक और भौतिक क्लेश, तन्त्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा;
त्रिशूली–(सं.पुं.) शिव, महादेव, पारा; (स्त्री.) दुर्गा; (वि.) त्रिशूल धारण करनेवाला ।
त्रिशृंग–(सं. पुं.) त्रिकूट पर्वत, त्रिकोण ।
त्रिशोक–(सं. पुं.) कण्व ऋषि के एक पुत्र का नाम, त्रिशूल ।
त्रिष्टुभ–(सं.स्त्री.) एक वैदिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं ।
त्रिष्टोम–(सं. पुं.) एक प्रकार का यज्ञ ।
त्रिसंगम–(सं. पुं.) तीन नदियों के मिलने का स्थान, तीन वस्तुओं का मेल ।
त्रिसंधि–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का फल जो सफेद, लाल और काला–तीनों रंग का होता है ।
त्रिसंध्य–(सं. पुं.) प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या–ये तीन काल; –व्यापिनी–(स्त्री.) वह तिथि जो सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रहती हो ।
त्रिसंध्या–(सं. स्त्री.) प्रातः, मध्याह्न और सायं-काल ये तीनों संधि-काल ।
त्रिसर–(सं.पुं.) तिल मिली हुई खिचड़ी ।
त्रिसरी–(सं. पुं.) एक प्रकार का घोड़ा जिसका केवल सिर काला हो तथा अन्य सब अंग भिन्न-भिन्न वर्ण के हों ।
त्रिसर्ग–(सं. पुं.) सत्त्व, रज और तम–ये तीनों गुण, सृष्टि ।
त्रिसुगंधि–(सं. पुं.) दालचीनी, इलायची और तेजपात–इन तीनों सुगन्धित पदार्थों का समूह ।
त्रिस्कंध–(सं. पुं.) ज्योतिष शास्त्र ।
त्रिस्तनी–(सं. स्त्री.) एक राक्षसी जिसके तीन स्तन थे, गायत्री ।
त्रिस्थली–(सं. स्त्री.) गया, काशी और प्रयाग–ये तीन पुण्य स्थान ।
त्रिस्थान–(सं. पुं.) तीनों लोकों में रहनेवाला परमेश्वर ।
त्रिस्नान–(सं. पुं.) सवेरे, दोपहर तथा संध्या–तीनों समयों का स्नान ।
त्रिस्रोतसी–(सं. स्त्री.) जिस नदी से तीन स्रोत निकले हों ।
त्रिस्रोता–(सं. स्त्री.) गंगा नदी ।
त्रिहायण–(सं. पुं.) तीन वर्ष का बछवा ।
त्रिहायणी–(सं. स्त्री.) द्रौपदी जो सत्ययुग में वेदवती, त्रेता में सीता और द्वापर में द्रौपदी के रूप में अवतरित हुई ।
त्रुटि–(सं. स्त्री.) छोटी इलायची,

न्यूनता, अभाव, संशय, समय का अत्यन्त सूक्ष्म भाग, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम, भूलचूक, वचनभंग।
त्रुटित–(सं. वि.) टूटा-फूटा, जिस पर आघात पड़ा हो, गिरा हुआ।
त्रुटिबीज–(सं. पुं.) अरुई।
त्रुटिस्वीकार–(सं. पु.) दोष की स्वीकृति।
त्रुटी–(हि. स्त्री.) देखें 'त्रुटि'।
त्रेता–(सं. स्त्री.) दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय नामक तीन अग्नियाँ, तीन कौड़ियों से खेला जानेवाला जुआ; (पुं.) चार युगों में से दूसरा युग जो कार्तिक शुक्ला नवमी से आरम्भ हुआ था; **–युग**–(पुं.) त्रेता नामक युग।
त्रै–(हि. वि.) तीन।
त्रैककुद–(सं. पुं.) काजल या सुरमा।
त्रैकटु–(सं. पुं.) देखें 'त्रिकटु'।
त्रैकालज्ञ–(सं. वि.) त्रिकालज्ञ।
त्रैकालिक–(सं. वि.) तीनों काल में अर्थात् सर्वदा रहनेवाला, त्रिकाल-संबधी।
त्रैकोणिक–(सं. पुं.) वह जिसमें तीन कोण हों, तिपहला।
त्रैगुणिक–(सं. वि.) तीन बार गुणा किया हुआ।
त्रैगुण्य–(सं. पुं.) सत्व, रज और तम–इन गुणों का धर्म या भाव।
त्रैदशिक–(सं. पुं.) अँगुली का अग्रभाग जो तीर्थ कहलाता है।
त्रैध–(सं. अव्य.) तीन प्रकार से।
त्रैधावती–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का यज्ञ।
त्रैपुर–(सं. पुं.) त्रिपुर देश।
त्रैवलि–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
त्रमातुर–(सं. पुं.) लक्ष्मणजी।
त्रमासिक–(सं. वि.) तीन महीनों का, हर तीसरे महीने प्रकाशित होनेवाला।
त्रैयंवका–(सं. स्त्री.) गायत्री।
त्रैराशिक–(सं. पुं.) गणित की वह क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों से चौथी अज्ञात राशि निकाली जाती है।
त्रैरूप्य–(सं. पुं.) त्रिधा-रूप वह जिसका आकार तीन प्रकार का हो।
त्रैलोक, त्रैलोक्य–(सं. पुं.) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल, इक्कीस मात्राओं का एक छन्द; **–विजया**–(स्त्री.) सिद्धि, भाँग।
त्रैवर्गिक–(सं. वि.) जिससे धर्म, अर्थ और काम–इन तीनों की साधना या सिद्धि हो।
त्रैवर्ग्य–(सं. वि.) देखें 'त्रैवर्गिक'।
त्रैवर्णिक–(सं. पुं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य–इन तीनों जातियों का धर्म; (वि.) तीन वर्णो से संबंधित।
त्रैवार्षिक–(सं. वि.) तीन वर्षो में होनेवाला, हर तीसरे वर्ष होनेवाला।
त्रैविक्रम–(सं. पुं.) त्रिविक्रम के अवतार, विष्णु।
त्रैविद्य–(सं. पुं.) तीनों वेदोंका जाननेवाला।
त्रैविध्य–(सं. पुं.) तीन प्रकार, तीन तरह।
त्रैविष्टप–(सं. पुं.) स्वर्ग में रहनेवाले देवता।
त्रैष्टभ–(सं. वि.) त्रिष्टुभ संबंधी।
त्रैहायण–(सं. वि.) तीन वर्ष में होनेवाला; (पुं.) तीन वर्ष का समय।
त्रोटक–(सं. वि.) छेदक, भेदक; (पुं.) दृश्य काव्य का एक भेद, (इसमें ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं और किसी स्वर्गीय या पार्थिव विषय का वर्णन होता है। यह नाटक शृंगार-रस-प्रधान होता है); एक राग का नाम, एक विषैला कीड़ा, शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम।
त्रोटकी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
त्रोटि–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का पक्षी, चोंच, जायफल, एक प्रकार की मछली।
त्रोटिहस्त–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।
त्रोटी–(सं. स्त्री.) चिड़िया की चोंच।
त्रोण, त्रोन–(हिं. पुं.) तरकश।
त्रोतल–(सं. वि.) तुतलाकर बोलनेवाला।
त्र्यंगट–(सं. पुं.) छिक्का, सिकहर, ईश्वर, चन्द्रमा।
त्र्यंगुल–(सं. वि., पुं.) तीनअंगुल का (प्रमाण)।
त्र्यंबक–(सं. पुं.) शिव, महादेव, ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र; **सख**–(पुं.) कुवेर।
त्र्यंबका–(सं. स्त्री.) दुर्गा जिसके सोम, सूर्य और अनल–ये तीन नेत्र हैं।
त्र्यंश–(सं. पुं.) तिगुना अंश, तिहाई भाग।
त्र्यक्ष–(सं. पुं.) त्रिनेत्र, शिव; (वि.) जिसको तीन आँखें हों।
त्र्यक्षर–(सं. पुं.) प्रणव, ओंकार, एक प्रकार का छन्द; (वि.) तीन अक्षरों का।
त्र्यधिपति–(सं. पुं.) तीनों लोकों के अधिपति, कृष्ण, विष्णु।
त्र्यधीश–(सं. पुं.) कृष्ण, विष्णु।
त्र्यध्वगा–(सं. स्त्री.) गंगा।
त्र्यब्द–(सं. पुं.) तीन वर्ष का काल।
त्र्यवि–(सं. पुं.) अठारह महीने का पशु।
त्र्यस्त्र–(सं. पुं.) व्याघ्रनख; (स्त्री.) चमेली; **–फल**–(पुं.) सेल का वृक्ष।
त्र्यह–(सं. पुं.) तीन दिन का काल।
त्र्यहैहिक–(सं. पुं.) वह गृहस्थ जिसके पास तीन दिन तक खाने का अन्न हो।
त्र्यायुष–(सं. पुं.) वाल्य, यौवन और स्थविरता (वृद्धावस्था)–ये तीन अवस्थाएँ।
त्र्याहिक–(सं. वि.) तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, तिजरा।
त्वक्–(सं. पुं.) छिलका, छाल, खाल, चमड़ा, स्पर्श करने की इन्द्रिय, कंचुक, कचुली; **–कंडूर**–(पुं.) फोड़ा; **–क्षीरा**–(पुं.) वंशलोचन; **–छेद**–(पुं.) मुसलमानों में शिश्न के अगले भाग का चमड़ा काटने का संस्कार; **–पत्र**–(पुं.) दारचीनी; **–पुष्प**–(पुं.) रोमांच; **–सार**–(पुं.) वाँस का छिलका, दारचीनी; **–सारा**–(पुं.) वंशलोचन; **–सुगंध**–(पुं.) लवंग।
त्वगंध–(सं. पुं.) नारंगी, नीबू।
त्वचकना–(हि. क्रि. अ.) पचकना।
त्वचा–(सं. स्त्री.) चमड़ा, छाल, वल्कल, केंचुली।
त्वत्कृत–(सं. वि.) तुम्हारे द्वारा किया हुआ।
त्वदीय–(सं. स्त्री.) तुम्हारा।
त्वरण, त्वरा–(सं. पुं., स्त्री.) शीघ्रता, जल्दी।
त्वरारोह–(सं. पुं.) पारावत, कवूतर।
त्वरावान्–(सं. वि.) शीघ्रता करनेवाला।
त्वरित–(सं. वि.) शीघ्र, गामी; (अव्य.) जल्दी से; **–गति**–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
त्वलग–(सं. पुं.) जलसर्प, डोंड़हा।
त्वष्टा–(सं. पुं.) विश्वकर्मा, शिव, महादेव, वढ़ई, एक वैदिक देवता, वारह आदित्यों में से एक, एक प्रजापति का नाम।

थ

थ–हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाली का सत्रहवाँ व्यंजन तथा तवर्ग का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्तमूल है।
थंका–(हि. पुं.) थोक में।
थंब, थंभ–(हि. पुं.) स्तम्भ, खंभा, सहारा, चाँड़, टेक, थूनी, सहारे का वल्ला।
थंभन–(हिं. पुं.) स्तम्भन, रुकावट, ठहराव, तन्त्र के छः प्रयोगों में से एक।
थँभना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'थमना'।
थंभित–(हिं. वि.) स्तंभित, रुका हुआ, स्थिर, निश्चल, अचल।
थक–(हिं. पुं.) देखें 'थाक'।
थकना–(हिं. क्रि. अ.) क्लान्त होना, शिथिल होना, ऊव जाना, बुढ़ापे के कारण अशक्त होना, दुर्वल होना, धीमा पड़ना, मोहित होना।
थकान–(हिं. स्त्री.) शिथिलता, थकावट।
थकाना–(हिं. क्रि. स.) शिथिल करना, श्रान्त करना।
थका-मांदा–(हिं. वि.) जो परिश्रम करते

करते अशक्त हो गया हो, श्रमित, क्लान्त।
थकार–(सं. पुं.) 'थ' स्वरूप अक्षर।
थकारादि–(सं. पुं.) जिसके आदि में 'थ' अक्षर हो।
थकारांत–(सं. वि.) जिसके अन्त में 'थ' अक्षर हो।
थकाव, थकावट–(हिं. स्त्री.) शिथिलता, थकने का भाव।
थकाहट–(हिं. स्त्री.) देखें 'थकावट'।
थकित–(हिं. वि.) श्रान्त, शिथिल, थका हुआ, मुग्ध, मोहित।
थकिया–(सं. स्त्री.) वह थक्का जो किसी गाढ़ी द्रव वस्तु के जमने से बन जाता है, गलाई हुई धातु का लोंदा।
थकौहाँ–(हिं. वि.) शिथिल, कुछ थका हुआ, थका-माँदा।
थक्का–(हिं. पुं.) गली हुई धातु का जमा हुआ लोंदा, जमा हुआ कतरा, किसी द्रव वस्तु पर की मोटी तह।
थगित–(हिं. वि.) ठहरा हुआ, रुका हुआ, शिथिल, मन्द, ढीला।
थति–(हिं. स्त्री.) देखें 'थाती'।
थत्ती–(हिं. स्त्री.) राशि, ढेर, पुंज।
थन–(हिं. पुं.) चौपायों का स्तन।
थनी–(हिं. स्त्री.) बकरी के गले के नीचे लटकती हुई स्तन के आकार की मांस की दो थैलियाँ, गलथना, थन के आकार का लटकता हुआ मांस का पिंड।
थनेला–(हिं. पुं.) स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा, गोबरैले के आकार का एक प्रकार का कीड़ा।
थनैत–(हिं. पुं.) गाँव का प्रधान पुरुष या मुखिया, वह मनुष्य जो भूस्वामी की ओर से कृषकों से कर उगाहता है, कारिंदा।
थपक (न)–(हिं.पुं.) वह आघात जो प्रेम से किसी के शरीर पर किया जाय, देखें 'थपकी'।
थपकना–(हिं.क्रि.स.) स्नेहवश किसी के शरीर पर धीरे-धीरे थपकी मारना, बच्चे को सुलाने के लिए उसको धीरे-धीरे ठोंकना, पुचकारना; ढाढ़स देना, किसी का क्रोध शान्त करना।
थपका–(हिं. पुं.) थक्का, थपकी।
थपकी–(हिं. स्त्री.) वह आघात जो प्रेमवश किसी के शरीर पर हथेली से धीरे-धीरे किया जाता है, धीरे-धीरे हाथ से ठोंकने की क्रिया, हाथ से थपका देने का काम, थापी, धोबी का कपड़ा पीटने का मुँगरा।
थपड़ी–(हिं.स्त्री.) ताली बजाने की आवाज।
थपथपी–(हिं. स्त्री.) देखें 'थपकी'।
थपन–(हिं. पुं.) स्थापन, ठहराने का काम।
थपना–(हिं. क्रि.अ.स.) स्थापित होना, ठहरना, जमना, धीरे-धीरे ठोंकना; (पुं.) पीटने का कोई उपकरण, थापी।
थपुआ–(हिं. पुं.) छाजन का चौरस और चौड़ा खपड़ा जिसके दोनों ओर नरिया बैठाई जाती है।
थपेड़ना–(हिं. क्रि. स.) थप्पड़ मारना।
थपेड़ा–(हिं. पुं.) हथेली से किया हुआ आघात, थप्पड़, ठोकर, टक्कर।
थपोड़ी, थपोरी–(हिं. स्त्री.) ताली।
थप्पड़–(हिं. पुं.) तमाचा, चपेट, धक्का, ठक्कर, आघात।
थप्पा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जहाज।
थम–(हिं. पुं.) खंभा, थूनी, केले का वृक्ष।
थमकारी–(हिं. वि.) स्तम्भन करनेवाला, रोकनेवाला।
थमना–(हिं.क्रि.अ.) ठहरना, रुकना, बन्द होना, धैर्य रखना।
थर–(हिं. स्त्री.) तह, परत, बाघ या शेर की माँद।
थरकना–(हिं. क्रि. अ.) भय से काँपना, थर्राना।
थरकौंहा–(हिं. वि.) काँपनेवाला।
थरथर–(हिं. स्त्री.) भय के कारण कम्पन, डर से काँपने की मुद्रा; (अव्य.) काँपते हुए।
थरथराना–(हिं. क्रि. अ.) भय से काँपना।
थरथराहट–(हिं. स्त्री.) भय से उत्पन्न कँपकँपी।
थरथरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'थरथराहट'।
थरना–(हिं.क्रि.स.) काँटी आदि की नोक को हथौड़ी से पीटकर चिपटी करना; (पुं.) नकाशी करने का एक औजार।
थरहरी–(हिं.स्त्री.) भय से उत्पन्न कँपकँपी।
थरि–(हिं. स्त्री.) बाघ आदि की माँद।
थरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'थाली'।
थर्राना–(हिं. क्रि. अ.) भय से काँपना।
थल–(हिं. पुं.) स्थल, ठिकाना, स्थान, फोड़े का फूला हुआ लाल घेरा, सूखी भूमि, रेत, मेंड़, बाघ की माँद, ऊँची भूमि, टीला।
थलकना–(हिं. क्रि. अ.) झोल होने के कारण ऊपर-नीचे हिलना, मोटेपन के कारण डोलने में शरीर का मांस हिलना।
थलचर–(हिं. पुं.) स्थलचर, भूमि पर रहनेवाला प्राणी।
थलचारी–(हिं.वि.) भूमि पर चलनेवाला, स्थलचर।
थलथल–(हिं. वि.) मोटाई के कारण हिलता हुआ (मांस)।
थलथलाना–(हिं.क्रि.अ.) मोटाई के कारण शरीर के मांस का ऊपर-नीचे हिलना।
थलपति–(हिं.पुं.) भूपति, राजा।
थलबेड़ा–(हिं. पुं.) नाव या जहाज के टिकने का स्थान।
थलरुह–(हिं. वि.) स्थलरुह, भूमि पर उत्पन्न होनेवाले वृक्ष, लता आदि।
थलिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'थाली'।
थली–(हिं.स्त्री.) स्थली, स्थान, ठिकाना, ऊँची भूमि, टीला, परती या रेतीली भूमि, बैठने का स्थान, नदी के नीचे का तल।
थवई–(हिं.पुं.) मकान बनानेवाला राज।
थवना–(हिं.पुं.) गीली मिट्टी का बनाया हुआ गोला जिसमें चरखी छोड़ने के लिए बाँस का पोला टोटी धँसाया रहता है।
थहना–(हिं. क्रि. स.) थाह लगाना।
थहरना–(हिं. क्रि. अ., स.) थरथराना, काँपना, (बोलचाल में—थाह लेना, गहराई का पता लगाना।)
थहाना–(हिं. क्रि. स.) गहराई का पता लगाना, थाह लगाना, किसी के आशय को जानने का प्रयत्न करना।
थाँग–(हिं. स्त्री.) वह गुप्त स्थान जहाँ चोर या डाकू छिपे रहते या ठहरते हैं, अनुसन्धान, खोज, पता, गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना, भेद।
थाँगी–(हिं. पुं.) वह मनुष्य जो चोरी का माल लेता या अपने पास रखता हो, चोरों का भेदिया, चोरी का पता लगानेवाला, जासूस, चोरों का सरदार; **–दारी**–(स्त्री.) थाँगी का काम।
थाँभ–(हिं. पुं.) खंभा, थूनी, चाँड़।
थाँवला–(हिं. पुं.) थाला या घरा जो किसी पेड़ के चारों ओर बनाया जाता है
था–(हिं. क्रि. अ.) 'होना' क्रिया का भूतकाल का रूप, रहा।
थाई–(हिं. वि.) स्थायी, स्थिर रहनेवाला, बहुत दिनों तक बना रहनेवाला; (पुं.) बैठने का स्थान, बैठक, ध्रुवपद, वह पद जो गाने में बार-बार दुहराया जाता है।
थाक–(हिं. पुं.) गाँव की सीमा या सरहद, राशि, ढेर, समूह।
थाकना–(हिं. क्रि. अ., स.) थकना, थाक लगाना।
थाति–(हिं. स्त्री.) स्थिरता, टिकाव, ठहराव।
थाती–(हिं. स्त्री.) धरोहर, जमा, पूंजी,

संचित धन, अमानत।
थान–(हिं. पुं.) स्थान, ठिकाना, निवास-स्थान, डेरा, घोड़े या चौपायों को बाँधने का स्थान, मन्दिर, देवालय, संख्या, कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा, घोड़े के नीचे बिछाई जानेवाली घास।
थानक–(हिं. पुं.) स्थान, वह गड्ढा जिसके भीतर वृक्ष लगाया जाता है, थाला।
थाना–(हिं. पुं.) ठहरने का स्थान, अड्डा, टिकान, पुलिस की बड़ी चौकी, बाँस की कोठी।
थानेदार–(हिं. पुं.) थाने का प्रधान अधिकारी।
थानेदारी–(हिं. स्त्री.) थानेदार का पद या कार्य।
थानेश्वर–(हिं. पुं.) पंजाब में स्थित एक हिंदू तीर्थ।
थानैत–(हिं. पुं.) किसी स्थान का स्वामी, ग्राम-देवता, किसी स्थान का देवता।
थाप–(हिं. स्त्री.) मृदंग, तबले आदि पर पूरे पंजे का आघात, ठोंक, शपथ, महत्त्व, प्रतिष्ठा, धाक, साख, थप्पड़, छाप, स्थिति, जमाव, प्रमाण, पंचायत।
थापन–(हिं. पुं.) स्थापित करने की क्रिया, प्रतिष्ठित करने का कार्य, रखने का काम।
थापना–(हिं. क्रि. स.) स्थापित करना, बैठाना, हाथ से पीटकर या साँचे में भरकर किसी गीली वस्तु का कुछ बनाना; (स्त्री.) स्थापन, नवरात्र में घट-स्थापन, किसी प्रतिमा का स्थापन या प्रतिष्ठा।
थापर–(हिं. पुं.) थप्पड़।
थापरा–(हिं. पुं.) छोटी नाव, डोंगी।
थापा–(हिं. पुं.) पंजे का छापा जिसको स्त्रियाँ मंगल अवसर पर घर की भीत पर लगाती हैं, रंग पोतकर कोई चिह्न बनाने का साँचा या छापा, खलिहान में अन्न के ढेर पर लगाया हुआ गोबर का चिह्न, वह चन्दा जो गाँव में देवी-देवता की पूजा के लिए इकट्ठा किया जाता है, साँचा जिसमें कोई गीली मिट्टी आदि भरकर कुछ बनाया जाता है।
थापी–(हिं. स्त्री.) कुम्हार की कच्चा घड़ा पीटने की मुँगरी, गच पीटने की राज की चिपटी मुँगरी।
थाम–(हिं. पुं.) स्तम्भ, खंभा, मस्तूल; (स्त्री.) पकड़, थामने की रीति या ढंग।
थामना–(हिं. क्रि. स.) रोके रहना, गिरने से रोकना, कोई कार्य का भार अपने ऊपर लेना, पकड़ना, हाथ में लेना, मदद देना, सँभालना, सहारा देना, चौकसी में रखना, ग्रहण करना।
थायी–(हिं. वि.) स्थायी, स्थिर, दृढ़।
थार (ल)–(हिं. पुं.) बड़ी थाली।
थारू–(पुं.) बिहार प्रान्त की एक जंगली जाति विशेष।
थाला–(हिं. पुं.) फोड़े का थल, आलवाल, वह गड्ढा जिसमें पेड़ बैठाया जाता है।
थाली–(हिं. स्त्री.) गोल छिछला बरतन, छोटा थाल, नाच की एक गत; (मुहा.) **–का बैंगन**–लाभ-हानि के अनुसार पक्ष बदलनेवाला।
थावर–(हिं. वि.) देखें 'स्थावर'।
थाह–(हिं. स्त्री.) जल की गहराई का अन्त, जलाशय का तल भाग, कम गहरा पानी, अन्त, पार, किसी संख्या के परिमाण का अनुमान, परिमिति, हद, किसी बात का गुप्त रीति से लगाया गया पता।
थाहना–(हिं. क्रि. स.) गहराई का पता लगाना, अनुमान करना।
थाहरा–(हिं. वि.) कम गहरा, छिछला, जहाँ जल गहरा न हो।
थिगली–(हिं. स्त्री.) किसी फटे हुए वस्त्र के छेद पर लगाने की चकती, पेवन; (मुहा.) **बादल में थिगली लगाना**–बड़ा कठिन या असंभव काम करना।
थित–(हिं. वि.) स्थित, ठहरा हुआ, स्थापित, रखा हुआ।
थिति–(हिं. स्त्री.) स्थायित्व, ठहराव, विश्राम करने का स्थान, बने रहने का भाव, रहन, अवस्था, दशा, सुरक्षा।
थिर–(हिं. वि.) स्थिर, अचल, ठहरा हुआ, स्थायी, शान्त, दृढ़, टिकाऊ।
थिरक–(हिं. स्त्री.) नृत्य में पैरों का हिलना-डोलना।
थिरकना–(हिं. क्रि. अ.) नृत्य में अंगों का संचालन करना, ठमक-ठमककर नाचना।
थिरता, थिरताई–(हिं. स्त्री.) स्थिरता, ठहराव, स्थायित्व, शान्ति, चंचलता।
थिरना–(हिं. क्रि. अ.) जल का क्षुब्ध न रहना, पानी का हिलना बन्द होना, पानी छन जाना, निथरना, पानी में मिली हुई वस्तु का तल में जमना, निथरकर स्वच्छ होना।
थिरा–(हिं. स्त्री.) स्थिरा, पृथ्वी।
थिराना–(हिं. क्रि. अ., स.) हिलते हुए जल का स्थिर होना, किसी तरल पदार्थ को स्थिर रखना जिससे उसमें मिली हुई वस्तु तल में बैठ जाय, थिराकर किसी घुली हुई वस्तु को तल में बैठने देना, पानी को थिराकर छानना।
थी–(हिं. क्रि. अ.) 'था' का स्त्रीलिंग रूप।
थीर–(हिं. वि.) स्थिर।
थुकवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'थुकाना'।
थुकहाई–(हिं. वि.) वह स्त्री जिसकी निन्दा सब कोई करता हो।
थुकाई–(हिं. स्त्री.) थूकने का काम।
थुकाना–(क्रि. वि. स.) किसी से थूकने का काम कराना, उगलवाना, तिरस्कार या निन्दा कराना।
थुक्का फजीहत–(हिं. स्त्री.) थुड़ीथुड़ी, निन्दा और तिरस्कार, लड़ाई-झगड़ा, धिक्कार।
थुक्की–(हिं. स्त्री.) रेशम के रेशे अलगाने के लिये उनमें थूक लगाना।
थुड़ी–(हिं. स्त्री.) तिरस्कार और घृणा-सूचक शब्द, धिक्कार, लानत; (मुहा.) **–थुड़ी करना**–धिक्कारना।
थुत्कार–(सं. पुं.) वह शब्द जो थूकते समय मुख से उत्पन्न होता है।
थुथना–(हिं. पुं.) देखें 'थूथन'।
थुथाना–(हिं. क्रि. अ.) अप्रसन्न होना, मुँह बनाना।
थुनेर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष, गठिवन।
थुन्नी–(हिं. स्त्री.) स्तम्भ, खंभा, चाँड़, थूनी।
थुपरना–(हिं. क्रि. स.) महुवे के फलों को ढेर बनाकर दबाकर रखना।
थुपरा–(हिं. पुं.) महूवे के फलों का ढेर।
थुरना–(हिं. क्रि. स.) मारना, पीटना, कूटना।
थुरहथा–(हिं. वि.) छोटे हाथवाला, जिसकी हथेली में थोड़ी वस्तु समा सके, मितव्ययी।
थुलमा–(हिं. पुं.) पहाड़ी मोटा कम्बल।
थुली–(हिं. स्त्री.) दलिया, दलकर महीन किया हुआ अन्न।
थूंक–(हिं. पुं.) देखें 'थूक'।
थूंकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'थूकना'।
थू–(हिं. अव्य.) तिरस्कार-सूचक शब्द, छिः, थूकने का शब्द; (मुहा.) **–थू करना**–धिक्कारना।
थूक–(हिं. पुं.) निष्ठीवन, खखार; (मुहा.) **–देना**–निन्दा करना, तिरस्कार करना; **थूकों सत्तू सानना**–थोड़ी-सी सामर्थ्य पर बड़ा काम करने के लिए उद्यत होना।
थूकना–(हिं. क्रि. अ.) मुख से थूक निकालना, मुख में रखी हुई वस्तु को

गिराना, उगलना, तिरस्कार करना, धिक्कारना; (मुहा.) थूक कर चाटना–किसी दी हुई वस्तु को फेर लेना, प्रतिज्ञा करके मुकर जाना।
थूथन–(हिं. पुं.) मुख का वह पतला भाग जो आगे को निकला हुआ हो।
थूथनी–(हिं. स्त्री.) थूथन, हाथी के मुख का एक रोग।
थूथरा–(हिं. वि.) थूथन की तरह बाहर को निकला हुआ मुख, भद्दा, चेहरा।
थून–(हिं. पुं.) स्तम्भ, खंभा, चाँड़।
थूना–(हिं. पुं.) मिट्टी का लोंदा जिसमें परेता खोंसकर रेशम का तागा उकेला जाता है।
थूनी–(हिं.स्त्री.) खंभा, चाँड़, बोझ रोकने के लिये लगाया हुआ डंडा, मथानी का डंडा, टेकने का साधन; सर्प का विष दूर करने के लिए डसने के स्थान को तपे हुए लोहे से दागने की विधि।
थूरना–(हिं. क्रि. स.) मारना, पीटना, कूटना, कसकर भरना, ठूँसकर खाना।
थूल–(हिं. वि.) स्थूल, भद्दा, भारी।
थूला–(हिं. वि.) हृष्ट-पुष्ट।
थूली–(हिं. स्त्री.) दलकर अलग किये हुए अन्न के छोटे कण, दलिया, सूजी।
थूवा–(हिं. पुं.) ऊँची भूमि, टीला, ढूह, मिट्टी का लोंदा, मिट्टी का ढूहा जो सीमा सूचित करने के लिए बनाया जाता है; (स्त्री.) धिक्कार का शब्द।
थूहड़, थूहर–(हिं. पुं.) एक छोटा पौधा जिसके तने से कँटीले डंड के आकार के डंठल निकलते हैं, (इसके डंठलों और पत्तों में से विषैला दूध निकलता है जो औषधों में प्रयोग किया जाता है), सेहुँड़।
थूहा–(हिं.पुं.) ऊँची भूमि, टीला, राशि, ढेर।
थूही–(हिं. स्त्री.) मिट्टी का ढेर, मिट्टी का खम्भा जो कुएँ पर बनाया जाता है जिस पर लकड़ी रखकर पानी खींचने के लिए गड़ारी लगाई जाती है।)
थैंथर–(हिं. वि.) श्रान्त, थका हुआ।
थेई-थेई–(हिं. वि.) तालसूचक नाच और मुद्रा।
थैला–(हिं. पुं.) कपड़े या टाट का बना हुआ झोला जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके, रुपयों का तोड़ा, पायजामे का जाँघ से घुटने तक का भाग।
थैली–(हिं. वि.) छोटा थैला, रुपयों से भरा था थैला, तोड़ा; (मुहा.)–खोलना–थैली से रुपये निकालकर देना;–दार–(पुं.) रोकड़िया, थोक माल बेचने वाला व्यापारी।
थोक–(हिं. पुं.) राशि, ढेर, झुंड, समूह, एकत्रित वस्तुएँ, इकट्ठा बेचने की वस्तुएँ, भूमि का टुकड़ा; (मुहा.) –करना–इकट्ठा करना।
थोड़न–(सं. पुं.) आच्छादन, ढपना।
थोड़ा–(हिं.वि.) न्यून, कम, अल्प, किंचित् परिमाण का; (अव्य.) तनिक;–बहुत–(वि.) न्यूनाधिक; **थोड़े ही**–(अव्य.) बिलकुल नहीं।
थोती–(हिं. स्त्री.) देखें 'थूथन'।
थोथ–(हिं. स्त्री.) पोलापन, तोंद।
थोथरा–(हिं.वि.) निःसार, पोला, व्यर्थ का।
थोथा–(हिं. वि.) निःसार, खोखला, बिना पूँछ का, बाँड़ा, निकम्मा, माथरा मिट्टी का साँचा जिसमें पात्र आदि ढाला जाता है।
थोथी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
थोपड़ी–(हिं. स्त्री.) थप्पड़, चपत, धौल।
थोपना–(हिं. क्रि. स.) पानी में सनी हुई मिट्टी का भीत पर मोटा लेप चढ़ाना, आरोपित करना, आक्रमण से बचाना, छोपना।
थोबड़, थोबड़ा–(हिं.पुं.) पशुओं का थूथन।
थोर, थोरा–(हिं. वि.) देखें 'थोड़ा'।
थोरिक–(हिं.वि.) थोड़ा-सा, अल्प मात्रा का।
थौंद–(हिं. पुं.) तोंद।
थ्यावस–(हिं.पुं.) स्थिरता, दृढ़ता, धीरज।

द

द–संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन तथा तवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्तमूल है। (सं. पुं.) अचल, पर्वत, दाँत, दाता; खंडन; (स्त्री.) भार्या, पत्नी; न्याय–(प्रत्य.) दाता, देनेवाला।
दंगई–(हिं. वि., पुं.) दंगा करनेवाला।
दंगल–(हिं.पुं.) कुश्ती की प्रतिद्वंद्विता।
दंगली–(हिं. वि.) झगड़ालू, जीतनेवाला।
दंगदारा–(हिं. पुं.) किसानों का परस्पर हल-बैल आदि की सहायता लेना-देना।
दंगा–(हिं. पुं.) उपद्रव, झगड़ा।
दंगैत–(हिं पुं.) उपद्रवी, लड़ाका।
दंगबाज–(फा. वि., पुं.) देखो 'दंगई'।
दंड–(सं.पुं.) यष्टि, लाठी, डंडा, एक प्रकार घोड़ा, के व्यूह का नाम, दमन, शासन, कोना, मथानी, सजा, डाँड़, अभिमान, घमंड, दंड के आकार का एक ग्रह, यम, इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम, विष्णु, राजाओं की चार नीतियों में से एक; लंबी लकड़ी जो हल में लगी रहती है, चार हाथ की नाप, २४ मिनट का समय, घड़ी; (मुहा.)–भरना–किसी की हानि को पूरा करना;–भोगना–दंड सहना;–सहना–घाटा सहना।
दंड-कंदक–(सं. पुं.) भूमि-कंद।
दंडक–(सं. पुं.) सेम्हर का मुँसरा; एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में २६ से अक्षर होते हैं, डंडा, दंडकारण्य, दंड देने वाला।
दंडकर्ता–(सं. वि.) दंड देनेवाला।
दंडकला–(सं. पुं.) एक प्रकार का छन्द।
दंडकाक–(सं.पुं.) डोम कौवा, काला कौवा।
दंडकारण्य–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध वन जो विन्ध्य पर्वत से, गोदावरी नदी के किनारे तक फैला हुआ है। वनवास के समय श्रीरामचन्द्र इसी वन में चौदह वर्ष रहे थे।
दंडकी–(सं. स्त्री.) ढोलक।
दंडगौरी–(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।
दंडग्रहण–(सं. पुं.) संन्यास आश्रम ग्रहण करना।
दंडग्राह–(सं. वि.) दंड धारण करनेवाला।
दंडघ्न–(सं. वि.) राजा के दिये हुए दंड को न माननेवाला।
दंडचक्र–(सं.पुं.) सेना-विभाग का एक क्रम।
दंडढक्का–(सं. स्त्री.) दुन्दुभी, नगाड़ा।
दंडताम्री–(सं. स्त्री.) जलतरंग बाजा जो ताँबे की प्यालियों में जल भरकर बजाया जाता है।
दंडत्व–(सं. पुं.) दंड का भाव, ताड़न।
दंडदास–(सं. पुं.) वह जो अर्थदंड का धन न देने के कारण दास बना हो।
दंडदेवकुल–(सं.पुं.) न्याय-विभाग, शासन-क्रम।
दंडधर–(सं.वि.) दंड धारण करनेवाला; (पुं.) यमराज, शासनकर्ता, राजा, संन्यासी।
दंडधार-(क)–(सं. पुं.) यमराज, राजा, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) शासन करनेवाला, दंडधारी।
दंडधारण–(सं. पुं.) संन्यास-आश्रम ग्रहण करना।
दंडधारी–(सं.वि.) दंड धारण करनेवाला संन्यासी।
दंडन–(सं. पुं.) दंड देने की क्रिया, शासन।
दंडना–(हिं.क्रि.स.) दंड देना, सजा देना।
दंडनायक–(सं. पुं.) सेनापति, दंड देने का अधिकारी, सूर्य का एक अनुचर।

दंडनिपातन–(सं. पुं.) शासन-पद्धति ।
दंडनीति–(सं. स्त्री.) दंड-विधान-शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें राज्य-शासन के संबंध के नियम और सिद्धांत हों ।
दंडनीय–(सं. वि.) दंड देने योग्य।
दंडनेता–(सं.वि.) दंड (सजा) देनेवाला।
दंडप–(सं. पुं.) दंड-नीति द्वारा शासन करनेवाला राजा ।
दंडपांशुल–(सं. पुं.) द्वारपाल ।
दंडपाणि–(सं. पुं.) यम जो सर्वदा अपने हाथ में दंड धारण किये हुए है ।
दंडपात–(सं. पुं.) एक प्रकार का सन्निपात रोग ।
दंडपाल–(सं.पुं.) द्वारपाल, डयोढ़ीदार ।
दंडपाली–(सं. स्त्री.) तुलायन्त्र, तराजू ।
दंडपाशक, दंडपाशिक–(सं. पुं.) दंड देनेवाला कर्मचारी, घातक ।
दंडप्रणाम–(सं.पुं.) भूमि पर साष्टांग लेटकर प्रणाम करना ।
दंडवध–(सं. वि.) प्राणदंड ।
दंड-वालधि–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी ।
दंडवाहु–(सं. वि.) जिसकी बाँह डंडे के समान पुष्ट हो ।
दंडभीति–(सं. स्त्री.) दंड पाने का भय ।
दंडभृत्–(सं.पुं.) कुम्हार; (वि.) दंडधारक ।
दंडमाथ–(सं. पुं.) सीधा रास्ता, मार्ग ।
दंडमाथिक–(सं.पुं.) सीधे मार्गसे चलनेवाला।
दंडमानव–(सं. पुं.) वह जिसको दंड देने की आवश्यकता होती है, बालक ।
दंड-यात्रा–(सं.स्त्री.) सेना की चढ़ाई, बारात।
दंडयाम–(सं. पुं.) यमराज, दिन, अगत्स्य मुनि ।
दंडयोग–(सं. पुं.) देखें 'दंड-विधि' ।
दंडरी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की ककड़ी ।
दंडवत्–(सं.वि.) दंड के समान, दंडधारी; (स्त्री.) पृथ्वी पर लेटकर प्रणाम करना ।
दंडवादी, दंडवादिक–(सं. पुं.) द्वारपाल, डयोढ़ीदार ।
दंडवासी–(सं. पुं.) गाँव का मुखिया ।
दंडवाही–(सं. पुं.) दण्ड का विधान करनेवाला कर्मचारी ।
दंडविधि–(सं. पुं.) अपराधी को दंड देने की व्यवस्था ।
दंडविष्कंभ–(सं.पुं.) मथानी बाँधने का खंभा।
दंडवृक्ष–(सं. पुं.) थूहर, सेंहुड़ ।
दंडसंहिता–(सं. स्त्री.) अपराधी को दंड देने की व्यवस्था ।
दंडसेन–(सं.पुं.) पुरुवंशके एक राजाका नाम।
दंडस्थान–(सं. पुं.) शरीर का वह अंग जहाँ दंड दिया जा सकता है ।
दंडाघात–(सं. पुं.) डंडे की मार ।
दंडाज्ञा–(सं. स्त्री.) दंड देने की आज्ञा ।
दंडादंडी–(सं. स्त्री.) डंडों की मारपीट ।
दंडाधिप, दंडाधिपति–(सं. पुं.) दंड, राजा ।
दंडापूपन्यास–(सं. पुं.) एक प्रकार का न्याय या दृष्टान्त-कथन जिससे यह सूचित किया जाता है कि जब किसी के द्वारा कठिन काम किया गया हो तो उसके द्वारा सहज काम अवश्य किया गया होगा।
दंडायमान–(सं. वि.) जो डंडे की तरह सीधा खड़ा हो ।
दंडार–(सं. पुं.) मदवाला हाथी, एक प्रकार का धनुष ।
दंडालय–(सं. पुं.) वह न्यायालय जहाँ दंड देने का विधान हो, एक प्रकार का छन्द जो दंडकला भी कहलाता है ।
दंडासन–(सं.पुं.) हठयोग का एक आसन।
दंडाहत–(सं. वि.) डंडे से मारा हुआ ।
दंडिक–(सं.पुं.) दंड देनवाला, मारनेवाला।
दंडिका–(सं.स्त्री.) डोरी, रस्सी, एक प्रकार का हार, बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।
दंडित–(सं.वि.) जिसको दंड मिला हो।
दंडिन्–(सं. पुं.) यम, राजा, द्वारपाल, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) दंड धारण करनेवाला ।
दंडी–(सं. पुं.) हिन्दुओं का एक उपासक सम्प्रदाय, (ये लोग दंड-कमंडल लिये इधर-उधर घूमते है ।)
दंड्य–(सं.वि.) दंडनीय, जो दंड पाने योग्य हो।
दंत–(सं.पुं.) पर्वत का ऊँचा भाग, प्राणियों का दाँत, बत्तीस की संख्या; **–क**–(पुं.) पहाड़ की चोटी, दाँत; **–कथा**–(स्त्री.) सुनी हुई बात, जनश्रुति; **–कराल**–(पुं.) एक प्रकार का दाँत का रोग; **–कर्षण**–(पुं.) जँभीरी नीबू; **–काष्ठ**–(पुं.) दतवन; **–काष्ठक**–(पुं.) तरवट का पेड़; **–कूर**–(पुं.) संग्राम, युद्ध; **–केतु**–(पुं.) छोटे नीबू का पेड़; **–ग्राही**–(वि.) दातों को नष्ट करनेवाला; **–घर्ष**–(पुं.) दाँत किरकिराना; **–घात**–(पुं.) दाँतों से काटना; **–चाल**–(पुं.) दाँतों का हिलना; **–च्छद**–(पुं.) ओष्ठ, ओठ; **–च्छदी**–(स्त्री.) बिंबाफल, कुन्दरू; **–जात**–(वि.) दाँत निकलने योग्य; **–जाह**–(पुं.) दन्तमूल, दाँत की जड़; **–दशन**–(पुं.) दाँत दिखलाना; क्रोध में दाँत पीसने की क्रिया; **–धावन**–(पुं.) दाँत धोने या स्वच्छ करने की क्रिया; **–पत्र**–(पुं.) कान का एक आभूषण; **–पात**–(पुं.) दाँतों का गिर जाना; **–पाली**–(स्त्री.) दाँत का मूल भाग; **–पीठक**–(पुं.) दाँत के ऊपर का माँस, मसूड़ा; **–पुष्प**–(पुं.) कुन्द का फूल, पीपल का वृक्ष; **–प्रक्षालन**–(पुं.) दाँत स्वच्छ करने का काम; **–फल**–(पुं.) कपित्थ, कैथ; **–फला**–(स्त्री.) पिप्पली, छोटी पीपल; **–भंग**–(पुं.) दाँत का टूटना; **–मय**–(वि.) दाँत के समान; **–मल**–(पुं.) दाँतों का मल या पपड़ी; **–माँस**–(पुं.) मसूड़ा; **–मूल**–(पुं.) दाँत की जड़; **–मूलिका**–(स्त्री.) जमालगोटे का वृक्ष; **–मूलीय**–(पुं.) दन्तमूल से उच्चारण किये जानेवाले वर्ण–तवर्ग; **–रंजन**–(पुं.) मंजन, मिस्सी; **–रोगी**–(वि.) जिसको दाँत का रोग हुआ हो; **–लेखन**–(पुं.) मसूड़े को चीरकर इसमें की पीब निकालने की क्रिया; **–वक्त्र**–(पुं.) शिशुपाल के भाई का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था; **–वल**–(पुं.) हाथी; **–वल्क**–(पुं.) मसूड़ा; **–वस्त्र, –वासस्**–(पुं.) ओष्ठ, ओठ; **–विधृति**–(पुं.) दाँत का एक रोग; **–वीज**–(पुं.) दाडिम, अनार; **–वीणा**–(स्त्री.) दाँत में लगाकर बजाने की एक प्रकार की वीणा; **–वेदना**–(स्त्री.) दाँत की पीड़ा; **–वेष्ट**–(पुं.) दाँतों का एक रोग; **–व्यसन**–(पुं.) दातों का नष्ट होना; **–शंकु**–(पुं.) प्राचीन काल का दाँत उखाड़ने का एक प्रकार का अस्त्र; **–शठ**–(पुं.) जँभीरी नीबू, कैथ, कमरख, नारंगी, खटाई; **–शठा**–(स्त्री.) खट्टी लोनिया; **–शर्करा**–(स्त्री.) दाँतों पर मैल जम जाने से उत्पन्न रोग; **–शाण**–(पुं.) दाँतों में लगाने की एक प्रकार की मिस्सी; **–शिरा**–(स्त्री.) मसूढ़ा; **–शुद्धि**–(स्त्री.) दाँतों की स्वच्छता; **–शूल**–(पुं.) दाँत की पीड़ा; **–शोथ**–(पुं.) मसूड़े में होनेवाला फोड़ा; **–संघर्ष**–(पुं.) दाँत किरकिराना; **–हर्ष**–(पुं.) दाँत का एक रोग जिसमें ठंढी या गरम वस्तु के दाँतों से स्पर्श होने पर बड़ा कष्ट होता है; **–हर्षक**–(पुं.) जँभीरी नीबू ।
दंतांतर–(सं. पुं.) दाँत का मध्य।
दंताग्र–(सं.पुं.) दाँत की नोक या अग्रभाग।
दंताघात–(सं. पुं.) दाँत का आघात या चोट ।

दंतादंति–(सं. स्त्री.) एक दूसरे को दाँत से काटने का युद्ध।
दंताद–(सं.पुं.) दाँतों में कीड़े पड़ने का रोग।
दंतायुध–(सं. पुं.) शूकर, सूअर।
दंतार्बुद–(सं.पुं.) मसूड़े में होनेवाला फोड़ा।
दंतालिका, दंताली–(सं.स्त्री.) घोड़े की लगाम।
दंतावल–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
दंतिका, दंतिजा–(सं. स्त्री.) दन्तीवृक्ष, जमालगोटा।
दंतिदंत–(सं. पुं.) हाथी के दाँत।
दंतिनी–(सं. स्त्री.) जमालगोटा।
दंती–(सं. स्त्री.) हाथी, अंडी की जाति का एक वृक्ष; **–फल**–(पुं.) पिप्पली, छोटी पीपल।
दंतुर, दँतुला–(सं.वि.) जिसके दाँत आगे की ओर निकले हों, हाथी, शूकर, सूअर।
दंतुरच्छद–(सं. पुं.) विजौरा नीबू।
दंतोच्छिष्ट–(सं. वि.) दाँत से जठा किया हुआ।
दंतोत्पाटन–(सं. पुं.) दाँत उखाड़ना।
दंतोद्भद्–(सं. पुं.) दाँत का निकलना।
दंतोष्ठ्य–(सं. पुं.) वह वर्ण जिसका उच्चारण दाँत और ओठ से हो।
दंत्य–(सं. वि.) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो, तवर्ग।
दंदश–(सं. पुं.) दन्त, दाँत।
दंदशूक–(सं. पुं.) सर्प, राक्षस; (वि.) हिंसा करनेवाला।
दंदह्यमान–(सं. वि.) दहकता हुआ।
दंद–(हिं. स्त्री.) गरमी, ताप, ताप की अनुभूति।
दंदाना–(हिं.क्रि.अ.) गरमाहट का अनुभव होना, जाड़ा न लगना।
दंदारू–(हिं. पुं.) छाला, फ़फोला।
दंपति–(हिं. पुं.) देख 'दंपती'।
दंपती–(सं. पुं.) पति-पत्नी।
दंभ–(सं. पुं.) ढकोसला, पाखंड, आडंवर, अभिमान, कपट, शाठ्य।
दंभक–(सं. वि., पुं.) पाखंडी, अभिमानी।
दंभन–(सं. पुं.) ढोंग, पाखंड, अभिमान।
दंभी–(सं. वि.) दंभ से युक्त, दंभ करनेवाला, पाखंडी, अभिमानी।
दँवरी–(हिं. स्त्री.) अनाज के डंठलों पर वैलों को चलाकर अन्न और भूसा अलगाना।
दँवारि–(हिं. स्त्री.) देखें 'दावाग्नि'
दंश–(सं. पुं.) गोमक्षिका, एक प्रकार का कीड़ा जो विष्ठा, मूत्र आदि से उत्पन्न होता है, दाँत से काटने की क्रिया, साँप के काटने का घाव, दाँत चुभने से उत्पन्न घाव, द्वेष, वैर, दाँत, विषैले कीड़ों के डंक, आक्षेप-वचन, कटूक्ति, कवच; **–क**–(पुं.) डाँस नाम की मक्खी; (वि.) दाँत से काटनवाला; **–न**–(पुं.) दाँत से काटना, डँसना; **–नाशिनी**–(स्त्री.) एक प्रकार का तेल का कीड़ा; **–भीरु**–(पुं.) महिष, भैंस; **–मूल**–(पुं.) सहजन का वृक्ष; **–वदन**–(पुं.) सफेद चील।
दंशिका–(सं. स्त्री.) वनमक्षिका, डाँस।
दंशित–(सं. वि.) दाँत से काटा हुआ, कवच आदि से ढपा हुआ।
दंशी–(सं.स्त्री.) छोटा डाँस; (वि.) काटनेवाला, व्यंग्य बोलनेवाला, द्वेष करनेवाला।
दंशूक–(सं. वि.) डँसनेवाला।
दंशेर–(सं. वि.) अपकार करनेवाला।
दंष्ट्र–(सं. पुं.) दाँत, सूकर, सुअर।
दंष्ट्रा–(सं. स्त्री.) दाढ़, चौभड़, विछुआ नामक पौधा।
दंष्ट्रायुध–(सं. पुं.) वराह, सूअर।
दंष्ट्राल–(सं. वि.) वड़े-वड़े दाँतोंवाला।
दंष्ट्राविष–(सं.वि.) वह सर्प जिसके दाँत में विप रहता है।
दंष्ट्रास्त्र–(सं. पुं.) वराह, सूअर।
दंष्ट्रिका–(सं. स्त्री.) दाढ़, चौभड़।
दंष्ट्री–(सं. पुं.) शूकर, सूअर; (वि.) वड़े-वड़े दाँतोंवाला।
दंस–(हिं. पुं.) देखें 'दंश'।
दंसना–(सं. स्त्री.) कर्म, काम।
दंसु–(सं. पुं.) अलौकिक शक्ति।
दइत–(हिं. पुं.) देखें 'दैत्य'।
दई–(हिं. पुं.) भाग्य, दैव, विधाता; **–दई**–(अव्य.) ईश्वर की दुहाई वाचक पद; **–मारा**–(वि.) दैव का मारा हुआ, हतभाग्य।
दक–(सं. पुं.) उदक, जल, पानी।
दकारांत–(सं.वि.) जिसके अन्त में 'द' हो।
दकार–(सं.पुं.) तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द'।
दकारादि–(सं.वि.) जिसके आदि में 'द' हो।
दकियानूसी–(हिं.वि.) प्राचीन, पुराना।
दकोदर–(सं.पुं.) एक प्रकार का पेट का रोग।
दक्खिन–(हिं. पुं.) सूर्य की ओर मुख करके खड़े होने पर दाहिने हाथ की ओर पड़नेवाली दिशा, भारत के दक्षिण की ओर का भाग।
दक्खिनी–(हिं. वि.) जो दक्षिण दिशा में हो; (पुं.) दक्षिण देश का रहनेवाला।
दक्ष–(सं. पुं.) वल, अत्रि ऋषि, शिव का वैल, महेश्वर, विष्णु, एक प्रजापति का नाम; (वि.) निपुण, चतुर, कुशल, सुगमता से काम करनेवाला, दक्षिण भाग का; **–कन्या**–(स्त्री.) दक्ष की पुत्री सती जिसका विवाह शिव से हुआ था; **–क्रतु**–(पुं.) दक्ष का वह यज्ञ जिसमें शिव नहीं वुलाये गये थे; **–जा**–(स्त्री.) दक्ष की कन्या सती, दुर्गा; **–०पति**–(पुं.) महादेव; **–तनया**–(स्त्री.) दक्ष प्रजापति की कन्या दुर्गा, अश्विनी, नक्षत्र; **–ता**–(स्त्री.) निपुणता, पटुता, योग्यता; **–पति**–(पुं.) जिसको सव से अधिक वल हो; **–यज्ञ**–(पुं.) दक्ष प्रजापति द्वारा किया गया यज्ञ; **–विहिता**–(स्त्री.) एक गीत का नाम; (वि.) दक्ष द्वारा किया हुआ; **–सुत**–(पुं.) देवता।
दक्षा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
दक्षाय्य–(सं. पुं.) गरुड़ पक्षी, गृध्र।
दक्षिण–(सं. पुं.) उत्तर के सामने की दिशा, अपसव्य, दाहिना भाग; विष्णु, दक्षिणाग्नि, वह नायक जिसका प्रेम अपने सव नायिकाओं पर समान हो, तन्त्रोक्त आचारविशेष, दक्षिण देश; (वि.) अनुकूल, निपुण, चतुर, दक्ष, समर्थ।
दक्षिण कालिका–(सं.स्त्री.) कालिका देवी।
दक्षिण गोल–(सं. पुं.) वे छः राशियाँ जो विपुवत् रेखा के दक्षिण में हैं।
दक्षिण तीर–(सं.पुं.) दाहिना किनारा।
दक्षिण दिक्–(सं.स्त्री.) दक्षिण दिशा।
दक्षिणधुरीण–(सं.स्त्री.) रथ के दाहिने ओर का घोड़ा।
दक्षिणपश्चात्–(सं.अव्य.) नैर्ऋत्य-कोण में
दक्षिणपश्चिमा–(सं.स्त्री.) नैर्ऋत्य कोण।
दक्षिणपूर्वक–(सं. पुं.) अग्निकोण।
दक्षिणमानस–(सं. पुं.) गया के दक्षिण के एक तीर्थ का नाम।
दक्षिणमेरु–(सं.पुं.) दक्षिण केन्द्र या ध्रुव।
दक्षिणसमुद्र–(सं.पुं.) भारत के दक्षिण का समुद्र।
दक्षिणस्थ–(सं. स्त्री.) वह सारथी जो रथ के दाहिनी ओर हो; (वि.) जो दाहिनी ओर या दक्षिण में हो।
दक्षिणांतिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का वतालीय छन्द।
दक्षिणा–(सं. स्त्री.) दक्षिण दिशा, प्रतिष्ठा, सम्मान, पुरस्कार, नट या ब्राह्मण को दिया जानेवाला दान, वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों पर आसक्त होने पर भी उससे पहिले की तरह प्रेम करती है; **–कपर्द**–(पुं.) ऋषि वसिष्ठ का नाम; **–काल**–(पुं.) दक्षिणा देने का समय।
दक्षिणाग्नि–(सं. पुं.) वह अग्नि जो यज्ञ में दक्षिण की ओर स्थापित की जाती है।

दक्षिणाचल–(सं.पुं.) मलयपर्वत, मलयाचल।
दक्षिणाचार–(सं.पुं.) एक तन्त्रोक्त आचार।
दक्षिणापथ–(सं.पुं.) दक्षिण की ओर जाने का मार्ग, विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश।
दक्षिणापरा–(सं. स्त्री.) नैर्ऋत्य कोण।
दक्षिणाभिमुख–(सं. वि.) जिसका मुख दक्षिण की ओर हो।
दक्षिणामूर्ति–(सं. पुं.) तन्त्र के अनुसार शिव की एक मूर्ति।
दक्षिणायन–(सं. पुं.) सूर्य की दक्षिण की ओर गति, सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति; (वि.) भू-मध्य रेखा से दक्षिण की ओर का।
दक्षिणारण्य–(सं. पुं.) एक जंगल का नाम जो भारत के दक्षिण में है।
दक्षिणार्ह–(सं. पुं.) वह जो दक्षिणा के उपयुक्त हो।
दक्षिणावर्त–(सं. वि.) जो दक्षिण की ओर घूमा हुआ हो, दक्षिण देश संबंधी; (पु.) वह शंख जिसका भीतरी घुमाव दाहिनी ओर हो।
दक्षिणावह–(सं. पुं.) दक्षिण की ओर से आनेवाली वायु।
दक्षिणाशा–(सं. स्त्री.) दक्षिण दिशा; –पति–(पुं.) मंगल ग्रह।
दक्षिणी–(हि.स्त्री.) दक्षिण देश की भाषा; (पुं.) मराठी; (वि.) दक्षिण देश-संबंधी।
दक्षिणीय–(सं. वि.) जो दक्षिणा का पात्र हो, दक्षिण संबंधी।
दक्षिणेतर–(सं. वि.) दाहिन से इतर, बाँया।
दक्षिण्य–(सं. वि.) जो दक्षिणा का पात्र हो।
दखमा–(हिं. पुं.) पारसियों का शव रखने का स्थान।
दखल–(अ. पुं.) अधिकार, भू-संपत्ति पर कब्जा, हस्तक्षेप, प्रवेश।
दखल-दिहानी–(अ. स्त्री.) विधिक आदेश के द्वारा भू-संपत्ति पर कब्जा प्राप्त करना।
दखल-नामा–(अ. पुं.) वह विधिक आज्ञा-पत्र, डिगरी आदि जिसके द्वारा जमीन, घर आदि पर कब्जा प्राप्त किया जाय।
दखिन–(हि. पुं.) देखें 'दक्षिण'।
दखिनहा–(हि.वि.,पुं.) दक्षिण का, दक्षिणी।
दखीलकार–(अ. पुं.) कृषि-भूमि पर स्थायी स्वत्व-प्राप्त भूमिधर या किसान।
दखीलकारी–(अ. स्त्री.) दखीलकार का पद, अधिकार, खेत आदि।
दगड़–(हिं. पुं.) बड़ा ढोल जो लड़ाई के मैदान में बजाया जाता है।
दगदगाना–(हिं. क्रि. अ., स.) चमकना, दमकना, दमकाना, चमकाना।
दगदगाहट–(हिं. स्त्री.) चमक-दमक।
दगदगी–(हिं. स्त्री.) भय, सन्देह।
दगध–(हिं. पुं.) दाह-क्रिया, दग्धा।
दगधना–(हिं.क्रि.अ.,स.) जलना, जलाना, दुःख देना।
दगना–(हिं. क्रि.अ.) बन्दूक या तोप का छूटना, दागा जाना, दग्ध होना, जलना।
दगर, दगरा–(हिं. पुं.) विलम्ब, देर, मार्ग, डगर, रास्ता।
दगरी–(हिं. स्त्री.) बिना मलाई का दही।
दगल–(हिं. पुं.) देखें 'दगला'।
दगला–(हिं. पुं.) रूईदार अथवा मोटे कपड़े का बना हुआ अँगरखा।
दगवाना–(हिं. क्रि. स.) दागने के काम में किसी दूसरे को लगाना।
दगहा–(हिं. वि.) दागवाला, जिसमें सफेद दाग हो, जिसने मृतक का दाह–कर्म किया हो, दग्ध किया हुआ, दागा हुआ।
दगा–(फा. स्त्री.) छल-कपट, धोखा, फरेब, विश्वासघात।
दगाबाज–(फा. वि.) धोखा देनेवाला, कपटी।
दगाबाजी–(फा. स्त्री.) धोखा, दगा, विश्वासघात।
दगल–(हि.वि.) जिसमें कुछ दोष या दाग हो; (पुं.) छली, कपटी।
दग्ध (सं. वि.) जला हुआ, जलाया हुआ, जिसका हृदय दग्ध हुआ हो, पीड़ित, दुःखित; –काक–(पुं.) द्रोणकाक, डोम-कौवा; –रथ–(पुं.) इन्द्र के एक सारथी का नाम।
दग्धा–(सं. स्त्री.) सूर्य के अस्त होने की दिशा, पश्चिम दिशा, अशुभ तिथियाँ, राशि-भेद युक्त कुछ तिथियों के नाम, यथा–रविवार की द्वादशी, सोमवार की एकादशी इत्यादि।
दचक–(हिं. स्त्री.) दबाव या झटके से लगी हुई चोट, दबाव, धक्का।
दचना–(हिं. क्रि. अ.) गिरना-पड़ना।
दच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'दक्ष'।
दक्षकुमारी–(स्त्री.) देखें 'दक्षकन्या'।
दच्छिना–(हि. स्त्री.) देखें 'दक्षिणा'।
दच्छ-सुता–(हिं. स्त्री.) देखें 'दक्षकन्या'।
दच्छिन–(हि. पुं., वि.) देखें 'दक्षिण'।
दड़ोकना–(हिं. क्रि. अ.) बाघ, साँड़ इत्यादि पशुओं का बोलना।
दढ़ना–(हिं. क्रि. अ.) जलना।
दढ़ियल–(हिं. वि.) दाढ़ीवाला।
दतुअन, दतुवन–(हिं. स्त्री.) नीम आदि की पतली ताजी टहनी जिसे दाँतों से कूँचकर दाँत साफ करते है, सबेरे के समय दाँत साफ करने की क्रिया।
दत्त–(सं. वि.) रक्षित, बचाया हुआ, दान किया हुआ; (पुं.) दान, एक ऋषि का नाम, एक वैश्य जाति।
दत्तक–(सं. पुं.) गोद लिया हुआ लड़का; –पुत्र–(पुं) देखें 'दत्तक'।
दत्तचित्त–(सं. वि.) जिसका चित्त किसी ओर लगा हो।
दत्तप्राण–(सं. वि.) जिसने अपने प्राण उत्सर्ग किये हों।
दत्तवर–(सं. वि.) जिसे ईश्वरीय वर-दान या महानता प्राप्त हो।
दत्तहस्त–(सं. वि.) जिसे अभयदान का सहारा दिया गया हो।
दत्तात्मा–(सं.पुं.) वह जिसने अपना पैत्रिक स्वत्व अपनी पैत्रिक संपत्ति पर से छोड़ दिया हो।
दत्तात्रेय–(सं. पुं.) एक ऋषि जो विष्णु के एक अवतार माने जाते हैं।
दत्तावधान–(सं.वि.) एकाग्रचित्त, सावधान।
दत्तासन–(सं. वि.) जिसको आसन दिया गया हो।
दत्तिक–(सं.वि.) अल्पदत्त, जो थोड़ा दिया हुआ हो।
दत्ती–(हिं. स्त्री.) दृढ़ संबंध, सगाई का पक्का होना।
दत्तय–(सं. पुं.) इन्द्र।
दत्तोपनिषद्–(सं. स्त्री.) एक उपनिषद् का नाम।
ददन–(सं. पुं.) दान।
ददरा–(हिं. पुं.) छानने का कपड़ा, छन्ना।
ददरी–(हिं.स्त्री.) तमाखू के पत्ते पर पड़ा हुआ चिह्न, एक विशाल मेला जो कार्तिक पूर्णिमा को बलिया के समीप लगता है।
ददा–(हिं. पुं.) देखें 'दादा'।
ददिया ससुर–(हिं. पुं.) ससुर का पिता, पत्नी या पति का दादा।
ददिया सास–(हिं. स्त्री.) पति या पत्नी की दादी।
ददिहाल–(हिं. पुं.) दादा का कुल, दादा का घर।
ददोरा–(हिं. पुं.) शरीर पर वह चकत्ता या चकोता जो मच्छर, बर्रे आदि के काटने से पड़ता है।
दद्रु–(सं.पुं.) कच्छप, कछुवा, दाद का रोग।
दद्रुक–(सं. पुं.) दद्रु, दाद का रोग।
दद्रुघ्न–(सं. पुं.) चकवँड़ का पौधा।
दद्रुण–(सं. वि.) जिसको दाद का रोग हुआ हो।

दद्रू, दद्रूण–(सं. पुं.) दाद का रोग ।
दध–(हिं. पुं.) देखें 'दधि', दही ।
दधसार–(हिं. पुं.) दही का सत्त्व या सार ।
दधि–(सं. पुं.) जमाया हुआ दूध, दही, वस्त्र, कपड़ा; (हिं. पुं.) समुद्र, सागर ।
दधिक–(सं. पुं.) सलई का पेड़ ।
दधिकाँदो–(हिं. पुं.) जन्माष्टमी के दूसरे दिन होनेवाला एक उत्सव जिसमें लोग दही में हल्दी मिलाकर एक दूसरे पर फेंकते हैं ।
दधिका–(सं. पुं.) अश्व, घोड़ा ।
दधिकूर्चिका–(सं. स्त्री.) छेना ।
दधिग्राम–(सं.पुं.) श्रीकृष्ण का एक लीला-स्थान ।
दधिचार–(सं.पुं.) दही मथने की मथानी ।
दधिज–(सं. पुं.) नवनीत, मक्खन ।
दधिजात–(सं. पुं.) मक्खन, चन्द्रमा ।
दधित्थ, दधिनामा–(सं.पुं.) कपित्थ, कैथ ।
दधिपुष्पी–(सं. स्त्री.) ज्योतिष्मती लता ।
दधिपूप–(सं.पुं.) एक प्रकार का पक्वान्न ।
दधिफल–(सं. पुं.) कपित्थ, कैथ ।
दधिभव–(सं. पुं.) नवनीत, मक्खन ।
दधिमंड–(सं. पुं.) दही का पानी ।
दधिमुख–(सं.पुं.) सुग्रीव के मामा का नाम ।
दधियार–(हिं.पुं.) अर्कपुष्पी नामक लता ।
दधिलेह–(सं.पुं.) दही के ऊपर की मलाई ।
दधिवत्–(सं. वि.) दही मिलाया हुआ ।
दधिवारि–(सं. पुं.) दही का पानी ।
दधिवास्तुका–(सं. स्त्री.) गोदन्ती, हरताल, जवासा ।
दधिवाहन–(सं.पुं.) राजा अंग के पुत्र का नाम ।
दधिशोण–(सं. पुं.) सफेद बन्दर ।
दधिसक्तु–(सं.पुं.) दही मिला हुआ सत्तू ।
दधिसर–(सं.पुं.) दही के ऊपर की मलाई ।
दधिसार–(सं. पुं.) नवनीत, मक्खन ।
दधिसुत–(हिं. पुं.) कमल, मोती, चन्द्रमा, विष; (सं. पुं.) नवनीत, मक्खन ।
दधिसुता–(हिं. स्त्री.) शुक्ति, सीप ।
दधिस्नेह–(सं. पुं.) दही पर की मलाई ।
दधिस्वेद–(सं. पुं.) तक्र, छाछ, मठा ।
दधीच–(सं.पुं.) शुक्राचार्य के पुत्र का नाम ।
दधीचि–(सं. पुं.) शुक्राचार्य के पुत्र, (वृत्रासुर को मारने के लिए उनकी हड्डी माँगी गई थी। इस निमित्त उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये थे । तबसे इनकी गणना सबसे बड़े दानियों में की जाती है ।)
दधीच्यस्थि–(सं. पुं.) दधीचि की हड्डी, वज्र, हीरा ।
दधीमुख–(सं. पुं.) एक बन्दर का नाम ।
दध्न–(सं. पुं.) चौदह यमों में से एक ।
दध्यन्न–(सं. पुं.) दही मिला हुआ अन्न ।
दध्यानी–(सं. स्त्री.) सुदर्शन का पौधा ।
दध्योदन–(सं.पुं.) दही मिला हुआ भात ।
दनदनाना–(हिं. क्रि. अ.) दनदन शब्द करना, आनन्द करना ।
दनादन–(हिं.अव्य.) दनदन शब्द के साथ, जल्दी-जल्दी ।
दनु–(सं. स्त्री.) दक्ष की एक कन्या का नाम जिसका विवाह कश्यप ऋषि से हुआ था, (इनके चालीस पुत्र थे । ये सब दानव कहलाये ।)
दनुज–(सं. पुं.) असुर, राक्षस; –**दलनी**–(स्त्री.) असुरों का नाश करनेवाली दुर्गा; –**राय**–(हिं. पुं.) हिरण्यकशिपु ।
दनुजारि–(सं. पुं.) दनुजशत्रु, देवता ।
दनुजेंद्र–(सं.पुं.) दानवों का राजा रावण ।
दनुजेश–(सं. पुं.) हिरण्यकशिपु, रावण ।
दनुप–(सं. पुं.) रावण ।
दनुसंभव, दनुसूनु–(सं. पुं.) दनु के पुत्र, राक्षस ।
दन्न–(हिं.पुं.) तोप आदि के छूटने का शब्द ।
दपट–(हिं. स्त्री.) डपट, घुड़की ।
दपटना–(हिं. क्रि. स.) डपटना ।
दपु–(हिं. पुं.) अहंकार, घमंड ।
दपेट–(हिं. स्त्री.) देखें 'दपट' ।
दपेटना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'दपटना' ।
दफन–(अ. पुं.) गाड़ना, मुरदे को कब्र में गाड़ना ।
दफनाना–(हिं.क्रि.स.) दफन करना, गाड़ना ।
दफा–(हिं.स्त्री.) बार, कानून का कोई एक नियम जो संख्यित होता है, धारा ।
दफतर–(अ. पुं.) कार्यालय ।
दफतरी–(अ. पुं.) दफ्तर के कागज-पत्रों की जिल्दबंदी करनेवाला ।
दफ्ती–(फा. स्त्री.) मोटा कड़ा कागज ।
दबंग–(हिं.वि.) दबदबावाला, प्रभावशाली ।
दबक–(हिं.स्त्री.) छिपने का भाव, दबने की क्रिया, सिकुड़न, धातु को पीटकर लंबा करने की क्रिया ।
दबकगर–(हिं. पुं.) धातु का तार बनानेवाला ।
दबकना–(हिं.क्रि.अ.) डर के मारे संकुचित स्थान में छिपना, लुकना, धातु को पीटकर बढ़ाना, डाँटना, डपटना ।
दबकनी–(हिं. स्त्री.) भाथी का छिद्र जिससे हवा भीतर जाती है ।
दबकवाना–(हिं.क्रि.स.) दबकाने में किसी दूसरे को प्रवृत्त करना ।
दबका–(हिं.पुं.) कामदानी का चिपटा तार ।
दबकाना–(हिं.क्रि.स.) ढाँपना, छिपाना, छिपाकर रखना डपटना ।
दबकी–(हिं. स्त्री.) सुराही के आकार का मिट्टी का पात्र, बरतन, दबकने की क्रिया ।
दबकैया–(हिं. पुं.) सोना-चाँदी के खंडों को पीटकर बढ़ानेवाला ।
दबगर–(हिं. पुं.) चमड़े के कुप्पे या ढाल बनानेवाला ।
दबना–(हिं. क्रि. स.) भार के नीचे आना, दाब के नीचे पड़ना, ऐसी अवस्था में होना जब कुछ बस न चले, किसी वस्तु का दूसरे के अधिकार में अनुचित रीति से चला जाना, शान्त रहना, संकोच करना, धीमा पड़ना, अच्छा न जान पड़ना, किसी के दबाव से विवश होना, अपने स्थान पर टिका न रहना, किसी ओर अधिक भार होना, किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना, मन्द पड़ना; (मुहा.) **दबी जबान से कहना**–किसी बात को स्पष्ट न कहना; ऐसे शब्दों में कहना जिससे सच्ची बात या तथ्य की कुछ झलक आती हो ।
दबमो–(हिं.पुं.) हिमालय पर्वत का एक प्रकार का बकरा ।
दबवाना–(हिं.क्रि.स.) दबाने के काम में दूसरे को लगाना ।
दबस–(हिं.पुं.) जहाजी माल की रसीद ।
दबाई–(हिं. स्त्री.) दबाने का कार्य ।
दबाऊ–(हिं. वि.) दबानेवाला, जिसका पिछला भाग आगे के भाग से भारी हो ।
दबाना–(हिं.क्रि.स.) किसी पदार्थ को नीचे की ओर धँसाने के लिए ऊपर भार देना, किसी पदार्थ पर बहुत जोर लगाना, भार के नीचे रखना, किसी बात को फैलने न देना, गुप्त रखना, दूसरे के गुणों को या महत्त्व को छिपा रखना, विवश करना, धरती में गाड़ना, अपने स्थान से पीछे हटना, अनुचित रीति से किसी का माल ले लेना, तेज दौड़कर आगे की वस्तु को पकड़ना, किसी को असहाय अवस्था में लाना, दमन करना, शान्त करना ।
दबाव–(हिं. पुं.) लकड़ी का बना हुआ लंबा-चौड़ा सन्दूक, दबाने की क्रिया, चाँप, प्रताप ।
दबीज–(फा. वि.) मोटा, गाढ़ा, मजबूत, गफ, ठस ।
दबैल–(हिं. वि.) जो किसी के प्रभाव या दबाव में हो, बहुत दबनेवाला, दब्बू ।

दबोचना–(हिं.क्रि.स.) किसी को अकस्मात् पकड़कर दबा लेना, छिपाना, धर दबाना।
दबौनी–(हिं.स्त्री.) बरतनों पर फूल-पत्ती उभाड़ने या नक्काशी करने का एक औजार।
दम–(सं..पुं.) दंड, दमन, इंद्रियों को वश में करना, कीचड़, घर, एक प्राचीन ऋषि का नाम, विष्णु, दयमन्ती के एक भाई का नाम, बुद्ध का एक नाम।
दम–(फा.पुं.) साँस, श्वास, जान, प्राण, जीवन, जिंदगी, हुक्के आदि का कश, समय, वक्त।
(मुहा.)–**अटकना**–श्वास का रुकना; –**घुटना**–श्वास-नलिका के अवरोध से साँस लेना-छोड़ना बंद होना; –**टूटना**–हाँफने लगना; –**निकलना**–प्राण निकलना; –**फूलना**–साँस फूलना; –**मारना**–सुस्ताना; –**लेना**–दम मारना, अवकाश लेना।
दमआलू–(हिं.पुं.) आलू की मसालेदार तरकारी।
दमकल–(पुं.) आग बुझाने का प्रसिद्ध मोटर, यंत्र आदि।
दमक–(सं. वि.) दम करनेवाला, शासनकर्ता; (हिं. स्त्री.) द्युति, चमक, चमचमाहट।
दमकना–(हिं. क्रि. अ.) चमकना, चमचमाना।
दमकला–(हिं. स्त्री.) वह यन्त्र जिसके द्वारा पानी या गुलावजल का फौवारा बड़े वेग से दूर तक फेंका जाता है; एक बड़ा पात्र जिसमें पिचकारी लगी होती है, (इससे बड़ी महफिलों में गुलाब-जल या रंग छिड़का जाता है), बड़ी अँगीठी जो दमकल के आकार की होती है, देखें 'दमचूल्हा'।
दमचूल्हा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लोहे का बना चूल्हा जिसके बीच में जाली होती है और बगल में हवा जाने के लिए एक बड़ा छेद होता है।
दमड़ी–(हिं.स्त्री.) एक पैसे का आठवाँ भाग।
दमदार–(फा. वि.) जिसमें दम या शक्ति अधिक हो।
दम-दिलासा–(फा.पुं.) आशा, बहकावा।
दमन–(सं. पुं.) दबाने की क्रिया, दंड, इन्द्रियों की चंचलता को रोकना, कुन्द का पुष्प या वृक्ष, शिव, महादेव, विष्णु, एक ऋषि का नाम; (वि.) दमन करनेवाला।
दमनक–(सं.पुं.) एक प्रकार का पौधा, दौना, एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में छः अक्षर होते हैं।
दमनशील–(सं. वि.) जिसकी प्रकृति दमन करने की हो, दमन करनेवाला।
दमना–(हिं. क्रि. स.) दमन करना।
दमनी–(सं. स्त्री.) अग्निदमनी नामक पौधा; (हिं. स्त्री.) संकोच, लज्जा।
दमनीय–(सं. वि.) दमन करने योग्य, जो दबाया जा सके।
दमाद–(हिं. पुं.) जामाता, कन्या का पति।
दमादम–(हिं. अव्य.) दम-दम शब्द के साथ, लगातार, बराबर।
दमानक–(हिं. स्त्री.) तोपों की बाढ़।
दमारि–(हिं. पुं.) वन की आग।
दमाह–(हिं. पुं.) बैल का श्वास-रोग।
दमित–(सं. वि.) वश में किया हुआ, कष्ट सहनेवाला।
दमी–(सं. वि.) दमन करनेवाला; (हिं. वि.) दम लगानेवाला, गाँजा पीनेवाला।
दमैया–(हिं. वि.) दमन करनेवाला।
दमोड़ा–(हिं. पुं.) मूल्य।
दमोदर–(हिं. पुं.) देखें 'दामोदर'।
दम्य–(सं.वि.) दमनीय, दमन करने योग्य।
दय–(सं. पुं.) दया, कृपा, करुणा।
दया–(सं. स्त्री.) वह दुःखपूर्ण भावना जो किसी मनुष्य के मन में दूसरे को कष्ट में देखकर उत्पन्न होता है और वह उस कष्ट को दूर करने का प्रयत्न करता है, करुणा, दक्ष की एक कन्या जिसका विवाह धर्म से हुआ था, अलंकार में शान्त रस का व्यभिचारी भाव।
दयादृष्टि–(सं. स्त्री.) किसी के प्रति करुणा या अनुग्रह का भाव।
दयाना–(हिं. क्रि. अ.) दयालु होना, कृपा करना।
दयानिधान–(सं.पुं.) अति दयालु पुरुष।
दयानिधि–(सं. पुं.) वह मनुष्य जिसके चित्त में बहुत दया हो, ईश्वर का एक नाम।
दयापात्र–(सं. पुं.) वह जिस पर दया करना उचित हो।
दयामय–(सं. वि.) दया से पूर्ण, अत्यन्त दयालु; (पु.) ईश्वर का एक नाम।
दयार्द्र–(सं. वि.) दयापूर्ण, दयालु।
दयाल–(हिं. वि.) दयालु, कृपालु।
दयालु–(सं. वि.) दयायुक्त, दयावान्, कृपालु।
दयालुता–(सं. स्त्री.) दया करने की प्रवृत्ति, दयालु होने का भाव।
दयावंत–(हिं. वि.) दयायुक्त, दयालु।
दयावती–(सं. वि.स्त्री) दया करनेवाली।
दयावान–(हिं. वि.) दया करने योग्य, दयावान्, दीन।
दयावान्–(हिं. वि.) जिसके चित्त में दया हो, कृपालु।
दयावीर–(सं. पुं.) वह मनुष्य जो दूसरे के दुःख को दूर करने के लिए प्राण तक दे सकता है, दयायुक्त, नायक।
दयाशील–(सं. वि.) दयावान्, कृपालु।
दयासागर–(सं. पुं.) जिसके चित्त में अगाध दया हो, अत्यन्त दयालु मनुष्य।
दयित–(सं. पुं.) पति; (वि.) प्रियतम, प्यारा।
दयिता–(सं. स्त्री.) पत्नी, भार्या।
दयिताधीन–(सं.पुं.) स्त्री के वशीभूत, जोरू का गुलाम।
दयित्लु–(सं. वि.) दयाशील, दयालु।
दर–(सं. पुं.) शंख, गदा, भय, कन्दरा, पहाड़ की गुफा।
दर–(हिं. पुं.) सेना, समूह, दल, स्थान; (स्त्री.) भाव, निर्ख, प्रतिष्ठा, कद्र, ठिकाना, (वि.) विदारक; थोड़ा-सा।
दर–(फा. पुं.) द्वार, दरवाजा, फाटक, दहलीज; (मुहा.)–**दर मारा फिरना**–दुर्दशा में पड़कर इधर-उधर भटकना।
दरक–(सं. वि.) डरपोक, कायर, भीरु; (हिं. स्त्री.) दरार जो दाब पड़ने से उत्पन्न होती है।
दरकच–(हिं. स्त्री.) वह चोट जो रगड़ जाने या चोट लगने से उत्पन्न हो, कुचल जाने से लगी हुई चोट।
दरकटी–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु के भाव का ठहराव।
दरकना–(हिं. क्रि. अ.) विदीर्ण होना, दबाव से फट जाना, चिरना।
दरका–(हिं. पुं.) विदीर्ण होने का चिह्न, दरार, वह चोट जिससे कोई वस्तु फट जाय।
दरकाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) फटना, फाड़ना।
दरकार–(फा.स्त्री.) आवश्यकता, जरूरत।
दरकारी–(फा. वि.) आवश्यक, जरूरी।
दरकिनार–(फा. वि.) अलग, अलहदा, एक ओर।
दरकूच–(फा. वि.) मंजिल पर मंजिल पार करता हुआ।
दरखास्त–(फा. स्त्री.) प्रार्थना, प्रार्थना-पत्र, निवेदन।
दरख्त–(फा. पुं.) पेड़, वृक्ष।
दरगाह–(फा.. स्त्री.) द्वार, दरवाजा, किसी प्रसिद्ध फकीर का मकबरा।
दरज–(हिं. स्त्री.) दरार, चीर।
दरजन–(हिं.पुं.) बारह का समूह, दर्जन।

दरजा–(हिं. पुं.) स्थिति, लोहा ढालने का एक प्रकार का यन्त्र, देखें 'दर्जा'।
दरजिन–(हिं. स्त्री.) दर्जी की स्त्री।
दरजी–(हिं.पुं.) कपड़े सीने का काम करनेवाला, दर्जी।
दरण–(हिं. पुं.) ध्वंस, नाश, पीसने की क्रिया।
दरद–(सं. पुं.) ईंगुर, सिंगरफ, खर्पर, खपरिया, एक म्लेच्छ जाति का नाम, कश्मीर और हिन्दूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का नाम।
दरद–(हिं. स्त्री.) दर्द, पीड़ा, व्यथा, दया।
दरदरा–(हिं. वि.) जिसके कण मोटे हों, जो महीन न पीसा गया हो।
दरदराना–(हिं.क्रि.अ.) बहुत महीन न पीसना, थोड़ा पीसना जिससे मोटे रवे रह जायँ।
दरदरी–(हिं. वि.स्त्री.)जिसके रवे मोटे हों।
दरन–(हिं.पुं.वि.) दलन, नाश करनेवाला।
दरना–(हिं. क्रि. स.) दरदरा बनाना, मोटा पीसना, नष्ट करना।
दरप–(हिं. पुं.) देखें 'दर्प'।
दरपन–(हिं. पुं.) देखें 'दर्पण'।
दरपना–(हिं. क्रि. अ) अहंकार करना, क्रोध करना।
दरब–(हिं.पुं.) धन, धातु, मोटे पोत की किनारदार चादर।
दरबा–(फा. पुं.) कबूतरों के रहने की लकड़ी की बनी खानेदार खुली आलमारी।
दरबान–(फा.पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
दरबार–(फा. पुं.) राजा का सभा-भवन, राजसभा, नवाबों, सामंतों आदि की सभा का बैठकखाना।
दरबार आम–(फा. पुं.) (बादशाह अकबर की) सार्वजनिक राजसभा।
दरबार खास–(फा. पुं.) राजा का निजी या विशिष्ट सभा-भवन।
दरबारदारी–(फा. स्त्री.) किसी के यहाँ बार-बार जाकर अनुनय-विनय करने की क्रिया, चापलूसी।
दरबारी–(फा. पुं.) दरबार में शामिल या शरीक होनेवाला सदस्य।
दरभ–(हिं.पुं.) देखें 'दर्भ', कुश, बन्दर।
दरमियान–(फा. पुं.) मध्य, बीच।
दरमियानी–(फा.वि.) मध्यस्थ,बीच का।
दररना–(हिं. क्रि.अ.) धक्का देना।
दरराना–(हिं.क्रि.अ.) वेग से आ पहुँचना।
दरवाजा–(फा.पुं.) द्वार, किवाड़, फाटक।
दरवी–(हिं. स्त्री.) साँप का फन, सँड़सी, करछुल, पौना।
दरवेश–(फा.पुं.) फकीर, भिखारी; याचक।
दरश–(हिं. पुं.) देखें 'दर्श'।
दरशन–(हिं. पुं.) देखें दर्शन।
दरशाना–(हिं.क्रि.स.) दरसाना, दिखलाना।
दरस–(हिं. पुं.) दर्शन, देखा-देखी, भेंट, सुन्दरता, छवि।
दरसन–(हिं. पुं.) दर्शन, भेंट।
दरसना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखना, दिखाई पड़ना, देखने म आना।
दरसनिया–(हिं. पुं.) शीतला की शान्ति के लिए पूजा करनेवाला।
दरसनी–(हिं. स्त्री.) दर्शन, दर्पण; –**हुंडी**–(स्त्री.) एक प्रकार की हुण्डी जिसके भुगतान की मिति में दस दिन या इससे कम समय बाकी हो, वह वस्तु या पत्र जिसके दिखलाते ही किसी से कोई वस्तु मिल जाय।
दरसनीय–(हिं. वि.) देखें 'दर्शनीय'।
दरसान–(हिं. पुं.) प्रकाश, चमक।
दरसाना, दरसावना–(हिं. क्रि. स.) दिखलाना, प्रकट करना, स्पष्ट करना, समझाना।
दराँती–(हिं. स्त्री.) घास आदि काटने की हँसिया।
दराई–(हिं. स्त्री.) दरने की क्रिया या या मजदूरी।
दराज–(हिं. स्त्री.) फाँक, छेद।
दराजदार–(फा. वि.) जिसमें दराजें हों।
दरार–(हिं. स्त्री.) दरज।
दरारना–(हिं.क्रि.अ.) विदीर्ण होना, फटना।
दरारा–(हिं. पुं.) धक्का, रगड़, दरेरा।
दरि–(सं. स्त्री.) गुहा, कन्दरा।
दरित–(सं. व.) भयभीत, डरपोक।
दरिद्र–(सं. वि.) निधन, कंगाल; (पुं.) कंगाल मनुष्य।
दरिद्रता–(सं. स्त्री.) निर्धनता।
दरिद्रत्व–(सं. पुं.) दरिद्रता।
दरिद्राण–(सं. पुं.) दरिद्रता।
दरिद्र-नारायण–(सं. पुं., वि.) बहुत गरीब, दरिद्र।
दरिया–(फा. पुं.) नदी, समुद्र।
दरियाई–(फा.वि.) नदी या समुद्र संबंधी।
दरियाई घोड़ा–(फा. पुं.) गैंड़े की तरह का एक जंगली अफ्रीकी जानवर जो नदियों के किनारे मिलता है।
दरियापत–(फा. वि.) ज्ञात, मालूम।
दरियाव–(हिं.पुं.) देख 'दरिया', समुद्र।
दरी–(सं. स्त्री.) पर्वत की गुफा, खोह, पर्वतों के बीच का वह नीचा स्थान जिसमें कोई नदी बहती हो अथवा गिरती हो।
दरी–(हिं.स्त्री.) मोटे सूतों का एक प्रकार का बिछौना जो फर्श या पलंग पर बिछाया जाता है; (सं.वि.) फाड़नेवाला, डरपोक।
दरेती–(हिं. स्त्री.) अनाज दरने की छोटी चक्की।
दरेक–(हिं. पुं.) बकाइन का पेड़।
दरेरना–(हिं.क्रि.स.) रगड़ते हुए धक्का देना, पीसना, रगड़ना।
दरेरा–(हिं. पुं.) धक्का, रगड़, निरन्तर धारा या बहाव, पानी का तोड़।
दरेस–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छींट, (वि.) तैयार, बना हुआ।
दरेसी–(हिं. स्त्री.) तैयारी सजावट।
दरैया–(हिं.पुं.) दाल दरनेवाला, घातक।
दरोगा–(हिं. पुं.) देखें 'दारोगा'।
दरोदर–(सं.पुं.) पासे से खेलने का जुआ।
दर्गाह–(हिं. पुं.) देखें 'दरगाह'।
दर्ज–(हिं. स्त्री.) देखें 'दरज'; (वि.) लिखित, लिखा हुआ।
दर्जन–(हिं.पुं.) बारह वस्तुओं का समूह, इकट्ठी या एक साथ बारह वस्तुएँ।
दर्जा–(अ.पुं.) श्रेणी, कोटि, वर्ग, कक्षा, पद, ओहदा।
दर्जिन–(हिं. स्त्री.) दर्जी की स्त्री।
दर्जी–(फा. पुं.) कपड़े सीनेवाला।
दर्द–(फा. पुं.) पीड़ा, व्यथा, कष्ट, दुःख, रहम, सहानुभूति, अनुकंपा।
दर्दनाक–(फा. वि.) कष्टकर, दुःखदायी, दयनीय।
दर्दमंद–(फा.वि.) पीड़ित, दुःखी, दयावान।
दर्दी–(हिं. वि.) देखें 'दर्दमंद'।
दर्दुर–(सं.पुं.) भेक, मेढ़क, मेघ, बादल, एक राक्षस का नाम, अभ्रक, बीरबहूटी नामक कीड़ा, एक प्रकार का धान, पर्वत, पहाड़, वह पात्र जिसका कुछ अंश टूट गया हो।
दर्दुरक–(सं. पुं.) देखें 'दर्दुर'।
दर्दुरच्छदा–(सं. स्त्री.) ब्राह्मी बूटी।
दर्दुरा–(सं. स्त्री.) चंडिका, दुर्गा।
दर्प–(सं. पुं.) गर्व, अहंकार, अभिमान, घमंड, कोप, रोष, उद्दण्डता, उत्साह, दबाव, आतंक, कस्तूरी, एक प्रकार का मृग।
दर्पक–(सं. पुं.) कामदेव; (वि.) अभिमान करनेवाला, घमंडी।
दर्पण–(सं. पुं.) चक्षु, नेत्र, उत्तेजना, आईना, आरसी, वह पर्वत जिस पर कुबेर रहते हैं।
दर्पद–(सं. वि.) अभिमान उत्पन्न करनेवाला, गर्वदायक; (पुं.) विष्णु।

दर्पपत्रक–(सं. पुं.) कुश।
दर्पहन्–(सं. वि.) अभिमान को दूर करनेवाला; (पुं.) विष्णु।
दर्पित–(सं. वि.) अहंकार से भरा हुआ।
दर्पी–(सं. वि.) अहंकारी, घमंडी।
दर्भ–(सं. पु.) एक प्रकार का कुश, डाभ, कुश का बना हुआ आसन।
दर्भक–(सं.पुं.) घोड़े के टाप का एक रोग।
दर्भकुसुम–(सं.पुं.) एक प्रकार का कीड़ा।
दर्भकेतु–(सं.पुं.) राजा जनक के भाई का नाम।
दर्भट–(सं.पुं.) घर के भीतर की कोठरी।
दर्भपत्र–(सं. पुं.) काश, काँस।
दर्भपुष्प–(सं. पुं.) एक प्रकार का सर्प।
दर्भमूल–(सं. पु.) कुश की जड़।
दर्भर–(सं. पुं.) लवा नामक पक्षी।
दर्भासन–(सं. पुं.) कुश का बना हुआ आसन, कुशासन।
दर्म–(सं. वि.) विदारक, फाड़नेवाला।
दर्मियान, दर्मियानी–(हिं.पुं.,अव्य.,वि.) देखें 'दरमियान,' 'दरमियानी'।
दर्राना–(हिं.क्रि.अ.) बधड़क किसी स्थान में प्रवेश करना, बिना भय के चला जाना।
दर्व–(सं. पुं.) राक्षस, हिंसा करनेवाला मनुष्य, पंजाब के उत्तर में रहनेवाली एक प्राचीन जाति; (स्त्री.) राजा उशीनर की एक पत्नी का नाम।
दर्वट–(सं. पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
दर्वरीक–(सं.पुं.) इन्द्र, वायु, एक प्रकार का बाजा।
दर्वि–(सं.स्त्री.) बड़ी करछी, साँप का फन।
दर्विका–(सं. स्त्री.) वनगोभी का तृण, आँख में लगाने का एक प्रकार का काजल।
दर्वी–(सं.स्त्री.) करछी, चम्मच, चमचा।
दर्वीकर–(सं. पु.) फनवाला साँप।
दर्श–(सं.पुं.) सूर्य और चन्द्रमा का संगम-काल, अमावस्या तिथि, अमावस्या के दिन किया जानेवाला यज्ञ।
दर्शक–(सं. पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, देखनेवाला, दिखलानेवाला; (वि.) निपुण, मुख्य, प्रधान।
दर्शन–(सं.पुं.) नयन, स्वप्न, धर्म, बुद्धि, दर्पण, वर्ण, भेंट, अवलोकन, दृष्टि द्वारा ज्ञान, साक्षात्कार, देखा-देखी, चाक्षुष ज्ञान, वह शास्त्र जिसके द्वारा यथार्थ तत्व का ज्ञान होता है, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त–ये षट्दर्शन कहलाते है।
दर्शनपथ–(सं. पुं.) दृष्टिपथ।
दर्शन प्रतिभू–(सं. पुं.) वह मनुष्य जो किसी दूसरे को उपस्थित करने का भार अपने ऊपर लेता है।
दर्शनीय–(सं. व.) देखने योग्य, सुन्दर।
दर्शनोज्ज्वला–(सं. स्त्री.) सफेद जायफल का पेड़।
दर्शनोपनिषद्–(सं. स्त्री.) एक उपनिषद् का नाम।
दर्शयामिनी–(सं. स्त्री.) अँधेरी रात, अमावस्या की रात।
दर्शयिता–(सं. पुं.) दर्शक, दिखलानेवाला, द्वारपाल।
दर्शविपद्–(सं. पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा।
दर्शाना–(हिं. क्रि. स.) दिखलाना।
दर्शित–(सं.वि.) प्रकाशित, दिखलाया हुआ।
दर्शी–(सं. वि.) विचार करनेवाला, देखनेवाला, भेंट करनेवाला।
दश्य–(सं. वि.) दर्शनीय, देखने योग्य।
दल–(सं. पुं.) आधा भाग, खंड, टुकड़ा, पौधों का पत्ता, पात, तलवार आदि का म्यान, झुंड, समूह, मंडली, सेना, परत, तह, फूल की पँखुड़ी, तमालपत्र, जल में होनेवाली एक घास।
दलक–(हिं.स्त्री.) चोट से उत्पन्न कँपकँपी, थरथराहट, शरीर की वह पीड़ा जो रह-रहकर होती है, टीस, गुदड़ी; (पुं.) नक्काशी करनेवालों का एक अस्त्र।
दलकन–(हिं. स्त्री.) दलकने की क्रिया, थरथराहट, टीस।
दलकना–(हिं. क्रि. अ., स.) डराना, कँपाना, थर्राना, चौंकना, उद्विग्न होना, चिरना, फट जाना।
दलकपाट–(सं. पुं.) पँखुडियों का वह कोष जिसके भीतर कली रहती है।
दलकोमल–(सं. पुं.) पद्म, कमल।
दलकोष–(सं. पुं.) कुन्द का पौधा, चमेली की लता।
दलगंजन–(सं.वि.) शत्रु सेना को मारनेवाला; (पुं.) एक प्रकार का धान।
दलगंध–(सं. पुं.) सप्तपर्ण वृक्ष।
दलघुसरा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की रोटी जिसके भीतर मसाला मिश्रित पीसी हुई दाल भरी रहती है।
दलदल–(हिं. स्त्री.) वह भूमि जो बहुत गहराई तक गीली और मृदु हो, जिस पर चलने से पैर धँस जाता हो; कीचड़, पंक, (मुहा.) –में फँसना–आपत्ति में पड़ना।
दलदला–(हिं. वि.) जहाँ दलदल हो।
दलदार–(हिं.वि.) मोटी तह या परत का।
दलन–(सं.पुं.) मोटा पीसकर टुकड़े-टुकड़े करना, विनाश, संहार, नाश।
दलना–(हिं. क्रि. स.) चूर्ण करना, टुकड़े-टुकड़े करना, कुचलना, नष्ट करना, तोड़ना, मसलना, चक्की में पीसकर अन्न के दानों के छोटे रवे बनाना या दो दलों में अलगाना।
दलनी–(सं. स्त्री.) ढेला; (वि.) विच्छेद करनेवाला।
दलप–(सं.पुं.) सुवर्ण, सोना, शस्त्र-प्रहार।
दलपति–(सं. पुं.) दल का प्रधान व्यक्ति, सरदार, सेनापति।
दलपुष्पा–(सं. स्त्री.) केतकी, केवड़ा।
दलबल–(सं. पुं.) सैन्य-समूह।
दल-बादल–(हिं. पुं.) बादलों का समूह या झुंड, बड़ी सेना, बड़ा खेमा।
दलमलना–(हिं. क्रि. स.) कुचलना, नष्ट करना, मार डालना।
दलवाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे से दलने का काम कराना।
दलवाल–(सं. पुं.) सेनापति।
दलसालिनी–(सं. स्त्री.) कच्चू, अरवी।
दलसायसी–(सं. स्त्री.) सफेद तुलसी का पौधा।
दलवैया–(हिं. वि.) कुचलनेवाला।
दलसूची–(सं. स्त्री.) कंटक, काँटा, वह पौधा जिसके पत्तों में काँटे हों।
दलस्थ–(सं.वि.) दलयुक्त, दलों में स्थित।
दलहन–(हिं. पुं.) वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाय।
दलहरा–(हिं. पुं.) दाल बेचनेवाला।
दलाढक–(सं. पुं.) जंगली तिल, गेरू, फन, जलकुम्भी, अंधड़, आँधी, गजकर्णी का पौधा, नागकेशर का वृक्ष।
दलाढकी–(सं.स्त्री.) पिठवन नामक लता।
दलाढ्य–(सं. पुं.) पंक, कीचड़, कुन्द का वृक्ष।
दलान–(हिं. पुं.) ओसारा, दालान।
दलामल–(सं.पुं.) मरुआ का पौधा, मैनफल का वृक्ष।
दलाम्ल–(सं. पुं.) लोनिया शाक।
दलाल–(अ.पुं.) दूसरों का माल कुछ धन लेकर खरीद-बिक्री करानेवाला।
दलाली–(अ. स्त्री.) दलाल का काम, दस्तूरी, कमीशन आदि।
दलाह्वय–(सं. पुं.) तेजपत्ता।
दलि–(सं. स्त्री.) ढेला।
दलिक–(सं. पुं.) काष्ठ, काठ।
दलित–(सं. वि.) दला हुआ, खंडित, विदीर्ण, कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ।

दलिया–(हिं. पुं.) वह अन्न जो दलकर टुकड़े-टुकड़े किया गया हो।
दलील–(अ. स्त्री.) तर्क, युक्ति, बहस।
दलेपंज–(हिं. पुं.) बुड्ढा घोड़ा, अधिक वय का मनुष्य।
दलेल–(हिं. पुं.) (अँगरेजी ड्रिल शब्द का अपभ्रंश) सिपाहियों की कवायद।
दलोद्भव–(सं. वि.) वह शहद जो पत्तों से उत्पन्न होती है।
दवँरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दँवरी'।
दवँगरा–(हिं. पुं.) वर्षा की झड़ी।
दव–(सं. पुं.) वन, जंगल, वह अग्नि जो जंगलों में आप से आप लग जाती है, उष्णता, गरमी, दुःख, कष्ट।
दवदग्धक–(सं. पुं.) रोहित नामक घास।
दवदहन–(सं.पुं.) दावाग्नि, जंगलकी आग।
दवन–(हिं. पुं.) नाश, दौने का पौधा।
दवनपापड़ा–(हिं. पुं.) पित्तपापड़ा।
दवना–(हिं. क्रि. स.) दग्ध करना, जलाना; (पुं.) दौने का पौधा।
दवनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दँवरी', मिसाई, मँड़ाई।
दवा–(फा. स्त्री.) औषध, उपचार, इलाज, चिकित्सा।
दवाई–(हिं. स्त्री.) दवा।
दवाखाना–(फा. पुं.) औषधालय।
दवाईखाना–(हिं. पुं.) देखें 'दवाखाना'।
दवाग्नि–(सं. पुं.) वन में लगनेवाली अग्नि, दावानल।
दवादरपन–(हिं. पुं.) औषध, उपचार।
दवानल–(सं. पु.) देख 'दवाग्नि'।
दवामी–(अ. वि.) स्थायी; **–बंदोबस्त**–(पुं.) जमीन की जोत, मालगुजारी आदि की स्थायी व्यवस्था।
दवारि–(हिं. स्त्री.) वनाग्नि, दावानल।
दविष्ठ–(सं. वि.) दूर देश का, दूरवर्ती।
दश–(सं. वि., पुं.) पाँच की दूनी संख्या, दस, १०।
दशक–(सं. पुं.) दस की संख्या।
दशकंठ–(सं.पुं.) जिसके दस कंठ हों, रावण।
दशकंध, दशकंधर–(सं. पुं.) रावण।
दशकर्म–(सं. पुं.) द्विजों के दस संस्कार, यथा–गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्न-प्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह।
दशकामव्यसन–(सं. पुं.) काम से उत्पन्न दस प्रकार के व्यसन, यथा–मृगया, द्यूत, दिवानिद्रा, परनिन्दा, प्रमदाशक्ति, नृत्य, गीत, क्रीड़ा, वृथा भ्रमण और मद्य-पान।
दशकुमारचरित–(सं. पुं.) महाकवि दंडी का बनाया हुआ संस्कृत का एक गद्य ग्रन्थ।
दशकुलवृक्ष–(सं. पुं.) तन्त्र के अनुसार दस वृक्ष, यथा–लिसोड़ा, करंज, बेल, पीपल, नीम, कदंब, गूलर, बरगद, इमली और आँवला।
दशकोषी–(सं.स्त्री.) रुद्रताल का एक भेद।
दशक्षीर–(सं. पुं.) दस जन्तुओं का दूध, यथा–गाय, भैंस, ऊँटनी, घोड़ी, बकरी, स्त्री, हथिनी, हरिनी और गदही का दूध।
दशगात्र–(सं. पुं.) शरीर के दस प्रधान अंग, मृतक संबंधी एक कर्म जो मरने के बाद दस दिनों तक किया जाता है।
दशग्रामिक दशग्रामी–(सं.पुं.) दस गाँवों का स्वामी।
दशग्रीव–(सं.पुं.) रावण, एक असुर का नाम।
दशजटा–(सं. स्त्री.) दशमूल।
दशतय–(सं. वि.) दस संख्यावाला।
दशति–(सं. स्त्री.) सौ की संख्या, सौ।
दशदशी–(सं. वि.) सौगुना।
दशदिक्–(सं. स्त्री.) दस दिशाएँ; यथा–पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, अग्नि, नैर्ऋत्य, वायु, ईशान, अधः और ऊर्ध्व; **–पाल**–(पुं.) दसों दिशाओं की रक्षा करनेवाले दस देवता, यथा–पूर्व दिशा के इन्द्र, अग्नि-कोण के अग्नि-देव, दक्षिण दिशा के यम, नैर्ऋत्य कोण के नैर्ऋत, पश्चिम दिशा के वरुण, वायुकोण के मरुत्, उत्तर दिशा के कुबेर, ईशान कोण के ईश, ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधः दिशा के रक्षक अनन्त हैं।
दशद्वार–(सं. पुं.) शरीर के दस छिद्र, यथा-दो कान, दो आँख, नाक के दो छिद्र, मुख, गुदा, लिंग और ब्रह्माण्ड।
दशधा–(सं.अव्य.) दस प्रकार से, दस तरह से।
दशन–(सं. पुं.) दाँत, शिखर, कवच।
दशनच्छद–(सं. पुं.) ओष्ठ, ओठ।
दशनपद–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ पर दाँतों से काटा गया हो।
दशनबीज–(सं. पुं.) दाडिम, अनार।
दशनवाला–(सं. पुं.) ओष्ठ, ओठ।
दशनांग–(सं. पुं.) देखें 'दशनपद'।
दशनांशु–(सं. पुं.) दाँतों की चमक।
दशनाढ्या–(सं. स्त्री.) लोनिया शाक।
दशनाम–(सं. पुं.) संन्यासियों के दस भेद, यथा–तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी, (इनमें पाँच तान्त्रिकों के थे। तान्त्रिकों को परास्त करने के बाद उनके पाँच नाम शांकर-मत में मिल गये। शांकरभेद–तीर्थ, अरण्य, गिरि, सरस्वती, तथा आश्रम; तान्त्रिकभेद–सागर, वन, पर्वत, भारती, तथा पुरी।)
दशनामी–(हिं. पुं.) संन्यासियों का एक वर्ग जिसको अद्वैतवादी सुप्रसिद्ध धर्म-प्रचारक शंकराचार्य के एक शिष्य ने चलाया था।
दशनोच्छिष्ट–(सं. पुं.) नाक या मुख से निकला हुआ श्वास, होंठों का चुम्बन।
दशपिंड–(सं.पुं.) मृत्यु के बाद दिया जाने-वाला दस पिण्ड।
दशपुर–(सं. पुं.) मुस्तक, मोथा।
दशपुरुष–(सं.पुं.) दस पीढ़ियाँ।
दशपूर्वरथ–(सं. पुं.) दशरथ।
दशपेय–(सं. पुं.) एक प्रकार का यज्ञ।
दशबल–(सं. पुं.) बुद्धदेव, दस बल, यथा–दान, शील, क्षमा, वीर्य, ज्ञान, प्रजा, उपाय, बल, प्रणिधि और ध्यान।
दशबाहु–(सं. स्त्री.) दशभुजा, दुर्गा; (वि.) जिसके दस बाहु हों।
दशभुजा–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।
दशभूमिग, दशभूमीश–(सं. पुं.) बुद्धदेव।
दशम–(सं.वि.) दस संख्या का पूरक, दसवाँ।
दशम दशा–(सं. स्त्री.) विरह में वियोगी की अंतिम दशा जिसमें वह प्राण त्याग देता है।
दशमलव–(सं.पु.) गणित में वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात होता है।
दशमहाविद्या–(सं. स्त्री.) देवी की दस मूर्तियाँ जिनकी उपासना शाक्त करते हैं; इनके नाम–काली, तारा, षोड़शी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमा-वती, बगला, मातंगी और कमला ह। इनको सिद्धविद्या भी कहते हैं।
दशमांश–(सं.पुं.) दसवाँ हिस्सा, दसवाँ भाग।
दशमी–(सं. स्त्री.) चान्द्रमास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि, मरणावस्था; **–स्थ**–(वि.) अति वृद्ध, जो नव्वे वर्ष से अधिक उम्र का हो।
दशमुख–(सं. पुं.) रावण।
दशमूल–(सं. पुं.) वैद्यक में कही हुई दस वनस्पतियों की जड़ें, जिनके नाम–सरिवन, पिठवन, छोटी कटाई, बड़ी कटाई, गोखरू, बेल, सोनापाठा, गंभारी, गनियारी और पाठा है।
दशमौलि–(सं. पुं.) रावण।
दशरथ–(सं.पुं.) इक्ष्वाकु वंश के राजा जो अयोध्या में राज्य करते थे, रामचन्द्र के पिता।
दशरात्र–(सं. पुं.) दस रातों में समाप्त होनेवाला एक यज्ञ।
दशलक्षण–(सं. पुं.) धर्म के दस लक्षण,

यथा–वृत्ति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध।

दशवदन–(सं. पुं.) रावण।

दशवार्षिक–(सं.वि.) दस वर्षों में होनेवाला।

दशवाहु–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

दशविध–(सं. वि.) दस प्रकार का।

दशवीर–(सं. पुं.) एक यज्ञ का नाम।

दशहरा–(सं. स्त्री.) ज्येष्ठ मास की शुक्ला दशमी, (इस दिन गंगा का जन्म हुआ था), गंगा-दशहरा।

दशांग–(सं. पुं.) देवताओं के पूजन में दिया जानेवाला धूप जो दस गंध-द्रव्यों को चूर्ण करके तैयार किया जाता है।

दशांगुल–(सं. पुं.) खरबूजा।

दशा–(सं. स्त्री.) अवस्था, चित्त, कपड़े का किनारा, दिये की वत्ती, मनुष्य के जीवन की दस अवस्थाएँ, यथा–गर्भावास, जन्म, बाल्य, कौमार, पौगंड, यौवन, स्थविरता, जरा, प्राणरोध और मृत्यु; प्रकार, विरहियों की कामकृत अवस्थाएँ; फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की अपने-अपने भोग-काल की अवस्थाएँ।

दशाकर्ष–(सं. पुं.) प्रदीप; वस्त्र का अंचल।

दशाकर्षी–(सं. पुं.) प्रदीप।

दशाधिपति–(सं. पुं.) ज्योतिष में दशा का स्वामी, दस सैनिकों का अध्यक्ष, जमादार।

दशानन–(सं. पुं.) रावण।

दशानिक–(सं.पुं.) दंती वृक्ष, जमालगोटा।

दशार्ण, दशार्णक–(सं.पुं.) एक प्राचीन देश का नाम जो विन्ध्य पर्वत के दक्षिण-पूर्व भाग में था, एक नदी का नाम जो इसी देश में होकर बहती है, इस देश का राजा या निवासी, दशाक्षर मन्त्र।

दशार्णा–(सं. स्त्री.) एक छोटी नदी का नाम जो कालपी के पास यमुना नदी में मिली है।

दशार्ध–(सं. पुं.) दस का आधा, पाँच।

दशार्ह–(सं.पुं.) राजा वृष्णि के पौत्र, विष्णु।

दशावतार–(सं. पुं.) विष्णु के प्रसिद्ध दस अवतार जो मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, दाशरथी या राम, बलराम, बुद्ध और कल्कि हैं।

दशाश्व–(सं. पुं.) चन्द्रमा, इक्ष्वाकु राजा के दसवें पुत्र का नाम।

दशाश्वमेध–(सं. पुं.) काशी के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम, प्रयाग में त्रिवेणी के पास एक घाट का नाम।

दशास्य–(सं. पुं.) दशमुख, रावण।

दशाह–(सं. पुं.) दस दिन, मृतक-कृत्य का दसवाँ दिन।

दशेर–(सं. पुं.) हिंसक जीव।

दशेरक–(सं. पुं.) वर्तमान मारवाड़ का प्राचीन नाम, मरुभूमि।

दशेरक–(सं. पुं.) मरुदेश, मारवाड़।

दशेश–(सं.पुं.) ज्योतिष में दशाका अधिपति।

दष्ट–(सं. वि.) दाँत से काटा हुआ।

दस–(हिं. वि.) जो गिनती में नव और एक अर्थात् पाँच का दुगुना हो; (पुं.) पाँच की दूनी संख्या, १०।

दसठौन–(हि. पुं.) प्रसव के दस दिन वाद प्रसूता का सौरी से दूसरे घर में प्रवेश।

दसखत–(हिं.पुं.) देखें 'दस्तखत', हस्ताक्षर।

दसन–(हि. पुं.) देखें 'दशन'।

दसना–(हि.क्रि.अ..स.) फैलना, फैलाना, विछाना; (पुं.) विस्तर, विछौना।

दसमी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दशमी'।

दस-रंग–(हि.वि.) मलखंभ का एक व्यायाम।

दसवाँ–(हिं.वि.) गिनती में दसवें स्थान का।

दसा–(हिं. स्त्री.) देखें 'दशा', अग्रवाल वैश्यों का एक भेद।

दसाना–(हिं. क्रि. स.) विछाना।

दसारी–(हिं. स्त्री.) पानी के समीप रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया।

दसी–(हिं. स्त्री.) वस्त्र के किनारे पर का सूत, पल्ला, वैलगाड़ी की पटरी, चमड़ा छीलने का एक प्रकार का अस्त्र।

दसं–(हिं. स्त्री.) दशमी तिथि।

दसोतरा–(हिं. वि.) दस अधिक।

दसौंधी–(हिं. पुं.) भाटों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है, ब्रह्मभट्ट।

दस्तंदाज–(फा.वि.) हस्तक्षेप करनेवाला।

दस्तंदाजी–(फा.स्त्री.) हस्तक्षेप, छेड़छाड़।

दस्त–(फा.पुं.) हाथ, पंजा, पतला पाखाना।

दस्तकार–(फा.पुं.) हाथ से काम करनेवाला।

दस्तकारी–(फा. स्त्री.) दस्तकार का काम, कौशल, कृति आदि।

दस्तखत–(फा. पुं.) हस्ताक्षर।

दस्तखती–(फा. वि.) हस्ताक्षरयुक्त।

दस्ता–(फा. पुं.) औजारों की मूठ, बेंट, फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, सिपाहियों या सैनिकों का छोटा-सा दल, कागज के २५ तावों का समूह।

दस्ताना–(फा.पुं.) हाथ में पहनने का मोजा।

दस्तावर–(फा. वि.) जिससे दस्त आवे, विरेचक।

दस्तावेज–(फा. स्त्री.) संपत्ति हस्तांतरण, विक्रय आदि का लिखित पट्टा, विक्रय-पत्र या लेख्य।

दस्तावेजी–(फा. वि.) दस्तावेज-संबंधी।

दस्ती–(फा. वि.) हाथ का, जो हाथ से भेजा गया हो।

दस्तूर–(फा.पुं.) रीति, रवाज, चाल, प्रथा।

दस्तूरी–(फा.स्त्री.) दलाली, कमीशन, छूट।

दस्म–(सं. वि.) आक्षेप करनेवाला, देखन योग्य; (पुं.) यजमान, अग्नि, चोर, दुष्ट मनुष्य।

दस्यु–(सं. पुं.) डकैत, डाकू, चोर, दुष्ट मनुष्य, अनार्य, म्लेच्छ, असुर, दत्य; (वि.) उपेक्षा करनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) लुटेरापन, डकैती, दुष्टता; **–भय**–(पुं.) चोर या डाकू का भय; **–वृत्ति**–(स्त्री.) चोरी, डकैती, लुटेरापन।

दस्र–(सं. पुं.) गर्दभ, गदहा, अश्विनी-कुमार, अश्विनी नक्षत्र; (वि.) हिंसा करनेवाला; **–देवता**– (पुं.) अश्विनी नक्षत्र।

दह–(हिं. पुं.) नदी के भीतर का गड्ढा, पाल, कुण्ड; (स्त्री.) अग्नि की ज्वाला या लपट।

दहक–(हिं. स्त्री.) आग के दहकने की क्रिया, धधक, ज्वाला, लपट, लज्जा।

दहकन–(हिं. स्त्री.) दहकने की क्रिया।

दहकना–(हिं. क्रि. अ.) ज्वाला के साथ बलना, धधकना, भड़कना, तपना, शरीर का गरम होना।

दहकाना–(हिं. क्रि. स.) धधकाना, क्रोध दिलाना, भड़काना, इस प्रकार जलाना की ज्वाला ऊपर उठे।

दहड़-दहड़–(हिं. अव्य.) ज्वाला या लपट फेंकते हुए, धायँ धायँ।

दहन–(सं.पुं.) अग्नि, चीता नाम का वृक्ष, भिलावाँ, दुष्ट मनुष्य, कबूतर, एक रुद्र का नाम, तीन की संख्या, ज्योतिष का एक योग, जलने की क्रिया, कृत्तिका नक्षत्र, अगर, गुग्गुल; **–केतन**–(पुं.) धूम्र, धुआँ; **–प्रिया**–(स्त्री.) स्वाहा-देवी; **–बकुल**–(पुं.) अग्नि, आग; **–शील**–(वि) जलनेवाला; **–सारथि**–(पं.) वायु, हवा।

दहना–(हि.क्रि. अ. स.) जलना, जलाना, भस्म होना, भस्म करना, क्रोध दिलाना, कुढ़ाना, दुःखी करना, कष्ट पहुँचाना, धँसना, नीचे वैठना; (वि.) दहिना।

दहनाराति–(सं. पुं.) जल, पानी।

दहनि–(हिं स्त्री.) जलने की क्रिया, दहन।

दहनीय–(सं.वि.) जलने या जलाने योग्य।

दहनोपल–(सं. पुं.) सूर्यकान्त मणि।

दहनोल्का–(सं.स्त्री.) आग की चिनगारी।

दहपटना–(हिं. क्रि. स.) ध्वस्त करना, नष्ट करना, चौपट करना।

दहर–(सं. पुं.) चूहा, भाई, वालक, मुर्गा; (वि.) सूक्ष्म, छोटा; (हिं. पुं.) नदी का गहरा स्थान, पाल, कुण्ड ।
दहर-दहर–(हिं. अव्य.) धधकते हुए ।
दहरसूत्र–(सं. पुं.) वौद्धों का एक ग्रन्थ ।
दहरना–(हिं.क्रि.अ.,स.) दहलना, दहलाना ।
दहल–(हिं.स्त्री.) भय से काँप उठना ।
दहलना–(हिं.क्रि.स.) डर से काँप उठना ।
दहला–(हिं. पुं.) ताश का वह पत्ता जिस पर दस बूटियाँ हों ।
दहलाना–(हिं. क्रि.) भयभीत करना, डराना, डराकर कँपाना ।
दहली–(हिं. स्त्री.) देखें 'दहलीज' ।
दहलीज–(फा. स्त्री.) दरवाजे के नीचे-वाली लकड़ी जो जमीन से सटी रहती है।
दहशत–(फा. स्त्री.) डर, भय ।
दहाई–(हिं. स्त्री.) दस का मान या भाव, अंकों का इकाई के वाद का दूसरा स्थान या संख्या ।
दहाड़–(हिं.पुं.) वाघ आदि भयंकर पशुओं की चिल्लाहट, गर्जन, चिल्लाकर रोने का शब्द; (मुहा.)–**मारना**–चिल्ला-कर रोना ।
दहाड़ना–(हिं. क्रि. अ.) गुर्राना, गरजना, चिल्लाकर रोना ।
दहाना–(हिं. क्रि. अ.) हिसाव लगाना, अंदाज लगाना, अनुमान करना, थाह लेना ।
दहिना–(हिं. वि.) अपसव्य, वायाँ का उलटा ।
दहिने–(हिं.अव्य.) दहिनी ओर; (मुहा.) –**होना**–अनुकूल या प्रसन्न होना; –**वायें**–(अव्य) इधर-उधर, दोनों ओर।
दही–(हिं. पुं.) जामन डालकर जमाया हुआ दूध; (मुहा.)–**दही करना**–अपनी वस्तु को वेचने के लिए लोगों से कहते फिरना।
दहुँ–(हिं. अव्य.) किंवा, अथवा, कदाचित्।
दहेंगर–(हिं. पुं.) दही का घड़ा ।
दहेंड़ी–(हिं. स्त्री.) दही रखने का मिट्टी का पात्र ।
दहेज–(हिं. पुं.) वह धन, सामग्रियाँ आदि जो कन्या का पिता वर-पक्ष को देता है, यौतुक ।
दहेला–(हिं. वि.) दग्ध, जला हुआ, सन्तप्त, दुःखी, आर्द्र, भीगा हुआ ।
दह्यमान–(सं. वि.) जो जल रहा हो ।
दाँ–(हिं.पुं.) वार, वारी, दफा; (फा.वि.) जाननेवाला, जानकार ।
दाँई–(हिं.वि.स्त्री.) दाहिनी; (स्त्री.) वार ।
दाँक–(हिं. स्त्री.) गरजना, गरज, दहाड़ ।
दाँकना–(हिं.क्रि.अ.) गरजना, दहाड़ मारना।
दाँग–(हिं. पुं.) डंका, नगाड़ा, छोटा पहाड़ी टीला, पहाड़ की चोटी ।
दाँगर–(हिं. वि.) देखें 'डाँगर' ।
दाँगी–(हिं. स्त्री.) जुलाहों की कंघी में लगी हुई लकड़ी ।
दाँज–(हिं. स्त्री.) समता, तुलना, वरावरी ।
दांड–(सं. वि.) दंड-संवंधी ।
दाँड़ना–(हिं. क्रि.स.) दंड देना ।
दांडिक–(सं. वि.) दंड-संवंधी ।
दाँडिक–(हिं. पुं.) घातक ।
दाँत–(हिं.पुं.) दाढ़ या मसूढ़ों की नुकीली हड्डी जो आहार चवाने के काम में आती है, दाँत के आकार की कोई वस्तु, दाँता, दंदाना; (मुहा.)–**काटी रोटी**–घनिष्ठता; –**खट्टे करना**–वहुत व्यग्र करना, हराना; –**चवाना**–क्रोध से दाँत पीसना; –**तले अँगुली दवाना**–चकित होना; –**तोड़ना**–हराना; –**पीसना**–क्रोध में दाँतों को किटकिटाना; –**वजाना**–वहुत ठंडक के कारण दाँतों का परस्पर घिसकर वोलना; –**वैठ जाना**–दाँत पर दाँत इस प्रकार वैठ जाना कि मुँह न खुल सके; –**लगाना**–किसी वस्तु को प्राप्त करने की वड़ी अभिलाषा करना; **तालू में दाँत जमना**–दुर्दशा के दिन आना; **दाँतों ऊँगली काटना**–अँगुलियों को दाँतों से दवाना, आश्चर्य में पड़ना; **दाँतों में तिनका लेना**–दया प्राप्त करने की आशा से प्रार्थना करना ।
दांत–(सं. वि.) दाँत-संवंधी, दमन करनेवाला, वीर, उदार, संयमी ।
दाँतली–(हिं. स्त्री.) काग, डट्टा ।
दाँता–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नुकीला कंगूरा, दंदाना; –**किटकिट**, –**किलकिल**–(स्त्री.) वाक्युद्ध, कहासुनी, गाली-गलौज।
दांति–(सं.स्त्री.) इंद्रिय-संयम या निग्रह।
दाँतियाँ–(हिं. पुं.) रेह का नमक जो पीने के तमाकू में मिलाया जाता है ।
दाँती–(हिं. स्त्री.) घास, चारा आदि काटने की हँसिया, वह वड़ा खूँटा जिसमें नाव वाँधी जाती है, एक प्रकार का छोटा-सा डंसनेवाला कीड़ा, दाँतों की पंक्ति, दर्रा, घाटी ।
दाँना, दाँवना–(हिं. क्रि.स.) पकी हुई उपज की वालों से दाना अलगाने के लिए वैलों से रौंदवाना ।
दांपत्य–(सं. वि.) दंपति-संवंधी ।
दांभ–(सं. वि.) ढोंगी, कपटी,
दांभिक–(सं. वि.) ढोंगी ।
दाँवनी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का गहना, दामिनी ।
दाँवरी–(हिं. स्त्री.) रस्सी, डोरी ।
दाई–(हिं. स्त्री.) धात्री, धाय, प्रसूता की उपचारिका, वच्चों की देखभाल करने-वाली दासी ।
दाऊ–(हिं. पुं.) ज्येष्ठ भ्राता, वड़ा भाई।
दाऊद–(अ. पुं.) ईसाई, इस्लाम और यहूदी धर्मों के एक पैगंवर ।
दाऊदी–(फा. पुं.) एक तरह का गेहूँ ।
दाक–(सं. पुं.) दाता, यजमान ।
दाक्षायण–(सं. वि.) दक्ष से उत्पन्न, दक्ष के गोत्र का; (पुं.) सोने का एक आभूषण, दक्ष द्वारा किया हुआ यज्ञ ।
दाक्षायणी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, रोहिणी नक्षत्र, कश्यप की स्त्री अदिति, दक्ष की कन्या कद्रु ।
दाक्षायण्य–(सं. पुं.) आदित्य, सूर्य ।
दाक्षि–(सं. पुं.) दक्ष-सन्तान ।
दाक्षिण–(सं. वि.) दक्षिणा सम्वन्धी ।
दाक्षिणक–(सं. वि.) चन्द्रलोकगामी ।
दाक्षिणशाल–(सं. पुं.) वह घर जिसका द्वार दक्खिन की ओर हो ।
दाक्षिणात्य–(सं. वि.) जो दक्षिण में उत्पन्न हो, दक्षिण देश संवंधी; (पुं.) भारतवर्ष का विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का भाग या देश ।
दाक्षिण्य–(सं. पुं.) अनुकूलता, प्रसन्नता, उदारता, सरलता, सुशीलता, साहित्य में नाटक का एक शृंगार-भाव; (वि.) दक्षिण संवंधी, दक्षिण का ।
दाक्षी–(सं. स्त्री.) दक्ष की कन्या ।
दाक्षीपुत्र, दाक्षय–(सं.पुं.) पाणिनी ऋषि ।
दाक्ष्य–(सं. पुं.) दक्षता, निपुणता ।
दाख–(हिं. स्त्री.) द्राक्षा, मुनक्का, अंगूर, किशमिश ।
दाखिल–(फा. वि.) प्रविष्ट, घुसा हुआ, पैठा हुआ ।
दाखिल-खारिज–(फा. पुं.) सरकारी कागजात में एक स्वत्वधारी का नाम काटकर उसकी जगह दूसरे का नाम विधिक रूप से दर्ज करना ।
दाखल-दफ्तर–(फा. वि.) किसी सर-कारी कागज का मिसिल में नत्थी होना ।
दाखिला–(फा. पुं.) प्रवेश, प्रविष्टि ।
दाग–(फा. पुं.) शरीर पर के जन्मजात चिह्न, धव्वा, कलंक; –**दार**–(वि.) जिसपर दाग हो, धव्वेदार; (मुहा.) –**लगना**–कलंकित होना ।

दाग–(हिं. पुं.) दग्ध, दाह, मृतक का दाह-कर्म, शव जलाने की क्रिया, जलन, जलने का चिह्न; (मुहा.)–**देना**–मृतक का दाह कर्म करना।
दागना–(हिं.क्रि.स.) दग्ध करना, जलाना, तपे हुए लोहे से शरीर पर चिह्न बनाना, किसी के अंग को जलाना, रंजक में आग लगाना; बंदूक, तोप आदि छोड़ना, फोड़े आदि पर ऐसी औषध लगाना जिससे वह जल जाय, रंग आदि से अंकित करना।
दागी–(फा. वि.) जिस पर दाग लगा हो, दागदार, कलंकित।
दाघ–(सं.पुं.) दाह, जलन, उष्णता, गरमी।
दाजन–(हिं. स्त्री.) दाझन, जलना।
दाजना–(हिं. क्रि. अ.स.) जलना, डाह करना, जलाना।
दाझन–(हिं. स्त्री.) दाजन, जलन।
दाझना–(हिं. क्रि. अ., स.) जलना, जलाना, सन्तप्त होना।
दाड़स–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सर्प।
दाड़िम–(सं.पुं.) एला, इलायची, अनार; –**पत्रक**–(पुं.) रोहितक वृक्ष; –**पुष्प**–(पुं.) रोहितक वृक्ष, अनार का फूल; –**प्रिय**, –**भक्षक**–(पुं.) शुक, सुग्गा।
दाड़िमी–(सं. स्त्री.) अनार का वृक्ष।
दाड़ी–(सं. स्त्री.) अनार का फल।
दाढ़–(हिं. पुं., स्त्री.) भयंकर शब्द, चौभड़, जबड़े के भीतर के चौड़े दाँत; (मुहा.)–**मारकर रोना**–जोर से चिल्लाकर रोना।
दाढ़ना–(हिं.क्रि.स.) अग्नि में भस्म करना, जलाना, दुःखी करना।
दाढ़ा–(सं. स्त्री.) दंष्ट्रा, चौभड़, दाढ़, प्रार्थना, विनती, समूह; (हिं. पुं.) दावानल, वन की आग।
दाढ़ी–(हिं. स्त्री.) चिबुक, ठुड्डी और गाल पर के बाल।
दाढ़ीजार–(हिं.पुं.) वह मनुष्य जिसकी दाढ़ी जल गई हो, एक प्रकार की गाली जिसको स्त्रियाँ क्रोध में आकर पुरुष को देती हैं।
दात–(सं.वि.) काटा हुआ, छिन्न, शुद्ध, पवित्र।
दातव्य–(सं. वि.) दान देने योग्य; (पुं.) उदारता, दान देने का काम; –**चिकित्सालय**–(पुं.) वह औषधालय जहाँ बिना मूल्य दिये रोगियों को दवा मिलती है।
दाता–(सं. पुं.) दानवीर, देनेवाला।
दातापन–(हिं. पुं.) दानशीलता।
दातार–(हिं. पुं.) दाता, देनेवाला।
दाति–(सं. स्त्री.) छित्ति, दान, वह वस्तु जो दी गई हो।
दाती–(हिं. स्त्री.) देनेवाली, दात्री।
दातु–(सं. पुं.) दान।
दातुन–(हिं. स्त्री.) देखें 'दतुवन'।
दातून–(हिं. स्त्री.) जमालगोटे की जड़, दतुवन।
दातृ–(सं. पुं.) दानवीर, दान देनेवाला; –**ता**–(स्त्री.) दानशीलता, देने की प्रवृत्ति; –**त्व**–(पुं.) देखें 'दातृता', दानशीलता।
दातौन–(हिं. स्त्री.) देखें 'दतुवन'।
दात्यूह–(सं.पुं.) चातक, पपीहा, मेघ, बादल।
दात्र–(सं. पुं.) हँसुआ, दानकर्त्ता।
दात्री–(सं.स्त्री.) दान देनेवाली, हँसिया, गंगा।
दाद–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का चर्म-रोग, देखें 'दद्रु'।
दादमर्दन–(हिं. पुं.) चकवँड़ का पौधा।
दादरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चलता गाना, एक प्रकार का ताल जिसमें दो अर्धमात्राएँ होती हैं।
दादा–(हिं. पुं.) पिता का पिता, पितामह, बड़ा भाई, एक आदरसूचक शब्द जो बड़े-बूढ़ों के लिए प्रयुक्त होता है।
दादी–(हिं. स्त्री.) पिता की माता।
दादु–(हिं. स्त्री.) दद्रु, दाद नामक चर्म-रोग
दादुर–(हिं. पुं.) मेढक, भेक।
दादू–(हिं. पुं.) दादा के प्रति प्यार का शब्द, एक साधारण संबोधन का शब्द, एक साधु का नाम जिसके नाम पर एक पंथ चला है, (इनकी अकबर के समय बहुत प्रतिष्ठा थी, इन्होंने बहुत-सी कवितायें बनाई हैं; –**दयाल**–(पुं.) दादू नामक साधु; –**पंथी**–(पुं.) दादू नामक साधु का चलाया हुआ सम्प्रदाय।
दाध–(हिं. स्त्री.) दाह, जलन।
दाधना–(हिं.क्रि.स.) जलाना, भस्म करना।
दाधिक–(सं. वि.) दही से बना हुआ।
दाधीचि–(हिं.पुं.) दधीचि के वंश का मनुष्य।
दान–(सं. पुं.) हाथी का मद, राजनीति के चार उपायों में से एक, शुद्धि, कर, महसूल, पालन, छेदन, वह वस्तु जो दान में दी जावे, देने का कार्य, त्याग, उत्सर्जन, धर्मार्थ कार्य; –**कर्म**–(पुं.) दानक्रिया, देने का काम; –**काम**–(वि.) दानशील; –**कुल्या**–(स्त्री.) हाथी का मद; –**घाटी**–(हिं. स्त्री.) गोवर्धन में श्रीकृष्ण की लीला का एक स्थान; –**धर्म**–(पुं.) दान का धर्म, दान पुण्य; –**पति**–(पुं.) सर्वदा दान देनेवाला; –**पत्र**–(पुं.) त्यागपत्र, वह लेख्य या पत्र जिसके द्वारा कोई सम्पत्ति किसी को दान के रूप में दी जाय; –**पद्धति**–(स्त्री.) दान देने की प्रणाली; –**पात्र**–(पुं.) दान पाने के उपयुक्त व्यक्ति; –**फल**–(पुं.) दान देने का फल –**लीला**–(स्त्री.) श्रीकृष्ण की वह लीला; जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर लिया था, वह पुस्तक जिसमें श्रीकृष्ण की इस लीला का वर्णन है; –**विधि**–(स्त्री.) दान देन का नियम; –**वीर**–(पुं.) बहुत दान देनेवाला, वीररस के अन्तर्गत एक प्रकार का नायक; –**व्रत**–(पुं.) दान-रूपी व्रत; –**शक्ति**–(स्त्री.) दान करने की योग्यता; –**शील**–(वि.) जो दाता हो, दानी, दान करनेवाला; –**शीलता**–(स्त्री.) उदारता; –**शूर**–(पुं.) दानवीर, शाक्य-मुनि; –**शौंड**–(वि.) नअन्य दानी; –**सागर**–(पुं.) एक प्रकार का महा-दान जिसमें भूमि, आसन तथा सोलह पदार्थों का दान किया जाता है।
दानव–(सं. पुं.) दनु की सन्तति, असुर, राक्षस; –**गुरु**–(पुं.) दानवों के गुरु, शुक्राचार्य; –**वज्र**–(पुं.) एक प्रकार का घोड़ा जो देवताओं और गन्धर्वों की सवारी में रहता था; –**प्रिया**–(स्त्री.) नागवल्ली लता, पान की लता।
दानवारि–(सं. पुं.) देवता, विष्णु, इन्द्र, हाथी का मद।
दानवी–(सं.स्त्री.) दानव की स्त्री, राक्षसी; (वि.) दानव-संबंधी, दानवों का।
दानवेन्द्र–(सं. पुं.) राजा बलि।
दानवेय–(सं. पुं.) दक्ष की संतान, दनु की सन्तान।
दाना–(फा. पुं.) अनाज का कण या बीज, अन्न, भोजन, चबेना, मनका गुरिया; (मुहा.) **दाने-दाने को तरसना**–भूखों मरना; **दान-दाने को मुहताज**–अति निर्धन।
दानाचारा–(हिं.पुं.) भोजन, खाना-पीना।
दानाध्यक्ष–(सं.पुं.) वह राज-कर्मचारी जो दान किये हुए द्रव्यों को बाँटता है।
दानापानी–(हिं. पुं.) अन्न-जल, भरण-पोषण, जीविका, रहने का संयोग; (मुहा.)–**पानी छोड़ना**–अन्न-जल कुछ भी ग्रहण न करना।
दानिनी–(सं. स्त्री.) दान देनेवाली स्त्री।
दानी–(हिं. वि., पुं.) दान करनेवाला, उदार, दाता, कर उगाहनेवाला; (पुं.) नेपाल के पहाड़ियों की एक जाति।
दानीय–(सं. वि.) दान करने योग्य।
दानु–(सं. पुं.) दाता, वायु, राक्षस

देने योग्य धन ।
दानद–(सं. वि.) धन देनेवाला ।
दानेदार–(फा. वि.) जिसमें दाने या रवे हों, रवादार ।
दानो–(हि. पुं.) देखें 'दानव' ।
दाप–(हि. पुं.) दर्प, अहंकार, गर्व, घमंड, शक्ति, वल, उत्साह, उमंग, ताप, जलन, क्रोध; –**क**–(वि.) दवानेवाला ।
दापनीय–(सं. वि.) दंड देने योग्य ।
दापित–(सं.पुं.) दंडित, जिसको दंड मिला हो, धन आदि देकर वश में किया हुआ ।
दाब–(हि.स्त्री.) दवने या दवाने का भाव, चाप, आतंक, अधिकार, भार, बोझा, शासन ।
दाबकस–(हिं. पुं.) लोहारों का छेद करने के अस्त्र का एक भाग ।
दाबदार–(हि.वि.) प्रभावशाली, प्रतापी ।
दाबना–(हि. क्रि. स.) देखें 'दवाना' ।
दाबा–(हि. पुं.) वृक्ष की कलम लगाने की एक विधि ।
दाबिल–(हिं. पुं.) एक प्रकार की सफेद चिड़िया ।
दाबी–(हि. स्त्री.) कटी हुई उपज के बँधे हुए पूले ।
दाभ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कुश, डाभ ।
दाभी–(सं. वि.) अनिष्टकारक, हानि पहुंचानेवाला ।
दाम्य–(सं. वि.) शासन किये जाने योग्य, बाधा देने योग्य ।
दाम–(सं. पुं.) पशु को बाँधने की रस्सी, हार, माला, समूह, अनुसन्धान, खोज, विश्व, लोक, धन द्वारा शत्रु को वश में करने की एक राजनीति, दाननीति; (वि.) दानी, देनेवाला ।
दाम–(हि. पुं.) एक दमड़ी का तीसरा अंश, धन, रुपया-पैसा, मूल्य, कीमत; (मुहा.)–**खड़ा करना**–किसी वस्तु को वेचकर दाम वसूल करना; –**चुकाना**–मूल्य दे देना; –**दाम भरना**–ऋण का दमेड़ी-दमड़ीचुकाना; –**भरना**–डाँड़ देना ।
दामक–(सं. पुं.) बागडोर, लगाम ।
दामग्रंथि–(सं. पुं.) विराट राजा के सेनापति का नाम ।
दामन्–(सं. पुं.) वह रस्सी जो गाय दुहते समय उसके पिछले पैरों में बाँधी जाती है, माला, हार ।
दामनपर्व–(सं. पुं.) चैत सुदी द्वादशी को होनेवाला पर्व ।
दामनी–(सं. स्त्री.) रस्सी, डोरी ।
दामर–(हि. स्त्री.) नाव की पेंदी में लगाने का मसाला, छोटे कानवाली भेड़ ।
दामरि, दामरी–(हि. स्त्री.) रस्सी, डोरी
दामाद–(फा. पुं.) दमाद, जामाता ।
दामासाह–(हि. पुं.) वह दिवालिया महाजन जिसकी सम्पत्ति लहनदारों में अनुपाततः बाँट दी जाय ।
दामासाही–(हिं. स्त्री.) दिवालिया महाजन की सम्पत्ति का वह अंश जो लहनदारों को वाँटा जाय ।
दामिनी–(सं.स्त्री.) विद्युत्, विजली, स्त्रियों के पहिनने का एक गहना, वेंदी, दाँवनी ।
दामी–(हि. स्त्री.) कर; (वि.) कीमती ।
दामोद–(सं. पुं.) अथर्ववेद की एक शाखा का नाम ।
दामोदर–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण, विष्णु, हृषीकेश, बंगाल की एक प्रसिद्ध नदी का नाम ।
दाय–(सं. पुं.) दान आदि में दिया जानेवाला धन, उत्तराधिकारियों में बाँटी जानेवाली सम्पत्ति, खंडन, विभाग, दान ।
दायक–(सं. वि.,पुं.) दाता, देनेवाला ।
दायज, दायजा–(हि. पुं.) यौतुक, दहेज, वह धन जो विवाह के समय कन्यापक्षवाले वरपक्ष को देते हैं ।
दायबंधु–(सं. पुं.) भ्राता, भाई ।
दायभाग–(सं. पुं.) पैत्रिक धन का पुत्रों या संबंधियों में विभाग ।
दायम–(अ. अव्य.) सर्वदा ।
दायमी–(अ. वि.) सर्वदा का ।
दायर–(अ. वि.) निर्णय के लिए अदालत में पेश किया हुआ ।
दायरा–(अ. पुं.) गोल घेरा, क्षेत्र ।
दायाँ–(हिं. वि.) दाहिना ।
दाया–(हि. स्त्री.) देखें 'दया' ।
दायागत–(सं. वि.) जो अंश या वाँट दाय में मिला हो ।
दायाद–(सं.पुं.) दायग्राही, सपिंड, कुटुम्बी; (वि.) जो दाय के अधिकारी हों ।
दायादवत्–(सं.प.) पुत्र, वेटा ।
दायादी–(सं. स्त्री.) पुत्री, वेटी, कन्या ।
दायाद्यता–(सं.स्त्री.) दाय का भागी होने का भाव ।
दायित–(सं. वि.) दिया हुआ ।
दायित्व–(सं. पुं.) दायी होने का भाव ।
दायिनी–(सं. वि.) देनेवाली ।
दायी–(सं. वि.) दानी, देनदार ।
दायें–(हिं. अव्य.) दाहिनी ओर ।
दार–(सं. स्त्री.) पत्नी, भार्या; (पुं.) विदारण, फोड़ना ।
दारक–(सं.पुं.) पुत्र, वेटा, लड़का; (वि.) विदारक, फाड़नेवाला ।
दारकर्म–(सं. पुं.) विवाह ।
दारकाचार्य–(सं.पुं.) वुद्ध के गुरु का नाम ।
दारक्रिया–(सं. स्त्री.) दारकर्म, विवाह ।
दारग्रहण–(सं. पुं.) विवाह, पत्नीग्रहण ।
दारण–(सं.पुं.) निर्मली का फल, चीरने-फाड़ने का काम, चीरने-फाड़ने का अस्त्र ।
दारद–(सं. पुं.) पारा, ईंगुर, समुद्र ।
दारपरिग्रह–(सं. पुं.) दारकर्म, विवाह ।
दारपरिग्रही–(सं.वि.) जिसने विवाह किया हो ।
दारवलिभुज्–(सं. पुं.) वकुला पक्षी ।
दारन–(हिं. वि.) देखें 'दारुण' ।
दारना–(हि.क्रि.स.) विदीर्ण करना ।
दारमदार–(फा. पुं.) किसी कार्य की पूरी जिम्मेदारी, कार्यभार ।
दारव–(सं. वि.) काष्ठ संवंधी, लकड़ी का वना हुआ ।
दारसंग्रह–(सं. पुं.) देखें 'दारपरिग्रह' ।
दारा–(हि. स्त्री.) भार्या, पत्नी ।
दाराधिगमन–(सं. पुं.) विवाह ।
दाराधीन–(सं.वि.) जो स्त्री के वशीभूत हो ।
दारि–(सं. वि.) दारक, फोड़नेवाला; (हि. स्त्री.) दाल ।
दारिउँ–(हिं. पुं.) देखें 'दाड़िम', अनार ।
दारिका–(सं.स्त्री.) कन्या, वेटी, वालिका ।
दारित–(सं.वि.) विदीर्ण, चीरा-फाड़ा हुआ ।
दारिद–(हि.पुं.) देखें 'दारिद्र्य, दरिद्रता ।
दारिम–(हि. पुं.) अनार ।
दारिद्र्य–(सं. पुं.) दरिद्रता, निर्धनता ।
दारी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का रोग जिसमें पर के तलवे फट जाते हैं, वेवाय; (हिं. स्त्री.) लड़ाई में जीतकर लाई हुई दासी ।
दारीजार–(हि. पुं.) लौंड़ी का पति, दासी का पुत्र ।
दारु–(सं. पुं.) काष्ठ, काठ, लकड़ी, देवदार, पीतल, वढ़ई, चीर-फाड़ करनेवाला मनुष्य; (वि.) टूटने-फूटनेवाला, दानशील ।
दारुक–(सं.पुं.) देवदार, काठ का पुतला, श्रीकृष्ण के एक सारथी का नाम ।
दारुकच्छ–(सं.पुं.) एक प्राचीन देश का नाम ।
दारुकदली–(सं. स्त्री.) जंगली केला, कठकेला ।
दारुका–(सं. स्त्री.) कठपुतली ।
दारुगध–(सं. स्त्री.) चीड़ के वृक्ष से निकलनेवाला द्रव, विरोजा ।
दारुचीनी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का तज, दालचीनी ।
दारुज–(सं. पुं.) एक प्रकार का वाजा; (वि.) काष्ठ से उत्पन्न होनेवाला ।
दारुण–(सं. पुं.) चीते का वृक्ष, भया-

नक रस, विष्णु, शिव, एक नरक का नाम, रौद्र नामक नक्षत्र, राक्षस; (वि.) विदारक, फाड़नेवाला, प्रचण्ड, भयंकर, विकट, कठिन, दुःसह।
दारुणक–(सं. पुं.) मस्तक में होनेवाला एक रोग।
दारुणता–(सं.स्त्री.) कठिनता, कठोरता।
दारुणा–(सं. स्त्री.) अक्षय तृतीया, नर्मदा खण्ड की अधिष्ठात्री देवी।
दारुणादि–(सं. पुं.) विष्णु।
दारुण्य–(सं.पुं.) कठोरता, भीषणता, उग्रता।
दारुनिशा–(सं.स्त्री.) दारुहरिद्रा, दारुहल्दी।
दारुपात्र–(सं. पुं.) काठ का बना हुआ पात्र, तुमड़ी।
दारुपीता–(सं. स्त्री.) दारुहल्दी।
दारुपुत्रिका–(सं. स्त्री.) कठपुतली।
दारुफल–(सं. पुं.) पिस्ता नामक मेवा।
दारुब्रह्म–(सं. पुं.) जगन्नाथ।
दारुमय–(सं. वि.) काठ का बना हुआ।
दारुमच–(सं.पुं.) एकप्रकारका स्थावरविष।
दारुमूषा–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का विष।
दारुयंत्र–(सं.पुं.) काठ का बना एक यन्त्र।
दारुयोषिता–(सं. स्त्री.) कठपुतली।
दारुवह–(सं. पुं.) लकड़ी ढोनेवाला।
दारुसार–(सं. पुं.) चन्दन।
दारुसिता–(सं. स्त्री.) दालचीनी।
दारुहरिद्रा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष जिसका डंठल और जड़ औषधों में प्रयुक्त होती है।
दारुहलदी(ल्दी)–(हिं.स्त्री.) देखें 'दारुहरिद्रा'।
दारुहस्तक–(सं.पुं.) काठका बनाहुआ पौना।
दारों–(हिं. पुं.) देखें 'दार्यों'।
दारोगा–(फा. पुं.) प्रबंध करनेवाला, थानेदार, थाने का प्रधान अधिकारी।
दारोगाई–(हिं. स्त्री.) दारोगा का पद, काम आदि।
दार्ढ्य–(सं. पुं.) दृढ़ता।
दार्दुर–(सं. पुं.) एक प्रकार का शंख, लाह, जल।
दार्दुरिक–(सं. पुं.) कुम्हार।
दार्भ–(सं. वि.) कुश संबंधी।
दार्यों–(हिं. पुं.) दाड़िम, अनार।
दार्व–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम जो आजकल के काश्मीर देश के अन्तर्गत पड़ता है।
दार्वट–(सं. पुं.) मंत्रणागृह, वह कोठरी जिसमें बैठकर किसी विषय पर मनन किया जाता है।
दार्वाघाट–(सं. पुं.) कठफोड़वा पक्षी।
दार्वाघात–(सं. पुं.) काष्ठ पर आघात करनेवाला कठफोड़वा, पक्षी।
दार्विका–(सं. स्त्री.) दारुहल्दी।
दार्विपत्रिका–(सं. स्त्री.) वनगोभी।
दार्वी–(सं. स्त्री.) वनगोभी, देवदार, दारुहल्दी।
दार्श–(सं. वि.) जो देखने से उत्पन्न हो, जो आँख से उत्पन्न हो।
दार्शनिक–(सं. पुं) दर्शनशास्त्र जाननेवाला, तत्त्वज्ञानी; (वि.) दर्शनशास्त्र संबंधी।
दार्षद–(सं. वि.) पत्थर का बना हुआ, पाषाण-निर्मित।
दार्ष्टांत–(सं. वि.) दृष्टान्तयुक्त, जो उदाहरण देकर समझाया गया हो।
दार्ष्टांतिक–(सं.वि.) दृष्टान्तयुक्त।
दाल–(सं. पुं.) वृक्ष के खोखले में उत्पन्न मधु, कोदो नामक अन्न, रवे बनाने या दलन का काम।
दाल–(हिं.स्त्री.) दला हुआ अन्न, दलिया, दली अरहर, मूंग आदि जो पानी में उबालकर तथा नमक, मसाला आदि मिलाकर रोटी या भात के साथ सालन की तरह खाई जाती है, वह पपड़ी जो चेचक, फोड़े आदि के सूखने पर पड़ जाती है, तुन जाति का एक वृक्ष; (मुहा.) **–गलना**–आशय सिद्ध होना; **–में कुछ काला होना**–कोई सन्देहयुक्त बात होना; **जूतियों दाल बटना**–आपस में कलह होना; **–रोटी** (स्त्री.) सामान्य भोजन; **–मोट**–(स्त्री.) घी, तेल आदि में तली तथा नमक-मिर्च मिलाई हुई दाल।
दालचीनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दारचीनी'।
दालन–(सं. पुं.) दाँत का एक रोग।
दालव–(सं.पुं.) एकप्रकार का स्थावरविष।
दाला–(सं. स्त्री.) महाकाल नामक लता।
दालान–(फा. पुं.) ओसारा, बैठक।
दालि–(सं. स्त्री.) दाड़िम, अनार।
दालिका–(सं.स्त्री.) महाकाल नामक लता।
दालिम–(सं. पुं.) दाड़िम, अनार।
दालिम–(सं. पुं.) इन्द्र।
दावँ–(हिं. पुं.) कार्य साधन का उपाय, युक्ति, चाल, छल, कपट, खेलने की बारी, जीत का पासा या कौड़ी, स्थान, ठौर, अवसर, मौका, पारी, वार, अनुकूल संयोग, कुश्ती का पेच; (मुहा.) **–करना**–युक्ति लगाना, घात में बैठना; **देना**–किसी खेल में हार जाने पर जो दण्ड निश्चित हुआ हो उसको भोगना; **–पर चढ़ना**–पूर्ण रूप से किसी के वश में होना; **पर रखना या लगाना**–रुपये-पैसे का पण या बाजी लगाना; **–लगना**–अच्छा अवसर मिलना; **–लेना**–बदला लेना।
दावँना–(हिं. क्रि. स.) सूखे हुए अन्न के डंठलों को भूसा तथा अन्न अलगाने के लिए बैलों से रौंदवाना।
दावँरी–(हिं. स्त्री.) रस्सी, डोरी।
दाव–(सं. पुं.) वन, जंगल, वड़वानल, वन की आग, ताप, जलन; (हिं. पुं.) एक प्रकार का शस्त्र, स्थान, जगह।
दावत–(अ. स्त्री.) भोज, ज्योनार, निमंत्रण, सहभोज।
दावदी–(हिं. स्त्री.) गुलदावदी का फूल।
दावन–(हिं. पुं.) दमन, नाश, एक प्रकार का टेढ़ा छुरा, खुखड़ी, हँसिया।
दावना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'दाँवना', दमन करना, नष्ट करना।
दावनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दाँवनी'।
दावरा–(हिं. पुं.) धव नामक वृक्ष।
दावसु–(सं. पुं.) अङ्गिरा ऋषि के एक पुत्र का नाम।
दावा–(हिं. स्त्री.) वन में बाँस तथा अन्य वृक्षों की डालियों के परस्पर रगड़ से उत्पन्न अग्नि।
दावा–(अ. पुं.) अपने अधिकार या स्वत्व की रक्षा या निर्णय के लिए न्यायालय में अर्पित प्रार्थनापत्र; **–गीर,–दार**–(पुं.) दावा करनेवाला, वादी।
दावाग्नि–(सं. पुं.) जंगल में लगनेवाली अग्नि।
दावात–(हिं. स्त्री.) दवात।
दावानल–(सं. पुं.) दावाग्नि, वन में लगनेवाली आग।
दाविनी–(सं. स्त्री.) बिजली, एक गहना जिसको स्त्रियाँ माथे पर पहिनती हैं।
दावी–(हिं. पुं.) धव का पेड़।
दाश–(सं.पुं.) धीवर, केवट, भृत्य, नौकर।
दाशक–(सं. पुं.) धीवर, केवट।
दाशग्राम–(सं.पुं.) धीवरों के रहने का गाँव।
दाशनंदिनी–(सं. स्त्री.) व्यास की माता सत्यवती।
दाशपुर–(सं. पुं.) धीवरों की बस्ती।
दाशरथ(सं. पुं.) श्रीरामचन्द्र।
दाशरथि–(सं. पुं.) दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र।
दाशु–(सं. वि.) दाता, देनेवाला, दिया हुआ।
दाशेयी–(सं.स्त्री.) व्यास की माता सत्यवती।
दाशेरक–(सं. पुं.) मालवादेश, मारवाड़, मालवदेश का राजा।

दाश्व–(सं. वि.) दानी, दानशील।
दास–(सं. पुं.) शूद्र, धीवर, सेवक, नौकर-चाकर, वह जिसने अपना जीवन स्वामी की सेवा में लगा दिया हो, भृत्य, एक उपाधि जो शूद्रों के नाम के अन्त में लगाई जाती है, दस्यु, वृत्रासुर; (वि.) घृणा या हीन भावना से युक्त; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) सेवावृत्ति, गुलामी, अधीनता; **–पत्नी**–(स्त्री.) दास की स्त्री; **–पन**–(हिं. पुं.) दासत्व, सेवापन; **–मित्र**–(पुं.) दास का मित्र।
दासन–(हिं. पुं.) देखें 'डासन'।
दासा–(हिं. पुं.) वह पुश्ता जो भीत से सटाकर ऊँचाई पर बनाया जाता है और इस पर वस्तुएँ रखी जाती हैं वह चबूतरा जो आँगन के चारों ओर भीत से सटाकर उठाया जाता है, इसके ऊपर बैठाया हुआ मोटा पत्थर, लकड़ी या पत्थर जो द्वार के ऊपर भीत के आर-पार रहता है, हँसिया।
दासानुदास–(सं. पुं.) सेवक का सेवक, अति तुच्छ सेवक, (यह शब्द विनय तथा नम्रता दिखलाने के लिये प्रयुक्त होता है।)
दासिका, दासी–(सं. स्त्री.) दास की पत्नी, टहलनी, लौंड़ी, नौकरानी, मल्लाहिन, काकजंघा, कटसरैया, वेदी।
दासीत्व–(सं. पुं.) दासी का कर्म, सेवावृत्ति।
दासीपाद–(सं वि.) जिसके पाँव दासी के समान हों।
दासेय–(सं. पुं.) दास, धीवर; (वि.) जो दास से उत्पन्न हो।
दासेयी–(सं. स्त्री.) व्यास की माता का नाम।
दासेर–(सं. पुं.) दास, धीवर।
दासेरक–(सं. पं.) दासीपुत्र, ऊँट।
दास्य–(सं. पुं.) दासत्व, सेवा, भक्ति के नौ भेदों में से एक।
दास्यमान–(सं. वि.) दान दिया जानेवाला (पदार्थ)।
दास्र–(सं. पुं.) अश्विनी नक्षत्र।
दाह–(सं. पुं.) भस्म करने या जलाने की क्रिया, शव जलाने की क्रिया, जलन, दहन, सन्ताप, शोक, भारी दुःख, ईर्ष्या, वह रोग जिसमें प्यास अधिक लगती है और संपूर्ण शरीर में जलन महसूस होती है; **–क**–(वि.) जलानेवाला; (पुं.) अग्नि, लाल चीते का वृक्ष; **–ता**–(स्त्री.) जलाने का गुण या भाव; **–कर्म**–(पुं.) शव फूँकने का काम; **–काष्ठ**–(पुं.) अगरु की लकड़ी; **क्रिया**–(स्त्री.) दाहकर्म; **–घ्न**–(पुं.) शरीर की जलन मिटानेवाली औषध; **–ज्वर**–(पुं.) वह ज्वर जिसमें शरीर में बहुत गरमी मालूम होती है; **–दा**–(स्त्री.) नागवल्ली लता, पान की लता; **–न**–(पुं.) भस्म करने या जलाने की क्रिया; **–मय**–(वि.) दाहपूर्ण; **–सर**–(पुं.) श्मशान; **–हरण**–(पुं.) वीरण, खस।
दाहना–(हिं. क्रि. स.) भस्म करना, जलाना, फूँकना; (हिं. वि.) दहिना।
दाहनागुरु–(सं. पुं.) अगर नामक गन्ध-द्रव्य।
दाहागुरु–(सं. पुं.) जलाने का अगर।
दाहिकाशक्ति–(सं. स्त्री.) जलाने की शक्ति।
दाहिना–(हिं. वि.) अपसव्य, दक्षिण, बायाँ का उलटा, अनुकूल, प्रसन्न; (मुहा.) **–हाथ होना**–बड़ा सहायक होना; **दाहिनी देना**–दक्षिण की ओर से परिक्रमा करना।
दाहिनावर्त–(हिं. वि.) देखें 'दक्षिणावर्त'।
दाहिने–(हिं. अव्य.) दहिने हाथ की ओर।
दाही–(हिं. वि.) जलाने या भस्म करनेवाला।
दाहुक–(सं. वि.) दाहक, जलानेवाला।
दाह्य–(सं. वि.) जलाने योग्य।
दिअरी, दिअली–(हिं. स्त्री.) मिट्टी का बहुत छोटा दीया, दिउली।
दिआ–(हिं. पुं.) देखें 'दीया'; **–बत्ती**–(हिं. स्त्री.) देखें 'दियाबत्ती'; **–सलाई** (स्त्री.) देखें 'दियासलाई'।
दिउली–(हिं. स्त्री.) घाव या फोड़े पर पड़ी हुई पपड़ी, दाल, मछली के ऊपर की चोईं, सेहरा।
दिक–(अ. पुं.) यक्ष्मा ज्वर; (वि.) तंग, परेशान।
दिकोड़ी–(हिं. स्त्री.) हड्डा, बर्रे।
दिक्–(सं. स्त्री.) दिशा, ओर।
दिक्क–(हिं. वि.) देखें 'दिक'।
दिक्कन्या–(हिं. स्त्री.) दिशारूपी कन्या, (पुराण के अनुसार सब दिशायें ब्रह्मा की कन्याएँ मानी जाती हैं।)
दिक्करी–(सं. स्त्री.) दिग्गज, युवती स्त्री।
दिक्कामिनी–(सं. स्त्री.) दिक्‌रूपी स्त्री।
दिक्खन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का गन्ना।
दिक्‌चक्र–(सं. पुं.) चक्रवाल, दस दिशाओं का समूह या गोलक।
दिक्‌दाह–(हिं. पुं.) देखें 'दिग्दाह'।
दिक्‌पति–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार दिशाओं के स्वामी-ग्रह, दस दिशाओं के पति।
दिक्‌पाल–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार दस दिशाओं के पालन करनेवाले देवता, (पूर्व के देवता इन्द्र, अग्निकोण के अग्नि, दक्षिण के यम, नैर्ऋत्य के नैर्ऋत पश्चिम के वरुण, वायु कोण के मरुत उत्तर के कुबेर, ईशान कोण के ईश्वर ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधोदिशा के देवता अनन्त हैं,) चौबीस मात्राओं का एक छन्द।
दिक्‌शूल–(सं. पुं.) दिनानुसार कुछ विशिष्ट दिशाओं में यात्रा का वर्जन; (दिक्‌शूल में यात्रा दिनानुसार वर्जित है –शुक्र और रविवार को पश्चिम, मंगल और बुध को उत्तर, सोम और शनिवार को पूरब तथा बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा में दिक्‌शूल माना जाता है।
दिक्‌साधन–(सं. पुं.) वह उपाय जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है।
दिक्‌सुंदरी–(सं. स्त्री.) देखें 'दिक्‌कन्या'।
दिक्‌स्वामी–(सं. पुं.) दिशाओं के स्वामी।
दिक्षा–(हिं. स्त्री.) देखें 'दीक्षा'।
दिखना–(हिं. क्रि. अ.) दिखाई पड़ना, देखने में आना।
दिखलवाई–(हिं. स्त्री.) दिखलवाने के बदले दिया जानेवाला धन, देख 'दिखलाई'।
दिखलवाना–(हिं. क्रि. स.) दिखलाने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
दिखलाई–(हिं. स्त्री.) दिखलाने की क्रिया या भाव, दिखलाने के बदले दिया हुआ धन।
दिखलाना–(हिं. क्रि. स.) दृष्टिगोचर कराना, दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना, अनुभव कराना।
दिखाई–(हिं. स्त्री.) देखने का काम, दिखाने का भाव, दिखाई के बदले दिया जानवाला धन।
दिखाऊ–(हिं. वि.) दर्शनीय, देखने योग्य, दिखौवा, बनावटी, जो केवल देखने योग्य हो पर काम म न आ सके।
दिखाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'दिखलाना'।
दिखाव–(हिं. पुं.) देखने का भाव या क्रिया, दृश्य।
दिखावट–(हिं. स्त्री.) दिखलाने का भाव या ढंग, ऊपरी तड़क-भड़क।
दिखावटी–(हिं. वि.) जो केवल देखने के योग्य हो पर काम न आ सके, दिखौवा
दिखावा–(हिं. पुं.) आडंबर, ऊपरी तड़क-भड़क।
दिखया–(हिं. वि.) देखने या दिखलानेवाल।
दिखौआ(वा)–(हिं. वि.) दिखावटी, बनावटी।
दिगंत–(सं. पुं.) दिशाओं का छोर या अन्त, आकाश का छोर, क्षितिज, दस दिशाएँ; (हिं. पुं.) आँख का कोना।

दिगंतर–(सं. पुं.) दो दिशाओं के बीच का स्थान, विपरीत दिशा ।
दिगंबर–(सं. पुं.) शिव, महादेव, क्षपणक, यति, तम, अन्धकार, नंगा रहनेवाले जैन साधु; (वि.) नंगा, नग्न; –**ता** (स्त्री.) नग्नता, नंगापन ।
दिगंबरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, पार्वती; (वि. स्त्री.) नंगी ।
दिगंश–(सं. पुं.) क्षितिज वृत्त का तीन-सौ-साठवाँ अंश; –**यंत्र**–(पु.) वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी नक्षत्र का दिगंश जाना जाता है ।
दिगदंति–(हि. पुं.) देखें 'दिग्गज' ।
दिगीश्वर–(सं. पुं.) इन्द्रादि दिक्पाल ।
दिग्गज–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार आठों दिशाओं के.आठ हाथी जो पृथ्वी को दवाये रखते हैं और इसकी रक्षा के लिये स्थापित हैं, (इन आठों हाथियों के नाम ह–पूर्व में ऐरावत, पूर्व-दक्षिण कोण में पुंडरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण-पश्चिम में कुमुद, पश्चिम में अंजन, पश्चिमोत्तर कोण में पुष्पदंत, उत्तर में सार्वभौम और उत्तर-पूर्व कोण में सुप्रीतक); (वि.) वहुत भारी या बड़ा ।
दिग्घ–(हि. वि.) दीर्घ, लंवा वड़ा ।
दिग्ज्ञान–(सं. पुं.) वह यंत्र या साधन जिससे सभी दिशाओं का ज्ञान हो ।
दिग्ज्या–(सं. स्त्री.) दिशा का छोर ।
दिग्दर्शक यंत्र–(सं. पुं.) डिबिया के आकार का एक चुंवकयुक्त यन्त्र जिससे दिशा का बोध होता है, कुतुवनुमा ।
दिग्दर्शन–(सं. पुं.) वह यन्त्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है, अभिज्ञता, वह जो उदाहरण के रूप में दिखलाया जाय ।
दिग्दाह–(सं. पुं.) भ्रुवीय उत्पात विशेष जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशायें जलती हुई लाल दिखाई पड़ती हैं ।
दिग्देवता–(सं. स्त्री.) सभी दिशाओं के साक्षीभूत देवता, दिक्पाल ।
दिग्घ–(सं. पुं.) विष में वुताया हुआ वाण, अग्नि, प्रेम, तैल, प्रवन्ध; (हिं वि.) लंवा-चौड़ा ।
दिग्पट–(हि. पुं.) दिशारूपी वस्त्र, दिगंवर, नंगा ।
दिग्पति, दिग्पाल–(हि.पुं.) देखें 'दिक्पाल' ।
दिग्वल–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार लग्नादि में स्थित ग्रहों का वल ।
दिग्भाग–(सं. पुं.) दिशाओं के विभाग ।
दिग्भ्रम–(सं. पुं.) दिशाओं का भ्रम होना, दिशा भूल जाना ।
दिग्भ्रांत–(स.वि.) जिसको दिशा का भ्रम हो गया हो ।
दिग्मंडल–(सं. पुं.) सव दिशायें, दिशाओं का समूह ।
दिग्राज–(हिं. पुं.) देखें 'दिक्पाल' ।
दिग्वदन–(सं. पुं.) सव दिशाओं में स्थित राशिभेद ।
दिग्वसन–(हि. पुं.) देखें 'दिग्वस्त्र' ।
दिग्वस्त्र–(सं. पुं.) शिव, महादेव, जैन, क्षपणक; (वि.) नग्न, नंगा ।
दिग्वान्–(सं. पुं.) पहरेदार, ड्योढ़ीदार ।
दिग्वारण–(सं. पुं.) दिग्गज ।
दिग्वास–(सं. पुं.) शिव, महादेव, नंगा रहनेवाला जैन क्षपणक; (वि.) नग्न, नंगा ।
दिग्विजय–(सं. पुं.) राजाओं का युद्ध द्वारा चारों दिशाओं अथवा देश-देशान्तर में सेना लेकर जाना और युद्ध करके विजय प्राप्त करना, देश-देशान्तर में जाकर विद्या द्वारा अपना महत्त्व स्थापित करना ।
दिग्विजयी–(सं. वि.) दिग्विजय करनेवाला, जिसने दिग्विजय किया हो ।
दिग्विदिक्–(सं. पुं.) सब दिशायें ।
दिग्विभाग–(सं. पुं.) दिशा, ओर ।
दिग्विलोकन–(सं. पुं.) शून्य दृष्टि ।
दिग्व्यापी–(सं. वि.) जो सब दिशाओं में व्याप्त हो ।
दिग्व्रत–(सं. पुं.) जैनियों का एक व्रत ।
दिग्शिखा–(सं. पुं.) पूर्व दिशा ।
दिग्सिंधुर–(सं. पुं.) देखें 'दिग्गज' ।
दिङ्नक्षत्र–(सं. पुं.) दिशाओं में अवस्थित नक्षत्र ।
दिङ्नाग–(सं. पुं.) दिग्गज, एक प्रसिद्ध वौद्ध ग्रन्थकार का नाम ।
दिङ्मंडल–(सं. पुं.) दिक्चक्र, दिशाओं का समूह ।
दिङ्मातंग–(सं. पुं.) दिग्गज ।
दिङ्मात्र–(सं. पुं.) उदाहरण मात्र ।
दिङ्मूढ़–(सं. वि.) जिसको दिशा का भ्रम हुआ हो, मूर्ख ।
दिङ्मोह–(सं.पुं.) दिक्भ्रम, दिशा भूल जाना ।
दिच्छित–(हि. पुं.) देखें 'दीक्षित' ।
दिठवन–(हि. स्त्री.) देखें 'देवोत्थान' ।
दिठादिठी–(हि. स्त्री.) देखो 'देखादेखी' ।
दिठाना–(हि.क्रि.स.) वुरी दृष्टि लगाना ।
दिठौना–(हिं. पुं.) काजल का टीका जो वालकों के माथे पर कुदृष्टि न लगने के लिये लगाया जाता है ।
दिढ़–(हिं. वि.) देखें 'दृढ़' ।
दिढ़ाना–(हि. क्रि. स.) दृढ़ करना, पोढ़ा करना, निश्चित करना ।
दिढ़ाव–(हिं. पुं.) दृढ़ वनावट ।
दित–(सं. वि.) चीरा हुआ, फाड़ा हुआ ।
दिति–(सं. स्त्री.) कश्यप ऋषि की स्त्री, दैत्यमाता; –**कुल**–(पुं.) दैत्यवंश; –**ज**–(पुं.) दिति के पुत्रगण, दैत्य; –**तनय**, –**सुत**–(पुं.) दैत्य, राक्षस ।
दित्य–(सं. पुं.) असुर, राक्षस; (वि.) जो छदने या काटने योग्य हो ।
दित्सा–(सं. स्त्री.) दान करने की इच्छा ।
दित्सु–(सं.वि.) जो दान करना चाहता हो ।
दिदृक्षमान–(सं. वि.) जो देखने की इच्छा करता हो ।
दिदृक्षा–(सं.स्त्री.) देखने की अभिलापा ।
दिदृक्षु–(सं. वि.) जो देखना चाहता हो ।
दिद्यु–(सं. पुं.) वज्र, वाण ।
दिन–(सं.पुं.) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय, साठ दंडों का परिमित काल, समय, काल, नियुक्त काल, निश्चित समय; (मुहा.) –**काटना**–किसी प्रकार निर्वाह करना; –**को तारे दिखाई पड़ना**–चित्त ठिकाने न रहना; –**को दिन रात को रात न समझना**–कार्य में इतना व्यस्त होना कि अपने शारीरिक सुख का ध्यान छोड़ देना; –**चढ़ना**–सूय का उदय होना, गर्भ परिपक्व होना; –**डूबना**–सन्ध्या होना; –**ढलना**–सन्ध्या निकट होना; –**दहाड़े**–(अव्य.) सूर्य रहते, सवके सामने दिन के समय; –**दूना रात चौगुना होना**–जल्दी-जल्दी वढ़ना; –**निकलना**–सूर्योदय होना; –**धरना**–दिन निर्धारित करना; –**पर दिन**–प्रतिदिन; –**फिरना**–दुःख के वाद सुख के दिन आना; –**भरना**–दिन विताना; –**रात**–(अव्य.) सदा; –**कंत**–(हिं. पुं.) दिनकर, सूर्य; –**कर**–(पुं.) सूर्य, मदार का वृक्ष; –०**कन्या**–(स्त्री.) यमुना नदी; –०**तनय**–(पुं.) शनि, यम, कर्ण, सुग्रीव; –०**देव**–(पुं.) सूर्य-नारायण; –०**तनया**–(स्त्री.) सूर्य की कन्या यमुना, ताप्ती; –**कर्ता**–(पुं.) सूर्य, अर्कवृक्ष; –**कृत**–(पुं.) देखें 'दिनकर्ता'; –**केशर**–(पुं.) अँधेरा; –**क्षय**–(पुं.) किसी तिथि का क्षय; –**चर्या**–(स्त्री.) दिन-भर का काम-धंधा, दिन भर में करने के कर्म या कर्तव्य; –**चारी**, –**ज्योति**, –**द्वीप**–(पुं.) सूर्य; –**दुःखित**–(पुं.) चकवा पक्षी; –**नाथ**, –**नायक**–(पुं.) सूर्य, दिनकर; –**नाह**–(पुं.) दिननाथ, सूर्य; –**प**, –**पति**–(पुं.

सूर्य, अर्क वृक्ष; –पात–(पुं.) तिथि का क्षय; –पाल–(पुं.) सूर्य; –प्रणी–(पुं.) सूर्य, अर्क वृक्ष; –बधु–(पुं.) सूर्य, मदार का वृक्ष; –मणि–(पुं.) सूर्य, मदार का वृक्ष; –मयूख–(पुं.) देखें 'दिन-मणि'; –मल–(पुं.) मास, महीना; –मान–(पुं.) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान; –माली–(पुं.) दिनकर, सूर्य; –मुख–(पुं.) प्रभात, सवेरा; –यौवन–(पुं.) मध्याह्न, दोपहर का समय; –रत्न–(पुं.) सूर्य, मदार का पेड़; –राज–(पुं.) सूर्य, दिनकर।

दिनांत–(सं. पुं.) दिन का अंत, सन्ध्या, सूर्यास्त।

दिनांतक–(सं. पुं.) अंधकार।

दिनांध–(सं. वि.) जिसे दिन के समय दिखाई न पड़ता हो, दिवांध।

दिनारंभ–(सं. पुं.) प्रातःकाल, सवेरा।

दिनांश–(सं. पुं.) दिन के तीन अथवा पांच भागों में से एक भाग।

दिनाइ–(हिं. स्त्री.) दद्रु, दाद का रोग।

दिनाई–(हिं. स्त्री.) ऐसी विषैली वस्तु जिसके खाने से थोड़े ही दिनों में मृत्यु हो जाय।

दिनागम–(सं. पुं.) प्रातःकाल, तड़का।

दिनाती–(हिं. स्त्री.) कर्मकारों या श्रमिकों का एक दिन का वेतन।

दिनाधीश–(सं. पुं.) सूर्य, मंदार का वृक्ष।

दिनार्ध–(सं. पुं.) मध्याह्न, दोपहर।

दिनावसान–(सं. पुं.) सन्ध्या, शाम।

दिनास्त–(सं. पुं.) सूर्यास्त, सन्ध्या, शाम।

दिनिका–(सं. स्त्री) एक दिन का वेतन।

दिनी–(हिं. वि.) बहुत दिनों का, पुराना।

दिनर–(हिं. पुं.) दिनकर, सूर्य।

दिनेश–(सं. पुं.) अर्क-वृक्ष, दिन का अधिपति-ग्रह, सूर्य; (पुं.) कुमुद नामक फूल।

दिनेशात्मज–(सं. पुं.) शनि, यम, कर्ण, सुग्रीव।

दिनेश्वर–(सं. पुं.) दिनेश, सूर्य, अर्क-वृक्ष।

दिनौंधी–(हिं. स्त्री.) आँख का वह रोग जिसमें सूर्य के तीव्र प्रकाश में धुंधला दिखाई पड़ता है।

दिपना–(हिं. क्रि. अ.) प्रकाशयुक्त होना, चमकना।

दिपाना–(हिं. क्रि. स.) चमकाना।

दिप्सु–(हिं. वि.) हानि पहुँचानेवाला।

दिब–(हिं. वि.) देखें 'दिव्य'; (पुं.) सत्यता प्रमाणित करने की एक परीक्षा।

दिमाक–(हिं. पुं.) देखें 'दिमाग'।

दिमाकदार–(हिं. वि.) देखें 'दिमागदार'।

दिमाग–(फा. पुं.) मस्तिष्क के भीतर का गाढ़ा जमा हुआ द्रव पदार्थ या गूदा, मग्ज, बुद्धि, समझदारी, अक्ल; –दार–(वि.) बुद्धिमान, समझदार, अभिमानी; –दारी–(स्त्री.) बुद्धिमत्ता, समझ; (मुहा.)–(सातवें) आसमान पर होना–बहुत अभिमान करना; –खाना–बेकार किसी को अपनी बातों के आग्रह से खिन्न करना; –चढ़ना–अभिमान करना; –चाटना–दिमाग खाना।

दिमागी–(अ. वि.) दिमागदार।

दिमात–(हिं. वि.) जिसके दो माताएँ हों, दो माताओंवाला।

दिमाना–(हिं. वि.) देखें 'दीवाना'।

दियट–(हिं. स्त्री.) देखें 'दीयट'।

दियना–(हिं. स्त्री.) दीयट।

दियरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मीठा पकवान, देखें 'दीया'।

दिया–(हिं. पुं.) देखें 'दीया'।

दियानत–(हिं. स्त्री.) ईमानदारी; –दारी–(स्त्री.) देखें 'दियानत'।

दियाबत्ती–(हिं. स्त्री.) दीयाजलानेका काम।

दियासलाई–(हिं. स्त्री.) एक सिरे पर गंधक आदि मसाला पोतकर बनाई हुई वह सींक जो रगड़ने से जल उठती है।

दिर–(हिं. पुं.) सितार का एक बोल।

दिरद–(हिं. पुं.) देखें 'द्विरद'।

दिरानी–(हिं. स्त्री.) देवरानी।

दिरिपक–(सं. पुं.) कन्दुक, गेंद।

दिरिस–(हिं. पुं.) देखें 'दृश्य'।

दिल–(फा. पुं.) रक्त-संचार का हृदय-स्थित केंद्र, हृदय, मन, जी, हिम्मत, हौसला इच्छा; (मुहा.) (किसी से) अटकना–प्रेमासक्त होना; –कड़ा करना–साहस करना; –का खोटा–बुरा, कपटी; –का गुबार निकालना–मन का मलाल निकालना; –का बादशाह–बहुत उदार; –की आग बुझना–जी ठंढा होना; –की कली खिलना–अत्यधिक प्रसन्नता होना; –की दिल में रखना–मन की बात मन में ही रखना; –खट्टा होना–किसी के प्रति प्रेम-भाव लुप्त हो जाना; –देना–प्रेम में फँसना; –पक जाना–दिल को बहुत कष्ट होना; –भर आना–दया, करुणा आदि से मन व्यथित होना; –में आना–इच्छा होना; –में गाँठ पड़ना–द्वेष-भाव होना; –लगना–प्रेमासक्त होना; –से दूर करना–भुला देना; –चस्प–(वि.) जो रुचिकर जान पड़े, मनोरंजक; –चस्पी–(स्त्री.) रुचि, मनोरंजकता; –चोर–(हिं. पुं.) काम करने में सुस्ती करनेवाला; –जला–(हिं. वि.) जिसका दिल जला हो, अत्यन्त दुःखी; –दरियाव (हिं. पुं.) अति उदार; –दार–(वि.) उदार, दानी, प्रेमी, रसिक; –दारी–(स्त्री.) उदारता, रसिकता; –पसंद–(वि.) जो दिल को अच्छा लगे; –बर–(वि.) दिलदार।

दिलवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'दिलाना'।

दिलवैया–(हिं. वि.) दिलानेवाला, सहायक।

दिलहा–(हिं. पुं.) देखें 'दिल्ला'।

दिलहेदार–(हिं. वि.) देखें 'दिल्लेदार'।

दिलाना–(हिं. क्रि. स.) देने का कार्य दूसरे से कराना।

दिलावर–(फा. वि.) साहसी, हिम्मती, दिलेर।

दिलावरी–(फा. स्त्री.) बहादुरी, उदारता।

दिलासा–(हिं. पुं.) आश्वासन, ढाढ़स; –दम-दिलासा–(पुं.) देखें 'दिलासा'।

दिली–(हिं. वि.) हार्दिक, अति घनिष्ट।

दिलीप–(सं. पुं.) इक्ष्वाकु वंश के एक प्रसिद्ध राजा का नाम, रघु के पूर्वज।

दिलेर–(फा. वि.) दिलावर।

दिल्लगी–(फा. स्त्री.) हँसी, मजाक, परिहास; –बाज–(वि.) मजाक करनेवाला, परिहासी।

दिल्ला–(हिं. पुं.) किवाड़ के पल्ले में जड़ा हुआ लकड़ी का चौखूंटा, टुकड़ा।

दिल्लीवाल–(हिं. वि.) दिल्ली नगर का, दिल्ली में रहनेवाला; (पुं.) एक प्रकार का दिल्ली का बना हुआ देशी जूता।

दिवंगत–(सं. वि.) मृत, स्वर्गगत।

दिवंगम–(सं. वि.) स्वर्गगामी।

दिव–(सं. पुं.) आकाश, दिन, सोना; वन, जंगल।

दिवक्ष–(सं. वि.) स्वर्गीय; (पुं.) इन्द्र।

दिवगृह–(सं. पुं.) देखें 'देवगृह'।

दिवरानी–(हिं. स्त्री.) देखें 'देवरानी'।

दिवल–(हिं. पुं.) दीया।

दिवस–(सं. पुं.) दिन, वासर; –कर–(पुं.) सूर्य, मदार का वृक्ष; –कृत्, –नाथ, –भर्ता–(पुं.) दिवाकर, सूर्य; –मुख–(पुं.) प्रभात, सबेरा; –मुद्रा–(स्त्री.) एक दिन का वेतन; –विगम–(पुं.) सन्ध्याकाल।

दिवसांतर–(सं. पुं.) दूसरा दिन।

दिवसेश्वर–(सं. पुं.) सूर्य, दिनकर।

दिवस्पति–(सं. पुं.) सूर्य, तेरहवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

दिवस्पृश्–(सं. पुं.) विष्णु जिन्होंने वामन अवतार में स्वर्ग को पैर से छुआ था।
दिवांध–(सं. पुं.) उल्लू; (वि.) जिसको दिन म न सूझता हो, दिनौंधी के रोगवाला।
दिवा–(सं. पुं.) दिवस, दिन, वाईस अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।
दिवाकर–(सं. पुं.) सूर्य, अर्क वृक्ष, कौवा।
दिवाकरसुत–(सं.पुं.) सूर्य के पुत्र, शनि, यम, कर्ण और सुग्रीव।
दिवाकीर्ति–(सं. पुं.) नापित, नाई, चाण्डाल, उल्लू।
दिवाचर–(सं.पुं.) पक्षी, चिड़िया, चाण्डाल।
दिवाचारी–(सं.वि) दिन में चलनेवाला (प्राणी)।
दिवान–(हिं. पुं.) दीवान, मन्त्री।
दिवाना–(हिं. पुं.) देखें 'दीवाना'; (क्रि. स.) दिलवाना।
दिवानाथ–(हिं. पुं.) सूर्य।
दिवानिश–(सं. स्त्री., अव्य.) रात-दिन।
दिवानी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दीवानी'।
दिवापृष्ठ–(सं. पुं.) सूर्य, दिवाकर।
दिवाप्रदीप–(सं. पुं.) नीच पुरुष।
दिवाभिसारिका–(सं.स्त्री.) वह नायिका जो शृंगार करके दिन में अपने प्रेमी से मिलने को निर्दिष्ट स्थान में जाय।
दिवाभीत–(सं.पुं.) उल्लू, सफद कमल, चोर।
दिवाभीति–(सं. वि.) जिसको दिन में वाहर निकलने में भय हो।
दिवामणि–(सं. पुं.) सूर्य, अर्कवृक्ष।
दिवामध्य–(सं. पुं.) मध्याह्न, दोपहर।
दिवाल–(हिं. वि.) दाता, देनेवाला; (स्त्री.) भीत।
दिवाला–(हिं.पुं.) महाजन, व्यापारी आदि की वह अवस्था जब उसके पास अपना ऋण चुकाने के लिये धन न रह जाय; (मुहा०) **–निकलना**– दिवाला होना; **–मारना**–ऋण चुकाने योग्य न रह जाना।
दिवालिया–(हिं. वि.) जिसके पास ऋण चुकाने के लिये धन न वचा हो।
दिवाली–(हिं.स्त्री.) देखें 'दीपावली दीवाली'
दिवावसान–(सं. पुं.) सन्ध्या, शाम।
दिवावसु–(सं. पुं.) सूर्य, मदार का वृक्ष।
दिवाशय–(सं. पुं.) वदली का दिन, अँधेरा दिन।
दिवासंचर–(सं.पुं.) दिन में घूमनेवाला प्राणी।
दिवास्वप्न–(सं. पुं.) दिन में सोना, व्यर्थ कल्पना।
दिवास्वाप–(सं.पुं.) दिवा, स्वप्न, दिनमें सोना।
दिवास्वापा–(सं. पुं.) बगला पक्षी।
दिवि–(सं. पुं.) नीलकण्ठ पक्षी।
दिविक्षय–(सं. वि.) स्वर्गवासी।
दिविगत–(सं.वि.) जो स्वर्ग को सिधारा हो।
दिविचर, दिविचारी–(सं.वि.) आकाशगामी, आकाश में घूमनेवाला।
दिविज–(सं.पुं.) वह जो स्वर्ग में उत्पन्न हो।
दिविजात–(सं. वि.) स्वर्ग में उत्पन्न।
दिविता–(सं.स्त्री.) द्युति, दीप्ति, चमक।
दिवियोनि–(सं. वि.) जिसका जन्म स्वर्ग में हुआ हो।
दिविषद्–(सं.पुं.) देवता; (वि.) स्वर्गवासी।
दिविष्टंभ–(सं. वि.) स्वर्ग में स्थापित।
दिविष्टि–(सं. पुं.) याग, यज्ञ।
दिविष्ठ–(सं.वि.) स्वर्ग में रहनेवाला।
दिविस्पृश–(सं. वि.) स्वर्ग को स्पर्श करनेवाला।
दिवी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का कीड़ा।
दिवेश–(सं. पुं.) दिक्पाल।
दिवैया–(हिं.वि.) देनेवाला, जो देता हो।
दिवौकस्–(सं.पुं.) देवता, चातक पक्षी; (वि.) आकाशगामी।
दिवोजा–(सं. वि.) जो स्वर्ग में उत्पन्न हुआ हो।
दिवोदास–(सं. पुं.) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम जो काशी में राज्य करते थे।
दिवोद्भव–(सं. वि.) स्वर्गजात, स्वर्ग में उत्पन्न; (स्त्री.) इलायची।
दिवोल्का–(सं. स्त्री.) वह उल्का या चमकीला पिण्ड जो दिन में आकाश से गिरता हो।
दिवौकस–(सं. पुं.) देवता।
दिवौकस्–(सं. पुं.) देवता, चातक पक्षी; (वि.) स्वर्ग में रहनेवाला।
दिवौका–(हिं.पुं.) स्वर्ग में रहनेवाला देवता।
दिव्य–(सं. वि.) स्वर्गीय, स्वर्ग से संबंध रखनेवाला, आकाश-संबंधी, प्रकाशमान्, चमकीला, अति सुन्दर, अलौकिक, अच्छी तरह स्वच्छ किया हुआ; (पुं.) यम, गुग्गुल, लवंग, हरिचन्दन, गंगाजल लेकर शपथ, तत्त्ववेत्ता, वह जो स्वर्ग में उत्पन्न हो, यव, जौ, सुअर, दैवविद् एक प्रकार का आकाशीय उत्पात, स्वर्गीय अथवा अलौकिक नायक, अपराधी या निरपराधी सिद्ध करने के लिये एक प्रकार की प्राचीन परीक्षा; (स्त्री.) सतावर, ब्राह्मी, सफेद दूव, हर्रे; **–क**–(पुं.) एक प्रकार का सर्प; **–कवच**–(पुं.) देवताओं का दिया हुआ कवच, अंगरक्षक स्तोत्र विशप; **–क्रिया**–(स्त्री.) दिव्य द्वारा सत्य की परीक्षा करने की विधि; **–गंध**–(पुं.) मनोहर गन्ध, लवंग; **–गंधा**–(स्त्री.) बड़ी इलायची; **–गायक**–(पुं.) गन्धर्व; **–चक्षु**–(पुं.) ज्ञानचक्षु, सुन्दर आँख, उपनेत्र, वन्दर, एक प्रकार का सुगन्ध-द्रव्य; (वि.) अन्धा; **–चंदन**–(पुं.) हरिचन्दन; **–ता**–(स्त्री.) दिव्य का भाव, उत्तमता, सुन्दरता; **–दर्शी**–(वि.) अलौकिक तथ्यों को जाननेवाला; **–दोहद**–(पुं.) अभीष्ट-सिद्धि के लिये देवता को अर्पण किया हुआ पदार्थ; **–दृष्टि**–(स्त्री.) अलौकिक दृष्टि, दिव्य-चक्षु; **–धर्मी**–(वि.) सुशील, अच्छा; **–नगर**–(पुं.) ऐरावती नगरी; **–नदी**–(स्त्री.) आकाश-गङ्गा; **–नारी**–(स्त्री.) दिव्य स्त्री, अप्सरा; **–पुष्प**–(पुं.) सुन्दर फूल, कनेर; **–पुष्पिका**–(स्त्री.) लाल रंग का मदार; **–रत्न**–(पुं.) चिन्तामणि रत्न जो सब कामनाओं को पूर्ण करता है; **–रथ**–(पुं.) देवताओं का विमान; **–रस**–(पुं.) मीठा रस, पारा; **–लता**–(स्त्री.) दूर्वा लता; **–वस्त्र**–(पुं.) सूर्य का प्रकाश, सुन्दर वस्त्र; **–वाक्य**–(पुं.) देववाणी, आकाशवाणी; **–वाह**–(स्त्री.) वृषभानु नामक गोप की एक कन्या का नाम; **–श्रोत**–(पुं.) वह कान जिससे सब कुछ सुनाई पड़े; **–सरित्**–(स्त्री.) आकाश-गंगा; **–सार**–(पुं.) साखू का पेड़; **–सूरि**–(पुं.) रामानुज संप्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम–भूत, महत् भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कवीन्द्र, रामानुज और गोदा देवी–हैं; **–स्त्री**–(स्त्री.) देवांगना, अप्सरा।
दिव्यांगना–(सं. स्त्री.) अप्सरा।
दिव्यांशु–(सं. पुं.) दिवाकर, सूर्य।
दिव्या–(सं. स्त्री.) धात्री, धाय, शतावर, ब्राह्मी बूटी, बड़ा जीरा, सफेद दूब, हर्रे, दिव्य-नायिका।
दिव्यादिव्य–(सं. पुं.) वह नायक जिसमें देवता के भी गुण हों।
दिव्या-दिव्या–(सं. स्त्री.) वह नायिका जिसमें स्वर्गीय या अलौकिक गुण हों।
दिव्याश्रम–(सं.पुं.) पुण्याश्रम, पवित्र आश्रम।
दिव्यासन–(सं. पुं.) तन्त्र के अनुसार एक प्रकार का आसन।
दिव्यास्त्र–(सं.पुं.) देवताओं का दिया हुआ अस्त्र, मन्त्रों की शक्ति से चलानेवाला अस्त्र।

दिव्योदक–(सं. पुं.) वर्षा का पानी ।
दिव्यौषधि–(सं. पुं.) मैनसिल ।
दिश्–(सं. स्त्री.) दिक्, दिशा ।
दिशा–(सं. स्त्री.) ओर, क्षितिज वृत्त के चार कल्पित विभागों में से एक विभाग या विस्तार जिनको पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण कहते हैं; दो संलग्न दिशाओं के बीच के कोणों के नाम जो इस प्रकार हैं–पूर्व और दक्षिण के बीच के कोण का नाम अग्निकोण, दक्षिण और पश्चिम के बीच के कोण का नाम नैर्ऋत्य, पश्चिम और उत्तर के बीच के कोण का नाम वायव्य कोण तथा उत्तर और पूर्व के कोण का नाम ईशान कोण है, रुद्र की एक पत्नी का नाम, दस की संख्या; **–गज**–(पुं.) दिग्गज; **–चक्षु**–(पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; **–पाल**–(पुं.) देखें 'दिक्पाल'; **–भ्रम**–(पुं.) दिशा के विषय में भ्रम होना; **–शूल**–(पुं.) देखें 'दिक्शूल' ।
दिशि–(हिं. स्त्री.) देखें 'दिशा' ।
दिशेभ–(सं. पुं.) दिग्गज ।
दिशोदंड–(सं. पुं.) अनादर द्वारा दण्ड ।
दिश्य–(सं. वि.) दिशा सम्बन्धी ।
दिष्ट–(सं. पुं.) भाग्य, काल, वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम, दारुहल्दी; (वि.) दिखलाया हुआ, उपदेश किया हुआ, दिया हुआ ।
दिष्टबंधक–(हिं. पुं.) वह बंधक जिसमें महाजन को केवल रुपये का सूद मिलता है और बंधक रखी हुई वस्तु पर स्वत्वा अधिकार नहीं प्राप्त होता ।
दिष्टांत–(सं. पुं.) मरण, मृत्यु, मौत ।
दिष्टि–(सं. स्त्री.) हर्ष, उपदेश, कथन, उत्सव, भाग्य ।
दिष्णु–(सं. वि.) दाता, देनेवाला ।
दिसंतर–(हिं. पुं.) देशान्तर, विदेश, परदेश; (अव्य.) बहुत दूर तक ।
दिस–(हिं. स्त्री.) दिशा ।
दिसना–(हिं.क्रि.अ.) दिखना, दिखाई पड़ना ।
दिसा–(हिं.स्त्री.) देखें 'दिशा', मलत्याग ।
दिसादाह–(हिं. पुं.) देखें 'दिग्दाह' ।
दिसावर–(हिं. पुं.) देशान्तर, परदेश, दूसरा देश ।
दिसावरी–(हिं. वि.) विदेश से आया हुआ, बाहरी ।
दिसासूल–(हिं. पुं.) देखें 'दिक्शूल' ।
दिसि–(हिं. स्त्री.) दिशा ।
दिसिदुरद–(हिं. पुं.) देखें 'दिग्गज' ।
दिसिनायक–(हिं. पुं.) देखें 'दिक्पाल' ।
दिसिप–(हिं. पुं.) दिक्पाल, दिसिनायक ।
दिसिराज–(हिं. पुं.) देखें 'दिसिनायक' ।
दिसैया–(हिं.वि.) देखने या दिखलानेवाला ।
दिस्ता–(हिं. पुं.) देखो 'दस्ता' ।
दिस्सा–(हिं. स्त्री.) ओर ।
दिहंदा–(फा. वि.) देनेवाला ।
दिहली–(हिं. स्त्री.) देहली, दहलीज ।
दिहात–(हिं. स्त्री.) देखें 'देहात' ।
दिहाती–(हिं.वि.) देखें 'देहाती', ग्रामीण ।
दिहातीपन–(हिं.पुं.) देहातीपन, ग्रामीणता ।
दीअट–(हिं. स्त्री.) देखें 'दीयट' ।
दीआ–(हिं. पुं.) देखें 'दीया' ।
दीक–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष ।
दीक्षक–(सं. वि.) दीक्षा देनेवाला, उपदेश देनेवाला, शिक्षक ।
दीक्षण–(सं. पुं.) दीक्षा देने की क्रिया ।
दीक्षणीय–(सं. वि.) दीक्षा-संस्कार के योग्य वस्तु. (व्यक्ति, विषय आदि) ।
दीक्षांत–(सं. पुं.) उपाधि-वितरण समारोह ।
दीक्षा–(सं. स्त्री.) सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान, यज्ञकर्म, यजन, पूजन, नियम, उपनयन संस्कार जिसमें गुरु गायत्री-मन्त्र का उपदेश देता है, यज्ञोपवीत, गुरु से नियमपूर्वक मन्त्र ग्रहण करना, गुरुमन्त्र, शैक्षणिक उपाधि; **–गुरु**–(पुं.) वह जो दीक्षा देता हो, मन्त्र का उपदेश करनेवाला ; **–पाल**–(पुं.) दीक्षापति सोम ।
दीक्षित–(सं. वि.) जिसने आचार्य आदि से विधिपूर्वक दीक्षा ली हो, जिसने सोम यज्ञ आदि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो; (पुं.) ब्राह्मणों की एक उपाधि ।
दीक्षितायनी–(सं. स्त्री.) दीक्षित की स्त्री ।
दीखना–(हिं. क्रि. अ.) दृष्टिगोचर होना, दिखाई पड़ना ।
दीघी–(हिं.स्त्री.) दीर्घिका, तालाब, पोखरी ।
दीच्छा–(हिं. स्त्री.) देखें 'दीक्षा' ।
दीठ, दीठि–(हिं. स्त्री.) नेत्र की ज्योति, देखने की शक्ति, दृष्टिपात, दृक्पथ, आँख की ज्योति का प्रसार, देखने के लिये खुली हुई आँख, किसी अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि डालना जिसका बुरा प्रभाव पड़े, देखभाल, निरीक्षण, पहचान, कृपादृष्टि, संकल्प, उद्देश्य, आशा; (मुहा.) **–उतारना**–झाड़-फूंककर बुरी दृष्टि का प्रभाव हटाना; **– खा जाना**–टोक लग जाना; **–जलाना**–राई, नमक आदि का अग्नि में डालना; **–बंद**–(पुं.) इन्द्रजाल, जादू; **–बंदी**–(स्त्री.) जादू; **–वंत**–(वि.) जिसको दिखलाई पड़े ।
दीति–(सं. स्त्री.) दीप्ति, प्रकाश ।
दीदा–(हिं. पुं.) दृष्टि, नजर, निगाह ।
दीदार–(फा. पुं.) दर्शन, साक्षात्कार ।
दीदिव–(सं. पुं.) स्वर्ग, वृहस्पति, अन्न, खाने की वस्तु; (अव्य.) फिरफिर, बारंबार ।
दीदी–(हिं. स्त्री.) बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द ।
दीधिति–(सं.स्त्री.) सूर्य, चन्द्रमा आदि की किरण, अंगुल, अँगुली ; **–मान्**–(पुं) सूर्य ।
दीन–(सं.वि.) दुःखित, दरिद्र, उदास, हीन, कातर, सन्तप्त, क्षुब्ध, नम्र, विनीत ।
दीनता–(सं. स्त्री.) दरिद्रता, नम्रता ।
दीनताई–(हिं. स्त्री.) दीनता, विनीत भाव ।
दीनत्व–(सं. पुं.) दीनता ।
दीनदयालु–(सं. वि.) दुखियों पर दया करनवाला, (पुं.) परमेश्वर का एक नाम ।
दीनबंधु–(सं. पुं.) वह जो दुःखियों की सहायता करता है, ईश्वर का एक नाम ।
दीनसाधक–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
दीना–(सं.स्त्री.) मूसा, चुहिया; (वि. स्त्री) दरिद्रा ।
दीनानाथ–(सं. पुं.) दुःखियों का रक्षक, परमेश्वर ।
दीनार–(सं. पुं.) सोने का आभूषण, सुवर्णमुद्रा, निष्क की तौल, सोने की मोहर, आठ रत्ती की तौल ।
दीनारी–(हिं. पुं.) लोहारों का ठप्पा ।
दीपंकर–(सं. पुं.) बुद्ध का एक अवतार ।
दीप–(सं. पुं.) जलती हुई बत्ती, दीया, दस मात्राओं का एक छन्द, शिरोमणि; (हिं. पुं.) देख 'द्वीप' ।
दीपक–(सं. पुं.) एक वाक्यालंकार जिसमें प्रस्तुत (वर्णनीय) और अप्रस्तुत (अवर्णनीय) विषय का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा जिसमें अनेक कार्यों का करनेवाला एक ही होता है, संगीत के छः रागों में एक राग, एक ताल का नाम, दीया, श्येन पक्षी, अजवाइन, केसर, एक प्रकार की अग्नि-क्रीड़ा; (वि.) प्रकाश फैलानेवाला, पाचन शक्ति को तीव्र करनेवाला, उत्तेजक; **–माला**–(स्त्री.) दस अक्षरों का एक छन्द, दीपक अलंकार का एक भेद; **–वृक्ष**–(पुं.) एक प्रकार का बड़ा दीवट जिसमें दिए रखने के लिये अनेक शाखाएँ होती हैं ; **–सुत**–(पुं.) कज्जल, काजल ।
दीपकलिका, दीपकली–(सं. स्त्री.) दिया की टेम ।
दीपकाल–(सं. पुं.) सन्ध्या समय, दीया

जलाने का समय।
दीपकिट्ट–(सं. पुं.) कज्जल, काजल।
दीपकूपी, दीपखोरी–(सं. स्त्री.) दीये की वत्ती।
दीपकावृत्ति–(सं. पुं.) दीपक अलंकार का एक भेद।
दीपत(ति)–(हिं.स्त्री.)कान्ति,शोभा,कीर्ति।
दीपदान–(सं. पुं.) किसी देवता के सामने दीपक जलाने का कार्य, कार्तिक के महीने में राधा-दामोदर के सामने दीपमालाएँ जलाने का काम।
दीपदानी–(हिं. स्त्री.) घी में बोरी हुई वत्ती रखने की डिबिया।
दीपध्वज–(सं. पुं.) कज्जल, काजल।
दीपन–(सं. पुं.) कुंकुम, केसर, प्याज,एक प्रकार का शाक, कसौंदा, मंत्र के संस्कारों का एक भेद, प्रज्वलित करने का काम, आवेग उत्पन्न करना, क्षुधा को तीव्र करना, उत्तेजन; (वि.) दीपन करनेवाला, भूख वढ़ानेवाला।
दीपना–(हिं. क्रि. अ., स.) प्रकाशित होना, चमकना, जगमगाना, चमकाना।
दीपनी–(सं. स्त्री.) मेथी, अजवाइन पाठा, ककड़ी।
दीपनीय–(सं. वि.) दीपन करने योग्य।
दीपपादप–(सं. पुं.) दीपवृक्ष, दीवट।
दीपपुष्प–(सं. पुं.) चम्पा का फूल।
दीपभाजन–(सं. पुं.) दीपपात्र, दीवट।
दीपमाला–(सं. स्त्री.) जलते हुए दीपकों की पंक्ति।
दीपमालिका–(सं. स्त्री.) जलते हुए दीपकों की पंक्ति, दीवाली।
दीपमाली–(हिं. स्त्री.) दीवाली।
दीपवत्–(सं. वि.) जिसके घर में दिये जलते हों, दीप जैसा।
दीपवृक्ष–(सं.पुं.)दीवट, दीयट, दीपाधार।
दीपशत्रु–(सं. पुं.) पतंग, फतिंगा।
दीपशिखा–(सं.स्त्री.)काजल,दिये की टेम।
दीपशृंखला–(सं. स्त्री.)जलते हुए दीपकों की पंक्ति।
दीपसुत–(सं. पुं.) कज्जल, काजल।
दीपान्वित–(सं. वि.) दीपयुक्त।
दीपान्विता–(सं. स्त्री.) कार्तिक मास की अमावस्या, दीवाली।
दीपावती–(सं.स्त्री.)एक रागिनी का नाम।
दीपावली–(सं. स्त्री.) दीपकों की पंक्ति, दीवाली।
दीपिका–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम; (वि.स्त्री.) दीपन करने वाली, उजाला फैलानेवाली।
दीपित–(सं. वि.) प्रकाशित, प्रज्वलित, चमकता हुआ, उत्तेजित।
दीपोत्सव–(सं.पुं.) दीपावली, दीवाली।
दीप्त–(सं. वि.) प्रज्वलित, जलता हुआ, चमकता हुआ, जगमगाता हुआ, उज्ज्वल, सफेद, प्रकाशमय; (पुं.) सुवर्ण, हींग, नीबू, सिंह, नाक का एक रोग; **–कंस**–(पुं.) शुद्ध काँसा धातु; **–क**–(पुं.) सोना; **–किरण**–(पुं.) सूर्य, अर्क वृक्ष; **–कीर्ति**–(वि.) जिसका यश दूर तक फैला हो; (पुं.) कार्तिकेय; **–जिह्वा**–(स्त्री.) शृगाली, सियारिन; **–पिंगल**–(पुं.) सिंह, शर; **–मूर्ति**–(पुं.) जो मूर्ति वहुत सफेद हो, विष्णु; **–रस**–(पुं.) केंचुआ; **–लोचन**–(पुं.) विडाल,विल्ली; **–लौह**–(पु.) तपाया हुआ लाल लोहा, काँसा; **–वर्ण**–(वि.) जिसका रंग सोने के समान चमकता हो; (पुं.) कार्तिकेय; **–शक्ति**–(पुं.) देखें 'दीप्तवर्ण'।
दीप्तांग–(सं. वि.) जिसका अंग चमकता हो; (पुं.) मयूर, मोर।
दीप्तांशु–(सं. पुं.) सूर्य, अर्क-वृक्ष।
दीप्ता–(सं. स्त्री.) ज्योतिष्मती लता; (वि. स्त्री.) चमकती हुई।
दीप्ताक्ष–(सं. वि.) जिसकी आँखें चमकीली हों; (पुं.) विडाल, विल्ली।
दीप्ताग्नि–(सं. पुं.) अगस्त्य मुनि।
दीप्ति–(सं. पुं.) द्युति, प्रकाश, उजाला, प्रभा, चमक, कान्ति, छवि, शोभा, ज्ञान का प्रकाश, लौह, लाक्षा, एक विश्वदेव का नाम; **–मान्**–(वि.) दीप्तियुक्त, चमकता हुआ, शोभायुक्त, कान्तियुक्त; (पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न थे।
दीप्तोपल–(सं. पुं.) सूर्यकान्त मणि।
दीप्य–(सं. पुं.) अजवाइन, जीरा, रुद्रजटा; (वि.) जो दीपन के योग्य हो।
दीप्यक–(सं. पुं.) अजवाइन, अजमोदा, लाल चीता, रुद्रजटा, कुंकुम, केसर, तगर, नीबू का पेड़, श्येन पक्षी।
दीप्यका–(सं. स्त्री.) अजवाइन।
दीप्यमान–(सं. वि.) प्रज्वलित, चमकता हुआ।
दीप्या–(सं.स्त्री.) पिण्डखजूर, अजवाइन।
दीमक–(फा. स्त्री.) चींटी की तरह का सफेद कीड़ा जो कागज, लकड़ी आदि पदार्थ वहुत शीघ्र चाट जाता है,वल्मीक।
दीयट–(हिं. पुं.) देखें 'दीवट'।
दीयमान–(सं. वि.) जो देने योग्य हो।
दीया–(हिं. पुं.) वह वत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है, दीपक; (स्त्री.) वह पात्र जिसमें तेल डालकर वत्ती जलाई जाती है; (मुहा.) **–ठंढा करना**–दीपक वुताना; **(किसी के घर का) –ठंढा होना**–किसी के मरने के कारण परिवार में अंधकार छा जाना; **–वढ़ाना**–दीया वुझाना; **–वत्ती करना**–दीपक जलाने का प्रवंध करना; **–लेकर ढूंढ़ना**–चारों ओर व्यग्र होकर किसी वस्तु को ढूँढ़ना।
दीयासलाई–(हिं.स्त्री.) वह सींक जिसके छोर पर गंधकयुक्त मसाला लगा होता है और जो रगड़ने से जल उठती है।
दीर्घ–(सं. वि.) आयत, लंबा, वड़ा; (पुं.) एक प्रकार का साल का पेड़, ऊँट, नरकट, ज्योतिष में सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक राशियाँ, द्विमात्रा-वर्ण अर्थात् वह वर्ण जिसका उच्चारण खींचकर होता है; यथा–आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ और औ, संगीत में दो मात्राओं का स्वर; **–कंटक**–(पुं.) ववूल का पेड़; **–कंठ**–(पुं.) वगुला, एक दानव का नाम; (वि.) जिसकी गरदन लंवी हो; **–कंठक**–(पुं.) वगुला; **–कंदक**–(पुं.) मालाकन्द, मूली; **–कंदिका**–(स्त्री.) तालमूली, मूसली; **–कंधर**–(वि.) जिसकी गरदन लंवी हो; (पुं.) वगुला पक्षी; **–कणा**–(स्त्री.) सफेद जीरा; **–कर्ण**–(वि.) जिसके कान लंवे हों; **–कांड**–(पुं.) एक प्रकार की घास; **–काय**–(वि.) लंवे-चौड़ शरीरवाला; **–काल**–(पुं.) अनेक दिन; **–कील**–(पुं.) अंकोल का वृक्ष; **–कुल्या**–(स्त्री.) गजपिप्पली; **–कूरक**–(पुं.) एक प्रकार का वढ़िया धान; **–केश**–(पुं.) भालू; (वि.) जिसके वाल लंवे हों; **–कोशिका**–(स्त्री.) शुक्ति, सुतुही; **–गति**–(पुं.) ऊँट; (वि.) लंवा डग मारनेवाला; **–गमन**–(पुं.) तीव्र गति; **–ग्रंथि**–(स्त्री.) गजपिप्पली, गजपीपल; **–ग्रीव**–(वि.) जिसकी गरदन लंवी हो; (पुं.) ऊँट; **–घाटिका**–(पुं.) ऊँट, वकुला; **–च्छद**–(पुं.) इक्षु, ऊख; (वि.) जिसके पत्ते लंवे हों; **–जंघ**–(पुं.) ऊँट, वकुला, (वि.) जिसकी जाँघें लंवी हों; **–जिह्व**–(पुं.) सर्प; एक राक्षस का नाम; (वि.) जिसकी जीभ लंवी हो; **–जिह्वा**–(स्त्री.) एक राक्षसी जिसको इन्द्रने मारा था, कार्तिकेय की एक

अनुचरी; –जिह्वी–(पुं.) कुक्कुर, कुत्ता; –जीवी–(वि.) बहुत दिनों तक जीनेवाला; –तंतु–(पुं.) लंबा तागा; –तमा–(पुं.) उपथ्य के पुत्र का नाम, (उनकी स्त्री का नाम ममता था। वे जन्मान्ध थे।); –तरु–(पुं.) ताड़ का वृक्ष; –ता–(स्त्री.) लंबाई; –तिमिषा–(स्त्री.) खीरा ककड़ी; –तुंडा– (स्त्री.) छछूंदरी; –तृण–(पुं.) लंबी घास; –दंड–(पुं.) रेंड़ का वृक्ष, ताड़ का पेड़; –दंडी–(स्त्री). गोरखमुंडी; – दर्शिता – (स्त्री.) बहुदर्शिता, दूरदर्शिता; –दर्शी–(पुं.) वह जो सब बातों का परिणाम सोच लेता है, पंडित, भालू, गिद्ध; –दृष्टि–(पुं.) वह जो दूर तक की बात सोचता हो, पण्डित; –द्रुम–(स्त्री.) सेमल का वृक्ष; –नाद–(पुं.) शंख, तीव्र स्वर; –नाल–(पुं.) ज्वार, गोंदला घास; –नास–(वि.) जिसकी नाक लंबी हो; –निःश्वास–(पुं.) लबी साँस जो दुःख या शोक के आवेग में ली जाती है; –निद्रा–(स्त्री.) बहुत देर तक रहनेवाली नींद, मृत्यु; –निस्वन– (पुं.) शंख; –पक्ष–(पुं.) कलिंग पक्षी; (वि.) जिसके डैने लंबे हों; –पत्र–(पुं.) लाल प्याज, एक प्रकार का कुश, एक प्रकार की ऊख; –पत्रक, –पत्रिक–(पुं.) लहसुन, रेंड़ी, बेंत का वृक्ष, ताड़ का वृक्ष, समुद्रफल; –पत्रा–(पुं.) सरिवन, केतकी, मजीठ; –पत्रिका–(स्त्री.) सफेद बच, घीकुआर, पुनर्नवा, शालपर्णी, सरिवन; –पत्री–(पुं.) खिरनी का पेड़; –पर्ण –(वि.) जिसके पत्ते लंबे हों; –पर्णी –(स्त्री.) पिठवन का पेड़; –पल्लव–(पुं.) सन का पौधा, लंबा पत्ता; –पाद –(पुं.) सारस पक्षी, ताड़ का वृक्ष; सुपारी का वृक्ष; (वि.) लंबी टाँगोंवाला, –पृष्ठ– (पुं.) सर्प, साँप; –दीर्घप्रज्ञ–(वि.) दूरदर्शी; –फल–(पुं.) अमलतास; –फलक–(पुं.) अगस्त्य का वृक्ष; –फला–(स्त्री.) अंगूर की लता; –फलिका–(स्त्री.) मेंढ़ा सिंगी की लता, तीता कद्दू, की अंगूर की लता; –बाहु–(पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम; (वि.) जिसकी भुजा लम्बी हो; –भुज–(पुं.) देखें 'दीर्घबाहु'; –मारुत–(पुं.) हस्ती, हाथी; –मुख–(पुं.) एक यक्ष का नाम; (वि.) जिसका मुख लम्बा हो; –मल–(पुं.) एक प्रकार की लता, जवासा, बेल का वृक्ष; –मूल, –मूलक (पुं.) बड़ी मूली या मुरई; –मूला–(स्त्री.) शालपर्णी, सरिवन; –मूलिका–(स्त्री.) जवासा, येवासक; –मूली–(सं. स्त्री.) देखें 'दीर्घमूलिका'; –यज्ञ–(वि.) जिसने बहुत काल तक यज्ञ किया हो; –रंगा–(स्त्री.) हरिद्रा, हलदी; –रत–(पुं.) कुक्कुर, कुत्ता; –रद–(पुं.) शूकर, सूअर; (वि.) जिसके दाँत लम्बे हों; –रसन–(पुं.) सर्प, साँप; –रागा–(स्त्री.) हरिद्रा, हलदी; –रात्र–(पुं.) अधिक समय, चिरकाल; –राव–(वि.) तेजस्वर से चिल्लानेवाला; –रोगी–(वि.) बहुत दिनों का रोगी; –रोम–(पुं.) भाल; (वि.) बड़े-बड़े बालोंवाला; –लोचन–(वि.) बड़ी-बड़ी आँखोंवाला; (पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, लम्बी आँख; –वंश–(पुं.) नरकट, बड़ा कुल; (वि.) जो प्राचीन वंश से उत्पन्न हो; –वक्त्र–(पुं.) हस्ती, हाथी; (वि.) लंबा मुखवाला; –वच्छिका–(स्त्री.) कुम्भीर, घड़ियाल; –वल्ली– (स्त्री.) महेन्द्रवारुणी लता; –वृक्ष– (पुं.) साखू का पेड़, ताड़ का पेड़; –वृंत–(पुं.) लता वृक्ष, सोनापाठा; –शर–(पुं.) जुआर, जोंधरी; –शाख–(पुं.) साल का वृक्ष; –शूक–(पुं.) एक प्रकार का धान; –श्मश्रु–(वि.) बड़ी दाढ़ीवाला; –श्रवा–(पुं.) दीर्घतमा ऋषि के एक पुत्र का नाम, लंबा कान; –श्रुत–(वि.) जो दूर तक सुनाई पड़े, जिसका नाम दूर तक प्रसिद्ध हो; –सत्र–(पुं.) यज्ञ जो बहुत दिनों में समाप्त हो; –सूत्र–(वि.) देख 'दीर्घसूत्री'; दीर्घसूत्रता–(स्त्री.) प्रत्येक कर्म में विलंब करने का अभ्यास; –सूत्री–(वि.) विलंब करनेवाला; –स्वर–(पुं.) वह स्वर जिसमें दो मात्राएँ हों।

दीर्घाकार–(सं. वि.) बड़े आकारवाला।

दीर्घाकृति–(सं. वि.) देखें 'दीर्घाकार'।

दीर्घायु–(सं. वि.) बहुत दिनों तक जीनेवाला, दीर्घजीवी।

दीर्घारण्य–(सं. पुं.) निविड़ वन, घना जंगल।

दीर्घालर्क–(सं.पुं.) सफेद मंदार का वृक्ष।

दीर्घास्य–(सं. पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम, हाथी, पश्चिमोत्तर प्रदेश; (वि.) बड़ा मुखवाला।

दीर्घाहन्–(सं. पुं.) ग्रीष्म काल।

दीर्घिका–(सं.स्त्री.) छोटा तालाब, बावली।

दीर्घोच्चारण–(सं.पुं.) गुरु या दीर्घ उच्चारण।

दीवट–(हिं. स्त्री.) दीया रखने का धातु या लकड़ी का बना हुआ आधार।

दीवान–(फा.पुं.) राजा, बादशाह, नवाब आदि का सभा-भवन, मंत्री, प्रधानमन्त्री, वजीर; –आम–(पुं.) बादशाह, राजा आदि का वह दीवान जो सर्वसाधारण के लिए खुला हो; –खास–(पुं.) वह दीवान जिसमें विशिष्ट लोग ही प्रवेश पा सकें।

दीवानगी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दीवानापन'।

दीवाना–(फा. वि.) विक्षिप्त, पागल, सनकी; –पन–(पुं.) पागलपन, सनक।

दीवानी–(फा. स्त्री.) वह अदालत या कचहरी जिसमें धन-संबंधी या आर्थिक विवादों का निर्णय होता है।

दीवार–(हिं.स्त्री.) मिट्टी, ईंट आदि का बना हुआ घेरा, भीत।

दीवाल–(हिं. स्त्री.) देखें 'दीवार'।

दीवाला–(हिं. पुं.) देख 'दिवाला'।

दीवाली–(हिं. स्त्री.) एक उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या के दिन होता है जिसमें सन्ध्या के समय घर में तथा घर के बाहर जलते हुए दीपकों की पंक्तियाँ रखी जाती हैं तथा लक्ष्मी का पूजन होता है, इस दिन रात्रि में लोग जुआ खेलते हैं।

दीवि–(सं. पुं.) नीलकण्ठ नामक पक्षी।

दीसना–(हिं. क्रि.अ.) दृष्टिगोचर होना, दिखाई पड़ना।

दीह–(हिं. वि.) दीर्घ, लंबा, बड़ा।

दुंका–(हिं. पुं.) छोटा कण, दाना।

दुंगरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का मोटा वस्त्र।

दुंद–(हिं. पुं.) युग्म, जोड़ा, दो मनुष्यों में होनेवाला युद्ध या झगड़ा, उत्पात, ऊधम, उपद्रव, दुन्दुभी, नगाड़ा।

दुंदुभि–(सं. स्त्री.) नगाड़ा, डंका, धौंसा।

दुंदुभी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दुंदुभि'।

दुंबा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मेंड़ा।

दुःख–(सं.पुं.) संकट, व्याधि, रोग, व्यथा, कष्ट, पीड़ा, मानसिक क्लेश, खेद; (मुहा.) –उठाना या भोगना–कष्ट सहना; –पहुँचाना–कष्ट देना; –बँटाना–सहानुभूति प्रकट करना; –भुगतना–

संकट के दिन बिताना; -कर-(सं.) कष्ट पहुँचानेवाला; -कोद्रवा-(स्त्री.) एक प्रकार का मसूर; -ग्राम-(पुं.) दुःखपूर्ण ससार, दुःखों का समुदाय; -जात- (वि.) दुःख से उत्पन्न, दुःखमय; -जीवी-(वि.) कष्ट से जीवन बितानेवाला; -ता- (स्त्री.) दुःख का भाव, दुःखत्व; -त्रय-(पुं.) आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक—ये तीन प्रकार के दुःख; -द-(वि.) दुःखदायी, क्लेश पहुँचानेवाला; -दग्ध-(वि.) कष्ट में पड़ा हुआ; -दर्शन-(पुं.) गृध्र, गिद्ध; -दाता-(पुं.) क्लेश पहुँचानेवाला व्यक्ति; -दायक, -दायी-(वि.) क्लेश देनेवाला; -दोह्या-(स्त्री.) वह गाय जो कठिनता से दुही जा सके; -निवह-(वि.) अत्यन्त कष्टकारक; -प्रद-(वि.) कष्ट देनेवाला; -बहुल-(वि.) क्लेश से भरा हुआ; -भाग-(वि.) दुःख भोगनेवाला, -भाषित-(वि.) कष्ट से व्यक्त किया हुआ; -भोग-(पुं.) कष्ट या दुःख सहना; -मय-(वि.) क्लेश से भरा हुआ; -लभ्य-(वि.) दुःसाध्य, जो कठिनता से मिल सके; -लोक-(पुं.) वह लोक जहाँ दुःख भोगना पड़े, यह संसार; -वर्धन-(पुं.) कान की जड़ में होनेवाला एक रोग; -शील-(वि.) जो सर्वदा दुःख भोगता हो; -संचार-(पुं.) कष्ट से समय बिताना; -सागर-(पुं.) दुःख का समुद्र, अत्यधिक क्लेश, बहुत दुःख; -साध्य-(वि.) दुःख से होने योग्य, जिसका करना कठिन हो; -हरा-(स्त्री.) दुःख का नाश करनेवाली दुर्गा।

दुःखांत-(सं. पुं.) दुःख का अन्त, क्लेश की समाप्ति; (वि.) (नाटक आदि) जिसके अन्त में दुःख का वर्णन हो।

दुःखाकर-(सं. पुं.) दुःख की खान रूपी संसार; (वि.) कष्ट पहुँचानेवाला।

दुःखाचार-(सं.वि.) दुःस्वभाव, दुःशासन।

दुःखान्वित-(सं. वि.) दुःखयुक्त, जिसको कष्ट हो।

दुःखायतन-(सं. पुं.) कष्टमय संसार।

दुःखार्त-(सं. वि.) दुःखपीड़ित, कष्ट से व्याकुल।

दुःखित-(सं. वि.) जिसको दुःख हो।

दुःखिनी-(सं. वि. स्त्री.) जो दुखिया हो।

दुःखी-(सं. वि.) क्लेशित, पीड़ित, जो क्लेश में हो।

दुःशकुन-(सं. पुं.) बुरा शकुन।

दुःशला-(सं. स्त्री.) राजा धृतराष्ट्र की एक मात्र कन्या जो गान्धारी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जयद्रथ से व्याही थी।

दुःशासन-(सं. वि.) जिस पर शासन करना कठिन हो, जो किसी की बात को न माने; (पुं.) धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक का नाम जो गान्धारी के गर्भ से उत्पन्न थे, (वह दुर्योधन के मन्त्री थे। कौरव-पाण्डवों में युद्ध के वे ही कारण थे। उनका स्वभाव बड़ा क्रूर था। जब पाण्डव सब कुछ जुए में हार गये तब उन्होंने द्रौपदी को सभा में लाकर उसके वस्त्र खींचकर उसे नग्न करने की चेष्टा की थी।)

दुःशील-(सं. वि.) दुष्ट शीलवाला, बुरे स्वभाव का; -ता-(स्त्री.) दुष्टता, अविनय।

दुःशोध-(सं. वि.) जिसका शोधन या सुधार कठिनता से हो।

दुःश्रव-(सं. वि.) जिसके सुनने से दुःख उत्पन्न हो; (पुं.) दुश्रव या कर्कश शब्दों के प्रयोग से उत्पन्न काव्य का एक दोष।

दुःसंकल्प-(सं. पुं.) दुष्ट विचार।

दुःसंग-(सं. पुं.) कुसंग।

दुःसंधान-(सं. पुं.) काव्य का एक रस जिसमें एक तो मेल की बात कहता है और दूसरा विगाड़ की।

दुःसह-(सं. वि.) दुःख द्वारा सहनीय, जिसका सहना कठिन हो; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुःसहा-(सं.स्त्री.) नागदमनी नामक लता।

दुःसाध-(हिं. वि.) देखें 'दुःसाध्य'।

दुःसाध्य-(सं. वि.) जिसका सहन करना कठिन हो, जिसका उपाय कठिन हो।

दुःसाधी-(सं. वि.) दुष्ट साधक; (पुं.) द्वारपाल।

दुःसाहस-(सं. पुं.) अनुचित साहस।

दुःसाहसिक-(सं. वि.) जिसके लिए साहस करना बुरा हो।

दुःसाहसी-(सं.वि.) व्यर्थका साहस करनेवाला

दुःसुप्त-(सं. वि.) बुरे सपने से युक्त।

दुःस्त्री-(सं. स्त्री.) दुष्ट स्त्री।

दुःस्थ-(सं. वि.) जिसकी स्थिति बुरी हो, मूर्ख, लोभी, दरिद्र।

दुःस्थित-(सं.वि.) दुःख में पड़ा हुआ, दरिद्र।

दुःस्थिति-(सं.स्त्री.) दुर्दशा, बुरी अवस्था।

दुःस्पर्श-(सं. वि.) जिसका छूना कठिन हो; (स्त्री.) केंवाच, भटकटैया।

दुःस्फोट-(सं.पुं.) एक प्राचीन शस्त्र।

दुःस्वप्न-(सं.पुं.) अशुभसूचक स्वप्न, ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता हो।

दुःस्वभाव-(सं. पुं.) दुःशीलता, बुरा स्वभाव; (वि.) बुरे स्वभाव का, नीच।

दु-(हिं. वि.) 'दो' शब्द का छोटा रूप जो समस्त-पदों के पहिले जोड़ा जाता है।

दुअन्नी-(हिं. स्त्री.) दो आने का सिक्का या वजन।

दुआ-(हिं. पुं.) एक प्रकार का गले में पहिनने का आभूषण।

दुआ-(अ. स्त्री.) ईश्वर से माँगना, प्रार्थना, आशीर्वाद; (मुहा.) -लगना-किसी का आशीर्वाद सफल होना।

दुआदस-(हिं. वि.) देखें 'द्वादश'।

दुआर-(हिं. पुं.) द्वार।

दुआरी-(हिं. स्त्री.) छोटा दरवाजा।

दुआला-(हिं. पुं.) छींट छापने का लकड़ी का बेलन।

दुआली-(हिं. स्त्री.) वह आरा जिसको दो आदमी चलाते हैं।

दुइ-(हिं. वि.) दो संख्या का, दो।

दुइज-(हिं. स्त्री.) द्वितीया, किसी पक्ष की दूसरी तिथि; (मुहा.) -का चाँद-द्वितीया का चन्द्रमा, थोड़ी देर तक रहनेवाली वस्तु।

दुऊ-(हिं. वि.) दोनों।

दुकड़हा-(हिं. वि.) जिसका दाम दो दमड़ी हो, टुकड़ गदा, तुच्छ, नीच।

दुकड़ा-(हिं.पुं.) एक में लगी हुई दो वस्तुएँ एक पैसे का चौथा अंश, छदाम; (वि.) जिसमें दो वस्तुएँ साथ साथ लगी हों, जोड़ा।

दुकड़ी-(हिं. वि.) जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो; (स्त्री.) वह ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियाँ हों, चारपाई की वह बुनावट जिसमें दो-दो बाध एक साथ बिने जाते हों, दो घोड़ों की गाड़ी, दो कड़ियों की लगाम।

दुकना-(हिं. क्रि. अ.) छिपना।

दुकान-(फा. स्त्री.) सौदा बेचने और खरीदने का स्थान।

दुकानदार-(फा. पुं.) दुकान का मालिक या स्वामी।

दुकानदारी-(फा.स्त्री.) दुकानदार का पेशा।

दुकाल-(हिं.पुं.) दुष्काल, अकाल, वह समय जब अन्न कठिनता से प्राप्त हो, दुर्भिक्ष।

दुकुल्ली-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा हुआ प्राचीन बाजा।

दुकूल-(सं. पुं.) सन या पाट के रेशों का बना हुआ वस्त्र, महीन वस्त्र, कपड़ा।

दुकेला-(हिं. वि.) जो अकेला न हो, जिसके साथ और भी एक साथी हो; अकेला-दुकेला-जो अकेला हो अथवा

जिसके साथ एक या दो आदमी हों।
दुकेले–(हिं. अव्य.) दूसरे व्यक्ति को साथ लिये हुए।
दुक्कड़–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाजा जो तबले की तरह का होता है और शहनाई के साथ बजाया जाता है, दो नावों की जोड़ी जो एक में एक जुटी होती है।
दुक्का–(हिं. वि.) जो अकेला न हो, जिसके साथ और भी कोई मनुष्य हो, जो एक साथ दो हो, जोड़ा; (पुं.) देखें 'दुक्की'; **दुक्का-तिक्का**–दो या तीन के संग में; **इक्का-दुक्का**–अकेला अथवा जिसके साथ और एक व्यक्ति हो।
दुक्की–(हिं. स्त्री.) ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियाँ हों।
दुखंडा–(हिं. वि.) दो–तल्ला, जिस (मकान) में दो खण्ड हों।
दुख–(हिं. पुं.) देखें 'दु:ख'।
दुखड़ा–(हिं. पुं.) दु:ख का वृत्तान्त, दु:ख की कथा, विपत्ति का वर्णन, कष्ट; (मुहा.)–**रोना**–अपने दु:ख की स्थिति किसी से कहना।
दुखदाई–(हिं. वि.) दु:खदाई, कष्ट देनेवाला।
दुखदुंद–(हिं. पुं.) दु:ख का उपद्रव।
दुखना–(हिं. क्रि.अ.) पीड़ायुक्त होना, दर्द या पीड़ा होना।
दुखरा–(हिं. पुं.) देखें 'दुखड़ा'।
दुखवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'दुखाना'।
दुखहाय–(हिं.वि.) देखें 'दु:खित', दुखी।
दुखाना–(हिं. क्रि. स.) कष्ट पहुँचाना, पीड़ा देना, व्यथित करना, पके घाव इत्यादि को स्पर्श करना जिससे पीड़ा हो; (मुहा.) **जी दुखाना**–मानसिक कष्ट देना।
दुखारा, दुखारी–(हिं. वि.) दु:ख-पीड़ित।
दुखित–(हिं. वि.) देखें 'दु:खित', पीड़ित।
दुखिया–(हिं.वि.,पुं.) (वह) जिसको किसी प्रकार का कष्ट या दु:ख हो, दु:खी, पीड़ित।
दुखियारा–(हिं. वि., पुं.) (वह) जिसको किसी बात का दु:ख हो, दुखिया, जिसको कोई शारीरिक कष्ट हो, रोगी।
दुखी–(हिं. वि.) जिसको कोई कष्ट या दु:ख हो, जिसको किसी प्रकार का मानसिक कष्ट हुआ हो, जिसके मन में क्लेश हो, रोगग्रस्त, रोगी।
दुखीला–(हिं. वि.) दु:खपूर्ण, जो दु:ख भोगता हो।
दुखौहाँ–(हिं.वि.) दु:खदायी, कष्ट देनेवाला।
दुगई–(हिं. स्त्री.) ओसारा।
दुगड़ा–(हिं.पुं.) दुनाली बन्दूक, दोहरी गोली।
दुगदुगी–(हिं. स्त्री.) गरदन के नीचे और छाती के ऊपर का गहरा भाग, धुकधुकी, गले में पहिनने का एक गहना जो छाती के ऊपर लटकता रहता है।
दुगना–(हिं. वि.) द्विगुण, दूना।
दुगुण–(हिं. वि.) देखें 'द्विगुण', दूना।
दुगुन–(हिं. वि.) देखें 'दुगुण', द्विगुण, दूना।
दुग्ग–(हिं. पुं.) देखें 'दुर्ग'।
दुग्ध–(सं. पुं.) स्त्री जाति के स्तनों से निकलनेवाला सफेद तरल द्रव जिससे उनके बच्चों का शैशवावस्था में पालन-पोषण होता है; (वि.) भरा हुआ, दुहा हुआ; –**कूपिका**–(स्त्री.) एक प्रकार का पकवान; –**तालीय**–(पुं.) दूध का फन, मलाई; –**तुंबी**–(हिं.स्त्री.) सफेद कद्दू; –**त्रय**–(पुं.) गाय, भैंस और बकरी का दूध; –**दा**–(वि. स्त्री.) दूध देनेवाली; (स्त्री.) एक प्रकार की घास; –**परिमापक-यंत्र**–(पुं.) वह यन्त्र जिससे दूध में मिलाय हुए पानी का पता चलता है; –**पाचन**– (पुं.) दूध गरम करने का पात्र; –**पाषाण**–(पुं.) एक प्रकार का वृक्ष; –**पोष्य**–(वि.) जो केवल दूध पिलाकर पाला जाता हो; (पुं.) शिशु, बच्चा; –**फेन**–(पुं.) दूध का फेन; –**फेनी**–(स्त्री.) एक प्रकार का छोटा पौधा; –**बंधन**–(पुं.) दूध दूहने के लिये गाय को बाँधना; –**बीजा**–(स्त्री.) ज्वार, जोंधरी; –**समुद्र**–(पुं.) देख 'क्षीरसमुद्र'।
दुग्धांबुधि–(सं. पुं.) क्षीरसागर।
दुग्धाक्ष–(सं.पुं.) एक प्रकार का सफेद रत्न।
दुग्धाग्र–(सं. पुं.) दूध पर की मलाई।
दुग्धाब्धि–(सं.पुं.) क्षीरसागर, दुग्ध समुद्र।
दुग्धाब्धितनया–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी।
दुग्धाश्मन्–(सं.पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
दुग्धि, दुग्धी–(सं. स्त्री.) दुद्धी नाम की घास; (वि.) दूधवाला, जिसमें दूध हो।
दुग्धिका–(सं. स्त्री.) दुद्धी नामक घास, खिरनी।
दुग्धिनिका–(सं. स्त्री.) लाल अपामार्ग, चिचड़ा।
दुघ–(सं. वि.) जो दूहता हो, दूहनेवाला।
दुघड़िया–(हिं. वि.) दो घड़ियों का (मुहूर्त); –**मुहूर्त**–(पुं.) दो-दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त जो यात्रा आदि आवश्यकताओं के लिये स्थिर किया जाता है।
दुघरी–(हिं. स्त्री.) दुघड़िया मुहूर्त।
दुचल्ला–(हिं.पुं.) दोनों ओर ढारवाली छत।
दुचित–(हिं. वि.) अस्थिर-चित्त, जिसका मन एक बात पर स्थिर न हो।
दुचिता–(हिं. वि.) चिन्तित।
दुचितई, दुचिताई–(हिं. स्त्री.) चित्त की अस्थिरता, आशंका, चिन्ता, द्विविधा, खटका, शंका।
दुचित्ता–(हिं. वि.) जिसका मन अस्थिर हो, अस्थिरचित्त, चिन्तित, जो खटके में हो, जो सन्देह में हो।
दुच्छक–(सं.पुं.) कपूरकचरी, तालीसपत्र।
दुच्छदान्–(सं. पुं.) पागल कुत्ता।
दुज–(हिं. पुं.) देखें 'द्विज'।
दुजड़–(हिं. स्त्री.) तलवार, खड्ग।
दुजड़ी–(हिं. स्त्री.) कटार।
दुजन्मा–(हिं. पुं.) देख 'द्विजन्मा'।
दुजपति–(हिं. पुं.) देखें 'द्विजपति'।
दुजाति–(हिं. पुं.) द्विज।
दुजानु–(हिं. अव्य.) दोनों जाँघों के बल।
दुजीह–(हिं.पुं.) देखें 'द्विजिह्व', सर्प, साँप।
दुजेश–(हिं. पुं.) देखें 'द्विजेश'।
दुटूक, दुटूक–(हिं. वि.) खण्डित, दो टुकड़ों में किया हुआ।
दुडि–(सं. स्त्री.) कच्छपी, कछुई।
दुत–(सं. वि.) पीड़ित, जिसको कष्ट हो; (हिं. अव्य.) तिरस्कारसूचक शब्द जो किसी को हटाने के लिये प्रयुक्त होता है, घृणासूचक शब्द।
दुतकार–(हिं. स्त्री.) धिक्कार, तिरस्कार, फटकार।
दुतकारना–(हिं.क्रि.स.) तिरस्कार करना, धिक्कारना, दुत-दुत करके अपने पास से किसी को हटाना।
दुतारा–(हिं. पुं.) दो तार लगा हुआ एक प्रकार का बाजा जो अँगुली से बजाया जाता है।
दुति–(हिं. स्त्री.) द्युति, आभा, चमक।
दुतिमान–(हिं. वि.) देखें 'द्युतिमान'।
दुतिय–(हिं. वि.) देखें 'द्वितीय', दूसरा।
दुतिया–(हिं. स्त्री.) द्वितीया, पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।
दुतिवंत–(हिं. वि.) द्युतिमान्, चमकीला, आभायुक्त, सुन्दर, मनोहर।
दुथरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मछली।
दुदल–(हिं. वि.) द्विदल, जिसके टूटने पर दो बराबर टुकड़े हो जायें; (पुं.) दाल।
दुदलाना–(हिं. क्रि. स.) दुतकारना।
दुदहँड़ी–(हिं. स्त्री.) दूध रखने का मिट्टी का पात्र।

दुदामी—(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सूती कपड़ा।
दुदिला—(हिं. वि.) जो दुवधे में पड़ा हो, दुचित्ता, व्यग्र, घवड़ाया हुआ।
दुद्धी—(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की घास जो भूमि पर दूर तक फैलती है, खड़िया मिट्टी, सफेद मिट्टी, सारिवा लता, जंगली नील।
दुद्रुम—(सं. पुं.) हरा प्याज।
दुधपिठवा—(हिं.पुं.) एक प्रकारका पक्वान।
दुधमुख—(हिं.वि.) दूध पीता हुआ, दुधमुँहाँ।
दुधमुँहा—(हिं. वि.) देखें 'दुधमुख'।
दुधहँड़ी, दुधहाँड़ी—(हिं. स्त्री.) दूध रखने या गरम करने का मिट्टी का छोटा पात्र।
दुधाँड़ी—(हिं. स्त्री.) देखें 'दुधहँड़ी'।
दुधार—(हिं. वि., स्त्री.) दूध देनेवाली; (वि., पुं.) जिसमें दूध हो।
दुधारा—(हिं. वि.) जिसमें दोनों ओर धार हो; (पुं.) एक प्रकार की चौड़ी तलवार, खाँड़ा।
दुधारी—(हिं.वि.स्त्री.) दूध देनेवाली, जो दूध देती हो, जिसमें दोनों ओर धार हो; (स्त्री.) एक प्रकार की कटार।
दुधारू—(हिं. वि.) देखें 'दुधार'।
दुधिया—(हिं. वि.) दूध मिला हुआ, जिसमें से दूध निकलता है, सफेद रंग का, दूध की तरह सफेद; (स्त्री.) दुद्धी नाम की घास, एक प्रकार की पशुओं को खिलाने की चरी, खड़िया मिट्टी, एक प्रकार का विष; **—कंजई**—(पुं.) एक प्रकार का रंग; **—पत्थर**—(पुं.) एक प्रकार का कोमल पत्थर जिसकी कटोरी आदि बनती है, एक प्रकार का रत्न; **—विष**—(पुं.) कलियारी जाति का एक स्थावर विष।
दुधली—(हिं. स्त्री.) देखें 'दुद्धी'।
दुधल—(हिं.वि.स्त्री.) जो बहुत दूध देती हो।
दुध्र—(सं. वि.) हिंसक, मारनेवाला, प्रेरक, प्रवल, जिसको दवाना कठिन हो; **—कृत**—(वि.) बुरा काम करनेवाला।
दुनस्ना, दुनवना—(हिं.क्रि.अ.) लचककर दोहरा हो जाना।
दुनाली—(हिं.वि.) जिसमें दो नालियाँ लगी हों; (स्त्री.) दुनाली बंदूक जिसमें एक साथ दो गोलियाँ भरी जा सकें।
दुनिया—(अ.स्त्री.) जगत् संसार, संसार का प्रपंच, झंझट आदि, संसार के लोग, लोक
दुनियाई—(हिं. वि.) सांसारिक।
दुनियादार—(फा. पुं.) संसार के जीवन-संग्राम में लगा हुआ व्यक्ति, गृहस्थ।
दुनियादारी—(फा. स्त्री.) दुनिया का कर्तव्य, धर्म, आचरण आदि, गृहस्थी, स्वार्थसाधन।
दुनियासाज—(फा. वि.) स्वार्थसाधक, अपना मतलव चापलूसी आदि के द्वारा निकालनेवाला।
दुनी—(हिं. स्त्री.) संसार, दुनिया।
दुपटा, दुपट्टा—(हिं.पुं.) दो पाटों की चद्दर, वह लम्वा वस्त्र जो कन्धों पर से नीचे ओढ़ा जाता है; (मुहा.)**—तानकर सोना**—निश्चिन्त होकर निद्रा लेना।
दुपट्टी—(हिं. स्त्री.) छोटा दुपट्टा।
दुपद—(हिं. पुं.) देखें 'द्विपद'।
दुपर्दी—(हिं. स्त्री.) मिरजई।
दुपलिया—(हिं. वि.) दो पल्लोंवाली।
दुपहर, दुपहरी—(हिं.पुं.स्त्री.) देखें 'दोपहर'।
दुपहरिया—(हिं. स्त्री.) मध्याह्न, दोपहर, एक प्रकार का पौधा जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं।
दुफसली—(हिं.वि.) दोनों फसलों में (अर्थात् रवी और खरीफ दोनों में) उत्पन्न होनेवाला; (वि.) सन्दिग्ध, अनिश्चित।
दुबगली—(हिं. स्त्री.) मलखम्भ का एक व्यायाम।
दुबड़ा—(हिं. पुं.) एक प्रकार की चौपायों के खाने की घास।
दुबधा—(हिं. स्त्री.) चित्त की अस्थिरता, अनिश्चय, आगा-पीछा, असमंजस, चिन्ता, संशय, सन्देह, खटका।
दुबरा—(हिं. वि.) देखें 'दुवला'।
दुबराना—(हिं. क्रि. अ.) दुर्वल होना दुवला होना।
दुबला—(हिं.वि.) दुर्वल, कृश, क्षीण शरीर का, अशक्त; **—पन**—(पुं.) दुर्वलता, कृशता।
दुबाइन—(हिं. स्त्री.) दूबे की स्त्री।
दुबागा—(हिं. पुं.) सन की मोटी डोरी।
दुबारा—(हिं. अव्य.) देखें 'दोवारा'।
दुबाहिया—(हिं. वि.) वह योद्धा जो दोनों हाथों से तलवार चलाता हो।
दुबिद—(हिं. पुं.) देखें 'द्विविध'।
दुबिध, दुबिधा—(हिं.स्त्री.) देखें 'दुवधा'।
दुभाखी—(हिं. पुं.) देख 'द्विभाषी'।
दुभाषिया, दुभाषी—(हिं. पुं.) वह जो दो भाषाओं को जानता हो, वह जो बातचीत करनेवाले दो मनुष्यों की भिन्न भाषाओं को जानता है और एक का अभिप्राय दूसरे को उसी वक्त वता देता है।
दुमंजिला—(फा. वि.) दो-खंडों या मंजिलों वाला (मकान)।
दुम—(फा. स्त्री.) पूंछ, पुच्छ; (मुहा.) **—दबाकर भागना**—डर के मारे भाग जाना।
दुमची—(फा. स्त्री.) घोड़े के साज में दुम के नीचे रहनेवाला पट्टा।
दुमदार—(फा.वि.) जिसके पूंछ हो, पूंछवाला।
दुमन—(हिं. पुं.) अप्रसन्न, खिन्न।
दुमाता—(हिं.वि.) सौतेली माता, वुरी माँ।
दुमाला—(हिं. पुं.) पाश, फन्दा।
दुमुँहा—(हिं. वि.) दो मुखवाला।
दुरंगा—(हिं. वि.) जिसमें दो रंग हों, दो रंगोंका, दो तरह का, दो पक्षों का अवलम्वन करनेवाला।
दुरंगी—(हिं. स्त्री.) द्विविधा, कभी एक पक्ष का और कभी दूसरे पक्ष का अवलम्बन; (वि., स्त्री.) दुरंगा।
दुरंत—(सं. वि.) जो पहिले अच्छा जान पड़े परन्तु जिसका अन्त बुरा हो, (सभी व्यसन दुरंत होते हैं), दुरंद।
दुरंतक—(सं. पुं.) शिव, महादेव।
दुरंद—(हिं. वि.) अपार, दुर्गम कठिन, भारी, अशुभ, बुरे परिणामवाला, दुस्तर, दुष्ट।
दुरंधा—(हिं. वि.) दो छेदोंवाला, जिसमें आर-पार छिद्र हो।
दुर—(हिं. अव्य.) तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये इस शब्द का व्यवहार होता है, इसका अर्थ है 'दूर हो'; (मुहा.)**—दुर करना**—दुरदुराना, तिरस्कारपूर्वक हटाना।
दुरक्ष—(सं.पुं.) पासा, चौपड़, बुरी दृष्टि।
दुरजन—(हिं. वि.) देखें 'दुर्जन', दुष्ट।
दुरजोधन—(हिं. पुं.) देख 'दुर्योधन'।
दुरतिक्रम—(सं. वि.) अलंघनीय, जिसका अतिक्रमण न हो सके, अपार, प्रवल, जिसको कोई जीत न सके; (पुं.) विष्णु।
दुरत्यय—(सं. वि.) दुस्तर, जिसका पार पाना कठिन हो।
दुरद—(हिं. पुं.) देखें 'द्विरद'।
दुरदाम—(हिं. वि.) कष्ट-साध्य।
दुरदाल—(हिं. पुं.) द्विरद, हस्ती, हाथी।
दुरदिन—(हिं. पुं.) देखें 'दुर्दिन'।
दुरदुराना—(हिं. क्रि. स.) तिरस्कारपूर्वक हटाना या दूर करना, भगा देना।
दुरदृष्ट—(सं.पुं.) अदृष्ट, दुर्भाग्य, अभाग्य।
दुरद्यान—(सं. स्त्री.) बुरा भोजन।
दुरधिग, दुरधिगम (म्य)—(सं.वि.) कठिनता से मिलने योग्य, जिसका जानना कठिन हो।
दुरधिष्ठित—(सं.वि.) जो धीरे-धीरे किया जाय।
दुरधीत—(सं.वि.) जो ठीक तरह से अध्ययन न किया हुआ हो, जो पढ़ा गया हो परन्तु जिसका मर्म न समझा गया हो।

दुरध्यय–(सं.वि.) अध्ययन करने में अशक्य।
दुरध्यवसाय–(सं. पुं.) बुरा काम करने की चेष्टा।
दुरध्व–(सं. पुं.) कुपथ, कुमार्ग।
दुरना–(हिं. क्रि.अ.) आँखों के सामने से हटना, आड़ में होना, दिखलाई न पड़ना, छिप जाना।
दुरनुपालन–(सं. वि.) जिसका पालन करना कठिन हो।
दुरनुबोध–(सं. वि.) जिसका याद करना कठिन हो।
दुरनुष्ठित–(सं. वि.) जो दुःख से किया जाय।
दुरनुष्ठेय–(सं. वि.) जिसका करना कठिन हो, दुर्गम, कठिन।
दुरन्वय–(सं. वि.) जो कठिनता से अन्वय किया जाय।
दुरन्वेष्य–(सं. वि.) जिसका अनुसन्धान कष्ट से हो सके।
दुरपचार–(सं.वि.) जो विरक्त नहीं किया जा सकता हो, जिसका हटाना कठिन हो।
दुरपदी–(हिं. स्त्री.) देखें 'द्रौपदी'।
दुरबार–(हिं. वि.) अटल।
दुरबास–(हिं. पुं.) दुर्गन्ध, बुरी महक।
दुरबीन–(हिं. पुं.) देखें 'दूरबीन'।
दुरभिग्रह–(सं. पुं.) अपामार्ग, चिचड़ा, जवासा, केंवाच; (वि.) जो कठिनता से प्राप्त हो।
दुरभिज्ञेय–(सं. वि.) जिसका जानना कठिन हो।
दुरभिसंधि–(सं. स्त्री.) बुरे अभिप्राय से मिल-जुलकर किया हुआ परामश।
दुरभव–(हिं. पुं.) दुर्भाव, मनोमालिन्य, मनमोटाव।
दुरमुस–(हिं. पुं.) गदा के आकार का यन्त्र जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।
दुरवगत–(सं. वि.) जो कठिनता से जाना जा सके।
दुरवगम्य–(सं. वि.) दुर्ज्ञेय, जिसका जानना कठिन हो।
दुरवग्राह्य–(सं. वि.) जो कठिनता से ग्रहण किया जा सके।
दुरवबोध–(सं. वि.) दुर्बोध, जो कठिनता से जाना जा सके।
दुरवरोह–(सं. वि.) जो कठिनता से चढ़ा जा सके।
दुरववद–(सं. वि.) जिससे सहज में कटु वाक्य न बोला जाय।
दुरवस्थ–(सं. वि.) जो दुर्दशा में हो, जिसकी दशा अच्छी न हो।
दुरवस्था–(सं.स्त्री.) बुरी दशा, हीन दशा।
दुरवाप–(सं. वि.) दुष्प्राप्य, कठिनता से प्राप्त होने योग्य।
दुरवेक्षित–(सं.पुं.) मन्द दृष्टि, बुरी दृष्टि।
दुरस–(हिं.पुं.) सहोदर भ्राता, सगा भाई।
दुरह्न–(सं. पुं.) दुर्दिन, बुरा दिन।
दुराउ–(हिं. पुं.) देख 'दुराव'।
दुराक–(सं.पुं.) एक म्लेच्छ जाति का नाम।
दुराकांक्ष–(सं. वि.) जो बुरे विषयों की आशा करता हो।
दुराकांक्षा–(सं. स्त्री.) बुरे विषयों की अभिलाषा।
दुराकृति–(सं. स्त्री.) बुरी आकृति, बुरा स्वरूप।
दुराक्रंद–(सं. पुं.) बड़े दुःख से रोना।
दुराक्रम–(सं. वि.) जिस पर बड़ी कठिनता से आक्रमण किया जाय।
दुराक्रम्य–(सं. वि.) जिस पर सहज में चढ़ाई न की जा सके।
दुराक्रोश–(सं. पुं.) दुःख का विलाप।
दुरागत–(सं.वि.) दुःखित, जो बड़े कष्ट में हो।
दुरागम–(सं. पुं.) बुरी रीति से प्राप्त करना।
दुरागमन–(हिं. पुं.) देखें 'द्विरागमन'।
दुरागौन–(हिं. पुं.) वधू का दूसरी बार ससुराल को जाना, द्विरागमन।
दुराग्रह–(सं. पुं.) किसी विषय में बुरी तरह से हठ करना, अपने मत के ठीक सिद्ध न होने पर भी हठ करके उस पर अड़ा रहना।
दुराग्रही–(हिं. वि.) जो उचित-अनुचित का विचार किये बिना अपने मत पर अड़ा रहता है, हठी।
दुराचरण–(सं. पुं.) खोटा चाल-चलन, बुरा व्यवहार।
दुराचार–(सं. पुं.) बुरा आचरण, बुरा चाल-चलन।
दुराचारी–(हिं. वि.) बुरे चाल-चलन का।
दुराज–(हिं. पुं.) दुष्ट शासन, वह राज्य जिसमें दो राजा शासन करते हों।
दुराजी–(हिं. वि.) दो राजाओं का, जिसमें दो राजा हों।
दुराढ्यसभव–(सं. पुं.) जो बहुत कष्ट से बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में पहुँचा हो।
दुरात्मता–(सं. स्त्री.) दुरात्मा का कार्य या भाव।
दुरात्मा–(सं.वि.) नीच प्रकृति का, खोटा।
दुरादान–(सं. वि.) जो कष्ट से आदान या धारण किया जाय।
दुरादुरी–(हिं. पुं.) गोपन, छिपाव; –करके–(अव्य) गुप्त रूप से, छिपे हुए।
दुराधन–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुराधर–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दुराधर्ष–(सं. पुं.) सफद सरसों, विष्णु; (वि.) जिसका दमन करना कठिन हो, अभिमानी, प्रवल; –ता–(स्त्री.) प्रवलता, प्रचण्डता।
दुराधर्षा–(सं. स्त्री.) कुटुम्बिनी वृक्ष।
दुराधार–(सं. वि.) जो कठिनता से सहारा पा सके, चिन्तनीय; (पुं.) शिव, महादेव।
दुराधि–(सं. वि.) क्लेशजनक।
दुराधी–(सं.वि.) दुष्ट प्रकृति या आचरण का।
दुरानम–(सं. वि.) जो बड़ी कठिनता से सन्तुष्ट किया जा सके।
दुराना–(हिं.क्रि.अ.,स.) दूर होना, हटना, छिपना, हटाना, दूर करना, छोड़ना, छिपाना।
दुराप–(सं. वि.) दुष्प्राप्य, कठिनता से मिलने योग्य।
दुरापन–(सं.वि.) देखें 'दुराप', दुष्प्राप्य।
दुरापादान–(सं. वि.) जो कठिनता से जा सके।
दुरापूर–(सं. वि.) जो कठिनता से पूरा किया जा सके।
दुराबाध–(सं. वि.) जो पीड़ा देने योग्य न हो; (पुं.) शिव, महादेव
दुराम्नाय–(सं. वि.) जो बड़ी कठिनता से वश में लाया जा सके।
दुराप्य–(सं. वि.) दुष्प्राप्य, जो कठिनता से प्राप्त हो सके।
दुरारक्ष्य–(सं. वि.) जो कठिनता से बचाया जा सके।
दुराराध्य–((सं.वि.) दुःख द्वारा आराधनीय, जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो; (पुं.) विष्णु।
दुरारुह–(सं. पुं.) बेल क. वृक्ष, नारियल का पेड़।
दुरारुहा–(सं. स्त्री.) खजूर का पेड़, ताड़ का पेड़, बांस।
दुरारोह, दुरारोहा–(सं.पुं.,स्त्री.) गिरगिट, ताड़ या खजूर का पेड़; (वि.) जिस पर चढ़ना कठिन हो।
दुरालंभ–(स वि.) जो कठिनता से मिले।
दुरालभ–(सं. वि.) दुर्लभ, जिसका मिलना कठिन हो।
दुरालभा–(सं. स्त्री.) एक कँटीला पौधा, जवासा, हिंगुआ, कपास, रूई का पेट।
दुरालभ्य–(स. वि.) जिसका मिलना कठिन हो।
दुरालाप–(सं,पु) कटु वचन, गाली गलौज।

दुरालोक–(सं.वि.) बहुत सफेद, (पुं.) चमक।
दुराव–(हि. पुं.) किसी से बात गुप्त रखने का भाव, कपट, छल।
दुरावत–(सं. वि.) जो कठिनता से घुमाया जा सके।
दुरावह–(सं.वि.) जिसका लाना कठिन हो।
दुराव्य–(सं. पुं.) दुष्ट मति, बुरा विचार।
दुराश–(सं.पुं.) जिसको अच्छी आशा न हो।
दुराशय–(सं. पुं.) दुष्ट विचार; (वि.) जिसका अभिप्राय बुरा हो।
दुराशा–(सं. स्त्री.) व्यर्थ की आशा।
दुरास–(सं. वि.) अजय, जिसको कोई जीत न सके।
दुरासा–(हि. स्त्री.) देखें 'दुराशा'।
दुरासद–(सं. वि.) दुष्प्राप्य, जिसका मिलना कठिन हो।
दुरासन–(सं. पुं.) वह स्थान जो रहने योग्य न हो।
दुराहर–(सं.वि.) जिसके खाने में कष्ट हो।
दुराहा–(सं. वि.) अभागा।
दुरित–(सं. पुं.) पातक, पाप, छोटा पाप; (वि.) पापी; –जय–(पुं) पाप का क्षय, पाप का घटना; –दमनी–(स्त्री.) शमी वृक्ष; (वि.स्त्री.) पाप का नाश करनेवाली।
दुरितारि–(सं. वि.) पाप का नाश करनेवाली।
दुरियाना–(हि.क्रि.स.) दूर करना, हटाना, तिरस्कार के साथ भगाना, दुरदुराना।
दुरिष्ट–(सं. पुं.) मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ, पातक, पाप।
दुरिष्टि–(सं. स्त्री.) अभिचार के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ।
दुरिष्ठ–(सं. वि.) खोटा, निकृष्ट।
दुरीश–(सं. पुं.) निन्दित प्रभु या स्वामी।
दुरीशणा–(सं. स्त्री.) शाप, दुराशय।
दुरुक्त–(सं. पुं.) कटु वचन, अपशब्द।
दुरुक्ति–(सं.स्त्री.) कटु वाक्य, कठोर-वचन।
दुरुच्चार–(सं. वि.) अश्लील, लज्जाजनक, फूहड़।
दुरुच्चाय–(सं. वि.) जो सहज में उच्चारण न किया जा सके।
दुरुच्छेद–(सं. वि.) जो कठिनाई से उखाड़ा जा सके।
दुरुच्छेद्य–(सं. वि.) जो सहज में न उखड़ सके।
दुरुत्तर–(सं. वि.) दुस्तर, जिसको पार करना कठिन हो, अनुत्तर. जिसका उत्तर देना कठिन हो; (पुं.) बुरा उत्तर या जवाब।
दुरुत्तोल्य–(सं. वि.) जो कठिनता से उठाया जा सके।
दुरुत्सह–(सं. वि.) दुःसह, न सहन करने योग्य।
दुरुदय–(सं.वि.) जो अच्छी तरह न दिखाई पड़े, भयंकर।
दुरुदाहर–(सं. वि.) जिसका उदाहरण सहज में न दिया जा सके।
दुरुद्वह–(सं. वि.) दुःसह।
दुरुपक्रम–(स. वि.) दुर्गम, जहाँ जाना कठिन हो।
दुरुपचार–(सं. वि.) बुरा व्यवहार।
दुरुपयोग–(सं. पुं.) अनुपयुक्त व्यवहार, बुरा उपयोग।
दुरुपलक्ष–(सं.वि.) जिसको देखते न बने।
दुरुपसर्पी–(सं.वि.) अकस्मात् आ जानेवाला।
दुरुपस्थान–(सं. वि.) दुष्प्राप्य, जिसका मिलना कठिन हो।
दुरुपाय–(सं. पुं.) बुरा विचार या उपाय।
दुरुम–(हि. पुं.) एक प्रकार का पतले दाने का गेहूँ।
दुरुस्त–(फा. वि.) जो अच्छी या व्यवहारयोग्य दशा में हो, जो फूटा-टूटा न हो, जो त्रुटिरहित हो, ठीक।
दुरुस्ती–(फा. स्त्री.) दुरुस्त करने की क्रिया, सुधारना।
दुरूह–(सं. वि.) जो जल्दी से विचार में न आ सके, गूढ़, कठिन, जटिल।
दुरोक–(सं. वि.) जो स्थान रहने योग्य न हो।
दुरोदर–(सं. पुं.) पण, दाँव, पासा; (पुं.) जुआ खेलनेवाला।
दुरोह–(सं. पुं.) नागकेशर का वृक्ष।
दुरौंधा–(हि. पुं.) द्वार के ऊपर लगाई हुई लकड़ी।
दुर्–(सं. अव्य.) क्रिया या संज्ञा के साथ लगाने से इस शब्द का अर्थ–दुष्ट, बुरा, निषेध, दुःख, संकट आदि होता है।
दुर्गंध–(सं. स्त्री.) बुरी गन्ध; (वि.) बुरी गन्ध का; –ता–(स्त्री.) दुर्गन्ध का भाव।
दुर्गंधी–(सं. वि.) जिसकी गन्ध बुरी हो।
दुर्ग–(सं. पुं.) कोट, गढ़, एक असुर का नाम जिसका वध करने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा।
दुर्गकर्म–(सं.पुं.) कोट या गढ़ बनाने का काम।
दुर्गकारक–(सं.पुं.) गढ़ बनानेवाला।
दुर्गत–(सं. वि.) दुर्दशाग्रस्त, जिसकी अवस्था बुरी हो, दरिद्र; (स्त्री.) देखें 'दुर्गति'; –ता–(स्त्री.) दरिद्रता।
दुर्गतरणी–(सं. स्त्री.) एक देवी का नाम।
दुर्गति–(सं. स्त्री.) नरक, बुरी स्थिति या अवस्था, दुर्दशा, कठिन मार्ग; (वि.) दीन; –नाशिनी–(स्त्री.) दुर्गा देवी।
दुर्गपति–(सं. पुं.) दुर्गरक्षक, वह अधिकारी जिस पर किले की रक्षा का भार सौंपा गया हो।
दुर्गपाल–(सं.पुं.) दुर्ग का रक्षक, किलेदार।
दुर्गपुष्पी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष।
दुर्गम–(सं. वि.) जहाँ पहुँचना कठिन हो, दुर्ज्ञेय, जिसका जानना कठिन हो, दुस्तर, विकट; (पुं.) दुर्ग, विष्णु, एक असुर का नाम, वन, जंगल, कठिन अवस्था; –ता–(स्त्री.) दुर्गम होने का भाव।
दुर्गमनीय–(सं. वि.) जहाँ पर पहुँचना कठिन हो।
दुर्गरक्षक–(सं. पुं.) गढ़पति, किलेदार।
दुर्गलंघन–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट।
दुर्गसंचर–(सं. पुं.) गढ़ का मार्ग।
दुर्गसंस्कार–(सं. पुं.) गढ़ की मरम्मत।
दुर्गा–(सं. स्त्री.) आदि शक्ति, सृष्टि, स्थिति और लय करनेवाली आद्याशक्ति, (शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेय संहिता में अम्बिका देवी का उल्लेख मिलता है। वहाँ पर यह रुद्र की बहिन कही गई हैं। सायनाचार्य के मत से वेदोक्त दुर्गा की महापूजा शरत्काल में होती है। अनेक असुरों का वध करने के कारण इनके अनेक नाम हैं), नौ वर्ष की कन्या, श्यामा पक्षी, कौवाठोंठी, एक संकर रागिनी का नाम।
दुर्गाधिकारी, दुर्गाध्यक्ष–(सं.पुं.) दुर्ग का रक्षक।
दुर्गा-माहात्म्य–(सं. पुं.) देवी-माहात्म्य, भगवती की महिमा।
दुर्गावती–(सं. स्त्री.) चित्तौर के राणा साँगा की कन्या का नाम।
दुर्गाष्टमी–(सं. स्त्री.) आश्विन और चैत्र के शुक्ल पक्ष की अष्टमी।
दुर्गुण–(सं. पुं.) बुरा गुण, दोष, बुराई।
दुर्गेश–(सं. पुं.) दुर्ग का अध्यक्ष।
दुर्गोत्सव–(सं. पुं.) दुर्गापूजन का उत्सव जो आश्विन के नवरात्र में होता है।
दुर्ग्रह–(सं. वि.) जो कठिनता से पकड़ा जा सके, दुर्ज्ञेय, जो सहज में न समझा जा सके; (पुं.) अपामार्ग, चिचड़ा।
दुर्ग्राह्य–(सं. वि.) कठिनता से ग्रहण किये जाने योग्य।
दुर्घट–(सं. वि.) कठिनता से होने योग्य।

दुर्घटना–(सं. स्त्री.) अशुभ घटना, विपत्ति, बुरा संयोग, आपत् ।
दुर्घोष–(सं.पुं.) भालू, कटु वचन; (वि.) जो कर्कश वचन बोले ।
दुर्जन–(सं. पुं.) दुष्ट मनुष्य, खोटा आदमी; **–ता**–(स्त्री.) खोटापन, दुष्टता ।
दुर्जयंत–(सं. पुं.) एक प्राचीन राजा का नाम ।
दुर्जय–(सं. वि.) जिसको जीतना कठिन हो; (पु.) विष्णु, एक राक्षस का नाम ।
दुर्जर–(सं.वि.) जो कठिनता से पच सके ।
दुर्जात–(सं. वि.) जिसका जन्म बुरी तरह से हुआ हो, नीच, अभागा; (पुं.) व्यसन, संकट, कठिनता ।
दुर्जाति–(सं. वि.) निन्दित कुल का, अस्पश्य या नीच जाति का ।
दुर्जीव–(सं.वि.) दूसरे के दिये हुए अन्न पर निर्भर रहनेवाला; (पुं.) बुरा जीवन, दूसरे के अधीन जीवन ।
दुर्जेय–(सं. वि.) दुर्जय, जिसको जीतना कठिन हो ।
दुर्ज्ञेय–(सं. वि.) दुर्बोध, जो सहज में समझ में न आ सके ।
दुर्णय–(सं. पुं.) बुरी नीति या चाल; (वि.) बरी चालवाला ।
दुर्णश–(सं.वि.) जो कठिनाई से न हो सके ।
दुर्णीत–(सं. पुं.) देखें 'दुर्नीति' ।
दुर्दम–(सं. वि.) जो सहज म न जीता जा सके, प्रचण्ड; (पुं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम जो रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न थे ।
दुर्दमन–(सं. पुं.) राजा जनमेजय के वंश के एक राजा का नाम; (वि.) जिसका दमन करना कठिन हो ।
दुर्दमनीय–(सं. वि.) जो कठिनता से जीता जा सके, प्रचण्ड, प्रबल ।
दुर्दम्य–(सं. वि.) जो शीघ्र जीता न जा सके; (पुं.) गाय का बछवा ।
दुर्दर्श–(सं. वि.) जिसको देखना कठिन हो, जो भयंकर रूप का हो ।
दुर्दर्शन–(सं.पुं.) कौरवों के एक सेनापति का नाम; (वि.) जो जल्दी दिखाई न पड़े ।
दुर्दर्प–(सं.पु.) भिलावाँ, बुरा गर्व या घमंड ।
दुर्दशा–(सं. स्त्री.) बुरी अवस्था, बुरी दशा, खराब हालत, दुर्गति ।
दुर्दांत–(सं. वि.) जिसका दमन करना कठिन हो, प्रचण्ड, प्रबल; (पुं.) कलह, शिव, महादेव ।
दुर्दिन–(सं. पुं.) ऐसा दिन जब बादल छाये हों, घटा का अंधकार, वृष्टि, वर्षा, दूषित दिन, बुरा दिन, कष्ट का समय, दुर्दशा का दिन ।
दुर्दिवस–(सं.पुं.) दुर्दिन, बरसात का दिन ।
दुर्दुरूढ़–(सं. वि.) नास्तिक ।
दुर्दुहा–(सं. स्त्री.) जिसको दूहने में कठिनाई हो ।
दुर्द्यूत–(सं. पुं.) कपट द्यूत, छल से जुआ खेलना ।
दुर्दैव–(सं. पुं.) दुर्भाग्य, पाप, बुरा संयोग, दिनों का बुरा प्रभाव ।
दुर्दैववत्–(सं. वि.) अभागा ।
दुर्द्रुम–(सं.पुं.) पलाण्डु, प्याज ।
दुर्धर–(सं. पुं.) एक नरक का नाम, पारा, भिलावाँ, महिषासुर का एक सेनापति, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, विष्णु, रावण का सेनापति, एक राक्षस जिसको हनुमान ने मारा था; (वि.) कठिनता से होने योग्य, प्रचण्ड, प्रबल, दुर्ज्ञेय, जो सहज में समझ में न आ सके ।
दुर्धर्म–(सं. वि.) अधर्म-युक्त ।
दुर्धर्ष–(सं. वि.) जिसका दमन करना कठिन हो, प्रबल, प्रचण्ड; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
दुर्धर्षण–(सं. वि.) जो सहज म वश में न लाया जा सके ।
दुर्धर्षता–(सं. स्त्री.) दुर्धर्ष होने का भाव ।
दुर्धर्षा–(सं.स्त्री.) नागदौना, कनियारी वृक्ष ।
दुर्धार्य–(सं. वि.) जो जल्दी से समझ में न आ सके ।
दुर्धाव–(सं. वि.) जिसका संशोधन करना कठिन हो ।
दुर्धी–(सं. वि.) बुरी बुद्धि का ।
दुर्नय–(सं. पुं.) नीति विरुद्ध आचरण ।
दुर्नाद–(सं. पुं.) अप्रिय ध्वनि; (वि.) कर्कश शब्द करनेवाला ।
दुर्नामक–(सं. पुं.) अर्श रोग, बवासीर का रोग ।
दुर्नाम–(सं. पुं.) बुरा नाम, अपयश, सुतुही, सीप, दुष्ट वचन, गाली-गलौज ।
दुर्नामारि–(सं. पुं.) सूरन, जमीकन्द, एक कन्द जो अर्श का नाश करता है ।
दुर्नाम्नी–(सं. स्त्री.) शुक्ति, सीप ।
दुर्निग्रह–(सं. वि.) दुगम, जो शीघ्र वश में न आ सके ।
दुर्निमित्त–(सं.पुं.) अपशकुन, बुरा सगुन ।
दुर्निर्मित–(सं. वि.) जो बुरे विचार से बनाया गया हो ।
दुर्नियंता–(सं. वि.) जो बड़ी कठिनता से अधीन किया जा सके ।
दुर्निरीक्ष्य, दुर्नस्य–(सं. वि.) जिसको देखते न बने, कुरूप, भयंकर ।
दुर्निवर्त्य–(सं.वि.) जो कठिनता से किया जा सके ।
दुर्निवार–(सं. वि.) जो कठिनता से निवारित हो सके ।
दुर्निवार्य–(सं.वि.) जो जल्दी से निवारित न हो सके, जिसका होना प्राय: निश्चित हो ।
दुर्नीत–(सं. पुं.) बुरी नीति, कुचाल; (वि.) बुरी चालवाल ।
दुर्नीति–(सं.स्त्री.) आयुक्त आचरण, अन्याय ।
दुर्नृप–(सं. पुं.) अन्यायी राजा ।
दुर्बचन–(हि.पुं.) दुर्वचन, कुवाक्य, गाली ।
दुर्बद्ध–(सं. वि.) बुरी तरह से बँधा हुआ ।
दुर्बल–(सं. वि.) बलहीन, दुबला-पतला, कृश, शिथिल; **–ता**–(स्त्री.) कृशता, दुबलापन; **–त्व**–(पुं.) दुर्बलता, कमजोरी ।
दुर्बला–(सं.स्त्री.) जलसिरिस का पेड़ ।
दुर्बाल–(सं. वि.) गंजा, खल्वाट; (पुं.) घुँघराले बाल ।
दुर्बुद्धि–(सं. स्त्री.) दुर्मति, कुबुद्धि; (वि.) मन्द बुद्धिवाला, दुष्ट ।
दुर्बुध–(सं. वि.) बुरे चित्त का, दुष्ट ।
दुर्बोध–(सं. वि.) दुर्ज्ञेय, जो सहज में न समझा जा सके, गूढ़, कठिन, क्लिष्ट ।
दुर्बोध्य–(सं. वि.) जिसका बोध कठिनता से हो सके ।
दुर्ब्राह्मण–(सं. पुं.) निन्दित ब्राह्मण, जिसके तीन पीढ़ियों से ब्राह्मणत्व का लोप हो गया हो ।
दुर्भक्ष–(सं. वि.) जो जल्दी से खाया न जा सके, खाने में जो अच्छा न लगे; (पुं) दुर्भिक्ष का समय ।
दुर्भक्ष्य–(सं.वि.) जिसका खाना कठिन हो ।
दुर्भग–(सं. वि.) बुरे भाग्य का, अभागा ।
दुर्भगत्व–(सं. पुं.) दुर्भाग्य, अभाग्य ।
दुर्भगा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो अपने पति के स्नेह से रहित हो; (वि.स्त्री.) मन्द-भाग्या, अभागिन ।
दुर्भग्न–(सं.वि.) जो सहज में न टूट सके ।
दुर्भर–(सं. वि.) दुःसह, गुरु, भारी, जिसको उठाना कठिन हो ।
दुर्भागी–(सं.वि.) मन्द भाग्य का, अभागा ।
दुर्भाग्य–(सं. पुं.) मन्द भाग्य, पाप; (वि.) हतभाग्य, अभागा ।
दुर्भाव–(सं. पुं.) बुरा भाव, द्वेष, मनोमालिन्य, मन-मुटाव ।
दुर्भावना–(सं. स्त्री.) बुरी भावना, चिन्ता, अंदेशा, खटका ।
दुर्भाव्य–(सं.वि.) जिसकी भावना सहज में न हो सके ।

दुर्भाषित–(सं.पुं.) बुरा वचन; (वि.) कटु वचन बोलनेवाला।
दुर्भाषी–(सं.वि.) कटु वचन बोलनेवाला।
दुर्भिक्ष–(सं. पुं.) ऐसा काल जब भिक्षा या भोजन कठिनता से प्राप्त हो, अकाल।
दुर्भिच्छ–(हिं.पुं.) देखें 'दुर्भिक्ष', अकाल।
दुर्भिद–(सं.वि.) जो जल्दी से भेदा न जा सके, जिसके पार छेदना कठिन हो।
दुर्भिषज्य–(सं. वि.) जिसकी चिकित्सा सहज में न हो सके।
दुर्भृत्य–(सं.पुं.) दुष्ट भृत्य, बुरा नौकर।
दुर्भेद, दुर्भेद्य–(सं. वि.) जो सहज में भेदा या छेदा न जा सके।
दुर्भ्रातृ–(सं.पुं.) दुष्ट भ्राता, कपटी भाई।
दुर्मंगल–(सं.वि.) अशुभ, बुरा।
दुर्मंत्र, दुर्मंत्रणा–(सं.पुं.स्त्री.) बुरा परामर्श।
दुर्मंत्रित–(सं. वि.) जिसे बुरी मंत्रणा दी गई हो।
दुर्मंत्री–(सं. पुं.) कुमन्त्री, दुष्ट मन्त्री, वह मन्त्री जो राजा को बुरी मन्त्रणा दे।
दुर्मति–(सं.स्त्री.) दुर्बुद्धि; (वि.) जिसकी समझ ठीक न हो, दुष्ट, नीच।
दुर्मद–(सं. वि.) मद से चूर, अभिमान से भरा हुआ; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुर्मनस्–(सं. पुं.) बुरा मन या चित्त; (वि.) खिन्न, उदास, बुरे चित्त का।
दुर्मना–(सं. स्त्री.) शतावरी, सतावर।
दुर्मनायमान–(सं. वि.) चिन्तित, उदास।
दुर्मनुष्य–(सं. पुं.) दुष्ट मनुष्य, खोटा आदमी।
दुर्मंतु–(सं.वि.) जो दुष्ट समझा जाता हो।
दुर्मर–(सं. वि.) जिसकी मृत्यु बड़े कष्ट से हो।
दुर्मरण–(सं. पुं.) बुरी तरह से (बड़े कष्ट से) होनेवाली मृत्यु।
दुर्मरा–(सं.स्त्री.) सफेद दूब, दीर्घमूली।
दुर्मर्ष–(सं. वि.) जिसको सहन करना कठिन हो।
दुर्मर्षण–(सं. पुं.) वह जो कठिनाई से सहन किया जाय; (पुं.) विष्णु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुर्मर्षित–(सं. वि.) जो वैर का बदला लेने के उद्योग में हो।
दुर्मली–(सं. स्त्री.) देखें 'दुर्मल्लिका'।
दुर्मल्लिका–(सं. स्त्री.) दृश्य काव्य का एक भेद जिसमें हास्य रस प्रधान होता है और जो चार अंकों में समाप्त होता है।
दुर्मात्सर्य–(सं. पुं.) ईर्ष्या, डाह।
दुर्मायुध–(सं.वि.) संहारक शस्त्र फेंकनेवाला।
दुर्मित्र–(सं. पुं.) अमित्र, शत्रु; (वि.) जिसके दुष्ट मित्र हों।
दुर्मिल–(सं. पुं.) भरत के सात पुत्रों में से एक, एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।
दुर्मिलका–(सं.स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तेईस वर्ण होते ह।
दुर्मुख–(सं. पुं.) अश्व, घोड़ा, राम की सेना के एक वानर का नाम, महिषासुर का एक सेनापति, रामचन्द्र के एक गुप्तचर का नाम, एक नाग का नाम, शिव, महादेव, एक संवत्सर का नाम, गणेश का एक गण, वह घर जिसका द्वार उत्तर की ओर हो; (वि.) अप्रियवादी, कटु वचन बोलनेवाला।
दुर्मुखा–(सं. स्त्री.) सफेद घुंघची, श्वेत गुंजा।
दुर्मुस–(हिं. पुं.) लोहे या पत्थर का डंडा लगा हुआ गदा के आकार का एक यन्त्र जो मिट्टी या कंकड़ पीटने के काम में आता है, दुरमुस।
दुर्मुहूर्त–(सं. पुं.) बुरा मुहूर्त, बुरा समय।
दुर्मूल्य–(स. वि.) जिसका दाम अधिक हो, महँगा।
दुर्मेधस्–(सं. वि.) मन्द-बुद्धि।
दुर्मेधावी–(सं. वि.) देखें 'दुर्मेधस्'।
दुर्मैत्र–(सं. पुं.) दुष्ट बन्धु, बुरा मित्र।
दुर्मोका–(सं. स्त्री.) श्वेत गुंजा, सफेद घुंघची।
दुर्मोह–(सं. पुं.) काकतुण्डी, कौवाठोंठी।
दुर्मोहा–(सं.स्त्री.) सफेद या लाल घुंघची।
दुर्य–(सं. पुं.) घर के द्वार पर का खंभा।
दुर्यश–(सं. पुं.) अपयश, अपकीर्ति।
दुर्योग–(सं. पुं.) दुर्भाग्य-सूचक योग।
दुर्योध–(सं. वि.) युद्ध में स्थिर रहनेवाला; (पुं.) विकट योद्धा।
दुर्योधन–(सं. पुं.) कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र के सब से बड़े पुत्र, (यह महाभारत के युद्ध में प्रधान नायक तथा कौरव दल के नेता थे। इन्हीं के साथ जुआ खेलने पर तथा जुए में हारकर युधिष्ठिर ने अपना सारा राज्य गँवा दिया था। हारने पर युधिष्ठिर को अपने चारों भाइयों सहित बारह वर्ष तक वनवास करना पड़ा था तथा अर्जुन को एक वर्ष तक अज्ञातवास भी करना पड़ा था। यहाँ से लौट आने पर दुर्योधन ने पाण्डवों को राज्य देना अस्वीकार किया जिस कारण से महाभारत का युद्ध हुआ था।)
दुर्योनि–(सं.स्त्री.) म्लेच्छ या नीच जाति।
दुर्लंघन–(सं. वि.) जो सहज में लाँघा न जा सके।
दुर्लंघ्य–(सं. वि.) अलंघ्य, जो जल्दी से लाँघा न जा सके।
दुर्लक्षण–(सं. पुं.) अशुभ लक्षण।
दुर्लक्ष्य–(सं. वि.) अदृश्य, जो कठिनता से दिखाई पड़े; (पुं.) बुरा उद्दश्य।
दुर्ललिका–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
दुर्लभ–(सं. वि.) दुष्प्राप्य, जो कठिनता से मिल सके, अति प्रशस्त, अनोखा, प्रिय, प्यारा; (पुं.) विष्णु।
दुर्लभा–(सं. स्त्री.) सफेद भटकटैया, लाल जवासा।
दुर्ललित–(सं. पुं.) दुष्कर्म, पाप; (वि.) दुष्कर्म करनेवाला, चंचल, चपल।
दुर्लसित–(सं. पुं.) बुरी चेष्टा, बुरा काम।
दुर्लाभ–(सं. पुं.) दुःख द्वारा प्राप्त लाभ।
दुर्लेख्य–(सं. पुं.) निंदित लेख्यपत्र; (वि.) जिसकी लिखावट बुरी हो।
दुर्वच, दुर्वचन–(सं. पुं.) कटुवचन, गालीगलौज।
दुर्वराह–(सं. वि.) पाला हुआ शूकर।
दुर्वर्ण–(सं.पुं.) रजत, चाँदी, बुरा अक्षर; (वि.) नीच जाति का, बुरे रंग का।
दुर्वर्तु–(सं.वि.) जिसको हटाना कठिन हो।
दुर्वस–(सं.वि.) जहाँ रहने में बड़ा कष्ट हो।
दुर्वह–(सं. वि.) जिसको उठाकर ले जाना कठिन हो।
दुर्वाच्–(सं.स्त्री.) निन्दित वाक्य, दुर्वचन।
दुर्वाच्य–(सं. पुं.) अपकीर्ति, निन्दा।
दुर्वाद–(सं. पुं.) अपकीर्ति, निन्दा, स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वचन, अनुचित वचन।
दुर्वार–(सं. वि.) जिसका निवारण करना या हटाना कठिन हो।
दुर्वारण–(सं. वि.) जो सहज में रोका न जा सके; (पुं.) शिव, महादेव।
दुर्वारित–(सं. वि.) कष्ट से हटाया हुआ।
दुर्वार्ता–(सं. स्त्री.) बुरा समाचार।
दुर्वार्य–(सं.वि.) जो जल्दी से न रोका जा सके।
दुर्वासना–(सं. स्त्री.) बुरी वासना, बुरी आकांक्षा, वह कामना जो कभी पूरी न हो।
दुर्वासा–(सं. पुं.) एक बड़े धर्मनिष्ठ ऋषि जो अत्रि मुनि के पुत्र थे, (इनका स्वभाव बड़ा उग्र था।)
दुर्वाहित–(सं. वि.) जिसको उठाकर ले जाना कठिन हो।
दुर्विकत्थन–(स. वि.) बड़े अभिमान से कहा हुआ।

दुर्विगाह–(सं. वि.) जिसका थाह जल्दी न लग सके।
दुर्विगाह्य–(सं. वि.) जिसका थाह लगाना कठिन हो।
दुर्विचिन्त्य–(सं. वि.) जो जल्दी से सोचा न जा सके।
दुर्विज्ञान–(सं. वि.) जो कठिनता से जाना जा सके।
दुर्विज्ञेय–(सं. वि.) जिसका कठिनता से ज्ञान हो।
दुर्वितर्क्य–(सं. वि.) जिसका वितर्क या निश्चय करने में कठिनता हो।
दुर्विद–(सं.वि.) जिसको जानना कठिन हो।
दुर्विदग्ध–(सं. वि.) अहंकारी, अधजला।
दुर्विदग्धता–(सं.स्त्री.) विनय का अभाव।
दुर्विद्य–(सं. वि.) अशिक्षित, मूर्ख।
दुर्विध–(सं.वि.) दरिद्र, मूर्ख, खल, दुष्ट।
दुर्विधि–(सं. पुं.) कुनियम, बुरी नीति।
दुर्विनय–(सं. पुं.) अशिष्टाचार।
दुर्विनीत–(सं.वि.) अविनीत, अशिष्ट, उद्धत।
दुर्विनीति–(सं. स्त्री.) विनय का अभाव, अक्खड़पन।
दुर्विपाक–(सं. पुं.) बुरा परिणाम, बुरा फल, दुर्घटना, बुरा संयोग।
दुर्विभाग–(सं. पुं.) वह जिसका विभाग जल्दी से न हो सके।
दुर्विभाव्य–(सं. वि.) दुर्बोध, जिसका अनुमान न किया जा सके।
दुर्विभाष–(सं. पुं.) दुर्वाच्य, बुरा वचन।
दुर्विमोचन–(सं. वि.) जिसका छुटकारा पाना कठिन हो; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुर्विलसित–(सं.पुं.) दुष्कार्य, बुरा काम।
दुर्वक्ता–(सं.पुं.) कटु भाषण करनेवाला।
दुर्विवाह–(सं. पुं.) निन्दित स्त्री से विवाह करना।
दुर्विश–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
दुर्विषह–(सं. वि.) असह्य, जो अत्यन्त दुःख से सहा जा सके; (पुं.) शिव, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुर्विषह्य–(सं. वि.) अत्यन्त दुःख से सहने योग्य।
दुर्वृत्त–(सं. पुं.) निन्दित आचरण, बुरा व्यवहार; (पुं.) दुर्जन।
दुर्वृत्ति–(सं. स्त्री.) निन्दित आचरण, बुरा काम।
दुर्वद–(सं. वि.) दुष्प्राप्य, दुर्लभ।
दुर्व्यवस्था–(सं. स्त्री.) कुप्रबन्ध।
दुर्व्यवस्थापक–(सं.पुं.) कुप्रबंध करनेवाला।
दुर्व्यवहार–(सं. पुं.) दुष्ट आचरण, बुरा व्यवहार।
दुर्व्यसन–(सं. पुं.) बुरी टेव।
दुर्व्यसनी–(सं. वि.) जिसको बुरी लत लगी हो।
दुर्व्याहृत–(सं.वि.) जिसमें बुरे शब्दों का व्यवहार हो।
दुर्व्रत–(सं.पुं.) दुष्ट मनोरथ, बुरा आशय।
दुर्हण–(सं.वि.) जिसको मारना कठिन हो।
दुर्हल–(सं. वि.) कुरूप।
दुर्हित–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी।
दुर्हुत–(सं. पुं.) निन्दित होम।
दुर्हृद–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी।
दुर्हृदय–(सं. वि.) दुष्ट अन्तःकरण का, खोटा।
दुलकना–(हि.क्रि.अ.) अस्वीकार करना।
दुलकी–(हि. स्त्री.) घोड़े की वह चाल जिसमें वह कुछ उछलता हुआ पैरों को थोड़ा-थोड़ा उठाकर दौड़ता है।
दुलखना–(हि. क्रि. स.) बारंबार बतलाना या कहना, दुलकना।
दुलखी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का कृषि-फल को हानि पहुँचानेवाला कीड़ा।
दुलड़ा–(हि. वि.) दो लड़ों का।
दुलड़ी–(हि.वि., स्त्री.) दो लड़ों की (माला)।
दुलत्ती–(हि. स्त्री.) मलखंभ का एक व्यायाम, चौपायों का पिछले दोनों पैरों का एक साथ उठाकर फटकारना।
दुलदुल–(अ. पुं.) वह मादा खच्चर जिसे मिस्र के प्रशासक ने मुहम्मद साहब को दिया था; मुहर्रम के नवें दिन जुलूस के साथ निकाला जानेवाला घोड़ा।
दुलना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'डुलना'।
दुलभ–(हि. वि.) देखें 'दुर्लभ'।
दुलरा–(हि. वि.) दुलारा।
दुलराना–(हि. क्रि.अ., स.) लाड़ करना, प्यार करना, बच्चों को बहलाना, इठराना।
दुलरी–(हि. स्त्री.) देखें 'दुलड़ी'।
दुलहन–(हि. स्त्री.) नव विवाहिता वधू, नई ब्याही हुई स्त्री।
दुलहा, दुल्हा–(हि. पुं.) देखें 'दूल्हा'।
दुलहाई–(हि.स्त्री.) विवाह का एक गीत।
दुलहिन–(हि. स्त्री.) देखें 'दुलहन'।
दुलहेटा–(हि. पुं.) दुलारा बेटा, प्रियपुत्र।
दुलहिया, दुल्ही–(हि.स्त्री.) देखें 'दुलहन'।
दुलाई–(हि. स्त्री.) रूई भरी हुई ओढ़ने की हलकी रजाई।
दुलाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'डुलाना'।
दुलार–(हि. पुं.) अनुराग, प्रेम, लाड़-प्यार।
दुलारना–(हि. क्रि. स.) बच्चों को प्रसन्न करने के लिए उनके साथ प्यार भरी चेष्टाएँ करना, लाड़ करना, प्रेम दिखलाना।
दुलारा–(हि. वि.) प्रिय, प्यारा, लाड़ला; (पुं.) प्रिय पुत्र, लाड़ला बेटा।
दुलारी–(हि.स्त्री.) प्रिय कन्या, लाड़ली बेटी।
दुलीचा, दुलैचा–(हि. पुं.) गलीचा।
दुलोही–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की तलवार जो लोहे के दो टुकड़ों को जोड़कर बनाई जाती है।
दुल्ल–(सं. पुं.) रेशम।
दुल्लभ–(हि. वि.) देखें 'दुर्लभ'।
दुव–(हि. वि.) दो संख्या का, दो।
दुवन–(हि. पुं.) दुर्जन, बुरा मनुष्य, राक्षस, दैत्य, शत्रु, वरी।
दुवस–(सं. पुं.) टहल।
दुवस्य–(सं. वि.) सेवा करने योग्य।
दुवाज–(हि. पुं.) एक प्रकार का घोड़ा।
दुवादस–(हि. वि.) देखें 'द्वादस', बारह।
दुवाली–(हि. स्त्री.) परतले में लगा हुआ खोल जिसमें तलवार आदि लटकाई जाती है, छपे वस्त्र पर चमक लाने का एक औजार।
दुवार–(हि. पुं.) देखें 'द्वार'।
दुविधा–(हि. स्त्री.) देखें 'दुविधा'।
दुवो–(हि. वि.) देखें 'दोनों'; (पुं.) वैरी, शत्रु।
दुश्चक्रम–(सं. पुं.) गोक्षुर, गोखरू।
दुश्चर–(सं. वि.) दुष्कर, जिसका करना कठिन हो, दुर्गम, जहाँ जाना कठिन हो; (पुं.) भालू, सीप; –त्व–(पुं.) दुर्गमता, कठिनता।
दुश्चरित्र–(सं. पुं.) बुरा आचरण, पाप, कुचाल; (वि.) निंदित या बुरे आचरण का।
दुश्चर्मा–(सं. पुं.) वह मनुष्य जिसके लिंगेंद्रिय के मुख पर ढापनेवाला चमड़ा न हो।
दुश्चलन–(हि. पुं.) बुरा आचरण, खोटी चाल।
दुश्चारित्र–(सं. पुं.) दुष्ट चरित्र, पाप; (वि.) बुरे चरित्र का।
दुश्चिंता–(सं.स्त्री.) आशंका, बुरी चिंता।
दुश्चिन्त्य–(सं. वि.) जो कठिनता से चिंतन किया जा सके।
दुश्चिकित्स–(सं. वि.) जिसकी चिकित्सा करना कठिन हो।
दुश्चिकित्सा–(सं. स्त्री.) अनियमित या अननुकूल चिकित्सा।
दुश्चिकित्सित–(सं.वि.) जिसकी चिकित्सा बड़ी कठिनता से हुई हो।
दुश्चिकित्स्य–(सं. वि.) जिसकी चिकित्सा बड़ी कठिनाई से हो सके।

दुश्चित-(सं. पुं.) व्यग्रता, घबड़ाहट ।
दुश्चेष्टा-(सं.स्त्री.) कुचेष्टा, बुरा काम ।
दुश्चेष्टित-(सं.पुं.) निन्दित कर्म, पाप, दुष्कर्म ।
दुश्च्यवन-(सं. पुं.) इन्द्र का एक नाम ।
दुश्च्याव-(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) जो सहज में हटाया न जा सके ।
दुश्मन-(फा. पुं.) शत्रु, वैरी, अपकारी ।
दुश्मनी-(फा. स्त्री.) शत्रुता, वैर ।
दुष्कर-(सं. वि.) अत्यन्त दुःख से करने योग्य, जिसको करना कठिन हो, दुःसाध्य ।
दुष्करण-(सं. वि.) जो कठिनता से किया जा सके ।
दुष्कर्ण-(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
दुष्कर्म-(सं.पुं.) कुकर्म, पाप, बुरा काम ।
दुष्कर्मी-(हि.वि.) दुराचारी, कुकर्मी, पापी ।
दुष्कलेवर-(सं. पुं.) बुरा शरीर ।
दुष्काल-(सं. पुं.) आपाद् काल, कुसमय, दुर्भिक्ष, अकाल, शिव, महादेव ।
दुष्कीर्ति-(सं. स्त्री.) अपयश; (वि.) जिसमें अपयश हो ।
दुष्कुल-(सं. पुं.) निन्दित कुल, अकुलीनता; (वि.) नीच कुल का ।
दुष्कृत-(सं. पुं.) नीच कार्य, बुरा काम, पाप; -कर्मा-(वि.) पापी, बुरा काम करनेवाला ।
दुष्कृतात्मा-(सं. वि.) दुरात्मा, खोटा ।
दुष्कृति-(सं. स्त्री.) कुकर्म, बुरा काम ।
दुष्कृष्ट-(सं. वि.) कठिनता से खींचा या जोता जानेवाला ।
दुष्क्रिया-(सं. स्त्री.) कुकार्य, बुरा काम ।
दुष्क्रीत-(सं.वि.) महँगा, महँगे दाम का ।
दुष्ट-(सं. वि.) अधम, नीच, खोटा, दोषयुक्त, खल; दुराचारी, दुर्जन, पित्त आदि दोष से युक्त, -चारी-(वि.) बुरा आचरण करनेवाला, दुर्जन; -चेता-(वि.) बुरे विचार का, अहित चाहनेवाला, कपटी; -ता-(स्त्री.) दुर्जनता, दोष, बुराई; -त्व-(पु.) दुष्टता, खोटाई; -पना-(हि. पु.) दुष्टता, दुष्टत्व, खोटाई; -योग-(पुं.) ज्योतिष के अनुसार अरिष्ट-सूचक योग; -वृष-(पुं.) गरियार बैल; -व्रण-(पुं.) वह घाव जो जल्दी से अच्छा न हो; -साक्षी-(वि.) कूट-साक्षी ।
दुष्टाचार-(सं.पुं.) कुकर्म, कुचाल, खोटा काम ।
दुष्टाचारी-(सं. वि.) कुकर्मी ।
दुष्टात्मा-(सं. वि.) खोटी प्रकृति का, जिसका अन्तःकरण बुरा हो ।
दुष्टान्न-(सं. पुं.) कुत्सित अन्न, बासी अन्न, पाप की कमाई का अन्न ।
दुष्पच्य-(सं. वि.) जो जल्दी न पचे, गरिष्ट ।
दुष्पतन-(सं. पुं.) अपशब्द ।
दुष्पत्र-(सं.पुं.) चोर नामक गन्ध-द्रव्य ।
दुष्पद-(सं. वि.) दुःख से प्राप्त ।
दुष्परिग्रह-(सं. वि.) जो सहज में वश में न लाया जा सके, जिसकी स्त्री व्यभिचारिणी हो; -हा (स्त्री.) कुलटा ।
दुष्परिहंतु-(सं. वि.) जिसको मारना कठिन हो ।
दुष्परीक्ष-(सं. वि.) जिसकी जाँच कठिनता से हो ।
दुष्पर्श-(सं. वि.) जिसको स्पर्श करना कठिन हो, दुष्प्राप्य, जो सहज में प्राप्त न हो सके ।
दुष्पान-(सं. वि.) जो कठिनता से पिया जा सके ।
दुष्पार-(सं. वि.) दुःसाध्य, कठिन ।
दुष्पुत्र-(सं. पुं.) कुपुत्र, नालायक लड़का, (वि.) जिसके पुत्र बुरे हों ।
दुष्पूर-(सं. वि.) अनिवार्य, जो सहज में पूरा न हो सके ।
दुष्प्रकाश-(सं. पुं.) अन्धकार, अँधेरा ।
दुष्प्रकृति-(सं. वि.) दुःशील, बुरे स्वभाव का; (स्त्री.) खोटा स्वभाव ।
दुष्प्रज्ञ-(सं. वि.) निर्बोध, अनजान ।
दुष्प्रज्ञान-(सं. पुं.) निन्दनीय ज्ञान ।
दुष्प्रतिग्रह-(सं. वि.) जो जल्दी से ग्रहण न किया जा सके ।
दुष्प्रधर्ष-(सं. वि.) जो जल्दी से न पकड़ा जा सके; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
दुष्प्रमेय-(सं. वि.) जो सहज में न नापा जा सके, अप्रमेय ।
दुष्प्रलंभ-(सं. वि.) जो सहज में न ठगा जा सके, जो सहज में प्राप्त न हो सके ।
दुष्प्रवाद-(सं. पुं.) अशिष्ट बात-चीत ।
दुष्प्रवृत्ति-(सं. स्त्री.) बुरी प्रवृत्ति ।
दुष्प्रवेश-(सं.वि.) जिसमें घुसना कठिन हो ।
दुष्प्रसह-(सं. वि.) दुःसह, जिसका सहना कठिन हो, भीषण, भयानक ।
दुष्प्रसाद-(सं. वि.) जो कठिनता से प्रसन्न किया जा सके ।
दुष्प्रहर्ष-(सं.वि.) जो सहज में प्रसन्न न हो; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
दुष्प्राप-(सं. वि.) दुर्लभ, जो कठिनता से प्राप्त हो सके ।
दुष्प्राप्ति-(सं. स्त्री.) वह वस्तु जो कठिनता से प्राप्त हो सके ।
दुष्प्राप्य-(सं. वि.) जो सहज में प्राप्त न हो सके ।
दुष्प्रीति-(सं. स्त्री.) अप्रीति, बुरा प्रेम ।
दुष्प्रेक्ष-(सं. वि.) दुर्दर्श, जिसको देखना कठिन हो, भीषण, भयंकर ।
दुष्प्रेक्षणीय-(सं. वि.) अदर्शनीय ।
दुष्मंत-(सं. पुं.) देखें 'दुष्यंत' ।
दुष्यंत-(सं. पुं.) एक पुरु-वंशी राजा जिन्होंने कण्व ऋषि के आश्रम में शकुन्तला से गान्धर्व विवाह किया था और इनसे भरत नामक अति प्रतापी राजा उत्पन्न हुए थे ।
दुसह-(हि.वि.) असह्य, जो सहन न हो सके ।
दुसहो-(हि.वि.) जो कठिनता से सहा जा सके ।
दुसाखा-(हि. पुं.) एक प्रकार की दीवट जिसमें दो शाखाएँ निकली होती हैं ।
दुसाध-(हि. पुं.) हिन्दुओं में एक नीच जाति का नाम, (ये लोग सुअर पालते हैं ।)
दुसार-(हि. पुं.) आरपार छेद; (अव्य.) आरपार ।
दुसाल-(हि. पुं.) देखें 'दुसार', आरपार छेद ।
दुसासन-(हि. पुं.) देखें 'दुःशासन' ।
दुसाहा-(हि. पुं.) वह खेत जिसमें दो बार खेती हो ।
दुसुती-(हि. स्त्री.) एक प्रकार की मोटी चादर जिसमें दो तागों का ताना और बाना रहता है ।
दुसेजा-(हि. पुं.) पलंग, दो आदमियों के सोने की बड़ी खाट ।
दुस्तर-(सं. वि.) दुर्घट, विकट, जिसको पार करना कठिन हो ।
दुस्त्यज-(सं. वि.) जिसका त्यागना कठिन हो ।
दुस्थ-(सं.वि.) जिसका रहना कठिन हो ।
दुस्पृष्ट-(सं.वि.) जो बुरी तरह से छूआ गया हो ।
दुस्पर्शा-(सं. स्त्री.) आकाशवल्ली लता, भटकटैया ।
दुस्फोट-(सं. वि.) घातक व्रण या घाव; (पुं.) एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र ।
दुस्सह-(हि. वि.) देखें 'दुःसह' ।
दुहता-(हि.पुं.) दोहित, नाती, बेटी का पुत्र ।
दुहत्था-(हि. वि.) दोनों हाथों से किया जानेवाला, जिसमें दो मूठें हों ।
दुहत्थी-(हि. स्त्री.) मलखंभ का एक व्यायाम; (वि. स्त्री.) दुहत्था ।
दुहना-(हि.क्रि.स.) स्तन में से दूध निकालना, निचोड़ना, तत्त्व निकालना, सार खींचना;

(मुहा.) दुह लेना–लूट लेना, धन हर लेना
दुहनी–(हिं. स्त्री.) वह पात्र जिसमें गाय, भैंस आदि का दूध दुहा जाता है।
दुहरा–(हिं. वि.) देखें 'दोहरा'।
दुहराना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'दोहराना'।
दुहाई–(हिं. स्त्री.) घोषणा, सहायता के लिए पुकार, शपथ, सौगन्ध, गाय-भैंस आदि को दुहने का काम, दुहने की मजदूरी; (मुहा.)–देना–सहायता के लिए किसी का नाम लेकर पुकारना; –फिरना–घोषणा करना।
दुहाग–(हिं. पुं.) दुर्भाग्य, वैधव्य, रँड़ापा।
दुहागिन–(हिं. स्त्री.) विधवा स्त्री।
दुहागी–(हिं. वि.) अभागा, दुर्भाग्य।
दुहाजू–(हिं. वि.) वह मनुष्य या स्त्री जो पत्नी या पति के मरने पर दूसरा विवाह करे।
दुहाना–(हिं. क्रि. स.) किसी अन्य पुरुष से दुहने का काम कराना।
दुहाव–(हिं. स्त्री.) भूपति द्वारा उत्सव के दिन किसान की गाय-भैंस का दूध दुहाकर लेना, इस प्रथा के अनुसार लिया हुआ दूध।
दुहावनी–(हिं. स्त्री.) दुहाई, दूध दुहने का शुल्क।
दुहिता–(हिं. स्त्री., सं.) दुहितृ कन्या, लड़की, पुत्री।
दुहितुःपति, दुहितृपति–(सं. पुं.) जामाता, दामाद।
दुहिन–(हिं. पुं.) ब्रह्मा।
दुहेल–(हिं. पुं.) संकट, क्लेश।
दुहेला–(हिं. वि.) दुःसाध्य, दुःखदायी, कठिन; (पुं.) कठिन कार्य, विकट खेल।
दुहोतरा–(हिं. पुं.) कन्या का पुत्र, नाती, (वि.) दो और, दो अधिक।
दुह्य–(सं. वि.) दुहने योग्य।
दुह्यमान–(सं. वि.) जो दुहा जाय।
दूंद–(हिं. पुं.) ऊधम।
दूंदना–(हिं. क्रि. अ.) ऊधम मचाना।
दू–(सं. पुं.) रोग, बीमारी।
दूआ–(हिं. पुं.) कलाई पर पहिनने का एक प्रकार का आभूषण, ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियाँ हों, किसी खेल का दाँव।
दूइज–(हिं. स्त्री.) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।
दूक–(हिं. वि.) दो-एक, एकाध।
दूकान–(हिं. पुं.) देखें 'दुकान'; –दार, –री–(हिं. पुं., स्त्री.) देखें 'दुकानदार, दुकानदारी'।
दूखन–(हिं. पुं.) दोष।
दूखना–(हिं. क्रि. अ., स.) दोष लगाना, पीड़ा होना।
दूगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा।
दूज–(हिं. स्त्री.) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया; (मुहा.)–का चाँद होना–बहुत दिनों बाद दर्शन होना, बहुत कम आना-जाना।
दूजा–(हिं. वि.) दूसरा।
दूडाश–(सं. वि.) पीड़ित, दुःखित।
दूत–(सं. पुं.) संवाद पहुँचानेवाला चर, प्रेमी-प्रेमिका का संदेश एक दूसरे से जाकर कहनेवाला, परराष्ट्र में नियुक्त किसी राज्य का प्रतिनिधि, राजदूत।
दूतक–(सं. पुं.) राजा की आज्ञा को सर्वसाधारण में पहुँचानेवाला।
दूतकत्व–(सं. पुं.) दूत का काम।
दूतकर्म–(सं. पुं.) समाचार पहुँचाने का काम
दूतघ्नी–(सं. स्त्री.) गोरखमुण्डी।
दूतता–(सं. स्त्री.) दूत का काम।
दूतत्व–(सं. पुं.) दूतता।
दूतपन–(हिं. पुं.) दूत का काम।
दूतावास–(हिं. पुं.) दूत के रहने का स्थान।
दूतिका–(सं. स्त्री.) दूती, कुटनी।
दूती–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका का संदेश एक दूसरे के पास पहुँचाती है, संचारिका, कुटनी।
दूत्य–(सं. पुं.) दूत-कर्म, दूत होने का भाव।
दूदला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
दूध–(हिं. पुं.) स्तन में से निकलनेवाला वह सफेद तरल पदार्थ जिससे बच्चों का बहुत दिनों तक पालन-पोषण होता है, दूध के समान वह तरल द्रव जो अनेक पौधों की डंठल तथा पत्तियों से निकलता है; (मुहा.)–उतरना–स्तनों में दूध भर जाना; –का दाँत टूटना–बाल्यावस्था होना; –का दूध और पानी का पानी–ऐसा न्याय जिसमें पक्षपात का लेश भी न हो; –की मक्खी की तरह निकालकर फेंक देना–किसी मनुष्य को अति तुच्छ जानकर निकाल देना; –फटना–दूध का छेना और पानी अलग हो जाना; –भर आना–माता के स्तन में बच्चे के स्नेह के कारण दूध भर आना; दूधों नहाओ पूतों फलो–परिवार तथा धन की वृद्धि के लिए आशीर्वाद; –चढ़ी–(वि. स्त्री.) जिसके स्तन में दूध पहिले से बढ़ गया हो; –पिलाई–(स्त्री.) दूध पिलानेवाली धाय, विवाह की एक प्रथा जिसमें वर को उसकी माता बारात के प्रस्थान के समय अपना दूध पिलाने की मुद्रा करती है, वह धन जो इस क्रिया के बदले उसको दिया जाता है; –पूत–(पुं.) धन और सन्तति; –बहन–(स्त्री.) शैशवावस्था में दो बच्चों का एक ही स्त्री का दूध पीकर पले होने के नाते होनेवाला बहन का संबंध; –भाई–(पुं.) ऐसे दो बालक जो एक ही स्त्री के स्तन का दूध पीकर पले हों परन्तु वे सहोदर भाई न हों; –मसहरी–(स्त्री.) एक प्रकार का महीन रेशमी कपड़ा; –मुहाँ–(वि. पुं.) जो अभी तक माता का दूध पीता हो, शिशु, बालक, छोटा बच्चा; –मुख–(पुं.) छोटा बच्चा, शिशु; –राज–(पुं.) एक प्रकार की बुलबुल, चौड़े फन का एक प्रकार का सर्प; –वाला–(पुं.) दूध बेचनेवाला, ग्वाला। –हँड़ी–(स्त्री.) दूध गरम करनेका मिट्टीका पात्र।
दूधा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान, अनाज के कच्चे दाने का रस।
दूधाभाती–(स्त्री.) विवाह की एक रीति जिसमें वर कन्या को तथा कन्या वर को दूध और भात खिलाती है।
दूधिया–(हिं. वि.) दुग्ध-संबंधी, जिसमें दूध मिला हो, दूध के रंग का, सफेद; (पुं.) एक प्रकार का चिकना तथा सफेद पत्थर, एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का सोहन-हलुआ; –खाकी–(पुं.) एक प्रकार का मटमैला सफेद रंग।
दून–(सं. वि.) चलते चलते थका हुआ, दुःखित, दुःख से व्याकुल; (हिं. स्त्री.) दूने का भाव, साधारण से कुछ जल्दी गाना; (पुं.) तराई, घाटी; (मुहा.)–की लेना या हाँकना–आत्म-श्लाघा करना, डींग हाँकना।
दूनर–(हिं. वि.) जो लचककर दोहरा हो गया हो।
दूनसिरिस–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी सिरिस का वृक्ष।
दूना–(हिं. वि.) द्विगुण, दुगुना।
दूनों–(हिं. वि.) दोनों।
दूब–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की प्रसिद्ध घास, दूर्वा।
दूबरा–(हिं. वि.) दुर्बल, दुबला।
दूबिया–(हिं. वि., पुं.) एक प्रकार का हरा (रंग)।
दूबे–(हिं. पुं.) ब्राह्मणों की एक उपाधि, द्विवेदी।
दूभर–(हिं. वि.) दुःसाध्य, कठिन
दूमना–(हिं. क्रि.) हिलना, डोलना

दूमा–(हिं. पुं.) चमड़े का छोटा थैला जिसमें पहाड़ी लोग चाय की पत्ती रखते हैं।
दूरंगम–(सं.वि.) वहुत दूर तक जानेवाला।
दूरंदेश–(फा. वि.) देखें 'दूरदर्शी'।
दूरंदेशी–(फा. स्त्री.) देखें 'दूरदर्शिता'।
दूर–(हिं. अव्य.) अनिकट; (मुहा.) **–करना**–अलग करना, हटाना, मिटाना; **दूर की बात**–सूक्ष्म बात; **–भागना**–अलग रहना, पास न जाना; **–होना**–हट जाना, नष्ट होना।
दूरक–(सं. वि.) जो दूर हो।
दूरग–(सं.वि.) वहुत; (पुं.) ऊँट, गदहा।
दूरगत, दूरगामी–(सं. वि.) जो बहुत दूर तक चला गया हो।
दूरग्रहण–(सं. पुं.) बहुत दूर से ग्रहण करने की शक्ति।
दूरचर–(सं. वि.) दूर तक चलनेवाला।
दूरजम–(सं. पुं.) वैदूर्यमणि।
दूरता–(हिं. स्त्री.) देखें 'दूरत्व'।
दूरत्व–(सं. पुं.) दूर होने का भाव, अन्तर, दूरी, फासला।
दूरदर्शक–(सं. वि.) देखें 'दूरदर्शी'; **–यंत्र**– (हिं. पुं.) दूरबीन।
दूरदर्शन–(सं. पुं.) दूर से दर्शन, गीध, पण्डित।
दूरदर्शिता–(सं.स्त्री.) दूरदर्शी होने का गुण।
दूरदर्शी–(सं.वि.) दूरदर्शक, बहुत दूर की बात या अपना भविष्य सोचनेवाला; (पुं.) पंडित, बुद्धिमान, गृध्र।
दूरदृष्टि–(सं. स्त्री.) दूरदर्शन, भविष्य का विचार।
दूरनिरीक्षण–(सं.पुं.) दूरदर्शन यन्त्र, दूरबीन।
दूरवा–(हिं. स्त्री.) देखें 'दूर्वा'।
दूरमूल–(सं.पुं.) मूँज, जवासा, यवासक।
दूरयायी–(सं. वि.) दूरगामी, दूर जानेवाला।
दूरवर्ती–(सं.वि.) दूरस्थित, जो दूर हो।
दूरवस्त्रक–(सं. वि.) वस्त्रहीन, नंगा।
दूरवासी–(सं. वि.) दूर देश में रहनेवाला।
दूरवीक्षण–(सं.पुं.) वह यन्त्र जिससे दूर की वस्तु बहुत पास और बड़ी दिखाई पड़ती है।
दूरवेधी–(सं. पुं.) वह जो दूर से लक्ष्य लगा सकता हो।
दूरसंस्थ–(सं. वि.) दूरवर्ती, दूरस्थित।
दूरस्थ–(सं. वि.) दूरस्थित, दूर का।
दूरस्थान–(सं. पुं.) दूरस्थता, वह स्थान जो दूर हो।
दूरापात–(सं. पुं.) वह अस्त्र जो दूर से फेंककर मारा जाता हो।
दूराप्लाव–(सं.वि.) जो दूर से उछलता हो।
दूरावस्थित–(सं.वि.) दूरवर्ती, जो दूर हो।
दूरी–(हिं. स्त्री.) दूरत्व।
दूरीकरण–(सं.पुं.) दूर करने की क्रिया।
दूरीकृत–(सं. वि.) जो दूर कर दिया गया हो।
दूरीभूत–(सं. वि.) दूर किया हुआ।
दूरेभा–(सं. वि.) दूर से चमकनेवाला।
दूरेयम–(सं. वि.) जहाँ पर यम न पहुँच सकें।
दूरेवध–(सं. वि दूर से मारनेवाला।
दूरेस्थ–(सं. वि.) दूरस्थ, जो दूर हो।
दूरोह–(सं. पुं.) आदित्यलोक; (वि.) जिस पर चढ़ना कठिन हो।
दूरोहण–(सं. पुं.) आदित्य, सूर्य, एक प्रकार का छन्द; (वि.) जो चढ़ने योग्य न हो, जिस पर चढ़ना कठिन हो।
दूर्य–(सं. पुं.) पुरीष, विष्ठा।
दूर्वा–(सं. स्त्री.) दूब नाम की घास।
दूर्वाक्षी–(सं. स्त्री.) वासुदेव के भाई वृक की स्त्री।
दूर्वाष्टमी–(सं. स्त्री.) भादों सुदी अष्टमी का नाम।
दूर्वासोम–(सं.पुं.) एक प्रकार की सोमलता।
दूर्वेष्टका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ के काम में आती है।
दूलन–(हिं. पुं.) देखें 'दोलन'।
दूलह–(हिं. पुं.) दुलहा, पति, स्वामी।
दूलाश–(सं. वि.) जो कठिनाई से मारा जा सके।
दूलिका–(सं. स्त्री.) नील का पौधा।
दूली–(सं. स्त्री.) देखें 'दूलिका'।
दूल्हा–(हिं. पुं.) देखें 'दूलह'।
दूवा–(हिं. पुं.) आशीर्वाद।
दूश्य–(सं. पुं.) तम्बू।
दूषक–(सं.वि.) दोषोत्पादक, दोष लगानेवाला, वह पदार्थ जो दोष या विकार उत्पन्न करे; (पुं.) एक प्रकार का धान।
दूषण–(सं. पुं.) दोष लगाने की क्रिया या भाव, अवगुण, रावण के एक भाई का नाम; (वि.) दोष उत्पन्न करनेवाला।
दूषणारि–(सं. पुं.) श्रीरामचन्द्र जिन्होंने दूषण को मारा था।
दूषणीय–(सं. वि.) दोष लगाने योग्य, जो अवगुण का पात्र हो।
दूषना–(हिं. क्रि. स.) कलंक लगाना, ऐब लगाना।
दूषयिता–(सं. वि.) दोष लगानेवाला।
दूषि–(सं. स्त्री.) आँख का मैल।
दूषिका–(सं. स्त्री.) नेत्र का मल, चित्रकार की कूँची; (वि. स्त्री.) दोष लगानेवाली।
दूषित–(सं.वि.) दोषयुक्त, जिसमें विकार हो।
दूषिता–(सं. स्त्री.) वह कन्या जिसमें कोई दोष हो या लगाया गया हो।
दूषी–(सं. स्त्री.) आँख का मैल।
दूषीविष–(सं. पुं.) शरीर में एक प्रकार का विष जो पोशक धातुओं को दूषित करता है।
दूष्य–(सं. वि.) दूषणीय, दोष लगाने योग्य, निन्दा करने योग्य, विकार या हानि पहुँचानेवाला, नीच, तुच्छ; (पुं.) कपड़ा, तम्बू, पीब।
दूष्या–(सं. स्त्री.) हाथी बाँधने का रस्सा।
दूष्युदर–(सं. पुं.) पेट का एक रोग।
दूसना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'दूषना'।
दूसर–(हिं. वि.) देखें 'दूसरा'।
दूसरा–(हिं. वि.) द्वितीय, अन्य, अपर, और, गैर।
दूहना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'दुहना'।
दुहनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दोहनी'।
दूहा–(हिं. पुं.) देखें 'दोहा'।
दृक्–(सं. पुं.) छिद्र, छेद, नेत्र।
दृक्कर्ण–(सं. पुं.) सर्प, साँप।
दृक्काण–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार एक राशि का तीसरा भाग जो दस अंशों का होता है।
दृक्क्षेप–(सं. पुं.) दृष्टिपात, अवलोकन।
दृक्पथ–(सं. पुं.) दृष्टि का मार्ग, दृष्टि की पहुँच।
दृक्पात–(सं.पुं.) देखें 'दृक्क्षेप', अवलोकन।
दृक्प्रिया–((सं. स्त्री.) शोभा, सुन्दरता।
दृक्शक्ति–(सं. स्त्री.) प्रकाश, रूप, चैतन्य, आत्मा।
दृक्श्रुति–(सं.पुं.) सर्प, साँप, देखें 'दृक्कर्ण'।
दृगंचल–(सं. पुं.) आँख की पलक।
दृग–(हिं. पुं.) दृष्टि, देखने की शक्ति, आँख, दो की संख्या।
दृगध्यक्ष–(सं. पुं.) नेत्र के अधिष्ठाता देवता सूर्य।
दृग्गणित–(सं. पुं.) ग्रहों के वेध से संबद्ध गणित।
दृग्गति–(सं. स्त्री.) चक्षुगति, दृष्टि की पहुँच।
दृग्गोचर–(सं.वि.) जो आँखों से दिखाई पड़े।
दृग्भक्ति–(सं. स्त्री.) प्रेम-दृष्टि।
दृग्भू–(सं. स्त्री.) सूर्य, वज्र, सर्प।
दृग्विष–(सं. पुं.) एक प्रकार का सर्प जिसकी आँखों में विष रहता है।
दृग्वृत्त–(सं. पुं.) क्षितिज।

दृङ्मंडल–(सं. पुं.) दृग्वृत्त।
दृढ़–(सं. वि.) अशिथिल, जो ढीला न हो, स्थूल, मोटा, हृष्ट-पुष्ट, बलवान, स्थायी, पक्का, कठिन, निडर, ढीठ, जो विचलित न हो, निश्चित, कड़ा, ठोस; (पुं.) लोहा, विष्णु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, तेरहवें मनु, सेमर का वृक्ष, हीरा, गणित में वह अंक जो किसी दूसरे अंक से पूरा-पूरा भाग न हो सके; –कंटक–(पुं.) खजूर का पेड़, अखरोट का वृक्ष; –कांड–(पुं.) बाँस, रोहिश नामक घास; –कारी–(वि.) पुष्ट करनवाला; –क्षत्र–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –गर्भ–(पुं.) हीरक, हीरा; –गात्रिका–(स्त्री.) राव, खाँड़; –ग्रंथि–(पुं.) बाँस; (वि.) जिसकी गाँठें पुष्ट हों; –ग्राही–(वि.) दृढ़ रूप से ग्रहण करनेवाला; –च्छद–(पुं.) ताड़ का वृक्ष; –च्युत–(पुं.) अगस्त्य मुनि के एक पुत्र का नाम; –तरु–(पुं.) धव का वृक्ष; –ता–(स्त्री.) दृढ़त्व, स्थिरता, पुष्टता; –तृण–(पुं.) मूँज नाम की घास; –त्व–(पुं.) दृढ़ता; –त्वच्–(वि.) जिसकी त्वचा या छाल कड़ी हो; (पुं.) ज्वार का पौधा, मूँज नामक घास; –दंशक–(पुं.) घड़ियाल; –धन–(पुं.) शाक्यमुनि, बुद्ध; –धन्वा–(पुं.) एक पुरुवंशी राजा का नाम; –धन्वी–(वि.) जिसका धनुष बड़ा और पुष्ट हो; –धुर–(वि.) जो बोझ ढोने में समर्थ हो; –नाभ–(पुं.) एक मन्त्र जो माया-अस्त्र को रोक सकता है, (विश्वामित्र ने यह मन्त्र रामचन्द्र को बतलाया था); –निश्चय–(वि.) वह जो अपने संकल्प पर दृढ़ रहे; –नीर–(पुं.) नारियल का फल जिसके भीतर का पानी धीरे-धीरे ठोस हो जाता है; –नेत्र–(पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम; –नेमि–(पुं.) वह रथ जिसका धुरा पुष्ट हो; –पत्र–(पुं.) मूँज की घास; (वि.) पुष्ट पत्तोंवाला; –पद–(पुं.) तेईस मात्राओं के एक छन्द का नाम; –प्रतिज्ञ–(वि.) जो अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे; –पाद–(पुं.) ब्रह्मा; (वि.) जो अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहे; –पादी–(स्त्री.) भुँइआमला; –पृष्ठक–(पुं.) कच्छप, कछुआ; –प्ररोह–(पुं.) बरगद का वृक्ष; –फल–(पुं.) नारियल; –बंधिनी–(स्त्री.) अनन्तमूल की लता; –बालुक–(पुं.) मुसब्बर; –भार्गव–(पुं.) हीरक, वज्र हीरा; –भूमि–(स्त्री.) योग-शास्त्र के अनुसार चित्त को एकाग्र और स्थिर करने का एक अभ्यास; –मुष्टि–(वि.) कृपण, कंजूस, मुट्ठी से कसकर पकड़नेवाला; –मूल–(पुं.) नारिकेल, नारियल; –रंगा–(स्त्री.) स्फटी, फिटकरी; –रजा–(स्त्री.) प्रौढ़ या युवा स्त्री; –रथ–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –लता–(स्त्री.) पाताल गारुड़ी नामक लता; –लोम–(पुं.) शूकर, सुअर; (वि.) कड़े रोयोंवाला; –वर्म–(वि.) जिसका कवच बहुत पुष्ट हो, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –वल्कल–(वि.) कड़ी छालवाला; (पुं.) सुपारी का पेड़; –वल्ल–(पुं.) मूँज नामक घास; –बीज–(पुं.) बेर, बबूल, नारियल; (वि.) जिसका बीज कड़ा हो; –वृक्ष–(पुं.) नारियल; –वेधन–(पुं.) दृढ़ता के साथ छेदने की क्रिया; –व्रत–(वि.) अपने संकल्प पर दृढ़ रहनेवाला; –शक्तिक–(वि.) जिसको बहुत बल हो; –संध–(वि.) अपनी प्रतिज्ञा का पक्का; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; –संधि–(वि.) निश्छिद्र, बिना छेद का; –सूत्रिका–(स्त्री.) मुर्रा नामक औषधि; –स्कंध–(पुं.) खिरनी का पेड़; (वि.) जिसका कंधा पुष्ट हो; –स्थिति–(पुं.) नारियल का पेड़; –हस्त–(पुं.) शस्त्र चलाने में जिसका हाथ पक्का हो।
दृढांग–(सं. वि.) जिसके अंग पुष्ट हों, हट्टा-कट्टा।
दृढ़ा–(सं. स्त्री.) मूसली।
दृढ़ाई–(हिं. स्त्री.) दृढ़ता।
दृढ़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) दृढ़ करना, पक्का करना, स्थिर या पक्का होना।
दृढ़ायु–(सं.पुं.) एक पौराणिक राजा का नाम जो उर्वशी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।
दृढ़ायुध–(सं.वि.) जो शस्त्र चलाने में निपुण हो; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दृत–(सं. वि.) सम्मानित, आदर किया हुआ, विदीर्ण, फाड़ा हुआ।
दृता–(सं. स्त्री.) जीरक, जीरा।
दृति–(सं.स्त्री.) खाल का बना हुआ पात्र, मछली, गाय के गले के नीचे का झूलता हुआ मांस, मेघ, बादल, रोमयुक्त चमड़ा; –हरि–(पुं.) कुक्कुर, कुत्ता; –हार–(पुं.) मशक ढोनेवाला।
दृत्य–(सं. वि.) आदरणीय।
दृप्त–(सं. वि.) प्रबल, प्रचण्ड, घमंडी।
दृब्ध–(सं. वि.) भयभीत, डरा हुआ।
दृशद्वती–(सं. स्त्री.) कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक नदी जो ब्रह्मावर्त की सीमा पर थी, कात्यायनी।
दृशा–(सं. स्त्री.) चक्षु, आँख।
दृशाक–(सं. वि.) दर्शनीय, देखने योग्य।
दृशान–(सं.पुं.) लोकपाल, आचार्य, गुरु, ब्राह्मण, प्रकाश; (वि.) जो दिखाई पड़ता हो।
दृशि–(सं. स्त्री.) चक्षु, नेत्र।
दृशेन्य–(सं. वि.) दर्शनीय, देखने योग्य।
दृशोपम–(सं. पुं.) सफेद कमल।
दृश्–(सं. पुं.) चक्षु, नेत्र, आँख, ज्ञान, दर्शन, देखना, दृष्टि, दो की संख्या; (वि.) (समस्तपदों में) देखने या दिखलानेवाला।
दृश्य–(सं. वि.) दर्शनीय, जो देखने योग्य हो, जो देखने में आ सके, जानने योग्य, मनोहर, सुन्दर; (पुं.) आँखों के सामने का पदार्थ, देखने की वस्तु, आँख के सामने होनेवाला मनोरंजक व्यापार, अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जानेवाला रूपक, गणित में ज्ञात राशि।
दृश्यकाव्य–(सं.पुं.) वह काव्य जो नाट्यशाला में नटी द्वारा दिखलाया जाता है।
दृश्यमान–(सं.वि.) जो दिखाई पड़ता हो, सुन्दर, चमकीला।
दृश्यादृश्य–(सं. वि.) भौतिक और आध्यात्मिक।
दृश्वन्–(सं. वि.) दर्शक, देखनेवाला।
दृषद्–(सं. स्त्री.) पहाड़ की चट्टान, पत्थर, सिल।
दृषद्वत्–(सं. वि.) शिलायुक्त।
दृषद्वती–(सं. स्त्री.) घाघरा नदी का प्राचीन नाम।
दृष्ट–(सं. वि.) अवलोकित, देखा हुआ, जाना हुआ, गोचर, प्रगट, प्रत्यक्ष; (पुं.) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष प्रमाण; –कर्म–(पुं.) देखा या परीक्षा किया हुआ काम; –कूट–(पुं.) प्रहेलिका, पहेली, ऐसी कविता जिसका अर्थ वाच्यार्थ से न समझा जा सके परन्तु लक्षणा से ज्ञात हो; –त्व–(पुं.) दृष्टि का भाव, देखने का कार्य; –दोष–(पुं.) मनुष्य का वह दोष जो राग, लोभ आदि से उत्पन्न हो; –नष्ट–(वि.) जो दर्शनमात्र से नष्ट हो जाय; –पृष्ठ–(वि.) युद्ध से भाग जानेवाला; –प्रत्यय–(पुं.) देखकर किया जानेवाला विश्वास; –रजो–(स्त्री.) प्रौढ़ा स्त्री; –व्रत–(वि.)

लौकिक, सांसारिक, प्रत्यक्ष-तुल्य; -वाद-(पुं.) केवल प्रत्यक्ष को ही माननेवाला दार्शनिक सिद्धान्त; -वीर्य-(वि.) जिसके बल की परीक्षा की गई हो; -सार-(वि.) जिसका बल देखा गया हो।

दृष्टांत-(सं. पुं.) किसी विषय को स्पष्ट रूप से बतलाने, समझाने अथवा सिद्ध करने के लिए किसी जाने हुए सदृश विषय का उल्लेख, उदाहरण, शास्त्र, वह अर्थालंकार जिसमें उपमान और उपमेय का तुलनात्मक तारतम्य रहता है।

दृष्टांतित-(सं. वि.) जो दृष्टांत के रूप में दिया गया हो।

दृष्टादृष्ट-(सं. वि.) जिसने अदृष्ट को भी देखा हो।

दृष्टार्थ-(सं. पुं.) जिसने जीवन का अर्थ समझा हो, जिसका अर्थ स्पष्ट हो; (पुं.) वह शब्द जिसके सुनने से सुननेवाले को ऐसे अर्थ का बोध हो जिसका प्रत्यक्षानुभव संसार में होता है।

दृष्टि-(सं. स्त्री.) दर्शन, देखने की वृत्ति, अवलोकन, चक्षु, प्रकाश, दृक्पथ, आँख की ज्योति, कृपा, नजर, ध्यान, अनुमान, विचार, आशय, उद्देश्य; (मुहा.) **-जुड़ना**-साक्षात्कार होना; **-जोड़ना**-आँख मिलाना; **-रखना**-देख-रेख में रखना; **-कूट**-(पुं.) देखें 'दृष्टकूट'; **-कृत्**-(वि.) दर्शक, देखनेवाला; **-क्षेप**-(पुं.) अवलोकन, देखना; **-गत**-(पुं.) नेत्र का विषय; (वि.) जो दिखाई पड़े; **-गुण**-(पुं.) नेत्र का गुण, तीर आदि का लक्ष्य; **-गोचर**-(वि.) नेत्र द्वारा जिसका बोध हो, जो दिखाई पड़ता हो; **-निपात**-(पुं.) अवलोकन, नेत्रों से दिखाई पड़ना; **-पथ**-(पुं.) दृष्टि का पथ, दृष्टि की पहुँच; **-पात**-(पुं.) अवलोकन, ताकना, देखना; **-पूत**-(वि.) जिसको देखने से आँखें पवित्र हों; **-प्रदा**-(स्त्री.) नेत्र का एक रोग; **-फल**-(पुं.) ज्योतिष के अनुसार वह फल जो एक राशि में स्थित ग्रह दूसरी राशि में स्थित ग्रह के दृष्टि-स्थान में हो; **-बंध**-(पुं.) इन्द्रजाल, जादू, हस्तलाघव; **-बंधु**-(पुं.) खद्योत, जुगनू; **-मंडल**-(पुं.) दर्शन; **-मत्**-(वि.) जिसको दृष्टि हो; **-योनि**-(पुं.) क्लीव, नपुंसक; **-रोग**-(पुं.) नेत्र रोग; **-रोध**-(पुं.) दृष्टि पहुँचने में रुकावट; **-वंत**-(हिं. वि.) दृष्टिवाला, ज्ञानी; **-वर्त्म**-(पुं.) आँख के पलक; **-वाद**-(पुं.) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्यक्ष ही सत्य माना जाता है; **-विभ्रम**-(पुं.) देखने में भ्रम होना; **-विज्ञान**-(पुं.) नेत्र रोग चिकित्सा की विद्या; **-विष**-(पुं.) एक प्रकार का सर्प जिसके नेत्रों में विष रहता है; **-संधि**-(स्त्री.) आँख का कोना; **-स्थान**-(पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का अवलोकन स्थान।

दृष्या-(सं. स्त्री.) हाथी की पीठ पर का ओहार।

दे-(हिं. स्त्री.) स्त्रियों के लिए प्रयोग करने का एक आदरसूचक शब्द, देवी।

देई-(हिं. स्त्री.) स्त्रियों के लिए एक आदरसूचक शब्द, देवी।

देख, देखन-(हिं. स्त्री.) देखने की क्रिया या भाव, अवलोकन।

देखनहारा-(हिं. वि.) देखनेवाला।

देखना-(हिं. क्रि. स.) अवलोकन करना, निरीक्षण करना, अन्वेषण करना, ढूँढ़ना, पता लगाना, संशोधित करना, शोधना, अनुभव करना, सोचना, समझना, परीक्षा करना, प्रबंध करना, परखना, ताकते रहना, विचारना, जाँच करना, ठीक करना, भोगना, पढ़ना; **-सुनना**-पता लगाना; **देखने में**-साधारण व्यवहार में; **देखते-देखते**-(अव्य.) आँखों के सामन, तुरत; (मुहा.) **देखते रह जाना**-अचंभे में पड़ना; **देखा जायगा**-दुबारा विचार किया जायगा।

देख-भाल-(हिं. स्त्री.) संरक्षण, निरीक्षण, जाँच-पड़ताल।

देखराना, देखरावना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'दिखलाना'।

देख-रेख-(हिं. स्त्री.) निरीक्षण, देखभाल।

देखाऊ-(हिं. वि.) जो केवल देखने के लिए हो, झूठी तड़क-भड़कवाला, दिखौवा, बनावटी।

देखादेखी-(हिं. स्त्री.) साक्षात्कार, दर्शन; (अव्य.) दूसरों को करते हुए देखकर।

देखाना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'दिखाना'।

देखाभाली-(हिं. स्त्री.) देखें 'देखभाल'।

देखाव-(हिं. पुं.) रूप-रंग दिखाने की क्रिया या भाव, बनावट, दृष्टि की सीमा, तड़क-भड़क, दिखावट, ठाटबाट।

देखावना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'दिखाना'।

देखौवा-(हिं. वि.) देखें 'देखाऊ'।

देग-(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाज पक्षी; (फा. पुं.) खाना पकाने का बड़ा हंडा।

देगचा-(फा. पुं.) छोटा देग।

देगची-(फा. स्त्री.) बहुत छोटा देग।

देदीप्यमान-(सं. वि.) जाज्वल्यमान, चमकता हुआ, अत्यन्त प्रकाशयुक्त।

देन-(हिं. स्त्री.) देने की क्रिया या भाव, दान की हुई वस्तु; (अ. पुं.) ऋण।

देनदार-(हिं. पुं.) ऋणी, दानी।

देनदारी-(हिं. स्त्री.) ऋणी होने की अवस्था।

देन-लेन-(हिं. पुं.) महाजनी का व्यवसाय।

देनहारा-(हिं. वि.) देनेवाला।

देना-(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को अपने अधिकार से हटाकर दूसरे के अधिकार में अर्पित करना, प्रदान करना, सौंपना, उत्पन्न करना, निकालना, अनुभव कराना, भोगाना, मारना, हाथ पर रखना, पास रखना, लगाना, डालना, बन्द करना; (पुं.) ऋण।

देमान-(हिं. पुं.) देखें 'दीवान'।

देय-(सं. वि.) दातव्य, देने योग्य।

देर-(फा. स्त्री.) अधिक समय, विलंब, समय, वक्त।

देरी-(हिं. स्त्री.) देखें 'देर'।

देव-(सं. पुं.) देवता, अमर, सुर, राजा, मेघ, पूज्य व्यक्ति, पारद, पारा, ब्राह्मणों की एक उपाधि, देवदार, तेजोमय व्यक्ति, ज्ञानेन्द्रिय, ऋत्विक्।

देव अंशी-(हिं. वि.) जो देवता का अंश लेकर उत्पन्न हो।

देवऋण-(सं. पुं.) यज्ञादि कर्म जिसके करने से मनुष्य देवताओं के ऋण से मुक्त होता है।

देवऋषि-(सं. पुं.) देवलोक में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि आदि ऋषि।

देवक-(सं. पुं.) श्रीकृष्ण के नाना का नाम जो यदुवंशीय राजा थे।

देवकन्या-(सं. स्त्री.) देवता की स्त्री, देवी।

देवकपास-(हिं. स्त्री.) नरमा, मनवाँ।

देवकर्दम-(सं. पुं.) सुगन्धित द्रव्य विशेष।

देवकर्म-(सं. पुं.) वह कर्म जो देवता को प्रसन्न करने के लिए किया जाय।

देवकली-(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।

देवकाँड़र-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा पौधा जो औषधी में प्रयुक्त होता है।

देवकार्य-(सं. पुं.) देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किया जानेवाला कर्म।

देवकाष्ठ-(सं. पुं.) देवदारु।

देवकिरि-(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।

देवकिल्बिष-(सं. पुं.) देवता द्वारा किया हुआ अनिष्ट।

देवकी-(सं. स्त्री.) वसुदेव की स्त्री, श्रीकृष्ण की माता।

देवकीनंदन-(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।

देवकीय-(सं. वि.) देवता-संबंधी, देवता का।

देवकुंड–(सं. पुं.) देवस्थान के निकट का जलाशय ।
देवकुल–(सं. स्त्री.) देवताओं का वंश, देवता-समूह ।
देवकुल्या–(सं. स्त्री.) गंगा नदी ।
देवकुसुम–(सं. पुं.) लवंग, लौंग ।
देवकूट–(सं. पुं.) वसिष्ठ के आश्रम के पास का एक पवित्र आश्रम ।
देवकेसर–(सं. पुं.) एक प्रकार का पुन्नाग ।
देवक्षत्र–(सं. पुं.) यज्ञ ।
देवक्षेत्र–(सं. पुं.) पुण्य स्थान, स्वर्ग ।
देवखात–(सं. पुं.) प्राकृतिक जलाशय, सरोवर, ताल, गुहा ।
देवखातक–(सं. पुं.) गुहा, कन्दरा ।
देवगंधर्व–(सं. पुं.) वे गन्धर्व जो देवताओं के विनोदार्थ गाते हैं ।
देवगणिका–(सं. स्त्री.) स्वर्ग की वेश्या, अप्सरा ।
देवगढ़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की ऊख ।
देवगण–(सं. पुं.) देवताओं का समूह, किसी देवता का अनुचर ।
देवगति–(सं. स्त्री.) मरने के बाद देवयोनि की प्राप्ति, स्वर्ग-लाभ ।
देवगर्भ–(सं. पुं.) वह मनुष्य जो देवता के वीर्य से उत्पन्न हुआ हो ।
देवगांधारी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
देवगायक, देवगायन–(सं. पुं.) गन्धर्व ।
देवगिरा–(सं. स्त्री.) देववाणी, संस्कृत ।
देवगिरि–(सं.पुं.) रैवतक पर्वत का नाम जो गुजरात में है; (स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
देवगुरु–(सं.पुं.) देवताओं के गुरु बृहस्पति
देवगुही–(सं. स्त्री.) सरस्वती ।
देवगुह्य–(सं. पुं.) जो विषय देवताओं को भी गुप्त हो ।
देवगृह–(सं.पुं.) गया के एक पुण्य स्थान का नाम; (पुं.) देवालय, मन्दिर ।
देवग्रह–(सं. पुं.) वे मनुष्य जो जागते-सोते देवताओं का ध्यान करते हैं ।
देवघन–(हिं. पुं.) बगीचों में लगाने का एक छायादार वृक्ष ।
देवचर्या–(सं. स्त्री.) देवताओं के निमित्त हवन आदि ।
देवचाली–(सं.पुं.) इन्द्रताल का एक भेद ।
देवचिकित्सक–(सं. पुं.) देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार, दो की संख्या ।
देवच्छंद–(सं.पुं.) एक प्रकार का हार ।
देवज–(सं. वि.) देवता से उत्पन्न ।
देवजग्ध–(सं.वि.) देवताओं द्वारा खाया हुआ; (पुं.) एक सुगन्धित घास ।
देवजन–(सं. पुं.) देवताओं के सदृश मनुष्य, गन्धर्व ।
देवजनविद्या–(सं. स्त्री.) गन्धर्व-विद्या, नाच-गाना ।
देवजाति–(सं. स्त्री.) देवगण ।
देवजामि–(सं. स्त्री.) देवताओं की स्त्री ।
देवजुष्ट–(सं.वि.) देवताओं को चढ़ाया हुआ ।
देवट–(सं. पुं.) शिल्पी, कारीगर ।
देवठान–(हिं. पुं.) कार्तिक सुदी एकादशी । (जिस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं ।)
देवढ़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'ड्योढ़ी ।'
देवतर–(सं. वि.) बहुत चमकीला ।
देवतरु–(सं. पुं.) स्वर्ग के पाँच वृक्ष, यथा-मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्पतरु और हरिचन्दन ।
देवतर्पण–(सं. पुं.) देवताओं का नाम लेकर तर्पण करने की क्रिया ।
देवता–(सं. स्त्री.) स्वर्ग में रहनेवाले देव, सुर, निर्जर ।
देवताकुसुम–(सं. पुं.) लवंग, लौंग ।
देवतागार–(सं. पुं.) देवताओं का घर ।
देवतागृह–(सं.पुं.) देवालय, ठाकुर-द्वारा ।
देवताड़–(सं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, बंदाल ।
देवताड़ी–(हिं. स्त्री.) तुरई, तरोई ।
देवतात–(सं.पुं.) देवताओं के पिता कश्यप ।
देवताधिप–(सं. पुं.) देवताओं के अधिपति, इन्द्र ।
देवताध्यक्ष–(सं. पुं.) सामवेद का एक ब्राह्मण ।
देवतानुक्रम–(सं.पुं.) देवताओं का उद्देश्य ।
देवतामणि–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
देवतामय–(सं. वि.) देवतास्वरूप ।
देवतायन–(सं.पुं.) देवगृह, ठाकुरद्वारा ।
देवतालय–(सं. पुं.) देवतायन ।
देवतावेश्म–(सं. पुं.) देवतालय ।
देवतीर्थ–(सं. पुं.) अँगूठे को छोड़कर अन्य अँगुलियों का अग्र भाग ।
देवत्त–(सं. वि.) देवता को अर्पण किया जानेवाला ।
देवत्य–(सं. वि.) देवता-संबंधी ।
देवत्रयी–(सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु और महेश–इन तीनों देवताओं का समुदाय ।
देवत्व–(सं. पुं.) देवता का भाव, देवता का धर्म ।
देवदग्ध–(सं. पुं.) रोहित घास ।
देवदत्त–(सं. पुं.) वह सम्पत्ति जो देवताओं के निमित्त दान दी गई हो, अर्जुन के एक शंख का नाम, शुद्धोदन के भतीजे का नाम; (वि.) जो देवताओं द्वारा दिया गया हो, जो देवता के निमित्त अर्पित किया गया हो ।
देवदर्श–(सं.वि.) देवता का दर्शन करने-वाला; (पुं.) एक ऋषि का नाम ।
देवदर्शन–(सं. पुं.) देवता का दर्शन ।
देवदाली–(सं. स्त्री.) बड़ी तरोई ।
देवदार(रु)–(हिं. पुं.) एक बहुत ऊँचा वृक्ष जो बहुत दीर्घायु होता है, (इसके हीर से तारपीन की तरह का तेल निकलता है ।)
देवदालिका–(सं.स्त्री.) महाकाल नामक वृक्ष ।
देवदासी–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, मन्दिरों की दासी, बिजौरा नीबू ।
देवदीप–(सं. पुं.) वह दीपक जो देवता के निमित्त जलाया गया हो, चक्षु, आँख ।
देवदुंदुभि–(सं. पुं.) देवताओं का बाजा, लाल या काली तुलसी ।
देवदूत–(सं. पुं.) देवताओं का दूत, अग्नि ।
देवदूती–(सं.स्त्री.) अप्सरा, बिजौरा नीबू ।
देवदेव–(सं.पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश ।
देवद्रुम–(सं. पुं.) स्वर्ग का वृक्ष, देखें 'देवदारु' ।
देवद्रोणी–(सं. वि.) देवयात्रा, वह अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है ।
देवधन–(सं. पुं.) देवता के निमित्त दिया हुआ धन ।
देवधान्य–(सं. पुं.) ज्वार ।
देवधाम–(सं. पुं.) देवस्थान, तीर्थस्थान ।
देवधुनी–(सं. स्त्री.) गंगा नदी ।
देवधूप–(सं. पुं.) गुग्गुल ।
देवनंदी–(सं.पुं.) इन्द्र के द्वारपाल का नाम ।
देवन–(सं. पुं.) व्यवहार, क्रीड़ा, खेल, द्युति, कान्ति, गति, जुआ, पद्म, कमल ।
देवनदी–(सं.स्त्री.) गंगा, सरस्वती और दृपद्वती ।
देवनल–(सं. पुं.) एक प्रकार का नरकट ।
देवना–(सं.स्त्री.) क्रीड़ा, खेल, सेवा, टहल ।
देवनागर, देवनागरी–(सं. पुं.) भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिन्दी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं, यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का एक रूप है ।
देवनाथ–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
देवनामक–(सं. पुं.) देवयोनि, विद्याधर ।
देवनायक–(सं. पुं.) सुरपति, इन्द्र ।
देवनाल–(सं. पुं.) बड़ा नरकट ।
देवनिकाय–(सं. पुं.) देवस्थान, स्वर्ग ।
देवनिम्नगा–(हिं. स्त्री.) गंगा ।
देवनिर्मित–(सं. वि.) देवता का बनाया

हुआ; (स्त्री.) गुरुच ।
देवनीय–(सं. पुं.)सत्रह चरणों का एक मन्त्र ।
देवपंचरात्र–(सं. पुं.)पाँच दिनों में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ ।
देवपति–(सं.पुं.)देवताओं के स्वामी इन्द्र ।
देवपत्नी–(सं. स्त्री.) *देवताओं की स्त्री ।*
देवपथ–(सं.पुं.)देवताओं का पथ, आकाश ।
देवपद्मिनी–(सं. स्त्री.) आकाश में बहनेवाली गंगा ।
देवपर–(सं. पुं.)वह जो आपत्ति पड़ने पर श्रद्धा से देवता के भरोसे बैठा रहे ।
देवपशु–(सं. पुं.) वह पशु जो देवता के नाम पर छोड़ा गया हो, देवता का उपासक ।
देवपात्र–(सं. पुं.) अग्नि, आग ।
देवपान–(सं.पुं.)सोमपान करने का पात्र ।
देवपालित–(सं. वि.)वह देश जहाँ वर्षा के जल से ही खेती होती है ।
देवपीयु–(सं. पुं.) देवताओं से द्वेष करनेवाले असुर ।
देवपुत्र–(सं. पुं.) देवकुमार, इलायची ।
देवपुर–(सं. पुं.) देवताओं की नगरी, अमरावती ।
देवपुरी–(सं. स्त्री.) अमरावती ।
देवपुष्प–(सं. पुं.) लवंग, लौंग ।
देवपूजा–(सं. स्त्री.) देवताओं का पूजन ।
देवपूज्य–(सं. पुं.) देवताओं का पूज्य, बृहस्पति ।
देवप्रतिकृति, देवप्रतिमा–(सं. स्त्री.) देवता की प्रतिमा ।
देवप्रयाग–(हिं. पुं.) टेहरी राज्य के अन्तर्गत एक पुण्य स्थान ।
देवप्रश्न–(सं. पुं.) शुभाशुभ-संबंधी प्रश्न ।
देवप्रसूत–(सं. वि.) जो देवता से उत्पन्न हुआ हो ।
देवप्रिय–(सं. पुं.)पीली भँगरैया, अगस्त्य का वृक्ष, नागवल्ली लता, सम्राट् अशोक की एक उपाधि ।
देवबंद–(हिं. पुं.) घोड़े की छाती पर की एक शुभ भौंरी ।
देवबंधु–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम ।
देवबधू–(सं. स्त्री.) अप्सरा ।
देवबला–(सं.स्त्री.) सहदेई नामक बूटी ।
देवबलि–(सं. पुं.) देवता के निमित्त बलि या उपहार ।
देवबाहु–(सं. पुं.) एक यदुवंशीय राजा का नाम ।
देवब्रह्म–(सं.पुं.)नारद ऋषि का एक नाम ।
देवब्राह्मण–(सं. पुं.) वह ब्राह्मण जो किसी देवता की पूजा करके अपनी जीविका चलाता है ।
देवभवन–(सं. पुं.) स्वर्ग, पीपल का वृक्ष, देवालय ।
देवभाग–(सं. पुं.) किसी सम्पत्ति या वस्तु का वह अंश जो देवता के लिए *निकाला जाता हो, देवताओं का भाग ।*
देवभाषा–(सं. स्त्री.) संस्कृत भाषा ।
देवभिषक्–(सं. पुं.) अश्विनीकुमार ।
देवभीति–(सं. स्त्री.) देवताओं का भय ।
देवभू–(सं. पुं.) देवता, स्वर्ग ।
देवभूति–(सं. स्त्री.) देवताओं का ऐश्वर्य, मन्दाकिनी ।
देवभूमि–(सं. स्त्री.) देवताओं की प्रिय भूमि, स्वर्ग ।
देवभूत–(सं. पुं.) विष्णु, इन्द्र ।
देवभोज्य–(सं. पुं.) अमृत ।
देवमंजर–(सं. पुं.) कौस्तुभमणि ।
देवमंदिर–(सं. पुं.) जिस घर में किसी देवता की मूर्ति स्थापित हो, देवालय, ठाकुरद्वारा ।
देवमणि–(सं. पुं.) कौस्तुभमणि, सूर्य ।
देवमत–(सं. वि.) देवताओं की सम्मति, एक ऋषि का नाम ।
देवमर्त्या–(सं. स्त्री.) महामेदा ।
देवमाता–(सं. स्त्री.) देवताओं की माता, अदिति ।
देवमादन–(सं. पुं.) वह सोम जिसको पीकर देवता मोहित हो जाते हैं ।
देवमान–(सं. पुं.) काल की गणना में देवताओं का मान, यथा–एक सौर वर्ष देवताओं के एक दिन के बराबर होता है ।
देवमानक–(सं. पुं.) कौस्तुभमणि ।
देवमाया–(सं. स्त्री.) परमेश्वर की माया जो अविद्या के रूप में सांसारिक बन्धनों का कारण होती है ।
देवमार्ग–(सं. पुं.) देख 'देवपथ' ।
देवमास–(सं.पुं.)गर्भ का आठवाँ महीना, देवमानानुसार तीस वर्ष का काल ।
देवमित्र–(सं. पुं.) शाकल्य ऋषि का एक नाम, अर्जुन वृक्ष, मदार का पेड़ ।
देवमुनि–(सं. पुं.) नारदादि ऋषि ।
देवयजन–(सं. पुं.) यज्ञ की वेदी, वह स्थान जहाँ यज्ञ किया जाता है, पृथ्वी ।
देवयजी–(सं. पुं.) देवता के निमित्त यज्ञ करनेवाला ।
देवयज्ञ–(सं. पुं.) पच यज्ञों के अन्तर्गत होम आदि कर्म ।
देवयज्या–(सं.स्त्री.) देवताओं के निमित्त यज्ञ ।
देवयात–(सं. पुं.) जिसने देवत्व प्राप्त किया हो, जो देवता हो गया हो ।
देवयात्रा–(सं. स्त्री.) देवताओं की यात्रा, रथ-यात्रा ।
देवयान–(सं. पुं.) देवताओं का विमान, शरीर से अलग होने के उपरान्त जीवात्मा *के जाने के लिए दो मार्ग हैं, उनमें से* वह मार्ग जिससे होता हुआ जीवात्मा ब्रह्मलोक को जाती है ।
देवयानी–(सं. स्त्री.) दैत्यगुरु शुक्राचार्य की कन्या जो पहिले अपने पिता के शिष्य कच पर अनुरक्त हुई थी परन्तु जब असुरों ने कच को मार डाला तब उसका विवाह राजा ययाति से हुआ ।
देवयावन्–(सं. वि.) देवताओं के तीर्थों की यात्रा करनेवाला ।
देवयुग–(सं. पुं.) सत्य-युग ।
देवयोनि–(सं. पुं.) देववंश जिसके अन्तर्गत–विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक और सिद्ध हैं।
देवयोषा–(सं. स्त्री.) देवताओं की स्त्री ।
देवर–(सं. पुं.) पति का छोटा भाई ।
देवरक–(सं. पुं.) पति का छोटा भाई ।
देवरक्षित–(सं. वि.) देवताओं द्वारा रक्षा किया हुआ ।
देवरक्षिता–(सं.स्त्री.) देवकी की बहिन ।
देवरथ–(सं. पुं.) सूर्य का रथ, देवताओं का रथ, विमान ।
देवरहस्य–(सं.पुं.)देवताओं की गुप्त लीला ।
देवरा–(हिं. पुं.) देवता, देवर ।
देवराज–(सं.पुं.)देवताओं के राजा इन्द्र ।
देवराज्य–(सं. पुं.) स्वर्ग ।
देवरात–(सं. पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार का सारस ।
देवरानी–(हिं. स्त्री.) देवर की स्त्री, पति के छोटे भाई की स्त्री, देवराज इन्द्र की रानी, शची ।
देवराय–(हिं. पुं.) देखें 'देवराज' ।
देवर्षि–(सं. पुं.) नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज आदि ऋषि ।
देवल–(सं. पुं.) देवताओं की पूजा करके जीविका निर्वाह करनेवाला, पुजारी, पंडा, देवर, नारद मुनि, धार्मिक पुरुष, एक स्मृति का नाम; (हिं. पुं.) देवमन्दिर, देवालय ।
देवलता–(सं. स्त्री.)नवमल्लिका, नेवारी लता, जीविका के लिए देवपूजन ।
देवलोक–(सं. पुं.) स्वर्ग; भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्–ये सातों देवलोक कहलाते हैं ।

देववक्त्र–(सं. पुं.) देवताओं का मुखस्वरूप, अग्नि।
देववती–(सं. स्त्री.) एक पौराणिक गन्धर्व की माता का नाम। (यह सुकेश नामक राक्षस की पत्नी थी।)
देववर्णिनी–(सं. स्त्री.) भारद्वाज मुनि की कन्या का नाम।
देववर्त्म–(सं. पुं.) आकाश।
देववर्धकि–(सं. पुं.) विश्वकर्मा।
देववर्ष–(सं. पुं.) एक द्वीप का नाम।
देववला–(सं. स्त्री.) सहदेई नामक बूटी।
देववल्लभ–(सं. वि.) देवताओं का प्रिय; (पुं.) केसर।
देववल्ली–(सं.स्त्री.) संस्कृत भाषा, आकाशवाणी।
देववाणी–(सं. स्त्री.) देखें 'देववल्ली', संस्कृत भाषा।
देववात–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
देववायु–(सं. पुं.) बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।
देववाहन–(सं. पुं.) देवताओं का वाहन, अग्नि।
देवविद्या–(सं. स्त्री.) निरुक्त विद्या।
देवविहाग–(सं. पुं.) एक राग का नाम।
देववीति–(सं. स्त्री.) देवताओं का भक्षण।
देववृक्ष–(सं. पुं.) मदार का पेड़, गुग्गुल।
देवव्रत–(सं. पुं.) एक प्रकार का साम-गान।
देवव्रती–(सं. वि., पुं.) देवता के निमित्त व्रत करनेवाला।
देवशत्रु–(सं. पुं.) देवताओं का शत्रु, असुर।
देवशर्मन्–(सं. पुं.) ब्राह्मण जाति की एक उपाधि।
देवशाख–(सं. पुं.) एक संकर राग का नाम।
देवशिल्पी–(सं. पुं.) विश्वकर्मा।
देवशुनी–(सं. स्त्री.) देवलोक की कुतिया, सरमा।
देवशेखर–(सं. पुं.) दौने का पौधा, देवता का मस्तक।
देवशेष–(सं. पुं.) अनन्त-नाग।
देवश्रवा–(सं. पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, वसुदेव के भाई का नाम।
देवश्री–(सं. पुं.) यज्ञ; (स्त्री.) देवताओं की कांति, लक्ष्मी।
देवश्रुत–(सं. वि.) देवताओं में प्रसिद्ध; (पुं.) ईश्वर, नारद, शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।
देवश्रेणी–(सं. स्त्री.) देवताओं की पंक्ति, मूर्वा लता।
देवश्रेष्ठ–(सं. वि.) देवताओं में श्रेष्ठ; (पुं.) बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

देवसख–(सं. पुं.) देवताओं का मित्र।
देवसख्या–(सं. पुं.) उत्तर दिशा का एक पर्वत।
देवसत्र–(सं. पुं.) एक यज्ञ का नाम।
देवसत्त्व–(सं. वि.) देवताओं के समान स्वभाववाला।
देवसद्म–(सं. पुं.) देवस्थान, देवालय।
देवसदन–(सं. पुं.) देवालय, स्वर्ग।
देवसम–(सं. पुं.) देवालय, ठाकुरद्वारा।
देवसभा–(सं. स्त्री.) देवताओं का समाज, राजसभा, सुधर्मा नाम की सभा जिसको मय दानव ने बनाया था।
देवसभ्य–(सं. पुं.) जुआड़ी।
देवसमाज–(सं. पुं.) सुधर्मा नाम की देवसभा।
देवसरित्–(सं. स्त्री.) गंगा नदी।
देवसर्षप–(सं. पुं.) एक प्रकार की सरसों।
देवसाख–(हिं. पुं.) देखें 'देवशाख'।
देवसात्–(सं. वि.) देवता के निमित्त अर्पण किया हुआ।
देवसायुज्य–(सं. पुं.) देवत्व-प्राप्ति।
देवसार–(सं. पुं.) इन्द्रताल के छः भेदों में से एक।
देवसावर्णि–(सं. पुं.) तेरहवें मनु का नाम।
देवसूरि–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध जैन आचार्य का नाम।
देवसृष्ट–(सं. वि.) देवताओं का बनाया हुआ।
देवसृष्टा–(सं. स्त्री.) मद्य, मदिरा।
देवसेना–(सं. स्त्री.) देवताओं का सैन्य, प्रजापति की एक कन्या जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी, शिशुओं का पालन करनेवाली षष्ठी देवी।
देवसेनापति–(सं. पुं.) स्कन्द, कार्तिकेय।
देवस्थान–(सं. पुं.) देवताओं के रहने का स्थान, देवालय, देवमन्दिर, ठाकुरद्वारा।
देवस्व–(सं. पुं.) देव-प्रतिमा के लिए अर्पण की हुई संपत्ति।
देवहंस–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वत्तक।
देवहरिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार की नाव।
देवहव्य–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
देवहित–(सं. पुं.) देवताओं का हित।
देवहू–(सं. स्त्री.) देवताओं की पुकार, अन्न से भरी हुई गाड़ी, बायाँ कान; (वि.) देवताओं को पुकारनेवाला।
देवहूति–(सं. स्त्री.) स्वायंभुव मनु की एक कन्या जिसका विवाह महर्षि कर्दम से हुआ था। (सांख्यशास्त्र के कर्ता कपिल मुनि इनके पुत्र थे।)
देवहूय–(सं. पुं.) देवताओं और राक्षसों का युद्ध।

देवहेलि–(सं. स्त्री.) देवास्त्र।
देवह्रद–(सं. पुं.) एक तीर्थ का नाम।
देवांगना–(सं. स्त्री.) देवताओं की स्त्री, अप्सरा।
देवांतक–(सं. पुं.) राक्षस विशेष।
देवांधस–(सं. पुं.) देवता का अन्न, अमृत।
देवा–(सं. स्त्री.) विजयसार, मूर्वा लता; (हिं. वि.) देनेवाला, ऋणी।
देवाक्रीड–(सं. पुं.) देवताओं का बगीचा।
देवागार–(सं. पुं.) देवताओं का स्थान, देवालय।
देवागारिक–(सं. वि.) देवालय में काम करनेवाला।
देवार्चा–(सं. स्त्री.) देवता का पूजन करनेवाली।
देवाजीव–(सं. वि.) पंडा, पुजारी।
देवाजीवी–(सं. वि.) देवताओं की पूजा करके जीविका चलानेवाला।
देवाट–(सं. पुं.) हरिहर क्षेत्र का नाम।
देवादिदेव–(सं. पुं.) विष्णु।
देवात्मा–(सं. पुं.) देवस्वरूप अश्वत्थ, पीपल।
देवाधिदेव–(सं. पुं.) परमेश्वर, महादेव, इन्द्र।
देवाधिप–((सं. पुं.) इन्द्र।
देवान–(हिं. पुं.) देखें 'दीवान'।
देवानांप्रिय–(सं. पुं.) देवताओं को प्रिय, छाग, बकरा, मूर्ख, महाराजा अशोक की उपाधि।
देवाना–(हिं. वि.) देखें 'दीवाना'।
देवानीक–(सं. पुं.) देवताओं की सेना, सगर-वंश के एक राजा का नाम।
देवानुचर–(सं. पुं.) देवताओं के साथ चलनवाले विद्याधर आदि।
देवानुयायी–(सं. पुं.) देख 'देवानुचर'।
देवान्न–(सं. पुं.) चरु, हवि।
देवापि–(सं. पुं.) पुरुवंशीय राजा प्रतीप के एक पुत्र का नाम।
देवाभियोग–(सं. पुं.) किसी रुष्ट देवता का शरीर में प्रवेश।
देवायतन–(सं. पुं.) देव-मन्दिर, ठाकुरद्वारा।
देवायुध–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष जो बरसात के दिनों में आकाश में दिखाई पड़ता है।
देवायुस्–(सं. पुं.) देवताओं का जीवन-काल।
देवारण्य–(सं. पुं.) देवताओं का बगीचा।
देवाराधन–(सं. पुं.) देवताओं की पूजा।
देवारि–(सं. पुं.) देवताओं के शत्रु, असुर।
देवारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दिवाली'।
देवार्पण–(सं. पुं.) किसी वस्तु का दान जो देवता के निमित्त किया जाय।

देवार्ह(सं. वि.) देवता के निमित्त दान देने योग्य।
देवाल–(हिं. वि.) दाता, देनेवाला।
देवालय–(सं. पुं.) स्वर्ग, देवगृह, ठाकुर-द्वारा।
देवाला–(हिं. पुं.) देखें 'दिवाला'।
देवालिया–(हिं. वि.) देखें 'दिवालिया'।
देवावतार–(सं. पुं.) देवता का अवतार।
देवावास–(सं. पुं.) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत, देवालय।
देवाश्व–(सं. पुं.) इन्द्र का घोड़ा, उच्चैः-श्रवा।
देवाहार–(सं. पुं.) देवता के योग्य आहार, अमृत।
देवाह्वय–(सं. पुं.) देवदार का वृक्ष।
देविका–(सं. स्त्री.) युधिष्ठिर की एक पत्नी का नाम, धतूरा; (वि.) देव-संबंधी।
देविया–(सं. पुं.) धतूरे का पेड़।
देविल–(सं. वि.) धार्मिक।
देवी–(सं. स्त्री.) देवपत्नी, देवता की स्त्री, दुर्गा, राजमहिषी, वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो, पटरानी, एक सुगन्धित घास, सुशील स्त्री, स्त्री की उपाधि, अतीस, हर्रे, पाठा, नागरमोथा, अड़हुल का फूल, सफेद इन्द्रायण, मूर्वा लता; –तंत्र–(पुं.) एक तन्त्र का नाम; –त्व–(पुं.) देवी होने का भाव; –पुराण–(पुं.) वह उप-पुराण जिसमें देवी के माहात्म्य का वर्णन है; –भागवत–(पुं.) वह पुराण (अथवा कुछ लोगों की गणना में उपपुराण) जिसमें बारह स्कन्ध और अठारह हजार श्लोक हैं, इसमें विस्तृत रूप से देवी-माहात्म्य का वर्णन किया हुआ है; –माहात्म्य–(पुं.) दुर्गा देवी का माहात्म्य; –लता–(स्त्री.) अनन्तमूल; –वीर्य–(पुं.) गन्धक; –सूक्त–(पुं.) ऋग्वेद की शाकल संहिता का एक देवी-विषयक सूक्त।
देवेन्द्र–(सं. पुं.) देवताओं के राजा इन्द्र।
देवेज्य–(सं. पुं.) देवताओं के आचार्य, बृहस्पति।
देवेश–(सं. पुं.) देवताओं के राजा विष्णु, महादेव, परमेश्वर।
देवेशया–(सं. स्त्री.) देवी, पार्वती।
देवेशी–(सं. स्त्री.) देवी, पार्वती।
देवेश्वर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
देवेष्ट–(सं. वि.) देवताओं को प्रिय; (पुं.) गुग्गुल।
देवै–(हिं. स्त्री.) देवकी।
देवैया–(हिं. वि., पुं.) देनेवाला, दाता।
देवोत्तर–(सं. पुं.) वह सम्पत्ति जो किसी देवता के नाम पर अर्पित की गयी हो।
देवोत्थान–(सं. पुं.) विष्णु भगवान् का कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन शेष की शय्या पर से उठना।
देवोद्यान–(सं. पुं.) देवताओं के चार उद्यान या बगीचे जिनके नाम नन्दन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र हैं।
देवोन्माद–(सं. पुं.) एक प्रकार का उन्माद या पागलपन जिसमें रोगी पवित्र रहता है, सुगन्धित फूलों की माला पहिनता है, आँखें बन्द नहीं करता और संस्कृत बोलता है, यह रोग देवता के कोप से उत्पन्न होता है।
देव्य–(सं. पुं.) देखें 'देवत्व'।
देव्या–(सं. स्त्री.) ब्राह्मी बूटी।
देव्युन्माद–(सं. पुं.) एक प्रकार का उन्माद जिसमें पक्षाघात हो जाता है।
देश–(सं. पुं.) वह भू-भाग जो एक राजा के शासन में हो अथवा जहाँ की सरकार एक हो। पृथ्वी का वह भाग जिसका कोई विशिष्ट नाम हो और जिसके अन्तर्गत अनेक नगर, ग्राम आदि हों, जनपद, न्याय अथवा वैशेषिक के अनुसार वह दिक्चक्र जिससे उत्तर-दक्षिण आदि दिशाओं का ज्ञान होता है, सम्पूर्ण जाति का एक राग, शरीर का कोई अंग, स्थान, जगह।
देशक–(सं. वि.) उपदेश करनेवाला।
देशकली–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
देशकार–(सं. पुं.) एक सम्पूर्ण जाति का राग।
देशकारी, देशगांधार–(सं. स्त्री., पुं.) एक रागिनी या राग का नाम।
देशज–(सं. वि.) देशजात, देश में उत्पन्न; (पुं.) शब्द के तीन विभागों में से एक जो न तो शुद्ध संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो, परन्तु किसी देश में बोले जाने के कारण भाषा में प्रचलित हो गया हो।
देशधर्म–(सं. पुं.) देश की रीति के अनुसार व्यवहार।
देश-निकाला–(हिं. पुं.) देश के बाहर निकाले जाने का दण्ड।
देश-परिच्छन्न–(सं. वि.) सर्वव्यापी, जो सब स्थानों में फैला हो।
देशपाली–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
देशभाषा–(सं. स्त्री.) किसी देश या प्रान्त में बोली जानेवाली भाषा।
देशमलार–(हिं. पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
देशराज–(सं. पुं.) आल्हा-ऊदल के पिता का नाम, यह राजा परमाल की सन्तानों में से थे।
देशरूप–(सं. वि.) उचित, योग्य।
देशस्थ–(सं. वि.) देश में रहनेवाला। (पुं.) महाराष्ट्रीय ब्राह्मणों का एक भेद;
देशांकी–(हिं. स्त्री.) रागिनी का एक भेद।
देशांतर–(सं. पुं.) देशभेद, परदेश, विदेश, भूगोल में उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक खींची हुई कल्पित माध्य देशांतर से पूरब या पच्छिम की ओर की दूरी।
देशाक्षा, देशाखी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी विशेष।
देशाचार–(सं. पुं.) देश की प्रचलित चाल या व्यवहार।
देशाटन–(सं. पुं.) देशभ्रमण, अनेक देशों की यात्रा।
देशिक–(सं. पुं.) यात्री, पथिक, बटोही, उपदेश करनेवाला गुरु।
देशित–(सं. वि.) जिसको उपदेश दिया गया हो।
देशिनी–(सं. स्त्री.) अँगूठे और मध्यमा के बीच की अँगुली, तर्जनी नामक अँगुली, सूची।
देशी–(हिं. वि.) देशीय, देश का, देश-संबंधी, अपने देश का बना हुआ, स्वदेश में उत्पन्न; (सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
देशीय–(सं. वि.) देश का, अपने देश का उत्पन्न या बना हुआ।
देश्य–(सं. पुं.) तर्क में पूर्व पक्ष; (वि.) देश-संबंधी, देश का।
देष्ठ–(सं. वि.) अति दानी, बहुत दान करनेवाला।
देस–(हिं. पुं.) देखें 'देश'।
देसवाली–(हिं. पुं.) गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद।
देसावर–(हिं. पुं.) देशान्तर, परदेश, विदेश।
देसावरी–(हिं. वि.) विदेशी।
देसी–(हिं. वि.) स्वदेशी, अपने देश का।
देह–(सं. पुं.) शरीर, तनु, शरीर का कोई अंग, जीवन, मूर्ति, चित्र; (मुहा.) –छूटना–मृत्यु होना; –छोड़ना–मरना; –धरना–शरीर धारण करना; –कर्ता–(पुं.) ईश्वर, सूर्य; –कृत्–(पुं.) परमेश्वर; –कोष–(पुं.) त्वचा, चमड़ा; –क्षय–(पुं.) शरीर का नाश, रोग; –ज–(पुं.) तनुज, पुत्र, बेटा; –जा–(स्त्री.) पुत्री, बेटी; (वि.) जो शरीर से उत्पन्न हो; –त्याग–(पुं.) प्राणनाश, मृत्यु; –द–(वि.) शरीर देनेवाला (पुं.) पारद, पारा;

–धारक(वि.) शरीर धारण करनेवाला; (पुं.) आहार, भोजन, अस्थि, हड्डी; **–धारण–** (पुं.) प्राण-धारण, शरीर-रक्षा; **–धारी**–(वि.) देह या शरीर धारण करनेवाला; **–धि**–(पुं.) पक्षियों का पंख; **–धृक्**–(पुं.) वायु, पवन, हवा; **–पर्याप्ति**–(स्त्री.) शरीर में रस, रक्त, मांस आदि की उत्पत्ति; **–पात**–(पुं.) मृत्यु; **–भाज्**–(वि.) जीवधारी, शरीर धारण करनेवाला; **–भुज्**–(पुं.) देह-धारी प्राणी, जीव, सूर्य; **–भृत्**–(पुं.) अपने-अपने कर्म के अनुसार देह का अधिष्ठाता जीव; **–यात्रा**–(स्त्री.) देह-रक्षण के उद्यम, भोजन, मरण, मृत्यु; **–लक्षण**–(पुं.) सामुद्रिक शास्त्र, शरीर के ऊपर का चिह्न; **–वंत**–(हिं. वि.) शरीरधारी; (पुं.) देह धारण करनेवाला मनुष्य; **–वान्**–(वि.) शरीरधारी; (पुं.) सजीव प्राणी; **–वायु**–(पुं.) देहस्थ पाँच वायु जिनके नाम–प्राण, अपान, व्यान, उदान तथा समान है; **–शंकु**–(पुं.) पत्थर का खम्भा; **–संचारिणी**–(स्त्री.) कन्या, पुत्री, बेटी; **–साम्य**–(पुं.) शरीर की समता; **–सार**–(पुं.) शरीर की धातु, मज्जा।

देहर–(हिं. स्त्री.) नदी के किनारे की नीची भूमि।

देहरा–(सं. पुं.) देवालय, ठाकुरद्वारा।

देहरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'देहली'।

देहला–(सं. स्त्री.) मद्य।

देहली–(सं. स्त्री.) द्वार के चौखट के नीचे लगी हुई लकड़ी, दिल्ली नगर; **–दीपक**–(पुं.) देहली पर रक्खा हुआ दीपक जो भीतर-बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है, एक अर्थालंकार जिसमें कोई मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगता है; **–प्रदीपन्याय**–(पुं.) एसी बात जो दोनों ओर संकेत करती हो।

देहांत–(सं. पुं.) मृत्यु।

देहांतर–(सं. पुं.) दूसरे शरीर की प्राप्ति, मृत्यु।

देहात–(हिं. स्त्री.) गाँव, ग्राम।

देहाती–(हिं. वि.) देहात का, देहात-संबंधी।

देहातीत–(सं. पुं.) वह ज्ञानी जिसको शरीर की ममता न हो।

देहात्मवाद, देहात्मप्रत्यय–(सं. पुं.) शरीर को ही आत्मा समझने का सिद्धांत।

देहात्मवादी–(सं. पुं.) शरीर को ही आत्मा समझनेवाला।

देहाध्यास–(सं. पुं.) देह या उसके धर्म को आत्मा समझने का धर्म।

देहावरण–(सं. पुं.) चिड़ियों का पंख, वस्त्र।

देहिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का कीड़ा।

देही–(सं. पुं.) आत्मा, शरीरी, जीव।

देहोद्भव–(सं. वि.) शरीर से उत्पन्न।

दैउ–(हिं. पुं.) देखें 'दैव'।

दैक्ष–(सं. वि.) दीक्षा-संबंधी।

दैर्घ्य–(सं. पुं.) दीर्घता, लंबाई।

दैतेय–(सं. पुं.) दिति की सन्तान, दैत्य; (वि.) दिति से उत्पन्न।

दैत्य–(सं. पुं.) कश्यप ऋषि के वे पुत्र जो दिति के गर्भ से उत्पन्न थे और जो देवताओं के विरोधी थे, असुर, राक्षस, विशाल काय और अति बलवान् मनुष्य, दुराचारी व्यक्ति, दानव; **–गुरु**–(पुं.) शुक्राचार्य; **–दानवमर्दन**–(पुं.) इन्द्र; **–देव**–(पुं.) वरुण, वायु; **–द्वीप**–(पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; **–द्वेषी**–(पुं.) देवता; **–धूमिनी**–(स्त्री.) तारा देवी की तान्त्रिक उपासना में एक कर-मुद्रा का नाम; **–निसूदन**–(पुं.) विष्णु; **–पति**–(पुं.) हिरण्यकश्यप; **–पुरोधस्**–(पुं.) दैत्यों के पुरोहित शुक्राचार्य; **–पूज्य**–(पुं.) देखें 'दैत्यपुरोधस्'; **–माता**–(स्त्री.) दैत्यों की माता दिति; **–मेदज**–(स्त्री.) पृथ्वी, गुग्गुल; **–युग**–(पुं.) दैत्यों का युग जो बारह वर्षों का माना जाता है; **–सेना**–(स्त्री.) प्रजापति की एक कन्या का नाम; **–हन्**–(पुं.) शिव, महादेव।

दैत्या–(सं. स्त्री.) दैत्य या असुर की स्त्री।

दैत्यारि–(सं. पुं.) विष्णु, इन्द्र।

दैत्याहोरात्र–(सं. पुं.) दैत्यों का एक दिन जो मनुष्य के एक वर्ष के बराबर होता है।

दैत्येंद्र–(सं. पुं.) दैत्यों के राजा, गन्धक; **–रक्त**–(पुं.) हिंगुल।

दैत्येज–(सं. पुं.) दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य।

दैनंदिनी–(सं. वि., स्त्री.) प्रति दिन की, प्रति दिन होनेवाली; (स्त्री.) दिनचर्या पुस्तिका, डायरी।

दैन–(सं. पुं.) दीन होने का भाव, दीनता; (वि.) दिन-संबंधी, दिन का।

दैनार–(सं. वि.) दीनार के सदृश।

दैनिक–(सं. वि.) दिन-संबंधी, प्रतिदिन होनेवाला, प्रतिदिन का; (पुं.) एक दिन का वेतन, दैनिक-पत्र; **–पत्र**–(पुं.) प्रतिदिन छपनेवाला समाचारपत्र।

दैनिकी–(सं. स्त्री.) डायरी, रोजनामचा।

दैन्य–(सं. पुं.) दीनता, दरिद्रता, काव्य के संचारी भावों में से वह भाव जिसमें दुःख आदि से विनीत भाव आ जाता है।

दैया–(हिं. पुं.) दई, दैव; (अव्य.) भय, आश्चर्य या क्लेश का सूचक शब्द जिसका स्त्रियाँ अधिक व्यवहार करती हैं।

दैव–(सं. वि.) देवता-संबंधी, जो कुछ देवता के विषय में किया जाय, देवता द्वारा होनेवाला, देवता को अर्पित; (पुं.) प्रारब्ध, भाग्य, विधाता, ईश्वर, आकाश।

दैवक–(सं. पुं.) दैव, प्रारब्ध।

दैवकी–(सं. स्त्री.) वसुदेव की पत्नी, श्रीकृष्ण की माता; **–नंदन**–(पुं.) वासुदेव, श्रीकृष्ण।

दैवकोविद–(सं. पुं.) दैवज्ञ, ज्योतिषी, वह विद्वान् जो दैव विषयों को जानता हो।

दैवगति–(सं. स्त्री.) ईश्वरी घटना, प्रारब्ध, भाग्य।

दैवज्ञ–(सं. पुं.) गणक, ज्योतिषी।

दैवचिंतक–(सं. पुं.) दैवज्ञ, ज्योतिषी।

दैवज्ञा–(सं. स्त्री.) ज्योतिषी की स्त्री।

दैवतंत्र–(सं. वि.) भाग्य के अधीन।

दैवत–(सं. पुं.) देवता, देवता-समूह, (वि.) देवता-सम्बन्धी।

दैवतपति–(सं. पुं.) इन्द्र।

दैवतप्रतिमा–(सं. स्त्री.) देवता की मूर्ति या प्रतिमा।

दैवति–(सं. पुं.) देवता की सन्तति।

दैवतीर्थ–(सं. पुं.) अँगुलियों की नोक।

दैवत्य–(सं. पुं.) देवत्व।

दैवदीप–(सं. पुं.) चक्षु, नेत्र, आँख।

दैवदुर्विपाक–(सं. पुं.) दैव की प्रतिकूलता, अभाग्य।

दैवपर–(सं. वि.) भाग्य पर भरोसा करनेवाला।

दैवप्रमाण–(हिं. वि.) भाग्याधीन।

दैवप्रश्न–(सं. पुं.) शुभाशुभ जानने की जिज्ञासा, देववाणी।

दैवमति–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।

दैवयुग–(सं. पुं.) मनुष्यों के चार युगों के बराबर एक युग, दिव्य युग।

दैवयोग–(सं. पुं.) आकस्मिक फल, संयोग।

दैवराति–(सं. पुं.) जनक राजा के पिता का नाम।

दैवलेखक–(सं. पुं.) मुहूर्तज्ञ, ज्योतिषी गणक।

दैववंश–(सं. पुं.) देवताओं का वंश।

दैववर्ष–(सं. पुं.) देवताओं का एक वर्ष।

दैववश–(हिं. अव्य.) संयोग से।

दैववशात्–(हिं. अव्य.) अकस्मात्।

दैववाणी–(सं. स्त्री.) आकाशवाणी, संस्कृत भाषा।

दैववादी–(सं. वि.) वह जो भाग्य के भरोसे रहता हो, निरुद्योगी, आलसी ।
दैवविद्–(सं. पुं.) गणक, ज्योतिषी ।
दैवविवाह–(सं. पुं.) स्मृतियों में लिखे हुए आठ प्रकार के विवाहों में से एक ।
दैविक श्राद्ध–(सं. पुं.) देवताओं के निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध ।
दैवसर्ग–(सं. पुं.) देवताओं की सृष्टि जिसके अन्तर्गत ब्राह्म, ऐन्द्र, पैत्र, गान्धर्व, याक्ष, राक्षस और पैशाच हैं ।
दैवसृष्टि–(सं. स्त्री.) ब्रह्मा की बनाई हुई देवताओं की सृष्टि ।
दैवहीन–(सं. वि.) जिसके भाग्य में कोई शुभ लक्षण न हो ।
दैवाकरि–(सं. पुं.) शनि, यम ।
दैवाकरी–(सं. स्त्री.) यमुना ।
दैवागत–(सं. वि.) सहसा होनेवाला आकस्मिक ।
दैवागारिक–(सं. वि.) जो देवालय में नियुक्त हो ।
दैवात्–(सं. अव्य.) अकस्मात्, अचानक ।
दैवापत्य–(सं. पुं.) अचानक होनेवाला अनर्थ ।
दैवाल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी ।
दैवासुर–(सं. नपुं.) देवता और असुर की शत्रुता ।
दैवाहोरात्र–(सं. पुं.) देवताओं का एक दिन जो मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है ।
दैविक–(सं. वि.) देवता-संबंधी, देवताओं के उद्देश्य से किया जानेवाला ।
दैवी–(सं. वि.) देवता-संबंधी, देवकृत, देवताओं द्वारा किया हुआ, आकस्मिक, प्रारब्ध से होनेवाला, सात्त्विक; **–गति**–(स्त्री.) भावी, प्रारब्ध, ईश्वरी लीला ।
दैवोद्यान–(सं. पुं.) देवताओं का बगीचा ।
दैवोपहतक–(सं. वि.) हतभाग्य, अभागा ।
दैव्य–(सं. पुं.) देवता, भाग्य, नसीब; (वि.) देवता-संबंधी ।
दैशिक–(सं. वि.) देश-संबंधी, देशीय ।
दैष्टिक–(सं. वि.) भाग्य के भरोसे रहनेवाला ।
दैहिक–(सं. वि.) शरीर-संबंधी, शारीरिक, शरीर से उत्पन्न ।
दोंकना–(हिं. क्रि. अ.) गुर्राना ।
दोंकी–(हिं. स्त्री.) धौंकनी ।
दोंर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सर्प ।
दो–(हिं. वि., पुं.) तीन से एक कम, एक और एक, २; **–एक, –चार**–(वि.) थोड़े से; (मुहा.) **–चार होना**–भेंट-मुलाकात होना; **आँखें दोचार होना**–साक्षात्कार होना; **–दिन का**–(वि.) थोड़े काल का ।
दोइ–(हिं. वि.) दो संख्या का, दो ।
दोउ, दोऊ–(हिं. वि.) दोनों ।
दोख–(हिं. पुं.) देखें 'दोष' ।
दोखना–(हिं. क्रि. स.) दोष लगाना ।
दोखी–(हिं. वि.) देखें 'दोषी' ।
दोगंग–(हिं. स्त्री.) दो नदियों के बीच का प्रदेश ।
दोगंडी–(हिं. वि.) उपद्रव करनेवाला, उत्पाती ।
दोगला–(हिं. वि.) वर्णसंकर; **–पन**–(पुं.) दोगला होने की स्थिति ।
दोगा–(हिं. पुं.) छपे हुए मोटे दुसूती कपड़े का ओढ़ना, छूने के लिए पानी में घोला हुआ चूना ।
दोगाड़ा–(हिं. पुं.) दो नलियों की बन्दूक ।
दोगुना–(हिं. वि.) देखें 'दुगुना' ।
दोग्धव्य–(सं. वि.) दुहने योग्य ।
दोग्धा–(सं. वि.) ग्वाला, अहीर; (वि.) दुहनेवाला, दुहने योग्य ।
दोग्ध्री–(सं. स्त्री.) दुधार गाय ।
दोघ–(सं. पुं.) दुहनेवाला मनुष्य ।
दोच–(हिं. स्त्री.) असमंजस, दुवधा, दुःख, कष्ट, दवाव ।
दोचन–(हिं. स्त्री.) दुविधा, असमंजस ।
दोचना–(हिं. क्रि. स.) किसी काम को करने के लिए बड़ा आग्रह करना, दबाव देना ।
दोचित्ता–(हिं. वि.) जिसका चित्त एक विषय में स्थिर न हो, उद्विग्न चित्त का ।
दोचित्ती–(हिं. स्त्री.) चित्त की अस्थिरता, उद्विग्नता ।
दोज–(हिं. स्त्री.) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया, दूज ।
दोजख–(फा. पुं.) इस्लाम धर्म के अनुसार नरक का नाम ।
दोजखी–(फा. वि.) दोजख का, दोजख-संबंधी ।
दोजानु–(हिं. अव्य.) घुटने के बल ।
दोतला, दोतल्ला–(हिं. वि.) दो खण्डों का (घर) ।
दोतारा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का दुशाला, दो तारों का एक प्रकार का बाजा ।
दोदना–(हिं. क्रि. स.) कही हुई बात को अस्वीकार करना ।
दोदरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष ।
दोदलक–(हिं. पुं.) चने की दाल या तरकारी ।
दोदा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा कौवा ।
दोदाना–(हिं. क्रि. स.) किसी को दोदने में प्रवृत्त करना ।
दोदामी–(हिं. वि.) देखें 'दुदामी' ।
दोदिन–(हिं. पुं.) रीठे की जाति का एक वृक्ष ।
दोदिला–(हिं. वि.) दोचित्ता, जिसका चित्त एकाग्र न हो ।
दोदिली–(हिं. स्त्री.) चित्त की अस्थिरता ।
दोध–(सं. पुं.) गोप, ग्वाला, अहीर ।
दोधक–(सं. पुं.) एक वर्णवृत्त का नाम ।
दोधार–(हिं. पुं.) भाला, बरछा ।
दोधारा–(हिं. वि.) जिस शस्त्र में दोनों ओर धार हो; (पुं.) एक प्रकार का थूहर का पौधा ।
दोधूयमान–(सं. वि.) बारंबार या निरंतर काँपनेवाला ।
दोन–(हिं. पुं.) भूमि का वह नीचा भाग जो दो पर्वतों के बीच में हो, दो नदियों के बीच का प्रदेश, दो नदियों का संगम-स्थान, दो वस्तुओं का मेल, धान सींचने का एक प्रकार का खोखला किया हुआ लंबा काठ ।
दोनला, दोनली–(हिं. वि.) दो नालों या नलियोंवाला ।
दोना–(हिं. पुं.) कटोरी के आकार का पत्तों का बना हुआ पात्र ।
दोनिया–(हिं. स्त्री.) छोटा दोना ।
दोनों–(हिं. वि.) उभय, एक और भी दूसरा ।
दोपंथी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की दोहरे बनावट की जाली ।
दोपट्टा–(हिं. पुं.) देखें 'दुपट्टा' ।
दोपलका–(हिं. वि.) दो पल्लों का; (पुं.) दोहरा नगीना, एक प्रकार का कबूतर ।
दोपलिया–(हिं. वि.) देखें 'दोपल्ली' ।
दोपल्ली–(हिं. वि.) दो पल्लोंवाला, जिसमें दो पल्ले हों; (स्त्री.) दो कपड़ों को एक में सिलकर बनाई हुई टोपी, दोपलिया ।
दोपहर–(हिं. स्त्री.) प्रातःकाल और संध्या के बीच का समय, मध्याह्न काल ।
दोपहरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'दोपहर' ।
दोपीठा–(हिं. वि.) जिस छपे वस्त्र के दोनों ओर समान रंग-रूप हों; (पुं.) कागज को एक ओर छापने के बाद दूसरी ओर छापना ।
दोपौवा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु का आधा भाग ।
दोबल–(हिं. पुं.) अपराध, दोष ।
दोबा–(हिं. पुं.) दुविधा ।
दोभाषिया–(हिं. पुं.) देखें 'दुभाषिया' ।

दोमट–(हिं.स्त्री.) बालू मिली हुई मिट्टी ।
दोमहला–(हिं.वि.) दो खण्डों या तल्लों का।
दोमुँहा–(हिं. वि.) जिसके दो मुख हों, दोहरी चाल चलनेवाला, कपटी; –**साँप**–(पुं.) एक प्रकार का साँप जिसकी पूँछ मोटी होकर मुख के समान दिखाई पड़ती है; कुटिल या कपटी मनुष्य ।
दोमुँही–(हिं. स्त्री.) सोनारों का नक्काशी करने का एक उपकरण ।
दोय–(हिं. वि.) दो, दोनों ।
दोयरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष ।
दोयल–(हिं. पुं.) बया पक्षी ।
दोरंगा–(हिं. वि.) जिसमें दो रंग हों, दो रंगोंवाला, दोनों ओर चलनेवाला, वर्णसंकर, दोगला ।
दोरंगी–(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'दोरंगा'; (स्त्री.) कपट, छल ।
दोरक–(सं. पुं.) बीन की ताँत बाँधने की रस्सी ।
दोरसा–(हिं. वि.) जिसमें दो तरह का स्वाद या रस हो, एक प्रकार का पीने का तमाखू जिसका धुआँ कड़वा और मीठा होता है; –**दिन**–(पुं.) ऐसा दिन जब गरमी और सरदी दोनों रहती हैं ।
दोराहा–(हिं. पुं.) वह स्थान जहाँ से दो ओर दो मार्ग जाते हों ।
दोर्ग्रह–(सं. पुं.) हाथ पकड़ना, हाथ की पीड़ा ।
दोर्ज्या–(सं.पुं.) भुज के आकार की ज्या।
दोर्दंड–(सं. पुं.) बाहुरूप दण्ड, भुजदण्ड ।
दोर्मध्य–(सं. पुं.) बाहु का मध्य भाग ।
दोर्मूल–(सं. पुं.) कक्ष, काँख ।
दोल–(सं.पुं.) हिंडोला, दोलना, झूला, डोली।
दोलड़ा–(हिं. वि.) जिसमें दो लड़ें हों ।
दोलत्ती–(हिं. स्त्री.) देखें 'दुलत्ती' ।
दोला–(सं.स्त्री.) हिंडोला, झूला, डोली ।
दोलायमान–(सं. वि.) झूलता हुआ, हिलता हुआ ।
दोलायुद्ध–(सं.पुं.) वह युद्ध जिसमें बराबर दोनों पक्षों की हार-जीत रहती है ।
दोलिका–(सं.स्त्री.) झूला, हिंडोला, डोली ।
दोलित–(हिं. वि.) चंचल, दोलायमान।
दोली–(सं. स्त्री.) देखें 'डोली' ।
दोलोत्सव–(सं. पुं.) वैष्णवों का एक उत्सव जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है ।
दोश–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लाह जो रंग बनाने के काम में आती है।
दोशाला–(हिं. पुं.) देखें 'दुशाला' ।

दोष–(सं.पुं.) पाप, शरीर का विकार जो वात, पित्त या कफ के कुपित होने से उत्पन्न होता है, गौ के वध आदि का लगनेवाला अपराध, न्याय में वह त्रुटि जो तर्क के अवयवों के प्रयोग करने में होती है, मिथ्या-ज्ञान से उत्पन्न होनेवाला मानसिक भाव, प्रदोष काल, अपराध, साहित्य में वे बातें जो काव्य के गुण को कम कर देती है, द्वेष, अवगुण; –**क**–(पुं.) गाय का बच्चा, बछड़ा; –**ग्राही**–(वि.) दुर्जन, दुष्ट; –**घ्न**–(वि.) पित्तादिक दोषों को शान्त करनेवाली औषध; –**ज्ञ**–(पुं.) चिकित्सक, वैद्य, पंडित; –**ता**–(स्त्री.) दोषी होने का भाव; –**त्रय**–(पुं.) वात, पित्त और कफ; –**त्व**–(पुं.) दोषी होने का धर्म या भाव; –**पत्र**–(पुं.) वह कागज जिसपर अपराधी के अपराधों का विवरण लिखा रहता है; –**पाचन**–(पुं.) कपित्थ, कैथ का पेड़; –**भेद**–(पुं.) आयुर्वेद के अनुसार बासठ प्रकार के दोषों में से एक ।
दोषन–(हिं. पुं.) दूषण, दोष, अपराध ।
दोषना–(हिं. क्रि. स.) अपराध या दोष लगाना ।
दोषल–(सं.वि.) दोषयुक्त, जिसमें दोष हों ।
दोषांध–(सं. पुं.) आँख का एक रोग ।
दोषा–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात, बाहु ।
दोषाकर–(सं. पुं.) अवगुण की खान, चन्द्रमा ।
दोषाक्लेशी–(सं. स्त्री.) वन-तुलसी ।
दोषाक्षर–(सं. पुं.) अभियोग, अपराध ।
दोषातन–(सं. वि.) रात्रिभव, रात में होनेवाला ।
दोषातिलक–(सं. पुं.) दीपक ।
दोषाभूत–(सं. वि.) रात्रि में परिणत ।
दोषारोपण–(सं. पुं.) दोष लगाना ।
दोषावह–(सं.वि.) दोषपूर्ण, जिसमें दोष हो।
दोषास्य–(सं. पुं.) प्रदीप ।
दोषिक–(सं. पुं.) रोग ।
दोषिन–(हिं.स्त्री.) पाप करनेवाली स्त्री।
दोषी–(सं. वि.) दोषयुक्त, अपराधी, अभियुक्त, पापी ।
दोषैकदृक्–(सं. वि.) वह जो गुणों को न देखकर केवल दोषों को खोजता फिरता है।
दोस–(हिं. पुं.) देखें 'दोष' ।
दोसदारी–(हिं. स्त्री.) मित्रता ।
दोसा–(हिं. पुं.) पानी में उगनेवाली एक प्रकार की घास ।
दोसाध–(हिं. पुं.) देखें 'दुसाध' ।

दोसाल–(हिं. पुं.) बरमा देश का लकड़ी ढोनेवाला हाथी ।
दोसाला–(हिं. वि.) दो साल का, दो वर्षों का पुराना।
दोसाही–(हिं. वि.) जिस खेत में दो फसलें होती हों ।
दोसूती–(हिं.स्त्री.) बिछाने की मोटी चादर।
दोस्त–(फा. पुं.) मित्र, सुहृद् ।
दोस्ताना–(फा. पुं.) मित्रता, सौहार्द ।
दोस्ती–(फा. स्त्री.) मित्रता ।
दोस्य–(सं.वि.) जो बहुत दूर हो; (पुं.) खेलनेवाला ।
दोह–(सं. पुं.) दुहने का बरतन, दूध, दोहन, दुहने का काम, देखें 'द्रोह' ।
दोहगा–(सं. स्त्री.) उपपत्नी, रखनी ।
दोहज–(सं. पुं.) दुग्ध, दूध ।
दोहता–(हिं. पुं.) कन्या का पुत्र, नाती ।
दोहत्थड़–(हिं. पुं.) वह थप्पड़ जो दोनों हाथों से मारा जाय ।
दोहत्था–(हिं.अव्य.) दोनों हाथों से, दोनों हाथों के द्वारा; (वि.) जो दोनों हाथों से किया जाय ।
दोहद–(सं. पुं., स्त्री.) गर्भवती स्त्री की अभिलाषा या इच्छा, उकौना, वान्ति जो गर्भवती स्त्री को होती है, गर्भ का चिह्न; –**लक्षण**–(पुं.) दोहद के लक्षण, गर्भ के लक्षण; –**वती**–(स्त्री.) गर्भवती स्त्री ।
दोहदान्विता–(सं.स्त्री.) देखें 'दोहदवती' ।
दोहन–(सं. पुं.) पशुओं के स्तन से दूध निकालना, दुहने का पात्र, दोहनी ।
दोहना–(हिं.क्रि.स.) दोष या ऐब निकालना।
दोहनी–(सं.स्त्री.) दूध दुहने का मिट्टी का पात्र, दूध दुहने का काम; –**कुंड**–(पुं.) वह कुण्ड जहाँ श्रीकृष्ण गाय दुहते थे ।
दोहर–(हिं. स्त्री.) दो परतों की बनी हुई ओढ़ने की चादर ।
दोहरना–(हिं.क्रि.अ., स.) दूसरी आवृत्ति होना, दोबारा होना, दो परत किया जाना
दोहरा–(हिं. वि.) जिसमें दो परतें या तहें हों, दुगना; (पुं.) पान के दो बीड़े जो एक पत्ते में लपेटे हों, दोहा नामक छन्द ।
दोहराना–(हिं. क्रि. स.) किसी बात को दुबारा करना, पुनरावृत्ति करना, कपड़े आदि की दो तहें करना ।
दोहरीपट–(हिं. स्त्री.) मल्ल-युद्ध की एक युक्ति ।
दोहल–(सं. पुं.) देखें 'दोहद'; –**वती**–(स्त्री.) गर्भवती स्त्री ।
दोहला–(हिं. वि., स्त्री.) जिसने दो बार बच्चा दिया हो ।

दोहली–(सं. स्त्री.) अशोक वृक्ष, मदार का पेड़ ।
दोहा–(हिं. पुं.) हिन्दी का एक मात्रावृत्त छन्द, संकीर्ण राग का एक भेद ।
दोहाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'दुहाई' ।
दोहापनय–(सं. पुं.) गाय का दूध ।
दोहाक,दोहाग–(हिं.पुं.) दुर्भाग्य,अभाग्य ।
दोहागा–(हिं. वि.) अभागा ।
दोहित–(सं. वि.) दुहा हुआ; (हिं. पुं.) दोहता, नाती ।
दोही–(सं. वि.) दूहनेवाला; (पुं.) गोप, ग्वाला ।
दोही–(हिं.स्त्री.) दोहे की तरह का एक छन्द ।
दोह्य–(सं. वि.) दोहनीय, दुहने योग्य ।
दौं–(हिं. अव्य.) देखें 'धौं' ।
दौंकना–(हिं.क्रि.अ.) दमकना, चमकना ।
दौंचना–(हिं.क्रि.स.) दबाव डालकर लेना ।
दौंरी–(हिं. स्त्री.) खेती की उपज के डंठलों में से दाना अलगाने के लिये इनको बैलों से कुचलवाना, दँवरी, बैलों को बाँधने की रस्सी, झुण्ड ।
दौ–(हिं. स्त्री.) जंगल की अग्नि, संताप, जलन ।
दौकल–(सं. पुं.) कपड़े से ढका हुआ रथ ।
दौड़–(हिं. स्त्री.) दौड़ने की क्रिया, द्रुत-गमन, धावा, चढ़ाई, गति की सीमा, पहुँच, फैलाव, विस्तार, लम्बाई, सिपाहियों का वह दल जो अपराधियों को पकड़ने के लिये एक साथ जाता है, बुद्धि की पहुँच, अधिक से अधिक दौड़-धूप करना; (मुहा.)–**मारना या लगाना**–बार-बार आना-जाना, लम्बी यात्रा करना; **मन की दौड़**–कल्पना; **–धूप**–(स्त्री.) भरपूर प्रयत्न, किसी काम के लिए इधर-उधर आना-जाना ।
दौड़ना–(हिं. क्रि. अ.) द्रुत गति से चलना, प्रवृत्त होना, झुक पड़ना, दौड़-धूप लगाकर, उद्योग करना, व्याप्त होना, फैलना, छा जाना; (मुहा.) **चढ़ दौड़ना**–आक्रमण करना, धावा करना; **दौड़ दौड़कर आना**–बारंबार आना ।
दौड़ादौड़–(हिं. अव्य.) अविश्रान्त ।
दौड़ादौड़ी–(हिं. स्त्री.) अनेक मनुष्यों का एक साथ इधर-उधर दौड़ना, व्यग्रता, आतुरता, दौड़-धूप ।
दौड़ान–(हिं. स्त्री.) दौड़ने की क्रिया या भाव, वेग, क्रम, झोंक, फेरा ।
दौड़ाना–(हिं.क्रि.स.) जल्दी-जल्दी चलाना, बारंबार आने-जाने के लिए विवश करना, कलम चलाना, रंग पोतना या फैलाना,
किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना ।
दौत्य–(सं. पुं.) दूतकर्म, दूत का काम ।
दौन–(हिं. पुं.) देखें 'दमन' ।
दौना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सुगन्धित पौधा; (हिं. क्रि. अ.) दमन करना ।
दौनागिरि–(हिं.पुं.) द्रोणगिरि नामक पर्वत ।
दौर–(अ. पुं.) चक्कर, भ्रमण, फेरा, दिनों का फेर, भाग्य-विपर्यय; **–दौरा**–(पुं.) बोलबाला, प्रधानता ।
दौरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'दौड़ना' ।
दौरा–(अ. पुं.) चक्कर, भ्रमण, फेरा, गश्त, प्रशासनिक अधिकारियों का सामयिक जाँच-पड़ताल के लिए क्षेत्र में जाना; (हिं. पुं.) बड़ा टोकरा ।
दौरात्म्य–(सं. पुं.) दुर्जनता, दुष्टता ।
दौरादौर–(हिं.अव्य.) धुन से,तेजी के साथ ।
दौरान–(अ. पुं.) चक्कर, फेरा ।
दौराना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'दौड़ाना' ।
दौरित–(सं. पुं.) क्षति, हानि ।
दौरी–(हिं. स्त्री.) छोटी टोकरी ।
दौर्ग–(सं. वि.) दुर्ग-संबंधी ।
दौर्गत्य–(सं.पुं.) दरिद्रता, दुःखित अवस्था ।
दौर्ग्य–(सं. वि.) दुर्ग-संबंधी ।
दौर्ग्रह–(सं. पुं.) अश्वमेध यज्ञ ।
दौर्जन्य–(सं. पुं.) दुर्जनत्व, दुर्जनता, दुष्टता, बुरा व्यवहार ।
दौर्बल्य–(सं. पुं.) दुर्बलता ।
दौर्मनस्य–(सं.पुं.) कुमन्त्रणा, बुरा विचार ।
दौर्य–(सं. पुं.) दूरी, अन्तर
दौर्योधन–(सं. वि.) दुर्योधन-संबंधी ।
दौर्वासेय–(सं.पुं.) एक उपपुराण का नाम ।
दौर्वीण–(सं. पुं.) स्वच्छन्दता ।
दौर्हार्द–(सं.पुं.) दुष्ट प्रकृति, बुरा स्वभाव ।
दौर्हृदय–(सं. पुं.) दुष्टता, नीचता ।
दौलत–(अ. स्त्री.) धन, संपत्ति; **–खाना**–(पुं.) वासस्थान, निवास, घर; **–मंद**–(वि.) धनी, मालदार; **–मंदी**–(स्त्री.) मालदारी, ऐश्वर्य ।
दौलेय–(सं. पुं.) कच्छप कछुवा ।
दौल्मि–(सं. पुं.) इन्द्र ।
दौवारिक–(सं. पुं.) द्वारपाल, द्वार-रक्षक, ड्योढ़ीदार ।
दौष्कुल–(सं. वि.) निन्दित कुल का ।
दौष्कृत्य–(सं. पुं.) दुष्टता, नीचता ।
दौहिक–(सं. वि.) प्रतिदिन दुहने योग्य ।
दौहित्र–(सं. पुं.) लड़की का पुत्र, नाती ।
दौहृद–(सं. पुं.) देखें 'दोहद' ।
द्यावाक्षमा–(सं. स्त्री.) स्वर्ग और पृथ्वी ।
द्यावापृथ्वी–(सं. स्त्री.) सूर्य और पृथ्वी ।
द्यु–(सं. पुं.) स्वर्ग, आकाश, दिन, अग्नि, सूर्यलोक ।
द्युकारि–(सं. पुं.) काक, कौवा ।
द्युग–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया ।
द्युगत् (सं. अव्य.) शीघ्र ।
द्युचर–(सं. पुं.) ग्रह, पक्षी ।
द्युत्–(सं. वि.) प्रकाशवान् ।
द्युतान–(सं.वि.) चमकीला ।
द्युतरु–(सं. पुं.) कल्पतरु ।
द्युति–(सं. स्त्री.) दीप्ति, कान्ति, चमक, शोभा, देह का लावण्य, रश्मि, किरण; **–कर**–(वि.) प्रकाश उत्पन्न करनेवाला; **–धर**–(वि.) प्रकाश धारण करनेवाला; **–मणि**–(पुं.) मदार का वृक्ष; **–मान्**–(वि.) चमकदार ।
द्युतित–(सं. वि.) चमकता हुआ ।
द्युतिमा–(सं. स्त्री.) तेज, प्रकाश ।
द्युधुनि–(सं. स्त्री.) गंगा नदी ।
द्युनिवास, द्युनिवासी–(सं. पुं.) देवता ।
द्युपति–(सं. पुं.) सूर्य, इन्द्र ।
द्युपथ–(सं. पुं.) स्वर्ग का मार्ग ।
द्युमणि–(सं. पुं.) सूर्य, मदार का पेड़ ।
द्युमत्–(सं. वि.) कान्तियुक्त, चमकदार ।
द्युमत्सेन–(सं. पुं.) सत्यवान् के पिता का नाम जो शाल्व देश के राजा थे ।
द्युमयी–(सं. स्त्री.) विश्वकर्मा की कन्या का नाम ।
द्युम्न–(सं. पुं.) सूर्य, धन, अन्न ।
द्युलोक–(सं. पुं.) स्वर्ग लोक ।
द्युषद–(सं. पुं.) देवता, नक्षत्र, धन ।
द्युसद्म–(सं. पुं.) स्वर्ग ।
द्युसरित्, द्युसिंधु–(सं. स्त्री.) मन्दाकिनी-जाह्नवी ।
द्यूत–(सं.पुं.) दाँव बदकर खेला जानेवाला खेल, जुआ; **–कर**–(पुं.) जुआ खेलनेवाला, जुआरी; **–कारक**–(वि.) जुआ खेलनेवाला; **–पूर्णिमा**–(स्त्री.) कोजागर, आश्विन मास की पूर्णिमा; **–फलक**–(पुं.) वह चौकी जिस पर जुए की कौड़ी फेंकी जाय; **–भूमि**–(स्त्री.) जुआ खेलने का अड्डा । **–वृत्ति**–(वि.) जो जुआ खेलकर अपनी वृत्ति चलाता हो ।
द्यून–(सं. वि.) क्षीण ।
द्यो–(सं. पुं.) स्वर्ग, आकाश, आठ वसुओं में से एक ।
द्योत–(सं. पुं.) प्रकाश, आतप ।
द्योतक–(सं. वि.) प्रकाश करनेवाला ।
द्योतन–(सं. पुं.) प्रकाशन, दीप, दीया, दिग्दर्शन, दिखलाने का काम ।

द्योतभूमि–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया; (स्त्री.) स्वर्ग और भूमि ।
द्योति–(हिं. स्त्री.) कान्ति ।
द्योतित–(सं. वि.) प्रकाशित ।
द्योहरा–(हिं. पुं.) देखें 'देवहरा' ।
द्रग–(हिं. पुं.) दृग, नेत्र ।
द्रगड़–(सं.पुं.) एक प्रकार का बाजा, दगड़ ।
द्रढ़िमन्–(सं. पुं.) दृढ़ता, मजबूती ।
द्रप्स–(सं. पुं.) तक्र, मठा, रस, शुक्र ।
द्रम्म–(सं. पुं.) सोलह पणों की एक प्राचीन मुद्रा ।
द्रव–(सं. पुं.) द्रवण, पलायन, दौड़, हँसी, बहाव, तरल द्रव्य, आसव, रस, वेग, गति; (वि.) आर्द्र, तरल, गीला, पिघला हुआ; –क–(पुं.) क्षरणशील, बहनेवाला; –ज–(पुं.) गुड़, रस से बनाई जानेवाली वस्तु; –ण–(पुं.) गमन, दौड़, क्षरण, बहाव, गरमी से पिघलने की क्रिया, हृदय पर करुणापूर्ण प्रभाव पड़ने का भाव; –ता–(स्त्री.) पानी की तरह पतला होना या बहना; द्रव होने का भाव; –त्व–(पुं.) द्रवता; –रसा–(स्त्री.) लाक्षा, लाह ।
द्रवना–(हिं. क्रि. अ.) पिघलना, पसीजना, पानी की तरह बहना, दयापूर्ण होना ।
द्रवाधार–(सं.पुं.) तरल पदार्थ रखनेका पात्र ।
द्रविड़–(सं. पुं.) दक्षिण भारत के एक देश का नाम, इस देश का निवासी, ब्राह्मणों का एक भेद जिसके अन्तर्गत आन्ध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड़ और महाराष्ट्र है ।
द्रविड़ी–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
द्रविण–(सं.पुं.) धन, सोना, पराक्रम, बल ।
द्रविणक–(सं. पुं.) अग्नि की एक स्त्री का नाम ।
द्रवीकरण–(सं. पुं.) गलाने की क्रिया ।
द्रवीकृत–(सं. वि.) गलाया हुआ ।
द्रवीभाव–(सं. पुं.) गलने की क्रिया ।
द्रवीभूत–(सं. वि.) जो जल के समान द्रव हो गया हो, कृपालु, दयालु ।
द्रव्य–(सं.पुं.) वस्तु, वित्त, धन, पृथ्वी आदि नौ पदार्थ, औषधि, सामग्री, जतु, लाह, मद्य, वैशेषिक दर्शन के अनुसार नौ पदार्थ, यथा–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन; –क–(सं. वि.) द्रव्य का वाहक; –त्व–(पुं.) द्रव्य का भाव, द्रव्यपन; –वान्–(वि.) धनवान्, धनी ।
द्रष्टव्य–(सं. वि.) दर्शनीय, देखने योग्य, दिखाया जानेवाला, जो जताना या बतलाना हो ।
द्रष्टा–(सं. वि.) दर्शक, देखनेवाला, प्रकाशक, साङ्ख्य मत के अनुसार पुरुष, योग-दर्शन के अनुसार आत्मा ।
द्रह–(सं. पुं.) अगाध जल का ताल ।
द्राक्षा–(सं. स्त्री.) दाख, अंगूर ।
द्राघिमा–(सं. स्त्री.) दीर्घता, लंबाई, भूमध्य रेखा के समानान्तर पृथ्वी के चारों ओर खींची हुई वे कल्पित रेखायें जो अक्षांश सूचित करती हैं ।
द्राण–(सं. वि.) सुप्त, सोया हुआ; (पुं.) स्वप्न ।
द्राप–(सं. पुं.) कीचड़, आकाश, कौड़ी; (वि.) मूर्ख ।
द्राव–(सं. पुं.) क्षरण, बहाव, गमन, अनुताप, गरमी, उष्णता, पसीजने की या बहने की क्रिया ।
द्रावक–(सं. पुं.) चन्द्रकान्त मणि; (वि.) हृदयग्राही, द्रवित करनेवाला, बहानेवाला, हृदय पर प्रभाव डालनेवाला, पीछा करनेवाला, चतुर, व्यभिचारी; (पुं.) मोम, सुहागा ।
द्रावकर–(सं. पुं.) टंकण, सोहागा ।
द्रावण–(सं. पुं.) द्रवीभूत करने का काम, पिघलाने का काम ।
द्राविका–(सं. स्त्री.) लार, मोम ।
द्राविड़–(सं. वि.) द्रविड़ देश में उत्पन्न, द्रविड़ देश में रहनेवाला ।
द्राविड़क–(सं. पुं.) काला लवण ।
द्राविड़ी–(हिं. स्त्री.) द्रविड़ जाति की स्त्री; (वि.) द्रविड़, देश का ।
द्रावित–(सं. वि.) द्रवीभूत, गलाया हुआ ।
द्राव्य–(सं. वि.) गलनेवाला, गलने योग्य ।
द्रु–(सं. पुं.) वृक्ष, शाखा, गति ।
द्रुघन–(सं. पुं.) मुद्गर के आकार का एक हथियार ।
द्रुण–(सं. पुं.) धनुष, तलवार, भौंरा, मधुमक्खी ।
द्रुणस–(सं. वि.) लंबी नाकवाला ।
द्रुणा–(सं. स्त्री.) धनुष की डोरी, चिल्ला ।
द्रुणाह–(सं. पुं.) तलवार का म्यान ।
द्रुणि–(सं. स्त्री.) सन्दूक, पिटारा ।
द्रुणी–(सं. स्त्री.) कछुई, कठवत, कठौता ।
द्रुत–(सं. वि.) गला हुआ, तीव्र, शीघ्रगामी, भागा हुआ; (पुं.) बिच्छू, बिल्ली, वह लय जो मध्यम से कुछ तीव्र हो, खरहा, हरिन, बिन्दु, व्यंजन ।
द्रुतगति–(सं. स्त्री.) तीव्र गति; (वि.) शीघ्र चलनेवाला ।
द्रुतगामी–(सं. वि.) शीघ्र चलनेवाला ।
द्रुतचारी–(सं. वि.) भूमि पर वेग से चलनेवाला ।
द्रुतत्रिताली–(सं. स्त्री.) देखें 'कौवाली' ।
द्रुतपद–(सं.पुं.) शीघ्रगामी डग एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं; (वि.) द्रुतगामी, द्रुतचारी ।
द्रुतमध्या–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पद समात्रिक होते हैं ।
द्रुतमांस–(सं. पुं.) हरिण, खरहे आदि का मांस ।
द्रुतविलंबित–(सं. पुं.) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते ह ।
द्रुति–(सं. स्त्री.) द्रव, गति ।
द्रुनख–(सं. पुं.) कण्टक, कांटा ।
द्रुपद–(सं. पुं.) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम जो महाभारत के युद्ध में मारे गये थे, इनके पुत्र का नाम शिखण्डी था ।
द्रुपदा–(सं.स्त्री.) एक वैदिक मन्त्र का नाम ।
द्रुपदात्मज–(सं. पुं.) द्रुपद के पुत्र शिखण्डी और धृष्टद्युम्न ।
द्रुम–(सं. पुं.) वृक्ष, पेड़, परजाता, अमलतास का वृक्ष, रुक्मिणी से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
द्रुमकिल–(सं. पुं.) देवदारु का वृक्ष ।
द्रुमग–(सं.पुं.) वह देश जहाँ जल कम हो ।
द्रुमध्वज–(सं. पुं.) ताड़ का वृक्ष ।
द्रुमनख–(सं. पुं.) कण्टक, काँटा ।
द्रुमव्याधि–(सं. पुं.) लाक्षा, लाह ।
द्रुमभर–(सं. पुं.) कण्टक, काँटा ।
द्रुमवल्क–(सं. पुं.) वृक्ष की छाल ।
द्रुमशय–(सं. पुं.) वानर, बन्दर ।
द्रुमश्रेष्ठ–(सं. पुं.) ताड़ का वृक्ष ।
द्रुमशीर्ष–(सं. पुं.) पेड़ का शिखर ।
द्रुमसार–(सं. पुं.) दाड़िम, अनार ।
द्रुमारि–(सं. पुं.) हस्ति, हाथी ।
द्रुमाश्रय–(सं. पुं.) गिरगिट ।
द्रुमिणी–(सं. स्त्री.) वन, जंगल ।
द्रुमिल–(सं. पुं.) एक दानव का नाम जो सौभ्र देश का राजा था ।
द्रुमिला–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस मात्रायें होती हैं और प्रत्येक चरण के अन्त का अक्षर गुरु होता है ।
द्रुमेश्वर–(सं. पुं.) ताड़ का वृक्ष, चन्द्रमा, पारिजात ।
द्रुमोत्पल–(सं. पुं.) कनक चम्पा ।
द्रुह–(सं. पुं.) वृक्ष, पुत्र, बेटा; (वि.) द्रोह करनेवाला ।

द्रुहण, द्रुहिण–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
द्रुही–(सं. स्त्री.) दुहिता, कन्या, बेटी।
द्रुह्यु–(सं. पुं.) ययाति की पत्नी शर्मिष्ठा के बड़े लड़के का नाम जिन्होंने अपने पिता का बुढ़ापा लेना अस्वीकार किया था, इससे ययाति ने उनको शाप दिया था।
द्रू–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना।
द्रूक्काण–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार लग्न का तृतीय भाग।
द्रूघण–(सं. पुं.) मुद्गर।
द्रूण–(सं. पुं.) वृश्चिक, बिच्छू।
द्रोघमित्र–(सं.पुं.) हानि पहुचानेवाला मित्र।
द्रोण–(सं. पुं.) एक प्राचीन माप जो प्रायः सोलह सेर के बराबर होती थी, अरणी की लकड़ी, काठ का बना हुआ पात्र जिसमें वदिक काल में सोम रस रखा जाता था, कठवत, लकड़ी का रथ, डोमकौवा, बिच्छू, वृक्ष, एक पर्वत का नाम, नाव, डोंगा, एक प्रकार का फूल, नील का पौधा, केला, महाभारत के एक प्रसिद्ध वीर का नाम जो ब्राह्मण थे; –कलश–(पुं.) लकड़ी का बना हुआ पात्र जिसमें यज्ञ का सोमरस छाना जाता था; –काक–(पुं.) डोमकौवा, काला कौवा; –क्षीरा–(स्त्री.) वह गाय जो सोलह सेर दूध देती हो; –गिरि–(पुं.) एक पर्वत का नाम, (हनुमानजी संजीवनी जड़ी लेने के लिए इसी पर्वत पर गये थे); –दुग्धा, –दुघा–(स्त्री.) देखें 'द्रोण-क्षीरा'; –पुष्पी–(स्त्री.) गूमा नामक जड़ी; –मुख–(पुं.) वह सुन्दर गाँव जो चार सौ गाँवों के बीच में हो; –मेघ–(पुं.) बादलों के एक अधिपति का नाम।
द्रोणाचार्य–(सं. पुं.) भरद्वाज ऋषि के पुत्र जिन्होंने कौरवों तथा पाण्डवों को अस्त्रविद्या सिखलाई थी। (इनके पुत्र का नाम अश्वत्थामा था।)
द्रोणास–(सं. पुं.) एक दानव का नाम।
द्रोणाहाव–(सं. पुं.) काठ का बना हुआ पात्र, कठवत।
द्रोणि–(सं. स्त्री.) कठवत, डोंगी, दो पवर्तों के बीच की भूमि, एक सौ अट्ठाइस सेर का प्राचीन परिमाण, अश्वत्थामा का एक नाम।
द्रोणिका–(सं. स्त्री.) नील का पौधा।
द्रोणी–(सं. स्त्री.) काठ का बना हुआ पात्र, कठवत, एक प्रकार का नमक, एक सौ अट्ठाइस सेर का प्राचीन परिमाण, द्रोणाचार्य की स्त्री कृपी, केला, नीघ्रता, दो पर्वतों की सन्धि, नील का पौधा, छोटा दोना, इन्द्रायन लता; –दल–(पुं.) केतकी का फूल।
द्रोन–(हिं. पुं.) देखें 'द्रोण'।
द्रोमिल–(सं. पुं.) चाणक्य मुनि।
द्रोह–(सं. पुं.) दूसरे का अहित विचारना, धोखे से मारना, द्वेष, वैर, हिंसा, मात्सर्य।
द्रोहाट–(सं. पुं.) ऊपर से देखने में भला पर भीतर का खोटा मनुष्य, मृगतृष्णा।
द्रोही–(सं. पुं.) द्रोहक, द्रोह करनेवाला।
द्रौणायनि–(सं. पुं.) अश्वत्थामा।
द्रौणिक–(सं. वि.) वह खेत जिसमें एक द्रोण या अड़तालीस सेर बीज बोया जाय।
द्रौपद–(सं. पुं.) द्रुपद राजा का पुत्र।
द्रौपदी–(सं. स्त्री.) द्रुपद राजा की कन्या कृष्णा जिसका विवाह पाँचों पाण्डवों से हुआ था। (दुर्योधन के मामा शकुनि के कपट-द्यूत से युधिष्ठिर अपना सर्वस्व हार गये थे, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी हार गये थे। तब दुर्योधन ने दुःशासन द्वारा द्रौपदी को भरी सभा में बुलाकर उसका वस्त्र खिंचवाना चाहा था, परन्तु श्रीकृष्ण ने कृष्णा की लाज रख ली। उस समय के रोदन से भीम उत्तेजित हो गये और भरी सभा में उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि द्रौपदी का अपमान करनेवाले की छाती फाड़कर उसका लोहू पीऊँगा, सचमुच भीम ने महाभारत की दौड़ान में अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी।)
द्रौपदेय–(सं. पुं.) द्रौपदी के पाँच पुत्र।
द्रौहिक–(सं. वि.) द्रोह करनेवाला।
द्वंद–(सं. पुं.) मिथुन, जोड़ा, जोड़, युग्म, दो मनुष्यों का परस्पर लड़ना, कलह, झगड़ा, प्रतिद्वन्द्वी, द्वन्द्व युद्ध, दो शब्दों का जोड़ा, यथा–शीतोष्ण; सुख-दुःख, भला-बुरा आदि, दुर्ग, रहस्य, भेद की बात, उपद्रव, झगड़ा, संशय, दुबिधा, कष्ट, दुःख, स्त्री-पुरुष या नर-मादा का जोड़ा।
द्वंदर–(हिं. वि.) झगड़ालू।
द्वंद्व–(सं. पुं.) युग्म, जोड़ा, नर-मादा का जोड़ा, रहस्य, झगड़ा, लड़ाई, एक प्रकार का समास जिसम जुड़े हुए सभी शब्द प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है।
द्वंद्वचर, द्वंद्वचारी–(सं.पुं.) चक्रवाक, चकवा।
द्वंद्वज–(सं. पुं.) त्रिदोष से उत्पन्न रोग।
द्वंद्वयुद्ध–(सं.पुं.) दो पुरुषों का परस्पर युद्ध।
द्वय–(सं. पुं.) द्वन्द्व, युगल, दो; (वि.) दोहराया हुआ।
द्वर–(सं. वि.) विघ्न डालनेवाला।
द्वाज–(सं. पुं.) जारज, दोगला पुत्र।
द्वादश–(सं. वि.) दस और दो की संख्या का; (पुं.) बारह की संख्या, १२, शिव, महादेव; –क–(वि.) बारह का; –कर–(पुं.) कार्तिकेय, बृहस्पति; (स्त्री.) भैरवी का एक भेद; –भाव–(पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार कुण्डली के बारह घर; –लोचन–(पुं.) कार्तिकेय; –शुद्धि–(स्त्री.) वैष्णव सम्प्रदाय में तन्त्रोक्त बारह प्रकार की शुद्धियाँ।
द्वादशांग–(सं. वि.) जिसके बारह अंग या अवयव हों।
द्वादशांशु–(सं. पुं.) बृहस्पति।
द्वादशाक्ष–(सं. पुं.) कार्तिकेय, बुद्ध।
द्वादशाक्षर–(सं. पुं.) बारह अक्षरों का विष्णु का मन्त्र–"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय", जगती छन्द का नाम जिसमें बारह अक्षर होते हैं।
द्वादशाख्य–(सं. पुं.) बुद्धदेव।
द्वादशात्मन्–(सं.पुं.) सूर्य, आक का पेड़।
द्वादशायतन–(सं. पुं.) जैन दर्शन के अनुसार पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों तथा मन और बुद्धि का समुदाय।
द्वादशायु–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।
द्वादशार–(सं. पुं.) तन्त्र के अनुसार सुषुम्ना नाड़ी के मध्य का हृदयस्थित बारह दलों का पद्म।
द्वादशाशन–(सं. पुं.) वैद्यक के अनुसार बारह प्रकार के आहार।
द्वादशाह–(सं. पुं.) बारह दिनों में किया जानेवाला एक यज्ञ, बारह दिनों का समुदाय, वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने के बारहवें दिन किया जाता है।
द्वादशी–(सं. स्त्री.) किसी मास के किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वादसवानी–(हिं.स्त्री.) देखें 'बारहबानी'।
द्वापर–(सं. पुं.) चार युगों में से तीसरा युग जो भाद्र कृष्णा त्रयोदशी बृहस्पतिवार से प्रारम्भ हुआ था, यह युग आठ लाख चौसठ हजार वर्ष का माना गया है, संशय।
द्वार–(सं. पुं.) मुख, मुहाना, इन्द्रियों के मार्ग या छेद, साधन, उपाय, छेदवाला अंग, कोठरी की भीत का वह छिद्र या खुला स्थान जिसमें से होकर आना जाना होता है।
द्वारक–(सं. पुं.) द्वारकापुरी।
द्वारकंटक–(सं. पुं.) कपाट, किवाड़।
द्वारका–(सं. स्त्री.) चारो धामों में से एक एक प्राचीन नगरी जो काठियावाड़ (गुजरात) में है।

द्वारकाधीश–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है, श्रीकृष्णचन्द्र ।
द्वारकानाथ–(सं. पुं.) देखें 'द्वारकाधीश'।
द्वारकेश–(सं. पुं.) वासुदेव, द्वारकानाथ ।
द्वारगोप–(सं. पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
द्वारचार–(सं. पुं.) विवाह की एक रीति जो बारात के कन्या के द्वार पर पहुँचने पर होती है ।
द्वारछेकाई–(हिं. स्त्री.) विवाह की एक रीति जिसमें जब वर-वधू घर में जाते हैं तब वर की बहिन मार्ग रोकती है और उसको कुछ नेग दिया जाता है यह नेग ।
द्वारपंडित–(सं. पुं.) किसी राजा के दरबार का पण्डित ।
द्वारप–(सं. पुं.) द्वारपाल, विष्णु ।
द्वारपति, द्वारपाल–(सं. पुं.) प्रतिहारी, दरवान, कुत्ता ।
द्वारपालक–(सं. पुं.) द्वारपाल, दरवान ।
द्वारपिंडी–(सं. स्त्री.) देहली, ड्योढ़ी ।
द्वारपूजा–(हिं. स्त्री.) विवाह की एक रीति जो कन्यावाले के द्वार पर तब की जाती है जब वर बारात के साथ पहले-पहल कन्यावाले के घर जाता है ।
द्वारयंत्र–(सं. पुं.) तालक, ताला ।
द्वारवती–(सं. स्त्री.) द्वारकापुरी ।
द्वारवर्त्म–(सं. पुं.) द्वार, फाटक ।
द्वारवृत्त–(सं. पुं.) काली पीपल ।
द्वारशाखा–(सं. स्त्री.) द्वार का भाग ।
द्वारसमुद्र–(सं. पुं.) कर्नाटक के प्राचीन राजाओं की राजधानी का नाम ।
द्वारस्तंभ–(सं. पुं.) द्वार पर का खंभा ।
द्वारस्थ–(सं. वि.) द्वार पर बैठा हुआ; (पुं.) द्वारपाल ।
द्वारा–(हिं. पुं.) फाटक, मार्ग; (अव्य.) साधन से ।
द्वाराधिप–(सं. पुं.) द्वार का मालिक ।
द्वाराध्यक्ष–(सं.पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
द्वारावती–(सं. स्त्री.) द्वारिकापुरी ।
द्वारिक–(सं. पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
द्वारिका–(सं. स्त्री.) द्वारिकापुरी ।
द्वारी–(हिं. स्त्री.) छोटा द्वार; (सं.पु.) द्वारपाल ।
द्वास्थ–(सं. पुं.) द्वारपाल, दरवान ।
द्वास्थित–(सं. पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
द्वि–(सं. वि.) दित्व, दो संख्या का, दो ।
द्विक–(सं.वि.) द्वय, दो, दूसरा, दो-बारा, जिसमें दो अवयव हों; (पुं.) कौवा, चकवा।
द्विककुद–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट ।
द्विकर–(सं. पुं.) दो भुजा, दो हाथ ।
द्विकर्मक–(सं. वि.) वह क्रिया जिसमें दो कर्म हों ।
द्विकल–(सं. पुं.) छन्दःशास्त्र में दो मात्राओं का समूह ।
द्विक्षार–(सं.पुं.) सोरा और सज्जीखार।
द्विगु–(सं.वि.) दो गौ-संबंधी, जिसके पास दो गायें हों; (पुं.) वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्यावाचक शब्द हो ।
द्विगुण–(सं. पुं.) दुगना, दूना ।
द्विगुणाकृत–(सं. वि.) दोबारा जोती हुई (भूमि); दो बार गुणा किया हुआ ।
द्विगुणित–(सं. वि.) दो से गुणा किया हुआ, दुगना, दूना ।
द्विचक्र–(सं. पुं.) एक असुर का नाम; (वि.) जिसमें दो पहिये हों ।
द्विचरण–(सं. वि.) दो पैरोंवाला ।
द्विज–(सं. पुं.) वह ब्राह्मण जिसका संस्कार हुआ हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिसका उपनयन संस्कार हुआ हो; अण्डज प्राणी, पक्षी, सर्प; चन्द्रमा, (वि.) जिसका दो बार जन्म होता हो; **–त्व**–(पुं.) द्विज का धर्म या भाव; **–दास**–(पुं.) द्विजों की सेवा करनेवाला; **–पति**–(पुं.) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण, चन्द्रमा, गरुड़, कपूर; **–प्रपा**–(स्त्री.) पानी देने के लिए पेड़ की जड़ के चारों ओर खोदा हुआ गड्ढा, आलवाल; **–प्रिया**–(स्त्री.) सोमलता (वि.) जो द्विज को प्रिय हो; **–बंधु**–(पुं.) संस्कारहीन द्विज, केवल नाममात्र का द्विज; **–राज**–(पुं.) देखें 'द्विजपति'; **–वर**–(पुं.) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण; **–वाहन**–(पुं.) नारायण, विष्णु; **–व्रण**–(पुं.) दाँत का एक रोग; **–श्रेष्ठ**– (वि.) श्रेष्ठ ब्राह्मण; **सत्तम**–(पुं.) द्विजों में श्रेष्ठ; **–सेवक**–(पुं.) द्विजोंकी सेवा करनेवाला ।
द्विजर्षभ–(सं. पुं.) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण ।
द्विजन्मा–(सं. पुं.) ब्राह्मण, दाँत, पक्षी, क्षत्रिय, वैश्य; (वि.) जिसका दो बार जन्म हुआ हो ।
द्विजा–(सं. स्त्री.) भँगरैया, पालक का शाक ।
द्विजांगिका–(सं. स्त्री.) कुटकी ।
द्विजाग्रह–(सं. पुं.) ब्राह्मण ।
द्विजाति–(सं. पुं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य; अण्डज, दाँत, पक्षी ।
द्विजातिमुख–(सं.वि.) ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ।
द्विजानि–(सं. पुं.) वह पुरुष जिसके दो पत्नियाँ हों ।
द्विजायनी–(सं.स्त्री.) यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
द्विजालय–(सं. पुं.) कोटर, वृक्ष का वह पोला भाग जिसमें पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं, ब्राह्मणों का घर ।
द्विजिह्व–(सं. पुं.) सर्प, साँप, पिशुन दुष्ट, चोर, एक प्रकार का रोग; (वि.) जिसको दो जीभ हों ।
द्विजेंद्र, द्विजेश–(सं.पुं.) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण, चन्द्रमा, गरुड़, कपूर ।
द्विजोत्तम–(सं. पुं.) ब्राह्मण ।
द्विजोपासक–(सं. पुं.) द्विजसेवक, शूद्र ।
द्विट्सेवा–(सं. स्त्री.) शत्रु की सेवा ।
द्विट्सेवी–(सं. वि.) राज्यशत्रु, वह जो राज्य के शत्रु से मिला हो ।
द्वित–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम ।
द्वितय–(सं. पुं.) दो की संख्या; (वि.) दोहरा ।
द्वितीय–(सं.वि.) दूसरा; (पुं.) पुत्र, बेटा।
द्वितीयक–(सं. पुं.) प्रति दूसरे दिन आनेवाला ज्वर; (वि.) दूसरा, द्वितीय ।
द्वितीया–(सं.स्त्री.) स्त्री, गेहिनी, प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि ।
द्वितीयाभा–(सं. स्त्री.) दारु-हलदी ।
द्वितीयाश्रम–(सं. पुं.) गृहस्थ आश्रम ।
द्वित्र–(सं. वि.) दो या तीन ।
द्वित्व–(सं. पुं.) दोहरा होने का भाव।
द्विदल–(सं. वि.) जिसमें दो दल या पिण्ड हों, दो पत्तोंवाला, दो पँखड़ियोंवाला; (पुं.) वह अन्न जिसमें दो दल हों, दाल ।
द्विदश–(सं. वि., पुं.) बीस की संख्या का, बीस, २० ।
द्विदिव–(सं. पुं.) दो दिनों में समाप्त होनेवाला यज्ञ ।
द्विदेह–(सं. पुं.) गणेश ।
द्विधा–(सं. अव्य.) दो प्रकार से, दो तरह से, दो टुकड़ों में; **– गति**– (स्त्री.) शिशुमार, घड़ियाल; (वि.) जिसकी गति दो प्रकार की हो ।
द्विधातु–(सं. स्त्री.) दो धातुओं के मेल से बनी हुई कोई धातु ।
द्विधात्मक–(सं.पुं.) जातिकोष, जायफल।
द्विधालेख्य–(सं. वि.) जो दो प्रकार से लिखा जा सके ।
द्विप–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी, नागकेशर ।
द्विपक्ष–(सं.पुं.) पक्षी, चिड़िया, एक महीना; (वि.) जिसके दो पक्ष हों, दो पक्षोंवाला
द्विपत्रक–(सं. पुं.) द्विदल कमल ।
द्विपथ–(सं. पुं.) दो मार्ग ।
द्विपद–(सं. पुं.) मनुष्य, पक्षी, दो पैर ।
द्विपदा–(सं. स्त्री.) वह ऋचा जिसमें केवल दो पाद हों ।

द्विपदिका–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का गीत।
द्विपदी–(सं. स्त्री.) दो पदों का गीत, वह छन्द जिसमें दो पद हों, चित्रकाव्य का एक भेद।
द्विपमद–(सं. पुं.) हाथी का मद।
द्विपर्णी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का जंगली वेर का वृक्ष।
द्विपाद–(सं. पुं.) मनुष्य, पक्षी; (वि.) जिसको दो पैर हों।
द्विपाधिप–(स. पुं.) गजश्रेष्ठ, ऐरावत।
द्विपायी–(सं. पुं.) गज, हाथी।
द्विपास्य–(सं. पुं.) गणेश।
द्विपुरी–(सं. स्त्री.) मल्लिका, चमेली।
द्विबंधु–(सं.पुं.) दो लोकों का वन्धु, अग्नि।
द्विबाहु–(सं. पुं.) मनुष्य आदि दो वाहु वाले जीव; (वि.) जिसके दो वाहु हों।
द्विभाग–(सं. पुं.) दो भाग, दो अंश।
द्विभाव–(सं.वि.) दुष्ट स्वभाव का, कपटी।
द्विभाषी–(सं. पुं.) दो भाषाएँ जाननेवाला मनुष्य।
द्विभुज–(सं. वि.) दो हाथोंवाला।
द्विभूम–(सं. पुं.) दो खण्डों का घर।
द्विमातृ–(सं. पुं.) जरासन्ध का नाम।
द्विमातृज–(सं. पुं.) गणेश, जरासन्ध।
द्विमात्र–(सं. पुं.) दीर्घ स्वर।
द्विमास्य–(सं. वि.) दो महीने के वय का।
द्विमुख–(सं. पुं.) गौ, गाय, जोंक दो मुँहवाला सर्प, (वि.) जिसके दो मुख हों।
द्विमुखी–(सं.वि.) दो मुँहवाली; (स्त्री.) वह गाय जो वच्चा दे रही हो।
द्विर–(सं. पुं.) भौंरा, शहद की मक्खी।
द्विरद–(सं. पुं.) हाथी, दुर्योधन के एक भाई का नाम; (वि.) दो दाँतोंवाला।
द्विरदांतक–(सं. पुं.) सिंह, शेर।
द्विरदाशन–(सं.पुं.) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।
द्विरभ्यस्त–(सं. वि.) द्विगुणित, दुगना।
द्विरशन–(सं. पुं.) दो वार भोजन।
द्विरसन–(सं. पुं.) सर्प, साँप।
द्विरागमन–(सं. पुं.) विवाह के बाद वधू का पिता के घर से दूसरी बार पति के घर आना।
द्विरात्र–(सं. पुं.) दो रातों में होनेवाला यज्ञ, दो रात।
द्विरात्रीण–(सं.वि.) दो रातों में होनेवाला।
द्विराप–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
द्विरुक्त–(सं. वि.) दो वार कहा हुआ।
द्विरुक्ति–(सं. स्त्री.) दो वार कथन।
द्विरूढ़ा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका विवाह पहिले एक पति से तथा दुवारा दूसरे पति से हुआ हो।
द्विरेतस्–(सं. पुं.) खच्चर, दोगला।
द्विरेफ–(सं. पुं.) भ्रमर, भौंरा।
द्विर्वचन–(सं. पुं.) दो वार कथन।
द्विलक्षण–(सं. वि.) दो तरह का।
द्विवचन–(सं.पुं.) संस्कृत व्याकरण में किसी शव्द का वह रूप जो दो व्यक्तियों, वस्तुओं आदि के लिए प्रयोग किया जाता है।
द्विवाहिका–(सं. स्त्री.) हिंडोला, झूला।
द्विविंदु–(सं. पुं.) विसर्ग का चिह्न।
द्विविद–(सं. पुं.) रामचन्द्र की सेना के एक वन्दर का नाम।
द्विविध–(सं.वि.) दो प्रकार का, दो तरह का।
द्विवेद–(सं. वि.) दो वेदों को पढ़नेवाला।
द्विवेदी–(सं. पुं.) ब्राह्मणों की एक उपजाति, दूबे।
द्विशफ–(सं. पुं.) वह पशु जिसका खुर फटा हो।
द्विशाल–(सं. वि.) जिसमें दो कोठरियाँ हों, दो दिशाओं में वना हुआ।
द्विशीर्ष–(सं. पुं.) अग्नि, आग; (वि.) जिसके दो सिर हों।
द्विश्रृंगी–(सं. वि.) जिसके दो सींग हों।
द्विषंतप–(सं. वि.) शत्रु को पीड़ा पहुँचानेवाला।
द्विष–(सं. पुं.) वैरी, शत्रु; (वि.) विरोध या द्वेष करनेवाला।
द्विषन–(हिं. पुं.) शत्रु, वैरी।
द्विषा–(सं. स्त्री.) एला, इलायची।
द्विषेण्य–(सं. वि.) ईर्ष्यालु, द्वेष करने का जिसका स्वभाव हो।
द्विसम–(सं. वि.) दो वर्ष का।
द्विसहस्राक्ष–(सं. पुं.) अनन्त, जिसके दो हजार नेत्र हैं।
द्विसीत्य–(सं. वि.) वह खेत जो दो वार जोता गया हो।
द्विहनु–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
द्विहल्य–(सं. वि.) वह खेत जो दो वार जोता गया हो।
द्विहायन–(सं. पुं.) दो साल का वछवा।
द्विहृदया–(सं. स्त्री.) गर्भवती स्त्री।
द्वींद्रिय–(सं. पुं.) वह प्राणी जिसके केवल दो ही इन्द्रियाँ हों।
द्वीप–(सं. पुं.) भूमि का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो, टापू, अवलंवका स्थान, आधार, कंकेलि वृक्ष, व्याघ्रचर्म, वाघ का चमड़ा।
द्वीपवती–(सं. स्त्री.) भूमि, जमीन।
द्वीपशत्रु, द्वीपिका–(सं.पुं., स्त्री.) सतावर।
द्वीपिनख–(सं. पुं.) व्याघ्रनख, वाघ का नाखून।
द्वेधा–(सं. अव्य.) दो प्रकार से।
द्वेष–(सं. पुं.) शत्रुता, वैर, विरोध।
द्वेषण–(सं. पुं.) शत्रु।
द्वेषी–(सं. वि.) द्वेष करनेवाला, विरोध करनेवाला।
द्वेष्टा–(सं.वि.) द्वेषी, विरोध करनेवाला।
द्वेष्य–(सं. वि.) जिससे द्वेष किया जाय।
द्वैगुणिक–(सं. पुं.) दूना व्याज लेनेवाला।
द्वैज–(हिं. स्त्री.) द्वितीया, दूज।
द्वैत–(सं.पुं.) द्वय, युगल, दो का भाव, भेद, अन्तर, भ्रम, अज्ञान, दुविधा, द्विभाव, भेदभाव, अपने और पराये का भाव।
द्वैतवन–(सं. पुं.) वह तपोवन जिसमें युधिष्ठिर ने वनवास के समय कुछ दिनों तक निवास किया था।
द्वैतवाद–(सं. पुं.) वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव और ईश्वर को अलग-अलग मानता है: (प्रायः सभी दर्शन-शास्त्रों में द्वैतवाद का उपदेश दिया गया है। द्वैतवादी जीव-चैतन्य को ब्रह्म-चैतन्य से पृथक् मानते हैं।)
द्वैतवादी–(सं. वि.) ईश्वर और जीव में भेद माननेवाला।
द्वैध–(सं. अव्य.) दो प्रकार से; (वि.) परस्पर का विरोध।
द्वैधीभाव–(सं. पुं.) परस्पर विरोध।
द्वैप–(सं.पुं.) व्याघ्रचम, वाघ का चमड़ा।
द्वैपायन–(सं. पुं.) वेदव्यास।
द्वैप्य–(सं. वि.) द्वीप-संवंधी।
द्वभाव्य–(सं.वि.) जो दो भागों में विभक्त हो।
द्वैमातुर–(सं. पुं.) जरासन्ध, गणेश।
द्वैमातृक–(सं.पुं.) वह भूमि जिसमें नदी के जल से तथा वर्षा के जल से खेती होती है।
द्वैरथ–(सं.पुं.) दो रथों द्वारा होनेवाला युद्ध।
द्वराज्य–(सं.पुं.) वह राज्य जो दो राजाओं के अधीन हो।
द्वैविध्य–(सं. पुं.) भ्रम, दुविधा।
द्वौ–(हिं. वि.) दोनों।
द्वयर्थ, द्वयर्थक–(सं. वि.) जिस शब्द के दो अर्थ हों।

ध

ध–हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन तथा तवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्तमूल है।
धंगर–(हिं. पुं.) ग्वाल, अहीर, चरवाहा, एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

धंध, धंधक–(हिं. पुं.) जंजाल, वखेड़ा, काम-धन्ध का दिखाव, एक प्रकार का ढोल; **–धोरी**–(पुं.) अपन ऊपर काम-धंधे का बोझ लादनेवाला व्यक्ति।

धंधरक–(हिं. पुं.) काम-धंधे का आडम्वर, वखेड़ा; **–धोरी**–(पुं.) देखें 'धंधकधोरी'।

धंधला–(हिं. पुं.) झूठा आडम्वर, ढोंग, वहाना।

धंधलाना–(हिं. क्रि. अ.) झूठा आडम्वर रचना, ढंग करना।

धंधा–(हिं. पुं.) काम या धन कमाने की इच्छा से उद्योग करना, व्यवसाय, काम-काज, उद्यम।

धंधार–(हिं. पुं.) भारी पत्थर, लकड़ी आदि उठाने का एक प्रकार का साधन।

धंधारी–(हिं. स्त्री.) गोरखधंधा जिसको गोरखपंथी साधु लिये रहते हैं।

धंधाला–(हिं. स्त्री.) दूती, कुटनी।

धंधोर–(हिं. पुं.) होलिका, होली, ज्वाला, आग की लपट।

धंवना–(हिं. क्रि. स.) धौंकना।

धंस–(हिं. पुं.) डुवकी, गोता।

धंसन–(हिं. स्त्री.) धँसने की क्रिया, गति, चाल।

धंसना–(हिं. क्रि. अ.) किसी कड़ी वस्तु का कोमल वस्तु के भीतर घुसना, गड़ना, पैठ जाना, खड़ी वस्तु का भूमि के भीतर चला जाना, चुभना, पैठना, नीचे खसकना या उतरना, नष्ट होना, वैठ जाना; (मुहा.) **मन में धँसना**–चित्त पर प्रभाव करना।

धँसनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'धँसन'।

धँसान–(हिं. स्त्री.) धँसने की क्रिया या ढंग, ढार, उतार, दलदल।

धँसाना–(हिं. क्रि. स.) गड़ाना, चुभाना, प्रवेश कराना, पैठाना, जमीन में गाड़ना।

धँसाव–(हिं. पुं.) धँसने की क्रिया, दलदल।

धक–(हिं. स्त्री.) हृदय धड़कने का भाव या शब्द, उमंग, उद्वेग, छोटा जूं; (अव्य) अचानक; (मुहा.) **कलेजा धक होना**–किसी प्रकार के उद्वेग के कारण कलेजा धड़कना।

धकधकाना–(हिं. क्रि. अ.) हृदय-गति का उद्वेग के कारण शीघ्रता या वेग से चलना, दहकना, भभकना, अग्नि का लपट के साथ जलना।

धकधकाहट–(हिं. स्त्री.) धकधक करने की क्रिया या भाव, आशंका, धड़कन, खटका।

धकधकी–(हिं. स्त्री.) धकधक करने की क्रिया, हृदय की धड़कन।

धकपक–(हिं. स्त्री.) कलेजे की धड़कन; (अव्य.) डरते हुए।

धकपकाना–(हिं. क्रि. अ.) डरना, दहलना, भय खाना।

धकपेल–(हिं. स्त्री.) धक्काधक्की।

धकार–(सं. पुं.) 'ध' अक्षर।

धका–(हिं. पुं.) देखें 'धक्का'।

धकाना–(हिं. क्रि. स.) धधकाना, आग सुलगाना।

धकारा–(हिं. पुं.) सन्देह, भय।

धकियाना–(हिं. क्रि. स.) धक्का देना, ढकेलना।

धकेलना–(हिं. क्रि. स.) ठेलना, धक्का देना।

धकेलू–(हिं. पुं.) धक्का देनेवाला, ढकेलनेवाला।

धकैत–(हिं. वि.) धक्का देनेवाला।

धक्कपक्क–(हिं. स्त्री.) देखें 'धकपक'।

धक्कमधक्का–(हिं. पुं.) वहुत से मनुष्यों का आपस में धक्का देने का कार्य, भारी भीड़ में मनुष्यों का परस्पर शरीर से शरीर रगड़ा जाना।

धक्का–(हिं. पुं.) आघात, टक्कर, झोंका, ऐसी वड़ी भीड़ जिसमें मनुष्यों का शरीर आपस में रगड़ खाता हो, ढकेलने की क्रिया, आपत्ति, विपत्ति, सन्ताप, हानि, टोटा, मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **–मुक्की**–(स्त्री.) मुठभेड़, मारपीट।

धगड़, धगड़ा–(हिं. पुं.) उपपति, जार।

धगड़वाज–(हिं. वि. स्त्री.) व्यभिचारिणी, कुलटा।

धगड़ी–(हिं. स्त्री.) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी स्त्री।

धगरा–(हिं. पुं.) देखें 'धगड़ा'।

धगरिन–(हिं. स्त्री.) वच्चे का नाल काटनेवाली स्त्री।

धगरी, धगवरी–(हिं. वि.) पति की मुँह-लगी, धगड़ी, कुलटा, छिनाल।

धग्गड़–(हिं. पुं.) देखें 'धगड़'।

धचका–(हिं. पुं.) आघात, धक्का, झोंका।

धज–(सं. स्त्री.) सुन्दर रचना, सुन्दर ढंग, वैठने-उठने का ढंग, आकृति, शोभा, चालढाल; **सज-धज**–(स्त्री.) तैयारी।

धजवड़–(हिं. स्त्री.) खड्ग, तलवार।

धजा–(हिं. स्त्री.) ध्वजा, पताका, झंडा, आकृति, कपड़े की चीर।

धजीला–(हिं. वि.) सुन्दर ढंग का, सजीला, तरहदार।

धज्जी–(हिं. स्त्री.) कपड़ा या कागज का लंवा पतला टुकड़ा, लोहे की चद्दर या लकड़ी की पतली चीर या पट्टी; (मुहा.)**–उड़ाना**–विदीर्ण करना, टुकड़े-टुकड़े करना।

धट–(सं. पुं.) तुला, धव का पेड़।

धटक–(सं. पुं.) एक प्राचीन परिमाण जो वयालीस रत्तियों के वरावर होता था।

धटकर्कट–(सं. पुं.) एक प्रकार की मुड़ी हुई लोहे की कील।

धटपरीक्षा–(सं. स्त्री.) देखें 'तुलापरीक्षा'।

धटिका–(सं. स्त्री.) एक प्राचीन परिमाण जो पाँच सेर के वरावर होता था, कौपीन, लंगोट, चीर।

धटी–(सं. स्त्री.) कपड़े की चीर, कौपीन।

धड़ंग–(हिं. वि.) वस्त्रहीन, नंगा।

धड़–(हिं. पुं.) शरीर का विचला मोटा भाग जिसके अन्तर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं, कमर के ऊपर का भाग, वृक्ष का जड़ से ऊपर का मोटा भाग, तना, पेड़ी, किसी वस्तु का भूमि पर वेग से गिरने का शब्द।

धड़क–(हिं. स्त्री.) हृदय का स्पन्दन, हृदय के स्पन्दन का शब्द, खटका, हिचक, भय; **वे-धड़क**–(अव्य.) विना किसी संकोच या रुकावट के।

धड़कन–(हिं. स्त्री.) हृदय का स्पन्दन, कलेजे का धकधक करना।

धड़कना–(हिं. क्रि. अ.) हृदय का स्पन्दन करना या धकधक करना, धड़धड़ शब्द करना; (मुहा.) **दिल धड़कना**–किसी भय या आशंका से हृदय-गति का वेग से चलना।

धड़का–(हिं. पुं.) हृदय की धड़कन का शब्द, खटका, अंदेशा गिरने आदि का शब्द, चिड़ियों को डराने के लिये खेत में डंडे के ऊपर उलटी रखी हुई काली हाँड़ी, धोखा।

धड़काना–(हिं. क्रि. स.) हृदय में धड़कन उत्पन्न करना, दहलाना, डराना, धड़-धड़ शब्द उत्पन्न करना।

धड़क्का–(हिं. पुं.) देखें 'धड़ाका'।

धड़टूटा–(हिं. वि.) जिसकी कमर झुक गई हो, कुवड़ा।

धड़-धड़–(हिं. स्त्री.) गाड़ी, मोटर आदि के चलने से उत्पन्न तीव्र शब्द; (अव्य.) विना रुकावट के, वेधड़क, धड़धड़ शब्द करते हुए।

धड़धड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) धड़धड़ शब्द करना।

धड़ट्टा–(हिं. वि.) जिसकी कमर झुक गई हो, कुवड़ा।

घड़ल्ला–(हिं. पुं.) घड़घड़ शब्द, धड़का, भीड़भाड़, धूमधाम, बड़ी भीड़; **घड़ल्ले से**–(अव्य.) झोंक से, वेग से, वेधड़क।
घड़वा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मैना चिड़िया।
घड़वाई–(हिं. पुं.) सौदा, माल आदि तौलने वाला।
घड़ा–(हिं. पुं.) तराजू के पलड़े पर किसी पात्र आदि का भार बराबर करने की क्रिया, बाट, बटखरा, तुला, तराजू, चार सेर की तौल (मुहा.) –**बाँधना**–तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना।
घड़ाका–(हिं. पुं.) घड़घड़ शब्द; **घड़ाके से**–(अव्य.) झटपट।
घड़ाघड़–(हिं. अव्य.) घड़घड़ शब्द के साथ, बिना रुकावट के, शीघ्रता से।
घड़ा-बंदी–(हिं. स्त्री.) घड़ा बाँधने का काम, समभार या समशक्ति करने की क्रिया।
घड़ाम–(हिं. पुं.) वह शब्द जो किसी वस्तु के जोर से गिरने पर उत्पन्न होता है, किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
घड़ी–(हिं. स्त्री.) चार या पाँच सेर की तौल, घरी।
घत–(हिं. स्त्री.) बुरा अभ्यास, बुरी लत।
घतकारना–(हिं. क्रि. स.) तिरस्कार के साथ हटाना, धिक्कारना, दुरदुराना।
घता–(हिं. वि.) दूर किया हुआ, हटाया हुआ; (मुहा.) –**करना**–हटाना, भगा देना।
घतिया–(हिं. वि.) बुरे स्वभाव का, कुटेव का।
घतींगड़, घतींगड़ा–(हिं. पुं.) मोटा मनुष्य।
घतूर–(हिं. पुं.) सिंहा, तुरही, धतूरा।
घतूरा–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसके गोल फल के ऊपर काँटे होते हैं, इसका बीज बड़ा विषैला होता है; (मुहा.) –**खाकर फिरना**–पागल की तरह घूमना।
घतूरिया–(हिं. पुं.) ठगों का एक सम्प्रदाय जो पथिकों को लूटने के लिये उनको धतूरा खिलाकर बेहोश कर देते थे।
घत्–(हिं. अव्य.) तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द, दुतकारने का शब्द।
घत्ता–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छन्द जो दो पंक्तियों में लिखा जाता है।
घत्तूर–(सं. पुं.) धतूरा।
घधक–(हिं. स्त्री.) आग की लपट का ऊपर को उठना, लौ, आँच की भड़क।
घधकना–(हिं. क्रि. अ.) आग का लपट के साथ जलना, भड़कना, दहकना।
घधकाना–(हिं. क्रि. स.) अग्नि को प्रज्वलित करना, दहकाना।
धन–(सं. पुं.) द्रव्य, सम्पत्ति, स्नेहपात्र, अति प्रिय वस्तु जो किसी के पास हो, पूँजी, गणित में जोड़ का (+) चिह्न, चौपायों का समूह; (स्त्री.) जवान स्त्री, वधू, बहू; (हिं. वि.) देखें 'धन्य'।
धनक–(सं. पं.) धन की कामना, धन की इच्छा; (हिं. पुं.) धनुष, कमान, एक प्रकार की ओढ़नी, टोपी में लगाने का गोटा।
धनकटी–(हिं. स्त्री.) धान काटने का समय, एक प्रकार का वस्त्र।
धनकर–(हिं. पुं.) एक प्रकार की कड़ी मिट्टी जिसमें धान खूब होता है, धान का खेत।
धनकुट्टी–(हिं. स्त्री.) धान कूटने का काम, धान कूटने का उपकरण, एक प्रकार का कीड़ा।
धनकुबेर–(हिं. पुं.) कुबेर के समान धनी, अति धनाढ्य मनुष्य।
धनकेलि–(सं. पुं.) कुबेर।
धनकोटा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी पौधा जिससे कागज बनाया जाता है।
धनक्षय–(सं. पुं.) धन का नाश।
धनखर–(हिं. पुं.) वह खेत जिसमें धान बोया जाता है।
धनगर्व–(सं. पुं.) दौलत या धन का घमंड।
धनगुप्त–(सं. पुं.) धन की बड़े यत्न से रक्षा करनेवाला मनुष्य।
धनचिड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पक्षी।
धनतेरस–(हिं. स्त्री.) कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी, (इस दिन लक्ष्मी का पूजन होता है।)
धनदंड–(सं. पुं.) धनरूप में दण्ड, जुर्माना।
धनद–(सं.पुं.) कुबेर; (वि.) धन देनेवाला।
धनदत्त–(सं. वि.) धन देनेवाला।
धनदा–(सं. स्त्री.) देवी का एक नाम, आश्विन कृष्णा एकादशी का नाम; (वि. स्त्री.) धन देनेवाली।
धनदाक्षी–(सं. स्त्री.) लता करंज, पाटल का वृक्ष।
धनदानुज–(सं.पुं.) रावण, कुम्भकर्ण आदि।
धनदायिका–(सं. स्त्री.) एक देवी का नाम।
धनदायी–(सं. वि.) धन देनेवाला; (पुं.) अग्नि।
धनदिशा–(हिं. पुं.) उत्तर दिशा।
धनदेव–(सं. पुं.) धन के देवता कुबेर।
धनधान्य–(सं. पुं.) धन और अन्न आदि सामग्री, सम्पत्ति।
धनधाम–(सं. पुं.) रुपया-पैसा और घर-बार।
धनधारी–(हिं.पुं.) कुबेर, बड़ा धनी मनुष्य
धननाथ–(सं. पुं.) धन का अधिष्ठाता कुबेर।
धनपति–(सं. पुं.) कुबेर, शरीर की एक वायु का नाम।
धनपत्र–(सं. पुं.) हिसाब लिखने का बही-खाता।
धनपात्र–(सं. पुं.) धनवान्, धनी।
धनपाल–(सं. वि.) धन की रक्षा करनेवाला; (पुं.) कुबेर।
धनपिशाचिका–(सं. स्त्री.) धन का लोभ, धन की आशा।
धनप्रयोग–(सं.पुं.) धन को किसी व्यापार में लगाने का काम।
धनप्रिया–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का जामुन।
धनमाद–(सं. पुं.) वह अग्नि जिसकी आराधना से धन प्राप्त होता है।
धनमूल–(सं. वि.) धन का लोभी या लालची।
धनलोभ–(सं. पुं.) धन की अभिलाषा।
धनवंत–(हिं. वि.) देखें 'धनवान्'।
धनवती–(सं. स्त्री.) धनिष्ठा नक्षत्र; (वि.स्त्री.) धन रखनेवाली।
धनवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
धनवान्–(सं. वि.) जिसके पास धन हो।
धनसंचय–(सं. पुं.) धन इकट्ठा करना।
धनसार–(हिं.पुं.) अन्न रखने की कोठरी।
धनसिरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
धनसू–(सं.पुं.) धन का संचय।
धनस्थ–(सं. वि.) धनाढ्य, धनी।
धनस्थान–(सं. पुं.) कुण्डली में लग्न से दूसरा स्थान।
धनस्पृहा–(सं. स्त्री.) धन की अभिलाषा।
धनस्वामी–(सं. पुं.) धनदेवता, कुबेर।
धनहर–(सं.वि.,पुं.) धन चुरानेवाला, तस्कर।
धनहारी–(सं. वि.) दूसरे के धन का उत्तराधिकारी।
धनहीन–(सं. वि.) निर्धन, कंगाल, दरिद्र।
धनहृत्–(सं. वि.) धन का हरण करनेवाला।
धना–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम, धान्यक, धनिया; (हिं. स्त्री.) युवती।
धनाकांक्षा–(सं.स्त्री.) धन की अभिलाषा।
धनागम–(सं. पुं.) धन की प्राप्ति, धन का मिलना।
धनाढ्य–(सं. वि.) धनवान्, मालदार।

धनाधिकारी–(सं.पुं.) कोषाध्यक्ष, भण्डारी।
धनाधित–(सं. वि.) जो धन देकर लिया गया हो।
धनाधिप–(सं. पुं.) कुवेर, धनरक्षक, भण्डारी।
धनाधिपति, धनाध्यक्ष–(सं. पुं.) धन-रक्षक, कुवेर।
धनाना–(हिं.क्रि.अ.) गाय का गर्भवती होना
धनार्थ–(सं. अव्य.) धन के लिये।
धनार्थी–(सं. वि.) धन चाहनेवाला।
धनाशा–(सं. स्त्री.) धन का लोभ, धन की आशा।
धनाश्री–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
धनि–(हि.स्त्री.) युवती; (वि.) देखें 'धन्य'।
धनिक–(सं.वि.) धनी, जिसके पास धन हो।
धनिका–(सं. स्त्री.) सच्चरित्रा स्त्री, युवती, वधू, धनी स्त्री।
धनिता–(सं. स्त्री.) धनाढ्यता।
धनिया–(हिं. स्त्री.) एक छोटा पौधा जिसके फल सुगन्धित होते और मसालों में प्रयुक्त होते हैं, देखें 'धनिका' (युवती स्त्री)।
धनिया माल–(हिं. पुं.) गले में पहिनने का एक प्रकार का गहना।
धनिष्ठ–(सं. वि.) बहुत बड़ा धनी।
धनिष्ठा–(सं. स्त्री.) सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र।
धनी–(सं. स्त्री.) युवती स्त्री, वधू, बहू; (हिं. वि.) जिसके पास धन हो; (पुं.) धनवान् पुरुष, पति, मालिक।
धनीयक–(सं. पुं.) धन्याक, धनिया।
धनु–(सं. पु.) धनुष, कमान, बारह राशियों में से नवीं राशि।
धनुआ–(हिं. पु.) धनुष, कमान, रुई धुनने की धुनकी।
धनुई–(हिं. स्त्री.) छोटा धनुष।
धनुक–(हि. पुं.) धनुष, इन्द्रधनुष।
धनुकवाई–(हि. पुं.) एक प्रकार का वायुरोग जिसमें जवड़े बैठ जाते हैं और मुँह नहीं खुलता।
धनुकेतकी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का फूल।
धनुर्गुण–(सं.पुं.) धनुष की डोरी, चिल्ला।
धनुर्ग्रह–(स. पुं.) धनुर्धर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
धनुर्द्रुम–(सं. पुं.) वंशवृक्ष, बाँस।
धनुर्धर–(सं. पुं.) धनुर्धारी, तीरन्दाज, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
धनुर्धारी–(सं. वि.) देख 'धनुर्धर'।
धनुर्भृत्–(सं. पुं.) धनुर्धर।
धनुर्मध्य–(सं. पुं.) धनुप का मध्य भाग जिसको पकड़कर तीर छोड़ा जाता है।
धनुर्मार्ग–(सं. पुं.) धनुष की तरह टेढ़ी रेखा; (वि.) वक्र, टेढ़ा।
धनुर्माला–(सं. स्त्री.) मरोरफली।
धनुर्मुख–(सं. पुं.) एक प्रकार का यज्ञ, धनुर्यज्ञ।
धनुर्यज्ञ–(सं. पुं.) वह यज्ञ जिसको राजा जनक ने सीता के स्वयंवर के निमित्त किया था।
धनुर्यास–(सं. पुं.) सोमलता।
धनुर्वक्त्र–(सं. पुं.) कार्तिकेय का एक अनुचर।
धनुर्वात–(सं.पुं.) एक प्रकार का वायु-रोग जिसमें शरीर ऐंठ जाता है।
धनुर्विद्या–(सं. स्त्री.) धनुष चलाने की विद्या, तीरन्दाजी।
धनुर्वीज–(सं. पुं.) भिल्लातक, भिलावाँ।
धनुर्वृक्ष–(सं.पुं.) अश्वत्थ, पीपल का पेड़।
धनुर्वेद–(सं.पुं.) धनुर्विद्या बोधक शास्त्र।
धनुष–(सं. पुं.) कमान, चाप।
धनुषाक्ष–(सं.पुं.) एक ऋषि का नाम।
धनुष्कर–(सं. पुं.) धनुष बनानेवाला।
धनुष्कोटि–(सं. पुं.) रामेश्वर के दक्षिण का एक तीर्थ।
धनुष्पाणि–(सं. वि.) जो हाथ में धनुप लिये हो।
धनुस्–(सं. पुं.) तीर चलाने का अस्त्र, कमान, बारह राशियों में से नवीं राशि, चार हाथ की एक नाप।
धनुस्तंभ–(सं. पुं.) देखें 'धनुर्वात'।
धनुहाई–(हिं. स्त्री.) धनुप की लड़ाई।
धनुहिया, धनुही–(हिं. स्त्री.) लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।
धनेश–(सं. पुं.) धन का स्वामी, कुवेर।
धनेश्वर–(सं. पुं.) कुवेर, विष्णु।
धनेस–(हिं. पुं.) वगुले की तरह का एक पक्षी।
धनैश्वर्य–(सं. पुं.) धन, सम्पत्ति।
धनैषी–(सं. वि.) धन चाहनेवाला।
धन्ना–(हि.पुं.) देखें 'धरना'; (वि.) धन्य।
धन्नासिका–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
धन्नासेठ–(हि.पुं.) प्रसिद्ध वनिक, वहुत धनाढ्य मनुष्य।
धन्नी–(हिं. स्त्री.) गाय-बैल की एक जाति, घोड़े की एक जाति।
धन्य–(सं. वि.) पुण्यवान्, श्लाघ्य, बड़ाई के योग्य, जो अपने नाम, यश आदि के कारण प्रसिद्ध हो; –वाद–(पुं.) साधुवाद, प्रशंसा, कृतज्ञता-सूचक शब्द; –व्रत–(पुं.) धन-जन के लिये किया जानेवाला व्रत।
धन्या–(सं. स्त्री.) छोटा आमला, उपमाता, धन्याक, धनिया, मनु की एक कन्या का नाम।
धन्याक–(सं. पुं.) धनिया।
धन्वंतर–(सं. पुं.) चार हाथ की नाप।
धन्वंतरि–(सं. पुं.) देवताओं के वद्य जो पुराणों के अनुसार समुद्र-मन्थन में समुद्र से निकले थे।
धन्व–(सं. पुं.) धनुष, कमान, चाप।
धन्वचर–(सं. पुं.) वह जो धनुष चलाकर अपनी जीविका निर्वाह करता है।
धन्वतरु–(सं. वि.) सोमवल्ली।
धन्वदुर्ग–(सं. पुं.) वह किला जिसके चारों ओर बहुत दूर तक मरुभूमि हो।
धन्वन्–(सं. पुं.) धनुष, मरुदेश, आकाश।
धन्वपति–(सं. पुं.) मरु-देश का राजा।
धन्वसह–(सं. पुं.) धनुर्धर, योद्धा, वीर।
धन्वा–(हिं. पुं.) धनुष, कमान, चाप, मरुभूमि।
धन्वाकार–(सं. वि.) कमान के आकार का, टेढ़ा।
धन्वी–(सं. पुं.) धनुर्धारी, वीर, निपुण; (पुं.) विष्णु, महादेव, धनु राशि।
धप–(हिं. स्त्री.) वह शब्द जो किसी भारी वस्तु के गिरने से होता है, थप्पड़, तमाचा।
धपना–(हिं. क्रि. अ., स.) वेग से चलना, झपटना, लपकना, मारना, पीटना, घूमना, घुमाना।
धप्पा–(हि.पुं.) धौल, थप्पड़, क्षति, हानि।
धप्पाड़–(हिं. स्त्री.) दौड़।
धबधब–(हिं. स्त्री.) किसी भारी कोमल वस्तु के गिरने का शब्द, मोटे मनुष्य के शरीर पर मारने से उत्पन्न शब्द।
धबला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का ढीला पहनावा।
धब्बा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु पर पड़ा हुआ ऐसा चिह्न जो देखने में बुरा लगे, कलंक, दोप; (मुहा.) नाम में धब्बा लगाना–दुर्नाम करना, कलंकित करना।
धम–(हिं. स्त्री.) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, धमाका।
धमक–(हिं. स्त्री.) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, चलने से पैर का शब्द, धमक सुनकर हृदय में कंप होनेवाला, धमाका, चोट, आघात।
धमकना–(हिं. क्रि. अ.) धम शब्द के साथ गिरना, रह-रहकर पीड़ा होना, दर्द या व्यथा

होना; (मुहा.) आ धमकना–आ पहुँचना।
धमकाना–(हिं. क्रि. स.) भय दिखलाना, डराना, घुड़कना, डाँटना।
धमकी–(हिं. स्त्री.) त्रास या भय दिखलाने की क्रिया, धमकाने का काम, डाँट-डपट, घुड़की; (मुहा.)–**में आना**–भय के मारे कोई काम करना।
धमगरेज–(हिं.पुं.) उत्पात, उपद्रव, युद्ध।
धमधम–(सं. पुं.) कुमार कार्तिकेय के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे; (स्त्री.) 'धम' की आवाज; (अव्य.) 'धम' शब्द के साथ।
धमधमाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) धमधम शब्द करना या होना।
धमधूसर–(हिं. वि.) भद्दा मोटा आदमी।
धमन–(सं. पुं.) हवा धौंकने का काम, नरकट, नीम का वृक्ष।
धमना–(हिं. क्रि.स.) धौंकना, फूँकना।
धमनी–(सं.स्त्री.) नाड़ी, शरीर के भीतर की रक्त आदि का संचार करनेवाली छोटी या बड़ी नली, हरिद्रा, हलदी, ग्रीवा, गला, फुँकनी।
धमसा–(हिं, पुं.) नगाड़ा, धौंसा।
धमाका–(हिं. पुं.) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, बन्दूक का शब्द, आघात, धक्का, हाथी पर लादी जानेवाली बड़ी तोप, पथरकला बन्दूक।
धमाचौकड़ी–(हिं. स्त्री.) उपद्रव, उछलकूद, ऊधम, कूद-फाँद, मारपीट।
धमाधम–(हिं. अव्य.) बारंबार धमधम शब्द के साथ, प्रहार के शब्दों के सहित; (स्त्री.) निरन्तर धमधम का शब्द, आघात।
धमार–(हिं. स्त्री.) उत्पात, उपद्रव, उछल-कूद, विशिष्ट प्रकार के साधुओं का दहकती आँच पर कूदने की क्रिया; (पुं.) होली में गाने का एक प्रकार का गीत।
धमारिया–(हिं. पुं.) उछल-कूद करनेवाला नट, उपद्रवी व्यक्ति; (वि.) होली में धमार गानवाला, उपद्रवी।
धमारी–(हिं. वि.) उत्पाती, उपद्रवी।
धमाल–(हिं. पुं.) देखें 'धमार'।
धमासा–(हिं. पुं.) जवासा, एक प्रकार का क्षुप।
धमि–(सं. स्त्री.) धमनी, नाड़ी, अँतड़ी।
धमूका–(हिं. पुं.) आघात, प्रहार, धमाका, घूँसा।
धमेख–(हिं. स्त्री.) (सं. धर्मेक्ष) बुद्ध के काल का स्तूप जो सारनाथ में है।
धम्मन–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
धम्माल–(हिं. स्त्री.) देखें 'धमार'।
धम्मिल–(सं. स्त्री.) चोटी, जूड़ा।
धयना–(हिं. क्रि. अ.) दौड़ना, घूमना।
धरंता–(हिं. वि.) पकड़नेवाला, धरनेवाला।
धर–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़, पृथ्वी, एक वसु का नाम, श्रीकृष्ण, विष्णु, व्यभिचारी पुरुष; (पुं.) कच्छप जो पृथ्वी को धारण किये हुए है; (वि.) धारक, धारण करनेवाला, थामनेवाला; **–पकड़**–(स्त्री.) अपराधियों को पकड़न का काम।
धरक–(हिं.पुं.) देखें 'धड़क'।
धरकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'धड़कना'।
धरण–(सं. पुं.) धारण करने की क्रिया, लोक, स्तन, धान्य, सेतु, पुल, मदार का वृक्ष।
धरणि–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, धमनी, नाड़ी; **–ज**–(पुं.) मंगलग्रह, नरकासुर, पानी का सोता जो पृथ्वी में से उत्पन्न हो; **–धर**–(पुं.) पर्वत, पहाड़, कच्छप, विष्णु, शिव, महादेव, शेषनाग; **–रुह**–(पुं.) वृक्ष।
धरणी–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, नाड़ी, मेदा, खैर का वृक्ष; **–धर**–(पुं.) देख 'धरणिधर'; **–धृत्**–(पुं.) पर्वत, अनन्तनाग; **–पूर**–(पुं.) समुद्र, सागर; **–भृत्**–(पुं.) पर्वत, विष्णु, अनंत; **–सुत**–(पुं.) मंगल ग्रह, नरकासुर; **–सुता**–(स्त्री.) सीता।
धरणीश्वर–(सं.पुं.) शिव, विष्णु, राजा।
धरता–(हिं. पुं.) ऋणी, देनदार, धारण करनेवाला, किसी कार्य का भार अपने ऊपर लेनेवाला।
धरती–(हिं. स्त्री.) धरित्री, पृथ्वी, संसार।
धरधराना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'धड़धड़ाना'।
धरन–(हिं. स्त्री.) धरन की क्रिया या भाव, गर्भाशय को दृढ़ता से जकड़नेवाली नस, गर्भाशय, टेक, हठ, अड़, लकड़ी, लोहे आदि का लंबा लट्ठा जो घरों में छत का बोझ थामने के लिये लगाया रहता है, कड़ी, धरनी।
धरना–(हिं.क्रि.स.) इधर-उधर गिरने से बचाना, स्थापित करना, ठहराना, रक्षा में रखना, बन्धक रखना, किसी स्त्री को रखनी की तरह रखना, पोतनेवाले रोगन, आदि किसी दूसरी वस्तु पर लगना आश्रय लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, आरोपित करना, धारण करना, पहिनना; (मुहा.) **धरा रह जाना**–काम में न आना, पड़ा रह जाना।
धरना–(हिं. पुं.) माँग पूरी न होने तक किसी के द्वार पर जाकर अड़कर बैठना।
धरनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'धरणी'।
धरनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'धरणी'।
धरनैत–(हिं.पुं.) धरना देनेवाला मनुष्य।
धरम–(हिं. पुं.) धर्म; **–सार**–(पुं.) देखें 'धर्मशाला'; **–घड़ी**–(स्त्री.) बिजली से चलनेवाली मीनार पर लगी हुई बड़ी घड़ी।
धरवाना–(हिं. क्रि. स.) धरने का काम दूसरे से कराना, पकड़ाना, थमाना।
धरषना–(हिं. क्रि. स.) मलना, दबाना।
धरसना–(हिं. क्रि. अ.) डर जाना, दब जाना, सहम जाना, दबना।
धरसनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'धर्षणी'।
धरहर–(हिं. स्त्री.) धरपकड़, रक्षा, बचाव, धैर्य, धीरज, लड़नेवालों की धर-पकड़ करके झगड़ा तय करने का काम, बीच-बचाव।
धरहरना–(हिं.क्रि.अ.) धड़धड़ शब्द करना।
धरहरा–(हिं. पुं.) धौरहरा, ऊँचा बुर्ज या मकान जिसमें ऊपर चढ़ने के लिये उसके भीतर सीढ़ियाँ बनी रहती हैं।
धरांतरचर–(सं. वि.) पृथ्वी पर घूमनेवाला।
धरहरिया–(हिं. पुं.) बीच-बचाव करनेवाला, बचाव करनेवाला, रक्षक।
धरा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, धरती, संसार, एक वर्णवृत्त का नाम; (हिं. स्त्री.) बटखरा, चार सेर की तौल।
धराऊ–(हिं.वि.) बहुमूल्य वस्तु या बहुत दिनों की रखी हुई हो।
धरातल–(सं. पुं.) धरती, पृथ्वी, सतह, क्षेत्रफल जिसमें मोटाई, गहराई या ऊँचाई का कुछ विचार नहीं किया जाता, लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल।
धरात्मज–(सं.पुं.) नरकासुर, मंगल ग्रह।
धराधर–(सं. पुं.) पर्वत, विष्णु, अनन्त, शेषनाग; (वि.) पृथ्वी की रक्षा करनेवाला।
धराधार–(सं. पुं.) शेषनाग।
धराधिप, धराधिपति, धराधीश–(सं.पुं.) नृप, राजा।
धराना–(हिं.क्रि.स.) स्थिर कराना, पकड़ाना, थमाना, दिन पक्का करना, ठहराना।
धरापति–(सं. पुं.) नृप, राजा।
धरापुत्र–(सं. पुं.) मंगल ग्रह।

धराभृत्–(सं. पुं.) पृथ्वी का मालिक।
धरामर–(सं. पुं.) ब्राह्मण।
धरासुर–(हिं. पुं.) ब्राह्मण।
धरासूनु–(सं. पुं.) नरकासुर, मंगल ग्रह।
धराहर–(हिं. पुं.) धरहरा।
धरिंगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चावल।
धरित्री–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि।
धरी–(हिं. स्त्री.) रखनी, कान में पहिनने का एक गहना, चार सेर की तौल।
धरुण–(सं. पुं.) जल, अग्नि, पृथ्वी, सूर्य, ब्रह्मा, स्वर्ग, इक्कीस की संख्या।
धरेल–(हिं. स्त्री.) रखेली, रखनी।
धरेला (ली)–(हिं. पुं.) वह पति जिसको कोई स्त्री विना व्याह किये ग्रहण कर ले।
धरैया–(हिं. वि.) धरने या पकड़नेवाला।
धरोत्तम–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
धरोहर–(हिं. स्त्री.) न्यास, थाती, वह द्रव्य जो किसी के पास इस विश्वास पर रखा जाय कि जब उसका मालिक उसको माँगगा तव वह उसको लौटा देगा।
धरौवा–(हिं. पुं.) स्त्री को विना व्याह किये रख लेने की चाल।
धर्णि–(सं. वि.) धारण करनेवाला।
धर्तव्य–(सं. वि.) पकड़ने योग्य, धरने योग्य, रहने योग्य, गिरने योग्य।
धर्ता–(सं. पुं.) धारण करनेवाला, अपने ऊपर किसी प्रकार का भार लेनेवाला।
धर्त्तूर–(सं. पुं.) धतूरा।
धर्म–(सं. पुं.) सुकृत, सत्कर्म, पुण्य, सदाचार, वह आचरण जिससे समाज की रक्षा और कल्याण हो, सुखशान्ति की वृद्धि हो और परलोक में सद्गति प्राप्त हो, कर्त्तव्य, मन की वृत्ति, इन्द्रियों का कार्य, गुण या क्रिया, पदार्थ का गुण, विशेषता आदि का भेद, कोई विशिष्ट लक्षण या तत्त्व, प्रकृति, स्वभाव, नित्य-नियम, अलंकार में उपमेय तथा उपमान में समान रूप से रहनेवाला गुण, विवेक, न्याय की व्यवस्था, नीतिमत, संप्रदाय, पंथ, उपासना का भेद; (मुहा.) **–कमाना**–धर्म करके उसके उत्तम फल प्राप्त करना; **–बिगाड़ना**–धर्म-भ्रष्ट करना; **–से कहना**–सच्ची बात कहना; **–कथक**–(पुं.) धर्म का उपदेश देनेवाला; **–कर्म**–(पुं.) वह कर्म जिसका करना किसी धर्म-ग्रन्थ में आवश्यक बतलाया गया हो; **–काय**–(पुं.) बुद्धदेव; **–कार**–(पुं.) धर्म-शास्त्रकार; **–कार्य**–(पुं.) धर्मकर्म; **–कूप**–(पुं.) एक तीर्थ का नाम; **–कृत्**–(वि.) धर्म करनेवाला; (पुं.) विष्णु; **–केतु**–(पुं.) बुद्धदेव; **–कोष**–(पुं.) धर्मसदृश रक्षणीय वस्तु; **–क्षेत्र**–(पुं.) कर्मभूमि, भारतवर्ष, कुरुक्षेत्र; **–गुप्त**–(पुं.) विष्णु; (वि.) धर्म-रक्षक; **–ग्रंथ**–(पुं.) वह ग्रन्थ जिसमें जन-समाज के आचार, व्यवहार तथा उपासना आदि विषयों की शिक्षा दी गई हो; **–घट**–(पुं.) धर्मार्थ दान करने का घड़ा; **–घ्न**–(वि.) धर्मद्वेषी, धर्मनाशक; **–चक्र**–(पुं.) धर्मसमूह, धर्म का ढेर, प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र; **–चर्या**–(स्त्री.) धर्म का अनुष्ठान; **–चारिणी**–(स्त्री.) सहधर्मिणी, जाया; **–चारी**–(वि.) धर्म का आचरण करनेवाला; **–चिंतक**–(वि.) धर्म-संबंधी बातों का विचार करनेवाला; **–चिंता**–(स्त्री.) धर्म-विषयक विचार; **–ज**–(पुं.) धर्मपत्नी से उत्पन्न प्रथम औरस पुत्र; **–जन्मा**–(पुं.) युधिष्ठिर; **–जन्मा**–(वि.) धर्म से उत्पन्न होनेवाला (सुख); **–जिज्ञासा**–(स्त्री.) धर्म के विषय में सन्देह उत्पन्न होने पर वेद वाक्य द्वारा धर्म की मीमांसा; **–जीवन**–(पुं.) वह ब्राह्मण जो धर्म-कृत्य कराके जीविका निर्वाह करता है; **–ज्ञ**–(वि.) धर्म को जाननेवाला; (पु.) युधिष्ठिर; **–तः**–(अव्य.) धर्म का ध्यान रखते हुए, धर्म को साक्षी मानकर; **–तत्त्व**–(पुं.) धर्म का गुप्त मर्म; **–द**–(वि.) धर्मोत्थानक, धर्म देनेवाला; **–दान**–(पुं.) वह दान जो धर्म समझ-कर किया जाय; **–दारा**–(स्त्री.) धर्म-पत्नी; **–द्रवी**–(स्त्री.) गंगा नदी; **–द्रोही**–(पुं.) धर्म का द्रोही, राक्षस; **–द्वेषी**–(पुं.) धर्मद्रोही, राक्षस; **–धातु**–(पुं.) बुद्धदेव; **–ध्वज**–(पुं.) मिथिला देश के जनक वंश के एक राजा जो परम ज्ञानी थे, वह मनुष्य जो धर्म का आडंबर रचकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता है; **–ध्वजी**–(वि.) पाखण्डी; **–नंदन**–(पुं.) धर्मपुत्र, युधिष्ठिर; **–निष्ठ**–(वि.) धार्मिक; **–निष्ठा**–(स्त्री.) धर्म में विश्वास; **–नीति**–(स्त्री.) वह शास्त्र जिसमें कर्तव्याकर्तव्य तथा उसके फलाफल का विचार हो; **–पट्ट**–(पुं.) वह व्यवस्था-पत्र जो किसी राजा या धर्माधिकारी की ओर से दिया जाय; **–पति**–(पुं.) वरुण देवता; **–पत्नी**–(स्त्री.) विवाहिता स्त्री, वह स्त्री जिसके साथ धर्म शास्त्र की विधि से विवाह हुआ हो; **–पत्र**–(पुं.) औदुम्बर, गूलर; **–पथ**–(पुं.) धर्ममार्ग, कर्तव्यपथ; **–पर**–(वि.) जिसकी धर्म में आस्था हो; **–परायण**–(वि.) सर्वदा धर्मकार्य का यथाशक्ति अनुष्ठान करनेवाला; **–पाल**–(पुं.) राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम; (वि.) धर्म की रक्षा करनेवाला; **–पाश**–(पुं.) न्याय या धर्म का बंधन; **–पीठ**–(पुं.) धर्म का मुख्य स्थान; **–पुत्र**–(पुं.) धर्म के अनुसार स्वीकृत किया हुआ पुत्र, युधिष्ठिर; **–प्रचार**–(पुं.) धर्म के सिद्धांतों का प्रचार; **–प्रचारक**–(पुं.) धर्म का प्रचार करने के लिये इधर-उधर घूमकर व्याख्यान देनेवाला; **–प्रतिरूपक**–(पुं.) न्यायालय; **–प्रदीप**–(पुं.) धर्म का प्रकाश, धर्मज्ञ; (वि.) धर्मनिष्ठ; **–प्रमाण**–(वि.) धर्म जिसका साक्षी हो; **–प्रवक्ता**–(पुं.) धर्म का निर्णायक; **–प्रवृत्ति**–(स्त्री.) धर्म में श्रद्धा; **–बल**–(पुं.) धर्म की शक्ति; **–बुद्धि**–(स्त्री.) धर्मज्ञान, धर्म-अधर्म का विचार; **–भगिनी**–(स्त्री.) धर्म के अनुसार मानी हुई बहिन, गुरु की कन्या; **–भय**–(पुं.) धर्म का भय, यह विश्वास कि अधर्म करने से नरक-यातना भोगनी पड़ती है; **–भाणक**–(पुं.) कथा-पुराण आदि बाँचनेवाला; **–भीत**–(वि.) धर्म के भय से डरनेवाला; **–भीरु**–(वि.) जिसको धर्म का भय हो, जो अधर्म करते हुए बहुत डरता हो; **–भृत**–(वि.) धर्मशील, धार्मिक; **–भृत्**–(पुं.) तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम; **–भ्राता**–(पुं.) भाई के समान एक ही आश्रम में रहनेवाला; **–मति**–(वि.) धार्मिक, पुण्यात्मा; **–मय**–(वि.) धर्म से परिपूर्ण; **–महा-मात्य**–(पुं.) धर्मविषयक प्रधान मन्त्री; **–मूल**–(पुं.) धर्म का प्रमाण; **–युग**–(पुं.) सत्य युग; **–युज्**–(वि.) धर्म-युक्त; (पुं.) न्याय से उपार्जित धन; **–युद्ध**–(पुं.) वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अन्याय अथवा नियमभंग न हो; **–रक्षित**–(पुं.) एक प्रसिद्ध बौद्ध स्थविर जो अशोक के समय में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये बिलूचिस्तान देश में भेजा गया था; **–राइ**–(हिं. पुं.) देखो 'धर्मराज'; **–राज**–(पुं.) नृपति, राजा, युधिष्ठिर, न्यायाधीश, यम, धर्म का पालन करनेवाला राजा, न्यायकर्ता;

–राय–(हिं. पुं.) देखें 'धर्मराज'; –लुप्ता उपमा–(स्त्री.) वह उपमा जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय में समान रूप से पाये जानवाले गुण का कथन न हो; –वत्–(वि.) धर्मयुक्त, धार्मिक; –वर्धन–(पुं.) शिव, महादेव; –वर्म–(वि.) धर्मरक्षक, धार्मिक; –वत्सल–(वि.) धर्मनिष्ठ, धार्मिक; –वाद–(पुं.) धर्मसंबंधी तर्क; –वादी–(वि.) धर्म का उपदेश देनेवाला; –वासर–(पुं.) पूर्णिमा; –वाहन–(पुं.) शिव, महादेव, धर्मराज का वाहन, भैंसा; –वाह्य–(वि.) जो धर्म को न मानता हो; –विद्–(वि.) धर्मज्ञ, धर्म जाननेवाला; –विदुत्तम–(पुं.) विष्णु; –वित्तम–(पुं.) विष्णु; (वि.) धार्मिकों में श्रेष्ठ; –विद्या–(स्त्री.) मीमांसादि शास्त्र; –विप्लव–(पुं.) धर्म का व्यतिक्रम; –विवेचन–(पुं.) धर्म और अधर्म का विचार; –वीर–(पुं.) वीर रस के अनुसार वह पुरुष जो धर्म करने में साहसी हो; –व्याध–(पुं.) मिथिलापुरवासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक एक तपस्वी को धर्म का उपदेश दिया था; –व्रता–(स्त्री.) धर्म की कन्या और मरीचि ऋषि की पत्नी; –व्रती–(पुं.) धर्म का परिपोषक; –शाला–(स्त्री.) यात्रियों के लिये धर्मार्थ बना हुआ गृह, सत्र, विचारालय; –शासन–(पुं.) धर्मशास्त्र; –शास्त्र–(पुं.) वह ग्रन्थ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार संबंधी नियम लिखे हों; –शास्त्री (पुं.) वह जो धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था करता हो, वह पण्डित जो धर्मशास्त्र को भली भाँति जानता हो; –शील–(वि.) धार्मिक, धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला; –शीलता–(स्त्री.) धर्मशील होने का भाव; –संकट–(हिं. पुं.) ऐसी स्थिति का आ पड़ना जब कोई कार्य करने या न करने दोनों स्थिति में धर्म पर आघात पड़ता हो; –संकर–(पुं.) विरुद्ध धर्म का एकत्र समवाय; –संश्रित–(वि.) धर्म-तत्त्व का अभिलाषी; –संहिता–(स्त्री.) वह शास्त्र जिसमें धर्म का निरूपण हो, धर्मशास्त्र; –सभा–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ पर बैठकर न्यायाधीश न्याय करे; –सार–(पुं.) पुण्य कर्म का साधन, श्रेष्ठ या पुण्य कर्म; –सारी–(हिं.स्त्री.) धर्मशाला; –सावर्णि–(पुं.) पुराणों के अनुसार ग्यारहवें मनु का नाम; –सुत–(पुं.) युधिष्ठिर; –सूत्र–(पुं.) जैमिनि का बनाया वह ग्रन्थ जिसमें धर्म की मीमांसा की गई है; –सेतु–(पुं.) धर्म का रक्षक; –स्थ–(पुं.) न्यायाधीश; (वि.) जो केवल धर्म में लगा रहता है; –स्थल–(पुं.) वह स्थान जहाँ धर्मकार्य किये जाते हैं; –स्थविर–(पुं.) धर्म में दृढ़चित्त; –हंता–(वि.) धर्म के काम में बाधा डालनेवाला।

धर्मांध–(सं. वि.) धर्म के विषय में बहुत ही अविवेकी तथा कट्टर।

धर्मागम–(सं. पुं.) धर्मशास्त्र।

धर्माचार्य–(सं. पुं.) धर्मशिक्षक, धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु।

धर्मात्मा–(सं.वि.) धर्म करनेवाला, धार्मिक।

धर्माधर्म–(सं. पुं.) पुण्य और पाप।

धर्माधिकरण–(सं. पुं.) विचारालय, न्यायालय, धर्माध्यक्ष।

धर्माधिकार–(सं. पुं.) न्याय और अन्याय के विचार का अधिकार।

धर्माधिकारी–(सं. पुं.) धर्म और अधर्म की व्यवस्था करनेवाला, न्यायाधीश, विचारक, दानाध्यक्ष।

धर्माधिपति–(सं. पुं.) प्रधान व्यवस्थापक।

धर्माधिष्ठान–(सं. पुं.) न्यायालय।

धर्माध्यक्ष–(सं. पुं.) धर्माधिकारी, विष्णु, शिव, महादेव।

धर्माध्वन–(सं. पुं.) न्याय का मार्ग।

धर्मानुगत–(सं. वि.) धर्मयुक्त, धार्मिक।

धर्मानुयायी–(सं. वि.) धर्म के अनुसार चलनेवाला।

धर्मायतन–(सं. पुं.) धर्म का मानसिक ज्ञान।

धर्मार्थ–(सं. अव्य.) धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये।

धर्मालीक–(सं. वि.) कपटी, पाखण्डी।

धर्मावतार–(सं. पुं.) साक्षात् धर्म स्वरूप, अत्यन्त बड़ा धर्मात्मा, अच्छी तरह न्याय करनेवाला, युधिष्ठिर।

धर्माश्रित–(सं. वि.) धर्मशील, धार्मिक।

धर्मासन–(सं. पुं.) न्यायाधीश के बैठने का आसन, चौकी आदि।

धर्मिणी–(सं. स्त्री.) पत्नी, स्त्री; (वि. स्त्री.) धर्म करनेवाली।

धर्मिष्ठ–(सं.पुं.) पुण्यात्मा, अत्यन्त धार्मिक।

धर्मी–(सं. वि.) धार्मिक, जिसमें धर्म हो, जिसमें गुण हो; (पुं.) धर्म का अवतार विष्णु, गुण या धर्म का आश्रय, धर्मात्मा पुरुष; –पुत्र–(पुं.) नाटक का कोई पात्र।

धर्मीयस्–(सं. वि.) धर्मात्मा।

धर्मेंद्र–(सं. वि.) धर्मराज, यम।

धर्मेप्सु–(सं. वि.) धर्म-लाभ करने का अभिलाषी।

धर्मेश–(सं. पुं.) धर्मराज, यम।

धर्मोत्तर–(सं. पुं.) प्रधान धर्म।

धर्मोपदेश–(सं. पुं.) धर्मशास्त्र, धर्म की शिक्षा, धर्म-विषयक उपदेश।

धर्मोपदेशक–(सं. वि.) धर्म का उपदेश देनेवाला; (पुं.) गुरु।

धर्मोपदेशना–(सं. स्त्री.) व्यवहार शास्त्र का उपदेश।

धर्मोपाध्याय–(सं. पुं.) पुरोहित।

धर्मोपेत–(सं. वि.) धार्मिक, न्यायी।

धर्म्य–(सं. वि.) जो धर्म के अनुकूल हो।

धर्ष–(सं. पुं.) प्रगल्भता, वीरता, क्रोध, अविनय, अधीरता, अनादर।

धर्षक–(सं. वि., पुं.) अपमान करनेवाला, तिरस्कार करनेवाला, चतुर, दमन करनेवाला, व्यभिचारी, नट।

धर्षकारिणी–(सं. स्त्री.) असती, व्यभिचारिणी स्त्री।

धर्षकारी–(सं. वि.) दमन करनेवाला, हरानेवाला।

धर्षण–(सं. पुं.) अनादर, अपमान, असहनशीलता, शिव, महादेव, आक्रमण; (वि.) दबानेवाला।

धर्षणा–(सं. स्त्री.) अवज्ञा, अपमान, नीचा दिखाने का काम, संभोग, रति, सतीत्वहरण।

धर्षणात्मा–(सं.पुं.) शिव, महादेव।

धर्षणि, धर्षणी–(सं. स्त्री.) बन्धकी, कुलटा स्त्री।

धर्षणीय–(सं.वि.) दबाने या हराने योग्य।

धर्षित–(सं. वि.) अपमानित, नीचा खाया हुआ।

धर्षी–(सं. वि.) आक्रमण करनेवाला, अपमान करनेवाला, हरानेवाला।

धव–(सं. वि.) कँपाने या डरानेवाला; (पुं.) पति, स्वामी, नर, धूर्त मनुष्य, एक जंगली वृक्ष।

धवई–(हिं.स्त्री.) एक वृक्ष का नाम, धातकी।

धवनि–(सं. स्त्री.) अग्नि, आग।

धवनी–(हिं.स्त्री.) धौंकनी; (वि.) सफेद।

धवर–(हिं. पुं.) एक प्रकार की चिड़िया।

धवरा–(हिं. वि.) उजला, सफेद।

धवरी–(हिं. वि. स्त्री.) उजली; (स्त्री.) सफेद रंग की गाय।

धवल–(सं. पुं.) धव का वृक्ष, बड़ा बैल, एक राग का नाम, धवर पक्षी, छप्पय

छन्द का एक भेद, सफेद कोढ़, शंख, सफेदी, मिर्च; (वि.) सफेद, उजला, निर्मल, सुन्दर, मनोहर ।
धवलगिरि–(सं.पुं.) एक पर्वत का नाम ।
धवलता–(हिं. स्त्री.) सफेदी, उजलापन ।
धवलत्व–(सं. पुं.) धवलता ।
धवलना–(हिं.क्रि.स.) उज्ज्वल करना, सफेद करना, चमकाना ।
धवलपक्ष–(सं. पुं.) हंस, शुक्ल पक्ष ।
धवलमृत्तिका–(सं. स्त्री.) दुद्धी, खड़िया मिट्टी ।
धवलश्री–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
धवला–(सं. स्त्री.) सफेद गाय; (पुं.) वृन्दावन का एक पर्वत, सफेद बैल अनन्त-मूल; (वि. स्त्री.) सफेद, उजली ।
धवलाई–(हिं. स्त्री.) उजलापन, सफेदी ।
धवलागिरि–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम ।
धवलित–(सं. वि.) सफेद किया हुआ ।
धवली–(सं.स्त्री.) सफेद गाय, सफद मिर्च ।
धवलीकृत–(सं. वि.) सफेद किया हुआ ।
धवलीभूत–(सं.वि.) जो सफेद हो गया हो ।
धवलेक्षु–(सं. पुं.) सफेद ऊख ।
धवलोत्पल–(सं.पुं.) कुमुद, एक फूल का नाम ।
धवाणक–(सं. पुं.) वायु, हवा ।
धवाना–(हिं. क्रि. स.) दौड़ाना ।
धवितव्य–(सं. वि.) हवा देने योग्य, धौंकने योग्य ।
धवित्त–(सं. पुं.) हरिन के चमड़े का बना हुआ पंखा ।
धस–(हिं. पुं.) जल आदि में प्रवेश, गोता, डुवकी, भुरभुरी मिट्टी ।
धसक–(हिं. स्त्री.) सूखी खाँसी से गले से निकलनेवाला शब्द, सूखी खाँसी, ढाँसी, ईर्ष्या, डाह ।
धसकना–(हिं.क्रि.अ.) नीचे को धँसना, दवना, बैठ जाना, ईर्ष्या करना, डाह करना ।
धसका–(हिं. पुं.) चौपायों के फेफड़े का एक रोग ।
धसना–(हिं. क्रि. अ.) धँसना, नष्ट होना, मिट जाना ।
धसनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'धँसनि' ।
धसमसाना–(हिं.क्रि.अ.) धरती में समाना धँसना ।
धसाल–(हिं. स्त्री.) देखें 'धँसान', एक नदी का नाम ।
धसाव–(हिं. पुं.) देखें 'धँसाव' ।
धांक–(हिं. पुं.) भील की तरह की एक जंगली जाति ।
धाँगड़–(हिं. पुं.) एक अनार्य जंगली जाति, (ये लोग कुआँ, तालाव आदि खोदने का काम करते हैं ।)
धाँगर–(हिं. पुं.) देखें 'धाँगड़' ।
धाँधना–(हिं.क्रि.स.) वन्द करना, वहुत अधिक या ठूँसकर खाना ।
धाँधल–(हिं. स्त्री.) उपद्रव, ऊधम, धोखा, अति शीघ्रता; –**पन**–(पुं.) उपद्रव, पाजीपन ।
धाँधली–(हिं. वि.) उपद्रवी, ऊधमी, नटखट, पाजी; (स्त्री.) अनीति, धोखा ।
धाँय–(हिं. स्त्री.) देखें 'धायँ ।'
धाँस–(हिं.स्त्री.) मिर्च, तमाखू आदि की तीव्र गन्ध जिससे खाँसी आने लगती है ।
धाँसना–(हिं.क्रि.अ.) पशुओं का खाँसना ।
धाँसी–(हिं. स्त्री.) घोड़े की खाँसी ।
धा–(सं. पुं.) ब्रह्मा, बृहस्पति; (वि.) धारण करनेवाला; (हिं. पुं.) संगीत में धैवत स्वर का संकेत, तवले का एक वोल; (प्रत्य.) कुछ विशेषणों के साथ 'प्रकार' के अर्थ में लगनेवाला प्रत्यय; यथा-वहुधा, शतधा आदि ।
धाइ–(हिं. पुं.) धव का वृक्ष ।
धाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'धाय', दाई ।
धाउ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नाच ।
धाऊ–(हिं. पुं.) वह मनुष्य जो किसी जरूरी कार्य के लिये भेजा जाय, हरकारा ।
धाक–(सं. पुं.) वैल, आहार, अन्न, खंभा, आधार; (हिं.स्त्री.) दवदवा, प्रसिद्धि; (पुं.) ढाक, पलास वृक्ष; (मुहा.) –**बँधना**–प्रभाव होना; –**बाँधना**–प्रभाव जमाना ।
धाकना–(हिं. क्रि. अ.) रोब जमाना ।
धागा–(हिं.पुं.) वटा हुआ सूत, तागा, डोरा ।
धाड़–(हिं. स्त्री.) डाकुओं का धावा, झुंड, जत्था, दहाड़ ।
धाड़ना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'दहाड़ना' ।
धाड़स–(हिं. स्त्री.) देखें 'ढाढ़स' ।
धाड़ी–(हिं. पुं.) वड़ा भारी डाकू ।
धात–(हिं. स्त्री.) देखें 'धातु' ।
धातकी–(सं. स्त्री.) धव का फूल ।
धाता–(सं. पुं.) विधाता, ब्रह्मा, शेषनाग, विष्णु, शिव, ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम, वारह सूर्यो में से एक, एक विशिष्ट वायु का नाम, आत्मा, भृगु मुनि के एक पुत्र का नाम, सप्तर्पियों में से एक ऋषि; (वि.) धारण करनेवाला, पालन करनेवाला ।
धातु–(सं. स्त्री.) परमात्मा, शरीर का पोषण करनेवाले द्रव्य यथा–वात, पित्त और कफ, शरीर में रहनेवाली सात धातुएँ–रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि मज्जा और शुक्र, शब्द का वह ल मूरूप जिससे क्रिया वनती है, खान से निकलनेवाले वे द्रव्य जो भारी हों, जो गलाये जा सकें तथा जिनमें गुरुत्व हो, जो पीटकर वढ़ाये जा सकें तथा जिनका तार खींचा जा सके, शुक्र, वीर्य, तत्त्व, भूत, किसी महात्मा की अस्थि जो डिव्वे म वंद करके भूमि में गाड़ दी जाती थी और उस पर स्मारक वनाया जाता था; –**क**–(पुं.) शिलाजतु, शिलाजीत; –**कुशल**–(वि.) जो धातु के काम में कुशल हो; –**क्षय**–(पुं.) प्रमेहादि रोग जिसमें धातु का अधिक क्षय होता है; –**घ्न**–(पुं.) शरीर की धातु को नष्ट करनेवाला पदार्थ; –**द्रावक**–(पुं.) धातु को गलानेवाला, सोहागा; –**पुष्ट**–(वि.) वीर्य को गाढ़ा करनेवाला; –**पुष्पिका**, –**पुष्पी**–(स्त्री.) धव का फूल; –**प्रधान**–(पुं.) शुक्र, वीर्य; –**वैरी**–(हिं. पुं.) गन्धक; –**भृत्**–(पुं.) पर्वत, पहाड़; (वि.) धातु का पोषण करनेवाला; –**मर्म**–(पुं.) कच्ची धातु को शुद्ध करने की कला; –**मल**–(पुं.) धातु का मल, वैद्यक के अनुसार कफ, पित्त, पसीना आदि; –**मारिणी**–(स्त्री.) सोहागा; –**राग**–(पुं.) धातु से निकला हुआ रंग; –**राजक**–(पुं.) शुक्र, वीर्य; –**वर्धक**–(वि.) वीर्य को वढ़ानेवाला; –**वल्लभ**–(पुं.) टंकन, सोहागा; –**वाद**–(पुं.) कच्ची धातु को निमल करने तथा एक में मिली हुई अनेक धातुओं को अलगाने की कला, रसायन वनान का काम; –**वादी**–(पुं.) रासायनिक क्रिया से सोना–चाँदी वनानेवाला रसायनज्ञ; –**विट्**–(स्त्री.) सीसक, सीसा धातु; –**विष**–(स्त्री.) सीसा, हरताल; –**वृद्धि**–(स्त्री.) वीर्य की वृद्धि; –**वैरी**–(पुं.) गन्धक; –**शेखर**–(पुं.) कसीस; –**संज्ञ**, –**संभव**–(वि.) सीसक, सीसा; –**सांभक**–(वि.) वीर्य को रोकनेवाला; –**हन्**–(पुं.) गंधक ।
धातृ–(सं. वि.) धारण करनेवाला, पोषक; (पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, आत्मा, ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम, आदित्य, सूर्य; –**पुत्र**–(पुं.) ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार; –**पुष्पिका**–(स्त्री.) धव का फूल ।
धात्री–(सं. स्त्री.) माता, माँ, किसी

बच्चे को दूध पिलानेवाली स्त्री, बच्चे का पालन-पोषण करनेवाली स्त्री, धाय, दाई, पृथ्वी, गायत्री देवी, गंगा, आँवला, सेना, गाय, आर्या छन्द का एक भद; **–पत्र–**(पुं.) तालीशपत्र, आमले की पत्ती; **–पुत्र–**(पुं.) धाय का बेटा, नट; **–फल–**(पुं.) धाय का बेटा, नट; **–फल–**(पुं.) आँवला; **–विद्या–**(स्त्री.) लड़का जनाने और शिशुपालन की विद्या।

धात्रेयी–(सं. स्त्री.) धात्री, धाय, दाई।

धात्वर्थ–(सं. पुं.) किसी शब्द का धातु से निकलनेवाला अर्थ।

धान–(हिं. पुं.) तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों का छिलका अलगाने पर चावल बनता है।

धानक–(सं. पुं.) धन्याक, धनिया, एक रत्ती का चौथा अंश; (हिं.पुं.) धनुर्धर।

धानकी–(हि. पुं.) धनुर्धर, कामदेव।

धानजई–(हि. पुं.) एक प्रकार का धान।

धानपान–(हि. पुं.) विवाह के पहिले की एक रीति जिसमें वर पक्ष की ओर से कन्या के घर धान और हल्दी भजी जाती है; (वि.) दुबला-पतला।

धानमाली–(हि. पुं.) अस्त्र चलाने की एक क्रिया जिसमें दूसरे के चलाये हुए अस्त्र को रोका जाता है।

धानाका–(सं. स्त्री.) धन्याक, धनिया।

धाना–(हि. क्रि. अ.) दौड़ना, भागना, प्रयत्न करना।

धानाचूर्ण–(सं. पुं.) सक्तु, सत्तू।

धानिका–(सं. स्त्री.) धानी, आधार।

धानी–(सं.स्त्री.) आधार, वह पात्र जिसमें कोई वस्तु रखी जाय, स्थान, जगह, धन्याक, धनिया; (हि. स्त्री.) धान की पत्ती के समान रंग, एक संकर रागिनी का नाम, भूना हुआ जव या गेहूँ; (वि.) हलके हरे रंग का।

धानुक–(हि.पुं.) धनुर्धर, एक नीच जाति।

धानुष्क–(सं. पुं.) धनुर्धर, धनुष चलाकर अपनी जीविका निर्वाह करनेवाला।

धानुष्का–(सं. स्त्री.) अपामार्ग, चिचड़ा।

धानुष्य–(सं. पुं.) बाँस।

धानेय, धानेयक–(सं. पुं.) धान्यक, धनिया।

धान्य–(सं. पुं.) छिलका सहित चावल, धान, कोई भी अन्न, चार तिलों का एक परिमाण, धन्याक, धनिया, एक प्रकार का नागरमोथा, प्राचीन काल का एक अस्त्र; **–क–**(पुं.) धन्याक, धनिया, धान्य, धान; **–कंचुकी–**(पुं.) धान का छिलका; **कल्क–**(पु.) धान की भूसी; **–कोष्ठक–**(पुं.) अन्न भरने का कोठिला; **–चमस–**(पुं.) चिपिटक, चिवड़ा; **–पति–**(पुं.) चावल, जव; **–बीज–**(पुं.) धन्याक, धनिया; **–भक्षक–**(पुं.) एक प्रकार का पक्षी; **–मंजरी–**(स्त्री.) धान का अंकुर; **–मंड–**(पुं.) धान की बनाई हुई मदिरा; **–माय–**(पुं.) धान तौलने या बेचनेवाला; **–मालिनी–**(स्त्री.) एक राक्षसी जो रावण के यहाँ रहती थी; **–माष–**(पुं.) दो धानों के बराबर का एक प्राचीन परिमाण; **–मुख–**(पुं.) चीर-फाड़ करने का एक प्राचीन अस्त्र; **–राज–**(पुं.) यव, जव; **–वर्धन–**(पुं.) सवाई पर अन्न ऋण देन का व्यवहार; **–बीज–**(पुं.) धान का बीज, धनिया; **–वीर–**(पुं.) माष, उड़द; **–शीर्षक–**(पुं.) धान की मंजरी; **–सार–**(पुं.) तण्डुल, चावल।

धान्या, धान्याक–(सं.स्त्री.,पुं.) धन्याक, धनिया।

धान्याकृत–(सं. पुं.) किसान, खेतिहर।

धान्याम्ल–(सं. पं.) काञ्जिक, काँजी।

धान्यारि–(सं. पुं.) मूषक, चूहा।

धान्याशय–(सं. पुं.) अन्न रखने का स्थान, भंडार।

धान्यास्थि–(सं. पुं.) तुष, भूसी।

धान्व–(सं.वि.) जंगल में उत्पन्न होनेवाला।

धाप–(हि. पुं.) लंबा-चौड़ा मैदान, खत की लंबाई-चौड़ाई, दूरी की नाप जो एक या दो मील मानी जाती है; (स्त्री.) तृप्ति, सन्तोष, जल की धारा।

धापना–(हि.क्रि.अ.,स.) तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, अघाना, सन्तुष्ट करना, दौड़ना, भागना।

धाबा–(हि. पुं.) छत के ऊपर का कमरा, अटारी, छत जिसके नीचे बाँस की फट्ठियाँ लगी रहती हैं, वह स्थान जहाँ कच्ची रसोई बनती है।

धाभाई–(हि. पुं.) देखें 'दूधभाई'।

धाम–(सं. पुं.) एक प्रकार के देवता, विष्णु, घर, शरीर, शोभा, प्रणाम, किरण, स्थान, जन्म, तेज, बागडोर, लगाम, ज्योति, देवस्थान, पुण्यस्थान, अवस्था, स्थिति, गति, स्वर्ग।

धामक–(सं.पुं.) एक प्रकार की सुगन्धित घास, एक माशे की तौल।

धामकेशी–(सं. पुं.) किरणयुक्त सूर्य।

धामक-धूमक–(हि. स्त्री.) देखें 'धूमधाम'।

धामधा–(सं. पुं.) पालक, रक्षक।

धामनिका–(सं. स्त्री.) धमनी, नाड़ी।

धामनिधि–(सं. पुं.) भानु, सूर्य।

धामभाज–(सं. पुं.) वह देवता जो यज्ञ में भाग लेता है।

धामा–(हिं. पुं.) भोजन का नेवता।

धामार्गव–(सं. पुं.) अपामार्ग, चिचड़ा, एक प्रकार की तरोई।

धामिन–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का बहुत लंबा सर्प जिसकी पूँछ में बहुत विष होता है।

धायँ–(हिं. स्त्री.) तोप, बंदूक आदि के छूटने का शब्द, किसी पदार्थ के वेग से गिरने का शब्द।

धाय–(सं. वि.) धारण करनेवाला; (हिं. स्त्री.) वह स्त्री जो दूसरे के शिशु को दूध पिलाती है तथा उसका पालन-पोषण करती है, दाई, धव का वृक्ष।

धायना–(हिं. क्रि.अ.) दौड़ना-धूपना।

धायस–(सं. वि.) धारण करनेवाला, पालन-पोषण करनेवाला।

धाय्य–(सं. पुं.) पुरोहित।

धार–(सं. पुं.) इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल, वेग से होनेवाली वर्षा, प्रान्त प्रदेश; (वि.) गहरा; (हिं. स्त्री.) निरन्तर जल का प्रवाह, पानी का सोता, देवी के लिए अर्घ्य, काटनेवाले हथियार का पैना किनारा, आक्रमण, धावा, सेना, दिशा, किनारा, छोर, ऋण, वर्तुलाकार काठ में (जमोट में) लगाया हुआ लोहा जिस पर कुएँ की कोठी बाँधी जाती है; (मुहा.) **–चढ़ाना–**किसी देवता को दूध आदि चढ़ाना; **–देना–**दूध देना; **–निकालना–**दूध दुहना; **–बाँधना–**किसी शस्त्र की धार को कुंठित करना; **–मारना–**पानी का सोता निकल आना।

धारक–(सं. पुं.) कलसा, घड़ा; (वि.) धारण करनेवाला, रोकनेवाला।

धारका–(सं. स्त्री.) स्त्री की योनि।

धारण–(सं. पुं.) ग्रहण, थामना, अपने ऊपर लेना, पहिनना, सेवा, रक्षा, निवारण, ले जाना, स्थापन, ऋण लेना, अंगीकार करना, खाना-पीना; (पुं.) शिव, महादेव, कश्यप के एक पुत्र का नाम।

धारणक–(सं. पुं.) ऋणी।

धारणा–(सं. स्त्री.) स्मरणशक्ति, बुद्धि, संकल्प, मर्यादा, पक्का विचार, स्मृति, परब्रह्म में चित्त की स्थिरता।

धारणी–(सं. स्त्री.) नाड़ी, श्रेणी, पंक्ति, पृथ्वी, सीधी लकीर।

धारणीमति–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की समाधि ।
धारणीय–(सं. वि.) धारण करने योग्य, जो धारण किया जा सके ।
धारन–(हिं. पुं.) देखें 'धारण' ।
धारना–(हिं. क्रि.स.) धारण करना, ऋण लेना ।
धारय–(सं. वि.) धारण करनेवाला ।
धारयितव्य–(सं. वि.) धारण करने योग्य ।
धारयितृ–(सं. वि.) धारण करनेवाला ।
धारयित्री–(सं. स्त्री.) धारण करनेवाली पृथ्वी ।
धारयिष्णु–(सं. वि.) धारण करनेवाला ।
धारांकुर–(सं. पुं.) वर्षा की बूँद, थोड़ी वर्षा, ओला ।
धारांग–(सं. पुं.) खड्ग, तलवार ।
धारांतरचर–(सं. वि.) आकाश में उड़नेवाला ।
धारा–(सं. स्त्री.) पानी आदि का बहाव, बाढ़, घोड़े की चाल, हथियार की धार, रथ का पहिया, कीर्ति, यश, उन्नति, समूह, झुंड, अधिक वर्षा, निरन्तर बहता हुआ कोई द्रव पदार्थ, पानी का झरना, समानता, गुरुच, हल्दी, आमला, घड़े में बनाया हुआ छिद्र, सेना का अगला भाग, पहाड़ की चोटी, राजा भोज की राजधानी ।
धारागृह–(सं. पुं.) वह घर जिसमें जल-यन्त्र लगे हों ।
धाराट–(सं. पुं.) चातक पक्षी, मेघ, बादल, घोड़ा, मस्त हाथी ।
धाराधर–(सं. पुं.) मेघ, बादल, खड्ग ।
धारापात–(सं.पुं.) जलधारा का गिरना ।
धारापूप–(सं. पुं.) एक प्रकार का मालपूआ ।
धाराफल–(सं. पुं.) मैनफल का वृक्ष ।
धारायंत्र–(सं. पुं.) कृत्रिम फुहारा ।
धाराल–(सं.वि.) धारदार, जिसमें धार हो ।
धारावत–(सं. वि.) जल के समान ।
धारावनि–(सं. पुं.) वायु, हवा ।
धारावर–(सं. पुं.) मेघ, बादल ।
धारावर्ष–(सं. पुं.) निरन्तर वर्षा ।
धारावाही–(सं. वि.) धारा के रूप में (बिना रुकावट के) बहने या होने वाला ।
धाराविष–(सं. वि.) खड्ग, तलवार ।
धाराश्रु–(सं. पुं.) आँसू का गिरना ।
धारासत्त्व–(सं. पुं.) गुरुच का रस ।
धारासंपात–(सं.पुं.) तीव्र और अधिक वृष्टि, मूसलधार वर्षा ।
धारासार–(सं.पुं.) जल की सतत वृष्टि ।
धारास्नुही–(सं. स्त्री.) निवारा, सेहुँड़ ।
धारि–(सं. पुं.) आयुष्य, वय; (हिं. स्त्री.) समूह, झुंड, एक वर्णवृत्त का नाम ।
धारिणी–(सं. स्त्री.) धरणी, पृथ्वी, भूमि, सेमल का वृक्ष, देवताओं की बारह पत्नियाँ जिनके नाम–शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्राणी, रुचिराकृति, सिनीवाली, कुहू, राका, अनुमति, आयाति, प्रज्ञा और वेला हैं; (वि.स्त्री.) धारण करनेवाली ।
धारी–(हिं.स्त्री.) सेना, समूह, झुंड, लकीर, रेखा; (वि.) धारण करनेवाला, ऋण लेनवाला; –**दार**–(वि.) वह वस्त्र आदि जिस पर लंबी-लंबी रेखाएँ या धारियाँ हों ।
धारु–(सं. वि.) पीनेवाला ।
धारुजल–(हिं. पुं.) खड्ग, तलवार ।
धारोष्ण–(सं. पुं.) थन से दुहा हुआ ताजा दूध जो कुछ गरम होता है ।
धार्तराष्ट्र–(सं.पु.) धृतराष्ट्र की सन्तान ।
धार्म–(सं. वि.) धर्म-संबंधी; –**पत्तन**–(पुं.) कील, खूटी ।
धार्मिक–(सं. वि.) धर्म-संबंधी, धर्मा-चरण करनेवाला, पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मात्मा; –**ता**–(स्त्री.) धार्मिक होने का भाव, धर्मशीलता ।
धार्य–(सं.वि.) धारण करने योग्य; (पुं.) वस्त्र, कपड़ा; –**त्व**–(पुं.) धारण करने का भाव ।
धार्ष्टद्युम्न–(सं. पुं.) धृष्टद्युम्न की सन्तान ।
धार्ष्ट्य–(सं. पुं.) धृष्टता ।
धार्ष्णक–(सं. पुं.) राजा धृष्णु का पुत्र ।
धाव–(हिं.पुं.) एक प्रकार का बहुत लंबा सुन्दर वृक्ष ।
धावक–(सं. पुं.) हरकारा, कपड़ा धोने-वाला, धोबी ।
धावड़ा–(हिं. पुं.) धव का फूल या वृक्ष ।
धावण–(हिं. पुं.) दूत, हरकारा ।
धावन–(सं. पुं.) शीघ्र दौड़ना, वेग से दौड़कर जाना, धोने या स्वच्छ करने का काम, दूत, हरकारा ।
धावना–(हिं. क्रि.अ.) दौड़ना, भागना ।
धावनि–(सं. स्त्री.) पिठवन, भटकटैया, चढ़ाई, धावा ।
धावनिका–(स. स्त्री.) पिठवन, कँटीली मकोय ।
धावरी–(हिं. स्त्री.) सफेद रंग की गाय ।
धावा–(हिं. पुं.) आक्रमण, चढ़ाई, किसी कार्य के निमित्त दौड़-धूप; (मुहा.) –**मारना**–आक्रमण करना ।
धावित–(हिं. वि.) दौड़ता हुआ ।
धासि–(सं. पुं.) अन्न, अनाज, गृह, घर ।
धाह–(हिं. स्त्री.) चिल्लाकर रोना ।
धिंग–(हिं. स्त्री.) ऊधम, उपद्रव ।
धिंगरा–(हिं. पुं.) देख 'धींगरा' ।
धिंगा–(हिं. वि.) उपद्रवी, निर्लज्ज ।
धिंगाई–(हिं. स्त्री.) ऊधम, उपद्रव, निर्लज्जता ।
धिंगाधिंगी–(हिं. स्त्री.) उपद्रव ।
धिंगाना–(हिं. क्रि. अ.) ऊधम मचाना, उपद्रव करना ।
धिआ–(हिं. स्त्री.) धिय, कन्या, बेटी, छोटी लड़की ।
धिआन–(हिं. पुं.) देखें 'ध्यान' ।
धिआना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'ध्यावना' ।
धिक–(हिं. अव्य.) धिक्, लानत ।
धिकना–(हिं. क्रि. अ.) गरम होना ।
धिकाना–(हिं. क्रि. स.) आँच पर गरम करना ।
धिक्–(सं. अव्य.) भर्त्सना, तिरस्कार, निन्दा या घृणासूचक शब्द ।
धिक्कार–(सं. पुं.) भर्त्सना, तिरस्कार या घृणासूचक शब्द, अनादर, फटकार ।
धिक्कारना–(हिं. क्रि. स.) तिरस्कार करना, फटकारना ।
धिग–(हिं. अव्य.) देखें 'धिक्' ।
धिग्दंड–(सं.पुं.) तिरस्कार-रूपक दण्ड ।
धित–(सं. वि.) स्थापित रखा हुआ ।
धिमचा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की इमली ।
धिय–(हिं. स्त्री.) कन्या, बेटी, लड़की ।
धियसान–(सं. वि.) धारण करनेवाला ।
धिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'धिय', कन्या ।
धियायु–(सं. वि.) अपनी बुद्धि के अनुसार काम करनेवाला ।
धिरकार–(हिं. स्त्री.) देखें 'धिक्कार' ।
धिरवना, धिराना–(हिं. क्रि. अ., स.) डराना, धमकाना, धीमा होना, धीरज रखना ।
धिषण–(सं. पुं.) बृहस्पति, ब्रह्मा, शिक्षक, गुरु; (वि.) बुद्धिमान् ।
धिषणा–(सं. स्त्री.) बुद्धि, प्रशंसा, पत्थर, पृथ्वी, स्थान; (वि.स्त्री.) धारण करनेवाली ।
धिषणाधिप–(सं. पुं.) देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।
धिष्ण्य–(सं. पुं.) स्थान, गृह, शक्ति, अग्नि; (वि.) स्तुति करने योग्य ।
धींग–(हिं. पुं.) हृष्ट-पुष्ट मनुष्य, हट्टा-कट्टा आदमी; (वि.) दुष्ट, पापी, उप-द्रवी; –**धुकड़ी**–(स्त्री.) उपद्रव ।
धींगड़ा–(हिं. पुं.) हट्टाकट्टा मनुष्य, गुंडा,

बदमाश, कुकर्मी ।
धींगड़ी(री)–(हिं.वि.,स्त्री.) दुष्ट (स्त्री) ।
धींगा–(हिं.वि.,पुं.) उपद्रवी, पाजी; **–धींगी**–(स्त्री.) उपद्रव, बलप्रयोग; **–मुश्ती**–(स्त्री.) उपद्रव, हाथावाँही, लड़ना ।
धींगाड़, धींगाड़ा–(हिं. वि.) दुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, वर्णसंकर, दोगला ।
धींद्रिय–(सं. पुं.) ज्ञानेन्द्रिय, वह इन्द्रिय जिसके द्वारा किसी बात का ज्ञान प्राप्त होता है (आँख, कान, नाक, त्वचा तथा रसना) ।
धींवर–(हिं. पुं.) देखें 'धीवर', मल्लाह ।
धी–(सं. स्त्री.) बुद्धि, ज्ञान, मन, मर्म; (हिं. स्त्री.) लड़की, बेटी; **–गुण**–(पुं.) बुद्धि का गुण ।
धीजना–(हिं.क्रि.अ.,स.) अंगीकार करना, स्वीकार करना, ग्रहण करना, धीरज धरना, अति प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना ।
धीत–(सं. वि.) आदर किया हुआ, आराधित, प्यासा ।
धीति–(सं.स्त्री.) प्यास, आदर, आराधना ।
धीदा–(सं. स्त्री.) कन्या, कुमारी, बेटी; (वि. स्त्री.) बुद्धिदायिका ।
धीम–(हिं. वि.) देखें 'धीमा' ।
धीमत्–(सं. वि.) बुद्धियुक्त; (पुं.) पुरूरवा के एक पुत्र का नाम ।
धीमर–(हिं. पुं.) धीवर, मल्लाह ।
धीमा–(हिं. वि.) जिसका वेग मन्द हो, जो तीव्र न हो, जो हलका हो, (ज्वर), (स्वर) जो साधारण से कम हो; **–तिताला**–(पुं.) संगीत में सोलह मात्राओं का एक ताल ।
धीमान्–(सं.वि.,पुं.) बुद्धिमान्, बृहस्पति ।
धीमोदिनी–(सं.स्त्री.) मद्य, सुरा, धीया ।
धीया–(हिं. स्त्री.) दुहिता, लड़की ।
धीर–(सं. वि.) धैर्यचित्त, जो शीघ्र घबड़ाता न हो, धृतिवान्, विनीत, नम्र, गंभीर, मन्द, धीमा, मनोहर, सुन्दर; (पुं.) धैर्य, सन्तोष ।
धीरट–(हिं. पुं.) हंस पक्षी ।
धीरज–(हिं. पुं.) देखें 'धैर्य' ।
धीरता–(सं. स्त्री.) मन की स्थिरता, चित्त की नम्रता, सन्तोष, पांडित्य, नायक का एक गुण ।
धीरत्व–(सं. पुं.) धीरता ।
धीरपत्री–(सं. स्त्री.) जमीकन्द, सूरन ।
धीरप्रशांत–(सं.पुं.) नाटक का वह नायक जो अनेक गुणों से युक्त उत्तम रूप का हो ।
धीरललित–(सं. पं.) नाटक आदि का [व]ह नायक जो कलापरायण, मृदु, तथा चिन्तारहित हो, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं ।
धीरशांत–(सं. पुं.) वह नायक जो दयावान्, गुणवान्, सुशील तथा पुण्यवान् हो ।
धीरस्कंध–(सं. पुं.) भैंस, जंगली सूअर ।
धीरा–(सं. स्त्री.) मालकँगनी, काकोली, गुरुच, शृंगार में वह नायिका जो अपने नायक की चेष्टाओं में परस्त्री-गमन के चिह्न देखकर व्यंग्य रूप से क्रोध प्रदर्शित करे; (हिं. वि.) मन्द, धीमा; (पुं.) धैर्य, धीरज ।
धीराधीरा–(सं. स्त्री.) साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक के अंग-भाव में परस्त्री-रमण के चिह्न देखकर अपना क्रोध कुछ गुप्त रूप से दिखलाये ।
धीरावी–(सं. स्त्री.) शीशम का पेड़ ।
धीरी–(हिं. स्त्री.) आँख की पुतली ।
धीरे–(हिं. अव्य.) मन्द स्वर या गति से ।
धीरोदात्त–(सं. पुं.) वह नायक जो आत्माभिमान नहीं दिखलाता, जो बलवान्, क्षमाशील, दयालु, दृढ़ चित्त और अच्छा लड़नेवाला हो, वीररस-प्रधान नाटक का मुख्य नायक ।
धीरोद्धत(सं. पुं.) वह नायक जो प्रचण्ड, चंचल, मायापटु, अहंकारादि-युक्त हो तथा आत्मश्लाघा करता हो ।
धीर्य–(सं. वि.) कातर, डरपोक ।
धीलटि–(सं. स्त्री.) दुहिता, लड़की ।
धीवर–(सं. पुं.) मल्लाह, मछुआ, केवट ।
धीवरी–(सं. स्त्री.) मल्लाहिन, मछली मारने की कँटिया, वंसी आदि ।
धीशक्ति–(हिं. स्त्री.) बुद्धि का गुण ।
धीसचिव–(हिं. पुं.) बुद्धिमान मन्त्री ।
धीहरा–(हिं. स्त्री.) कटहल, कुंदरू ।
धुंआ–(हिं. पुं.) देखें 'धुआँ', धूम्र ।
धुंकार–(हिं. स्त्री.) गड़गड़ाहट ।
धुंगार–(हिं. स्त्री.) बघार, तड़का, छौंक ।
धुंगारना–(हिं.क्रि.स.) बघारना, छौंकना ।
धुंज–(हिं. वि.) धुँधला ।
धुंद–(हिं. स्त्री.) देखें 'धुंध' ।
धुंदा–(हिं. वि.) अन्धा, नेत्रहीन ।
धुंध–(हिं. स्त्री.) वायु में उड़ती हुई धूलि, वह अन्धकार जो हवा में धूल का बादल छा जाने से हो जाता है; आँख का वह रोग जिसमें वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ती ।
धुंधक–(हिं.पुं.) देखें 'धुंध' ।
धुंधका–(हिं. पुं.) धुवाँ निकलने का छिद्र, धुवाँकश ।
धुंधकार–(हिं. पुं.) धुंकार, गड़गड़ाहट, अंधकार, धुंध का अँधेरा ।
धुंधमार–(हिं. पुं.) देखें 'धुंधुमार' ।
धुँधर–(हिं. स्त्री.) वह धूल जो हवा में उड़ती हो, अत्यधिक धूल उड़ने के कारण अँधेरा होना ।
धुँधराना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'धुँधलाना' ।
धुंधरि–(हिं. स्त्री.) वह अँधेरा जो धुएँ आदि के कारण होता हो ।
धुंधँला–(हिं. वि.) धुएँ के रंग का, कुछ काला, अस्पष्ट, जो स्पष्ट रूप से न दिखाई पड़े, थोड़ा-थोड़ा अँधेरा ।
धुँधलई–(हिं. स्त्री.) धुँधलापन ।
धुँधलाना–(हिं.क्रि.अ.) धुँधला पड़ जाना ।
धुँधलापन–(हिं. पुं.) धुंधला होने का भाव ।
धुँधली–(हिं. स्त्री.) देखें 'धुंध' ।
धुंधु–(सं. पुं.) मधु नामक राक्षस के पुत्र का नाम; **–मार**–(पुं.) बृहदश्व राजा का पुत्र जिसने धुन्धु नामक राक्षस को मारा था, घर में जमा हुआ धुंआँ, बीरबहूटी, छिपकली ।
धुंधुकार–(हिं. पुं.) अंधकार, धुँधलापन, नगाड़े का शब्द ।
धुंधुरित–(हिं. वि.) धुँधला किया हुआ, दृष्टिहीन, धुँधली आँखवाला ।
धुंधुवाना–(हिं.क्रि.अ.) धुआँ देना, धुआँ देकर जलना ।
धुंधेरी–(हिं. स्त्री.) धुंध, वह अन्धकार जो हवा में मिली हुई धूलि के कारण हो ।
धुंधेला–(हिं. पुं.) बदमाश, दुष्ट, छली, धोखेबाज ।
धु–(सं. स्त्री.) कँपकँपी, थरथराहट ।
धुअ–(हिं. पुं.) ध्रुवतारा ।
धुआँ–(हिं. पुं.) भाफ जो जलती हुई वस्तुओं से निकलकर वायु म मिल जाती है, कोयले के सूक्ष्म कणों के मिले होने से इसका रंग कुछ काला होता है, धूम्र, बड़ा समूह, चेहरे का कालापन, घटाटोप धुंध; (मुहा.) **धुएँ का धौराहर**–शीघ्र नष्ट होनेवाली वस्तु; **धुएँ का बादल उड़ाना**–व्यर्थ बकबक करना; **–कश**–(पुं.) भाफ से चलनेवाली नाव या जहाज, अगिनबोट; **–दान**–(पुं.) छत में धुआँ निकलने का छिद्र; **–धार**–(वि.) धुएँ से भरा हुआ, धूम्रमय, घोर, प्रचण्ड, काला, धुएँ के समान, तड़क-भड़क का, भड़कीला, काले रंग का; (अव्य.) बड़े वेग से, बड़े जोर से ।
धुआँना–(हिं.क्रि.स.) अधिक धुए में चुरने के कारण स्वाद या गन्ध का बिगड़ जाना ।
धुआँयँध–(हिं. वि.) धुएँ के समान गन्ध का; (स्त्री.) अच्छी तरह अन्न का पाचन

न होने के कारण जो डकार आती हो।
घुआँरा–(हिं.पुं.) धुआँ निकलने के लिए छत में बना हुआ छिद्र।
घुआँस–(हिं. स्त्री.) देखें 'धुवाँस'।
घुआँसा–(हिं. पुं.) वह कालिख जो धुएँ के कारण छत में जम जाती है, (वि.) धुएँ के रंग या गन्ध का।
घुआ–(हिं. पुं.) शव, मृतदेह।
घुक–(हिं.स्त्री.) कलावत्तू बटने की सलाई।
घुकड़-पुकड़–(हिं. पुं.) चित्त की अस्थिरता, व्यग्रता, घबड़ाहट।
घुकड़ी–(हिं.स्त्री.) छोटी थैली या बटुआ।
घुकघुकी–(हिं. स्त्री.) छाती के बीच का गहरा स्थान, हृदय की धड़कन, कम्पन, भय, डर, गले में पहिनने का एक प्रकार का गहना।
घुकना–(हिं.क्रि.अ.) झुकना, नीचे की ओर गिरना, झपटना, टूट पड़ना, गिर पड़ना, नवना।
घुकाना–(हिं. क्रि. स.) नवाना, झुकाना, पटकना, ढकेलना, पछाड़ना, धूनी देना।
घुकार–(हिं.स्त्री.) नगाड़े का शब्द, गरज, गड़गड़ाहट का शब्द।
धुकी–(सं. स्त्री.) बेर का पेड़।
घुक्कना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'घुकना'।
घुगघुगी–(हिं. स्त्री.) देखें 'धुकधुकी'।
घुज, घुजा–(हि.पुं.,स्त्री.) ध्वजा, पताका।
घुजिनी–(हिं. स्त्री.) सेना।
घुड़ंगा, घुड़ंगी–(हिं. वि.) वस्त्रहीन, बिलकुल नंगा, जिसके नग्न शरीर पर धूल लगी हो।
घुत–(सं. वि.) छोड़ा हुआ, भगाया हुआ; –कार–(हिं. स्त्री.) देखें 'दुतकार'।
घुतकारना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'दुतकारना'।
घुताई–(हिं. स्त्री.) धूर्तता।
घुतारा–(हिं. वि.) धूर्त।
घुतू–(हिं. पुं.) देखें 'धूतू'।
घुघुकार–(हिं.स्त्री.) धू-धू का शब्द, कर्कश शब्द।
घुन–(सं. पुं.) कम्पन, काँपने की क्रिया; (हिं.स्त्री.) किसी काम को निरन्तर खूब परिश्रम से करने की प्रवृत्ति, मन की तरंग, चिन्ता, सोच-विचार, गाने का एक ढंग, संपूर्ण जाति का एक राग; (मुहा.) –का पक्का–वह जो आरंभ किये हुए काम को बिना पूरा किये नहीं छोड़ता।
घुनकना–(हिं. क्रि. स.) धुनना।
घुनकी–(हिं. स्त्री.) धुनियों का धनुष के आकार का रूई धुनने का साधन, लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।
घुनना–(हिं.क्रि.स.) धुनकी से रूई स्वच्छ करना जिससे इसमें के बिनौले अलग हो जायँ, धूल निकल जाय और रेशे अलग हो जायँ, खूब मारना या पीटना, किसी काम को निरन्तर करते जाना, बारंबार कहना।
घुनवाना–(हिं. क्रि. स.) धुनने का काम किसी दूसरे से कराना।
घुनि–(सं. पुं.) एक असुर का नाम; (स्त्री.) नदी; (हिं.स्त्री.) ध्वनि।
घुनियाँ–(हिं. पुं.) रूई धुनने का काम करनेवाला, बेहना।
घुनी–(हिं. वि.) निरन्तर किसी धुन में लगा रहनेवाला; (सं. स्त्री.) नदी; (हिं. स्त्री.) देखें 'ध्वनि', देखें 'धूनी'।
घुनीनाथ–(सं. पुं.) सागर, समुद्र।
घुनेचा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का सन।
घुनेहा–(हिं. पुं.) देखें 'धुनियाँ', बेहना।
घुपना–(हिं.क्रि.अ.) धुलना, धोया जाना।
घुपाना–(हिं.क्रि.स.) सुखाने के लिए किसी वस्तु को धूप में रखना, धूप दिखाना।
घुपेली–(हिं. स्त्री.) गरमी के दिनों में पसीने से निकलनेवाली छोटी-छोटी फुंसी, अँभौरी।
घुमारा–(हिं. वि.) धुएँ के रंग का।
घुमिलना–(हिं. क्रि.स.) धूमिल करना।
घुमिला–(हिं. वि.) धुँधला।
घुरंधर–(सं. पुं.) भार उठानेवाला, बोझ ढोनेवाला मनुष्य या पशु, एक राक्षस का नाम, धव का वृक्ष; (वि.) भार ढोनेवाला, श्रेष्ठ, प्रधान, सबसे बड़ा या बलवान्।
घुर–(सं. पुं.) गाड़ी या रथ का धुरा, अक्ष, भार, बोझ, आरंभ, बैल आदि पशुओं के कन्धे पर रखने का जुआ, प्रधान स्थान, ऊँचा स्थान, धन, सम्पत्ति, भूमि की एक नाप जो एक बिस्वे के बराबर होती है, भाग, अंश, चिनगारी; (वि.) दृढ़, पक्का; (अव्य.) ठीक स्थान पर, सटीक, सीध, सीध में; –सिरे से–(अव्य.) आरम्भ से।
घुरकट–(हिं. पुं.) भूमि का वह लगान जो कृषक भू-स्वामी को जेठ के महीने में दे देता है।
घुरकिल्ली–(हिं. स्त्री.) गाड़ी के धुरे में लगाई जानेवाली लोहे की कील।
घुरना–(हिं. क्रि. स.) मारना, पीटना बजाना।
घुरपद–(हिं. पुं.) देखें 'ध्रुपद'।
घुरा–(हिं. पुं.) वह लोहे का डंडा जिस पर गाड़ी आदि का पहिया घूमता है, अक्ष।
घुरिया-धुरंग–(हिं. वि.) (वह गाना) जो बिना साज-बाज के अकेले ही गाया जाय, अकेला, जिसके साथ दूसरा कोई न हो।
घुरियाना–(हिं.क्रि.स.) किसी वस्तु को धूल से ढाँपना, ऊख की उपज का पहले-पहल गोड़ा जाना, किसी कलंक या दोष का छिपाया जाना।
घुरिया-मल्लार–(हिं. पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक मल्लार राग।
घुरी–(हिं. स्त्री.) छोटा धुरा।
घुरीण–(सं. वि.) भारवाहक, बोझ ढोनेवाला, मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, धुरंधर।
घुरीय–(सं. पुं.) बोझ ढोनेवाला पशु; (वि.) बोझ ढोने योग्य।
घुरेटना–(हिं. क्रि. स.) धूल लगाना, धूल पोतना।
घुर्य–(सं.वि.) धुरन्धर, श्रेष्ठ, बोझ ढोने योग्य
घुर्रा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु का बहुत छोटा भाग, कण, रजकण; (मुहा.) धुर्रे उड़ाना–किसी वस्तु के छोटे-छोटे टुकड़े करना।
घुलना–(हिं. क्रि.अ.) जल की सहायता से स्वच्छ किया जाना, धोया जाना।
घुलवाना–(हिं. क्रि. स.) धोने का काम किसी दूसरे से कराना।
घुलाई–(हिं.स्त्री.) धोने का काम या शुल्क।
घुलाना–(हिं.क्रि.स.) किसी दूसरे को धोने के काम में प्रवृत्त करना, धुलवाना।
घुलिया-मिटिया–(हिं. वि.) जिस पर धूल या मिट्टी जमी हुई हो, शान्त किया हुआ।
घुलेंड़ी–(हिं. स्त्री.) होली के दूसरे दिन होनेवाला हिन्दुओं का एक त्योहार जिसमें लोग एक दूसरे पर गुलाल डालते है।
घुव–(हिं. वि.,पुं.) देखें 'ध्रुव'।
घुवक–(सं. वि.) गर्भनाश करनेवाला।
घुवका–(सं. स्त्री.) गीत का पहिला पद।
घुवन–(सं. पुं.) अग्नि, आग; (वि.) कँपानेवाला, हिलानेवाला।
घुवाँ–(हिं.पुं.) देखें 'धुआँ'; –कश–(पुं.) धुआँकश।
घुवाँरा–(हिं. पुं.) धुआँ निकलने का छिद्र।
घुवाँस–(हिं. स्त्री.) उड़द का आटा जिसका पापड़ आदि बनाया जाता है।
घुवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'धुलाना'।
घुवित्र–(सं. पुं.) हरिन के चमड़े का बना हुआ पंखा।
घुस्तूर–(सं. पुं.) धतूरा।
घुस्स–(हिं. पुं.) मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर, टीला, नदी आदि के किनारे बनाया हुआ बाँध, बंद।
घुस्सा–(हिं. पुं.) मोटे ऊन की बनी हुई लोई जो ओढ़ने के काम में आती है।

धूँध–(हिं. स्त्री.) देखें 'धुंध'।
धूँधर–(हिं.वि.) धुंधला; (पुं.) अँधेरा जो हवा में छाई हुई धूलि के कारण हो जाता है।
धू–(हिं.पुं.) ध्रुवतारा, धुरा; (सं.पुं.) उत्तानपाद राजा के पुत्र का नाम।
धूआँ–(हिं.पुं.) देखें 'धूआँ,' धूम्र।
धूआँधार–(हिं.वि.,अव्य.) देखें 'धुआँधार'।
धूई–(हिं.स्त्री.) धूनी।
धूक–(सं.पुं.) वायु हवा, धूर्त मनुष्य, काल, मौलसिरी का वृक्ष, बिलैया; (हिं.पुं.) कलावत्तू बटने की सलाई।
धूत–(हिं.वि.) काँपता हुआ, धमकाया हुआ, छोड़ा हुआ, देखें 'धूर्त'।
धूतना–(हिं. क्रि. स.) ठगना, धोखा देना।
धूतपाप–(सं. वि.) जिसका पाप दूर हो गया हो।
धूतपापा–(सं. स्त्री.) काशी की एक प्राचीन छोटी नदी।
धूता–(सं. स्त्री.) भार्या, स्त्री।
धूती–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
धूतुक, धूतू–(हिं. पुं.) तुरही बाजा।
धूध–(हिं. पुं.) आग के दहकने का शब्द, आग की लपट।
धून–(सं. वि.) कम्पित, काँपता हुआ।
धूनक–(सं. पुं.) गोंद, राल, धूप; (वि.) हिलाने-डोलानेवाला।
धूनन–(सं. पुं.) कम्प, थरथराहट।
धूनना–(हिं. क्रि.स.) धुनी देना, सुलगाना, जलाना, रूई के रेशे अलगाना, धुनना।
धूनराज–(हिं.पुं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।
धूना–(हिं. पुं.) गुग्गुल की जाति का एक बड़ा वृक्ष, इसमें से निकलनेवाला गोंद जो धूप की तरह जलाया जाता है।
धूनि–(सं. स्त्री.) कम्प, थरथराहट
धूनी–(हिं. स्त्री.) देवपूजन अथवा सुगन्ध के लिए कपूर, अगर, गुग्गुल आदि सुगन्धित द्रव्यों का सुलगाया हुआ धुआँ, साधुओं के तापने की आग; (मुहा.)–**जगाना**–तप करना, साधु बनना; –**देना**–गन्ध-द्रव्यों को सुलगाकर धुआँ करना; –**रमाना**–धूनी जलाकर आँच तापना।
धूप–(सं. पुं.) मिश्रित गन्ध-द्रव्यों का धुआँ, इनसे बनी हुई बत्ती आदि जो देवपूजन या सुगन्ध के लिए जलाई जाती है; (हिं. स्त्री.) सूर्य का प्रकाश, घाम; (मुहा.)–**खाना**–ऐसे स्थान पर बैठना जहाँ शरीर पर धूप पड़े; –**दिखाना**–धूप में रखना; –**निकलना**–सूर्य का [illegible] में उदय हो जाना; –**में बाल पकाना**–जीवन का अधिक समय बिना अनुभव प्राप्त किये व्यतीत करना।
धूपक–(सं.पुं.) शहतूत की लकड़ी।
धूप-घड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का यन्त्र जिसमें सूर्य के प्रकाश से समय का ज्ञान होता है।
धूपछाँह–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वस्त्र जिसके ताने और बाने में विभिन्न रंग होते हैं; (इसी कारण से ऐसे वस्त्र में एक ही स्थान पर कभी एक रंग और कभी दूसरा रंग जान पड़ता है।
धूपदान–(हिं. पुं.) वह पात्र जिसमें धूप या गन्ध-द्रव्य रखकर सुलगाया जाता है।
धूपदानी–(हिं. स्त्री.) छोटा धूपदान।
धूपद्रुम–(सं. पुं.) लाल खैर का वृक्ष।
धूपन–(सं. पुं.) साल का वृक्ष, धूप देने की क्रिया।
धूपना–(हिं. क्रि. अ., स.) गन्ध-द्रव्य सुलगाना, धूप देना, सुगन्धित धुएँ से वासना, दौड़ना, व्यग्र करना।
धूपपात्र–(सं.पुं.) धूप जलाने का बरतन।
धूपबत्ती–(हिं. स्त्री.) गंध-द्रव्य का चूर लपेटी हुई सींक या बत्ती जिसके जलाने से सुगन्धित धुआँ उठकर फैलता है।
धूपमुद्रा–(सं. स्त्री.) तन्त्रानुसार धूपदान की मुद्रा।
धूपवास–(सं. पुं.) स्नान करने के बाद सुगन्धित धुएँ से शरीर, सिर के बाल आदि को सुवासित करने की क्रिया।
धूपवृक्ष–(सं.पुं.) सलई या गुग्गुल का वृक्ष।
धूपायित–(सं. वि.) चलते-चलते थका हुआ, धूप दिखाया हुआ।
धूपार्ह–(सं. वि.) धूप देने योग्य।
धूपित–(सं. वि.) सन्तप्त, थका हुआ, धूप दिया हुआ।
धूम–(सं. पुं.) धूम्र, धुआँ, डकार, उल्कापात, धूम्रकेतु, एक ऋषि का नाम, एक देश का नाम; –**क**–(पुं) धुआँ, एक प्रकार का शाक; –**केतु**–(पुं.) दुमदार सफेद तारा जो कभी-कभी आकाश में दिखाईपड़ता है, पुच्छल तारा, एक प्रकार का घोड़ा, केतु ग्रह, रावण का एक राक्षस सेनापति, अग्नि, महादेव; –**गंधि**–(पुं.) वह अग्नि जिसका अनुमान धुएँ से होता है; –**ग्रह**–(पुं.) राहुग्रह; –**ज**–(पुं.) मेघ, बादल, मोथा, घास; –**जांगज**–(पुं.) वज्रक्षार, नौसादर; –**दर्शी**–(पुं.) जिसकी आँखों से अस्पष्ट धुआँ-सा दिखाई पड़ता है, एक प्रकार का आँख का रोग; –**ध्वज**–(पुं.) –**घर**–(पुं.) अग्नि, आग; –**घर**–(पुं.) अग्नि, आग; –**प**–(वि.) धुआँ पीनेवाला; –**पथ**–(पुं.) धुआँ निकलने का मार्ग; –**पान**–(पुं.) औषधियों का धुआँ जो रोगी को नली द्वारा पान कराया जाता है, तमाखू, बीड़ी आदि पीने का व्यसन; –**पोत**–(पुं.) अग्निबोट, धुआँकश; –**प्रभा**–(स्त्री.) एक नरक का नाम; (वि.) धुएँ के रंग का; –**प्राश**–(वि.) धुआँ पीकर तपस्या करनेवाला; –**मार्ग**–(पुं.) धुएँ का मार्ग; –**मृत्तिका**–(स्त्री.) सुवर्ण शोधने की एक प्रकार की मिट्टी; –**योनि**–(पुं.) मेघ, बादल, मोथा; –**रज**–(पुं.) धुएँ की कालिख जो छतों में लग या जम जाती है; –**ल**–(पुं.) कृष्ण लोहित वर्ण; (वि.) धुएँ के रंग का; –**वार**–(वि.) जिसमें धुआँ लगा हो; –**वर्त्म**–(पुं.) धुएँ का मार्ग; –**शिख**–(पुं.) एक राक्षस का नाम; –**संहति**–(स्त्री.) धुएँ का जमाव; –**स**–(पुं.) एक प्रकार का शाक; –**सार**–(पुं.) घर का धुआँ।
धूम–(हिं. पुं.) अनेक मनुष्यों का एकत्र होकर कोलाहल करना, आन्दोलन, उपद्रव, हलचल, ऊधम, उत्पात, समारोह, प्रसिद्धि, हल्ला, ठाट-बाट; –**धड़क्का**–(पुं.) समारोह, भारी आयोजन; –**धाम**–(स्त्री.) ठाटबाट, समारोह।
धूमक-धैया–(हिं. स्त्री.) उत्पात, उपद्रव, कूद-फाँद, हल्ला।
धूमर–(सं. पुं.) आँख का एक रोग जिसमें आँखों से धुंधला दिखाई पड़ता है, देखें 'धूमल'।
धूमला–(हिं. वि.) धुएँ के रंग का, ललाई लिए काले रंग का, धुंधला, जो चटकीला न हो, मलिन।
धूमसी–(सं. स्त्री.) उड़द का आटा।
धूमांग–(सं. पुं.) जिसका रंग धुएँ के समान हो।
धूमाक्ष–(सं.पुं.) वह पुरुष जिसकी आँख धुएँ के रंग की हों।
धूमाग्नि–(सं. पुं.) बिना ज्वाला या लपट की आग।
धूमावती–(सं. स्त्री.) दस महाविद्याओं में से एक।
धूमिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का पक्षी।
धूमित–(सं. वि.) जिसमें धुआँ लगा हो।
धूमिता–(सं. स्त्री.) सूर्य के डूबने की की दिशा, पश्चिम।
धूमिन–(सं. पुं.) अग्नि की एक जिह्वा का नाम।

धूमिल–(हिं.वि.) धुँधला, धुएँ के रंग का।
धूमोद्गार–(सं. पुं.) धुआँ निकलना, धुआँयँध।
धूमोर्णा–(सं.स्त्री.) यम की स्त्री, मार्कण्डेय की स्त्री का नाम; **–पति**–(पुं.) यम।
धूम्याट–(सं.पुं.) भृंगराज नामक पक्षी।
धूम्र–(सं. पुं.) धुआँ, ललाई लिए काला रंग, शिलारस, लोवान, शिव, महादेव, मेघ, बादल, राम की सेना का एक भालू; (वि.) धुएँ के रंग का, सुँघनी के रंग का; **–क**–(पुं.) उष्ट्र, ऊँट; **–केतु**–(पुं.) राजा भरत के पुत्र का नाम; (वि.) जिसकी पताका धुएँ के रंग की हो; **–केश**–(पुं.) राजा पृथु के एक पुत्र का नाम; (वि.) जिसके बाल सुँघनी के रंग के हों; **–पत्रा,–पत्रिका**–(स्त्री.) कृमिघ्नी नामक पौधा; **–लोचन**–(पुं.) कपोत, कबूतर, शुम्भ दानव का सेनापति जिसको भगवती ने मारा था; **–लोहित**–(पुं.) शिव, महादेव, कालापन लिए गाढ़ा लाल रंग; **–वर्ण**–(पुं.) ललाई लिये काला रंग; (वि.) धुए के रंग का; **–वर्णा**–(स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम; **–शूक**–(पुं.) उष्ट्र, ऊँट; **–शूल**–(पुं.) देखें 'धूम्रशूक'।
धूम्रा–(सं.स्त्री) एक प्रकार की ककड़ी।
धूम्राक्ष–(सं. वि.) जिसकी आँख धुएँ के समान हो; (पुं.) रावण के एक सेनापति का नाम।
धूम्राट–(सं.पुं.) भृंगराज नामक पक्षी।
धूम्राभ–(सं. पुं.) वह जिसकी कान्ति धूमिल वर्ण की हो।
धूम्रायण–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
धूम्रार्चि–(सं. स्त्री.) अग्नि की दस कलाओं में से एक।
धूम्राश्व–(सं.पुं.) राजा इक्ष्वाकु के प्रपौत्र का नाम।
धूम्रिका–(सं. स्त्री.) शीशम का पेड़।
धूर–(हिं. स्त्री.) धूलि, धूल।
धूरकट–(हिं. पुं.) वह लगान जो कृषक भूस्वामी को जेठ में पेशगी देता है।
धूरजटी–(हिं. पुं.) देखें 'धूर्जटि'।
धूरत–(हिं. वि.) देखें 'धूर्त'।
धूरधान–(हिं. पुं.) धूल का ढेर।
धूरधानी–(हिं. स्त्री.) धूर का ढेर, धूर, ध्वंस, नाश, एक प्रकार की बंदूक।
धूरा–(हिं. पुं.) धूल, चूरा, चूर्ण, बुकनी; (मुहा.) **–देना**–शीत लगने पर शरीर भर सोंठ की बुकनी रगड़ना।
धूरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'धूल'।
धूरिया-मल्लार–(हिं. पुं.) मल्लार राग का एक भेद।
धूरे–(हिं. अव्य.) पास में।
धूर्जटि–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
धूर्त–(सं. पुं.) लोहे की मैल, धतूरा, चोर नामक गन्ध-द्रव्य, जुआरी; (वि.) मायावी, वंचक, धोखा देनेवाला।
धूर्तक–(सं. पुं.) सियार, गीदड़, जुआरी।
धूर्तकृत्–(सं. पुं.) धतूरा; (वि.) धोखा देनेवाला।
धूर्तचरित–(सं. पुं.) धूर्तों का चरित्र, संकीर्ण नाटक का एक भेद।
धूर्तजंतु–(सं. पुं.) मनुष्य।
धूर्तता–(सं.स्त्री.) शठता, ठगपना, वंचकता।
धूर्तर–(सं. पुं.) पारद, पारा।
धूर्ता–(सं. स्त्री.) सफेद भटकटैया।
धूर्धर–(सं.पुं.) धुरंधर, बोझा ढोनेवाला।
धूर्वह–(सं. वि.) देखें 'धूर्धर'।
धूल–(हिं. स्त्री.) मिट्टी, रेत आदि का महीन कण, रेणु, रज, धूल के समान कोई तुच्छ वस्तु; (मुहा.) **–उड़ना**–नष्ट होना, शोभा का मिटना, उपहास होना; **–उड़ाना**–अपमानित करना, हँसी उड़ाना; **–की रस्सी बटना**–असंभव बात के पीछे पड़ना; **–चाटना**–बड़ी विनती करना; **–डालना**–दबा देना, ध्यान में न लाना; **–फांकना**–इधर-उधर मारा-मारा फिरना; **–में मिलाना**–चौपट करना; **–समझना**–तुच्छ समझना; **पैर की धूल**–अति तुच्छ वस्तु या व्यक्ति; **सिर पर धूल डालना**–पछतावा करना।
धूलक–(सं. पुं.) विष, गरल।
धूलधानी–(हिं. स्त्री.) ध्वंस, नाश।
धूला–(हिं. पुं.) खण्ड, टुकड़ा।
धूलि–(सं. स्त्री.) मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर, धूल।
धूलिका–(सं. स्त्री.) महीने जलकणों की झड़ी।
धूलिकुट्टिम–(सं. पुं.) जोता हुआ खेत।
धूलिकेदार–(सं. पुं.) मिट्टी का टीला।
धूलिगुच्छक–(सं. पुं.) अबीर।
धूलिजंघ–(सं. पुं.) काक, कौवा।
धूलिध्वज–(सं. पुं.) पवन, वायु, हवा।
धूलिपुष्पिका–(सं.स्त्री.) केतकी का फूल।
धूली–(सं.स्त्री.) धूल; **–पटल**–(पुं.) धूल का ढेर; **–मय**–(वि.) धूल से भरा हुआ।
धूवाँ–(हिं. पुं.) देखें 'धुआँ'।
धूसर–(सं. पुं.) मटमैला रंग, गदहा, ऊँट, कबूतर, बनियों की एक जाति, जंगली गौरैया; (वि.) धूल के रंग का, मटमैला, धूल लगा हुआ, धूल से भरा हुआ।
धूसरा–(हिं.वि.) धूल लगा हुआ, मटमैला।
धूसराह्वय–(सं. पुं.) गर्दभ, गदहा।
धूसरित–(सं. वि.) धूल से भरा हुआ, मटमैला किया हुआ।
धूसरी–(सं. स्त्री.) एक किन्नरी का नाम।
धूसला–(हिं. वि.) देखें 'धूसरा'।
धूस्तूर–(सं. पुं.) धतूरा।
धृक, धृग–(हिं. अव्य.) देखें 'धिक्'।
धृत–(सं. वि.) धारण किया हुआ, स्थिर किया हुआ, निश्चित, पतित, ग्रहण किया हुआ; (पुं.) तेरहवें मनु रौच्य के पुत्र का नाम; **–केतु**–(पुं.) वसुदेव के बहनोई का नाम; **–देवा**–(स्त्री..) देवकी की एक कन्या; **–पदा**–(स्त्री) गायत्री का एक भेद; **–माली**–(स्त्री.) अस्त्रों को निष्फल करने का एक प्राचीन अस्त्र विशेष; **–राष्ट्र**–(पुं.) वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो, एक नगर का नाम, वह कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य के पुत्र थे; **–राष्ट्री**–(स्त्री.) धृतराष्ट्र की पत्नी; **–वत्**–(वि.) ग्रहण करनेवाला; **–वर्म**–(वि.) जो कवच धारण किये हो; (पुं.) एक पौराणिक राजा; **–व्रत**–(वि.) जिसने व्रत धारण किया हो; (पुं.) पुरुवंशीय एक राजा का नाम।
धृतात्मा–(सं.वि.) चित्त को स्थिर रखनेवाला, धीर; (पुं.) विष्णु।
धृति–(सं. स्त्री.) धारण करने या पकड़ने की क्रिया, संतोष, तृप्ति, मन की दृढ़ता, गौरी आदि षोडश मातृकाओं में से एक, फलित ज्योतिष का एक योग, अठारह अक्षरों का एक वृत्त, दक्ष की पुत्री; (पुं.) राजा जयद्रथ का पौत्र, एक विश्वदेव का नाम, साहित्य में एक व्यभिचारी भाव; **–मत्**–(वि.) धैर्ययुक्त, धीरज वाला; **–होम**–(पुं.) विवाह के बाद करने का एक होम।
धृत्वन्–(सं. वि.) विष्णु, धर्म, आकाश, समुद्र; (वि.) धारण करनेवाला।
धृपज्–(सं.वि.) दमन करनेवाला, दबानेवाला।
धृपु–(सं. वि.) दक्ष, निपुण।
धृष्ट–(सं. वि.) प्रगल्भ, निर्लज्ज, उद्धत, निर्दय, ढीठ, वह नायक जो निर्लज्ज हो, जिसको किसी प्रकार का भय न लगता हो और जो झूठी बातों से अपना दोष छिपाने का प्रयत्न करता हो; **–केतु**–(पुं.) नवें

ग्रह या केतु का नाम, राजा शिशुपाल के एक पुत्र का नाम; **-ता**-(स्त्री.) अनुचित साहस, ढिठाई, निर्लज्जता; **-द्युम्न**-(पुं.) द्रुपद राजा के पुत्र और द्रौपदी के भाई, (कौरव और पाण्डवों के युद्ध में यह पाण्डवों की ओर से एक प्रधान सेना-नायक नियुक्त थे। जिस समय द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनकर अपना शरीर त्यागन के लिए योग में निमग्न थे उसी समय धृष्टद्युम्न ने उनका शिर काट डाला था।) **-धी**-(वि.) कठोर स्वभाव का।

धृष्टा-(सं.स्त्री.)व्यभिचारिणी स्त्री,कुलटा।

धृष्टि-(सं. पुं.) दशरथ के एक मन्त्री का नाम, यज्ञ का एक पात्र।

धृष्णज-(सं. वि.) निर्लज्ज, बेहया।

धृष्णता-(सं. स्त्री.) धृष्टता, निर्लज्जता।

धृष्णत्व-(सं. पुं.) धृष्टता।

धृष्णु-(सं. वि.) प्रगल्भ, उद्धत, ढीठ; (पुं.) एक रुद्र का नाम, वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

धृष्य-(सं.वि.)धर्षणीय, दमन करने योग्य।

धेन-(सं. पुं.) समुद्र, नद; (हि. स्त्री.) देखें 'धेनु', गाय।

धेना-(सं. स्त्री.) स्वाद, रस।

धेनु-(सं. स्त्री.) गाय, हाल की व्यायी हुई गाय, बच्चेवाली गाय।

धेनुक-(सं. पुं.) एक असुर जिसको बलराम ने मारा था।

धेनुका-(सं.स्त्री.)हथिनी, गाय, धनिया।

धेनुकारि-(सं. पुं.) बलराम, नागकेशर का वृक्ष।

धेनुमती-(सं. स्त्री.) गोमती नदी।

धेनुमुख-(सं.पुं.) एक प्रकार का बाजा।

धेनुष्टरी-(सं. स्त्री.) अच्छी गाय।

धेय-(सं. वि.) धारण करने योग्य, पोषण करने योग्य, पीने योग्य; (पुं.) धारण, पोषण।

धेर-(हि. पुं.) एक अनार्य जाति, (इस जाति के लोग खेती का काम करते हैं और मरे चौपायों का मांस खाते हैं।)

धेरिया-धेरी-(हि. स्त्री.) पुत्री, बेटी।

धेलचा, धेला-(हि.पुं.) पैसे के आधे मूल्य का तांबे का सिक्का, अधेला।

धेली-(हि. स्त्री.) आधा रुपया, अठन्नी।

धेष्ठ-(सं.वि.)विविध रूप धारण करनेवाला

धैताल-(हि.वि.) उद्धत, चपल, चंचल।

धैनव-(सं. पुं.) गाय का बच्चा; (वि.) ५ से उत्पन्न।

धैना-(हि. स्त्री.) स्वभाव, काम-धंधा।

धैनुक-(सं. पुं.) गाय का समूह।

धैर्य-(सं पुं.) चित्त की स्थिरता, धीरता, धीरज, अप्रमाद, मन में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव, अवधान, शांत भाव, अत्यन्त भयानक विघ्न उपस्थित होने पर भी अपने कार्य से तनिक भी विचलित न होने का भाव, महादेव; **-कलित**-(वि.) स्थिर, अटल; **-च्युत**- (वि.) विकल, धैर्यहीन; **-शाली**-(वि.) धैर्ययुक्त, शान्त।

धैर्यावलंबन-(सं.पुं) शान्त होने की क्रिया।

धैर्यावलंबी-(सं. वि.) सहिष्णु, शान्त।

धवत-(सं. पुं.) संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर।

धोंडाल-(हि. वि.) जिसमें कंकड़, पत्थर के ढोंके हों।

धोंधा-(हि. पुं.) पिण्ड, लोंदा, भद्दा शरीर; **मिट्टी का धोंधा**-मूर्ख, आलसी, या सुस्त आदमी।

धोई-(हि. स्त्री.) उड़द या मूँग की छिलका निकाली हुई दाल।

धोकड़-(हि. वि.) हट्टाकट्टा।

धोका-(हि. पुं.) देखें 'धोखा'।

धोखा-(हि.पुं.) दूसरे को भ्रम में डालने का व्यवहार, छल, भुलावा, दगा, भ्रम, अनिष्ट की संभावना, प्रमाद, भूल, अज्ञान, भ्रान्ति उत्पन्न करनेवाली वस्तु, संशय, बेसन का बना हुआ एक पकवान, पक्षियों को डराने के निमित्त खेत में खड़ा किया हुआ पुतला, फले हुए वृक्षों पर रस्सी से बँधी हुई लकड़ी जिसको खींचने से खट-खट शब्द होता है और पक्षी उड़ जाते हैं, असार वस्तु, माया; (मुहा.)**-उठाना**-भ्रम में पड़कर हानि उठाना; **-खाना**-ठगा जाना, वंचित होना; **-देना**-छलना, ठगना; **-पड़ना**-अन्यथा होना; **-रचना**-किसी को ठगने के लिए उपाय रचना; **-लगना**-त्रुटि या कमी होना; **-लगाना**-भ्रम में डालना; **धोखे की टट्टी**-भ्रम में डालनेवाली वस्तु; **धोखे से**-अज्ञान से, भूल से।

धोखेबाज(हि.वि.)धोखा देनेवाला, वंचक।

धोखेबाजी-(हि. स्त्री.) धोखा, वंचना।

धोटा-(हि. पुं.) देखें 'ढोटा'।

धोड-(सं. पुं.) एक प्रकार का सर्प।

धोतर-(हि.पुं.)एक प्रकार का मोटा वस्त्र।

धोती-(हि. स्त्री.) नौ-दस हाथ लम्बा तथा दो-ढाई हाथ चौड़ा वस्त्र जिससे भारतवासी हिन्दू लोग कमर से लेकर पैर तक शरीर का भाग ढांपते हैं तथा स्त्रियाँ सर्वांग ढांपने के लिए कमर मे लपेट लेती है, एक अंगुल चौड़ी और चौवन अंगुल लम्बी कपड़े की धज्जी जिसको हठयोगी धौति-क्रिया में प्रयोग करते हैं; (मुहा.)**-ढीली होना**-भयभीत होना, डर जाना।

धोना-(हि.क्रि.स.)जल से स्वच्छ करना; पखारना, हटाना, मिटाना, दूर करना; **किसी वस्तु से हाथ धोना**-गँवा देना, खो बैठना; **हाथ धोकर पीछे पड़ना**-किसी को खूब तंग करना।

धोप-(हि. स्त्री.) खड्ग, तलवार।

धोब-(हि.पुं.)धोये जाने का काम, धुलाई।

धोबिघटा-(हि. पुं.) वह घाट जहाँ धोबी कपड़े धोते हैं।

धोबिन-(हि. स्त्री.) धोबी की स्त्री, धोबी जाति की स्त्री, एक प्रकार का पक्षी जो जल के किनारे रहता है।

धोबी-(हि. पुं.) मैले कपड़ों को धोकर स्वच्छ करनेवाला, रजक; (मुहा.)**-का कुत्ता**-एक स्थान पर स्थिर न रहनेवाला मनुष्य; **-घास**-(स्त्री.) बड़ी दूब; **-पछाड़,छाट**-(पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

धोम-(हि. पुं.) धूम्र, धूम, धुआँ।

धोर-(हि. स्त्री.) निकटता, सामीप्य, किनारा, पाढ़।

धोरण-(सं. पुं.) हाथी, घोड़े की तेज सरपट चाल, दौड़।

धोरणी-(सं. स्त्री.) परम्परा, श्रेणी।

धोरी-(हि. पुं.) भार उठानेवाला, बैल, बड़ा आदमी, मुखिया, सरदार।

धोरे-(हि. अव्य.) पास में।

धोलधक-(हि. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।

धोला-(हि. पुं.) हिंगुआ, जवास।

धोवाना-(हि. क्रि. स.) देखें 'धुलाना'।

धोवत-(हि. पुं.) धोबी।

धोवन-धोवा-(हि. पुं.) धोने या पखारने की क्रिया, वह जल जिसमें कोई वस्तु धोई गई हो।

धोवाना-(हि. क्रि. स.) धोने का काम किसी दूसरे से कराना।

धोसा-(हि. पुं.) गुड़ आदि का लोंदा।

धौं-(हि. अव्य.) मालूम नहीं, न जाने, अथवा, या, अच्छा, तो, भला, कि आ अर्थों में यह शब्द प्रयोग किया जाता है।

धौंक-(हि.स्त्री.)अग्नि पर धौंकने से उत्पन्न वायु का झोंका, गरम हवा की लपट, ताप, लू, हवा का झोंका जो भाथी से उत्पन्न

किया जाता है।
धौंकना–(हिं. क्रि. स.) आग दहकाने के लिए उस पर भाथी आदि की धौंक पहुँचाना, ऊपर डालना, दण्ड आदि लगाना, भार डालना या पहुँचाना।
धौंकनी–(हिं. स्त्री.) आग फूँकने की धातु या बाँस की सोनार की पोली नली, भाथी।
धौंका–(हिं. पुं.) वायु का झोंका, लू, तीव्र वायु।
धौंकिया–(हिं. पुं.) आग फूँकनेवाला, भाथी चलानेवाला, बरतनों की मरम्मत करनवाले कारीगर जो अँगीठी, भाथी आदि लेकर नगरों की गलियों में घूमा करते हैं।
धौंकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'धौंकनी'।
धौंज, धौंजन–(हिं. स्त्री.) उद्विग्नता, व्यग्रता, घबड़ाहट, दौड़-धूप।
धौंजना–(हिं.क्रि. अ., स.) दौड़-धूप करना, कीट आदि को पैर से कुचलना, कुचलकर नष्ट करना।
धौंटा–(हिं. पुं.) वह ढकना जो तेली के बल की आँखों पर लगाया जाता है।
धौंताल–(हिं.वि.) चतुर, साहसी, निपुण, हट्टा-कट्टा, किसी धुन में लगा हुआ।
धौंधौंमर–(हिं.स्त्री.) शीघ्रता, उतावली।
धौंर–(हिं. स्त्री.) सफेद रंग की ऊख।
धौंस–(हिं. स्त्री.) घुड़की, धमकी, डाँट-डपट, कपट, धोखा।
धौंसना–(हिं. क्रि. स.) दंड देना, दमन करना, दबाना, धमकी देना, घुड़की देना, मारना, पीटना, डराना।
धौंस-पट्टी–(हिं. स्त्री.) धोखा, भुलावा, दम-दिलासा।
धौंसा–(हिं. पुं.) डंका, बड़ा नगाड़ा, सामर्थ्य, शक्ति।
धौंसिया–(हिं. पुं.) डाँट-डपट से काम लेनेवाला, दम-दिलासा देनेवाला, नगाड़ा बजानेवाला, कर उगाहने का व्यय लेने-वाला।
धौ–(हिं. पुं.) धव, एक बड़ा पहाड़ी वृक्ष।
धौत–(सं. वि.) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ, नहाया हुआ, (पुं.) रूपा, चाँदी; **–कट**–(पुं.) सूत की बनी हुई थैली; **–कोषज**–(पुं.) सोनापाठा नामक औषधि; **–खंडी**–(स्त्री.) मिस्री का टुकड़ा; **–शिल**–(पुं.) स्फटिक, बिल्लौर।
धौतय–(सं. पुं.) सैन्धव, सेंधा नमक।
धौति–(सं. स्त्री.) विशुद्धि, हठयोग में शरीर को बाहर से तथा भीतर से शुद्ध करने की क्रिया, (यह चार प्रकार की होती है—अन्तर्धौति, दन्तधौति, हृद् धौति और मूलशोधन।
धौती–(सं. स्त्री.) थरथराहट, कँपकँपी।
धौमल–(सं. पुं.) रक्तविकार।
धौम्य–(सं. पुं.) धूम ऋषि के पुत्र जो युधिष्ठिर के पुरोहित थे।
धौम्र–(सं. वि.) धुएँ के रंग का।
धौर–(सं. पुं.) धव का वृक्ष; (हिं.वि.) सफेद परेवा पक्षी।
धौरहर–(हिं. पुं.) धौराहर।
धौरा–(हिं.वि.) उजला; (पुं.) धव का वृक्ष, सफेद बल, एक प्रकार का पक्षी, पंडुक।
धौराहर–(हिं. पुं.) ऊँची अटारी, धरहरा।
धौरित–(सं. पुं.) घोड़े की एक चाल।
धौरी–(हिं. स्त्री.) सफेद गाय, कपिला।
धौरे–(हिं. अव्य.) देखें 'धोरे'।
धौरेय–(सं. वि.) रथ आदि खींचनेवाला; (पुं.) गाड़ी खींचनेवाला बैल।
धौर्तिक–(सं. पुं.) शठत्व, शठता।
धौर्तय–(सं. पुं.) धूर्त मनुष्य की सन्तति।
धौर्त्य–(सं. पुं.) शठता, धोखे का काम।
धौर्य–(सं. पुं.) घोड़े की एक चाल।
धौल–(हिं. स्त्री.) थप्पड़, तमाचा, चाँटा, धक्का, आघात, हानि या टोटा, हरा ज्वार, एक प्रकार की ऊख; (पुं.) धव का पेड़, धरहरा; **–धूर्त**–(वि.) बहुत बड़ा धूर्त; **–धक्कड़**–(पुं.) ऊधम, उपद्रव, दंगा; **–धक्का**–(पुं.) आघात, चपेट; **–धप्पड़**–(पुं.) उपद्रव, दंगा, मारपीट, धक्का-मुक्की; **–धप्पा**–(पुं.) देखें 'धौलधप्पड़'; **–हर**–(पुं.) देखें 'धौरहर'।
धौला–(हिं. वि.) धवल, उजला, सफेद; (पुं.) धव का वृक्ष, सफेद बैल।
धौलाई–(हिं. स्त्री.) उजलापन, सफेदी।
धौलाखैर–(हिं. पुं.) बबूल की जाति का एक वृक्ष।
धौलागिरि–(हिं. पुं.) देखें 'धवलगिरि'।
धौली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी कोमल होती है और पालकी, खिलौने आदि बनाने के काम में आती है।
ध्माकार–(सं. पुं.) धम-धम का शब्द, लोहार।
ध्मापन–(सं. पुं.) जलाने की क्रिया।
ध्मापित–(सं.वि.) जलाकर राख किया हुआ।
ध्यात–(सं. वि.) ध्यान किया हुआ, विचार किया हुआ, चिन्तित।
ध्याता–(हिं. पुं.) ध्यान करनेवाला, विचार करनेवाला।
ध्यान–(सं.पुं.) बाह्य इन्द्रियों के प्रयोग के बिना केवल मन में सोचने की क्रिया या भाव, चित्त की एकाग्रता, सोच-विचार, धारणा, स्मृति, बुद्धि, समझ, भावना, सोच; (मुहा.) **–आना**–याद पड़ना; **–छूटना**–मन विचलित हो जाना; **–जाना**–चित्त की प्रवृत्ति किसी ओर होना; **–दिलाना**–चेताना, याद दिलाना; **–देना**–चित्त लगाना; **–पर चढ़ना**–याद आना; **–बँटना**–अन्य विषय की ओर मन फिर जाना चित्त एकाग्र न रहना; **–बँधना**–चित्त एकाग्र होना; **–में डूबना**–अन्य बातों को भूलकर एक विषय में चित्त एकाग्र करना, ध्यान करना, लीन होना। **किसी के ध्यान में लगना**–किसी के चिंतन में संलग्न होना; **–में लाना**–विचार या सोच करना; **–रखना**–निरन्तर विचार बना रहना, याद किये रहना, न भूलना; **–लगना**–चित्त एकाग्र होना।
ध्यानगोचर–(सं.वि.) जो ध्यान से जाना जाय।
ध्यानना–(हिं. क्रि. स.) विचार करना।
ध्यानमय–(सं.वि.) ध्यान-स्वरूप, ध्यानपूर्ण।
ध्यानयोग–(सं.पुं.) योग का वह विभाग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो, इन्द्र-जाल की एक क्रिया।
ध्यानबिन्दूपनिषद्–(सं. स्त्री.) अथर्ववेद की एक उपनिषद्।
ध्यानिक–(सं. वि.) जिसकी प्राप्ति या सिद्धि ध्यान के द्वारा हो, ध्यानगम्य।
ध्यानी–(हिं.वि.) ध्यानयुक्त, समाधिस्थ, ध्यान करनें में निमग्न।
ध्याम–(सं. पं.) दौना नामक पौधा।
ध्यामक–(हिं. पुं.) एक प्रकार की सुगन्धित घास।
ध्यामन–(सं.पुं.) चिन्ता, विचार, परिमाण।
ध्येय–(सं. वि.) जिसका ध्यान किया जाय, ध्यान करने योग्य, जो ध्यान का विषय हो।
ध्राक्षा–(सं. स्त्री.) देखें 'द्राक्षा', दाख।
ध्रुपद–(हिं. पुं.) वह गद्य-पद्यमय गंभीर आशय का गीत जिसमें देवताओं की लीला, राजाओं का यश अथवा बड़े-बड़े युद्धों का वर्णन स्वर, ताल, राग, रागिनी आदि के संयोग या मेल से गाया जाता है।
ध्रुव–(सं. वि.) दृढ़, निश्चित, स्थिर,

अचल, ठीक, पक्का; (पुं.) सन्तति, आकाश, तर्क, शंकु, कील, खंभा, फलित ज्योतिष का एक योग, विष्णु, बरगद का वृक्ष, एक प्रकार का पक्षी, ध्रुव तारा, ध्रुवपद, वसुदेव के एक पुत्र का नाम, नहुष का एक पुत्र, पर्वत, आठ वसुओं में से एक, उत्तानपाद के एक पुत्र का नाम, पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिराओं का चिपटा भाग जिनमें से अक्ष रेखा खींची जाती हुई मानी जाती है, रगण का एक भेद जिसमें क्रम से एक लघु, एक गुरु और पुनः तीन लघु वर्ण होते हैं।
ध्रुवका–(सं. स्त्री.) ध्रुपद।
ध्रुवकेतु–(सं.पुं.) एक प्रकार का केतु तारा।
ध्रुवक्षेम–(सं. पुं.) स्थिर निवास।
ध्रुवगति–(सं. स्त्री.) ध्रुवपद।
ध्रुवचरण–(सं.पुं.) रुद्र ताल का एक भेद।
ध्रुवच्युत्–(सं. वि.) अचल पर्वत को हिलानेवाला।
ध्रुवता–(सं. स्त्री.) अचलता, दृढ़ता, स्थिरता, निश्चय।
ध्रुवतारा–(हिं. स्त्री.) मेरु के ठीक ऊपर स्थित वह तारा जो सर्वदा ध्रुव रहता है, कभी इधर-उधर नहीं हटता।
ध्रुवदर्शक–(सं. पुं.) सप्तर्षि-मण्डल।
ध्रुवदर्शन–(सं. पुं.) विवाह-संस्कार के अन्तर्गत एक कृत्य जिसमें मन्त्र पढ़कर वर और वधू को ध्रुवतारा दिखलाया जाता है।
ध्रुवधेनु–(सं. स्त्री.) वह गाय जो दुहते समय चुपचाप खड़ी रहती है।
ध्रुवपद–(सं. पुं.) देखें 'ध्रुपद'।
ध्रुवमत्स्य–(सं. पुं.) दिशासूचक यन्त्र।
ध्रुवरत्ना–(सं. स्त्री.) कुमार कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
ध्रुवरेखा–(सं. स्त्री.) विषुवत् रेखा।
ध्रुवलोक–(सं.पुं.) मर्त्यलोक के अन्तर्गत एक लोक जिसमें ध्रुव स्थित है।
ध्रुवसंधि–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष का एक योग।
ध्रुवसिद्धि–(सं. पुं.) अग्निमित्र की सभा का एक वैद्य।
ध्रुवा–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का यज्ञपात्र।
ध्रुवावर्त–(सं. पुं.) घोड़ों की एक भौंरी का नाम।
ध्रुवाश्च–(सं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा घोड़ा।
ध्वंस–(सं. पुं.) विनाश, क्षति, हानि।
ध्वंसक–(सं.वि.) विनाशक, नाश करनेवाला।
ध्वंसकला–(सं. स्त्री.) हत्या।
ध्वंसन–(सं. पुं.) नाश करने की क्रिया, ध्वंश, नाश, अधःपतन, क्षय।
ध्वंसित–(सं.पुं.,वि.) खँडहर, नाश किया हुआ।
ध्वंसी–(सं.वि.) नाश करनेवाला; (पुं.) पहाड़ी पीलु का वृक्ष।
ध्वज–(सं. पुं.) ध्वजा लेकर चलनेवाला मनुष्य, चिह्न, गर्व, अभिमान, खाट की पाटी, मेड़, लिंग, पताके का डंडा, झंडा; **–गृह**–(पुं.) वह घर जिस पर झंडा फहराया जाता है; **–ग्रीव**–(पुं.) एक राक्षस का नाम; **–द्रुम**–(पुं.) ताड़ का वृक्ष; **–प्रहरण**–(पुं.) वायु, हवा; **–भंग**–(पुं.) नपुंसकता; **–मंत्र**–(पुं.) वह मन्त्र जिसे पढ़कर ध्वजा फहराई जाती है; **–यष्टि**–(स्त्री.) झंडे का डंडा; **–वत्**–(वि.) चिह्नयुक्त, ध्वज जैसा।
ध्वजांशुक–(सं. पुं.) झंडे का कपड़ा।
ध्वजा–(सं. स्त्री.) पताका, झंडा, मलखंभ का एक व्यायाम, छन्दःशास्त्र के अनुसार ठगण का पहिला भेद।
ध्वजारोपण–(सं. पुं.) देवालय तथा अट्टालिकाओं पर पताका फहराना।
ध्वजिक–(सं. वि.) धर्मध्वजी, पाखण्डी।
ध्वजिनी–(सं. स्त्री.) सेना का एक भेद, पाँच प्रकार की सेनाओं में से एक।
ध्वजी–(हिं. वि.) ध्वजयुक्त, जो पताका लिये हो, चिह्नयुक्त; (पुं.) ब्राह्मण, पर्वत, संग्राम, सर्प, घोड़ा, मयूर, मोर।
ध्वजोत्थान–(सं. पुं.) भाद्रपद मास की शुक्ला द्वादशी के दिन मनाया जानेवाला एक उत्सव।
ध्वन–(सं. पुं.) शब्द।
ध्वनन–(सं. पुं.) अव्यक्त शब्द।
ध्वनमोदिन्–(सं. पुं.) भ्रमर, भौंरा।
ध्वनि–(सं. स्त्री.) वह जिसका ज्ञान श्रवणेन्द्रिय द्वारा होता है, मृदंगादि शब्द, नाद, गुंजन, वैयाकरणों के अनुसार शब्द का स्फोट, लय, वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ में अधिक विशेषता रहती है अर्थात् जब व्यंजना-बोधित अर्थ वाच्यार्थ से अधिक चमत्कार दिखलाता है, गूढ़ार्थ, आशय।
ध्वनिकाव्य–(सं. पुं.) उत्तम प्रकार का काव्य।
ध्वनिग्रह–(सं. पुं.) श्रोत्र, कर्ण, कान।
ध्वनित–(सं. वि.) शब्द किया हुआ, प्रकट किया हुआ, बजाया हुआ; (पुं.) मृदंगादि बाजा।
ध्वनिनाला–(सं. स्त्री.) वेणु, बाँसुरी, एक प्रकार का बड़ा ढोल।
ध्वनिबोधक–(सं. पुं.) रोहिश नामक घास।
ध्वनिविकार–(सं. पुं.) विकृत ध्वनि, ध्वनि का अन्यथा भाव।
ध्वन्य–(सं. पुं.) व्यंग्यार्थ।
ध्वन्यात्मक–(सं वि.) ध्वनिमय, ध्वनि-स्वरूप, जिस काव्य में ध्वनि प्रधान हो।
ध्वन्यार्थ–(हिं. पुं.) वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।
ध्वसन–(सं. पुं.) ध्वंस का स्थान।
ध्वसनि–(सं. पुं.) मेघ, बादल।
ध्वसित–(सं. वि.) जिसका नाश हुआ हो।
ध्वस्त–(सं. वि.) गिरा-पड़ा हुआ, नष्ट-भ्रष्ट, टूटा हुआ, पराजित।
ध्वस्ति–(सं. स्त्री.) ध्वंस, नाश, क्षय।
ध्वस्यन्–(सं. वि.) ध्वंसक, नाश करनेवाला।
ध्वस्र–(सं. वि.) ध्वंसक, नाश करनेवाला।
ध्वांक्ष–(सं. पुं.) काक, कौवा, बगला, भिक्षुक; **–जंघा**–(स्त्री.) काकजंघा; **–दंडी**–(स्त्री.) कौवाठोंठी; **–पुष्ट**–(पुं.) कोकिल, कोयल; **–माची**–(स्त्री.) का कमाची, मकोय।
ध्वांक्षी–(सं. स्त्री.) शीतलचीनी।
ध्वांत–(सं. पुं.) अन्धकार, अँधेरा, एक नरक जहाँ सर्वदा अँधेरा रहता है; **–चर**–(पुं.) दानव, निशाचर, राक्षस; **–वित्त**–(पुं.) खद्योत, जुगनू; **–शात्रव**–(पुं.) सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा।
ध्वांताराति–(सं. पुं.) सूर्य, चन्द्र, अग्नि।
ध्वांतोन्मेष–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
ध्वान–(सं. पुं.) शब्द, आवाज।

न

न–हिन्दी तथा संस्कृत व्यंजन वर्ण का बीसवाँ वर्ण तथा तवर्ग का पाँचवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है। (सं. अव्य.) निषेधवाचक शब्द, मत, हाँ या नहीं, कि नहीं; (पुं.) उपमा, बन्ध, नकार स्वरूप वर्ण, सुवर्ण, रत्न।
नंग–(हिं. पुं.) नग्नता, नंगा होने का भाव, गुप्त अंग, शरीर का छिपा हुआ भाग; (वि.) नंगा, लुच्चा।
नंगधड़ंग–(हिं.वि.) नंगा, दिगम्बर, जिसके शरीर पर एक भी वस्त्र न हो।
नंगमुनंगा–(हिं. वि.) देखें 'नंगधड़ंग'।
नंगर–(हिं. पुं.) देखें 'लंगर'।

नंगरवारी–(हिं. स्त्री.) समुद्र में चलनेवाली एक मस्तूल की नाव ।

नंगा–(हिं. वि.) नग्न, वस्त्रहीन, जो कपड़ा न पहिने हो, प्रकट, जो किसी वस्तु से ढपा न हो, खुला हुआ, विना ढपने का, दुष्ट, निर्लज्ज; (पुं.) शिव, महादेव, कश्मीर की सीमा पर का एक पर्वत; –झोरी, –झोली–(स्त्री.) किसी छिपाई हुई वस्तु का पता लगाने के लिए किसी मनुष्य के पहिने हुए वस्त्रों को उतरवाकर अथवा वस्त्र को भली भाँति हाथों से टटोलकर देखना; –धुंगा–(वि.) जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, नंग-धड़ंग; –बुच्चा, –बूचा–(वि.) अति दरिद्र, कंगाल, जिसके पास कुछ भी न हो; –मादरजाद–(वि.) ऐसा नंगा जैसा शिशु माता के उदर से निकलन के समय होता है; –मुनंगा (पुं.) विलकुल नंगा; –लुच्चा–(वि.) नीच और पाजी ।

नंगियाना–(हिं. क्रि.स.) नंगा करना, शरीर पर से वस्त्र उतार लेना, सर्वस्व हरण करना, कुछ भी पास न रहने देना ।

नंद–(सं. पुं.) आनन्द, हर्ष, खुशी, हर्षात्मक ध्वनि, परमेश्वर, मेढक, एक प्रकार की वीणा, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, एक प्रकार का मृदंग, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, विष्णु, एक राग का नाम, नवनिधियों में से एक, पुत्र, लड़का, महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई का नाम, गोपराज नंद; (मथुरा के अन्तर्गत यमुना नदी के उस पार गोकुल नाम का नगर था। इसी नगर के अधिपति नन्द थे जिनकी स्त्री का नाम यशोदा था । देवकी के गर्भ से भगवान् श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था और वसुदेव श्रीकृष्ण को उस समय नन्द के घर पर रख आये थे। बाल्यावस्था में श्रीकृष्ण नन्द के ही घर पर रहते थे); –क–(पुं.) विष्णु का खड्ग, मेढक, कार्तिकेय का एक अनुचर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) आनन्द देनेवाला, सन्तोष देनेवाला, वंश की रक्षा करनेवाला; –कि–(स्त्री.) पिप्पली, छोटी पीपल; –कुमार–(पुं.) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण; –गिरि–(पुं.) एक प्राचीन नगर का नाम जो चित्तौर के पास बसा हुआ था; –ग्राम–(पुं.) नन्दगाँव, अयोध्या के पास का एक गाँव जहाँ भरत ने तपस्या की थी; –नंदन–(पुं.) श्रीकृष्ण; –नंदिनी–(स्त्री.) नन्द की पुत्री, योगमाया; –न–(पुं.) इन्द्र का वगीचा जो स्वर्ग में है, अठारह अक्षरों के एक वर्णवृत्त का नाम, बेटा, लड़का, विष्णु, महादेव, कार्तिकेय का एक अनुचर, मेक, मेढक, एक संवत्सर का नाम, एक प्रकार का अस्त्र, देवदार; (वि.) आनन्द देनेवाला; –०ज–(पुं.) श्रीकृष्ण, हरिचन्दन; –०प्रधान–(पुं.) नन्दनवन के स्वामी इन्द्र; –०माला–(स्त्री.) एक प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय थी; –०वन–(पुं.) इन्द्र का वगीचा, कपास; –पाल–(पुं.) वरुण; –पुत्री–(स्त्री.) नन्दनन्दिनी, योगमाया, दुर्गा; –प्रयाग–(पुं.) बदरिकाश्रम के निकट के एक तीर्थ का नाम; –यन्–(वि.) प्रसन्न करनेवाला; –रानी–(हिं. स्त्री.) नन्द की स्त्री, यशोदा; –रुख–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती हैं; –लाल–(हिं. पुं.) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण; –वन–(पुं.) देख 'नंदनवन'।

नंदा–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम, एक प्रकार की संक्रान्ति, एक कामधेनु का नाम, प्रसन्नता, संगीत में एक मूर्च्छना का नाम, एक अप्सरा का नाम, बरवै छन्द, पति की बहन, ननद, लाल तुलसी।

नंदात्मज–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण; नंदात्मजा–(स्त्री.) योगमाया ।

नंदादेवी–(सं. पुं.) पश्चिमी हिमालय की एक चोटी जो पचीस हजार फुट ऊँची है।

नंदापुराण–(सं.पुं.) एक उपपुराण का नाम।

नंदावत–(सं. पुं.) एक प्रकार की मछली ।

नंदि–(सं. पुं.) विष्णु, परमेश्वर, शिव का द्वारपाल, बैल, एक प्रकार का जुआ, शिव, महादेव, एक गन्धर्व का नाम, आनन्द, प्रसन्नता ।

नंदिक–(सं.पुं.) तुन का वृक्ष, धव का पेड़।

नंदिकर–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।

नंदिका–(सं.स्त्री.) नन्दनवन, पानी रखने की मिट्टी की नाँद हँसमुख स्त्री, किसी पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथियों का नाम ।

नंदिकेश–(सं. पुं.) शिव का द्वारपाल, नंदिकेश्वर ।

नंदिकेश्वर–(सं.पुं.) शिव के द्वारपाल बैल का नाम ।

नंदिघोष–(सं. पुं.) अर्जुन के रथ का नाम, मंगल-घोषणा ।

नंदित–(सं. वि.) आनन्दित, प्रसन्न ।

नंदितरु–(सं. पुं.) धव का पेड़ ।

नंदि-तूर्य–(सं.पुं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा ।

नंदिन–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मछली ।

नंदिनी–(सं. स्त्री.) गंगा, ननद, कन्या, पुत्री, वसिष्ठ की कामधेनु जो सुरभि से उत्पन्न थी, पत्नी, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम, तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, दुर्गा, हरीतकी, हर्रे, सफेद चिचड़ा ।

नंदिपादप–(सं. पुं.) तुन का वृक्ष ।

नंदिपुराण–(सं. पुं.) एक उपपुराण का नाम ।

नंदिमुख–(सं. पुं.) एक प्रकार का चावल, शिव ।

नंदिरुद्र–(सं. पुं.) महादेव का एक नाम ।

नंदिवर्धन–(सं. पुं.) शिव, महादेव, पुत्र, मित्र; (वि.) आनन्द बढ़ानेवाला ।

नंदिवृक्ष–(सं. पुं.) नंदी वृक्ष ।

नंदिवृष्ण–(सं. पुं.) उड़द, माष ।

नंदी–(सं. पुं.) पुत्र, शिव का वाहन, शिव का एक गण, विष्णु, बरगद का पेड़, दागकर छोड़ा हुआ साँड़ ।

नंदीघंटा–(हिं. पुं.) बैल के गले में बाँधने की घंटी ।

नंदीपति–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।

नंदीवृक्ष–(सं.पुं.) सुगन्धित तुन का वृक्ष ।

नंदीश–(सं.पुं.) शिव, महादेव, एक ताल का नाम ।

नंदीश्वर–(सं.पुं.) शिव, शिव का द्वारपाल।

नंदोई–(हिं. पुं.) पति का बहनोई, ननद का पति ।

नंदोला–(हिं. पुं.) मिट्टी की बड़ी नाँद ।

नंदोसी–(हिं. पुं.) देखें 'नंदोई' ।

नंबर–(अं. पुं.) गिनती, संख्या, अंक ।

नंबरदार–(हिं. पुं.) गाँव का वह भूस्वामी जो अपनी पट्टी का तथा हिस्सेदारों का कर आदि लेता था तथा सरकारी कर जमा करता था ।

नंबरवार–(हिं. अव्य.) यथाक्रम, एक-एक करके ।

नंबरी–(हिं. वि.) जिस पर नंबर या संख्या लिखी हो, नंबरवाला, प्रसिद्ध; –गज–(पुं.) तीन फुट का गज; –सेर–(पुं.) अस्सी रुपयों की तौल का लोहे का सेर या बाट ।

नंश–(सं. पुं.) ध्वंस, नाश ।

नंशन–(स. पुं.) नाश, ध्वंस।
नंशुक–(सं. वि.) नाश करनेवाला; (पुं.) छोटा टुकड़ा, अणु।
नंष्टव्य–(सं. वि.) नाश करने योग्य।
नंस–(हि. पुं.) ध्वंस, नाश।
नइहर–(हि. पुं.) स्त्रियों की माता का घर, मायका।
नई–(हि. वि.) 'नया' शब्द का स्त्रीलिंग रूप, देखें 'नयी'; (हि. वि.) नीतिज्ञ।
नउँजी–(हि. स्त्री.) लीची नाम का फल।
नउ–(हि. वि., पुं.) नव, नौ।
नउआ–(हि. पुं.) नापित, नाऊ, हज्जाम।
नउका–(हि. स्त्री.) देखें 'नौका', नाव।
नउत–(हि. वि.) वह जो नीचे की ओर झुका हो।
नउरंगी–(हि. स्त्री.) नारंगी।
नउर–(हि पुं.) देखें नेवला, नेउर।
नउलि–(हि. वि.) नवीन, नया।
नएपंज–(हि. पुं.) पाँच साल का जवान घोड़ा।
नओढ़–(हि. वि.) देखें 'नवोढ़ा'।
न–(हि. अव्य.) नहीं।
नकंद–(हि. पुं.) एक प्रकारका अच्छा चावल।
नक–(हि. पुं.) 'नाक' का कुछ समस्त पदों में आदि-पद के रूप में प्रयुक्त होनेवाला रूप।
नककटा–(हि. वि.) जिसकी नाक कटी हो, निर्लज्ज, जिसकी वड़ी दुर्दशा हुई हो, अप्रतिष्ठित।
नककटी–(हि. स्त्री.) नाक काटने की क्रिया, अप्रतिष्ठा, दुर्दशा; (वि.) 'नककटा' का स्त्रीलिंग रूप।
नकघिसनी–(हि. स्त्री.) भूमि पर नाक घिसने की क्रिया, अति दीनता।
नकचढ़ा–(हि. वि.) बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा।
नकछिकनी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की घास जिसके फल को सूंघने से बहुत छींक आती है।
नकटा–(हि. पुं.) वह जिसकी नाक कट गई हो, विवाह के समय गान का एक गीत, एक प्रकार की चिड़िया; (वि.) जिसकी नाक कटी हो, निर्लज्ज, जिसकी वड़ी दुर्दशा हुई हो।
नकटेसर–(हि. पुं.) एक प्रकार का पौधा।
नकड़ा–(हि. पुं.) वैलों की नाक फूल जाने का एक रोग।
नकतोड़–(हि. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
नकतोड़ा–(हि. पुं.) नाक-भौं सिकोड़कर वड़े गर्व के साथ चोचला करना।
नकद–(हि. वि., पुं.) देखें 'नगद'।
नकदी–(वि.) देखें 'नगदी'।
नकना–(हि. क्रि. अ., स.) नाक में दम होना, उल्लघन करना, त्यागना।
नकफूल–(हि. पुं.) नाक में पहिनने का एक आभूषण, नाक में पहिनने की लौंग।
नकब–(अ. स्त्री.) सेंध; **–जनी**–(स्त्री.) सेंध मारकर चोरी करना।
नकबानी–(हि. स्त्री.) व्यग्रता, नाक में दम।
नकबसर–(हि. स्त्री.) नाक में पहिनने की छोटी नथ।
नकमोती–(हि. पुं.) नाक में पहिनने का मोती या बुलाक, नथ का लटकन।
नकल–(अ. स्त्री.) किसी वस्तु के सदृश वनाई गई प्रतिमा, चित्र, लेख आदि, अनुकृति, प्रतिलिपि, अनुकरण; **–ची–**(वि.) नकल करनेवाला; **–नवीस**–(पुं.) लेख्यों की नकल उतारनेवाला कर्मचारी; **–नवीसी**– (स्त्री.) नकल-नवीस का कार्य, पद आदि; **–वही**–(स्त्री.) वह वही जिसमें आवश्यक वातों की नकल रखी जाती है।
नकली–(अ. वि.) नकल-संवंघी, असली का विलोम, खोटा, जाली।
नकलेल–(हि. स्त्री.) वैल की नाक की रस्सी।
नकशा–(हि. पुं.) मानचित्र।
नकशी–(हि. वि.) प्रतिलिपि-संवंधी; **–मैना**–(स्त्री.) एक प्रकार की मैना।
नकसा–(हि. पुं.) मानचित्र।
नकसीर–(हि. स्त्री.) आप से आप नाक से लोहू वहना जो वहुधा गरमी के दिनों में होता है; (मुहा.)**–भी न फूटना**–थोड़ा भी कष्ट न होना।
नकाना–(हि. क्रि. अ., स.) नाक में दम होना, व्यग्र करना।
नकाव–(अ. पुं.) चेहरा छिपाने का रंगीन या जालीदार कपड़ा; **–पोश**–(वि.) जिसने नकाव से अपना चेहरा छिपाया हो।
नकार–(सं. पुं.) 'न' स्वरूप वर्ण, नहीं, अस्वीकार।
नकारची–(हि. पुं.) देखें 'नक्कारची'।
नकारना–(हि. क्रि. अ.) अस्वीकार करना।
नकाश–(हि. पुं.) नकाशी करनवाला।
नकाशना–(हि. क्रि. स.) धातु, पत्थर आदि पर वेल-बूटे वनाना।
नकाशी–(हि. स्त्री.) धातु आदि पर खोद-कर चित्रकारी करने का काम, नक्काशी।
नकास–(हि. पुं.) देखें 'नक्काश'।
नकासना–(हि. क्रि. स.) नकाशी करना।
नकासी–(हि. स्त्री.) देखें 'नक्काशी'; **–दार**–(वि.) जिस पर नकाशी की गई हो
नकिंचन–(सं. वि.) दरिद्र, कंगाल।
नकियाना–(हि. क्रि. अ., स.) अनुनासिक उच्चारण करना, नाक से वोलना, अति दुःखी होना, नाक में दम करना, कष्ट देना।
नकीव–(अ. पुं.) वह भाट या वंदी जो वादशाह या नवाव की सवारी के आगे उनका यश-गान करता चलता हो, चारण।
नकुंच–(सं. पुं.) मदार का पेड़।
नकुटी–(सं. पुं.) नासिका, नाक।
नकुल–(सं. पुं.) एक सर्पाहारी जंतु, नेवला, महादेव, शिव, पाण्डु राजा के चौथे पुत्र का नाम जो माद्री से उत्पन्न थे, पुत्र, वेटा; (वि.) कुलरहित, जिसका कुल न हो।
नकुलक–(सं. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन आभूषण, रुपए रखने की थैली।
नकुला–(सं. स्त्री.) पार्वती।
नकुलारि–(सं. पुं.) विड़ाल, विलैया।
नकुली–(सं. स्त्री.) नेवले की मादा, कुक्कुटी, मुर्गी, जटामासी.।
नकुलीश–(सं. पुं.) तान्त्रिकों के एक भैरव का नाम।
नकुवा–(हि. पुं.) नासिका, नरक, तराजू की डंडी में का छेद।
नकेल–(हि. स्त्री.) ऊट, वैल आदि की नाक में वँधी हुई रस्सी, मुहार; (मुहा.) **किसी की नकेल हाथ में लेना**–किसी को अपने वश में करना।
नक्का–(हि. पुं.) सूई का छेद, नाका, ताश के पत्ते का एक्का, कौड़ी।
नक्कार–(हि. पुं.) तिरस्कार, अवज्ञा, अपमान।
नक्कारखाना–(फा. पुं.) वह स्थान जहाँ नक्कारा या नौवत वजती हो, नौवतखाना।
नक्कारची–(फा. पुं.) नक्कार या नगाड़ा वजानेवाला।
नक्कारा–(फा. पुं.) नगाड़ा, नौवत।
नक्काल–(फा. पुं.) नकल करनेवाला, स्वाँग वनानेवाला, भाँड़।
नक्काली–(फा. स्त्री.) नक्काल का काम, स्वाँग।
नक्काश–(अ. पुं.) जो नक्काशी करता हो, रंगसाज।
नक्काशी–(अ. स्त्री.) लकड़ी, धातुपट आदि पर वेल-वूटे वनाने की कला या कौशल, ऐसे वनाये गये वेल-वूटे।
नक्की–(हि. स्त्री.) ताश के पत्ते की एक्की, जुए में वह दाँव जिसमें जीत के लिए एक का चिह्न नियत हो; **–मूठ**–(स्त्री.) एक प्रकार का जुआ जो

कौड़ियों से खेला जाता है।
नक्कू–(हिं.वि.) बड़ी नाकवाला, सब से भिन्न आचरणवाला, सब से उलटा काम करनेवाला।
नक्तंचर–(सं. पुं.) राक्षस, गुग्गुल, चोर, बिल्ली; नगाड़ा; (वि.) रातमें घूमनेवाला।
नक्तंचर्या–(सं.स्त्री.) रात में घूमने का काम
नक्तंजात–(सं.वि.) जो रात में उत्पन्न हो।
नक्तंतन–(सं. वि.) रात में होनेवाला।
नक्त–(सं. पुं.) रात्रि ; **–क**– (पुं.) गूदड़, चिथड़ा, आँख की पलक; **–चर**– (पुं.) शिव, महादेव, रात को घूमनेवाला, राक्षस, उल्लू; **–चारी**–(पुं.) बिल्ली, उल्लू, राक्षस; **–न**–(पुं.) रात्रि, रात; **–प्रभव**–(वि.) रात को उत्पन्न होनेवाला; **–भोजी**–(वि.) रात को भोजन करनेवाला; **–माल**–(पुं.) करंज का वृक्ष; **–मुखा**– (स्त्री.) रात्रि, रात; **–व्रत**–(पुं.) एक व्रत जो अगहन सुदी प्रतिपदा को किया जाता है; (रात में विष्णु की पूजा होती है तथा तारा देखकर भोजन किया जाता है), शिव, महादेव, राजा पृथु के पुत्र का नाम, वह व्रत जिसमें दिन को खाया नहीं जाता, रात को खाया जाता है।
नक्तांध–(सं. वि.) जिसको रतौंधी हुई हो, जिसको रात में न सूझता हो।
नक्ता–(सं.स्त्री.) रात्रि, हलही, कलियारी नामक विषैला पौधा, एक प्रकार की घास।
नक्ताह्–(सं. पुं.) करंज का वृक्ष।
नक्ति–(सं, स्त्री.) रात्रि, रात।
नक्द–(अ. पुं.) मुद्रा, रुपया, पैसा, रकम।
नक्दी–(अ. स्त्री.) रोकड़।
नक्र–(सं. पुं.) कुम्भीर, मगर, घड़ियाल, नासिका, नाक; **–राज**–(पुं.) घड़ियाल, मगर।
नक्रा–(सं. स्त्री.) नासिका, नाक, मधुमक्खी का झुंड।
नक्श–(अ. पुं.) तसवीर, चित्र, फूल-पत्ती या बेल-बूटा, नक्काशी; (वि.) चित्रित, अंकित; **–दार**–(वि.) चित्रित, बेल-बूटेदार; **–बंद**–(पुं.) नक्शा या चित्र बनानेवाला; **–बंदी**–(स्त्री.) चित्रसाजी।
नक्शा–(अ.पुं.) मानचित्र, तसवीर, चित्र, चेहरा, आकृति, मकान, सड़क आदि का चित्र या रूपरेखा; **–नवीस**–(पुं.) नक्शा बनानेवाला; **–नवीसी**–(स्त्री.) नक्शा बनाने का काम या कला, नक्शबंदी; **–बंद**–(पुं.) नक्शानवीस।
नक्षत्र–(सं. पुं.) तारों का वह पुंज या समूह जो चन्द्रमा के पथ में घूमता है, पहिचान के लिए इनके भिन्न-भिन्न नाम रख गये हैं। इनकी संख्या सत्ताईसहै। इनके नाम–अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती हैं; **–चक्र**–(पुं.) राशिचक्र; **–चिंतामणि**–(पुं.) एक प्रकार का कल्पित रत्न जिसके विषय में ऐसी प्रसिद्धि है कि उससे जो कुछ माँगा जाय वह मिलता है; **–ज**–(वि.) जो नक्षत्र से उत्पन्न हो; **–जात**–(पुं.) नक्षत्र जिस में किसी का जन्म हो; **–दर्शी**–(वि.) नक्षत्रों को देखनेवाला; (पुं.) गणक, ज्योतिषी; **–दान**–(पुं.) नक्षत्रों के भेद के अनुसार विशेष द्रव्यों का दान; **–नाथ**–(पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा; **–नेमि**–(पुं.) ध्रुवतारा, चन्द्रमा, विष्णु; **–प**–(पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा; **–पति**–(पुं.) चन्द्रमा; **–पथ**–(पुं.) नक्षत्रों के घूमने का मार्ग; **–फल**–(पुं.) नक्षत्र-समूह का फल; **–भोग**–(पुं.) राशिचक्र में स्थित नक्षत्रों का एक दिन का भोग; **–मार्ग**–(पुं.) नक्षत्रपथ; **–माला**–(स्त्री.) नक्षत्रों की श्रेणी, सत्ताईस मोतियों का हार; **–मालिनी**–(स्त्री.) जातीपुष्प, अड़हुल का फूल; **–योग**–(पुं.) नक्षत्रों के साथ अरिष्ट-ग्रहों का योग; **–योनि**–(स्त्री.) वह नक्षत्र जो विवाह के लिए निषिद्ध हो; **–राज**–(पुं.) नक्षत्रों के अधिपति, चन्द्रमा; **–लोक**–(पुं.) पुराण के अनुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र घूमते हैं; **–वर्त्म**–(पुं.) नक्षत्रों के घूमने का पथ; **–विद्या**– (स्त्री.) ज्योतिष विद्या; **–वृष्टि**–(पुं.) उल्कापात, तारा टूटना; **–व्यूह**–(पुं.) पुरुष और द्रव्य विशेष का शुभाशुभ सूचक नक्षत्र समूह; **–व्रत**–(पुं.) नक्षत्र-योगके निमित्त किया जानेवाला व्रत; **–शूल**–(पुं.) पूर्वादि दिशा में यात्रा करने के समय जो नक्षत्र फलित ज्योतिष के अनुसार निषिद्ध माने गये हैं; **–सत्र**–(पुं.) नक्षत्र के निमित्त यज्ञ; **–साधक**–(पुं.) शिव, महादेव; **–साधन**–(पुं.) वह गणना जिसके अनुसार यह जाना जाता है कि अमुक ग्रह पर अमुक नक्षत्र इतने समय तक रहता है।
नक्षत्रामृत–(सं. पुं.) बारह निर्दिष्ट नक्षत्रों का योग।
नक्षत्रिन्–(सं. पुं.) चन्द्रमा, विष्णु।
नक्षत्रिय–(सं. पुं.) जो क्षत्रिय न हो।
नक्षत्री–(हिं. वि.) जो शुभ नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ हो, भाग्यवान्।
नक्षत्रेश–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कपूर, सीप।
नक्षत्रेश्वर–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
नक्षत्रेष्टि–(सं.स्त्री.) नक्षत्रारिष्ट के उद्देश्य से किया जानेवाला यज्ञ।
नख–(सं. पुं.) अँगुली के अगले भाग की कोमलास्थि, कररुह, नखी नामक गन्ध-द्रव्य, खण्ड, टुकड़ा।
नखनी–(सं.स्त्री.) नाखून काटने की नहरनी।
नखकुट्ट–(सं. पुं.) नाई।
नखक्षत–(सं. पुं.) नह गड़ने से बना हुआ चिह्न या घाव।
नखखादिन्–(सं. वि.) दाँतों से नह कुतरनेवाला।
नखच्छत–(हिं.पुं.) देखें 'नखक्षत'।
नखच्छेदन–(सं. पुं.) नख काटना।
नखचारिन्–(सं.वि.) पंजे के बल चलनेवाला।
नखजाग्र–(सं. पुं.) नह का अगला भाग।
नखत, नखतर–(हिं. पुं.) देखें 'नक्षत्र'।
नखता–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
नखतेस–(हिं. पुं.) चन्द्रमा।
नखदारण–(सं. पुं.) नहरनी।
नखना–(हिं.क्रि.अ.,स.) उल्लंघन होना या करना, नष्ट करना।
नखनिकृंतन–(सं. पुं.) नहरनी।
नखपद–(सं. पुं.) नह का चिह्न।
नखपर्णी–(सं. स्त्री.) वृश्चिका घास।
नखपुष्पफला–(सं. स्त्री.) सफेद सेम।
नखपूर्विका–(सं. स्त्री.) हरी सेम।
नखफलिनी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की सेम।
नखभेद–(सं. पुं.) कुलत्थ, कुलथी।
नखमुच–(सं. पुं.) धनुष, चिरौंजी का वृक्ष; (वि.) नाखून काटनेवाला।
नख-रंजनी–(सं. स्त्री.) नहरनी।
नखर–(सं. पुं.) नख, एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।
नखरंजनी–(हिं. स्त्री.) मेंहदी का पौधा।
नखरा–(फा.पुं.) नायिका की विलास-चेष्टा, चोचला, हावभाव, नाज-अदा, दिखावटी अस्वीकृति, चलना।
नखरा-तिल्ला–(फा. पुं.) नखरा, चोचला।

नखरायुध–(सं. पुं.) सिंह, व्याघ्र, कुत्ता।
नखरी–(सं.स्त्री.) नखी नामक गन्ध-द्रव्य।
नखरेखा–(सं. स्त्री.) नख का चिह्न।
नखरेबाज–(फा. वि.) नखरा करनेवाला।
नखरेबाजी–(फा. स्त्री.) नखरा, हाव-भाव, चोचला।
नखरौट–(हिं. स्त्री.) शरीर पर का नाखून गड़ने से बना हुआ चिह्न या घाव।
नखबिंदु–(सं. पुं.) गोल या चन्द्राकार चिह्न जिसको स्त्रियाँ मेंहदी से अपने नहों पर बनाती हैं।
नखविष–(सं. पुं.) वह जिसके नख में विप हो, नख में एकत्रित मैल, उसका विप।
नखविष्किर–(सं. पुं.) वह पशु जो अपने शिकार को नख से फाड़कर खाता है।
नखवृक्ष–(सं. पुं.) नील का पेड़।
नखशंख–(सं. पुं.) छोटा शंख।
नखशस्त्र–(सं. पुं.) नहरनी।
नखशिख–(हिं. पुं.) नख से लेकर शिखा तक सब अंग, शरीर का प्रत्येक अंग।
नखशूल–(सं. पुं.) नख का एक रोग।
नखहरणी–(सं. पुं.) नहरनी।
नखांक–(सं.पुं.) नख गड़ने का चिह्न।
नखांकर–(स. पुं.) नख।
नखांग–(सं. पुं.) नख नामक गन्ध-द्रव्य।
नखाघात–(सं. पुं.) नख का क्षत।
नखानखि–(सं. अव्य.) परस्पर नख से आघात करने का युद्ध।
नखायुध–(सं. पुं.) शेर, बाघ, कुत्ता।
नखारि–(सं. पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम।
नखालि–(सं.पुं.) छोटा शंख, नख की पंक्ति।
नखालु–(सं. पुं.) नील का पौधा।
नखाशी–(सं. वि.) नख की सहायता से भक्षण करनेवाला; (पुं.) उल्लू पक्षी।
नखास–(अ. पुं.) वह बाजार जिसमें चौपाये और विशेपकर घोड़े बिकते हैं, कोई बाजार।
नखिन्–(सं. पुं.) सिंह, व्याघ्र, शिकार को नख से फाड़कर खानेवाला पशु।
नखियाना–(हिं. क्रि. स.) नहँ गड़ाना।
नखी–(सं. स्त्री.) नख नामक गन्ध-द्रव्य।
नखेद–(हिं. पुं.) निपेध।
नखोटना–(हि. क्रि. स.) नख से नोचना।
नग–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़, वृक्ष, पादप, पेड़, सर्प, सूर्य, सात की संख्या; (वि.) स्थिर, अचल, न चलने-फिरनेवाला।
नग–(फा. पुं.) अँगूठी अथवा अन्य आभूपणों में जड़ने का रंगीन शीशे का टुकड़ा या रत्न, नगीना, संख्या।
नगज–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी; (वि.) –जो पर्वत से उत्पन्न हो।
नगजा–(सं. स्त्री.) पार्वती, पापाण-भेदी लता।
नगजित–(सं.पुं.) पापाणभेदक (पौधा)।
नगण–(सं. पुं.) पिंगल तथा छंदःशास्त्र में तीन लघु अक्षरों का एक गण।
नगणा–(सं. स्त्री.) इंगुदी, मालकँगनी।
नगण्य–(सं. वि.) गणना न करने योग्य, तुच्छ, घृणा करने योग्य।
नगदंती–(सं. स्त्री.) विभीपण की स्त्री का नाम।
नगद–(हिं. पुं.) देखें 'नकद'।
नगदी–(हिं. स्त्री.) देखें 'नकदी'।
नगधर–(सं. पुं.) पर्वत को धारण करने-वाले श्रीकृष्ण।
नगनंदिनी–(सं. स्त्री.) हिमालय की कन्या, पार्वती।
नगन–(हिं. वि.) नग्न, नंगा, जिसके शरीर पर वस्त्र न हो।
नग-नदी–(सं. स्त्री.) किसी पर्वत से निकली हुई नदी।
नगना–(हिं. वि. स्त्री.) नग्ना, नंगी।
नगनिका–(हिं. स्त्री.) संकीर्ण राग का एक भेद, क्रीड़ा नामक वृत्त।
नगनी–(हिं. स्त्री.) वह कन्या जो रजस्वला न हुई हो, कन्या, बेटी, पुत्री।
नगपति–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत, चन्द्रमा, ताड़ का पेड़, कैलाशपति, शिव, सुमेरु पर्वत।
नगभित्–(सं.पुं.) इन्द्र, पापाणभेदी लता।
नगभू–(सं. स्त्री.) पहाड़ी भूमि; (वि.) पहाड़ से उत्पन्न।
नगमा–(अ. पुं.) सुरीला या मधुर-कंठ या स्वर, राग, गाना।
नगमाल–(सं. पुं.) एक प्रकार का सुग-न्धित धान।
नगमूर्धा–(सं. पुं.) पहाड़ की चोटी।
नगर–(सं. पुं.) मनुष्यों के रहने की वह बस्ती जो गाँव और कस्बे से बड़ी हो और जिसमें अनेक जातियाँ रहती हों, शहर; –**काक**–(पुं.) नगर का कौवा, एक घृणासूचक शब्द; –**कीर्तन**–(पुं.) ईश्वर के नाम का भजन जिसको लोग नगर की सड़कों या गलियों में घूम-घूमकर गाते हैं; –**घात**–(पुं.) हाथी, नगर के निवासियों की हत्या; –**जन**–(पुं.) पुरवासी; –**द्वार**–(पुं.) नगर का द्वार; –**नायिका**, –**रानी**–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी; –**पति**–(पुं.) नगर का अध्यक्ष; –**पाल**–(पुं.) नगर-रक्षक, नगरपति; –**प्रांत**–(पुं.) नगर के समीप का स्थान; –**मर्दी**–(पुं.) मस्त हाथी; –**मार्ग**–(पुं.) राजमार्ग, चौड़ी सड़क; –**मुस्ता**–(स्त्री.) नागर-मोथा; –**रक्षा**–(स्त्री.) नगर का शासन, नगर की रक्षा; –**वायस**–(पुं.) नगर-काक, घृणासूचक शब्द; –**वासी**–(वि.) पुरवासी, नागरिक; –**विवाद**–(पुं.) शहर के झगड़े; –**स्थ**–(वि.) नगरवासी; –**हा**–(हिं. पुं.) नगर में रहनेवाला; –**हार**–(पुं.) भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर जो जलालाबाद के पास बसा था।
नगराई–(हिं. स्त्री) नागरिकता, चतुराई।
नगराधिप–(सं. पुं.) नगर-पालक।
नगराधिपति, नगराध्यक्ष–(सं. पुं.) नगर का अध्यक्ष।
नगराह्वय–(सं. पुं.) शुंठि, सोंठ।
नगरी–(सं. स्त्री.) छोटा नगर; –**काक**–(पुं.) बक, बकुला।
नगरीय–(सं. वि.) नागरिक, नगर का रहनेवाला।
नगरीत्थ–(सं. वि.) जो नगर में उत्पन्न हुआ हो।
नगरीवक–(सं. पुं.) काक, कौवा।
नगरौषधि–(सं. स्त्री.) कदली, केला।
नगवासी–(सं. वि.) पर्वत पर रहनेवाला।
नगवाहन–(सं. पुं.) शिवजी का एक नाम।
नगस्वरूपिणी–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम।
नगाटन–(सं. पुं.) वानर, बन्दर; (वि.) पहाड़ पर घूमनेवाला।
नगाड़ा, नगारा–(हिं. पुं.) डुगडुगी जैसा पर उससे बहुत बड़ा बाजा।
नगाधिप–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत।
नगानिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार-चार अक्षर होते हैं।
नगारि–(सं. पुं.) इन्द्र।
नगावास–(सं. पुं.) वृक्ष पर रहने का स्थान, मयूर, मोर।
नगाश्रय–(सं. वि.) पहाड़ और वृक्ष पर रहनेवाला।
नगिचाना–(हिं. क्रि. अ.) समीप आना।
नगी–(हिं. स्त्री.) रत्न, मणि, नगीना, हिमालय की कन्या, पार्वती, पहाड़ी स्त्री।
नगीच–(हिं. अव्य.) पास, नजदीक।
नगीना–(फा. पुं.) रत्न, मणि।
नगेंद्र, नगेश–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत।
नगेसरि–(हिं. पुं.) नागकेसर।
नगौकस्–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, शेर,

कौवा; (वि.) पर्वत और वृक्ष पर रहनेवाला ।
नग्न–(सं. वि.) विवस्त्र, नंगा, जिसके शरीर पर वस्त्र न हो, बिना आवरण का; (पुं.) दिगंबर जैन; **–क**–(पुं.) नग्न, नंगा; **–क्षपणक**–(पुं.) एक प्रकार के बौद्ध संन्यासी; **–ता**–(स्त्री.) नंगापन; **–योषित्**–(स्त्री.) नंगी स्त्री; **–व्रतधर**–(पुं.) महादेव, शिव ।
नग्ना–(सं. स्त्री.) नंगी स्त्री, वह स्त्री जिसके स्तन उभड़े न हों ।
नग्नाट–(सं. पुं.) वह जो सर्वदा नंगा रहता हो ।
नग्नाटक–(सं. पुं.) सदा नंगा घूमनेवाला साधु ।
नग्निका–(सं. स्त्री.) वह कन्या जो नंगी होकर घूमती हो, वह कन्या जो रजस्वला न हुई हो ।
नग्र–(हिं. पुं.) देखें 'नगर' ।
नग्रोध–(हिं. पुं.) बरगद का पेड़ ।
नघना–(हिं. क्रि. स.) लांघना, पार करना ।
नघमार–(सं. पुं.) कुष्ठ रोग, कोढ़ की बीमारी ।
नघाना–(हिं. क्रि. स.) उल्लंघन कराना ।
नघारीव–(सं. पुं.) कुष्ठ रोग ।
नघुष–(सं. पुं.) नहुष राजा ।
नचना–(हिं. क्रि. अ.) नाचना, इधर-उधर घूमना; (वि.) नाचनेवाला ।
नचनिया–(हिं. पुं.) नाचनेवाला ।
नचनी–(हिं. स्त्री.) करघे की लकड़ी; (वि. स्त्री.) नाचनेवाली ।
नचाना–(हिं. क्रि. स.) नाचने का काम दूसरे से कराना, किसी वस्तु को इधर-उधर घुमाना, इधर-उधर दौड़ाना; (मुहा.) **–नचाना**–व्यर्थ व्यग्र करना ।
नचवैया–(हिं. पुं.) नाचने या नचानेवाला ।
नचिकेता–(सं. पुं.) उद्दालक ऋषि के पुत्र, अग्नि, आग ।
नचिरात–(सं. अव्य.) शीघ्र, तुरत ।
नचीला–(हिं. वि.) चंचल ।
नचेत्–(सं. अव्य.) नहीं तो, ऐसा न हो कि ।
नचौंहा–(हिं. वि.) सर्वदा घूमनेवाला ।
नछत्र–(हिं. पुं.) देखें 'नक्षत्र' ।
नछत्री–(हिं. वि.) प्रभावशाली, भाग्यवान् ।
नजदीक–(फा. अव्य.) पास, निकट, समीप ।
नजदीकी–(फा. वि.) पास या नजदीक का; (पुं.) निकट का संबंधी; (स्त्री.) समीपता, सामीप्य ।
नजर–(अ. स्त्री.) दृष्टि, निगाह, आँख, कृपा, निरीक्षण, निगरानी, देख-भाल, टोना, ध्यान, भेंट, उपहार ।
नजरबंद–(अ. वि.) जो (बंदी) किसी स्थान में सख्त निगरानी में रखा गया हो, नजरबंदी की सजा से दंडित (बंदी) ।
नजरबंदी–(अ. स्त्री.) नजरबंद रखने की क्रिया या भाव, जादू का चकमा ।
नजरबाग–(अ. पुं.) महल के चारों ओर का बाग ।
नजरना–(हिं. क्रि. स.) कुदृष्टि लगाना, देखना ।
नजराना–(हिं. क्रि. अ., स.) बुरी दृष्टि का प्रभाव होना या लगाना; (पुं.) भेंट, उपहार, वह वस्तु जो भेंट के रूप में दी जाय ।
नजरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'नजर' ।
नजला–(अ. पुं.) जुकाम, नाक से गिरनेवाला कफ ।
नजाकत–(फा. स्त्री.) नाजुक होने का भाव, सुकुमारता ।
नजामत–(अ. स्त्री.) नाजिम का पद, प्रबंध, इंतजाम ।
नजारा–(अ. पुं.) दृश्य, दृष्टि, देखना ।
नजिकाना–(हिं. क्रि. अ.) समीप पहुँचना, निकट आना ।
नजीक–(हिं. अव्य.) समीप, पास ।
नजीर–(अ. स्त्री.) उदाहरण, मिसाल, दृष्टांत ।
नजूम–(अ. पुं.) ज्योतिष विद्या ।
नजूमी–(अ. पुं.) ज्योतिषी ।
नजूल–(अ. पुं.) सरकारी जमीन ।
नट–(सं. पुं.) नर्तक, नाट्य करनेवाला, अशोक वृक्ष, एक वर्णसंकर जाति, सम्पूर्ण जाति का एक राग, एक नीच जाति जो गा-बजाकर तथा खेल-तमाशे दिखलाकर अपनी जीविका चलाती है, बड़ा नरकट, लोध वृक्ष; **–पत्रिका**–(स्त्री.) बैंगन, भंटा; **–पर्ण**–(पुं.) दालचीनी; **–भूषण, –मंडन**–(पुं.) हरिताल, हरताल; **–मल**–(पुं.) एक प्रकार का राग; **–मल्लार**–(पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग; **–मल्लारी**–(हिं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम; **–रंग**–(पुं.) नट के समान अभिनय; **–राज**–(पुं.) शिव, महादेव; **–वटु**–(पुं.) युवक अभिनेता; **–वर**–(पुं.) नृत्य-कला में बहुत चतुर मनुष्य; (वि.) बहुत चतुर ।
नटई–(हिं. स्त्री.) गला, गरदन, गले की घांटी ।
नटखट–(हिं. वि.) उपद्रवी, चंचल, धूर्त, ऊधमी ।
नटखटी–(हिं. स्त्री.) उपद्रव ।
नटगति–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रति चरण में चौदह अक्षर होते हैं ।
नटचर्या–(सं. स्त्री.) अभिनय, नाटक ।
नटता–(सं. स्त्री.) नटत्व, नट का भाव, नट का काम ।
नटन–(सं. पुं.) नृत्य, नाच ।
नटना–(हिं. क्रि. अ., स.) नाट्य करना, अस्वीकार करना, कहकर बदल जाना, नृत्य करना, नाचना, नष्ट करना; (पुं.) बिना पेंदी का मछली पकड़ने का बड़ा टोकरा, रस छानने की छलनी ।
नटनारायण–(सं. पुं.) सम्पूर्ण जाति के एक राग का नाम ।
नटनि–(हिं. स्त्री.) नृत्य, नाच, अस्वीकार ।
नटनी–(हिं. स्त्री.) नट की स्त्री, नट जाति की स्त्री ।
नटसंज्ञक–(सं. पुं.) नट, गोदन्ती हरताल ।
नटसाल–(हिं. स्त्री.) काँटे का टूटा हुआ भाग जो धँसा रह जाता है, छोटी फाँस, कसक, पीड़ा ।
नटसार–(हिं. स्त्री.) नाट्यशाला ।
नटांतिका–(सं. स्त्री.) लज्जा ।
नटाई–(हिं. स्त्री.) ताना तानने का जुलाहों का एक उपकरण ।
नटिन–(हिं. स्त्री.) नट की स्त्री, नट जाति की स्त्री ।
नटी–(सं. स्त्री.) नट जाति की स्त्री, नाचनेवाली स्त्री, वेश्या, अभिनय करनेवाली स्त्री, अशोक वृक्ष, एक रागिनी का नाम ।
नटुआ, नटुवा–(हिं. पुं.) देखें 'नट', 'नटई' ।
नटेश, नटेश्वर–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
नटैया–(हिं. स्त्री.) गला ।
नट्ट–(हिं. पुं.) देखें 'नट' ।
नट्या–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
नठना–(हिं. क्रि. अ., स.) नष्ट करना या होना ।
नड–(सं. पुं.) नरकुल, नरकट ।
नडक–(सं. स्त्री.) दोनों कंधों के बीच की हड्डी ।
नडप्राय, नडमय–(सं. वि.) वह स्थान जहाँ नरकट बहुत होता है ।
नडमीन–(सं. पुं.) झींगा नामक मछली ।
नडह–(सं. वि.) सुन्दर ललित, चमक-दमकवाला ।
नडिनी–(सं. वि.) नडपूर्ण तटवाली नदी ।
नड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा ।
नढ़ना–(हिं. क्रि. स.) बाँधना, पिरोना, गूँथना ।
नत–(सं. वि.) झुका हुआ, वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा ।
नतद्रुम–(सं. पुं.) लताशाल नामक वृक्ष ।
नतन–(सं. पुं.) झुकाव ।
नतनाडिका–(सं. स्त्री.) दिन के दोपहर से रात के दोपहर का समय ।
नतनासिका–(सं. वि.) जिसकी नाक छोटी हो ।

नतपाल–(सं. पुं.) प्रणतपाल, शरण में आनेवाले का पालन करनेवाला ।
नतपुर–(सं.पुं.)आधुनिक नादियाद प्रांत।
नतम–(हिं. वि.) बाँका ।
नतर, नतरु–(हिं.अव्य)अन्यथा, नहीं तो ।
नतांगी–(सं. स्त्री.) नारी, काकड़ासींगी।
नतांश–(सं. पुं.) वह वृत्त जिसका केन्द्र भूकेन्द्र पर रहता है और जो विषुवत् रेखा पर लम्ब रहता है ।
नताउल–(हिं. पुं.) एक पहाड़ी वृक्ष ।
नति–(सं.स्त्री.) झुकाव, नमन, नमस्कार, प्रणाम, विनय, विनती, फलित ज्योतिष में एक प्रकार की गणना, नम्रता ।
नतिनी–(हिं. स्त्री.) लड़की की लड़की ।
नतु–(सं.अव्य.) अन्यथा, नहीं तो ।
नतैत–(हिं. पुं.) सम्बन्धी, नातेदार, रिश्तेदार ।
नतैनी–(हिं. स्त्री.) नातेदारी, संबंध ।
नत्थ–(हिं. स्त्री.) देखें 'नथ', नथिया ।
नत्थी–(हिं. स्त्री.) कागज, कपड़े आदि के टुकड़ों की एक साथ सिली हुई गड्डी, इस प्रकार नथे हुए कागज-पत्र ।
नथ–(हिं. स्त्री.) बाली की तरह का एक गहना जिसको स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं।
नथना–(हिं. पुं.) नाक का अग्रभाग, नाक का छेद; (मुहा.)–**फुलाना**–क्रोध दिखलाना; (क्रि.अ.,स.) नत्थी होना या करना, छिदना, छेदा जाना ।
नथनी–(हिं. स्त्री.) नाक में पहिनने की छोटी नथ, नथ के आकार की कोई वस्तु, बैल की नाक में पहिनाने की रस्सी, तलवार की मूठ पर लगाने का छल्ला,बुलाक ।
नथिया, नथुनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'नथ' ।
नद–(सं. पुं.) बड़ी नदी ।
नदन–(सं. पुं.) शब्द करना, बजना, पशुओं का शब्द करना ।
नदनदीपति–(सं. पुं.) समुद्र, सागर ।
नदना–(हिं. क्रि. अ.) रँभाना ।
नदनिमत्–(सं. वि.) शब्द करनेवाला ।
नदनु–(सं. पुं.) सिंह, शेर, मेघ, बादल ।
नदम–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की कपास ।
नदर–(सं. वि.) भयशून्य, निडर ।
नदराज–(सं. पुं.) समुद्र, सागर ।
नदान–(हिं. वि.) अनभिज्ञ, नादान ।
नदारत(द)–(हिं. वि.) लुप्त, खाली ।
नदाल–(सं. वि.) सौभाग्यशाली, भाग्यवान् ।
नदि–(सं. पुं.) स्तुति, प्रशंसा ।
नदिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'नदी' ।
नदी–(सं. स्त्री.) किसी पर्वत, झील आदि से निकलकर बहनेवाला जल का बड़ा प्राकृतिक प्रवाह जो वर्षभर बहता रहता है, निम्नगा, तरङ्गिणी, किसी तरल वस्तु का बड़ा प्रवाह, चौदह अक्षरों के एक छन्द का नाम; (मुहा.)–**नाव संयोग**–अकस्मात् होनेवाला संयोग; –**कदंब**–(पुं.) गोरखमुण्डी; –**कांत**–(पुं.) समुद्र, सागर, जामुन का वृक्ष, जलबेंत, काकजंघा नामक लता; –**कांता**–(स्त्री.) जामुन का वृक्ष; –**कूल**–(पुं.) तीर, तट, किनारा; –**कूलस्थ**–(वि.) तटस्थ, किनारे का; –**गर्भ**–(पुं.) नदी के दोनों किनारों के बीच का स्थान; –**गलर**–(हिं. पुं.) लिसोड़े का वृक्ष; –**ज**–(वि.) नदी से उत्पन्न; (पुं.) एक प्रकार का धान, अर्जुन वृक्ष, खजूर का पेड़; –**जल**–(पुं.) नदी का पानी; –**जा**–(स्त्री.) अरणी वृक्ष, सीप; –**जामुन**–(हिं. पुं.) छोटा जामन; –**दोह**–(पुं.) नदी पार करने का कर; –**धर**–(पुं.) शिव, महादेव; –**पंक**–(पुं.) नदी के किनारे का कीचड़युक्त स्थान; –**पति**–(पुं.) समुद्र, सागर, वरुण; –**पुर**–(पुं.) वह नदी जो बाढ़ के जल से किनारे पर के गाँवों को डुबा देती है; –**भव**–(वि.) जो नदी में उत्पन्न हो; (पुं.) सेंधा नमक, छोटा शंख; –**मातृक**–(वि.) वह देश या स्थान जहाँ पर खेती-बारी का काम केवल नदी के जल से होता है; –**मुख**–(पुं.) वह स्थान जहाँ नदी समुद्र में गिरती है, नदी का मुहाना; –**वंक**–(पुं.) नदी का टेढ़ापन ।
नदीया–(सं. स्त्री.) अरणी का वृक्ष ।
नदीश–(सं. पुं.) समुद्र, सागर ।
नदीसर्ज–(सं. पुं.) अर्जुन वृक्ष ।
नदेया, नदेयी–(सं. स्त्री.) छोटा जामुन ।
नदोला–(हिं. पुं.) मिट्टी की छोटी नाँद ।
नद्दना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'नदना' ।
नद्ध–(सं. वि.) बद्ध, बँधा हुआ ।
नद्धि–(सं. स्त्री.) बन्धन, रस्सी ।
नद्धी–(सं. स्त्री.) चमड़े की डोरी, ताँत ।
नद्यावर्तक–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा के लिए एक शुभ योग ।
नद्युत्सृष्ट–(सं. वि.) वह भूमि जो नदी के हट जाने से निकल आई हो ।
नधना–(हिं.क्रि.अ.,स.) रस्सी या तसमें से बैल, घोड़े आदि को उस वस्तु के साथ बाँधना जिसको उन्हें खींचकर ले जाना हो, जुतना, किसी कार्य का अनुष्ठान होना ।
नधाव–(हिं. पु.) पौदर का वह गड्ढा जिसमें से पानी को सिंचाई के लिए नाली से खेत में ले जाते हैं ।
नध्री–(सं. स्त्री.) चमड़े की डोरी, ताँत ।
ननकारना–(हिं.क्रि.अ.) अस्वीकार करना ।
ननद, ननदी–(हिं. स्त्री.) पति की बहिन ।
ननदोई–(हिं. स्त्री.) पति का बहनोई, ननद का पति, नंदोई ।
ननसार–(हिं.स्त्री.) नाना का घर, ननिहाल।
नना–(सं. स्त्री.) माता, दुहिता, कन्या ।
ननिआउर–(हिं. पुं.) देखें 'ननिहाल' ।
ननिया ससुर–(हिं.पुं.) पति या स्त्री का नाना
ननिया सास–(हिं.स्त्री.) स्त्री या पति की नानी
ननिहारी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की ईंट ।
ननिहाल–(हिं. पुं.) नाना का घर, ननसार।
ननु–(सं. अव्य.) प्रश्न, अनुज्ञा, विनय, अधिकार, आक्षेप, प्रत्युक्ति, वाक्यारम्भ आदि में प्रयुक्त होता है ।
ननोई–(हिं.पुं.) एक प्रकार का जंगली धान।
नन्योरा–(हिं.पुं.) ननिहाल, नाना का घर ।
नन्हा–(हिं. वि.) छोटा ।
नन्हाई–(हिं. स्त्री.) छोटाई, अप्रतिष्ठा ।
नन्हिया–(हिं. पु.) एक प्रकार का धान ।
नन्हैया–(हिं. वि.) देखें 'नन्हा' ।
नपराजित–(सं. पु.) शिव, महादेव ।
नपाई–(हिं.स्त्री.) नापने का काम या शुल्क ।
नपाक–(हिं. वि.) देखें 'नापाक', अशुद्ध ।
नपुंसक–(सं. पु.) क्लीब, हिजड़ा; (वि.) कायर, डरपोक; –**ता**–(स्त्री.) नपुंसक होने का भाव; –**त्व**–(पुं.) नपुंसकता ।
नपुआ–(हिं. पुं.) नापने की वस्तु ।
नपुत्री–(हिं. वि.) देखें 'निपुत्री' ।
नप्ता–(सं. पुं.) लड़की या लड़के का लड़का, नाती या पोता ।
नप्त्री–(सं. स्त्री.) पोती, नातिन ।
नफर–(फा. पुं.) दास, सेवक, अनुचर।
नफरत–(अ. स्त्री.) घृणा, घिन ।
नफरी–(फा. स्त्री.) मजदूर की दैनिक मजदूरी या काम ।
नफा–(अ.पुं.) लाभ ।
नफासत–(अ. स्त्री.) नफीस या उम्दा होने का भाव, उम्दापन, सुंदरता ।
नफीरी–(हिं. स्त्री.) तुरही ।
नफीस–(अ. वि.) बढ़िया, उम्दा, सुंदर ।
नबी–(अ. पुं.) पैगंबर, ईश्वर का दूत ।
नबेड़ना–(हिं.क्रि.,स.) निपटाना, झगड़ा तय करना, समाप्त करना, अपने मतलब की वस्तु लेकर बाकी को छोड़ देना, चुनना।
नबेड़ा–(हिं. पुं.) न्याय, निपटारा ।
नबेरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'नबेना' ।
नबेरा–(हिं. पुं.) देखें 'नबेड़ा' ।

नब्ज–(अ. स्त्री.) हाथ की नाड़ी जिसके स्पंदन को उँगलियों से जाँचकर रोग-निदान किया जाता है।
नब्बे–(हिं. वि.) जो गिनती में अस्सी और दस के बराबर हो; (पुं.) यह संख्या, ९०।
नभ–(सं. पुं.) सावन या भादों का महीना, आकाश, शून्य स्थान, महादेश, शिव, गणित में शून्य, आश्रय, आधार, निकट, पास, अभ्रक, अबरख, राजा नल के एक पुत्र का नाम, जल, पानी, मेघ, बादल, वर्षा।
नभःकेतन, नभःपांथ–(सं. पुं.) सूर्य।
नभःप्राण–(सं. पुं.) पवन, हवा।
नभःसद–(सं. पुं.) देवता, पक्षी, चिड़िया।
नभःसरित्–(सं. स्त्री.) आकाश-गंगा, मन्दाकिनी।
नभःसुत–(सं. पुं.) पवन, हवा।
नभःस्थल–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
नभःस्थित–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
नभःस्पृश्–(सं. वि.) आकाश छूनेवाला।
नभग–(सं. पुं.) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम, पक्षी, पवन, हवा, मेघ; (वि.) आकाश में विचरनेवाला, भाग्य-हीन, अभागा।
नभगनाथ–(सं. पुं.) गरुड़।
नभगामी–(सं. पुं.) सूर्य तारा, देवता, चन्द्रमा, पक्षी।
नभगेश–(सं. पुं.) गरुड़।
नभचर–(हिं. पुं.) देखें 'नभश्चर'।
नभधुज–(हिं. पुं.) मेघ, बादल।
नभनीरप–(हिं. पुं.) चातक, पपीहा।
नभन्य–(सं. वि.) आकाश में उत्पन्न होनेवाला।
नभश्चक्षु(स्)–(सं. पुं.) सूर्य।
नभश्चमस–(सं. पुं.) चन्द्रमा, इंद्रजाल।
नभश्चर–(सं. वि.) गगनचारी, आकाश में उड़नेवाला; (पुं.) पक्षी, हवा, देवता, गन्धर्व आदि, मेघ, बादल।
नभसंगम–(सं. पुं.) खग, पक्षी, चिड़िया।
नभस्थल–(हिं. पुं.) आकाश।
नभस्थित–(हिं. वि.) नभःस्थित।
नभस्य–(सं. पुं.) भाद्रपद का महीना।
नभस्वत्–(सं. पुं.) वायु, हवा।
नभाक–(सं. पुं.) अन्धकार, अँधेरा, राहु।
नभि–(सं. स्त्री.) चक्र, पहिया।
नभीत–(सं. वि.) भयरहित, निडर।
नभोंबुप–(सं. पुं.) चातक पक्षी, पपीहा।
नभोग–(सं. वि.) नभश्चर, पक्षी, देवता, ग्रह।
नभोगज–(सं. पुं.) मेघ, बादल।
नभोगति–(सं. स्त्री.) आकाश में चलना।
नभोज–(सं. वि.) जो आकाश में उत्पन्न हो।
नभोदुह, नभोद्वीप, नभोधूम, नभोध्वज–(सं. पुं.) मेघ, बादल।
नभोनदी–(सं. स्त्री.) आकाशगंगा, मन्दाकिनी।
नभोमणि–(सं. पुं.) सूर्य।
नभोमंडल–(सं. पुं.) गगनमण्डल।
नभोमंडलदीप–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
नभोयोनि–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
नभोरजस–(सं. पुं.) अन्धकार, अँधेरा।
नभोरूप–(सं. पुं.) नीला रंग।
नभोरेणु–(सं. पुं.) नीवार, कुहरा।
नभोलय–(सं. पुं.) धूम, धुआँ।
नभोवट–(सं. पुं.) आकाशमण्डल।
नभ्य–(सं. पुं.) पहिये के बीच का भाग, धुरी।
नभ्राज्–(सं. पुं.) मेघ, बादल।
नमः–(सं. अव्य.) प्रणाम का सूचक शब्द।
नम–(फा. वि.) तर, गीला, आर्द्र।
नमक–(फा. पुं.) खाया जानेवाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ, लवण, लावण्य, सुंदरता, सलोनापन; **–ख्वार**–(पुं.) नमक खानेवाला; **–दान**–(पुं.) नमक रखने का पात्र या आधान; **–हराम**–(वि.) स्वामी या पालक के साथ कृतघ्न व्यवहार करनेवाला; **–हरामी**–(स्त्री.) कृतघ्नता; **–हलाल**–(वि.) स्वामी का कृतज्ञ; **–हलाली**–(स्त्री.) नमकहलाल होने का भाव; (मुहा.)**–अदा करना**–स्वामी के प्रति वफादार या कृतज्ञ रहना; **–मिर्च मिलाना**–कुछ असत्य जोड़कर कहना; **किसी का नमक खाना**–(किसी की) कृपा या संरक्षण या नियोजन में निर्वाह होना; **कटे पर नमक छिड़कना**–दुखिया को और दुःख देना।
नमकीन–(फा. वि.) जिसमें नमक पड़ा हो, जिसका स्वाद नमक-सा हो, सलोना, लावण्य-युक्त, सुन्दर।
नमत–(सं. पुं.) प्रभु, स्वामी, धुआँ, नट; (वि.) जो नत हो, नम्र।
नमन–(सं. पुं.) प्रणाम, नमस्कार, झुकाव।
नमना–(हिं. क्रि. अ.) झुकना, नमस्कार करना।
नमनीय–(सं. वि.) झुकने या झुकाने योग्य, नमस्कार करने योग्य, माननीय, पूजनीय, आदरणीय।
नमयिष्णु–(सं. वि.) आदर करने योग्य, जो झुक सके।
नमसान–(सं. वि.) नमस्कार करने योग्य।
नमसित–(सं. वि.) पूजित, नमस्कार किया हुआ।
नमस्कार–(सं. पुं.) प्रणाम, झुककर अभिवादन करने की क्रिया।
नमस्कारी–(सं. स्त्री.) घास, लजालू।
नमस्कार्य–(सं. वि.) पूज्य, नमस्कार करने योग्य।
नमस्क्रिया–(सं. स्त्री.) नमस्कार, पूजा।
नमस्ते–(सं.) एक वाक्य जिसका अर्थ है–तुमको नमस्कार।
नमस्य–(सं. वि.) पूज्य, आदरणीय।
नमस्या–(सं. स्त्री.) पूजा।
नमित–(हिं. वि.) झुका हुआ।
नमुचि–(सं. पुं.) कन्दर्प, एक दानव का नाम, एक ऋषि का नाम, पुष्पधनु, फूल का धनुष; **–सूदन**–(पुं.) इन्द्र।
नमूना–(फा. पुं.) अन्न, घी आदि पदार्थों की राशि में से निकाला हुआ थोड़ा-सा अंश जिससे उसके उम्दापन, किस्म आदि की परख की जाती है, बानगी, ठाट, ढाँचा, खाका।
नमोवाक्–(सं. पुं.) नमस्कार का वाक्य।
नम्य–(सं. वि.) नमनीय, झुकने योग्य।
नम्र–(सं. वि.) झुका हुआ, विनीत, जिसमें विनय हो; (पुं.) बल का पेड़; **–क**–(पुं.) बेंत का पौधा; **–ता**–(स्त्री.) विनय; **–त्व**–(पुं.) नम्रता; **–प्रकृति**–(वि.) विनीत स्वभाव का; **–मुख**–(वि.) जिसका मुख झुका हो; **–मूर्ति**–(वि.) विनीत, जिसमें नम्रता हो; **–स्वभाव**–(वि.) देखें 'नम्र-प्रकृति'।
नय–(सं. पुं.) नीति, न्याय, नम्रता, विष्णु।
नयक–(सं. वि.) नीति या न्याय में कुशल,
नयकारी–(हिं. पुं.) नाचनेवालों का प्रमुख। नाचनेवाला मनुष्य, नचनिया, नीतिकार।
नयन–(सं. पुं.) चक्षु, नेत्र, आँख, प्रापण, ले जाना; **–गोचर**–(वि.) समक्ष दिखाई पड़नेवाला, जो आँखों के सामने हो; **–पट**–(पुं.) आँख की पलक; **–पथ**–(पुं.) जितनी दूरी तक दृष्टि जा सके, आँख के सामने का स्थान; **–पुट**–(पुं.) आँख की पलक; **–प्रसाद**–(पुं.) निर्मली का पेड़; **–प्लव**–(पुं) आँसू से भरी हुई आँख; **–वारि, –सलिल**–(पुं.) नेत्रजल, आँसू।
नयनांजन–(सं. पुं.) काजल, सुरमा।
नयना–(हिं. क्रि. अ.) नम्र होना, लटकना, झुकना; (पुं.) नयन, नेत्र, आँख।
नयनागर–(सं. वि.) नीतिकुशल, नीतिज्ञ।
नयनापांग–(सं. पुं.) आँख की कोर।
नयनाभिराम–(सं. वि.) आँखों को प्रिय लगनेवाला; (पुं.) चन्द्रमा।

नयनी–(सं. स्त्री.) आँख की पुतली; (हि. वि.) आँखवाली, जिसको आँख हो।
नयनू–(हि. पुं.) नवनीत, मक्खन, एक प्रकार की मलमल जिस पर सफेद बूटियाँ बनी होती हैं।
नयनोत्सव–(सं. पुं.) प्रदीप, दीया।
नयनोपांत–(सं.पु.)आँखका किनारा या कोर
नयनौषध–(सं. पुं.) पीला कसीस।
नयपीठी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का जुए का खेल।
नयलोचन–(सं.पु.)नीतिरूप चक्षु; (वि.) जिसकी आँखें न्याय की ओर रहती हैं।
नयर–(हि. पुं.) देखें 'नगर'।
नयवर्त्म–(सं.पुं.)नीति मार्ग,न्याय का मार्ग।
नयविशारद–(सं.पुं.)नीतिशास्त्रज्ञ, नीति-कुशल।
नय-शास्त्र–(सं. पुं.) नीतिशास्त्र।
नयशील–(सं. वि.) नीतिकुशल, विनीत।
नयसार–(सं. पुं.) नीतिसूत्र।
नया–(हि. वि.) नूतन, नवीन, हाल का, जो पहिले किसी काम में न लाया गया हो; (मुहा.)–**पुराना करना**–पुराना हिसाब तय करके उसे नये सिरे से चालू करना; –**पन**–(पु.)नया होने का भाव, नवीनता।
नर–(सं. पुं.) परमात्मा, विष्णु, शिव, महादेव, पुरुष, एक प्रकार के देवता, नरदेव के अवतार अर्जुन, रोहिश नामक घास, शंकु, लम्ब, नील का पौधा, दोहे का एक भेद, छप्पय का एक भेद, वह खूँटी जो समय जानने के लिये खड़े बल गाड़ी जाती है, एक देवयोनि; (वि.) जो स्त्री न हो, पुरुष जाति का।
नरकंत–(हि. पुं.) राजा, नृप।
नरई–(हि. स्त्री.) गेहूँ के पौधे का डंठल, जल में होनेवाली एक प्रकार की घास।
नरक–(सं. पुं.) हिन्दू धर्मशास्त्र तथा पुराणों के अनुसार वह स्थान जहाँ मृत्यु के बाद मनुष्य की आत्मा को अपने किये हुये पापों का फल भोगना पड़ता है; –**कुंड**–(पुं.) पापियों के कष्ट भोगने का एक स्थान; –**गामी**–(वि.) नरक में जानेवाला; –**चतुर्दशी**–(स्त्री.) कार्तिक बदी चौदस जिस दिन संपूर्ण गृह का कड़ाकरकट घर से बाहर फेंका जाता है; –**जित्**–(पुं.) नरकासुर को जीतनेवाले श्रीकृष्ण; –**पाल**–(पुं.)मृतक की खोपड़ी; –**भूमि**–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ पापी आत्माओं को जाकर दुःख भोगना पड़ता है; –**भूमिका**–(स्त्री.)नरकलोक; –**मुक्त**–(वि.) नरक से छुटकारा पाया हुआ; –**स्थ**–(वि.)जो नरक-भूमि में स्थित हो।
नरकचूर–(हि. पुं.) देखें 'कचूर'।
नरकट–(हि. पुं.) बेंत की तरह का एक पौधा जिसके पोले डंठल अनेक काम में लाये जाते हैं।
नरकल, नरकस–(हिं. पुं.) देखें 'नरकट'।
नरकांतक–(सं. पुं.) नरकजित्, श्रीकृष्ण।
नरकामय–(सं. पुं.)नरक-रूपी एक प्रकार का अति कष्टदायक रोग, प्रेत।
नरकासुर–(सं. पुं.) पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न एक असुर जिसका सिर सुदर्शन चक्र से कृष्ण ने काटकर उसके सभी बंदियों को मुक्त किया था।
नरकी–(हिं. वि.) देखें 'नारकी'।
नरकीलक–(सं. वि.) गुरुघ्न, गुरु की हत्या करनेवाला।
नरकुल–(हि. पु.) देखें 'नरकट'।
नरकेशरी–(सं. पुं.) नरसिंह, वह मनुष्य जो अन्य मनुष्यों से श्रेष्ठ हो।
नरकेहरी–(हि. पुं.) देखें 'नरकेशरी'।
नरकौकस्–(सं. पुं.) नरक में रहनेवाले।
नरकौतुक–(सं. पुं.) मदारी का खेल।
नरगण–(सं. पुं.) फलित-ज्योतिष में नक्षत्रों का एक गण।
नरगिस–(फा. पुं.) हलके पीले रंग का प्रसिद्ध सुगंधित पुष्प।
नरगिसी–(फा. वि.) नरगिस जैसा; (पुं.) एक प्रकार का कपड़ा।
नरचा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पटुआ।
नरता–(सं. स्त्री.) नरत्व, मनुष्यत्व।
नरतात–(सं. पुं.) नृपति, राजा।
नरत्व–(सं. पुं.) मनुष्यत्व।
नरद–(हि. स्त्री.) चौसर की गोटी।
नरदन–(हिं. पुं.) नाद करना, गरजना।
नरदमा (वाँ)–(हिं. पुं.) परनाला।
नरदारा–(हिं. पुं.) नपुंसक, हिजड़ा, वह जो पुरुष होकर स्त्री का काम करे; (वि.) डरपोक, कायर।
नरदेव–(सं. पुं.) नृपति, राजा, ब्राह्मण।
नरद्विष्–(सं. पु.) राक्षस, असुर।
नरनाथ, नरनायक–(सं. पुं.) नरश्रेष्ठ, नृपति, राजा।
नरनारायण–(सं. पुं.) नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो भृगु ऋषि के शाप के कारण तथा पृथ्वी का भार हरने के लिये अर्जुन और कृष्ण के रूप में संसार में उत्पन्न हुए थे।
नरनारी–(सं. स्त्री.) नर (अर्जुन) की स्त्री द्रौपदी, पुरुष-स्त्री।
नरनाह–(हिं. पुं.) नृप, राजा।
नरनाहर–(हिं. पुं.) नृसिंह भगवान।
नरनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा।
नरप–(सं. पुं.) संसार का पालन करनेवाले विष्णु।
नरपति–(सं. पुं.) नृपति, राजा।
नरपद–(सं. पुं.) नगर, देश।
नरपशु–(सं. पुं.) जिस मनुष्य का आचरण पशु के सदृश हो, नृसिंह।
नरपाल–(सं. पुं.) मनुष्यों का रक्षक, राजा।
नरपालि–(सं. पुं.) छोटा शंख।
नरपिशाच–(सं. पुं.) पिशाच की तरह काम करनेवाला मनुष्य, अति दुष्ट।
नरपुंगव–(सं. पुं.) मनुष्यों में श्रेष्ठ या प्रधान।
नरपुर–(सं. पुं.) भूलोक, मनुष्य-लोक।
नरप्रिय–(सं. वि.) जो मनुष्य को अच्छा लगे; (पुं.) कबूतर।
नरबदा–(हिं. स्त्री.) देखें 'नर्मदा'।
नरबलि–(सं. पुं.) देवता की वह पूजा जिसमें नर की बलि की जाती थी, नरमेध।
नरभक्षी–(सं. पुं.) दैत्य, दानव, राक्षस।
नरभू–(सं. स्त्री.) भारतवर्ष, मनुष्यों की उत्पत्ति।
नरभूमि–(सं. स्त्री.) भारतवर्ष।
नरम–(हिं. वि.) कोमल, जो कठोर न हो, लचीला, मृदु, शीघ्र पचनेवाला, जिसमें पराक्रम या उग्रता का अभाव हो।
नरमद–(हिं. स्त्री.) वह भूमि जहाँ की मिट्टी कोमल हो।
नरमदा–(हिं. स्त्री.) देखें 'नर्मदा'।
नरम लोहा–(हिं. पुं.)वह लोहा जो आग में तपाकर तैयार किया जाता है।
नरमा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की कपास मनवाँ, सेमर की रूई, कान के भीतर का भाग, एक प्रकार का कोमल कपड़ा।
नरमाई–(हिं. स्त्री.) कोमलता।
नरमाना–(हि.क्रि. अ.,स.) कोमल करना, धीमा करना, शान्त करना, नरम होना।
नरमानिका, नरमानिनी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसकी दाढ़ी-मूँछ निकल आई हो।
नरमाला–(सं. स्त्री.) नरमुण्ड की माला।
नरमालिनी–(सं. स्त्री.) देखें 'नरमानिका'।
नरमावड़ी–(हिं. स्त्री.) वन-कपास, नरमाई, मृदुता, कोमलता।
नरमेध–(सं.पुं.) एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन काल में पुरुष का वध करके उसके मांस की आहुति दी जाती थी।
नरम्मन्य–(सं. पुं.) वह जो अपने को राजा कहकर अभिमान करता हो।
नरयान–(सं.पुं.) मनुष्य द्वारा खींची जाने-

वाली सवारी या गाड़ी।
नरराज–(सं.पुं.) नरश्रेष्ठ, मनुष्यों में श्रेष्ठ।
नररूप–(सं. वि.) मनुष्य के समान आकृति का।
नरर्षभ–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
नरलोक–(सं. पुं.) पृथ्वीलोक, संसार।
नरवल्लभ–(सं. पु.) कपोत, कबूतर।
नरवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
नरवाह–(सं. पुं.) वह यान जिसको मनुष्य खींचकर ले जाते हैं।
नरवाहन–(सं. पुं.) कुबेर, किन्नर।
नरवृक्ष–(सं. पुं.) नील (वट) का पेड़।
नरव्याघ्र–(सं. पुं.) मनुष्यों में श्रेष्ठ, एक प्रकार का जल में रहनेवाला जन्तु।
नरशक्र–(सं. पुं.) नरेन्द्र, राजा।
नरशृंग–(सं. पु.) मिथ्या वस्तु या कथन।
नरसख–(सं. पुं.) मानव-बन्धु, नारायण।
नरसंसर्ग–(सं. पुं.) मनुष्यों का संसर्ग।
नरसल–(हिं. पु.) देखें 'नरकट'।
नरसादर, नरसार–(सं. पुं.) नौसादर।
नरसिंग–(हिं. पुं.) एक प्रकार का फल।
नरसिंगा–(हिं. पुं.) देखें 'नरसिंघा'।
नरसिंघ–(हिं. पुं.) देखें 'नरसिंह'।
नरसिंघा–(हिं.पुं.) मुख से फूँककर बजाया-जानेवाला तुरही के आकार का एक बाजा।
नरसिंह–(सं. पुं.) नरश्रेष्ठ, विष्णु।
नरसिंहपुराण–(सं. पुं.) एक उपपुराण का नाम।
नरसेज–(हिं. पुं.) त्रिधारा, सेंहुड़।
नरसों–(हिं. अव्य., पुं.) परसों से पहिले या बाद (का दिन)।
नरस्कंध–(सं. पुं.) मनुष्यों का समूह।
नरहय–(सं. पुं.) वह मनुष्य जिसका मुख घोड़े के समान हो।
नरहर–(हिं. स्त्री.) पैर की पिंडली के ऊपर की हड्डी।
नरहरि–(सं. पुं.) भगवान् के दस अवतारों में से चौथा अवतार, नृसिंह।
नरहरी–(सं. पुं.) एक मात्रिक छन्द का नाम।
नरहीरा–(हिं. पुं.) आठ या छः पहलों का बड़ा हीरा।
नरांग–(सं. पुं.) नाभि, ढोंढ़ी, एक प्रकार का फोड़ा।
नरांतक–(सं. पुं.) रावण के एक पुत्र का नाम; (वि.) मनुष्य का संहार करनेवाला।
नरा–(हिं. पुं.) नरकट की छोटी नली।
नराच–(हिं. पुं.) नाराच, तीर, बाण, शर, नागराज नामक छन्द।
नराचिका–(सं. स्त्री.) वितान वृत्त का एक भेद।
नराज–(सं.पुं.) एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
नराज–(हिं. वि.) अप्रसन्न, नाराज।
नराजना–(हिं.क्रि.अ.,स.) अप्रसन्न होना या करना।
नराट–(हिं. पुं.) नृपति, राजा।
नराधम–(सं. पुं.) नीच मनुष्य।
नराधिप–(सं. पुं.) राजा, सोनापाठा, अमलतास का वृक्ष।
नरायण–(सं. पुं.) नारायण, विष्णु।
नराश–(सं. पुं.) नरभोजी, राक्षस।
नराशन–(सं. पुं.) राक्षस।
नरासन–(सं. पुं.) मनुष्य के आकार का एक प्रकार का आसन।
नरियर–(हिं. पुं.) देखें 'नारियल'।
नरिया–(हिं. पुं.) अर्धवृत्ताकार मिट्टी का खपड़ा।
नरियाना–(हिं. क्रि. अ.) चिल्लाना।
नरी–(सं.स्त्री.) स्त्री, नारी, (फा.स्त्री.) चमड़ा।
नरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का बगला, सोनार की फुँकनी।
नरुई–(हिं. स्त्री.) छोटी नली या छुच्छी।
नरुवा (आ)–(हिं. पुं.) अन्न के पौधे की डंठी जो पोली होती है।
नरेंद्र–(सं. पुं.) नरेश, नृप, राजा, विष-वैद्य; साँप, बिच्छू आदि के दंश की चिकित्सा करनेवाला, सोनापाठा, अमलतास, अगर का पेड़, एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस मात्राएँ होती हैं।
नरेवी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल से एक प्रकार का खाकी रंग बनता है।
नरेली–(हिं. स्त्री.) नारियल की खोपड़ी।
नरेश–(सं. पुं.) नरेन्द्र, राजा, नृप।
नरोत्तम–(सं. पुं.) ईश्वर, नरश्रेष्ठ।
नरोह–(हिं. स्त्री.) पैर की पिंडली की हड्डी, कोल्हू की नली जिसमें से रस निकलता है।
नर्क–(हिं.पु.) देखें 'नरक'।
नर्कट–(हिं. पु.) देखें 'नरकट'।
नर्कुटक–(सं.पुं.) घ्राणेन्द्रिय, नासिका, नाक।
नर्गिस–(हिं. पु.) देखें 'नरगिस'।
नर्गिसी–(हिं. वि.) देखें 'नरगिसी'।
नर्त, नर्तक–(सं. पुं.) नट, नाचनेवाला, वन्दीजन, भाट, एक प्रकार की संकर जाति, नृप, राजा, महादेव, मोर, नरकट, महुआ।
नर्तकी–(सं. स्त्री.) नाचनेवाली स्त्री, वेश्या, हस्तिनी, हथिनी।
नर्तन–(सं. पुं.) नृत्य, नाच; (वि.) नाचनेवाला; –प्रिय–(पुं.) वह जिसको नाचना प्रिय हो, मयूर, मोर; –शाला–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ नाच होता है, नाचघर।
नर्तनागार–(सं. पुं.) नर्तनशाला।
नर्तना–(हिं. क्रि. अ.) नाचना।
नर्तित–(सं. वि.) जो नचाया गया हो।
नर्दकी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की कपास।
नर्दटक–(सं. पुं.) एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।
नर्दन–(सं. पुं.) भीषण ध्वनि, गरज।
नर्दबान–(हिं. पुं.) लकड़ी की बनी हुई सीढ़ी, निसेनी।
नर्दा–(हिं.पुं.) गन्दा पानी बहने की नाली।
नर्बदा–(हिं. स्त्री.) देखें 'नर्मदा'।
नर्म–(सं. पुं.) वह देवता जिसके उद्देश्य से नरमेध यज्ञ किया जाता है, हँसी-दिल्लगी, हँसी-मजाक।
नर्म–(फा.वि.) गुदगुदा, मुलायम, कोमल, सहज, आसान, सस्ता, धीमा, विनम्र; –गर्म–(वि.) सस्ता-महँगा; –दिल–(वि.) कोमल हृदयवाला।
नर्मट–(सं. पुं.) सूर्य, खपड़ा।
नर्मठ–(सं. पुं.) जार, यार, ठठोल, ठिठोलिया, चिबुक, ठुड्डी, स्तन का अग्र, चूचुक, स्त्री-प्रसंग।
नर्मद–(सं. वि.) आनन्द देनेवाला; (पुं.) ठिठोलिया, ठठोल, भाँड़।
नर्मदा–(सं. स्त्री.) मध्य प्रदेश की एक बड़ी नदी, एक गन्ध-द्रव्य।
नर्मदेश्वर–(सं. पुं.) स्फटिक का शिव-लिंग जो नर्मदा नदी में मिलता है।
नर्मद्युति–(सं. स्त्री.) नाटक की प्रति-मुख-सन्धि का एक अंग।
नर्मरा–(सं. स्त्री.) गुफा, खोह, पान, वन्ध्या स्त्री, नारी, धौंकनी।
नर्मवत्–(सं. वि.) आनन्दयुक्त; (हिं. स्त्री.) आनन्द, हँसी।
नर्मसचिव–(सं.पुं.) विदूषक, वह मनुष्य जो राजा को हँसाने के लिये रखा जाता है।
नर्मसुहृद–(सं. पुं.) देखें 'नर्मसचिव'।
नर्मस्फोट–(सं. पुं.) साधारण ठिठोली।
नर्य–(सं. वि.) बलवान्, मानवी, वीर।
नर्रो–(हिं. स्त्री.) ऊसर में जमनेवाली एक प्रकार की घास।
नर्स–(अं.स्त्री.) धात्री, उपचारिका, दाय।

नल–(सं. पुं.) पद्म, कमल, नरकट, निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र जिनका विवाह भीम राजा की कन्या दमयन्ती से हुआ था, (वह अश्वविद्या में बड़े निपुण थे), विश्वकर्मा का पुत्र, राम का एक वानर सैनिक, एक दानव का नाम, यदु के पुत्र का नाम; (हिं. पुं.) कोई लंबी पोली वस्तु, धातु की बनी हुई पोली वस्तु, परनाली, शरीर में की मूत्र निकलने की नाली।
नलक–(सं. पुं.) नली के आकार की हड्डी।
नलका–(हिं. स्त्री.) नली, नाल।
नलकानन–(सं पुं.) नरकट का जंगल।
नलकिनी, नलकील–(सं. स्त्री.) जंघा, जाँघ, घुटना।
नलकूबेर–(सं. पुं.) कुबेर के एक पुत्र का नाम, (इसके भाई का नाम मणिग्रीव था। नारद के शाप से ये दोनों भाई अर्जुन वृक्ष हो गये थे और श्रीकृष्ण के स्पर्श से शाप-मुक्त हुए थे।)
नरकोल–(सं. पुं.) एक प्रकार का बैल।
नलदंबु–(सं. पुं.) नीम का पेड़।
नलद–(सं. पुं.) फूल का रस, मकरन्द, उशीर, खस, जटामासी।
नलदा–(सं. स्त्री.) जटामासी, बालछड़।
नलनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'नलिनी'।
नलनीरुह–(हिं.पुं.) मृणाल, कमल का डंठल।
नलपट्टिका–(सं. स्त्री.) नरकट की बनी हुई चटाई।
नलमीन–(सं. पुं.) एक प्रकार की मछली।
नलवा–(हिं. पुं.) गाय-बैल को दवा पिलाने की बाँस की ढरकी।
नलसेतु–(सं पुं.) रामेश्वर के पास समुद्र पर बँधा हुआ पुल जिसको श्रीरामचन्द्र ने नल-नील आदि से बनवाया था।
नला–(हिं. स्त्री.) पेट के भीतर की नली जिसमें से होकर मूत्र नीचे को उतरता है, नली के आकार की हाथ या पैर की लंबी हड्डी।
नलाई–(हिं. स्त्री.) बोये हुए खेत से घास-पात हटाने का काम, निराई।
नलाना–(हिं. क्रि. अ.) बोने के खेत से निरर्थक घास आदि दूर करना, निराना।
नलिक–(सं. पुं.) नरकुल, नरकट।
नलिका–(सं. स्त्री.) नली नामक सुगंधित द्रव्य, प्राचीन काल का एक शस्त्र, जल बहने की नाली, नली के आकार की कोई वस्तु, चोंगा, तीर रखने का तरकश, पुदीना, करेमू का शाक; **–यंत्र**–(पुं.) नली के आकार का जलोदर का पानी निकालने का एक प्राचीन यन्त्र।
नलिन–(सं. पुं.) पद्म, कमल, पानी, नील; (स्त्री.) सारस पक्षी, करौंदा, पद्म-केशर, नीम, वह जलभाग जहाँ कमल का समूह हो, नदी, गंगा की एक धारा का नाम, नारियल की बनी हुई मदिरा, नाक का बायाँ छिद्र, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में पाँच सगण होते हैं, जिसको भ्रमरावली और मनहरण भी कहते हैं।
नलिनशय–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
नलिनी–(सं. स्त्री.) कमलिनी।
नलिनीखंड–(सं. पुं.) पद्मिनी-समूह।
नलिनीनंदन–(सं. पुं.) कुबेर के बगीचे का नाम।
नलिनीरुह–(सं. पुं.) कमल की नाल; (पुं.) ब्रह्मा, मनःशिल, मैनसिल।
नली–(सं. स्त्री.) नलिका, एक प्रकार का गन्धद्रव्य; (हिं.स्त्री.) छोटा पतला नल, चोंगा, नल के आकार की हड्डी, बन्दूक का लंबा छेद जिसमें से गोली छूटती है, घुटने के नीचे का भाग, पिंडली।
नलुआ–(हिं. पुं.) बाँस की पोर, छोटी नली, पशुओं का एक रोग।
नलुका–(हिं. स्त्री.) जायफल का वृक्ष।
नलोत्तम–(सं. पुं.) बढ़िया नरकट।
नल्ल–(सं. पुं.) प्राचीन काल की एक प्रकार की नाप।
नल्ली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
नल्वण–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का परिमाण जो प्रायः सोलह सेर का होता था।
नव–(सं.पुं.) स्तोत्र; (वि.) नवीन, नूतन, नया।
नव–(सं. वि.) दस से एक कम की संख्या का; (पुं.) आठ और एक की संख्या, ९।
नवक–(सं. पुं.) एक ही तरह के नौ पदार्थों का समूह; (वि.) जिसमें नौ संख्याएँ हों।
नवकारिका–(सं.वि.) नवविवाहिता स्त्री, वह स्त्री जिसका रजोधर्म हाल में हुआ हो।
नवकालिका–(सं. स्त्री.) युवती स्त्री।
नवकुमारी–(सं. स्त्री.) नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमें कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चण्डिका, शाम्भवी, दुर्गा और सुभद्रा की कल्पना की जाती है।
नवचक्रांग–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
नवच्छत्र–(सं. पुं.) नवीन विद्यार्थी।
नवग्रह–(सं. पुं.) रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु–ये नवग्रह कहलाते हैं।
नवछिद्र–(सं. पुं.) शरीर के नौ छिद्र या द्वार।
नवज–(सं. वि.) जो अभी उत्पन्न हुआ हो।
नवड़ा–(हिं. पुं.) भरसे का शाक।
नवतंतु–(सं. पुं.) नया सूत, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
नवत–(सं. पुं.) हाथी की झूल, रेशमी वस्त्र, कम्बल।
नवतन–(हिं. वि.) नवीन, नया।
नवता–(हिं.पुं.) ढालुआँ भूमि; (सं.स्त्री.) नवीनता, नयापन।
नवतिका–(सं. स्त्री.) चित्रकार की रंग भरने की कूँची।
नवदल–(सं. पुं.) नया पत्ता।
नवदीधिति–(सं. पुं.) मंगल ग्रह।
नवदुर्गा–(सं. स्त्री.) पुराणनुसार नौ दुर्गाएँ जिनकी नवरात्र में क्रम से नौ दिन पूजा होती है, उनके नाम–शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डी, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री हैं।
नवदोला–(सं. स्त्री.) नया हिंडोला।
नवद्वार–(सं. पुं.) शरीर के नौ द्वार या छिद्र–यथा दो आँख, दो कान, नाक के दो छिद्र, मुख, गुदा, लिंग या भग।
नवद्वीप–(सं. पुं.) बंगाल के नदिया नामक नगर का प्राचीन नाम।
नवधा–(सं.अव्य.) नौ प्रकारों से, नौ बार।
नवधा अंग–(सं.पुं.) शरीर के नौ अंग–यथा दो आँख, दो कान, दो हाथ, दो पैर और एक नाक।
नवधातु–(सं.पुं.) नौ प्रकार की धातुएँ, यथा, सोना, चाँदी, लोहा, सीसा, ताँबा, राँगा, इस्पात, काँसा और कान्तिलोहा।
नवधा भक्ति–(सं. स्त्री.) नौ प्रकार की भक्ति; यथा–श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।
नवन–(हिं. पुं.) देखें 'नमन'।
नवना–(हिं. क्रि. अ.) झुकना, नम्र होना, विनीत भाव दिखलाना।
नवनि–(हिं. स्त्री.) झुकने का भाव, विनीत भाव, दीनता, नम्रता।
नवनिधि–(सं. स्त्री.) देखें 'निधि'।
नवनी, नवनीत–(सं. स्त्री., पुं.) मक्खन।
नवनीतक–(सं. पुं.) घृत, घी, गंधक।
नवनीतज–(सं. पुं.) घृत, घी।
नवनीतोद्भव–(सं.पुं.) दधि, दही, घृत, घी।

नवपद–(सं. पुं.) मात्रावृत्त का एक प्रकार का छन्द ।
नवपदी–(सं.स्त्री.) चौपाई नामक छन्द ।
नवपाठक–(सं. पुं.) नया शिक्षक ।
नवप्राशन–(सं. पुं.) नया अन्न या फल खाना ।
नवफलिका–(सं. स्त्री.) नवयौवना, वह स्त्री जो पहले-पहल रजस्वला हुई हो ।
नवन–(सं. वि.) जो गिनती में नौ के स्थान पर हो, नवाँ ।
नवमल्लिका–(सं. स्त्री.) चमेली या नेवारी का फूल ।
नवमालिका, नवमालिनी–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम ।
नवमी–(सं. स्त्री.) चान्द्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि ।
नवयज्ञ–(सं. पुं.) नये अन्न के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ ।
नवयुवक, नवयुवा–(सं. पुं.) तरुण, नौजवान ।
नवयौवन–(सं.पुं.) तरुण अवस्था, जवानी ।
नवयौवना–(सं.स्त्री.) युवती, तरुण स्त्री ।
नवरंग–(हिं. वि.) रूपवान्, सुन्दर, नई शोभा से युक्त, नये ढंग का ।
नवरंगी–(हि. वि.) प्रतिदिन नया आनन्द लेनेवाला, हँसमुख, रँगीला; (स्त्री.) देखें 'नारंगी' ।
नवरत्न–(सं. पुं.) नव प्रकार के रत्न जिनके नाम–मोती, पन्ना, मानिक, गोमेदक, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम है; राजा विक्रमादित्य की कल्पित सभा के नव पण्डित जिनके नाम—क्षपणक, धन्वन्तरि, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि है, एक प्रकार का गले में पहिनने का हार जिसमें नौ रत्न जड़े होते हैं ।
नवरस–(सं. पुं.) साहित्य-शास्त्र के प्रधान नौ रस, यथा–शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त; (इन नौ रसों के स्थायी भाव क्रम से—रति, हास (हँसी), शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और शान्ति है ।)
नवरात्र–(सं. पुं.) आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें दुर्गा का घट-स्थापन, पूजन आदि होता है; चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त भी उपर्युक्त प्रकार का पूजन होता है ।
नवल–(सं. पुं.) नव्य, नूतन, नवीन, नया, सुन्दर, शुद्ध, उज्ज्वल ।
नवल अनंगा–(सं.स्त्री.) केशव के अनुसार मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक ।
नवलकिशोर–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण ।
नवलक्षण–(सं. पुं.) वेदान्त के अनुसार ब्रह्म को प्रमाणित करने के नौ लक्षण; यथा–विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, इनका उपादान, गोचर, अपरोक्ष ज्ञान, चिकीर्षा और कृत्रिमत्व हैं ।
नवलता–(हिं. स्त्री.) नयापन, नई बेल ।
नवलवधू–(सं. स्त्री.) केशव के अनुसार मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक ।
नवला–(सं. स्त्री.) तरुणी स्त्री ।
नववधू–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका विवाह हाल में हुआ हो, दुलहिन ।
नववध्वागमन–(सं. पुं.) व्याही हुई स्त्री का पहले-पहल स्वामी के घर आना ।
नववरिका–(सं. स्त्री.) नवोढ़ा, नई व्याही हुई स्त्री ।
नववर्ष–(सं. पुं.) नया वर्ष, नई वर्षा ।
नववल्लभ–(सं. पुं.) एक प्रकार का सुगन्धित अगर ।
नववस्त्र–(सं. पुं.) नया वस्त्र ।
नवविष–(सं. पुं.) नौ प्रकार के विष जिनके नाम–वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रक, शृंगक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र हैं ।
नवशक्ति–(सं.स्त्री.) नौ शक्तियाँ जिनके नाम–प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नन्दिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा हैं ।
नवशस्य–(सं. पुं.) नया अन्न ।
नवशिक्षित–(सं. वि.) जिसने कुछ काल पूर्व पढ़ा या सीखा है, नौसिखुआ, आधुनिक रीति से शिक्षा प्राप्त किया हुआ ।
नवशोभ–(सं. पुं.) युवक, तरुण, नई शोभावाला ।
नवसंगम–(सं. पुं.) पति से पत्नी की पहली भेंट ।
नवसत–(हि. पुं.) देखें 'नवसप्त' ।
नवसप्त–(सं. पुं.) नौ और सात अर्थात् सोलह शृंगार ।
नवसर–(हि.पुं.) नौ लड़ों का हार ।
नवससि–(हि. पुं.) द्वितीया का चन्द्रमा, नया चाँद ।
नवसिखा–(हि. पुं.) नव शिक्षित, नौसिखुआ ।
नवसू, नवसूतिका–(सं. स्त्री.) नई प्रसूता गाय या स्त्री ।
नवाँ–(हिं. वि.) आठवें के बाद तथा दसवें के पहिले का, नौवाँ ।
नवांगा–(सं. स्त्री.) काकड़ासिंगी ।
नवांश–(सं.पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार मेषादि बारह लग्नों का नवाँ भाग ।
नवाई–(हि. स्त्री.) विनीत होने का भाव ।
नवागत–(सं. वि.) जो अभी आया हो, नया आया हुआ ।
नवाजना–(हि. क्रि. अ.) दया दिखलाना ।
नवाड़ा–(हि. पुं.) एक प्रकार की नाव ।
नवाना–(हि. क्रि. स.) विनीत करना, झुकाना ।
नवान्न–(सं. पुं.) नया अन्न, एक श्राद्ध जो नया अन्न तैयार होने पर पितरों के उद्देश्य से किया जाता है ।
नवाब–(अ. पुं.) मुगल सम्राटों द्वारा नियुक्त किये गये प्रान्तीय प्रशासक या शासक, छोटे-मोटे राज्यों के मुसलमान शासक, एक उपाधि, वैभव और ऐश्वर्य के बीच रहनेवाला धनवान् व्यक्ति ।
नवाबी–(हिं. स्त्री.) नवाब का पद, मर्यादा, काम, जीवन आदि, नवाब का शासन या सत्ता, वैभवपूर्ण अमीरी; (मुहा.)–करना–बहुत शान-शौकत के बीच रहना ।
नवाभ्युत्थान–(सं. पुं.) विद्या तथा कला-कौशल में होनेवाला नवीन विकास ।
नवार–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की बड़ी नाव ।
नवारी–(हि. स्त्री.) देखें 'नेवारी' ।
नवासा–(हि. पुं.) नाती ।
नवासिका–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त ।
नवासी–(हि. वि.) अस्सी और नौ की संख्या का; (पुं.) अस्सी और नौ की संख्या, ८९ ।
नवाह–(सं. पुं.) नौ दिन, किसी सप्ताह, पक्ष, मास या वर्ष का नया दिन, नौ दिनों में समाप्त होनेवाला यज्ञ अथवा रामायण आदि का पाठ ।
नवि–(हि. स्त्री.) गाय को दूहते समय बछड़े का गला बाँधने की रस्सी जो गाय के पैर से बाँध दी जाती है ।
नविका–(सं. स्त्री.) जिसमें नौ शब्द हों ।
नवीन–(सं. वि.) नूतन, नया, विचित्र, अपूर्व, विलक्षण, तरुण, नवयुवक ।
नवीनता–(हि. स्त्री.) नयापन ।
नवीभाव–(सं. पुं.) नया होने का भाव या क्रिया ।
नवेद–(हि. पुं.) निमन्त्रण, न्योता ।
नवेला–(हि. वि.) नवीन, नया, तरुण ।

नवेली–(हिं. वि. स्त्री.) तरुणी, युवती ।
नवोढा–(सं. स्त्री.) नव विवाहिता स्त्री, नवयौवना वधू, साहित्य में वह मुग्धा नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो ।
नवोदक–(सं. पुं.) नूतन जल, नया पानी ।
नवोद्धृत–(सं. वि.) तुरत निकाला हुआ; (पुं.) नवनीत, मक्खन ।
नव्य–(सं. वि.) नूतन, नवीन, नया, स्तुति करने योग्य ।
नव्वाव–(अ. पुं.) देखें 'नवाव' ।
नव्वावी–(अ. स्त्री.) देखें 'नवावी' ।
नशन–(सं.पुं.) नाश, नष्ट होना ।
नशना–(हिं. क्रि. अ.) नाश होना ।
नशा–(हिं. पुं.) मादकता; भाँग, अफीम, शराव आदि मादक द्रव्य, नशीली वस्तु, मद, गर्व; **–खोर**–(पुं.) किसी मादक वस्तु का सदा सेवन करनेवाला; **नशे वाज**–(वि.) नशाखोर; (मुहा.) **–उतरना**–मादकता दूर होना, गर्व या अहंकार मिटना; **–किरकिरा होना**–नशे के मजे में विघ्न पड़ना; **–चढ़ना**–नशा होना; **–छाना**–देखें 'नशा चढ़ना'; **–टूटना**–देखें 'नशा उतरना' ।
नशाना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना ।
नशावन–(हिं. वि.) नष्ट करनेवाला ।
नशीन–(फा. वि.) विराजमान, वैठनवाला ।
नशीनी–(फा. स्त्री.) वैठने की क्रिया या भाव ।
नशीला–(फा. वि.) नशा उत्पन्न करनेवाला, मादक, मदपूर्ण ।
नशेड़ी–(हिं. वि.) नशेवाज ।
नशोहर–(हिं. वि.) नाश करनेवाला ।
नश्तर–(फा. पुं.) छुरे जैसा तेज छोटा चाकू ।
नश्वर–(सं. वि.) नष्ट होनेवाला, जो नष्ट हो जाय; **–ता**–(स्त्री.) नाश ।
नष–(हिं. पुं.) देखें 'नख' ।
नषत–(हिं.पुं.) देखें 'नक्षत्र' ।
नष्ट–(सं. वि.) जो अदृश्य हो, जो दिखाई न पड़े, अधम, नीच, पामर, जिसका प्रभाव दूर हो चुका हो, जो भाग गया हो, निष्फल, व्यर्थ, जिसका नाश हो गया हो; (पुं.) नाश; **–चंद्र**–(पुं.) भादों महीने के दोनों पक्षों की (अव केवल शुक्ल पक्ष की) चतुर्थी को उगनेवाला चन्द्रमा जिसका दर्शन पुराण के अनुसार निषिद्ध माना जाता है; **–चित्त**–(वि.) उन्मत्त, मतवाला; **–चेतन**–(वि.) अचेत; **–चेष्ट**–(वि.) जिसमें हिलने-डोलने की शक्ति न रह गई हो; **–चेष्टता**–(स्त्री.) मूर्च्छा, प्रलय; **–जन्मा**–(पुं.) वर्णसंकर, दोगला; **–ता**–(स्त्री.) नाश, दुराचारिता; **–दृष्टि**–(वि.) दृष्टिहीन, अंधा; **–प्रभ**–(वि.) कान्तिरहित, तेजहीन; **–बुद्धि**–(वि.) बुद्धिहीन, मूढ़, मूर्ख; **–भ्रष्ट**–(वि.) जो बिलकुल नष्ट हो गया है अथवा चौपट हो गया हो; **–मार्गण**–(पुं.) खोई हुई वस्तु खोजना; **–रूप**–(वि.) मृत, मरा हुआ; **–रूपा**–(स्त्री.) अनुष्टुप् छन्द का एक भेद; **–विष**–(वि.) वह विषैला जन्तु जिसका विष नष्ट हो गया हो; **–बीज**–(पुं.) वह अन्न जो बोने पर न जमे; **–वेदन**–(पुं.) खोई हुई वस्तु की खोज; **–शुक्र**–(वि.) जिसका वीर्य नष्ट हो गया हो ।
नष्टा–(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा, वेश्या ।
नष्टाग्नि–(सं. पुं.) वह अग्निहोत्री जिसकी यज्ञाग्नि बुझ गई हो ।
नष्टात्मा–(सं. वि.) दुष्ट, खल ।
नष्टार्थ–(सं. वि.) निर्धन, दरिद्र ।
नष्टाशंक–(सं. वि.) निर्भय, निडर ।
नष्टासु–(सं. वि.) मृत, मरा हुआ ।
नष्टेंदुकला–(सं. स्त्री.) वह अमावस्या जिस दिन चन्द्रमा बिलकुल दिखाई न पड़ ।
नसंक–(हिं. वि.) निःशंक, निर्भय ।
नस–(हिं.स्त्री.) पुरुष की मूत्रेन्द्रिय, लिंग, शरीर के भीतर के तन्तुओं का वह लच्छा जो पेशियों के छोर पर रहता है और उन पेशियों अथवा हड्डी आदि को वाँध रहता है, रक्तवाहिनी नली, पत्ते के वीच का तन्तु; (मुहा.) **–फड़क उठना**–अति प्रफुल्ल होना, रोमांचित होना; **–नस में**–संपूर्ण शरीर में; **–पर नस चढ़ना**–शरीर के किसी स्थान की नस का विचलित होना ।
नसकटा–(हिं. पुं.) नपुंसक, हिजड़ा ।
नसतरंग–(हिं. पुं.) शहनाई के आकार का पीतल का वना हुआ एक प्रकार का वाजा जिसका मुँह गले की घंटी के पास रखकर गले से स्वर भरकर वजाया जाता है ।
नसना–(हिं.क्रि.अ.) नष्ट होना, भाग जाना ।
नसफाड़–(हिं. पुं.) हाथी का पैर फूलने का एक रोग ।
नसवार–(हिं. स्त्री.) तमाखू के सूखे पत्ते जिसका चूर्ण पीसकर सूँघा जाता है, नस्य, सुँघनी ।
नसहा–(हिं. वि.) जिसमें नस हों ।
नसा–(सं. स्त्री.) नासिका, नाक ।
नसाना, नसावना–(हिं.क्रि.अ.) नष्ट होना, विगड़ जाना ।
नसी–(हिं. स्त्री.) हल के फार का अगला भाग ।
नसीनी–(हिं. स्त्री.) निसेनी, सीढ़ी ।
नसीपूजा–(हिं. पुं.) वोआई हो जाने पर हल की की जानेवाली पूजा ।
नसीव–(अ. पुं.) किस्मत, भाग्य, दैव, अदृष्ट; (मुहा.) **–होना**–मिलना या प्राप्त होना; **–वर**–(वि.) भाग्यवान ।
नसीवा–(हिं. पुं.) नसीव ।
नसीला–(हिं.वि.) जिसमें नस हो, नशीला ।
नसीहत–(अ.स्त्री.) उपदेश, शिक्षा, सीख ।
नसीहा–(हिं.पुं.) वह हल जो कोमल मिट्टी जोतने में व्यवहार किया जाता है ।
नसूढ़िया–(हिं. वि.) जिसके दर्शन मात्र से हानि या दोष हो ।
नसूर–(हिं. पु.) देखें 'नासूर' ।
नसेनी–(हिं. स्त्री.) सीढ़ी ।
नस्त–(सं.पुं.) नासिका, नास, एक प्रकार की सुँघनी ।
नस्ता–(सं.स्त्री.) पशुओं के नाक का छेद ।
नस्तित–(सं.वि.) नकेल पहनाया हुआ ।
नस्ती–(हिं. स्त्री.) नाथ, नकेल ।
नस्य–(सं. पुं.) नासिका-द्वार, नाक में सुँघने का चूर्ण, नास, सुँघनी; **–दानी**–(स्त्री.) सुँघनी रखने की डिबिया ।
नस्या–(सं. स्त्री.) नासिका, नाक, नाक का छेद ।
नस्वर–(हिं. वि.) देखें 'नश्वर' ।
नह (हँ)–(हिं. पुं.) नख ।
नहछू–(हिं. पुं.) विवाह की एक रीति जिसमें वर का क्षौर किया जाता है, नहँ काटे जाते हैं तथा उसके शरीर में उवटन आदि लगाया जाता है ।
नहन–(हिं. पुं.) पुरवट खींचने की मोटी रस्सी, नार ।
नहना–(हिं. क्रि. स.) काम में लगाना, जोतना, नाँधना ।
नहर–(फा.स्त्री.) कृत्रिम जलमार्ग, कुल्या ।
नहरनी–(हिं. स्त्री.) नख काटन का यन्त्र, एक प्रकार का यन्त्र जिससे पोस्ते का ढोंढ़ चीरते हैं ।
नहरम–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मछली ।
नहरी–(हिं.वि.) नहर से सींचा जानेवाला ।
नहरुआ–(हिं. पुं.) कमर के नीचे के भाग में होनेवाला एक घाव जिसमें से डोरी की तरह का कीड़ा धीरे-धीरे निकलने लगता है ।

नहला–(हिं. पुं.) ताश का वह पत्ता जिसमें नौ बूटियाँ रहती हैं, नकाशी बनाने का करनी की तरह का एक औजार।
नहलाई–(हिं. स्त्री.) नहलाने की क्रिया या भाव, नहलाने के बदले में दिया जानेवाला धन।
नहलाना, नहवाना–(हिं. क्रि. स.) स्नान कराना।
नहसुत–(हिं. पुं.) नख का चिह्न, पलाश की तरह का एक वृक्ष।
नहाँ–(हिं. पुं.) पहिये के बीच का छिद्र, घर के आगे का आँगन।
नहान–(हिं. पुं.) नहाने की क्रिया, स्नान का पर्व।
नहाना–(हिं. क्रि. अ.) स्नान करना, संपूर्ण शरीर को पानी से धोना, बिलकुल भीग जाना; (मुहा.) **दूधों नहाना पूतों फलना**–धनधान्य की वृद्धि होना।
नहानी–(हिं. स्त्री.) स्त्री का रजस्वला होना।
नहार–(हिं. वि.) जो आहार न खाया हो।
नहारी–(हिं. स्त्री.) जलपान।
नहिं–(हिं. अव्य.) कभी नहीं।
नहिअन, नहियाँ–(हिं. पुं.) स्त्रियों का पैर की अँगुलियों में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
नहिरनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'नहरनी'।
नहीं–(हिं. अव्य.) निषेध या अस्वीकृति-सूचक अव्यय; **–तो**–(अव्य.) अन्यथा इसके न होने पर; **–सही**–(अव्य.) कुछ चिन्ता नहीं।
नहुष–(सं. पुं.) विष्णु, एक नाग का नाम, चन्द्र-वंश के एक राजा का नाम जो अम्बरीप के पुत्र और ययाति के पिता थे।
नहूर–(हिं. स्त्री.) तिब्बत में पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड़।
नांउ–(हिं. पुं.) देखें 'नाम'।
नांगा–(हिं. वि.) देखें 'नंगा'; (पुं.) एक प्रकार के साधु जो सर्वदा नंगे रहते हैं।
नांघना–(हिं. क्रि. स.) उछलकर किसी वस्तु के पार जाना, लाँघना।
नांठना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट होना।
नांद–(हिं. स्त्री.) चौड़े मुँह का मिट्टी का बड़ा पात्र जिसमें पशुओं को खाने के लिये चारा दिया जाता है।
नांदना–(हिं. क्रि. अ.) शब्द करना, आनन्दित होना, छींकना, दीपक का बुतने के पहिले भभकना।
नांह–(हिं. पुं.) नाथ, स्वामी, मालिक।
ना–(सं. अव्य.) अस्वीकृति या निषेध-सूचक शब्द, न, नहीं।
नाइक–(हिं. पुं.) देखें 'नायक'।
नाइन–(हिं. स्त्री.) नाई जाति की स्त्री, नाउन।
नाइब–(हिं. वि., पुं.) देखें 'नायब'।
नाई–(हिं. अव्य.) समान दशा या स्थिति में; (वि.) तुल्य, सदृश, समान।
नाई–(हिं. पुं.) नापित, नाऊ।
नाउँ–(हिं. पुं.) देखें 'नाम'।
नाउ–(हिं. पुं.) देखें 'नाव'।
नाउत–(हिं. पुं.) भूत-प्रेत झाड़नेवाला, ओझा।
नाउन–(हिं. स्त्री.) देखें 'नाइन'।
ना-उम्मेद–(फा. वि.) निराश, हताश।
ना-उम्मेदी–(फा. स्त्री.) निराशा।
नाऊ–(हिं. पुं.) नाई, नापित।
नाक–(सं. पुं.) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, किसी अस्त्र का आघात या चोट; (हिं. पुं.) नास, नासिका, नाक से निकलनेवाला मल, लकड़ी का डंडा जिस पर चढ़ाकर पात्र खरादा जाता है, चरखा घुमाने की मूठ, शोभा की वस्तु, मान, प्रतिष्ठा, मगर की जाति का एक जन्तु; **–घिसनी**–(स्त्री.) गिड़गिड़ाकर विनती करना; (मुहा.) **–कट जाना**–मान में बट्टा लगना; **–कान काटना**–कठोर दण्ड देना; **–का बाल**–घनिष्ठ मित्र; **–चढ़ाना**–क्रुद्ध होना, रोष होना; **–भौं सिकोड़ना**–अप्रसन्नता दिखलाना; **–में दम करना**–बहुत कष्ट देना; **–रख लेना**–मान-मर्यादा की रक्षा करना; **–रगड़ना**–गिड़गिड़ाते हुए विनती करना; **–सिकोड़ना**–घृणा दिखलाना; **नाकों आना**–व्यग्र होना; **नाकों चने चबवाना**–बहुत हैरान करना; **–चर**–(पुं.) आकाश में भ्रमण करनेवाला; **–नटी**–(स्त्री.) स्वर्ग की अप्सरा; **–नायक, –पाल**–(पुं.) इन्द्र, देवता; **–पृष्ठ–लोक**–(पुं.) स्वर्ग; **–वनिता**–(स्त्री.) स्वर्गीय अप्सरा; **–वास**–(पुं.) स्वर्ग में निवास; **–वेधक**–(पुं.) देवाधिप, इंद्र; **–सद्**–(पुं.) स्वर्गवासी, देवता।
नाकड़ा–(हिं. पुं.) नाक का एक रोग।
नाकदर–(फा. वि.) जो कदर करना न जानता हो।
नाका–(हिं. पुं.) प्रवेश-द्वार; मुहल्ला, सड़क, गली आदि का आरंभ-स्थान, नगर अथवा गढ़ का फाटक, ताने का धागा बांधने का जुलाहे का एक उपकरण, सूई का छेद, मगर की जाति का एक जन्तु, वह प्रधान स्थान जहाँ निरीक्षण करने के लिये अथवा कर लेने के लिये सिपाही नियुक्त रहते हैं; (मुहा.) **–छेंकना**–आने-जाने का मार्ग रोकना।
नाकापगा–(सं. स्त्री.) स्वर्ग की नदी, मन्दाकिनी।
नाकाबंदी–(हिं. स्त्री.) आने-जाने के मार्ग का छेंका जाना, प्रवेश-द्वार पर नियुक्त सिपाही या पहरेदार।
नाकाम–(फा. वि.) जो काम के अयोग्य हो।
नाकिस–(अ. वि.) बुरा, खराब।
नाकी–(सं. पुं.) देवता।
नाकु–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, पर्वत, पहाड़, भीटा, टीला, दीमक का बनाया हुआ मिट्टी का टीला।
नाकुल–(सं. पुं.) मार्ग, रास्ता, सेमर का मूसल; (वि.) नकुल नामक पाण्डव का बनाया हुआ।
नाकुली–(सं. स्त्री.) सर्पगन्धा नामक जड़ी सफेद भटकटैया।
नाकेदार–(हिं. पुं.) फाटक पर रहनेवाला सिपाही, वह प्रधान कर्मचारी जो नाके पर कर आदि लेने के लिये नियुक्त रहता है; (वि.) जिसमें नाका या छेद हो।
नाकेबंदी–(हिं. स्त्री.) देखें 'नाकाबंदी'।
नाकेश, नाकेश्वर–(सं. पुं.) स्वर्ग के अधिपति इन्द्र।
नाकौकस्–(सं. पुं.) स्वर्गवासी, देवता।
नाक्षत्र–(सं. वि.) नक्षत्र-संबंधी।
नाक्षत्र–(सं. वि.) नक्षत्र का, नक्षत्र-संबंधी; (पुं.) चांद्र मास; **–दिन**–(पुं.) नाक्षत्र मास का एक दिन; **–मास**–(पुं.) नाक्षत्रिक गति के अनुसार या चंद्रमा के परिक्रमणानुसार ज्योतिषीय महीना।
नाक्षत्रिक–(सं. वि.) नक्षत्र-संबंधी।
नाखना–(हिं. क्रि. स.) बिगाड़ना, नाश करना, उल्लंघन करना, गिराना।
नाखुशी–(फा. स्त्री.) अप्रसन्नता।
नाखून–(फा. पुं.) उँगली के सिरे पर का कठिन और कड़ा आवरण।
नाखूना–(फा. पुं.) एक प्रकार का नेत्ररोग।
नाग–(सं. पुं.) सीसा, रांगा, सर्प, हाथी, मेघ, नागकेसर, मोथा, शरीर की एक वायु का नाम, कश्यप की सन्तान, पूर्वी हिमालय के पास के एक देश का नाम, इस देश में रहनेवाली एक जाति, पुन्नाग, आठ की संख्या, क्रूर मनुष्य, ज्योतिष में एक करण का नाम;

–कन्या–(स्त्री.)नाग जाति की अति सुन्दर कन्या; –कर्ण–(पुं.) पलास का वृक्ष, हाथी का कान; –किंजल्क–(पुं.) नागकेशर;–कुमारिका–(स्त्री.)गुरुच, मजीठ;–केशर–(पुं.)एक वृक्ष जिसके सूखे फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं; –गति–(स्त्री.) ग्रहों की एक विशिष्ट गति का नाम; –गर्भ–(पुं.) –चंपा–(हिं. पुं.) नागकेशर का फूल; –चूड़–(पुं.) शिव, महादेव; –जंबू–(स्त्री.) एक प्रकार का जामुन; –ज–(वि.) जो सर्प या हाथी से उत्पन्न हो; (पुं.) सिंदूर, राँगा; –जिह्वा–(स्त्री.) अनन्तमूल; –जिह्विका–(स्त्री.) मनःशिल, मैनसिल; –जीवन–(पुं.)शोधित राँगा; –झाग–(हि. पुं.) अहिफेन, अफीम; –तुंबी–(स्त्री.)छोटा कड़ुआ कद्दू; –दंत,–दंतक–(पुं.)हाथीदाँत, भीत में लगाने की खूँटी; –दंती–(स्त्री.) श्वेतपुष्पा नामक औषधि; –दमन–(पुं.) नागदौने का पौधा; –दमनी–(स्त्री.) नागदमन; –दला–(स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है;–दा–(स्त्री.) हरीतकी,हर्रे;–दुमा–(हिं.वि.) (हाथी) जिसकी पूँछ का छोर सर्प के फन के आकार का हो; –दौन,–दौना–(हिं. पुं.)एक प्रकार का कँटीला दौना जिसके पौधे लंब होते ह, (इसकी पत्तियों को कागज या कपड़ों के बीच में रखने से इनमें कीड़े नहीं लगते); –द्रुम–(पुं.) सेंहुड़, नागफनी; –धर–(पुं.) शिव, महादेव;–ध्वनि–(स्त्री.) एक संकर रागिनी का नाम; –नक्षत्र–(पुं.) अश्लेषा नक्षत्र;–नग–(हि.पुं.)गजमुक्ता; –नामा–(स्त्री.) सफेद या काली तुलसी; –नायक–(पुं.) नागों का अधिपति, अनन्त, वासुकि आदि; –नासा–(स्त्री.) हाथी की सूँड़; –पंचमी–(स्त्री.)श्रावण शुक्ला पंचमी जिस दिन हिन्दू लोग नाग की पूजा करते हैं; –पति–(पुं.) नागों का अधिपति वासुकि,हाथियों का अधिपति ऐरावत; –पत्र–(पुं.)पान का पत्ता; –पत्री–(स्त्री.) लक्ष्मणा नामक जड़ी;–पद–(पुं.) विभिन्न प्रकार के रतिबन्धों में से एक, हाथी का पैर;–पर्णी–(स्त्री.) नागवल्ली, पान; –पाश–(पुं.) वरुण के एक अस्त्र का नाम जिससे वे शत्रु की जाँघ को बाँध लेते थे;–पुष्प–(पुं.) नागकेशर, चम्पक, चंपा; –पुष्पक–(पुं.) कपित्थ, कैथ का पेड़, पीली जूही, कूष्माण्ड; –पुष्पा–(स्त्री.) नागदौना, मनःशिल, मैनसिल; –पुष्पी–(स्त्री.) जूही, मेढ़ासींगी; –फनी–(हिं.स्त्री.) सिंगे की तरह का एक बाजा,थूहर की जाति का एक पौधा जिसके मोटे दल काँटों से भरे होते हैं, कान मे पहिनने का एक गहना;–फल–(पुं.) पटोल, परवल; –फाँस–(हिं. पुं.)देखें 'नागपाश'; –फेन–(हि.पुं.) अहिफेन, अफीम; –बंधु–(पुं.) पीपल, गूलर का वृक्ष; –बधू–(स्त्री.)नागों की स्त्री; –बल–(पुं.) भीम का एक नाम, हाथी के समान बल; –बला–(स्त्री.) गँगेरन नामक औषधि;–बेल–(हिं.स्त्री.)नागवल्ली,पान की लता; –भगिनी–(स्त्री.) वासुकि की बहिन जरत्कारु; –भूषण–(पुं.) शिव, महादेव;–मंडलिक–(पुं.) नाग पकड़ने या रखनेवाला, सँपेरा; –मती–(स्त्री.) काली तुलसी; –मरोड़–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति;–मल्ल–(पुं.) ऐरावत हाथी;–माता–(स्त्री.) नागों की माता कद्रू, मैनसिल;–मार–(पुं.) काला भँगरा; (वि.) सर्पमारक; –मुख–(पुं.)गणेश; –यष्टि–(स्त्री.) तालाब के बीचोबीच खड़ा किया हुआ खम्भा; –रंग–(पुं.) नारङ्गी का वृक्ष, एक प्रकार का झूला; रक्त–(पुं.)सर्प या हाथी का रक्त, सिन्दूर; –राज–(पुं.)शेषनाग, ऐरावत, पिंगल; नाराचछन्द का दूसरानाम; –राह्व–(पुं.) शुंठी, सोंठ; –लता–(स्त्री.)पान की लता; –लोक–(पुं.)पाताल; –वंश–(पुं.) शक जाति की एक शाखा; –वल्लरी,–वल्लिका–(स्त्री.)पान की लता; –वारिक–(पुं.) हस्तिपालक, महावत, गरुड़, मयूर, मोर; –वास–(पुं.)नाग-गण के रहने का स्थान; –वीट–(वि.)लम्पट, धूर्त; –वृक्ष–(पुं.) नागकेशर का पेड़; –शुंडी–(स्त्री.) एक प्रकार की ककड़ी; –हनु–(पुं.) नख नामक सुगन्ध-द्रव्य।

नागर–(सं. वि.) नगर का, नगर संबंधी, चतुर, चालाक; (पुं.) नगरवासी, पौर, सभ्य व्यक्ति, देवर, सोंठ, नारंगी, नागरी लिपि के अक्षर; –वन–(पुं.) नागरमोथा; –मोथा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का तृण।

नागरिक–(सं. वि.) नगर में रहनेवाला, नगर-संबंधी,चतुर, सभ्य; (पुं.) नगर-निवासी–ता–(स्त्री.)नागरिकअधिकार तथा कर्तव्य, नागरिक होने का भाव।

नागरी–(सं. स्त्री.) थूहर का पेड़, चतुर स्त्री, नागर ब्राह्मण की स्त्री, भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी लिखी जाती है, देवनागरी, पत्थर की मोटाई की एक नाप, पत्थर की बहुत मोटी पटियां; (वि. स्त्री.) नगर में उत्पन्न होनेवाली।

नागरीट–(सं. वि., पुं.) लम्पट, व्यभिचारी,दोगला।

नागरुक–(सं.पुं.) नागरंग, नारंगी।

नागरेयक–(सं. वि.) नगर-सम्बन्धी, नगर का।

नागर्य–(सं. पुं.) जुए की रस्सी जिससे बैल का कन्धा बाँधा जाता है।

नागांगना–(सं. स्त्री.) नाग की स्त्री।

नागांजना–(सं. स्त्री.) हस्तिनी, हथिनी

नागांतक–(सं. पुं.) गरुड़, मोर, सिंह।

नागा–(हि.पुं.)शैव सम्प्रदाय के वे साधु जो वस्त्र धारण नहीं करते, और एकदम नंगे रहते हैं, आसाम के पूर्व नागा पर्वत और उसके आस-पास के देश में रहनेवाली एक जाति।

नागाख्य–(सं. पुं.) नागकेशर।

नागाधिप, नागाधिपति–(सं. पुं.) हाथी अथवा सर्प के अधिपति।

नागानन–(सं. पुं.) गजानन, गणेश।

नागार्जुन–(सं.पुं.)विदर्भ नगर के रहनेवाले एक ब्राह्मण जो बौद्धधर्म के प्रचारक थ।

नागार्जुनी–(सं. स्त्री.) दुधिया घास।

नागालाबु–(सं. पुं.) गोल कद्दू।

नागाशन–(सं.पुं.)गरुड़, मोर, सिंह, शेर।

नागिन–(हिं. स्त्री.) मादा सर्प, बैल, घोड़े आदि की पीठ पर की एक भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

नागीय–(सं. पुं.) नागकेशर।

नागुला–(हिं. पुं.) नकुल, नेवला।

नागेंद्र, नागेश्वर–(सं. पुं.) ऐरावत, शेषनाग, बड़ा हाथी, बड़ा सर्प।

नागेसर–(हिं. पुं.) देखें 'नागकेशर'।

नागेसरी–(हिं. वि.) नागकेशर के रंग का, पीला।

नागोद–(सं. पुं.) छाती पर पहिनने का लोहे का कवच।

नागोदर–(सं. पुं.) गर्भिणी के गर्भ का एक प्रकार का उपद्रव।

नागौर–(हिं. पुं.) बीकानेर राज्य के पास

का एक स्थान जो गाय-बैलों के लिये बड़ा प्रसिद्ध है; (वि.) अच्छी जाति का (बैल या बछड़ा)।

नागौरी–(हि. वि.) नागौर का (बैल, बछवा आदि); (स्त्री.) एक जाति की गाय।

नाच–(हि. पुं.) नाचने की क्रिया या भाव, अंगों की वह गति जो चित्त के उमंग के कारण उत्पन्न हो, नाट्य, खेल, क्रीड़ा, काम-धंधा; (मुहा.) **–काछना**–नाचने के लिये वस्त्र आदि पहिनकर तैयार होना; **–दिखाना**–उछल-कूद करना, हाव-भाव दिखलाना; **–नचाना**–मनचाहा काम किसी से कराना; **–कूद**–(स्त्री.) प्रयत्न, आयोजन, नाच-तमाशा, वह उद्योग जिसमें गुण, योग्यता, महत्त्व आदि का दिखावा किया जाता है, क्रोध में उछलना, डींग हाँकना; **–घर**–(पुं.) नृत्यशाला, वह स्थान जहाँ नाच-गाना आदि होता हो; **–महल**– (पुं.) नृत्यशाला, नाचघर; **–रंग**–(पुं.) आमोद-प्रमोद।

नाचना–(हि.क्रि.अ.) चित्त के उमंग से उछलना-कूदना तथा अंगों की तरह-तरह की मुद्राएँ बनाना, ताल-स्वर के अनुसार हाव-भाव दिखलाते हुए हिलना-डोलना, कूदना, नाज, या विलास चेष्टा करना, चक्कर मारना, इधर-उधर घूमना, दौड़ना-धूपना, स्थिर न रहना, क्रोध में उद्विग्न और चंचल होना, क्रोध में आकर उछलना-कूदना, काँपना, थर्राना; (मुहा.) **सिर पर नाचना**–त्रास देना, कष्ट देना।

नाचिकेत–(सं. पुं.) अग्नि, उद्दालक ऋषि के एक पुत्र का नाम।

नाज–(हि. पुं.) अन्न, अनाज, भोजन की सामग्री।

नाज–(फा.पुं.) नखरा, चोचला, हावभाव, विलाश-चेष्टा, गर्व, घमंड।

नाजनी–(फा. स्त्री.) सुन्दरी स्त्री।

नाजायज–(अ. वि.) जो जायज या उचित न हो, अनुचित।

नाजिम–(अ. वि.) प्रबंधकर्ता; (पुं.) मुसलमानी शासन-काल में सूबे या प्रान्त का प्रबंधकर्ता।

नाजिर–(अ. पुं.) निरीक्षक, देखभाल करनेवाला, कचहरी का एक कर्मचारी।

नाजिल–(अ. वि.) नीचे उतरनेवाला, गुजरनेवाला।

नाजुक–(फा. वि.) कोमल, सुकुमार, महीन, बारीक; **मिजाज**–(वि.) जो तनिक भी परेशानी या कष्ट न सह सके, तुनुक-मिजाज।

नाट–(सं. पुं.) नृत्य, नाच, एक राग का नाम जिसमें वीर रस का गान होता है, कर्नाटक के समीप एक प्राचीन देश का नाम।

नाटक–(सं. पुं.) नर्तक, नट, नाट्य द्वारा अभिनय करनेवाला, रंगशाला में नटों का हाव-भाव, वेश, वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन, वह दृश्य जिसमें स्वाँग द्वारा अभिनय दिखलाये जाते हैं, गद्य या पद्य की रचना या ग्रन्थ जिसमें पात्रों में कथोपकथन द्वारा कोई कहानी लिखी रहती है; दृश्य-काव्य, रूपक; **–शाला**–(स्त्री.) वह स्थान या घर जहाँ नाटक का अभिनय होता है।

नाटकावतार–(सं.पुं.) किसी नाटक के बीच में दूसरे नाटक का अभिनय, अन्तर्नाटक।

नाटकिया, नाटकी–(हि. पं.) नाटक करके अपनी जीविका चलानेवाला।

नाटकीय–(सं. वि.) नाटक-सम्बन्धी।

नाटना–(हि. क्रि. स.) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहना, अस्वीकार करना, इनकार करना।

नाटवसंत–(सं. पुं.) एक राग का नाम।

नाटा–(हि. वि.) छोटे डील-डौल का; (पुं.) छोटा बल।

नाटाम्र–(सं. पुं.) तरम्बुज, तरबूज।

नाटिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का दृश्य काव्य जिसमें कल्पित वृतान्त का वर्णन रहता है, इसमें केवल चार अंक होते हैं तथा स्त्री-पात्र अधिक होते हैं, एक रागिनी का नाम।

नाटित–(सं.वि.) जिसका अभिनय हुआ हो।

नाटितक–(सं. पुं.) वह जो अभिनय करता हो।

नाटेर–(सं. पुं.) नटी की सन्तान।

नाट्य–(सं. पुं.) नृत्य, गीत और वाद्य, नटों का काम, अभिनेता, अंग-चेष्टा द्वारा प्रदर्शन, अभिनय, स्वाँग; **–कार**–(पुं.) नाटक करनेवाला, नट; **–प्रिय**–(पुं.) शिव, महादेव; **–मंदिर**–(पुं.) देखें 'नाट्यशाला'; **–रासक**–(पुं.) एक प्रकार का दृश्य काव्य जिसमें केवल एक ही अंक होता है; **–शाला**–(स्त्री.) राजभवन का नाच-घर, नाटकघर; **–शास्त्र**–(पुं.) भरतमुनि का रचित एक प्राचीन ग्रन्थ; नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या।

नाट्यालंकार–(सं.पुं.) नाटक का भूषण-हेतु अथवा वह अलंकार जो नाटक की सुन्दरता को बढ़ा देता है।

नाट्योक्ति–(सं. स्त्री.) नाटक विषयक वाक्य, वे विशिष्ट संबोधन के शब्द जो नाटक में विशिष्ट पात्रों के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं, यथा–ब्राह्मण के लिये महाराज, पति के लिये आर्यपुत्र, राजा के लिये देव आदि।

नाठ–(हि.पुं.) नाश, ध्वंस, हानि, अभाव।

नाठना–(हि. क्रि. अ., स.) नष्ट करना या होना।

नाठा–(हि. पुं.) वह जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

नाड़–(हि. स्त्री.) ग्रीवा, गरदन।

नाड़ा–(हि.पुं.) सूत की मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाघरा या धोती बाँधती हैं, नीवी, देवताओं को चढ़ाने का लाल-पीला रँगा हुआ बिना बटा हुआ (कच्चा) सूत।

नाडिंधम–(सं. पुं.) स्वर्णकार, सोनार; (वि.) श्वास को जल्दी-जल्दी चलानेवाला, भयदायी, नली को फूँकनेवाला, भयंकर, नाड़ियों को हिलानेवाला, दहलानेवाला।

नाडि–(सं. स्त्री.) देखें 'नाड़ी'।

नाडिक–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का शाक, घटिका, दण्ड।

नाडिकेल–(सं. पुं.) नारिकेल, नारियल।

नाड़िया–(हि. पुं.) चिकित्सक, वैद्य।

नाड़ी–(सं. स्त्री.) नली, देहस्थित शिरा, गाँडर घास, हठ योग के अनुसार ज्ञानवाहिनी, श्वास-प्रश्वास-वाहिनी तथा शक्तिवाहिनी शिराएँ, फोड़े का छिद्र, छः क्षणों का काल मान, बन्दूक की नली; (मुहा.) **–चलना**–नाड़ी में फड़कन होना; **–छूटना**–नाड़ी की फड़कन बन्द होना, मृत्यु होना; **–देखना**–कलाई की नाड़ियों पर हाथ की अँगुलियों को रखकर इनके स्पन्दन से रोग का निदान करना; **–चक्र**– (पुं.) हठयोग के अनुसार नाभिदेश में स्थित एक अण्डाकार गाँठ जिससे निकलकर सब नाड़ियाँ शरीर में फैली हैं; **–चरण**–(पुं.) पक्षी, चिड़िया; **–जंघ**–(पुं.) काक, कौवा; **–देह**–(वि.) बहुत दुबला-पतला; (पुं.) शिव का एक द्वारपाल, भृंगी; **–मंडल**–(पुं.) विषुवत् रेखा; **–यंत्र**–(पुं.) शल्य-चिकित्सा का एक प्राचीन शस्त्र; **–वलय**–(पुं.) समय निश्चित करने का एक प्राचीन यन्त्र एक प्रकार की घड़ी; **–व्रण**–(पुं.) वह घाव जिसके भीतर ही भीतर नली की तरह

छेद हो जाय और इसमें से बराबर पीब निकला करे; **–शुद्धि**–(स्त्री.) हठयोग के अनुसार नाड़ी-शोधन की एक विधि ।
नाणक–(सं. पुं.) मुद्रा, धातु; **–परीक्षा**–(स्त्री.) धातु-परीक्षा ।
नात–(हि. पुं.) नातेदार, सम्बन्धी, सम्बन्ध, नाता ।
नातरु–(हि. अव्य.) नहीं तो ।
नाता–(हि.पुं.) ज्ञाति, सम्बन्धी, कुटुम्ब की घनिष्ठता, सम्बन्ध, लगाव ।
नातिदीर्घ–(सं.वि.) जो अधिक लंबा न हो ।
नातिन–(हि. स्त्री.) लड़की की लड़की ।
नातिशीतोष्ण–(सं. वि.) जो अधिक गरम या अधिक ठंढा न हो, गुनगुना ।
नाती–(हि. पुं.) बेटी का बेटा ।
नाते–(हि. अव्य.) सम्बन्ध से, वास्ते, लिये; **–दार**–(वि.) संबंधी ।
नाथ–(सं. पुं.) अधिपति, प्रभु, स्वामी, मालिक, पति; बैल, भैंसा आदि की नाक छेदकर उसमें बाँधी हुई रस्सी, साँप पालनेवाला मदारी; (स्त्री.) लड़ी के रूप में जोड़ने की क्रिया, नत्थी, पशुओं की नकेल नाथने की क्रिया या भाव ।
नाथता–(हि. स्त्री.) प्रभुता, स्वामित्व ।
नाथत्व–(स. पुं.) प्रभुता, प्रभुत्व ।
नाथना–(हि. क्रि.स.) बैल, भैंसा आदि की नाक छेदकर उसमे रस्सी डालना, नाक छेदना, नकेल लगाना, किसी वस्तु को छदकर उसमें तागा या रस्सी डालना, नत्थी करना, लड़ी के रूप में जोड़ना ।
नाथद्वारा–(सं. पु.) उदयपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर जहाँ वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध मन्दिर है जिसमें श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है ।
नाथविद–(सं. वि.) शरण देनेवाला ।
नाथहरि–(सं. पुं.) पशु, चौपाया ।
नाद–(सं. पुं.) शब्द, अनुस्वार के समान उच्चारित होनेवाला वर्ण, ब्रह्म-स्वरूप घोष विशेष, अर्धचन्द्र, संगीत के अनुसार वह शब्द जो नाभि के ऊर्ध्व देश से उच्चारित होकर मुख से निकलता है, वर्णो के उच्चारण का एक प्रयत्न जिसमें कण्ठ को बहुत फैलाये या सिकोड़े बिना वायु निकालना पड़ता है, एक ऋषि का नाम, संगीत ।
नादज–(सं.वि.) वह जो नाद से उत्पन्न हो ।
नादना–(सं. स्त्री.) शब्द का गुण ।
नादना–(हि. क्रि. अ., स.) शब्द करना, बजाना, चिल्लाना, गरजना, प्रसन्न होना ।
नादपुराण–(सं.पुं.) एक उपपुराण का नाम ।
नादमुद्रा–(सं. पु.) तन्त्रोक्त एक मुद्रा जिसमें दहिने हाथ की मुट्ठी को बन्द कर अँगूठा ऊपर उठा रहता है ।
नादविद्या–(सं. स्त्री.) संगीतशास्त्र ।
नादित–(सं. वि.) शब्द करता हुआ, बजता हुआ ।
नादिया–(हि. पुं.) नादी, वह सुडौल अंगवाला बैल जिसको साथ लेकर साधु भीख माँगते हैं ।
नादिर–(अ. वि.) असाधारण, अद्भुत; **–शाह**–(पुं.) फारस का एक क्रूर और पराक्रमी सुलतान जिसने १७३८ में दिल्ली पर अधिकार कर नगर में नृशंस जनवध कराया था; **–शाही**–(स्त्री.) नृशंस जनवध, निरंकुश शासन; (वि.) नादिरशाह-संबंधी, नृशंस ।
नादिहंद–(फा. वि.) न देनेवाला, जो ऋण न चुका सके ।
नादी–(हि. वि.) शब्द करनेवाला, बजनेवाला ।
नादेय–(सं. पुं.) सेंधा नमक; (वि.) नदी में होनेवाला, नदी-सम्बन्धी ।
नादेयी–(सं. स्त्री.) नारंगी, अड़हुल, नागरमोथा, रेंड़ का वृक्ष, वैजयन्ती ।
नादेहंद–(हि. वि.) जो ऋण न चुका सके, नादिहंद ।
नाधन–(हि. स्त्री.) चरखे के तकले मे तागा रोकने के लिए लगाई हुई गोल टिकिया ।
नाधना–(हि. क्रि. स.) बैल या घोड़े को रस्सी आदि से उस वस्तु में बाँधना जिसको उसे खींचकर ले जाना हो, जोतना, जोड़ना, सम्बद्ध करना, गूँथना, गुहना, आरम्भ करना, शुरू करना ।
नाधा–(हि. पुं.) वह रस्सी जिससे हल या कोल्हू की हरिस जुए से बाँधी जाती है, नारी, वह नाली जिसमें से होकर सिंचाई के लिये कुएँ का पानी बहता है ।
नानक, गुरु नानक–(पुं.) सिक्खों के धर्म-प्रवर्तक प्रसिद्ध गुरु; **–पंथ**–(हि. पुं.) नानकजी का चलाया हुआ धर्म; **–पंथी**–(हि.पुं.) गुरु नानक के धर्म का अनुयायी, सिक्ख; **–शाह**–(पुं.) गुरु नानक; **–शाही**–(वि.) गुरु नानक से संबद्ध, नानक-पंथ का अनुयायी ।
नानकीन–(हि.पुं.) एक प्रकार का मटमैले रंग का सूती कपड़ा जो पहिले चीन में बनता था ।
नानस–(हि. स्त्री.) सास की माता ।
नानसरा–(हि.पुं.) पति या पत्नी का नाना ।
नाना–(सं. अव्य.) अनेक प्रकार के, बहुत तरह के, अनेक, बहुत ।
नाना–(हि. पुं.) माता का पिता, मातामह, माँ का बाप; (क्रि.स.) नीचा करना, प्रविष्ट करना, डालना, घुसाना ।
नानात्मवादी–(सं. पुं.) सांख्य दर्शन का वह सिद्धान्त जो आत्मा की अनेकता मानता है ।
नानारूप–(सं. पु., वि.) विविध प्रकार की आकृति (वाला) ।
नानार्थ–(सं.वि.) (वह शब्द) जिसके एक से अधिक अर्थ हों ।
नानावर्ण–(सं.वि.) जिसमें कई रंग हों ।
नानाविध–(सं. वि.) अनेक प्रकार या तरह का ।
ननिहाल–(हि.पुं.) नाना-नानी के रहने का घर ।
नानी–(हि. स्त्री.) माता की माता, मातामही ।
नान्ह–(सं. वि.) छोटा, लघु, क्षुद्र, नीच; (मुहा.)**–कातना**–बहुत बारीक काम करना ।
नान्हक–(हि. पुं.) देखें 'नानक' ।
नान्हरिया–(हि. वि.) क्षुद्र. छोटा ।
नान्हा–(हि. वि.) नन्हा, छोटा ।
नाप–(हि. स्त्री.) किसी वस्तु का विस्तार जिसका निर्धारण किसी प्रचलित मानक से किया जाय, परिमाण, माप, किसी निर्दिष्ट लम्बाई को एक मानकर यह स्थिर करना कि अमुक वस्तु का विस्तार कितना है, मानदण्ड, नापना; **–जोख**–(स्त्री.) नापने या तौलने की क्रिया परिमाण या तोल जो नापकर या तौलकर स्थिर की जाय; **–तौल**–(स्त्री.) देखें 'नापजोख' ।
नापना–(हि.क्रि.स.) किसी वस्तु का विस्तार इस प्रकार नियत करना कि वह मानक विस्तार का कितना गुना है, अनुमान करना, पता लगाना, मापना; (मुहा.) **सिर नापना**–सिर काट लेना ।
नापित–(सं. पुं.) नाई, नाऊ; **–शाला**–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ क्षौरकर्म किया जाता है ।
नाफा–(फा. पुं.) कस्तूरी मृग की नाभिस्थित थैली ।
नाबदान–(फा.पुं.) गंदा पानी, मल आदि बहने की नाली ।
नाभ–(सं. स्त्री.) चन्द्रमा का प्रकाश;

(हि. स्त्री.) नाभि, ढोंढ़ी, तुंडी, शिव का एक नाम, अस्त्रों का संहार; (पं.) सूर्य-वंश के एक राजा का नाम।
नाभक–(सं.पुं.) हरीतकी, हर्रे।
नाभस–(सं.पुं.)फलित ज्योतिष का एक योग।
नाभाक–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
नाभाग–(सं. पुं.) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।
नाभादास–(पुं.) भक्तमाल के रचयिता एक प्रसिद्ध कवि।
नाभि–(सं. पुं.) चक्रमध्य, पहिये का बिचला भाग, क्षत्रिय, गोत्र, व्यक्ति, महादेव; (स्त्री.) ढोंढ़ी, तोंदी, तुण्डी, कस्तूरी;–**कंटक**–(पुं.) निकली हुई ढोंढ़ी; –**गुप्त**–(पुं.) प्रियव्रत राजा का पौत्र; –**गोलक**–(पुं.) नाभि का उमड़ा हुआ भाग;–**च्छेदन**–(पुं.) नवजात शिशु का नाल काटने की क्रिया;–**ज**–(पुं.) चतुर्मुख ब्रह्मा जिनकी उत्पत्ति विष्णु की नाभि से है;–**नाला**–(स्त्री.) नाभि में स्थित नाल;–**पाक**–(पुं.) बच्चों की ढोंढ़ी पकने का एक रोग;–**भू**–(पुं.) ब्रह्मा; –**ल**–(वि.) उमड़ी हुई नाभि-वाला;–**शोथ**–(पुं.) बालकों की नाभि सूजने का एक रोग;–**संबंध**–(पुं.)गोत्र-संबंध।
नाभिका–(सं. स्त्री.) देखें 'नाभि'।
नाभील–(सं.पुं.) स्त्रियों की कमर के नीचे का भाग, तोंदी का उमड़ा हुआ भाग।
नाभ्य–(सं. वि.) नाभि-सम्बन्धी; (पुं.) शिव, महादेव।
नाम–(सं. पुं.) वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या समूह का बोध हो,संज्ञा, प्रसिद्धि, धाक, यश, सुनाम; (मुहा.) –**उछालना**–दुर्नाम या अपयश करना; –**उठ जाना**–नाम तक हट जाना; –**कमाना**–प्रसिद्ध होना; –**करना**–नाम मात्र के लिए करना;–**का**–नामधारी,केवल नाम के लिए;–**को**–थोड़ा-सा;–**को मरना** –यश प्राप्त करने का उद्योग करना; –**चढ़ना**–नामावली में नाम का लिखा जाना;–**जगाना**–यश फैलाना;–**जपना** –नाम की यादगार बनी रहना; किसी देवता का बारंबार नाम लेना;–**डुबाना** –यश का नाश करना;–**डूबना**–अप-मानित या कलंकित करना;–**धर(रा)ना** –दुर्नाम करना;–**न लेना**–दूर रहना; –**निकल जाना**–किसी बात के लिये प्रसिद्ध या कलंकित होना; (**किसी के**) **नाम पड़ना**–किसी के भरोसे रखा जाना; (**किसी के**) **नाम पर**–किसी के निमित्त; –**पर धब्बा लगना**–अपमानित होना; (**किसी के**) **नाम पर बैठना**–किसी के भरोसे रहना;–(**किसी के**) **नाम पर मरना**–किसी के प्रेम में लिप्त होना; –**पाना**–प्रसिद्ध होना;–**बद करना**–अपयश करना;–**बाकी रहना**–मरने पर सिवाय नाम के कुछ न रह जाना;–**बिकना**–अति प्रसिद्ध होना;–**मिटना**–कीर्ति का लोप होना;–**मात्र**–बहुत अल्प परिमाण का;–**रखना**–नामकरण करना;–**रह जाना**–कीर्ति बनी रहना;–**लगाना**–अप-राधी में सम्मिलित करना, अपराधी ठह-राना; (**किसी के**) **नाम लिखना**–किसी के खाते में लिखना; (**किसी का**) **नाम लेकर**–किसी के नाम के प्रभाव पर; –**लेना**–कहना, उच्चारण करना, प्रशंसा करना; **नामोनिशान**–पता;–**से**–किसी शब्द के व्यवहार से, किसी का नाम लेने से; (**किसी के**) **नाम से काँपना**–नाम सुनते ही डर जाना;–**होना**–प्रसिद्ध होना, किसी अपराध का दोष लगना या होना; –**क**–(वि.) नाम से प्रसिद्ध, नाम धारण करनेवाला;–**करण**–(पुं.) हिन्दुओं के बारह संस्कारों में से एक संस्कार जिसमें बालक का नाम रखा जाता है, नाम रखने का कृत्य; –**कर्म**–(पुं.) नाम-करण संस्कार;–**कीर्तन**–(पुं.) ईश्वर के नाम का जप, भगवान का भजन; –**ग्राम**–(पुं.) नाम और पता;–**ग्रह, ग्राहण**–(पुं.) नाम लेकर सम्बोधन करना; –**देव**–(पुं.) ये महाराष्ट्र देश के कृष्णभक्त थे। इनकी कथा भक्तमाल में लिखी है;–**धन**–(पुं.) एक संकर राग का नाम; –**धराई**–(हि. स्त्री.) अपकीर्ति, निन्दा; –**धाम**–(हि. पुं.) पता-ठिकाना; –**धारक**–(वि.) किसी नाम को धारण करनेवाला, नाम मात्र का; –**धारी**–(हि. वि.) नामवाला, नामक; –**धेय**–(पुं.) नामकरण, नाम, संज्ञा, आख्या; –**नामिक**–(पुं.) पर-मेश्वर; –**निक्षेप**–(पुं.) नामस्मरण; –**बोला**–(हि. वि.) नाम लेनेवाला, जपनेवाला;–**मात्र**–(वि.,अव्य.)कहने भर को;–**माला**–(स्त्री.)एक प्रकार का कोष;–**मुद्रा**–(स्त्री.)अँगूठी पर खोदा हुआ नाम, नामांकित मुद्रा; –**यज्ञ**–(पुं.) वह यज्ञ जो केवल नाम के लिये किया जाता है;–**लेवा**–(हि.पुं.) नाम लेनेवाला, उत्तराधिकारी, सन्तति;–**शेष**–(वि.) मृत, मरा हुआ, जिसका केवल नाममात्र बच गया हो।
नामर्द–(फा. वि.) पुंसत्व-शक्ति से हीन, नपुंसक, क्लीव।
नामर्दी–(फा. स्त्री.) नामर्द की स्थिति या भाव।
नामांकित–(सं. वि.) जिस पर नाम लिखा हो।
नामा–(सं. वि.) नामधारी, नामवाला; (पुं.) नामदेव भक्त।
नामापराध–(सं.पुं.)भगवान के नाम लेते समय अज्ञान से हो जानेवाली दस चूक।
नामालूम–(फा.वि.)जो मालूम या विदित न हो, अविदित, अज्ञात, अपरिचित।
नामावली–(सं. स्त्री.) नामों की सूची, वह कपड़ा जिस पर चारों ओर किसी देवता का नाम छपा हो, रामनामी।
नामिक–(सं. वि.) नामवाला।
नामी–(हि. वि.) नामवाला, नामधारी, प्रसिद्ध;–**गिरामी**–(वि.)विख्यात,प्रसिद्ध।
नाम्य–(सं.वि.) झुकाने योग्य।
नायँ–(हि.पुं.) देखें 'नाम'; (अव्य.)नहीं।
नाय–(सं.पुं.)नय,नीति,युक्ति,नेता,अगुआ।
नायक–(सं. पुं.) नेता, अगुआ, श्रेष्ठ पुरुष, माला के बीच का नग, सुमिरनी, सरदार, स्वामी, सेनापति, वह प्रधान पुरुष जिसका चरित्र किसी नाटक या काव्य में वर्णित हो, संगीत-विद्या में निपुण मनुष्य, कलाकार, एक वर्ण-वृत्त का नाम, एक राग का नाम।
नायका–(हि.स्त्री.)वेश्या की माँ, कुटनी, दूती, नायिका।
नायकाधिप–(सं. पुं.) नृप, राजा।
नायकी–(सं. स्त्री.) एक राग का नाम; –**कान्हड़ा**–(पुं.) एक राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं; –**मल्लार**–(पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
नायड्–(पुं.) कोचीन के उत्तर भाग में रहनेवाली एक जाति।
नायन–(हि. स्त्री.) नापित की स्त्री।
नायब–(अ. वि.) सहायक, सहकारी, अधीनस्थ, उप।
नायबी–(अ. स्त्री.) नायब होने की स्थिति या भाव, सहायकत्व।
नायर–(हि. पुं.) बड़ी नाव; (पुं.) मलयालम की एक जाति।
नायिका–(सं. स्त्री.)दुर्गा, शक्ति, शृंगार-रस का अवलंबन करनेवाली सुन्दर स्त्री, वह स्त्री जिसके चरित्र का वर्णन किसी काव्य या नाटक में किया गया हो,स्त्री नेता।

नारंग–(सं. पुं.) नारंगी का पेड़ या फल।
नारंगी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का मीठा नीबू, संतरा; (वि.) नारंगी के रंग का।
नार–(सं. पुं.) नरसमूह, तुरत का जनमा हुआ गाय का बछवा, जल, पानी, सोंठ; (वि.) मनुष्य-संबंधी, परमात्मा-सम्बन्धी; (हि. स्त्री.) गरदन, गला, जुलाहे की ढरकी; (पुं.) नाला, मोटा रस्सा, नारा, जुआ बाँधने की रस्सी, पशुओं का समूह जो चरने के लिए जाता हो; (मुहा.)–नवाना, –नीची करना–सिर झुकाना, लज्जावश सामने न ताकना।
नारक–(सं. पुं.) नरक में रहनेवाला जीव।
नारकी–(सं. वि.) नरक-भोगी, नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला, पातकी।
नारकीट–(सं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा, वह अधम पुरुष जो दूसरे को आशा देकर निराश करता हो।
नारकेर–(सं. पुं.) नारिकेल, नारियल।
नारद–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र थे, (वे बड़े हरिभक्त और कलहप्रिय थे), विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, एक प्रजापति का नाम, एक गन्धर्व का नाम, झगड़ा लगानेवाला मनुष्य; –पुराण–(पुं.) अठारह महापुराणों में से एक जिसको महामुनि वेदव्यास ने रचा था। इसमें नाना प्रकार की धर्म कथा वर्णित या लिखित हैं, बृहन्नारदीय नामक उपपुराण का नाम; -संहिता-(स्त्री.) एक धर्मशास्त्र का नाम।
नारदा–(सं. स्त्री.) ऊख की जड़।
नारदीय–(सं. वि.) नारद-संबंधी, नारद का।
नारना–(हि. क्रि. स.) थाह लगाना, पता लगाना।
नारसिंह–(सं. पुं.) एक उपपुराण जिसमें नृसिंह के अवतार की कथा का वर्णन है, तन्त्र का नाम; (वि.) नृसिंह भगवान-सम्बन्धी।
नारसिंही–(हि. वि.) नरसिंह-संबंधी।
नारा–(सं. स्त्री.) जल, पानी; (हि. पुं.) सूत या डोरी जिससे स्त्रियाँ घाघरा बाँधती हैं, नीवी, हल के जुए में बाँधने की रस्सी, बरसाती पानी बहने का गड्ढा, नाला, छोटी नदी, लाल या पीला रँगा हुआ सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है, खेंड़ी, सामूहिक जय-घोष, चीत्कार आदि।
नाराच–(सं. पुं.) लोहे का बना हुआ बाण, दुर्दिन, ऐसा दिन जब बादल हों और अंधड़ चले, एक वर्णवृत्त का नाम जिसको तारका या महामालिनी भी कहते हैं, चौबीस मात्राओं का एक छन्द।
नाराचिका–(सं. स्त्री.) सोनारों का सोना-चाँदी तौलने का काँटा, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ-आठ अक्षर होते हैं।
नाराची–(सं. स्त्री.) रत्न तौलने का छोटा काँटा।
नाराज–(फा. वि.) क्रुद्ध, अप्रसन्न, क्षुब्ध।
नाराजगी–(फा. स्त्री.) नाराज या क्रुद्ध होने की स्थिति या भाव, अप्रसन्नता।
नारायण–(सं. पुं.) परमात्मा, विष्णु, ईश्वर, दुर्योधन की एक सेना का नाम, कृष्ण यजुर्वेद की एक उपनिषद्, एक प्राचीन अस्त्र का नाम; –प्रिय–(पुं.) शिव, महादेव, पीला चन्दन; –बलि–(पुं.) वह कर्म जो पापियों के मरने पर प्रायश्चित्त के रूप में किया जाता है।
नारायणास्त्र–(सं. पुं.) विष्णु के चार अस्त्र; यथा–शंख, चक्र, गदा और पद्म।
नारायणी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, लक्ष्मी, गंगा, सतावर, मुद्गल मुनि की स्त्री का नाम, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, श्रीकृष्ण की उस सेना का नाम जिसको उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिये दिया था।
नारायणीय–(सं. वि.) नारायण-सम्बन्धी।
नाराशंस–(सं. पुं.) पितरों को सोमपान अर्पण करने का चमचा, वेदों के वे मन्त्र जिनमें विशेष मनुष्यों की प्रशंसा की गई है, प्रशस्ति, पितर।
नाराशंसी–(सं. वि.) स्तुति-संबंधी; (स्त्री.) मनुष्यों की प्रशंसा।
नारि–(हि. स्त्री.) देखें 'नारी'।
नारिक–(सं. वि.) जल-संबंधी, आत्मा-संबंधी।
नारिकेर, नारिकेल–(सं. पुं.) नारियल।
नारिकेलोदक–(सं. पुं.) नारियल का पानी।
नारियल–(हि. पुं.) खजूर की जाति का एक वृक्ष जो खम्भे की तरह पचास-साठ गज ऊँचा होता है, (इसके फलों पर घना रेशादार छिलका होता है, फल के भीतर की सफेद गरी खाने में मीठी होती है), नारियल के गोले का बना हुआ हुक्का।
नारियली–(हि. स्त्री.) नारियल का खोपड़ा, नारियल का हुक्का, नारियल की ताड़ी।
नारी–(सं. स्त्री.) अबला, वामा, स्त्री, देखें 'नाड़ी, नाली'; –त्व–(पुं.) नारी के सद्गुण, सद्भाव आदि।
नारीच–(सं. पुं.) एक प्रकार का शाक।
नारीतरंगक–(सं. पुं.) व्यभिचारी मनुष्य, स्त्रियों के चित्त को चंचल करनेवाला मनुष्य।
नारीदूषण–(सं. पुं.) स्त्रियों के छः दूषणीय कार्य, यथा–सुरापान, दुर्जन-संसर्ग, पति-विरह, भ्रमण, अन्य गृह में वास तथा अधिक सोना।
नारीयान–(सं. पुं.) स्त्रियों की सवारी।
नारीष्ट–(सं. वि.) जो स्त्रियों को प्रिय हो; (स्त्री.) मल्लिका, चमेली।
नारीष्ठ–(सं. पुं.) एक गन्धर्व का नाम।
नारुंतुद–(सं. वि.) जिसके शरीर पर किसी प्रकार का आघात न लग सके।
नारू–(हि. पुं.) जूँ, ढील, नहरुआ नामक रोग।
नार्तिक–(सं. वि.) खूब नाचनेवाला।
नार्पत्य–(सं. वि.) नृपति या राजा संबंधी।
नार्मत–(सं. पुं.) पूर्व पुरुष के नाम से उत्पन्न।
नार्मद–(सं. पुं.) वह शिवलिंग जो नर्मदा में पाया जाता है।
नार्मर–(सं. पुं.) एक असुर का नाम जिसको इन्द्र ने मारा था।
नार्मिन्–(सं. वि.) सहज में झुकनेवाला, कोमल।
नार्यंग–(सं. पुं.) नारंगी, स्त्री का अंग।
नार्यतिक्त–(सं. पुं.) चिरायता।
नालंबी–(सं. स्त्री.) महादेव जी की वीणा का नाम।
नाल–(सं. स्त्री.) कमल-दण्ड; कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लंबी डंडी, पौधे का डंठल, (पुं.) हरताल, लिंग; जल बहन का स्थान, गर्भस्थ बालक की नाभि से मिली हुई मोटी तन्तु की बनी रक्तवाही नली, नार, वह रेशा जो कलम बनाते समय छीलने पर निकलता है, सोनारों की फुंकनी, जुलाहों की सूत लपेटने की छुच्छी, बन्दूक की नली; गेहूँ, जौ आदि की पतली लंबी डंडी जिसमें बाल लगती है, खोशा, नाली, एक प्रकार का पहाड़ी बाँस, जल में उगनेवाला एक पौधा, कसरत करने का बहुत भारी पत्थर।
नाल–(अ. पुं.) घोड़े के टाप में लगाया जानेवाला लोहे का टुकड़ा; –बंद–(पुं.) नाल बनानेवाला शिल्पी।
नालकटाई–(हि. स्त्री.) नवजात शिशु के नाल काटने की क्रिया, इस काम का शुल्क।
नालक–(सं. पुं.) उड़द।
नालकी–(हि. स्त्री.) धन्वाकार छाजन-वाली दोनों ओर से खुली पालकी जिस पर ब्याह के समय दूल्हा बैठकर

जाता है।
नालबाँस–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी बाँस।
नालवंश–(सं. पुं.) नरसल, नरकट।
नालशाक–(सं.पुं.) एक प्रकार का साग।
नाला–(हिं. पुं.) वर्षा का जल बहने का लंबा-चौड़ा गड्ढा, जलप्रणाली, जल-प्रवाह, ऐसे मार्ग से बहनेवाला जल, रंगीन गंडेदार सूत, नारा।
नालि–(सं. स्त्री.) कमल की डंडी, नाड़ी, शिरा, **–क**–(पुं.) भैंसा, कमल, एक प्राचीन शस्त्र, एक प्रकार का शाक; **–का**–(स्त्री.) छोटा डंठल, नाली, जुलाहों की सूत लपेटने की छुच्छी, एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य; **–केर**–(पुं.) नारियल; **–केरी**–(स्त्री.) एक प्रकार का शाक; **–जंघ**–(पुं.) डोमकौवा।
नालिनी–(सं. स्त्री.) नाक का छेद।
नालिश–(फा. स्त्री.) न्यायालय में किया जानेवाला दावा या अभियोग।
नाली–(सं. स्त्री.) करेमू का साग, पद्म, कमल, घटीयन्त्र, घड़ी, नाड़ी, धमनी, मनःशिल; (हिं.स्त्री.) जल बहने का पतला मार्ग, मोरी, पनाला, तलवार के बीचोबीच लंबे बल की लकीर, घोड़े की पीठ पर का गड्ढा, चौपायों को दवा पिलाने का ढरका।
नालीक–(सं. पुं.) शर, बाण, पद्म-समूह, मृणाल की डंडी।
नालीघटी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की प्राचीन घड़ी जिससे पल, दण्ड आदि का पता लग जाता था।
नालीय–(सं. पुं.) कदम्ब का वृक्ष।
नालीव्रण–(सं. पुं.) नाड़ीव्रण, नासूर।
नालुक–(सं.पुं.) एक प्रकार का गन्धद्रव्य।
नालौर–(हिं.वि.) अपनी प्रतिज्ञा को भंग करनेवाला, कहकर मुकर जानेवाला।
नावँ–(हिं. पु.) देखें 'नाम'।
नाव–(हिं. स्त्री.) जल के ऊपर तरनेवाली लोहे, लकड़ी आदि की बनी हुई सवारी, नौका, जलयान।
नावक–(हिं. पुं.) मल्लाह, माँझी, केवट।
नावघाट–(हिं. पुं.) नावों के ठहरने का घाट।
नावना–(हिं. क्रि. स.) झुकाना, नवाना, घुसाना, फेंकना, गिराना, डालना, प्रविष्ट करना।
नावमिक–(सं. वि.) नौ के स्थान पर, नवमी-संबंधी।
नावर–(हिं. पुं.) नाव, नौका, नाव को धारा में ले जाकर चक्कर देने की क्रीड़ा।
नाविक–(सं. पुं.) कर्णधार, मल्लाह, माँझी; **–विद्या**–(स्त्री.) जहाज चलाने की विद्या।
नावी–(सं. पुं.) नौका, जहाज आदि चलानेवाला, नाविक।
नावोपजीवी–(सं.पुं.) वह जो नाव आदि चलाकर अपनी जीविका चलाता है।
नाव्य–(सं. वि.) जो नाव के बिना पार नहीं किया जा सकता; (पुं.) नयापन, युवावस्था।
नाश–(सं. पुं.) ध्वंस, अदर्शन, पलायन, भाग जाना।
नाशक–(सं. वि.) ध्वंसक, नाश करनेवाला, वध करनेवाला, दूर करनेवाला, मिटा देनेवाला।
नाशकारी–(हिं. वि.) देखें 'नाशक'।
नाशन–(सं. पुं.) उच्छेदन, विलोपन।
नाशना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'नासना'।
नाशपाती–(सं. स्त्री.) एक मझोले आकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ अमरूद की पत्तियों के समान होती हैं, इसका गोल फल कुरकुरा और खट-मीठा होता है।
नाशयित्री–(सं. स्त्री.) नाश करनेवाली।
नाशवान्–(सं. वि.) नाश होनेवाला, नश्वर, अनित्य।
नाशित–(सं. वि.) नष्ट किया हुआ।
नाशी–(सं. वि.) नाश होनेवाला, नष्ट होनेवाला, नाशक, नाश करनेवाला।
नाशुक–(सं. वि.) ध्वंसशील, नाश होनेवाला।
नाश्य–(सं. वि.) नाश होने योग्य।
नास–(हिं. स्त्री.) नाक से सूँघी जानेवाली औषध, सुंघनी।
नासत्य–(सं. पुं.) अश्विनीकुमार।
नासत्या–(सं. स्त्री.) अश्विनी नक्षत्र।
नासदान–(हिं.पुं.) सुंघनी रखने की डिबिया।
नासना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना, मार डालना।
नासमझ–(हिं. वि.) जिसे समझ या बुद्धि न हो, निर्बुद्धि, बेवकूफ।
नासमझी–((हिं. स्त्री.) नासमझ होने का भाव या स्थिति, बेवकूफी।
नासांतिक–(सं. वि.) नाक तक।
नासा–(सं. स्त्री.) नासिका, नाक, नाक का छेद, नयना, अड़ूसे का पौधा, द्वार के ऊपर की लकड़ी, भरेटा।
नासाग्र–(सं.पुं.) नाक का अगला भाग।
नासाज्वर–(सं. पुं.) वह ज्वर जो नाक के भीतर फोड़ा होने से उत्पन्न होता है।
नासानाहु–(सं. पुं.) एक प्रकार का नाक का रोग।
नासापाक–(सं. पुं.) नाक का एक रोग।
नासापुट–(सं.पुं.) नाक की झिल्ली, नथना।
नासावेध–(सं. पुं.) नाक का वह छेद जिसमें नथिया पहिनी जाती है।
नासारोग–(सं.पुं.) नाक में होनेवाला रोग।
नासालु–(सं. पुं.) कायफल का वृक्ष।
नासावंश–(सं. पुं.) नाक की हड्डी।
नासाविवर–(सं. पुं.) नाक का छेद।
नासिका–(सं.स्त्री.) घ्राणेन्द्रिय, नाक, नासा।
नासिकाग्र–(सं.पुं.) नाक का अगला भाग।
नासिकामल–(सं.पुं.) नाक का मल, नटा।
नासिकाशब्द–(सं. पुं.) नाक से निकलनेवाला शब्द।
नासिक्य–(सं. पुं.) नासिका, नाक, दक्षिण का एक देश, नासिक, अश्विनीकुमार; (वि.) नाक से उत्पन्न।
नासी–(हिं. वि.) देखें 'नाशी'।
नासीर–(सं. पुं.) सेनानायक के आगे-आगे जय-घोष करते हुए चलनेवाला सैन्यदल; (वि.) आगे चलनेवाला।
नासूर–(अ. पुं.) घाव, फोड़े आदि का बहुत गहरा छेद जिसमें से बराबर मवाद बहता रहता है, नाड़ीव्रण।
नास्ति–(सं.स्त्री., अव्य.) अविद्यमानता, नहीं।
नास्तिक–(सं.वि., पुं.) (वह) जो ईश्वर का अस्तित्व नहीं मानता, पाखण्डी, परलोक को न माननेवाला; **–ता**– (स्त्री.) ईश्वर या परलोक को न मानने का अविश्वास, ईश्वर में अविश्वास।
नास्तिक्य–(सं. पुं.) देखें 'नास्तिकता'।
नास्तिता–(सं. स्त्री.) नास्तित्व, अविद्यमानता।
नास्तिद–(सं.पुं.) आम्र वृक्ष, आम का पेड़।
नास्तिवाद–(सं. पुं.) नास्तिकों का मत।
नास्य–(सं. वि.) नासिका-संबंधी; (पुं.) बैल की नाक में बँधी हुई रस्सी।
नाह–(सं. पुं.) बन्धन, किनारा; (हिं. पुं.) नाथ, नाभि, पहिये के मध्य का छिद्र।
नाहनूह–(हिं. स्त्री.) अस्वीकार, नहीं, नहीं का शब्द।
नाहर–(हिं. पुं.) सिंह, शेर, व्याघ्र, बाघ, टेसू का फूल; **–सांस**–(पुं.) घोड़े का दम फूलने का रोग।
नाहरू–(हिं. पुं.) नहरुआ नामक रोग।
नाहिन–(हिं. अव्य.) नहीं है।
नाहीं–(हिं. अव्य.) नहीं।
नाहुष–(सं. पुं.) नहुष राजा का पुत्र।
नित–(हिं. अव्य.) देखें 'नित्य'।

निंद–(हिं. वि.) निंद्य ।
निंदना–(हिं.क्रि.स.) निन्दा करना, अपमानित करना ।
निंदरना–(हिं.क्रि.स.) निन्दा करना ।
निंदक–(सं.पुं.) निंदा करनेवाला व्यक्ति ।
निंदनीय–(सं. वि.) निंदा करने योग्य ।
निंदरिया–(हिं. स्त्री.) निद्रा, नींद ।
निंदा–(सं. स्त्री.) किसी का दोष-कथन, बदनामी, कलंक, अपयश ।
निंदाई–(हिं. स्त्री.) खेत की घास, तृण आदि उखाड़ने का काम, निराने का शुल्क ।
निंदाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'निराना' ।
निंदासा–(हिं. वि.) जिसको नींद आती हो, उनींदा ।
निंदा-स्तुति–(सं. स्त्री.) निंदा और प्रशंसा, व्याज-स्तुति ।
निंदित–(सं. वि.) जिसकी निंदा की गई हो, दूषित, बदनाम ।
निंदिया–(हिं. स्त्री.) निद्रा, नींद ।
निंद्य–(सं. वि.) निंदा करने योग्य, निंदनीय ।
निंब–(सं. पुं.) नीम का पेड़ ।
निंबकौरी–(हिं. स्त्री.) नीम का फल ।
निंबार्क–(सं. पुं.) एक वैष्णव धर्म-प्रवर्तक, उनका चलाया हुआ मत ।
निंबू, निंबूक–(सं. पुं.) कागजी नीबू ।
निः–(सं. अव्य.) 'विहीन' अर्थ का एक उपसर्ग ।
निःकपट–(हिं. वि.) देखें 'निष्कपट' ।
निःकाम–(हिं. वि.) देखें 'निष्काम' ।
निःकारण–(सं. वि.) कारण-शून्य, अनिमित्त ।
निःकासन–(सं. पुं.) बहिष्कार, अपसरण ।
निःकासित–(सं. वि.) बहिष्कृत, निःसारित ।
निःक्षत्र–(सं. वि.) क्षत्रियरहित ।
निःक्षिप्त–(सं.वि.) प्रक्षिप्त, फेंका हुआ ।
निःक्षेप–(सं.पुं.) फेंकना, अर्पण, विश्वासपूर्वक अपना द्रव्य दूसरे के पास रखना ।
निःछल–(हिं. वि.) देखें 'निश्छल' ।
निःपक्ष–(सं. वि.) देखें 'निष्पक्ष' ।
निःपाप–(सं. वि.) देखें 'निष्पाप' ।
निःप्रभ–(सं. वि.) ज्योतिरहित ।
निःप्रयोजन–(सं. वि.) व्यर्थ ।
निःफल–(सं. वि.) देखें 'निष्फल' ।
[निः]शंक–(सं. वि.) शंकारहित, निर्भय, निडर ।
[illegible]–(स.वि.) शब्दरहित, जहाँ शब्द हो, जो शब्द न करता हो ।
निःशम–(सं. पुं.) निन्दा, शोक, चिन्ता ।
निःशलाक–(सं. वि.) निर्जन, सूनसान ।
निःशल्य–(सं. वि.) निष्कण्टक, विना प्रतिबन्ध का ।
निःशेष–(सं. वि.) सम्पूर्ण, समूचा, पूरा, समाप्त, जिसका कोई अंश न बच गया हो, अवशेष रहित ।
निःशेषित–(सं. वि.) जो समाप्त हो या किया जा चुका हो ।
निःशोध्य–(सं. वि.) शोधा हुआ ।
निःश्रयणी, निःश्रयिणी–(सं. स्त्री.) काठ की सीढ़ी ।
निःश्रेणी–(सं. स्त्री.) काठ की सीढ़ी, खजूर का वृक्ष ।
निःश्रेयस–(सं. पुं.) मुक्ति, मोक्ष, मंगल, कल्याण, भक्ति, शिव, महादेव ।
निःश्वास–(सं. पुं.) प्राणवायु का नाक या मुख से निकलना, नाक से निकली हुई वायु, साँस ।
निःसंकल्प–(सं. वि.) इच्छारहित ।
निःसंकोच–(सं.अव्य.) बिना संकोच के, बेधड़क ।
निःसंग–(सं. वि.) विना मेल का, जिसमें अपना कुछ अर्थ न हो, निर्लिप्त ।
निःसंज्ञ–(सं. वि.) जिसे संज्ञा न हो, संज्ञाहीन, बेहोश ।
निःसंतान–(सं.वि.) जिसके सन्तान न हो ।
निःसंदेह–(सं. वि.) जिसमें सन्देह न हो, (अव्य.) विना सन्देह के ।
निःसंधि–(सं. वि.) जिसमें सन्धि या दरार न हो, सन्धिरहित, कसा या गठा हुआ ।
निःसंपात–(सं. पुं.) रात्रि, रात; (वि.) जिसमें से आना-जाना न हो सके ।
निसंशय–(सं. वि.) जिसमें संशय न हो ।
निःसत्व(त्त्व)–(सं.वि.) जिसमें सत्त्व या सार न हो ।
निःसरण–(सं. पुं.) मृत्यु, मरण, निर्वाण, निर्गम, निकास, निकलने का मार्ग ।
निःसार–(सं. पु.) घर में से निकलने का पथ, द्वार या मार्ग ।
निःसारित–(सं.वि.) बाहर निकाला हुआ ।
निःसीम–(सं. वि.) बहुत बड़ा या अधिक, सीमारहित ।
निःसृत–(सं. वि.) निकला हुआ
निःस्नेह–(सं. वि.) रतहीन, प्रेमरहित, जिसमें चिकनाहट न हो, घृत या तैल से रहित ।
निःस्नेहा–(सं.वि.) अनुरागरहित, जिसमें प्रेम न हो ।
निःस्पंद–(सं. वि.) निश्चल, जो हिलता-डोलता न हो ।
निःस्पृह–(सं. वि.) आशाशून्य, इच्छारहित, निर्लोभ ।
निःस्यंद–(सं. पुं.) निकास, स्राव ।
निःस्रव–(सं. पुं.) निर्गमन, निकास ।
निःस्राव–(सं. पुं.) क्षरण, माड़, व्यय ।
निःस्व–(सं. वि.) घनहीन, दरिद्र, कंगाल ।
निःस्वार्थ–(सं. वि.) जो अपना मतलब न निकालता हो, वह जो अपना स्वार्थ न साधता हो ।
नि–(सं. उप.) एक उपसर्ग जो अधोभाव, समूह, आदेश, नित्यता आदि का बोधक है ।
निअर, निअरे–(हिं. अव्य.) समीप, पास, निकट ।
निअराना–(हिं.क्रि.अ.) पास या नजदीक आना, पहुँचना आदि ।
निआन–(हिं. अव्य.) अंत में; (पुं.) निदान, परिणाम ।
निकंटक–(हिं. वि.) देखें 'निष्कंटक' ।
निकंदन–(सं. पुं.) नाश, ध्वंस ।
निकंदना–(हिं. क्रि. स.) नाश करना ।
निकट–(सं. वि.) समीप का, पास का; (अव्य.) पास, सन्निकट; **–ता**–(स्त्री.) समीपता; **–पना**–(हिं. पुं.) समीपता; **–वर्ती**–(वि.) निकट का, समीप का; **–संबंधी**–(सं. वि.) निकट का संबंधी; **–स्थ**–(वि.) पास का, समीप का ।
निकटागत–(सं. वि.) जो पास या निकट आ गया हो ।
निकटागमन–(सं. पुं.) समीप में आना ।
निकती–(हिं.स्त्री.) छोटा तराजू या काँटा ।
निकम्मा–(हिं. वि.) जो कोई व्यवसाय न करता हो, जिससे कुछ काम न बने, जो किसी काम में न आ सके, व्यर्थ का ।
निकर–(सं. पुं.) समूह, झुंड, राशि, ढेर, निधि, धन ।
निकरना–(हिं. क्रि. अ.) निकलना ।
निकर्तन–(सं. पुं.) काटने की क्रिया ।
निकर्मा–(हिं. वि.) जो काम-धंधा न करता हो, आलसी ।
निकर्षण–(सं. पुं.) घर के बाहर का मैदान, समीपस्थता, पड़ोस ।
निकलंक–(हिं. वि.) निर्दोष ।
निकलंकी–(हिं. पुं.) विष्णु का दसवाँ अवतार, कल्कि अवतार ।
निकल–(अं. पुं.) एक सफेद धातु ।
निकलना–(हिं. क्रि. अ.) भीतर से बाहर आना, किसी मिली हुई वस्तु का अलग

होना, जाना, अतिक्रमण करना, पार जाना, व्यतीत होना, घोड़े आदि का सवारी लेकर चलने योग्य बनाया जाना, प्रकाशित होना, हिसाब करने पर कुछ धन देने को बाकी होना, प्राप्त होना, अलग होना, उचड़ना, हटना, मिटना, दूर होना, शरीर पर उत्पन्न होना, मुक्त होना, छूटना, नई बात आदि प्रकट होना, उत्तीर्ण होना, खुलना, पृथक् होना, उदय होना, निश्चित होना, ठहराया जाना, किसी ओर उभाड़ होना, उपस्थित होना, दिखाई पड़ना, प्रश्न का ठीक उत्तर प्राप्त होना, फैलाव होना, जारी होना, प्रचलित होना, कहकर दायित्व से भागना प्रमाणित होना, सिद्ध होना, खपना, बच जाना, बिकना, छूटना, छिड़ना, (मुहा.)**–जाना**–चला जाना, नष्ट होना ।

निकलवाना–(हिं. क्रि. स.) निकलने का काम दूसरे से कराना ।

निकष–(सं. पुं.) कसौटी, सान चढ़ाने का पत्थर ।

निकषण–(सं. पुं.) घिसने की क्रिया ।

निकषा–(सं. स्त्री.) विश्रवा की पत्नी जिसके गर्भ से रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे; (अव्य.) समीप, पास ।

निकषात्मज–(सं. पुं.) राक्षस ।

निकषोपल–(सं. पुं.) निकष, कसौटी ।

निकसना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'निकलना' ।

निकाई–(हि. पुं.) देखें 'निकाय'; (हि. स्त्री.) अच्छापन, सुन्दरता ।

निकाज–(हिं. वि.) निकम्मा, बेकाम ।

निकाम–(सं. वि.) यथेष्ट, पर्याप्त, बहुत ।

निकाम–(हिं. वि.) निकम्मा, बुरा; (अव्य.) व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।

निकाय–(सं. पुं.) समूह, झुंड, ढेर, राशि, परमात्मा, निवासस्थान, लक्ष्य ।

निकार–(सं. पुं.) अपकार, अपमान, मानहानि, अनादर, तिरस्कार, धिक्कार; (हिं. पुं.) निकालने का काम, निकास, ऊख का रस पकाने का बड़ा कड़ाहा ।

निकारण–(सं. पुं.) मारण, वध ।

निकाल–(हि. पुं.) निकास, मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।

निकालना–(हि. क्रि. स.) भीतर से बाहर करना, उपस्थित करना, निश्चित करना, ठहराना, प्रकट करना, खोलना, घटाना कम करना, दूर करना, निर्वाह करना, आविष्कार करना, सूई से बेल-बूटे बनाना, घोड़ा, बैल आदि को गाड़ी में चलने की शिक्षा देना, ढूँढ़कर पता लगाना, अपनी वस्तु दूसरे के पास ले जाना, हटाना, आरंभ करना, छोड़ना, चलाना, ले जाना, सामने लाना, अतिक्रमण करना, मिली हुई वस्तुओं को अलगाना, प्रकाशित करना, सिद्ध करना, फैलाना, संकट से छुटकारा देना, बेचना, खपाना, नौकरी से हटाना, अलग करना ।

निकाला–(हिं. पुं.) निकालने का काम, बहिष्कार, किसी स्थान से निकाले जाने का दण्ड ।

निकाश–(सं. पुं.) पास, समीप ।

निकास–(हिं. पुं.) निकलने या निकालने की क्रिया या भाव, निर्वाह की रीति, आय, ढर्रा, क्रम, द्वार, वह स्थान जिसमें से होकर कोई वस्तु निकले, खुला मैदान, मूल स्थान, संकट या कठिनाई से मुक्त होने की विधि, छुटकारे का उपाय, वंश का मूल, युक्ति ।

निकासना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'निकालना' ।

निकासपत्र–(हिं. पुं.) आय-व्यय तथा बचत के हिसाब की बही ।

निकासी–(हिं. स्त्री.) निकलने की क्रिया या भाव, बिक्री, खपत, चुंगी, रवन्ना, भरती, लदाई, प्राप्ति, आय, वह धन जो भूस्वामी के पास सरकारी कर देने पर बचे ।

निकाह–(अ. पुं.) मुसलमानी धार्मिक पद्धति के अनुसार सम्पन्न विवाह ।

निकियाना–(हिं. क्रि. स.) नोचकर धज्जी-धज्जी अलग करना, चमड़े पर से पंख या रोयाँ नोचकर अलग करना ।

निकिल्विष–(सं. पं.) पाप का अभाव ।

निकिष्ट–(हिं. वि.) देखें 'निकृष्ट' ।

निकुंच–(सं. पुं.) लकुट, बड़हर ।

निकुंचक–(सं. पुं.) एक प्राचीन परिमाण जो प्रायः आठ तोले के बराबर होता था ।

निकुंचित–(सं. वि.) संकुचित, सिकुड़ा हुआ ।

निकुंज–(सं. पुं.) लतागृह, वृक्षों अथवा लताओं से घिरा हुआ मंडप ।

निकुंभ–(सं. पुं.) कुंभकर्ण का एक पुत्र जिसको हनुमान ने मारा था, एक असुर का नाम, जमालगोटा, जल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का बेंत, शिव के एक अनुचर का नाम, कुमार कार्तिकेय का एक गण, एक विश्वदेव, प्रह्लाद के एक पुत्र का नाम, दन्ती वृक्ष ।

निकुंभित–(सं. पुं.) एक प्रकार का नाच ।

निकुंभिला–(सं. स्त्री.) लंका के पश्चिम की एक गुफा का नाम ।

निकुंभी–(सं. स्त्री.) कुंभकर्ण की कन्या ।

निकुरंब–(सं. पुं.) समुदाय, समूह, झुंड ।

निकुही–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का पक्षी ।

निकृंतन–(सं. वि.) काटनेवाला; (पुं.) छेदन, खण्डन ।

निकृत–(सं. वि.) निकाला हुआ, तिरस्कार किया हुआ, लांछित ।

निकृतन–(सं. पुं.) गन्धक ।

निकृति–(सं. स्त्री.) तिरस्कार, अपकार, शठता, नीचता ।

निकृती–(सं. वि.) दुष्ट, शठ, नीच ।

निकृत्त–(सं. वि.) जड़ से काटा हुआ ।

निकृत्या–(सं. स्त्री.) दुष्टता, नीचता ।

निकृष्ट–(सं. वि.) अधम, नीच, तुच्छ; **–ता**–(स्त्री.) अधमता, नीचता; **–त्व**–(पुं.) निकृष्टता ।

निकेत–(सं. पुं.) घर, मकान ।

निकेतन–(सं. पुं.) गृह, घर, प्याज, जल, बेंत

निकोचन–(सं. पुं.) संकुचन, सिकुड़न ।

निकोसना–(हि. क्रि. अ.) दाँत पीसना, कटकटाना ।

निकौनी–(हिं. स्त्री.) निराई का काम या शुल्क ।

निक्रमण–(सं. पुं.) स्थान ।

निक्रीड़–(सं. पुं.) कौतुक, तमाशा ।

निक्वण, निक्वाण–(सं. पुं.) बीन की झनकार, शब्द ।

निक्षण–(सं. पुं.) चुम्बन की क्रिया ।

निक्षा–(सं. स्त्री.) जूँ का अंडा, लीख ।

निक्षिप्त–(सं. वि.) त्यक्त, छोड़ा हुआ, रखा हुआ, धरोहर रखा हुआ ।

निक्षुभा–(सं. स्त्री.) सूर्य की पत्नी का नाम ।

निक्षेप–(सं. पुं.) फेंकने की क्रिया या भाव, धरोहर, थाती, पोंछने की क्रिया या भाव ।

निक्षेपक–(सं. पुं.) फेंकनेवाला, त्यागनेवाला ।

निक्षेपण–(सं. पुं.) त्यागना, फेंकना, छोड़ना, डालना, चलाना ।

निक्षेपी–(हि. वि.) फेंकनेवाला, छोड़नेवाला, धरोहर रखनेवाला ।

निक्षेप्य–(सं. वि.) छोड़ने या फेंकने योग्य ।

निखंग–(हि. पुं.) देखें 'निषंग' ।

निखंगी–(हि. वि.) देखें 'निषंगी' ।

निखंड–(हि. वि.) ठीक मध्य या बीच का, सटीक ।

निखट्टर–(हि. वि.) निष्ठुर, निर्दय, कठोर चित्त का ।

निखट्टू–(हि. वि.) जो कोई काम-काज न करता हो, बेकार, इधर-उधर घूमनेवाला, आलसी, निकम्मा ।

निखनन–(सं. पुं.) खनना, खोदना, गाड़ना ।

निखरना–(हिं. क्रि. अ.) स्वच्छ होना, निर्मल होना, धुलकर निर्मल होना ।
निखरवाना–(हि.क्रि.स.) धुलवाना, स्वच्छ कराना ।
निखरी–(हिं. स्त्री.) घी में पकाया हुआ भोजन-द्रव्य ।
निखर्व–(सं. पुं.) वामन, बौना ।
निखर्वट–(सं.पु.) रावण की सेना का एक राक्षस ।
निखवख–(हि.अव्य.) विलकुल, सव, और कुछ शेष नही ।
निखात–(सं.वि.) रखा हुआ, गाड़ा हुआ ।
निखाद–(हिं. पुं.) देखें 'निषाद' ।
निखार–(हिं. पुं.) निर्मलता, स्वच्छता, सफाई, शृंगार, सजावट ।
निखारना–(हिं. क्रि. स.) स्वच्छ करना, माँजना, पवित्र करना, पापरहित करना ।
निखारा–(हिं.पुं.) गुड़ वनाने का कड़ाहा ।
निखालिस–(हिं. वि.) विशुद्ध, जिसमें किसी अन्य वस्तु की मिलावट न हो ।
निखिल–(सं. वि.) समग्र, सम्पूर्ण, सव ।
निखुटना–(हिं. क्रि. अ.) घटना, समाप्त होना ।
निखेध–(हिं. पुं.) देखें 'निषेध' ।
निखेधना–(हिं. क्रि. स.) मना करना ।
निखोट–(हि.वि.) जिसमें कोई दोष न हो, निर्दोष, स्पष्ट, खुला हुआ, स्वच्छ; (अव्य.) विना संकोच के, वेधड़क, खुल्लमखुल्ला ।
निखोड़ा–(हिं. वि.) कठोर-हृदय, निर्दय ।
निखोड़ना–(हिं. क्रि. स.) नख से नोचना या उखाड़ना ।
निगंद–(हि. पुं.) रक्तशोधन करने की एक जड़ी ।
निगंदना–(हिं. क्रि. स.) रूई से भरी हुई गद्दी आदि तागना ।
निगंध–(हि.वि.) देखें 'निर्गंध', गंधहीन ।
निगड–(सं. पुं.) हाथी के पैर में वाँधने की लोहे की सिकड़ी, आँदू, बेड़ी ।
निगडन–(सं.पुं.) सिकड़ी से वाँधने का काम ।
निगडित–(सं. वि.) सिकड़ी से वँधा हुआ ।
निगण–(सं.पुं.) होम से निकलनेवाला धुआँ ।
निगद–(सं. पुं.) भाषण, कथन, ऊँचे स्वर से किया जानेवाला जप ।
निगदित–(सं. वि.) भाषित, कहा हुआ ।
निगम–(सं. पुं.) वाणिज्य, व्यापार, वेद, हाट, मेला, पथ, मार्ग, निश्चय ।
निगमन–(सं.पुं.) न्याय-शास्त्र में अनुमान के पाँच अवयवो में से एक, हेतु, उदाहरण और उपनय के उपरान्त प्रतिज्ञा को सिद्ध करने के लिये उसका फिर से कथन, पाँचों अवयवों के नाम इस प्रकार हैं– यहाँ अग्नि है (प्रतिज्ञा), क्योंकि यहाँ धुआँ है (हेतु), जहाँ धुआँ रहता है वहाँ अग्नि रहती है, जैसे–रसोईघर में (उदाहरण), यहाँ धुआँ है (उपनय); अतएव, यहाँ अग्नि है (निगमन) ।
निगमवासी–(सं. पुं.) विष्णु, नारायण ।
निगमागम–(सं. पुं.) वेद और शास्त्र ।
निगमी–(सं. पुं.) वेद जाननेवाला ।
निगर–(सं. पुं.) भोजन; (हिं. वि.) सव; (पु.) देखें 'निकर' ।
निगरण–(सं. पुं.) भोजन, भक्षण, ग्रीवा, गला ।
निगरा–(हिं.वि.) जिसमें जल न मिला हो ।
निगराना–(हिं. क्रि. स.) निर्णय करना, निबटाना, अलग करना, स्पष्ट करना ।
निगरानी–(फा.स्त्री.) निरीक्षण, देखरेख ।
निगरु–(हिं.वि.) हलका, जो भारी न हो ।
निगलना–(हिं.क्रि.स.) गले के नीचे उतारना, घोंट जाना, गटक जाना, खा जाना, लीलना, किसी का धन पचा जाना ।
निगहवान–(फा. पुं.) रक्षक, प्रतिपालक ।
निगहवानी–(फा.स्त्री.) रक्षा, प्रतिपालन ।
निगाद–(सं. पुं.) भाषण, कथन ।
निगादी–(सं. पुं.) बोलनेवाला, वक्ता ।
निगार–(सं. पुं.) भक्षण, भोजन ।
निगाल–(सं. पुं.) भोजन, घोड़े का गला ।
निगालिका–(सं. स्त्री.) आठ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको प्रमाणिका या नगस्वरूपिणी भी कहते हैं ।
निगाली–(हिं.स्त्री.) हुक्के की नली जिसको मुँह में रखकर धुआँ खींचा जाता है ।
निगाह–(फा. स्त्री.) दृष्टि, नजर, देखने की शक्ति या क्रिया, कृपा-दृष्टि, प्रतिपालन, चौकसी ।
निगिभ–(हिं. वि.) अत्यन्त गोपनीय, जिसका वहुत लोभ हो, अत्यन्त प्रिय ।
निगु–(सं.पुं.) मन, अन्तःकरण, भ्रम, मूल ।
निगुण–(हिं. वि.) देखें 'निर्गुण' ।
निगुनी–(हिं. वि.) गुणरहित, जो गुणी न हो ।
निगुरा–(हिं. वि.) जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो ।
निगूढ़–(सं. वि.) गुप्त, छिपा हुआ ।
निगूढ़ार्थ–(सं. वि.) जिसका अर्थ छिपा हुआ हो, जो स्पष्ट न हो ।
निगूहक–(सं. वि.) छिपानेवाला ।
निगूहन–(सं. पुं.) गोपन, छिपाव ।
निगूहनीय–(सं. वि.) गोपनीय, छिपाने योग्य ।
निगृहीत–(सं. वि.) आक्रमित, जिस पर धावा किया गया हो, पीड़ित, दण्डित, पकड़ा हुआ, घेरा हुआ, जिस पर शासन किया गया हो, जो वश में लाया गया हो ।
निगोड़ा–(हिं. वि.) जिसका कोई रक्षक न हो, जिसके आगे-पीछे कोई न हो, दुष्ट, नीच ।
निग्रंथन–(सं. पुं.) मारण, वध ।
निग्रह–(सं. पुं.) अवरोध, रुकावट, मारण, वध, चिकित्सा, विष्णु, महादेव, सीमा, हद, दण्ड, भर्त्सना, डाँट-फटकार, वन्धन, पीड़न ।
निग्रहण–(सं. पुं.) दण्ड देने का कार्य, रोकने का काम ।
निग्रहना–(हिं. क्रि. स.) रोकना, थामना, पकड़ना ।
निग्रहस्थान–(सं. पुं.) न्यायदर्शन के सोलह पदार्थों में से एक, वाद-विवाद अथवा शास्त्रार्थ में वह स्थान जहाँ किसी पक्ष द्वारा विप्रतिपत्ति (उलटा-पुलटा ज्ञान) या अप्रतिपत्ति (अज्ञान) की वात कही जाती है तो उसको निग्रहस्थान कहते हैं, (प्रतिज्ञा-हानि, प्रतिज्ञान्तर आदि बाईस निग्रहस्थान न्याय-शास्त्र में माने गये हैं ।)
निग्रही–(हिं. वि.) रोकनेवाला, दबानेवाला, दण्ड देनेवाला ।
निग्रहीतव्य–(सं.वि.) जो दण्ड देने योग्य हो ।
निग्राह–(सं. पुं.) आक्रोश, शाप ।
निग्राह्य–(सं. वि.) दण्डनीय, ग्रहण करने योग्य ।
निघंट–(सं. पुं.) निघंटु, सूचीपत्र ।
निघंटिका–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का कन्द ।
निघंटु–(सं. पुं.) नाम-संग्रह, वैदिक शब्दों की सूची, वह कोष जिसमें केवल एकार्थ शब्द लिखे होते हैं ।
निघटना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'घटना' ।
निघरघट–(हिं. वि.) जिसको कहीं रहने का ठिकाना न हो, निर्लज्ज, जो घूम-फिरकर वहीं आवे जहाँ से वह दुतकारा गया हो ।
निघरा–(हिं.वि.) जिसके घर-वार न हो ।
निघर्ष, निघर्षण–(सं.पुं.) घिसना, रगड़ ।
निघस–(सं. पुं.) आहार, भोजन ।
निघात–(सं. पुं.) प्रहार, चोट ।
निघाति–(सं. स्त्री.) लोहार की निहाई ।
निघाती–(सं. वि.) आघात करनेवाला, मारनेवाला ।
निघृष्व–(सं.पुं.) खुर, वायु, मार्ग, सुअर ।
निघ्न–(सं. वि.) जिसको चोट लगी हो,

घायल, निर्भर, अधीन, (गणित में) गुणा किया हुआ।

निचमन–(सं.पुं.) थोड़ा-थोड़ा करके पीना।

निचय–(सं. पुं.) निश्चय, समूह, संचय।

निचल–(हिं. वि.) देखें 'निश्चल'।

निचला–(हिं. वि.) नीचे का, नीचेवाला, शान्त, अचल, अचपल।

निचाई–(हिं. स्त्री.) नीचापन, नीचा होने का भाव, नीचे की ओर का विस्तार, नीचता, ओछापन।

निचान–(हिं.स्त्री.) नीचापन, ढालुआँपन।

निचाय–(सं. पुं.) धान आदि का ढेर।

निचिंत–(हिं. वि.) चिन्तारहित।

निचिकी–(सं. स्त्री.) अच्छी गाय।

निचित–(सं. वि.) व्याप्त, पूरित, रचित, निर्मित।

निचिर–(सं. पुं.) चिर काल।

निचुंकण–(सं. पुं.) गरज, घड़घड़ाहट।

निचुड़ना–(हिं. क्रि. अ.) रस से भरी हुई किसी वस्तु को दबाने, ऐंठने आदि से उसमें से रस निकलकर गिर जाना, गरना, पानी टपकना या चूना, रसहीन होना, शरीर का बल निकल जाना, शरीर का दुर्बल होना।

निचेता–(सं.वि.) विविध वस्तुओं का संचय करनेवाला।

निचेय–(सं. वि.) संग्रह करने योग्य।

निचेरु–(सं.पुं.) सर्वदा इधर-उधर घूमनेवाला मनुष्य।

निचोड़–(हिं. पुं.) निचोड़ने से निकला हुआ जल, रस आदि सार वस्तु, सत्त्व, मुख्य तात्पर्य, सारांश।

निचोड़ना–(हिं. क्रि.स.) गीली या रस से भरी हुई वस्तु को दबाकर या ऐंठकर इसमें का रस या पानी निकालना, गारना, किसी वस्तु का सार-भाग अलग करना, सर्वस्व हरण करना, सब कुछ ले लेना।

निचोना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'निचोड़ना'।

निचोरना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'निचोड़ना'।

निचोल, निचोलक–(सं. पुं.) शरीर को ऊपर से ढाँपने का वस्त्र, उत्तरीय वस्त्र, स्त्रियों के घूंघट का वस्त्र, लहँगा, घाघरा।

निचोवना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'निचोड़ना'।

निचौहाँ–(हिं. वि.) नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ।

निचौहैं–(हिं. अव्य.) नीचे की ओर।

निछक्का–(हिं. पुं.) निर्जन स्थान जहाँ कोई देखने वाला न हो, एकांत।

निछत्र–(हिं.वि.) छत्रहीन, बिना छत्र का, बिना राजचिह्न का, छत्रियों से रहित।

निछनियाँ–(हिं. अव्य.) देखें 'निछान'।

निछल–(हिं. वि.) बिना छल-कपट का।

निछला–(हिं. वि.) बिना मिलावट का।

निछान–(हिं. वि.) विशुद्ध, बिना मिलावट का, केवल; (अव्य.) एकदम।

निछावर–(हिं. स्त्री.) एक उपचार जिसमें किसी की रक्षा के निमित्त कोई वस्तु उसके संपूर्ण शरीर के ऊपर से घुमाकर फेंक दी जाती है अथवा किसी को दान दी जाती है, उत्सर्ग, उतारा, वह द्रव्य या वस्तु जो इस प्रकार उतारी जाती है, नेग; (मुहा.) **किसी व्यक्ति पर निछावर होना**–किसी के लिये प्राण देने को तैयार होना।

निछोह, निछोही–(हिं. वि.) निर्दयी, निष्ठुर, जिसमें प्रेम या छोह न हो।

निज–(सं. वि.) स्वकीय, अपना, जो पराया न हो, प्रधान, मुख्य, वास्तविक, यथार्थ, सच्चा; (अव्य.) ठीक-ठीक, निश्चयपूर्वक; –का–अपना; –करके–निश्चित रूप से; –का–अपना खास, व्यक्तिगत।

निजिकाना–(हिं. क्रि. अ.) समीप आना, निकट पहुँचना।

निजकारी–(हिं.स्त्री.) बँटाई की फसल।

निजकृत–(सं.वि.) स्वयं किया हुआ।

निजघ्नी–(सं. वि.) जो आत्म-हत्या करना चाहता हो।

निजधृति–(सं. वि.) बुद्धिमान।

निजन–(हिं. वि.) देखें 'निर्जन'।

निजाम–(अ. पुं.) व्यवस्था, इंतजाम, हैदराबाद के पुराने शासकों की पदवी।

निजि–(सं. वि.) शुद्धियुक्त, जो अशुद्धि-रहित हो।

निजी–(हिं. वि.) स्वकीय, अपना, निज का।

निजुर्–(सं. स्त्री.) हत्या, नाश।

निजू–(हिं. वि.) निज का, अपना।

निजोर–(हिं. वि.) बलहीन, निर्बल।

निझरना–(हिं.क्रि.अ.) लगा या अटका न रहना, झड़ जाना, अपने को निर्दोष प्रमाणित करना, दोष से मुक्त बनना, तत्त्व या सार न रह जाना।

निझाटना–(हिं.क्रि.स.) झपटना, खींचकर छीनना।

निझाना–(हिं. क्रि. स.) छिपकर देखना, ताकझाँक करना।

निटर–(हिं. वि.) जो उपजाऊ न रह गया हो, जिसमें कुछ दम न हो।

निटल–(सं. पुं.) मस्तक, कपाल।

निटलाक्ष–(सं. पं.) शिव, महादेव।

निटोल–(हिं. पुं.) टोला, मुहल्ला, बस्ती, पुरा।

निठल्ला, निठल्लू–(हिं.वि.) जिसके पास कोई काम-धंधा न हो, बेकार, व्यवसाय-रहित।

निठाला–(हिं. पुं.) ऐसा समय जब कोई काम-धंधा न हो, जीविका का अभाव, वह समय जब किसी प्रकार की आय न हो।

निठुर–(हिं. वि.) निष्ठुर, क्रूर, निर्दय, जिसको दूसरे के कष्ट या पीड़ा का अनुभव न हो; –ई–(स्त्री.) देखें 'निठुरता'; –ता–(स्त्री.) हृदय की कठोरता, निर्दयता, क्रूरता।

निठुराई–(हिं.स्त्री.) निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता।

निठुराव–(हिं. पुं.) निठुराई।

निठौर–(हिं. पुं.) बुरी जगह, कुठाँव, बुरी अवस्था।

निडर–(हिं. वि.) निर्भय, साहसी, धृष्ट, ढीठ; –पन, –पना–(पुं.) निर्भयता, साहस।

निडीन–(सं. पुं.) पक्षियों के उड़ने की एक गति।

निड़े–(हिं. अव्य.) निकट, समीप, पास।

निढाल–(हिं. वि.) अशक्त, शिथिल, उत्साहहीन, मरा हुआ।

निढिल–(हिं. वि.) जो ढीला न हो, कसा हुआ।

निण्य–(सं. वि.) अन्तर्निहित।

नितंत–(हिं. अव्य.) देखें 'नितांत'।

नितंब–(सं. पुं.) स्त्री की कमर के पीछे का उभड़ा हुआ भाग, चूतड़, कन्धा, किनारा, पहाड़ का ढालुआँ भाग; –देश–(पुं.) कमर का पिछला भाग।

नितंबी–(सं. वि.) नितंबयुक्त।

नितंबिनी–(सं. स्त्री.) सुन्दर नितंबवाली स्त्री; (वि.) सुन्दर नितम्बवाली।

नित–(हिं. अव्य.) सर्वदा, नित्य, प्रतिदिन; –नित–(अव्य.) प्रतिदिन; –नया–(वि.) सर्वदा नया रहनेवाला।

नितराम्–(सं. अव्य.) सर्वदा।

नितल–(सं. पुं.) सात पातालों में से एक का नाम।

नितांत–(सं.वि.) अतिशय, बहुत अधिक, सर्वथा, निरा।

निति–(हिं. अव्य.) नित, प्रतिदिन।

नित्य–(सं. वि.) सतत, प्रतिदिन का, सब

दिन रहनेवाला, शाश्वत, जिसकी परम्परा कभी न टूटे, त्रिकालव्यापी, अविनाशी; (पुं.) समुद्र, सागर; (अव्य.) प्रतिदिन, हर रोज, सर्वदा; **–कर्म–**(पुं.) वह धर्म या प्रकृति संबंधी कार्य जिसका प्रतिदिन करना आवश्यक तथा नियत है; **–क्रिया–**(स्त्री.) नित्य-कर्म, प्रतिदिन करने का कार्य, यथा–स्नान, सन्ध्या आदि; **–ग–**(पुं.) आयुष्य; **–गति–**(पुं.) वायु, हवा; **–ता–**(स्त्री.) नित्य होने का भाव; **–त्व–**(पुं.) नित्यता; **–दा–**(अव्य.) सर्वदा; **–दान–**(पुं.) वह दान जो प्रतिदिन किया जाता है; **–नर्त–**(पुं.) शिव, महादेव; **–नियम–**(पुं.) प्रतिदिन के करने का निश्चित व्यापार, प्रतिदिन का नियम; **–नैमित्तिक–**(पुं.) पार्वण-श्राद्ध आदि कार्य; **–प्रति–**(अव्य.) प्रतिदिन; **–प्रलय–**(पुं.) सुषुप्ति की अवस्था जब नींद आती है और किसी विषय का ज्ञान नहीं रहता; **–मय–**(वि.) अनन्त; **–मुक्त–**(पुं.) परमात्मा; **–यज्ञ–**(पुं.) अग्निहोत्र आदि प्रतिदिन करने का यज्ञ; **–युक्त–**(वि.) जो सर्वदा काम में लगा रहता हो; **–यौवन–**(वि.,पुं.) स्थिर यौवन, जिसकी युवावस्था बहुत दिनों तक बनी रहे; **–वैकुंठ–**(पुं.) विष्णु का निवास विशेष; **–शः–**(अव्य.) प्रतिदिन, सर्वदा; **–सम–**(पुं.) न्याय-शास्त्र के चौबीस अयुक्त-खण्डनों में से एक जो इस प्रकार किया जाता है कि–अनित्य वस्तुओं में भी अनित्यता नित्य है, अतः धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ; **–समास–**(पुं.) 'कु' शब्द तथा 'आदि' शब्द के साथ जो समास होता है वह नित्य समास कहलाता है; **–स्तोत्र–**(वि.) सर्वदा प्रशंसित; (पुं.) स्तोत्र जिसका सर्वदा पाठ किया जाय; **–होम–**(पुं.) वह हवन जो द्विजों को प्रतिदिन करना कर्तव्य है।

नित्या–(सं. स्त्री.) देवी की एक शक्ति, पार्वती, मनसा देवी।

नित्यानंद–(सं. पुं.) वह जो सर्वदा आनन्द में रहे।

नित्यानुबद्ध–(सं. वि.) रक्षा करनेवाला, बचानेवाला।

नियंभ–(हिं. पुं.) स्तम्भ, खंभा।

नियरना–(हिं. क्रि. अ.) जल आदि की हलकन बंद होना और इसमें घुली हुई मैल आदि का नीचे बैठ जाना, घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने से जल आदि का स्वच्छ हो जाना।

नियार–(हिं. पुं.) पानी के स्थिर होने से उसके तल में बैठी हुई वस्तु, स्वच्छ जल जो घुली हुई वस्तु के तल में बैठ जाने से निथर जाता है।

नियारना, नियालना–(हिं.क्रि.स.) घुली हुई वस्तु का निथार बैठने देकर जल को स्वच्छ करना, पानी छानना।

निद–(सं.पुं.) विष; (वि.) निन्दा करनेवाला।

निदई–(हिं. वि.) देखें 'निर्दय'।

निदरना–(हिं. क्रि. स.) अपमान करना, निरादर करना, तिरस्कार करना, हराना।

निदर्शक–(सं. वि.) निदर्शन करनेवाला।

निदर्शन–(सं. पुं.) प्रकाशित करने या दिखलाने का काम, उदाहरण, दृष्टान्त।

निदर्शना–(सं. स्त्री.) वह अर्थालंकार जिसमें कोई बात किसी दूसरी बात को सिद्ध करके दिखलाई जाती है, निदर्शना अलंकार वहाँ होता है जहाँ दोनों बातों में जमीन-आसमान का अंतर होता है; जैसे–सूर्य और दीप में।

निदलन–(हिं. पुं.) देखें 'निर्दलन'।

निदहना–(हिं. क्रि. स.) जलाना।

निदाघ–(सं. पुं.) ग्रीष्म-काल, गरमी, उष्णता, ताप, घाम, धूप; **–कर–**(पुं.) सूर्य, मदार का वृक्ष; **–काल–**(पुं.) ग्रीष्म ऋतु।

निदान–(सं. पुं.) रोग की पहिचान, अन्त, तप के फल की इच्छा, आदिकारण, कारण का क्षय, शुद्धि; (अव्य.) अन्त में, (वि.) अन्तिम श्रेणी का, जो बहुत गया-बीता हो।

निदारुण–(सं. वि.) कठिन, भयानक, निर्दय, कठोर, दुःसह।

निदिग्ध–(सं. वि.) लेप किया हुआ।

निदिग्धा, निदिग्धिका–(सं. स्त्री.) इलायची, भटकटैया।

निदिध्यासन–(सं. पुं.) वारंवार स्मरण, वार-बार स्मरण करना।

निदेश–(सं. पुं.) शासन, आज्ञा, कथन, भाजन, पात्र, सामीप्य, पास, पृथ्वी।

निदेशी–(सं. वि.) आज्ञा देनेवाला।

निदेस–(हिं. पुं.) देखें 'निदेश'।

निदोष–(हिं. वि.) देखें 'निर्दोष'।

निद्धि–(हिं. स्त्री.) देखें 'निधि'।

निद्र–(सं.पुं.) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

निद्रा–(सं. स्त्री.) स्वप्न, नींद, सुषुप्ति, मन की वह स्थिति जिसमें सभी मनोवृत्तियाँ लीन हो जाती है तथा जब अज्ञान का अवलम्बन कर चेतना अचेत रहती है; **–कर–**(वि.) निद्राकारक, सुलानेवाला; **–कारी–**(वि.) निद्राकर, सुलानेवाला; **–काल–**(पुं.) शयन करने (सोने) का समय; **–कुल–**(वि.) निद्रा से पीड़ित; **–गत–**(वि.) निद्रित, जो सो गया हो; **–गौरव–**(पुं.) बहुत नींद आना; **–ग्रस्त–**(वि.) निद्राकुल, निद्रालु; **–जनक–**(वि.) सुलानेवाला; **–दरिद्र–**(पुं.) नींद न आना; **–भंग–**(पुं.) नींद टूटना; **–योग–**(पुं.) निद्रा और गहरी चिन्ता; **–विमुख–**(वि.) अनिद्र, जागरूक; **–वृक्ष–**(पुं.) अन्धकार, अँधेरा; **–शाला–**(स्त्री.) सोने का घर; **–शील–**(वि.) निद्रालु, सोनेवाला।

निद्राभाव–(सं. पुं.) निद्रा का अभाव, नींद न आना।

निद्रायमाण–(सं. वि.) जो नींद में हो, सोता हुआ।

निद्रालु–(सं. वि.) निद्राशील, सोनेवाला; (स्त्री.) वनतुलसी।

निद्रित–(सं. वि.) निद्रागत, सोया हुआ।

निद्रोत्थित–(सं.वि.) जो सोकर उठा हो।

निधड़क–(हिं. अव्य.) विना किसी रुकावट के, विना संकोच के, निःशंक, बिना भय या हिचक के।

निधन–(सं. पुं.) मरण, नाश, विष्णु, कुल, कुल का अधिपति; (वि.) धनहीन, दरिद्र; **–क्रिया–**(स्त्री.) अन्त्यष्टि-क्रिया; **–ता–**(स्त्री.) दरिद्रता, कंगाली; **–पति–**(पुं.) प्रलयकर्ता, शिव; **–वत्–**(वि.) मरण-तुल्य।

निधनी–(हिं. वि.) धनहीन, दरिद्र।

निधमन–(सं. पुं.) नीम का पेड़।

निधातव्य–(सं. वि.) स्थापन करने योग्य।

निधान–(सं. पुं.) आश्रय, आधार, निधि, स्थापन, लयस्थान, वह स्थान जहाँ सभी वस्तुएँ लीन होती हैं।

निधि–(सं. पुं.) समुद्र, विष्णु, जीवक नामक औषधि, आधार, शिव, महादेव, नौ की संख्या, कुबेर के नौ रत्न, यथा–पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्व, गड़ा हुआ धन; **–गोप–**(पुं.) वह जो वेदवेदांग पढ़कर गुरुकुल में गया हो; **–नाथ–**(पुं.) निधिपति, कुबेर; **–पति–**(पुं.) धनेश्वर, कुबेर; **–पा–**(पुं.) यक्षों का अधिपति; **–पाल–**(पुं.) निधिपति, कुबेर; **–मान्–**(वि.) धनाढ्य, जिसके पास धन हो।

निधेय–(सं. वि.) स्थापन करने योग्य ।
निध्यान–(सं. पुं.) दर्शन, देखना ।
निनद–(सं.पुं.) निनाद, शब्द, घरघराहट ।
निनदित–(सं. वि.) देखें 'निनादित' ।
निनदी–(सं. वि.) देखें 'निनादी' ।
निनय–(सं. स्त्री.) नम्रता ।
निनरा–(हि. वि.) न्यारा, अलग, दूर ।
निनाद–(सं. पुं.) शब्द, आवाज ।
निनादित–(सं. वि.) ध्वनित, शब्द किया हुआ ।
निनादी–(सं. वि.) शब्द करनेवाला ।
निनान–(हि. वि.) घोर, निकृष्ट, बुरा; (अव्य.) बिलकुल, एकदम, अन्त में ।
निनारा–(हि. वि.) भिन्न, न्यारा, अलग, हटा हुआ, दूर ।
निनावाँ–(हि. पुं.) महीन लाल दाने जो जीभ और मसूढ़े पर निकल आते हैं ।
निनावी–(हि. स्त्री.) वह जिसका नाम लेना अशुभ माना जाता है, डाइन, चुड़ैल ।
निनित्सु–(सं. पुं.) जो निन्दा न करने का इच्छुक हो ।
निनीषा–(सं. स्त्री.) एक स्थान से दूसरे स्थान म ले जाने की अभिलाषा ।
निनौरा–(हि. पुं.) नाना-नानी का घर ।
निन्यानवे–(हि. वि.) एक कम सौ की संख्या का; (पुं.) नब्बे और नौ की संख्या, ९९ ।
निन्यारा–(हि. वि.) देखें 'न्यारा' ।
निपंग–(हि. वि.) जिसके हाथ-पैर बेकाम हों, अपाहिज ।
निप–(सं. पुं.) कलश, कलसा, कदंब का पेड़ ।
निपजना–(हि.क्रि. अ.) उपजना, उगना, उत्पन्न होना, बढ़ना, बनना, पुष्ट होना ।
निपजी–(हि. स्त्री.) लाभ, उपज ।
निपट–(हि.अव्य.) निरा, खाली, नितान्त, बिलकुल, एकदम ।
निपटना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'निबटना' ।
निपटाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'निबटाना' ।
निपटारा–(हि. पुं.) देखें 'निबटारा' ।
निपटावा–(हि. पुं.) देखें 'निबटावा' ।
निपटेरा–(हि. पं.) देखें 'निबटेरा' ।
निपठ–(सं. पुं.) पाठ, अध्ययन ।
निपठित–(सं. वि.) अशिक्षित, जो पढ़ा-लिखा न हो ।
निपतन–(सं. पुं.) अधःपतन, गिराव ।
निपतित–(सं. वि.) पतित, गिरा हुआ ।
निपत्या–(सं. स्त्री.) युद्ध-भूमि, ऐसी भूमि जिस पर पैर फिसलता हो ।
निपत्र–(हि. वि.) पत्रहीन ।
निपलाश–(सं.वि.) जिसके पत्ते गिर गये हों ।
निपात–(सं. पुं.) पतन, गिराव, नाश, मृत्यु, अधःपतन, विनाश, वह शब्द जो व्याकरण में दिये हुए नियमों के अनुसार न बना हो; (वि.) बिना पत्तों का ।
निपातन–(सं. पुं.) मारण, वध करने का काम, गिराने का काम ।
निपातना–(हि. क्रि. स.) गिराना, नष्ट करना, वध करना, मारकर गिराना, काटकर गिराना ।
निपातनीय–(सं.वि.) वध के योग्य, गिराने योग्य ।
निपातित–(सं. वि.) जो नीचे गिरा दिया गया हो, नष्ट किया हुआ ।
निपाती–(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) घातक, मारनेवाला, गिरानेवाला, फेंकनेवाला ।
निपाद–(सं. पुं.) नीचा प्रदेश, नीची भूमि ।
निपान–(सं. पुं.) तालाब, गड्ढा, दूध दूहने का पात्र ।
निपीड़क–(सं. वि.) पीड़ा देनेवाला, निचोड़नवाला, पेरनेवाला ।
निपीड़न–(सं. पुं.) कष्ट देने का कार्य, पसेव निकालना, पेरकर निकालना, मलना, दलना ।
निपीड़ना–(सं. स्त्री.) देखें 'निपीड़न'; (हि. क्रि. स.) कष्ट देना, पेरकर निकालना, मलना ।
निपीड़ित–(सं. वि.) आक्रान्त, दबाया हुआ, पेरा हुआ ।
निपीत–(सं.वि.) जो पिया गया हो ।
निपीयमान–(सं.वि.) जो पिया जा रहा हो ।
निपुड़ना–(हि.क्रि.अ.) खुलना, उघरना ।
निपुण–(सं.वि.) कार्य-कुशल, काम करने में दक्ष, विद्वान्; (पुं.) चिकित्सक, वैद्य; **–ता**–(स्त्री.) कुशलता ।
निपुणाई–(हि. स्त्री.) दक्षता ।
निपुत्री–(हि. वि.) निःसन्तान, निपूता ।
निपुन–(हि. वि.) देखें 'निपुण', दक्ष; **–ई**–(स्त्री.) निपुणता, दक्षता ।
निपुर–(सं.पुं.) लिंग-देह, सूक्ष्म शरीर ।
निपूत, निपूता–(हि. वि.) अपुत्र, जिसके सन्तान न हो ।
निपोड़ना–(हि. क्रि. स.) दाँत दिखाना ।
निफन–(हि. वि.) निष्पन्न, पूर्ण, पूरा; (अव्य.) अच्छी तरह से, पूर्ण रूप से ।
निफरना–(हि.क्रि.अ.) छुनकर उस पार से उस पार निकल जाना, उद्घाटित होना, प्रकट होना, खुलना, स्वच्छ होना ।
निफल–(हि. वि.) देखें 'निष्फल' ।
निफाक–(अ. पुं.) विरोध, द्रोह, वैर, बिगाड़, अनबन ।
निफारना–(हि. क्रि. स.) इस पार से उस पार तक छेद करना, खोलना, स्पष्ट करना ।
निफालन–(सं. पुं.) दर्शन, दृष्टि ।
निफेन–(सं. पुं.) अहिफेन, अफीम ।
निफोट–(हि. वि.) स्पष्ट, स्वच्छ ।
निबंध–(सं. पुं.) मूत्र रुकने का रोग, करक, पुस्तक की टीका, बंधन, नीम का पेड़, वह व्याख्या जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो, लिखित प्रबंध, लेख; (पुं.) गीत; **–दान**–(पुं.) द्रव्य-समर्पण ।
निबंधक–(सं. पुं.) निबन्धन करनेवाला अधिकारी, रजिस्ट्रार ।
निबंधन–(सं.पुं.) हेतु, कारण, ग्रन्थि, गाँठ, बन्धन, नियम, व्यवस्था, ग्रन्थ, पुस्तक ।
निबंधना–(सं. स्त्री.) बंधन, बेड़ी ।
निबंधित–(सं. वि.) बद्ध, बँधा हुआ ।
निबंधी–(सं. वि.) निबन्ध करनेवाला ।
निबकौरी–(हि.स्त्री.) नीम का फल या बीज ।
निबटना–(हि. क्रि. अ.) निर्णीत होना, निश्चित होना, चुकना, निवृत्त होना, छुट्टी पाना, समाप्त होना, पूरा होना, शौचादि से निवृत्त होना, अन्त होना ।
निबटाना–(हि.क्रि.स.) समाप्त करना, पूरा करना, भुगताना, चुकाना ।
निबटाव–(हि. पुं.) निबटाने का भाव या क्रिया, निर्णय ।
निबटेरा–(हि. पुं.) निबटाने का भाव या क्रिया, समाप्ति, छुट्टी, झगड़े का निर्णय, निश्चय ।
निबड़ना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'निबटना' ।
निबड़ा–(हि.पुं.) एक प्रकार का बड़ा घड़ा ।
निबद्ध–(सं. वि.) बद्ध, निरुद्ध, बँधा हुआ, रुका हुआ, गुथा हुआ, बैठाया हुआ, जड़ा हुआ; (हि. पुं.) वह गीत जिसमें गाते समय ताल, स्वर आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है ।
निबर–(हि. वि.) देखें 'निर्बल' ।
निबरना–(हि. क्रि. अ.) किसी बँधी हुई वस्तु का अलग होना, छूटना, मुक्त होना, उद्धार होना, विलग होना, छँटना, निर्णय होना, समाप्त होना, अवकाश पाना, अन्त होना, दूर होना, सुलझना, उलझन दूर होना ।
निबर्हण–(सं. पुं.) नष्ट होने की क्रिया या भाव, मारण ।
निबल–(हि. वि.) देखें 'निर्बल' ।
निबलाई–(हि. स्त्री.) दुर्बलता ।
निबह–(हि.पुं.) देखें 'निग्रह', समूह, झुण्ड ।

निवहना–(हिं. क्रि. अ.) छुटकारा पाना, पार पाना, निर्वाह होना, बराबर चला चलना, व्यवहार होना, चरितार्थ होना, पूरा होना, किसी स्थिति, सम्बन्ध आदि का निरन्तर बना रहना।
निवहुर–(हिं. पुं.) यमद्वार जहाँ से कोई लौटकर नहीं आता।
निवहुरा–(हिं.वि.) जो जाकर फिर न लौटे।
निवाह–(हिं. पुं.) निबाहने की क्रिया या भाव, निर्वाह, गुजारे का ढंग, निरन्तर व्यवहार, चरितार्थ करने का कार्य, रहन, परंपरा की रक्षा, पूरा करने का काम।
निवाहक–(हिं. वि.) निर्वाह करनेवाला।
निवाहना–(हिं. क्रि. स.) निर्वाह करना, चरितार्थ करना, पूरा करना, निरन्तर साधन करना, पालन करना।
निविड़–(हिं. वि.) घना, कठिन, गहरा।
निवुकना–(हिं.क्रि.अ.) बंधन से मुक्त होना।
निवड़ना–(हिं. क्रि. स.) बन्धन आदि से मुक्त करना, छोड़ाना, दूर करना, अलग करना, विलगाना, अलगाना, निर्णय करना, उलझन दूर करना, भुगताना, पूरा करना।
निवेड़ा–(हिं.पुं.) देखें 'निवेरा'।
निवेरना–(हिं.क्रि.स.) उन्मुक्त करना, पूरा करना, निवटाना, दूर करना, हटाना, अलग करना, निर्णय करना, उलझन दूर करना, छाँटना, चुनना, मिटाना।
निवेरा–(हिं.पुं.) मुक्ति, छुटकारा, समाप्ति, भुगतान, चुनाव, सुलझने की क्रिया या भाव, उलझन दूर होना, निर्णय, निवटेरा।
निवेहना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'निवेरना'।
निवौरी, निवौली–(हिं. स्त्री.) नीम का फल, निमकौड़ी।
निभ–(सं.वि.) सदृश, तुल्य; (पुं.) प्रकाश, प्रभाव।
निभना–(हिं. क्रि. अ.) निकलना, बचना, पार पाना, छुटकारा पाना, निर्वाह होना, पालन होना, पूरा होना, सपरना, चरितार्थ होना, बराबर होता चलना।
निभरम–(हिं. वि.) भ्रमरहित, जिसमें कोई शंका न हो; (अव्य.) बेधड़क।
निभरमा–(हिं. वि.) जिसका विश्वास उठ गया हो, जिसकी मर्यादा न रह गई हो।
निभरोस–(हिं. वि.) निराश, हताश।
निभरोसी–(हिं. वि.) निराश्रय, जिसको कोई भरोसा न रह गया हो।
निभाउ–(हिं. वि.) भावरहित।
निभागा–(हिं. वि.) अभागा, हतभाग्य।
निभाना–(हिं. क्रि. स.) निर्वाह करना, संबंध बनाये रखना, बराबर करते जाना, चलाना, भुगताना, चरितार्थ करना, पालन करना, पूरा करना, वचन या वादे के अनुसार निरन्तर व्यवहार करना।
निभालन–(सं. पुं.) दर्शन, भेंट।
निभूत–(सं. वि.) भूत, बीता हुआ।
निभूयप–(सं. पुं.) विष्णु भगवान।
निभृत–(सं. वि.) धरा हुआ, रखा हुआ, पूर्ण, भरा हुआ, निश्चित, स्थिर, शान्त, अस्त होने के निकट, निर्जन, सूना, छिपा हुआ, बन्द किया हुआ, एकाग्र, विनीत, नम्र, निश्चल, अटल।
निभौना–(हिं.क्रि.स.) नवाना, झुकाना, नीचे करना।
निभ्रांत–(हिं. वि.) देखें 'निर्भ्रांत'।
निमंत्रक–(सं. पुं.) नेवता देनेवाला।
निमंत्रण–(सं. पुं.) किसी कार्य के लिये नियत समय पर आने के लिये अनुरोध करना, भोजन का बुलावा, न्योता; **–पत्र**–(पुं.) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति से भोज, उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिये अनुरोध किया जाता है।
निमंत्रना–(हिं. क्रि. स.) नेवता देना।
निमंत्रित–(सं.वि.) जिसको न्योता दिया गया हो।
निम–(सं.पुं.) शंकु, शलाका।
निमक–(हिं. पु.) देखें 'नमक'।
निमकी–(हिं. स्त्री.) नीबू का अचार, घी में तली हुई मैदे की नमकीन मोयनदार टिकिया।
निमकौड़ी–(हिं.स्त्री.) नीम की फली या बीज, निबकौड़ी।
निमग्न–(सं. वि.) डूबा हुआ, मग्न।
निमज्जक–(सं. वि.) डुबकी या गोता लगानेवाला।
निमज्जन–(सं. पुं.) अवगाहन, पानी में डुबकी लगाकर किया जानेवाला स्नान।
निमज्जना–(हिं. क्रि. अ.) गोता लगाना, स्नान करना।
निमज्जित–(सं. वि.) डूबा हुआ, स्नान किया हुआ।
निमटना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'निवटना'।
निमटाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'निबटाना'।
निमटेरा–(हिं. पुं.) देखें 'निबटेरा'।
निमता–(हिं. वि.) जो उन्मत्त न हो।
निमन्यु–(सं. वि.) क्रोधरहित।
निमय–(सं. पुं.) विनिमय, बदला।
निमर्म–(सं. वि.) मर्मरहित।
निमान–(हिं. पुं.) मूल्य, दाम, कीमत; (वि.) नीचा, ढालुआँ, विनीत, नम्र, सुशील।
निमाना–(हिं. वि.) नीचा, ढालुआँ, नम्र, विनीत।
निमि–(सं. पुं.) दत्तात्रेय के एक पुत्र का नाम, इक्ष्वाकु राजा के एक पुत्र का नाम, निमेष, आँख मिचकाना।
निमिख–(हिं. पुं.) देखें 'निमिष'।
निमित्त–(सं. पु.) चिह्न, लक्षण, हेतु, कारण, शकुन, उद्देश्य, फल की ओर लक्ष्य; **–क**–(वि.) जनित, उत्पन्न, किसी हेतु से होनेवाला; (पुं.) निमित्त-कारण, चुम्बन; **–कारण**–(पुं.) न्याय के अनुसार वह कारण जो किसी वस्तु को बनावे अथवा जिसकी सहायता से कोई वस्तु बने; **–काल**–(पुं.) निमेष, समय या काल; **–कृत**–(पुं.) काक, कौवा; **–त्व**–(पुं.) कारणत्व; **–धर्म**–(पुं.) निष्कृति, प्रायश्चित्त; **–मात्र**–(पुं.) हेतुमात्र, कारणमात्र; **–विद्**–(पुं.) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
निमित्ती–(सं. वि.) कर्त्ता, प्रयोजक।
निमिराज–(सं. पुं.) राजा जनक।
निमिष–(सं.पुं.) आँख मिचकाना, पलकों का गिरना, वह समय जो पलक के एक बार गिरने में लगता है, परमेश्वर।
निमिषित–((सं.वि.) पलक गिराया हुआ।
निमीलन–(सं.पुं.) निमेष, पलक गिरना।
निमीला–(सं. स्त्री.) आँखें मुँदना या झपकना, निद्रा, नींद।
निमीलिका–(सं. स्त्री.) आँख की झपक, छल।
निमीलित–(सं.वि.) बंद किया हुआ, ढपा हुआ, मरा हुआ।
निमुँहाँ–(हिं. वि.) न बोलनेवाला।
निमूँद–(हिं.वि.) बन्द किया हुआ, मुंदा हुआ।
निमूल–(सं. वि.) मूलरहित।
निमेख–(हिं. पुं.) देखें 'निमेष'।
निमेट–(हिं. वि.) न मिटनेवाला।
निमेय–(सं.वि.) परिवर्तनीय, बदलने-योग्य।
निमेष–(सं. पुं.) पलक गिराने भर का समय, पल, क्षण, आँखें झपकना, एक यज्ञ का नाम।
निमेषक–(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
निमेषकृत्–(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली।
निमोना–(हिं. पुं.) पिसे हुए हरे चने या मटर के दानों को भूनकर बनाया हुआ एक व्यंजन।
निमौनी–(हिं.स्त्री.) वह दिन जब ऊख की उपज में से पहले-पहल कटाई होती है।
निम्न–(सं. वि.) नीचे का, नीचा; **–ग**–(वि.) अधोगामी, नीचे जानेवाला, **–गत**–

(वि.) जो नीचे की ओर गया हो; –गा, (स्त्री.) सरिता, नदी, दरया; –देश (पु.) तल भाग, निचला भाग; –लिखित– (वि.) नीचे लिखा हुआ।

निम्नोक्त–(सं.वि.) नीचे कहा हुआ।

नियंतव्य–(सं. वि.) नियमन करने योग्य।

नियंता–(सं. पुं.) नियमनकर्ता, नियामक, नियमानुसार संचालन करनेवाला।

नियंत्रण–(सं. पुं.) काबू या वश म रखना, संयम, प्रतिबंधन।

नियंत्रित–(सं. वि.) नियंत्रण में रखा हुआ, संयमित।

नियत–(सं. वि.) नियम द्वारा स्थिर किया हुआ, संयत, स्थिर, ठहराया हुआ, नियोजित, स्थापित, परिमित, ठीक किया हुआ, बँधा हुआ; (पुं.) गन्धक; –मानस–(वि.) जितेन्द्रिय, जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।

नियतात्मा–(सं.वि.) देखें 'नियतमानस'।

नियताप्ति–(सं. स्त्री.) नाटक की पाँच अवस्थाओं में से एक जिसमें फल-प्राप्ति का निश्चय होता है।

नियताहार–(सं. वि.) परिमित आहार करनेवाला, अल्पाहारी।

नियति–(सं.स्त्री.) नियम, बंधेज, स्थिरता, भाग्य, अवश्य होनेवाली घटना, पूर्वकृत कर्म का निश्चित परिणाम, जड़ प्रकृति, एक देवी का नाम।

नियतेंद्रिय–(सं. वि.) जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को अपने वश में करनेवाला।

नियम–(सं. पुं.) प्रतिज्ञा, अंगीकार, परिमिति, रोक, विधि या निश्चय के अनुसार प्रतिबन्ध, निश्चय, व्यवस्था, पद्धति, परम्परा, क्रम, शासन, दबाव, संकल्प, योग का एक अंग, विष्णु, शिव, महादेव, एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात का निर्दिष्ट स्थान पर होना स्थिर कर दिया जाय; –तंत्र–(वि.) नियम के अधीन; –न–(पुं.) नियमबद्ध करने का कार्य, बाँधना, शासन, निग्रह, नियंत्रण, दमन; –पत्र– (पुं.) प्रतिज्ञापत्र; –पर–(वि.) नियम के अधीन; –बद्ध–(वि.) नियमों के अनुकूल, नियमों से बँधा हुआ; –भंग–(पुं.) प्रतिज्ञा-भंग, नियम का उल्लंघन; –वत्–(अव्य.) नियम के अनुसार; –सेवा–(स्त्री.) नियमपूर्वक ईश्वर की उपासना।

नियमित–(सं. वि.) नियमों से बँधा हुआ, ठीक नियमपूर्वक घटित होनेवाला, नियमबद्ध, बाकायदा।

नियमी–(सं. वि.) नियमों का पालन करनेवाला।

नियम्य–(सं. वि.) नियमन करने योग्य।

नियर–(हिं. अव्य.) पास, समीप।

नियराई–(हिं.स्त्री.) सामीप्य, निकटता।

नियराना–(हिं.क्रि.अ.) पास होना, निकट आना।

नियरे–(हिं.अव्य.) समीप।

नियाई–(हिं. वि.) देखें 'न्यायी'।

नियाज–(फा. पुं.) प्रार्थना, इच्छा, भेंट, आवश्यकता।

नियातन–(सं. पुं.) निपातन, नाश करने का कार्य।

नियान–(सं. पुं.) गोशाला; (हिं. पुं.) निदान, परिणाम, अन्त।

नियाम–(सं. पुं.) नियम।

नियामक–(सं. वि., पुं.) नियम या व्यवस्था करनेवाला, मारनेवाला; (पुं.) मल्लाह, माँझी।

नियामत–(अ. स्त्री.) स्वादिष्ट भोजन, अलभ्य पदार्थ, धन-दौलत।

नियार–(हिं. पुं.) जौहरी या सोनार की दुकान में का कूड़ा-करकट।

नियारना–(हिं. क्रि.स.) अलगाना।

नियारा–(हिं. वि.) पृथक्, अलग, न्यारा, जुदा; (पुं.) देखें 'नियार'।

नियारिया–(हिं. पुं.) सुनारों या जौहरियों की दुकान के कूड़ा-करकट में से माल निकालनवाला, चतुर मनुष्य।

नियारे–(हिं. अव्य.) देखें 'न्यारे'।

नियाव–(हिं. पुं.) देखें 'न्याय'।

नियुक्त–(सं. वि.) अधिकार किया हुआ, काम पर लगाया हुआ, प्रेरित, तत्पर किया हुआ, स्थिर किया हुआ।

नियुक्ति–(सं.स्त्री.) नियुक्त होने का भाव।

नियुत–(सं.पुं.) लक्ष, एक लाख, दस लाख।

नियुद्ध–(सं. पुं.) बाहु-युद्ध, मल्लयुद्ध।

नियोक्तव्य–(सं. वि.) नियोजित करने योग्य।

नियोक्ता–(सं. पुं.) नियोजित करनेवाला, किसी काम में लगानेवाला, नियोग करनेवाला।

नियोग–(सं.पुं.) प्रेरणा, अयनानुसार नियुक्ति, अवधारण, आज्ञा, निश्चय, पुत्र उत्पन्न करने के लिये निःसन्तान बड़े भाई की स्त्री के साथ संयोग; –कर्ता–(वि.) किसी कर्म में नियुक्त करनेवाला; –पत्र–(पुं.) वह पत्र जिसमें किसी को नियुक्ति का आदेश लिखा हो; –विधि–(पुं.) किसी को किसी कार्य में नियुक्त करने की विधि।

नियोगार्थ–(सं. पुं.) नियुक्त करने का उद्देश्य।

नियोगी–(सं.वि.) जो नियुक्त किया गया हो, जो किसी स्त्री के साथ नियोग करे।

नियोग्य–(सं. वि.) नियोग करने योग्य।

नियोजक–(सं. पुं.) कार्य में नियुक्त करनेवाला।

नियोजन–(सं. पुं.) नियोग, प्रेरणा, किसी काम में लगाना, उत्तजना, प्रवर्तन।

नियोजित–(सं. वि.) नियुक्त किया हुआ।

नियोज्य–(सं. वि.) जो नियुक्त करने के योग्य हो, नौकर।

नियोद्धा–(सं. पुं.) युद्ध लड़नेवाला, पहलवान, मुर्गा।

निरंकार–(हिं.वि.) देखें 'निराकार'।

निरंकुश–(सं. वि.) बिना अंकुश या प्रतिबन्ध का, अनिवार्य, जो निवारण करन योग्य न हो, स्वेच्छाचारी, बिना डर या दबाव का, बकहा।

निरंग–(सं. वि.) अंगहीन, केवल; (पुं.) रूपक अलंकार का एक भेद जहाँ उपमेय में उपमान का इस प्रकार आरोप होता है कि एक-दूसरे के सभी अंग नहीं मिलते; (हिं. वि.) बिना रंग का, उदास, फीका।

निरंगुल–(सं. वि.) जिसको अँगुली न हो।

निरंजन–(सं. वि.) बिना अंजन का, अंजन-रहित, अज्ञान से रहित, निर्दोष; (पुं.) परमात्मा, शिव।

निरंजनी–(सं.पुं.) साधुओं का एक संप्रदाय।

निरंतर–(सं. वि.) बिना अंतर या फासले का, जिसका क्रम न टूटा हो, अखंड, लगातार होनेवाला; (अव्य.) लगातार, बराबर, सर्वदा।

निरंतरता–(सं. स्त्री.) निरंतर होने का भाव, अविच्छिन्नता।

निरंध–(सं. वि.) निपट अंध या मूर्ख।

निरंबु–(सं. वि.) बिना पानी का, निर्जल।

निरंभ–(सं. वि.) बिना पानी का।

निरंश–(सं.वि.) बिना अंश का, अंशहीन।

निरकेवल–(हिं.वि.) बिना मल का, स्वच्छ।

निरक्षदेश–(सं. पुं.) भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्षिण के वे देश जहाँ दिन-रात प्रायः बराबर होते हैं।

निरखन–(हिं. पुं.) देखें 'निरीक्षण'।

निरक्षर–(सं. वि.) जिसने एक अक्षर भी न पढ़ा हो, अपढ़, मूर्ख।

निरक्ष-रेखा–(सं. स्त्री.) नाड़ीमण्डल, क्रान्तिवृत्त।

निरखना–(हिं. क्रि. स.) देखना, ताकना ।
निरग–(हिं. पुं.) देखें 'नृग' ।
निरगुन–(हिं. वि.) देखें 'निर्गुण', वह जिसमें गुण न हो, अनाड़ी ।
निरग्नि–(सं. पुं.) वह ब्राह्मण जो श्रौत और स्मार्त विधियों के अनुसार अग्निकर्म न करता हो ।
निरचू–(हिं. वि.) निश्चिन्त, जिसको अवकाश मिल गया हो, जिसने छुट्टी ली हो ।
निरच्छ–(हिं. वि.) चक्षुहीन, अंधा ।
निरजर–(हिं. वि.) जो कभी जीर्ण या पुराना न हो ।
निरजल–(हिं.वि.) देखें 'निर्जल' ।
निरजी–(हिं. स्त्री.) संगतराश की संगमरमर काटने की महीन टाँकी ।
निरजोस–(हिं.पुं.) निर्णय, निचोड़, सारांश ।
निरजोसी–(हिं. वि.) निर्णय करनेवाला, सारांश निकालनेवाला ।
निरझर–(हिं. पुं.) देखें 'निर्झर' ।
निरत–(सं. वि.) नियुक्त, तत्पर, किसी काम में लगा हुआ, लीन, तन्मय; (हिं. पुं.) देखें 'नृत्य' ।
निरतना–(हिं.क्रि.अं.) नृत्यकरना, नाचना ।
निरति–(सं. स्त्री.) अत्यन्त प्रीति, लीन होने का भाव ।
निरतिशय–(सं. वि., पुं.) अतिशय से परे, परमेश्वर, सर्वज्ञ, परम श्रेष्ठ ।
निरत्यय–(सं. वि.) जिसकी हद न हो, जिसका नाश न हो, आपत्तिरहित ।
निरदई–(हिं. वि.) देखें 'निर्दय' ।
निरधन–(हिं. वि.) देखें 'निर्धन' ।
निरधातु–(हिं. वि.) वीर्यहीन, शक्तिहीन, अशक्त ।
निरधार–(हिं. पुं.) देखें 'निर्धार' ।
निरधाना–(हिं. क्रि. स.) निश्चय करना, स्थिर करना, ठहराना, मन में धारण करना ।
निरध्व–(सं. वि.) जो अपना मार्ग भूल गया हो ।
निरनुक्रोश–(सं.वि., पुं.) निर्दय, निष्ठुरता; **–ता**–(स्त्री.) निर्दयता; **–युक्त**–(वि.) निर्दय ।
निरनुग–(सं. वि.) जिसके पास कोई सेवक न हो ।
निरनुनासिक–(सं. वि.) जिसका उच्चारण नाक से न किया जाय ।
निरनुरोध–(सं. वि.) निष्ठुर, कृतघ्न ।
निरन्न–(सं. वि.) अन्नहीन, विना अन्न का, निराहार, जिसन अन्न न खाया हो ।
निरन्नता–(सं. स्त्री.) उपवास ।
नरन्ना–(हिं.वि.) निराहार, जिसने अन्न न खाया हो ।
निरन्वय–(सं.वि.) संबंधरहित, निःसंतान ।
निरपना–(हिं.वि.) जो आत्मीय न हो, पराया ।
निरपराध–(सं. पुं.) दोषहीनता, निर्दोषता, शुद्धता; (वि.) अपराधरहित, निर्दोष; (अव्य.) विना कोई अपराध किये हुए ।
निरपराधी–(हिं. वि.) देखें 'निरपराध' ।
निरपवर्त–(सं. वि.) जो अपवर्तन न करता हो, जिसमें भाजक का पूरा भाग लग सके ।
निरपवाद–(सं. वि.) अपवादरहित, निर्दोष, जिसकी कोई बुराई न करे ।
निरपाय–(सं. वि.) जिसका नाश न हो ।
निरपेक्ष–(सं. वि.) जिसको किसी वस्तु की आकांक्षा या चाह न हो, जिसको किसी दूसरे की आशा न हो, तटस्थ, पृथक्, अलग, उदासीन ।
निरपेक्षा–(सं. स्त्री.) अवज्ञा, निराशा ।
निरपेक्षित–(सं. वि.) जिसकी अपेक्षा या आकांक्षा न की गयी हो ।
निरपेक्षी–(सं.वि.) अपेक्षा न रखनेवाला ।
निरफल–(हिं. वि.) निष्फल ।
निरबंध–(हिं. वि.) बन्धनहीन ।
निरबंसी–(हिं. वि.) निर्वंश, जिसको वंश या सन्तान न हो ।
निरबल–(हिं. वि.) देखें 'निर्बल' ।
निरबहना–(हिं. क्रि.अ.) देख 'निभना' ।
निरबाहना–(हिं. क्रि. स.) निर्वाह करना ।
निरभिभव–(सं. वि.) जो जीता न जा सके, जो अपमानित न हों ।
निरभिमान–(सं. वि.) अभिमानरहित ।
निरभिलाष–(सं. वि.) अभिलाषारहित ।
निरभ्र–(सं.वि.) मेघशून्य, बिना बादल का ।
निरमण–(सं.पु.) अत्यन्त अनुराग, अधिक प्रेम ।
निरमना–(हिं. क्रि. स.) निर्माण करना, बनाना, रचना ।
निरमर्ष–(सं. वि.) जिसे कोप न हो, धीर, धर्मयुक्त, अमर्षशून्य ।
निरमान–(हिं. पुं.) देखें 'निर्माण' ।
निरमाना–(हिं. क्रि. स.) निर्माण करना, बनाना, तैयार करना ।
निरमित्र–(सं. वि.) शत्रुरहित; (पुं.) नकुल के एक पुत्र का नाम ।
निरमूलना–(हिं. क्रि. स.) निर्मूल करना, नष्ट करना ।
निरमोल–(हिं. वि.) अमूल्य, अनमोल, बहुत बढ़िया ।
निरमोही–(हिं. वि.) देखें 'निर्मोही' ।
निरय–(सं. पुं.) नरक ।
निरयण–(सं. पु.) ज्योतिष में गणना करने की एक रीति, अयनरहित गणना ।
निरर्गल–(सं.वि.) जिसमें कोई बाधा न हो
निरर्थ–(सं. वि.) अर्थशून्य, जिसका अर्थ न हो, निष्फल, व्यर्थ ।
निरर्थक–(सं. वि.) अर्थशून्य, निष्फल, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, न्याय का एक निग्रहस्थान, काव्य का एक दोष ।
निरर्बुद–(सं. पुं.) एक नरक का नाम ।
निरलंकार–(हिं. वि.) अलंकाररहित ।
निरलस–(हिं. वि.) आलस्यहीन ।
निरवकाश–(सं.वि.) जिसे अवकाश न हो ।
निरवग्रह–(सं. वि.) स्वतन्त्र, प्रतिबन्धरहित, बिना विघ्न या बाधा का, जो दूसरे की इच्छा पर न हो ।
निरवच्छिन्न–(सं. वि.) जिसका क्रम न टूटे, निरन्तर ।
निरवद्य–(सं.वि.) अनिन्द्य, विशुद्ध, निर्मल; (पुं) गायत्री का एक भेद, परमात्मा ।
निरवधि–(सं. अव्य.) निरन्तर, बराबर, सर्वदा; (वि.) असीम, अपार ।
निरवयव–(सं. वि.) अंगों से रहित, निराकार, (न्याय के मत से परमाणु तथा आकाशादि निरवयव माने गये हैं तथा सर्वथा अवयवशून्य केवल ब्रह्म है ।)
निरवरोध–(सं. वि.) प्रतिबन्धरहित, बिना रुकावट का ।
निरवलंब–(सं.वि.) आधाररहित, निराश्रय, बिना सहारे का, जिसको कहीं ठिकना न हो, जिसका कोई सहायक न हो ।
निरवलंबन–(सं.वि.) निराश्रय, असहाय ।
निरवशेष–(सं. वि.) समग्र, समूचा ।
निरवशेषित–(सं. वि.) जिसका कुछ बचा न हो ।
निरवसाद–(सं. वि.) जिसको दुःख या अवशिष्ट न हो ।
निरवस्कृत–(सं. वि.) परिष्कृत, स्वच्छ किया हुआ ।
निरवस्तार–(सं.वि.) बिना बिछौने का ।
निरवाना–(हिं. क्रि. स.) निराने का काम दूसरे से कराना ।
निरवार–(हिं. पु.) निस्तार, छुटकारा, सुलझाने का काम, निबटाना, गाँठ आदि छुड़ाना, सुलझन, निर्णय ।
निरवारना–(हिं. क्रि. स.) मुक्त करना, छुडाना, त्यागना, सुलझाना, गाँठ आदि छुड़ाना, निर्णय करना ।
निरवाह–(हिं. पुं.) निर्वाह ।
निरशन–(सं. पुं.) अनशन, भोजन न करना, लंघन, उपवास; (वि.) जिसने कुछ खाया न हो ।

निरसंक–(हि. वि.) देखें 'निःशंक'।
निरस–(सं. वि.) नीरस, रसहीन, जिसमें रस न हो, फीका, निःसत्त्व, असार, सूखा, रूखा, विरक्त।
निरसन–(सं. पु.) निराकरण, परिहार, वध, थूकना, दूर करना, हटाना, निकालना, नाश।
निरसा–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
निरस्त–(सं. वि.) जल्दी से निकाला हुआ, थूका हुआ, उगला हुआ, प्रेषित, भेजा हुआ; (पु.) थूकने की क्रिया, सोचने की क्रिया।
निरस्त्र–(सं.वि.) अस्त्रशून्य, विना अस्त्र का।
निरस्थि–(सं.वि.) (वह मांस) जिसमें से हड्डी अलग कर दी गई हो।
निरस्य–(सं. वि.) खंडनीय, परिहार करने योग्य; –मान–(वि.) अलग किया, जानेवाला।
निरहंकार–(स. वि.) अभिमानरहित।
निरहंकृत–(सं. वि.) अहंकाररहित।
निरहंकृति–(स. स्त्री.) निरभिमान, निरहंकार।
निरहंक्रिय–(स. वि.) जिसका घमंड नष्ट हुआ हो।
निरहंमति–(स. वि.) अभिमानरहित।
निरहुतु–(हि. वि.) देखें 'निहुतु'।
निरा–(हि.वि.) विशुद्ध, विना मिलावट का, केवल, एकमात्र, जिसके साथ और कोई न हो, नितान्त, निपट।
निराई–(हि. स्त्री.) निराने का काम, खेत में अनावश्यक उगनवाली घास या तृण हटाने का काम, निराने का शुल्क।
निराकरण–(सं. पुं.) निवारण, किसी बुराई को दूर करने का काम, छांटना, अलग करना, मिटाना, हटाना, दूर करना, सिद्धान्त, निर्णय, शमन, परिहार, युक्ति को काटने का काम, मीमांसा, अवधारण।
निराकांक्ष–(सं. वि.) जिसको अभिलाषा या आकांक्षा न हो।
निराकांक्षा–(सं. स्त्री.) लोभ, लालसा या आकांक्षा का न होना।
निराकांक्षी–(सं. वि.) निस्पृह, जिसको कुछ इच्छा न हो।
निराकार–(सं. वि.) जिसका कोई आकार न हो; (पुं.) परमेश्वर, परब्रह्म, आकाश।
निराकाश–(सं. वि.) आकाशशून्य।
निराकुल–(सं. वि.) अनुद्विग्न, जो घबड़ाया न हो, अत्यन्त व्याकुल, बहुत घबड़ाया हुआ।
निराकृत–(सं. वि.) निरस्त, खंडन किया हुआ, निवारित, नष्ट किया हुआ, विचारा हुआ, दूर किया हुआ, हटाया हुआ।
निराकृति–(सं. स्त्री.) प्रत्यादेश, परिहार; (वि.) निराकार।
निराक्रंद–(स. पुं.) वहाँ रोना जहाँ कोई पुकार सुननेवाला या सहायता करनेवाला न हो; (वि.) जिसकी सहायता कोई न करे।
निराक्रिया–(सं. स्त्री.) प्रतिवन्ध।
निराखर–(हि.वि.) विना अक्षर का, जिसमें अक्षर न हों, अपठित, मूढ़, मौन, चुप।
निराग–(सं. वि.) रागशून्य, रागहीन।
निरागम–(सं. वि.) आगमरहित।
निरागस्–(सं. वि.) पापशून्य, पापरहित।
निराग्रह–(सं. वि.) आग्रहशून्य, विना आग्रह का।
निराचार–(सं. वि.) आचारशून्य।
निराजी–(हि. स्त्री.) जुलाहे के करघे के हत्थे पर की एक लकड़ी।
निराजीव्य–(सं. वि.) जिसका जीवनोपाय कुछ न हो।
निराट–(हि.वि.) एकमात्र, निपट, निरा।
निराडंबर–(सं. वि.) आडंबररहित, विना ठाट-वाट का।
निरातंक–(सं. वि.) भयशून्य, रोगरहित।
निरातप–(सं.वि.) आतप या उष्णतारहित।
निरातपा–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात।
निरात्मक–(सं. वि.) आत्मशून्य।
निरादर–(सं. पुं.) अपमान।
निरादान–(सं. पुं.) लेन का अभाव; (वि.) जो प्रतिग्रह स्वीकार न करता हो।
निरादिष्ट–(सं. वि.) ऋण जो अदा कर दिया गया हो।
निरादेश–(सं. पुं.) चुकाने का काम, भुगतान; (वि.) आदेशरहित।
निराधान–(सं. वि.) आधानरहित।
निराधार–(सं.वि.) अवलम्बहीन, आश्रयरहित, जिसको सहारा न हो, जो सहारे पर न हो, जो विना अन्न-जल के हो, जो प्रमाणों से पुष्ट न हो, मिथ्या, अयुक्त, जिसको जीविका का सहारा न हो।
निराधि–(सं. वि.) रोगरहित, जिसको कोई चिन्ता न हो।
निरानंद–(सं. वि.) आनन्दरहित, शोकाकुल; (पुं.) आनन्द का अभाव दुःख, चिन्ता।
निराना–(हि. क्रि. स.) पौधों के आस-पास उगी हुई घास आदि को खोदकर हटाना।
निरापद्–(सं. वि.) जिसको कोई आपत्ति या डर न हो, जिसको किसी प्रकार की विपत्ति की संभावना न हो, सुरक्षित, जहाँ किसी वात का डर न हो।
निरापन–(हि. वि.) पराया, जो अपना न हो।
निरावाध–(सं. वि.) वाधाशून्य।
निरामय–(सं. वि.) रोगशून्य, भला, चंगा, उपद्रवशून्य, कुशल; (पुं.) शिव, महादेव।
निरामालु–(सं. पुं.) कैथ का वृक्ष, निर्मली।
निरामिष–(सं. वि.) विना मांस का, मांसरहित, जिसमें मांस न मिला हो, जो मांस न खाता हो।
निरामिषाशी–(सं. वि.) मांस न खानेवाला, शाकाहारी।
निराय–(सं.वि.) आयरहित, विना कर का।
निरायण–(सं. वि.) अयनरहित।
निरायत–(सं. वि.) अविस्तृत, न फैला हुआ, सिकुड़ा हुआ।
निरायास–(सं. वि.) आयास या चेष्टारहित, सुकर।
निरायुध–(सं. वि.) अस्त्रहीन।
निरारंभ–(सं. वि.) आरम्भ या प्रयत्नशून्य।
निरारा–(हि. वि.) देखें 'निराला', पृथक्, अलग।
निरालंब–(सं. वि.) निराधार, विना सहारे का, विना ठिकाने का।
निरालंबन–(सं. वि.) निराश्रय, विना ठौर-ठिकाने का।
निरालंबा–(सं. स्त्री.) छोटी जटामासी।
निरालस–(हि. वि.) विना आलस्य का।
निरालस्य–(सं. वि.) जिसमें आलस्य न हो, तत्पर; (पुं.) आलस्य का अभाव।
निराला–(हि. पुं.) एकान्त स्थान, ऐसा स्थान जहाँ कोई मनुष्य या वस्ती न हो; (वि.) निर्जन, एकान्त, अद्भुत, विलक्षण, अपूर्व, सब से भिन्न, अनोखा, अति उत्तम, अनूठा।
निरालोक–(सं.वि.) आलोकरहित, जिसमें से प्रकाश निकल गया हो, अन्धकारयुक्त।
निरावना–(हि. क्रि. स.) देखें 'निराना'।
निरावर्ष–(सं. वि.) वृष्टि से रहित।
निरावृत–(सं. वि.) जो ढका न हो।
निराशंक–(सं. वि.) आशंकारहित, जिसमें किसी बात का सन्देह न हो।
निराश–(सं. वि.) आशारहित।
निराशक–(सं. वि.) निराश करनेवाला।
निराशता–(सं. स्त्री.) निराश होने का धर्म या भाव।
निराशत्व–(सं. पुं.) निराश का भाव।
निराशा–(सं. स्त्री.) आशा का अभाव।

निराशिष्–(सं. वि.) विना आशीर्वाद का, तृष्णारहित ।
निराशी–(सं. वि.) आशाहीन, हताश, विरक्त, उदासीन ।
निराश्रम–(सं. वि.) आश्रमरहित ।
निराश्रय–(सं. वि.) विना आश्रय या सहारे का, असहाय, अशरण, जिसको कहीं ठिकाना न हो ।
निरास–(सं. पुं.) निराकरण, खण्डन ।
निरासन–(सं. वि.) आसनरहित ।
निरासी–(हिं. वि.) निराश, उदास ।
निरास्वाद–(सं. वि.) स्वादरहित ।
निरास्वाद्य–(सं. वि.) सम्भोगरहित ।
निराहार–(सं. वि.) आहाररहित, जिसने भोजन न किया हो, उपवासवाला (व्रत); (पुं.) आहार का अभाव ।
निरिंग–(सं. वि.) अचल, निश्चल ।
निरिंगिणी–(सं. स्त्री.) चिक, परदा, झिलमिली ।
निरिंद्रिय–(सं. वि.) इन्द्रियरहित, जिसको कोई इन्द्रिय न हो ।
निरिच्छ–(सं. वि.) इच्छाशून्य, जिसको इच्छा न हो ।
निरिच्छना–(हिं. क्रि. स.) निरीक्षण, देखना ।
निरी–(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'निरा' ।
निरीक्षक–(सं. वि.) दर्शक, देखनेवाला, देखरेख करनेवाला ।
निरीक्षण–(सं. पुं.) दर्शन, देखरेख, देखने का ढंग, चितवन, नेत्र, आँख, जाँच करना ।
निरीक्षमाण–(सं. वि.) जो देख रहा हो ।
निरीक्षा–(सं. स्त्री.) दर्शन, निरीक्षण ।
निरीक्षित–(सं. वि.) देखा हुआ, निरीक्षण किया हुआ, जाँचा हुआ ।
निरीक्ष्य–(सं. वि.) निरीक्षण के योग्य ।
निरीश–(सं. वि.) विना मालिक का, ईश्वर को न माननेवाला, नास्तिक ।
निरीश्वर–(सं. वि.) अनीश्वरवादी, नास्तिक ।
निरीश्वरवाद–(सं. पुं.) यह सिद्धान्त कि ईश्वर नहीं है, नास्तिकता ।
निरीश्वरवादी–(सं. पुं.) नास्तिक जो ईश्वर को न मानता हो ।
निरीष–(सं. पुं.) हल का फार ।
निरीह–(सं. वि.) चेष्टाशून्य, जो किसी वात के लिये प्रयत्न न करता हो, जिसको किसी वात की चाह न हो, विरक्त, उदासीन, तटस्थ, जो सर्वदा सव से मेल रखता हो; (पुं.) विष्णु ।
निरीहा–(सं. स्त्री.) निश्चेष्टा, विरक्ति ।
निरुआर–(हिं. पुं.) देखें 'निरवार' ।
निरुआरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'निरवारना' ।
निरुक्त–(सं. पुं.) निर्वचन, वेद के छः अंगों में से एक, यास्कमुनिकृत वैदिक शब्दों के निघण्टु की व्याख्या जिसम उनके अर्थों का निर्णय किया गया है; (वि.) व्याख्या किया हुआ, निश्चित किया हुआ ।
निरुक्ति–(सं. स्त्री.) निर्वचन, व्युत्पत्ति आदि को वतलाते हुए किसी पद या वाक्य की व्याख्या, एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ लगाया जाय परन्तु वह अर्थ युक्तिपूर्ण हो ।
निरुच्छ्वास–(स. वि.) संकीर्ण, सँकरा, जहाँ वहुत से लोग भरे हों ।
निरुज–(हिं. वि.) देखें 'नीरुज' ।
निरुत्तर–(सं. वि.) उत्तररहित, जो उत्तर न दे सके ।
निरुत्पात–(सं. वि.) उपद्रवशून्य, उत्पातरहित ।
निरुत्सव–(सं. वि.) उत्सवहीन, विना धूमधाम का ।
निरुत्साह–(सं. वि.) विना उत्साह का ।
निरुत्सुक–(सं. वि.) औत्सुक्यहीन; (पुं.) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम ।
निरुदक–(सं. वि.) जलहीन, विना जल का ।
निरुद्ध–(सं. वि.) वँधा हुआ, रुका हुआ; (पुं.) योग की पाँच प्रकार की मनोवृत्तियों में से चित्त की वह अवस्था जिसम वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त कर निश्चेष्ट हो जाता है; **–गुद**–(पुं.) एक रोग जिसमें मल-द्वार प्रायः वन्द हो जाता है; **–प्रकस**–(पुं.) मूत्र-द्वार वन्द होना तथा बूँद-बूँद मूत्र गिरने का रोग ।
निरुद्यम–(सं. वि.) विना उद्योग का, जिसके पास कोई उद्यम या काम न हो, बिना काम-काज का ।
निरुद्यमी–(हिं. वि.) जो कोई उद्यम न करता हो ।
निरुद्योग–(सं. वि.) जिसके पास कोई उद्योग न हो, निरुद्यम ।
निरुद्योगी–(हिं. वि.) जो कोई उद्योग न करता हो ।
निरुद्विग्न–(सं. वि.) उद्वेगरहित, निश्चिन्त ।
निरुद्वेग–(सं. वि.) उद्वेगरहित, निश्चिन्त ।
निरुपक्रम–(सं. वि.) विना उपक्रम का ।
निरुपद्रव–(सं. वि.) उपद्रवरहित, जो उत्पात या उपद्रव न करता हो ।
निरुपद्रवता–(सं. स्त्री.) निरुपद्रव होने की क्रिया या भाव ।
निरुपद्रवी–(हिं. वि.) जो उपद्रव न करता हो, शान्त ।
निरुपपत्ति–(सं. वि.) जिसमें किसी प्रकार की उपपत्ति न हो ।
निरुपपद–(सं. वि.) उपपदरहित ।
निरुपप्लव–(सं. वि.) उत्पातरहित ।
निरुपभोग–(सं. वि.) उपभोगरहित ।
निरुपम–(सं. वि.) उपमारहित, जिसकी उपमा या तुलना न हो ।
निरुपमा–(सं. स्त्री.) गायत्री का एक नाम ।
निरुपयोग–(सं. वि.) जिसका उपयोग न किया जा सके, निरर्थक, व्यर्थ ।
निरुपरोध–(सं. वि.) उपरोधरहित, अपक्षपाती ।
निरुपल–(सं. वि.) विना पत्थर का ।
निरुपलेप–(सं. वि.) उपलेपरहित ।
निरुपसर्ग–(सं. वि.) उत्पातरहित, उपसर्गहीन ।
निरुपस्कृत–(सं. वि.) पवित्र, स्वाभाविक, अकृत्रिम ।
निरुपहत–(सं. वि.) शुभसूचक ।
निरुपाख्य–(सं. वि.) जिसकी व्याख्या न हो सके, असत्य, जिसके होन की संभावना न हो ।
निरुपाधि–(सं. वि.) उपाधिशून्य, मायारहित, वाधारहित; (पुं.) ब्रह्मा ।
निरुपाय–(सं. वि.) उपायहीन, जो कुछ उपाय न कर सके ।
निरुपेक्ष–(स. वि.) उपेक्षारहित ।
निरुवरना–(हिं. क्रि. अ.) सुलझना, कठिनाई मिटना ।
निरुवार–(हिं. पुं.) मोचन, मुक्ति, छुटकारा, वचाव, उलझन मिटाने का काम, निर्णय, सुलझाने का काम ।
निरुवारना–(हि. क्रि. स.) मुक्त करना, छोड़ाना, निर्णय करना, सुलझाना, निवटाना, उलझन मिटाना ।
निरुष्मन्–(सं. वि.) जो गरम न हो, शीतल ।
निरूढ़–(सं. वि.) प्रसिद्ध, प्रख्यात, व्युत्पन्न, अविवाहित, क्वारा; (पुं.) व्युत्पत्ति या लक्षणा द्वारा अर्थबोधक शब्द, एक प्रकार का पशु-याग ।
निरूढ-लक्षणा–(सं. स्त्री.) लक्षणा का वह भेद जिसमें किसी शब्द का वास्तविक अर्थ रूढ़ हो गया हो अर्थात् केवल प्रसंग से ही वह अर्थ लगाया गया हो ।
निरूढा–(सं. स्त्री.) अविवाहिता या कुँवारी स्त्री ।
निरूढि–(सं. स्त्री.) प्रसिद्धि, निरूढ-लक्षणा ।

निरूप–(सं. वि.) रूपहीन, निराकार, कुरूप, भद्दा; (पुं.) वायु, देवता, आकाश।
निरूपक–(सं.वि.) किसी विषय का निरूपण करनेवाला।
निरूपकता–(सं. स्त्री.) निरूपण करने का भाव।
निरूपण–(सं.पुं.) आलोक, विचार, विवेचनसहित निर्णय, निदर्शन, निरूपकता।
निरूपना–(हि.क्रि.स.) निर्णय या निश्चित करना, स्थिर करना।
निरूपम–(हि. वि.) देखें 'निरुपम'।
निरूपित–(सं.वि.) विचारा हुआ, निर्णय किया हुआ, दृष्ट, देखा हुआ।
निरूप्य–(सं. वि.) निरूपण करने योग्य।
निरूह–(स.पुं.) वस्ति की पिचकारी।
निरूहण–(सं. पु.) स्थिरता, निश्चय।
निरेक–(सं. वि.) परिपूर्ण, पूरा।
निरेखना–(हि. क्रि. सं.) देखें 'निरखना'।
निरै–(हि. पु.) निरय, नरक।
निरोग, निरोगी–(हि. वि.) रोगरहित, आरोग्यपूर्ण, स्वस्थ।
निरोध–(सं. पुं.) नाश, रुकावट, बंधन, प्रतिबंध, अवरोध, घेरा, योग में चित्त की सब वृत्तियों को रोकने का भाव।
निरोधक–(सं. वि.) निरोध करनेवाला।
निरोधन–(सं. पुं.) गति का अवरोध, रुकावट, निरोध।
निरोधी–(सं.वि.) प्रतिबन्धक, रोकनेवाला।
निर्ख–(फा.पुं.) दर, भाव; –नामा–(पुं.) वह सूची जिसमें दुकान की प्रत्येक या विशिष्ट विक्रेय वस्तुओं का भाव लिखा हो।
निर्गंध–(सं.वि.) गंधरहित; –ता–(स्त्री.) निर्गंध होने की अवस्था या भाव; –पुष्पी–(स्त्री.) सेमर का पेड़।
निर्गंधन–(सं. पुं.) मारण।
निर्गत–(सं. वि.) निकला हुआ, बाहर आया हुआ।
निर्गम–(सं. पुं.) निकलना, निःसरण, निकास।
निर्गमन–(सं.पु.) द्वार, द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
निर्गमना–(हि.क्रि.अ.) निकलना।
निर्गर्व–(सं. वि.) अहंकाररहित
निर्गवाक्ष–(स.वि.) जिसमें झरोखा न हो।
निर्गुंठी–(सं.स्त्री.) निर्गुंडी, सिंदुवार।
निर्गुंडी–(सं.स्त्री.) एक पौधा जिसकी जड़ औषधों में प्रयुक्त होती है, सँभालू।
निर्गुण–(सं. वि.) जिसमें गुण न हो, जिसमें डोरी या चिल्ला न हो, जिसमें सत्त्व, रज और तम तीनों गुण न हों; (पुं.) परमेश्वर; –ता–(स्त्री.) निर्गुण होने की क्रिया या भाव, गुणहीनता; –त्व–(पु.) गुणहीनता, मूर्खता।
निर्गुणात्मक–(सं.वि.) निर्गुणस्वरूप (ब्रह्म)।
निर्गुणिया–(हि. वि.) जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो।
निर्गुणी–(हि.वि.) जिसमें कोई गुण न हो, मूर्ख।
निर्गूढ़–(सं.वि.) जो बहुत गूढ़ या गुप्त हो।
निर्गृह–(सं.वि.) गृहशून्य, जिसके घर न हो।
निर्गौरव–(सं. वि.) गौरवरहित, अहंकारशून्य, विनीत, नम्र।
निर्ग्रंथ–(सं. पुं.) दिगम्बर जैनी; (वि.) जुआ खेलनेवाला, निर्धन, निःसहाय, मूर्ख।
निर्ग्रंथक–(सं.वि.) निष्फल, वस्त्ररहित, नंगा।
निर्ग्रंथन–(सं. पुं.) मारण।
निर्ग्रंथि–(सं.वि.) जिसमें गाँठ या गिरह न हो
निर्ग्रंथिक–(सं. पुं.) क्षपणक; (वि.) चतुर, हीन, निर्ग्रंथि।
निर्ग्राह्य–(सं. वि.) जो अच्छी तरह से ग्रहण न किया जा सके।
निर्घंट–(सं. पुं.) शब्द या ग्रन्थ-सूची।
निर्घट–(सं. पुं.) वह हाट जहाँ किसी प्रकार का राज-कर न लगता हो।
निर्घात–(सं. पुं.) तीव्र वायु के चलने से उत्पन्न शब्द, चोट।
निर्घात्य–(सं. वि.) छेदने योग्य।
निर्घुरिणी–(सं. स्त्री.) निर्झरिणी, पानी का सोता।
निर्घृण–(सं. वि.) दयाशून्य, निर्दय, निन्दित अयोग्य, जिसको बुरा काम करने में घृणा न हो।
निर्घोष–(सं. पुं.) शब्द, निनाद; (वि.) शब्द-शून्य, शब्दरहित।
निर्छल–(हि. वि.) देखें 'निश्छल'।
निर्जन–(सं. वि.) जनशून्य (स्थान), जिस स्थान में कोई मनुष्य न हो, सुनसान।
निर्जर–(सं.पुं.) देवता, सुधा, अमृत; (वि.) जरारहित, जिसको बुढ़ापा न आवे।
निर्जरा–(सं.स्त्री.) गुरुच, गिलोय, तालपर्णी।
निर्जरायु–(सं. वि.) जरायुहीन।
निर्जल–(सं. वि.) जलशून्य, बिना जल का, जल के संसर्ग से रहित; (पुं.) वह प्रदेश जहाँ पानी न हो; निर्जला एकादशी–(स्त्री.) जेठ सुदी एकादशी तिथि जिस दिन हिन्दू लोग व्रत करते हैं और पानी तक नहीं पीते।
निर्जित–(सं. वि.) पराजित, जीता हुआ, जो वश में कर लिया गया हो।
निर्जिह्व–(सं. वि.) जिसके जीभ न हो।
निर्जीव–(सं. वि.) प्राणहीन, मृतक, अशक्त, उत्साहहीन।
निर्जीवन–(हि. वि.) जीवनहीन।
निर्जीवित–(सं. वि.) जीवनहीन।
निर्झर–(सं. पुं.) पहाड़ से निकला हुआ जलप्रवाह, झरना, सोता।
निर्झरिणी–(सं. स्त्री.) नदी, दरिया।
निर्झरी–(सं. पुं) पर्वत, गिरि, पहाड़; (सं. स्त्री.) पानी का झरना, सोता।
निर्णय–(सं.पुं.) उचित-अनुचित का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक पक्ष को ठीक निर्धारित करना, किसी विषय में कोई सिद्धान्त स्थिर करना, विचार, मीमांसा के किसी सिद्धान्त से कोई परिणाम निकालना, विरोध का परिहार, निबटारा।
निर्णयन–(सं. पुं.) निर्णय।
निर्णयोपमा–(सं. स्त्री.) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुण-दोषों की विवेचना की जाती है।
निर्णायक–(सं. पुं.) न्यायकर्त्ता; –मत–(पुं.) समान मत होने पर सभापति का निजी निर्णयात्मक मत।
निर्णायन–(सं. पुं.) निर्णय का कारण।
निर्णिक्त–(सं. वि.) शुद्ध किया हुआ।
निर्णिज–(सं. वि.) जीता हुआ।
निर्णीत–(सं. वि.) निर्णय किया हुआ।
निर्णेक–(सं. पुं.) अत्यन्त शुद्ध।
निर्णेजक–(सं. पुं.) रजक, धोबी।
निर्णेजन–(सं. पुं) शुद्धि, प्रायश्चित्त।
निर्णेता–(सं.वि.) निर्णय करने वाला।
निर्णेय–(सं. वि.) निर्णय करने योग्य।
निर्त–(हि. पुं.) देखें 'नृत्य'।
निर्तक–(हि. पुं.) देखें 'नर्तक'।
निर्तना–(हि.क्रि.अ.) नृत्य करना, नाचना।
निर्दंड–(सं. वि.) दण्डहीन, जिसको दण्ड न दिया जाय।
निर्दंभ–(सं. वि.) अभिमानरहित।
निर्दई–(हि. वि.) देखें 'निर्दय'।
निर्दग्ध–(सं. वि.) जो जला न हो।
निर्दग्धिका–(सं. वि.) [illegible]।
निर्दट–(सं. वि.) निर्दय, कठोरहृदय।
निर्दट–(सं. वि.) निर्दय, निष्प्रयोजन।
निर्दय–(सं. वि.) दयाहीन, निष्ठुर; –ता–(स्त्री.) निष्ठुरता; –त्व–(पु.) –पन–(हि. पुं.) निर्दय होने का भाव या क्रिया।
निर्दयी–(हि. वि.) देखें 'निर्दय'।
निर्दर–(सं. पुं.) गुफा, कन्दरा; (वि.) कठिन।

निर्दल–(सं. वि.) जो किसी दल में न हो, दलहीन, दलबंदी से अलग ।
निर्दलन–(सं. पुं.) विदारण ।
निर्दशन–(सं. वि.) विना दाँत का ।
निर्दहन–(सं.पुं.) भिलावे का पेड़, आग से जलाना; (वि.) अग्निशून्य ।
निर्दहना–(हि. क्रि. स.) जलाना ।
निर्दहनी–(सं. स्त्री.) मूर्वा लता ।
निर्दहित–(सं. वि.) आग से जला हुआ ।
निर्दिग्ध–(सं. वि.) पुष्ट, मोटा ।
निर्दिष्ट–(सं. वि.) निश्चित, ठहराया हुआ, आदिष्ट, आज्ञा दिया हुआ ।
निर्दूषण–(सं. वि.) देखें 'निर्दोष' ।
निर्देश–(सं. पुं.) उल्लेख, वर्णन, संकेत, संज्ञा, चेतन, निश्चय, कथन, आज्ञा ।
निर्देशन–(सं. पुं.) निर्देश करने की क्रिया ।
निर्देशिका–(सं स्त्री.) व्यवसायियों के नाम, पते आदि की पुस्तक ।
निर्देष्टा–(सं. वि.) निर्देश देनेवाला ।
निर्दैन्य–(सं. वि.) दीनतारहित ।
निर्दोष–(सं. वि.) दोषरहित, जिसने कोई अपराध न किया हो; **–ता**–(स्त्री.) दोषहीनता, शुद्धता ।
निर्दोषी–(हि. वि.) जिसने कोई अपराध न किया हो ।
निर्द्रव्य–(सं. वि.) दरिद्र, धनहीन ।
निर्द्रोह–(सं. वि.) द्रोहरहित, मित्र जैसा ।
निर्द्वंद्व–(सं. वि.) जिसका विरोध करनेवाला कोई न हो, जो राग-द्वेष से रहित हो, स्वच्छन्द ।
निर्धन–(सं.वि.) धनरहित, दरिद्र, कंगाल; **–ता**–(स्त्री.) दरिद्रता ।
निर्धर्म–(सं. वि.) जो धर्म से रहित हो ।
निर्धार–(सं. पुं.) निर्धारण, निश्चित करना, ठहराना ।
निर्धारण–(सं. पुं.) निर्णय, निश्चय, न्याय के अनुसार किसी एक वर्ग आदि में से गुण, धर्म आदि का विचार करते हुए वहुतों में से एक को अलगाना ।
निर्धारना–(हिं.क्रि.स.) निर्धारित करना, निश्चित करना, ठहराना ।
निर्धारित–(सं.वि.) निश्चित, ठहराया हुआ ।
निर्धूत–(सं.वि.) खण्डित, टूटा हुआ, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, निन्दा किया हुआ ।
निर्धूम–(सं. वि.) जहाँ धुआँ न हो ।
निर्धौत–(सं. वि.) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ ।
निर्नमस्कार–(सं. वि.) प्रणामरहित ।
निर्नर–(सं. वि.) मनुष्यशून्य, नररहित ।
[illegible]प–(सं. वि.) विना मालिक का ।
निर्नाभि–(सं. वि.) जिसको ढोंढ़ी न हो ।
निर्नाशन–(सं. पुं.) निर्वासन, वहिष्कार ।
निर्निमित्त–(सं. वि.) अकारण ।
निर्निमेष–(सं. वि.) जो पलक न गिराता हो; (अव्य.) टकटकी लगाये हुये ।
निर्निवार्य–(सं. वि.) अनिवार्य ।
निर्नीड़–(सं. वि.) आश्रयशूय, विना घरद्वार का ।
निर्पक्ष–(हिं. वि.) पक्षपातरहित ।
निर्फल–(हिं. वि.) देखें 'निष्फल' ।
निर्बंध–(सं. पुं.) आग्रह, हठ, रुकावट ।
निर्बंधी–(सं. वि.) आवश्यक, आग्रही ।
निर्बंधु–(सं. वि.) बंधुरहित, बंधुहीन ।
निर्बर्हण–(सं. वि.) निर्वल ।
निर्बल–(सं. वि.) बलहीन ।
निर्बलता–(सं. स्त्री.) शक्तिहीनता ।
निर्बहना–(हिं. क्रि. अ.) पार होना, दूर होना, अलग होना, पालन होना, निभना ।
निर्बाचन–(हिं. पुं.) देखें 'निर्वाचन' ।
निर्बाण–(हिं. पुं.) देखें 'निर्वाण' ।
निर्बाध–(सं. वि.) विना प्रतिबन्ध का, निरुपद्रव ।
निर्बुद्धि–(सं. वि.) बुद्धिहीन, मूर्ख ।
निर्बोध–(सं. वि.) जिसको हिताहित का ज्ञान न हो, अज्ञानी ।
निर्भट–(सं. वि.) दृढ़, पुष्ट ।
निर्भय–(सं. वि.) भयरहित, जिसको कोई डर न हो, निडर; **–ता**–(स्त्री.) निडर होने की अवस्था ।
निर्भर–(सं.वि.) वहुत, अधिक, मिला हुआ, अवलंवित, आश्रित, भरा हुआ; (पुं.) वेतनशून्य भृत्य ।
निर्भर्त्सन–(सं. पुं.) निन्दा, तिरस्कार, डाँट-डपट ।
निर्भर्त्सना–(सं. स्त्री.) निन्दा ।
निर्भर्त्सित–(सं. वि.) जिसकी निन्दा की गई हो ।
निर्भाग्य–(सं. वि.) मन्दभाग्य, अभागा ।
निर्भाज्य–(स. वि.) जो भाग करने या बाँटने के योग्य न हो ।
निर्भिन्न–(स. वि.) अभिन्न, खण्डित ।
निर्भीक–(सं.वि.) निःशंक, निडर, भयरहित ।
निर्भीकता–(सं. स्त्री.) निर्भीक या निडर होने का भाव ।
निर्भीत–(सं. वि.) भयरहित, निडर ।
निर्भुज–(सं. वि.) जिसका एक छोर मुड़ा हो, विना हाथ का ।
निर्भृति–(सं. पुं.) वेतनहीन भृत्य ।
निर्भेद–(सं. पुं.) विदारण, फाड़ना ।
निर्भेदी–(सं. वि.) भेद करनेवाला ।
निर्भेद्य–(सं. वि.) निर्भेद करने योग्य ।
निर्भोग–(सं. वि.) संभोगरहित, सुखहीन ।
निर्भ्रम–(सं. वि.) भ्रमरहित, जिसमें कोई सन्देह न हो; (अव्य.) विना सन्देह के, बेखटके ।
निर्भ्रांत–(सं. वि.) भ्रमरहित, जिसमें कोई सन्देह न हो ।
निर्मंत्र–(स.वि.) मन्त्रशून्य, विना मंत्र का ।
निर्मंथन–(सं.पुं.) अच्छी तरह मथना, मर्दन ।
निर्मक्षिक–(स. वि.) जिस देश में मक्खियाँ न हों, निर्जन देश ।
निर्मज्ज–(सं. वि.) मज्जारहित ।
निर्मत्सर–(सं. वि.) अहंकारहीन, विना घमंड का ।
निर्मत्स्य–(सं.वि.) जिसमें मछलियाँ न हों ।
निर्मद–(सं. वि.) निरभिमान, हर्षशून्य ।
निर्मनुज, निर्मनुष्य–(सं. वि.) मनुष्य-शून्य, निर्जन ।
निर्मन्यु–(सं. वि.) क्रोधरहित ।
निर्मम–(सं. वि.) जिसको ममता, करुणा या मोह न हो ।
निर्ममता–(सं. स्त्री.) ममता का अभाव ।
निर्ममत्व–(सं. पुं.) निर्ममता ।
निर्मर्याद–(सं. वि.) विना मर्यादा का ।
निर्मल–(सं. वि.) मलहीन, स्वच्छ, पवित्र, शुद्ध, पापरहित, कलंकहीन, निर्दोष; (पुं.) अभ्रक, निर्मली का वृक्ष; **–ता**–(स्त्री.) विशुद्धता, स्वच्छता, शुद्धता, पवित्रता ।
निर्मला–(हिं. पुं.) एक नानकपंथी संप्रदाय जिसके प्रवर्तक रामदास नामक एक महात्मा थे ।
निर्मली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल का गूदा खाया जाता है, (इसके बीज को घिसकर गँदले पानी में डाल देने से पानी स्वच्छ हो जाता है।)
निर्मलोपल–(सं. पुं.) स्फटिक, विल्लौर ।
निर्मशक–(सं. वि.) मच्छड़रहित, जहाँ मच्छड़ न हों ।
निर्मांस–(सं. वि.) जिसमें मांस न हो, अति दुर्बल ।
निर्मा–(सं. स्त्री.) परिमाण, मल्य, दाम ।
निर्माण–(सं. पुं.) वनाने का काम, रचना, वनावट; **–विद्या**–(स्त्री.) मकान, पुल आदि वनाने की विद्या, वास्तुविद्या ।
निर्माता–(सं. पुं.) निर्माण करनेवाला, वनानवाला ।
निर्मात्रिक–(सं. वि.) विना मात्रा का, जिसमें मात्रा न हो ।
निर्माना–(हिं.क्रि.स.) निर्माण करना, वनाना
निर्माल्य–(सं. पुं.) देवता को अर्पित की।

हुई वस्तु।
निर्मित–(सं. वि.) रचा हुआ, बनाया हुआ।
निर्मुक्त–(सं. वि.) जो मुक्त हो गया हो, जो छूट गया हो, जिसके लिये किसी प्रकार का बन्धन न हो।
निर्मुक्ति–(सं. स्त्री.) छुटकारा, मुक्ति।
निर्मुंट–(सं. पुं.) सूर्य, खपड़ा, धूर्त, शठ।
निर्मूल, निर्मूलक–(सं. वि.) मूलरहित, बिना जड़ का, जड़ से उखाड़ा हुआ, बिना आधार का, जो सर्वथा नष्ट हो गया हो।
निर्मूलन–(सं. पुं.) उत्पाटन, उखाड़ना, निर्मूल होना या करना।
निर्मेघ–(सं. वि.) बिना बादल का।
निर्मेध–(सं. वि.) बुद्धिहीन।
निर्मोक–(सं.पुं.) साँप की केंचुली, मोचन, छुटकारा, आकाश, कवच।
निर्मोक्ता–(सं. वि.) मुक्त करनेवाला।
निर्मोक्ष–(सं.पुं.) त्याग, पूर्ण मोक्ष।
निर्मोच्य–(सं. वि.) मुक्ति पाने योग्य।
निर्मोल–(हिं. वि.) अमल्य, जिसका दाम बहुत अधिक हो।
निर्मोह–(सं. वि.) मोहशून्य, जिसके मन में मोह या ममता न हो; (पुं.) सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।
निर्मोहिया–(हिं. वि.) जिसके मन में ममता या दया न हो, कठोर हृदय का।
निर्मोही–(हिं.वि.) निर्दय, कठोर हृदय का।
निर्यंत्रण–(सं. वि.) बाधारहित, उद्दण्ड।
निर्यत्न–(सं. वि.) यत्नशून्य, आलसी।
निर्याण–(सं. पुं.) मुक्ति, मोक्ष, अदृश्य होना, शरीर में से आत्मा का निकलना।
निर्यात–(सं.वि.) निर्गत, निकला हुआ; (पुं) देश के बाहर भेजी हुई सामग्री; –कर–(पुं.) निर्यात पर लगनेवाला राज-कर।
निर्यातक–(हिं. वि., पुं.) निर्यात करनेवाला, देश का माल बाहर भेजनेवाला।
निर्यातन–(सं. पुं.) प्रतीकार, बदला चुकाना, धरोहर लौटा देना, ऋण चुकाना, मार डालना।
निर्याता–(सं. पुं.) कृषक, किसान।
निर्याति–(सं. स्त्री.) प्रस्थान।
निर्याम–(सं. पुं.) नाविक, मल्लाह, माँझी।
निर्यास–(सं.पुं.) कषाय, काढ़ा, वृक्षों में से निकलनेवाला रस, गोंद, लाह, छाल।
निर्युक्ति–(सं.स्त्री.) असंयोग, युक्तिहीनता।
निर्यूथ–(सं. वि.) यूथ या झुण्ड से अलग किया हुआ।
निर्यूप–(सं. पुं.) निर्यास, गोंद।
निर्योग–(सं. पुं.) अलंकार, सजावट।
निर्लक्षण–(सं. वि.) क्षुद्र, अप्रसिद्ध।
निर्लक्ष्य–(सं. वि.) लक्ष्यहीन, जो दृष्टि पर न पड़े।
निर्लज्ज–(सं. वि.) लज्जाहीन।
निर्लज्जता–(सं. स्त्री.) लज्जाहीनता।
निर्लिंग–(सं. वि.) जिसमें कोई निश्चित लिंग या चिह्न न हो।
निर्लिप्त–(सं. वि.) राग-द्वेष आदि से मुक्त, जो किसी विषय में आसक्त न हो, जो किसी से संबंध न रखता हो।
निर्लुंच–(सं.पुं.) लूट-मार करने का काम।
निर्लुंठन–(सं. पुं.) अपहरण, लूटना।
निर्लेखन–(सं. पुं.) किसी वस्तु पर का मैल खुरचना।
निर्लोभ–(सं. वि.) जिसको लोभ या लालच न हो।
निर्लोभी–(हिं. वि.) लोभरहित।
निर्लोमा–(सं. वि.) जिसके रोएँ न हों।
निर्लोह–(सं. पु.) बोल नामक गन्धद्रव्य।
निर्वंश–(सं.वि.) जिसके वंश में कोई संतति न हो; –ता–(स्त्री.) निर्वंश होने का भाव।
निर्वक्तव्य–(सं. वि.) निर्वाच्य, प्रकट न करने योग्य।
निर्वचन–(सं. पुं.) किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसम व्युत्पत्ति आदि का पूरा वर्णन हो; (वि.) वक्तव्यता-शून्य, मौन, प्रसिद्ध।
निर्वचनीय–(सं.वि.) निर्वचन करने योग्य।
निर्वपण–(सं. पुं.) अन्न आदि का संविभाग, दान।
निर्वयणी–(सं. स्त्री.) साँप की केंचुली।
निर्वर–(सं. वि.) निर्लज्ज, निर्भय, कठिन।
निर्वसन–(सं. वि.) वस्त्रहीन।
निर्वहण–(सं. पु.) समाप्ति, निर्वाह।
निर्वहना–(हिं. क्रि. स.) निभाना, चलाना।
निर्वात–(सं. वि.) प्रेरित, भेजा हुआ।
निर्वाक्–(सं. वि.) वाक्यहीन, जिसके मुख से बात न निकलती हो।
निर्वाक्य–(सं. वि.) वाक्यहीन, गूँगा।
निर्वाच्य–(सं. वि.) निर्वचनीय।
निर्वाचक–(सं. पुं.) जो चुनता हो, चुननवाला।
निर्वाचन–(सं. पुं.) किसी सामाजिक कार्य के लिये अनेक व्यक्तियों में से एक या अधिक को प्रतिनिधि चुन लेना।
निर्वाचित–(सं. वि.) चुना हुआ।
निर्वाण–(सं. पु.) निवृत्ति, शान्ति, समाप्ति, विनाश, विघ्न, संगम, विश्रान्ति, मुक्ति, जन्म शून्यता, विद्या का उपदेश; (वि.) अस्त, डूबा हुआ, बुझा हुआ, शान्त, मरा हुआ।
निर्वात–(सं. वि.) वायुरहित, जहाँ हवा न हो, अचंचल, स्थिर।
निर्वाद–(सं. पुं.) अपवाद, निन्दा, अवज्ञा।
निर्वानर–(सं. वि.) जहाँ बंदर न हों।
निर्वाप–(सं. पुं.) दान, भक्षण, भोजन।
निर्वापण–(सं. पुं.) वध, दान, सम्पादन।
निर्वापित–(सं. वि.) जिसको निर्वाण मिला हो, नाश किया हुआ, बुझाया हुआ।
निर्वास–(हिं. पुं.) प्रवास, विदेश-यात्रा, निर्वासन, देश से निकाला जाना।
निर्वासक–(सं. पुं.) निर्वास करनवाला।
निर्वासन–(सं. पुं.) मारण, वध, (नगर, देश, गाँव आदि से) दण्ड रूप में अपराधी का बाहर निकाला जाना, विसर्जन, निःसारण निकालना।
निर्वासनीय–(सं. वि.) देश से बाहर निकालने योग्य।
निर्वाह–(सं. पुं.) कार्य-सम्पादन, पालन, निर्वहण, समाप्ति, पूरा होना।
निर्वाहक–(सं.वि.) निबाहनेवाला, निर्वाह करनेवाला।
निर्वाहना–(हिं. क्रि. स.) निर्वाह करना निबाहना।
निर्वाहित–(सं. वि.) निबाहा हुआ।
निर्विकल्प–(सं. वि.) भेद से रहित, निश्चित, स्थिर; –क–(वि.) विकल्परहित, (पुं.) दर्शन के अनुसार वह अवस्था जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय में भेद नहीं रह जाता तथा दोनों एक हो जाते हैं; –०समाधि–(स्त्री.) वह समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता–तीनों का कोई भेद नहीं रह जाता और ज्ञानात्मक सच्चिदानन्द ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई पड़ता।
निर्विकार–(सं.पुं.) जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो, परमात्मा; (वि.) विकारशून्य।
निर्विकास–(सं.वि.) अस्फुट, विकासरहित।
निर्विघ्न–(सं. वि.) जिसमें कोई विघ्न न हो, विघ्नरहित, बिना बाधा का।
निर्विचार–(सं. वि.) विचाररहित।
निर्विचेष्ट–(सं. वि.) अज्ञान, मूर्छित।
निर्वितर्क–(सं.वि.) वितर्कशून्य; (पुं.) पातंजल दर्शन के अनुसार एक प्रकार की समाधि।
निर्विद्य–(सं. वि.) विद्याहीन, जो पढ़ा-लिखा न हो।
निर्विभेद–(सं. वि.) भेदरहित, अभिन्न।
निर्विमर्श–(सं. वि.) विचारहीन।
निर्विरोध–(सं.वि., अव्य.) जिसका विरोध न (हो)।

निर्विरोधी–(हिं. वि.) निर्विवादी, शान्त।
निर्विवर–(सं.वि.) छिद्रशून्य, विना छेद का।
निर्विवाद–(सं. वि.) कलहशून्य, विना झगड़े का।
निर्विवेक–(सं.वि.) विवेचनारहित, अविवेकी
निर्विवेकिता–(हिं. स्त्री.) निर्विवेक होने का भाव।
निर्विशंक–(सं. वि.) निर्भय, निडर।
निर्विशंकित–(सं. वि.) शंकाहीन, भ्रम-रहित।
निर्विशेष–(सं. पुं.) परब्रह्म; (वि.) विशेषतारहित, तुल्यरूप।
निर्विष–(सं. वि.) विषरहित, जिसमें विष न हो।
निर्विषय–(सं. वि.) अगोचर, जो इन्द्रिय-ग्राह्य न हो।
निर्विषा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
निर्विषी–(सं. स्त्री.) अष्टवर्ग जाति की एक ओषधि जिसकी जड़ का प्रयोग अनेक विषों के नाश करने में किया जाता है।
निर्विष्ट–(सं. वि.) कृतभोग, कृतविवाह, मुक्त, छोड़ा हुआ।
निर्वीज–(सं. वि.) वीजशून्य, जिसमें बीज न हो, कारणहीन; (पुं.) एक प्रकार की समाधि का नाम।
निर्वीजा–(सं.स्त्री.) किशमिश नामक मेवा।
निर्वीर–(सं. वि.) प्रभुताहीन, वीरताशून्य।
निर्वीरा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका पति और पुत्र न हो।
निर्वीर्य–(सं. वि.) वीर्यहीन, तेजरहित।
निर्वृक्ष–(सं.वि.) वृक्षशून्य, विना वृक्ष का।
निर्वृत–(सं. वि.) प्रसन्न।
निर्वृति–(सं. स्त्री.) मोक्ष, मृत्यु, शान्ति, आनन्द।
निर्वृत्त–(सं. वि.) निष्पन्न, जो पूरा हो गया हो।
निर्वृत्ति–(सं.वि.) जीविकारहित, जीविका-हीन।
निर्वृष–(सं. वि.) बिना वर्षा का, विना बैल का।
निर्वेग–(सं. वि.) गतिहीन, स्थिर।
निर्वेतन–(सं. वि.) वेतनहीन।
निर्वेद–(सं. पुं.) अपमान, वैराग्य, दुःख, खेद; (वि.) वेदरहित।
निर्वेश–(सं. पुं.) वेतन, मूर्च्छा, विवाह।
निर्वेशनीय–(सं. वि.) भोग्य, प्राप्त करने योग्य।
निर्वेष्टन–(सं. वि.) वेष्टनरहित, विना ढपने का।
निर्वैर–(सं.वि.) शत्रुभाव-वर्जित, मित्र-सा।
निर्वोध–(सं. वि.) ज्ञानहीन, मूर्ख।
निर्व्यथ–(सं.वि.) व्यथा या पीड़ा से रहित।
निर्व्यथन–(सं. वि.) जिसको व्यथा या पीड़ा न हो; (पुं) छेद।
निर्व्यपेक्ष–(सं. वि.) निरपेक्ष।
निर्व्याकुल–(सं. वि.) जो घबड़ाया न हो, स्थिरचित्त।
निर्व्याघ्र–(सं. वि.) जहाँ व्याघ्र का भय न हो।
निर्व्याज–(सं. वि.) छलरहित, बाधा-रहित, विना कपट का।
निर्व्याधि–(सं. वि.) व्याधिमुक्त, आरोग्य, चंगा।
निर्व्यापार–(सं. वि.) विना कामकाज का।
निर्व्यूढ़–(सं.वि.) निष्पन्न, समाप्त, स्थिर।
निर्व्रण–(सं.वि.) व्रणरहित, जिसको घाव न हों।
निर्व्रत–(सं.वि.) व्रत तथा आचार-हीन।
निर्हरण–(सं.पुं.) दहन, नाश करने का काम।
निर्हरणीय–(सं.वि.) निर्हरण करने योग्य।
निर्हस्त–(सं.वि.) विना हाथ का, हस्तशून्य।
निर्हिम–(सं. वि.) हिमशून्य, जहाँ बरफ न गिरती हो।
निर्हृत–(सं.वि.) निकाला या हटाया हुआ।
निर्हृति–(सं.स्त्री.) अपने स्थान से हटाया जाना।
निर्हेतु–(सं. वि.) कारणहीन, जिसमें हेतु या कारण न हो।
निर्हीक–(सं. वि.) निर्भीक, साहसी।
निलज्ज–(हिं. वि.) देखें 'निर्लज्ज'।
निलज्जता–(हिं. स्त्री.) निर्लज्जता।
निलज्जी–(हिं. वि.) निर्लज्ज।
निलय–(सं.पुं.) गृह, घर, मकान, आश्रय-स्थान।
निलयन–(सं.पुं.) वैठने का स्थान, सम्बन्ध।
निलहा–(हिं.वि.) नीलवाला, नील-सम्बन्धी।
निलाम–(हिं. पुं.) देखें 'नीलाम'।
निलिंप–(सं.पुं.) देवता।
निलिंपा–(सं.स्त्री.) गाय, दूध दूहने का पात्र।
निलीन–(सं.वि.) लीन, छिपा हुआ, संलग्न।
निवछावर–(हिं. स्त्री.) देखें 'निछावर'।
निवड़िया–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की नाव।
निवता–(हिं.वि.) (वह) जो नीचे झुका हो।
निवर–(सं. वि.) निवारक, हटानेवाला।
निवरा–(सं. स्त्री.) अविवाहिता या कुमारी कन्या।
निवर्त–(सं.वि.) हटाया हुआ, लौटाया हुआ।
निवर्तक–(सं.वि.) प्रतिवंधक, रोकनेवाला।
निवर्तन–(सं. पुं.) रोकना, पीछे हटाना या लौटाना।
निवर्तनीय–(सं.वि.) लौटाने योग्य, पीछे हटाने योग्य।
निवर्तमान–(सं. वि.) जो लौट रहा हो।
निवर्तित–(सं. वि.) लौटाया हुआ।
निवर्हण–(सं. वि.) उत्सन्न, ध्वस्त।
निवसति–(सं. स्त्री.) घर, मकान।
निवसथ–(सं. पुं.) गाँव, सीमा, हद।
निवसन–(सं. पुं.) घर, वस्त्र, कपड़ा।
निवसना–(हिं. क्रि. अ.) बसना, रहना, निवास करना।
निवरतव्य–(सं.वि.) निर्वाह करने योग्य।
निवह–(सं. पुं.) समूह, यूथ, फलित ज्योतिष के अनुसार सातओं वायु के अन्तर्गत एक वायु।
निवाई–(हिं.वि.) नया, विलक्षण, अनोखा।
निवाज–(हिं. वि.) अनुग्रह करनेवाला, कृपा करनेवाला।
निवाजना–(हिं. क्रि.अ.) अनुग्रह करना, कृपा करना।
निवाड़–(हिं. स्त्री.) देखें 'निवार'।
निवाड़ा–(हिं. पुं.) छोटी नाव, नदी के वीच धारा में नाव ले जाकर उसको चक्कर देने की क्रीड़ा।
निवात–(सं. पुं.) आश्रय, निवास; (वि.) वातशून्य; –कवच–(पुं.) एक दैत्य का नाम।
निवान–(हिं. पुं.) नीची भूमि जो कीचड़ या दलदल से भरी हो, वड़ा तालाव, झील।
निवाना–(हिं.क्रि.स.) झुकाना, नीचे की ओर करना।
निवान्या–(सं. स्त्री.) वह गाय जिसका बच्चा मर गया हो और दूसरे वछड़े को पिलाकर दूही जाती हो।
निवापक–(सं. वि.) बीज बोनेवाला।
निवापी–(हिं. पुं.) बोनेवाला।
निवार–(सं. पुं.) निवारण, बाधा; (हिं. स्त्री.) कुएँ की नीवँ में बैठाने का लकड़ी का गोल चक्कर, तिन्नी का धान, एक एक प्रकार की मूली।
निवारक–(सं. वि.) रोकनेवाला, दूर करनेवाला, अवरोधक, मिटानेवाला।
निवारण–(सं. पुं.) निवृत्ति, छुटकारा, बचाने, हटाने या दूर करने की क्रिया।
निवारणीय–(सं. वि.) रोकने या हटाने योग्य बचाने योग्य।
निवारन–(हिं.पुं.) देखें 'निवारण'।
निवारना–(हिं. क्रि. स.) निषेध करना, मना करना, बचाना, हटाना, दूर करना।
निवारी–(हिं. स्त्री.) जूही की जाति का एक पौधा, इस पौधे का सफेद फूल।
निवास–(सं. पुं.) रहने का स्थान, आश्रय,

गृह, घर, वस्त्र, कपड़ा; –स्थान–(पुं.) रहने का स्थान, घर।
निवासी–(सं.वि.) बसनेवाला, रहनेवाला।
निवास्य–(सं. वि.) रहने योग्य, कपड़े से ढपा हुआ।
निविड़–(सं. वि.) गहरा, घना, अविरल, गाढ़ा; –ता–(स्त्री.) गहरापन, घनापन।
निविष्ट–(सं. वि.) प्रविष्ट, घुसा हुआ, बँधा हुआ, ठहरा हुआ, स्थित, लपेटा हुआ, जिसका चित्त एकाग्र हो।
निर्वीर्य–(सं. वि.) वीर्यहीन, जिसमें पुरुषत्व न हो।
निवृत–(सं. वि.) घिरा हुआ, बाहर से ढपा हुआ।
निवृत्त–(सं. पुं.) मुक्ति, छुटकारा, निवृत्तिपूर्वक कर्म; (वि.) विरक्त, छूटा हुआ, जो छुट्टी पा गया हो।
निवृत्तात्मा–(सं. वि.) जो विषय-वासना से निवृत्त हो; (पुं.) विष्णु, महादेव, शिव।
निवृत्ति–(सं. स्त्री.) मुक्ति, छुटकारा, मोक्ष।
निवेदक–(सं. वि.) निवेदन करनेवाला।
निवेदन–(सं. पुं.) समर्पण, प्रार्थना, विनय, विनती।
निवेदना–(हिं. क्रि.स.) विनती करना, प्रार्थना करना, किसी देवता के आग कुछ नैवेद्य रखना, अर्पित करना।
निवेदनीय–(सं.वि.) निवेदन करने योग्य।
निवेदित–(सं. वि.) निवेदन किया हुआ, कहा हुआ, अर्पण किया हुआ, चढ़ाया हुआ, दिया हुआ।
निवेदी–(सं. वि.) निवेदन करनेवाला, प्रार्थी।
निवेद्य–(सं. वि.) निवेदन करने योग्य।
निबेरना–(हिं.क्रि.स.) निबटाना, तय करना।
निबेरा–(हिं. वि.) छाँटा हुआ, चुना हुआ, अनोखा।
निवेश–(सं.पुं.) विन्यास, विवाह, शिविर, डेरा, प्रवेश, घर, खेमा।
निवेशन–(सं. पुं.) स्थापन, स्थिति, प्रवेश, नगर।
निवेशनीय–(सं. वि.) निवेशन करने योग्य।
निवेशित–(सं. वि.) स्थापित, प्रवेशित।
निवेश्य–(सं. वि.) निवेश करने योग्य।
निवेष्टन–(सं. पुं.) वस्त्र द्वारा आच्छादन, कपड़े से ढाँपने का कार्य।
निवेष्टव्य–(सं. वि.) ढाँपने योग्य।
निवेष्य–(सं. पुं.) व्याप्ति, आवर्त, पानी का भँवर, नीहारजल, रुद्र; (वि.) व्याप्त, फैला हुआ।
निव्यूढ–(सं. पुं.) निरन्तर परिश्रम।
निशंक–(हिं. वि.) जिसको किसी बात की शंका या डर न हो, निर्भय, निडर; (पुं.) एक प्रकार का नाच।
निशंग–(हिं. पुं.) देखें 'निषंग'।
निश–(हिं. स्त्री.) देखें 'निश्', रात्रि।
निशांत–(सं. पुं.) घर, पिछली रात, प्रभात, तड़का; (वि.) अति शान्त।
निशांध–(सं.वि.,पुं.) (वह) जिसको रात में न सूझता हो, जिसको रतौंधी हुई हो।
निशा–(सं.स्त्री.) रात्रि, रात, हरिद्रा, हलदी।
निशाकर–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कुक्कुर, मुरगा, कपूर, एक महर्षि का नाम, शिव, महादेव।
निशाचर–(सं. पुं.) राक्षस, सियार, उल्लू, सर्प, चोर, बिल्ली, प्रेत, भूत, चक्रवाक पक्षी, महादेव, चोरक नाम का गन्धद्रव्य; (वि.) रात को निकलनेवाला; –पति–(पुं.) शिव, महादेव, रावण।
निशाचरी–(सं. स्त्री.) कुलटा, राक्षसी, अभिसारिका, नायिका; (पुं.) शिव, निशाचर।
निशाचर्म–(सं. पुं.) अंधकार, अँधेरा।
निशाजल–(सं. पुं.) हिम, पाला, ओस।
निशाट–(सं. पुं.) उल्लू पक्षी; (वि.) निशाचर।
निशाटक–(सं. पुं.) गुग्गुल; (वि.) रात को घूमनेवाला।
निशाटन–(सं. पुं.) रात के समय में भ्रमण, उल्लू।
निशात्यय–(सं. पुं.) प्रभात, सबेरा।
निशाद–(सं.वि.) केवल रात में खानेवाला।
निशादर्शिन्–(सं. पुं.) उल्लू पक्षी।
निशाधीश–(सं. पुं.) निशापति, चन्द्रमा।
निशान–(फा. पुं.) लक्षण, चिन्ह, दाग।
निशानाथ–(सं.पुं.) निशापति, चन्द्रमा, कपूर।
निशापति–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
निशापुत्र–(सं.पुं.) नक्षत्र आदि आकाशीय पिण्ड।
निशापुष्प–(सं. पुं.) कुमुद, कुईं।
निशाप्राणेश्वर–(सं.पुं.) निशापति, चन्द्रमा।
निशाबल–(सं.पुं.) ज्योतिष के अनुसार वे राशियाँ जो रात में अधिक बलवती होती हैं।
निशाभंगा–(सं. स्त्री.) दुग्धपुष्पी नामक पौधा।
निशाभाग–(सं. पुं.) रात्रि, रात।
निशामणि–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कपूर।
निशामय–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
निशामुख–(सं.पुं.) गोधूलिवेला, प्रदोष-काल।
निशामृग–(सं. पुं.) शृगाल, सियार।
निशायी–(सं. वि.) निद्रागत, सोया हुआ।
निशारण–(सं. पुं.) रात्रि में युद्ध, रात के समय की लड़ाई।
निशारत्न–(सं.पुं.) चन्द्रमा, कर्पूर, कपूर।
निशारुक–(सं. पुं.) एक प्रकार के ताल का नाम; (वि.) हिंसा करनेवाला।
निशावन–(सं. पुं.) सन का पौधा।
निशावसान–(सं.पुं.) रात का अन्त-भाग, तड़का।
निशाविहार–(सं. पुं.) राक्षस।
निशावृंद–(सं.पुं.) रात्रि-पुंज, रात्रि-समूह
निशावेदिन्–(सं. पुं.) कुक्कुट, मुरगा।
निशाहंस–(सं. पुं.) कुमुदिनी, कुईं।
निशि–(सं. स्त्री.) रजनी, रात, हरिद्रा, हलदी; –कर–(पुं.) चन्द्रमा, शशि; –चर–(पुं.) निशाचर; –दिन–(अव्य.) रात-दिन, सर्वदा; –नाथ, –नायक, –पति, –पाल–(पुं.) चन्द्रमा, एक प्रकार का छन्द; –पालक–(पुं.) रात को पहरा देनेवाला, द्वारपाल; एक प्रकार का वर्णवृत्त; –पुष्पा–(स्त्री.) निर्गुण्डी लता; –वासर–(अव्य.) रात-दिन, सर्वदा।
निशीथ–(सं.पुं.) रात्रि, रात, आधी रात।
निशीथिनी–(सं.स्त्री.) रात्रि, रात; –नाथ–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; –वल्लभ–(पुं.) चन्द्रमा।
निशुंभ–(सं. पुं.) हिंसा, वध, एक असुर जो दुर्गा के हाथों से मारा गया था।
निशुंभन–(सं. पुं.) वध, मार डालना।
निशुंभमर्दिनी–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।
निशुंभिन्–(सं. वि.) नाश करनेवाला।
निसृष्ट–(सं. वि.) उपनीत, लाया हुआ।
निशेश–(सं. पुं.) निशिकर, चन्द्रमा।
निशैत–(सं.पुं.) बक, बगुला।
निशोत्सर्ग–(सं. पुं.) प्रभात, तड़का।
निशोपशाय–(सं.वि.) रात में विश्राम करनेवाला।
निश्–(सं.स्त्री.) रात्रि, रात, हरिद्रा, हलदी
निश्कुला–(सं. वि. स्त्री.) अपने कुल से निकाली हुई।
निश्चंद्र–(सं. वि.) चन्द्रमारहित, जिसमें चांद न हो।
निश्चक्षु–(सं. वि.) नेत्रहीन, अंधा।
निश्चय–(सं. पुं.) ऐसी धारणा जिसमें किसी प्रकार का सन्देह न हो, निर्णय, विश्वास, दृढ़संकल्प, पक्का विचार, वह अर्थालंकार जिसमें अन्य विषय का निषेध होकर यथार्थ विषय का स्थापन होता है; (अव्य.) अवश्य।

निश्चयात्मक–(सं.वि.) विना सन्देह का, निश्चित, निश्चय-संबंधी ।
निश्चयात्मकता–(सं. स्त्री.) असन्दिग्धता, यथार्थता ।
निश्चयित–(सं. वि.) स्थिर किया हुआ, ठीक किया हुआ, विचारा हुआ ।
निश्चल–(सं. वि.) स्थिर, जो हिलता-डोलता न हो, अचल, जो अपने स्थान से न हटे; –ता–(स्त्री.) दृढ़ता स्थिरता ।
निश्चलांग–(सं. पुं.) वक, वगला; (वि.) जो हिलता-डोलता न हो ।
निश्चला– (सं. स्त्री.) शालपर्णी, पृथ्वी ।
निश्चायक–(सं.वि.) निश्चय करनेवाला ।
निश्चितई–(हिं.स्त्री.), **निश्चिंतता**–(सं. स्त्री.) निश्चिन्त होने का भाव ।
निश्चित–(सं. वि.) निश्चय किया हुआ, तय किया हुआ ।
निश्चिंत–(सं. वि.) चिन्तारहित ।
निश्चुक्कण–(सं.पुं.) दाँतों में लगाने की मिस्सी ।
निश्चेतन–(सं. वि.) चैतन्यशून्य ।
निश्चेतस्–(सं. वि.) चेतनारहित, वेसुध ।
निश्चेष्ट–(सं. वि.) चेष्टाहीन, असहाय, निश्चल, स्थिर, अचेत ।
निश्चेष्टा–(सं. स्त्री.) निश्चलता ।
निश्चेष्टाकरण–(सं. पुं.) कामदेव के एक वाण का नाम ।
निश्चै–(हिं. पुं.) देखें 'निश्चय' ।
निश्चौर–(सं. वि.) वह स्थान जहाँ से डाकुओं ने अपना अड्डा हटा लिया हो ।
निश्छंद–(सं. वि.) जिसने वेद का अध्ययन न किया हो, छलरहित, निष्कपट ।
निश्छिद्र–(सं.वि.) विना छेद का, छिद्रशून्य ।
निश्छेद–(सं.वि.) गणित में अविभाज्य राशि ।
निश्रम–(सं.पुं.) किसी काम में न थकना या घवड़ाना ।
निश्रमणी–(सं. स्त्री.) सोपान, सीढ़ी ।
निश्रावी–(सं. वि.) नाश होनेवाला ।
निश्रेणी–(सं.स्त्री.) सोपान, सीढ़ी, मुक्ति ।
निश्रेयसु–(हिं. पुं.) दुःख का अभाव, कल्याण, मोक्ष ।
निश्वस, निश्वास–(सं.पुं.) दीर्घ निश्वास, आह भरना ।
निश्शंक–(सं. वि.) निर्भय, निडर, सन्देह-रहित, जिसमें शंका न हो ।
निश्शक्त–(सं. वि.) शक्तिहीन, निर्बल ।
निश्शील–(सं. वि.) वुरे स्वभाव का ।
निश्शीलता–(सं. स्त्री.) दुष्ट स्वभाव ।
निश्शेष–(सं. वि.) जिसमें कुछ वाकी न बचा हो ।

निषंग–(सं. पुं.) तूणीर, तरकश, खड्ग, मुँह से फूँककर वजाने का एक प्राचीन वाजा ।
निषकपुत्र–(सं. पुं.) निशाचर, राक्षस ।
निषकर्ष–(सं.पुं.) स्वरसाधन की एक प्रणाली
निषक्त–(सं. पुं.) जनक, पिता, वाप ।
निषण्ण–(सं. वि.) उपविष्ट, स्थित, बैठा हुआ ।
निषद–(सं. पुं.) संगीत का निषाद स्वर, एक राजा का नाम ।
निषदन–(सं. पुं.) गृह, घर ।
निषद्–(सं. स्त्री.) यज्ञ की दीक्षा ।
निषद्या–(सं. स्त्री.) हाट, छोटी खटिया ।
निषद्वर–(सं. पुं.) कीचड़, चहला ।
निषद्वरी–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात ।
निषध–(सं. पुं.) एक प्राचीन पर्वत का का नाम, राजा जनमेजय के पुत्र का नाम, एक प्राचीन देश का नाम जो विन्ध्य पर्वतांचल में था, निषध देश के राजा का नाम, कुरु के एक पुत्र का नाम, रघुवंशीय रामात्मज कुश के पौत्र का नाम; (वि.) कठिन ।
निषधाधिप–(सं. पुं.) निषध देश के राजा का नाम ।
निषधाधिपति–(सं. पुं.) राजा नल ।
निषधाश्व–(सं.पुं.) कुरु के एक पुत्र का नाम ।
निषाद–(सं. पुं.) एक अनार्य जाति जो भारतवर्ष में आर्यों के पहिले या पूर्व रहती थी, (रामायण के अनुसार श्रृंगवेर-पुर में निषादराज की राजधानी थी), संगीत में सात स्वरों में से अन्तिम तथा सब से ऊँचा स्वर ।
निषादित–(सं. वि.) उपवेशित, बैठाया हुआ ।
निषादी–(सं. पुं.) हाथीवान, महावत; (वि.) उपविष्ट, बैठा हुआ ।
निषिक्तता–(सं. वि.) गर्भ की रक्षा करने की क्रिया ।
निषिद्ध–(सं. वि.) जिसका निषेध किया गया हो, जो करने योग्य न हो, दूषित ।
निषिद्धि–(सं. स्त्री.) निषेध, मनाही ।
निषेक–(सं.पुं.) गर्भाधान, जल से सिंचाई, चूना, टपकना ।
निषेक्तव्य–(सं. वि.) सींचने योग्य ।
निषेचन–(सं. पुं.) सींचना, तर करना, भिगाना ।
निषेध–(सं. पुं.) वर्जन, वाधा, रुकावट, निवर्तन, वारण ।
निषेधक–(सं.वि.) निवारक, रोकनेवाला ।
निषेधन–(सं. पुं.) निषेध, निवारण, मना करना ।

निषेध-पत्र–(सं. पुं.) वह पत्र जिसके द्वारा किसी प्रकार का निषेध किया जाय ।
निषेध-विधि–(सं. पुं.) वह आज्ञा जिसके द्वारा किसी वात का निषेध किया जाय ।
निषेधित–(सं. वि.) निवारित, निषेध किया हुआ, मना किया हुआ ।
निषेधी–(सं. वि.) निषेध करनेवाला ।
निषेधाभास–(सं. पुं.) आक्षेप अलंकार के पाँच भेदों में से एक ।
निषधोक्ति–(सं. स्त्री.) निषेध-वाक्य ।
निषेव–(सं. वि.) अनुरक्त, अभ्यासशील; (पुं.) अनुसरण, पूजा ।
निषेवण–(सं. पुं.) सेवा, व्यवहार ।
निषेवणीय–(सं.वि.) सेवा करने योग्य ।
निषेवितव्य–(सं. वि.) सेवनीय, सेवा करने योग्य ।
निषेवी–(सं. वि.) सुखभोगी, अनुरक्त ।
निषेव्य–(सं. वि.) सेवनीय, सेवा करने योग्य ।
निष्कंटक–(सं. वि.) वाधारहित, कंटक-हीन, उपद्रवरहित, जिसमें काँटा न हो, निर्विघ्न, उपसर्गहीन ।
निष्कंठ–(सं. पुं.) वरुण नामक वृक्ष ।
निष्कंद–(सं. वि.) जो (कंद) खाने योग्य न हो ।
निष्कंप–(सं. वि.) कंपहीन, जिसमें किसी प्रकार का कंप न हो ।
निष्कंभ–(सं.पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।
निष्क–(सं. पुं.) वैदिक काल की एक प्रकार की सोने की मुद्रा, सुवर्ण, सोना, हीरा, एक प्रकार का गले का आभूषण, सोने का पात्र, वैद्यक में चार माशे की तौल, चाँदी तौलने की प्राचीन काल की एक तौल जो चार सोने की मुद्राओं के बराबर होती थी; –कंठ–(वि.) जिसके गले में सोने का गहना हो; –ग्रीव–(वि.) देखें 'निष्ककंठ' ।
निष्कनिष्ठ–(सं. वि.) जिसकी कानी अँगुली कट गई हो ।
निष्कपट–(सं. वि.) निश्छल, जो किसी प्रकार का छल न जानता हो; –ता (स्त्री.) सरलता, निश्छलता ।
निष्कपटी–(हिं. वि.) निष्कपट ।
निष्कर–(सं.वि.) वह भूमि जिसका कर न देना पड़ता हो ।
निष्करुण–(सं. वि.) दयारहित ।
निष्कल्मष–(सं. वि.) परिष्कृत, स्वच्छ ।
निष्कर्म–(सं. वि., पुं.) (वह) जो किसी काम में लिप्त न हो ।

निष्कर्मण्य–(सं. वि.) अयोग्य, निकम्मा।
निष्कर्मा–(सं. वि.) अकर्मा, आलसी।
निष्कर्ष–(सं. पुं.) निश्चय, सारांश, सार, निचोड़ निकालने की क्रिया।
निष्कर्षण–(सं.पुं.) निकालना, बाहर करना, निःसारण, बाहर निकालने की क्रिया।
निष्कलंक–(सं. वि.) जिसमें किसी प्रकार का कलंक न हो, निर्दोष।
निष्कल–(सं. वि.) भाग या कलारहित, निरवयव, जिसका कोई अंग या भाग नष्ट हो गया हो, नष्टवीर्य, नपुंसक, संपूर्ण, समूचा; (पुं.) ब्रह्मा।
निष्कलत्व–(सं. पुं.) अविभाज्य होने की अवस्था, परमाणु की वह अवस्था जिसमें उसके और भाग न हो सकें।
निष्कला–(सं. स्त्री.) वृद्धा स्त्री, बुढ़िया।
निष्कली–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बंद हो गया हो।
निष्कल्मष–(सं.वि.) कलंकहीन, पापरहित।
निष्कषाय–(सं. वि.) जिसका चित्त पवित्र और स्वच्छ हो।
निष्काम–(सं. वि.) कामनारहित, जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा से किया जाय; –ता–(स्त्री.) निष्काम होने की अवस्था या भाव।
निष्कामी–(सं. वि.) कामनारहित, जिसको किसी प्रकार की आसक्ति न हो।
निष्कारण–(सं.वि.) बिना कारण, वृथा, व्यर्थ।
निष्कालन–(सं. पुं.) मारण, मार डालने की क्रिया, निकालना।
निष्काश–(सं. पुं.) निष्कासन, ओसारा।
निष्काशन–(सं.पुं.) निःसारण, बाहर करना।
निष्काशित–(सं. वि.) बहिष्कृत, निकाला हुआ, निन्दित।
निष्कास–(सं. पुं.) घर का ओसारा।
निष्कासन–(सं.पुं.) बाहर करना, निकालना।
निष्कासित–(सं. वि.) निःसारित, बाहर निकाला हुआ, निन्दा किया हुआ।
निष्किंचन–(सं. वि.) धनहीन, दरिद्र।
निष्किल्बिष–(सं.वि.) पापशून्य, पाप-रहित।
निष्कीर्ण–(सं. वि.) निकाला हुआ।
निष्कुट–(सं. पुं.) घर के पास का बगीचा, कपाट, किवाड़, अन्तःपुर।
निष्कुटिका–(सं.स्त्री.) एक मातृका का नाम।
निष्कुटी–(सं. स्त्री.) एला, इलायची।
निष्कुतूहल–(सं. वि.) जिसको कोई कुतूहल न हो।
निष्कुल–(सं. वि.) सपिण्डादि कुलरहित।
निष्कुषित–(सं वि.) निःसारित, निकाला हुआ।
निष्कुह–(सं.पुं.) वृक्ष का कोटर या खोंड़र।
निष्कृत–(सं. वि.) मुक्त किया हुआ, हटाया हुआ, मृत, मरा हुआ।
निष्कृति–(सं. स्त्री.) निस्तार, छुटकारा।
निष्कोषण–(सं. पुं.) भीतरी अवयव का बाहर निकलना।
निष्क्रम–(सं. पुं.) घर से बाहर निकलने का कार्य, पतित होना; (वि.) बिना क्रम का।
निष्क्रमण–(सं.पुं.) घर से बाहर निकलना, बारह संस्कारों में से एक संस्कार जो बालक के चार महीने का होने पर होता है।
निष्क्रय–(सं. पुं.) वेतन, बिक्री, सामर्थ्य, शक्ति, पुरस्कार, प्रत्युपकार।
निष्क्रिय–(सं. वि.) व्यापारशून्य, जो कोई काम न करता हो।
निष्क्रियता–(सं. स्त्री.) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।
निष्क्रीति–(सं. स्त्री.) मुक्ति, मोक्ष।
निष्क्रोध–(सं. वि.) जिसको क्रोध न हो।
निष्क्लेश–(सं. वि.) सब प्रकार के कष्टों से मुक्त।
निष्टि–(सं. स्त्री.) कश्यप की एक पत्नी का नाम।
निष्टुर–(सं. वि.) शत्रु को विजय करने-वाला।
निष्ठ–(सं. वि.) स्थित, ठहरा हुआ, तत्पर, लगा हुआ, जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।
निष्ठा–(सं. स्त्री.) निष्पत्ति, समाप्ति, नाश, सिद्धावस्था, अन्तिम स्थिति जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है, चिकित्सा, स्थिति के आधार विष्णु, स्थिति, अवस्था, निश्चय, धर्मादि में श्रद्धा, निर्वाह।
निष्ठावत्, निष्ठावान्–(सं. वि.) निष्ठा-युक्त, जिसमें श्रद्धा हो।
निष्ठित–(सं. वि.) दृढ़, ठहरा हुआ, जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो।
निष्ठीव, निष्ठीवन–(सं. पुं.) थूक, खखार।
निष्ठुर–(सं. वि.) कठिन, कठोर, क्रूर।
निष्ठुरता–(सं. स्त्री.) कठोरता, निर्दयता, क्रूरता, कड़ाई।
निष्ठेव–(सं. पुं.) देखो 'निष्ठीव'।
निष्ण–(सं. वि.) चतुर, कुशल।
निष्णात–(सं. वि.) किसी विषय में निपुण, चतुर, प्रधान, श्रेष्ठ।
निष्पंद–(सं. वि.) स्पंदनरहित, जिसमें किसी प्रकार का कम्प न हो।
निष्पंक–(सं. वि.) बिना कीचड़ का, निर्मल।
निष्पक्व–(सं. वि.) पकाया हुआ, उबाला हुआ।
निष्पक्ष–(सं. वि.) पक्षपातरहित, जो किसी का पक्षपात न करता हो; –ता–(स्त्री.) निष्पक्ष होने का भाव।
निष्पतन–(सं. पुं.) निर्गमन, बाहर निकलना।
निष्पत्ति–(सं स्त्री.) समाप्ति, सिद्धि, परि-पाक, अन्त, निर्वाह, मीमांसा, निश्चय, चुकता, हठ-योग के अनुसार नाद की अन्तिम अवस्था, गणित में अनुपात।
निष्पत्र–(सं.वि.) पत्रहीन, बिना पत्तों का।
निष्पत्रिका–(सं. स्त्री.) करील का वृक्ष।
निष्पद–(सं.वि.) बिना पैर या पहिये का।
निष्पन्न–(सं. वि.) जो समाप्त या पूरा हो चुका हो।
निष्पराक्रम–(सं. वि.) शक्तिहीन, निर्बल।
निष्परिग्रह–(सं. वि.) जिसके पास कोई सम्पत्ति न हो, जो दान आदि न लेता हो, जिसको स्त्री न हो, अविवाहित, कुँआरा।
निष्परिच्छद–(सं. वि.) बिना कपड़ा पहिने हुए, बिना वस्त्र का।
निष्परिदाह–(सं. वि.) जो सहज में जल न सके।
निष्परीक्षित–(सं. वि.) जिसकी परीक्षा न की गई हो।
निष्परुष–(सं. वि.) जो सुनने में कर्कश न हो।
निष्पाद–(सं. पुं.) मटर, बोड़ा, सेम।
निष्पादित–(सं.वि.) सम्पादित, निष्पन्न।
निष्पाद्य–(सं.वि.) निष्पादन करने योग्य।
निष्पिष्ट–(सं.वि.) चूर्णित, चूर किया हुआ।
निष्पीड़, निष्पीड़न–(सं.पुं.) निचोड़ना, गारना।
निष्पीड़ित–(सं. वि.) निचोड़ा हुआ।
निष्पुत्र–(सं. वि.) अपुत्रक, जिसके पुत्र न हो।
निष्पुरुष–(सं. वि.) पुरुषशून्य, जहाँ आबादी न हो।
निष्पेष–(सं. पुं.) पिसना, रगड़, चूर्ण करना।
निष्पौरुष–(सं.वि.) पौरुषहीन, निर्बल।
निष्प्रकाश–(सं.वि.) जिसमें प्रकाश न हो।
निष्प्रचार–(सं. वि.) जो एक स्थान से दूसरे स्थान में न जा सके।
निष्प्रताप–(सं.वि.) प्रतापहीन, तेजरहित।
निष्प्रतिघ–(सं.वि.) जिसमें कोई रुकावट न हो।
निष्प्रतिद्वंद्व–(सं. वि.) शत्रुहीन, बिना शत्रु का।

निष्प्रतिभ–(सं. वि.) मूर्ख, जड़, जिसमें चमक न हो।
निष्प्रतीकार–(सं. वि.) प्रतिकाररहित, विघ्न-शून्य।
निष्प्रत्यूह–(सं.वि.) निर्विघ्न,बाधा-रहित।
निष्प्रधान–(सं. वि.) प्रधानशून्य, बिना सरदार का।
निष्प्रपंच–(सं. वि.) प्रपंचरहित।
निष्प्रपंचात्मा–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
निष्प्रभ–(सं. वि.) प्रभारहित, बिना चमक का।
निष्प्रभाव–(सं. वि.) बिना प्रभाव या सामर्थ्य का।
निष्प्रयत्न–(सं.वि.) यत्नहीन,उपाय-रहित।
निष्प्रयोजन–(सं. वि.) प्रयोजनरहित, निरर्थक, व्यर्थ, जिससे कोई अर्थ सिद्ध न हो; (अव्य.) व्यर्थ।
निष्प्राण–(सं.वि.) श्वासरहित,मरा हुआ।
निष्प्रीति–(सं. वि.) प्रीतिरहित, जिसमें प्रेम न हो।
निष्प्रही–(हिं. वि.) देखें 'निस्पृह'।
निष्फंद–(सं. पुं.) देखें 'निष्पंद'।
निष्फल–(सं. वि.) फलशून्य, जिसका कोई फल न हो, निरर्थक, वृथा।
निष्फलता–(सं. स्त्री.) असफलता।
निष्फला–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका रजोधर्म होना बंद हो गया हो।
निष्फली–(सं.स्त्री.) निष्फला, वृद्धा स्त्री।
निष्फन–(सं. वि.) फेनरहित, जिसमें फन न हो।
निसंक–(हिं. वि.) देखें 'निःशंक'।
निसंकल्प–(सं. वि.) संकल्परहित।
निसंज्ञ–(सं. वि.) संज्ञाहीन, अचेत।
निसंपात–(सं. पुं.) निशीथ,रात का दो प्रहर।
निसंस–(हिं. वि.) नृशंस, क्रूर, निर्दय।
निसँसना–(हिं. क्रि. अ.) निःश्वास लेना, हाँफना।
निस–(हिं.स्त्री.) निशा, रात्रि, रात।
निसक्‍–(हिं. वि.) अशक्त, दुर्बल।
निसकर–(हिं.पुं.) देखें 'निशाकर',चन्द्रमा।
निसचय, निसचै–(हिं.पुं.) देखें 'निश्चय'।
निसठ–(हिं. वि.) निर्धन, दरिद्र।
निसत–(हिं. वि.) असत्य।
निसतरना–(हिं. क्रि. अ.) मुक्ति पाना, छुटकारा पाना।
निसतार–(हिं. पुं.) देखें 'निस्तार'।
निसतारना–(हिं.क्रि.स.) मुक्त करना, निस्तार देना।
निसद्योस–(हिं.अव्य.) अहर्निश, रात-दिन।
निसनेहा–(हिं. स्त्री.) देखें 'निःस्नेहा'।
निसयाना–(हिं. वि.) जिसका चित्त ठिकाने न हो।
निसर–(सं. वि.) खूब चलनेवाला।
निसरना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'निकलना'।
निसर्ग–(सं.पुं.) प्रकृति, स्वभाव, आकृति, स्वरूप, सृष्टि।
निसर्गज–(सं.वि.) जो प्रकृति से उत्पन्न हो।
निसवासर–(हिं.अव्य.) रात-दिन, सर्वदा।
निसस–(हिं. वि.) श्वासरहित, अचेत, संज्ञाहीन।
निसाँस, निसाँसा–(हिं.पुं.) ठंढी साँस; (वि.) मृतप्राय।
निसा–(हिं. स्त्री.) सन्तोष, तृप्ति, देखें 'निशा'।
निसाकर–(हिं. पुं.) देखें 'निशाकर'।
निसाचर–(हिं. पुं.) देखें 'निशाचर'।
निसाद–(हिं. पुं.) भंगी, मेहतर।
निसान–(हिं. पुं.) चिह्न, नगाड़ा, धौंसा।
निसानन–(हिं.पुं.) प्रदोष काल,सन्ध्या।
निसा(शा)ना–(हिं. पुं.) लक्ष्य।
निसा(शा)नी–(हिं.स्त्री.) चिह्न,यादगार।
निसापति–(हिं.पुं.) देखें 'निशापति', चन्द्रमा
निसाफ–(हिं. पुं.) निर्णय, इंसाफ।
निसार–(सं.पुं.) समूह; (अ.पुं.) निछावर, उतारा, मुगल शासन-काल का चाँदी का एक सिक्का।
निसारक–(सं.पुं.) राग का एक भेद।
निसारना–(हिं. क्रि. स.) बाहर करना, निकालना।
निसारा–(सं.स्त्री.) कदली वृक्ष।
निसावरा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का कबूतर।
निसास–(हिं.पुं.) देखें 'निःश्वास', गहरी साँस।
निसासी–(हिं. वि.) जिसकी साँस न चलती हो।
निसि–(हिं.स्त्री.) देखें 'निशि', एक प्रकार का वर्ण-वृत्त; –कर, –चर, –चारी–(पुं.) देखें 'निशि' के अंतर्गत।
निसित–(हिं. वि.) तीव्र।
निसिदिन–(हिं. अव्य.) रात-दिन, आठों पहर, सर्वदा, सदा।
निसि–(हिं.स्त्री.) निशीथ, आधी रात।
निसियर–(हिं. पुं.) निशिकर, चन्द्रमा।
निसिवासर–(हिं.अव्य.) रात-दिन, सर्वदा, सदा।
निसीठी–(हिं. वि.) निःसार, जिसमें कुछ तत्त्व न हो, नीरस, फीका।
निसीथ–(हिं. पुं.) आधी रात
निसुंवार–(सं. पुं.) सँभालू सिंदुवारा।
निसुंभ–(सं. पुं.) एक असुर का नाम।
निसु–(हिं. स्त्री.) निशा, रात्रि, रात।
निसुका–(हिं. वि.) दरिद्र।
निसूदक–(सं.वि.) हिंसक,हिंसा करनेवाला।
निसूदन–(सं. पुं.) हिंसा, वध; (वि.) मारनेवाला।
निसृत–(हिं. वि.) देखें 'निःसृत'।
निसृता–(सं. स्त्री.) निसोथ, सोनापाठा।
निसृष्ट–(सं. वि.) प्रेरित, भेजा हुआ, दिया हुआ, त्याज्य, छोड़ा हुआ, मध्यस्थ।
निसृष्टार्थ–(सं.पुं.) वह दूत जो दोनों पक्षों के अभिप्राय को समझकर स्वयं सब प्रश्नों का उत्तर देता और कार्य सिद्ध कर लेता है, अपने स्वामी का काम तत्परता से करनेवाला धीर और वीर मनुष्य।
निसेनी–(हिं. स्त्री.) सोपान, सीढ़ी।
निसेष–(हिं. वि.) देखें 'निःशेष'।
निसेस–(हिं. पुं.) चन्द्रमा।
निसैनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'निसेनी'।
निसोढ़–(सं. वि.) भली भाँति सहन करने योग्य।
निसोग, निसोच–(हिं. वि.) जिसको किसी प्रकार की चिन्ता न हो।
निसोत–(हिं. वि.) जिसमें किसी अन्य वस्तु की मिलावट न हो, विशुद्ध।
निसोथ–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की लता जिसके डंठल और जड़ रेचक होते हैं।
निसोधु–(हिं.स्त्री.) सुध,समाचार,सन्देश।
निस्–(सं. उप.) यह उपसर्ग निषेध, निश्चय, साफल्य, अतिक्रम आदि अर्थों में व्यवहृत होता है।
निस्की–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
निस्केवल–(हिं.वि.) निर्मल,शुद्ध,निष्केवल।
निस्तंतु–(सं. वि.) तंतुहीन, सन्तानहीन।
निस्तंद्र–(सं. वि.) तन्द्रारहित, आलस्य-रहित, पुष्ट, बलवान्।
निस्तंभ–(सं. वि.) स्तंभरहित, जिसमें खंभा न हो।
निस्तत्त्व–(सं. वि.) तत्त्वहीन, निःसार, जिसमें कोई सार न हो।
निस्तनी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसको स्तन न हो, वटिका, गोली।
निस्तब्ध–(सं. वि.) निश्चेष्ट, जिसमें गति या व्यापार न हो, नीरव, सन्नाटा; –ता–(स्त्री.) सन्नाटा।
निस्तमस्क–(सं.वि.) अन्धकारशून्य,उजेला।
निस्तरण–(सं. पुं.) निस्तार, छुटकारा, निर्गम, दबाकर निकालना, पार जाने की क्रिया।
निस्तरना–(हिं.क्रि.अ.) मुक्त होना,छूटना।

निस्तरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
निस्तरी–(सं. वि.) बिना नौके का।
निस्तरीप–(सं.वि.) जिस नाव पर माँझी न हो।
निस्तर्क्य–(सं. वि.) जिसकी कल्पना या तर्क न किया जा सके।
निस्तल–(सं. वि.) बिना पेंदी या तल का, चलायमान।
निस्तार–(सं. पुं.) निस्तरण, उद्धार, पार होने का भाव, अभीष्ट-प्राप्ति।
निस्तारक–(सं. पुं.) मोक्ष देनेवाला, बचानेवाला, तारनेवाला।
निस्तारण–(सं. पुं.) छुटकारा, मुक्ति, पार करना, बचाना, छोड़ना।
निस्तारन–(हिं. पुं.) देखें 'निस्तारण'।
निस्तारना–(हि. क्रि. स.) मुक्त करना, छुटकारा देना।
निस्तारबीज–(सं. पुं.) वह उपाय जिससे मनुष्य जन्म-मरण से मुक्त हो जाय।
निस्तारा–(हिं. पुं.) देखें 'निस्तार'।
निस्तिमिर–(सं. वि.) अन्धकाररहित।
निस्तीर्ण–(सं. वि.) जिसका निस्तार हो चुका हो, पार गया हुआ, जो तप कर चुका हो।
निस्तुति–(सं. वि.) प्रशंसारहित।
निस्तुष–(सं. वि.) जिसमें भूसी न हो, निर्मल; (पुं.) गेहूँ।
निस्तुषित–(सं. वि.) छाँटा हुआ (अन्न)।
निस्तुषोपल–(सं.पुं.) स्फटिकमणि, बिल्लौर।
निस्तेज–(सं. वि.) जिसमें तेज न हो, बिना चमक का, प्रभारहित, मलिन।
निस्तैल–(सं. वि.) बिना तेल का, जिसमें तेल न हो।
निस्तोदन–(सं. पुं.) अति कष्ट।
निस्तोय–(सं.वि.) जलरहित, बिना जल का।
निस्त्रंश–(सं. वि.) भयहीन, निडर।
निस्त्रप–(सं. वि.) निर्लज्ज।
निस्त्रिंश–(सं. वि.) निर्दय, कठोर; (पुं.) खड्ग, तलवार।
निस्त्रैगुण्य–(सं.वि.) जो सत्त्व, रज, तम–इन तीनों गुणों से रहित हो।
निस्नेह–(सं. वि.) प्रेमशून्य, जिसमें प्रेम न हो, जिसमें तेल न हो; –फला–(स्त्री.) सफेद भटकटैया।
निस्पंद–(सं. वि.) जिसमें कंप न हो।
निस्पंदी–(सं.वि.) निष्पन्दयुक्त, काँपता हुआ।
निस्पृह–(सं. वि.) जिसको किसी प्रकार का लोभ या लालच न हो; –ता–(स्त्री.) निस्पृह होने का भाव, लोभ या लालसा न होना।
निस्पृहा–(सं.स्त्री.) कलिहारी नामक पौधा।
निस्र (स्रा) व–(सं.वि.) भात का माँड़, क्षरण।
निस्रावी–(सं. वि.) जो बहता हो।
निस्व–(सं. वि.) दरिद्र, हीन, गरीब।
निस्वन–(सं. पुं.) शब्द।
निस्वास–(हिं. पुं.) देखें 'निःश्वास'।
निस्संकोच–(हिं. वि.) संकोचरहित, जिसमें संकोच या लज्जा न हो; (अव्य.) बेधड़क।
निस्संतान–(हिं. वि.) संततिरहित।
निस्संदेह–(हिं. अव्य.) अवश्य; (वि.) जिसमें सन्देह न हो।
निस्सरण–(सं. पुं.) निकलने का मार्ग या स्थान, निकास।
निस्सहाय–(हिं. वि.) निराश्रय।
निस्सार–(सं. वि.) निस्तत्त्व, जिसमें कोई रोचक तत्त्व न हो, साररहित।
निस्सारित–(सं. वि.) निकाला हुआ, बाहर किया हुआ।
निस्सीम–(सं. वि.) जिसकी कोई सीमा न हो, असीम, अपार।
निस्सृत–(हिं. पुं.) तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।
निस्स्वादु–(हिं. वि.) जिसमें कोई स्वाद न हो, जिसका स्वाद बुरा हो।
निस्स्वार्थ–(हिं. वि.) स्वार्थ से रहित, जिसमें अपना कोई स्वार्थ न हो।
निहंग–(हिं. वि.) एकाकी, अकेला, जो विवाह न करता हो अथवा स्त्री से संबंध न रखता हो, नंगा, निर्लज्ज।
निहंगम–(हिं. वि.) देखें 'निहंग।'
निहंग-लाड़ला–(हिं. वि.) वह जो माता-पिता के अधिक लाड़-प्यार के कारण बहुत उद्दण्ड बन गया हो।
निहंतव्य–(सं. वि.) मारने योग्य।
निहंता–(सं. वि.) नाश करनेवाला, प्राणघातक।
निहकाम–(हिं. वि.) देखें 'निष्काम'।
निहचय–(हिं. पुं.) देखें 'निश्चय'।
निहचल–(हिं. वि.) देख 'निश्चल'।
निहत–(सं. वि.) नष्ट, फेंका हुआ, मार डाला हुआ।
निहत्था–(हिं. वि.) शस्त्रहीन, जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो।
निहनन–(सं. पुं.) मारण, वध।
निहपाप–(हिं. वि.) देखें 'निष्पाप'।
निहफल–(हिं. वि.) देखें 'निष्फल'।
निहल–(हिं.पुं.) वह भूमि जो नदी की धारा के हट जाने पर निकल आई हो, कछार।
निहाई–(हिं. स्त्री.) पक्के लोहे का भूमि में गड़ा हुआ वह चौकोर टुकड़ा जिस पर लोहार या सोनार हथौड़े से धातु पीटते हैं।
निहाउ–(हिं.पुं.) देखें 'निहाई'।
निहाका–(हिं. स्त्री.) गोह, घड़ियाल।
निहानी–(हिं. स्त्री.) बारीक खोदाई करने की अर्धचंद्राकार नुकीली रुखानी।
निहायत–(अ.अव्य.) बहुत अधिक या ज्यादा।
निहार–(सं. पुं.) नीहार, हिम, ओस, कुहरा, पाला।
निहारना–(हिं.क्रि.स.) ध्यानपूर्वक देखना, ताकना।
निहारिका–(सं. स्त्री.) आकाश में दिखाई देनेवाला छाया-पथ-सा पिंड की तरह जान पड़ता है।
निहाल–(फा. वि.) जो सब प्रकार से संतुष्ट और तृप्त हो, पूर्णकाम।
निहाल-लोचन–(हिं. पुं.) वह घोड़ा जिसके अयाल दोनों ओर लटके होते हैं।
निहाव–(हिं. पुं.) लोहे का बड़ा हथौड़ा या घन।
निहिंसन–(सं. पुं.) मारण, वध।
निहित–(सं. वि.) स्थापित, रखा हुआ।
निहीन–(सं. वि.) पामर, नीच।
निहुकना–(हिं. क्रि. अ.) झुकना।
निहुड़ना, निहुरना–(हिं.क्रि.अ.) झुकना, नवना।
निहुराना–(हिं. क्रि.) झुकाना, नवाना।
निहुराई–(हिं. स्त्री.) निष्ठुरता।
निहोरना–(हिं. क्रि. स.) विनती करना, प्रार्थना करना, कृतज्ञ होना, मनौती करना, मनाना।
निहोरा–(हिं.पुं.) उपकार, अनुग्रह, आश्रय, आधार, भरोसा, विनती, प्रार्थना।
निहोरे–(हिं. अव्य.) वास्ते लिये, कारण से, बदौलत, निमित्त, द्वारा।
निह्नुत–(सं. वि.) छिपाया हुआ।
नींद–(हिं. स्त्री.) निद्रा, स्वप्न; (मुहा.) –उचटना–नींद खुल जाना; –टूटना–जाग पड़ना; –पड़ना–नींद आना; –भर सोना–बहुत देर तक सोना; –हराम होना–नींद न आना।
नींदड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'नींद'।
नीक, नीका–(हिं. वि.) स्वच्छ, सुन्दर, अच्छा, भला; (पुं.) उत्तमता, अच्छा-पन, सुन्दरता।
नीकार–(सं. पुं.) भर्त्सना, तिरस्कार।
नीकाश–(सं. वि.) तुल्य, समान; (पुं.) निश्चय।
नीके–(हिं. अव्य.) भली-भाँति, अच्छी तरह से।
नीच–(सं. वि.) जाति, गुण [illegible]

से निकृष्ट, तुच्छ, अवम, पामर; (पु.) क्षुद्र मनुष्य, ओछा आदमी।

नीच-ऊँच–(हिं. वि.,पुं.) भला-बुरा,हानि-लाभ, भलाई-बुराई।

नीचक–(सं. वि.) वामन, बौना, नाटा।

नीच कमाई–(हिं. स्त्री.) खोटा काम,बुरे काम से कमाया हुआ धन।

नीचका–(सं.स्त्री.) उत्तम गौ, अच्छी गाय।

नीचग–(सं.पुं.) नीचे की ओर बहनेवाला पानी; (वि.) पामर, ओछा।

नीचगा–(सं. स्त्री.) निम्नगा, नदी, नीच के साथ गमन करनेवाली स्त्री।

नीचगामी–(हिं. वि.) नीचे जानेवाला, ओछा; (पुं.) पानी।

नीचट–(हिं. वि.) दृढ़, पक्का।

नीचता–(सं. स्त्री.) नीचत्व, अधमता, खोटाई।

नीचत्व–(सं. पुं.) नीचता।

नीचा–(हिं. वि.) जिसके तल से आस-पास का तल ऊँचा हो, जो उतार या ढाल पर हो, जो ऊपर की ओर दूर तक न गया हो, छोटा,ओछा, मध्यम,धीमा,जो तीव्र न हो,झुका हुआ,(भूमि)जो ऊँचाई से समतल होकर दूर तक फैली हो, अधिक लटका हुआ; **–ऊँचा**–(वि.)जो समतल न हो, भला-बुरा; (मुहा.) **–खाना**–लज्जित होना,हार जाना; **–दिखाना**–अपमानित करना, हराना; **–देखना**–अपमानित होना,हारना; **नीची दृष्टि करना**–सामने न देखना, सिर झुकाना।

नीचायक–(सं. वि.) बहुत चाहनेवाला।

नीचाशय–(सं.वि.)तुच्छ विचार का,ओछा।

नीचू–(हिं. वि.) देखें 'नीचा', जो टपकता न हो।

नीचे–(हिं. अव्य.) नीचे की ओर, अधीनता में, तले, घटकर, कम; **–ऊपर**–एक दूसरे के ऊपर; (मुहा.) **ऊपर से नीचे तक**–सर्वत्र, हर जगह; **–गिरना**–प्रतिष्ठा नष्ट होना, पतित होना।

नीचोच्चवृत्त–(सं.पुं.) वह वृत्त जिसका केन्द्र किसी बड़े वृत्त के मध्य में हो।

नीचोपगत–(सं. वि.) वह जो खगोल के नीचे के भाग में हो।

नीज–(हिं. पुं.) रज्जु, रस्सी।

नीजन–(हिं. पुं.) निर्जन स्थान।

नीजू–(हिं. स्त्री.) पानी भरने की रस्सी।

नीझर–(हिं. पुं.) देखें 'निर्झर', पानी का सोता।

नीठ–(हिं. अव्य.) कठिनाई से।

नीठि–(हिं. स्त्री.) अरुचि, अनिच्छा; (अव्य.) किसी तरह या प्रकार से, कठिनता से।

नीठो–(हिं.वि.) अप्रिय, जो सुहावना न हो।

नीड़–(सं.पुं.)पक्षियों के रहने का घोंसला।

नीड़क–(सं. पुं.) खग, पक्षी, चिड़िया।

नीड़ज–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

नीड़जद्र–(सं. पुं.) गरुड़ पक्षी।

नीड़ोद्भव–(सं. पुं.) खग, पक्षी, चिड़िया।

नीत–(सं. वि.) स्थापित, गृहीत, लाया हुआ, प्राप्त, पाया हुआ; (पुं.) धान्य, धान।

नीति–(सं. स्त्री.) ले जाने की क्रिया या ढंग, आचार-पद्धति, समाज का कल्याण करनेवाली व्यवहार की रीति,वह आचार तथा व्यवहार का नियम जो समाज के हित के लिये स्थिर किया गया हो,युक्ति, उपाय, किसी कार्य की सिद्धि के लिये अपनाई जानेवाली चाल, वह युक्ति जो राज्य की रक्षा के लिये काम में लाई जाती है, राजा और प्रजा दोनों के लिये निर्धारित की हुई व्यवस्था, राजनीति; **–कुशल**–(वि.) नीतिज्ञ; **–घोष**–(पुं.) बृहस्पति के रथ का नाम; **–ज्ञ**–(वि.) नीति जाननेवाला, नीति में प्रवीण, नीति में कुशल; **–मान्**–(वि.)नीति-कुशल,सदाचारी; **–विद्या**–(स्त्री.)नीति-विषयक विद्या; **–शास्त्र**–(पुं.)वह शास्त्र जिसमें मनुष्य-समाज के हित के लिये देश, काल तथा पात्र के अनुसार आचार, व्यवहार, प्रबन्ध और शासन के नियम लिखे हों।

नीथ–(सं. पुं.) नयन, स्तोत्र।

नीदना–(हिं.क्रि.अ.) शयन करना, सोना।

नीध–(सं. पुं.) छाजन की ओरी, पहिये की नाभि, चन्द्रमा, रेवती नक्षत्र।

नीधना–(हिं. वि.) निर्धन, दरिद्र।

नीनाह–(सं. पुं.) निबन्ध, बन्धन।

नीप–(सं. पुं.) पहाड़ का निचला भाग, अशोक वृक्ष, गाँठ देने के लिये रस्सी का फन्दा।

नीपराज–(सं. पुं.) राजकदम्ब का वृक्ष।

नीबू–(हिं. पुं.) गरम देशों में होनेवाला एक छोटे आकार का काँटेदार वृक्ष जिसका गोल फल खट्टा रसदार होता है।

नीम–(हिं. पुं.)गरम देशों में होनेवाला एक वृक्ष जिसका प्रत्येक भाग कड़ुआ होता है, (चर्म रोग की यह विशिष्ट औषध है); **–हकीम**–(पुं.) मामूली दवाओं का जानकार चिकित्सक; **–हकीम खतरे जान**–नीम-हकीम की दवा करने में जान जाने का खतरा रहता है।

नीमच–(हिं. पुं.)नदी मे मिलनेवाली एक प्रकार की मछली।

नीमटर–(हिं. वि.) जिसको किसी विद्या की थोड़ी सी जानकारी हो।

नीमन–(हिं. वि.) अच्छा, भला, नीरोग, चंगा, जो बिगड़ा न हो, सुन्दर, बढ़िया।

नीमर–(हिं. वि.) दुर्बल, बलहीन।

नीमस्तीन–(हिं.स्त्री.)आधी बाँह की कुरती।

नीमावत–(हिं.पुं.) एक वैष्णव सम्प्रदाय।

नीयत–(अ. स्त्री.) आंतरिक उद्देश्य या अभिप्राय, आशय, संकल्प, इच्छा।

नीरंग–(सं. वि.) बिना रंग का।

निरंध्र–(सं.वि.)छिद्ररहित,जिसमें छेद न हो।

नीर–(सं. पुं.) जल, पानी, रस, कोई द्रव पदार्थ, फफोले के भीतर का पानी, निर्यास,सुगंधवाला (औषधि); **–ढलना**–आँसू बहना।

नीरक्त–(सं. वि.) रक्तशून्य, वर्णरहित।

नीरज–(सं. पुं.) पद्म, कमल, मोती, उशीर, महादेव; (वि.)जल में उत्पन्न।

नीरजस्–(सं. वि.) निर्धूल, जहाँ धूलि न हो, बिना पराग का।

नीरजात–(सं. वि.) जल में उत्पन्न; (पुं.) कमल।

नीरत–(सं. वि.) विरत।

नीरद–(सं. पुं.) मेघ, बादल; (वि.) अदंत, बिना दाँत का।

नीरधर–(सं. पुं.) मेघ, बादल।

नीरधि, नीरनिधि–(सं. पुं.) समुद्र।

नीरपति–(सं. पुं.) वरुण देवता।

नीरप्रिय–(सं. वि.) जिसको जल बहुत प्यारा हो।

नीररुह–(सं. पुं.) पद्म, कमल।

नीरव–(सं.वि.)स्तब्ध, बिना शब्द का।

नीरस–(सं. पुं.) दाड़िम, अनार; (वि.) जिसमें रस न हो, सूखा, स्वादरहित,फीका।

नीरसन–(सं. वि.) बिना करधनी या कटिबन्ध का।

नीरसा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।

नीरांजन–(सं. पुं.) दीपदान, आरती, अस्त्र को शुद्ध करने या चमकाने का काम।

नीराज–(सं. पुं.) ऊदबिलाव, नेवला।

नीराजन–(सं. पुं.) दीपदान, आरती।

नीराजना–(सं.स्त्री.) देवता को दीपक दिखलाने की विधि; (क्रि. स.)आरती करना।

नीरुच–(सं.वि.) जिसमें बहुत चमक न हो।

नीरुज–(सं.वि.) रोगरहित, नीरोग, स्वस्थ।

नीरुज्–(सं. पुं.) आरोग्य, स्वास्थ्य; (वि.) चतुर।

निरूप–(सं. वि.) रूपहीन, कुरूप ।

नीरे–(हि. अव्य.) नियरे, पास में ।

नीरोग–(हि. वि.) रोगहीन, स्वस्थ ।

नीरोह–(सं. वि.) अंकुरित ।

नील–(सं. पुं.) नीला रंग, एक पर्वत का नाम, एक पौधा जिससे रंग बनता है, नौ निधियों में से एक, कलंक, वटवृक्ष, सौ खरब की संख्या, राम की सेना का एक बंदर, इन्द्रनील मणि, नीलम, एक नाग का नाम, काँच, लवण, नीला वस्त्र, शरीर पर पड़नेवाला चोट का नीला दाग एक प्रकार का नाच, तालीसपत्र, विष; (वि.) नीले रंग का, नीला; (मुहा.) –का टीका लगाना–अपमानित करना; –कंटक–(पुं.) चातक पक्षी, पपीहा; –कंठ–(वि.) जिसका कंठ नीला हो, शिव, महादेव, गौरा पक्षी, चटक, मयूर, मोर, एक प्रकार की चिड़िया जिसके कंठ और डैने नीले रंग के होते हैं; –कंठक–(पुं.) चातक पक्षी, पपीहा; –कंठाक्ष–(पुं.) रुद्राक्ष; (वि.) जिसकी आँखें खञ्जन के समान हों; –क–(पुं.) काला मृग, भौंरा, मिलावाँ, मटर, काँच, लवण, बीजगणित में अव्यक्त राशि का भेद; –कण–(पुं.) नीलम का टुकड़ा, ठुड्डी पर गोदे हुए गोदने का विन्दु; –कणा–(स्त्री.) स्याहजीरा; –कर–(पुं.) नील बनानेवाला; –कांत–(पुं.) एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया, विष्णु, नीलम रत्न; –कायिक–(पुं.) जिसका देह नीला हो; –कुंतला–(स्त्री.) पार्वती की एक सखी का नाम; –कुसुमा–(स्त्री.) नीली कटसरैया; –केशी–(स्त्री.) नील का पौधा; –क्रांता–(स्त्री.) विष्णुक्रान्ता नामक लता जिसमें नीले फल होते हैं; –क्रौंच–(पुं.) काला बगला; –गंगा–(स्त्री.) एक नदी का नाम; –गर्भ–(वि.) जिस फूल आदि का बिचला भाग नीला हो; –गाय–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का जंगली पशु जो गाय के सदृश होता है; (यह जंगलों में दल बाँधकर रहता है); –चक्र–(सं.पुं.) दण्डक वृत्त का एक भेद; –नीरज–(पुं.) नीला कमल; –ता–(स्त्री.) नीलापन; –पंक–(पुं.) काला कीचड़, अन्धकार; –पत्र–(पुं.) नील कमल, मोथा (घास) जिसकी जड़ में कसेरू होता है, नीला पत्ता; –पत्री–(स्त्री.) जंगली नील; –पद्म–(पुं.) नीला कमल; –पिंगला–(स्त्री.) नीलापन और भूरापन लिये लाल रंग की गाय; –पिच्छ–(पुं.) श्येन (बाज) पक्षी; –पुराण–(पुं.) एक पुराण का नाम जिसमें कश्मीर-सम्बन्धी कथाएँ हैं; –पुष्प–(पुं.) नीला फूल, नीली भँगरैया; –पुष्पिका–(स्त्री.) अलसी, तीसी, नील का पौधा; –पुष्पी–(स्त्री.) देखें 'नीलपुष्पिका'; –पृष्ठ–(पुं.) अग्नि, आग; –पोर–(पुं.) एक प्रकार की ऊख; –फला–(स्त्री.) बैंगन, भंटा; –बरी–(हि. स्त्री.) कच्चे नील की बट्टी; –भ–(पुं.) चन्द्रमा, मेघ, बादल, मक्खी; –मंडल–(पुं.) परूष, फालसा; मक्खी; –मणि–(सं. पुं.) इन्द्रनील, नीलम; –मक्षिका–(स्त्री.) नीली –मल्लिका–(स्त्री.) कपित्थ, कैथ, बेल; –माधव–(पुं.) विष्णु, जगन्नाथ, जगन्नाथ दारु ब्रह्म के पूर्व की प्रतिमा जो इन्द्रद्युम्न के आते ही अन्तर्हित हो गई थी; –माष–(पुं.) काला उड़द; –मौलिक–(पुं.) खद्योत, जुगनू; –मृत्तिका–(स्त्री.) हीराकसीस; –मेह–(पुं.) एक प्रकार का प्रमेह रोग; –मोर–(हि. पुं.) कुररी नामक पक्षी जो हिमालय पर्वत पर पाया जाता है; –यष्टिका–(स्त्री.) एक प्रकार की काली ऊख; –रत्न–(पुं.) इन्द्रनील मणि, नीलम; –रूपक–(पुं.) पाकड़ का वृक्ष; –लोचन–(वि.) नीली आँखोंवाला; –लोहित–(पुं.) शिव, महादेव, (वि.) नीलापन लिये लाल, बैंगनी; –लोहिता–(स्त्री.) शिवा, पार्वती, एक प्रकार का छोटा जामुन; –वर्ण–(पुं.) परूष फल, फालसा; –वर्षाभू–(पुं.) काला मेढक; –वसन–(वि.) नीला वस्त्र पहिने हुये; (पुं.) शनि ग्रह; –वस्त्र–(पुं.) परशुराम; –वृंत–(पुं.) तूल, रुई, तरकश बनाने की लकड़ी; –वृषा–(स्त्री.) बगन, भंटा; –सरस्वती–(स्त्री.) तारा देवी; –सस्य –(पुं.) बाजरा; –सार– (पुं.) तेंदू का वृक्ष; –सिर–(हि. पुं.) नीले सिर की बत्तक; –स्वरूप–(पुं.) एक वर्णवृत्त का नाम ।

नीलम–(फा.पुं.) नीले रंग का बहुमूल्य रत्न ।

नीलांग–(सं. पुं.) सारस पक्षी; (वि.) नीले रंग का ।

नीलांशु–(सं. पुं.) भौंरा, मौरा, घड़ियाल,

नीलांजन–(सं.पुं.) सुरमा, तुत्थ, तूतिया ।

नीलांजना–(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली ।

नीलांबर–(सं. पुं.) बलदेव, शनि ग्रह, राक्षस, नीला वस्त्र; (वि.) नीला वस्त्र पहिननेवाला ।

नीलांबरी–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।

नीलांबुज–(सं.पुं.) नील पद्म, नील कमल ।

नीला–(सं. स्त्री.) नील का पौधा, नीली मक्खी, एक राग का नाम; (हि. वि.) आसमानी रंग का; (पुं.) नीलम, एक प्रकार का कबूतर; (मुहा.) –नीला होना–रोष दिखलाना ।

नीलाक्ष–(सं.वि.) नीली आँख का; (पुं.) राजहंस ।

नीलाचल–(सं. पुं.) जगन्नाथ पुरी के पास की एक छोटी पहाड़ी का नाम ।

नीलाथोथा–(हि.पुं.) ताँबे का क्षार, तूतिया

नीलाब्ज–(सं.पु.) नील पद्म, नीला कमल

नीलाभ्र–(सं. पुं.) काला अभ्रक ।

नीलाम–(हि.पुं.) बिक्री आदि का एक ढंग । जिसमें माल सबसे ऊँचा बोल बोलनेवाले खरीदार के हाथ बेच दिया जाता है ।

नीलावती–(हि.स्त्री.) एक प्रकार का चावल ।

नीलाश्मज–(सं पुं.) तुत्थ, तूतिया ।

नीलाश्मन्–(सं. पुं.) नीलकान्त मणि ।

नीलासन–(सं.पुं.) एक रतिबन्ध का नाम ।

नीलाहट–(हि. स्त्री.) नीलापन ।

नीलिका–(स.स्त्री.) नील का पौधा, नीली निर्गुण्डी, आँख का एक रोग ।

नीलिनी–(सं. स्त्री.) नील का पौधा ।

नीलिमा–(सं. स्त्री.) नीलापन, श्यामता ।

नीली–(हि. वि. स्त्री.) नीले रंग की ।

नीली घोड़ी–(हि. स्त्री.) जामे में सिली हुई कागज की घोड़ी जिसको पहिन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है; (दफाली लोग इसको पहनकर गाजी मियाँ का गीत गाकर भीख माँगते हैं)

नीलोत्पल–(सं.पुं.) नीलपद्म, नीला कमल ।

नीलोद–(सं. पुं.) वह समुद्र या नदी जिसका पानी नीला हो ।

नीवँ–(हि. स्त्री.) घर बनाने के लिये गहरी नाली के आकार का गड्ढा जिसके पेंदे से भीत की जोड़ाई आरम्भ होती है, भीत का आधार, मूल-भित्ति; जड़, मूल; (मुहा.)–जमाना–आधार दृढ़ करना; –देना–गड्ढा खोदकर दीवार बनाने के लिये जोड़ाई करना, कोई कार्य आरंभ करना ।

नीव–(हि. स्त्री.) देखें 'नीवँ' ।

नीवानास–(हि. पुं.) सत्यानाश, बरबादी, सर्वनाश ।

नीवार–(सं. पुं.) तिन्नी का चावल ।

नीवि–(सं. स्त्री.) देखें 'नीवी'।
नीवी–(सं. स्त्री.) पण, मूलधन, पूंजी, स्त्री के कमर पर के वस्त्र बांधने की डोरी, नारा, कमर में लपेटी हुई धोती की गांठ, साड़ी, धोती, लँहगे में पड़ी हुई डोरी।
नीव्र–(सं. पुं.) पहिये का घेरा, चन्द्र, रेवती नक्षत्र।
नीशार–(सं.पुं.) सरदी से बचने का ओढ़ना।
नीस–(हि. पुं.) सफेद धतूरा।
नीसक–(हि. वि.) बलहीन।
नीसानी–(हि. स्त्री.) तेईस मात्राओं का एक छन्द।
नीसुआ, नीसू–(हि. पुं.) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर रखकर गड़ासे से चारा काटा जाता है।
नीहार–(सं.पुं.) तुषार, हिम, पाला, कुहरा।
नीहारस्फोट–(सं.पुं.) हिम का बड़ा टुकड़ा।
नीहारिका–(सं. स्त्री.) आकाश में फैला हुआ आकाश-गंगा-सा प्रकाश-पुंज जो अँधियारी रात म अस्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।
नु–(सं. पुं.) अनुस्वान।
नुकता–(अ. पुं.) ऐब, दोष, छिद्र, धब्बा, दाग, बिंदु, अक्षरों पर लगाई जानेवाली बिंदी; –चीनी–(स्त्री.) छिद्रान्वेषण।
नुकरी–(हि. स्त्री.) जल के पास रहनेवाली एक चिड़िया जिसकी चोंच काली और पैर सफेद होते हैं।
नुकसान–(अ.पुं.) क्षति, हानि, कमी, न्यूनता।
नुकाई–(हि.स्त्री.) खुरपी से निराने का काम।
नुकाना–(हि. क्रि. स.) छिपाना।
नकीला–(हि. वि.) नोकदार, नोकझोंक का, बाँका।
नुक्कड़–(हि. पुं.) नोक, पतला सिरा, अन्त, छोर, निकला हुआ सिरा, नाका।
नुक्का–(हि. पु.) नोक, नुकीला भाग।
नुक्स–(अ. पुं.) ऐब, दोप, त्रुटि।
नुखरना–(हि.क्रि.अ.) भालू का चित लेटना
नुचना–(हि.क्रि.अ.) किसी वस्तु का खिंचकर अलग होना, उखड़ना, नख आदि से नोचा जाना, खरोंचा जाना।
नुचवाना–(हि. क्रि. स.) नोचने के लिये किसी दूसरे को लगाना, नोचने देना।
नुजट–(हि.पुं.) संगीत की चौबीस शोभाओं में से एक।
नुत–(सं.वि.) प्रशंसा या स्तुति किया हुआ।
नुति–(सं. स्त्री.) स्तुति, वन्दना, पूजा।
नुत्त–(सं. वि.) भेजा हुआ, चलाया हुआ।
नुनखरा, नुनखारा–(हि. वि.) स्वाद में नमक के सदृश, नमकीन।
नुनना–(हि. क्रि. स.) लुनना, कृषिफल काटना।
नुनाई–(हि. स्त्री.) सुन्दरता, लावण्य।
नुनी, नूनी–(हि.स्त्री.) छोटी किस्म का शहतूत, पुरुष की जननेन्द्रिय।
नुनेरा–(हि.पुं.) नोनिया, नमक बनानेवाला
नुन्न–(सं. वि.) प्रेरित, भेजा हुआ।
नुमा–(फा. वि.) समस्त पदों म व्यवहृत होनेवाला 'सदृश या मानिंद' का अर्थसूचक शब्द।
नुमाइंदा–(फा. पुं.) दिखानेवाला, प्रकट करनवाला, प्रतिनिधि।
नुमाइश–(फा. स्त्री.) दिखावा, प्रदर्शन, प्रदर्शनी।
नुमाइशी–(फा. वि.) दिखावटी, प्रदर्शनात्मक।
नुमाई–(फा. स्त्री.) प्रदर्शन।
नुमायाँ–(फा. वि.) जाहिर, प्रकट।
नुसखा–(अ.पुं.) लिखा हुआ कागज, किसी रोग के निवारणार्थ प्रस्तुत औषध, औषध के पदार्थों की विवरण-सूची।
नूत–(सं. वि.) स्तुत, प्रशंसा किया हुआ; (हि.वि.) नूतन, नया, अनोखा, अनूठा।
नूतन–(सं. वि.) नवीन, नया, अपूर्व, अनोखा, विचित्र, विलक्षण।
नूतनता–(हि. स्त्री.) नवीनता, नयापन।
नूतनत्व–(सं. पुं.) नवीनता, नूतनता।
नूद–(स. पुं.) शहतूत।
नून–(हि. पुं.) आल की जाति की एक लता, लवण, नमक; (हि. वि.) देखें 'न्यून', कम; –तेल–(पुं.) गृहस्थी की भोजन-सामग्रियाँ आदि।
नूनताई–(हि. स्त्री.) न्यूनता, कमी।
नूपुर–(सं. पुं.) स्त्रियों की पैर म पहिनने का एक गहना, पैंजनी, नगण के पहिले भेद का नाम, इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम।
नूर–(अ.पुं.) ज्योति, प्रकाश, कांति, छवि।
नूरा–(हि. पुं.) आपस में मिलकर लड़ा जानवाला मल्लयुद्ध; (वि.) प्रतापी, तेजस्वी।
नूरी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की सुन्दर छोटी चिड़िया।
नृ–(सं. पुं.) मनुष्य, पुरुष।
नृकुक्कुर–(सं.पुं.) कुत्ते के समान व्यवहार करने वाला मनुष्य।
नृकेशरी–(सं. पुं.) नृसिंहावतार, विष्णु, अति पराक्रमी पुरुष।
नृघ्न–(सं. वि.) नरघातक।
नृजग्ध–(सं. वि.) नरभक्षक, मनुष्य को खानेवाला।
नृजाति–(सं. स्त्री.) मनुष्य जाति।
नृतक–(हि. वि.) नर्तक, नाचनेवाला।
नृति–(सं. स्त्री.) नर्तन, नाच।
नृत्तना–(हि. क्रि.अ.) नाचना।
नृत्य–(सं. पुं.) संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथ-पाँव हिलाने, उछलन, कूदने आदि का व्यापार, ताण्डव, नाच; –प्रिय–(पुं.) ताण्डवप्रिय, महादेव, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम; –शाला–(स्त्री.) नाट्यगृह, नाच-घर; –स्थान–(पुं.) नाचने का स्थान।
नृदुर्ग–(सं.पुं.) सेना के चारों ओर का घेरा।
नृदेव, नृदेवता–(सं. पुं.) राजा, ब्राह्मण।
नृप–(सं.पुं.) नरपति, राजा; –गृह–(पुं.) राजमहल; –तरु–(पुं.) खिरनी का पेड़; –ता–(हि. स्त्री.) राजा का गुण या भाव; –त्व–(पुं.) राजत्व, राजा का काम; –द्रुम–(पुं.) खिरनी का वृक्ष; –द्रोही–(पुं.) परशुराम; –प्रिय–(पुं.) जड़हन, धान, आम का वृक्ष, पहाड़ी तोता; (वि.) राजा का प्रिय; –मंदिर–(पुं.) राजगृह, राजभवन; –मान–(पुं.) एक प्रकार का बाजा जो राजाओं के भोजन के समय बजाया जाता था; –शु–(पुं.) नरपशु, मूर्ख; –सभा–(स्त्री.) राजाओं की सभा; –सुता–(स्त्री.) राजकुमारी, छछूंदर।
नृपानुचर–(सं. पुं.) राजभृत्य, राजा का नौकर।
नृपाभीर–(सं. पुं.) देखें 'नृपमान'।
नृपामय–(सं. पुं.) राजयक्ष्मा, क्षयरोग।
नृपाल–(सं. पुं.) नृपति, राजा।
नृपालय–(सं.पुं.) राजप्रासाद, राजमहल।
नृपासन–(सं. पुं.) राजा का सिंहासन।
नृपोचित–(सं. वि.) राजा के योग्य।
नृमण–(सं. पुं.) धन, सम्पत्ति।
नृमणि–(सं. पुं.) एक प्रकार का भूत जो बच्चों को लगता और कष्ट देता है, श्रेष्ठ मनुष्य।
नृमर–(सं. पुं.) मनुष्य को मारनेवाला राक्षस।
नृमेध–(सं. पुं.) नरमेध यज्ञ।
नृयज्ञ–(सं. पुं.) पंच यज्ञों में से एक जो गृहस्थ के लिये कर्तव्य है, अतिथि-सेवा।
नृलोक–(सं. पुं.) मर्त्य-लोक, भू-लोक।
नृवाहन–(सं. पु.) नरवाहन, कुबेर।
नृवेष्टन–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
नृशंस–(सं. वि.) क्रूर, निर्दय, अपकारी, अनिष्टकारी, अत्याचारी; –ता–(स्त्री.)

निर्दयता, क्रूरता।

नृसदन–(सं. पुं.) यज्ञगृह, यज्ञशाला।

नृसिंह–(सं. पुं.) विष्णु का नरसिंह-रूपी अवतार, दस अवतारों में से चौथा अवतार, श्रेष्ठ पुरुष; –**चतुर्दशी**–(स्त्री.) वैशाख शुक्ला चतुर्दशी जिस दिन नृसिंह देव के उद्देश्य से व्रत किया जाता है।

नृहन्–(सं. पुं.) शत्रुहंता, नरघातक।

नृहरि–(सं. पुं.) नृसिंहरूपी विष्णु।

ने–(हि.अव्य.) सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता का कारक-चिह्न जो उसके आगे लगाया जाता है।

नेउतना–(हि. क्रि. स.) निमंत्रण देना।

नेउला–(हि. पुं.) देखें 'नेवला'।

नेउली–(हि. स्त्री.) हठयोग का एक भेद।

नेक–(फा. वि.) अच्छा, भला, उपकारी, दानशील; –**चलन**–(वि.) सदाचारी; –**चलनी**–(स्त्री.) सदाचार; –**नाम**–(वि.) सुख्यात; –**नामी**–(स्त्री.) सुख्याति; –**नीयत**–(वि.) अच्छी नीयतवाला; –**नीयती**–(स्त्री.) भलमनसाहत, ईमानदारी।

नेकरी–(हि. स्त्री.) समुद्र की लहर का हिलोर जिससे जहाज एक ओर ढरता है।

नेकी–(फा.स्त्री.) भलाई, उपकार, अच्छा काम, हित; –**बदी**–(स्त्री.) अच्छाई और बुराई।

नेकु–(हि. वि.) देखें 'नेक'।

नेग–(हि. पुं.) पुरस्कार जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा नाई, कुम्हार आदि पौनियों को दिया जाता है, इस निमित्त दिया जानेवाला धन, पुरस्कार; –**चार**, –**जोग**–(पुं.) विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा नाई, बारी आदि को प्रसन्न करने के लिये दिया हुआ पुरस्कार।

नेगटी–(सं.वि.) रीतिका पालन करनेवाला।

नेगी–(हि. पुं.) नेग पानेवाला।

नेगी-जोगी–(हि. पुं.) नेग पाने का अधिकारी, नेग पानेवाला।

नेचरिया–(हि. पुं.) प्रकृतिवादी, प्रकृति से परे ईश्वर को न माननेवाला, नास्तिक।

नेछावर–(हि. स्त्री.) देखें 'निछावर'।

नेजक–(सं. पुं.) धोबी।

नेजाल–(हि. पुं.) भाला, बरछा।

नेटा–(हि. पुं.) नाक से निकलनेवाला कफ।

नेठना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'नाठना'।

नेड़े–(हि. अव्य.) समीप, निकट, पास।

नेत–(हि. पुं.) निर्धारण, ठहराव, किसी बात का स्थिर होना, निश्चय, प्रबंध, व्यवस्था, संकल्प, एक प्रकार की चादर।

नेतली–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की पतली डोरी।

नेता–(सं. पुं.) नायक, सरदार, अगुआ, स्वामी, प्रवर्तक, मालिक, विष्णु, नीम का पेड़; (हि. पुं.) मथानी की रस्सी।

नेति–(सं. पुं.) हठयोग का एक भेद, एक संस्कृत वाक्य जिसका अर्थ है "इति न" अर्थात् अन्त नहीं है।

नेती–(हि. स्त्री.) मथानी में लपेटकर खींचने की रस्सी

नेतीधौती–(हि. स्त्री.) हठयोग की वह क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डालकर आँतें साफ की जाती हैं।

नेतृत्व–(सं. पुं.) नायकता, अध्यक्षता।

नेत्र–(सं. पुं.) चक्षुरिन्द्रिय, चक्षु, नयन, आँख, एक प्रकार का वस्त्र, मथानी की रस्सी, पेड़ की जड़, जटा, रथ, नाड़ी, वस्ति कर्म की सलाई, हैहय राजा पुत्र, दो की संख्या; –**कनीनिका**–(पुं.) आँख की पुतली; –**कोष**–(पुं.) आँख का परदा; –**ज**–(पुं.) नेत्र से उत्पन्न आँसू; –**जल**–(पुं.) अश्रु, आँसू; –**पाक**–(पुं.) आँख का एक रोग; –**पिंड**–(पुं.) बिल्ली, आँख का डेला; –**बंध**–(पुं.) आँख-मिचौली का खेल; –**बाला**–(हि. पुं.) सुगन्धवाला; –**भाव**–(पु.) संगीत या नृत्य में आँखों की चेष्टा से सुख-दुःख के भाव व्यक्त करने की कला; –**मंडल**–(पुं.) आँख का डेला; –**मल**–(पुं.) आँख का कीचड़; –**योनि**–(पुं.) इन्द्र, चन्द्रमा; –**रंजन**–(पुं.) कज्जल, काजल; –**रोम**–(पु.) आँख की बरौनी; –**वारि**–(पुं.) अश्रुजल, आँसू; –**विष**–(पुं.) एक प्रकार का सर्प जिसकी आँख में विष रहता है; –**संधि**–(स्त्री.) आँख का कोना; –**स्तंभ**–(पुं.) आँख की पलकों की क्रिया बन्द हो जाना; –**स्राव**–(पुं.) आँखों से पानी बहना।

नेत्रांत–(सं. पुं.) अपांग, कनपटी।

नेत्रांबु, **नेत्रांभस्**–(सं. पुं.) अश्रु, आँसू।

नेत्राभिष्यंद–(सं. पुं.) आँख आने का रोग।

नेत्रामय–(सं पुं.) आँख का एक रोग।

नेत्री–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, नाड़ी, नदी, अग्रगामिनी, राह बतलानेवाली।

नेत्रोत्सव–(सं. पुं.) वह वस्तु जिसको देखने से आनन्द मिले।

नेनुआ, **नेनुवा**–(हि. पुं.) एक प्रकार की तरकारी, घियातरोई।

नेप–(सं. पुं.) पुरोहित, उदक, जल।

नेपथ्य–(सं. पुं.) वेश, भूषण, अभिनय, नाटक आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट-नटी नाना प्रकार के वेश धारण करते हैं।

नेपाल–(पुं.) भारतवर्ष के उत्तर का एक स्वाधीन हिन्दू राज्य; –**जा**–(स्त्री.) मनःशिल, मैनसिल।

नेपाली–(हि. वि.) नेपाल-संबंधी, नेपाल में होनेवाला; (पुं.) नेपाल का निवासी; (स्त्री.) नेपाल की भाषा।

नेब–(हि. पुं.) सहायक, मन्त्री, दीवान।

नेबू–(हि. पुं.) देखें 'नीबू'।

नेम–(सं. पुं.) काल, समय, अवधि, खण्ड, टुकड़ा, छल, कपट, गड्ढा, अन्न, सायंकाल, मूल, जड़।

नेम–(हि.पुं.) नियम, बंधेज, रीति, निरन्तर होनेवाली बात, धर्म-भावना से व्रतादि क्रियाओं का पालन; –**धरम**–(पुं) व्रत, पाठ-पूजा आदि।

नेमत–(हि. स्त्री.) वैभव।

नेमघिति–(सं. स्त्री.) संग्राम, युद्ध।

नेमि–(सं. स्त्री.) पहिये का घेरा, चक्कर, कुएँ की जगत, वज्र, एक दैत्य का नाम, एक जैन तीर्थंकर, प्रान्त, भाग; –**वृक्ष**–(पुं.) सफेद खर का पेड़।

नेमी–(हि. वि.) धर्म की दृष्टि से पाठ, पूजा, व्रत, उपवास आदि नियमों का पालन करनेवाला।

नेय–(सं. वि.) लाने योग्य।

नेयार्थता–(सं.स्त्री.) काव्य-दोष का एक भेद।

नेरवती–(हि. स्त्री.) नीले रंग की एक पहाड़ी भेड़।

नेरे–(हि. अव्य.) निकट, समीप, पास।

नव–(हि. पुं.) देखें 'नेव'।

नवग–(हि. पुं.) देखें 'नेग'।

नेवगी–(हि. पुं.) देखें 'नेगी'।

नेवछावर–(हि. स्त्री.) देखें 'निछावर'।

नेवज–(हि. पुं.) खाद्यपदार्थ जो देवता को अर्पण किया जाय, नैवेद्य, भोग।

नेवतना–(हि.क्रि.स.) निमंत्रण देना, न्योता भेजना।

नेवतहरी–(हि. पुं.) वह जिसको निमंत्रण दिया जाय।

नेवता–(हि. पुं.) देखें 'न्योता'।

नेवर–(हि. पुं.) पैर का गहना, नूपुर, घोड़े के पैर से पैर की रगड़; (वि) बुरा, खराब।

नेवरना–(हि.क्रि.अ.) दूर होना, समाप्त होना।

नेवला–(हि. पुं.) [illegible] रंग का [illegible] आकार का

मांसाहारी पिण्डज जन्तु जो बिलों में रहता है, (यह सर्प को मार डालता है।)
नेवा–(हिं.पुं.) लोकोक्ति, कहावत; (वि.) सदृश, समान।
नेवाज–(हिं. वि.) देखें 'निवाज'।
नेवाड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'निवाड़ा'
नेवारना–(हिं. क्रि. स.) देख 'निवारना'।
नेवार–(हिं. पुं., स्त्री.) देखें 'निवार'।
नेवारी–(हिं. स्त्री.) वनमल्लिका, जूही की जाति का एक पौधा।
नेष्ट–(सं.वि.) अनिष्ट, शास्त्र से निषिद्ध।
नेष्टु–(सं. पुं.) लोष्ट, ढेला।
नेसकुन–(हिं.पुं.) वन्दरों का जोड़ा खाना।
नेसुक–(हिं. वि.) अल्प, थोड़ा, तनिक; (अव्य.) अल्प मात्रा में, थोड़ा सा।
नेह–(हिं.पुं.) स्नेह, प्रीति, प्रेम, तेल या घी।
नेही–(हिं. वि.) प्रेमी, स्नेह करनेवाला।
नै–(हिं. स्त्री.) नीति।
नैऋत–(हिं. वि.) देखें 'नैर्ऋत्य'।
नैक–(सं. वि.) अनेक, वहुत; (पुं.) विष्णु; (हिं. वि.) देखें 'नेक'।
नैकचर–(सं.वि.) (जंतु) जो अकेले न चलते हों, जो झुंड में चलते हों।
नैकटिक–(सं.वि.) निकटवर्ती, समीप का।
नैकट्य–(सं. पुं.) निकटता।
नैकधा–(सं. अव्य.) अनक प्रकार से।
नैकभेद–(सं. वि.) अनेक प्रकार का।
नैकरूप–(सं. वि.) नानारूप; (पुं.) परमेश्वर।
नैकशः–(सं. अव्य.) अनेक वार।
नैकषेय–(सं.पुं.) राक्षस।
नैकसानुचर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
नैकृतिक–(सं. वि.) कटुभाषी, कटु बोलनेवाला।
नैगम–(सं. पुं.) नय, नीति, उपनिषद्, वेद, शास्त्र, नगरवासी, नागरिक; (वि.) निगम-संवंधी, जिसमें निगम आदि का प्रतिपादन हो।
नैगमेय–(सं.पुं.) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
नैची–(हिं. स्त्री.) पुरवट खींचने में वैलों के आने-जाने के लिये वनी हुई ढालू भूमि।
नैज–(सं. वि.) निज-सम्वन्धी, अपना।
नैटी–(हिं. स्त्री.) दुविया घास।
नैतिक–(सं. वि.) नीति-सम्वन्धी।
नैत्य–(सं. पुं.) नित्य-कर्म।
नैत्यिक–(सं. वि.) नित्यविहित, प्रतिदिन करने का।
नैदाघ–(सं.वि.) ग्रीष्म-सम्बन्धी, गरमी का।
नैदेशिक–(सं. पुं.) किंकर, दास।
नैद्र–(सं. वि.) निद्रा-सम्बन्धी।
नैधन–(सं.पुं.) निधन; (वि.) मरण-संवंधी।
नैन–(हिं.पुं.) नयन, नैत्र, नवनीत, मक्खन; –सुख–(पुं.) एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।
नैनू–(हिं. पुं.) एक प्रकार का उभड़ी हुई गोल बूटियोंवाला सूती कपड़ा, मक्खन।
नैपाल–(सं. वि.) नेपाल-संवंधी, नेपाल में होनेवाला; (पुं.) एक प्रकार की ऊख, नेपाल।
नैपाली–(सं.वि.) नेपाल देश का; (स्त्री.) मैनसिल, नील का पौधा।
नैपुण, नैपुण्य–(सं.पुं.) निपुणता, चतुराई।
नैमय–(सं. पुं.) व्यवसायी।
नैमित्तिक–(सं. वि.) निमित्त-संवंधी, जो किसी निमित्त से किया जाय।
नैमिषारण्य–(सं. पुं.) एक प्राचीन वन जो आजकल हिन्दुओं का तीर्थ माना जाता है, (यह स्थान सीतापुर जिले में है।)
नैमेय–(सं.पुं.) विनिमय, वस्तुओं का वदला।
नैयमिक–(सं. वि.) नियम या विधि के अनुसार होनेवाला।
नैया–(हिं. स्त्री.) नाव।
नैयायिक–(सं. पुं.) न्याय-शास्त्र का जाननेवाला, न्यायाध्येता।
नैर–(हिं.पुं.) देश, नगर।
नैरपेक्ष्य–(सं. पुं.) अपेक्षा का अभाव।
नैरयिक–(सं. वि.) नरक भोगनेवाला।
नैरर्थ्य–(सं. पुं.) निरर्थकता।
नैराश्य–(सं. पुं.) निराश होने का भाव, आशाशून्यता।
नैर्ऋत–(सं. पुं.) राक्षस, मूल नक्षत्र; पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।
नैर्ऋती–(सं. स्त्री.) दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा।
नैर्गंध्य–(सं. पुं.) गन्धहीनता।
नैर्मल्य–(सं. पुं.) स्वच्छता, निर्मलता।
नैर्लज्य–(सं. पुं.) निर्लज्जता।
नैवेद्य–(सं. पुं.) वह भोजन-सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाय, भोग, देव-प्रसाद।
नैश–(सं. वि.) निशा-संवंधी, रात का।
नैश्चित्य–(सं. पुं.) निश्चय।
नैषध–(सं. पुं.) निषध देश के राजा नल, श्रीहर्षरचित एक संस्कृत महाकाव्य; (वि.) निषध देश का।
नैषधीय–(सं. वि.) नल-संवंधी।
नैष्ठिक–(सं.वि.) निष्ठावान्, निष्ठायुक्त।
नैष्ठुर्य–(सं. पुं.) निठुराई, क्रूरता।
नैष्फल्य–(सं. पुं.) निष्फलता।
नैसर्गिक–(सं.वि.) स्वाभाविक, प्राकृतिक।
नैसर्गिकी–(हिं.वि.) स्वाभाविक, प्राकृतिक।
नैसा–(हिं. वि.) बुरा, खराब।
नैहर–(हिं.पुं.) स्त्री के पिता का घर, मायक।
नो–(अव्य.) नहीं।
नोआ(ई)–(हिं.पुं.) दूध दुहते समय गाय के दोनों पिछले पैर बाँधने की रस्सी।
नोक–(फा. स्त्री.) वारीक 'सिरा'।
नोक-झोंक–(हिं. स्त्री.) शृंगार, ठाटवाट, सजावट, आतंक, दर्प, तेज, चुभनेवाली वात, व्यंग्य, ताना, परस्पर की छेड़-छाड़।
नोकना–(हिं. क्रि. अ.) ललचना।
नोकदार–(हिं. वि.) जिसमें नोक हो, चुभनेवाला, चित्त पर प्रभाव डालनेवाला, पैना, तड़क-भड़क का।
नोकपलक–(हिं. स्त्री.) चेहरे की बनावट।
नोकपान–(हिं. पुं.) जूते की सुन्दरता और पुष्टता।
नोकाझोंकी–(हिं. स्त्री.) वादविवाद, छेड़-छाड़, आपस की व्यंग्यपूर्ण बातें।
नोकीला–(हिं. वि.) देखें 'नुकीला'।
नोखा–(हिं. वि.) अनोखा, अपूर्व, अनूठा।
नोच–(हिं. स्त्री.) नोचने की क्रिया या भाव, चारों ओर की माँग, छीनना, खसोटना; –खसोट–(स्त्री.) झटके से छीनना, छीना-झपटी।
नोचना–(हिं.क्रि.स.) जमी हुई या लगी हुई वस्तु को झटके से खींचकर अलग करना, उखाड़ना, खरोचना, दुखी और विवश करके लेना, पीछे पड़ जाना, नख आदि से विदीर्ण करना।
नोचू–(हिं. पुं.) नोचनेवाला, तंग करके लेनेवाला।
नोण–(सं. पुं.) लवण, नमक।
नोदन–(सं.पुं.) खण्डन, प्रेरणा, चलाने या हाँकने का काम, बैल हाँकने की छड़ी, पना।
नोधा–(सं. अव्य.) नवधा, नौ प्रकार से।
नोन–(हिं. पुं.) लवण, नमक।
नोनचा–(हिं. पुं.) नमकीन अचार, वह भूमि जिसमें नमक अधिक पाया जाता है।
नोनछी–(हिं. स्त्री.) लोनी मिट्टी।
नोना–(हिं. पुं.) नमक का वह अंश जो पुरानी भीतों में लग जाता है, लोनी, मिट्टी, जहाज या नाव की पेंदी में लगनवाला एक प्रकार का कीड़ा; (वि.) नमक मिला हुआ, खारा, सुन्दर, सलोना; –चमारी–(स्त्री.) एक प्रसिद्ध जादूगरनी जो कामरूप की रहनेवाली थी, (इसकी दोहाई अव तक मंत्रों में दी जाती है।)
नोनिया–(हिं. पुं.) लोनी मिट्टी में से नमक निकालनेवाली जाति।

नोनी–(हिं.स्त्री.) लोनी मिट्टी, अमलोनी का साग; (वि.स्त्री.) रूपवती, सुन्दर, सलोनी।
नोवना–(हिं.क्रि.स.) दुहते समय गाय के पिछले पैरों को रस्सी से बांधना।
नोहर–(हिं.वि.) दुर्लभ, अलभ्य, जो सहज में प्राप्त न हो सके, अद्भुत, अनोखा।
नौ–(सं. स्त्री.) नौका, नाव।
नौ–(हिं. वि.,पुं.) नव, जो गिनती में आठ और एक हो, एक कम दस की संख्या, ९; (मुहा.)–दो ग्यारह होना–भाग जाना।
नौकड़ा–(हिं. पुं.) तीन आदमियों के खेलने का एक प्रकार का कौड़ी का जुआ।
नौकर्णधार–(सं. पुं.) मल्लाह, मांझी।
नौकर्म–(सं. पुं.) नाव चलाने का काम।
नौका–(सं. स्त्री.) तरणि, नाव, पोत; –दंड–(पुं) नाव का डाँड़ा।
नौक्रम–(सं. पुं.) नाव का बना हुआ पुल।
नौग्रही–(हिं. स्त्री.) हाथ में पहिनने का एक गहना।
नौचर–(सं.वि.) नाव पर चढ़कर घूमनेवाला।
नौची–(हिं. स्त्री.) रंडी की पाली हुई लड़की जिसको वह अपना व्यवसाय सिखलाती है।
नौछावर–(हिं. स्त्री.) देखें 'निछावर'।
नौज–(अ. अव्य.) ईश्वर न करे, ऐसा न हो कि, न सही, न हो।
नौजीविक–(सं. पुं.) वह जो नाव चलाकर अपनी जीविका कमाता हो।
नौतन–(हिं. वि.) देखें 'नूतन', नया।
नौतम–(हिं. वि.) अत्यन्त नवीन, बहुत नया; (पुं.) विनय, नम्रता।
नौता–(हिं. पुं.) देखें 'न्योता', निमन्त्रण; (वि.) नया।
नौतेरही–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की पुरानी ईंट, पासे से खेलने का एक प्रकार का जुआ।
नौतोड़–(हिं. वि.) नया तोड़ा हुआ, जो पहले-पहल तोड़ा गया हो; (स्त्री.) पहिली बार जोती हुई भूमि।
नौदंड–(सं. पुं.) नाव का डाँड़ा।
नौधा–(हिं. वि.) देखें 'नवधा', (पुं) नया लगाया हुआ फलों का बाग, वर्ष के आरंभ में बोया हुआ नील।
नौनगा–(हिं. पुं.) बांह पर पहिनने का एक गहना, भुजबंद।
नौना–(हिं.क्रि.अ.) नवना, झुकना, झुककर टेढ़ा होना।
नौनार–(हिं.स्त्री.) वह स्थान जहां नोनिया मिट्टी से नमक निकालता है।
नौबढ़–(हिं. वि.) (वह) जिसको हीन (दरिद्र) अवस्था से अच्छी दशा में आये हुए थोड़े ही दिन हुए हों।
नौबत–(फा. स्त्री.) दुर्दशा, गत, स्थिति, योग, हालत, दशा, मांगलिक बाजा।
नौबती–(फा. पुं.) नौबत बजानेवाला।
नौमासा–(हिं. पुं.) गर्भ का नवां महीना, वह रस्म जो इस मास में की जाती है।
नौमि–(सं. क्रि. स.) एक संस्कृत का शब्द जिसका अर्थ है–मैं नमस्कार करता हूँ।
नौमी–(हिं. स्त्री.) नवमी, किसी पक्ष की नवीं तिथि।
नौयान–(सं. पुं.) नाव आदि पर चढ़कर देश-यात्रा करना।
नौरंग–(हिं. पुं.) 'औरंगजेब' का अपभ्रंश।
नौरंगी–(हिं. स्त्री.) देखें 'नारंगी'।
नौरतन–(हिं. पुं.) देखें 'नवरत्न', एक प्रकार का गहना, एक प्रकार की चटनी जिसमें—खटाई, गुड़, मिर्च, शीतलचीनी, केशर, इलायची, जावित्री, सौंफ और जीरा–ये नौ चीजें पड़ती हैं।
नौरस–(हिं. वि.) जिसका रस नया हो, नवयुवक।
नौरूप–(हिं. पुं.) नील की उपज की पहिली कटाई।
नौल–(हिं. पुं.) जहाज पर माल लादने का भाड़ा।
नौलक्खा, नौलखा–(हिं. वि.) जिसका मूल्य नव लाख हो, बहुमूल्य, अनमोल।
नौलखा–(हिं. स्त्री.) जुलाहों की वह लकड़ी जिसमें ताने बनाये जाते हैं।
नौला–(हिं. पुं.) देखें 'नेवला', नकुल।
नौलासी–(हिं. वि.) मृदु, कोमल।
नौवाह–(सं. वि.) जिससे नाव चलाई जाती है, नाव का डाँड़ा।
नौविद्या–(सं.स्त्री.) जहाज आदि चलाने की विद्या।
नौसत–(हिं.स्त्री.) सोलहों सिंगार, (शृंगार)।
नौसरा–(हिं.पुं.) नौ लड़ों की माला या हार।
नौसादर–(हिं. पुं.) एक तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक जो सींग, हड्डी, खुर, बाल आदि खौलाकर भभके से अर्क खींचा जाता है।
नौसिख–(हिं. वि.) नया सीखा हुआ, नवशिक्षित।
नौसिखिया, नौसिखुआ–(हिं. वि.) जो किसी विद्या या कला को सीखकर पटु न हुआ हो।
नौसेना–(सं. स्त्री.) जल-सेना, वह सेना जो जहाजों पर से लड़ती है।
नौहँड़–(हिं. पुं.) मिट्टी की नई हांड़ी, कोरी हँड़िया।
नौहँड़ा–(हिं. पुं.) पितृपक्ष, श्राद्धपक्ष।
न्यंकुभूरुह–(सं.पुं.) सोनापाठा, अमलतास।
न्यंगशिरस–(सं.पुं.) ककुभ राग, छन्द।
न्यक्ष–(सं. पुं.) भैंसा, जमदग्नि, परशुराम।
न्यग्रोध–(सं. पुं.) वट वृक्ष, बरगद, शमी वृक्ष, पुरसा, विष्णु, महादेव, उग्रसेन राजा के एक पुत्र का नाम।
न्यग्रोधिका–(सं. स्त्री.) मूसाकानी नामक लता।
न्यय–(सं. पुं.) अपचय, नाश।
न्यर्बुद–(सं. पुं.) दस अरब की संख्या।
न्यस्त–(सं. वि.) फेंका हुआ, डाला हुआ, त्यक्त, छोड़ा हुआ, रखा हुआ, धरा हुआ, स्थापित, बैठाया हुआ; –देह–(पुं.) मृत शरीर; –शस्त्र–(वि.) जिसने हथियार रख दिया हो।
न्यस्य–(सं. वि.) स्थापनीय, रखने योग्य, छोड़ने योग्य।
न्याउ–(हिं. पुं.) देखें 'न्याय'।
न्याति–(हिं. स्त्री.) ज्ञाति, जाति।
न्याय–(सं. पुं.) नियमों के अनुकूल बात उचित बात, नीति, अधिकारी और अनधिकार, दोषी और निर्दोष आदि का निर्णय, या फैसला; (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय आदि) निगमनात्मक पंचावयव वाक्य, वह शास्त्र जिसम कानूनी विषय का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कराने के लिये व्यवस्थित विवेचन किया जाता है, छः आस्तिक दर्शनों में से एक जिसके प्रवर्तक गौतम ऋषि थे, वे युक्तिमूलक दृष्टान्त जिनमें अनुभवसिद्ध नाना प्रकार की उक्तियां प्रचलित हैं, जो लौकिक न्याय कहलाती; यथा–घुणाक्षर न्याय, ऊपरवृष्टि न्याय, कूपमण्डूक न्याय आदि; –कर्ता–(पुं.) न्याय करनेवाला, दो पक्षों के विवाद का निर्णय करनेवाला; –तः–(अव्य.) धर्म और नीति के अनुसार, ठीक तरह से; –ता–(स्त्री.) न्याय का भाव, उपयुक्तता; –देश–(पुं.) विचारालय; –पथ–(पुं.) मीमांसा-शास्त्र, उचित रीति; –पर–(वि.) न्यायी; –परता–(स्त्री.) न्यायी होने का भाव; –परायण–(वि.) न्यायपर, न्याय पर चलनेवाला; –वर्ती–(वि.) देखें 'न्याय पर'; –वान्–(पुं.) न्याय के अनुसार चलनेवाला, न्यायी, विवेकी; –विहित–(वि.) न्याय के अनुसार अथवा नियमपूर्वक किया हुआ; –विरुद्ध–(वि.) न्याय प्रमाण के विरुद्ध; –सभा–

(स्त्री.) वह सभा जहाँ विवादों का निर्णय किया जाता है, न्यायालय ।
न्यायाधीश–(सं.पुं.) विवाद का निर्णय करनेवाला अधिकारी, न्यायकर्ता, न्यायमूर्ति ।
न्यायालय–(सं.पुं.) वह स्थान जहाँ विवादों या अभियोगों का न्याय किया जाता है ।
न्यायी–(सं. वि.) न्यायपर, न्याय करनेवाला, उचित पक्ष का ग्रहण करनेवाला ।
न्याय्य–(सं. वि.) न्यायसंगत, न्याययुक्त, उचित ।
न्यारा–(हिं. वि.) जो पास न हो, दूर का, जो मिला न हो, अलग, निराला, अनोखा, भिन्न, अन्य ।
न्यारिया–(हिं. पुं.) सोनारों के नियार (धातु-मल) को धोकर इसमें से सोना-चाँदी के कण या चूर निकालनेवाला ।
न्यारे–(हिं. अव्य.) दूर, अलग, पास नहीं, पृथक् ।
न्याव–(हिं. पुं.) नियम, नीति, आचरण, पद्धति, उचित-अनुचित की बुद्धि, कर्तव्य, ठीक निर्धारण, उचित पक्ष, विवाद या झगड़े का निवटारा, दो पक्षों के विवाद का निर्णय ।
न्यास–(सं. पुं.) उपनिधि, धरोहर, थाती, निक्षेप, स्थापन, रखना, अर्पण, त्याग, संन्यास, किसी रोग या वाधा की शान्ति के निमित्त रोगी या वाधाग्रस्त मनुष्य के एक-एक अंग पर हाथ रखकर मन्त्र पढ़ने का विधान, तान्त्रिक पद्धति के अनुसार देवता के भिन्न-भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मन्त्र पढ़कर उन पर विशेष वर्णों का स्थापन, (अंगन्यास, करन्यास, अंतर्मातृका-न्यास, तथा वाह्य मातृका-न्यास इसके प्रधान भेद हैं ।)
न्यासिक–(सं. वि.) धरोहर रखनेवाला ।
न्यासिन्–(सं. वि.) त्यागी, सन्यासी ।
न्युब्ज–(सं. नपुं.) कर्मरङ्ग फल, कमरख, कुश, एक प्रकार का यज्ञपात्र; (वि.) कुब्ज, कुबड़ा, अधोमुख, औंधा, रोग से जिसकी कमर झुक गई हो ।
न्यून–(सं. वि.) क्षुद्र, हीन, अल्प, नीच, कम, थोड़ा; **–तर**–(वि.) प्रचलित वाट के परिमाण से कम, ठीक वजन से कम; **–ता**–(स्त्री.) हीनता, अल्पता, कमी ।
न्यूनांग–(सं.वि.) अंगहीन, खंज, लँगड़ा ।
न्यूनेंद्रिय–(सं. वि.) जिसकी कोई इन्द्रिय कम हो ।
न्योछावर–(हिं. स्त्री.) देखें 'निछावर' ।
न्योजी–(हिं. स्त्री.) लीची, चिलगोजा ।
न्योतना–(हिं क्रि. स.) निमंत्रित करना, बुलाना, दूसरे को अपने घर भोजन के लिये बुलाना ।
न्योतनी–(हिं. स्त्री.) खाना-पीना जो विवाहादि शुभ अवसरों पर होता है ।
न्योतहरी–(हिं. पुं.) न्योते में आया हुआ मनुष्य ।
न्योता–(हिं.पुं.) उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रण, बुलावा, भोजन स्वीकार करने की प्रार्थना, वह धन आदि जो अपने इष्ट मित्रों या संबंधियों के घर से शुभ या अशुभ प्रयोजनों में सम्मिलित होने का न्योता पाकर भेजा जाता है ।
न्योला–(हिं. पुं.) देखें 'नेवला' ।
न्योली–(हिं. स्त्री.) नेतीधौती आदि के समान हठ योग की एक क्रिया जिसमें पेट की नलियों को जल द्वारा शुद्ध करते हैं ।
न्यौरा–(हिं.पुं.) बड़े दानों का घुँघरू, नेवर ।
न्हाना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'नहाना', स्नान करना ।

प

प–हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला के व्यञ्जन वर्णो का इक्कीसवाँ अक्षर, (इसका उच्चारण ओठ से होता है । इसके उच्चारण में दोनों ओठ मिलते हैं । अतएव यह स्पर्श-वर्ण कहलाता है ।)
पंक–(सं. पुं.) कीचड़, दलदल, लेप; **–ज**–(पुं.) कमल; (वि.) जो कीचड़ में उत्पन्न हो; **–जात**–(पुं.) पंकज ।
पंकजासन–(सं. पुं.) ब्रह्मा ।
पंकजिनी–(सं. स्त्री.) कमल का पौधा ।
पंकिल–(सं. वि.) पंकयुक्त, कीचवाला ।
पंकिलता–(सं.स्त्री.) कलुष, कालिमा, गंदगी ।
पंक्ति–(सं. स्त्री.) श्रेणी, कतार, पाँत, पंगत; **–बद्ध**–(वि.) श्रेणीबद्ध ।
पंख–(हिं.पुं.) पक्ष, पर, डैना; (मुहा.) **–जमना**–नाश होने के चिह्न दिखाई देना; **–लगना**–वेगयुक्त होना ।
पँखड़ी–(हिं. स्त्री.) फूल की कोमल पत्ती, पुष्पदल ।
पंखा–(हिं. पुं.) वह पदार्थ जिसको हिलाकर वायु का झोंका एक ओर ले जाते हैं, व्यजन, बिजना, बेना; **–कुली**–(पुं.) पंखा खींचने के लिये नियुक्त भृत्य ।
पंखाज–(हिं. पुं.) देखें 'पखावज' ।
पंखापोश–(हिं.पुं.) पंखे के ऊपर का ढपना ।
पंखी–(हिं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, पँखड़ी, फतिंगा, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा; (स्त्री.) छोटा पंखा, पहिये का कीचड़ रोकने की धातु या लकड़ी की पट्टी ।
पँखुड़ा, पँखुरा–(हिं. पुं.) कंधा और बाँह का जोड़, पखुरा ।
पँखुरी–(हिं. स्त्री.) फल का दल, पँखड़ी ।
पंखेरू–(हिं. पुं.) पक्षी ।
पंग–(हिं.वि.) पंगु, लँगड़ा, स्तब्ध; (पुं.) एक प्रकार का वृक्ष, एक प्रकार का नमक ।
पंगत, पंगति–(हिं. स्त्री.) पंक्ति, पाँत, भोज के समय भोजन करनेवालों की पंक्ति, सभा, समाज, भोज, जुलाहों के करगह का दो सरकंडों का बना हुआ एक उपकरण ।
पँगला, पंगा–(हिं. वि.) पंगु, लँगड़ा ।
पंगायत–(हिं.पुं.) चारपाई का पैताना ।
पंगी–(हिं.स्त्री.) धान की उपज में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा, वह मिट्टी जो बाढ़ के घट जाने पर जम जाती है ।
पंगु–(सं. वि.) जो पैर से काम लेने में अशक्य हो, लँगड़ा; **–ता**–(स्त्री.) पंगु अवस्था, लँगड़ापन; **–त्व**–(पुं.) पंगुता ।
पंगुल–(सं. वि.) पंगु ।
पंच–(हिं. पुं.) पाँच की संख्या या अंक, पाँच या अधिक मनुष्यों का समुदाय, समाज, सर्वसामान्य, जनता, पाँच या अधिक मनुष्यों का समुदाय जो किसी झगड़े को तय करने के लिये चुना जाता है, न्यायसभा; **–की भीख**–(स्त्री.) सामान्य लोगों की कृपा; **–की दुहाई**–(स्त्री.) न्याय के निमित्त सब लोगों से प्रार्थना; **–परमेश्वर**–एक मत होकर पंच का निर्णय, (यह ईश्वर का वाक्य माना जाता है;) (क्रि.प्र.) **–मानना**–विवाद के निवटारे के लिये पंच नियुक्त करना; **–क**–(पुं.) पाँच का समूह, शकुन विचार में धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिनमें किसी नये कार्य का आरंभ करना निषिद्ध है, वह जिसके पाँच अवयव हों; **–कन्या**–(स्त्री.) पुराण के अनुसार वे पाँच स्त्रियाँ जो सर्वदा कन्या ही रहीं; (इनके नाम–अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी हैं); **–कपाल**–(पुं.) एक प्रकार का यज्ञ; **–कर्म**–(पुं.) वैशेपिक के अनुसार उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन–ये पाँच कर्म; **–कर्मेंद्रिय**–(पुं.) हस्त, पाद, गुदा, उपस्थ और जिह्वा; **–कल्याण**–(पुं.) वह घोड़ा जिसका सिर चारों ओर सफेद हो तथा शेष शरीर किसी एक रंग का हो; **–कषाय**–(पुं.) पाँच प्रकार के कसैले द्रव्य, यथा–जागुन

सेमर, खिरैंटी, मौलसिरी और बैर; –काम–(पुं.) तन्त्र के अनुसार कामदेव के पाँच नाम, यथा–काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु; –कुर–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बँटाई जिसमें भूस्वामी को उपज का पाँचवाँ भाग दिया जाता है; –कोण–(पुं.) पाँच कोने का क्षेत्र; –कोशी–(स्त्री.) पाँच कोसों की लंबाई-चौड़ाई के बीच में बसी हुई काशी नगरी; –गंग–(पुं.) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा–इन पाँच नदियों का समूह; –गंगा–(स्त्री.) काशी का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ गंगा में किरणा और धूतपापा नदियाँ मिली थीं, (ये दोनों नदियाँ अब लुप्त हो गई हैं); –गत–(पुं.) बीजगणित में पंच वर्णयुक्त राशि; –गव्य–(पुं.) गो-संबंधी पाँच प्रकार के द्रव्य, यथा–दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र; –गुण–(पुं.) ज्ञानेंद्रियों के पाँच गुण, यथा–शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध; (वि.) पाँच से गुणा किया हुआ; –गौड़–(पुं.) ब्राह्मणों का वह विभाग जिसके अन्तर्गत सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और औत्कल हैं; –चक्र–(पुं.) तंत्र के अनुसार पाँच प्रकार के चक्र जिनके नाम–राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और दशचक्र हैं; –चामर–(पुं.) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं; –जन–(पुं.) पुरुष; देव, मनुष्य, नाग गंधर्व और पितर; एक प्रजापति का नाम, राजा सगर के एक पुत्र का नाम; –जन्य–(पुं.) एक प्रसिद्ध शंख जिसको श्रीकृष्ण बजाया करते थे; –तंत्र–(पुं.) विष्णु शर्मा विरचित एक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ का नाम; –तत्त्व–(पुं.) पाँच तत्त्वों का समुदाय जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश हैं; –तप–(पु.) अपने चारों ओर अग्नि जलाकर ग्रीष्म-काल में खुली धूप में बैठकर तपस्या करनेवाला; –तपा–(पुं.) अपने चारों ओर आग जलाकर तथा धूप में बैठकर तप करनेवाला साधु, पंचाग्नि तापनेवाला; –तरु–(पुं.) पाँच वृक्ष, यथा–मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन; –ता–(स्त्री.) मृत्यु; –तालेश्वर–(पुं.) शुद्ध जाति का एक राग; –तिक्त–(पुं.) पाँच प्रकार की कटु ओषधियाँ यथा–गिलोय, कंटकारी, सोंठ, कुट और चिरायता; –त्व–(पुं.) मरण, मृत्यु; –दश–(वि.) पंद्रह, पंद्रहवाँ; (पुं.) पंद्रह की संख्या; –०धा–(अव्य.) पंद्रह प्रकार से; –दशाह–(पुं.) पंद्रह दिनों का समय; –दशी–(स्त्री.) पूर्णिमा, अमावस्या; –देवता–(पुं.) पाँच प्रधान देवता जिनकी उपासना आजकल हिन्दुओं में प्रचलित है; यथा–आदित्य, गणेश, देवी, रुद्र और विष्णु; –द्राविड़–द्राविड़ राज्य के अधीन पाँच प्रधान जनपदों के ब्राह्मण जो द्राविड़, आन्ध्र, कर्णाटक, महाराष्ट्र और गुजर हैं; –धा–(अव्य.) पाँचों प्रकार से; –नद–(पुं.) पंजाब प्रदेश जहाँ सतलज, व्यास, रावी, चनाव और झेलम–ये पाँच नदियाँ बहती हैं, पाँच नदियों का समुदाय; –नाथ–(पुं.) बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ; –पक्षी–(पुं.) प्रश्नादि द्वारा शकुन जानने का शिवोक्त एक शास्त्र; –पर्णिका–(स्त्री.) गोरखी नाम का पौधा; –पर्व–(पुं.) चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और रविसंक्रान्ति–ये पाँच दिन; –पल्लव–(पुं.) आम, जामुन, कैथ, बिजौरा और बेल, अथवा आम, पीपल, बर, पाकर और ओदुम्बर के पत्ते; –पात्र–(पुं.) चौड़े मुख का गिलास के आकार का पात्र जो पूजा आदि में जल रखने के काम में आता है; –पाद–(वि.) पाँच पैरोंवाला; (पुं.) संवत्सर; –पितृ–(पुं.) जन्मदाता, उपनेता या आचार्य, कन्यादाता, अन्नदाता और भयत्राता–ये पाँच पिता माने गये हैं; –पुष्प–(पुं.) देवताओं को प्रिय पाँच प्रकार के फूल, यथा–चम्पा, आम, शमी, कमल और कनेर के फूल; –प्राण–(पुं.) शरीर-स्थित पाँच प्राणवायु जिनके नाम–प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान हैं, हृदय-देश में प्राण वायु, गुह्य-देश में अपान वायु, नाभि-देश में समान, कण्ठ-देश में उदान वायु तथा सम्पूर्ण शरीर में व्यान वायु व्याप्त रहती है; –बाण–(पुं.) कामदेव के पाँच बाण जिनके नाम–स्तंभन, शोषण, तापन, मोहन और उन्मादन हैं; कामदेव के पाँचों पुष्पबाणों के नाम–कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल हैं; –बाहु–(पुं.) शिव, महादेव; –भद्र–(पुं.) वह घोड़ा जिसके शरीर पर पाँच स्थानों में फूल के चिह्न हों; –भूत–(पुं.) पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश; –म–(वि.) पाँचवाँ, सुन्दर, दक्ष, निपुण; (पुं.) संगीत के सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर; –मकार–(पुं.) तन्त्र के अनुसार–मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन–ये पांच मकार; –महापातक–(पुं.) मनुस्मृति के अनुसार पाँच बहुत बड़े पातक जिनके नाम–ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार तथा इन पातकों के करनेवालों के साथ संसर्ग; –महायज्ञ–(पुं.) पाँच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थों के लिये परम आवश्यक है–इनके नाम–अध्ययन तथा अध्यापन (ब्रह्मयज्ञ), अन्न तथा उदक द्वारा पितृलोगों का तर्पण (पितृयज्ञ), हवन या होम (देवयज्ञ), पशु-पक्षी को अन्न खिलाना (भूतयज्ञ) तथा अतिथि-सेवा (मनुष्ययज्ञ) हैं; –महाव्याधि–(स्त्री.) पाँच बड़े रोग, यथा–अर्श (बवासीर), यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद; –महाव्रत–(पुं.) अहिंसा, सूनृत या सच बोलना, अस्तेय या चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह या दान-दक्षिणा न लेना; –भार–(पुं.) बलदेव के एक पुत्र का नाम; –मास्य–(पुं.) कोकिल, कोयल; (वि.) पाँच महीने का; –मुख–(पुं.) सिंह, शिव, महादेव, पंचमुखी रुद्राक्ष; –मुखी–(स्त्री.) अड़ूसा का फूल, पार्वती; –मुद्रा–(स्त्री.) पूजाविधि में करने की पाँच प्रकार की मुद्राएँ, यथा–आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, सम्बोधिनी और सम्मुखीकरणी; –याम–(पुं.) दिवस, दिन; –रत्न–(पुं.) पाँच प्रकार के रत्न, कुछ लोग–सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती को पंचरत्न कहते हैं, कुछ लोग–मोती, मूंगा, वैक्रान्त, हीरा और पन्ना को पंचरत्नों में गिनते हैं; –रश्मि–(पुं) आदित्य, सूर्य जिसकी किरणों में पिंगल, शुक्ल, नील, पीत और लोहित–ये पाँच रंग हैं; –रत्ता–(स्त्री.) आमला, हरीतकी, हर्रे; –रात्र–(पुं.) पाँच रातों में होनेवाला यज्ञ, पाँच रात; –राशिक–(पुं.) गणित जिसमें चार ज्ञातराशियों से पाँचवीं राशि निकाली जाती है; –रीत–(पुं.) संगीत में एक ताल का नाम; –रु–(पुं.) मकरन्द; –लवण–(पुं.) वैद्यक के अनुसार पाँच नमक; यथा–काच, सेंधा, सामुद्र, बिड् और सोंचर; –लोकपाल–(पुं.) पाँच लोकपाल,

यथा–विनायक, दुर्गा, वायु और दोनों अश्विनीकुमार; –लोह–(पुं.) सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा और राँगा–ये पाँच धातुएँ पंचलोह कहलाती हैं; –वस्त्र–(पुं.) शिव, महादेव; –वटी–(स्त्री.) दण्ड-कारण्य का एक वन जहाँ वनवास के समय श्री रामचन्द्र रहते थे; –वदन–(पुं.) शिव, महादेव; –वर्ग–(पुं.) पाँच प्रहरों में होनेवाला एक यज्ञ; –वर्ण–(पुं.) प्रणव के पाँच वर्ण, यथा–अ, उ, म, नाद और विन्दु; –वर्णक–(पुं.) धतूरे का पेड़; –वाण–(पुं.) कामदेव के पाँच वाण; –वायु–(पुं.) शरीर में स्थित–प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान–ये पाँच वायु; –वार्षिक–(वि.) हर पाँचवें वर्ष का; –विध–(वि.) पाँच प्रकार का; –वृत्ति–(स्त्री.) पतंजलि के अनुसार मन की पाँच वृत्तियाँ, यथा–प्रमाद, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति; –शः–(अव्य.) पाँच-पाँच करके; –शर–(पुं.) कन्दर्प, कामदेव, कामदेव के पाँच वाण; –शाख–(वि.) जिसमें पाँच शाखाएँ या विभाग हों; –शिख–(पुं.) सिंह, एक मुनि का नाम जो सांख्य शास्त्र के प्रधान आचार्य थे; –शीर्ष–(पुं.) एक प्रकार का सर्प; –शुक्ल–(पुं.) एक प्रकार का कीड़ा; –संधि–(स्त्री.) व्याकरण में सन्धि के पाँच भेद; –स्नेह–(पुं.) घी, तेल, वसा, मज्जा और मोम।

पंचपात–(हिं. पुं.) पंचोली नामक पौधा।

पंचपीरिया–(हिं. पु.) मुसलमानों के पाँचों पीरों का पूजन करनवाला।

पंचभर्तारी–(हिं. स्त्री.) द्रौपदी।

पंचमेल–(हिं. वि.) जिसमें पाँच वस्तुएँ मिली हों, मिला-जुला।

पंचरंगा–(हिं. वि.) पाँच रंगों का, रंग-विरंगा।

पंचलड़ा–(हिं. वि.) पाँच लड़ों का।

पंचलड़ी, पँचलरी–(हिं. स्त्री.) गले में पहिनने की पाँच लड़ों की माला।

पंचांग–(सं. पुं.) वृक्ष के पाँच अंग–छाल, पत्ता, फूल, फल और जड़, पुरश्चरण विशेष–जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण-भोजन, ज्योतिष के अनुसार वह पंजिका जिसमें वार, तिथि, नक्षत्र, योग आदि के विवरण लिखे हों, कछुआ, एक प्रकार का घोड़ा, वह प्रणाम जो बाहु, जानु, मस्तक, वाक्य और दृष्टि के समन्वय से किया जाय।

पंचांगी–(सं. स्त्री.) हाथी की कमर में बाँधने का रस्सा।

पंचांगुरि–(सं.वि.) पाँच अँगुलियों का; (स्त्री.) हाथ।

पंचांगुल–(सं. वि.) जो पाँच अंगुल का हो; (पुं.) तेजपत्ता, रेंड़।

पंचाक्षर–(सं. पुं.) प्रणव, पाँच अक्षरों का मन्त्र।

पंचाग्नि–(सं.पुं.) पाँच प्रकार की अग्नियाँ यथा–(अन्वाहार्यपचन, गार्हपत्य, सभ्य, आहवनीय और आवरुथ्य।

पंचातप–(सं. पुं.) धूप में बैठकर अपने चारों ओर अग्नि जलाकर तपस्या करना।

पंचानन–(सं. पुं.) शिव, महादेव, सिंह, सिंह राशि, संगीत में स्वर-साधन की एक रीति।

पंचाननी–(सं.स्त्री.) शिव की पत्नी, दुर्गा।

पंचानब–(हिं. वि.) नव्बे और पाँच की संख्या का; (पुं.) नब्बे और पाँच की संख्या, ९५।

पंचामृत–(सं. पुं.) एक स्वादिष्ट पेय जो घी, दूध, दही, मधु और चीनी मिलाकर बनाया जाता है।

पंचायत–(हिं.स्त्री.) पाँच निर्वाचित मनुष्यों की वह समिति जो किसी विवाद-विषय का निर्णय करने के लिये नियुक्त की जाती है; बहुत से लोगों का एक साथ बकवाद करना, पंचों का वादविवाद।

पंचायती–(हिं. वि.) पंचायत द्वारा किया हुआ, पंचायत-संबंधी, साझे का, मिला-जुला, सर्वसाधारण का।

पंचायुध–(सं. पुं.) विष्णु का एक नाम।

पंचाल–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम।

पंचालिका–(सं. स्त्री.) पुतली, गुड़िया।

पंचाली–(सं.स्त्री.) गुड़िया; (हिं.स्त्री.) द्रौपदी।

पंचावयव–(सं. पुं.) न्याय के पाँच अवयव, यथा–प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

पंचाशिका–(सं. स्त्री.) वह रचना जिसमें पचास श्लोक या कविताएँ हों।

पंचास्य–(सं. पुं.) सिंह, महादेव।

पंचिका–(सं. स्त्री.) पाँच खण्डों या अध्यायों की रचना या पुस्तक।

पंचेंद्रिय–(सं. पुं.) पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, यथा–श्रोत्र, त्वक्, नेत्र, रसना और घ्राण; तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ, यथा–वाक्, पाणि, पायु, पाद और उपस्थ।

पंचेषु–(सं. पुं.) कामदेव के पाँच वाण।

पंचो(चो)ली–(हिं.स्त्री.) एकपौधा जिसके डंठलों और पत्तों से एक प्रकार का सुगन्धित तेल निकाला जाता है।

पंचौदन–(सं. पुं.) एक यज्ञ का नाम।

पंछा–(हिं. पुं.) छाला, फफोला, शीतला के दानों के भीतर भरा हुआ पानी, एक प्रकार का स्राव जो मनुष्य के शरीर अथवा पेड़-पौधों से कटने छिलने आदि के कारण निकलता है।

पंछाला–(हिं. पुं.) फफोले में का पानी।

पंछी–(हिं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

पंजर–(सं. पुं.) शरीर की हड्डियों का समूह, शरीर, देह, चिड़िया का पिंजड़ा, कलियुग।

पंजराखेट–(सं. पुं.) मछली पकड़ने का टोकरा।

पंजा–(फा. पुं.) पाँच उँगलियों सहित हथली और कलाई तक का भाग, पैर की उँगलियों सहित अगला चौड़ा भाग, जते का अगला भाग जहाँ पंजा रहता है, पाँच वस्तुओं का समाहार, पंजा लड़ाने का मल्लयुद्ध, पाँच बूटियोंवाला ताश का पत्ता।

पंजालोड़ बैठक–(हिं. पुं.) मल्ल-युद्ध की एक युक्ति।

पंजाब–(पुं.) भारतवर्ष का वह पश्चिमोत्तर प्रदेश जिसमें सतलज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम–ये पाँच नदियाँ बहती हैं।

पंजाबी–(हिं.वि.) पंजाब देश का, पंजाब में होनेवाला; (पुं.) पंजाब का निवासी; (स्त्री.) पंजाब की भाषा।

पंजारा–(हिं.पुं.) रूई धुननेवाला, धुनियाँ।

पंजि–(सं. स्त्री.) पंजिका, पंचांग।

पंजिका–(सं. स्त्री.) रूई की प्योनी, तिथि, वार आदि युक्त पंचांग, पत्रिका।

पँजीरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई जो आटे को घी में भूनकर उसमें धनिया, सोंठ, जीरा आदि मिलाकर बनाई जाती है, (इसका व्यवहार विशेषत: नैवेद्य में होता है)।

पँजेरा–(हिं. पुं.) पात्र या बरतन झालने का काम करनेवाला।

पँड़रू–(हिं. पुं.) पँड़वा।

पंडल–(हिं. वि.) पीले रंग का; (पुं.) शरीर, पिण्ड।

पंडव, पडवा–(हिं. पुं.) देखें 'पांडव'।

पँड़वा–(हिं. पुं.) भैंस का बच्चा।

पंडा–(हिं. पुं.) किसी तीर्थ या मन्दिर का पुजारी, घाटिया, ब्राह्मण, रसोईदार; (सं. स्त्री.) ज्ञान, बुद्धि, विवेक, शास्त्र-ज्ञान।

पंडित–(हिं. पुं.) शास्त्रज्ञ, विद्वान्, महादेव; **–राज**–(पुं.) बहुत बड़ा पंडित या विद्वान्।

पंडितम्मन्य–(सं.वि.) जो अपने को बहुत बड़ा पंडित समझता हो।

पंडिताई–(हिं. स्त्री.) पाण्डित्य, विद्वत्ता।

पंडिताऊ–(हिं. वि.) पंडित के योग्य आचार-विचारवाला, पंडित-जैसा।

पंडितानी–(हिं. स्त्री.) पंडित की स्त्री, ब्राह्मणी, विदुषी।

पंडुक–(हिं. पुं.) जंगल, झाड़ियों तथा उजाड़ स्थानों में रहनेवाला कबूतर की जाति का एक पक्षी।

पंडोह–(हिं. पुं.) परनाला।

पंथ–(हिं. पुं.) मार्ग, व्यवहार का क्रम, रीति, चाल, व्यवस्था, सम्प्रदाय, धर्म, मार्ग, मत, रोगी का लंघन या उपवास के बाद का हलका पथ्य या भोजन; (मुहा.) **–गहना**–मार्ग चलना; **–दिखाना**–मार्ग बतलाना; **–निहारना**–प्रतीक्षा करना; **–पर पाँव धरना**–आचरण से चलना; **–पर लगना**–सुमार्ग पर चलना; **(किसी के) –पर लगना**–पीछा करना, व्यंग्य करना; **–सेना**–आसरा देखना, प्रतीक्षा करना।

पंथान–(हिं. पुं.) पथ, मार्ग।

पंथकी, पंथिक–(हिं.पुं.) पथिक, बटोही।

पंथी–(हिं. पुं.) पथ पर चलनेवाला, पथिक, बटोही, किसी सम्प्रदाय का अनुयायी।

पंदरह(द्र)–(हिं.वि.) दस और पाँच की संख्या का; (पुं.) दस और पाँच की संख्या, १५; **–वाँ**–(वि.) जो पंदरह के स्थान पर हो।

पंप–(अं. पुं.) मोटर, साइकिल आदि के पहिये में हवा भरने का यंत्र विशेष; ऊपर के मंजिलों पर पानी चढ़ाने का यंत्र।

पंपा–(सं.स्त्री.) दक्षिण की एक नदी जिसका उल्लेख वाल्मीकीय रामायण में है।

पंपाल–(हिं. वि.) पापी।

पँवर–(हिं.स्त्री.) ड्योढ़ी, सामान, सामग्री।

पँवरना–(हिं. क्रि. अ.) पानी में तरना, थाह लेना, पता लगाना।

पँवरि–(हिं. स्त्री.) प्रवेश-द्वार या गृह, ड्योढ़ी।

पँवरिया–(हि.पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, दरबान, शुभ अवसर पर द्वार पर बैठकर मंगल-गीत गानेवाला भिक्षुक।

पँवरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पँवरि', खड़ाऊँ, पाँवरी।

पँवाड़ा (रा)–(हि.पुं.) कल्पित आख्यान, मनगढ़ंत कहानी, लंबी कथा जिसको सुनते-सुनते जी ऊब जाय, विस्तारसहित कही हुई व्यर्थ बात, एक प्रकार का गीत।

पँवार–(हि.पुं.) राजपूतों की एक जाति, परमार।

पँवारना–(हिं. क्रि. स.) हटाना, फेंकना, दूर करना।

पँवारी–(हिं.स्त्री.) लोहे में छेद करने का लोहारों का एक अस्त्र।

पँसरहट्टा–(हिं. पुं.) वह हाट जहाँ पंसारियों की दूकानें हों।

पंसारी–(हि.पुं.) वह बनिया जो मसाले तथा औषधि के लिये जड़ी-बूटी बेचता हो।

पंसासार–(हिं. पुं.) पासे का खेल।

पँसुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पँसुली'।

पँसुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'पसली'।

पँसेरी–(हि.स्त्री.) पाँच सेर की तौल या बाट।

पइता–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छंद जिसको पाइता भी कहते हैं।

पइसना–(हि.क्रि.अ.) देखें 'पैठना', घुसना।

पइसार–(हि.पुं.) प्रवेश, पैठ, घुसना।

पउनार–(हिं. पुं.) कमल का डंठल।

पउनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पौनी'।

पउँरि, पउरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पौरी'।

पकड़–(हिं. स्त्री.) पकड़ने या धरने की क्रिया, पकड़ने का ढंग, भिड़ंत, लड़ाई, कुश्ती में एक बार का भिड़ना, दोष या भूल ढूँढ़ने या निकालने की क्रिया; **–धकड़**–(स्त्री.) देखें 'धर-पकड़'।

पकड़ना–(हिं. क्रि. स.) थामना, धरना, पता लगाना, रोक रखना, ठहराना, दौड़ने, चलने आदि म आगे बढ़े हुए व्यक्ति के बराबर हो जाना, रोकना, टोकना, वश में लाना, (रोग से) ग्रस्त होना, अपने स्वभाव या वृत्ति में समाने या व्याप्त होने देना, धारण करना, धरना, ग्रसना, संचार करना।

पकड़वाना–(हि.क्रि.स.) पकड़ने में दूसरे को प्रवृत्त करना, ग्रहण कराना।

पकड़ाना–(हिं. क्रि. स.) किसी के हाथ में देना या रखना, पकड़ने का काम कराना, ग्रहण कराना।

पकना–(हिं. क्रि.अ.) सिद्ध होना, सीझना, रिंधना, चुरना, कच्चा न रहना, फोड़े आदि का पीब से भर जाना, मूल्य ठहराना, सौदा पटना, आँच खाकर चुरना या तैयार होना; (मुहा.) **कलेजा पकना**–जी जलना; **बाल पकना**–बालों का सफेद होना।

पकरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पकड़ना'।

पकला–(हिं. पुं.) फोड़ा, फुन्सी।

पकवान–(हि.पुं.) घी या तेल में पकाकर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

पकवाना–(हिं. क्रि. स.) पकाने का काम दूसरे से कराना, आँच पर तैयार कराना।

पकाई–(हिं. स्त्री.) पकाने की क्रिया या शुल्क।

पकाना–(हि.क्रि.स.) फल आदि को मिष्ट और रसदार करना, गरमी से गलाना, आँच पर चुराना, रींधना, सिझाना, भट्ठे में तपाना, बाल सफेद करना, फोड़ा-फुन्सी आदि को ऐसी अवस्था में पहुँचाना कि उसमें पीब भर जाय।

पकार–(सं. पुं.) 'प' अक्षर, 'प' स्वरूप वर्ण।

पकारादि–(सं. वि.) जिसके आदि में 'प' अक्षर हो।

पकारांत–(सं. वि.) जिसके अन्त में 'प' अक्षर हो।

पकाव–(सं. पुं.) पकने का भाव, पीब का भरना।

पकावन–(हि पुं.) देखें 'पकवान'।

पकौड़ा–(हि.पुं.) घी या तेल में पकी हुई बेसन या पीठी की बरी, फुलौरी।

पकौड़ी–(हि.स्त्री.) छोटे आकार का पकौड़ा।

पक्कटी–(सं. स्त्री.) पाकर का वृक्ष।

पक्करस–(हिं. पुं.) मदिरा।

पक्का–(हि.पुं.) अन्न या फल जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो, जो कच्चा न हो, पका हुआ, तैयार, अनुभव-प्राप्त, निपुण, आँच पर गलाया या पकाया हुआ, घी में (भोजन) बनाया हुआ, स्थिर, दृढ़, निश्चित, जो अभ्यास से मँज गया हो, प्रामाणिक, न छूटनेवाला (रंग), जाँचा हुआ, जो आँच से कड़ा हो गया हो, जिसमें पूर्णता आ गई हो, जो अपनी पूरी बाढ़ या प्रौढ़ता पर पहुँच गया हो, ईंट या पत्थर का बना हुआ; **–कागज**–(पुं.) वह पत्र जिस पर लिखा हुआ विषय विधितः प्रामाणिक और मान्य हो; (पुं) **–खाना**–केवल घी में पकाया हुआ भोजन; **–पानी**–औटाया हुआ जल।

पक्कड़–(हि. वि.) पक्का, दृढ़।

पक्तव्य–(सं. वि.) पाक के योग्य।

पक्त्र–(सं. पुं.) गार्हपत्य अग्नि।

पक्व–(सं. वि.) पका हुआ, पुष्ट, पक्का; **–केश**–(पुं.) पका बाल, सफेद बाल; **–ता**–(स्त्री.) पक्वावस्था, परिपक्वता; **–मान**–(वि.) पकाया हुआ; **–रस**–(पुं.) मद्य, मदिरा; **–वारि**–(पुं.) उबाला हुआ जल।

पक्वान्न–(सं.पुं.)पकाया हुआ अन्न, खाने की वस्तु जो घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाई गई हो।

पक्वाशय–(सं. पुं.) पेट के भीतर नाभि के नीचे का भाग जो वस्तुतः उदर का ही एक अंश है, (खाया हुआ भोजन अन्न की नली द्वारा यहाँ पहुँचता है और इसमें पित्त आदि रसों के संयोग से पाचन का कार्य आरंभ होता है।)

पक्ष–(सं.पुं.) पंद्रह दिनों का काल, पाख, पक्षियों का डैना, पर, तीर में लगा हुआ पर, या पंख किसी स्थान या पदार्थ के दोनों छोर, किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक, किसी विषय पर दो परस्पर भिन्न मतों में से एक, अनुकूल मत या प्रवृत्ति, पक्षी, पार्श्व, ओर, तरफ, हाथ का कड़ा, वादी या प्रतिवादी, घर, चूल्हे का छेद, सहायक, साथी, विवाद करनेवालों में से किसी के अनुकूल स्थिति, वह कथन जिसमें साध्य की प्रतिज्ञा की जाती है, सेना, बल, विशिष्ट वर्ग, दल या समूह; **–करना** –पक्षपात करना; **–गिरना**–युक्तियों द्वारा मत का सिद्ध न होना; **–क**–(पुं.) पक्षद्वार, सहाय; **–गम**–(पुं.) पक्षी, चिड़िया, पर्वत; **–ग्रहण**–(पुं.) किसी का पक्ष करना; **–ग्राह**–(वि.)पक्ष लेनेवाला; **–घात**–(पुं.) वह वात रोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं, लकवा; **–घ्न**–(वि.) पक्षनाशक; **–चर, –ज**–(पुं.) चन्द्रमा; **–ति**–(पुं.) पक्ष-मूल, डैने की जड़; **–त्व**–(पुं.) पक्षग्रहण, पक्षपात; **–द्वार**–(पुं.)खिड़की जैसा द्वार; **–धर**–(पुं.) चन्द्रमा, शिव, महादेव, पक्षी; **–पात**–(पुं.) अनुचित और उचित का विचार न करते हुए किसी के अनुकूल प्रवृत्ति; **–पातिता**–(स्त्री.) पक्षपात; **–पाती**–(वि.) उचित-अनुचित का विचार न करके किसी के अनुकूल प्रवृत्त होना; **–पालि**–(पुं.) गुप्तद्वार; **–पोषक**–(वि.) पक्षसमर्थक; **–मूल**–(पुं.) प्रतिपदा तिथि; **–रचना**–(स्त्री.) किसी का पक्ष करने के लिये रचा हुआ प्रपंच; **–रूप**– (पुं.) शिव, महादेव; **–वध**– (पुं.) पक्षाघात ; **–वान्**–(वि.)पक्षवाला, परवाला; (पुं.) पर्वत, पहाड़; **–वाहन**–(पुं.) पक्षी, चिड़िया।

पक्षांत–(सं. पुं.) अमावस्या, पूर्णिमा।

पक्षांतर–(सं. पुं.) दूसरा पक्ष, मतान्तर।

पक्षाघात–(सं.पुं.)एक प्रकार का वायुरोग जिसमें शरीर का आधा भाग निश्चेष्ट और क्रियाहीन हो जाता है, लकवा।

पक्षाभास–(सं. पुं.) मिथ्या तर्क।

पक्षालु–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

पक्षावसर–(सं. पुं.) पूर्णिमा, अमावस्या।

पक्षिणी–(सं. स्त्री.)चिड़िया, मादा पक्षी, पूर्णिमा।

पक्षिपति–(सं. पुं.) पक्षिराज, संपाति।

पक्षिप्रवर, पक्षिराज–(सं. पुं.) गरुड़।

पक्षिशाला–(सं.स्त्री.) चिड़ियों के रहने का घर।

पक्षि–सिंह–(सं. पुं.) पक्षिराज, गरुड़।

पक्षी–(सं. पुं.) खग, विहंगम, शकुन्त, अण्डज, चिड़िया; (हिं. वि.) पक्षपाती।

पक्ष्म–(सं. पुं.) आँख की बरौनी।

पक्ष्मल–(सं. वि.) बरौनी–युक्त।

पखंड–(हिं. पुं.) देखें 'पाखंड'।

पखंडी–(हिं. वि.) देख 'पाखंडी'।

पख–(फा. स्त्री.) व्यर्थ की बढ़ाकर कही हुई बात, बाधक चाल, अड़ंगा, झंझट, बखेड़ा, त्रुटि, दोष, हानि।

पखड़ी–(हिं. स्त्री.) पुष्प-दल, फूल के रंगीन पटल जो इसको पहिले बंद किये रहते है और खिलने पर फैल जाते हैं।

पखनारी–(हिं. स्त्री.) चिड़ियों के पर का नली के आकार का पोला भाग।

पखपान–(हिं. पुं.) पैर में पहिनने का एक गहना।

पखरना–(हिं. क्रि. स.) धोना।

पखराना–(हिं.क्रि.स.) पखारने या धोने का काम कराना।

पखरी–(हिं.स्त्री.) देखें 'पाखर, पँखड़ी'।

पखरैत–(हिं. पुं.) बैल, घोड़ा या हाथी जिस पर लोहे की पाखर डाली गई हो।

पखरौटा–(हिं. पुं.) चाँदी-सोने के महीन पत्र में लपेटा हुआ पान का बीड़ा।

पखवाड़ा, पखवारा–(हिं. पुं.) अर्धमास, पंद्रह दिनों का समय।

पखाउज–(हिं. पुं.) देखें 'पखावज'।

पखाटा–(हिं. पुं.) धनुष का कोना।

पखान–(हिं. पुं.) देखें 'पाषाण', पत्थर।

पखाना–(हिं. पुं.) उपाख्यान, कथा, कहावत, मसल, करतूत, देख 'पाखाना'।

पखारना–(हिं.क्रि.स.) पानी से धोकर मैल साफ करना।

पखाल–(हिं. स्त्री.) कुएँ से पानी भरने की चमड़े की बड़ी मशक, धौंकनी; **–पेटिया**–(पुं.)बड़े पेटवाला मनुष्य।

पखाली–(हिं.पुं.) मशक में पानी भरनेवाला।

पखावज–(हिं. पुं.) मृदंग से छोटा एक प्रकार का बाजा।

पखावजी–(हिं. पुं.)पखावज बजानेवाला।

पखिया–(हिं. पुं.) झगड़ा करानेवाला, बखड़िया।

पखी–(हिं. पुं.) पक्षी।

पखुड़ी(री)–(हिं. स्त्री.) देखें 'पखड़ी'।

पखुरा(वा)–(हिं. पुं.) कंधा और बाँह के जोड़ का भाग।

पखेरू–(हिं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

पखेव–(हिं. पुं.) बच्चा जनने के बाद छः दिनों तक गाय या भैंस को पिलाने का मसालेदार झोल।

पखौआ–(हिं. पुं.) पंख, पर।

पखौटा–(हिं.पुं.) डैना, पर, छोटा पंख।

पखौरा–(हिं. पुं.) कंधे पर की हड्डी।

पग–(हिं. पुं.) पैर, पाँव, चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया, डग, फाल, चलते समय दोनों पैरों के बीच का स्थान; **–डंडी**–(स्त्री.) मैदान या जंगल का वह पतला मार्ग जो मनुष्यों के चलने से बन गया हो।

पगड़ी–(हिं. स्त्री.) सिर पर लपेटकर बाँधने का कपड़ा या चीरा, उष्णीष, मुटारे (मुहा.) **–अटकना**–झगड़ा लगना; **–उछालना**–किसी का अपमान करना; **–उतारना**–अपमान करना, ठगना; **–बँधना**–सम्मान या प्रतिष्ठा प्राप्त करना; उत्तराधिकारी बनना; **–बदलना**–भाईचारा दिखलाना।

पगतरी–(हिं. स्त्री.) उपानह, जूता।

पगदासी–(हिं. स्त्री.) जूता, खड़ाऊँ।

पगना–(हिं.क्रि.अ.) रस के साथ पककर मिलना, शीरे के साथ इस प्रकार पकना कि चाशनी भीतर प्रवेश कर जाय और चारों ओर लिपट जाय, मग्न होना, प्रेम में डूबना।

पगनियाँ–(हिं. स्त्री.) जूती।

पगपान–(सं. पुं.) पैर में पहिनने का एक गहना।

पगरना–(हिं. पुं.) नक्काशी करनेवालों का एक अस्त्र।

पगरा–(हिं. पुं.) डग, पग, यात्रा आरंभ करने का काल, तड़का, सवेरा, सोने का एक आभूषण।

पगरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पगड़ी'।

पगला–((हिं. पुं.) देखें 'पागल'।

पगहा–(हिं.पुं.) बैल आदि को बाँधने की

गरांव, पघा ।

पगा—(हिं. पुं.) पगड़ी, दुपट्टा, पघा ।

पगाना—(हिं.क्रि.स.) चाशनी में किसी वस्तु को पागने का काम दूसरे से कराना, अनुरक्त करना, मग्न करना ।

पगार—(हिं. पुं.) पैर में लगी हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा, वह नदी या नाला जो हलकर पार किया जा सके, पैर से कुचली हुई वस्तु, वेतन ।

पगारना—(हिं.क्रि.स.) फैलाना ।

पगिआ(या)ना—(हिं.क्रि.स.) देखें 'पगाना' ।

पगिया—(हिं. स्त्री.) देखें 'पगड़ी' ।

पगुराना—(हिं. क्रि. अ.) पागुर करना, जुगाली करना, पचा जाना ।

पग्गा—(हिं.पुं.) पीतल, ताँबा आदि गलाने की घरिया ।

पघा—(हिं. पुं.) चौपायों को बाँधने की रस्सी, पगहा ।

पघाल—(हिं. पुं.) एक प्रकार का कड़ा लोहा ।

पघिलना—(हिं.क्रि.अ.) देखें 'पिघलना' ।

पघैया—(हिं. पुं.) गाँव-गाँव घूम-घूमकर माल बेचनेवाला व्यापारी ।

पच—(हिं. आदि पद) समस्त पदों में आदि पद के रूप में प्रयुक्त होनेवाला पांच का वाचक शब्द ।

पचक—(हिं. पुं.) कट नामक गुल्म ।

पचकना—(हिं. क्रि. अ.) देखें 'पिचकना' ।

पचकल्यान—(हिं.पुं.) शुभ लक्षणों वाला घोड़ा ।

पचखना—(हिं.वि.) जिसमें पांच खण्ड हों ।

पचखा—(हिं. पुं.) देखें 'पंचक' ।

पचगुना—(हिं.वि.) पांच गुना, पांच बार अधिक ।

पचग्रह—(हिं. पुं.) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि ग्रहों का समूह ।

पचड़ा—(हिं. पुं.) प्रपंच, बखेड़ा, झंझट, लावनी या ख्याल के ढंग का एक प्रकार का गीत जिसमें पांच-पांच चरणों के खंड होते हैं ।

पचत—(सं. पुं.) सूर्य, अग्नि, इन्द्र; (वि.) परिपक्व, पका हुआ ।

पचतूरा—(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाजा ।

पचतोलिया—(हिं.पुं.) पांच तोले का बाट ।

पचन—(सं. पुं.) पकने या पकाने की क्रिया, अग्नि, पकानेवाला ।

पचना—(हिं. क्रि. अ.) भोजन किये हुए पदार्थ का रसादि में परिणत होकर शरीर का पोषण होना, शरीर का सूखना या क्षय होना, समाप्त होना, नष्ट होना, पराया माल अपने हाथ में कर लेना, अनुचित उपाय से प्राप्त किये हुए धन आदि का उपयोग में आना, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में अच्छी तरह मिल जाना, खपना; (मुहा.) —मरना—किसी काम को करने में बहुत प्रयत्न करना ।

पचनागार—(सं. पुं.) रसोईघर ।

पचनाग्नि—(सं. पुं.) जठराग्नि ।

पचनिका—(सं. स्त्री.) कड़ाही ।

पचमेल—(हिं. वि.) देखें 'पँचमेल' ।

पचनीय—(सं. वि.) पचने योग्य ।

पचपच—(सं. पुं.) शिव, महादेव ।

पचपचा—(हिं.वि.) वह अधपका भोजन जिसका पानी अच्छी तरह से सूखा या जला न हो ।

पचपचाना—(हिं.क्रि.अ.) आवश्यकता से अधिक गीला होना, कीचड़ होना ।

पचपन—(हिं. वि.) पचास और पाँच की संख्या का; (पुं.) पचास और पाँच की संख्या, ५५; —वाँ—(वि.) जो गिनती में चौवन के बाद हो ।

पचपल्लव—(हिं. पुं.) देखें 'पंचपल्लव' ।

पचमान—(सं. वि.) पाक करनेवाला, पकानेवाला ।

पचमेल—(हिं. वि.) कई वस्तुओं या चीजों के मेल का, पँचमेल ।

पचरंग—(हिं. पुं.) चौक पूरने की सामग्रियाँ—अबीर, वुक्का, मेंहदी की बुकनी, हल्दी का चूर्ण आदि ।

पचरंगा—(हिं. वि.) जिसमें भिन्न-भिन्न पांच रंग हों, पांच रंगों से रँगा हुआ, अनेक रंगों का; (पुं.) नवग्रह आदि के पूजन के लिये पूरा जानेवाला चौक ।

पचरा—(हिं. पुं.) देखें 'पचड़ा' ।

पचलड़ी—(हिं. स्त्री.) पाँच लड़ों की माला या हार ।

पचलोना—(हिं. पुं.) वह जिसमें पाँच तरह के नमक मिलाये गये हों ।

पचवाई—(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की अन्न से बनी हुई मदिरा ।

पचहत्तर—(हिं. वि.) सत्तर और पांच की संख्या का; (पुं.) सत्तर और पांच की संख्या, ७५; —वाँ—(वि.) जिसका क्रम चौहत्तर के बाद हो ।

पचहरा—(हिं. वि.) पाँच बार लपेटा या मोड़ा हुआ, पाँच परतों का ।

पचानक—(हिं.पुं.) एक प्रकार का पक्षी ।

पचाना—(हिं.क्रि.स.) अग्नि की सहायता से चुराना, पकाना, खाई हुई वस्तुओं का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत होकर शरीर के पोषण योग्य बनना, जीर्ण करना, नष्ट करना, क्षय करना, पराये माल को अपना लेना, समाप्त करना, अधिक परिश्रम करके शरीर को सुखाना, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने में पूर्ण रूप से मिला लेना ।

पचार—(हिं. पुं.) जुए में लगी हुई लकड़ी या बांस ।

पचारना—(हिं. क्रि. अ.) ललकारना ।

पचाव—(हिं.पुं.) पचने की क्रिया या भाव ।

पचास—(हिं. वि.) चालीस और दस की संख्या का; (पुं.) चालीस और दस की संख्या, ५०; —वाँ—(वि.) गिनती में पचास के स्थान पर पड़नेवाला ।

पचासा—(हिं. पुं.) एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह ।

पचासी—(हिं. वि.) अस्सी और पांच की संख्या का; (पुं.) अस्सी और पांच की संख्या, ८५; —वाँ—(वि.) जो क्रम म पचासी के स्थान पर हो ।

पचित—(सं.वि.) जड़ा हुआ, बैठाया हुआ ।

पचीस—(हिं. वि.) बीस और पांच की संख्या का; (पुं.) बीस और पांच की संख्या, २५; —वाँ—(वि.) जो गणना में पचीस के स्थान पर हो ।

पचीसी—(हिं. स्त्री.) चौसर की बिसात पर खेला जानेवाला जुआ जो सात कौड़ियों से खेला जाता है, एक ही प्रकार की पचीस वस्तुओं का समूह, किसी की आयु के आरंभ के पचीस वर्ष, फल आदि की गणना जिसका सैकड़ा पचीस गाहियों या १२५ का माना जाता है ।

पचूका—(हिं. पुं.) पिचकारी ।

पचोतर—(हिं. वि.) किसी संख्या से पांच अधिक; —सौ—(पुं.) एक सौ पांच की संख्या ।

पचौनी—(हिं. स्त्री.) पाचन ।

पचौर—(हिं. पुं.) गांव का मुखिया या सरदार, पंच ।

पचौली—(हिं. पुं.) देखें 'पचौर' ।

पचौवर—(हिं.वि.) पांच तह या परत किया हुआ, पांच परतों का ।

पच्चड़, पच्चर—(हिं. पुं.) लकड़ी या बांस की फट्टी, गाल या जोड़ के छेद में ठोंकने की गावदुम लकड़ी की गुल्ली ।

पच्ची—(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु के तल को छेदकर उसमें दूसरी वस्तु इस प्रकार बैठाना या ठोंकना कि जोड़ देखने में अथवा हाथ फेरने पर उभरा हुआ न जान पड़े और उसके किसी प्रकार की दरार भी न रह जाय, किसी धातु के बने हुए पदार्थ

पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव; (मुहा.) पूर्णतः हो जाना–एकदम मिलकर एक-रूप हो जाना; –कारी–(स्त्री.) पच्ची करने की क्रिया या भाव ।
पच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'पक्ष'; –घात–(पुं.) देखें 'पक्षघात'; –ताई–(स्त्री.) पक्षपात ।
पच्छम, पच्छिम–(हिं. पुं.) देखें 'पश्चिम'।
पच्छी–(हिं. पुं.) पक्षी, चिड़िया ।
पच्य–(सं. वि.) पकाने योग्य; –मान–(वि.) जो पकाया जा रहा हो ।
पछड़ना–(हिं. क्रि. अ.) लड़ने में पछाड़ा जाना, देखें 'पिछड़ना'।
पछताना–(हिं. क्रि.अ.) किसी किये हुए अनुचित कार्य के संबंध में पीछे से दुःखी होना, पश्चात्ताप करना ।
पछतानि–(हिं. स्त्री.) देखें 'पछतावा'।
पछताव–(हिं. पुं.) अनुताप, पश्चात्ताप ।
पछतावना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'पछताना'।
पछतावा–(हिं. पुं.) पश्चात्ताप, कोई अनुचित काम पर होनेवाला शोक ।
पछना–(हिं. क्रि.अ.) पाछा जाना; (पुं.) पाछने का यन्त्र ।
पछमन–(हिं. अव्य.) पीछे ।
पछरना–(हिं. क्रि. अ.) लौटना, पछड़ना।
पछरा–(हिं. पुं.) पछाड़ ।
पछलगा–(हिं. पुं.) अनुयायी, पिछलगा।
पछवल–(हिं. स्त्री.) वह अनाज जो उपज के कटने पर बोया जाय ।
पछवाँ–(हिं. वि.) पश्चिम दिशा-संबंधी, पश्चिमी; (स्त्री.) अँगिया का पीठ की ओर का भाग ।
पछाँह–(हिं.स्त्री.) पश्चिम की ओर का प्रदेश।
पछाँहिया, पछाँही–(हिं. वि.) पश्चिम देश का, पछाँह का ।
पछाड़–(हिं.स्त्री.) मूर्च्छित होकर गिरना, शोक आदि के कारण अचेत होकर गिरना, पटकान; (मुहा.) –खाना–अचानक मूर्च्छित होकर गिर पड़ना ।
पछाड़ना–(हिं. क्रि. अ.) लड़ाई या मल्लयुद्ध में पटकना या हराना, कपड़े को धोते समय पटकना ।
पछाड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिछाड़ी'।
पछाया–(हिं. पुं.) किसी वस्तु का पिछला भाग ।
पछारना–(हिं. क्रि.स.) कपड़े को पटक-कर धोना, देखें 'पछाड़ना'।
पछावरि–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सिखरन, एक प्रकार का पेय ।
पछाहें, पछाहीं–(हिं. वि.) पश्चिम प्रदेश का, पछाँह का ।
पछिआ(या)ना–(हिं. क्रि.स.) पीछे-पीछे चलना, पीछा करना ।
पछिताना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'पछताना'।
पछिताव–(हिं. पुं.) देखें 'पछतावा'।
पछिनाव–(हिं. पुं.) चौपायों का एक रोग।
पछियाव–(हिं. पुं.) पश्चिमी वायु ।
पछिलना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'पिछड़ना'।
पछिला–(हिं. वि.) देखें 'पिछला'।
पछि(यु)वाँ–(हिं. वि.) पश्चिम का; (स्त्री.) पश्चिम की हवा ।
पछीत–(हिं. स्त्री.) घर का पिछवाड़ा ।
पछुआ(वा)–(हिं. पुं.) हाथ में पहिनने का एक गहना ।
पछेड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'पीछा'।
पछेलना–(हिं. क्रि.स.) आगे बढ़ जाना ।
पछेला–(हिं. पुं.) स्त्रियों के हाथ में पहिनने का एक गहना, मठिया; (वि.) पिछला ।
पछेली–(हिं. स्त्री.) हाथ का एक आभूषण।
पछोड़ना, पछोरना–(हिं. क्रि. स.) सूप आदि से अन्न फटककर साफ या स्वच्छ करना, फटकना ।
पछौरा–(हिं. पुं.) देखें 'पिछौरा'।
पछ्यावर–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का शरबत ।
पजर–(हिं.पुं.) चूने या टपकने की क्रिया ।
पजरना–(हिं. क्रि. अ.) जलना ।
पजारना–(हिं. क्रि. स.) जलाना ।
पजावा–(हिं. पुं.) आवाँ ।
पजोखा–(हिं. पुं.) किसी की मृत्यु पर उसके संबंधियों का शोक-प्रकाश ।
पज्ज–(सं. पुं.) शूद्र जाति, ।
पट–(सं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा, चित्र बनाने का कागज या कपड़ा; लकड़ी, धातु आदि का वह पत्र जिस पर चित्र बनाया जाता है, वह चित्र जो बदरिका-श्रम, जगन्नाथपुरी आदि में यात्रियों को मिलता है, छान, छप्पर, बहली के ऊपर डालने का छप्पर, आड़, परदा, चिक, कपास, तृण, चिरौंजी का वृक्ष; (हिं. पुं.) किवाड़, सिंहासन, चिपटी तथा चौरस भूमि, पालकी का सरकनेवाला द्वार, मल्लयुद्ध की एक युक्ति, टाँग, पट-पट का शब्द; (वि.) ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि पर हो तथा पीठ आकाश की ओर, मंदा; (अव्य.) तुरत, शीघ्र; (मुहा.) –खुलना–देवता के दर्शन के लिए मन्दिर का द्वार खुलना; –पड़ना–(कारबार) मन्द होना, रुक जाना, न चलना ।
पटइन–(हिं. स्त्री.) पटहार की स्त्री ।
पटक–(सं. पुं.) शिविर, तंबू, सूती कपड़ा ।
पटकन–(हिं.पुं.,स्त्री.) पटकने की क्रिया या भाव, चपत, तमाचा, छोटा डंडा या छड़ी।
पटकना–(हिं.क्रि.स.) किसी वस्तु को वेग के साथ ऊँचे स्थान से नीचे को झोंक देना या गिराना, किसी बैठे या खड़े हुए मनुष्य को वेग से नीचे को गिराना, मल्लयुद्ध में पछाड़ना, शब्द करते हुए किसी वस्तु का फटना, अन्न के दानों का सिकुड़ना, या पचकना; (मुहा.) **किसी पर कोई काम पटकना**–कोई काम करने के लिए किसी को सौंपना ।
पटकनिया–(हिं. स्त्री.) पटकने की क्रिया या भाव, पटकान, भूमि पर गिरकर लोटने की क्रिया, पछाड़ ।
पटकनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पटकनिया'।
पटका–(हिं. पुं.) कमर में बाँधने का दुपट्टा, कमरपेंच, भीत में जड़ी हुई पट्टी या बन्द ।
पटकान–(हिं. स्त्री.) देखें 'पटकनिया'।
पटकार–(सं. पुं.) कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा, चित्रकार ।
पटकुटी–(सं.स्त्री.) कपड़े का घर, तंबू।
पटच्चर–(सं. पुं.) पुराना कपड़ा, चोर ।
पटझोल–(हिं. पुं.) अंचल ।
पटड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पटरी'।
पटतर–(हिं. पुं.) तुल्यता, समानता, समता, सादृश्य, उपमा ।
पटतरना–(हिं.क्रि.स.) बराबर ठहराना, उपमा देना ।
पटतारना–(हिं.क्रि.स.) असमतल भूमि को चौरस या समतल करना, भाला आदि शस्त्र किसी के ऊपर चलाने के लिय थामना या तानना ।
पटताल–(हिं. पुं.) मृदंग का एक ताल।
पटद–(सं. पुं.) कर्पास, कपास, रूई।
पटधारी–(हिं. वि.) जो वस्त्र पहिने हो; (पुं.) कोष का अधिकारी ।
पटना–(हिं.क्रि.अ.) समतल या चौरस होना, पक्की या कच्ची छत बनना, खेत आदि का सींचा जाना, किसी वस्तु से किसी स्थान का परिपूर्ण होना, घर का दूसरा खण्ड बनाया जाना, दो मनुष्यों के विचार में समानता होना, मन मिलना, लेन-देन, खरीद-बिक्री आदि में मल्य आदि का स्थिर होना, गाढ़ी मैत्री होना, ऋण का चुकता हो जाना ।
पटना–(पुं.) बिहार प्रान्त की राजधानी, इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था।
पटनिया(हा)–(हिं.वि.) पटना नगर में बना

हुआ, पटना नगर से संबंध रखनेवाला ।

पटनी–(हिं. स्त्री.) कोठे के नीचे का घर, स्थायी पट्टे पर मिली हुई भूमि, वस्तुएँ रखने के लिये दो खूँटियों पर दीवार की ऊँचाई पर रखी हुई पटरी ।

पटपट–(हिं. स्त्री.) किसी हलकी वस्तु के आघात आदि से उत्पन्न निरन्तर शब्द; (अव्य.) पट-पट शब्द करता हुआ ।

पटपटाना–((हिं. क्रि.अ.,स.) भूख-प्यास अथवा सरदी-गरमी के कारण अधिक कष्ट सहना, तड़पना, किसी वस्तु से पट-पट शब्द निकलना, किसी वस्तु को पीटकर पट-पट शब्द उत्पन्न करना, पछताना, शोक या दुःख करना ।

पटपर–(हिं.वि.) समतल, चौरस; (पुं.) नदी के आस-पास की वह भूमि जो वर्षाकाल में प्रायः डूबी रहती है और जिसमें केवल रबी की उपज होती है, ऐसा स्थान जहाँ वनस्पति न उपजे, उजाड़ स्थान ।

पटबंधक–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बंधक जिसमें महाजन बंधक रखी हुई सम्पत्ति की वार्षिक आय से सूद काट लेने के बाद जो बढ़ती होती है उसको मूल ऋण में काटता जाता है और संपूर्ण ऋण चुकता हो जाने पर वह सम्पत्ति उसके मालिक को लौटा देता है ।

पटबास–(हिं.पुं.) वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य ।

पटबीजना–(हिं. पुं.) खद्योत, जुगनू ।

पटमंजरी–(सं. स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी का नाम ।

पटमंडप–(सं.पुं.) तंबू, कपड़े का बना घर ।

पटम–(हिं. वि.) वह जो भूख के मारे अन्धा हो रहा हो ।

पटमय–(सं. पुं.) तम्बू, लँहगा ।

पटरा–(हिं. पुं.) लकड़ी का लंबा चौरस पल्ला, पाटा, धोबी का पाट, हेंगा; (मुहा.)–कर देना–मार-काटकर भूमि पर लेटा देना ।

पटरानी–(हिं.स्त्री.) किसी राजा की सबसे बड़ी या मुख्य रानी जिसको राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार हो ।

पटरी–(हिं. स्त्री.) काठ का छोटा पतला पटरा, लिखने की पटिया, नरिया खपुआ, आपसी मेल, सड़क के दोनों किनारों पर मनुष्यों के चलने के लिये बना हुआ ऊँचा मार्ग, बगीचों में क्यारियों के चारों ओर चलने का मार्ग, जन्तर, हाथ में पहिनने की एक प्रकार की चूड़ी, नहर के दोनों ओर के मार्ग, कपड़े के किनारों पर टाँकने की कलाबत्तू की पट्टी, रेल की लाइन ।

पटल–(सं.पुं.) छान-छप्पर, लाव-लश्कर, मोतियाबिंद नामक आँख का रोग, तिलक, टीका, पुस्तक का एक भाग, परिच्छेद, समूह, ढेर, आँख का परदा, लकड़ी का चौरस टुकड़ा, पटरा, आवरण, परत, तह, ग्रन्थ, वृक्ष, परवल या उसकी लता, करौंदे का वृक्ष ।

पटलक–(सं.पुं.) राशि, समूह, ढेर, आवरण, परदा, झिलमिली, बुरका, छोटा संदूक ।

पटलता–(सं. स्त्री.) अधिकता ।

पटली–(सं. स्त्री.) पंक्ति ।

पटवा–(हिं. पुं.) वह जो रेशमी सूत में गहनों को गूँथता है, पटहार, पटसन, पाट, नारंगी रंग का बैल ।

पटवाद्य–(सं.पुं.) झाँझ की तरह का एक प्राचीन बाजा ।

पटवाना–(हिं. क्रि. स.) पाटने का काम दूसरे से कराना, ढँपवाना, छत तैयार कराना, गड्ढे को मिट्टी आदि से भरवाना, पानी से सिंचवाना, दाम चुका देना, शान्त करना, सौदा तै कर देना ।

पटवाप–(सं. पुं.) तंबू ।

पटवारगिरी–(हिं.स्त्री.) पटवारी का काम या पद ।

पटवारी–(हिं. पुं.) वह कर्मचारी जो गाँव की भूमि, उसके कर आदि का हिसाब-किताब रखता है; (स्त्री.) कपड़ा पहिनानेवाली लौंड़ी ।

पटवास–(सं. पुं.) पट-मंडप, शिविर, तंबू, साड़ी, लहँगा, वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य ।

पटवेश्म–(सं. पुं.) शिविर, तम्बू ।

पटसन–(हिं.पुं.) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों से रस्सी, बोरे, टाट आदि बनाये जाते हैं, पाट, जूट ।

पटहंसिका–(सं. स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।

पटह–(हिं.पुं.) दुंदुभी, नगाड़ा, बड़ा ढोल ।

पटहता–(सं. स्त्री.) नगाड़े की ध्वनि ।

पटहा–(हिं. पुं.) देखें 'पटह' ।

पटहार–(हिं. पुं.) वह जो रेशम के डोरे बनाता हो, रेशम के डोरे में गहना गूंथने-वाला पटवा ।

पटा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की लोहे की पट्टी जो किर्च के आकार की होती है जिससे लोग तलवार के वार की काट और बचाव सीखते हैं, चौड़ी तथा लंबी धारी, गोटा, लेन-देन, लगाम की मुहरी, अधिकार-पत्र, पटरा ।

पटाई–(हिं. स्त्री.) पटाने की क्रिया या भाव, सिंचाई, सिंचाई का वेतन, पाटने की क्रिया ।

पटाक–(हिं. पुं.) किसी छोटी वस्तु के गिरने आदि का शब्द ।

पटाका–(हिं. पुं.) पट या पटाक शब्द, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जिसके छूटने पर पटाक शब्द निकलता है, कोड़े आदि का शब्द, थप्पड़, तमाचा ।

पटाखा–(हिं. पुं.) देखें 'पटाका' ।

पटाना–(हिं. क्रि. स.) पाटन का काम कराना, गड्ढे को पाटकर भूमि को समतल करना, छत को पीटकर बराबर करना, सौदा तै करना, ऋण चुका देना; (क्रि. अ.) चुप या शांत होना ।

पटापट–(हिं. अव्य.) निरन्तर पट-पट शब्द करते हुए; (स्त्री.) निरन्तर पट-पट शब्द ।

पटापटी–(हिं. स्त्री.) वह वस्तु जो रंग-बिरंगी हो ।

पटार–(हिं. स्त्री.) पिंजड़ा, पेटी, पिटारी, रेशम की डोरी ।

पटालुका–(सं. स्त्री.) जलौका, जोंक ।

पटाव–(हिं. पुं.) पाटने की क्रिया, पाटने का भाव, पटा हुआ स्थान, भीतों से सटाकर बनाया हुआ ऊँचा स्थान, छत की पाटन, लकड़ी का वह पुष्ट पटरा जिसको द्वार के ऊपर रखकर उसपर भीत उठाई जाती है, भरेठ ।

पटिका–(सं. स्त्री.) यवनिका, परदा ।

पटिया–(हिं.स्त्री.) पत्थर का लंबा चौरस टुकड़ा, काठ का छोटा पटरा, खाट या पलंग की पाटी, हेंगा, माँग, पट्टी, कम्बल या टाट की पट्टी, लिखने की पटरी, सँकरा लंबा खेत ।

पटी–(सं. स्त्री.) कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा, परदा, नाटक का परदा, पटका ।

पटोमा–(हिं. पुं.) छीपियों का वह पटरा जिस पर वे कपड़े को फैला कर उसे छापते हैं ।

पटोर–(सं. पुं.) ऊँचाई, भेष, बादल, वंसलोचन, मूली, चन्दन, खैर, कंदर्प, उदर, पेट, बरगद का वृक्ष, नलनी ।

पटोलना–(हिं.क्रि.स.) किसी को फुसलाने की बातें कहकर अपने अनुकूल करना या ढंग पर लाना, नीचा दिखाना, कमाना, प्राप्त करना, मारना, पीटना, पूर्ण करना, सफलतापूर्वक कोई काम समाप्त करना,

ठगना, छलना ।
पटु–(सं. वि.) दक्ष, चतुर, रोगरहित, स्वस्थ, तीक्ष्ण, मनोहर, प्रकाशित, कठोर हृदय का, उग्र, धूर्त; (पुं.) नमक, परवल, करेला, जीरा, बच, नकछिकनी, चीनी, कपूर ।
पटुआ–(हिं. पुं.) पटसन, करेमू ।
पटुक–(सं. पुं.) पटोल, परवल ।
पटुका–(हिं.पुं.) कन्धे पर का वस्त्र, कन्हावर, चादर, धारीदार वस्त्र ।
पटुता–(सं.स्त्री.) दक्षता, चतुराई, प्रवीणता ।
पटुत्व–(सं. पुं.) पटुता, दक्षता ।
पटुपत्रिका–(सं. स्त्री.) पिण्डखजूर ।
पटुपर्णी–(सं. स्त्री.) सत्यानासी, कटेरी ।
पटुरूप–(सं. वि.) बहुत चतुर या दक्ष ।
पटुली–(हिं.स्त्री.) झूले के रस्सों पर रखने की काठ की पटरी, गाड़ी या छकड़े में जड़ा हुआ काठ का पटरा, चौकी, पीढ़ा ।
पटुवा–(हिं.पुं.) पटसन, जूट, करेमू का शाक ।
पटूका–(हिं. पुं.) देखें 'पटका' ।
पटेबाज–(हिं. पुं.) वह जो पटा खेलता हो, पटे से लड़नेवाला, एक प्रकार का खिलौना, व्यभिचारी और धूर्त मनुष्य; (स्त्री.) कुलटा, धूर्त स्त्री ।
पटेर–(हिं. स्त्री.) सरकंडे की जाति का एक पौधा जो जल में होता है ।
पटेरक–(सं. पुं.) मुस्तक, मोथा ।
पटेरा–(हिं. पुं.) देखें 'पटेला' ।
पटेल–(हिं. पुं.) गाँव का मुखिया या चौधरी, गुजरातियों की एक उपाधि ।
पटेलना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पटीलना' ।
पटेला–(हिं. पुं.) वह नाव जिसका बिचला भाग पटा हुआ हो, एक प्रकार की घास जिसकी चटाइयाँ बनती हैं, सिल, हेंगा, पटिया, मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।
पटेली–(हिं. स्त्री.) छोटा पटेला ।
पटैत–(हिं. पुं.) पटा खेलनेवाला, पटेबाज ।
पटैला–(हिं.पुं.) किवाड़ बन्द करने के लिये लगा हुआ चिपटा डंडा, ब्योंड़ा ।
पटोर–(हिं. पुं.) पटोल, रेशमी कपड़ा ।
पटोरी–(हिं.स्त्री.) रेशमी साड़ी या चादर ।
पटोल–(सं. पुं.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, परवल ।
पटोलक–(सं. पुं.) शुक्ति, सीपी, सुतुही ।
पटोलिका–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की तरोई ।
पटौनी–(हिं.पुं.) नाविक, मल्लाह, माँझी ।
पटौहाँ–(हिं. पुं.) वह कमरा जो पाटन के नीचे दूसरा कमरा हो, पटबंधक ।
पट्ट–(सं. पुं.) नगर, पहिया, घाव पर बाँधने की पट्टी, पट्टा, दुपट्टा, ढाल, राजसिंहासन, पीढ़ा, पाटा, शिला, पगड़ी, रेशम, लाल रेशमी पगड़ी, चौराहा; (वि.) प्रधान ।
पट्टक–(सं. पुं.) लिखने की पटिया, चित्रपट, ताम्रपट जिस पर राजा का आदेश खोदा जाता था, पट्टा ।
पट्टदेवी–(हिं. स्त्री.) राजा की प्रधान रानी, पटरानी ।
पट्टदोल–(सं.स्त्री.) कपड़े का बना हुआ झूला ।
पट्टन–(सं. पुं.) पत्तन, बड़ा नगर ।
पट्टमहिषी–(सं. स्त्री.) राजा की प्रधान रानी, पटरानी ।
पट्टरंग–(सं. पुं.) पतंग, बक्कम ।
पट्टराज्ञी–(सं. स्त्री.) पटरानी ।
पट्टा–(हिं. पुं.) किसी भूमि अथवा स्थावर सम्पत्ति के उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी, ठीकेदार या किरायेदार को लिखा जाता है, कोई अधिकारपत्र, एक आभूषण जिसको स्त्रियाँ चूड़ियों के बीच में पहिनती हैं, पीढ़ा, चपरास, पुरुष के सिर पर के बाल की काट जो पीछे की ओर बराबर होती है, कामदार जूतियों पर का कपड़ा जिस पर बेल-बूटा बना होता है, एक प्रकार की तलवार, विवाह के समय का वह नेग जो नाई, बारी, धोबी आदि को वर-पक्ष से दिलवाया जाता है, चमड़े का कटिबन्ध, घोड़े के माथे पर पहिनाने का गहना, कुत्ता, बिल्ली आदि के गले में बाँधने की पट्टी ।
पट्टिका–(सं. स्त्री.) पठानी लोध, एक बित्ता लंबा कपड़ा, चित्र-पट, छोटी पटरी ।
पट्टिकार–(सं.वि.) रेशमी कपड़ा बुननेवाला ।
पट्टिश–(सं.पुं.) तलवार-जैसा एक अस्त्र ।
पट्टी–(सं. स्त्री.) पठानी लोध, एक गहना जो पगड़ी में लगाया जाता है, तसमा, घोड़े के सीने में बाँधने की रस्सी, घोड़े की सीधी दौड़, सरपट चाल, जमीदारी का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में होता था, छत या छाजन में लगाने का बल्ला, कपड़े का किनारा, नाव के बीच में लगाने का पटरा, टाट बनाने की सन की बज्जी, तिल या चने की दाल पाग कर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई, सूती या ऊनी वस्त्र की धज्जी, पंक्ति, पटिया, लिखने की काठ की पटरी, खाट में लंबे बल लगी हुई लकड़ी, बालु, कागज या कपड़े की धज्जी, घाव पर बाँधने की कपड़े की धज्जी, बहकानेवाली शिक्षा, भुलाना, सिखावन, पाठ, माँग के दोनों ओर सँवारे हुए बाल, विभाग ।
पट्टीदार–(हिं.पुं.) वह व्यक्ति जिसका किसी सम्पत्ति में अंश हो, बराबर अंश का अधिकारी, संयुक्त सम्पत्ति या जमींदारी के अंश का स्वामी, वह जिसको अंश पाने का अधिकार हो ।
पट्टीदारी–(हिं. स्त्री.) पट्टीदार होने का भाव, भू-संपत्ति के अंश-विभाग, भाईचारा, वह भू-सम्पत्ति जिसमें अनेक भागी हों ।
पट्टीवार–(हिं. अव्य.) हर पट्टी का हिसाब-किताब अलग-अलग रखते हुए; (वि.) अलग-अलग पट्टियों के अनुसार तैयार किया हुआ ।
पट्टीश–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
पट्टू–(हिं.पुं.) एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो बहुत गरम होता है, शुक, तोता ।
पट्टे-पछाड़–(हिं.पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।
पट्टे-बैठक–(हिं.पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।
पट्टैत–(हिं. पुं.) पटैत, मूर्ख, एक प्रकार का कबूतर ।
पट्टोपाध्याय–(सं.पुं.) दानपत्र का लिपिक या लिखनेवाला ।
पट्ठमान–(हिं. वि.) पढ़ने योग्य ।
पट्ठा–(हिं. पुं.) तरुण, नवयुवक, वह किशोर जिसमें यौवन का आगमन हो चुका हो, जवान लड़का, स्नायु, मोटे दल का पत्ता, एक प्रकार का चौड़ा गोटा, बेल बनाई हुई गोट, जाँघ और कटिका जोड़, मोटी नस; (मुहा.)–**चढ़ना**–नस पर नस चढ़ जाना; –**पछाड़**–(वि. स्त्री.) हृष्ट-पुष्ट (स्त्री) ।
पट्ठी–(हिं.स्त्री.) देखें 'पठिया'; (वि. स्त्री.) पट्ठा ।
पठक–(सं. पुं.) पाठक, पढ़नेवाला ।
पठन–(सं. पुं.) अध्ययन, पढ़ना ।
पठनीय–(सं. वि.) पढ़ने योग्य ।
पठनेटा–(हिं. पुं.) पठान का पुत्र ।
पठमंजरी–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
पठवना–(हिं. क्रि. स.) भेजना ।
पठवाना–(हिं.क्रि.स.) भेजवाना, दूसरे से भेजने का काम कराना ।
पठान–(हिं.पुं.) भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्तों में रहनेवाली इसलाम धर्म माननेवाली एक जाति ।
पठाना–(हिं.क्रि.स.) भेजना, पठवाना ।
पठानिन, पठानी–(हिं.स्त्री.) पठान की स्त्री ।
पठानी लोध–(हिं. पुं.) एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं तथा छिलका रंग बनाने के काम में आता है ।
पठावन–(हिं.पुं.) सन्देश ले जानेवाला दूत ।

पठावनि, पठावनी–(हिं. स्त्री.) किसी मनुष्य को कहीं कोई वस्तु लेकर अथवा सन्देश पहुँचाने के लिये भेजना, यह कार्य, इसका वेतन।

पठावर–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की घास।

पठित–(सं. वि.) पढ़ा हुआ, शिक्षित, पढ़ा-लिखा।

पठितव्य–(सं. वि.) पढ़ने योग्य।

पठिति–(सं. स्त्री.) शब्दालंकार का एक भेद।

पठियर–(हिं.स्त्री.) वह बल्ला या पटिया जो कुएँ के आर-पार बीचोबीच रखी जाती है।

पठिया–(हिं.स्त्री.) जवान या युवती स्त्री, हृष्ट-पुष्ट स्त्री।

पठोर–(हिं. स्त्री.) बिना ब्याई हुई जवान बकरी।

पठौना–(हिं. क्रि. स.) भेजना।

पठौनी–(हिं. स्त्री.) किसी को कुछ देकर कहीं भेजने की क्रिया, पठावनि।

पठ्यमान–(सं. वि.) जो पढ़ने योग्य हो।

पड़छती–(हिं. स्त्री.) लकड़ी की पाटन, टाँड़, कच्ची भीत की रक्षा के लिये लगाया जानेवाला छप्पर।

पड़त (हिं. स्त्री.), **पड़ता**–(हिं. पुं.) वह मूल्य जो किसी वस्तु को तैयार करने या मोल लेने में लगा हो, सामान्य दर, लागत, लगान की दर; (मुहा.)–**खाना**–लागत के ऊपर लाभ मिल जाना; –**फैलाना**–लाभ रखते हुए किसी वस्तु का दाम स्थिर करना।

पड़ताल–(हिं. स्त्री.) अनुसन्धान, छानबीन, समय-समय पर पटवारी द्वारा खेतों की उपज आदि विषयों की जाँच।

पड़तालना–(हिं. क्रि. स.) अनुसन्धान करना, छानबीन करना।

पड़ती–(हिं. स्त्री.) वह भूमि जो कुछ वर्षों से जोती-बोई न गई हो; –**जमीन**–वह भूमि जो जोती-बोई न गई हो या जाती हो।

पड़ना–(हिं. क्रि.अ.) पतित होना, गिरना, बिछाया जाना, अधिक इच्छा होना, धुन लगना, रखा रहना, मैथुन करना, उत्पन्न होना, उपस्थित होना, संयोगवश आ पड़ना, जाँच करने पर ठीक ठहरना, रोगी होना, पड़ता खाना, संकट या कठिनाई आना, हस्तक्षेप करना, विश्राम करने के लिये लेटना, डेरा डालना, ठहरना, मार्ग में मिलना, आय, प्राप्ति आदि में बचत होना, ऊँचे स्थान से नीचे को आना, पाला जाना; (मुहा.) किसी पर पड़ना–आपत्ति आना; पड़ा होना–एक ही स्थान पर बने रहना; पड़े रहना–बिना कुछ काम किये खाट पर लेट रहना; (किसीको) क्या पड़ी है?–तुमसे क्या मतलब।

पड़पड़–(हिं. स्त्री.) निरन्तर पड़-पड़ाने का शब्द।

पड़पड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) पड़-पड़ शब्द होना, मिर्च आदि खाने या रगड़ने से जलन होना, परपराना।

पड़पड़ाहट–(हिं.स्त्री.) पड़पड़ाने की क्रिया या भाव, परपराहट।

पड़पोता–(हिं.पुं.) प्रपौत्र, पोते का पुत्र।

पड़म–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा जो खेमा आदि बनाने के काम में आता है।

पड़वा–(हिं. स्त्री.) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि; (पुं.) भैंस का बच्चा, पँड़वा।

पड़वाना–(हिं. क्रि. स.) गिरवाना।

पड़वी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की ऊख जो वैशाख या जेठ में बोई जाती है।

पड़ा–(हिं. पुं.) भैंस का बच्चा, पँड़वा।

पड़ाइन–(हिं.स्त्री.) देखें 'पँड़ाइन'।

पड़ाका–(हिं.पुं.) देखें 'पटाका'।

पड़ाना–(हिं. क्रि. स.) झुकाना, गिराना।

पड़ापड़–(हिं. स्त्री.) देखें 'पड़पड़'।

पड़ाव–(हिं. पुं.) यात्रा के बीच का ठहराव, वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों, चट्टी, टिकान।

पड़िया–(हिं. स्त्री.) भैंस का मादा बच्चा।

पड़ियाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'भैंसाना'।

पड़िवा–(हिं. स्त्री.) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि, प्रतिपदा।

पड़ोस–(हिं. पुं.) किसी घर के समीप का घर, घर के आसपास का या समीपवर्ती स्थान; (क्रि.प्र.)–**करना**–पड़ोस में बसना।

पड़ोसी, पड़ौसी–(हिं. पुं.) प्रतिवासी, पड़ोस में रहनेवाला।

पढ़त–(हिं.स्त्री.) पढ़ने की क्रिया या भाव, मन्त्र, जादू।

पढ़ना–(हिं. क्रि. स.) किसी पुस्तक, लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी हुई बात का ज्ञान हो जाय, उच्चारण करना, बाँचना, धीरे से कहना, नया सबक सीखना, स्मरण रखने के लिये बारंबार उच्चारण करना, मन्त्र फूँकना, जादू करना, अध्ययन करना, शिक्षा प्राप्त करना, पालतू तोता, मैना आदि का मनुष्यों द्वारा सिखलाये हुए शब्दों का उच्चारण करना; –**लिखना**–(क्रि. स.) शिक्षा प्राप्त करना।

पढ़नी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।

पढ़नी-उड़ी–(हिं. स्त्री.) उछलकर लाँघने का एक व्यायाम।

पढ़वाना–(हिं. क्रि. स.) किसी से पढ़ने का काम कराना, बँचवाना, किसी के द्वारा शिक्षा दिलाना।

पढ़वैया–(हिं. पुं.) शिक्षार्थी, पढ़नेवाला।

पढ़ाई–(हिं. स्त्री.) विद्याभ्यास, पठन, अध्ययन, पढ़ने का काम, पाठन, पढ़ाने का काम, पढ़ने का ढंग, पढ़ाने के लिए या बदले में दिया जानेवाला धन, अध्ययन या अध्यापन की शैली।

पढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) अध्यापन करना, शिक्षा देना, सिखाना, पढ़वाना, कोई कला सिखलाना, तोता, मैना आदि पक्षियों को बोलना सिखलाना।

पढ़िना–(हिं.पुं.) मीठे तथा खारे पानी में रहनेवाली एक प्रकार की मछली, पहिना।

पढ़ैया–(हिं. पुं.) पाठक, पढ़नेवाला।

पण–(सं. पुं.) ताँबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सिक्के के रूप में किया जाता था, वेतन, स्तुति, प्रशंसा, प्राचीन काल की एक माप जो एक मुट्ठी अन्न के बराबर होती थी, घर, विष्णु, बिक्री करनेवाला, द्यूत, जुआ, मूल्य, दाम, धन, सम्पत्ति, प्रतिज्ञा, बाजी की वस्तु जिसका देना स्वीकार हो, व्यापार, व्यवहार, क्रय-विक्रय की वस्तु, कोई कार्य जिसमें बाजी लगाई गई हो।

पण-ग्रंथि–(सं. पुं.) हाट।

पणन–(सं. पुं.) बेचने की क्रिया या भाव, व्यापार करने की क्रिया।

पणनीय–(सं. वि.) खरीदने या बेचने योग्य, पण्य।

पणफर–(सं. पुं.) ज्योतिष में जन्म-कुण्डली का दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ और ग्यारहवाँ घर।

पणबंध–(सं. पुं.) बाजी या शर्त लगाना।

पणव–(सं. पुं.) छोटा नगाड़ा, छोटा ढोल, एक वर्णवृत्त का नाम।

पणस–(सं. पुं.) कटहल।

पणाय–(सं. पुं.) बिक्री की वस्तु।

पणसुंदरी, पणस्त्री, पणांगना–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

पणायित–(सं. वि.) स्तुति किया हुआ, मोल लिया हुआ।

पणि–(सं. स्त्री.) हाट।

पणित–(सं. वि.) जिसकी बाजी लगाई गई हो, मोल लिया हुआ।

पणितव्य–(सं. वि.) बाजी लगाने योग्य, व्यापार करने योग्य।

पण्य–(सं.वि.) मोल लेने या बेचने योग्य, व्यवहार करने योग्य, बाज़ी लगाने योग्य; (पुं.) व्यापार, माल; **–जीवी**–(पुं.) बनिया, सौदागर; **–दासी**–(स्त्री.) लौंडी, दासी, बाँदी; **–पति**–(पुं.) बहुत बड़ा साहूकार, नगर-सेठ; **–फल**–(पुं.) व्यापार में लाभ; **–भूमि**–(स्त्री.) माल रखने या जमा करने का स्थान, कोठी, गोदाम; **–विलासिनी**–(स्त्री.) वेश्या, रंडी; **–वीथिका**–(स्त्री.) हाट; **–शाला**–(स्त्री.) दुकान।

पण्यांगना–(सं. स्त्री.) रंडी।

पतंखा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का बगला।

पतंग–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष, वक्कम; (स्त्री.) तागे के सहारे हवा में ऊपर उड़नेवाला एक खिलौना जो बाँस की तीलियों के ढाँचे पर कागज चिपकाकर बनाया जाता है, कनकैया, गुड्डी; **–बाज**–(पुं.) पतंग उड़ानेवाला, पतंग उड़ाने का व्यसनी; **–बाजी**–(स्त्री.) पतंग उड़ाने की कला, क्रिया आदि।

पतंग–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, सूर्य, फतिंगा, टिड्डी, एक प्रकार का धान, चिनगारी, एक गन्धर्व का नाम, जल, महुआ, शरीर, नाव, एक पर्वत का नाम, पारा, एक प्रकार का चन्दन, बाण, अग्नि, घोड़ा, पिशाच, मक्खी, कृष्ण का एक नाम, प्रजापति के एक पुत्र का नाम।

पतंगम–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, शलभ, टिड्डी।

पतंगा–(हि. पुं.) फतिंगा, एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा, स्फुलिंग, चिनगारी, दीपक की बत्ती का वह अंश जो जलकर गिर पड़ता है।

पतंगिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की मधुमक्खी।

पतंगी–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

पतंगेंद्र–(सं. पुं.) गरुड़।

पतंचिका–(सं. स्त्री.) धनुष की डोरी, चिल्ला।

पतंजलि–(सं. पुं.) योगशास्त्र के प्रणेता, पाणिनीय महाभाष्य के प्रणेता।

पत–(हिं. स्त्री.) लज्जा, प्रतिष्ठा; (पुं.) पति, स्वामी; (मुहा.) **–उतारना**–अपमान करना; **–रखना**–प्रतिष्ठा बचाना।

पतई–(हिं. स्त्री.) पत्र, पत्ती।

पतखोवन–(हिं. पुं.) ऐसा कार्य करनेवाला जिससे अपना या दूसरे का अपमान हो।

पतझड़, पतझर, पतझा(ड़)र–(हिं.स्त्री.) वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं, माघ और फागुन का महीना, अवनतिकाल, नाश का समय।

पतत्प्रकर्ष–(सं. पुं.) काव्य में एक प्रकार का रस-दोष।

पतत्र–(सं. पुं.) पक्ष, पंख, डैना, वाहन, सवारी।

पतत्रि–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

पतत्रिकेतन–(सं.पुं.) गरुड़ध्वज, विष्णु।

पतत्रिराज–(सं. पुं.) पक्षिराज, गरुड़।

पतत्री–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।

पतद्भीरु–(सं. पुं.) श्येन पक्षी, बाज।

पतन–(सं. पुं.) गिरने या नीचे आने का भाव, गिरना, नीचे धँसने की क्रिया, अवनति, अधोगति, नाश, मृत्यु, पाप, जातिच्युति, उड़ान, किसी नक्षत्र का अक्षांश; **–शील**–(वि.) गिरता हुआ, नाशहोनेवाला, जिसका पतन निश्चित हो, गिरनेवाला।

पतना–(हिं. क्रि. अ.) गिरना।

पतनारा–(हिं. पुं.) परनाला, मोरी।

पतनीय–(सं.वि.) पतित होनेवाला, गिरनेवाला; (पुं.) पतित करनेवाला पाप।

पतनोन्मुख–(सं. वि.) जिसका पतन, अधोगति या विनाश समीप हो, जो गिरने वाला हो।

पतपानी–(हिं.पुं.) प्रतिष्ठा, मान, लाज।

पतम–(सं. पुं.) चन्द्रमा, पक्षी, चिड़िया, फतिंगा।

पतयालु, पतयिष्णु–(सं.वि.) देखें 'पतनशील'।

पतर–(हिं. वि.) पतला, कृश; (पुं.) पत्तल, पत्ता।

पतरा–(हि.पुं.) पत्तल, सरसों का पत्ता; (वि.) पतला।

पतराई–(हिं. स्त्री.) पतलापन।

पतरी–(हिं. स्त्री.) पत्तल।

पतरु–(सं.वि.) पतनशील, गिरनेवाला।

पतला–(हिं. वि.) कृश, जो मोटा न हो, जिसका दल मोटा न हो, झीना, हलका, अधिक तरल, अशक्त, असमर्थ, हीन; (मुहा.) **–पड़ना**–आपत्ति में पड़ना, दुर्दशाग्रस होना।

पतलाई–(हिं. स्त्री.), **–पतलापन**–(हिं. पुं.) पतला होने का भाव।

पतली–(हिं. वि. स्त्री.) देखें 'पतला'।

पतलून–(हिं. पुं.) अँगरेजों का पायजामा जिसमें नीवी नहीं लगाई जाती और जो बटन और पेटी से कमर में कसा जाता है।

पतलो–(हिं. स्त्री.) सरकंडा, सरपत।

पतवर–(हिं. अव्य.) पंक्ति के क्रम से, पाँतों में।

पतवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मचान जिस पर बैठकर शिकार किया जाता है।

पतवार–(हिं. स्त्री.) नाव का वह अंग या पुरजा अंग जो इसके पीछे-की ओर लगा होता है जिसके द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है, कर्ण।

पतवारी–(हिं.स्त्री.) ऊख का खेत, पतवार।

पतवाल–(हिं. स्त्री.) देखें 'पतवार'।

पतस–(सं. पुं.) पक्षी।

पता–(हिं. पुं.) किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान का ज्ञान करानेवाले ब्योरे, परिचय आदि जिनके सहारे उसको पाया जा सके, अनुसन्धान, खोज, रहस्य; गूढ़ तत्त्व, जानकारी, चिट्ठी की पीठ पर लिखे हुए पते के शब्द; **–ठिकाना**–(पु.) जिन बातों से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के मिलने का स्थान जाना जा सके; **पते की बात**–भेद या तत्त्व की बात।

पताई–(हिं. स्त्री.) सूखकर झड़ी हुई पेड़-पौधों की पत्तियाँ।

पताका–(सं. स्त्री.) ध्वजा, झंडा, सौभाग्य, तीर चलाने में अँगुलियों की विशिष्ट स्थिति, दस खर्व की संख्या, पिंगल के अनुसार छन्द अथवा छन्दों में किसी लघु-गुरु वर्ण का स्थान जानने की रीति, वह डंडा जिसम पताका पहिनाई जाती है, नाटक म वह स्थान जहाँ एक पात्र कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर उसी विषय की कोई और बात कहे जिससे उक्त पात्र के चिंतन-विषय की सूचना होती हो; (मुहा.) **–उड़ना**–एकाधिकार हो जाना, प्रसिद्धि होना, विजयी होना; **–गिरना**–हार जाना।

पताकिक, पताकी–(सं. पुं., वि.) पताकायुक्त, पताका उठानेवाला।

पताकिनी–(सं.स्त्री.) एक देवी का नाम, सेना।

पतार–(हिं.पुं.) देखें 'पाताल', वन, जंगल।

पतारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का जलपक्षी।

पताल–(हिं.पुं.) देखें 'पाताल'; **–आँवला**–(पुं.) एक प्रकार का पौधा जो औषध में प्रयुक्त होता है; **–कुम्हड़ा**–(पुं.) एक प्रकार की जंगली बेल जो शकरकन्द की लता की तरह भूमि पर फैलती है और इसकी गाँठों में

कन्द लगते हैं; **—दंती**—(पुं.) वह हाथी जिसके दाँत नीचे को झुके होते हैं।

पतावर—(हिं. पुं.) पेड़ के सूखे पत्ते।

पताशी—(हिं. स्त्री.) बढ़इयों की छोटी रुखानी।

पतिंगा—(हिं. पुं.) फतिंगा।

पतिंवरा—(सं. स्त्री.) स्वयंवरा।

पति—(सं. पुं.) मूल; गति, दूल्हा, स्त्री का विवाहित पुरुष, भर्ता, अधिपति, स्वामी, मालिक, प्रभु, ईश्वर, प्रतिष्ठा, मर्यादा, लज्जा।

पतिआना—(हिं. क्रि. स.) विश्वास करना, मानना।

पतिआर—(हिं. पुं.) विश्वास।

पतिकामा—(सं. वि. स्त्री.) स्वामी को चाहनेवाली (स्त्री)।

पतिघातिनी—(सं. स्त्री.) पति को मारनेवाली स्त्री।

पतित—(सं. वि.) चलित, गया हुआ, गलित, गिरा हुआ, नीतिभ्रष्ट, आचारच्युत, अपावन, अधम, अति नीच, महापातकी, अवम; **—उधारन**—(पुं., वि.) पतित का उद्धार करनेवाला, ईश्वर, परमात्मा, ईश्वर का अवतार; **—ता**—(वि.) अधमता, नीचता, अपवित्रता; **—त्व**—(पुं.) पतित होने का भाव; **—पावन**—(वि.) पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर।

पतित्व—(सं. पुं.) स्वामित्व, स्वामी होने का भाव।

पतित्वन—(सं. पुं.) यौवन, जवानी।

पतिदेवता—(सं. स्त्री.) जिस स्त्री का आराध्य एक मात्र पति हो।

पतिदेवा—(सं. स्त्री.) पतिव्रता स्त्री।

पतिधर्म—(सं. पुं.) पति के प्रति स्त्री का धर्म।

पतिनी—(हिं. स्त्री.) देखें 'पत्नी'।

पतिया—(हिं. स्त्री.) देखें 'पत्रिका'।

पतियाना—(हिं. क्रि. स.) विश्वास करना, सच मानना।

पतिलोक—(सं. पुं.) पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।

पतिवती—(हिं. वि.) सौभाग्यवती, सधवा।

पतिवेदन—(सं. पुं.) पति प्राप्त करानेवाले शिव।

पतिव्रत—(सं. पुं.) पति में निष्ठापूर्वक अनुराग।

पतिव्रता—(सं. वि. स्त्री.) अपने स्वामी के प्रति अनन्य अनुराग रखनेवाली तथा पति की सेवा करनेवाली स्त्री, सती, साध्वी।

पतीजना, पतीनना—(हिं. क्रि. स.) विश्वास करना, पतिआना।

पतीर—(हिं. स्त्री.) पंक्ति, पाँत।

पतीरी—(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चटाई।

पतील—(हिं. वि.) पतला।

पतीली—(हिं. स्त्री.) चौड़े मुँह की बटलोई, देगची।

पतुरिया—(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री, छिनाल औरत।

पतुली—(हिं. स्त्री.) कलाई में पहिनने का एक गहना।

पतेर—(हिं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, गर्त, गड्ढा।

पतोई—(हिं. स्त्री.) गुड़ बनाते समय खौलते रस में से निकलनेवाला फेन।

पतोखद—(हिं. स्त्री.) जड़ी-बूटी, औषधि, खरबिरई।

पतोखा—(हिं. पुं.) पत्ते का बना हुआ पात्र, दोना, एक प्रकार की छतरी।

पतोखी—(हिं. स्त्री.) पत्तों का बना हुआ एक छोटा छाता, छतरी, एक पत्ते की बनी हुई दोनियाँ।

पतोह, पतोहू—(हिं. स्त्री.) पुत्रवधू, बेटे की स्त्री।

पत्तँआ—(हिं. पुं.) पत्र, पत्ता।

पत्त—(सं. पुं.) पाद, पर, पाँव।

पत्तन—(सं. पुं.) नगर, मृदंग।

पत्तरंग—(सं. पुं.) लाल चन्दन, बक्कम।

पत्तर—(हिं. पुं.) किसी धातु को पीटकर तयार किया हुआ पतला टुकड़ा, धातु की चद्दर, देखें 'पत्तल'।

पत्तल—(हिं. स्त्री.) पत्तों को सींकों से जोड़कर बनाया हुआ पात्र जो थाली के काम में लाया जाता है, पत्तल में परोसी हुई भोजन सामग्री, परोसा; (मुहा०) **एक पत्तल में खानेवाले**—जिनमें परस्पर खान-पान और विवाह आदि का व्यवहार होता हो; **जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना**—उपकार करनेवाले की हानि करना, कृतघ्नता दिखलाना।

पत्ता—(हिं. पुं.) पेड़-पौधे का टहनी से निकला हुआ हरे रंग का फैला हुआ अवयव, पर्ण, पत्र, कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना, धातु की चद्दर, पत्तर, मोटे कागज का चौकोर टुकड़ा; (वि.) बहुत हलका; (मुहा.) **—खड़कना**—आशंका होना, खटका होना।

पत्ति—(सं. पुं.) पैदल सिपाही, वीर, योद्धा; (स्त्री.) गति, चाल, प्राचीन काल की सेना का सबसे छोटा भाग जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल सिपाही होते थे।

पत्तिक—(सं. पुं.) पदाति, पैदल सिपाही, प्राचीन काल की सेना का वह विभाग जिसमें दस घोड़े, दस हाथी, दस रथ और दस पैदल सिपाही होते थे, ऐसे सेना-विभाग का अधिकारी; (वि.) पैदल चलनेवाला।

पत्ती—(हिं. स्त्री.) छोटा पत्ता, भाग, हिस्सा, फूल की पँखड़ी या दल, पत्ती के आकार का लकड़ी, धातु आदि का छोटा पत्तर, पट्टी।

पत्तीदार—(हिं. पुं.) साझीदार, हिस्सेदार।

पत्तूर—(सं. पुं.) जल-पिप्पली, पाकड़ का वृक्ष, शमी का पेड़।

पत्थ—(हिं. पुं.) देखें 'पथ्य'।

पत्थर—(हिं. पुं.) पृथ्वीतल का कड़ा खण्ड या पिण्ड, सड़क की नाप बतलानेवाला भूमि में गड़ा हुआ पत्थर, रत्न, बनौरी, ओला, बिलकुल नहीं, कुछ नहीं, पत्थर की तरह कठोर तथा भारी अयोग्य वस्तु; (मुहा.)**—का कलेजा**—करुणा तथा दया से रहित हृदय; **—की छाती**—कठोर हृदय; **—की लकीर**—सर्वदा बनी रहनेवाली वस्तु; **—चटाना**—पत्थर पर घिसकर शस्त्र चोखा करना; **—तले से हाथ निकलना**—संकट से छुटकारा पाना; **—तले हाथ दबना**—ऐसे संकट में पड़ना जिससे छुटकारा कठिन हो; **—पड़ना**—नष्ट होना; **—पर दूब जमना**—असंभव घटना का होना; **—पर सिर पटकना**—असंभव बात के लिये उद्योग करना; **—पसीजना**—अत्यन्त कठोर हृदयवाले मनुष्य में दया उत्पन्न होना; **—पानी**—आँधी का समय, अंधड़; **—कला**—(पुं.) पुरानी चाल की बन्दूक जिसमें बारूद जलाने के लिये चक़मक़ पत्थर लगा रहता था; **—चटा**—(पुं.) एक प्रकार की घास, एक प्रकार का सर्प जो पत्थर चाटता है, एक प्रकार की मछली जो समुद्र की चट्टानों में चिपटी रहती है; (वि.) कृपण, कंजूस, जो घर के बाहर न निकलता हो, सर्वदा घर में रहनेवाला; **—चूर**—(पुं.) एक प्रकार का पौधा; **—फोड़**—(पुं.) एक प्रकार की वनस्पति जो पत्थरों के संध (छेद) में उत्पन्न होती है; **—फोड़**—(पुं.) पत्थर तोड़ने का उद्यम करनेवाला; **—बाज़**—(पुं.) जो किसी को पत्थर फेंककर मारता

हो; –बाजी–(स्त्री.) पत्थर फेंकने की क्रिया।
पत्थल–(हि. पुं.) देखें 'पत्थर'।
पत्नी–(सं. स्त्री.) वेद-विधान के अनुसार विवाहिता स्त्री, भार्या, जाया, दारा, सधर्मिणी; **–त्व**–(पुं.) पत्नी होने का भाव या धर्म; **–वत्**–(वि.) स्त्री की तरह, पत्नी के समान; **–व्रत**–(पुं.) अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री के साथ गमन न करने का संकल्प या नियम।
पत्य–(सं. पुं.) पति या स्वामी होने का भाव, यथा–सेनापत्य।
पत्याना–(हि. क्रि. स.) देखें 'पतिआना'।
पत्यारी–(हि. स्त्री.) पंक्ति, पाँत।
पत्योरा–(हि.पुं.) एक प्रकार की घी या तेल में बनाई हुई साग-पत्तों की पकौड़ी।
पत्र–(सं. पुं.) पत्ता, तेजपत्ता, चिड़ियों का पर, तीर में लगा हुआ पर, पन्ना, पत्री, चिट्ठी, धातु का पत्तर, लिखा हुआ कागज, पट्टा, समाचार-पत्र, पृष्ठ; **–क**–(पुं.) वृक्ष का पत्ता, तेजपत्ता, पत्तों की लड़ी, पलास का वृक्ष; **–कार**–(हिं. पुं.) समाचारपत्र का संपादक; **–कृच्छ्र**–(पुं.) वह व्रत जिसमें पत्तों का रस पीकर निर्वाह किया जाता है; **–गुप्त**–(पुं.) त्रिधारा, सेंहुड़; **–ज**–(पुं.) तेजपत्र, तेजपात; **–द्रुम**–(पुं.) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़; **–परशु**–(पुं.) सोनार या लोहार की छेनी; **–पाल**–(पुं.) लंबा छुरा या कटार; **–पाली**–(स्त्री.) कर्तनी, कैंची, वाण का पंखवाला भाग; **–पुष्प**–(पुं.) लाल तुलसी, छोटा उपहार या भेंट; **–पुष्पक**–(पुं.) भूर्जपत्र, भोजपत्र; **–पुष्पा**–(स्त्री.) लाल पत्ती की तुलसी; **–बंध**–(पुं.) फलों और पत्तों की सजावट; **–बाल**–(पुं.) क्षेपणी, नाव का डाँड़ा; **–भंग**–(पुं.) वे चित्र और रेखायें जो स्त्रियाँ शोभा या सुन्दरता बढ़ाने के लिये स्तन, कपोल आदि पर बनाती हैं; **–मंजरी**–(स्त्री.) पत्ते का अगला भाग; **–माल**–(पुं.) वेंत का पौधा; **–माला**–(स्त्री.) पत्तों की बनी हुई माला; **–यौवन**–(नपुं.) नया पत्ता, कोंपल; **–रथ**–(पुं.) पक्षी, चिड़िया; **–लता**–(स्त्री.) वह लता जिसमें समग्र प्रायः पत्ते ही पत्ते हों; **–वल्ली**–(स्त्री.) रुद्रजटा, पान; **–वाज**–(पुं.) पक्षी, चिड़िया, वाण; **–वाह**, **–वाहक**–(पुं.) वाण, तीर, चिड़िया, चिट्ठीरसाँ, हरकारा; (वि.) चिट्ठी ले जानेवाला; **–विष**–(पुं.) पत्तों से निकाला हुआ विष; **–वेष्ट**–(पुं.) कान में पहिनने का एक आभूषण, करनफूल; **–व्यवहार**–(पुं.) चिट्ठी लिखने और उत्तर पाने की क्रिया; **–शाक**–(पुं.) वह पौधा जिसके पत्तों का शाक पकाकर खाया जाता है; **–शिरा**–(स्त्री.) पत्तों की नस; **–श्रेणी**–(स्त्री.) देखें 'पत्रावली'; **–श्रेष्ठ** (पुं.) विल्वपत्र, बेलपत्र।
पत्रांग–(सं. पुं.) लाल चन्दन, बक्कम, भोजपत्र, कमलगट्टा।
पत्रांजन–(सं. पुं.) मसी, काली स्याही।
पत्रा–(हिं. पुं.) तिथिपत्र, जन्त्री, पंचांग, पन्ना, पृष्ठ।
पत्राख्य–(सं. पुं.) तेजपत्ता, तालीसपत्र।
पत्रावलि, **पत्रावली**–(सं. स्त्री.) देखें 'पत्रभंग', पत्तों की पंक्ति।
पत्रिका–(सं. स्त्री.) चिट्ठी-पत्री, कोई छोटा पत्र, समाचार-पत्र, कोई सामयिक पत्र या प्रकाशन, एक प्रकार का कपूर।
पत्रिन्–(सं. पुं.) वाण, तीर, चिड़िया, श्येन, बाज पक्षी, ताड़ का पेड़; (वि.) जिसमें पत्ते हों।
पत्रिणी–(सं. स्त्री.) नया अंकुर, कोंपल।
पत्रिवाह–(सं.पुं.) हरकारा, चिट्ठीरसाँ।
पत्री–(सं.स्त्री.) लिखित, पत्र, चिट्ठी; (पुं.) दौने का पौधा, ताड़ का पेड़, खैर का वृक्ष; (हिं. स्त्री.) हाथ में पहिनने का एक आभूषण।
पथ–(सं. पुं.) पंथ, मार्ग, व्यवहार आदि की रीति, विधान; (हिं.पुं.) पथ्य, रोग के लिये उपयुक्त हलका आहार; **–क**–(पुं.) प्रान्त, मार्ग; **–कल्पना**–(स्त्री.) जादू का खेल, इन्द्रजाल; **–गामी**, **–चारी**–(पुं.) पथिक, बटोही; **–दर्शक**–(पुं.) मार्गदर्शक; **–प्रदर्शक**–(पुं.) देखें 'पथदर्शक'।
पथनार–(हिं. स्त्री.) गोबर के उपले या गोहरे बनाने का काम, पीटन या मारने की क्रिया।
पथरकला–(हिं. पुं.) पुराने ढंग की कड़ाबीन या बंदूक जिसकी बारूद में चकमक पत्थर से आग उत्पन्न की जाती थी।
पथरचटा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की औषधि पत्थरचटा।
पथरना–(हिं.क्रि.सं.) शस्त्र को पत्थर पर रगड़कर पैना करना।
पथराना–(हिं.क्रि.अ.) सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना, सजीव न रहना, स्तब्ध या जड़ होना।
पथरी–(हिं. स्त्री.) अश्मरी नामक रोग, मूत्राशय अथवा गुरदे में पत्थर की तरह के छोटे-बड़े टुकड़े पड़ जाने का रोग, कटोरे के आकार का पत्थर का बना हुआ पात्र, चकमक पत्थर, वह पत्थर जिस पर लोहे की चोट पड़ने से आग निकलती है, चकमक पत्थर, एक प्रकार की मछली।
पथरीला–(हिं. वि.) पत्थरों से युक्त, जिसमें पत्थर हों।
पथरौटी–(हिं. स्त्री.) पत्थर की कटोरी, पथरी।
पथिक–(सं. पुं.) मार्ग पर चलनेवाला, यात्री; **–शाला**–(स्त्री.) सराय, यात्रियों के ठहरने की धर्मशाला।
पथिका–(सं.स्त्री.) काली द्राक्षा, मुनक्का।
पथिकार–(सं. वि.) मार्ग बनानेवाला।
पथिकाश्रम–(सं. पुं.) पथिकों के ठहरने का स्थान।
पथिन्–(सं. पुं.) पथ, मार्ग, पथ पर चलनेवाला।
पथिल–(सं. पुं.) बोझ ढोनेवाला, पथिक, यात्री।
पथी–(हिं. पुं.) पथिक, यात्री, मार्ग पर चलनेवाला।
पथु–(हिं. पुं.) पथ, मार्ग।
पथेया–(हिं. पुं.) देखें 'पाथेय'।
पथेरा–(हिं.पुं.) ईंट पाथनेवाला, कुम्हार।
पथौरा–(हिं. पुं.) गोबर पाथने का स्थान।
पथ्य–(सं.वि.) हितकर (चिकित्सा); (पुं.) वह हलका और शीघ्र पचनेवाला भोजन जो गी के लिये लाभकारक हो, सेंधा नमक, छोटी हर्रे, उसका पेड़, हित, कल्याण, मंगल; (मुहा.) **–से रहना**–संयम से रहना; **–करी**–(स्त्री.) एक प्रकार का लाल धान; **–का**–(स्त्री.) मेथिका, मेथी; **–भोजन**–(पुं.) लाभकारक आहार; **–शाक**–(पुं.) चौलाई का साग।
पथ्या–(सं. स्त्री.) हरीतकी, हर्रे, आर्या-छन्द का एक भेद।
पथ्यापथ्य–(सं.वि.,पुं.) रोग के लिए हितकर और अहितकर (द्रव्य)।
पथ्यावक्त्र–(सं. पुं.) मात्रावृत्त का एक भेद।
पद–(सं. पुं.) पैर, पाँव, डग, कदम, पैर का चिह्न, प्रदेश, व्यवसाय, काम, रक्षा, स्थान, चिह्न, किरण, श्लोक या छन्द का चौथा भाग, चरण; (जूता, छाता,

वस्त्र, पात्र, आभूषण आदि) द्रव्य जो ब्राह्मणोंको दान में दिया जाता है, छः अंगुलों की नाप, ऋग्वेद या यजुर्वेद का पद-पाठ, विभक्तियुक्त शब्द या धातु, दर्जा, मोक्ष, निर्वाण, गीत, भजन ।

पदक–(सं. पुं.) एक प्रकार का आभूषण जिस पर किसी देवता के पैरों का चिह्न बना हो, सोना-चाँदी अथवा अन्य धातु का बना हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा जो कोई विशिष्ट या मानक कार्य करने के उपलक्ष म किसी व्यक्ति या समाज को दिया जाता है, (यह प्रशंसा-सूचक उपहार या पुरस्कार होता है।)

पदग–(सं.पुं.) पैदल चलनेवाला प्यादा ।

पदगोत्र–(सं. पुं.) भरद्वाज आदि चार ऋषियों का गोत्र ।

पदचतुरार्द्ध–(सं. पुं.) विषम वृत्त का एक भेद ।

पदचर–(सं. पुं.) पैदल, प्यादा ।

पदचारी–(सं. वि.) पैदल चलनेवाला ।

पदचिह्न–(सं. पुं.) वह चिह्न जो चलते समय भूमि पर बन जाता है ।

पदच्छेद–(सं. पुं.) सन्धि और समास-युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद का व्याकरण के नियमों के अनुसार विवरण बतलाना ।

पदच्युत–(सं. वि.) अपने पद या स्थान से हटा या गिरा हुआ ।

पदच्युति–(सं. स्त्री.) अपने पद से हटने या गिरने की क्रिया ।

पदज–(सं. पुं.) पैर की अँगुली, शूद्र; (वि.) जो पैर से उत्पन्न हो ।

पदज्ञ–(सं. वि.) मार्ग जाननेवाला ।

पदतल–(सं. पुं.) पैर का तलवा ।

पदता, पदत्व–(सं. स्त्री., पुं.) ओहदा ।

पदत्याग–(सं.पुं.) अपना पद या ओहदा छोड़ने की क्रिया ।

पदत्राण–(सं. पुं.) पैरों की रक्षा करने-वाला, जूता ।

पदत्रान–(हिं. पुं.) देखें 'पदत्राण' ।

पदत्री–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया ।

पददलित–(सं. वि.) पैरों से कुचला हुआ, दबाकर हीन किया हुआ ।

पददारिका–(सं.स्त्री.) पैर का एक रोग, बवाई ।

पदन्यास–(सं. पुं.) गमन करना, चलना, पैर रखने की एक मुद्रा, गोखरू, पद रचने का काम ।

पदपंक्ति–(सं.स्त्री.) पदश्रेणी, पैर का चिह्न

पदपद्धति–(सं. स्त्री.) पैर के चिह्न ।

पदपलटी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का नाच ।

पदबन्ध–(सं. पुं.) पद-चिह्न ।

पदभंजिका–(सं.स्त्री.) पंजिका, टिप्पणी ।

पदम–(हिं.पुं.) बादाम की जाति का एक जंगली पेड़; –**चल**–(पुं.) रेवंद वृक्ष; –**नाभ**–(पुं.) पद्मनाभ, विष्णु, सूर्य ।

पदमाकर–(हिं. पुं.) जलाशय, तालाब ।

पदमाला–(सं. स्त्री.) पदश्रेणी, पैरों के चिह्न ।

पदमूल–(सं. पुं.) पैर का तलवा ।

पदमैत्री–(सं.स्त्री.) (काव्य म) अनुप्रास ।

पदयोजना–(सं. स्त्री.) कविता बनाने के लिये शब्दों को जोड़ना ।

पदर–(हिं. पुं.) ड्योढ़ीदारों के बैठने का स्थान ।

पदरथी–(सं. पुं.) जूता, खड़ाऊँ ।

पदरिपु–(हिं. पुं.) कंटक, काँटा ।

पदवाद्य–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल ।

पदवाना–(हिं.क्रि.स.) पादने का काम दूसरे से कराना ।

पदवाय–(सं. वि.) मार्ग दिखलानेवाला ।

पदवि–(सं. स्त्री.) पद्धति, परिपाटी, पन्थ, उपाधि, नियोग ।

पदविग्रह–(सं.पुं.) पदच्छेद ।

पदविच्छेद–(सं. पुं.) पदों का विच्छेद, पदों का पदच्छेद ।

पदवी–(सं. स्त्री.) पद्धति, परिपाटी, विधि, उपाधि ।

पदसमूह–(सं. पुं.) कविता का चरण, पदपाठ ।

पदस्थ–(सं. वि.) जो किसी पद पर हो, जो अपने पैरों के बल खड़ा हो ।

पदांक–(सं. पुं.) पैरों का चिह्न ।

पदांत–(सं. पुं.) पद का शेष, पद का अन्त ।

पदांतर–(सं. पुं.) स्थानान्तर, दूसरा पद ।

पदाति, पदातिक–(सं. पुं.) पदल सिपाही, प्यादा; (वि.) पैदल चलनेवाला ।

पदातिका–(हिं. पुं.) पदल सेना ।

पदाधिकारी–(सं. पुं.) वह जो किसी पद पर नियुक्त हो, अधिकारी ।

पदाना–(हिं.क्रि.स.) पादने का काम दूसरे से कराना, बहुत दिक करना, छकाना ।

पदानुराग–(सं.पुं.) देव-चरणों में भक्ति ।

पदार–(सं. पुं.) पाद-धूलि, पैर की धूल ।

पदारथ–(हिं. पुं.) देखें 'पदार्थ' ।

पदारविंद–(सं. पुं.) पद्मरूपी पैर ।

पदार्घ्य–(सं. पुं.) वह जल जो किसी अतिथि या पूज्य के पैर धोने के लिये दिया जाय ।

पदार्थ–(सं. पुं.) धर्म, सत्त्व, वस्तु, पुराण के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, वैद्यक के अनुसार रस, गुण, विपाक, वीर्य और शक्ति, पद का अर्थ, शब्द का आशय, सांख्य-दर्शन में प्रकृति, विकृति, प्रकृति-विकृति और अनुनव–ये चार प्रकार के पदार्थ माने गये हैं, आधु-निक नैयायिकों के मत से द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ हैं ।

पदार्थवाद–(सं. पुं.) वह सिद्धान्त जिसमें भौतिक पदार्थों की ही सत्ता मानी जाती है और ईश्वर तथा आत्मा का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जाता ।

पदार्थ-विज्ञान–(सं. पुं.) वह विज्ञान या शास्त्र जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों, और उनके व्यापारों आदि का ज्ञान प्राप्त होता है ।

पदार्थ-विद्या–(सं. स्त्री.) वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के गुणावगुण का विचार करते हुए उनके कार्य आदि का वर्णन किया जाता है ।

पदार्पण–(सं. पुं.) किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया। (इस शब्द का प्रयोग केवल माननीय व्यक्ति के लिये किया जाता है ।)

पदावनत–(सं.वि.) विनीत, नम्र, जो पैरों के बल झुका हो, जो प्रणाम करता हो।

पदावली–(सं. स्त्री.) पद-समूह, वाक्यों की श्रेणी, भजनों का संग्रह ।

पदाश्रित–(सं. वि.) शरण में आया हुआ, जो आश्रय में रहता हो ।

पदास–(हिं.स्त्री.) पादने का भाव, पादने की प्रवृत्ति ।

पदासन–(सं. पुं.) पादपीठ, जिस पर पैर रखा जाय ।

पदासा–(हिं.वि.) जिसे पादने की प्रवृत्ति हो

पदिक–(सं. पुं.) पदाति, पैदल सेना, गले में पहिनने का एक प्रकार का गहना ।

पदी–(हिं. पुं.) पैदल, प्यादा ।

पदु–(हिं. पुं.) पद ।

पदुम–(हिं.पुं.) देखें 'पद्म', घोड़े के शरीर पर का एक चिह्न ।

पदुमिनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पद्मिनी' ।

पदोड़ा–(हिं. पुं.) जो बहुत पादता हो, डरपोक, कायर ।

पदोदक–(सं. पुं.) पैर धोने का जल, चरणामृत ।

पद्धटिका–(सं. स्त्री.) एक मात्रिकछन्द ।

पद्धड़ी–(हिं स्त्री.) पद्धटिका ।

पद्धति–(सं. स्त्री.) पथ, पंक्ति, वह ग्रन्थ जिसमें किसी मौलिक पुस्तक का तात्पर्य समझाया गया है, पदवी, प्रणाली, रीति, ढंग, परिपाटी, कार्यप्रणाली, विधि, विधान, कर्म या संस्कार की विधि ।

पद्धरि(री)–(हिं. पुं.) देखें 'पद्धटिका'।

पद्म–(सं. पुं.) कमल का फूल या पौधा, हाथी के माथे या सूँड़ पर बनाये हुए चित्र, सेना का पद्मव्यूह, पुराण के अनुसार एक कल्प का नाम, सीसक, सीसा, कुबेर की नौ निधियों में से एक, पुष्करमूल, कुट नाम की औषधि, गणित में सौ नील की संख्या, एक वर्णवृत्त का नाम, साँप के फन पर का चित्रित चिह्न, शरीर पर का सफेद दाग, एक प्रकार का गले का गहना, विष्णु का एक आयुध, सामुद्रिक के अनुसार पैर पर का एक शुभ चिह्न, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, एक प्रकार का सर्प, तन्त्र के अनुसार शरीर के भीतरी भाग का एक कल्पित कमल, बलदेव का एक नाम, विभिन्न प्रकार के रतिबन्धों में से एक, एक नरक का नाम, एक प्राचीन नगर का नाम; **–क**–(पुं.) कुट नाम की औषधि, सफेद कोढ़; **–कंद**–(पुं.) कमल की जड़, भिस्स, भसींड़; **–कर**–(पुं.) पद्मपाणि, विष्णु; **–किंजल्क**–(पुं.) कमल का केसर; **–कीट**–(पुं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा; **–केतन**–(पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; **–केतु**–(पुं.) मृणाल के आकार का एक पुच्छल तारा; **–केशर**–(पुं.) कमल का पुष्प-राग; **–कोष**–(पुं.) कमल (फूल) के बीच का छत्ता; **–गर्भ**–(पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, शिव, महादेव, कमल का भीतरी भाग; **–गुणा**–(स्त्री.) लक्ष्मी; **–गृहा**–(स्त्री.) पद्मालया, लक्ष्मी का एक नाम; **–चारिणी**–(स्त्री.) शमी वृक्ष, हलदी, लाख, लाक्षा, गेंदा; **–ज**–(पुं.) चतुर्मुख, ब्रह्मा; **–तंतु**–(पुं.) मृणाल, कमल की डंडी; **–दर्शन**–(पुं.) श्रीवास, लोहबान; **–नाभ**–(पुं.) विष्णु, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक सर्प का नाम, एक स्तम्भन-मंत्र; **–नाभि**–(पुं.) पद्मनाभ, विष्णु; **–नाल**–(पुं.) मृणाल, कमलदंड; **–निधि**–(स्त्री.) कुबेर की नौ निधियों में से एक; **–पत्र**–(पुं.) पुष्करमूल, कमलदल; **–पाणि**–(पुं.) ब्रह्मा, बुद्ध की एक मूर्ति, सूर्य; **–पाद**–(पुं.) शंकराचार्य के एक प्रधान शिष्य का नाम; **–पुष्प**–(पुं.) कनेर का पेड़, एक प्रकार की चिड़िया; **–प्रिया**–(स्त्री.) जरत्कारु मुनि की पत्नी, गायत्री रूपी महादेवी; **–बंध**–(पुं.) एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें अक्षर इस प्रकार लिख जाते हैं कि उनमें कमल का रूप बन जाता है; **–बंधु**–(पुं.) सूर्य, भ्रमर, भौंरा; **–भास,–भू**–(पुं.) विष्णु; **–मय**–(वि.) पद्मयुक्त, पद्मपूर्ण; **–मालिनी**–(स्त्री.) गंगा; **–माली**–(पुं.) एक राक्षस का नाम; **–मुख**–(वि.) कमल के समान मुखवाला; **–मुखी**–(स्त्री.) भटकटैया, दूब; **–मुद्रा**–(पुं.) एक तान्त्रिक मुद्रा; **–योनि**–(पुं.) ब्रह्मा, बुद्ध का एक नाम; **–रज**–(पुं.) कमल का केशर; **–राग**–(हिं. पुं.) लाल रंग का प्रसिद्ध मानिक; **–रेखा**–(स्त्री.) सामुद्रिक के अनुसार हथेली पर की एक शुभ रेखा; **–रेणु**–(पुं.) पद्मकेसर; **–लांछन**–(पुं.) ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर, बुद्ध; **–लांछना**–(स्त्री.) तारा, लक्ष्मी, सरस्वती; **–वासा**–(स्त्री.) लक्ष्मी; **–बीज**–(पुं.) कमल का बीज, कमलगट्टा; **–बीजाभ**–(पुं.) मखान्न फल, मखाना; **–व्यूह**–(पुं.) एक प्रकार की समाधि, प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये सेना स्थापित करने की एक विधि, (इसमें व्यूह-रचना कमल के आकार की हो जाती थी); **–शायिनी**–(स्त्री.) एक जलचर पक्षी; **–समासन**, **–संभव**–(पुं.) ब्रह्मा; **–सूत्र**–(पुं.) कमल के फूलों की माला; **–स्नुषा**–(स्त्री.) गंगा, दुर्गा; **–हास**–(पुं.) विष्णु।

पद्मांतर–(सं. पुं.) कमल के पत्ते ।

पद्मा–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, मनसादेवी, कमलदण्ड, मजीठ, भादों सुदी एकादशी, कुसुंभ का फूल, लवंग, गेंदे का पौधा ।

पद्माकर–(सं. पुं.) बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल उत्पन्न होते हैं ।

पद्माक्ष–(सं. पुं.) कमलगट्टा, विष्णु ।

पद्माख–(हिं. पुं.) पदम काठ औषधि ।

पद्माधीश–(सं. पुं.) विष्णु ।

पद्मालय–(सं. पुं.) ब्रह्मा ।

पद्मालया–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, गंगा, लवंग ।

पद्मावती–(सं. स्त्री.) मनसा देवी, पद्मादेवी, गेंदे का पौधा, पटना नगर का प्राचीन नाम, लक्ष्मी, स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम, युधिष्ठिर की एक रानी का नाम ।

पद्मासन–(सं. पुं.) ब्रह्मा शिव, सूर्य, मैथुन करने का एक आसन, योग-साधन का एक आसन जिसमें बाईं जाँघ पर दाहिनी जाँघ रखी जाती है और छाती पर अँगूठा रखकर नासिका का अग्रभाग देखा जाता है, पद्म के आकार का धातु-निर्मित, आसन ।

पद्मिनी–(सं. स्त्री.) छोटा पद्म, कमलिनी, कोक शास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से सर्वश्रेष्ठ भेद, सरोवर, तालाव, पद्म, कमल, कमलदण्ड, हथिनी, चित्तौर की एक प्रसिद्ध रानी का नाम, लक्ष्मी ।

पद्मेशय–(हिं. पुं.) विष्णु ।

पद्मोत्तम, पद्मोत्तर–(सं. पुं.) कुसुंभ का फूल।

पद्मोद्भव–(सं. पुं.) ब्रह्मा ।

पद्मोद्भवा–(सं. स्त्री.) मनसा देवी ।

पद्य–(सं. पुं.) कविता, काव्य, श्लोक, पिंगल के नियमों के अनुसार चार चरणोंवाला छन्द; (पद्य दो प्रकार का होता है। जिसके अक्षर मान होते हैं उसको वृत्त तथा जो मात्रा के अनुसार होता है उसको जाति कहते हैं); वह कीचड़ जो सूखा न हो, शूद्र; (वि.) पैरों से संबंध रखनेवाला, जिसमें कविता के चिह्न हों ।

पद्यमय–(सं. वि.) पद्यपूर्ण ।

पद्या–(सं. स्त्री.) स्तुति, प्रशंसा, मार्ग शर्करा, गुड़ ।

पद्यात्मक–(सं. वि.) जो पद्यमय या छंदोबद्ध हो ।

पद्रथ–(सं. पुं.) पैदल चलनेवाला ।

पद्व–(सं. पुं.) भूलोक, रथ, मार्ग ।

पधरना–(हिं. क्रि.अ.) किसी प्रतिष्ठित या पूज्य व्यक्ति का आना ।

पधराना–(हिं. क्रि. स.) सम्मानपूर्वक ले जाना, किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाना ।

पधरावनी–(हिं. स्त्री.) आदरपूर्वक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को ले जाकर बैठान की क्रिया, पधारने की क्रिया, किसी देवता का स्थापन ।

पधारना–(हिं. क्रि.अ.स.) चला जाना, आ पहुँचना, गमन करना, आना, चलना, प्रतिष्ठित करना, आदरपूर्वक बैठाना ।

पनंग–(हिं. पुं.) सर्प, साँप ।

पन–(हिं. पुं.) संकल्प, प्रतिज्ञा, आयु के चार भागों में से एक, (ये चार विभाग, बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था हैं); (हिं. प्रत्य.) भाववाचक संज्ञा बनाने में प्रयुक्त होता है,

यथा—कड़ापन, लड़कपन ।
पनकटा—(हिं. पुं.) वह मनुष्य जो खेतों में इधर-उधर सिंचाई के लिये पानी ले जाता है।
पनकपड़ा—(हिं. पुं.) पानी में भिगाया हुआ लत्ता जो शरीर में कहीं पर कट जाने के घाव पर बाँधा जाता है।
पनकाल—(हिं. पुं.) अति वर्षा के कारण होनेवाला अकाल ।
पनकुट्टी—(हिं. स्त्री.) पान कूटने का छोटा खरल ।
पनकौवा—(हिं. पुं.) एक प्रकार का जलपक्षी ।
पनगनि—(हिं. स्त्री.) सर्पिणी ।
पनगाचा—(हिं.पुं.)पानी से सींचा हुआ खेत।
पनघट—(हिं. पुं.) पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हैं।
पनच—(हिं. स्त्री.) प्रत्यंचा, धनुष की डोरी, चिल्ला ।
पनचक्की—(हिं. स्त्री.)पानी की शक्ति से चलाई जानेवाली चक्की या कल ।
पनचोरा—(हिं. पुं.)वह पात्र जिसकी पेंदी चौड़ी और मुँह छोटा हो ।
पनडब्बा—(हिं. पुं.)पान रखने का डब्बा।
पनडुब्बा—(हिं. पुं.) पानी में गोता लगानेवाला, पानी में गोता लगाकर मछली पकड़नेवाली चिड़िया, जलाशय में रहनेवाला एक प्रकार का कल्पित प्रेत, मुरगाबी ।
पनडुब्बी—(हिं. स्त्री.) पानी में डुबकी लगाकर मछली पकड़नेवाली चिड़िया, एक प्रकार का यंत्र-चालित छोटा जंगी जहाज जो पानी में डूबकर चलता है ।
पनपना—(हिं. क्रि. अ.) पानी मिलने के कारण फिर से हरा हो जाना, रोग से मुक्त होकर स्वस्थ होना ।
पनपनाहट—(हिं.स्त्री.) पन-पन का शब्द।
पनपाना—(हिं. क्रि. स.) ऐसा कार्य करना जिसमें कोई वस्तु पनपे ।
पनफर—(सं. पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न से दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ और ग्यारहवाँ स्थान ।
पनबट्टा—(हिं. पुं.) पान के बीड़े रखने का छोटा डिब्बा ।
पनबिछिया—(हिं. स्त्री.)डंक मारनेवाला पानी में रहनेवाला एक कीड़ा ।
पनभरा—(हिं.पुं.)पानी भरनेवाला,पनहरा।
पनलगवा—(हिं. पुं.) देखें 'पनकटा' ।
पनव—(हिं. पुं.) देखें 'प्रणव' ।
पनवाँ—(हिं. पुं.)हुमेल के बीच का पत्र ।
पनवाड़ी—(हिं. स्त्री.) पान का खेत, पान बेचनेवाला, तमोली ।
पनवारा—(हिं. पुं.) पत्तों की बनी हुई पत्तल जिस पर रखकर लोग भोजन करते हैं, एक आदमी के खाने के लिए पत्तल-भर भोजन ।
पनस—(सं. पुं.) कटहल ।
पनसखिया—(हिं. स्त्री.)एक प्रकार का पौधा।
पनसतालिका,पनसनालिका—(सं.पुं.)कटहल।
पनसल्ला—(हिं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ प्यासे लोगों को पानी पिलाया जाता है, पनसाल, प्याऊ ।
पनसाखा—(हिं. पुं.) एक प्रकार की मशाल जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ जलती हैं ।
पनसार—(हिं. पुं.) पानी से भली भाँति सींचने का काम ।
पनसारी—(हिं. पुं.) देखें 'पँसारी' ।
पनसाल—(हिं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ सर्वसाधारण को पानी पिलाया जाता है, पौसरा, पानी की गहराई नापने की क्रिया।
पनसिका—(सं. स्त्री.) कान के भीतर फुन्सी होने का रोग।
पनसी—(सं. स्त्री.) पनसिका ।
पनसुइया—(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी नाव जिस पर एक ही खेनेवाला दोनों डाँड़े चला सकता है ।
पनसूर—(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाजा।
पनसेरी—(हिं. स्त्री.) पाँच सेर की बाट, पंसेरी ।
पनसोई—(हिं. स्त्री.) देखें 'पनसुइया' ।
पनहड़ा—(हिं. पुं.) तमोली का पानी रखने का पात्र ।
पनहरा—(हिं.पुं.) पानी भरनेवाला नृत्य, पनभरा, सोनार की पानी रखने की अथरी ।
पनहा—(हिं. पुं.) कपड़े, भीत आदि की चौड़ाई, गूढ़ आशय, मर्म, चोरी का पता लगानेवाला, चुराई हुई वस्तु को लौटा देने के लिये दिया जानेवाला पुरस्कार।
पनहारा—(हिं. पुं.) वह जो पानी भरने का काम करता हो, पनभरा।
पनहिया—(हिं. स्त्री.) देखें 'पनही', जूता।
पनहियाभद्र—(हिं. पुं.) सिर पर जूतों की मार, सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायँ।
पनही—(हिं. स्त्री.) उपानह, जूता, जूती।
पना—(हिं. पुं.) आम, इमली आदि से बनाया हुआ एक प्रकार का शरबत, पानक, पन्ना ।
पनाती—(हिं. पुं.) पुत्र अथवा कन्या का नाती, पोते अथवा नाती का लड़का ।
पनारा, पनाला—(हिं. पुं.) देखें 'परनाला'।
पनासना—(हिं. क्रि. स.) पालन-पोषण करना ।
पनाह—(फा. स्त्री.) रक्षा, परित्राण, बचाव, शरण ।
पनिक—(हिं. पुं.) जुलाहों का कैंची के आकार का एक अस्त्र।
पनिघट—(हिं. पुं.) देखें 'पनघट' ।
पनिच—(हिं. पुं.) देखें 'पनच' ।
पनिया—(हिं. वि.) पानी में उत्पन्न, पानी मिला हुआ, पानी में रहनेवाला; —सोत—(पुं.) तालाब या कुआँ जिसमें पानी का सोता हो; (क्रि.) बहुत गहरा ।
पनियाला—(हिं. पुं.) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा, एक प्रकार का फल ।
पनिहा—(हिं. वि.) पानी में रहनेवाला, जिसमें पानी मिला हो, जल-संबंधी; (पुं.) जासूस ।
पनिहार—(हिं. पुं.) देखें 'पनहरा' ।
पनी—(हिं. पुं.) प्रतिज्ञा करनेवाला पुरुष ।
पनीर—(फा. पुं.) फाड़े हुए दूध का छेना, दही आदि के मिश्रण से बनाया जानेवाला एक खाद्य पदार्थ ।
पनीरी—(हिं. स्त्री.) वे छोटे पौधे जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में रोपे जाते हैं, बेहन की क्यारी ।
पनीला—(हिं. स्त्री.) जलयुक्त, जिसमें पानी मिला हो ।
पनु—(सं. स्त्री.) स्तुति, प्रशंसा ।
पनुआँ—(हिं. पुं.) कड़ाहे के धोवन का शरबत; (वि.)फीका,जिसमें मिठास कम हो ।
पनेथी—(हिं. स्त्री.)हाथों में पानी लगाकर पोई हुई रोटी ।
पनेहरा—(हिं. पुं.) देखें 'पनहरा' ।
पनेला—(हिं. पुं.) गरम कपड़ों के नीचे अस्तर देने का चिकना गाढ़ा कपड़ा।
पनौआ—(हिं.पुं.)पान के पत्तों की पकौड़ी।
पनौटी—(हिं. स्त्री.) पान रखने की पिटारी, पानदान ।
पन्न—(सं. वि.) गिरा हुआ, पड़ा हुआ, नष्ट, गत ।
पन्नई—(हिं. वि.) पन्ने के रंग का, गहरे हरे रंग का ।
पन्नग—(सं. पुं.) सर्प, साँप, पद्मकाष्ठ; (हिं. पुं.) पन्ना, मरकत मणि; —केसर—(पुं.) नागकेसर का फूल; —नाशन—(पुं.) गरुड़; —पति—(पुं.) शेषनाग ।

पन्नगारि, पन्नगाशन–(सं. पुं.) गरुड़ ।
पन्नगी–(सं. स्त्री.) साँपिन, मनसादेवी ।
पन्ना–(हिं. पुं.) हरे रंग का एक प्रसिद्ध रत्न, पुस्तक के दो पृष्ठ ।
पन्नी–(हिं. स्त्री.) राँगे या पीतल के बहुत पतले पत्र, सोनहला या रुपहला कागज, बारूद की एक तौल जो आधसेर के बराबर होती है; (पुं.) पठानों की एक जाति; **–साज**–(पुं.) पन्नी बनानेवाला; **–साजी**–(स्त्री.) पन्नी बनाने का काम, पेशा आदि ।
पन्य–(सं. वि.) प्रशंसा करने योग्य ।
पन्यारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सदाबहार जंगली वृक्ष ।
पन्हारा–(हिं. स्त्री.) गेहूँ के खेत में होनेवाला एक तृण ।
पन्हैयाँ–(हिं. स्त्री.) देखें 'पनही' ।
पपटा–(हिं. पुं.) देखें 'पपड़ा', छिलका ।
पपड़ा–(हिं. पुं.) लकड़ी का पतला सूखा छिलका, चिप्पड़, रोटी के ऊपर का छिलका ।
पपड़िया–(हिं. वि.) पपड़ीला, पपड़ीसंबंधी; **–कत्था**–सफेद कत्था ।
पपड़ियाना–(हिं.क्रि.अ.) बहुत सूख जाना, किसी वस्तु की परत का सूखकर सिकुड़ जाना ।
पपड़ी, पपरी–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु के ऊपर की परत जो सूखकर कड़ी हो गई हो, घाव के ऊपर की परत, खुरंड, छोटा पापड़, एक प्रकार की मिठाई ।
पपड़ीला–(हिं. वि.) जिस पर पपड़ी जमी हो, पपड़ीयुक्त ।
पपनी–(हिं. स्त्री.) पलक के सिरे के बाल, बरौनी ।
पपहा–(हिं. पुं.) धान की उपज को हानि पहुँचानेवाला एक कीड़ा, एक प्रकार का घुन ।
पपी–(सं. पुं.) सूर्य, चन्द्रमा ।
पपीता–(हि.पुं.) रेंड़ की तरह का एक पौधा जिसका फल पकाकर खाया जाता है ।
पपीहा–(हिं. पुं.) कीड़ा खानेवाला एक पक्षी जो वसन्त और वर्षा ऋतु में बहुधा आम के वृक्षों पर बैठकर बड़े मीठे स्वर में गाता है, चातक, सितार का लोहे का तार ।
पपैया–(हिं.पुं.) आम का छोटा पौधा, अमोला ।
पपोटन–(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसके पत्ते बाँधने से फोड़ा पक जाता है ।
पपोटा–(हिं. पुं.) आँख के ऊपर का चमड़े का परदा, पलक ।
पपोरना–(हिं.क्रि.स.) बाँह ऐंठकर उसकी निहारना ।
पपोलना–(हिं.क्रि.अ.) चबाना, मुँह चलाना ।
पबई–(हिं.स्त्री.) मैना की जाति का एक पक्षी ।
पबारना–(हिं. क्रि. स.) फेंक देना ।
पबि–(हिं. पुं.) वज्र ।
पब्बय–(हिं. पुं.) पर्वत, पहाड़ ।
पमार–(हिं. पुं.) अग्निकुल क्षत्रियों की एक शाखा, परमार, पवाँर ।
पम्मन–(हिं.पुं.) एक प्रकार का मोटा गेहूँ ।
पयस्, पय–(सं.पुं.) दूध, जल, अन्न, वीर्य, ओज, शक्ति ।
पयकुंड–(हिं. पुं.) दूध या जल रखने का घड़ा ।
पयद–(हिं. पुं.) मेघ ।
पयधि–(हिं. पुं.) देखें 'पयोधि', समुद्र ।
पयनिधि–(हिं. पुं.) देखें 'पयोनिधि' ।
पयपान–(हि पुं.) दुग्ध-पान, दूध पीना ।
पयपालिनी–(हिं. स्त्री.) उशीर, खस ।
पयस्वान्–(हिं. वि.) पानीवाला ।
पयस्विनी–(सं. स्त्री.) नदी, दूध देनेवाली गाय, बकरी, धेनु, रात्रि, गायत्री रूपा महादेवी ।
पयस्वी–(हिं.वि.) पानीवाला, जिसमें जल हो ।
पयहारी–(हिं. पुं.) वह तपस्वी या साधु जिसका आहार केवल दूध हो ।
पयादा–(हिं. पुं.) देखें 'प्यादा' ।
पयान–(हिं. पुं.) गमन, यात्रा, जाना ।
पयार, पयाल–(हिं. पुं.) धान के सूखे डंठल जिसमें से दाने निकाल लिये गये हों, पुआल; (मुहा.) **–झाड़ना**–व्यर्थ परिश्रम करना ।
पयोगल–(सं. पुं.) घनोपल, ओला ।
पयोज–(सं. पुं.) पद्म, कमल ।
पयोजन्मा–(सं. पुं.) मेघ, बादल, मोथा ।
पयोद–(सं.पुं.) मेघ, बादल, मुस्तक, मोथा ।
पयोदन–(हिं. पुं.) दूध-भात ।
पयोदेव–(सं. पुं.) वरुण देवता ।
पयोधर–(सं. पुं.) स्त्री का स्तन, मोथा, नारियल, तालाब, मदार, कसेरू, पवत, एक प्रकार की ऊख, समुद्र, गाय का थन, दोहा छन्द का एक भेद, छप्पय छन्द का एक भेद ।
पयोधरा–(सं. स्त्री.) जल की धारा ।
पयोधि–(सं. पुं.) समुद्र ।
पयोनिधि–(सं.पुं.) देखें 'पयोधि', समुद्र ।
पयोमुख–(सं. वि.) दुग्धपति, दुधमुँहा ।
पयोमुच्–(सं. पुं.) मेघ, मोथा ।
पयोवाह–(सं. पुं.) देखें 'पयोमुच्' ।
परंच–(सं.अव्य.) तो भी, और भी, परन्तु ।
परंतप–(सं.वि.) शत्रु को संतप्त करनेवाला ।
परंतु–(सं.अव्य.) किसी उपवाक्य के साथ दूसरे उपवाक्य का वैपरीत्य-भाव-सूचक शब्द, किंतु, लेकिन ।
परंपरा–(हिं. स्त्री.) एक के पीछे दूसरा, सन्तति, वंश-क्रम; **–गत**–(वि.) परंपरा से चला आता हुआ ।
पर–(सं. पुं.) केवल ब्रह्म, मोक्ष, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, शत्रु, ब्रह्मा की आयु; (वि.) श्रेष्ठ, जो बाद का हो, अन्य, दूसरा; (हिं.अव्य.) पश्चात्, पीछे, परन्तु, (प्रत्य.) अधिकरण कारक प्रत्यय; (फा.पुं.) डैना, पंख; (मुहा.) **–कट जाना**–शक्ति का ह्रास होना; **–जमना**–उपद्रव खड़ा करने के लिये उद्यत होना; **–जलना**–साहस न होना; **–न मारना**–पैर न रख सकना ।
परई–(हिं. स्त्री.) मिट्टी का पात्र जो दिये से कुछ बड़ा होता है ।
परकटा–(हिं. वि.) जिसके पर कटे हों ।
परकना–(हिं. क्रि. अ.) अभ्यास पड़ना, हिलना-मिलना, चसका लगना ।
परकर्म–(सं. पुं.) दूसरे का काम ।
परकलत्र–(सं. पुं.) दूसरे की स्त्री ।
परकसना–(हिं.क्रि.अ.) प्रकाशित होना, प्रकट होना ।
परकाजी–(हिं. वि.) परोपकारी, दूसरे का उपकार करनेवाला ।
परकान–(हिं.पुं.) तोप का एक अंग, मूठ ।
परकाना–(हिं. क्रि. स.) परचाना, धड़का खोलना, चसका लगाना ।
परकार–(फा. पुं.) वृत्त खींचने का एक प्रसिद्ध आला ।
परकार्य–(सं. पुं.) दूसरे का कार्य ।
परकाल–(हिं. पुं.) देखें 'परकार' ।
परकाला–(हिं. पुं.) सीढ़ी, देहली, चौखट, दहलीज, खण्ड, टुकड़ा, काँच का टुकड़ा, चिनगारी; (मुहा.) **आफत का परकाला**–प्रचंड या भयंकर मनुष्य ।
परकास–(हिं. पुं.) देखें 'प्रकाश' ।
परकासना–(हिं. क्रि. स.) प्रगट करना, प्रकाशित करना ।
परकिति–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रकृति' ।
परकीय–(सं. वि.) पराया, दूसरे का ।
परकीया–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो अपने पति को छोड़कर गुप्तरूप से अन्य पुरुष से प्रेम करती हो ।
परकृति–(सं.स्त्री.) दूसरे का किया हुआ काम ।
परकोटा–(हिं.पुं.) गढ़ की रक्षा के लिये इसके चारों ओर बनाई हुई भीत, धुस,

बाँघ।

परख–(हिं. स्त्री.) गुण-दोष को सम्यक् ज्ञात करने के लिये उसकी अच्छी तरह देख-भाल या जाँच, परीक्षा, भला-बुरा जानने की शक्ति, पहचान।

परखना–(हिं.क्रि.स.) जाँच करना, परीक्षा करना, गुण-दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखना-भालना, भला-बुरा पहिचानना, प्रतीक्षा करना, आसरा देखना।

परखवाना–(हिं.क्रि.स.) दूसरे से जँचवाना या परीक्षा कराना।

परखवैया–(हिं.पुं.) परखनेवाला, जाँचनेवाला।

परखाई–(हिं.स्त्री.) परखने का काम या शुल्क।

परखाना–(हिं.क्रि.स.) परखने का काम दूसरे से कराना, परीक्षा कराना, जँचवाना।

परखैया–(हिं. पुं.) परखनेवाला।

परगट–(हिं. वि.) देखें 'प्रकट'।

परगटना–(हिं.क्रि. अ.,स.) प्रगट करना, खुलना, प्रगट होना।

परगत–(सं.वि.) दूसरे के द्वारा अधिकृत।

परगनी, परगहनी–(हिं. स्त्री.) सोनारों का एक औजार जिसमें चाँदी या सोने की गुल्लियाँ ढाली जाती हैं।

परगसना–(हिं. क्रि. अ.) प्रगट होना, प्रकाशित होना।

परगाछा–(हिं.पुं.) दूसरे पेड़ों पर लगनेवाला परजीवी पौधा।

परगाढ़–(हिं. वि.) कठिन, गहरा।

परगासना–(हिं. क्रि. अ.,स.) प्रकाशित होना या करना।

परगुण–(सं.वि.) दूसरे के लिए उपकारी।

परग्रंथि–(सं. पुं.)) अँगुली की गाँठ।

परघट–(हिं. वि.) देखें 'प्रगट'।

परघनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'परगहनी'।

परचंड–(हिं. वि.) देखें 'प्रचंड'।

परचक्र–(सं.पुं.) विपक्षी या शत्रु राज्य।

परचत–(हिं. स्त्री.) जान-पहचान।

परचना–(हिं.क्रि.अ.) घनिष्टता प्राप्त करना, हिलना-मिलना, चसका लगना, धड़का खुलना।

परचाना–(हिं.क्रि.स.) आकर्षित करना, हिलाना-मिलाना, घनिष्ठता उत्पन्न करना, संकोच हटाना, धड़का खोलना, टेव या चसका लगाना।

परचार–(हिं. पुं.) देखें 'प्रचार'।

परचारना–(हिं.क्रि.स.) प्रचार करना।

परचित्त-ज्ञान–(सं. पुं.) दूसरे के मन का भाव जान लेना।

परचून–(हिं. पुं.) आटा, चावल, दाल, नमक, मसाला आदि भोजन-सामग्रियाँ।

परचूनी–(हिं. पुं.) परचून वेचनेवाला बनिया, मोदी; (स्त्री.) परचनी का काम।

परचै–(हिं. पुं.) देखें 'परिचय'।

परच्छंद–(सं. वि.) पराधीन, वह जो दूसरे के अधीन हो।

परछत्ती–(हिं. स्त्री.) सामग्रियाँ रखने के लिये कोठरी के भीतर भीत से सटाकर कुछ ऊँचाई पर बनाई हुई पाटन, टाँड़, हलका छप्पर, छाजन।

परछन–(हिं. पुं.) विवाह की एक रीति जिसमें द्वार पर बारात के प्रस्थान के समय स्त्रियाँ वर की पूजा करती ह और आरती उतारती हैं।

परछना–(हिं. क्रि. स.) वर का परछन करना।

परछा–(सं. पुं.) भीड़ हटना, समाप्ति, निर्णय।

परछाईं–(हिं. स्त्री.) प्रकाश के अवरोध के कारण पड़नेवाली किसी वस्तु की छाया, छायाकृति, प्रतिबिम्ब; (मुहा.) **–से डरना**–मामूली बातों से भयभीत होना, बहुत डरना।

परछालना–(हिं.क्रि.स.) प्रक्षालन करना, धोना।

परछिद्र–(सं. पुं.) दूसरे का दोष।

परजंक–(हिं. पुं.) देखें 'पर्यंक'।

परज–(हिं.पुं.) एक राग का नाम; कोयल; (वि.) दूसरे के द्वारा प्रतिपालित।

परजन–(हिं. पुं.) देखें 'परिजन'।

परजन्य–(हिं. पुं.) देखें 'पर्जन्य'।

परजवट–(हिं. पुं.) देखें 'परजौट'।

परजा–(हिं. स्त्री.) प्रजा, आश्रित-जन, भूस्वामी, आसामी, काम-धंधा करनेवाला।

परजात–(सं. वि.) दूसरे के द्वारा प्रतिपालित; (पुं.) कोयल, दूसरी जाति या बिरादरी का मनुष्य।

परजाता–(हिं.पुं.) पारिजात, एक मझोले आकार का वृक्ष जिसके सुगन्धित फूल गुच्छों में लगते हैं, इसके फूल की डंठी पीली होती है।

परजाति–(सं. स्त्री.) दूसरी जाति।

परजारना–(हिं. क्रि. स.) जलाना।

परजित–(सं.वि.) शत्रु के द्वारा पराजित।

परजौट–(हिं.पुं.) वह वार्षिक कर जो घर बनाने के लिये मिली हुई भूमिपर लगता है।

परणना–(हिं. क्रि. स.) विवाह करना।

परतंचा–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रत्यंचा'।

परतंत्र–(सं. वि.) पराधीन, परवश; (पुं.) उत्तम शास्त्र, उत्तम परिच्छेद।

परतः–(सं. अव्य.) अन्य से, दूसरे से, पश्चात्, पीछे, आगे।

परत–(हिं. स्त्री.) किसी तल के ऊपर की मोटाई का फैलाव, स्तर, तह, कपड़े, कागज आदि के अलग-अलग भाग जो मोड़ने से नीचे-ऊपर हो जाते हैं।

परतच्छ–(हिं. वि.) देखें 'प्रत्यक्ष'।

परतल–(हिं. पुं.) लद्दू घोड़े की पीठ पर रखने का बोरा।

परतला–(हिं. पुं.) कपड़े, चमड़े आदि की चौड़ी पट्टी जो कन्धे पर से छाती और पीठ पर होती हुई तिरछी लटकाई जाती है और जिसमें तलवार झूलती है।

परता–(सं. स्त्री.) श्रेष्ठता, परायापन, परत्व; (हिं. पुं.) देखें 'पड़ता'।

परताजना–(हिं. पुं.) सोनारों का एक उपकरण।

परताप–(हिं. पुं.) देखें 'प्रताप'।

परतापन–(सं. पुं.) वह जो दूसरे को कष्ट देता हो, गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

परताल–(हिं. स्त्री.) देखें 'पड़ताल'।

परतिग्या–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रतिज्ञा'।

परती–(हिं. स्त्री.) बिना जोती हुई भूमि, वह चद्दर जिससे हवा करके अन्न में से भूसा उड़ाया जाता है।

परतीत–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रतीति'।

परतेजना–(हिं.क्रि.स.) त्याग करना, छोड़ना।

परतोली–(हिं. स्त्री.) गली।

परत्र–(सं. अव्य.) अन्यत्र, दूसरे स्थान में, परलोक में; **–भीरु**–(वि.) धार्मिक जिसको परलोक का भय हो।

परत्व–(सं. पुं.) परता, पहिले या पूर्व होने का भाव।

परथन–(हिं. पुं.) देखें 'पलेथन'।

परदच्छिना–(हिं.स्त्री.) देखें 'प्रदक्षिणा'।

परदनी–(हिं. स्त्री.) धोती।

परदादा–(हिं.पुं.) प्रपितामह, दादा का बाप।

परदार–(सं.स्त्री.) दूसरे की भार्या या पत्नी, परस्त्री; **–गमन**–(पुं.) परस्त्री-गमन; **–गामी**–(पुं.) दूसरे की स्त्री से संभोग करनेवाला।

परदिवस–(सं. पुं.) आज से दूसरा दिन।

परदेवता–(सं.स्त्री.) श्रेष्ठ या इष्ट देवता।

परदुम्न–(हिं. पुं.) देखें 'प्रद्युम्न'।

परदेश–(सं. पुं.) दूसरा देश, विदेश।

परदेशी–(सं. वि.) विदेशी, दूसरे देश में

रहनेवाला।
परदुःख–(सं. पुं.) दूसरे का कष्ट।
परधर्म–(सं.पुं.) दूसरे का धर्म, श्रेष्ठ धर्म।
परदोस–(हि. पुं.) देखें 'प्रदोष'।
परधान–(हि. वि.) देखें 'प्रधान'; (पुं.) परिधान।
परधाम–(सं.पुं.) वैकुण्ठ, परलोक, ईश्वर, विष्णु।
परध्यान–(सं.पुं.) ध्येयनिष्ठ-चिन्तन।
परन–(हि. पुं.) प्रतिज्ञा, टेक, अभ्यास, मृदंग आदि वजाने में वोलों के खण्ड।
परना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'पड़ना'।
परनाना–(हि. पुं.) नाना का पिता।
परनाम–(हि. पुं.) देखें 'प्रणाम'।
परनाला–(हि. पुं.) मोरी, पनाला।
परनाली–(हि. स्त्री.) छोटी मोरी।
परनि–(हि. स्त्री.) आदत, टेव।
परनी–(हि.स्त्री.) धातु की वनी हुई पन्नी।
परनौत–(हि. स्त्री.) नमस्कार, प्रणाम।
परपंच–(हि. पुं.) देखें 'प्रपंच'।
परपंचक–(हि. वि.) मायावी, वखेड़िया।
परपंची–(हि. वि.) धूर्त, वखेड़िया।
परपक्ष–(सं. पुं.) विपक्ष की वात, विरोधियों का दल।
परपट–(हि.पुं.) समतल भूमि, चौरस मैदान।
परपटी–(हि. स्त्री.) देखें 'पर्पटी'।
परपद–(सं. पुं.) श्रेष्ठ पद, मुक्ति।
परपराना–(हि. क्रि. अ.) जीभ पर तीखा लगना, चुनचुनाना, पड़पड़ाना।
परपराहट–(हि.स्त्री.) परपराने की क्रिया।
परपाजा–(हि.पुं.) प्रपितामह, दादाका पिता।
परपार–(हि.पुं.) दूसरी ओर का किनारा, उस ओर का तट।
परपीड़क–(सं. पुं.) दूसरे को कष्ट देनेवाला, दूसरे की पीड़ा न समझनेवाला।
परपुरुष–(सं. पुं.) अन्य पुरुष, विष्णु।
परपुष्ट–(सं. पुं.) कोकिल, कोयल।
परपुष्टा–(सं.स्त्री.) पराश्रया, वेश्या, रंडी।
परपूठा–(हि. वि.) पक्व, पक्का।
परपूर्वा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरा पति करती है।
परपोता–(हि. पुं.) देखें 'परप्रपौत्र'।
परपौत्र–(हि.पुं.) पोते का पुत्र, परपोता।
परफुल्ल–(हि. वि.) देखें 'प्रफुल्ल'।
परफुल्लित–(हि. वि.) देखें 'प्रफुल्लित'।
परवंद–(हि. पुं.) नाच की एक गत।
परवंध–(हि. पुं.) प्रवंध, व्यवस्था।
परव–(हि.पुं.) देखें 'पर्व'; (स्त्री.) किसी रत्न का छोटा टुकड़ा।
परवत–(हि. पुं.) पर्वत, पहाड़।
परवल–(हि. वि.) देखें 'प्रवल'।
परवस–(हि.वि.) देखें 'परवश', पराधीन।
परवसताई–(हि. स्त्री.) पराधीनता, परवशता।
परवाल–(हि.पुं.) आँख को कष्ट देनेवाले वरौनी के अनावश्यक वाल।
परवीन–(हि. वि.) देखें 'प्रवीण'।
परवेस–(हि. पुं.) देखें 'प्रवेश'।
परवोध–(हि. पुं.) देखें 'प्रवोध'।
परवोधना–(हि.क्रि.स.) ज्ञान का उपदेश देना, जगाना, समझाना, सांत्वना देना।
परब्रह्म–(सं. पुं.) निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।
परभाउ–(हि. पुं.) देखें 'प्रभाव'।
परभाग–(सं.पुं.) वचा हुआ अंश, दूसरी ओर का भाग, अंतिम भाग।
परभाग्योपजीवी–(सं. वि.) दूसरे की कमाई पर जीनेवाला।
परभात–(हि. पुं.) देखें 'प्रभात'।
परभाती–(हि. स्त्री.) देखें 'प्रभाती'।
परभाव–(हि. पुं.) देखें 'प्रभाव'।
परभुक्त–(सं.वि.) दूसरे के द्वारा भोगा हुआ।
परभुक्ता–(सं. स्त्री.) (वह स्त्री) जो पर-पुरुष से संभोग कर चुकी हो।
परभृत्–(सं. पुं.) काक, कौवा; (वि.) दूसरे को पालनेवाला।
परभृत्य–(सं. पुं.) दूसरे का सेवक।
परम–(सं.वि.) उत्कृष्ट, सर्वोत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य, अत्यन्त, पहिला; (पुं.) विष्णु, शिव; **–गति**–(स्त्री.) मुक्ति, मोक्ष; **–जा**–(स्त्री.) प्रकृति; **–तत्त्व**–(पुं.) मूल तत्त्व, मूल सत्ता, ब्रह्म, ईश्वर; **–देवी**–(स्त्री.) महादेवी, पटरानी; **–धाम**–(पुं.) वैकुण्ठ, स्वर्ग; **–पद**–(पुं.) मोक्ष, मुक्ति; **–पिता**–(पुं.) परमेश्वर; **–पुरुष**–(पुं.) पुरुषोत्तम, विष्णु; **–पूतिक**–(पुं.) अहिफेन, अफीम; **–फल**–(पुं.) मोक्ष, मुक्ति; **–ब्रह्मचारिणी**–(स्त्री.) दुर्गा; **–भट्टारक**–(पुं.) महाराजाधिराज, एकछत्र राजाओं की एक प्राचीन उपाधि; **–भागवत**–(पुं.) वैष्णवों की एक साम्प्रदायिक उपाधि; **–महत्**–(वि.) सब से बड़ा और व्यापक; **–रस**–(पुं.) पानी मिला हुआ मट्ठा; **–हंस**–(पुं.) ज्ञान की परम अवस्था को पहुँचा हुआ संन्यासी, वह जिसको पूर्ण ज्ञान हो जाता है कि मैं ही ब्रह्म हूँ या मैं ही परमात्मा हूँ, परमात्मा।
परमठ–(हि. पुं.) संगीत में एक ताल।
परमर्षि–(सं.पुं.) वेदव्यास आदि ऋषि।
परमल–(हि.पुं.) ज्वार या गेहूँ का भुना हुआ दाना।
परमा–(हि.स्त्री.) शोभा, छवि, सुन्दरता।
परमाणु–(सं.पुं.) पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश—इन पाँचों भूतों का सब से छोटा भाग जिसके फिर विभाग नहीं हो सकते, अत्यन्त सूक्ष्म अणु; **–वाद**–(पुं.) न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों का यह सिद्धान्त कि परमाणुओं से ही जगत् की सृष्टि हुई है; **–वादी**–(पुं.) परमाणुवाद को माननेवाला।
परमात्मा–(सं. पुं.) परब्रह्म, ईश्वर, चिदात्मा।
परमाद्वैत–(सं.पुं.) सर्वभेदरहित परमात्मा, विष्णु।
परमानंद–(सं. पुं.) परम आनन्द-स्वरूप ब्रह्म, परमात्मा, ब्रह्मानन्द, ब्रह्म के अनुभव का आनन्द।
परमान–(हि. पुं.) देखें 'प्रमाण', सत्य वात, अवधि, सीमा।
परमानना–(हि.क्रि.स.) प्रमाण मानना, ठीक समझना।
परमान्न–(सं.पुं.) पायस, खीर, वह अन्न जो देवता और पितरों को अत्यन्त प्रिय है।
परमायु–(सं.स्त्री.) जीवन-काल, अधिक से अधिक आयु, (मनुष्य की परमायु एक सौ वर्ष मानी जाती है।)
परमार–(हि.पुं.) राजपूत जाति की एक प्रधान शाखा, पवाँर।
परमारथ–(हि. पुं.) देखें 'परमार्थ'।
परमार्थ–(सं.पुं.) उत्कृष्ट पदार्थ, वास्तविक सत्ता, सार वस्तु, मोक्ष, सर्वथा यथार्थ सच्चा सुख; **–ता**–(स्त्री.) सत्य भाव, मोक्ष; **–वादी**–(हि. पुं.) तत्त्वज्ञ, वेदान्ती, ज्ञानी; **–विद्**–(वि.) परमार्थवेत्ता, वेदान्ती।
परमार्थी–(सं.वि.) यथार्थ तत्त्व को ढूँढ़नेवाला, मुमुक्षु, मोक्ष चाहनेवाला।
परमाह–(सं. पुं.) शुभ दिन, अच्छा दिन।
परमिति–(हि. स्त्री.) मर्यादा।
परमुख–(हि. वि.) पराङ्मुख, विमुख, उदासीन आचरण करनेवाला।
परमेश, परमेश्वर–(सं. पुं.) सृष्टि आदि को रचनेवाला, सगुण त्रिमूर्ति ब्रह्म, विष्णु, शिव।
परमेश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा।
परमेष्ठ–(सं. पुं.) प्रजापति।
परमेष्ठी–(सं.पुं.) अग्नि आदि देवता, ब्रह्मा, शिव, महादेव, विष्णु, गरुड़, प्रजापति और उनके पुत्र।

परमेसर–(हिं. पुं.) देखें 'परमेश्वर'।
परमैश्वर्य–(सं. पुं.) विपुल ऐश्वर्य।
परमोद–(हिं. पुं.) देखें 'प्रमोद'।
परमोधना–(हिं. क्रि. स.) जगाना, समझाना।
परयंक–(हिं. पुं.) देखें 'पर्यंक'।
पररमण–(सं. पुं.) परस्त्री से रमण करनेवाला, लम्पट, व्यभिचारी।
पररूप–(सं. वि.) दूसरे के समान रूपवाला।
परलउ–(हिं. पुं.) देखें 'प्रलय'।
परलत–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और जड़ औषध में प्रयुक्त होती है।
परलय–(हिं.पुं., स्त्री.) प्रलय, सृष्टि का नाश या अन्त।
परला–(हिं.वि.) दूसरी ओर का, उधर का; **परले सिरे का**–बहुत अच्छा या अधिक।
परलै–(हिं. पुं.) देखें 'प्रलय'।
परलोक–(सं. पुं.) लोकान्तर, दूसरा लोक, स्वर्ग, वह लोक जिसमें मृत्यु के बाद गति होती है; **–गत**–(वि.) मृत्यु को प्राप्त, मरा हुआ; **–गमन**–(पुं.) मृत्यु, मरण; **–प्राप्ति**–(स्त्री.) मरण; **–वासी**–(पुं.) मृत्यु को प्राप्त; (मुहा.)–**सिधारना**–मरना।
परवत्–(सं. वि.) पराधीन, परवश।
परवर–(हिं.पुं.) परवल, आँख का एक रोग।
परवल–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लता जो टट्टियों पर चढ़ाई जाती और जिसके फलों की तरकारी बनती है।
परवश, परवश्य–(हिं. वि.) पराधीन, जो दूसरे के वश में हो; **–ता**– (स्त्री.) पराधीनता।
परवस्ती–(हिं. स्त्री.) पालन-पोषण।
परवा–(हिं. स्त्री.) किसी पक्ष की पहली तिथि, एक प्रकार की घास।
परवाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'परवा'।
परवाच्य–(सं. वि.) जिसको दूसरे बुरा कहते हों, निन्दित।
परवाणि–(सं. पुं.) मयूर, मोर।
परवाद–(सं. पुं.) प्रवाद, अपवाद, दूसरे की निन्दा।
परवान–(हिं. पुं.) सीमा, अवधि, प्रमाण, यथार्थ बात।
परवानना–(हिं. क्रि. स.) उचित समझना।
परवाना–(फा. पुं.) लिखित आज्ञापत्र, हुक्मनामा, फरमान, आदेश-पत्र।
परवाया–(हिं. पुं.) चारपाई के पायों के नीचे रखने का काठ आदि का टुकड़ा।
परवाल–(हिं. पुं.) देखें 'प्रवाल', मूँगा।
परवास–(हिं. पुं.) आच्छादन, ढपना।
परवासी–(सं.वि.) दूसरे के घर में बसनेवाला।
परवाह–(हिं. पुं.) देखें "प्रवाह", बहाने का काम, व्यग्रता, चिन्ता, भरोसा, ध्यान।
परवी–(हिं. स्त्री.) पर्व काल।
परवीन–(हिं. वि.) देखें 'प्रवीण'।
परवेख–(हिं. पुं.) चन्द्रमा के चारों ओर का प्रभामण्डल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है।
परवेश–(हिं. पुं.) देखें 'प्रवेश'।
परवेश्म–(स. पुं.) वैकुण्ठ, स्वर्ग।
परव्रत–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र का एक नाम।
परश–(सं.पुं.) पारस पत्थर, स्पर्शमणि; (पुं.) स्पर्श, छूना।
परशाला–(सं. पुं.) परगृह, दूसरे का घर।
परशासन–(सं. पुं.) दूसरों पर आदेश।
परशु–(सं. पुं.) कुठार, कुल्हाड़ी, तबर, फरसा, प्राचीन काल के सैनिकों का एक प्रधान अस्त्र; **–धर**–(पुं.) गणेश, परशुराम; (वि.) परशु धारण करनेवाला; **–राम**–(पुं.) जमदग्नि ऋषि के पुत्र, भृगुपति, (इन्होंने पृथ्वी को इक्कीस बार निःक्षत्रिय किया था); **–वन**–(पुं.) एक नरक का नाम।
परश्वध–(सं. पुं.) कुठार, कुल्हाड़ी।
परसंग–(हिं. पुं.) देख 'प्रसंग'।
परसंबंध–(सं. पुं.) दूसरे का संबंध।
परसन–(हिं.पुं.) छूने का भाव या काम, स्पर्श; (वि.) प्रसन्न।
परसना–(हिं. क्रि. स.) स्पर्श करना, छूना, छुलाना, किसी के सामने भोजन के पदार्थ रखना, परोसना।
परसन्न–(हिं. वि.) देखें 'प्रसन्न'।
परसपखान–(हिं. पुं.) स्पर्शमणि, पारस पत्थर।
परसवर्ण–(सं.पुं.) (व्याकरण में) उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण।
परसा–(हिं. पुं.) कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा, देखें 'परोसा', पत्तल।
परसाद–(हिं. पुं.) देखें 'प्रसाद'।
परसाना–(हिं. क्रि. स.) स्पर्श कराना, छुलाना, भोजन बँटवाना।
परसाल–(हिं. अव्य.) पिछले वर्ष, अगले साल।
परसिद्ध–(हिं. वि.) देखें 'प्रसिद्ध'।
परसिया–(हिं. स्त्री.) हँसिया।
परसीया–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी काली और पुष्ट होती है।
परसु–(हिं. पुं.) परशु।
परसूक्ष्म–(सं. पुं.) एक सूक्ष्म परिमाण जो आठ परमाणुओं के बराबर माना जाता है।
परसेद–(हिं. पुं.) देखें 'प्रस्वेद'।
परसेवा–(सं. स्त्री.) दूसरे की सेवा।
परसों–(हिं. अव्य.) बीते हुए कल से एक दिन पहले, आनेवाले कल से एक दिन आगे।
परसोत्तम–(हिं. पुं.) देखें 'पुरुषोत्तम'।
परसोर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।
परसौंहाँ–(हिं. वि.) स्पर्श करनेवाला।
परस्त्री–(सं. स्त्री.) दूसरे की स्त्री, परकीया नारी; **–गमन**–(पुं.) पराई स्त्री के साथ सम्भोग।
परस्पर–(सं. अव्य.) एक दूसरे के साथ, आपस में।
परस्परानुमति–(सं. स्त्री.) एक-दूसरे की अनुमति।
परस्परोपमा–(सं.स्त्री.) एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय से और उपमेय की उपमा उपमान से दी जाती है, उपमेयोपमा।
परस्वध–(सं.पुं.) परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ी।
परहरना–(हिं.क्रि.स.) त्यागना, छोड़ना।
परहार–(हिं. पुं.) देखें 'प्रहार', परिहार।
परहारी–(हिं. पुं.) जगन्नाथ जी के पुजारी जो मन्दिर में ही रहते हैं।
परहित–(सं. पुं.) दूसरे का कल्याण।
परहेज–(फा.पुं.) वर्जित आहार-विहार से बचना; **–गार**–(वि.) परहेज करनेवाला; **–गारी**–(स्त्री.) परहेज।
परहेलना–(हिं. क्रि. स.) तिरस्कार या निरादर करना।
परांग–(सं. पुं.) शरीर का पिछला भाग।
परांगद–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
परांगव–(सं. पुं.) समुद्र।
परांचा–(हिं. पुं.) पटरी, पाटन, टाँड़।
परांठा–(हिं. पुं.) तवे पर घी लगाकर सेंकी हुई चपाती, पोतला।
परांतक–(सं. पुं.) सर्वनाशक महादेव।
परांतकाल–(सं. पुं.) मृत्यु का समय।
परांतिका–(सं.स्त्री.) मात्रा-वृत्त का एक भेद।
परा–(सं.उप.) प्राधान्य, गति, विक्रम, वध, अनादर आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।
परा–(सं. स्त्री.) उपनिषद् विद्या, ब्रह्मविद्या, एक प्रकार का सामगान, गायत्री चार प्रकार की वाणियों में से पहली वाणी जो नादस्वरूपा और मूलाधार से निकलती हुई मानी जाती है; (वि. स्त्री.) श्रेष्ठ,

उत्तम; (हिं. पुं.) पंक्ति, श्रेणी, रेशम उकेलने का एक लकड़ी का औजार।
परांइ, पराई–(हिं.वि.स्त्री.) दूसरे की।
पराकाष्ठा, पराकोटि–(सं. स्त्री.) चरम सीमा, हद, गायत्री का एक भेद, ब्रह्मा का आधा आयुष्य।
पराक्रम–(सं. पुं.) शक्ति, बल, सामर्थ्य, पुरुषार्थ, उद्योग, विष्णु; –**ज्ञ**– (पुं.) शत्रु के बल को जाननेवाला।
पराक्रमी–(हिं. वि.) वीर, पुरुषार्थी, उद्यमी, उद्योगी, बलवान।
पराग–(सं. पुं.) पुष्परज, वह रज जो फूलों के बीच में केशरों पर जमी रहती है, धूलि, रज, उपराग, विख्याति, कपूर का चूर्ण, स्वच्छन्द गमन, एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण जिसको शरीर पर पोतकर शृंगार किया जाता है; –**केशर**–(पुं.) फूलों के मध्य के वे लंबे तथा पतले सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।
परागति–(सं.पुं.) शिव,महादेव; (स्त्री.) गायत्री।
परागना–(हिं. क्रि. अ.) अनुरक्त होना।
परागम–(सं. पुं.) शत्रु का आगमन या आक्रमण।
पराङ्मुख–(सं. वि.) विमुख, प्रतिकूल, विरुद्ध, निवृत्त, उदासीन, ध्यान न देनेवाला; –**ता**–(स्त्री.) प्रतिकूलता।
पराचित–(सं.वि.) दूसरे के द्वारा पाला-पोसा हुआ।
पराचीन–(सं. वि.) पराङ्मुख, विमुख।
पराजय–(सं. स्त्री.) पराभव, हार।
पराजिका–(हिं. स्त्री.) परज राग की रागिनी।
पराजित–(सं. वि.) पराभूत, विजित, हारा हुआ।
पराजिष्णु–(सं.वि.)विजयी,जीतनेवाला।
पराण–(सं. पुं.) प्राण।
परातंस–(सं.वि.)धक्का देकर हटाया हुआ।
परात–(हिं. स्त्री.) थाली के आकार का बड़ा पात्र, बड़ी थाली, थाल।
परातर–(सं. वि.) बहुत दूर।
परात्पर–(सं. पुं.) परमात्मा, विष्णु।
परात्परेश्वर–(सं. वि.) सर्वश्रेष्ठ, सब से उत्तम; (पुं.) परमात्मा।
परात्मा–(सं. पुं.) परब्रह्म, परमात्मा, दूसरे की आत्मा।
पराधि–(सं. पुं.) दूसरे का दुःख, दूसरे की मानसिक व्यथा।
पराधीन–(सं. वि.) परवश, जो दूसरे के अधीन हो, परतंत्र; –**ता**–(स्त्री.) परतन्त्रता, परवशता।
परान–(हिं. पुं.) देखें 'प्राण'।
पराना–(हिं. क्रि. अ.) भागना, पलायन करना।
परान्न–(सं. पुं.) दूसरे का दिया हुआ भोजन; –**भोजी**–(वि.) दूसरे का अन्न खानेवाला।
परापर–(सं. वि.) पर और अपर।
पराभव–(सं. पुं.) पराजय, हार, तिरस्कार, विनाश, मानहानि।
पराभूत–(सं. वि.) पराजित, हारा हुआ, नष्ट, तिरस्कृत।
पराभूति–(सं. स्त्री.) पराभव, हार।
परामर्श–(सं. पुं.) विचारयुक्त निर्णय, अनुमान, मन्त्रणा, स्मृति, याद।
परामर्शन–(सं. पुं.) स्मरण, चिन्तन, विचार करना, मन्त्रणा करना।
परामर्शी–(सं. वि.) निर्देशक, परामर्श देनेवाला।
परामष–(सं. पुं.) देखें 'परामर्श'।
परामृत–(सं. पुं.) मुक्ति, मोक्ष।
परामृष्ट–(सं. वि.) निर्णय किया हुआ, विचारा हुआ, पकड़कर खींचा हुआ।
परायण–(सं. वि.) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ; (पुं.) विष्णु, आश्रय।
परायति–(सं. स्त्री.)उत्तर काल; (वि.) पराधीन।
परायत्त–(सं. वि.) पराधीन, परवश।
पराया–(हिं. वि.) (स्त्री. परायी) अन्य का, दूसरे का, जो अपना न हो, जो आत्मीय न हो।
परायु–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
परार–(हिं. वि.) दूसरे का, पराया।
परारध–(हिं. पुं.) देखें 'परार्ध'।
परारुक–(सं. पुं.) प्रस्तर, पत्थर।
परार्थ–(सं. वि.) जिसका उद्देश्य स्वार्थ-प्रधान न हो, दूसरे के निमित्त का; (पुं.) दूसरे का उपकार।
परार्ध–(सं. पुं.) एक शंख की संख्या, ब्रह्म की आयु का आधा काल, कुंकुम, केशर, खस, चन्दन।
परावत–(सं. पुं.) परूषक, फालसा।
परावन–(हिं. पुं.) पलायन, एक साथ अनेक मनुष्यों का भागना, भगदड़, पर्व, पुण्य-काल।
परावर–(सं.वि.)सर्वश्रेष्ठ,अगला-पिछला।
परावरा–(सं.स्त्री.)एक प्रकार की विद्या।
परावर्त–(सं. पुं.) विनिमय, अदल-बदल, पलटाव।
परावर्तन–(सं. पुं.) पलटना, लौटना।
परावर्तित–(सं. वि.) पलटाया हुआ, फेरा हुआ।
परावसु–(सं. पुं.) एक गन्धर्व का नाम।
परावह–(सं. पुं.) वायु के सात भेदों में से एक।
परावा–(हिं. वि.) देखें 'पराया'।
परावाक–(सं. पुं.) तिरस्कार का वचन।
परावृत्त–(सं.वि.)फेरा हुआ, बदला हुआ।
परावृत्ति–(सं. स्त्री.) पलटने या पलटाने की क्रिया या भाव।
पराशर–(सं. पुं.) एक सर्प का नाम, एक गोत्रकार, एक ऋषि जो वसिष्ठ और शक्ति के पौत्र थे, एक प्रसिद्ध स्मृतिकार का नाम।
पराश्रय–(सं. वि.) वह जो दूसरे के आश्रय में हो,अन्याश्रित; (पुं.)दूसरे का सहारा।
पराश्रित–(सं. वि.) पराधीन, दूसरे का आश्रित।
परास–(सं. पुं.) देखें 'पलाश'।
परासन–(सं.पुं.)मारण, वध, उत्तम आसन।
परासी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
परास्त–(सं. वि.) पराजित, हारा हुआ, ध्वस्त, जीता हुआ।
पराह–(सं. पुं.)अन्य दिन, दूसरा दिन।
पराह्न–(सं. पुं.) अपराह्न, दोपहर के बाद का समय, तीसरा पहर।
परि–(स. उप.) इसके शब्द में जुड़ने से 'सर्वोत्तम, अच्छी तरह, अतिशय, त्याग, नियम' आदि अर्थों का समावेश होता है।
परिकंप–(सं.पुं.) भय, डर।
परिक–(हिं. स्त्री.) खोटी चाँदी।
परिकथा–(सं.स्त्री.) वह कथा जिसके अन्तर्गत दूसरी कथा हो, धर्म-विषयक कहानी।
परिकर–(सं. पुं.) पर्यंक, पलंग, परिवार, तैयारी, समूह, विवेक, ज्ञान, सहायक, अनुचरवर्ग, एक अलंकार जिसमें अभिप्रायपूर्ण विशेषणों के साथ विशेष्य का प्रयोग होता है।
परिकरमा–(हिं. स्त्री.) देखें 'परिक्रमा'।
परिकरांकुर–(सं. पुं.) एक अर्थालंकार जिसमें किसी शब्द का प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता है।
परिकर्तिका–(सं.स्त्री.) काटने या चुभने की तरह की पीड़ा।
परिकर्षण–(सं. पुं.) खींचकर दूसरे स्थान में ले जाना।
परिकल्कन–(सं. पुं.) वंचना, धोखा।
परिकल्प–(सं. पुं.) स्थिर निश्चय, बनावटी निदश, रचना।

परिकल्पन–(सं. पुं.) चिन्तन, मनन, मन में गढ़ना ।

परिकल्पित–(सं. वि.) स्थिर किया हुआ, ठहराया हुआ, मन में सोचकर बनाया हुआ ।

परिकीर्ण–(सं.वि.) विस्तृत, फैला हुआ ।

परिकीर्तन–(सं. पुं.) गुणों का विस्तृत वर्णन, अधिक प्रशंसा ।

परिकीर्तित–(सं. वि.) प्रशंसित, श्लाघ्य, कहा हुआ, गाया हुआ ।

परिकूट–(सं. पुं.) नगर या गढ़ के फाटक पर की खाई ।

परिकृश–(सं. वि.) अति दुर्बल ।

परिकेश–(सं. पुं.) वाल का अगला भाग ।

परिक्रम, परिक्रमण–(सं. पुं.) प्रदक्षिणा, परिक्रमा, चारों ओर घूमना या चक्कर देना ।

परिक्रमा–(सं. स्त्री.) चारों ओर घूमना, चक्कर देना, किसी तीर्थ स्थान या देव-मन्दिर के चारों ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग ।

परिक्रय–(सं. पुं.) मोल लेना ।

परिक्रिया–(सं. स्त्री.) खाई आदि से घेरने की क्रिया ।

परिक्लेद–(सं. पुं.) आर्द्रता, गीलापन ।

परिक्लेश–(सं. पुं.) अत्यन्त दुःख ।

परिक्षत–(सं. वि.) नष्ट-भ्रष्ट ।

परिक्षय–(सं. पुं.) ध्वंस, नाश, पतन ।

परिक्षा–(सं. स्त्री.) गीली मिट्टी, कीचड़; (हि. स्त्री.) देखें 'परीक्षा' ।

परिक्षाम–(सं. वि.) अत्यंत दुर्बल ।

परिक्षालन–(सं.पुं.) धोने की क्रिया, धोना ।

परिक्षिप्त–(सं.वि.) खाई आदि से घेरा हुआ

परिक्षेप–(सं. पुं.) निक्षेप, चारों ओर घूमना

परिक्षेपक–(सं. वि.) फेरा लगानेवाला, घूमनेवाला ।

परिखन–(हिं. वि.) रक्षक, रखवाली करनेवाला ।

परिखना–(हिं. क्रि. स.) प्रतीक्षा करना, आसरा देखना, परीक्षा करना, जांचना ।

परिखा–(सं. स्त्री.) किले को घेरने की खाई ।

परिखात–(सं. पुं.) परिखा, खाई ।

परिखान–(हिं.स्त्री.) पहिये की लीक या लकीर ।

परिखेद–(सं.पुं.) अत्यन्त दुःख, परिश्रम ।

परिख्यात–(सं. वि.) विख्यात, प्रसिद्ध ।

परिगण–(सं. पुं.) गृह, घर ।

परिगणन, परिगणना–(सं. पुं., स्त्री.) भली भांति गणना करना, विभाग करना, गिनती करना ।

परिगणनीय–(सं. वि.) गिने जाने योग्य ।

परिगणित–(सं. वि.) गिना हुआ ।

परिगण्य–(सं.वि.) परिगणनीय, गिनने योग्य ।

परिगत–(सं.वि.) गत, जाना हुआ, प्राप्त, मिला हुआ, विस्मृत, भूला हुआ, बीता हुआ, घिरा हुआ, मरा हुआ ।

परिगदित–(सं. वि.) कहा हुआ ।

परिगर्वित–(सं. वि.) बड़ा घमंडी, बहुत गर्वीला ।

परिगर्हण–(सं. पुं.) घोर निन्दा ।

परिगह–(हि.पुं.) कुटुम्बी, आश्रित जन ।

परिगहन–(सं. पुं.) घोर अन्धकार ।

परिगीति–(सं.स्त्री.) एक छन्द का नाम ।

परिगुंठित–(सं.वि.) छिपा हुआ, ढपा हुआ ।

परिगूढ़–(सं. वि.) अत्यन्त गुप्त ।

परिगृहीत–(सं. वि.) स्वीकृत, ग्रहण किया हुआ, मिला हुआ ।

परिगृह्या–(सं.स्त्री.) धर्मपत्नी, विवाहिता स्त्री ।

परिग्रह–(सं.पुं.) दान लेना, ग्रहण करना, सेना का पिछला भाग, अनुग्रह, कृपा, साधन, विष्णु, हाथ, शाप, शपथ, वेतन, पत्नी, भार्या, परिजन, परिवार, मूल, कन्द, अंगीकार, धन आदि का संग्रह, आदरपूर्वक कोई वस्तु लेना ।

परिग्रहण–(सं. पुं.) पूर्ण रूप से ग्रहण करना, वस्त्र पहिनना ।

परिघ–(सं. पुं.) अर्गला, मुद्गर, बरछा, भाला, कलश, घड़ा, गोपुर, घर, प्रतिबन्ध, पर्वत, तीर, मूढ़गर्भ, चन्द्रमा, जल, वज्र, सूर्य, स्थान, सूर्य के सामनेवाला बादल, ज्योतिष का एक योग, घोड़ा ।

परिघात–(सं.पुं.) हनन, हत्या, मार डालना ।

परिघाती–(सं. वि.) हत्या करनेवाला ।

परिघोष–(सं.पुं.) बादल की गरज, शब्द ।

परिचना–(हि. क्रि.अ.) देखें 'परचना' ।

परिचपल–(सं. वि.) जो हर समय घूमता-फिरता या अस्थिर हो ।

परिचय–(सं.पुं.) विशेष रूप से जानना, जानकारी, प्रमाण, लक्षण, अभ्यास, किसी व्यक्ति के नाम, काम, गुण आदि का ज्ञान, जान-पहचान ।

परिचर–(सं. पुं.) रोगी की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला, अनुचर, भृत्य, टहलुआ ।

परिचरजा–(हिं. स्त्री.) देखें 'परिचर्या' ।

परिचरण–(सं. पुं.) सेवा, टहल ।

परिचरणीय–(सं.वि.) सेवा करने योग्य ।

परिचरिता–(सं.वि.) सेवा-टहल करनेवाला ।

परिचरी–(सं. स्त्री.) दासी, टहलनी ।

परिचर्या–(सं. स्त्री.) सेवा, शुश्रूषा, रोगी की सेवा ।

परिचायक–(सं. पुं.) जान-पहचान करानेवाला, सूचित करनेवाला ।

परिचार–(सं. पुं.) सेवा-टहल, घूमने-फिरने का स्थान ।

परिचारक–(सं. पुं.) भृत्य, दास, किंकर, चेट, रोगी की सेवा-टहल करनेवाला, देव-मन्दिर आदि का प्रबन्धकर्ता ।

परिचारण–(सं.पुं.) सेवा, टहल, खिदमत, सहवास करना, संग करना ।

परिचारना–(हि.क्रि.स.) सेवा-टहल करना

परिचारिका–(सं. स्त्री.) दासी ।

परिचारी–(हि. वि.) सेवक ।

परिचार्य–(सं. वि.) सेवा करने योग्य ।

परिचालक–(सं. पुं.) संचालक, चलानेवाला, गति देनेवाला, हिलानेवाला ।

परिचालन–(सं. पुं.) गति देना, हिलाना-डुलाना, कार्यक्रम चलाना, चलने के लिये प्रेरित करना ।

परिचालित–(सं. वि.) चलाया हुआ, परिचालन किया हुआ, हिलाया हुआ ।

परिचित–(सं.वि.) जिसका परिचय हो, जान-पहचान का, अभिज्ञ, मिलने-जुलनेवाला, सूचित, इकट्ठा किया हुआ ।

परिचिति–(सं.स्त्री.) अभिज्ञता, जानकारी ।

परिचुंबन–(सं.पुं.) प्रेम का गाढ़ चुंबन ।

परिचो–(हिं. पुं.) परिचय, ज्ञान ।

परिच्छद–(सं. पुं.) परिवार, परिजन, कुटुम्ब, वेश, पहिनावा, किसी पदार्थ को ढापने की वस्तु, असबाब, सामग्री, राज-चिह्न, राजा के साथ रहनेवाला नौकर ।

परिच्छन्न–(सं.वि.) परिच्छद से सज्जित, राजछत्र से मंडित, वस्त्रों से सुशोभित, छिपाया हुआ, ढपा हुआ, सजाया हुआ ।

परिच्छा–(हि. स्त्री.) देखें परीक्षा ।

परिच्छित्ति–(सं.स्त्री.) परिच्छेद, सीमा, हद ।

परिच्छिन्न–(सं. वि.) मर्यादित, विभक्त, सीमायुक्त ।

परिच्छेद–(सं. पुं.) विभाजन, काटकर विभाग करना, टुकड़े करना, ग्रन्थ या पुस्तक का ऐसा खण्ड जिसमें स्वतन्त्र विषय का वर्णन हो, अध्याय, प्रकरण ।

परिच्छेद्य–(सं. वि.) विभाज्य, बांटने योग्य ।

परिच्युति–(सं. स्त्री.) पतन, गिरना ।

परिछन–(हि. पुं.) देखें 'परछन' ।

परिछाहीं–(हि.स्त्री.) देखें 'परछाईं' ।

परिछिन्न–(हि. वि.) देखें 'परिच्छिन्न' ।

परिजंक–(हि. पुं.) देखें 'पर्यंक' ।

परिजटन–(हि. पुं.) देखें 'पर्यटन' ।

परिजन–(सं. पुं.) परिवार, आश्रित वर्ग,

सर्वदा साथ रहनेवाला सेवक, अनुचर-वर्ग; –ता–(स्त्री.) अधीनता।
परिजाड्य–(सं. पुं.) जड़ता, मूर्खता।
परिजात–(सं. वि.) जन्मा हुआ, उत्पन्न।
परिज्ञप्ति–(सं. स्त्री.) जान-पहचान।
परिज्ञा–(सं. स्त्री.) सूक्ष्म ज्ञान।
परिज्ञात–(सं.वि.) विशेष रूप से जाना हुआ
परिज्ञाता–(हि.पुं.) ज्ञानी, बुद्धिमान्।
परिज्ञान–(सं. पुं.) किसी वस्तु का सम्यक् ज्ञान, सूक्ष्म ज्ञान।
परिज्ञेय–(सं.वि.) भली-भाँति जानने योग्य।
परिडीन–(सं.पुं.) किसी पक्षी का आकाश में गोलाई में उड़ना।
परिणत–(सं. वि.) पका हुआ, पचा हुआ, रूप बदला हुआ, प्रौढ़, पुष्ट, अवनत।
परिणति–(सं. स्त्री.) अवनति, झुकाव, परिपाक, रूपांतर, प्रौढ़ता, पुष्टि, पक्वता।
परिणद्ध–(सं. वि.) बँधा हुआ, लपेटा हुआ, फला हुआ, बढ़ा हुआ।
परिणय–(सं. पुं.) विवाह, ब्याह।
परिणयन–(सं. पुं.) विवाह करने की क्रिया।
परिणाम–(सं. पुं.) विकार, प्रकृति का अन्यथाभाव, एक अर्थालंकार जिसमें एक वर्णनीय विषय में अन्य किसी वस्तु का आरोप किया जाता है और वह आरोप्यमान वस्तु अभिन्न रूप से प्रकृत विषय का उपयोगी होती है, रूपान्तरण, बदलने का भाव या कार्य, कारण का फल, परिपुष्टि, विकास, समाप्त होना, बीतना, योग के अनुसार एक स्थिति से दूसरी स्थिति को प्राप्त करना, सांख्य के अनुसार स्वाभाविक रूप से एक अवस्था त्यागकर दूसरी अवस्था को प्राप्त करना; –दर्शी–(वि.) भविष्य का विचार करके काम करनेवाला, सोच-विचारकर काम करनेवाला, सूक्ष्मदर्शी; –दृष्टि–(स्त्री.) भले-बुरे परिणाम की ओर दृष्टि; –वाद–(पुं.) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार संसार की उत्पत्ति, नाश तथा अन्योन्याश्रित विपर्यय मान जाते हैं; –शूल–(पुं.) भोजन पचने के समय पेट में उत्पन्न होनेवाला शूल।
परिणामी–(सं. वि.) जो परिणाम के अनुसार हो, बदलनेवाला।
परिणायक–(सं. पुं.) सेनापति, नेता, पति।
परिणाह–(सं.पुं.) विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।
परिणीत–(सं. वि.) विवाहित, जिसका ब्याह हो गया हो, समाप्त, पूर्ण।
परिणीता–(सं. स्त्री.) भार्या।
परिणेता–(हिं. पुं.) स्वामी, पति।
रितः–(सं. अव्य.) चारों ओर, पूर्ण रूप से, सब प्रकार से।
परितच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'प्रत्यक्ष'।
परितप्त–(सं. वि.) क्लेश अनुभव करता हुआ, अत्यन्त गरम, तपा हुआ, जलता हुआ।
परितप्ति–(सं. स्त्री.) जलन, दाह, संताप।
परितर्पण–(सं. पुं.) पूर्ण तृप्ति।
परिताप–(सं. पुं.) दुःख, संताप, मानसिक क्लेश, पछतावा, भय, डर, अत्यधिक गरमी, कँपकँपी, एक नरक का नाम।
परितापी–(हिं. वि.) दुःखित, व्यथित, जिसको परिताप हो, पीड़ा देनेवाला।
परितिक्त–(सं. वि.) बहुत कड़वा, बहुत तीता; (पुं.) नीम का वृक्ष।
परितुष्ट–(सं. वि.) अच्छी तरह सन्तुष्ट, प्रसन्न।
परितुष्टि–(सं. स्त्री.) सन्तोष, प्रसन्नता।
परितृप्त–(सं. वि.) अच्छी तरह सन्तुष्ट, अघाया हुआ।
परितोष–(सं.पुं.) तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता।
परितोषक–(सं. वि.) प्रसन्न करनेवाला।
परितोषण–(सं. पुं.) सन्तोष, तुष्टि।
परितोषी–(हिं. वि.) सन्तोषी।
परितोस–(हिं. पुं.) देखें 'परितोष'।
परित्यक्त–(सं.वि.) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
परित्याग–(सं. पुं.) त्यागने का भाव, अलग कर देना, छोड़ना।
परित्यागी–(सं. वि.) त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला।
परित्याजन–(सं.पुं.) परित्याग, छोड़ना।
परित्याज्य–(सं. वि.) परित्याग के योग्य।
परित्रस्त–(सं. वि.) भयभीत, डरा हुआ।
परित्राण–(सं.पुं.) रक्षा, आत्मरक्षा, बचाव।
परित्रात–(सं. वि.) जिसकी रक्षा हुई हो।
परित्राता–(सं. पुं.) बचानेवाला, रक्षा करनेवाला।
परिदर–(सं.पुं.) दाँत का एक रोग।
परिदर्शन–(सं. पुं.) अवलोकन, देखना।
परिदष्ट–(सं.वि.) काटकर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।
परिदान–(सं.पुं.) वापस करना, लौटा देना।
परिदाय–(सं. पुं.) सुगन्धि।
परिदाह–(सं. पुं.) शोक, सन्ताप।
परिदीन–(सं.वि.) अत्यन्त खिन्न या उदास।
परिदेवक–(सं. पुं.) विलाप करनेवाला।
परिध–(हिं. पुं.) देखें 'परिधि'।
परिधन–(हिं.पुं.) नीचे पहिनने का वस्त्र, धोती आदि।
परिधान–(सं. पुं.) पहिनने का वस्त्र, शरीर पर कपड़ा लपेटना, कपड़ा पहिनना।
परिधापन–(सं. पुं.) पहिनाने की क्रिया।
परिधाय–(सं. पुं.) परिधान, वस्त्र, नितंब, चूतड़।
परिधायक–(सं.पुं.) ढाँपने या लपेटनेवाला।
परिधि–(सं. पुं.) रेखागणित में वह रेखा जो वृत्त को बनाती है, सूर्य, चन्द्र आदि के चारों ओर का प्रभामंडल, घेरा, बाड़ा, परिक्रमा का मार्ग, कक्षा, वस्त्र।
परिधीर–(सं. वि.) अत्यन्त गम्भीर।
परिधूपित–(सं.वि.) धूप द्वारा सुवासित।
परिधेय–(सं. वि.) पहिनने योग्य; (पुं.) कपड़ा, पहिनने का वस्त्र।
परिध्वंस–(सं. पुं.) विनाश, नाश।
परिनय–(हिं. पुं.) देखें 'परिणय'।
परिनिर्वृत्त–(सं. वि.) जिसे पूर्ण रूप से निर्वाण प्राप्त हुआ हो।
परिनिर्वृत्ति–(सं. स्त्री.) मुक्ति, मोक्ष।
परिनिश्चय–(सं. पुं.) स्थिर निश्चय।
परिनिष्ठा–(सं. स्त्री.) पूर्णता, समाप्ति।
परिन्यास–(सं.पुं.) काव्य के चरणों में वह स्थान जहाँ इसका एक अर्थ पूरा होता हो, नाटक में प्रधान कथानक की मूलभूत घटना की सूचना संकेत द्वारा किया जाना।
परिपंच–(हिं. पुं.) देखें 'प्रपंच'।
परिपंची–(हिं. पुं.) शत्रु, प्रपंची व्यक्ति।
परिपक्व–(सं. वि.) विकसित, प्रौढ़, अच्छी तरह से पका हुआ, बहुदर्शी, अनुभवी, निपुण, प्रवीण, जो अच्छी तरह पच गया हो।
परिपक्वता–(सं. स्त्री.) परिपक्व होने का भाव, बहुदर्शिता।
परिपद–(सं. पुं.) जाल, फन्दा।
परिपवन–(सं. पुं.) सूप, चलनी।
परिपाक–(सं. पुं.) पकना या पकाया जाना, पचन का भाव, बहुदर्शिता, निपुणता, कुशलता, कर्म का फल, परिणाम, प्रौढ़ता, पूर्णता।
परिपाचन–(सं. पुं.) अच्छी तरह से पच जाना।
परिपाटल–(सं.वि.) पीलापन लिये लाल रंग का।
परिपाटी–(सं.स्त्री.) अनुक्रम, श्रेणी, प्रणाली, ढंग, रीति, पद्धति, चाल, अंकगणित।
परिपार्श्वचर–(सं. वि.) बगल में चलने या जानेवाला।
परिपार–(हिं. पुं.) मर्यादा।
परिपालक–(सं.वि.) पालन करनेवाला।
परिपालन–(सं.पुं.) परिरक्षण, देख-रेख, रखवाली, रक्षा, बचाव, पालन-पोषण।

परिपिच्छ–(सं. पुं.) मोर के पंखों का बना हुआ प्राचीन काल का एक आभूषण।
परिपिष्ट–(सं.वि.) दलित, कुचला हुआ।
परिपीड़न–(सं. पुं.) बहुत कष्ट देने या हानि पहुँचाने का कार्य, सताना।
परिपीवर–(सं. वि.) बहुत मोटा।
परिपुष्ट–(सं. वि.) पूर्ण रूप से पुष्ट, जिसका पालन-पोषण भली भाँति हुआ हो।
परिपूत–(सं. वि.) विशुद्ध, अति पवित्र।
परिपूरक–(सं. वि.) समृद्ध करनेवाला, धन-धान्य से पूर्ण करनेवाला।
परिपूरन–(हिं. वि.) देखें 'परिपूर्ण'।
परिपूरित–(सं.वि.) परिपूर्ण, भरा हुआ, समृद्ध किया हुआ।
परिपूर्ण–(सं. वि.) सम्पूर्ण, पूरा किया हुआ, परितृप्त, अघाया हुआ।
परिपूर्णता–(सं. स्त्री.) सम्पूर्णता।
परिपूर्णत्व–(सं. पुं.) परिपूर्णता।
परिपूर्ति–(सं. स्त्री.) परिपूर्ण होने की क्रिया, स्थिति या भाव।
परिपृच्छक–(सं. पुं.) पूछनेवाला।
परिपेलव–(सं. वि.) अति सुकुमार।
परिपोट–(सं. पुं.) कान का एक रोग।
परिपोषण–(सं. पुं.) पालन-पोषण।
परिप्रश्न–(सं. पुं.) युक्तायुक्त प्रश्न, जिज्ञासा।
परिप्राप्ति–(सं. स्त्री.) लाभ, मिलना।
परिप्रेषित–(सं. वि.) भेजा हुआ।
परिप्रेष्य–(सं.पुं.) दास, टहलुआ; (वि.) भेजने योग्य।
परिप्लव–(सं. वि.) अस्थिर, चंचल, काँपता हुआ, गतियुक्त, चलता हुआ; (पुं.) प्लावन, बाढ़, नाव, अत्याचार।
परिप्लुत–(सं. वि.) आर्द्र, भीगा हुआ, प्लावित, डूबा हुआ।
परिप्लुता–(सं. स्त्री.) मदिरा।
परिप्लुष्ट–(सं.वि.) जला हुआ, भुना हुआ।
परिफुल्ल–(सं. वि.) अत्यन्त खिला हुआ, अत्यन्त रोमांचित, प्रफुल्ल।
परिबर्ह–(सं. पुं.) देखें परिबर्हण।
परिबर्हण–(सं. पुं.) राजा का छत्र, चमर आदि राज-चिह्न।
परिबाधा–(सं. स्त्री.) कष्ट, बाधा, पीड़ा।
परिबृंहण–(सं. पुं.) उन्नति, बढ़ती।
परिबोध–(सं. पुं.) सम्यक् ज्ञान।
परिभंग–(सं. पुं.) टुकड़े-टुकड़े होना।
परिभक्ष–(सं. वि.) दूसरे का माल खानेवाला।
परिभक्षण–(सं. पुं.) सारा या समूचा खा जाना, चट कर जाना।
परिभव, परिभवन–(सं. पुं.) अनादर, तिरस्कार, पराजय।
परिभवी–(हिं.वि.) तिरस्कार करनेवाला।
परिभाव–(सं.पुं.) अनादर, तिरस्कार।
परिभावन–(सं.स्त्री.) चिंतन, शोच, संयोग, मिलाप, साहित्य में वह रचना-शैली जिससे अधिक कुतूहल या उत्सुकता सूचित या उत्पन्न होती है।
परिभावित–(हिं. वि.) चिंतन किया हुआ, तिरस्कृत।
परिभाषक–(सं. वि.) निन्दक, निन्दा द्वारा किसी का अपमान करनेवाला।
परिभाषण–(सं. पुं.) निन्दा करना, उलहना देना।
परिभाषा–(सं. स्त्री.) स्पष्ट या संशय-रहित कथन, किसी शब्द का इस प्रकार अर्थ करना जिससे उसकी अर्थ की विशेषता और व्याप्ति पूर्णरूप से निश्चित हो जाय, किसी शास्त्र, ग्रन्थ आदि की विशिष्ट संज्ञा, ऐसा शब्द जिसका किसी शास्त्र में निर्दिष्ट अर्थ में व्यवहार किया जाता है, शास्त्रकारों की बनाई हुई संज्ञा, लक्षण, सूत्र के छः लक्षणों में से एक, निन्दा।
परिभाषित–(सं. वि.) जिसकी परिभाषा की गई हो, अच्छी तरह से व्याख्यात।
परिभाषी–(हिं. वि.) बोलनेवाला।
परिभुक्त–(सं. वि.) जिसका उपभोग किया गया हो।
परिभू–(सं. वि.) जो चारों ओर से आच्छादित हो; (पुं.) परिपालक, ईश्वर।
परिभूत–(सं. वि.) अवमानित, तिरस्कार किया हुआ, पराजित, हराया हुआ।
परिभूषण–(सं. पुं.) सजाने की क्रिया या भाव।
परिभूति–(सं.स्त्री.) निरादर, तिरस्कार।
परिभूषित–(सं. वि.) सजाया हुआ, सँवारा हुआ।
परिभेद–(सं. पुं.) तलवार, तीर आदि का घाव।
परिभेदक–(सं. वि.) गहरा घाव करनेवाला।
परिभोक्ता–(सं. पुं.) दूसरे के धन का उपभोग करनेवाला।
परिभोग–(सं. पुं.) उपभोग, स्त्री-प्रसंग, मैथुन।
परिभ्रम–(सं. पुं.) भ्रमण, भटकना, भ्रम, भ्रान्ति।
परिभ्रमण–(सं. पुं.) पर्यटन, इधर-उधर घूमना, चक्कर खाना, परिधि, घेरा।
परिभ्रष्ट–(सं. वि.) पतित, गिरा हुआ, भागा हुआ।
परिमंडल–(सं. वि.) वर्तुलाकार; (पुं.) चन्द्रमा के चारों ओर की प्रभा, परिधि घेरा।
परिमंथर–(सं. वि.) बहुत मंद या धीमा।
परिमंद–(सं. वि.) बहुत थका हुआ।
परिमर–(सं. पुं.) वायु, हवा।
परिमर्श–(सं. पुं.) परामर्श, विचार।
परिमर्ष–(सं. पुं.) ईर्ष्या, डाह, कुढ़न।
परिमल–(सं. पुं.) उत्तम गन्ध, मैथुन, सहवास, विमर्दन, मलने का काम, कुंकुम आदि का मलना; –ज–(पुं.) मैथुन से प्राप्त सुख।
परिमाण–(सं. पुं.) माप, वह मान जो तौल या नापने से जानी जाय।
परिमाणक–(सं.पुं.) नापने का कोई यन्त्र।
परिमान–(हि. पुं.) देखें 'परिमाण'।
परिमार्गण–(सं. पुं.) खोजना, ढूँढ़ना।
परिमार्जक–(सं. पुं.) धोने या माँजनेवाला, परिशोधक, परिष्कारक।
परिमार्जन–(सं. पुं.) परिशोधन, मार्जन, एक प्रकार की मिठाई।
परिमार्जनीय–(सं. वि.) परिमार्जन करने योग्य।
परिमार्जित–(सं. वि.) धोया हुआ, माँजा हुआ, परिमार्जन किया हुआ।
परिमित–(सं. वि.) अल्प, थोड़ा, कम, यथार्थ परिमाण का, जिसका परिमाण ज्ञात हो, तौला हुआ, सीमित।
परिमिति–(सं.स्त्री.) भूमि मापने का शास्त्र, भूमिति; (हि. स्त्री.) मर्यादा, प्रतिष्ठा।
परिमिलन–(सं.पुं.) अच्छी तरह मिलना।
परिमुख–(सं. वि.) मुख के चारों ओर का।
परिमुक्त–(सं. वि.) पूर्ण रूप से मुक्त।
परिमूढ़–(सं. वि.) व्याकुल, विचलित।
परिमृष्ट–(सं. वि.) पकड़ा हुआ, परामर्श किया हुआ।
परिमेय–(सं. वि.) नापने या तौलने योग्य, जिसके नापने या तौलने का प्रयोजन हो, संकुचित, थोड़ा।
परिमोक्ष–(सं. पुं.) सम्यक् मुक्ति, पूर्ण मोक्ष, परित्याग, छोड़ना, विष्णु।
परिमोक्षण–(सं.पुं.) परित्याग, मुक्ति, मोक्ष।
परिमोष–(सं. पुं.) स्तेय, चोरी।
परिमोषक–(सं. पुं.) चोरी करनेवाला, ठग, चोर।
परिमोहन–(सं. पुं.) वशीकरण।
परिम्लान–(सं. वि.) कुम्हलाया हुआ।
परियंक–(हि. पुं.) देखें 'पर्यंक'।
परियंत–(हि. अव्य.) देखें 'पर्यंत'।

परियत्त–(सं.वि.) चारों ओर से घिरा हुआ।
परियाण–(सं. पुं.) परिभ्रमण।
परियात–(सं. वि.) लौटकर आया हुआ।
परिरंभ, परिरंभण–(सं. पुं.) आलिंगन।
परिरंभना–(हिं.क्रि.स.) आलिंगन करना।
परिरक्षक–(सं. वि.) सब तरह से रक्षा करनेवाला।
परिरक्षण–(सं. पुं.) सब प्रकार से रक्षा।
परिरक्षणीय–(सं.वि.) रक्षा करने योग्य।
परिरक्षा–(सं. स्त्री.) परिपालन।
परिरक्षित–(सं.वि.) सब प्रकार से रक्षित।
परिरक्षी–(हिं.पुं.वि.) रक्षक, बचानेवाला।
परिरथ्या–(सं. स्त्री.) चौड़ी सड़क।
परिरोध–(सं. पुं.) अवरोध, रुकावट।
परिलंघन–(सं. पुं.) छलांग मारना।
परिलिखन–(सं. पुं.) किसी वस्तु को रगड़कर चिकनाना।
परिलिखित–(सं.वि.) रेखा से घिरा हुआ।
परिलुप्त–(सं. वि.) नष्ट, क्षति-ग्रस्त।
परिलेख–(सं. पुं.) कलम या कूँची जिससे रेखा या चित्र बनाया जाय, चित्र का स्थूल रूप जिसमें केवल रेखाएँ हों, और रंग न भरा हो, चित्र, उल्लेख, वर्णन।
परिलेखन–(सं. पुं.) किसी वस्तु के चारों ओर रेखा खींचना।
परिलेखना–(हिं.क्रि.स.) समझना, विचार करना।
परिवंचन–(सं. पुं.) धोखा, छल।
परिवत्सर–(सं. पुं.) पूरा वर्ष।
परिवदन–(सं. पुं.) परिवाद, निन्दा।
परिवर्जक–(सं. वि.) त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला।
परिवर्जन–(सं. पुं.) परित्याग, मारण।
परिवर्जनीय–(सं. वि.) त्याग करने योग्य।
परिवर्जित–(सं.वि.) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
परिवर्त–(सं.पुं.) विनिमय, बदला, घुमाव, चक्कर, युग का अन्त, अदल-बदल, ग्रन्थ का अध्याय, स्वर-साधन की एक प्रणाली।
परिवर्तक–(सं.वि.) घुमाने या फिरानेवाला, चक्कर खानेवाला, चक्कर देनेवाला, बदलनेवाला, उलटने-पलटनेवाला।
परिवर्तन–(सं. पुं.) दो वस्तुओं का परस्पर अदल-बदल, हेर-फेर, वह जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय, बदलने की क्रिया, किसी काल या युग की समाप्ति, घुमाव, फेरा।
परिवर्तनीय–(सं. वि.) बदलने योग्य।
परिवर्तित–(सं. वि.) जिसका आकार या रूप बदल गया हो, बदला हुआ, जो बदले में मिला हो।
परिवर्ती–(हिं. वि.) परिवर्तनशील, बार-बार बदलनेवाला, बारबार घूमनेवाला, बदलता रहनेवाला।
परिवर्तुल–(सं. वि.) पूर्णतः गोल।
परिवर्धन–(सं.पुं.) अच्छी तरह वृद्धि होना, किसी वस्तु का संख्या, गुण आदि में बढ़ना।
परिवर्धित–(सं.वि.) बढ़ा हुआ, बढ़ाया हुआ।
परिवसथ–(सं. पु.) ग्राम, गाँव।
परिवह–(सं. पुं.) सात पवनों में से एक जो प्रातःकाल आकाशगंगा को बहाता हुआ शुक्र तारा को घुमाता है (पुराण कथा), अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
परिवा–(हिं. स्त्री.) किसी पक्ष की पहिली तिथि, प्रतिपदा, पड़िवा।
परिवाद–(सं.पुं.) अपवाद, निन्दा, सितार या बीन बजाने की अँगूठी।
परिवादक–(सं. वि.) निन्दा करनेवाला, बीन बजानेवाला।
परिवादी–(हिं. वि.) अपवादक, निन्दा करनेवाला।
परिवाप–(सं. पुं.) परिच्छद, मुण्डन।
परिवार–(सं. पुं.) परिजनसमूह, कुटुम्ब, तलवार का कोष, म्यान, कोई ढापनेवाली वस्तु, राजा या रईस के अनुचर जो उनके पीछे-पीछे चलते हैं, आश्रित-जन, समान स्वभाव, धर्म वर्ग आदि की वस्तुओं का समुदाय, कुल।
परिवारण–(सं. पुं.) आवरण, तलवार का म्यान।
परिवारी–(हिं. पुं.) कुटुम्ब।
परिवास–(सं.पुं.) प्रवास, परदेश-निवास, घर, सुगन्ध।
परिवाह–(सं. पुं.) राजा को भेंट देने योग्य वस्तु, पानी के निकलने का मार्ग, मेंड़ आदि के ऊपर से जल का बहना।
परिविद्ध–(सं. वि.) सब प्रकार से बँधा हुआ, परिवृत, घेरा हुआ।
परिविहार–(सं. पुं.) स्वच्छन्द विहार।
परिवीत–(सं.वि.) घिरा हुआ, लपेटा हुआ।
परिवृत–(सं. वि.) ढपा हुआ, छिपा हुआ।
परिवृति–(सं. स्त्री.) वेष्टन, छिपाने या घेरने की वस्तु।
परिवृत्त–(सं. वि.) ढपा या घिरा हुआ, समाप्त।
परिवृत्ति–(सं. स्त्री.) घुमाव, चक्कर, वेष्टन, घिराव, विनिमय, अदला-बदली, समाप्ति, अन्त, किसी शब्द या पद के स्थान पर दूसरा ऐसा शब्द या पद रखना कि अर्थ वही बना रहे, एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु लेकर दूसरी वस्तु देने के परिणामों में असीम अंतर व्यक्त किया जाता है।
परिवृद्ध–(सं. वि.) अत्यन्त बढ़ा हुआ।
परिवृद्धि–(सं. स्त्री.) परिवर्धन, बढ़ती।
परिवेत्ता–(हिं. पुं.) वह मनुष्य जो बड़े भाई से पहिले अपना विवाह कर ले।
परिवेद–(सं. पुं.) परिज्ञान, पूर्ण ज्ञान।
परिवेदक–(सं.पुं.) पूर्ण ज्ञान करानेवाला।
परिवेदन–(सं. पुं.) विवाह, अग्निहोत्र, के लिये अग्निस्थापन, विचरण, घूमना, पूर्ण ज्ञान, लाभ, प्राप्ति, विद्यमानता, बहुत दुःख या कष्ट, वाद-विवाद।
परिवेश–(सं. पुं.) परिधि, वेष्टन, घेरा।
परिवेष–(सं. पुं.) परिधि, सूर्य का मंडल, परोसना, चहारदीवारी आदि जो चारों ओर से घेरकर गृह आदि की रक्षा करती है, कोट, परकोटा।
परिवेषण–(सं. पुं.) परिधि, घेरा, परोसना, सूर्य या चन्द्र के चारों ओर का मण्डल, भोजन-पात्र में अन्न आदि का दान।
परिवेष्टन–(सं. पुं.) आच्छादन, चारों ओर से घेरना, ढापने या लपेटने की वस्तु, परिधि, घरा।
परिवेष्टा–(हिं. पुं.) परोसनेवाला।
परिवेष्टित–(सं.वि.) चारों ओर से घिरा हुआ।
परिव्यक्त–(सं.वि.) अत्यन्त स्पष्ट या प्रगटा।
परिव्याध–(सं. पुं.) जलबेंत, कनेर का वृक्ष; (वि.) चारों ओर से बेधनेवाला।
परिव्रज्या–(सं.स्त्री.) तपस्या, इधर-उधर घूमना, भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना।
परिव्राज, परिव्राजक, परिव्राट्–(सं. पुं.) सब प्रकार के विषय-भोगों का परित्याग करके भ्रमण करनेवाला संन्यासी, परमहंस, यति, श्रमण।
परिशमित–(सं. वि.) शमन किया हुआ।
परिशाश्वत–(सं.वि.) जो सर्वदा समान रहे।
परिशिष्ट–(सं.पुं.) पुस्तक या लेख का वह अंश जिसमें ऐसी बातें हों जो यथास्थान लिखने में छूट गई हों, पुस्तक की उपयोगिता बढ़ाने के लिये अवशिष्ट विषयों की पूर्ति; (वि.) अवशिष्ट, छूटा हुआ।
परिशीलन–(सं. पुं.) सब बातों या विषयों को सोच-समझकर पढ़ना, अनुशीलन, स्पर्श, छूना।
परिशुद्ध–(सं. वि.) अच्छी तरह से शुद्ध किया हुआ।
परिशुद्धि–(सं. स्त्री.) परिशुद्ध होने का भाव, पाप से छुटकारा।
परिशुश्रूषा–(सं. स्त्री.) समुचित सेवा।
परिशुष्क–(सं.वि.) बहुत सूखा हुआ, रसहीन।
परिश्रुत–(सं. पुं.) सुरा, मद्य।

परिशेष–(सं. पुं.) समाप्ति, अवशेष; (वि.) अवशिष्ट, बचा हुआ ।
परिशोध–(सं.पुं.) पूर्ण शुद्धि, ऋण चुकाना।
परिशोधन–(सं. पुं.) पूर्ण रूप से शुद्ध करना, ऋण की चुकाई ।
परिशोषण–(सं.पुं.) समूचा सूख जाना ।
परिश्रम–(सं. पुं.) श्रम, क्लांति, प्रयास, उद्यम, व्यायाम ।
परिश्रमी–(सं. वि.) उद्यमी ।
परिश्रय–(सं. पुं.) वेष्टन, घेरा, आश्रय, रक्षा का स्थान, सभा, परिषद् ।
परिश्रयण–(सं. पुं.) वेष्टन, घेरा ।
परिश्रांत–(सं. वि.) बहुत थका हुआ ।
परिश्रांति–(सं. स्त्री.) थकावट ।
परिश्राम–(सं. पुं.) क्लान्ति, थकावट ।
परिश्रुत–(सं. वि.) प्रसिद्ध ।
परिश्लिष्ट–(सं. वि.) आलिंगित, छाती से लगाया हुआ ।
परिषत्, परिषद्–(सं. स्त्री.) प्राचीन काल की विद्वान् ब्राह्मणों की सभा, विद्वत्-सभा, समूह, समाज, सभा, भीड़ ।
परिषद्य–(सं. पुं.) सदस्य, सभासद्, स्वामी के पीछे-पीछे चलनेवाले अनुचर ।
परिषद्वल–(सं. वि.) सभासद्, सदस्य ।
परिषिक्त–(सं. वि.) सींचा हुआ, जिस पर जल आदि छिड़का गया हो ।
परिषीवण–(सं. पुं.) गाँठ देना, सीना ।
परिषेक–(सं.पुं.) छिड़काव, स्नान ।
परिषेचक–(सं. वि.) सींचनेवाला, छिड़कनवाला ।
परिष्कण्ण–(सं. वि.) अन्य के द्वारा पाला-पोसा हुआ, दत्तक पुत्र ।
परिष्कार–(सं. पुं.) संस्कार, शुद्धि, शोभा, अलंकार, भूषण, सजावट, संयम, स्वच्छता, निर्मलता, शृंगार ।
परिष्कृत–(सं.वि.) विभूषित, सजाया हुआ, शुद्ध किया हुआ, परिष्कार किया हुआ ।
परिष्क्रिया–(सं. स्त्री.) शुद्ध करना, माँजना, धोना, सजाना, विभूषित करना, सँवारना ।
परिष्टवन–(सं. पुं.) प्रशंसा या स्तुति करना ।
परिष्टोम–(सं.पुं.) हाथी की पीठ पर की झूल ।
परिष्यंद–(सं. पुं.) नदी, जल की धारा, द्वीप, टापू ।
परिष्वंग–(सं.पुं.) आलिंगन, गले मिलना ।
परिसंख्या–(सं. स्त्री.) परिगणना, गिनती, एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के समान दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से काटने के निमित्त कही जाती है, (यह कही हुई बात अन्य प्रमाणों से सिद्ध जान पड़ती है ।)
परिसंख्यान–(सं.पुं.) परिगणन, गिनती ।
परिसंचर–(सं. पुं.) सृष्टि का प्रलयकाल ।
परिसभ्य–(सं. पुं.) सभ्य, सभासद् ।
परिसमंत–(सं. पुं.) वृत्त के चारों ओर की सीमा या घेरा ।
परिसमाप्त–(सं. वि.) पूर्ण रूप से समाप्त, निःशेष ।
परिसर–(सं. पुं.) नदी या पर्वत के आस-पास की भूमि, मृत्यु, विधि, शिरा, नाड़ी ।
परिसरण–(सं. पुं.) इधर-उधर घूमना, पराभव, हार, मृत्यु ।
परिसर्प–(सं. पुं.) किसी के चारों ओर घूमना, पर्यटन, आवेष्टन, घूमना-फिरना, एक प्रकार का सर्प, एक प्रकार का कुष्ठ रोग, नाटक में किसी व्यक्ति के केवल मार्ग के चिह्न आदि की सहायता से या अनुमान के सहारे को खोजने के लिए भटकते फिरना ।
परिसाधन–(सं.पुं.) परम विषय का साधन ।
परिसारक–(सं.पुं.) इधर-उधर भटकनेवाला ।
परिसारी–(सं.वि.) भ्रमणकारी, घूमनेवाला ।
परिसीमा–(सं.स्त्री.) चारों ओर की सीमा ।
परिस्कंद–(सं. पुं.) वह व्यक्ति जिसका पालन-पोषण उसके पिता के अलावा दूसरे ने किया हो ।
परिस्तरण–(सं. पुं.) छितराना, फैलाना, लपेटना ।
परिस्थान–(सं.पुं.) स्थिति, रहने का घर ।
परिस्पंद–(सं. पुं.) अधिक हिलना या काँपना ।
परिस्पर्धा–(सं. स्त्री.) धन, बल, यश आदि में किसी के बराबर होने की इच्छा ।
परिस्पर्धी–(सं. वि.) स्पर्धा करनेवाला ।
परिस्फुट–(सं. वि.) व्यक्त, प्रकाशित, विकसित, अच्छी तरह से खिला हुआ ।
परिस्यंद–(सं.पुं.) क्षरण, झरना या बहना ।
परिस्रव–(सं.पुं.) टपकना, चूना, मन्द प्रवाह ।
परिस्रुत–(सं. वि.) टपकता या चूता हुआ; (पुं.) पुष्पसार, फूलों का इत्र ।
परिस्रुता–(सं. स्त्री.) अंगूर की मदिरा ।
परिहत–(सं. वि.) मृत, मरा हुआ; (हिं. स्त्री.) हल के पीछे की ओर की वह सीधी खड़ी लकड़ी जिसके ऊपर मुठिया लगी होती है तथा नीचे की ओर हरिस रहता है ।
परिहर–(हिं. पुं.) देखें 'परिहार' ।
परिहरण–(सं. पुं.) परिवर्जन, त्याग, किसी की वस्तु बलपूर्वक छीन लेना, निवारण, निराकरण, (अनिष्ट, दोष आदि का) उपचार करना ।
परिहरणीय–(सं.वि.) परिहरण के योग्य, हटाने या दूर करने योग्य ।
परिहरना–(हिं.क्रि.स.) त्यागना, छोड़ना ।
परिहस–(हिं. पुं.) परिहास, हँसी, ईर्ष्या, दुःख, खेद, डाह ।
परिहा–(सं. पुं.) एक प्रकार का छंद ।
परिहाटक–(सं.पुं.) वलय, हाथ का कंगन ।
परिहानि–(सं. स्त्री.) घाटा, हानि ।
परिहार–(सं. पुं.) अवज्ञा, अनादर, उपेक्षा, पशुओं के चरने की सार्वजनिक भूमि, निःशुल्क भूमि, छूट, खण्डन, दोषादि दूर करने की युक्ति, लड़ाई म जीता हुआ आयुधादि, धन, छिपाने की क्रिया, उपचार, त्यागने का कार्य, बहिष्कार, सूर्य या चन्द्र वंशीय राजपूतों की एक स्वतन्त्र शाखा, किसी अनुचित कार्य के करने का प्रायश्चित नाटक में दिखाया जाना ।
परिहारक–(सं.वि.) परिहार करनेवाला ।
परिहारना–(हिं. क्रि.स.) प्रहार करना, मारना ।
परिहारी–(सं. वि.) निवारण, त्याग या हरण करनेवाला ।
परिहार्य–(सं. वि.) जिसका परिहार किया जा सके ।
परिहास–(हिं.पुं.) विनोद, क्रीड़ा, खेल, हँसी, दिल्लगी, ठट्ठा ।
परिहित–(सं. वि.) पहिना हुआ, ऊपर डाला हुआ, आच्छादित, चारों ओर से छिपा हुआ ।
परिहृत–(सं. वि.) पतित, भ्रष्ट, गिरा हुआ, नष्ट ।
परी–(फा.स्त्री.) अप्सरा, सुंदरी स्त्री ।
परीक्षक–(सं. पुं.) परखने या जाँचनेवाला, परीक्षा लेनेवाला ।
परीक्षण–(सं.पुं.) परीक्षा, जाँच-पड़ताल ।
परीक्षा–(सं.स्त्री.) गुण-दोष का विवेचन, वह कार्य जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि जानी जाय, समीक्षा, समालोचना, निरीक्षण, जाँच-पड़ताल, वैज्ञानिक खोजों के लिये प्रयोग ।
परीक्षित–(सं. वि.) जिसकी परीक्षा की गई हो ।
परीक्षित–(सं.पुं.) अर्जुन के पौत्र, अभिमन्यु के पुत्र, पाण्डु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा, (शमीक ऋषि के शाप से इनको तक्षक ने डसा या जिससे इनकी मृत्यु हुई थी। कलियुग का आरम्भ इनकी मृत्यु के

वाद से हुआ था।)
परीक्ष्य–(सं. वि.) परीक्षा करने योग्य, जिसकी परीक्षा करनी उचित हो।
परीखना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'परखना'।
परीछत–(हिं. पुं.) देखें 'परीक्षित्'।
परीछना–(हिं. क्रि. स.) परीक्षा लेना।
परीछम–(हिं. पुं.) पैर में पहिनने का एक आभूषण।
परीछा–(हिं. स्त्री.) देखें 'परीक्षा'।
परीछित–(हिं. वि.) देखें 'परीक्षित'।
परीत–(सं. वि.) परिवेष्टित, घिरा हुआ।
परीतोष–(सं. पुं.) परितोष, सन्तोष।
परीत्त–(सं. वि.) संकीर्ण, संकुचित।
परीप्सा–(सं. स्त्री.) प्राप्त करने की अभिलाषा।
परीभाव–(सं. पुं.) परिभाव, अनादर।
परीरंभ–(सं. पुं.) परिरंभ, आलिंगन।
परीवाद–(सं.पुं.) परिवाद, अपवाद, निन्दा।
परीवार–(सं.पुं.) तलवार का खोल, परिजन।
परीषाह–(सं. पुं.) जैन शास्त्रों के अनुसार वाईस प्रकार के त्याग।
परीसार–(हिं. पुं.) इधर-उधर घूमना।
परीहार–(सं. पुं.) अवज्ञा, अनादर।
परीहास–(सं.पुं.) परिहास, उपहास, क्रीड़ा।
परु–(सं.पुं.) पर्वत, समुद्र, स्वर्गलोक, ग्रन्थि।
परुई–(हिं. स्त्री.) भड़भूँजे की अन्न भूजने की नाँद।
परुख–(हिं.वि.) देखें 'परुष', कठोर, तीक्ष्ण।
परुखाई–(हिं. स्त्री.) परुषता, कठोरता, कड़ाई।
परुष–(सं. पुं.) कठोर वात, तीर, वाण, सरपत; (वि.) कठोर, कड़ा, निष्ठुर, अप्रिय, निर्दय, जिसको दया न हो।
परुषता–(सं. स्त्री.) कर्कशता, कठोरता, निर्दयता, निष्ठुरता।
परुषत्व–(सं. पुं.) निष्ठुरता।
परुषा–(सं. स्त्री.) रावी नदी, फालसा, काव्य में कठोर शब्दों के प्रयोग करने की रीति जिसमें टवर्गीय, द्वित्व, संयुक्त, रेफ, श, ष आदि वर्ण प्रयुक्त किये गये हों तथा लंवे-लंवे समास अधिक हों।
परुषाक्षर–(सं. पुं.) कर्कश वचन, कटोर वात।
परुषित–(सं. वि.) कठोर वचन बोलनेवाला।
परुषतर–(सं. वि.) कोमल, मृदु।
परुषोक्ति–(सं. स्त्री.) निष्ठुर वचन।
परूँगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी शाहवलूत का वृक्ष और फल।
परूष, परूषक–(सं. पुं.) फालसा।

परे–(हिं. अव्य.) दूर, उधर, उस ओर, अतीत, वाहर, ऊपर, वढ़कर, पीछे, वाद।
परेई–(हिं. स्त्री.) पंडुकी, कवूतरी।
परेखना–(हिं. क्रि. स.) सव ओर से देखना, जाँचना, प्रतीक्षा करना, आसरा देखना।
परेखा–(हिं. स्त्री.) परीक्षा, जाँच-पड़ताल, प्रतीति, विश्वास, पश्चात्ताप, पछतावा, खेद।
परेग–(हिं. पुं.) लोहे की कील, छोटा काँटा।
परेड–(हिं.पुं.) सैनिक शिक्षा या व्यायाम।
परेत–(हिं. पुं.) देखें 'प्रेत', एक भूत योनि का नाम; (वि.) मृत, मरा हुआ; **–भूमि**–(स्त्री.) प्रेतभूमि, श्मशान; **–राज**–(पुं.) यम; **–वास**–(पुं.) श्मशान-भूमि।
परेता–(हिं. पुं.) सूत लपेटने का जुलाहों का एक उपकरण, वह बेलन या चरखी जिस पर पतंग (गुड्डी) का डोरा लपेटा जाता है।
परेर–(हिं. पुं.) आकाश।
परेली–(हिं. पुं.) ताण्डव नृत्य का एक भेद।
परेवा–(हिं. पुं.) पण्डुक पक्षी, कवूतर, तेज उड़नेवाली चिड़िया, शीघ्रगामी पत्रवाहक, हरकारा।
परेश–(सं. पुं.) ईश्वर, विष्णु, ब्रह्मा।
परेहा–(हिं. पुं.) वह भूमि जो हल चलाने के बाद सींची गई हो।
परैधित–(सं. वि.) दूसरे के द्वारा पाला-पोसा हुआ; (पुं.) कोकिल, कोयल।
परों–(हिं. अव्य.) देखें 'परसों'।
परोक्ष–(सं.पुं.) अप्रत्यक्षता, अनुपस्थिति, अभाव, अनस्तित्व; (वि.) जो सामने न हो, गुप्त, छिपा हुआ।
परोक्षत्व–(सं.पुं.) परोक्ष होने का भाव।
परोजन–(हिं. पुं.) देखें 'प्रयोजन'।
परोट–(सं. पुं.) घी में पकाई हुई पूरी।
परोढा–(सं.स्त्री.) दूसरे की पत्नी।
परोना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पिरोना'।
परोपकार–(सं. पुं.) दूसरे के हित का काम, दूसरे का उपकार।
परोपकारक–(सं. पुं.) वह जो दूसरे की भलाई करता हो।
परोपकारी–(सं. वि.) दूसरे का हित करनेवाला।
परोरना–(हिं. क्रि. स.) अभिमन्त्रित करना, मन्त्र पढ़कर फूंकना।
परोवरीण–(सं. वि.) जिसमें भले-बुरे दोनों गुण हों।
परोवरीयस्–(सं. वि.) परम श्रेष्ठ, परमात्मा।

परोसना–(हिं. क्रि. स.) खाने के लिये किसी के सामने तरह-तरह के भोजन रखना, परसना।
परोसा–(हिं. पुं.) एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो थाली या पत्तल पर रखकर कहीं भेजा या किसी को दिया जाता है।
परोसी–(हिं. पुं.) देखें 'पड़ोसी'।
परोसैया–(हिं. पुं.) भोजन परसनेवाला।
परोहन–(हिं. पुं.) वह पशु जिस पर सवार होकर यात्रा की जाय, यथा–घोड़ा, बैल, हाथी आदि।
परौता–(हिं. स्त्री.) अन्न ओसाने के लिये हवा करने की चादर।
पर्कट–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का बगला।
पर्कटि, पर्कटी–(सं. स्त्री.) पाकड़ का वृक्ष।
पर्कार–(हिं. पुं.) देखें 'परकार', परकाल।
पर्काला–(हिं. पुं.) देखें 'परकाला'।
पर्गना–(हिं. पुं.) देखें 'परगना'।
पर्चा–(हिं. पुं.) देखें 'परचा'।
पर्चाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'परचाना'।
पर्चुन–(हिं. पुं.) देखें 'परचन'।
पर्चुनिया–(हिं. पुं.) देखें 'परचनी'।
पर्जंक–(हिं. पुं.) देखें 'पर्यंक'।
पर्जनी–(सं. स्त्री.) दारुहरिद्रा, दारुहलदी।
पर्जन्य–(सं. पुं.) इन्द्र, मेघ, वादल, विष्णु।
पर्जन्या–(सं. स्त्री.) दारुहलदी।
पर्ण–(सं.पुं.) पत्र, पत्ता, ताम्बूल, पान, पक्ष, डैना, पलाश का पत्ता।
पर्णकार–(सं. पुं.) पान बेचनेवाला, तमोली, वरई।
पर्णकुटिका, पर्णकुटी–(सं. स्त्री.) पर्णशाला, झोपड़ी, केवल पत्तों की बनी हुई कुटी।
पर्णकृच्छ्र–(सं. पुं.) एक व्रत जिसमें पाँच दिन तक पत्तों का क्वाथ पीकर रहा जाता है।
पर्णखंड–(सं. पुं.) पुष्पहीन वनस्पति।
पर्णचीरपट–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
पर्णनाल–(सं. पुं.) पत्तों का डंठल।
पर्णभोजन–(सं. वि.) जो केवल पत्ते खाकर रहता हो।
पर्णमणि–(सं. पुं.) पान की जड़, कुलंजन।
पर्णमृग–(सं. पुं.) वृक्षों पर रहनेवाला पशु।
पर्णल–(सं.वि.) पर्णयुक्त, जिसमें पत्ते हों।
पर्ण-लता–(सं. स्त्री.) पान की बेल।
पर्णवी–(सं. पुं.) खग, पक्षी।
पर्णशय्या–(सं. स्त्री.) पत्तों का विछावन।
पर्णशाला–(सं.स्त्री.) पत्तों की वनी हुई कुटी।
पर्णाटक–(सं.पुं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम
पर्णाद–(सं. वि.) पत्ते खाकर रहनेवाला।
पर्णाशन–(सं. वि.) देख 'पर्णाद'; (पुं.)

मेघ, बादल ।
पर्णास–(सं. पुं.) तुलसी ।
पर्णाहार–(सं.वि.) जो पत्ते खाकर रहता हो ।
पर्णिक–(सं. वि.) पत्ते बेचनेवाला ।
पर्णिका–(सं. स्त्री.) पिठवन की लता ।
पर्णी–(हिं. पुं.) वृक्ष, पेड़, तेजपत्ता, पिठवन, एक प्रकार की अप्सरा ।
पर्णोटज–(सं. पुं.) देखें 'पर्णशाला' ।
पर्त–(हिं. स्त्री.) देखें 'परत' ।
पर्दनी–(हिं. स्त्री.) धोती ।
पर्दा–(हिं. पुं.) देखें 'परदा' ।
पर्दानशीन–(हिं.वि.स्त्री.) परदे में रहनेवाली ।
पर्पट–(सं. पुं.) पित्तपापड़ा, पपड़ी ।
पर्पटी–(सं. स्त्री.) गोपीचंदन, पपड़ी, एक सुगन्ध-द्रव्य, पानड़ी; **–रस**–(पुं.) वैद्यक में एक प्रकार का रस ।
पर्परीक–(सं. पुं.) सूर्य, अग्नि, जलाशय ।
पर्ब–(हिं. पुं.) देखें 'पर्व' ।
पर्बत–(हिं. पुं.) देखें 'पर्वत' ।
पर्बती–(हिं. वि.) पहाड़-संबंधी, पहाड़ी ।
पर्यंक–(सं. पुं.) पलंग, योग का एक आसन, एक प्रकार का वीरासन ।
पर्यंत–(सं.पुं.) अंतिम सीमा; (अव्य.) तक, लौं ।
पर्यंतीकृत–(सं. वि.) समाप्त किया हुआ ।
पर्यग्नि–(सं. पुं.) वह अग्नि जिसको लेकर परिक्रमा की जाती है ।
पर्यटन–(सं. पुं.) भ्रमण, घूमना, फिरना ।
पर्यन्य–(सं. पुं.) गरजता हुआ बादल, बादल की गरज ।
पर्यय–(सं.पुं.) किसी नियम का उल्लंघन ।
पर्ययण–(सं. पुं.) घोड़े की पीठ पर रखने का जीन या गद्दी ।
पर्यवरोध–(सं. पुं.) बाधा, रुकावट ।
पर्यवसान–(सं.पुं.) अन्त, समाप्ति, अन्तर्भाव, राग, क्रोध, ठीक अर्थ निश्चित करना ।
पर्यवसायी–(हिं. वि.) समाप्त करनेवाला ।
पर्यवस्कंद–(सं. पुं.) रथ से उतरना ।
पर्यवस्थान–(सं. पुं.) विरोध ।
पर्यवस्थित–(सं. वि.) विरोधपूर्ण ।
पर्यसन–(सं. पुं.) चारों ओर फेंकना ।
पर्यस्त–(सं. वि.) पतित, प्रसारित, फैलाया हुआ, दूर किया हुआ ।
पर्यस्तापह्नुति–(सं.स्त्री.) एक अर्थालंकार जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु का गुण छिपाकर उस गुण का अन्य व्यक्ति या वस्तु में विद्यमान होना वर्णन किया जाता है ।
पर्यस्तिका–(सं.स्त्री.) पर्यंक, खाट, पलंग ।
पर्याकुल–(सं. वि.) बहुत व्यग्र या घबड़ाया हुआ ।
पर्याकुलत्व–(सं. पुं.) व्याकुलता ।
पर्याण–(सं. पुं.) घोड़े का साज ।
पर्याप्त–(सं. वि.) यथेष्ट, पूरा, प्राप्त, मिला हुआ, जिसमें शक्ति या सामर्थ्य हो ।
पर्याप्ति–(सं. स्त्री.) यथेष्टता, प्राप्ति, शक्ति, नैयायिकों के मत से एक प्रकार का स्वरूप-संबंध ।
पर्याय–(सं. पुं.) क्रम, परंपरा, अनुक्रम, परिपाटी, प्रकार, अवसर, निर्माण, बनाने का काम, द्रव्य का गुण, एकार्थवाचक शब्द, वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णन किया जाता है; **–क्रम**–(पुं.) बड़ाई-छोटाई आदि के विचार से पर्याय या क्रम; **–वाचक**–(वि.) जिसमें पर्याय शब्द हों; **–वृत्ति**–(स्त्री.) एक वृत्ति को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना; **–शयन**–(पुं.) अपनी-अपनी पारी से सोना ।
पर्यायिक–(सं.पुं.) संगीत या नृत्य में अंग-भाव
पर्यायोक्त–(सं.वि.) जो क्रम से कहा गया हो ।
पर्यायोक्ति–(स. स्त्री.) वह अर्थालंकार जिसमें कोई बात स्पष्ट रूप से न कही जाकर घुमाव-फिराव से कही गई हो अथवा किसी सुन्दर बहाने से कार्य-साधन का वर्णन किया गया हो ।
पर्यालोचन–(सं. पुं.) अनुशीलन, अच्छी तरह से विवेचन ।
पर्यालोचना–(सं. स्त्री.) किसी वस्तु की पूरी समीक्षा, पूरी जाँच-पड़ताल ।
पर्यावर्त–(सं. पुं.) लौटना ।
पर्यास–(सं. पुं.) हनन, वध, नाश ।
पर्यासन–(सं.पुं.) किसी को घेर कर बठना ।
पर्युत्थान–(सं.पुं.) खड़ा होना, उठना ।
पर्युदय–(सं.अव्य.) सूर्योदय का समीप-काल ।
पर्युपासक–(सं. पुं.) सेवा करनेवाला ।
पर्युपासन–(सं. पुं.) सेवा-सत्कार ।
पर्युप्ति–(सं. स्त्री.) बोआई, बीज बोना ।
पर्व–(सं. पुं.) बाँस की गाँठ, अँगुली का जोड़, सन्धिस्थान, उत्सव, प्रस्ताव, पूर्णिमा और प्रतिपदा की सन्धि, अंश, भाग, धर्म, क्षण, अवसर, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण, यज्ञ आदि के समय होनेवाला उत्सव, भाग, टुकड़ा, पक्ष ।
पर्वक–(सं. पुं.) पैर का घुटना ।
पर्वकाल–(सं.पुं.) पर्व का समय, पुण्य काल, पर्व का दिन, चन्द्रमा का क्षय-काल ।
पर्वगामी–(सं. पुं.) पर्व के दिन स्त्री से संभोग करनेवाला ।
पर्वण–(सं.पुं.) पूरा करने की क्रिया या भाव ।
पर्वणी–(सं. स्त्री.) पूर्णिमा, पौर्णमासी, आँख का एक रोग ।
पर्वत–(सं. पुं.) शैल, गिरि, पहाड़, किसी वस्तु का ऊँचा ढेर, वृक्ष, पेड़, एक प्रकार का साग, सन्यासी, एक प्रकार के गन्धर्व, मरीचि के एक पुत्र का नाम; **–काक**–(पुं.) डोमकौवा; **–जा**–(स्त्री.) नदी, गौरी, पार्वती; **–पति**–(पुं.) हिमालय; **–मोचा**–(स्त्री.) पहाड़ी केला; **–राज**–(पुं.) हिमालय पवत; **–०पुत्री**–(स्त्री.) दुर्गा; **–वासी**–(पुं., वि.) पहाड़ पर रहनेवाला ।
पर्वतात्मजा–(सं. स्त्री.) दुर्गा ।
पर्वतारि–(सं. पुं.) इन्द्र ।
पर्वताशय–(सं. पुं.) मेघ, बादल ।
पर्वताश्रय–(सं. वि.) पहाड़ पर रहनेवाला ।
पर्वतास्त्र–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसको चलाने से शत्रु की सेना पर बड़े-बड़े पत्थर गिरने लगते थे अथवा सेना के चारों ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे ।
पर्वती–(हिं. वि.) पर्वत-संबंधी, पहाड़ी ।
पर्वतीय–(सं. वि.) पर्वत-संबंधी, पहाड़ी, पहाड़ पर रहनेवाला, पहाड़ पर उत्पन्न होनेवाला ।
पर्वतेश्वर–(सं. पुं.) पर्वतराज, हिमालय ।
पर्वतोद्भव–(सं. पुं.) हिंगुल, पारद, पारा ।
पर्वतोद्भूत–(सं. पुं.) अभ्रक, अबरक ।
पर्वधि–(सं. पुं.) चन्द्र, चन्द्रमा ।
पर्वमूल–(सं. पुं.) चतुर्दशी और अमावस्या का मध्यवर्ती मुहूर्त ।
पर्वमूला–(सं. स्त्री.) सफेद दूब ।
पर्वयोनि–(सं. पुं.) गाँठदार वनस्पति, यथा–ऊख ।
पर्वर–(हिं. पुं.) परवल ।
पर्वरुद, पर्वरुह्–(सं. पुं.) दाड़िम, अनार ।
पर्वसंधि–(सं. पुं.) घुटने का जोड़, सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण लगने का समय, पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय ।
पर्वा–(हिं. स्त्री.) चिन्ता ।
पर्वानगी–(हिं. स्त्री.) आज्ञा ।
पर्वाना–(हिं. पुं.) आज्ञा-पत्र ।
पर्वाह–(सं. पुं.) पर्वदिन, उत्सव का दिन; (हिं. स्त्री.) चिन्ता, परवाह ।
पर्विणी–(हिं. स्त्री.) पर्व का दिन ।
पर्शनीय–(हिं. वि.) स्पर्श करने योग्य ।
पर्शु–(सं. पुं.) परशु, फरसा, पसली ।
पर्शुका–(सं. स्त्री.) छाती की हड्डी ।
पर्शुपाणि–(सं. पुं.) परशुराम ।
पर्शुराम–(सं. पुं.) देखें 'परशुराम' ।
पर्ष–(स. वि.) निष्ठुर, कठोर ।
पर्षद्–(सं. स्त्री.) सभा, समाज ।

पलंकट–(सं. वि.) भीरु, डरपोक।
पलंकष–(सं. पुं.) राक्षस, गुग्गुल।
पलंकषा–(सं. स्त्री.) गुग्गुल, पलाश, गोरखमुण्डी, लाह, मक्खी, छोटा गोखरू।
पलंका–(हिं. स्त्री.) अति दूर का स्थान।
पलंग–(हिं. पुं.) पर्यंक, सुन्दर चारपाई।
पलँगड़ी–(हिं. स्त्री.) छोटा पलंग।
पलंगतोड़–(हिं. वि.) आलसी, निकम्मा, कामचोर।
पलंगपोश–(हिं. पुं.) पलंग पर बिछाने की चादर।
पलँगिया–(हिं. स्त्री.) छोटा पलंग, खटिया।
पल–(सं. पुं.) समय का एक प्राचीन विभाग जो चौबीस सेकेंड के बराबर होता है, घड़ी या दण्ड का साठवाँ भाग, धान का पुआल, चलने की क्रिया, छल, तुला, तराजू एक तौल जो चार कर्ष के बराबर होती है, आमिष, मांस, मूर्ख, दृगंचल, पलक, समय का अति सूक्ष्म विभाग, क्षण; (मुहा.) **–मारते**–क्षण भर में, तुरत; **–में**–अति शीघ्र, देखते-देखते।
पलई–(हिं. स्त्री.) पतली टहनी, डाल का सिरा।
पलक–(सं. पुं.) आँख के ऊपर का चमड़े का परदा जिसके गिरने से आँख बंद होती और उठने से खुलती है, क्षण, पल; (मुहा.) **–गिरना**–आँख बंद होना, झपकी लगना, नींद आना; **–झपते**–बहुत थोड़े समय में, बात की बात म; **(किसी के लिये)–बिछाना**–बड़े प्रेम से स्वागत करना; **–भाँजना**–इशारा करना; **–मारना**–पलक गिराना, आँखों से संकेत या इशारा करना; **–से पलक न लगना**–आँखें खुली रहना, नींद न आना।
पलक दरिया–(हिं. वि.) अति उदार, बड़ा दानी।
पलक-नेवाज–(हिं. वि.) अति उदार, क्षणभर में निहाल कर देनेवाला।
पलक-पीटा–(हिं. पुं.) आँख की बरौनी झड़ने का एक रोग।
पलका–(हिं. पुं.) पलंग, चारपाई।
पलक्या–(सं. स्त्री.) पालक का साग।
पलखन–(हिं. पुं.) पाकर का पेड़।
पलगंड–(सं.पुं.) कच्ची भीत पर मिट्टी का लेप करनेवाला।
पलचर–(हिं. पुं.) राजपूत जाति के पुराणोक्त उपदेवता।
पलटन–(हिं. स्त्री.) अंग्रेजी पैदल सेना का एक विभाग; (इसमें दो सौ सैनिक रहते हैं), समूह, समदाय, दल।
पलटना–(हिं. क्रि. अ.,स.) किसी वस्तु के ऊपर के भाग को नीचे और नीचे के भाग को ऊपर करना, उलटा हो जाना, अच्छी स्थिति प्राप्त करना, अच्छे दिन बहुरना, बार-बार उलट-फेर करना, एक बात से मुकरकर दूसरी बात कहना, बदलना, लौटाना, फेरना, काया-पलट होना, लौटना, पीछे फिरना, मुड़ना, एक वस्तु को त्यागकर दूसरी वस्तु को ग्रहण करना।
पलटनिया–(हिं. पुं.) पलटन में काम करनेवाला सैनिक; (वि.) पलटन का।
पलटा–(हिं. पुं.) पलटने की क्रिया या भाव, प्रतिफल, बदला, परिवर्तन, नाव में वह पटरी जिस पर खेनेवाला बैठता है, मल्लयुद्ध की एक युक्ति, गाने में शीघ्रता समन्विन ताल-लय के साथ ऊँचे स्वर तक पहुँचकर धीरे-धीरे नीचे स्वरों तक पहुँचना, लोहे या पीतल की बड़ी खुरचनी; (मुहा.) **–खाना**–परिस्थिति का बदल जाना।
पलटाना–(हिं. क्रि.स.) बदलना, फेरना, लौटाना।
पलटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पलटा'।
पलटे–(हिं. अव्य.) प्रतिफलस्वरूप, बदले में।
पलड़ा–(हिं.पुं.) तुलापट, तराजू का पल्ला।
पलथा–(हिं. पुं.) कलैया मारना।
पलथी–(हिं. स्त्री.) बैठने का एक ढंग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पुट्ठे के नीचे दबाकर रखा जाता है और दोनों टाँगें नीचे ऊपर होकर दोनों जाँघों से त्रिकोण बनाती हैं।
पलद–(सं. वि.) (वह द्रव्य) जिसके खाने से मांस की वृद्धि होती है।
पलना–(हिं.क्रि.अ.) पाला-पोसा जाना, खा-पीकर मोटा होना, तैयार या हृष्ट-पुष्ट होना; (पुं.) पालना।
पलनाना–(हिं. क्रि.स.) घोड़े की पीठ पर गद्दा कसकर तैयार करना।
पलप्रिय–(सं. वि.) मांस खानेवाला।
पलभक्षी–(हिं. पुं.) मांसाहारी, मांस खानेवाला।
पलरा–(हिं. पुं.) देखें 'पलड़ा'।
पलल–(सं. पुं.) मांस, कीचड़, तिल का चूर्ण, तिलकुट।
पललप्रिय–(सं. वि.) देखें 'पलप्रिय'।
पललाशय–(सं. पुं.) गलगंड, घेंघा।
पलव–(सं. पुं.) मछली मारने का झावा।
पलवल–(हिं. पुं.) देखें 'परवल'।
पलवा–(हिं. पुं.) ऊख का अगौरा, अंजुली, चुल्लू।
पलवाना–(हिं. क्रि. स.) किसी के द्वारा पालन-पोषण कराना।
पलवारी–(हिं. पुं.) नाव खेनेवाला माँझी।
पलवाल–(हिं.वि.) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।
पलवैया–(हिं. वि.) पालन-पोषण करनेवाला।
पलस्तर–(हिं. पुं.) भीत आदि पर गारे आदि का लेप, लेट; (मुहा.) **–ढीला होना**–अति व्यग्र होना; **–कारी**–(स्त्री.) पलस्तर करने या होने का काम।
पलहना–(हिं.क्रि.अ.) पत्तियों से लद जाना, पल्लवित होना, पत्तियाँ फूटना।
पलहा–(हिं. पुं.) कोमल पत्ता, कोंपल।
पलांग–(सं. पुं.) शिशुमार, सूँस।
पलांडु–(सं. पुं.) प्याज।
पला–(हिं. पुं.) पल, निमिष, तराजू का पलड़ा, पल्ला, किनारा, अंचल।
पलाद–(सं. पुं.) मांसभक्षक, राक्षस।
पलान–(हिं. पुं.) पशुओं की पीठ पर कसा जानेवाला बोझ रखन का गद्दा।
पलानना–(हिं.क्रि.स.) घोड़े आदि पर पलान कसना, गद्दा बाँधना, धावा करने के लिए तैयारी करना।
पलाना–(हिं.क्रि. अ., स.) पलायन करना, भाग जाना, भगा देना।
पलानी–(हिं. स्त्री.) पैर की अँगुलियों में पहिनन का एक गहना, छप्पर।
पलान्न–(सं. पुं.) चावल और मांस के मेल से बना हुआ भोजन।
पलायक–(सं. वि.) पलायन करनेवाला, भग्गू, भागनेवाला।
पलायन–(सं. पुं.) भागने की क्रिया या भाव, भागना।
पलायमान–(सं. वि.) भागता हुआ।
पलायित–(स. वि.) भागा हुआ।
पलायी–(सं. वि.) पलायक, भग्गू।
पलाल–(सं. पुं.) किसी पौधे का सूखा डंठल, पुआल।
पलाश–(सं. पुं.) पत्र, पत्ता, ढाक का फूल, पलास का वृक्ष, कचूर, राक्षस, शासन, मगध देश, हरा रंग; (वि.) निष्ठुर, कठोर।
पलाशक–(सं. पुं.) पलाश का फूल।
पलाशन–(सं. पुं.) सारिका, मैना।
पलाश-निर्यास–(सं. पुं.) ढाक का गोंद।
पलाशपर्णी–(सं. स्त्री.) अश्वगन्धा, असगंध।

पलाशिका-(सं. पुं.) विदारीकन्द।
पलाशी-(सं. वि.) पल्लवित, मांसाहारी; (पुं.) राक्षस।
पलास-(हिं. पुं.) पलाश, ढाक।
पलासना-(हिं. क्रि. स.) सिल जाने पर जूते का निकला हुआ चमड़ा काटना।
पलिजी-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
पलिक-(सं.वि.) जो तौल में एक पल हो।
पलिका-(हिं. पुं.) खाट, चारपाई।
पलिघ-(हिं. पुं.) घड़ा, प्राचीर, गोशाला, गोपुर, फाटक, अर्गला, अगरी।
पलित-(सं. पुं.) ताप, गरमी, गुग्गुल, कीचड़, मिर्च; (वि.) वृद्ध, बूढ़ा, सफेद वालवाला।
पलिती-(हिं. वि.) पके वालवाला।
पलिया-(हिं.पुं.) पशुओं का गला फलने का रोग।
पलिहर-(हिं. पुं.) वह खेत जो वरसात में विना कुछ बोये छोड़ दिया जाता है।
पली-(सं. स्त्री.) सामान्य मक्खी; (हिं. स्त्री.) बड़े पात्र से घी या तेल निकालने की एक प्रकार की करछी।
पलीत-(हिं. पुं.) भूत, प्रेत, पिशाच; (वि.) दुष्ट, धूर्त, चालाक; (मुहा.)-**मिट्टी पलीत होना**-दुर्दशा होना।
पलीती-(हिं. स्त्री.) छोटा पलीता।
पलुआ-(हिं. वि.) पाला हुआ, पालतू; (पुं.) सन की जाति का एक पौधा।
पलुहना-(हिं.क्रि.अ.) पल्लवित होना, कोंपल निकलना।
पलुहाना-(हिं. क्रि.स.) हरामरा करना।
पलेट-(अं. स्त्री.) लंबी पट्टी, गोट।
पलेड़ना-(हिं.क्रि.स.) धक्का देना, ढकेलना।
पलेथन-(हिं. पुं.) वह सूखा आटा जो रोटी बेलते समय लोई में लगाया जाता है जिससे वह चकले म न चिपक जाय, परथन, किसी हानि के वाद होनेवाला अनावश्यक व्यय; (मुहा.)-**निकलना**-खूब पीटा जाना।
पलेनर-(अं.पुं.) चौरस करने की पटिया।
पलेना-(हिं. पुं.) देखें 'पलेनर'।
पलेव-(हिं.पुं.) खेत की हलकी सिंचाई, जूस को गाढ़ा करने के लिये इसमें मिलाया हुआ मसाला या आटा।
पलोटना-(हिं. क्रि. अ., स.) पैर दवाना, कष्ट के कारण छटपटाना या तड़फड़ाना।
पलोथन-(हिं. पुं.) देखें 'पलेथन'।
पल्टन-(हिं. स्त्री.) देखें 'पलटन'।
पल्टा-(हिं. पुं.) देखें 'पलटा'।
पलोवना-(हिं.क्रि.स.) पैर दवाना, सेवा-शुश्रूषा करना।
पलोसना-(हिं.क्रि.स.) जल आदि से धोना, शुश्रूषा करके अपने पक्ष में करना।
पल्यंक-(सं. पुं.) पलंग, पर्यंक, खाट।
पल्ल-(सं. पुं.) पलाल, पुआल।
पल्लव-(सं. पुं.) नये निकले हुए कोमल पत्ते, किसलय, विस्तार, वल, हाथ में पहिनने का कंगन, चपलता, नाच में हाथ की एक आकर्षक मुद्रा, प्राचीन पह्लव देश, दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश; -**ग्राही**-(वि.) किसी विषय का थोड़ा ज्ञान रखनेवाला।
पल्लवना-(हिं. क्रि. अ.) पत्ते निकलना, पल्लवित होना।
पल्लवाद-(सं. पुं.) हरिण, हिरन।
पल्लवाधार-(सं. पुं.) डाल, शाखा।
पल्लवास्त्र-(सं. पुं.) कामदेव।
पल्लविक-(सं. वि.) कामुक, लम्पट।
पल्लवित-(सं. वि.) जिसमें नये-नये पत्ते निकले हों, लहलहाता हुआ, हरा-भरा, लंबा-चौड़ा, रोमांचयुक्त, जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों; (पुं.) लाख का रंग।
पल्ला-(हिं. पुं.) वस्त्र का अंचल, छोर, दूरी, अधिकार, पास, तराजू की एक ओर की डलिया, पलड़ा, कैंची के दो भागों में से एक भाग, पटल, किवाड़, पहल, तीन मन का बोझ, चादर जिसमें अन्न बाँधकर लोग ले जाते हैं, दुपलिया टोपी का एक भाग; (मुहा.)-**छूटना**-छुटकारा पाना; -**पसारना**-किसी से कुछ माँगने के लिये कपड़ा फलाना; -**भारी होना**-किसी पक्ष का वल वढ़ना; **पल्ले पड़ना**-प्राप्त होना, मिलना; **पल्ले बाँधना**-जिम्मे करना।
पल्लि-(सं. स्त्री.) कुटी, ग्राम, गाँव, घर, छिपकली।
पल्ली-(सं. स्त्री.) छिपकली, गोधा, विस्तुइया।
पल्लू-(हिं.पुं.) चौड़ी गोट, पल्ला, छोर, अँचरा।
पल्ले-(हिं. पुं.) पल्ला; (अव्य.) जिम्मे; -**दार**-(पुं.) आढ़त या दुकान में अन्न तौलनेवाला मनुष्य, वया, अन्न ढोनेवाला कुली; -**दारी**-(स्त्री.) अन्न तौलने का काम।
पल्लौ-(हिं. पुं.) देखें 'पल्लव', पल्ला।
पवँरि-(हिं. स्त्री.) ड्योढ़ी।
पवँरिया-(हिं. पुं.) ड्योढ़ीदार।
पवई-(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
पवन-(सं. पुं.) हवा, वायु, कुम्हार का आवाँ, जल, पानी, विष्णु, श्वास, साँस, अन्न की भूसी अलगाना; (वि.) पावन, पवित्र; -**अस्त्र**-(हिं. पुं.) वह अस्त्र जिसके चलाने से प्रचण्ड वायु वहने लगती है; -**कुमार**-(पुं.) हनुमान्, भीमसेन; -**चक्की**-(हिं. स्त्री.) वायु के वेग से चलनेवाली चक्की या कल; -**चक्र**-(पुं.) चक्कर खाती हुई वायु, चक्रवात, ववंडर; -**ज**, -**तनय**-(पुं.) हनुमान्, भीमसेन; -**नंद**, -**नंदन**-(पुं.) हनुमान्, भीमसेन; -**पति**-(पुं.) वायु के अधिष्ठाता देवता; -**परीक्षा**-(स्त्री.) ज्योतिषियों की एक गणना जिसके अनुसार आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य वतलाया जाता है; -**पुत्र**-(पुं.) हनुमान्, भीमसेन; -**वाण**-(पुं.) वह वाण जिसको चलाने से वायु बड़े वेग से वहने लगे; -**वाहन**-(पुं.) अग्नि; -**संघात**-(पुं.) दो ओर से वायु का आकर आपस में वेग से टकराना; -**सुत**-(पुं.) हनुमान्, भीमसेन।
पवनात्मज-(सं. पुं.) भीमसेन, हनुमान्।
पवनाश, पवनाशन-(सं. पुं.) सर्प, साँप।
पवनाशिन्-(सं. पुं.) सर्प; (वि.) जो हवा खाकर रहता हो।
पवनास्त्र-(सं. पुं.) पुराण के अनुसार एक अस्त्र जिसके चलाने से वायु बड़े वेग से चलने लगती थी।
पवनी-(हिं. स्त्री.) नाई, वारी, लोहार., आदि जो गाँव के ब्राह्मणों, क्षत्रियों आदि से प्रतिवर्ष कुछ अनाज पाते हैं।
पवनेष्ट-(सं. पुं.) वकायन, नीबू का पेड़।
पवमान-(सं. पुं.) स्वाहा देवी के गर्भ से उत्पन्न अग्नि के एक पुत्र का नाम, चन्द्रमा का एक नाम।
पवर-(हिं. वि.) देखें 'प्रवर'।
पवर्ग-(सं. पुं.) वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग, जिसमें प, फ, व, भ, और म-ये पाँच अक्षर हैं।
पवाँर-(हिं. पुं.) परमार क्षत्रियों की एक शाखा।
पवाँरना-(हिं.क्रि.स.) गिराना, फेंकना, खेत में छींट कर बीज बोना।
पवाई-(हिं. स्त्री.) एक पैर का जूता, चक्की का एक पाट।
पवाड़-(हिं. स्त्री.) चकवँड़।
पवाड़ा-(हिं. पुं.) देखें 'पँवाड़ा'।
पवाना-(हिं. क्रि. स.) भोजन कराना, खिलाना।
पवार-(हिं. पुं.) देखें 'परमार'।

पवि–(सं. पुं.) वज्र, विजली, वाक्य, मार्ग, थूहर का पौधा।
पवित–(सं. वि.) पूत, पवित्र, शुद्ध।
पविताई–(हिं. स्त्री.) पवित्रता।
पवित्तर–(हिं. वि.) देखें 'पवित्र'।
पवित्र–(सं. वि.) शुद्ध, निर्मल; (पुं.) विष्णु, महादेव, कार्तिकेय, तिल का पौधा, कुश, कुश की वनी हुई हाथ में पहिनने की पवित्री, शुद्ध द्रव्य, मधु, घी, यज्ञोपवीत, वर्षा, ताँवा, दूध, जल पानी, रगड़।
पवित्रक–(सं.पुं.) सूत का वना हुआ जाल, कुश, दौने का पौधा, गूलर या पीपल का वृक्ष, क्षत्रिय का यज्ञोपवीत।
पवित्रता–(सं. स्त्री.) स्वच्छता, शुद्धि।
पवित्रधान्य–(सं. पुं.) यव, जौ।
पवित्रा–(सं. स्त्री.) श्रावण के शुक्ल पक्ष की एकादशी, रेशम की वनी हुई माला, तुलसी, हलदी, शमी का वृक्ष, पीपल का पेड़।
पवित्रात्मा–(हिं. वि.) जिसकी आत्मा पवित्र हो, शुद्ध अन्तःकरणवाला।
पवित्रित–(सं. वि.) पवित्र शुद्ध या निर्मल किया हुआ।
पवित्री–(सं. स्त्री.) कुश का वना हुआ छल्ला जो यज्ञादि के समय अनामिका में पहिना जाता है, पैंती।
पविधर–(सं. पुं.) वज्र धारण करनेवाले इन्द्र।
पवीर–(सं. पुं.) आयुध, शस्त्र, हल का फार।
पवेरना–(हिं.क्रि.स.) छींटकर बोना।
पवेरा–(हिं. पुं.) वह वोआई जो अन्न को छींटकर की जाय।
पशम–(हिं. पुं.) वहुत वढ़िया तथा कोमल ऊन जिसके दुशाले आदि वनते हैं, उपस्थ पर के वाल, नगण्य या अति तुच्छ पदार्थ।
पशमीना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का उम्दा ऊनी कपड़ा।
पशव्य–(सं. वि.) पशु-सम्वन्धी।
पशु–(सं.पुं.) चार पैरों से चलनेवाले लोमश और पूँछयुक्त प्राणी, प्राणी मात्र, जीव, देवता, पागल, यज्ञ, सांसारिक मनुष्यों की आत्मा; **–कर्म**–(पुं.) यज्ञ आदि में पशुओं का वलिदान; **–काम**–(वि.) गाय, भैंस आदि का अभिलाषी; **–क्रिया**–(स्त्री.) मैथुन; **–घ्न**–(वि.) पशुघातक; **–चर्या**–(स्त्री.) पशु के समान विवेकहीन आचरण; **–ता**–(स्त्री.) पशु का भाव, मूर्खता; **–त्व**–(पुं.) देखें 'पशुता'; **–दा**–(स्त्री.) कुमार की एक अनुचरी का नाम; **–देवता**–(स्त्री.) पशुओं के अधिष्ठाता देवता; **–धर्म**–(पुं.) पशुओं के समान प्रसंयत मैथुनादि कर्म जो निन्दनीय समझे जाते हैं; **–नाथ**–(पुं.) शिव, पशुस्वामी सिंह; **–प**–(वि.) पशुओं को पालनेवाला; **–पतास्त्र**–(पुं.) शिव का शूलास्त्र; **–पति**–(पुं.) शिव, महादेव, हुताशन, अग्नि, औषध, दवा; **–पाल**–(पु.) पशुओं को पालनेवाला; **–पालक**–(वि.) पशुओं का रक्षक; **–पाश**–(पुं.) पशुरूप जीव का बंधन; **–पाशक**–(पुं.) एक रतिवन्ध का नाम; **–बंधक**–(पुं.) पशुओं को बाँधने की रस्सी; **–भाव**–(पुं.) पशुत्व, साधकों की मन्त्र-सिद्धि का एक विशेष प्रकार; **–मार**–(पुं.) पशु की तरह हिंसा; **–रक्षक**–(पुं.) गोपाल, ग्वाला; **–रक्षी**–(पुं.) पशु की रक्षा करनेवाला; **–राज**–(पुं.) सिंह, शेर; **–वत्**–(वि.) पशुतुल्य।
पश्चात्–(सं. अव्य.) पीछे से, बाद में, फिर, अनन्तर; (पुं.) पश्चिम दिशा, शेष, अन्त; **–कर्म**–(पुं.) वैद्यक के अनुसार वह कर्म जो शरीर का वल, रक्त तथा अग्नि की वृद्धि के लिये रोग हटने पर किया जाता है।
पश्चात्ताप–(सं. पुं.) पछतावा।
पश्चात्तापी–(सं. वि.) पछतावा करनेवाला।
पश्चादुक्ति–(सं. स्त्री.) वाद में कहना।
पश्चाद्भाग–(सं. पुं.) पीछ का हिस्सा।
पश्चानुताप–(सं. पुं.) पछतावा।
पश्चान्मारुत–(सं. पुं.) पश्चिम की ओर बहनेवाली वायु।
पश्चारुज–(सं.पुं.) वालकों का एक रोग।
पश्चार्ध–(सं. वि.) शेषार्ध, अपरार्ध।
पश्चिम–(सं. वि.) अन्तिम, जो वाद में उत्पन्न हुआ हो वाद का; (पुं.) वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है, प्रतीची, पच्छिम; **–रात्र**–(पुं.) रात्रि का शेष भाग; **–वाहिनी**–(वि.) पश्चिम की ओर वहनेवाली (नदी)।
पश्चिमा–(सं. स्त्री.) सूर्यास्त की दिशा, पश्चिम।
पश्चिमाचल–(सं. पुं.) एक कल्पित पर्वत जिसके विषय में लोगों की यह धारणा है कि अस्त होते समय सूर्य उसकी आड़ में छिप जाता है, अस्ताचल।
पश्चिमी–(हिं. वि.) पश्चिम-संबंधी, पश्चिम का।
पश्चिमोत्तर–(सं. स्त्री.) वायुकोण, पश्चिम और उत्तर के वीच का कोण।
पश्तो–(हिं.स्त्री.) प्राचीन आर्य भाषाओं में से एक जो भारत के पश्चिमोत्तर सीमा से लेकर अफगानिस्तान तक बोली जाती है, साढ़े तीन मात्राओं का एक ताल।
पश्मीना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का उत्तम और कोमल ऊनी वस्त्र।
पश्यंती–(सं. स्त्री.) नाद का उस समय का सूक्ष्म स्वरूप जब वह मूलाधार से उठकर हृदय में जाता है। (वाणी या सरस्वती के चार चक्र माने गये हैं, यथा–परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी।)
पश्यतोहर–(सं. वि.) आँखों के सामने से वस्तु चुरा लेनेवाला, जैसे-सुनार।
पश्वयन–(सं. पुं.) एक प्रकार का यज्ञ।
पश्वाचार–(सं.पुं.) देवी का वह पूजन जो कामना और संकल्पपूर्वक वेदोक्त विधान से किया जाता है।
पष–(हिं. पुं.) पक्ष, डैना, पंख।
पषा–(हिं. पुं.) श्मश्रु, दाढ़ी।
पषाण–(हिं. पुं.) देखें 'पाषाण'।
पषारना–(हिं. क्रि. स.) प्रक्षालन करना, धोना।
पसँगा (घा)–(हिं.पुं.) वह भार जो तराजू के पल्लों को समभार करने के लिये उस पल्ले की ओर बाँध दिया जाता है जो हलका होता है, पासँग; (वि.) वहुत कम या थोड़े परिमाण का; (मुहा.)–**भी न होना**–किसी की तुलना में कुछ भी न होना।
पसंद–(फा. स्त्री.) चुनाव, रुचि; (वि.) रुचि के योग्य, जो मन को जँचे।
पसंदा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कवाव।
पसई–(हिं. स्त्री.) पहाड़ी राई।
पसंदीदा–(फा. वि.) पसंद किया हुआ।
पसनी–(हिं. स्त्री.) अन्न-प्राशन-संस्कार जिसमें बच्चों को पहली बार अन्न खिलाया जाता है।
पसमीना–(हिं. पुं.) देखें 'पशमीना'।
पसर–(हिं.पुं.) गहरी की हुई हथली, आधी अंजली, विस्तार, फैलाव, आक्रमण, धावा, रात के समय पशु चुराने का दुष्कर्म।
पसरना–(हिं.क्रि.अ.) विस्तृत होना, वढ़ना, फैलना, आगे की ओर वढ़ना, पैर फैलाकर सोना, हाथ-पैर फैलाकर लेटना।
पसरट्टा, पसरहट्टा–(हिं.पुं.) वह वाजार जिसमें पंसारियों की दुकानें हों और जहाँ

जड़ी-बूटी, मसाले आदि विकते हों।
पसराना–(हिं. क्रि.स.) पसारने का काम दूसरे से कराना।
पसरौंहा–(हिं.वि.) पसरने या फैलनेवाला।
पसली–(हिं. स्त्री.) मनुष्यों तथा पशुओं के शरीर में छाती के अस्थिपंजर की गोलाकार आड़ी हड्डियों में से हर एक; (मुहा.) **तोड़ना**–बहुत मारना; **फड़कना**–उमंग या जोश आना।
पसवपेस–(हिं. पुं.) व्यग्रता, द्विविधा।
पसवा–(हि. पुं.) हलका गुलाबी रंग।
पसही–(हि. पुं.) तिन्नी का चावल।
पसा–(हि. पुं.) अंजली।
पसाई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
पसाउ–(हिं.पुं.) प्रसाद, अनुकम्पा, प्रसन्नता।
पसाना–(हिं. क्रि. स.) भात में से माँड़ निकालना, पसेव निकालना या गिराना।
पसार–(हि. पुं.) पसारने की क्रिया या भाव, विस्तार, फैलाव।
पसारना–(हिं. क्रि. स.) विस्तार करना, फैलाना, आगे को बढ़ाना।
पसारी–(हिं. पुं.) देखें 'पंसारी'।
पसाव–(हि. पुं.) वह पदार्थ जो भात आदि पसाने पर निकले, माँड़, पीच।
पसावन–(हिं.पुं.) किसी उबाली हुई वस्तु में से निकला हुआ पानी, माँड़, पीच।
पसीजना–(हिं.क्रि.अ.) किसी ठोस पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी से रिसकर वहना, चित्त में दया उत्पन्न होना।
पसीना–(हिं. पुं.) परिश्रम या गरमी से शरीर के रध्रों से निकलनेवाला जल, श्रमवारि, स्वेद।
पसु–(हिं. पुं.) देखें 'पशु', जानवर।
पसुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पसली'।
पसूज–(हिं. स्त्री.) वह सिलाई जिसमें तोपे भरे जाते हैं।
पसूजना–(हिं.क्रि.स.) सिलाई करना, सीना।
पसूता–(हि. स्त्री.) प्रसूता, जिस स्त्री ने हाल में बच्चा जना हो।
पसेउ–(हिं. पुं.) देखें 'पसेव'।
पसेरी–(हि.स्त्री) पाँच सेर का वाट, पंसेरी।
पसेव–(हि. पुं) वह तरल पदार्थ जो किसी पदार्थ के पसीजने पर निकले, रसकर निकलनेवाला जल, स्वेद, पसीना।
पसेवा–(हिं. पुं.) सोनार की अँगीठी पर रखने का ईंट का टुकड़ा।
पस्ताना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'पछताना'।
पस्तावा–(हिं. पुं.) देखें 'पछतावा'।
पस्स–(अं. पुं.) जहाज का भंडारी।
पस्सी बबूल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी बबूल का वृक्ष, इस पेड़ का गोंद।
पहँ–(हिं. अव्य.) निकट, समीप, पास।
पहँसुल–(हिं. पुं.) तरकारी काटने का हँसुआ।
पह–(हिं. स्त्री.) देखें 'पौ'।
पहचनवाना–(हिं. क्रि. स.) पहचानने का काम कराना।
पहचान–(हिं. स्त्री.) पहचानने की क्रिया या भाव, पहचानने के चिह्न, परिचय, जान-पहचान, लक्षण, परखने की क्रिया या भाव, किसी की योग्यता, गुण आदि जानने की क्रिया या भाव।
पहिचानना–(हिं.क्रि.स.) किसी व्यक्ति या वस्तु को देखते ही जान लेना कि वह कौन व्यक्ति या वस्तु है, विवेक करना, चीन्हना, किसी वस्तु का गुण-दोष जानना, किसी वस्तु की आकृति, रूप, रंग, आदि देखकर उससे परिचित होना, अन्तर समझना।
पहटना–(हिं. क्रि. स.) भगाने अथवा पकड़ने के लिये किसी का पीछा करना, खदेड़ना, किसी शस्त्र की धार पैनी करना।
पहटा–(हिं. पुं.) देखें 'पाटा'।
पहनना–(हिं. क्रि. स.) परिधान करना, शरीर पर धारण करना।
पहनवाना–(हिं. क्रि. स.) पहनाने का काम किसी दूसरे से कराना।
पहनाई–(हिं. स्त्री.) पहनने की क्रिया या भाव, पहनान का शुल्क।
पहनाना–(हिं.क्रि.स.) किसी के शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण कराना।
पहनावा–(हिं. पुं.) परिधेय, पहनने के मुख्य वस्त्र, वे वस्त्र जो खास अवसर पर पहने जाते ह, पहनने का ढंग।
पहपट–(हिं. पुं.) स्त्रियों के गाने का एक प्रकार का गीत, कोलाहल, गुप्त रूप से की हुई निन्दा, छल, ठगी, अपमान की चर्चा।
पहपटवाज–(हिं. पुं.) कोलाहल करनेवाला, छली, निंदक।
पहपटबाजी–(हिं.स्त्री.) झगड़ालूपन, छल।
पहपटहाई–(हिं.स्त्री.) झगड़ा करानेवाली।
पहर–(हिं.पुं.) युग, समय, दिन-रात का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय।
पहरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पहनना'।
पहरा–(हिं. पुं.) रखवाली करने का प्रबंध, चौकी, रक्षकगण, चौकीदारों का समुदाय, रखवालों की नियुक्ति, पहरेदारों का तीन-तीन घंटे पर वदला जाना, अभियुक्त को बन्द करने का घर, रक्षक का रात के समय भ्रमण या चक्कर, युग, समय, चौकीदार का संकेत-शब्द, किसी के आने का शुभ या अशुभ फल, पहरे में रहने की स्थिति; (मुहा.) – **देना** – चौकसी करना; **बदलना**–नये पहरेदार की नियुक्ति होना या करना; –**बैठाना**–किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये प्रहरी नियुक्त करना; **पहरे में रखना**–कैद रखना।
पहराइत–(हिं. पुं.) पहरा देनेवाला।
पहराना–(हिं. क्रि.) देख 'पहनाना'।
पहरावनी–(हिं. स्त्री.) वह पहिनावा जिसको कोई बड़ा अपने से छोटे को दे, खिलअत।
पहरावा–(हिं. पुं.) देखें 'पहनावा'।
पहरी–(हिं. पुं.) चौकीदार, प्रहरी।
पहरुआ, पहरू–(हिं. पुं.) पहरा देनेवाला, रक्षक, संतरी, चौकीदार।
पहल–(हिं. पुं.) किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई तथा मोटाई के कोनों या रेखाओं से विभक्त समतल अंश, बगल, पहलू, गद्दा आदि में की रूई की दबी हुई तह, जमा हुआ ऊन, परत, तह, किसी कार्य का आरंभ, छड़।
पहलदार–(हिं. वि.) जिसमें पहल हों, जिसमें चारों ओर अलग-अलग बँटी हुई सतहें हों।
पहलनी–(हिं. स्त्री.) कोंढ़े को गोल करने का सोनारों का एक अस्त्र।
पहला–(हिं.वि.) जो क्रम में प्रथम हो, आरंभ का (पुं.) जमी हुई पुरानी रूई, पहल।
पहलू–(फा. पुं.) पार्श्व, बगल, बाजू, किनारा, दिशा, ओर, तरफ, करवट, पक्ष।
पहले–(हिं. अव्य.) आरंभ में, पूर्व काल में, बीते समय में, अगले समय में, स्थिति या क्रम में प्रथम, आगे।
पहलेज–(हिं.पुं.) एक प्रकार का खरबूजा जो लंबोतरा होता।
पहले-पहल–(हिं.अव्य.) सर्वप्रथम, पहली बार।
पहलौंठा, पहलौठा–(हिं. वि.) प्रथम गर्भजात, पहिली बार के गर्भ से उत्पन्न।
पहलौंठी, पहलौंठी–(सं. स्त्री.) प्रथम प्रसव, पहले-पहल बच्चा जनना।
पहाड़–(हिं. पु.) प्राकृतिक कारणों से वना हुआ पत्थर, चूना, मिट्टी आदि की चट्टानों का ऊँचा तथा बड़ा समह, पर्वत, गिरि, किसी वस्तु का भारी ढेर, दुःसाध्य अथवा अति क्लिष्ट कार्य, वहुत बड़ी और भारी वस्तु, वह जिससे निस्तार न हो सके; (मुहा)–**उठाना**–कोई बहुत बड़ा काम अपने ऊपर लेना; –**टूटना**–एकाएक कोई

बड़ा संकट आ पड़ना; –से टक्कर लेना– अपने से अधिक बलवान् से भिड़ना ।
पहाड़ा–(हिं.पुं.) किसी अंक के एक से लेकर दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सूची ।
पहाड़िया–(हिं. वि.) देख 'पहाड़ी' ।
पहाड़ी–(हिं. वि.) पहाड़ पर रहनवाला, पहाड़-संबंधी; (स्त्री.) छोटा पहाड़, पहाड़ी लोगो के गाने की एक धुन, संपूर्ण जाति की एक प्रकार की रागिनी ।
पहार–(हिं. पुं.) देखें 'पहाड़' ।
पहारी–(हिं. वि.) देखें 'पहाड़ी' ।
पहिचानना–(हिं.क्रि.स.) देख 'पहचानना'।
पहिती–(हिं. स्त्री.) पकायी हुई दाल ।
पहिनना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पहनना' ।
पहिनाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पहनाना' ।
पहिनावा–(हिं. पुं.) देखें 'पहनावा' ।
पहियाँ–(हिं. अव्य.) देखें 'पहँ' ।
पहिया–(हिं.पुं.) गाड़ी, इंजन अथवा यन्त्र में लगा हुआ लकड़ी या लोहे का चक्का, किसी यन्त्र का वह चक्राकार भाग जो अपनी धुरी पर घूमता हो, चक्र, चक्का।
पहिरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पहनना' ।
पहिराना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पहनाना' ।
पहिरावना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'पहनाना' ।
पहिरावनि, पहिरावनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पहनावा' ।
पहिला–(हिं.वि.स्त्री.) प्रथम-प्रसूता, पहले-पहल व्याई हुई; (वि.पुं.) देखें पहला, प्रथम।
पहिले–(हिं. अव्य.) आरंभ में ।
पहिलौंठा–(हिं. वि.) देखें 'पहलौंठा' ।
पहिलौंठी–(हिं. वि) देख 'पहलौंठी' ।
पहीति–(हिं. स्त्री.) देखें 'पहिती' ।
पहुँच–(हिं. स्त्री.) किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या भाव, किसी स्थान तक की गति, पैठ, प्रवेश, समाई, तात्पर्य, समझने की शक्ति, जानकारी की सीमा, परिचय, किसी स्थान तक का लगातार फैलाव, पकड़, दौड़ ।
पहुँचना–(हिं. क्रि. अ.) गति द्वारा किसी स्थान में उपस्थित होना, एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त करना, तुल्य होना, अनुभूति होना, समझने में समर्थ होना, प्राप्त होना, मिलना, प्रविष्ट होना, पैठना, घुसना, गूढ़ अर्थ को जान लेना, कहीं तक फैलना; **पहुँचा हुआ**– सिद्ध पुरुष, ज्ञानी; **पहुँचनेवाला**– गुप्त बातों का जानकार ।
पहुँचा–(हिं. पुं.) अग्र-बाहु और हथेली के बीच का भाग, मणिबन्ध, कलाई, गट्टा ।
पहुँचाना–(हिं. क्रि. स.) किसी निर्दिष्ट स्थानतक उपस्थित करना या ले जाना, अनुभव कराना, घुसाना, किसी को किसी विशेष स्थिति में ले जाना, अकेलापन मिटाने के लिये किसी के साथ कहीं पर जाना, प्रविष्ट कराना, पैठाना, परिणाम के रूप में प्राप्त कराना ।
पहुँची–(हिं. स्त्री.) हाथ की कलाई पर पहिनने का एक गहना ।
पहुनई–(हिं. स्त्री.) देखें 'पहुनाई' ।
पहुना–(हिं. पुं.) देखें 'पाहुना' ।
पहुनाई–(हिं. स्त्री.) अतिथि के रूप में कहीं जाना या आना, अतिथि-सत्कार ।
पहुनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पहुनाई' ।
पहुन्नी–(हिं. स्त्री.) वह पच्चड़ या फन्नी जिसको बढई लकड़ी चीरते समय काठ में ठोंक देते हैं ।
पहुप–(हिं. पुं.) पुष्प, फूल ।
पहुमी–(हिं. स्त्री.) पृथ्वी ।
पहुरी–(हिं. स्त्री.) संगतराश की मठारने की टाँकी ।
पहूला–(हिं.स्त्री.) कुमुदनी, कुईं का फूल।
पहेरी, पहेली–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु या विषय का इस प्रकार वर्णन जो किसी अन्य वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़ता और जो बहुत विचार करने पर समझा जा सकता हो, समस्या, बुझौवल, फेरवट की बात; (मुहा.) **–बुझौवल–** फेरवट की बात करना ।
पल्लव–(सं. पुं.) इस जाति के लोग पहिले क्षत्रिय थे जो बाद में मुसलमान हो गये, एक प्राचीन जाति, पारसी या ईरानी जाति।
पल्लवी–(हिं.स्त्री.) ईरान राज्य की प्राचीन भाषा ।
पह्लिका–(सं. स्त्री.) जलकुंभी ।
पाँ, पाँइ–(हिं. पुं.) पद, पाँव, पैर ।
पाँइता–(हिं. पुं.) देखें 'पाँयता' ।
पाँऊँ–(हिं. पुं.) पद, पाँव, पैर ।
पाँक–(हिं. पुं.) पंक, कर्दम, कीचड़ ।
पाँका–(हिं. पुं.) देखें 'पाँक' ।
पाँख–(हिं. पुं.) पंख, पर ।
पाँखड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पँखड़ी' ।
पाँखी–(हिं.स्त्री.) फतिंगा, चिड़िया, पक्षी ।
पाँखुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पखुड़ी' ।
पाँग–(हिं. पुं.) गंगबरार, कछार ।
पाँगल–(हिं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट ।
पाँगा, पाँगानोन–(हिं. पुं.) समुद्र के जल से निकाला हुआ नमक ।
पाँच–(हि. वि.) जो गिनती में चार और एक हो; (पुं.) चार और एक की संख्या, ५, अनेक मनुष्य, बहुत से लोग, जाति के प्रमुख लोग, पंच; (मुहा.) **पाँचों अँगुलियाँ घी में होना**–सब प्रकार का सुख मिलना; **पाँचों सवारों में नाम लिखाना**–बड़े-बड़े लोगों में अपनी गिनती करना ।
पांचक–(हिं. पुं.) देखें 'पंचक' ।
पांचजन्य–(हिं. पुं.) देखें 'पंचजन्य', विष्णु के बजाने का शंख, अग्नि ।
पांचभौतिक–(हिं. पुं.) देखें 'पंचभौतिक', पंचतत्व का बना हुआ शरीर ।
पाँचर–(हिं. वि.) कोल्हू के बीच में जड़ा हुआ लकड़ी का टुकड़ा ।
पाँचवाँ–(हिं. वि.) जो क्रम में पाँच के स्थान पर हो ।
पाँचा–(हिं. पुं.) किसानों की घास-भूसा हटाने की फरुही ।
पांचाल–(हिं. पुं.) पंचाल; (वि.) पंचाल देश का, पंचाल देश-संबंधी ।
पांचालिका–(हिं. स्त्री.) देखें 'पांचाली', कपड़े की बनी हुई पुतली, गुड़िया ।
पाँची–(हिं. स्त्री.) तालाब में होनेवाली एक प्रकार की घास ।
पाँचै–(हिं. स्त्री.) किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि, पंचमी ।
पाँजना–(हिं. क्रि. स.) टीन, लोहे, पीतल आदि के टुकड़ों को टाँका लगाकर जोड़ना, झालना ।
पाँजर–(हिं. पुं.) पार्श्व और कमर के बीच का वह भाग जिसमें पसलियाँ होती है, छाती के आस-पास का भाग, पसली, पार्श्व, सामीप्य ।
पाँजी–(हिं. स्त्री.) नदी का इतना सूख जाना कि उसको हलकर पार किया जा सके।
पाँझ–(हिं. वि.) (नदी) जो 'पाँजी' हो ।
पांडक–(हिं. पुं.) देखें 'पंडुक' ।
पांडर–(सं. पुं.) गैरिक, गेरू, एक प्रकार का पक्षी, पानड़ी; (वि.) सफेद रंग का।
पांडव–(सं. पुं.) पाण्डु राजा के युधिष्ठिर आदि पाँच पुत्र; **–नगर**–(पुं.) दिल्ली का प्राचीन नाम ।
पांड्यापन–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण ।
पांडविक–(सं. पुं.) काली गौरैया ।
पांडवीय–(सं. वि.) पांडव-सम्बन्धी ।
पांडवेय–(सं. पुं.) अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित, पांडव ।
पांडित्य–(सं. पुं.) विद्वत्ता, पंडिताई ।
पांडु–(सं. पुं.) पटोल, परवल, हलका पीला रंग, एक प्राचीन राजा, सफेद रंग, सफेद हाथी, एक रोग जिसमें पित्त के विकार से शरीर पीला पड़ जाता है,

कामला रोग का एक भेद, एक प्राचीन देश का नाम; –कंटक–(पुं.) अपामार्ग, चिचड़ा; –कंबल–(पुं.) एक प्रकार का पत्थर; –क–(पुं.) पांडु राजा, परवल; –तरु–(पुं.) धव का पेड़; –ता–(स्त्री.), –त्व–(पुं.), पीलापन; –नाग–(पुं.) पुन्नाग वृक्ष, सफेद हाथी, सफेद रंग का साँप; –पुत्र–(पुं.) पांडु के पुत्र, पांडव; –भाव–(पुं.) देखें 'पांडुता'; –मृत्तिका–(स्त्री.) रामरज, पीली मिट्टी; –रंग–(पुं.) एक प्रकार की घास; –र–(पुं.) सफेद रंग, कामला रोग, धव का वृक्ष, खड़िया, कबूतर, बगला, श्वेत कुष्ठ; (वि.) पीला, सफेद; –०ता–(स्त्री.) सफेदी; –रा–(स्त्री.) माषपर्णी, ककड़ी; –राग–(पुं.) दमनक, दौना; –०प्रिय–(पुं.) मौलसिरी का पेड़; –रेक्षु–(पुं.) एक प्रकार की सफेद ऊख; –रोग–(पुं.) कामला रोग; –लिपि, –लेख–(पुं.) लेख आदि का हस्तलिखित रूप; –लोमा–(वि.) जिसके रोएँ सफेद हों; –शर्मिला–(स्त्री.) द्रौपदी।

पाँड़े–(हि. पुं.) कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा, पंडों की एक शाखा, पण्डित, विद्वान्, शिक्षक, रसोई बनानेवाला, ब्राह्मण।

पांडेय–(हि. पुं.) देखें 'पाँड़े'।

पाँति–(हि. स्त्री.) पंगत, पंक्ति, पाँत, समूह, किसी जाति के लोग जो एक साथ बैठकर भोजन करते हैं।

पांथ–(सं. पुं.) पथिक; (वि.) वियोगी, विरही; –निवास–(पुं.) पथिकों के ठहरने का स्थान, चट्टी; –शाला–(स्त्री.) चट्टी।

पाँयँ–(हि. पुं.) पाद, पैर, चरण।

पाँयता–(हि. पुं.) खाट या पलंग का उस ओर का भाग जिस ओर पैर किया जाता है, पैताना।

पाँव–(हि. पुं.) पाद, पर, पावँ।

पाँवड़ी–(हि. स्त्री.) खड़ाऊँ।

पाँवर–(हि. वि.) देखें 'पामर'।

पाँवरी–(हि. स्त्री.) सोपान, सीढ़ी, जूता, पैर रखने का स्थान, पौरी, दालान, बैठका।

पांशव–(सं. पुं.) रेह से निकाला हुआ नमक।

पांशु–(सं. पुं.) धूलि, रज, बालू, एक प्रकार का कपूर, गोबर की खाद।

पांशुजा–(सं. स्त्री.) [illegible] का पौधा।

पांशुचत्वर–(सं. पुं.) ओला।

पांशुल–(सं. पुं.) [illegible]

[illegible] गया हो।

पांशुचं[illegible]–(सं. पुं.) [illegible] का नाम।

पांशुभव–(सं. पुं.) देखें 'पाँगा'।

पांशुलवण–(सं. पुं.) पाँगा नमक।

पांशुल–(सं. वि.) व्यभिचारी, लंपट, धूल से ढपा हुआ; (पुं.) शिव, महादेव।

पांशुला–(सं. स्त्री.) कुलटा, रजस्वला, केतकी, भूमि।

पाँस–(हि. स्त्री.) शराब निकाला हुआ महुआ, खाद, उफान जो किसी अन्न, फल आदि को सड़ाने पर उठता है।

पाँसना–(हि. क्रि. स.) खेत में खाद डालना।

पाँसा–(हि. पुं.) हड्डी या हाथी-दाँत के बने हुए चौसर खेलने के चौकोर टुकड़े; (मुहा.)–पलटना–किसी स्थिति का विपर्यय होना।

पाँसी–(हि. स्त्री.) भूसा आदि बाँधने का जाला।

पांसु–(सं. पुं.) धूलि, रज; –क–(पुं.) धूलि, पाँगा नमक; –का–(स्त्री.) रजस्वला स्त्री; –कुली–(स्त्री.) राजमार्ग, चौड़ी सड़क; –कृत–(वि.) जो धूल हो गया हो; –क्षार–(पुं.) पाँगा नमक; –खुर–(पुं.) घोड़े के खुर का एक रोग; –चंदन–(पुं.) शिव, महादेव; –चामर–(पुं.) तंबू, प्रशंसा, धूलि का ढेर; –जालिक–(पुं.) विष्णु का एक नाम; –पत्र–(पुं.) बथुए का साग; –भिक्षा–(स्त्री.) धव का पेड़।

पांसुर–(सं. पुं.) दंशक, डाँस, खंज, लँगड़ा।

पाँसुरी–(हि. स्त्री.) देखें 'पसली'।

पांसुल–(सं. पुं.) शिव, महादेव, दूसरे की स्त्री से प्रेम करनेवाला, केतकी वृक्ष।

पांसुला–(सं. स्त्री.) कुलटा, रजस्वला, केतकी।

पाँही–(हि. अव्य.) समीप, निकट, पास।

पाइ–(हि. पुं.) देखें 'पाद', पावँ।

पाइक–(हि. पुं.) देखें 'पायक'।

पाइतरी–(हि. स्त्री.) चारपाई का पैताना।

पाइरा–(हि. पुं.) घोड़े के जीन में लगी हुई रकाब।

पाइल–(हि. स्त्री.) देखें 'पायल'।

पाई–(हि. स्त्री.) एक पैसा, एक छोटी [illegible] जो एक पैसे में तीन होती थी, छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लिखने से चतुर्थांश प्रगट करती है, [illegible] के [illegible] रखने [illegible], पूर्ण विराम, [illegible] में [illegible] छोटी खड़ी रेखा, [illegible] का एक रोग, घोड़े का एक रोग, [illegible], [illegible] एक ढाँचा जिन पर ताने माँजे जाते हैं, [illegible] हुए

टाइप, बेरा बनाते हुए नाचने की क्रिया।

पाईता–(हि. पुं.) एक वर्णवृत्त का नाम।

पाउँ–(हि. पुं.) देखें 'पाँव'।

पाक–(सं. पुं.) पकाने की क्रिया, रींधना, रसोई, खाये हुए पदार्थ को पचाने की क्रिया, एक असुर जिसको इन्द्र ने मारा था, भय, बुढ़ापे में बालों का पकना, परिणति, दूध पीनेवाला बच्चा, चाशनी में पकाई हुई औषध, श्राद्ध में पिण्ड-दान के लिये पकाई हुई खीर; (फा. वि.) पवित्र, विशुद्ध, निर्दोष, निष्कलंक, खालिस; पाक-साफ़–(वि.) पाक।

पाककृष्ण–(सं. पुं.) करौंदे का पेड़।

पाकठ–(हि. वि.) पका हुआ, पुराना अनुभवी, बलवान।

पाकड़–(हि. पुं.) देखें 'पाकर'।

पाकद्विष्–(सं. पुं.) पाकशासन, इन्द्र।

पाकना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'पकना'।

पाकपात्र–(सं. पुं.) भोजन पकाने का पात्र।

पाकपुटी–(सं. स्त्री.) कुम्हार का आवाँ।

पाकफल–(सं. पुं.) करौंदा।

पाकभांड–(सं. पुं.) वह पात्र जिसमें कुछ पकाया या रखा जाय।

पाकयज्ञ–(सं. पुं.) वृषोत्सर्ग तथा गृह प्रतिष्ठा आदि का हवन जिसमें खीर की आहुति दी जाती है, पंच महायज्ञों के अन्तर्गत वैश्वदेवहोम, बलिकर्म, नित्य-श्राद्ध और अतिथि भोजन—ये चार प्रकार के महायज्ञ।

पाकर–(हि. पुं.) उत्तरी भारतवर्ष में होनेवाला एक वृक्ष जो पंचवटों में से एक है।

पाकरंजन–(सं. पुं.) तेजपात, तेजपत्ता।

पाकरिपु–(सं. पुं.) इन्द्र का एक नाम।

पाकलि–(सं. स्त्री.) ककड़ी, [illegible]।

पाकशाला–(सं. स्त्री.) रसोई बनाने का घर।

पाकशासन–(सं. पुं.) इन्द्र।

पाकशासनि–(सं. पुं.) इन्द्र [illegible]।

पाकशुक्ला–(सं. स्त्री.) खड़िया मिट्टी।

पाकस्थली–(सं. स्त्री.) [illegible]।

पाका–(हि. वि.) देखें '[illegible]'; [illegible]।

पाकागार–(सं. पुं.) रसोईघर।

पाकातिसार–(सं. पुं.) [illegible] रोग का एक भेद।

पाकारि–(सं. पुं.) पाकशासन, इन्द्र।

पाकिस्तान–[illegible] १९४७ [illegible]

पाकिस्तानी–(फा. वि.) पाकिस्तान का या संवंधी; (पुं.)पाकिस्तान का निवासी।
पाकु–(स. वि.) रसोई वनानेवाला।
पाकेट–(अं. पुं.) जेब, खलीता; **–मार**–(पुं.) जेव काटकर रकम चुरानेवाला चोर; **–मारी**–(स्त्री.) पाकेटमार का पेशा; (मुहा.)**–गरम करना**–घूस देना या लेना।
पाक्य–(सं. पुं.) काला नमक, यवक्षार; (वि.) पचने योग्य, पाचनीय; **–क्षार**–(पु.) जवाखार, शोरा; **–ज**–(पुं.) काच लवण।
पाक्या–(सं. स्त्री.) सज्जी, जवाखार।
पाक्षायण–(सं. वि.)पक्ष में एक वार होने-वाला।
पाक्षिक–(सं. वि.) किसी व्यक्ति विशेष का पक्ष करनेवाला, पक्षपाती, पक्षियों को मारनेवाला, जो प्रति पक्ष में एक वार हो, पक्ष या पखवाड़े से सम्वन्ध रखने-वाला, वैकल्पिक।
पाखंड–(हिं. पुं.) वेद-विरुद्ध आचरण, वह व्यवहार जो किसी को धोखा देने के लिये किया जाय, कपट, छल, वह भक्ति या उपासना जो किसी को दिखलाने के लिये की जाय, ढोंग, ढकोसला, आडंवर, नीचता; (मुहा.)**–फैलाना**–किसी को छलने का उपाय करना।
पाखंडी–(हिं. वि.) वेद-विरुद्ध आचरण करनेवाला,ढोंगी, धूर्त, कपटी, धार्मिकता का दिखावटी प्रदर्शन करनेवाला।
पाख–(हिं. पु.) महीने का आधा भाग, पंद्रह दिन का समय, पखवाड़ा, मकान की चौड़ाई की भीतों के वे भाग जो ऊँचे किये होते हैं और जिन पर वड़ेर रखे जाते हैं।
पाखर–(हिं. स्त्री.) राल चढ़ाया हुआ टाट, लोहे की झूल जो युद्ध के समय हाथी या घोड़े की पीठ पर डाल दी जाती थी।
पाखरी–(हिं. स्त्री.) टाट की वनी हुई वड़ी चादर जिसको वैलगाड़ी में रख-कर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है।
पाखा–(हिं.पुं.) कोना, छोर, देख 'पाख'।
पाखान–(हिं. पुं.) देखें 'पाषाण', पत्थर।
पाग–(हिं. स्त्री.) पगड़ी; (पुं.) वह शीरा या चाशनी जिसमें डुवोकर मिठाइयाँ रखी जाती हैं; चाशनी में पकाई हुई औषध, फल आदि।
पागना–(हिं. क्रि.स.) चाशनी में लपेटना या सानना।
पागल–(सं. वि.) ऐसा मानसिक रोगी जिसकी बुद्धि और इच्छा-शक्ति में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं और जिसको कर्तव्याकर्तव्य का ध्यान नहीं रहता, उन्मत्त, वावला, विक्षिप्त, मूर्ख; **–खाना**–(हि. पुं.) वह स्थान जहाँ पागलों को रखकर उनकी चिकित्सा की जाती है; **–पन**–(हि.पुं.) उन्माद, वावलापन, मूर्खता, चित्तविभ्रम।
पागली–(हिं. स्त्री.) देखें 'पगली'।
पागुर–(हि. पुं.) देखें 'जुगाली'।
पाचक–(सं. वि.) पकाने या पचानेवाला, पाचन-शक्ति को वढ़ानेवाली (औपध), (पुं.) रसोईदार, पित्त में रहनेवाली पाचन की अग्नि।
पाचन–(सं. पुं.) प्रायश्चित्त, भोजन को पचानेवाली औषध, खट्टा रस, अग्नि, आग; (वि.) पचानेवाला।
पाचनक–(सं. पुं.) सोहागा।
पाचन-शक्ति–(सं. स्त्री.) भोजन को पचाने की शक्ति।
पाचना–(हिं. क्रि. स.) अच्छी तरह से पकाना।
पाचनीय–(सं.वि.)पचने या पकाने योग्य।
पाचर–(हिं. पु.) देखें 'पच्चर'।
पाचल–(स. पुं.) अग्नि, वायु।
पाचिका–(सं.स्त्री.) रसोई वनानेवाली स्त्री
पाची–(सं. स्त्री.) देखें 'पच्ची'।
पाच्छा, पाच्छाह–(हिं. पुं.) राजा।
पाच्य–(सं. वि.) पाचनीय, जो अवश्य पचाया या पकाया जा सके।
पाछ–(हिं. स्त्री.) जन्तु या पौधे के अंग पर छुरी की धार से काटकर वनाया हुआ हलका घाव, रस निकालने के लिये वृक्ष की डाल या तने पर बनाया हुआ चीरा, अफीम निकालने के लिये पोस्ते के डोंड़े पर बनाया हुआ चीरा; (पुं.) पिछला भाग; (अव्य.) पीछे की ओर।
पाछना–(हिं. क्रि. स.) जन्तु या पौधे के अंग पर छुरी की धार से इस प्रकार मारना कि छुरी गहरी न धँसे और केवल ऊपर का रक्त या रस निकल आवे।
पाछल–(हिं. वि.) देखें 'पिछला'।
पाछा–(हिं. पुं.) देखें 'पीछा'।
पाछिल–(हिं. वि.) देखें 'पिछला'।
पाछी, पाछु, पाछै–(हिं. अव्य.) पीछे की ओर।
पाज–(हिं. पुं.) देखें 'पाँजर'।
पाजरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल से रंग निकाला जाता है।
पाजामा–(हिं. पुं.) देखें 'पायजामा'।
पाजी–(हि. पु.) पैदल सेना का सिपाही, प्यादा, चौकीदार; (वि.) दुष्ट, नीच, लुच्चा; **–पन**–(पुं.) दुष्टता, नीचता।
पाटंबर–(हि.पुं.) रेशमी वस्त्र।
पाट–(हिं. पुं.) पटसन का पौधा, वस्त्र, कपड़ा, चक्की का एक पल्ला, धोबी का कपड़ा पटककर धोने का पत्थर, पल्ला, पीढ़ा, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, रेशम, बटा हुआ रेशम, राज्यशासन, सिंहासन, एक प्रकार का कीड़ा।
पाटक–(सं. वि.) छेदक, भेदक।
पाटकिरण–(सं.पु.)शुद्ध जाति का एक राग।
पाटच्चर–(सं. पुं.) चोर।
पाटन–(हिं. स्त्री.) पाटने की क्रिया या भाव, पटाव, कच्ची या पक्की छत, नगर, पत्तन, सर्प का विष उतारने का एक मन्त्र जो सर्प-दष्ट मनुष्य के कान में चिल्लाकर पढ़ा जाता है।
पाटना–(हि.क्रि.स.)गड्ढे या नीचे स्थान को भरकर उसके आस-पास के धरातल के बराबर कर देना,सन्तुष्ट करना,सींचना, लकड़ी के वल्ले आदि विछाकर छत का आधार वनाना, ढेर लगा देना, दो भीतों के आरपार छाजन टेकने के लिए वड़ेर वल्ला आदि रखना।
पाटमहिषी–(हिं. स्त्री.) प्रधान रानी, पटरानी।
पाटरानी–(हिं. स्त्री.) देखे 'पटरानी'।
पाटल–(सं.पुं.)पाटली का फूल, गुलावी रंग, पाढर का वृक्ष, रोहिष घास।
पाटलकीट–(सं.पुं.) एक प्रकार का कीड़ा।
पाटला–(सं. स्त्री.) पाटल का वृक्ष, लाल रंग का पौधा, दुर्गा; (हि. पुं.) भारत का शुद्ध किया हुआ वढ़िया सोना।
पाटलावती–(स. स्त्री.) दुर्गा।
पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र–(सं. पुं.)मगध या विहार के प्रसिद्ध नगर का प्राचीन नाम, (आज-कल यह पटना के नाम से प्रसिद्ध है।)
पाटली–(सं. स्त्री.) करभी या कटभी वृक्ष, पटना नगर की अधिष्ठात्री देवी; (हिं. स्त्री.) नाव में लगाने की लकड़ी, वल्ली।
पाटलोपल–(स. पुं.) एक प्रकार का गुलावी रत्न।
पाटव–(सं.पु.)पटुता, निपुणता, चतुराई, दृढ़ता, आरोग्य।
पाटविक–(सं. वि.) पटु, धूर्त।
पाटवी–(हिं. वि.) पटरानी से उत्पन्न, रेशमी (वस्त्र)।

पाटसन–(हिं. पुं.) पटसन, पटुआ।
पाटहिका–(सं. स्त्री.) गुंजा, घुँघची; (पुं.) दुन्दुभी बजानेवाला।
पाटा–(हिं. पुं.) पीढ़ा, वह आधार-स्थान जो दो भीतों के बीच में बाँस आदि, धोबी का पाट देकर बनाया जाता है।
पाटिका–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का पौधा।
पाटी–(सं. स्त्री.) अनुक्रम, रीति, परिपाटी, श्रेणी, पंक्ति; जोड़, बाकी, गुणा, भाग, अंकगणित; (हिं. पुं.) वह लकड़ी की पट्टी जिस पर बालकों को विद्याभ्यास कराया जाता है, पटिया, पाठ, खाट की लम्बाई के बल की दो लकड़ियाँ, शिला, जयन्ती, चट्टान, माँग के दोनों ओर के सँवारे हुए बाल।
पाटीगणित–(सं.पुं.) गणित-शास्त्र, अंक-विद्या।
पाटीर–(सं. पुं.) एक प्रकार का चंदन।
पाटूनी–(हिं. पुं.) वह मल्लाह जो किसी घाट का ठेकेदार हो।
पाटच–(सं. पुं.) पटसन, पटुआ।
पाठ–(सं. पु.) शिष्य का अध्यापन, पढ़ना, पढ़ने की क्रिया, किसी धर्म-पुस्तक को नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया, किसी पुस्तक का वह अंश जो एक बार पढ़ा जाय, शब्दक्रम, अध्याय, किसी पुस्तक का परिच्छेद; (मुहा.) **–पढ़ाना–** स्वार्थसाधन के लिये किसी को बहकाना; **उलटा पाठ पढ़ाना**–उलटी-पलटी बातें समझा देना।
पाठक–(सं. पुं.) उपाध्याय, पढ़ानेवाला, धर्मोपदेशक, कथा बाँचनेवाला, सारस्वत, गौड़, सरयूपारी तथा गुजराती ब्राह्मणों के एक वर्ग का नाम।
पाठदोष–(सं. पुं.) पढ़ने का वह ढंग अथवा पढ़ने के समय की वह चेष्टा जो निन्दित और वर्जित समझी जाती है।
पाठन–(सं. पुं.) पढ़ने का ढंग या भाव, अध्यापन, पढ़ाना।
पाठना–(हिं. क्रि. स.) पढ़ाना।
पाठपद्धति, पाठप्रणाली–(सं.स्त्री.) पढ़ने की रीति या ढंग।
पाठभेद–(सं. पुं.) पाठान्तर, वह भेद जो किसी प्राचीन ग्रन्थ की दो प्रतियों के पाठ में पाया जाता है।
पाठमंजरी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की मैना।
पाठशाला–(सं. स्त्री.) पढ़ाने का स्थान, विद्यालय, चटसाला।
पाठशालिनी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की मैना।
पाठांतर–(सं. पुं.) किसी प्राचीन पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थान पर भिन्नता या पार्थक्य होना, पाठभेद।
पाठा–(सं.स्त्री.) पाढा नाम की लता; (हिं. पुं.) हृष्टपुष्ट आदमी, जवान और मोटा बैल, भैंसा, बकरा आदि।
पाठार्थी–(सं. वि.) पढ़नेवाला।
पाठालय–(सं. पुं.) पाठशाला, विद्यालय।
पाठिका–(सं.स्त्री.) पढ़ानेवाली, पढ़नेवाली।
पाठित–(सं. वि.) पढ़ाया हुआ, सिखाया हुआ।
पाठी–(हिं. पुं.) पाठ करनेवाला, पाठक, पढ़नेवाला. चित्रक वृक्ष, चीता।
पाठीन–(सं.पुं.) पहिना मछली, गुग्गुल।
पाठ्य–(सं.वि.) पठनीय, पढ़ (ढ़ा) ने योग्य।
पाड़–(हिं. पुं.) धोती, साड़ी आदि का किनारा, मचान, पुश्ता, बाँध, लकड़ी का बना हुआ ठाट, कटघरा, चह, दो भीतों के बीच में बाँस, पटियाँ आदि देकर बनाया हुआ आधार, वह पटरा जिस पर अपराधी को खड़ा करके फाँसी दी जाती है।
पाड़र–(हिं. स्त्री.) पाटल नाम का वृक्ष।
पाड़ल–(हिं. पुं.) देखें 'पाटल'।
पाड़लीपुर–(हिं. पुं.) देखें 'पाटलीपुत्र'।
पाड़ा–(हिं. पुं.) नगर का मुहल्ला, टोला।
पाडिनी–(सं.स्त्री.) मिट्टी का पात्र, हाँड़ी।
पाढ़–(हिं. पुं.) वह पीढ़ा या पाटा जिस पर बैठकर सुनार, लोहार या बढ़ई काम करते हैं, वह मचान जिस पर बैठकर किसान अपनी उपज की रखवाली करता है, कुएँ के मुँह पर रखी हुई लकड़ी, सुनारों का नक्काशी करने का एक उपकरण, पाटा, लकड़ी की सीढ़ी।
पाढ़त–(हिं. स्त्री.) पढ़ने की क्रिया या भाव, जो कुछ पढ़ा जाय, मंत्र, जादू।
पाढ़र–(हिं. पुं.) पाटल का वृक्ष।
पाढ़ल–(हिं. पुं.) देखें 'पाटल'।
पाढ़ा–(हिं. पुं.) सफेद चित्तीयुक्त हरिन।
पाढ़ी–(हिं. स्त्री.) सूत की लच्छी, यात्रियों को पार उतारने की नाव।
पाण–(सं. पुं.) व्यापार, खरीद-बिक्री, दाँव, प्रशंसा, कर, हाथ।
पाणि–(सं. पुं.) हस्त, हाथ, कर, घुंघची का वृक्ष, एक कर्ष का परिमाण।
पाणिक–(सं.वि.) जो मोल लिया गया हो; (पुं.) सौदागर, हस्त, हाथ।
पाणिकर्ण–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
पाणिकर्मा–(सं. पु.) हाथ से बाजा बजानेवाला।
पाणिका–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
पाणिगृहीत–(सं. वि.) पाणि द्वारा ग्रहण किया हुआ, विवाहित।
पाणिग्रह–(सं. पुं.) विवाह, ब्याह।
पाणिग्रहण–(सं. पुं.) हिन्दुओं में विवाह की वह रीति जिसमें पिता कन्या का हाथ वर के हाथ में देता है, विवाह, ब्याह।
पाणिग्रहणीय–(सं. वि.) विवाह में दिया जानेवाला उपहार।
पाणिग्राह–(सं. पुं.) पाणिग्रहण करनेवाला पति।
पाणिघ–(सं. पुं.) हाथ से बजाने के बाजे, शिल्पी, कारीगर।
पाणिघात–(सं. पुं.) हाथ से मारने की क्रिया, थप्पड़, मुक्का।
पाणिज–(सं. पुं.) अँगुली, नख।
पाणितल–(सं. पुं.) हाथ का निचला भाग, करतल, हथेली, दो तोले के बराबर का एक प्राचीन परिमाण।
पाणिधर्म–(सं. पुं.) विवाह-संस्कार।
पाणिनि–(सं. पुं.) संस्कृत भाषा के सर्वप्रधान तथा सर्व-प्राचीन व्याकरण-शास्त्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
पाणिनीय–(सं. वि.) पाणिनि का कहा हुआ, पाणिनि-संबंधी।
पाणिनीय दर्शन–(सं. पुं.) पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण।
पाणिपल्लव–(सं.पुं.) हाथ की अँगुलियाँ।
पाणिपीड़न–(सं.पुं.) पाणिग्रहण, विवाह, क्रोध, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथों को परस्पर मलना।
पाणिप्रदान–(सं. पुं.) हाथ मारकर बाजी लगाना।
पाणिबंध–(सं. पुं.) विवाह, ब्याह।
पाणिभुज–(सं.पुं.) उदुम्बर, गूलर का पेड़।
पाणिमंथ–(सं. पुं.) करंज का वृक्ष।
पाणिमणिका–(सं. स्त्री.) कलाई पर की हड्डी।
पाणिमर्द–(सं. पुं.) करमर्द, करौंदा।
पाणिमुक्त–(सं. पुं.) भाला।
पाणिमूल–(सं. पुं.) बाहुमूल, कलाई।
पाणिरुह–(सं. पुं.) अँगुली, नख।
पाणिरेखा–(सं.स्त्री.) हथेली पर की लकीर।
पाणिवाद–(सं. वि.) ढोल, मृदंग आदि बाजे बजानेवाला, ताली बजाना, हाथ से बजनेवाले बाजे, मृदंग, ढोल आदि बाजे।
पाणिवादक–(सं.वि.) देखें 'पाणिवाद'।
पाणिसंग्रहण–(सं.पुं.) हाथ पकड़ना।
पाणी–(हिं. पुं.) देखें 'पाणि'।
पाणीकरण–(सं. पुं.) पाणिग्रहण, विवाह।
पाण्य–(सं. वि.) स्तुति करने योग्य।
पातंगि–(सं.पु.) शनैश्चर, यम, कर्ण, सुग्रीव।

पातंजल–(स. वि.) पतंजलि ऋषि का; पतंजलि संबंधी; (पुं.) पतञ्जलि मुनि प्रणीत योगदर्शन अथवा व्याकरण का महाभाष्य; **–दर्शन**–(पुं.) योगदर्शन; **–भाष्य**–(पुं.) व्याकरण का महाभाष्य नामक ग्रन्थ; **–सूत्र**–(पुं.) योगसूत्र।

पात–(स. पुं.) पतन, गिरने की क्रिया या भाव, खगोल का वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ क्रान्ति-वृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे उतरती हैं, गिराने की क्रिया या भाव, टूटकर गिरने की क्रिया या भाव, नाश, मृत्यु, उड़ान, उतार; (वि.) बचानेवाला, गिरानेवाला; (हिं. पुं.) पत्ता, कान में पहिनने का एक गहना।

पातक–(सं. पुं.) अघ, पाप, दुष्कृत।

पातकी–(हि. वि.) पाप करनेवाला, कुकर्मी, पापी।

पातघावड़ा–(हिं. वि.) वह मनुष्य जो पत्तों के खड़कने से डर जाय।

पातन–(सं. पुं.) गिराने की क्रिया।

पातबंदी–(हिं. स्त्री.) वह मानचित्र जिसमें भू-सम्पत्ति की आय और उस पर का देना लिखा होता है।

पातर–(हिं. वि.) सूक्ष्म, पतला; (स्त्री.) पत्तल, पतुरिया, वेश्या, रंडी।

पातराज–(सं. पुं.) एक प्रकार का सर्प।

पातल–(हिं. वि.) देखें 'पातर', पतला।

पातव्य–(स. वि.) रक्षा करने योग्य, पीने योग्य।

पातशाह–(हिं. पुं.) देखें 'वादशाह'।

पातशाही–(हिं. स्त्री.) देखें 'वादशाही'।

पाता–(हिं. पुं.) पत्ता; (सं.वि.) रक्षक, रक्षा करनेवाला।

पाताखत–(हिं. पुं.) पत्र और अक्षत।

पातार–(हिं. पुं.) देखें 'पाताल'।

पाताल–(सं. पुं.) विवर, गुफा, बिल, वड़वानल, पुराणानुसार पृथ्वीतल के नीचे का सातवाँ लोक, (पाताल सात माने गये हैं, यथा–अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल); मात्रिक छन्द की संख्या, मात्रा आदि जानने का चक्र; **–केतु**–(पुं.) पाताल में रहनेवाले एक प्रकार के दैत्य; **–खंड**–(पुं.) पाताल-लोक; **–गरुड़ी**–(स्त्री.) एक प्रकार की लता, तितलौकी; **–निलय**–(पुं.) दैत्य, सर्प; **–यंत्र**–(पुं.) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा धातु की औषधियाँ पिघलाई जाती हैं, (इस यन्त्र में कांच या मिट्टी के दो पात्रों के मुँह मिलाकर एक के ऊपर दूसरा रखा जाता है और सन्धिस्थान को कपड़ा तथा गीली मिट्टी से बंद कर दिया जाता है।; **–वासिनी**–(स्त्री.) नागवल्ली लता।

पाताली–(हिं. स्त्री.) ताड़ के फल का गूदा जिसको लोग खाते हैं।

पाति–(सं. पुं.) प्रभु, स्वामी; (हिं. स्त्री.) पत्ती, दल, पत्र, चिट्ठी।

पातिक–(सं. पुं.) शिशुमार, सूंस नामक जलजन्तु।

पातित–(सं. वि.) गिराया हुआ।

पातित्य–(सं. पुं.) पतित होने का भाव, गिरावट, अधःपतन, कुमार्गी होने का भाव।

पातिली–(सं. स्त्री.) चिड़िया पकड़ने का फंदा, मिट्टी का पात्र, हाँड़ी।

पातिव्रत, पातिव्रत्य–(हिं., सं. पुं.) स्त्री का पतिव्रता होने का धर्म।

पाती–(हिं. स्त्री.) मान, प्रतिष्ठा, पत्र, चिट्ठी, पत्ती।

पातुक–(सं. वि.) गिरानेवाला; (पुं.) जल-प्रपात, झरना।

पातुर, पातुरनी–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

पातृ–(सं. पुं.) पापियों का उद्धार करनेवाला।

पात्य–(सं. वि.) पतनीय, गिराने योग्य।

पात्र–(सं. पुं.) अनेक गुणों से सम्पन्न व्यक्ति, वह वस्तु जिसमें कुछ रखा जाय, भाण्ड, कोश, योग्य व्यक्ति, राजमन्त्री, नदी का पाट, पत्ता, स्रुवा आदि यज्ञ की सामग्री, आधार, भाजन, नाटक का अभिनेता, नायक या नायिका, नट।

पात्रक–(सं.पुं.) छोटी थाली, हाँड़ी, भीख माँगने का पात्र।

पात्रट–(स. पुं.) भिखमंगा; (वि.) दुबला-पतला।

पात्रतरंग–(सं.पुं.) ताल देने का एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

पात्रता–(सं. स्त्री.) पात्रत्व, उपयुक्तता, योग्यता, पात्र का धर्म।

पात्रत्व–(सं. पुं.) योग्यता, पात्रता।

पात्रदुष्टरस–(सं. पुं.) केशवदास के अनुसार काव्य का वह रसदोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझाना चाहता है उसके विरुद्ध ही रचना में कहा जाता है।

पात्रशेष–(सं. पुं.) खाकर छोड़ा हुआ अन्न आदि, उच्छिष्ट, जूठा।

पात्रसंचार–(सं. पुं.) भोजन के बाद जूठे पात्रों को उठाकर अलग रखना।

पात्रसंस्कार–(सं. पुं.) पात्र की शुद्धि।

पात्री–(हिं. वि.) जिसके पास सुयोग्य मनुष्य हों; (स्त्री.) छोटा पात्र या बरतन, छोटी भट्ठी।

पात्रीय–(सं. वि.) पात्र-सम्बन्धी।

पात्र्य–(सं.वि.) जो एक पात्र में खाता हो।

पाथ–(सं. पुं.) जल, पानी, सूर्य, अग्नि, अन्न, वायु, आकाश; (हिं. पुं.) मार्ग।

पाथना–(हिं. क्रि. स.) ठोंक-पीटकर, सुडौल बनाना, बढ़ाना, पीटना, ठोंकना मारना, किसी गीली वस्तु को साँचे में या हाथ से टिकिया आदि के रूप में करना।

पाथनाथ, पाथनिधि, पाथसपति–(स. पुं.) समुद्र, सागर, वरुण देवता।

पाथर–(हिं. पुं.) देखें 'पत्थर'।

पाथा–(हिं. पु.) खलिहान में अन्न नापने का बड़ा टोकरा, कोल्हू हाँकनेवाला, एक प्रकार का अन्न में लगनेवाला कीड़ा।

पाथि–(हिं. पुं.) समुद्र, आँख, घाव पर की पपड़ी।

पाथेय–(सं. पुं.) वह धन जो यात्री मार्ग-व्यय के लिये ले जाता है, सबल, यात्री का रास्ते का कलेवा।

पाथेयक–(सं. वि.) वह जिसकेपास मार्ग-व्यय हो।

पाथोज–(सं. पुं.) कमल, पद्म।

पाथोद–(स. पुं.) मेघ, बादल।

पाथोधर–(सं. पुं.) मेघ, बादल।

पाथोधि, पाथोनिधि–(सं. पुं.) समुद्र।

पाथ्य–(सं. वि.) आकाश या हवा में रहनेवाला।

पाद–(सं. पुं.) चरण, पैर, पाँव, चतुर्थांश, श्लोक का चौथा भाग, पेड़ की जड़, पुस्तक का विशेष अंश, गमन, मयूख, किरण, शिव, चिकित्सा के चार अंग यथा–वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक; बड़े पवत के समीप का छोटा पवत, नीचे का भाग; (हिं. पुं.) अधोवायु, गुदा द्वारा निकलनेवाली वायु; **–कंटक**–(पुं.) नूपुर, पैर में पहनने का एक गहना; **–क**–(वि.) गमन करने वाला, चलनेवाला; (पुं.) चतुर्थ भाग, छोटा पैर; **–गंडीर**–(पुं.) श्लीपद रोग; **–ग्रंथि**–(पु.) गुल्फ, एड़ी के ऊपर का स्थान, टखना; **–ग्रहण**–(पुं.) पैर छूकर प्रणाम करना; **–ग्राही**–(वि.) वह जो पैर छूता हो; **–चत्वर**–(पुं.) बकरा, पीपल का वृक्ष, बालू का भीटा, पिशुन; **–चारी**–(पुं.) पदाति, पैदल चलनेवाला; **–चिह्न**–(पुं.) दोनों पैरों

के चिह्न; –ज–(पुं.) शूद्र; (वि.) जो पैर से उत्पन्न हो; –जल–(पुं.) वह जल जिससे किसी पुज्य के पैर धोये गये हों, पादोदक, तक्र, मट्ठा; –टीका–(स्त्री.) वह टिप्पणी जो किसी पुस्तक के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो; –तल–(पुं.) पैर का तलवा; –त्र,–त्राण–(वि., पुं.) पादरक्षक, जो पैर की रक्षा करे, पादुका, खड़ाऊँ, जूता; –दलित–(वि.) पैर से कुचला हुआ; –दारिका–(स्त्री.) पैर का बिवाई नामक रोग; –दाह–(पुं.) पैर के तलवे में जलन होना; –धावन–(पुं.) पैर धोने की क्रिया; –नख–(पु.) पैर की अँगुलियों के नख; –नालिका–(स्त्री.) पैर में पहिनने का एक गहना; –न्यास–(पुं.) पैर रखना, नाचना; –प–(पुं.) वृक्ष, पेड़, बैठने का पीढ़ा; –पद्म–(पुं.) चरणकमल; –पद्धति–(स्त्री.) पगडंडी; –पाश–(पुं.) घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी, पिछाड़ी; –पाशी–(स्त्री.) शृंखला, सिक्कड़, बेड़ी; –पीठ–(पुं.) पैर का आसन, पीढ़ा; –पूरण–(पुं.) किसी कविता के चरण को पूरा करना, वह शब्द या अक्षर जो कविता के पद को पूरा करने के लिये जोड़ा जाय; –प्रक्षलन–(पुं.) पैरों को धोना; –प्रणाम–(.) साष्टाङ्ग दण्डवत्; –प्रतिष्ठान–(पुं.) पुंपादपीठ, पीढ़ा; –प्रधारण–(पुं.) पादुका, खड़ाऊँ; –प्रहार–(पुं.) लात मारना, ठोकर मारना; –बंधन–(पुं.) पैर बाँधने की सिकड़ी, बेड़ी; –बद्ध–(वि.) श्लोक के चरण से युक्त; –भाग–(पुं.) पैर का तलवा, चौथाई भाग; –भुज–(पुं.) शिव, महादेव; –मुद्रा–(स्त्री.) पैर का चिह्न; –मूल–(पुं.) पैर का निचला भाग, पहाड़ की तराई; –रक्षक–(वि.) वह जिससे पैरों की रक्षा हो; –रक्षण–(पुं.) पादुका, खड़ाऊँ, जूता; –रज–(पुं.) चरणों की धूलि; –रज्जु–(स्त्री.) पैर बाँधने की रस्सी; –रथी–(स्त्री.) पादुका, खड़ाऊँ; –रोह, –रोहण–(पुं.) वर का पेड़; –लेप–(पु.) पैर में लगाने का आलता, महावर; –वंदन–(पुं.) पैर छूकर प्रणाम करना; –वल्मीक–(पुं.) श्लीपद; –विदारिका –(स्त्री.) घोड़े के पैर का एक रोग; –विन्यास–(पुं.) पैर रखने का ढंग; –वेष्टनिक–(पुं.) पैर में पहिनने का मोजा; –शलाका–(स्त्री.) पैर की पतली हड्डी; –शाखा–(स्त्री.) पैर की अँगुली; –शोली–(स्त्री.) कचर; –शुश्रूषा–(स्त्री.) चरणसेवा, पैर दबाना; –शोथ–(पुं.) पैर सूजने का रोग; –शौच–(पुं.) पैर धोना; –स्तंभ–(पुं.) टेक लगाने की लकड़ी; –स्फोट–(पुं.) एक प्रकार का कुष्ठ; –स्वेदन–(पुं.) पैर से पसीना निकलना; –हत–(वि.) चरण द्वारा मारा हुआ; –हर्ष–(पु.) पैर में झुनझुनी होने का रोग; –हीन–(वि.) जिसके चरण न हों, जिस कविता में तीन ही चरण हों; –हीना–(स्त्री.) आकाशवल्ली।

पादना–(हिं. क्रि. अ.) अपान वायु को गुदा मार्ग से निकालना, गोज करना।

पादविक–(सं. पुं.) पथिक, यात्री।

पादरी–(हिं. पुं.) ईसाई धर्म का पुरोहित जो गिरजाघर में पूजा, जातकर्म आदि संस्कार कराता है।

पादांगद–(सं. पुं.) नूपुर, पैजनी।

पादांत–(सं. पुं.) पाद का अन्त, पाद का अन्तिम भाग, पैर के समीप।

पादांबु–(सं. पुं.) तक्र, मठा।

पादाकुलक–(स. पुं.) एक प्रकार का मात्रा-वृत्त, चौपाई।

पादाक्रांत–(सं. वि.) पैरों से कुचला हुआ।

पादाग्र–(हिं. पुं.) पैर का पंजा।

पादाघात–(सं. पुं.) पैरों का प्रहार।

पादाति, पादातिक–(सं.पुं.) पैदल सिपाही।

पादानोन–(हिं. पु.) काला नमक।

पादाभ्यंग–(सं. पुं.) पैर के तलवे में तेल की मालिश।

पादारक–(सं. पुं.) नाव में यात्रियों के बैठने की लकड़ी की पटरी।

पादार्द्ध–(सं. पुं.) पाद का अर्ध-भाग, आठवाँ हिस्सा।

पादालिंदी–(सं. स्त्री.) नौका, नाव।

पादावर्त–(सं. पुं.) कुएँ से जल निकालने का यन्त्र, रहट।

पादावसेचन–(सं. पुं.) पैर धोना।

पादाविक–(सं.पुं.) पदाति, पैदल सिपाही।

पादासन–(सं. पुं.) पाँव रखने का आसन, पीढ़ा।

पादी–(हिं. वि., पुं.) पैरवाला (जंतु), पैरवाले प्राणी।

पादीय–(हिं.पुं.) पदवाला, मर्यादावाला।

पादुक–(सं. पुं.) पैदल, चलनेवाला।

पादुका–(सं. स्त्री.) खड़ाऊँ, जूता।

पादुकाकार–(सं.पुं) चर्मकार, मोची।

पादू–(सं. पुं.) पादुका, खड़ाऊँ।

पादोदक–(सं.पुं.) वह जल जिससे किसी का पैर धोया गया हो, चरणामृत।

पादोदर–(सं. पुं.) सर्प, साँप।

पाद्य–(सं. पुं.) वह जल जिससे पैर धोया गया हो, पादोदक।

पाद्यक–(सं. पुं.) पैर धोने का जल।

पाद्यार्घ–(सं. पुं.) हाथ-पैर धुलाने का जल, पूजा की सामग्री, पूजा में दिया हुआ धन, भेंट।

पाधा–(हिं.पुं.) आचार्य, उपाध्याय, पण्डित।

पान–(सं. पुं.) पीना, घूँट-घूँट करके गले के नीचे उतारना, मदिरा पीना, पीने का पदार्थ, मद्य पीने का पात्र, रक्षा, नहर, कलवार, निःश्वास, जल, पौसरा, चुंबन, अस्त्र की धार तेज करना; (हिं. पुं.) पत्ता, एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्ते पर चूना, खैर तथा सुपारी रखकर बीड़ा बनाकर लोग खाते हैं, ताम्बूल, पान के आकार का गहना, ताश के पत्ते के चार भेदों में से एक, जूते में पान के आकार का रंगीन चमड़ा।

पानकुंभ–(सं. पुं.) जल का कलसा।

पानगोष्ठिका–(सं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ तान्त्रिक लोग इकट्ठा होकर मद्य-पान, साधना तथा जप-पूजा करते हैं।

पानड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की सुगन्धित पत्ती।

पानदान–(हिं. पुं.) वह डब्बा जिसमें पान, खैर, सुपारी, चूना आदि रखा जाता है।

पानदोष–(सं. पुं.) मद्यपान का व्यसन।

पानप–(सं.वि.) मद्य पीनेवाला, पियक्कड़

पानपत्ता–(हिं. पुं.) तुच्छ उपहार, छोटी-सी भेंट।

पानफूल–(हिं. पुं.) सामान्य भेंट, बड़ी सुकुमार वस्तु।

पानभूमि–(सं स्त्री.) वह स्थान जहाँ एकत्र होकर शराबी मदिरा पीते हों।

पानमद–(सं. पु.) मद्य का नशा।

पानमात्रा–(सं.स्त्री.) सुरापान की औसत मात्रा।

पानविभ्रम–(सं. पु.) मद्य-पान जनित एक रोग।

पानरा–(हिं. पुं.) देखें 'पनारा', पनाला।

पानस–(सं. पुं.) कटहल से बनाई हुई मदिरा।

पानही–(हिं. स्त्री.) पनही, जूता।

पाना–(हिं. क्रि. स.) प्राप्त करना, किसी विषय में किसी के बराबर होना, पास पहुँचना, समर्थ होना, जानना, समझना भोजन करना, कोई खोई हुई वस्तु पुनः

मिल जाना. मोल लेना, पता लगना, साक्षात्कार करना.देखना,अनुभव करना, अच्छा-बुरा परिणाम भोगना, भेद मिलना; (पुं.) धन जो प्राप्त हो सके या जिसके पाने का अधिकार हो।

पानागार–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ बहुत-से लोग एकत्र होकर मद्य पीते हैं।

पानात्यय–(सं. पुं.) अधिक मदिरा पीने से उत्पन्न होनेवाला एक रोग।

पानि–(हिं.पुं.) देखें 'पाणि',हाथ,पानी,जल।

पानिक–(सं.पुं.)मदिरा बेचनेवाला,कलवार।

पानिग्रहण–(हिं. पुं.) देखें 'पाणिग्रहण', विवाह।

पानिप–(हिं. पुं.) द्युति, चमक, कान्ति।

पानिय–(हिं. पुं.) पानी।

पानी–(हिं.पुं.)पानीय, जल, वृष्टि, वर्षा; जीभ, आँख, त्वचा आदि से निकलनेवाला रस या पंछा, वीर्य, शुक्र, वर्ष, साल, मुलम्मा, कोमल वस्तु, जलवायु, चमक, कोई तरल वस्तु, कोई द्रव पदार्थ, अर्क, मान, प्रतिष्ठा, अवसर, कोई नीरस फीका पदार्थ, मद्य, द्वंद्वयुद्ध, पानी की तरह का ठंढा पदाथ, पशुओं की वंशगत विशेषता, सामाजिक अवस्था, पौरुष, शस्त्र की उत्तमता, जूस, छवि; (मुहा.) **–उतर जाना**–अपमानित होना; **–का बुलबुला**–क्षण भर में नष्ट होनेवाला पदार्थ; **–की तरह धन बहाना**–अपव्यय करना; **–के मोल**–बहुत सस्ते दाम पर; **–जाना**–अपमानित होना; **–टूटना**–तालाब, कुएँ आदि में जल का अभाव होना; **–देना**–खेत सींचना, पितरों को तर्पण करना; **–पढ़ना**–जल को मंत्र से अभिमंत्रित करके छिड़कना; **–पानी कर देना**–क्रोध को शान्त करना; **–पानी होना**–अति लज्जित होना; **–फूंकना**–जल को अभिमन्त्रित करना; **–फेर देना**–पूर्ण रूप से नष्ट कर देना; **–भरना**–अत्यन्त हीन प्रतीत होना; **–में आग लगाना**–जहाँ झगड़ा होना असंभव हो वहाँ बखेड़ा उत्पन्न कर देना; **–में फेंकना**–नष्ट कर देना; **–लगना**–कहीं का जलवायु स्वास्थ्य के लिए हितकर न होना; **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**–अति लज्जित होना, मुँह दिखाने योग्य न रह जाना; **मुँह में पानी आना**–बहुत लालच उत्पन्न होना; **सूखे पानी में डूबना**–धोखे में पड़ना।

पानीदार–(हिं. पुं.) चमकदार, माननीय, प्रतिष्ठित, आत्माभिमानी, साहसी, जीवटवाला।

पानीदेवा–(हिं. पुं.) तर्पण या पिण्डदान देनेवाला, अपने वंश या कुल का व्यक्ति; पुत्र, बेटा।

पानीफल–(हिं. पुं.) सिंघाड़ा।

पानीय–(सं. पुं.) जल; (वि.) पीने योग्य, जो पिया जा सके; **–फल**–(पुं.) मखाना; **–शालिका**–(स्त्री.) प्यासे को पानी पिलाने का स्थान, पौसरा।

पानूस–(हिं. पुं.) देखें 'फानूस'।

पानौरा–(हिं.पुं.)पान के पत्ते की पकौड़ी।

पान्हर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सरपत।

पाप–(सं.पुं.) अधर्म,दुष्कृत, शास्त्र-विहित कर्म न करना, निन्दित कर्म करना, इन्द्रिय सुपखोपभोग में अत्यन्त आसक्त होना, अपराध, वध, हत्या, अहित, बुराई, कठिनाई, संकट, अधर्म बुद्धि, क्लेश देने का दुष्कर्म; (वि.) पापिष्ठ, नीच, दुराचारी, अशुभ; (मुहा.) **–उदय होना**–पूर्व-जन्म के किये हुए पापों का फल मिलना; **–कटना**–पाप का नाश होना; झंझट दूर होना; **–पड़ना**–पाप लगना; **–बटोरना**–पातक करना; **–लगना**–पाप का भागी होना; **–लेना**–जान-बूझकर झंझट में फँसना।

पापकर्म–(सं.पुं.) निषिद्ध कार्य जिसके करने से पाप हो।

पापकर्मा–(हिं. वि.) पापी, पातकी।

पापकर्मी–(हिं. वि.) पाप करनेवाला।

पापकल्प–(सं. वि.) दुष्कर्मी, पापकर्म से जीविका चलानेवाला।

पापकारी–(सं.वि.) पापकर्मी, पातकी।

पापकृत–(सं. वि.) पापी।

पापक्षय–(सं. पुं.) पाप का नाश।

पापगण–(सं. पुं.) छन्दः शास्त्र के अनुसार ठगण का भेद।

पापग्रह–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु अथवा इन ग्रहों से युक्त बुध ग्रह जो अशुभ फल देनेवाले माने जाते हैं।

पापघ्न–(सं. वि.) पापनाशक, जिससे पाप का नाश हो।

पापघ्नी–(सं. स्त्री.) तुलसी।

पापचारी–(सं.वि.)पाप करनेवाला, पापी।

पापचेतस्–(सं.वि.) पापबुद्धि, पापिष्ठ।

पापड़–(हिं.पुं.)उड़द अथवा मूँग की धुली हुई बिना छिलके की दाल के आटे से बनाई हुई मसालेदार महीन पपड़ी; (वि.)पतला, सूखा; (मुहा.) **–बेलना**–बड़े परिश्रम का कार्य करना, दुःख के दिन बिताना।

पापड़ा–(हिं.पुं.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी को खरादकर खिलौने बनाते हैं; **–खार**–(पुं.) केले के पेड़ से निकला हुआ क्षार।

पापत्व–(सं.पुं.)पाप का अधर्म या आसक्ति।

पापदर्शी–(हिं. वि.) अनिष्ट करने की इच्छा से देखनेवाला।

पापदृष्टि–(सं. वि.) अशुभ या अमंगल दृष्टिवाला।

पापधी–(सं.वि.) पापमति, दुर्बुद्धि।

पापनक्षत्र–(सं. पुं.) अशुभ नक्षत्र।

पापनामा–(सं.वि.) अमंगल नामवाला, अपमानित।

पापनाशन, पापनाशक–(सं. वि., पुं.) विष्णु, शिव।(वह प्रायश्चित आदि, जिसके करने से पापों का नाश हो।)

पापनाशिनी–(सं. स्त्री.) काली तुलसी।

पापपति–(सं. पुं.) उपपति, जार।

पापपुरुष–(सं. पुं.)तन्त्र में माना हुआ एक पुरुष जिसका सम्पूर्ण शरीर पापमय होता है।

पापफल–(सं. पुं.) पाप का फल; (वि.) जिसका फल अशुभ हो।

पापबुद्धि–(सं. वि.) पापमति, दुष्ट।

पापभक्षण–(सं. पु.) काल-भैरव, शिव।

पापमति–(सं. वि.) पापबुद्धि।

पापमुक्त–(स.वि.) निष्पाप, पाप से मुक्त।

पापमोचनी–(सं. स्त्री.) चैत के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम।

पापयक्ष्मा–(सं.पुं.) राजयक्ष्मा, क्षयरोग।

पापयोनि–(सं. स्त्री.) पाप करने से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के सिवाय पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि जिसको पातकी लोग नरक-यातना भोगने के बाद प्राप्त करते हैं।

पापर–(हिं. पुं.) देखें 'पापड़'।

पापरोग–(सं. पुं.) वह रोग जो कोई घोर पाप करने से होता है,वसन्त रोग, छोटी माता।

पापरोगी–(सं. वि.) वह जिसको कोई पापरोग हुआ हो।

पापलेन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का उम्दा सूती कपड़ा।

पापलोक–(सं. पुं.) पापियों के रहने का स्थान, नरक।

पापलोक्य–(सं. वि.) नरक-सम्बन्धी।

पापवाद–(सं. पुं.) अशुभसूचक शब्द, अमङ्गल ध्वनि।

पाप-विनाशन–(सं.पुं.) पाप का नाम।

पापशमनी–(सं. स्त्री.) शमी वृक्ष।

पापशील–(सं. वि.) दुष्ट स्वभाव का।

पापसंकल्प–(सं. वि.) जिसने पाप करने का दृढ़ निश्चय कर लिया हो ।
पापसम–(सं. वि.) पापतुल्य, पापसदृश ।
पापहन्, पापहर–(स. वि.) पाप का नाश करनेवाला; (पुं.) आश्विन मास की शुक्ला एकादशी का नाम ।
पापा–(हि. पुं.) ज्वार-बाजरे की उपज में लगनेवाला एक कीड़ा, बच्चों का पिता को संबोधन करने का शब्द ।
पापाचार–(सं. पुं.) पाप-कर्म, पाप का आचरण; (वि.) पापी, दुराचारी ।
पापात्मा–(सं.वि.) पापिष्ठ, पापी, पातकी ।
पापाशय–(स. पुं.) अधार्मिक, दुष्ट, पातकी ।
पापाह–(सं.पुं.) निन्दित या अशुभ दिन ।
पापाही–(सं. पुं.) सर्प, साँप ।
पापिष्ठ–(सं.वि.) बहुत बड़ा पापी, पातकी ।
पापी–(हि. वि.) पाप करनेवाला, निर्दय, क्रूर, दुराचारी, अपराधी, अधर्म करनेवाला, दूसरे को कष्ट देनेवाला ।
पापीयसी–(हि. स्त्री.) पाप करनेवाली ।
पाबंद–(फा.वि.) बँधा हुआ, पराधीन, कैद, *नियमित रूप से अनुसरण करनेवाला ।*
पाबंदी–(फा.स्त्री.) पाबंद होने का भाव, बद्धता, अधीनता, मजबूरी, लाचारी ।
पाम–(हि. स्त्री.) गोट, किनारी के छोर पर लगी हुई गोट; (सं.पुं.) चमड़े पर की फुंसियाँ, खाज, खुजली ।
पामघ्न–(सं. पुं.) गन्धक ।
पामघ्नी–(सं. स्त्री.) कुटकी ।
पामड़ा–(हि.पुं.) देखें 'पावँड़ा' ।
पामरा–(सं.वि.) खल, दुष्ट, नीच कुल में उत्पन्न, दुश्चरित्र, अधर्मी, मूर्ख, निर्बुद्धि ।
पामरी–(हि.स्त्री.) उपरना, डुपट्टा, पाँवड़ी ।
पामा–(स.पुं.) एक प्रकार का चर्म रोग ।
पायँ–(हि. पुं.) देखें 'पावँ' ।
पायँजेहरि–(हि. स्त्री.) पाजेब, नूपुर ।
पायँता–(हि. पुं.) चारपाई का वह भाग जिस ओर पैर रहता है पैताना ।
पायँती–(हि. स्त्री.) पैताना ।
पायपुसारी–(हि.स्त्री.) निमली का वृक्ष और फल ।
पाय–(सं. पुं.) जल, परिणाम; (हि. पु.) पावँ, पैर ।
पायक–(सं.वि.) पीनेवाला; (हि.पुं.) दूत, हरकारा, दास, सेवक, पैदल सिपाही ।
पायखाना–(हि. पुं.) मल, गू, शौचालय ।
पायजामा–(हि.पुं.) एक प्रकार का पहनावा ।
पायजेब–(हि.पुं.) पैर में पहनने का एक गहना ।
पायड़ा–(हि. पुं.) देखें 'पैंड़ा' ।
पायन–(सं. पुं.) पान ।
पायना–(हि.क्रि. स.) हथियार पर सान धरना ।
पायपोश–(हि. पुं.) जूता ।
पायरा–(हि. पुं.) रकाब, एक प्रकार का कबूतर ।
पायल–(हि. स्त्री.) नूपुर, पाजेब, बाँस की सीढ़ी, वेग से चलनेवाली हथिनी, वह बच्चा जिसके पैर जनमते समय पहले बाहर निकलें ।
पायस–(सं. पुं.) खीर, देवदारु के वृक्ष से निकला हुआ गोंद; (वि.) दूध-संबंधी ।
पायसा–(हि. पुं.) पड़ोस ।
पाया–(हि. पुं.) पलग, कुर्सी, चौकी आदि के तल में खड़े बल का लगा हुआ डंडा जिन पर इनका ढाँचा जड़ा होता है, गोड़ा, पावा, खंभा, सीढ़ी, पद ।
पायास–(सं. पुं.) पैदल सिपाही ।
पायी–(सं. वि.) पानकारी, पीनेवाला ।
पायु–(सं. पुं.) मलद्वार, गुदा, पाखाना ।
पारंगत–(स.वि.) समर्थ, पूरा जानकार ।
पारंपरीण–(सं. वि.) *परम्परा से आगत ।*
पारंपर्य–(सं. पुं.) परम्परा का भाव, कुल-क्रम ।
पार–(सं.पुं.) नदी का किनारा, प्रान्त, भाग, छोर, ओर, पारद, पारा, अन्त, हद; (अव्य.) आगे, दूर; **आर-पार**–(अव्य.) इस पार से उस पार तक; (मुहा.)–**उतरना**–सफलता प्राप्त करना किसी काम से छुट्टी पाना; –**करना**–पूरा करना, समाप्त करना, निर्वाह करना; –**पाना**–अन्तिम सीमा तक पहुँचना, विजय प्राप्त करना; –**लगना**–नदी आदि के पार पहुँचना; –**लगाना**–अन्त तक पहुँचाना, पूरा करना, उद्धार करना; –**होना**–किसी कार्य को समाप्ति पर पहुँचा देना ।
पारक्–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना ।
पारक–(सं.वि.) पार करनेवाला, निपुण ।
पारक्य–(सं.वि.) परकीय, पराया ।
पारख–(हि.पुं.) देखें 'पारिख', पारखी ।
पारखद–(हि. पु.) देखें 'पार्षद' ।
पारखी–(हि. पुं.) परीक्षक, परखनेवाला, जिसमें परीक्षा करने की योग्यता हो ।
पारग–(सं. वि.) पारदर्शी, पार जानेवाला, समर्थ, काम को पूरा करनेवाला, अभिज्ञ ।
पारजात–(हि. पुं.) देखें 'पारिजात', परजाता ।
पारजायिक–(सं पुं.) परस्त्रीगामी, व्यभिचारी ।
पारण–(सं. पुं.) वह भोजन जो किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन प्रथम बार किया जाय, इस संबंध का कृत्य, मेघ, बादल, तृप्त करने की क्रिया या भाव, समाप्ति ।
पारणा–(सं. स्त्री.) उपवास, व्रत आदि के दूसरे दिन का प्रथम भोजन ।
पारणीय–(सं. वि.) पूरा करने योग्य ।
पारतंत्र्य–(सं. पुं.) पराधीनता ।
पारत्रिक–(सं. वि.) पारलौकिक, परलोक-सम्बन्धी ।
पारथ, पारथिव–(हि. पुं.) देखें 'पार्थ' ।
पारद–(सं.पुं.) पारा, एक प्राचीन म्लेच्छ जाति का नाम ।
पारदर्शक–(सं. वि.) जिसके भीतर से होकर प्रकाश की किरणें जा सकें, आर-पार दिखलाई देनेवाला ।
पारदर्शन–(सं. वि.) सर्वज्ञ, पारग ।
पारदर्शी–(सं. वि.) परिणामदर्शी, चतुर, विद्वान्, दूरदर्शी, पटु, समर्थ ।
पारदारिक–(सं. पु.) परस्त्री से संभोग करनेवाला ।
पारदाय–(सं.पुं.) परस्त्री-गमन, व्यभिचार ।
पारधी–(हि. पुं.) बहेलिया, व्याध, वधिक, हत्यारा; (स्त्री.) ओट, आड़ ।
पारधीपति–(हि. पुं.) धनुष चलानेवाला, कामदेव ।
पारन–(हि. पुं.) देखें 'पारण' ।
पारना–(हि.क्रि.अ.,स.) डालना, गिराना, रखना, पहिनना, मिलाना, बुरी स्थिति होना, साँचे आदि में ढालकर तैयार करना, भूमि पर डालना, पछाड़ना, समर्थ होना, उत्पात मचाना, पिंडा पारना, पिण्डदान करना ।
पारवती–(हि.स्त्री.) देखें 'पार्वती' ।
पारमार्थिक–(सं. वि.) परमार्थ-संबंधी, वास्तविक, भ्रमरहित, स्वाभाविक ।
पारयिष्णु–(सं.वि.) पारग पार जानेवाला ।
पारलौकिक–(सं. पुं.) परलोक-संबंधी, परलोक में शुभ फल देनेवाला ।
पारवत–(सं. पुं.) पारावत, कबूतर ।
पारवश्य–(स.पुं.) परतन्त्रता, परवशता ।
पारशव–(सं. पुं.) पराई स्त्री से उत्पन्न पुत्र, एक वर्णसंकर जाति जो ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न हो, लोहा, एक प्राचीन देश का नाम जहाँ मोती निकलता था ।

पारश्वध-(सं. पुं.) परशुधारी योद्धा।
पारस-(हि. पुं.) स्पर्शमणि, एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में लोगों में ऐसी प्रसिद्धि है कि इसके स्पर्श या छूने से लोहा सुवर्ण हो जाता है, अत्यन्त लाभदायक तथा उपयोगी वस्तु, खाने के लिये रखा हुआ भोजन, पत्तलभर खाने की सामग्री, एक पहाड़ी वृक्ष, भारतवर्ष के पश्चिम काबुल और अफ़गानिस्तान के आगे का एक देश; (वि.) आरोग्यपूर्ण, चंगा।
पारसनाथ-(हि. पुं.) देखें 'पार्श्वनाथ'।
पारसव-(हि. पुं.) देखें 'पारशव'।
पारसी-(हि. वि.) पारस देश-सम्बन्धी, पारस देश का; (पुं.) पारस देश का रहनेवाला मनुष्य, (स्वदेश परित्याग करके ये लोग भारतवर्ष में आकर बसे हैं। इन लोगों पर मुसलमानों ने बहुत अत्याचार किया था जिससे इनको देश छोड़ना पड़ा।); (स्त्री.) पारस की भाषा।
पारसीक-(सं. पुं.) पारस देश का निवासी, पारस देश का घोड़ा।
पारस्कर-(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम, एक गृह्यसूत्रकार मुनि का नाम।
पारस्त्रणय-(सं. वि.) पर-स्त्री से उत्पन्न पुत्र, जारज पुत्र।
पारस्परिक-(सं. वि.) परस्पर का, आपस का।
पारस्य-(सं. पुं.) पारस देश जिसका आधुनिक नाम ईरान है।
पारा-(हि. पुं.) चाँदी की तरह श्वेत चमकती हुई एक तरल धातु जिसका द्रव-रूप गरमी-सरदी से नहीं बदलता; टुकड़ा, पत्थरों के खंडों को जोड़कर बनी हुई दीवार; (मुहा.)-पिलाना-किसी वस्तु को बहुत भारी बना देना।
पारायण-(सं. पुं.) सम्पूर्णता, समाप्ति, नियमित समय में किसी धर्म-ग्रन्थ का आदि से अन्त तक पाठ करना।
पारायणिक-(सं. पुं.) किसी धर्म-ग्रन्थ का आद्योपन्त पाठ करनेवाला।
पारारुक-(सं. पुं.) चट्टान, शिला।
पारावत-(सं. पुं.) परेवा, पंडुक, कबूतर, बंदर, पर्वत, एक नाग का नाम, तेंदू का वृक्ष, एक प्रकार का खट्टा पदार्थ, दत्तात्रेय के गुरु का नाम।
पारावती-(सं. स्त्री.) ग्वालों का गीत, लवली का फल, हरफारेवड़ी।
पारावार-(सं. पुं.) दोनों किनारे, पारापार, सीमा, हद, समुद्र।
पारावारीण-(सं. वि.) आरपार करनेवाला।
पाराशर-(सं. पुं.) व्यासदेव, पराशर मुनि का वंशज; (वि.) पराशर-संबंधी, पराशर का बनाया हुआ।
पाराशरि-(सं. पुं.) वेदव्यास, शुकदेव।
पारिंद्र-(सं. पुं.) सिंह, शेर।
पारि-(हि. स्त्री.) पार, ओर, दिशा, किसी जलाशय का किनारा।
पारिकुट-(सं. पुं.) सेवक, नौकर।
पारिख-(हि. पुं.) देखें 'परख'।
पारिक्षत-(सं. पुं.) परीक्षित् के पुत्र जनमेजय।
पारिगर्भिक-(सं. पुं.) कपोत, कबूतर।
पारिग्रामिक-(सं. वि.) गाँव के चारों ओर का।
पारिजात-(सं. पुं.) एक वृक्ष जो समुद्र-मंथन के समय निकला था और इन्द्र के नन्दन-वन में आरोपित हुआ, परजाता, हरसिंगार, कचनार, ऐरावत के कुल का एक हाथी, एक तन्त्र-शास्त्र का नाम, एक ऋषि का नाम।
पारितथ्या-(सं. स्त्री.) स्त्रियों का सिर के बालों पर पहिनने का एक आभूषण।
पारितोषिक-(सं. वि.) प्रीतिकर, आनन्द देनेवाला; (पुं.) वह वस्तु जो किसी को प्रसन्न करने के लिये दी जाय, भेंट, उपहार, पुरस्कार।
पारिपंथिक-(सं. पुं.) डाकू, चोर।
पारिपात्र-(सं. पुं.) सप्त कुलाचलों में से एक पर्वत।
पारिपार्श्व-(सं. पुं.) सेवक, अनुचर।
पारिपार्श्विक-(सं. पुं.) नाटक के अभिनय में एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है, (यह सूत्रधार, नटी आदि के साथ प्रस्तावना में आता है), पास खड़ा रहनेवाला सेवक।
पारिप्लव-(सं. वि.) चंचल; (पुं.) एक जलपक्षी, नाव, जहाज।
पारिप्लवनेत्र-(सं. पुं.) चंचल चक्षु।
पारिबर्ह-(सं. पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।
पारिभद्र-(सं. पुं.) फरहद का पेड़, सलई का वृक्ष, देवदारु, एक हरे रंग का रत्न।
पारिभाव्य-(सं. पुं.) प्रतिभू होने का भाव।
पारिभाषिक-(सं. वि.) परिभाषा-युक्त, अर्थबोधक (पद), जिस (शब्द) का व्यवहार किसी विशेष या वैज्ञानिक अर्थ में किया जाता है।
पारिमांडल्य-(सं. पुं.) अणु या परमाणु का परिमाण।
पारिरक्षक-(सं. पुं.) तपस्वी, साधु।
पारिव्राजक-(सं. पुं.) परिव्राज का भाव, संन्यास।
पारिश-(सं. पुं.) एक वृक्ष, कमण्डलु।
पारिशील-(सं. पुं.) एक प्रकार का मालपूआ।
पारिषद-(सं. पुं.) सभा में बैठनेवाला, सभ्य, सभासद्; (वि.) सभा-संबंधी।
पारिषदक-(सं. वि.) पंच द्वारा किया हुआ।
पारिस पीपल-(हि. पुं.) भिंडी की जाति का एक पौधा।
पारिहारिक-(सं. वि.) परिहार करनेवाला।
पारिहार्य-(सं. पुं.) वलय, हाथ का कड़ा।
पारिहास्य-(सं. पुं.) परिहास का भाव।
पारींद्र-(सं. पुं.) सिंह, अजगर, सर्प।
पारी-(सं. स्त्री.) जलराशि; (हि. स्त्री.) बारी, ओसरी, गुड़ का जमाया हुआ ढोंका।
पारीण-(सं. वि.) पारग।
पारीरण-(सं. पुं.) कछुवा, दण्ड।
पारु-(सं. पुं.) अग्नि, सूर्य।
पारुष्य-(सं. पुं.) बोल की अप्रियता, कठोरता, रुखाई, इन्द्र के वन का नाम, बृहस्पति।
पारेरक-(सं. पुं.) खड्ग, तलवार।
पारेवत-(सं. पुं.) एक प्रकार का अमरूद, एक प्रकार का खजूर।
पारेसिंधु-(सं. अव्य.) समुद्र के दूसरे किनारे पर।
पारोक्ष-(सं. वि.) परोक्ष-संबंधी।
पार्घट-(सं. पुं.) भस्म, राख।
पार्थ-(सं. पुं.) पृथिवीपति, पृथा का पुत्र, अर्जुन, अर्जुनवृक्ष।
पार्थक्य-(सं. पुं.) पृथक् होने का भाव, अंतर, भिन्नता, वियोग।
पार्थव-(सं. पुं.) स्थूलता, मोटाई; (वि.) पृथुराज-संबंधी।
पार्थसारथि-(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
पार्थिव-(सं. पुं.) पृथ्वी पर के प्राणी, पृथिवीपति, राजा, एक संवत्सर का नाम, मंगल ग्रह, मिट्टी का पात्र, मिट्टी का बना हुआ शिवलिंग; (वि.) मिट्टी आदि का बना हुआ, राजा के योग्य, पृथ्वी-संबंधी।
पार्थिवी-(सं. स्त्री.) सीता, उमा, पार्वती।
पार्पर-(सं. पुं.) यम।
पार्वण-(सं. पुं.) किसी पर्व के दिन किया जानेवाला श्राद्ध।
पार्वत-(सं. पुं.) महानिम्ब, बकायन, एक प्रकार का अस्त्र, हिंगुल, शिलाजीत; (वि.) पर्वत-संबंधी, पर्वत पर होनेवाला।
पार्वती-(सं. स्त्री.) पर्वतराज की कन्या, दुर्गा, शिव की अर्धाङ्गिनी, गोपी, ग्वालिन, द्रौपदी, गोपीचन्दन, धाय, सलई।
पार्वतीय-(सं. वि.) पर्वत-संबंधी, पहाड़ी।

पार्वतीलोचन–(सं. पुं.) एक ताल का नाम।
पार्वतीश्वर–(सं. पुं.) एक शिवलिंग का नाम।
पार्वतेय–(सं. पुं.) सुरमा, हुरहुर का पौधा, धाय का वृक्ष; (वि.) पर्वत पर होनेवाला।
पार्शव–(सं.पुं.) परशु से लड़नेवाला योद्धा।
पार्शुका–(सं. स्त्री.) पर्शुका, पसली।
पार्श्व–(सं. पुं.) काँख के नीचे का भाग, पसली, निकटता, समीपता, आसपास का स्थान; (वि.) पास का।
पार्श्वक–(सं. वि.) धूर्तता से अपनी उन्नति करनेवाला।
पार्श्वग–(सं. पुं.) अनुचर, सेवक; (वि.) पास या साथ रहनेवाला।
पार्श्वगत–(सं. वि.) निकट रहनेवाला।
पार्श्वचर–(सं. पुं.) अनुचर, भृत्य।
पार्श्वच्छवि–(हिं. स्त्री.) अप्रधान शोभा।
पार्श्वतीय–(सं. वि.) जो पार्श्व में हो।
पार्श्वद–(सं. पुं.) अनुचर, सेवक।
पार्श्वदेश–(सं. पुं.) पार्श्व-भाग।
पार्श्वनाथ–(सं.पुं.) जैनों के तेईसवें तीर्थंकर।
पार्श्वभाग–(सं. पुं.) पक्ष, काँख।
पार्श्ववक्त्र–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
पार्श्ववर्ती–(सं. पुं.) पास रहनेवाला मनुष्य; (वि.) समीप का।
पार्श्वशायी–(सं. वि.) बगल में सोनेवाला।
पार्श्वसूत्रक–(सं. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन आभूषण।
पार्श्वस्थ–(सं. पुं.) पार्श्वस्थित नट, अभिनय के नटों में से एक जो पास में खड़ा रहता है; (वि.) पास में खड़ा रहनेवाला।
पार्श्वस्थित–(सं.वि.) पार्श्व में रहनेवाला।
पार्श्वानुचर–(सं. पुं.) अनुचर।
पार्श्वासन्न–(सं. वि.) पार्श्व में उपस्थित।
पार्श्वास्थि–(सं. पुं.) पर्शुका, पसली की हड्डी।
पार्श्विक–(सं. वि.) सहचर, छली।
पार्षत–(सं. पुं.) राजा विराट के पुत्र धृष्टद्युम्न।
पार्षती–(सं. स्त्री.) द्रौपदी।
पार्षद–(सं. पुं.) मन्त्री, पास रहनेवाला सेवक, पारिषद, अनुचर।
पार्ष्णि–(सं.पु.) एड़ी, पृष्ठ; (स्त्री.) कुन्ती।
पालंक–(सं. पुं.) पालक का साग, बाज पक्षी, एक प्रकार का रत्न।
पालंकी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य, कुंदुरू में।
पाल–(सं. पुं.) पालक, पालन करनेवाला, चीते का वृक्ष; (हिं.पुं.) पत्तों को नीचे-ऊपर रखकर फलों को पकाने की विधि, वह स्थान जहाँ पत्तों को नीचे-ऊपर बिछाकर फल पकाये जाते हैं, तंबू, चँदवा, गाड़ी आदि ढाँपने का टाट, ओहार, नाव के मस्तूल पर बाँधने का मोटा वस्त्र, कबूतरों का जोड़ा खाना; (स्त्री.) ऊँचा किनारा, कगार, पानी रोकने का बाँध या मेंड़।
पालक–(सं. पुं.) रक्षा करनेवाला मनुष्य, चीते का वृक्ष, कुठ नामक वृक्ष, हिंगुल; (वि.) पालनेवाला; (हिं. पुं.) एक प्रकार का शाक, पालंक, पाला हुआ पुत्र; –जूही–(हिं. स्त्री.) औषध में प्रयुक्त होनेवाला एक पौधा; –पुत्र–(पुं.) पाला हुआ पुत्र, दत्तक-पुत्र।
पालकी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की सवारी जिसको कहार कंधे पर ढोते हैं, पीनस, खड़खड़िया, पालक का साग; –गाड़ी–(स्त्री.) पालकी के आकार की घोड़ा-गाड़ी।
पालघ्न–(सं. पुं.) छत्राक, खुमी।
पालट–(हिं. स्त्री.) पटेबाजी का एक हाथ; (वि.) पाला-पोसा हुआ लड़का, दत्तक-पुत्र।
पालतू–(हिं. वि.) पाला-पोसा हुआ।
पालथी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पलथी'।
पालन–(सं. पुं.) तुरत की ब्याई हुई गाय का दूध, रक्षण, भरणपोषण, अनुकूल व्यवहार से किसी बात का निर्वाह, वचन को भंग न करना, बात न टालना, लड़कों को बहलाने का गीत।
पालना–(हिं.क्रि.स.) पालन-पोषण करना, पक्षी आदि को पोसना, अनुकूल आचरण द्वारा अपनी बात की रक्षा या निर्वाह करना; (पुं.) बच्चों को सुलाने का खटोला या झूला जो रस्सियों से लटकाया रहता है।
पालनीय–(सं. वि.) पालन करने योग्य।
पालयिता–(हिं. वि.) पालन करनेवाला।
पालल–(सं. पुं.) तिलपपड़ी।
पालव–(हिं. पुं.) कोमल पत्ता।
पाला–(हिं. पुं.) वायु में मिले हुए भाप के अत्यन्त सूक्ष्म कण जो अधिक ठंड से जमीन पर बर्फ के रूप में जम जाते हैं, हिम, ठंढक से जमा हुआ पानी, ठंड, व्यवहार का संयोग, दस-पाँच आदमियों के बैठने की जगह, मुख्य स्थान, सीमा निर्धारित करने के लिये बनी हुई मेंड़ या भीटा, अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र, मल्लयुद्ध का स्थान, अखाड़ा; (मुहा.)–पड़ना–आवश्यकता होना; –मार जाना–पाला पड़ने से उपज को हानि पहुँचना; किसी के पाले पड़ना–किसी के वश में आ जाना।
पालागन–(हिं.स्त्री.) नमस्कार, दण्डवत्।
पालागल–(सं. पुं.) दूत, समाचार देनेवाला मनुष्य।
पालाश–(सं.वि.) हरित, हरे रंग का।
पालाशी–(सं. स्त्री.) खिरनी का पेड़।
पालि–(सं.स्त्री.) पंक्ति, श्रेणी, कोना, प्रान्त, किनारा, वह स्त्री जिसकी दाढ़ी में बाल हों, सेतु, पुल, परिधि, जूँ, चीलर, एक प्राचीन तौल, मेंड़, बाँध, बटलोई, सीमा, प्रशंसा, गोद, करार, भीटा।
पालिक–(सं.पुं.) पलंग, चारपाई, पालकी।
पालिका–(सं. स्त्री.) घर का कोना; पालनेवाली।
पालित–(सं.वि.) रक्षित, पाला हुआ; (पुं.) कुमार का एक अनुचर, कायस्थों की एक उपाधि।
पालित्य–(सं. पुं.) बालों की सफेदी।
पाली–(हिं.वि.) पालन करनेवाला, रक्षा करनेवाला; (सं.स्त्री.) जूँ, थाली; मध्य एशिया में प्रचलित एक प्राचीन लिपि जिसमें लिखे हुए अशोक के समय के अनेक शिलालेख पाये जाते हैं। (इसकी वर्णमाला के अक्षर देवनागरी से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं, इसमें बौद्धों के धर्मग्रन्थ लिखे हुए हैं); (हिं.स्त्री.) वह स्थान जहाँ तीतर, बटेर, बुलबुल आदि पक्षी लड़ाये जाते हैं, पात्र का ढपना, परई।
पालीघोश–(सं.पुं.) कान का एक रोग।
पालू–(हिं. वि.) पालतू, पाला हुआ।
पालो–(हिं. पुं.) गाँव की बस्ती से दूर की भूमि जिसकी सिंचाई कुएँ से होती है।
पाल्य–(सं. वि.) पालने योग्य।
पाल्वल–(सं. वि.) ताल में होनेवाला; (पुं.) ताल का पानी।
पावँ–(हिं. पुं.) चलने का अंग, पाद, पैर; (मुहा.)–अड़ाना–हस्तक्षेप करना; –उखड़ जाना–ठहरने की शक्ति न रहना, युद्ध से भागना; –उठाना–चलने के लिये पैर बढ़ाना; –घिसना–चलते-चलते पैरों का थकना; –जमना–स्थिति दृढ़ होना; –तोड़कर बैठना–अपने स्थान पर टिक जाना, हार जाना; –तोड़ना–पैर थकाना, अधिक प्रयास करना; –धरना–पैर छूकर प्रणाम करना; (बुरे रास्ते पर) –धरना–बुरे आचरण में प्रवृत्त होना; (धरती पर)–न रखना–बहुत घमंड से चलना; –न होना–साहस न होना; –पकड़ना–पैर छूना, दीनता

प्रकट करना, पैर छूकर प्रणाम करना; -पखारना-पैर धोना; -पड़ना-साष्टांग दंडवत् करना, शुश्रूषा करना; -पसारना-पैर फैलाना, ठाट-बाट बनाना; -पांव चलना-पैदल चलना; -पूजना-बड़ा सत्कार करना; -फूंक-फूंककर चलना-बहुत सँभलकर काम करना; -फैलाना-अधिक लालसा करना; -बढ़ाना-आगे बढ़ना; -भर जाना-चलते-चलते बहुत थक जाना; -भारी होना-स्त्री का गर्भ धारण करना; -रोपना-दृढ़ निश्चय करना; -लगना-प्रणाम करना; -सो जाना-पैर उठाने की शक्ति न रहना।

पावँ-चप्पी-(हिं. स्त्री.) थकावट दूर करने के लिये पैर दबाना।

पावँड़ा-(हिं.पुं.) पैर रखने के लिये मार्ग पर फैलाया हुआ कपड़ा।

पावँड़ी-(हिं. स्त्री.) खड़ाऊँ, जूता, गोटा बुननेवालों का एक उपकरण।

पाव-(हिं. पुं.) चतुर्थ भाग, चौथाई अंश, एक सेर का चौथाई भाग चार छटाँक का परिमाण।

पावक-(सं. पुं.) अग्नि, सदाचार, चीते का वृक्ष, वरुण, एक ऋषि का नाम, सूर्य, अग्नि मन्थ वृक्ष, तपस्वी; (वि.) शुद्ध या पवित्र करनेवाला; -मणि-(पुं.) सूर्यकान्त मणि; -वर्ण-(वि.) अग्नि के समान तेजस्वी।

पावका-(सं. स्त्री.) सरस्वती।

पावकात्मज-(सं. पुं.) कार्तिकेय।

पावकि-(सं. पुं.) कार्तिकेय, पावक का पुत्र जो इक्ष्वाकुवंशीय दुर्योधन की कन्या सुदर्शना से उत्पन्न हुआ था।

पावकुलक-(सं. पुं.) पादाकुलक छन्द, चौपाई।

पावदान-(हिं. पुं.) पैर रखने की वस्तु या स्थान, एक्का, गाड़ी आदि में पैर रखने का स्थान, मेज के नीचे पैर रखने के लिये रखी हुई छोटी चौकी।

पावन-(सं. पुं.) व्यास, पीली भँगरैया, जल, विष्णु, सिद्ध, गोबर, रुद्राक्ष, कुठ, चीता, चन्दन, प्रायश्चित्त; (वि.) शुद्ध, पवित्र, शुद्ध या पवित्र करनेवाला; -ता-(स्त्री.) पवित्रता, शुद्धता; -त्व-(पुं.) शुद्धता; -ध्वनि-(पुं.) पवित्र ध्वनि, शंख।

पावना-(हिं. क्रि. स.) प्राप्त करना, अनुभव करना, जानना, समझना, भोजन करना, पाना; (पुं.) लेहना।

पावनि-(सं. पुं.) पवनसुत, हनुमान्।

पावनी-(सं. स्त्री.) तुलसी, गाय, गंगा; (वि.स्त्री.) पवित्र करनेवाली, पवित्र, शुद्ध।

पावमुहर-(हिं. स्त्री.) शाहजहाँ के काल की सोने की एक मुद्रा जो मुहर की चौथाई होती थी।

पावल-(हिं. स्त्री.) देखें 'पायल'।

पावली-(हिं. स्त्री.) चार आने की मुद्रा, चवन्नी।

पावस-(हिं. स्त्री.) वर्षाकाल, बरसात, सावन-भादों का महीना।

पावा-(हिं. पुं.) देखें 'पाया', गोरखपुर जिले का एक प्राचीन गाँव, (यहाँ पर गौतम बुद्ध कुछ दिनों तक ठहरे थे।)

पावित्र-(सं. पुं.) एक प्रकार का छन्द।

पावी-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मैना।

पाव्य-(सं. वि.) पाक करने योग्य।

पाश-(सं. पुं.) आर्य जाति का एक प्रकार का प्राचीन युद्धास्त्र, पशु-पक्षियों को फँसाने का फंदा, जाल रस्सी, डोरी, बन्धन, एक योग विशेष, शब्द के अन्त में जोड़ने से इसका अर्थ-समूह, निन्दा आदि होता है यथा-केशपाश, छलपाश; -क-(पुं.) पासा, चौपड़; -केलरी-(स्त्री.) पासा फेंककर की जानेवाली फलित-ज्योतिष की एक गणना; -क्रीड़ा-(स्त्री.) पासा खेलना; -धर-(पुं.) जलदेव, वरुण देवता; -पाणि-(पुं.) वरुण देवता; -बंधक-(पुं.) व्याध, बहेलिया; -भृत्-(पुं.) वरुण देवता; -मुद्रा-(स्त्री.) तन्त्रोक्त एक प्रकार की मुद्रा; -हस्त-(पुं.) वरुण, शतभिषा नक्षत्र।

पाशन-(सं. पुं.) बन्धन।

पाशव-(सं.वि.) पशु-संबंधी, पशु के समान।

पाशवासन-(सं. पुं.) एक आसन का नाम।

पाशांत-(सं. पुं.) कपड़े का किनारा।

पाशा-(पुं) तुर्क देश के सरदारों की उपाधि।

पाशिक-(सं. पुं.) व्याध, बहेलिया।

पाशित-(सं. वि.) पाशयुक्त, बँधा हुआ।

पाशिन्-(सं.पुं.) वरुण, यम, व्याध, बहेलिया।

पाशुक-(सं. वि.) पशु-संबंधी।

पाशुपत-(सं. पुं.) अगस्त का वृक्ष, पशुपति देवता, पशुपति देवता के भक्त या उपासक, शिव का कहा हुआ तन्त्रशास्त्र; (वि.) शिव-संबंधी, पशुपति का; -दर्शन-(पुं.) एक प्रसिद्ध धार्मिक दर्शन जिसका उल्लेख माधवाचार्य ने सर्वदर्शन-संग्रह में किया है।

पाशुपतास्त्र-(सं.पुं.) महादेव का वह अस्त्र जो बहुत प्रचण्ड था, (अर्जुन ने कठोर तपस्या करके शिव से यह अस्त्र प्राप्त किया था।

पाशुपाल्य-(सं.पुं.) पशुओं को पालने की वृत्ति।

पाशुबंधक-(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ यज्ञ का बलि-पशु बाँधा जाता है।

पाश्चात्य-(सं. वि.) पीछे होनेवाला, पीछे का, पिछला, पश्चिम देश या दिशा का; -दर्शन-(पुं.) अंग्रेजी तथा अन्य यूरोपीय विद्वानों का लिखा हुआ दर्शन-शास्त्र।

पाषंड-(सं.वि.) वैदिक धर्म के विरुद्ध आचरण करनेवाला, पाखंडी, झूठा मत माननेवाला, झूठा आडंबर दिखलानेवाला, कपट वेशधारी, ढोंगी, दूसरों को ठगने के लिये साधुओं के समान रंग-रूप बनानेवाला।

पाषंडी-(सं.वि.) वैदिक धर्म के विरुद्ध आचरण या धर्म-ग्रहण करनेवाला, झूठा मत माननेवाला, धूर्त, ढोंगी।

पाषर-(हिं. स्त्री.) देखें 'पाखर'।

पाषाण-(सं. पुं.) शिला, प्रस्तर, पत्थर, गन्धक; -कदली-(स्त्री.) पहाड़ी केला; -गर्दभ-दाढ़ सूजने का रोग; -गैरिक-(पुं.) गेरू; -जतु-(पुं.) शिलाजतु, शिलाजीत; -दारक-(पुं.) टाँकी, छेनी; -भिद्-(पुं.) कुलत्थ, कुलथी; -भेद-(पुं.) पथरचट्टा नाम का सुन्दर पत्तियोंवाला एक पौधा; -रोग-(पुं.) अश्मरीरोग, पथरी।

पाषाणी-(सं. स्त्री.) तौलने के काम में आनेवाला पत्थर का टुकड़ा।

पासँग-(फा. पुं.) तराजू की डाँड़ी का एक ओर उठा और एक झुका हुआ होने पर इन्हें बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा जानेवाला भार, पसँघा।

पास-(हिं. पुं.) पासा, फाँस ऊन कतरने की कैंची, पार्श्व, समीपता, निकटता, अधिकार; (अव्य.) निकट, समीप अधिकार में, किसी के प्रति, किसी को संबोधन करके; आसपास-(अव्य.) निकट, लगभग, प्रायः, करीब; (मुहा.) -फटकना-समीप आना।

पासना-(हिं.क्रि.अ.) थनों में दूध आना।

पासनी-(हिं. स्त्री.) अन्नप्राशन, बच्चे को पहले-पहल अन्न चटाने का संस्कार।

पासबंद-(हिं. पुं.) दरी बुनने के करघ की एक लकड़ी।

पासबान-(हिं. पुं.) पार्श्वचर, पास रहनेवाला सेवक।

पासवर्ती–(हिं. वि.) देखें 'पार्श्ववर्ती।'
पासा–(हिं. पुं.) हाथी-दाँत या हड्डी का बना हुआ छः पहलोंवाला छोटा टुकड़ा जिस पर बिंदियाँ बनी होती है और जो चौसर खेलने के काम में आता है, चौसर का खेल, गुल्ली, पीतल या काँसे का ठप्पा; (मुहा.)–**पड़ना**–भाग्य का अनुकल होना; –**पलटना**–स्थिति बदलना।
पासासार–(हिं. पुं.) पासे की गोटी, पासे का खेल।
पासिका–(हिं. स्त्री.) पाश, फंदा, जाल।
पासी–(हिं. पुं.) जाल या फन्दा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला, व्याध, बहेलिया, एक नीच और अस्पृश्य जाति; (स्त्री.) फंदा, फाँस, घास बाँधने का जाल, घोड़े के पैर में बाँधने की रस्सी, पिछाड़ी।
पासुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'पसली'।
पाहँ–(हिं. अव्य.) निकट, समीप, पास, किसी के प्रति।
पाह–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पत्थर।
पाहन–(हिं. पुं.) पाषाण, पत्थर।
पाहरू–(सं. पुं.) पहरा देनेवाला, चौकीदार।
पाहा–(हिं.पुं.) खेत के चारों ओर की मेंड़।
पाहात–(सं. पुं.) शहतूत का पेड़।
पाहिं–(हिं. अव्य.) समीप, निकट, पास, प्रति, से।
पाहि–(सं.क्रि.पद) एक संस्कृत क्रिया-पद जिसका अर्थ है–रक्षा करो, बचाओ।
पाही–(हिं. स्त्री.) वह खेती जिसका किसान दूसरे गाँव में रहता हो।
पाहुँच–(हिं. स्त्री.) देखें 'पहुँच'।
पाहुना–(हिं. पुं.) अभ्यागत, अतिथि, जामाता, दामाद।
पाहुनी–(हिं.स्त्री.) स्त्री अतिथि, आतिथ्य, सत्कार।
पाहुर–(हिं. पुं.) भेंट, वह धन या वस्तु जो इष्ट-मित्र या सम्बन्धी के यहाँ व्यवहार में दी जाय।
पाहू–(हिं. पुं.) मनुष्य, पत्थरों के जोड़ पर जड़ने का टेढ़ा लोहा।
पिंग–(सं. पुं.) बालक, हरताल, भैंसा, चूहा, पीला रंग, भूरापन लिये लाल रंग, तामड़ा; (वि.) ललाई लिये भूरा।
पिंगकपिशा–(सं. स्त्री.) गोबरैले के प्रकार का एक कीड़ा, तेल चट्टा।
पिंगचक्षु–(सं.वि.) जिसकी आँखें भूरे रंग की हों।
पिंगजट–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
पिंगमल–(सं. पुं.) पीला गाजर।
पिंगर, पिंगल–(सं. पुं.) लाल और भूरा मिला हुआ रंग, एक नाग का नाम, एक पर्वत का नाम, एक संवत्सर का नाम, पिङ्गलाचार्य का बनाया हुआ छन्द शास्त्र का एक ग्रन्थ, एक यक्ष का नाम, उलूक, उल्लू पक्षी, नेवला, बन्दर, अग्नि, एक प्रकार का स्थावर विष, पीतल, हरताल, खस; (वि.) तामड़ा, सुँघनी के रंग का।
पिंगलक–(सं. पुं.) एक प्रकार के यक्ष।
पिंगला–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी का एक नाम, हठयोग के अनुसार दक्षिण पार्श्व में अवस्थित एक नाड़ी का नाम, राजनीति, गोरोचन, शीशम का पेड़।
पिंगलिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की मक्खी जिसके काटने से जलन और सूजन होती है।
पिंगसार–(सं. पुं.) हरिताल, हरताल।
पिंगस्फटिक–(सं. पुं.) गोमेदक मणि।
पिंगा–(सं. स्त्री.) हलदी, गोरोचन, वंशलोचन, रक्तवाहिनी नाड़ी।
पिंगाक्ष–(सं. पुं.) शिव, महादेव, नक्र नामक जलजन्तु, बिल्ली; (वि.) जिसकी आँखें तामड़े रंग की हों।
पिंगाक्षी–(सं. स्त्री.) कुमार की अनुचरी एक मातृका।
पिंगाशी–(सं. स्त्री.) नील का पौधा।
पिंगूरा–(हिं. पुं.) बच्चों को सुलाकर झुलाने का पालना।
पिंगेक्षण–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
पिंगेश–(सं. पुं.) अग्नि का एक नाम।
पिंजड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'पिंजरा'।
पिंजन–(सं. पुं.) रूई धुनने की धुनकी।
पिंजर–(सं. पुं.) देखें 'पिंजरा', पिंजड़ा।
पिंजरा–(हिं. पुं.) लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते है।
पिंजरापोल–(हिं. पुं.) गोशाला, पशुशाला, वह स्थान जहाँ पालतू चौपाये रखे जाते है।
पिंजियारा–(हिं. पुं.) रूई ओटनेवाला।
पिंड–(सं. पुं.) गोलाकार वस्तु; पित्रादि के उद्देश्य से दिया जानेवाला अन्न, जीविका, आहार, भोजन, मदन वृक्ष, कोई गोल द्रव्य, जपा-पुष्प, खीर आदि का हाथ से बाँधा हुआ गोल लोंदा, बल, घन।
पिंडक, पिंडकंद–(सं.पुं.) पिण्डालू, ओल, पिशाच, कवल।
पिंडका–(सं.स्त्री.) मसूरिका, छोटी चेचक।
पिंडखजू(र्जू)र–(सं. पुं.) छोहाड़ा।
पिंडज–(सं. पुं.) वह जन्तु जो पिंड अर्थात् शावक के रूप में उत्पन्न हो।
पिंडत्व–(सं. पुं.) पिण्ड का भाव या फल।
पिंडद–(सं. पुं.) पिण्डदान करनेवाला, वह जो पिण्डदान का अधिकारी हो।
पिंडदान–(सं. पुं.) पिण्ड देने का कृत्य जो श्राद्ध में किया जाता है।
पिंडपात–(सं. पुं.) पिण्डदान, भिक्षादान।
पिंडपात्र–(स. पुं.) वह पात्र जिसमें पिण्ड-दान किया जाता है, भिक्षा-पात्र।
पिंडपाद–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
पिंडपुष्प–(सं. पुं.) अड़हुल का फूल, कमल का फल, अनार का वृक्ष।
पिंडपुष्पक–(सं. पु.) बथुआ का साग।
पिंडफल–(सं. पुं.) कद्दू।
पिंडफला–(सं. स्त्री.) तितलौकी।
पिंडबीज–(सं. पु.) कनेर का पेड़।
पिंडभाज्–(सं. पुं.) पिण्डभोजी, पिण्ड खानेवाला।
पिंडमय–(सं. वि.) गोल, पिंड जैसा।
पिंडमुस्ता–(सं. स्त्री.) नागरमोथा।
पिंडमूल–(सं. पुं.) गाजर, शलजम।
पिंडयोनि–(सं. स्त्री.) योनि का एक प्रकार का रोग।
पिंडरोग–(सं. पुं.) कुष्ठ, कोढ़।
पिंडल–(सं. पुं.) सेतु, पुल।
पिंडस–(सं. पुं.) भिक्षा से जीविका निर्वाह करनेवाला।
पिंडस्थ–(स. वि.) संयुक्त, मिश्रित, एक में मिला हुआ।
पिंडा–(सं. स्त्री.) हलदी, एक प्रकार की कस्तूरी।
पिंडाकार–(सं. वि.) पिंड के आकार का, गोल।
पिंडामा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का गुड़।
पिंडालु (लू)–(स. पुं.) एक प्रकार का सफतालू।
पिंडाश–(स. पुं.) भिक्षुक, भिखारी।
पिंडित–(सं.वि.) घन, पिण्ड के रूप में बँधा हुआ, गुणा किया हुआ; (पुं.) काँसा।
पिंडिन्–(सं. वि.) शरीरधारी, शरीरी।
पिंडिरिका–(सं. स्त्री.) चौराई का साग।
पिंडिला–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की ककड़ी।
पिंडी–(सं. स्त्री.) कद्दू, लौकी, एक प्रकार का तगर, एक प्रकार का खजूर, ठोस गोल वस्तु, लुगदी, वह वेदी जिसपर बलिदान किया जाता है, सूत, रस्सी आदि का लपेटा हुआ लच्छा; –**पुष्प**–(पुं.)

अशोक वृक्ष; **–शूर–**(पुं.) घर में बैठे-नैठे शूरता दिखलानेवाला, पेटू।
पिंडोद्भवा–(सं. स्त्री.) मदिरा, शराब।
पिंडोलि–(सं.स्त्री.) उच्छिष्ट पदार्थ, जूठन।
पिआज–(हिं. पुं.) देखें 'प्याज'।
पिआना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पिलाना'।
पिआनो–(सं पुं.) वाद्य यंत्र विशेष।
पिआर–(हिं. पुं.) देखें 'प्यार'।
पिआरा–(हिं. वि.) देखें 'प्यारा'।
पिआस–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्यास'।
पिआसा–(हिं. वि.) देखें 'प्यासा'।
पिउ–(हिं. पुं.) पति।
पिउनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पूनी'।
पिक–(सं. पुं.) कोकिल, कोयल; **–देव–**(पुं.) आम का दृक्ष; **–प्रिय–**(पुं.) वसन्त-काल, आम का वृक्ष; **–प्रिया–**(स्त्री.) बड़ा जामुन, कोकिला; **–बंधु, –वल्लभ–**(पुं.) आम का पेड़।
पिकांग–(सं. पुं.) चातक पक्षी, पपीहा।
पिकाक्ष–(सं. पुं.) तालमखाना; (वि.) जिसकी आँखें कोयल की तरह लाल हों।
पिकानद–(सं. पुं.) वसन्त ऋतु।
पिकी–(सं.स्त्री.) कोकिला, मादा कोयल।
पिकुरस–(सं. पुं.) मद्य।
पिक्क–(सं. पुं.) हाथी का बच्चा।
पिघलना–(हिं. क्रि. अ.) द्रवीभूत होना, किसी गाढ़े पदार्थ का गरमी से गलकर पानी के समान हो जाना, चित्त में दया उत्पन्न होना, पसीजना।
पिघलाना–(हिं. क्रि. स.) दयार्द्र करना, किसी के चित्त में दया उत्पन्न करना, किसी वस्तु को गरमी पहुँचाकर पानी सा तरल बनाना।
पिचकना–(हिं. क्रि. अ.) किसी उभड़े हुए अथवा फूले हुए तल का दब जाना।
पिचकवाना–(हिं. क्रि. स.) पिचकाने का काम दूसरे से कराना।
पिचका–(हिं. पुं.) बड़ी पिचकारी।
पिचकाना–(हिं. क्रि.स.) फूले या उभड़े हुए तल को नीचे की ओर दबाना।
पिचकारी–(हिं.स्त्री.) एक नल जैसा यन्त्र जिससे कोई तरल पदार्थ खींचकर वेग से फेंका जाता है, (यह बाँस, लोहा, पीतल, काँच, टीन आदि की बनी होती है।)
पिचकी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिचकारी'।
पिचपिचा–(हिं. वि) देखें 'चिपचिपा'।
पिचपिचाना–(हिं.क्रि.अ.) घाव आदि में से थोड़ा-थोड़ा करके पंछा आदि निकलना।
पिचपिचाहट–(हिं. स्त्री.) (घाव आदि का) गीला या आर्द्र रहने की अवस्था।
पिचलना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'कुचलना'।
पिचु–(सं. पुं.) रूई, एक प्रकार का कुष्ठ रोग, दो तोले के बराबर की तौल, एक असुर का नाम, एक प्रकार का धान।
पिचुक–(सं. पुं.) मैनफल का वृक्ष।
पिचुकिया–(हिं. स्त्री.) छोटी पिचकारी।
पिचुक्का–(हिं. पुं.) गोलगप्पा, पिचकारी।
पिचोतरसो–(हिं.पुं.) पहाड़े में एक सौ और पाँच की संख्या के लिये कहा जाता है।
पिच्चट–(सं. पुं.) सीसा, राँगा, आँख का एक रोग।
पिच्चिट–(सं. पुं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
पिच्चित–(सं. वि.) पिचका हुआ, जो दबकर चिपटा हो गया हो।
पिच्ची–(हिं. वि.) देखें 'पिच्चित'।
पिच्छ, पिच्छक–(सं. पुं.) पशु की पूँछ, लांगुल, मोर की पूँछ, चूड़ा, मोर की चोटी, मोचरस।
पिच्छतिका–(सं. स्त्री.) शीशम का पेड़।
पिच्छन–(सं. पुं.) किसी वस्तु को दबाकर चिपटी करने की क्रिया।
पिच्छबाण–(सं. पुं.) श्येन पक्षी, बाज नामक चिड़िया।
पिच्छभार–(सं. पुं.) मोर की पूँछ।
पिच्छल–(सं. पुं.) मोचरस, आकाशवल्ली, शिंशपा वृक्ष, शीशम का पेड़; (वि.) देखें 'पिच्छिल'।
पिच्छा–(सं. स्त्री.) पूग, सुपारी, मोचरस, निर्मली का पेड़, आकाशवल्ली, नारंगी का पेड़।
पिच्छिल–(हिं. वि.) जिस पर से पैर फिसल जाय, चिकना; **–पाद–**(पुं.) घोड़े के पैर का एक रोग; **–बीज–**(पुं.) दाडिम, अनार।
पिच्छिलक–(सं. पुं.) धन्वन का वृक्ष, मोचरस।
पिच्छिलच्छदा–(सं.स्त्री.) पोय का साग, बेर का फल।
पिच्छिला–(सं. स्त्री.) शीशम, सेमर, तालमखाना, अगर, अरबी।
पिछड़ना–(हिं. क्रि.अ.) श्रेणी में आगे या बराबर न रहना, पीछे रह जाना।
पिछलगा–(हिं. पुं.) सेवक, नौकर, आश्रित व्यक्ति, अनुगामी, दूसरे के मत से काम करनेवाला, वह मनुष्य जो किसी के पीछे-पीछे चले, शिष्य, किसी का मतानुयायी, चेला।
पिछलगी–(हिं. स्त्री.) अनुसरण, अनुयायी होना, अनुगमन करना।
पिछलगू (ग्गू)–(हिं.वि.) देखें 'पिछलगा'।
पिछलना–(हिं. क्रि. अ.) पीछे की ओर हटना या मुड़ना।
पिछलपाई–(हिं. स्त्री.) जादूगरनी, चुड़ैल।
पिछला–(हिं. वि.) पीछे की ओर का, अन्त की ओर का, गत, बीता हुआ, पुराना, भूतकाल का, बाद का; (पुं.) पिछले दिन का पढ़ा हुआ, पाठ वह खाना जो रोजे के दिनों में मुसलमान लोग रात रहते ही खा लेते हैं, सहरी; **–पहर–**(पुं.) आधी रात के बाद का समय; **पिछली रात–**(स्त्री.) पिछला पहर।
पिछवाई–(हिं.स्त्री.) शीशेवाली खिड़की आदि के पीछे की ओर लटकाने का परदा।
पिछवाड़ा, पिछवारा–(हिं. पुं.) घर के पीछे का स्थान या भाग।
पिछाड़ी–(हिं. स्त्री.) पीछे का भाग, घोड़े के पिछले पैरों में बाँधने की रस्सी।
पिछारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिछाड़ी'।
पिछौंड़–(हिं.वि.) किसी के मुख की ओर पीठ किया हुआ, जिसने अपना मुँह पीछे फेर लिया हो।
पिछौंड़ा–(हिं. अव्य.) पीछे की ओर।
पिछौंता–(हिं. अव्य.) पिछली ओर।
पिछौंही–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिछौरी'।
पिछौंहें–(हिं. अव्य.) पिछली ओर।
पिछौरा–(हिं. पुं.) मनुष्य के ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।
पिछौरी–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों की चादर जिसको वे धोती के ऊपर ओढ़ती हैं, ऊपर से ओढ़ने का वस्त्र।
पिटंत–(हिं. स्त्री.) पीटने की क्रिया या भाव, मारपीट।
पिटक–(सं. पुं.) बाँस, बेंत आदि का बना हुआ पिटारा, फुड़िया, फुंसी, किसी ग्रन्थ का विभाग या खंड।
पिटका–(सं. स्त्री.) पिटारी, फुंसी।
पिटना–(हिं. क्रि.अ.) आघात सहना, मार खाना, ठोंका जाना, आघात पाकर बजना; (पुं.) छत पीटने की लकड़ी की मुँगरी।
पिटपिट–(हिं. स्त्री.) हलके आघात से उत्पन्न शब्द।
पिटरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिटारी'।
पिटवाना–(हिं. क्रि.स.) पीटने का काम दूसरे से कराना, दूसरे से आघात कराना, मार खिलवाना, कुटवाना, ठोंकवाना, बजवाना।
पिटाई–(हिं. स्त्री.) प्रहार, आघात, पीटने का काम, मारपीट, पिटवाने का शुल्क,

पीटने या मारने का वेतन ।
पिटापिट–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु को कुछ देर तक बारंबार पीटना, मारपीट।
पिटारा–(हिं. पुं.) बाँस, बेंत आदि की तीलियों का बिना हुआ डिब्बा जैसा पात्र ।
पिटारी–(हिं.स्त्री.) छोटा पिटारा, झाँपी ।
पिट्टक–(सं. पुं.) दाँत की मैल ।
पिट्टस–(हिं. स्त्री.) दुःख या शोक से छाती पीटना ।
पिट्टू–(हिं. वि.) जिसको मार खाने का अभ्यास हो ।
पिट्ठी–(हि. स्त्री.) देखें 'पीठी' ।
पिट्ठु–(हिं. पुं.) सहायक, अनुयायी, पीछे चलनेवाला, खेल में साथ देनेवाला, किसी खेलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में उसके बदले वह स्वयं खेलता है।
पिठ–(सं. पुं.) पीड़ा, दुःख ।
पिठर–(सं. पुं.) मोथा, एक प्रकार का घर, थाली, एक दानव का नाम ।
पिठरक–(सं. पुं.) एक नाग का नाम ।
पिठरिका–(सं. स्त्री.) पात्र, थाली ।
पिठवन–(हिं. स्त्री.) पृष्ठपर्णी लता जो औषधों में प्रयुक्त होती है ।
पिठी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिट्ठी' ।
पिठौनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिठवन' ।
पिठौरी–(हिं. स्त्री.) पीठी की बनी हुई वरी, पकौड़ी आदि ।
पिडक(का)–(सं. पुं.,स्त्री.) छोटा फोड़ा फुंसी
पिड़िया–(हिं. स्त्री.) चावल का लड्डू ।
पिढ़ई–(हि. स्त्री.) छोटा पीढ़ा या पाटा ।
पितंबर–(हिं. पुं.) देखें 'पीतांबर' ।
पितपापड़ा–(हिं. पुं.) एक झाड़ जिसका उपयोग औषधों में होता है।
पितर–(हिं. पुं.) मृत पूर्व-पुरुष, मरे हुए पुरखे जिनके नाम पर श्राद्ध और तर्पण किया जाता है; **–पति**–(पुं.) यमराज; **–शूर**–(पुं.) वह जो पिता के सामने शूरता दिखलाता हो ।
पितराइँध, पितराई–(हिं. स्त्री.) खाद्य वस्तु में पीतल के कसाव-सा स्वाद ।
पितरिहा–(हिं. वि.) पीतल का बना हुआ; (पुं.) पीतल का घड़ा ।
पिता–(हिं. पुं.) जनक, बाप, वह जो जन्म के बाद शिशु का पालन-पोषण करता है; **–मह**–(पुं.) पिता का पिता, दादा, ब्रह्मा, विधाता, शिव, महादेव, भीष्म, मूंज नामक घास; **–मही**–(स्त्री.) पितामह की स्त्री, दादी ।
पितिया–(हिं. पुं.) पिता का भाई, चाचा; **–ससुर**–(पुं.) स्त्री या पति का चाचा; **–सास**–(स्त्री.) स्त्री या पति की चाची ।
पितियानी–(हिं.स्त्री.) चाचा की स्त्री, चाची।
पितुःपुत्र–(सं.पुं.) योग्य पिता का योग्य पुत्र।
पितुःस्वसा–(सं. स्त्री.) पिता की बहिन, फूवा, मौसी ।
पितु–(सं.पुं.) अन्न,अनाज; (हिं.पुं.) पिता ।
पितृ–(सं.पुं.) उत्पादक, जनक पिता, वह जो शिशु का पालन-पोषण करता है, (चाणक्य ने पाँच प्रकार के पिता बतलाये हैं, यथा-अन्नदाता, भयत्राता, श्वसुर, जनक और उपनेता), किसी व्यक्ति के मृत बाप, दादा, परदादा आदि, मृत पुरुष जिनका प्रेतत्व छूट गया हो, एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गये हैं; **–ऋण**–(पुं.) धर्मशास्त्र के अनुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक जिस ऋण से मनुष्य पुत्र उत्पन्न करने पर मुक्त होता है; **–क**–(वि.) पैत्रिक, पिता का, पिता का दिया हुआ; **–कर्म**–(पुं.) श्राद्ध, तर्पण आदि जो पितरों के उद्देश्य से किये जाते हैं; **–कल्प**–(वि.) पिता के सदृश; **–कानन**–(पुं.) श्मशान; **–कार्य**–(पुं.) पितृकर्म; **–कुल**–(पुं.) पिता के वंश के लोग, पिता की ओर के सम्बन्धी; **–कृत**–(वि.) पूर्व पुरुषों द्वारा किया हुआ; **–गण**–(पुं.) मनु, मरीचि आदि के पुत्र; **–गीता**–(स्त्री.) पिता की माहात्म्य-सूचक गीता; **–गृह**–(पुं.) श्मशान, बाप का घर, स्त्रियों का पीहर,नैहर,मायका; **–घात**–(पुं.) पिता की हत्या; **–तर्पण**–(पुं.) पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला बलिदान,तर्पण आदि; **–तिथि**–(स्त्री.) अमावस्या; **–तीर्थ**–(पुं.) गया तीर्थ, दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान; **–त्व**–(पुं.) पिता का भाव या धर्म; **–दत्त**–(वि.) पिता द्वारा दिया हुआ; **–दान**–(पुं.) पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ अन्न आदि का दान; **–दाय**–(पुं.) पिता से प्राप्त धन या सम्पत्ति, बपौती; **–दिन**–(पुं.) अमावस्या ; **–देव**–(पुं.) पितृगण के अधिष्ठाता देवता; **–दैवत**–(पुं.) मघा नक्षत्र, यम; **–नाथ**–(पुं.) यमराज; **–पक्ष**–(पुं.) आश्विन मास का कृष्ण पक्ष, पितृकुल पिता के सम्बन्धी; **–पति**–(पुं.) यमराज; **–पद**–(पुं.) पितृत्व, पितर होने की स्थिति; **–पितु**–(पुं.) पितरों के पिता ब्रह्मा; **–प्रिय**–(पुं.) पीपल का वृक्ष, भँगरैया; **–भोजन**–(पुं.) माष, उड़द; **–मंदिर**–(पुं.) पिता का घर; **–मेध**–(पुं.) श्राद्ध से भिन्न वह यज्ञ जो पितरों की मृत्यु के बाद दशरात्र में किया जाता है; **–यज्ञ**–(पुं.) पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला तर्पण; **–याण**–(पुं.) पितरों का चन्द्रलोक को जाने का मार्ग; **–रूप**–(पुं.) शिव, महादेव; **–लोक**–(पुं.) पितरों का लोक, वह स्थान जहाँ पितर लोग रहते हैं, (यह चन्द्रलोक के ऊपर है); **–वत्**–(वि.,अव्य.) पितातुल्य, पिता के सदृश; **–वन**–(पुं.) श्मशान; **–वसति**–(स्त्री.) श्मशान; **–वित्त**–(पुं.) बापदादों की सम्पत्ति; **–व्य**–(पुं.) पिता के भाई, चाचा; **–हा**–(पुं.) पिता की हत्या करनेवाला ।
पित्त–(सं. पुं.) शरीर के भीतर यकृत में बननेवाला एक तरल पदार्थ जो खाये हुए अन्न को पचाने में सहायता देता है; (मुहा.)**–उबलना**–तीव्र भूख लगना; **–गरम होना**–शीघ्र क्रोध आना; **–कर**–(वि.) पित्त बढ़ानेवाला; **–घ्न**–(वि.) पित्त का नाश करनेवाला; **–ज्वर**–(पुं.) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला ज्वर; **–पापड़ा**–(पुं.) देखें 'पितपापड़ा'; **–प्रकृति**–(वि.) जिसकी प्रकृति पित्त-प्रधान हो, जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त अधिक हो; **–प्रकोपी**–(वि.) पित्त बढ़ानेवाला, पित्तोत्पादक; **–रक्त**–(पुं.) एक प्रकार का रोग जो पित्त बिगड़ने से उत्पन्न होता है ।
पित्तल–(सं. पुं.) पीतल नामक धातु; भोजपत्र, हरताल; (वि.) पित्तयुक्त, पित्त बढ़ानेवाला ।
पित्ता–(हिं. पुं.) पित्ताशय, जिगर में वह थैली जिसमें पित्त रहता है, साहस; (मुहा.) **–उबलना**–क्रोध चढ़ना; **–निकालना**–बड़े परिश्रम का काम करना; **–मारना**–क्रोध दबाना, कठिन कार्य करने में न घबड़ाना।
पित्तातिसार–(सं. पुं.) पित्त के प्रकोप से होनेवाला अतिसार ।
पित्ताशय–(सं. पुं.) पित्त की थैली जो यकृत के नीचे की ओर होती है ।
पित्ती–(हिं. स्त्री.) गरमी के दिनों में पसीना मरने से शरीर में निकलनेवाले महीन दाने,एक रोग जो पित्त की अधिकता अथवा रुधिर में अधिक गरमी आ

जाने से उत्पन्न होता है, (इसमें समग्र शरीर पर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं); (पुं.) पितृव्य, चाचा।
पित्तोदर–(सं. पुं.) पित्त के बिगड़ने से होनेवाला उदर का एक रोग।
पित्र्य–(सं. वि.) पितृ-सम्बन्धी, जिसका श्राद्ध किया जा सके; (पुं.) वड़ा भाई।
पित्र्या–(सं. स्त्री.) अमावस्या, पूर्णमासी, मघा नक्षत्र।
पिद्दा–(हि. पुं.) देखें 'पिद्दी', गुलेल की डोरी के वीच में लगी हुई गोली चलाने की गद्दी।
पिद्दी–(हि. स्त्री.) बया की जाति की छोटी सुन्दर चिड़िया, फुदकी, अति तुच्छ प्राणी।
पिधातव्य–(सं. वि.) ढापने योग्य।
पिधान–(सं. पुं.) आवरण, आच्छादन, परदा, ढपना, किवाड़, तलवार का कोष।
पिनकना–(हिं.क्रि.अ.) ऊँघना, नीद में या अफीम के नशे में बैठे-बैठे ऊँघना।
पिनकी–(हि. पुं.) पीनक लेनेवाला, अफीमची।
पिनपिन–(हिं. स्त्री.) रोगी या दुर्बल वच्चे का अनुनासिक स्वर में रोना, वच्चों का पिन-पिन करके रोने का शब्द।
पिनपिनहा–(हि. वि.) पिनपिन करनेवाला अथवा निरन्तर रोनेवाला वच्चा।
पिनपिनाना–(हिं. क्रि. अ.) धीमे स्वर में रुक-रुककर वच्चों का रोना।
पिनपिनाहट–(हिं. स्त्री.) पिनपिन करके रोने की क्रिया या भाव, पिनपिन करके रोने का शब्द।
पिनस–(सं. पु.) देखे 'पीनस'।
पिनसन, पिनसिन–(हि.स्त्री.) देखें 'पेंशन'।
पिनाक–(सं. पुं.) शिवजी का धनुष जिसको श्रीरामचन्द्र ने जनकपुर में तोड़ा था, त्रिशूल, एक प्रकार का अभ्रक।
पिनाकी–(सं. पुं.) पिनाकधारी शिव, एक प्रकार का तार लगा हुआ प्राचीन बाजा।
पिन्नस–(हिं. स्त्री.) देखें 'पीनस'।
पिन्ना–(हिं. वि.) सर्वदा रोनेवाला; (पुं.) धुनकी।
पिन्नी–(हि. स्त्री.) आटे या अन्य प्रकार के अन्न के चूर्ण में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाई हुई मिठाई।
पिन्यास–(सं. पुं.) हिंगु, हींग।
पिन्हाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'पहिनाना'।
पिपरामूल–(सं. पुं.) पिप्पली की जड़।
पिपराही–(हिं. पुं.) पीपल का जंगल।
पिपासा–(सं. स्त्री.) तृष्णा, प्यास, लोभ, लालच, अधिक प्यास की व्याधि।
पिपासित–(सं.वि.) पिपासु, प्यासा।
पिपासु–(सं. वि.) तृषित, प्यासा, उत्कट इच्छा रखनेवाला, लालची।
पिपियाना–(हिं.क्रि.अ.) पीव निकलना।
पिपिली–(सं. स्त्री.) पिपीलिका, चींटी।
पिपीलक–(सं. पुं.) चींटा, च्यूंटा।
पिपीलिका–(सं. स्त्री.) चींटी, च्यूंटी।
पिपीली–(सं. स्त्री.) पिपीलिका, चींटी।
पिप्पटा–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई।
पिप्पल–(सं. पु.) जल, पानी, अश्वत्थ, पीपल का पेड़।
पिप्पली–(सं. स्त्री.) पीपल की लता, इसका शहतूत के आकार का फल।
पिप्पलीमूल–(सं. पुं.) पिपरामूल।
पिप्पिका–(सं. स्त्री.) दाँतों की मैल।
पिप्रीषा–(सं. स्त्री.) प्रीति-कामना।
पिप्रीषु–(सं.वि.) प्रीति का अभिलाषी।
पिय–(हिं. पुं.) स्वामी, भर्ता, पति।
पियदसी–(पुं.) सम्राट् अशोक की उपाधि।
पियर–(हिं. वि.) पीला, पीले रंग का।
पियरई–(हि. स्त्री.) पीलापन।
पियरवा–(हिं. पुं.) प्रिय, पति, प्रेमी।
पियराई–(हिं. स्त्री.) पीलापन, जर्दी।
पियराना–(हि.क्रि.अ.) पीला पड़ना या होना।
पियरी–(हिं. स्त्री.) पीली रँगी हुई धोती, पीलापन, एक प्रकार का पीला रंग।
पियरोला–(हिं. पुं.) पीले रंग की एक प्रकार की चिड़िया।
पियली–(हिं. स्त्री.) नारियल के खोपड़े का टुकड़ा।
पियल्ला–(हिं. पुं.) दूध पीनेवाला वच्चा।
पियवास–(हिं. पुं.) देखें 'प्रियवास'।
पिया–(हि. पुं.) देखें 'पिय', प्रिय।
पियादा–(हिं. पुं.) देखें 'प्यादा'।
पियाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पिलाना'।
पियावाँसा–(हिं. पुं.) कटसरैया।
पियार–(हिं. पुं.) महुए की तरह का एक वृक्ष जिसके बीज की गरी चिरौंजी कहलाती है जो खाने में मीठी होती है।
पियारा–(हि. वि.) देखें 'प्यारा'।
पियाल–(सं. पुं.) चिरौंजी का पेड़।
पियाला–(हिं. पु.) कटोरी।
पियास–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्यास'।
पियासा–(हिं. वि.) प्यासा।
पियासाल–(हिं. पुं.) वहेड़े या अर्जुन की जाति का एक वृक्ष, पीतसाल।
पियूख, पियूष–(हिं. पुं.) देख 'पीयूष'।
पिरकी–(हिं. स्त्री.) फुंसी, फोड़िया।
पिरता–(हिं. पुं.) पूनी दवाने का काठ का टुकड़ा।
पिरथी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पृथ्वी'।
पिरन–(हिं. पुं.) चौपायों का लँगड़ापन।
पिराई–(हि. स्त्री.) देखें 'पियराई'।
पिराक–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चीनी, मेवे आदि का वना हुआ अर्ध-चन्द्राकार पकवान।
पिराना–(हिं. क्रि. अ.) पीड़ा होना, दुखना, पीड़ा का अनुभव करना, किसी के दुःख से दुःखित होना।
पिरारा–(हिं. पुं.) डाकू, लुटेरा।
पिरिच–(हिं. पुं.) कटोरी।
पिरिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वाजा, कुएँ से पानी खींचने का रहट।
पिरीतम–(हि. पुं.) प्रिय, प्रियतम।
पिरीता–(हिं. वि.) प्रिय, प्यारा।
पिरीति–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रीति'।
पिरोज–(हिं. पुं.) कटोरा, छोटी थाली।
पिरोजन–(हिं.पुं.) देखें 'प्रयोजन', कनछेदन।
पिरोजा–(फा. पुं.) हरापन लिये एक प्रकार का नीला रत्न।
पिरोड़ा–(हिं. स्त्री.) पीली कड़ी मिट्टी की भूमि।
पिरोना–(हिं. क्रि. स.) तागे आदि को सूई के छेद में डालना, छेद के पार निकालना, डोरे में मनका पहिनाना, गूँथना, पोहना।
पिरोला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
पिलई–(हिं. स्त्री.) बरवट, तापतिल्ली।
पिलक–(हिं. पुं.) अवलक, कबूतर, एक प्रकार की पीले रंग की चिड़िया।
पिलकना–(हिं.क्रि.स.) ढकेलना, गिराना, लुढ़काना।
पिलकिया–(हि. पुं.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसका रंग पीलापन लिये भूरा होता है।
पिलखन–(हिं. पुं.) पाकर का वृक्ष।
पिलड़ी–(हिं. स्त्री.) मसालेदार पकवान।
पिलचना–(हिं. क्रि. अ.) तत्पर होना, लीन होना, काम में लग जाना, दो मनुष्यों का परस्पर भिड़ना।
पिलना–(हिं. क्रि. अ.) एकवारगी प्रवृत्त होना या लग जाना, लिपट जाना, तेल निकालने के लिये पेरा जाना, किसी ओर एकवारगी टूट पड़ना, भिड़ जाना।
पिलपिल, पिलपिला–(हिं. वि.) इतना नरम या ढीला कि दवाने से भीतर का रस या गूदा वाहर निकल जाय।
पिलपिलाना–(हिं. क्रि. अ.) गूदेदार या रसदार वस्तु को इस प्रकार दवाना कि इसमें का रस वाहर निकलने लगे।

पिलपिलाहट–(हि.स्त्री.) अधिक पकने की नरमी या मृदुता जो गूदे या गाढ़े रस के ढीले होने के कारण आ गई हो।
पिलवाना–(हिं. क्रि. स.) पिलान का काम दूसरे से कराना, दूसरे को पिलाने में लगाना, पेरवाना, पेलने या पेरने का काम कराना।
पिलाना–(हिं. क्रि. स.) पीने का काम कराना, पीने को देना, भीतर करना, किसी छेद में डाल देना।
पिलिपिल–(सं. वि.) अधिक पका या घुला हुआ (फल)।
पिलुंडा–(हिं. पुं.) देखें 'पुलिंदा'।
पिलु–(सं. पुं.) एक रागिनी का नाम।
पिलुनी–(सं. स्त्री.) मूर्वा लता।
पिल्ल–(सं. पुं.) आँख का एक रोग जिसमें आँखों में से कीचड़ बहा करता है।
पिल्लका–(सं. स्त्री.) हस्तिनी, हथिनी।
पिल्ला–(हि. पुं.) कुत्ते का छोटा बच्चा।
पिल्लू–(हि. पुं.) विना पैर का सफेद कीड़ा जो सड़े हुए फल, घाव आदि में पड़ जाता है।
पिव–(हिं. पुं.) देखें 'प्रिय'।
पिवाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'पिलाना'।
पिशंग–(सं. पुं.) पीलापन लिये भूरा रंग, एक नाग का नाम; (वि.) धूमिल रंग का।
पिशंगक–(सं. पुं.) विष्णु भगवान।
पिशंगरूप–(सं.वि.) पीतवर्ण, पीले रंग का।
पिशंगाश्व–(सं. पुं.) पीले रंग का घोड़ा।
पिशंगी–(सं. वि.) पीला।
पिशाच–(सं.पुं.) एक हीन देवयोनि, भूत, प्रेत; **–क**–(पुं.) भूत-प्रेत, भूत भगानेवाला ओझा, पीली सरसों; **–घ्न**–(पुं., वि.) पिशाचों को हटाने या नाश करनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) पिशाच का भाव या धर्म; **–वृक्ष**–(पु.) सिहोर का पौधा; **–सभ**–(पुं.) पिशाचों की सभा।
पिशाचालय–(सं. पुं.) पिशाचों का घर।
पिशाचिका, पिशाची–(सं. स्त्री.) छोटी जटामासी, स्त्री पिशाच।
पिशित–(सं. पुं.) मांस।
पिशिता–(सं. स्त्री.) जटामासी।
पिशिताशन–(सं.वि.) नर-मांस खानेवाला।
पिशील–(सं. पुं.) मिट्टी की कटोरी।
पिशुन–(सं. पुं.) कुंकुम, केशर, नारद, कौवा, कौशिक के एक पुत्र का नाम; (वि.) आपस में लड़ाई लगानेवाला, क्रूर, दुष्ट; **–ता**–(स्त्री.) क्रूरता, चुगलखोरी।
पिशोर–(हिं. पुं.) एक प्रकार की पहाड़ी झाड़ी।
पिष्ट–(सं. पुं.) सीसा, पिट्ठी, पीठी; (वि.) चूर्ण किया हुआ; **–क**–(पुं.) तिल का चूर्ण, पिष्ट, पीठी, रोटी, कचौड़ी, पूआ, एक प्रकार का आँख का रोग, सीसा; **–का**–(स्त्री.) दाल की पीठी; **–पचन**–(पुं.) पीठी पकाने का पात्र–तवा, कड़ाही; **–पिंड**–(पुं.) पुरोडाश, पीठी; **–पूर**–(पुं.) वटक, बरी, एक प्रकार की पीठी; **–पेषण**–(पु.) पीसे हुए को पीसना, एक बार कही हुई बात को बारंबार दोहराना; **–मेह**–(पुं.) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ सफेद स्राव गिरता है; **–योनि**–(पुं.) कचौरी या पूआ; **–सौरभ**–(पुं.) चन्दन जिसके पीसने से सुगन्ध निकलती है।
पिष्टोदक–(सं. पुं.) पीसे हुए चावल का घोल।
पिसनहारी–(हिं. स्त्री.) वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसकर चलती हो।
पिसना–(हिं. क्रि. अ.) पीसकर तैयार होना, पीसा जाना, चूर्ण किया जाना, कष्ट उठाना, अधिक परिश्रम से क्लान्त होना, दबना, कुचल जाना।
पिसवाज–(हिं. पु.) रंडियों के पहिनने का घाघरा।
पिसवाना–(हिं. क्रि. स.) पीसने का काम दूसरे से कराना।
पिसाई–(हिं. स्त्री.) पीसने की क्रिया या भाव, पीसने का शुल्क या मजदूरी, बहुत अधिक श्रम।
पिसाच–(हिं. पुं.) देखें 'पिशाच'।
पिसान–(हिं. पुं.) अन्न का महीन पिसा हुआ चूर्ण, आटा।
पिसाना–(हिं. क्रि. स.) पिसवाना।
पिसिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा कोमल गेहूँ।
पिसुन–(हिं. पुं.) देखें 'पिशुन'।
पिसुराई–(हिं. स्त्री.) सरकंडे का छोटा टुकड़ा जिस पर लपेटकर पूनी बनाई जाती है।
पिसेरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हिरन।
पिसौनी–(हिं. स्त्री.) पीसने का काम, चक्की पीसने का धंधा, परिश्रम का काम।
पिस्त–(सं. पुं.) पिस्ता।
पिस्ता–(हिं. पुं.) एक छोटा पेड़ जिसका फल अच्छे मेवों में गिना जाता है।
पिस्तौल–(अं.स्त्री.) छोटी बंदूक, तमंचा।
पिस्सी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का गेहूँ।
पिस्सू–(हिं. पुं.) उड़नेवाला एक छोटा कीड़ा जो मच्छड़ों की तरह काटता और रक्त चूसता है।
पिहकना–(हिं. क्रि. अ.) मोर, कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।
पिहान–(हिं. पुं.) पिधान, ढपना।
पिहित–(सं. वि.) आच्छादित, छिपा हुआ; (पुं.) वह अर्थालंकार जिसमें किसी व्यक्ति के मन का कोई भाव जानकर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करना वर्णन किया जाता है।
पिहुआ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
पिहोली–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ बड़ी सुगंधित होती हैं।
पींजना–(हिं. क्रि. स.) रूई धुनना।
पींजरा–(हिं. पुं.) देखें 'पिंजड़ा'।
पींड–(हिं. पुं.) किसी गीली वस्तु का गोला, पिंडी, पिंड, चरखे का बेलन, पिंडखजूर, शरीर, देह, वृक्ष का तना, पेड़ी।
पींडी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिंडी'।
पींडुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिंडुली'।
पी–(सं. पुं.) पपीहे की बोली, देखें 'पिय'।
पीक–(हिं. स्त्री.) थूक में मिला हुआ पान का रस, ऊँची-नीची भूमि, वह रंग जो कपड़े पर पहिली बार चढ़ाया जाता है; **–दान**–(पुं.) एक प्रकार का डमरू के आकार का पात्र जिसमें पान की पीक थूकी जाती है, उगालदान।
पीकना–(हिं. क्रि. अ.) पिहकना, पपीहे या कोयल का बोलना।
पीका–(हिं. पुं.) किसी वृक्ष का नया कोमल पत्ता, कोंपल।
पीखग–(हिं. पुं.) पपीहा।
पीच–(सं. पुं.) नीचे का जवड़ा, ठुड्डी; (हिं. स्त्री.) माँड़।
पीचना–(हिं. क्रि. अ.) पिसना, दबना।
पीचू–(हिं. पुं.) करील का कँटीला पौधा, एक प्रकार का झाड़।
पीछ–(हिं. स्त्री.) देखें 'पीच', माँड़।
पीछा–(हि. पु.) पश्चात् भाग, पिछला भाग, पीछे-पीछे चलकर किसी के साथ लगा रहना, किसी घटना के बाद का काल; (मुहा.) **–करना**–खदेड़ना; **–छुड़ाना**–सम्बन्ध छोड़ाना; **–छूटना**–छुटकारा पाना, पिंड छूटना; **–छोड़ना**–पीछा करना बन्द करना; **–दिखाना**–छूटकर भाग जाना; **–देना**–किसी काम में पहिले साथ देकर बाद को हट जाना।

पीछे–(हिं.अव्य.) आगे की विरुद्ध दिशा में या पीछे की ओर,कुछ दूर पर,अन्त में,पीठ की ओर,निमित्त या कारण से,वास्ते,लिये, किसी की अनुपस्थिति या अभाव में,देश-काल के अनुसार किसी के बाद, कुछ देर बाद, अनन्तर; (मुहा.)**–चलना**–अनुकरण करना; **–छूटना**–पीछे रह जाना; पिछड़ जाना; **–छोड़ना**–किसी का पीछा करने के लिये किसी को दौड़ाना; **–डालना**–बटोर रखना; **–पड़ना**–किसी काम में निरन्तर उद्योग करना, किसी काम के लिए किसी को व्यग्र करना; **–लगना**–पीछे-पीछे चलना, पीछा करना; **–लगाना**–सहारा देना, कुछ पता लगाने के लिये किसी के साथ कर देना।

पीजन–(हिं. पुं.) ऊन धुनने की धुनकी।

पीजर–(हिं. पुं.) देखें 'पिंजड़ा'।

पीटन–(हिं. पुं.) देखें 'पिटना'।

पीटना–(हिं. क्रि. स.) प्रहार करना, मारना,चोट देकर किसी वस्तु को चिपटा करना, किसी न किसी प्रकार से कोई वस्तु प्राप्त कर लेना, ठोंकना, किसी न किसी प्रकार से कोई काम समाप्त कर लेना; (पुं.) आपत्ति, मृत्यु, शोक; (मुहा.) **छाती पीटना**–अत्यन्त शोक या दुःख प्रकट करना।

पीठ–(सं. पुं.) पीढ़ा, चौकी, आसन, वह स्थान जहाँ पर जपादि करके मंत्र सिद्ध किये जाते हैं, किसी मूर्ति के नीचे का आधार, पिण्ड, कंस के एक मन्त्री का नाम,बैठने का एक विशेष ढंग, सिंहासन, देवस्थान, एक असुर का नाम, व्रत के किसी अंश का पूरक, अधिष्ठान, वेदी, प्रदेश, प्रान्त, आश्वासन; (हिं. स्त्री.) गरदन से कटि तक का पीछे का भाग,किसी वस्तु का ऊपरी तल या भाग,पशु के शरीर का ऊपरी भाग; **–का**–अग्रज के बाद का; (मुहा.) **चारपाई से पीठ लग जाना**–रोग से अति दुर्बल होना; **–ठोंकना**–प्रशंसा करना; **–दिखाना**–युद्ध से भाग जाना; **–देना**–साथ छोड़ना; मुँह मोड़ना; **–पर का**–एक ही माता से उत्पन्न एक संतति के बाद का जन्मा हुआ; **–पर हाथ फेरना**–बढ़ावा देना; **–पर होना**–सहायक होना; **–पीछे**–किसी की अनुपस्थिति में; **–फेरना**–भाग जाना; **–लगना**–घोड़े, बैल आदि की पीठ पर घाव होना; **–लगाना**–पटक देना; **–क**–(पुं.)आसन, पीढ़ा,चौकी; **–ग**–(वि.) खंज, लँगड़ा; **–गर्भ**–(पुं.) वह गड्ढा जो किसी मूर्ति को बैठाने के लिये खोदा जाता है; **–चक्र**–(पुं.) एक प्रकार का रथ; **–देवता**–(पुं.) आधार-शक्ति, आदि-देवता; **–पाठिका**–(स्त्री.) भगवती, दुर्गा; **–मर्द**–(पु.) नायक के चार सखाओं में से एक जो बोलने की चतुराई से नायिका का मान-मोचन कर सकता है,कुपित नायिका को प्रसन्न करनेवाला नायक; (वि.)अति धृष्ट, बहुत ढीठ; **–स्थान**–(पुं.) देवता का पावन तीर्थ-स्थान।

पीठा–(हिं. पुं.) आटे की लोई में पीठी भरकर बनाया हुआ एक पकवान, पीढ़ा।

पीठि–(हि. स्त्री.) देखें 'पीठ'।

पीठिका–(सं. स्त्री.) मूर्ति अथवा खंभे का मूल-भाग, पुस्तक का अध्याय।

पीठी–(हिं. स्त्री.) उड़द, मूँग आदि की छिलका उतारकर पीसी हुई दाल।

पीड़–(हिं. स्त्री.) सिर के बालों में बाँधने का एक प्रकार का आभूषण।

पीड़क–(सं. पुं.) दुःखदायी, पीड़ा देने-वाला, अत्याचारी, एक प्रकार का चर्म-रोग।

पीड़न–(सं. पुं.) आक्रमण द्वारा किसी देश को नष्ट करना, दुःख देना, चाँपने या दबाने की क्रिया, नाश, लोप, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण, किसी वस्तु को कसकर पकड़ना।

पीडनीय–(सं. वि.) पीड़न के योग्य।

पीड़ा–(सं. स्त्री.) शारीरिक अथवा मान-सिक क्लेश, वेदना, व्यथा, व्याधि, रोग, एक सुगन्धित औषधि, सिर पर पहनने की माला; **–कर**–(वि.) दुःखदायक; **–स्थान**–(पुं.) अशुभ ग्रहों के स्थान।

पीड़ित–(सं. वि.) क्लेशयुक्त, दुःखित, रोगी, दबाया हुआ, मर्दन किया हुआ; (पुं.) एक प्रकार का मन्त्र।

पीडुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिंडली'।

पीढ़ा–(हिं. पुं.) लकड़ी का छोटी चौकी जैसा आसन जिस पर हिन्दू लोग भोजन करते समय बैठते हैं।

पीढ़ी–(हिं. स्त्री.) किसी वंश या कुल में किसी विशिष्ट पूर्वज से आरंभ करके उसके पूर्व या पश्चात् के पुरुषों का गणना-क्रम, समुदाय आदि, किसी विशेष व्यक्ति अथवा प्राणी की सन्तति-समु-दाय, सन्तान, सन्तति।

पीत–(सं. पुं.) हरताल, हरिचन्दन, पीला रंग, पुष्परागमणि, पुखराज, एक प्रकार की सोमलता, पद्माख, कुसुम, प्रवाल, मूँगा, भूरा रंग; (वि.) पीले रंग का, पिया हुआ, भूरे रंग का।

पीतकंद–(सं. पुं.) गाजर।

पीतक–(सं. पुं.) हरताल, अगरु, केशर, पीतल, विजयसार, मधु, पीला चन्दन, पीले रंग से रँगा हुआ वस्त्र, गाजर, सफेद जीरा, पीला लोध, चिरायता।

पीतका–(सं. स्त्री.) हलदी, कुष्माण्ड, कटसरैया, पोई का साग, एक प्रकार का कीड़ा।

पीतकाष्ठ–(सं. पुं.) पद्मकाष्ठ, पद्माख।

पीतकेदार–(सं. पुं.) एक प्रकार का धान।

पीतगंध–(सं. पुं.) पीला चन्दन, हरि-चन्दन।

पीतचंदन–(सं. पुं.) पीले रंग का चन्दन, हरिचन्दन।

पीतचंपक–(सं. पुं.) पलाश का फूल, टेसू।

पीतता–(सं. स्त्री.) पीलापन।

पीततुंड–(सं. पुं.) एक पक्षी।

पीतत्व–(हिं. पुं.) देखें 'पीतता'।

पीतदारु–(सं. पुं.)देवदार, हलदी, चिरा-यता।

पीतदुग्धा–(सं.स्त्री.)एक प्रकार का थ्योहर।

पीतद्रु–(सं. पुं.) दारुहलदी।

पीतधातु–(सं.पुं.) गोपीचन्दन, रामरज।

पीतन–(सं. पुं.) कुंकुम, केशर, हरताल, देवदारु, पाकड़ का वृक्ष।

पीतनख–(सं. पुं.) नाखून का एक रोग।

पीतनाश–(सं. पुं.) लकुच, बड़हर।

पीतनी–(सं. स्त्री.) शालपर्णी, सरिवन।

पीतपराग–(सं. पुं.) कमल का केसर।

पीतपादप–(सं. पुं.) सोनापाठा, लोध का वृक्ष।

पीतपादा–(स. स्त्री.)सारिका,मैना पक्षी।

पीतपुष्प–(स. पुं.) घियारतोई, कनेर, चंपा, हिंगोट, लाल कचनार।

पीतपुष्पक–(सं. पुं.) बबल का पेड़।

पीतपुष्पा–(सं. स्त्री.) इन्द्रवारुणी, सह-देई, कटसरैया, अरहर, पीला कनेर, सोनजूही।

पीतपुष्पिका–(सं. स्त्री.) जंगली ककड़ी।

पीतपृष्पी–(सं.स्त्री.)महाबला,शंखपुष्पी।

पीतपृष्ठा–(सं.स्त्री.)पीली पीठ की कौड़ी।

पीतफल–(सं. पुं.) कमरख।

पीतफेन–(सं. पुं.) अरिष्टक वृक्ष, रीठा।

पीतबीजा–(सं. स्त्री.) मेथिका, मेथी।

पीतभद्रक–(सं.पुं.)एक प्रकार का बबूल।

पीतम–(हिं. वि.) देखें 'प्रियतम'।

पीतमणि–(सं. पुं.) पुष्पराग, पुखराज ।
पीतमस्तक–(सं. पुं.) एक प्रकार का बाज ।
पीतमुंड–(सं. पुं.) एक प्रकार का हरिन ।
पीतमूलक–(सं. पुं.) गाजर ।
पीतयूथी–(सं. स्त्री.) सोन जुही ।
पीतर–(हि. पुं.) देखें 'पीतल' ।
पीतरत्न–(सं. पुं.) पीतमणि, पुखराज ।
पीतराग–(सं.पुं.) पद्मकेसर; (वि.) पीला ।
पीतल–(हि.पुं.) जस्ते और ताँबे के संयोग से बनी हुई एक उपधातु ।
पीतवर्ण–(सं.पुं.) कदंब, मैनसिल, पीला चन्दन, केसर; (वि.) पीले रंग का ।
पीतवल्ली–(सं. स्त्री.) अमरबेल ।
पीतवासा–(सं.वि.) पीला वस्त्र पहिनने-वाला; (पु.) श्रीकृष्ण ।
पीतबीजा–(सं. स्त्री.) मेथी ।
पीतवृक्ष–(सं.पुं.) सोनापाठा ।
पीतशाल–(सं. पुं.) असना, विजयसार नामक वृक्ष ।
पीतशालि–(सं.पुं.) एक प्रकार का महीन धान ।
पीतसरा–(हि. पुं.) ससुर का भाई ।
पीतसार–(सं. पुं.) पीला चन्दन, हरि-चन्दन, मलयज चन्दन, गोमेदक मणि, अंकोल का वृक्ष, बीजक, शिलारस ।
पीतसारक–(सं. पुं.) नीम का पेड़ ।
पीतसारि–(स. पुं.) सुरमा ।
पीतसाल–(सं. पु.) विजयसार का वृक्ष ।
पीतस्कंध–(सं. पुं.) शूकर, सूअर ।
पीतस्फटिक–(सं. पुं.) पुष्पराग, पुखराज ।
पीतस्फोट–(सं. पुं.) खजुली, दद्रु, दाद ।
पीतांग–(सं.पुं.) सोनापाठा, पीला मेढक, नारंगी का पेड़, हरिद्रा, हल्दी ।
पीतांबर–(स. पुं.) विष्णु, कृष्ण, पीला कपड़ा, रेशमी धोती जिसको पहिनकर लोग पूजा-पाठ करते हैं; (वि.) पीले वस्त्रवाला ।
पीता–(सं.स्त्री.) हल्दी, दारुहल्दी, अतीस, गोरोचन, हरताल, देवदार, राल, असगन्ध, आकाशवल्ली; (वि.स्त्री.) पीले रंग की ।
पीताब्धि–(सं. पुं.) अगस्त्य मुनि ।
पीताभ–(सं. पुं.) पीला चन्दन; (वि.) जिसमें पीली आभा हो ।
पीताश्म–(स. पुं.) पुष्पराग मणि, पुखराज ।
पीति–(सं.पुं.) घोड़ा, हाथी की सूँड़, गति ।
पीतिका–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी ।
पीतु–(सं. पुं.) सूर्य, अग्नि, ऐरावत ।
पीथ–(सं.पुं.) जल, पानी, घी, सूर्य, अग्नि ।
पीदड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिद्दी' ।
पीन–(सं. वि.) पुष्ट, स्थूल सम्पन्न, कठिन, प्रवृद्ध; (पुं.) स्थूलता, मोटाई ।
पीनक–(हिं. स्त्री.) अफीम के नशे में बैठे-बैठे ऊँघना, पिनकना ।
पीनता–(सं. स्त्री.) स्थूलता, मोटाई ।
पीनना–(हिं. क्रि स.) देखें 'पींजना' ।
पीनस–(सं. पुं.) नाक का एक रोग; (हिं. स्त्री.) पालकी ।
पीनसा–(स. स्त्री.) कर्कटी, ककड़ी ।
पीना–(हिं. क्रि. स.) जल या जल के समान अन्य वस्तु को घूँट-घूँट करके गले के नीचे उतारना, घूँटना, मद्य पीना, सोखना, चूसना, धूम्रपान करना; हुक्का, चुरुट आदि का धुआँ भीतर खींचना, सहन करना, उपेक्षा करना, क्रोध या उत्तेजना प्रगट न करना, मनोविकार को भीतर ही दबा देना, कुछ भी शेष या बाकी न रहना, किसी संबंध में मौन धारण करना, किसी बात को दबा देना; (सं.पुं.) तीसी आदि की खली; (मुहा.) **लोहू का घूंट पीना**–किसी बात को बड़ कष्ट से सहन कर लेना ।
पीनी–(हिं.स्त्री.) तीसी, तिल आदि की खली ।
पीप–(हिं. स्त्री.) फूटे हुए फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला लसलसा सफेद पदार्थ, पीब, मवाद ।
पीपर–(हिं. पुं.) देखें 'पीपल' ।
पीपरपर्न–(हिं. पुं.) कान में पहिनने का एक गहना ।
पीपरामूल–(हिं. पुं.) देखें 'पीपलामूल' ।
पीपल–(हिं. पुं.) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसको हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं; (स्त्री.) एक लता जिसके पत्ते पान की तरह होते हैं; (इसकी कलियाँ औषधों में प्रयुक्त होती हैं ।)
पीपलामूल–(हिं.पुं.) पीपल लता की जड़, पिप्परामूल ।
पीपा–(हिं. पुं.) ढोल के आकार का लोहे या काठ का बड़ा पात्र जो तेल आदि रखने के काम म लाया जाता है ।
पीब–(हिं. स्त्री.) देखें 'पीप' ।
पीय–(हिं.पुं.) देखें 'पिय' ।
पीयर–(हि वि.) पीला, पीले रंग का ।
पीयु–(सं पुं.) सूर्य, काल, समय, थक, उल्लू पक्षी; (वि) प्रतिकूल, विरुद्ध, हिंसा करनेवाला ।
पीयूख–(हि. पु.) देखें 'पीयूष' ।
पीयूष–(सं. पुं.) सुधा, अमृत, दूध, गाय के ब्याने पर उसका सात दिन तक का दूध; –**महा**, –**भानु**–(पुं.) चन्द्रमा; –**रुचि**–(पुं.) अमृत, कपूर, चन्द्रमा; –**वर्ष**–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर, एक प्रकार का मात्रिक छन्द जिसको आनन्दवर्धक भी कहते हैं ।
पीयूषोत्था–(सं. स्त्री.) सालम-मिस्री ।
पीर–(हिं.स्त्री.) सहानुभूति, करुणा, दया, पीड़ा, दुःख, प्रसव-वेदना; (फा. पु.) मुसलमानों के धर्मगुरु ।
पीरमान–(हिं. पुं.) मस्तूल पर के वे डंडे जिन पर पाल चढ़ाया जाता है ।
पीरा–(हिं. स्त्री.) देखें 'पीड़ा'; (वि.) देखें 'पीला' ।
पीरु–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मुर्गा ।
पीरोजा–(हि.पुं.) देखें 'फीरोजा' ।
पीलक–(सं.पु.) पिपीलिका, चींटी; (हिं.पुं.) । एक प्रकार की पीले रंग की चिड़िया ।
पीलपाल–(हिं. पुं.) हाथीवान, महावत ।
पीलपाँव–(हि.पुं.) श्लीपद, पैर फूल जाने का एक रोग ।
पीलवा(वा)न–(हिं. पुं.) हाथीवान, महावत
पीलसोज–(हि.पुं.) दीपक जलाने की दीयट ।
पीला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हल्दी या सोने के सदृश रंग, शतरंज का एक मोहरा; (वि.) निस्तेज, फीका, धुंधला, पीत; (मुहा.) –**पड़ना या होना**–रोग या भय के कारण शरीर तथा मुख का रंग पीला होना ।
पीलापन–(हि.पुं.) पीला होने का भाव, जर्दी ।
पीलाम–(हिं. पुं.) साटन नामक कपड़ा ।
पीलिया–(हिं. पुं.) कामला रोग जिसमें मनुष्य का संपूर्ण शरीर और आँखें पीली पड़ जाती हैं ।
पीली चिट्ठी–(हिं. स्त्री.) विवाह का निमन्त्रण-पत्र ।
पीलु–(सं. पुं.) फूल, परमाणु, हाथी, अस्थि-खण्ड, हड्डी का टुकड़ा, कीड़ा, बाण, अख-रोट का वृक्ष, लाल कटसरैया का फल ।
पीलुआ–(हिं. पुं.) मछली पकड़ने का बड़ा जाल ।
पीलुक–(सं. पुं.) एक प्रकार का चींटा ।
पीलुनी–(सं. स्त्री.) चने का साग ।
पीलू–(हिं. पुं.) सफेद लंबे कीड़े जो फलों के सड़ने पर उनमें पड़ जाते हैं, एक प्रकार का रोग, एक प्रकार का कँटीला पौधा ।
पीव–(हि.पुं.) पिय, पति; (स्त्री.) देखें 'पीब' ।
पीवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पीना' ।
पीवर–(सं.वि.) स्थूल, गुरु, भारी, मोटा; (पुं.) जटा, कछुआ; –**त्व**–(पुं.) स्थूलता, मोटापन; –**स्तनी**–(स्त्री.) बड़े थन की गाय ।
पीवरा–(सं. स्त्री.) असगन्ध, सतावर;

(वि.स्त्री.) स्थूल, मोटी।
पीवरी–(सं.स्त्री.) तरुणी, युवती स्त्री, गाय।
पीवस–(सं. वि.) स्थूल, मोटा।
पीवा–(हिं. वि.) स्थूल, पुष्ट, मोटा।
पीसना–(हिं.क्रि. स.) रगड़कर बुकनी करना, भुरकुस करना, कठोर परिश्रम करना, किसी वस्तु को जल के योग से रगड़कर महीन करना; (पुं.) पीसी जानेवाली वस्तु, एक मनुष्य के पीसने भर अनाज; (मुहा.) **किसी को पीसना**–अत्यन्त कष्ट देना।
पीसू–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा, देखें 'पिस्सू'।
पीह–(हिं. स्त्री.) वसा।
पीहर–(हिं. पुं.) विवाहित स्त्रियों के माता-पिता का घर, मायका।
पुं–(सं. पुं.) पुरुष, नर।
पुंख–(सं. पुं.) एक प्रकार का वाज पक्षी।
पुंखित–(हिं. वि.) पक्षयुक्त।
पुंगफल, पुंगीफल–(हिं.पुं.) सुपारी।
पुंछल्ला–(हिं. पुं.) देखें 'पुंछाला'।
पुंछार–(हिं. पुं.) मयूर, मोर।
पुंछाला–(हिं. पुं.) पोंछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु, पुंछल्ला, अनावश्यक वस्तु जो किसी के साथ जोड़ी हुई हो, आश्रित, साथ न छोड़नेवाला।
पुंज–(हिं. पुं.) समूह, ढेर।
पुंजराज–(स. पुं.) दलपति, सरदार।
पुंजा–(हिं. पुं.) समूह, गुच्छा, पूला।
पुंजिक–(सं. पुं.) हिम।
पुंजी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पूंजी'।
पुंजीकृत–(हिं. वि.) इकट्ठा किया हुआ।
पुंजीभूत–(हिं.वि.) राशीभूत. एकत्रित।
पुंड–(सं. पुं.) माथे पर लगाने का तिलक, टीका; (हिं.पुं.) दक्षिण देश की एक जाति।
पुंडरीक–(सं.पुं.) सफेद कमल, एक प्रकार का कुष्ठ, रेशम का कीड़ा, सफेद सर्प, दौने का पौधा, कमण्डलु, एक प्रकार का धान, सफेद आम, आग, वाण, सफेद हाथी, एक प्रकार की ऊख, घी, चीनी, एक प्रकार का तिलक।
पुंडरीकाक्ष–(सं. पुं.) विष्णु भगवान।
पुंडरीयक–(सं. पुं.) स्थल-कमल।
पुंड्र–(सं. पुं.) श्वेत कमल, पाकर का वृक्ष, तिल का पौधा, तिलक, टीका, एक प्रकार की ऊख, माधवी लता, कृमि, कीड़ा; **–केलि**–(स्त्री.) हाथी; **–वर्धन**–(पुं.) प्राचीन पुंड्र देश की राजधानी।
पुंध्वज–(सं. पुं.) मूषिका, चूहा।
पुंमंत्र–(स. पुं.) वह मन्त्र जिसके अन्त में 'नमः' या 'स्वाहा' हो।
पुंयान–(स. पुं.) वह सवारी जिसको मनुष्य खींचते हों, पालकी।
पुंरत्न–(सं. पुं.) पुरुषों में श्रेष्ठ।
पुंराशि–(सं. पुं.) मेप, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुम्भ राशियाँ।
पुंलक्षणा–(सं. स्त्री.) पुरुप-मुखी स्त्री, योनिहीन स्त्री।
पुंलिंग–(सं.पुं.) पुरुप का चिह्न, शिश्न, पुरुषवाचक शब्द।
पुंवंशा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके केवल पुरुष सन्तानें हों।
पुंवत्–(सं. अव्य.) पुरुष की तरह, पुलिंग-शब्द की तरह।
पुंवृष–(सं. पुं.) छछूंदर।
पुंवेश–(स. पुं.) पुरुष का वेश; (वि.) पुरुष की तरह वेशधारी।
पुंश्चल–(सं. पुं.) व्यभिचारी पुरुष।
पुंश्चली–(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी, असती, कुलटा, छिनार।
पुंश्चलीय–(सं. पुं.) वेश्यापुत्र, कुलटा का पुत्र।
पुंस–(हिं. पुं.) पुरुष, मर्द।
पुंसवन–(सं. पुं.) दुग्ध, दूध, द्विजों के सोलह संस्कारों में से एक जो गर्भाधान के तीसरे महीने में किया जाता है, वैष्णवों के एक व्रत का नाम।
पुंसवान–(हिं. वि.) पुत्रवाला।
पुंस्कामा–(सं. स्त्री.) पुरुष की अभिलाषा करनेवाली स्त्री।
पुंस्कोकिल–(सं. पुं.) नर कोयल पक्षी।
पुंस्त्व–(सं. पुं.) पुरुषत्व, पुरुष का धर्म, शुक्र, वीर्य।
पुआ–(हिं. पुं.) चाशनी में पागी हुई आटे की घी में तली हुई पूरी या टिकिया।
पुआई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सदा-बहार वृक्ष।
पुआल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष, देखें 'पयाल'।
पुकार–(हिं. स्त्री.) रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट, अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये किसी को ऊँचे स्वर से संबोधन करना, किसी को नाम लेकर बुलाने की क्रिया, हाँक, माँगने की चिल्लाहट, किसी अधिकारी से दुःख या हानि का निवेदन, अभियोग, गोहार।
पुकारना–(हिं. क्रि. स.) रक्षा के लिये चिल्लाना, गोहार लगाना, घोषित करना, चिल्लाकर कहना, दुहाई देना, किसी का नाम लेकर बुलाना, किसी से चिल्लाकर कुछ माँगना या कहना।
पुक्कश, पुक्कस–(सं.वि., पु.) अधम, नीच, चाण्डाल।
पुक्कसी–(स. स्त्री.) नील का पौधा।
पुख–(हिं. पुं.) देखें 'पुष्य'।
पुखता–(हिं. वि.) दृढ़, टिकाऊ, मजबूत।
पुखर–(हिं. पुं.) पुष्कर, तालाव।
पुखराज–(हिं.पुं.) पीले रंग का एक रत्न।
पुख्य–(हिं. पुं.) देखें 'पुष्य'।
पुगना–(हि. क्रि.अ.) देखें 'पुजना'।
पुगाना–(हिं. क्रि.स.) पूरा करना, पुजाना।
पुचकार–(हिं. स्त्री.) प्यार जताने के लिये ओंठो से किया जानेवाला चूमने का शब्द, चुमकार।
पुचकारना–(हिं.क्रि.स.) ओंठों से चूमने का-सा शब्द करते हुए प्यार दिखलाना, चुमकारना।
पुचकारी–(हिं. स्त्री.) प्यार दिखलाने के लिये ओठों से उत्पन्न किया जानेवाला चूमने का-सा शब्द, चुमकार।
पुचारना–(हिं.क्रि.स.) पोतना, पुचारा देना।
पुचारा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु के ऊपर पानी से तर किया हुआ कपड़ा फेरना, वह गीला कपड़ा जिससे पोता या पुचारा दिया जाता है, पतला लेप करने की क्रिया, पानी में घोली हुई कोई वस्तु जिससे लेप किया जाता है, हलका लेप, उत्साह बढ़ाने की बात, झूठी प्रशंसा, प्रसन्न करने के लिये मीठे वचन वोलना, दगी हुई बन्दूक या तोप की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर गीला कपड़ा रखना।
पुच्छंतक–(सं.पुं.) तक्षक वंश का एक नाग।
पुच्छ–(सं. पुं.) लांगुल, पूंछ, किसी वस्तु का पिछला भाग, वालों से युक्त पूंछ।
पुच्छकंटक–(सं. पुं.) वृश्चिक, बिच्छू।
पुच्छटी–(सं. स्त्री.) अँगुली चटकाना।
पुच्छफल–(सं.पुं.) बेर का फल या पेड़।
पुच्छमूल–(सं. पुं.) पूँछ की जड़।
पुच्छल–(सं. वि.) पूँछवाला; **–तारा**–(पुं.) देख 'केतु'।
पुच्छिक–(सं. पुं.) जंगली उड़द।
पुच्छी–(सं. पुं.) मदार, मुरगा; (वि.) पूँछवाला।
पुछल्ला–(हिं. पुं.) आश्रित, पीछे लगा रहनेवाला, साथ न छोडनेवाला, अनावश्यक वस्तु जो साथ में जुटी हो, पूँछ की तरह की कोई वस्तु।
पुछवैया–(हिं. पुं.) पूछनेवाला, खोज-खबर लेनेवाला।

पुछार–(हिं. पुं.) पूछनेवाला, आदर करनेवाला, खोज लेनेवाला।
पुछिया–(हिं. पुं.) दुंबा मेढ़ा।
पुछैया–(हिं. पुं.) पूछनेवाला, पुछवैया।
पुजना–(हिं. क्रि. अ.) सम्मानित होना, पूजा जाना, पूरा होना।
पुजवाना–(हिं. क्रि. स.) पूजा करने में प्रवृत्त कराना, आदर-सम्मान कराना, पूरा कराना।
पुजाई–(हिं. स्त्री.) पूजने का भाव या क्रिया, पूरा करने की क्रिया या भाव, पूजा करने का शुल्क।
पुजाना–(हिं. क्रि. स.) पूजा में प्रवृत्त अथवा नियुक्त करना, दूसरे से पूजा कराना, आदर-सम्मान कराना, भेंट चढ़वाना, धन लेना; घाव, चोट आदि का भरना, पूर्ति करना, कमी दूर करना, सफल करना।
पुजापा–(हिं. पुं.) पूजा की सामग्री, पूजा की सामग्री रखने का पात्र।
पुजारी–(हिं. पुं.) देवमूर्ति की नियमतः पूजा करनेवाला, वह जो पूजा करता हो।
पुजाही–(हिं. स्त्री.) पूजा की सामग्री रखने का पात्र।
पुजेरी–(हिं. पुं.) देखें 'पुजारी'।
पुजैया–(हिं. पुं.) पूजा करनवाला, पूरा करनेवाला, भरनेवाला, देखें 'पुजाई'।
पुजौरा–(हिं. पुं.) पूजा के समय देवता को अर्पण करने की सामग्री, पूजा।
पुट–(सं. पुं.) जायफल, घोड़े की टाप, कटोरा, औषध पकाने का पात्र, अन्तःपट, एक वर्णवृत्त का नाम, दोना, ढाँपने की वस्तु, घेरा; (हिं. पुं.) किसी वस्तु को हलका मेल देने के लिए उस पर डाला हुआ छींटा, हलका छिड़काव, बहुत हलका मेल देने के लिये घुले हुए रंग या किसी तरल मिश्रण में डुबाना, थोड़ी सी मिलावट।
पुटकंद–(सं. पुं.) बाराहीकन्द।
पुटक्लि–(सं. वि.) आवद्ध, बँधा हुआ।
पुटकिनी–(हिं. स्त्री.) पद्मिनी, कमलिनी, पद्मसमूह, पद्मलता।
पुटकी–(हिं. स्त्री.) दैवी आपत्ति, आकस्मिक मृत्यु, पोटली, गठरी, तरकारी आदि के रसे को गाढ़ा करने के लिये मिलाया हुआ बेसन या आटा।
पुटग्रीव–(सं. पुं.) गगरी, ताँबे का घड़ा।
पुटपाक–(सं. पुं.) मिट्टी आदि के पात्र में औषधि रखकर तथा उसका मुख अच्छी तरह से बन्द करके गड्ढे के भीतर गोहरा जलाकर पकाने की विधि।
पुटभेद–(सं. पुं.) नदी आदि का चक्राकार जलावर्त, पानी का भँवर।
पुटभेदक–(सं. पुं.) स्तरित पत्थर।
पुटरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'पोटली'।
पुटरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पोटली'।
पुटास,पोटाश–(हिं.पुं.) एक जहरीला क्षार।
पुटिका–(सं.स्त्री.) इलायची, संपुट, पुड़िया।
पुटित–(सं. वि.) फटा हुआ, सिला हुआ, बंद, संकुचित, सिकुड़ा हुआ।
पुटिनी–(सं.स्त्री.) फेनी नाम की मिठाई।
पुटी–(सं. स्त्री.) कौपीन, लँगोटी, छोटा कटोरा, छोटा दोना, पुड़िया।
पुटोदक–(सं. पुं.) नारिकेल, नारियल।
पुट्ठा–(हिं. पुं.) चूतड़ का ऊपरी मांसल भाग, पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग, चौपायों का चूतड़, घोड़ों की संख्या-सूचक शब्द।
पुट्ठी–(हिं. स्त्री.) बैलगाड़ी के पहिये के घेरे का वह अर्ध चन्द्राकार खंड जिसमें आरे जड़े रहते हैं।
पुठवार–(हिं. अव्य.) पीछे, बगल में।
पुठवाल–(हिं. पुं.) पृष्ठरक्ष, चोरों के दल का वह मनुष्य जो सेंध के मुँह पर पहरा देता है।
पुड़ा–(हिं. पुं.) बड़ी पुड़िया, ढोल मढ़ने का चमड़ा।
पुड़िया–(हिं.स्त्री.) (विपत्ति आदि का) भण्डारघर या खान, मोड़कर लपेटा हुआ कागज या पत्ता जिसमें कोई वस्तु रखी जाय, पुड़िया में लपेटी हुई दवा की एक मात्रा।
पुड़ी–(हिं. स्त्री.) ढोल मढ़ने का चमड़ा।
पुण्य–(सं. पुं.) धर्म का कार्य, भला काम, सुकृत, शुभ कार्य का संचय; (वि.) धर्म-विहित, पवित्र, शुभ, सुन्दर, अच्छा, सुगन्धित; **–क**–(पुं.) पुण्य देनेवाला व्रत, विष्णु; **–कर्ता**–(पुं.) पुण्य या शुभ कार्य करनेवाला; **–कर्म**–(पुं.) शुभ कम, जिस कार्य के करन से पुण्य होता है; **–काल**–(पुं.) शुभ समय, दान-पुण्य करने का काल; **–कीर्तन**–(पुं.) विष्णु; धर्म-ग्रंथों का पाठ; **–कीर्ति**–(वि., स्त्री.) पुण्य कीर्ति, जिसके कीर्तन से पुण्य होता है; **–कृत्**–(पुं., वि.) पुण्यकर्ता, धार्मिक; **–क्षेत्र**–(पुं.) पुण्य-भूमि, आर्यावर्त जहाँ जाने से पुण्य होता है; **–गंध**–(पुं.) पवित्र गन्ध, चम्पा; **–गंधि**–(वि.) पवित्रगन्ध-युक्त; **–गर्भा**–(स्त्री.) गंगा; **–गृह**–(पुं.) पुण्यशाला, धर्म-क्षेत्र; **–जन**–(पुं.) सज्जन, धर्मात्मा, यक्ष; **–जनेश्वर**–(पुं.) कुबेर; **–ता**–(स्त्री.) पुण्य कर्म का फल; **–दर्शन**–(वि.) जिसके दर्शन का फल शुभ हो; (पुं.) नीलकण्ठ पक्षी; **–नामन्**–(पुं.) कार्तिकेय के एक अनुचरा का नाम; **–प्रतप**–(पुं.) पुण्य का बल; (वि.) प्रतापवान्; **–प्रद**–(वि.) पुण्य देनेवाला; **–फल**–(पुं.) लक्ष्मी के रहने का वन, पुण्य के अनुष्ठान का फल; **–भाज्**–(वि.) पुण्यात्मा; **–भूमि**–(स्त्री.) आर्यावर्त देश, पुत्रवती स्त्री; **–रात्र**–(पुं.) पवित्र रात; **–लोक**–(पुं.) पुण्य धाम, चन्द्रलोक की प्राप्ति, स्वर्ग; **–वत्**–(वि.) पुण्ययुक्त, धर्मात्मा; **–वान्**–(वि.) धर्मात्मा, पुण्य करनेवाला; **–शकुन**–(पुं.) शुभ शकुन या चिह्न; **–शाला**–(स्त्री.) पवित्र गृह, पाकगृह; **–शील**–(वि.) पुण्य स्वभाव का, अच्छे स्वभाव-वाला; **–श्लोक**–(पुं.) विष्णु, युधिष्ठिर, राजा नल; (वि.) पुण्यचरित्र-वाला, पवित्र आचरणवाला; **–श्लोका**–(स्त्री.) द्रौपदी, सीता; **–सम**–(अव्य.) पुण्यतुल्य, पुण्य के समान; **–स्थान**–(पुं.) पवित्र स्थान, तीर्थस्थान।
पुण्या–(सं. स्त्री.) तुलसी।
पुण्याई–(हिं. स्त्री.) पुण्य का फल, पुण्य का प्रभाव।
पुण्यात्मा–(स. वि.) पुण्यशील, धर्मात्मा, जो पुण्य करने में प्रवृत्त हो।
पुण्यालंकृत–(सं. स्त्री.) पुण्यात्मा।
पुण्याह–(सं.पुं.) पुण्य दिन, शुभ दिवस।
पुण्याहवाचन–(सं. पुं.) देवादि कर्म में मंगल के निमित्त 'पुण्याह' शब्द का तीन बार उच्चारण।
पुण्योदय–(सं. पुं.) पुण्य कर्म का उदय।
पुतरिया, पुतरी–(हिं.स्त्री.) देखें 'पुतली'।
पुतला–(हिं. पुं.) (लकड़ी, मिट्टी, धातु,) आदि कपड़े की बनी हुई मूर्ति।
पुतली–(हि.स्त्री.) (लकड़ी, मिट्टी, धातु) कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति, गुड़िया, आँख के बीच का काला भाग, घोड़े की टाप का निकला हुआ भाग, कपड़ा बुनने का यन्त्र, सुंदर और आकर्षक शोभावाली स्त्री; (मुहा.) **–फिर जाना**–आँखें पथरा जाना; **–घर**–(पुं.) कपड़ा बुनने का कारखाना।
पुताई–(हिं. स्त्री.) पोतने की क्रिया या भाव, भीत आदि पर मिट्टी, गोबर, चूना

आदि पोतने का काम, पोतने का शुल्क ।
पुतारा–(हिं. पु.)पोतने के लिये भिगाया हुआ कपड़ा।
पुत्त–(हिं. पुं.) देखें 'पुत्र', बेटा ।
पुत्तरी–(हिं. स्त्री.) पुत्री, बेटी ।
पुत्तल, पुत्तलक–(सं. पुं.) पुतला।
पुत्तलिका–(सं.स्त्री.) (लकड़ी, मिट्टी, धातु,) कपड़े आदि की बनी हुई गुड़िया, पुतली।
पुत्तली–(स पुं.) गुड़िया, पुतली ।
पुत्तिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की मधुमक्खी ।
पुत्र–(स.पुं.)तनय, तनुज, लड़का, बेटा; **–क**–(पुं.) पुत्र, बेटा, शरभ, टिड्डी, फतिंगा, दौने का पौधा, एक प्रकार का चूहा; **–काम**–(वि.) पुत्राभिलाषी; **–कामेष्टि**–(स्त्री.) पुत्र प्राप्त करने के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ; **–कृतक**–(पु.) दत्तक पुत्र; **–कृत्य**–(पुं.) पुत्र का कार्य, पुत्रत्व; **–घ्नी**–(स्त्री.) पुत्रघातिनी स्त्री; **–जात**–(वि.) जिसको पुत्र उत्पन्न हुआ हो; **–जीव**–(पुं.) पितौंजिया नामक वृक्ष जिसकी छाल और बीज औषधों में प्रयुक्त होते हैं; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) पुत्र का धर्म; **–दा**–(स्त्री.) लक्ष्मणाकन्द, सफेद भटकटैया; **–पौत्र**–(पुं.) पुत्रों-पोतों का समुदाय; **–प्रदा**–(स्त्री.) सफद भटकटैया; **–भाव**–(पुं.) पुत्रत्व, पुत्रता; **–वत्**–(वि.) पुत्र-तुल्य, पुत्र के सदृश; **–वती**–(वि.स्त्री.) जिसके पुत्र हों, पुत्रवाली; **– वत्सल**–(वि.) पुत्र के प्रति अधिक प्रेमयुक्त; **–वधू**–(स्त्री.) पुत्र की पत्नी, पतोहू; **–शृंगी**–(स्त्री.) मेढ़ासिंगी; **–सख**–(पुं.) पुत्र का मित्र; **–हत**–(वि.) जिसका पुत्र मर गया हो; (पुं.)वशिष्ठ।
पुत्रिका–(सं. स्त्री.)कन्या, बेटी, पुत्रहीन व्यक्ति द्वारा पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या, पुतली, गुड़िया, आँख की पुतली; **–पुत्र**–(पुं.) बेटी का बेटा, नाती ।
पुत्री–(स.वि.)पुत्रवाला,पुत्रवान्; (स्त्री.) सुता, कन्या, बेटी ।
पुत्रीय–(सं. वि.)पुत्र-संबंधी ।
पुत्रेष्टि–(स. स्त्री.) वह यज्ञ जो पुत्र की कामना से किया जाता है ।
पुत्रोत्सव–(सं. पुं.)पुत्र के जन्म-दिन पर किया जानेवाला उत्सव ।
पुद्गल–(सं. पुं.) देह, शरीर, आत्मा, परमाणु, पंचभूत ।
पुनः–(हिं. अव्य.) दोबारा, दूसरी बार, फिर, अनन्तर, उपरान्त, पीछे; **–पराजय**–(पुं.) फिर से हार; **–पाक**–(पुं.) दूसरी बार पाक; **–पुनः**–(अव्य.) बारंबार; **–संस्कार**–(पुं.) दूसरी बार उपनयन आदि संस्कार ।
पुन–(हिं. पु.) पुण्य, धर्म ।
पुनना–(हिं. क्रि. स.) भला-बुरा कहना ।
पुनरपगम–(सं. पुं.) फिर से जाना ।
पुनरपि–(सं. अव्य.) फिर से ।
पुनरबसु–(हिं. पुं.) देखें 'पुनर्वसु' ।
पुनरभिधान–(सं. पुं.) दुबारा कथन ।
पुनरागत–(स. वि.) प्रत्यागत, दुबारा आया हुआ ।
पुनरागम–(सं. पुं.) फिर से आना ।
पुनरागमन–(सं.पुं.) द्वितीय बार आगमन, फिर से आना, संसार में फिर जन्म लेना।
पुनरादि–(सं. वि.) प्रथम, पहिला ।
पुनरायन–(सं. पुं.) पुनरागमन ।
पुनरावर्त–(सं.पुं.) पुनरागमन, चक्कर ।
पुनरावर्ती–(सं.वि.) बारबार आनेवाला, फिर जन्म लेनवाला ।
पुनरावृत्त–(स. वि.) फिर से कहा हुआ, फिर से घूमकर आया हुआ, लौटा हुआ ।
पुनरावृत्ति–(स. स्त्री.) पुनर्जन्म, फिर से घूमकर आना, किये हुए काम को फिर से करना, पुनरुक्ति ।
पुनराहार–(सं. पुं.) दुबारा भोजन ।
पुनरुक्त–(सं. वि.) फिर से कहा हुआ ।
पुनरुक्तता–(सं. स्त्री.) साहित्य में वह दोष जो एक शब्द, भाव आदि को दुबारा कहने से होता है ।
पुनरुक्तवदाभास–(सं. पुं.) वह अलंकार जिसमें पुनरुक्ति या उसका आभास जान पड़े, परन्तु वस्तुतः ऐसा न हो ।
पुनरुक्ति–(सं. स्त्री.) एक बार कही हुई बात को फिर से कहना, कहे हुए वचन को दोहराना ।
पुनरुत्पत्ति–(सं. स्त्री.) पुनर्जन्म ।
पुनर्गमन–(सं. पुं.) दुबारा गमन, पुनः या फिर से जाना ।
पुनर्ग्रहण–(सं. पुं.) फिर से लेना, पुनरुक्ति ।
पुनर्जन्म–(सं. पुं.) फिर से उत्पत्ति, एक शरीर छूटने पर दूसरा शरीर धारण करना ।
पुनर्जात–(सं. वि.) फिर से उत्पन्न ।
पुनर्नवा–(सं. स्त्री.) एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ चौराई की पत्तियों के समान होती हैं, गदहपुरना ।
पुनर्भव–(सं. पुं.) नख, फिर से होना ।
पुनर्भाव–(स.पुं.) मृत्यु के बाद फिर से जन्म ।
पुनर्भू–(स.स्त्री.) वह विधवा जिसका विवाह पति के मरने पर दूसरे पुरुष से हुआ हो ।
पुनर्मृत्यु–(सं. स्त्री.) दुबारा मृत्यु ।
पुनर्यज्ञ–(सं. पुं.) फिर से किया हुआ यज्ञ ।
पुनर्लाभ–(सं. पुं.) खोई हुई वस्तु को फिर से पाना ।
पुनर्वचन–(सं. पुं.) किसी वाक्य का बार-बार प्रयोग ।
पुनर्वसु–(सं. पुं.) विष्णु, शिव, कात्यायन मुनि, सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र, एक लोक ।
पुनर्विवाह–(सं. पुं.) दुबारा विवाह ।
पुनवाँसी–(हि. स्त्री.) पूर्णिमा ।
पुनि–(हिं.अव्य.) पुनः, फिर से, दुबारा ।
पुनिम–(हिं. स्त्री.) पूर्णिमा ।
पुनी–(हि.स्त्री.) पूर्णिमा, पूनो; (वि.,पुं.) पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।
पुनीत–(हिं. वि.) पवित्र, शुद्ध, पाक ।
पुन्न–(हि. पुं.) देखें 'पुण्य' ।
पुन्नाग–(सं.पु.) एक बड़ा सदाबहार वृक्ष, सुलताना चम्पा, श्वेत पद्म, सफेद कमल, जातिफल, जायफल ।
पुन्नाट–(सं. पुं.) चकवँड़ का पौधा ।
पुन्य–(सं. पुं.) देखें 'पुण्य' ।
पुन्यताई–(हिं. स्त्री.) पवित्रता ।
पुपली–(हि. स्त्री.) बाँस की पोली नली ।
पुप्पुट–(सं. पु.) तालु का एक रोग ।
पुप्फुस–(सं. पुं.) कमलगट्टे का छत्ता ।
पुमान्–(सं. पुं.) पुरुष, मर्द, नर ।
पुरंजन–(सं. पुं.) जीव ।
पुरंजनी–(सं. स्त्री.) बुद्धि ।
पुरंजय–(सं. पुं.) जनमेजय के पिता का नाम, ऐरावत हाथी के एक पुत्र का नाम; (वि.) पुर को जीतनेवाला ।
पुरंदर–(सं. पु.) इन्द्र, ज्यष्ठा नक्षत्र, अग्नि; (वि.) नगर या घर को तोड़ने-वाला; **–पुरी**–(स्त्री.) इन्द्रपुरी ।
पुरंध्री–(सं. स्त्री.) कुटुम्बिनी स्त्री ।
पुरः–(हिं. अव्य.) आगे, पहिले; **–सर**–(वि.) अग्रगण्य, अगुआ, संगी, साथी; (पुं.) अग्रगमन ।
पुर–(स. पुं.) नगर, गृह, घर, दुर्ग, गढ़, गुग्गुल, राशि, समूह, एक दैत्य का नाम, चमड़ा, पीली कटसरैया, देह, शरीर कोठरी, अटारी, लोक, नक्षत्र; (वि.) पूर्ण, भरा हुआ; (हिं. पुं.) चरसा, कुएँ से सिंचाई करने का चमड़े का बड़ा डोल, पुरवट ।
पुरइन–(हिं.स्त्री.) कमल का पत्ता, कमल ।
पुरखा–(हिं.पु.) पूर्वज, पूर्व पुरुष, कुल का

वृद्ध पुरुष, वड़ा-वूढ़ा; (मुहा.) **पुरखे तर जाना**–परलोक में पुरखों की उत्तम गति होना।
पुरग–(स. वि.) नगर को जानेवाला।
पुरगुर–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी के खिलौने वनाये जाते हैं।
पुरचक्र–(हिं. स्त्री.) चुमकार, पुचकार, प्रोत्साहन, वढ़ावा, प्रेरणा, उसकाना, पृष्ठपोषण, समर्थन।
पुरजन–(सं. पुं.) नागरिक।
पुरजा–(फा. पुं.) कागज का टुकड़ा, रुक्का, यंत्र आदि का कोई सहायक अंग; (मुहा.) **पुरजे-पुरजे उड़ाना या करना**–खंड-खंड करना।
पुरजित्–(सं. वि.) त्रिपुरारि, शिव।
पुरट–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना।
पुरण–(सं. पुं.) समुद्र, सागर।
पुरतटी–(सं. स्त्री.) छोटा हाट।
पुरत्राण–(सं. पुं.) प्राकार, परकोटा।
पुरद्वार–(सं. पुं.) परकोटे का फाटक।
पुरद्विष–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
पुरनियाँ–(हिं. वि.) वृद्ध, बुड्ढा।
पुरनी–(हिं.स्त्री.) अँगूठे में पहिनने का छल्ला, तुरही, वंदूक का गज।
पुरपाल–(सं. पुं.) नगरपाल, कोतवाल।
पुरवला, पुरवुला–(हिं. वि.) पूव का, पहिले का, पूवजन्म-संवंधी।
पुरविया, पुरविहा–(हि.वि.) पूर्व देश में उत्पन्न, पूरव का।
पुरभिद्, पुरमथन–(सं.पुं.) शिव,महादेव।
पुरमार्ग–(सं. पुं.) नगर का मार्ग।
पुररक्ष–(सं. पुं.) नगर का रक्षक।
पुरला–(स. स्त्री.) दुर्गा।
पुरवइया–(हिं. स्त्री.) देखें 'पुरवाई'।
पुरवट–(हिं. पु.) खत सींचने के लिये कुएँ से पानी खींचन का चमड़े का वड़ा डोल, मोट, चरसा।
पुरवना–(हिं.क्रि.अ., स.)पूरा करना या होना, भरना, पुजाना, पर्याप्त होना; (मुहा.) **साथ पुरवना**–साथ देना।
पुरवा–(हिं. पुं.) छोटा गाँव, पुरा, पूर्व दिशा से चलनेवाली हवा, गला फूलने का एक रोग, मिट्टी का कुल्हड़।
पुरवाई–(हिं.स्त्री.) पूर्व दिशा से चलनेवाली हवा।
पुरवासी–(सं.वि.) नगर में रहनेवाला।
पुरवैया–(हिं. पुं.) देखें 'पुरवाई'।
पुरशासन–(सं. पुं.) महादेव, शिव।
पुरश्चरण–(सं.पुं.) किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहिले उपाय सोचकर अनुष्ठान करना, किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के निमित्त नियमपूर्वक मन्त्र का जप या स्तोत्रपाठ करना।
पुरसा–(हिं.पुं.) ऊँचाई या गहराई की एक नाप जो हाथ उठाकर खड़े हुए मनुष्य के वरावर होती है।
पुरस्–(सं. अव्य.) सामने, आगे।
पुरस्करण–(सं. पुं.) पुरस्कृत होने या करने की क्रिया या भाव।
पुरस्कार–(सं.पुं.)आदर, पूजा, प्रधानता, स्वीकार, उपहार, पारितोपिक, सींचने की क्रिया।
पुरस्कृत–(सं. वि.)पूजित, स्वीकृत, आगे किया हुआ, जिसको उपहार मिला हो।
पुरस्सर–(सं. पुं. वि.) अगुआ, साथी, आगे का, पहिला।
पुरहत–(हिं. पुं.) वह अन्न, द्रव्य आदि जो मंगल कार्य में पुरोहित या प्रजा को पहिले दिया जाता है, आखत।
पुरहन–(सं. पुं.) विष्णु, शिव।
पुरहा–(हिं. पुं.) वह मनुष्य जो कुएँ पर पुरवट छीनने के लिये नियुक्त रहता है।
पुरहूत–(हिं. पुं.) देखें 'पुरुहूत'।
पुरा–(सं.अव्य.) प्राचीन काल में, 'पुराने समय में; (वि.) प्राचीन, पुराना; (हिं. पुं.) पुरवा, गाँव, वस्ती।
पुराकल्प–(सं.पुं.) प्राचीन युग, पहिले का कल्प, प्राचीन काल, एक प्रकार का सिद्धांत जिसके अनुसार प्राचीन प्रथाओं के आधार पर किसी विधि के समर्थन के लिये लोग प्रवृत्त किय जाते हैं।
पुराकृत–(सं. वि.) पूव जन्म में किया हुआ, पहिले समय में किया हुआ; (पुं.) पूर्व जन्म का पाप-पुण्य।
पुराग–(सं. वि.) पूर्वगामी।
पुराचीन–(हिं. वि.) देखें 'प्राचीन'।
पुराज–(सं.वि.) जो पूर्व काल में हुआ हो।
पुराण–(सं. वि.) प्राचीन, पुराना; (पुं.) शिव, महादेव, प्राचीन आख्यान, पुरानी कथा, हिन्दुओं का धर्म-संवंधी प्राचीन ग्रन्थ जिसमें संसार की सृष्टि, लय, प्राचीन ऋषि-मुनियों और राजाओं की कथाएँ हैं, परंपरागत कथासंग्रह, (पुराण अठारह हैं। इनमें विष्णु, ब्रह्माण्ड, मत्स्य आदि महापुराणों में सृष्टि-तत्त्व, पुनःसृष्टि और लय, देव और पितरों की वंशावली, मन्वन्तर का अधिकार तथा सूय और चन्द्रवंशीय राजाओं का संक्षिप्त वर्णन पाया जाता है। इन अठारहों पुराणों के नाम–ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भविष्य, मार्कण्डेय, अग्नि, नारद, भागवत, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वाराह, स्कन्द, वामन, कर्म, मत्स्य, गरुड़ और ब्रह्माण्ड पुराण हैं।
पुराणकिट्ट–(सं.पुं.) लौहमल, कसीस।
पुराणपुरुष–(सं. पुं.) विष्णु।
पुराणप्रोक्त–(सं.वि.) जो पुराण में कहा गया हो।
पुराणविद्(सं.वि.)पुराणों को जाननेवाला।
पुराणांत–(सं.पुं.) पुराण का शेष, यम।
पुरातत्त्व–(सं.पुं.) प्राचीन काल-संवंधी अन्वेषण तथा अध्ययन-विषयक विद्या।
पुरातन–(सं.पुं.) विष्णु; (वि.) प्राचीन, पुराना।
पुरातल–(सं.पुं.) तलातल, सात पातालों के नीचे की भूमि।
पुराधिप–(सं. पुं.) नगर का अध्यक्ष।
पुरान–(हिं.पुं.)देखें 'पुराण'; (वि.)पुराना।
पुराना–(हिं. वि.) जो वहुत दिनों से चला आता हो, प्राचीन काल का, जिसका अनुभव वहुत दिनों का हो, जीर्ण, जो वहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो, परिपक्व, पुरातन; (हिं. क्रि. अ., स.) पूरा करना, भरना, अनुसरण करना, पालन करना, इस प्रकार वाँटना कि सव को मिल जाय, अँटाना, पुजवाना, किसी घाव का या गड्ढे को भरना; **–खुर्राट**–(पुं.) वृद्ध अनुभवी मनुष्य; **–घाघ**–(पुं.) वड़ा धूर्त।
पुराराति, पुरारि–(सं. पुं.)शिव, महादेव।
पुराल–(हिं. पुं.) देखें 'पयाल'।
पुरावसु–(सं. पुं.) भीष्म।
पुराविद्–(सं.वि.)पुरातत्त्व जाननेवाला।
पुरावृत्त–(सं. पुं.) पुराना वृत्तान्त, इतिहास, पुराना चरित्र।
पुरि–(स. स्त्री.) पुरी, नदी, शरीर, राजा, एक प्रकार के संन्यासी।
पुरी–(सं. स्त्री.) नगरी, जगन्नाथ पुरी।
पुरीतत्–(सं. स्त्री.) अन्त्र, आँत।
पुरीमोह–(सं. पु.) धतूरा।
पुरीष–(सं. पु.) विष्ठा, मल, गू।
पुरीषम–(सं. पु.) माष, उड़द।
पुरु–(सं.पु.)देवलोक एक दत्य, वह पर्वत जिस पर पुरूरवा का जन्म हुआ था, शरीर, पराग।
पुरुकुत्सन–(सं. पुं.) एक दैत्य।
पुरुक्ष–(सं. वि., पुं.) (वह) जिसके पास वहुत अन्न हो।
पुरुख–(हिं. पु.) देखें 'पुरुष'।

पुरुखा–(हिं. पुं.) देखें 'पुरखा'।
पुरुचेतन–(सं. वि.) अनेक विषयों का जाननेवाला।
पुरुज–(सं.पुं.) पुरु राजा के एक पुत्र का नाम।
पुरुजित्–(सं. पुं.) विष्णु।
पुरुदिन–(सं. पुं.) बहु दिन, अनेक दिन।
पुरुप्रशस्त–(सं. वि.) जिसकी अनेक प्रकार से स्तुति या प्रशंसा की गई हो।
पुरुभुज–(सं. वि.) बहुत खानेवाला।
पुरुभूत–(सं. पुं.) पुरुहूत, इन्द्र।
पुरुमित्र–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
पुरुरुच–(सं. वि.) बहुत चमकीला।
पुरुरूप–(सं. वि.) अनेक रूप धारण करनेवाला।
पुरुष–(सं. पुं.) मनुष्य, सांख्य के अनुसार प्राणियों का आत्मिक स्वरूप, विष्णु, शिव, जीव, पूर्वज, पति, मनुष्य की शरीर-स्थिति आत्मा, सूर्य, चेतना, धातु, गुग्गुल, पुन्नाग वृक्ष, पारा, तिलक, व्याकरण में सर्वनाम और वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम अथवा क्रियापद अपने लिये अथवा अन्य के लिये प्रयोग किया गया है; यथा–"मैं" उत्तम पुरुष, "तुम" मध्यम पुरुष और "वह" प्रथम पुरुष कहलाता है; **–कार**– (पुं.) पुरुष की कृति, पौरुष, उद्योग; **–कुंजर**–(पुं.) पुरुषश्रेष्ठ; **–केशरी**–(पुं.) नरसिंह-रूपी विष्णु; **–ग्रह**–(पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार मंगल, सूर्य और बृहस्पति; **–ता**–(स्त्री.) पौरुष, पुरुष का भाव; **–त्व**–(पुं.) पुरुषता; **–नक्षत्र**–(पुं.) ज्योतिषशास्त्र के अनुसार हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा और पुष्य नक्षत्र; **–नाग**–(पुं.) पुरुष-श्रेष्ठ; **–नाथ**–(पुं.) नरपाल, सेनापति; **–पुंगव**–(पुं.) पुरुषश्रेष्ठ; **–पुंडरीक**–(पुं.) देखें 'पुरुषपुंगव'; **–पुर**–(पुं.) प्राचीन गान्धार राज्य की राजधानी, इसका वर्तमान नाम पेशावर है); **–मुखी**–(वि.स्त्री.) पुरुष के समान मुखवाली; **–मेध**–(पुं.) अश्वमेध, गोमेध आदि के समान एक यज्ञ जो वैदिक काल में किया जाता था, इसमें नर-बलि दी जाती थी; **–राज**–(पुं.) पुरुषश्रेष्ठ; **–राशि**–(स्त्री.) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियाँ; **–रूप**–(पुं.) पुरुषाकार; **–वर्ण**–(वि.) पुरुष की हत्या करनेवाला; **–वत्**–(वि.) मनुष्य के समान; **–वध**–(पुं.) नर-हत्या; **–वाह**–(पुं.) गरुड़, कुबेर; **–र्षभ**, **–व्याघ्र**–(पुं.) पुरुषश्रेष्ठ; **–व्याधि**–(स्त्री.) उपदंश रोग; **–शार्दूल**–(पुं.) पुरुष श्रेष्ठ; **–शीर्ष**–(पुं.) पुरुष का मस्तक; **–सिंह**–(पुं.) पुरुषों में श्रेष्ठ; **–सूक्त**–(पुं.) ऋग्वेदोक्त एक सूक्त जो "सहस्र शीर्षा पुरुष:" से आरंभ होता है, (इसमें सोलह ऋचाएँ हैं। इसका पाठ अभिषेकादि अनेक कार्यों में होता है।)
पुरुषांतर–(सं. पुं.) अन्य पुरुष।
पुरुषांतरात्मा–(सं. पुं.) जीवात्मा।
पुरुषाद्य–(सं. पुं.) विष्णु, राक्षस।
पुरुषाधम–(सं. पुं.) निकृष्ट नर, अधम मनुष्य।
पुरुषानुक्रम–(सं.पुं.) पुरखाओं से चली आती हुई परम्परा।
पुरुषायितबंध–(सं. पुं.) विपरीत रति।
पुरुषायुष–(सं. पुं.) पुरुष का आयुकाल।
पुरुषार्थ–(सं. पुं.) जीवन का प्रयोजन जो चार प्रकार का है, यथा–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, पौरुष, पराक्रम, उद्यम, पुंस्त्व, सामर्थ्य, शक्ति, बल।
पुरुषार्थी–(सं. वि.) पराक्रमी, परिश्रमी, उद्योगी, सामर्थ्यवान्, बली।
पुरुषाशी–(सं. पुं.) नरभक्षक राक्षस।
पुरुषेंद्र–(सं. पुं.) पुरुषश्रेष्ठ।
पुरुषोत्तम–(सं. पुं.) विष्णु, पुरुषश्रेष्ठ, ईश्वर, कृष्ण जगन्नाथ भगवान जिनका मन्दिर उड़ीसा में है, नारायण; **–मास**–(पुं.) मलमास का महीना, अधिक-मास।
पुरुह–(सं. वि.) प्रचुर, पर्याप्त।
पुरुहूत–(सं. पुं.) इन्द्र, इन्द्रयव।
पुरुहूता–(सं.स्त्री.) भगवती की एक मूर्ति।
पुरुहूति–(सं. पुं.) विष्णु।
पुरूद्वह–(सं. पुं.) सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।
पुरूरवा–(सं.पुं.) एक राजा का नाम जो ऋग्वेद के अनुसार इला के पुत्र थे, (इनकी पत्नी का नाम उर्वशी था), पार्वण-श्राद्ध के एक देवता का नाम, एक विश्वदेव।
पुरूवसु–(सं.पुं.) बहुत धन, बड़ी सम्पत्ति।
पुरेथा–(हिं. पुं.) हलकी मूठ, परिहता।
पुरैन–(हिं.स्त्री.) देखें 'पुरइन'।
पुरोग–(सं.वि.) अग्रगामी, आगे जानेवाला।
पुरोगत–(सं. वि.) जो पहिले गया हो।
पुरोगति–(सं.पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।
पुरोगम, **पुरोगव**, **पुरोगा**–(सं.वि.) अग्रगामी, आगे जानेवाला।
पुरोगामी–(सं. वि.) अग्रगामी।
पुरोगुरु–(सं. वि.) जिसका अगला भाग भारी हो।
पुरोचन–(सं. पुं.) दुर्योधन के एक मित्र का नाम जिसको उसने पाण्डवों को जतुगृह में जलाने के लिये नियुक्त किया था।
पुरोजन्मा–(सं. पुं.) बड़ा भाई।
पुरोजव–(सं. वि.) आगे बढ़नेवाला, रक्षा करनेवाला।
पुरोडाश–(सं. पुं.) यज्ञीय द्रव्य, वह वस्तु जो यज्ञ में होम की जाय, जव के आटे की बनी हुई रोटी, यज्ञ में हवन करने के बाद बचा हुआ भाग, एक प्रकार का पीठा, सोम-रस।
पुरोद्भवा–(सं. स्त्री.) महामेदा नामक औषधि।
पुरोद्यान–(सं. पुं.) नगर का बगीचा।
पुरोध–(सं. पुं.) पुरोहित।
पुरोधा–(हिं. स्त्री.) पुरोहिताई; (पुं.) पुरोहित।
पुरोधिका–(सं. स्त्री.) प्यारी स्त्री।
पुरोभाग–(सं. पुं.) अग्रभाग।
पुरोभागी–(सं. वि.) केवल दोषों को देखनेवाला, छिद्रान्वेषी।
पुरोमारुत–(सं. पुं.) पुरवा हवा।
पुरोवर्ती–(सं. वि.) सामने रहनेवाला।
पुरोवात–(सं.पुं.) पूरब से बहनेवाली हवा।
पुरोहित–(सं. पुं.) यजमान के यहाँ यज्ञादि श्रौत कर्म, गृह-कर्म, संस्कार, शान्ति आदि कर्म करानेवाला ब्राह्मण।
पुरोहिताई–(हिं. स्त्री.) पुरोहित का काम।
पुरोहितानी–(हिं.स्त्री.) पुरोहित की स्त्री।
पुरौ–(हिं. पुं.) पुरवट।
पुरौती–(हिं. स्त्री.) देखें 'पूर्ति'।
पुर्जल–(हिं. पुं.) कलाबत्तू लपेटने का यन्त्र।
पुर्जा–(हिं. पुं.) देखें 'पुरजा'।
पुर्तगाल–(पुं.) यूरोप के दक्षिण-पश्चिम कोण में स्थित एक देश।
पुर्तगाली–(हिं. वि.) पुर्तगाल देश-संबंधी; (पुं.) इस देश का रहनेवाला (स्त्री.) यहाँ की भाषा।
पुर्य–(सं. वि.) दुर्ग के मध्य का।
पुर्सा–(हिं. पुं.) देखें 'पुरसा'।
पुलक–(सं. पुं.) रोमाञ्च, प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से चित्त का प्रफुल्लित होना, एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का मोटा अन्न।
पुलकना–(हिं. क्रि. अ.) रोमांचित होना, गद्गद होना।
पुलकांग–(सं. वि.) रोमाञ्चित अंग

वाला; (पुं.) वरुण का पाशास्त्र।
पुलकाई-(हिं. स्त्री.) पुलकित होने का भाव, गद्गद होना।
पुलकालि, पुलकावलि-(सं. स्त्री.) हर्ष, प्रेम आदि से प्रफुल्ल रोमांच।
पुलकित-(सं. वि.) रोमाञ्चित, हर्ष-युक्त, गद्गद, प्रेम या हर्ष से जिसके रोएँ स्फुरित हो उठे हों।
पुलकी-(सं. वि.) रोमाञ्चयुक्त; **-कृत**-(वि.) हर्ष या प्रेम से रोमांचित।
पुलकोद्गम-(सं. पुं.) हर्ष, आनन्द।
पुलट-(हिं. स्त्री.) देखें 'पलट'।
पुलपुला-(हिं. वि.) जो छूने में कड़ा न हो, जो इतना कोमल हो कि छूने से पचक जाय।
पुलपुलाना-(हिं. क्रि. स.) किसी कोमल वस्तु को दबाना, मुँह में लेकर बिना चबाये हुए दबाकर चूसना।
पुलपुलाहट-(हिं. स्त्री.) पुलपुला होने का भाव।
पुलस्त-(हिं. पुं.) देखें 'पुलस्त्य'।
पुलस्ति-(सं. पुं.) सप्तर्षियों के अन्तर्गत एक ऋषि, पुलस्त्य मुनि।
पुलस्त्य-(सं. पुं.) ब्रह्मा के मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से एक तथा एक प्रजापति माने जाते हैं, शिव का एक नाम।
पुलह-(सं. पुं.) ब्रह्मा के मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से एक तथा एक प्रजापति भी माने जाते हैं, एक गन्धर्व का नाम, शिव, महादेव।
पुलाक-(सं.पुं.) एक निकृष्ट धान्य, उबाला हुआ चावल, भात का माँड़, संक्षेप, शीघ्रता; **-कारी**-(वि.) क्षिप्रकारी।
पुलाव-(हिं.पुं.) मांस और चावल को एक साथ पकाकर बना हुआ एक व्यंजन।
पुलिंद-(सं.पुं.) भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति।
पुलिंदक-(सं. पुं.) पुलिन्द जाति और उनके रहने का देश।
पुलिंदा-(हिं.पुं.) लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का छोटा मुट्ठा, गट्ठर, बंडल।
पुलिन-(सं.पुं.) तट, किनारा, नदी के बीच में पड़ी हुई रेती, एक यक्ष का नाम, धारा के हट जाने से निकली हुई भूमि।
पुलिरिक-(सं.पुं.) सर्प, साँप।
पुलिस-(अ. स्त्री.) प्रशासनांतर्गत अपराध-निवारक विभाग, इस विभाग का कर्मचारी।
पुलिहोरा-(हिं.पुं.) एक प्रकार का पकवान।
पुलुकाम-(सं. वि.) नाना प्रकार की कामना करनेवाला।
पुलोमही-(सं.स्त्री.) अहिफेन, अफीम।
पुलोमजा-(सं. स्त्री.) पुलोम की कन्या, शची, इन्द्राणी।
पुलोमजित्, पुलोमभिद्-(सं. पुं.) इन्द्र।
पुलोमा(मन्)-(सं.पुं.) एक दैत्य, इन्द्र का ससुर; (स्त्री.) भृगु की पत्नी, च्यवन ऋषि की माता।
पुल्ल-(सं.वि.) विकसित, खिला हुआ।
पुल्ला-(हिं.पुं.) नाक में पहिनने का एक गहना।
पुवा-(हिं. पुं.) पुआ, पूआ, मालपुआ।
पुवार-(हिं.पुं.) देखें 'पयाल', पुआल।
पुश्तैनी-(फा. वि.) वंशपरंपरागत।
पुषित-(सं. वि.) पोषण किया हुआ, पाला-पोसा हुआ, वर्धित, बढ़ा हुआ।
पुष्कर-(सं.पुं.) हाथी की सूँड़ का अगला भाग, ढोल, मृदंग आदि का मुखड़ा जिस पर चमड़ा मढ़ा जाता है, आकाश, तलवार का म्यान, कमल, एक प्रकार का रोग, पुराण में कहे हुए सात द्वीपों में से एक, राजा नल के छोटे भाई का नाम, सारस पक्षी, बाण, तीर, पिंजड़ा, नाचने की कला, सूर्य, मद, शिव, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, एक दिग्गज का नाम, एक प्रकार का ढोल, ताल, पोखरा, विष्णु, सर्प, करछी की कटोरी, ज्योतिष के अनुसार एक योग, आकाश, अंश, पुष्करमूल, बुद्ध का एक नाम, एक तीर्थ जो अजमेर के पास है।
पुष्करक-(सं. पुं.) पुष्करमूल।
पुष्करनाभ-(सं. पुं.) पद्मनाभ, विष्णु।
पुष्करपर्ण-(सं. पुं.) कमल का पत्ता।
पुष्करमूल-(सं. पुं.) पुष्कर देश में होनेवाली एक औषधि।
पुष्करस्थपति-(सं.पुं.) शिव, महादेव।
पुष्कराक्ष-(सं. पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण।
पुष्करिका-(सं.स्त्री.) शिश्न का एक रोग।
पुष्करिणी-(सं. स्त्री.) पद्म, कमल, पुष्करमूल, जलाशय, पोखरा।
पुष्करी-(स. पुं.) गज, हाथी।
पुष्कल-(सं. पुं.) शिव, महादेव, एक प्रकार का ढोल, एक असुर का नाम, वरुण के एक पुत्र का नाम, अन्न नापने की एक प्राचीन नाप; (वि.) प्रचुर, अधिक, परिपूर्ण, भरा हुआ, उपस्थित, पवित्र, श्रेष्ठ।
पुष्कलक-(सं. पुं.) कस्तूरी-मृग।
पुष्कलावती-(सं. स्त्री.) गान्धार राज्य की प्राचीन राजधानी।
पुष्ट-(सं.वि.) पालन-पोषण किया हुआ, बलवान्, बलिष्ठ, मोटा, दृढ़, पक्का; (पुं.) पुष्टि, विष्णु; **-ई**-(हिं. स्त्री.) बलवीर्य को पुष्ट करनेवाली औषधि; **-ता**-(स्त्री.) दृढ़ता, पोढ़ाई।
पुष्टि-(सं. स्त्री.) पोषण, वृद्धि, सोलह मातृकाओं में से एक, धर्म की एक पत्नी, एक योगिनी का नाम, बलिष्ठता, कथन का समर्थन, दृढ़ता, मजबूती; **-कर**-(वि.) पुष्ट करनेवाला, बलवीर्यवर्धक; **-करी**-(स्त्री.) गंगा; **-कर्म**-(पुं.) पुण्य के लिये काम; **-कांत**-(पुं.) गणाधिप, गणेश; **-का**-(स्त्री.) जल की सीप, सुतुही; **-काम**-(वि.) जो पुष्ट होने की इच्छा करता हो; **-कारक**-(वि.) देखें 'पुष्टिकर'; **-द**-(वि.) पुष्टि देनेवाला; **-दा**-(स्त्री.) वृद्धि नामक औषधि; **-मति**-(पुं.) अग्नि का एक भेद, सरस्वती; **-मार्ग**-(पुं.) वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित वैष्णवों का भक्ति-मार्ग; **-वर्धन**-(वि.) पुष्टि देनेवाला।
पुष्प-(सं. पुं.) कुसुम, सुमन, फूल, स्त्रियों के ऋतुकाल का रज, आँख का फली नामक रोग, कुबेर का विमान, पुष्पक, लवंग, मांस, रसवत, एक प्रकार का सुरमा, पुष्करमूल, घोड़ों का एक लक्षण; **-क**-(पुं.) कुबेर का विमान जिसको रावण ने छीन लिया था और रावण के वध के बाद श्रीरामचन्द्र ने उसको कुबेर को दे दिया था, एक प्रकार का नेत्ररोग, फूली, रसवत, एक पर्वत का नाम, घर बनाने में एक प्रकार का मण्डप, पुष्प, फूल, कंकण, सर्प विशेष, तोता, हीराकसीस; **-कर्ण**-(वि.) वह जिसके कान पर फूल हो; **-काल**-(पुं.) स्त्रियों का ऋतु-काल, वसन्त ऋतु; **-कीट**-(पुं.) भौंरा, फूल का कीड़ा; **-कृच्छ्र**-(पुं.) एक व्रत जिसमें फूलों का क्वाथ पीकर महीना भर रहना होता है; **-केतन, -केतु**-(पुं.) कामदेव; **-गंधा**-(स्त्री.) सफेद जूही; **-गृह**-(पुं.) फूलों का घर; **-ग्रंथन**-(पुं.) माला, गूँथना; **-चाप**-(पुं.) फूल का धनुष, कामदेव; **-चामर**-(पुं.) केतकी केवड़ा, दौना; **-ज**-(पुं.) फूल का रस, फूलों से उत्पन्न मधु; **-दंत**-(पुं.) वायु कोण के दिग्गज का नाम, एक विद्याधर का नाम, एक नाग का नाम, विष्णु का एक अनुचर; **-द**-(वि.) फल

देनेवाला; (पुं.)वृक्ष; -दर्शन-(पुं.) स्त्रियों का रजोदर्शन; -दाम-(पुं.) फूलों की माला, एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में सोलह अक्षर होते हैं; -द्रव-(पुं.)फूल का रस; -धनु,-धन्वा-(पुं.) कामदेव; -धर-(पुं.) महादेव, शिव; -धारण-(पुं.) विष्णु; -ध्वज-(पुं.) पुष्पकेतन, कामदेव; -निक्ष-(पुं.) भ्रमर, भौंरा; -निर्यास-(पुं.) मकरन्द, फूल का रस; -पत्री- (पुं.) कुसुमशर, कामदेव; -पथ-(पुं.) स्त्रियों के रज निकलने का मार्ग, योनि; -पिंड-(पुं.) अशोक का वृक्ष; -पुट-(पुं.) फूल की पँखड़ियों का कटोरी के आकार का आधार; -पुर-(पुं.) पाटलिपुत्र का एक प्राचीन नाम; -फल-(पुं.) कूष्माण्ड, कुम्हड़ा, कैथ; -वाण-(पुं.)कामदेव, फूलों का वाण; -भद्र-(पुं.) वह मण्डप जिसमें बासठ खंभ हों; -भद्रक-(पुं.) देवताओं का एक उपवन; -भव-(पुं.) मकरन्द, मधु; -भूषित-(वि.) फूलों से सुशोभित; -मंडन-(पुं.) फूलों का अलंकार; -मास-(पुं.) वसन्त ऋतु के दो महीने; -मित्र-(पुं.) एक राजा जिसको स्कन्दगुप्त ने हराया था; देखें 'पुष्यमित्र', -मृत्यु-(पुं.) एक प्रकार का नरकट; -रज-(पु.) फूल की धूल, पराग;-रथ-(पु.) फूलों का रथ;-रस, -रसोद्भव- (पु.) फूल का मधु; -राग-(पु.) पुखराज; -रेणु-(पु.) फूल की धूल, पराग; -रोचन-(पु.) नागकेसर; -लावी-(स्त्री.) माला बनानेवाली मालिन; -लिक्ष-(पु.) भ्रमर, भौरा, -लिपि- (स्त्री.) एक प्रकार की प्राचीन लिपि;-लिह्-(पुं.) भ्रमर, भौरा; -वती-(स्त्री.) रजस्वला स्त्री; (वि.स्त्री.)फूली हुई; -वाटिका- (स्त्री.) फूलों का बगीचा, फुलवारी; -वृष्टि- (स्त्री.) फूलों की वर्षा; -वेणी-(स्त्री.) फूलों की चोटी; -शय्या-(स्त्री.) फूलों की सेज; -शर; -शरासन-(पुं.) कामदेव; -शून्य-(वि.) विना फूल का; (पुं.) गूलर; -समय-(पुं.) वसन्तकाल; -सायक-(पुं.) कन्दर्प, कामदेव;-सार-(पुं.) पुष्प का रस; -सारा-(स्त्री.) तुलसी;-हास-(पुं.) विष्णु, फूलों का खिलना; -हासा-(स्त्री.) रजस्वला स्त्री;-हीन-(वि.) विना फूल का, गूलर का वृक्ष; -हीना-(स्त्री.) वन्ध्या, वाँझ स्त्री।

पुष्पांजलि-(सं. पुं.) अंजली भरकर फूल जो किसी देवता पर चढ़ाये जायँ।

पुष्पांबुज-(सं. पुं.) मकरन्द।

पुष्पा-(सं. स्त्री.)चम्पा, मालिनी, सौंफ।

पुष्पाकर-(सं. पुं.) वसन्त ऋतु।

पुष्पाजीव, पुष्पाजीवी-(सं. पुं.) मालाकार, माली।

पुष्पायुध-(सं. पुं.) कुसुमायुध, कामदेव।

पुष्पार्क-(सं. पुं.) फूलों का अर्क।

पुष्पासव-(सं. पुं.) मधु, फूलों से बना हुआ मद्य।

पुष्पास्त्र-(सं. पुं.) कुसुमायुध, कामदेव।

पुष्पिका-(सं. स्त्री.) दाँत का मल, किसी ग्रन्थ की समाप्ति के अन्त के वाक्य जो "इति श्री" करके आरंभ होते हैं।

पुष्पिणी-(सं. स्त्री.)रजस्वला स्त्री।

पुष्पित-(सं. स्त्री.) कुसुमित, फूला हुआ।

पुष्पिता-(सं. स्त्री.) रजस्वला स्त्री।

पुष्पिताग्रा-(सं. स्त्री.) एक अर्धसमवृत्त जिसके पहिले और तीसरे चरण में बारह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह अक्षर होते हैं।

पुष्पी-(सं. वि. पुं.) फूला हुआ (वृक्ष)।

पुष्पेषु-(सं. पुं.) कामदेव।

पुष्पोत्सव-(सं. पुं.) कुसुम-क्रीड़ा, फूलों की सुंदर प्रदर्शनी।

पुष्पोद्यान-(सं.पुं.)पुष्पवाटिका, फुलवारी।

पुष्य-(सं पुं.) सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवाँ नक्षत्र; (इसकी आकृति वाण के सदृश है),पुष्टि, पोषण, फूल का सार, पूस का महीना, मूल या सार वस्तु; -नेत्रा-(स्त्री.) वह रात्रि जिसम रातभर पुष्य नक्षत्र हो; -मित्र-(पुं.) एक प्रतापी राजा जिसने मौर्यों के बाद मगध देश में शुंग वंश का राज्य स्थापित किया था; -लक-(पुं.) कस्तूरी-मृग; -स्नान-(पुं.) पूस के महीने में उस समय का स्नान जब चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता हो।

पुष्या-(सं. स्त्री.) पुष्य नक्षत्र।

पुष्यार्क-(सं. पुं.) ज्योतिष का एक योग जो कर्क की संक्रान्ति में सूर्य के पुष्य नक्षत्र में रहने पर होता है।

पुस-(हि. पु.) बिल्ली को पुकारने का प्यार का शब्द।

पुसाना-(हि. क्रि. अ.)उचित जान पड़ना, शोभा देना, अच्छा लगना, बन पड़ना, पूरा पड़ना।

पुस्त-(सं. पुं.) शिल्पकर्म।

पुस्तक-(स. स्त्री.) पोथी, किताब।

पुस्तकमुद्रा-(सं.स्त्री.)एक तान्त्रिक मुद्रा।

पुस्तकाकार-(सं. वि.) पुस्तक के आकार का, पोथी के रूप का।

पुस्तकागार-(सं. पुं.) जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो, पुस्तकालय।

पुस्तकालय-(सं. पुं.) पुस्तकागार, जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो।

पुस्तिका-(सं. स्त्री.) छोटे आकार की पुस्तक या पोथी।

पुहकर-(हि. पुं.) देखें 'पुष्कर'; -मूल-(पुं.) पुष्करमूल।

पुहमी-(हि. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि।

पुहाना-(हि. क्रि. स.) गुँथवाना, पिरोने का काम दूसरे से कराना।

पुहुप-(हि. पुं.) देखें 'पुष्प', फूल।

पुहुप-राग-(सं. पुं.) पुष्पराग।

पुहुपरेनु-(हि. पुं.) पुष्परेणु, पराग।

पुहुमी-(हि. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि।

पूंगा-(हि. स्त्री.) सीप का कीड़ा, सँपेरे का बाजा, महुवर।

पूँछ-(हि. स्त्री.) पशु, पक्षी, कीड़े आदि के शरीर का सब से पिछला भाग,लांगुल, पोंछ, किसी वस्तु का पीछे का भाग, पुछिल्ला, पीछे लगा रहनेवाला,पिछलग्गू।

पूँछड़ी-(हि. स्त्री.) लांगुल, पुच्छ, पोंछ।

पूँछताछ-(हि. स्त्री.) देखें 'पूछताछ'।

पूँछना-(हि. क्रि. स.) देखें 'पूछना'।

पूँछलतारा-(हि. पुं.) देखें 'केतु'।

पूँजी-(हि. स्त्री.) मूल धन, वह द्रव्य या धन जिससे कोई व्यापार आरंभ किया जाय, किसी कारखाने की अचल सम्पत्ति, रुपया-पैसा, धन, किसी विषय में सामर्थ्य, समूह, पुंज, ढेर; -दार, -पति-(पुं.) वह जो किसी व्यवसाय में धन या पूँजी लगता है;-वाद-(पुं.) समाज में पूँजीपतियों द्वारा उत्पादन के साधनों पर अधिकार करने की व्यवस्था।

पूंठ-(हि. स्त्री.) देखें 'पीठ'।

पूआ-(हि. पुं.) मालपूआ, एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुड़ व चीनी के रस में गूँथकर घी में छानी जाती है।

पूग-(सं. पुं.) सुपारी का वृक्ष या फल, कटहल, शहतूत का वृक्ष, ढेर, समूह, संघ, स्वभाव; -कृत-(वि.) इकट्ठा किया हुआ; -पात्र-(पुं.) पीकदान; -पीठ-(पुं.) उगालदान; -फल-(पुं.) सुपारी, उसका पेड़।

पूगना-(हि. क्रि. अ.) पूरा होना, पुगना।

पूगी–(सं. स्त्री.) सुपारी; **–फल**–(पुं.) गुवाक, सुपारी।
पूछ–(हिं. स्त्री.) पूछने की क्रिया या भाव, जिज्ञासा, आदर, खोज, चाह।
पूछताछ–(हिं. स्त्री.) अनुसन्धान, जिज्ञासा, जाँच-पड़ताल।
पूछना–(हिं. क्रि. स.) किसी बात को जानने के लिये प्रश्न करना, जिज्ञासा करना, पता लगाना, किसी बात की सत्यता जानने की चेष्टा करना, आदर करना, ध्यान देना, टोकना; (मुहा.) बात न **पूछना**–तुच्छ समझकर ध्यान न देना।
पूछपाछ–(हिं. स्त्री.) देखें 'पूछताछ'।
पूछरी–(हिं. स्त्री.) पोंछ, पीछे का भाग।
पूछालाछी, पूछापाछी–(हिं. स्त्री.) पूछने की क्रिया या भाव।
पूजक–(हिं. पुं., वि.) पूजा करनेवाला।
पूजन–(हिं. पुं) पूजा, अर्चना, देवता की वन्दना, आदर, सम्मान, आराधना।
पूजना–(हिं. क्रि. अ., स.) गहराई का भरना या बराबर होना, पूरा होना, समाप्त होना, बीतना, ऋण आदि का चुकता होना, श्रद्धा-भक्ति से किसी की सेवा करना, किसी देवता की आराधना करना, सम्मान करना, आदर करना, घूस देना।
पूजनी–(सं. स्त्री.) मादा चटक या गौरैया।
पूजनीय–(सं. वि.) आराध्य, पूजा करने योग्य, आदरणीय, अर्चनीय।
पूजमान–(हिं. वि.) पूजनीय, पूज्य।
पूजा–(सं. स्त्री.) पूजन, अर्चन, आराधना, ईश्वर या देवी-देवता के प्रति श्रद्धा, विनय, सम्मान और समर्पण का भाव प्रगट करने का कार्य, किसी को प्रसन्न करने के लिये घूस आदि देना, आदर-सत्कार, वह धार्मिक कृत्य जो जल, फल-फूल, अक्षत, नैवेद्य आदि देवता पर चढ़ाकर किया जाता है, ताड़ना, दण्ड।
पूजार्ह–(सं. वि.) मान्य, पूजने योग्य।
पूजित–(सं. वि.) अर्चित, जिसकी पूजा की गई हो।
पूजिव्य–(सं. वि.) पूजा करने योग्य।
पूजेता–(हिं. पुं.) पुजारी।
पूज्य–(सं. वि.) पूजनीय, माननीय, आदर के योग्य, पूजा के योग्य।
पूज्यता–(सं. स्त्री.) पूजा-योग्य होने का भाव।
पूज्यपाद–(सं. वि.) जिसके पैर पूजनीय हों, अत्यन्त पूज्य या मान्य।
पूज्यमान–(सं. वि.) जो पूजा जाता हो।
पूठा–(हिं. पुं.) देखें 'पुट्ठा'।
पूठि–(हिं. स्त्री.) देखें 'पीठ', पृष्ठ।
पूड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'पूआ'।
पूड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पूरी', मृदंग या तबले पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा।
पूणू–(हिं. स्त्री.) पूर्णिमा, पुनवाँसी।
पूत–(सं. वि.) शुद्ध किया हुआ, पवित्र, सत्य, सच्चा; (पुं.) शंख, सफेद कुश, पलाश, तिल का पौधा, भूसी निकाला हुआ अन्न, जलाशय; (हिं. पुं.) पुत्र, बेटा, चूल्हे के दोनों ओर तथा पीछे का उभड़ा हुआ भाग।
पूतड़ा–(हिं. पुं.) छोटे बच्चों के नीचे मलमूत्र त्याग करने के लिये बिछाया जानेवाला छोटा बिछौना।
पूतदारु–(सं. पुं.) पलाश, ढाक।
पूतद्रु–(सं. पुं.) खदिर, खैर का वृक्ष।
पूतधान्य–(सं. पुं.) तिल।
पूतन–(सं. पुं.) गुदा का एक रोग।
पूतना–(सं. स्त्री.) हरीतकी, हर्रे, जटामासी, एक दानवी जिसको कंस ने बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये भेजा था, पर जिसको श्रीकृष्ण ने मार डाला था, एक बाल-ग्रह या बाल-रोग।
पूतनारि–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
पूतनिका–(सं. स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम, पूतना राक्षसी।
पूतनी–(सं. स्त्री.) पुदीना।
पूतपत्री–(सं. स्त्री.) तुलसी का पौधा।
पूतफल–(स. पुं.) पनस, कटहल।
पूतमति–(सं. वि.) पवित्र-बुद्धि, पवित्र अन्तःकरणवाला; (पुं.) शिव, महादेव।
पूतरा–(हिं. पुं.) देखें 'पुतला', बालबच्चा।
पूतरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पुतली'।
पूता–(सं. वि. स्त्री.) पवित्र, शुद्ध; (स्त्री.) दूब।
पूतात्मा–(सं. वि.) शुद्ध अन्तःकरणवाला; (पुं.) विष्णु।
पूति–(सं. पुं.) रोहिश तृण; (स्त्री.) पवित्रता, दुर्गन्ध; (वि.) दुर्गन्धयुक्त; **–क**–(पुं.) विष्ठा; **–कन्या**–(स्त्री.) पूतिका, पुदीना; **–कर्ण**–(पुं.) कान का एक रोग जिसमें कान से पीव निकलती और दुर्गन्ध आती है; **–का**–(स्त्री.) एक प्रकार की मधुमक्खी, पोई का साग; **–०कामुख**–(पुं.) शंबूक, घोंघा; **–काष्ठ**–(पुं.) देवदारु, देवदार; **–केसर**–(पुं.) नागकेसर; **–गंध**–(पुं.) एक प्रकार की सुगन्धित घास, दुर्गन्ध; **–गंधा**–(स्त्री.) बकुची; **–तला**–(स्त्री.) मालकँगनी; **–दला**–(स्त्री.) तेजपत्र, तेजपात; **–नस्य**–(पुं.) नाक का एक रोग; **–पत्र**–(पुं.) सोनापाठा, पीला लोध; **–मांस**–(पुं.) सड़ा हुआ मांस; **–मारुत**–(पु.) छोटा बेर, बेल का वृक्ष; **–मूषिका**–(स्त्री.) छछूँदर।
पूती–(हिं. स्त्री.) लहसुन की गाँठ।
पूतीक–(सं. पुं.) गंधमार्जार।
पूथ, पूथा–(हिं. पुं.) बालू का ऊँचा टीला।
पून–(सं. वि.) नष्ट; (हिं. पुं.) जंगली बादाम का वृक्ष; (वि.) पूर्ण।
पूनना–(हिं. पुं.) एक प्रकार की ऊख।
पूनव–(हिं. स्त्री.) देखें 'पूर्णिमा', पूनो।
पूनसलाई–(हिं. स्त्री.) पूनी बनाने की सलाई।
पूनाक–(हिं. स्त्री.) तेलहन की पेरी हुई खली।
पूनिउँ–(हिं. स्त्री.) देखें 'पूनो', पूर्णिमा।
पूनी–(सं. स्त्री.) पवित्रता, शुद्धि; (हिं. स्त्री.) धुनी हुई रूई की बड़ी बत्ती जो सूत कातने के लिये बनाई जाती है।
पूनो–(हिं. स्त्री.) पूर्णमासी, पूर्णिमा।
पूप–(सं. पुं.) पूआ, मालपुआ।
पूपला–(सं. स्त्री.) पूआ-जैसा एक प्रकार का पकवान।
पूपली–(सं. स्त्री.) बाँस आदि की पोली नली, बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।
पूपाली–(सं. स्त्री.) पूआ, मालपुआ।
पूय–(सं. पुं.) मवाद, पीव; **–कुंड**–(पुं.) एक नरक का नाम; **–रक्त**–(पुं.) नाक का एक रोग।
पूयारि–(सं. पुं.) नीम का वृक्ष।
पूयोद–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
पूर–(सं. पुं.) जलराशि, बाढ़, मसाले आदि जो पकवान के भीतर भरे जाते हैं, प्राणायाम में साँस खींचने की क्रिया; (हिं. वि.) देखें 'पूर्ण'।
पूरक–(सं. पुं.) वह अंक जिसमें किसी संख्या का गुणा किया जाय, प्राणायाम की वह क्रिया जिसमें नाक के एक छिद्र को बन्द करके दूसरे छिद्र से साँस ऊपर को खींची जाती है, अशौच काल में मृत व्यक्ति के प्रेत के निमित्त दिया जानेवाला पिण्ड; (वि.) पूरा करनेवाला।
पूरण–(सं. पुं.) पूरक पिण्ड, वृष्टि, अंकों का गुणा करना, कान में तेल डालना, सेतु, पुल, नागरमोथा, समुद्र, वात के प्रकोप से होनेवाला एक व्रण, परिपूर्ण करने की क्रिया।
पूरणी–(सं. वि. स्त्री.) पूरा करनेवाली; (स्त्री.) सेमल का वृक्ष।
पूरणीय–(सं. वि.) पूरा करने योग्य।

पूरन–(हिं. वि.) देखें 'पूर्ण'; **–काम**–(वि.) देखें 'पूर्णकाम'; **–पूरी**–(स्त्री.) एक प्रकार की पूरनवाली कचौड़ी; **–मासी**–(स्त्री.) देखें 'पूणमासी'।
रना–(हिं.क्रि.अ.,स.) पूर्ति करना, टोटा पूराकरना, मनोरथ सिद्ध करना, मंगल अवसरों पर भूमि पर अबीर, आटे आदि से चौखूंटे क्षेत्र बनाना, चौक बनाना, बटना, पूर्ण या व्याप्त होना, बजाना, फूँकना, छाना।
पूरब–(हिं. पुं.) वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है, पूर्व दिशा।
पूरबल–(हिं. पुं.) प्राचीन समय, इस जन्म से पहिले का जन्म, पूर्वजन्म।
पूरबला–(हिं. वि.) प्राचीन काल का, पुरातन, पुराना, पहिले जन्म का।
पूरबिया, पूरबी–(हिं. वि.) पूर्व-संबंधी, पूरब का; (स्त्री.) पूर्वी नाम की रागिनी।
पूरयितव्य–(सं. वि.) पूरा करने योग्य।
पूरा–(हिं.वि.) परिपूर्ण, भरा हुआ, समस्त, समूचा, विना खंड किया हुआ, जिसमें कोई कमी न हो, यथेष्ट, भरपूर, सम्पन्न; (मुहा.) **बात का पूरा**–अपने वचन पर दृढ़ रहनेवाला; **काम पूरा उतरना**–काम का पूरी तरह से संपन्न होना; **बात पूरी उतरना**–कही हुई बात सच्ची ठहरना; **दिन पूरे करना**–किसी न किसी प्रकार से दिन बिताना; **दिन पूरे होना**–मृत्युकाल समीप आना।
पूरिका–(सं. स्त्री.) पूरी, बरा।
पूरित–(सं.वि.) परिपूर्ण, भरा हुआ, पूरा किया हुआ, गुणा किया हुआ, तृप्त, सन्तुष्ट।
पूरिया–(हिं. पुं.) षाड़व जाति का एक राग; **–कल्याण**–(पुं.) संपूर्ण जाति का एक संकर राग।
पूरी–(हिं. स्त्री.) एक खाद्य पदार्थ जो आटे को साधारण रोटी की तरह बेल-कर घी में छान लिया जाता है, वह गोल चमड़ा जो ढोल, मृदंग आदि के मुख पर मढ़ा रहता है।
पूरुजित्–(सं. पुं.) विष्णु।
पूरुष–(सं.पुं.) पुरुष, नर, चेतन, आत्मा।
पूर्ण–(सं.वि.) परिपूर्ण, भरा हुआ, जिसको किसी प्रकार की इच्छा न हो, अखण्डित, समूचा, समग्र, परितृप्त, यथेष्ट, समाप्त, सफल, सिद्ध; (पुं.) एक गन्धर्व का नाम, जल, परमेश्वर, विष्णु, संगीत या ताल में वह स्थान जो 'सम अतीत' की एक मात्रा के बाद आता है; **–कंस**–(पुं.) भरा हुआ घड़ा; **–क**–(पुं.) देवताओं की एक योनि, ताम्रचूड़, मुर्गा; **–काम**–(पुं.) परमेश्वर; (वि.) निष्काम, जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो चुकी हों; **–कुंभ**–(पुं.) जल से भरा हुआ घड़ा; **–कुट**–(पुं.) एक प्रकार का पक्षी; **–कोषा**–(स्त्री.) कचौरी नाम का पकवान; **–गर्भा**–(स्त्री.) वह स्त्री जिसको शीघ्र ही प्रसव होनेवाला हो; **–चंद्र**–(पुं.) पूर्णिमा का चन्द्रमा; **–तः, –तया**–(अव्य.) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से; **–ता**–(स्त्री.) **–त्व**–(पुं.) पूर्ण होने का भाव; **–परिवर्तक**–(पुं.) वह जीव जो अपने जीवन में अनेक बार अपना रूप बदलता है; **–पात्र**–(पुं.) वस्तुपूर्ण पात्र, होम के अन्त में पुरोहित को देय दक्षिणा आदि, जलपूर्ण पात्र; **–प्रज्ञ**–(वि.) पूर्ण ज्ञानी, बहुत बुद्धिमान्, पूर्णप्रज्ञ दर्शन के प्रणेता मध्वाचार्य; **–दर्शन**–(पुं.) वेदान्त सूत्र तथा इस पर मध्वाचार्यकृत भाष्य का अवलम्बन करके बनाया हुआ दर्शनशास्त्र; **–बीज**–(पुं.) बीजपूर, बिजौरा नीबू; **–भद्र**–(पुं.) एक नाग का नाम; **–मा**–(स्त्री.) देखें 'पूर्णिमा'; **–मासी**–(स्त्री.) चान्द्रमास की अन्तिम तिथि, शुक्लपक्ष का अन्तिम या पंद्रहवाँ दिन; **–विराम**–(पुं.) लिखने में वह चिह्न जो वाक्य के अंत में लगाया जाता है, (नागरी, बँगला आदि में इसके लिये एक खड़ी पाई '।' का प्रयोग किया जाता है); **–विषम**–(पुं.) संगीत के ताल में वह स्थान जो कभी-कभी सम का काम देता है; **–होम**–(पुं.) हवन के अन्त की पूर्णाहुति।
पूर्णांजलि–(सं. वि.) जितना परिमाण एक अंजलि में समा सके।
पूर्णा–(सं.स्त्री.) ज्योतिष के अनुसार पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावास्या तिथियाँ।
पूर्णाघात–(सं.पुं.) संगीत का एक ताल।
पूर्णानंद–(सं. पुं.) परमेश्वर, परब्रह्म।
पूर्णामृता–(सं.स्त्री.) चन्द्रमा की सोलहवीं कला।
पूर्णायु–(सं. पुं.) सौ वर्ष का जीवन-काल; (वि.) पूरे आयुष्यवाला।
पूर्णावतार–(सं. पुं.) परमातमा या ईश्वर का सोलहों कलाओं से युक्त अवतार।
पूर्णाहुति–(सं. स्त्री.) होम की समाप्ति पर दी जानेवाली अन्तिम आहुति।
पूर्णिका–(सं. स्त्री.) दोहरी चोंच का एक पक्षी।
पूर्णिमा–(सं.स्त्री.) पूर्णमासी, पूरनमासी।
पूर्णेंदु–(सं.पुं.) पूर्णिमा का चन्द्रमा, पूर्णचन्द्र।
पूर्णोत्संग–(सं.वि.) जिसकी गोद भरी हो।
पूर्णोपमा–(सं. स्त्री.) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारों अंग अर्थात् उपमेय, उपमान, वाचक और साधारण धर्म-पूर्ण रूप से व्यक्त हों।
पूर्त–(सं. पुं.) पालन, खोदने या बनाने का काम; (वि.) पूरित, आच्छादित, ढपा हुआ।
पूर्ति–(सं. स्त्री.) पूरण करने का काम, गुणन, गुणा करने का काम, बावली, कूप, तालाब आदि का उत्सर्ग, पूर्णता, किसी आरंभ किये हुए काम की समाप्ति, किसी काम में जितनी वस्तुएँ आवश्यक हों उनको पूरा करने का काम; **–काम**–(वि.) धन आदि से अपनी कामना पूरी करनेवाला; **–विभाग**–(पुं.) वह सरकारी विभाग जो राष्ट्रीय खाद्य-सामग्रियों की पूर्ति करता है।
पूर्ती–(सं. वि.) पूरा करनेवाला, जन-कल्याण के कार्य करनेवाला।
पूर्भिद्य–(सं. पुं.) संग्राम, युद्ध।
पूर्य–(सं. वि.) पालन करने योग्य, पूरा करने योग्य।
पूर्व–(सं. वि.) प्रथम, आदि, पहिले का, आगे का, बड़ा, प्राचीन, पुराना, पिछला; (पुं.) वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है; (अव्य.) पहले; **–क**–(पुं.) पूर्वज, बाप-दादा; (अव्य.) साथ, सहित, (इस अर्थ में यह संज्ञा के अन्त में जुड़कर प्रयुक्त होता है, यथा–ध्यानपूर्वक); **–कर्म**–(पुं.) पहले किया जानेवाला कार्य; **–कल्प**–(पुं.) पूर्वकाल, प्राचीन समय; **–काय**–(पुं.) शरीर में नाभि के ऊपर का भाग; **–काल**–(पुं.) प्राचीन काल; **–कालिक**–(वि.) पूर्व-काल-संबंधी, जिसकी रीति पूर्वकाल में रही हो, जिसका जन्म पूर्वकाल में हुआ हो; **–कालिक क्रिया**–(स्त्री.) वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले का हो; **–काष्ठा**–(स्त्री.) पूर्व दिशा; **–कृत्**–(पुं.) पूर्व दिशा के अधिपति, सूर्य; **–कृत**–(वि.) पूर्वकाल में किया हुआ; **–गंगा**–(स्त्री.) नर्मदा नदी; **–ग**–(वि.) पूर्व या पहले का; **–ज**–(पुं.) पूर्वपुरुष, पुरखा चन्द्रलोक में रहनेवाले पितर-गण; (वि.) पूर्व-काल में उत्पन्न; **–जन**–(पुं.) पुराने समय के लोग; **–जन्म**–(पुं.) पहिले का जन्म, पिछला जन्म; **–जन्मा**–(पुं.) अग्रज, बड़ा भाई;

–जा–(स्त्री.) बड़ी बहन; **–जाति–**(स्त्री.) पूर्वजन्म, पिछला जन्म; **–ज्ञान–**(पुं.) पहिले का ज्ञान, पूर्व-जन्म का ज्ञान; **–तः–**(अव्य.) पहले से; **–तन–**(वि.) पुराने समय का; **–त्व–**(पुं.) पूर्व का भाव, पुरानापन; **–दक्षिणा–**(स्त्री.) अग्निकोण, पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना; **–दिन–**(पुं.) आज से पहिले का दिन; **–देह–**(पुं.) पूर्व-जन्म का शरीर; **–निरूपण–**(पुं.) भाग्य; **–पक्ष–**(पुं.) कृष्ण-पक्ष, शास्त्रार्थ में संशय मिटाने के लिये जो प्रश्न किया जाता है, फक्किका, अभियोग में वादी का दावा या अधिकार; **–पक्षी–**(वि.) पूर्वपक्ष उपस्थित करनेवाला; (पुं.) वह जो किसी प्रकार का अभियोग उपस्थित करे; **–पक्षीय–**(वि.) पूर्वपक्ष-संबंधी; **–पद–**(पुं.) पूर्ववर्ती स्थान; **–पितामह–**(पुं.) प्रपितामह, परदादा; **–पुरुष–**(पुं.) बाप-दादा, परदादा आदि पुरखे, ब्रह्मा; **–प्रज्ञा–**(स्त्री.) पूर्वज्ञान, पूर्वस्मृति; **–फाल्गुनी–**(स्त्री.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसका दो तारकायुक्त आकार चारपाई की तरह है; **–०भव–**(पुं.) बृहस्पति; **–भाग–**(पुं.) प्रथम भाग, ऊर्ध्व भाग; **–भाद्रपद–**(पुं.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पचीसवाँ नक्षत्र, (इसका आकार घण्टे की तरह का तथा दो नक्षत्रयुक्त है); **–भाषी–**(वि.) पहिले बोलनेवाला; **–भूत–** (वि.) जो पहिले बीत गया हो; **–मीमांसा–**(स्त्री.) जैमिनि ऋषिकृत एक दर्शन-शास्त्र जिसमें कर्मकाण्ड-सम्बन्धी विषयों का वर्णन है; **–रंग–** (पुं.) नाटक आरम्भ करने के पहिले विघ्न-शान्ति अथवा दर्शकों को सावधान करने के लिये जो वंदना या स्तुति गाई जाती है; **–राग–**(पुं.) पूर्वानुराग, प्रथम अनुराग, साहित्य में नायक और नायिका की वह प्रेम-भावना जो दोनों के परस्पर संयोग होने से पहले होती है; **–रात्र–**(पुं.) रात्रि का पूर्व भाग; **–रूप–**(पुं.) पहिले का रूप, किसी वस्तु का वह रंग-ढंग जिसमें वह पहिले रही हो, पूर्वलक्षण, आगमसूचक चिह्न जो किसीके उपस्थित होने से पहिले प्रकट हो, आसार; **–लक्षण–**(पुं.) पौरा, आगमसूचक लक्षण; **–वत्–**(अव्य.) पूर्वतुल्य, पहले की तरह, कारण देखकर किसी कार्य का अनुमान; **–वयस्–**(पुं.) कम उम्र का; **–वर्ती–**(वि.) पहिले का, जो पहिले हो चुका हो; **–वाद–**(पुं.) पहिला अभियोग; **–वादी–**(पुं.) जो न्यायालय में जाकर पहिले अभियोग उपस्थित करे; **–वायु–**(पुं.) पुरवइया हवा; **–वार्षिक–**(वि.) वर्षाकाल के पहिले का; **–विद्–**(वि.) पुरानी बातों को जाननेवाला; **–वृत्त–**(पुं.) प्राचीन घटना, इतिहास; **–वैरी–**(पुं.) पहिले का शत्रु; **–शारद–**(वि.) शरदृतु के पहले का; **–शैल–**(पुं.) उदयाचल; **–सर–**(वि.) अग्रगामी, आगे चलनेवाला।

पूर्वा–(सं. स्त्री.) पूर्व दिशा, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र।

पूर्वाग्नि–(सं. पुं.) आवसथ्य अग्नि।

पूर्वाचल–(सं. पुं.) उदयाचल।

पूर्वानिल–(सं.पुं.) पूरब से बहनवाली वायु।

पूर्वानुराग–(सं. पुं.) अनुराग या प्रेम का आरम्भ, किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होनेवाला प्रेम, साहित्य में पूर्वानुराग तब तक माना जाता है जब तक प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप न हो, (मिलन के उपरान्त उसको प्रेम या प्रीति कहते हैं।)

पूर्वापर–(सं. वि.) अगला और पिछला, क्रमानुसार, पूर्व और पश्चिम का।

पूर्वापर्य–(सं. पुं.) पूर्वापर का भाव।

पूर्वाफाल्गुनी–(सं. स्त्री.) अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ नक्षत्र, (इसका आकार पलंग की तरह का माना जाता है, इसमें दो तारे हैं।)

पूर्वाभाद्रपद–(सं. पुं.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वाभिभाषी–(सं.वि.) पहिले बोलनेवाला।

पूर्वाभिमुख–(सं.वि.) पूरब की ओर मुख किया हुआ।

पूर्वार्जित–(स. वि.) पहिले का उपार्जित या कमाया हुआ।

पूर्वार्ध–(सं.वि.) किसी पुस्तक का आदि का आधा भाग।

पूर्वाशी–(सं.वि.) पहले भोजन करनेवाला।

पूर्वाषाढ़ा–(सं. स्त्री.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवाँ नक्षत्र जिसका आकार सूर्य की तरह का माना जाता है, (इसमें चार तारे हैं। यह नक्षत्र अधोमुख है और इसका अधिष्ठाता देवता वरुण है।)

पूर्वाह्न–(सं.पुं.) दिनमान का प्रथम भाग, प्रातःकाल से दोपहर तक का समय।

पूर्वी–(हिं वि.) पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला, पूरब का; (पुं.) एक प्रकार का चावल जो पूरब में होता है, बिहार प्रान्त में गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत।

पूर्वी घाट–(हिं.पुं.) दक्षिणी भारत के पूर्वी किनारे पर स्थित पर्वतों की श्रेणी।

पूर्वेतर–(सं. वि.) पूर्व से भिन्न, पश्चिमी।

पूर्वेद्युः–(सं. पुं.) प्रातःकाल, सवेरा; (अव्य.) पिछले दिन, पूर्व दिन।

पूर्वोक्त–(सं. वि.) पूर्वकथित, पहले कहा हुआ।

पूर्वोत्तरा–(सं. स्त्री.) पूरब और उत्तर के बीच की दिशा, ईशान-कोण।

पूर्वोत्पन्न–(सं. वि.) पूर्वकाल में उत्पन्न, जो पहले पैदा हुआ हो।

पूलक–(सं. पुं.) घास का पुंज या ढेर, मूँज आदि का बँधा हुआ गट्ठा।

पूला–(हि. पुं.) मूँज आदि का बँधा हुआ गट्ठा।

पूलिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का पूआ।

पूली–(हिं. स्त्री.) छोटा पूला।

पूवा–(हि. पुं.) देखें 'पूआ'।

पूष–(सं.,हि.पुं.) शहतूत का वृक्ष, पौष मास।

पूषक–(सं. पुं.) शहतूत का पेड़।

पूषण–(सं. पुं.) सूर्य पुराण के अनुसार बारह आदित्यों में से एक, पार्थिव आदित्यों में से एक, पार्थिव पदार्थ, मिट्टी की बनी हुई वस्तु।

पूषणा–(सं. स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

पूषा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, दाहिने कान की एक नाड़ी का नाम; (पुं.) देखें 'पूषण', सूर्य; **–सुहृद्–**(पुं.) शिव, महादेव।

पूस–(हिं. पुं.) पौष मास, अगहन के बाद तथा माघ के पहिले का महीना।

पृक्का–(सं. स्त्री.) असवर्ग नामक एक गन्धद्रव्य।

पृक्थ–(सं. पुं.) धन, सम्पत्ति।

पृक्ष–(सं. पुं.) अन्न, अनाज।

पृच्छक–(सं. वि.,पुं.) जिज्ञासु, जानने की इच्छा करनेवाला, प्रश्न करनेवाला, पूछनेवाला।

पृच्छना–(सं.स्त्री.) जिज्ञासा, पूछना।

पृच्छा–(सं. स्त्री.) प्रश्न, सवाल।

पृतना–(स. स्त्री.) सेना, संग्राम, लड़ाई, प्राचीन सेना-विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और

१२१५ पैदल सिपाही रहते थे; **–पति–** (पुं.) सेनापति।
पृत्–(सं. स्त्री.) सेना, युद्ध, संग्राम।
पृथक्–(सं. अव्य.) भिन्न, अलग, जुदा; **–करण–**(पुं.) अलग करने का भाव, अलगाव; **–क्षेत्र–**(पुं.) एक ही पिता परन्तु भिन्न माता से उत्पन्न सन्तान; **–छद–**(पुं.) अखरोट का वृक्ष; **–ता–** (स्त्री.) अलगाव; **–त्व–**(पुं.) अलग होने का भाव; **–पर्णी–**(स्त्री.) पिठवन नामक औषधि।
पृथगात्मता–(सं. स्त्री.) विरक्ति, विराग, अन्तर, भेद।
पृथग्जन–(सं. पुं.) नीच या पापी पुरुष।
पृथग्बीज–(सं. पुं.) भल्लातक, भिलावाँ।
पृथग्भाव–(सं. पुं.) देखें 'पृथक्त्व'।
पृथग्विध–(सं.वि.,अव्य.) नाना रूप का (से)।
पृथदान–(सं. पुं.) पृथ्वी, भूमि।
पृथवी–(सं. स्त्री.) देखें 'पृथिवी'।
पृथा–(सं. स्त्री.) पाण्डु की राजपत्नी कुन्ती का दूसरा नाम; **–ज–**(पुं.) कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर आदि; **–पति–** (पुं.) पाण्डुराज।
पृथिवी–(सं. स्त्री.) अचला, भूमि, धरा, धरणी; **–कंप–**(पु.) भूकम्प; **–गीता–** (स्त्री.) पृथिवी की कथा जिसका सुन्दर वर्णन विष्णु-पुराण में किया गया है; **–पति–**(पुं.) राजा, यम; **–मय–** (वि.) मृत्तिकामय; **–लोक–**भूलोक; **–स्थ–**(वि.) भूमि पर रहनेवाला।
पृथु–(सं.पुं.) त्रेता-युग के सूर्यवंशीय पंचम राजा जो राजा वेणु के पुत्र थे, चतुर्थ मन्वन्तर के एक सप्तर्षि, दानवों का एक भेद, शिव, महादेव, अग्नि, विष्णु, काला जीरा, अहिफेन, अफीम, एक हाथ का मान; (वि.) महत्, बड़ा, विस्तृत, चौड़ा, अधिक चतुर, प्रवीण; **–क–** (पुं.) चिपिटक, चिउड़ा, बालक; **–कीर्ति–**(वि.) जिसकी कीर्ति अधिक हो; **–ग्रीव–**(वि.) जिसकी गरदन मोटी हो; **–चल–**(वि.) वेग से चलनवाला; **–ता–**(स्त्री.) विस्तार, फलाव; **–त्व–**(पुं.) देखें 'पृथुता'; **–दर्शी–**(वि.) बहुदर्शी, चतुर, प्रवीण; **–पाणि–**(वि.) जिसके हाथ बहुत लंबे हों; **–प्रथ–**(वि.) जिसका यश दूर तक फैला हो; **–यशा–** (वि.) बहुत यशस्वी; **–ल–** (वि.) महत्, बड़ा भारी, स्थूल, अधिक; **–वक्त्र–** (वि.) बड़ा मुखवाला; **–शिरा–**(स्त्री.) काली जोंक; **–शेखर–**(पुं.) पर्वत, पहाड़; **–श्रवा–**(वि.) बड़े कानोंवाला; **–स्कंध–**(पुं.) शूकर, सूअर।
पृथुलाक्ष–(सं.वि.) बड़ी-बड़ी आँखोंवाला।
पृथूदर–(सं. पुं.) मेष, मेढ़ा; (वि.) बड़े पेटवाला।
पृथ्वी–(सं. स्त्री.) सौर जगत् का वह ग्रह जिस पर हम सब प्राणी चलते-फिरते हैं, भूमि, धरती, मिट्टी, काला जीरा, पुनर्नवा, बड़ी इलायची, मदार का पौधा, पंचभूतों या तत्त्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गन्ध है, परन्तु गौण रूप से इसमें स्पर्श, शब्द, रूप और रस— ये चारों गुण भी विद्यमान हैं, एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सत्रह अक्षर होते हैं।
पृथ्वीका–(सं.स्त्री.) बड़ी इलायची, काला जीरा।
पृथ्वीकुरबक–(सं. पुं.) सफेद मदार।
पृथ्वीगर्भ–(सं. पुं.) लम्बोदर, गणेश।
पृथ्वीगृह–(सं. पुं.) गह्वर, गुफा।
पृथ्वीज–(सं.वि.) भूमि से उत्पन्न; (पुं.) साँभर नमक।
पृथ्वीतल–(सं. पुं.) संसार, वह धरातल जिस पर हम लोग चलते-फिरते ह।
पृथ्वीधर–(सं. पुं.) पर्वत, पहाड़।
पृथ्वीनाथ, पृथ्वीपति, पृथ्वीपाल–(सं.पुं.) राजा, नरेश।
पृथ्वीपुत्र–(सं. पुं.) मंगल ग्रह।
पृथ्वीश–(सं. पुं.) भूपति, राजा।
पृश्नि–(सं. वि.) जिसका शरीर दुर्बल हो, सफेद रंग का, चितकबरा, सामान्य, साधारण; (स्त्री.) किरण, चितकबरी गाय; (पुं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम, अन्न, जल, वेद, अमृत; **–गर्भ–** (पु.) श्रीकृष्ण; **–पर्णी–**(स्त्री.) पिठवन नाम की लता; **–भद्र–**(पुं.) श्रीकृष्ण; **–श्रृंग–**(पुं.) गणेश।
पृषत्–(सं. पुं.) बिन्दु, बूँद।
पृषदश्व–(सं. पुं.) वायु, हवा।
पृषद्वरा–(सं.स्त्री.) मेनका की कन्या का नाम।
पृषद्वल–(सं. पुं.) वायु का घोड़ा।
पृषोदर–(सं. वि.) जिसका पेट छोटा हो।
पृषोद्यान–(सं. पुं.) छोटा बगीचा।
पृष्ट–(सं.वि.) सींचा हुआ, पूछा हुआ।
पृष्टहायन–(सं. पुं.) गज, हाथी।
पृष्टि–(सं. स्त्री.) जिज्ञासा, पूछने की क्रिया, पिछला भाग।
पृष्टिपर्णी–(सं. स्त्री.) पिठवन लता।
पृष्ठ–(सं. पुं.) शरीर का पीछे का भाग, पीठ, किसी वस्तु के तल का ऊपरी भाग, पीछा, पुस्तक का पत्र या पन्ने के एक ओर का भाग; **–गोप–** (पुं.) सेना के पीछे रहकर उसकी रक्षा करनेवाला सैनिक; **–ग्रंथि–**(पुं.) कुब्ज-रोग, कूबड़; **–चर–**(वि.) पीछे चलनेवाला; **–ज–**(वि.) जिसका जन्म पीछे हुआ हो; **–दृष्टि–**(पुं.) भालू, रीछ; **–पोषक–**(पुं.) सहायता करनेवाला, सहायक; **–फल–**(पुं.) किसी पिण्ड के ऊपरी भाग का क्षेत्र-फल; **–भंग–**(पुं.) युद्ध की वह रीति जिसमें शत्रु की सेना पर पीछे से आक्रमण करके नष्ट कर दिया जाता है; **–भाग–**(पुं.) पिछला भाग, पीठ; **–मांस–** (पुं.) पशु आदि की पीठ पर का मांस; **–मांसाद–**(वि.) पीठ पीछे निन्दा करनेवाला, पीठ का मांस खाने-वाला; **–यान–**(पुं.) घोड़े आदि की सवारी करना; **–वंश–**(पुं.) पीठ पर की हड्डी, रीढ़; **–वाह्य–** (पुं.) वह पशु जिसकी पीठ पर बोझ लादा जाता है; **–शय–**(वि.) पीठ के बल सोनेवाला; **–श्रृंग–**(पुं.) जंगली बकरा; **–श्रृंगी–**(पुं.) भैंसा, भीमसेन, मेढ़ा, नपुंसक, हिजड़ा।
पृष्ठानुग, पृष्ठानुगामी–(सं. वि.) पीछे चलनेवाला।
पृष्ठास्थि–(सं. स्त्री.) देखें 'पृष्ठवंश'।
पृष्ठ्य–(सं. पुं.) बोझ ढोनेवाला घोड़ा।
पृष्णिपर्णी–(सं. स्त्री.) पिठवन लता।
पें–(हिं. पु.) रोने, बाजा फूँकने आदि से निकलनेवाला शब्द।
पेंग–(हिं. स्त्री.) हिंडोले या झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर जाना; (पुं.) एक प्रकार का पक्षी; (मुहा.)**–मारना–**झूले का वेग बढ़ाना।
पेंघट, पेंघा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मटमैले रंग की चिड़िया।
पेंच–(हिं. पुं.) देखें 'पेच'।
पेंचक–(हिं. पुं.) देखें 'पेचक'।
पेंचकश–(हिं. पुं.) देखें 'पेचकश'।
पेंठ–(हिं. स्त्री.) देखें 'पैंठ', पैठ।
पेंड़–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पीली चोंचवाला सारस।
पेंडुकी–(हिं. स्त्री.) पंडुक पक्षी, सोनार की फुंकनी, गुझिया नामक पकवान।
पेंदा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु का निचला

भाग या आधार, तला ।

पेंदी–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु का निचला भाग, गुदा, मूली या गाजर की जड़ ।

पेउश–(हिं. पुं.) देखें 'पेउसी' ।

पेउसी–(हिं. स्त्री.) ब्याई हुई गाय या भैंस का पहिले सात दिनों तक का दूध, एक प्रकार का पकवान ।

पेखक–(हिं. वि.) प्रेक्षक, देखनेवाला ।

पेखना–(हिं. क्रि. स.) देखना ।

पेच–(सं. पुं.) उलूक पक्षी; (फा. पुं.) फरेब, छल, धोखा, चक्कर, लपेट, कुश्ती का दाँव, मशीन का पुरजा, यंत्र, युक्ति, उपाय; –कश–(पुं.) बढ़इयों का एक औजार ।

पेचक–(सं. पुं.) उलूक पक्षी, उल्लू, पर्यंक, पलंग, मेघ, बादल ।

पेचना–(हिं. क्रि. स.) दो वस्तुओं के बीच में तीसरी वस्तु को इस प्रकार जमा देना कि उसका पता न चले ।

पेचनी–(सं. स्त्री.) सीधी लकीर पर काढ़ा हुआ कशीदा ।

पेचिका–(सं. स्त्री.) मादा उल्लू पक्षी ।

पेचिल–(सं. पुं.) गज, हाथी ।

पेचिश–(फा. स्त्री.) मल में आँव गिरने का उदर रोग ।

पेचीदगी–(फा.स्त्री.) पेचीदा होने का भाव ।

पेचीदा–(फा. वि.) पेचवाला, उलझन-वाला, टेढ़ा, जिसका सहज में समाधान न हो सके ।

पेचीला–(हिं. वि.) देखें 'पेचीदा' ।

पेचुली–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का साग ।

पेज–(हिं. स्त्री.) रबड़ी, बसौंधी ।

पेट–(हिं. पु.) शरीर के भीतर का वह भाग जहाँ पहुँचकर भोजन पचता है, उदर, पचौनी, ओझरी, अन्तःकरण, मन, छाती के नीचे से कमर तक का ऊपरी अंग, बन्दूक या तोप का गोला भरने का स्थान, किसी पोली वस्तु का भीतरी स्थान, समाई, गर्भ, चक्की का भीतरी भाग, जीविका; (मुहा.)–काटना–कंजूसी करके कम खाना; –का धंधा–जीविका-निर्वाह का उपाय; –का पानी न पचना–भेद को रोक न सकना; –का हलका–ओछे स्वभाव का, जो गंभीर न हो; –की आग–भूख; –की बात गुप्त बात; –जलाना–अपने को भूखा दिखलाना, दीनता प्रकट करना; –गिरना–गर्भपात होना; –चलना–बारंबार शौच होना; –जलना–बड़ी भूख लगना; –देना–मन की बात कह देना; –पालना–जीविका चलाना; –फूलना–किसी बात को जानने के लिये उत्कण्ठित होना, पेट में वायु का भर जाना; –में दाढ़ी होना–बाल्यावस्था में ही चतुर होना; –में पठना–भेद की बात जानने के लिये घनिष्ठता बढ़ाना; –में होना–गुप्त रूप में कोई वस्तु किसी के पास होना, मन में होना; –हो रहना–गर्भ रहना; –वाली–गर्भवती; –से पाँव निकालना–बुरे मार्ग में प्रवृत्त करना; –से होना–गर्भवती होना ।

पेटक–(सं.पुं.) मंजूषा, पेटारा, समूह, ढेर ।

पेटकैयाँ–(हिं. अव्य.) पेट के बल ।

पेटल–(हिं. वि.) बड़े पेटवाला, तोंदीला ।

पेटा–(हिं. पुं.) सीमा, पूरा विवरण, ब्योरा, वृत्त, घेरा, किसी गहरी वस्तु का मध्य भाग, बड़ा टोकरा, पशुओं की अँतड़ी, नदी के बहने का मार्ग, नदी का पाट ।

पेटाक–(सं. पुं.) पेटक, पिटारा ।

पेटागि–(हिं. स्त्री.) पेट की आग, भूख ।

पेटारा–(हिं. पुं.) देखें 'पिटारा' ।

पेटार्थी, पेटार्थू–(हिं. वि.) पेट भरने के लिये कुछ भी करनेवाला, पेटू, भुक्खड़ ।

पेटिका–(हिं. स्त्री.) छोटी पिटारी ।

पेटी–(हिं. स्त्री.) छोटा संदूक, चपरास, पेट का वह भाग जहाँ त्रिवली पड़ती है, छाती और पेड़ू के बीच का स्थान, कटि-बन्ध, चौड़ा तसमा, नाई का कैंची, छुरा आदि रखने का थैला, बुलबुल की कमर में बाँधने की डोरी ।

पेटू–(हिं.वि.) जो बहुत खाता हो, भुक्खड़ ।

पेठ–(हिं. पु.) देखें 'पैंठ' ।

पेठा–(हिं.पुं.) कूष्माण्ड, सफेद कुम्हड़ा ।

पेड़–(हिं. पुं.) वृक्ष ।

पेड़ना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'पेरना' ।

पेड़ा–(हिं.पुं.) खोवे और चीनी की बनी हुई गोल चिपटी मिठाई, गुँधे हुए आटे की लोई ।

पेड़ी–(हिं. स्त्री.) काण्ड, पेड़ का धड़, शरीर का ऊपरी भाग, पान की पुरानी लता, वह खेत जिसमें पहिले ऊख बोई गई हो पर बाद में वह खेत गेहूँ बोने के लिये जोता जाय ।

पेड़ू–(हिं. पुं.) गर्भाशय, उपस्थ, नाभि और मूत्रेन्द्रिय के बीच का स्थान ।

पेत्व–(सं. पुं.) अमृत, घी, बकरा ।

पेदड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पिद्दी' ।

पेन–(हिं. पुं.) लिसोड़ की जाति का एक वृक्ष ।

पेन्हाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पहनाना', दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन से दूध उतरना ।

पेम–(हिं. पु.) देखें 'प्रेम' ।

पेमचा–(हिं. पु.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

पेय–(सं. पुं.) जल, दूध, पीने की वस्तु; (वि.) पीने योग्य, जो पिया जा सके ।

पेया–(सं. स्त्री.) चावल के माँड़ की बनी हुई एक प्रकार की लपसी ।

पेयूप–(सं. पुं.) ब्याई हुई गाय का सात दिनों तक का दूध, पेउस, अमृत, तुरत का तपाया हुआ घी ।

पेरना–(हिं. क्रि. स.) किसी काम के करने में देर लगाना, रस निकालने के लिये किसी वस्तु को दबाना, कष्ट देना, प्रेरणा करना, चलाना, भेजना, कोल्हू में तेलहन आदि का तेल निकालना ।

पेरली–(हिं.स्त्री.) ताण्डव नृत्य का एक भेद ।

पेरवा–(हिं. पुं.) कोल्हू में तेल पेरने-वाला, तेली ।

पेरा–(हिं.पुं.) दीवार आदि पर पोतने की पीली मिट्टी, पोतनी मिट्टी ।

पेरु–(सं. पुं.) अग्नि, सूय, समुद्र ।

पेरोज–(सं. पुं.) फीरोजा नामक रत्न ।

पेल–(सं. पुं.) पुरुष का अण्डकोष ।

पेलड़–(हिं. पुं.) देखें 'पेल्हड़' ।

पेलना–(हिं. क्रि. स.) धक्का देना, ढकेलना, टालना, बल प्रयोग करना, घुसाना, जोर से भीतर को दबाना, गुदा-मैथुन करना, त्यागना, हटाना, आक्रमण करने के लिये आगे बढ़ाना, ठेलना, देखें 'पेरना' ।

पेलव–(सं. वि.) मृदु, कोमल, लघु, विरल, कृश, दुबला-पतला, सूक्ष्म ।

पेलवाना–(हिं. क्रि. स.) पेलने का काम दूसरे से कराना ।

पेला–(हिं. पुं.) आक्रमण, धावा, झगड़ा, अपराध, पेलने की क्रिया या भाव ।

पेलि–(सं. वि.) गमनशील, जानेवाला ।

पेलिशाला–(सं. स्त्री.) अश्वशाला ।

पेलू–(हिं. पुं.) उपपति, जार, गुदामंजन करनेवाला ।

पेल्हड़–(हिं. पुं.) अण्डकोष

पेवँ–(हिं. पुं.) प्रेम, स्नेह ।

पेवक्कड़–(हिं. पुं.) देखें 'पियक्कड़' ।

पेवड़ी–(हिं. स्त्री.) रामरज, पीले रंग की चिकनी मिट्टी ।

पेवर–(हिं. पुं.) पीला रंग ।

पेवस–(हिं. पु.) ब्याई हुई गाय या भैंस का पहले सात दिनों तक का दूध ।

पेवसी–(हि. स्त्री.) देखें 'पेवस'।
पेश–(फा.अव्य.) आगे, सामने, उपस्थित।
पेशल–(सं. वि.) दक्ष, प्रवीण, चतुर, धूर्त, कोमल; (पुं.) विष्णु।
पेशलता–(सं.स्त्री.) सुकुमारता, सुन्दरता, धूर्तता।
पेशवा–(फा. पुं.) नेता, सरदार, मराठा-शासन में प्रधान मंत्री की उपाधि।
पेशस्कार–(सं. पुं.) रूप बदलनेवाला कीड़ा।
पेशा–(फा. पुं.) धंधा, रोजगार।
पेशाब–(फा. पुं.) मूत्र, मूत, शुक्र, वीर्य; **–खाना**–(पुं.) पेशाब करने का स्थान।
पेशि–(सं. स्त्री.) अंडा, अरहर की दाल।
पेशिका–(सं. स्त्री.) अंडा।
पेशी–(सं. स्त्री.) अंडा, वज्र, उड़द की दाल, फूल की पकी हुई कली, जटामासी, तलवार का म्यान, एक प्रकार का ढोल, गर्भकोष, शरीर के भीतर का मांस का पिंड, पुट्ठा।
पेशीकोष–(सं. पुं.) अण्डकोष।
पेषक–(सं. वि.) पीसनेवाला।
पेषण–(सं. पुं.) चूर्ण करना, पीसना।
पेषणी–(सं. स्त्री.) मसाले आदि पीसने की सिल, खरल।
पेषणीय–(स. वि.) पीसने योग्य।
पेखना–(हि. क्रि. स.) देखें 'पेखना'।
पेस–(हि. अव्य.) देखें 'पेश'।
पेसल–(हि. वि.) देखें 'पेशल'।
पेहँटा–(हि. स्त्री.) कचरी नामक लता का फल जो कुँदरू के आकार का होता है।
पैंकड़ा–(हि.पुं.) पैर का कड़ा, ऊँट की नकेल।
पैंच–(हि. स्त्री.) मोर की पूँछ, धनुष की डोरी।
पैंचना–(हि. क्रि. स.) अनाज फटकना, पछोरना।
पैंचा–(हि. पुं.) पलटा, हेर-फेर।
पैंजना–(हि. पुं.) पैर में पहनने का एक गहना।
पैंजनियाँ, पैंजनी–(हि. स्त्री.) पैर में पहनने का एक गहना जो चलने पर झन-झन शब्द करता है, सग्गड़ या बैल गाड़ी के पहिये की वह गोल लकड़ी जिसके छेद में पहिये का धुरा घुसा रहता है।
पैंठ–(हि. स्त्री.) हाट, दुकान, हाट लगने का दिन।
पैंठोर–(हि. पुं.) दुकान, हाट।
पैंड़–(हि. पुं.) मार्ग, पगडंडी, पग, डग।
पैंड़ा–(हि. पुं.) प्रणाली, रीति, मार्ग, पथ, घुड़साल; (मुहा.) **पैंड़े पड़ना**–तंग करना, पीछे पड़ना।
पैंड़िया–(हि.पुं.) कोल्हू में गन्ना भरनेवाला।
पैंत–(हि. स्त्री.) पण, दाँव।
पैंतालि(ली)स–(हि. वि.) चालीस और पाँच की संख्या का; (पुं.) चालीस और पाँच की संख्या, ४५।
पैंती–(हि. स्त्री.) श्राद्धादि कर्म करते समय अँगुलियों में पहिनने का कुश का बना हुआ छल्ला, पवित्री।
पैंतीस–(हि. वि.) तीस और पाँच की संख्या का; (पुं.) तीस और पाँच की संख्या, ३५।
पैंयाँ–(हि. स्त्री.) पाँव, पैर।
पैंसठ–(हि. वि.) साठ और पाँच की संख्या का; (पुं.) साठ और पाँच की संख्या, ६५।
पै–(हि.पुं.) माँड़ी देने की क्रिया; (स्त्री.) दोष, ऐब, त्रुटि; (अव्य.) ओर, निकट, पास, समीप, परन्तु, पर, अनन्तर, पीछे, पश्चात्, (प्रत्य.) अधिकरणसूचक विभक्ति पर, ऊपर, करणसूचक विभक्ति-द्वारा, से; **जो पै**–(अव्य.) यदि; **–तो पै** (अव्य.) तो फिर।
पैकर–(हि. पुं.) कपास से रूई इकट्ठी करनेवाला।
पैकरमा–(हि. स्त्री.) देखें 'परिक्रमा'।
पैकरी–(हि. स्त्री.) पाँव में पहिनने का एक गहना।
पैका–(हि. पुं.) पैसा।
पैकार–(फा.पुं.) फुटकर माल बेचनेवाला।
पैकारी–(हि. पुं.) देखें 'पैकार'।
पैकी–(हि. पुं.) मेले आदि में घूम-घूमकर तमाखू पिलानेवाला।
पैकेट–(हि. पुं.) पुलिन्दा, छोटी गठरी।
पैखाना–(हि. पुं.) पायखाना, शौचालय।
पैगंबर–(फा. पुं.) ईश्वर का दूत, नबी।
पैगंबरी–(फा. वि.) पैगंबर का।
पग–(हि. पुं.) कदम, डग।
पैगाम–(फा. पुं.) संदेसा, समाचार।
पैगामी–(फा. पुं.) संदेश-वाहक।
पैज–(हि. स्त्री.) प्रतिज्ञा, पण, टेक, किसी के विरोध में किया जानेवाला होड़, प्रतिस्पर्धा; (पुं.) पैतरा।
पैजनी–(हि. स्त्री.) देखें 'पैंजनी'।
पैजा–(हि. पुं.) किवाड़ के छेद में पहिनाया हुआ लोहे का कड़ा।
पैजामा–(हि. पुं.) देखें 'पायजामा'।
पैजावा–(हि. पुं.) ईंट पकाने का भट्ठा।
पैठ–(हि. स्त्री.) प्रवेश, घुसने का काम, पहुँच, गति, आना-जाना।
पैठाना–(हि.क्रि.स.) प्रवेश कराना, घुसाना।
पैठार–(हि. पुं.) प्रवेश, पैठ, प्रवेश-द्वार।
पठारी–(हि. स्त्री.) प्रवेश, पैठ, पहुँच।
पठी–(हि. स्त्री.) काम का बदला।
पड़ी–(हि. स्त्री.) सीढ़ी, पुरवट खींचते समय बैलों के चलने के लिये बना हुआ ढालवाँ मार्ग, पौदर।
पैतरा–(हि. पुं.) मल्ल-युद्ध में अथवा तलवार चलाते समय घूम-फिरकर पैर रखने की मुद्रा, धूल पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।
पैतरेबाजी–(हि. स्त्री.) चालबाजी।
पैतला–(हि. वि.) छिछला, कम गहरा।
पैताना–(हि. पुं.) देखें 'पायँता'।
पैतामह–(सं. वि.) पितामह-सम्बन्धी।
पैतृक–(सं. वि.) पितृसम्बन्धी; **–भूमि**–(स्त्री.) जिस स्थान में बाप-दादे रहते आ रहे हों।
पैत्त–(सं. वि.) पित्तज, पित्त से उत्पन्न, पित्त-सम्बन्धी।
पैत्तल–(स. वि.) पीतल-सम्बन्धी।
पैत्तिक–(सं. वि.) पित्त से उत्पन्न, पित्त-सम्बन्धी।
पैत्र–(सं. वि.) पितृ-सम्बन्धी।
पैथला–(हि. वि.) छिछला, उथला।
पैदर–(हि. पुं.) देखें 'पदल'।
पैदल–(हि. पुं.) पदाति, सिपाही, पाँव-पाँव चलना; (वि.) पाँव-पाँव चलनेवाला; (अव्य.) पाँव-पाँव।
पैदा–(फा. वि.) उत्पन्न।
पैदावार–(हि.पुं.), **पैदावारी**–(हि.स्त्री.) खेत की उपज।
पैन–(हि.पुं.) छोटा नाला, नाली, परनाली।
पैना–(हि. पुं.) हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी, लोहे की नुकीली छड़, अंकुश, धातु गलाने का मसाला; (वि.) तीक्ष्ण, धारदार, चोखा।
पैनाक–(सं. वि.) पिनाक-सम्बन्धी।
पैनाना–(हि.क्रि.स.) छुरी आदि की धार चोखी करना।
पैमक–(हि. स्त्री.) कलाबत्तू की बनी हुई एक प्रकार की सुनहरी गोट।
पैमाल–(हि. वि.) नष्ट।
पैयाँ–(हि. स्त्री.) पैर, पाँव।
पैया–(हि. पुं.) पोला दाना, बिना सत्त का अन्न का दाना, दीन-हीन मनुष्य।
पैर–(हि. पुं.) स्थित होने और चलने का अंग, चरण, पाँव, धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न, खलियान, डंठल सहित अन्न का गाँज जो दँवरी चलाने भर हो; **–उठान**–(पुं.) मल्ल-युद्ध की एक युक्ति;

–गाड़ी–(स्त्री.) वह हलकी गाड़ी जो बैठे-बैठे पैर से चलाने से चलती है, यथा–बाइसिकिल।
पैरना–(हिं. क्रि. अ.) पानी के ऊपर हाथ-पैर चलाते हुए बहना, तैरना।
पैरवी–(फा. स्त्री.) पीछे-पीछे जाना, अनुगमन, मुकदमे की देखरेख।
पैरा–(हिं. पुं.) पड़े हुए चरण, आया हुआ पग, पैर में पहिनने का एक प्रकार का कड़ा, बाट, बटखरे रखने का लकड़ी का खाना, ऊँचाई पर चढ़ने के लिये बल्ले आदि रखकर बना हुआ मार्ग।
पैराई–(हिं. स्त्री.) तैरने की क्रिया, तैरने की कला।
पैराक–(हिं. पुं.) तैरनेवाला, तैराक।
पैराना–(हिं.क्रि.स.)तैरने का काम कराना।
पैराव–(हिं.पुं.) डुबाव, इतना गहरा पानी जो तैरकर ही पार किया जा सकता हो।
पैरी–(हिं. स्त्री.) पैर में पहिनने का एक चौड़ा गहना, दँवरी, अनाज के सूखे डंठलों पर बैल चलाकर दाना अलगाने का कार्य, बाल कतरने का काम।
पैरेखना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'परिखना'।
पैरोकार–(हिं. पुं.) मालिक की आज्ञानुसार काम का प्रबंध करनेवाला।
पैलगी–(हिं. स्त्री.) पालागन, प्रणाम।
पैला–(हिं. पुं.) अन्न नापने की डलिया, दूध-दही ढापने का मिट्टी का पात्र।
पैली–(हिं. स्त्री.) देखें 'पैला'।
पैशल्य–(सं. पुं.) पेशलता, कोमलता।
पैशाच–(सं. वि.) पिशाच-सम्बन्धी; –विवाह–(पुं.) आठ प्रकार के विवाहों में से वह विवाह जो सोई हुई कन्या को हरण करके अथवा मदोन्मत्त कन्या के साथ बलात्कार करके उससे विवाह किया जाता है।
पैशाचिक–(सं. वि.) पिशाच सम्बन्धी, राक्षसी, बीभत्स।
पैशाची–(सं. स्त्री.) प्राकृत भाषा का एक भेद।
पैशुन–(सं. पुं.) पिशुनता, चुगलखोरी।
पैशुनिक–(सं. वि., पुं.) पीठ पीछे निन्दा करनेवाला, चुगलखोर।
पैशुन्य–(सं. पुं.) पिशुनता, चुगली।
पैष्टिक–(सं. पुं.) आटे को सड़ाकर बनी हुई मदिरा।
पैसना–(हिं.क्रि.अ.) प्रवेश करना, घुसना, पैठना।
पैसरा–(हिं. पुं.) व्यापार, प्रयत्न, झंझट, बखेड़ा।
पैसा–(हिं. पुं.) तीन पाई अथवा पाव आने के मूल्य की ताँबे की मुद्रा, धन।
पैसार–(हिं.पुं.) प्रवेश-द्वार, आने-जाने का मार्ग।
पैसिंजर गाड़ी–(हिं. स्त्री.) यात्रियों को ले जानेवाली रेलगाड़ी।
पैसेवाला–(हिं. पुं.) धनी, धनवान्।
पैहरा–(हिं. पुं.) पकार, बनिया।
पैहारी–(हिं. वि.) केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।
पों–(हिं. स्त्री.) अधोवायु निकलने का शब्द, भोंपा फूंकने से निकला हुआ शब्द।
पोंकना–(हिं. क्रि. अ.) बहुत डरना, पतला शौच होना।
पोंका–(हिं. पुं.) बड़ा फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है।
पोंगा–(हिं. पुं.) टीन आदि की नली, चोंगा, बाँस की पोर या नली; (वि.) पोला, खोखला, मूर्ख।
पोंगी–(हिं.स्त्री.) छोटी पोली नली, बाँस या ऊख का दो गाँठों के बीच का स्थान।
पोंछ–(हिं. स्त्री.) देख 'पूँछ'।
पोंछन–(हिं. पुं.) किसी वस्तु का पोंछकर निकाला हुआ अंश।
पोंछना–(हिं. क्रि. स.) किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु को कपड़े आदि से हटाना, रगड़कर स्वच्छ करना, काछना; (पुं.) पोंछने का कपड़ा।
पोंटा–(हिं.पुं.) नाक से निकला हुआ मल।
पोआ–(हिं. पुं.) साँप का छोटा बच्चा।
पोआना–(हिं. क्रि. स.) पोने का काम दूसरे से कराना, आटे की लोई को बेलकर सेंकने के लिये देना।
पोइया–(हिं. स्त्री.) घोड़े का दो-दो पैर फेंककर दौड़ना, घोड़े की सरपट चाल।
पोइस–(हिं.स्त्री.) घोड़े की सरपट चाल; (अव्य.) देखो, हटो, बचो।
पोई–(हिं. स्त्री.) एक लता जिसकी पत्तियों का साग खाया जाता है, अंकुर, गेहूँ आदि का छोटा पौधा, ऊख का कल्ला या अँखुआ।
पोकना–(हिं. पुं.) देखें 'पोंकना'।
पोख–(हिं.पुं.) पालने-पोसन का संबंध, पोस।
पोखनरी–(हिं. स्त्री.) जुलाहे की ढरकी के बीच का गड्ढा।
पोखना–(हिं. क्रि. स.) पालना-पोसना, थलकना।
पोखर–(हिं. पुं.) तालाब, पोखरा।
पोखरा–(हिं. पुं.) खोद कर बनाया हुआ तालाब।
पोखराज–(हिं. पुं.) देखें 'पुखराज'।
पोखरी–(हिं.स्त्री.) छोटा पोखरा या तालाब।
पोगंड–(सं. पुं.) पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक, वह मनुष्य जिसका कोई अंग छोटा-बड़ा या अधिक हो।
पोच–(हिं. वि.) क्षीण, हीन, तुच्छ, नीच, क्षुद्र।
पोचारा–(हिं. पुं.) देखें 'पुचारा'।
पोची–(हिं. स्त्री.) निचाई, हेठी, बुराई।
पोट–(सं. पुं.) स्पर्श, मेल, मिलन; (हिं, स्त्री.) मोटरी, पोटली, बकुचा, ढर, पुस्तक के पन्नों का वह स्थान जहाँ सिलाई होती है।
पोटगल–(सं. पुं.) नरकट, काँस, एक प्रकार का सर्प।
पोटना–(हिं. क्रि. स.) फुसलाना, बातों में फँसाना, समेटना, बटोरना।
पोटरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'पोटली'।
पोटला–(हिं. पुं.) बड़ी गठरी।
पोटली–(हिं.स्त्री.) छोटी गठरी या बकुचा।
पोटा–(सं.स्त्री.) वह स्त्री जिसमें पुरुष के लक्षण हों; (पुं.) पेट की थैली, सामर्थ्य, समाई, चिड़िया का बच्चा, गेंदा, नाक का मल, आँख की पलक, अँगुली का छोर।
पोट्टलिका, पोट्टली–(सं. स्त्री.) पोटरी, छोटी गठरी।
पोडु–(सं. पुं.) खोपड़ी का ऊपर का भाग।
पोढ़ा–(हिं. वि.) दृढ़, पुष्ट, कठोर, कड़ा।
पोढ़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) पुष्ट करना, पक्का करना या होना, पुष्ट होना।
पोत–(सं. पुं.) नाव, जहाज, घर की नीवँ, वस्त्र, दस बरस का हाथी, छोटा पौधा, पशु आदि का छोटा बच्चा; (हिं.स्त्री.) माला या गुरिया का दाना, काँच की गुरिया; (पुं.) प्रवृत्ति, ढंग, अवसर, दाँव, भूमि-कर या लगान।
पोतक–(सं. पुं.) तीन महीने का बच्चा, एक नाग का नाम।
पोतकी–(सं स्त्री.) पोई नाम की लता।
पोतज–(सं. पुं.) घोड़े, हाथी आदि का वह बच्चा जो खेड़ी सहित उत्पन्न हो।
पोतड़ा–(हिं. पुं.) बच्चों के चूतड़ के नीचे रखने का वस्त्र, गँड़तरा।
पोतदार–(हिं. पुं.) कोषाध्यक्ष जिसके पास लगान का रुपया रखा जाता है, कोष में रुपयों को परखनेवाला।
पोतधारी–(स. पुं.) जहाज का अध्यक्ष।
पोतन–(सं. वि.) स्वच्छ, पवित्र, पवित्र करनेवाला।

पोतनहर–(हिं. स्त्री.) वह पात्र जिसमें पोतने के लिये मिट्टी घोलकर रखी हो, घर पोतनेवाली स्त्री, आँत, अँतड़ी।
पोतना–(हिं. क्रि. स.) किसी गीले पदार्थ को दूसरे पदार्थ पर फैलाकर लगाना, चुपड़ना; गोबर, मिट्टी, चूना आदि से किसी स्थान को लीपना; (पुं.) पोतने का कपडा।
पोतनायक–(सं. पुं.) जहाज का अधिकारी, नाव का माँझी।
पोतभंग–(सं. पुं.) जहाज का चट्टान से टक्कर खाकर नष्ट होना।
पोतरक्ष–(सं. पुं.) नाव चलाने का डाँड़ा या लग्गी।
पोतला–(हिं. पुं.) तवे पर घी लगाकर सेंकी हुई चपाती, पराठा।
पोतवाह–(स. पुं.) मल्लाह, माँझी।
पोतांड–(सं. पुं.) घोड़े के अण्डकोष का एक रोग।
पोता–(हिं. पुं.) पौत्र, बेटे का बेटा, बूता, सामर्थ्य, घुली हुई मिट्टी जो भीत आदि पर पोती जाती है, पोतने का कपड़ा, अंडकोष।
पोताच्छादन–(सं. पुं.) तम्बू, डेरा।
पोतारा–(हिं. पुं.) देख 'पुतारा'।
पोतारी–(हिं. स्त्री.) पोतने का कपड़ा।
पोताश्रय–(सं. पुं.) बन्दरगाह।
पोतास–(सं. पुं.) भीमसेनी कपूर।
पोतिका–(सं. स्त्री.) पोई की लता, वस्त्र, कपड़ा।
पोतिया–(हिं. पुं.) सुरती, चूना, सुपारी आदि रखने की छोटी थैली, एक प्रकार का खिलौना।
पोती–(हिं. स्त्री.) पौत्री, पुत्र की बेटी, रेशमी कपड़े पर माँड़ी चढाने की क्रिया, मिट्टी का लेप जो हँड़िये की पेंदी पर किया जाता है।
पोत्र–(सं. पुं.) हल का फाल, वज्र, जहाज, नाव।
पोत्रायुध–(सं. पुं.) शूकर, सूअर।
पोयकी–(सं. स्त्री.) छोटे बच्चों का आँख का एक रोग।
पोथा–(हिं. पुं.) कागजों की गड्डी, बड़े आकार की पोथी।
पोथी–(हिं. स्त्री.) पुस्तिका, किताब।
पोदना–(हिं. पुं.) छोटे डीलडौल का पुरुष, नाटा या ठेंगना आदमी, एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
पोद्दार–(हिं. पुं.) देखें 'पोतदार'।
पोना–(हिं. क्रि. स.) गूथे हुए आटे की लोई को हथेलियों से गढ़कर रोटी बनाना, पिरोना, गूथना, पकाना।
पोपला–(हिं. वि.) सिकुड़ा हुआ, पचका हुआ, बिना दाँत का, जिसके मुख में दाँत न हों, जिसमें पोल हो, खोखला।
पोपलाना–(हिं. क्रि. अ.) पोपला होना।
पोपली–(हिं. स्त्री.) आम की गुठली को घिसकर बनाया हुआ बच्चों का बाजा।
पोय–(हि. स्त्री.) देखें 'पोई'।
पोया–(हिं. पुं.) नरम छोटा पौधा, बच्चा, साँप का छोटा बच्चा।
पोर–(हिं.स्त्री.) अँगुली की गाँठ या जोड़, दो गाँठों के बीच का अँगुली का भाग, रीढ, पीठ; ऊख, बाँस आदि का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो।
पोरा–(हिं. स्त्री.) लकड़ी का मण्डलाकार टुकड़ा, लकड़ी का गोल कुन्दा, कुन्दे की तरह मोटा मनुष्य।
पोरिया–(हिं.स्त्री) छल्ले के आकार का वह गहना जो हाथ या पैर के पोरों पर पहना जाता है।
पोरी–(हि.स्त्री.) एक प्रकार की कड़ी मिट्टी।
पोल–(सं. वि.) प्रभावयुक्त; (पुं.) एक प्रकार का पकवान, नाभि के नीचे का भाग; (हिं. पुं.) अवकाश, शून्य स्थान, सारहीनता, खोखलापन, प्रवेश-द्वार, आँगन; (मुहा.)–खोलना–गुप्त बात अथवा किसी के दोष को प्रकट करना।
पोला–(हिं. वि.) जो भीतर से भरा न हो, पोपला, खोखला, निःसार, तत्त्व-रहित; (पुं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और मृदु होती है।
पोलाद–(हिं. पुं.) पक्का लोहा।
पोलारी–(हिं. स्त्री.) सोनार का छेनी के आकार का एक छोटा आला।
पोलाव–(हिं. वि.) देखें 'पुलाव'।
पोलिंद–(सं.पुं.) नाव में यात्रियों के बैठने की दोनों ओर की पटरियाँ।
पोलिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की पूरी या पूआ।
पोलिया–(हिं. स्त्री.) पैर में पहिनने का एक पोला गहना।
पोली–(सं. स्त्री.) पतली रोटी; (हिं. स्त्री.) जगली कुसुम।
पोलो–(अ. पुं.) हाकी-जैसा घुड़सवार खिलाड़ियों का खेल।
पोश–(फा. पुं.) पहनने की चीज, कपड़ा, ढकनेवाला कपड़ा।
पोशाक–(फा. स्त्री.) पहनावा, वस्त्र।
पोष–(सं.पुं.) पालन-पोषण, वृद्धि, बढ़ती, सन्तोष, तृप्ति।
पोषक–(सं. वि.) पालक, पालनेवाला, बढ़ानेवाला, सहायता देनेवाला।
पोषण–(सं. पुं.) पुष्टि, पालन, बढ़ती, सहायता।
पोषध–(हिं. पुं.) उपवास, व्रत।
पोषधोषित–(सं.वि.) उपवास करनेवाला।
पोषना–(हिं. क्रि. स.) पालना।
पोषयिष्णु–(सं.वि.) पोषक, पालनेवाला।
पोषित–(सं. वि.) पाला हुआ।
पोष्य–(सं.वि.) पोषण-योग्य, पालने योग्य; (पुं.) भृत्य, सेवक, नौकर।
पोष्यपुत्र–(सं.पुं.) पुत्र के समान पाला हुआ लड़का, दत्तक पुत्र, पालट।
पोस–(हि.पुं.) पालनेवाले के प्रति प्रेम-भाव।
पोसन–(हिं. पुं.) रक्षा, पालन।
पोसना–(हिं. क्रि. स.) रक्षा करना, पालना, अपनी रक्षा में रखना।
पोस्ता–(हिं.पुं.) अफीम का पौधा, उसका बीज, खसखस।
पोहना–(हिं. क्रि. स.) पिरोना, गूँथना, घिसना, पीसना, घुसाना, धँसाना, जड़ना, छेदना, पोतना, (वि.) घुसनेवाला।
पोहर–(हिं.पुं.) पशुओं के चरने का स्थान, चरागाह, पशुओं का चारा।
पोहमी–(हि.स्त्री.) देखें 'पुहमी', पृथ्वी।
पोहा–(हिं. पुं.) पशु, चौपाया।
पोहिया–(हिं. पुं.) चरवाहा।
पौंचा–(हि. पुं.) साढ़े पाँच का पहाड़ा।
पौंड़ई–(हि. वि.) पौंड़े के रंग का।
पौंडरीक–(सं.पुं.) एक प्रकार का कुष्ठ, स्थल-कमल।
पौंड़ा(ढ़ा)–(हिं.पुं.) एक प्रकार की बड़ी और मोटी जाति की ऊख जिसका छिलका कड़ा होता है, परन्तु रस बहुत मीठा होता है।
पौंड़ी–(हि. स्त्री.) देखें 'पौरी'।
पौंड्र, पौंड्रक–(सं. पुं.) मोटा गन्ना, पौंढ़ा, भीमसेन के एक शंख का नाम, पुण्ड्र देश का राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था, एक प्राचीन पतित जाति।
पौंढ़ना, पौंरना–(हिं. क्रि. अ.) तैरना।
पौंरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'पौरी'।
पौंरिया–(हिं. पुं.) देखें 'पौरिया'।
पौंश्चल्य–(सं. पुं.) पुरुष और स्त्री का छिपकर व्यभिचार।
पौंसवन–(सं. पुं.) पुंसवन सस्कार।
पौ–(हि. स्त्री.) पौसला, प्याऊ, सूर्योदय,

किरण, पासे की एक चाल या दाँव; (पुं.) पैर, जड़; (मुहा.)–फटना–प्रातःकाल होना; –बारह होना–जीत का दाँव पड़ना, खूब बन आना, लाभ होना।

पौआ–(हिं. पुं.) देखें 'पौवा'।

पौगंड–(सं. पुं.) पांच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।

पौठ–(हिं. स्त्री.) जोत की वह रीति जिसके अनुसार जोतने का अधिकार प्रतिवर्ष बदलता जाता है।

पौढ़ना–(हिं. क्रि. अ.) लेटना, सोना, हिलते हुए झूलना।

पौढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) इधर से उधर हिलाना या झुलाना, लेटाना, सुलाना।

पौण्य–(सं. वि.) पुण्य कर्म करनेवाला।

पौताना–(हि. पुं.) देखें 'पैताना'।

पौत्तलिक–(सं. वि.) पुतली-संबंधी।

पौत्र–(सं. पुं.) पुत्र का पुत्र, पोता।

पौत्रिकेय–(सं. पुं.) लड़की का लड़का, नाती जो अपने नाना की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो।

पौत्री–(सं. स्त्री.) पुत्र की बेटी, पोती।

पौद–(हि.स्त्री.) छोटा पौधा, नया उगा हुआ पेड़, वह छोटा पौधा जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में लगाया जाता है, सन्तान, वंश, बड़े लोगों के चलने के लिये भूमि पर बिछाया हुआ वस्त्र, पाँवड़ा।

पौदर–(हि. स्त्री.) पैर का चिह्न, पगडंडी, वह ढालुआँ मार्ग जिस पर से बैल कुएँ से पुरवट खींचते समय आते-जाते हैं।

पौध–(हि.स्त्री.) छोटा वृक्ष।

पौधन–(हि.स्त्री.) वह पात्र जिसमें खाना रखकर परोसा जाता है।

पौधा–(हि. पुं.) नया जामा हुआ पेड, छोटा पेड़, क्षुप, गुल्म।

पौधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'पौद'।

पौनःपुनिक–(सं.वि.,पुं.) गणित में दशमलव के अंक जो बारंबार आवृत्त होते हैं, बार-बार होनेवाला।

पौन–(हिं. पुं.) देखें 'पवन', वायु, हवा; (वि.) तीन-चौथाई (भाग)।

पौनरुक्त–(सं. पुं.) बारबार कहना।

पौनर्णाव–(सं. वि.) सन्निपात ज्वर का एक भेद।

पौनर्भव–(सं. पु.) वह पुत्र जो उस स्त्री से उत्पन्न हो जो विधवा होने पर अथवा पति के द्वारा त्यागे जाने पर अपनी इच्छा से दूसरे से विवाह कर ले।

पौनर्भवा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका किसी के साथ एक बार विवाह हो चुका हो और दूसरी बार दूसरे के साथ विवाह किया जाय।

पौना–(हिं. पुं.) पौन का पहाड़ा, लोहे की बड़ी करछी या झरना।

पौनार, पौनारि–(हिं. स्त्री.) कमल के फूल की नाल।

पौनी–(हिं. स्त्री.) नाऊ, बारी, धोबी आदि जो विवाहादि उत्सवों पर नेग पाते हैं, छोटा पौना।

पौने–(हिं. वि.) किसी संख्या का तीन-चौथाई।

पौमान–(हिं. पुं.) जलाशय, पोखरा।

पौरंदर–(सं. वि.) इन्द्र-संबंधी; (पुं.) ज्येष्ठा नक्षत्र।

पौर–(सं. पुं.) रोहिष नाम की घास, नखी नामक गन्धद्रव्य; (वि.) नगर-संबंधी, नगर में उत्पन्न।

पौरक–(सं.पुं.) घर के बाहर का बगीचा।

पौरजन–(सं. पुं.) नगर में रहनेवाला।

पौरव–(सं. पुं.) पुरु का वंशज, पुरु देश का निवासी; (वि.) पुरु वंश का।

पौरवी–(सं. स्त्री.) युधिष्ठिर की एक स्त्री का नाम, संगीत में एक मूर्च्छना।

पौरसख्य–(सं.पुं.) वह मैत्री जो एक नगर या ग्राम में रहने से परस्पर होती है।

पौरस्त्री–(सं. स्त्री.) अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री।

पौरा–(हि.पु.) पड़े हुए चरण, आगमन।

पौराण–(सं. वि.) पुराण में लिखा या कहा हुआ, पुराण-सम्बन्धी।

पौराणिक–(सं. पुं.) पुराणवेत्ता, पुराण-पाठी, अठारह मात्राओं का छंद विशेष; (वि.) प्राचीन काल का, पुराण-संबंधी।

पौरि–(हिं. स्त्री.) देख 'पौरी'।

पौरिया–(हि. पु.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।

पौरी–(हिं. स्त्री.) ड्योढ़ी, सीढ़ी, खड़ाऊँ।

पौरुष–(सं. पुं.) पुरुषत्व, पराक्रम, साहस, उद्यम, उद्योग, गहराई या ऊँचाई की एक नाप, पुरसा; (वि.) पुरुष-संबंधी।

पौरुषिक–(सं. वि.) पुरुष-संबंधी।

पौरुषेय–(सं. पुं.) जन-समुदाय, पुरुष का कर्म; (वि.) पुरुष का किया हुआ, मानवीय।

पौरुष्य–(सं. पुं.) पौरुष, साहस।

पौरुहूत–(सं. पुं.) इन्द्र का अस्त्र, वज्र।

पौरू–(हि. पुं.) मिट्टी का एक भेद।

पौरोहित–(सं.पुं.) पुरोहित का धर्म या कार्य।

पौरोहित्य–(सं. पुं.) पुरोहित का कार्य, पुरोहिताई।

पौर्णमास–(सं. पु.) पौर्णमासी के दिन होनेवाला एक यज्ञ।

पौर्णमासिक–(सं. वि.) पूर्णिमा-संबंधी।

पौर्णमासी–(सं. स्त्री.) पूर्णमासी।

पौर्वदहिक–(सं. वि.) पूर्व-जन्म-संबंधी।

पौर्वापर्य–(सं. पु.) अनुक्रम।

पौल–(हिं. स्त्री.) मार्ग, नगर का फाटक।

पौलना–(हिं. क्रि. स.) काटना।

पौलस्ती–(सं. स्त्री.) पुलस्त्य की कन्या, शूर्पणखा।

पौलस्त्य–(सं.पु.) पुलत्स्य का पुत्र या उनके वंश का पुरुष, रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण, चन्द्रमा; (वि.) पुलस्त्य-संबंधी।

पौला–(हिं. पुं.) बिना खूँटी का खड़ाऊँ जिसके छेद में लगी हुई रस्सी में पंजा फँसा रहता है।

पौलि–(हिं.स्त्री.) पोलिका, फुलका, रोटी

पौलिया–(हिं. पु.) देखें 'पौरिया'।

पौली–(हिं. स्त्री.) पौरी, ड्योढ़ी, पैर की एड़ी से लेकर अंगुलियों तक का भाग, धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।

पौलोमी–(सं. स्त्री.) इन्द्राणी, भृगु ऋषि की पत्नी का नाम।

पौवा–(हि. पु.) एक सेर का चौथाई अंश, चतुर्थांश, पाव भर दूध, पानी आदि अँटने भर का पात्र।

पौष–(सं. पु.) बारह महीनों के अन्तर्गत नवाँ महीना, जिस महीने की पुनवाँसी पुष्य नक्षत्र में हो, पूस का महीना।

पौष्कर–(सं. पु.) पुष्करमूल, भसींड़, स्थलपद्म, रेंड़ की जड़।

पौष्करिणी–(सं. स्त्री.) छोटा पोखरा या तालाब।

पौष्कल्य–(सं. पु.) सम्पूर्णता।

पौष्टिक–(सं. वि.) पुष्ट करनेवाला, बलवीर्य को बढ़ानेवाला।

पौष्प–(सं. वि.) पुष्प-संबंधी, फूल का बना हुआ।

पौसरा, पौसला–(हि.पुं.) प्यासों को पानी पिलाने का स्थान, प्याऊ।

पौसार–(हि. स्त्री.) जुलाहे का राछ को नीचा-ऊँचा करने के लिये लगा हुआ डंडा।

पौसेरा–(हि. पुं.) एक पाव की तौल।

पौहारी–(हि. पु.,वि.) वह जो केवल दूध पीकर रहता है, जो अन्न आदि न खाता हो।

प्याऊ–(हि. पुं.) पौसरा।

प्यार–(हि. पुं.) प्रेम, स्नेह दिखलाने की क्रियाएँ, यथा—आलिंगन, चुम्बन आदि, पियार नाम का वृक्ष जिसका बीज चिरौंजी कहलाता है।

प्यारा–(हिं.वि.,पुं.) प्रीतिपात्र, जिसको प्यार किया जाय, जो अच्छा लगे, जो छोड़ा न जाय, प्रिय।
प्याला–(फा. पुं.) पीने का पात्र।
प्यावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'पिलाना'।
प्यास–(हिं. स्त्री.) जल पीने की इच्छा, तृष्णा, तृषा, पिपासा, किसी पदार्थ को प्राप्त करने की प्रवल इच्छा, प्रवल कामना; **खून की प्यास**–(स्त्री.) हत्या करने की हिंसा।
प्यासा–(हिं.वि.) जिसको प्यास लगी हो, जो पानी पीना चाहता हो, पिपासार्त्त।
प्युष–(सं. पुं.) विभाग, दाह।
प्यूनी–(हिं. स्त्री.) सूत कातने की रूई की वत्ती, पूनी।
प्यूस–(हिं. पुं.) देखें 'पेवस'।
प्यौ–(हिं. पुं.) पति, स्वामी।
प्योरी–(हिं. स्त्री.) रूई की मोटी वत्ती, एक प्रकार का पीला रंग।
प्योसर–(हिं. पुं.) हाल की व्याई हुई गाय का दूध।
प्योसार–(हिं. पुं.) स्त्री के माता-पिता का घर, पीहर, मायका।
प्र–(स. उप.) संस्कृत का एक उपसर्ग जो गति, उत्कर्ष, उत्पत्ति, आरंभ, ख्याति, व्यवहार आदि अर्थों के लिये प्रयोग किया जाता है।
प्रकंद–(सं. पुं.) कँपकँपी, थरथराहट।
प्रकंपन–(सं. पुं.) वायु, हवा, एक नरक का नाम, एक राक्षस का नाम, कंप, थरथराहट।
प्रकंपमान-(सं.वि.) काँपता या थरथराता हुआ
प्रकंपित–(सं. वि.) कंपनयुक्त।
प्रकच–(सं. वि.) जिसके वाल खड़े हों।
प्रकट–(सं. वि.) स्पष्ट, व्यक्त, जो प्रत्यक्ष हो, आविर्भूत, उत्पन्न।
प्रकटन–(सं.पुं.) प्रकट होने की क्रिया आदि।
प्रकटित–(सं. वि.) जो प्रकट हुआ हो, प्रकाशित।
प्रकथन–(स. पुं.) स्पष्ट रूप से कथन।
प्रकर–(सं. पुं.) समूह, खिला हुआ फूल, अधिकार, सहारा; (वि.) कौशल से काम करनेवाला।
प्रकरण–(सं. पुं.) प्रस्ताव, वृत्तान्त, प्रसंग का विषय, किसी ग्रन्थ का एक छोटा विभाग, दृश्य-काव्य के अन्तर्गत रूपक के दस भेदों में से एक।
प्रकरणी–(सं. स्त्री.) शृंगार-रस-प्रधान कोई छोटा नाटक जिसको नाटिका भी कहते हैं।
प्रकरी–(सं. स्त्री.) नाटक में प्रयोजन-सिद्धि के पाँच साधनों में से एक, एक प्रकार की प्रासंगिक कथा-वस्तु, एक प्रकार का गान।
प्रकर्तव्य–(सं. वि.) अवश्य करने योग्य।
प्रकर्ता–(सं. वि.) अच्छी तरह से काम करनेवाला।
प्रकर्ष–(सं. पुं.) उत्तमता, अधिकता, वहुतायत।
प्रकर्षक–(सं.पुं.) उत्तमता को बढ़ानेवाला।
प्रकर्षण–(सं. पुं.) आधिक्य, अधिकता।
प्रकला–(स.स्त्री.) एक कला का साठवाँ भाग।
प्रकल्पना–(हिं. स्त्री.) निश्चित करना, स्थिर करना।
प्रकल्पित–(सं.वि.) निश्चित किया हुआ।
प्रकश–(सं. पुं.) पीड़ा देना, कोड़े की मार।
प्रकांड–(सं. पु.) वृक्ष का तना, शाखा; (वि.) बहुत विस्तृत, वहुत फैला हुआ, वहुत बड़ा।
प्रकाम–(सं. वि.) यथेष्ट; (पुं.) कामना, इच्छा।
प्रकार–(स. पुं.) सादृश्य, समानता, भेद, भाँति, तरह; (हिं. पुं.) प्राकार, परकोटा, घेरा।
प्रकारता–(सं.स्त्री.) विषयका भेद, भिन्नता।
प्रकारांतर–(सं. पुं.) अन्य प्रकार, दूसरी तरह का होना।
प्रकाश–(सं.पुं.) वह तत्व जिसके माध्यम से नेत्रों को वस्तुओं के रूप, रंग, आकार आदि का ज्ञान होता है, दीप्ति, आभा, धूप, ज्योति, स्पष्ट रूप से समझ में आना, गोचर होना, विस्तार, विकास, प्रसिद्धि, ख्याति, किसी ग्रन्थ या पुस्तक का विभाग, शिव, महादेव, वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम; (वि.) प्रकाशित, जगमगाता हुआ, प्रत्यक्ष, अति प्रसिद्ध; **–क**–(वि.) प्रकट करनेवाला; (पुं.) सूर्य, शिव, महादेव, पुस्तक आदि को छपवाकर वेचनेवाला; **–कार**– (पुं.) देखें 'प्रकाशक'; **–ता**– (स्त्री.) प्रकाश का भाव या धर्म, प्रत्यक्षता; **–धर्म**– (पुं.) सूर्य; **–धृष्ट**–(पुं.) वह नायक जो कपट रूप से नायिका के साथ धृष्टता का व्यवहार करता है तथा किसी प्रकार का संकोच नहीं करता; **–न**–(पुं.) विष्णु का एक नाम, प्रकाशित करने का काम, किसी ग्रन्थ को छापकर सर्वसाधारण में विक्रय करने का काम; **–मान**– (वि.) प्रकाशयुक्त, चमकीला, प्रसिद्ध, विख्यात; **–वान्**– (वि.) देखें 'प्रकाशमान; **–वियोग**– (पुं.) वह वियोग जो गुप्त न रहे अर्थात् सव को विदित हो जाय; **–संयोग**– (पुं.) वह संयोग जो सव को विदित हो जाय; **–स्तंभ**– (पुं.) जहाजों के मार्ग-प्रदर्शन के लिए वना हुआ स्तंभ।
प्रकाशात्मा–(सं.पुं.) सूर्य, विष्णु; (वि.) सतेज, प्रकाशवाला।
प्रकाशित–(सं. वि.) जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो, चमकता हुआ, जो प्रकाश में आ चुका हो, शोभित, प्रगट, जिसका प्रकाशन हो चुका हो।
प्रकाशिता–(स. स्त्री.) प्रकाशित होने का भाव या धर्म।
प्रकाशी–(सं. वि.) प्रकाशयुक्त, जिसमें प्रकाश हो।
प्रकाश्य–(सं. वि.) प्रकाश के योग्य, प्रकाशित करने योग्य; (अव्य.) प्रकट रूप से, स्पष्ट रूप से।
प्रकास–(हि. पुं.) देखें 'प्रकाश'।
प्रकासना–(हिं. क्रि.स.) प्रकट करना।
प्रकीर्ण–(सं.वि.) छितराया हुआ, फैलाया हुआ, मिलाया हुआ, अनक प्रकारों या भिन्न किस्मों का।
प्रकीर्णक–(सं. पुं.) अध्याय, प्रकरण, विस्तार, वह जिसमें विभिन्न वस्तुएँ मिली हों, फुटकर पदार्थ, घोड़ा।
प्रकीर्णकेशी–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।
प्रकीर्तन–(सं.पुं.) उच्च स्वर से चिल्लाकर कीर्तन करना, घोषणा करना।
प्रकीर्ति–(सं. स्त्री.) प्रशंसा, प्रसिद्धि, घोषणा।
प्रकीर्तित–(सं. वि.) प्रशंसित, घोषित।
प्रकुपित–(सं. वि.) अति क्रुद्ध, जिसको वहुत क्रोध चढ़ गया हो।
प्रकुल–(सं. पुं.) सुन्दर शरीर।
प्रकृत–(सं.वि.) आरव्ध, आरंभ किया हुआ, निर्मित, रचा हुआ, यथार्थ, वास्तविक, सच्चा, विकाररहित; (पुं.) श्लेष अलंकार का एक भेद; **–ता**– (स्त्री.) यथार्थ।
प्रकृति–(सं.स्त्री.) स्वभाव, किसी पदार्थ का गुण जो सर्वदा वना रहता हो, लिंग, योनि, संसार का निर्माण करनेवाली मूल शक्ति, आकाशादि पाँचों तत्त्व, शक्ति, परमात्मा, जन्तु, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते हैं, माया, भगवान् की शक्ति, सत्त्व, रज और तम की साम्यावस्था; **–ज**– (वि.) जो प्रकृति या स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो; **–पुरुष**–(पुं.) प्रधान

राज-मंत्री; –भाव–(पुं.) स्वभाव, व्याकरण में सन्धि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से इनमें से किसी में कोई परिवर्तन नहीं होता; –शास्त्र–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों का विचार किया जाता है; –सिद्ध–(वि.) स्वाभाविक, नसर्गिक, प्राकृत; –स्थ–(वि.) स्वाभाविक, जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो।

प्रकृष्ट–(सं. वि.) मुख्य, प्रधान, आकृष्ट, खींचा हुआ; –ता–(स्त्री.) उत्तमता, श्रेष्ठता।

प्रकोट–(सं. पुं.) परकोटा, परिखा।

प्रकोप–(सं. पुं.) अधिक क्रोध, क्षोभ, चंचलता, वात, पित्त या कफ में से किसी एक के बिगड़ने से उत्पन्न रोग।

प्रकोपन–(सं. पुं.) बन्धन, क्रोध, क्षोभ, आग का सुलगना, चंचलता, वात, पित्त अथवा कफ का प्रकोप जिससे रोग उत्पन्न होता है।

प्रकोपनीय–(सं.वि.) प्रकोपन करने योग्य।

प्रकोपित–(सं. वि.) प्रकोप उत्पन्न किया हुआ।

प्रकोष्ठ–(सं.पुं.) केहुनी के नीचे का भाग, घर के प्रधान द्वार के पास की कोठरी, बड़ा आँगन जिसके चारों ओर कोठरियाँ हों।

प्रक्खर–(सं. पुं.) घोड़े की पाखर, कुत्ता, खच्चर; (वि.) प्रचण्ड, बहुत तेज।

प्रक्रम–(सं.पुं.) क्रम, अवसर, उल्लंघन, आरंभ में किया हुआ उपाय।

प्रक्रमण–(सं.पुं) पार करना, आरंभ करना।

प्रक्रम-भंग–(सं.पुं.) साहित्य का वह दोष जो तब होता है जब किसी प्रकरण के आरंभ का निर्वाह ठीक से नहीं किया जाता।

प्रक्रांत–(सं.वि.) आरम्भ किया हुआ।

प्रक्रिया–(सं. स्त्री.) प्रकरण, नियत विधि, युक्ति।

प्रक्रोश–(सं. पुं.) आक्रोश।

प्रक्लेद–(सं. पुं.) आर्द्रता, नमी, तरी।

प्रक्लेदन–(सं.पुं.) गीला करना, भिगोना।

प्रक्ष–(हिं. वि.) पूछनेवाला।

प्रक्षय–(सं. पुं.) नाश।

प्रक्षयण–(सं.पुं.) विनाशन, नाश करना।

प्रक्षर–(सं. पुं.) घोड़े की पाखर।

प्रक्षरण–(स.पुं.) झरना, चूना।

प्रक्षालन–(सं. पुं.) मार्जन, जल से धोने की क्रिया।

प्रक्षालनीय–(सं. वि.) धोने या स्वच्छ करने योग्य।

प्रक्षालित–(सं.वि.) धोया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।

प्रक्षिप्त–(सं. वि.) फेंका हुआ, ऊपर से बढ़ाया हुआ, निविष्ट किया हुआ।

प्रक्षेप–(सं. पुं.) वह द्रव्य जो औषध आदि में ऊपर से डाला जाय, फेंकना, छितराना, मिलाना, बढ़ाना, किसी व्यापार में असवारियों की लगाई हुई अलग-अलग पूँजी।

प्रक्षेपण–(सं. पुं.) निक्षेपण, फेंकना, ऊपर से मिलाना, निश्चित करना।

प्रक्षेद-लिपि–(सं. स्त्री.) लिखावट या लिखने की एक विशेष रीति।

प्रक्षोभण–(सं. पुं.) व्यग्रता, घबड़ाहट।

प्रक्ष्वेडन–(स. पुं.) लोहे का तीर।

प्रखर–(सं. पुं.) घोड़े की पाखर; (वि.) तीक्ष्ण, प्रचण्ड, धारदार, पैना, चोखा।

प्रखल–(सं. वि.) अति दुष्ट, बड़ा पाजी।

प्रख्या–(सं. स्त्री.) उपमा, समता।

प्रख्यात–(सं. वि.) विख्यात, प्रसिद्ध।

प्रख्याति–(सं. स्त्री.) विख्याति, प्रसिद्धि।

प्रगंड–(सं. पुं.) कंधे से लेकर केहुनी तक का भाग।

प्रगंडी–(सं.स्त्री.) दुर्ग की बाहरी भीत जिस पर से दूर की वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं।

प्रगट–(हिं. वि.) देखें 'प्रकट'।

प्रगटना–(हिं. क्रि. अ.) सम्मुख होना, प्रकट होना, सामने आना।

प्रगतजानु–(सं. वि.) मुड़े हुए पैरोंवाला।

प्रगति–(हिं. स्त्री.) ढंग, चाल, उन्नति; –शील–(वि.) गतियुक्त, उन्नतिशील।

प्रगम–(सं. पुं.) आगे बढ़ना।

प्रगमन–(सं. पुं.) उन्नति, आगे बढ़ना।

प्रगमनीय–(सं. वि.) आगे बढ़ने योग्य।

प्रगर्जन–(सं.पुं.) बहुत जोर का शब्द, गरज।

प्रगल्भ–(सं. वि.) उद्धत, जिसमें नम्रता न हो, निर्लज्ज, धृष्ट, अभिमानी, चतुर, उत्साही, साहसी, ठीक समय पर उत्तर देनेवाला, वक्रवादी, निर्भय, निडर, गम्भीर, समर्थ, मुख्य, प्रधान, पुष्ट; –ता–(स्त्री.) गम्भीरता, प्रधानता, पुष्टता, सामर्थ्य, व्यर्थ की बकवाद, उत्साह, साहस, धृष्टता, निर्लज्जता, अभिमान, चातुरी, निर्भयता; –वचना–(स्त्री.) वह मध्या नायिका जो प्रत्येक बात में अपना दुःख और क्रोध प्रकट करती और उलाहना देती है।

प्रगल्भा–(सं. स्त्री.) प्रौढ़ा नायिका।

प्रगल्भित–(सं. वि.) प्रगल्भयुक्त।

प्रगसना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'प्रगटना'।

प्रगाढ़–(सं. वि.) अतिशय, अधिक, दृढ़, गहरा, गाढ़ा, घना, कठोर, कड़ा।

प्रगाता–(सं. पुं.) अच्छा गानेवाला।

प्रगाद्य–(सं. वि.) कथनीय, कहने योग्य।

प्रगामी–(सं. वि.) जानेवाला।

प्रगाहन–(सं. पुं.) अवगाहन, मज्जन, प्रमार्जन।

प्रगीति–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छंद।

प्रगुणी–(सं. वि.) अति गुणी, गुणवान्।

प्रगुण्य–(सं. वि.) चतुर।

प्रगृहीत–(सं.वि.) अच्छी तरह से पकड़ा हुआ।

प्रगेशय–(सं. वि.) प्रातःशायी, सबेरे के बाद तक सोनेवाला।

प्रग्रह–(सं. पुं.) तराजू में बँधी हुई डोरी, कोड़ा, घोड़े की लगाम, किरण, भुजा, बाहु, बंदी, अनुग्रह, कृपा, किसी ग्रह के साथ रहनेवाला छोटा ग्रह, उपग्रह, ग्रहण का अवलंब या आधार, ग्रहण करने का ढंग, सोना, विष्णु, शासन, आदर, सत्कार, मार्गदर्शक, अगुआ।

प्रग्रहण–(सं. पुं.) ग्रहण करने की क्रिया या भाव।

प्रग्रीव–(सं. पुं.) झरोखा, छोटी खिड़की, अस्तबल।

प्रघट–(हिं. वि.) देखें 'प्रकट'।

प्रघटना–(हिं. क्रि. अ.) प्रकट होना।

प्रघट्टक–(सं. पुं.) सिद्धान्त; (वि.) संयोजक, मिलानेवाला।

प्रघण–(सं. पु.) अलिंद, बरामदा, ताँबे का पात्र।

प्रघस–(सं. पुं.) असुर, राक्षस, रावण की सेना का एक सेनानायक जिसको हनुमान् ने मारा था; (वि.) भक्षक, खानेवाला।

प्रघुर्ण, प्रघूर्ण–(सं. पुं.) अतिथि, पाहुन।

प्रघोर–(सं. वि.) बहुत कठिन।

प्रचंड–(सं. वि.) अधिक तीव्र, प्रबल, कठोर, भयंकर, असह्य, प्रतापी, पुष्ट, उग्र, बलवान्; (पुं.) शिव के एक गण का नाम; –ता–(स्त्री.) तीव्रता; –त्व–(पुं.) प्रचंडता; –मूर्ति–(स्त्री.) उग्र मूर्ति, वरुण वृक्ष।

प्रचंडा–(सं. वि., स्त्री.) अति कोपवती दुर्गा, चण्डी, सफेद दूब।

प्रचय–(सं. पुं.) समूह, झुण्ड, ढेर, वृद्धि, न्याय में एक प्रकार का संयोग।

प्रचर–(सं पुं.) मार्ग, गमन।

प्रचरना–(हिं. क्रि अ.) चलना, फैलना।

प्रचरण–(सं.पुं.) विचरण, चलना-फिरना।

प्रचरित–(सं. वि.) प्रचार किया हुआ।

प्रचल–(सं. वि.) प्रचलित ।
प्रचलन–(सं. पुं.) प्रवतन, चलन ।
प्रचला–(स. स्त्री.) वह निद्रा जो कुछ लोगों को खड़े-खड़े या बैठे-बैठे आ जाती है, गिरगिट ।
प्रचलित–(सं. वि.) चलता हुआ, जिसकी चलन हो, जारी, प्रसिद्ध ।
प्रचाय–(सं. पुं.)राशि, ढेर,संचय,अधिकता ।
प्रचायक–(सं. वि.)चयन करनेवाला ।
प्रचार–(सं. पुं.) प्रचरण, चलन प्रसिद्धि, किसी वस्तु आदि को प्रसिद्ध करने का कार्य।
प्रचारक–(सं.पुं.,वि.) प्रचार करनेवाला, फैलानेवाला।
प्रचारण–(सं. पुं.) प्रचार, चलन, रीति ।
प्रचारना–(हिं. क्रि. स.) प्रचार करना, विस्तार करना, फैलाना, ललकारना ।
प्रचारित–(सं. वि.) विस्तृत, फैलाया हुआ, प्रचार किया हुआ।
प्रचारी–(सं. वि.) प्रचार करनेवाला ।
प्रचालित–(सं. वि.) प्रचार किया हुआ ।
प्रचिकीर्षु–(सं. वि.) जो बदला लेना चाहता हो।
प्रचित–(सं. पुं.) दण्डक वृत्त का एक भेद ।
प्रचुर–(सं. वि.) अनेक, प्रभूत, बहुत; **–ता**– (स्त्री.) बहुलता, अधिकता ।
प्रचेता–(हि. पुं.) मुनिविशेष, वरुण, एक प्रजापति का नाम, राजा पृथु के प्रपौत्र का नाम; (वि.) चतुर, बुद्धिमान् ।
प्रचेय–(सं.वि.)चुनने या संग्रह करने योग्य ।
प्रचोद–(सं. पुं.) प्रेरणा, उत्तेजना ।
प्रचोदक–(सं.पुं.,वि.)उत्तेजित करनेवाला।
प्रचोदन–(सं. पुं.) उत्तेजना, प्रेरणा, आज्ञा, नियम ।
प्रचोदित–(सं. वि.) उत्तेजित किया हुआ।
प्रच्छक–(सं. पुं.) पूछनेवाला ।
प्रच्छद–(सं. पुं.) लपेटन का वस्त्र, चोगा, कंवल ।
प्रच्छना–(स. स्त्री.) जिज्ञासा, पूछना ।
प्रच्छन्न–(सं. वि.) आच्छादित, ढपा हुआ, गोपित, छिपा हुआ ।
प्रच्छदन–(सं. पुं.)'वमन, उलटी ।
प्रच्छादन–(सं. पुं.) ओढ़ने का वस्त्र, चादर, आँख की पलक, छिपाना, ढापना ।
प्रच्छादित–(सं.वि.)आच्छादित,ढपा हुआ।
प्रच्छाय–(सं. पुं.) घनी छाया ।
प्रच्छालना, प्रछालना–(हिं.क्रि.स.) धोना।
प्रच्छिल–(सं. वि.) निर्जल, जलशून्य ।
प्रच्छेदन–(सं. पुं.) काटने की क्रिया ।
प्रच्छेद्य–(सं. वि.) काटने योग्य ।
प्रच्यवन–(सं. पु.) झरना, चूना ।

प्रजंत–(हिं. अव्य.) देखें 'पर्यंत' ।
प्रजन–(सं.पुं.)पशुओं के गर्भ-धारण करने का समय, सन्तान उत्पन्न करने का कार्य।
प्रजनन–(स. पुं.) जन्म, धात्री-कर्म, दाई का काम, सन्तान उत्पन्न करने या कराने का काम।
प्रजनिका–(सं.स्त्री.)जन्म देनेवाली माता।
प्रजनिष्णु–(सं. वि.) जन्म देनेवाला ।
प्रजय–(सं. पुं.) विजय, जीत ।
प्रजरना–(हिं.क्रि.अ.)अच्छी तरह से जलना।
प्रजल्प, प्रजल्पन–(सं. पुं.) व्यर्थ या इधर-उधर की बातचीत ।
प्रजल्पित–(सं.वि.)व्यक्त,प्रकट, कहा हुआ।
प्रजल्पिता–(स. स्त्री.) बकवादी स्त्री ।
प्रजव–(सं. पुं.) तीव्र गति ।
प्रजा–(स स्त्री.) सन्तति, सन्तान, प्रजनन, वह जनसमूह जो किसी राजा के अधीन या एक राज्य के अन्तगत रहता हो, राज्य के निवासी ।
प्रजाकाम–(सं.वि.)पुत्र की इच्छा रखने-वाला ।
प्रजाकार– (सं. पुं.) प्रजापति, ब्रह्मा ।
प्रजागर–(सं. पुं.) रात भर का जागरण, नीद न आना, विष्णु, प्राण; (वि.) रक्षा करनेवाला ।
प्रजागरण–(सं. पुं.) नींद न आना ।
प्रजागरा–(सं स्त्री.)एक अप्सरा का नाम।
प्रजाघ्न–(सं.वि.)प्रजाका नाश करनेवाला।
प्रजातंतु–(सं. पुं.) सन्तान, वंश, कुल ।
प्रजातंत्र–(सं.पुं.)वह शासन-पद्धति जिसमें कोई राजा नहीं होता, परन्तु जनसमूह समय-समय पर अपना शासक चुन लेते है, जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा शासन-व्यवस्था ।
प्रजाता–(सं. स्त्री.) प्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसको बालक उत्पन्न हुआ हो ।
प्रजादान–(सं. पुं.) सन्तान उत्पन्न करने का साधन ।
प्रजाध्यक्ष–(सं. पुं.) प्रजापति, सूर्य ।
प्रजानाथ–(सं. पुं.) लोकनाथ, राजा, ब्रह्मा, मनु ।
प्रजापति–(सं. पुं.) सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, महीपाल, राजा, इन्द्र, जामाता, सूय, अग्नि, विश्वकर्मा, यज्ञ, घर का मालिक, तितली, एक तारा का नाम, साठ संवत्सरों में से पाँचवाँ संवत्सर, आठ प्रकार के विवाहों में से एक, पिता,बाप।
प्रजापाल–(सं. पुं.) प्रजा का पालन करनेवाला ।
प्रजायिनी–(सं. स्त्री.) माता।

प्रजारना–(हिं. क्रि. स.) अच्छी तरह से जलाना ।
प्रजावती–(सं. स्त्री.) बड़े भाई की स्त्री, भौजाई, गर्भवती स्त्री ।
प्रजासत्ता–(सं. स्त्री.) देखें 'प्रजातंत्र'।
प्रजाहित–(सं. पुं.) जल, पानी; (वि.) प्रजा की भलाई करनेवाला ।
प्रजिन–(सं. पुं.) वायु, हवा ।
प्रजीवन–(सं. पुं.) जीविका ।
प्रजुरना–(हिं. क्रि. अ.) प्रकाशित होना, जगमगाना ।
प्रजुलित–(सं. वि.) देखें 'प्रज्वलित'।
प्रजुष्ट–(सं. वि.) प्रसक्त, लगा हुआ ।
प्रजेश्वर–(सं. पुं.) राजा, नृप ।
प्रजोग–(हि. पुं.) देखें 'प्रयोग' ।
प्रज्झटिका–(सं. स्त्री.) प्राकृत छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती है ।
प्रज्ञ–(सं. पु.) विद्वान्, पण्डित, जानकार ।
प्रज्ञता–(सं. स्त्री.) विद्वत्ता, पाण्डित्य ।
प्रज्ञप्ति–(सं.स्त्री.)संकेत, ज्ञान, सूचना ।
प्रज्ञा–(सं. स्त्री.) ज्ञान, बुद्धि, सरस्वती ।
प्रज्ञाचक्षु–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र; (वि.) जिसके पास प्रज्ञारूपी चक्षु हो, अन्धा ।
प्रज्ञाढ्य–(सं. वि.) बुद्धिमान्, विद्वान् ।
प्रज्ञान–(सं. पुं.) बुद्धि, ज्ञान, चिह्न ।
प्रज्ञापारमिता–(सं. स्त्री.)बौद्ध दर्शनानुसार दान, शील आदि गुणों में से एक ।
प्रज्ञाप्त–(सं. वि.) सूचित ।
प्रज्ञामय, प्रज्ञा-शील–(सं. वि.) विद्वान्, बुद्धिमान् ।
प्रज्वलन–(सं. पुं.) अच्छी तरह से जलने की क्रिया ।
प्रज्वलित–(सं. वि.) दहकता या धधकता हुआ, अति स्वच्छ ।
प्रज्वलिता–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं ।
प्रज्वालना–(हि.क्रि.स.) जलाना, दहकाना।
प्रण–(हिं. पुं.) कोई काम करने के लिये किया हुआ अटल निश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणख–(सं. पुं.) नख का अगला भाग ।
प्रणत–(सं. वि.) प्रणाम करता हुआ, वक्र, झुका हुआ, नम्र, विनीत; (पुं.) प्रणाम करनेवाला, दास, सेवक, भक्त, उपासक; **–पाल**–(पुं.) दीनों का रक्षक, दासों या भक्तों का पालन करनेवाला ।
प्रणति–(सं. स्त्री.) विनय, नम्रता, प्रणाम, दण्डवत् ।
प्रणम–(हिं. पुं.) देखें 'प्रणाम' ।
प्रणमन–(सं. पुं.) दण्डवत् या प्रणाम

करना, झुकना।
प्रणम्य–(सं. वि.) प्रणाम करने योग्य, वन्दनीय।
प्रणय–(सं. पुं.) प्रीतियुक्त प्रार्थना, प्रेम, निर्वाण, मोक्ष, विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, प्रार्थना, स्त्री का सन्तान उत्पन्न करना।
प्रणयन–(सं. पुं.) रचना, बनाना, करना, होम के समय अग्नि का एक संस्कार।
प्रणयिनी–(सं. स्त्री.) प्रेमिका, प्रियतमा, स्त्री, पत्नी।
प्रणयी–(सं.पुं.) प्रेम करनेवाला, पति, स्वामी।
प्रणव–(सं. पुं.) ओंकार, परमेश्वर, ओंकार मन्त्र जो अ, उ और म् की सन्धि से बना है, (इसमें अकार शब्द से विष्णु, उकार से महेश और मकार से ब्रह्मा का बोध होता है।)
प्रणवना–(हिं. क्रि. स.) प्रणाम या नमस्कार करना, श्रद्धा-भक्तिपूर्वक किसी के सामने झुकना।
प्रणस–(सं. वि.) बड़ी नाकवाला।
प्रणाद–(सं. पुं.) अति तीव्र ध्वनि।
प्रणाम–(सं. पुं.) दण्डवत्, नमस्कार।
प्रणामी–(सं. वि.) प्रणाम करनेवाला।
प्रणायक–(सं. पुं.) सेनानायक, सरदार।
प्रणाल–(सं. पुं.) जल निकलने का मार्ग।
प्रणालिका–(सं. स्त्री.) परनाली, बन्दूक की नली।
प्रणाली–(सं. स्त्री.) पानी निकलने का मार्ग, नाली, परिपाटी, श्रेणी, रीति, पद्धति, चाल, ढंग, जल के दो बड़े भागों को मिलानेवाला संकीर्ण जल-मार्ग।
प्रणाश–(सं. पुं.) मृत्यु, नाश।
प्रणाशन–(सं. पुं.) ध्वंस, नाश।
प्रणाशी–(सं. वि.) नाश करनेवाला।
प्रणिधान–(सं. पुं.) ध्यान, मन की एकाग्रता, समाधि, भक्ति, प्रयत्न, अधिक उपासना, अर्पण, भावी जन्म के संबंध में की जानेवाली प्रार्थना।
प्रणिधि–(सं. पुं.) प्रार्थना, विनती, पूजा।
प्रणिनाद–(सं. पुं.) वज्र के समान गरजना
प्रणिपतन–(सं. पुं.) प्रणाम, दण्डवत्।
प्रणिपात–(हिं. पुं.) प्रणाम।
प्रणिहित–(सं. वि.) रखा हुआ, मिलाया हुआ।
प्रणीत–(सं. वि.) बनाया हुआ, निर्मित, फेंका हुआ, सुधारा हुआ, प्रवेश किया हुआ, भेजा हुआ; (पुं.) मन्त्र से संस्कार किया हुआ जल, अग्नि।
प्रणीता–(सं. स्त्री.) मन्त्रोच्चारसहित छानकर रखा हुआ जल, वह पात्र जिसमें ऐसा जल रखा जाता है।
प्रणुत–(सं. वि.) स्तुति किया हुआ, प्रशंसा किया हुआ।
प्रणेजन–(सं.पुं.) धोना स्वच्छ करना।
प्रणेता–(सं. पुं.) रचयिता, बनानवाला।
प्रणोदित–(सं. वि.) प्ररित, नियोजित।
प्रतच्छ–(हिं. वि.) देखें 'प्रत्यक्ष'।
प्रतत–(सं. वि.) विस्तृत, लंबा-चौड़ा।
प्रतति–(सं. स्त्री.) विस्तार, फैलाव।
प्रतन–(सं. वि.) पुरातन, पुराना।
प्रतनु–(सं. वि.) बहुत छोटा, बहुत महीन, क्षीण।
प्रतपन–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
प्रतप्त–(सं. वि.) तापित, तपा हुआ।
प्रतमक–(सं.पुं.) एक प्रकार का श्वास-रोग।
प्रतर–(सं. पुं.) पार करना।
प्रतर्क–(सं. पुं.) संशय, सन्देह, वादविवाद।
प्रतर्दन–(सं. पुं.) ताड़ना; (पुं.) काशी के एक प्राचीन राजा दिवोदास का पुत्र, एक ऋषि का नाम, विष्णु; (वि.) ताड़नेवाला।
प्रतल–(सं. पुं.) उन्मुक्त हथेली, पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रतान–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, एक प्रकार का वायुरोग जिसमें वारंवार मूर्च्छा आती है, बेल, लता, रेशा; (वि.) विस्तृत, लंबा-चौड़ा, रेशेदार।
प्रताप–(सं. पुं.) पौरुष, वीरता, बल, पराक्रम, तेज, ताप, गरमी, ऐसा प्रभाव जिसके कारण उपद्रवी या विरोधी शान्त रहें, मदार का पौधा।
प्रतापन–(सं.पुं.) पीड़न, कष्ट पहुँचाना, विष्णु, एक नरक का नाम; (वि.) कष्ट देनेवाला।
प्रतापवान्–(हिं. वि.) प्रतापी।
प्रतापस–(सं. पुं.) उत्तम तपस्वी, सफेद मदार।
प्रतापी–(हिं. वि.) प्रतापवाला, दुःखदायी।
प्रतारक–(सं. पुं., वि.) वंचक, ठग, धूर्त।
प्रतारण–(सं. पुं.) वंचन, धूर्तता, ठगी।
प्रतारणा–(सं. स्त्री.) प्रतारण।
प्रतारणीय–(सं. वि.) ठगने योग्य।
प्रतारित–(सं.वि.) वंचित, जो ठगा गया हो।
प्रतिंचा–(हिं. स्त्री.) प्रत्यंचा, धनुष की डोरी, ज्या, चिल्ला।
प्रति–(सं. उप.) एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में–प्रतिनिधि, प्रतिकल, विपरीत, प्रत्येक, दुबारा, ऊपर, समीप, लक्षण, विरोध, अल्पमात्रा, निश्चय, अंश, निन्दा, स्वभाव, व्याप्ति आदि अर्थों का बोध करने के लिये जोड़ा जाता है; (अव्य.) सामने, ओर, संबंध में, विषय में; (स्त्री.) एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं में से एक वस्तु।
प्रतिकंठ–(सं. अव्य.) कण्ठ के समीप।
प्रतिकर्तव्य–(सं.वि.) बदला चुकाने योग्य।
प्रतिकर्म–(सं. पुं.) किसी दूसरे के द्वारा प्रेरित कर्म, वेश, भेस, बदला, शरीर का सँवारना।
प्रतिकांक्षी–(सं. वि.) आकांक्षी।
प्रतिकामिनी–(सं. स्त्री.) सपत्नी, सौत।
प्रतिकाय–(सं.पुं.) प्रतिमा, प्रतिरूप, चित्र।
प्रतिकार–(सं.पुं.) बदला, किसी की चाल का उचित उपाय।
प्रतिकारक, प्रतिकारी–(सं. वि.) बदला चुकानेवाला।
प्रतिकाश–(सं.वि.) तुल्य, सदृश, समान।
प्रतिकुंचित–(सं. वि.) वक्र, टेढ़ा किया हुआ।
प्रतिकूप–(सं. पुं.) परिखा, खाई।
प्रतिकूल–(सं. वि.) जो अनुकूल न हो, उलटा, विपरीत, विरुद्ध; (पुं.) प्रतिरोध; –ता–(स्त्री.) प्रतिकूल आचरण; –वचन–(पुं.) विरुद्ध वाक्य, खंडन।
प्रतिकृत–(सं. वि.) जिसका बदला लिया या दिया चुका हो।
प्रतिकृति–(सं. स्त्री.) प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, चित्र, प्रतिकार, बदला, प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रतिकृत्य–(सं.वि.) प्रतिकार करने योग्य।
प्रतिक्रम–(सं. पुं.) प्रतिकूल या उलटा क्रम।
प्रतिक्रिया–(सं. स्त्री.) प्रतिकार, बदला, संस्कार, सजावट, शमनया निवारण का उपाय, किसी क्रिया की परिणामी क्रिया।
प्रतिक्रुष्ट–(सं. वि.) दरिद्र, नीरस।
प्रतिक्षण–(सं.अव्य.) वारंवार, फिर-फिर।
प्रतिक्षिप्त–(सं. वि.) तिरस्कार किया हुआ, रोका हुआ, बुलाया हुआ, भेजा हुआ, फेंका हुआ।
प्रतिक्षेप–(सं. पुं.) फेंकना, रोकना, तिरस्कार।
प्रतिख्याति–(सं.स्त्री.) विख्याति, प्रसिद्धि।
प्रतिगत–(सं. वि.) जो लौट आया हो।
प्रतिगिरि–(सं. पुं.) छोटा पहाड़।
प्रतिगृह–(सं. अव्य.) घर-घर में।
प्रतिगृहीत–(सं. वि.) ग्रहण किया हुआ, लिया हुआ।
प्रतिगृहीता–(सं. स्त्री.) धर्मपत्नी, वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो।
प्रतिगृह्य–(सं. वि.) ग्रहण करने योग्य।
प्रतिगेह–(सं. अव्य.) घर-घर में।
प्रतिग्या–(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रतिज्ञा'।

प्रतिग्रह–(सं. पुं.) ग्रहण, स्वीकार, सेना का पिछला भाग, ब्राह्मण का विधिपूर्वक दिये हुए दान को लेना, प्रतिकूल ग्रह, विरोध करना, पाणिग्रहण, अभ्यर्थना, स्वागत, अधिकार में लाना, पकड़ना, किसी के अभियोग चलाने पर उस पर वदले में अभियोग चलाना, ग्रहण ।
प्रतिग्रहण–(सं. पुं.) विधिपूर्वक दिया हुआ दान लेना, प्रतिग्रह करना ।
प्रतिग्रही, प्रतिग्रहीता–(हि. वि., पुं.) प्रतिग्रह या दान लेनेवाला पति ।
प्रतिग्राह–(सं.पुं.) प्रतिग्रह, ग्रहण करना ।
प्रतिग्राहक, प्रतिग्राही–(सं पुं., वि.) देखें 'प्रतिग्रही' ।
प्रतिग्राह्य–(सं. वि.) ग्रहण करने योग्य ।
प्रतिघ–(सं. पुं.) क्रोध, मूर्च्छा, प्रतिफल; (वि.) रुकावट डालनेवाला ।
प्रतिघात–(सं. पुं.) प्रतिवन्ध, वाधा, निराशा, वह आघात जो आघात लगने या करने पर प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हो, टक्कर, मारण, मारना ।
प्रतिघातक–(सं.वि.) प्रतिघात करनेवाला ।
प्रतिघातन–(सं. पुं.) हत्या, बाधा, रुकावट ।
प्रतिघाती–(सं.वि.) प्रतिघात करनेवाला, विरोध करनेवाला; (पुं.) शत्रु, वरी ।
प्रतिचिंतन–(सं. पुं.) पुनर्विचार, फिर से सोचना ।
प्रतिच्छंद–(सं.पुं.) प्रतिकृति, अनुरोध ।
प्रतिच्छा–(हि. स्त्री.) देखें 'प्रतीक्षा' ।
प्रतिच्छाया–(सं.स्त्री.) प्रतिमूर्ति, सादृश्य, चित्र, प्रतिविम्व, परछाईं ।
प्रतिच्छेद–(सं. पुं.) प्रतिबन्ध, रुकावट ।
प्रतिछाँई–(हि.स्त्री.) देखें 'प्रतिच्छाया' ।
प्रतिछाया–(हि.स्त्री.) प्रतिविंव, परछाइ ।
प्रतिछाँही–(हि. स्त्री.) देखें 'प्रतिछाया' ।
प्रतिजंघा–(सं.स्त्री.) जाँघ का अगला भाग ।
प्रतिजल्प–(सं. पुं.) सम्मति देना ।
प्रतिजागर–(सं. पुं.) वड़ी सावधानी से पहरा देना ।
प्रतिजिह्वा–(सं.स्त्री.) गले के भीतर की घाँटी, कौआ ।
प्रतिजीवन–(सं. पुं.) फिर से जी जाना ।
प्रतिज्ञांतर–(सं. पुं.) तर्क में निग्रह-स्थान का एक भेद ।
प्रतिज्ञा–(सं. स्त्री.) कोई काम करने के लिये दृढ़ निश्चय, न्याय के पाँच अवयवों में से पहला अवयव, शपथ, सौगन्ध, अभियोग ।
प्रतिज्ञात–(सं. वि.) अंगीकृत, स्वीकार किया हुआ जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो ।
प्रतिज्ञा-पत्र–(सं. पुं.) वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो ।
प्रतिज्ञा-विरोध–(सं. पुं.) न्याय में वह स्थिति जव प्रतिज्ञा और हेतु-दोनों में विरोध होता है ।
प्रतिज्ञा-हानि–(सं. स्त्री.) न्याय में निग्रह का एक भेद ।
प्रतिज्ञेय–(सं. वि.) प्रतिज्ञा करने योग्य ।
प्रतिताल–(सं. पुं.) संगीत में ताल का एक भेद ।
प्रतितूणी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का वात-रोग ।
प्रतिदत्त–(सं.वि.) लौटाया हुआ, वदले में दिया हुआ ।
प्रतिदान–(सं. पुं.) विनिमय, वदला, ली हुई या रखी हुई वस्तु को लौटाना ।
प्रतिदारण–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई ।
प्रतिदिन–(सं. पु., अव्य.) प्रत्यह, हर रोज ।
प्रतिदिवन्–(सं. पुं., अव्य.) प्रतिदिन, सूर्य ।
प्रतिदिवस–(सं. अव्य.) देखें 'प्रतिदिन' ।
प्रतिदेय–(सं. पुं.) मोल ली हुई वस्तु को फेर देना ।
प्रतिद्वंद्व–(सं. पुं.) वरावरी के योद्धाओं की लड़ाई ।
प्रतिद्वंद्वी–(सं. पुं.) शत्रु, वरावरी का लड़नेवाला ।
प्रतिधावन–(सं. पुं.) पीछे से आक्रमण ।
प्रतिध्वनि–(सं. पुं.) प्रतिशब्द, वह शब्द जो अपनी उत्पत्ति के उपरांत कुछ क्षणों तक गूँजता रहता है, दूसरे के भावों या विचारों का दोहराया जाना ।
प्रतिध्वनित–(सं. वि.) गूँजता हुआ ।
प्रतिनंदन–(हि. पुं.) आशीर्वादपूर्वक अभिनन्दन करना ।
प्रतिनव–(सं. वि.) नूतन, नया ।
प्रतिना–(हि. स्त्री.) देखें 'पूतना' ।
प्रतिनाड़ी–(सं.स्त्री.) उपनाड़ी, छोटी नाड़ी ।
प्रतिनाद–(सं. पुं.) प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ।
प्रतिनायक–(सं. पुं.) नाटकों, महाकाव्यों आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र ।
प्रतिनाह–(सं. पुं.) श्वास वन्द होने का एक रोग ।
प्रतिनिधि–(सं. पुं.) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त या निर्वाचित सदस्य ।
प्रतिनिधित्व–(सं.पुं.) प्रतिनिधि होने का कार्य या भाव ।
प्रतिनियम–(सं. पुं.) व्यवस्था, प्रत्येक के लिये सामान्य नियम ।
प्रतिनिर्जित–(सं.वि.) पराजित, हराया हुआ ।
प्रतिनिर्देश–(सं. पुं.) पुनः उल्लेख या निर्देश ।
प्रतिनिर्यातन–(सं. पुं.) अपकार के वदले में किया हुआ अपकार ।
प्रतिनिर्वर्तित–(सं.वि.) प्रत्यागत, लौटायाहुआ
प्रतिप–(सं. पुं.) राजा शन्तनु के पिता का नाम ।
प्रतिपक्ष–(सं.पुं.) प्रतिवादी, शत्रु, विरुद्ध पक्ष; –**ता**–(स्त्री.) विपक्षता, विरोध ।
प्रतिपक्षी–(सं.पुं.) विपक्षी, विरोधी, शत्रु ।
प्रतिपच्छ–(हि. पुं.) देखें 'प्रतिपक्ष' ।
प्रतिपच्छी–(हि. पुं.) देखें 'प्रतिपक्षी' ।
प्रतिपत्–(हि. स्त्री.) देखें 'प्रतिपद्' ।
प्रतिपत्ति–(सं. स्त्री.) प्राप्ति, ज्ञान, अनुमान, निरूपण, प्रतिपादन, निश्चय, दृढ़-विचार, परिणाम, आदर, सत्कार, गौरव, स्वीकृति, प्रतिष्ठा, चित्त में स्थिर होना, कार्य में परिणत होना; –**कर्म**–(पुं.) श्राद्ध आदि में सब से अन्त में किया जानेवाला कर्म ।
प्रतिपद–(सं. अव्य.) पग-पग पर, स्थान-स्थान पर ।
प्रतिपदा–(सं.स्त्री.) किसी पक्ष की पहली तिथि, परिवा ।
प्रतिपद्–(सं. स्त्री.) श्रेणी, पंक्ति, मार्ग, आरंभ, बुद्धि, पक्ष की पहली तिथि ।
प्रतिपन्न–(सं. वि.) जाना हुआ, स्वीकार किया हुआ, परिपूर्ण, निश्चित, शरणागत, प्रतिष्ठित, प्राप्त, जो मिला हो, अभियुक्त, गृहीत, प्रमाणित ।
प्रतिपात्र–(सं.अव्य.) प्रत्येक मनुष्य पर ।
प्रतिपादक–(सं. पुं., वि.) निर्वाह करनेवाला, प्रतिपादन करनेवाला ।
प्रतिपादन–(सं. पुं.) दान, उत्पत्ति, पुरस्कार, प्रमाण, प्रतिपत्ति, अच्छी तरह समझाना, निरूपण ।
प्रतिपादनीय–(सं.वि.) प्रतिपादन के योग्य ।
प्रतिपादित–(सं. वि.) दिया हुआ, स्थिर या निश्चित किया हुआ, शोधा या सुधारा हुआ, निरूपित ।
प्रतिपाद्य–(सं. वि.) निरूपण करने योग्य, देने योग्य, प्रतिपादनीय ।
प्रतिपाप–(सं. पुं.) किसी पापी के प्रति किया जानेवाला कठोर व्यवहार ।
प्रतिपार–(हि. पुं.) देखें 'प्रतिपाल' ।
प्रतिपाल, प्रतिपालक–(सं. वि.) रक्षक, पोषक; (पुं.) राजा, पालन-पोषण करनेवाला ।
प्रतिपालन–(सं. पुं.) पालन-पोषण करने की क्रिया या भाव, निर्वाह, रक्षा ।

प्रतिपालना–(हिं. क्रि. स.) रक्षा करना, पालन-पोषण करना।
प्रतिपालनीय–(सं. वि.) प्रतिपालन, विरोध करने योग्य।
प्रतिपालित–(सं. वि.) प्रतिपालन किया हुआ
प्रतिपुरुष–(सं. अव्य.) प्रत्येक पुरुष पर; (पुं.) प्रतिनिधि, वह पुतला जिसको प्राचीन काल में चोर लोग प्रवेश करने के पहले घर में फेंकते थे।
प्रतिपुस्तक–(सं. पुं.) किसी ग्रन्थ या पुस्तक की प्रतिलिपि।
प्रतिपूजन–(सं. पुं.) दूसरे को प्रणाम आदि करते हुए देखकर तदनुसार स्वयं प्रणाम करना, अभिवादन।
प्रतिपोषक–(सं. पुं.) समर्थक।
प्रतिप्रहार–(सं. पुं.) मार पर मार, प्रहार के बदले प्रहार।
प्रतिप्राकार–(सं.पुं.) गढ़ के बाहर की भीत।
प्रतिप्रिय–(सं. पुं.) किसी उपकार के बदले में किया हुआ उपकार।
प्रतिप्लवन–(सं. पुं.) पीछे की ओर कूदना।
प्रतिफल–(सं. पुं.) प्रतिविम्ब, छाया, प्रत्युपकार, परिणाम, बदला।
प्रतिफलित–(सं.वि.) प्रतिविम्बित, प्रतिकृत।
प्रतिबंध–(सं. पुं.) बाधा, विघ्न, रुकावट, बंधन, अवरोध।
प्रतिबंधक–(सं.पुं.,वि.) बाधा डालनेवाला, रोकनेवाला।
प्रतिबंधकता–(सं. स्त्री.) विघ्न, रुकावट, अड़चन।
प्रतिबंधु–(सं. पुं.) जो बन्धु के समान हो।
प्रतिबद्ध–(सं. वि.) जिसमें किसी प्रकार का प्रतिबन्ध या रुकावट हो।
प्रतिबल–(सं. वि.) समान शक्तिवाला।
प्रतिबला–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का पौधा।
प्रतिबाधक–(सं.पुं.,वि.) बाधा डालनेवाला, कष्ट पहुँचानेवाला।
प्रतिबाहु–(सं.पुं.) बाँह का अगला भाग।
प्रतिबिंब–(सं.पुं.) मूर्ति, परछाइ, दर्पण, चित्र।
प्रतिबिंबक–(सं. वि.) परछाई के समान साथ-साथ चलनेवाला।
प्रतिबिंबना–(हिं.क्रि.अ.) प्रतिबिंबित होना।
प्रतिबिंब-वाद–(सं. पुं.) वेदान्त का वह सिद्धान्त जिनके अनुसार जीव ईश्वर का प्रतिबिम्ब माना जाता है।
प्रतिबिंबित–(सं. वि.) जिसकी परछाई पड़ती हो, जो परछाइ पड़ने के कारण दिखाई पड़ता हो।
प्रतिबीज–(सं. वि.) (बीज) जिसकी उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो गई हो।
प्रतिबुद्ध–(सं. वि.) जागता हुआ, ज्ञात, जो जाना गया हो, जिसकी उन्नति हुई हो।
प्रतिबुद्धि–(सं. स्त्री.) विपरीत बुद्धि, उलटी समझ।
प्रतिबोध–(सं. पुं.) जागरण, ज्ञान।
प्रतिबोधक–(सं. पुं.) शिक्षक, प्रतिबोध करनेवाला, ज्ञान उत्पन्न करनेवाला, जगानेवाला।
प्रतिबोधन–(सं. पुं.) ज्ञान उत्पन्न करना, जागरण।
प्रतिभट–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी, बराबरी का योद्धा; **–ता**– (स्त्री.) शत्रुता, वैर।
प्रतिभा–(सं. स्त्री.) बुद्धि, दीप्ति, चमक, समानता, असाधारण बुद्धिमत्ता।
प्रतिभाग–(सं. पुं.) प्रत्येक भाग।
प्रतिभात–(हिं. वि.) चमकता हुआ।
प्रतिभानु–(सं. पुं.) सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
प्रतिभामुख–(सं.वि.) प्रतिभाशाली, प्रगल्भ।
प्रतिभावत्–(सं.वि.) प्रतिभाशाली, चमकदार
प्रतिभावान्–(हिं. वि.) प्रतिभाशाली।
प्रतिभाशाली–(सं.वि.) जिसमें प्रतिभा हो।
प्रतिभाषा–(सं. स्त्री.) प्रत्युत्तर, वादी का कथन।
प्रतिभास–(सं. पुं.) प्रकाश, चमक, आकृति, भ्रम।
प्रतिभासंपन्न–(सं. वि.) प्रतिभाशाली।
प्रतिभाहानि–(सं. पुं.) बुद्धिनाश।
प्रतिभू–(सं.पुं.) जमानत करनेवाला, जामिन।
प्रतिभेद–(सं. पुं.) अन्तर, भेद, विभाग।
प्रतिभेदन–(सं.पुं.) विभाग करना, खोलना।
प्रतिभोग–(सं. पुं.) उपभोग।
प्रतिमंडक–(सं. पुं.) एक राग का नाम।
प्रतिमंडल–(सं.पुं.) सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का मण्डल।
प्रतिमंत्रण–(सं. पुं.) उत्तर देना।
प्रतिम–(सं. वि.) समान, सदृश।
प्रतिमल्ल–(सं. पुं.) जोड़ का योद्धा।
प्रतिमा–(सं. स्त्री.) अनुकृति, किसी वास्तविक या कल्पित आकृति के अनुरूप बनाई हुई मूर्ति या चित्र, प्रतिविम्ब, छाया; धातु, पत्थर, मिट्टी आदि की बनाई हुई किसी देवता की मूर्ति, बाट, बटखरा, वह अलंकार जिसमें किसी मनुष्य, पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन किया जाता है।
प्रतिमान–(सं. पुं.) प्रतिविम्ब, परछाई, हाथी के निकले हुए दाँतों के बीच का स्थान, समानता, बराबरी, हाथी का ललाट, दृष्टान्त, उदाहरण, प्रतिनिधि।
प्रतिमाया–(सं. स्त्री.) माया का प्रतिरूप।
प्रतिमाला–(सं. स्त्री.) अन्त्याक्षरी पढ़ना।
प्रतिमास–(सं. अव्य.) हर महीने में।
प्रतिमुक्त–(सं.पुं.) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ, फेंका हुआ।
प्रतिमुख–(सं. पुं.) नाटक की पाँच अंग-सन्धियों में से एक।
प्रतिमुद्रा–(सं. स्त्री.) नामांकित मुद्रा की छाप।
प्रतिमुहूर्त–(सं. अव्य.) निरन्तर।
प्रतिमूर्ति–(सं. स्त्री.) देवतादि की मूर्ति।
प्रतिमोक्षण–(सं. पुं.) मोक्ष की प्राप्ति।
प्रतिमोचन–(सं.पुं.) बन्धन से मुक्त करना।
प्रतियत्न–(सं. पुं.) लालच, रचना, संस्कार।
प्रतियान–(सं. पुं.) लौटना, वापस आना।
प्रतियुद्ध–(सं. पुं.) बराबरी की लड़ाई।
प्रतियोग–(सं. पुं.) शत्रुता, विरुद्ध तत्त्वों का संयोग, फिर से किया जानेवाला उद्योग, किसी कारण के परिणाम को नष्ट करनेवाली युक्ति।
प्रतियोगिता–(सं. स्त्री.) प्रतिद्वन्द्विता, विरोध, शत्रुता, होड़।
प्रतियोगी–(हि. वि.) विरोधी, वैरी, सहायक, साथी, बराबरवाला।
प्रतियोद्धा–(हि.पुं.) शत्रु, वैरी, लड़नेवाला।
प्रतिरक्षण–(सं. पुं.) रक्षा।
प्रतिरथ–(सं. पुं.) बराबरी का लड़नेवाला।
प्रतिराज–(सं. पुं.) विपक्षी राजा।
प्रतिरात्र–(सं. अव्य.) प्रत्येक रात को।
प्रतिरुद्ध–(सं.वि.) अवरुद्ध, रुका हुआ।
प्रतिरूप–(सं. पुं.) प्रतिमा, मूर्ति, चित्र; (वि.) अनुरूप, समान।
प्रतिरूपक–(सं. पुं.) प्रतिविम्ब।
प्रतिरोद्धा–(हिं. वि.) विरोधी, बाधा डालनेवाला।
प्रतिरोध–(सं. पुं.) विरोध, तिरस्कार, प्रतिविम्ब।
प्रतिरोधक–(सं. वि.,पुं.) रोकने या बाधा डालनेवाला।
प्रतिरोधन–(सं. पुं.) प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव।
प्रतिरोधित–(सं.वि.) निवारित, रोका हुआ
प्रतिरोधी–(सं. वि., पुं.) प्रतिरोधक।
प्रतिलंभ–(सं. पुं.) लाभ, प्राप्ति।
प्रतिलक्षण–(सं.पुं.) चिह्न।
प्रतिलभ्य–(सं. वि.) प्राप्त करने योग्य।
प्रतिलाभ–(सं.पुं.) लाभ, पुनः प्राप्त करना।
प्रतिलिपि–(सं. स्त्री.) किसी लेख का अनुकरण, नकल।
प्रतिलोम–(सं. वि.) विपरीत प्रतिकूल,

उलटा, जो सीधा न गया हो, जो नीचे से ऊपर गया हो; –ज–(पुं.) नीच वर्ण के पुरुष तथा उच्च वर्ण की स्त्री से उत्पन्न सन्तान; –विवाह–(पु.) वह विवाह जिसमें वर नीच वर्ण का तथा कन्या उच्च वर्ण की हो।

प्रतिवक्तव्य–(सं. वि.) उत्तर देने योग्य।

प्रतिवचन–(सं.पुं.) उत्तर, विरुद्ध वाक्य।

प्रतिवत्सर–(सं. अव्य.) हर साल।

प्रतिवर्तन–(स.पुं.) लौट आना।

प्रतिवसथ–(सं.पुं.) ग्राम, गाँव।

प्रतिवस्तु–(सं.स्त्री.) तुल्य या सदृश पदार्थ।

प्रतिवस्तूपमा–(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्मों का वर्णन पृथक्-पृथक् वाक्यों में किया जाता है।

प्रतिवहन–(सं. पुं.) विरुद्ध दिशा में जाना।

प्रतिवाक्य–(सं.पुं.) प्रतिध्वनि, प्रत्युत्तर।

प्रतिवाणि–(सं. स्त्री.) प्रतिकूल वाक्य, प्रतिध्वनि।

प्रतिवात–(सं. पुं.) वह दिशा जिस ओर से वायु बहती हो।

प्रतिवाद–(सं. पुं.) किसी के वाक्य या सिद्धान्त को खण्डन अथवा उसका विरोध करने के लिये कहा हुआ वाक्य, विवाद, विरोध, खण्डन, उत्तर।

प्रतिवादक–(सं.पुं.) प्रतिवाद करनेवाला।

प्रतिवादिता–(सं. स्त्री.) प्रतिवादी होने का भाव।

प्रतिवादी–(सं.वि.,पुं.) प्रतिवाद या खण्डन करनवाला, वह जो किसी बात में तर्क करे, वादी का उत्तर देनेवाला।

प्रतिवारण–(सं. पुं.) निवारण, रोकना, मना करना, मस्त हाथी।

प्रतिवार्य–(सं. वि.) निवारण करने योग्य।

प्रतिवास–(सं. पुं.) सुगन्ध, पड़ोस।

प्रतिवासिता–(सं.स्त्री.) पड़ोस का निवास।

प्रतिवासी–(सं. वि.,पुं.) पड़ोस में रहनेवाला, पड़ोसी।

प्रतिविधान–(हिं.पुं.) प्रतिकार।

प्रतिविधि–(सं. पुं.) प्रतिकार।

प्रतिविधेय–(सं.वि.) प्रतिकार करने योग्य।

प्रतिविभाग–(सं. पुं.) उप-विभाग।

प्रतिविरक्ति–(सं.स्त्री.) वैराग्य, विराग।

प्रतिविरुद्ध–(सं. वि.) विरुद्ध आचरण करनेवाला।

प्रतिविशिष्ट–(सं. वि.) उत्कृष्ट।

प्रतिविष–(स.पुं.) विष का प्रभाव नष्ट करनेवाली दवा।

प्रतिविषा–(सं.स्त्री.) अतिविषा, अतीस।

प्रतिवीक्षणीय–(सं. वि.) देखने योग्य।

प्रतिवीर–(सं. पुं.) बराबरी का योद्धा।

प्रतिवेश–(सं.पुं.) पड़ोसी का घर, पड़ोस।

प्रतिवेशी–(सं. वि.) प्रतिवासी, पड़ोस में रहनेवाला।

प्रतिवेश्म–(सं. पुं.) पड़ोसी का घर।

प्रतिवेश्य–(सं. पुं.) पड़ोस में रहनेवाला।

प्रतिशंका–(सं. स्त्री.) बराबर बनी रहनेवाली शंका।

प्रतिशब्द–(सं. पुं.) प्रतिध्वनि, गूँज।

प्रतिशम–(सं. पुं.) नाश, मुक्ति।

प्रतिशयन–(सं. पुं.) धरना देना।

प्रतिशयित–(सं.वि.,पुं.) धरना देनेवाला।

प्रतिशाप–(सं. पुं.) बदले में शाप देना।

प्रतिशिष्य–(सं.पुं.) चेले (शिष्य) का चेला।

प्रतिशिष्ट–(सं.वि.) भजा हुआ, लौटा हुआ।

प्रतिशीवन–(सं. पुं.) ठहरने का स्थान।

प्रतिशोध–(हिं. पुं.) बदला चुकाने के लिये किया जानेवाला काम, प्रतिकार।

प्रतिश्याय–(सं. पुं.) जुकाम का रोग।

प्रतिश्रम–(सं. पुं.) परिश्रम।

प्रतिश्रय–(सं. पुं.) यज्ञशाला, सभा-स्थान, निवास।

प्रतिश्रव–(सं. पुं.) अंगीकार, प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रुत–(सं. वि.) स्वीकार किया हुआ, प्रतिज्ञात।

प्रतिश्रुति–(सं. स्त्री.) अंगीकार, प्रतिध्वनि, गूँज, प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रोता–(सं.पुं.) अनुमति या स्वीकृति देनेवाला।

प्रतिषिद्ध–(सं. वि.) निषेध किया हुआ।

प्रतिषेध–(सं. पुं.) खण्डन, निषेध, वह अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध समानता का इस प्रकार वर्णन किया जाता है जिससे इसका कोई विशेष अर्थ निकले।

प्रतिषेधक–(सं. वि.) मना करनेवाला, रोकनेवाला।

प्रतिषेधन–(सं. पुं.) प्रतिषेध, निषेध।

प्रतिषेधनीय–(सं. वि.) मना करने योग्य।

प्रतिषेधोपमा–(सं. स्त्री.) उपमा अलंकार का वह भेद जहाँ उपमान और उपमेय की समानता प्रतिषेध द्वारा अलंकारिक रूप से वर्णन की जाती है।

प्रतिष्टंभ–(सं. पुं.) प्रतिबन्ध, रुकावट।

प्रतिष्ठा–(सं. स्त्री.) मान, मर्यादा, गौरव, आदर, सत्कार, व्रत का उद्यापन, देवता की प्रतिमा का स्थापन, स्थान, आश्रय, चार वर्णों का एक वृत्त, स्थिति, ठहराव, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति एक प्रकार का छन्द।

प्रतिष्ठान–(सं. पुं.) पुरूरवा की राजधानी, प्रतिष्ठित करने की क्रिया, उपाधि, पदवी, प्रसिद्धि, देवमूर्ति की स्थापना, स्थापित करने की क्रिया, वह कृत्य जो व्रतादि के समाप्त होने पर किया जाता है; –पुर–(पुं.) चन्द्रवंश के पहले राजा पुरूरवा की राजधानी।

प्रतिष्ठापन–(सं. पुं.) किसी देवमूर्ति की स्थापना, पदासीन करना।

प्रतिष्ठापत्र–(सं. पुं.) सम्मानपत्र, वह पत्र जो किसी की प्रतिष्ठा करने के लिये दिया जाता है, मान-पत्र।

प्रतिष्ठावान्–(हिं. वि.) प्रतिष्ठावाला।

प्रतिष्ठित–(सं.वि.) प्रतिष्ठा युक्त, आदरणीय, प्रशंसित, विख्यात, जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो; (पुं.) विष्णु।

प्रतिसंक्रम–(सं. पुं.) संचार, प्रतिच्छाया।

प्रतिसंख्या–(सं.स्त्री.) सांख्य के अनुसार ज्ञान का एक भेद, चेतना।

प्रतिसंचर–(सं. पुं.) प्रलय-काल।

प्रतिसंधान–(सं. पुं.) अनुसंधान, स्तुति।

प्रतिसंधानिक–(सं. पुं.) मागध, स्तुति-पाठक, खोजनेवाला।

प्रतिसंधि–(सं. पुं.) अनुसन्धान, पुनर्जन्म।

प्रतिसंवत्सर–(सं. अव्य.) हर साल, प्रतिवर्ष।

प्रतिसंहृत–(सं. वि.) संकुचित, सिकुड़ा हुआ।

प्रतिसदृश–(सं.वि.) सब को समान भाव से देखनेवाला।

प्रतिसम–(सं. वि.) जो देखने में समान न हो।

प्रतिसर–(सं. पुं.) जादू का मन्त्र, एक प्रकार का हाथ में पहनने का गहना, प्रातःकाल, सेना का पिछला भाग, भृत्य, नौकर, प्रभात, माला।

प्रतिसर्ग–(सं.पुं.) मनु आदि की सृष्टि के बाद दक्ष आदि की सृष्टि।

प्रतिसव्य–(सं. वि.) विपरीत, प्रतिकूल।

प्रतिसामंत–(सं. पुं.) विपक्ष, शत्रु।

प्रतिसारण–(सं. पुं.) दूरीकरण, अलग करना।

प्रतिसारणीय–(सं.वि.) प्रतिसारण करने के योग्य।

प्रतिसारित–(सं. वि.) अलग किया हुआ, बदला हुआ, शोधा हुआ।

प्रतिस्त्री–(सं. स्त्री.) परायी या दूसरे की स्त्री।

प्रतिस्थान–(सं. अव्य.) प्रत्येक स्थान में।

प्रतिस्पर्धा–(सं. स्त्री.) किसी काम में

दूसरे से बढ़ने की इच्छा या उद्योग, चढ़ा-उपरी, विवाद, झगड़ा।

प्रतिस्पर्धी–(सं.पुं.,वि.) विद्रोही, उद्दण्ड, बराबरी करनेवाला।

प्रतिस्राव–(सं. पुं.) नाक में से पीप निकलने का एक रोग।

प्रतिहंतव्य–(हिं. वि.) रोकने योग्य।

प्रतिहंता–(सं. पुं.) बाधक, रोकनेवाला।

प्रतिहत–(सं. वि.) हटाया हुआ, मना किया हुआ, चोट खाया हुआ, उसकाया हुआ, रुका हुआ, बँधा हुआ, आशाहीन।

प्रतिहति–(सं. स्त्री.) क्रोध, हटाने की चेष्टा, प्रतिघात, अवरोध, निराशा।

प्रतिहरण–(सं. पुं.) विनाश, निवारण।

प्रतिहस्त–(सं. पुं.) प्रतिनिधि।

प्रतिहार–(सं. पुं.) द्वारपाल, दरवान, चोबदार, द्वार, ड्योढ़ी, ऐन्द्रजालिक, बाजीगर, प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो सर्वदा राजा के पास रहता और उनको समाचार आदि सुनाया करता था; –क–(पु.) एन्द्रजालिक।

प्रतिहारी–(सं. पुं.) द्वारपाल, दरवान।

प्रतिहार्य–(सं.वि.) परिहार्य, छोड़ने योग्य।

प्रतिहास–(सं. पुं.) हँसी करनेवाले के साथ हँसी करना, सफेद कनेर का वृक्ष।

प्रतिहिंसा–(सं. स्त्री.) बदला लेना, बदला चुकाने के लिये हिंसा करना।

प्रतीक–(सं. पुं.) अवयव, अंग, चिह्न, परवल, प्रतिरूप, प्रतिमा, उपासना का एक भेद, मुख, आकृति, किसी वाक्य या पद्य के आदि तथा अन्त के कुछ अक्षर या शब्द लिखना जिससे पूरे वाक्य या पद्य का पता लगता है।

प्रतीकार–(सं. पुं.) अपकार का बदला चुकाने के लिये किया हुआ अनिष्ट।

प्रती(ति)काश–(सं.पुं.) सादृश्य, उपमा।

प्रतीकोपासना–(सं. स्त्री.) व्यापक ब्रह्म की भावना करके किसी विशेष पदार्थ का पूजन करना, प्रतिमा-पूजन।

प्रतीक्षक–(सं.पुं.,वि.) प्रतीक्षा करनेवाला, आसरा देखनेवाला, पूजा करनेवाला।

प्रतीक्षण–(सं. पुं.) आसरा देखना, कृपा-दृष्टि।

प्रतीक्षणीय–(सं. वि.) प्रतीक्षा करने योग्य।

प्रतीक्षा–(सं.स्त्री.) प्रतीक्षण, आसरा, प्रतिपालन, पालन-पोषण।

प्रतीघात–(सं. पुं.) रुकावट, बाधा, टक्कर, निराशा।

प्रतीची–(सं. स्त्री.) पश्चिम दिशा।

प्रतीचीन–(सं. वि.) पश्चिम दिशा का, पछाँह का, पराङ्मुख, जिसने मुँह फेर लिया हो।

प्रतीच्छक–(सं.पुं.,वि.) गाहक, लेनेवाला।

प्रतीच्य–(सं. वि.) पश्चिम दिशा का।

प्रतीत–(सं. वि.) प्रसिद्ध, प्रसन्न, विदित, जाना हुआ, विश्वस्त।

प्रतीति–(सं. स्त्री.) विश्वास, दृढ़ निश्चय, प्रसिद्धि, आदर, आनन्द, ज्ञान।

प्रतीनाह–(सं. पुं.) कान का एक रोग, पताका।

प्रतीप–(स. वि.) प्रतिकूल, उलटा; (पुं.) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को उपमान के समान न कहकर इसके विपरीत उपमान को उपमेय के समान वर्णन करते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार दिखलाया जाता है।

प्रतीपग–(सं. वि.) उलटा आचरण करनेवाला।

प्रतीपगति–(सं. स्त्री.) प्रतिकूल गति।

प्रतीपगमन–(सं. पुं.) प्रतिकूल गमन।

प्रतीपतरण–(सं. पुं.) जल के प्रवाह के विपरीत नाव चलाना।

प्रतीपदर्शिनी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो देखते ही अपना मुँह फर ले।

प्रतीपवचन–(सं. पुं.) प्रतिकूल वाक्य, खण्डन।

प्रतीपोक्ति–(सं. स्त्री.) प्रतीप-वचन।

प्रतीयमान–(सं.वि.) जो ध्वनि या व्यंजना द्वारा प्रकट हो, जान पड़ता हुआ।

प्रतीर–(सं. पुं.) तट, किनारा।

प्रतीवत–(सं. वि.) गोलाकार, वर्तुल।

प्रतीवाप–(सं. पुं.) दैवी उपद्रव।

प्रतीवेश–(सं. पुं.) प्रतिवेश, पड़ोस।

प्रतीवेशी–(सं. पुं., वि.) पड़ोस में रहनेवाला, पड़ोसी।

प्रतीहार–(स. पुं.) द्वार, देखें 'प्रतिहार'।

प्रतीहारी–(सं. पुं.) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।

प्रतुंडुक–(सं. पुं.) जीवक नाम की जड़ी।

प्रतुद–(सं. पुं.) ऐसे पक्षी जो चोंच से तोड़कर अपना भक्ष्य खाते हैं।

प्रतुष्टि–(सं. स्त्री.) अधिक सन्तोष।

प्रतूलिका–(सं. स्त्री.) गद्दा।

प्रतोद–(सं. पुं.) पैना, चाबुक।

प्रतोली–(सं. स्त्री.) सड़क, गली, गढ़ का वह गुप्त मार्ग जो जमीन के नीचे से हो।

प्रतोषना–(हिं. क्रि. स.) सन्तुष्ट करना।

प्रत्न–(सं. वि.) पुरातन, प्राचीन, पुराना; –तत्त्व–(पुं.) वह विद्या जिसमें प्राचीन बातों का विवरण हो, पुरातत्त्व।

प्रत्यंचा–(हिं. स्त्री.) धनुष की डोरी।

प्रत्यंश–(सं. पुं.) प्रत्येक अंश या विभाग।

प्रत्यक्–(हिं.अव्य.) पीछे, पश्चिम की ओर।

प्रत्यक्पुष्पी–(सं.स्त्री.) अपामार्ग, चिचड़ा।

प्रत्यक्ष–(सं. वि.) इन्द्रिय-ग्राह्य, जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके, इंद्रियगोचर, जो आँखों के सामने हो; (पुं.) चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो सब से श्रेष्ठ माना जाता है; (अव्य.) आँखों के सामने; –ता–(स्त्री.) प्रत्यक्ष होने का भाव; –दर्शन–(पुं.) साक्षात् या आँखों के सामने देखना, वह साक्षी जिसने अपनी आँखों से किसी घटना को देखा हो; –दर्शी–(वि.,पुं.) (वह साक्षी) जिसने अपनी आँखों से घटना देखी हो; –दृष्ट–(वि.) जो प्रत्यक्ष रूप से देखा गया हो; –प्रमाण–(पुं.) स्पष्ट प्रमाण; –वादी–(पुं.,वि.) (वह) जो प्रत्यक्ष से भिन्न अस्तित्व को नहीं मानता।

प्रत्यक्षीकरण–(सं. पुं.) इन्द्रियों द्वारा ज्ञात कराने की क्रिया।

प्रत्यक्षीभूत–(सं. वि.) जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हुआ हो।

प्रत्यगात्मन्–(सं.पुं.) ब्रह्मचैतन्य, परमेश्वर।

प्रत्यगाशापति–(सं. पुं.) पश्चिम दिशा के अधिपति वरुण।

प्रत्यग्र–(सं. वि.) नूतन, नया, शोधा हुआ।

प्रत्यनीक–(सं. पुं.) विरोधी, शत्रु, विघ्न, बाधा, प्रतिवादी, एक अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहनेवाले या संबंधी के प्रति किसी हित या अहित का किया जाना वर्णित होता है।

प्रत्यनुमान–(सं. पुं.) तर्क में वह अनुमान जो किसी दूसरे के अनुमान का खण्डन करते हुए किया जाय।

प्रत्यपकार–(सं. पुं.) किसी अपकार के बदले किया हुआ अपकार।

प्रत्यभिचरण–(सं. पुं.) रोकने या हटाने की क्रिया।

प्रत्यभिज्ञा–(सं. स्त्री.) वह ज्ञान जो कभी देखी हुई वस्तु को अथवा उसके समान किसी अन्य वस्तु को फिर से देखने पर उत्पन्न हो; –दर्शन–(पुं.) वह दर्शन जिसके अनुसार भक्तवत्सल महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञान–(सं.पुं.) सदृश वस्तु देखकर वैसी ही पहले देखी हुई वस्तु का स्मरण।

प्रत्यभिभाषी–(हिं.वि.) अभिनन्दन करने-

वाला।
प्रत्यभियोग–(सं. पुं.) वह अभियोग जो अभियुक्त अभियोग लगानेवाले पर लगाता है।
प्रत्यभिवाद–(सं. पुं.) वह आशीर्वाद जो किसी बड़े को अभिवादन करने पर मिले।
प्रत्यमित्र–(सं. पुं.) शत्रु।
प्रत्यय–(सं.पुं.) ज्ञान, बुद्धि, शपथ, सौगंध, विश्वास, प्रमाण, रूप-निश्चय, व्याकरण में वह अक्षर या शब्द जो मूल शब्द के अन्त मे लगकर विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करता है, छन्दों के भेद और उनकी संख्याएँ जानने की रीति, सम्मति, निर्णय, चिह्न, आवश्यकता, व्याख्या, विचार, आचार, प्रसिद्धि, कारण, हेतु, छिद्र, सहायक, स्वाद; –कारी–(वि.) विश्वास उत्पन्न करनेवाला।
प्रत्ययित–(सं. वि.) विश्वस्त, विश्वास किया हुआ, पाया हुआ।
प्रत्ययी–(सं.पुं.,वि.) विश्वस्त, विश्वासयुक्त।
प्रत्यर्चन–(सं. पुं.) पूजा के बदले पूजा।
प्रत्यर्थक–(सं. पुं.) वैरी, शत्रु।
प्रत्यर्थी–(सं. पुं.) शत्रु, प्रतिवादी।
प्रत्यर्पण–(सं. पुं.) दान म पाये हुए धन आदि को फिर से दान करना।
प्रत्यर्पित–(सं. वि.) प्रत्यर्पण किया हुआ।
प्रत्यवरोह–(सं.पुं.) सोपान, सीढ़ी, उतरना।
प्रत्यवरोही–(सं. वि.) उतरनेवाला।
प्रत्यवसान–(सं. पुं.) भोजन।
प्रत्यवसित–(सं. वि.) खाया हुआ।
प्रत्यवस्कंद–(सं. पुं.) प्रतिवादी का वह उत्तर जो वादी के कथन का खण्डन करने के लिये दिया जाता है।
प्रत्यवस्थान–(सं.पुं.) शत्रु के रूप में रहना।
प्रत्यवहार–(सं.पुं.) संहार, मार डालना।
प्रत्यवाय–(सं. पुं.) नित्य-कर्म न करने से उत्पन्न पाप, महान् परिवर्तन, उलट-फेर।
प्रत्यवेक्षण–(सं. पुं.) अनुसन्धान, खोज, विचार, सावधानी।
प्रत्यस्तगमन–(सं. पुं.) सूर्य का डूबना।
प्रत्यस्त्र–(सं. पुं.) तुल्य शक्तिवाला अस्त्र।
प्रत्यह–(सं. अव्य.) प्रतिदिन।
प्रत्याक्षेपक–(सं. पुं., वि.) उपहास करनेवाला, हँसी उड़ानेवाला।
प्रत्याख्यात–(सं. वि.) अस्वीकृत।
प्रत्याख्यान–(सं.पुं.) निराकरण, अस्वीकार करना, खण्डन।
प्रत्यागत–(सं. वि.) लौटा हुआ।
प्रत्यागति–(सं. स्त्री.) लौट आना।
प्रत्यागमन–(सं.पुं.) लौट आना, वापसी।
प्रत्याघात–(सं. पुं.) चोट के बदले चोट, टक्कर।
प्रत्याचार–(सं.पुं.) अच्छा आचरण।
प्रत्यात्मा–(सं. वि.) एकाकी, अकेला; (पु.) प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रत्यादिष्ट–(सं. वि.) जताया हुआ, छोड़ा हुआ, खण्डित।
प्रत्यादेश–(हि. पुं.) चेतावनी, खण्डन।
प्रत्यानयन–(हि. पुं.) फिर से लाना।
प्रत्यानीत–(सं. वि.) फिर से लाया हुआ।
प्रत्यापत्ति–(सं.स्त्री.) वैराग्य, पुनरागमन।
प्रत्याम्नाय–(सं.पुं.) प्रतिनिधि, अनुमान।
प्रत्यायक–(सं. वि.) विश्वासकारक।
प्रत्यायित–(सं. वि.) विश्वस्त।
प्रत्यालीढ़–(सं. पुं.) धनुष चलानेवाले के बैठने का एक ढंग।
प्रत्यावर्तन–(सं.पुं.) वापसी, लौट आना।
प्रत्यावृत्त–(सं.वि.) लौटा हुआ, दोहराया हुआ।
प्रत्याशा–(सं. स्त्री.) आशा, भरोसा।
प्रत्याशी–(सं. वि.) आशा करनेवाला।
प्रत्याश्रय–(सं. पुं.) शरण का स्थान।
प्रत्यासत्ति–(सं.स्त्री.) निकटवर्ती स्थान।
प्रत्यासर, प्रत्यासार–(सं. पुं.) सेना के पीछे का मोरचा।
प्रत्याहार–(सं. पुं.) योग के आठ अंगों में से एक जिसमें इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त के समान विरुद्ध किया जाता है, इन्द्रियों का पूर्ण रूप से निग्रह।
प्रत्युक्त–(सं.वि.) जवाब या उत्तर दिया हुआ।
प्रत्युत–(सं. अव्य.) इसके विरुद्ध, वरन्, (विपरीत भाव का सूचक।)
प्रत्युत्कर्ष–(सं. पुं.) मूल्य की अधिकता।
प्रत्युत्तर–(सं. पुं.) उत्तर का उत्तर।
प्रत्युत्थान–(सं. पुं.) किसी बड़े या पूज्य के आने पर उसके स्वागत के लिये आसन छोड़कर खड़ा हो जाना।
प्रत्युत्पन्न–(सं. वि.) जो फिर से अथवा ठीक समय पर उत्पन्न हुआ हो, सत्वर।
प्रत्युदाहरण–(सं.पुं.) उदाहरण के विपरीत उदाहरण।
प्रत्युद्गम, प्रत्युद्गमन–(सं. पुं.) देखें 'प्रत्युत्थान'।
प्रत्युपकार–(सं. पुं.) किसी उपकार के बदले किया जानेवाला उपकार।
प्रत्युपकारी–(सं.वि.) उपकार का बदला देनेवाला।
प्रत्युपक्रिया–(सं.स्त्री.) देखें 'प्रत्युपकार'।
प्रत्युपभोग–(हि. पुं.) सुख का भोग।
प्रत्युपवेश–(सं.पुं.) बलपूर्वक स्वीकार कराना।
प्रत्युपस्थान–(सं. पुं.) निकटवर्ती स्थान।
प्रत्युपहार–(सं. पुं.) भेंट के बदले भेंट।
प्रत्युष, प्रत्यूष–(सं. पुं.) प्रभात, सवेरा, सूर्य, एक वसु का नाम।
प्रत्यूह–(सं. पुं.) विघ्न, बाधा।
प्रत्येक–(सं.वि.) बहुतों में से हर एक, अलग-अलग; –त्व–(पुं.) अलग-अलग होने का भाव।
प्रत्रास–(सं. पुं.) कंप, कँपकँपी।
प्रथम–(सं. वि.) प्रधान, मुख्य, पहला, सर्वश्रेष्ठ, सब से उत्तम; (अव्य.) आग, पहले; –कल्पित–(वि.) जिसकी कल्पना पहले की गई हो; –कारक–(पुं.) व्याकरण में कर्ता कारक; –गर्भ–(पुं.) प्रथम बार का गर्भ; –ज, –जात–(वि.) अग्रज, जो पहले उत्पन्न हुआ हो; –तः–(अव्य.) पहले, सब से पहले; –पुरुष–(पुं.) आदि पूर्वज, पुराने समय का मनुष्य, व्याकरण में वह सर्वनाम जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, यथा–'वह सो रहा है' में वह; –रात्र–(पुं.) रात का शुरू का भाग; –संगम–(पुं.) पहली बार भेंट या संभोग।
प्रथमा–(सं. स्त्री.) व्याकरण में कर्ता कारक, मद्य।
प्रथमार्ध–(सं.पुं.) आदि का आधा अंश।
प्रथमी–(हि. स्त्री.) देखें 'पृथ्वी'।
प्रथमेतर–(सं. वि.) भिन्न, दूसरा।
प्रथा–(सं. स्त्री.) ख्याति, प्रसिद्धि, रीति चाल, नियम।
प्रथित–(सं. वि.) प्रसिद्ध।
प्रथिवी–(सं. स्त्री.) देखें 'पृथ्वी'।
प्रथु–(सं. पुं.) देखें 'पृथु', विष्णु।
प्रद–(सं. वि.) दाता, देनेवाला, (यौगिक शब्दों के अन्त में इस शब्द का प्रयोग होता है, जैसे–सुखप्रद, कष्टप्रद इत्यादि।)
प्रदक्षिण–(सं.पुं.), **प्रदक्षिणा**–(सं.स्त्री.) देवमूर्ति को दाहिनी ओर करके भक्ति-पूर्वक उसके चारों ओर घूमना, परिक्रमा करना।
प्रदत्त–(सं. वि.) अर्पित, दिया हुआ; (पुं.) एक गन्धर्व का नाम।
प्रदर–(सं. पुं.) तोड़ने या फोड़ने का काम, स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसदार स्राव निकलता है।
प्रदर्श–(सं. पुं.) भेंट, आज्ञा, रूप।
प्रदर्शन–(सं. वि.) देखने या दिखलाने-वाला; (पुं.) रूप, उल्लेख, दिखलाने

का काम, प्रदर्शनी।
प्रदर्शनी-(सं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुएँ प्रदर्शन के लिये रखी जाती हैं, नुमाइश।
प्रदर्शित-(सं. वि.) दिखलाया हुआ।
प्रदल-(सं. पुं.) बाण, तीर।
प्रदव्य-(सं. पुं.) दावानल, जंगल की आग।
प्रदहन-(सं. पुं.) अच्छी तरह से जलना।
प्रदातव्य-(सं. वि.) दान देने योग्य।
प्रदाता-(सं. पुं.) अधिक दान देनेवाला, इन्द्र।
प्रदान-(सं. पुं.) दान देने की क्रिया, कन्या-दान, अंकुश; -रुचि-(वि.) जिसकी दान देने में रुचि हो; -शूर-(पुं.) दान-वीर, बड़ा दानी।
प्रदायक-(सं. पुं., वि.) प्रदान करनेवाला, दान देनेवाला।
प्रदायी-(सं. पुं., वि.) दान देनेवाला।
प्रदाव-(सं. पुं.) दावाग्नि, जंगल की आग।
प्रदाह-(सं. पुं.) जलन जो अधिक ज्वर आदि के कारण शरीर में उत्पन्न होती है।
प्रदिग्ध-(सं. पुं.) घी में अच्छी तरह पकाया हुआ मांस।
प्रदिव-(सं. वि.) बहुत चमकनेवाला, पुरातन, पुराना; (पुं.) पर्व का दिन।
प्रदिशा-(सं. स्त्री.) दो मुख्य दिशाओं के बीच का कोना।
प्रदीप-(सं. पुं.) दीप, दीया, प्रकाश, सम्पूर्ण जाति का एक राग।
प्रदीपक-(सं. वि., पुं.) प्रकाशक, प्रकाश में लानेवाला, उद्दीपक।
प्रदीपति-(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रदीप्ति'।
प्रदीपन-(सं. पुं.) प्रकाश करने का काम, उद्दीपन, चमकाना, उजाला करना, एक प्रकार का भयंकर स्थावर विष जिसके स्पर्श या सूँघने से ही मनुष्य मर जाता है; (वि.) प्रकाश करनेवाला।
प्रदीपिका-(सं. स्त्री.) छोटी लालटेन, एक रागिनी का नाम।
प्रदीप्त-(सं. वि.) उज्ज्वल, चमकता हुआ, प्रकाशमात्र, जगमगाता हुआ।
प्रदीप्ति-(सं. स्त्री.) प्रकाश, चमक।
प्रदुम्न-(हिं. पुं.) देखें 'प्रद्युम्न'।
प्रदेय-(सं. वि.) दान के उपयुक्त, दान करने योग्य।
प्रदेश-(सं. पुं.) किसी देश का बड़ा विभाग, प्रान्त, सूबा, स्थान, संज्ञा, नाम, अंग, अवयव, भीत, पद, अँगूठे के अगले सिरे से लेकर तर्जनी के अगले सिरे तक की दूरी, बित्ता।
प्रदेशकारी-(सं. पुं.) योगियों का एक सम्प्रदाय।
प्रदेशन-(सं. पुं.) भेंट, आज्ञा।
प्रदेशनी, प्रदेशिनी-(सं. स्त्री.) तर्जनी, अँगूठे के पास की अँगुली।
प्रदेशीय-(सं. वि.) प्रदेश-सम्बन्धी।
प्रदेह-(सं. पुं.) फोड़े आदि के ऊपर लगाने का लेप।
प्रदोष-(सं. पुं.) सायंकाल, रात्रि के प्रथम चार दण्डों का काल, सूर्यास्त के बाद चार दण्डों तक का काल, भारी अपराध, संध्या के समय होनेवाला अँधेरा, त्रयोदशी का व्रत जिसमें दिन भर उपवास के बाद सन्ध्या के समय शिव का पूजन करके भोजन किया जाता है।
प्रदोह-(सं. पुं.) दोहन, दुहना।
प्रद्युम्न-(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव, रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; (वि.) अत्यन्त बलवान्, बड़ा वीर।
प्रद्योत-(सं. पुं.) रश्मि, किरण, दीप्ति, चमक, एक यक्ष का नाम।
प्रद्योतन-(सं. पुं.) सूर्य, दीप्ति, चमक।
प्रद्राव-(सं. पुं.) पलायन, भागना।
प्रद्वार-(सं. पुं.) द्वार का अगला भाग।
प्रद्वेष-(सं. पुं.) शत्रुता, वैर।
प्रद्वेषण-(सं. पुं.) घृणा, द्वेष।
प्रधन-(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई; (वि.) जिसके पास बहुत धन हो।
प्रधर्ष-(सं. पुं.) आक्रमण, धावा।
प्रधर्षक-(सं. वि., पुं.) आक्रमण करनेवाला।
प्रधर्षण-(सं. पुं.) आक्रमण, चढ़ाई, अनादर, अपकार, बलात्कार।
प्रधा-(सं. स्त्री.) दक्ष प्रजापति की कन्या जिस का विवाह कश्यप से हुआ था।
प्रधान-(सं. पुं.) प्रकृति, परमात्मा, सेनाध्यक्ष, सचिव, मन्त्री, सरदार, नेता; (वि.) मुख्य, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम, प्रमुख; -क-(पुं.) सांख्य के अनुसार बुद्धितत्व; -ता-(स्त्री.) प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य या पद, श्रेष्ठता, उत्तमता।
प्रधानात्मा-(सं. पुं.) परमात्मा, विष्णु।
प्रधावन-(सं. पुं.) वेग से दौड़ना, वायु, हवा।
प्रधि-(सं. पुं.) नेमि, पहिये का घेरा।
प्रधी-(सं. स्त्री.) तीव्र बुद्धि।
प्रधूपित-(सं. वि.) तप्त, तपाया हुआ, दीप्त, चमकता हुआ।
प्रध्मात-(सं. वि.) शब्द करता हुआ।
प्रध्यान-(सं. पुं.) गम्भीर ध्यान।
प्रध्वंस-(सं. पुं.) नाश, सांख्य के अनुसार किसी पदार्थ की अतीत अवस्था।
प्रध्वंसक-(सं. पुं., वि.) नाश करनेवाला।
प्रध्वंसन-(सं. पुं.) नाश।
प्रध्वस्त-(सं. वि.) जो नष्ट हो गया हो, जो बीत गया हो।
प्रन-(हिं. पुं.) प्रण, संकल्प, दृढ़ निश्चय।
प्रनति-(हिं. स्त्री.) देखें 'प्रणति'।
प्रनम(व)ना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'प्रणमना'।
प्रनष्ट-(सं. वि.) पूरी तरह से नष्ट।
प्रनामी-(हिं. पुं.) प्रणाम करनेवाला; (स्त्री.) वह धन या दक्षिणा जो गुरु, ब्राह्मण आदि को शिष्य या भक्त प्रणाम करते समय देते हैं।
प्रनाली-(हिं. स्त्री.) प्रणाली।
प्रनाशन-(हिं. पुं.) देखें 'प्रणाशन'।
प्रनाशी-(हिं. वि.) नाश करनेवाला।
प्रनिघातन-(सं. पुं.) वध, हत्या।
प्रनिपात-(हिं. पुं.) देखें 'प्रणिपात'।
प्रनीड-(सं. वि.) घोंसला छोड़नेवाला पक्षी।
प्रपंच-(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव, संचय, संसार, विपर्यास, उलट-पलट, भवजाल, संसारी जंजाल, झमेला, बखेड़ा, धोखा, आडम्बर, ढोंग।
प्रपंचक-(सं. वि.) प्रपंच फैलानेवाला।
प्रपंचित-(सं. वि.) भ्रमयुक्त, ठगा हुआ।
प्रपंची-(सं. वि., पुं.) प्रपंच करनेवाला, छली, कपटी, ढोंगी, बखेड़िया, झगड़ालू।
प्रपक्व-(सं. वि.) अच्छी तरह से पका हुआ
प्रपक्ष-(सं. पुं.) पंख का अगला भाग।
प्रपण-(सं. पुं.) विनिमय, बदला।
प्रपत्ति-(सं. स्त्री.) अनन्य भक्ति।
प्रपद-(सं. पुं.) पैर का अगला भाग।
प्रपन्न-(सं. वि.) प्राप्त, पाया हुआ, शरणागत, शरण में आया हुआ।
प्रपर्ण-(सं. पुं.) गिरा हुआ पत्ता।
प्रपलायन-(हिं. पुं.) पलायन, वेग से भाग जाना।
प्रपा-(सं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ प्यासों को पानी पिलाया जाता है, पौसरा।
प्रपाक-(सं. पुं.) घाव के पकने की क्रिया।
प्रपाठक-(सं. पुं.) श्रौत ग्रन्थ (वेद) के अध्यायों का अंश।
प्रपाणि-(सं. पुं.) पाणितल, हथेली।
प्रपात-(सं. पुं.) पहाड़ या चट्टान का खड़ा किनारा, पानी का झरना, कल, किनारा, जल की धारा जो ऊँचे स्थान से गिरती हो, एकबारगी नीचे गिरना।
प्रपाद-(सं. पुं.) असमय का प्रसव।
प्रपान-(सं. पुं.) पौसरा, प्याऊ, पेय।
प्रपापूरण-(सं. पुं.) पानी के कुण्ड को जल से भरना।

प्रपालन-(सं.पुं.) अच्छी तरह रक्षा करना।
प्रपितामह-(सं. पुं.) परब्रह्म, ब्रह्मा, दादा के बाप, परदादा।
प्रपितृव्य-(सं. पुं.) परदादा का भाई।
प्रपित्सु-(सं. वि.) पाने की इच्छा करनेवाला।
प्रपीड़न-(सं. पुं.) अधिक कष्ट देना, सताना।
प्रपीड़ित-(सं. वि.) अधिक सताया हुआ।
प्रपुंज-(सं. पुं.) बहुत बड़ा समूह या झुण्ड।
प्रपुत्र-(सं.पुं.) पौत्र, बेटे का बेटा।
प्रपुन्नाट, प्रपुन्नाड-(सं. पुं.) चकवँड़ का पौधा।
प्रपुष्पित-(सं. वि.) फूल से लदा हुआ।
प्रपूरक-(सं. वि.) पूरा करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला।
प्रपूरिका-(सं.स्त्री.) कण्टकारी, भटकटैया।
प्रपूरित, प्रपूर्ण-(सं.वि.) परिपूर्ण, तृप्त किया हुआ, भरा हुआ।
प्रपृष्ठ-(सं.वि.) जिसकी पीठ ऊँची हो।
प्रपौत्र-(सं.पुं.) पोते का लड़का, परपोता।
प्रपौत्री-(सं.स्त्री.) पोते की कन्या, परपोती।
प्रप्लावन-(सं.पुं.) पानी से आग बुझाना।
प्रफुलना-(हि.क्रि.अ.) फूलना, खिलना।
प्रफुला-(हि. स्त्री.) कमलिनी, कुमुदनी, कुईं।
प्रफुलित-(हि. वि.) कुसुमित, खिला हुआ, प्रफुल्ल, आनन्दित।
प्रफुल्ल-(सं. वि.) विकसित, खिला हुआ, कुसुमित, फूला हुआ, प्रसन्न, आनन्दित, खुला हुआ, जो बंद या मुंदा हुआ न हो।
प्रफुल्लित-(हि. वि.) प्रफुल्ल।
प्रबंध-(सं. पुं.) बाँधने की डोरी आदि, कई वस्तुओं आदि का एक में बँधना, योजना, वाक्य-रचना का विस्तार, उपाय, आयोजन, व्यवस्था, पूर्वापर संगति, बँधा हुआ क्रम।
प्रबंध-कल्पना-(सं. स्त्री.) ऐसा निबंध, काव्य, उपन्यास आदि जिसमें थोड़ी सी बातें सच हों और बहुत-सी बातें मन से गढ़कर मिला दी गई हों।
प्रबर्ह-(सं. वि.) प्रधान, श्रेष्ठ।
प्रबल-(सं. वि.) बलवान्, प्रचण्ड, उग्र, महान्, घोर।
प्रबला-(सं. वि. स्त्री.) बहुत बलवती, प्रचण्डा।
प्रबलाकी-(सं. पुं.) सर्प, साँप।
प्रबाल-(सं. पुं.) 'प्रवाल', मूँगा।
प्रबालपद्म-(सं. पुं.) लाल कमल।
प्रबास-(हि. पुं.) देखें 'प्रवास'।
प्रबाह-(हि. पुं.) देखें 'प्रवाह'।
प्रबाहु-(सं. पुं.) हाथ का अगला भाग, पहुँचा।
प्रबीन-(हि. वि.) देखें 'प्रवीण'।
प्रबुद्ध-(सं. वि.) पण्डित, ज्ञानी, जागा हुआ, खिला हुआ, सचेत।
प्रबुध-(सं. स्त्री.) यथार्थ या पूर्ण ज्ञानी।
प्रबोध-(सं. पुं.) पूर्ण बोध, यथार्थ ज्ञान, विकास, चेतावनी, नींद टूटना, जागना, सान्त्वना, ढाढ़स।
प्रबोधक-(सं. वि.) चेतानेवाला, जगानेवाला, ढाढ़स देनेवाला।
प्रबोधन-(सं. पुं.) यथार्थ ज्ञान, जागरण, जगाना, विकास, खिलना, नींद से उठना, आश्वासन, ज्ञान देना।
प्रबोधना-(हि. क्रि. स.) नींद से जगना, समझाना-बुझाना, सचेत करना, मन में बैठाना, ढाढ़स देना, सिखाना, पट्टी पढ़ाना।
प्रबोधनी-(सं. स्त्री.) कार्तिक शुक्ल-पक्ष की एकादशी, देवोत्थान एकादशी जिस दिन भगवान् सोकर उठते हैं।
प्रबोधित-(सं. वि.) जगाया हुआ, समझाया हुआ।
प्रबोधिता-(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसको सुनन्दिनी या मञ्जुभाषिणी भी कहते हैं।
प्रबोधिनी-(सं. स्त्री.) देखें 'प्रबोधनी'।
प्रबोधी-(सं. वि.) जगानेवाला।
प्रभंग-(सं. वि.) भग्न, टूटा हुआ।
प्रभंजन-(सं. पुं.) प्रचण्ड वायु, आँधी, तोड़-फोड़, विनाश।
प्रभद्र-(सं. पुं.) नीम का पेड़; (वि.) श्रेष्ठ।
प्रभद्रक-(सं. पुं.) पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
प्रभद्रा-(सं. स्त्री.) प्रसारिणी लता।
प्रभव-(सं. पुं.) जन्म-हेतु, पराक्रम, उत्पत्ति, सृष्टि, संसार, विष्णु, एक संवत्सर का नाम, एक मुनि का नाम।
प्रभवन-(सं. पुं.) उत्पत्ति, अधिष्ठान।
प्रभविष्णु-(सं. वि.) प्रभावशाली; (पुं.) विष्णु।
प्रभा-(सं. स्त्री.) दीप्ति, चमक, प्रकाश, तेज, दुर्गा, कुबेरपुरी, राजा नहुष की माता का नाम, एक अप्सरा का नाम, सूर्य का बिम्ब, बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको मन्दाकिनी भी कहते हैं।
प्रभाउ-(हि. पुं.) देखें 'प्रभाव'।
प्रभाकर-(सं. पुं.) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, समुद्र, एक नाग का नाम।
प्रभाकीट-(सं. पुं.) खद्योत, जुगनू।
प्रभाग-(सं. पुं.) भाग का विभाग, भग्नांश।
प्रभात-(सं. पुं.) प्रातःकाल, प्रत्यूष।
प्रभाती-(सं. स्त्री.) दन्तधावन, दातून, प्रातःकाल गाने का एक प्रकार का गीत।
प्रभान-(सं. पुं.) ज्योति, दीप्ति।
प्रभापन-(सं.पुं.) उजाला करना।
प्रभापर्ण-(सं.वि.) प्रकाश करनेवाला।
प्रभामंडल-(सं.पुं.) गोलाकार रश्मि-पुंज।
प्रभामय-(सं.वि.) दीप्तिमय।
प्रभाव-(सं.पुं.) प्रताप, तेज, सामर्थ्य, महिमा, विक्रम, माहात्म्य, शक्ति, शान्ति, उद्भव, किसी के अन्तःकरण को अपनी ओर प्रवृत्त करने का गुण और इस प्रवृत्ति पर होनेवाला फल या परिणाम।
प्रभावज-(सं. वि.) प्रभाव से उत्पन्न।
प्रभावती-(सं. स्त्री.) प्रभाव शाली स्त्री, कुमार की एक मातृका का नाम, सूर्य की पत्नी, शिव की एक वीणा का नाम, तेरह अक्षरोंका एक छन्द जिसको रुचिरा भी कहते हैं, एक राग का नाम।
प्रभावन-(सं. वि.) प्रभावशाली।
प्रभाष-(सं. पुं.) एक वसु का नाम।
प्रभाषण-(सं.पुं.) अच्छी तरह कहना।
प्रभाषी-(सं. वि.) अच्छी तरह से बोलनेवाला, सुवक्ता।
प्रभास-(सं. पुं.) एक वसु का नाम, कुमार का एक अनुचर, ज्योति, दीप्ति; (वि.) पूर्ण प्रभायुक्त।
प्रभासन-(सं.पुं.) दीप्ति, ज्योति।
प्रभासना-(हि. क्रि. अ.) दिखाई पड़ना।
प्रभिन्न-(सं. वि.) भिन्न, विभक्त।
प्रभु-(सं. पुं.) विष्णु, शिव, पारद, पारा, अधिपति, नायक, स्वामी, नेता अधिप, पालक, शिव, भगवान्, ईश्वर; -ता-(स्त्री.), -ताई- (हि. स्त्री.) महत्त्व, बड़ाई, वैभव, शासन का अधिकार; -त्व-(पुं.) देखें 'प्रभुता'।
प्रभुत्वाक्षेप-(सं. पुं.) एक अर्थालंकार जिसमें कोई नायिका अपने प्रभुत्व के अभिमान से नायक को बाहर जाने से रोकती है।
प्रभुभक्त-(सं.पुं.) बढ़ियाघोड़ा; (वि.) स्वामिभक्त।
प्रभूत-(सं. वि.) प्रचुर, अधिक, उन्नत, बढ़ा हुआ, निकला हुआ, बहुत; (पुं.) पंचभूत, पंच-तत्त्व।

प्रभूति–(सं.स्त्री.) उत्पत्ति, शक्ति, अधिकता।
प्रभृति–(सं. अव्य.) इत्यादि, आदि।
प्रभेद–(सं. पुं.) विभिन्नता, भेद, अन्तर, शरीर में फोड़ा निकलना।
प्रभेदक–(सं. पुं., वि.) विभाग करनेवाला।
प्रभेदनी–(सं. स्त्री.) छेद करने का अस्त्र।
प्रभदिका–(सं.वि.,स्त्री.) छेद करनेवाली।
प्रभ्रंश–(सं. पुं.) अलग होना, नष्ट होना।
प्रभ्रष्ट–(सं. वि.) टूटा-फूटा।
प्रमंडल–(सं. पुं.) पहिये का घेरा।
प्रमत्त–(सं. वि.) उन्मत्त, मतवाला, प्रविक्षिप्त, पागल, जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो, जो सन्ध्या-वन्दन आदि न करता हो; (पुं.) एक प्रकार का कौआ; **–गीत**–(पुं.) प्रमादपूर्ण गीत; **–ता**–(स्त्री.) पागलपन।
मथ–(सं. पुं.) घोटक, घोड़ा, शिव के पार्षद या गण विशेष जिनकी संख्या छत्तीस करोड़ कही जाती है, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
प्रमथन–(सं. पुं.) वध, हत्या, मथना, जड़ से उखाड़ना, रौंदना, सताना, तिरस्कार, अपमान।
प्रमथनाथ, प्रमथाधिप–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
प्रमथालय–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
प्रमथित–(सं. पुं.) नवनीत, मक्खन, मट्ठा।
प्रमद–(सं. पुं.) हर्ष, आनन्द, धतूरे का फल या फूल, वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम, उन्मत्तता, मतवालापन; (वि.) मतवाला; **–कानन**–(पुं.) राजाओं के अन्तःपुर का बगीचा।
प्रमदा–(सं. स्त्री.) सुन्दर स्त्री, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं, देवी का एक नाम; **–वन**–(पु.) प्रमद-कानन।
प्रमद्वर–(सं. वि.) असावधान।
प्रमन्यु–(सं. वि.) बहुत क्रोधी; (पुं.) अति क्रोध।
प्रमय–(सं. पुं.) वध, हिंसा।
प्रमर्दन–(सं. वि.) अच्छी तरह से रगड़नेवाला; (पुं.) एक असुर का नाम, अच्छी तरह से मलना, दलना, रौंदना, दमन, नष्ट करना।
प्रमा–(सं.वि.) यथार्थ ज्ञान, शुद्ध बोध, वह ज्ञान जिसमें किसी प्रकार का भ्रम न हो।
प्रमाण–(सं.पुं.) सत्यता, सचाई, निश्चय, विष्णु, नित्यता, मर्यादा, शास्त्र, एक अलंकार जिसमें विभिन्न प्रमाणों में से किसी एक का वर्णन हो, प्रामाणिक वस्तु, प्रमा, मूल धन, आदेश, परिमाण; (वि.) सत्य, यथार्थ, मान्य, स्वीकार करने योग्य, प्रमाणित, चरितार्थ; (अव्य.) पर्यन्त, तक।
प्रमाणकुशल–(सं.वि.) अच्छा तर्क करनेवाला।
प्रमाण-कोटि–(सं. स्त्री.) प्रमाण मानी जानेवाली बातों का समुदाय।
प्रमाणता–(सं.स्त्री.) प्रामाणिक होने का भाव या धर्म।
प्रमाणना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'प्रमानना'।
प्रमाण-पत्र–(सं. पुं.) वह लिखा हुआ कागज जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो।
प्रमाण-पुरुष–(सं. पुं.) वह जिसके निर्णय को मानने के लिये दोनों पक्ष के लोग तैयार हों, पंच।
प्रमाण-लक्षण–(सं. पुं.) वह लक्षण जो प्रमाण-सिद्ध हो।
प्रमाण-वाक्य–(सं. पुं.) न्यायसंगत वाक्य, वेद वाक्य।
प्रमाणांतर–(सं. स्त्री.) अन्य प्रकार का प्रमाण।
प्रमाणिक–(सं. वि.) जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो।
प्रमाणिका–(सं. स्त्री.) छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं, इसका दूसरा नाम नगस्वरूपिणी है।
प्रमाणित–(सं. वि.) प्रमाण द्वारा सिद्ध, सच्चा ठहराया हुआ।
प्रमाणी–(सं.स्त्री.) प्रमाणिका छन्द।
प्रमाणीकृत–(सं. वि.) जो प्रमाण रूप में स्वीकार किया गया हो।
प्रमाता–(सं. पुं.) प्रमाणों द्वारा प्रमेय के ज्ञान को प्राप्त करनेवाला, ज्ञान उत्पन्न करनेवाला, आत्मा, चेतन पुरुष, विषयों से भिन्न, विषयों का द्रष्टा, साक्षी; (स्त्री.) पिता की माता, दादी; **–मह**–(पुं.) मातामह का पिता, परनाना; **–मही**–(स्त्री.) प्रमातामह की पत्नी, परनानी।
प्रमात्व–(सं. पुं.) प्रमा का धर्म या भाव।
प्रमाथ–(सं.पुं.) मथन, बलपूर्वक हरण, मर्दन, नाश करना, दुःख देना, हत्या करना, शिव के एक गण का नाम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, किसी स्त्री के साथ बलात्कार।
प्रमाथी–(सं. वि.) मारनेवाला, पीड़ा देनेवाला; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक राक्षस का नाम।
प्रमाद–(सं. पुं.) भ्रम, भ्रान्ति, असावधानी, अन्तःकरण की दुर्बलता, योगशास्त्र के अनुसार समाधि के साधनों को झूठ मानना।
प्रमादिक–(सं.वि.) भूलचूक करनेवाला।
प्रमादिका–(सं.स्त्री.) वह कन्या जिसका किसी ने कौमार्य नष्ट कर दिया हो।
प्रमादिनी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
प्रमादी–(सं. वि.) असावधानी करनेवाला, बावला, पागल।
प्रमान–(हिं. पुं.) देखें 'प्रमाण'।
प्रमानना–(हिं. क्रि.स.) प्रमाणित मानना या करना, सिद्ध करना, स्थिर करना, यथार्थ मानना।
प्रमानी–(हिं. वि.) प्रमाणिक, प्रमाण योग्य, माननीय, मानने योग्य।
प्रमापण–(सं. पुं.) मारण, नाश।
प्रमापयिता–(सं. पुं.) घातक, नाश करनेवाला।
प्रमार–(सं. पुं.) राजपूत क्षत्रियों की एक उपजाति, देखें 'परमार'।
प्रमार्जक–(सं. वि.) निर्मल करनेवाला।
प्रमार्जन–(सं. पुं.) अच्छी तरह से शुद्ध करना, झाड़ना-पोंछना, हटाना।
प्रमित–(सं.वि.) ज्ञात, विदित, निश्चित, अल्प, थोड़ा, परिमित, प्रमाणित।
प्रमिताक्षरा–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
प्रमिताशन–(सं. पुं.) अल्प भोजन।
प्रमीति–(सं. स्त्री.) मृत्यु, मरण।
प्रमीलक–(सं. पुं.) शरीर का आलस्य या दुर्बलता, झपकी, उँघाई।
प्रमीलन–(सं.पुं.) निमीलन, आँखें मूँदना।
प्रमीला–(सं. स्त्री.) तन्द्रा, उँघाई, अवसाद, थकावट, ग्लानि, शिथिलता।
प्रमीली–(सं. वि.) आँखें मूँदनेवाला।
प्रमुक्ति–(सं. स्त्री.) निर्वाण, मोक्ष।
प्रमुख–(सं. पुं.) समूह, ढेर, आरम्भ; (वि.) मुख्य, प्रधान, पहला, प्रतिष्ठित, मान्य; (हिं.अव्य.) इससे आरम्भ करके, वगरह, इत्यादि।
प्रमुच्–(सं. वि.) मुक्ति देनेवाला।
प्रमुद्–(सं.स्त्री.) अत्यन्त आनन्द; (वि.) आनन्दित।
प्रमुदित–(सं. वि.) आनन्दित, प्रसन्न।
प्रमुदित-वदना–(सं. स्त्री.) बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको मन्दाकिनी भी कहते हैं।

प्रमूपित–(सं.वि.) अपहृत, चुराया हुआ।
प्रमृश–(सं. वि.) पण्डित, विद्वान्।
प्रमृष्ट–(सं. वि.) मार्जित, धोया हुआ।
प्रमेय–(सं. वि.) जो प्रमाण का विषय हो सके, जिसका मान बतलाया जा सके, निर्धारण करने योग्य; (पुं.) यथार्थ ज्ञान का विषय; –त्व–(पुं.) प्रमेय का भाव या धर्म।
प्रमेह–(सं. पुं.) एक मूत्र-रोग, बहुमूत्र का रोग, वह रोग जिसमें मूत्र के साथ शरीर की पोषक धातुएँ निकला करती हैं।
प्रमेही–(सं. पुं.) प्रमेह का रोगी।
प्रमोक्ष–(सं.पुं.) निर्वाण, मुक्ति, छुटकारा।
प्रमोचन–(सं.पुं.) मुक्त करना, छुड़ाना।
प्रमोद–(सं. पुं.) हर्ष, आनन्द, सुख, कुमार के एक अनुचर का नाम, एक सिद्धि का नाम।
प्रमोदक–(सं. पुं.) साठी नाम का धान।
प्रमोदन–(सं.पुं.) विष्णु, आनन्द देना।
प्रमोदा–(सं.स्त्री.) सांख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिसमें आधिदैविक दुःखों का नाश हो जाता है।
प्रमोदित–(सं. वि.) हर्षित, आनन्दित।
प्रमोदी–(सं.वि.) अति प्रसन्न, हर्षजनक।
प्रमोह–(सं. पुं.) मूर्च्छा, मोह।
प्रमोही–(सं. वि.) मोहजनक।
प्रयंक–(हिं. पुं.) देखें 'पर्यंक'।
प्रयंत–(हिं. अव्य.) देखें 'पर्यंत'।
प्रयत–(सं. वि.) पवित्र, नम्र, दीन।
प्रयतात्मा–(सं. वि.) जितेन्द्रिय, संयमी।
प्रयत्न–(सं. पुं.) चेष्टा, प्रयास, इष्ट साधन की चेष्टा, कोई काम करने की इच्छा, अंगों की क्रिया या व्यापार, व्याकरण में वर्णों के उच्चारण में होनेवाली एक क्रिया जो दो प्रकार की होती है—मुख से ध्वनि निकलने के पहिले वागिन्द्रियों की क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न तथा ध्वनि के अन्त की क्रिया को बाह्य प्रयत्न कहते हैं।
प्रयत्नवान्–(हिं.वि.) प्रयत्न में लगा हुआ।
प्रयसा–(सं. स्त्री.) एक राक्षसी जिसको रावण ने सीता को समझाने के लिये नियुक्त किया था।
प्रयस्त–(सं. वि.) परिश्रम से किया हुआ।
प्रयाग–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा और यमुना के संगम पर है; –वाल–(पुं.) प्रयाग तीर्थ का पंडा।
प्रयाचक–(सं. पुं., वि.) याचना करनेवाला, मांगनेवाला।
प्रयाचन–(सं. पुं.) याचना, प्रार्थना।
प्रयाण–(सं. पुं.) गमन, जाना, युद्ध-यात्रा, चढ़ाई, आरम्भ; –काल–(पुं.) जाने का समय, मृत्युकाल।
प्रयात–(सं. पुं.) ऊँचा किनारा, गमन, जाना; (वि.) गया हुआ, मरा हुआ, सोया हुआ।
प्रयातव्य–(सं. वि.) चढ़ाई करने योग्य।
प्रयास–(सं. पुं.) प्रयत्न, उद्योग, अभ्यास, श्रम।
प्रयुक्त–(सं. वि.) अच्छी तरह से जोड़ा हुआ, प्रेरित, लगाया हुआ, जिसका प्रयोग किया गया हो, अच्छी तरह से मिला हुआ।
प्रयुक्ति–(सं. स्त्री.) प्रयोजन, प्रयोग।
प्रयुज्यमान–(सं. वि.) जिसका प्रयोग किया गया हो।
प्रयुत–(सं. पुं.) दस लाख की संख्या; (वि.) सहित, समेत, अस्पष्ट, अच्छी तरह मिला हुआ, दस लाख।
प्रयुत्सु–(सं. पुं.) योद्धा, वीर, वायु, इन्द्र, संन्यासी।
प्रयोक्ता–(सं. पुं.) प्रयोग या व्यवहार करनेवाला, प्रधान अभिनय करनेवाला, सूत्रधार, ऋण देनेवाला, महाजन।
प्रयोग–(सं. पुं.) अनुष्ठान, साधन, किसी काम में लाना या लाया जाना, व्यवहार, क्रिया का साधन, नाटक का खेल, कोई तान्त्रिक उपचार या साधन, दृष्टान्त, घोड़ा, यज्ञ आदि कर्मों की पद्धति, सूद पर रुपया देना, साम, दण्ड आदि उपायों का अवलंबन।
प्रयोगातिशय–(सं.पुं.) नाटक की प्रस्तावना का एक भेद।
प्रयोगी–(सं. वि.) प्रयोग करनेवाला।
प्रयोजक–(सं. वि.) अनुष्ठान करनेवाला, काम में लानेवाला, प्रेरक, प्रदर्शक, प्रबन्ध करनेवाला।
प्रयोजन–(सं. पुं.) हेतु, कार्य, काम, कारण, उद्देश्य, अभिप्राय, व्यवहार, उपयोग।
प्रयोजनवती लक्षणा–(सं. स्त्री.) वह लक्षणा जो प्रयोजन की सिद्धि के लिए वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रगट करती है।
प्रयोजनवान्–(सं.वि.) अभिप्राय रखनेवाला।
प्रयोजनीय–(सं. वि.) काम का, प्रयोज्य।
प्रयोज्य–(सं. वि.) प्रयोग में लाने योग्य, कर्तव्य, काम में लगाये जाने योग्य; (पुं.) मूल-धन, नौकर।
प्रराध्य–(सं. वि.) प्रशंसा या आराधना के योग्य।
प्ररुह्–(सं. वि.) भूमि उगनेवाला (अंकुर)।
प्ररूढ़–(सं. वि.) प्रवृद्ध, खूब बढ़ा हुआ, उत्पन्न।
प्ररोचन–(सं. पुं.) रुचि उत्पन्न करना, उत्तेजित करना, मोहित करना।
प्ररोचना–(सं. स्त्री.) उत्तेजना बढ़ाना, रुचि उत्पन्न करने की क्रिया, नाटक की प्रस्तावना का एक अंग जिसमें दर्शकों में रुचि उत्पन्न करने की बात कही जाती हैं, अभिनय के बीच-बीच में आगे आनेवाली बातों का रुचिकर रूप से कथन।
प्ररोह–(सं. पुं.) अंकुर, अँखुआ का, ऊपर की ओर निकलना।
प्ररोहण–(सं. पुं.) उत्पत्ति, आरोह, चढ़ाव, अंकुर का भूमि से निकलना, उगना।
प्ररोह-भूमि–(सं. स्त्री.) उर्वरा भूमि, उपजाऊ खेत।
प्ररोहशाखी–(सं. पुं.) (ऐसा वृक्ष) जिसकी कलम लगाने से लग जाय।
प्रलंब–(सं. पुं.) एक दानव जिसको बलराम ने मारा था, पयोधर, स्तन, शिथिलता, व्यर्थ का विलम्ब, ताड़ का तना, राँगा, अंकुर, अँखुआ, शाखा, डाल, एक प्रकार का हार, प्रलम्बन, लटकाव; (वि.) लम्बवत्, लटका हुआ, निकला हुआ, बढ़ा हुआ, शिथिल।
प्रलंबन–(सं. पुं.) लटकाव, झूलने की क्रिया, अवलम्बन, सहारा लेना।
प्रलंबित–(सं. वि.) लटका हुआ।
प्रलंबी–(सं. वि.) आश्रयी, सहारा लेनेवाला, लटकनेवाला।
प्रलंभ–(सं. पुं.) प्राप्ति, लाभ, धोखा।
प्रलंभन–(सं. पुं.) लाभ, छल, धोखा।
प्रलपन–(सं. पुं.) अनर्थक बात।
प्रलपित–(सं. वि.) कथित, कहा हुआ।
प्रलयंकर–(सं. वि.) प्रलय करनेवाला।
प्रलय–(सं. पुं.) संसार के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, कल्पान्त, वैष्णवों के मत से हृदय के सात्विक भावों में से एक भाव, साहित्य में सात्विक भाव का एक भेद, मूर्च्छा, विलीन होना, लय को प्राप्त होना।
प्रलयता–(सं.स्त्री.) प्रलय का धर्म या भाव।
प्रलव–(सं. पुं.) खण्ड, टुकड़ा, छोटा अंश।
प्रलवण–(सं. पुं.) उपज या फसल काटना।
प्रलाप–(सं. पुं.) निरर्थक बात, व्यर्थ की बकवाद, पागलों की-सी बकझक।
प्रलापक–(सं.पुं.) सन्निपात ज्वर का एक भेद।
प्रलापन–(सं. पुं.) बकवाद, बकझक।

प्रलापी–(सं. वि.) अंडबंड बकनेवाला।
प्रलीन–(सं. वि.) लुप्त, चेष्टाशून्य, जड़वत्; –ता–(स्त्री.) प्रलय, नाश।
प्रलून–(सं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा; (वि.) छिन्न-भिन्न, काटा हुआ।
प्रलेप–(सं. पुं.) घाव आदि पर किसी औषध का लेप चढ़ाना।
प्रलेपक–(सं. वि.) लेप करनेवाला, (पुं.)एक प्रकार का पुराना मंद ज्वर।
प्रलेपन–(सं. पुं.) लेप करने या पोतने की क्रिया।
प्रलेहन–(सं. पुं.) जीभ से किसी वस्तु को चाटना।
प्रलोप–(सं. पुं.) ध्वंस, नाश।
प्रलोभ–(सं. पुं.) अति लोभ, लालच।
प्रलोभक–(सं. वि.) ललचानेवाला।
प्रलोभन–(सं.पुं.)लालच देना,ललचाना।
प्रलोभित–(सं. वि.) ललचाया हुआ।
प्रलोभी–(सं.वि.)लोभी, लोभ में फँसाने वाला।
प्रलोलुप–(सं. वि.) बहुत लालची।
प्रवंचना–(सं. स्त्री.) धूर्तता, छल, कपट।
प्रवक्ता–(सं. पुं.) उपदेश देनेवाला, अच्छी तरह समझाकर कहनेवाला।
प्रवग–(सं. पुं.) खग, पक्षी।
प्रवचन–(सं. पुं.) व्याख्यापूर्वक समझाना, वेदांग, व्याख्या।
प्रवचनीय–(सं.वि.)समझाकरकहने योग्य।
प्रवट–(सं. पुं.) गोधूम, गेहूँ।
प्रवण–(सं. वि.) जो क्रमशः नीचा होता गया हो, ढालुआँ, आयत, लंबा, उदार, आसक्त, क्षीण, विनीत, अनुकूल, नम्र, निपुण, नत, झुका हुआ, स्निग्ध; (पुं.) उतार, चौराहा, पहाड़ का किनारा, आहुति, उदर, पेट।
प्रवत्स्यत्पतिका–(सं. स्त्री.) वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।
प्रवत्स्यत्प्रेयसी–(सं. स्त्री.) देखे 'प्रवत्स्यत्पतिका'।
प्रवदन–(सं. पुं.) घोषणा।
प्रवपण–(सं. पुं.) मूँछ-दाढ़ी मुड़वाना।
प्रवयण–(सं. पुं.) चाबुक, अंकुश।
प्रवयस्–(सं.वि.)बुड्ढा, पुरातन, पुराना।
प्रवर–(सं. पुं.) अगर की लकड़ी, गोत्र, सन्तति, काली मंग; (वि.) श्रेष्ठ, मुख्य; –ललिता–(स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
प्रवरा–(सं. स्त्री.) अगर की लकड़ी, पलाश वृक्ष।

प्रवर्ग–(सं. पुं.) हवन करने की अग्नि।
प्रवर्त–(सं. पुं.) एक प्रकार का गोल आभूषण, किसी प्रकार की उत्तेजना, कार्यारम्भ, ठानना।
प्रवर्तक–(सं.पुं.,वि.)आरम्भ करनेवाला, किसी काम को चलानेवाला, प्रवृत्त करनेवाला, काम में लगानेवाला, गति देनेवाला, न्याय करनेवाला, आविष्कार करनेवाला, उसकानेवाला; (पुं.)नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार नाटक के समय का वर्णन करता है।
प्रवर्तन–(सं.पुं.)प्रवृत्त करना,कार्य आरम्भ करना, ठानना, प्रचार करना, प्रेरित करना चलाना, उत्तेजित करना,उसकाना।
प्रवर्तना–(सं. स्त्री.) आरम्भ, उत्तेजना, उभाड़ना,उसकाना,किसी कार्य में प्रवृत्ति।
प्रवर्तित–(सं. वि.) चलाया हुआ, आरंभ किया या ठाना हुआ, उभाड़ा हुआ, लौटाया हुआ।
प्रवर्ती–(सं. वि.) प्रवाहशील, अग्रगामी।
प्रवर्धक–(सं. पुं., वि.)वृद्धि करनेवाला।
प्रवर्ष–(सं. पुं.) अति वृष्टि।
प्रवर्षण–(सं. पुं.) अति वृष्टि, बहुत वर्षा, किष्किन्धा के समीप का एक पर्वत जिस पर राम, लक्ष्मण और सीता न कुछ काल तक निवास किया था।
प्रवर्ह–(सं. वि.) श्रेष्ठ, प्रधान।
प्रवल्हिका–(सं. स्त्री.)प्रहेलिका, पहेली।
प्रवसन–(सं. पुं.) विदेश-गमन।
प्रवह–(सं. पुं.) वह कुंड जिसमें से नाली द्वारा जल बहता हो, बहाव, सात वायुओं में से एक; घर, नगर आदि से बाहर निकलना।
प्रवहण–(सं. पुं.) यान, सवारी, पोत, नाव, कन्या को व्याह देना।
प्रवाच्–(सं.वि.) युक्तिपूर्वक बोलनेवाला।
प्रवाचक–(सं.पुं.,वि.)अच्छा बोलनेवाला।
प्रवाचन–(सं.पुं.)अच्छी तरह से बोलना।
प्रवाण–(सं.पुं) कपड़े का किनारा बनाना।
प्रवात–(सं.पुं.) प्रबल वायु।
प्रवाद–(सं. पुं.) आपस की बातचीत, जनसमाज में प्रसिद्ध बात, अपवाद, जनरव, जनश्रुति।
प्रवादक–(सं. पुं.) बाजा बजानेवाला।
प्रवाद्य–(सं. वि.) कहने योग्य, प्रकाशित करने योग्य।
प्रवादी–(सं. पुं., वि.) बोलनेवाला।
प्रवार–(सं. पुं.) चादर, दुपट्टा।
प्रवारण–(सं. पुं.) निषेध।
प्रवाल–(सं. पुं.) विद्रुम, मूंगा।

प्रवास–(सं. पुं.) विदेश वास, अपना घर या देश त्यागकर दूसरे देश में निवास करना।
प्रवासन–(सं. पुं.) देश या नगर से बाहर निकालना, वध।
प्रवासित–(सं. वि.) देश से निकाला हुआ, हत, मारा हुआ।
प्रवासी–(सं. पुं., वि.) परदेश में रहनेवाला, परदेशी।
प्रवाह–(सं. पुं.) प्रवृत्ति, झुकाव, पानी की गति, जल का स्रोत, धारा, बहता हुआ पानी, विस्तार, चलता हुआ क्रम, कार्य का बराबर चलता रहना।
प्रवाहक–(सं. वि.) अच्छी तरह ले जानेवाला।
प्रवाहणी–(सं. स्त्री.)मलद्वार की सब से ऊपरी कुंडली जो मल को बाहर फेंकती है।
प्रवाहिका–(सं. स्त्री.) ग्रहणी रोग, अतिसार, सदा बहनेवाली नदी।
प्रवाहित–(सं.वि.)बहता हुआ,ढोया हुआ।
प्रवाही–(सं. वि.) बहने या बहानेवाला, तरल, द्रव, प्रवाहयुक्त; (स्त्री.) बालुका, बालू।
प्रविख्याति–(सं. स्त्री.) अति प्रसिद्धि।
प्रविचय–(सं.पुं.)परीक्षा,अनुसन्धान,खोज।
प्रविचार–(सं. पुं.) उत्तम रूप से विचार।
प्रविदारण–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई।
प्रविपल–(सं. पुं.)विपल के साठ भागों में से एक भाग।
प्रविरल–(सं. वि.) अत्यल्प, बहुत थोड़ा।
प्रविवाद–(सं. पुं.) तर्क-वितर्क करना।
प्रविषा–(सं. स्त्री.) अतिविषा, अतीस।
प्रविष्ट–(सं. वि.) पैठा हुआ, घुसा हुआ।
प्रविष्टक–(सं. पुं.) घर में घुसनेवाला।
प्रविसना–(हिं. क्रि. अ.) प्रवेश करना, घुसना।
प्रविस्तार–(सं.पुं.)पर्याप्त चौड़ाई,फैलाव।
प्रवीण–(सं. वि.) निपुण, शिक्षित, कुशल, चतुर, अच्छा गाने-बजानेवाला; –ता–(स्त्री.) कुशलता, चतुराई।
प्रवीर–(सं.पुं.,वि.) बड़ा योद्धा, बहादुर; –बाहु–(पुं.) एक प्रकार के राक्षस; –वर–(पुं.) एक प्रकार के असुर।
प्रवृत्त–(सं. वि.) नियुक्त, रत, लीन, किसी काम में लगा हुआ, उद्यत।
प्रवृत्तक–(सं.पुं.)एक [illegible] का नाम।
प्रवृत्ति–(सं. स्त्री.)प्रवाह, बहाव, वार्ता वृत्तान्त, चित्त का किसी ओर लगाव, या झुकाव, उत्पत्ति, सांसारिक विषयों

में लगन, नैयायिकों के मत से एक यत्न विशेष, हाथी का मद।
प्रवृद्ध–(सं. वि.) प्रौढ़, अत्यन्त पका हुआ, अच्छी तरह से बढ़ा हुआ; (पुं.) तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।
प्रवृद्धि–(सं. स्त्री.) उन्नति।
प्रवेता–(सं.पुं.) रथ हाँकनवाला, सारथी।
प्रवेद–(सं.पुं.) अच्छी समझ।
प्रवेदन–(सं. पुं.) ज्ञापन, घोषणा।
प्रवेप–(सं.पुं.) कम्पन, कँपकँपी।
प्रवेरित–(सं.वि.) इधर-उधर फेंका हुआ।
प्रवेश–(सं.पुं.) पैठ, पहुँच, भीतर जाना, घुसना, किसी विषय की जानकारी।
प्रवेशक–(सं. पुं.) नाटक के अभिनय में वह स्थल जहाँ कोई पात्र अपने वार्तालाप से दो अंकों के बीच की घटनाओं का परिचय देता है।
प्रवेशना–(हिं. क्रि. अ.) प्रवेश करना।
प्रवेशनीय–(सं. वि.) घुसने योग्य।
प्रवेशिका–(सं.स्त्री.) प्रवेश के लिये दिया जानेवाला धन, वह पत्र, चिह्न आदि जिसको दिखलाकर कोई कहीं प्रवेश पा सकता है, माध्यमिक परीक्षा विशेष।
प्रवेशित–(सं.वि.) घुसाया या पैठाया हुआ।
प्रवेश्य–(सं. वि.) घुसने योग्य।
प्रवेष्ट–(सं. पुं.) बाहु का निचला भाग।
प्रवेष्टक–(सं.पुं.) दक्षिण बाहु, दाहिना हाथ।
प्रबोध–(सं. पुं.) ज्ञान, समझ।
प्रव्रजन–(सं. पुं.) संन्यास।
प्रव्रजिता–(सं.स्त्री.) जटामासी, गोरखमुंडी।
प्रव्रज्या–(सं. स्त्री.) संन्यास।
प्रव्राज–(सं.पुं.) बहुत नीची भूमि, संन्यास।
प्रव्राजित–(सं. वि.) निर्वासित, देश से निकाला हुआ।
प्रशंस–(हिं. वि.) प्रशंसा के योग्य; (स्त्री.) प्रशंसा।
प्रशंसक–(सं. पुं., वि.) बखान, प्रशंसा या स्तुति करनेवाला।
प्रशंसन–(सं. पुं.) गुणकीर्तन, गुणों का वर्णन करते हुए स्तुति करना, सराहना, धन्यवाद।
प्रशंसना–(हिं. क्रि. स.) गुणानुवाद करना, प्रशंसा या स्तुति करना।
प्रशंसनीय–(सं. वि.) प्रशंसा के योग्य।
प्रशंसा–(सं. स्त्री.) प्रशंसन, बड़ाई, स्तुति।
प्रशंसित–(सं. वि.) जिसकी प्रशंसा की गई हो, सराहा हुआ।
प्रशंसोपमा–(सं. स्त्री.) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान की बड़ाई दिखलाई जाती है।

प्रशंस्य–(सं. वि.) प्रशंसनीय।
प्रशम–(सं. पुं.) उपशमन, शान्ति।
प्रशमन–(सं. स्त्री.) मारण, वध, शमन, शान्ति, स्थिर करना, वश में लाना।
प्रशम्य–(सं. वि.) शान्त करने योग्य।
प्रशस्त–(सं. वि.) प्रशंसनीय, मनोहर, श्रेष्ठ, उत्तम; (पुं.) क्षेम, कुशल;–**पाद**–(पुं.) एक प्रसिद्ध नयायिक जिन्होंने वैशेषिक सूत्र की टीका लिखी है।
प्रशस्ति–(सं. स्त्री.) प्रशंसा, स्तुति, वह प्रशंसासूचक वाक्य जो किसी को पत्र लिखते समय पत्र के आदि में लिखा जाता है, सिरनामा, राजा के वे आज्ञा-पत्र जो प्राचीन समय में पत्थरों, चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते थे, प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के आदि और अन्त की कुछ पंक्तियाँ जिनमें पुस्तक के कर्त्ता, विषय, काल आदि का वर्णन रहता था;–**कृत्**–(वि.) प्रशंसा करनेवाला।
प्रशस्य–(सं. वि.) प्रशंसनीय, श्रेष्ठ, उत्तम।
प्रशांत–(सं. वि.) स्थिर, चंचलतारहित, शान्त, निश्चल वृत्ति का; (पुं.) एक महासागर जो एशिया और अमेरिका के बीच में है;–**ता**–(स्त्री.) निश्चलता, शान्ति।
प्रशांतात्मा–(सं. पुं.) शिव, महादेव, प्रशांत स्वभाववाला।
प्रशाखा–(सं.स्त्री.) शाखा में से निकली हुई शाखा, टहनी।
प्रशासक–(सं. वि.) प्रशासन करनेवाला।
प्रशासन–(सं. पुं.) राज्य के शासन की कार्यकारिणी व्यवस्था।
प्रशासित–(सं. वि.) प्रशासन के अंतर्गत, शिक्षित, संयमित।
प्रशास्ता–(सं. पुं.) शासनकर्ता।
प्रशिथिल–(सं. वि.) अति शिथिल, बहुत थका हुआ।
प्रशिष्य–(सं. पुं.) शिष्य का शिष्य।
प्रशोष–(सं. पुं.) शुष्क होना, सोखना।
प्रशोषण–(सं. पुं.) सोखना, सुखाना।
प्रश्न–(सं.पुं.) जिज्ञासा, पूछने की बात, विचारणीय विषय, एक उपनिषद् का नाम।
प्रश्नदूती–(सं. पुं.) प्रहेलिका, पहेली, बुझौवल।
प्रश्नि–(सं. स्त्री.) एक ऋषि का नाम, जलकुम्भी।
प्रश्नोत्तर–(सं. पुं.) प्रश्न और उत्तर, वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर दोनों रहते हैं।

प्रश्रय–(सं. पुं.) विनय, आश्रय, स्थान, सहारा, टेक, एक देवता का नाम।
प्रश्रयण–(सं.पुं.) विनय, शिष्टाचार।
प्रश्रयी–(सं. वि.) शान्त, नम्र, विनीत।
प्रश्लिष्ट–(सं.वि.) अच्छी तरह से संवद्ध।
प्रश्लेष–(सं. पुं.) व्याकरण की सन्धि में स्वरों का परस्पर मिल जाना।
प्रश्वास–(सं.पुं.) साँस बाहर निकालना, वह वायु जो नाक से बाहर निकलती है।
प्रष्टव्य–(सं. वि.) पूछने योग्य।
प्रष्टा–(सं. पुं.) प्रश्नकर्ता, पूछनेवाला।
प्रष्टि–(सं. पुं.) तीन बैलों की गाड़ी में वह बैल जो आगे जोता जाता है, तिपाई।
प्रसंख्या–(सं. स्त्री.) चिन्ता, ध्यान।
प्रसंग–(सं. पुं.) घनिष्ठ संबंध, मेल, हेतु, कारण, प्रस्ताव, मैथुन, अनुरक्ति, लगन, क्रमबद्ध संबंध, व्याप्ति-रूप-सम्बन्ध; प्रकरण, अर्थ आदि की संगति, विस्तार;–**सम**–(पुं.) न्याय में एक प्रकार का प्रतिषेध या कुतर्क।
प्रसंसना–(हिं. क्रि. स.) बड़ाई करना।
प्रसक्त–(सं. वि.) संबद्ध, आसक्त, संश्लिष्ट, लगा हुआ, मिला हुआ।
प्रसक्ति–(सं.स्त्री.) प्रसंग, अनुमिति, आपत्ति।
प्रसत्ति–(सं. स्त्री.) निर्मलता, शुद्धि।
प्रसन्न–(सं. वि.) सन्तुष्ट, निर्मल, स्वच्छ, अनुकूल, खुश; (पुं.) महादेव, शिव।
प्रसन्नता–(सं. स्त्री.) अनुग्रह, कृपा, हर्ष, आनन्द, प्रफुल्लता, निर्मलता, स्वच्छता।
प्रसन्नमुख–(सं. वि.) जिसकी आकृति से प्रसन्नता टपकती हो।
प्रसन्नांध–(सं.पुं.) घोड़े का एक नेत्र रोग।
प्रसन्नात्मा–(सं. वि.) जो सदा प्रसन्न रहता हो; (पुं.) विष्णु।
प्रसन्नित–(हिं. वि.) देखें 'प्रसन्न'।
प्रसभ–(सं. पुं.) बलात्कार।
प्रसर–(सं.पुं.) विस्तार, फैलाव, वेग, समूह, व्याप्ति, साहस, वीरता, उत्पत्ति, प्रेम।
प्रसरण–(सं. पुं.) सेना का इधर-उधर फैलना, आगे बढ़ना, फैलाव, उत्पत्ति, व्याप्ति, विस्तार।
प्रसरित–(सं. वि.) विस्तृत, फैला हुआ, आगे बढ़ा हुआ।
प्रसजन–(सं. वि.) गिराना, डालना।
प्रसर्पण–(सं.पुं.) फैलाव, घुसना, पैठना।
प्रसर्पी–(सं. वि.) गतिशील, रेंगनेवाला।
प्रसव–(सं. पुं.) बच्चा जनने की क्रिया, प्रसूति, जन्म, उत्पत्ति, सन्तान, आज्ञा।
प्रसवन–(सं.पुं.) बच्चा जनना, गर्भपात।
प्रसवना–(हिं. क्रि. अ.,स.) उत्पन्न होना,

प्रसव करना।
प्रसव-वेदना-(सं. स्त्री.) वह पीड़ा जो बच्चा जनने के समय होती है।
प्रसविता-(सं.पुं.)जन्म देनेवाला, उत्पन्न करनेवाला, पिता, बाप।
प्रसवित्री-(सं.स्त्री.)जन्म देनेवाली,माता।
प्रसविनी-(सं.वि.,स्त्री.)जन्म देनेवाली,माता।
प्रसव्य-(सं. वि.) प्रतिकूल, बायाँ; (पुं.) बाईं ओर से परिक्रमा करना।
प्रसहन-(सं.पुं.) सहन, क्षमा, आलिंगन।
प्रसातिका-(सं.स्त्री.) सांवां नाम का अन्न।
प्रसाद-(सं. पुं.) प्रसन्नता, स्वच्छता, कृपा, अनुग्रह, स्वास्थ्य, गुरुजन आदि के खाने के बाद बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय, वह पदार्थ जिसको देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें, देवता को चढ़ाने की वस्तु, काव्य का गुण विशेष, वह सुबोध भाषा जिसको सुनते ही भाव समझ में आ जाय, शब्दालंकार के अन्तर्गत एक वृत्ति, धर्म की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न एक पुत्र।
प्रसादक-(सं. वि.) निर्मल या प्रसन्न करनेवाला; (पुं.) प्रसाद।
प्रसादन-(सं.वि.,पुं.) प्रसन्न करनेवाला, प्रसन्नता देनेवाला, प्रसन्न करना।
प्रसादना-(सं. स्त्री.) परिचर्या, सेवा।
प्रसादनीय-(सं. वि.) प्रसन्न करने योग्य।
प्रसादान्न-(सं. पुं.) देवता का प्रसादरूप अन्न।
प्रसादी-(हि. स्त्री.) नैवेद्य, देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ, वह पदार्थ जो बड़ा छोटे को देता हो।
प्रसाधक-(सं. वि.) सम्पादन करनेवाला, राजाओं को कपड़ा, गहना आदि पहनानेवाला।
प्रसाधन-(सं. पुं.) अलंकार, शृंगार, वेश।
प्रसाधनी-(सं. स्त्री.) कंघी।
प्रसाधित-(सं.वि.) अलंकृत, सजाया हुआ।
प्रसार-(सं.पुं.) विस्तार, फैलाव, इधर-उधर जाना, निर्गम, निकास, संचार।
प्रसारना-(हि. क्रि. स.) फैलाना।
प्रसारण-(सं.पुं.) विस्तारकरण, फैलाना, पसारना, बढ़ाना।
प्रसारित-(सं. वि.) विस्तारित, फैलाया हुआ।
प्रसारिणी-(सं.स्त्री.) लजालू, लाजवन्ती।
प्रसारी-(सं. वि.) फैलनेवाला।
प्रसित-(सं. पुं.) पीब, मवाद।
प्रसिति-(सं.स्त्री.) बंधन, जाल, रस्सी।
प्रसिद्ध-(सं. वि.) विख्यात, अलंकृत, विभूषित, सजाया हुआ;-ता-(स्त्री.) प्रसिद्ध होने का भाव।
प्रसिद्धि-(सं. स्त्री.) ख्याति, शृंगार।
प्रसुत-(सं.वि.) दबाया या निचोड़ा हुआ।
प्रसुप्त-(सं. वि.) निद्रित, सोया हुआ।
प्रसुप्ति-(सं. स्त्री.) घोर निद्रा, गहरी नींद।
प्रसू-(सं. स्त्री.) माता, जननी, घोड़ी, केला; (वि.स्त्री.) उत्पन्न करनेवाली।
प्रसूका-(सं. स्त्री.) घोड़ी, असगन्ध।
प्रसूत-(सं. वि.) संजात, उत्पन्न; (पुं.) कुसुम, फूल, स्त्रियों का एक रोग जो प्रसव के बाद होता है; एक रोग जिसमें हाथ-पैर से पसीना छूटता है।
प्रसूता-(सं.स्त्री.) सद्यः जननेवाली स्त्री।
प्रसूति-(सं. स्त्री.) प्रसव, जनन, उद्भव, तनय, बेटा, बेटी, सन्तान, कारण, उत्पत्ति-स्थान, दक्ष प्रजापति की स्त्री का नाम, वह जिसने सद्यः प्रसव किया हो।
प्रसूतिका-(सं. स्त्री.) प्रसूता।
प्रसून-(सं.पुं.) पुष्प, फूल, मदार का वृक्ष।
प्रसूनक-(सं. पुं.) मुकुल, कली, फूल।
प्रसूनबाण, प्रसूनेषु-(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।
प्रसृत-(सं. वि.) बढ़ा हुआ, फैला हुआ, नियुक्त, तत्पर, भेजा हुआ, गया हुआ; (पुं.) हथेली भर का मान, गहरी की हुई हथेली, पसर।
प्रसृता-(सं. स्त्री.) जंघा, जाँघ।
प्रसृति-(सं. स्त्री.) विस्तार, फैलाव, सन्तति, सोलह तोले का परिमाण।
प्रसृष्ट-(सं. वि.) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, दूषित।
प्रसेक-(सं. पुं.) सेंचना, निचोड़, छिड़काव, एक असाध्य रोग, पसेव।
प्रसेद-(हि. पुं.) प्रस्वेद, पसीना।
प्रसेदिका-(सं. स्त्री.) छोटा बगीचा।
प्रसेव-(सं.पुं.) बीन की तुंबी, चमड़े की थैली।
प्रसेवक-(सं.पुं.) चमड़े या कपड़े का थैला, बीना की तुंबी।
प्रस्कंद-(सं. पुं.) विरेचन, अतिसार रोग, शिव, महादेव।
प्रस्कंदिका-(सं. स्त्री.) संग्रहणी रोग।
प्रस्खलन-(सं. पुं.) पतन, गिरना।
प्रस्तर-(सं. पुं.) शिला, पत्थर, मणि, बिछावन, पत्तों की सेज, प्रस्तार, समतल, [illegible]।
प्रस्तरण-(सं. पुं.) बिछावन, बिछौना।
प्रस्तरिणी-(सं. स्त्री.) [illegible]।
प्रस्तरोपल-(सं. पुं.) चन्द्रकान्त मणि।
प्रस्तव-(सं. पुं.) स्तुति, प्रशंसा, प्रस्ताव।
प्रस्तान्न-(सं. पुं.) पुराना चावल।
प्रस्तार-(सं.पुं.) घास का जंगल, पत्तों का बिछौना, विस्तार, फैलाव, वृद्धि, परत, सीढ़ी, समतल भूमि, छन्दःशास्त्र के अनुसार वह विधि जिससे छन्दों के भेद की संख्याओं और रूपों का ज्ञान होता है।
प्रस्ताव-(सं. पुं.) अवसर, प्रकरण, छिड़ी हुई बात, चर्चा, सभा के सामने उपस्थित की हुई बात या विषय, परिचय, भूमिका।
प्रस्तावक-(सं. पुं.) प्रस्ताव करनेवाला।
प्रस्तावन-(सं.पुं.) प्रस्ताव करने की क्रिया।
प्रस्तावना-(सं. स्त्री.) आरम्भ, कथोद्घात, वह प्रसंग जो नाटकादि में अभिनय के पूर्व कथा-वस्तु का परिचय देने के लिये कहा जाता है।
प्रस्तावित-(सं. वि.) जिसके लिये प्रस्ताव किया गया हो।
प्रस्तुत-(सं. वि.) उपयुक्त, योग्य, प्राप्त, उद्यत, तैयार, प्रकरण-युक्त, जिसकी प्रशंसा की गई हो, जो किया गया हो, जो कहा गया हो।
प्रस्तुतालंकार-(सं. पुं.) वह अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत विषय के संबंध में कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत विषय पर घटाया जाता है।
प्रस्तुति-(सं. स्त्री.) प्रस्तावना, प्रशंसा, स्तुति, स्मृति।
प्रस्थ-(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक मान जो प्रायः एक द्रोण का सोलहवाँ भाग माना जाता था, पहाड़ का ऊँचा किनारा, शिखर, फैलाव।
प्रस्थपुष्प-(सं. पुं.) छोटे पत्तों की तुलसी, जंभीरी नींबू।
प्रस्थान-(सं. पुं.) मार्ग, गमन, यात्रा से पहले अस्त्र आदि जिनको यात्रा का मुहूर्त न मिलने पर लोग शुभ मुहूर्त में किसी के घर रख आते हैं और यात्रा पर जाते समय साथ ले लेते हैं;-त्रयी-(स्त्री.) ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् और गीता।
प्रस्थानी-(हि. वि.) प्रस्थान करनेवाला, जानेवाला।
प्रस्थापन-(सं. पुं.) स्थापन, प्रस्थान कराना, भेजना।
प्रस्थापित-(सं. वि.) प्रेषित, स्थापित।
प्रस्थाता-(सं.पुं.,वि.) प्रस्थान करनेवाला।
प्रस्थायी-(सं. वि.) [illegible]

करनेवाला हो।
प्रस्थिका–(सं.स्त्री.) आमड़ा, पुदीना।
प्रस्थित–(सं.वि.) जो जाने को तैयार हो, जो गया हो, स्थिर, ठहरा हुआ, दृढ़।
प्रस्थिति–(सं. स्त्री.) प्रस्थान, यात्रा।
प्रस्निग्ध–(सं. वि.) तेल लगा हुआ।
प्रस्नुषा–(सं.स्त्री.) नतोहू, पोते की स्त्री।
प्रस्फुट, प्रस्फुटित–(सं. वि.) प्रकट, खिला हुआ।
प्रस्फुरण–(सं. पुं.) प्रकाशित होना।
प्रस्फोटन–(सं. पुं.) सूर्य, सूप, फूटना, विकसित होना, फटकना, गोले आदि का एकाएक फूटना या खुलना जिससे उसके भीतर का पदार्थ वेग से बाहर निकल जाता है।
प्रस्रव–(सं. पुं.) झरना, बहना।
प्रस्रवण–(सं. पुं.) स्वेद, पसीना, किसी स्थान से निकलकर बहता हुआ पानी, सोता, झरना, दूध, मूत्र।
प्रस्राव–(सं.पुं.) लगातार बहना, मूत्र।
प्रस्रुत–(सं. वि.) झड़ा हुआ, गिरा हुआ।
प्रस्वन–(सं.पुं.) जोर का शब्द।
प्रस्वाप–(सं. पुं.) गैस, दवा आदि जिसके प्रयोग से निद्रा आ जाती है।
प्रस्वेद–(सं. पुं.) घर्म, पसीना।
प्रहंता–(स. पुं.) मारनेवाला।
प्रहत–(सं. वि.) प्रताड़ित, पीटा हुआ, प्रसारित, फैलाया हुआ; (पुं.) प्रहार।
प्रहर–(सं. पुं.) दिन-रात के आठ भागों में से एक भाग, तीन घंटे का समय।
प्रहरक–(सं. पुं.) पहरेदार या प्रहरी, जो घंटा बजाता हो।
प्रहरखना–(हि. क्रि. अ.) आनन्दित होना।
प्रहरण–(सं. पुं.) मारना, फेंकना, हटाना, हरण करना, छीनना; **–कलिका**–(स्त्री.) चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
प्रहरणीय–(सं. वि.) हरण करने योग्य।
प्रहरी–(सं. पुं.) पहर-पहर पर घंटा बजानेवाला, पहरा देनेवाला, चौकीदार।
प्रहर्ता–(सं. पुं.) प्रहार करनेवाला, योद्धा।
प्रहर्ष–(सं. पुं.) हर्ष, अत्यन्त आनन्द।
प्रहर्षण–(सं.पुं.) बुध ग्रह, आनन्द, एक अलंकार जिसमें बिना प्रयत्न के किसी वांछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है; (वि.) हर्ष उत्पन्न करनेवाला।
प्रहर्षणी–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हलदी, एक वर्णवृत्त का नाम।
प्रहसन–(सं. पुं.) हास, परिहास, रूपक का एक अंग, व्यंग्योक्ति, चुहल, खिल्ली।
प्रहाण–(सं. पुं.) परित्याग, चित्त की एकाग्रता।
प्रहार–(सं. पुं.) आघात, चोट, वार।
प्रहारक–(सं. पुं.) प्रहारी, मारनेवाला।
प्रहारना–(हि.क्रि.स.) आघात पहुँचाना, मारना।
प्रहारित–(सं.वि.) जिस पर प्रहार किया गया हो।
प्रहारी–(सं.पुं.,वि.) प्रहार करनेवाला, मारनेवाला, नष्ट करनेवाला, अस्त्र फेंकनेवाला; (पुं.) एक राक्षस का नाम।
प्रहार्य–(सं.वि.) प्रहार या हरण करने योग्य।
प्रहास–(सं. पुं.) जोर की हँसी, ठहाका, शिव, कार्तिकेय के अनुचर का नाम।
प्रहासक, प्रहासी–(सं. पुं.) मसखरा, हँसानेवाला।
प्रहित–(सं. वि.) प्रेरित, उसकाया हुआ, फेंका हुआ।
प्रहृत–(सं. वि.) फेंका हुआ, मारा हुआ।
प्रहृष्ट–(सं. वि.) अत्यन्त प्रसन्न।
प्रहेणक, प्रहेलक–(सं. पुं.) लपसी।
प्रहेलिका–(सं.स्त्री.) कूटार्थ, पहेली।
प्रह्लास–(सं. पुं.) क्षय, नाश।
प्रह्लाद–(सं. पुं.) दैत्यपति हिरण्यकशिपु के पुत्र जो विष्णु के बड़े भक्त थे, आनन्द, आमोद।
प्रह्लादक–(सं. वि.) आनन्दकर।
प्रह्लादन–(सं. पुं.) प्रसन्न करना।
प्रह्लादिनी–(सं स्त्री.) लाल लाजवन्ती।
प्रह्व–(सं. वि.) नम्र, विनीत।
प्रह्वण–(सं. पुं.) विनीतभाव से झुकना।
प्रांग–(सं. पुं.) छोटा नगाड़ा।
प्रांगण–(सं. पुं.) एक प्रकार का ढोल, घर के बीच का खुला हुआ स्थान, आँगन।
प्रांजल–(सं. वि.) सरल; सीधा, सच्चा।
प्रांजलि–(सं. वि.) जो अंजली बाँधे हो; (स्त्री.) बद्धांजलि।
प्रांत–(सं. पुं.) अन्त, किनारा, दिशा, प्रदेश; **–ग**–(वि.) सीमा प्रदेश पर रहनेवाला; **–भूमि**–(स्त्री.) सोपान, सीढ़ी, योगशास्त्र के अनुसार समाधि।
प्रांतर–(सं. पुं.) वन, जंगल, दो गाँवों के बीच की भूमि, वृक्ष का खोखला भाग।
प्रांतिक, प्रांतीय–(सं. वि.) प्रान्त-संबंधी।
प्रांश–(सं. वि.) ऊँचा; (पुं.) विष्णु।
प्रांशु–(सं. वि.) उच्च, उन्नत; **–ता**–(स्त्री.) उच्चता, ऊँचापन।
प्राकषिक–(सं. पुं.) स्त्रियों के बीच में नाचनेवाला मनुष्य, रंडियों का दलाल।
प्राकाम्य–(सं. पुं.) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।
प्राकार–(सं. पुं.) प्राचीर, चहारदीवारी।
प्राकाश्य–(सं. पुं.) ख्याति, प्रसिद्धि।
प्राकृत–(सं. वि.) नीच, प्रकृति से उत्पन्न, स्वाभाविक, लौकिक, संसारी, साधारण; (स्त्री.) बोलचाल की वह भाषा जिसका प्रचार किसी समय प्रांत विशेष में हो, एक भाषा जिसका प्रचार प्राचीन समय में भारतवर्ष में था, (बहुत से पंडितों का मत है कि प्राकृत भाषा से ही संस्कृत भाषा निकली है); **–ज्वर**–(पुं.) ऋतु के प्रभाव से होनेवाला ज्वर; **–तंत्र**–(पुं.) प्रजा के हस्तगत राज्यशासन, प्रजातन्त्र; **–मित्र**–(पुं.) जिसके साथ स्वाभाविक मित्रता हो; **–शत्रु**–(पुं.) स्वाभाविक शत्रु; **–समाज**–(पुं.) साधारण जन-समाज।
प्राकृतिक–(सं. वि.) प्रकृति-संबंधी, स्वाभाविक, साधारण, जो प्रकृति से उत्पन्न हो, सांसारिक, लौकिक; **–इतिवृत्त**–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें सृष्ट (प्राकृतिक) पदार्थों के स्वरूप, उत्पत्ति आदि का विवेचन हो; **–भूगोल**–(पुं.) भूगोल विद्या का वह अंग जिसमें समुद्र, पर्वत, नदी आदि का विवेचन किया जाता है; **–विज्ञान**–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक सृष्टि-विषयक मूल कारणों आदि का विवेचन होता है।
प्राक्–(सं.वि.) पहिले का, अगला; (पुं.) पूर्व दिशा, पूरब; **–केवल**–(वि.) जो पहले से ही भिन्न रूप में प्रकट रहा हो; **–छाय**–(पुं.) वह समय जब छाया पूर्व की ओर पड़ती हो; **–तन**–(वि.) प्राचीन, पुराना; **–फल**–(पुं.) पनस, कटहल; **–संध्या**–(स्त्री.) सूर्योदय के समय का काल, प्रातःकाल, सवेरा।
प्राखर्य–(सं. पुं.) प्रखरता, तीक्ष्णता।
प्रागभाव–(सं.पुं.) अपनी उत्पत्ति के पहले कार्य का अपने कारण में अभाव या न रहना।
प्रागल्भ्य–(सं. पुं.) निर्भयता, साहस, वीरता, धृष्टता; प्रबलता, घमंड, चतुराई।
प्रागुक्ति–(सं. स्त्री.) पूर्वोक्ति, पूर्वकथन।
प्रागुत्तरा–(सं. स्त्री.) पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा।
प्राग्गामी–(सं. वि.) अग्रगामी, पूर्वगामी।
प्राग्जन्म–(सं. पुं.) पूर्व-जन्म।
प्राग्ज्योतिष–(सं. पुं.) कामरूप देश, कामाख्या देश, **–पुर**–(पुं.) इस देश की राजधानी जो आजकल गोहाटी के नाम से प्रसिद्ध है।

प्राग्द्वार–(सं. पुं.) पूरब की ओर का दरवाजा।
प्राग्भाग–(सं. पुं.) अग्रभाग।
प्राग्भार–(सं. पुं.) पर्वत का अगला भाग।
प्राग्वत्–(सं. अव्य.) पहले के समान।
प्राघात–(सं. पुं.) युद्ध।
प्राघुण–(सं. पुं.) पाहुन, अतिथि।
प्राचार्य–(सं. पुं.) गुरु, शिक्षक, आचार्य, पण्डित।
प्राचिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की विषैली मक्खी।
प्राची–(सं.स्त्री.) पूर्व दिशा, पूरब।
प्राचीन–(सं. वि.) पूर्व देश का, पहिले का, वृद्ध, बुड्ढा, पुरातन, पुराना; (पुं.) प्राचीर; **–ता**–(स्त्री.) पुराना होने का भाव, पुरानापन; **–तिलक**–(पुं.) चन्द्रमा; **–त्व**–(पुं.) पुरानापन, प्राचीनता; **–शाला**–(पुं.) पुराना घर।
प्राचीपति–(सं. पुं.) इन्द्र।
प्राचीर–(सं. पुं.) परकोटा।
प्राचुर्य–(सं. पुं.) प्रचुरता, बहुतायत।
प्राचेतस–(सं. पुं.) वाल्मीकि मुनि का नाम, विष्णु, वरुण के पुत्र का नाम।
प्राच्छित–(हिं. पुं.) देखें 'प्रायश्चित्त'।
प्राच्य–(सं. पुं.) पूर्व देश; (वि.) पूर्व दिशा में उत्पन्न, पूरबी, पूर्व काल का, पुराना; **–वृत्ति**–(स्त्री.) वैतालीय वृत्त (छन्द) के एक भेद का नाम।
प्राजन–(सं. पुं.) कोड़ा, चाबुक।
प्राजापत्य–(सं. पुं.) बारह दिनों के एक व्रत का नाम, रोहिणी नक्षत्र, आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें पिता कन्या को अलंकृत करके वर को दान देता है, प्रजापति के पुत्र; (वि.) प्रजापति से उत्पन्न, प्रजापति-संबंधी।
प्राजिक–(सं. पुं.) श्येन, बाज पक्षी।
प्राज्ञ–(सं. पुं.) वेदान्त के अनुसार जीवात्मा; (वि.) बुद्धिमान्, चतुर, पण्डित, समझदार; **–त्व**–(पुं.) बुद्धिमत्ता, पाण्डित्य।
प्राज्ञा–(सं. स्त्री.) बुद्धिमती, विदुषी, सूर्य की पत्नी का नाम।
प्राज्य–(सं. वि.) प्रचुर, अधिक, बहुत, जिस खाद्य पदार्थ में बहुत घी पड़ा हो।
प्राण–(सं. पुं.) ब्रह्म, ब्रह्मा, वायु, हवा, श्वास, शक्ति, पुराण के अनुसार एक कल्प का नाम, जीवन, जान, अग्नि, परम प्रिय व्यक्ति, धाता के पुत्र का नाम, विष्णु, देहस्थित वायु जिससे प्राणी जीवित रहता है; काल का वह भाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके; (मुहा.) **–उड़ जाना**–बहुत घबड़ा जाना या डर जाना; **–का गले तक आ जाना**–मृत्यु का समीप आ जाना; **–छोड़ना**–मरना; **–जाना या निकलना** –मृत्यु होना; **–डालना**–जीवन प्रदान करना; **–देना**–मर जाना; **–निकलना**–मर जाना; **–लेना**–मार डालना; **–हारना**–साहस छोड़ देना; **किसी पर प्राण देना**–किसी को प्राण से अधिक चाहना; **प्राणों पर बीतना**–बड़े संकट में पड़ना; **–क**–(पुं.) प्राणिमात्र, जीवक वृक्ष; **–कर**–(वि.) शक्तिवर्धक; **–कष्ट**–(पुं.) बहुत बड़ा कष्ट या दुःख; **–कांत**–(पुं.) प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी; **–घात**–(पुं.) हत्या, वध; **–घ्न**–(वि.) प्राण लेनेवाला; **–जीवन**–(पुं.) परम प्रिय व्यक्ति, अत्यन्त प्रिय पुत्र, विष्णु; **–त्याग**–(पुं.) प्राण का परित्याग, मरना; **–द**–(पुं.) जल, पानी, रुधिर, विष्णु; (वि.) प्राण की रक्षा करनेवाला; **–दा**–(स्त्री.) हरितकी हर्रे; **–दाता**–(पुं.) जीवन देनेवाला; **–दान**–(पुं.) जीवनदान, किसी को मरने या मारे जाने से बचाना; **–द्रोह**–(पुं.) प्राणहत्या; **–धन**–(पुं.) अत्यन्त प्रिय; **–धार**–(वि.) जीवित; (पुं.) प्राणी; **–धारण**– (पुं.) जीवन-धारण, शिव; **–धारी**–(वि.) प्राणवार, जीवित, जो साँस लेता हो, चेतन; **–नाथ**–(पुं.) पति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति, प्रियतम; **–नाथी**–(पुं.) गुरु प्राणनाथ के संप्रदाय का अनुयायी, इनका चलाया हुआ संप्रदाय; **–नाश**–(पुं.) प्राणत्याग; **–नाशक**–(वि.) मार डालनेवाला; **–निग्रह**–(पुं.) प्राणायाम की क्रिया; **–पति**–(पुं.) आत्मा, स्वामी, पति, प्रिय व्यक्ति; **–पत्नी**–(स्त्री.) प्राण के समान प्रिय पत्नी; **–परिग्रह**–(पुं.) प्राण-धारण, जन्म; **–परिवर्तन**–(पुं.) किसी मरे हुए व्यक्ति की आत्मा को किसी जीवित प्राणी के शरीर म बुलाना; **–प्यारा**–(हिं. पुं.) अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी; **–प्रतिष्ठा**–(स्त्री.) प्राण-धारण करना, हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार किसी नई बनी हुई मूर्ति को मन्दिर में स्थापित करते समय मन्त्रों को पढ़कर उसमें प्राण आरोपण करना; **–प्रद**–(वि.) प्राणदाता, शरीर का स्वास्थ्य, बल आदि बढ़ानेवाला; **–प्रिय**–(वि.) प्राण के समान प्रिय; (पुं.) प्यारा, अति प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी, प्रियतम; **–वल्लभ**–(पुं.) देखें 'प्राण-वल्लभ'; **–भृत्**–(वि.) प्राण-धारण करनेवाला; (पुं.) विष्णु; **–मय**–(वि.) प्राणधारी, जिसमें प्राण हो; **–०कोश**–(पुं.) वेदान्त के अनुसार शरीरस्थ पाँच कोशों में से एक जो प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान-पाँचों प्राणों से बना हुआ माना जाता है; **–यात्रा**–(स्त्री.) साँस का खींचना और छोड़ना, वह व्यापार जिससे मनुष्य जीवित रहता है; **–योनि**–(पुं.) प्राणवायु, परमेश्वर; **–रंध्र**–(पुं.) नासिका, नाक; **–रोध**–(पुं.) प्राणायाम; **–वध**–(पुं.) जान से मार डालना; **–वल्लभ**–(पुं.) अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, प्यारा, पति, स्वामी; **–वायु**–(स्त्री.) प्राण, जीव; **–व्यय**–(पुं.) प्राणनाश; **–शरीर**–(पुं.) उपनिषदों के अनुसार वह सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है; **–संयम**–(पुं.) प्राणायाम; **–संशय, संकट, संदेह**–(पुं.) जीवन पर आनेवाली महान् आशंका; **–संभत**–(पुं.) वायु, हवा; **–सार**–(वि.) बलिष्ठ; **–हर**–(वि.) मारक, नाश करनेवाला; **–हानि**–(स्त्री.) वह अवस्था जिसमें प्राणों पर संकट हो; **–हारी**–(वि.) प्राण लेनेवाला।
प्राणांत–(सं. पुं.) प्राणनाश, मरण।
प्राणांतक–(सं. वि.) जान लेनेवाला।
प्राणाधार, प्राणाधिक–(सं. वि.) प्राणों से अधिक प्रिय, प्यारा।
प्राणाधिनाथ–(सं. पुं.) पति, स्वामी।
प्राणायाम–(सं.पुं.) प्राण-वायु की गति का विच्छेदक व्यापार, योग के आठ अंगों में से एक जिसमें श्वास और प्रश्वास को यथाविधि इच्छा-शक्ति के अधिकार में किया जाता है।
प्राणायामी–(सं. पुं., वि.) प्राणायाम करनेवाला।
प्राणी–(हिं. पुं.) जीव-जन्तु, मनुष्य, व्यक्ति, पुरुष या स्त्री; (वि.) जिसमें प्राण हों।
प्राणीद्यूत–(सं. पुं.) मेढ़ा, तीतर, घोड़े आदि जीवों की लड़ाई या दौड़ का जुआ।
प्राणेश, प्राणेश्वर–(सं. पुं.) पति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति, बहुत प्यारा।
प्राणोपहार–(सं. पुं.) आहार, भोजन।
प्रातः–(सं. पुं.) प्रभात, तड़का; **–कर्म**–(पुं.) प्रातःकाल के समय किया

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह–(सं.पुं.) मंत्रणा-गृह, राजाओं आदि का मन्त्रणा करने का स्थान।
प्रेक्षित–(सं. वि.) दृष्ट, देखा हुआ।
प्रेक्षी–(सं. वि.) देखनेवाला।
प्रेत–(सं. पुं.) मृत मनुष्य, एक देवयोनि जो पिशाचों की तरह की होती है, वह कल्पित शरीर जो मृत्यु के बाद प्राप्त होता है, भयंकर आकृति का मनुष्य; **–कर्म**–(पुं.) प्रेत-कार्य, हिन्दुओं में वह कर्म जो मृतक के दाह के बाद से सपिण्डीकरण तक किया जाता है; **–कार्य**–(पुं.) प्रेतकर्म; **–गृह**–(पुं.) शव जलाने का स्थान, श्मशान, मरघट; **–गेह**–(पुं.) प्रेत-गृह, मरघट; **–त्व**–(पुं.), **–ता**–(स्त्री.) प्रेत का भाव, काया या धर्म; **–दाह**–(पुं.) मृतक को जलाने का कार्य; **–देह**–(पुं.) पुराण के अनुसार मृतक का वह कल्पित शरीर जो मृत्यु समय से सपिण्डीकरण तक उसकी आत्मा को प्राप्त होता है; **–नदी**–(स्त्री.) वैतरणी नदी; **–नाथ, –नाह**–(पुं.) यम; **–पुर**–(पुं.) यमपुरी; **–यज्ञ**–(पुं.) वह यज्ञ जिसके करने से प्रेतयोनि से मुक्ति होती है; **–राज**–(पुं.) यमराज; **–लोक**–(पुं.) यमपुरी; **–विधि**–(स्त्री.) मृतक का दाह आदि कर्म; **–शिला**–(स्त्री.) गया की वह शिला जिस पर प्रेतों के उद्देश्य से पिण्डदान किया जाता है; **–हार**–(पुं.) मृत शरीर को उठाकर श्मशान पर ले जानेवाला।
प्रेतनी–(हिं. स्त्री.) प्रेत की स्त्री, चुड़ैल, भूतनी।
प्रेता–(सं. स्त्री.) पिशाची, भगवती कात्यायनी का एक नाम।
प्रेताधिप–(सं.पुं.) प्रेतों के राजा, यमराज।
प्रेतान्न–(सं. पुं.) वह अन्न जो प्रेत के उद्देश्य से दिया जाय।
प्रेताशिनी–(सं. स्त्री.) मृतकों को खानेवाली भगवती का एक नाम।
प्रेताशौच–(सं. पुं.) हिन्दुओं में सपिण्ड की मृत्यु के बाद होनेवाला अशौच जो ब्राह्मणों में दस, क्षत्रियों में बारह, वैश्यों में पन्द्रह और शूद्रों में तीस दिन का होता है, मरणाशौच।
प्रेतास्थि–(सं.पुं.) मृत व्यक्ति की हड्डी।
प्रेति–(सं. स्त्री.) अन्त, मरण।
प्रेतिक–(सं. पुं.) मृत व्यक्ति, प्रेत।
प्रेतिनी–(हिं. स्त्री.) पिशाचिनी, डाइन।
प्रेती–(हिं.पुं.) प्रेतपूजक, प्रेत की उपासना करनेवाला।
प्रेतेश–(सं. पुं.) यमराज।
प्रेतोन्माद–(सं. पुं.) एक प्रकार का उन्माद जिसको लोग प्रेतबाधा से उत्पन्न मानते हैं।
प्रेत्य–(सं. पुं.) लोकान्तर, परलोक।
प्रेत्यभाव–(सं.पुं.) पुनर्जन्म।
प्रेप्सु–(सं. वि.) जो किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करता हो।
प्रेम–(सं. पुं.) प्रियता, स्नेह, प्रीति, अनुराग, प्यार, माया और लोभ, स्त्री-जाति और पुरुष-जाति का पारस्परिक मौन स्नेह जो बहुधा रूप, गुण, स्वभाव, सान्निध्य अथवा कामवासना के कारण होता है, एक अलंकार का नाम; **–कर्ता**–(पुं.) प्रेम करनेवाला, प्रेमी; **–कलह**–(पुं.) प्रेम के कारण हँसी-दिल्लगी या झगड़ा करना; **–गर्विता**–(स्त्री.) साहित्य में वह नायिका जिसको अपने पति के प्रेम का बहुत अभिमान हो, जिस स्त्री को इस बात का अभिमान हो कि उसका पति उसे बहुत चाहता है; **–जल, –नीर**–(पुं.) प्रेम के कारण आँखों से निकलनेवाला आँसू, प्रेमाश्रु; **–पातन**–(पुं.) प्रेम के आवेग में रोना; **–पात्र**–(पुं.) वह जिससे प्रेम किया जाय; **–पाश**–(स्त्री.) प्रेम का फंदा या जाल; **–पुत्तलिका**–(स्त्री.) प्यारी स्त्री, भार्या; **–पुलक**–(पुं.) प्रेम के कारण होनेवाला रोमांच; **–बंध**–(पुं.) गहरा प्रेम; **–भक्ति**–(स्त्री.) श्रीकृष्ण की वह भक्ति जो प्रेम के माध्यम से की जाय; **–मार्ग**–(पुं.) वह मार्ग जो मनुष्य को सांसारिक विषयों में फँसाता है; **–वारि**–(पुं.) प्रेम के कारण निकलनेवाला आँसू।
प्रेमा–(सं. पुं.) स्नेही, इन्द्र, वायु, उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद।
प्रेमाक्षेप–(सं.पुं.) वह अलंकार जिसमें प्रेम का वर्णन करने में उसमें व्याघात भी दिखलाया जाता है।
प्रेमामृत–(सं. पुं.) प्रेमरूप सुधा।
प्रेमालाप–(सं. पुं.) प्रेमपूर्ण वार्तालाप।
प्रेमालिंगन–(सं.पुं.) प्रेमपूर्वक आलिंगन, नायक और नायिका का परस्पर आलिंगन
प्रेमाश्रु–(सं. पुं.) देखें 'प्रेमवारि'।
प्रेमिक, प्रेमी–(सं. पुं.) प्रेम करनेवाला, वह जो प्रेम करता हो, आसक्त।
प्रेय–(सं. पुं.) एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई एक भाव किसी दूसरे भाव का अथवा स्थायी भाव का अंग होता है।
प्रेयस्–(सं. पुं.) पति, स्वामी, वल्लभ, प्रियतम।
प्रेयसी–(सं.स्त्री.) प्रियतमा, प्यारी स्त्री।
प्रेयस्ता–(सं. स्त्री.) प्रियता।
प्रेरक–(सं.पुं., वि.) प्रेरणा करनेवाला, किसी काम में प्रवृत्त करनेवाला।
प्रेरणा–(सं. पुं., स्त्री.) दबाव डालना, उत्तेजना देना, उसकाना।
प्रेरणार्थक क्रिया–(सं.स्त्री.) किसी क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह कर्ता की प्रेरणा द्वारा करवाया गया है; यथा–'पढ़ना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप 'पढ़वाना' है।
प्रेरणीय–(सं. वि.) प्रेषणीय, भेजने योग्य, प्रेरणा करने योग्य।
प्रेरना–(हिं. क्रि. स.) प्रवृत्त करना।
प्रेरयिता–(सं. पुं.) प्रेरणा करनेवाला, उभाड़नेवाला, आज्ञा देनेवाला, भेजनेवाला।
प्रेरित–(सं.वि.) प्रेषित, भेजा हुआ, उत्तेजित, उभाड़ा हुआ, प्रेरणा दिया हुआ।
प्रेषक–(सं. पुं.) प्रेरक, भेजनेवाला।
प्रेषण–(सं.पुं.) भेजने का काम, नियोग।
प्रेषना–(हिं. क्रि. स.) भेजना।
प्रेषयिता–(हिं. पुं.) भेजनेवाला।
प्रेषित–(सं. वि.) प्रेरणा किया हुआ, भेजा हुआ; (पुं.) स्वर-साधन की एक प्रणाली।
प्रेषितव्य–(सं. वि.) भेजने योग्य।
प्रेष्य–(सं. पुं.) दास, सेवक, दूत।
प्रेष्यता–(सं. स्त्री.) दासत्व, दूतत्व।
प्रोक्त–(सं. वि.) कथित, कहा हुआ।
प्रोक्षण–(सं.पुं.) सेचन, पानी छिड़कना, पानी का छींटा, विवाह में की एक रीति, परिछन।
प्रोक्षणी–(सं. स्त्री.) कुश की बनी हुई मुद्रिका।
प्रोक्षित–(सं.वि.) सींचा हुआ, बलिदान किया हुआ, निहत, मारा हुआ।
प्रोज्झित–(सं.वि.) त्यक्त, छोड़ा हुआ।
प्रोत–(सं.पुं.) वस्त्र, कपड़ा; (वि.) सिला हुआ, गुथा हुआ, गाँठ दिया हुआ।
प्रोत्कर्ष–(सं. पुं.) श्रेष्ठता, उत्तमता।
प्रोत्खात–(सं. वि.) गड्ढा किया हुआ।
प्रोत्तुंग–(सं. वि.) बहुत ऊँचा।
प्रोत्तेजित–(सं.वि.) उत्तेजित किया हुआ।
प्रोत्फुल्ल–(सं.वि.) पूर्णतः खिला हुआ।

प्रोत्साह–(सं. पुं.) प्रवल उत्साह।

प्रोत्साहक–(सं.वि.,पुं.) प्रोत्साह देनेवाला।

प्रोत्साहन–(सं.पुं.) उत्साह बढ़ाना, नाटक में एक अलंकार।

प्रोत्साहित–(सं. वि.) उत्तेजित, उत्साहित, प्रवर्तित, ललकारा हुआ।

प्रोथ–(सं.पुं.) कमर, गर्भाशय, पथिक, चिथड़ा; (वि.) स्थापित, रखा हुआ, प्रसिद्ध।

प्रोथित–(सं.वि.) भूमि में या नीचे गाड़ा हुआ।

प्रोष–(सं.पुं.) अति सन्ताप या दुःख।

प्रोषित–(सं. वि.) प्रवासी, जो विदेश गया हो; **–नायक**–(पुं.) वह नायक जो विदेश में अपनी नायिका के वियोग से विकल हो; **–पतिका**–(स्त्री.) वह स्त्री जो अपने पति के विदेश जाने से दुःखित हो; **–प्रेयसी, –भर्तृका**–(स्त्री.) वह स्त्री जिसका स्वामी परदेश में रहता हो; **–भार्य**–(पुं.) वह नायक जिसकी नायिका विदेश में रहती हो।

प्रोष्ठपद–(सं.पुं.) भादों का महीना, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र।

प्रोष्ठपदी–(सं. स्त्री.) भाद्रपद मास की पूर्णिमा।

प्रोष्ण–(सं.पुं.) अति उष्ण, बहुत गरम।

प्रोह–(सं. पुं.) पर्व-सन्धि, घेर, गाँठ; (वि.) चतुर।

प्रोहित–(हिं. पुं.) देखें 'पुरोहित'।

प्रौढ़–(सं.वि.) वर्धित, अच्छी तरह बढ़ा हुआ, पुष्ट, प्रगल्भ, निपुण, चतुर, दक्ष, पुरातन, गंभीर, गूढ़; (पुं.) चौबीस अक्षरों का एक तान्त्रिक मन्त्र; **–ता**–(स्त्री.) प्रौढ़ होने का भाव, प्रौढ़त्व; **–त्व**–(पुं.) प्रौढ़ता, प्रौढ़ावस्था।

प्रौढ़ा–(सं.स्त्री.) यौवनातीत वयवाली स्त्री, तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की स्त्री, भली भाँति कामकला जाननेवाली स्त्री।

प्रौढ़ा-अधीरा–(सं. स्त्री.) वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक में विलास के चिह्न देखकर प्रत्यक्ष क्रोध दिखलावे।

प्रौढ़ाधीरा–(सं.स्त्री.) वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक में विलाससूचक चिह्न देखकर व्यंग्य रूप से क्रोध दिखलावे।

प्रौढ़ाधीराधीरा–(सं.स्त्री.) वह नायिका जो अपने नायक में परस्त्री-गमन के चिह्न देखकर कुछ व्यंग्य पूर्वक और कुछ प्रत्यक्ष क्रोध दिखलावे।

प्रौढ़ि–(सं.स्त्री.) प्रौढ़ता, धृष्टता, वाद विवाद करने की धृष्टता।

प्रौढ़ोक्ति–(सं.स्त्री.) किसी बात को गूढ़ बनाकर कहना, वह अलंकार जिसमें उत्कर्ष का हेतु न रहने पर कल्पित किया जाता है।

प्रौण–(सं. वि.) निपुण, चतुर।

प्रौष्ठपदी–(सं. स्त्री.) भाद्रपद मास की पूर्णिमा।

प्लक्ष–(सं. पुं.) पाकर का वृक्ष, पीपल का पेड़, सात कल्पित द्वीपों में से एक।

प्लक्षादेवी–(सं. स्त्री.) सरस्वती नदी।

प्लवंग–(सं. पुं.) बंदर, हरिन, साठ संवत्सरों में से एक।

प्लवंगम–(सं.पुं.) बन्दर, एक प्रकार का मातृक छन्द; (वि.) कूद-कूदकर चलनेवाला।

प्लव–(सं. पुं.) तैरना, संतरण, प्लवन, बाढ़, एक प्रकार की सुगंधित घास, बंदर, शब्द, लौटना, साठ संवत्सरों में से एक, स्नान करना, नहाना, जल में तैरनेवाली एक चिड़िया; (वि.) तैरता हुआ।

प्लवग–(सं. पुं.) बंदर, मेढक, हरिण; (वि.) तैरनेवाला।

प्लवन–(सं. पुं.) उछलना, कूदना, तैरना, उतार।

प्लवर्ग–(सं. पुं.) अग्नि, जलपक्षी।

प्लावगा–(सं. पुं.) मर्कट, बन्दर।

प्लावन–(सं. पुं.) मज्जन, संतरण, तैरना, बाढ़, किसी पदार्थ को अच्छी तरह से धोना।

प्लावित–(सं. वि.) जल में डूबा हुआ।

प्लीहा–(सं. पुं.) पेट की तिल्ली; **–कर्ण**–(पुं.) कान का एक रोग।

प्लीहोदर–(सं. पुं.) प्लीहा का रोग।

प्लुक्षि–(सं. पुं.) स्नेह, प्रेम, अग्नि।

प्लुत–(सं. पुं.) घोड़े की टेढ़ी चाल जिसको पोइया कहते हैं, स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है; **–गति**–(पुं.) शशक, खरहा।

प्लुष–(सं. पुं.) स्नेह, प्रेम, दाह।

फ

फ–हिन्दी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन तथा पवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है। इसके उच्चारण करने में जीभ का अगला भाग ओठों से लगता है।

फंक–(हिं. स्त्री.) देखें 'फाँक'।

फंका–(हिं. पुं.) चूने दाने या बुकनी की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुँह में फाँकी जा सके, खण्ड या टुकड़ा।

फंकी–(हिं. स्त्री.) फाँकने की चूर्ण आदि की पुड़िया, फाँकने की दवा, उतनी औषध जितनी एक बार में फाँकी जा सके।

फंग–(हिं. पुं.) बन्धन, फंदा, अनुराग।

फंद–(हिं. पुं.) बंधन, फंदा, दुःख, कष्ट, गूँज, मर्म, रहस्य, जाल, छल, धोखा, फँसान का फन्दा।

फंदना–(हिं. क्रि. अ., स.) फंदे में पड़ना, फँसना, उल्लंघन करना, फाँदना।

फंदरा–(हिं. पुं.) देखें 'फंदा'।

फंदवार–(हिं. वि.) फंदा लगानेवाला।

फंदा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु या प्राणी को फँसाने के लिये लगाया हुआ रस्सी आदि का जाल, कष्ट, दुःख, पाश, फाँस; (मुहा.) **–लगाना**–किसी को फँसाने के लिये जाल फैलाना, धोखा देना; **फंदे में पड़ना**–धोखे में पड़ना।

फँदाना–(हिं. क्रि. स.) जाल में फँसाना, फंदे में लाना, उछालना, कुदाना।

फँफाना–(हिं. क्रि. अ.) शब्द को उच्चारण करते समय जीभ काँपना, हकलाना, खौलते हुए दूध, दाल आदि का ऊपर उठना।

फँसना–(हिं. क्रि. अ.) बन्धन में पड़ना, पकड़ा जाना, उलझना, अटकना।

फँसनी–(हिं. स्त्री.) कसेरे की एक प्रकार की हथौड़ी।

फँसाना–(हिं. क्रि. स.) वशीभूत करना, अपने वश में लाना, अटकाना, बझाना।

फँसिहारा–(हिं. वि.) फँसानेवाला।

फक–(हिं. वि.) स्वच्छ, सफेद; (स्त्री.) दो मिली हुई वस्तुओं का अलग होना; (मुहा.) **रंग फक पड़ना**–घबड़ाहट से चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।

फकड़ी–(हिं.स्त्री.) दुर्गति, दुर्दशा, आपत्ति।

फकीर–(अ. पुं.) साधु, तपस्वी, भिखारी।

फकीरनी–(हिं. स्त्री.) स्त्री साधु, तपस्विनी, भिखारिणी।

फकीराना–(अ. वि.) फकीरों का-सा, फकीरों जैसा।

फकीरी–(हिं. स्त्री.) भिखमंगापन निर्धनता, साधुता।

फक्कड़–(हिं. पुं.) बदमस्त व्यक्ति, उच्छृंखल आदमी, छानने फूँकनेवाला; फिकरामी साधु।

फक्किका–(सं. स्त्री.) अनुचित व्यवहार, छल-कपट, जो बात शास्त्र के कठिन

स्थल को स्पष्ट करने के लिये पूर्वपक्ष में कही जाय, कूट-प्रश्न।

फग–(हिं. पुं.) फंदा, बन्धन।

फगुआ–(हिं.पुं.) होली के उत्सव का दिन, फागुन के महीने में लोगों का वह आमोद-प्रमोद जो वसन्त-ऋतु के उपलक्ष में मनाया जाता है, (इसमें लोग एक दूसरे पर रंग डालते तथा अनेक प्रकार के अश्लील गाने गाते हैं), फाग के उपलक्ष में दी जानेवाली भेंट, गीत जो फागुन के महीने में गाया जाता है।

फगुआना–(हिं. क्रि. अ.) फागुन के महीने में किसी के ऊपर रंग छोड़ना अथवा उसको सुनाकर अश्लील गीत गाना।

फगुनहट–(हिं. स्त्री.) फागुन में चलनेवाली तीव्र वायु जो धूल से भरी होती है, फागुन में होनेवाली वर्षा।

फगुनियाँ–(हिं.पुं.) त्रिसन्धि नाम का फूल।

फगुहारा–(हिं. पुं.) फगुआ गानेवाला पुरुष, वह जो फागुन में होली खेलने के लिये किसी के घर जाता है।

फजिहतिताई–(हिं. स्त्री.) दुर्दशा।

फजीहत–(अ. स्त्री.), **फजीहती**–(हिं. स्त्री.) अपमान, दुर्दशा।

फट–(सं.पुं.) साँप का फन, पाखण्ड, धोखा; (हिं. स्त्री.) किसी पतली हलकी वस्तु पर आघात करने आदि से उत्पन्न शब्द।

फटक–(हिं. पुं.) स्फटिक, बिल्लौर पत्थर; (अव्य.) तत्क्षण, झटपट।

फटकन–(हिं. स्त्री.) अन्न की भूसी आदि जो उसे फटककर निकाली जाय।

फटकना–(हिं. क्रि. अ., स.) फट-फट शब्द करना, सूप से अन्न आदि को हिला-डुलाकर स्वच्छ करना, फेंकना, पटकना, पास आना, पहुँचना, अलग होना, तड़फड़ाना, श्रम करना, परखना, जाँचना, फटके से रूई धुनना।

फटकरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'फिटकरी'।

फटका–(हिं. पुं.) धुनिये की धुनकी, तड़फड़ाहट, रसहीन कविता, एक प्रकार की बलुई मिट्टी, चिड़ियों को उड़ाने के लिये पेड़ पर बँधी हुई लकड़ी जिसकी रस्सी खींचने और ढीली करने से उसमें फट-फट शब्द होता है।

फटकाना–(हिं.क्रि.स.) फटकने का काम दूसरे से कराना, फेंकना, अलग करना।

फटकार–(हिं. स्त्री.) झिड़की, दुतकार, डाँट।

फटकारना–(हिं. क्रि. स.) झटका देकर फेंकना, शस्त्र आदि चलाना, अलग करना, दूर करना, छितराना, कपड़े को पटककर धोना, अन्न आदि को सूप से इस प्रकार हिलाना कि वह निखर जाय, लाभ उठाना, लेना, किसी को कड़ी बात कहकर चुप कर देना।

फटकिया–(हिं.पुं.) एक प्रकार का विष।

फटकी–(सं. स्त्री.) देखें 'फटका'; (हिं. स्त्री.) बहेलियों की चिपटी टोकरी जिसमें वे चिड़ियों को बंद रखते हैं।

फटना–(हिं. क्रि. अ.) आघात लगने पर किसी वस्तु का टूटना या उसमें दरार पड़ना, किसी वस्तु का बीच का भाग कटकर अलग हो जाना, वस्त्र आदि का पुराना होकर छिन्न-भिन्न होना, बदली आदि का गायब होना, अधिकता होना, अलग होना, दूध या दही में ऐसा विकार हो जाना कि उसमें का सार-भाग और पानी अलग हो जाय; (मुहा.) **छाती फटना**–असह्य दुःख होना; **मन (चित्त) फटना**–प्रेम-भाव मिट जाना; **पड़ना**–सहसा पहुँच जाना।

फटफट–(हिं. स्त्री.) फट शब्द की आवृत्ति, व्यर्थ बकवाद, जूते आदि पटकने का शब्द।

फटफटाना–(हिं. क्रि. अ., स.) फट-फट शब्द होना, चक्कर मारना, इधर-उधर फिरना, पीट-कर फट-फट शब्द करना।

फटहा–(हिं. वि.) फटा हुआ।

फटा–(सं. स्त्री.) सर्प का फन, दाँत, घमंड, छल; (हिं. पुं.) छेद; (वि.) जो फट गया हो; (मुहा.) **किसी के फटे में पाँव डालना**–किसी के संकट को अपने ऊपर ले लेना।

फटिक–(हिं. पुं.) स्फटिक, बिल्लौर, संगमरमर पत्थर।

फटिका–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मदिरा।

फटिकारी–(सं. स्त्री.) फिटकरी।

फटेहाल–(हिं. वि.) कंगाल, दरिद्र।

फट्–(सं. अव्य.) तन्त्रोक्त अस्त्र नामक मन्त्रभेद जो आवाहन, प्रोक्षण आदि में प्रयुक्त होता है।

फट्ठा–(हिं. पुं.) चीरे हुए बाँस का टुकड़ा।

फट्ठी–(हिं. स्त्री.) बाँस का चीरा हुआ पतला फट्ठा।

फड़–(हिं. स्त्री.) जुआ खेलने की एक रीति, जुए का एक दाँव, जुए का अड्डा, वह स्थान जहाँ दुकानदार बैठकर माल लेता या बेचता है; (पुं.) वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है, चरख, गाड़ी का हरसा, लकड़ी का मोटा चीरा हुआ बल्ला।

फड़क, फड़कन–(हिं. स्त्री.) फड़कने की क्रिया या भाव, फड़फड़ाहट, स्पंदन, उत्सुकता, लालसा।

फड़कना–(हिं. क्रि. अ.) फड़फड़ करना, फड़फड़ाना, हिलना-डोलना, उद्यत होना, तड़फड़ाना, नीचे-ऊपर या इधर-उधर बारंबार हिलना, किसी अंग में गति होना, पक्षियों का पर हिलाना।

फड़काना–(हिं.क्रि.स.) विचलित करना, हिलाना, उत्सुक बनाना, उमंग में लाना।

फड़नवीस–(हिं. पुं.) मराठा शासनकाल का एक विशेष पदाधिकारी।

फड़फड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) फड़फड़ शब्द उत्पन्न करना या होना, घबड़ाना, उत्सुक होना, तड़फड़ाना।

फड़बाज, फड़िया–(हिं. पुं.) वह पुरुष जो लोगों को अपने घर में जुआ खेलाता है।

फड़ोलना–(हिं. क्रि. अ.) किसी वस्तु को उलटना-पलटना या इधर-उधर करना।

फण–(सं. पुं.) रस्सी का फंदा, मुद्धी, नाक का ऊपरी अगला भाग, साँप का फन।

फणकर, फणधर, फणभृत्, फणवान्–(सं. पुं.) सर्प, साँप।

फणा–(सं.स्त्री.) सर्प का फन।

फणाकर, फणाधर, फणाभर–(सं पुं.) सर्प, साँप।

फणी–(सं. पुं.) साँप, **–कन्या**–(स्त्री.) नाग-कन्या; **–केशर**–(पुं.) नागकेसर; **–चंपक**(पुं.) जंगली चंपा; **–जा**–(स्त्री.) एक प्रकार की तुलसी जिसकी पत्तियाँ बहुत छोटी होती हैं; **–तल्पग**–(पुं.) भगवान् विष्णु; **–पति**–(पुं.) देखें 'फणींद्र'; **–प्रिय**–(पुं.) वायु, हवा; **–फन**–(सं.) अहिफेन, अफीम; **–भुज्**–(पुं.) पन्नगाशन, गरुड़; **–मुक्ता**–(स्त्री.) साँप की मणि; **–मुख**–(पुं.) चोर की सेंध लगाने की सबरी; **–लता, –वल्ली**–(स्त्री.) नागवल्ली, पान।

फणींद्र, फणीश–(सं. पुं.) शेषनाग, वासुकि, बड़ा साँप।

फणी–(सं. पुं.) सर्प, साँप।

फतिंगा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा।

फदकना–(हिं. क्रि. अ.) फदफद शब्द करना, खदबदाना, देखें 'फुदकना'।

फदका–(हिं.पुं.) गुड़ का पाग जो बहुत

गाढ़ा न हुआ हो।

फन–(हिं. पुं.) साँप का फैला हुआ सिर, फण।

फनकना–(हिं. क्रि. अ.) सनसनाते हुए हवा में हिलना, फनफनाना।

फनकार–(हिं.स्त्री.)फनफन का शब्द,वैसा शब्द जैसा साँप के फुफकारने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न होता है।

फनगना–(हिं. क्रि. अ.) पौधों में नये-नये अंकुर निकलना, पनपना।

फनगा–(हिं. पुं.) देखें 'फतिंगा'।

फनना–(हिं.क्रि.अ.)कार्य का आरंभ होना।

फनफनाना–(हिं.क्रि.अ.) फनफन शब्द उत्पन्न करना, चंचलता के साथ इधर-उधर हिलना।

फनस–(हिं. पुं.) कटहल।

फनिग–(हिं. पुं.) देखें 'फणींद्र', साँप।

फनिंद–(हिं. पुं.) देखें 'फणींद्र'।

फनि–(हिं. पुं.) देखें 'फण, फणी'।

फनिग, फनिप, फनिपति, फनिधर–(हिं. पुं.) सर्प।

फनूस–(हिं. पुं.) देखें 'फानूस'।

फन्नी–(हिं.स्त्री.) लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो चूल आदि को दृढ़ करने के लिये ठोंका जाता है, जोलाहों का एक प्रकार का कंघी की तरह का औजार।

फफदना–(हिं. क्रि. अ.) गोबर, दाद आदि का छितराकर फैलना, बढ़ना।

फफसा–(हिं. पुं.) फुप्फुस, फेफड़ा।

फफूंदी–(हिं. स्त्री.) काई की तरह की सफेद तह जो बरसात के दिनों में फल, लकड़ी आदि पर लग जाती है, स्त्रियों की साड़ी का बंधन, नीवी।

फफोर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली प्याज।

फफोला–(हिं.पुं.) आग में जलने से चमड़े पर का पोला उभाड़ जिसके भीतर पानी भर जाता है, छाला; (मुहा.) दिल के फफोले फोड़ना–अपने चित्त का रोष प्रगट करना।

फबकना–(हिं. क्रि. अ.) मोटा होना।

फबती–(हिं. स्त्री.) समय के अनुकूल बात, हँसी की बात जो किसी पर घटती हो, चुटकी, व्यंग्य; (मुहा.)–उड़ाना–हँसी उड़ाना;–कसना–हँसी उड़ाना।

फबन–(हिं.स्त्री.) सुन्दरता, शोभा, छवि।

फबना–(हिं. क्रि. अ.) शोभा देना, सजना, सुन्दर या भला जान पड़ना, वस्त्र आदि इस प्रकार पहनना कि अच्छा जान पड़े।

फबि–(हिं. स्त्री.) फबन।

फबीला–(हिं. वि.) जो भला जान पड़ता हो, सुन्दर, शोभा देनेवाला।

फर–(हिं. पुं.) फल।

फरक–(हिं. स्त्री.) फरकने का भाव या क्रिया, फुरती से उछलने-कूदने की चेष्टा; (पुं.) देखें 'फर्क'।

फरकन–(हिं. स्त्री.) फड़कने का भाव या क्रिया।

फरकना–(हिं. क्रि. अ.) फड़कना, हिलना-डुलना, आप से आप स्पंदित होना।

फरका–(हिं. पुं.) छप्पर जो अलग से छाकर बँड़ेर पर चढ़ाया जाता है, द्वार पर लगाने का टट्टर, बँड़ेर की एक ओर की छाजन, पल्ला।

फरकाना–(हिं.क्रि.स.)संचालित करना, हिलाना, बार-बार हिलाना, फड़फड़ाना, अलग करना।

फरकी–(हिं. स्त्री.) बाँस की पतली तीली जिसमें लासा लगाकर चिड़ीमार चिड़ियों को फँसाता है, भीत में खड़े बल जड़ने के पत्थर।

फरकिल्ला–(हिं. पुं.) हरसे में का खूँटा।

फरचा–(हिं. वि.) जो जूठा न हो, शुद्ध, पवित्र।

फरचाना–(हिं. क्रि. स.) शुद्ध करना।

फरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'फलना'।

फरफंद–(हिं. पुं.) चोचला, दाँव-पेंच, छल-कपट।

फरफर–(हिं. पुं.) चिड़ियों के उड़ने या पंख फड़फड़ाने से उत्पन्न शब्द।

फरफराना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'फड़फड़ाना'।

फरफुंदा–(हिं. पुं.) देखें 'फतिंगा'।

फरमा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु को ढालने का साँचा, ढाँचा, डौल, लकड़ी आदि का बना हुआ ढाँचा जिस पर रखकर मोची जूता बनाते हैं, कागज का पूरा ताव जो मुद्रण-यंत्र पर एक बार में छापा जाता है।

फरयारी–(हिं. स्त्री.) हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है।

फरराना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'फहराना'।

फरवार–(हिं. पुं.) खलिहान।

फरवी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का भूना हुआ चावल, मुरमुरा, लाई।

फरशी–(फा. स्त्री.) लंबी नलीवाला शाही हुक्का।

फरस–(हिं. पुं.) समतल भूमि, फर्श।

फरसा–(हिं. पुं.) मिट्टी खनने का फावड़ा।

फरहटा–(हिं. पुं.) चरखी के बीच में जड़ी हुई पतली चौड़ी पटरी।

फरहर–(हिं. वि.) शुद्ध, निर्मल, हरा-भरा, प्रसन्न।

फरहर(रा)ना–(हिं.क्रि.अ.,स.)फरकना, फहराना, झंडा उड़ाना।

फरहरा–(हिं.पुं.) झंडा, पताका; (वि.) स्पष्ट, शुद्ध, निर्मल, अलग-अलग, प्रसन्न, खिला हुआ।

फरहरी–(हिं. स्त्री.) फल।

फरहा–(हिं.पुं.) धुनिये का रूई धुनने की कमान।

फरही–(हिं. स्त्री.) लकड़ी का वह चौड़ा टुकड़ा जिस पर पात्र रखकर कसेरे रेतते हैं।

फराक–(हिं. पुं.) मैदान; (वि.) लंबा-चौड़ा।

फ़रार–(अ. पुं.) भागना, गायब होना।

फरारी–(अ. वि.) भागा हुआ; (पुं.) अपराधी जो भागता फिरता हो।

फराल–(हिं. स्त्री.) विस्तार, फैलाव, पटरा।

फरासीसी–(हिं.पुं., वि.) फ्रांस देश का रहनेवाला, फ्रांस देश का बना हुआ, फ्रांस देश का।

फरिया–(हिं. स्त्री.) वह लहँगा जो सामने की ओर सिला नहीं रहता; (पुं.) मिट्टी की नाँद।

फरियाद–(फा. स्त्री.)अपराध की शिकायत, दुहाई, नालिश।

फरियादी–(फा.वि.,पुं.)फरियाद करनेवाला।

फरियाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) धोकर साफ करना, पक्ष निर्णय करना, तय करना, स्वच्छ करना, स्पष्ट दिखाई पड़ना।

फरी–(हिं. स्त्री.)फाल, गाड़ी का हरसा, फड़, गतके की मार रोकने की चमड़े की ढाल, फली।

फरीक–(अ. पुं.) जुदा करनेवाला, पक्ष, वादी या प्रतिवादी।

फरुहा–(हिं. पुं.) देखें 'फावड़ा'।

फरुही–(हिं. स्त्री.) छोटा फावड़ा, फावड़े के आकार का एक लकड़ी का उपकरण जो घोड़े की लीद हटाने अथवा खेत में क्यारी बनाने के काम में आता है, भुना हुआ चावल जो भीतर से पोला हो जाता है, लाई।

फरहरी–(हिं.स्त्री.)देखें 'फुरहरी', स्पंदन।

फरेंदा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा गूदेदार जामुन।

फरेंद्र–(सं. पुं.) जामुन का वृक्ष।

फरेब–(फा. पुं.) धोखा, छल।
फरेबी–(फा. वि.) धोखा देनेवाला, छली, धोखेबाज।
फरेरी–(हिं. स्त्री.) जंगल के फल, जंगली मेवा।
फरोख्त–(फा. स्त्री.) बिक्री, बेची।
फरोख्ता–(फा. वि.) बेचा हुआ, बिका हुआ।
फर्क–(अ. पुं.) अन्तर, भेद, दूरी।
फर्च–(हिं. वि.) देखें 'फरचा'।
फर्चा–(हिं. वि.) देखें 'फरचा'।
फर्ज–(अ. पुं.) कर्तव्य, कर्म।
फर्जी–(अ. वि.) फर्ज किया हुआ, काल्पनिक।
फर्द–(अ. वि.) अकेला; (पुं.) कागज का ताव, पन्ना आदि।
फर्दा–(हिं. पुं.) गेहूँ या धान की उपज का एक रोग।
फर्राटा–(हिं. पुं.) देखें 'खर्राटा'।
फर्श–(अ. पुं.) कमरे का धरातल-भाग, गलीचा, दरी।
फल–(सं. पुं.) वनस्पति में होनेवाला गूदे से परिपूर्ण वह बीजकोश जो फूलों में से विशिष्ट ऋतु में उत्पन्न होता है, गणित की किसी क्रिया का परिणाम, उद्देश्य की सिद्धि, लाभ, त्रैराशिक की तीसरी राशि, ब्याज, सूद, क्षेत्रफल, प्रयोजन, स्त्री का रज, वमन, त्रिफला, दान, इन्द्रजव, गुण, प्रभाव, नतीजा, कर्म का भोग, शुभ कर्मों का परिणाम, बाण-भाले आदि का नुकीला भाग, ढाल, हल का फाल, प्रतिफल, बदला, न्याय के अनुसार प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न अर्थ, फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का सुख अथवा दुःख देनेवाला परिणाम; **–कंटक**–(पुं.) पनस, कटहल; **–क**–(पुं.) चक्र, ढाल, लकड़ी आदि का पटरा, चौकी, हथेली, वरक, चादर, जलपात्र रखने का आधार, धोबी का पाट, नितंब, हड्डी का टुकड़ा, खाट की बिनाई; **–०पंच**–(पुं.) ज्योतिष का एक यन्त्र; **–कर**–(हिं. पुं.) वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाता है; **–कृष्ण**–(पुं.) करंज वृक्ष, जल-आँवला; **–केशर**–(पुं.) नारियल का वृक्ष; **–कोष**–(पुं.) अण्डकोष; **–ग्राही**–(वि.) फल भोगनेवाला; **–तः**–(अव्य.) फलस्वरूप, इसलिये; **–त्रय**, **–त्रिक**–(पुं.) त्रिफला, हर्रा, बहेड़ा, आमला; **–द**–(वि.) फल देनेवाला; **–दान**–(पुं.) हिन्दुओं में विवाह स्थिर करने की एक रीति, वररक्षा, विवाह-सम्बन्धी टीके की रीति; **–दार**–(हिं. वि.) फलवाला, जिसमें फल लगे हों; **–द्रुम**–(पुं.) फला हुआ वृक्ष; **–पाक**–(पुं.) करमर्दक, करौंदा; **–पादप**–(पुं.) फल का वृक्ष; **–पुच्छ**–(पुं.) वह वनस्पति जिसकी जड़ में गाँठ पड़ती हो; **–पुष्पा**–(स्त्री.) पिंडखजूर; **–पूर**–(पुं.) दाड़िम, अनार, बिजौरा नीबू; **–प्रद**–(वि.) फल देनेवाला; **–भागी**–(वि.) फल का भोग करनेवाला; **–भूमि**–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ कर्मों का फल भोगना पड़ता है; **–भोग**–(पुं.) कर्मफल, सुख-दुःख आदि का भोग; **–मत्स्या**–(स्त्री.) घृतकुमारी, घीकुआर; **–मुख्या**–(स्त्री.) अजमोदा; **–मुंड**–(पुं.) नारियल का पेड़; **–योग**–(पुं.) नाटक में वह स्थान जिसमें फल की प्राप्ति अथवा नायक की अर्थसिद्धि हो; **–राज**–(पुं.) तरबूज, खरबूजा; **–लक्षणा**–प्रयोजनवती लक्षणा; **–वर्ति**–(स्त्री.) घाव में डालने की कपड़े की मोटी बत्ती; **–वर्तुल**–(पुं.) कुम्हड़ा, तरबूज; **–वान्**–(वि.) जिसमें फल लगे हों; **–विक्रयी**–(पुं.) फल बेचनेवाला; **–वृक्ष**–(पुं.) फल का पेड़; **–श्रेष्ठ**–(पुं.) आम का वृक्ष; **–स्थापन**–(पुं.) सोलह प्रकार के संस्कारों में से तीसरा संस्कार, सीमंतोन्नयन; **–स्नेह**–(पुं.) अखरोट का वृक्ष; **–हरी**–(हिं. स्त्री.) वन के वृक्षों के फल, मेवा; **–हार**–(हिं. पुं.) देखें 'फलाहार'; **–हारी**–(वि.) फल चुरानेवाला; (स्त्री.) कालिका देवी; (हिं. वि.) (पक्वान्न) जो अन्न से न बना हो, जिस खाद्य-पदार्थ के बनाने में केवल फलों का उपयोग किया गया हो।
फलना–(हिं. क्रि. अ.) फल से युक्त होना, फल लगना, परिणाम निकलना, लाभदायक होना, शरीर के किसी भाग में छोटे-छोटे दाने निकलना; **फलना-फूलना**–सम्पन्न और सुखी होना।
फलांग–(हिं. स्त्री.) एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया, भाव या दूरी, मलखंभ का एक व्यायाम, छलाँग।
फलाँगना–(हिं. क्रि. अ.) कूदना, फाँदना।
फलांत–(सं. पुं.) फल का अन्त या शप।
फलांश–(सं. पुं.) तात्पर्य, सारांश।
फला–(सं. स्त्री.) प्रियगु, शमी वृक्ष।
फलागम–(सं. पुं.) फल आने का काल, शरद् काल।
फलादन–(सं. वि.) फल खानेवाला; (पुं.) शुक, तोता।
फलादेश–(सं. पुं.) ग्रहादि का फल या परिणाम बतलाना।
फलाध्यक्ष–(सं. पुं.) फल देनेवाला, ईश्वर।
फलाना–(हिं. क्रि. स.) फलने में प्रवृत्त करना।
फलाफल–(सं. पुं.) अच्छा या बुरा फल।
फलाम्ल–(सं. पुं.) अमलबेत।
फलाराम–(सं. पुं.) फल का बगीचा।
फलार्थी–(सं. वि.) फल की कामना करनेवाला।
फलाले(लै)न–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कोमल ऊनी वस्त्र।
फलाशी–(सं. वि.) फलभोजी, फल खानेवाला।
फलासव–(सं. पुं.) फलों से बनी हुई मदिरा।
फलास्थि–(सं. पुं.) नारियल का वृक्ष।
फलाहार–(सं. पुं.) केवल फलों का भोजन।
फलाहारी–(सं. पुं.) वह जो केवल फल खाकर निर्वाह करता हो; (वि.) जो केवल फलों से बना हो, फलाहार-संबंधी।
फलित–(सं. वि.) फलवान्, फला हुआ, पूर्ण, संपूर्ण; (पुं.) पत्थरफूल, छरीला; **–ज्योतिष**–(पुं.) ज्योतिष शास्त्र का वह भाग जिसमें ग्रहों के योग का फलाफल बतलाया जाता है।
फलितव्य–(सं. वि.) फलने योग्य।
फलिन–(सं. वि.) फला हुआ, जिसमें फल लगे हों; (पुं.) पनस, कटहल।
फलिनी–(सं. स्त्री.) मूसली, इलायची, मेहँदी।
फली–(हिं. स्त्री.) पौधों के वे फल जो चिपटे और लंबे होते हैं जिनमें बीज भरे होते हैं, छीमी।
फलीभूत–(सं. वि.) फलित, फलदायक, लाभदायक, सफल।
फलेंदा, फलेंद्र–(हिं., सं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा, गूदेदार और मीठा जामुन।
फलोदय–(सं. पुं.) लाभ, हर्ष, आनन्द, फल की उत्पत्ति।
फलोद्भव–(सं. वि.) जो फल से उत्पन्न हुआ हो।
फलोपजीवी–(सं. पुं., वि.) जो फल बेचकर जीविका निर्वाह करता हो।
फल्गु–(सं. वि.) असार, निरर्थक, व्यर्थ, सामान्य, क्षुद्र, छोटा; (स्त्री.) गया-क्षेत्र की एक नदी।
फल्गुनीभव–(सं. पुं.) बृहस्पति का एक नाम।
फल्ला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पीले रंग का रेशम।

फसकड़ा–(हिं. पुं.) बैठने का ढंग या आसन विशेष।

फसकना–(हिं. क्रि. अ.) फटना, धँसना; (वि.) जल्दी से धँसने या फट जानेवाला।

फसकाना–(हिं. क्रि. स.) कपड़े को दबाकर फाड़ना, धँसाना।

फसल–(हिं. स्त्री.) खेती की उपज, खेत में खड़े अनाज।

फसली–(हिं.वि.) फसल का, मौसमी।

फसाद–(अ.पुं.) खराबी, बिगाड़, बखेड़ा, झगड़ा।

फसादी–(अ. वि.) फसाद करनेवाला, उपद्रवी।

फहरना–(हिं. क्रि. अ.) हवा में उड़ना।

फहरान–(हिं. स्त्री.) फहराने का भाव या क्रिया।

फहराना–(हिं. क्रि. स.) हवा में उड़ने के लिये किसी वस्तु को छोड़ देना, हवा में रह-रहकर हिलना या उड़ना, हवा में पसारना।

फहरानि–(हिं. स्त्री.) देखें 'फहरान'।

फहरिस्त–(हिं. स्त्री.) सूची।

फाँक–(हिं. स्त्री.) किसी फल आदि का एक सिरे से दूसरे सिरे तक काटकर अलगाया हुआ टुकड़ा, किसी गोल या पिण्डाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा, खण्ड, कोई टुकड़ा।

फाँकड़ा–(हिं. वि.) छैल-छबीला, हृष्ट-पुष्ट।

फाँकना–(हिं. क्रि. स.) चूर, दाने या बुकनी के रूप की किसी वस्तु को दूर से मुंह में डालना; (मुहा.) धूल फाँकना–दुर्दशा भोगना।

फाँका–(हिं.पुं.) फंका, उतनी वस्तु जो एक बार फाँकी जाय, उपवास।

फाँग, फाँगी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का साग।

फाँट–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु को यथाक्रम कई भागों में बाँटने की क्रिया, क्रम से बाँटा हुआ भाग, औषधि का क्वाथ या काढ़ा।

फाँटना–(हिं. क्रि. स.) विभाग करना, बाँटना, काढ़ा बनाना।

फाँटबंदी–(हिं. स्त्री.) वह कागज जिसमें जमींदारों या पट्टीदारों के अनुसार गाँव की आय लिखी होती है।

फाँटा–(हिं.पुं.) दो दीवारों के कोने में बनी हुई कोनिया।

फाँड़, फाँड़ा–(हिं. पुं.) धोती या दुपट्टे का वह भाग जो कमर में बँधा रहता है।

फाँद–(हिं.स्त्री.) उछलने का भाव या क्रिया, उछाल, चिड़ियों को फँसाने का फंदा।

फाँदना–(हिं. क्रि. स.) झटके से शरीर को ऊपर उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा पड़ना, कूदना, कूदकर लाँघना, फँसाना, फंदे में फाँसना।

फाँदा–(हिं.स्त्री.) गट्ठर बाँधने की रस्सी।

फाँफी–(हिं. स्त्री.) बहुत महीन झिल्ली, मलाई की पतली तह जो दूध के ऊपर पड़ जाती है, जाला या माँड़ा जो आँख की पुतलियों पर पड़ जाता है।

फाँस–(हिं. स्त्री.) पाश, बंधन, वह रस्सी जिसका फंदा डालकर पशु-पक्षी फँसाये जाते है, बाँस या काठ का कड़ा रेशा या नोक, महीन काँटा, पतली तीली या खपची।

फाँसना–(हिं. क्रि. स.) बंधन में डालना, पकड़ना, धोखे में डालना, जाल में फँसाना, किसी पर ऐसा प्रभाव डालना कि वह वश में हो जाय।

फाँसी–(हिं. स्त्री.) पाश, फँसाने का फंदा, मृत्युदण्ड जो गले में फंदा डालकर दिया जाता है, प्राणदण्ड की टिकठी; (मुहा.)-चढ़ना–गला फाँसकर प्राणदण्ड पाना;–देना–फाँसी पर प्राणदंड देना; अत्यन्त कष्ट देना।

फाका–(अ.पुं.) भूखा रहना, उपवास।

फाखतई–(हिं. वि.) भूरापन लिये लाल रंग का।

फाग–(हिं. पुं.) फाल्गुन महीने में होनेवाला उत्सव जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते और वसंत ऋतु का गीत गाते हैं, फाग में गाया जानेवाला गीत।

फागुन–(हिं. पुं.) शिशिर ऋतु का दूसरा महीना, माघ के बाद का महीना, फाल्गुन।

फागुनी–(हिं. वि.) फागुन-संबंधी।

फाटक–(हिं. पुं.) बड़ा द्वार, तोरण, फटकन, पछोड़न।

फाटकी–(हिं. स्त्री.) फिटकरी।

फाटना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'फटना'।

फाड़न–(हिं. पुं.) कागज या कपड़े का फाड़कर निकाला हुआ भाग, दही के मक्खन की छाँछ।

फाड़ना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना, टुकड़े करना, चीरना, आँख या मुंह फैलाकर खोलना, धज्जियाँ उड़ाना, खटाई के योग से दूध का जल और सार-भाग अलगाना।

फाणि–(सं.स्त्री.) गुड़।

फाणित–(सं.पुं.) खौलाकर गाढ़ा किया हुआ ऊख का रस, राब, शीरा।

फानना–(हिं. क्रि. स.) किसी काम को हाथ में लेना, रुई को फटकना या धुनना।

फाफर–(हिं. पुं.) कूटू।

फाफा–(हिं. स्त्री.) पोपली बुढ़िया।

फाब–(हिं. स्त्री.) देखें 'फबन'।

फाबना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'फबना'।

फायदा–(अ. पुं.) लाभ, उपकार।

फायदेमंद–(अ. वि.) लाभदायक।

फाया–(हिं. पुं.) देखें 'फाहा'।

फार–(हिं. पुं.) देखें 'फाल'।

फारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'फाड़ना'।

फारस–(हिं. पुं.) देखें 'पारस', ईरान।

फारा–(हिं.पुं.) कतला, फाँक, फाल।

फाल–(सं. पुं.) लोहे की एक हाथ लंबी छड़ जिसका सिरा नुकीला होता है और जो हल की अँकड़ी के नीचे लगाई जाती है, कुसी, वस्त्र, फावड़ा, महादेव, बलदेव; (हिं. स्त्री.) फल आदि में से काटा हुआ पतला टुकड़ा कटी हुई सुपारी; डग, फलाँग; (मुहा.)–बाँधना–उछलकर लाँघना।

फालकृष्ट–(सं.वि.) हल से जोता हुआ।

फालगुप्त–(सं. पुं.) बलराम का नाम।

फालतू–(हिं. वि.) आवश्यकता से अधिक, फाजिल।

फाल्गुन–(सं. पुं.) अर्जुन का नाम, वह चन्द्रमास जिसकी पूर्णिमा फाल्गुनी नक्षत्र में होती है, फागुन का महीना; –प्रिय–(पुं.) गंज।

फाल्गुनि–(सं. पुं.) अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी–(सं. स्त्री.) पूर्वा-फाल्गुनी तथा उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा–(हि.पुं.) एक प्रकार का लोहे का अस्त्र जो मिट्टी खोदने तथा हटाने के काम में आता है, फरसा।

फावड़ी–(हि. स्त्री.) छोटा फावड़ा, फरुही।

फाहा–(हि.पुं.) फाया, घाव, फोड़े आदि पर लगाने की मरहम से तर की हुई पट्टी।

फिकवाना–(हि.क्रि.स.) देखें 'फेंकवाना'।

फिंगा–(हि.पुं.) एक प्रकार की चिड़िया।

फिकई–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का मोटा अन्न।

फिकैत–(हि.पुं.) फरी गतका-खेलनेवाला।

फिक्कुर–(हि. स्त्री.) वह फेन जो मृगी में मुंह से निकलता है।

फिक्र–(अ. स्त्री.) सोच, चिंता।
फिचकुर–(हिं. पुं.) मूर्च्छा में मुंह से निकलनेवाला गाज।
फिट–(हिं. अव्य.) धिक्कार का शब्द, धिक, छिः।
फिटकरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'फिटकिरी'।
फिटकार–(हिं.पुं.) धिक्कार,शाप,कोसना।
फिटकिरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो लाल, काला, पीला तथा सफेद होता है।
फिटकी–(हिं. स्त्री.) छींटा, नये कपड़े का फुचड़ा।
फिटाना–(हिं. क्रि. स.) भगाना।
फिट्टा–(हिं. वि.) अपमानित, फटकार खाया हुआ।
फिदा–(अ. वि.) मुग्ध, आसक्त।
फिदाई–(अ. वि.) प्राण निछावर करनेवाला।
फिना–(हिं. स्त्री.) मृत्यु, नाश।
फिनिया–(हिं. स्त्री.) कान में पहनने का एक गहना।
फिनीज–(हिं. स्त्री.) दो मस्तूलों की छोटी नाव।
फिफरी–(हिं. स्त्री.) पपड़ी।
फिरंग–(सं. पुं.) यूरोप महादेश, गोरों का देश, अंगरेज, आतशक रोग, गरमी।
फिरंगी–(हिं. पुं.) फिरंग देश का रहनेवाला, गोरा; (स्त्री.) विलायती तलवार; (वि.) विलायती।
फिरंट–(हिं. वि.) विरुद्ध, विरोध करने के लिए उद्यत।
फिर–(हिं. अव्य.) पुनः, दुबारा, अनन्तर, उपरान्त, भविष्य में, दूसरे समय, आगे बढ़कर, आगे चलकर, उस अवस्था में, इसके अतिरिक्त; –**फिर**–(अव्य.) बार-बार; –**क्या है?**–तब तो कोई चिन्ता की बात नहीं है; –**भी**–(अव्य.) तो भी।
फिरक–(हिं. स्त्री.) सामग्री ढोने की एक प्रकार की छोटी गाड़ी।
फिरकना–(हिं. क्रि. अ.) किसी गोल वस्तु का एक स्थान पर घूमना, थिरकना, नाचना।
फिरकी–(हिं. स्त्री.) लड़कों का नचाने का एक खिलौना, मलखंभ का एक व्यायाम, मल्लयुद्ध की एक युक्ति, तागा बटने की तकली के नीचे लगा हुआ धातु आदि का गोल टुकड़ा, धागा लपेटने की छोटी नली।
फिरकैया–(हिं. स्त्री.) चक्कर।
फिरता–(हिं. पुं.) अस्वीकार; (वि.) वापस, लौटाया हुआ।
फिरना–(हिं.क्रि.अ.) विचरना, टहलना, चक्कर या फेरा लगाना, इधर-उधर चलना, ऐंठा जाना, पलटना, विपरीत होना, मुड़ना, प्रचारित होना, झुकना, विरुद्ध होना, लड़ने को तैयार हो जाना, स्थिति बदलना, दूसरी ओर जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान को कई बार आना-जाना, वापस होना, उलटा होना, प्रवृत्त होना; (मुहा.) **जी फिर जाना**–विरक्त या उदासीन होना; **सिर फिरना**–बुद्धि भ्रष्ट होना, पागल होना।
फिरवा–(हिं. पुं.) गले में पहनने का सोने का एक गहना।
फिरवाना–(हिं. क्रि. स.) फेरने या फिराने का काम दूसरे से कराना।
फिराना–(हिं. क्रि. स.) इधर-उधर चलाना, चक्कर देना, नचाना, विचलित करना, बात पर स्थिर न रहने देना, पलटाना, घुमाना, ऐंठना, मरोड़ना, स्थिति बदलना, बारंबार फेरे लगवाना।
फिरि–(हिं. अव्य.) देखें 'फिर'।
फिरिहरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
फिरिहरी–(हिं. स्त्री.) बच्चों का नचाने का खिलौना, फिरकी।
फिल्ली–(हिं. स्त्री.) लोहे की छड़ जो करघे के तूर में लगाई जाती है, पिंडली।
फिस–(हिं. वि.) कुछ नहीं; (मुहा.) **टाँय टाँय फिस**–धूमधाम दिखाई पड़े पर परिणाम कुछ न निकले।
फिसड्डी–(हिं. वि.) जो काम में पीछे रह जाय, जो किसी काम में बढ़ न सके, जिसका कुछ किया न हो सके।
फिसफिसाना–(हिं. क्रि. अ.) शिथिल होना, ढीला पड़ना।
फिसलन–(हिं. स्त्री.) फिसलने की क्रिया या भाव, पिच्छलता।
फिसलना–(हिं. क्रि. अ.) चिकनाहट और गीलापन के कारण पैर का न जमना, झुकना, प्रवृत्त होना।
फिसलाना–(हिं. क्रि. स.) किसी के फिसलने का साधन होना।
फीका–(हिं. वि.) नीरस, स्वादहीन, मलिन, जो चटकीला न हो, प्रवाहहीन, व्यर्थ, कान्तिहीन, धूमिल, निष्फल।
फीता–(हिं. पुं.) सूत या रेशम की पतली पट्टी, जूता कसने का धागा।
फीफरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'फिफरी'।
फीली–(हिं. स्त्री.) घुटने के नीचे एड़ी तक का भाग, पिंडली।
फुंकना–(हिं. क्रि. अ.) भस्म होना, जलना, मुंह में भरी हुई हवा का वेग से निकलना, नष्ट होना; (पुं.) बाँस, पीतल आदि की नली, प्राणियों के शरीर में मूत्र रहने का अवयव, मूत्राशय।
फुंकनी–(हिं. स्त्री.) बाँस, पीतल आदि की नली जिसमें मुंह की हवा फूंककर आग को दहकाने के लिये उस पर छोड़ते हैं, छोटी भाथी।
फुंकरना–(हिं.क्रि.अ.) मुँह से हवा छोड़ना।
फुंकवाना–(हिं. क्रि. स.) फूंकने का काम दूसरे से कराना, मुंह से हवा का झोंका निकलवाना, भस्म कराना, जलाना।
फुंकाना–(हिं. क्रि. स.) फूंकने का काम कराना।
फुंकार–(हिं. पुं.) फूत्कार।
फुंदना–(हिं. पुं.) फूल के आकार की गाँठ जो झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बाँधी जाती है, झब्बा।
फुंदिया–(हिं. स्त्री.) फुँदना।
फुंदी–(हिं.स्त्री.) फंदा, गाँठ, बिंदी, टीका।
फुंसी–(हिं. स्त्री.) छोटी फोड़िया।
फुआरा–(हिं. पुं.) देखें 'फुहारा'।
फु–(सं. पुं.) तुच्छ वाक्य।
फुक–(सं. पुं.) पक्षी।
फुकना–(हिं. क्रि. अ., पुं.) देखें 'फुंकना'।
फुकाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'फुंकाना'।
फुगना–(हिं. क्रि. स.) खोलना।
फुचड़ा–(हिं. पुं.) वह सूत या रेशा जो कपड़े, चटाई आदि की बुनावट में बाहर निकला रहता है।
फुट–(सं. पुं.) साँप का फन; (हिं. वि.) अयुग्म, जिसका किसी से संबंध न हो, फुटकर।
फुटकर(ल)–(हिं. वि.) विषम, अकेला, थोड़ा, जो इकट्ठा न हो, जिसका जोड़ा न हो, भिन्न-भिन्न, कई प्रकार का, जिसका कोई क्रम न हो; (पुं.) रेजगारी
फुटका–(हिं.पुं.) फफोला, धान का लावा।
फुटकी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया, फुदकी, दाने जैसे उभड़े हुए कण जो दूध आदि के ऊपर छिटके हुए दिखाई पड़ते हैं, रुधिर, पीब आदि का छींटा जो कपड़े आदि पर दिखाई पड़ता है।
फुट-मत–(हिं. पुं.) मत-भेद।
फुटेहरा–(हिं. पुं.) मटर या चने का भूना हुआ दाना जिसका छिलका फटकर

अलग हो गया हो।
फुटैल–(हिं. वि.) देखें 'फुट्टैल'।
फुट्ट–(हिं. वि.) देखें 'फुट'।
फुट्टक–(सं. पुं.) एक प्रकार का वस्त्र।
फुट्टैल–(हिं. वि.) झुंड या समूह से अलग, अकेला रहनेवाला, जिसका जोड़ न हो, हतभाग्य, अभागा।
फुत्कार–(सं. पुं.) फूंक, मुंह से वेग से हवा छोड़ने का शब्द, क्रिया आदि।
फुत्कृति–(सं. स्त्री.) देखें 'फुत्कार'।
फुदकना–(हिं. क्रि. अ.) उछल-उछलकर कूदना, फूले न समाना, उमंग में आना।
फुदकी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
फुनंग–(हिं. स्त्री.) वृक्ष या शाखा का अगला भाग, फुनगी।
फुन–(हिं. अव्य.) पुनः, फिर से।
फुनगी–(हिं. स्त्री.) वृक्ष या शाखाओं का अग्र-भाग, फुनगी, टूंसा।
फुनना–(हिं. पुं.) देखें 'फुंदना'।
फुनफुनि–(हिं., अव्य.) बारंबार।
फुप्फुस–(सं. पुं.) फेफड़ा जो हृदय के दोनों ओर रहता है।
फुफंदी–(हिं.स्त्री.)डोरी या गाँठ जो लहँगे या स्त्रियों की साड़ी में कसी जाती है, नीवी।
फुफकाना–(हिं.क्रि.अ.)देखें 'फुफकारना'।
फुफकार–(हिं.पुं.) फूत्कार, हवा का शब्द जो साँप के मुख से निकलता है।
फुफकारना–(हिं.क्रि.अ.) फुत्कार करना।
फुफी–(हिं. स्त्री.) देखें 'फूफी'।
फुफू–(हिं. स्त्री.) देखें 'फूफी'।
फुफेरा–(हिं. वि.) फूफा के नाते का।
फुर–(हिं.स्त्री.)पक्षी का पर फड़फड़ाने का शब्द; (वि.) सत्य, सच्चा।
फुरकाना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'फड़काना'।
फुरती–(हिं. स्त्री.) शीघ्रता।
फुरतीला–(हिं.वि.) जो मन्द न हो, तेज।
फुरना–(हिं. क्रि. अ.) सच्चा ठहरना, पूरा उतरना, प्रभाव उत्पन्न होना, प्रकाशित होना, चमक उठना, सफल होना, मुख से शब्द निकलना, उदय होना, फड़कना, हिलना।
फुरफुर–(हिं. स्त्री.) उड़ने में पर फड़फड़ाने से उत्पन्न हलका शब्द।
फुरफुराना–(हिं.क्रि.अ.,स.) फुरफुर शब्द करना, हलकी वस्तु का लहराना, उड़ने में परों से शब्द निकलना, कान में रूई की फुरेरी फिराना।
फुरफुराहट–(हिं. स्त्री.) पंख फड़फड़ाने का भाव, क्रिया या शब्द।
फुरफुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'फुरफुराहट'।
फुरमान–(हिं. पुं.) राजा की आज्ञा।
फुरमाना–(हिं. क्रि. अ.)आदेश देना।
फुरहरना–(हिं.क्रि.अ.) स्फुरित होना, हिलना।
फुरहरी–(हिं. स्त्री.) परों को फुलाकर फड़फड़ाने का शब्द, फरफराहट, कँपकँपी, रोमांच, कपड़े आदि का हवा में हिलने से उत्पन्न शब्द, फुरेरी।
फुराना–(हिं. क्रि. स.) प्रमाणित करना।
फुरेरी–(हिं. स्त्री.) रोमांचयुक्त कँपकँपी, रोंगटे खड़े होना, रूई लपेटी हुई सींक जो तेल, इत्र आदि में डुबोकर कान में लगाई जाती है; (मुहा.)–**लेना**–रोमांच से काँपना।
फुर्ती–(हिं. स्त्री.) देखें 'फुरती'।
फुलका–(हिं. पुं.) पतली हलकी रोटी, चपाती, फफोला, छाला, छोटी कड़ाही।
फुलचुही–(हिं. स्त्री.) एक छोटी चिड़िया जो सर्वदा फूलों पर उड़ती फिरती है।
फुलझड़ी, फुलझरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जिसमें से फूलों के समान चिनगारियाँ निकलती हैं, विवाद या कलह उत्पन्न करनेवाली बात या स्त्री।
फुलनी–(सं. स्त्री.) ऊसर में होनेवाली एक प्रकार की घास।
फुलमती–(सं.स्त्री.)एक रागिनी का नाम।
फुलरा–(हिं. पुं.) देखें 'फुंदना'।
फुलवर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कपड़ा जिस पर रेशम के बेल-बूटे कढ़े होते हैं।
फुलवाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'फुलवारी'।
फुलवार–(हिं. पुं.) प्रसन्न।
फुलवारी–(हिं.स्त्री.) फूलों का उद्यान या बगीचा, वह उत्सव जिसमें फूलों की सजावट होती है; कागज के बने हुए फूल, वृक्ष आदि जो शोभा के लिए बारात के साथ निकाले जाते हैं।
फुलसरा–(हिं.पु.)काले रंग की एक चिड़िया।
फुलसुंघी–(हिं. स्त्री.) एक छोटी चिड़िया, फुलचुही।
फुलहारा–(हिं. पुं.) माली।
फुलाई–(हिं.स्त्री.)फूलने का भाव या क्रिया।
फुलाना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को हवा भरकर फैलाना, गर्वित करना, अति आनन्द देकर आपे से बाहर करना, फूलों से युक्त करना, रोमांचित करना; (मुहा.) **मुंह फुलाना**–रूठना।
फुलायल–(हिं. पुं.) देखें 'फुलेल'।
फुलाव–(हिं.पुं.)फूलने का भाव या अवस्था।
फुलावट–(हिं. स्त्री.) फूलने की क्रिया या भाव, उभाड़, सूजन।
फुलावा–(हिं. पुं.) स्त्रियों के सिर के बालों की चोटी, फुँदनेवाली चोटी।
फुलिंग–(हिं. पुं.) स्फुलिंग, चिनगारी।
फुलिया–(हिं. स्त्री.) कील या काँटा जिसका माथा फला हुआ हो, कील या काँटे के आकार की कोई वस्तु जिसका सिरा गोल और उभड़ा हुआ हो, कान में पहनने का लौंग नाम का गहना।
फुलुरिया–(हिं.स्त्री.)छोटे बच्चों के चूतड़ के नीचे बिछाने का मोटा कपड़ा आदि।
फुलेरा–(हिं.पुं.)फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओं की मूर्ति के ऊपर लगाई जाती है।
फुलेल–(हिं. पुं.) सुगंधित तेल, फूलों के सुगंध से बासा हुआ तेल।
फुलेली–(हिं.स्त्री.)फुलेल रखने का काँच का पात्र।
फुलेहरा–(हिं. पुं.) उत्सवों में द्वार पर लगाने के सूत, रेशम आदि के बने हुए गुच्छेदार वंदनवार।
फुलौरा–(हिं. पुं.) बड़ी फुलौरी, पकौड़ा।
फुलौरी–(हिं. स्त्री.) चने, मटर आदि के बेसन की बरी, बेसन की पकौड़ी।
फुल्ल–(सं. वि.) विकसित, फूला हुआ; (पुं.) पुष्प, फल; –**दाम**–(पुं.) उन्नीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त; –**न**–(वि.) वायु से भरा हुआ; –**लोचन**–(वि.) प्रफुल्ल नेत्रोंवाला।
फुल्लारविंद–(सं.पुं.) फूला हुआ कमल।
फुल्ली–(हिं.स्त्री.) फूली, फुलिया, फूल के आकार का कोई आभूषण।
फुवारा–(हिं. पुं.) देखें 'फुहारा'।
फुस–(हिं. स्त्री.) अति मन्द स्वर।
फुसकारना–(हिं. क्रि. अ.) फूंक मारना।
फुसड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'फुचड़ा'।
फुसफुसा–(हिं. वि.)जो पुष्ट न हो, मंद, नरम, ढीला, स्पर्श मात्र से टूट जानेवाला।
फुसफुसाना–(हिं. क्रि.) अति मन्द स्वर में बोलना।
फुसलाना–(हिं. क्रि. स.) भुलावा देकर शान्त और चुप करना, बहलाना, मीठी-मीठी बातें कहकर अनुकूल करना, किसी ओर प्रवृत्त करने के लिये इधर-उधर की बातें करना, बहकाना।
फुहार–(हिं.पुं.)जलकण, पानी का छींटा, महीन बूंदों की झड़ी, झींसी।
फुहारा–(हिं.पुं.) जल की यांत्रिक टोंटी जिसमें से महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठते और फैलकर नीचे गिरते हैं, जल का महीन छींटा।

फुही–(हिं. स्त्री.) पानी का महीन छींटा, महीन-महीन बूंदों की झड़ी।

फूंक–(हिं. स्त्री.) वह हवा जो ओठों को मिलाकर या सिकोड़कर निकाली जाय, सांस, मुंह की हवा, मन्त्र पढ़कर मुंह से छोड़ी हुई हवा, गाँजे आदि का कश; (मुहा.)–निकल जाना–मृत्यु होना; झाड़-फूंक–(पुं.) तंत्र-मंत्र की विधि।

फूंकना–(हिं.क्रि.स.)ओठों को मिलाकर या से सिकोड़कर वेग से हवा छोड़ना, धातुओं को रासायनिक रीति से भस्म करना, फूंककर प्रज्वलित करना या जलाना, मन्त्र आदि पढ़कर किसी पर फूंक मारना, बाँसुरी आदि बाजों को मुख से हवा फूंककर बजाना, कष्ट देना, चारों ओर फैलाना, व्यर्थ व्यय करना; (मुहा.) फूंक-ताप डालना–सब धन व्यय कर डालना; फूंक-फूंककर पैर रखना–बड़ी सावधानी से कोई काम करना।

फूंका–(हिं. पुं.) भाथी या नली से आग पर फूंक मारने की क्रिया, फोड़ा, फफोला, बाँस की नली में जलन उत्पन्न करनेवाली दवाओं को भरकर गाय के थन में लगाकर फूंकना जिससे उसका सब दूध थन में आ जाय।

फूंद, फूंदा–(हिं. स्त्री.) फुँदना, झब्बा।

फूई–(हिं.स्त्री.) मक्खन के ऊपर का गाज जो उसको तपाने पर उठता है, फुहारा, फफूंदी।

फूट–(हिं. स्त्री.) फूटने की क्रिया या भाव, विरोध, वैर, बिगाड़, एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर फूट जाती है।

फूटन–(हिं. स्त्री.) किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो फूटकर अलग हो गया हो, शरीर के जोड़ों की पीड़ा।

फूटना–(हिं. क्रि. अ.) भग्न होना, खण्ड होना, नष्ट होना, बिगड़ना, शरीर पर फुंसियों के रूप में निकलना, अंकुर, शाखा आदि के रूप में निकलना, अँखुआ फूटना, व्याप्त होना, फैलना, मिला न रहना, कली का खिलना, शब्द का मुख से निकलना, शरीर के जोड़ों में पीड़ा होना, किसी पनीली वस्तु का रसकर निकलना, भेद खुलना, रोक या दबाव का हट जाना, खौलते हुए पानी में बुलबुले निकलना या छूटना, भीतर से झोंक के साथ निकलना, प्रकाशित होना, दूसरे पक्ष में जाना, मेड़, बाँध आदि का टूट जाना; (मुहा.) फूटी आँखों न भाना–बहुत बुरा लगना; फूट-फूटकर रोना–अति विलाप करना।

फूटा–(हिं. वि.) भग्न, टूटा हुआ।

फूत्कार–(सं. पुं.) मुख से हवा छोड़ने का शब्द, फुत्कार।

फूफा–(हिं.पुं.) पिता की बहिन का पति।

फूफी–(हिं. स्त्री.) पिता की बहिन, बूआ।

फूल–(हिं. पुं.) पुष्प, कुसुम, कुष्ठ रोग का सफेद चिह्न, श्वेत कुष्ठ, पहली बार की उतारी हुई देशी मदिरा, मासिक धर्म में निकलनेवाला स्त्रियों का रुधिर, फुलिया, फूल के आकार के बेल-बूटे, स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का गहना, दीपक का गुल, आग की चिनगारी; ताँबे और राँगे के मेल से बनी हुई एक मिश्र-धातु, सूखे साग या भाँग की पत्तियाँ, गर्भाशय, किसी वर्ग, वस्तु आदि का उत्तम भेद; घुटने पर की गोल हड्डी, टिकिया, वह हड्डी जो शव जलाने पर बच जाती है; (स्त्री.) फूलने का भाव, स्फुलिंग; (मुहा.)–झड़ना–मधुर और प्रिय शब्द बोलना;–सूंघकर रहना–बहुत कम आहार करना;–सा–(वि.) सुन्दर और सुकुमार।

फूलकारी–(हिं. स्त्री.) बेल-बूटे बनाने का काम।

फूलगोभी–(हिं. स्त्री.) गोभी की एक जाति जिसमें मंजरियों का बँधा हुआ ठोस पिण्ड होता है जो तरकारी के रूप में खाया जाता है।

फूलडोल–(हिं. पुं.) चैत्र शुक्ला एकादशी के दिन होनेवाला एक उत्सव।

फूलदान–(हिं. पुं.) काँच, पीतल, चीनी मिट्टी आदि का गिलास के आकार का फूलों के गुलदस्ते रखने का पात्र।

फूलदार–(हिं. वि.) जिस पर बेल-बूटे या कशीदे काढ़कर सुंदर रूप से बनाये गये हों।

फूलना–(हिं.क्रि.अ.) फूलों से युक्त होना, हवा भरने से उभड़ जाना, विकसित होना, न खिलना, घमंड करना, मोटा होना, रूठना, शरीर के किसी भाग का सूजना, प्रफुल्ल होना, आनन्दित होना, भीतर से किसी वस्तु के भर जाने से बाहरी भाग बढ़ जाना; (मुहा.)–फलना–समृद्ध और सुखी होना; प्रफुल्ल होना; फूला-फूला फिरना–आनन्द में घमना; फूले न समाना–अति आनंदित होना; मुंह फूलना–रूठना।

फूलबिरंज–(हिं.पुं.) एक प्रकार का धान।

फूलमती–(हिं. स्त्री.) एक देवी का नाम, एक प्रकार की रागिनी।

फूला–(हिं.पुं.) आँखों का एक रोग, ऊख का रस पकाने का बड़ा कड़ाहा, लावा।

फूली–(हिं. स्त्री.) सफेद चिह्न जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है, एक प्रकार की सब्जी।

फूस–(हिं. पुं.) छप्पर आदि छाने की सूखी लंबी घास, तृण, तिनका, खर।

फूहड़, फूहर–(हिं. वि.) जो किसी काम को भली-भाँति न कर सके, जो बेढंगी बातें करता हो, देखने में कुरूप या गंदा।

फूहा–(हिं. पु.) रूई का पोला गोला।

फूही–(हिं. स्त्री.) पानी की महीन बूंद, महीन बूंदों की झड़ी, झींसी।

फेंक–(हिं.स्त्री.) फेंकने की क्रिया या भाव।

फेंकना–(हिं.क्रि.स.) हाथ से इस प्रकार की गति देना कि वस्तु दूर जा गिरे, एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर डालना, मल्ल-युद्ध में पटकना, अपने ऊपर का भार दूसरे पर डालना, गँवाना, खोना, जुए में पासे आदि को भूमि पर लुढ़काना, अपव्यय करना, चलाना, उछालना, छोड़ना, असावधानी से इधर-उधर हटाना।

फेंकरना–(हिं. क्रि. अ) चीत्कार सहित रोना, फेकरना।

फेंट–(हिं.स्त्री.) कमर का मण्डल या घेरा, कमर में बाँधा हुआ कपड़ा, फेंटा, लपेट, फेंटने की क्रिया या भाव; (मुहा.)–धरना–कमर पकड़ लेना जिसमें कोई भाग न सके।

फेंटना–(हिं.क्रि.स.) लेप या लेई की तरह की किसी वस्तु को हाथ या अँगुलियों से मथना, ताश के पत्तों को उलट-पलट करके अच्छी तरह मिलाना।

फेंटा–(हिं. पुं.) कमर का घेरा, लपेट, सिर पर लपेटने की छोटी पगड़ी।

फेंटी–(हिं. स्त्री.) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत।

फेकरना–(हिं. क्रि. अ.) आच्छादनरहित होना, नंगा होना, फेंकरना।

फेकारना–(हिं. क्रि. स.) खोलना या नंगा करना।

फेन–(सं. पुं.) जल के ऊपर बुलबुलों का समूह, झाग, नाक का मल, नेटा।

फेनक–(सं. पुं.) टिकिया के आकार का एक मिष्टान्न।

फेनका–(सं. स्त्री.) पीठी।

फेनप–(सं. वि.) फेन पीनेवाला।

फेनमेह–(सं. पुं.) एक प्रकार का प्रमेह

जिसमें मूत्र झाग या फेन की तरह निकलता है।
फेनल–(सं. वि.) फेनयुक्त, फेनिल।
फेनाग्र–(सं. पुं.) बुद्‌बुद, बुलबुला।
फेनिका–(सं.स्त्री.) फेनक नाम की मिठाई।
फेनिल–(सं. पुं.) बेर का फल, मैनफल, रीठे का पेड़; (वि.) फेनयुक्त।
फेनी–(हिं. स्त्री.) घी में छानी हुई सूत के लच्छे के आकार की मिठाई।
फेफड़ा–(हिं.पुं.) शरीर के भीतर छाती की हड्डियों के नीचे का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं, फुप्फुस।
फेफड़ी–(हिं. स्त्री.) गरमी से ओठों पर पड़नेवाली पपड़ी।
फेफरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'फेफड़ी'।
फेरंड–(सं. पुं.) शृगाल, सियार।
फेर–(सं. पुं.) शृगाल, सियार।
फेर–(हिं. पुं.) घुमाव, चक्कर, उलट-फेर, मोड़, झुकाव, उलझन, भ्रम, संशय, हानि, घाटा, भूत-प्रेत का प्रभाव, अदला-बदला, अन्तर, भेद, धोखा, दुविधा, झंझट, उपाय, ढंग, युक्ति, दिशा, ओर; (अव्य.) पुनः, एक बार फिर; (मुहा.) **–खाना**–घूमकर जाना; **–में पड़ना**–धोखे में पड़ना; **दिनों का फेर**–समय या दशा का परिवर्तन; **निन्यानबे का फेर**–धन संचित करने की लालसा; **हेर-फेर**–(पुं.) उलट-फेर, लेन-देन।
फेरना–(हिं. क्रि. स.) पलटना, बदलना, बारबार दोहराना, स्थान या क्रम बदलना, प्रचार करना, इस बल से उस बल करना, घुमाना, घोड़े आदि को दौड़ने की शिक्षा देना, लौटाना, ऐंठना, मरोड़ना, माला जपना, भिन्न दिशा में प्रवृत्त करना, मुद्‌गर भाँजना, इधर-उधर ले जाना, पोतना, तह चढ़ाना; (मुहा.) **पानी फेरना**–नष्ट करना।
फेर-पलटा–(हिं. पुं.) द्विरागमन, गौना।
फेरफार–(हिं पुं.) परिवर्तन, उलटफेर, चक्कर, अन्तर, घुमाव-फिराव, पेंच, टाल-मटूल, बहाना।
फेरव–(सं. पुं.) सियार, राक्षस; (वि.) धूर्त।
फेरवट–(हिं. स्त्री.) फेरने का भाव, लपेटने में एक बार का घुमाव, पेंच, अन्तर, घुमाव-फिराव, फेरौरी।
फेरवा–(हि.पुं.) सोने के तार को दो-तीन बल लपेटकर बनाया हुआ छल्ला।
फेरा–(हि. पुं.) परिक्रमण, चक्कर, फिर आना, उलट-फेर, बारंबार आना-जाना, आवर्त, घेरा, मण्डल, लपेटने में एक बार का घुमाव; **–फेरी**–(स्त्री.) हेरा-फेरी, इधर का उधर करना।
फेरि–(हिं. अव्य.) पुनः, फिर से।
फेरी–(हिं. स्त्री.) परिक्रमा, प्रदक्षिणा, वह चरखी जिससे रस्सी पर ऐंठन चढ़ाई जाती है, कई बार आना-जाना, चक्कर, किसी फकीर का किसी बस्ती में भिक्षा के लिये फेरा लगाना, घूम-फिरकर सौदा बेचना; **–वाला**–(पुं.) घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।
फेरुआ–(हिं. पुं.) देखें 'फेरवा'।
फेरौरी–(हिं. स्त्री.) छाजन से टूटे-फूटे खपरैल निकालकर उनके स्थान में नये खपरैल बैठाने की क्रिया।
फेल–(सं. पुं.) उच्छिष्ट, जूठा पदार्थ।
फेला–(सं. स्त्री.) जूठा पदार्थ।
फेहरिस्त–(हिं. स्त्री.) सूची।
फैल–(हिं. पु.) विस्तार, लंबाई-चौड़ाई, फैलाव।
फैलना–(हिं. क्रि. अ.) अधिक स्थान घेरना, बहुतायत से मिलना, पूरी तरह से तनना, आकार का बढ़ना, मुड़ा या सिकुड़ा न रहना, (समाचार) चारो ओर पहुँचना, आग्रह करना, प्रचारित या प्रसिद्ध होना, पसरना, स्थूल होना, मोटाना, बिखरना, पूरा खुलना, संख्या बढ़ना, व्यापक होना, जिद या हठ करना, छितराना, बिखरना, छा लेना।
फैलाना–(हिं. क्रि. स.) अधिक स्थान घिरवाना, इधर-उधर दूर तक पहुँचाना, छेद या गड्ढे को बड़ा करना, हिसाब-किताब करना, वृद्धि करना, बढ़ाना, गुणा-भाग की क्रिया ठीक होने की परीक्षा करना, पसारना, प्रचलित करना, पूरा तानकर किसी ओर बढ़ाना, बिखरना, व्यापक करना, प्रसिद्ध करना, चारों ओर प्रकट करना। **लाव**–(हिं. पुं.) विस्तार, प्रचार, लंबाई-चौड़ाई।
फोंक–(हिं. पुं.) तीर के पीछे का सिरा जिसमें पर लगाये जाते हैं, फटन।
फोंका–(हिं.पुं.) लंबा और पोला चोंगा।
फोंका गोला–(हिं.पुं.) तोप का लंबा गोला।
फोंफर–(हिं. वि.) खोखला।
फोंफी–(हिं. स्त्री.) छोटी नली।
फोकट–(हिं.वि.) निःसार, पोला, व्यर्थ।
फोकला–(हिं. पुं.) छिलका।
फोट–(हिं. पु.) स्फोट, धड़ाका।
फोटा–(हिं. पुं.) बूँद, तिलक, बुंदा।
फोड़ना–(हिं.क्रि.स.) किसी वस्तु के टुकड़े-टुकड़े करना, फूट उत्पन्न करके विग्रह करना, भेद खोल देना; अंकुर, कनखे आदि का निकलना, शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना, किसी पोली वस्तु को आघात मारकर भग्न करना, साथ छुड़ाना, शरीर में घाव या फोड़े निकलना, भेद-भाव उत्पन्न करना, विदीर्ण करना।
फोड़ा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का शोथ या उभाड़ जो शरीर पर रुधिर के बिगड़ने से उत्पन्न हो जाता है। (इसमें जलन और पीड़ा होती है और रुधिर सड़कर पीब हो जाता है।)
फोड़िया–(हिं. स्त्री.) छोटा फोड़ा।
फोया–(हिं. पुं.) फाहा।
फोरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'फोड़ना'।
फोहारा–(हिं. पुं.) देखें 'फुहारा'।
फौआरा–(हिं. पुं.) देखें 'फुहारा'।
फौकना–(हिं. क्रि. अ.) डींग हाँकना, बढ़बढ़कर बातें करना।
फौज–(अ. स्त्री.) सेना, जनसमूह; **–दार**–(पुं.) सेनानायक; **–दारी**–(स्त्री.) फौजदार का पद, मारपीट, लड़ाई।
फौजी–(अ. वि.) फौज-संबंधी; (पुं.) सैनिक।
फौत–(अ. स्त्री.) मरना, गुजरना।
फौती–(अ. वि.) मृत्यु-संबंधी।
फौलाद–(अ. पुं.) कड़ा और पक्का लोहा।
फौलादी–(अ. वि.) फौलाद का, बहुत कड़ा और मजबूत।
फ्रांस–(पुं.) पश्चिम यूरोप में फ्रांसीसियों की जन्मभूमि और राज्य।

ब

ब–हिन्दी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन तथा पवर्ग का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण दोनों ओठों को मिलाकर किया जाता है।
बंक–(हिं. वि.) टेढ़ा, तिरछा, पुरुषार्थी, दुर्गम, जहाँ पहुँचना कठिन हो; (अं. पुं.) वह संस्था जो लोगों के रुपये अमानत के रूप में रखती और सूद के साथ माँगने पर वापस देती है।
बंकट–(हिं. वि.) वक्र, टेढ़ा।
बंकनाल–(हिं. स्त्री.) सुनारों की महीन फूँकनी जिससे दीपक की लौ फूँककर वे

महीन टाँके जोड़ते हैं।
वंकराज–(हिं.पुं.) एक प्रकार का सर्प।
वंकवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।
वंकसाल–(हिं.पुं.) जहाज का बड़ा कमरा।
वंका–(हिं.वि.) टेढ़ा, तिरछा, बलवान्।
वँकाई–(हिं.स्त्री.) टेढ़ापन, तिरछापन।
वंकी–(हिं. वि., स्त्री.) देखें 'वंका'।
वंकुर–(हिं. पुं.) देखें 'वंक', टेढ़ा।
वंकुरता–(हिं. स्त्री.) वक्रता, टेढ़ापन।
वंग–(हिं. पुं.) बंगाल।
वँगला–(हिं. पुं.) एक खंड का चारों ओर से खुला हुआ घर जिसमें सब ओर बरामदे होते हैं, घर की ऊपरी छत पर बना हुआ हवादार कमरा, बंगाल देश का पान; (स्त्री.) बंगाल की भाषा; (वि.) बंगाल-संबंधी।
बंगाल–(हिं. पुं.) वंग प्रान्त।
बंगाला–(हिं.पुं.) एक रागिनी का नाम।
बंगालिका–(हिं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
बंगालिन–(हिं. स्त्री.) बंगाली स्त्री।
बंगाली–(हिं. वि., पुं.) बंगाल देश का (निवासी), संपूर्ण जाति का एक राग; (स्त्री.) बंगाल देश की भाषा।
बंगू–(हिं.पुं.) लड़कों का नाचने का एक खिलौना।
वंगोमा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का कछुआ।
वंचक–(हिं. पुं.) धूर्त, पाखंडी।
वंचकता, वंचकताई–(हिं. स्त्री.) धूर्तता।
वंचन–(हिं. पुं.) छल, धूर्तता।
वंचनता–(हिं. स्त्री.) ठगी, छल।
बंचना–(हिं.स्त्री.) छल, ठगी; (क्रि. स.) ठगना, धोखा देना।
बंचर–(हिं. पुं.) देखें 'वनचर'।
वँचवाना–(हिं.क्रि.स.) दूसरे को पढ़ने में प्रवृत्त करना, पढ़वाना।
वंचित–(सं. वि.) देखें 'वंचित'।
वंछना–(हिं.क्रि.स.) इच्छा करना, चाहना।
वंछनीय, वंछित–(हिं.वि.) देखें 'वांछित'।
वंज–(हिं. पुं.) देखें 'वनिज', एक प्रकार का पहाड़ी वलूत का वृक्ष।
वंजर–(हिं. पुं.) वह भूमि जिसमें अन्न उत्पन्न नहीं होता, ऊसर।
वंजारा–(हिं. पुं.) देखें 'वनजारा'।
वंजुल–(हिं. पुं.) अशोक वृक्ष।
बंझा–(हिं.वि.स्त्री.) जिसको संतान न हो; बाँझ; (स्त्री.) बाँझ स्त्री; (वि.) न फलनेवाला (पेड़)।
बँटना–(हिं.क्रि.स.) अलग-अलग विभाग होना, कई व्यक्तियों को किसी वस्तु का अलग-अलग भाग दिया जाना; (पुं.) देखें 'बटना'।
बँटवाई–(हिं. स्त्री.) बाँटने का शुल्क।
बँटवाना–(हिं.क्रि.स.) वितरण करवाना, सबको अलग-अलग भाग दिलवाना, बाँटने का काम दूसरे से करवाना।
बँटवारा–(हिं.पुं.) बाँटने की क्रिया, विभाग।
बँटवैया–(हिं.वि.) बाँटनेवाला।
बंटा–(हिं. पुं.) चौकोर या गोल छोटा डब्बा; (वि.) छोटे आकार का।
बँटाई–(हिं. स्त्री.) वितरण, बाँटने का काम, शुल्क या भाव, खेती की वह रीति जिसमें किसान भूमि की लगान न देकर उपज का निर्धारित अंश भूमिधर को देता है।
बँटाना–(हिं. क्रि. स.) अंश ले लेना, भाग करा लेना, किसी काम में अंशधारी होने के लिये अथवा दूसरे का बोझ हलका करने के लिये योगदान करना।
बँटावन–(हिं. वि.) बँटानेवाला, भाग करनेवाला।
बंटी–(हिं. स्त्री.) छोटा बंटा, पशुओं को फँसाने का जाल।
बँटैया–(हिं.पुं.) भाग करनेवाला, बँटानेवाला।
बंडा–(हिं.पुं.) तरकारी के रूप में खाया जानेवाला कंद जो गोल और गाँठदार होता है।
बंडी–(हिं.स्त्री.) मिरजई, बगलबन्दी, फतुही।
बँडेर–(हिं. पुं.) खपरैल की छाजन के बीच में रखने की मोटी लंबी लकड़ी।
बंदगी–(फा. स्त्री.) नमस्कार, प्रणाम।
बंदगोभी–(हिं. स्त्री.) करमकल्ला, पातगोभी।
बंदन–(हिं. पुं.) देखें 'वंदन'; रोली, इंगुर, सिन्दूर।
बंदनता–(हिं. स्त्री.) आदर या वन्दना किये जाने की योग्यता।
बंदनवार–(हिं.पुं.) वन्दनमाला, फूल-पत्ते आदि की बनी हुई माला जो शुभ अवसरों पर द्वार पर लटकाई जाती है, तोरण।
बंदना–(हिं.स्त्री.) देखें 'वंदना'; (क्रि.स.) प्रणाम करना।
बंदनी–(हिं. स्त्री.) सिर पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण; (वि. स्त्री.) वंदनीया; **–माल**–(स्त्री.) वह लंबी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो।
बंदर–(हिं.पुं.) मनुष्य के आकार से मिलता-जुलता एक पशु, कपि, मर्कट; (मुहा.) **–घुड़की (भभकी)**–(स्त्री.) केवल डराने या धमकाने की डाँट-डपट; (फा.पुं.) समुद्र के किनारे पर का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं; **–गाह**–(पुं.) बंदर।
बंदली–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।
बंदवान–(हिं. पुं.) बंदीगृह का रक्षक।
बंदसाल–(हिं. पुं.) बंदीगृह।
बंदा–(फा. पुं.) सेवक, दास; **–निवाज**–(वि.) बंदे पर कृपा करनेवाला; **–निवाजी**–(स्त्री.) कृपा, अनुग्रह; **–परवर**–(वि.) बंदे का पालन करनेवाला।
बंदारु–(हिं. वि.) आदरणीय, पूजनीय, वन्दन करने योग्य।
बंदाल–(हिं. पुं.) देवदाली, घघरबेल।
बंदि–(हिं. स्त्री.) कारावास।
बंदिया–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों के सिर पर पहनने का एक आभूषण, बंदी।
बंदिश–(फा.स्त्री.) रोक, प्रतिबंध, रचना उपाय, साजिश।
बंदी–(सं. पुं.) चारणों की एक जाति जो प्राचीन काल में राजाओं की कीर्ति गान करती थी, भाट; (हिं. स्त्री.) एक प्रकार का आभूषण जिसको स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।
बंदीघर–(हिं. पुं.) कारागृह।
बंदीवान–(हिं. पुं.) कैदी।
बंदूक–(फा.स्त्री.) लकड़ी के कुंदे में लगी हुई लोहे की नली में गोली या कारतूस भरकर चलाया जानेवाला प्रसिद्ध आग्नेयास्त्र।
बंदूकची–(फा. पुं.) बंदूक चलाने वाला।
बंदूख–(हिं. स्त्री.) देखें 'बंदुक'।
बंदोबस्त–(फा. पुं.) प्रबंध, इंतजाम, सरकारी तौर पर खेतों की पैमाइश, लगान आदि स्थिर करने का काम; **–इस्तमरारी**–(पुं.) स्थायी बंदोबस्त।
बंध–(सं.पुं.) बन्धन, गाँठ, शरीर, पानी रोकने का बाँध, योग-साधना की एक मुद्रा।
बंधक–(सं. पुं.) ऋण के बदले में महाजन के पास रखने की वस्तु, गिरवी, विनिमय, बाँधनेवाला।
बंधकी–(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री, वेश्या, रंडी।
बंधकर्ता–(हिं. पुं.) शिव, महादेव।
बंधन–(सं. पुं.) बाँधने की क्रिया, रस्सी आदि जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय, वध, हत्या, बाँध का स्थान, बंदीगृह, शरीर का सन्धि-स्थान, शिव, महादेव; (वि.) बाँधनेवाला।
बँधना–(हिं. क्रि. अ.) बाँधा जाना, मुग्ध होना, वचन-बद्ध होना, फँसना, अटकना, बंदी होना, ठीक होना, स्थिर होना; (पुं.)

कोई बाँधने की वस्तु, वह थैली जिसमें स्त्रियाँ सीने-पिरोने की सामग्रियाँ रखती हैं।
बँधनि–(हिं. स्त्री.) वह जिसमें कोई वस्तु बँधी हो, उलझाने या फँसाने की वस्तु।
बंधनी–(सं. स्त्री.) शरीर के संधि-स्थानों की मोटी नसें जो अवयवों को बाँधे रहती हैं।
बंधनीय–(सं. वि.) बाँधने योग्य।
बंधमोचनिका–(सं. स्त्री.) एक योगिनी का नाम।
बंधयिता–(सं. पुं.) बाँधनेवाला।
बँधवाना–(हिं. क्रि. स.) बाँधने का काम दूसरे से कराना, तालाव, कुआँ आदि बनवाना, नियत कराना।
बंधस्तंभ–(सं. पुं.) हाथी बाँधने का खूँटा।
बँधान–(हिं. पुं.) लेन-देन के विषय में निश्चित क्रम या नियम, पानी रोकने का बाँध, संगीत में ताल का सम, वह धन या पदार्थ जो लेन-देन की परिपाटी के अनुसार दिया जाता है।
बँधाना–(हिं. क्रि. स.) बाँधने का काम दूसरे से कराना, धारण कराना।
बंधाल–(हिं. पुं.) जहाज या नाव की पेंदी में वह स्थान जहाँ पर पानी छेदों से रसकर जमा हो जाता है।
बंधिका–(हिं. स्त्री.) ताने की साँथी बाँधने की डोरी।
बंधित–(हिं.वि.) बँधा हुआ बद्ध।
बंधी–(हिं.स्त्री.) वह जिसमें किसी प्रकार का बंधन हो, बंबेज।
बंधु–(सं. पुं.) सगोत्र, बान्धव, स्वजन, भाई-बंद, मित्र।
बंधुआ, बँधुवा–(हिं. पुं.) बंदी।
बंधुक–(सं. पुं.) गुल दुपहरिया नाम का फूल या पौधा।
बंधुजन–(सं. पुं.) आत्मीय, कुटुम्ब।
बंधुता–(सं. स्त्री.) बन्धु होने का भाव, भाईचारा, मित्रता।
बन्धुत्व–(सं. पुं.) मित्रता, बंधुता।
बंधुदा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री।
बन्धुपाल–(सं. पुं.) अपने कुटुम्ब का पालन करनेवाला।
बंधुर–(सं.पुं.) मुकुट, गुल दुपहरिया, वहरा मनुष्य, हंस, काकड़ा सींगी, चिड़िया; (वि.) सुन्दर, नम्र, ऊँचा-नीचा।
बंधुल–(सं.पुं.) रंडी का लड़का; (वि.) सुन्दर।
बंधूर–(सं. वि.) रम्य, सुन्दर।
बंधेज–(हिं. पुं.) किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति, नियत समय पर तथा नियत रूप से कुछ देने की क्रिया या भाव, प्रतिबन्ध, रुकावट, वाजीकरण, नियत समय पर नियत रूप से दिया जानेवाला धन या पदार्थ।
बंध्य–(सं. वि.) बिन फल का, बंधनीय।
बंध्या–(सं. स्त्री.) जिस स्त्री को सन्तान न होती हो, बाँझ स्त्री; –**तनय**–(पुं.) अनहोनी बात; –**पुत्र**–(पुं.) कभी न होनेवाली बात।
बंपुलिस–(हिं. स्त्री.) म्युनिसिपैलिटी आदि का बनाया हुआ सार्वजनिक मल-त्याग करने का स्थान।
बंबं–(हिं.स्त्री.) बम-बम शब्द जो शैव लोग कहा करते हैं, युद्ध के आरंभ में वीरों का उत्साहवर्धक नाद, दुंदुभी, नगाड़ा।
बंबा–(हिं. पुं.) पानी की कल, जल का सोता, पानी बहाने का नल।
बँबाना–(हिं.क्रि.अ.) गाय आदि पशुओं का बाँ-बाँ शब्द करना, रँभाना।
बंबू–(हिं.पुं.) बाँस की छोटी पतली नली जिससे चंडू पिया जाता है।
बंस–(हिं. पुं.) देखें 'वंश', परिवार।
बंसकार–(हिं. पुं.) बाँसुरी।
बंसरी–(हिं. स्त्री.) बंसी।
बंसलोचन–(हिं. पुं.) बाँस का सार-भाग जो उसके जल जाने के बाद सफेद छोटे-छोटे टुकड़ों में पाया जाता है, वंशलोचन।
बँसवाड़ी–(हिं. स्त्री.) बाँस की कोठी।
बंसार–(हिं. पुं.) भण्डार-घर।
बंसी–(हिं. स्त्री.) बाँसुरी, मछली फँसाने का एक उपकरण, धान के खेतों में होनेवाली एक प्रकार की घास, विष्णु, कृष्ण और राम के चरणों का रेखा-चिह्न; (पुं.) एक प्रकार का गेहूँ; –**धर**–(पुं.) वंशीधर, श्रीकृष्ण।
बँहगी–(हिं.स्त्री.) भार ढोने का एक उपकरण जिसमें बाँस के डंडे के दोनों सिरों पर रस्सियों के छीके लटकाये रहते हैं।
बंहिमा–(सं.स्त्री.) बहुत अधिकता।
बँहोली–(हिं. स्त्री.) कुरते आदि का हाथ का भाग, आस्तीन।
बउराना–(हिं. क्रि. अ.) पगलाना।
बक–(सं. पुं.) बगुला, अगस्त का फूल, कुबेर, एक राक्षस जिसको भीमसेन ने मारा था, बकासुर; (हिं. स्त्री.) बकवक, बकवाद।
बकचंदन–(सं.पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
बकचा–(हिं. पुं.) देखें 'बकुचा'।
बकची–(हिं.स्त्री.) एक मछली, बकुची।
बकजित्–(सं. पुं.) भीमसेन, श्रीकृष्ण।
बकझक–(हिं. स्त्री.) बकवाद।
बकठाना–(हिं. क्रि. अ.) किसी बहुत कसैले पदार्थ को खाने से मुख का स्वाद बिगड़ जाना।
बकदर्शी–(सं. पुं.) पारावत, कबूतर।
बक-ध्यान–(हिं पुं.) पाखंडपूर्ण मुद्रा, ऐसी चेष्टा या ढंग जो देखने में सात्त्विक या धार्मिक-जान पड़े परन्तु जिसका भीतरी आशय कपटी और दुष्ट हो।
बकध्यानी–(सं.पुं.,वि.) (वह) जो देखने में सीधासादा परन्तु वस्तुत: कपटी हो।
बकना–(हिं. क्रि. अ., स.) प्रलाप करना, बड़बड़ाना, ऊटपटाँग बातें करना।
बकनिषूदन–(सं. पुं.) भीमसेन, श्रीकृष्ण।
बकपंचक–(सं. पुं.) कार्तिक महीने की शुक्ल पक्ष की एकादशी से पूर्णमासी तक का समय।
बकबक–(हिं. स्त्री.) प्रलाप, बकवाद।
बकमौन–(हिं. पुं.) अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगुले की तरह भोला बनकर चुपचाप रहने की क्रिया या भाव; (वि.) चुपचाप अपना काम साधनेवाला।
बकयंत्र–(सं. पुं.) मुड़े हुए लंबे गरदन की काँच की गोल पेंदे की शीशी जिसको वैद्य या हकीम अर्क आदि उतारने के काम में लाते हैं।
बकर–(अ.पुं.) गाय, बैल; –**ईद**–(स्त्री.) मुसलमानों का एक प्रसिद्ध त्योहार; –**कसाब**–(पुं.) चिक, कसाई।
बकरना–(हिं. क्रि. स.) बेकार बकना, बड़बड़ाना, अपना दोष या अपराध स्वयं स्वीकार करना या कह देना।
बकरम–(अ. पुं.) एक प्रकार का कड़ा कपड़ा जो कालर, आस्तीन आदि में कड़ाई लाने के लिये डाला जाता है।
बकरा–(हिं. पुं.) फटे हुए खुर का एक प्रसिद्ध छोटे जाति का चौपाया जिसके छोटी पूँछ और छोटी सींग होता है, (यह जुगाली करता है। कुछ बकरों की ठोढ़ी के नीचे दाढ़ी भी होती है।)
बकराना, बकरवाना–(हिं. क्रि. स.) दोष या अपराध स्वीकार कराना।
बकला–(हिं. पुं.) पेड़ की छाल, फल के ऊपर का छिलका।
बकली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सुन्दर लंबा वृक्ष।
बकवाद–(हिं.स्त्री.) व्यर्थ वार्ता, बकवक।
बकवादी–(हिं. वि.) बकवाद करनेवाला।

बकवाना–(हि. क्रि. स.) बकने के लिये किसी को प्रेरित करना, किसी से बकवाद कराना।
बकवास–(हि.स्त्री.) व्यर्थ बातचीत, बकवक करने का अभ्यास क्रिया आदि।
बकवृत्ति–(सं.स्त्री.,वि.) कपटाचार, जो बगुले के समान शिकार में लगा रहता है।
बकवैरी–(सं. पुं.) बलराम, श्रीकृष्ण।
बकव्रती–(सं. वि.) बकवृत्ति।
बकस–(हि. पुं.) कपड़े, गहने आदि रखने का संदूक, छोटा डब्बा।
बकसना–(हि. क्रि. स.) देना।
बकसा–(हि. पुं.) जल में होनेवाली एक प्रकार की घास।
बकसाना, बकसवाना–(हि. क्रि. स.) क्षमा कराना।
बकसी–(हि. पुं.) क्षमा करनेवाला।
बकसीला–(हि. वि.) जिसके खाने से जी मचलने लगे और मुख का स्वाद बिगड़ जाय।
बकसीस–(हि. स्त्री.) पारितोषिक।
बकसुआ–(हि.पुं.) लोहे या पीतल का छल्ला।
बकाउर–(हि. स्त्री.) देखें 'बकावली'।
बकाना–(हि. क्रि. स.) बकबक करने के लिये प्रेरित करना, बकबक कराना।
बकायन–(हि.पुं.) नीम की जाति का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और हलकी होती है।
बकाया–(अ. वि.) अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ।
बकारि–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण, भीमसेन।
बकारी–(हि. स्त्री.) मुख से निकलनवाला शब्द।
बकावली–(हि.स्त्री.) देखें 'गुल-बकावली'।
बकासुर–(सं.पुं.) एक दैत्य जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
बकी–(सं. स्त्री.) बकासुर की बहन पूतना का एक नाम।
बकुचा–(हि. पुं.) छोटी गठरी, बकचा।
बकुचना–(हि. क्रि. अ.) संकुचित होना, सिकुड़ना।
बकुचाना–(हि. क्रि. स.) किसी वस्तु को गठरी बाँधकर कंधे पर लटकाना या पीठ पर बाँधना।
बकुची–(हि. स्त्री.) एक पौधा जो औषध के काम में आता है, छोटी गठरी।
बकुचौहाँ–(हि. वि.) बकुचे जैसा।
बकुर–(सं. पुं.) सूर्य, बिजली; (वि.) भयंकर, डरावना।
बकुरना–(हि. क्रि. स.) देखें 'बकरना'
बकुराना–(हि. क्रि. स.) स्वीकार कराना।
बकुल–(सं. पुं.) मौलसिरी।
बकुला–(हि. पुं.) देखें 'बगुला'।
बकूल–(स. पुं.) बकुल, मौलसिरी।
बकेन, बकेना–(हि. स्त्री.) वह गाय या भैंस जिसको बच्चा दिये प्रायः साल भर हो गया हो, जो बरदाई न हो और दूध देती हो।
बकेल–(हि.स्त्री.) पौधा विशेष जिसकी जड़ को कूटकर रस्सी बनाई जाती है।
बकैयाँ–(हि. पुं.) बच्चों का घुटनों के बल चलने का ढंग।
बकोट–(हि. स्त्री.) बकोटने या नोचने की क्रिया या भाव, किसी पदार्थ की उतनी मात्रा जो बकोटने से चंगुल में पकड़ी जा सके।
बकोटना–(हि. क्रि. स.) पंजा मारना, नख से नोचना।
बकौड़ा–(हि. पुं.) परास की कूटी हुई जड़ जिसकी रस्सी बनाई जाती है।
बकौरी–(हि. स्त्री.) गुलबकावली।
बक्कल–(हि.पुं.) वल्कल, छिलका, छाल।
बक्का–(हि.पुं.) धान की उपज में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
बक्की–(हि. वि.) बकवाद करनेवाला, बहुत बोलनेवाला; (पुं.) एक प्रकार का भदौहाँ धान।
बक्कुर–(हि. पुं.) वचन, बोली।
बक्खर–(हि. पुं.) गाय-बैल बाँधने का बाड़ा, एक तृण, बाखर।
बक्स–(हि. पुं.) बकस, पेटी, संदूक।
बखत–(हि. पुं.) वक्त, समय।
बख (क) तर–(हि. पुं.) कवच।
बखर–(हि. पुं.) देखें 'बक्खर'।
बखरा–(हि. पुं.) भाग, हिस्सा, बाँट।
बखरी–(हि. स्त्री.) एक कुटुम्ब के रहने योग्य ईंट, मिट्टी आदि का बना हुआ गाँव का घर।
बखरैत–(हि पुं.) हिस्सेदार, साझीदार।
बखसीस–(हि. स्त्री.) देखें 'बकसीस'।
बखान–(हि. पुं.) वर्णन, कथन, गुणकीर्तन, प्रशंसा, बड़ाई।
बखानना–(हि. क्रि. स.) वर्णन करना, कहना, बुरा-भला कहना, गाली-गलौज देना, प्रशंसा करना।
बखार–(हि. पु.) दीवार आदि से घेरकर बनाया हुआ अन्न रखने का स्थान।
बखारी–(हि. स्त्री.) छोटा बखार।
बखिया–(फा. पुं.) एक प्रकार की महीन पुष्ट सिलाई।
बखियाना–(हि.क्रि.स.) किसी वस्त्र पर बखिया की सिलाई करना, बखिया करना।
बखीर–(हि. स्त्री.) मीठे रस में पकाया हुआ चावल, एक प्रकार की खीर।
बखुद–(फा.अव्य.) अपने से, अपने आप।
बखूबी–(फा. अव्य.) अच्छी तरह, भली भाँति।
बखेड़ा–(हि. पुं.) आडम्बर, व्यर्थ विस्तार, कठिनता, विवाद, झगड़ा, झंझट, उलझन।
बखेड़िया–(हि. वि.) बखेड़ा करने वाला, झगड़ालू।
बखेरना–(हि. क्रि. स.) पदार्थों को इधर-उधर फैलाना या फेंकना।
बखेरी–(हि.स्त्री.) एक प्रकार का कँटीला वृक्ष।
बखोरना–(हि. क्रि.स.) टोकना, छेड़ना।
बख्श–(फा.वि.) देनेवाला, बख्शनेवाला।
बख्शना–(हि.क्रि.स.) देना, दान करना, क्षमा करना।
बख्शिश–(फा. स्त्री.) दान, इनाम, क्षमा।
बख्शी–(फा. पुं.) तनख्वाह बाँटनेवाला सरकारी कर्मचारी।
बख्शीश–(हि. स्त्री.) देखें 'बख्शिश'।
बग–(हि. पुं.) बगला।
बगई–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की घास, एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है, कुकुरमाछी।
बगछुट–(हि. अव्य.) बड़े वेग से, सरपट चाल से।
बगदना–(हि. क्रि. अ.) बिगड़ना, नष्ट होना, बहकना, ठीक मार्ग भूल जाना, गिरना।
बगदर–(हि. पुं.) मच्छड़।
बगदवाना–(हि. क्रि. स.) बिगाड़ना, नष्ट कराना, भुलवाना, प्रतिज्ञा भंग कराना, गिराना।
बगदाना–(हि. क्रि. स.) बिगाड़ना, भड़काना, भुलाना।
बगना–(हि.क्रि.अ.) घूमना-फिरना।
बगनी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की घास, बगई।
बगमेल–(हि.पुं.) पाँत या पंक्ति में चलना, समानता।
बगर–(हि. पुं.) प्रासाद, बड़ा घर, द्वार के सामने का खुला स्थान, आँगन, गाय बाँधने का स्थान या घर, कोठरी; (स्त्री.) बगल।
बगरना–(हि. क्रि. अ.) बिखरना, फैलना, छितराना।

वगराना–(हिं. क्रि. अ.,स.) छितराना, फैलाना, विखरना।
वगरी–(हिं.पुं.) एक प्रकार का भदौहाँ धान; (स्त्री.) वखरी।
वगल–(फा. स्त्री.) काँख, पहलू, पार्श्व, समीपवर्ती स्थल; (मुहा.) **–गरम करना**–स्त्री के साथ सोना।
वगल-गंध–(हिं. स्त्री.) काँख का फोड़ा, कँखौरी, एक प्रकार का रोग जिसमें काँख से वड़ी दुर्गन्ध निकलती है।
वगलवंदी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मिरजई जिसमें वगल के नीचे वंद लगे रहते हैं।
वगला–(हिं. पुं.) सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, एक झाड़ी जैसा पौधा।
वगलामुखी–(हिं. स्त्री.) एक तान्त्रिकदेवी।
वगलियाना–(हि. क्रि. अ., स.) अलग करना, वगल में करना, वगल से होकर जाना, राह से हटकर निकलना।
वगली–(हिं. वि.) वगल का, वगल से संवंध रखनेवाला; (स्त्री.) कपड़े का वह टुकड़ा जो अंगे, कुरते आदि की वगल में लगाया जाता है, वह थैली जिसमें दर्जी सूई-तागा रखते हैं; (मुहा.) **–टाँग**–(स्त्री.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **–बाँह**–(स्त्री.) एक प्रकार का व्यायाम; **–लँगोट**–(पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
वगलौंहा–(हिं. वि.) वगल की ओर झुका हुआ, तिरछा।
वगसना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'वकसना'।
वगा–(हिं. पुं.) जामा, वागा, वगला।
वगाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) टहलाना, घुमाना-फिराना, जल्दी-जल्दी जाना, भागना।
वगार–(हिं. पुं.) गाय बाँधने का स्थान।
वगारना–(हिं.क्रि.स.) पसारना, फैलाना।
वगावत–(अ.स्त्री.) राज-विद्रोह, विप्लव, वदअमली।
वगिया–(हिं. स्त्री.) छोटा वगीचा, या उपवन, वाटिका।
वगीचा–(हिं. पुं.) उपवन, वाटिका।
वगुला–(हिं. पुं.) वकपक्षी।
वगुला-भगत–(हिं. पुं.) पाखण्डी मनुष्य।
वगूला–(हिं. पुं.) वह वायु जो गरमी के दिनों में कभी-कभी एक स्थानप र भँवर-सी घूमती हुई दिखाई पड़ती है, वातचक्र, ववंडर।
वगेदना–(हिं. क्रि. स.) विचलित करना।
वगेरी–(हिं. स्त्री.) भूरे रंग की एक छोटी चिड़िया।
वगैचा–(हिं. पुं.) देखें 'वगीचा'।
वगैर–(फा. अव्य.) विना, सिवा।
वग्गी, वग्घी–(हिं. स्त्री.) पालकी के आकार की चौपहिया घोड़ा-गाड़ी।
वघंवर–(हिं. पुं.) वाघ की खाल जिस पर साधु वैठकर ध्यान लगाते हैं, वाघ की खाल की तरह वुना हुआ कंवल।
वघनहाँ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का शस्त्र जिसमें वाघ के नख के समान काँटे रहते हैं, (यह अँगुलियों में पहना जाता है), वच्चों को पहनाने का एक प्रकार का गहना जिसमें वाघ के नख सोने या चाँदी में मढ़े होते हैं।
वघार–(हिं.पुं.) छौंक, तड़का, वघारने की महक, वघारने का मसाला।
वघारना–(हिं. क्रि. स.) तड़का देना, छौंकना, अपनी योग्यता से अधिक पांडित्य दिखाना, कुसमय अधिक वातें करना।
वघूरा–(हिं. पुं.) वगला।
वघेरा–(हिं. पुं.) लकड़वग्घा।
वघेली–(हिं. स्त्री.) पात्रों को खरादने-वालों का खूँटा।
वच–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ औषधों में प्रयुक्त होती हैं; (पुं.) वचन, वाक्य।
वचका–(हिं.पुं.) एक प्रकार का पकवान।
वचकाना–(हिं. वि.) वच्चों के योग्य, वच्चों की नाप का, थोड़ी अवस्था का।
वचत–(हिं. स्त्री.) वह अंश जो व्यय होने के वाद वच रहे, शेष, लाभ, वचाव।
वचन–(हिं. पुं.) देखें 'वचन'।
वचना–(हिं. क्रि. अ.) रक्षा या वचाव होना, दूर रहना, छूट जाना।
वचपन–(हिं. पुं.) वाल्यावस्था, लड़कपन।
वचवया–(हिं. पुं.) वचानेवाला, रक्षा करनेवाला।
वचा–(हिं. पुं.) देखें 'वच्चा', लड़का।
वचाना–(हिं. क्रि. स.) कष्ट या आपत्ति से वचाव या रक्षा करना, पीछे करना, हटाना, व्यय न होने देना, किसी वुरी वात से अलग रखना, छिपाना, चुराना, प्रभाव न पड़ने देना, ऐसे रोग से चंगा करना जिसमें मृत्यु का भय हो।
वचाव–(हिं. पुं.) वचने का भाव, रक्षा।
वचिया–(हिं. स्त्री.) कशीदे में वनाई हुई छोटी-छोटी वूटियाँ।
वचून–(हिं. पुं.) भालू का वच्चा।
वच्चा–(हिं. पुं.) नवजात शिशु, वालक, छोटा लड़का; **वच्चों का खेल**–(पुं.) वहुत आसान काम।
वच्ची–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की वारह-मासी लता।
वच्ची–(हिं.स्त्री.) छोटी कन्या, वालिका।
वच्छ–(हिं. पुं.) वच्चा, वेटा, वछड़ा।
वच्छनाग–(हिं. पुं.) देखें 'वछनाग'।
वच्छल–(हिं. वि.) देख 'वत्सल', माता-पिता के समान लाड़-प्यार करनेवाला।
वच्छस–(हिं. पुं.) छाती, सीना।
वच्छा–(हिं. पुं.) गाय का वछवा, किसी पशु का वच्चा।
वछड़ा, वछा–(हिं. पुं.) गाय का वच्चा।
वछनाग–(हिं. पुं.) हिरन के सींग के आकार का एक स्थावर विष जो एक पहाड़ी पौधे की जड़ है।
वछरा–(हिं. पुं.) देखें 'वछड़ा'।
वछरू–(हिं. पुं.) देखें 'वछड़ा', वछवा।
वछल–(हिं. वि.) देखें 'वत्सल'।
वछवा, वछेड़ा–(हिं.पुं.) गाय का वच्चा।
वछेरू–(हिं. पुं.) देखें 'वछड़ा'।
वछौटा–(हिं. पुं.) वह चन्दा जो हिस्से के अनुसार लगाया जाय।
वजंत्री–(हिं. पुं.) वाजा वजानेवाला, वजनियाँ।
वजकंद–(हिं. पुं.) एक प्रकार की जंगली लता।
वजकना–(हिं. क्रि. अ.) किसी पदार्थ का सड़कर वुलवुले छोड़ना, वजवजाना।
वजका–(हिं. पुं.) वेसन की पकौड़ी जो पानी में भिगोकर दही में डाली जाती है।
वजट–(अं. पुं.) आय-व्यय का तख्मीना (वनाना)।
वजड़ना–(हिं.क्रि.अ.) पहुँचना, टकराना।
वजड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'वजरा'।
वजनक–(हिं. पुं.) पिस्ते का फूल जिससे रेशम रँगा जाता है।
वजना–(हिं. क्रि. अ.) करतल आदि के आघात या हवा के वेग से वाज में शब्द उत्पन्न होना, प्रसिद्ध होना, प्रहार या आघात पड़ना, हठ करना, शस्त्रों का चलना; (पुं.) वजानेवाला, वाजा, रुपया; (वि.) वजानेवाला।
वजनियाँ, वजनिहाँ–(हिं.पुं.) वाजा वजाने वाला।
वजनी–(हिं. वि.) वजनेवाला, जो वजता हो।
वजवजाना–(हिं. क्रि. अ.) वजकना।
वजमारा–(हिं. वि.) वज्र से मारा हुआ, जिस पर वज्र पड़ा हो।
वजरंग–(हिं. वि.) वज्र के समान पुष्ट

शरीरवाला; (पुं.) हनुमान; **-बली-** (पुं.) महावीर, हनुमान।
बजरवट्टू-(हिं. पुं.) एक वृक्ष के फल का दाना जिसकी माला बनाकर बच्चों को पहनाई जाती है।
बजरबोंग-(हिं. पुं.) बाँस का मोटा भारी डंडा, एक प्रकार का अगहनिया धान।
बजरहड्डी-(हिं. स्त्री.) घोड़े के पैर में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।
बजरा-(हिं. पुं.) एक प्रकार की पटी गई बड़ी नाव, देखें 'बाजरा'।
बज्रागि-(हिं. स्त्री.) देखें 'बिजली'।
बजरी-(हिं. स्त्री.) कंकड़ के छोटे-छोटे टुकड़े जो गच के ऊपर पीटे जाते हैं, गढ़ की भीत के ऊपर बना हुआ कंगूरा जिसके छिद्रों में से गोली चलाई जाती है, ओला।
बजवाई-(हिं. स्त्री.) बाजा बजाने का पारिश्रमिक या क्रिया।
बजवाना-(हिं. क्रि. स.) बजाने के लिये किसी को प्रेरित करना, बजाने में किसी को प्रवृत्त करना।
बजवैया-(हिं. पुं.) बाजा बजानेवाला।
बजागि-(हिं. स्त्री.) वज्र की आग, बिजली।
बजाना-(हिं. क्रि. स.) बाजे आदि पर आघात करके अथवा हवा के वेग से उसमें शब्द उत्पन्न करना, आघात पहुँचाना, किसी वस्तु से मारना, (काम) पूरा करना, आवाज निकालकर जाँचना।
बजार-(हिं. पुं.) हाट, बाजार।
बजारी, बजारू-(हिं. वि.) बाजारी, साधारण, सामान्य।
बजुआ-(हिं. पुं.) देखें 'बाजू'।
बजूखा-(हिं. पुं.) बाजू।
बज्जर-(हिं. वि.) कड़ा, पुष्ट; (पुं.) देखें 'वज्र'।
बज्जात-(हिं. वि.) दुष्ट, पाजी।
बज्जाती-(हिं. स्त्री.) दुष्टता, पाजीपन।
बज्र-(हिं. पुं.) देखें 'वज्र'।
बझवट-(हिं. स्त्री.) बाँझ स्त्री, कोई मादा पशु, पौधों का डंठल।
बझना-(हिं. क्रि. अ.) बंधन में पड़ना, फँसना, उलझना, हठ करना।
बझान-(हिं. स्त्री.) बझने की क्रिया या भाव, बझाव।
बझाना-(हिं. क्रि. स.) बंधन में डालना, उलझाना, फँसाना।
बझाव-(हिं. पुं.) फँसाने की क्रिया या भाव, अटकाव, उलझन।
बझावट-(हिं. स्त्री.) बझने की क्रिया या भाव, उलझन।
बझावना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'बझाना'।
बट-(हिं. पुं.) देखें 'वट', 'बड़ा' नामक पकवान, गोल वस्तु, मार्ग, बट्टा, लोढ़िया, बाट, बटखरा; (स्त्री.) रस्सी की ऐंठन।
बटई-(हिं. स्त्री.) बटेर नाम की चिड़िया।
बटखर, बटखरा-(हिं. पुं.) तौलने का मान, बाट।
बटन-(हिं. स्त्री.) रस्सी आदि बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव, एक प्रकार का बादले का तार; (अं. पुं.) कमीज, कोट आदि में लगाई जानेवाली सीप, सींग आदि की घुंडी, बुताम, बिजली आदि का स्विच या घुंडी।
बटना-(हिं. क्रि. अ., स.) कई तन्तुओं, तागों या तारों को एक साथ मिलाकर इस प्रकार ऐंठना कि वे सब मिलकर एक हो जायँ, सिल पर रगड़कर किसी वस्तु का पिसा जाना, पिसना।
बटपरा-(हिं. पुं.) देखें 'बटमार'।
बटपार-(हिं. पुं.) देखें 'बटमार'।
बटपारी-(हिं. स्त्री.) डकैती, ठगी।
बटम-(हिं. पुं.) दीवार की सीध नापने का यन्त्र, गोनिया।
बटमार-(हिं. पुं.) डाकू, लुटेरा।
बटला-(हिं. पुं.) देग, देगचा, बड़ी बटलोई।
बटली, बटलोई-(हिं. स्त्री.) चौड़े मुँह का गोल पात्र, देगची।
बटवाना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'बँटवाना', 'बटना' का प्रेरणार्थक रूप।
बटवायक, बटवार-(हिं. पुं.) चौकीदार।
बटा-(हिं. पुं.) गोल वस्तु, गोला, पथिक, बटोही, राही, गेंद, ढेला, रोड़ा, गणित में अपूर्ण संख्या या भग्नांश में का हर, जैसे-$\frac{3}{4}$=तीन बटा चार।
बटाई-(हिं. स्त्री.) बटने या ऐंठन डालने का काम, बटने का शुल्क, बँटाई।
बटाऊ-(हिं. पुं.) राह चलनेवाला, बटोही, पथिक; (मुहा.) **-होना**-चला जाना।
बटाक-(हिं. वि.) बड़ा, ऊँचा।
बटाना-(हिं. क्रि. अ.) रुक जाना, बंद हो जाना।
बटाली-(हिं. स्त्री.) बढ़इयों का एक उपकरण, रुखानी।
बटिया-(हिं. स्त्री) कोई गोल और चिकना टुकड़ा, छोटा गोला, पत्थर, लोढ़िया, छोटा बट्टा
बटी-(हिं. स्त्री.) बड़ी नाम का पकवान।
बटुआ-(हिं. पुं.) देखें 'बटुवा'; (वि.) सिल-बट्टे से पिसा हुआ।
बटुक-(सं. पुं.) लड़का, बच्चा।
बटुरना-(हिं. क्रि. अ.) सिमटना, फैला न रहना, इकट्ठा होना।
बटुला-(हिं. पुं.) बड़ी बटलोई।
बटुवा-(हिं. पुं.) कपड़े या चमड़े की थैली जिसमें कई खाने रहते हैं, बड़ी बटलोई।
बटेर-(हिं. स्त्री.) तीतर या लवा की जाति की एक छोटी चिड़िया जो भूरे रंग की होती है; **-बाज**-(पुं.) बटेर पालने या लड़ानेवाला; **-बाजी**-(स्त्री.) बटेर पालने या लड़ाने का काम।
बटेरा-(हिं. पुं.) कटोरा, गहरी थाली।
बटोई-(हिं. पुं.) देखें 'बटोही'।
बटोर-(हिं. पुं.) बहुत से मनुष्यों का इकट्ठा होना, जमघट, जमावड़ा, कूड़ा करकट का ढेर, दानों का ढेर जो खेत में बटोरकर इकट्ठा किया गया हो।
बटोरन-(हिं. स्त्री.) बटोरकर इकट्ठा किया हुआ ढेर, कूड़ा-करकट का ढेर।
बटोरना-(हिं. क्रि. स.) बिखरी हुई वस्तुओं को इकट्ठा करके ढेर लगाना, समेटना, फैला न रहने देना।
बटोहिया-(हिं. पुं.) देखें 'बटोही'।
बटोही-(हिं. पुं.) पथिक, राही।
बट्ट-(हिं. पुं.) गेंद, गोला, बाँट, बटखरा, बल, मुर्री।
बट्टा-(हिं. पुं.) दलाली, हानि, पूरे मूल्य में वह कमी जो किसी मुद्रा आदि के तुड़ान में देना पड़े, रत्न आदि रखने का डिब्बा, एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी, पत्थर आदि का गोल टुकड़ा, कूटने या पीसने का पत्थर, लोढ़ा, वह कमी जो क्रय-विक्रय में किसी वस्तु के मूल्य में की जाती है; (मुहा.) **-लगना**-कलंक लगना; **-खाता**-(पुं.) वह बही जिसमें डूबी हुई रकम का लेखा रहता है; **-ढाल**-(वि.) समतल और चिकना।
बट्टी-(हिं. स्त्री.) छोटा बट्टा, पत्थर आदि का गोल छोटा टुकड़ा, कूटने-पीसने का लोढ़ा, साबुन की टिकिया।
बट्टू-(हिं. पुं.) धारीदार चारखाना, बजरबट्टू, लोबिया नामक तरकारी।
बट्टेबाज-(हिं. पुं., वि.) जादूगर, धूर्त।
बडंगा-(हिं. पुं.) देखें 'बँड़ेर'।
बड़-(हिं. स्त्री.) प्रलाप, बकवाद; (पुं.) बरगद का वृक्ष; (वि.) बड़ा; (अव्य.) बढ़कर।
बड़कुइयाँ-(हिं. स्त्री.) कच्चा कुआँ।
बड़गूजर-(हिं. पुं.) राजपूतानावासी एक क्षत्रिय जाति।
बड़गुल्ला-(हिं. पुं.) एक प्रकार का बगुला।

बड़दुमा–(हिं.पुं.) लंबी पोंछवाला हाथी।
बड़प्पन–(हिं.पुं.) महत्त्व, गौरव, श्रेष्ठता, बड़ाई।
बड़बट्टा–(हिं.पुं.) बरगद का फल, गोदा।
बड़बड़–(हिं.स्त्री.) व्यर्थ का बोलना, बकवाद।
बड़बड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) प्रलाप करना, व्यर्थ बकवाद करना, मुँह में ही कुछ बोलना।
बड़बड़िया–(हिं.वि.) बड़बड़ करनेवाला, बकवादी।
बड़बेरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'झरबेरी'।
बड़बोल, बड़बोला–(हिं. वि.) लंबी-चौड़ी बातें करनेवाला, सीटनेवाला।
बड़भाग, बड़भागी–(हिं. वि.) भाग्यवान्।
बड़रा–(हिं. वि.) विशाल, बड़ा।
बड़राना–(हिं.क्रि.अ.) बर्राना, बड़बड़ करना।
बड़वा–(सं.स्त्री.) घोड़ी, अश्विनी नक्षत्र, दासी, समुद्र के भीतर की अग्नि।
बड़वाग्नि–(सं.स्त्री.), **बड़वानल**–(सं.पुं.) समुद्र के भीतर की अग्नि या ताप।
बड़वामुख–(सं.पुं.) महादेवजी का एक नाम।
बड़वार–(हिं. वि.) बड़ा, विशाल।
बड़वारी–(हिं. स्त्री.) महत्त्व, बड़प्पन, प्रशंसा।
बड़वाल–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़।
बड़वासुत–(सं. पुं.) अश्विनी कुमार।
बड़हंस–(हिं.पुं.) एक संकर राग का नाम; **–सारंग**–(पुं.) संपूर्ण जाति का एक राग।
बड़हंसिका–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
बड़हन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।
बरहर(ल)–(हिं. पुं.) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल शरीफे के आकार के बेडौल और खाने में मीठे होते हैं।
बड़हार–(हिं. पुं.) बरातियों की वह ज्योनार जो विवाह के बाद दी जाती है।
बड़ा–(हिं. वि.) अधिक, विस्तृत, लंबा-चौड़ा, उम्र, में अधिक (गुण, प्रभाव आदि में) उत्तम, किसी बात में बढ़कर, श्रेष्ठ, ऊँचा, अधिक परिमाण का; (पुं) मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की टिकिया को घी या तेल में तलकर बनाया हुआ एक पकवान।
बड़ा घर–(हिं.पुं.) बन्दीगृह।
बड़ाई–(हिं. स्त्री.) परिमाण या विस्तार की अधिकता, महिमा, प्रशंसा, (पद, मान, मर्यादा, वय, विद्या आदि की) वृद्धि, बड़प्पन, श्रेष्ठता; (मुहा.)–देना–आदर-सत्कार करना।
बड़ा दिन–(हिं.पुं.) २५ दिसंबर का दिन जो ईसा मसीह का जन्मदिवस माना जाता है, (ईसाई लोग इस दिन त्योहार मनाते हैं।)
बड़ा पीलू–(हिं.पुं.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
बड़ाबोल–(हिं. पुं.) अहंकार के शब्द।
बड़ासदरा–(हिं. पुं.) कसेरों का पात्रों में जोड़ लगाने का उपकरण।
बड़ी–(हिं.स्त्री.) (उड़द, मूंग आदि की) पीठी की बनाई हुई छोटी-छोटी टिकिया, मांस की बोटी; (वि.) 'बड़ा' का स्त्रीलिंग रूप; **–कटाई**–(स्त्री.) बड़ी जाति की भटकटैया; **–गोटी**–(स्त्री.) चौपायों का एक रोग; **–माता**–(स्त्री.) शीतला रोग, चेचक; **–मैल**–(स्त्री.) भूरे रंग की एक चिड़िया; **–मौसली**–(स्त्री.) लोहे का ठप्पा जिससे थालियों में नकाशी की जाती है।
बड़ेरर–(हिं. पुं.) चक्रवात, बवंडर।
बड़ेरा–(हिं. पुं.) छाजन में लंबे बल की पुष्ट लकड़ी जिस पर ठाट टिका रहता है, कुएँ पर खंभों पर रखी हुई वह लड़की जिस पर घिरनी लगी रहती है।
बड़ौखा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का नरम गन्ना।
बड़ौना–(हिं. पुं.) प्रशंसा।
बढ़–(हिं. स्त्री.) अधिकता।
बढ़ई–(हिं.पुं.) काठ को गढ़कर अनेक प्रकार की सामग्रियां बनानेवाला कारीगर।
बढ़ती–(हिं.स्त्री.) (मात्रा, मान या संख्या में) वृद्धि, धन-धान्य की वृद्धि, सम्पत्ति आदि का बढ़ना।
बढ़दार–(हिं.पुं.) पत्थर काटने की टाँकी।
बढ़न–(हिं. स्त्री.) वृद्धि, बढ़ती।
बढ़ना–(हिं.क्रि.अ.) वृद्धि को प्राप्त होना, उन्नति करना, अग्रसर होना, भाव में वृद्धि होना, लाभ होना, दुकान आदि का बंद होना, दीपक का बुझना, परिमाण या संख्या में अधिक होना, किसी से गुण, बल आदि में अधिक होना, दूसरे से आगे निकल जाना; (मुहा.) **बढ़कर चलना**–घमंड करना।
बढ़नी–(हिं. स्त्री.) झाड़ू, बुहारी, अन्न या रुपया जो खेती करने के लिये अग्रिम दिया जाता है।
बढ़ाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) फैलाना, लम्बा करना, दुकान आदि को बन्द करना, भाव अधिक कर देना, समाप्त होना, (पद, अधिकार, सुख-सम्पत्ति आदि में) अधिकता होना, आगे ले जाना, उन्नत करना, (बल, प्रभाव, गुण आदि को) अधिक करना, अधिक तीव्र करना, दीपक बुझाना, चुकना, समाप्त होना।
बढ़ाली–(हिं.स्त्री.) कटारी, छोटी कटार।
बढ़ाव–(हिं. पुं.) बढ़ने की क्रिया या भाव, विस्तार, वृद्धि, अधिकता।
बढ़ावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बढ़ाना'।
बढ़ावा–(हिं. पुं.) उत्तेजना, प्रोत्साहन, साहस देनेवाली बात, मन बढ़ाने की बात, कठिन काम में प्रवृत्त करने का हौसला।
बढ़िया–(हिं. वि.) उत्तम, अच्छा; (पुं.) एक प्रकार का कोल्हू, (अन्न, गन्ने आदि की) उपज का एक रोग।
बढ़ेल–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की कोमल रोएँ की भेड़।
बढ़ेला–(हिं. पुं.) जंगली सूअर।
बढ़ैया–(हिं.पुं.) बढ़ने या बढ़ानेवाला, उन्नति करनेवाला।
बढ़ोतरी–(हिं. स्त्री) उन्नति, बढ़ती, उत्तरोत्तर वृद्धि।
बणिक्–(सं. पुं.) वाणिज्य करनेवाला, बनिया, विक्रेता, बेचनेवाला।
बणिग्बंधु–(सं.पुं.) नील का पौधा, बनियों का बन्धु।
बणिग्भाव–(सं.पुं.) वाणिज्य, दुकानदारी।
बणिज्–(सं.पुं.) देखें 'बणिक्', बनिया।
बणिज्य, बणिवृत्ति–(सं. पुं. स्त्री.) देखें 'वाणिज्य'।
बत–(हिं.स्त्री.) बात, (यौगिक शब्दों में इसका प्रयोग होता है, यथा–बतकही।)
बतक–(हिं. स्त्री.) देखें 'बतख'।
बतकहाव–(हिं. पुं.) बातचीत, वाद-विवाद।
बतकही–(हिं.स्त्री.) वार्तालाप, बात-चीत।
बतख–(हिं. स्त्री.) हंस की जाति की पानी में तैरनेवाली एक सफेद चिड़िया।
बतचल–(हिं. वि.) बकवादी, बक्की।
बतबढ़ाव–(हिं. पुं.) व्यर्थ बात बढ़ाना, झगड़ा, विवाद।
बतर–(हिं. वि.) बुरा।
बतरस–(हिं.पुं.) वार्तालाप का आनन्द।
बतरान–(हिं. स्त्री.) बातचीत।
बतराना–(हिं.क्रि.अ.) बातचीत करना।
बतरौंहा–(हिं. वि.) बातचीत करने को उत्सुक।
बतलाना, बताना–(हिं.क्रि. स.) निर्देश करना, दिखाना, जताना, समझाना-बुझाना, नाचन-गाने में भाव बताना, किसी बात को प्रकट करना, दण्ड

देकर ठीक मार्ग पर लाना, मार-पीटकर ठीक करना, मरम्मत करना ।
बताना–(हिं. पुं.) हाथ का कड़ा, वह पुराना कपड़ा या चीर जिस पर पगड़ी बाँधी जाती है ।
बताशा–(हिं. पुं.) देखें 'बतासा' ।
बतास–(हिं. स्त्री.) गठिया, वात रोग, वायु, हवा ।
बतासफेनी–(हिं. स्त्री.) टिकिया के आकार की एक मिठाई ।
बतासा–(हिं.पुं.) चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई, बुलबुला, एक प्रकारकी अग्नि क्रीड़ा ।
बतिया–(हिं. पुं.) थोड़े दिनों का लगा हुआ छोटा फल ।
बतियाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) बातचीत करना ।
बतियार–(हिं. स्त्री.) बातचीत ।
बतीसा–(हिं. पुं.) बत्तीस दवाओं और मेवों के योग से बना हुआ लड्डू या हलवा जो प्रसूता को पुष्टि के लिए दिया जाता है ।
बतीसी–(हिं. स्त्री.) बत्तीसों दाँत, बत्तीस चीजों का समूह; (मुहा.) **–खिलना**–खुलकर हँसना ।
बतू–(हिं. पुं.) देखें 'कलाबत्तू' ।
बतौर–(फा. अव्य.) द्वारा, मारफत ।
बतौरी–(हिं. स्त्री.) सूजन ।
बत्तक–(हिं. स्त्री.) देखें 'बतख' ।
बत्तिस–(हिं. वि.) देखें 'बत्तीस' ।
बत्ती–(हिं.स्त्री.) (सूत, रूई, कपड़े आदि की) पतली पूनी या मोटा फीता जो दीपक जलाने के उपयोग में आता है, प्रकाश, दिया, पगड़ी का ऐंठा हुआ कपड़ा, मोमबत्ती, बत्ती के आकार की कोई वस्तु, फूस का मुट्ठा जो छाजन में लगाया जाता है, घाव से पीब निकालकर उसमें भरने की कपड़े की लंबी पलीता ।
बत्तीस–(हिं. वि.) तीस और दो की संख्या का; (पुं.) तीस और दो की संख्या, ३२ ।
बत्तीसा–(हिं. पुं.) बत्तीस औषधियाँ आदि मिलाकर बना हुआ पुष्टई देनेवाला एक प्रकार का लड्डू, बतीसा ।
बत्तीसी–(हिं. स्त्री.) बत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे-ऊपर के दाँतों की पंक्तियाँ जिनकी कुल संख्या बत्तीस होती है ।
बथान–(हिं.पुं.) गाय-बैल के रहने का स्थान ।
बथुआ–(हिं. पुं.) एक छोटा पौधा जिसका साग बनाकर खाया जाता है ।
बद–(फा. वि.) बुरा, खराब, दुष्ट अशुभ, अमंगलकारी; **–इंतजाम**–(वि.) प्रबंध में अपटु; **–इंतजामी**–(स्त्री.) कुप्रबंध, कुव्यवस्था; **–किस्मत**–(वि.) अभागा; **–चलन**–(वि.) दुश्चरित्र; **–तमीज**–(वि.) अशिष्ट, गुस्ताख; **–तमीजी**–(स्त्री.) अशिष्टता, गुस्ताखी; **–दिमाग**–(वि.) घमंडी; **–दिमागी**–(स्त्री.) घमंड; **–नाम**–(वि.) जिसकी लोग निंदा करें; **–नामी**–(स्त्री.) कलंक; **–नीयत**–(वि.) बेईमान; **–नीयती**–बेईमानी; **–बू**–(स्त्री.) दुर्गंध; **–दार**–(वि.) दुर्गंधयुक्त; **–रंग**–(वि.) बुरे रंग का; **–सूरत**–(वि.) कुरूप; **–सूरती**–(स्त्री.) कुरूपता; **–हजमी**–(स्त्री.) अजीर्ण, अपच ।
बदन–(हिं. पुं.) देखें 'वदन'; (फा. पुं.) शरीर, देह ।
बदना–(हिं.क्रि.स.) वर्णन करना, कहना, स्थिर करना, ठहराना, स्वीकार करना, मान लेना, होड़ लगाना, गिनती में लाना, किसी को कुछ समझना, या मानना; **बदकर**–(अव्य.) हठ पूर्वक, जान-बूझकर ।
बदर–(सं. पुं.) कपास, बिनौला, बेर का वृक्ष, या फल, आठ माशे की तौल ।
बदरबीज–(सं. पुं.) बैर की गुठली ।
बदरा–(सं. स्त्री.) कपास, वाराही-कन्द; (हिं. पुं.) बादल, मेघ ।
बदराई–(हिं.स्त्री.) बदली ।
बदरामलक–(सं. पुं.) जल-आमला ।
बदरास्थि–(सं. पुं.) बेर की गुठली ।
बदरि–(सं. स्त्री.) बेर का पेड़ या फल ।
बदरिकाश्रम–(सं. पुं.) श्रीनगर (गढ़वाल) के पास अलकनन्दा नदी के पश्चिमी किनारे पर अवस्थित एक तीर्थ, (यहाँ पर नर-नारायण तथा व्यास का आश्रम है ।)
बदरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'बदली' ।
बदरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बदली' ।
बदरीनाथ–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत के एक शिखर का नाम जहाँ पर बदरी-नारायण का मन्दिर है ।
बदरी-नारायण–(सं. पुं.) वह देव मूर्ति जो बदरिकाश्रम में है ।
बदरौह–(हिं. वि.) कुमार्गी; (हिं. पुं.) बदली का आभास, भला-बुरा कहने में कुछ संकोच न होना ।
बदलना–(हिं.क्रि.अ.,स.) परिवर्तित होना, भिन्न होना, एक के स्थान पर दूसरे को करना, एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना, एक के स्थान पर दूसरा हो जाना; (मुहा.) **बात बदलना**–कोई बात कहकर उससे मुकर जाना ।
बदलवाना–(हिं. क्रि. स.) बदलने का काम दूसरे से कराना ।
बदला–(हिं. पुं.) विनिमय, परस्पर लेन-देन का व्यवहार, एक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु-देना, प्रतिकार, प्रतिफल, पलटा, किसी कर्म का परिणाम जो भोगना पड़े, अपकार के उत्तर में अपकार करना, प्रतिशोध ।
बदलाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बदलवाना' ।
बदली–(हिं. स्त्री.) नभ में फैला या छाया हुआ बादल, एक के स्थान पर दूसरे की नियुक्ति, एक पद से दूसरे पद पर नियुक्ति, स्थानांतरण ।
बदलौवल–(हिं. स्त्री.) अदल-बदल, हेर-फर, उलट-फेर ।
बदस्तूर–(फा.अव्य.) यथापूर्व, पहलेकीतरह ।
बदा–(हिं. वि.) प्रारब्ध में लिखा हुआ ।
बदान–(हिं. स्त्री.) किसी बात का प्रतिज्ञापूर्वक बदा या स्थिर किया जाना ।
बदाबदी–(हिं. स्त्री.) दो पक्षों की एक-दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या होड़, लाग-डाँट ।
बदाम–(हिं. पुं.) देखें 'बादाम' ।
बदामी–(हिं. वि.) बदाम के रंग का ।
बदि–(हिं. स्त्री.) बदला, पलटा; (अव्य.) वास्ते, बदले में ।
बदी–(हिं. स्त्री.) कृष्ण-पक्ष, अँधेरा पाख ।
बदे–(हिं. अव्य.) वास्ते, लिये ।
बदौलत–(फा. अव्य.) के सहारे, के द्वारा ।
बद्द–(हिं. वि.) अपमानित ।
बद्दर, बद्दल–(हिं. पुं.) देखें 'बादल' ।
बद्ध–(सं.वि.) बाँधा हुआ, बँधा हुआ, फँसा हुआ, बिना स्वातंत्र्य का, परिमित, व्यवस्थित, निर्धारित, जुड़ा हुआ, ठहराया हुआ, अज्ञान में फँसा हुआ; **–क**–(पुं.) बन्दी; **–कोष्ठ**–(पुं.) अच्छी तरह मल न निकलने की शिकायत या रोग; **–जिह्व**–(वि.) जिसको बोलने में संकोच होता हो; **–परिकर**–(वि.) कमर बाँधे हुए, तैयार; **–पुरीष**–(वि.) जिसको कब्ज का रोग हो; **–फल**–(पुं.) करंज का वृक्ष; **–मुष्टि**–(वि.) जिसकी मुट्ठी बँधी हो, कृपण, प्रकार; **–रसाल**–(पुं.) एक उत्तम प्रकार का आम; **–वर्चस**–(वि.) मल का अवरोध करनेवाला; **–वीर**–(वि.) जिसकी सेना

शत्रुओं से घिर गई हो ;–शिख–(वि.) जिसकी शिखा या चोटी बँधी हो ।

वद्धी–(हिं.स्त्री.) डोरी, रस्सी, बाँधने की कोई वस्तु, चार लड़ों का एक आभूषण ।

वध–(सं. पुं.) हनन, हत्या ।

वधक–(सं. वि.) वध करनेवाला, हत्या करनेवाला ; (पुं.) व्याध, मृत्यु ।

वधगराड़ी–(हिं. स्त्री.) रस्सी बँटने का एक औजार ।

वधना–(हिं.क्रि.स.) वध करना, हत्या करना ।

वधभूमि–(सं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ अपराधियों को प्राणदण्ड दिया जाता है ।

वधस्थली–(सं. स्त्री.) श्मशान ।

वधाई–(हिं. स्त्री.) वृद्धि, बढ़ती, मंगल अवसर का गाना-बजाना, शुभ अवसर पर दिया जानेवाला उपहार, चहल-पहल, शुभ अवसर पर आनन्द का सन्देश ।

वधाना–(हिं. क्रि. स.) वध कराना ।

वधाया–(हिं. पुं.) देखें 'वधाई' ।

वधावना–(हिं. पुं.) देखें 'वधावा' ।

वधावा–(हिं. पुं.) वधाई, मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा इष्ट-मित्रों के यहाँ से आनेवाला उपहार, मंगलाचार, मंगल अवसर पर का गाना-बजाना ।

वधिक–(हिं. पुं.) वध करनेवाला, मारनेवाला, व्याध, बहेलिया ।

वधिया–(हिं.पुं.) वह पशु जिसको अण्ड-कोश कुचलकर या निकालकर षंड या नपुंसक कर दिया गया हो, खस्सी, एक प्रकार की मीठी ऊख ।

वधियाना–(हिं. क्रि. स.) वधिया करना या बनाना ।

वधिर–(सं.वि.) बहरा, जिसे सुनने की शक्ति न हो;–ता–(स्त्री.) बहरापन ।

वधू–(हिं. स्त्री.) वधू, नव-विवाहिता स्त्री, पतोहू, भार्या, पत्नी ।

वधूटी–(सं. स्त्री.) पुत्र की स्त्री, पतोहू, नई आई हुई बहू, सौभाग्यवती स्त्री ।

वधूत्सव–(सं.पुं.) वधू का प्रथम रजोदर्शन ।

वधूरा–(हिं. पुं.) अंधड़, ववंडर ।

वधैया–(हिं. स्त्री.) वधाई ।

वधोद्यत–(सं. वि.) जो मारने के लिये उद्यत हो ।

वध्य–(सं. वि.) मार डालने योग्य; –भूमि–(स्त्री.) वध करने का स्थान, श्मशान ।

वन–(हिं.पुं.) देखें 'वन,' जंगल, अरण्य, बाग, बगीचा ।

वनआलू–(हिं. पुं.) जमींकन्द के प्रकार का एक पौधा ।

वनउर–(हिं. पुं.) बिनौला ।

वनकंडा–(हिं.पुं.) वह कंडा जो जंगल में आप से आप सूखकर तैयार होता है, जंगल का सूखा गोबर ।

वनक–(हिं. स्त्री.) वन या जंगल की उपज, सजधज, वेशभूषा ।

वनकटी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का बाँस ।

वनकर–(हिं.पुं.) जंगल में होनेवाले पदार्थों की आय या उनपर लगनेवाला कर ।

वनकल्ला–(हिं.पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष ।

वनकस–(हिं.पुं.) एक प्रकार की जंगली घास ।

वनकोरा–(हिं.पुं.) लोनिया का साग ।

वनखंड–(हिं.पुं.) जंगल का कोई भाग ।

वनखंडी–(हिं.स्त्री.) छोटा-सा जंगल; (वि.) वन में रहनेवाला ।

वनखरा–(हिं.पुं.) वह खेत जिसमें पिछली उपज कपास रही हो ।

वनगाव–(हिं.पुं.) एक प्रकार का बड़ा हिरन ।

वनचर–(हिं.पुं.) वन्य पशु, जंगल में रहनेवाला पशु, जंगली मनुष्य ।

वनचारी–(हिं.पुं.,वि.) वन में घूमनेवाला, जंगल में रहनेवाला मनुष्य या पशु ।

वनचौंर–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की जंगली गाय, सुरागाय ।

वनज–(हिं.पुं.) कमल, शंख, जंगल में होनेवाले पदार्थ, वाणिज्य, व्यवसाय ।

वनजना–(हिं.क्रि.अ.) व्यापार करना ।

वनजर–(हिं.पुं.) देखें 'वंजर' ।

वनजात–(हिं.पुं.) कमल, पद्म ।

वनजारा–(हिं.पुं.) वह व्यापारी जो बैलों पर अन्न लादकर देश-देश में घूमकर बेचता है, टाँड़ा, व्यापारी, बनिया ।

वनजी–(हिं.पुं.) व्यापारी ।

वनज्योत्स्ना–(हिं.स्त्री.) माधवी लता ।

वनड़ा–(हिं. पुं.) एक राग का नाम; –जेत–(पुं.) रूपक ताल पर बजनेवाला एक राग ।

वनत–(हिं. स्त्री.) रचना, बनावट, अनुकूलता, मेल, रेशम या मखमल पर काढ़ने की एक प्रकार की बेल ।

वनताई–(हिं.स्त्री.) जंगल का घनापन या भयंकरता ।

वनतुरई–(हिं. स्त्री.) बंदाल ।

वनतुलसी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्ती और मंजरी तुलसी के समान होती है ।

वनद–(हिं. पुं.) मेघ, बादल ।

वनदाम–(हिं. पुं.) वनमाला ।

वनदेवी–(हिं. स्त्री.) वन की अधि-ष्ठात्री देवी ।

वनधातु–(सं. स्त्री.) गेरू, कोई रंगीन मिट्टी ।

वनना–(हिं. क्रि. अ.) रचा जाना, तैयार होना, आपस में मित्रता होना, अच्छा अवसर प्राप्त होना, स्वाँग का स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना, शृंगार करना, महत्त्व की मुद्रा धारण करना, सफल होना, कोई विशेष पद या अधि-कार प्राप्त करना, आविष्कार होना, अपने को अधिक योग्य दर्शित करना, संभव होना, ठीक होना, किसी पदार्थ का व्यवहार में आने योग्य होना, एक पदार्थ का रूप बदलकर दूसरा पदार्थ हो जाना; (मुहा.) बना रहना–जीवित रहना, उपस्थित रहना; वनकर–(अव्य.) अच्छी तरह से ।

वननि–(हिं.स्त्री.) बनावट, सिंगार ।

वननिधि–(हिं. पुं.) समुद्र ।

वनपट–(हिं. पुं.) वृक्षों की छाल आदि से बनाया हुआ कपड़ा ।

वनपति–(हिं. पुं.) सिंह, शेर ।

वनपथ–(हिं. पुं.) वह मार्ग जो जंगल बीच से गया हो ।

वनपाट–(हिं. पुं.) जंगली पटुआ ।

वनपाती–(हिं. स्त्री.) देखें 'वनस्पति' ।

वनपाल–(हिं.पुं.) वन या बाग का रक्षक ।

वनप्रिय–(हिं. पुं.) कोकिल, कोयल ।

वनफल–(हिं. पुं.) जंगली मेवा ।

वनवारी–(हिं. स्त्री.) वनकन्या, फूलों का बगीचा ।

वनवास–(हिं. पुं.) वन में रहने या बसने की क्रिया या भाव, प्राचीन काल का देश से निकाले जाने का दंड ।

वनवासी–(हिं. पुं.) वन में रहनेवाला, जंगली ।

वनवाहन–(हिं. पुं.) जलयान, नाव ।

वनविलाव–(हिं. पुं.) बिल्ली की जाति का एक जंगली जन्तु ।

वनमानुष–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बंदर जो बहुत बड़ा होता है और जिसका आकार मनुष्य से मिलता-जुलता है, बिलकुल जंगली आदमी ।

वनमाला–(हिं.स्त्री.) तुलसी, कुंद, मंदार, पारिजात और कमल—इन पाँचों फूलों की बनी हुई माला ।

वनमाली–(हिं.पुं.) वनमाला धारण करने-वाला, विष्णु, कृष्ण, मेघ, बादल ।

बनमुरगा–(हिं. पुं.) जंगली मुरगा।
बनर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अस्त्र।
बनरखा–(हिं. पुं.) वन का रक्षक, जंगल की रखवाली करनेवाला, बहेलियों तथा जंगल में रहनेवालों की एक जाति।
बनरा–(हिं. पुं.) वर, दूल्हा, विवाह के समय का एक प्रकार का मंगल-गीत।
बनराज, बनराय–(हिं. पुं.) जंगल का राजा, सिंह, बहुत बड़ा वृक्ष।
बनरी–(हिं. स्त्री.) नववधू, नई आई हुई बहू।
बनरीठा–(हिं.पुं.)एक प्रकार का जंगली रीठा।
बनरीहा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
बनरुह–(हिं. पुं.) वह पौधा जो जंगल में अधिकतर उगता है, जंगली पेड़, पद्‌म, कमल।
बनवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बनाना'।
बनवर–(हिं. पुं.) बिनौला।
बनवसन–(हिं. पुं.) वृक्ष की छाल का बना हुआ कपड़ा।
बनवा–(हिं.पुं.)पनडुब्बी नामक जलपक्षी।
बनवाना–(हिं. क्रि. स.) बनाने का काम दूसरे से कराना।
बनवारी–(हिं. पुं.) वनमाली, श्रीकृष्ण का एक नाम।
बनवासी–(हिं.पुं.) जंगल में रहनेवाला।
बनवैया–(हिं. पुं.) बनानेवाला।
बनसपती–(हिं. स्त्री.) देखें 'वनस्पति'।
बनसार–(हिं. पुं.) जहाज पर चढ़ने-उतरने का स्थान।
बनसी–(हिं.स्त्री.) देखें 'वंशी'।
बनस्थली–(हिं. स्त्री.) वनखण्ड, जंगल का कोई भाग।
बनस्पती–(हिं. स्त्री.) देखें 'वनस्पति'।
बनहटी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी नाव।
बनहरदी–(हिं. स्त्री.) दारुहलदी।
बना–(हिं.पुं.) वर, दूल्हा, एक छन्द का नाम, (इसका दूसरा नाम दण्डकला है।)
बनाइ–(हिं. अव्य.) अत्यन्त, बहुत, भली भाँति, अच्छी तरह।
बनाउ–(हिं. पुं.) देखें 'बनाव'।
बनाग्नि–(हिं. स्त्री.) दावानल।
बनात–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो बहुत गरम होता है।
बनाती–(हिं. वि.) बनात का बना हुआ।
बनाना–(हिं. क्रि. स.) प्रस्तुत करना, रचना, किसी पदार्थ का रूप बदलकर दूसरा पदार्थ तैयार करना, दुरुस्त करके अपने व्यवहार के योग्य करना, आविष्कार करना, पूरा करना, कमाना, अन्न साफ करना, मूर्ख ठहराना, कोई विशेष पद अथवा शक्ति देना, अच्छी स्थिति में पहुँचाना, मरम्मत करना, ठीक रूप या दशा में लाना, उपार्जित करना; **बनाकर**–(अव्य.) भली भाँति, अच्छी तरह।
बनाफर–(हिं.पुं.)क्षत्रियों की एक जाति।
बनाबंत–(हिं.पुं.)गणना करने के निमित्त वर और कन्या की जन्मकुण्डलियाँ मिलाना।
बनाम–(फा.अव्य.)के नाम से या नाम पर।
बनाय–(हिं. अव्य.) पूर्ण रूप से, अच्छी तरह।
बनार–(हिं.पुं.)काश,कसौंदा,एक प्राचीन राज्य जो वर्तमान काशी की उत्तरी सीमा पर था। (कहा जाता है कि 'बनारस' नगर का नाम इसी राज्य के नाम पर पड़ा है।)
बनारसी–(हिं. वि., पुं.) काशी-संबंधी, काशी-निवासी।
बनारी–(हिं. स्त्री.) कोल्हू में लगी हुई रस गिरने की बाँस की नली।
बनाव–(हिं.पुं.) रचना, बनावट, श्रृंगार, सजावट, युक्ति।
बनावट–(हिं. स्त्री.) बनने या बनाने का भाव, गढ़न, ऊपरी दिखावा, आडंबर।
बनावटी–(हिं. वि.) कृत्रिम, दिखौवा।
बनावन–(हिं. पुं.) (कंकड़ी, मिट्टी, छिलके आदि) जो अन्न को स्वच्छ करने पर निकले, बिनन; **–हारा**–(पुं.) रचयिता, बनानेवाला, बिगड़े को बनानेवाला।
बनावलि–(सं. स्त्री.) बाणों की पंक्ति।
बनासपति, बनासपाती–(हिं. स्त्री.) देखें 'वनस्पति', जड़ी-बूटी, पत्ती, फल-फूल आदि।
बनि–(हिं. वि.) समस्त, सब।
बनिक–(हिं. पुं.) वणिक्, बनिया।
बनिज–(हिं. पुं.) वस्तुओं का क्रय-विक्रय, व्यवसाय, व्यापार की वस्तु।
बनिजना–(हिं. क्रि. अ.) व्यापार करना, खरीदना-बेचना, अपने अधीन करना।
बनिजाति–(हिं.स्त्री.)व्यापार की सामग्री।
बनिजारा–(हिं. पुं.) देखें 'बनजारा'।
बनिजारिन–(हिं.स्त्री.) बनजारा जाति की स्त्री।
बनजारी–(हिं. स्त्री.) बनजारे की स्त्री।
बनित–(हिं. पुं.) वेश-भूषा, बानक।
बनिता–(हिं. स्त्री.) स्त्री, भार्या, पत्नी।
बनिया–(हिं. पुं.) व्यापार करनेवाला मनुष्य, वैश्य, आटा, चावल आदि बेचनेवाला मोदी।
बनियाइन–(हिं. स्त्री.) बनिये की स्त्री, सूत, रेशम आदि की बुनी हुई बंडी या कुरती जो शरीर से चिपकी रहती है।
बनिस्वत–(फा. अव्य.) की अपेक्षा, मुकाबले में।
बनिहार–(हिं. पुं.) वह भृत्य जो खेती के लिये नियुक्त किया जाता है।
बनी–(हिं. स्त्री.) वनस्थली, वाटिका, नायिका, दुलहिन, अन्न के रूप में मिलनेवाली मजदूरी, वन का छोटा खंड।
बनौनी–(हिं. स्त्री.) वैश्य जाति की स्त्री, बनिये की स्त्री।
बनेठी–(हिं. स्त्री.) वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं तथा जिसका व्यवहार पटेबाजी के खेल या अभ्यासों में किया जाता है।
बनैला–(हिं. वि.) वन्य, जंगली।
बनौटी–(हिं. वि.) कपासी,-कपास के फूल के रंग का।
बनौरी–(हिं. स्त्री.) वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला, उपल।
बनौवा–(हिं. वि.) कृत्रिम, बनावटी।
बन्नी–(हिं. स्त्री.) उपज का कोई अंश जो खेत में काम करनेवालों को मजदूरी में दिया जाता है।
बन्हि–(हिं. स्त्री.) देखें 'वह्नि'।
बप–(हिं.पुं.) बाप, पिता; **–मार**–(वि.) अपने पिता की हत्या करनेवाला, सब के साथ अन्याय करनेवाला।
बपना–(हिं. क्रि. स.) बीज बोना।
बपु, बपुख–(हिं. पुं.) देखें 'वपु', शरीर, अवतार, रूप।
बपुरा–(हिं. वि.) अशक्त, बेचारा।
बपौती–(हिं. स्त्री.) पिता से मिली हुई सम्पत्ति।
बप्पा–(हिं. पुं.) पिता, बाप।
बफौरी–(हिं. स्त्री.) भाफ से पकाई हुई बरी।
बबकना–(हिं. क्रि. अ.) आवेग में आकर बकना या बोलना, बमकना।
बबा–(हिं. पुं.) देखें 'बाबा'।
बबुआ–(हिं. पुं.) पुत्र या दामाद के लिये प्यार का शब्द, रईस, भूमिस्वामी।
बबुई–(हिं. स्त्री.) कन्या, बेटी, किसी सरदार या रईस की बेटी, छोटी ननद।
बबुर, बबूल–(हिं.पुं.)एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जो मझोले कद का होता है।
बबूला–(हिं. पुं.)देखें 'बगूला', बुलबुला।

बभनी–(हिं. स्त्री.) छिपकली के आकार का एक पतला छोटा कीड़ा जिसके शरीर पर सुन्दर लम्बी धारियाँ होती हैं।
बभूत–(हिं. स्त्री.) देखें 'भभूत', विभूति।
बभ्रु–(सं. पुं.) अग्नि, शिव, विष्णु, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, कपिला गौ; –क–(पुं.) नेवला, बन्दर; –धातु–(स्त्री.) सोना, सुवर्ण, गेरू; –वाहन–(पुं.) अर्जुन के एक पुत्र का नाम।
बम–(हिं. पुं.) शिव के उपासकों का पूजन का शब्द, शहनाई के साथ का बाईं ओर का नगाड़ा, वह लम्बा बाँस जो गाड़ी आदि में आगे की ओर लगा रहता है जिसमें घोड़ा खड़ा करके जोता जाता है; (मुहा.)–बोलना–सब सामग्रियों का समाप्त होना।
बम–(अं.पुं.) विस्फोटक वस्तुओं को भरकर बनाया हुआ लोहे का गोला; –गोला–(पुं.) बम का गोला; –बाज–(पुं.) शत्रु पर बम गिरानेवाला; –बाजी–(स्त्री.) बम की वर्षा।
बमकना–(हिं. क्रि. अ.) डींग हाँकना।
बमचख–(हिं. स्त्री.) लड़ाई, झगड़ा।
बमना–(हिं. क्रि. अ.) वमन करना।
बमपुलिस–(हिं. पुं.) देखें 'बंपुलिस'।
बमीठा–(हिं. पुं.) वल्मीक, बाँबी।
बम्हनदियाव–(हिं. पुं.) पहले-पहले ऊख पेरते समय इसका कुछ रस ब्राह्मणों को पिलाना।
बम्हनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बभनी', ऊख का एक रोग, लाल रंग की भूमि, आँख का एक रोग।
बय–(हिं. पुं.) देखें 'वय'।
बयन–(हिं. पुं.) बैन, वाणी, बात।
बयना–(हिं. क्रि. स.) वर्णन करना, कहना, बीज जमाना या लगाना; (पुं.) देखें 'बायन'।
बयनी–(हिं. स्त्री.) बोलनेवाली।
बयर–(हिं. पुं.) देखें 'बैर'।
बयल–(हिं. पुं.) बैल।
बयस–(हिं. स्त्री.) देखें 'वय'।
बया–(हिं. पुं.) गौरैया के आकार तथा रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो बड़ी चातुरी से अपना घोंसला तृणों से बनाता है; अनाज तौलनेवाला मनुष्य।
बयाई–(हिं. स्त्री.) अन्न आदि तौलने का शुल्क, तौलाई।
बयान–(अ. पुं.) कथन, उक्ति, वचन, वाक्य।
बयाना–(हिं.पुं.) वह धन जो किसी काम के लिये बात पक्की हो जाने पर अग्रिम दिया जाता है और मूल्य चुकता देते समय काट लिया जाता है; (क्रि.अ.) बड़-बड़ाना।
बयार–(हिं. स्त्री.) पवन, हवा।
बयारि–(हिं.स्त्री.) हवा का मंद झोंका।
बयारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बयार'।
बयाला–(हिं. पुं.) भीत में का छेद या झरोखा, ताख, आला, गढ़ की भीत में का वह छोटा छिद्र जिसमें से तोप का गोला छोड़ा या दागा जाता है, पटाव के नीचे का स्थान, गढ़ में वह स्थान जहाँ तोपें लगी रहती हैं।
बयालि(ली)स–(हिं.पुं.) चालीस और दो की संख्या, ४२; (वि.) जो संख्या में चालीस और दो हो; –वाँ–(वि.) जो क्रम में बयालीस के स्थान पर हो।
बयासी–(हिं. वि.) अस्सी और दो की संख्या का; (पुं.) अस्सी और दो की संख्या, ८२।
बरंग–(हिं. पुं.) एक छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और मृदु होती है।
बरंगा–(हिं. पुं.) छत पाटने की पत्थर की पटिया या लकड़ी।
बर–(हिं.पुं.) वह जिसका विवाह होने जा रहा हो, दूल्हा, आशीर्वादसूचक वचन, बल, शक्ति, बर का पेड़; (वि.) श्रेष्ठ।
बरई–(हिं. पुं.) पान की खेती करने-वाली एक जाति, तमोली।
बरकत–(अ. स्त्री.) वृद्धि, बढ़ोतरी, लाभ।
बरकती–(अ. वि.) बरकत से युक्त।
बरकना–(हिं. क्रि. अ.) निवारण होना, बचना, अलग रहना, हटना।
बरकाज–(हिं. पुं.) विवाह।
बरकाना–(हिं. क्रि. स.) निवारण करना, बचाना, पीछा छुड़ाना, फुसलाना।
बरख–(हिं. पुं.) वर्ष, साल।
बरखना–(हिं. क्रि. अ.) वर्षा होना, पानी बरसना।
बरखा–(हिं. स्त्री.) वर्षा, वृष्टि, पानी बरसना, वर्षा ऋतु।
बरखास्त–(फा. वि.) नौकरी से निकाला हुआ।
बरखास्तगी–(फा. स्त्री.) बरखास्त होने की क्रिया या भाव।
बरगंध–(हिं. पुं.) सुगन्धित मसाला।
बरगद–(हिं. पुं.) वट वृक्ष, बर का पेड़।
बरगेल–(हिं.पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
बरचर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का देव-दार वृक्ष।
बरछा–(हिं. पुं.) फेंककर या भोंककर मारने का एक अस्त्र, भाला।
बरछैत–(हिं. पुं.) बरछा चलानेवाला।
बरजना–(हिं.क्रि.स.) मना करना, रोकना।
बरजनि–(हिं. स्त्री.) रुकावट, मनाही।
बरजोर–(हिं.वि.) प्रबल, अत्याचारपूर्वक या अनुचित रीति से बल का प्रयोग करनेवाला; (अव्य.) बलात्।
बरजोरी–(हिं. स्त्री.) बल का प्रयोग; (अव्य.) बलपूर्वक।
बरट–(सं. पुं.) एक प्रकार का अन्न।
बरणना–(हिं. क्रि. स.) वर्णन करना।
बरत–(हिं. पुं.) व्रत, उपवास; (स्त्री.) रस्सी, वह रस्सा जिस पर चढ़कर नट खेल करता है।
बरतन–(हिं. पुं.) कोई वस्तु रखने का मिट्टी या धातु का पात्र, व्यवहार।
बरतना–(हिं. क्रि. अ., स.) व्यवहार में लाना, बरताव करना।
बरतनी–(हिं. स्त्री.) शब्द का वर्ण-क्रम, लकड़ी की लेखनी, लिखने का ढंग।
बरताना–(हिं. क्रि. स.) वितरण करना, बाँटना।
बरताव–(हिं.पुं.) किसी के प्रति आचरण का ढंग, व्यवहार।
बरती–(हिं. वि.) जिसने व्रत या उप-वास किया हो।
बरतेला–(हिं. स्त्री.) जुलाहे के करगह के दाहिने ओर की खूँटी।
बरतोर–(हिं. पुं.) बाल की जड़ टूट जाने से होनेवाला फोड़ा।
बरदना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'बरदाना'।
बरदवान–(हिं. पुं.) तीव्र वायु।
बरदवाना–(हिं. क्रि. स.) बरदाने का काम दूसरे से कराना।
बरदा–(हिं. पुं.) देखें 'बरवा'।
बरदाना–(हिं. क्रि. अ., स.) गाय, भैंस, बकरी आदि पशुओं का उनकी जाति के नर पशुओं से संतान उत्पन्न कराने के लिये संयोग होना, जोड़ा खाना या खिलाना।
बरदौर–(हिं. पुं.) मवेशियों को बाँधने का स्थान।
बरव(वा)–(हिं. पुं.) बैल।
बरदवाना, बरवाना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'बरदाना'।
बरवी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चमड़ा।
बरन–(हिं. पुं.) देखें 'वर्ण'।
बरनन–(हिं. पुं.) देखें 'वर्णन'।
बरनना–(हिं. क्रि. स.) वर्णन करना।

वरना–(हिं.क्रि.अ.,स.) पति या पत्नी के रूप में अंगीकार करना, दान देना, किसी काम मे लगाना, किसी काम के लिये किसी को चुनना, देखें 'जलना'।
वरनाला–(हिं. पुं.) जहाज में का पानी निकालने का मार्ग या परनाला।
वरनेत–(हिं. स्त्री.) विवाह-कृत्य के पहले होनेवाली एक रीति।
वरफ–(हि. स्त्री.) हिम।
वरफी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई जो खोया आदि को चीनी की चाशनी में जमाकर बनती है।
वरवंड–(हिं. पुं.) प्रचण्ड, बलवान्, उद्दण्ड, बलवंत।
वरवट–(हिं. अव्य.) देखें 'वरवस'।
वरवर–(हिं. स्त्री.) व्यर्थ की बात; (वि.) वर्बर।
वरवरी–(हिं. स्त्री.) एक देश का नाम, एक प्रकार की बकरी।
वरवस–(हिं. अव्य.) बलपूर्वक, व्यर्थ।
वरम–(हिं. पुं.) कवच।
वरमा–(हि. पुं.) लकड़ी आदि में छेद करने का एक औजार, ब्रह्मदेश।
वरमी–(हिं. पुं.) बरमा देश का रहनेवाला; (स्त्री.) बरमा देश की भाषा, छोटा वरमा।
वरम्हा(ह्मा)–(हिं.पुं.)ब्रह्मा,वरमा देश।
वरम्हाना–(हिं. क्रि. स.) ब्राह्मण का आशीर्वाद देना।
वरम्हाव–(हिं.पुं.)ब्राह्मण का आशीर्वाद।
वररे–(हिं. पुं.) देखें 'वर्रे'।
वरवट–(हिं.स्त्री.)तिल्ली नाम का रोग।
वरवल–(हिं.पुं.)एक प्रकार की पहाड़ी भेड़
वरवा,वरवै–(हिं.पुं.)ध्रुव या कुरंग नाम का छन्द जिसमें उन्नीस मात्राएँ होती हैं।
वरषना–(हिं.क्रि.अ.)वरसना, वर्षा होना।
वरषा–(हिं. स्त्री.) वृष्टि, पानी वरसना, वर्षाकाल, वरसात।
वरषासन–(हिं. पुं.) अन्न का उतना परिमाण जितना एक परिवार एक वर्ष में खा सके।
वरस–(हिं. पुं.) वर्ष, तीन सौ पैंसठ दिनों अथवा बारह महीनों का समूह; **–गाँठ**–(स्त्री.) सालगिरह, वह दिन जब किसी का जन्म हुआ हो, जन्म-दिन।
वरसना–(हिं. क्रि. अ.) आकाश से जल के बूंदों का निरन्तर गिरना, वर्षा के जल की तरह किसी पदार्थ का ऊपर से गिरना, अधिक मात्रा या संख्या में उपलब्ध होना, ओसाया जाना।

बरसाइत–(हिं. स्त्री.) ज्येष्ठ मास की अमावस्या जिस दिन स्त्रियाँ वटसावित्री का पूजन करती हैं।
वरसाइन–(हिं. स्त्री.) प्रति वर्ष व्यानेवाली गाय।
बरसात–(हिं.स्त्री.)वर्षाऋतु, वर्षाकाल।
बरसाती–(हिं. वि.) वर्षा-सम्बन्धी, बरसात का; (पुं.) बरसात में होनेवाला घोड़ों का एक रोग, चरस पक्षी, बरसात में होनेवाली एक प्रकार की फुंसियाँ, वर्षा ऋतु में पहनने का एक प्रकार का कपड़ा जिसके पहनने से शरीर नहीं भीगता।
बरसाना–(हिं. क्रि. स.) वृष्टि या वर्षा करना, अन्न को ओसाना, वर्षा की तरह निरन्तर ऊपर से गिराना, अधिक मात्रा या संख्या में चारों ओर से प्राप्त कराना।
बरसायत–(हिं. स्त्री.) शुभ मुहूर्त, देखें 'बरसाइत'।
बरसावना–(हिं.क्रि.स.)देखें 'बरसाना'।
बरसी–(हिं. स्त्री.) वह श्राद्ध जो किसी मृतक के उद्देश्य से उसके मरने की तिथि से ठीक एक वर्ष बाद किया जाता है।
बरसीला–(हिं. वि.) बरसानेवाला।
बरसू–(हिं.पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
बरसौंड़ी–(हिं. स्त्री.) प्रति वर्ष लिया जानेवाला कर।
बरसौंहा–(हिं. वि.) बरसनेवाला।
बरहंटा–(हिं. पुं.) कड़वा भंटा।
बरहा–(हिं. पुं.) खेत में सिंचाई के लिये बनाई हुई छोटी नाली, मोटा रस्सा।
बरही–(हिं. पुं.) मोर, मुरगा; (स्त्री.) इंधन का बोझ,भारी पटिया आदि उठाने का मोटा रस्सा, साही नामक जन्तु, सन्तान उत्पन्न होने के बारहवें दिन प्रसूता का स्नान तथा अन्य कृत्य; **–पीड़**–(पुं.)मोर के परों का बना हुआ मुकुट; **–मुख**–(पुं.) देवता।
बरहौं–(हिं. पुं.) बरही का कृत्य।
बरह्मंड–(हिं. पुं.) देखें 'ब्रह्मांड'।
बरह्मावना–(हिं. क्रि. स.) ब्राह्मण का आशीर्वाद देना, असीस देना।
बरांडल–(हिं. पुं.) जहाज के मस्तूल को बाँधने का रस्सा।
बरांडा–(हिं. पुं.) देखें 'बरामदा'।
बरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पकवान जो उड़द की दाल को पीसकर बनाया जाता है, भुजा पर पहनने का एक गहना।
बराई–(हिं. स्त्री.) देखें 'बड़ाई'।

बराक–(हिं. पुं.) युद्ध, लड़ाई, महादेव; (वि.) अधम, पापी, बेचारा, बापुरा।
बराट–(हिं. पुं.) कौड़ी।
बरात–(हिं. स्त्री.) वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर के साथ कन्या के घर जाते हैं, जनेत, एक साथ जानेवाले अनेक मनुष्यों का समुदाय।
बराती–(हिं. पुं.) वर के साथ कन्या के घर बरात में जानेवाला मनुष्य।
बरान-कोट–(हिं. पुं.) वह ऊनी कोट जो सिपाही जाड़े या बरसात में वर्दी के ऊपर पहनते हैं।
बराना–(हिं. क्रि. स.) परहेज करना, अलग रखना, बचाना, रक्षा करना, प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात छिपा रखना, टालना, छाँटना, नाली का पानी क्यारी में बहाना; चुनना।
बराबर–(फा. वि.) तुल्य, सदृश, समान, समतल, एक-सा; (अव्य.) लगातार, हर समय, सदा; (मुहा.)**–पर छूटना**–कुश्ती आदि में दोनों लड़नेवालों का बिना हारे-जीते अलग हो जाना।
बराबरी–(फा.स्त्री.)समानता, सदृशता, तुल्यता, प्रतिस्पर्धा।
बरामद–(फा. पुं.) प्रकट होना, बाहर आना; (मुहा.)**–करना**–छिपाई हुई वस्तुओं को तलाशी द्वारा ढूँढ़ निकालना।
बरामदगी–(फा. स्त्री.) बरामद होने की क्रिया या भाव।
बरामदा–(फा. पुं.) मकान के सामने खंभों पर टिका हुआ ओसारा।
बरायन–(हिं. पुं.)विवाह के समय वर के हाथ में पहनाने का लोहे का छल्ला।
बरायनाम–(फा. अव्य.) नाममात्र को।
बरार–(हिं.पुं.)एक प्रकार का जंगली पशु।
बरारक–(हिं. पुं.) हीरक, हीरा।
बरारी–(हिं. स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी; **–श्याम**–(पुं.) एक संकर राग का नाम।
बराव–(हिं. पुं.) निवारण, बचाव।
बरास–(हिं. पुं.) भीमसेनी कपूर, पाल को घुमाने की रस्सी।
बराह–(हिं. पुं.) देखें 'वराह'।
बराही–(हिं.स्त्री.)एक प्रकार की पतलीऊख।
बरिआत–(हिं. स्त्री.) देखें 'बरात'।
बरिआर–(हिं. वि.) प्रबल, बलवान्।
बरिया–(हिं. वि.) बलवान्, पुष्ट।
बरियाई–(हिं. अव्य.)बलपूर्वक; (स्त्री.) बल-प्रयोग।
बरियारा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का

रोहिणी।
वलवलाना–(हिं.क्रि.अ.) ऊँट का बोलना, निरर्थक शब्द बोलना, व्यर्थ बकवाद करना।
वलवलाहट–(हिं. स्त्री.) ऊँट की बोली, व्यर्थ बकवाद, अहंकार, घमंड।
वलबीज–(हिं. पुं.) ककही नामक पौधे का बीज।
वलबीर–(हिं.पुं.) बलराम के भाई, श्रीकृष्ण।
वलभ–(सं. पुं.) एक विषैला कीड़ा।
वलभद्र–(सं. पुं.) अनन्त, बलदेवजी, लोध, नील गाय, एक पर्वत का नाम।
वलभद्रा–(सं.स्त्री.) कुमारी, जंगली गाय।
वलभी–(हिं. स्त्री.) वह कोठरी जो घर के सबसे ऊपरवाली छत पर बनी हो, चौबारा।
वलम, वलमा–(हिं. पुं.) पति, नायक।
वलय–(हिं. पुं.) देखें 'वलय'।
वलराम–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न थे।
वलल–(सं. पुं.) बलराम।
वलवंड–(हिं. वि.) बलवान्।
वलवंत–(हिं. वि.) बलवान्, बली।
वलवत्–(सं.वि.) शक्तिमान्; (पुं.) शिव।
वलवर्धन–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, सेना की वृद्धि; (वि.) बल बढ़ानेवाला।
वलवा–(हिं.पुं.) दंगा, दो दलों में होनेवाली मारपीट, बगावत, उपद्रव।
वलवान्–(सं. वि.) बलिष्ठ, दृढ़, शक्तिमान्।
वलविकर्णिका–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम।
वलविन्यास–(सं. पुं.) युद्ध के लिये सैन्य व्यूह की रचना।
वलवीर–(हिं. पुं.) देखें 'वलबीर'।
वलव्यसन–(सं. पुं.) सेना का तितर-बितर होना।
वलव्यूह–(सं.पुं.) एक प्रकार की समाधि।
वलशाली–(सं. वि.) बलवान्।
वलशील–(सं. वि.) बलवान्, बली।
वलसंभव–(सं. पुं.) साठी का धान।
वलसुम–(हिं.वि.) बलुआ, जिसम बालू हो।
वलसूदन–(सं. पुं.) विष्णु, इंद्र।
वलसेना–(सं. स्त्री.) सेनादल।
वलस्थिति–(सं.स्त्री.) शिविर, छावनी।
वलहर–(सं. वि.) बलनाशक।
वलहीन–(सं. वि.) निर्बल, बलरहित।
वला–(सं. स्त्री.) बरियारा नाम का पौधा, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम, लक्ष्मी, पृथ्वी, नाटक में छोटी बहन के लिये संबोधन का शब्द, वह विद्या जिसको विश्वामित्र ने रामचन्द्र को सिखलाया था, (इसके प्रभाव से युद्ध में भूख-प्यास नहीं लगती); (अ. स्त्री.) आपत्ति, बलाय।
वलाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'बलाय'।
वलाक–(सं.पुं.) बक, बगला, एक पौराणिक राक्षस का नाम।
वलाका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का नाच, कामुकी स्त्री; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
वलाग्र–(सं. पुं.) सेना का अगला भाग, सेनापति; (वि.) बलवान्।
वलाट–(सं. पुं.) मुद्ग, मूंग।
वलाढ्य–(सं.वि.) शक्तिशाली, बलवान्।
वलात्–(सं. अव्य.) बलपूर्वक, बल से।
वलात्कार–(सं. पुं.) किसी की इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक कोई काम करना, अत्याचार, अन्याय, किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।
वलाधिक–(सं. वि.) अधिक बलशाली।
वलाध्यक्ष–(सं. पुं.) सेनापति।
वलानुज–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
वलाय–(सं. पुं.) वरुण वृक्ष; (हिं.स्त्री.) आपत्ति, विपत्ति, दुःख, कष्ट, प्रेत आदि की बाधा, बहुत कष्ट देनेवाला मनुष्य।
वलाराति–(सं. पुं.) इन्द्र, विष्णु।
वलालक–(सं. पुं.) जल-आमला।
वलावलेप–(सं.पुं.) बल का गर्व, अहंकार।
वलाश–(सं. पुं.) क्षय-रोग।
वलास–(हिं. पुं.) वरुना नाम का पेड़।
वलाह–(हिं. पुं.) घोड़ा, अश्व, जल।
वलाहक–(सं. पुं.) मेघ, बादल, मोथा, एक दैत्य का नाम, श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़ का नाम, एक प्रकार का बगला, एक नाग का नाम।
वलि–(सं. स्त्री.) भूमि का कर, उपहार, भेंट, चँवर का डंडा, पूजा-सामग्री, पंच महायज्ञों में से एक, खाने की वस्तु, अन्न, चढ़ावा, नैवेद्य, वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय, प्रह्लाद का पोता जो दैत्यों का राजा था; (हिं. स्त्री.) सखी, छोटी बहन; (मुहा.) **–चढ़ना**–मृत्यु को प्राप्त होना; **–चढ़ाना**–पशु को मारकर देवता को चढ़ाना; **–जाऊँ**–अपने प्राण मैं तुम पर न्योछावर करता हूँ; **–जाना**–न्योछावर होना।
वलिदान–(सं.पुं.) किसी देवता के उद्देश्य से नैवेद्य आदि पूजा की सामग्री चढ़ाना, दुर्गा, देवता आदि को चढ़ाने के लिये बकरा आदि पशु मारना।
वलिध्वंसी–(सं. पुं.) विष्णु।
वलिनंदन–(सं.पुं.) बलि के पुत्र बाणासुर।
वलिपशु–(सं. पुं.) वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाता है।
वलिपुष्ट–(सं. पुं.) काक, कौआ।
वलिप्रदान–(सं. पुं.) बलिदान।
वलिप्रिय–(सं. पुं.) काक, कौआ।
वलिबंधन–(सं पुं.) विष्णु।
वलिभ–(सं. पुं.) वृद्ध पुरुष, बूढ़ा आदमी।
वलिभुक्–(सं. पुं.) कौवा।
वलिभृत्–(सं. वि.) कर देनेवाला, अधीन।
वलिभोजन, वलिभोजी–(सं.पुं.) कौवा।
वलिमंदिर–(सं.पुं.) अधोलोक, पाताल।
वलिया–(हिं. वि.) बलवान्।
वलिवर्द–(सं. पुं.) वृष, साँड़।
वलिवेश्म–(सं. पुं.) पाताल।
वलिवैश्वदेव–(सं. पुं.) भूतयज्ञ, पाँच महायज्ञों में से चौथा यज्ञ जिसमें गृहस्थ पकाए हुए अन्न से एक-एक ग्रास लेकर मन्त्र-पाठ करते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों में रखता है।
वलिश–(सं.पुं.) मछली फँसाने की बंसी।
वलिष्ठ–(सं. पुं.) ऊँट; (वि.) अधिक बलवान्।
वलिसद्म–(सं. पुं.) रसातल।
वलिहन्–(सं. पुं.) विष्णु, वामनदेव।
वलिहारना–(हिं. क्रि. स.) बलिदान करना, निछावर करना।
वलिहारी–(हिं. स्त्री.) श्रद्धा, भक्ति, प्रेम आदि के कारण अपने को निछावर करना; (मुहा.) **–जाना**–निछावर होना; **–लेना**–प्रेम दिखाना।
वली–(हिं. स्त्री.) चमड़े पर की झुर्री, वह रेखा जो चमड़े के सिकुड़ने से पड़ती हो; (सं. वि.) पराक्रमी, बलवान्।
वलीक–(सं. पुं.) ओलती, ओरी।
वलीन–(सं. पुं.) वृश्चिक, बिच्छू।
वलीवैठक–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की बैठक।
वलीमुख–(सं. पुं.) वानर, बन्दर।
वलीयान्–(सं. पुं.) गर्दभ, गदहा।
वलीवर्द–(सं. पुं.) वृषभ, बैल।
वलीशक–(सं. पुं.) आमड़े का पेड़।
वलुआ–(हिं. वि.) रेतीला, जिसमें बालू अधिक मिला हो।
वलूच, वलूची–(हिं. पुं.) बलूचिस्तान का निवासी।
वलैया–(हिं. स्त्री.) बला, बलाय; (मुहा.) **–लेना**–मंगल-कामना सहित

प्यार करना, किसी के रोग, कष्ट आदि को अपने ऊपर ले लेना।

बलोत्कट–(सं. वि.) अति बलवान्।

बल्कल–(हिं. पुं.) देखें 'वल्कल'।

बल्कस–(सं. पुं.) वह तलछट जो आसव बनाने में नीचे बैठ जाती है।

बल्लम–(हिं. वि., पुं.) देखें 'वल्लभ'।

बल्लभी–(हिं. स्त्री.) प्रिया।

बल्लम–(हिं. पुं.) बरछा, भाला, डंडा, सोंटा, वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसको प्रतिहारी या चोबदार राजाओं के आगे-आगे लेकर चलते हैं।

बल्लव–(सं. पुं.) चरवाहा, रसोइया, भीम का वह नाम जो उन्होंने विराट के यहाँ रसोइये के रूप में रखा था।

बल्ला–(हिं. पुं.) लकड़ी का मोटा तथा लंबा लट्ठा, मोटा दण्ड, गेंद मारने का लकड़ी का डंडा, नाव खेने का डाँड़ा या बाँस।

बल्लारी–(हिं. स्त्री.) संपूर्ण जाति की एक रागिनी; (पुं.) दक्षिण का एक नगर।

बल्ली–(हिं. स्त्री.) छोटा बल्ला।

बल्व–(सं. पुं.) ज्योतिष में एक करण का नाम।

बवँड़ना–(हिं. क्रि. अ.) व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

बवंडर–(हिं. पुं.) चक्रवात, चक्र की तरह घूमती हुई वायु, आँधी।

बव–(सं. पुं.) ज्योतिष में पहले करण का नाम।

बवघूरा–(हिं. पुं.) बवंडर, चक्रवात।

बवना–(हिं.क्रि.अ.,स.) छिटकना, बिख(खे) रना, छितराना; (पुं.) वामन, बौना।

बवरना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'बौरना'।

बवादा–(हिं. स्त्री.) हल्दी की तरह की एक जड़ी।

बशिष्ट–(सं. पुं.) देखें 'वसिष्ठ'।

बसंत–(हिं. पुं.) देखें 'वसंत'।

बसंता–(हिं.पुं.) हरे रंग की एक चिड़िया।

बसंती–(हिं. वि.) वसन्त ऋतु-संबंधी, वसन्त का, पीले रंग का; (पुं.) सरसों के फूल के समान रंग, पीला कपड़ा।

बसंदर–(हिं. पुं.) अग्नि, आग।

बस–(हिं. पुं.) देखें 'वश'; (फा. अव्य.) अलम्।

बसन–(हिं. पुं.) देखें 'वसन'।

बसना–(हिं. क्रि. अ.) स्थायी रूप से रहना, निवास करना, टिकना, जनपूर्ण होना, ठहरना, सुगन्ध से पूर्ण हो जाना, डेरा डालना; (पुं.) वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय, बेठन, थैली; (मुहा.) **घर बसना**–गृहस्थी का बनना, कुटुम्ब सहित आनन्द से रहना; **मन में बसना**–याद रहना।

बसनि–(हिं.स्त्री.) निवास, रहना, वास।

बसवार–(हिं. पुं.) छौंक, बघार।

बसवास–(हिं. पुं.) निवास, रहना, रहने का ढंग या सुविधा, ठिकाना।

बसह–(हिं. पुं.) वृषभ, बैल।

बसा–(हिं.स्त्री.) वसा, चरबी, बर्रे, भिड़।

बसात–(हिं. पुं.) देखें 'बिसात'।

बसाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) रहने का ठिकाना देना, ठहराना, टिकाना, डेरा देना, बैठाना, बासना, महकाना, दुर्गन्ध करना; (मुहा.) **घर बसाना**–गृहस्थी जमाना, कुटुम्ब सहित रहने की व्यवस्था करना।

बसिऔ(यौ)रा–(हिं. पुं.) बासी भोजन, शीतलाष्टमी आदि पूजन के दिन का बासी भोजन।

बसिया–(हिं. वि.) देखें 'बासी'।

बसियाना–(हिं.क्रि.अ.) बासी हो जाना।

बसिष्ठ–(हिं. पुं.) देखें 'वसिष्ठ'।

बसीकत–(हिं. स्त्री.) बसने का भाव या क्रिया, रहन।

बसीकर–(हिं. वि.) वश में करनेवाला।

बसीकरन–(हिं. पुं.) देखें 'वशीकरण'।

बसीठ–(हिं. पुं.) दूत, सन्देश ले जाने-वाला मनुष्य।

बसीठी–(हिं. स्त्री.) दौत्य, दूत का काम।

बसीना–(हिं. पुं.) निवास, रहन।

बसु–(हिं. पुं.) देखें 'वसु'।

बसुदेव–(हिं. पुं.) देखें 'वसुदेव'।

बसुधा–(हिं. स्त्री.) देखें 'वसुधा'।

बसुफला–(हिं.पुं.) एक वर्णवत्त जिसको तारक भी कहते हैं।

बसुमती–(हिं. स्त्री.) देखें 'वसुमती'।

बसुरी–(हिं. स्त्री.) बाँसुरी।

बसूला–(हिं पुं.) बढ़ई का लकड़ी छीलने और गढ़ने का अस्त्र।

बसूली–(हिं. स्त्री.) मेमार का बसूले के आकार का छोटा अस्त्र।

बसेरा–(हिं. वि.) रहनेवाला, बसने-वाला; (पुं.) यात्रियों के टिकने का स्थान, वह स्थान जहाँ पक्षी रात में रहते हैं, अड्डा, निवास; (मुहा.) –**करना**–टिकना, डेरा डालना; –**देना**–ठहराना, ठहरने का स्थान देना; –**लेना**–टिकना, ठहरना।

बसेरी, बसैया–(हिं. वि.) निवासी, रहनेवाला।

बसोवास–(हिं. पुं.) निवासस्थान।

बसौंधी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की रबड़ी जो सुगन्धित और लच्छेदार होती है।

बस्त–(सं. पुं.) सूर्य, बकरा; –**कर्ण**–(पुं.) साल का वृक्ष, असना का पेड़; –**गंधा**–(स्त्री.) अजमोदा।

बस्ता–(हिं. पुं.) बेठन, कागज-पत्र।

बस्ती–(हिं. स्त्री.) जनपद, निवास, बहुत से घरों का समूह जिसमें लोग बसते हों।

बस्त्र–(हिं. पुं.) देखें 'वस्त्र'।

बस्साना–(हिं. क्रि. अ.) दुर्गन्ध देना।

बहँगा–(हिं. पुं.) बड़ी बहँगी।

बहँगी–(हिं.स्त्री.) तराजू के आकार का एक ढाँचा जिसके दोनों ओर के छीकों पर बोझ ढोता है, काँवर।

बहकना–(हिं. क्रि. अ.) मार्ग-भ्रष्ट होना, भटकना, किसी की बात या भुलावे में आकर या कोई काम कर बैठना, किसी ओर ध्यान लग जाने पर मन शान्त होना, मद में चूर होना, आपे में न रहना, चूकना, बिना भला-बुरा विचारे कुछ कहना; (मुहा.) **बहकी-बहकी बातें करना**–मतवाले की तरह बकबक करना, डींग मारना।

बहकाना–(हिं. क्रि. स.) ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर ले जाना, फेरना, भुलावा देना, भटकाना, शान्त करना, बहलाना, बातों में फुसलाना, भरमाना, बदलचन में प्रवृत्त करना।

बहकावट–(हिं. स्त्री.), **बहकावा**–(हिं. पुं.) बहकाने की क्रिया या भाव।

बहतोल–(हिं. स्त्री.) पानी बहने की नाली, बरहा।

बहत्तर–(हिं. वि.) सत्तर और दो की संख्या का; (पुं.) सत्तर और दो की संख्या, ७२; –**वाँ**–(वि.) जिसका स्थान बहत्तर पर पड़े।

बहदुरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा जो चने की उपज को नष्ट करता है।

बहन–(हिं. स्त्री.) देखें 'बहिन'; (पुं.) बहने की क्रिया या भाव।

बहना–(हिं. क्रि. अ., स.) छूट जाना, दूर होना, पानी की धारा में पड़कर जाना, ऊपर रखकर ले चलना या ढोना, व्यर्थ नष्ट हो जाना, उठना, चलना, धारण करना, हवा का चलना, बहुतायत से मिलना, पानी, धारा आदि का किसी ओर चलना, बुरा या पतित होना, ठीक लक्ष्य से च्युत होना, पीब निकलना, बूंद-बूंद

करके या धार रूप में निकलना, मारा-मारा फिरना, सत् मार्ग से विचलित होना, गर्भपात होना, निर्वाह करना, धन डूब जाना, कुमार्गी होना; (मुहा.) **बहती गंगा में हाथ धोना**–ऐसी बात से लाभ उठाना जिससे अनेक लोग लाभ उठाते हों।

वहनापा–(हिं. पुं.) वहन का सम्वन्ध।

वहनी–(हि. स्त्री.) वह्नि, आग, ऊख का रस रखने की ठिलिया।

वहनु–(हि. पुं.) देखें 'वाहन', यान।

वहनेली–(हिं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके साथ वहनापा हो।

वहनोई–(हिं. पुं.) वहन का पति।

वहनौता–(हि.पुं.) वहिन का पुत्र, भांजा।

वहनौरा–(हिं. पुं.) वहिन की ससुराल।

वहम–(हि. पुं.) शंका, भ्रम।

वहर–(हिं. पुं.) समुद्र; (अव्य.) वाहर।

वहरा–(हि. वि., पुं.) (वह) जो कान से कम या जो विलकुल न सुनता हो।

वहराना–(हिं. क्रि. अ.) वाहर होना, भुलावा देना, वहकाना, दुःख की वात भुलाने के लिये ऐसी वात कहना जिससे चित्त प्रसन्न हो जावे।

वहरिया–(हिं. पुं.) वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिर के वे कर्मचारी जो मंडप के वाहर रहते हैं।

वहिरियाना–(हिं. क्रि. अ., स.) वाहर निकालना, अलग करना, अलग होना, वाहर की ओर होना, नाव का किनारे से हटकर मझधार की ओर जाना या ले जाया जाना।

वहरू–(हिं. पुं.) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट और सुन्दर होती है।

वहल–(सं.पुं.) नाव, ईख; (स्त्री.) वैल से खीची जानेवाली एक प्रकार की छतरीदार गाड़ी; (वि.) पुष्ट, घना, ठोस, अधिक स्थूल, मोटा, प्रचुर।

वहलत्वच्–(सं. पुं.) सफद लोध, भोजपत्र का वृक्ष।

वहलना–(हिं. क्रि. अ.) दुःख की वात भलकर चित्त का दूसरी ओर लगना, मनोरंजन होना, चित्त प्रसन्न होना।

वहला–(सं. स्त्री.) वड़ी इलायची।

वहलाना–(हिं. क्रि. स.) दुःख की वात भुलवाकर मन को दूसरी ओर फेरना, भुलावा देना, वातों में लगाना, चित्त प्रसन्न करना, मनोरंजन करना।

वहलाव–(हिं. पुं.) मनोरंजन, प्रसन्नता, वहलने या वहलाने का भाव या क्रिया।

वहलिया–(हिं. पुं.) देखें 'वहेलिया'।

वहली–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की छतरीदार वैलगाड़ी, वहल, खड़खड़िया।

वहल्ला–(हिं. पुं.) प्रसन्नता, आनन्द।

वहल्ली–(हिं.स्त्री.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

वहस–(अ. स्त्री.) वाद-विवाद, तर्क तथा युक्ति के साथ अपने पक्ष का समर्थन, मुकदमे में वकील द्वारा अपने पक्ष को न्याय्य सावित करना।

वहसना–(हि.क्रि.अ.) वाद-विवाद करना, तर्क-वितर्क करना, होड़ लगाना।

वहादुर–(फा. वि.) वीर, शूर, साहसी, पराक्रमी।

वहादुराना–(फा. अव्य.) वीरतापूर्वक; (वि.) वीरतापूर्ण, वहादुरी से पूर्ण।

वहादुरी–(फा. स्त्री.) वहादुर का कार्य या गुण, वीरता, शूरता।

वहाना–(हिं. क्रि. स.) पानी आदि को नीची सतह की ओर छोड़ना, ढलकाना, ढालना, व्यर्थ व्यय करना, हवा द्वारा उड़ाया जाना, फेंकना, डालना, सस्ता बेचना, पानी की धार में डालना, लगातार बूंद या धार के रूप में छोड़ना, खोना, गँवाना; (फा. पुं.) झूठा या बनावटी हेतु, ढंग आदि, हीला।

वहारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बुहारना'।

वहारी–(हिं. स्त्री.) देख 'बुहारी'।

वहाव–(हिं. पुं.) प्रवाह, वहने की क्रिया या भाव, वहती हुई धारा, वहता हुआ जल आदि।

वहिः–(सं. अव्य.) वाहर।

वहिअर–(हिं. स्त्री.) स्त्री।

वहिक्रम–(हिं. पुं.) आयु, उम्र।

वहित्र–(सं. पुं.) देखें 'वहित्र', नाव।

वहिन–(हि.स्त्री.) भगिनी, पिता की वेटी।

वहिनापा–(हिं. पुं.) देखें 'वहनापा'।

वहियाँ–(हिं. स्त्री.) वाहु, वाँह।

वहिरंग–(सं. वि.) वाहरवाला, वाहरी, जो अतरंग न हो।

वहिर(रा)–(हिं. वि.) देखें 'वहरा'।

वहिरत–(हिं. अव्य.) वाहर।

वहिराना–(हिं.क्रि.अ.,स.) निकाल देना, वाहर करना, वाहर होना।

वहिर्गत–(सं. वि.) जो वाहर गया हो, अलग, जुदा।

वहिर्जानु–(सं. अव्य.) दोनों हाथों को घुटनों के वाहर किये हुय।

वहिर्द्वार–(सं. पुं.) तोरण, वाहरी द्वार।

वहिर्ध्वजा–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।

वहिर्निर्गमन–(सं. पुं.) वाहर जाना।

वहिर्भूत–(सं. वि.) अलग, जो वाहर हो गया हो।

वहिर्भूमि–(सं. स्त्री.) वस्ती के वाहर की भूमि।

वहिर्मुख–(सं. वि.) पराङमुख, विमुख।

वहिर्यान–(सं. पुं.) वहिर्गमन।

वहिर्लंब–(सं. वि.) अधिक कोण वनानेवाली (रेखा)।

वहिर्लापिका–(सं. स्त्री.) वह पहेली जिसके उत्तर का शव्द पहेली के शव्दों में नहीं रहता।

वहिला–(हिं. वि.) वन्ध्या, वाँझ।

वहिष्क–(सं.वि.) जो वाहर हो।

वहिष्करण–(सं. पुं.) वाहर करना।

वहिष्कार–(सं. पुं.) संवंध-त्याग, (जाति से) वाहर या अलग करने का भाव, किसी वस्तु का व्यवहार-त्याग।

वहिष्कृत–(सं. वि.) त्यागा हुआ, वहिष्कार किया हुआ।

वहिष्कृति–(सं. स्त्री.) वाहर करने की क्रिया, वहिष्कार।

वहिष्प्राण–(सं. वि.) जिसके प्राण शरीर से वाहर निकल गये हों।

वही, वहीखाता–(हिं. स्त्री.) हिसाव-किताब लिखने की पुस्तक।

वहीर–(हिं. स्त्री.) जनसमूह, भीड़-भाड़, सेना के साथ चलनेवाले सेवक, दुकानदार आदि का झुंड, सेना की सामग्री; (अव्य.) वाहर।

वहु–(सं. वि.) एक से अधिक, अनेक; (स्त्री.) देखें 'वहू', वधू।'

वहुकंटक–(सं.पुं.) छोटा गोखरू, जवासा, खजूर का वृक्ष, सहिजन का वृक्ष।

वहुकंद–(सं. पुं.) सूरन, ओल।

वहुक–(सं. पुं.) केकड़ा, चातक, पपीहा, छोटा तालाव; (वि.) अधिक मूल्य देकर मोल लिया हुआ, महँगा।

वहुकन्या–(सं.स्त्री.) घृतकुमारी, घीकुआर

वहुकर–(सं. पुं.) ऊँट, झाड़ू देनेवाला; (वि.) वहुत काम करनेवाला।

वहुकरी–(सं.स्त्री.) मार्जनी, झाड़ू।

वहुक्षम–(सं. वि.) वहुत सहनेवाला।

वहुगंध–(सं.पुं.) दारचीनी, पीत चन्दन।

वहुगंधदा–(सं. स्त्री.) कस्तूरी।

वहुगंधा–(सं.स्त्री.) चम्पा, जूही, स्याह-जीरा।

वहुगुण–(सं.वि.) अनेक गुणों से युक्त; (पुं.) गन्धर्वों का एक भेद।

वहुगुना–(हिं. पुं.) चौड़े मुँह का पीतल आदि का पात्र जो अनेक कामों में लाया

वहुशत्रु–(सं.वि.) जिसके अनेक शत्रु हों।
वहुशाखा–(सं. वि.)अनेक शाखाओं से युक्त।
वहुशृंग–(सं. पुं.) विष्णु।
वहुश्रुत–(सं. वि.) जिसने अनेक विद्वानों से भिन्न-भिन्न शास्त्रों की वातें सुनी हों।
वहुसंख्यक–(सं. वि.) गिनती में वहुत या अधिक।
वहुसार–(सं. पुं.) खदिर, खैर।
वहुसुत–(सं.वि.) जिसकी वहुत सन्तानें हों।
वहुस्वन–(सं. पुं.) पेचक, उल्लू पक्षी।
वहूँटा–(हिं. पुं.) वाँह पर पहनने का एक आभूषण।
वहू–(हिं. स्त्री.) पुत्रवधू, पतोहू, नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पत्नी, स्त्री।
वहूदन–(सं. पुं.) प्रचुर अन्न।
वहूपमा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म के लिए अनेक उपमान दिय जाते हैं।
वहेंगवा–(हिं. पुं.) भुजंगा पक्षी।
वहेत–(हिं. स्त्री.) ताल या गड्ढे में वहकर जमी हुई मिट्टी।
वहेचा–(हि. पुं.) घड़े का ढाँचा जो चाक पर से गढ़कर उतारा जाता है।
वहेड़ा–(हिं. पुं.) अर्जुन की जाति का एक वड़ा तथा ऊँचा वृक्ष, (इसके फल औषघ के काम में आते हैं।)
वहेतू–(हिं. वि.) इधर-उधर मारा-मारा फिरनेवाला, व्यर्थ घूमनेवाला।
वहेरा–(हिं. पुं.) देखें 'वहेड़ा'।
वहेला–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
वहेलिया–(हिं.पुं.) पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करनेवाला, चिड़ीमार, व्याघ।
वहोर–(हिं.पुं.) फेरा, पलटा; (अव्य.) फिर।
वहोरना–(हिं. क्रि. स.) लौटाना।
वहोरि–(हिं. अव्य.) पुनः, फिर।
वह्वक्षर–(सं.वि.) अनेक अक्षरों का (पद)।
वह्वाशी–(सं.वि.) वहुत भोजन करनेवाला।
वाँ–(हिं.पुं.) गाय-वैल के बोलने का शब्द, वार, वेर, दफा।
वाँक–(हिं. पुं.) वाँह पर पहनने का एक आभूषण, एक प्रकार का व्यायाम, नदी का मोड़, पैर में पहनने का एक प्रकार का चाँदी का गहना, गन्ना छीलने का एक अस्त्र, हाथ में पहनने की चौड़ी चूड़ी, एक प्रकार की छोटी टेढ़ी छुरी, वक्रता, टेढ़ापन, लोहे का शिकंजा; (वि.) टेढ़ा, वक्र, तिरछा, वाँका।
वाँकड़ा–(हिं.वि.) शूरवीर, साहसी; (पुं.) धुरे के नीचे आड़े वल लगी हुई लकड़ी जो छकड़े में जड़ी जाती है।
वाँकड़ी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता जो वादले और कलावत्तू से वनाया जाता है।
वाँकडोरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का शस्त्र।
वाँकनल–(हिं. पुं.) सोनारों की धातु की बनी हुई पतली टेढ़ी फुँकनी।
वाँकना–(हिं.क्रि.अ.स.) टेढ़ा करना या होना।
वाँकपन–(हिं. पुं.) तिरछापन, टेढ़ापन, छवि, शोभा, सजावट, बनाव, छैलापन।
वाँका–(हिं. वि.) वीर, बहादुर, बना-ठना, सुन्दर, छैल-छबीला, टेढ़ा, तिरछा; (पुं) लोहे का वना हुआ एक टेढ़ा शस्त्र, वह वर या दुल्हा जो सुन्दर वस्त्र और अलंकारों से सजकर पालकी या घोड़े पर वैठकर बारात के साथ चलता है।
वाँकिया–(हिं. पुं.) नरसिंघा नाम का टेढ़ा बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।
वाँकुर, वाँकुरा–(हिं. वि.) पैनी धार का, टेढ़ा, बाँका, चतुर।
वाँगड़ू–(हिं. वि.) मूर्ख।
वाँगर–(हिं. पुं.) छकड़ा गाड़ी का लंबे वल बँधा हुआ वाँस, एक प्रकार का वैल, वह भूमि जो झील, नदी आदि की वाढ़ से नहीं डूबती।
वाँगा–(हिं.पुं.) विना ओटी हुई रूई, कपास।
वाँगुर–(हिं. पुं.) पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल, फंदा।
वाँचना–(हिं.क्रि.अ.,स.) पढ़ना, वाकी वचना, छोड़ देना।
वाँछना–(हिं.क्रि.स.) अभिलाषा करना, चाहना, इच्छा करना, अच्छी-अच्छी वस्तुओं को चुनना या छाँटना।
वांछा–(हिं. स्त्री.) देखें 'वांछा', इच्छा।
वांछित–(हिं. वि.) देखें 'वांछित', इच्छा किया हुआ।
वांछी–(हिं. वि.) अभिलाषा या इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला।
वाँझ–(हिं. स्त्री.) वन्ध्या, वह स्त्री जिसको सन्तान न होती हो, एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष; –पन, –पना–(पुं.) वाँझ होने का भाव, या अवस्था, वन्ध्यत्व।
वाँट–(हिं. पुं.) वाँटने की क्रिया या भाव, भाग, घास या पुआल का वना हुआ रस्सा; (मुहा.)–पड़ना–हिस्से में आना; –चूट–(स्त्री.) वटवारा।
वाँटना–(हिं.क्रि.स.) किसी वस्तु के अनेक विभाग करके अलग-अलग वितरण करना, प्रत्येक व्यक्ति थोड़ा-थोड़ा देना।
वाँटा–(हिं. पुं) वाँटने की क्रिया भाव, विभाग।
वाँड़–(हिं. पुं.) दो नदियों के स के वीच की भूमि।
वाँड़ा–(हिं. पुं.) वह पशु जिसकी कट गई हो, वह पुरुष जिसके व। बच्चे न हों; (वि.) विना पूँछ का
वाँड़ी–(हिं. स्त्री.) विना पूँछ की । कोई मादा पशु जिसकी पूँछ कट हो, छोटी लाठी।
वाँड़ीवाज–(हिं.पुं.) लकड़ी लड़नेव उपद्रवी।
वाँदर–(हिं. पुं.) देखें 'बंदर'।
वाँदा–(हिं. पुं.) किसी वृक्ष के ऊप उगी हुई दूसरी वनस्पति।
वाँदी–(हिं. स्त्री.) दासी, लौंडी।
वाँदू–(हिं. पुं.) वँधुवा बंदी।
वाँध–(हिं. पुं.) मिट्टी, ईंट या पत्थ का बना हुआ धुस जो जलाशय किनारे पानी रोकने या एकत्र करने लिये बनाया जाता है।
वाँधना–(हिं. क्रि. स.) रस्सी, तागे आ से किसी पदार्थ को बंधन में कसना गाँठ देकर कसना, पकड़कर बंद करना घर आदि बनाना, ठीक करना, मिठाई, दवा आदि के चूर्ण को मुट्ठियों में दवा कर पिण्ड बनाना, पानी का वहाव रोकने के लिए बाँध बनाना, नियत करना, तंत्र-मंत्र द्वारा किसी शक्ति का अवरोध करना, प्रेमपाश में बद्ध करना, रचना के लिये सामग्रियाँ इकट्ठा करना, मन में बैठाना स्थिर करना।
वाँधनीपौरि–(हिं.पुं.) पशुओं को बाँधने का स्थान।
वाँधनू–(हिं. पुं.) पूर्व निश्चित विचार, कल्पित या मनगढ़ंत वात या योजना, झूठा दोष, कलंक, किसी होनेवाली वात मिथ्या अभिमान, के विषय में पहले ही से तरह-तरह के विचार कर लेना, वह बंधन जो रँगरेज लोग चुँदरी या लह-रियादार रँगाई में वाँधते हैं।
वांधव–(सं.पुं.) भाई-बन्धु, नातेदार, मित्र।
वांधवक–(सं. वि.) वांधव-संबंधी।
वांधव्य–(सं. पुं.) नाता, रक्त-संबंध।
वांबी–(हिं. स्त्री.) दीमक के रहने का भीटा, सर्प का विल, बमीठा।
वांया–(हिं. वि.) देखें 'वायाँ'।

बाँस–(हिं. पुं.) तृण जाति का एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर गाँठ होती है, रीढ़, लग्गी।
बाँसफल–(हिं. पुं.) एक बारीक धान।
बाँसली–(हिं. स्त्री.) मुरली, बाँसुरी, रुपया-पैसा रखने की एक प्रकार की पतली, जालीदार तथा लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है।
बाँसा–(हिं. पुं.) बाँस की छोटी नली जो हल के साथ बँधी रहती है जिसमें अन्न डाला जाता है जो कूँड़ में गिरता रहता है; नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नथनों के बीच में होती है, एक प्रकार का छोटा पौधा।
बाँसा-गड़ा–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
बाँसी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का कोमल पतला नरकट, एक प्रकार का गेहूँ, एक प्रकार की घास।
बाँसुरी–(हिं. स्त्री.) मुख से फूँककर बजाने का एक बाजा, वंशी।
बाँसुली–(हिं. स्त्री.) देखें 'बाँसुरी', एक प्रकार की घास जो उपज को हानि पहुँचाती है; **–कंद**–एक प्रकार का जंगली सूरन।
बाँह–(हिं.स्त्री.) बाहु, भुजा, बल, शक्ति, भुजबल, (कुरते, अंगे, कोट आदि का) बाहु का भाग; शरण, सहारा, भरोसा, सहायक, एक प्रकार का व्यायाम जो दो आदमी मिलकर करते हैं; (मुहा.) **–गहना या पकड़ना**–सहायता करना, विवाह करना; **–टूटना**–निराश्रय होना, सहायक न रह जाना; **–देना**–सहायता करना; **–तोड़**–(पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **–बोल**–(पुं.) सहायता करने का वचन; **–मरोड़**–(पुं.) मल्ल-युद्ध की एक युक्ति।
बाँही–(हिं. स्त्री.) देखें 'बाँह'।
बा–(हिं. पुं.) जल, पानी।
बाइ–(हिं. स्त्री.) देखें 'बाई'।
बाइबिरंग–(हिं.पुं.) विडंग नामक ओषधि।
बाइबिल–(अं.पुं.) ईसाइयों की धर्मपुस्तक।
बाइसवाँ–(हिं. वि.) देखें 'बाईसवाँ'।
बाई–(हिं. स्त्री.) त्रिदोष में से वात-दोष जिसके प्रकोप से मनुष्य बीमार हो जाता है; स्त्रियों का आदरसूचक शब्द, वेश्याओं के लिए प्रयुक्त शब्द; (मुहा.) **–की झोंक**–(स्त्री.) वायु का प्रकोप; (मुहा.) **–चढ़ना**–गर्व से अधिक बकवक करना; मिजाज बिगड़ना; **–पचना**–घमंड टूटना।
बाईस–(हिं.वि.) बीस और दो की संख्या का; (पुं.) बीस और दो की संख्या, २२; **–वाँ**–(वि.) जो क्रम में बाईस के स्थान पर हो।
बाईसी–(हिं. स्त्री.) बाईस वस्तुओं, पद्यों आदि का समूह।
बाउ–(हिं. पुं.) वायु, अपान वायु।
बाउर–(हिं. वि.) बावला, पागल, भोला-भाला, अज्ञान, मूर्ख, मूक, गूँगा।
बाउरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की घास।
बाउल–(हिं.पुं.) एक वैष्णव संप्रदाय जिसके प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु कहे जाते हैं।
बाऊ–(हिं. पुं.) वायु, पवन।
बाएँ–(हिं. अव्य.) बाईं ओर।
बाकचाल–(हिं. वि.) बड़ा बकवादी, अधिक बोलनेवाला।
बाकना–(हिं. क्रि. अ.) बकवक करना।
बाकरी–(हिं. स्त्री.) पाँच महीने की ब्याई हुई गाय।
बाकल–(हिं. पुं.) देखें 'वल्कल'।
बाकसी–(हिं. स्त्री.) जहाज के पाल को एक ओर से दूसरी ओर करना।
बाका–(हिं. पुं.) वाक्, वाणी।
बाकी–(अ. वि.) बचा हुआ, अवशिष्ट, न चुकाया हुआ; (स्त्री.) गणित में घटाने की क्रिया; बचा हुआ अंश।
बाकुल–(हिं. पुं.) देखें 'वल्कल'।
बाखरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'बखरी'।
बागडोर–(हिं. स्त्री.) घोड़े की लगाम में बाँधने की रस्सी, लगाम।
बागना–(हिं. क्रि. अ.) चलना-फिरना, घूमना, टहलना, बोलना।
बागर–(हिं. पुं.) नदी के किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक बाढ़ का पानी कभी नहीं पहुँचता।
बागल–(हिं. पुं.) बक, बगला।
बागुर–(हिं.पुं.) पशु या पक्षी फँसाने का जाल।
बागेसरी–(हिं. स्त्री.) सरस्वती, संपूर्ण जाति की एक रागिनी।
बाघंबर–(हिं पुं.) बाघ की खाल जो बिछाने के काम में आती है, एक प्रकार का रोयेंदार कंबल।
बाघ–(हिं. पुं.) सिंह, शेर।
बाघा–(हिं. पुं.) चौपायों का पेट फूलने का एक रोग।
बाघी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की गिलटी जो बहुधा गरमी के रोगियों की जाँघ और पेड़ू के जोड़ में निकलती है।
बाचना–(हिं. क्रि. स.) सुरक्षित रखना, बचाना।
बाचा–(हिं. स्त्री.) बोलने की शक्ति, वार्तालाप, बातचीत; **–बंध**–(वि.) जिसने किसी प्रकार की प्रतिज्ञा की हो।
बाछा–(हिं. पुं.) गाय का बच्चा, बछवा, बच्चा, लड़का।
बाज–(फा. पुं.) एक प्रसिद्ध शिकारी चिड़िया; (वि.) वंचित; (पुं.) समस्त पदों में–करनेवाला, रखनेवाला आदि अर्थों में प्रयुक्त; (हिं.पुं.) घोड़ा, बाजा, सितार में का पक्के लोहे का तार, बजाने की रीति या ढंग, ताने के सूत में डालने की लकड़ी।
बाजड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'बाजरा'।
बाजन–(हिं. पुं.) देखें 'बाजा'।
बाजना–(हिं. क्रि. अ.) बाजे आदि का बजना, प्रसिद्ध होना, पुकारा जाना, लड़ना, भिड़ना, सामने पहुँच जाना, चोट लगना।
बाजरा–(हिं. पुं) एक प्रकार का पौधा जिसके बालों में हरे रंग के छोटे-छोटे दाने लगते हैं, बाजड़ा।
बाजहर–(हिं. पुं.) जहरमोहरा।
बाजा–(हिं.पुं.) वाद्य, बजाने का कोई यन्त्र जिसमें से राग-रागिनी निकाली जाती है अथवा जो ताल देने के लिये बजाया जाता है; **–गाजा**–(पुं.) अनेक प्रकार के बाजों का समूह।
बाजार–(फा. पुं.) दुकानों का समूह जहाँ आवश्यक वस्तुएँ बिकती हैं, हाट, मंडी, भाव, वस्तुओं की दर, (मुहा.) **–करना**–बाजार से आवश्यक वस्तुएँ खरीदना; **–गर्म होना**–बाजार में खूब खरीद-बिक्री होना; **–गिरना**–किसी वस्तु का भाव गिरना; **–मंदा होना**–देखें 'बाजार गिरना'।
बाजारी–(फा. वि.) बाजार का, अशिष्ट।
बाजारू–(हिं.वि.) हाट-संबंधी, बाजारी।
बाजि–(हिं. पुं.) घोड़ा, पक्षी, बाण।
बाजी–(हिं. पुं.) घोड़ा, बजनिया; (फा. स्त्री.) तमाशा, दाँव, खेल।
बाजू–(फा. पुं.) बाँह, भुजा, दाहिना या बायाँ अलँग, पक्ष, डैना; **–बंद**–(पुं.) बाँह में पहनने का एक आभूषण।
बाजूबीर–(हिं. पुं.) बाजूबंद।
बाझ–(हिं. अव्य.) बिना।
बाझन–(हिं. स्त्री.) बझने या फँसने का भाव, उलझन, फँसाव, बखेड़ा, झंझट।
बाझना–(हिं. क्रि. अ.) बझना।
बाट–(हिं. पुं.) मार्ग, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जो तौलने के काम में आता है, बटखरा, पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाती है;

(स्त्री.) ऐंठन, वल; (मुहा.)–करना–मार्ग वनाना; रास्ता खोलना;–देखना, –जोहना–आसरा देखना; –परना –कष्ट देना, पीछे पड़ना, डाका पड़ना; –पारना–डाका डालना।

वाटना–(हि. क्रि. स.) चूर्ण करना, सिल पर वट्टे से कोई वस्तु पीसना।

वाटली–(हि. स्त्री.) जहाज पर का पाल तानने का रस्सा।

वाटिका–(सं.स्त्री.)उपवन,उद्यान,वगीचा, फुलवारी, गद्य-काव्य का एक भेद।

वाटी–(हि. स्त्री.) गोली, पिण्ड, अंगारों या उपलों पर सेंकी हुई गोली या पेड़े के आकार की रोटी, लिट्टी, चौड़े मुँह का कटोरा।

वाड़व–(सं. पुं.) घोड़ियों का समूह, वड़वानल, ब्राह्मण।

वाड़वाग्नि–(सं. स्त्री.) वड़वानल।

वाड़व्य–(सं. पुं.) ब्राह्मणों का समूह।

वाड़स–(सं. पुं.) मत्स्य, मछली।

वाड़ा–(हि. पुं.) वह भूमि जो चारों ओर से घिरी हुई हो, पशु-शाला।

वाड़ी–(हि.स्त्री.)वाटिका, वारी, फुलवारी।

वाढ़–(हि. स्त्री.) बढ़ने की क्रिया या भाव, वढ़ती, अधिक वर्षा के कारण नदी आदि के जल का वहुत अधिक बढ़ना, बंदूक, तोप आदि का निरन्तर छूटना, व्यापार में होनेवाला लाभ, तलवार, छुरी आदि की धार, सान; (मुहा.) –दगना–तोपों का निरन्तर छूटना।

वाढ़कढ़–(हि. स्त्री.) खड्ग, तलवार।

वाढ़ना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'वढ़ना'।

वाढ़ि–(हि. स्त्री.) देखें 'वाढ़'।

वाढ़ी–(हि.स्त्री.)वढ़ाव,अधिकता,वृद्धि, लाभ–अन्न उधार देने पर व्याज रूप में मिलनेवाला अन्न।

वाढ़ीवान–(हि. पुं.) छुरी, कैंची आदि पर सान चढ़ानेवाला।

वाण–(सं. पुं.) तीर, सायक, अग्नि, गाय का थन, सिर का अगला भाग, सरपत, लक्ष्य, निशाना, पाँच की संख्या, राजा वलि के सव से वड़े पुत्र का नाम।

वाणधि–(सं. पुं.) तूण, तरकश।

वाणपति–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

वाणपथ–(सं. पुं.) उतनी दूरी जहाँ तक वाण जा सके।

वाणलिंग–(सं. पुं.) स्फटिक का शिवलिंग जो नर्मदा नदी में मिलता है।

वाणविद्या–(सं.स्त्री.)वाण चलाने की विद्या।

वाणारि–(सं.पुं.)वाणासुर के शत्रु, विष्णु।

वाणासुर–(सं. पुं.) राजा वलि के सौ पुत्रों में से सव से वड़े पुत्र का नाम।

वाणिज्य–(सं. पुं.) वाणिज्य, व्यापार।

वात–(हि. स्त्री.) वचन, प्रसंग, फैली हुई चर्चा, (योग्यता, गुण आदि के संबंध में) कथन, उपदेश, सीख, मर्म, रहस्य, प्रतिज्ञा, मान-मर्यादा, विश्वास, कामना, इच्छा, ढंग, रीति, व्यवहार, तत्व, वस्तु, प्रभाव, स्वभाव, गुण, प्रकृति, संबंध, मूल्य, तात्पर्य, अभिप्राय, कर्तव्य, गुप्त-वार्ता, प्रश्न, प्रशंसा का विषय, चमत्कारपूर्ण वार्ता, विशेषता, घोखा देने के लिये कहे हुए शब्द, वनावटी कथन,वहाना, सन्देश,व्यवस्था, परस्पर वार्तालाप, घटनेवाली स्थिति, सार्थक शब्द या वाक्य, उचित उपाय; (मुहा.)–उठाना–चर्चा या जिक्र करना; –कहते–(अव्य.) तुरंत;–काटना–किसी के वोलते समय वीच में वोल उठना;–का धनी–अपनी वात पर अडिग रहनेवाला;–का वतंगड़ करना–वकवाद करके वखेड़ा खड़ा करना;–की बात में–तुरंत;–खाली जाना–प्रार्थना निष्फल होना;–खोना–साख या प्रतिष्ठा विगड़ना; –छिड़ना–प्रसंग उठना; –जाना–विश्वास उठ जाना; –टलना–कहना व्यर्थ होना; –टालना–किसी की प्रार्थना को अस्वीकार करना; –ठहरना–विवाह-संबंध पक्का होना;–न पूछना–वात न करना;–पक्की करना–वादा पक्का करना; –पर जाना–वातों पर ध्यान देना; –बढ़ना–किसी घटना का भयंकर रूप धारण करना; –बनना–प्रतिष्ठा कायम रहना;–वनाना–वहाना करना; –वात में–(अव्य.) तुरंत, हर विषय में;–बिगड़ना–मर्यादा नष्ट होना; –रखना–किसी की प्रार्थना को मान लेना; अपना वचन पूरा करना; वातों में आना–किसी के वहकावे में आना; वातों में उड़ाना–किसी वात को हँसी में उड़ा देना; वातों में लगाना–वातचीत में लीन करना।

वातकंटक–(हि. पुं.) वायु का एक रोग।

वातचीत–(हि. स्त्री.) दो अथवा अनेक मनुष्यों का परस्पर वातें करना, वार्तालाप।

वातप–(हि. पुं.) हिरन।

वातफरोश–(हि. पुं.) इधर-उधर की झूठी वातें करनेवाला।

वातिंगन–(सं. पुं.) वैंगन।

वाती–(हि. स्त्री.) देखें 'वत्ती'।

वातुल–(हि. वि.)पागल, सनकी, वौड़हा।

वातूनिया, वातूनी–(हि. वि.) वहुत वोलनेवाला, वकवादी।

वाथ–(हि. पुं.) अंक, गोद।

वाथू–(हि. पुं.) वथुआ का साग।

वाद–(हि. पुं.)वाद, तर्क-वितर्क, प्रतिज्ञा, झगड़ा, विवाद, झंझट; (अ. अव्य.) पीछे, अनंतर; –को,–से–पीछे।

वादकाकुल–(सं. पुं.) संगीत में एक ताल का नाम।

वादना–(हि.क्रि. अ.) वकवाद करना।

वादरंग–(सं. पुं.) पीपल का वृक्ष।

वादर–(सं.पुं.) कपास का पौधा, रेशम; (वि.) आनन्दित, प्रसन्न; (हि. पुं.) वादल, मेघ।

वादरा–(सं. स्त्री.) कपास का पौधा, सूत, रेशम।

वादरायण–(सं. पुं.) वेदव्यास का नाम।

वादरिया–(हि. स्त्री.) देखें 'वदली'।

वादल–(हि. पुं.) वह भाप जो पृथ्वी पर के जलराशि से उठकर आकाश में जाती है और फिर पानी के रूप में पृथ्वी पर बूंद-बूंद करके गिरती है, मेघ; (मुहा.) –उठना– आकाश में वादलों का फैलना या छा जाना; –गरजना–मेघों का गड़गड़ शब्द करना;–घिरना–मेघों का चारों ओर छा जाना; –छँटना–मेघों का टुकड़े-टुकड़े होकर विखरना।

वादला–(हि. पुं.) सोने या चाँदी का महीन और चिपटा तार जो कलावत्तू वनाने तथा गोटा बुनने के काम में आता है।

वादशाह–(फा.पुं.) राजा,सम्राट्, सुलतान, प्रकृति से स्वेच्छाचारी, शतरंज का मुख्य मोहरा, ताश का एक पत्ता।

वादशाहत–(फा. स्त्री.) वादशाह का पद या गौरव, राजत्व।

वादशाही–(फा.वि.) वादशाह का,वादशाह से संवद्ध; (स्त्री.) विपुल सुख, समृद्धि और एश्वर्य।

वादहवाई–(हि. अव्य.) व्यर्थ।

वादाम–(फा. पुं.) जामुन आदि वृक्षों की तरह का एक पेड़ जिसका तना मोटा होता है, (इसका फल मेवों में गिना जाता है।)

वादामी–(फा.वि.) वादाम के छिलके के रंग का, कुछ पीलापन लिये लाल रंग का, वादाम के आकार का, अण्डाकार; (स्त्री.) गहना रखने की एक प्रकार की डिबिया;

(पुं.) एक प्रकार का धान, बादामी रंग का घोड़ा।
बादि–(हिं. अव्य.) व्यर्थ।
बादिया–(हिं. पुं.) पेच बनाने का लोहारों का एक अस्त्र।
बादी–(हिं. पुं.) किसी के विरुद्ध अभियोग चलानेवाला, वादी, शत्रु, प्रतिद्वंद्वी, लोहारों का सिकली करने का एक अस्त्र; (फा. वि.) वायु-विकार-संबंधी; (स्त्री.) वायु-विकार।
बादुना–(हिं. पुं.) घेवर नाम की मिठाई बनाने का एक उपकरण।
बादुर–(हिं. पुं.) चमगादड़।
बाध–(सं. पुं.) प्रतिबन्ध, रुकावट, उत्पात, उपद्रव, कष्ट, पीड़ा, कठिनता, अर्थ की असंगति, वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव-सा हो; (हिं. पुं.) मूंजकी पतली रस्सी।
बाधक–(सं. वि.) प्रतिबन्धक, बाधाजनक, दुःखदायी, रुकावट करनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) बाधक होने का भाव या धर्म, बाधा
बाधन–(सं. पुं.) कष्ट, पीड़ा, प्रतिबन्ध, बाधा।
बाधना–(हिं. क्रि. स.) बाधा डालना, रोकना, विघ्न करना, अड़चन डालना।
बाधा–(सं. स्त्री.) कष्ट, पीड़ा, विघ्न, रुकावट, भय, डर, निषेध, मनाही, संकट, अड़चन।
बाधित–(सं. वि.) रोका हुआ, जिसके करने में रुकावट हो, प्रभावहीन, ग्रस्त, असंगत, जिसको सिद्ध करने में बाधा हो।
बाधिर्य–(सं. पुं.) बहरापन।
बाध्य–(सं. वि.) विवश, रोका जानेवाला; **–ता**–(स्त्री.) रोक, प्रतिबंध, विवशता।
बान–(हिं. पुं.) वाण, तीर, एक प्रकार का वृक्ष, एक प्रकार की अग्नि-क्रीड़ा जो तीर के आकार की होती है, धुनकी की ताँत पर मारने का डंडा, समुद्र या नदी की ऊँची लहर, अभ्यास, बनावट, कान्ति।
बानइत–(हिं. वि.) बाना चलाने या फेरनेवाला, बाण चलानेवाला, योद्धा, वीर।
बानक–(हिं. स्त्री.) बाना, भेष, एक प्रकार का रेशम।
बानगी–(हिं. स्त्री.) नमूना, किसी माल का वह अंश जो ग्राहक को देखने के लिये दिया जाता है।
बानर–(हिं. पुं.) बंदर।
बानबे–(हिं. वि.) नब्बे और दो की संख्या का; (पुं.) नब्बे और दो की संख्या, ९२।
बाना–(हिं. पुं.) वस्त्र, पहिनावा, भेस, चाल, रीति, भाले के आकार का एक शस्त्र, दोनों ओर धारवाली तलवार के आकार का एक लंबा शस्त्र, एक प्रकार का सूत जिससे गुड्डी उड़ाई जाती है, खेत की पहली बार की जुताई, कपड़े की बुनावट में वे तागे जो ताने में भरे जाते हैं, बुनावट में आड़े बल के तागे, स्वभाव, बुनाई; (क्रि. स.) मुँह, छेद आदि को बढ़ाना या फैलाना।
बानात–(हिं. स्त्री.) देखें 'बनात'।
बानावरी–(हिं. स्त्री.) बाण चलाने की विद्या।
बानि–(हिं. स्त्री.) बनावट, सजधज, अभ्यास, चमक, कान्ति, वाणी, वचन।
बानिक–(हिं. स्त्री.) वेश, शृंगार, सजधज।
बानिन–(हिं. स्त्री.) बनियाइन, बनिये की स्त्री।
बानिया–(हिं. पुं.) बनिया, व्यापारी।
बानी–(हिं. स्त्री.) मुख से निकला हुआ शब्द, वचन, प्रतिज्ञा, सरस्वती, आभा, चमक, साधु-महात्मा का उपदेश, वाणिज्य, एक प्रकार की पीली मिट्टी, गोला, बाना नामक हथियार; (अ. पुं.) आरंभ करनेवाला, चलानेवाला।
बानैत–(हिं. पुं.) बाण चलानेवाला, बाना फेरनेवाला, योद्धा, सैनिक।
बाप–(हिं. पुं.) पिता, जनक; **–दादा**–(पुं.) पूर्व-पुरुष, पुरखा; **–माँ**–(पुं.) पालन या रक्षा करनेवाला।
बापा–(हिं. पुं.) देख 'बप्पा'।
बापिका–(हिं. स्त्री.) देखें 'वापिका'।
बापी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वापी', बावली।
बापुरा–(हिं. पुं.) तुच्छ, दीन, बेचारा।
बापू–(हिं. पुं.) बाप।
बाफ–(हिं. स्त्री.) देखें 'भाप'।
बाबची–(हिं. स्त्री.) देखें 'बकुची'।
बाबरी–(हिं. स्त्री.) सिर पर के लंबे बाल।
बाबा–(हिं. पुं.) पिता, बाप, पितामह, दादा, वृद्ध पुरुष, एक आदर-सूचक शब्द जो साधु-संन्यासियों के लिये प्रयुक्त होता है, लड़कों के लिये प्यार का शब्द।
बाबी–(हिं. स्त्री.) संन्यासिन, कन्या के लिये प्यार का शब्द।
बाबुना–(हिं. पुं.) पीले रंग की एक चिड़िया।
बाबुल–(हिं. पुं.) बाप।
बाबू–(हिं. पुं.) एक आदरसूचक शब्द, भला आदमी, पिता के लिये संबोधन का शब्द, राजा के बंधु-बांधवों के लिये प्रयुक्त शब्द।
बाबूड़ा–(हिं. पुं.) बाबू के लिये घृणासूचक शब्द।
बाभन–(हिं. पुं.) ब्राह्मण, भूमिहार।
बाम–(हिं. वि.) देखें 'वाम'; (हिं. स्त्री.) स्त्रियों का कान में पहनने का एक गहना।
बामा–(हिं. स्त्री.) देखें 'वामा'।
बायँ–(हिं. वि.) बायाँ, खाली, चूका हुआ, लक्ष्य पर न बैठा हुआ; (मुहा.) **–देना**–तरह देना, छोड़ना।
बाय–(हिं. स्त्री.) वायु, हवा, वात का प्रकोप, बावली, बेहर।
बायक–(हिं. पुं.) दूत, पढ़नेवाला, बतलानेवाला।
बायन–(हिं. पुं.) वह मिठाई, पकवान आदि जो उत्सव आदि के उपलक्ष्य में लोग अपने इष्ट-मित्रों के घर भेजते है, भेंट, उपहार; (मुहा.) **–देना**–छेड़-छाड़ करना।
बायबिडंग–(हिं. पुं.) पहाड़ पर होनेवाली एक लता जिसमें छोटे-छोटे मटर के बराबर गोल फल गुच्छों के लगते हैं जो आयुर्वेदिक औषधों में काम में आते हैं।
बायबिल–(अं. पुं.) देखें 'बाइबिल'।
बायबी–(हिं. वि.) अपरिचित, अजनबी, बाहरी, नया आया हुआ।
बायब्य–(हिं. वि., पुं.) देखें 'वायव्य'।
बायरा–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
बायल–(हिं. वि.) जो दाँव खाली जाय।
बायला–(हिं. वि.) वायु का विकार बढ़ानेवाला।
बायस–(हिं. पुं.) देखें 'वायस'।
बायाँ–(हिं. वि.) पूर्वाभिमुख खड़े होने पर किसी मनुष्य का उत्तर की ओर का पार्श्व, प्रतिकूल, विरुद्ध; (पुं.) बायें हाथ से बजाने का तबला; (मुहा.) **–देना**–जान-बूझकर कतरा जाना।
बायें–(हिं. अव्य.) विपरीत, विरुद्ध, बाईं ओर; (मुहा.) **–होना**–खिन्न होना।
बारंबार–(हिं. अव्य.) पुनः-पुनः, बार-बार।
बार–(हिं. पुं.) द्वार, घरबार, आश्रय-स्थान, घेरा, रोक, किसी शस्त्र की धार, नाव, थाली आदि का किनारा, देखें 'बाल'; (स्त्री.) काल, समय, अतिकाल, देर, दफा, **–बार**–(अव्य.) फिर-फिर।
बारक–(हिं. स्त्री.) सैनिकों के रहने के लिये बना हुआ पक्का घर, छावनी।
बारकीर–(सं. पुं.) जोंक।
बारगह–(हिं. स्त्री.) डेवढ़ी, डेरा, तंबू।
बारजा–(हिं. पुं.) कोठा, अटारी, बरामदा, मुख्य द्वार के ऊपर पाटकर बनाया हुआ ओसारा, घर के आगे का दालान।

वारतुंडी–(हिं. स्त्री.) आल का पेड़ ।
वारन–(हिं. पुं.) देखें 'वारण' ।
वारना–(हिं. क्रि. स.) रोकना, मना करना, प्रज्वलित करना, जलाना, जोंधरी,वाजरे आदि के दाने अलगाना।
वारवधू, वारवधूटी–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
वारमुखी–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
वारवा–(हिं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
वारह–(हिं. वि.) दस और दो की संख्या का; (पुं.) दस और दो की संख्या, १२; (मुहा.)–**वाट करना**–तितर-वितर करना, नष्ट करना।
वारह-खड़ी–(हिं.स्त्री.) वर्णमाला-ज्ञानका वह अंग जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः-इन वारह स्वरों की मात्राएँ लगाकर उच्चारण वताया जाता है।
वारहदरी–(हिं. स्त्री.) चारों ओर से खुला हवादार कमरा जिसमें वारह द्वार होते हैं।
वारह-पत्थर–(हिं. पुं.) सीमा, सिवान, छावनी ।
वारहवान–(हिं. पुं.) एक प्रकार का उत्तम सोना ।
वारहवाना–(हिं. वि.) चमकता हुआ, खरा, चोखा ।
वारहवानी–(हिं. वि.) सूर्य के समान चमकनेवाला, पापरहित निर्दोष, खरा, चोखा, सच्चा, पक्का,; (स्त्री.) सूर्य के समान चमक ।
वारहमासा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पद्य या गीत जिसमें किसी विरही या विरहिणी के मुख से वारहों महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन कराया जाता है।
वारहमासी–(हिं. वि.) वारहों महीने होनेवाला, सब ऋतुओं में फलने-फूलनेवाला ।
वारहवाँ–(हिं.वि.) जो वारहके स्थान में हो।
वारहसिंगा(घा)–(हिं. पुं.) हरिन की जाति का एक चौपाया जिसके सींगों में कई शाखाएँ निकली रहती हैं ।
वारहाँ–(हिं. वि.) देखें 'वारहवाँ' ।
वारहों(हों)–(हिं.स्त्री.) वच्चे के जन्म से वारहवाँ दिन, जब उत्सव आदि किये जाते हैं, किसी मनुष्य के मरने के दिन से वारहवाँ दिन।
वारा–(हिं. वि.) वाल्यावस्या का, जो सयाना न हो; (पुं.) वेलने के सिरे पर लगाई हुई लोहे की कँगनी, महीन तार खींचने की जंती, वह मनुष्य जो कुएँ पर रहकर मोट का पानी उँड़ेलता या गिराता है ।
वारात–(हिं. स्त्री.) वरयात्रा, वह समाज जो वर के साथ उसको व्याहने के लिये सजधज करके वधू के घर जाता है।
वारादरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वारहदरी' ।
वारिगर–(हिं. पुं.) हथियारों पर सान रखनेवाला ।
वारिधर–(हिं. पुं.) मेघ, वादल, एक वर्णवृत्त का नाम ।
वारिधि–(हिं. पुं.) देखें 'वारिधि' ।
वारिवाह–(हिं. पुं.) वादल ।
वारी–(हिं. स्त्री.) तट, किनारा, धार, छोर, (वगीचे, खेत आदि के चारों ओर वना हुआ) घेरा, किसी पात्र की कोर, नवयौवना, किशोरी स्त्री, कन्या, लड़की, अवसर, पारी, जहाजों के ठहरने का स्थान, वंदरगाह, घर, क्यारी, खिड़की, झरोखा, वह स्थान जहाँ वृक्ष लगाये गये हों; (पुं.) एक जाति जो पत्तल बनाने का काम करती है; (मुहा.) –**बँधना**–अलग-अलग समय निश्चित होना; –**वारी से**–एक-एक करके ।
वारीक–(फा. वि.) महीन, वहुत पतला, सूक्ष्म; –**बीन**–(वि.) सूक्ष्मदर्शी; –**बीनी**–(स्त्री.) सूक्ष्मदर्शिता, वारीकी ।
वारीकी–(फा.स्त्री.) वारीकपन, सूक्ष्मता।
वारीस–(हिं. पुं.) समुद्र ।
वारुणी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वारुणी' ।
वारू–(हिं. पुं.) देखें 'वालू' ।
वारूद–(फा.स्त्री.) सोरा, गंधक और कोयले के वारीक चूर्ण का मिश्रण, जो वंदूक, आतिशवाजी आदि में प्रयुक्त होता है; –**खाना**–(पुं.) गोली-वारूद का भंडार।
वारूदानी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वालूदानी'।
वारोठा–(हिं.पुं.) विवाह की एक रीति जो वर के कन्याके द्वारपर आनेपर की जाती है।
वार्हस्पत(त्य)–(सं.वि.) वृहस्पति-संबंधी।
वाल–(सं. पुं.) वालक, लड़का, किसी पशु का वच्चा, शावक, लोम, केश, कुन्तल, घोड़े का वच्चा, वछेड़ा, हाथी का वच्चा, नारियल, दूध; (वि.) मूर्ख, वह जो पूरी वाढ़ पर न पहुँचा हो, जिसको उगे हुए थोड़े दिन हुए हों; (हिं.स्त्री.) अनाजों के पौधों के डंठल का अग्रभाग जिसमें दानों के गुच्छे लगे रहते हैं; (मुहा.)–**पकना**–वृद्ध होना, अनुभव प्राप्त करना; –**वाँका न होना**–किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचना; –**वाल वचना**–किसी आपत्ति में पड़ते-पड़ते वच जाना ।
वालक–(सं. पुं.) पुत्र, शिशु, लड़का, थोड़ी उम्र का वच्चा, अबोध या अनजान मनुष्य, हाथी या घोड़े का वच्चा, केश, वाल ।
वालकता–(हिं. स्त्री.) लड़कपन।
वालकताई–(हिं. स्त्री.) वाल्यावस्था, लड़कपन ।
वालकपन–(हिं. पुं.) वालक होने का भाव, लड़कपन ।
वालकप्रिया–(सं. स्त्री.) इन्द्रवारुणी, केला।
वालकांड–(सं. पुं.) रामायण का वह भाग जिसमें रामचन्द्र के जन्म तथा वाललीला आदि का वर्णन है ।
वालकाल–(सं. पुं.) वाल्यावस्था ।
वालकी–(हिं. स्त्री.) कन्या, पुत्री।
वालकृष्ण–(सं. पुं.) वाल्यावस्था के श्रीकृष्ण ।
वालकेलि–(सं. स्त्री.) लड़कों का खेल, खिलवाड़, अति साधारण या तुच्छ काम ।
वालकेशी–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की घास।
वालक्रीड़न–(सं. पुं.) लड़कों का खेल।
वालक्रीड़ा–(सं. स्त्री.) लड़कों का खल।
वालखिल्य–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार ब्रह्मा के रोमकूप से उत्पन्न साठ हजार ऋषि जो डील-डौल में अँगूठे के वरावर थे ।
वालखोरा–(हिं. पुं.) सिर के वाल झड़ने का रोग।
वालगर्भिणी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसने पहले-पहल गर्भ-धारण किया हो।
वालगोपाल–(सं.पुं.) वालकृष्ण, परिवार के वाल-वच्चे ।
वालग्रह–(सं. पुं.) वालकों को सतानेवाले ग्रह, (अरिष्टानुसार ये वालकों को सताते हैं।)
वालचर–(सं.पुं.) वह संस्था जो विद्यार्थियों में लोकसेवा, स्वावलंवन आदि वृत्तियों का विकास करने के लिए वनी है, इसका सदस्य ।
वालचरित–(सं.पुं.) लड़कों का खिलवाड़।
वालचर्य–(सं. पुं.) कार्तिकेय, वालकों का चरित्र ।
वालछड़–(हिं. स्त्री.) जटामासी।
वालजीवन–(सं. पुं.) दुग्ध, दूध ।
वालटी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की डोलची जिसका नीचे का घेरा सँकरा तथा ऊपर का चौड़ा होता है।
वालतंत्र–(सं. पुं.) वालकों के लालन-

पालन की विद्या, कुमार-भृत्या।
वालतनय–(सं. पुं.) वालक, पुत्र।
वालतृण–(सं.पुं.)नरम तृण, हरी घास।
वालतोड़–(हिं. पुं.) देखें 'वरतोर'।
वालद–(हिं. पुं.) वैल।
वालधि–(सं. स्त्री.) पूँछ।
वालना–(हिं. क्रि. स.) प्रज्वलित करना, जलाना।
वालपत्र–(सं. पुं.) नया पत्ता, कोंपल।
वालपन–(हिं. पुं.)वाल्यावस्था, लड़कपन।
वालपर्णी–(सं. स्त्री.) मेथिका, मेथी।
वालपुष्पी–(सं. स्त्री.) यूथिका, जूही।
वालबच्चे–(हिं. पुं.) सन्तान।
वालबुद्धि–(सं. स्त्री.) वालकों के समान वुद्धि, नासमझी।
वालबोध–(सं. पुं.) वच्चों की पुस्तक; (वि.) समझने में सरल, सहज।
वालबोधक–(सं. वि.) वहुत सहज।
वालब्रह्मचारी–(सं. पुं.) वह जिसने वाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य-व्रत धारण किया हो।
वालभाव–(सं. पुं.) लड़कपन।
वालभोग–(सं. पुं.) वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे प्रातःकाल रखा जाता है, जलपान, कलेवा।
वालम–(हिं. पुं.) पति, स्वामी, प्रेमी।
वालमखीरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वड़ा खीरा।
वालमुकुंद–(हिं. पुं.) वाल्यावस्था के श्रीकृष्णजी।
वालमूलक–(सं. पुं.) छोटी कच्ची मूली।
वालरोग–(सं. पुं.) वालकों की व्याधि।
वाललीला–(सं. स्त्री.) लड़कों का खेल।
वालव–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार दूसरे करण का नाम।
वालवत्स–(सं. पुं.) कपोत, कबूतर।
वालविधु–(सं. पुं.) अमावस्या के वाद दूज का नवीन चन्द्रमा।
वालव्यंजन–(सं.पुं.)लड़के का पंखा, चँवर।
वालसाँगड़ा–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
वालसूर्य–(सं. पुं.) उदय-काल का सूर्य, वैदूर्यमणि।
वालस्थान–(सं. पुं.) शिशुत्व, लड़कपन।
वाला–(सं. स्त्री.) नारियल, हल्दी, पत्नी, पुत्री, कन्या, छोटी इलायची, वेले का पौधा, वारह वर्ष से सोलह वर्ष तक की स्त्री, एक वर्णवृत्त का नाम, एक वरस की गाय, घीकुआर, खैर; दश महाविद्याओं में से एक, सुगन्धवाला; (हिं. पुं.) कान का आभूषण, एक प्रकार का गेहूँ की उपज को नष्ट करनेवाला कीड़ा; (मुहा.) **बोलवाला होना**–आदर का वढ़ना; **–भोला**–(वि.) वहुत सीधा-सादा।
वालादित्य–(सं. पुं.)तुरत का उगा हुआ सूर्य।
वालापन–(हिं. पुं.) वचपन, लड़कपन।
वालारुण–(सं. पुं.) देखें 'वालादित्य'।
वालार्क–(सं. पुं.) प्रातःकाल का सूर्य।
वालि–(सं. पुं.) वानरों का अधिपति जो सुग्रीव का वड़ा भाई था।
वालिका–(सं. स्त्री.) छोटी कन्या, पुत्री, वेटी, इलायची, कान में पहनने की वाली।
वालिनी–(सं. स्त्री.) अश्विनी नक्षत्र।
वालिश–(सं. वि.) मूर्ख, अवोध।
वालिहंता–(सं. पुं.) श्रीरामचन्द्र।
वाली–(हिं. स्त्री.) कान में पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण, पौधों का वह भाग जिसमें दाने लगते हैं।
वालुंगी–(सं. स्त्री.) कर्कटी, ककड़ी।
वालु–(सं. पुं.) वालू, कपूर।
वालुका–(सं.स्त्री.) वालू, ककड़ी, कपूर; **–मय**–(वि.) वालू से भरा हुआ; **–यंत्र**–(पुं.) वह यन्त्र जिसमें औषध फूंकने के लिये तप्त वालू काम में लाया जाता है।
वालू–(हिं. पुं.) पत्थर का वह महीन चूर्ण या कण जो वर्षा-जल के साथ पहाड़ से वहकर आता और नदियों के किनारे जमा होता है, रेणुका, रेत; **–की भीत**–शीघ्र नष्ट होनेवाली वस्तु।
वालूक–(सं. पुं.) एक प्रकार का विष।
वालूचरा–(हिं. पुं.) वह भूमि जिस पर वालू पटा हो।
वालूदानी–(हिं. स्त्री.) वालू रखने की झँझरीदार छोटी डिविया जिससे वालू छिड़कर मसि (रोशनाई) आदि सुखायी जाती है।
वालूबुर्द–(हिं. वि.) जो वालू पड़कर नष्ट हो गया हो; (पुं.)वह भूमि जो वालू पड़ जाने से खेती के योग्य न रह गई हो।
वालूशाही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई।
वालेंदु–(सं. पुं.) दूज का चन्द्र।
वालेय–(सं. पुं.) रासभ, गदहा, एक दैत्य का नाम, चावल; (वि.) वालकों के हित का, वलिदान करने योग्य।
वाल्टी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वालटी'।
वाल्य–(सं. पुं.) लड़कपन, वालक होने की अवस्था; (वि.) वालक-सम्वन्धी, वचपन का।
वाल्यावस्था–(सं. स्त्री.) सोलह वर्ष तक की अवस्था, लड़कपन।
वाल्हक–(सं. पुं.) कुंकुम, केसर।
वाल्हीक–(सं. पुं.) जनमेजय के एक पुत्र का नाम।
वाव–(सं.पुं.)वायु,हवा,अपान वायु,वाई।
वावड़ी–(हिं.स्त्री.)वह चौड़ा कुआँ जिसमें पानी तक जाने के लिये सीढ़ियाँ वनी रहती हैं, वावली, छोटा तालाव।
वावन–(हिं. वि.) पचास और दो की संख्या का; (पुं.) पचास और दो की संख्या, ५२; (मुहा.) **–तोले पाव रत्ती**–विलकुल ठीक; **–बीर**–(पुं.) बड़ा चतुर और वीर पुरुष।
वावना–(हिं. वि.) देखें 'बौना'।
वावभक–(हिं. पुं.) झझक, पागलपन।
वावरा–(हिं. वि.) देखें 'वावला'।
वावरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वावली'।
वावला–(हिं. वि.) विक्षिप्त, पागल, सनकी; **–पन**–(पुं.) झक, पागलपन।
वावली–(हिं.स्त्री.)सीढ़ियों से युक्त छोटा गहरा तालाव या चौड़े मुँह का कुआँ।
वावाँ–(हिं.वि.)वाईं ओर का,वायाँ,विरुद्ध।
वाष्कल–(सं. पुं.) वीर, योद्धा, चाँदी, एक ऋषि का नाम।
वाष्प–(हिं.पुं.) भाफ,लोहा,आँसू,एक प्रकार की जड़ी,गौतम बुद्ध के एक शिष्य का नाम।
वास–(हिं. पुं.) निवास, रहने का स्थान, वस्त्र, कपड़ा, एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष, एक छन्द का नाम; (स्त्री.) धारदार छुरी, एक प्रकार का अस्त्र, अग्नि, आग, इच्छा, गन्ध, महक।
वासकर्णी–(सं. स्त्री.) यज्ञशाला।
वासकसज्जा–(हिं. स्त्री.) वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि-क्रीड़ा के लिए अपना शृंगार करती हो।
वासठ–(हिं. वि.) साठ और दो की संख्या का; (पुं.) साठ और दो की संख्या, ६२; **–वाँ**–(वि.) वह जो क्रम में वासठ के स्थान पर हो।
वासदेव–(हिं.पुं.)अग्नि,आग,देखें 'वासुदेव'।
वासन–(हिं. पुं.) पात्र, वरतन।
वासना–(हिं. स्त्री.) इच्छा, चाह, गन्ध; (क्रि. स.) सुवासित करना, महकाना।
वासफूल–(हिं.पुं.) एक सुगंधित धान।
वासमती–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वढ़िया धान जिसका चावल पकने पर सुगन्धित होता है।

वासर–(हिं. पुं.) वासर, दिन, प्रातःकाल, सवेरा, प्रातःकाल गाने का गीत।
वासव–(हिं. पुं.) इन्द्र।
वासवी–(हिं. पुं.) अर्जुन; **–दिशा**–(स्त्री.) पूर्व दिशा।
वाससी–(हिं. स्त्री.) वस्त्र, कपड़ा।
वासा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की चिड़िया, अड़ूसा, वह स्थान जहाँ पकी हुई रसोई दाम देने पर मिलती है, निवास-स्थान।
वासिंदा–(हिं. वि.) निवासी।
वासित–(हिं.वि.) सुगन्धित किया हुआ।
वासी–(हिं. वि.) देर का अथवा एक दिन पहले का बना हुआ, जो हरा-भरा न हो, सूखा या कुम्हलाया हुआ, पिछले दिन का तोड़ा हुआ, बसनेवाला, रहनेवाला; (मुहा.)**–कढ़ी में उबाल आना**–वृद्धावस्था में जवानी की उमंग आना।
वासुकी–(हिं. पुं.) देखें 'वासुकी'।
वासौंधी–(हिं. स्त्री.) देख 'बसौंधी'।
वाह–(सं. पुं.) बाहु, बाँह; (हिं. पुं.) खेत जोतने की क्रिया, खेत की जोताई।
वाहकी–(हिं. स्त्री.) कहार की स्त्री, कहारिन।
वाहड़ी–(हिं. स्त्री.) कुम्हड़ौरी डालकर पकाई हुई खिचड़ी।
वाहन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का ऊँचा लंबा वृक्ष, देखें 'वाहन'।
वाहना–(हिं.क्रि.अ.,स.) ढोना, लादना या लादकर ले जाना, फकना, चलाना, पकड़ना, धारण करना, वहना, खत में हल चलाना, गाड़ी, घोड़े आदि हांकना, गाय, भैंस आदि को गाभिन कराना।
वाहनी–(हिं. स्त्री.) सेना।
वाहवली–(हिं.पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
वाहर–(हिं. अव्य.) किसी निश्चित या कल्पित सीमा से हटकर, सिवाय, अलग, प्रभाव या अधिकार से परे, किसी दूसरे स्थान पर, भीतर का उलटा; (मुहा.) **–करना**–हटाना, दूर करना; **–का**–जो आत्मीय न हो, पराया; **–वाहर**–(अव्य.) ऊपर से, विना किसी को वतलाये हुए; **–होना**–प्रगट होना।
वाहरजामी–(हिं. पुं.) ईश्वर का अवतार, यथा–राम, कृष्ण आदि।
वाहरी–(हिं. वि.) वाहर से संबद्ध, वाहर का, पराया, जो घर का न हो, जो आपस का न हो, ऊपरी, जो केवल वाहर से दिखलाने के लिए किया जाय।
वाहरी-टांग–(हिं. स्त्री.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
वाहस–(हिं. पुं.) अजगर।
वाहाँजोरी–(हिं अव्य.) भुजा से भुजा अथवा हाथ से हाथ मिलाकर।
वाहा–(हिं. पुं.) वह रस्सी का टुकड़ा जिससे नाव का डाँड़ा बँधा रहता है।
वाहिज–(हिं.अव्य.) ऊपर से, बाहर से।
वाहिनी–(हिं. स्त्री.) सेना, नदी, यान।
वाहिर–(हिं. अव्य.) देखें 'बाहर'।
वाहीं–(हिं. स्त्री.) देखें 'बाँह' बाहु।
वाहु–(सं. पुं.) भुजा, बाँह; **–क**–(पुं.) एक नाग का नाम, नकुल का नाम, राजा नल जव अयोध्या के राजा के सारथी वने थे तव उन्होंने अपना नाम वाहुक रखा था; **–कर**–(वि.) हाथों से काम करनेवाला; **–कुंथ**–(पुं.) पक्ष, पंख; **–ज**–(पुं.) क्षत्रिय जिसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के बाहु से मानी जाती है, सुग्गा; (वि.) वह जो बाहु से उत्पन्न हो; **–जन्य**–(वि.) वाहु से उत्पन्न; **–ज्या**–(पुं.) रेखा-गणित की भुजज्या; **–त्राण**–(पुं.) चमड़े, लोहे आदि का वना हुआ हस्तत्राण जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है; **–दंतिन**, **–दंतेय**–(पुं.) इन्द्र; **–पाश**–(पुं.) आलिंगन के लिए वाहुओं को फैलाना; **–वल**–(पुं.) हाथों की शक्ति, पराक्रम; **–भाष्य**–(पु.) वहुत बोलना, बकवक; **–भूषा**–(पु.) वाँह पर पहनने का एक आभूषण, केयूर **–भेदी**–(पुं.) विष्णु; **–मूल**–(पुं.) कंधे और वाँह का जोड़, काँख; **–युद्ध**–(पुं.) मल्लयुद्ध; **–योध**–(पुं.) पहलवान; **–ल**–(पुं.) बहुतायत, अग्नि, कार्तिक मास, हाथ में पहनने का कवच; **–० ग्रीव**–(पुं.) मयूर, मोर; **–लेय**–(पुं.) कार्तिकेय; **–ल्य**–(पुं.) आधिक्य, अधिकता; **–विस्फोट**–(पुं.) ताल ठोंकना; **–वीर्य**–(पुं.) वाहुवल, पराक्रम; **–शाली**–(पुं.) शिव, भीम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **–शिखर**–(पुं.) स्कन्ध, कन्धा; **–शोष**–(पुं.) वाँह में होनेवाला एक प्रकार का वात-रोग; **–संभव**–(पुं.) क्षत्रिय; **–हजार**–(हिं. पुं.) देखें 'सहस्रबाहु'।
वाह्य–(सं. पुं.) भार ढोनेवाला पशु, (वि.) ढोनेवाला, वाहरी, वाहर का; **–पटी**–(स्त्री.) यवनिका, नाटक का परदा।
वाह्याचरण–(सं. पुं.) आडंवर, ढकोसला।
वाह्याभ्यंतर–(सं. पुं.) प्राणायाम का एक भेद।
वाह्यालय–(सं पुं.) बाहर का घर।
वाह्लीक–(सं. पुं.) काम्वोज के उत्तरी प्रदेश का प्राचीन नाम, (यह स्थान कावुल के उत्तर की ओर था।)
विंजन–(हिं. पुं.) देखें 'व्यंजन'।
विंद–(हिं.पुं.) पानी की बूँद, वीर्य की बूँद, दोनों भौंहों के बीच का स्थान, देखें 'विंदी'।
विंदा–(हिं.स्त्री.) एक गोपी का नाम, माथे पर का गोल वड़ा टीका, इस आकार का कोई चिह्न।
विंदी–(हिं. स्त्री.) शून्य, सुन्ना, माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका, इस आकार का कोई चिह्न।
विंदु–(सं. पुं.) विंदु, बूँद; **–क**–(पुं.) गोल टीका; **–चित्रक**–(पुं.) एक प्रकार का चित्तीवाला हिरन; **–तंत्र**–(पुं.) चौपड़ आदि की विसात; **–पत्र**–(पुं.) भूजपत्र, भोजपत्र; **–माधव**–(पुं.) विष्णु का एक नाम; **–रेखा**–(स्त्री.) विंदुओं से बनी हुई रेखा; **–वासर**–(पुं.) वह दिन जव गर्भ का प्रथम-संचार होता है; **–सार**–(पुं.) चन्द्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।
विंदुका–(हिं.पुं.) विंदी, गोल टीका।
विंदुरी, विंदुली–(हिं. स्त्री.) माथे पर का गोल टीका, टिकुली।
विंद्रावन–(हिं. पुं.) देखें 'वृन्दावन'।
विंध–(हिं. पुं.) देख 'विंध्याचल'।
विंधना–(हिं. क्रि. अ.) छेदा जाना, फँसना, उलझना।
विंधिया–(हिं.पुं.) मोती में छेद करनेवाला।
विंब–(सं. पुं.) प्रतिविम्व, छाया, मूर्ति, कमण्डल, सूर्य या चन्द्र का मण्डल, आभास, झलक, गिरगिट, एक छन्द का नाम, कुँदरू।
विंवक–(सं. पुं.) कुँदरू का फल।
विंवित–(सं. वि.) प्रतिविंवित।
विंवु–(सं. पुं.) पूगीफल, सुपारी।
वि–(हिं. वि.) दो, एक और एक।
विअहुता–(हिं. वि.) विवाह का, विवाह-सम्बन्धी, जिसका विवाह हो गया हो।
विआधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'व्याधि'।
विआवु–(हिं. पुं.) देखें 'व्याव'।
विआना–(हिं. क्रि. अ,. स.) पशुओं का वच्चा देना, जनना।
विआपी–(हिं. वि.) देखें 'व्यापी'।
विकट–(हिं. वि.) देखें 'विकट'।
विकना–(हिं. क्रि. अ.) किसी पदार्थ का मूल्य लेकर दिया जाना, वेचा जाना

विक्री होना; (मुहा.) किसी के हाथ बिकना–किसीका दास या सेवक बनना।
बिकरम–(हिं. पुं.) देखें 'विक्रमादित्य'।
बिकरार, बिकराल–(हिं. वि.) भीषण, डरावना, भयानक, देखें 'विकराल'।
बिकर्म–(हिं. पुं.) दुष्कर्म।
बिकल–(हिं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, देखें 'विकल'।
बिकलाई–(हिं.स्त्री.) व्याकुलता, बेचैनी।
बिकलाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) व्याकुल होना, घबड़ाना, व्याकुल करना।
बिकवाना–(हिं. क्रि. स.) बेचने का काम दूसरे से कराना, किसी से बिक्री कराना।
बिकसना–(हिं.क्रि.अ.) खिलना, फूलना, बहुत प्रसन्न होना।
बिकसाना–(हिं.क्रि.स.) विकसित कराना, खिलाना, प्रफुल्ल या प्रसन्न करना।
बिकाऊ–(हिं.वि.) बिकने योग्य, बिकनेवाला।
बिकाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'बिकना'।
बिकार–(हिं. पुं.) देखें 'विकार'; (वि.) विकराल, भयंकर।
बिकारी–(हिं. वि.) विकृत रूपवाला, हानिकारक; (स्त्री.) संख्या या मान सूचित करने के लिये मन, सेर, रुपए आदि की चिन्हरूप टेढ़ी रेखा।
बिकास–(हिं. पुं.) देखें 'विकास'।
बिक्री–(हिं.स्त्री.) बेचे जाने की क्रिया या भाव, वह धन जो बेचने से प्राप्त होता है।
बिक्रेय–(हिं. वि.) बिकाऊ, बचने योग्य।
बिख–(हिं. पुं.) विष, गरल।
बिखम–(हिं. वि.) देखें 'विषम'।
बिखरना–(हिं. क्रि.अ.) चीज़ों, कणों आदि का इधर-उधर गिरना या फैल जाना, छितराना।
बिखराना–(हिं. क्रि. स.) बिखेरना।
बिखाद–(हिं. पुं.) देखें 'विषाद'।
बिखान–(हिं. पुं.) देखें 'विषाण'।
बिखेरना–(हिं. क्रि. स.) इधर-उधर फैलाना, तितर-बितर करना, छितराना।
बिग–(हिं. पुं.) भड़िया।
बिगड़ना–(हिं.क्रि.अ.) असली रूप, रंग या गुण नष्ट हो जाना, कुचाली होना, क्रुद्ध होना, अप्रसन्नता प्रगट करना, विरोध-भाव होना, पशु आदि का अपने रक्षक के काबू से बाहर होना, बुरी अवस्था या दुर्दशा को प्राप्त होना, लड़ाई-झगड़ा होना, व्यर्थ व्यय होना, किसी पदार्थ का बनते समय ठीक न उतरना, फल आदि का सड़ना।

बिगड़ेदिल–(हिं. वि.) जो बात-बात में लड़ने-झगड़ने लगे, जो हृदय का बुरा हो, कुपथ पर चलनेवाला।
बिगड़ैल–(हिं. वि.) थोड़ी बात पर क्रुद्ध होनेवाला, हठ करनेवाला।
बिगर–(हिं. अव्य.) रहित, बिना।
बिगरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'बिगड़ना'।
बिगराइल–(हिं. वि.) देखें 'बिगड़ैल'।
बिगसना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'बिकसना'।
बिगहा–(हिं. पुं.) देखें 'बीघा'।
बिगही–(हिं. स्त्री.) क्यारी, बरही।
बिगाड़–(हिं. पुं.) वैमनस्य, लड़ाई-झगड़ा, दोष, बुराई, बिगड़ने की क्रिया या भाव।
बिगाड़ना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु के स्वाभाविक रूप, रंग या गुण को नष्ट करना, कुमार्ग में लगाना, बुरी अवस्था में लाना, व्यर्थ व्यय कराना, किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करना, बुरा अभ्यास डालना, बहकाना, किसी वस्तु को बनाते समय उसमें ऐसा ऐब उत्पन्न कर देना कि वह ठीक न बन सके।
बिगार–(हिं. पुं.) देखें 'बिगाड़'।
बिगारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बेगारी'।
बिगास–(हिं. पुं.) देखें 'विकास'।
बिगासना–(हिं.क्रि.स.) विकसित करना।
बिगिर–(हिं. अव्य.) बगैर, सिवाय।
बिगुन–(हिं. वि.) गुणरहित, जिसमें कोई गुण न हो।
बिगुर–(हिं. वि.) बिना गुरु का, जिसने किसी गुरु से शिक्षा न प्राप्त की हो।
बिगुरदा–(हिं. पुं.) प्राचीन समय का एक प्रकार का शस्त्र।
बिगुल–(हिं. पुं.) एक प्रकार की तुरही।
बिगूचन–(हिं. स्त्री.) उलझन, चित्त का भ्रम, असमंजस, कठिनता।
बिगूचना, बिगूतना–(हिं. क्रि. अ., स.) संकोच में पड़ना, अड़चन में पड़ना, दबाया जाना, पकड़ा जाना, दबोचना।
बिगोना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना, विनाश करना, व्यग्र करना, छिपाना, चुराना, बहकाना, भ्रम में डालना।
बिगाहा–(हिं. पुं.) आर्या छन्द का एक भेद, (इसको उद्गीति भी कहते हैं।)
बिग्रह–(हिं. पुं.) देखें 'विग्रह'।
बिघटना–(हिं.क्रि.अ.,स.) विनाश करना, बिगाड़ना, विघटित करना या होना।
बिघन–(हिं.पुं.) देखें 'विघ्न', बाधा; –हरन –(पुं.) विघ्नों को हटानेवाले, गणेशजी।
बिच–(हिं. वि.) देखें 'बीच'।

बिचकना–(हिं. क्रि. अ.) भड़कना।
बिचकाना–(हिं.क्रि.स.) किसी को चिढ़ाने के लिये मुँह टेढ़ा करना, मुँह चिढ़ाना।
बिचरना–(हिं. क्रि. अ.) इधर-उधर घूमना, चलना-फिरना, पर्यटन करना।
बिचलना–(हिं. क्रि. अ.) विचलित होना, इधर-उधर हटना, किसी बात को कहकर मुकर जाना, हिम्मत हारना।
बिचला–(हिं. वि.) बीच का, बीचवाला।
बिचलाना–(हिं. क्रि. स.) विचलित करना, अस्थिर करना, डिगाना, तितर-बितर करना।
बिचवई–(हिं. पुं.) मध्यस्थ; (स्त्री.) मध्यस्थता।
बिचवान, बिचवानी–(हिं. पुं.) मध्यस्थ, वह जो झगड़ा निबटाता हो।
बिचारना–(हिं. क्रि.स.) बिचार करना।
बिचारमान–(हिं. वि.) विचार करनेवाला, विचारने योग्य।
बिचारा–(हिं. वि.) देखें 'बेचारा'।
बिचारी–(हिं.वि.) विचार करनेवाला; (वि. स्त्री.) देखें 'बिचारा'।
बिचाल–(हिं. पुं.) अन्तर।
बिचेत–(हिं. वि.) अचेत, मूर्च्छित।
बिचौंहाँ–(हिं.पुं.) मध्यस्थ।
बिच्छिति–(सं.स्त्री.) शृंगार रस के ग्यारह भावों में से एक जिसमें किसी पुरुष का स्त्री के किंचित् शृंगार से ही मोहित होना वर्णन किया जाता है, विच्छित्ति।
बिच्छी–(हिं. स्त्री.) **बिच्छू**–(हिं.पुं.) एक छोटा कीड़ा जिसकी पूँछ में डंक होता और विष रहता है, एक प्रकार की घास जिसके स्पर्श से बिच्छू काटने के समान जलन और पीड़ा उत्पन्न होती है।
बिछना–(हिं. क्रि. अ.) फैलाया जाना, छितराया जाना, भूमि पर बिछाया जाना।
बिछलन–(सं. पुं.) फिसलन।
बिछलना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'फिसलना'।
बिछलाना–(हिं. क्रि. स.) फिसलाना।
बिछवाना–(हिं. क्रि. स.) बिछाने का काम दूसरे से कराना।
बिछाना–(हिं. क्रि. स.) चादर आदि पूरे विस्तार से फैलाना, मारकर गिराना या लिटा देना, बिखेरना, सखने के लिए अन्न आदि को भूमि पर कुछ दूर तक फैला देना।
बिछावन–(हिं.पुं.), **बिछायत**–(हिं स्त्री.) बिछौना।
बिछिया–(हिं. स्त्री.) पैर की अँगुलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

विछिप्त–(हिं. वि.) देखें 'विक्षिप्त'।
विछुआ (वा)–(हिं. पुं.) पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना, एक प्रकार की छोटी छुरी, अगिया नामक घास।
विछुड़न–(हिं. स्त्री.) विछुड़ने या अलग होने का भाव, वियोग।
विछुड़ना–(हिं. क्रि. अ.) साथ रहनेवाले दो व्यक्तियों का अलग होना, प्रेमियों का परस्पर वियोग होना।
विछुरंता–(हिं. पुं.) विछुड़नेवाला।
विछुरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'विछुड़ना'।
विछुवा–(हिं. पुं.) देखें 'विछिया'।
विछोई (ही)–(हिं. पुं.) वियोगी।
विछोड़ा–(हि. पुं.) विछोह, विछुड़ने की क्रिया या भाव।
विछोय, विछोह–(हिं.पुं.) वियोग, विरह।
विछोय(ह)ना–(हि.क्रि.अ.) वियोग होना।
विछौना–(हि. पुं.) विछाने का वस्त्र, विछावन, विस्तर।
विजड़–(हिं. स्त्री.) खड्ग, तलवार।
विजन, विजना–(हि. पुं.) व्यजन, पंखा; (वि.) एकान्त, जिसके साथ दूसरा कोई न हो।
विजयघंट–(हिं. पुं.) मन्दिरों में लटकाया जानेवाला वड़ा घंटा।
विजयसार–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वहुत वड़ा जंगली वृक्ष, (इसकी लकड़ी वहुत पुष्ट होती है।)
विजली–(हिं. स्त्री.) रासायनिक क्रियाओं से उत्पन्न वह शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्पण तथा अपकर्षण होता और जिससे ताप एवं प्रकाश भी उत्पन्न होता है, विद्युत्, वादलों के टकराने से होनेवाला वह प्रकाश जो आकाश में वर्षा-काल में दिखाई पड़ता है, आम की गुठली के भीतर की गरी, कान में पहनने का एक गहना, गले में पहनने का एक आभूपण; (वि.) अधिक तीव्र या चंचल, चमकीला; (मुहा.)–कड़कना–आकाश में गड़गड़ाहट और तीव्र चमक होना; **–गिरना या मारना**–आकाश से विद्युत् का वेग के साथ भूमि पर आना।
विजहन–(हिं. वि.) (वह वीज) जिसकी जामनेकी शक्ति नष्ट हो गई हो, हतवीर्य।
विजाती–(हिं. वि.) दूसरी जाति का, जाति से निकाला हुआ, वहिष्कृत।
विजान–(हिं. वि.) अज्ञान, अनजान।
विजायठ–(हि. पुं.) वांह पर पहनने का एक आभूषण, वाजूवंद।
विजुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'विजली'।
विजूका, विजूखा–(हिं. पुं.) विभीपिका, पशु-पक्षियों को डराने के लिए खेत में खड़ा किया हुआ पुतला।
विजैसार–(हिं. पुं.) देखें 'विजयसार'।
विजोग–(हि. पुं.) देखें 'वियोग'।
विजोरा–(हिं. वि.) निर्वल, वलहीन, अशक्त।
विजोहा–(हिं. पुं.) एक छन्द का नाम।
विजौरा–(हिं. पुं.) नींवू की जाति का एक वृक्ष जिसके फल नारंगी के वरावर होते हैं।
विजौरी–(हिं. स्त्री.) कुम्हड़ौरी।
विज्जु–(हिं. स्त्री.) विजली, विद्युत्।
विज्जुपात–(हिं.पुं.) विजली का गिरना।
विज्जुल–(हिं. स्त्री.) विजली; (पुं.) त्वचा, छिलका।
विज्जू–(हिं. पुं.) विल्ली की तरह का एक जंगली पशु।
विज्जूहा–(हिं. पुं.) एक वर्णिकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं।
विझरा–(हिं. पुं.) एक में मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जव।
विझुकना–(हिं. क्रि. स.) भयभीत होना।
विझुकाना–(हिं. क्रि. स.) भड़काना, डराना, टेढ़ा करना।
विट–(हिं.पुं.) देखें 'विट्', नायक का वह साथी जो सव कलाओं में निपुण हो, पक्षियों की विष्ठा, वीट।
विटप–(हिं. पुं.) देखें 'विटप'।
विटपी–(हिं. पुं.) वृक्ष।
विटरना–(हिं. क्रि. अ.) घँघोलना, घँघोलकर मैला करना, मलिन होना, घँघोला जाना।
विटिनियाँ, विटिया–(हिं.स्त्री.) वेटी, पुत्री।
विट्ठल–(हिं. पुं.) विष्णु का एक नाम, वंवई प्रांत में शोलापुर के अन्तर्गत पंढरपुर नगर की एक प्रसिद्ध देवमूर्ति जो वुद्ध की मूर्ति-सी जान पड़ती है।
विठलाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'वैठाना'।
विठाना–(हिं. क्रि. स.) वैठाना।
विडंव–(हिं. पुं.) आडंवर।
विड़ंवना–(हिं. स्त्री.) देखें 'विड़ंवना'।
विड़–(हिंपुं.) विष्ठा, एक प्रकार का नमक।
विड़र–(हिं. वि.) छितराया हुआ, दूर-दूर, निर्भय, जिसको डर न लगता हो, धृष्ट, ढीठ।
विड़रना–(हिं. क्रि. अ.) अस्त-व्यस्त होना, तितर-वितर होना, पशुओं का भयभीत होना, विचकना।
विड़राना–(हिं. क्रि. स.) तितर-वितर करना, भगाना।
विड़ारना–(हि. क्रि. स.) डराकर भगाना, नष्ट करना।
विडाल–(सं. पुं.) विलाव, विल्ला, विडालाक्ष नामक दैत्य जिसको दुर्गा ने मारा था, दोहे का एक भेद; **–पद**–(पुं.) एक तौल जो एक कर्ष के वरावर होती है; **–व्रतिक**–(वि.) लोभी, कपटी स्वभाव का।
विडालाक्ष–(सं. वि.) वह जिसकी आँख विल्ली की आँखों के सदृश हों।
विडौलिका–(सं.स्त्री.) विल्ली, हरताल।
विडाली–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का आँख का रोग।
विडौजा–(सं. पुं.) इन्द्र का एक नाम।
विढ़तो–(हि. पुं.) लाभ।
विढ़वना–(हिं. क्रि. स.) एकत्रित करना, संचित करना, इकट्ठा करना।
विढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'विढ़वना'।
वित–(हि. पुं.) देखें 'वित्त', धन, द्रव्य, शक्ति, सामर्थ्य, आकार।
वितताना–(हिं. क्रि. अ., स.) व्याकुल होना, घवड़ाना, कष्ट देना।
वितना–(हिं.पुं.) विता, ऐंठन चढ़ाते समय रस्सेमें लगानेका लकड़ीका छोटा टुकड़ा।
वितरना–(हिं. क्रि. स.) वाँटना।
वितवना–(हिं. क्रि. स.) विताना।
विता–(हिं. पुं.) देखें 'वित्ता'।
विताना–(हिं. क्रि. स.) समय आदि व्यतीत करना।
विताल–(हिं. पुं.) देखें 'वैताल'।
वितावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'विताना'।
वितीतना–(हिं. क्रि. अ.) व्यतीत होना।
वितु–(हिं. पुं.) देख 'वित्त'।
वित्त–(हिं. पुं.) देखें 'वित्त', धन।
वित्ता–(हिं. पुं.) फैलाकर अँगूठे के सिरे से कानी उँगली के छोर तक की नाप।
वियकना–(हिं. क्रि. अ.) चकित होना, थकना।
वियरना–(हिं.क्रि.अ.) इधर-उधर होना, छितराना, खिल जाना।
विया–(हिं. स्त्री.) देखें 'व्यथा', पीड़ा।
वियारना–(हिं. क्रि. स.) छिटकाना, विखेरना।
वियित–(हिं. वि.) देखें 'व्यथित'।
वियोरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'वियरना'।
विदकना–(हिं. क्रि. अ.) फटना, चिरना, घायल होना, भड़कना।
विदकाना–(हिं. क्रि. स.) विदीर्ण करना,

फाड़ना, घायल करना।
बिदर–(हिं. पुं.) विदर्भ देश (आधुनिक नाम वरार), जस्ते और ताँवे के मेल से बनी हुई एक उपधातु; –**साज**–(पुं.) विदर धातु के पात्र आदि बनानेवाला।
बिदरन–(हिं. स्त्री.) दरार, फटना; (वि.) फाड़ने या चीरनेवाला।
बिदरना–(हिं. क्रि. अ.) फटना।
बिदरी–(हिं. स्त्री.) विदर धातु का बना हुआ वरतन आदि।
बिदल–(सं. पुं.) दाल, अनारदाना, बाँस का बना हुआ पात्र, लाल सोना, पीठी।
बिदलना–(हिं. क्रि. अ.) दलित करना।
बिदला–(सं. स्त्री.) निसोथ; (वि.) जिसमें पत्ते न हों।
बिदा–(हिं. स्त्री.) प्रस्थान, जाने की आज्ञा, द्विरागमन, गवन, गौना।
बिदाई–(हिं. स्त्री.) विदा होने का भाव या क्रिया, विदा होने की आज्ञा, किसी के विदा होने के समय दिया जानेवाला धन।
बिदारना–(हिं. क्रि. स.) चीरना, फाड़ना, नष्ट करना, विगाड़ना।
बिदारी-कंद–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लाल कन्द जो प्रायः वेल की जड़ में होता है, विदारी-कंद।
बिदुराना–(हिं. क्रि. स.) मुखाकृतियाँ बनाना, धीरे-धीरे हँसना, मुस्कराना।
बिदुरानी–(हिं. स्त्री.) मुस्कराहट।
बिदूषना–(हिं. क्रि. स.) कलंक या दोष लगाना।
बिदेस–(हिं. पुं.) विदेश, अपने देश के अतिरिक्त अन्य देश, परदेश।
बिदोख–(हिं. पुं.) वैमनस्य, वैर, शत्रुता।
बिदोरना–(हिं. क्रि. स.) ओठ चलाना।
बिधँसना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना।
बिध–(हिं. पुं.) हाथी का चारा, ब्रह्मा, (स्त्री.) प्रकार, तरह, आय-व्यय आदि का लेखा; (मुहा.) –**मिलाना**–आय-व्यय की रकमों को देखना कि ठीक लिखी गई हैं या नहीं।
बिधना–(हिं. पुं.) विधि, विधाता, ब्रह्मा।
बिधबंदी–(हिं. स्त्री.) भूमिकर की वह रीति जिसमें उपज की कूत पर रकम दी जाती है।
बिधवपन–(हिं. पुं.) वैधव्य, रँड़ापा।
बिधवा–(हिं. स्त्री.) देखें 'विधवा'।
बिधवाना–(हिं. क्रि. स.) छेद कराना।
बिधाँसना–(हिं. क्रि. स.) विध्वंस करना, नष्ट करना।
बिधाई–(हिं. पुं.) विधायक, विधान करनेवाला।
बिधाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बिंधाना'।
बिधानी–(हिं. पुं.) रचने या बनानेवाला।
बिधिना–(हिं. पुं.) देखें 'बिधना'।
बिधुंतुद–(हिं. पुं.) राहु।
बिधुंसना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना।
बिधु–(सं. पुं.) देखें 'विधु'।
बिन–(हिं. अव्य.) बिना।
बिनई–(हिं. वि.) देखें 'विनयी'।
बिनउ–(हिं. स्त्री.) देखें 'विनय'।
बिनता–(हिं.पुं.) देखें 'विनता'।
बिनति, बिनती–(हिं. स्त्री.) निवेदन, प्रार्थना।
बिनन–(हिं. स्त्री.) बुनने की क्रिया, बुनावट, अन्न आदि में से चुनकर निकाला हुआ कूड़ा-करकट।
बिनना–(हिं. क्रि. स.) छोटे-छोटे पदार्थों को एक-एक करके अलग करना, चुनना, इच्छानुसार संग्रह करना, छाँटकर अलगाना, देखें 'बुनना'।
बिनय–(हिं. स्त्री.) देखें 'विनय'।
बिनयना–(हिं. क्रि. स.) प्रार्थना करना, विनय करना।
बिनवाना–(हिं.क्रि.स.) चुनवाना, बुनवाना।
बिनसना–(हिं. क्रि. अ., स.) नष्ट होना या करना।
बिनसाना–(हिं. क्रि. अ., स.) नष्ट करना, विगाड़ना, नष्ट होना।
बिना–(हिं. अव्य.) छोड़कर, बगैर।
बिनाई–(हिं. स्त्री.) विनने (चुनने) की क्रिया या भाव, इस कार्य का शुल्क।
बिनाती–(हिं. स्त्री.) देखें 'विनती'।
बिनाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बुनाना'।
बिनानी–(हिं. वि.) अज्ञानी; (स्त्री.) विशेष विचार।
बिनावट–(हिं. स्त्री.) देखें 'बुनावट'।
बिनासना–(हिं. क्रि. स.) संहार करना, नष्ट करना।
बिनि, बिनु–(हिं. अव्य.) बिना।
बिनै–(हिं. स्त्री.) देखें 'विनय'।
बिनौका–(हिं. पुं.) नये धान्य का पकवान जो देवता के निमित्त अर्पण किया जाता है।
बिनौरिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास जो चारे के काम में आती है।
बिनौला–(हिं. पुं.) कपास का वीज।
बिपच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'विपक्ष', शत्रु; (वि.) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध।
बिपच्छी–(हिं. पुं.) विपक्षी, शत्रु, विरोधी।
बिपत–(हिं. स्त्री.) देखें 'विपत्ति'।
बिपरीत–(हिं. वि.) विपरीत, प्रतिकूल।
बिफरना–(हिं. क्रि. अ.) विद्रोही होना।
बिबछना–(हिं. क्रि. अ.) विरोधी होना, उलझना।
बिबरन–(हिं. वि.) जिसका रंग विगड़ गया हो; (पुं.) देखें 'विवरण'।
बिबस–(हिं. वि.) विवश, पराधीन, परतन्त्र; (अव्य.) विवश होकर।
बिबहार–(हिं. पुं.) देखें 'व्यवहार'।
बिबाई–(हिं. स्त्री.) बिवाई, पैर के तलवे के फटने का रोग।
बिबाक–(हिं. वि.) वेबाक चुकता।
बिबादना–(हिं. क्रि. अ.) विवाद करना।
बिबाहना–(हिं. क्रि. स.) विवाह करना।
बिभाना–(हिं. क्रि. अ.) चमकना।
बिभावरी–(हिं. स्त्री.) विभावरी, रात्रि।
बिभित्सा–(हिं.स्त्री.) फूट डालने की इच्छा।
बिमन–(हिं. वि.) अति दुःखी, चिन्तित, उदास; (अव्य.) विना चित्त लगाये, अनमना होकर।
बिमानी–(हिं. वि.) मानरहित।
बिमोहना–(हिं. क्रि. अ.,स.) मोहित होना या करना, लुभाना, ललचाना।
बिमौरा–(हिं. पुं.) वल्मीक, बाँबी।
बिय–(हिं. वि.) युग्म, दो, दूसरा।
बियत–(हिं. पुं.) वियत्, आकाश।
बियसार–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा पहाड़ी वृक्ष।
बिया–(हिं.पुं.) वीज, (वि.) अन्य, दूसरा।
बियाज–(हिं.पुं.) देखें 'व्याज'।
बियाड़–(हिं.पुं.) वह खेत जिसमें पहले वीज बोये जाते हैं और बाद में वेहन उखाड़कर दूसरे खेत में रोपे जाते हैं।
बियाधा–(हिं. पुं.) देखें 'व्याधा'।
बियाधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'व्याधि'।
बियान–(हिं. पुं.) प्रसव, पशुओं का बच्चा देना।
बियाना–(हिं. क्रि. अ., स.) पशुओं का बच्चा देना।
बियापना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'व्यापना'।
बियारी, बियालू–(हिं.स्त्री.) देखें 'व्यालू'।
बियाह–(हिं. पुं.) विवाह, व्याह।
बियाहता–(हिं. स्त्री.) (वह स्त्री) जिसके साथ विवाह हुआ हो।
बियो–(हिं. पुं.) पौत्र, पोता।
बियोग–(हिं. पुं.) देखें 'वियोग'।
बिरंग–(हिं. वि.) कई रंगों का, जिसमें एक से अधिक रंग हों, विना रंग का।
बिरंचना–(हिं. क्रि. स.) बनाना।
बिरंचि–(हिं. पुं.) ब्रह्मा।
बिरई–(हिं.स्त्री.) छोटा बिरवा, जड़ी-बूटी।

विरझना–(हिं. क्रि. अ.)झगड़ा करना।
विरताना–(हिं. क्रि. स.) बाँटना।
विरथा–(हिं. वि.)वृथा, व्यर्थ, निरर्थक।
विरद–(हि.पुं.)बड़ाई,यश, देखें 'विरद'।
विरदैत–(हि.पुं.)बड़ा या प्रसिद्ध वीर या योद्धा; (वि.) प्रसिद्ध, नामी।
विरध–(हिं. वि.) देखें 'वृद्ध'।
विरधाई–(हिं. स्त्री.)वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
विरधापन–(हिं. पुं.) वृद्ध होने का भाव, बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
विरमना–(हिं. क्रि. अ.) विराम करना, सुस्ताना, ठहरना, मोहित होना।
विरमाना–(हि. क्रि. स.) व्यतीत करना, बिताना, ठहराना, रोक रखना, मुग्ध या मोहित करना।
विरला–(हिं. वि.) कोई-कोई, इक्का-दुक्का।
विरवा–(हिं. पुं.) वृक्ष, पौधा।
विरवाई(ही)–(हिं. स्त्री.) छोटे-छोटे पौधों का कुंज।
विरषभ–(हि. पुं.) देखें 'वृषभ'।
विरसन–(हि. पुं.) विष, गरल।
विरहिनी–(हिं. पुं.) विरहिणी, वह नायिका जो अपने प्रियतम के विरह से दुःखित हो।
विरहा–(हि.पुं.)एक प्रकार का लोक-गीत।
विरही–(हि.पुं.) विरही।
विराग–(हिं. पुं.) विराग, विरक्ति।
विराजना–(हि. क्रि. अ.) शोभित होना, शोभा देना, बैठना।
विरादर–(फा. पुं.) भाई-बंधु।
विरादराना–(फा. वि.) भाई का-सा, भ्रातृवत्।
विरादरी–(फा. स्त्री.)जाति, कुल, गोत्र, भाई-चारा।
विरान, विराना–(हिं. वि.) दूसरा।
विराना–(हि. क्रि. स.) मुँह चिढ़ाना।
विरियाँ–(सं. स्त्री.) समय, बार।
विरिया–(हिं. स्त्री.) कान में पहनने का कटोरी के आकार का एक गहना।
बिरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बीड़ी'।
बिरुआ–(हि.पुं.)एक प्रकार का राजहंस।
विरुझना–(हि.क्रि.अ.)उलझना, झगड़ना।
विरोजा–(हिं. पुं.) देखें 'गंधा-विरोजा'।
विरुद–(हिं. पुं.) प्रशंसा।
विरुधाई–(हिं. स्त्री.) बुढ़ापा।
विरूप–(हिं. वि.) कुरूप।
विरोधना–(हिं. क्रि. अ.) विरोध करना, वैर करना।
विलंद–(हिं. वि.) ऊँचा।
विलंब–(हिं. वि.) विलंब, लटकने वाला; (पुं.) देर, सुस्ती।
विलंबना–(हिं. क्रि. अ.) विलंब करना, देर करना, रुकना, ठहरना।
विल–(सं. पुं.) छेद, गुहा, कन्दरा, जंगली पशुओं के रहने का स्थान जिसको वे खोदकर बनाते हैं, इंद्र का घोड़ा।
विलखना–(हिं. क्रि. अ.) विलाप करना, रोना, दुःखी होना।
विलखाना–(हिं. क्रि. स.) रुलाना, दुःखी करना।
विलग–(हिं. वि.) पृथक्, अलग; (पुं.) अलग होने का भाव, द्वेष रंज।
बिलगाना–(हिं.क्रि. अ., स.) पृथक् होना, अलग करना, अलगाना, चुनना, छाँटना।
बिलगी–(हिं.पुं.)एक प्रकार का संकर राग।
बिलच्छन–(हिं. वि.) देखें 'विलक्षण'।
बिलछना–(हिं. क्रि. अ.) लखना।
विलनी–(हिं. स्त्री.) काली भौंरी जो भीत या किवाड़ों पर अपने रहने के लिये मिट्टी की बाँबी बनाती है, आँख की पलक पर होनेवाली फुंसी।
विलपना–(हिं. क्रि. अ.) विलाप करना, रोना।
विलविलाना–(हिं. क्रि. अ.) छोटे-छोटे कीड़ों का इधर-उधर रगना, असंबद्ध प्रलाप करना, व्याकुल होकर बकना, भूख से व्यग्र होना, कष्ट के कारण व्याकुल होकर रोना, चिल्लाना।
विलमना–(हिं. क्रि. अ.) विलम्ब करना, देर करना, ठहरना, रुकना।
विलमाना–(हिं. क्रि. स.) अटकाना, रोक रखना, देर करना।
विललाना–(हिं. क्रि. अ.) विलाप करना, विलखकर रोना, व्याकुल होकर बड़बड़ाना।
विलवाना–(हिं. क्रि. स.) खोना, गँवाना, नष्ट करना, दूसरे से किसी वस्तु को नष्ट कराना, छिपाना, छिपवाना।
विलवास–(सं. पुं.) विल में रहनेवाला जन्तु।
विलवासी–(सं.वि.) विल में रहनेवाला।
विलसना–(हि क्रि. अ.,स.) भोग करना, अच्छा जान पड़ना, शोभा देना।
विलसाना–(हिं. क्रि. स.) भोग करना, काम में लाना, दूसरे से भोग कराना।
विलस्त–(हिं. पुं.) वित्ता।
विलहरा–(हिं. पुं.) बाँस की तीलियों का बना हुआ एक प्रकार का चिपटा डब्बा।
विला–(अ. अव्य.) बिना, बगैर।
विलाई–(हिं. स्त्री.) बिल्ली, लोहे या लकड़ी की सिटकिनी जो किवाड़ों को बंद करने के लिये लगाई जाती है, अँकुसी या काँटा जिससे कुएँ में गिरे हुए पात्र आदि निकाले जाते हैं।
बिलाईकंद–(हिं. पुं.) देखें 'विदारी-कंद'।
बिलाना–(हिं. क्रि. अ.) नष्ट होना, विलीन होना, अदृश्य होना, छिप जाना।
बिलापना–(हिं. क्रि.अ.) विलाप करना।
बिलार–(हिं. पुं.) मार्जार, बिल्ली।
बिलारी–(हिं. स्त्री.) बिल्ली।
बिलारीकंद–(हिं. पुं.) देखें 'विदारीकंद'।
बिलाव–(हिं. पुं.) देखें 'बिलार'।
बिलावर–(हिं. पुं.) देखें 'बिल्लौर'।
बिलावल–(सं. पुं.) एक राग का नाम।
बिलास–(हिं. पुं.) विलास।
बिलासना–(हिं. क्रि. अ.) भोगना, भोग करना।
बिलिया–(हिं. स्त्री.) कटोरी, गाय-बैल आदि के गले का एक रोग।
बिलूर–(हिं. पुं.) देखें 'बिल्लौर'।
बिलेशय–(सं. पुं.)सर्प, चूहा, नेवला, खरहा।
बिलैया–(हिं. स्त्री.) बिल्ली, कद्दू, मूली आदि के लच्छे काटने का एक यन्त्र, कद्दूकश, सिटकिनी,।
बिलोकना–(हिं.क्रि.स.)अवलोकन करना, देखना।
बिलोकनि–(हिं. स्त्री.) देखने की क्रिया, दृष्टिपात, कटाक्ष।
बिलोड़ना–(हिं. क्रि. स.) अस्त-व्यस्त करना, दही आदि मथना।
बिलोन–(हिं. वि.) बिना नमक का, कुरूप, भद्दा।
बिलोना–(हिं. क्रि. स.) मथना, खूब हिलाना,ढालना,गिराना; (वि.)बिलोन।
बिलोरना–(हिं. क्रि. स.)देखें 'बिलोड़ना'।
बिलोलना–(हिं. क्रि. अ.)हिलना-डोलना।
बिलोवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बिलोना'।
बिलौर–(हि. पुं.) देखें 'बिल्लौर'।
बिल्कुल–(हिं. अव्य.) देखें 'बिलकुल'।
बिल्ल–(सं. पुं.) आलवाल, थाला।
बिल्लमूला–(सं. स्त्री.) वाराहीकन्द।
बिल्ला–(हिं. पुं.) मार्जार, नर बिल्ली, संस्था विशेष की सदस्यता सूचक पट्टी जो बाँह पर या गले में पहनी जाती है।
बिल्ली–(हिं. स्त्री.) एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु, किवाड़ आदि में लगाने की सिटकिनी, बिलैया।
बिल्लूर, बिल्लौर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का स्वच्छ पारदर्शक पत्थर, स्फटिक,

स्वच्छ शीशा।
विल्लौरी–(हि. वि.) विल्लौर का बना हुआ, विल्लौर पत्थर का, विल्लौर के समान स्वच्छ।
विल्व–(सं. पुं.) बेल का वृक्ष; –पत्र–(पुं.) बेल की पत्ती;–वन–(पुं.) बेल का जंगल।
विवरना–(हि. क्रि. अ.) सुलझना।
विवराना–(हि. क्रि. स.) सिर के बालों को सुलझवाना या सुलझाना।
विवाई–(हि. स्त्री.) पाँव के तलवे का फटना।
विषया–(हि. स्त्री.) विषय-वासना।
विषान–(हि. पुं.) देखें 'विषाण'।
विसंच–(हि. पुं.) संचय न होना, कार्य की हानि, बाधा, भय, डर।
विसंभर–(हि. पुं.) देखें 'विश्वंभर'।
विसँभार–(हि. वि.) असावधान, वेसुध।
विस–(हि. पुं.) देखें 'विष'।
विसखापर, विसखपरा–(हि. पुं.) गोह की जाति का एक विषैला जन्तु, पुनर्नवा, एक प्रकार की जंगली बूटी।
विसज–(सं. पुं.) पद्म, कमल।
विसतरना–(हि. क्रि. अ., स.) विस्तार करना, बढ़ाना, फैलाना, फैलना।
विसद–(हि. वि.) देखें 'विशद'।
विसन–(हि. पुं.) देख 'व्यसन'।
विसनी–(हि. वि.) जिसको किसी बात का व्यसन हो, जिसको सामान्य पदार्थ अच्छे न लगें, छैल-चिकनियाँ।
विसमय–(हि. पुं.) देखें 'विस्मय'।
विसमरना–(हि. क्रि. स.) विस्मरण होना, भूल जाना।
विसयक–(हि. पुं.) देश, राष्ट्र।
विसरना–(हि. क्रि. स.) विस्मृत होना, भूल जाना।
विसरात–(हि. पुं.) खच्चर।
विसराना–(हि.क्रि.स.) ध्यान से भुला देना।
विसराम–(हि. पुं.) देखें 'विश्राम'।
विसरावना–(हि.क्रि.स.) देखें 'विसराना'।
विसल–(सं. पुं.) अंकुर, कोंपल।
विसवार–(हि. पुं.) हज्जाम की छुरा, चमोटा आदि रखने की पटी।
विसवास–(हि. पुं.) देखें 'विश्वास'।
विससना–(हि. क्रि. स.) वध करना, शरीर काटना, चीरना-फाड़ना, विश्वास करना।
विसहना–(हि. क्रि. स.) मोल लेना।
विसहरा–(हि. पुं.) सर्प, साँप।
विसहरू–(हि. पुं.) मोल लेनेवाला।
विसहिनी–(हि.स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
विसाख–(हि. स्त्री.) देख 'विशाखा'।
विसात–(अ.स्त्री.) फैलाव, चौसर आदि खेलने का कपड़ा, समाई, समता, सूई, तागा आदि सामग्रियाँ;–खाना–(पुं.) विसाती की दुकान; –वाना–(पुं.) विसात की सामग्रियाँ।
विसाती–(हि.पुं.) विसात की चीजें वेचनेवाला
विसाना–(हि. क्रि. अ.) वश चलना, वश में होना, विष का प्रभाव होना।
विसायँध–(हि. वि.) सड़ी मछली की गन्धवाला; (स्त्री.) सड़ी मछली के समान गन्ध।
विसारद–(हि. पुं.) देखें 'विशारद'।
विसारना–(हि. क्रि. स.) ध्यान में न रखना, भुलाना।
विसारा–(हि.वि.) विषाक्त, विष भरा हुआ।
विसास–(हि. पुं.) विश्वास।
विसासिन, विसासिनि–(हि. वि., स्त्री.) (स्त्री) जिस पर विश्वास न किया जा सके, विश्वासघातिनी।
विसासी–(हि. वि.) छली, कपटी, जिस पर विश्वास न किया जा सके।
विसाह–(हि. पुं.) क्रय।
विसाहना–(हि. क्रि. स.) मोल लेना, अपने हाथ में करना; (पुं.) मोल ली हुई वस्तु, मोल लेने की क्रिया।
विसाहनी–(हि. स्त्री.) वस्तु जो मोल ली जाय, सौदा।
विसाहा–(हि.पुं.) मोल ली हुई वस्तु, सौदा।
विसिख–(हि. पुं.) देख 'विशिख'।
विसियर–(हि. वि.) विषैला।
विसुनना–(हि.क्रि.अ.) खाते समय किसी वस्तु का नाक की ओर चढ़ जाना।
विसु(सू)रना–(हि.क्रि.अ.) चिन्ता करना, सोच करना; (स्त्री.) चिन्ता।
विसेख–(हि.वि.) देखें 'विशेष'।
विसेखना–(हि.क्रि.अ.) ब्योरेवार वर्णन करना, निश्चित करना, विशेष रूप से होना।
विसेन–(हि.पुं.) क्षत्रियों की एक शाखा।
विसेसर–(सं. पुं.) देखें 'विश्वेश्वर'।
विस्तर–(हि.पुं.) विछौना, विस्तार, बढ़ाव।
विस्तरना–(हि. क्रि. स.) विस्तार-पूर्वक वर्णन करना या कहना, विस्तार होना, फैलना, बात को बढ़ाकर कहना।
विस्तारना–(हि. क्रि. स.) विस्तार करना, फैलाना।
विस्तुइया–(हि.स्त्री.) गृहगोधा, छिपकली।
विस्वा–(हि.पुं.) एक बीघे का बीसवाँ भाग।
विस्वादार–(हि. पुं.) पट्टीदार।
विस्वास–(हि. पुं.) देखें 'विश्वास'।
विहंग–(हि. पुं.) देखें 'विहंग', पक्षी।
विहंड़ना–(हि. क्रि. अ.) टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना, नष्ट करना, काटना, मार डालना।
विहँसना–(हि. क्रि. अ.) मुस्कराना, मन्द हास करना, प्रफुल्ल होना, फूल का खिलना।
विहँसाना–(हि. क्रि. स.) प्रफुल्ल करना, खिलाना।
विहग–(हि. पुं.) देखें 'विहंग', पक्षी।
विहतर–(हि. वि.) अधिक अच्छा।
विहतरी–(हि. स्त्री.) कुशल, भलाई।
विहद्द–(हि.वि.) वेहद, परिमाण से अधिक।
विहवल–(हि. वि.) विह्वल, व्याकुल।
विहरना–(हि. क्रि. अ.) भ्रमण करना, घूमना-फिरना, सैर करना, विदीर्ण होना, फूटना, फटना, टूटकर अलग होना।
विहराना–(हि. क्रि. अ.) फटना।
विहरी–(हि. स्त्री.) अंशदान, चंदा।
विहाग–(हि. पुं.) एक राग का नाम।
विहागड़ा–(हि. पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
विहान–(हि. पुं.) प्रातःकाल, सवेरा; (अव्य.) आनेवाला काल।
विहाना–(हि.क्रि.अ.,स.) त्यागना, छोड़ना, वीतना।
विहारना–(हि. क्रि. अ.) विहार करना, केलि या क्रीड़ा करना।
विहाल–(हि. वि.) व्याकुल।
विहि–(हि. स्त्री.) देखें 'विधि'।
विहीन, विहून–(हि. वि.) विहीन, रहित, विना।
विहोरना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'विछुड़ना'।
वींड, वींड़ा–(हि. पुं.) कच्चे कुएँ की भीत गिरने से रोकने के लिये लगाया हुआ टहनियों आदि का मेंड़रा, घास आदि की बनी हुई गेंडुरी, एक प्रकार का गोल आसन, पिंड, पिंडी, लकड़ी या बाँस का बँधा हुआ गट्ठर।
वींड़िया–(हि. पुं.) तीन बैलों की गाड़ी में सब से आगे जोता हुआ बैल।
वींड़ी–(हि. स्त्री.) सूत की वह लच्छी जो किसी वस्तु पर लपेटकर बनाई जाती है।
वींधना–(हि. क्रि. स.) बेधना, छेदना।
वीका–(हि. वि.) वक्र, टेढ़ा।
वीख–(हि. पुं.) पद, कदम, डग।
वीग–(हि. पुं.) भेड़िया।
वीगना–(हि.क्रि.स.) फेंकना, छितराना छींटना, गिराना।

वीगहाटी–(हिं. स्त्री.) वीघे के हिसाब से लगाया जानेवाला लगान।
वीघा–(हिं. पुं.) खेत का क्षेत्रफल या वर्गमान जो वीस विस्व का होता है।
वीच–(हिं. पुं.) किसी पदार्थ का मध्य भाग, अवकाश, अन्तर, अवसर, भेद; (अव्य.) वीच में; (मुहा.)–**खेत**–खुले मैदान, सब के सामने; –**पड़ना**–झगड़ा निवटाने के लिये मध्यस्थ वनना; –**वीच में**–(अव्य.) थोड़ी-थोड़ी देर बाद; –**में कूदना**–निरर्थक विघ्न डालना; –**में डालना**–उलट-फेर करना; –**में पड़ना**–विचवई या मध्यस्थ होना, (ईश्वर को; –**में रखकर कहना**–शपथ खाना।
वीचु–(हिं. पुं.) अन्तर, अवसर।
वीचोवीच–(हिं. अव्य.) विलकुल मध्य या वीच में।
वीछना–(हिं. क्रि. स.) चुनना, छाँटना।
वीछी, वीछ–(हिं.पुं.) देखें 'विच्छू', विछुआ।
वीज–(सं.पुं.) प्रधान कारण, शुक्र, वीया, वृक्ष, आदि के पौधे फल के दाने, वीजगणित, मूल प्रकृति, मल, जड़, देवताओं के मूल-मन्त्र; –**क**–(पुं.) वह सूची जिसमें माल का व्योरा, मूल्य आदि लिखा हो, वीज, गड़े हुए धन की सूची जो उसके साथ रहती है, असना का वृक्ष, विजौरा नीवू, कवीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक; –**कर्ता**–(पुं.) शिव, महादेव; –**क्रिया**–(स्त्री.) वीजगणित से सवाल लगाने की क्रिया; –**गणित**–(पुं.) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्या का द्योतक मानकर अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं; –**गुप्ति**–(स्त्री.) सेम, धान की भूसी; –**त्व**–(पुं.) वीज उपजने का भाव या धर्म; –**धान्य**–(पुं.) धान्यक, धनिया; –**पूर, –पूरक**–(पुं.) विजौरा नीवू; –**पेशिका**–(स्त्री.) अण्डकोप; –**वंद**–(पुं.) खरियारा का वीज; –**मंत्र**–(पुं.) भिन्न-भिन्न देवताओं के उद्देश्य से निर्दिष्ट मूल-मन्त्र; –**मातृका**–(स्त्री.) कमल-गट्टा; –**रत्न**–(पुं.) उड़द की दाल; –**ल**–(वि.) वीजयुक्त, जिसमें वीज हो; (हिं. स्त्री.) तलवार; –**वर**–(पुं.) एक प्रकार का उड़द; –**वाहन**–(पुं.) शिव, महादेव; –**वृक्ष**–(पुं.) असना का पेड़।
विजांकुर–(सं. पुं.) प्रथम अंकुर, अँखुआ।
वीजा–(हिं.वि.) दूसरा।
वीजाक्षर–(सं. पुं.) किसी वीज-मन्त्र का पहला अक्षर।
वीजाध्यक्ष–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
वीजित–(सं. वि.) बोया हुआ।
वीजी–(हिं.स्त्री.) गिरी, मींगी, गुठली।
वीजु–(हिं. स्त्री.) विजुली, विद्युत्; –**पात**–(पुं.) देखें 'वज्रपात'।
वीजुरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'विजली'।
वीज–(हिं. वि.) जो (वृक्ष) वीज से उत्पन्न हो।
वीझना–(हिं.क्रि.अ.) लिप्त होना, फँसना।
वीझा–(हिं. वि.) निर्जन, एकान्त।
वीट–(हिं.स्त्री.) पक्षियों की विष्ठा, मल, गू।
वीठल–(हिं. पुं.) देखें 'विट्ठल'।
वीड़–(हिं. स्त्री.) एक के ऊपर एक रखे हुए रुपयों की गड्डी।
वीड़ा–(हिं.पुं.) पानकी गिलौरी, खिल्ली; (मुहा.)–**उठाना**–किसी काम को करने के लिये उद्यत होना।
वीड़िया–(हिं. पुं.) वीड़ा उठानेवाला, अगुआ।
वीड़ी–(हिं. स्त्री.) वीड़ा, गड्डी, वीड़, मिस्सी जिसको स्त्रियाँ दाँतों पर मलती हैं, शहतूत के सूखे पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिसको जलाकर लोग सिगरेट की तरह पीते हैं, एक प्रकार की नाव।
वीतना–(हिं. क्रि. अ.) समय का व्यतीत होना, घटित होना, घटना, दूर होना, छूट जाना, पड़ना।
वीता–(हिं. पुं.) देखें 'वित्ता'।
वीथित–(हिं. वि.) व्यथित, दुःखित।
वीथी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वीथी'।
वीधना–(हिं. क्रि. अ.) फँसना, देखें 'वींधना'।
वीन–(हिं. स्त्री.) वीणा, सितार की तरह का एक वाजा जिसके दोनों ओर वड़-वड़े तुंवे लगे रहते हैं।
वीनना–(हिं.क्रि.स.) अन्न आदि से छोटी-छोटी, कंकड़ियों को एक-एक करके निकालना, चुनना, छाँटकर अलगाना, वुनना।
वीफै–(हिं. पुं.) वृहस्पतिवार, गुरुवार।
वीवी–(हिं. स्त्री.) भले घर की स्त्री, कुलांगना, स्त्री, वेटी, छोटी ननद।
वीभत्स–(सं. पुं.) काव्य के नौ रसों में से एक रस जिसमें ऐसी वातों का वर्णन होता है जिससे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है; (वि.) क्रूर, पापी।
वीभत्सित–(सं. वि.) घृणित, निन्दित।
वीभत्सु–(सं. पुं.) अर्जुन का एक नाम।
वीमा–(फा. पुं.) मृत्यु, दुर्घटना आदि की हानि-पूर्ति के निमित्त विशिष्ट संस्था द्वारा नियत धन देने की जिम्मेदारी या वह धन पाने का अधिकार।
वीमार–(फा. वि.) रोगग्रस्त, रोगी।
वीमारी–(फा. स्त्री.) रोग, लत।
वीय–(हिं. वि.) देखें 'वीजा', दूसरा।
वीया–(हिं. वि.) द्वितीय, दूसरा; (पुं.) वीज, दाना।
वीर–(हिं. वि.) देखें 'वीर'; (पुं.) भ्राता, भाई; (स्त्री.) सखी, सहेली, कान में पहनने का एक आभूषण, पशुओं के चरने का स्थान, चरागाह।
वीरउ–(हिं. पुं.) देखें 'विरवा'।
वीरज–(हिं. पुं.) देखें 'वीर्य'।
वीरन–(हिं. पुं.) भ्राता, भाई।
वीरनि–(हिं. स्त्री.) कान में पहिनने का एक गहना।
वीरबहूटी–(हिं. स्त्री.) गहरे लाल रंग का एक छोटा कीड़ा जो वरसात के आरंभ में खेतों या मैदानों में रेंगता हुआ दिखाई पड़ता है, इन्द्रगोप।
वीरा–(हिं. पुं.) देखें 'वीड़ा', देवता का प्रसाद जो भक्तों को वाँटा जाता है।
वीरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का कान में पहनने का आभूषण या गहना, लोहे का छेदवाला टुकड़ा जिस पर रखकर लोहार किसी लोहे आदि में छेद करते हैं।
वीरौ–(हिं. पुं.) वृक्ष, पेड़।
वील–(हिं. वि.) पोला; (पुं.) वह नीची भूमि जिसमें पानी भरा रहता है, वल।
वीस–(हिं. वि.) दस की दूनी संख्या का; (पुं.) दस की दूनी संख्या, २०; –**वाँ**–(वि.) वीस के स्थान पर पड़नेवाला।
वीसना–(हिं.क्रि.स.) चौसर आदि खेलने के लिये विसात फैलाना।
वीसरना–(हिं. क्रि. स.) भूलना।
वीसी–(हिं. स्त्री.) वीस वस्तुओं का समूह, कोड़ी, ज्योतिष के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से एक विभाग, प्रति वीघे दो विस्वे की उपज जो भूस्वामी को दी जाती थी; (पुं.) तौलने का काँटा।
वीहड़–(हिं. वि.) विपम, ऊँचा-नीचा, जो समतल न हो, विकट, पृथक्।
वुंद–(हिं. स्त्री.) वूँद, ठोप, वीर्य; (पुं.) तीर; (वि.) थोड़ा-सा।
वुंदकी–(हिं.स्त्री.) गोल छोटी विंदी, छोटा गोल चिह्न या धव्वा; –**दार**–(वि.) जिस पर वुँदकियाँ वनी या पड़ी हों।
वुंदवान–(हिं.पुं.) छोटी-छोटी वूँदों की वर्षा

बुँदा–(हिं. पुं.) कान में पहिनने का एक गहना जो बुलाक के आकार का होता है, लोलक, माथ पर लगाने की वड़ी टिकली, बड़ी टिकली के आकार का गोदना।
बुँदिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'बूँदी'।
बुंदीदार–(हिं. वि.) जिसपर छोटी-छोटी विदियाँ बनी या लगी हों।
बुंदेलखंड–(हिं. पुं.) बुंदेलों का देश जिसमें उत्तर प्रदेश के कुछ पश्चिमी जिले और पंजाब का थोड़ा-सा पूरवी भाग है।
बुंदेलखंडी–(हिं. वि.) बुंदेलखंड का; (स्त्री.) बुंदेलों की भाषा।
बुंदेला–(हिं. पुं.) राजपूतों का एक भेद।
बुँदौरी–(हिं. स्त्री.) बुंदी या बुँदिया नाम की मिठाई।
बुआ–(हिं. स्त्री.) देखें 'बूआ'।
बुक–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा।
बुकचा–(हिं. पुं.) वह गठरी जिसमें कपड़े बँधे हों।
बुकची–(हिं. स्त्री.) छोटी गठरी, दर्जियों की वह थैली जिसमें वे सूई, डोरा आदि रखते हैं।
बुकनी–(हिं. स्त्री.) महीन पिसा हुआ चूर्ण, रंग का महीन चूर्ण जिसको पानी में घोलकर कपड़े आदि रँगते हैं।
बुकवा–(हिं. पुं.) उबटन।
बुकस–(हिं. पुं.) भंगी, मेहतर।
बुका–(हिं. पुं.) देखें 'बुक्का'।
बुकुना–(हिं. पुं.) बुकनी, पाचक चूर्ण।
बुक्क–(सं. पुं.) छाग, बकरा, हृदय।
बुक्कन–(सं. पुं.) कुत्ते का भूँकना।
बुक्कस–(सं. पुं.) चांडाल।
बुक्का–(हिं.पुं.) अभ्रक का चूर्ण।
बुक्कार–(सं. पुं.) सिंह का गरजना।
बुख़ार–(अ. पुं.) ज्वर।
बुग–(हिं. पुं.) मच्छड़।
बुगचा–(हिं. पुं.) देखें 'बुकचा'।
बुगदर–(हिं. पुं.) मच्छड़।
बुगिअल–(हिं. पुं.) पशुओं के चरने का स्थान, चरागाह।
बुजनी–(हिं. स्त्री.) कान में पहिनने का एक गहना।
बुज़ुर्ग–(फा.वि.,पुं.) बड़ा, वृद्ध, गुरुजन।
बुज़ुर्गी–(फा.स्त्री.) बड़प्पन, बड़ाई।
बुझना–(हिं. क्रि. अ.) (आग आदि का) जलना बंद होना, चित्त का उत्साह मन्द पड़ना, गरम वस्तु का पानी पड़कर ठंढा होना, प्यास मिटना, शांत होना, बुझाया जाना।
बुझाई–(हिं.स्त्री.) बुझाने की क्रिया या भाव।
बुझाना–(हिं. क्रि. स.) जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना, तपे हुए पदार्थ को पानी में डालकर ठंढा करना, सन्तोष देना, प्यास मिटाना, बूझने का काम दूसरे से कराना, विषैले पानी में छौंकना, चित्त के आवेग को शान्त करना, संतोष देना, समझाना, बोध कराना।
बुझारत–(हिं. स्त्री.) गाँव के भूस्वामी के वार्षिक आय-व्यय का लेखा।
बुट–(हिं. स्त्री.) देखें 'बूटी'।
बुटना–(हिं. क्रि. अ.) भागना।
बुड़की–(हिं. स्त्री.) डुबकी, गोता।
बुड़ना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'डूबना'।
बुड़बुड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) कुढ़कर अस्पष्ट रूप से बोलना, बड़बड़ करना।
बुड़ाना–(हिं.क्रि.स.) डुबाना, गोता देना।
बुड़ाव–(हिं. पुं.) देखें 'डुबाव'।
बुड्ढा–(हिं. वि.) (स्त्री. बुड्ढी) पचास-साठ वर्ष से अधिक अवस्था का, बूढ़ा, जिसका शरीर, बल आदि क्षीण हो गया हो।
बुढ़ना–(हिं. पुं.) पत्थरफूल, छड़ीला।
बुढ़वा–(हिं. वि.) (स्त्री.बुढ़िया) देखें 'बुड्ढा'।
बुढ़ाई–(हिं. स्त्री.) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
बुढ़ाना–(हिं. क्रि. अ.) वृद्धावस्था को प्राप्त होना, बुड्ढा होना।
बुढ़ापा–(हिं. पुं.) बुड्ढा होने की अवस्था, वृद्धावस्था।
बुढ़ौती–(हिं. स्त्री.) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
बुत–(फा. पुं.) मूर्ति, प्रतिमा; (वि.) जड़वत्।
बुतना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'बुझना'।
बुताना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'बुझाना'।
बुत्त–(हिं. वि.) देखें 'बुत'।
बुत्ता–(हिं. पुं.) बहाना, धोखा, पट्टी।
बुद्बुद–(सं. पुं.) बुलबुला, बुल्ला।
बुदबुदा–(हिं. पुं.) बुलबुला, बुल्ला।
बुद्ध–(सं. पुं.) भगवान् के नवें अवतार माने जानेवाले बौद्ध धर्म के प्रवर्तक शाक्य मुनि जो राजा शुद्धोदन के पुत्र थे; (वि.) जागरित, जागा हुआ, ज्ञानवान्, ज्ञानी, विद्वान्, पण्डित।
बुद्धत्व–(सं. पुं.) बुद्ध का भाव या धर्म।
बुद्धि–(सं. स्त्री.) मन की वह शक्ति जिसके अनुसार मनुष्य किसी वस्तु या विषय के संबंध में ठीक-ठीक विचार या निर्णय करता है, ज्ञान, एक प्रकार का छन्द जिसको लक्ष्मी भी कहते हैं, छप्पय का एक भेद, उपजाति वृत्त का एक भेद; **–कामा**–(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; **–चक्षु**–(पुं.) प्रज्ञाचक्षु, धृतराष्ट्र; **–जीवी**–(वि.) वह जो बुद्धि द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो; **–पर**–(वि.) बुद्धि से अतीत, जहाँ बुद्धि न पहुँच सके; **–पूर्ण**–(वि.) जो जान-बूझकर किया गया हो; **–मत्ता**–(स्त्री.) बुद्धिमान होने का भाव; **–मान्**–(वि.) (वह) जो बहुत समझदार हो; **–मानी**–(हिं. स्त्री.) देखें 'बुद्धिमत्ता'; **–वंत**–(हिं. वि.) बुद्धिमान्; **–शक्ति**–(स्त्री.) मेधा-शक्ति; **–शाली**, **–शील**–(वि.) बुद्धिमान्; **–शुद्ध**–(वि.) अच्छी बुद्धि वाला; **–सहाय**–(पुं.) मन्त्री, वजीर; **–हत**, **–हीन**–(वि.) निर्बुद्धि, जिसे बुद्धि न हो।
बुद्बुद–(सं. पुं.) बुलबुला, बुल्ला।
बुधंगड़–(हिं. पुं.) मूर्ख मनुष्य।
बुध–(सं. पुं.) विद्वान्, पण्डित, नवग्रह के अन्तर्गत चौथा ग्रह जो सूर्य से अति समीप है, सूर्यवंशीय एक राजा का नाम; **–जायी**–(पुं.) चन्द्रमा, बुध के पिता; **–तात**–(पुं.) चन्द्रमा; **–रत्न**–(पुं.) मरकत मणि; **–वान**–(हिं. वि.) बुद्धिमान्, पण्डित; **–वार**–(पुं.) बुधग्रह का दिन, सातवारों में से एक वार जो मंगलवार के बाद और गुरुवार के पहले होता है।
बुधा–(सं. स्त्री.) जटामासी।
बुधान–(सं. पुं.) गुरु, प्रियवादी, कवि।
बुधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'बुद्धि'।
बुधित–(सं. वि.) ज्ञात, जाना हुआ।
बुधिल–(सं. वि.) विद्वान्, पण्डित।
बुनना–(हिं. क्रि. स.) रूई, रेशम आदि के सूत से कपड़ा, मोजा, गुलूबंद आदि तैयार करना।
बुनाई–(हिं. स्त्री.) बुनने की क्रिया या भाव, बुनने का शुल्क।
बुनावट–(हिं. स्त्री.) बुनने में सूतों के विन्यास का ढंग, बुनाई।
बुनियाद–(फा. स्त्री.) जड़, मूल, नींव।
बुबुकना–(हिं. क्रि. अ.) तज या उच्च स्वर में रोना, पुक्का छोड़ना।
बुबुकारी–(हिं. स्त्री.) उच्च स्वर में रोना।
बुबुधान–(सं. पुं.) आचार्य, पण्डित।
बुभुक्षा–(सं. स्त्री.) क्षुधा, खाने की इच्छा।
बुभुक्षित–(सं. वि.) क्षुधित, भूखा।
बुभुक्षु–(सं. वि.) जिसको भोजन करने की इच्छा हो, क्षुधित।

बुभूपक–(सं.वि.) यश की इच्छा करनेवाला।
बुभूषा–(सं. स्त्री.) यश की इच्छा।
बुरकना–(हिं. क्रि. स.) चूर्ण अथवा पिसी हुई वस्तु को दूसरी वस्तु पर हाथ से धीरे-धीरे छिड़कना, भुरभुराना; (पुं.) लड़कों की दावात जिसमें वे खड़िया घोलकर पटरी पर लिखते हैं।
बुरकाना–(हिं. क्रि. स.) भुरभुराने या छिड़कने का काम दूसरे से कराना।
बुरा–(हिं. वि.) निकृष्ट, खराब, खोटा, अनैतिक; (मुहा.) **–मानना**–द्वेष रखना; **–भला-बुरा**–(पुं.) हानि-लाभ, गाली-गलौज; **–ई**–(स्त्री.) दुष्टता, नीचता, खोटापन, अवगुण, दोप, निन्दा, किसी के संबंध में कही हुई निंदा की बात; **–पन**–(पुं.) देखें 'बुराई'।
बुरुल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बहुत बड़ा वृक्ष।
बुलवाना–(हिं. क्रि. स.) बुलाने का काम दूसरे से करवाना।
बुलाक–(हिं.पुं.)एक लंबोतरा या सुराहीदार मोती जिसको स्त्रियाँ नथ में या दोनों नथनों के बीच के परदे में पहनती हैं।
बुलाकी–(हिं. पुं.) घोड़ की एक जाति।
बुलाना–(हिं. क्रि. स.) पुकारना, किसी को अपने पास आने के लिये कहना।
बुलावा–(हिं. पुं.) बुलाने की क्रिया या भाव, निमन्त्रण।
बुलाह–(हिं. पुं.) वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ पर के बाल पीले हों।
बुलौआ(वा)–(हिं. पुं.) देखें 'बुलावा'।
बुल्लन–(हिं. पुं.) मुख, चेहरा, बुल्ला।
बुल्ला–(हिं. पुं.) बुद्बुद, बुलबुला।
बुप, बुस–(सं. पुं.) अनाज के ऊपर का छिलका, भूसी।
बुहरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बहुरी'।
बुहारना–(हिं. क्रि. स.) झाड़ू देना, झाड़कर साफ करना।
बुहारी–(हिं. स्त्री.) झाड़ू, बढ़नी, सोहनी।
बूँद–(हिं. स्त्री.) जल आदि का थोड़ा अंश जो गिरते समय छोटी-सी गोली या दाने का रूप धारण करता है, एक प्रकार का रंगीन देशी कपड़ा, वीर्य, शुक्र; (मुहा.) **बूँदें गिरना**–अल्प वृष्टि होना, झींसी पड़ना।
बूँदा–(हिं. पुं.) बड़ी टिकली, सुराहीदार या लंबोतरा मोती जो स्त्रियाँ कान या नाक में पहनती हैं।
बूँदाबूँदी–(हिं.स्त्री.) अल्प वृष्टि, हलकी वर्षा।
बूँदी–(हिं. स्त्री.) वर्षा की बूँद, एक प्रकार की मिठाई, बुँदिया।
बूआ–(हिं. स्त्री.) पिता की बहिन, फूफी, बड़ी बहन।
बूई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिसको जलाकर सज्जीखार निकाला जाता है।
बूक–(हिं. पुं.) माजूफल की जाति का एक बड़ा वृक्ष, चंगुल, बकोटा।
बूकना–(हिं. क्रि. स.) किसी पदार्थ को पीसकर महीन चूर्ण करना, अपने को अधिक योग्य प्रमाणित करने के लिये बढ़कर बातें करना।
बूका–(हिं. पुं.) नदी के हटने से निकली हुई भूमि।
बूगा–(हिं. पुं.) भसा।
बूचड़–(हिं. पुं.) कसाई, मांस बेचनेवाला; **–खाना**–(पुं.) कसाईखाना।
बूचा–(हिं. वि.) जिसके कान कटे हों, कनकटा, वह जो किसी अंग के कट जाने के कारण भद्दा और कुरूप दिखाई पड़ता हो।
बूची–(हिं. पुं.) वह भेड़ जिसके कान बाहर न निकले हों।
बूजना–(हिं.क्रि.स.) धोखा देना, छिपाना।
बूझ, बूझन–(हिं. स्त्री.) बुद्धि, समझ, ज्ञान, पहेली।
बूझना–(हिं. क्रि. स.) जानना, समझना, प्रश्न करना, पूछना।
बूट–(हिं. पुं.) चने का हरा पौधा, चने का हरा दाना, होरहा, वृक्ष, पेड़; (अं. पुं.) फीतेदार अंग्रेजी जूता।
बूटना–(हिं. क्रि. अ.) भागना।
बूटनि–(हिं. स्त्री.) बीरबहूटी नाम का कीड़ा।
बूटा–(हिं. पुं.) छोटा वृक्ष, पौधा, (वृक्ष, फल, पत्ते आदि का) चित्र जो कपड़े, भीत आदि पर रंग-बिरंगे बनाय जाते हैं, बड़ी बूटी।
बूटी–(हिं. स्त्री.) वनस्पति, जड़ी, वनौषधि, भाँग, ताश पर बनी हुई टिक्की, फल-फूल के छोटे चित्र जो वस्त्रादि पर बनाये जाते हैं।
बूड़ना–(हिं. क्रि. अ.) डूबना, लीन होना।
बूड़ा–(हिं. पुं.) नदी की बाढ़ जो वर्षा के कारण आती है।
बूढ़, बूढ़ा–(हिं. वि.) देखें 'बुड्ढा'।
बूता–(हिं. पुं.) बल, पराक्रम, शक्ति।
बूना–(हिं. पुं.) चनार नामक वृक्ष।
बूरना–(हिं. क्रि. अ.) डूबना।
बूरा–(हिं. पुं.) भूरे रंग की कच्ची चीनी, शक्कर, महीन चूर्ण।
बूरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बहुत छोटी वनस्पति।
बृंद–(हिं. पुं.) देखें 'वृंद'।
बृच्छ–(हिं. पुं.) वृक्ष।
बृष–(सं. पुं.) देखें 'वृष'।
बृहच्चंचु–(सं. पुं.) लंबी चोंचवाला।
बृहज्जाल–(सं. पुं.) बड़ा जाल।
बृहतिका–(सं. स्त्री.) उत्तरीय वस्त्र, उपरना।
बृहती–(सं. स्त्री.) बनभंटा, उत्तरीय वस्त्र, उपरना, कण्टकारी, भटकटैया, वाक्य, एक वर्णवृत्त का नाम, विश्वावसु गन्धर्व की वीणा का नाम, वैद्यक के अनुसार एक मर्मस्थान जो पीठ के बीचोबीच रीढ़ के दोनों तरफ है; **–कल्प**–(पुं.) एक प्रकार का काया-कल्प; **–पति**–(पुं.) बृहस्पति।
बृहत्–(सं. वि.) विशाल, बहुत बड़ा, ऊँचा, दृढ़, पर्याप्त, बलिष्ठ; **–कंद**–(पुं.) गाजर; **–कीर्ति**–(पुं.) एक असुर का नाम; **–कुक्षि**–(वि.) बड़ी तोंदवाला; **–तृण**–(पुं.) बाँस; **–पाद**–(पुं.) बरगद का पेड़; **–पीलु**–(पुं.) जंगली अखरोट; **–पुष्प**–(पुं.) केले का पेड़; **–पुष्पी**–(स्त्री.) सनई का पौधा; **–फल**–(पुं.) कुम्हड़ा, कटहल; **–फला**–(स्त्री.) तितलौकी।
बृहदंग–(सं. पुं.) मतंगज, हाथी।
बृहदश्व–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
बृहदारण्य–(सं. पुं.) शतपथ ब्राह्मण की एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
बृहदेला–(सं. स्त्री.) बड़ी इलायची।
बृहद्दली–(सं. स्त्री.) लज्जावंती, लजालू।
बृहद्धन–(सं. पुं.) अपार धन, बड़ी धन-दौलत।
बृहद्धल–(सं. पुं.) बड़ा हल।
बृहद्बीज–(सं. पुं.) आम्रातक, आमड़ा।
बृहद्भानु–(सं. पु.) सत्यभामा के एक पुत्र का नाम, अग्नि, चित्रक वृक्ष।
बृहद्रथ–(सं. पुं.) इन्द्र, यज्ञ-पात्र, शतधन्वा के पुत्र का नाम, जरासन्ध के पिता का नाम, परीक्षित के पुत्र का नाम।
बृहद्वयस्–(सं. वि.) अधिक वयवाला।
बृहद्वर्ण–(सं. पुं.) सोनामाखी।
बृहद्वल्ली–(सं. स्त्री.) करेला।
बृहन्नल–(सं. पुं.) बड़ा नरकट, बाहु, बाँह, अर्जुन का एक नाम।
बृहन्नला–(सं. स्त्री.) अर्जुन का वह नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय

धारण किया था जब वह स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट् की कन्या को नाच-गाना सिखलाते थे।
वृहन्नारायण–(सं. पुं.) एक उपनिषद् का नाम।
वृहन्नेत्र–(सं. वि.) बड़ी-बड़ी आँखोंवाला, दूरदर्शी।
वृहस्पति–(सं. पुं.) अंगिरा के पुत्र और देवताओं के गुरु, सौर जगत् का एक ग्रह; –वार–(पुं.) गुरुवार, वीफै।
वेंग–(हिं. पुं.) भेक, मेढक।
वेंगा–(हिं. पुं.) वह बीज जो किसानों को बोने के लिये सवाई पर दिया जाता है।
वेंठ(ट)–(हिं. पुं.) मूठ।
वेंड़–(हिं. पुं.) वह भेड़ा जो छोड़ दिया जाता है; (स्त्री.) चाँड़, टेक।
वेंड़ना–(हिं.क्रि.स.) बन्द करना, घेरना।
वेंड़ा–(हिं. वि.) आड़ा, तिरछा, कठिन।
वेंड़ी–(हिं. स्त्री.) बाँस की बनी हुई एक प्रकार की टोकरी।
वेंत–(हिं. पुं.) एक लता जिसका डंठल लचीला और मजबूत होता है; (मुहा.) –की तरह काँपना–डर से थर-थर काँपना।
वेंदली–(हिं. स्त्री.) माथे पर लगाने की विंदी, टिकली।
वेंदा–(हिं. पुं.) माथे पर का तिलक, टीका, स्त्रियों का माथे पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण, टिकली के आकार का एक गहना।
वेंदी–(हिं. स्त्री.) टिकली, विंदी, वेंदा नामक आभूषण, शून्य, सुन्ना।
वे–(हिं. अव्य.) अरे, अबे; (फा.) विना, बगैर, सिवाय।
वेअंत–(हिं.वि.) जिसका अन्त न हो, वेहद।
वेअदव–(फा. वि.) बड़ों का अदव या सम्मान न करनेवाला।
वेअदवी–(फा.स्त्री.) वेअदव का-सा वरताव।
वेइज्जत–(फा. वि.) विना इज्जत या सम्मान का।
वेइज्जती–(फा.स्त्री.) अपमान, अप्रतिष्ठा।
वेइलि–(हिं. पुं.) देखें 'वेला'।
वेईमान–(फा.वि.) विना ईमानवाला, असद्।
वेईमानी–(फा. स्त्री.) वदनीयती।
वेकनाट–(सं. पुं.) सूदखोर।
वेकरा–(हिं. पुं.) चौपायों का एक रोग।
वेकल–(हिं. वि.) व्याकुल, व्यग्र।
वेकली–(हिं. स्त्री.) व्यग्रता, घवड़ाहट।
वेकहा–(हिं. वि.) जो किसी का कहना न मानता हो।
वेकाम, वेकार–(हिं.वि.) जो किसी काम का न हो, निकम्मा, निरर्थक, व्यर्थ।
वेकारी–(हिं. स्त्री.) वेकार होने की स्थिति, भाव आदि।
वेकुरा–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का बाजा।
वेखटक(के)–(हिं. अव्य.) विना किसी प्रकार के खटका या रुकावट के, विना संकोच या असमंजस के, विना आगा-पीछा सोचे हुए।
वेखुर–(हिं. पुं.) एक प्रकार की चिड़िया।
वेग–(हिं. पुं.) देखें 'वेग', (चमड़े, कपड़े आदि का वना हुआ थैला।)
वेगड़ी–(हिं. पुं.) नगीना वनानेवाला।
वेगना–(हिं. क्रि. अ.) शीघ्रता करना।
वेगम–(तु.स्त्री.) अमीर या सामंत घराने की महिला, रानी, पत्नी, रानी की शक्लवाला ताश का पत्ता।
वेगर–(हिं. पुं.) अचार में मिलाया हुआ मसाला।
वेगवती–(सं.स्त्री.) एक वर्ण-वृत्त का नाम।
वेगसर–(हिं. पुं.) खच्चर।
वेगि–(हिं.अव्य.) शीघ्रता से, तुरत।
वेगुनी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की सुराही।
वेचक–(हिं. पुं.) वेचनेवाला।
वेचना–(हिं. क्रि. स.) विक्रय करना, मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना।
वेचवाना, वेचाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'विकवाना'।
वेझड़ा–(हिं.पुं.) गेहूँ, जव, चना, मटर आदि में से दो, तीन या सब मिले हुए अन्न।
वेझना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'वेधना'।
वेझा–(हिं. पुं.) लक्ष्य।
वेटकी–(हिं. स्त्री.) वेटी, लड़की।
वेटला(वा)–(हिं. पुं.) वेटा, पुत्र।
वेटा–(हिं. पुं.) पुत्र, लड़का।
वेटी–(हिं. स्त्री.) पुत्री, लड़की।
वेटौना–(हिं. पुं.) वेटा।
वेठन–(हिं. पुं.) कपड़े का टुकड़ा जो किसी वस्तु को लपेटने के काम में आता है, वँधना।
वेठिकाना–(फा. वि.) जिसका पता-ठिकाना न हो, अज्ञात निवासवाला।
वेठिकाने–(हिं. वि., अव्य.) जो अपने उचित स्थान पर न हो, व्यर्थ, निरर्थक, विना सिर-पैर का, वेमौके।
वेड़–(हिं. पुं.) मेंड़, थाला, नगद, रुपया।
वेड़ना–(हिं. क्रि. स.) भीत आदि से घेरना, थाला वनाना।
वेड़ा–(हिं. पुं.) लट्ठे, बाँस आदि एक में बाँधकर वनाया हुआ ढाँचा जिस पर वैठकर नदी पार करते हैं, तिरना, नाव, वहुत-सी नावों या जहाजों का समूह; (मुहा.) –पार करना–संकट से छुड़ाना।
वेड़िन, वेड़िनी–(हिं. स्त्री.) नाचने-गानेवाली नट जाति की स्त्री।
वेड़ी–(हिं. स्त्री.) लोहे की कड़ी जो अपराधियों के पैर में पहनाई जाती है जिससे वे स्वतन्त्रतापूर्वक घूम-फिर न सकें, निगड़, बाँस की वनी हुई टोकरी जो पानी उलीचने के काम में लाई जाती है; छोटी नाव, छोटा वेड़ा।
वेडौल–(हिं. वि.) भद्दा, (अंग) जो उपयुक्त अनुपात में न हो, वेढंगा।
वेढंग, वेढंगा–(हिं. वि.) बुरे ढंग का, कुरूप, भद्दा; –पन–(पुं.) भद्दापन।
वेढ़–(हिं. पुं.) नाश, वोया हुआ बीज जिसमें अंकुर निकल आया हो।
वेढ़ई–(हिं. स्त्री.) पीठी आदि भरी हुई कचौड़ी।
वेढ़न–(हिं. पुं.) वेढ़ने के लिए वनाया हुआ घेरा।
वेढ़ना–(हिं. क्रि. स.) वृक्ष, खेत आदि की रक्षा के निमित्त टट्टी, बाड़ा आदि से घेरना, चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।
वेढव–(हिं. वि.) जिसका ढंग अच्छा न हो, जो देखने में ठीक न जान पड़े, भद्दा; (अव्य.) भद्दे ढंग से, बुरी तरह से।
वेढ़ा–(हिं. पुं.) घर के सामने तरकारी आदि बोने के लिये घेरा हुआ छोटा स्थान, एक प्रकार का हाथ में पहिनने का आभूषण।
वेढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) घेरना, घिरवाना।
वेणीफल–(हिं. पुं.) फूल के आकार का सिर पर पहिनने का एक प्रकार का गहना, सीसफूल।
वेत–(हिं पुं.) एक प्रकार की लचीली और मजबूत नरकट, वेंत।
वेतना–(हिं. क्रि. अ.) प्रतीत होना, जान पड़ना।
वेतार–(हिं. वि.) विना तार का, जिसमें तार न हो; –का तार–(पुं.) एक वैज्ञानिक आविष्कार जिसमें समाचार, गाने आदि रेडियो के यंत्र से सुने जाते हैं, इसका प्रसारण विद्युत् यंत्र से विना तार के होता है।
वेताल–(हिं. पुं.) देखें 'वैताल', भूत योनि विशेष।
वेताला–(हिं. वि.) वह बाजा या संगीत

जो ताल का सहगामी न हो।

बेतुका–(हिं. वि.) बेढंगा।

बेतुका छंद–(हिं. पुं.) वह छंद जिसमें अनुप्रास न मिलते हों, अमिताक्षर छन्द।

बेद–(हिं. पुं.) देखें 'वेद'।

बेदक–(हिं. पुं.) हिन्दू, वेद को माननेवाला।

बेदखल–(फा. वि.) कब्जे में न होनेवाला।

बेदखली–(फा. स्त्री.) कब्जे से निकल जाना।

बेदमाल–(हिं. पुं.) लकड़ी की वह पटरी जिस पर तेल लगाकर सिकलीगर अपना औजार या अस्त्र रगड़कर चमकाते हैं।

बेदाना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार, बिहीदाना नामक फल का बीज; (वि.) मूर्ख।

बेदाम–(हिं. वि.) बिना दाम का, जिसका कुछ मूल्य न दिया गया हो।

बेधड़क–(हिं. अव्य.) बिना किसी प्रकार के संकोच, भय या आशंका के, निडर होकर, बिना रुकावट के, बिना आगा-पीछा सोच-समझे; (वि.) निर्भय, निडर।

बेधना–(हिं. क्रि. स.) किसी नुकीली वस्तु से छेद करना, शरीर में घाव करना।

बेधर्म–(हिं. वि.) जिसको अपने धर्म का ध्यान न हो, धर्म से च्युत।

बेधिया–(हिं. पुं.) अंकुश।

बेधीर–(हिं. वि.) देखें 'अधीर'।

बेन–(हिं. पुं.) वंशी, मुरली, सँपेरे की तुमड़ी, महुवर, एक प्रकार का वृक्ष, बाँस।

बेनग–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी बाँस।

बेनट–(हिं. स्त्री.) बंदूक के अगले सिरे पर लगी हुई किर्च, संगीन।

बेना–(हिं. पुं.) बाँस का बना हुआ छोटा पंखा, व्यजन, खस, उशीर, बाँस, माथे पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

बेनागा–(हिं. अव्य.) निरन्तर।

बेनी–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों की चोटी, वेणी, एक प्रकार का धान, (गंगा, यमुना और सरस्वती का) संगम, त्रिवेणी, किवाड़ के पल्ले में लगी हुई वह लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।

बेनु–(हिं. पुं.) देखें 'वेणु', वंसी, मुरली, बाँस।

बेनुली–(हिं. स्त्री.) जाँते या चक्की के किल्ले पर रखी हुई वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर जोती रहती है।

बेनौटी–(हिं. पुं.) कपास के फूल के समान रंग

बेपरद(दा)–(हिं. वि.) नंगा।

बेपाइ–(हिं. वि.) हक्कावक्का, भौचक।

बेपार, बेपारी–(हिं. पुं.) देखें 'व्यापार', 'व्यापारी'।

बेपेंदी–(हिं. वि.) बिना पेंदी का, इधर-उधर लुढ़कनेवाला; (मुहा.)–का लोटा–वह मनुष्य जो बारंबार अपने विचार को बदलता हो।

बेबस–(हिं. वि.) विवश, लाचार, जिसका कुछ वश न चले, परवश, पराधीन।

बेबसी–(हिं. स्त्री.) विवशता, पराधीनता।

बेबहा–(हिं. वि.) अमूल्य।

बेबाक–(फा. वि.) हिसाब चुकता किया हुआ, पूरा पावना अदा किया हुआ।

बेबाकी–(फा. स्त्री.) चुकती होना, पावने का बाकी न रहना।

बेब्याहा–(हिं. वि.) अविवाहित, कुँआरा।

बेम–(हिं. स्त्री.) जुलाहों की कंघी।

बेमन–(हिं. अव्य.) बिना मन लगाये; (वि.) जिसका मन न लगता हो।

बेमरम्मत–(फा. वि.) जो ठीक या दुरुस्त हालत में न हो, टूटा-फूटा।

बेमारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बीमारी'।

बेमालूम–(हिं. अव्य.) बिना किसी को पता दिये हुए; (वि.) जो मालूम न पड़ता हो, जिसका पता न लगता हो।

बेमेल–(फा. वि.) जिसमें मेल न हो, अनमिल, बेजोड़।

बेयरा–(हिं. पुं.) देखें 'बेरा'।

बेर–(हिं. पुं.) एक कँटीला वृक्ष जिसके फल मीठे होते हैं, इसका फल; (स्त्री.) बार, दफा, विलम्ब, देर।

बेरजरी–(हिं. स्त्री.) जंगली बेर, झरबेरी।

बेरजा–(हिं. पुं.) देखें 'बिरोजा'।

बेरवा–(हिं. पुं.) कलाई पर पहनने का एक गहना, कड़ा।

बेरा–(हिं. पुं.) बला, समय, प्रातःकाल, तड़का, एक में मिला हुआ चना और जव।

बेरादरी–(हिं. पुं.) देखें 'बिरादरी'।

बेराम–(हिं. वि.) देख 'बीमार'।

बेरामी–(हिं. स्त्री.) देखें 'बीमारी'।

बेरिआ–(हिं. स्त्री.) समय, वेला।

बेरियाँ–(हिं. स्त्री.) समय, काल।

बेरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पहाड़ी लता, एक में मिली हुई सरसों और तीसी, बेर, उतना अनाज जितना चक्की में एक बार डाला जाता है, मुट्ठी भर अन्न।

बेरुआ–(हिं. पुं.) वह बाँस का टुकड़ा जो नाव खींचने की गून में बँधा होता है।

बेरुइ–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

बेरुकी–(हिं. स्त्री.) बैलों की जीभ में होनेवाला एक रोग।

बेरूप–(हिं वि.) कुरूप।

बेर्रा–(हिं. पुं.) एक में मिला हुआ जव और चना, इसका आटा।

बेलंब–(हिं. पुं.) देखें 'विलंब'।

बेल–(हिं. पुं.) मझोले आकार का एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके मीठे फल पर मोटा कड़ा छिलका होता है, बिल्व, श्रीफल; (स्त्री.) वे छोटे कोमल पौधे जो अपने बल पर ऊपर नहीं उठ सकते, लता, वल्ली, सन्तान, वंश, नाव खेने का डाँड़ा, घोड़े के पैर का एक रोग, फीते पर बना हुआ जरदोजी या रेशम का काम, विवाह आदि अवसरों पर पौरियों को देने का धन; कपड़े, भीत आदि पर बनी हुई फल-पत्तियाँ; (फा. पुं.) एक प्रकार की कुदाली, एक प्रकार का लंबा खुरपा।

बेलक–(हिं. पुं.) फरसा, फावड़ा।

बेलकी–(हिं. पुं.) चरवाहा।

बेलखजी–(हिं. पुं) एक प्रकार का लंबा पहाड़ी-वृक्ष।

बेलगिरी–(हिं. स्त्री.) बेल के फल का गूदा

बेलड़ी–(हिं. स्त्री.) छोटी बेल या लता।

बेलन–(हिं. पुं.) रोटी, पूरी आदि बेलने का उपकरण; लोहे, पत्थर आदि का गोल भारी टुकड़ा जो अपने अक्ष पर घूमता है, (इसे सड़क पर कंकड़ बैठाने तथा समतल करने के काम में लाते हैं), कोल्हू का जाठ, किसी यन्त्र में लगा हुआ बेलन के आकार का पुरजा, एक प्रकार का जड़हन धान, रूई धुनने की मुठिया या हत्था, कोई लंबा गोल लुढ़कनेवाला पदार्थ।

बेलना–(हिं. पुं.) काठ का गोल लंबा टुकड़ा जो बीच में मोटा और दोनों ओर पतला होता है, (यह पूरी, रोटी आदि बेलने के काम में आता है), देखें 'बेलन'; (हिं. क्रि. स.) चकले पर लोई रखकर बेलन से बढ़ाकर गोल तथा पतला करना, नष्ट करना, पानी के छींटे उड़ाना; (मुहा.) पापड़ बेलना–काम बिगाड़ना।

बेलपत्ती, बेलपत्र–(हिं. पुं.) बेल के वृक्ष की पत्ती जो शिवजी को चढ़ाई जाती है।

बेलपात–(हिं. पुं.) देखें 'बेलपत्र'।

बेलवागुरा–(हिं. पुं.) हिरनों को पकड़ने का जाल।

बेल-बूटा–(हिं. पुं.) कागज, कपड़े आदि पर बनाये जानेवाले फूल-पत्ते।

बेल-बूटेदार–(हिं. वि.) जिसपर बेल-बूटे बने हों।

बेलसना–(हिं. क्रि. अ.) भोग-विलास

करना, सुख लूटना।
बेलहरा–(हिं. पुं.) बाँस या धातु की बनी हुई लंबोतरी पिटारी जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।
बेलहरी–(हिं. पुं.) साँची पान।
बेलहाजी–(हिं. स्त्री.) धोती, दुपट्टे आदि पर किनारा छापने का ठप्पा।
बेला–(हिं. पुं.) एक छोटा पौधा जिसमें सुगन्धित सफेद फूल लगते हैं, मल्लिका, लहर, कटोरा, वायोलिन नाम का बाजा, चमड़े की बनी हुई छोटी कुल्हिया, समुद्र का किनारा; (स्त्री.) वेला, समय।
बेलाग–(हिं. पुं.) जिसमें किसी प्रकार की लिहाज की भावना न हो।
बेलि–(हिं. स्त्री.) देखें 'बेल'।
बेलिया–(हिं. स्त्री.) छोटी कटोरी।
बेली–(हिं. पुं.) संगी, साथी।
बेलौस–(हिं. वि.) सच्चा, खरा।
बेवपार–(हिं. पुं.) देखें 'व्यापार'।
बेवर–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
बेवरा–(हिं. पुं.) विवरण, ब्योरा।
बेवरेबाजी–(हिं. स्त्री.) धूर्तता।
बेवरेवार–(हिं. वि.) विवरण सहित।
बेवसाय–(हिं. पुं.) देखें 'व्यवसाय'।
बेवस्था–(हिं. स्त्री.) देखें 'व्यवस्था'।
बेवहरना–(हिं. क्रि. अ.) व्यवहार करना।
बेवहरिया–(हिं. पुं.) लेन-देन का व्यवहार करनेवाला, महाजन।
बेवहार–(हिं. पुं.) देखें 'व्यवहार'।
बेवाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'बिवाई'।
बेवान–(हिं. पुं.) देखें 'विमान'।
बेश–(हिं. पुं.) देखें 'वेश'।
बेश्म–(हिं. पुं.) देखें 'वेश्म', गृह, घर।
बेसंदर–(हिं. पुं.) देखें 'वैश्वानर', अग्नि।
बेसँभार–(हिं. वि.) बेसुध।
बेसन–(हिं. पुं.) चनेकी दालका महीन आटा।
बेसनी–(हिं. वि.) बेसन का बना हुआ; (स्त्री.) बेसन भरी हुई पूरी।
बेसर–(हिं. स्त्री.) नाक में पहिनने की नथ; (पुं.) खच्चर।
बेसवा–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
बेसवार–(हिं. पुं.) वह सड़ा हुआ मसाला जिससे मद्य बनाया जाता है।
बेसा–(हिं. पुं.) देखें 'वेश'; (स्त्री.) वेश्या, रंडी।
बेसारा–(हिं. वि.) बैठाने या ठहरानेवाला।
बेसहना–(हिं. क्रि. स.) मोल लेना, झगड़ा आदि अपने ऊपर लेना।
बेसाह, बेसाहा–(हिं. पुं.) माल, सौदा।
बेसिलसिले–(हिं. अव्य.) अव्यवस्थित रूप या क्रम में।
बेसी–(हिं. वि., अव्य.) अधिक।
बेसुध–(हिं. वि.) अचेत।
बेसुधी–(हिं. स्त्री.) अचेत अवस्था।
बेसुर–(हिं. वि.) (संगीत में) जिसका स्वर ठीक न हो, बेमेल स्वर का।
बेसुरा–(हिं.वि.) जो लययुक्त स्वर में न हो।
बेस्वाद–(हिं. वि.) स्वादरहित, जिसमें अच्छा स्वाद न हो।
बेहंगम–(हिं. वि.) बेढंगा, विकट, बेढब।
बेहंगमपन–(हिं. पुं.) बेढंगापन, भद्दापन।
बेहँसना–(हिं. क्रि. अ.) वेग से हँसना, ठट्ठा मारकर हँसना।
बेह–(हिं. पुं.) बेध, छिद्र, छेद।
बेहड़–(हिं. वि.) देखें 'बीहड़'।
बेहन–(हिं.पुं.) अन्न आदि का बीज धान आदि के रोपने के लिए छोटे पौधे; (वि.) पीला।
बेहना–(हिं. पुं.) जुलाहों की एक जाति जो प्रायः रूई धुनने का काम करती है, धुनियाँ।
बेहर–(हिं.वि.) स्थावर, अचर, पृथक्, अलग; (पुं.) बावली।
बेहरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास, मूंज की बनी हुई चिपटी पेटारी; (वि.) पृथक्, अलग।
बेहराना–(हिं.क्रि.अ.) दरार होना, फटना।
बेहरी–(हिं. स्त्री.) किसी विशेष कार्य के लिये बहुत से मनुष्यों से अंशदान के रूप में इकट्ठा किया हुआ धन, चंदा।
बेहला–(हिं. पुं.) सारंगी की तरह का एक प्रकार का अंग्रजी बाजा।
बेहुनरा–(हिं. वि.) जो कोई हुनर या कारीगरी न जानता हो, मूर्ख, तमाशा दिखलानेवाला भालू या बन्दर।
बेहून–(हिं. अव्य.) सिवाय, बिना।
बैंगन–(हिं. पुं.) एक छोटा पौधा जिसके फल तरकारी बनाने के काम में आते हैं, बैंगन, भंटा।
बैंगनी–(हिं.वि.) ललाई लिये नीले रंग का; (स्त्री.) बैंगन और बेसन के संयोग से बना हुआ पकवान।
बैंजनी–(हिं. वि.) देखें 'बैंगनी'।
बैंड़ा–(हिं. वि.) देखें 'बेंड़ा'।
बैं–(हिं. स्त्री.) बैसर, जुलाहे की कंघी, देखें 'वय'; (अ. स्त्री.) खेत आदि की बिक्री।
बैकल–(हिं. वि.) उन्मत्त, पागल, मूर्ख।
बैकुंठ–(हिं. पुं.) देखें 'वैकुंठ'।
बैखरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वैखरी'।
बैखानस–(हिं. वि.) देखें 'वैखानस'।
बैगन–(हिं. पुं.) देखें 'बैंगन', भंटा।
बैगनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पकवान; (वि.) देखें 'बैंगनी'।
बैजंती–(हिं. स्त्री.) देखें 'वैजयंती', विष्णु की माला, फूल का पौधा विशेष।
बैजई–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हलका नीला रंग।
बैजनाथ–(हिं. पुं.) देखें 'वैद्यनाथ'।
बैजयंती–(हिं. स्त्री.) देखें 'वैजयंती'।
बैजला–(हिं. पुं.) कबड्डी जैसा एक खेल।
बैजीय–(सं. वि.) बीज-संबंधी।
बैजेय–(सं. वि.) बीज से उत्पन्न।
बैटा–(हिं. स्त्री.) रूई ओटने की चरखी।
बैठ–(हिं. पुं.) राजकीय कर।
बैठक–(हिं. स्त्री.) बैठने का स्थान, आसन, पीठ, बैठने का ढंग, संग, मेल, एक प्रकार का व्यायाम, वह स्थान जहाँ बहुत से लोग आकर बैठते हों, सभासदों का एकत्रित होना, अधिवेशन, बैठने का व्यापार, काँच, धातु आदि की दीवट, साथ उठना-बैठना, किसी मूर्ति या खंभे के नीचे का आधार।
बैठका–(हिं. पुं.) वह चौपाल या दालान जहाँ पर बैठकर लोग बातचीत करते हैं।
बैठकी–(हिं. स्त्री.) बारंबार उठने-बैठने का व्यायाम, आसन, आधार।
बैठन–(हिं. स्त्री.) बैठने की क्रिया या भाव, बैठने का ढंग, बैठक, आसन।
बैठना–(हिं. क्रि.अ.) स्थित होना, आसन जमाना, तौल में ठहरना, कारबार बिगड़ना, निरुद्योग रहना, तलछट के रूप में पेंदी में जम जाना, पक्षियों का अंडा सेना, अँटना, समाना, रखनी बनकर रहना, पौधे की जड़ का भूमि में लगना, घोड़े आदि पर सवारी करना, निर्दिष्ट लक्ष्य पर लगना, अभ्यस्त होना, ठीक होना, चूल आदि का ठीक कसा जाना, अस्त होना, व्यय होना, लागत लगना, नस आदि का अपनी जगह पर आ जाना, पचक जाना, दबना; **बैठते-उठते**–हर अवस्था में; **बैठे-बैठाये, बैठे-बैठे**–अकारण, अचानक।
बैठनी–(हिं. स्त्री.) करगह का वह स्थान जहाँ बैठकर जुलाहे कपड़ा बुनते हैं।
बैठवाई–(हिं. स्त्री.) बैठाने का शुल्क।
बैठवाना–(हिं. क्रि. स.) बैठाने का काम दूसरे से कराना, पेड़ लगवाना।
बैठा–(हिं. पुं.) चमचा, बड़ी करछी।
बैठाना–(हिं.क्रि. स.) बैठना का प्रेरणार्थक रूप, (सब अर्थों में)।
बैड़(ढ़)ना–(हिं.क्रि.स.) बेढ़ना, बन्द करना।

वैडाल–(सं. वि.) बिल्ली-संबन्धी ।
वैतरनी–(हि. स्त्री.) देखें 'वैतरणी', एक प्रकार का अगहनिया धान ।
वैताल–(हि. पुं.) देखें 'वेताल'।
वैतालिक–(हि. वि.) देखें 'वैतालिक' ।
वैद–(हि. पुं.) देखें 'वैद्य', चिकित्सक ।
वैदगी, वैदई–(हि. स्त्री.) वैद्य की विद्या या व्यवसाय ।
वैदल–(सं. पुं.) दाल की पीठी ।
वैदूर्य–(हि. पुं.) देखें 'वैदूर्य' ।
वैदेही–(हि. स्त्री.) देखें 'वैदेही' ।
वैन–(हि. पुं.) वार्ता, बात; (मुहा.) **–झरना**–मुख से बात निकलना ।
वैनतेय–(हि. पुं.) देखें 'वैनतेय' ।
वैना–(हि.पुं.) वह मिठाई, पकवान आदि जो विवाह आदि उत्सवों के उपलक्ष्य में इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजा जाता है, बायन ।
वैपार–(हि. पुं.) देखें 'व्यापार' ।
वैपारी–(हि. पुं.) व्यापार करनेवाला ।
वैयन–(हि. पुं.) बाना भरने का लकड़ी का उपकरण ।
वैयर–(हि. स्त्री.) स्त्री ।
वैया–(हि. पुं.) वैसर ।
वैरंग–(अं. वि.) चिट्ठी आदि जिस पर प्रेषक ने टिकट न लगाया हो, विफल।
वैर–(हि. पुं.) देखें 'वैर', शत्रुता, द्रोह, विरोध, वेर का वृक्ष या फल, हल में लगा हुआ चोंगा जिसमें भरा हुआ बीज हल चलने से बराबर कूँड़ में गिरता जाता है; (मुहा.)**–ठानना**–शत्रुता करना, द्रोह आरम्भ करना; **–निकालना**–शत्रुता का बदला लेना; **–पड़ना**–शत्रु बनकर कष्ट देना; **–मोल लेना**–शत्रुता उत्पन्न करना; **–लेना**–बदला लेना ।
वैरख–(हि. पुं.) ध्वजा, पताका।
वैरा–(हि.पुं.) बीज बोने के लिये हल में लगा हुआ चोंगा; (अं.पुं.) सेवक, चाकर।
वैराखी–(हि. स्त्री.) भुजा पर पहनने का एक गहना, बरेखी ।
वैराग–(हि. पुं.) देख 'वैराग्य' ।
वैरागी–(हि. पुं.) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद ।
वैराग्य–(हि. पुं.) देखें 'वैराग्य' ।
वैराना–(हि. क्रि. अ.) वायु के प्रकोप से विकार होना ।
वैरी–(हि. वि.) देखें 'वैरी', विरोधी, शत्रु।
वैल–(हि. पुं.) वृष, एक चौपाया जिसकी मादा गाय कहलाती है, मूर्ख मनुष्य; **–गाड़ी**–(स्त्री.) बैल द्वारा खींची जानेवाली गाड़ी।

वैलर–(अ. पुं.) 'बायलर' का अपभ्रंश, पीपे के आकार का लोहे का बड़ा पात्र जो भाफ से चलनेवाली कलों (इंजन आदि) में लगा रहता है ।
वैल्व–(सं. वि.) बेल-संबंधी, बेल का ।
वैखानस–(सं. पुं.) देखें 'वैखानस' ।
वैसंदर–(हि. पुं.) देखें 'वैश्वानर', अग्नि ।
वैस–(हि. स्त्री.) आयु, युवावस्था; (पुं.) क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा ।
वैसना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'बैठना' ।
वैसर–(हि. स्त्री.) जुलाहों का एक यन्त्र जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बठाते हैं, कंघी ।
वैसवारा–(हि. पुं.) अवध के पश्चिमी प्रान्त का नाम ।
वैसाख–(हि. पुं.) देखें 'वैशाख', चैत के बाद के महीने का नाम ।
वैसाखी–(हि. वि.) वैशाख महीने का; (स्त्री.) वह लाठी जिसके सिरे पर अर्धचन्द्राकार आड़ी लकड़ी लगी होती है जिसको बगल में टेककर लँगड़े लोग चलते-फिरते हैं, वैशाख की पूर्णिमा ।
वैसाना, वैसारना–(हि. क्रि. स.) देखें 'बैठाना' ।
वैसिक–(हि. पुं.) रंडी से प्रेम करनेवाला मनुष्य ।
वैहर–(हि. वि.) भयानक, प्रचण्ड, क्रोधी; (स्त्री.) वायु, हवा ।
वोंक–(हि. पुं.) लोहे का मुड़ा हुआ कीला जो किवाड़ के पल्ले की चूल में लगाया जाता है ।
वोंगना–(हि. पुं.) चौड़े मुख का एक प्रकार का पात्र ।
वोआई–(हि. स्त्री.) बोने का काम, बोने का पारिश्रमिक ।
वोआना–(हि. क्रि. स.) बोने का काम दूसरे से कराना ।
वोक, वोकरा–(हि. पुं.) बकरा ।
वोखार–(हि. पुं.) ज्वर ।
वोगुमा–(हि. पु.) घोड़े का एक रोग जिसमें उसका पेट फूल जाता है ।
वोज–(हि. पुं.) घोड़े का एक भेद ।
वोजा–(हि. स्त्री.) चावल से बनी हुई मदिरा ।
वोझ–(हि. पुं.) ऐसा गट्ठर, भार आदि जिसको उठाने में कठिनता हो, गठरी, गुरुत्व, भारीपन, कठिन कार्य, खटका या असमंजस, उतना माल जितना बैलगाड़ी आदि पर लादा जा सके, वह व्यक्ति जिसका निर्वाह करना भारी जान पड़े, उतना भार जितना एक बैल की पीठ पर लादा जाय, कोई कार्य को पूरा करने की चिन्ता, कार्य-भार ।
वोझना–(हि. क्रि. स.) नाव, गाड़ी आदि पर माल लादना ।
वोझल–(हि. वि.) भारी ।
वोझा–(हि. पुं.) देखे 'बोझ' ।
वोझाई–(हि. स्त्री.) बोझने या लादने का काम, इस काम का शुल्क ।
वोटा–(हि. पुं.) लकड़ी का छोटा-छोटा कटा हुआ टुकड़ा, कुंदा ।
वोटी–(हि.स्त्री.) मांस का छोटा टुकड़ा; (मुहा.)**–बोटी करना**–टुकड़े-टुकड़े करना।
वोड़–(हि. स्त्री.) सिर पर पहनने का एक प्रकार का फूल के आकार का गहना, बोर।
वोड़री–(हि. स्त्री.) नाभि, तोंदी ।
वोड़ल–(हि. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी पक्षी ।
वोड़ा–(हि. पुं.) अजगर, बड़ा सर्प, एक प्रकार की लंबी पतली फली जिसकी तरकारी खाई जाती है, लोबिया ।
वोड़ी–(हि.स्त्री.) दमड़ी, अति अल्प धन, पौधे, वृक्ष आदि की फली, अगस्त की कली ।
वोत–(हि. पुं.) घोड़ों की एक जाति ।
वोतक–(हि.पुं.) पान की पहले वर्ष की खेती।
वोतल–(हि.स्त्री.) काँच की लंबी गरदन का पात्र जो तेल आदि द्रव पदार्थ रखने के काम में आता है ।
वोतलिया–(हि. वि.) बोतल के रंग का, कालापन लिये हरा ।
वोता–(हि. पुं.) ऊँट का बच्चा जिस पर सवारी न होती हो ।
वोदकी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का कुसुम जिसके फूल का रंग बनता है ।
वोदर–(हि. स्त्री.) लचीली छड़ी; ताल के किनारे पर सिंचाई का पानी चढ़ाने का गड्ढा ।
वोदा–(हि. वि.) जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मूर्ख, मट्ठर, जो दब्बू हो; **–पन**–(पुं.) मूर्खता, दब्बूपन ।
वोध–(सं. पुं.) ज्ञान, भ्रम का न होना, सन्तोष, धैर्य, धीरज; **–क**–(पुं.) ज्ञापक, बोध करानेवाला, शृंगार रस के हावों में से एक जिसमें किसी संकेत या क्रिया द्वारा अपने मन का भाव दूसरे को जताया जाता है; (वि.) ज्ञान करानेवाला; **–कर**–(पुं.) सेवक जो प्रातःकाल स्वामी को जगाता है; **–गम्य**–(वि.) समझ में आने योग्य; **–ज्ञ**–(पुं.) अभिप्राय जाननेवाला, श्रीकृष्ण; **–न**–(पुं.) ज्ञापन, जताना, विज्ञापन,

अग्नि को सुलगाना, चैतन्य, उद्दीपन।
वोधना–(हि.क्रि.स.) ज्ञान देना, समझाना।
वोधनी–(सं. स्त्री.) वोध, पीपल का पेड़, कार्तिक शुक्ला एकादशी।
वोधनीय–(सं. वि.) समझाने योग्य।
वोधान–(सं. पुं.) बृहस्पति, विष्णु।
वोधि–(हि.पुं.) वोध, ज्ञान, पीपल का वृक्ष।
वोधित–(सं. वि.) ज्ञापित, जताया हुआ।
वोधितरु–(सं. पुं.) पीपल का वृक्ष, गया में स्थित वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था।
वोधिद्रुम–(सं. पुं.) वोधितरु।
वोधिसत्व–(सं. पुं.) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो।
वोध्य–(सं.वि.) वोध के योग्य, वोधनीय।
वोना–(हि. क्रि. स.) अन्न के दानों या फल के बीजों को मिट्टी में डालना जिससे उनमें अंकुर फूटे और पौधा उत्पन्न हो, विखराना, इधर-उधर फेंकना।
वोवा–(हि.पुं.) स्तन, थन, गट्ठर, गठरी, घर की सामग्री।
वोव्वी–(हि. स्त्री.) पुन्नाग जाति का एक सदावहार वृक्ष।
वोय–(हि. स्त्री.) गंध, दुर्गंध।
वोर–(हि. पुं.) डुवाने की क्रिया, गोल गुंवज या कँगूरा, घुँघरू, एक गहना जो सिर पर पहना जाता है।
वोरका–(हि.पुं.) दावात, मिट्टी की दावात जिसमें लड़के खड़िया-मिट्टी घोलकर रखते हैं।
वोरना–(हि. क्रि. स.) किसी द्रव पदार्थ में निमग्न करना, डुवाना, कलंकित करना, मिलावट करना, डुवाकर भिगोना, घुले हुए रंग में डुवाकर रँगना।
वोरसी–(हि. स्त्री.) मिट्टी का वह पात्र जिसमें आग रखी जाती है, अँगीठी।
वोरा–(हि. पुं.) अन्न आदि रखने का टाट का वना हुआ थैला।
वोरिका–(हि. पुं.) देखें 'वोरका'।
वोरिया–(हि.स्त्री.) छोटा थैला, विस्तर, चटाई; (मुहा.)–वँधना उठाना–यात्रा की तैयारी करना।
वोरी–(हि. स्त्री.) टाट की छोटी थैली, छोटा वोरा।
वोरो–(हि.पुं.) एक प्रकार का मोटा धान।
वोल–(हि.पुं.) वाणी, वचन, व्यंग्य, ताना, प्रतिज्ञा, संख्या, गीत का टुकड़ा, अन्तरा, किसी वाजे की ध्वनि; (मुहा.) –वाला होना–मान-मर्यादा वनी रहना; –चाल–(स्त्री.) वार्तालाप, वातचीत, परस्पर सद्भाव, मेल-मिलाप, प्रतिदिन की आपसी वातचीत, असाहित्यिक भाषा।
वोलता–(हि. पुं.) आत्मा, जीवन-तत्व, अर्थयुक्त शब्द वोलनेवाला प्राणी, मनुष्य, हुक्का, प्राण; (वि.) वाचाल, वकवादी।
वोलती–(हि. स्त्री.) वाक्, वाणी।
वोलनहार–(हि. वि.) वोलनेवाला; (पुं.) आत्मा।
वोलना–(हि. क्रि.स.) मुख से शब्द निकालना, वाजा, पेट आदि का शब्द उत्पन्न करना, कहना, कहलाना, पुकारना, भाषण करना, रोक-टोक करना; (मुहा.)–चालना–वार्तालाप करना; वोल जाना–मृत्यु को प्राप्त होना, कुछ शेष न रहना।
वोलवाना–(हि. क्रि. सं.) कहवाना, उच्चारण कराना, देखें 'वुलवाना'।
वोलसर–(हि. पुं.) मौलसिरी का पेड़, घोड़े की एक जाति।
वोलाचाली–(हि. स्त्री.) देखें 'वोल-चाल'।
वोलाना–(हि. क्रि. सं.) देखें 'वुलाना'।
वोलावा–(हि.पुं.) देखें 'वुलावा', निमंत्रण।
वोली–(हि. स्त्री.) मुख से निकाला हुआ शब्द, वाणी, अर्थयुक्त शब्द या वाक्य, वचन, नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का चिल्लाकर दाम कहना, किसी प्रदेश की भाषा, हँसी, दिल्लगी; (मुहा.) –वोलना–व्यंग्य के शब्द वोलना; –दार–(पु.) वह असामी जिसको जोतने-वोने के लिये खेत विना लिखा-पढ़ी के दिया गया हो।
वोल्लाह–(हि.पुं.) घोड़े की एक जाति।
वोवना–(हि. क्रि. स.) देखें 'वोना'।
वोवाई–(हि.स्त्री.) वोने की क्रिया या भाव।
वोवाना–(हि. क्रि. स.) वोने का काम दूसरे से कराना।
वोह–(हि. स्त्री.) डुवकी, गोता।
वोहनी–(हि. स्त्री.) किसी दिन की पहली विक्री।
वोहारना–(हि. क्रि. स.) देखें 'वुहारना'।
वोहारी–(हि. स्त्री.) झाड़ू।
वोहित–(हि. पुं.) वड़ी नाव।
वौंड़–(हि. स्त्री.) किसी पौधे की डोरी के रूप में दूर तक जानेवाली टहनी, लता, वेल।
वौंड़ना–(हि. क्रि. अ.) लता की तरह वढ़ना, टहनी फेंकना।
वौंडर–(हि. पुं.) चक्रवायु, ववंडर, वायु का झोंका।
वौंड़ी–(हि. स्त्री.) लता या पौधों के कच्चे फल, फली, छीमी, वोड़ी, ढोंढ़।
वौआना–(हि. क्रि. अ., स.) स्वप्न की अवस्था में वोलना, वर्राना, अंडवंड वकना।
वौखल–(हि.वि.) पागल, सनकी, झक्की।
वौखलाना–(हि. क्रि. अ.) सनक जाना, क्रोध से पागल हो जाना।
वौखा–(हि. स्त्री.) हवा का तीव्र झोंका।
वौछाड़–(हि. स्त्री.) देखें 'वौछार'।
वौछार–(हि. स्त्री.) वायु के झोंके से तिरछी होकर गिरनेवाली वर्षा की बूँदें, झड़ी, किसी वस्तु का अधिक संख्या में कहीं आकर गिरना, लगातार वात पर वात जो किसी से कही जाय, कोई पदार्थ वहुत-सा देते या सामने रखते जाना, व्यंग्यपूर्ण वात, ताना।
वौड़हा–(हि.वि.) पागल, सनकी, वावला।
वौता–(हि.पुं.) समुद्र में तैरता हुआ संकेत।
वौद्ध–(सं. पुं.) गौतम बुद्ध के मत का अनुयायी; (वि.) बुद्ध द्वारा प्रचारित।
वौद्ध-धर्म–(हि.पुं.) गौतम बुद्ध का चलाया हुआ मत, भगवान् बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।
वौधायन–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।
वौना–(हि. पुं.) वामन, छोटे डील-डौल का मनुष्य, वहुत ठिगना आदमी।
वौभुक्ष–(सं. वि.) क्षुधित, भूखा।
वौर–(हि.पुं.) आम के वृक्ष की मंजरी, मौर।
वौरई–(हि. स्त्री.) पागलपन, सनक।
वौरना–(हि. क्रि. अ.) आम के वृक्ष का फलना, इसमें मंजरी निकलना।
वौरहा–(हि. वि.) विक्षिप्त, पागल, सनकी।
वौरा–(हि. वि.) विक्षिप्त, पागल, अज्ञान, गूँगा।
वौराई–(हि. स्त्री.) सनक, पागलपन
वौराना–(हि. क्रि. अ.) विक्षिप्त होना, पागल हो जाना, सनक जाना, विवेक या बुद्धिरहित हो जाना।
वौराहा–(हि.वि.) पागल, सनकी, वावल।
वौरी–(हि.स्त्री.) वावली या पागल स्त्री।
वौलड़ा–(हि. पुं.) सिर पर पहनने का एक प्रकार का गहना।
वौलसिरी–(हि. स्त्री.) देखें 'मौलसिरी'।
व्यंग–(हि. पुं.) व्यंग्य।
व्यंजन–(हि. पुं.) व्यंजन।
व्यतीतना–(हि. क्रि. अ.) व्यतीत होना; वीतना।
व्यथा, व्यथित–(हि. पुं.) देखें 'व्यथा; 'व्यथित'।

व्यवहरिया–(हिं. पुं.) रुपये का लेन-देन करनेवाला, महाजन ।
व्यवसाय–(हिं. पुं.) देखें 'व्यवसाय' ।
व्यवस्था–(हिं. स्त्री.) देखें 'व्यवस्था' ।
व्यवहार–(हिं. पुं.) व्यवहार, रुपये का लेन-देन, आपसी संबंध, मेल-मिलाप का संबंध, सुख-दुःख में परस्पर सम्मिलित होने की रीति ।
व्यवहारी–(हिं. वि.) लेन-देन करनेवाला, जिसके साथ लेन-देन हो, व्यापारी, कार्य-कर्ता, जिसके साथ प्रेम-परस्पर हो ।
व्यसन–(हिं. पुं.) देखें 'व्यसन' ।
व्याज–(हिं. पुं.) वृद्धि, सूद, देखें 'व्याज' ।
व्याध, व्याधा–(हिं. पुं.) देखें 'व्याध', वहेलिया ।
व्याधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'व्याधि', रोग ।
व्याना–(हिं. क्रि. स.) पशुओं का बच्चा प्रसव करना, गर्भ से निकालना, उत्पन्न करना ।
व्यापना–(हिं. क्रि. अ.) चारों ओर व्याप्त होना या फैलना, प्रभाव डालना, ग्रसना, घेरना ।
व्यापार–(हिं. पुं.) देखें 'व्यापार' ।
व्यारी–(हिं. स्त्री.) रात का भोजन, व्यालू ।
व्याल–(हिं. पुं.) देखें 'व्याल' ।
व्याली–(हिं. स्त्री.) सर्पिणी, नागिन; (वि.) सर्प धारण करनेवाला ।
व्यालू–(हिं. पुं.) रात का भोजन ।
व्याह–(हिं. पुं.) देखें 'विवाह', पाणिग्रहण ।
व्याहता–(हिं. वि.) जिसके साथ विवाह हुआ हो; (पुं., स्त्री.) पति या पत्नी ।
व्याहना–(हिं. क्रि. स.) किसी का किसी के साथ विवाह-संबंध कर देना ।
व्याहुला–(हिं. वि.) विवाह संबंधी ।
व्यूगा–(हिं. पुं.) चमड़े को रगड़कर कोमल करने का चमार का लकड़ी का एक औजार ।
व्योंचना–(हिं. क्रि. अ.) किसी अंग की नस का एकबारगी इधर-उधर मुड़कर उत्पन्न होना, मुरकना ।
व्योंत–(हिं. पुं.) विवरण, युक्ति, उपाय, साधन या सामग्री आदि का मितव्यय, काम पूरा होने का हिसाब-किताब, पहनावा बनाने के लिये कपड़े की काट-छाँट, प्रबंध, अवसर, संयोग, आयोजन, तैयारी, समाई, ढव ।
व्योंतना–(हिं. क्रि. अ.) कोई पहनावा बनाने के लिये कपड़े को नापकर काटना-छाँटना, मितव्यय से चलना ।
व्योंताना–(हिं. क्रि. स.) शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटवाना ।
व्योपार, व्योपारी–(हिं. पुं.) देखें 'व्यापार', 'व्यापारी' ।
व्योरन–(हिं. स्त्री.) बालों को सुलझाने या सँवारने की क्रिया या ढंग ।
व्योरना–(हिं. क्रि. स.) उलझे हुए सूत, तार आदि को अलगाना, उलझे हुए बालों को सँवारना ।
व्योरा–(हिं. पुं.) विवरण, वृत्तान्त, समाचार, किसी विषय के संबंध की सारी बात, अन्तर, भेद ।
व्योरेवार–(हिं. अव्य.) विस्तार-सहित ।
व्योसाय–(हिं. पुं.) देखें 'व्यवसाय' ।
व्योहर–(हिं. पुं.) रुपये का लेन-देन, व्यवहार ।
व्योहरा–(हिं. पुं.) सूद पर रुपया देनेवाला, हुंडी चलानेवाला ।
व्योहरिया–(हिं. पुं.) महाजनी करनेवाला, सूद पर रुपया ऋण देनेवाला ।
व्यौहर–(हिं. पुं.) देख 'व्योहर' ।
व्यौहरिया–(हिं. पुं.) देखें 'व्योहरिया' ।
व्यौहार–(हिं. पुं.) देखें 'व्योहर' ।
व्रज–(हिं. पुं.) देखें 'व्रज' ।
व्रजना–(हिं. क्रि. अ.) चलना, जाना ।
व्रध्न–(सं. पुं.) सूर्य, शिव, दिखें, घोड़ा ।
ब्रह्मंड–(हिं. पुं.) देखें 'ब्रह्मांड' ।
ब्रह्म–(सं. पुं.) वेद, तपस्या, तप, सत्य, तत्त्व, ज्ञानमय परमात्मा, आनन्द-स्वरूप आत्मा, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से पचीसवाँ योग, चैतन्य, एक की संख्या, ब्रह्मराक्षस, वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत-योनि को प्राप्त हुआ हो, ब्रह्मा, ब्राह्मण; **–कन्यका**–(स्त्री.) ब्राह्मी बटी; **–कर**–(पुं.) वह धन जो ब्राह्मण, गुरु या पुरोहित को दिया जाय; **–कर्म**–(पुं.) वेद-विहित कार्य; **–कल्प**–(पुं.) उतना समय जितने म एक ब्रह्मा सृष्टि चलाते हैं; **–काष्ठ**–(वि.) शहतूत; **–कृत**–(पुं.) विष्णु, शिव, इन्द्र; **–कोशी**–(पुं.) अजमोदा; **–गति**–(स्त्री.) निर्वाण, मोक्ष; **–गर्भ**–(पुं.) अजमोदा, अड़हुल का फूल; **–गाँठ**–(हिं. स्त्री.) जनेऊ की गाँठ; **–गीतिका**–(स्त्री.) ब्रह्मा की स्तुति; **–ग्रंथि**–(स्त्री.) यज्ञोपवीत की मुख्य गाँठ; **–ग्रह**–(पुं.) ब्रह्मराक्षस; **–घातक**–(पु.) ब्रह्महत्या करनेवाला; **–घाती**–(पुं., वि.) ब्राह्मण की हत्या करनेवाला; **–घातिनी**–(स्त्री.) ब्राह्मण की हत्या करनेवाली स्त्री; **–घोष**–(पुं.) वेदध्वनि, वेदपाठ; **–घ्न**–(पुं.) ब्राह्मण को मारनेवाला; **–चर्य**–(पुं.) एक आश्रम का नाम, आठ प्रकार के मैथुनों से बचन का साधन, यम का एक भेद, वीर्य को सुरक्षित करने का संयम, पुरुष का स्त्री-संभोग तथा अन्य वासनाओं से अलग रहकर केवल अध्ययन करने में निरन्तर लगे रहना; **–चारिणी**–(स्त्री.) ब्रह्मचर्य पालन करनेवाली स्त्री, दुर्गा की एक मूर्ति, पार्वती, सरस्वती; **–चारी**–(पुं.) उपनयन के बाद नियमपूर्वक वेदादि के अध्ययन के लिये गुरु के घर में रहनेवाला, शिष्य, एक गंधर्व का नाम; **–ज**–(पुं.) हिरण्यगर्भ; **–जटा**–(स्त्री.) दमनक, दौने का पौधा; **–जन्म**–(पुं.) उपनयन संस्कार; **–जीवी**–(पुं.) श्रौत आदि कर्म करके जीविका चलानेवाला; **–ज्ञ**–(पुं.) विष्णु, कार्तिकेय; (वि.) ब्रह्म को जाननवाला; **–ज्ञान**–(पुं.) ब्रह्मविषयक ज्ञान, चैतन्य आत्मा का यथार्थ अनुभव, अद्वैत सिद्धान्त का पूर्ण बोध; **–ज्ञानी**–(वि.) परमार्थतत्त्व का ज्ञान रखनवाला; **–ज्य**–(वि.) ब्राह्मण पर अत्याचार करनेवाला; **–ण्य**–(पुं.) विष्णु, शनैश्चर, कार्तिकेय; (वि.) ब्रह्म-संबंधी; **–ता**–(स्त्री.) ब्राह्मण का धर्म या भाव; **–ताल**–(पुं.) चतुर्मुख ताल का नाम; **–त्व**–(पुं.) ब्राह्मणत्व, ब्रह्मा का भाव या धर्म; **–दंड**–(पुं.) ब्राह्मण का शाप-रूप दण्ड, ब्रह्म-शाप; **–दर्भा**–(स्त्री.) यमानिका, अजवायन; **–दान**–(पुं.) वेद का अध्यापन; **–दारु**–(पुं.) शहतूत का पेड़; **–दिन**–(पुं.) ब्रह्मा का एक दिन; **–दैत्य**–(पुं.) वह ब्राह्मण जिसने मरने पर प्रेतयोनि पाई हो, ब्रह्म-राक्षस; **–दोष**–(पुं.) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण की हत्या करने का पाप; **–दोषी**–(वि.) जिसको ब्रह्म-हत्या लगी हो; **–द्रोही**–(वि.) ब्राह्मणों से द्रोह करनवाला; **–द्वार**–(पुं.) खोपड़ी के बीच का छिद्र, ब्रह्मरंध्र; **–धातु**–(पुं.) ब्रह्मत्व की शक्ति, रुद्र; **–नाभि**–(पुं.) विष्णु; **–निष्ठ**–(वि.) ब्रह्मज्ञान-संपन्न, ब्राह्मणों का भक्त; **–पति**–(पुं.) बृहस्पति; **–पत्र**–(पुं.) पलाश का पत्ता; **–पद**–(पुं.) ब्रह्मत्व, मोक्ष, मुक्ति, ब्राह्मणत्व; **–पर्णी**–(स्त्री.) पिठवन नाम की लता; **–पादप**–(पुं.)

पलाश का वृक्ष; —पाश—(पुं.) ब्रह्मा का पाश नामक अस्त्र; —पिशाच—(पुं.) ब्रह्मराक्षस; —पुत्र—(पुं.) एक बड़ी नदी जो मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है; ब्रह्मा का पुत्र, वशिष्ठ, नारद, मरीचि; —पुत्री—(स्त्री.) सरस्वती नदी; —पुर—(पुं.) हृदय, ब्रह्मलोक; —पुराण—(पुं.) वेदव्यास प्रणीत एक पुराण जिसको आदि पुराण भी कहते हैं; —पुरी—(स्त्री.) काशी धाम; —पुरोहित—(पुं.) देवताओं के पुरोहित, बृहस्पति; —फाँस—(हि. स्त्री.) देखो 'ब्रह्मपाश'; —बल—(पुं.) वह तेज या शक्ति जो भक्त को तप करने से प्राप्त हो; —बीज—(पुं.) प्रणव, ओंकार; —भवन—(पुं.) ब्रह्मलोक; —भाव—(पुं.) ब्रह्म का स्वरूप; —भूय—(पुं.) ब्रह्मत्व, मोक्ष; —भोज—(पुं.) ब्राह्मणों को भोजन कराना; —मय—(वि.) ब्रह्मस्वरूप; —मुहूर्त—(पुं.) सूर्योदय के तीन-चार घड़ी पहले का समय, प्रभात; —मेखल—(पुं.) मुंजतृण, मूँज; —यज्ञ—(पुं.) शिष्यों का विधिपूर्वक वेदाभ्यास, वेदाध्ययन; —योग—(पुं.) समाधि का एक भेद, अठारह मात्राओं का एक ताल; —योनि—(वि.) जिसकी उत्पत्ति का कारण ब्रह्म हो; —रंध्र—(पुं.) तालु, मस्तक के मध्य का वह गुप्त छिद्र जिससे निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है; —रथ—(पुं.) ब्रह्मा का वाहन, हंस; —राक्षस—(पुं.) वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत-योनि को प्राप्त हुआ हो; —रात—(पुं.) याज्ञवल्क्य मुनि के पिता का नाम; —रात्र—(पुं.) देखो 'ब्रह्ममुहूर्त', ब्रह्मा की एक रात जो कल्प के बराबर होती है; —राशि—(पुं.) पवित्र मन्त्र-समूह; —रीति—(स्त्री.) ब्रह्मा या ब्राह्मण की रीति; —रूपक—(पुं.) एक प्रकार का छन्द जिसमें सोलह अक्षर होते हैं, (इसको चित्रा या चंचला भी कहते हैं); —रेखा—(स्त्री.) भाग्य या नियति का लेख, ब्रह्मलेख; —लेख—(पुं.) भाग्य या नियति का लेख जिसके विषय में कहा जाता है कि जीव-भ्रूण के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर ब्रह्मा लिख देते हैं; —लोक—(पुं.) वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं, सत्यलोक; —वक्ता—(पुं.) [illegible] का व्याख्याता; —वध—(पुं.) ब्राह्मण की हत्या; —वर्चस्—(पुं.) वह शक्ति जिसको ब्रह्मचर्य तथा तप से प्राप्त किया जाता है; —वाद—(पुं.) वेदपाठ, वेद का पढ़ना-पढ़ाना; —वादी—(पुं.) वेदान्ती, वेदों को पढ़ानेवाला; —वादिनी—(स्त्री.) गायत्री; —वास—(पुं.) ब्रह्मलोक; —विद्—(पुं.) विष्णु, शिव; (वि.) ब्रह्म को जाननेवाला, वेद का अर्थ समझनेवाला; —विद्या—(स्त्री.) ब्रह्मज्ञान, दुर्गा, उपनिषद् का एक भेद, वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म का ज्ञान हो सके; —विवर्धन—(पुं.) विष्णु, तपोबल का विशेष रूप से बढ़ना; —वृक्ष—(पुं.) पलाश का वृक्ष, गूलर का पेड़; —वृत्ति—(स्त्री.) ब्राह्मण की जीविका; —वृद्ध—(वि.) जिसकी शक्ति तप करने से बढ़ गई हो; —वेद—(पुं.) वेदान्त; —वैवर्त—(पुं.) वह प्रतीति या भाव जो ब्रह्म के कारण हो, ब्रह्म के तेज से प्रतीत होनेवाला जगत्, अठारह पुराणों में से एक, श्रीकृष्ण; —व्रत—(पुं.) वह व्रत जो ब्रह्मलोक की प्राप्ति के लिये किया जाता है; —शाला—(पुं.) वेदाध्ययन का स्थान; —शासन—(पुं.) वेद या स्मृति की आज्ञा; —समाज—(पुं.) राजा राममोहन राय द्वारा प्रचार किया हुआ एक संप्रदाय; —सर्प—(पुं.) विषधर सर्प; —सुता—(स्त्री.) सरस्वती; —सू—(पुं.) प्रद्युम्न, अनिरुद्ध; —सूत्र—(पुं.) यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यास मुनि का बनाया हुआ वेदांत सूत्र जिसमें ब्रह्म का प्रतिपादन है; —स्तंब—(पुं.) ब्रह्माण्ड; —स्वरूप—(पुं.) जगत् या प्रकृति का प्रतिरूप; —हत्या—(स्त्री.) ब्राह्मण का वध, ब्राह्मण को मार डालना; —हन्—(पुं.) ब्रह्महत्या करनेवाला; —हुत—(पुं.) अतिथि-पूजन-रूप यज्ञ।

ब्रह्मांड—(सं.पुं.) चौदहों भुवनों का समूह, विश्वगोलक, सम्पूर्ण विश्व, कपाल, खोपड़ी।

ब्रह्मर्षि—(सं.पुं.) ब्राह्मण ऋषि, वसिष्ठ आदि; —देश—(पुं.) कुरुक्षेत्र आदि चार देश।

ब्रह्मा—(सं.पुं.) ब्रह्म के सगुण रूपों में से वह जो सृष्टि की रचना करता है, पितामह, यज्ञ के एक ऋत्विक् का नाम।

ब्रह्माक्षर—(सं.पुं.) प्रणव, ओंकार।

ब्रह्माणी—(सं.स्त्री.) ब्रह्मा की स्त्री, शक्ति, सरस्वती, सावित्री, दुर्गा।

[illegible]—(सं.स्त्री.) [illegible]।

ब्रह्मानंद—(सं.पुं.) ब्रह्मस्वरूप आनन्द, ब्रह्मज्ञान होने पर जो आनन्द प्राप्त होता है।

ब्रह्माभ्यास—(सं.पुं.) वेदाभ्यास।

ब्रह्मायतन—(सं.पुं.) ब्रह्मलोक।

ब्रह्मावर्त—(सं.पुं.) सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।

ब्रह्मासन—(सं.पुं.) ध्यानासन, योगासन।

ब्रह्मास्त्र—(सं.पुं.) वह संहारक अस्त्र जो मन्त्रों से चलाया जाता था।

ब्रह्मास्य—(सं.पुं.) ब्राह्मण का मुख।

ब्रह्मिष्ठा—(सं.स्त्री.) दुर्गा।

ब्रात—(हि.पुं.) देखो 'व्रात'।

ब्राह्म—(सं.वि.) ब्रह्म या ब्राह्मण संबंधी।

ब्राह्मण—(सं.पुं.) अग्रजन्मा, भूदेव, विप्र, ब्राह्मण जाति, शिव, विष्णु, मंत्र से भिन्न वेद का अंश, अग्नि, एक नक्षत्र का नाम; —ता—(स्त्री.), —त्व—(पुं.) ब्राह्मण का भाव या धर्म; —प्रिय—(पुं.) विष्णु; —भोजन—(पुं.) ब्राह्मणों को खिलाना; —वध—(पुं.) ब्राह्मण की हत्या।

ब्राह्मणी—(सं.स्त्री.) ब्राह्मण की स्त्री।

ब्राह्मण्य—(सं.पुं.) ब्राह्मण का धर्म, विप्रत्व।

ब्राह्ममुहूर्त—(सं.पुं.) अरुणोदय काल के पूर्व के दो दण्ड।

ब्राह्म-समाज—(सं.पुं.) एक धर्म समाज जिसमें एक मात्र परब्रह्म की उपासना की जाती है, ब्रह्म-समाज।

ब्राह्मी—(सं.स्त्री.) दुर्गा, सरस्वती, रोहिणी नक्षत्र, एक बूटी का नाम, भारतवर्ष की एक प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं।

ब्राह्मीकंद—(सं.पुं.) वाराहीकन्द।

ब्राह्मप—(सं.वि.) [illegible]।

भ

भ—हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ व्यंजन, पवर्ग का चौथा वर्ण, (इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। इसके उच्चारण में [illegible] है।)

भ—(सं.पुं.) नक्षत्र, ग्रह, राशि, [illegible]।

भंकार—(हि.पुं.) [illegible]।

भंकारी—(हि.स्त्री.) [illegible]।

भंग–(सं. पुं.) तरंग, लहर, खंड, बाधा, विनाश, टुकड़ा, भाग, टूटना; (स्त्री.) भाँग ।
भंगड़–(हि.वि.) बहुत भाँग पीनेवाला; (पुं.) वह जो प्रतिदिन बहुत भाँग पीता हो, भँगेड़ी ।
भँगना–(हि.क्रि.अ.,स.) तोड़ना, दबाना, टूटना, दबना ।
भँगरा–(हि. पुं.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो भाँग के रेशे से बुना जाता है, वर्षाकाल में होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति, भँगरैया ।
भँगराज–(हि. पुं.) कोयल की तरह की एक चिड़िया, देखें 'भँगरा' ।
भँगरया–(हि.स्त्री.) देखें 'भँगरा', भृंगराज ।
भंगार–(हि. पुं.) वह गड्ढा जो कूप खनते समय पहले खोदा जाता है, वह गड्ढा जो बरसात के दिनों में भूमि के दब जाने से बन जाता है, कूड़ा-करकट, घासफूस ।
भंगिमा–(सं. स्त्री.) वक्रता, मुद्राकृति ।
भंगिरा–(हि. पुं.) देखें 'भँगरा' ।
भंगी–(सं. वि.) नष्ट होनेवाला, भंग करनेवाला; (स्त्री.) टेढ़ापन, कुटिलता, वेश-विन्यास; (हि. पुं.) एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मल-मूत्र आदि उठाना है; (वि.) भाँग पीनेवाला, भँगेड़ी ।
भंगुर–(हि.वि.) नाशवान्, टेढ़ा; –ता–(स्त्री.) कुटिलता, विनाशशीलता ।
भँगेड़ी–(हि.पुं.) अधिक भाँग पीनेवाला ।
भँगेरा–(हि. पुं.) भाँग की छाल का बना हुआ कपड़ा, भँगरैया ।
भँगेला–(हि. पुं.) देखें 'भँगेरा' ।
भंजक–(सं. वि.) तोड़नेवाला ।
भंजन–(सं. पुं.) तोड़ने का काम; (वि.) तोड़नेवाला, नाश करनेवाला ।
भँजना–(हि. क्रि. स.) विभक्त होना, टुकड़े-टुकड़े होना, किसी बड़ी मुद्रा का छोटी मुद्रा में बदला जाना, भुनना, बटा जाना, मोड़ा जाना, माँजा जाना ।
भँजनी–(हि. स्त्री.) करघे का एक अंग जो ताने के किनारे पर लगा रहता है ।
भँजाना–(हि. क्रि. स.) तोड़वाना, बड़ी मुद्रा के बदले छोटी मुद्राएँ लेना या देना, भुनाना, रस्सी, कागज आदि को माँजने में दूसरे को नियुक्त करना ।
भँझा–(हि. पुं.) कुएँ के किनारे के खंभों पर आड़े बल रखी हुई लकड़ी ।
भँटकटैया–(हि. स्त्री.) देखें 'भटकटैया' ।
भँटा–(हि. पुं.) बैंगन ।
भँड–(हि. पुं.) देखें 'भाँड़'; (वि.) गाली बकनेवाला, धूर्त ।
भँडताल–(हि.पुं.) एक प्रकार का नाच और गाना जिसमें एक मनुष्य गाता है और शेष लोग उसके पीछे तालियाँ पीटते है ।
भँडतिल्ला–(हि. पुं.) देखें 'भँड़ताल' ।
भंडना–(हि. क्रि. स.) भंग करना, तोड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना, अपकीर्ति फैलाना, हानि पहुँचाना, बिगाड़ना ।
भंडफोड़–(हि. पुं.) मिट्टी के पात्रों को पटककर तोड़ना-फोड़ना, मिट्टी के पात्रों का टूटना-फूटना, भेद खोलने का काम, भंडाफोड़ ।
भँड़भाँड़–(हि. पुं.) एक कँटीला पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ औषध के काम में आती हैं ।
भँड़रिया–(हि. पुं.) एक जाति का नाम, (इस जाति के लोग शनैश्चर आदि ग्रहों का दान लेते तथा लोगों का हाथ देखकर भविष्य-फल बतलाते है); (वि.) पाखंडी, ढोंगी, धूर्त; (स्त्री.) भीत में बनी हुई छोटी आलमारी जिसमें पल्ले लगे हों ।
भँड़सार, भँड़साल–(हि.स्त्री.) वह गोदाम जहाँ सस्ता अन्न मोल लेकर महँगा बेचने के लिये इकट्ठा किया जाता है ।
भंडा–(हि. पुं.) पात्र, भांड, भंडार, रहस्य, भेद; (मुहा.) –फूटना–भेद खुल जाना ।
भँडाना–(हि.क्रि.स.) नष्ट करना, तोड़ना-फोड़ना, उपद्रव करना, उछल-कूद करना ।
भंडार–(हि. पुं.) कोष, अन्न रखने का स्थान, कोठार, पाकशाला, भंडारा, उदर, पेट, अग्निकोण ।
भंडारा–(हि. पुं.) देखें 'भंडार', झुंड, समूह, उदर, पेट, साधुओं का भोज ।
भंडारी–(हि. स्त्री.) कोष, खजाना, छोटी कोठरी; (पुं.) कोषाध्यक्ष, रसोईदार ।
भँडेरिया–(हि. पुं.) देखें 'भँड़रिया' ।
भँडेरियापन–(हि. पुं.) पाखंड, ढोंग ।
भँड़ौआ–(हि. पुं.) भांड़ों के गान का गीत, ऐसा गीत जो सभ्य समाज में गाने योग्य न हो, हास्यरस की निकृष्ट कविता ।
भंवूरी–(हि.स्त्री.) बबूल की जाति का एक वृक्ष ।
भँभरना–(हि.क्रि.अ.) भयभीत होना, डरना ।
भंभा–(सं. पुं.) बिल, छेद ।
भंभाका–(हि. स्त्री.) कोई बड़ा छिद्र ।
भँभाना–(हि. क्रि. अ.) गौ आदि पशुओं का चिल्लाना, रँभाना ।
भँभीरी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का बरसाती फतिंगा, जुलाहा ।
भँभेरि–(हि. स्त्री.) भय, डर ।
भँमर–(हि.पुं.) बड़ी मधुमक्खी, बर्रे, भिड़ ।
भँवन–(हि. स्त्री.) देखें 'भ्रमण', घूमना-फिरना ।
भँवना–(हि. क्रि. अ.) घूमना-फिरना, चक्कर लगाना ।
भँवर–(हि. पुं.) देखें 'भ्रमर', भौंरा, गड्ढा, जल के बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की धारा एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है; –कली–(स्त्री.) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि चारों ओर घूम सके; –गीत–(पुं.) देखें 'भ्रमर-गीत'; –जाल–(पुं.) संसार के प्रपंच, भ्रमजाल; –भीख–(स्त्री.) वह भीख जो घर-घर घूमकर माँगी जाय ।
भँवरा–(हि. पुं.) देखें 'भौंरा', भ्रमर ।
भँवरी–(हि.स्त्री.) भँवर, जल-धारा का चक्कर, जन्तुओं के शरीर पर का वह स्थान जहाँ रोयें या बाल एक केन्द्र पर ऐंठे हुए रहते हैं, घूम-घूम कर सौदा बेचना, चक्कर लगाना, परिक्रमा ।
भँवाना–(हि. क्रि. स.) भ्रम में डालना, चक्कर देना, घुमाना ।
भँवारा–(हि.वि.) भ्रमणशील, घूमनेवाला ।
भइया–(हि. पुं.) भ्राता, भाई, एक आदर-सूचक शब्द जो बराबरवालों के लिय प्रयुक्त होता है ।
भक–(हि.अव्य.) आग के एकाएक जलने या धुआँ के निकलने से उत्पन्न शब्द; (इसका प्रयोग 'से' विभक्ति के साथ होता है ।)
भकभकाना–(हि. क्रि. अ.) भकभक करके जलना ।
भकक्षा–(सं. स्त्री.) नक्षत्रों की कक्षा ।
भकरांध–(हि. स्त्री.) अन्न के सड़ने की गन्ध ।
भकरांधा–(हि. वि.) सड़ा हुआ ।
भकसा–(हि. वि.) (खाद्य-पदार्थ) जो अधिक समय तक पड़े रहने के कारण दुर्गन्धयुक्त हो गया हो ।
भकसाना–(हि. क्रि. अ.) किसी खाद्य पदार्थ का दुर्गंधयुक्त और खट्टा हो जाना ।
भकाऊँ–(हि. पुं.) बच्चों को डराने का शब्द, हौआ ।
भकार–(सं. पुं.) 'भ' स्वरूप वर्ण ।
भकुआ–(हि. वि.) मूढ़, मूर्ख ।

भकुआना–(हि.क्रि.अ.,स.) व्यग्र होना, घबड़ा जाना, चकपकाना, मूर्ख बनना, भकुआ जाना ।
भकुड़ा–(हि. पुं.) तोप में बत्ती आदि ठूँसने का मोटा गज ।
भकुड़ाना–(हि. क्रि. स.) तोप का मुँह लोहे के गज से स्वच्छ करना ।
भकुवा–(हि. वि.) देखें 'भकुआ' ।
भकूट–(सं. स्त्री.) ज्योतिष में एक प्रकार की राशियों का समूह ।
भकोसना–(हि.क्रि.स.) बिना अच्छी तरह से कुचले जल्दी-जल्दी निगलना, या खाना ।
भक्किका–(सं. स्त्री.) झिल्ली, झींगुर ।
भक्त–(सं. पुं.) भात, धन; (वि.) तत्पर, भक्तियुक्त, सेवा करनेवाला, बाँटकर दिया हुआ, अलग किया हुआ; –कंस–(पुं.) काँसे का पात्र जिसमें भात खाया जाता है; –कार–(पुं.) रसोईदार; –जा–(स्त्री.) अमृत; –ता–(स्त्री.), –त्व–(पुं.) भक्ति; –दास–(पुं.) वह दास जो केवल भोजन लेकर ही काम करता हो; –पन–(हि. पुं.) भक्ति; –रुचि–(स्त्री.) भोजन करने की प्रबल इच्छा; –वत्सल–(वि.) भक्तों पर स्नेह करनेवाला; (पुं.) विष्णु; –शाला–(स्त्री.) रसोई-घर।
भक्ताई–(हि. स्त्री.) देखें 'भक्ति' ।
भक्ति–(सं. स्त्री.) विभाग, सेवा, शुश्रूषा, बाँटने की क्रिया, खण्ड, अवयव, रेखा से किया हुआ विभाग, श्रद्धा, विश्वास रखना, पूजा, अर्चन, स्नेह, अनुराग, उपचार, एक वृत्त का नाम, भगवत्-पूजा में अनुराग; –कर–(वि.) भक्तियोग्य; –योग–(पुं.) भक्ति का साधन, सर्वदा भगवान् में श्रद्धापूर्वक मन लगाकर उनकी उपासना करना; –रस–(पुं.) वह रस जिसका स्थायी भाव भक्ति है; –राग–(पुं.) भक्ति का पूर्वानुराग; –वाद–(पु.) भक्ति-विषयक कथा; –सूत्र–(पु.) वैष्णव सम्प्रदाय का एक सूत्रग्रन्थ जिसमें भक्ति का वर्णन है ।
भक्ष–(सं. पुं.) भक्षण, खाने का काम, खाने का पदार्थ; –क–(वि.) खादक, खानेवाला; –कार–(पु.) हलवाई; –ण–(पुं.) किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना, भोजन करना ।
भक्षणीय–(सं. वि.) भोजनीय, खाने-लायक ।
भक्षना–(हि.क्रि.) भोजन करना, खाना ।
भक्षयिता–(सं. पुं.) खानेवाला ।
भक्षित–(सं. वि.) खाया हुआ ।
भक्षी–(सं. वि.) भक्षक, खानेवाला ।
भक्ष्य–(सं. वि.) खाने योग्य; (पुं.) अन्न, आहार ।
भक्ष्याभक्ष्य–(सं. पुं.) खाने तथा न खाने योग्य पदार्थ ।
भख–(हि. पुं.) आहार, भोजन ।
भखना–(हि. क्रि. स.) भोजन करना, खाना, निगलना ।
भखी–(हि. स्त्री.) दलदल में होनेवाली एक प्रकार की घास ।
भगंदर–(सं.पुं.) गुदा में व्रण होने का रोग ।
भग–(सं. पुं.) स्त्री की योनि, गदा, रवि, सूर्य, बारह आदित्यों में से एक, छः प्रकार की विभूतियाँ, इच्छा, माहात्म्य, यत्न, धर्म, मोक्ष, सौभाग्य, कान्ति, चन्द्रमा, धन, पद, एक देवता का नाम, ऐश्वर्य ।
भगण–(सं. पुं.) वह समय जो किसी ग्रह के मेषादि बारहों राशियों के अतिक्रमण में लगता है, छन्दःशास्त्र के अनुसार वह गण जिसके आदि का एक वर्ण गुरु और अन्त के दो वर्ण लघु होते हैं ।
भगत–(हि. पुं.) देखें 'भक्त', सेवक, उपासक, साधु, वह जो मांस न खाता हो, विचारवान्, ओझा, होली में स्वांग बनानेवाला, भूत-प्रेत उतारनेवाला ।
भगतिया–(हि. पुं.) राजपूताने की एक वैष्णव जाति ।
भगदड़, भगदर–(हि.स्त्री.) किसी उपद्रव से त्रस्त होकर बहुत-से लोगों का एकाएक भागना ।
भगतवछल–(हि.वि.) देखें 'भक्तवत्सल' ।
भगति–(हि. स्त्री.) देखें 'भक्ति' ।
भगती–(हि. स्त्री.) देखें 'भक्ति' ।
भगना–(हि.पुं.) बहिन का पुत्र, भांजा; (क्रि. अ.) भागना ।
भगनी–(हि. स्त्री.) देखें 'भगिनी' ।
भगर–(हि. पु.) छल, कपट ।
भगरना–(हि. क्रि. अ.) गर्मी से अन्न का सड़ने लगना ।
भगल–(हि. पु.) जादू, छल, कपट, [illegible], इन्द्रजाल ।
भगली–(हि.पुं.) ढोंगी, छली, बाजीगर ।
भगवंत–(हि. पु.) देखें 'भगवान्' ।
भगवती–(सं. स्त्री.) देवी, गौरी, सरस्वती, दुर्गा ।
भगवत्–(सं. पुं.) परमेश्वर, बुद्ध, शिव, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय, वेदव्यास, गुरु; (वि.) पूजनीय ।
भगवत्पदी–(सं.स्त्री.) गंगा का एक नाम ।
भगवद्गीता–(सं. स्त्री.) महाभारत के भीष्म पर्व के अन्तर्गत अठारह अध्यायों का वह ग्रंथ जिसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का उपदेश है जिसको श्रीकृष्ण ने अर्जुन का मोह दूर करने के लिये काव्य के रूप में युद्धस्थल में सुनाया था ।
भगवद्भक्त–(सं. पुं.) ईश्वर का भक्त ।
भगवा–(हि. पुं.) लँगोटा, गेरुआ रंग ।
भगवान्, भगवान–(सं.,हि.पुं.) परमेश्वर, विष्णु, कोई आदरणीय व्यक्ति; (वि.) पूज्य, ऐश्वर्ययुक्त ।
भगहारी–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
भगांकुर–(सं. पुं.) अर्शरोग, बवासीर ।
भगाना–(हि. क्रि. स.) किसी को भागने में प्रवृत्त करना, दौड़ाना, हटाना, खदेड़ना, दूर करना ।
भगास्त्र–(सं.पुं.) प्राचीन काल का एक अस्त्र ।
भगिनी–(सं. स्त्री.) सहोदरा, बहिन ।
भगीरथ–(सं. पुं.) वह सूर्यवंशीय राजा अंशुमान् के पुत्र दिलीप के लड़के थे और घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाये थे; (वि.) भगीरथ की तपस्या के समान कठिन, बहुत बड़ा ।
भगेड़ू–(हि. वि., पुं.) (वह) जो कहीं से छिपकर भागा हो, जो काम पड़ने पर भाग जाता हो, कायर ।
भगोड़ा–(हि वि.,पुं.) भागनेवाला, कायर ।
भगोल–(सं. पु.) नक्षत्रचक्र, खगोल ।
भगौती–(हि. स्त्री.) देखें 'भगवती' ।
भगौहाँ–(हि. वि.) जो भागने को तैयार हो, कायर, गेरु में रँगा हुआ, गेरुआ ।
भग्गुल, भग्गू–(हि.वि.) जो विपत्ति देखकर भागता हो, युद्धक्षेत्र से भागा हुआ, कायर ।
भग्न–(सं. वि.) पराजित, भागा हुआ, टूटा हुआ; –दूत–(पु.) रणक्षेत्र से भागकर आया हुआ सैनिक जो अपनी सेना की हार का समाचार सुनाता है; –पृष्ठ–(वि.) जिसकी पीठ टूट गई हो ।
भग्नांश–(सं. पु.) मूल [illegible] का [illegible] का [illegible] ।
भग्नावशेष–(सं.पु.) किसी टूटी हुई वस्तु के टुकड़े, किसी टूटी-फूटी इमारत का अवशेष, खंडहर ।
[illegible]

भाव, लँगड़ापन।
भचकना–(हि.क्रि.अ.) आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना, चलते समय पैरों का टेढ़ा-मेढ़ा पड़ना।
भचक्र–(सं. पुं.) नक्षत्रसमूह, राशिचक्र।
भच्छ–(हि. पु.) देखें 'भक्ष्य'।
भच्छना–(हि.क्रि.स.) भक्षण करना,खाना।
भजक–(सं.वि.)विभाजक,भाग करनेवाला।
भजन–(सं. पुं.) भाग, खण्ड, सेवा, पूजा, वारम्बार किसी देवता या पूज्य का नाम लेना, स्मरण, देवता के उद्देश्य से गाया जानेवाला गीत, स्तोत्र, गुण-कीर्तन।
भजना–(हि. क्रि. अ., स.) सेवा करना, जपना, आश्रित होना, आश्रय लेना,देवता आदि का नाम वारवार लेना, भाग जाना, प्राप्त होना, पहुँचना।
भजनानंद–(सं. पुं.) वह आनन्द जो परमेश्वर का नाम लेने से प्राप्त होता है।
भजनानंदी–(सं. वि.,पुं.) (वह) जो दिन-रात भजन करने में मस्त रहता है।
भजनी–(हि. वि.) भजन गानेवाला।
भजनीय–(सं. वि.) विभाग करने योग्य, सेवा करने योग्य, आश्रय लेने योग्य।
भजमान–(सं. वि.) विभाग करनेवाला, सेवा करनेवाला।
भजाना–(हि. क्रि. स.) दौड़ाना, भगाना, दूर करना।
भजियाउर–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का भोजन जो दही, चावल, घी आदि को एक साथ पकाकर बनाया जाता है।
भज्य–(सं.वि.)सेवा करने योग्य,भजने योग्य।
भट–(सं. पुं.) युद्ध करने या लड़नेवाला योद्धा,वीर,सैनिक,एक वर्णसंकर जाति।
भटकटाई, भटकटैया–(हि. स्त्री.) एक छोटा काँटेदार पौधा जिसके पत्तों पर काँटे होते हैं।
भटकना–(हि.क्रि.अ.) भ्रम में पड़ना, मार्ग भूल जाना, इधर-उधर घूमते फिरना।
भटका–(हि. पुं.) चक्कर, व्यर्थ घूमना।
भटकाना–(हि. क्रि. स.) भ्रम में डालना, धोखा देना।
भटकैया–(हि.वि.)भटकने या भटकानेवाला।
भटकौहाँ–(हि.वि.)भ्रम में डालनेवाला।
भटतीतर–(हि.पु.)एक प्रकार की चिड़िया।
भटधर्मी–(हि. वि.) वीर धर्म का पालन करनेवाला, सच्चा वीर।
भटनास–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की लता जिसकी फलियों के दानों की दाल बनाई जाती है।
भटनेरा–(हि.पु.)वैश्यों की एक जाति है।
भटभेरा–(हि. पुं.) दो वीरों का सामना, आकस्मिक मिलन, अनायास होनेवाली भेंट, टक्कर, धक्का।
भटा–(हि. पुं.) भंटा, बैंगन।
भटियारा–(हि. पुं.) देखें 'भठियारा'।
भटियारिन–(हि.स्त्री.)भठियारे की स्त्री।
भटियारी–(सं.स्त्री.)एक रागिनी का नाम।
भटियाल–(हि. अव्य.) नदी की धारा की ओर।
भटू–(हि. स्त्री.) प्रिय अलि, सखी, एक आदरसूचक शब्द जो स्त्रियाँ आपस में संबोधन के लिए कहती है।
भटेरा–(हि. पुं.) वैश्यों की एक जाति।
भटैया–(हि. स्त्री.) देखें 'भटकटैया'।
भटोट–(हि. पुं.) यात्रियों के गले में फांसी लगाकर लूटनेवाला ठग।
भटोला–(हि. वि.) भाट के योग्य; (पुं.) वह भूमि जो भाट को दी गई हो।
भट्ट–(सं. पुं.) महाराष्ट्री ब्राह्मणों की एक उपाधि, पण्डित, योद्धा, भाट, सूर।
भट्टप्रयाग–(सं. पुं.) गंगा और यमुना का संगम-स्थान।
भट्टारक–(सं. पुं.) नाटकों में राजा इस नाम से पुकारा जाता है, सूर्य, देव, पूज्य व्यक्ति।
भट्टारकवार–(सं.पुं.)आदित्यवार,रविवार।
भट्टिनी–(सं. स्त्री.) ब्राह्मण की भार्या, नाटक की भाषा में राजा की वह पत्नी जिसका अभिषेक न हुआ हो।
भट्टी–(हि. स्त्री.) देखें 'भट्ठी'।
भट्ठा–(हि. पुं.) बड़ी भट्ठी, ईंट, खपड़े आदि पकाने का पजावा, हलवाई का बड़ा चूल्हा।
भट्ठी–(हि. स्त्री.) चूल्हा, देशी मद्य बनाने का कार्यालय।
भठियाना–(हि. क्रि.अ.) समुद्र में भाटा आना, समुद्र के पानी का नीचे उतरना।
भठियारपन–(हि. पुं.) भठियारों की तरह लड़ना और गाली बकना।
भठियारा–(हि. पुं.) सराय का प्रबंध करनेवाला।
भठियाल–(हि. पुं.) देखें 'भाटा'।
भठुली–(हि.स्त्री.)ठठेरों की छोटी भट्ठी।
भठुवा–(हि. पुं.) आडंबर, दिखौवा शान।
भड़क–(हि. स्त्री.) दिखौवा चमक-दमक, चमकीलापन, भड़कने का भाव; –**दार**–(वि.) चमकीला, भड़कीला।
भड़कना–(हि. क्रि. अ.) प्रज्वलित होना, वेग से जल उठना, क्रुद्ध होना, चौकना, घोड़े आदि का डरकर पीछे हटना।
भड़काना–(हि. क्रि. स.) प्रज्वलित करना, जलाना, चमकाना, बढ़ावा देना, उत्तेजित करना, उभाड़ना, भयभीत करना।
भड़कीला–(हि. वि.) भड़कदार, चमकीला, डरकर उत्तेजित होनेवाला, चौकन्ना होनेवाला; –**पन**–(पुं.) भड़कीला होने का भाव या क्रिया।
भड़भड़–(हि. स्त्री.) किसी पोली वस्तु पर आघात से उत्पन्न शब्द, जनसमूह, भीड़भाड़, व्यर्थ बकवास, अधिक वार्ता।
भड़भड़ाना–(हि. क्रि. अ., स.) भड़भड़ शब्द करना, व्यर्थ बकवाद करना।
भड़भड़िया–(हि. वि.) व्यर्थ बातें करनेवाला, बकवादी, गप्पी।
भड़भाँड़–(हि. पुं.) एक कँटीला पौधा, घमोय।
भड़भूँजा–(हि. पुं.) हिन्दुओं की एक छोटी जाति जो भाड़ में अन्न भूनने का काम करती है।
भड़वा–(हि. पुं.) देखें 'भड़ुआ'।
भड़साईं–(हि. स्त्री.) भड़भूँजे का भाड़।
भड़सायँ–(हि. स्त्री.) देखें 'भँड़रिया'।
भड़ार–(हि. पुं.) देखें 'भंडार'।
भड़ाल–(हि. पुं.) वीर, योद्धा, लड़ाका।
भड़िहा–(हि. पुं.) तस्कर, चोर, ठग।
भड़िहाई–(हि. अव्य.) चोरों की तरह लुक-छिपकर; (स्त्री.) चोरी।
भड़ी–(हि. स्त्री.) वह उत्तेजना जो किसी को मूर्ख बनाने या उत्तजित करने के लिये दी जाय, झूठा बढ़ावा।
भड़ुआ–(हि. पुं.) वह जो रंडियों की दलाली करता हो, रंडियों के साथ तबला या सारंगी बजानेवाला।
भड़ुर, भड्डर–(हि. पुं.) ब्राह्मणों में निम्न श्रेणी की एक जाति, (इस जाति के लोग ग्रहों का दान लेते और तीर्थों में यात्रियों को दर्शन आदि कराते हैं), भंडर।
भणन–(सं. पुं.) कथन, उक्ति।
भणना–(हि. क्रि.स.) कहना।
भणित–(सं. वि.) कथित, कहा हुआ; (पुं.) कही हुई बात।
भतवान–(हि. पुं.) विवाह की एक रीति जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों को कच्ची रसोई खिलाते ह।
भतार–(हि. पुं.) भर्ता, पति।
भतीजा–(हि. पुं.) भाई का पुत्र।
भतुआ–(हि. पु.) सफेद कुम्हड़ा, पेठा।
भत्ता–(हि. पुं.) किसी कर्मचारी को वेतन के उपरांत दिया जानेवाला यात्रा-व्यय आदि।

भदंत–(हिं. पुं.) बौद्ध संन्यासी ।
भदई–(हिं. वि.) भादों के महीने का; (स्त्री.) भादों के महीने में तैयार होनेवाली उपज ।
भदभद–(हिं. वि.) बहुत मोटा, भद्दा ।
भदयल–(हिं. पुं.) मेढक ।
भदावर–(हिं. पुं.) ग्वालियर राज्य का एक प्रान्त जहाँ के बैल बड़े प्रसिद्ध होते हैं।
भदेस–(हिं. वि.) कुरूप, भद्दा ।
भदेसिल–(हिं. वि.) भद्दा, कुरूप ।
भदौंह (हा)–(हिं. वि.) भादों महीने में होनेवाला ।
भद्दा–(हिं. वि.) जो देखने में सुन्दर न हो, कुरूप, बेढंगा, अशिष्ट; **–पन**–(पुं.) कुरूपता, बेढंगापन, अशिष्टता ।
भद्र–(सं. पुं.) क्षेम, कुशल, ज्योतिष में एक करण का नाम, महादेव, खंजन पक्षी, बैल, कदंब, व्रज के एक वन का नाम, स्वरसाधन की एक प्रणाली, बलदेवजी के एक सहोदर भाई, विष्णु का एक द्वारपाल, सुमेरु पर्वत, चन्दन, सोना, उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम; (वि.) सभ्य, श्रेष्ठ, कल्याणकारी; (हिं. पुं.) सिर, दाढ़ी तथा मूँछ के बालों का मुंडन; **–क**–(पुं.) देवदारु, बाइस अक्षरों का एक छन्द; **–कपिल**–(पुं.) शिव, महादेव; **–काय**–(पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; **–कार**, **–कारक**–(वि.) कल्याण करनेवाला; **–काली**–(स्त्री.) कात्यायनी, दुर्गा की एक मूर्ति; **–गणित**–(पुं.) बीज-गणित के अन्तर्गत एक गणित जो चक्रविन्यास की क्रिया आदि से संबद्ध है; **–ता**–(स्त्री.) सभ्यता, शिष्टता, भलमनसी; **–घन**–(पुं.) नागरमोथा; **–नामन्**–(पुं.) कठफोड़वा नामक पक्षी; **–पदा**–(स्त्री.) पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र; **–पीठ**–(पुं.) वह सिंहासन जिस पर राजाओं या देवताओं का अभिषेक किया जाता है; **–बला**–(स्त्री.) माधवी लता; **–रूपा**–(स्त्री.) सुन्दर स्त्री; **–वती**–(स्त्री.) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम; **–वसन**–(पुं.) सुन्दर पहिनावा; **–विराट्**–(पुं.) एक वर्णिक वृत्त का नाम; **–शील**–(वि.) सच्चरित्र, जिसका आचरण अच्छा हो; **–षष्ठी**–(स्त्री.) दुर्गा देवी; **–सोमा**–(स्त्री.) गंगा नदी ।
भद्रा–(सं. स्त्री.) आकाशगंगा, फलित ज्योतिष में द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियों का मान, शमी, हल्दी, गाय, केकय राज की कन्या जो कृष्ण को ब्याही थी, सुभद्रा का एक नाम, पिंगल में उपजाति का एक भेद, बाधा, अड़चन, पृथ्वी, फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग का नाम ।
भद्राकरण–(सं. पुं.) मूँड़न, सिर का बाल मुड़वाना ।
भद्रानंद–(सं. पुं.) स्वरसाधना की एक प्रणाली ।
भद्रावती–(सं. स्त्री.) कटहल का वृक्ष ।
भद्राश्रय–(सं. पुं.) चन्दन ।
भद्रासन–(सं. पुं.) देखे 'भद्रपीठ' ।
भद्रिका–(सं. स्त्री.) भद्रा तिथि, एक वर्णवृत का नाम ।
भद्री–(सं. वि.) भाग्यवान् ।
भद्रैला–(सं. स्त्री.) बड़ी इलायची ।
भनक–(हिं. स्त्री.) भनभन की आवाज, धीमा शब्द, ध्वनि, जनश्रुति ।
भनकना–(हिं. क्रि. अ.) धीरे से बोलना या कहना ।
भनना–(हिं. क्रि. स.) कहना ।
भनभनाना–(हिं. क्रि. अ.) भनभन शब्द करना, गुंजार करना ।
भनभनाहट–(हिं. स्त्री.) भनभनाने का शब्द, गुंजार ।
भनित–(हिं. वि.) देखें 'भणित' ।
भपति–(सं. पुं.) चन्द्रमा ।
भबका–(हिं. पुं.) अर्क उतारने या मद्य चुआने का यन्त्र ।
भभक–(हिं. स्त्री.) भभकने की क्रिया या भाव, लालटेन की टेम का भभक कर बुता जाना ।
भभकना–(हिं. क्रि. अ.) मिट्टी का तेल आदि पड़ने के कारण लौ का ऊपर उठकर बुता जाना, प्रज्वलित होना, भड़कना, जोर से जल उठना ।
भभका–(हिं. पुं.) देखें 'भबका' ।
भभकी–(हिं. स्त्री.) झूठी धमकी, घुड़की ।
भभरना–(हिं. क्रि. अ.) डरना, घबड़ाना, भयभीत होना, भ्रम में पड़ना ।
भभीरी–(हिं. स्त्री.) झींगुर ।
भभूत–(हिं. पुं., स्त्री.) वह भस्म जिसको शैव भक्त माथे तथा भुजा पर लगाते हैं ।
भम्भ–(सं. पुं.) मक्खी, मच्छड़, धुवाँ ।
भम्भ(म्भ)ड़–(हिं. स्त्री.) जनसमुदाय, भीड़भाड़ ।
भयंकर–(सं. वि.) डरावना, भयजनक, जिसको देखने से भय लगे; **–ता**–(स्त्री.) भयंकर होने का भाव, भीषणता ।
भय–(सं. पुं.) वह भाव या मनोविकार जो किसी आनेवाली आपत्ति या आशंका से उत्पन्न होता है; **–कर**–(वि.) भयकारक, जिसको देखकर डर लगे; **–कर्ता**–(वि.) भयानक, भय उत्पन्न करनेवाला; **–जात**–(वि.) भय से उत्पन्न; **–द**–(वि.) भय उत्पन्न करनेवाला; **–दायी**–(वि.) डरावना; **–नाशन**–(पुं.) विष्णु; **–प्रद**–(वि.) भयानक, जिसको देखकर भय उत्पन्न हो; **–भीत**–(वि.) जिसके मन में भय उत्पन्न हुआ हो, डरा हुआ; **–भ्रष्ट**–(वि.) जो डर के मारे भागा हो; **–मोचन**–(वि.) भय दूर करनेवाला; **–हरण**–(वि.) भय का नाश करनेवाला; **–हारी**–(वि.) डर दूर करनेवाला ।
भया–(हिं. क्रि. अ.) होना क्रिया का भूतकालिक रूप, हुआ (बोलचाल का शब्द) ।
भयाकुल–(सं. वि.) डर से घबड़ाया हुआ ।
भयातिसार–(सं. पुं.) डर के कारण बहुत शौच होना ।
भयातुर–(सं. वि.) डर से घबड़ाया हुआ ।
भयान–(हिं. वि.) देखें 'भयानक' ।
भयानक–(सं. वि.) भयंकर, डरावना, जिसको देखने से भय लगता हो; (पुं.) व्याघ्र, राहु, साहित्य म वह रस जो भीषण दृश्यों के वर्णन से उत्पन्न होता रहता है ।
भयाना–(हिं. क्रि. अ., स.) डरना, डराना ।
भयापह–(सं. वि.) भयनाशक ।
भयारा–(हिं. वि.) भयानक, डरावना ।
भयावन–(हिं. वि.) डरावना ।
भयावह–(सं. वि.) भयंकर, डरावना ।
भयावहा–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात ।
भय्या–(हिं. पुं.) भैया, भाई ।
भरंड–(सं. पुं.) स्वामी, मालिक, राजा, बैल, पृथ्वी, कृमि, कीड़ा ।
भरंत–(हिं. स्त्री.) भ्रान्ति, सन्देह ।
भर–(सं. वि.) अतिशय, बहुत, पूरा, कुल, भरण करनेवाला; (पुं.) भार, बोझ, संग्राम, दो सौ पलों का एक परिमाण; (हिं. पुं.) पुष्टि, मोटाई, एक अस्पृश्य हिंदू जाति; (अव्य.) द्वारा, बल से ।
भरक–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी, देखें 'भड़क' ।
भरकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'भड़कना' सुखाने के लिए धूप में रखे गये अनाज की नमी का धीरे-धीरे सूखना ।
भरका–(हिं. पुं.) वह मिट्टी जो काली और चिकनी हो, ऐसी मिट्टी का खेत ।
भरट–(सं. पुं.) कुम्हार, सेवक ।

भरण–(सं. पुं.) पालन-पोषण, भरणी नक्षत्र, पूर्ति या बदले में दिया जानेवाला पदार्थ, भरती।
भरणी–(सं. स्त्री.) सत्ताईस नक्षत्रों मे से दूसरा नक्षत्र, (इसकी आकृति त्रिकोण-जैसी है); –भू–(पुं.) राहु ग्रह।
भरणीय–(सं. वि.) पालने-पोसने योग्य।
भरण्य–(सं. पुं.) मूल्य, वेतन।
भरण्यु–(सं.पुं.) मेघ, अग्नि, ईश्वर, बैल।
भरत–(सं. पुं.) एक मुनि जो नाट्य-शास्त्र के सृष्टिकर्ता थे, नट, जुलाहा, खेत, कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र, रामचन्द्र के छोटे भाई, शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यन्त के पुत्र जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था, उत्तर भारत का प्राचीन नाम, संगीतशास्त्र के एक आचार्य का नाम; (पुं.) लवा पक्षी, काँसा, कसकुट; –खंड–(पुं.) प्राचीन पुराणों के अनुसार पृथ्वी के नव-खंडों में से एक, भारतवर्ष; –प्रसू–(स्त्री.) भरत की माता कैकेयी।
भरतरी–(हिं. स्त्री.) पृथ्वी।
भरता–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सालन जो भंटा, अरुई, आलू आदि को भूनकर बनाया जाता है, चोखा।
भरताग्रज–(सं. पुं.) श्रीरामचन्द्र।
भरतार–(हिं. पुं.) पति, स्वामी।
भरताश्रम–(सं.पुं.) भरत मुनि का आश्रम।
भरतिया–(हिं. वि.) कसकुट या काँसे का बना हुआ; (पुं.) कसकुट का पात्र बनानेवाला, ठठेरा।
भरती–(हिं. स्त्री.) भरे जाने का भाव, भरा जाना, प्रवेश, वह नाव जिसमें माल लादा जाता हो, नक्काशी या चित्र-कारी में बीच का खाली स्थान भरना, ज्वार, बाढ़, सेना आदि में नियुक्ति; (क्रि. प्र.)–करना–दाखिल या नियुक्त करना।
भरथ–(सं. पुं.) लोकपाल; (हिं. पुं.) देखें 'भरत'।
भरथरी–(हि. पुं.) देखें 'भर्तृहरि'।
भरदूल–(हि. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
भरद्वाज–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, इनके वंशजो के गोत्र का नाम, एक प्रकार का पक्षी।
भरना–(हिं. क्रि. अ., स.) पूर्ण करना, रिक्त स्थान को पूरा करने के लिये कोई वस्तु डालना, उड़ेलना, ऋण चुकाना, शरीर या अंगों का हृष्ट-पुष्ट होना, घाव के गड्ढे का बराबर होना, अवकाश या छिद्र का बंद होना, तोप या बन्दूक में गोली-बारूद आदि डालना, पशुओं पर बोझ लादना, पद पर नियुक्त करना, निर्वाह करना, काटना, खेत म पानी देना, कुएँ से घड़े आदि में पानी लाना, निन्दा करना, कठिनता से समय बिताना या काटना, सहना, झेलना; (मुहा.) **घर भरना**–अधिक धन देना; (हिं. पुं.) भरने की क्रिया या भाव, उत्कोच, घूस।
भरनि–(हिं. स्त्री.) पहिनावा।
भरनी–(हिं. स्त्री.) करघे की ढरकी, नार, छछूंदर, मोरनी, एक प्रकार की जंगली बूटी।
भरपाई–(हिं. अव्य.) भली-भाँति, पूर्ण रूप से; (स्त्री.) प्राप्य या बाकी धन पूरा-पूरा पा जाना, वह रसीद जो ऋण चुकता हो जाने पर दी जाय।
भरपूर–(हिं. वि.) जो पूरी तरह से भरा हुआ हो, परिपूर्ण; (अव्य.) पूर्ण रूप से, भली-भाँति, अच्छी तरह, पूरा करके; (पुं.) समुद्र का ज्वार।
भर-पेट–(हिं. अव्य.) पेट भरकर, जी भरकर।
भरभराना–(हिं. क्रि. अ.) रोआँ खड़ा होना, घबड़ाना।
भरभराहट–(हिं. स्त्री.) घबड़ाहट।
भरभूंजा–(हि. पुं.) देखें 'भड़भूंजा'।
भरभेंटा–(हिं. पुं.) सामना।
भरम–(हिं. पुं.) भ्रम, भ्रान्ति, संशय, सन्देह, धोखा, भेद, रहस्य; (मुहा.)–गँवाना–भेद खोलवाना।
भरमना–(हिं. क्रि. अ.) भटकना, धोखे में पड़ना, मारा-मारा फिरना, चलना, घूमना; (स्त्री.) भ्रम, भ्रान्ति, भूल।
भरमाना–(हिं. क्रि. अ., स.) भ्रम या चक्कर में डालना, बहकाना, चकित होना, हैरान होना।
भरमार–(हिं. स्त्री.) आधिक्य, अधिकता।
भरराना–(हिं. क्रि. अ., स.) भर-भर शब्द करते हुए गिरना, अरराना, टूट पड़ना, दूसरे को टूट पड़ने में प्रवृत्त करना।
भरल–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की जंगली भेड़।
भरवाई–(हिं. स्त्री.) भरवाने की क्रिया या भाव, भरवाने का वेतन।
भरवाना–(हिं. क्रि. स.) भरने का काम दूसरे से कराना।
भरसक–(हिं. अव्य.) यथाशक्ति, जितना हो सके।
भरसन–(हिं.स्त्री.) भर्त्सना, डाँट-फटकार।
भरसाई–(हिं. पुं.) देखें 'भाड़'।
भरहरना–(हि.क्रि.अ.) देखें 'भरभराना'।
भरहराना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'भहराना'।
भराँति–(हि. स्त्री.) देखें 'भ्रांति'।
भराई–(हि. स्त्री.) भरने की क्रिया या भाव, भरने का शुल्क।
भरापूरा–(हि. वि.) जिसमें किसी बात की न्यूनता न हो, संपन्न।
भराव–(हि. पुं.) भरने का भाव, भरने का काम, कशीदा काढ़ने में बेल-बूटों के बीच के स्थान को तागों से भरना।
भरित–(हिं.वि.) भरा हुआ, पाला हुआ, जिसका पालन-पोषण किया गया हो।
भरिया–(हिं. वि.) भरनेवाला, पूर्ण करनेवाला, ऋण चुकानेवाला; (पुं.) ढलाई करनेवाला मनुष्य।
भरी–(हिं. स्त्री.) दस माशे या एक रुपये के बराबर की तौल।
भरु–(सं.पुं.) विष्णु, शिव, समुद्र, स्वामी, सुवर्ण; (हि. पुं.) बोझ, भार।
भरुआ–(हि. पुं.) देखें 'भड़ुआ', टसर।
भरुकच्छ–(सं.पु.) भरोच देशका प्राचीन नाम।
भरुज–(सं. पुं.) सियार।
भरुहाना–(हि. क्रि. अ., स.) गर्व करना, घमंड करना, धोखा देना, बहकाना, उत्तेजित करना, बढ़ावा देना।
भरुही–(हिं. स्त्री.) लेखनी बनाने की एक प्रकार की किलिक।
भरेठ–(हिं. पुं.) द्वार के ऊपर लगाई हुई लकड़ी जिस पर भीत टिकी रहती है।
भरैया–(हिं. वि.) पालन करनेवाला, जो भरता हो।
भरोसा–(हिं. पुं.) अवलम्बन, आश्रय, आसरा, सहारा, आशा, दृढ़ विश्वास।
भरोसी–(हिं. वि.) भरोसा या आसरा करनेवाला, आश्रित, विश्वसनीय, जिस पर भरोसा किया जाय।
भरौती–(हिं. स्त्री.) वह रसीद जिसमें भरपाई लिखी गई हो।
भरौना–(हिं. वि.) बोझल, भारी।
भर्ग–(सं.पुं.) शिव, महादेव, भूना हुआ अन्न।
भर्जन–(सं. पुं.) भूना हुआ अन्न।
भर्तव्य–(सं.वि.) भरण-पोषण करने योग्य।
भर्ता–(सं. पुं.) अधिपति, विष्णु, मालिक, स्वामी, पति।
भर्तार–(हिं. पुं.) पति, स्वामी।
भर्तृघ्नी–(सं. स्त्री.) पतिघातिनी।
भर्तृत्व–(सं.पुं.) पति का भाव या धर्म।
भर्तृमती–(सं. स्त्री.) सधवा स्त्री।
भर्तृहरि–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध कवि

जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के भाई थे।

भर्त्सक–(सं. पुं.) तिरस्कार करनेवाला।

भर्त्सन–(सं. पुं.) निन्दा, डाँट-डपट।

भर्त्सना–(सं. स्त्री.) निन्दा, डाँट-डपट, फटकार।

भर्रा–(हि. पुं.) पक्षियों की उड़ान, एक प्रकार की चिड़िया।

भर्राना–(हि.क्रि.अ.) भर्र-भर्र शब्द होना।

भर्सन–(हि. पुं.) निन्दा, अपवाद, डाँट-फटकार।

भल–(सं.पुं.) देखो 'भला'।

भलका–(हि. पुं.) एक प्रकार का बाँस।

भलटी–(हि. स्त्री.) लोहा काटने का एक अस्त्र, हँसिया।

भलपति–(हि.पुं.) भाला धारण करनेवाला।

भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी–(हि. स्त्री.) सज्जनता।

भला–(हि. वि.) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया; (पुं.) लाभ, कल्याण, भलाई; (अव्य.) अस्तु; –ई–(स्त्री.) अच्छापन, भलापन, सौभाग्य, उपकार, नेकी; –पन–(पुं.) देखो 'भलाई'; –बुरा–(वि.) उचित-अनुचित; (पुं.) डाँट-फटकार, हानि-लाभ।

भले–(हि. अव्य.) भली-भाँति, अच्छी तरह से, खूब, वाह; भले ही–(अव्य.) इसकी परवाह नहीं।

भलु–(हि. पुं.) देखो 'भला'।

भल्ल–(सं.पुं.) भल्लूक, भालू, एक प्रकार का बाण, बर्छा, हत्या, भिलावाँ (फल या वृक्ष)।

भल्लक–(सं. पुं.) भल्लूक, भालू।

भल्लाक्ष–(सं. वि.) जिसको कम दिखाई पड़ता हो, मन्ददृष्टि।

भल्लातक–(सं.पुं.) भिलावाँ, उसका वृक्ष।

भल्लुक, भल्लूक–(सं. पुं.) भालू।

भवँ–(हि. स्त्री.) देखो 'भौंह'।

भवंग–(हि. पु.) भुजंग, साँप।

भवंत–(हि. सर्व.) आपका, आप लोगों का।

भवँरकली–(हि.स्त्री.) देखो 'भँवरकली'।

भवँरी–(हि. स्त्री.) देखो 'भँवरी'।

भवँगिया–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की नाव, भौंगिया।

भव–(सं. पु.) जन्म, उत्पत्ति, शिव, महादेव, संसार, क्षेम, [illegible] [illegible], मेघ, [illegible], [illegible] [illegible]; (हि. पु.) [illegible] [illegible]

भवकेतु–[illegible]

तारा।

भवक्षिति–(सं. स्त्री.) जन्मभूमि।

भवचाप–(सं.पुं.) शिवजी के धनुष का नाम।

भवतव्यता–(हि.स्त्री.) देखो 'भवितव्यता'।

भवत्–(सं. वि.) मान्य, पूज्य; (सर्व.) आप, श्रीमान; (पुं.) विष्णु, मुनि।

भवदा–(सं. स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

भवदीय–(सं. सर्व.) आपका।

भवधरण–(सं. पुं.) संसार को धारण करनेवाला, परमेश्वर।

भवन–(सं. पुं.) प्रासाद, हर्म्य, गृह, छप्पय का एक भेद; (हि. पुं.) जगत्, संसार; –पति–(पुं.) घर का स्वामी।

भवना–(हि. क्रि. अ.) घूमना।

भवनी–(हि.स्त्री.) गृहिणी, भार्या, स्त्री।

भवपाली–(सं. स्त्री.) संसार की रक्षा करनेवाली शक्ति।

भवबंधन–(सं. पु.) संसार की झंझट।

भवभंजन–(सं. पु.) संसार का नाश करनेवाला, काल, परमेश्वर।

भवभय–(सं. पुं.) संसार में बारबार जन्म लेने और मरने का भय।

भवभामिनी–(सं. स्त्री.) पार्वती, भवानी।

भवभावन–(सं. पुं.) विष्णु।

भवभूति–(हि. स्त्री.) सृष्टि।

भवभूप(ण)–(हि.,सं.पुं.) संसार का भूषण।

भवमोचन–(सं. वि.) संसार के बन्धनों से छुड़ानेवाला, भगवान्।

भवर्ग–(सं. पुं.) नक्षत्र वर्ग।

भववामा–(सं. स्त्री.) शिवजी की स्त्री, पार्वती।

भवविलास–(सं. पुं.) माया, विषय भोग से उत्पन्न होनेवाला संसार का सुख।

भवशूल–(सं.पु.) सांसारिक कष्ट और क्लेश।

भवसंभव–(सं. वि.) संसार में होनेवाला।

भवाँ–(हि. स्त्री.) चक्कर, भौंरी।

भवाना–(हि. क्रि स.) घुमाना, फिराना।

भवा–(सं. स्त्री.) दुर्गा, पार्वती।

भवानी–(सं. स्त्री.) शिवपत्नी, दुर्गा।

भवानीवल्लभ–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

भवितव्य–(सं वि.) होनहार, अवश्यंभावी; –ता–(स्त्री.) भाग्य, [illegible], भावी।

भविष्या–(सं. स्त्री.) एक नदी का नाम।

भविष्णु–(सं. वि.) होनेवाला।

भविष्य–(सं. पु., वि.) [illegible] [illegible] [illegible]; –पुराण–(पुं.) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भविष्यत्–(सं. वि., पुं.) वर्तमान काल के उपरान्त का काल, आगामी काल, भावी।

भविष्यद्वक्ता–(सं.पु.) वह जो होनेवाली बात को पहले ही बता दे।

भविष्यद्वाणी, भविष्यवाणी–(सं. स्त्री.) भविष्य की बात जो पहले ही कही गई हो।

भवीला–(हि. वि.) भावयुक्त, भावपूर्ण, सजीला, बाँका।

भवेश–(सं. पु.) संसार का स्वामी, शिव का एक नाम।

भव्य–(सं. वि.) शुभ, मंगलसूचक, जो देखने में आकर्षक और सुन्दर जान पड़े, सत्य, सच्चा, योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा, प्रसन्न, भविष्य में होनेवाला।

भव्यता–(सं.स्त्री.) भव्य होने का भाव आदि।

भव्या–(सं. स्त्री.) उमा, पार्वती।

भष–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता; (हि.पुं.) भोजन।

भषण(सं. पुं.) कुत्ते का भौंकना।

भषना(हि.क्रि.स.) भोजन करना, भखना।

भषी(सं. स्त्री.) कुतिया।

भसन(सं. पुं.) भ्रमर, भौंरा।

भसना–(हि. क्रि अ.) पानी के तल पर तैरना, पानी में डूबना।

भसमंत–(हि. वि.) जला हुआ।

भसम–(हि. पु.) देखो 'भस्म'।

भसमा–(हि. पु.) पीसा हुआ आटा, नील की पत्ती की बुकनी, बाल काला करने का एक प्रकार का द्रव्य।

भसान–(हि. पु.) काली, सरस्वती आदि की मूर्तियों को पूजा के उपरान्त नदी में प्रवाह करना।

भसाना–(हि.क्रि स.) पानी में डुबाना, पानी में किसी वस्तु को फेंकने के लिये छोड़ना।

भसिंड, भसीड़–(हि.पु.) कमलनाल, मुरार।

भसुँड़–(हि.पु.) हाथी, सूँड़।

भसुर–(हि.पु.) पति का बड़ा भाई, जेठ।

भसोंड़–(हि. पु.) हाथी की सूँड़।

[illegible]–(सं. पु.) शिव, [illegible]।

भस्त्रका, भस्त्रा–(सं. स्त्री.) आग सुलगाने की भाथी।

भस्म–(सं. पु.) लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख, शिव की राख, [illegible] [illegible] [illegible]; –क–(पुं.) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कथा, लम्बा-चौड़ा विवरण, महायुद्ध, संग्राम, भारतवर्ष; **-खंड-** (पुं.) देखें 'भारतवर्ष'; **-वर्ष-**(पुं.) वह देश जो उत्तर में हिमालय पर्वत, दक्षिण में कन्याकुमारी, पश्चिम में सिन्धु नदी और पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक विस्तृत है, हिन्दुस्तान।

भारती-(सं.स्त्री.) वचन, वाक्य, सरस्वती, ब्राह्मी,संन्यासियोंके दस उपाधियोंमें से एक, वह वृत्ति या वर्णन-शैली जिसमें रौद्र और वीभत्स रसों का वर्णन किया जाता है।

भारतीय-(सं. वि.) भारत-सम्बन्धी, भारत का; (पुं.) भारतवासी।

भारतुला-(सं.स्त्री.)खंभे का मध्य-भाग।

भारतेश्वर-(सं. पुं.) राजा भरत।

भारथ-(सं. पुं.) भारद्वल पक्षी; (हिं. पुं.) देखें 'भारत', युद्ध, संग्राम।

भारथी-(हिं. पुं.) योद्धा, सिपाही।

भारदंड-(हिं. पुं.)एक प्रकार का व्यायाम।

भारद्वाज-(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम, द्रोणाचार्य, अगस्त्य मुनि, मंगल ग्रह, बृहस्पति के पुत्र, भरदूल पक्षी; (वि.) भरद्वाज के कुल में उत्पन्न।

भारना-(हिं. क्रि. स.) भार लादना।

भारभारी, भारभृत्-(सं. वि.) बोझ ढोनेवाला; (पुं.) विष्णु।

भारयष्टि-(सं.स्त्री.)भार ढोने का दण्ड, वहँगी।

भारव-(सं. पुं.) धनुष की रस्सी।

भारवाह, भारवाहक-(सं.पुं.,वि.) बोझ ढोनेवाला।

भारवाही-(सं.पुं., वि.) देखें 'भारवाह'।

भारवि-(सं. पुं.) एक प्राचीन कवि जिन्होंने किरातार्जुनीय नामक महा-काव्य रचा था।

भारवी-(सं. पुं.) तुलसी का पौधा।

भारा-(हिं. वि.) देखें 'भारी'; (पुं.) देखें 'भाड़ा'।

भाराक्रांता-(सं. स्त्री.) एक वर्ण-वृत्त का नाम।

भारावलंबकत्व-(सं. पुं.) पदार्थों के परमाणुओं का परस्पर आकर्षण, (अनेक पदार्थों में ऐसा गुण होने के कारण वे टट नहीं सकते।)

भारिक-(सं. पुं.) बोझ ढोनेवाला।

भारी-(हिं. वि.) गुरु, अधिक भार का; (हिं. वि.) कठिन, विशाल, अधिक, अत्यन्त, असह्य, उदास, गम्भीर, प्रबल, शांत, देर में पचनेवाला; **-पन**-(पुं.) भारी होने का भाव, गुरुत्व।

भारूप-(सं. पुं.) चिदात्मक आत्मा।

भार्गव-(सं. वि.) भृगु-संबंधी, भृगु से उत्पन्न; (पुं.)शुक्राचार्य, परशुराम, शिव, हाथी, एक हिन्दू जाति।

भार्गवी-(सं. स्त्री.) पार्वती, लक्ष्मी।

भार्गवेश-(सं. पुं.) परशुराम।

भार्या-(सं. स्त्री.) शास्त्र-विधि से विवा-हिता पत्नी, जाया, दारा, कलत्र; **-त्व**-(पुं.) भार्या का भाव या धर्म।

भाल-(सं. पुं.) ललाट, मस्तक, कपाल; (हिं. पुं.) भाला, बरछा, तीर की नोक, भालू, रीछ; **-चंद्र**-(पुं.)शिव, महादेव, गणेश; **-दर्शन**-(पुं.) सिन्दूर, सेंदुर।

भालना-(हिं.क्रि.स.)ध्यानपूर्वक या अच्छी तरह देखना,(देखना के साथ प्रयुक्त)।

भालनेत्र, भाललोचन-(सं. पुं.) महादेव, शिव।

भालवी-(हिं. पुं.) रीछ, भालू।

भालांक-(सं. पुं.) कच्छप, कछुआ, शिव, ललाट पर का चिह्न।

भाला-(हिं.पुं.)बरछा,बल्लम; **-बरदार**-(पुं.) बरछा चलानेवाला।

भालि-(हिं. स्त्री.) बरछी, शूल, काँटा।

भाली-(हिं. स्त्री.) भाले की नोक, काँटा।

भालुक-(सं.पुं.) भल्लुक, भालू, रीछ।

भालुनाथ-(हिं. पुं.) जामवन्त।

भालू-(हिं. पुं.) एक स्तनपायी, भयंकर और वन्य चौपाया जिसके शरीर पर लंबे-लंबे बाल होते हैं, रीछ।

भावंता-(हिं. पुं.) भावी, होनहार।

भावँर-(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।

भाव-(सं. पुं.) मन का विकार, सत्ता, अभिप्राय, स्वभाव, जन्म, चित्त, आत्मा, चेष्टा, संसार, उपदेश, योनि, प्रेम, बुध, जन्तु, विभूति, विषय, क्रिया, लीला, पदार्थ, चोचला, मुख की आकृति या चेष्टा, आदर, प्रतिष्ठा, देवता के प्रति श्रद्धा, भक्ति, कल्पना, ढंग, अवस्था, विश्वास, भावना, नायक या नायिका के मन में उत्पन्न होनेवाला विकार, शरीर या अंगों का मोहक संचालन; (हिं. पुं.) दर; (मुहा.)**-गिरना**-किसी वस्तु का दाम घटना; **-देना**-आकृति द्वारा मन का भाव प्रकट करना।

भावइ-(हिं. अव्य.) जो इच्छा हो, जो जी चाहे।

भावक-(सं. पुं.) मन का विकार, भाव, भक्त, प्रेमी; (वि.) भावपूर्ण, भाव से भरा हुआ, भाव करनेवाला, उत्पन्न करनेवाला; (अव्य.) किंचित्, थोड़ा।

भावगंभीर-(सं. वि.) जिसका भाव या तात्पर्य कठिन हो।

भावगति-(हिं. स्त्री.) विचार, इच्छा।

भावगम्य-(सं. वि.) भक्तिभाव या मनन से जानने योग्य।

भावग्राही-(सं. वि.) भाव समझनेवाला।

भावग्राह्य-(सं. वि.) भाव से ग्रहण करने योग्य।

भावज-(सं. वि.) भाव से उत्पन्न; (हिं. स्त्री.) भाई की स्त्री, भौजाई।

भावता-(हिं. वि.)प्रिय, जो अच्छा जान पड़े; (पुं.) प्रियतम।

भावताव-(हिं. पुं.) किसी वस्तु का मूल्य या भाव।

भावदया-(सं. स्त्री.) किसी जीव को दुःखित देखकर मन में दया उत्पन्न होना।

भावदर्शी-(सं.वि.)भाव को समझनेवाला।

भावन-(हिं. वि.) जो प्रिय या अच्छा जान पड़े।

भावना-(सं.स्त्री.) अनुभव तथा स्मृति से उत्पन्न होनेवाला चित्त का एक घनीभूत संस्कार, भाव, कल्पना, साधारण विचार या कल्पना, ध्यान,इच्छा, वैद्यक के अनुसार किसी चर्ण आदि को किसी रस या तरल पदार्थ में बार-बार मिलाकर घोटना तथा सुखाना; (हिं.क्रि.अ.)अच्छा लगना; (वि.) प्रिय, प्यारा।

भावनाश्रय-(सं. पुं.) शिव का एक नाम।

भावनि-(हिं. स्त्री.) मन की बात, वह भाव जो चित्त में आवे।

भावनीय-(सं. वि.) चिन्ता या विचार के योग्य।

भावप्रकाश-(सं. पुं.) वैद्यक का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

भावबंधन-(सं. पुं.) प्रेम-पाश में बाँधना।

भावबोधक-(सं. पुं., वि.) (वह) जिसके द्वारा भाव का बोध हो।

भावभक्ति-(हिं. स्त्री.) आदर-सत्कार।

भावयितव्य-(सं. वि.) चिन्ता के योग्य।

भावयिता-(सं. पुं.) पालने-पोसनेवाला।

भावरूप-(सं. वि.) प्रकृत, यथार्थ।

भावली-(हिं.स्त्री.)वह खेत जिसकी उपज की बँटाई भूस्वामी और कृषक के बीच होती है।

भाववाचक-(सं. पुं.) व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव, गुण, धर्म आदि सूचित होता है; यथा-सरलता, मनुष्यत्व इत्यादि।

भाववाच्य-(सं. पुं.) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह विदित होता है

कि वाक्य का उद्देश्य-शब्द उस क्रिया का कर्ता या कर्म नहीं है परन्तु क्रिया का भाव ही प्रधान है, (इसमें कर्ता के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है); यथा-रोगी से खाया नहीं जाता।

भाववृत्त-(सं. पुं.) ब्रह्मा; (वि.) सृष्टि-संबंधी।

भावसंधि-(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें दो भावों की सन्धि का वर्णन रहता है।

भावसत्य-(सं. वि.) ऐसा सत्य जो भाव-बोध से सच्चा जान पड़े।

भावशबलता-(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें कई भावों का आलंकारिक वर्णन एक साथ किया जाता है।

भावात्मक-(सं. वि.) किसी विषय की आत्मिक अवस्था का सूचक, भाव से संबद्ध।

भावाभाव-(सं. पुं.) एक अलंकार का नाम।

भावार्थ-(सं. पुं.) वह अर्थ या टीका जिसमें मूल का केवल भाव ही विस्तृत व्याख्या न हो, अभिप्राय, तात्पर्य।

भावालंकार-(सं. पुं.) एक प्रकार का अलंकार।

भाविक-(सं. पुं.) वह अलंकार जिसमें भूत या भावी बातें वर्तमान की तरह वर्णन की गई हों; (वि.) मर्म जाननेवाला।

भावित-(सं. वि.) सोचा हुआ, चिंतित, सुगन्धित किया हुआ, मिला या मिलाया हुआ, शुद्ध किया हुआ, भेंट किया हुआ, (दवा) जिसमें रस आदि की भावना दी गई हो।

भावी-(हिं. स्त्री.) भविष्य काल, आनेवाला समय, भाग्य, प्रारब्ध, भवितव्यता, अवश्य होनेवाली बात; (वि.) होनेवाला।

भावुक-(सं. पुं.) मंगल, आनन्द, सज्जन, भला आदमी; (वि.) भावना करनेवाला, सोचनेवाला, अच्छी कल्पना करनेवाला, जिस पर अच्छे भावों का तुरंत प्रभाव पड़ता है।

भावे-(हिं. अव्य.) जो जी चाहे।

भावोत्सर्ग-(सं. पुं.) बुरे भावों का त्याग।

भावोदय-(सं. पुं.) वह अलंकार जिसमें किसी भाव के उदय होने की अवस्था का वर्णन किया जाता है।

भाव्य-(सं. वि.) अवश्य होनेवाला, भावना करने योग्य।

भाष-(हिं. पुं.) भाषा।

भाषक-(सं. पुं.) वक्ता, बोलनेवाला।

भाषज्ञ-(सं. पुं.) भाषा जाननेवाला।

भाषण-(सं. पुं.) वक्तृता, व्याख्यान, कथन, बातचीत।

भाषना-(हिं. क्रि. स.) भोजन करना, खाना, बातचीत करना।

भाषांतर-(सं. पुं.) अनुवाद, उलथा।

भाषा-(सं. स्त्री.) वाक्य, बोली, किसी विशेष जनसमूह में प्रचलित बातचीत करने का ढंग, वह अव्यक्त शब्द जिससे पशु-पक्षी अपने मन के भाव को प्रकट करते हैं, वाणी, आधुनिक हिन्दी भाषा, अभियोग-पत्र; **-तत्व**-(पुं.) भाषा-शास्त्र, भाषा-विज्ञान; **-बद्ध**-(वि.) साधारण देशभाषा में बना हुआ; **-विज्ञान, -शास्त्र**-(पुं.) वह शास्त्र जिसमें भाषा की उत्पत्ति, विकास आदि का विवेचन होता है; **-सम**-(पुं.) शब्दालंकार का वह भेद जिसमें केवल ऐसे शब्दों की योजना की जाती है जो अनेक भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं।

भाषित-(सं. वि.) कथित, कहा हुआ।

भाषी-(हिं. वि.) कहने या बोलनेवाला।

भाष्य-(सं. पुं.) सूत्रों की व्याख्या या टीका, सूत्रग्रन्थों का विस्तृत विवेचन, किसी गूढ़ ग्रंथ की व्याख्या; **-कार**-(पुं.) सूत्रों की व्याख्या या टीका करनेवाला।

भास-(सं. पुं.) दीप्ति, प्रकाश, चमक, मुरगा, गिद्ध, मयूख, किरण, इच्छा, स्वाद, मिथ्या ज्ञान आभास, एक प्राचीन संस्कृत कवि; **-क**-(वि.) प्रकाशक, द्योतक; **-कण**-(पुं.) रावण की सेना का एक मुख्य नायक जिसको हनुमान ने मारा था; **-मान**-(वि.) दिखाई पड़ता हुआ; (हिं. पुं.) सूर्य।

भासन-(सं. पुं.) दीपन, प्रकाशन।

भासना-(हिं.क्रि.अ.,स.) प्रकाशित होना, चमकना, कहना, लिप्त होना, दिखाई पड़ना, फँसना।

भासित-(सं. वि.) दिखाई पड़नेवाला, तेजोमय, चमकीला।

भासुर-(सं. पुं.) स्फटिक, बिल्लौर, वीर, योद्धा।

भास्कर-(सं. पुं.) सूर्य, अग्नि, सुवर्ण, सोना, मदार का वृक्ष, शिव, महादेव, वीर, एक जाति के लोग जो पत्थर पर नक्काशी करते हैं; **-विद्या**-(स्त्री.) पत्थर पर नक्काशी करन की कला।

भास्कराचार्य-(सं. पुं.) भारतवर्ष के एक प्राचीन ज्योतिर्विद् का नाम।

भास्वर-(सं. पुं.) सूर्य, दिन; (वि.) चमकीला।

भिंग-(हिं. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा, बिलनी, भौंरा।

भिंगाना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'भिगाना'।

भिंजाना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'भिगोना'।

भिंडी-(हिं. स्त्री.) एक पौधे की फली जिसकी तरकारी बनती है।

भिंदपाल, भिंदिपाल-(हिं. पुं.) छोटा डंडा, ढेलवाँस।

भिक्षण-(सं.पुं.) भिक्षा माँगने की क्रिया।

भिक्षा-(सं. स्त्री.) याचन, माँगना, सेवा, भीख, माँगी हुई वस्तु; **-करण**-(पुं.) भीख माँगने का काम; **-चर**-(पुं.) भीख माँगनेवाला; **-पात्र**-(पुं.) भीख माँगने का पात्र; **-वृत्ति**-(स्त्री.) भीख माँगकर जीविका निर्वाह करना।

भिक्षाटन-(सं. पुं.) भीख माँगने के लिये इधर-उधर घूमना।

भिक्षार्थी-(सं. पुं.) भिक्षुक, भिखमंगा।

भिक्षु-(सं. पुं.) भीख माँगनेवाला, भिक्षुक, भिखारी, परिव्राजक, संन्यासी, बौद्ध संन्यासी; **-क**-(पुं.) भिक्षोपजीवी, भिखारी; **-णी**-(स्त्री.) बौद्ध संन्यासिनी; **-रूप**-(पुं.) शिव, महादेव।

भिखमंगा-(हिं. पुं.) भिक्षुक, भिखारी।

भिखार-(हिं. पुं.) भिखमंगा, भिखारी।

भिखारिन, भिखारिणी-(हिं. स्त्री.) भीख माँगनेवाली स्त्री।

भिखारी-(हिं. पुं.) भिक्षुक, भीख माँगनेवाला।

भिखिया-(हिं. स्त्री.) देखें 'भिक्षा'।

भिगाना, भिगोना-(हिं. क्रि. स.) किसी पदार्थ को पानी से तर करना, गीला करना।

भिच्छा-(हिं. स्त्री.) देखें 'भिक्षा'।

भिच्छु-(हिं. पुं.) देखें 'भिक्षु'।

भिजवना-(हिं. क्रि. स.) भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

भिजवाना-(हिं. क्रि. स.) भेजने का काम दूसरे से कराना।

भिजा(जो)ना-(हिं. क्रि. स.) भिगोना, तर करना, गीला करना।

भिज्ञ-(सं. पुं.,वि.) जानकार, जाननेवाला।

भिटना-(हिं. पुं.) छोटा गोल फल।

भिटनी-(हिं.स्त्री.) स्तन के आगे का भाग।

भिड़-(सं. स्त्री.) बर्रे, ततैया।

भिड़ना-(हिं. क्रि. अ.) लड़ना, झगड़ना, लड़ाई करना, टक्कर खाना, मैथुन करना, सटना।

भितल्ला-(हिं. पुं.) दोहरे कपड़े का भीतरी पल्ला; (वि.) भीतर का।

भितल्ली-(हिं. स्त्री.) चक्की के नीचे का पाट।

भिताना-(हिं. क्रि. स.) भयभीत करना,

डराना।
भित्ति–(सं. स्त्री.) दीवार, दरार, खंड, टुकड़ा, प्रवेश, अवकाश, अंतर, चित्र वनाने का आधार, नींव; **–चित्र**–(पुं.) दीवार पर बनाया हुआ चित्र।
भिद–(हिं. पुं.) अन्तर, प्रभेद।
भिदक–(सं. पुं.) वज्र, खड्ग, तलवार।
भिदना–(हिं. क्रि. अ.) प्रवेश करना, घुसना, छेदा जाना, चोट खाना।
भिदा–(सं. स्त्री.) धन्याक, धनिया।
भिदिर, भिदुर–(सं. पुं.) वज्र।
भिद्य–(सं. वि.) भेदनीय।
भिद्र–(सं. पुं.) वज्र।
भिनकना–(हिं. क्रि. अ.) मक्खियों का भिन-भिन शब्द करना, घृणा उत्पन्न होना, किसी गंदी चीज पर मक्खियों का वैठना।
भिनभिनाना–(हिं.क्रि.अ.) भिनभिन शब्द करना।
भिनसहरा, भिन(नु)सार–(हिं.पुं.) प्रातःकाल, सवेरा।
भिनही–(हिं. अव्य.) प्रातःकाल, सवेरे।
भिन्न–(सं. वि.) कटा हुआ, भेदित, अन्य, दूसरा, प्रफुल्ल, खिला हुआ, पृथक्; (पुं.) गणित में वह संख्या जो एकाई से कम हो; **–कर्ण**–(वि.) जिसके कान कट गये हों; **–जातीय**–(वि.) भिन्न-भिन्न जातियों या सम्प्रदायों का; **–ता**–(स्त्री.) भिन्न होने का भाव, भेद, अलगाव; **–त्व**–(पुं.) भिन्नता; **–लिंग**–(पुं.) एक अलंकार जिसमें भिन्न वचन और भिन्न लिंग द्वारा उपमा दी जाती है, पृथक् चिह्न; **–वर्ण**–(पुं.) पृथक् वर्ण।
भिन्नार्थक–(सं. वि.) दूसरे अर्थ का।
भियना–(हिं. क्रि. अ.) डरना।
भिया–(हिं. पुं.) भ्राता, भाई।
भिरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'भिड़ना'।
भिरिंग–(हिं. पुं.) देखें 'भृंग'।
भिलनी–(हिं.स्त्री.) भील जाति की स्त्री, एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
भिलावाँ–(हिं. पुं.) एक जंगली वृक्ष जिसके फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं, भल्लातक।
भिल्ल–(सं. पुं.) भील जाति।
भिषक्–(सं.पुं.) चिकित्सक, वैद्य; **–प्रिया**–(स्त्री.) गुरुच।
भिषज्–(सं.पुं.) चिकित्सक, वैद्य, औषध।
भिष्टा–(हिं. पुं.) देखें 'विष्ठा', मल, गू।
भिसज–(हिं. पुं.) वैद्य।
भिसटा–(हिं. पुं.) विष्ठा, मल, गू।
भिसर–(हिं. पुं.) ब्राह्मण।
भिसिणी–(हिं. पुं.) व्यसनी।
भिस्स–(हिं.स्त्री.) कमल की जड़, भसींड।
भिस्सा–(सं. स्त्री.) अन्न, पक्वान्न।
भींगना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'भीगना'।
भींगी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का फतिंगा।
भींचना–(हिं. क्रि. स.) खींचना, कसना, मूँदना, वंद करना।
भींजना–(हिं. क्रि. अ.) आर्द्र होना, गीला होना, प्रेम से मग्न होना, स्नान करना, नहाना, समा जाना, घुस जाना, हेल-मेल वढ़ाना।
भींट, भींत–(हिं.पुं.,स्त्री.) देखें 'भीट, भीत'।
भी–(सं. स्त्री.) भय, डर; (अव्य.), अवश्य, निश्चय करके, अधिक, तक।
भीउँ–(हिं. पुं.) भीम, भीमसेन।
भीक–(सं. वि.) भीत, डरा हुआ।
भीकर–(सं. वि.) भयंकर, डरावना।
भीख–(हिं.स्त्री.) भिक्षा, उसे दी हुई वस्तु।
भीखन–(हिं. वि.) विकराल, भीषण।
भीखम–(हिं. पुं.) देखें 'भीष्म'; (वि.) भयानक, डरावना।
भीगना–(हिं.क्रि.अ.) आर्द्र होना, भींजना।
भीचर–(हिं. पुं.) वीर।
भीजना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'भींजना'।
भीट–(हिं. पुं.) ऊँची भूमि, टीला।
भीटा–(हिं. पुं.) टीला, ऊँची भूमि, पान की खेती की ढालुआ भूमि जो चारों ओर लताओं से ढपी रहती है।
भीड़–(हिं. स्त्री.) वहुत-से मनुष्यों का जमाव, जमघट, जनसमूह, संकट, आपत्ति; (क्रि. प्र.) **–छटना**–जनसमूह का तितर-वितर होना; **–भड़क्का**–(पुं.) वहुत-से मनुष्यों का समूह; **–भाड़**–(स्त्री.) जमघट।
भीड़ना–(हिं. क्रि. स.) मलना, मिलाना।
भीड़ा–(हिं. वि.) संकुचित, सँकरा, तंग।
भीड़ी–(हिं. स्त्री.) भिडी, रामतरोई।
भीत–(सं.स्त्री.) भीति, भय, डर; (वि.) भयग्रस्त, डरा हुआ; (हिं.स्त्री.) दीवार, भित्तिका, कमरे में विभाग करने का परदा, चटाई, खण्ड, टुकड़ा, स्थान, छिद्र, दरार, त्रुटि, अवसर; (मुहा.) **–के विना चित्र वनाना**–वे-सिर-पैर की वातें करना; **–में दौड़ना**–असंभव काम करने का प्रयत्न करना।
भीतर–(हिं.अव्य.) अंदर, मध्य में; (पुं.) अन्तःकरण, हृदय, अन्तःपुर।
भीतरा–(हिं. वि.) अन्तःपुर में काम करने वाला मनुष्य।
भीतरिया–(हिं. पुं.) वल्लभ संप्रदाय के वे पुरोहित या पुजारी जो मन्दिर के भीतर मूर्ति के पास रहते हैं।
भीतरी–(हिं.वि.) आंतरिक, भीतर का; **–टाँग**–(पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
भीति–(सं.स्त्री.) भय, डर; **–कर**–(वि.) भयंकर, डरावना; **–कारी**–(वि.) डरावना।
भीती–(सं.स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; (हिं. स्त्री.) भीत, डर।
भीन–(हिं. पुं.) प्रातःकाल, सबेरा।
भीनना–(हिं.क्रि.अ.) समा जाना, भर जाना।
भीनी–(हिं. वि.) मीठी।
भीम–(सं. वि.) भीषण, घोर, भयंकर; (पुं.) शिव, महादेव, विष्णु, महादेव की आठ मूर्तियों में से भीमरूप मूर्ति, भयानक रस, एक गन्धर्व का नाम, एक राक्षस का नाम, विशालकाय और वलवान मनुष्य, अठारह अक्षरों का एक मन्त्र, पाँचों पाण्डवों में से एक जो वायु के पुत्र माने जाते थे, वृकोदर, विदर्भ के प्राचीन राजा का नाम, कुम्भकर्ण का एक पुत्र जो रावण का सेनापति था; **–चंडी**–(स्त्री.) एक देवी का नाम; **–ता**–(स्त्री.) भयंकरता; **–तिथि**–(स्त्री.) माघ सुदी एकादशी; **–नाद**–(पुं.) सिंह, भयंकर शब्द; **–पलाशी**–(स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी; **–वल**–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **–मुख**–(वि.) डरावने मुखवाला; (पुं.) एक प्रकार का वाण; **–रथ**–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; **–राज**–(हिं. पुं.) काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया, भृंगराज; **–रात्रि**–(स्त्री.) भयंकर रात; **–विक्रम**–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **–शासन**–(पुं.) कठोर शासन; **–सेन**–(पुं.) मध्यम पाण्डव, भीम; **–सेनी**–(हिं.पुं.,वि.) एक प्रकार का कपूर, भीमसेन-संबंधी; **–०एकादशी**–(स्त्री.) ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, निर्जला एकादशी, माघ शुक्ला एकादशी; **–०कपूर**–(पुं.) एक प्रकार का उत्तम कपूर, वरास; **–हास**–(पुं.) इन्द्रतूल, गुड्डी की डोरी।
भीमा–(सं. स्त्री.) रोचना नामक गन्धद्रव्य, चावुक, दुर्गा देवी।
भीमोत्तर–(सं. पुं.) कुष्माण्ड, कुम्हड़ा।
भीमोदरी–(सं. स्त्री.) उमा, दुर्गा का एक नाम।
भीम्रायली–(हिं.पुं.) घोड़ों की एक जाति।
भीर–(सं. पुं.) देखें 'आभीर', अहीर;

(हिं. स्त्री.) देखें 'भीड़', संकट, विपत्ति, दुःख; (वि.) भयभीत, डरा हुआ।
भीरना–(हिं.क्रि.अ.) भयभीत होना, डरना।
भीरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
भीरी–(हिं. स्त्री.) अरहर की दाल।
भीरु–(सं.वि.) भयभीत, डरपोक, कायर; (पुं.) सियार, बेले का फूल, ईख की एक जाति।
भीरुक–(सं.पुं.) वन, जंगल, उल्लू, चाँदी।
भीरुता–(सं.स्त्री.), –त्व–(सं. पुं.) कायरता, भय, डर।
भीरुताई–(हिं. स्त्री.) भीरुता।
भीरुहृदय–(सं. पुं.) हिरन।
भीरे–(हिं. अव्य.) समीप, पास।
भील–(हि.पुं.) एक प्रसिद्ध जंगली जाति; (स्त्री.) ताल की सूखी मिट्टी जो पपड़ी के समान हो जाती है; –भूषण–(पुं.) गुंजा, घुँघची।
भीष–(हिं. स्त्री.) देखें 'भिक्षा', भीख।
भीषक–(सं. वि.) डरावना, भयंकर।
भीषज–(सं. पुं.) भिषक्, वैद्य।
भीषण–(सं. पुं.) साहित्य में भयानक रस, कुँदरू, कबूतर, शिव, ब्रह्मा; (वि.) भयानक, डरावना, जो बहुत उग्र या दुष्ट हो; –क–(वि.) डरावना; –ता–(स्त्री.) डरावनापन, भयंकरता।
भीषणी–(सं. स्त्री.) सीता की एक सखी का नाम।
भीषन–(हिं. वि.) देखें 'भीषण', भयंकर।
भीषम–(हिं. पुं.) देखें 'भीष्म'।
भीष्म–(सं.वि.) भयानक, भयंकर; (पुं.) शिव, महादेव, राक्षस, साहित्य में भयानक रस, शान्तनु राजा के पुत्र, गांगेय; –क (पुं.) विदर्भ देश के राजा जो श्रीकृष्ण की महिषी रुक्मिणी के पिता थे; –गंधक–(पुं.) माधवी लता; –पंचक–(पुं.) कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक की पाँच तिथियाँ; –पितामह–(पुं.) देखें 'भीष्म'; –सू–(स्त्री.) गंगा।
भीष्माष्टमी–(सं.स्त्री.) माघ शुक्ला अष्टमी, (इसी दिन भीष्म ने प्राण-त्याग किया था।)
भीसम–(हिं. पुं.) देखें 'भीष्म'।
भुइ–(हिं. स्त्री.) भूमि, पृथ्वी।
भुँइघरा–(हिं. पुं.) देखें 'भुँइहरा'।
भुँइफोर–(हिं.पुं.) वर्षा ऋतु में तालाबों के आसपास मिलनेवाली एक प्रकार की खुमी।
भुँइहरा–(हिं. पुं.) भूमि खोदकर बनाया हुआ कमरा, तहखाना।
भुँगाल–(हिं. पुं.) तुरही, भोंपा।
भुँजन–(हिं. पुं.) देखें 'भोजन'।
भुँजना–(हिं.क्रि.अ.) भुना जाना, झुलसना।
भुँजना–(हिं. क्रि. स.) भूनना।
भुँडली–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का कीड़ा, पिल्लू।
भुँडा–(हिं. वि.) बिना सींग का।
भुअंग, भुअंगम–(हिं. पुं.) देखें 'भुजंग', सर्प, साँप।
भुअ–(हिं. स्त्री.) भ्रू, भौंह।
भुअन–(हिं. पुं.) देखें 'भुवन'।
भुआर, भुआल–(हिं.पुं.) भूपाल, राजा।
भुइँ–(हिं.स्त्री.) भूमि, पृथ्वी; –आँवला–(पुं.) एक प्रकार की घास जो औषधों में प्रयुक्त होती है; –कंप-डोल–(पुं.) भूकंप, भूचाल; –घरा–(पुं.) समतल भूमि पर आवाँ लगाने की एक विधि, तहखाना; –नास–(पुं.) किसी वस्तु के एक किनारे को भूमि में इस प्रकार गाड़ना कि उसका कुछ अंश भूमि के भीतर गड़ जाय, एक प्रकार का छोटा पौधा; –हार–(पुं.) देखें 'भूमिहार'।
भुई–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का कीड़ा, पिल्लू।
भुक–(हिं.पुं.) भोजन, खाद्य पदार्थ, आहार।
भुकड़ी–(हिं. स्त्री.) सड़े हुए पदार्थ पर पड़नेवाली पपड़ी, फफूँदी।
भुकरायँ–(हिं. स्त्री.) सड़ने की दुर्गन्ध।
भुकाना–(हिं. क्रि.स.) बकाना।
भुक्खड़–(हिं. वि.) जिसको भूख लगी हो, भूखा, कंगाल, दरिद्र, वह जो बहुत खाता हो, पेटू।
भुक्त–(सं. वि.) भक्षित, जो खाया गया हो, उपभुक्त, भोगा हुआ, जिसका भोग हो चुका हो; –शेष–(पुं.) उच्छिष्ट, जूठा।
भुक्ति–(सं. स्त्री.) भोजन, आहार, लौकिक सुख, ग्रहों का किसी राशि में एक-एक करके जाना, अधिकार; –प्रद–(वि.) भोग या भोजन देनेवाला।
भुखमरा–(हिं. वि.) वह जो भूखों मरता हो, भुक्खड़, जो खाने के लिये मरा जाता हो, पेटू।
भुखाना–(हिं.क्रि.अ.) भूख से पीड़ित होना।
भुखाल–(हिं. वि.) जिसको भूख लगी हो, भूखा।
भुगत–(हिं. स्त्री.) देखें 'भुक्ति'।
भुगतना–(हिं.क्रि.अ.,स.) भोगना, सहना, बीतना, चुकाना, निबटाना, दूर होना।
भुगतान–(हिं. पुं.) निबटारा, मूल्य या देन का चुकाना, देन।
भुगताना–(हिं. क्रि. स.) संपादन करना, पूरा करना, बिताना, लगाना, चुकता करना, दुःख सहने के लिये बाध्य करना, दूसरे को। भुगतने के लिये बाध्य करना, भोग कराना।
भुगुति–(हिं. स्त्री.) देखें 'भुक्ति'।
भुग्न–(सं. वि.) वक्र, टेढ़ा, रोगी।
भुच्च, भुच्चड़–(हिं. वि.) मूर्ख।
भुजंग–(सं. पुं.) सर्प, स्त्री का यार, सीसा नामक धातु; –प्रयात–(पुं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं; –भोजी–(पुं.) गरुड़, मयूर, मोर; –रिपु–(पुं.) सर्प, साँप; –लता–(स्त्री.) नागवल्ली, पान; –विजृंभित–(पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छब्बीस वर्ण होते हैं; –संगता–(स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नौ वर्ण होते हैं।
भुजंगा–(हिं. पुं.) काले रंग का मधुर स्वर में बोलनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी।
भुजंगांतक–(सं. पुं.) मोर, गिद्ध।
भुजंगिनी–(सं. स्त्री.) गोपाल नामक छन्द का दूसरा नाम, सर्पिणी, नागिन।
भुजंगी–(सं. स्त्री.) सर्पिणी, एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।
भुजंगरित–(सं. पुं.) एक छन्द का नाम।
भुजंगेश–(सं. पुं.) वासुकि, शेषनाग।
भुज–(सं. पुं.) भुजा, बाहु, बाँह, कर, हाथ, दो की संख्या, भोजपत्र, छाया का मूल, लपेट, पूरक, कोण, किसी क्षेत्र के किनारे की रेखा, प्रान्त, किनारा, शाखा, डाली, त्रिभुज का आधार; –कोटर–(पुं.) कक्ष, काँख; –ग–(पुं.) साँप, आश्लेषा नक्षत्र; –०दारण–(पुं.) गरुड़; –०शिशुसुता–(स्त्री.) एक वर्णिक वृत्त का नाम; –०पति–(पुं.) वासुकि, अनन्त; –शिशुभृता–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं; –दंड–(पुं.) बाहुरूप दण्ड; –दल–(पुं.) हस्त, हथेली; –पाश–(पुं.) गले में हाथ डालना, गलबाँही; –प्रतिभुज–(पुं.) आयत आदि क्षेत्रों की समानान्तर या आमने-सामने की भुजाएँ; –बंद–(पुं.) बाँह में पहिनने का एक आभूषण, बाजूबंद; –बंध–(पुं.) बाजूबंद, अंगद; –बल–(पुं.) बाहुबल, पराक्रम, पौरुष;

(हिं. पुं.) शालिहोत्र के अनुसार एक भौंरी जो घोड़े के अगले पैर के ऊपर होती है; -मूल-(पुं.) बाहु-मूल, काँख, मोढ़ा ।
भुजगाशन-(सं. पुं.) गरुड़ ।
भुजगी-(सं. स्त्री.) सर्पिणी, नागिन ।
भुजगेंद्र-(सं. पुं.) सर्पराज, वासुकि ।
भुजगेश-(सं. पुं.) सर्पों का राजा, शेषनाग, वासुकि ।
भुजवा-(हिं. पुं.) भड़भूँजा ।
भुजांतर-(सं. पुं.) क्रोड़, गोद ।
भुजा-(सं. स्त्री.) बाँह, हाथ; (मुहा.) -उठाना-प्रतिज्ञा करना ।
भुजागम-(सं. पुं.) वृक्ष, पेड़ ।
भुजाग्र-(सं. पुं.) कर, हाथ ।
भुजाना-(हिं. क्रि. स.) देखें 'भुनाना' ।
भुजामध्य-(सं. पुं.) बाहु का मध्य-भाग, केहुनी ।
भुजामूल-(सं. पुं.) काँख ।
भुजाली-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की टेढ़ी बड़ी छुरी, खुखरी, छोटी बरछी ।
भुजिया-(हिं. पुं.) सूखी भुनी हुई तरकारी, उबाले हुए धान का चावल ।
भुजिष्या-(सं. स्त्री.) गणिका, वेश्या, दासी ।
भुजल-(हिं. पुं.) भुजंगा नामक पक्षी ।
भुजौना-(हिं. पुं.) भाड़ में भुना हुआ अन्न, चबैना, भुनने या भुनाने का शुल्क ।
भुट्टा-(हिं. पुं.) जुआर या बाजरे की बाल, मक्के की हरी बाल ।
भुठार-(हिं. पुं.) मरुभूमि प्रदेश में पाया जानेवाला घोड़ा ।
भुठौर-(हिं. पुं.) घोड़े की एक जाति ।
भुड़ली-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का फूल ।
भुड़ारी-(हिं. पुं.) बाल के डंठल के साथ लगा हुआ अन्न का दाना ।
भुन-(हिं. पुं.) अव्यक्त गुंजार का शब्द, मक्खी आदि का शब्द ।
भुनगा-(हिं. पुं.) उड़नेवाला एक छोटा कीड़ा, फतिंगा, अति दुर्बल मनुष्य ।
भुनगी-(हिं. स्त्री.) ईख के पौधे को हानि पहुँचानेवाला एक छोटा कीड़ा ।
भुनना-(हिं. क्रि. स.) भूना जाना, आग की गरमी से पककर लाल होना, (नोट, रुपये आदि का) छोटी मुद्राओं में बदला जाना ।
भनभुनाना-(हिं. क्रि. अ.) भुनभुन शब्द करना, मन ही मन कुढ़कर धीरे-धीरे कुछ बड़बड़ाना ।
भुनाना-(हिं. क्रि. स.) भूनने का काम कराना, (नोट, रुपये आदि को) छोटी मुद्राओं में बदलना ।
भुनुगा-(हिं. पुं.) देखें 'भुनगा' ।
भुरकना-(हिं. क्रि. अ.) सूखकर भुरभुरा हो जाना, भूलना, चूर्ण या बुकनी को किसी पदार्थ के ऊपर छिड़कना, भुर-भुराना ।
भुरका-(हिं. पुं.) बुकनी, अबीर, मिट्टी की दावात, बोरका ।
भुरकाना-(हिं. क्रि. स.) भुरभुरा करना, छिड़कना, भुलावा देना, बहकाना ।
भुरकी-(हिं. स्त्री.) अन्न रखने का छोटा कुठिला, छोटा कुल्हड़, पानी का छोटा गड्ढा ।
भुरकुटा-(हिं. पुं.) छोटा कीड़ा-मकोड़ा ।
भुरकुन-(हिं. पुं.) चूर्ण, चूरा ।
भुरक(कु)स-(हिं. पुं.) चूर्ण, चूरा; (मुहा.) -निकलना-हड्डी-पसली का चूरचूर होना, बहुत पीटा जाना ।
भुरत-(हिं. पुं.) एक प्रकार की बरसाती घास ।
भुरता-(हिं. पुं.) दबकर या कुचला जाकर विकृत पदार्थ, चोखा या भरता नाम का सालन ।
भुरभुर-(हिं. स्त्री.) ऊसर या रेतीली भूमि में होनेवाली एक प्रकार की घास ।
भुरभुरा-(हिं. वि.) वह जो हलके स्पर्श से चूर-चूर हो जाय ।
भुरभुराना-(हिं. क्रि. स.) चूर्ण आदि छिड़कना ।
भुरवना-(हिं. क्रि. स.) भ्रम में डालना, भुलवाना, फुसलाना ।
भुरली-(हिं. स्त्री.) खेत की उपज को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा ।
भुराई-(हिं. स्त्री.) भोलापन, भूरापन ।
भुराना-(हिं. क्रि. अ., स.) भूलना, भुलाना ।
भुलक्कड़-(हिं. वि.) विस्मरणशील स्वभाव-वाला, जो बात को सर्वदा भूल जाता हो ।
भुलना-(हिं. पुं.) भुलक्कड़, एक प्रकार की घास ।
भुलभुला-(हिं. पुं.) गरम राख ।
भुलवाना-(हिं. क्रि. स.) भूलने के लिये प्रेरित करना, भ्रम में डालना, विस्मृत कराना, भुलाना ।
भुलसना-(हिं. क्रि. स.) गरम राख में झुलसना ।
भुलाना-(हिं. क्रि. अ., स.) भ्रम में डालना, धोखा देना, विस्मृत करना, भूलना, भटकना, भ्रम में पड़ना ।
भुलावा-(हिं. पुं.) छल, कपट, धोखा ।
भुवंग-(हिं. पुं.) देखें 'भुजंग', सर्प, साँप ।
भुवंगम-(हिं. पुं.) सर्प, साँप ।
भुवः-(सं. पुं.) सात लोकों के अन्तर्गत दूसरा लोक जो सूर्य और भूमि के बीच है, अन्तरिक्ष लोक ।
भुव-(सं. पु., स्त्री.) अग्नि, आग, संसार, पृथ्वी ।
भुवन-(सं. पुं.) जगत्, संसार, जल, आकाश, जन, चौदह लोक जो पुराणा-नुसार-भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः तपः और सत्य-ये सात स्वर्गलोक; तथा अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत्, महातल, रसातल और पाताल-ये सात पाताल लोक हैं; पार्थिव सृष्टि, एक मुनि का नाम; -कोश-(पुं.) भूगोल, भूमण्डल; -पति-(पुं.) संसार का स्वामी; -पाल-(पुं.) देखें 'भूपाल'; -पावनी-(वि., स्त्री.) भुवन को पवित्र करनेवाली, गंगा ।
भुवपाल-(हिं. पुं.) देखें 'भूपाल' ।
भुवर्लोक-(सं. पुं.) अन्तरिक्ष लोक ।
भुवा-(हिं. पुं.) रूई, घुआ ।
भुवार-(हिं. पुं.) देखें 'भुवाल' ।
भुवाल-(हिं. पुं.) राजा ।
भुवि-(हिं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि ।
भुशुंडि(डी)-(सं. पुं.) काकभुशुण्डी, (इनके विषय में यह प्रसिद्धि है कि वह अमर और त्रिकालज्ञ हैं); एक अस्त्र का नाम ।
भुस-(हिं. पुं.) भूसा ।
भुसी-(हिं. स्त्री.) देखें 'भूसी' ।
भुसौरा-(हिं. पुं.) भूसा रखने का स्थान ।
भूँकना-(हिं. क्रि. अ.) कुत्ते का भों-भों करना, व्यर्थ बकबक करना; (पुं.) कुत्ते का शब्द ।
भूँख, भूँखा-(हिं. स्त्री., वि.) देखे 'भूख, भूखा' ।
भूँचाल-(हिं. पुं.) भूकंप ।
भूँजना-(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को आग में डालकर अथवा कड़ाही आदि में सूखा पकाना, तलना, कष्ट देना, सताना ।
भूँजा-(हिं. पुं.) भूना हुआ अन्न, चबैना, भड़भूँजा ।
भूँडरी-(हिं. स्त्री.) बिना लगान की भूमि जो नाऊ, बारी आदि को दी गई हो ।
भूँड़िया-(हिं. वि.) मँगनी के हलबैलों से खेती करनेवाला ।
भूँडोल-(हिं. पुं.) देखें 'भूकंप' ।
भूँरो-(हिं. पुं.) भ्रमर, भौंरा ।
भू-(सं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि, स्थान, सीता की एक सखी का नाम; (हिं. स्त्री.) भौंह; (वि.) (समस्त पदों में) उत्पन्न

होनेवाला; जैसे–स्वयंभू, मनोभू आदि।
भूआ–(हिं.पुं.) रूई, इसके समान कोई हलकी तथा कोमल वस्तु, घूआ; (स्त्री.) बूआ।
भूकंद–(सं. पुं.) सूरन, ओल।
भूकंप–(सं. पुं.) कुछ प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के ऊपरी भाग या तल का एकाएक हिल उठना, भूचाल, भूडोल।
भूक–(हिं. स्त्री.) देखें 'भूख'।
भूकदंबा–(सं. स्त्री.) गोरखमुन्डी।
भूकर्ण–(सं. पुं.) ज्योतिष शास्त्र में निरक्षमण्डल (पृथ्वी) का व्यासार्ध।
भूकेश–(सं. पुं.) सिवार, वरगद की जटाएँ जो भूमि पर लटकती हैं।
भूकेशा–(सं. स्त्री.) राक्षसी।
भूख–(हिं. स्त्री.) शरीर की वह स्वतःक्रिया जिसमें भोजन की इच्छा हो, क्षुधा, अभिलाषा, कामना, आवश्यकता।
भूखन–(हिं. पुं.) देखें 'भूषण'।
भूखना–(हिं. क्रि. स.) सजाना।
भूखर–(हिं. स्त्री.) क्षुधा, भूख, इच्छा।
भूखा–(हिं. वि.) क्षुधित, जिसको भोजन की प्रवल इच्छा हो, दरिद्र, जिसके पास खाने तक को न हो, इच्छुक।
भूगर–(सं. पुं.) विष, गरल।
भूगर्भ–(सं. पुं.) विष्णु, पृथ्वी का भीतरी भाग; –गृह–(पुं.) भूमि के भीतर का घर; –शास्त्र–(पुं.) वह शास्त्र जिसके द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है कि पृथ्वी का संघटन किस प्रकार हुआ, उसका ऊपरी तल तथा मध्य का भाग किन-किन तत्त्वों से वना है, उसका आदि रूप क्या था तथा किन कारणों से इसको वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है।
भूगोल–(सं. पुं.) भुवन, भूमण्डल, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी भाग का स्वरूप, उसके प्राकृतिक विभाग आदि विषयों का ज्ञान होता है; –विद्या–(स्त्री.) वह विद्या जिसके द्वारा पृथ्वी की आकृति, गर्म, विभाग, गति, मौसम आदि जाना जाता है।
भूघन–(सं. पुं.) प्राणियों का शरीर।
भूचक्र–(सं.पुं.) पृथ्वी की परिधि, विषुवत् रेखा, अयन-वृत्त, क्रान्ति-वृत्त।
भूचणक–(सं. पुं.) मूँगफली, चिनियाबादाम।
भूचर–(सं. पुं.) भूमि पर रहनेवाला प्राणी, शिव, महादेव, दीमक, एक प्रकार की तान्त्रिक सिद्धि।
भूचरी–(सं. स्त्री.) योग-शास्त्र के अनुसार समाधि की एक क्रिया या मुद्रा, (इसका निवेश नाक में होता है और इसके द्वारा प्राण और अपान–दोनों वायु एकत्र हो जाते हैं।)
भूचाल–(हिं. पुं.) भूकंप, भूडोल।
भूचित्र–(सं. पुं.) पृथ्वी का मानचित्र।
भूजात–(हिं. पुं.) वृक्ष।
भूटान–(हिं. पुं.) एक स्वाधीन पहाड़ी राजतंत्र राज्य जो नेपाल के पूरव में है।
भूटानी–(हिं. वि.) भूटान-सम्बन्धी, भूटान देश का; (पुं.) भूटान देश का निवासी; (स्त्री.) भूटान देश की भाषा।
भुटिया बादाम–(हिं. पुं.) एक मझोले आकार का पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट होती और इसका फल खाया जाता है।
भूड़–(हिं. स्त्री.) वालू मिली हुई मिट्टी, कुएँ का सोता।
भूडोल–(हिं. पुं.) भूकंप।
भूत–(सं.पुं.) वेदांत के अनुसार वे मूल तत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) जिनकी सहायता से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है, मृत शरीर, शव, तत्त्व, सत्य, कुमार कार्तिकेय, लोध, कृष्ण-पक्ष, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करता है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका, वे कल्पित आत्माएँ जिनके विषय में यह माना जाता है कि वे अनेक प्रकार के उपद्रव करती और कष्ट पहुँचाती हैं, पिशाच, वसुदेव के सब से बड़े पुत्र का नाम, जगत्, कल्याण, देवयोनि विशेष, अतीत काल, प्राणी, जन्तु, सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, चर अथवा अचर पदार्थ या प्राणी; (वि.) युक्त, मिला हुआ, बीता हुआ, सदृश, समान, जो हो चुका हो; (मुहा.) – का पकवान–भ्रम में डालनेवाली असत्य वस्तु; –चढ़ना या सवार होना–अधिक क्रोध होना, बहुत दुराग्रह करना; –कर्त्ता–(पुं.) ब्रह्मा; –कला–(स्त्री.) पंच-भूतों को उत्पन्न करनेवाली एक शक्ति; –काल–(पुं.) अतीत काल, बीता हुआ समय; –कालिक–(वि.) अतीत काल-संबंधी; –कृत–(पुं.) देवता, विष्णु; –खाना–(हिं. पुं.) बहुत मैला-कुचैला तथा अँधेरा घर; –घ्न–(वि.) भूत का नाश करनेवाला –चारी–(पुं.) शिव, महादेव; –जटा–(पुं.) जटामासी; –तत्त्व–(पुं.) पंचभूत का भाव या धर्म; –धात्री–(स्त्री.) पृथ्वी; –नाथ–(पुं.) शिव, महादेव; –पक्ष–(पुं.) कृष्ण पक्ष; –पति–(पुं.) कृष्ण, शिव, महादेव; –पाल–(पुं.) विष्णु; –पूर्णिमा–(स्त्री.) आश्विन मास की पूर्णिमा; –पूर्व–(वि.) वर्तमान काल के पहले का, इस समय से पहले का; –भर्ता–(पुं.) भूतपति, शिव, महादेव; –भव्य–(पुं.) विष्णु; –भावन–(पुं.) विष्णु, महादेव, भूतों के स्रष्टा; –भाषा–(स्त्री.) पैशाचिक भाषा; –भृत्–(पुं.) विष्णु; –भैरव–(पुं.) भैरव की एक मूर्ति का नाम; –महेश्वर–(पुं.) विष्णु; –यज्ञ–(पुं.) गृहस्थों के पंचयज्ञों में से एक, वलिवैश्यदेव, भूतवलि; –वत्–(वि.) पूर्ववत्, पहले की तरह; –वादी–(वि.) ठीक-ठीक बोलनवाला; –वाहन–(पुं.) शिव का एक नाम; –विद्–(वि.) सर्वज्ञ, बीती हुई बातों को जाननेवाला; –शुद्धि–(स्त्री.) तन्त्र के अनुसार शरीर के विभिन्न अंगों की भावना करते हुए मंत्र द्वारा उसका शोधन; –संचार–(पुं.) भूतोन्माद नामक रोग; –संप्लव–(पुं.) प्रलय; –संसार–(पुं.) जगत्, विश्व, ब्रह्माण्ड; –हत्या–(स्त्री.) जीवहत्या।
भूतत्व–(सं. पुं.) भूत का भाव या धर्म, पृथ्वी संबंधी विद्या; –विद्या–(स्त्री.) भूगर्भ-शास्त्र, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के भीतर के पदार्थों के विषय में ज्ञान होता है।
भूतल–(सं. पुं.) पृथ्वी, संसार, पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल, पृथ्वी के नीचे का भाग, पाताल।
भूतांतक–(सं. पुं.) यम, रुद्र।
भूतात्मा–(सं. पुं.) परमेश्वर, जीवात्मा, शिव, विष्णु, युद्ध, देह, शरीर।
भूताधिपति–(सं. पुं.) भूतनाथ, शिव।
भूतायन–(सं.पुं.) परमेश्वर, जीवात्मा।
भूतार्त–(सं. वि.) भूतग्रस्त।
भूतावास–(सं. पुं.) शरीर, विष्णु, संसार।
भूति–(सं. पुं.) शिव; (स्त्री.) अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ, भस्म, राख, वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, सत्ता, उत्पत्ति, लक्ष्मी, जाति, वृद्धि, अधिकता; –कर्म–(पुं.) गार्हस्थ्य संस्कार; –काम–(वि.) जिसको ऐश्वर्य की कामना हो; –द–(पुं.) शिव; –दा–(स्त्री.) गंगा; –निधान–(पुं.) धनिष्ठा नक्षत्र; –वाहन–(पुं.) शिव का एक नाम।
भूतिनी–(हिं.स्त्री.) जिस स्त्री ने भूतयोनि प्राप्त की हो, डाकिनी, शाकिनी आदि।
भूतिवानी–(हिं. स्त्री.) भस्म, राख।

भूतृण–(सं. पुं.) रोहिश घास।
भूतेश, भूतेश्वर–(सं. पुं.) परमेश्वर, शिव, महादेव।
भूतेष्टा–(सं. स्त्री.) काली तुलसी, आश्विन कृष्ण चतुर्दशी।
भूतोन्माद–(सं. पुं.) भूत-पिशाच के बाधा से होनेवाला उन्माद रोग।
भूतोपदेश–(सं.पुं.) बीती हुई बात की शिक्षा।
भूत्तम–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना।
भूदार–(सं. पुं.) शूकर, सूअर।
भूदेव–(सं. पुं.) ब्राह्मण।
भूधन–(सं. पुं.) राजा, नृप।
भूधर–(सं. पुं.) शेषनाग, विष्णु, राजा, औषध बनाने का एक प्रकार का वालुका यन्त्र; –ता–(स्त्री.) भूधर का भाव या धर्म।
भूधरेश्वर–(सं.पुं.) पर्वतों का राजा हिमालय।
भून–(हिं. पुं.) देखें 'भ्रूण'।
भूनना–(हिं. क्रि. स.) आग पर रखकर पकाना, गरम घी या तेल में डालकर पकाना, तलना, गरम बालू में डालकर पकाना, अधिक कष्ट देना।
भूनता–(सं. पुं.) भूपति, राजा।
भूप, भूपति–(सं.पुं.) राजा, नृप, वटुकभैरव।
भूपद–(सं. पुं.) वृक्ष, पेड़।
भूपदी–(सं. स्त्री.) मल्लिका, चमेली।
भूपरिधि–(सं. स्त्री.) पृथ्वी की परिधि।
भूपाल–(सं. पुं.) नृप, राजा।
भूपाली–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
भूपुत्र–(सं. पुं.) मंगल ग्रह, नरकासुर।
भूप्रकंप–(सं. पुं.) भूकंप।
भूबिंब–(सं. पुं.) पृथ्वी की छाया।
भूभल–(हिं. स्त्री.) गरम राख या धूल, गरम रेत।
भूभुज्–(सं. पुं.) नृप, राजा।
भूभुरि–(हिं. स्त्री.) देखें 'भूभल'।
भूभृत्–(सं. पुं.) पर्वत, राजा।
भूमंडल–(सं. पुं.) मण्डलाकार भूभाग, पृथ्वी।
भूमयी–(सं. स्त्री.) सूर्य-पत्नी, छाया।
भूमि–(सं. स्त्री.) वसुधा, पृथ्वी, स्थान, क्षेत्र, आधार, वासस्थान, योग में चित्त की एक अवस्था, प्रदेश, प्रान्त, जड़, नींव; –कंप–(पुं.) भूकंप, भूचाल; –खंड–(पुं.) भूमि का भाग; –गन–(पुं.) उष्ट्र, ऊँट; –गर्त–(पुं.) भूमि में बड़ा विवर, छिद्र, छेद; –गुहा–(स्त्री.) भूमि-गह्वर, सुरंग; –गृह–(पुं.) तहखाना; –चल–(पुं.) भूकम्प, भूडोल; –ज–(वि.) जो भूमि से उत्पन्न हो; (पुं.) सुवर्ण, सोना, गुग्गुल, सीसा, एक अनार्य जाति का नाम; –जा–(स्त्री.) सीता, जानकी; –जीवी–(पुं.) वैश्य, खेतिहर, किसान; –तल–(पुं.) भूतल, सतह; –दंड–(पुं.) एक प्रकार का व्यायाम; –देव–(पुं.) ब्राह्मण, राजा; –धर–(पुं.) पर्वत, पहाड़, काश्तकार; –पति, –पाल–(पुं.) भूपति, राजा; –पिशाच–(पुं.) ताड़ का वृक्ष; –पुत्र–(पुं.) मंगल ग्रह, नरकासुर; –पुत्री–(स्त्री.) सीता, जानकी; –भाग–(पुं.) प्रदेश; –भुज्–(पुं.) राजा, भूपति; –भृत्–(पुं.) राजा, पर्वत, पहाड़; –या–(हिं. पुं.) भूमि का अधिकारी, ग्रामदेवता; –रुह–(पुं.) वृक्ष, पेड़; –लोक–(पुं.) पृथ्वीलोक; –ष्ठ–(वि.) भूमि पर गिरा हुआ, उत्पन्न; –संभवा–(स्त्री.) सीता, जानकी; –सुत–(पुं.) मंगल ग्रह, नरकासुर, वृक्ष; –सुता–(स्त्री.) सीता, जानकी; –सुर–(पुं.) ब्राह्मण; –हार–(हिं. पुं.) विहार तथा पूरबी उत्तर प्रदेशवासी एक ब्राह्मण जाति।
भूमिका–(सं. स्त्री.) रचना, बनावट, अभिनेताओं भेष धारण करना, वेदान्त मत से चित्त की एक अवस्था, वक्तव्य विषय की सूचना, ग्रन्थ का मौलिक परिचय, मुखबन्ध, प्रस्तावना।
भूमींद्र–(सं. पुं.) भूपति, राजा।
भूम्य–(सं. वि.) भूमि पर होने योग्य।
भूयः–(सं अव्य.) बहुत, अधिक, फिर से।
भूयण–(हिं. स्त्री.) भूमि, पृथ्वी।
भूयिष्ठ–(सं. वि.) बहुत, प्रचुर।
भूर–(हिं. वि.) बहुत, अधिक; (पुं.) बालू।
भूरज–(हिं. पुं.) भोजपत्र का पेड़; –पत्र–(पुं.) भोजपत्र।
भूरपूर–(हिं. अव्य.) देखें 'भरपूर'।
भूरला–(हिं. पुं.) वैश्यों की एक जाति।
भूरसी दक्षिणा–(हिं. स्त्री.) वह थोड़ी-थोड़ी दक्षिणा जो किसी बड़े यज्ञ, दान अथवा धर्मकृत्य के अन्त में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूरा–(हिं. पुं.) धूमिल रंग, यूरोप देश का निवासी, कच्ची चीनी, खाँड़सारी, वह सफेद चीनी जो कच्ची चीनी को स्वच्छ करके बनाई जाती है; (वि.) मिट्टी के रंग का।
भूरि–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र; (वि.) प्रचुर, अधिक, बड़ा, भारी।
भूरिगम–(सं. पुं.) गर्दभ, गदहा।
भूरिज–(सं. वि.) जो झुंड का झुंड या बहुत-सा उत्पन्न हो।
भूरिता–(सं. स्त्री.) प्राचुर्य, अधिकता।
भूरितेजा–(सं. वि.) अतिशय तेजस्वी; (पुं.) सुवर्ण, सोना, अग्नि, आग।
भूरिद, भूरिदा–(सं. वि.) बहुत दान देनेवाला।
भूरिधामा–(सं. वि.) अति प्रभावशाली।
भूरिबला–(सं. स्त्री.) अतिबला, ककही।
भूरुह–(सं. पुं.) वृक्ष, पेड़।
भूरोह–(सं. पुं.) केंचुआ।
भूर्जपत्र–(सं. पुं.) भोजपत्र।
भूर्णि–(सं. स्त्री.) मरुभूमि।
भूर्लोक–(सं. पुं.) मर्त्य-लोक।
भूल–(हिं. स्त्री.) भूलने का भाव, चूक, दोष, अपराध, अशुद्धि।
भूलक–(हिं. वि., पुं.) जो भूल करता हो, भूलनेवाला।
भूलता–(सं.स्त्री.) केंचुआ नामक कीड़ा।
भूलना–(हिं.क्रि.अ.,स.) विस्मरण होना, याद न रहना, धोखे में आना, आसक्त होना, अनुरक्त होना, घमंड करना, खो जाना; (वि.) भूलनेवाला।
भूलभुलैया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का बड़ा और चक्कर में डालनेवाला गृह जिसमें एक ही तरह के बहुत से मार्ग और द्वार होने के कारण भीतर जाकर बाहर निकलना कठिन होता है, बहुत घुमाव या फेर की बात या घटना, पेचीली बात।
भूलोक–(सं. पुं.) पृथ्वीलोक, संसार।
भूलोटन–(हिं.वि.) पृथ्वी पर लोटनेवाला।
भूवलय–(सं. पुं.) भूमि की परिधि।
भूवल्लभ–(सं. पुं.) राजा।
भूवा–(हिं. पुं.) रूई; (वि.) रूई के समान सफेद।
भूविद्या–(सं. स्त्री.) वह शास्त्र जिसमें भूमि के तत्त्वों, प्राकृतिक विशेषताओं आदि का विवेचन होता है।
भूशक्र–(सं. पुं.) नृपति, भूपति, राजा।
भूशय्या–(सं. स्त्री.) भूमि पर सोना, शयन करने की भूमि।
भूशायी–(सं. वि.) पृथ्वी पर सोनेवाला, पृथ्वी पर गिरा हुआ, मृतक।
भूषण–(सं.पुं.) अलंकार, आभरण, गहना, शोभा बढ़ानेवाली वस्तु, विष्णु; –ता–(स्त्री.) शोभा, सजावट।
भूषन–(हिं. पुं.) देखें 'भूषण'।
भूषना–(हिं. क्रि. स.) अलंकृत करना, सजाना।

भेषना–(हिं. क्रि. अ.) स्वाँग बनाना।
भेस–(हिं.पुं.) वह बनावटी रूप, रंग तथा पहनावा जो वास्तविक रूप को छिपाने के लिये धारण किया जाता है, वेश।
भेसज–(हिं. स्त्री.) औषध, दवा।
भेसना–(हिं.क्रि.अ.) वेश धारण करना, वस्त्र आदि पहनना।
भैंस–(हिं. स्त्री.) गाय की जात का परन्तु उससे बड़ा तथा काले रंग का एक चौपाया जिसको लोग दूध के लिये पालते हैं, एक प्रकार की मीठे जल में मिलनेवाली मछली।
भैंसा–(हिं. पुं.) भैंस का नर, (पुराण के अनुसार यह यम का वाहन माना जाता है।)
भैंसाव–(हिं.पुं.) भैंस और भैंसे का जोड़ा खाना।
भैंसासुर–(हिं. पुं.) देखें 'महिषासुर'।
भैंसोरी–(हिं. स्त्री.) भैंस का चमड़ा।
भै–(हिं. पुं.) देखें 'भय', डर।
भैक्ष–(सं. पुं.) भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव, भिक्षा, भीख; –चर्या–(स्त्री.) भीख माँगने का काम; –जीविका–(स्त्री.) भीख माँगकर जीविका का निर्वाह; –वृत्ति–(स्त्री.) भिक्षा द्वारा जीवनोपाय।
भैक्षशाला–(सं. स्त्री.) पुण्य-गृह, वह स्थान जहाँ भिक्षुकों को भिक्षा मिलती हो।
भैचक–(हिं. वि.) विस्मित, चकित, घबड़ाया हुआ, भौचक।
भैजन–(हिं. वि.) भय उत्पन्न करनेवाला।
भैदा–(हिं. वि.) भयप्रद, डरावना।
भैन–(हिं. स्त्री.) भगिनी, वहिन।
भैना, भैनी–(हिं.स्त्री.) देखें 'भैन', वहिन।
भैने–(हिं. पुं.) वहिन का पुत्र, भानजा।
भैम–(सं. वि.) भीम-संबंधी; (पुं.) राजा उग्रसेन।
भैमी–(सं. स्त्री.) दमयन्ती।
भैयस–(हिं.पुं.) पतृक सम्पत्ति में भाइयों का अंश।
भैया–(हिं. पुं.) भ्राता, भाई, एक संबोधन का शब्द जो बराबरवालों या छोटों के लिये व्यवहार किया जाता है; –चार, –चारा–(हिं. पुं.) भ्रातृ-भाव, भाईचारा; –दूज–(स्त्री.) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाई-दूज, जिस दिन बहिन भाई को टीका लगाती तथा मिठाई खिलाती है।
भैरव–(सं. वि.) भयंकर, डरावना; (पुं.) शंकर, महादेव, साहित्य में भयानक रस, भयानक शब्द, शिव के गण, एक राग का नाम; –मस्तक–(पुं.) ताल का एक भेद।
भैरवी–(सं. स्त्री.) महाविद्या की मूर्ति का एक भेद, चामुण्डा, सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी का नाम, (यह प्रभात के समय गाई जाती है); –चक्र–(पुं.) तान्त्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट तिथियों को भैरवी का पूजन करने के लिये इकट्ठा होता है; –यातना–(स्त्री.) पुराण के अनुसार वह यातना जो प्राणियों को भैरव देते हैं।
भैरवेश–(सं. पुं.) शंकर, महादेव।
भैरिक–(सं. पुं.) दुंदुभी बजानेवाला।
भैरू–(हिं. पुं.) देखें 'भैरव'।
भैरो–(हिं. पुं.) देखें 'भैरव'।
भैवाद–(हिं. पुं.) भाईचारा।
भषज, भैषज्य–(सं. पुं.) औषध।
भैहा–(हिं. पुं.) डरा हुआ, भयभीत, प्रेत-ग्रस्त।
भों–(हिं. स्त्री.) भों-भों का शब्द।
भोंकना–(हिं. क्रि. अ., स.) धसाना, घुसेड़ना, भूंकना।
भोंगरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लता।
भोंगाल–(हिं. पुं.) बड़ा भोंपा।
भोंड़ा–(हिं. वि.) कुरूप, भद्दा; (पुं.) जुआर की जाति की एक प्रकार की लंबी घास; –पन–(पुं.) कुरूपता, भद्दापन।
भोंड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की भेंड़ जिसके पेट पर के रोयें सफेद होते हैं।
भोंतरा–(हिं.वि.) जिसकी धार पैनी न हो।
भोंदू–(हिं. वि.) मूर्ख, भोला, सीधा।
भोंपू, भोंपा–(हिं. पुं.) तुरही की तरह का मुँह से फूंककर बजाने का बाजा; इंजन, कारखाने आदि में लगा हुआ यंत्र जो ऊँची आवाज पैदा करता है।
भोंसले–(पुं.) महाराष्ट्र राजवंश की एक उपाधि।
भो–(हिं. अव्य.) हे; (क्रि. अ.) हुआ।
भोकस–(हिं. पुं.) एक प्रकार के राक्षस; (वि.) भुक्खड़।
भोकार–(हिं. स्त्री.) जोर से रोने का शब्द।
भोक्ता–(सं. वि.) भोजन करनेवाला, सुख-दुःख का भोग करनेवाला, भोगनेवाला; (पुं.) भर्ता, पति।
भोग–(सं. पुं.) सुख या दुःख, सुख-दुःख का अनुभव, भोजन, शरीर, मान, पुण्य-पाप का फल, पालन-पोषण, धन, साँप का फन, किराया, भाड़ा, रखेली स्त्री को दिया जानेवाला धन, स्त्री-संभोग, प्रारब्ध, खाद्य पदार्थ जो देवी-देवता को चढ़ाया जाता है, सूर्य आदि ग्रहों का राशि-स्थिति का काल; –गृह–(पुं.) वासगृह, रहने का घर; –त्व–(पुं.) भोगने का भाव या धर्म; –देह–(पुं.) स्वर्ग या नरक भोगनवाला आत्मा का सूक्ष्म देह; –पति–(पुं.) किसी नगर या प्रान्त का अधिकारी; –पात्र–(पुं.) वह पात्र जिसमें नैवेद्य रखकर देवता को अर्पण किया जाता है; –बंधक–(पुं.) बंधक रखने की वह रीति जिसमें उधार लिये हुए रुपये का सूद नहीं देना होता, परन्तु निर्दिष्ट काल के लिये महाजन को प्रतिभू-सम्पत्ति का भोग करने का अधिकार होता है; –भूमि–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ केवल भोग ही होता है, कर्म नहीं होता; –लाभ–(पुं.) सुख, दुःख आदि की प्राप्ति; –लिप्सा–(स्त्री.) व्यसन, लत; –विलास–(पुं.) आमोद-प्रमोद; –स्थान–(पुं.) भोगभूमि, रमण-गृह; –वती–(स्त्री.) नागों की स्त्री, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; –वस्तु–(पुं.) उपभोग्य द्रव्य।
भोगना–(हिं. क्रि. स.) शुभाशुभ कर्मों के फलों का अथवा सुख-दुःख का अनुभव करना, भुगतना, सहन करना, स्त्री-प्रसंग करना।
भोगली–(हिं. स्त्री.) छोटी नली, पुपली, नाक में पहनने की नथ, कान में पहनने का एक आभूषण, जरी, बादले आदि का बना हुआ एक प्रकार का सलमा।
भोगवाना–(हिं. क्रि. स.) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना, भोग कराना।
भोगाना–(हिं. क्रि. स.) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना, भोग कराना।
भोगावली–(सं. स्त्री.) स्तुति-गान।
भोगिनी–(सं.स्त्री.) राजा की रखेली स्त्री।
भोगिभुज्–(सं. पुं.) मयूर, मोर।
भोगी–(सं. पुं.) सर्प, राजा, नापित, अश्लेषा नक्षत्र, शेषनाग, वह जो भोगता हो; (वि.) इन्द्रियों का सुख चाहनेवाला, विषयासक्त, भुगतनेवाला, सुखी, विषयी, व्यसनी, विलासी, आनन्द लेनेवाला, खानेवाला।
भोग्य–(सं. वि.) भोगने योग्य, काम में लाने योग्य, जिसका उपभोग किया जाय; (पुं.) धनधान्य; –त्व–(पुं.) भोगने का धर्म या भाव; –भूमि–(स्त्री.) मर्त्यलोक; –मान–(वि.)

जो अभी भोगा जा रहा हो ।
भोग्या–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
भोज–(सं.पुं.) एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा का नाम, श्रीकृष्ण के एक ग्वाल-सखा का नाम, कच्छ के अन्तर्गत एक स्थान जो आजकल भुज कहलाता है; (हिं. पुं.) बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना, जेवनार, खाने की वस्तु, परमार १०-११वीं शताब्दी वंशी एक प्रसिद्ध राजा का नाम जो बड़े विद्वान् थे ।
भोजक–(सं. वि., पुं.) भोजन करनेवाला, भोग-विलास करनेवाला, भोगी ।
भोजदेव–(सं. पुं.) भोजराज जो कान्यकुब्ज देश के राजा थ ।
भोजन–(सं. पुं.) भक्षण, ठोस आहार को दाँतों से कुचलकर निगलना, भोजन की सामग्री; **–काल**–(पुं.) भोजन करने का समय; **–त्याग**–(पुं.) भोजन छोड़कर उठ जाना, उपवास; **–पात्र**–(पुं.) वह पात्र जिसमें भोजन किया जाता है; **–वेला**–(स्त्री.) खाने का समय; **–भट्ट**, **–व्यग्र**–(पुं.) पेटू; **–शाला**–(स्त्री.) रसोईघर ।
भोजनालय–(सं.पुं.) पाकशाला, रसोईघर ।
भोजनीय–(सं. वि.) भोजन करने योग्य ।
भोजपत्र–(हिं. पुं.) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी छाल प्राचीन समय में पुस्तकादि लिखने के काम में आती थी ।
भोज-परीक्षक–(सं. पुं.) रसोई की परीक्षा करनेवाला ।
भोजपुरिया–(हिं. पुं.) भोजपुर का निवासी; (वि.) भोजपुर-संबंधी ।
भोजपुरी–(सं. स्त्री.) राजा भोज की राजधानी, भोजपुर की भाषा; (पुं.) भोजपुर का निवासी; (वि.) भोजपुर-संबंधी ।
भोजबाजी–(हिं.स्त्री.) ऐन्द्रजालिक क्रीड़ा, जादूगरी ।
भोजयितव्य–(सं.वि.) भोजन करने योग्य ।
भोजयिता–(सं. पुं.) भोजन करानेवाला ।
भोजराज–(सं.पुं.) कान्यकुब्ज (कन्नौज) के प्रसिद्ध राजा भोजदेव जो रामभद्र देव के पुत्र थे ।
भोजविद्या–(सं.स्त्री.) ऐन्द्रजालिक विद्या, बाजीगरी ।
भोजी–(हिं. वि.) भोजन करनेवाला ।
भोजू–(सं. पुं.) भोजन ।
भोजेश–(सं. पुं.) भोजराज, कंस ।
भोज्य–(सं. वि.) भोजन करने योग्य; (पुं.) खाद्य पदार्थ ।

भोट–(हिं. पुं.) भूटान देश, एक प्रकार का बड़ा चौरस पत्थर ।
भोटिया–(हिं.स्त्री.) भूटान देश की भाषा; (वि.) भूटान देश-सम्बन्धी; **–बादाम**–(पुं.) आलूबुखारा, मूँगफली ।
भोडर, भोडल–(हिं.पुं.) अभ्रक, अबरक का चूर, बुक्का, एक प्रकार का गन्धविडाल ।
भोडागार–(हिं. पुं.) भण्डार-घर ।
भोण–(हिं. पुं.) गृह, घर ।
भोथरा–(हिं. वि.) जिसकी धार कुंद हो गई हो ।
भोना–(हिं.क्रि.अ.) लिप्त होना, भीनना, अनुरक्त होना ।
भोपा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की तुरही, भोंपा, मूर्ख ।
भोबरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास ।
भोभो–(सं. अव्य.) सम्बोधन का शब्द, अरे, हो ।
भोम, भोमी–(हिं. स्त्री.) पृथ्वी ।
भोर–(हिं. पुं.) प्रातःकाल, तड़का, सवेरा, एक प्रकार का बड़ा पक्षी, धोखा, भूल; (वि.) चकित, घबड़ाया हुआ ।
भोराना–(हिं.क्रि.अ., स.) भ्रम म डालना, बहकाना, भ्रम में पड़ना, धोखे में आना ।
भोरु–(हिं. पुं.) देख 'भोर' ।
भोला–(हिं.वि.) सरल, सीधा-सादा, मूर्ख; **–नाथ**–(पुं.) शिव, महादेव; **–पन**–(पुं.) सरलता, सिधाई, मूर्खता; **–भाला**–(वि.) सरल चित्त का, सीधा-सादा ।
भोलि–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट ।
भोसर–(हिं. वि.) मूर्ख ।
भौं–(हिं. स्त्री.) आँख के ऊपर के बालों की श्रेणी, भौंह ।
भौंकना–(हिं.क्रि.अ.) भौं-भौं शब्द करना, कुत्तों का बोलना, निरर्थक बोलना ।
भौंगर–(हिं.पुं.) क्षत्रियों की एक जाति ।
भौंचाल–(हिं. पुं.) देखें 'भूकंप' ।
भौंड़ी–(हिं.स्त्री.) छोटा पहाड़, पहाड़ी ।
भौंतुवा–(हिं. पुं.) काले रंग का खटमल के आकार का एक कीड़ा जो वर्षा ऋतु में पानी के ऊपर चक्कर खाता फिरता है, एक प्रकार का रोग जिसमें कोई अंग सूज जाता है, तेली का बैल जो दिन भर कोल्हू में जुता रहता है ।
भौंर–(हिं. पुं.) भौंरा, जल का आवर्त, भँवरकली; **–कली**–(स्त्री.) भँवरकली ।
भौंरा–(हिं. पुं.) काले रंग का उड़नेवाला एक कीड़ा, बड़ी मधुमक्खी, हिंडोले की लकड़ी, भूमि के नीचे का घर, अन्न रखने का गड्ढा, ज्वार आदि की उपज को हानि पहुँचानेवाला एक कीड़ा, गड़ेरिये की भेड़ों की रखवाली करनेवाला कुत्ता, पशुओं का एक रोग, गाड़ी के पहिये का मध्य भाग, रहट की गोलाकार चरखी, काली या लाल भेड़, लट्टू के आकार का एक खिलौना, प्रेमी, रसिक ।
भौंराना–(हिं.क्रि.अ., स.) परिक्रमा कराना, घुमाना, चक्कर काटना, फेरी लगाना, विवाह में भाँवर दिलाना, व्याह कराना ।
भौंरी–(हिं. स्त्री.) पशुओं के शरीर पर रोयें का चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण-दोष का निर्णय होता है, पानी का चक्कर, जलावर्त, अंगाकड़ी, बाटी, विवाह के समय वर और वधू का अग्नि का परिक्रमा करना ।
भौंह–(हिं.स्त्री.) आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल, भृकुटी, भौं; (मुहा०) **–चढ़ाना**–त्योरी चढ़ाना; **–जोहना**–चापलूसी करना ।
भौंहरा–(हिं. पुं.) तहखाना ।
भौ–(हिं.पुं.) भव, संसार, जगत्, भय, डर ।
भौका–(हिं. पुं.) बड़ी दौरी, टोकरा ।
भौगिया–(हिं. वि.) संसार के सुखों को भोगनेवाला ।
भौगोलिक–(सं. वि.) भूगोल-संबंधी ।
भौचक (क्का)–(हिं. वि.) स्तम्भित, घबड़ाया हुआ, हक्का-बक्का ।
भौचाल–(हिं. पुं.) देखें 'भूकंप' ।
भौज, भौजाई, भौजी–(हिं. स्त्री.) भाई की स्त्री, भावज ।
भौज्य–(सं. पुं.) वह राज्य-प्रबन्ध जिसमें राजा प्रजा से लाभ उठाता परन्तु प्रजा के स्वत्वों, सुखों आदि का कुछ विचार न करता हो ।
भौठा–(हिं. पुं.) छोटा पहाड़, टीला ।
भौत–(सं. पुं.) वह बलि जो भोजन के पहले भूतों के उद्देश्य से दी जाती है; (वि.) भूत-सम्बन्धी ।
भौतिक–(सं. वि.) पंचभूत या सृष्टि-सम्बन्धी, पंच-तत्वों से बना हुआ, पार्थिव, शरीर-सम्बन्धी, शरीर का, भूत योनि का; (पुं.) महादेव, शिव, शरीर की इन्द्रियाँ; **–विज्ञान**, **–शास्त्र**–(पुं.) वह विज्ञान जिसमें सृष्टि के मूल तत्वों (ताप, ऊर्जा, विद्युत् आदि) का विवेचन हो; **–विद्या**–(स्त्री.) (भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी आदि को) बुलाने तथा इनसे ग्रस्त मनुष्यों पर से इनको हटाने की विद्या; **–सृष्टि**–(स्त्री.)

आठ प्रकार की देवयोनियाँ, पाँच प्रकार की तिर्यक योनियाँ तथा मनुष्य योनि-इन तीनों का समुच्चय ।
भौन-(हिं. पुं.) देखें 'भवन', घर ।
भौना-(हिं.क्रि.अ.) भ्रमण करना, घूमना ।
भौम-(सं. पुं.) मंगल ग्रह, नरकासुर, एक प्रकार का पुच्छल तारा; (वि.) भूमि-संबंधी, भूमि से उत्पन्न;-चार-(पुं.) ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह का संचार;-जल-(पुं.) झरने या कुएँ का जल;-प्रदोष-(पुं.) मंगलवार को पड़नेवाला प्रदोप;-रत्न-(पुं.) प्रवाल, मूंगा;-वार-(पुं.) मंगलवार ।
भौमासुर-(सं.पुं.) नरकासुर नामक दैत्य ।
भौमिक-(सं. वि.) भूमि-संबंधी; (पुं.) भूमिधर, जमींदार ।
भौमी-(सं. स्त्री.) सीता, जानकी ।
भौर-(हिं. पुं.) घोड़े का एक भेद, देखें 'भँवर', भौंरा ।
भौलिया-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की नाव जो ऊपर से ढपी रहती है ।
भौवन-(सं. वि.) भुवन-संबंधी ।
भौसा-(हिं.पुं.) जनसमूह, भीड़-भाड़ ।
भ्रंगारी-(हिं. पुं.) झींगुर ।
भ्रंगी-(हिं. पुं.) एक प्रकार का भन-भनानेवाला फतिंगा ।
भ्रंश,भ्रंस-(सं.पुं.) ध्वंस, नाश, अधःपतन, भटकना; (वि.) भ्रष्ट ।
भ्रंशन-(सं. पुं.) अधःपतन ।
भ्रकुंश-(सं. पुं.) स्त्री-वेश में नाचने-वाला पुरुष ।
भ्रकुटि-(सं. स्त्री.) भ्रूकुटी, भौह ।
भ्रत-(हिं. पुं.) दास, सेवक ।
भ्रद-(हिं. पुं.) हाथी ।
भ्रम-(सं. पुं.) मिथ्या ज्ञान, भ्रान्ति, धोखा, सन्देह, संशय, मूर्च्छा, भ्रमण, जल धारा का भँवर, कुम्हार का चाक, खरादने का अस्त्र ।
भ्रमकारी-(सं.वि.) भ्रम में डालनेवाला ।
भ्रमण-(सं. पुं.) घूमना-फिरना, यात्रा, मंडल, फरी, चक्कर ।
भ्रमणीय-(सं. वि.) घूमने-फिरने योग्य ।
भ्रमत्व-(सं. पुं.) भ्रम, भ्रांति, संशय ।
भ्रमना-(हिं. क्रि. अ.) धोखा खाना, भूल करना, भटकना, चूकना ।
भ्रममूलक-(सं. वि.) जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो ।
भ्रमर-(सं. पुं.) मधुकर, भौंरा; -क-(पुं.) सिर के लटकने-वाले बाल;-कंटक-(पुं.) एक प्रकार का फतिंगा जो दीपक को बुझा देता है; -गीत-(स्त्री.) विरह-काव्य का एक भेद, एक प्रकार का छप्पय; -पद-(पुं.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक पद में बारह अक्षर होते हैं;-मारी-(स्त्री.) एक सुन्दर सुगन्ध का पौधा; -विलासिता-(स्त्री.) एक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं ।
भ्रमरानंद-(सं. पुं.) वकुल, मौलसिरी ।
भ्रमरावली-(सं. स्त्री.) एक वृत्त का नाम जिसको नलिनी या मनहरण भी कहते हैं भौंरों की पंक्ति ।
भ्रमरी-(सं. स्त्री.) मिरगी रोग, भौंरे की मादा ।
भ्रमवात-(सं. पुं.) ऊर्ध्व आकाश में वह वायुमण्डल जो सर्वदा चक्कर खाता रहता है ।
भ्रमात्मक-(सं. वि.) संदिग्ध, जिसके विषय में भ्रम हो ।
भ्रमाना-(हिं. क्रि. स.) घुमाना-फिराना, बहकाना ।
भ्रमित-(सं. वि.) शंकित, घूमता हुआ ।
भ्रमी-(सं. वि.) चकित, जिसको भ्रम हो, भौचक ।
भ्रष्ट-(सं. वि.) पतित, दूषित, दुराचारी ।
भ्रष्टा-(सं. स्त्री.) दुश्चरित्रा स्त्री, छिनाल औरत ।
भ्रांत-(सं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, उन्मत्त, भूला हुआ; (पुं.) तलवार के विविध हाथों में से एक ।
भ्रांतापह्नुति-(सं.स्त्री.) एक काव्यालंकार जिसमें भ्रम दूर करने के लिये सच्ची बात का वर्णन रहता है ।
भ्रांति-(सं. स्त्री.) भ्रम, धोखा, संशय, मोह, प्रमाद, चक्कर, भँवरी, एक प्रकार का काव्यालंकार जिसम किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देखकर भ्रम से एक को दूसरी वस्तु समझ लेना वर्णन किया जाता है ।
भ्रांतिमत्-(सं. वि.) भ्रान्त, भ्रमयुक्त; (पुं.) वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का अन्य वस्तु से ज्ञान होना दिखलाया जाता है ।
भ्रांतिहर-(सं. वि.) भ्रम का नाश करनेवाला; (पुं.) मन्त्रणा द्वारा भ्रान्ति दूर करनेवाला, मन्त्री ।
भ्राजन-(सं. पुं.) चमक-दमक, दीपन ।
भ्राजना-(हिं.क्रि.अ.) शोभायमान होना ।
भ्राता-(सं. पुं.) सगा भाई ।
भ्रातृ-(सं. पुं.) सगा भाई, सहोदर भ्राता;-त्व-(पुं.) भ्राता का भाव या धर्म; -द्वितीया-(स्त्री.) देखें 'भाई-दूज'; -पुत्र-(पुं.) भाई का पुत्र, भतीजा; -भाव-(पुं.) भाई के समान प्रेम या संबंध, भाईचारा, ज्योतिष में लग्न से तृतीय स्थान; -वधू-(स्त्री.) भाई की स्त्री, भौजाई ।
भ्रात्रीय-(सं. वि.) भ्राता-संबंधी ।
भ्राम-(सं. वि.) भ्रमयुक्त, संशययुक्त ।
भ्रामक-(सं.पुं.) शृगाल, सियार, चुंबक पत्थर, कान्ति लोहा; (वि.) भ्रम में डालनेवाला, सन्देह उत्पन्न करनेवाला, धूर्त, चक्कर में डालनेवाला ।
भ्रामर-(सं. पुं.) मधु, शहद, अपस्मार रोग, दोहे का एक भेद; (वि.) भ्रमर-संबंधी ।
भ्रामरी-(सं.स्त्री.) पार्वती का एक नाम ।
भ्राश्य-(सं. पुं.) आयुध, शस्त्र ।
भ्राष्ट्र-(सं. पुं.) आकाश, वह नाँद जिसमें भड़भूँज दाना भूँजते हैं ।
भ्रुकंश-(सं. पुं.) वह मनुष्य जो स्त्री का वेश धारण करके नाचता हो ।
भ्रुकुटि (टी)-(सं. स्त्री.) क्रोध में भौंह चढाना, भृकुटी, भौंह; -मुख-(पुं.) एक प्रकार का सर्प ।
भ्रू-(सं. स्त्री.) भौंह, भौं ।
भ्रूकुंस-(सं. पुं.) देखें 'भ्रुकुंश' ।
भ्रूकुटी-(सं. स्त्री.) क्रोधादि में भौंहों को तिरछी करना ।
भ्रूक्षेप-(सं. पुं.) संकेत जताने के लिये भौंहों को तिरछी करना, भ्रूविलास ।
भ्रूण-(सं. पुं.) स्त्री का गर्भ, बच्चे के गर्भ में रहने की आदि अवस्था; -घ्न- भ्रूण-हत्याकारी, गर्भ में रहने हत्या करनेवाला ; -हति, -हत्या-(स्त्री.) गर्भस्थ बालक को जान से मार डालना; -हन्-(पुं.) भ्रूण-हत्या करनेवाला ।
भ्रप्रकाश-(सं. पुं.) एक प्रकार का काला रंग जिससे शृंगार आदि के लिये भौंहें सँवारते हैं ।
भ्रूभंग, भ्रूभेद-(सं. पुं.) क्रोध आदि प्रकट करने में भौह चढ़ाना ।
भ्रूभेदी-(सं. वि.) भौंह चढ़ाये हुए ।
भ्रूविकार-(सं. पुं.) भ्रूभंग, भौंह चढ़ाना ।
भ्रूविक्षेप-(सं. पुं.) भौह चढ़ाकर अप्रसन्नता दिखलाना ।
भ्रूविचेष्टित-(सं. पुं.) भ्रूविक्षेप, त्यौरी चढ़ाना ।
भ्रूविलास-(सं.पुं.) भ्रू-भंग, त्यौरी चढ़ाना ।

मंडलाकार–(सं. वि.) गोल ।
मँडलाना–(हि. क्रि.अ.) देखें 'मँडराना'।
मंडलायित–(सं. वि.) वर्तुल, गोलाकार।
मंडलित–(सं. वि) गोलाकार।
मंडली–(सं. स्त्री.) गोष्ठी, समूह, मनुष्यों का संघ, जमघट।
मंडलीक, मंडलेश, मंडलेश्वर–(सं. पुं.) कई राजाओं का अधिपति ।
मँड़वा–(हिं. पुं.) देखें 'मंडप'।
मंडा–(सं. स्त्री.) सुरा, मदिरा; (हिं. पुं.) दो विस्वे की नाप की भूमि, एक प्रकार की बँगला मिठाई ।
मँड़ार–(हिं. पुं.) गड्ढा, डलिया, झावा।
मंडित–(सं. वि.) भूषित, सजाया हुआ, पूरित, भरा हुआ ।
मँड़ियार–(हिं. पुं.) झरबेरी नाम की कँटीली झाड़ी ।
मंडी–(हि. स्त्री.) थोक विक्री का स्थान, हाट, दो विस्वे के नाप की भूमि ।
मड़ुआ–(हिं.पुं.) एक प्रकार का मोटा अन्न।
मंडूक–(सं. पुं.) भेक, मेढक, प्राचीन काल का एक बाजा, एक प्रकार का नाच, घोड़े की एक जाति, दोहे का एक भेद, रुद्र ताल का एक भेद ।
मंडूकी–(सं.स्त्री.) ब्राह्मी बूटी, निर्लज्ज स्त्री।
मंडूर–(सं. पुं.) गलाये हुए लोहे का मैल।
मंढा–(हिं. पुं.) कलावत्तू बुननेवालों का लकड़ी का एक उपकरण ।
मंत–(हिं. पुं.) देखें 'मंत्र', सलाह ।
मंतव्य–(सं.पुं.) मत, विचार; (वि.) मानने योग्य ।
मंत्र–(सं. पुं.) वेद का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है, (यह ब्राह्मण से पृथक् है), मंत्रणा, परामर्श, देवता के आराधन के निमित्त वैदिक वाक्य जिनको पढ़कर यज्ञादि क्रिया की जाती है; **–कार** –(पुं.) मंत्र रचनेवाले ऋषि; **–कुशल**– (वि.) मंत्र जाननेवाला; **–कृत**–(पुं.) परामर्श देनेवाला, मंत्री; **–गृह**–(पुं.) वह स्थान जहाँ सलाह या मंत्रणा की जाती है; **–जल**–(पुं.) अभिमन्त्रित किया हुआ जल; **–जिह्व**–(पुं.) अग्नि; **–ज्ञ**–(वि.) मंत्र जाननेवाला, सच्ची मंत्रणा देनेवाला; **–ण**–(पुं.) मन्त्रणा, परामर्श; **–णा**–(स्त्री.) परामर्श; **–द**, **–दाता**–(पुं.) गुरु, मन्त्र देनेवाला गुरु; **–मूर्ति**–(पुं.) शिव, महादेव; **–वादी**–(वि.) मंत्र जाननेवाला; **–विद्या**–(स्त्री.) मंत्र-शास्त्र; **–संहिता**–(स्त्री.) वैदिक मंत्रों का संग्रह; **–साधन**–(पुं.) अभिलषित विषय की सिद्धि; **–सिद्धि**–(स्त्री.) मंत्र की सफलता ।
मंत्रिता–(सं. स्त्री.) मंत्री का काम ।
मंत्रित्व–(सं. पुं.) देखें 'मंत्रिता'।
मंत्री–(सं.पुं.) वह अधिकारी जिसके परामर्श से राज्य के काम-काज होते हैं, अमात्य, सचिव, शतरंज की एक गोटी का नाम; **–मंडल**–(पुं.) मंत्रियों की परिषद् या समूह।
मंथ–(सं. पुं.) मंथन, मथानी, औषध को खल में मथने की एक विधि, हिलाने की क्रिया, सूर्य की किरण; **–क**–(वि., पुं.) मथनेवाला; **–ज**–(पुं.) मक्खन; **–न**–(पुं.) मथना, सोचकर पता लगाना, बार-बार पढ़ना, मथानी ।
मंथर–(सं. पुं.) कोष, मथानी, गुप्तचर, क्रोध, वैशाख मास, मक्खन, फल; (वि.) मन्द, भारी, वक्र, टेढ़ा, सुस्त, नीच, अधम ।
मंथरा–(सं. स्त्री.) कैकेयी की दासी जिसने राम को वनवास देने के लिये रानी को बहकाया था ।
मंथा–(सं. स्त्री.) मेथिका, मेथी ।
मंथान–(सं. पुं.) मंथन-दण्ड, मथानी, शिव, महादेव, एक छन्द का नाम, भैरव का एक भेद।
मंथिनी–(सं.स्त्री.) दही मथने का पात्र।
मंद–(सं. पुं.) शनि ग्रह, यम, जठरानल, प्रलय, अभाग्य; (वि.) शिथिल, धीमा, आलसी, दुष्ट, खल, मूर्ख; **–कर्म**– (वि.) कार्यहीन; **–कारी**–(वि.) हानि करनेवाला; **–गति**–(वि.) धीमी चाल चलनेवाला; **–जात**–(वि.) धीरे-धीरे उत्पन्न; **–ता**–(स्त्री.) आलस्य, धीमापन, क्षीणता; **–धी**, **–बुद्धि**–(वि.) अल्पबुद्धि; **–भागी**–(वि.) हतभाग्य, अभागा; **–भाग्य**–(वि.) हतभाग्य, अभागा; **–भाषिणी**–(स्त्री.) मृदुभाषिणी; **–यंती**–(स्त्री.) दुर्गा देवी ।
मंदा–(हिं. वि.) मंद, धीमा, शिथिल, नष्ट-भ्रष्ट, बिगड़ा हुआ, सस्ता ।
मंदाकिनी–(सं. स्त्री.) स्वर्ग-गंगा, गंगा की वह प्रधान धारा जो स्वर्ग को चली गई है, संक्रान्ति विशेष, बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।
मंदाक्रांता–(सं. स्त्री.) सत्रह अक्षरों के एक वर्णवृत्त का नाम; (वि.) जिस पर किंचित् विजय प्राप्त हुई हो ।
मंदाक्ष–(सं. पुं.) लज्जा ।
मंदाग्नि–(सं.पुं.) पाचन मंद होने का रोग।
मंदान–(हिं. पुं.) जहाज का अगला भाग।
मंदानिल–(सं.पुं.) मलय, मंद वायु।
मंदार–(सं. पुं.) अर्क वृक्ष, हाथी, स्वर्ग, एक विद्याधर का नाम, एक पौराणिक पर्वत, हिरण्यकश्यप के एक पुत्र का नाम; **–माला**–(स्त्री.) बाईस अक्षरों के एक वर्णवृत्त का नाम; **–सप्तमी**–(स्त्री.) माघ शुक्ला सप्तमी ।
मंदारी–(सं. स्त्री.) लाल अकवन ।
मंदिर–(सं. पुं.) गृह, घर, जिस घर में देवी या देवता का स्थापन किया गया हो, वासस्थान, नगर, समुद्र, एक गन्धर्व का नाम ।
मंदिरा–(सं. स्त्री.) मँजीरा नामक बाजा।
मंदिल–(हिं. पुं.) देवालय, घर, वह अल्प धन जिसको दुकानदार धार्मिक कृत्य के लिये निकाल देता है।
मंदी–(हिं.स्त्री.) भाव का कम होना, सस्ती।
मंदील–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सिर पर पहनने का आभूषण।
मंदुरा–(सं. स्त्री.) घुड़साल, बिछाने की चटाई ।
मंदुरिक–(सं. पुं.) घोड़े का साईस।
मंदोदरी–(सं. स्त्री.) रावण की पटरानी का नाम ।
मंदोष्ण–(सं. वि.) थोड़ा गरम, गुनगुना।
मंद्र–(सं.पुं.) मृदंग, हाथी की एक जाति, संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक; (वि.) प्रसन्न, सुन्दर, मनोहर, धीमा।
मंद्राज–(हिं.पुं.) भारतवर्ष के दक्षिण का एक प्रधान नगर तथा देश ।
मंद्राजी–(वि., पुं.) मंद्राज-संबंधी, मंद्राज में रहनेवाला ।
मंसना–(हिं. क्रि. स.) मन में संकल्प करना, इच्छा करना, मनसना ।
मंसा, मंशा–(हिं. स्त्री.) संकल्प, अभिरुचि, अभिप्राय, इच्छा, आशय ।
मंसूबा–(हिं. पुं.) देखें 'मनसूबा'।
मइया–(हिं. स्त्री.) माँ, सास ।
मउर–(हिं. पुं) विवाह के समय दूल्हे के सिर पर पहनाने के लिए फलों का बना हुआ मुकुट या सेहरा, मौर; **–छोराई**– (स्त्री.) विवाह के बाद मौर छोरन की रीति ।
मउरी–(हिं. स्त्री.) छोटा मौर जो विवाह के समय कन्या के सिर पर बाँधा जाता है।
मउलसिरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मौलसिरी'।
मउसी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मौसी'।
मकई–(हिं. स्त्री.) ज्वार नामक अन्न।
मकड़ा–(हिं. पुं.) बड़ी मकड़ी ।

मकड़ी–(हिं. स्त्री.) आठ पैरोंवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा, लूता ।

मकरंद–(सं. पुं.) फूलों का रस जिसको मधुमक्खियाँ, भौंरे आदि चूसते हैं, पुष्प-केसर, कुन्द का फूल, एक वृत्त का नाम जिसको माधवी या मंजरी भी कहते हैं ।

मकर–(सं. पुं.) एक प्रकार का जलजन्तु, मगर, मेषादि बारह राशियों में से दसवीं राशि, मछली, माघ महीना, छप्पय का एक भेद; –कुंडल–(पुं.) कान में पहनने का एक प्रकार का गहना; –केतन–(पुं.) कन्दर्प, कामदेव; –तार–(हिं.पुं.) बादले का तार; –ध्वज–(पुं.) कन्दर्प, कामदेव, रससिन्दूर, चन्द्रोदय रस; –पति–(पुं.) कामदेव, ग्राह; –व्यूह–(पुं.) एक प्रकार की सैन्य-व्यूह-रचना जिसमें सैनिक मकर के आकार में खड़े किये जाते हैं; –संक्रांति–(स्त्री.) वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, (हिन्दू लोग इसको पुण्य दिन मानते हैं), खिचड़वार; –सप्तमी–(स्त्री.) माघ शुक्ला सप्तमी ।

मकरांक–(सं. पुं.) कामदेव, समुद्र ।

मकरा–(हिं.पुं.) भूरे रंग का एक कीड़ा, मँडुवा नामक अन्न, हलवाई की सेव बनाने की चौघड़िया ।

मकराकार–(सं. वि.) मगर या मछली के आकार का ।

मकराकृत–(सं. वि.) देखें 'मकराकार' ।

मकराक्ष–(सं.पुं.) खर का पुत्र और रावण का भतीजा ।

मकरानन–(सं.पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम ।

मकराना–(हिं. पुं.) राजपूताने का एक प्रदेश जहाँ का संगमरमर बहुत प्रसिद्ध है ।

मकरालय, मकरावास–(सं. पुं.) समुद्र ।

मकरासन–(सं. पुं.) तान्त्रिकों का एक आसन जिसमें हाथ और पैर पीठ की ओर किये जाते हैं ।

मकरी–(सं. स्त्री.) मगर की मादा, चक्की की वह लकड़ी जो जुए के छेद में रहती है ।

मकरोड़ा–(हिं.पुं.) ज्वार या मक्के का डंठल ।

मकरौरा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो प्रायः आम के वृक्षों पर चिपका रहता है ।

मकलई–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का गोंद ।

मकाई–(अ.स्त्री.) बड़ी जोंधरी, ज्वार ।

मकान–(हिं.पुं.) रहने का घर; –दार–(पुं.) मकान का मालिक ।

मकार–(सं.पुं.) म-स्वरूप वर्ण, तन्त्रोक्त पाँच पदार्थ, यथा–मद्य, मांस, मत्स्य, मैथुन और मुद्रा ।

मकुंद–(हिं. पुं.) देखें 'मुकुंद' ।

मकु–(हिं. अव्य.) कदाचित्, चाहे, वरन्, बल्कि, क्या जाने ।

मकुआ–(हिं.पुं.) बाजरे की उपज का एक रोग

मकुट–(हिं.पुं.) देखें 'मुकुट' ।

मकुना–(हिं. पुं.) वह नर हाथी जिसके दाँत बहुत छोटे हों, बिना मूँछ का मनुष्य ।

मकुनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की कचौड़ी जो बेसन या चने की पीठी भरकर बनाई जाती है, उसी प्रकार की बाटी या लिट्टी ।

मकुर–(सं.पुं.) कुम्हार का डंडा जिससे वह चाक चलाता है, दर्पण, मुकुर, कली, बकुल वृक्ष, मौलसिरी ।

मकुल–(सं. पुं.) बकुल, मौलसिरी ।

मकूनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मकुनी' ।

मकेरा–(हिं.पुं.) जिस खेत में ज्वार या बाजरा बोया जाता है ।

मको–(हिं. स्त्री.) देखें 'मकोय' ।

मकोइचा–(हिं.वि.) मकोय के रंग का, ललाई लिये पीला ।

मकोई–(हिं. स्त्री.) जंगली मकोय जिसमें काँटे होते हैं ।

मकोड़ा–(हिं. पुं.) कोई छोटा कीड़ा ।

मकोय–(हिं. स्त्री.) एक छोटा पौधा जिसमें छोटे गोल फल लगते हैं, (इसके दो भेद होते हैं । एक में पीले और सुपारी के बराबर खट-मीठे फल लगते हैं । इसके फल को रसभरी भी कहते हैं । दूसरी जाति में फालसे के बराबर हरे या लाल छोटे फल लगते हैं जो औषधों में प्रयुक्त होते हैं ।)

मकोरना–(हिं.क्रि. स.) देखें 'मरोड़ना' ।

मकोसल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसकी लकड़ी कड़ी होती है ।

मकोहा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का लाल रंग का कीड़ा जो कृषि को बहुत हानि पहुँचाता है ।

मक्कर–(हिं. पुं.) छल, कपट ।

मक्का–(हिं. पुं.) ज्वार, मकई ।

मक्कुल–(सं. पुं.) शिलाजतु, शिलाजीत ।

मक्कोल–(सं. पुं.) खटिका, खड़िया ।

मक्खन–(हिं.पुं.) गाय या भैंस के दूध का वह सार भाग जो दूध या दही को मथने से प्राप्त होता है और जिसको तपाने से घी बनता है; (मुहा.) कलेजे पर मक्खन मला जाना–शत्रु की हानि देखकर प्रसन्न होना ।

मक्खा–(हिं. पुं.) बड़ी जाति की मक्खी, नर मक्खी ।

मक्खी–(हिं. स्त्री.) एक प्रसिद्ध उड़नेवाला छोटा कीड़ा जिसके छः पैर होते हैं, (यह संसार भर सर्वत्र पायी जाती है), मक्षिका, मधुमक्खी; (मुहा.) जीती मक्खी निगलना–जान-बूझकर ऐसा काम करना जिससे बाद में पछताना पड़े; –की तरह फेंक देना–अनावश्यक समझकर हटा देना; –मारना–व्यर्थ कार्य करना; –चूस–(वि.) बहुत अधिक कृपण, भारी कंजूस; –मार–(पुं.) एक प्रकार का जन्तु जो मक्खियों को खा जाता है, एक प्रकार की छड़ी; –लेट–(स्त्री.) एक प्रकार की जाली (वस्त्र) जिस पर छोटी-छोटी बूटियाँ बनी रहती हैं ।

मक्ष–(सं. पुं.) क्रोध, समूह, ढेर ।

मक्षिका–(सं.स्त्री.) मक्खी, शहद की मखी ।

मक्खी–(हिं. पुं.) काले रंग का घोड़ा ।

मख–(सं. पुं.) याग, यज्ञ ।

मखजन–(सं. पुं.) भण्डार, कोष ।

मखतूल–(हिं. पुं.) काला रेशम ।

मखतूली–(हिं.वि.) काले रेशम का बना हुआ ।

मखद्विष्, मखद्वेषी–(सं. पुं.) राक्षस ।

मखधारी–(हिं. पुं.) यज्ञ करनेवाला ।

मखन–(हिं. पुं.) देखें 'मक्खन' ।

मखना–(हिं. पुं.) देखें 'मकुना' ।

मखनाथ–(सं. पुं.) यज्ञ के स्वामी, विष्णु ।

मखनिया–(हिं. पुं.) मक्खन बनाने या बेचनेवाला; (वि.) (दूध या दही) जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो ।

मखमल–(अ. स्त्री.) रोयेंदार मोटा रेशमी कपड़ा ।

मखमली–(अ. वि.) मखमल-जैसा ।

मखमित्र–(सं. पुं.) विष्णु ।

मखराज–(सं. पुं.) यज्ञों में श्रेष्ठ, राजसूय यज्ञ ।

मखशाला–(सं. स्त्री.) यज्ञशाला, यज्ञ करने का स्थान ।

मखस्वामी–(सं.पुं.) यज्ञ के स्वामी, विष्णु ।

मखाना–(हिं. पुं.) देखें 'तालमखाना' ।

मखान्न–(सं. पुं.) यज्ञीय अन्न ।

मखालय–(सं. पुं.) यज्ञशाला ।

मखी–(हिं. स्त्री) देखें 'मक्खी' ।

मखोना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का कपड़ा ।

मखौल–(हिं. पुं.) हँसी, दिल्लगी ।

मग–(हिं. पुं.) मार्ग, मगध देश, मगह;

(सं. पुं.) एक वर्ग के शाकद्वीपी ब्राह्मण, मगध देश का निवासी।
मगजी–(हिं. स्त्री.) पतली गोट या पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है।
मगण–(सं. पुं.) कविता के आठ गणों में से एक गण जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं।
मगद–(हिं.पुं.) एक प्रकार की मिठाई जो मूंग के आटे और घी से बनाई जाती है।
मगदर, मगदल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लड्डू जो मूंग या उड़द के आटे में घी और चीनी मिलाकर बनाया जाता है।
मगदा–(हिं. पुं.) मार्ग दिखलानेवाला।
मगदूर–(हिं. पुं.) सामर्थ्य।
मगध–(सं. पुं.) दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम।
मगधीय–(सं. वि.) मगध-देश सम्बन्धी।
मगधेश–(सं. पुं.) मगध देश का राजा, जरासन्ध।
मगन–(हिं. वि.) मग्न, डूबा हुआ, प्रसन्न, लीन।
मगना–(हिं.क्रि.अ.) लीन या तन्मय होना।
मगर–(हिं. पुं.) इस नाम का एक प्रसिद्ध जलजन्तु, मीन, मछली, कान में पहनने का मछली के आकार का एक गहना।
मगरमच्छ–(हिं. पुं.) बड़ी मछली, मगर नामक जलजन्तु।
मगरा–(हिं. पुं.) नदी का ऐसा किनारा जो जोतने-बोने योग्य हो।
मगरोसन–(हिं. स्त्री.) नस्य, सुंघनी।
मगस–(हिं. पुं.) ऊख की सीठी, खोई।
मगसिर–(हिं. पु.) अगहन का महीना।
मगह–(हिं. पुं.) मगध देश।
मगहपति–(हिं. पुं.) मगध देश का राजा, जरासन्ध।
मगही–(हिं. वि.) मगध-सम्बन्धी, मगध देश का, मगह में उत्पन्न; (पुं.) एक प्रकार का पान।
मगु–(सं.पुं.) शाकद्वीपी ब्राह्मण, देखें 'मग'।
मग्ज–(अ. पुं.) मस्तिष्क का भेजा, दिमाग, बुद्धि।
मग्न–(स.वि.) तन्मय, लीन, लिप्त, प्रस, डूबा हुआ, निमज्जित, नशे में चूर; (पु.) एक पर्वत का नाम।
मघ–(सं. पुं.) धन, सम्पत्ति, पुरस्कार।
मघई–(हिं. वि.) देखें 'मगही'।
मघवती–(सं. स्त्री.) इन्द्राणी।
मघवा–(सं. पुं.) इन्द्र; –प्रस्थ–(पुं.) इन्द्रप्रस्थ नाम का नगर; –रिपु–(पुं.) मेघनाद।
मघा–(सं. स्त्री.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र, (इसमें पाँच तारे हैं।)
मघाना–(हिं. पु.) एक प्रकार की बरसाती घास।
मघारना–(हिं. क्रि. स.) माघ महीने में हल चलाना।
मघी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का धान।
मघोनी–(सं. स्त्री.) इन्द्राणी।
मघोना–(हिं. पुं.) नीले रंग का वस्त्र।
मचक–(हिं. स्त्री.) दवाव, लचक।
मचकना–(हिं.क्रि.अ.) मच-मच आवाज करना, लचकना।
मचकाना–(हिं.क्रि.अ.) किसी पदार्थ को इस प्रकार से दबाना कि मचमच शब्द निकले, झटके से किसी पदार्थ को हिलाना
मचका–(हिं.पुं.) झोंका, धक्का, झूले की पेंग।
मचना–(हिं. क्रि. अ.) फैलना, छा जाना, किसी ऐसे कार्य का होना जिसमें हलचल या कोलाहल हो।
मचमचाना–(हिं. क्रि. अ.) मच-मच शब्दसहित हिलना, मचकना।
मचरंग–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
मचल–(हिं.स्त्री.) मचलने की क्रिया या भाव।
मचलना–(हिं.क्रि.अ.) हठ करना, अड़ना।
मचला–(हिं. वि.) मचलनेवाला, अनजान बननेवाला, जो बोलने के अवसर पर चुप रहे।
मचलाना–(हिं. क्रि.अ., स.) किसी को मचलने में प्रवृत्त करना, वमन की इच्छा होना, ओकाई आना।
मचवा–(हिं. पुं.) खाट, पलंग, खटिया या चौकी का पावा।
मचान–(हिं. स्त्री., पुं.) चार खम्भों पर बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठकर लोग शेर आदि का शिकार करते हैं या शिकारी उपज की रखवाली करते हैं, दिया रखने की दीवट।
मचाना–(हिं. क्रि. स.) ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें कोलाहल हो।
मचिया–(हिं. स्त्री.) छोटे पायों की एक आदमी के बैठने योग्य छोटी चारपाई।
मचिलई, मचली–(हिं. स्त्री.) मचलने का भाव या क्रिया।
मचेरी–(हिं. स्त्री.) बैलों के जुए के नीचे लगी हुई लकड़ी।
मच्छ–(हिं. पुं.) बड़ी मछली, दोहे का एक भेद; –असवारी–(पुं.) मदन, कामदेव; –घातिनी–(स्त्री.) मछली फँसाने की लंबी बंसी।
मच्छड़, मच्छर–(हिं.पुं.) एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतु में गरम देशों में पाया जाता है।
मच्छरता–(हिं. स्त्री.) द्वेष, ईर्ष्या, डाह।
मच्छरिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बुलबुल।
मच्छी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मछली'; –काँटा–(पुं.) एक प्रकार की सिलाई; –मार–(पुं.) धीवर, मल्लाह।
मच्छोदरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मत्स्योदरी'।
मछरंगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जल-पक्षी, राम चिड़िया।
मछली–(हिं. स्त्री.) सदा जल में रहने-वाला एक प्रसिद्ध जीव, मत्स्य, मीन, मछली के आकार का लटकन जो गहनों में लगाया जाता है; –गोता–(पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति या पेंच; –डंड–(पुं.) एक प्रकार का व्यायाम; –दार–(पु.) दरी की एक प्रकार की बुनावट; –मार–(पुं.) धीवर, मछुवा।
मछुआ, मछुवा–(हिं. पुं.) मछली मारने-वाला, धीवर, मल्लाह।
मछेह–(हिं. पुं.) मधुमक्खी का छत्ता।
मजदूर–(फा. पुं.) मजूर, कुली।
मजदूरी–(फा. स्त्री.) मजदूर का काम, पारिश्रमिक आदि।
मजनू–(अ. वि.) पागल, बावला; (पुं.) अरबी की प्रसिद्ध प्रेम-कथा लैला-मजनू का नायक।
मजबूर–(अ. वि.) विवश, लाचार।
मजबूरी–(अ. स्त्री.) मजबूर होने की स्थिति, विवशता।
मजलिस–(अ. स्त्री.) जलसा, सभा।
मजलिसी–(अ. वि.) मजलिस-संबंधी।
मजहब–(अ. पुं.) धर्म, संप्रदाय।
मजहबी–(अ. वि.) मजहब का।
मजा–(अ. पुं.) स्वाद, रस, जायका, आनंद, मनोविनोद, तमाशा।
मजाक–(अ. पुं.) हँसी, दिल्लगी।
मजाकिया–(अ. वि.) मजाक करनेवाला।
मजारी–(हिं. स्त्री.) मार्जार, बिल्ली।
मजिल–(हिं. स्त्री.) पड़ाव, स्थान, घर का खंड।
मजीठ–(हिं. स्त्री.) पहाड़ों में होनेवाली एक प्रकार की लता जिसकी जड़ और डंठल से लाल रंग बनाया जाता है।
मजीठी–(हिं. वि.) लाल रंग का; (स्त्री.) रूई ओटने की चरखी में लगी हुई बीच की लकड़ी।
मजीर–(हिं. स्त्री.) केले आदि का घौद।
मजीरा–(हिं. पुं.) काँसे की बनी हुई

छोटी-छोटी कटोरियों की जोड़ी जिनके बीच में छेद होता है इन छदों में डोरा पिरोया होता है। संगीत में ताल देने के लिए इन्हें आपस में टकराकर बजाते हैं।
मजूर, मजूरा—(हिं. पुं.) कुली।
मजूरी—(हि.स्त्री.) मजूर का पारिश्रमिक, काम, पेशा आदि।
मजेज—(हिं. स्त्री.) अहंकार।
मजेदार—(अ. वि.) मजा से युक्त, आनंद-दायक, स्वादिष्ट।
मजेदारी—(अ.स्त्री.) मजा, आनन्द, मौज।
मज्ज—(हिं. स्त्री.) देखें 'मज्जा'।
मज्जन—(सं. पुं.) स्नान, नहाना, मज्जा।
मज्जना—(हिं. क्रि. अ.) नहाना, गोता लगाना।
मज्जफल—(सं. पुं.) माजूफल।
मज्जर—(सं. पुं.) एक प्रकार की घास।
मज्जा—(सं. स्त्री.) अस्थिसार, हड्डी के भीतर का गूदा; —रस—(पुं.) शुक्र, वीर्य; —सार—(पुं.) जायफल।
मज्जूक—(सं. पुं.) मण्डूक, मेढक।
मझ, मझ—(हिं. पुं., अव्य.) बीच (में)।
मझधार—(हिं. स्त्री.) नदी की मध्य धारा, बीच-धारा, किसी कार्य का मध्य।
मझला—(हिं. वि.) मध्य का, बीच का।
मझाना—(हि. क्रि. अ., स.) प्रविष्ट होना या करना, बीच में धँसाना या धँसाना, पैठना।
मझार—(हिं. अव्य.) बीच में।
मझावना—(हिं.क्रि.अ.,स.) देखें 'मझाना'।
मझिया—(हि. स्त्री.) गाड़ी की पेंदी में लगी हुई लकड़ी।
मझियाना—(हिं. क्रि. स.) मध्य से होकर आना या निकालना, नाव खेना।
मझियारा—(हि.वि.) बीच का, मध्य का।
मझुआ—(हि. पुं.) हाथ में पहिनने की एक प्रकार की चूड़ी।
मझेला—(हिं. पुं.) जूते का तल्ला सीने का चमार का एक औजार।
मझोला—(हिं. वि.) मझला, बीच का, मध्यम आकार का, जो न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा हो।
मझोली—(हि.स्त्री.) एक प्रकार की बैल-गाड़ी, जूता सीने की एक प्रकार की टेकुरी।
मट—(हि.पुं.) मिट्टी का बड़ा पात्र, मटका।
मटक—(हिं. स्त्री.) मटकने की क्रिया या भाव, नखरे की चाल या गति, हाव-भाव।
मटकना—(हिं. क्रि. अ.) अंगों को हिलाते हुए चलना, लचककर या चोचला दिखाते हुए चलना, इठलाकर चलना, नेत्र, भृकुटी, अँगुली आदि इस प्रकार चलाना जिसमें कुछ लचक या चोचला दिखाई पड़े।
मटकनि—(हिं. स्त्री.) नृत्य, नाचना, मटक, चोचला।
मटका—(हिं. पुं.) मिट्टी का बड़ा घड़ा जिसका मुख चौड़ा होता है।
मटकाना—(हिं. क्रि. स.) अंगों को नखरे के साथ हिलाना-डुलाना, या चमकाना, मटकने की क्रिया करना।
मटकी—(हिं. स्त्री.) छोटा मटका, कमोरी, मटकने का भाव, मटक।
मटकीला—(हिं. वि.) मटकनेवाला, चोचला के साथ अंगों को हिलानेवाला।
मटकौअल—(हिं. स्त्री.) मटकने की क्रिया या भाव, मटक।
मटना—(हिं. पुं.) एक प्रकार का गन्ना।
मटमँगरा—(हिं. पुं.) विवाह के पहले की एक रीति जिसमें किसी शुभ दिन वर या वधू की हलदी उठती और घर की स्त्रियां मंगल-गीत गाती हैं।
मटमैला—(हि.वि.) मिट्टी के रंग का, धूमिल।
मटर—(हिं. पुं.) एक प्रकार का मोटा अन्न, (इसकी फलियों को छीमी कहते हैं जिसमें दाने होते और खाने में अच्छे लगते हैं।
मटरगश्त—(हिं. पुं.) टहलना, इधर-उधर घूमना, सैर-सपाटा।
मटरगश्ती—(हिं. स्त्री.) सैर-सपाटा।
मटरखोर—(हि.पुं.) मटर के बराबर घुँघरू।
मटराला—(हिं. पुं.) जौ में मिला हुआ मटर।
मटलनी—(हि.स्त्री.) मिट्टी का कच्चा पात्र।
मटा—(हिं. पुं.) एक प्रकार का लाल चीटा जो छत्ता बनाकर आम के पेड़ों पर रहता है।
मटि(आ)याना—(हिं. क्रि. स.) जूठे पात्र को मिट्टी आदि से माँजकर स्वच्छ करना, मिट्टी से ढाँपना, सुनकर अनसुनी करना, महटियाना।
मटिया—(हिं. स्त्री.) मिट्टी, मृत शरीर, शव; (वि.) मिट्टी के समान, मटमैला, एक प्रकार का पक्षी; —मसान, —मेट—(वि.) नष्ट-भ्रष्ट।
मटियार—(हि. पुं.) वह खेत जिसमें चिकनी मिट्टी पटी हो।
मटियाला, मटीला—(हिं. वि.) मटमैला।
मटुका—(हि. पुं.) देखें 'मटका'।
मटुकी—(हिं. स्त्री.) देखें 'मटकी'।
मट्टक—(सं. पुं.) एक प्रकार की मछली।
मट्टी—(हिं. स्त्री.) देखें 'मिट्टी'।
मट्ठर—(हिं. वि.) आलसी, सुस्त।
मट्ठा—(हिं. पुं.) मथा हुआ दही जिससे मक्खन निकाल लिया गया हो, तक्र, छाछ।
मट्ठी—(हिं. स्त्री.) मैदे का नमकीन पकवान।
मठ—(सं. पुं.) रहने का स्थान, निवास-स्थान, छात्रावास, देवगृह, मन्दिर, वह घर जिसमें एक महन्त की अधीनता में बहुत से साधु रहते हैं।
मठधारी—(हिं. पुं.) मठाधीश, साधुओं के मठ का अधिकारी या प्रधान।
मठर—(सं. पुं.) वह जो मद्य पीकर मत-वाला हुआ हो।
मठरना—(हिं. पुं.) सोनारों या कसेरों की एक प्रकार की छोटी हथौड़ी।
मठरी (ली)—(हि. स्त्री.) मट्ठी।
मठाधिपति, मठाधीश—(सं. पुं.) मठ का महन्त।
मठिया—(हिं.स्त्री.) फूल (धातु) की बनी हुई हाथ की चूड़ियां, छोटी कुटी या मठ।
मठी—(हिं. स्त्री.) छोटा मठ, मठ का अधिकारी या महन्त।
मठुली—(हिं. स्त्री.) मिट्ठी या मठरी नाम का पकवान।
मठोर—(हिं. स्त्री.) दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।
मठोरना—(हिं. क्रि. स.) छोटी हथौड़ी से धीरे-धीरे ठोंकना।
मठोरा—(हिं. पुं.) एक प्रकार का बढ़ई का रन्दा।
मड़ई—(हिं. स्त्री.) पर्णशाला, छोटी कुटी या झोपड़ी।
मड़क—(हिं. स्त्री.) गुप्त बात, रहस्य।
मड़मड़ाना—(हि.क्रि.अ.) देखें 'मरमराना'।
मड़राना—(हिं. क्रि. अ.) मँड़राना।
मड़ला—(हि. पुं.) अनाज रखने का छोटा कुठला।
मड़वा—(हि. पुं.) देखें 'मंडप'।
मड़वारी—(हि. पुं.) देखें 'मारवाड़ी'।
मड़हट—(हि. पुं.) मरघट।
मड़हा—(हि. पुं.) मिट्टी का बना हुआ छोटा घर, [illegible]।
मड़ा—(हि. पुं.) कोठरी, कुठला
मड़ार—(हि. पुं.) छोटा [illegible] तालाब, पोखरी।
मड़ुआ—(हि. पुं.) बाजरे की जाति का एक मोटा अन्न, एक प्रकार का पक्षी।
मड़ैया—(हि. स्त्री.) पर्णशाला, कुटी, मिट्टी का बना हुआ छोटा घर, मड़ई।

मड़ोर–(हिं. स्त्री.) देखें 'मरोड़'।
मड़ोही–(हिं. स्त्री.) लोहे की छोटी पेंचदार कँटिया।
मढ़–(हिं. पुं.) दाँत के ऊपर की मैल; (वि.) अड़कर वैठनेवाला, जो हटान पर भी जल्दी न हटे।
मढ़ना–(हि.क्रि.स.) चित्र आदि पर शीशा जड़ना, पुस्तक पर जिल्द लगाना, घेर, ढोल, मृदंग आदि बाजों के मुँह पर चमड़ा लगाना, वलपूर्वक किसी पर आरोपित करना, किसी के गले लगाना, थोपना।
मढ़वाना–(हिं. क्रि. स.) मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ा–(हि.पुं.) मिट्टी का वना हुआ छोटा घर।
मढ़ाई–(हि.स्त्री.) मढ़न का काम या शुल्क।
मढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ी–(हिं. स्त्री.) छोटा मठ, छोटा देवालय, छोटा घर, छोटा मण्डप, पर्ण-शाला, झोपड़ी।
मढ़या–(हिं. पुं.) मढ़नेवाला।
मणि–(सं.स्त्री.वा पुं.) वहुमूल्य पत्थर, रत्न, बकरी के गले की थैली, लिंग का अग्रभाग, एक नाग का नाम, मणिवन्ध, सवश्रेष्ठ व्यक्ति; **–कंठ**–(पुं.) चास नामक पक्षी; **–क**–(पुं.) मिट्टी का घड़ा; **–कर्णिका**–(स्त्री.) काशी का एक तीर्थ विशष, रत्न जड़ा हुआ कान का एक आभूषण; **–कानन**–(पुं.) कण्ठ, गला, रत्नों का समूह; **–कार**–(पुं.) रत्नों को जड़कर गहने बनानेवाला; **–कूट**–(पुं.) कामरूप के एक पर्वत का नाम; **–केतु**–(पुं.) एक वहुत छोटा पुच्छल तारा; **–गुण**–(पुं.) एक वर्णिक वृत्त जिसको शशिकला या शरभ भी कहते हैं; **–०निकर**–(पुं.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं; **–ग्रीव**–(पुं.) कुवेर के एक पुत्र का नाम; **–चूड़**–(पुं.) एक विद्याधर का नाम; **–तारक**–(पुं.) सारस पक्षी; **–दोष**–(पुं.) रत्नादि के दोष; **–धर**–(पुं.) सर्प, साँप; **–पुर**–(पुं.) तन्त्र के अनुसार पट्चक्रों में से एक जो नाभि-देश में अवस्थित है; **–प्रभा**–(स्त्री.) एक छन्द का नाम; **–बंध**–(पुं.) करग्रन्थि, कलाई, गट्टा, नौ अक्षरों के एक वृत्त का नाम; **–बीज**–(पुं.) अनार का वृक्ष; **–भद्र**–(पुं.) शिवजी के एक प्रधान गण का नाम; **–भावर**–(पुं.) सारस पक्षी; **–भू**–(स्त्री.) वह खान जिससे रत्न निकलते हों; **–भूमि**–(स्त्री.) रत्नों की खान; **–मंजरी**–(स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं; **–मंडप**–(पुं.) रत्नमय मंडप; **–मंथ**–(पुं.) सेंधा नमक; **–मध्य**–(पुं.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं; **–माला**–(स्त्री.) मणियों की माला, हार, चमक, दीप्ति, लक्ष्मी, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में वारह अक्षर होते हैं; **–रत्न**–(पुं.) हीरा; **–राग**–(पुं.) ईंगुर, शिंगरफ; **–राज**–(पुं.) श्रेष्ठ मणि, उत्तम रत्न; **–श्याम**–(पुं.) इन्द्रनील मणि, नीलम; **–सर, –सूत्र**–(पुं.) मोतियों की माला।
मणी–(हिं.पुं.) सर्प, साँप; (सं.स्त्री.) मणि।
मणीवक–(सं. पुं.) पुष्प, फूल।
मतंग–(सं. पुं.) मेघ, बादल, एक ऋषि का नाम जो शबरी के पुत्र थे, एक दानव का नाम, हाथी।
मतंगज–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
मतंगा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वाँस।
मतंगी–(हिं. पुं.) हाथी का सवार।
मत–(सं. पुं.) सम्मति, राय, आशय, धर्म, पन्थ, ज्ञान, सम्प्रदाय, मतदान; (हिं. अव्य.) निषेध-वाचक शब्द, नहीं; **–दान**–(पुं.) राष्ट्रीय चुनाव आदि में अपना मत देना।
मतना–(हिं. क्रि. अ.) आशय स्थिर करना, उन्मत्त होना।
मतरिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'माता'।
मतलब–(अ.पुं.) अभिप्राय, आशय, अर्थ, गरज।
मतलबी–(अ. वि.) मतलब रखनवाला।
मतवार, मतवारा–(हि.वि.) देखें 'मतवाला'।
मतवाला–(हि. वि.) उन्मत्त, पागल, धन आदि का गर्व करनेवाला; (पुं.) शत्रु को मारने के लिय पहाड़ या गढ़ पर से फेंका हुआ पत्थर, एक प्रकार का कागज का वना हुआ खिलौना जिसकी पदी भारी होती है, इसलिये फेंकने पर यह जमीन पर खड़ा गिरता है।
मता–(हि.पुं.) देखें 'मत'; (स्त्री.) देखें मति।
मताधिकार–(सं.पुं.) मत देने का अधिकार।
मतानुयायी–(सं. वि., पुं) किसी मत के अनुसार आचरण करनेवाला, किसी के मत को माननेवाला।
मतारी–(हिं. स्त्री.) महतारी, माता।
मतावलंबी–(सं.वि,पुं.) किसी मत, सिद्धान्त या सम्प्रदाय का अवलंवन करनेवाला।
मति–(सं. स्त्री.) वुद्धि, इच्छा, स्मृति, सम्मति; (हिं. अव्य.) देखें 'मत' सदृश, समान, अनुरूप; **–गर्भ**–(वि.) वुद्धिमान्, चतुर; **–दर्शन**–(पुं.) वह प्रज्ञा-शक्ति जिससे दूसरे के मन का भाव जाना जाता है; **–पूर्वक**–(अव्य.) वुद्धि-पूर्वक, सोच-विचारकर; **–भेद**–(पुं.) वुद्धि की भिन्नता; **–भ्रंश**–(पुं.) वुद्धि-नाश, पागलपन; **–भ्रम**–(पुं.) वुद्धिभ्रंश, वुद्धिनाश; **–भ्रांति**–(स्त्री.) मति-भ्रम; **–मत्**–(वि.) वुद्धिमान्, विचार-वान्; (पुं.) शिव; **–मान्**–(वि.) वुद्धिमान्, विचारवान्; **–माह**–(वि.) मतिमान्; **–विभ्रम**–(पुं.) उन्माद रोग, वुद्धिनाश; **–शाली**–(हिं. वि.) मेधावी, वुद्धिमान्।
मती–(हिं.स्त्री.) देखें 'मति'; (अव्य.) मत
मतीरा–(सं. पुं.) कलिंगक, तरबूज।
मतीश्वर–(सं.पुं.) विश्वकर्मा का एक नाम
मतीस–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाजा।
मत्कुण–(सं. पुं.) खटमल, बिना मूँछ का आदमी, नारियल का फल या वृक्ष।
मत्कुणिका–(सं. स्त्री.) कुमार की एक मातृका का नाम।
मत्त–(सं.पुं.) धतूरा, कोयल, भैंस, मस्त हाथी; (वि.) उन्मत्त, पागल, प्रसन्न; (हिं.स्त्री.) मात्रा; **–काशिनी**–(स्त्री.) उत्तम नारी; **–कीश**–(पुं.) हस्ती, हाथी; **–गामिनी**–(स्त्री.) उन्मत्त गज की तरह चलनेवाली स्त्री; **–ता**–(स्त्री.) मतवालापन; **–ताई**–(हिं. स्त्री.) मतवालापन; **–नाग**–(पुं.) मतवाला हाथी; **–मयूर**–(पुं.) मेघ, वादल, पंद्रह अक्षरों का एक वृत्त; **–मातंग लीलाकर**–(पुं.) दण्डक वृत्त का एक भद; **–वारण**–(पुं.) मकान के आगे का दालान, आँगन के ऊपर की छत, सुपारी का चरा, मत-वाला हाथी; **–विलासिनी**–(स्त्री.) एक छन्द का नाम; **–समक**–(पुं.) चौपाई छन्द का एक भेद।
मत्ता–(सं. स्त्री.) मदिरा, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में वारह अक्षर होते हैं; (प्रत्य.) एक भाववाचक प्रत्यय जो "पन" के अर्थ का होता है, यथा–बुद्धिमत्ता, नीतिमत्ता आदि।
मत्ताक्रीडा–(सं. स्त्री.) तेईस अक्षरों का एक छन्द।
मत्तेभगमना–(सं. स्त्री.) मतवाले हाथी के समान चालवाली स्त्री।
मत्तेभविक्रीड़ित–(सं. पुं.) एक छन्द

जिसके प्रत्येक चरण में २१ अक्षर होते हैं।
मत्था–(हिं. पुं.) ललाट, माथा, सिर, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।
मत्सर–(सं. पुं.) किसी का विभव या सुख न देख सकना, ईर्ष्या, डाह, जलन, क्रोध; (वि.) कृपण, कंजस, डाह करनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) डाह, जलन।
मत्सरी–(सं.वि.) दूसरे से डाह रखनेवाला।
मत्स्य–(सं. पुं.) मीन, मछली, विराट् देश, नारायण, मीन राशि, छप्पय छंद का एक भेद; **–गंधा**–(स्त्री.) जलपीपल, व्यास की माता सत्यवती का एक नाम, सोमलता; **–धानी**–(स्त्री.) मछली रखने का पात्र; **–नारी**–(स्त्री.) देखें 'मत्स्यांगना'; **–पुराण**–(पुं.) अठारह महापुराणों में से एक पुराण का नाम; **–बंध**–(पुं.) मछली पकड़नेवाला, धीवर; **–बंधन**–(सं. पुं.) मछली पकड़ने की बंसी; **–मुद्रा**–(स्त्री.) तांत्रिक पूजाओं में धारण की जानेवाली एक मुद्रा; **–रंग**–(पुं.) एक प्रकार की चिड़िया; **–राज**–(पुं.) विराट् देश का राजा, रोहू मछली।
मत्स्यांगना–(सं. स्त्री.) मत्स्यनारी, वह कल्पित प्राणी,जिसका मुख स्त्री के समान तथा बाकी शरीर का भाग मछली के समान होता है।
मत्स्याक्ष–(सं. पुं.) सोमलता।
मत्स्यावतार–(सं.पुं.) भगवान् का मत्स्य-रूपी अवतार।
मत्स्याशन–(सं. पुं.) मत्स्यभक्षक, मछली खानेवाला।
मत्स्यासन–(सं.पुं.)तान्त्रिकों की साधना में योग का एक आसन।
मत्स्येंद्रनाथ–(हिं.पुं.) मध्य-युग के एक हठयोगी साधु जो गोरखनाथ के गुरु थे।
मत्स्योदरी–(सं. स्त्री.) व्यास की माता सत्यवती, काशी के एक तीर्थ का नाम, मच्छोदरी।
मत्स्योपजीवी–(सं. पुं.) धीवर, मल्लाह।
मथन–(सं. पुं.) मथने की क्रिया या भाव, विलोड़न, गनियारी नामक झाड़, एक अस्त्र का नाम; (वि.) मथनेवाला।
मथना–(हिं. क्रि. स.) किसी तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से वेगपूर्वक हिलाना या चलाना, इस प्रकार चलाकर मिलाना, ध्वंस करना, नष्ट करना, घूम-घूमकर पता लगाना, किसी काम को बारंबार करना, टीसना; (पुं.) मथानी, रई।
मथनियाँ (या)–(हिं.स्त्री.) मथानी; (पुं.) दूध को मथकर मक्खन निकालनेवाला।
मथनी–(हिं.स्त्री.) मथन की क्रिया, वह मटका जिसम दही मथा जाता है, मथानी।
मथवाह–(हिं. पुं.) पीलवान, महावत।
मथानी–(हिं. स्त्री.) काठ का डंडा जिसके सिरे पर एक खोरिया लगी रहती है, (इससे दही मथकर मक्खन निकाला जाता है।)
मथित–(हिं.वि.) मथा हुआ; (पुं.) साढ़ी-समेत भली-भाँति फेंटा हुआ दही।
मथुरा–(सं. स्त्री.) यमुना नदी के किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो पुराणों के अनुसार सात मोक्षदायिका पुरियों में से एक है।
मथुरिया–(हिं. वि.) मथुरा से संबद्ध, मथुरा का।
मथुरेश–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
मथौरा–(हिं. पुं.) बढ़इयों का एक प्रकार का रंदा।
मथौरी–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों का सिर पर पहिनने का एक गहना।
मथ्य–(सं. वि.) मथने योग्य; (हिं. पुं.) माथा।
मदंध–(हिं. वि.) देखें 'मदांध'।
मद–(सं.पुं.) गन्धयुक्त एक द्रव जो मस्त हाथी की कनपटियों से बहता है, आनन्द, हर्ष, वीर्य, एक दानव का नाम, कामदेव, मादकता, नशा, गर्व, अहंकार, मद्य, उन्माद रोग, मतवालापन, कस्तूरी; (वि.) मत्त, मतवाला।
मदक–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत्त से बनाया जाता है, (तमाखू की तरह इसको लोग चिलम पर रखकर पीते हैं।)
मदकची–(हिं. पुं.) मदक पीनेवाला।
मदकद्रुम–(सं. पुं.) ताड़ का पेड़।
मदकर–(सं. पुं.) धतूरे का पौधा, सुरा; (वि.) मद या नशा करनेवाला।
मदकल–(सं. पुं.) मस्त हाथी; (वि.) मतवाला, उन्मत्त, बावला।
मदकारी–(सं. वि.) मद या नशा उत्पन्न करनेवाला।
मदकी–(हिं.वि.) मदक पीनेवाला, मदकची।
मदखला–(अ. स्त्री.) रखेली औरत।
मदगंधा–(सं. स्त्री.) मदिरा।
मदगल–(सं. वि.) मत्त, बावला।
मदजल–(सं.पुं.) मत्त हाथी की कनपटी का स्राव।
मदद–(अ. स्त्री.) सहायता; **–गार**–(वि., पुं.) मदद करनेवाला।
मदन–(सं. पुं.) कामदेव, वसन्त, मद, धतूरा, मैनफल, भौंरा, उड़द, खैर का वृक्ष, वकुल वृक्ष, मौलसिरी, कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन, मैना, अखरोट का वृक्ष, भोग, ज्योतिष में लग्न से सातवें स्थान का नाम, प्रेम, एक प्रकार का गीत, रूपमाला छन्द का दूसरा नाम, छप्पय का एक भेद, खंजनपक्षी; **–क**–(पुं.) दमनक, दौना, मोम, खैर, धतूरा, मैनफल, मौलसिरी; **–कदन**–(पुं.) शिव, महादेव; **–गृह**–(पुं.) स्त्री की योनि; **–गोपाल**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–चतुर्दशी**–(स्त्री.) चैत्र शुक्ला चतुर्दशी; **–चोर**–(पुं.) एक प्रकार का छोटा पक्षी; **–ताल**–(पुं.) संगीत में एक प्रकार का ताल; **–दमन, –दहन**–(पुं.) शिव, महादेव; **–दोला**–(स्त्री.) इन्द्रताल का एक भेद; **–नालिका**–(स्त्री.) दुश्चरित्रा स्त्री; **–पक्षी**–(पुं.) खंजन पक्षी; **–पति**–(पुं.) इन्द्र, विष्णु; **–पाठक**–(पुं.) कोकिल, कोयल; **–पाल**–(पुं.) रतिपति, कामदेव; **–फल**–(पुं.) मैनफल; **–बान**–(हिं पुं.) एक प्रकार का बहुत अच्छी और तीव्र गन्ध का बेले का फूल; **–भवन**–(पुं.) मदनगृह; **–मंजरी**–(स्त्री.) दैत्यराज दुंदुभि की कन्या, नायिका का एक भेद; **–मनोरमा**–(स्त्री.) सवैया छन्द का एक भेद, इसका दूसरा नाम दुर्मिल है; **–मनोहर**–(पुं.) दण्डक का एक भेद, मनोहर छन्द; **–मल्लिका**–(स्त्री.) मल्लिका वृत्त का एक नाम; **–मस्त**–(पु.) चंपे की जाति का उग्र तथा मोहक गन्ध का एक फूल; **–महोत्सव**–(पुं.) चैत्र शुक्ला एकादशी से चतुर्दशी तक होनेवाला प्राचीन काल का एक सार्वजनिक उत्सव, होली का एक भेद; **–मोदक**–(पुं.), **–मालिनी**–(स्त्री.) सवैया छन्द का एक भेद; **–मोहन**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–रिपु**–(पुं.) शिव, महादेव; **–रेखा**–(स्त्री.) विक्रमादित्य की माता का नाम; **–ललिता**–(स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह वर्ण होते हैं; **–लेख**–(पुं.) नायक-नायिका का परस्पर प्रेम-पत्र; **–शलाका**–(स्त्री.) सारिका, मैना, कोयल; **–सदन**–(पुं.) स्त्री की योनि; **–सारिका**–(स्त्री.) मैना पक्षी; **–हर**–(पुं.) देखें 'मदनहरा'; **–हरा**–(स्त्री.) चालीस

मात्राओं के एक छन्द का नाम ।

मदनांकुश–(सं. पुं.) पुरुष का लिंग ।

मदनांतक–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।

मदनांध–(सं. वि.) कामान्ध ।

मदना–(सं. पुं.) सारिका पक्षी, मैना ।

मदनायुध–(सं. पुं.) कामदेव का अस्त्र ।

मदनारि–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।

मदनालय–(सं. पुं.) स्त्री की योनि, भग ।

मदनावस्था–(सं. स्त्री.) प्रेमियों की कामुकावस्था ।

मदनास्त्र–(सं. पुं.) देखें 'मदनायुध' ।

मदनी–(सं. स्त्री.) सुरा, मदिरा, कस्तूरी, मेथी ।

मदनीया–(सं. स्त्री.) मल्लिका, वेला ।

मदनोत्सव–(सं. पुं.) एक प्रकार का उत्सव, देख 'मदन-महोत्सव' ।

मदनोत्सवा–(सं. स्त्री.) स्वर्ग, वेश्या, अप्सरा ।

मदनोद्यान–(सं. पुं.) सुन्दर बगीचा ।

मदमत्त–(सं. वि.) मद में चूर, एक छन्द का नाम ।

मदराग–(सं. पुं.) मद में चूर मनुष्य; पागल, मुर्गा ।

मदलेखा–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं, मतवाले हाथियों के मद-स्राव की रेखा ।

मदवारि–(सं. पुं.) हाथी का मद ।

मदसार–(सं. पुं.) ताल वृक्ष, शहतूत का वृक्ष ।

मदस्थल–(सं. पुं.) मदिरा पीने का स्थान ।

मदांध, मदाढ्य–(सं. वि.) मस्त, मत्त ।

मदार–(सं. पुं.) हाथी, सूअर, कामुक; (हिं. पुं.) आक का वृक्ष, अकवन ।

मदारिया, मदारी–(हिं. पुं.) मुसलमान फकीर संप्रदाय का एक फकीर, (ये लोग शाह मदार के अनुयायी हैं ।) बन्दर, भालू आदि का तमाशा दिखलानेवाला, कलंदर, बाजीगर ।

मदालस–(सं. पुं.) मद के कारण आलस्य ।

मदालसा–(सं. स्त्री.) गन्धर्वराज विश्वकेतु की परम विदुषी और ब्रह्मवादिनी कन्या जिसको पातालकेतु राक्षस उठा ले जाकर पाताल में रखा था ।

मदावस्था–(सं. स्त्री.) कामुकता, मद ।

मदिया–(हिं. स्त्री.) मादा प्राणी ।

मदिरा–(सं. स्त्री.) मद्य, वासुदेव की पत्नी का नाम, बाईस अक्षरों का एक वर्णिक छन्द ।

मदिराक्ष–(सं. वि.) जिसकी आँखें मद से भरी हों ।

मदिराक्षी–(सं. स्त्री.) मदोन्मत्त आँखोंवाली ।

मदिरागृह–(सं. पुं.) मद्यशाला ।

मदिष्णु–(सं. वि.) मद-मत्त, मदोन्मत्त ।

मदीय–(सं. सर्व.) मेरा ।

मदीला–(हिं. वि.) मद से भरा हुआ ।

मदुकल–(हिं. पुं.) दोहे का एक भेद जिसका दूसरा नाम गयन्द है ।

मदोत्कट–(सं. पुं.) कपोत, कबूतर; (वि.) मदोन्मत्त ।

मदोद्धत–(सं. वि.) मत्त, अभिमानी, घमंडी ।

मदोन्मत्त–(सं. वि.) उन्मत्त, मदांध ।

मदोल्लापी–(सं. पुं.) कोकिल, कोयल ।

मदोवै–(हिं. स्त्री.) देख 'मंदोदरी' ।

मद्दूसाही–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पुराना ताँबे का चौकोर पैसा ।

मद्धिम–(हिं. वि.) मध्यम, मन्दा, तुलना में या अपेक्षाकृत कम अच्छा ।

मद्धे–(हिं. अव्य.) संबंध में, विषय में, बीच में, लेखे में ।

मद्य–(सं. पुं.) सुरा, मदिरा; –प–(वि., पुं.) मदिरा पीनेवाला; –पान–(पुं.) मदिरा पीना; –बीज–(पुं.) खमीर जो मद्य बनाने में उतारा जाता है; –मोद–(पुं.) बकुल वृक्ष, मौलसिरी; –वासिनी–(स्त्री.) धव का पेड़ ।

मद्र–(सं. पुं.) एक प्राचीन जनपद जो वर्तमान रावी और झेलम नदी के बीच में था, हर्ष, आनन्द; –कार–(वि.) मंगलकारक; –सुता–(स्त्री.) नकुल तथा सहदेव की माता का नाम, माद्री ।

मध–(हिं. पुं.) देखें 'मध्य'; (अव्य.) में ।

मधन–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।

मधिम–(हिं. पुं.) मध्यम, मद्धिम ।

मधु–(सं. पुं.) मद्य, जल, पानी, दूध, मकरन्द, महुवे का वृक्ष, अमृत, सुधा, घी, मुलेठी, मक्खन, शिव, महादेव, मिस्री, अशोक वृक्ष, एक दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था, मीठा रस, चैत का महीना, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो लघु वर्ण होते हैं, एक राग का नाम; (वि.) मीठा, स्वादिष्ट; –कंठ–(पुं.) कोकिल, कोयल; –क–(पुं.) जेठीमधु, त्रपु, सीसा, महुवे का पेड़ या फल; –कर–(पुं.) भ्रमर, भौंरा, कामी पुरुष; –करी–(स्त्री.) भ्रमरी, भौंरी, वह भिक्षा जिसमें पका हुआ अन्न दिया जाता है; –का–(स्त्री.) एक प्रकार की लता; –कुंभा–(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; –कृत–(पुं.) भ्रमर, भौंरा; –कैटभ–(पुं.) मधु और कैटभ नाम के दो असुर जिनको विष्णु ने मारा था; –कोष, –कोश–(पुं.) मधुमक्खी का छत्ता; –गंध–(पुं.) मीठी महक, अर्जुन वृक्ष, मौलसिरी का पेड़; –गायन–(पुं.) कोयल; –घोष–(पुं.) कोकिल, कोयल; –चक्र–(पुं.) मधुमक्खी का छत्ता; –च्छदा–(स्त्री.) मोरशिखा नाम की बूटी; –ज–(पुं.) सिक्थ, मोम; –जा–(स्त्री.) पृथ्वी, सीता, शक्कर; –जित्–(पुं.) विष्णु; –जीरक–(पुं.) सौंफ; –तृण–(पुं.) इक्षु, ईख; –त्व–(पुं.) माधुर्य, मधुरत्व, मीठापन; –दीप–(पुं.) कन्दर्प, कामदेव; –दोह–(पुं.) मधु निकालने की क्रिया; –द्रुम–(पुं.) महुवे का वृक्ष; –द्विष्–(पुं.) विष्णु; –धारा–(स्त्री.) मधु की वृष्टि; –नी–(स्त्री.) एक प्रकार का पौधा; –प–(पुं.) भ्रमर, भौंरा, मधुमक्खी; –पटल–(पुं.) मधुमक्खी का छत्ता; –पति–(पुं.) श्रीकृष्ण; –पर्क–(पुं.) पूजन का एक उपचार जिसमें दही, घी, जल, मधु और चीनी मिलाकर देवताओं को चढ़ाया जाता है; –पाका–(स्त्री.) पड़भुजा, खरबूजा; –पायी–(पुं.) भ्रमर, भौंरा, मधु पीनेवाला; –पीलु–(पुं.) अखरोट का वृक्ष; –पुरी–(स्त्री.) मथुरा नगरी; –पुष्प–(पुं.) सिरीस का पेड़; –पुष्पा–(स्त्री.) धव का वृक्ष; –प्रमेह–(पुं.) वह रोग जिसमें मूत्र के साथ शक्कर गिरती है; –प्रिय–(पुं.) बलराम; –फल–(पुं.) मीठा नारियल, दाख; –वन–(पुं.) व्रज भूमि के एक प्राचीन वन का नाम; –बहुला–(स्त्री.) वासन्ती लता, सफेद जूही; –बीज–(पुं.) दाड़िम, अनार; –भार–(पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ मात्राएँ होती हैं; –भिद्–(पुं.) विष्णु; –मक्खी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मक्खी जो फलों का रस चूसकर मधु इकट्ठा करती है; –मक्षिका–(स्त्री.) मधुमक्खी; –मज्जन–(पुं.) अखरोट का पेड़; –मती–(स्त्री.) गंगा, एक छन्द का नाम, समाधि या सिद्धि का एक भेद; –मत्त–(वि.) वसन्त सुषमा से मत्त; –मल्लिका–(स्त्री.) मालती लता; –माखी–(हिं. स्त्री.) मधुमक्खी; –मात–(पुं.) एक राग का नाम; –०सारंग–(पुं.) सारंग राग का एक भेद; –माधव–(पुं.) वसन्त-काल; –माधवी–(स्त्री.) एक रागिनी का

नाम, एक छन्द का नाम; –मालती–(स्त्री.) मालती लता; –मेह–(पुं.) प्रमेह रोग जिसम मूत्र के साथ शक्कर निकलती है;–यष्टि–(स्त्री.) इक्षु, ईख; –यष्टिका–(स्त्री.) जेठीमधु नामक औषधि; –रसिक–(पुं.) भ्रमर, भौंरा; –लिह, –लोलुप–(पुं.) भ्रमर, भौंरा; –वन– (पुं.) यमुना नदी के किनारे मथुरा के पास एक प्राचीन वन, किष्किंधा के पास का सुग्रीव का एक वन;–वर्ण–(वि.) सुन्दर स्वरूपवाला; –वल, –वामन– (पुं.) भ्रमर, भौंरा; –वासिनी–(स्त्री.) धव का वृक्ष;–विद्या –(स्त्री.) मधु वनाने की विद्या;–बीज –(पुं.) दाड़िम, अनार; –वृक्ष–(पुं.) महुए का पेड़; –शर्करा –(स्त्री.) मधु से बनाई हुई शक्कर; –शिला–(स्त्री.) सफेद सेम; –श्री– (स्त्री.) वसन्त की शोभा; –संकाश– (वि.) देखने में सुन्दर;–संभव–(पुं.) सिक्थ, मोम; –सख–(पुं.) कंदर्प, कामदेव; –सहाय, –सुहृद्– (पुं.) कंदर्प, कामदेव; –सूदन–(पुं.) भ्रमर, भौंरा, श्रीकृष्ण; –सूदनी– (स्त्री.) पालक का साग; –स्थान–(पुं.) मधुमक्खी का छत्ता; –स्नेह–(पुं.) मोम; –स्यंदन–(पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम; –स्रवा– (स्त्री.) जेठीमधु, लजालू नामक पौधा; –स्वर–(पुं.) कोकिल, कोयल ; –हन्–(पुं.) विष्णु।

मधुर–(सं. पुं.) मीठा रस, महुए का पेड़, बादाम का पेड़, विरोजा नीबू, वंग, राँगा, एक प्रकार का आम, एक प्रकार की घास; (वि.) जिसका स्वाद मीठा हो, मनोरंजक, सुन्दर, जो सुनने में अच्छा जान पड़े, धीरे चलनेवाला; –ई–(हिं. स्त्री.) सुकुमारता, मधुरता, कोमलता, मीठापन; –ता–(स्त्री.) मधुर होने का भाव, सौन्दर्य, सुन्दरता, मिठास, कोमलता, मृदुता; –त्व–(पुं.) माधुर्य, मधुरता; –फल–(पुं.) तरबूज; –लता–(स्त्री.) जेठीमधु; –स्वर–(वि.) गन्धर्व।

मधुरा–(सं. स्त्री.) कमला नीबू, सतावर, पालक का साग, मसूर, केले का पौधा, जेठीमधु, सौंफ; –ई–(हिं. स्त्री.) मधुरता, कोमलता, सुन्दरता।

मधुराक्षर–(सं. वि.) सुन्दर अक्षर लिखनेवाला।

मधुरानन–(सं. वि.) सुंदर, मुख वाला।

मधुरान्न–(सं. पुं.) मिठाई।

मधुराना–(हिं. क्रि. अ.) किसी वस्तु में मीठा रस आ जाना, मीठा होना, सुन्दर हो जाना।

मधुरालापा–(सं.स्त्री.) सारिका,मैना पक्षी।

मधुरासव–(सं. पुं.) आम्र, आम।

मधुरिका–(सं. स्त्री.) सौंफ।

मधुरिमा–(हिं. स्त्री.) मीठापन, मिठास, सौन्दर्य, सुन्दरता।

मधुरी–(हिं. स्त्री.) मुख से फूँककर बजाने का एक प्रकार का बाजा, आम का पेड़, सुन्दरता।

मधुल–(सं. पुं.) मद्य, मदिरा।

मधुलिका–(सं. स्त्री.) राजिका, राई, एक प्रकार का मद्य, मूँग, मसूर।

मधूक–(सं. पुं.) महुए का पेड़, मुलेठी।

मधूकरी–(सं. स्त्री.) मधुकरी, भ्रमरी।

मधूत्सव–(सं. पुं.) वसन्तोत्सव।

मधूलिका–(सं. स्त्री.) मुलेठी, एक प्रकार का मोटा धान, छोटे दान का गेहूँ, एक प्रकार की मक्खी।

मध्य–(सं. पुं.) अवसान, विश्राम, किसी वस्तु के बीच का भाग, कटि, कमर, नृत्य में मध्यम गति, संगीत में बीच का सप्तक, वैद्यक के अनुसार सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष की अवस्था, अन्तर, भेद; (वि.) मध्यम, बीच का;–क्षामा–(स्त्री.) एक छंद का नाम;–खंड–(पुं.) ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी का वह भाग जो कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ता है;–गत–(वि.) मध्यस्थित, बीच का; –चारी–(वि.) औसत चाल चलनवाला;–तः–(अव्य.) मध्य में, बीच में;–ता–(स्त्री.) मध्यमें होनेका भाव या धर्म; –तापिनी–(स्त्री.) एक उपनिषद् का नाम;–दिन–(पुं.) मध्याह्न, दोपहर;–देश–(पुं.) भारतवर्ष का वह प्रदेश जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत, पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग है;–देह–(सं. पुं.) उदर,पेट;–प्रदेश–(पुं.) भारतवर्ष के मध्य भाग म स्थित एक प्रदेश;–भाव–(पुं.) मध्य अवस्था; –रात्र–(पुं.) निशीथ,आधी रात;–रेखा –(स्त्री.) पृथ्वी के मध्य भाग की कल्पित रेखा जो उत्तर-दक्षिण खींची गई मानी जाती है;–लोक–(पुं.) पृथ्वी;–वर्ती–(वि.) मध्य का, विचला;–वय–(स्त्री.) जीवन का मध्य भाग; –वृत्त –(पुं.) नाभि;–शरीर–(पुं.) पेट,उदर;–शायी –(वि.) मध्यवर्ती,बीच का;–स्थ–(पुं.) पंच, वह व्यक्ति जो बीच में पड़कर दो मनुष्यों के झगड़े आदि को निवटाता है; –०ता (स्त्री.) मध्यस्थ होने का भाव या धर्म;–स्थल–(पुं.) कटि, कमर; –स्थित–(वि.) मध्यवर्ती, बीच का।

मध्यम–(सं. पुं.) संगीत में चतुर्थ स्वर, इस नाम का राग, वह नायक जो नायिका के क्रोध दिखलाने पर अपना प्रेम प्रकट न करे; (वि.) बीच का, न बढ़िया, न घटिया; –खंड–(पुं.) विचला भाग; –जात–(वि.) मँझला; –ता–(स्त्री.) मध्यम होने का भाव, बीच की स्थिति; –पदलोपी–(पुं.) वह समास जिसमें पूर्व पद का आगामी पद से संबंध बतलानेवाला शब्द लुप्त रहता है ;–पुरुष–(पुं.) व्याकरण के अनुसार वह व्यक्ति जिससे कुछ कहा जाय; –रात्र–(पुं.) मध्यरात्रि, आधी रात; –लोक–(पुं.) पृथ्वी; –वयस्–(स्त्री.) सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष तककी अवस्था;–वाह–(वि.) मन्द गति से चलनेवाला; –स्थ–(वि.) मध्यस्थित, बीच का।

मध्यमा–(सं. स्त्री.) बीच की अँगुली, एक प्रकार का छन्द,छोटे जामुन का वृक्ष, रजस्वला स्त्री, वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम अथवा दोष के अनुसार उसका सत्कार या अपमान करे।

मध्यमादि–(सं.पुं.) संगीत में एक प्रकार का ताल।

मध्यमाहरण–(सं. पुं.) वीजगणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई आयत्त मान निकाला जाता है।

मध्यमिक–(सं. वि.) बीच का।

मध्यमिका–(सं. स्त्री.) रजस्वला स्त्री।

मध्या–(सं. स्त्री.) काम-शास्त्र के अनुसार वह नायिका जिसमें काम और लज्जा समान हो, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं।

मध्याह्न–(सं. पुं.) दिन का मध्य भाग, दोपहर का समय।

मध्ये–(हिं. अव्य.) विषय में, वारे में।

मध्व–(सं.पुं.) माध्व सम्प्रदाय के प्रवर्तक।

मध्वक–(सं. पुं.) शहद की मक्खी।

मध्वक्ष–(सं. वि.) जिसके नेत्र में यौन प्रेम का माधुर्य हो।

मध्वाचार्य–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो माध्व सम्प्रदाय के प्रवर्तक और वेदान्तों के प्रसिद्ध भाष्यकार थे।

मध्वाधार–(सं. पुं.) मधुमक्खी का छत्ता।
मध्वालु–(सं. पुं.) एक प्रकार के पौधे की जड़ जो खान में मीठी होती है।
मध्वासव–(सं. पुं.) महुए की बनी हुई मदिरा या शराब।
मध्वाहुति–(सं. स्त्री.) मधु की आहुति।
मनःक्षेप–(सं. पुं.) मन का उद्वेग।
मनःपति–(सं. पुं.) विष्णु।
मनःप्रसाद–(सं. पुं.) मन की प्रसन्नता।
मनःशास्त्र–(सं. पुं.) मनोविज्ञान, वह शास्त्र जिसमे मन तथा उसके विकारों का वर्णन हो।
मनःशिल, मनःशिला–(सं. पुं.) मैनसिल।
मनःस्थर्य–(सं. पुं.) मन की स्थिरता।
मन–(सं. पुं.) अन्तःकरण, मनुष्य में वह अंतरिंद्रिय जिससे वेदना, इच्छा, संकल्प बोध, विचार आदि उत्पन्न होते हैं, इच्छा, अन्तःकरण की चार वृत्तियों में से वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है; (मुहा.) **–अटकना**– प्रेम होना; **–के लड्डू खाना**–अनिश्चित आशा पर प्रफुल्लित होना; **–चलना**–अभिलाषा होना; **–टटोलना**–किसी के मन की बात जानने का उद्योग करना; **–टूट जाना**– हताश होना; **–डोलना**– लोभ उत्पन्न होना; **–तोड़ना**– उत्साह तोड़ना; **–देना**–चित्त लगाना; **–धरना**–ध्यान देना; **–फेरना**–चित्त हटा लेना; **–बढ़ना**–उत्साह बढ़ना; **–बढ़ाना**– उत्साह बढ़ाना; **–बहलाना**–चित्त प्रसन्न करना; **–बूझना**– चित्त का अभिप्राय जानना; **–भरना या भर जाना**–तृप्ति या संतोष होना; **–भाना** अच्छा लगना; **–माना**–अपनी इच्छानुसार; **–मानना**– तृप्ति या संतोष होना; **–मारना**–उदासीन बन जाना; **–मिलना**–एक दूसरे के विचार, प्रेम आदि समान होना; **–में रखना**–गुप्त रखना; **–में लाना**–विचारना; **–मैला करना**–खिन्न होना; **–मोटा होना**–चित्त हट जाना; **–मोड़ना**– चित्तवृत्ति को दूसरी ओर लगाना; **–रखना**–अभिलाषा पूर्ण करना; **–लाना**– चित्त लगाना; **–हरा होना**–चित्त प्रसन्न होना; **–ही मन**–चुपचाप, हृदय में।
मन–(हि. पुं.) चालीस सेर की तौल, मणि, बहुमूल्य रत्न।
मनई–(हि. पुं.) मनुष्य।
मनकना–(हि. क्रि. अ.) हाथ-पैर आदि हिलाना, हिलना-डोलना, तर्क-वितर्क करना।
मनकरा–(हि.वि.) प्रकाशमान, चमकदार।
मनका–(हिं. पुं.) (बिल्लौर, लकड़ी आदि का) छेदा हुआ गोल दाना जिसको पिरोकर माला या सुमिरनी बनाई जाती है, गुरिया, रीढ़ के ऊपर गरदन के पीछे की हड्डी।
मनकामना–(हिं. स्त्री.) मनोकामना, अभिलाषा, इच्छा।
मनगढ़ंत–(हिं. वि.) कपोल-कल्पित, जिसकी केवल कल्पना मात्र कर ली गई हो, जिसकी वास्तव में सत्ता न हो।
मनचला–(हिं.वि.) साहसी, निडर, रसिक।
मनचाहता–(हिं. वि.) मन के अनुकूल, यथेच्छ।
मनचाहा–(हिं.वि.) अभिलषित, इच्छित, वांछित।
मनचीता–(हिं. वि.) मनचाहा, मन में सोचा हुआ।
मनजात–(हिं. पुं.) कामदेव।
मनन–(सं. पुं.) अनुचिन्तन, बारंबार विचार करना, सोचना, अच्छी तरह से अध्ययन करना।
मननशील–(सं. वि.) किसी विषय पर अच्छी तरह मनन करनेवाला।
मननाना–(हिं. क्रि. अ.) गूँजना।
मनभाया–(हिं.वि.) जो मनको अच्छा लगे।
मनभावन–(हिं. वि.) मन को अच्छा लगनेवाला।
मनभावना–(हिं. वि.) प्रिय, प्यारा, जो अच्छा लगता हो।
मनमंत–(हिं. वि.) देखें 'गैमंत'।
मनमति–(हिं. वि.) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करनेवाला।
मनमथ–(हिं. पुं.) देखें 'मन्मथ', कामदेव।
मनमानता–(हिं. वि.) मनोवांछित, मनमाना।
मनमाना–(हिं. वि.) मनोनीत, मन के अनुकूल, जो मन को अच्छा लगे, इच्छानुकूल; (अव्य.) यथेच्छ, जितना जी चाहे।
मनमुखी–(हिं. वि.) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करनेवाला।
मनमुटाव–(हिं. पुं.) वैमनस्य होना, मन फिर जाना।
मनमोदक–(हिं. पुं.) मन का लड्डू, वह कल्पित या असंभव बात जो अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बसाई गई हो।
मनमोहन–(हिं.वि.) मन को लुभानेवाला, प्रिय, प्यारा; (पुं.) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्राएँ होती हैं।
मनमोहनी–(हिं.वि.स्त्री.) मनको लुभानेवाली
मनमौजी–(हिं. वि.) मनमाना काम करनेवाला, स्वेच्छाचारी।
मनरंज, मनरंजन–(हिं. वि.) मनोरंजक, चित्तको प्रसन्न करनेवाला (पुं.) मनोरंज।
मनलाडू–(हिं. पुं.) देखें 'मनमोदक'।
मनवाँ–(हिं. पुं.) नरमा, राम-कपास।
मनवांछित–(हिं. वि.) देखें 'मनोवांछित'
मनवाना–(हिं. क्रि. स.) किसी को मानने में प्रवृत्त करना।
मनसना–(हिं. क्रि. अ.) संकल्प करना, इच्छा करना, दृढ़ निश्चय करना, संकल्प का मन्त्र पढ़कर कोई वस्तु दान करना।
मनसा–(सं. स्त्री.) एक देवी जिसकी पूजा ज्यष्ठ में गंगादशहरा के दिन बंगाल म घर-घर होती है; (हिं. स्त्री.) अभिलाषा, मनोरथ, संकल्प, कामना, इच्छा, अभिप्राय, मन, बुद्धि; (वि.) मन से उत्पन्न; (अव्य.) मन के द्वारा, मन से; **–कर**–(हिं.वि.) मनोरथ पूर्ण करनेवाला; **–पंचमी**–(सं. स्त्री.) आषाढ़ कृष्ण पंचमी का दिन।
मनसाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) उमंग या तरंग में आना, संकल्प का मन्त्र पढ़कर या पढ़ाकर दूसरे से दान आदि कराना।
मनसायन–(हिं.वि.,पुं.) वह स्थान जहाँ मन बहलाने के लिये कुछ लोग इकट्ठे हों, मनोरम (स्थान)।
मनसिकार–(सं. पुं.) मनोयोग, ध्यान।
मनसिज, मनसिशय–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।
मनसेधू–(हिं. पुं.) मनुष्य, मनई।
मनस्क–(सं. पुं.) मनोयोग, 'मन' शब्दका अल्पार्थ-रूप जिसका प्रयोग कुछ समस्त-पदों में होता है, यथा–तन्मनस्क।
मनस्कांत–(सं.वि.) मन के अनुकूल प्रिय।
मनस्काम–(सं. पुं.) मनोरथ, अभिलाषा।
मनस्ताप–(सं. पुं.) आन्तरिक दुःख, पछतावा।
मनस्ताल–(सं. पुं.) दुर्गा देवी के सिंह का नाम; (पुं.) हरताल।
मनस्थ–(सं. वि.) अन्तःकरण में स्थित।
मनस्विनी–(सं.स्त्री.) श्रेष्ठ विचार की स्त्री, प्रजापति की एक स्त्री का नाम।
मनस्वी–(सं. पुं.) उच्च विचारवाला, स्वेच्छाचारी।
मनहंस–(सं. पुं.) पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मनहर–(हिं. वि.) मन को हरनेवाला, मनोहर, घनाक्षरी छन्द का एक नाम।
मनहरण–(सं. पुं.) मन को हरने की

क्रिया या भाव, पंद्रह अक्षरों का एक छंद जिसको नलिनी या भ्रमरावली भी कहते हैं; (वि.) मनोहर, सुन्दर।
मनहरन-(हि. वि.) मन को हरनेवाला।
मनहार, मनहारि-(हि.वि.) देखें 'मनोहारि'
मनहुँ-(हि. अव्य.) मानो, जैसे, यथा।
मनाई-(हि. स्त्री.) देखें 'मनाही'।
मनाक-(हि. वि.) अल्प, थोड़ा।
मनाका-(सं. स्त्री.) हस्तिनी, हथिनी।
मनाक्-(सं. अव्य.) अल्प, थोड़ा, मन्द।
मनाना-(हि. क्रि. स.) मानने के लिए प्रेरित, बाध्य या उद्यत करना, स्वीकार कराना, जो अप्रसन्न हो उसको प्रसन्न करने का प्रयत्न करना, स्तुति करना, प्रार्थना करना, राजी करना विनय करना, किसी मनोकामना के पूर्ण होने के लिये देवी-देवता से प्रार्थना करना, मनौती करना।
मनावन-(हि. पुं.) अप्रसन्न व्यक्ति को प्रसन्न करने का काम, मनाने की क्रिया।
मनावी-(सं. स्त्री.) मनु की पत्नी का नाम।
मनाही-(हि. स्त्री.) निषेध, रोक।
मनि-(हि. स्त्री.) देखें 'मणि'।
मनिका-(हि. स्त्री.) माला में पिरोया हुआ दाना, गुरिया।
मनित-(सं वि) ज्ञात।
मनिया-(हि. स्त्री.) मनका, गुरिया, कंठी या माला में पिरोया हुआ दाना।
मनियार-(हि.वि.) देदीप्यमान, चमकीला।
मनिहार-(हि. पुं.) चूड़ी बनानेवाला, चुड़िहारा।
मनिहारिन-(हि. स्त्री.) चुड़िहारिन।
मनी-(हि. स्त्री.) देखें 'मणि', वीर्य, गर्व, अहंकार।
मनीषा-(सं. स्त्री.) बुद्धि, प्रशंसा।
मनीषित-(सं. वि.) अभिलषित, वांछित।
मनीषिता-(सं. स्त्री.) बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी।
मनीषी-(सं. पुं.) पण्डित, ज्ञानी, बुद्धिमान्।
मनु-(सं. पुं.) मनुष्य, मन्त्र, ब्रह्मा के पुत्र जो मानव जाति के आदि पुरुष थे और संख्या में चौदह हैं, इनके नाम-स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, धर्मसावर्णि और इन्द्रसावर्णि हैं, मन, अन्तःकरण, विष्णु, अग्नि, ब्रह्मा, विद्युत्, चौदह की संख्या; (हि. अव्य.) मानो, जैसे।

मनुआँ-(हि. पुं.) मन, मनुष्य, नरमा, सेमर का कपास।
मनुज-(सं. पुं.) मनुष्य, आदमी; -पति-(पुं.) राजा; -लोक-(पुं.) मृत्युलोक।
मनुजा-(सं. स्त्री.) स्त्री, नारी।
मनुजात-(सं.वि.) मनु या मनुष्य से उत्पन्न।
मनुजाद-(सं. पुं.) मनुष्य को खानेवाला राक्षस।
मनुजाधिप-(सं. पुं.) मनुष्यों का अधिपति, राजा।
मनुजेंद्र-(सं. पुं देखें 'मनुजाधिप'।
मनुयुग-(सं. पुं.) मन्वंतर।
मनुराज-(सं. पुं.) कुबेर।
मनुश्रेष्ठ-(सं. पुं.) विष्णु।
मनुष-(हि. पुं.) मनुष्य, आदमी, पति।
मनुषेंद्र-(हि. पुं.) मनुजेंद्र।
मनुष्य-(सं. पुं.) मनुज, मानव, पुरुष, आदमी, नर; -कार-(पुं.) पुरुषों द्वारा की हुई चेष्टा; -गंधर्व-(पुं.) मानव-रूपी गंधर्व; -ता-(स्त्री.) मनुष्य का भाव या धर्म, सभ्यता, शिष्टता, दयाभाव, चित्त की कोमलता; -त्व-(पुं.) मनुष्य का भाव या धर्म; -यज्ञ-(पुं.) अतिथि-सत्कार; -रथ-(पुं.) वह रथ जिसको मनुष्य खींचते हैं; -लोक-(पुं.) भूलोक, पृथ्वी; -सव-(पुं.) मनुष्य द्वारा किया हुआ यज्ञ।
मनुसंहिता-(सं. स्त्री.) मानव धर्मशास्त्र।
मनुसाई-(हि. स्त्री.) पुरुषार्थ, पराक्रम, मनुष्यता।
मनुस्मृति-(सं. स्त्री.) मनुप्रणीत एक धर्म-ग्रन्थ, मानव धर्मशास्त्र, मनुसंहिता।
मनुहार-(हि. स्त्री.) मनौती, वह विनती जो किसी को प्रसन्न करने या क्रोध शान्त करने के लिये की जाती है, विनय, प्रार्थना, आदर-सत्कार।
मनुहारना-(हि. क्रि. स.) मनाना, आदर-सत्कार करना, विनय करना, प्रार्थना करना।
मनरो-(अ. स्त्री.) मुरादाबादी कलई करने की बुकनी।
मनों-(हि. अव्य.) मानो।
मनोकामना-(हि.स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा।
मनोगत-(सं. वि.) मनःस्थित, जो मन में हो; (पुं.) कन्दर्प, कामदेव, विचार।
मनोगति-(सं. स्त्री.) मन की गति, चित्त-वृत्ति, अभीष्ट, इच्छा।
मनोगवी-(सं. स्त्री.) इच्छा, अभिलाषा।
मनोज-(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव, मदन।
मनोजव-(सं. पुं.) विष्णु, मन का वेग, वायु के एक पुत्र का नाम, रुद्र में एक पुत्र का नाम; (वि.) पितृतुल्य, अधिक वेगवान्।

मनोजात-(सं.वि.) जो मन में उत्पन्न हो।
मनोज्ञ-(सं.वि.) रुचिर, सुन्दर, मनोहर; -ता-(स्त्री.) सुन्दरता।
मनोज्ञा-(सं. स्त्री.) रूपवती स्त्री, सुन्दरी, मैनसिल, मदिरा, मेंगरैला, जावित्री का फूल।
मनोदाही-(हि. वि.) मन को जलानेवाला।
मनोदुष्ट-(सं. वि.) दुष्ट या कुत्सित हृदयवाला।
मनोदेवता-(सं. पुं.) अन्तरात्मा, विवेक।
मनोधृत-(सं. वि.) जितेन्द्रिय।
मनोनिग्रह-(सं. पुं.) चित्त की वृत्तियों का निरोध, मन को वश में रखना।
मनोनीत-(हि. वि.) चुना हुआ।
मनोभव-(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव; (वि.) मन में उत्पन्न।
मनोभिराम-(सं. वि.) मनोज्ञ, सुन्दर।
मनोभूत-(सं. पुं.) चन्द्रमा।
मनोमथन-(सं. पुं.) मदन, कामदेव।
मनोमय-(सं. वि.) मनोरूप, मानसिक; -कोश-(पुं.) वेदान्त शास्त्र के अनुसार पाँच कोशों में से वह कोश जिसके अन्तर्गत मन, अहंकार और कर्मेन्द्रियाँ मानी जाती हैं।
मनोयायी-(हि. वि.) इच्छानुसार गमन करनेवाला।
मनोयोग-(सं. पुं.) चित्तवृत्ति का निरोध करके एकाग्र करना और किसी एक विषय पर लगाना।
मनोयोनि-(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।
मनोरंजक-(सं. वि.) चित्त को प्रसन्न करनेवाला।
मनोरंजन-(सं. पुं.) चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव, एक बँगला मिठाई का नाम।
मनोरथ-(सं. पुं.) अभिलाषा, वांछा, इच्छा; -तृतीया-(स्त्री.) चैत्र शुक्ला तृतीया जिस दिन व्रत करने से मनोरथ सिद्ध होता है; -दायक-(वि. पुं.) अभीष्ट फल देनेवाला, कल्पवृक्ष; -द्वादशी-(स्त्री.) चैत्र शुक्ला द्वादशी; -सिद्धि-(स्त्री.) अभिलाषा का पूरा होना
मनोरम-(सं. वि.) सुन्दर, मनोहर, [illegible] [illegible] [illegible]
मनोरमा-(सं. स्त्री.) गोरोचन, [illegible] एक [illegible] का नाम, [illegible] [illegible] प्रत्येक चरण में [illegible] होते हैं, [illegible]

छन्द का एक नाम, आर्या छन्द का एक भेद, चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त, सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम; (इन सातों के नाम–सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मनोरमा, सरस्वती, सुरेणु और विमलोदका हैं।)
मनोरा–(हिं. पुं.) भीत पर गोबर से बनाये हुए चित्र जो दीपावली के बाद रंग-बिरंगे फूल-पत्तों से सजाकर प्रतिदिन सन्ध्या को दीपक जलाकर पूजे जाते हैं और झूमक गीत गाया जाता है।
मनोराज–(हिं. पुं.) मन की कल्पना, मनगढ़ंत।
मनोरिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चाँदी की सिकड़ियों की शृंखला जिसको स्त्रियाँ ओढ़नी या साड़ियों के किनारे पर टाँक देती हैं जो उनके सिर पर लटकती है।
मनोलय–(सं. पुं.) मन का नाश, (प्रकृति-पुरुष के मिल जाने पर मन की चेतना लुप्त हो जाती है।)
मनोलौल्य–(सं.पुं.) चित्त की चंचलता।
मनोवती–(सं.स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।
मनोवांछा–(सं.स्त्री.) इच्छा, अभिलाषा।
मनोवांछित–(सं.वि.) इच्छित, चाहा हुआ।
मनोविकार–(सं. पुं.) मन की वह अवस्था जिसमें किसी प्रकार का सुखद या दुःखद भाव, विचार या विकार उत्पन्न हो।
मनोविज्ञान–(सं. पुं.) वह शास्त्र जिसमें मन की वृत्तियों का अनुशीलन होता है।
मनोविद्–(सं. वि.) मन के भावों को जाननवाला।
मनोवृत्ति–(सं. स्त्री.) मन का व्यापार या कार्य।
मनोवेग–(सं. पुं.) मनोविकार।
मनोव्यापार–(सं. पुं.) मन की क्रिया, विचार।
मनोसर–(हिं. पुं.) मन की वृत्ति।
मनोहत–(सं. वि.) प्रतिहत, निराश।
मनोहर–(सं. वि.) सुन्दर, चित्त को आकर्षण करनेवाला; (पुं.) सोना, छप्पय का एक भेद, एक संकर राग का नाम; –ता– (स्त्री.); –ताई–(हिं. स्त्री.) सुन्दरता।
मनोहरा–(सं.स्त्री.) मनोहर स्त्री, सोनजूही का फूल, एक अप्सरा का नाम।
मनोहरी–(हिं. स्त्री.) कान में पहनने की छोटी बाली।
मनोहारी–(सं.वि.) मनोहर, चित्ताकर्षक।
मनोह्लाद–(सं. पुं.) चित्त की प्रसन्नता।
मनौती–(हिं. स्त्री.) असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करना, किसी देवी-देवता की कार्य-सिद्धि होने पर पूजा करने का संकल्प।
मन्नत–(हिं. स्त्री.) किसी विशेष कामना की पूर्ति के लिये किसी देवी-देवता की पूजा आदि करने की प्रतिज्ञा, मानता, मनौती; (मुहा.)–**उतारना**–किसी मन्नत को पूरी करना; –**मानना**–कोई मनोरथ पूरा होन के लिये देवी-देवता की पूजा करने की प्रतिज्ञा करना।
मन्ना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मीठा निर्यास जो अनेक वृक्षों से निकलता है, (यह औषधियों में प्रयुक्त होता है।)
मन्मथ–(सं. पुं.) कामदेव, कैथ का वृक्ष, काम वासना।
मन्मथालय–(सं.पुं.) प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का स्थान।
मन्मन–(सं. पुं.) गद्गदवाणी, कान में गुप्त बात कहना।
मन्य–(सं. वि.) मननीय, मानने योग्य।
मन्या–(सं. स्त्री.) गरदन के पिछले भाग की एक शिरा का नाम।
मन्यु–(सं. पुं.) कार्य, स्तोत्र, शोक, यज्ञ, क्रोध, दीनता, शिव, अहंकार, अग्नि।
मन्वंतर–(सं.पुं.) युग, (दैव-युग का एक सहस्र युग ब्रह्मा का एक दिन होता है। (इसी एक दिन का नाम मन्वन्तर है जो गणना करने से तीस करोड़, सड़सठ लाख, बीस हजार वर्ष होता है।)
मन्वाद्य–(सं. पुं.) धान्य, धन।
मम–(सं. सर्व.) मेरा या मेरी।
ममता–(सं. स्त्री.) 'यह मेरा है' इस प्रकार का भाव, ममत्व, अपनापन, लोभ, मोह, अभिमान, गव, स्नह, प्रम, माता का अपनी सन्तान पर स्नेह।
ममत्व–(सं.पुं.) ममता, स्नेह, अभिमान, गर्व।
ममरखी–(हिं. स्त्री.) बधावा।
ममरी–(हिं. स्त्री.) वनतुलसी, दौना।
ममाखी–(हिं. स्त्री.) मधुमक्खी।
ममिया–(हिं. वि.) जो सम्बन्ध या नाते में मामा के कुल का हो, यथा;–ममिया ससुर, सास आदि।
ममियाउर, ममियौरा–(हिं. पुं.) मामा का घर।
ममी–(पुं.) मिस्र देश का प्रसिद्ध मृत मनुष्य का सुरक्षित प्राचीन शव।
मयंक–(हिं. पुं.) देखें 'मृगांक', चन्द्रमा।
मयंद–(हिं. पुं.) देखें 'मृगेंद्र', शेर।
मयंदी–(हिं. स्त्री.) गाड़ी के पहिये के चक्के पर लगाई जानेवाली लोहे की सामी।
मय–(सं. पुं.) दिति के पुत्र का नाम, एक प्रसिद्ध दानव, एक देश का नाम, अश्व, घोड़ा, खच्चर, चिकित्सक, वैद्य; (हिं. प्रत्य.) तद्धित का एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार तथा प्राचुर्य के अर्थों में संज्ञाओं के अन्त में लगाया जाता है; यथा-आनन्दमय।
मयगल–(हिं. पुं.) मस्त हाथी।
मयट–(सं. पुं.) पर्णशाला, झोपड़ी।
मयन–(सं. पुं.) मधु, मक्खी का छत्ता; (हिं. पुं.) मदन, कामदेव।
मयमंत, मयमत्त–(हिं.वि.) मदोन्मत्त, मस्त।
मयसुता–(सं. स्त्री.) मन्दोदरी।
मया–(हिं. स्त्री.) देखें 'माया'।
मयार–(हिं. वि.) कृपालु, दयावान्।
मयारी–(हिं. स्त्री.) वह धरन जिससे हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है, छाजन की धरन जिस पर बँड़र रखा जाता है।
मयु–(सं. पुं.) किन्नर, मृग; –**राज**–(पुं.) कुबेर।
मयूक–(सं. पुं.) मयूर, मोर।
मयूख–(सं. पुं.) रश्मि, किरण, प्रकाश, ज्वाला, पर्वत।
मयूखी–(सं. पुं.) भारत के प्राचीन आर्यों का एक प्रकार का अस्त्र।
मयूर–(सं.पु.) शिखी, बर्हीं, मोर; –**गति**–(स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस अक्षर होते हैं; –**ग्रीवक**–(पुं.) तुत्थ, तूतिया; –**ध्वज**–(पुं.) एक पुराण-वर्णित प्राचीन राजा जिसकी राजधानी रत्नपुरी थी; –**पुच्छ**–(पुं.) मोर की पूँछ, चन्द्रिका; –**रथ**, –**वाहन**–(पुं.) स्कन्ध, कार्तिकेय; –**शिखा**–(स्त्री.) शिखालु, एक पौधा; –**सारिणी**–(स्त्री.) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण म तेरह वर्ण होते हैं।
मयूरा–(सं.स्त्री.) काली तुलसी, अजमोदा।
मयूरासन–(सं. पुं.) शाहजहाँ का बनवाया हुआ मयूर के आकार का प्रसिद्ध रत्नजटित सिंहासन।
मयूरिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
मयूरी–(सं. स्त्री.) मोरनी।
मयोभव–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
मरंद–(हिं. पुं.) देखें 'मकरंद'।
मरक–(हिं. स्त्री.) आँख से संकेत करना, (पुं.) महामारी, मृत्यु, मरण।

मरकट–(हिं. पुं.) देखें 'मर्कट'।
मरकत–(सं. पुं.) पन्ना नाम का रत्न।
मरकना–(हिं. क्रि. अ.) दवाव पड़कर टूट जाना, मुरकना।
मरकहा–(हिं. वि., पुं.) जो पशु सींग से मारता हो, सींग से मारनेवाला।
मरकाना–(हिं. क्रि. स.) दवाकर चूरचूर करना, मुरकाना।
मरकोटी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई।
मरखन्ना–(हिं. वि.) देखें 'मरकहा'।
मरगजा–(हिं.वि.) मसला हुआ, गींजा हुआ।
मरघट–(हिं. पुं.) शव को जलाने का स्थान, श्मशान; (वि.) कुरूप और विकराल आकृति का, जो सदा उदास रहता है, मनहूस।
मरचोवा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की तरकारी।
मरजाद, मरजादा–(हिं. स्त्री.) मर्यादा, रीति, परिपाटी, सीमा, हद, आदर, सत्कार, प्रतिष्ठा।
मरजिया–(हिं.वि.) मरकर जीनेवाला, जो प्राण देने को उद्यत हो, मरनेवाला, मृतप्राय, अधमरा।
मरजी–(अ. स्त्री.) खुशी, इच्छा, रुचि।
मरजीवा–(हिं. पुं.) देखें 'मरजिया'।
मरण–(सं. पुं.) मृत्यु, पंचतत्त्व।
मरणांत–(सं.अव्य.) मरण पर्यन्त, मृत्यु तक।
मरणोत्तर–(सं. वि.) मृत्यु के वाद का।
मरत–(हिं. पुं.) मरण, मृत्यु।
मरतवान–(हिं. पुं.) देखें 'अमृतवान'।
मरद–(हिं.पुं.) देखें 'मद'; **–ई**–(स्त्री.) साहस, वीरता, पराक्रम।
मरदना–(हिं. क्रि. स.) मर्दन करना, मसलना, तर करना, गूँथना, माँड़ना; (पुं.) शरीर म तेल लगानवाला सेवक।
मरन–(हिं. पुं.) देखें 'मरण'।
मरना–(हिं.क्रि.अ.) मृत्यु को प्राप्त होना, वहुत दुःख सहना, कुम्हलाना, मुरझाना, सूख जाना, लज्जा आदि के कारण मस्तक न उठा सकना, वेग का कम होना, रोना, पछतावा करना, डाह करना, जलना, वशीभूत होना, हारना; (मुहा.) **किसी पर मरना**–आसक्त होना; **मर मिटना**–परिश्रम करते-करते शक्तिहीन हो जाना; **मरा जाना**–व्याकुल होना, रीझना; **पानी मरना**–नीवें या भीत में पानी धँसना, दुर्नाम होना।
मरनी–(हिं. स्त्री.) मृत्यु, दुःख, कष्ट, वह शोक जो किसी के मरने पर उसके संवंधियों को होता है, मृत्यु-संवंधी कृत्य।
मरभुखा–(हिं. वि.) भूखों मरता, भुक्खड़, दरिद्र।
मरम–(हिं. पुं.) देखें 'मर्म'।
मरमर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वहुत चिकना पत्थर।
मरमरा–(हिं. पुं.) एक पक्षी का नाम, थोड़ा खारा पानी; (वि.) सहज में टूटनेवाला।
मरमराना–(हिं. क्रि. अ.) वृक्ष की शाखा का दवाव पाकर मरमर शब्द करना।
मरम्मत–(अ. स्त्री.) टूटी-फूटी चीज को वनाना या वनवाना, सुधार; (हिं. स्त्री.) मार, पिटाई।
मरम्मती–(अ. वि.) मरम्मत-सवंधी।
मरवट–(हिं. स्त्री.) वह निःशुल्क जागीर, भूमि जो सैनिक के मारे जाने पर राज्य द्वारा उसके वाल-वच्चों को दी जाती है।
मरवा–(हिं. पुं.) देखें 'मरुआ'।
मरवाना–(हिं. क्रि. स.) वध कराना, मारने के लिये दूसरे को प्रवृत्त करना।
मरसा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का साग।
मरहट–(हिं. पुं.) मरघट, श्मशान, मसान।
मरहटा–(हिं.पुं.) महाराष्ट्र देश का निवासी, उनतीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
मरहठा–(हिं. पुं.) महाराष्ट्र देशवासी, महाराष्ट्री, मराठा।
मरहठी–(हिं. वि.) महाराष्ट्र-संवंधी; (स्त्री.) वह भाषा जो महाराष्ट्र देश में वोली जाती है, मराठी।
मर(ल)हम–(अ. पुं.) घाव पर लगाने का लेप; **–पट्टी**–(स्त्री.) घाव पर मरहम लगाकर पट्टी वाँधना।
मराठा–(हिं.पुं.) महाराष्ट्र देश का निवासी।
मराठी–(हिं. स्त्री.) मराठों की भाषा; (पुं.) महाराष्ट्र का निवासी; (वि.) मराठा-संवंधी।
मराना–(हिं. क्रि. स.) मारने के लिये प्रेरणा करना, मरवाना।
मरायल–(हिं. वि.) जिसने कई वार मार खाई हो निर्जीव, निर्बल, निःसत्त्व; (पुं.) घाटा
मरायु–(सं. वि.) मरणशील, मरनेवाला।
मराल–(सं. पुं.) राजहंस, काजल, वादल, घोड़ा, हाथी, एक प्रकार की वत्तख, खल, दुष्ट; (वि.) चिकना।
मरिंद–(हिं. पुं.) देखें 'मलिंद', मरंद।
मरिच–(सं. पुं.) गोलमिर्च।
मरिचा–(हिं. पुं.) लाल वड़ा मिरचा।
मरियल–(हिं.वि.) कमजोर, निर्वल, वहुत दुवला-पतला।
मरिया–(हिं.स्त्री.) खाट के पैंताने में कसने की रस्सी।
मरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'महामारी', एक संक्रामक रोग जिससे अनक मनुष्यों की एक साथ मृत्यु होती है।
मरीचि–(सं. पुं.) एक ऋषि जो पुराणों में ब्रह्मा के मानस पुत्र तथा एक प्रजापति माने गये हैं, (यह सप्तर्षियों में एक है), मनु के एक पुत्र का नाम, एक मुनि का नाम जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे; (स्त्री.) एक अप्सरा का नाम, किरण, कान्ति, ज्योति; **–गर्भ**–(पुं.) सूर्य; **–जल**–(पुं.) मृगतृष्णा; **–माली**–(पुं.) सूर्य या चन्द्रमा।
मरीचिका–(सं. स्त्री.) मृगतृष्णा, मरुभूमि में जल का आभास, किरण।
मरीची–(सं. पुं.) सूर्य, चन्द्रमा; (वि.) किरणयुक्त।
मरीना–(हिं.पुं.) एक प्रकार का कोमल तथा पतला ऊनी वस्त्र जो विलायती भेड़ के ऊन से तैयार किया जाता है।
मरुंडा–(सं.स्त्री.) ऊँचे ललाट की स्त्री।
मरु–(सं. पुं.) मरुभूमि, निर्जल प्रदेश, मारवाड़ और उसके आसपास के देश का नाम, एक दैत्य का नाम।
मरुआ–(हिं. पुं.) वनतुलसी या ववेरी की जाति का एक पौधा जो वागों में लगाया जाता है, (इसमें सफेद फूल लगते हैं), पत्थर या लकड़ी का छोटा खंभा, वँड़ेर, हिंडोला लटकाने की लकड़ी।
मरुकांतर–(सं. पुं.) वालू का भू-भाग।
मरुज–(सं. वि.) मरुभूमि में होनेवाला।
मरुजाता–(सं. पुं.) केवाँच, कौंच।
मरुत्–(सं. पुं.) वायु, हवा, एक देवगण का नाम, प्राण, सुवर्ण, सोना, देवता विशेष; **–कर्म**–(पुं.) पेट फूलना, हवा निकलना; **–क्रिया**–(स्त्री.) अधोवायु का निकलना, पादना; **–पति**–(पुं.) इन्द्र; **–पथ**–(पुं.) आकाश; **–पाल**–(पुं.) इन्द्र; **–पुत्र**–(पुं.) भीमसेन; **–वान्**–(पुं.) इन्द्र, हनुमान, देवताओं का एक गण; **–सहाय**–(पुं.) अग्नि, आग; **–सुत**–(पुं.) हनुमान, भीम।
मरुथल–(हिं. पुं.) देखें 'मरुस्थल'।
मरुदेश–(सं.पुं.) मरुभूमि, मारवाड़ देश।
मरुद्रुम–(सं. पुं.) ववूल का वृक्ष।
मरुद्वाह–(सं. पुं.) धूम्र, धुआँ, अग्नि, आग।
मरुद्वीप–(सं. पुं.) मरुभूमि में कहीं-कहीं उपजाऊ तथा हराभरा मैदान।

मरुद्वेग–(सं. पुं.) वायु का वेग, एक दैत्य का नाम ।
मरुधर–(सं. पुं.) मारवाड़ देश ।
मरुप्रिय–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट ।
मरुभूमि–(सं. स्त्री.) विना पेड़-पौधे का तथा जलरहित वालू का विस्तृत-भाग ।
मरुरना–(हिं. क्रि. अ., स.) ऐंठना, मरोड़ना, मरोड़ा जाना ।
मरुवक–(सं. पुं.) तुलसी का छोटा पौधा, मरुए का फूल, व्याघ्र; (हिं.वि.) भयंकर, डरावना ।
मरुसा–(हिं. पुं.) देखें 'मरसा' ।
मरुस्थल–(सं. पुं.) मरुभूमि, निर्जल तथा विस्तृत वालू का मैदान ।
मरुस्थली–(सं. स्त्री.) वर्तमान मारवाड़ प्रदेश का प्राचीन नाम, मरुस्थल ।
मरू–(हिं. वि.) कठिन, कड़ा ।
मरूक–(सं. पुं.) मयूर, मोर ।
मरूद्भवा–(सं. स्त्री.) जवासा, कपास ।
मरूरा–(हिं. पुं.) देखें 'मरोड़' ।
मरोड़–(हिं. पुं.) मरोड़न की क्रिया या भाव, वह पीड़ा जो आँव आदि के कारण उत्पन्न होती है, एठन, घुमाव, पेट की पीड़ा, गव, अहकार, घमंड, क्रोध, रोष; (मुहा.)–**की वात**–फेरवट की वात-चीत; –**खाना**–कष्ट में पड़ जाना ।
मरोड़ना–(हिं. क्रि. अ., स.) ऐंठना, वल डालना, एठकर खराव करना, पीड़ा उत्पन्न करना, मलना, मसलना, ऐंठकर मार डालना; (मुहा.) **भौंह मरोड़ना**–भौंह चढ़ाना, सैन करना; नाकभौंह सिकोड़ना; **हाथ मरोड़ना**–पछताना ।
मरोड़फली–(हि.स्त्री.) मुर्रा नामक औपधि ।
मरोड़ा–(हिं. पुं.) ऐंठन, उमेठन, पेट की पीड़ा जिसम एठन जान पड़ती है ।
मरोड़ी–(हिं. स्त्री.) एठन, घुमाव, गाँठ, गुत्थी; (मुहा.)–**करना**–खींचा-खींची करना ।
मरोर–(हिं. पुं.) पछतावा, मरोड़ ।
मरोरि–(सं. पुं.) मगर की जाति का एक समुद्री जन्तु ।
मर्क–(सं. पुं.) शरीर, देह, वायु, हवा, वन्दर, शुक्राचार्य के एक पुत्र का नाम ।
मर्कक–(सं. पुं.) मकड़ा, हड़गीला नामक पक्षी ।
मर्कट–(सं. पुं.) वन्दर, मकड़ा, अजमोदा, तड़गीला पक्षी, दोहे का एक भेद, छप्पय छन्द का एक भेद; –**क**–(पुं.) मकड़ा, एक दत्य का नाम; –**पाल**–(पुं.) वन्दरों का राजा, सुग्रीव; –**पिप्पली**–(स्त्री.) अपामार्ग, चिचड़ा; –**प्रिय**–(पुं.) खिरनी का पेड़; –**वास**–(पुं.) मकड़ी का जाला ।
मर्कटी–(सं. स्त्री.) कौंच, केंवाच, अपामार्ग, चिचड़ा, अजमोदा, वँदरी, करंज, मकड़ी, छन्द के नौ प्रत्ययों में से अन्तिम प्रत्यय जिसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छन्द के लघु-गुरु आदि का तथा वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है ।
मर्कत–(सं. पु.) देखें 'मरकत' ।
मर्कर–(सं. पुं.) भृंगराज, भँगरैया ।
मर्करा–(सं. स्त्री.) भुइँहरा, सुरंग, भाण्ड, वरतन, वाँझ स्त्री ।
मर्जी–(हिं. स्त्री.) इच्छा, मरजी ।
मर्तवान–(हि. पुं.) रंग चढ़ाया हुआ मिट्टी का पात्र जिसम अचार, मुरब्बा आदि रखा जाता है, अमृतवान ।
मर्त्य–(सं. पुं.) भूलोक, मनुष्य, शरीर, देह; (वि.) मरणशील; –**ता**–(स्त्री.) मर्त्य या नश्वर का भाव या धर्म; –**त्व**–(पुं.) मर्त्यता; –**धर्म**–(पुं.) मनुष्य का धम; –**भाव**–(पुं.) मनुष्य का स्वभाव, मनुष्यत्व; –**भुवन**–(पुं.) मनुष्य-लोक; –**लोक**–(पुं.) मनुष्य-लोक, पृथ्वी ।
मद–(सं. पुं.) मर्दन, कुचलना, वह जो कूंचा जाय; (फा. पुं.) पुरुष, नर ।
मर्दन–(सं. पुं.) शरीर पर तेल, उवटन आदि मलना, कुचलना, रौंदना, चूण करना, ध्वंस, घोटना, पीसना, मल्ल-युद्ध म एक पहलवान का दूसरे पहलवान की गरदन पर हाथों से घस्सा देना; (वि.) नाश या संहार करनेवाला ।
मर्दना–(हिं. क्रि. स.) मलना, रौंदना, कुचलना, नष्ट करना, उवटन, तेल आदि शरीर पर मलना ।
मर्दल–(सं. पुं.) प्राचीन काल का मृदंग की तरह का एक वाजा ।
मर्दानगी–(फा. स्त्री.) पुरुषत्व, वहादुरी ।
मर्दाना–(फा.वि.) पुरुष-संवंधी, पुरुष का ।
मर्दित–(सं. वि.) नष्ट किया हुआ, चूर्ण किया हुआ, मला हुआ, मसला हुआ ।
मर्म–(सं.पुं.) स्वरूप, रहस्य, तत्त्व, शरीर का सन्धि-स्थान, शरीर में वह कोमल स्थान जहाँ आघात लगने से वहुत पीड़ा होती और कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है, हृदय, संवेद; –**घ्न**–(वि.) ममघातक; –**च्छिद**–(वि.) मर्म को भेदनेवाला; –**ज्ञ**–(वि.) किसी वात का मम या गूढ़ रहस्य जाननेवाला, तत्त्वज्ञ, भेद की वातों को जाननेवाला; –**पारग**–(वि.) देखें 'ममज्ञ'; –**भेदक**–(वि.) हृदय को अधिक कष्ट पहुँचानेवाला; –**भेदन**–(वि., पुं.) मर्मभेदक, अस्त्र; –**भेदी**–(वि.) हृदय को कष्ट पहुँचानेवाला, हार्दिक कष्ट देनेवाला; –**मय**–(वि.) रहस्यपूर्ण; –**वचन**–(पुं.) मर्मभेदी वात, वह वात जिसको सुनन से आन्तरिक कष्ट हो; –**वाक्य**–(पुं.) रहस्य की वात, भेद की अथवा गुप्त वात; –**विद्**–(वि.) मर्मज्ञ, मर्म को जाननवाला; –**स्थान**–(पुं.) शरीर का संवेद-स्थल ।
मर्मर–(सं. पुं.) कपड़े, पत्ते इत्यादि के हिलने से होनेवाला मरमर शब्द ।
मर्मरीक–(सं. वि.) दीन, दुखिया ।
मर्मांतक–(सं.वि.,पुं.) मम को स्पश करने वाला, क्लेश, हृदय में चुभनेवाला दुःख ।
मर्मान्वेषी–(हिं.वि.) गूढ़ रहस्य की खोज करनेवाला ।
मर्मी–(सं. वि.) मर्मविद्, मर्मज्ञ ।
मर्याद–(हिं. स्त्री.) देखें 'मर्यादा', रीति, प्रथा, चाल, विवाह में दिया जानेवाला एक भोज, ज्योनार या वड़हार की रीति ।
मर्यादक–(सं. वि.) माननीय ।
मर्यादा–(सं. स्त्री.) न्याय-पक्ष की स्थिति, धर्म, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा, मान, गौरव, सदाचार, नियम, सीमा, नदी का किनारा ।
मर्यादाबंध–(हिं.पुं.) मर्यादा की रक्षा ।
मर्यादी–(सं.वि.) मर्यादापूर्ण ।
मर्षण–(सं. पुं.) क्षमा, शांति, धैर्य ।
मर्षणीय–(सं. वि.) क्षमा करने योग्य ।
मल–(सं. पुं.) पाप, विष्ठा, पुरीष, कीट, मैल, वात, पित्त, कफ, प्रकृति का दोष, दूषण, विकार, शरीर के अंगों से निकलनेवाला मैल ।
मलकना–(हि. क्रि. अ.) हिलना-डोलना, इतराना ।
मलकरन–(हिं. पुं.) नक्काशी करने का एक अस्त्र ।
मलका–(हि. स्त्री.) सम्राट् की पटरानी ।
मलकाना–(हिं.क्रि.स.) हिलाना-डोलाना, आँख मटकाना ।
मलखंभ, मलखम–(हिं. पुं.) चार-पाँच हाथ लंवा लकड़ी का मोटा डंडा जो भूमि में गाड़ा रहता है अथवा छत में लगा रहता है जिस पर अनेक प्रकार का व्यायाम किया जाता है, इस पर का व्यायाम, लकड़ी का खूँटा जो पत्थर के कोल्हू में लगा होता है ।

मलखाना–(हिं. पुं.) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में रहनेवाली एक राजपूत जाति जो मुसलमानी राज्य में मुसलमान बन गई थी, परन्तु अब हिन्दू हो गई है; (वि.) मल खानेवाला।

मलग–(सं. पुं.) रजक, धोबी।

मलगजा–(हिं.पु.) वसन में लपेटकर तेल या घी में छाने हुए बैंगन के पतले टुकड़।

मलगिरी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हलका कत्थई रंग।

मलघन–(हिं.पुं.) एक प्रकार का कचनार।

मलघ्न–(सं.पुं.) सेमल का मूसल; (वि.) मलनाशक।

मलघ्नी–(सं. स्त्री.) नागदौना।

मलज–(सं.वि.) मल से उत्पन्न; (पुं.) पीव।

मलझन–(हिं.पुं.) एक प्रकार की लता।

मलता–(सं.स्त्री.), **मलत्व**–(सं.पुं.) मैला होने का भाव या अवस्था।

मलदूषित–(सं. वि.) मलिन, मैला।

मलद्वार–(सं. पुं.) शरीर की वे इन्द्रियाँ जिससे मल निकलते हैं, गुदा।

मलधात्री–(सं. स्त्री.) बच्चों का मल-मूत्र धोनेवाली धाय।

मलन–(सं. पुं.) पोतना, लगाना, तंबू।

मलना–(हिं. क्रि. स.) हथेलियों से किसी वस्तु को रगड़ना, ऐंठना, मरोड़ना, मालिश करना, दबाना, मसलना, मींजना, तेल आदि लगाना; (मुहा.) **हाथ मलना**–पछताना।

मलनी–(हिं. स्त्री.) कुम्हार का पात्र चिकनाने का एक उपकरण।

मलबा–(हिं. पुं.) कतवार, कूड़ा-करकट, गिरे हुये घरों की ईंट, पत्थर, चूना आदि।

मलभुज्–(सं. पुं.) मल खानेवाला जन्तु।

मलमल–(हिं. स्त्री.) महीन सूत से बुना हुआ सफेद और पतला कपड़ा।

मलमला–(हिं. पुं.) कुलफ का साग।

मलमलाना–(हिं. क्रि. स.) बारंबार पलकों को खोलना तथा मूँदना, बारंबार आलिंगन करना, पछतावा करना।

मलमा–(हिं. पुं.) देखें 'मलबा'।

मलमास–(सं. पुं.) अधिक मास जो प्रति तीसरे वर्ष होता है, पुरुषोत्तम मास।

मलय–(सं. पुं.) मलाबार प्रदेश का पर्वत, सफेद चन्दन, छप्पय का एक भेद, नन्दन-वन, गरुड़ के एक पुत्र का नाम, मलय देश, यहाँ का रहनेवाला मनुष्य; –**गंधिनी**–(स्त्री.) उमा की एक सखी का नाम; –**गिरि**–(पुं.) मलयाचल पर्वत जो भारत के दक्षिण में है, मलयगिरि में उत्पन्न चन्दन, हिमालय पर्वत के पूर्व का भाग जहाँ आसाम है; –**ज**–(पुं.) चन्दन, राहु; (वि.) जो मलयगिरि पर होता हो।

मलयागिरि–(हिं. पुं.) देखें 'मलयगिरि'।

मलयाचल–(सं. पुं.) मलय पर्वत।

मलयानिल–(सं.पुं.) मलय पर्वत से आनेवाली वायु, वसन्त काल की हवा।

मलयाली–(हिं. वि.) मलाबार देश-संबंधी, मलाबार देश में उत्पन्न; (पुं.) मलाबार का निवासी; (स्त्री.) मलाबार देश की भाषा।

मलयुग–(सं. पुं.) कलियुग।

मलरुचि–(सं.वि.) पापमय चित्त का, पापी।

मलरोधक–(सं. वि.) मल का रुकाव करनेवाला।

मलवा–(हिं. पुं.) बरमा देश में होनेवाला एक वृक्ष।

मलवाना–(हिं. क्रि. स.) मलने का काम दूसरे से कराना।

मलवेग–(सं. पुं.) अतिसार रोग।

मलशुद्धि–(सं. स्त्री.) पेट की शुद्धि।

मलसा–(हिं. पुं.) घी रखने का चमड़े का कुप्पा।

मलसी–(हिं. स्त्री.) मुसलमानों का खाना पकाने का मिट्टी का पात्र।

मलहारक–(सं. वि.) पाप हरनेवाला।

मला–(सं. स्त्री.) भुंइआमला, आमा-हल्दी, चमड़ा, कसकुट, बिच्छू का डंक।

मलाई–(हिं. स्त्री.) दूध की साढ़ी, सार-तत्त्व, रस, हलका बादामी रंग, मलन की क्रिया या भाव, मलने का शुल्क।

मलाका–(सं.स्त्री.) कामिनी स्त्री, वेश्या।

मलाट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का भूरे रंग का घटिया मोटा कागज जो कागज की गड्डियों पर लपेटने के काम में आता है।

मलान–(हिं. वि.) देखें 'म्लान'।

मलानि–(हिं. स्त्री.) देखें 'म्लानि'।

मलापह–(सं.वि.) मल को दूर करनेवाला।

मलायन–(सं. पुं.) मलद्वार, गुदा।

मलार–(हिं.पुं.) एक राग जो बरसात में गाया जाता है; (मुहा.) –**गाना**–प्रसन्न होकर कुछ कहना।

मलारी–(हिं. स्त्री.) वसन्त राग की एक रागिनी।

मलाल–(अ. पुं.) दुःख, विषाद, प्रतिशोध की भावना।

मलावरोध–(सं. पुं.) कब्ज।

मलाशय–(सं. पुं.) आँतों का निचला भाग।

मलाह–(हिं. पुं.) देखें 'मल्लाह'।

मलिंद–(हिं. पुं.) भौंरा।

मलिक्ष, मलिच्छ–(हिं.वि.) देखें 'म्लेच्छ'।

मलित–(हिं. पुं.) सोनार की गहना स्वच्छ करने की कूँची।

मलिन–(सं. पु.) मैली वस्तु, एक प्रकार के साधु जो मैला-कुचैला वस्त्र पहनते हैं, दोष, पाप, मट्ठा, सोहागा, काला अगर, रत्नों की चमक या रंग का फीका होना; (वि.) मैला, मटमैला, धीमा, फीका, उदासीन; –**ता**–(स्त्री.),–**त्व**–(पुं.) कालुष, मैल; –**मुख**– (पुं.) अग्नि, प्रेत, बंदर विशेष; (वि.) खिन्न, जिसका मुख उदास हो।

मलिना–(सं. स्त्री.) रजस्वला स्त्री, लाल खाँड़।

मलिनाई–(हिं.स्त्री.) मलिनता, मैल।

मलिनाना–(हिं. क्रि. अ.) मैला होना।

मलिनीकरण–(सं. पुं.) निर्मल वस्तु को मैला करना।

मलिया–(हिं. स्त्री.) छोटे मुख का मिट्टी का पात्र, चक्कर, घेरा।

मलियामेट–(हिं. पुं.) सत्यानास।

मलिस–(हिं. स्त्री.) सोनारों का छनी की तरह का एक औजार।

मलीन–(हिं. वि.) मैला-कुचैला, उदास।

मलीनता–(हिं. स्त्री.) देखें 'मलिनता'।

मलीमस–(सं. पुं.) पाप, दोष; (वि.) पापयुक्त, मलिन।

मलुफ–(हिं. स्त्री.) उदर, पेट, एक प्रकार का पक्षी।

मलू–(हिं. स्त्री.) मलघ्न नामक पौधा।

मलूक–(सं.पुं.) एक प्रकार का कीड़ा; (वि.) मनोहर, सुन्दर।

मलेक्ष, मलेच्छ–(हिं. वि.) देखें 'म्लेच्छ'।

मल्ल–(सं. पुं.) एक प्राचीन जाति का नाम, (इस जाति के लोग मल्लयुद्ध में बड़े कुशल होते थे। इसी कारण से कुश्ती को मल्लयुद्ध कहते है); पहलवान, पात्र, दीपक, एक वर्णसंकर जाति; –**क**–(पुं.) दन्त, दांत; –**क्रीड़ा**–(स्त्री.) मल्लयुद्ध; –**खंभ**–(पुं.) देखें 'मलखंभ'; –**तरु**–(पुं.) पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़; –**ताल**–(पुं.) संगीत म एक ताल का नाम; –**भू**, –**भूमि**–(स्त्री.) मल्लयुद्ध का स्थान अखाड़ा; –**युद्ध**– (पुं.) बाहु-युद्ध, कुश्ती; –**वाह**–(पुं.) लाल रंग की एक घास; –**विद्या**–(स्त्री.) मल्लयुद्ध की विद्या; –**शाला**–(स्त्री.) मल्लभूमि, अखाड़ा।

मल्ला–(सं. स्त्री.) नारी, स्त्री, चमेली; (हिं. पुं.) जुलाहों का एक औजार।
मल्लार–(सं. पुं.) संगीत शास्त्र के अनुसार एक राग का नाम, मलार।
मल्लारी–(सं. स्त्री.) वसन्त राग की एक रागिनी।
मल्लासुर–(सं. पुं.) एक असुर जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
मल्लाह–(अ. पुं.) केवट, माझी।
मल्लाही–(हिं. वि.) मल्लाह-संबंधी; (स्त्री.) मल्लाह का पेशा, पद, मजूरी आदि।
मल्लिक–(सं. पुं.) भूस्वामी की एक उपाधि, माघ का महीना, जुलाहों की ढरकी।
मल्लिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का वेला जिसको मोतिया भी कहते हैं, एक प्रकार का मिट्टी का पात्र, आठ अक्षरों का एक वर्णिक छन्द, सुमुखी-वृत्त का एक नाम, यूथिका, जूही।
मल्लिकाक्ष–(सं. पुं.) एक प्रकार का हंस।
मल्लिकामोद–(सं. पुं.) संगीत में एक ताल का नाम।
मल्लिगंधि–(सं. पुं.) अगरु, अगर।
मल्लिनी–(सं. स्त्री.) माधवी लता।
मल्ली–(सं. स्त्री.) सुंदरी वृत्त का एक नाम; **–कर**–(पुं.) चोरी करनेवाला, चोर।
मल्लु–(सं. पुं.) भालू, बंदर।
मल्लू–(हिं. पुं.) बंदर।
मल्व–(सं. पुं.) शत्रु।
मल्हनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की नाव जिसका अगला भाग अधिक चौड़ा होता है।
मल्हराना, मल्हारना–(हिं. क्रि. स.) चुमकारना, पुचकारना।
मल्हार–(हिं. पुं.) देखें 'मल्लार'।
मवाद–(अ. पुं.) पीव।
मवास–(हिं. पुं.) आश्रय, शरण, रक्षा-स्थान, दुर्ग।
मवासी–(हिं. स्त्री.) गढ़ी; (पुं.) गढ़-पति, प्रधान पुरुष, मुखिया।
मवेशी–(हिं. पुं.) गाय-बैल आदि, ढोर; **–खाना**–(पुं.) मवेशी रखने का बाड़ा।
मश–(सं. पुं.) क्रोध, मच्छड़।
मशक–(सं. पुं.) मच्छड़, मस्सा नाम का चर्म-रोग।
मशकहरी–(सं. स्त्री.) मसहरी।
मशक्कत–(अ. स्त्री.) श्रम, मेहनत।
मशक्कती–(अ. वि.) मेहनती।
मशहूर–(अ. वि.) प्रसिद्ध, नामी।
मशाल–(अ. स्त्री.) लकड़ी के सिरे पर कपड़ा लपेटकर जलायी जानेवाली दीप-शिखा; **–ची**–(पुं.) मशाल जलानेवाला।
मशीन–(अं. स्त्री.) यंत्र, कल।
मष–(हिं. पुं.) देखें 'मख'।
मषि–(सं. स्त्री.) काजल, सुरमा, स्याही।
मष्ट–(हिं. वि.) जो भूल गया हो, उदासीन, मौन, चुप रहनेवाला; (मुहा.) **–मारना**–मौन धारण करना।
मस–(हिं. स्त्री.) देख 'मसि', रोशनाई, मूंछ निकलने के पहिले ओंठ पर का कालापन; (मुहा.) **मसें भींगना**–मोंछ निकलना आरंभ होना।
मसक–(सं. पुं.) मशक, मच्छड़; (हिं. पुं.) मसकने की क्रिया।
मसकत–(हिं. स्त्री.) परिश्रम।
मसकना–(हिं. क्रि. अ., स.) खिचाव या दबाव के कारण कपड़े का इस प्रकार फटना कि उसकी बुनावट के सूत टूटकर अलग हो जायँ, किसी पदार्थ में दरार पड़ जाना, बलपूर्वक दबाना या मलना, चिन्तित होना, चित्त का मसोसना।
मसकरा–(हिं. वि.) देखें 'मसखरा'।
मसकली–(हिं. स्त्री.) सिकली करने का यंत्र।
मसखरा–(अ. वि.) हँसोड़, मजाकिया।
मसजिद–(अ. स्त्री.) मुसलमानों का पूजास्थान।
मसखवा–(हिं. वि., पुं.) मांसाहारी, माँस खानेवाला।
मसड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
मसनद–(हिं. पुं.) बड़ा तकिया।
मसना–(हिं. क्रि. स.) मसलना, गूंधना।
मसयारा–(हिं. पुं.) मशाल।
मसलना–(हिं. क्रि. स.) हाथ से दबाते हुए रगड़ना, मलना, आटा गूँथना, बल-पूर्वक दबाना।
मसवई–(हिं. स्त्री.) बबूल या किसी अन्य वृक्ष का गोंद।
मसवारा–(हिं. पुं.) प्रसूता स्त्री का प्रसव के एक महीने के बाद का स्नान।
मसवासी–(हिं. पुं.) वह साधु या वैरागी जो एक महीने से अधिक एक स्थान में न रहे, वह स्त्री जो एक महीने से अधिक किसी पुरुष के पास न रहे, गणिका, वेश्या।
मसहरी–(हिं. स्त्री.) छिद्रित या जालीदार कपड़े का बना हुआ परदा जो मच्छरों से बचने के लिये पलंग के चारों ओर लटकाया जाता है, वह पलंग जिसमें ऐसा जालीदार परदा लटकाने के लिये डंडे लगे हों।
मसहार–(हिं. पुं.) मांसाहारी, मांस खानेवाला।
मसा–(हिं. पुं.) शरीर के किसी भाग पर काले रंग का उमड़ा हुआ मांस का काला दाना, बवासीर रोग में गुदा के भीतर या मुंह पर निकलनेवाला मांस का दाना, मच्छड़, मसक।
मसान–(हिं. पुं.) शव को जलाने का स्थान, मरघट, रणभूमि; भूत, प्रेत, पिचाश आदि; (मुहा.) **–जगाना**–तन्त्रोक्त विधि से मरघट में बैठकर मंत्र सिद्ध करना।
मसानिया–(हिं. पुं.) मसान का डोम।
मसानी–(हिं. स्त्री.) मरघट में रहने-वाली डाकिनी, पिशाचिनी आदि।
मसार–(सं. पुं.) नीलमणि, नीलम; (हिं. वि.) स्निग्ध, गीला।
मसाल, मसालची–(हिं. पुं.) देखें 'मशाल', 'मशालची'।
मसाला–(हिं. पुं.) किसी पदार्थ को तैयार करने के लिये आवश्यक सब सामग्री, धनिया, मिर्च, लौंग आदि, साबन, औषधियों का अथवा रासायनिक द्रव्यों का वर्ग।
मसि–(सं. स्त्री.) लिखने की रोशनाई, काजल, कालिख।
मसिक–(सं. पुं.) सर्प का बिल।
मसिधान, मसिधानी–(हिं. पुं., स्त्री.) दावात।
मसिपात्र–(सं. पुं.) देख 'मसिधानी'।
मसिबुंदा–(हिं. पुं.) दिठौना।
मसिमुख–(हिं. वि.) जिसके मुंह में कालिख लगी हो, पापी, कुकर्मी।
मसियर–(हिं. पुं.) मशाल।
मसियाना–(हिं. क्रि. अ.) पूरा हो जाना।
मसियारा–(हिं. पुं.) मशालची।
मसिल–(हिं. पुं.) देख 'मैनसिल'।
मसिबिंदु–(हिं. पुं.) काजल का बुंदा जो कुदृष्टि से बचने के लिये बच्चों के माथे पर लगाया जाता है, दिठौना।
मसी–(हिं. स्त्री.) काली स्याही।
मसीका–(हिं. पुं.) एक माशे का मान।
मसीत, मसीद–(हिं. स्त्री.) मसजिद।
मसीना–(सं. स्त्री.) तीसी।
मसुर–(सं. पुं.) मसूर।
मसू–(हिं. स्त्री.) कठिनता, कठिनाई।
मसूढ़ा–(हिं. पुं.) मुख के भीतर का वह मांस जिसमें दाँत होते हैं।
मसूर–(सं. पुं.) एक प्रकार का चिपटा अन्न जिसकी दाल गुलाबी रंग की होती है।
मसूरा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, मसूर की बनी हुई बरी; (हिं. पुं.) देखें 'मसूढ़ा'।
मसूरिका–(सं. स्त्री.) कुटनी, शीतला रोग, चेचक।
मसूरी–(सं. स्त्री.) मसूरिका, चेचक।

मसूल–(हिं. पुं.) देखें 'महसूल'।
मसूला–(हिं. पुं.) एक प्रकार की पतली लंबी नाव।
मसूसना–(हिं. क्रि. अ.) मसोसना निचोड़ना, ऐंठना, चित्त के किसी उद्वेग को रोकना, मन ही मन कुढ़ना।
मसृण–(सं. वि.) चिकना, कोमल।
मसेवरा–(हिं. वि.) मांस का बना हुआ खाने का पदार्थ।
मसोढ़ा–(हिं. पुं.) सोना, चाँदी आदि गलाने की घरिया।
मसोसना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'मसूसना'।
मस्करा–(हिं. पु.) ठठोल।
मस्करी–(हिं. स्त्री.) हँसी, ठिठोली, मजाक।
मसखरा–(हिं. पुं.) देखें 'मस्करा'।
मस्जिद–(हिं. स्त्री.) देखें 'मसजिद'।
मस्त–(हिं. वि.) नशे में चूर, मतवाला, मत्त, बेफिक्र।
मस्तक–(सं. पुं.) मुण्ड, सिर, माथा।
मस्तरी–(हिं.स्त्री.) धातु गलान की भट्ठी।
मस्ताना–(हिं. वि.) मस्त।
मस्तिष्क–(सं. पुं.) मस्तक के भीतर का गूदा, भेजा।
मस्ती–(हिं. स्त्री.) मस्त होने का भाव, अवस्था आदि।
मस्तूरी–(हिं.स्त्री.) धातु गलाने की भट्ठी।
मस्तूल–(हिं. पुं.) जहाज, नाव आदि के बीच में पाल टाँगने के लिए गाड़ा हुआ लंबा बल्ला।
मस्सा–(हिं. पुं.) देखें 'मसा'।
महँ–(हिं. अव्य.) में।
महँई–(हिं. वि.) देखें 'महान्', भारी; (अव्य.) देखें 'महँ'।
महँक, महँकना–(हिं.स्त्री., क्रि. अ.) देखें 'महक', 'महकना'।
महँगा–(हिं. वि.) अधिक मूल्य पर बिकनेवाला, जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो; –ई–(स्त्री.) देखें 'महँगी'।
महँगी–(हिं. स्त्री.) महँगा होने का भाव, महँगापन, महँगा होने की अवस्था, अकाल, दुर्भिक्ष।
महँड़ा–(हिं. पुं.) भूना हुआ चना।
महंत–(हिं. पुं.) किसी मठ का अधिष्ठाता, साधुओं का मुखिया; (वि.) श्रेष्ठ, प्रधान।
महंती–(हिं.स्त्री.) महंत का भाव या पद।
महँदी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मेहँदी'।
मह–(हिं.अव्य.) देखें 'महँ'; (सं.पुं.) उत्सव, यज्ञ, भैंस; (हिं.वि.) महत्, बड़ा; अधिक।
महक–(हिं. स्त्री.) गन्ध, वास; –दार–(वि.) जिसमें महक हो, महकनेवाला।
महकना–(हिं. क्रि. अ.) गन्ध निकलना।
महकान–(हिं. स्त्री.) देखें 'महक'।
महकाली–(हिं. स्त्री.) पार्वती।
महकीला–(हिं.वि.) सुगन्धित, महकदार।
महचक्र–(हि. पुं.) सूर्य।
महज–(अ. वि.) निरा, केवल।
महजित–(हिं. स्त्री.) देखें 'मसजिद'।
महण–(हिं. पुं.) समुद्र।
महत–(हिं. पुं.) देख 'महत्त्व'।
महतवान–(हिं. पुं.) करघे के पीछे की ओर लगी हुई खूँटी।
महता–(हिं. पुं.) सरदार, गाँव का मुखिया, मुंशी; (स्त्री.) गर्व, अभिमान।
महतारी–(हिं. स्त्री.) माता, मा।
महती–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की वीन, नारद की वीणा का नाम, महत्त्व, महिमा, योनि का एक रोग, वैश्यों की एक जाति; –द्वादशी–(स्त्री.) भाद्रपद शुक्ला द्वादशी, (यदि उस दिन श्रवण नक्षत्र पड़ता हो।)
महतु–(हिं. पुं.) देख 'महत्त्व'।
महतो–(हिं. पुं.) गयावाल पंडों की एक उपाधि, सरदार, चौधरी।
महत्–(सं. वि.) बृहत्, विपुल, विस्तीर्ण, सर्वश्रेष्ठ; (पुं.) दर्शन के अनुसार प्रकृति का पहला विकार जिससे जगत् की उत्पत्ति हुई है, राज्य, ब्रह्म, जल।
महत्कथ–(सं. वि.) चापलूस।
महत्तत्त्व–(सं. पुं.) सांख्य के अनुसार चौबीस तत्त्वों में से दूसरा तत्त्व, बुद्धि-तत्त्व, जीवात्मा।
महत्तम–(सं. वि.) सब से बड़ा या श्रेष्ठ।
महत्तर–(सं. वि.) दो पदार्थों आदि में बड़ा या श्रेष्ठ।
महत्त्व–(सं. पुं.) श्रेष्ठता, उत्तमता, अधिकता, बड़प्पन।
महदाशा–(सं. स्त्री.) ऊँची आकांक्षा।
महद्गत–(सं. वि.) जिसने श्रेष्ठ पुरुष का आश्रय लिया हो।
महद्भय–(सं.पुं.) अधिक भय या डर।
महन–(हिं. पुं.) देखें 'मथन'।
महना–(हिं. क्रि. स.) दही-दूध आदि को मथना; (पुं.) मथानी, रई।
महनिया–(हिं. पुं.) मथनेवाला।
महनु–(हिं. पुं.) नाश करनेवाला, मथन करनेवाला।
महमंत–(हिं. वि.) मदोन्मत्त, मस्त।
महमदी–(हिं. वि., पुं.) मुहम्मद के मत का अनुयायी, मुसलमान।
महमह–(हिं. अव्य.) सुगन्ध देते हुए।
महमहण–(हिं. पुं.) विष्णु।
महमहा–(हिं. वि.) सुगन्धित।
महमहाना–(हिं.क्रि.अ.) सुगन्ध देना, महकना।
महमानी–(हिं. स्त्री.) पहुनई।
महमाय–(हिं. स्त्री.) पार्वती।
महर–(हिं. पुं.) एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज में बोला जाता है, (इसका व्यवहार विशेष करके भूस्वामी और वैश्यों के लिय किया जाता है), एक प्रकार की चिड़िया; (वि.) सुगन्धित, देखें 'महरा'।
महरबान–(हिं. पुं.) कृपा करनेवाला।
महरा–(हिं. पुं.) कहार, सरदार, श्वसुर के लिये आदरसूचक शब्द; (वि.) श्रेष्ठ, बड़ा; –ई–(स्त्री.) श्रेष्ठता, प्रधानता।
महराज–(हिं. पुं.) देखें 'महाराज'।
महराजा–(हिं. पुं.) देखें 'महाराज'।
महराना–(हिं.पुं.) महरों के रहने का स्थान।
महराव–(हिं. स्त्री.) मसजिद आदि की ऊपर की वृत्ताकार रचना।
महरि–(हिं. स्त्री.) ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिय व्यवहार किये जाने का आदरसूचक शब्द, घर की स्वामिनी, एक प्रकार का पक्षी।
महरी–(हिं.स्त्री.) ग्वालिन नामक चिड़िया।
महरू–(हिं. पुं.) चंडू पीने की नली, एक प्रकार का वृक्ष।
महरेटा–(हिं.पुं.) श्रीकृष्ण, महर का बेटा।
महरेटी–(हिं. स्त्री.) राधिका, महर की लड़की।
महर्घता–(सं. स्त्री.) महँगा होने का भाव, महँगी, महार्घता।
महर्लोक–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार ऊपर के सात लोकों में से एक लोक।
महर्षभ–(सं. पुं.) बड़ा साँड़; (वि.) महान्, श्रेष्ठ।
महर्षि–(सं. पुं.) अति श्रेष्ठ ऋषि, ऋषीश्वर, संगीत में एक राग का नाम।
महल्ल–(सं. पुं.) वृद्ध मनुष्य, खोजा।
महल्लक–(सं. पुं.) अन्तःपुर का रक्षक।
महस्–(सं. पुं.) यज्ञ, आनन्द, जल; (वि.) पूज्यमान्, बड़ा, महत्।
महा–(हिं. अव्य.) देख 'मह'; (सं. वि.) अत्यंत, बहुत, अधिक, सर्वश्रेष्ठ, सबसे बढ़कर, बहुत बड़ा, भारी; (हिं. पुं.) मठा, छाछ।
महाई–(हिं. स्त्री.) मथने का काम, मथने का भाव, मथने का शुल्क।

महाउत–(हि. पुं.) देखें 'महावत'।
महाउर–(हि. पुं.) देखें 'महावर'।
महाकंबु–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महाकच्छ–(सं. पुं.) समुद्र, वरुण, पर्वत।
महाकपाल–(सं. पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम।
महाकपोल–(सं.पुं.) शिव का एक अनुचर।
महाकर–(सं. पुं.) लंबा हाथ, अधिक लगान; (वि.) बड़े हाथोंवाला, रश्मिवान्।
महाकरुण–(सं. वि.) अति दयालु।
महाकर्ण–(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) जिसके बड़े-बड़े कान हों।
महाकर्णा–(सं. स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
महाकल्प–(सं. पुं.) शिव, महादेव, उतना काल जितने में एक ब्रह्मा का आयुष्य पूरा होता है।
महाकांत–(सं. वि.) बहुत सुन्दर।
महाकांता–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
महाकाय–(सं. पुं.) शिव का द्वारपाल, नन्दी, हाथी, बड़ा शरीर; (वि.) बड़े शरीरवाला।
महाकारण–(सं. पुं.) सब कर्मो का कारण, परमेश्वर।
महाकाल–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महाकाली–(सं. स्त्री.) महाकाल की पत्नी, दुर्गा की एक मूर्ति का नाम, शक्ति की एक अनुचरी।
महाकाव्य–(सं. पुं.) छंदोबद्ध वह बड़ा काव्य जिसमें आठ या उससे अधिक सर्ग हों, जिसमें शृंगार, वीर, शान्त, हास्य, करुण, वीभत्स आदि रसों का अंगभूत वर्णन हो तथा जिसमें किसी ऐतिहासिक घटना अथवा किसी महात्मा का चरित्र और उसके सामाजिक कृत्यों के मुख्य वर्णन के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य, ऋतुओं आदि का विशद वर्णन हो।
महाकुमार–(सं. पुं.) युवराज।
महाकृच्छ्र–(सं.पुं.) विष्णु का एक नाम।
महाकेतु, महाकेश–(सं.पुं.) शिव, महादेव।
महाक्रतु–(सं. पुं.) राजसूय, अश्वमेध आदि बड़ा यज्ञ।
महाक्रम–(सं. पुं.) विष्णु, महादेव।
महाखर्व–(सं. पुं.) सौ खर्व की संख्या।
महाखात–(सं. पुं.) लंबा-चौड़ा गड्ढा।
महाख्यात–(सं. वि.) अति प्रसिद्ध।
महागंध–(सं. पुं.) कुटज, हरिचन्दन; (वि.) सुगन्धपूर्ण।
महागद–(सं. पुं.) कोई बड़ा रोग।
महागर्भ–(सं.पुं.) शिव, एक दानव का नाम
महागव–(सं. पुं.) गवय, गाय के समान एक पशु जिसके गले में झालर न हो।
महागुनी–(हि. पुं.) देखें 'महोगनी'।
महागौरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम।
महाग्रीव–(सं. पुं.) ऊँट, शिव, महादेव।
महाघोर–(सं. वि.) अति भयानक।
महाचंड–(सं. पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम।
महाचक्र–(सं. पुं.) बड़ा चक्र, भवचक्र।
महाचपला–(सं. स्त्री.) आर्या छन्द का एक भेद।
महाचित्ता–(सं.स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।
महाजन–(सं. पुं.) साधु, श्रेष्ठ पुरुष, धनी, रुपये-पैसे का लेन-देन करनेवाला, भद्र पुरुष साहूकार, बनिया, कोठीवाल।
महाजनी–(हिं. स्त्री.) रुपये के लेन-देन का व्यवसाय, हुंडी-पुरजे का काम, महाजनों के यहाँ बही-खाता लिखने की एक लिपि जिसमें मात्राएँ आदि नहीं लगायी जातीं, मुड़िया अक्षर।
महाजल–(सं. पुं.) समुद्र।
महाजाति–(सं. स्त्री.) श्रेष्ठ वर्ण।
महाजानु–(सं.पुं.) शिव के एक अनुचर।
महाजिह्व–(सं.पुं.) एक असुर, शिव।
महाज्ञान–(सं. पुं.) परम ज्ञान।
महाज्वाला–(सं. स्त्री.) धधकती ज्वाला, जिस अग्नि में धधकती ज्वाला हो।
महाढ्य–(सं.वि.) अति धनवान्, बड़ा धनी।
महातंक–(सं. पुं.) बड़ी व्याधि।
महातत्त्व–(सं. पुं.) ज्ञानतत्व।
महातत्त्वा–(सं.स्त्री.) दुर्गा की अनुचरी।
महातप(पा)–(हिं., सं.पुं.) कठिन तपस्या, विष्णु।
महातपन–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
महातम–(हि. पुं.) देखें 'माहात्म्य'।
महातल–(सं. पुं.) चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भुवन या तल।
महातिक्त–(सं. पुं.) बकायन का वृक्ष, चिरायता।
महातीक्ष्ण–(सं.वि.) बहुत तीखा या कड़वा।
महातेजा–(सं. पुं.) पारा, अग्नि, शिव, कार्तिकेय; (वि.) बड़ा प्रतापवान्।
महात्मा–(हिं. पुं.) वह जिसकी आत्मा का आशय बहुत ऊँचा हो, महानुभाव, परमात्मा, शिव, महादेव, बहुत बड़ा साधु, संन्यासी या विरक्त।
महात्यय–(सं.पुं.) घोर विपत्ति, सर्व-नाश।
महात्यागी–(हिं. वि.) जिसने संसार का माया-मोह आदि बिलकुल छोड़ दिया हो।
महादंड–(सं.पुं.) यम के हाथों का बड़ा दण्ड।
महादंत–(हि. पुं.) हाथी का दाँत, शिव, महादेव।
महादान–(सं. पुं.) वे बड़े दान जिनके करने से अनन्त स्वर्ग की प्राप्ति होती है, (प्रधान महादान—सोना, सोने का घोड़ा, तिल, गाय, दासी, रथ, पृथ्वी, घर, कन्या और कपिला गाय का दान है।)
महादूत–(सं. पुं.) यमदूत।
महादेव–(सं.पुं.) शिव, (अष्टमूर्ति के अन्तर्गत यह सोम-मूर्ति तथा ब्रह्मस्वरूप है।)
महादेवी–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम, राजा की प्रधान रानी या पटरानी।
महाद्युति–(सं. स्त्री.) चमकीला प्रकाश।
महाद्रुम–(सं. पुं.) ताल-वृक्ष, ताड़ का पेड़।
महद्रोण–(सं.पुं.) शिव, महादेव, सुमेरु पर्वत।
महाद्रोणा–(सं. स्त्री.) द्रोणपुष्पी।
महाद्वीप–(सं. पुं.) पृथ्वी का वह बड़ा भाग जो चारों ओर प्राकृतिक सीमाओं से घिरा हो, जिसमें अनेक देश हों और अनेक जातियाँ वास करती हों।
महाधन–(सं. वि.) बहुमूल्य, बहुत धनी; (पुं.) सुवर्ण, सोना, खेती, सुगन्ध, धूप।
महाध्वनि–(सं. पुं.) बड़े जोर का शब्द।
महानंद–(सं. पुं.) मुक्ति, मोक्ष, अति प्रसन्नता, मगध देश के एक प्रतापी राजा का नाम, दस अंगुल की बाँसुरी।
महानंदा–(सं. स्त्री.) सुरा, माघ शुक्ला नवमी।
महानग्न–(सं. वि.) जिसके शरीर पर वस्त्र न हो।
महानट–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महानरक–(सं. पुं.) अत्यन्त यातनापूर्ण नरक।
महानल–(सं. पुं.) भयंकर आग।
महानवमी–(सं. स्त्री.) आश्विन शुक्ला नवमी।
महानस–(सं. पुं.) पाकशाला।
महानाटक–(सं. पुं.) दस अंकों का नाटक।
महानाडी–(सं. स्त्री.) मोटी नस।
महानाद–(सं. पुं.) गज, हाथी, सिंह, ऊँट, शंख, बड़ा ढोल, शिव, महादेव, बरसनेवाला बादल, जोर का शब्द।
महानाभ–(सं.पुं.) हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार का मन्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए अस्त्र व्यर्थ हो जाते हैं।
महानारायण–(सं. पुं.) विष्णु।
महानास–(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) बड़ी नाकवाला।
महानिद्रा–(सं. स्त्री.) मृत्यु, मरण।
महानिधान–(सं. पुं.) बुभुक्षित धातुभेदी

पारा जिसको "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते हैं।
महानिंब–(सं. पुं.) बकायन का वृक्ष।
महानियम–(सं. पुं.) विष्णु।
महानिरय–(सं.पुं.) एक नरक का नाम।
महानिर्वाण–(सं. पुं.) पूर्ण निर्वाण जिसके अधिकारी केवल अर्हत या बुद्ध गण माने जाते हैं।
महानिशा–(सं. स्त्री.) रात्रि का मध्य भाग, आधी रात, प्रलय की रात्रि।
महानील–(सं. पुं.) भृंगराज पक्षी, एक प्रकार का नीलम, एक प्रकार का सर्प, सब से बड़ी संख्या।
महानुभाव–(सं.पुं.) महाशय, कोई बड़ा आदरणीय व्यक्ति, बड़ा आदमी; **–ता**–(स्त्री.) महानुभाव होने का भाव, बड़प्पन।
महानुराग–(सं.पुं.) ऐकान्तिक प्रेम।
महानेत्र–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महानेमि–(सं. पुं.) काक, कौवा।
महान्–(सं. वि.) महा, बहुत बड़ा।
महान्वय–(सं. वि.) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो।
महापक्षी–(सं. पुं.) उल्लू, गरुड़।
महापत्र–(सं. पुं.) सागौन का वृक्ष।
महापथ–(सं. पुं.) प्रधान पथ, राजपथ, बहुत लंबा-चौड़ा मार्ग, मृत्युपथ, परलोक-मार्ग, शिव, महादेव, सुषुम्ना नाड़ी, एक नरक का नाम।
महापद्म–(सं. पुं.) एक नाग का नाम, कुबेर की नौ निधियों में से एक, सौ पद्म की संख्या, सफेद कमल, दक्षिण दिशा का दिग्गज, एक नरक का नाम, नन्द राजा के एक पुत्र का नाम।
महापद्य–(सं. पुं.) महाकाव्य।
महापवित्र–(सं. वि.) अति पवित्र।
महापात–(सं. पुं.) तीर का दूर गिरना।
महापातक–(सं. पुं.) पाँच सब से बड़े पाप, यथा–ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय (चोरी), गुरुपत्नी के साथ व्यभिचार करना तथा इन पापाचारियों के साथ संसर्ग।
महापातकी–(सं. वि., पुं.) महापातक करनेवाला।
महापात्र–(सं. पुं.) प्रधान मन्त्री, कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक-कर्म का दान लेता है।
महापाद–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महापाश–(सं. पुं.) यमदूत विशेष।
महापुत्र–(सं. पुं.) पौत्र, पोता।
महापुरी–(सं. स्त्री.) राजधानी।
महापुरुष–(सं. पुं.) नारायण, भगवान्, महात्मा, महानुभाव, श्रेष्ठ मनुष्य।
महापुष्प–(सं.पुं.) लाल कनेर, काली मूँग।
महापूजा–(सं.स्त्री.) दुर्गा-नवरात्र की पूजा।
महापूत–(सं. वि.) अति पवित्र।
महापृष्ठ–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट; (वि.) चौड़ी पीठ का।
महाप्रकाश–(सं. पुं.) अवतार आदि का आविर्भाव।
महाप्रजापति–(सं. पुं.) विष्णु।
महाप्रताप–(सं.वि.) अत्यन्त प्रभावशाली।
महाप्रभ–(सं.वि.) जिसमें बहुत चमक हो।
महाप्रभाव–(सं. वि.) अति बलवान्।
महाप्रभु–(सं. पुं.) परमेश्वर, चैतन्य, वल्लभाचार्य की पदवी, राजा, इन्द्र, शिव, विष्णु, संन्यासी या साधु, वैष्णव, आचार्य चैतन्य की एक आदरसूचक पदवी।
महाप्रलय–(सं. पुं.) त्रैलोक्य का नाश या संहार जो ब्रह्मा के एक दिन बीतने पर होता है।
महाप्रसाद–(सं. पुं.) विष्णु का नैवेद्य, जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात; मांस, अखाद्य पदार्थ, अधिक प्रसन्नता।
महाप्रसूत–(सं. पुं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।
महाप्रस्थान–(सं. पुं.) शरीर त्यागने की इच्छा से हिमालय की ओर जाना, मृत्यु, मरण।
महाप्राज्ञ–(सं. वि.) परम ज्ञानी।
महाप्राण–(सं.पुं.) काला कौवा, व्याकरण में–ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स और ह–इन वर्णों का नाम; (वि.) बहुत बलवान्।
महाफल–(सं. पुं.) बेल का वृक्ष, नारियल का पेड़, बड़ा फल।
महाफला–(सं. स्त्री.) इन्द्रवारुणी, बड़ा जामुन, नील का पौधा।
महाबंध–(सं. पुं.) योग की एक क्रिया।
महाबल–(सं. पुं.) सीसा धातु, पितरों के एक गण का नाम, वायु, शिव के एक अनुचर का नाम; (वि.) अत्यन्त बलवान्।
महाबला–(सं. स्त्री.) पीली सहदेई, पीपल, नील का पौधा, बब का पेड़, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
महाबली–(हिं. वि.) बहुत बड़ा बलवान्।
महाबाहु–(सं. वि.) लंबी भुजाओंवाला, बलवान्; (पुं.) विष्णु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
महाबुद्धि–(सं. वि.) तीव्र बुद्धिवाला।
महाबोधि–(सं. पुं.) बुद्धदेव।
महाब्राह्मण–(सं.पुं.) देखें 'महापात्र', वह ब्राह्मण जो मृतक-कृत्य का दान लेता है।
महाभट–(सं. पुं.) बहुत बड़ा योद्धा।
महाभाग–(सं. वि.) अति भाग्यवान्, सौभाग्यशाली, महात्मा।
महाभागवत–(सं. पुं.) परम वैष्णव, एक उपपुराण का नाम, छब्बीस मात्राओं का एक छन्द, बारह महाभक्त; यथा–मनु, सनकादि, नारद, जनक, कपिल, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शंभु।
महाभागी–(सं. वि.) भाग्यवान्।
महाभार–(सं. पुं.) भारी बोझा।
महाभारत–(सं. पुं.) व्यासप्रणीत अठारह पर्वों का एक प्राचीन एतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों तथा पांडवों के युद्ध का वर्णन है; कौरव-पाण्डवों का युद्ध, कोई महा-युद्ध।
महाभाष्य–(सं. पुं.) पाणिनि व्याकरण के सूत्रों का विस्तृत भाष्य जिसको पतंजलि ने लिखा है।
महाभासुर–(सं. पुं.) विष्णु; (वि.) अधिक चमकनेवाला।
महाभिमान–(सं. पुं.) अत्यधिक घमंड।
महाभीत–(सं. वि.) बहुत डरपोक।
महाभीम–(सं. पुं.) राजा शान्तनु का एक नाम।
महाभीरु–(सं. वि.) अत्यन्त डरपोक।
महाभुज–(सं.वि.) जिसकी बाँहें लंबी हों।
महाभूत–(सं. पुं.) पंचतत्व; यथा–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।
महाभूषण–(सं. पु.) मूल्यवान् अलंकार।
महाभैरव–(सं. पुं.) शरभरूपी शिव।
महाभैरवी–(सं. स्त्री.) तान्त्रिकों के अनुसार एक विद्या का नाम।
महाभोग–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम।
महाभोगी–(सं. पुं.) बड़े फनवाला सर्प।
महाभ्र–(सं. पुं.) घन मेघ, गहरी घटा।
महामंत्र–(सं. पुं.) बीज-मन्त्र, इष्ट मन्त्र, बड़ा प्रभावशाली मन्त्र।
महामंत्री–(सं.पुं.) राजा का प्रधान मन्त्री।
महामख–(सं. पुं.) बड़ा यज्ञ।
महामणि–(सं. पुं.) मूल्यवान् रत्न।
महामति–(सं. वि.) अति बुद्धिमान्, चतुर; (पुं.) गणेश, बृहस्पति, यक्षराज।
महामति–(सं. वि.) बहुत बुद्धिमान्।
महामद–(सं. पुं.) मस्त हाथी; (वि.) बहुत प्रसन्न।
महामह–(सं. पुं.) बड़ा उत्सव।
महामहोपाध्याय–(सं. पुं.) श्रेष्ठ पण्डित, गुरुओं का गुरु, एक उपाधि जो संस्कृत भाषा के विद्वानों या पण्डितों को

दी जाती है।
महामांस–(सं. पुं.) मनुष्य के शरीर का मांस; (गाय, हाथी, घोड़ी, भैंस, वराह, ऊँट तथा उरग का) मांस।
महामांसी–(सं. स्त्री.) संजीवनी नाम का पौधा।
महामाई–(हिं. स्त्री.) दुर्गा, काली।
महामात्य–(सं. पुं.) राजा का प्रधान या सब से बड़ा मन्त्री।
महामात्र–(सं. वि.) प्रधान, श्रेष्ठ, सम्पन्न, धनवान्; (पुं.) प्रधान मन्त्री।
महामानी–(सं. वि.) बहुत घमंडी।
महामाया–(सं.पुं.) शिव, विष्णु, विद्याधर का एक भेद; (स्त्री.) गंगा, बुद्धदेव की माता का नाम, दुर्गा, आर्या छन्द का एक भेद।
महामारी–(सं. स्त्री.) महाकाली, वह संक्रामक और भीषण रोग जिससे एक साथ बहुत से मनुष्यों की मृत्यु होती है।
महामाल–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महामालिका–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं।
महामालिनी–(सं. स्त्री.) नाराच छन्द का एक नाम।
महामाष–(सं.पुं.) राजमाष, बड़ा उड़द।
महामुख–(सं. पुं.) महादेव, नदी का मुहाना; (वि.) बड़े मुखवाला।
महामुनि–(सं.पुं.) अगस्त्य मुनि, कृपाचार्य, बुद्ध, वेदव्यास।
महामूढ़, महामूर्ख–(सं. वि.) निपट मूर्ख।
महामूर्ति–(सं. पुं.) विष्णु।
महामृग–(सं. पुं.) हाथी, सिंह शेर।
महामृत्युंजय–(सं. पुं.) शिव का एक मन्त्र विशेष।
महामृत्यु–(सं. पुं.) यम, शिव।
महामेघ–(सं. पुं.) काली घटा।
महामेद–(सं. पुं.) अष्टवर्ग की एक प्रसिद्ध औषधि।
महामेदा–(सं.स्त्री.) महामेद नामक जड़ी।
महामैत्री–(सं. स्त्री.) गाढ़ी मित्रता।
महामोदकारी–(सं. पुं.) एक वर्णिक वृत्त, (इसको क्रीड़ाचक्र भी कहते हैं।)
महामोह–(सं.पुं.) सांसारिक सुखों का भोग।
महामोहा–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम।
महाय–(हिं. वि.) देखें 'महा', बहुत।
महायक्ष–(सं. पुं.) यक्षपति, एक प्रकार के बौद्ध देवता।
महायज्ञ–(सं.पुं.) वेदपाठ, हवन, अतिथि-पूजा, तर्पण और बलि–ये पाँच महायज्ञ कहलाते हैं।
महायमक–(सं. पुं.) श्लोक का एक भेद जिसके प्रत्येक पाद में एकसी शब्दात्मक आवृत्ति की जाती है परन्तु अर्थ में भेद रहता है।
महायशा–(सं. वि.) बड़ा यशस्वी।
महायात्रा–(सं.स्त्री.) महा तीर्थयात्रा, मृत्यु।
महायान–(सं.पुं.) एक विद्याधर का नाम, बड़ी बैलगाड़ी, बौद्धों का एक विशेष सम्प्रदाय।
महायुग–(सं. पुं.) सत्य, त्रेता, द्वापर तथा कलि–इन चारों युगों का समूह।
महायुत–(सं.पुं.) सौ अयुत की संख्या का नाम।
महायुध–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महायोगी–(सं.पुं.) श्रेष्ठ योगी, विष्णु, शिव।
महायौगिक–(सं. पुं.) उनतीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महार्घ्य–(सं. वि.) पूजने योग्य।
महारक्त–(सं. पुं.) प्रवाल, मूँगा।
महारजत–(सं.पुं.) सुवर्ण, सोना, धतूरा।
महारण–(सं.पुं.) महायुद्ध, व्यापक लड़ाई।
महारण्य–(सं.पुं.) बड़ा जंगल।
महारथ–(सं. पुं.) शिव, बड़ा योद्धा।
महारथी–(सं. पुं.) देखें 'महारथ'।
महारव–(सं. पुं.) भेक, मेढक।
महारस–(सं.पुं.) पारा, हिंगुल, अभ्रक; (वि.) जिसमें बहुत रस हो।
महाराज–(सं. पुं.) राजाओं में श्रेष्ठ, बहुत बड़ा राजा, (ब्राह्मण, गुरु, आचार्य या किसी पूज्य) के लिये संबोधन।
महाराजाधिराज–(सं. पुं.) बहुत बड़ा राजा, अनेक राजाओं में श्रेष्ठ।
महाराज्ञी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, महारानी।
महाराज्य–(सं. पुं.) बहुत बड़ा राज्य।
महाराणा–(सं. पुं.) उदयपुर या चित्तौड़ के राजवंश की एक उपाधि।
महारात्रि–(सं. स्त्री.) महाप्रलय की रात्रि जब ब्रह्मा का लय हो जाता है और दूसरा महाकल्प आरंभ होता है; दुर्गा, तांत्रिकों के अनुसार ठीक आधी रात बीतने पर दो मुहूर्त्तों का समय, आश्विन शुक्ला अष्टमी।
महारावण–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाय थीं।
महारावल–(हिं.पुं.) राजपूताना, जैसलपुर और डूँगरपुर के राजवंशों की उपाधि।
महाराष्ट्र–(सं. पुं.) भारतवर्ष के दक्षिण का एक विस्तीर्ण जनपद, इस देश में रहनेवाला, बड़ा राष्ट्र या राज्य।
महाराष्ट्री–(सं. स्त्री.) जलपिप्पली, एक प्रकार का शाक, अठारह प्रकार की प्राकृत भाषाओं में एक, आधुनिक महाराष्ट्र देश की भाषा, मराठी।
महारुजा–(सं.स्त्री.) घोर पीड़ा या दुःख।
महारुद्र–(सं.पुं.) महादेव।
महारूप–(सं. पुं.) महादेव; (वि.) बहुत रूपवान्।
महारोग–(सं. पुं.) असाध्य व्याधि या रोग।
महारौद्र–(सं. पुं.) शिव, महादेव, बाइस मात्राओं का एक छन्द।
महारौद्री–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम।
महारौरव–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
महार्घ–(सं. वि.) बहुमूल्य।
महार्घता–(सं.स्त्री.) महार्घ होने का भाव।
महार्णव–(सं. पुं.) बड़ा समुद्र, शिव, महादेव, एक दैत्य का नाम।
महार्थक–(सं. वि.) अधिक मूल्य का।
महार्बुद–(सं. पुं.) सौ करोड़ या दस अर्बुद की संख्या।
महार्ह–(सं. वि.) बहुमूल्य, योग्य।
महालक्ष्मी–(सं.स्त्री.) लक्ष्मी, नारायण की शक्ति, राधा, एक वर्णिक वृत्त का नाम।
महालय–(सं.पुं.) पितृपक्ष, आश्विन का कृष्ण पक्ष जिसमें पितरों के लिये तर्पण, श्राद्ध आदि किये जाते हैं, बड़ा मकान।
महालया–(सं. स्त्री.) आश्विन कृष्ण अमावस्या–जिस दिन पितरों के लिये पार्वण श्राद्ध आदि किये जाते हैं।
महालस–(सं. वि., पुं.) बहुत आलसी (व्यक्ति)।
महालिंग–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महालोभ–(सं. पुं.) काक, कौवा; (वि.) बहुत लालची।
महालोल–(सं. वि.) अत्यन्त चंचल।
महावट–(हिं.स्त्री.) माघ-पूस की वर्षा।
महावत–(हिं. पुं.) हाथी हाँकनेवाला।
महावतारी–(सं. पुं.) पचीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महावन–(सं. पुं.) घोर जंगल।
महावर–(हिं.पुं.) लाख से बना हुआ एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने पर रँगती हैं।
म(मु)हावरा–(हिं.पुं.) लाक्षणिक शब्द-योजना।
म(मु)हावरेदार–(हिं.वि.) महावरायुक्त।
महावल्क–(सं. पुं.) जायफल का पेड़।
महावल्ली–(सं. स्त्री.) माधवी लता।
महावसु–(सं. वि.) बड़ा धनी।
महावात, महावायु–(सं.पुं.) प्रचण्ड वायु।
महावारुणी–(सं. स्त्री.) गंगा-स्नान का एक योग, (चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन

जब शनिवार और शतभिषा नक्षत्र रहता है तब यह योग होता है।
महावाहन–(सं. पुं.) बहुत बड़ी सवारी या वाहन।
महाविक्रम–(सं. वि.) बड़ा प्रतापवान्।
महाविज्ञ–(सं. वि.) बड़ा ज्ञानवान्।
महाविद्या–(सं. स्त्री.) तन्त्र में मानी हुई दस देवियाँ जिनके नाम–काली, तारा, षोड़षी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका हैं। ये सिद्ध-विद्या भी कहलाती हैं।
महाविपुला–(सं. स्त्री.) आर्या छन्द का एक भेद।
महाविभूति–(सं. वि.) ऐश्वर्यवान्, बहुत धनाढ्य।
महाविराज–(सं. पुं.) महादेव, विष्णु।
महाविशिष्ट–(सं. वि.) अति प्रसिद्ध।
महाविहंगम–(सं. पुं.) गरुड़।
महावीचि–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
महावीज–(सं. पुं.) चिरौंजी का वृक्ष।
महावीर–(सं. पुं.) गरुड़, सिंह, जैनियों के अंतिम तीर्थंकर, वज्र, कोकिल, कनेर का वृक्ष, हनुमानजी।
महावीर्य–(सं. पुं.) ब्रह्मा, बुद्धदेव; (वि.) बहुत बलवान्।
महावृक्ष–(सं.पुं.) ताड़ का पेड़, करंज वृक्ष।
महावेग–(सं.पुं.) शिव, महादेव, गरुड़, बंदर।
महावैर–(सं. पुं.) घोर शत्रुता।
महाव्याहृति–(सं. स्त्री.) प्रणव और स्वाहा युक्त तीन व्याहृतियाँ,–"ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा।"
महाव्रत–(सं. पुं.) बारह वर्ष तक चलनेवाला व्रत, आश्विन की दुर्गा-पूजा।
महाव्रीहि–(सं. पुं.) साठी धान।
महाशंख–(सं. पुं.) एक बहुत बड़ी संख्या जो दस शंख की होती है, कुबेर की नौ निधियों में से एक।
महाशक्ति–(सं. पुं.) कार्तिकेय, शिव, महादेव; (स्त्री.) असीम शक्ति; (वि.) बड़ा बलवान्।
महाशठ–(सं. वि.) अति दुष्ट, बड़ा धूर्त।
महाशब्द–(सं. पुं.) भयानक शब्द।
महाशय–(सं. वि., पुं.) (स्त्री. महाशया) महानुभाव, उच्च आशयवाला, सज्जन, समुद्र।
महाशय्या–(सं. स्त्री.) राजाओं की शय्या या सिंहासन।
महाशांति–(सं. स्त्री.) [illegible] दूर करने के लिए [illegible] का अनुष्ठान।
महाशालि–(सं. पुं.) उत्तम धान।
महाशालीन–(सं. वि.) अति [illegible], बड़ा नम्र।

महाशिला–(सं.स्त्री.) एक शस्त्र का नाम।
महाशीर्ष–(सं. पुं.) शिव का एक अनुचर।
महाशुक्ति–(सं. स्त्री.) बड़ी सीप, वह सीप जिससे मोती निकलती है।
महाशुक्ला–(सं. स्त्री.) सरस्वती।
महाशून्य–(सं. पुं.) आकाश।
महाश्रय–(सं. पुं.) अखरोट का पेड़।
महाश्व–(सं. पुं.) बड़ा तथा सुन्दर घोड़ा।
महाश्वेता–(सं. स्त्री.) सरस्वती, दुर्गा।
महाषष्ठी–(सं. स्त्री.) दुर्गा जो बालक की रक्षा करती है।
महाष्टमी–(सं. स्त्री.) आश्विन शुक्ला अष्टमी।
महासंस्कारी–(सं. स्त्री.) सत्रह मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महासतोमुखा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
महासत्त्व–(सं. पुं.) एक बोधिसत्त्व का नाम, शाक्य मुनि।
महासत्य–(सं. पुं.) यमराज।
महासम्मत–(सं. वि.) अति आदरणीय।
महासर्ग–(सं. पुं.) महाप्रलय के बाद संसार की पुनः रचना।
महासर्ज–(सं. पुं.) कटहल का पेड़।
महासहा–(सं. स्त्री.) इमली का वृक्ष।
महासिद्ध–(सं. वि.) जिसने योग द्वारा सिद्धि प्राप्त की है।
महासिद्धि–(सं. स्त्री.) आठ सिद्धियों में से एक।
महासुख–(सं. पुं.) अति आनन्द।
महासुर–(सं. पुं.) एक दानव का नाम।
महासूत–(सं. पुं.) युद्ध क्षेत्र में बजाने का एक प्रकार का बाजा।
महासेन–(सं.पुं.) शिव, महादेव, कार्तिकेय।
महास्कंधा–(सं. स्त्री.) जामुन का वृक्ष।
महास्थली–(सं. स्त्री.) बहुत सुन्दर स्थान, पृथ्वी।
महास्पद–(सं. वि.) बहुत प्रभावशाली।
महास्वन–(सं. पुं.) लड़ाई का डंका, एक प्रकार के असुर।
महास्वर–(सं. पुं.) उच्च स्वर।
महाहनु–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महाहव–(सं. पुं.) घमासान युद्ध।
महाहस्त–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
महाहास–(सं. पुं.) [illegible] हँसी, अट्टहास।
महाहि–(सं. पुं.) [illegible] सर्प।
महि–(हि. अव्य.) में; महि–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
महिका–(सं. स्त्री.) हिम।
महित–(सं. वि.) पूजित, पूजा किया हुआ।
महिमा–(सं. स्त्री.) महत्त्व, [illegible]।

महित्व–(सं. पुं.) महत्त्व, प्रभुता।
महिदेव–(सं. पुं.) ब्राह्मण।
महिधर–(सं. पुं.) देखें 'महीधर'।
महिपाल–(सं. पुं.) देखें 'महीपाल'।
महिमा–(सं. स्त्री.) महत्त्व, आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, प्रभाव, प्रताप।
महिम्न–(सं. पुं.) शिव के एक प्रसिद्ध स्तोत्र का नाम।
महियाँ–(हि. अव्य.) में।
महिया–(हि. पुं.) ऊख के रस का फेन जो उसको उबालने पर निकलता है।
महियाउर–(हि. पुं.) मठे में पका हुआ चावल।
महिरावण–(सं.पुं.) एक राक्षस का नाम जो रावण का पुत्र था और पाताल में रहता था।
महिला–(सं. स्त्री.) स्त्री, प्रियंगु लता।
महिष–(सं. पुं.) भैंस, एक प्राचीन देश का नाम, एक असुर जिसको दुर्गा देवी ने मारा था, एक अग्नि का नाम, वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो; –घ्नी–(स्त्री.) दुर्गा देवी; –ध्वज–(पुं.) यमराज; –मर्दिनी–(स्त्री.) दुर्गा देवी; –वाहन–(पुं.) यमराज।
महिषासुर–(सं. पुं.) रंभासुर का पुत्र जिसको दुर्गा देवी ने मारा था।
महिषी–(सं. स्त्री.) भैंस, पटरानी, जिस रानी के साथ राजा का अभिषेक हुआ हो।
महिषेश–(सं. पुं.) महिषासुर, यमराज।
महिष्ठ–(सं. वि.) विशाल, सबसे बड़ा।
महिसुर–(हि.पुं.) देखें 'महिसुर,' मैसूर।
मही–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, राज्य, देश, मिट्टी, स्थान, समूह, सेना, [illegible], एक संख्या, एक छन्द का नाम; (हि. पु.) मठा, छाछ; –[illegible]–(पु.) [illegible]; –तड़ी–(हि. स्त्री.) [illegible] का एक शब्द; –चर–(वि.) पृथ्वी पर चलनेवाला; –धारी–(पु.) [illegible]; (वि.) पृथ्वी पर [illegible]; –[illegible]–(पुं.) [illegible]; –[illegible]–(पु.) [illegible], पृथ्वी; –देव–(पु.) देखें 'महीदेव', ब्राह्मण; –[illegible]–(पु.) [illegible] [illegible]; –नाथ, –[illegible]–(पु.) [illegible]; –[illegible]–(पु.) [illegible]; –[illegible], –[illegible]–(पु.) [illegible]; –[illegible]–(पु.) [illegible]; –[illegible]–(पु.) [illegible]; –[illegible]–

(पुं.) भूमण्डल; **–मय–**(वि.) मिट्टी का बना हुआ; **–यस्त्व–**(पुं.) प्रभुता, श्रेष्ठता; **–रुह–**(पुं.) वृक्ष, पादप, पेड़; **–लता–**(स्त्री.) केंचुआ; **–शासक–**(पुं.) भूपाल, राजा; **–सुत–**(पुं.) पृथ्वी का पुत्र, मंगल ग्रह; **–सुर–**(पुं.) ब्राह्मण।

महीन–(हिं. वि.) जिसकी मोटाई या घेरा बहुत कम हो, बारीक, कोमल, पतला, धीमा, जो श्रुतिकटु या कर्कश न हो, मन्द।

महीना–(हिं. पुं.) काल का वह परिमाण जो वर्ष के बारहवें अंश के बराबर होता है, मासिक वेतन, स्त्रियों का मासिक धर्म, ऋतुकाल।

महुँ–(हि. अव्य.) देखें 'महँ'।

महुअर–(हिं. स्त्री.) महुआ मिलाकर पकाई हुई रोटी, एक प्रकार का बाजा जिसको सँपेरे बजाते हैं, तुमड़ी, तुंबी, महुअर बजाकर खेला जानेवाला एक इन्द्रजाल का खेल।

महुअरी–(हिं. स्त्री.) आटे में महुआ मिलाकरबनाई हुई रोटी।

महुआ–(हिंपुं.) एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसके छोटे मीठे फलों से एक प्रकार की मदिरा बनती है।

महुआरी–(हिं. स्त्री.) महुए का जंगल।

महुर्छा–(हि.पुं.) महोत्सव, बड़ा उत्सव।

महुला–(हिं. वि.) महुए के रंग का।

महुवरि–(हिं. स्त्री.) महुअर नाम का बाजा, तुमड़ी।

महुवा–(हिं. पुं.) देखें 'महुआ'।

महुख–(हि.पुं.) महुआ, जेठीमधु, मुलेठी।

महूम–(हिं. स्त्री.) चढ़ाई।

महूरत–(हिं. पुं.) देखें 'मुहूर्त'।

महेंद्र–(सं. पुं.) विष्णु, इन्द्र, भारतवर्ष के एक पर्वत का नाम, बौद्ध सम्राट् अशोक के पुत्र का नाम; **–चाप–**(पुं.) इन्द्रधनुष; **–नगरी–**(स्त्री.) अमरावती; **–मंत्री–**(पुं.) बृहस्पति; **–वारुणी–**(स्त्री.) बड़ा इन्द्रायण।

महेर–(हिं. पुं.) झगड़ा, देखें 'महेरा'।

महेरा–(हि.पुं.) एक प्रकार का व्यंजन जो दही मे चावल पकाकर बनाया जाता है।

महेरी–(हिं. स्त्री.) जल में उबाली हुई ज्वार जो नमक-मिर्च मिलाकर खाई जाती है; (वि.) बखेड़ा करनेवाला।

महेला–(हि.स्त्री.) देखें 'महिला', स्त्री; (पुं.) पशुओं को खिलाने का एक पौष्टिक पदार्थ।

महेलिका–(सं. स्त्री.) महिला, नारी, बड़ी इलायची।

महेश–(सं. पुं.) शिव, महादेव, ईश्वर।

महेशबंधु–(सं.पुं.) श्रीफल, बेल का फल।

महेशानी–(सं.स्त्री.) दुर्गा देवी।

महेश्वर–(सं.पुं.) शिव, महादेव, परमेश्वर।

महेश्वरी–(हिं.पुं.) दुर्गा, पश्चिम भारत के बनियों की एक शाखा।

महेषु–(सं. पुं.) बड़ा तीर या बाण।

महेस–(हिं. पुं.) देखें 'महेश'।

महेसिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बढ़िया धान।

महैला–(सं. स्त्री.) बड़ी इलायची।

महैश्वर्य–(सं. पुं.) महाशक्ति, बहुत बल।

महोक, महोख–(हिं. पुं.) देखें 'महोखा'।

महोखा–(हि. पुं.) एक प्रकार का कत्थई रंग का कौवे के आकार का पक्षी जो वेग से दौड़ सकता है पर दूर तक उड़ नहीं सकता।

महोगनी–(सं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष, (इसकी लकड़ी बहुत पुष्ट, टिकाऊ और बहुमूल्य होती है।)

महोच्छव, महोछा–(हिं. पुं.) महोत्सव।

महोती–(हिं. स्त्री.) महुवे का फल।

महोत्पल–(सं. पुं.) पद्म, सारस पक्षी।

महोत्सव–(सं. पुं.) कोई बड़ा उत्सव।

महोत्साह–(सं. पुं.) विष्णु, कठिन उद्यम।

महोदधि–(सं. पुं.) सागर, समुद्र।

महोदय–(सं. पुं.) कान्यकुब्ज देश, आधिपत्य, स्वामी, महाशय, बड़ों के लिये आदर-सूचक शब्द।

महोदया–(सं.स्त्री.) महाशया, नागबला।

महोदर–(सं. वि.) जिसका पेट बड़ा हो; (पुं.) शिव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

महोद्यम, महोद्योग–(सं. पुं.) बड़ा उद्योग या प्रयत्न।

महोन्नत–(सं.वि.) जिसकी बड़ी उन्नति हुई हो; (पुं.) ताल वृक्ष, नारियल का पेड़।

महोन्नति–(सं. स्त्री.) अधिक उन्नति।

महोन्मद–(सं. वि.) अति उन्मत्त।

महोबा–(हि. पुं.) उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक विभाग।

महोबिया, महोबी–(हिं.वि.) महोबे का।

महोष्ठ–(सं. वि.) जिसका ओठ लंबा और मोटा हो।

महौघ–(सं. पुं.) नदी की बाढ़।

महौजस्–(सं. वि.) परम यशस्वी।

महौषध–(सं. पुं.) लहसुन, सोंठ, बाराही कन्द, अतीस, बछनाग, पीपल।

महौषधि–(सं. स्त्री.) श्रेष्ठ औषधि, (देवी को स्नान कराने में सर्वौषधि और महौषधि का उपयोग होता है—बहेड़ा, व्याघ्री, बला, अतिबला, शंखपुष्पी, बृहती, क्षीरकाकोली और सुवर्चला का चूर्ण।

माँ–(हिं. स्त्री.) जन्म देनेवाली माता, (अव्य.) में।

माँकड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मकड़ी किमखाब बुननेवालों का एक औजार।

माँखन–(हिं. पुं.) मक्खन, नवनीत।

माँखना–(हिं. क्रि. अ.) क्रुद्ध होना, क्रोध करना।

माँखी–(हिं. स्त्री.) मक्खी।

माँग–(हिं. स्त्री.) माँगने की क्रिया या भाव, आवश्यकता, सिर के बाल के बीच की रेखा जो बालों को सँवारने में बनाई जाती है, नाव का नुकीला भाग, सिल के ऊपर का भाग जो कूटा नहीं रहता, किसी वस्तु का ऊपरी भाग, सिरा; (मुहा.) **–कोख से सुखी रहना**–स्त्रियों का सौभाग्यवती तथा सन्तानवती होना।

माँग-टीका–(हिं. पुं.) स्त्रियों का वह गहना जिसको वे माँग पर पहनती हैं।

माँगन–(हिं. पुं.) माँगने की क्रिया या भाव, याचक, भिखमंगा।

माँगना–(हिं. क्रि. स.) कुछ प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करना, आकांक्षा-पूर्ति के लिये कहना।

माँगफूल–(हिं. पुं.) देखें 'माँग-टीका'।

मांगल गीत–(हिं. पुं.) विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाया जानवाला गीत।

मांगलिक–(सं. पुं.) नाटक का वह पात्र जो मंगलपाठ करता है; (वि.) मंगल या भला करनेवाला।

मांगल्य–(सं. वि.) शुभजनक, मंगलकारी; (पुं.) मंगल का भाव।

मांगल्य गीत–(सं.पुं.) वह गीत जो विवाहादि शुभ अवसरों पर गाया जाता है।

मांगल्या–(सं. स्त्री.) शमी का वृक्ष।

माँगी–(हिं. स्त्री.) धुनकी की लकड़ी जिस पर ताँत कसी रहती है।

माँच–(हिं. पुं.) पाल के कोने पर बँधा हुआ रस्सा जिससे पाल ढीला किया या कसा जाता है।

माँचना–(हिं. क्रि. अ.) आरंभ होना, प्रसिद्ध होना।

माँचा–(हिं. पुं.) मचान, खाट, पलंग, मंझा, छोटा पीढ़ा।

माँची–(हिं. स्त्री.) बैलगाड़ी आदि में गाड़ीवान के बैठने की जगह लगी हुई जालीदार झोली।

माँजना–(हिं.क्रि.स.) मलकर स्वच्छ करना किसी वस्तु को रगड़कर मैल छुड़ाना,

पतंग की डोर पर माँझा देना, तानी के सूत को रँगना, अभ्यास करना, कण्ठस्थ करना।

मांजर–(हिं. पुं.) अस्थि-पंजर, ठठरी।

मांजा–(हिं. पुं.) पहली वर्षा का फेन।

मांझ–(हि.अव्य.) में, बीच में; (पु.) अन्तर, नदी के बीच में पड़ी हुई रेतीली भूमि।

मांझा–(हिं. पुं.) नदी के बीच की रेती, पगड़ी पर पहिनने का एक आभूषण, वृक्ष का तना, पीले वस्त्र जो विवाह के समय वर और कन्या को पहनाये जाते हैं, पतंग के डोरे पर रगड़ने की सरेस और काँच की बुकनी, मंझा।

मांझिल–(हिं. वि.) बीच का।

मांझी–(हिं. पुं.) नाव खेनेवाला, मल्लाह, केवट, झगड़ा तय करनेवाला पंच।

मांट–(हिं. पुं.) मिट्टी का बड़ा पात्र, मटका, घर का ऊपरी भाग, अटारी।

मांठ–(हिं. पुं.) मटका, कुंडा।

मांठी–(हिं. स्त्री.) मठिया, मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान, मठली।

मांड़–(हिं. पुं.) पकाये हुए चावल से निकाला हुआ पानी, भात का पसेव, एक प्रकार का राग।

मांड़ना–(हिं. क्रि. स.) मसलना, सानना, लगाना, पोतना, गूंथना, रचना, बनाना, अन्न की बाल से कुचलवाकर दाने निकालना, मचाना, ठानना।

मांड़नी–(हिं. स्त्री.) गोट।

मांडप–(सं. वि.) मंडप-संबंधी।

मांडलिक–(सं. पुं.) किसी प्रान्त का शासक, वह छोटा राजा जो किसी सार्वभौम राजा के अधीन हो।

मांडवी–(सं. स्त्री.) राजा जनक की भतीजी जो भरत को ब्याही थी।

मांड़ा–(हिं.पुं.) घी में पकाई हुई मैदे की पतली पूरी, लुची, पराठा, उल्टा, आँख का एक रोग जिसमें पुतली पर एक सफेद झिल्ली पड़ जाती है।

मांड़ी–(हिं. स्त्री.) भात का पसेव, माँड़, आँटा, मैदा या भात के पसेव आदि से तैयार की हुई लेई जिससे कपड़ों पर कलफ दिया जाता है।

मांढ़ो–(हिं.पुं.) विवाह आदि अथवा दूसरे शुभ कृत्यों के लिये छाया हुआ मण्डप।

मांढ़ी–(हिं.पुं.) विवाह का मण्डप, माँढ़ो।

मांढ़यो–(हिं. पुं.) पाहुन के ठहरने का स्थान, अतिथिशाला, [illegible]।

मांत–(हिं. वि.) उन्मत्त, [illegible], पागल, बावला, उदास, हारा हुआ, [illegible]।

मांतना–(हिं. क्रि. अ.) उन्मत्त होना, पागल होना।

मांता–(हि. वि.) उन्मत्त, मतवाला।

मांथ–(हि. पुं.) मस्तक, सिर।

मांथ-बंधन–(हि.पुं.) सूत या ऊन की डोरी जिससे स्त्रियां सिर के बाल बांधती हैं, सिर में लपेटने का कपड़ा, मुरेठा।

मांद–(हिं. स्त्री.) हिंसक पशुओं के रहने का विवर, खोह, गोबर का वह ढेर जो पड़े-पड़े सूख जाता है; (वि.) पराजित, हारा हुआ, हलका, उदास।

मांदर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मृदंग।

मांपना–(हि. क्रि. अ.) उन्मत्त होना।

मांयँ–(हि. अव्य.) में, बीच में, मध्य में।

मांस–(सं.पुं.) शरीर का रक्तजात तत्व विशेष, कुछ पशुओं के शरीर का वह अंश जो खाया जाता है; –कच्छप–(पुं.) तालु में होनेवाला एक रोग; –कीलक–(पुं.) बवासीर का मसा; –खंड–(पुं.) मांस का टुकड़ा; –ज–(पुं.) मांस से उत्पन्न शरीर की चरबी; –जाल–(पुं.) मांस की झिल्ली; –पिंड–(पुं.) शरीर, देह; –पित्त–(पुं.) अस्थि, हड्डी; –पेशी–(स्त्री.) शरीर के भीतर का मांस-पिंड, पट्ठा; –फल–(पुं.) तरबूज; –भक्षी, –भोजी–(पुं.) मांस खानेवाला; –मंड–(पुं.) मांस का झोल; –रस–(स्त्री.) मांसमंड; –ल–(पुं.) उड़द, काव्य में गौड़ी रीति का एक गुण; (वि.) मांसयुक्त, मांस से भरा हुआ, स्थूल, मोटा, पुष्ट, बलवान; –०ता–(स्त्री.) स्थूलता, पुष्टि; –०फला–(स्त्री.) तरबूज, भिंडी; –वारुणी–(स्त्री.) हरिन आदि के मांस से बनाई हुई एक प्रकार की मदिरा; –वृद्धि–(स्त्री.) गलगण्ड, घेघा, श्लीपद, अण्ड-वृद्धि का रोग; –समुद्भवा–(स्त्री.) चर्बी, चरबी; –स्नेह–(पुं.) वसा।

मांसादन–(सं.पुं.) मांस-भक्षण, मांस खाना।

मांसाशी–(सं. पुं.) राक्षस।

मांसाहारी–(सं. वि. पुं.) मांसभक्षी, मांस खानेवाला।

मांसिनी–(सं. स्त्री.) जटामासी।

मांसोपजीवी–(सं.पुं.) मांस बेचनेवाला।

माँह, माँहि–(हिं. अव्य.) बीच में।

माहुँ, माहूँ–(हिं. स्त्री.) [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] हुआ जिससे [illegible] [illegible] [illegible] है।

माढ़–(हिं. स्त्री.) देखो 'माँड़'।

माइका–(हिं. पुं.) स्त्री के माता-पिता का घर, मायका।

माई–(हिं. स्त्री.) माता, माँ, बूढ़ी, बूढ़ी स्त्री के लिये संबोधन का शब्द; (मुहा.) –का लाल–शूरवीर व्यक्ति, उदार-चित्त मनुष्य।

माकंद–(सं. पुं.) आम का वृक्ष।

माक्ष–(सं. पुं.) स्पृहा, देखो 'मांक्ष'।

माक्षिक–(सं. पुं.) मधु, सोनामक्खी नामक धातु।

माख–(हि.पुं.) अभिमान, घमंड, अप्रसन्नता पश्चात्ताप, अपने दोष को ढाँकना।

माखन–(हिं. पुं.) मक्खन, नवनीत।

माखना–(हिं. क्रि. अ.) अप्रसन्न होना, क्रुद्ध होना।

माखी–(हिं. स्त्री.) मक्खी, सोनामक्खी नामक धातु।

मागध–(सं. पुं.) वंश-परम्परा-क्रम से राजाओं की स्तुति करनेवाले, स्तुति-पाठक, बन्दी, भाट, जरासन्ध का एक नाम, सफेद जीरा; (वि.) मगध देश का।

मागधिक–(सं. वि.) मगध देश का।

मागधी–(सं. स्त्री.) जूही, छोटी पीपल, छोटी इलायची, साठी धान, जीरा, मगध देश की प्राचीन भाषा; –[illegible]–(स्त्री.) पिप्पली-मूल।

माघ–(सं.पुं.) भारत के एक प्राचीन कवि जिन्होंने शिशुपाल-वध नामक काव्य लिखा है, उस नक्षत्र का नाम, पौष के बाद तथा फाल्गुन के पहिले का चान्द्र मास।

माघवन–(सं. वि.) इन्द्र-संबंधी।

माघी–(सं.स्त्री.) माघ मास की पूर्णिमा जिस दिन मघा नक्षत्र का योग होता है।

माघोनी–(सं. स्त्री.) पूर्व दिशा जिसके अधिपति इन्द्र हैं।

माच–(सं.पुं.) पथ, मार्ग; (हिं. पुं.) मचान।

माचना–(हिं. क्रि. अ.) देखो 'मचना'।

माचल–(सं. पुं.) [illegible], रोग, [illegible], [illegible]; (हिं. वि.) [illegible], [illegible], [illegible]।

माचा–(हिं. पुं.) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]।

माची–(हिं. स्त्री.) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], देखो '[illegible]'।

[illegible]–(हिं. पुं.) [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]–(हिं. पुं.) [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]–(हिं. स्त्री.) [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]–(सं. पुं.) [illegible] [illegible] [illegible]।

माजून–(हिं. स्त्री.) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]।

माझा–(हिं. पुं.) कमर।
माट–(हिं.पुं.) मिट्टी का बड़ा पात्र जिसमें रंगरेज रंग बनाते हैं, बड़ी मटकी जिसमें दही रखा जाता है।
माटा–(हिं. पुं.) लाल रंग के चींटे जो झुंड के झुंड आम के पेड़ पर रहते हैं।
माटी–(हिं. स्त्री.) शरीर, मृत शरीर, पृथ्वी नामक तत्त्व, मिट्टी, धूल, रज, किसी खेत की अच्छी तरह जोताई।
माठ–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मिठाई, मठली, टिकिया, मिट्टी का पात्र, मटकी।
माठा–(हिं.पुं.) मठा, मट्ठा, कृपण, कंजस।
माठी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की कपास।
माड़–(हिं. पुं.) देखें 'माँड़'।
माड़ना–(हिं.क्रि.अ.,स.) ठानना, करना, विभूषित करना, आदर करना, धारण करना, पहनना, हाथ या पैर से मसलना, माँड़ना।
माड़व–(हिं. पुं.) देखें 'माँड़ौ', मंडप।
माढ़ा–(हिं.पुं.) अटारी पर का चौबारा।
माढ़ी–(सं. स्त्री.) पत्तों की नस, दाँतों की जड़; (हिं. स्त्री.) देखें 'मढ़ी'।
माण, माणक–(सं.पुं.) एक प्रकार का कन्द।
माणवक–(सं. पुं.) सोलह वर्ष तक की आयु का मनुष्य, बालक, वटु, विद्यार्थी, नीच मनुष्य।
माणव्य–(सं. पुं.) बालकों का समुदाय।
माणिक–(सं.पुं.) मानिक।
माणिक्य–(सं. पुं.) लाल रंग का एक रत्न, मानिक, लाल, पद्मराग; (वि.) आदरणीय, शिरोमणि, अति श्रेष्ठ।
मातंग–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी, पीपल का वृक्ष, ऋष्यमूक पर्वत पर रहनेवाले एक प्राचीन मुनि का नाम, एक नाग, ज्योतिष के अनुसार एक योग, संवर्तक मेघ का एक नाम, किरात जाति, चाण्डाल; **–ज**–(पुं.) हाथी का बच्चा; **–मकर**–(पुं.) एक प्रकार की बड़ी मछली।
मातंगी–(सं. स्त्री.) दस महाविद्याओं के अन्तर्गत एक महाविद्या।
मात–(हिं.स्त्री.) माता; (वि.) मतवाला।
मातन–(अ. स्त्री.) पराजय, हार; (वि.) हारा हुआ।
मातना–(हिं. क्रि. अ.) मस्त होना।
मातम–(अ. पुं.) मृत्यु-जनित शोक, गमी, स्यापा।
मातमुख–(हिं. वि.) मूर्ख।
मातलि–(सं.पुं.) इन्द्र के सारथी का नाम।
माता–(हिं. स्त्री.) जन्म देनेवाली स्त्री, जननी, किसी आदरणीय स्त्री के लिए संबोधन का शब्द, गाय, भूमि, लक्ष्मी, शीतला रोग; **–मह**–(पुं.) माता का पिता, नाना; **–मही**–(स्त्री.) मासा की माता, नानी।
मातु–(हिं. स्त्री.) माता, माँ।
मातुल, मातुलक–(सं. पुं.) माता का भाई, मामा, एक प्रकार का धान, मदन वृक्ष, धतूरा, मटर।
मातुला–(सं. स्त्री.) मातुल की पत्नी, मामी, भाँग, मटर, सन, प्रियंगु का वृक्ष।
मातुलानी–(सं. स्त्री.) मामी।
मातुली–(सं. स्त्री.) मामी।
मातुलेय–(सं.पुं.) मातुल-पुत्र, ममेरा भाई।
मातुलेयी–(सं. स्त्री.) ममेरी बहन।
मातुल्य–(सं. पुं.) मामा का घर।
मातृ–(सं. स्त्री.) जननी, माता, गाय, भूमि, ऐश्वर्य, लक्ष्मी; (वि.) बनानेवाली; **–क**–(वि.) माता-संबंधी; **–का**– (स्त्री.) दूध पिलानेवाली धाय, जननी, माता, उपमाता, सौतेली माँ, वर्णमाला की बारहखड़ी, काम-क्रोध आदि आठ विकारों की आठ अधिष्ठात्री देवियाँ, यथा–काम की योगश्वरी, क्रोध की माहेश्वरी, लोभ की वैष्णवी, मद की ब्रह्माणी, मोह की कौमारी, मात्सर्य की ऐन्द्राणी, पैशुन्य की दण्डधारिणी तथा असूया की वाराही–ये अष्ट-मातृकाएँ कहलाती हैं; **–गण**–(पुं.) मातृकाओं का परिवार; **–घाती**–(वि.) माता की हत्या करनेवाला; **–तीर्थ**–(पुं.) कानी अँगुली का सब से नीचे का स्थान; **–नंदन**–(पुं.) कार्त्तिकेय; **–निंदक**–(वि.) माता की निन्दा करनेवाला; **–पूजन**–(पुं.) माता की पूजा; **–पूजा**–(स्त्री.) विवाह की एक रीति जिसमें विवाह के एक दिन पहले पितरों का पूजन किया जाता है; **–भाषा**–(स्त्री.) वह भाषा जिसको बालक माता की गोद में रहते हुए सीखता है; **–वत्**–(वि.) माता के समान; **–वत्सल**–(वि.) माता के प्रति भक्ति करनेवाला; (पुं.) कार्त्तिकेय; **–सपत्नी**– (स्त्री.) विमाता, सौतेली माता; **–स्वसा**–(स्त्री.) माता की बहन, मौसी; **–स्वसेय**–(पुं.) मौसेरा भाई।
मात्र–(सं. अव्य.) केवल, सिर्फ।
मात्रा–(सं. स्त्री.) परिमाण, एक बार सेवन करने भर औषधि, किसी वस्तु का नियमित अल्प भाग, अवयव, शक्ति, रूप, इन्द्रिय, वित्त, सम्पत्ति, स्वरसूचक रेखा जो अक्षर में लगाई जाती है, एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में जितना समय लगता है; छन्द का ह्रस्व या दीर्घ उच्चारण-भेद; **–पताका**–(स्त्री.) छन्दःशास्त्र के अनुसार मात्रा का लघु-गुरु ज्ञान करने का पताका यन्त्र; **–वृत्त**–(पुं.) आर्या आदि छन्दों का भेद; **–समक**–(पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।
मात्रिक–(सं. वि.) मात्रा-संबंधी, मात्राओं की गणना से संबद्ध, जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।
मात्सर्य–(सं. पुं.) ईर्ष्या, डाह।
माथ–(हिं. पुं.) माथा।
माथना–(हिं. क्रि. स.) मथन करना।
माथा–(हिं. पुं.) सिर का ऊपरी भाग, मस्तक, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; (मुहा.) **–ठनकना**–किसी दुर्घटना की पहिले से आशंका होना; **माथे चढ़ाना**– शिरोधार्य करना; **–पच्ची**–(स्त्री.) अधिक मानसिक श्रम लगाना।
माथुर–(सं.पुं.) वह जो मथुरा से आया हो, मथुरानिवासी, कायस्थों तथा वैश्यों की एक जाति, ब्राह्मणों की चौबे जाति।
माथुरक–(सं. पुं.) मथुरा में रहनेवाला।
माथे–(हिं. अव्य.) माथे पर, सिर पर, सहारे, भरोसे।
माद–(सं.पुं.) हर्ष, प्रसन्नता।
मादक–(सं. वि.) नशा उत्पन्न करनेवाला, नशीला; (पुं.) एक प्रकार का हरिण, एक प्रकार का अस्त्र; **–ता**–(स्त्री.) मादक होने का भाव।
मादन–(सं. पुं.) लवंग, कामदेव, धतूरे का पौधा; (वि.) हर्षोत्पादक, मादक।
मादनी–(सं. स्त्री.) विजया, भाँग।
मादयिष्णु–(सं. वि.) आनन्द देनेवाला।
मादिनी–(सं. स्त्री.) विजया, भाँग।
माद्रवती–(सं. स्त्री.) राजा परीक्षित् की स्त्री का नाम।
माद्री–(सं. स्त्री.) मद्रराज की कन्या जो पाण्डुराजा को ब्याही थी, (इनके पुत्र नकुल और सहदेव थे); **–पति**–(पुं.) राजा पाण्डु।
माद्रेय–(सं. पुं.) नकुल और सहदेव।
माधव–(सं. पुं.) विष्णु, नारायण, वसन्त ऋतु, महुवे का पेड़, काला उड़द, एक प्रकार का संकर राग, एक वृत्त का नाम जिसको मुक्तहरा भी कहते हैं;

–क–(पुं.) महुवे की मदिरा; –द्रुम–(पुं.) आम का वृक्ष; –प्रिय–(पुं.) पीला चन्दन; –श्री–(स्त्री.) वसन्त ऋतु की शोभा।

माधवी–(सं. स्त्री.) इस नाम की लता जिसमें चमेली के समान सुगन्धित फूल लगते हैं; मदिरा, मधु से बनाई हुई चीनी, तुलसी, दुर्गा, सवैया छन्द का एक भेद, एक रागिनी का नाम।

माधवीय–(सं. वि.) वसन्त-संबंधी।

माधवोद्भव–(सं. पुं.) खिरनी का पेड़।

माधी–(हिं. पुं.) एक राग का नाम।

माधुकर–(सं. पुं.) महुवे का मद्य।

माधुर–(सं.वि.) मीठा; (पुं.) चमेली का फूल।

माधुरई, माधुरता–(हिं. स्त्री.) मधुरता, मिठास।

माधुरिया-(हिं.स्त्री.), **माधुरी**–(सं.स्त्री.) मद्य, शराब, सौन्दर्य, शोभा, मधुरता, मिठास।

माधुर्य–(सं. पुं.) मधुर होने का भाव, मधुरता, सुन्दरता, मिठास, काव्य में वह रचना जिससे चित्त द्रवीभूत होता है और अत्यन्त प्रसन्नता होती है, शब्दावली में मन को मोह लेनेवाला गुण; –प्रधान–(वि.) जिसमें माधुर्य गुण हो।

माधैया–(हिं. पुं.) देखें 'माधव'।

माधो–(हिं. पुं.) माधव, श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्र।

माधौ–(हिं.पुं.) देखें 'माधव'।

माध्यंदिन–(सं.पुं) दिन का मध्य भाग, दोपहर।

माध्यंदिनी–(सं. स्त्री.) शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

माध्यम–(सं. वि.) मध्य का, बीच का।

माध्यमिक–(सं. वि.) मध्य का, विचला; (पुं.) बौद्धों का एक दार्शनिक मतभेद।

माध्यस्थ–(सं. पुं.) झगड़ा निपटानेवाला पंच, विवाह करानेवाला ब्राह्मण, कुटना, दलाल।

माध्याकर्षण–(सं. पुं.) पृथ्वी के मध्य-भाग का वह आकर्षण जो सर्वदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है।

माध्याह्निक–(सं.वि.,पुं.) मध्याह्न के समय किया जानेवाला (कार्य)।

माध्व–(सं. पुं.) मध्वाचार्य का चलाया हुआ वैष्णव धर्म का एक सम्प्रदाय।

माध्वक–(सं. पुं.) महुवे की मदिरा।

माध्विक–(सं. पुं.) मधु इकट्ठा करनेवाला मनुष्य।

माध्वी–(सं. स्त्री.) मद्य, महुवे आदि की बनी हुई मदिरा।

मान–(सं. पुं.) परिमाण, तौल, संगीत-शास्त्र के अनुसार वह स्थान जहाँ ताल का विराम होता है, घन, अभिमान आदि के कारण मन में यह विकार होना कि मेरे सदृश दूसरा कोई नहीं है, सामर्थ्य, शक्ति, प्रतिष्ठा, रूठी हुई नायिका का भाव-विशेष, ग्रह, मंत्र, सम्मान; (मुहा.) –मथना– अभिमान नष्ट करना; –मनाना–जो रूठ गया हो उसको प्रसन्न करना; –मोड़ना– अभिमान त्याग देना; –रखना–प्रतिष्ठा करना।

मानकच्चू, मानकंद–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मीठा कन्द, सालम मिस्री।

मानकलह–(सं. पुं.) मान के कारण कलह।

मानक्रीड़ा–(सं. स्त्री.) एक छन्द का नाम।

मानक्षति–(सं. स्त्री.) मानहानि।

मानगृह–(सं. पुं.) कोपभवन।

मानचित्र–(सं. पुं.) किसी स्थान या देश का चित्र, नक्शा।

मानज–(सं.पुं.) क्रोध।

मानता–(हिं. स्त्री.) मनौती, मन्नत।

मानदंड–(सं. पुं.) वह मान या साधन जिससे कोई वस्तु नापी जाय।

मानद–(सं.वि.) बड़ाई करनेवाला; (पुं.) विष्णु।

मानधन–(सं. वि.) मानी, प्रतिष्ठित।

मानना–(हिं. क्रि. स.) स्वीकार करना, कल्पना करना, मान लेना, ध्यान में लाना, खयाल करना, पर्व आदि पर विशेष कृत्य करना, किसी से बहुत प्रेम करना, धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना, देवी या देवता की मन्नत करना, आदर करना, ठीक मार्ग पर आना।

माननीय–(सं. वि.) आदर करने योग्य, पूजनीय।

मानपरेखा–(हिं. पुं.) आशा।

मानभंग–(सं. पुं.) मानहानि।

मानभाव–(सं. पुं.) चोचला।

मानमंदिर–(सं. पुं.) ग्रहों की गति आदि देखने के लिये वैज्ञानिक यन्त्रों से सुसज्जित स्थान, वेधशाला, वह एकान्त कमरा जहाँ स्त्रियाँ रूठकर बैठती हैं, कोपभवन।

मानमनौती–(हिं.स्त्री.) मानता, रूठने और मान जाने की क्रिया, परस्पर का प्रेम।

मानमय–(सं. वि.) गर्वयुक्त, घमंडी।

मानमान्यता–(सं. स्त्री.) प्रतिष्ठा।

मानमोचन–(सं.पुं.) साहित्य के अनुसार रूठे हुए प्रिय अथवा प्रिया को मनाना।

मानयितव्य–(सं.वि.) सम्मान करने योग्य।

मानव–(सं.पुं.) मनु की सन्तान, मनुष्य।

मानवक–(सं. पुं.) नाटा मनुष्य, बौना, तुच्छ नर।

मानवत्त्व–(सं. पुं.) मानव जाति का प्राकृतिक गुण आदि।

मानवपति–(सं. पुं.) राजा।

मानवर्जित–(सं.वि.) मानरहित, मानहीन

मानवशास्त्र–(सं. पुं.) मानव जाति की उत्पत्ति तथा विकास का शास्त्र जिसके अध्ययन से संसार के भिन्न-भिन्न भागों में बसनेवाली जातियों की ऐतिहासिक सभ्यता का ज्ञान होता है; अर्थात् मनुष्यों की सृष्टि कब और कैसे हुई और मानवी सभ्यता का क्रमशः कैसे विकास हुआ।

मानवास्त्र–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक अस्त्र।

मानवी–(सं. स्त्री.) नारी, स्त्री; (वि.) मनुष्य-संबंधी।

मानवीय–(सं. वि.) मनुष्य संबंधी।

मानवेंद्र–(सं. पुं.) राजा।

मानस–(सं. पुं.) मन, हृदय, मनुष्य, संकल्प-विकल्प, पुष्कर द्वीप के एक पर्वत का नाम, एक नाग का नाम, कामदेव, दूत, मानसरोवर; (वि.) मन से उत्पन्न, मनोभाव, मन में विचारा हुआ; (अव्य.) मन के द्वारा।

मानसजप–(सं. पुं.) मन में ही (बिना उच्चारण किये) जप करने की विधि।

मानसपुत्र–(सं.पुं.) पुराण के अनुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हुई हो।

मानसपूजा–(सं. स्त्री.) किसी देवता की मन में पूजा करना जिसमें वाह्य कृत्यों की आवश्यकता नहीं होती।

मानसर–(सं. पुं.) देखें 'मानसरोवर'।

मानसरुज–(सं.पुं.) चित्त में व्यथा होना।

मानसरोवर–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध बड़ी झील जो हिमालयपर्वत की ऊँचाई पर है।

मानसवेग–(सं.पुं.) मनमें का वेग, चिन्ता।

मानसशास्त्र–(सं.पुं.) मनोविज्ञान, वह शास्त्र जिसमें मानसिक क्रियाओं का विवेचन होता है अर्थात् मन किस प्रकार कार्य करता है और उसकी वृत्तियाँ किस प्रकार उत्पन्न होती हैं।

मानससंताप–(सं.पुं.) आन्तरिक दुःख।

मानससर–(सं. पुं.) मानसरोवर।

मानसहंस–(सं. पुं.) एक वृत्त का नाम जिसको रसालन भी कहते हैं।

मानसिक–(सं.वि.) जो मन में या मन की कल्पना में उत्पन्न हो, मन-संबंधी; (पुं.) विष्णु।

मानसी–(सं. स्त्री.) पुराण के अनुसार एक विद्या-देवी का नाम, वह पूजा जो मन में ही की जाय; (वि.) मन से उत्पन्न; **–गंगा**–(स्त्री.) गोवर्धन पर्वत के पास एक सरोवर का नाम; **–व्यथा**–(स्त्री.) मानसिक कष्ट।

मानहंस–(सं. पुं.) एक वृत्त का नाम जिसको रणहंस या मानसहंस भी कहते हैं।

मानहन–(सं.वि.) अप्रतिष्ठा करनेवाला।

मानहानि–(सं. स्त्री.) अप्रतिष्ठा।

मानहीन–(सं. वि.) जिसकी अप्रतिष्ठा हुई हो, सम्मानरहित।

मानहुँ–(हिं. अव्य.) मानो।

माना–(हिं.पुं.) अन्न आदि नापने का एक पात्र; (क्रि.अ.,स.) नापना, तौलना, जाँच करना, अटना, समाना; (अव्य.) मान लिया कि।

मानिक–(हिं. पुं.) माणिक्य, पद्मराग; **–खंभ**–(पुं.) व्यायाम का मलखंभ, विवाह-मण्डप के बीच में गाड़ने का खंभा; **–चंदी**–(स्त्री.) साधारण या छोटी सुपारी; **–जोड़**–(पुं.) एक प्रकार का बड़ा बगला; **–रेत**–(स्त्री.) मानिक का चूरा जिससे सोनार गहना साफ करते हैं।

मानित–(सं.वि.) सम्मानित, पूजित।

मानिनी–(सं.वि.,स्त्री.) अभिमान करनेवाली या गर्ववती (स्त्री), रुष्टा स्त्री, साहित्य में वह नायिका जो अपने प्रेमी का दोष देखकर रूठ जाती हो।

मानी–(सं.वि.) अभिमानी, गर्वी, घमंडी, अहंकारी; (पुं.) सिंह, साहित्य में वह नायक जो नायिका द्वारा अपमानित होकर रूठ गया हो; (स्त्री.) घड़ा, प्राचीन काल का मापने का एक पात्र, कुदाल, वसुला आदि का वह छेद जिसमें बेंट लगाई जाती है, चक्की के ऊपर के पाट में लगाई हुई लकड़ी जिसके बीच के छेद में कीली रहती है।

मानुख–(हिं. पुं.) देखें 'मनुष्य'।

मानुष–(सं. पुं.) मनुष्य, मानव; (वि.) मनुष्य का।

मानुषता–(सं.स्त्री.) मनुष्य का भाव या धर्म।

मानुषराक्षस–(सं.पुं.) राक्षस प्रकृतिवाला मनुष्य, मनुष्य का शत्रु।

मानुषिक–(सं. वि.) मनुष्य-संबंधी, मनुष्य का।

मानुषी–(सं. वि.) मनुष्य-संबंधी।

मानुष्य–(सं. पुं.) मनुष्यत्व।

मानुस–(हिं. पुं.) मनुष्य, आदमी।

माने–(हिं. पुं.) मतलब, अर्थ।

मानो–(हिं. अव्य.) जैसे।

मान्य–(सं. वि.) पूजनीय, सम्मान के योग्य, मान करने योग्य; (पुं.) विष्णु, शिव, महादेव; **–त्व**–(पुं.) सम्मान या पूजा; **–मान**–(वि.) मान या सम्मान के योग्य; **–वती**–(स्त्री.) माननीया, वह स्त्री जो सम्मान करने के योग्य हो।

मान्या–(सं. वि.) पूजनीया, आदर करने योग्य।

माप–(हिं. स्त्री.) मापने की क्रिया या भाव, परिमाण, वह माप जिससे कोई पदार्थ मापा जाय, मान।

मापक–(सं.पुं.) मान, माप, वह जो मापता हो, वह जिससे कोई पदार्थ मापा जाय।

मापन–(सं.पुं.) परिमाण, तौलना, नाप।

मापना–(हिं.क्रि.अ.,स.) किसी नियत माप से किसी पदार्थ का विस्तार, वजन आदि नापना, किसी पदार्थ का परिमाण जानने के लिये कोई क्रिया करना, नापना, मतवाला होना।

माफ–(अ. वि.) क्षमा प्राप्त, क्षमित।

माफिक–(अ. वि.) अनुकूल, अनुसार।

माफी–(अ.स्त्री.) क्षमा, करमुक्त भूमि।

माम–(सं. पुं.) मातुल, मामा, कृपण, कंजूस; (वि.) मेरा; (हिं.पुं.) अहंकार, ममता, अधिकार, शक्ति।

मामक–(सं. वि.) ममतायुक्त; (सर्व.) मेरा; (पुं.) मामा।

मामता–(हिं. स्त्री.) आत्मीयता, अपनापन, प्रेम।

मामरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष।

माम(मि)ला–(हिं. पुं.) घटना, काम-काज, धंधा, लेन-देन, खरीद-बेची, विवाद, मुकदमा।

मामा–(हिं. पुं.) माता का भाई।

मामी–(हिं. स्त्री.) मामा की स्त्री, माँ की भौजाई; अपने अवगुण या दोष पर ध्यान न देना।

मामूली–(अ. वि.) साधारण।

मायँ–(हिं. अव्य.) देख 'माँहि'।

माय–(हिं.स्त्री.) जननी, माता, माँ, किसी वृद्ध स्त्री के लिये संबोधन का शब्द।

मायक–(हिं.पुं.) माया करनेवाला, मायावी।

मायका–(हिं. पुं.) नैहर, पीहर।

मायन–(हिं.पुं.) विवाह की वह रीति जिसमें मातृका-पूजन और पितृ-निमन्त्रण होता है, इस दिन का कृत्य।

माया–(सं. स्त्री.) छलपूर्ण रचना, इन्द्रजाल, जादू, दया, कृपा, धूर्तता, शठता, बदमाशी, प्रज्ञा, ज्ञान, लक्ष्मी, धन, सम्पत्ति, प्रकृति, अज्ञान, अविद्या, भ्रम, गौतम बुद्ध की माता का नाम, मय दानव की कन्या का नाम जिसके गर्भ से त्रिशिरा, शूर्पणखा, खर और दूषण उत्पन्न हुए थे, इन्द्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक भेद, कोई आदरणीय स्त्री, ईश्वर की वह अव्यक्त शक्ति जो उनकी आज्ञा से सब कार्य करती है, किसी देवता की लीला, शक्ति, इच्छा या प्रेरणा; (हिं. स्त्री.) ममता, दया, कृपा; **–कार**–(पुं.) ऐन्द्रजालिक, जादूगर; **–चार**–(वि.) मायावी; **–जीवी**–(पुं.) जादूगरी से जीविका निर्वाह करनेवाला; **–द**–(पुं.) कुम्भीर, मगर; **–देवी**–(स्त्री.) बुद्धदेव की माता का नाम; **–धर**–(पुं.) मायावी, ऐन्द्रजालिक, जादूगर, एक प्रकार के राक्षस; **–पटु**–(पुं.) मायावी मनुष्य; **–बीज**–(पुं.) ह्रीं नामक तान्त्रिक मन्त्र; **–यंत्र**–(पुं.) किसी को मोहने की विद्या; **–रवि**–(पुं.) संपूर्ण जाति का एक राग; **–वती**– (स्त्री.) कामदेव की स्त्री रति; **–वाद**–(पुं.) वेदान्त का वह सिद्धान्त जो ईश्वर के सिवाय संपूर्ण संसार को असत्य, अनित्य तथा असार मानता है; **–वादी**–(पुं.) ईश्वर के सिवाय सारी सृष्टि को अनित्य माननेवाला, वह जो संपूर्ण सृष्टि को माया या भ्रम समझता है।

मायाविनी–(सं.स्त्री.) छल-कपट करनेवाली स्त्री, एक रागिनी।

मायावी–(सं. वि.) छलपूर्ण, ऐन्द्रजालिक; (पुं.) बिल्ली, एक दानव का का नाम जिसका पुत्र मय था, जादूगर, परमात्मा।

मायास्त्र–(सं.पुं.) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

मायिक–(सं. पुं.) माजूफल, जादूगर, ऐन्द्रजालिक; (वि.) माया से बना हुआ, जाली, मायावी, बनावटी।

मायुराज–(सं. वि.) कुबेर के एक पुत्र का नाम।

मायूर–(सं.वि.) मयूर-संबंधी, मोर का।

मायूरिक–(सं. पुं.) मोर पकड़कर बेचनेवाला।

मार–(सं. पुं.) कामदेव, वध, मारण, विघ्न, धतूरा; (हिं. स्त्री.) आघात, मारने की क्रिया या भाव।

मारक–(सं. वि.) संहारक, हत्या करनेवाला, विष आदि के प्रभाव को नष्ट

करनेवाला; (पु.) वाज पक्षी।
मारकाट–(हिं. स्त्री.) मारने-काटने का भाव या कार्य, युद्ध, लड़ाई।
मारकीन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।
मारग–(हिं. पुं.) देखें 'मार्ग'।
मारगन–(हिं. पुं.) देखें 'मार्गण', वाण, तीर, भिखमंगा।
मारजन–(हिं. पुं.) देखें 'मार्जन'।
मारजनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मार्जनी'।
मारजारक–(हिं. पुं.) मार्जार, विल्ली।
मारजार–(हिं. पुं.) विल्ली।
मारजित्–(सं. पुं.) वह जिसने कामदेव को जीत लिया हो, वुद्धदेव का एक नाम।
मारट–(सं. पुं.) ऊख की जड़।
मारण–(सं. पुं.) वध, हत्या, जान से मार डालना, वह तान्त्रिक क्रिया जिसके द्वारा मृत्यु, व्याधि आदि अनिष्ट उत्पन्न होता है, आयुर्वेद में किसी धातु या रत्न का भस्म वनाने की क्रिया।
मारतौल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वड़ा हथौड़ा।
मारना–(हिं. क्रि. स.) वध करना, प्राण लेना, आघात पहुँचाना, धातु आदि को जलाकर भस्म वनाना, अनुचित रीति से किसी वस्तु को लेना, वल या प्रभाव कम करना, निर्जीव कर देना, विजय प्राप्त करना, (गोता) लगाना, संभोग करना, डसना या काटना, विना परिश्रम के प्राप्त करना, छिपाना, किसी आवेग को रोकना, नष्ट करना, अन्त करना, आखेट करना, वंद करना, मल्लयुद्ध में विपक्षी को हराना, ठोंकना, पीटना, टकराना; (मुहा.) **गोली मारना**–वंदूक से गोली चलाकर किसी जीव को मारना; **जादू मारना**–जादू का प्रयोग करना।
मारपीट–(हिं. स्त्री.) मारने की क्रिया, उपद्रव, झगड़ा।
मारपेच–(हिं. पुं.) वह युक्ति जो किसी को धोखे में रखकर उसकी हानि करे।
मारवा–(हिं. पुं.) एक संकर राग का नाम।
मारवाड़–(हिं. पुं.) राजपूताने का एक विशिष्ट अंचल, मेवाड़।
मारवाड़ी–(हिं. पुं.) मारवाड़ देश का रहनेवाला; (वि.) मारवाड़ देश-संवंधी; (स्त्री.) इस देश की भाषा।
मारवी–(सं. स्त्री.) संगीत की एक मात्रा।
मारवीज–(सं. पुं.) एक प्रकार का मन्त्र।
मारात्मक–(सं. वि.) संघाती, प्राणनाशक।
मारा–(हिं. वि.) ग्रस्त, मारा हुआ; (मुहा.) **–मारा फिरना**–विना काम के इधर-उधर भटकते रहना; **–मार**–(अव्य.) वड़ी तेजी, जल्दी या शीघ्रता से; (स्त्री.) देखें 'मारपीट'।
मारिच–(हिं. पुं.) देखें 'मारीच'।
मारित–(सं. वि.) जो मार डाला गया हो।
मारिष–(सं. पुं.) नाटक का सूत्रधार।
मारिषा–(सं. स्त्री.) दक्ष की माता का नाम।
मारी–(सं. स्त्री.) चण्डी, माहेश्वरी शक्ति, ऐसा संक्रामक रोग जिसके कारण वहुत-से लोग एक साथ मरें, मरी रोग।
मारीच–(सं. पुं.) रामायण के अनुसार रावण का भेजा हुआ वह राक्षस जिसने सोने का मृग वनकर श्रीरामचन्द्र को छला था, कश्यप, याजक, ब्राह्मण।
मारीची–(सं. स्त्री.) मायादेवी का एक नाम।
मारीमृत–(सं. वि.) जिसकी मृत्यु महामारी से हुई हो।
मारीष–(सं. पुं.) मरसे का साग।
मारुंड–(सं. पुं.) सर्प का अंडा, गोवर।
मारुत–(सं. पुं.) वायु, हवा, वायु के अधिपति देवता; **–सुत**–(पुं.) हनुमान, भीम।
मारुताशन–(सं. पुं.) सर्प, कार्त्तिकेय; (वि.) केवल हवा पीकर रहनेवाला।
मारुताश्व–(सं. पुं.) हवा के समान वेग से दौड़नेवाला घोड़ा।
मारुति–(सं. पुं.) हनुमान, भीम।
मारू–(हिं. पुं.) वह राग जो युद्ध के समय गाया-वजाया जाता है, वड़ा नगाड़ा, जंगी धौंसा; (वि.) हृदय-विदारक, कष्ट देनेवाला, मारनेवाला; (हिं. पुं.) मरुदेश का रहनेवाला।
मारूत–(सं. पुं.) हनुमान; (हिं. पुं.) घोड़े के पिछले पैर की एक भौंरी।
मारे–(हिं. अव्य.) के कारण।
मार्कंडेय–(सं. पुं.) मृकण्डु ऋषि के पुत्र जो अपने तपोवल से मृत्यु को परास्त करके चिरजीवी हुए हैं, जन्मदिन तथा संस्कारादि के कृत्यों में इनकी पूजा की जाती है।
मार्कट–(सं. पुं.) मर्कट-संवंधी।
मार्का–(हिं. पुं.) संकेत, कोई अंक या चिह्न जो किसी विशेष वात का सूचक हो।
मार्ग–(सं. पुं.) पथ, मृगमद, कस्तूरी, अगहन का महीना, मृगशिरा नक्षत्र, अन्वेषण, खोज, विष्णु।
मार्गक–(सं. पुं.) अगहन का महीना।
मार्गण–(सं. पुं.) अन्वेषण, ढूंढ़ना, परीक्षा करना, प्रार्थना; (पुं.) भिखमंगा, शर, वाण।
मार्गणता–(सं. स्त्री.) याचकता।
मार्गतोरण–(सं. पुं.) मार्गपर वना हुआ फाटक।
मार्गधेनु–(सं. पुं.) एक योजन का विस्तार।
मार्गन–(हिं. पुं.) देखें 'मार्गण'।
मार्गपाली–(सं. स्त्री.) स्तम्भ, खंभा।
मार्गवंध–(सं. पुं.) मार्ग रोकना।
मार्गरक्षक–(सं. पुं.) पथका रक्षक या पहरेदार।
मार्गशाखी–(सं. पुं.) मार्ग पर लगाये हुए वृक्ष।
मार्गशीर्ष–(सं. पुं.) अगहन का महीना।
मार्गिक–(सं. पुं.) पथिक, यात्री।
मार्गित–(सं. वि.) अन्वेषित, खोजा हुआ।
मार्गितव्य–(सं. वि.) अन्वेषण या खोज करने योग्य।
मार्गी–(सं. पुं.) मार्ग पर चलनेवाला, यात्री, संगीत में एक मूर्च्छना का नाम।
मार्गेश–(सं. पुं.) मार्गरक्षक।
मार्ग्य–(सं. वि.) मार्जनीय, मार्जन करने योग्य।
मार्जक–(सं. वि.) निर्मल करनेवाला; (पुं.) रजक, धोवी।
मार्जन–(सं. पुं.) स्वच्छ करने का काम, वैदिक संध्या करते समय मन्त्र पढ़कर शरीर पर जल छिड़कना।
मार्जना–(सं. स्त्री.) मार्जन, स्वच्छता, मृदंग का वोल, क्षमा।
मार्जनी–(सं. स्त्री.) झाड़ू।
मार्जनीय–(सं. वि.) मार्जन करने योग्य।
मार्जार–(सं. पुं.) विलाव, विल्ली।
मार्जारक–(सं. पुं.) मयूर, मोर, विल्ली।
मार्जारी टोडी–(हिं. स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।
मार्जित–(सं. वि.) मार्जन किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।
मार्तंड–(सं. पुं.) शूकर, सुवर्णमाक्षिक, आक सूर्य; **–मूल**–(पुं.) अकवन की जड़।
मार्त्य–(सं. वि.) नश्वर, मर्त्य।
मार्दव–(सं. पुं.) दूसरे को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना, अहंकाररहित होना, सरलता।
मार्दवीकृत–(सं. वि.) कोमल किया हुआ।
मार्मिक–(सं. वि.) मर्मस्पर्शी, मर्मस्थान पर प्रभाव डालनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) मार्मिक होने का भाव, किसी वस्तु के मर्म तक पहुँचने का भाव।
माल–(सं. पुं.) वन, जंगल, क्षेत्र, कपट, हरताल, म्लेच्छ जाति, विष्णु; (हिं. स्त्री.) माला, हार, पंक्ति, चरखे के टेकुए को घुमाने की रस्सी, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु वनी हो, युवती स्त्री, गणित में वर्ग

का घात; (अ.पुं.) स्वादिष्ट भोजन, खेत की मालगुजारी, धन, सम्पत्ति, सामग्री, क्रय-विक्रय के पदार्थ, वाणिज्य की सामग्री; (हिं. पुं.) मल्ल; (मुहा.) **–चीरना**–दूसरे का धन हरण करना।
मालकँगनी–(हिं. स्त्री.) वृक्षों पर फैलनेवाली एक पहाड़ी लता जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है।
मालका–(सं. स्त्री.) माला।
मालकुंडा–(हिं.पुं.) नील रखने का मटका।
मालकोश–(सं.पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसको कौशिक राग भी कहते हैं।
मालकोस–(हिं. पुं.) देखें 'मालकोश'।
मालगाड़ी–(हिं.पुं.) वह रेलगाड़ी जिसमें केवल माल (वाणिज्य-वस्तु) भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।
मालगुजारी–(अ.स्त्री.) भूमिकर, लगान।
मालगुर्जरी–(सं.स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।
मालगोदाम–(हिं. पुं.) वह स्थान जहाँ व्यापार का माल जमा रखा जाता है, रेल के स्टेशनों पर वह स्थान जहाँ मालगाड़ी से भेजा जानेवाला अथवा आया हुआ माल रहता है।
माल-टाल–(हिं. पुं.) वन-संपत्ति।
मालतिका–(सं.स्त्री.) कार्त्तिकेय की एक अनुचरी।
मालती–(सं.स्त्री.) वृक्षों आदि पर फैलनेवाली एक लता जिसमें सुगंधित सफेद फूल होते हैं, युवती, बारह अक्षरों के एक वर्णिक वृत्त का नाम, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छः अक्षर होते हैं, रात्रि, चांदनी, पाठालता, जायफल का वृक्ष; **–टोडी**–(स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी; **–पत्रिका**–(स्त्री.) जावित्री; **–फल**–(पुं.) जायफल।
मालदह–(हिं. पुं.) एक प्रकार का आम जो पूरबी बिहार प्रान्त में अधिक होता है।
मालदही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, एक प्रकार की छाजन या छप्पर लगी हुई नाव।
मालद्वीप–(हिं.पुं.) हिंद महासागर के अन्तर्गत सिंहल के समीप एक द्वीपपुंज।
मालपुआ, मालपूवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मीठा पकवान जो पूरी की तरह घी में छाना जाता है।
मालबरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की ईख।
मालभंडारी–(हिं. पुं.) जहाज।
मालय–(सं. पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; व्यापारियों का झुंड, वह स्थान जहाँ कोई प्रेमी अपनी नायिका से मिलता है, पद्मकाष्ठ, श्रीखंड, चंदन; (वि.) मलयगिरि संबंधी।
मालव–(सं. पुं.) अवन्ति देश, मालवा देश, एक राग का नाम जिसको भैरव भी कहते हैं, मालवा का निवासी; **–क**–(पुं.) मालवा का रहनेवाला; **–गौड़**–(पुं.) एक संकर राग का नाम; **–श्री**–(स्त्री.) श्रीराग की एक रागिनी का नाम।
मालवा–(हिं. पुं.) मध्य भारत का एक प्रदेश।
मालवी–(सं.स्त्री.) श्रीराग की एक रागिनी।
मालवीय–(सं. वि.) मालवा देश-संबंधी, मालवा देश का; (पुं.) मालवा का रहनेवाला, ब्राह्मणों की एक उपजाति।
मालसी–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
माला–(सं. स्त्री.) श्रेणी, पंक्ति, आवलि, गले में पहिनने का फूलों का हार, गजरा, जपमाला, सुमरनी, एक प्रकार की दूब, भुईंआमला, उपजाति छन्द का एक भेद; (मुहा.) **–फेरना**–जप करना; **उलटी माला फेरना**–किसी का अहित चाहना; **–कार**–(पुं.) माला बनानेवाला, माली; **–गुण**–(पुं.) माला गूँथने का सूत, गले में पहिनने का गहना; **–दीपक**–(पुं.) एक अर्थालंकार जिसम पूर्वकथित वस्तु को उसमें होनवाले उत्तरोत्तर उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है; **–धर**–(वि.) माला धारण करनेवाला; (पुं.) सत्रह अक्षरों के एक वर्णिक वृत्त का नाम; **–फल, –मणि**–(पुं.) रुद्राक्ष।
मालामाल–(अ. वि.) धन-धान्य से पूर्ण।
मालिका–(सं. स्त्री.) पंक्ति, माला, चमेली, अंगूर का मद्य, मालिन।
मालिनी–(सं. स्त्री.) मालिन, गौरी, गंगा, प्राचीन चम्पा नगरी, एक मातृका का नाम, जवासा का पौधा, स्कन्द की सात माताओं में से एक, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते ह द्रौपदी का एक नाम, मदिरा नाम का वृत्त।
मालिन्य–(सं. पुं.) मलिनता, अन्धकार, अँधेरा, पाप, बुरी वृत्ति।
मालिया–(हिं. पुं.) मोटे रस्सों में दी जानेवाली एक प्रकार की गाँठ।
मालिवान–(हिं. पुं.) देखें 'माल्यवान्'।
माली–(हिं. पुं.) फूल बेचनेवाली जाति-विशेष, वह जो बगीचों में पेड़ लगाने और सींचने का काम करता है; वाल्मीकीय रामायण के अनुसार सुकेश राक्षस के पुत्र का नाम, एक छन्द जिसका दूसरा नाम राजीवगण है; (वि.) माला पहिने हुए, (फा. वि.) आर्थिक, धनसंबंधी।
मालीय–(सं.वि.) माली-संबंधी, माली का।
मालु–(सं. पुं.) वृक्ष पर चढ़नेवाली एक लता का नाम।
मालूम–(अ. वि.) ज्ञात, विदित।
मालूर–(सं.पुं.) कैथ का वृक्ष, बेल का पेड़।
मालेया–(सं. स्त्री.) बड़ी इलायची।
मालोपमा–(सं.स्त्री.) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं तथा प्रत्येक उपमान के धर्म भिन्न होते हैं।
माल्य–(सं. पुं.) पुष्प, फूल, गले में धारण करने की माला; **–जीवक**–(पुं.) मालाकार, माली; **–वती**– (वि.) माला पहिने हुए; **–वान्, –वंत**–(पुं.) पुराणों के अनुसार एक पर्वत का नाम, सुकेश के पुत्र का नाम जो एक राक्षस था, (यह माली और सुमाली का भाई था।)
मावली–(हिं. पुं.) दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति, (शिवाजी की सेना में इस जाति के अधिक सैनिक थे।)
मावा–(हिं. पुं.) पीच, माँड़, सत्व, प्रकृति, खोया, अंडे के भीतर का रस, मसाला।
माश–(हिं. पुं.) देखें 'माष'।
माशा–(हिं. पुं.) एक तोले का बारहवाँ भाग, आठ रत्ती का एक मान या बाट।
माशी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का रंग जो कालापन लिये हरा होता है।
माष–(सं. पुं.) उड़द, परिमाण विशेष, माशा, शरीर पर का मसा जो काले रंग का होता है; **–क**–(पुं.) पाँच रत्ती का परिमाण, उड़द; **–पर्णी**–(स्त्री.) जंगली उड़द; **–वटी**–(स्त्री.) उड़द की बड़ी।
माषाद–(सं. पुं.) कच्छप, कछुआ।
मास–(सं. पुं.) वर्ष का बारहवाँ भाग, महीना, (जितने दिनों तक सूर्य एक राशि में रहता है वह सौर-मास कहलाता है। तिथि के अनुसार मास को चान्द्र-मास कहते हैं); **–जात**–(वि.) जिसको उत्पन्न हुए केवल एक महीना हुआ हो; **–पूर्व**–(अव्य.) एक महीना पहिले; **–प्रवेश**–(पुं.) महीने का आरम्भ होना।
मासना–(हिं.क्रि.अ.,स.) मिलना, मिलाना।
मासवृद्धि–(हिं.स्त्री.) अण्डवृद्धि का रोग, गलगण्ड, घेघा।
मासल–(हिं.वि.) देखें 'मांसल', हृष्ट-पुष्ट।
मासांत–(सं. पुं.) एक महीन का अन्त, अमावस्या, संक्रान्ति का दिन।

मासा–(हिं. पुं.) देखें 'माशा' ।
मासिक–(हिं. वि.) मास-संबंधी, महीने का, महीने में एक बार होनेवाला; (पुं.) मासिक वेतन, पत्रिका आदि ।
मासी–(हिं.स्त्री.) माँ की बहिन, मौसी ।
मासुरी–(सं.स्त्री.) मासी, मौसी, चीर-फाड़ का एक प्राचीन अस्त्र ।
मासोपवास–(सं. स्त्री.) एक महीने तक का अनशन, व्रत ।
माह–(हिं.पुं.) माष,उड़द; (फा.पुं.) महीना ।
माहत–(सं. पुं.) महत्त्व, बड़ाई ।
माहन–(सं. पुं.) ब्राह्मण ।
माहना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'उमाहना' ।
माहनीय–(सं. वि.) पूजनीय, श्रेष्ठ ।
माहली–(हिं. पुं.) वह सेवक जो अन्तःपुर में आता-जाता हो, सेवक, दास ।
माहाँ, माहँ–(हिं. अव्य.) देखें 'महँ' ।
माहाकुल–(सं. वि.) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो ।
माहात्मिक–(सं. वि.) महात्मा-संबंधी ।
माहात्म्य–(सं.पुं.) महिमा,बड़ाई, महत्त्व, गौरव, आदर, सम्मान ।
माहाराज्य–(सं.पुं.) महाराज का पद या मर्यादा ।
माहाराष्ट्र–(सं. वि.) महाराष्ट्र-संबंधी ।
माहि–(हिं. अव्य.) भीतर, में, पर ।
माहिर–(अ. वि.) निपुण,गुण में बढ़ा हुआ ।
माहिला–(हिं. पुं.) मल्लाह, माँझी ।
माहिष–(सं. वि.) भैंस-संबंधी, भैंस का ।
माहिषिक–(सं. पुं.) व्यभिचारिणी स्त्री का पति ।
माहिष्मती–(सं. स्त्री.) भारतवर्ष की एक अति प्राचीन नगरी का नाम जो दक्षिण देश में थी ।
माहीं–(हिं. अव्य.) देखें 'माँह' ।
माहुर–(हिं. पुं.) विष, गरल ।
माहेन्द्र–(सं.वि.) जिसका पूज्य देवता इन्द्र हो, इन्द्र-संबंधी; (पुं.) एक अस्त्र का नाम ।
माहेन्द्री–(सं. स्त्री.) इन्द्राणी, इन्द्र की शक्ति, गाय, सात मातृकाओं में से एक ।
माहेय–(सं. वि.) मिट्टी का बना हुआ; (पुं.) मंगल ग्रह, विद्रुम, मूँगा ।
माहेश–(सं. वि.) महेश-संबंधी ।
माहेशी–(सं. स्त्री.) दुर्गा ।
माहेश्वर–(सं. वि.) महेश्वर-संबंधी; (पुं.) एक यज्ञ का नाम, एक उपपुराण का नाम, शैव सम्प्रदाय का एक भेद, एक अस्त्र का नाम, पाणिनि के अइउण्, ऋलृक् आदि चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यञ्जन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है ।
माहेश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, एक मातृका का नाम, वैश्यों की एक जाति ।
मि–(पुं.) चीन देश की एक जाति का नाम ।
मिगनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मेंगनी' ।
मिगी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मींगी' ।
मिड़ाई–(हिं. स्त्री.) मींड़ना या मींजने की क्रिया या भाव, मींड़ने का शुल्क, छींट की छपाई में एक क्रिया जो कपड़े को छापने के बाद और धोने के पहले की जाती है ।
मिंहदी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मेंहदी' ।
मिआद–(हि.पुं.) नियत काल या समय ।
मिआदी–(हिं.वि.) नियत काल पर होनेवाला ।
मिचकना–(हिं. क्रि. अ.) पलकों का झपकना या बंद होना ।
मिचकाना–(हिं.क्रि.स.) बार-बार आँखें खोलना या बंद करना, आँखें मटकाना ।
मिचकी–(हिं. स्त्री.) छलांग ।
मिचना–(हिं.क्रि.अ.) आँखों का बंद होना ।
मिचलाना–(हिं. क्रि. अ.) ओकाई आना, मतली आना ।
मिचली–(हिं. स्त्री.) जी मिचलाने की क्रिया, मतली ।
मिचौनी–(हिं.स्त्री.) आँख मिचौली ।
मिजाज–(अ.पुं.) प्रकृति, स्वभाव, आदत, घमंड, गर्व; (मुहा.)–न मिलना–घमंड के मारे किसी से बात न करना;–होना–घमंड होना ।
मिजाजदार–(अ. वि.) घमंडी ।
मिजाजी–(हिं. वि.) घमंडी, अभिमानी ।
मिटका–(हिं. पुं.) देखें 'मटका' ।
मिटना–(हिं. क्रि. अ.) किसी अंकित चिह्न आदि का लुप्त हो जाना, नष्ट होना, न रह जाना ।
मिटाना–(हिं. क्रि. स.) (रेखा, चिह्न आदि को) दूर करना या हटाना, नष्ट कर देना, रहने न देना ।
मिटिया–(हिं. स्त्री.) मिट्टी का छोटा बरतन, मटकी; (वि.) मिट्टी का बना हुआ ।
मिटियाना–(हिं. क्रि. स.) मिट्टी लगाकर स्वच्छ करना, रगड़ना या चिकनाना ।
मिटिया-महल–(हिं.पुं.) मिट्टी का घर, झोपड़ी ।
मिट्टी–(हिं. स्त्री.) पृथ्वी, भूमि, जमीन, खाक, भस्म, धूल, शरीर, देह, शव, शरीर की बनावट, चन्दन का तेल या इत्र जिसके योग में दूसरे इत्र बनाये जाते हैं; (मुहा.) –करना–नाश करना; –का पुतला–मनुष्य का शरीर; –खराबी–दुर्दशा. नाश; –के मोल–बहुत सस्ते दाम पर; –डालना–किसी दोष को छिपा देना; –देना–कब्र में मुरदा रखने के बाद उसमें लोगों का थोड़ी-थोड़ी मिट्टी डालना, कब्र में गाड़ना; –पलीद करना–दुर्दशा करना; –मिट्टी में मिलना–पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट हो जाना; –का तेल–(पुं.) एक तरल खनिज पदार्थ जो दीपक जलाने आदि के काम में आता है; –का फूल–(पुं.) भूमि पर जमनेवाला एक प्रकार का क्षार, रेह ।
मिट्ठा–(हिं. वि.) देखें 'मीठा' ।
मिट्ठी–(हिं. स्त्री.) चुंबन, चूमा ।
मिट्ठू–(हिं. वि.) मीठा बोलनेवाला, चुप रहनेवाला, न बोलनेवाला, मधुरभाषी; (पुं.) तोता ।
मिठ–(हिं.वि.) 'मीठा' शब्द का संक्षिप्त रूप, इसका व्यवहार प्रायः यौगिक शब्द बनाने में कुछ शब्दों के पहिले किया जाता है; –बोलवा, –बोला–(वि.) मधुरभाषी, मीठा बोलनेवाला; –लोना–(वि.) जिसमें कम नमक पड़ा हो ।
मिठाई–(हिं. स्त्री.) मीठा होने का भाव, मिठास, खाने की कोई मीठी वस्तु, कोई अच्छा पदार्थ ।
मिठास–(हिं.स्त्री.) मीठा होने का भाव, माधुर्य, मीठापन ।
मिठोरी–(हिं. स्त्री.) पीसे हुए उड़द या चने की बनी हुई बरी ।
मिड़ाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'मिड़ाई' ।
मितंग–(हिं. पुं.) हस्ती, हाथी ।
मित–(सं. वि.) परिमित, जो सीमा के भीतर हो, कम, थोड़ा, क्षिप्त, फेंका हुआ; (हिं. पुं.) मित्र; –भाषी–(वि.) स्वल्पभाषी, थोड़ा बोलनेवाला; –भुक्–(वि.) थोड़ा खानेवाला; –मति–(वि.) अल्पमति, थोड़ी बुद्धिवाला; –व्यय–(पुं.) कम व्यय करना; –व्ययिता–(स्त्री.) कम व्यय; –व्ययी–(वि.) परिमित व्यय करनेवाला; –शायी–(वि.) बहुत कम सोनेवाला ।
मिताई–(हिं. स्त्री.) मित्रता, दोस्ती ।
मिताक्षरा–(सं.स्त्री.) याज्ञवल्क्य-स्मृति की टीका जिसको विज्ञानेश्वर ने बनाया था ।
मिताचार–(सं. पुं.) परिमित आचार ।
मितार्थ–(सं.पुं.) परिमित अर्थ, वह दूत जो थोड़ी बातें कहकर कार्य सम्पन्न करता है ।

मितार्थक–(सं. वि.) कम अर्थ का ।
मिताशन–(सं.वि.) कम भोजन करनेवाला।
मिताशी–(सं. वि.) अल्पभोजी ।
मिताहार–(सं. पुं.) थोड़ा भोजन।
मिति–(सं.स्त्री.) मान, परिमाण, सीमा, विभाग ।
मिती–(हिं.स्त्री.) महीने की तिथि जब तक व्याज देना हो; (क्रि.पुं.)–पूजना– हुंडी देन का नियत काल बीतना।
मित्र–(सं. पुं.) साथी, सखा, पुराण के अनुसार बारह आदित्यों में से एक, आर्य जाति के एक प्राचीन देवता, एक मरुत; –करण–(पुं.) मित्रता करना; –घ्न– मित्र की हत्या करनेवाला, विश्वास-घातक; –ता–(स्त्री.) मित्र होने का भाव ।
मिथुन–(सं. पुं.) मैथुन, संभोग, बारह राशियों में से तीसरी राशि ।
मिथ्या–(सं. स्त्री.) झूठ, असत्य; –चर्या– (स्त्री.) कपटाचरण; –वादी–(वि., पुं.) झूठ बोलनेवाला ।
मिनट–(अं. पुं.) घंटे का साठवाँ भाग ।
मिमियाना–(हिं. क्रि. अ.) में-में करना (बकरी का) ।
मिरगी–(हिं. स्त्री.) एक मानस रोग, मूर्छा रोग ।
मिरचा–(हिं. पुं.) लाल मिर्च ।
मिर्च–(हिं.स्त्री.) काले रंग का गोल दाना जो स्वाद में कटु होता है, लाल मिर्च ।
मिलकी–(हिं.पुं.)जिसके पास भूसम्पत्ति हो, जमींदार, जिसके पास धनसम्पत्ति हो ।
मिलन–(सं. पुं.) समागम, भेंट, मिश्रण, मिलावट; –सार–(हिं. वि.)जो सब से प्रेमपूर्वक मिलता हो, सब से हेलमेल रखनेवाला; –सारी–(हिं. स्त्री.) सुशीलता, सब से प्रेमपूर्वक मिलन का गुण; –स्थान–(स्त्री.) मिलने का स्थान ।
मिलना–(हिं.क्रि.अ., स.) दो भिन्न-भिन्न पदार्थों का एक होना, सम्मिलित होना, आलिंगन करना, छाती से लगाना, किसी पक्ष में होना, संभोग करना, बाजों का बजने के पहले सुरों का मेल होना, मेल-मिलाप होना, (गुण, आकृति आदि का) समान होना, सटना, चिपकना, लाभ होना, सामने आना, भेंट होना, प्राप्त होना; मिलता-जुलता–(वि.) समान, एकसा; मिला-जुला–(वि.) मिश्रित ।
मिलनी–(हिं. स्त्री.) विवाह की एक रीति जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उनको कुछ रुपये नेग देते हैं ।
मिलवाई–(हिं. स्त्री.) मिलवाने की क्रिया या भाव ।
मिलवाना–(हिं.क्रि.स.) मिलने या मिलाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को मिलने में प्रवृत्त करना, भेंट या परिचय कराना, मेल कराना, सम्भोग कराना ।
मिलाई–(हिं. स्त्री.) मिलने की क्रिया या भाव, जाति से बहिष्कृत व्यक्ति को पुनः जाति में मिलाने का काम, देख 'मिलनी' ।
मिलान–(हिं. पुं.) मिलाने की क्रिया या भाव, ठीक होने की जाच, तुलना ।
मिलाना–(हिं. क्रि. स.) मिश्रण करना, एक पदार्थ में दूसरा पदार्थ डालना, भिन्न-भिन्न पदार्थों को एक में करना, मेल कराना, किसीको अपने पक्ष में करना, परिचय या भेंट कराना, सम्भोग कराना, सटाना, चिपकाना, संलग्न या संयुक्त करना, बराबर करना, यह देखना कि प्रतिलिपि मूल के अनुसार है या नहीं, अपना साथी या भेदिया बनाना ।
मिलाप–(हिं. पुं.) मिलने की क्रिया या भाव, मित्रता, सम्भोग, भेंट, मिलाई ।
मिलाव–(हिं. पुं.) मिलाने की क्रिया या भाव, मिलाप, मिलावट ।
मिलावट–(हिं. स्त्री.) मिलाये जाने का भाव, किसी अच्छी वस्तु में घटिया वस्तु का मेल ।
मिलिंदक–(सं. पुं.) एक प्रकार का सर्प ।
मिलित–(सं.वि.) सटा हुआ, मिला हुआ ।
मिलोना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'मिलाना', गाय का दूध दूहना; (पुं.) बालू मिली हुई एक प्रकार की अच्छी मिट्टी ।
मिलौनी–(हिं. स्त्री.) मिलनी की रस्म, (विवाह की एक प्रथा), मिलाने की क्रिया या भाव, मिलावट ।
मिशि–(सं. स्त्री.) मधुरिका, सौंफ, मेथी, जटामासी या बालछड़ ।
मिश्र–(सं. पुं.) रक्त, लोहू, सन्निपात, ज्योतिष के अनुसार एक गण का नाम, ब्राह्मणों के वर्ग की एक उपाधि जो कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा सारस्वत ब्राह्मणों में होती है; (वि.) मिश्रित, मिला हुआ, श्रेष्ठ, बड़ा, गणित में भिन्न प्रकार की संख्याओं से संबद्ध; –क–(पुं.) जसद, जस्ता, खारी नमक, मूली; –केशी– (स्त्री.) एक अप्सरा जो मेनका की सखी थी; –ज–(पुं.) वह जो भिन्न जातियों के मिश्रण से उत्पन्न हो, खच्चर; –जाति– (स्त्री.) वर्णसंकर, दोगला; –ण– (पुं.) दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया, जोड़ने की क्रिया, मिलावट, संयोजन; –व्यवहार–(पुं.) गणित की एक क्रिया ।
मिश्रित–(सं.वि.) सम्मिलित, मिलाया हुआ।
मिश्री–(हिं. स्त्री.) देखें 'मिसरी' ।
मिश्रीकरण–(सं.पुं.) मिलाने की क्रिया ।
मिश्रीभूत–(सं. वि.) मिलाया हुआ ।
मिश्रौदन–(सं. पुं.) खिचड़ी ।
मिष–(सं. पुं.) छल, कपट, बहाना, हीला, ईर्ष्या, डाह, स्पर्धा, होड़ ।
मिषिका–(सं. स्त्री.) मधुरिका, सौंफ ।
मिष्ट–(सं. पुं.) मीठा रस; (वि.) मधुर, मीठा; –पाक–(पुं.) मिष्टान्न, मुरब्बा; –पाचक– (पुं.) अच्छा भोजन बनानेवाला; –भाषी–(वि.) मधुर बोलनेवाला ।
मिष्टान्न–(सं.पुं.) मिष्ट, पकवान, मिठाई।
मिस–(हिं. पुं.) बहाना, हीला, पाखंड ।
मिसन–(हिं.स्त्री.) बालू मिली हुई मिट्टी ।
मिसना–(हिं. क्रि. अ.) मिश्रित होना, मला जाना, मींजा जाना, देखें 'मिलना'।
मिसरी–(हिं. पुं.) मिस्र देश का निवासी; (स्त्री.) मिस्र देश की भाषा, स्वच्छ करके जमाई हुई सफद चीनी ।
मिसि–(सं.स्त्री.) सौंफ, जटामासी, खस ।
मिसिल–(अ. स्त्री.) मुकदमे से संबंधित कागज-पत्र जो इकट्ठा करके नत्थी कर दिये गये हों ।
मिसिरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मिसरी' ।
मिसिली–(हिं. वि.) जिसके विषय में न्यायालय में कोई मिसिल बन चुकी हो, जिसको न्यायालय से दण्ड मिल चुका हो ।
मिस्तर–(हिं.पुं.) लकड़ी का वह उपकरण जिससे राज पलस्तर करते हैं ।
मिस्तरी–(हिं. पुं.) कुशल कारीगर ।
मिस्ता–(हिं. पुं.) बंजर भूमि, अन्न को दाँवने के लिय बनाई हुई भूमि ।
मिस्र–(अ.पुं.) अफ्रीका के पूर्वोत्तर भाग का एक प्रसिद्ध देश ।
मिस्री–(हिं. स्त्री.) देखें 'मिसरी' ।
मिस्सा–(हिं. पुं.) मूंग, मोठ आदि का भूसा, कई तरह की दालों को पीस कर बनाया हुआ आटा ।
मिहिर–(सं. पुं.) विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, मेघ, बादल, ताँबा, अर्क वृक्ष ।
मिहिरकुल–(सं.पुं.)प्राचीन शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध राजा तोरमाण के पुत्र का नाम ।
मींगी–(हिं. स्त्री.) गूदा, गिरी ।
मींजना–(हिं.क्रि.स.) हाथों से मलना,

मसलना ।

मींड़–(हिं. स्त्री.) संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस चातुरी से बजाना या गाना जिसमें दोनों स्वरों के बीच का संबंध स्पष्ट हो जाय और यह न जान पड़े कि गानेवाला एक स्वर से कूदकर दूसरे स्वर पर चला गया है, गमक ।

मींड़क–(हिं. पुं.) मेंढक ।

मींड़ना–(हिं. क्रि. स.) हाथों से मलना, मसलना ।

मीआ(या)द–(अ. स्त्री.) नियत समय या काल, मियाद ।

मीआ(या)दी–(हिं. वि.) जिसके लिये कोई समय या अवधि निर्धारित हो ।

मीआदी हुंडी–(हिं.स्त्री.) वह हुंडी जिसका रुपया निर्धारित अवधि पर देना पड़े ।

मीच, मीचु–(हिं. स्त्री.) मृत्यु ।

मीचना–(हिं. क्रि. स.) आँख बंद करना या मूंदना ।

मीचु–(हिं. स्त्री.) मृत्यु ।

मीजना–(हिं. क्रि. स.) देख 'मींजना', मसलना ।

मीजान–(अ. पुं.) जोड़, जमा ।

मीटना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'मीचना' ।

मीठा–(हिं. वि.) जो स्वाद में मधुर और प्रिय हो, सुस्वादिष्ट, हलका, धीमा, सुस्त, बहुत सीधा, किसी का अनिष्ट न करनेवाला, प्रिय, रुचिकर, मधुरभाषी, नपुंसक; (पुं.) मीठा खाद्य, मिठाई, गुड़, हलुवा, मीठा नीबू, वछनाग, एक प्रकार का कपड़ा; **–आलू**–(पुं.) शकरकन्द; **–कद्दू**–(पुं.) कुम्हड़ा; **–चावल**–(पुं.) मीठा भात; **–जीरा**–(पुं.) सौंफ; **–ठग**–(पुं.) झूठा और कपटी मित्र; **–तेल**–(पुं.) तिल या पोस्ते के दाने का तेल; **–पानी**–(पुं.) शक्कर तथा नीबू का सत मिला हुआ पानी; **–प्रमेह**–(पुं.) मधुमेह; **मीठी छुरी**–(स्त्री.) कपटी मित्र; **मीठी मार**–(स्त्री.) भीतरी मार जिसमें बाहर से चोट के चिह्न न दिखाई दे; **मीठी लकड़ी**–(स्त्री.) मुलेठी ।

मीड़–(हिं. स्त्री.) देखें 'मींड़' ।

मीत–(हिं. पुं.) मित्र ।

मीन–(सं. पुं.) मत्स्य, मछली, मेषादि राशियों में बारहवीं या अन्तिम राशि; **–केतन**–(पुं.) कन्दर्प, कामदेव; **–मेख निकालना**–दोष निकालना ।

मीना–(सं. स्त्री.) उषा की कन्या का नाम जिसका विवाह कश्यप से हुआ था; (पुं.) राजपूताना की एक वीर जाति का नाम, गहनों पर रंग चढ़ाना ।

मीनाक्ष–(सं. वि.) मछली के समान सुन्दर आँखोंवाला ।

मीनार–(हिं. स्त्री.) बहुत ऊँचा स्तंभ ।

मीनालय–(सं. पुं.) सागर, समुद्र ।

मीमांसक–(सं. पुं.) मीमांसा-शास्त्र को जाननेवाला, किसी प्रश्न की मीमांसा या निर्णय करनेवाला मनुष्य ।

मीमांसा–(सं. स्त्री.) विचारपूर्वक तत्त्व-निर्णय, छः दर्शनों में से एक जिसके दो विभाग हैं, जैमिनि ऋषिकृत पूर्वमीमांसा तथा व्यासकृत उत्तर-मीमांसा जो वेदान्त के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

मीमांसित–(सं.वि.) विचारपूर्वक मीमांसा किया हुआ ।

मीमांस्य–(सं. वि.) जिसकी मीमांसा करनी हो ।

मीराबाई–(हिं. स्त्री.) मेवाड़ के एक अधिपति महाराणा कुंभ की स्त्री का नाम जो कृष्ण की अनन्य उपासिका थी ।

मील–(हिं.पुं.) १७६० गज की दूरी ।

मीलन–(सं. पुं.) आँखें मूंदना, सिकोड़ना ।

मीलित–(सं.वि.) बंद किया हुआ, सिकोड़ा हुआ; (पुं.) वह अलंकार जिसमे प्रभाव अव्यक्त होने के कारण नहीं जान पड़ता, अतः उसका छिप जाना दिखाया जाता है ।

मीवर–(सं. वि.) पूज्य, माननीय ।

मुंगना–(हिं. पुं.) सहिजन का वृक्ष ।

मुंगरा–(हिं. पुं.) काठ का बड़ा हथौड़ा, नमकीन बुँदिया ।

मुंगिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा, चारखाना ।

मुंगौरी–(हिं. पुं.) मूंग की बनी हुई बरी ।

मुंचन–(सं. पुं.) मोचन, परित्याग ।

मुंचना–(हिं. क्रि. अ., स.) मुक्त होना या करना ।

मुंज–(सं. पुं.) मूंज नामक घास; **–केशी**–(पुं.) शिव, महादेव, विष्णु; **–मणि**–(पुं.) पुखराज ।

मुंजर–(सं. पुं.) मृणाल, कमल की जड़ ।

मुंड–(सं. पुं.) शुम्भ का सेनापति, एक दैत्य जिसको भगवती दुर्गा ने मारा था, वृक्ष का ठूँठ, गरदन के ऊपर का अंग जिसमें आँख, नाक, मुँह आदि रहते हैं, मस्तक, सिर, कटा हुआ सिर, एक उपनिषद् का नाम; (वि.) मुंड़ा हुआ, अधम, नीच; **–न**–(पुं.) सिरके बालों को उस्तरे से मूंड़ने की क्रिया, द्विजातियों के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बालक के सिर का बाल मूंड़ा जाता है; **–फल**–(पुं.) नारियल का फल; **–मंडली**–(स्त्री.) अशिक्षित सेना; **–माला**–(स्त्री.) कटे हुए सिरों की माला जो शिव या काली के गले में सुशोभित है; **–मालिनी**–(स्त्री.) दुर्गा, काली; **–माली**–(पुं.) शिव, महादेव; **–शालि**–(पुं.) बोरो धान ।

मुंड़करी–(हिं. स्त्री.) घुटनों पर सिर धरकर बैठना ।

मुंड़चिरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार के फकीर जो अपना सिर, आँख, कान, नाक आदि किसी पैने हथियार से घायल करके भीख माँगते हैं, जब कोई जल्दी भीख नहीं देता तो वे अड़ जाते और अपने अंगों को और भी घायल करते हैं ।

मुंड़चिरापन–(हिं. पुं.) लेन-देन में बड़ी हुज्जत और हठ ।

मुंड़ना–(हिं. क्रि. स.) सिर के बालों की सफाई करना, लुटना, ठगा जाना, धोखे में आना, हानि उठाना ।

मुंडा–(हिं. पुं.) वह जिसके सिर पर बाल न हों या मुड़े हुए हों, वह जो सिर के बाल मुड़ाकर किसी साधु या योगी का चेला बन गया हो, वह पशु जिसके सींग न हों, बिना मात्रा की एक प्रकार की लिपि जिसका महाजन या व्यापारी व्यवहार करते हैं, मुड़िया अक्षर, बिना नोक का जूता, वह जिसके ऊपरी या इधर-उधर फैलनेवाले अंग न हों, छोटा नागपुर में रहनेवाली एक असभ्य जाति का नाम; (सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके सिर के बाल मूंड़ दिये गये हों ।

मुंड़ाई–(हिं. स्त्री.) मुंडन, मुड़ाने की क्रिया या भाव, मूंड़ने या मुड़ाने का शुल्क ।

मुंडासन–(सं. पुं.) योग का एक आसन ।

मुंड़ासा–(हिं. पुं.) सिर पर बांधने का मुरेठा ।

मुंडित–(सं. वि.) मूंड़ा हुआ ।

मुंडिनी–(सं. स्त्री.) कस्तूरी-मृग ।

मुंड़िया–(हिं. पुं.) वह जो सिर मुड़ाकर किसी साधु-संन्यासी का चेला बन गया हो, संन्यासी ।

मुंडी–(सं. स्त्री.) गोरखमुंडी ।

मुंडी–(हिं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका सिर मूंड़ा गया हो, विधवा, रांड़, बिना नोक की एक प्रकार की जूती; (पुं.) साधु या संन्यासी के प्रति तिरस्कारसूचक शब्द ।

मुंड़ेर–(हिं. स्त्री.) देखें 'मुंड़ेरा', खेत की सीमा पर बंधी हुई मेंड़ ।

मुंड़ेरा–(हिं. पुं.) सब से ऊपर की छत पर चारों ओर बनी हुई मेंड़ जैसी दीवार।
मुंड़री–(हिं. स्त्री.) छोटा मुंड़ेरा।
मुंदना–(हिं. क्रि. अ.) खुली हुई वस्तु का ढप जाना या बंद होना, (छेद, बिल आदि का) बंद होना, लुप्त होना, छिपना।
मुंदरा–(हिं. पुं.) योगियों का कान में पहनने का एक प्रकार का कुंडल, कान में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
मुंदरी–(हिं. स्त्री.) अँगुलियों में पहिनने का सोना, चाँदी आदि का छल्ला, अँगूठी।
मुंशी–(अ. पुं.) लिखनेवाला, लेखक।
मुंह–(हिं. पुं.) किसी प्राणी का वह अंग जिससे वह भोजन करता या बोलता है, मुख, मनुष्य या अन्य प्राणी के सिर का अगला भाग जिसमें आँख, नाक, कान आदि अंग होते हैं; चेहरा, सामर्थ्य, योग्यता, साहस, छिद्र, बरतन आदि का ऊपरी भाग का छिद्र, ऊपरी धार या किनारा; (मुहा.) **–काला करना**–अपने को अपमानित करना, व्यभिचार करना, उपेक्षा करना; **–की खाना**–अपमानित होना; **–के बल गिरना**–ठोकर खाकर इस प्रकार गिरना कि मुंह में चोट लग जाय; **–छिपाना**–लज्जावश सिर नीचा कर लेना; **–तक आना**–लबालब भर जाना; **–ताकना**–किसी के मुख की ओर देखना, स्तब्ध होकर मुंह निहारना, चुपचाप बैठे रहना; **–दिखाना**–सामने आना; **–देखकर बात कहना**–चापलूसी करते हुए कुछ कहना; **–देखना**–देखें 'मुंह ताकना'; **–देखे की**–दिखौआ, बनावटी; **–पर**–(अव्य.) प्रत्यक्ष, सामने; **–पर बरसना**–आकृति से मन का भाव प्रकट होना; **–फुलाना**–असन्तोष दिखलाना; **–फूंकना**–धिक्कारना, कोसना; **–रखना**–किसी की बात मानना; **–लगना**–किसी से उद्दंडता के साथ वाद-विवाद करना; **–लगाना**–सिर चढ़ाना; **–सूखना**–डर या लज्जा से मुख की आकृति उदास हो जाना, चेहरा उतर जाना; **–काला**–(पुं.) अप्रतिष्ठा, एक प्रकार की गाली; **–चटौवल**–(स्त्री.) चुम्बन, बकवाद; **–चोर**–(पुं.) वह जो लोगों के सामने जाने में संकोच करता हो; **–छुआई**–(स्त्री.) केवल ऊपरी मन से कुछ कहना; **–छुट**–(वि.) जो अश्लील बातें कहने में या गाली देने में संकोच न करे, मुंहफट; **–जोर**–(वि.) अधिक बोलनेवाला, बड़बड़िया, उद्दण्ड; **–जोरी**–(स्त्री.) उद्दण्डता, लड़ाकापन; **–दिखलाई, –दिखाई**–(स्त्री.) नई वधू का मुख देखने की रीति या रस्म, वह धन, आभूषण आदि जो मुंह देखने पर वधू को दिया जाता है; **–देखा**–(वि.) जो हार्दिक या आन्तरिक न हो, जो किसी को प्रसन्न करने के लिये हो, सर्वदा आज्ञा की प्रतीक्षा म रहनेवाला; **–नाल**–(स्त्री.) धातु की बनी हुई वह छोटी नली जो हुक्के की सटक या नैचे में लगी रहती है और जिसको मुंह में लगाकर धुआँ खींचा जाता है, तलवार के म्यान के सिरे पर लगी हुई धातु की सामी; **–पटा**–(पुं.) घोड़े का एक साज; **–फट**–(वि.) जिसकी वाणी संयत न हो; **–बंद**–(वि.) जिसका मुंह बन्द हो, जो खुला न हो; **–बँधा**–(पुं.) जैन साधु जो मुख पर कपड़ा बाँधे रहते ह; **–बोला**–(वि.) जो वास्तव में न हो, केवल मुख से कहकर बनाया गया हो; **–भराई**–(स्त्री.) मुंह भरने की क्रिया या भाव, वह धन जो किसी का मुंह बंद करने के लिये अर्थात् उसको कुछ कहने या करने से रोकने के लिये दिया जाय, उत्कोच, घूस; **–माँगा**–(वि.) मनोनुकूल, अपनी माँग के अनुसार।
मुंहामुंह–(हिं. अव्य.) मुंह तक, भरपूर।
मुंहासा–(हिं. पुं.) युवावस्था में मुख पर निकलनेवाले दाने या फुंसियाँ जो बीस से पचीस वर्ष की अवस्था तक निकलती हैं।
मुअत्तल–(अ. वि.) काम से अलग किया हुआ, पदच्युत।
मुअत्तली–(अ. स्त्री.) मुअत्तल होने का भाव, पदच्युत।
मुकंद–(सं.पुं.) कुंदरू, प्याज, साठी धान।
मुकट–(हिं. पुं.) देखें 'मुकुट'।
मुकटा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की रेशमी धोती जो पूजन, भोजन आदि के समय पहनी जाती है।
मुकता–(हिं. पुं.) देखें 'मुक्ता', मोती; (वि.) यथेष्ट, पर्याप्त, बहुत अधिक।
मुकदमा–(अ.पुं.) कचहरी में विचाराधीन मामला।
मुकदमेबाज–(अ.वि.) मुकदमा लड़नेवाला।
मुकना–(हिं.पुं.) देख 'मकुना'; (हिं.क्रि. अ.) मुक्त होना, छुटकारा पाना, समाप्त होना।
मुकरना–(हिं. क्रि. अ.) कोई बात कहकर उससे फिर जाना, या हटना; (पुं.) वह जो बात कहकर मुकर जाता हो।
मुकरनी–(हिं.स्त्री.) मुकरी नामक कविता।
मुकराना–(हिं.क्रि.स.) दूसरे को मुकरने में प्रवृत्त करना।
मुकरी–(हिं. स्त्री.) चार चरणों की एक कविता–इसके प्रथम तीन चरण ऐसे होते हैं जिनसे दो तरह के अर्थ निकलते हैं, तथा चौथे चरण में किसी पदार्थ का नाम लेकर उन चरणों का अर्थ अस्वीकार किया जाता है।
मुकर्रर–(अ. वि.) निश्चित, नियत।
मुकल–(सं. पुं.) अमलतास, गुग्गुल।
मुकाबला–(अं. पुं.) बराबरी, सामने होना या आना, मिलान करना।
मुकाम–(अं. पुं.) ठहरने का स्थान, पड़ाव, ठहराव, वासस्थान।
मुकामी–(अ. वि.) स्थानीय।
मुकियल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाँस।
मुकियाना–(हिं. क्रि. स.) किसी के शरीर पर मुक्कियों से बार-बार आघात करना, आटा गूँथने के बाद उसको कोमल करने के लिये बार-बार मुक्कियों से दबाना, घूंसे लगाना, मुक्का मारना।
मुकुंद–(सं. पुं.) विष्णु, एक प्रकार का रत्न, पारा, कुँदरू, कनेर, पोई का साग।
मुकुट–(सं. पुं.) राजाओं का सिर का आभूषण, किरीट, अवतंस, (प्राचीन काल के राजा मुकुट धारण करते थे।)
मुकुटी–(सं. स्त्री.) अँगुली मटकाना।
मुकुर–(सं. पुं.) दर्पण, मौलसिरी का वृक्ष, कुम्हार का डंडा जिससे वह चाक चलाता है, बेर का पेड़, एक प्रकार का केला, कोरक, कली।
मुकुरित–(सं. वि.) खिला हुआ।
मुकुल–(सं. पुं.) शरीर, आत्मा, भूमि, पृथ्वी, गुग्गुल, जमालगोटा, एक प्रकार का छन्द, कली।
मुकुलाग्र–(सं.पुं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।
मुकुलित–(सं. वि.) जिसमें कलियाँ लगी या निकली हों, कुछ खिली हुई (कली), आधा खुला और आधा बंद।
मुकुली–(सं.पुं.) वह पौधा जिसमें कलियाँ निकल आई हों।
मुकुष्ठ–(सं. पुं.) वनमूंग, मोट।
मुक्का–(हिं. पुं.) बँधी हुई मुट्ठी जिससे मारा जाय।
मुक्की–(हिं. स्त्री.) मुक्का, घूंसा, मुक्कों

की मार, आटा गूँथने के बाद उसको मृदु करने के लिये बँधी हुई मुट्ठी से बार-बार दबाना, किसी के शरीर पर मुट्ठी बाँध कर धीरे-धीरे आघात पहुँचाना जिससे शरीर की पीड़ा दूर हो।

मुक्केबाजी–(हि.स्त्री.) मुक्कों की लड़ाई।

मुक्खी–(हि. पुं.) एक प्रकार का कबूतर।

मुक्त–(सं. वि.) जिसको मोक्ष प्राप्त हो गया हो, बंधन से छूटा हुआ, जो दबाव से अलग हुआ हो, फेंका हुआ; –कंचुक–(पुं.) जिस सर्प ने हाल में केंचुली छोड़ी हो; –कंठ–(वि.) चिल्लाकार बोलनेवाला, बेधड़क बोलनेवाला; –क–(पुं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का फेंककर मारने का अस्त्र, फुटकार कविता; –केश–(वि.) जिसके बाल बँधे न हों; –केशी–(स्त्री.) काली देवी का एक नाम; –चक्षु–(पुं.) सिंह; (वि.) जिसकी आँखें खुली हों; –चेता–(वि.) जिसमें मोक्ष पान की बुद्धि आ गई हो; –ता–(स्त्री.) मुक्त होने का भाव, मुक्ति, छुटकारा; –निद्र–(वि.) जागरित, जगा हुआ; –मातृ–(स्त्री.) शुक्ति, सीप; –रस–(वि.) जिसका रस बह गया हो; –रोष–(वि.) जिसको क्रोध न हो; –लज्ज–(वि.) निर्लज्ज; –वसन–(वि.) जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, नग्न, नंगा; (पुं.) शुक्ति, सीप; –वेणी–(स्त्री.) द्रौपदी का एक नाम; –व्यापार–(वि.) जिसने कारबार छोड़ दिया हो, संन्यासी, त्यागी; –संशय–(वि.) जिसका सन्देह दूर हो गया हो; –सार–(पुं.) केले का पेड़; –हस्त–(वि.) उदार, जो बड़ा दानी हो।

मुक्तांबर–(सं. वि.) नग्न, नंगा।

मुक्ता–(सं. स्त्री.) मौक्तिक, मोती।

मुक्तात्मा–(सं. पुं.) वह पुरुष जो माया के बंधनों से मुक्त हो गया हो।

मुक्तापात–(हि. पुं.) एक प्रकार की झाड़ी जिसके डंठलों से चटाई बनती है।

मुक्तापुष्प–(सं.पुं.) कुन्द का पौधा या फूल।

मुक्ताल–(सं. पुं.) मोती, कपूर, हरफारेवड़ी, एक प्रकार का छोटा लिसोड़ा।

मुक्तामोदक–(सं.पुं.) मोतीचूर का लड्डू।

मुक्तासन–(सं. पुं.) योग-साधना का एक आसन, सिद्धासन।

मुक्ति–(सं. स्त्री.) मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण।

मुक्तिका–(सं स्त्री.) एक उपनिषद् जिसमें मुक्ति के विषय में मीमांसा की गई है।

मुक्तिक्षेत्र–(सं.पुं.) मुक्तिप्रद स्थान, काशी।

मुख–(सं. पुं.) मुँह, आनन, घर का द्वार, नाटक में एक प्रकार की सन्धि, शब्द, नाटक, वेद, पक्षी की चोंच, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, नाटक का पहला शब्द, आरम्भ, जीरा; (वि.) मुख्य, प्रधान; –कमल–(पुं.) कमल जैसी मुख; –खुर–(पुं.) दाँत; –चंद्र–(पुं.) चन्द्रमा के समान मुख की शोभा; –चपल–(वि.) जो बढ़-बढ़कर बोलता हो; –चपलता–(स्त्री.) बहुत अधिक बढ़-बढ़ कर बोलना; –चपला–(स्त्री.) आर्या छंद का एक भेद; –चपेटिका–(स्त्री.) गाल पर तमाचा मारना; –ज–(पुं.) ब्राह्मण; (वि.) मुख से उत्पन्न; –ताल–(पुं.) किसी गीत का पहला पद, टेक; –दूषण–(पुं.) पलाण्डु, प्याज; –दूषिका–(स्त्री.) मुँहासा रोग; –धावन–(पुं.) दतुवन करना; –पट–(पुं.) मुख ढाँपने का कपड़ा, नकाब, घूँघट; –पाक–(पुं.) बैलों आदि के मुख का एक रोग; –पिंड–(पुं.) अन्त्येष्टि-क्रिया में दिया जानेवाला पिंड; –पूरण–(पुं.) कुल्ली करने के लिये मुँह में लिया हुआ पानी; –प्रक्षालन–(पुं.) मुखधावन, मुँह धोना; –प्रिय–(पुं.) नारंगी, ककड़ी; –बंध–(पुं.) अनुक्रमणिका, प्रस्तावना; –भूषण–(पुं.) ताम्बूल, पान; –मंडल–(पुं.) चेहरा; –र–(वि.) अप्रियवादी, कटु, बोलनेवाला, बकवादी, प्रधान; (पुं.) कौवा; –वल्लभ–(पुं.) अनार का पेड़; (वि.) जो खाने में अच्छा लगे; –वाद्य–(पुं.) मुँह से फूंककर बजाने का बाजा; –वासिनी–(स्त्री.) सरस्वती देवी; –विपुला–(स्त्री.) आर्या छन्द का एक भेद; –शठ–(पु.) दुर्मुख, वह जो कटु वचन बोलता हो; –शुद्धि–(स्त्री.) मंजन या दतुअन आदि की सहायता से मुँह स्वच्छ करना, भोजन के उपरान्त पान-सुपारी आदि खाकर मुख को शुद्ध करना; –शोष–(पु.) प्यास या गर्मी के कारण मुँह सूखना; –संभव–(पु.) ब्राह्मण, [illegible]; –स्थ–(वि.) कण्ठस्थ, जो याद हो; –स्राव–(पु.) थूक, लार।

मुखड़ा–(हि. पु.) चेहरा, मुख।

मुखाकार–(सं. पु.) मुख के सदृश।

मुखाग्र–(सं. पु.) किसी पदार्थ का अगला भाग, ओठ; (हि.) कण्ठस्थ।

मुखापेक्षक–(सं. वि.) दूसरे का मुँह ताकनेवाला।

मुखापेक्षा–(सं. स्त्री.) दूसरे के आश्रित रहना, दूसरे का मुँह ताकना।

मुखापेक्षी–(सं. वि., पुं.) (वह) जो दूसरे की कृपादृष्टि के भरोसे रहता हो।

मुखामृत–(सं. पुं.) मुख की शोभा, छोटे बच्चों के मुँह की लार।

मुखास्त्र–(सं. पुं.) केवड़ा।

मुखिया–(हि. पुं.) नेता, सरदार, किसी काम को सब से पहले करनेवाला, अग्रसर, अगुआ, वल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिरों का प्रधान कर्मचारी जो मूर्ति की पूजा करता और भोग लगाता है।

मुख्य–(सं. वि.) प्रधान, सब से बड़ा, श्रेष्ठ

मुख्यतः–(सं.अव्य.) मुख्य रूप से, खास तौर पर।

मुख्यता–(सं. स्त्री.) मुख्य होने का भाव, श्रेष्ठता।

मुगदर–(हि. पुं.) एक प्रकार की लकड़ी की गावदुम मुँगरी जो व्यायाम में उपयोग की जाती है, जोड़ी।

मुगल–(फा. पुं.) मध्य एशिया के तातार नामक देश का निवासी, मुसलमानों के चार प्रधान वर्गों में से एक वर्ग।

मुगवन–(हि. पुं.) वनमूंग, मोठ।

मुगम–(हि. वि.) गोलकार न कहा हुआ संकेत में कहा गया।

मुग्ध–(सं. वि.) मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, सुन्दर, मनोहर, मूढ़, आसक्त, मोहित, नवीन, नया; –ता–(स्त्री.) –त्व–(पुं.) मूढ़ता, सुन्दरता, मोहित होने का भाव; –बुद्धि–(वि.) भ्रान्त बुद्धि का; –भाव–(पुं.) बुद्धिहीनता, सरलता।

मुग्धा–(सं. स्त्री.) साहित्य के अनुसार वह नायिका जो युवावस्था को प्राप्त हुई हो परन्तु उसमें काम की चेष्टा न हो।

मुचंगड़–(हि. वि.) मोटा और भद्दा।

मुचक–(सं. पुं.) लाक्षा, लाह।

मुचकुंद–(सं. पु.) एक सुगंधित फूल का पेड़।

मुचिर–(सं. वि.) उदार, दानी।

मुचुक–(सं. पु.) [illegible]।

मुचुकुंद–(सं. पु.) देखो 'मुचकुंद'

मुचुटी–(सं. स्त्री.) चुटकी बजाना।

मुछंदर–(हि. पु.) [illegible] [illegible]।

मुछियल–(हि. पु.) [illegible]।

मुजराई–(हि. स्त्री.) [illegible] का [illegible]

वादन करता हो।
मुझ–(हिं. सर्व.) "मैं" का वह रूप जो उसको कर्त्ता और संबंध कारक को छोड़कर अन्य कारकों में विभक्ति लगने से प्राप्त होता है, यथा–मुझको, मुझसे, मुझ पर।
मुझे–(हिं. सर्व.) "मैं" का कर्म और संप्रदान कारक का रूप।
मुटकना–(हिं. वि.) जो आकार में छोटा परन्तु सुन्दर हो।
मुटका–(हिं. पुं.) एक प्रकार की रेशमी धोती, मुकटा।
मुटमुरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का धान।
मुटाई–(हिं. स्त्री.) स्थूलता, मोटापन, पुष्टि, अभिमान, घमंड।
मुटाना–(हिं. क्रि. अ.) मोटा होना, अभिमानी होना।
मुटासा–(हिं. वि.) जो कुछ धन कमा लेने के कारण घमंडी हो गया हो।
मुटिया–(हिं. पुं.) वह श्रमिक जो बोझ ढोता हो।
मुट्ठा–(हिं. पुं.) चंगुल भर वस्तु, (घास, फूस, तृण आदि का) उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके, यन्त्र आदि की मुठिया, पुलिंदा, बँधा हुआ समूह जो मुट्ठी में आ सके, धुनकी की ताँत पर चोट लगाने का बेलन।
मुट्ठी–(हिं. स्त्री.) बँधी हुई हथेली, करतल की वह मुद्रा जो अँगुलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेने से बनती है, उतनी वस्तु जितनी बँधी हुई हथेली में अँट सके, बँधी हुई हथेली के बराबर की माप, अंगों का मर्दन; (मुहा.) –में–अधिकार या वश म; –गरम करना–घूस देना।
मुठभेड़–(हिं. स्त्री.) लड़ाई, टक्कर, सामना, भेंट।
मुठिका–(हिं. स्त्री.) मुट्ठी, घूंसा, मुक्का।
मुठिया–(हिं. स्त्री.) किसी अस्त्र की बेंट, धुनियों का वह डंडा जिससे वे ताँत पर मारते हैं, किसी वस्तु का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है।
मुठी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मुट्ठी'।
मुड़क–(हिं. स्त्री.) देखें 'मुरक'।
मुड़कना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'मुरकना'।
मुड़ना–(हिं. क्रि.अ.) दबाव या आघात से झुक जाना, टेढ़ा होकर भिन्न दिशा में प्रवृत्त होना, सीधा जाकर किसी ओर झुकना, किसी धारदार किनारे या नोक का एक ओर झुक जाना, घूमकर पीछे की ओर चलना, लौटना, पलटना, चलते-चलते किसी ओर फिर जाना।
मुड़ला–(हिं. वि.) मुंडा, बिना बाल का।
मुड़वाना–(हिं. क्रि. स.) किसी को मूँड़ने में प्रवृत्त करना, घूमने या मुड़ने म प्रवृत्त करना।
मुड़वारी–(हिं. स्त्री.) अटारी की भीत का सिरा, मुँड़ेरा, जिस ओर किसी पदार्थ का सिरा या ऊपरी भाग हो, चारपाई का सिरहाना।
मुड़हर–(हिं. पुं.) स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है।
मुड़ाना–(हिं. क्रि. स.) मुंडन कराना, मुँड़ाना।
मुड़िया–(हिं. पुं.) वह जिसका सिर मूंड़ा गया हो, संन्यासी; (स्त्री.) महाजनी लिपि।
मुड़ेरा–(हिं. पुं.) देखें 'मुंड़ेरा'।
मुतक्का–(हिं. पुं.) पटिया या ईंट की भीत जो छज्जे या ऊपरी चौक के पाटन के किनारे खड़ी की जाती है, खम्भा, लाट।
मुतसिरी–(हिं. स्त्री.) गले में पहनने की मोतियों की कंठी।
मुताह–(हिं.पुं.) मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी रूप का विवाह।
मुतेहरा–(हिं.पुं.) कंकण की आकृति का एक प्रकार का आभूषण।
मुद–(सं. पुं.) हर्ष, आनन्द।
मुदकारी–(हिं. वि.) हर्ष कारक।
मुदगर–(हिं. पुं.) देखें 'मुगदर'।
मुदरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मादक पदार्थ।
मुदित–(सं. वि.) आनन्दित, प्रसन्न।
मुदिता–(सं. स्त्री.) हर्ष, आनन्द, साहित्य में वह परकीया नायिका जो पर पुरुष की प्रीति या प्रेम की आकस्मिक प्राप्ति से प्रसन्न होती है।
मुदिर–(सं. पुं.) मेघ, बादल, कामुक, जिसकी काम-वासना तीव्र हो, मेंढक।
मुद्ग–(सं. पुं.) जलवायस, मूँग नामक अन्न; –पर्णी–(स्त्री.) वनमूँग, मोठ।
मुद्गर–(सं. पुं.) काठ का बना हुआ एक प्रकार का गावदुम दण्ड जिसकी पेंदी भारी होती है, (इसको हाथ में लेकर कई प्रकार हिलाते हुए मल्ल व्यायाम करते हैं), एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
मुद्गल–(सं. पुं.) रोहिंग नाम की घास, गोत्रप्रवर्तक एक ऋषि का नाम।
मुद्गवटक–(सं. पुं.) मूँग का वड़ा।
मुद्ध–(हिं. वि.) देख 'मुग्ध'।
मुद्धी–(हिं. स्त्री.) सरकनेवाली गाँठ।
मुद्रक–(सं. पुं.) पुस्तक छापनेवाला।
मुद्रण–(सं. पुं.) किसी वस्तु पर अक्षर आदि छापना, छपाई का काम, ठप्पे आदि की सहायता से छापकर मुद्रा तैयार करना, मूँदना।
मुद्रणा–(सं. स्त्री.) अँगूठी।
मुद्रणालय–(सं.पुं.) मुद्रण करने का स्थान, छापाखाना।
मुद्रांकन–(सं. पुं.) मुद्रा की सहायता से छापने का काम, छपाई, शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न जो गरम लोहे से दाग कर बनाये गये हों।
मुद्रांकित–(सं. वि.) मुद्रांकन किया हुआ।
मुद्रा–(सं.स्त्री.) किसी नाम की छाप या मुहर, अँगूठी, सोना-चाँदी आदि का सिक्का, चिह्न, छापने की विभिन्न लिपियों में से कोई एक, टाइप के ढले हुए अक्षर, तान्त्रिक साधना में अंग की विशिष्ट स्थिति, कान का एक आभूषण जिसको गोरखपंथी साधु पहनते हैं, अगस्त्य ऋषि की पत्नी का नाम, वह अलंकार जिसमें प्रकृत अर्थ के सिवाय पद्य में और भी साभिप्राय अर्थ निकलते हों, विष्णु के आयुधों के चित्र जिसको वैष्णव लोग अपने शरीर पर अंकित करते हैं अथवा गरम लोहे से दगवा लेते हैं, किसी देवता की आराधना करते समय हाथ, पाँव, अँगुली आदि की विशिष्ट स्थिति; मुख की आकृति, खड़े होने, बैठने या लेटने का कोई ढंग, हठयोग में विशेष अंग-विन्यास जो पाँच प्रकार का होता है, यथा–खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी; –कार–(पुं.) राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके अधिकार में राजा की मुद्रा रहती है, वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो; –कान्हड़ा–(पुं.) एक प्रकार का राग; –टोरी–(स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी; –तत्त्व, –विद्या–(पुं., स्त्री.) वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश की पुरानी मुद्राओं की सहायता से उस देश के ऐतिहासिक तत्त्वों का निरूपण किया जाता है; –मार्ग–(पुं.) ब्रह्मरन्ध्र, मस्तक के भीतर का वह स्थान जहाँ प्राणवायु रहती है; –यंत्र–(पुं.) वह यन्त्र जिसके द्वारा कागज आदि पर लकड़ी या सीसे के ढले हुए मुद्राक्षरों से छापा जाता है, मुद्रण की कल; –विज्ञान, –शास्त्र–(पुं.) देखें 'मुद्रातत्त्व'।
मुद्राक्षर–(सं.पुं.) सीसे के ढले हुए अक्षर।

जो छपने के काम में आते हैं, टाइप।
मुद्रिक, मुद्रिका–(सं.स्त्री.) सोना या चाँदी की मुद्रा, रुपया, अँगूठी, कुश की बनी हुई वह अँगूठी जो पितृश्राद्ध में अनामिका में पहनी जाती है, पवित्री।
मुद्रित–(सं.वि.) मुद्रण किया हुआ, छपा हुआ, मुँदा हुआ।
मुधा–(सं. अव्य.) व्यर्थ, वृथा, निष्फल, निरर्थक; (वि.) निष्प्रयोजन, मिथ्या।
मुनमुना–(हिं.पुं.) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।
मुनरा–(हिं. पुं.) कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।
मुनि–(सं. पुं.) मौनव्रती, महात्मा, ऋषि, तपस्वी, त्यागी, (भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने मुनि की परिभाषा अर्जुन से इस प्रकार कही है–जो दुःख में नहीं घबड़ाते, सुख में जिनको स्पृहा नहीं रहती, तथा जिनको अनुराग, भय, क्रोध आदि लेशमात्र नहीं होता), दमनक, दौना, सात की संख्या, कुरु के एक पुत्र का नाम; **–धान्य**–(पुं.) तिन्नी का चावल; **–पुंगव**–(सं.पुं.) मुनिश्रेष्ठ; **–पुष्प**–(पुं.) विजयसार का फूल; **–प्रिया**–(स्त्री.) एक प्रकार का सुगन्धित धान; **–भक्त; –भोजन**–(पुं.) तिन्नी का चावल।
मुनियाँ–(हिं. स्त्री.) लाल नामक पक्षी की मादा; (पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।
मुनींद्र–(सं. पुं.) ऋषियों में श्रेष्ठ, बुद्धदेव।
मुनीब, मुनीम–(अ. पुं.) सहायक, वह जो साहूकारों का हिसाब-किताब लिखता हो।
मुनीश–(सं.पुं.) मुनिश्रेष्ठ, वाल्मीकि, बुद्धदेव।
मुनीश्वर–(सं. पुं.) मुनियों में श्रेष्ठ, विष्णु, बुद्धदेव।
मुन्ना–(हिं. पुं.) छोटे बच्चे के लिये प्रेमसूचक शब्द, प्यारा, तारकशी में दोनों खूँटे जिनमें जंता लगा रहता है।
मुन्नू–(हिं. पुं.) देखें 'मुन्ना'।
मुफलिस–(अ. वि.) गरीब, निर्धन।
मुफलिसी–(अ. स्त्री.) गरीबी।
मुफीद–(अ. वि.) लाभकारी।
मुफ्त–(अ.वि.) बिना दाम का, सेंत में प्राप्त।
मुबारक–(अ.वि.) शुभ, भला, कल्याणकर।
मुमकिन–(अ. वि.) संभाव्य, जो हो सके।
मुमुक्षा–(सं. स्त्री.) मुक्ति की अभिलाषा।
मुमुक्षु–(सं.पुं., वि.) (वह) जो मुक्ति की कामना करता हो।
मुमुक्षता–(सं.स्त्री.) मुमुक्षु का भाव या धर्म।
मुमूर्षा–(सं. स्त्री.) मरने की अभिलाषा।
मुमूर्षु–(सं.वि.) जो मर रहा हो, मरणासन्न।
मुरंडा–(हिं. पुं.) वह लड्डू जो भूने हुए गहूँ म गुड़ मिलाकर बनाया जाता है, गुड़धानी; (वि.) शुष्क, सूखा हुआ।
मुर–(सं. पुं.) एक दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था, वेष्टन, बेठन; (हिं.अव्य.) दुबारा, फिर।
मुरई–(हिं. स्त्री.) देखें 'मूली'।
मुरक–(हिं.स्त्री.) मुरकने की क्रिया या भाव।
मुरकना–(हिं. क्रि. अ.) लचककर एक ओर मुड़ना या झुकना, फिरना, घूम जाना, हिचकना, रुकना, लौटना, नष्ट होना, किसी अंग का आघात लगने से मुड़ जाना, मोच खाना।
मुरका–(हिं. पुं.) बड़े-बड़े दाँतों का सुन्दर हाथी।
मुरकाना–(हिं. क्रि. स.) घुमाना, फेरना, लौटाना, शरीर के किसी अंग में मोच या मुरक उत्पन्न करना, नष्ट करना।
मुरकी–(हिं. स्त्री.) कान में पहनने की छोटी वाली।
मुरकुल–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पहाड़ी लता।
मुरखाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'मूर्खता'।
मुरगंड–(सं. पुं.) मुहाँसा नामक रोग।
मुरगा–(हिं. पुं.) एक पालतू पक्षी।
मुरगी–(हिं. स्त्री.) मादा मुरगा।
मुरचंग–(हिं.पुं.) लोहे आदि का बना हुआ एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता है।
मुरचा–(हिं. पुं.) देखें 'मोरचा'।
मुरछना–(हिं. क्रि. अ.) शिथिल होना, अचेत होना।
मुरछल–(हिं. पुं.) देखें 'मोरछल'।
मुरछा–(हिं. स्त्री.) देखें 'मूर्च्छा'।
मुरछावंत–(हिं. वि.) देखें 'मूर्च्छित'।
मुरछित–(हिं. वि.) देखें 'मूर्च्छित'।
मुरज–(सं. पुं.) मृदंग, पखावज।
मुरझाना–(हिं. क्रि. अ.) फूल-पत्ती आदि का कुम्हलाना, उदास होना।
मुरड़–(हिं. पुं.) अभिमान, अहंकार।
मुरतंगा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष।
मुरदर–(सं. पुं.) मुरारि, श्रीकृष्ण।
मुरदा–(फा.वि.) मृत, मरा हुआ, बेजान; (पुं.) शव, लाश।
मुरदार–(फा. वि.) मरा हुआ, मृत, बेजान।
मुरदासन–(हिं.पुं.) सीसा तथा सेंदुर का मिश्रण।
मुरधर–(हिं. पुं.) मारवाड़ देश का प्राचीन नाम।
मुरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'मुड़ना'।
मुरपरैना–(हिं. पुं.) वह बकुचा जिसमें सौदा बाँधकर फेरीवाले बेचते हैं।
मुरब्बा–(अ. पुं.) फलों को चाशनी में पकाकर बनाया हुआ पाक।
मुरमर्दन–(सं. पुं.) मुरारि, विष्णु।
मुरमुराना–(हिं. क्रि. अ.) चूरचूर होना।
मुररिपु–(सं. पुं.) मुरारि, विष्णु।
मुरल (ला)–(सं.पुं., स्त्री.) प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा, नर्मदा नदी।
मुरलिका–(सं. स्त्री.) मुरली, बाँसुरी।
मुरलिया–(हिं. स्त्री.) मुरली, बाँसुरी
मुरली–(सं. स्त्री.) मुँह से बजाने का बाँसुरी नामक बाजा, बंसी, एक प्रकार का आसामी चावल; **–धर**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–मनोहर**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–वाला**–(पुं.) श्रीकृष्ण।
मुरवा–(हिं.पुं.) एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा, एक प्रकार की कपास।
मुरवी–(हिं. स्त्री.) मौर्वी, धनुष की डोरी, चिल्ला।
मुरवैरी–(सं. पुं.) मुरारि, श्रीकृष्ण।
मुरसुत–(सं.पुं.) मुर दैत्य का पुत्र वत्सासुर।
मुरहा–(सं.पुं.) विष्णु, कृष्ण; (हिं. पुं.) वह बालक जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो, अनाथ बालक; (वि.) उपद्रवी, नटखट।
मुरहारी–(सं. पुं.) मुर दैत्य को मारनेवाले विष्णु।
मुरा–(सं. स्त्री.) एक प्रसिद्ध गन्धद्रव्य, मौर्यवंश के संस्थापक सम्राट चन्द्रगुप्त की माता का नाम जो महाराज महापद्मनंद की रखेली थी।
मुराड़ा–(हिं.पुं.) जलती हुई लकड़ी, लुआठी।
मुराद–(अ. स्त्री.) कामना, अभीष्ट।
मुराना–(हिं. क्रि. स.) मुँह में डालकर किसी वस्तु को मृदु करना, चुभलाना, देख 'मोड़ना'।
मुरार–(हिं.पुं.) कमल की जड़, भसींड़, देखें 'मुरारि'।
मुरारि–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
मुरारी–(हिं. पुं.) देखें 'मुरारि'।
मुरारे–(सं.पुं.) मुरारि का संबोधन कारक रूप।
मुरासा–(हिं. पुं.) कर्णफूल, तरकी।
मुरु–(हिं. पुं.) देखें 'मुर'; (सं.पुं.) एक प्रकार की झाड़ी।
मुरुआ–(हिं.पुं.) एड़ी के ऊपर का घेरा या हड्डी।
मुरुख–(हिं. वि.) देखें 'मूर्ख'।
मुरुछना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'मुरछना', (स्त्री.) देखें 'मूर्च्छना'।
मुरुझना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'मुरझाना'।

मुरेठा–(हि. पुं.) पगड़ी, साफा।
मुरेर–(हि. स्त्री.) देखें 'मरोड़'।
मुरेरना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'मरोड़ना'।
मुरेरा–(हि. पुं.) मुँड़ेरा, देखें 'मरोड़'।
मुरौवत–(अ. स्त्री.) उदारता, कृतज्ञता।
मुरौवती–(अ. वि.) मुरौवत-संबंधी।
मुर्दा–(हि. वि.) मरा हुआ, मुरदा।
मुर्मुर–(सं. पुं.) मन्मथ, कामदेव, सूर्य के रथ का घोड़ा।
मुर्रा–(हि. पुं.) मरोड़फली नाम की ओषधि; पेट में मरोड़ होकर बारंबार शौच होना; (स्त्री.) एक प्रकार की भैंस जिसका सींग गोलाई में मुड़ा रहता है।
मुर्री–(हि. स्त्री.) ोरी या रस्सी के दो सिरों को आपस में मिलाकर वट देना ताकि वे जुड़ जायँ, धोती आदि का कमर पर का लपेट, कपड़े आदि को मरोड़कर बनी हुई वत्ती, चिकन, कशीदा या कढ़ाई की एक विधि; **–दार**–(वि.) ऐंठनदार।
मुर्वा–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का जंगली पौधा।
मुलकना–(हि. क्रि. अ.) पुलकित होना, मुँह पर हँसी दिखाई पड़ना।
मुलकित–(हि. वि.) मन्द-हासयुक्त, मुस्कराता हुआ।
मुलतानी–(हि. वि.) मुलतान-संबंधी; (स्त्री.) एक रागिनी का नाम, एक प्रकार की बहुत कोमल चिकनी मिट्टी।
मुलमची–(हि. पुं.) सोना या चाँदी के गहनों आदि पर मुलम्मा करनेवाला, गिलट करनवाला।
मुलम्मा–(अ. वि.) चाँदी या सोने का पानी चढ़ाया हुआ; (पुं.) चानी-सोने की कलई।
मुलहठी–(हि. स्त्री.) देखें 'मुलेठी'।
मुलहा–(हि. वि.) मूल नक्षत्र में उत्पन्न, उपद्रवी।
मुलाकात–(अ.स्त्री.) भेंट, मिलना-जुलना।
मुलाकाती–(अ. वि.) मुलाकात-संबंधी।
मुलायम–(अ. वि.) नरम, कोमल।
मुलायमी–(हि. स्त्री.) कोमलता।
मुलुक–(हि. पुं.) देखें 'मुल्क'।
मुलेठी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की लता जिसकी जड़ ओषध में प्रयुक्त होती है, जठीमधु।
मुल्क–(अ. पुं.) देश, प्रदेश।
मुल्की–(अ. वि.) देश का, मुल्क-संबंधी।
मुल्तवी–(अ.वि.) आगे के लिए टाला हुआ।
मुल्ला–(अ.पुं.) मौलवी, नमाज पढ़नेवाला।
मुवना–(हि. क्रि. अ.) मरना।
मुवाना–(हि. क्रि. स.) हत्या करना, मार डालना।
मुशल–(सं. पुं.) मूसल।
मुशलिका–(सं. स्त्री.) मुसली।
मुशली–(सं. पुं.) बलदेव का एक नाम।
मुश्क–(फा. पुं.) कस्तूरी।
मुश्किल–(अ. वि.) कठिन।
मुषक–(सं. पुं.) मूसा, चूहा।
मुषल–(सं. पुं.) मूसल, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
मुषली–(सं. स्त्री.) छिपकली, बिस्तुइया।
मुषा–(सं. स्त्री.) सोना-चाँदी गलाने की घरिया।
मुषित–(सं. वि.) चुराया हुआ, ठगा हुआ।
मुष्क–(सं. पुं.) अण्डकोष, तस्कर, चोर, ढेर; (वि.) मांसल, मांस से भरा हुआ; **–शून्य**–(वि.) वधिया किया हुआ।
मुष्ट–(सं.वि.) नष्ट किया हुआ, मसला हुआ।
मुष्टि–(सं. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन परिमाण, मुट्ठी, मुक्का, घूँसा, चोरी, दुर्भिक्ष, कंस की सभा का एक मल्ल, (छुरे, तलवार आदि की) मूठ, मोखा नामक वृक्ष, ऋद्धि नामक औषधि, चार अंगुल की नाप, सोनार।
मुष्टिकांतक–(सं. पुं.) मुष्टिक नाम के मल्ल को मारनेवाले बलदेव।
मुष्टिका–(सं. स्त्री.) मुक्का, घूँसा, मुट्ठी।
मुष्टिदेश–(सं. पुं.) धनुष का वह भाग जो मुट्ठी से पकड़ा जाता है।
मुष्टिमेय–(सं. वि.) मुट्ठी भर, बहुत थोड़ा-सा।
मुष्टियुद्ध–(सं. पुं.) घूँसेबाजी, मुक्कों की लड़ाई।
मुष्टियोग–(सं. पुं.) हठयोग की कुछ क्रियायें जिनके करने से रोग हटता तथा शरीर में वल आता है, किसी काम आदि का कोई सरल उपाय।
मुसकनि–(हि. स्त्री.) मुसकराहट।
मुसकराना–(हि. क्रि. अ.) ओठों में हँसना, बहुत मन्द रूप से हँसना।
मुसकराहट–(हि. स्त्री.) मुसकराने की क्रिया या भाव, मंद हँसी।
मुसंका–(हि. स्त्री.) रस्सी की बनी हुई जाली जो वैलों के मुँह पर बाँधी जाती है।
मुसकान–(हि. स्त्री.) देखें 'मुसकराहट'।
मुसकाना–(हि. क्रि. अ.) मुसकराना।
मुसकानि–(हि. स्त्री.) मुसकराहट।
मुसकिराना–(हि.क्रि.अ.) देखें 'मुसकराना'।
मुसकिराहट–(हि. स्त्री.) देखें 'मुसकराहट'।
मुसकुराना–(हि. क्रि.अ.) देखें 'मुसकराना'।
मुसकुराहट–(हि. स्त्री.) देखें 'मुसकान'।
मुसक्यान–(हि. पुं.) देखें 'मुसकान'।
मुसखोरी–(हि. स्त्री.) खेत में चूहों की अधिकता।
मुसटी–(हि. स्त्री.) चुहिया, एक प्रकार का धान।
मुसदी–(हि.स्त्री.) मिठाई बनाने का साँचा
मुसना–(हि. क्रि. अ.) अपहरना, लूटा जाना, धन आदि का चुराया जाना।
मुसमर, मुसमरवा–(हि. पुं.) चूहा खानेवाला एक पक्षी।
मुसमुद, मुसमुध–(हि. वि.) नाश किया हुआ; (पुं.) नाश।
मुसम्मी–(हि. पुं.) मीठा बड़ा नीबू।
मुसरा–(हि. पुं.) पेड़ की वह जड़ जिसमें एक ही मोटा पिण्ड धरती के भीतर दूर तक चला गया हो, उसमें शाखायें न हों।
मुसल–(सं. पुं.) धान कूटने का एक उपकरण, मूसल।
मुसलधार–(हि. अव्य.) देखें 'मूसलधार'।
मुसलमान–(अ. पुं.) इस्लाम धर्म का अनुयायी।
मुसलमानी–(अ. वि.) मुसलमान-संबंधी; (स्त्री.) मुसलमान बनाना, खतना।
मुसलिम–(अ. पुं.) मुसलमान।
मुसली–(हि. पुं.) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ औषधों में प्रयुक्त होती है।
मुसल्लम–(अ. वि.) समूचा।
मुसवाना–(हि. क्रि. स.) लुटवाना, चोरी कराना।
मुसहर–(हि.पुं.) एक अन्त्यज जंगली जाति जो दोने, पत्तल आदि बेचती है।
मुस्किल–(हि. स्त्री.) देखें 'मुश्किल'।
मुस्की–(हि. स्त्री.) देखें 'मुसकराहट'।
मुस्टंडा–(हि. वि.) हृष्टपुष्ट, गुंडा, दुष्ट।
मुस्त, मुस्तक–(सं. पु.) नागरमोथा।
मुस्ता–(सं. स्त्री.) मुस्तक, मोथा।
मुहताज–(अ. वि.) गरीब, अभावग्रस्त।
मुहताजी–(अ.स्त्री.) गरीबी, अभावग्रस्तता।
मुहवनी–(हि. स्त्री.) नारंगी की तरह का एक प्रकार का फल।
मुहव्वत–(अ. स्त्री.) चाह, प्रेम, प्रीति।
मुहव्वती–(अ. वि.) प्रेमी, मुहव्वत का।
मुहर–(हि. स्त्री.) किसी चीज पर अंकित प्रतीक, (प्रामाणिकता के लिये), मुद्रा।
मुहरा–(हि. पुं.) सामने का भाग, मुख की आकृति, लक्ष्य, शतरंज आदि की

कोई गोटी, पन्नी घोंटने का आला, घोड़े का वह साज जो उसके मुख पर पहनाया जाता है; (मुहा.)–लेना–सामना करना।
मुहर्रिर–(अ. पुं.) लिखनेवाला ।
मुहर्रिरी–(अ. स्त्री.) मुहर्रिर का काम या पद ।
मुहलत–(अ. स्त्री.) अवकाश ।
मुहलेठी–(हि. स्त्री.) देखें 'मुलेठी' ।
मुहाला–(हि. पुं.) पीतल की चूड़ी जो शोभा के लिये हाथी के दाँत पर चढाई जाती है।
मुँहि–(हि. सर्व.) देखें 'मोहि'।
मुहुः–(सं.अव्य.) बार-बार, फिर-फिर ।
मुहुक–(सं. पुं.) मोहक, मोहनवाला ।
मुहुपुची–(हि. पुं.) एक प्रकार का कीड़ा।
मुहुर्भुज्–(सं. पुं.) अश्व, घोड़ा ।
मुहुर्मुहुः–(सं. अव्य.) बारंबार, फिर-फिर।
मुहूर्त–(सं. पुं.) दिन-रात का तीसवाँ भाग, कला का दसवाँ भाग, निर्दिष्ट क्षण या काल, फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ वह काल जिसमें शुभ कार्य आदि किया जाता है;–ज्ञ–(पुं.) ज्योतिर्विद्, ज्योतिषी ।
मुहूर्ता–(सं.स्त्री.)दक्ष की एक कन्या का नाम।
मूँग–(हि.स्त्री.) एक अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है;–फली–(स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिसमें आलू की तरह मेड़ों के भीतर गुच्छों में फल लगते हैं जो खाने और तेल निकालने के काम में आते हैं, चिनिया बादाम ।
मूँगा–(हि. पुं.) समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गुरिया बनाकर पहनी जाती है, (इसकी गणना रत्न में है), विद्रुम, प्रवाल, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा, एक प्रकार का गन्ना ।
मूँगिया–(हि. वि.) हरे रंग का; (पुं.) एक प्रकार का हरा रंग, एक प्रकार का धारीदार चारखाना ।
मूँछ–(हि. स्त्री.) ऊपर के ओठ पर के घने बाल जो केवल पुरुषों को होते हैं; (मुहा.)–उखाड़ना–किसी का अभिमान नष्ट करना; मूँछ नीची होना–अभिमान मिट जाना;–पर ताव देना–गर्व से मूँछ के बालों को ऐंठना ।
मूँछी–(हि. स्त्री.) बेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी ।
मूँज–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का तृण जिसमें पतली तथा लंबी पत्तियां होती हैं और टहनियां नहीं होतीं ।
मूँड़–(हि. पुं.) कपाल, सिर; (मुहा.) –मारना–कठिन परिश्रम करना; –मुड़ाना–साधु या वैरागी बन जाना; –कटा–(वि.)दूसरे को हानि पहुँचानेवाला
मूँड़न–(हि.पुं.) मुंडन, चूड़ाकरण संस्कार।
मूँड़ना–(हि.क्रि.स.) सिर के बाल बनाना, हजामत करना, धोखा देकर किसी का धन हर लेना, ठगना, चेला बनाना, भेड़ का ऊन कतरना ।
मूँड़ी–(हि. स्त्री.) मस्तक, सिर, किसी पदार्थ का सिर के आकार का भाग ।
मूँदना–(हि. क्रि. स.) ऊपर से ढककर किसी वस्तु को छिपाना; (छिद्र, द्वार, मुख आदि पर) कोई वस्तु फैलाकर या रखकर उसको बंद करना ।
मूक–(सं. वि.) वाक्यरहित, गूंगा, हीन, विवश;–ता (स्त्री.), –त्व–(पुं.)– गूंगापन ।
मूका–(हि. पुं.) भीत के आरपार बना हुआ छेद, छोटा गोल झरोखा, मोखा, बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार, घूंसा ।
मूखना–(हि. क्रि. स.) देखें 'मसना' ।
मूचना–(हि. क्रि. स.) देखें 'मोचना' ।
मूठ–(हि. स्त्री.) मुष्टि, मुट्ठी, उतनी वस्तु जितना मुट्ठी में आ सके, किसी हथियार का कब्जा, तंत्र-मंत्र का प्रयोग, जादू-टोना, कौड़ी से खेलने का एक प्रकार का जुआ; (मुहा.) –मारना– जादू-टोना करना;–लगना– जादू का प्रभाव होना ।
मूठना–(हि.क्रि.अ.)नष्ट होना,मर मिटना।
मूठा–(हि. पुं.) रस्सी से बँधे हुए घास-फूस के पूले जो खपरैल के नीचे छाजन में लगाये जाते हैं, मुट्ठा ।
मूठाली–(हि. स्त्री.) तलवार ।
मूठी–(हि. स्त्री.) देखें 'मुट्ठी' ।
मूड़–(हि. पुं.) देखें 'मूँड़' ।
मूढ़–(सं. वि.) मूर्ख, निश्चेष्ट, स्तब्ध, जिसको आगा-पीछा न सूझता हो; (पुं.) मूर्च्छा;–गर्भ–(पुं.) गर्भस्राव आदि रोग;–चेतन–(वि.) निर्बुद्धि, व्याकुल-चित्त, सरल; –ता (स्त्री.), –त्व– (पुं.) मूर्खता; –धी–(वि.) मन्दबुद्धि, जड़; –मति–(वि.) मन्दबुद्धि, मूर्ख ।
मूत–(हि. पुं.) प्राणियों के उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला जल, मूत्र ।
मूतना–(हि. क्रि. अ.) मूत्र निकालना ।
मूतरी–(हि.पुं.)एक प्रकार का जंगली कौवा ।
मूत्र–(सं.पुं.) वह जल जो नाना मल के द्रव अंश को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलता है, मूत; –कृच्छ्र–(पुं.) मूत्र का वह रोग जिसमें पीड़ा देकर रुक-रुककर मूत्र निकलता है;–कोश–(पुं.) मूत्राशय;–दोष–(पुं.) मूत्रकृच्छ रोग;– –निरोध–(पुं.) मूत्र का रुक जाना; –विज्ञान–(पुं.) मूत्र के भेद तथा दोषादोष को जानने की विद्या; –वृद्धि–(स्त्री.) अधिक मूत्र निकलना;–शूल–(पुं.)मूत्र निकलते समय पीड़ा होना।
मूत्राघात–(सं.पुं.)मूत्र बंद होने का रोग।
मूत्राशय–(सं.पुं.) नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित होता है ।
मूना–(हि. पुं.) टेकुवे की पीतल या लोहे की अँकुसी ।
मूर–(हि. पुं.) मल, जड़, मूल-धन, मूल नक्षत्र ।
मूरख–(हि.पुं.)मूर्ख मनुष्य; (वि.) मूर्ख।
मूरखताई–(हि. स्त्री.) देखें 'मूर्खता' ।
मूरचा–(हि. पुं.) देखें 'मोरचा' ।
मूरछना–(हि.स्त्री.) देखें 'मूर्च्छना',(क्रि. अ.) मूर्छित होना।
मूरछा–(हि. स्त्री.) देखें 'मूर्च्छा' ।
मूरत (ति)–(हि. स्त्री.) देखें 'मूर्ति' ।
मूरतिवंत–(हि.वि.)मूर्त्तिमान्,शरीरधारी।
मूरव–(हि. पुं.) देखें 'मूर्वा' ।
मूरि, मूरी–(हि.स्त्री.)मूल,जड़,जड़ी-बूटी।
मूर्ख–(सं. वि.) मूढ़, अज्ञ, वह जो गायत्री नहीं जानता;–ता–(स्त्री.) मूढ़ता; –त्व–(पुं.) अज्ञता ।
मूर्खिनी–(हि. स्त्री.) मूर्ख स्त्री ।
मूर्खिमा–(सं. स्त्री.) मूर्खता ।
मूर्च्छन–(सं. पुं.) संज्ञा नष्ट होना या करना, मूर्च्छित करने का मन्त्र, कामदेव के एक बाण का नाम ।
मूर्च्छना–(सं. स्त्री.) संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक आरोह-अवरोह, ग्राम के सातवें भाग का नाम ।
मूर्च्छा–(सं. स्त्री.) किसी प्राणी की निश्चेष्ट और संज्ञाहीन होने की अवस्था, अचेत स्थिति, बेहोशी, देखें 'मूर्च्छना' ।
मूर्च्छित–(सं. वि.) मूर्छायुक्त, बेहोश, अचेत, मारा हुआ (पारा), मूढ़, बढ़ा, मूर्ख, व्याप्त, फैला हुआ ।
मूर्त–(सं. वि.) जिसका कोई रूप या आकार हो, साकार, नैयायिकों के मत से पंचतत्वों से निर्मित, ठोस; –ता–(स्त्री.) मूर्त होने का भाव या धर्म ।
मूर्ति–(सं. स्त्री.) काठिन्य, कठिनता, शरीर, देह, प्रतिमा, किसी के रूप या आकृति के समान बनाई हुई वस्तु,

आकृति, स्वरूप, रंग या रेखा द्वारा बनाई हुई आकृति, चित्र, तसवीर; -कार- (पुं.) मूर्त्ति बनानेवाला, चित्रकार;-त्व-(पुं.) मूर्ति का भाव या धर्म;-धर-(पुं.) मूर्ति धारण करनेवाला; -पूजक-(पुं.) मूर्ति या प्रतिमा को पूजनेवाला;-पूजा-(स्त्री.) किसी देवी-देवता की भावना करके उसकी मूर्ति या प्रतिमा को पूजना; -मत्-(पुं.) शरीर, देह; (वि.) जो शरीर धारण किये हो, साक्षात्, गोचर, प्रत्यक्ष, सशरीर;-मय-(वि.) मूर्त्ति-स्वरूप; -मान्-(वि.) शरीरधारी; -विद्या-(स्त्री.) मूर्ति गढ़ने की विद्या, चित्रकारी।

मूर्ध-(हि. पुं.) मस्तक, शिर;-क-(पुं.) क्षत्रिय;-कर्णी-(स्त्री.) वह वस्तु जो धूप तथा वर्षा से बचने के लिये सिर पर रखी जाय,छाता; -कर्परी-(स्त्री.) छतरी;-न्य-(वि.) मूर्धा से उत्पन्न।

मूर्धा-(सं. स्त्री.) सिर।

मर्धाभिषेक-(सं. पुं.) अभिषेक के समय सिर पर अभिमंत्रित जल सिंचन।

मर्वा-(सं. स्त्री.) मरोड़फली नामक लता।

मूल-(सं. पुं.) वृक्ष का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, जड़, आदि, आरंभ, पास, समीप, धन या पूँजी जो किसी व्यापार में लगाई जाती है, आदि कारण, नीवँ, वह ग्रन्थ जिस पर टीका की जाती है, खाने योग्य जड़, कन्द, सूरन, पिप्पलीमूल,अश्विनी आदि नक्षत्रों में से उन्नीसवाँ नक्षत्र, देवताओं का आदि मन्त्र या बीज; (वि.) मुख्य, प्रधान;-क-(पुं.) मूली, मुरई, मूल स्वरूप एक स्थावर विष; (वि.) उत्पन्न करनेवाला, जनक;-कर्म-(पुं.) प्रधान कर्म; -कारण-(पुं.) आदि कारण; -कारिका-(स्त्री.) चण्डी; -ग्रंथ-(पुं.) वह ग्रन्थ जिसका अनुवाद, टीका आदि की गई हो, -च्छेद-(पुं.) किसी पदार्थ का जड़ से नाश; -जाति-(स्त्री.) प्रधान वंश;-त्व-(पुं.) मूल का भाव या धर्म;-द्रव्य-(पुं.) मूल-धन, पूंजी;-द्वार-(पुं.) प्रधान द्वार; -धन-(पुं.) मूल-द्रव्य, पूँजी; -पुरुष-(पुं.) किसी वंश का आदि पुरुष या पुरखा;-पोती-(स्त्री.) छोटी पोय का साग;-प्रकृति-(स्त्री.) आद्या-शक्ति; -बंध-(पुं.) हठ-योग की एक क्रिया;-भद्र-(पुं.) कंसराज; -भव-(वि.) जो मूल से उत्पन्न हो; -मंत्र- (पुं.) बीज-मंत्र; -वित्त-(पुं.) मूलधन, पूँजी; -विद्या-(स्त्री.) बारह अक्षरों का एक मन्त्र;-स्थली-(स्त्री.) आलवाल, थाला; -स्थान-(पुं.) जन्म-स्थान, बाप-दादों का वास-स्थान; -स्थायी-(पुं.) शिव, महादेव; -हर-(वि.) मूलनाशक।

मूला-(सं. स्त्री.) सतावर, मूल नक्षत्र।

मूलाधार-(सं. पुं.) योग के अनुसार मनुष्य के शरीर के भीतर का वह स्थान जो गुदा और लिंग के बीच में स्थित है।

मूलाशी-(सं. वि.) कन्द-मूल खाकर रहनवाला।

मूलिका-(सं.स्त्री.) औषधियों की जड़,जड़ी।

मूली-(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसकी जड़ खाने में कटु या कड़ुई होती है, मुरई; (मुहा.) **किसी को गाजर-मूली समझना**-(किसी को) तुच्छ जानना।

मूलोच्छेद-(सं. पुं.) जड़ से नाश।

मूलोत्पाटन-(सं. पुं.) जड़ से उखाड़ना।

मूल्य-(सं. पुं.) किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाला धन, दाम; -करण-(पुं.) मूल्य-निरूपण;-वान-(वि.) कीमती।

मूष-(सं. पुं.) मूसा, चूहा, सोना-चाँदी गलाने की घरिया;-क-(पुं.) इन्दुर,चूहा।

मूषा-(सं. स्त्री.) गवाक्ष, झरोखा, गोखरू का पौधा।

मूषीकरण-(सं. पुं.) घरिया में धातु गलाने की क्रिया।

मूस-(हिं. पुं.) चूहा;-दानी- (स्त्री.) चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना-(हिं.क्रि.स.) चुराकर उठा ले जाना।

मूसर-(हिं. पुं.) धान कूटने की लकड़ी का मोटा डंडा, मूसल, असभ्य पुरुष।

मूसरचंद-(हिं. पुं.) अपढ़, गँवार, हट्टा-कट्टा परन्तु निकम्मा।

मूसल-(हिं. पुं.) धान कूटने का लंबा मोटा डंडा, एक अस्त्र जिसको बलराम धारण करते थे।

मूसलधार-(हिं. अव्य.) वृष्टि जो मूसल के समान मोटी धारा में हो।

मूसली-(हिं. पुं.) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

मूसा-(हिं. पुं.) चूहा, यहूदियों के एक पैगंबर का नाम।

मूसाकानी-(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की लता जिसके पत्ते चूहे के कान के आकार के होते हैं, यह औषधों में प्रयुक्त होती है।

मृकंडु-(सं. पुं.) मार्कण्डेय ऋषि के पिता।

मृग-(सं. पुं.) पशु मात्र विशषत: जंगली पशु, हाथी की एक जाति, हरिन, मृगशिरा नक्षत्र, अन्वेषण, खोज, प्रार्थना, अगहन का महीना, मकर राशि, मृगनाभि, कामशास्त्र के अनुसार पुरुषों के चार भेदों में से एक, अन्वेषण करनेवाला वैष्णवों के तिलक का एक भेद;-कानन (पुं.) मृगया का उपयुक्त वन;-क्षीर-(पुं.) हरिनी का दूध; -गामिनी-(स्त्री.) मृग के समान चलनेवाली; -चर्म-(पुं.) हरिन का चमड़ा जो बहुत पवित्र माना जाता है;-छाला-(हिं.पुं.) हरिन का चमड़ा;-जल-(पु.) मृगतृष्णा; -जीवन-(पुं.) व्याध, बहेलिया; -णा-(स्त्री.) खोयी हुई वस्तु की खोज; -तृषा, -तृष्णा-(स्त्री.) जल की लहरों का आभास जो मरुभूमि में कड़ी धूप के कारण दिखाई पड़ता है, मृगजल, मरीचिका; -त्व-(पुं.) मृग का भाव या धर्म;-दंश,-दंशक-(पुं.) कुत्ता;-दाव-(पुं.) मृग-कानन, काशी के पास का सारनाथ नामक एक स्थान;-दृश्-(वि.) मृगलोचन, हरिन के समान आँखोंवाला; -धर-(पुं.) चन्द्रमा; -धूर्त्त-(वि.) शृगाल, सियार; -नाथ--(पुं.) सिंह;-नाभि-(पुं.) कस्तूरी; -नेत्रा-(वि.स्त्री.) मृग के सदृश नेत्रवाली; -पति,-प्रभु-(पुं.) सिंह; -भद्र-(पुं.) हाथियों की एक जाति; -मद-(पुं.) कस्तूरी; -मरीचिका-(स्त्री.) देखें 'मृगतृष्णा'; -मित्र-(पुं.) चन्द्रमा; -मेद-(पुं.) कस्तूरी; **या** (स्त्री.) शिकार, आखेट; -राज-(पुं.) सिंह, व्याघ्र; -रोग-(पुं.) घोड़े का एक घातक रोग; -रोचना-(स्त्री.) कस्तूरी, मुश्क; -लांछन-(पुं.) चंद्रमा; -लेखा-(स्त्री.) चन्द्रमा का कलंक;-लोचना,-लोचनी-(स्त्रीं.) हरिण के समान नेत्रोंवाली स्त्री; -वन-(पुं.) आखेट का जंगल; -वारि-(पुं.) मृगतृष्णा का जलाभास;-व्याध-(पुं.) मृगों को पकड़नेवाला, बहेलिया, एक नक्षत्र, शिव, महादेव; -शावक-(पुं.) हरिण का बच्चा; -शिरा-(स्त्री.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र;-शीष-(पुं.) मृगशिरा नक्षत्र; -श्रेष्ठ-(पुं.) व्याघ्र, बाघ।

मृगांक-(सं. पुं.) चन्द्रमा, कपूर, वायु, वैद्यक के एक रस का नाम।

मृगांगजा–(सं. स्त्री.) कस्तूरी।
मृगांगना–(सं. स्त्री.) हरिणी, हरनी।
मृगाक्षी–(सं. स्त्री.) देखें 'मृगनयना'।
मृगाधिप,मृगाधिराज–(सं.पुं.) सिंह, शेर।
मृगारि–(सं. पुं.) सिंह, व्याघ्र, बाघ।
मृगाश, मृगाशन–(सं. पुं.) सिंह, शेर।
मृगित–(सं. वि.) अन्वेषित, खोजा हुआ।
मृगिनी–(हिं. स्त्री.) हरनी।
मृगी–(सं. स्त्री.) हरिणी, कश्यप ऋषि की एक कन्या का नाम, तीन अक्षरों का एक छंद, पीले रंग की एक प्रकार की कौड़ी, कस्तूरी, अपस्मार-रोग।
मृगीपति–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
मृगीलोचना–(सं. स्त्री.) देखें 'मृगनेत्रा'।
मृगेंद्र–(सं. पुं.) सिंह, एक छन्द का नाम; **–मुख**–(पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्यक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।
मृगेक्षण–(सं.वि.) मृग के समान आँखोंवाला।
मृगेक्षणा–(सं. स्त्री.) मृगनयनी।
मृगेश, मृगेश्वर–(सं. पुं.) सिंह।
मृग्य–(सं. वि.) खोजने योग्य।
मृज–(सं. पुं.) मुरज नाम का बाजा।
मृज्य–(सं. वि.) मार्जन योग्य।
मृड–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
मृडन–(सं. पुं.) आनन्दित करना।
मृडा, मृडानी–(सं.स्त्री.) दुर्गा का एक नाम।
मृणाल–(सं. पुं.) कमल की डंडी, कमलनाल, उशीर, खस, कमल की जड़, मुरार, भसींड; **–क**–(पुं.) कमलनाल।
मृणालिनी–(सं.स्त्री.) पद्मिनी, कमलिनी, पद्मसमूह, वह स्थान जहाँ कमल हों।
मृणाली–(सं. स्त्री.) देखें 'मृणाल'।
मृत–(सं. वि) प्राण शून्य, मरा हुआ; **–क**–(पुं.) शव; **–कर्म**–(पुं.) वह कृत्य जो मृत पुरुष की शुद्ध गति के लिये किया जाता है, प्रेतकर्म; **–कल्प**–(वि.) मृतप्राय, मरा हुआ-सा; **–गृह**–(पुं.) समाधि-स्थान; **–जीव**–(पुं.) मरा हुआ प्राणी; **–जीवनी**–(स्त्री.) मृतक को जिलाने की विद्या; **–प**–(पुं.) शव की रक्षा करनेवाला; **–मत्त**–(पुं.) शृगाल, सियार; **–वत्सा**–(स्त्री.) वह स्त्री जिसकी सन्तति मर जाती हो; **–संस्कार**–(पुं.) अन्त्येष्टि-क्रिया; **–संजीवनी**–(स्त्री.) मृतक को जिलाने की बूटी, दुधिया घास; **–सूत**–(पुं.) रससिन्दूर; **–स्नान**–(पुं.) सपिंड या बन्धु के मरने पर उसके उद्देश्य से किया जानेवाला स्नान; **–हार**–(पुं.) शव ढोनेवाला।
मृतांग–(सं. पुं.) शव।
मृतागार–(सं. पुं.) शव का भस्म।
मृतालक–(सं. पुं.) अरहर, गोपीचन्दन।
मृताशन–(सं. वि.) शव खानेवाला।
मृताशौच–(सं. पुं.) वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।
मृति–(सं. स्त्री.) मरण, मृत्यु।
मृतोद्भव–(सं. पुं.) समुद्र, महासागर।
मृत्कपाल–(सं.पुं.) खपड़ा, जली हुई मिट्टी।
मृत्कर–(सं. पुं.) कुम्भकार, कोंहार।
मृत्किरा–(सं. स्त्री.) घुंघरू।
मृत्तिका–(सं. स्त्री.) मिट्टी; **–लवण**–(पुं.) मिट्टी का नोन।
मृत्पांडु–(सं. पुं.) पाण्डुरोग जो मिट्टी खाने से उत्पन्न होता है।
मृत्पात्र–(सं. पुं.) मिट्टी का पात्र।
मृत्युंजय–(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) जिसने मृत्यु को जीत लिया हो।
मृत्यु–(सं. पुं.) यम, कंस, मौत, निधन, प्राण छूटना, शरीर से प्राणों का अलग होना; **–कन्या**–(स्त्री.) यम की लड़की; **–दूत**–(पुं.) यम के दूत; **–द्वार**–(पुं.) शरीर के नौ छेद जिनसे होकर प्राणवायु निकलती है; **–पाश**–(पुं.) यम का बंधन; **–बीज**–(पुं.) मृत्यु का कारण, जन्म; **–भय**–(पुं.) मरने का डर; **–राज**–(पुं.) यमराज; **–रूपी**–(वि.) मृत्यु के समान रूपवाला; **–लोक**–(पुं.) मर्त्यलोक, यमलोक; **–सुत**–(पुं.) केतु-ग्रह।
मृत्स–(सं. वि.) चिपचिपा।
मृत्स्ना–(सं.स्त्री.) चकनी मिट्टी, गोपीचन्दन।
मृथा–(हिं. अव्य.) मृषा, वृथा।
मृदंग–(सं.पुं.) ढोलक के आकार का परंतु उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का बाजा; **–क**–(पुं.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं; **–फल**–(पुं.) पनस, कटहल।
मृदंगी–(सं. स्त्री.) कपोती, तरोई।
मृदर–(सं. पुं.) व्याधि, रोग।
मृदा–(सं.स्त्री.) मृत्तिका, मिट्टी; **–कर**–(पुं.) वज्र।
मृदित–(सं. वि.) चूर्ण किया हुआ।
मृदु–(सं. वि.) कोमल, सुकुमार, जो सुनने में कर्कश न हो, मन्द, धीमा, (स्त्री.) घृतकुमारी, घीकुआर; **–कर्म**–(पुं.) कोमल करने की क्रिया; **–गमना**–(वि.स्त्री.) धीमी चाल से चलनेवाली; **–च्छद**–(पुं.) भोजपत्र का वृक्ष; **–ता**–(स्त्री.) कोमलता, मन्दता, धीमापन; **–पर्ण**–(पुं.) कोमल पत्ता, नरकट, भोजपत्र का वृक्ष; **–पुष्प**–(पुं.) सिरिस का पेड़; **–ल**–(पुं.) जल, पानी; (वि.) कोमल, सुकुमार, दयालु हृदय का; **–०ता**–(स्त्री.) सुकुमारता, कोमलता; **–रोमक**–(पुं.) शशक, खरहा; **–वात**–(पुं) मन्द-मन्द बहनेवाला पवन; **–हृदय**–(वि.) दयालु, कृपालु।
मृद्वंग–(सं. पुं.) कोमल शरीर।
मृध–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई।
मृधा–(सं. अव्य.) मृषा, झूठमूठ।
मृनाल–(हिं. पुं.) देखें 'मृणाल'।
मृन्मय–(सं. वि.) मिट्टी का बना हुआ।
मृषा–(सं. अव्य.) मिथ्या, झूठमूठ; (वि.) असत्य, झूठ; **–ज्ञान**–(पुं.) अज्ञान, असत्य; **–त्व**–(पुं.) असत्य; **–दृष्टि**–(स्त्री.) भ्रांत दृष्टि; **–भाषी**–(वि.) असत्य वक्ता, झूठ बोलनेवाला; **–वाद**–(पुं.) मिथ्या कथन, असत्य वचन; **–वादी**–(वि.) झूठ बोलनेवाला।
मृष्ट–(सं.वि.) शोधित, स्वच्छ किया हुआ।
मृष्टि–(सं. स्त्री.) परिशुद्धि, शोधन।
में–(हिं. अव्य.) अधिकरण कारक का चिह्न जिसको किसी शब्द के आगे लगाने से 'भीतर', 'बीच का', 'चारों ओर' आदि अर्थ सूचित होता है; यह आधार या अवस्थान सूचित करता है।
मेंगनी–(हिं. स्त्री.) पशुओं की गोलियों के रूप में विष्ठा, यथा–ऊँट या बकरी की विष्ठा, लेंड़ी।
मेंड़–(हिं. पुं., स्त्री.) खेतों के चारों ओर की हदबंदी; **–बंदी**–(स्त्री.) खेतों के चारों ओर की जानेवाली हदबंदी।
मेक–(सं. पुं.) छाग, बकरी।
मेकल–(सं.पुं.) विन्ध्य पर्वत का एक भाग जो रीवाँ राज्य के अन्तर्गत है; **–सुता**–(स्त्री.) नर्मदा नदी।
मेक्षण–(सं. पुं.) चम्मच के आकार का एक यज्ञ-पात्र।
मेख–(हिं.पुं.) देखें 'मेष'; (स्त्री.) भूमि में गाड़ने के लिये नुकीली गढ़ी हुई लकड़ी, खूँटा, कील, काँटा, लकड़ी का पच्चर।
मेखड़ा–(हिं.स्त्री.) बाँस के फट्ठों का घेरा।
मेखल–(हिं. स्त्री.) किंकिणी, करधनी।
मेखला–(सं. स्त्री.) करधनी, कमरबंद जिसमें तलवार लटकाई जाती है, मण्डलाकार या, गोल घेरा, पर्वत की ढाल, बाँध, सामी, मिट्टी का घेरा जो होम-कुंड के चारों ओर बना रहता है, साधु की कफनी।

मेखली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पहनावा जिसको गले में डालने से पेट और पीठ ढँकी रहती है तथा दोनों हाथ खुले रहते हैं, कटिवन्ध, करधनी।

मेघ–(सं. पुं.) मोथा, राक्षस, आकाश में एकत्रित घनीभूत जल या वाष्प जिससे वर्षा होती, पयोधर, पर्जन्य, बादल, संगीत के प्रधान छः रागों में से एक; **–काल**–(पुं.) वर्षाकाल; **–गर्जन**–(पुं.) बादलों की गड़गड़ाहट; **–चितक**–(पुं.) मेघ को चाहनेवाला, चातक, चकवा; **–जाल**– (पुं.) बिजली; **–जीवन**–(पुं.) चक्रवाक पक्षी; **–डंवर**–(पुं.) मेघ की गर्जना; **–तिमिर**–(पुं.) बदली का दिन; **–दीप**– (पुं.) बिजली; **–दुंदुभि**–(स्त्री.) बादल की गरज; **–दूत**–(पुं.) महाकवि कालिदास-प्रणीत एक खंड-काव्य; **–नाथ**–(पुं.) एक राग का नाम, इन्द्र; **–नाद**–(पुं.) रावण के पुत्र का नाम, बादल की गरज, मोर, बिल्ली, बकरा, वरुण, वृक्ष; **–निर्घोष**–(पुं.) बादल की गरज; **–पुष्प**–(पुं.) इन्द्र का घोड़ा, श्रीकृष्ण के रथ के चारों घोड़ों में से एक; जल, पानी, मोथा, नदी का पानी, बकरे का सींग; **–भूति**–(पुं.) वज्र, बिजली; **–मंडल**– (पुं.) आकाश; **–मल्लार**–(पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग; **–माला**–(स्त्री.) बादलों की घटा, स्कन्द की एक अनुचरी का नाम; **–माली**–(पुं.) एक असुर का नाम, स्कन्द के एक अनुचर का नाम; **–योनि**–(पुं.) धुवाँ, कुहरा; **–रवा**–(स्त्री.) स्कन्द की एक मातृका का नाम; **–राग**–(पुं.) संगीत के छः प्रकार के रागों में से एक; **–राज**–(पुं.) इन्द्र; **–राजि, –लेखा**– (स्त्री.) बादलों की घटा; **–वर्णा**–(स्त्री.) नील का पौधा; **–वर्त**–(पुं.) प्रलय-काल के मेघों में से एक का नाम; **–वर्त्म**–(पुं.) आकाश; **–वह्नि**–(पुं.) वज्र, बिजली; **–वाहन**–(पुं.) इन्द्र; **–वितान**–(पुं.) एक छन्द का नाम, मेघसमूह; **–विस्फूर्जिता**–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम; **–वेश्म**–(पुं.) आकाश; **–श्याम**–(वि.) मेघ के समान काला; (पुं.) श्रीकृष्ण; **–सार**–(पुं.) चीनिया कपूर; **–सुहृद्**–(पुं.) मयूर, मोर; **–स्वन, –ह्लाद**–(पुं.) मेघ की गर्जना।

मेघात–(सं. पुं.) शरत् काल।

मेघा–(हिं. पुं.) मंडूक, मेढक।

मेघागम–(सं. पुं.) वर्षाकाल।

मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित–(स. वि.) बादलों से ढँपा हुआ।

मेघाडंबर–(सं. पुं.) मेघों का गर्जन।

मेघानंद–(सं. पुं.) मयूर, मोर।

मेघाभ–(सं. पुं.) वन-जामुन।

मेघारि–(सं. पुं.) वायु, हवा।

मेघावरि–(हिं. स्त्री.) बादलों की घटा।

मेच–(हिं. स्त्री.) पलंग, बेंत की बिनी हुई खाट।

मेचक–(सं. पुं.) अन्धकार, अँधेरा, धुवाँ, बादल, एक प्रकार का छोटा बिच्छू; (वि.) श्यामल, काला; **–ता**–(स्त्री.) श्यामता, कालापन; **–ताई**–(हिं. स्त्री.) देख 'मेचकता'।

मेज–(फा. स्त्री.) लकड़ी आदि की बनी ऊँची चौकी, टेबुल।

मेजा–(हिं. पुं.) मंडूक, मेढक।

मेटक–(हिं. वि.) नाश करनेवाला, मिटानेवाला।

मेटनहार–(हिं. पुं.) मिटाने या दूर करनेवाला।

मेटना–(हिं. क्रि. स.) घिसकर निर्मल करना, मिटाना, नष्ट करना, दूर करना।

मेटिया–(हिं. स्त्री.) घड़े से छोटा मिट्टी का पात्र।

मेटी, मेटुवा–(हिं. स्त्री.) देखें 'मेटिया'।

मेटुवा–(हिं. वि.) उपकार न माननवाला, कृतघ्न।

मेड़–(हिं. पुं.) खेत के चारों ओर मिट्टी डालकर बनाया हुआ घेरा, मेंड़, दो खेतों के बीच की सीमा, ऊँची लहर; **–बंदी**–(स्त्री.) मेड़ बनाने की क्रिया, मेंड़बंदी।

मेड़क–(हिं. पुं.) मंडूक, मेढक।

मेड़रा–(हिं. पुं.) किसी वस्तु का मंडलाकार ढाँचा, उमड़ा हुआ गोल किनारा, मड़रा।

मेड़राना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'मँड़राना'।

मेड़िया–(हिं. स्त्री.) मढ़ी।

मेढक–(हिं. पुं.) एक जल-स्थलचारी जन्तु, मंडूक, दर्दुर, मेघा।

मेढ़ा–(हिं. पुं.) सींगवाला एक चौपाया जिसके शरीर पर घन रोयें होते हैं, (इसको लोग लड़ाने के लिये पोलते हैं।)

मेढ़ासिंगी–(हिं. स्त्री.) एक झाड़ीदार लता जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

मेढ़ी–(हिं. स्त्री.) तीन लड़ियों की गूँथी हुई चोटी।

मेढ़–(सं. पुं.) शिश्न, लिंग।

मेथि–(सं. स्त्री.) पशुओं को बाँधने का खूँटा।

मेथी–(सं. स्त्री.) एक पौधा जिसकी फलियाँ मसाले और औषधों में प्रयुक्त की जाती हैं।

मेथौरी–(हि. स्त्री.) उर्द की बरी जो मेथी का साग मिलाकर बनाई जाती है।

मेद–(सं. पुं.) वसा, चरबी, शरीर में वसा बढ़ने का रोग, कस्तूरी, एक अन्त्यज जाति; **–ज**–(वि.) वसा से उत्पन्न; **–पुच्छ**–(पुं.) एडक, दुंवा मेढ़ा; **–स्वी**–(वि.) वसा के कारण जिसका शरीर मोटा हो गया हो।

मेदा–(सं. स्त्री.) अष्टवर्ग की एक प्रसिद्ध औषधि; (अ. पुं.) पाकाशय, पेट।

मेदिनी–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, धरती, मेदा।

मेदिनीज–(सं. पुं.) मंगल ग्रह।

मेदिनीपति–(सं. पुं.) पृथ्वीपति।

मेदुर–(सं. वि.) स्निग्ध, चिकना।

मेदोज–(सं. पुं.) अस्थि, हड्डी।

मेध–(सं. पुं.) यज्ञ, यज्ञ में बलि दिया जानवाला पशु; **–ज**–(पुं) विष्णु।

मेधा–(सं. स्त्री.) धारणा-शक्ति, बुद्धि, मन, स्मरण रखन की शक्ति, धन, सम्पत्ति, सोलह मातृकाओं म से एक, छप्पय छन्द का एक भेद, दक्ष प्रजापति की एक कन्या; **–तिथि**–(पुं.) कण्व मुनि के पिता; **–वती**–(स्त्री.) वह स्त्री जिसकी बुद्धि तीव्र हो।

मेधाविनी–(सं. स्त्री.) ब्रह्मा की पत्नी।

मेधावी–(सं. वि.) जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो, पंडित, विद्वान्, चतुर; (पुं.) तोता, मदिरा।

मेध्य–(सं. वि.) पवित्र, बुद्धि बढ़ानेवाला; (पुं.) छाग, बकरा।

मेध्या–(सं. स्त्री.) लाल कमल, गोरोचन, ब्राह्मी बूटी, ईख।

मेनका–(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम, पार्वती की माता का नाम।

मेनकात्मजा–(सं. स्त्री.) दुर्गा, शकुन्तला।

मेना–(सं. स्त्री.) देख 'मेनका'; (हिं. क्रि. स.) पकवान के द्रव्य में मोयन डालना।

मेम–(हिं. स्त्री.) यूरोप, अमेरिका आदि देशों की स्त्री, ताश का एक पत्ता, बीबी, रानी; **–साहबा**–(स्त्री.) मेम।

मेमना–(हिं. पुं.) मेड़ का बच्चा, घोड़े की एक जाति।

मेमिष–(सं. वि.) जिसकी आँखों पर पलके न हों।

मेय–(सं. वि.) जो नापा जा सके।

मेरक–(सं. पुं.) एक असुर जिसको विष्णु ने मारा था।

मेरवना–(हिं. क्रि. स.) संयोग करना, मिलाना ।
मेरा–(हिं. सर्व.) 'मैं' शब्द का संबंध कारक का रूप, मुझसे संबंध रखनेवाला ।
मेराउ,मेराव–(हिं.पुं.) मिलाप, समागम; (स्त्री.) गर्व, घमंड ।
मेरी–(हिं.सर्व.) 'मेरा' का स्त्री-लिंग रूप ।
मेरु–(सं. पु.) एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है, सुमेरु, जपमाला के बीच का सब से बड़ा दाना जो सब दानों के ऊपर होता है, वीणा का एक अंग, एक विशेष बनावट का देवमन्दिर, पिंगल-शास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगता है कि कितने लघु-गुरु वर्णो से कितने छन्द बन सकते हैं; **–क**–(पुं.) धूना; **–ग्रंथि**–(पुं.) वृक्क, गुरदा; **–दंड**–(पुं.) पीठ के बीच की हड्डी, रीढ़, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच से होकर गई है; **–धामा**–(पुं.) शिव, महादेव; **–पृष्ठ**–(पुं.) आकाश, स्वर्ग; **–मूल**–(पुं.) पहाड़ का निचला भाग; **–यंत्र**–(पुं.) बीजगणित में एक चक्र, चरखा; **–शिखर**–(पुं.) हठयोग के अनुसार मस्तक के छः चक्रों में सब से ऊपर का चक्र ।
मेरे–(हिं.सर्व.) 'मेरा' का बहुवचन, 'मेरा' का वह रूप जो संबद्ध पुंलिंग शब्द के आगे विभक्ति लगने पर इसे प्राप्त होता है ।
मेल–(सं.पुं.) मिलाने की क्रिया या भाव, संयोग, परस्पर का घनिष्ठ व्यवहार, मित्रता, अनुकूलता, अनुरूपता, ढंग, प्रकार, मिश्रण, मिलावट, समता, एक साथ प्रीतिपूर्वक रहने का भाव, संगति, एकता; (मुहा.) **–खाना**–ठीक होना, अनुकूल होना ।
मेलक–(सं. पुं.) समागम, मिलन, मेला, सहवास ।
मेल-जोल–(हिं.पुं.) मेल-मिलाप ।
मेलन–(सं. पुं.) मिलने की क्रिया या भाव, संग या साथ होना, इकट्ठा होना ।
मेलना–(हिं.क्रि.अ.,स.) मिलाना, इकट्ठा होना ।
मेल-मिलाप–(हिं.पुं.) मित्रता, घनिष्ठता ।
मेला–(हिं. पुं.) बहुत-से लोगों का जमा-वड़ा, भीड़-भाड़, उत्सव, खेल, कौतुक देखने के लिये बहुत से लोगों का इकट्ठा होना; **–ठेला**–(पुं.) भीड़भाड़, जमावड़ा ।
मेलाना–(हिं. क्रि. स.) देख 'मिलाना' ।
मेलानी–(हिं. स्त्री.) बन्धक रखी हुई वस्तु को रुपया देकर छुड़ाना ।
मेली–(हिं. पुं.) संगी, हेलमेल रखनेवाला ।
मेल्हना–(हिं. क्रि. अ.) बेचैन होना, छटपटाना, टालमटोल करना ।
मेव–(हिं. पुं.) राजपूताने की एक लुटेरी जाति ।
मेवड़ी–(हिं. स्त्री.) निर्गुण्डी, सँभालू ।
मेवा–(फा. पुं.) फल, सुखाया हुआ फल ।
मेवाड़–(हिं. पुं.) दक्षिण राजपूताना के अन्तर्गत एक विस्तीर्ण प्रदेश ।
मेवाड़ी–(हिं.पुं.) मेवाड़ प्रदेश का निवासी ।
मेवात–(हिं. पुं.) दिल्ली राजधानी के दक्षिण का प्रदेश ।
मेवाती–(हिं. पुं.) मेवात प्रदेश में रहनेवाली एक जाति ।
मेवास–(हिं.पुं.) दुर्ग, गढ़, सुरक्षित स्थान ।
मेवासी–(हिं. पुं.) गढ़ में रहनेवाला, गढ़ का मालिक, सुरक्षित गढ़ ।
मेशिका–(सं.स्त्री.) मजीठ नामक औषधि ।
मेष–(सं. पुं.) भेड़ा, प्रथम राशि का नाम, (वैशाख मास में सूर्य इस राशि में उगते हैं); **–पाल**–(पुं.) गड़ेरिया; **–पुष्प**–(पुं.) मेढासिंगी; **–वृषण**–(पुं.) इन्द्र; **–संक्रांति**–(स्त्री.) मेष राशि में सूर्य के आने का; योग (इस दिन सतुआ दान करने का माहात्म्य है), सतुआ संक्रांति; **–हृत्**–(पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।
मेषा–(सं. स्त्री.) गुजराती इलायची ।
मेषी–(सं. स्त्री.) मादा भेड, शीशम की जाति का एक वृक्ष, जटामासी ।
मेहँदी–(हिं. स्त्री.) एक पौधा जिसकी पत्तियों को पीसकर स्त्रियाँ हाथ-पैर पर लगाती हैं जिससे वहाँ लाली हो जाती है ।
मेह–(सं. पुं.) प्रमेह रोग, मेष, मेड़ा, मूत्र; (हिं. पुं.) मेघ, बादल, वर्षा ।
मेहतर–(हिं. पुं.) गली-नाली साफ करने-वाला व्यक्ति ।
मेहतरानी–(हिं. स्त्री.) स्त्री मेहतर ।
मेहन–(सं. पुं.) शिश्न, लिंग, मूत्र ।
मेहनत–(फा. स्त्री.) परिश्रम, उद्योग ।
मेहनताना–(हिं. पुं.) पारिश्रमिक ।
मेहनती–(फा. वि.) मेहनत करनेवाला, परिश्रमी ।
मेहमान–(फा. पुं.) अतिथि, पाहुना ।
मेहमानी–(फा. स्त्री.) आतिथ्य, पहुनाई ।
मेहरा–(हिं. पुं.) जनखा, स्त्रैण ।
मेहराव–(अ. स्त्री.) दरवाजे, फाटक आदि के ऊपर की धनुपाकार संरचना ।
मेहरावी–(अ.वि.) मेहराव-संबंधी ।
मेहरारू–(हिं. स्त्री.) स्त्री, औरत ।
मेहरी, मेहर–(हिं. स्त्री.) पत्नी ।
मैं–(हिं. सर्व.) स्वयं, खुद, (उत्तम पुरुष के कर्त्ता का एकवचन का रूप ।
मैं–(हिं.अव्य.) देखें 'मय', साथ मिलाकर ।
मैका–(हिं. पुं.) देखें 'मायका' ।
मैगल–(सं. पुं.) मस्त हाथी; (वि.) मत्त, मस्त ।
मैत्र–(सं. पुं.) अनुराधा नक्षत्र, सूर्य-लोक; (वि.) मित्र-संबंधी, दयालु ।
मैत्रता–(सं. पुं.) बन्धुत्व, मित्रता ।
मैत्राक्ष–(सं. पुं.) एक प्रकार का प्रेत ।
मैत्रायणी–(सं. स्त्री.) एक उपनिषद् का नाम ।
मैत्रिक–(सं. वि.) मित्र-संबंधी ।
मैत्री–(सं.स्त्री.) मित्र का भाव, मित्रता ।
मैत्रेय–(सं. पुं.) पराशर मुनि के एक शिष्य जिन्होंने विष्णुपुराण रचा था, सूर्य ।
मैत्रेयी–(सं. स्त्री.) योगिराज याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम ।
मैथिल–(सं. पुं.) मिथिला देशवासी; (वि.) मिथिला-संबंधी ।
मैथिली–(सं. स्त्री.) मिथिला देश की भाषा, सीता ।
मैथुन–(सं. पुं.) स्त्री के साथ पुरुष का समागम, रति-क्रीड़ा ।
मैदा–(फा. पुं.) बहुत बारीक आटा ।
मैदान–(फा. पुं.) परती तृण-भूमि, खेलने की विस्तृत भूमि; (मुहा.) **–में आना या उतरना**–लड़ने के लिये अखाड़े में आना; **–साफ कर देना**–बाधा-विघ्न दूर कर देना ।
मैदानी–(हिं. वि.) मैदे का बना हुआ ।
मैन–(हिं. पुं.) मोम, कामदेव, राल में मिलाया हुआ मोम जो मूर्ति आदि का ढाँचा बनाने के काम में आता है ।
मैनफल–(हिं. पुं.) मँझोले आकार का एक काँटेदार वृक्ष जिसके गोल फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं ।
मैनसिल–(हिं.पुं.) मनःशिल, एक प्रकार की धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है ।
मैना–(हिं. स्त्री.) काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखलाने पर मनुष्य की तरह बोली बोल सकता है, राज-पूताने की मैना-नामक जाति ।
मैनाक–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम जो हिमालय का पुत्र माना जाता है, हिमालय की एक ऊँची चोटी का नाम ।

मैनाल–(सं. पुं.) धीवर, मछुआ।
मनावली–(सं.स्त्री.) एक वणवृत्त का नाम।
मैमंत–(हिं. वि.) मदोन्मत्त, मतवाला, अभिमानी।
मैया–(हिं. स्त्री.) माता, माँ।
मैर–(हिं. पुं.) सुनारों की एक जाति; (स्त्री.) साँप के विष की लहर।
मैरा–(हिं.पुं.) वह मचान जिस पर बैठकर किसान अपनी उपज की रखवाली करते हैं।
मैल–(हिं.वि.) मलिन, मैला; (पुं.या स्त्री.) धूल, किट्ट आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक नष्ट हो जाती है, मैला करने की वस्तु, दोष, विकार; (मुहा.) **हाथ-पैर की मैल**–तुच्छ वस्तु।
मैलखोरा–(हिं. वि.) मैल को छिपाने-वाला, जिस पर पड़ी हुई मैल जल्दी दिखाई न पड़े; (पुं.) काठी के नीचे का नमदा, साबुन।
मैला–(हिं. पुं.) विष्ठा, कूड़ा-करकट; (वि.) दूषित, विकारयुक्त, गंदा, जिस पर मैल जमी हो, जिस पर धूल, कीट आदि जमी हो; **–कुचैला**–(वि.) बहुत मैला, जो बहुत मैले वस्त्र पहनता हो; **–पन**–(पुं.) मैला होने का भाव।
मैहिक–(सं. वि.) जिसको प्रमेह रोग हुआ हो।
मों–(हिं. अव्य.) में; (सर्व.) मो।
मोंगरा–(हिं. पुं.) मेख ठोंकने का हथौड़ा, एक प्रकार का केशर।
मोंछ–(हिं. स्त्री.) देखें 'मूंछ'।
मोंढा–(हिं. पुं.) बाँस, सरकंडा या बेंत का बना हुआ एक प्रकार का गोल ऊँचा आसन, कन्धा।
मो–(हिं. सर्व.) मेरा, 'मैं' का वह रूप जो व्रज भाषा में कर्त्ताकारक के सिवाय अन्य कारकों मे व्यवहार किया जाता है।
मोई–(हिं. स्त्री.) घी में सना हुआ आटा।
मोक–(सं. पुं.) किसी पशु का चमड़ा।
मोकना–(हिं. क्रि. स.) त्यागना, छोड़ना।
मोकल–(हिं.वि.) मुक्त, छोड़ा हुआ, स्वतंत्र।
मोकला–(हिं.वि.) अधिक चौड़ा, स्वच्छंद।
मोका–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष, मोखा।
मोक्ष–(सं. पुं.) मुक्ति, किसी प्रकार के बंधन से छूट जाना, छुटकारा, मृत्यु, पतन, शास्त्रों तथा पुराणों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बन्धन से छूटना; **–क**–(वि.) मोक्ष देनेवाला; **–ण**–(पुं.) मोक्ष देने की क्रिया; **–द**–(वि.) मोक्षदाता, मोक्ष देने-वाला; **–दा**–(स्त्री.) अगहन सुदी एकादशी का नाम; **–द्वार**–(पुं.) मोक्ष का उपाय, सूर्य; **–पति**–(पुं.) ताल के मुख्य आठ भेदों में से एक; **–पुरी**–(स्त्री.) काशी आदि सात पुरियाँ; **–विद्या**–(स्त्री.) वेदान्त शास्त्र।
मोख–(हिं. पुं.) देखें 'मोक्ष'।
मोखा–(हिं. पुं.) भीत आदि में बना हुआ छिद्र, झरोखा, एक वृक्ष।
मोग–(सं. पुं.) चेचक रोग।
मोगरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बड़े बेले का फूल।
मोगल–(हिं. पुं.) देखें 'मुगल'।
मोगली–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
मोघ–(सं.वि.) निरर्थक, निष्फल, हीन; **–ता**–(स्त्री.) निष्फलता।
मोघिया–(हिं.स्त्री.) चौड़ी तथा मोटी नरिया जो खपरैल की छाजन में लगाई जाती है।
मोच–(सं. पुं.) केला, सेमल का वृक्ष; (स्त्री.) अंग के किसी जोड़ पर की नस का अपने स्थान से हट जाना जो बहुत पीड़ाकर होता है।
मोचक–(सं. वि.) मक्तिकारक, छुड़ाने-वाला।
मोचन–(सं.पुं.) मोक्ष, मुक्त करना, काँपना, शठता, बंधन आदि खोलना, दूर करना, हटाना, ले लेना; (वि.) छुड़ानेवाला।
मोचना–(हिं. क्रि. स.) छुड़ाना, गिराना, बहाना, मुक्त करना; (पुं.) हज्जामों की बाल उखाड़ने की चिमटी।
मोचनी–(सं. स्त्री.) भटकटैया।
मोचनीय–(सं. वि.) मुक्त करने योग्य।
मोचरस–(सं. पुं.) सेमर का गोंद।
मोचसार–(सं. पुं.) देख 'मोचरस'।
मोचा–(सं. स्त्री.) सेमर का वृक्ष, केले का वृक्ष, सलई का वृक्ष, नील का पौधा।
मोचिनी–(सं. स्त्री.) पोई का साग।
मोची–(हिं. पुं.) चर्मकार श्रेणी की एक जाति, (ये लोग जूता बनाते और इसकी मरम्मत करते है); (सं. वि.) हटाने या दूर करनेवाला।
मोच्य–(सं. वि.) छोड़ देने योग्य।
मोच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'मोक्ष'।
मोछ–(हिं. स्त्री.) देखें 'मूंछ', 'मोक्ष'।
मोजा–(फा. पुं.) हाथ या पैर में पहना जानेवाला सूती, ऊनी आदि पहनावा, पायतावा।
मोट–(हिं. स्त्री.) गठरी, मोटरी, चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिये कुएँ से पानी निकाला जाता है, चरसा; (वि.) मोटा, साधारण, कम मूल्य का।
मोटक–(सं. पुं.) श्राद्धादि कार्य में इसका प्रयोग किया जाता है, यह तीन कुशों का गाँठ देकर बनाया जाता है।
मोटकी–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
मोटन–(सं.पुं.) पीसना, आक्षेप, वायु।
मोटनक–(सं. पुं.) एक वर्णवृत्त का नाम।
मोटरी–(हिं. स्त्री.) गठरी।
मोटा–(हिं. वि.) जिसके शरीर में आव-श्यकता से अधिक मांस हो, जिसका घेरा साधारण से अधिक हो, जो अच्छी तरह से पीसा न हो, दरदरा, बेडौल, भद्दा, अहंकारी, घमंडी, कठिन, भारी, घटिया, स्थूल बुनावट का; **–असामी**–(पुं.) धन-वान् मनुष्य; **–भाग्य**–(पुं.) सौभाग्य-वान्; **मोटी बात**– (स्त्री.) सामान्य वार्ता।
मोटाई–(हिं. स्त्री.) मोटा होने का भाव, स्थूलता, गर्व।
मोटाना–(हिं. क्रि. अ.) स्थूलकाय होना, मोटा होना, अमीर होना, अभिमानी होना, अहंकारी होना।
मोटापन, मोटापा–(हिं. पुं.) मोटा होने का भाव, स्थूलता।
मोटिया–(हिं. पुं.) रूक्ष, मोटा, देशी कपड़ा, खद्दर, बोझ ढोनेवाला कुली।
मोटेमल–(हिं. पुं.) मोटा आदमी।
मोट्टायित–(सं. पुं.) स्त्रियों के स्वाभा-विक दस प्रकार के हावों में से एक हाव या भाव जिसमें नायिका अपने आन्तरिक प्रेम को छिपाने का प्रयत्न करने पर भी उसे छिपा नहीं पाती।
मोठ–(हिं. स्त्री.) मूंग की तरह का एक प्रकार का मोटा अन्न।
मोठस–(हिं. वि.) मौन, चुप।
मोड़–(हिं. स्त्री.) मार्ग में वह स्थान जहाँ से मुड़ा जाता है, घुमाव, मुड़ने का भाव, कागज मोड़ना।
मोड़ना–(हिं. क्रि स.) फेरना, लौटाना, कोई काम करने में आगा-पीछा करना, विमुख होना, किसी फैली हुई वस्तु की तह करना, धार भुथरी करना; (मुहा.) **मुँह मोड़ना**–पराङ्मुख होना।
मोड़ा–(हिं. पुं.) बालक, लड़का।
मोड़ी–(हिं. स्त्री.) घसीट लिखने की एक प्रकार की लिपि जिसमें प्रायः मराठी भाषा लिखी जाती है।
मोतियदाम–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वर्णवृत्त।

मोतिया–(हि. पुं.) एक प्रकार का बेला (फूल) जिसकी कली मोती के समान गोल होती है, एक प्रकार का सलमा; (वि.) मोती-संबंधी, गोल छोटे दाने का।

मोतियाबिंद–(हि. पुं.) आंख का एक रोग जिसमें उसके परदे पर गोल झिल्ली सी पड़ जाती है जिसके कारण आंख से दिखाई नहीं पड़ता।

मोती–(हि. पुं.) एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में अथवा उनके रेतीले तटों में सीप में निकलता है, मुक्ता, कसेरों का नक्काशी करने का एक अस्त्र; (स्त्री.) बाली जिसमें बड़े-बड़े मोती जड़े रहते हैं; (मुहा.) –गरजना–मोती का चिटक जाना; मोतियों से मुंह भरना–बहुत अधिक धन देना; –चूर–(पुं.) छोटी बूंदियों का लड्डू, एक प्रकार का धान, मल्लयुद्ध की एक युक्ति; –झिरा–(स्त्री.) छोटी शीतला का रोग, छोटी चेचक; –बेल–(स्त्री.) मोतिया बेल का फूल; –भात–(पुं.) एक विशेष प्रकार का भात; –सिरी–(स्त्री.) मोतियों की कंठी या माला।

मोथा–(हि.पुं.) नागरमोथा नामक घास, (इसकी जड़ औषधों म प्रयुक्त होती है।)

मोद–(सं. पुं.) हर्ष, आनन्द, सुगन्ध, एक वर्णवृत्त का नाम; –क–(पुं.) एक खाद्य पदार्थ, लड्डू, जड़ी-बूटियों का बना हुआ लड्डू, एक वर्णवृत्त का नाम; (वि.) आनन्द देनेवाला; –कर–(वि.) आनन्द देनेवाला; –कार–(पुं.) मिठाई बनानेवाला, हलवाई।

मोदकी–(सं. स्त्री.) चमेली के फूल का पौधा; (वि.स्त्री.) आनन्द देनेवाली।

मोदन–(सं. पुं.) हर्ष, आनन्द, सुगन्ध।

मोदना–(हि. क्रि. अ., स.) प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, सुगन्ध फैलाना।

मोदनी–(सं. स्त्री.) सफेद जूही।

मोदनीय–(सं. वि.) आनन्द के योग्य।

मोदाढ्या–(सं.स्त्री.) प्रसन्न रहनेवाली स्त्री।

मोदित–(सं. वि.) आनन्दित, हर्षयुक्त।

मोदिनी–(सं.स्त्री.) अजमोदा, जूही, कस्तूरी।

मोदी–(हि. पुं.) (आटा, चावल, दाल आदि बेचनेवाला) बनिया; –खाना–(पुं.) अनादि रखने का स्थान, गोदाम।

मोधक–[illegible]

मोधू–[illegible]

मोन–(हि. पु.) देखें 'मौना'।

मोना–[illegible]

मोनिया–(हि. स्त्री.) छोटा मोना।

मोपला–(हि. पुं.) मुसलमानों की एक जाति जो मद्रास प्रांत में बसी हुई है।

मोम–(हि. पुं.) हलके पीले रंग का पिघलनेवाला पदार्थ।

मोमना–(हि. वि.) बहुत कोमल।

मोमबत्ती–(हि. स्त्री.) मोम या चरबी को सांचे में ढालकर बनाई हुई बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमी–(हि. वि.) मोम के समान, मोम का बना हुआ।

मोयन–(हि. पुं.) मांड़े हुए आटे में घी मिलाना, (ऐसा करने से पकवान खस्ता बनते हैं।)

मोरंग–(हि. पुं.) नेपाल का पूर्वी भाग।

मोर–(हि.पुं.) एक सुन्दर बड़ा पक्षी, नीलम की आभा जो मोर के पर के समान होती है, सेना की अगली पंक्ति; (सर्व.) मेरा।

मोरचंद, मोरचंद्रिका–(हि.पुं.,स्त्री.) मोर-पंख के ऊपर की बूटियां।

मोरचा–(फा. पुं.) लोहे के ऊपरी तल पर पड़नेवाली लाल तह जो वायु और तरी से उत्पन्न होती है, दर्पण पर जमी हुई मैल, वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिये खोदकर बनाया जाता है, वह स्थान जहां से सेना गढ़ या नगर की रक्षा करती है, वह स्थान जहां युद्धरत राष्ट्रों की सेनाएं लड़ाई करती हैं, वह सेना जो गढ़ में रहकर शत्रु से लड़ती है; (मुहा.) –बंदी करना–गढ़ के चारों ओर सेना नियुक्त करना; –बांधना–मोरचा बनाना; –मारना–शत्रु के गढ़ आदि पर अधिकार कर लेना; –लेना–युद्ध करना।

मोरछल–(हि. पुं.) मोर की पूंछ के परों को इकट्ठा बांधकर बनाया हुआ चंवर जो देवताओं तथा राजाओं के मस्तक पर डुलाया जाता है।

मोरछली–(हि. स्त्री.) देखें 'मौलसिरी', मोरछल हिलानेवाला।

मोरछांह–(हि. पुं.) देखें 'मोरछल'।

मोरजुटना–(हि.पुं.) एक प्रकार का सुवर्ण का आभूषण जिसमें रत्न जड़े होते हैं।

मोरट–(सं.पुं.) ऊख की जड़, एक प्रकार की लता।

मोरन–(हि. स्त्री.) [illegible] [illegible] (दही का बना हुआ गाढ़ पदार्थ।)

मोरना–(हि. क्रि. स.) देखें 'मोड़ना', दही को मथकर मक्खन निकालना।

मोरनी–(हि. स्त्री.) मोर पक्षी की मादा, छोटा टिकरा जो नथ में पिरोया जाता है।

मोरपंख–(हि. पुं.) मोर का पर।

मोरपंखी–(हि. स्त्री.) वह नाव जिसका अगला भाग मोर की तरह बना और रंगा रहता है, मलखंभ का एक व्यायाम; (पुं.) एक प्रकार का चमकीला और गहरा नीला रंग; (वि.) गहरा नीला।

मोरपंखा–(हि. पुं.) मोर का पर, मोर के पंख की बनी हुई कलंगी।

मोरमुकुट–(हि. पुं.) मोर के पंख का बना हुआ मुकुट।

मोरवा–(हि. पुं.) देखें 'मोर', नाव की किलवारी में बांधने की रस्सी।

मोरशिखा–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की जड़ी जिसकी पत्तियां मोर की कलंगी के आकार की होती हैं।

मोरा–(हि. सर्व.) मेरा; (पुं.) अकीक नामक रत्न का एक भेद।

मोराना–(हि.क्रि.स.) चारों ओर घुमाना, फिराना, पेरने के लिए ईख की अंगारी कोल्हू में डालना।

मोरिया–(हि. स्त्री.) कोल्हू की कतरी में लगा हुआ बांस।

मोरी–(हि. स्त्री.) मैला पानी बहने की नाली, परनाली, मोहरी, मछलियों की एक जाति।

मोर्चा–(हि. पुं.) देखें 'मोरचा'।

मोल–(हि. पुं.) मूल्य, दाम; (क्रि. प्र.) –करना–व्यापारी या किसी वस्तु का दाम बढ़ाकर कहना; –चाल–(पुं.) किसी वस्तु का दाम घटाकर सौदा तय करना।

मोलना–(हि. पुं.) मौलाना, मौलवी।

मोलाना–(हि. क्रि. स.) किसी वस्तु का दाम पूछना अथवा मूल्य स्थिर करना।

मोवना–(हि. क्रि. स.) देखें 'मोना'।

मोष–(सं. पुं.) चोरी, लूट, डकैती; (हि. पुं.) देखें 'मोख'।

मोषक–(सं. पुं.) तस्कर, चोर।

मोषण–(सं.पुं.) लूटना, चोरी करना, वध करना।

मोह–(सं. पुं.) [illegible]

मोहक–[illegible]

मोहकम–[illegible]

मोहठा–[illegible] छंद।

मोहड़ा–(हिं. पुं.) किसी पात्र का मुख या खुला भाग, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग, मुँह, मुख, मोहरा।
मोहजनक–(सं. वि.) मोह उत्पन्न करनेवाला।
मोहताज–(हिं.वि.) धनहीन, अभावग्रस्त।
मोहताजी–(हिं. स्त्री.) धनहीनता।
मोहन–(सं.पुं.) धतूरे का पौधा, मोहनेवाला व्यक्ति, जिसको देखकर मन लुभा जाय, श्रीकृष्ण, एक प्रकार का वर्ण-वृत्त, एक प्रकार का तान्त्रिक प्रयोग जिससे किसी को मूर्च्छित करते हैं, शत्रु को मूर्च्छित करने का एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, कोल्हू में वह स्थान जहाँ पेरने के लिये ऊख लगाई जाती है, वारह मात्राओं का एक ताल, कामदेव के पाँच बाणों में से एक; (हिं. वि.) मोह उत्पन्न करनेवाला; **–भोग–** (पुं.) एक प्रकार का हलुवा, एक प्रकार का केला, एक प्रकार का आम; **–माला–** (स्त्री.) सोने के दानों की वनी हुई माला।
मोहना–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की चमेली; (हिं. क्रि. अ., स.) किसी पर अनुरक्त होना या रीझना, मूर्च्छित होना, मोहित करना, लुभाना, धोखा देना, भ्रम में डालना।
मोहनास्त्र–(सं. पुं.) प्राचीन काल का शत्रु को मूर्च्छित करनेवाला एक अस्त्र।
मोहनिद्रा–(सं. स्त्री.) मोहरूपी निद्रा।
मोहनी–(सं. स्त्री.) पोई का साग, वटपत्री, पत्थरफोड़, माया, वैशाख सुदी एकादशी, एक प्रकार का लंवा कीड़ा, वह स्त्री का रूप जो भगवान् ने समुद्र-मंथन के बाद अमृत बाँटते समय धारण किया था, एक वर्णवृत्त का नाम, वशीकरण मंत्र; (वि.) चित्त को लुभानेवाली; (मुहा.)**–डालना–**अपने वश में कर लेना; **–लगाना–**वश में करना।
मोहनीय–(सं. वि.) मोहित करने योग्य।
मोहफिल, महफिल–(हिं. स्त्री.) सभा।
मोहव्वत–(हिं. स्त्री.) प्रेम, मुहव्वत।
मोहमंत्र–(सं.पुं.) मोह उत्पन्न करने का मंत्र।
मोहयिता–(सं. पुं.) मोहनेवाला।
मोहरा–(हिं. पुं.) किसी पात्र का मुख या खुला हुआ भाग, सेना की अगली पंक्ति जो चढ़ाई करती है, सेना की गति, किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग, एक प्रकार की जाली जो वेल के मुँह में बाँधी जाती है, चोली आदि का वंद, छेद, शतरंज की गोटी।
मोहरात्रि–(सं.स्त्री.) वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है, जन्माष्टमी की रात्रि।
मोहरी–(हिं. स्त्री.) किसी पात्र का छोटा मुख अथवा खुला भाग, पाजामे का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं, एक प्रकार की मधुमक्खी, मोरी।
मोहल्ला–(हिं. पुं.) देखें 'मुहल्ला'।
मोहशास्त्र–(सं.पुं.) अविद्याजनक ग्रन्थ।
मोहार–(हिं. पुं.) द्वार, मोहड़ा, अगला भाग, मधुमक्खी का छत्ता, भौंरा।
मोहारनी–(हिं.स्त्री.) पाठशाले में बालकों का एक साथ खड़े होकर पहाड़े पढ़ना।
मोहिं–(हिं. सर्व.) मुझ, मुझको।
मोहित–(सं. वि.) मुग्ध, भ्रम में पड़ा हुआ, आसक्त, मोहा हुआ।
मोहिनी–(सं.वि., स्त्री.) मोहनेवाली; (स्त्री.) वेले का फूल, पत्थरफोड़, विष्णु का मोहनी अवतार, जादू, माया, वैशाख शुक्ल एकादशी का नाम, एक अर्धसम-वृत्त का नाम, पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मोही–(हिं. वि.) मोहित करनेवाला, प्रेम करनेवाला, अज्ञानी, भ्रम या अविद्या मे पड़ा हुआ, लोभी, लालची।
मोहुक–(हिं. वि.) मोह करनेवाला।
मोहेला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चलता गाना।
मोहेली–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मछली।
मोहोपमा–(सं. स्त्री.) उपमा अलंकार का एक भेद।
मौंगी–(हिं. वि., स्त्री.) मौन, चुप।
मौंज–(सं. वि.) मूँज का बना हुआ।
मौंजी–(सं.स्त्री.) मूँज की वनी हुई मेखला।
मौंजीवंधन–(सं. पुं.) यज्ञोपवीत संस्कार।
मौका–(अ.पुं.) अवसर।
मौक्तिक–(सं.पुं.) मुक्ता, मोती; **–तंडुल–** (पुं.) वड़ी ज्वार; **–दाम–**(पुं.) एक वर्णिक वृत्त; **–माला–**(स्त्री.) एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं; **–शुक्ति–**(स्त्री.) सीप।
मौख–(सं. पुं.) वह पाप जो अभक्ष्य-भक्षण से होता है, एक प्रकार का मसाला; (वि.) मुख-सम्वन्धी।
मौखर–(सं. पुं.) वहुत वढ़-वढ़कर वातें करना।
मौखरी–(सं. पुं.) उत्तर भारत का प्राचीन राजवंश।
मौखर्य–(सं. पुं.) वहुत वढ़-वढ़कर वोलना, मुखरता।
मौखिक–(सं.वि.) मुख-सम्वन्धी, मुख का।
मौख्य–(सं. पुं.) प्रधानता।
मौगा–(हिं. पुं.) निर्वुद्धि, हिजड़ा।
मौगी–(हिं. स्त्री.) स्त्री।
मौज–(फा. पुं.) आनन्द, प्रसन्नता, विनोद।
मौजी–(हिं. वि.) मनमाना काम करनेवाला, आनन्दी, सर्वदा प्रसन्न रहनेवाला, जो जी में आवे वही करनेवाला।
मौजूं–(अ. वि.) उपयुक्त।
मौड़ा–(हिं. पुं.) मोड़ा।
मौत–(फा. स्त्री.) मृत्यु, मरण।
मौदक–(सं. वि.) मोदक-संवंधी।
मौद्गल–(सं. पुं.) मुद्गल ऋषि के गोत्र में उत्पन्न।
मौद्गलि–(सं. पुं.) काक, कौआ।
मौन–(सं. पुं.) न बोलने की क्रिया या भाव, चुप्पी, मुनियों का एक व्रत, फाल्गुन महीने का पहला पक्ष; (वि.) चुप, जो न बोले; (हिं.पुं.) मूँज का वना हुआ पिटारा, डव्वा, पात्र; (मुहा.)**–ग्रहण करना–**चुप रहना, न बोलना; **–तजना–**बोलने लगना, मौन त्यागना; **–साधना–**गूँगा बन जाना।
मौनव्रत–(सं. पुं.) चुप रहने का व्रत।
मौनता–(सं. स्त्री.) चुप रहने का भाव।
मौना–(हिं. पुं.) घी या तेल रखने का पात्र, मूँज की वनी हुई पिटारी।
मौनित्व–(सं. पुं.) मौनी का भाव, मौन।
मौनी–(हिं. वि.) मौन व्रत धारण करनेवाला; (पुं.) चुप रहनेवाला साधु।
मौर–(हिं.पुं.) चमकीले कागज आदि का वना हुआ एक प्रकार का शिरोभूषण जो विवाह के समय वर को पहनाया जाता है; (वि.) शिरोमणि, प्रधान, सरदार; (पुं.) गरदन का पिछला भाग, मंजरी, वौर।
मौरना–(हिं. क्रि. अ.) वृक्षों पर मंजरी लगना, वौरना।
मौरसिरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'मौलसिरी'।
मौरी–(हिं. स्त्री.) वधू के सिर पर रखने का छोटा मौर।
मौर्ख्य–(सं. पुं.) मूर्खता का भाव, वेवकूफी।
मौर्य–(सं. पुं.) मुरा का अपत्य, चन्द्रगुप्त, भारत का एक प्राचीन क्षत्रिय राजवंश।
मौलवी–(अ. पुं.) इस्लामी धर्म-शास्त्र का पंडित।
मौलसिरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का सदावहार वृक्ष जिसमें छोटे-छोटे सुगन्धित फूल होते हैं।
मौलि–(सं. पुं.) मस्तक, सिर, किरीट, जूड़ा, प्रधान व्यक्ति, सरदार, भूमि,

अशोक वृक्ष ।
मौलिक–(सं. वि.) मूल-सम्बन्धी ।
मौलिकता–(सं. स्त्री.) मौलिक होने का भाव ।
मौलिमंडन–(सं. पुं.) एक प्रकार का शिरोभूषण ।
मौल्य–(सं. वि.) मूल्य-सम्बन्धी ।
मौसा–(हिं. पुं.) माता की बहिन का पति ।
मौसियउत, मौसियायत–(हिं.वि.) मौसेरा ।
मौसी–(हिं.स्त्री.) माता की बहिन, मौसी ।
मौसेरा–(हिं. वि.) मौसी के सम्बन्ध का ।
मौहूर्त–(सं. वि.) मुहूर्त-सम्बन्धी ।
म्याँव–(हिं. स्त्री.) बिल्ली की बोली; (मुहा.)–म्याँव करना–डरकर धीमी बोली बोलना ।
म्यान–(फा. पुं.) तलवार, कटार आदि के फल को सुरक्षित रखने का कोष ।
म्याना–(हिं. क्रि. स.) म्यान में रखना ।
म्यों–(हिं. स्त्री.) बिल्ली की बोली ।
म्योंड़ी–(हिं. स्त्री.) एक सदाबहार वृक्ष, निर्गुण्डी ।
म्रियमाण–(सं. वि.) मृततुल्य, मृतप्राय ।
म्लान–(सं. वि.) कुम्हलाया हुआ, मलिन, दुर्बल; (पुं.) ग्लानि, शोक; –ता–(स्त्री.) मलिनता ।
म्लिष्ट–(सं. वि.) जो स्पष्ट न बोलता हो ।
म्लेच्छ–(सं. पुं.) वर्णाश्रम-हीन जाति; (वि.) पामर, नीच, सर्वदा पाप करनेवाला ।
म्हा–(हिं. सर्व.) देखें 'मुझे' ।
म्हारा–(हिं. सर्व.) हमारा ।

य

य–हिन्दी वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर; इसका उच्चारण स्थान तालु है। यह स्पर्श-वर्ण और ऊष्म-वर्ण के बीच का वर्ण है। इसलिये इसको अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं ।
यंत–(सं. पुं.) सारथी, महावत ।
यंतव्य–(सं. वि.) दमन करने योग्य ।
यंता–(सं. पुं.) सारथी ।
यंत्र–(सं. पुं.) नियंत्रण, किसी विशेष कार्य के लिए बनाया हुआ उपकरण, कल, मशीन, तोप या बंदूक, कोई अस्त्र या शस्त्र, वाद्य, बाजा, ताला, तन्त्र के अनुसार विशिष्ट प्रकार के बने हुए कोष्ठक आदि, जंतर ।
यंत्रगृह–(सं. पुं.) वेधशाला, कारखाना ।
यंत्रण–(सं. पुं.) रक्षण, रक्षा करना, बन्धन, बांधना, नियम ।
यंत्रणा–(सं. स्त्री.) वेदना, यातना, कष्ट ।
यंत्रनाल–(सं. पुं.) कुएँ में से पानी निकालने की कल ।
यंत्रपेषणी–(सं. स्त्री.) पीसने की चक्की ।
यंत्रप्रवाह–(सं.पुं.) पानी फेंकने का यंत्र, दमकल ।
यंत्रमंत्र–(सं. पुं.) जादू-टोना ।
यंत्रराज–(सं. पुं.) ग्रहों तथा तारों की गति जानने का यंत्र ।
यंत्रविद्या–(सं. स्त्री.) कलों के निर्माण और चलाने की विद्या ।
यंत्रशाला–(सं.स्त्री.) वेधशाला, कारखाना ।
यंत्रसूत्र–(सं. पुं.) वह सूत जिसकी सहायता से कठपुतली नचाई जाती है ।
यंत्रालय–(सं. पुं.) मुद्रालय, छापाखाना, कारखाना ।
यंत्राश–(सं. पुं.) एक राग का नाम ।
यंत्रिका–(सं.स्त्री.) छोटी ताली, छोटा यंत्र ।
यंत्रित–(सं.वि.) जो यंत्र द्वारा बंद किया या रोका गया हो, ताला लगा हुआ ।
यंत्री–(हिं. पुं.) यंत्र-मंत्र करनेवाला, तान्त्रिक, बाजा बजानेवाला ।
यंत्रोपल–(सं. पुं.) चक्की का पत्थर ।
यंद–(हिं. पुं.) स्वामी, मालिक ।
यकार–(सं. पुं.) 'य' स्वरूप वर्ण ।
यकृत–(सं. स्त्री.) पेट की दाहिनी ओर की एक थैली जिसमें पाचन रस रहता है और जिसकी क्रिया से भोजन पचता है, जिगर, वह रोग जिसमें यकृत फूल तथा बढ़ जाता है ।
यकोला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और पुष्ट होती है ।
यक्ष–(सं. पुं.) देवयोनि विशेष, कुबेर का अनुचर, धनरक्षक; –कर्दम–(पुं.) एक प्रकार का अंग-राग; –ण–(पुं.) भोजन करना, पूजन करना; –तरु–(पुं.) बर का पेड़; –ता–(स्त्री.) यक्ष का भाव या धर्म; –त्व–(पुं.) यक्ष का भाव या धर्म; –नायक–(पुं.) यक्षों के स्वामी, कुबेर; –प–(पुं) यक्षपति; –पति–(पुं.) कुबेर; –पुर–(पुं.) अलकापुरी; –भृत–(वि.) जिसकी पूजा की गई हो; –रस–(पुं.) फूलों से बनाई हुई मदिरा; –राज–(पुं.) यक्षों के राजा कुबेर; –रात्रि–(स्त्री.) कार्तिक की पूर्णिमा; –लोक–(पुं.) वह लोक जिसमें यक्षों का वास माना जाता है; –वित्त–(वि.) जो धन का व्यय न करे, कृपण, कंजूस; (पुं.) यक्ष का धन; –साधन–(पुं) यक्ष की उपासना ।
यक्षाधिप, यक्षाधिपति–(सं. पुं.) यक्ष-पति, कुबेर ।
यक्षामलक–(सं. पुं.) पिण्डखजूर ।
यक्षावास–(सं. पुं.) बरगद का वृक्ष ।
यक्षिणी–(सं. स्त्री.) यक्ष की पत्नी, कुबेर की स्त्री, दुर्गा की एक अनुचरी ।
यक्षी–(सं. स्त्री.) यक्ष की पत्नी; (पुं.) वह जो यक्ष की उपासना करता हो या उसको साधता हो ।
यक्षेंद्र, यक्षेश्वर–(सं. पुं.) यक्षों के स्वामी, कुबेर ।
यक्ष्म–(सं. पुं.) क्षय नामक रोग ।
यक्ष्मा–(सं. पुं.) क्षय नामक रोग ।
यगण–(सं. पुं.) छन्दःशास्त्र के आठ गणों में से एक जिसमें पहिला वर्ण लघु तथा बाद के दो वर्ण गुरु होते हैं ।
यगूर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी काले रंग की होती है ।
यग्य–(हिं. पुं.) देखें 'यज्ञ' ।
यच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'यक्ष' ।
यच्छत्–(सं. वि.) दान देनेवाला, चित्त हटानेवाला ।
यच्छिनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'यक्षिणी' ।
यज–(सं. पुं.) यज्ञ, अग्नि ।
यजत–(सं. पुं.) ऋत्विक् ।
यजति–(सं. पुं.) यज्ञ, याग ।
यजत्र–(सं.पुं.) यज्ञ करनेवाला, अग्निहोत्री ।
यजन–(सं. पुं.) यज्ञ करना; –कर्ता–(पुं.) हवन अथवा यज्ञ करनेवाला ।
यजनीय–(सं. वि.) यजन करने योग्य ।
यजमान–(सं. पुं.) वह जो यज्ञ करता हो, ब्राह्मणों को दान देनेवाला, शिव की आठ मूर्तियों म से एक मूर्ति; –त्व–(पुं.) यजमान का भाव या धर्म ।
यजमानी–(हिं. स्त्री.) यजमान का भाव या धर्म, पुरोहित की वृत्ति, वह स्थान जहाँ किसी पुरोहित के यजमान रहते हों ।
यजाक–(हिं. वि.) दान देनेवाला ।
यजिष्णु–(सं. वि.) यज्ञ करनेवाला ।
यजुः–(सं. पुं.) यजुर्वेद ।
यजुर्वेद–(सं. पुं.) चार प्रसिद्ध वेदों में से एक जिसमें विशेषतया यज्ञकर्म का विस्तृत वर्णन है ।
यजुर्वेदी–(हिं. वि.) यजुर्वेद का जानने-वाला, यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करनेवाला ।
यजु यजुश्रुति–(सं. स्त्री.) यजुर्वेद ।

यजुष्पति–(सं. पुं.) विष्णु।
यजुष्य–(सं. वि.) यज्ञ-संबंधी।
यजुस्–(सं. पुं.) यजुर्वेद।
यज्ञ–(सं. पुं.) याग, इष्टि, मख, वह वैदिक कृत्य जिसमें सभी देवताओं का पूजन तथा घृतादि द्वारा हवन होता है; **–क, –कर्ता**–(पुं.) यज्ञ करनेवाला; **–कल्प**–(पुं.) विष्णु; **–काम**–(वि.) यज्ञ की इच्छा करनेवाला; **–काल**–(पुं.) पौर्णमासी, पूर्णिमा; **–कीलक**–(पुं.) लकड़ी का वह खूँटा जिसमें यज्ञ के लिये बलि दिया जानेवाला पशु बाँधा जाता है; **–कुंड**–(पुं.) वह कुंड या वेदी जिसमें हवन किया जाता है; **–कृत्**–(वि.) यज्ञ करनेवाला; **–केतु**–(पुं.) एक राक्षस का नाम; **–क्रिया**–(स्त्री.) यज्ञ के काम, कर्मकाण्ड; **–गिरि**–(पुं.) पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम; **–गुप्त**–(पुं.) एक प्रसिद्ध जैनाचार्य का नाम; **–घ्न**–(पुं.) यज्ञ का नाश करनेवाला, राक्षस; **–छाग**–(पुं.) यज्ञ में बलि देने का बकरा; **–त्राता**–(पुं.) यज्ञ की रक्षा करनेवाले विष्णु; **–दक्षिणा**–(स्त्री.) वह दक्षिणा जो यज्ञ समाप्त हो जाने पर यज्ञ करानेवाले पुरोहित को दी जाती है; **–दीक्षा**–(स्त्री.) यज्ञ-विषयक दीक्षा; **–धर**–(पुं.) विष्णु; **–धूप**–(पुं.) धूना का वृक्ष; **–नेमि**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–पति**–(पुं.) यजमान, वह जो यज्ञ कराता हो, विष्णु; **–पत्नी**–(स्त्री.) यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा; **–पथ**–(पुं.) यज्ञ की प्रणाली; **–पशु**–(पुं.) वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय, बकरा, घोड़ा; **–पात्र**–(पुं.) काठ के बने हुए पात्र जो यज्ञ में काम आते है; **–पादप**–(पुं.) कंटकी नामक वृक्ष; **–पाल**–(पुं.) यज्ञ का संरक्षक; **–पुच्छ**–(पुं.) यज्ञ का शेष; **–पुरुष**–(पुं.) यज्ञरूपी पुरुष, विष्णु; **–फलद**–(पुं.) विष्णु; **–बंधु**–(पुं.) यज्ञ-कर्म का सहकारी; **–बाहु**–(पुं.) अग्नि का एक नाम; **–भाग**–(पुं.) यज्ञ का अंश जो देवताओं को दिया जाता है, देवता जिनको यज्ञ का भाग मिलता है; **–भाजन, –भांड**–(पुं.) यज्ञपात्र; **–भावन**–(पुं.) विष्णु; **–भूमि**–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ यज्ञ होता है, यज्ञस्थान; **–भूषण**–(पुं.) कुश; **–भृत्, –भोक्ता**–(पुं.) विष्णु; **–मंडप**–(पुं.) यज्ञ करने के लिये जो मण्डप बनाया गया हो, यज्ञवेदी; **–मंडल**–(पुं.) वह स्थान जो यज्ञ करने के लिये घेरा गया हो; **–मंदिर**–(पुं.) यज्ञशाला; **–मय**–(पुं.) यज्ञस्वरूप, विष्णु; **–महोत्सव**–(पुं.) यज्ञ के निमित्त कोई बड़ा उत्सव; **–मित्र**–(वि.) एक प्रसिद्ध जैन साधु का नाम; **–मुख**–(पुं.) यज्ञ का आरम्भ; **–यूप**–(पुं.) वह खंभा जिसमें यज्ञ का बलि-पशु बाँधा जाता है; **–योग्य**–(पुं.) गूलर का पेड़; **–रस**–(पुं.) सोम; **–राज**–(पुं.) चन्द्रमा; **–लिंग**–(पुं.) श्रीकृष्ण का एक नाम; **–वर्धन**–(वि.) यज्ञ को बढ़ानेवाला; **–वराह**–(पुं.) विष्णु; **–वल्क**–(पुं.) याज्ञवल्क्य के पिता; **–वल्ली**–(स्त्री.) सोमलता; **–वाट**–(पुं.) यज्ञशाला; **–वाहन**–(पुं.) शिव, विष्णु, ब्राह्मण; **–वाही**–(वि.) यज्ञ का काम करनेवाला; **–वीर्य**–(पुं.) विष्णु; **–वृक्ष**–(पुं.) कंटकी का पेड़; **–व्रत**–(वि.) यज्ञ करनवाला; **–शत्रु**–(पुं.) राक्षस; **–शाला**–(स्त्री.) यज्ञगृह, यज्ञ करने का स्थान; **–शास्त्र**–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें यज्ञों और उनके कृत्यों का विवेचन रहता है; **–शील**–(वि.) यज्ञ करनेवाला; **–शेष**–(पुं.) यज्ञ का अवशिष्ट या शेष भाग; **–श्री**–(स्त्री.) यज्ञ का धन; **–श्रेष्ठा**–(स्त्री.) सोमलता; **–संस्तर**–(पुं.) यज्ञभूमि, सफेद कुश; **–संस्था**–(स्त्री.) यज्ञ का स्वरूप; **–सदन**–(पुं.) यज्ञ-स्थान; **–साधन**–(वि.) यज्ञ की रक्षा करनेवाला; (पुं.) विष्णु; **–साधनी**–(स्त्री.) सोमलता; **–सार**–(पुं.) गूलर का पेड़; **–सिद्धि**–(स्त्री.) यज्ञ की समाप्ति; **–सूत्र**–(पुं.) यज्ञोपवीत, जनेऊ; **–सेन**–(पुं.) विदर्भ के एक प्राचीन राजा का नाम; **–स्तंभ**–(पुं.) यज्ञयूप; **–स्थाणु**–(पुं.) वह खंभा जिसमें यज्ञ में बलि देने का पशु बाँधा जाता है; **–स्थान**–(पुं.) वह स्थान जहाँ यज्ञ किया जाता है; **–हन्**–(वि., पुं.) यज्ञ में विघ्न करनेवाला, राक्षस; **–हृदय**–(पुं.) विष्णु; **–होता**–(पुं.) यज्ञ में देवताओं का आवाहन करनेवाला।
यज्ञांग–(सं. पुं.) खैर का वृक्ष, गूलर का पेड़, यज्ञ का अवयव या अंग।
यज्ञांगी–(सं. स्त्री.) सोमलता।
यज्ञांश–(सं. पुं.) यज्ञ का अंश या भाग।
यज्ञांशभुज्–(सं. पुं.) देवतागण।
यज्ञागार–(सं. पुं.) यज्ञशाला।
यज्ञात्मा–(सं. पुं.) विष्णु।
यज्ञाधिपति–(सं. पुं.) यज्ञ के स्वामी, विष्णु।
यज्ञारि–(सं. पुं.) शिव, राक्षस।
यज्ञार्थ–(सं. अव्य.) यज्ञ के निमित्त।
यज्ञाशन–(सं. पुं.) देवता।
यज्ञेश्वर–(सं. पुं.) विष्णु।
यज्ञोपकरण–(सं. पुं.) वह वस्तु जो यज्ञ के काम में आती है।
यज्ञोपवीत–(सं. पुं.) ब्रह्मसूत्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य का एक संस्कार, उपनयन, व्रतबन्ध, जनेऊ।
यज्ञोपासक–(सं.पुं.) वह जो यज्ञ करता हो
यज्य–(सं.वि.) यजन करने योग्य।
यज्वा–(सं. पुं.) यज्ञ करनेवाला।
यडर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
यत–(सं.वि.) शासित, दमन किया हुआ।
यतन–(सं. पुं.) देखें 'यत्न'।
यतनीय–(सं. वि.) यत्न करने योग्य।
यतमान–(सं. वि.) यत्न करता हुआ।
यतव्य–(सं. वि.) प्रयत्न करनेवाला।
यतव्रत–(सं.वि.) बड़े संयम से रहनेवाला
यतात्मा–(सं. पुं.) संयमी।
यति–(सं. पुं.) भिक्षुक, संन्यासी, योगी, ब्रह्मचारी, त्यागी, जिसने संसार का त्याग किया है, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, छप्पय छन्द का एक भेद; (स्त्री.) छंद पढ़ने में जहाँ-जहाँ विश्राम किया जाता है, विरति, विराम, यमन, प्रतिबन्ध; **–त्व**–(पुं.) यति का कर्म या भाव; **–धर्म**–(पुं.) संन्यास; **–नी**–(स्त्री.) संन्यासिनी, विधवा; **–भंग**–(पुं.) काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर आगे-पीछे पड़ती है जिससे पढ़ने में छन्द का लय बिगड़ जाता है; **–भ्रष्ट**–(पुं.) यतिभंग दोष से युक्त छन्द; **–सांतपन**–(पुं.) एक प्रकार का चान्द्रायण व्रत।
यती–(सं. पुं.) देखें 'यति', जितेन्द्रिय।
यतुका–(सं. स्त्री.) चकवँड़ का पौधा।
यतोद्भव–(सं. वि.) जहाँ से उत्पत्ति हो।
यत्किंचित्–(सं.वि.) थोड़ा-सा, बहुत कम।
यत्न–(सं. पुं.) रूप आदि चौबीस गुणों के अन्तर्गत एक गुण, उद्योग, उपाय, उपचार, रोग-शान्ति का उपाय; **–वान्**–(वि.) यत्न करनेवाला।
यत्नाक्षेप–(सं. पुं.) अलंकार-शास्त्रोक्त आक्षेप का एक भेद।

यत्र–(सं. अव्य.) जहाँ, जिस जगह; –तत्र–(अव्य.) जहाँ-तहाँ, कहीं-कहीं; –तत्रस्थ–(वि.) जहाँ-तहाँ रहनेवाला।

यथर्थ–(सं. अव्य.) यथा समय।

यथांश–(सं. अव्य.) अंश के अनुसार।

यथा–(सं. अव्य.) जैसे, ज्यों; –कर्तव्य–(वि.) कर्त्तव्य के अनुरूप, जैसा करना चाहिये; –कर्म–(अव्य.) कर्म के अनुसार; –कल्प–(अव्य.) शास्त्र के अनुसार; –काम–(अव्य.) इच्छानुसार; –कामी–(वि.) स्वेच्छाचारी; –काम्य–(वि.) यथेष्ट; –काय–(अव्य.) काया के अनुसार; –कार्य–(अव्य.) जैसा करना चाहिए; –काल–(अव्य.) उपयुक्त समय पर; –कुल–(अव्य.) कुलधर्म के अनुसार; –धर्म–(अव्य.) धर्मानुसार, धर्म का जैसा नियम हो उसी के अनुसार; –कृत– (अव्य.) रीति के अनुसार; –क्रम– (अव्य.) क्रमानुसार, क्रमशः; –क्षम– (अव्य.) यथाशक्ति; –गात्र–(अव्य.) देह-देह में, प्रत्येक शरीर में; –गुण– (अव्य.) गुण के अनुरूप; –गृह–(अव्य.) घर के समान; –चिंतित–(वि.) चिन्तानुसार; –जात–(वि.) मूर्ख, नीच; –जाति–(अव्य.) जाति के अनुसार; –ज्ञप्त–(वि.) जैसी आज्ञा दी गयी हो; –ज्ञान–(अव्य.) ज्ञान के अनुसार; –तत्व–(अव्य.) यथार्थ; –तथ–(वि.) यथार्थ, उचित; –तथ्य–(अव्य.) जैसे का तैसा, ज्यों का त्यों, सत्यतः; –दत्त–(वि.) जैसा दिया गया हो; –दर्शन–(अव्य.) देखने के अनुसार; –दीक्षा–(अव्य.) दीक्षा के अनुसार; –दृष्ट–(अव्य.) जैसा देखा गया हो; –धर्म–(अव्य.) धर्म के अनुसार; –नियम–(अव्य.) नियमानुसार; –न्याय–(वि., अव्य.) यथोचित, न्याय के अनुसार; –प्रदिष्ट–(वि.) जैसी आज्ञा दी गई हो; –पूर्व–(अव्य.) पहिले के समान, ज्यों का त्यों; –प्राण–(अव्य.) शक्ति के अनुसार; –प्रार्थित–(अव्य.) जैसी प्रार्थना की गई हो; –प्रीति–(अव्य.) प्रेम के अनुसार; –बल–(अव्य.) यथाशक्ति, बल के अनुसार; –बुद्धि–(अव्य.) बुद्धि के अनुसार; –भक्ति–(अव्य.) भक्ति के अनुसार; –भक्षित–(वि.) जिस तरह खाया गया हो; –भाग,–भाजन–(अव्य.) भाग या पात्र के अनुसार; –मति–(अव्य.) बुद्धि के अनुसार; –मुख्य–(अव्य.) प्रधानता से; –म्नाय–(अव्य.) वेदों के अनुसार; –यथ–(वि.) तुल्य, समान; –युक्ति–(अव्य.) युक्ति के अनुसार; –युक्त–(वि.) यथोचित; –योग्य–(अव्य.) योग्यतानुसार; –रुचि–(अव्य.) रुचि के अनुसार; –रूप–(अव्य.) रूप के अनुसार; –लब्ध–(वि.) जितना प्राप्त हो सके उसके अनुसार; –लाभ–(अव्य.) जो कुछ मिले उसके अनुसार; –वत्–(अव्य.) पूर्ववत्, जैसा का तैसा, जैसा चाहिये वैसा, अच्छी तरह से; –विध–(अव्य.) जिस प्रकार से; –विधि–(अव्य.) विधिपूर्वक; –विहित–(अव्य.) विधि के अनुसार; शक्य–(अव्य.) सामर्थ्य भर; –शक्ति–(अव्य.) सामर्थ्य के अनुसार, जितना हो सके; –शास्त्र, –श्रुत–(अव्य.) शास्त्र के अनुसार; –श्रुति–(अव्य.) श्रुति के अनुकूल; –संदिष्ट–(अव्य.) जैसा कहा गया हो; –संभव–(अव्य.) शक्ति के अनुसार; –संहित–(अव्य.) संहिता के अनुसार; –संकल्पित–(अव्य.) जैसा मन में संकल्प किया गया हो; –सख्य–(अव्य.) मित्रता के भाव से; –समय–(अव्य.) समय के अनुसार, जैसा समय हो वैसा; –साध्य–(अव्य.) यथाशक्ति; –स्तुत–(अव्य.) जैसी स्तुति की गई हो; –स्थान–(अव्य.) ठीक स्थान पर; –स्थित–(वि.) सत्य, ठीक, स्थिर; –स्थिति–(स्त्री.) जैसी स्थिति थी; –स्मृति–(अव्य.) स्मृति के प्रमाण के अनुसार; –स्व–(अव्य.) इच्छानुसार; –स्वैर–(अव्य.) चित्त के अनुसार।

यथाकार–(सं. अव्य) आकार के अनुसार।

यथागत–(सं. अव्य.) आगत के अनुसार।

यथागम–(सं. अव्य.) आगम के अनुसार।

यथाचार–(सं. अव्य.) आचार के अनुसार।

यथाचारी–(सं. वि.) आचार के अनुसार चलनेवाला।

यथात्मक–(सं. वि.) प्रकृति के अनुसार।

यथादिष्ट–(सं. वि.) जैसा कहा गया हो।

यथाभिकाम–(सं. अव्य.) रुचि के अनुसार।

यथाभिरुचि–(सं. अव्य.) रुचि के अनुसार।

यथाभिलषित–(सं. वि.) जैसा अभिलषित हो।

यथाभिलिखित–(सं. वि.) जैसा अभिलिखित हो।

यथारंभ–(सं. अव्य.) आरंभ के अनुसार।

यथार्थ–(सं. अव्य.) सत्य और जैसा होना चाहिये वैसा, जैसा का तैसा, ठीक; –ता–(स्त्री.) यथार्थ होने का भाव, सत्यता।

यथावकाश–(सं. अव्य.) अवकाश के अनुसार।

यथाहार–(सं. अव्य.) आहार के अनुसार।

यथेच्छ–(सं. अव्य.) इच्छानुसार, मनमाना।

यथेच्छक–(सं. वि.) मनमाना काम करनेवाला।

यथेच्छा–(सं. अव्य.) इच्छानुसार, मनमाना, जो मन में आवे वैसे।

यथेच्छाचार–(सं. पुं.) उचित-अनुचित का ध्यान न करके इच्छानुसार काम करना।

यथेच्छाचारी–(सं. वि.) मनमौजी।

यथेप्सित–(सं. वि.) जो इच्छा हो वैसा।

यथेष्ट–(सं. वि.) जितना चाहिये उतना; –कारी–(वि.) इच्छानुसार करनेवाला।

यथोक्त–(सं. वि.) जैसा कहा गया हो; –कारी– (वि.) आज्ञाकारी; –वादी–(वि.) उचित बोलनेवाला।

यथोचित–(सं. वि.) यथायोग्य, जैसा चाहिये वैसा, ठीक।

यथोत्तर–(सं. अव्य.) उत्तर के अनुसार।

यथोत्साह–(सं. अव्य.) सामर्थ्य के अनुसार।

यथोदित–(सं. अव्य.) कहने के अनुसार।

यथोद्दिष्ट–(सं. वि.) जैसा कहा गया हो।

यथोद्देश–(सं. अव्य.) अभिप्राय के अनुसार।

यथोपदिष्ट–(सं. वि.) जैसा उपदेश दिया गया हो।

यथोपदेश–(सं. अव्य.) उपदेश के अनुसार।

यथोपपन्न–(सं. अव्य.) जिस प्रकार प्राप्त हुआ हो।

यथोपपाद–(सं. अव्य.) यथासंभव।

यथोपयोग–(सं. अव्य.) उपयोग या प्रयोग के अनुसार।

यथोपाधि–(सं. अव्य.) उपाधि के अनुसार।

यदपि–(हि. अव्य.) देखें 'यद्यपि'।

यदर्थ–(सं. अव्य.) जिस कारण से।

यदा–(सं. अव्य.) जिस समय, जब, ज्यों; –कदा–(अव्य.) जब-तब, कभी-कभी।

यदि–(सं. अव्य.) यद्यपि, (संभव, कल्पना आदि सूचित करने के लिये उपवाक्य के आरंभ में प्रयोग होता है।)

यदि च, यदि चेत्–(सं. अव्य.) यद्यपि।

यदृच्छा–(सं. स्त्री.) [illegible]।

यदु–(सं. पुं.) ययाति के ज्येष्ठ पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न थे, (इन्होंने अपना अलग वंश चलाया था); –नंदन–(पुं.) श्रीकृष्ण; –नाथ–(पुं.) यदुवंश के स्वामी श्रीकृष्ण; –वीर–

(पुं.) श्रीकृष्ण; –भूप(पुं.), राई–(हिं. पुं.) श्रीकृष्ण; –राज–(पुं.) यदुकुल के राजा श्रीकृष्ण; –वंश– (पुं.) राजा यदु का कुल, यादव, ग्वाल, आमीर, गोप; –मणि–(पुं.) श्रीकृष्ण; –वंशी–(वि.) यदुकुल में उत्पन्न, यादव, अहीर; –वर, –वीर–(पुं.) श्रीकृष्ण।
यद्यपि–(सं. अव्य.) यदि।
यदृच्छया–(सं. अव्य.) अकस्मात्, अचानक, दैवयोग से, विना नियम या कारण से।
यदृच्छा–(सं. स्त्री.) केवल इच्छा के अनुसार व्यवहार, आकस्मिक संयोग।
यद्भविष्य–(सं. पुं.) अदृष्टवादी।
यद्वातद्वा–(सं. अव्य.) कभी-कभी।
यन्निमित्त–(सं. अव्य.) जिस कारण से।
यम–(सं. पुं.) दक्षिण दिशा के दिक्पाल, मृत्यु के देवता, यमराज, संयम, मन तथा इन्द्रियों को वश में करना, विष्णु, शनि, कौआ, वायु, दो की संख्या, यमज, जोड़ा।
यमक–(सं.पुं.) एक शब्दालंकार जिसमें किसी कविता में एक ही शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों में कई बार प्रयोग किया जाता है।
यमकात, यमकातर–(हिं. पुं.) यम का छुरा, एक प्रकार की तलवार।
यमकिंकर–(सं. पुं.) यमदूत।
यमकीट–(सं. पुं.) केंचुवा।
यमकील–(सं. पुं.) विष्णु।
यमक्षय–(सं. पुं.) मृत्यु।
यमघंट–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग जिसम शुभ कार्य करना मना है, कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा, दीपावली के वाद का दिन।
यमचक्र–(सं.पुं.) यम का शस्त्र।
यमज–(सं. वि.) एक गर्भ से एक साथ उत्पन्न होनेवाली दो सन्तान, जुड़वाँ, अश्विनीकुमार।
यमजातना–(हिं.स्त्री.) देखें 'यम-यातना'।
यमजित्–(सं. पुं.) मृत्युंजय।
यमदंड–(सं.पुं.) यमराज का डंडा, कालदण्ड।
यमदंष्ट्रा–(सं. स्त्री.) वैद्यक के अनुसार आश्विन, कार्तिक और अगहन के लगभग का कुछ विशिष्ट काल जिसमें रोग तथा मृत्यु का अधिक भय होता है।
यमदग्नि–(सं.पुं.) परशुराम के पिता।
यमदुतिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'यम-द्वितीया'।
यमदूत–(सं. पुं.) यम के दूत, कौआ, नौ समाधियों में से एक।
यमदूतिका–(सं. स्त्री.) इमली।
यमदेवता–(स्त्री.) भरणी नक्षत्र।
यमद्रुम–(सं. पुं.) सेमर का पेड़।
यमद्वितीया–(सं. स्त्री.) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज।
यमन–(सं. पुं.) रोकना, बंद करना, बाँधना, ठहराना; (पुं.) यम।
यमनगर–(सं. पुं.) यमपुरी।
यमनाह–(हिं. पुं.) धर्मराज।
यमनिका–(सं. स्त्री.) यवनिका, नाटक का परदा।
यमनी–(अ. स्त्री.) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।
यमपुर–(सं. स्त्री.) यमलोक।
यमपुरी–(सं. स्त्री.) यमपुर, यमलोक।
यमभगिनी–(सं. स्त्री.) यमुना नदी।
यममार्ग–(सं. पुं.) मृत्युपथ।
यमयातना–(सं. स्त्री.) यम के दूतों द्वारा दी हुई पीड़ा, मृत्यु-समय का कष्ट।
यमरथ–(सं. पुं.) यम का वाहन, भैंसा।
यमराज–(सं. पुं.) यमों के राजा धर्मराज जो मृत्यु के बाद प्राणी के कर्मो का विचार करते हैं।
यमराष्ट्र–(सं. पुं.) यमलोक।
यमल–(सं. पुं.) युग्म, जोड़ा, यमज; –पत्रक,–च्छद–(पुं.) कचनार का वृक्ष।
यमला–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का हिचकी का रोग।
यमलार्जुन–(सं.पुं.) नलकूबर और मणिग्रीव नाम के कुबेर के दो पुत्र जो नारद के शाप से अर्जुन वृक्ष हो गये थे, (श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।)
यमली–(सं. स्त्री.) स्त्रियों का घाघरा और चोली।
यमलोक–(सं. पुं.) वह लोक जहाँ मृत्यु के बाद आत्माएँ जाती हैं, यमपुरी।
यमवाहन–(सं. पुं.) यम का वाहन, भैंसा।
यमवृक्ष–(सं. पुं.) सेमल का पेड़।
यमव्रत–(सं. पुं.) राजा का निष्पक्ष या न्यायपूर्ण शासन।
यमसदन–(सं. पुं.) यमलोक।
यमस्तोम–(सं. पुं.) एक दिन में होनेवाला एक यज्ञ।
यमस्वसा–(सं. स्त्री.) यमुना, दुर्गा।
यमहंता–(सं. पुं.) काल का नाश करनेवाला।
यमांतक–(सं. पुं.) शिव।
यमानिका, यमानी–(सं.स्त्री.) अजवायन।
यमानुग–(सं. पुं.) यम का अनुचर।
यमानुजा–(सं. स्त्री.) यमुना नदी।
यमारि–(सं. पुं.) विष्णु।
यमालय–(सं. पुं.) यमपुर।
यमी–(सं. स्त्री.) यमुना; (पुं.) संयमी।
यमुना–(सं. स्त्री.) भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में बहनेवाली एक नदी, यम की बहिन, कालिन्दी, दुर्गा।
यमेश–(सं. पुं.) भरणी नक्षत्र।
यमेश्वर–(सं. पुं.) शिव।
ययाति–(सं. पुं.) नहुप राजा के एक पुत्र का नाम जिनका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानि के साथ हुआ था।
ययातीश्वर–(सं. पुं.) शिव।
ययी–(सं.पुं.) शिव, महादेव, मार्ग, घोड़ा।
यव–(सं. पुं.) जव या जौ नाम का अन्न, चार धान या छः सरसों की तौल या मान, इन्द्रजव, सामुद्रिक के अनुसार अँगुली में जव की आकृति की रेखा जो शुभ मानी जाती है।
यवकंटक–(सं. पुं.) खेतपापड़ा।
यवक्षार–(सं.पुं.) जौ के पौधों को जलाकर निकाला हुआ क्षार, जवाखार।
यवतिक्ता–(सं. स्त्री.) शंखिनी नाम की लता, चौराई या मरसे का साग।
यवद्वीप–(सं. पुं.) जावा नामक टापू का प्राचीन नाम।
यवन–(सं. पुं.) यनान देश का निवासी, मुसलमान, कालयवन नामक असुर, तीव्र घोड़ा; (वि.) वेगवान; –प्रिय–(पुं.) मिरचा।
यवनानी–(सं. स्त्री.) यूनान की लिपि, यूनान की भाषा; (वि.) यवन-संबंधी।
यवनाल–(सं. पुं.) जुआर का पौधा, जौ का डाँठ।
यवनिका–(सं. स्त्री.) नाटक का परदा।
यवनी–(सं. स्त्री.) यवन जाति की स्त्री।
यवनेष्ट–(सं.पुं.) लहसुन, प्याज, शलगम।
यवपल्ल–(सं. पुं.) जौ का सूखा डंठल।
यवपिष्ट–(सं. पुं.) जव का आटा।
यवफल–(सं. पुं.) बाँस, जटामासी, प्याज, इन्द्रजव, पाकड़ का पेड़।
यवमती–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम।
यवमद्य–(सं. पुं.) जव की मदिरा।
यवमध्य–(सं. पुं.) एक प्रकार का चांद्रायण व्रत।
यवमंथ–(सं. पुं.) जव का सत्तू।
यवलास–(सं. पुं.) यवक्षार, जवाखार।
यवशक्तु–(सं. पुं.) जव का सत्तू।
यवशूक–(सं. पुं.) यवक्षार, जवाखार।
यवासुर–(सं. पुं.) जौ की मदिरा।
यवसौवीर–(सं. पुं.) जौ का माँड़।
यवागू–(सं. पुं.) जौ या चावल का माँड़ जो सड़ाकर खट्टा कर दिया गया हो।

यवानी–(सं. स्त्री.) अजवायन।
यवास–(सं. पुं.) जवासा नामक कँटीला पौधा।
यविष्ठ–(सं. वि.) छोटा, जवान; (पुं.) छोटा भाई, अग्नि।
यवीयुध–(सं. वि.) रणप्रिय।
यवोदर–(सं. पुं.) जौ का मध्य भाग।
यवोद्भव–(सं. पुं.) जवाखार।
यश–(सं. पुं.) प्रशंसा, ख्याति, कीर्ति, सुनाम, बड़ाई; (मुहा.) **–गाना**–प्रशंसा करना, कृतज्ञ होना।
यशद–(सं. पुं.) एक धातु विशेष, जस्ता।
यशस्कर–(सं. वि.) कीर्तिकारक।
यशस्करी–(सं.स्त्री.) यश बढ़ानेवाली विद्या।
यशस्काम–(सं. वि.) यश की कामना करनेवाला।
यशस्कृत,यशस्य–(सं.वि.) यश चाहनेवाला।
यशस्वत्–(सं. वि.) यशस्वी।
यशस्विनी–(सं. वि., स्त्री.) कीर्तिमती, सत्यव्रत की पत्नी।
यशस्वी–(हिं. वि.) कीर्तिमान्, जिसका बहुत यश हो।
यशी–(सं. वि.) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशील–(हिं. वि.) देखें 'यशी'।
यशुमति–(हिं. स्त्री.) देखें 'यशोदा'।
यशोघ्न–(सं. वि.) यश का नाश करनेवाला।
यशोद–(सं.वि.) यश देनेवाला; (पुं.) पारा।
यशोदा–(सं. स्त्री.) नन्द की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था, दिलीप की माता का नाम, एक वर्णवृत्त का नाम।
यशोधन–(सं. वि.) यश ही जिसका एकमात्र धन हो।
यशोधर–(सं. वि.) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोधरा–(सं. स्त्री.) बुद्धदेव की पत्नी और राहुल की माता।
यशोधा–(सं. वि.) कीर्तिमान्, यशस्वी।
यशोभाग्य–(सं.वि.) यशभागी,कीर्तिमान्।
यशोभृत्–(सं. वि.) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोमती–(सं.स्त्री.) यशस्विनी,यशोदा।
यशोवर–(स. पुं.) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
यष्टव्य–(सं. वि.) यज्ञ के योग्य।
यष्टि–(स.स्त्री.) ध्वजदण्ड, लाठी, छड़ी, शाखा, टहनी, मोतियों का हार, मुलेठी, बाहु।
यष्टिक–(सं. पुं.) तीतर पक्षी, दण्ड, डंडा, मजीठ।
यष्टिका–(सं.स्त्री.) गले में पहनने का हार, छोटी छड़ी या लाठी, बावली।
यष्टिमधु–(सं. पुं.) मुलेठी।
यष्टियंत्र–(सं.पुं.) एक प्रकार की धूपघड़ी।
यष्टीकर्ण–(सं. पुं.) कान में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।
यह–(हिं. सर्व.) निकट की वस्तु का निर्देश करनेवाला एक सर्वनाम जो वक्ता और श्रोता के सिवाय जीवों या पदार्थों के लिये प्रयोग किया जाता है।
यहाँ–(हिं. अव्य.) इस स्थान में या पर।
यहि–(हिं. वि., सर्व.) 'यह' का वह रूप जो प्राचीन हिन्दी में कोई विभक्ति लगने के पूर्व प्रयुक्त होता था, व्रजभाषा में 'ए' का विभक्ति-युक्त रूप, इसको।
यही–(हिं. अव्य.) निश्चित रूप से यह, यह ही।
यहूद–(इ. पुं.) वह देश जहाँ महात्मा ईसा उत्पन्न हुए थे।
यहूदी–(हिं.पुं.) पश्चिम एशियावासी एक प्राचीन जाति; (स्त्री.) इस जाति की भाषा
याँ–(हिं. अव्य.) यहाँ।
याँचना–(हिं. स्त्री.) देखें 'याचना'।
यांत्रिक–(हिं. वि.) यन्त्र-संबंधी।
या–(हिं. सर्व.) व्रजभाषा में विभक्ति लगने के पहले 'यह' का रूप।
याक–(हिं. पुं.) हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल जिसकी पूँछ का चँवर बनता है; (हिं. वि.) एक।
याग–(सं. पुं.) यज्ञ; **–कर्म**– (पुं.) यज्ञ का कार्य; **–काल**–(पुं.) यज्ञ करने का उपयुक्त समय; **–मंडप**–(पुं.) यज्ञशाला; **–संतान**– (पुं.) इन्द्र के पुत्र जयन्त का नाम; **–सिद्ध**–(वि.) यज्ञ द्वारा सिद्ध या प्राप्त; **–सूत्र**–(पुं.) यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत।
याचक–(सं. वि.) माँगनेवाला, भिक्षुक, भिखमंगा।
याचन–(सं. पुं.) याचना, प्रार्थना।
याचनक–(सं.वि.) विवाह के लिये कन्या से प्रणय-प्रार्थना करनेवाला।
याचना–(सं. स्त्री.) प्रार्थना, माँगना; (हिं. क्रि. स.) माँगना।
याचनीय–(सं. वि.) माँगने योग्य।
याचमान–(सं. वि.) माँगनेवाला।
याचित–(सं. वि.) माँगा हुआ।
याचितक–(सं. पुं.) माँगी हुई वस्तु।
याचितव्य–(सं. वि.) माँगने योग्य।
याचिष्णु–(सं. वि.) माँगनेवाला।
याची–(सं. पुं.) भिक्षुक, भिखमंगा।
याच्य–(सं. वि.) याचना करने योग्य।
याजक–(सं. पुं.) याज्ञिक, यज्ञ करनेवाला, मस्त हाथी।
याजन–(सं. पुं.) यज्ञ की क्रिया।
याजनीय–(सं. वि.) यज्ञ करने योग्य।
याजमान–(सं. पुं.) यज्ञ में यजमान के कर्तव्य या काम।
याजयिता–(सं. पुं.) यज्ञ करानेवाला पुरोहित।
याजिका–(सं. स्त्री.) पूजा के समय दिया जानेवाला उपहार।
याजी–(हिं. वि.) यज्ञ करनेवाला।
याजुष–(सं. वि.) यजुर्वेद-सम्बन्धी।
याज्ञ–(सं. वि.) यज्ञ-सम्बन्धी।
याज्ञवल्क्य–(सं.पुं.) धर्मशास्त्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि, (यह वैशम्पायन के शिष्य थे), वाजसनेयी संहिता के आचार्य, राजा जनक के दरबार के एक ऋषि।
याज्ञसेनी–(सं. स्त्री.) द्रौपदी।
याज्ञिक–(सं.पुं.) यज्ञ करने या करानेवाला
याज्ञिय–(सं. वि.) यज्ञ संबंधी।
याज्य–(सं. वि.) यज्ञ करने योग्य।
याज्या–(सं. स्त्री.) गंगा।
यात–(सं. वि.) लब्ध, पाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ।
यातन–(सं. पुं.) पारितोषिक।
यातना–(सं. स्त्री.) बहुत अधिक कष्ट या वेदना, वह पीड़ा जो यमलोक में भोगनी पड़ती है।
यातयाम–(सं.वि.) जीर्ण, पुराना, जिसका उपभोग किया जा चुका हो, परित्यक्त, उच्छिष्ट।
यातव्य–(सं. वि.) आक्रमण करने योग्य।
याता–(सं. स्त्री.) पति के भाई की स्त्री, जेठानी या देवरानी।
यातायात–(सं. पुं.) आना-जाना।
यातिक–(सं. पुं.) पथिक, यात्री।
यातु–(सं. पुं.) मार्ग पर चलनेवाला; (पुं.) राक्षस।
यातुधान–(सं. पुं.) राक्षस।
यातुमत्–(सं. वि.) हिंसायुक्त।
यातुविद्–(सं. पुं.) ऐन्द्रजालिक, जादूगर।
यातुहन्–(सं. वि.) इन्द्रजाल को नष्ट करनेवाला।
यातोपयात–(सं. पुं.) आना-जाना।
यात्रा–(सं.स्त्री.) एक स्थान से दूसरे स्थान को गमन करने की क्रिया, प्रस्थान, प्रयाण, तीर्थाटन, देवस्थान के दर्शन को जाना।
यात्राकार–(सं. पुं.) यात्रा करनेवाला।
यात्रावाल–(हिं. पुं.) तीर्थ-यात्रियों को दर्शन आदि करानेवाला पंडा।
यात्रिक–(सं. वि.) यात्रा-संबंधी, रीत्यनु-

सार, जीवन-धारण करने के उपयुक्त; (पुं.) यात्री, पथिक, यात्रा की सामग्री।
यात्री–(सं. वि., पुं.) यात्रा करनेवाला, तीर्थाटन के लिये जानेवाला।
याथाकामी–(सं. वि.) इच्छानुसार काम करनेवाला।
याथाकाम्य–(सं. पुं.) इच्छानुसार होने का भाव।
याथातथ्य–(सं. पुं.) यथार्थता।
याथात्म्य–(सं. पुं.) आत्मानुरूपता।
याथार्थ्य–(सं. पुं.) यथार्थता।
याद–(फा. स्त्री.) स्मृति, स्मरण।
यादव–(सं.पुं.) यदु के वंशज, श्रीकृष्ण; (वि.) यदु-संबंधी।
यादवक–(सं. पुं.) यदु के वंशज।
यादवी–(सं.स्त्री.) यदुकुल की स्त्री, दुर्गा।
यादवेंद्र–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
यादुविद्या–(सं. स्त्री.) भौतिक विद्या।
यादुर–(सं. वि.) वीर्यवान्।
यादृश–(सं. वि.) जिस प्रकार का, जैसा।
यादृशी–(सं. वि. स्त्री.) जिस प्रकार की।
यान–(सं.पुं.) (घोड़ा, हाथी, रथ आदि) सवारी, विमान, वाहन, राजाओं के सन्धि आदि छः गुणों में से एक, शत्रु पर आक्रमण करना, गति; **–पात्र**–(पुं.) जहाज; **–भंग**–(पुं.) जहाज का नष्ट होना; **–वाह**–(पुं.) रथ हाँकनेवाला; **–शाला**–(स्त्री.) रथ, गाड़ी आदि रखने का घर।
यापक–(सं. वि.) यापन करनेवाला।
यापन–(सं. पुं.) चलाना, समय विताना, छोड़ना, मिटाना, निवटाना, विताना।
यापना–(सं. स्त्री.) कालक्षेप, व्यवहार।
यापनीय–(सं. वि.) यापन करने योग्य।
याप्य–(सं. वि.) निन्दनीय, रक्षणीय, छिपाने योग्य; **–यान**–(पुं.) पालकी।
याव–(फा. पुं.) छोटा घोड़ा, टट्टू।
याभ–(सं. पुं.) स्त्री-प्रसंग, मैथुन।
याम–(सं. पुं.) तीन घंटे का समय, प्रहर, काल, समय, गमन, जाना, एक प्रकार के देवगण; (हिं. स्त्री.) रात्रि, रात; **–क**–(पुं.) पुनर्वसु नक्षत्र।
यामकिन–(सं. स्त्री.) पुत्रवधू, वहिन।
यामघोष–(सं. स्त्री.) कुक्कुट, मुर्गा।
यामघोषा–(सं. स्त्री.) समय की सूचना देने के लिये वजाई जानेवाली घंटी।
यामतूर्य–(सं. पुं.) समय वतलाने के लिये वजनेवाली तुरही।
यामदुंदुभि–(सं.पुं.) नगाड़ा।
यामन–(सं. वि.) गति, गमन।
यामनाली–(सं. स्त्री.) समय वतलानेवाली घड़ी।
यामनेमि–(सं. पुं.) इन्द्र।
यामल–(सं. पुं.) यमज सन्तान, जुड़वाँ लड़के, एक तन्त्र ग्रन्थ।
यामवती–(सं. स्त्री.) निशा, रात्रि।
यामश्रुत–(सं. वि.) जो शीघ्रता से सुना गया हो।
यामार्ध–(सं. पुं.) आधा पहर।
यामिक–(सं.पुं.) पहरा देनेवाला, चौकीदार।
यामिका, यामिनी–(सं. स्त्री.) रात।
यामिनीचर–(सं. पुं.) उल्लू पक्षी।
यामिनीपति–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
याम्य–(सं. पुं.) शिव, विष्णु; (वि.) यम-संबंधी, दक्षिण का; **–द्रुम**–(पुं.) सेमल का वृक्ष।
याम्या–(सं. स्त्री.) भरणी नक्षत्र, दक्षिण दिशा।
याम्योत्तर-दिगंश–(सं. पुं.) भूगोल में लम्बांश या दिगंश।
याम्योत्तर-रेखा–(सं. स्त्री.) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और मेरु से होती हुई पृथ्वी के चारों ओर जाती है।
यायावर–(सं. पुं) अश्वमेघ का घोड़ा, खानावदोश।
यायी–(सं. वि.) गमनशील, जानेवाला; (पुं.) अभियोग चलानेवाला।
यार–(फा. पुं.) मित्र, प्रेमी।
याव–(सं. वि.) जौ का वना हुआ।
यावक–(सं. पुं.) बोरो धान, कुलथी, उड़द, जव।
यावच्छक्य–(सं. अव्य.) यथाशक्ति।
यावच्छस्त्र–(सं. अव्य.) जहाँ तक शस्त्र जा सके।
यावच्छेष–(सं.अव्य.) जितना वच गया हो।
यावच्छ्रेष्ठ–(सं. वि.) वहुत वढ़िया।
यावज्जन्म–(सं. अव्य.) जन्म भर।
यावत्–(सं. अव्य.) जव तक, अवधि या मर्यादा तक; **–काम**– (अव्य.) इच्छा के अनुसार; **–प्रमाण**– (अव्य.) जहाँ तक; **–भाषित**–(वि.) जितना कहा गया हो; **–व्याप्ति**–(सं.अव्य.) अन्त तक।
यावदंत–(सं. अव्य.) शेष तक।
यावदर्थ–(सं.वि.) आवश्यकता के अनुसार।
यावदायुस–(सं. अव्य.) आजीवन।
यावदीप्सित–(सं.अव्य.) जितनी इच्छा हो।
यावदुक्त, यावद्भाषित–(सं. अव्य.) कहे के अनुसार।
यावदुत्तम–(सं. अव्य.) शेष सीमा तक।
यावद्गम–(सं. अव्य.) जितना शीघ्र जाना संभव हो।
यावन–(सं. वि.) यवन-संवंधी।
यावनाल–(सं. पुं.) जुआर।
यावनाली–(सं. स्त्री.) ज्वार की शक्कर।
यावनी–(सं. स्त्री.) ईख; (वि.) यवन-संवंधी।
यावन्मात्र–(सं. अव्य.) थोड़ा-थोड़ा।
यावास–(सं. वि.) जवासे की मदिरा।
याविक–(सं. पुं.) मक्का नामक अन्न।
याव्य–(सं. पुं.) जवाखार।
याष्टीक–(सं.पुं.) लाठी से लड़नेवाला योद्धा
यासा–(सं. स्त्री.) कोकिल, कोयल।
यासु–(हिं. सर्व.) देखें 'जासु'।
यास्क–(सं. पुं.) वेद के निरुक्त ग्रन्थ के रचयिता ऋषि विशेष।
याहि–(हिं. सर्व.) इसको, इसे।
यियक्षु–(सं. वि.) यज्ञ करने का इच्छुक।
यियासु–(सं.वि.) जाने की इच्छा करनेवाला
युक्त–(सं. वि.) न्याय्य, उचित, ठीक, सम्मिलित, मिला हुआ, जुटा हुआ, अवशिष्ट; (पुं.) योग का अभ्यास करनेवाला, योगी; **–कारी**–(वि.) ठीक काम करनेवाला; **–दंड**–(पुं.) ठीक दण्ड; **–रूप**–(वि.) ठीक।
युक्ता–(सं. स्त्री.) एक वृत्त का नाम।
युक्ति–(सं. स्त्री.) न्याय, नीति, उपाय, ढंग, चातुरी, तर्क, अनुमान, रीति, प्रथा, कारण, हेतु, नाटक का एक अलंकार जिसमें कोई मर्म की वात छिपाई जाती है, केशव के अनुसार स्वभावोक्ति।
युक्तिकर–(सं.पुं., वि.) (वह) जो तर्क के अनुसार ठीक हो।
युक्तिज्ञ–(सं. अव्य.) ठीक तर्क करनेवाला।
युक्तियुक्त–(सं. वि.) उपयुक्त तर्क के अनुसार।
युक्तिशास्त्र–(सं. पुं.) प्रमाणशास्त्र।
युग–(सं. पुं.) युग्म, जोड़ा, जुआ, ऋद्धि और सिद्धि नामक दो औषधियाँ, समय, काल, चार हाथ का मान, पासे के खेल की गोटियाँ, पासे के खेल में दो गोटियों का एक घर में वैठना, पुरुष, पीढ़ी, पुराण के अनुसार काल का वह दीर्घ परिमाण जो संख्या में चार माना गया है, यथा-सत्य, द्वापर, त्रेता और कलि।
युगकीलक–(सं.पुं.) जुए के छेद में डालने का डंडा।
युगक्षय–(सं. पुं.) युग का नाश।
युगति–(हिं. स्त्री.) देखें 'युक्ति'।
युगप–(सं. पुं.) गन्धर्व।
युगपत्–(सं.अव्य.) एक ही समय में।

युगबाहु–(सं. वि.) जिसके हाथ बहुत लम्बे हों।
युगम–(हिं. पुं.) देखें 'युग्म'।
युग-युग–(सं. अव्य.) अनंत काल तक।
युगल–(सं. पुं.) युग्म, जोड़ा।
युगांत–(सं.पुं.) युग का अन्तिम समय, प्रलय
युगांतक–(सं. पुं.) प्रलयकाल।
युगांतर–(सं. पुं.) दूसरा युग।
युगादि–(सं. पुं.) सृष्टि का आरम्भ।
युगाद्या–(सं. स्त्री.) वह तिथि जिसमें कोई युग आरम्भ हुआ था, यथा–वैशाख शुक्ला तृतीया को सतयुग, कार्तिक शुक्ला नवमी को त्रेता, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को द्वापर तथा पौष मास की पूर्णिमा को कलियुग का आरंभ माना जाता है।
युगाध्यक्ष–(सं. पुं.) प्रजापति, शिव।
युग्म–(सं. पुं.) युगल, द्वन्द्व, जोड़ा, युग, मिथुन राशि; **–कंटक**–(स्त्री.) बैर का वृक्ष; **–क**–(पुं.) युग्म, जोड़ा; **–ज**–(पुं.) जुड़वाँ लड़के; **–धर्म**–(पुं.)–मिलनशीलता, मैथुन; **–पत्र**–(पुं.) भोजपत्र का वृक्ष; **–पत्रिका**–(स्त्री.) शीशम का पेड़; **–विपुला**–(स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
युज्य–(सं. वि.) संयुक्त, मिला हुआ, मिलाने योग्य।
युत–(सं. पुं.) चार हाथ की नाप; (वि.) युक्त, सहित, मिलित, मिला हुआ।
युतक–(सं. पुं.) संशय, सन्देह, अंचल, मैत्रीकरण।
युति–(सं. स्त्री.) योग, मिलन।
युत्कार–(सं. वि.) लड़ाई करनेवाला।
युद्ध–(सं. पुं.) रण, समर, संग्राम, लड़ाई; **–क**–(पुं.) युद्ध, संग्राम; **–कारी**–(वि.) समर करनेवाला; **–कीर्ति**–(स्त्री.) शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम; **–प्राप्त**–(पुं.) लड़ाई में पकड़ा हुआ बंदी; **–भू**–(स्त्री.) संग्राम या युद्ध की भूमि; **–मय**–(वि.) रण-संबंधी; **–मेदिनी**–(स्त्री.) रणभूमि; **–रंग**–(पुं.) लड़ाई का मैदान; **–विद्या**–(स्त्री.) लड़ाई की विद्या; **–वीर**–(पुं.) रण करने में निपुण; **–शाली**–(वि.) साहसी, वीर; **–सार**–(पुं.) घोड़ा; **–स्थल**–(पुं.) रणभूमि।
युद्धाध्वन–(सं.पुं.) युद्ध का मार्ग।
युद्धावसान–(सं. पुं.) युद्ध का शेष।
युद्धोन्मत्त–(सं. वि.) युद्ध करने के लिये उतावला।
युद्धोपकरण–(सं. पुं.) युद्ध की सामग्री।
युधाजित्–(सं. पुं.) केकय राजा का पुत्र जो भरत का मामा था।
युधिष्ठिर–(सं. पुं.) पाँचों पाण्डवों में से सब से बड़े भाई का नाम।
युध्म–(सं. पुं.) संग्राम, युद्ध।
युयुक्षमान–(सं. वि.) ईश्वर में लीन होने का इच्छुक।
युयुत्सा–(सं.स्त्री.) युद्ध करने की लालसा, विरोध, शत्रुता।
युयुत्सु–(सं. वि.) लड़ने की इच्छा करनेवाला; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
युयुधान–(सं. पुं.) इन्द्र, क्षत्रिय, योद्धा।
युवक–(सं. पुं.) सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष के वय का मनुष्य, जवान।
युवगंड–(सं. पुं.) मुहाँसा।
युवति, युवती–(सं. स्त्री.) प्राप्त-यौवना, जवान स्त्री।
युवनाश्व–(सं. पुं.) सूर्यवंशी एक राजा जो प्रसेनजित् की पत्नी गौरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
युवपलित–(सं. वि.) युवावस्था में जिसके बाल पक गये हों।
युवराई–(हिं. स्त्री.) युवराज का पद।
युवराज–(सं. पुं.) राजा का वह राजकुमार जो राज्य का उत्तराधिकारी होता है; **–त्व**–(पुं.) युवराज का पद या धर्म।
युवराजी–(हिं. स्त्री.) युवराज का पद।
युवा–(हिं. पुं., वि.) युवक, जवान।
युवानपीड़िका–(सं. स्त्री.) मुहाँसा।
यूँ–(हिं. अव्य.) यों, इस प्रकार से।
यूक, यूका–(सं. पुं., स्त्री.) बालों में पड़नेवाला कीड़ा, जूँ, ढील।
यूकांड–(सं. पुं.) चीलर, लीख।
यूत–(सं. पुं.) मिश्रण, मिलावट।
यूथ–(सं. पुं.) एक ही जाति के अनेक जीवों का समूह, झुण्ड, दल, सेना; **–नाथ**–(पुं.) सेनापति, सरदार; **–पति**–(पुं.) सेनानायक; **–हत**–(वि.) दल से अलग।
यूथिका–(सं. स्त्री.) पाठा, जूही नामक पुष्प; **–पत्र**–(पुं.) तालीशपत्र।
यून–(सं. पुं.) रस्सी, डोरी।
यूनान–(हिं. पुं.) एशिया के सब से पास का यूरोप का प्रदेश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, शिल्पकला, साहित्य और दर्शन के लिये प्रसिद्ध था।
यूनानी–(हिं.वि.) यूनान देश का; (स्त्री.) यूनान देश की भाषा, यूनान देश की चिकित्साप्रणाली, हकीमी; (पुं.)–यूनान देश का निवासी।
यूप–(सं. पुं.) यज्ञ में वह खम्भा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है; **–क**–(पुं.) पाकर का वृक्ष; **–दारु**–(पुं.) गूलर की लकड़ी; **–द्रु**–(पुं.) खैर का वृक्ष; **–ध्वज**–(पुं.) यश; **–वाह**–(पुं.) यूप ढोनेवाला।
यूपा–(हिं. पुं.) द्यूत, जुआ।
यूरोपीय–(हिं. वि.) यूरोप-सम्बन्धी।
यूष–(सं. पुं.) दाल आदि का जूस।
यूह–(हिं. पुं.) यूथ, झुण्ड, समूह।
ये–(हिं.सर्व.) 'यह' का बहुवचन रूप, यह सब।
येई–(हिं. सर्व.) देखें 'यही'।
येऊ–(हिं. सर्व.) यह भी।
येतो–(हिं. वि.) देखें 'एतो'।
येहू–(हिं. अव्य.) यह भी।
यों–(हिं. अव्य.) इस तरह, इस प्रकार से।
योंही–(हिं. अव्य.) ऐसे ही, इसी प्रकार से, व्यर्थ ही, बिना काम के, बिना किसी विशेष प्रयोजन के, केवल मन की प्रवृत्ति से।
योग–(सं. पुं.) संयोग, मेल, उपाय, युक्ति, प्रेम, संगति, ध्यान, गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़, एक प्रकार का छन्द, तप और ध्यान, वैराग्य, मेल-मिलाप, सम्बन्ध, सद्भाव; साम, दाम, दण्ड, भेद–ये चार उपाय; धन प्राप्त करना और बढ़ाना, औषध, छल, धोखा, विश्वासघात, शुभ अवसर, दूत, चतुराई, परिणाम, बैलगाड़ी, नाम, मुक्ति या मोक्ष का उपाय, प्रयोग, नियम, चित्त की चंचलता को रोकना, षड्दर्शनों में से एक, फलित ज्योतिष के अनुसार वह विशिष्ट काल जो सूर्य और चन्द्रमा के कुछ विशिष्ट स्थानों में आने के कारण होता है; (ये संख्या में सत्ताईस हैं); **–कन्या**–(स्त्री.) यशोदा के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या जिसको कंस ने मार डाला था; **–क्षेम**–(पुं.) जो वस्तु अपने पास न हो उसको प्राप्त करना और जो मिल चुकी हो उसकी रक्षा करना, जीवन-निर्वाह, कुशल-मंगल, लाभ, राष्ट्र का अच्छा प्रबन्ध; **–चर**–(पुं.) हनुमान; **–ज**–(वि.) योग से उत्पन्न; **–०फल**–(पुं.) दो या अधिक अंकों का जोड़; **–तत्त्व**–(पुं.) एक उपनिषद् का नाम; **–तल्प**–(पुं.) योगनिद्रा; **–तारा**–(स्त्री.) एक दूसरे में मिले हुए तारे; **–दर्शन**–(पुं.) महर्षि पतञ्जलि का योगसूत्र; **–दा**–आसाम की एक नदी; **–दान**–(पुं.) योग-दीक्षा, सहयोग; **–नाथ**(पुं.) शिव, महादेव; **–निद्रा**–(स्त्री.) विष्णु की युग

के अन्त की निद्रा, योगरूप निद्रा, निद्रारूपी दुर्गा; –निलय–(पुं.) शिव, महादेव; –पति–(पुं.) शिव, महादेव, विष्णु; –पथ–(पुं.) योगमार्ग; –पारंग–(पुं.) पूर्ण योगी; –पीठ–(पुं.) देवताओं का योगासन; –प्राप्त–(वि.) योग से पाया हुआ; –फल–(पुं.) दो या अधिक संख्याओं का जोड़; –बल–(पुं.) योग की साधना से प्राप्त बल, तपोबल; –भावना–(स्त्री.) योग की चिन्ता, बीज-गणित के अनुसार संख्या-प्रकरण का भेद; –भ्रष्ट–(वि.) जिसकी योग की साधना पूरी न हुई हो, योग-मार्ग से च्युत; –मय–(वि.) योगस्वरूप; (पुं.) विष्णु; –माता–(स्त्री.) दुर्गा; –माया–(स्त्री.) विष्णुमाया भगवती, वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी जिसको कंसने मार डाला था; –मूर्तिधर–(पुं.) शिव, महादेव; –यात्रा–(स्त्री.) यात्रा के लिये शुभ मुहूर्त; –युक्त–(वि.) योग में संलग्न; –योगी–(वि.) योग के आसन पर बैठा हुआ योगी; –रंग–(पुं.) नारंगी; –रत्न–(पुं.) जादूगरी से तैयार किया हुआ रत्न; –रथ–(पुं.) योग की प्राप्ति का साधन; –रूढ़ि–(स्त्री.) दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जिसका विशेष अर्थ होता है, यथा–'मंडप' शब्द का अर्थ 'माँड़ पीनेवाला' नहीं होता, परन्तु वह 'गृह' का बोधक है; –वह–(वि.) मिलावट से तैयार किया हुआ; –वाशिष्ठ–(पुं.) देवर्षि वशिष्ठ का बनाया हुआ एक ग्रन्थ जिसमें वेदान्त-तत्त्व का वर्णन है; –वाही–(स्त्री.) पारद, पारा, सज्जीखार; –विद्–(पुं.) महादेव, बाजीगर; –शक्ति–(स्त्री.) तपोबल; –शब्द–(पुं.) वह यौगिक शब्द जो योगरूढ़ि न हो परन्तु धातु के अर्थ का बोधक हो; –शास्त्र–(पुं.) पतञ्जलि-द्वारा रचित वह शास्त्र जिसमें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाये गये हैं; –शिक्षा–(स्त्री.) एक उपनिषद् का नाम, योगाभ्यास; –सार–(पुं.) वह उपाय जिससे मनुष्य सदा के लिये रोग-मुक्त हो जाय; –सिद्ध–(पुं.) वह जिसने योग की सिद्धि प्राप्त कर ली हो; –सूत्र–(पुं.) महर्षि पतञ्जलि के बनाये गये योग-सम्बन्धी सूत्रों का संग्रह।

योगांग–(सं. पुं.) पतञ्जलि के अनुसार योग के आठ अंग हैं; यथा-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

योगांजन–(सं. पुं.) सिद्धाञ्जन, वह अंजन जिसके लगाने से पृथ्वी के भीतर की वस्तु दिखाई पड़ती है।

योगांतर–(सं. पुं.) भिन्न-भिन्न वस्तुओं का संयोग।

योगांतराय–(सं. पुं.) योग में विघ्न डालनेवाली बातें।

योगाकर्षण–(सं. पुं.) वह आकर्षण-शक्ति जिसके कारण परमाणु आपस में मिले रहते हैं और अलग नहीं होते।

योगागम–(सं. पुं.) योगशास्त्र।

योगाचार–(सं. पुं.) योग का आचरण।

योगाचार्य–(सं. पुं.) इन्द्रजाल का शिक्षक।

योगात्मा–(सं. पुं.) योगी।

योगानंद–(सं. पुं.) वह जिसको योगावलंबन से आनन्द प्राप्त हो।

योगानुशासन–(सं. पुं.) योगशास्त्र।

योगाभ्यास–(सं. पुं.) योग का साधन।

योगाभ्यासी–(सं. पुं.) योग की साधना करनेवाला।

योगासन–(सं. पुं.) जिस आसन से बैठकर योगाभ्यास किया जाता है, योग के बत्तीस प्रकार के आसन।

योगित–(सं. वि.) जो मन्त्र आदि की सहायता से वश में कर लिया गया हो।

योगित्व–(सं. पुं.) योगी का भाव या धर्म।

योगिनी–(सं. स्त्री.) योगाभ्यासिनी, रणपिशाचिनी, योगमाया, देवी, काली की एक सहचरी का नाम, आषाढ़ कृष्ण एकादशी, कालिका पुराण में चौसठ योगिनियों का नाम लिखा है; –चक्र–(पुं.) तान्त्रिकों का वह चक्र जिससे वे योगिनियों का साधन करते हैं।

योगिया–(हिं. पुं.) संपूर्ण जाति का एक राग।

योगिराज–(सं. पुं.) बहुत बड़ा योगी।

योगींद्र–(सं. पुं.) योगीश्वर, बहुत बड़ा योगी।

योगी–(सं. पुं.) शिव, महादेव, आत्मज्ञानी।

योगीनाथ–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

योगीश–(सं. पुं.) याज्ञवल्क्य ऋषि का एक नाम, योगींद्र।

योगीश्वर–(सं. पुं.) देखें 'योगीश'।

योगीश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा।

योगेंद्र–(सं. पुं.) योगियों में श्रेष्ठ।

योगेश–(सं. पुं.) याज्ञवल्क्य मुनि।

योगेश्वर–(सं. पुं.) शिव, श्रीकृष्ण, बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, नागदौना।

योगैश्वर्य–(सं. पुं.) योग का ऐश्वर्य।

योग्य–(सं. वि.) प्रवीण, चतुर, श्रेष्ठ, उपयुक्त, आदरणीय, उचित, सुन्दर, जोड़ने लायक, ठीक; –ता–(स्त्री.) सामर्थ्य, बड़ाई, अनुकूलता, गुण, बुद्धिमानी, उपयुक्तता; –त्व–(पुं.) योग्यता, प्रवीणता।

योग्या–(सं. स्त्री.) सुश्रुत के अनुसार चीरफाड़ का अभ्यास, युवती स्त्री।

योजक–(सं. वि.) संयोजक, मिलानेवाला; (पुं.) भूडमरूमध्य।

योजन–(सं. पुं.) एक में मिलाने की क्रिया या भाव, योग, परमात्मा, संयोग, मिलान, चार कोस की दूरी, लीलावती के अनुसार बत्तीस हजार हाथ की दूरी; –गंधा–(स्त्री.) व्यास की माता का नाम, सीता, कस्तूरी।

योजवल्ली–(सं. स्त्री.) मजीठ।

योजना–(सं. स्त्री.) किसी काम में लगाने की क्रिया या भाव, जोड़, मिलान, स्थिति, घटना, प्रयोग, व्यवस्था, रचना, आयोजन, नियुक्ति, व्यवहार।

योजित–(सं. वि.) रचा हुआ, बनाया हुआ, नियमबद्ध, मिलाया हुआ।

योज्य–(सं. वि.) योजना के योग्य; (पुं.) जोड़ी जानेवाली संख्याएँ।

योत्र–(सं. पुं.) वह बंधन जो जुए को बैलों की गरदन से जोड़ता है, जोत।

योद्धा–(हिं. पुं.) युद्ध करनेवाला, सिपाही।

योधन–(सं. पुं.) युद्ध की सामग्री।

योधा–(हिं. पुं.) देख 'योद्धा'।

योध्य–(सं. वि.) युद्ध करने योग्य।

योनि–(सं. स्त्री.) आकर, खान, जल, उत्पादक, कारण, प्राणियों का उत्पत्ति-स्थान, स्त्रियों की जननेन्द्रिय, भग, शरीर, देह, (पुराण के अनुसार चौरासी लाख योनियाँ हैं जिनके अण्डज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज–ये चार भेद हैं); –ज–(पुं.) जरायुज, जिसकी उत्पत्ति योनि से हो; –देवता–(स्त्री.) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र; –मुक्त–(वि.) मोक्ष-प्राप्त; –संकर–(पुं.) वर्णसंकर, दोगला।

योषणा–(सं. स्त्री.) असती स्त्री।

योषा–(सं. स्त्री.) नारी, स्त्री।

योषित्प्रिया–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी।

योषिता–(सं. स्त्री.) नारी, स्त्री।

यों–(हिं. अव्य.) देखें 'यों'।

यौ–(हिं. सर्व.) यह।

यौक्तिक–(सं. वि.) जो युक्ति के अनुसार ठीक हो।

छेद जो प्रकाश और वायु आने के लिये बनाया जाता है, गढ़ की भीतों में वह मोखा जिसमें से बाहर की ओर तोप या बंदूक चलाई जाती है।
रँदना–(हिं. क्रि. स.) लकड़ी की सतह को रंदे से छीलकर चिकना करना।
रंदा–(हिं. पुं.) बढ़ई का वह औजार जिससे वह लकड़ी के तल को छीलकर चिकनी करता है।
रंधक–(सं. पुं.) रसोई बनानेवाला, बरबाद या नष्ट करनेवाला।
रंधन–(सं. पुं.) रसोई बनाने की क्रिया।
रंध्र–(सं. पुं.) दूषण, छिद्र; **–पत्र**–(पुं.) नरकट।
रंभा–(सं. स्त्री.) कदली, केला, एक अप्सरा का नाम, गौरी, वेश्या, उत्तर दिशा; (हिं. पुं.) पेशराज का लोहे का छोटा डंडा।
रँभाना–(हिं. क्रि. अ.) गाय का शब्द करना।
रंभापति–(सं. पुं.) इन्द्र।
रंभाफल–(सं. पुं.) कदलीफल, केला।
रंभिणी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
रंभित–(सं. वि.) शब्द किया हुआ, बजाया हुआ।
रंभोरू–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसकी जाँघें केले के तने के समान हों।
रँहचटा–(हिं. पुं.) किसी मनोरथ की सिद्धि के लिये लालसा, लालच।
रंहस्–(सं. पुं.) वेग, गति, विष्णु, शिव।
रइअत–(हिं. स्त्री.) देखें 'रैयत'।
रइकौ–(हिं. अव्य.) कुछ भी, थोड़ा भी, जरा भी।
रइनि–(हिं. स्त्री.) रजनी, रात्रि, रात।
रई–(हिं. स्त्री.) दही मथने की लकड़ी, मथानी, गेहूँ का मोटा या दरदरा आटा, सूजी, चूर्णमात्र; (वि. स्त्री.) युक्त, मिली हुई, डूबी हुई, अनुरक्त।
रईस–(अ. पुं.) अमीर, धनवान, सरदार, शाहजादा।
रईसी–(अ. स्त्री.) रईस होने का भाव या स्थिति।
रउताई–(हिं. स्त्री.) स्वामी या मालिक होने का भाव, स्वामित्व।
रउरे–(हिं. सर्व.) मध्यम पुरुष का आदरसूचक शब्द, आप।
रकछ–(हिं. पुं.) पत्तों की बनी हुई पकौड़ी।
रकत–(हिं. पुं.) देखें 'रक्त', रुधिर, लोहू; (वि.) लाल रंग का; **–कंद**–(पुं.) देखें 'रक्तकंद'।
रकतांक–(हिं. पुं.) कुंकुम, केसर, लाल चन्दन।
रकबा–(हिं. पुं.) क्षेत्रफल, जोत की कुल भूमि।
रकबाहा–(हिं. पुं.) घोड़ों का एक भेद।
रकमंजनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा।
रकम–(अ. स्त्री.) धन, धन-संपत्ति, गहना।
रकाब–(अ. स्त्री.) लोहे का पावदान जिसपर घुड़सवार पैर रखते हैं।
रकाबी–(हिं. स्त्री.) तश्तरी।
रकार–(सं. पुं.) 'र' वर्ण।
रक्खना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'रखना'।
रक्त–(सं. पुं.) कुंकुम, केसर, ताँबा, लाल कमल, सिन्दूर, सिंगरिफ, शरीर के सात धातुओं में से एक जो लाल रंग का होता है और शरीर की नसों में चलता रहता है, रुधिर; (वि.) लाल रंग का, अनुरक्त, रंजित, रँगा हुआ; **–कंठ**–(पुं.) कोकिल, कोयल, बैंगन, भंटा; (वि.) मीठे स्वर का; **–कंद**–(पुं.) प्याज, रतालू, विद्रुम, मूँगा; **–क**–(पुं.) गुल-दुपहरिया का पौधा, लाल कपड़ा, लाल रंग का घोड़ा, केसर, कुंकुम; **–कदली**–(स्त्री.) चम्पा केला; **–कमल**–(पुं.) लाल रंग का कमल; **–कांचन**–(पुं.) कचनार का वृक्ष; **–कांता**–(स्त्री.) लाल गदहपूरना; **–काश**–(पुं.) एक रोग जिसमें श्वास-नली और फुप्फुस से खून का स्राव निकलता है; **–काष्ठ**–(पुं.) लाल रंग की लकड़ी, पतंग की लकड़ी; **–कुमुद**–(पुं.) लाल कुइँ का फूल; **–कुरंडक**–(पुं.) लाल कटसरैया; **–कुष्ठ**–(पुं.) विसर्प नामक रोग; **–कुसुम**–(पुं.) कचनार, मदार; **–कुसुमा**–(स्त्री.) अनार का वृक्ष; **–क्रमिजा**–(स्त्री.) लाक्षा, लाह; **–केशर**–(पुं.) फरहद का पेड़; **–केशी**–(वि.) जिसके बाल लाल रंग के हों; **–कैरव**–(पुं.) लाल कुमुद; **–कोप**–(पुं.) रुधिर का विकार; **–क्षय**–(पुं.) रुधिर का स्राव; **–गंधक**–(पुं.) बोल नामक गन्धद्रव्य; **–गंधा**–(स्त्री.) अश्वगन्धा, असगंध; **–गर्भा**–(स्त्री.) मेहँदी का पेड़; **–ग्रीव**–(पुं.) राक्षस; **–चंचु**–(पुं.) शुक, तोता; **–चंदन**–(पुं.) लाल चन्दन; **–चूर्ण**–(पुं.) सिन्दूर, सेंदुर; **–ज**–(वि.) रक्त से उत्पन्न होनेवाला; **–जिह्व**–(पुं.) शेर, लाल जीभवाला; **–ता**–(स्त्री.) लालिमा, ललाई; **–तुंड**–(पुं.) शुक, तोता; (वि.) लाल मुखवाला; **–तुंडक**–(पुं.) सीसा नामक धातु; **–दंतिका**–(स्त्री.) चण्डिका देवी; **–दला**–(स्त्री.) नलिका नाम का गन्ध-द्रव्य; **–दूषण**–(वि.) रुधिर को दूषित करनेवाला; **–दृश्**–(पुं.) कपोत, कबूतर; **–धरा**–(स्त्री.) मांस के भीतर की झिल्ली जिसमें रुधिर रहता है; **–धातु**–(पुं.) गैरिक, गेरू; **–नयन**–(पुं.) कबूतर, चकोर; **–नासिक**–(पुं.) उल्लू पक्षी; **–नील**–(पुं.) एक प्रकार का बड़ा विषैला बिच्छू; **–नेत्र**–(पुं.) सारस, कबूतर; (वि.) लाल आँखोंवाला; **–प**–(पुं.) राक्षस; (वि.) रुधिर पीनेवाला; **–पक्ष**–(पुं.) गरुड़; **–पट**–(वि.) लाल रंग के वस्त्र पहिननेवाला; **–पत्र**–(पुं.) पिंडालू; **–पत्रिका**–(स्त्री.) लाल पत्ता; **–पद्म**–(पुं.) लाल कमल; **–पर्ण**; **–पल्लव**–(पुं.) लाल पत्ता; **–पा**–(स्त्री.) जोंक, डाइन; (वि., स्त्री.) रुधिर पीनेवाली; **–पात**–(पुं.) रक्तस्राव, रुधिर का बहना, मारकाट; **–पाता**–(स्त्री.) जोंक; **–पायी**–(पुं.) मत्कुण, खटमल; (वि.) रुधिर पीनेवाला; **–पाषाण**–(पुं.) गेरू, लाल पत्थर; **–पिंडक**–(पुं.) रतालू, अड़हुल का वृक्ष; **–पिटिका**–(स्त्री.) लाल फोड़ा; **–पित्त**–(पुं.) वह रोग जिसमें मुँह, नाक आदि से रुधिर निकलता है; **–पुष्प**–(पुं.) करवीर, कनेर, अनार का वृक्ष, गुलदुपहरिया; लाल फूल; **–पुष्पक**–(पुं.) परास का पेड़; **–पुष्पा**–(पुं.) सेमर का वृक्ष, नागदौना; **–पूय**–(पुं.) रुधिर और पीब; **–पूरक**–(पुं.) इमली; **–पोस्त**–(पुं.) लाल पोस्ता; **–प्रदर**–(पुं.) स्त्रियों की योनि से रुधिर बहने का प्रदर रोग; **–बीज**–(पुं.) दाड़िम, अनार, शुम्भ और निशुम्भ का एक सेनापति जिसको दुर्गा ने मारा था; **–बीजा**–(पुं.) सिन्दूर-पुष्पी; **–भव**–(पुं.) मांस; **–मंजरी**–(स्त्री.) लाल कनेर; **–मंडल**–(पुं.) लाल कमल; **–मस्तक**–(पुं.) लाल सिरवाला सारस पक्षी; **–मुख**–(पुं.) साठी धान; **–मूला**–(पुं.) लजालू; **–मेह**–(पुं.) एक प्रकार का

प्रमेह जिसमें रुधिर के रंग का मूत्र निकलता है; -मोक्षण-(पुं.) दूषित रुधिर निकालना; -मोचन-(पुं.) शरीर से रुधिर निकालना; -यष्टि- (स्त्री.) मजीठ; - रंगा-(स्त्री.) मेहँदी; -ला-(स्त्री.) गुंजा, कौवाठोंठी; -लोचन-(पुं.) कपोत, कबूतर; (वि.) लाल नेत्रोंवाला; -वटी-(स्त्री.) मसूरिका, शीतला रोग; -वर्ण- (पुं.) प्रवाल, मूँगा, बीरबहूटी; (वि.) लाल रंग का; -वर्तक-(पुं.) लाल बटेर; -वर्त्य-(पुं.) कुक्कुट, मुरगा; -वर्धन-(पुं.) बैंगन; (वि.) रुधिर बढ़ानेवाला; -वल्ली- (स्त्री.) मजीठ; -वसन-(पुं.) संन्यासी, लाल कपड़ा; -वारिज-(पुं.) लाल कमल; -वासस्-(वि.) लाल कपड़ा पहननेवाला; -वृष्टि- (स्त्री.) आकाश से लाल रंग के जल की वृष्टि; -शाली-(पुं.) एक प्रकार का लाल रंग का धान; -शालुक-(पुं.) कमल की जड़; -शासन-(पुं.) सिन्दूर; -शीर्षक-(पुं.) सारस पक्षी; -शेखर-(पुं.) पुन्नाग; -श्याम-(वि.) गहरे लाल रंग का, -सरोरुह-(पुं.) लाल कमल; -सार- (पुं.) लाल चन्दन, अमलबेंत; -स्राव-किसी अंग से रुधिर का बहना; -हंसा-(स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी; -हर-(पुं.) भल्लातक, भिलावाँ।

रक्तांग-(सं. पुं.) मंगल ग्रह, प्रवाल, मूँगा, खटमल, कुंकुम, केसर।

रक्तांबर-(सं. पुं.) लाल वस्त्र, गेरुआ वस्त्र पहना हुआ संन्यासी।

रक्ता-(सं. स्त्री.) लाक्षा, घुंघची, वच।

रक्ताकर-(सं. पुं.) प्रवाल, मूँगा।

रक्तायत-(सं. पुं.) लाल चन्दन।

रक्ताक्ष-(सं. पुं.) भैंस, कबूतर, चकोर।

रक्तातिसार-(सं.पुं.) एक प्रकार का रोग जिसमें शौच के साथ रुधिर निकलता है।

रक्ताधरा-(सं. स्त्री.) किन्नरी।

रक्ताधार-(सं. पुं.) चर्म, चमड़ा।

रक्ताब्ज-(सं. पुं.) लाल कमल।

रक्ताभ-(सं. पुं.) इन्द्रगोप, वीरबहूटी।

रक्तारुण-(सं.वि.) रुधिर के समान लाल।

रक्तार्क-(सं. पुं.) लाल चन्दन।

रक्तालता-(सं. स्त्री.) मजीठ।

रक्तालू-(सं. पुं.) रतालू नामक कन्द।

रक्ताश्वारि-(सं.पुं.) लाल कनेर का फूल।

रक्तास्राव-(सं. पुं.) नाक से लाल रुधिर बहना।

रक्तार्श-(सं.पुं.) अर्श रोग जिसमें रुधिर निकलता है।

रक्ति-(सं.स्त्री.) अनुराग, प्रेम, एक रत्ती का परिमाण।

रक्तिका-(सं.स्त्री.) घुंघची, रत्ती।

रक्तिमा-(सं. स्त्री.) ललाई।

रक्तोत्पल-(सं. पुं.) लाल कमल।

रक्तोत्पलाभ-(सं. पुं.) लाल रंग।

रक्तोदर-(सं. पुं.) रोहू मछली, एक प्रकार का बहुत विषैला विच्छू।

रक्तोपल-(सं. पुं.) लाल मिट्टी, गेरू।

रक्तौदन-(सं.पुं.) लाल चावल का भात।

रक्ष-(सं. वि.) रक्षा करनेवाला, रक्षा, लाह, राक्षस, छप्पय का एक भेद।

रक्षईश-(सं.पुं.) रावण।

रक्षक-(सं.पुं.) रक्षा करनेवाला, बचानेवाला, पहरेदार।

रक्षण-(सं. पुं.) रक्षा करना, पालन-पोषण करना; -कर्ता- (पुं.) रक्षा करनेवाला।

रक्षणीय-(सं. वि.) रक्षा करने योग्य।

रक्षन-(हि. पुं.) देखें 'रक्षण'।

रक्षना-(हि. क्रि. स.) रक्षा करना।

रक्षपाल-(सं. पुं.) रक्षा करनेवाला।

रक्षमाण-(सं. वि.) देखें 'रक्ष्यमाण'।

रक्षस-(हि. पुं.) राक्षस, दानव।

रक्षा-(सं स्त्री.) (कष्ट, नाश या आपत्ति से) बचाना, गोंद, राख, भस्म, अनिष्ट निवारण के लिये हाथ में बांधा हुआ सूत्र; -गृह-(पुं.) सूतिकागृह; -पति-(पुं.) रक्षा-पुरुष, नगरवासियों की रक्षा करनेवाला; -पत्र- (पुं.) भोजपत्र, सफेद सरसों; -पुरुष- (पुं.) पहरेदार, अन्तःपुर का पहरा देनेवाला, नट; -प्रदीप- (पुं.) भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षा करने के लिये जलाया हुआ दीपक; -बंधन- (पुं.) श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होनेवाला हिन्दुओं का एक त्योहार जिसमें हाथ की कलाई पर रक्षासूत्र बांधा जाता है; -मंगल-(पुं.) वह अनुष्ठान या धार्मिक क्रिया जो भूत-प्रेत की बाधा से रक्षित होने के लिये की जाय; -मणि-(पुं.) वह रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचने के लिये पहना जाय।

रक्षिक-(सं. पुं.) रक्षक, पहरेदार।

रक्षित-(सं.वि.) रक्षा किया हुआ, पाला-पोसा हुआ, रखा हुआ।

रक्षितव्य-(सं.वि.) रक्षा करने योग्य।

रक्षिता-(सं.स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।

रक्षी-(हि.पुं.) राक्षसपूजक, देखें 'रक्षक'।

रक्षोगण-(सं. पुं.) राक्षसों का समूह।

रक्षोघ्न-(सं.पुं.) हींग, सफेद सरसों, भिलावाँ का वृक्ष।

रक्षोजननी-(सं.स्त्री.) राक्षस की माता, रात्रि, रात।

रक्षोहन-(सं.वि.) राक्षस को मारनेवाला।

रक्ष्य-(सं.वि.) रक्षणीय, रक्षा करने योग्य।

रख-(हि.स्त्री.) पशुओं के चरने की भूमि।

रखटी-(हि.स्त्री.) एक प्रकार की ईख।

रखना-(हि.क्रि.स.) ठहराना, रक्षा करना, निर्वाह करना, सौंपना, बंधक या रेहन करना, नियुक्त करना, अपने अधिकार में लेना, रोक लेना, आश्रित करना, डेरा डालना, गर्भ धारण करना, पक्षियों का अण्डा देना, बचाना, सम्भोग करना, उपपत्नी बनाना, मन में धारण करना, चोट पहुँचाना, व्यवहार करना, स्थगित करना।

रखनी-(हि. स्त्री.) वह स्त्री जिससे विवाह न हुआ हो और जो योंही घर में रख ली गई हो, रखेली, सुरैतिन।

रखवाई-(हि. स्त्री.) खेत की रखवाली, रखने की क्रिया या ढंग, रखने का शुल्क, मजूरी, चौकीदारी।

रखवाना-(हि.क्रि.स.) रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

रखवार-(हि पुं.) रखवाला, चौकीदार।

रखवारी-(हि. स्त्री.) रखवाली।

रखवाला-(हि.पुं.) चौकीदार, पहरेदार।

रखवाली-(हि. स्त्री.) रक्षा करने की क्रिया या भाव।

रखाई-(हि. स्त्री.) देखे 'रखवाली'।

रखान-(हि. स्त्री.) चराई की भूमि।

रखाना-(हि. क्रि स.) रखने का काम दूसरे से कराना, रखवारी करना, नष्ट होने से बचाना।

रखिया-(हि. पुं.) रखनेवाला, गांव के पास का वह पेड़ जो पूजा के लिये सुरक्षित रहता है।

रखियाना-(हि. क्रि.स.) पात्रों को राख से मांजना।

रखेली-(हि. स्त्री.) रखनी, सुरैतिन।

रखैया-(हि. पुं.) देखे 'रखवार'।

रखौत-(हि. पु.) पशुओं के चरने के लिये छोड़ी हुई भूमि।

रग-(फा. स्त्री.) नस, नाड़ी, तन्तु, हठ, जिद।

रगड़-(हि. स्त्री.) घिस्सा, रगड़ने से उत्पन्न चिह्न, कड़ा परिश्रम, झगड़ा।

रगड़ना–(हिं. क्रि. स.) घसना, पीसना, वहुत श्रम तथा शीघ्रता से कोई काम करना, अभ्यास करने के लिए कोई काम बारम्बार करना, स्त्री-प्रसंग करना, कष्ट देना ।

रगड़वाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे को रगड़ने में प्रवृत्त करना ।

रगड़ा–(हि. पुं.) घर्षण, रगड़, अत्यन्त परिश्रम, वह झगड़ा जो शीघ्र समाप्त न हो ।

रगड़ान–(हिं. स्त्री.) रगड़ने की क्रिया या भाव ।

रगण–(सं.पुं.) छन्दःशास्त्र में तीन वर्णो का समूह जिसमें विचला वर्ण लघु तथा आदि-अन्त के वर्ण गुरु होते हैं ।

रगत–(हिं. पुं.) देखें रक्त', रुधिर ।

रगपट्ठा–(हि.पुं.)शरीर के भीतर मांसल अंश, किसी विषय. की सूक्ष्म बातें ।

रगर (रा)–(हिं. पुं.) देखें 'रगड़', और 'रगड़ा' ।

रगवाना–(हिं. क्रि. स.) शान्त कराना. चुप कराना ।

रगा–(हि. पुं.) मोर ।

रगाना–(हिं. क्रि. अ., स.)शान्त होना या करना ।

रगी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का मोटा अन्न, देखें 'रग्गी' ।

रगीला–(हिं. वि.) हठी, दुष्ट ।

रगेद–(हिं.स्त्री.)दौड़ाने या भगाने की क्रिया।

रगेदना–(हिं. क्रि. स.) भगा देना ।

रग्गी–(हिं. स्त्री.) अधिक वर्षा के बाद होनेवाली धूप ।

रघु–(सं. पुं.) सूर्यवंशीय राजा दिलीप के पुत्र जो श्रीरामचन्द्र के प्रपितामह थ;–**कुल**–(पुं.) राजा रघु का वंश; –**नंदन**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र; –**नाथ**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र; –**नायक**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र; –**पति**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र;–**राज**–(पुं.) श्रीराम; –**वंश**–(पुं.) महाराज रघु का वंश जिसमें श्रीरामचन्द्र उत्पन्न हुए थे, कालिदास कवि के एक महाकाव्य का नाम; –०**कुमार**, –०**तिलक**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र; –**वंशी**–(वि.) जिसका जन्म रघु के वंश में हुआ हो; (पुं.)उत्तर भारतवासी क्षत्रियों के अन्तर्गत एक जाति; –**वर**– (पुं.) श्रीरामचन्द्र; –**वीर**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र ।

रघूत्तम–(सं. पुं.) रघुकुल में श्रेष्ठ, श्रीरामचन्द्र ।

रघूद्वह–(सं. पुं.) देखें 'रघूत्तम' ।

रचना–(सं.स्त्री.)बनाने की क्रिया,निर्माण, माला बनाना, बाल गूंथना, यथाक्रम रखना, स्थापित करना, वाक्य-विन्यास, चमत्कारयुक्त गद्य या पद्य, विश्वकर्मा की स्त्री का नाम; (हिं.क्रि.अ.,स.)हाथों से बनाकर प्रस्तुत करना, ग्रन्थ आदि लिखना, रँगा जाना, सजाना, अनुरक्त होना, उत्पन्न करना, कल्पना करना, ठानना, निश्चित करना, क्रम से रखना।

रचनीय–(सं.वि.) रचना करने योग्य ।

रचयिता–(सं. वि.) निर्माता, रचनेवाला।

रचवाना–(हिं. क्रि. स.) रचने का काम दूसरे से कराना, मेंहँदी या महावर लगवाना ।

रचाना–(हिं. क्रि.स.) बनाना, रचवाना ।

रचित–(सं.वि.) रचा हुआ, गूँथा हुआ, शोभित, निर्माण किया हुआ ।

रचितव्य–(सं. वि.,) रचना करने योग्य ।

रचिपचि–(हिं.अव्य.) परिश्रम से ।

रच्छा–(हि.स्त्री.) देखें 'रक्षा' ।

रजःसार–(सं.पुं.) कर्पूर, कपूर ।

रज–(सं.पुं.) स्त्री का आर्तव, स्त्री का कुसुम, पराग, रजोगुण, स्कन्द की सेना का नाम, वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम, जल, पानी, धूल, रात्रि, ज्योति, प्रकाश, भुवन, लोक, (हिं.पुं.) चाँदी ।

रजक–(सं. पुं.) धावक, धोबी ।

रजगुण–(हिं. पुं.) देखें 'रजोगुण' ।

रजतंत–(हिं.स्त्री.) शूरता, वीरता ।

रजत–(सं.पुं.) चाँदी, हाथी-दाँत, रुधिर, ह्रद, तालाब; (वि.) सफेद रंग का, शुक्ल, धवल; –**कुंभ**–(पु.) रजत या चाँदी का कलश; –**गिरि**–(पुं.) कैलाश पर्वत; –**द्युति**–(पुं.) हनुमान; –**पात्र**–(पुं.)चाँदी का पात्र; –**प्रतिमा**–(स्त्री.) रजत या चाँदी की बनी हुई प्रतिमा; –**भाजन**–(पुं.) चाँदी का बना हुआ पात्र; –**मय**–(वि.) चाँदी का बना हुआ ।

रजताई–(हिं. स्त्री.) सफेदी ।

रजताकर–(सं.पुं.) चाँदी की खान ।

रजताचल–(सं.पुं.) चाँदी का पहाड़ ।

रजताद्रि–(सं. पुं.) कैलाश पर्वत ।

रजतोपम–(सं. वि.) चाँदी के सदृश ।

रजधानी–(हिं. स्त्री.) देखें 'राजधानी' ।

रजना–(हिं.क्रि.अ.,स.) रँगना, रगा जाना।

रजनि–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात, हल्दी ।

रजनी–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात, हल्दी, वैवस्वत मनु की पत्नी का नाम; –**कर**–(पुं.) चन्द्रमा; –**गंधा**–(स्त्री.) एक प्रकार का फूल; –**चर**–(पुं.) चन्द्रमा, राक्षस, चोर; (वि.) रात में चलनेवाला; –**जल**–(पुं.) कुहिरा; –**पति**–(पुं.) चन्द्रमा; –**मुख**–(पुं.)सन्ध्या; –**रमण**–(पुं.) चन्द्रमा ।

रजनीश–(सं.पुं.) चन्द्रमा ।

रजपूत–(हिं. पुं.) देख 'राजपूत' ।

रजपूती–(हिं. स्त्री.) क्षत्रिय होने का भाव, शूरता, वीरता, राजपूती ।

रजबलाहक–(हिं. पुं.) मेघ, बादल ।

रजवली–(हि. पुं.) भूपति, राजा ।

रजबहा–(हिं. पुं.) नदी या नहर से निकाला हुआ वह बड़ा नल जिससे और भी अनेक छोटे-छोटे नल निकलते हैं।

रजवंती–(हिं. वि.) रजस्वला (स्त्री) ।

रजवट–(हिं.स्त्री.) क्षत्रियत्व, वीरता ।

रजवाड़ा–(हिं. पु.) देशी राज्य ।

रजवार–(हिं. पु.) राजा की सभा ।

रजस–(सं. वि.) अपवित्र, मैला ।

रजस्तोक–(सं. पुं.) लोभ, लालच ।

रजस्वला–(सं.वि.,स्त्री.)वह स्त्री जिसको मासिक धर्म होता हो, ऋतुमती ।

रजाई–(हिं. स्त्री.) जाड़े में ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसमें रूई भरी होती है, राजा होने का भाव ।

रजाना–(हिं. क्रि. अ.) राज्य-सुख भोग करना, बहुत अधिक सुख देना, अच्छी तरह से रखना ।

रजायस–(हिं. स्त्री.) आज्ञा, इच्छा ।

रजिया–(हिं.स्त्री.) अन्न नापने का प्रायः डेढ़ सेर का मान ।

रजोकुल–(हिं. पुं.) देखें 'राजकुल' ।

रजोगुण–(सं. पुं.) मनुष्यों की वह प्रकृति या स्वभा जिससे उनमें भोग-विलास तथा दिखाववटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है ।

रजोदर्शन–(सं.पुं.) स्त्रियों का रजस्वला होना ।

रजोधर्म–(सं.पुं.)स्त्रियों का मासिक धर्म ।

रजोबल–(सं. पुं.) अन्धकार ।

रजोमेघ–(स..पु) धूलि का मेघ ।

रजोरस–(सं.पु.) अन्धकार, अन्धेरा ।

रजोहर–(सं.पुं.) रजक, धोबी ।

रज्जु–(सं. स्त्री.) रस्सी, घोड़े की लगाम, बागडोर, स्त्रियों के सिर की चोटी ।

रटत–(हिं.स्त्री.) रटने की क्रिया या भाव।

रट–(हिं.स्त्री.) बारंबार किसी शब्द को उच्चारण करने की क्रिया ।

रटन—(हि. पुं.) कथन, कहना; (हि. स्त्री.) रटने की क्रिया या भाव।
रटना—(हि.क्रि.स.) किसी शब्द को बार-बार कहना, कण्ठस्थ करने के लिये बारंबार दोहराना।
रटित—(सं. वि.) कथित, रटा हुआ।
रठ—(हि. वि.) शुष्क, सूखा।
रढ़ना—(हि. क्रि. स.) देखें 'रटना'।
रण—(सं.पुं.) युद्ध, लड़ाई, शब्द, गति; —कुशल—(वि.) वीर, योद्धा; —कारी—(वि.) युद्ध करनेवाला; —कृत्—(वि.) लड़ाई करनेवाला; —क्षिति—(स्त्री.) युद्धभूमि; —क्षेत्र— (पुं.) लड़ाई का मैदान; —छोड़— (हि. पुं.) श्रीकृष्ण का एक नाम; —जेता—(पुं.) युद्ध में जीतनेवाला; —तूर्य—(पुं.) लड़ाई का डंका; —दुंदुभी—(स्त्री.) युद्ध की भेरी; —न—(पुं.) कोलाहल का शब्द; —प्रिय—(वि.) युद्धप्रिय; (पुं.) विष्णु, बाज पक्षी; —भूमि—(स्त्री.) लड़ाई का मैदान; —मंडा— (स्त्री.) पृथ्वी; —मत्त—(पुं.) हाथी; (वि.) युद्ध में मत्त; —मुख—(पुं.) सेना का अग्रभाग; —मुष्टि—(पुं.) कुचिला; —मूर्धजा—(स्त्री.) काकड़ासिंगी; —रंक—(पुं.) हाथी के दोनों दाँतों के बीच का स्थान; —रंग—(पुं.) युद्ध का उत्साह, युद्ध-क्षेत्र; —रण—(पुं.) व्यग्रता, घबड़ाहट; —रणक—(पुं.) कामदेव, व्यग्रता, घबड़ाहट, उत्कण्ठा; —लक्ष्मी—(स्त्री.) विजय-लक्ष्मी, युद्ध की देवी जो विजय करानेवाली मानी जाती है; —वृत्ति—(पुं.) सैनिक, सिपाही; —शिक्षा—(स्त्री.) युद्धाभ्यास; —शूर—(पु.) वह जो युद्ध में वीरता दिखलाता हो; —सिंघा, सिंहा— (पुं.) नरसिंघा, तुरही; —स्तंभ— (पुं.) वह स्तम्भ जो युद्ध में विजय प्राप्त करने पर स्मारक के रूप में बनवाया जाता है, विजय का स्मारक; —स्थल—(पुं.) रणभूमि, लड़ाई का मैदान; —स्थान—(पुं.) लड़ाई का मैदान; —स्वामी— (पुं.) शिव, महादेव; —हंस— (पुं.) एक वर्णवृत्त का नाम।
रणांगण—(सं. पुं.) लड़ाई का मैदान।
रणाग्र—(सं. पुं.) युद्ध का आरम्भ।
रणाजिर—(सं. पुं.) युद्धस्थल।
रणातोद्य—(सं. पुं.) लड़ाई का डंका।
रणाभियोग—(सं.पु.) युद्ध करना, लड़ना।
रणायुध—(सं. पुं.) युद्ध की सामग्री।
रणेचर—(सं. वि.) युद्ध-क्षेत्र में विचरने-वाला; (पुं.) विष्णु।
रणेश—(सं. पुं.) विष्णु, शिव, महादेव।
रण्य—(सं.वि.) रमणीय।
रणित—(सं. वि.) शब्द किया हुआ।
रत—(सं. पुं.) मैथुन, स्त्रीप्रसंग, योनि, लिंग, प्रेम, प्रीति; (वि.) अनुरक्त, प्रेम में पड़ा हुआ, कार्य में लगा हुआ, लिप्त; (हि. पुं.) देखें 'रक्त', रुधिर।
रतकील—(सं. पुं.) कुत्ता।
रतगुरु—(सं. पुं.) पति, स्वामी।
रतजगा—(हि.पुं.) किसी उत्सव, त्योहार आदि के उपलक्ष्य में सारी रात जागकर बिताना, रात भर होनेवाला आनन्दोत्सव।
रतज्वर—(सं. पुं.) काक, कौआ।
रतताली—(सं. स्त्री.) कुटनी।
रतन—(हि. पुं) देखें 'रत्न'।
रतनजोत—(हि. स्त्री.) एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ से लाल रंग निकलता है।
रतनाकर—(हि. पुं.) देखें 'रत्नाकर'।
रतनागर—(हि. पुं.) समुद्र।
रतनागरभ—(हि. स्त्री.) भूमि, पृथ्वी।
रतनार, रतनारा—(हि. वि.) कुछ लाल, (इस शब्द का प्रयोग विशेषतः सुंदर आँखों के लिये किया जाता है)।
रतनारी—(हि.स्त्री.) लाली, लालिमा; (पुं.) एक प्रकार का धान; (वि.स्त्री.) रतनार।
रतनारीच—(सं. पुं.) कुत्ता, लम्पट, व्यसनी पुरुष।
रतनालिया—(हि. वि.) देखें 'रतनार'।
रतनावली—(हि. स्त्री.) देख 'रत्नावली'।
रतनिधि—(सं. पुं.) खंजन पक्षी।
रतमुहाँ—(हि. वि.) लाल मुखवाला।
रतांजली—(सं.स्त्री.) लाल चन्दन।
रताना—(हि. क्रि. अ., स.) रत होना, लीला करना, रत करना।
रतायनी—(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
रतालू—(हि.पुं.) पिण्डालू, बाराही कन्द।
रति—(सं. स्त्री.) कामदेव की स्त्री, अनुराग, प्रेम, कामक्रीड़ा, संभोग, सौभाग्य, छवि, शोभा, साहित्य में शृंगार-रस का स्थायी भाव, नायक-नायिका के मन में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण; (हि. अव्य.) रत्ती, थोड़ा, कम; —कर—(वि.) आनन्ददायक; —कर्म—(पुं.) मैथुन; —कलह—(पुं.) संभोग, मैथुन; —कांत—(पुं.) कामदेव; —कुहर—(पुं.) योनि, भग; —केलि—(स्त्री.) भोग-विलास; —क्रिया—(स्त्री.) मैथुन, संभोग; —गृह—(पुं.) रमण-गृह, योनि; —जनक—(वि.) प्रीति उत्पन्न करनेवाला; —ज्ञ—(वि.) जो रति क्रिया में चतुर हो; —तस्कर—(पुं.) वह जो स्त्रियों को संभोग करने के लिये प्रवृत्त करता हो; —ताल—(पुं.) ताल का एक भेद; —दान—(पुं.) मैथुन, संभोग; —देव—(पुं.) विष्णु, कुत्ता; —धन—(पुं.) शत्रु के अस्त्रों का नाश करनेवाला अस्त्र; —नाथ—(पुं.) कामदेव; —नायक—(पुं.) कामदेव; —पति—(पुं.) कामदेव; —नाह—(हि.पुं.) कामदेव; —पद—(पुं.) एक वर्णवृत्त का नाम; —प्रिय—(पुं.) कामुक, कामदेव, —प्रिया—(स्त्री.) वह स्त्री जिसको मैथुन बहुत प्रिय हो; —बंध—(पुं.) मैथुन या संभोग करने का आसन; —भवन—(पुं.) वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रतिक्रीड़ा करते हों; —भाव—(पुं.) प्रीतिभाव; —भौन—(हि. पुं.) रतिभवन; —मंदिर—(पुं.) योनि, भग, मैथुनगृह; —मदा— (स्त्री.) अप्सरा; —रमण—(पुं.) कामदेव, मैथुन; —रस—(पुं.) सहवास का सुख; —राज—(पुं.) कामदेव; —लंपट— (वि.) संभोग-प्रिय; —वंत—(हि.वि.) सुन्दर; —वर्धन—(पुं.) कामदेव; —वाही—(पुं.) एक प्रकार का राग; —शक्ति—(स्त्री.) रमण करने का बल; —शास्त्र—(पुं.) काम-शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें रति की क्रियाओं का वर्णन हो; —संयोग—(पुं.) स्त्री-प्रसंग, मैथुन; —सहिति—(स्त्री.) काम करने की योग्यता; —समर—(पुं.) संभोग, मैथुन; —साधन—(पुं.) काम-शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिचिन्ह।
रती—(सं. स्त्री.) लाल घुंघची; (हि. स्त्री.) आठ चावल का मान, रत्ती, देखें 'रति'; (वि.) थोड़ा, कम; (अव्य.) जरा सा, रत्ती भर।
रतुआ—(हि. पुं.) एक प्रकार की घास।
रतोद्वह—(सं. पुं.) कोकिल, कोयल।
रतोपल—(हि. पुं.) लाल सुरमा, लाल खड़िया, गेरू।
रतौंधी—(हि. स्त्री.) आँख का एक रोग जिसमें रोगी को रात में आसपास कुछ दिखाई नहीं पड़ता।
रत्त—(हि. वि., पु.) देखें 'रक्त'।
रत्ती—(हि. स्त्री.) आठ चावल [illegible] का मान, [illegible], घुंघची का दाना, [illegible], शोभा; (वि.) बहुत थोड़ा।
रत्थी—(हि. स्त्री.) [illegible]

अथवा संदूक जिसमें शव रखकर अन्तिम संस्कार के लिये ले जाते हैं, टिकठी।

रत्न–(सं.पुं.) कुछ विशिष्ट छोटे तथा चमकीले बहुमूल्य पदार्थ विशेषतः खनिज पदार्थ या पत्थर जो आभूषणों में जड़े जाते हैं, मणि, नगीना, वह जो अपने वर्ग या जाति में श्रेष्ठ हो; **–कंदल**–(पुं.) प्रवाल, मूंगा; **–कर**–(पुं.) कुबेर; **–कणिका**–(स्त्री.) करनफूल; **–कलश**–(पुं.) रत्न का बना हुआ कलसा; **–कीर्ति**–(पुं.) बुद्ध का एक नाम; **–कूट**–(पुं.) एक पर्वत का नाम; **–कोटि**–(स्त्री.) असंख्य रत्न; **–खानि**–(स्त्री.) रत्नों की खान, समुद्र; **–गर्भ**–(पुं.) कुबेर, समुद्र; **–गर्भा**–(स्त्री.) पृथ्वी, भूमि; **–दीप**–(पुं.) रत्न का दीपक; **–द्रुम**–(पुं.) प्रवाल, मूंगा; **–धर**–(पुं.) धनवान्; **–नाभ**–(पु.) विष्णु; **–निधि**–(पुं.) समुद्र; **–परीक्षक**–(पुं.) रत्नों की परीक्षा करनेवाला, जौहरी; **–पारखी**– (हिं.पुं.) जौहरी; **–प्रभा**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–मंजरी**–(स्त्री.) विद्याधरी का एक भेद; **–माला**–(स्त्री.) मणियों की माला या हार; **–मालिका**–(स्त्री.) मणियों की छोटी माला; **–माली**–(वि.) रत्नों की माला पहननेवाला; **–मुख्य**–(पुं.) हीरा; **–राजि**–(स्त्री.) रत्नों का समूह; **–राशि**– (पुं.) समुद्र; **–वती**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–वृक्ष**–(पुं.) मूंगा; **–शाला**–(स्त्री.) रत्न-जटित महल; **–शिला**–(स्त्री.) वह शिला जिसमें अनेक रत्न जड़ हों; **–संग्रह**– (पुं.) रत्नों का समुदाय; **–संभव**– (पुं.) एक बोधिसत्व का नाम; **–सानु**–(पुं.) सुमेरु पर्वत का नाम; **–सू**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–सूति**–(स्त्री.) पृथ्वी।

रत्नांक–(सं. पुं.) विष्णु का रथ।

रत्नाकर–(सं.पुं.) रत्नों का समूह, समुद्र, बुद्धदेव, वाल्मीकि मुनि का पहला नाम।

रत्नाधिपति–(सं. पुं.) कुबेर।

रत्नाभरण–(सं. पुं.) रत्न का गहना।

रत्नाभूषण–(सं. पुं.) जड़ाऊ गहना।

रत्नालंकार–(सं. पुं.) रत्न का गहना।

रत्नालोक–(सं. पुं.) रत्न की ज्योति।

रत्नावली–(सं.स्त्री.) मोतियों की माला, मणियों की माला, एक रागिनी का नाम, एक अर्थालंकार जिसमें शब्दों के प्रयुक्त अर्थ के अतिरिक्त ठीक क्रम से वस्तु-समूह के नाम भी निकलते हैं।

रत्नासन–(सं. पुं.) रत्नों का आसन।

रत्नेंद्र–(सं. पुं.) श्रेष्ठ रत्न।

रत्नोत्तमा–(सं. स्त्री.) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम।

रथ–(सं. पुं.) काय, शरीर, चरण, पैर, बेंत, प्राचीन काल का एक प्रकार का यान जिसमें दो या अधिक पहिये होते थे, गाड़ी, क्रीड़ा-स्थान, शतरंज का एक मोहरा, ऊँट; **–कर**–(पुं.) रथ बनानेवाला, बढ़ई; **–कार**– (पुं.) रथ बनानेवाला; **–कारक**–(पुं.) बढ़ई; **–कारत्व**–(पुं.) बढ़ई का काम; **–कुटुंबिक**–(पुं.) रथ हाँकनेवाला; **–केतु**–(पुं.) रथ में लगी हुई ध्वजा; **–क्षोभ**–(पुं.) रथ का हिलना-डोलना; **–गर्भक**–(पुं.) शिविर, पालकी आदि सवारी जो कन्धों पर उठाकर ढोते हैं; **–घोष**–(पुं.) रथ का शब्द; **–चक्र**–(पुं.) रथ का पहिया; **–चरण**–(पुं.) चकवा पक्षी; **–चर्या**– (स्त्री.) रथ का चलना; **–जंघा**–(स्त्री.) रथ का पिछला भाग; **–ज्ञान**–(पुं.) रथ हाँकने में निपुणता; **–दारु**–(पुं.) वह लकड़ी जिससे रथ बनाया जाता है; **–धूर**–(स्त्री.) रथ का पहिया; **–पति**–(पुं.) रथ का सारथी; **–पथ**–(पुं.) जिस मार्ग पर रथ चल सके; **–बंध**–(पुं.) रथ बाँधने की रस्सी; **–यात्रा**–(स्त्री.) देव-देवी को रथ पर बिठाकर उसे खींचने का उत्सव, एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को होता है; **–युद्ध**–(पुं.) रथ पर चढ़कर युद्ध करना; **–यूथ**–(पुं.) रथों का समूह; **–योजक**–(पुं.) सारथी; **–वर**–(पुं.) उत्तम रथ; **–वान**–(हिं.पुं.) रथ हाँकनेवाला; **–वाह**– (पुं.) सारथी, घोड़ा; **–वाहक**–(पुं.) रथ हाँकनेवाला; **–विद्या**–(स्त्री.) रथ हाँकने की विद्या; **–वीति**–(पुं.) तपस्या करनेवाला; **–वेग**–(पुं.) रथ चलने की गति; **–व्रज**–(पुं.) रथों का समूह; **–शाला**–रथ रखने का स्थान; **–शिक्षा**–(स्त्री.) रथ चलाने का कौशल; **–सप्तमी**–(स्त्री.) माघ शुक्ला सप्तमी; **–सूत्र**–(पुं.) रथ बनाने का नियम; **–स्थ**–(वि.) रथ पर बैठा हुआ; **–स्वन**–(पुं.) रथ का शब्द।

रथाग्र–(सं. पुं.) श्रेष्ठ योद्धा।

रथाभ्र–(स. पुं.) वेतस, बेंत।

रथारथि–(सं. अव्य.) रथों पर चढ़कर युद्ध करना।

रथारूढ़–(सं. वि.) रथ पर बैठा हुआ।

रथारोह–(सं. वि.) रथ पर बैठकर युद्ध करनेवाला।

रथारोही–(सं. वि.) देखें 'रथारोह'।

रथार्भक–(सं. पुं.) छोटा रथ।

रथाश्व–(सं.पुं.) रथ में जोतने का घोड़ा।

रथिक–(सं. पुं.) रथ का सवार।

रथी–(सं. पुं.) रथ पर चढ़कर लड़नेवाला, योद्धा; (वि.) रथ पर चढ़ा हुआ; (हिं. स्त्री.) अरथी, शव को ले जाने का ढाँचा।

रथोत्सव–(सं.पुं.) रथयात्रा नामक उत्सव।

रथोद्धता–(सं. स्त्री.) ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

रथौघ–(सं. पुं.) रथ का वेग।

रथ्या–(सं. स्त्री.) रथ का मार्ग या लकीर, नाली, आँगन, गली।

रद–(सं. पुं.) दन्त, दाँत; (अ. वि.) नष्ट, तुच्छ, निरर्थक।

रदच्छद–(सं. पुं.) ओष्ठ, ओठ; (हिं.पुं.) रति के समय दाँतों का चिह्न।

रददान–(सं. पुं.) रति के समय दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।

रदन–(सं. पुं.) दन्त, दाँत; **–च्छद**–(पुं.) ओठ, देखें 'रदच्छद'।

रदनी–(हिं. वि.) दाँतवाला।

रदपट–(सं. पुं.) ओष्ठ, ओठ।

रद्द–(अ. वि.) निकम्मा, निकृष्ट।

रद्दा–(हिं. पुं.) भीत की पूरी लंबाई में एक ईंट की जोड़ाई, का कुल अंश, मिट्टी की भीत उठाने में उतना अंश जितना चारों ओर एक बार में उठाया जाता है, चमड़ की मोहरी जो भालू के मुँह पर बाँधी जाती है, थाली में मिठाइयों की एक पर एक रखी हुई श्रेणी, वस्तुओं की एक के ऊपर एक रखी हुई श्रेणी, कुश्ती में गरदन पर कुहनी से मारना।

रद्दी–(हिं. वि.) (वह पदार्थ) जो काम न आवे; (स्त्री.) कागज आदि जो काम में न आने के कारण फेंक दिये जाते हों।

रधार–(हिं.स्त्री.) ओढ़ने का वस्त्र, दोहर।

रन–(हिं. पुं.) रण, युद्ध, लड़ाई, वन, जंगल, समुद्र का छोटा अंश, ताल, झील।

रनकना–(हिं. क्रि. अ.) घुंघरू आदि का धीमा शब्द होना।

रनछोर–(हिं. पुं.) देखें 'रणछोड़'।

रनना–(हिं.क्रि.अ.) बजना, झनकार होना।

रनवरिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़।

रनबंका, रनबाँकुरा–(हिं. पुं.) योद्धा, शूर-वीर।

रनलापिका–(हिं. स्त्री.) गौ, गाय।
रनवादी–(हिं. वि.) शूर, योद्धा।
रनवास–(हिं. पुं.) महल में रानियों के रहने का स्थान, अन्तःपुर।
रनित–(हिं. वि.) रणित, झन-झन शब्द करता हुआ।
रनिवास–(हिं. पुं.) देखें 'रनवास'।
रनी–(हिं. पुं.) योद्धा, लड़नेवाला।
रनत–(हिं. पुं.) भाला, बरछा।
रपट–(हिं. स्त्री.) अभ्यास, रपटने की क्रिया या भाव, फिसलन, उतार, दौड़, सूचना।
रपटना–(हिं.क्रि.अ.) पैर जम न सकने के कारण किसी ओर सरकना, वेग से चलना, झपटना, किसी काम को झटपट पूरा करना, मैथुन करना।
रपटाना–(हिं. क्रि. स.) सरकाना, फिसलाना, रपटने में प्रेरित करना।
रपट्टा–(हिं. पुं.) फिसलने की क्रिया या भाव, फिसलाव, झपट्टा, चपेट, दौड़-धूप।
रपाती–(हिं. स्त्री.) तलवार।
रफल–(हिं. स्त्री., अंग्रेजी राइफल का अपभ्रंश) एक प्रकार की बंदूक; (पुं.) ऊनी चादर जो जाड़े में ओढ़ी जाती है।
रफूचक्कर–(हिं. वि.) गायब, चंपत।
रफ्तार–(फा.स्त्री.) गति, चाल, दौड़, वेग।
रबड़ना–(हिं. क्रि.अ.,स.) घूमना, घुमाना, चलाना, फेरना।
रबड़ी–(हिं. स्त्री.) औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिलाई जाती है, बसौंधी।
रबदा–(हिं. पुं.) पैदल चलने से होनेवाली थकावट, कीचड़।
रबरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'रबड़ी'।
रबाना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा डफ जिसमें मजीरे लगे होते हैं।
रबाब–(अ.पुं.) एक तरह की सारंगी।
रबाबिया–(हिं.पुं.) रबाब बजानेवाला।
रबी–(हिं. स्त्री.) वसन्त ऋतु, वसन्त ऋतु में काटी जानेवाली फसल।
रबील–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया।
रब्ध–(सं.वि.) ग्रहण किया हुआ, आरंभ किया हुआ।
रभस–(सं. पुं.) वेग, हर्ष, उत्सुकता।
रभोदा–(सं. वि.) बल देनेवाला।
रम–(सं. पुं.) कामदेव, प्रेमी; (वि.) प्रिय, सुन्दर, आनन्ददायक।
रमक–(सं. पुं.) उपपति, जार; (हिं. स्त्री.) झूले की पेंग, तरंग, झकोरा।

रमकजरा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का धान।
रमकना–(हिं. क्रि. अ.) हिंडोले पर पेंग मारना, इतराते हुए चलना।
रमचकरा–(हिं.पुं.) बेसन की मोटी रोटी।
रमझोला–(हिं. पुं.) पैर में पहनने का घुंघरू, नूपुर।
रमठ–(सं. पुं.) हींग।
रमण–(सं. पुं.) रति, सुरत, मैथुन, क्रीड़ा, विलास, कामदेव, पति, अण्डकोष, सूर्य का सारथि, घूमना-फिरना, एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं; (वि.) सुन्दर, मनोहर, रमनेवाला, आनन्द देनेवाला; –गमना–(स्त्री.) वह नायिका जो यह समझकर दुःखी होती है कि संकेत-स्थान पर नायक आया होगा परन्तु वह उस स्थान पर उपस्थित न थी।
रमणा, रमणी–(सं. स्त्री.) नारी, स्त्री, सुन्दर स्त्री, सुगन्धवाला नामक गन्ध-द्रव्य।
रमणीक–(सं. वि.) सुन्दर, मनोहर।
रमणीय–(सं. वि.) रमणीक, सुन्दर; –ता–(स्त्री.) सुन्दरता, साहित्य दर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं म बना रहे अथवा क्षण-क्षण में नया रूप धारण करे।
रमता–(हिं. वि.) एक ही स्थान पर जमकर न रहनेवाला, घूमता-फिरता।
रमदी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।
रमन–(हिं. पुं.) देखें 'रमण'।
रमना–(हिं. क्रि. अ.) सुख-प्राप्ति या विलास के निमित्त कहीं ठहरना, व्याप्त होना, इधर-उधर घूमना, अनुरक्त होना, चैन करना, आनन्द करना; (पुं.) वह सुरक्षित स्थान जहाँ पशु मृगया के लिये छोड़े जाते हैं, कोई सुन्दर या रमणीक स्थान, चरागाह।
रमनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'रमणी'।
रमनीक–(हिं. वि.) देखें 'रमणीक'।
रमा–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी; –कांत–(पुं.) विष्णु; –धव–(पुं.) विष्णु; –नरेश–(पुं.) विष्णु; –नाथ–(पुं.) विष्णु; –निवास–(पुं.) लक्ष्मीपति, विष्णु; –पति–(पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण; –प्रिय–(पुं.) पद्म, कमल, विष्णु; –रमण–(पुं.) लक्ष्मीपति, विष्णु।
रमाना–(हिं. क्रि. स.) अनुरंजित करना, मोहित करना, संयुक्त करना, जोड़ना, रोक रखना, ठहराना, अपने अनुकूल बनाना।

रमाली–(हिं.पुं.) एक प्रकार का महीन धान।
रमाश्रय–(सं.पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण।
रमित–(हिं. वि.) मुग्ध, लुभाया हुआ।
रमी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास।
रमेश, रमेश्वर–(सं. पुं.) विष्णु।
रमैती–(हिं. स्त्री.) आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे के खेतों में काम करने की किसानों में प्रचलित प्रथा, ऐसा काम, पैठी।
रमैनी–(हिं. स्त्री.) कबीरदास के बीजक का एक भाग जिसमें दोहे और चौपाइयाँ हैं।
रमैया–(हिं. पुं.) राम, ईश्वर।
रम्य–(सं.वि.) सुन्दर, मनोहर, रमणीय; (पुं.) चम्पक वृक्ष, वायु का एक भेद; –ता–(स्त्री.) सौन्दर्य; –श्री–(पुं.) विष्णु
रम्या–(सं. स्त्री.) स्थलपद्मिनी, रात्रि, एक रागिनी का नाम।
रम्हाना–(हिं. क्रि. अ.) गाय का बोलना।
रय–(सं. पुं.) प्रवाह, धूल।
रयन–(हिं. स्त्री.) रात्रि, रात।
रयना–(हिं. क्रि. अ.) उच्चारित करना, बोलना, संयुक्त करना, मिलाना, रँगना।
रयासत–(हिं. स्त्री.) देखें 'रियासत'।
रयि–(सं. पुं.) धन, ऐश्वर्य; –पति–(पुं.) कुबेर; –मत्–(वि.) धनवान्; –यन्–(वि.) धन की इच्छा करनेवाला; –ष्ठ–(पुं.) बहुत धनी; कुबेर, अग्नि।
रय्यत–(हिं. स्त्री.) रैयत, प्रजा।
ररकार–(हिं. पुं.) रकार की ध्वनि।
रर–(हिं. स्त्री.) वह भीत जो बड़े-बड़े पत्थरों के ढोंकों को एक के ऊपर एक रखकर बनाई गई हो, और चूने, गारे आदि से जोड़ी न गई हो, रट, रटन।
ररकना–(हिं. क्रि. अ.) कष्ट देना, पीड़ा देना, कसकना।
ररना–(हिं.क्रि.अ.) बारंबार एक ही बात कहना या रटना।
रराट–(सं. पुं.) देखें 'ललाट'।
ररिहा–(हिं. पुं.) रटनेवाला, भिखमंगा, [illegible] नामक पक्षी।
ररी–(हिं. वि.) कंगाल, अधम, नीच, बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला।
रलना–(हिं.क्रि.अ.) एक में एक मिल जाना।
रलाना–(हिं.क्रि.स.) एक में एक मिलाना।
रली–(हिं. स्त्री.) आनन्द, प्रसन्नता, क्रीड़ा, विहार, [illegible] नामक अन्न।
रल्ल–(हिं. पुं.) कोलाहल, हल्ला।
रव–(सं. पुं.) शब्द, ध्वनि, गुंजार, कोला-

रसोद्भव–(सं.पुं.) शिंगरफ, रसौत; (वि.) रस से उत्पन्न।
रसोन–(सं. पुं.) लशुन, लहसुन।
रसोपल–(सं. पुं.) मौक्तिक, मोती।
रसोय–(हिं. स्त्री.) देखें 'रसोई'।
रसोल्लास–(सं. पुं.) कामोद्दीपन, आठ सिद्धियों में से एक।
रसौं (सौ) त–(हिं. स्त्री.) एक औषधि जो दारु-हल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तथा खूब गाढ़ा करके बनती है।
रसौती–(हिं. स्त्री.) धान की एक विशेष प्रकार की बोआई।
रसौर–(हिं.पुं.) ऊख के रस में पकाया हुआ चावल।
रसौल–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की कँटीली लता।
रसौली–(हिं. स्त्री.) वह रोग जिसमें आँखों के ऊपर भौं के पास गिल्टी निकल आती है।
रस्ता–(हिं. पुं.) रास्ता, मार्ग।
रस्तावगी, रस्तोगी–(हिं. पुं.) भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में रहनेवाली बनिया जाति की एक शाखा।
रस्मि–(हिं.स्त्री.) देखें 'रश्मि', किरण।
रस्सा–(हिं.पुं.) कई पतली रस्सियों को बटकर बनाई हुई मोटी रस्सी।
रस्सी–(हिं.स्त्री.) रज्जु, डोरी; **–बाट**–(पुं.) रस्सी बनानेवाला।
रहँकला–(हिं.पुं.) एक प्रकार की हलकी गाड़ी, तोप लादने की गाड़ी, इस गाड़ी पर लदी हुई तोप।
रहँचटा–(हिं. पुं.) मनोरथ-सिद्धि की अभिलाषा, चसका।
रहँट–(हिं.पुं.) कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र।
रहँटा–(हिं.पुं.) सूत कातने का चरखा।
रहँटी–(हिं.स्त्री.) कपास ओटने की चरखी।
रहचह–(हिं.स्त्री.) चिड़ियों का बोलना।
रहठा–(हिं.पुं.) रहर के पौधे का सूखा डंठल।
रहण–(सं. पुं.) फेंकना, साथ छोड़ना।
रहन–(हिं स्त्री.) रहने की क्रिया या भाव, रहने का ढंग, व्यवहार; **–सहन**–(स्त्री.) जीवन-निर्वाह का नियत ढंग, चाल-चलन।
रहना–(हिं.क्रि.अ.) स्थित होना, ठहरना, प्रस्थान न करना, रुकना, स्थापित होना, जीवित रहना, बचना, छूट जाना, निवास करना, बसना, कामकाज करना, नौकरी करना, मैथुन करना, चुपचाप समय बिताना, अस्थायी रूप में होना, काम करना बंद करना, उपस्थित होना, थमना, छूट जाना; (मुहा.) **रह जाना**–रुक जाना, सफल न होना।
रहनि–(हिं.स्त्री.) आचरण, चाल-ढाल, प्रेम, देखें 'रहन'।
रहर–(हिं.स्त्री.) देखें 'अरहर'।
रहरू–(हिं.स्त्री.) खाद ढोने की छोटी गाड़ी।
रहरेठा–(हिं. पुं.) देखें 'रहठा', कड़िया।
रहलू–(हिं. स्त्री.) देखें 'रहरू'।
रहस–(हिं.पुं.) निर्जन स्थान, गुप्त भेद, छिपी बात, आनन्द, सुख, गूढ़ तत्त्व-योग, तन्त्र आदि की गुप्त बात; (सं. पुं.) समुद्र, स्वर्ग।
रहसना–(हिं. क्रि. अ.) आनन्दित होना, प्रसन्न होना।
रहस-बधावा–(हिं.वि.) विवाह की एक रीति जिसमें नवविवाहिता वधू के वर के साथ घर आने पर स्त्रियाँ तथा गुरुजन उसका मुख देखते और वस्त्र, आभूषण आदि उपहार देते हैं।
रहसि–(हिं.स्त्री.) एकान्त या गुप्त स्थान।
रहसू–(सं.स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री।
रहस्य–(सं. पुं.) गूढ़ तत्त्व, गुप्त भेद, मर्म की बात, भीतरी या छिपी बात, हँसी, ठट्ठा।
रहाई–(हिं.स्त्री.) रहने की क्रिया या भाव।
रहाऊ–(हिं. स्त्री.) गीत का टेक।
रहाना–(हिं. क्रि. अ.) रहना, होना।
रहावन–(हिं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ गाँव भर के पशु इकट्ठे होते हों।
रहासहा–(हिं.वि.) बचा हुआ, अवशिष्ट।
रहित–(सं. वि.) वर्जित, विना।
रहिला–(हिं. पुं.) चना।
रहोगत–(सं.वि.) निर्जन स्थान में स्थित।
राँक–(हिं. वि.) देखें 'रंक'।
राँकड़–(हिं.स्त्री.) कंकरीली भूमि जिसमें बहुत कम अन्न उत्पन्न होता है।
राँगड़ी–(हिं.पुं.) एक प्रकार का चावल।
राँगा–(हिं.पुं.) एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और सफेद रंग की होती है।
राँच–(हिं. अव्य.) देखें 'रंच'।
राँचना–(हिं. क्रि. अ., स.) चाहना, प्रेम रंग चढ़ाना।
राँजना–(हिं. क्रि. स.) आँखों में काजल लगाना, रँगना।
राँटा–(हिं. पुं.) टिटिहरी नामक पक्षी।
राँड़–(हिं.स्त्री.) विधवा स्त्री, वेश्या, रंडी।
राँढ़–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चावल।
राँढना–(हिं. क्रि. अ.) रोना।
राँता–(हिं. वि.) राँगे का बना हुआ।
राँध–(हिं. पुं.) निकट, पास, पड़ोस।
राँधना–(हिं.क्रि.स.) भोजन आदि पकाना।
राँपी–(हिं.स्त्री.) मोचियों का एक औजार जो पतली खुरपी के आकार का होता है।
राँभना–(हिं. क्रि. अ.) गाय का बोलना, रँभाना।
रा–(सं. स्त्री.) विभ्रम, दान; (पुं.) शब्द, धन।
राआ–(हिं. पुं.) राजा।
राइ–(हिं. पुं.) छोटा राजा, राय, सरदार।
राइता–(हिं. पुं.) देखें 'रायता'।
राई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों, बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण; (पुं.) छोटा राजा, राजा; (मुहा.) **–नोन उतारना**–जिस बच्चे को कुदृष्टि (नजर) लगी हो उसके सिर के ऊपर से राई और नमक उतारकर अग्नि में डालना; **–से पर्वत करना**–थोड़ी-सी बात को बहुत बढ़ा देना, रंक को राजा बनाना।
राउ–(हिं पुं.) राजा, नृप।
राउत–(हिं. पुं.) राजवंश का कोई पुरुष, क्षत्रिय।
राउर–(हिं. पुं.) अन्तःपुर; (सर्व.) आपका, श्रीमान् का।
राउल–(हिं. पुं.) देखें 'राउत', राजा।
राकस–(हिं. पुं.) देखें 'राक्षस'।
राकसिन–(हिं.स्त्री.) राक्षसी, निशाचरी।
राका–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसको पहले-पहल रजोदर्शन हुआ हो, पूर्णिमा की रात या चन्द्रमा, शूर्पणखा की माता जो राक्षसी थी; **–चंद्र**–(पुं.) पूर्णिमा का चन्द्रमा, **–रमण**–(पुं.) पूर्ण चंद्रमा।
राकिणी–(सं. स्त्री.) देवी की एक शक्ति जो चौसठ योगिनियों के अन्तर्गत है।
राकेश–(सं. पुं.) पूर्ण चन्द्रमा।
राक्षस–(सं. पुं.) दैत्य, असुर, निशाचर; (पुं.) साठ संवत्सरों में से उनचासवाँ संवत्सर, कुबेर के कोष का रक्षक, दुष्ट प्राणी।
राक्षसग्रह–(सं. पुं.) उन्माद रोग।
राक्षसता–(सं. स्त्री.) राक्षस का भाव या धर्म।
राक्षस-विवाह–(सं. पुं.) वह विवाह जिसमें युद्ध करके कन्या-हरण किया जाता है।
राक्षसी–(सं. स्त्री.) असुर की स्त्री, संध्याकाल; (वि.) राक्षस-जैसा।
राक्षसेंद्र–(सं. पुं.) रावण।

राक्षा–(हिं. स्त्री.) लाक्षा, लाह।
राख–(हिं. स्त्री.) भस्म, राखी।
राखना–(हिं. क्रि. स.) रक्षा करना, बचाना, रखवाली करना, जाने न देना, रोक रखना, कपट करना, छिपाना, आरोप करना, बताना, देखें 'रखना'।
राखी–(हिं. स्त्री.) हाथ की कलाई पर बाँधने का मंगल-सूत्र, रक्षाबन्धन का डोरा, देखें 'राख'।
राग–(सं. पुं.) अनुराग, मोह, चन्द्रमा, सूर्य, नाच, मात्सर्य, प्रीति, प्रेम, अभिमत विषय की अभिलाषा, सांसारिक सुखों की अभिलाषा, ईर्ष्या, द्वेष, कष्ट, पीड़ा, सिन्दूर, आलता, संगीत-शास्त्र का लय-युक्त स्वर, अंग-राग, सुगन्धित लेप जो शरीर पर लगाया जाता है, रंग, विशषतः लाल रंग, एक वर्णवृत्त का नाम; (मुहा.) अपना राग अलापना–अपने ही विषय की बातें करना।
रागद–(सं. वि.) राग उत्पन्न करनेवाला, क्रोध दिलानेवाला।
रागदालि–(सं. पुं.) मसूर।
रागना–(हिं. क्रि. अ.) अलापना, गाना गाना, रँग जाना, अनुरक्त होना, प्रेम करना।
रागनी–(हिं. स्त्री.) संगीत में किसी राग की पत्नी।
रागपट्ट–(सं. पुं.) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।
रागपुष्प, रागप्रसव–(सं.पुं.) गुलदुपहरिया
रागबंध–(सं. पुं.) अनुराग का चिह्न।
रागभंजन–(सं.पुं.) एक विद्याधर का नाम।
रागमाला–(सं. स्त्री.) रागों का समूह।
रागयुज–(सं. पुं.) माणिक्य, मानिक।
रागलता–(सं.स्त्री.) कामदेव की स्त्री, रति।
रागलेखा–(सं.स्त्री.) चन्दन आदि का चिह्न।
रागविवाद–(सं. पुं.) गाली-गलौज।
रागवंत–(सं. पुं.) कामदेव।
रागसारा–(सं. स्त्री.) मैनसिल।
रागांगी–(सं. स्त्री.) मजीठ।
रागांध–(सं. वि.) अति क्रोधी।
रागान्वित–(सं. वि.) क्रोधी, जिसको राग या प्रेम हो।
रागिनी–(सं. स्त्री.) संगीत में किसी राग की पत्नी, विदग्धा स्त्री, जयश्री, मेनका की बड़ी कन्या का नाम।
रागी–(हिं. वि.) अनुरक्त, विषय-वासना में फँसा हुआ, अनुरागी, प्रेमी, रँगनेवाला, रँगा हुआ; (पुं.) मँड़ आ नामक कदन्न; एक छन्द का नाम; (स्त्री.) देखें 'रानी'।
राघव–(सं.पुं.) रघु के वंश में उत्पन्न कोई व्यक्ति, श्रीरामचन्द्र, अज, दशरथ, समुद्र में मिलनेवाली एक बहुत बड़ी मछली।
राचना–(हिं.क्रि. अ., स.) रचना, बनाना, रचा जाना, बनना, रँगा जाना, लीन या मग्न होना, शोभा देना, अच्छा जान पड़ना, प्रसन्न होना, सोच में पड़ना, अनुरक्त होना, रंजित होना, डूबना।
राछ–(हिं. पुं.) जुलाहे के करघे का वह औजार जो ताने के तागे को उठाता और गिराता है, बरात, लोहार का बड़ा हथौड़ा, चक्की के बीच का खूँटा, लकड़ी के भीतर का हीर; –बँधिया–(पुं.) राछ बाँधनेवाला मनुष्य।
राछस–(हिं. पुं.) देखें 'राक्षस'।
राज–(सं.पुं.) देश का अधिकार या प्रबन्ध, प्रजा-पालन की व्यवस्था, शासन, पूर्ण अधिकार, अधिकार का काल, राष्ट्र, देश, जनपद, उतना भूमिभाग जितना एक राजा द्वारा शासित हो, राजा, घर आदि बनानेवाला राजगीर, थवई; (मुहा.)–पर बैठना–राज-सिंहासन पर बैठना; –रजना–बड़े आनन्द से रहना; –क–(पुं.) राजा; (वि.) चमकानेवाला; –कथा–(स्त्री.) राजाओं का इतिहास; –कन्या–(स्त्री.) राजा की पुत्री; –कर–(पुं.) वह कर जो प्रजा से राजा को मिलता है; –करण–(पुं.) न्यायालय, राजनीति; –कण–(पुं.) हाथी की सूँड़; –कर्ता–(पुं.) वह पुरुष जो राजा बनाने की शक्ति रखता है; –कर्म–(पुं.) राजा का कार्य; –कला–(स्त्री.) चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक; –कशेरू–(पुं.) नागरमोथा; –काज–(हिं.पुं.) राजा का कार्य; –कार्य–(पुं.) राजा का काम; –कार्श–(पुं.) शाल वृक्ष; –काष्ठ–(पुं.) बक्कम की लकड़ी; –कीय–(वि.) राजा-संबंधी, राज्य-संबंधी; –कुँअर–(हिं. पुं.) राजकुमार; –कुमार–(पुं.) राजा का पुत्र; –कुमारी–(स्त्री.) राजा की पुत्री; –कुल–(स्त्री.) राजवंश; –कुलक–(पुं.) परवल की लता का नाम; –कृत–(वि.) राजा द्वारा किया हुआ; –कृत्य–(पुं.) राजा का काम; –कोलाहल–(पुं.) संगीत में एक ताल का नाम; –क्रिया–(स्त्री.) राजकार्य; –गद्दी–(हिं. स्त्री.) राजा के बैठने का आसन, राज-सिंहासन, राज्याभिषेक; –गवी–(स्त्री.) गाय की जाति का एक पशु; –गिरि–(पुं.) मगध देश के एक पर्वत का नाम, राजगृह; –गीर–(हिं. पुं.) पक्का घर बनानेवाला, राज, थवई; –गीरी–(स्त्री.) राजगीर का कार्य या पद; –गुरु–(पुं.) राजा का गुरु या उपदेशक; –गृह–(पुं.) राजभवन, मगध राज्य की प्राचीन राजधानी; –गृह–(हिं. पुं.) देखें 'राजभवन'; –चूड़ामणि–(पुं.) संगीत में एक ताल का नाम; –तनय–(पुं.) राजपुत्र; –तरंगिणी–(स्त्री.) कल्हण कवि-कृत काश्मीर का प्राचीन इतिहास जो संस्कृत में लिखा हुआ है; –तरु–(पुं.) अमलतास, सुपारी का पेड़; –तिमिश–(पुं.) तरबूज; –तिलक–(पुं.) किसी नये राजा के राज-सिंहासन पर बैठने का संस्कार, राज्याभिषेक; –त्व–(पुं.) शासन, राजा का पद, राजा का भाव या कर्म; –दंड–(पुं.) राजशासन, वह दण्ड जो राजा की आज्ञा के अनुसार दिया जाय; –दंत–(पुं.) दाँतों की पंक्ति के बीच के वे दाँत जो औरों से बड़े होते हैं; –दर्शन–(पुं.) राजा का दर्शन; –दुहिता–(स्त्री.) राजा की कन्या; –दूत–(पुं.) वह पुरुष जो एक राज्य की ओर से अन्य राज्य में किसी विशिष्ट कार्य के लिए भेजा जाता है; –द्रुम–(पुं.) अमलतास; –द्रोह–(पुं.) राजा अथवा राज्य के विरुद्ध आचरण द्रोह; –द्रोही–(वि.) राजा या राज्य का द्रोही; –द्वार–(पुं.) राजभवन का द्वार, राजा की ड्योढ़ी, विचारालय, न्यायालय; –धर्म–(पुं.) राजा का कर्तव्य या धर्म; –धानी–(स्त्री.) वह प्रधान नगर जहाँ किसी देश का राजा या शासक रहता है, शासनकेन्द्र; –धुर–(पुं.) शासनभार; –नय–(पुं.) राजनीति; –रति–(स्त्री.) वह नीति जिसके अनुसार राजा अपने राज्य का शासन तथा प्रजा की रक्षा करता है; –नीतिक–(वि.) राजनीतिसम्बन्धी; –नील–(पुं.) मरकत-मणि, पन्ना; –न्य–(पुं.) क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, खिरनी का वृक्ष; –०क–(पुं.) क्षत्रियों का समूह; –०त्व–(पुं.) क्षत्रिय का भाव या धर्म; –०बंधु–(पुं.) क्षत्रिय; –पंखी–(हिं.पुं.) राजहंस; –पंथ–(हिं.पुं.) राजपथ; –पट्ट–(पुं.) चुम्बक पत्थर; –पति–(पुं.) राजाधिराज, सम्राट्; –पत्नी–(स्त्री.) राजा की पत्नी; –पथ–(पुं.) वह चौड़ा मार्ग जिस पर हाथी, घोड़े, रथ आदि सुगमता से चल सकते हों, राजमार्ग; –पद्धति–(स्त्री.) राजनीति; –पाल–(पुं.) वह जो राजा या राज्य की रक्षा करता हो;

—पुत्र—(पुं.) राजा का पुत्र, युवराज, एक वर्णसंकर जाति का नाम, बुध ग्रह, बड़े आम का एक भेद, खिरनी का पेड़; —पुत्रा— (स्त्री.) वह स्त्री जिसका पुत्र राजा हो; —पुत्री—(स्त्री.) राजकन्या, जूही का फूल, मालती; —पुरुष—(पुं.) राज्य का कोई अधिकारी; —पुष्प— (पुं.) कनकचम्पा; —पुष्पी— (स्त्री.) वनमल्लिका, जाती पुष्प; —पूजित—(पुं.) वह जिसका राजा की ओर से सत्कार होता हो; —पूज्य—(वि.) राजा का पूजनीय; —पूत—(हिं.पुं.) राजपूताना-निवासी क्षत्रिय जाति विशेष; —प्रकृति—(स्त्री.) राजा का स्वभाव; —प्रिय— (पुं.) राजा का प्रिय-पात्र; —प्रिया—(स्त्री.) लाल रंग का एक प्रकार का धान; —फल—(पुं.) एक प्रकार का वड़ा आम; —फला—(स्त्री.) जंबू, जामुन; —बदर—(पुं.) लाल आमला; —बाड़ी—(हिं. स्त्री.) राजमहल; —बाहा—(हिं. पुं.) प्रधान या बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी-छोटी नहरें खेतों को सींचने के लिय निकाली जाती हैं; —भक्त—(वि.) राजा का भक्त; —भक्ति—(स्त्री.) राजा या राज्य के प्रति भक्ति; —भट—(पुं.) राजसैनिक; —भद्रक—(पुं.) फरहद का वृक्ष, कुँदरू, नीम; —भय—(पुं.) राजा का भय या डर; —भवन—(पुं.) राजा का प्रासाद; —भांडार—(पुं.) राजा का कोष; —भू—(स्त्री.) राजा की भूमि, राज्य; —भृत—(पुं.) राजा का वेतन-भोगी भृत्य; —भृत्य—(पुं.) राजा का सेवक; —भोग—(पुं.) एक प्रकार का महीन धान, उत्तम खाद्य वस्तुएँ जिनका उपभोग राजा करता है; —भोगी—(वि.) उत्तम भोजन करनेवाला; —भोग्य—(वि.) राजा के भोजन-योग्य; (पुं.) एक प्रकार का धान, चिरौंजी; —भोजन—(पुं.) राजा का भोजन; —भ्रातृ—(पुं.) राजा का भाई; —मंडल—(पुं.) किसी बड़े राज्य के आसपास के राज्य; —मंडूक—(पुं.) एक प्रकार का बड़ा मेढक; —मणि—(पुं.) बहुमूल्य रत्न; —मंदिर— (पुं.) राजभवन; —मराल—(पुं.) राजहंस; —महल—(पुं.) राजा का प्रासाद; —माता—(स्त्री.) राजा की माता; —मानुष—(पुं.) वह मनुष्य जो राजा का सेवक हो; —मार्ग— (पुं.) राजपथ, चौड़ी सड़क; —माष—(पुं.) बड़ा उड़द; —मुनि—(पुं.) राजर्षि; —यक्ष्मा—(पुं.) क्षय रोग; —यज्ञ—(पुं.) राजा का किया हुआ यज्ञ; —यान—(पुं.) वह यान या सवारी जो राजा के लिये हो; —योग—(पुं.) ज्योतिष के अनुसार वह योग जिसके प्रभाव से मनुष्य राजा के समान धनवान् और प्रतापी होता है, योग-शास्त्र में बतलाया हुआ योग के विषय का उपदेश; —योग्य—(वि.) राजा के योग्य; —रंग—(पुं.) रजत, चाँदी; —रथ—(पुं.) राजा का रथ; —राज, —राजेश्वर—(पुं.) अधिराज, राजाओं का राजा, चन्द्रमा, कुबेर; —राजेश्वरी—(स्त्री.) महाराज्ञी, दस महाविद्याओं में से एक का नाम, भुवनेश्वरी; —राज्ञी— (स्त्री.) राजा की प्रधान रानी; —रानी— (स्त्री.) राजमहिषी, राज्ञी; —रोग— (पुं.) राजयक्ष्मा, क्षयरोग; —लक्षण—(पुं.) सामुद्रिक के अनुसार वे लक्षण जो मनुष्य का राजा होना सूचित करते हैं; —लक्ष्मा—(पुं.) राजचिह्न, युधिष्ठिर; —लक्ष्मी— (स्त्री.) राजश्री, राजवैभव, राजा की शोभा; —लिंग—(पुं.) राजचिह्न; —वंत—(हिं. वि.) राजा के कम से संयुक्त; —वंश—(पुं.) राजा का कुल; —वंश्य—(वि.) राजा के वंश में उत्पन्न; —वत्—(अव्य.) राजा के समान; —वर्त्म—(पुं.) राजपथ, चौड़ी सड़क; —वल्लभ—(वि.) राजप्रिय; —वल्ली— (स्त्री.) करेले की लता; —वसति— (स्त्री.) राजभवन; —वार—(हिं. पुं.) राजद्वार; —वारुणी—(स्त्री.) एक प्रकार की मदिरा; —वाह—(पुं.) घोड़ा; —वाहन—(पुं.) राजा की सवारी का हाथी; —विजय—(पुं.) संपूर्ण जाति का एक राग; —विद्या—(स्त्री.) राजनीति; —विद्रोह—(पु.) राजविप्लव; —विद्रोही—(वि.,पुं.) राजा से विद्रोह करनेवाला; —विनोद—(पुं.) संगीत के अनुसार एक ताल का नाम; —वीथी—(स्त्री.) चौड़ी सड़क; —वृक्ष—(पुं.) पियाल का पेड़; —वृत्त—(पुं.) राजा का चरित्र; —वेश्म—(पुं.) राजा का भवन; —वेष—(पुं.) राजा का पहिनावा; —शाक—(पुं.) बथुआ का साग; —शालि—(स्त्री.) एक प्रकार का धान; —शासन—(पुं.) राजा का शासन; —शास्त्र—(पुं.) राजनीति शास्त्र; —शुक—(पुं.) लाल रंग का बड़ा तोता, नूरी; —श्री—(स्त्री.) राजा का ऐश्वर्य, राजलक्ष्मी, राजा की शोभा; —स—(पुं.) वह शक्ति जो गुण से उत्पन्न हो, आवेश, क्रोध; —सत्ता—(स्त्री.) राजशक्ति, राज्य की सत्ता; —सत्त्व—(पुं.) राजसत्ता, राजशक्ति; —सदन, —सद्म—(पुं.) राजा का महल; —सभा—(स्त्री.) वह सभा जिसमें अनेक राजा सम्मिलित हों, राजा के मंत्रियों की सभा; —समाज—(पुं.) राजमण्डली; —सर्प—(पुं.) एक प्रकार का बड़ा सर्प; —सात्—(अव्य.) राजा के अधिकार में; —सारस—(पुं.) मयूर, मोर; —सिंहासन—(पुं.) राजा के बैठने का सिंहासन; —सिक—(वि.) रजोगुण से उत्पन्न, राजा के योग्य; —सिरी—(हिं.स्त्री.) देख 'राजश्री'; —सी—(स्त्री.) दुर्गा; (वि.) राजा के योग्य, वैभवपूर्ण, भड़कीला, जिसमें रजोगुण की अधिकता हो; —सुत—(पुं.) राजा का लड़का, राजपुत्र; —सुता—(स्त्री.) राजकन्या, राजा की लड़की; —सूनु—(पुं.) देखें 'राजपुत्र'; —सूय—(पुं.) वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट् को होता है; —सेवक—(पुं.) राजा की सेवा करनेवाला भृत्य, राज-कर्मचारी; —सेवा—(स्त्री.) राजा की सेवा, सरकारी नौकरी; —स्कंध—(पुं.) घोड़ा; —स्त्री—(स्त्री.) राजमहिषी, रानी; —स्थान—(पुं.) राजपूताना; —स्व—(पुं.) भूमि आदि का वह कर जो राजा को दिया जाता है; —स्वामी—(पुं.) विष्णु; —हंस—(पुं.) एक प्रकार का हंस जिसको सोनापक्षी भी कहते हैं; —हर्म्य—(पुं.) राजा का महल।

राजर्षि—(सं. पुं.) वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय-कुल का हो।

राजांगन—(सं.पुं.) राजमहल का आँगन।

राजा—(सं. पुं.) नरपति, अधिपति, स्वामी, प्रेमपात्र, प्रिय व्यक्ति, एक उपाधि जो अंग्रेजी राज्यकाल में धनिकों को दी जाती थी।

राजाग्नि—(सं. पुं.) राजा का कोप।

राजाज्ञा—(सं. स्त्री.) राजा की आज्ञा।

राजादनी—(सं. स्त्री.) खिरनी का पेड़।

राजाद्रि—(सं.पुं.) एक प्रकार का अदरक।

राजाधिकारी—(सं. पुं.) न्यायालय में बैठकर विचार करनेवाला, न्यायाधीश।

राजाधिकृत—(सं. वि.) राजाधिकारी।

राजाधिराज—(सं.पुं.) अधिराज, राजाओं का राजा।

राजाधिष्ठान–(सं. पुं.) किसी राजा की राजधानी।
राजाध्वन्–(स.पुं.) राजमार्ग, चौड़ी सड़क
राजानक–(सं. पुं.) छोटा राजा।
राजाभियोग–(सं. पुं.) राजा का प्रजा से हठपूर्वक कोई काम कराना।
राजाभिषेक–(सं. पुं.) राजा का अभिषेक जिसके होने पर वह शासन-भार ग्रहण करता है।
राजाम्र–(सं.पुं.) उत्तम जाति का आम।
राजाम्ल–(सं. पुं.) अमलबेत।
राजार्ह–(सं. पुं.) अगर, कपूर, जामुन का वृक्ष।
राजार्हण–(सं. पुं.) राजा का दान।
राजालुक–(सं. पुं.) मूली, मुरई।
राजावर्त–(सं.पुं.) लाजवर्द नामक रत्न।
राजासन–(सं. पुं.) राजाओं के बैठने का आसन।
राजि, राजी–(सं. स्त्री.) श्रेणी, पंक्ति, लकीर, सर्षप, राई।
राजिका–(सं.स्त्री.) पंक्ति, लकीर, राई, क्यारी, रेखा; **–फल**–(पुं.) लाल सरसों।
राजित–(सं. वि.) शोभित शोभायुक्त, विराजमान।
राजिव–(हिं. पुं.) देखें 'राजीव', कमल।
राजी–(अ. वि.) अनुकूल, बात मानने को तैयार, सहमत, रजामंद, आरोग्य, प्रसन्न, खुशी; (स्त्री.) अनुकूलता, सहमति; **–खुशी**–(हिं.स्त्री.) सुख और आरोग्य; **–नामा**–(फा. पुं.) स्वीकृति पत्र, सुलहनामा, लिखित स्वीकृति युक्त प्रमाणपत्र।
राजीफल–(सं. पुं.) परवल।
राजीव–(सं. पुं.) पद्म, कमल, नील कमल, हाथी **–गण**–(पुं.) एक प्रकार का मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं, (इसका दूसरा नाम माला है); **–लोचन**–(वि.) कमल की तरह आँखोंवाला।
राजीविनी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का कमल।
राजुक–(सं. पुं.) मौर्य शासन-काल का एक कर्मचारी, कायस्थ।
राजेंद्र–(सं. पुं.) राजश्रेष्ठ, राजाओं का राजा, सामन्त।
राजेय–(सं. पुं.) परवल।
राजेश्वर–(सं. पुं.) राजाओं में श्रेष्ठ।
राजेष्ट–(सं. पुं.) लाल रंग का प्याज।
राजेष्टा–(सं. स्त्री.) पिंडखजूर।
राजोपकरण–(सं.पुं.) राजाओं के लक्षण।
राजोपजीवी–(सं. पुं.) राजकर्मचारी, जिसकी जीविका राज-सेवा से चलती हो।
राजोपसेवा–(सं. स्त्री.) राज-सेवा, सरकारी नौकरी।
राजोपसेवी–(सं. स्त्री.) राजकर्मचारी।
राज्ञी–(सं. स्त्री.) राजपत्नी, रानी, काँसा, नील का पेड़।
राज्य–(सं. पुं.) राजत्व, राजा का काम, राष्ट्र, जनपद; **–कर**–(पुं.) राज्य-शासन; **–कर्ता**–(पुं.) राज्य के प्रशासन-विभाग का कर्मचारी; **–कृत्**–(पुं.) राज्य का शासक; **–च्युत**–(वि.) राजसिंहासन से उतारा हुआ; **–च्युति**–(स्त्री.) राजा का राजगद्दी से उतार दिया जाना; **–तंत्र**–(पुं.) राज्य की शासन-प्रणाली; **–देवी**–(स्त्री.) राज-कुल की देवी, रानी; **–द्रव्य**–(पुं.) राजतिलक की सामग्री; **–धर**–(पुं.) राज्यपालक; **–परिभ्रष्ट**–(वि.) राज्यच्युत; **–पाल**–(पुं.) राजा; **–प्रद**–(वि.) राज्य देनेवाला; **–भंग**–(पुं.) राज्य का नाश; **–भार**–(पुं.) राज्य के शासन का भार; **–भेदकर**–(वि.) राज्य का नाश करनेवाला; **–भोग**–(पुं.) राज्य-शासन; **–भ्रंश**–(पुं.) राज्य का नाश; **–भ्रष्ट**–(पुं.) देखें 'राज्यच्युत'; **–रक्षा**–(स्त्री.) राज्य की रक्षा का कार्य; **–लक्ष्मी**–(स्त्री.) विजय, कीर्ति, राज्यश्री; **–लीला**–(स्त्री.) राज्य का कार्य; **–लोभ**–(पुं.) राज्य प्राप्त करने की आकांक्षा; **–वर्धन**–(पुं.) राज्य की वृद्धि करनेवाला राजा; **–व्यवस्था**–(स्त्री.) राज्य-शासन करने का नियम; **–व्यवहार**–(पुं.) राजकाज; **–श्री**–(स्त्री.) राज्यलक्ष्मी; **–सभा**–(स्त्री.) राज्य की व्यवस्थापिका सभा; **–सुख**–(पुं.) राजा का आनन्द; **–स्थ**–(वि.) राज्य में स्थित; **–स्थायी**–(वि.) शासन करनेवाला; **–स्थिति**–(स्त्री.) राज्य का शासन हाथ में लेना; **–हर**–(वि.) राज्य का ध्वंस करनेवाला।
राज्यांग–(सं.पुं.) राज्य के साधक सात अंग, यथा—स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल और सुहृद्।
राज्याधिकार–(सं.पुं.) राज्य का अधिकार।
राज्याधिपति–(स.पुं.) राज्य का अधिपति, राजा।
राज्याभिषिक्त–(सं. वि.) जिसका राज्याभिषक हुआ हो।
राज्याभिषेक–(सं.पुं.) किसी नये राजा को राजसिंहासन पर बैठाना, अभिषेक, राजगद्दी।
राज्येश्वर–(सं. पुं.) राज्याधिपति।
राज्यैश्वर्य–(सं. पुं.) राज्यरूप ऐश्वर्य।
राज्योपकरण–(सं. पुं.) राजचिह्न।
राट्–(सं.पुं.) राजा, सरदार, श्रेष्ठ पुरुष।
राटुल–(हिं. पुं.) लोहा-लकड़ी आदि तौलने का बड़ा तराजू।
राठ–(सं.पुं.) मदन वृक्ष; (हिं. पुं.) राज्य, राजा।
राठवर, राठौर–(हिं.पुं.) मारवाड़वासी राजपूतों की एक शाखा।
राड़–(हिं. वि.) नीच, निकम्मा।
राढ़–(हिं. स्त्री.) झगड़ा; (वि.) नीच।
राढ़ा–(सं.स्त्री.) शोभा, कान्ति; (हिं.पुं.) वंगदेश के उत्तरी भाग का पुराना नाम।
राढीय–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मोटी घास।
राणा–(हिं.पुं.) राजा, (इस शब्द का प्रयोग राजपूताना के कुछ राजाओं तथा नेपाल के उच्च सामंतों के लिये होता है।)
राणिका–(सं. स्त्री.) घोड़े की लगाम।
रातंग–(हिं.पुं.) गृध्र, गीध।
रात–(हिं.स्त्री.) रात्रि, रजनी, निशा, संध्या से प्रातःकाल तक का समय। **–दिन**–(अव्य.) सर्वदा।
रातना–(हिं. क्रि. अ.) अनुरक्त होना, रँगा जाना।
राता–(हिं.वि.) रँगा हुआ, लाल रंग का।
रातिचर–(हिं. पुं.) निशाचर, राक्षस।
रातिब–(फा. पुं.) पशुओं का चारा, भूसा आदि।
रातुल–(सं.पुं.) शुद्धोदन के एक पुत्र का नाम।
रातैल–(हिं. पुं.) लाल रंग का एक छोटा कीड़ा।
रात्र–(सं.पुं.) रात्रि, रात, निशा, रजनी।
रात्रि–(सं. स्त्री.) हल्दी, रजनी, रात; **–क**–(पुं.) एक प्रकार का विच्छू; **–कर**–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; **–काल**–(पुं.) रजनी, रात; **–कृत्य**–(पुं.) रात में किया जानेवाला कार्य; **–चर**–(पुं.) राक्षस; **–चर्या**–(स्त्री.) रात में करने का कर्त्तव्य; **–चारी**–(वि.,पुं.) रात को विचरनेवाला; **–ज**–(पुं.) नक्षत्र, तारे आदि; **–जागर**–(पुं.) कुत्ता, रतजगा; **–जागरण**–(पुं.) रतजगा; **–तिथि**–(स्त्री.) शुक्ल पक्ष की रात; **–दोष**–(पुं.) स्वप्नदोष आदि विकार; **–नाशन**–(पुं.) सूर्य; **–पुष्प**– (पुं.)

कमल; -पूजा-(स्त्री.) रात में किया जानेवाला पूजन; -बल-(पुं.) राक्षस; (वि.) रात में बलवान्; -भोजन-(पुं.) रात का खाना; -भट-(पुं.) राक्षस; (वि.) रात में विचरनेवाला; -मणि-(पुं.) चन्द्रमा, निशाकर; -योग-(पुं.) रात्रि का आगमन; -रक्षक-(पुं.) रात का पहरेदार; -राग-(पुं.) अन्धकार, अँधेरा; -वासस्-(पुं.) देखें 'रात्रिराग'; -विगम-(पुं.) प्रभात, सवेरा; -वेद-(पुं.) कुक्कुट, मुर्गा; -हास-(पुं.) कुमुदिनी, कुई; -हिंडक-(पुं.) राजाओं के अन्तःपुर का रक्षक (पहरेदार)।

रात्री-(हिं. स्त्री.) रात, हल्दी।

रात्र्यंध-(सं. वि.) जिसको रात में दिखाई न पड़ता हो।

रात्र्यंधता-(सं.स्त्री.) रतौंधी का रोग।

रात्र्यट्-(सं. पुं.) राक्षस; (वि.) रात में घूमनेवाला।

राद्ध-(सं.वि.) पकाया हुआ, ठीक किया हुआ।

राध-(हिं. पुं.) पीब, मवाद।

राधन-(सं.पुं.) साधने की क्रिया, सन्तोष, तुष्टि, प्राप्ति, साधन।

राधना-(हिं. क्रि. स.) सिद्ध करना, पूरा करना, साधना, काम निकालना, आराधना करना, पूजा करना।

राधा-(सं.स्त्री.) विशाखा नक्षत्र, बिजली, वैशाख की पूर्णिमा, प्रीति, श्रीराधिका, (वृषभानु गोप की कन्या), एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं; -कांत-(पुं.) श्रीकृष्ण; -कृष्ण-(पुं.) राधा और कृष्ण; -तनय-(पुं.) कर्ण; -मोहन-(पुं.) श्रीकृष्ण; -रमण-(पुं.) श्रीकृष्ण; -वल्लभ-(पुं.) श्रीकृष्ण; -वल्लभी-(हिं. पुं.) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय; -विनोद-(पुं.) श्रीकृष्ण; -सुत-(पुं.) कर्ण।

राधिका-(सं. स्त्री.) श्रीकृष्ण की प्रेमिका, (वृषभानु गोप की कन्या), एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बाईस मात्राएँ होती है।

राधिकारमण-(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।

राधेय-(सं. पुं.) कर्ण।

राधेश, राधेश्वर-(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।

राध्य-(सं. वि.) स्तुति करने योग्य।

रानतुरई-(हिं. स्त्री.) कड़ुई तरोई।

राना-(हिं.पुं.) देखें 'राणा'; (क्रि. अ.) अनुरक्त होना; -पति-(पुं.) सूर्य।

रानी-(हिं.स्त्री.) राजा की पत्नी, राजा की स्त्री, स्वामिनी, स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द।

रानीकाजर-(हिं.पुं.) एक प्रकार का धान।

रापी-(हिं. स्त्री.) चमारों का चमड़ा स्वच्छ करने का एक औजार।

राब-(हिं. स्त्री.) आँच पर औटाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

राबड़ी-(हिं. स्त्री.) औटाकर तथा चीनी मिलाकर गाढ़ा किया हुआ दूध, बसौंधी।

राबना-(हिं. पुं.) खेत में खाद देने की एक विशेष विधि।

राभस्य-(सं. पुं.) आग्रह, हठ, आनन्द।

राम-(सं. वि.) सुन्दर, सफेद; (पुं.) परशुराम सूर्यवंशीय राजा दशरथ के पुत्र जो अवतार माने जाते हैं, कृष्ण के बड़े भाई बलराम, अशोक वृक्ष, वरुण, घोड़ा, तीन की संख्या, एक मात्रिक छन्द; (मुहा.) -राम करना-अभिवादन या प्रणाम करना, राम नाम जपना; -राम करके-किसी न किसी प्रकार से, बड़ी कठिनाई से; -राम होना-मर जाना; -कजरा-(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान; -कली-(स्त्री.) एक रागिनी का नाम; -काँटा-(हिं.पुं.) एक प्रकार का बबूल; -किरि-(स्त्री.) एक रागिनी का नाम; -कुमार-(पुं.) लव और कुश; -कृष्ण-(पुं.) बलराम और श्रीकृष्ण; -केला-(पुं.) एक प्रकार का बढ़िया केला, एक प्रकार का बढ़िया आम; -गीती-(स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छत्तीस मात्राएँ होती हैं; -चंद्र-(पुं.) अयोध्या के राजा इक्ष्वाकुवंशीय महाराज दशरथ के पुत्र जो विष्णु के एक अवतार माने जाते हैं; -चर-(पुं.) बलराम; -चरित-(पुं.) दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र की जीवनी; -चिड़िया-(हिं.स्त्री.) मछरंझा नामक जल-पक्षी; -ज-(पुं.) राम के पुत्र; -जननी-(स्त्री.) बलदेवजी की माता रोहिणी, रामचन्द्र की माता कौशल्या; -जना-(हिं. पुं.) एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति करती हैं; -जनी-(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी; -जमनी-(हिं. पुं.) एक प्रकार का बहुत महीन चावल; -जौ-(हिं. पुं.) एक प्रकार की जई; -झोल-(हिं. पुं.) पैर में पहनने का पाजेब; -टोड़ी-(हिं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम; -ठ-(पुं.) अखरोट का वृक्ष, हींग; -ण-(पुं.) तेंदू का वृक्ष; -तरुणी-(स्त्री.) राम की पत्नी सीता; -तरोई-(हिं. स्त्री.) भिंडी नाम की तरकारी; -ता-(स्त्री.) राम का गुण; -तारक-(पुं.) "रां रामाय नमः" मंत्र जिसको राम के उपासक जपते हैं; -त्व-(पुं.) देखें 'रामता'; -दल-(पुं.) श्रीरामचन्द्र की वानरी सेना, ऐसी प्रबल सेना जिसको हराना कठिन हो; -दाना-(हिं.पुं.) मरसे या चौराई की जाति का एक पौधा जिसमें बहुत छोटे सफेद दाने लगते हैं; -दास-(पुं.) हनुमान्, एक प्रकार का धान, शिवाजी के गुरु जो एक बड़े महात्मा थे; -दूत-(पुं.) हनुमानजी; -दूती-(स्त्री.) एक प्रकार की तुलसी; -देव-(पुं.) रामचन्द्र; -द्वादशी-(स्त्री.) जेठ सुदी द्वादशी; -धनुष-(पुं.) इन्द्रधनुष; -धाम-(पुं.) साकेत लोक जहाँ भगवान् नित्य राम-रूप में विराजमान हैं; -ननुवा-(हिं. पुं.) घीया, कद्दू; -नवमी-(स्त्री.) चैत्र शुक्ला नवमी जिस दिन रामचन्द्र का जन्म हुआ था; -नामी-(हिं.स्त्री.) वह चादर या दुपट्टा जिस पर 'राम राम' छपा रहता है, एक प्रकार का गले का हार जिसके बीच के पान-पत्र पर 'राम' अंकित रहता है; -नौमी-(हिं. स्त्री.) देखें 'रामनवमी'; -पात-(हिं.पुं.) नील की जाति का एक पौधा; -फल-(हिं. पुं.) सीताफल, शरीफा; -बँटाई-(हिं. स्त्री.) आधे-आध का विभाग; -बाँस-(हिं. पुं.) एक प्रकार का मोटा बाँस जो पालकी के डंडे बनाने के काम में आता है, केवड़े की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियों के रेशे से रस्से बनाये जाते हैं; -बान-(हिं.वि.) तुरत प्रभाव दिखानेवाला; (पुं.) नरसल, एक प्रकार की ऊख; -बिलास-(हिं.पुं.) एक प्रकार का धान; -भक्त-(पुं.) रामचन्द्र का उपासक; हनुमान; -भद्र-(पुं.) श्रीरामचन्द्र; -भोग-(हिं.पुं.) एक प्रकार का चावल, एक प्रकार का आम; -रक्षा-(पुं.) रामजी का एक स्तोत्र; -रज-(पुं.) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं; -रतन-(हिं. पुं.) चन्द्रमा; -रस-(हिं. पुं.) नमक, पीसी हुई भाँग; -राज्य-(पुं.) रामचन्द्र का शासन जो प्रजा के लिये अत्यन्त सुखदायक था, आदर्श शासन-व्यवस्था; -रास-

(हिं. पुं.) प्रणाम, नमस्कार, भेंट; **–रौला**–(हिं. पुं.) कोलाहल; **–ल**–(वि.) रमल सम्बन्धी; **–लवण**–(पुं.) साँभर नोन; **–लीला**–(स्त्री.) रामजी के जीवनकाल के किसी कृत्य का अभिनय या नाटक, एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएँ होती हैं; **–बाण**–(पुं.) एक प्रकार की ऊख; (वि.) जो तुरंत उपयोगी सिद्ध हो, तुरत प्रभाव दिखलानेवाला, अमोघ; **–शर**–(पुं.) एक प्रकार का सरकंडा जो ऊख के खेत में आप से आप उगता है; **–शिला**–(स्त्री.) गया की एक पहाड़ी जिसको लोग तीर्थ मानते हैं; **–श्री**–(पुं.) एक राग का नाम; **–संडा**–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास; **–सखा**–(पुं.) सुग्रीव; **–सनेही**–(हिं.पुं.) एक वैष्णव सम्प्रदाय, रामभक्त; **–सुंदर**–(हिं. पुं.) एक प्रकार की नाव; **–सेतु**–(पुं.) दक्षिण भारत की अन्तिम सीमा पर रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह; **–सेनक**–(पुं.) कटहल; **–सेवक**–(पुं.) कटहल।

रामा–(सं. स्त्री.) सुन्दर स्त्री, अच्छा गाना गानेवाली स्त्री, हींग, ईंगुर, सफेद भटकटैया, आर्या-छन्द का एक भेद, कार्तिक बदी एकादशी, उपजाति-वृत्त का एक भेद, शीतला, गोरोचन, घीकुआर, अशोक, गेरू, तमाखू, सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी, राधा, आठ अक्षरों का वृत्त; **–तुलसी**–(स्त्री.) एक प्रकार की तुलसी।

रामानंद–(सं. पुं.) एक वैष्णव धर्म प्रचारक साधु (१३५६-१४६७)।

रामानंदी–(सं. वि., पुं.) रामानंद सम्प्रदाय का (अनुयायी)।

रामानुज–(सं.पुं.) रामचन्द्रजी के छोटे भाई लक्ष्मण, वैष्णव सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध आचार्य (१०७३-११९४), (इनका सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत-वेदान्त कहलाता है।)

रामायण–(सं.पुं.) वाल्मीकि ऋषि का संस्कृत में रचा हुआ आदि-काव्य, तुलसीदास का रामायण।

रामायणी–(सं. वि.) रामायण संबंधी; (पुं.) रामायण का पंडित।

रामायन–(हिं. पुं.) देखें 'रामायण'।

रामावत–(सं.पुं.) रामानंद का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।

रामिल–(सं.पुं.) रमण, कामदेव, पति।

रामेश्वर–(सं. पुं.) दक्षिण भारत के समुद्र तट पर स्थित एक स्थान जहाँ पर श्रीरामचन्द्र द्वारा स्थापित एक शिवलिंग है।

राय–(फा. स्त्री.) निर्णय, मत।

राय–(सं. पुं.) छोटा राजा, सरदार, वन्दी, भाट, गन्धर्वों की एक उपाधि; **–बहादुर**–(पुं.) ब्रिटिश शासनकाल की एक उपाधि; **–बेल**–(हिं. स्त्री.) सुगन्धित फूलों की एक प्रकार की लता; **–भोग**–(पुं.) देखें 'राजभोग', एक प्रकार का धान; **–मुनी**–(स्त्री.) लाल नामक पक्षी की मादा, सदिया; **–रायान**–(पुं.) राजाओं का राजा, बादशाह, सम्राट्; **–रासि**–(स्त्री.) राजा का कोष; **–साहब**–(पुं.) रायबहादुर।

रायज–(अ. वि.) जो व्यवहार में आ रहा हो, प्रचलित, चलनसार।

रायण–(सं.पुं.) क्रन्दन, रोना, चीत्कार।

रायता–(हिं. पुं.) उबाला हुआ साग, कुम्हड़ा, लौवा, बुँदिया आदि जिसमें दही, नमक, मिर्च आदि मिलाया रहता है।

रायसा–(हिं.पुं.) वह काव्य जिसमें किसी राजा का जीवन-चरित वर्णित हो, रासो।

रायस्काम–(सं. वि.) धन की इच्छा करनेवाला।

रार–(हिं. पुं.) झगड़ा।

रारा–(हिं. पुं.) ज्योति, प्रकाश।

राल–(हिं. स्त्री.) धूना का वृक्ष, वह तरल गोंद जो इस वृक्ष से निकाला जाता है, पतला लसदार थूक, लार।

राली–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का बाजरा।

राव–(सं. पुं.) ध्वनि, शब्द; (हिं. पुं.) राजा, सरदार, श्रीमान्, धनिक, भाट, राजपूताना के कुछ राजाओं की पदवी; **–बहादुर**–(पुं.) रायबहादुर; **–साहब**–(पुं.) रायसाहब।

रावचाव–(हिं.पुं.) नाच-गाने का उत्सव, राग-रंग।

रावट–(हिं. पुं.) राजभवन।

रावटी–(हिं. स्त्री.) कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का घर, छोलदारी।

रावण–(सं. पुं.) लंकाधिपति, दशकन्धर, लंकेश, दशानन।

रावणारि–(सं. पुं.) रावण को मारनेवाले श्रीरामचन्द्र।

रावत–(हिं. पुं.) छोटा राजा, सरदार, शूरवीर, सेनापति, बड़ा योद्धा।

रावन–(हिं.पुं.) देखें 'रावण'; **–गढ़**–लंका।

रावना–(हिं. क्रि.स.) रुलाना।

रावर–(हिं.सर्व.) भवदीय, आपका; (पुं.) अन्तःपुर, रनिवास।

रावरखा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी ऊँचा वृक्ष।

रावल–(हिं.पुं.) अन्तःपुर, राजा, प्रधान, सरदार, एक प्रकार का आदरसूचक संबोधन का शब्द, राजपूत सामन्तों की एक उपाधि।

राशि–(सं. पुं.) अन्न आदि का समूह, पुंज, समुच्चय, ढेर, राशिचक्र का बारहवाँ भाग, बारह राशियाँ–मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन हैं; **–चक्र**–(पुं.) ग्रहों के चलने का मार्ग या वृत्त, भचक्र, ज्योतिषचक्र; **–नाम**–(पुं.) किसी बालक का वह नाम जो नामकरण के समय राशि के अनुसार रखा जाता है; **–भोग**–(पुं.) उतना समय जितना किसी ग्रह का किसी राशि में रहने में लगता है।

राशी–(अ. वि.) उत्कोच लेनेवाला, घूसखोर।

राशीकरण–(सं. पुं.) इकट्ठा करना।

राशीकृत–(सं. वि.) इकट्ठा किया हुआ।

राष्ट्र–(सं. पुं.) राज्य, देश, प्रजा, वह बाधा जो संपूर्ण देश में व्याप्त हो, वह जनसमूह जो किसी देश या राज्य में बसता हो; **–क**–(पुं.) राज्य, देश; **–कर्षण**–(पुं.) राजा का प्रजा पर अत्याचार करना; **–काम**–(वि.) राज्य पाने की इच्छा करनेवाला; **–कूट**–(पुं.) दाक्षिणात्य का प्राचीन क्षत्रिय राजवंश; **–गुप्ति**–(स्त्री.) राज्य की रक्षा; **–गोप**–(पुं.) राष्ट्र की रक्षा करनेवाला; **–तंत्र**–(पुं.) राज्य पर शासन करने की प्रणाली; **–दा**–(वि.,स्त्री.) राज्य देनेवाली; **–निवास**–(पुं.) जनपद, देश; **–पति**–(पुं.) किसी राष्ट्र का स्वामी, आधुनिक प्रजातन्त्र शासनप्रणाली में बहुमत से चुना हुआ शासक; **–पाल**–(पुं.) राष्ट्रपति; **–भंग**–(पुं.) राज्य का नाश; **–भय**–(पुं.) राज्य के ऊपर शत्रु के आक्रमण का भय; **–भृत्**–(पुं.) राजा, शासक; **–भृति**–(स्त्री.) राज्य का पालन करने की विधि; **–भृत्य**–(पुं.) राज्य का शासन करनेवाला; **–भेद**–(पुं.) राष्ट्र में विभेद

करने की नीति; –वर्धन–(पुं.) राज्य की वृद्धि; –वासी–(पुं.) राष्ट्र में रहनेवाला; –विप्लव–(पुं.) विद्रोह, बलवा।
राष्ट्रांतपाल–(सं. पुं.) सीमान्त राज्य।
राष्ट्रांतपालक–(सं. पुं.) राज्य की सीमा का रक्षक।
राष्ट्रि–(सं. स्त्री.) राजेश्वरी, रानी।
राष्ट्रिक–(सं. वि.) राष्ट्र-संबंधी।
राष्ट्रीय–(सं.वि.) राष्ट्र-संबंधी, राष्ट्र का।
रास–(सं. पुं.) कोलाहल, ध्वनि, गूंज, गोपियों की एक क्रीड़ा जिसमें वे श्रीकृष्ण के साथ घेरा बनाकर नाचती थीं, वह नाटक जिसमें श्रीकृष्ण की इस लीला का अभिनय होता है; (हिं. स्त्री.) ढर, समूह, जोड़, चौपायों का झुंड, सूद, ब्याज, ज्योतिष की राशि, गोद, एक प्रकार का अगहनिया धान, एक प्रकार का छन्द, घोड़े की लगाम, बागडोर; (वि.) अनुकूल, ठीक, दुरुस्त।
रासक–(सं. पुं.) हास्य-रस प्रधान एक नाटक जिसमें केवल एक अंक होता है।
रासताल–(सं. पुं.) तेरह मात्राओं के एक ताल का नाम।
रासधारी–(सं.पुं.) वह मंडली या व्यक्ति जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।
रासन–(सं. पुं.) स्वाद लेना।
रासनशीन–(हिं. वि.,पुं.) गोद लिया हुआ, दत्तक।
रासना–(हिं. पुं.) देखें 'रास्ना'।
रासनृत्य–(सं. पुं.) गोपियों का नृत्य, नाच का एक भेद।
रासभ–(सं. पुं.) गर्दभ, वैशाखनन्दन, गदहा, अश्वतर, खच्चर।
रासभी–(सं. स्त्री.) गधी।
रासभूमि–(स. स्त्री.) रासक्रीड़ा करने का स्थान।
रासमंडल–(सं. पुं.) रासक्रीड़ा करने का स्थान, रासलीला करनेवालों का समूह, वह अभिनय जो रासधारी करते हैं।
रासमंडली–(सं. स्त्री.) रासधारियों का समाज।
रासयात्रा–(सं. स्त्री.) कार्तिकी पूर्णिमा को होनेवाला एक उत्सव।
रासलीला–(सं. स्त्री.) वह क्रीड़ा या नृत्य जो कृष्ण ने गोपियों के साथ किया था, रासधारियों का अभिनय।
रासविहारी–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
रासायनिक–(सं. वि.) रसायन-शास्त्र-संबंधी; (पुं.) रसायन-शास्त्र का जानकार।
रासि–(हिं. स्त्री.) देखें 'राशि'।
रासी–(हिं.स्त्री.) सज्जी; (वि.) कृत्रिम, बुरा, छोटी नाप का।
रासु–(हिं. वि.) सरल, सीधा।
रासेरस–(सं. पुं.) श्रृंगार, रासलीला उत्सव, हँसी-दिल्लगी।
रासेश्वरी–(सं. स्त्री.) राधा।
रासो–(हिं. पुं.) किसी राजा का पद्यमय जीवन-चरित जिसमें विशेषतः उसके युद्धों, विजयों, वीरता आदि का वर्णन रहता है।
रास्ता–(फा. पुं.) मार्ग, पथ, प्रथा, चाल; (मुहा.) –देखना– प्रतीक्षा करना; –पकड़ना–चला जाना; –बतलाना–उपाय बतलाना, बहाना करके टालना, झूठ कहकर धोखा देना (व्यंग्य)।
रास्ना–(सं.स्त्री.) सर्पगन्धा नामक औषधि।
रास्य–(सं. वि.) रासके योग्य; (पुं.) श्रीकृष्ण।
राह–(फा. पुं.) रास्ता, मार्ग, पथ, चाल, प्रथा।
राह-खर्च–(फा. पुं.) यात्रा-व्यय, सफर-खर्च; (मुहा.) देखें 'रास्ता'।
राह-चलता–(हिं. पुं.) रास्ता चलनेवाला, पथिक, बटोही, अपरिचित व्यक्ति।
राह-चौरंगी–(हिं. पुं.) चौराहा।
राहजन–(फा. पुं.) डाकू, लुटेरा।
राहजनी–(फा. स्त्री.) डकैती, लूट।
राहत–(अ. स्त्री.) सुख, आनन्द, चैन।
राहदारी–(फा.स्त्री.) चुंगी,नागरिक कर।
राहना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'रहना', मोटी रेती से रगड़कर चिकना करना।
राहरीति–(हिं.स्त्री.) जान-पहचान,परिचय।
राहा–(हिं. पुं.) चक्की के नीचे मिट्टी का चबूतरा।
राही–(फा. पुं.) यात्री, पथिक।
राहु–(सं.पुं.) पुराणों के अनुसार नवग्रहों में से एक ग्रह; (हिं.पुं.) रोहू मछली; –ग्रसन– (पुं.) राहु द्वारा ग्रस्त होना; –भेदी–(पुं.) विष्णु; –रत्न–(पुं.) गोमेदक मणि; –ल–(पुं.) गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम; –संस्पर्श–(पुं.) सूर्य या चन्द्रग्रहण; –सूतक–(पुं.) ग्रहण; –स्पर्श–(पुं.) सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण; –हन्–(पुं.) विष्णु।
राहूच्छिष्ट–(सं. पुं.) लहसुन।
राहेल–(सं.पुं.) यहूदियों की एक उपजाति का नाम।
रिंगन–(हिं. स्त्री.) घुटनों के बल चलना।
रिंगना–(हिं. क्रि. अ.) रेंगना, घूमना-फिरना, दौड़ना, धीरे-धीरे चलना।
रिंगल–(हिं.पुं.) एकप्रकार का पहाड़ी बाँस।
रिआयत–(अ. स्त्री.) कृपापूर्ण व्यवहार, कमी, छूट, सहूलियत।
रिआया–(अ. स्त्री.) प्रजा।
रिकवँछ–(हिं.स्त्री.) उड़द की पीठी तथा अरुई के पत्तों से बना हुआ एक खाद्य पदार्थ।
रिकशा–(अं. पुं.) प्रसिद्ध दो या तीन पहियावाली सवारी गाड़ी।
रिकाब–(हिं. स्त्री.) देख 'रकाब'।
रिकाबी–(हिं. स्त्री.) कटोरी।
रिक्त–(सं.पुं.) वन, जंगल; (वि.) शून्य, खाली, निर्धन, गरीब; –क– (वि.) खाली; –कुंभ– (पुं.) ऐसी बोली जो समझ में न आवे; –कृत–(वि.) खाली किया हुआ; –ता– (स्त्री.) शून्यता; –पाणि–(वि.) निर्धन; –भांड–(पुं.) बुद्धिहीन व्यक्ति; –मति–(वि.) शून्य-चित्त; –हस्त–(वि.) जिसके पास एक पैसा भी न हो, निर्धन।
रिक्ता–(सं. स्त्री.) चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ।
रिक्ताक–(सं.पुं.) रविवार को पड़नेवाली रिक्ता तिथि।
रिक्थ–(सं. पुं.) उत्तराधिकार में मिला हुआ धन या सम्पत्ति; –ग्राह–(वि.) रिक्थ पानेवाला; –जात–(पुं.) मृत व्यक्ति की सब सम्पत्ति; –भागी–(वि.) रिक्थग्राह; –हर–(पुं.) रिक्थभागी; –हार, –हारी–(पुं.) वह जो रिक्थ का अधिकारी हो।
रिक्थी–(सं. वि.) जिसको उत्तराधिकार में धन या सम्पत्ति मिले।
रिक्ष–(हिं. पुं.) देख 'ऋक्ष', रीछ, भालू।
रिक्षा–(सं. स्त्री.) लीख।
रिचा–(हिं. स्त्री.) देखें 'ऋचा'।
रिच्छ–(हिं. पुं.) भालू।
रिजु–(हिं. वि.) देखें 'ऋजु'।
रिझकवार, रिझवार, रिझवैया–(हिं. पुं.) किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला, अनुराग करनेवाला, प्रेमी, गुणग्राहक।
रिझाना–(हिं. क्रि. स.) अपने ऊपर किसी को प्रसन्न कर लेना, लुभाना, किसी को अपना प्रेमी बना लेना।
रिझायल–(हिं. वि.) रीझनेवाला।
रिझाव–(हिं. पुं.) किसी के ऊपर प्रसन्न होने का भाव।
रिझावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'रिझाना'।
रित, रितु–(हिं. स्त्री.) देखें 'ऋतु'।
रितवना–(हिं. क्रि. स.) खाली करना।
रितुवंती–(हिं. स्त्री.) रजस्वला स्त्री।

रिद्ध–(सं. वि.) पका या रींधा हुआ।
रिद्धि–(हि. स्त्री.) देखें 'ऋद्धि'।
रिधम–(सं. पुं.) कामदेव, वसन्त।
रिन–(हि. पुं.) देखें 'ऋण'।
रिनवंधी–(हि. वि.) ऋणी।
रिनिआँ (याँ)–(हि. वि.) ऋणी।
रिनी–(हि. वि.) देखें 'ऋणी'।
रिप–(हि. पुं.) रिपु, शत्रु।
रिपु–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी; –घाती–(वि.) शत्रुओं का नाश करनेवाला; –ता–(स्त्री.) शत्रुता, वैमनस्य।
रिमझिम–(हि. स्त्री.) जल की छोटी-छोटी बूंदों की वर्षा, फूही।
रिमहर–(हि. पुं.) शत्रु।
रिमिका–(हि. स्त्री.) काली मिर्च की लता।
रियासत–(अ. स्त्री.) राज्य, रईस होने का भाव, अमीरी, विभव।
रिरंसा–(सं. स्त्री.) रमण करने की इच्छा।
रिरसु–(सं. वि.) रमण की इच्छा करनेवाला
रिर–(हि. स्त्री.) हठ, गिड़गिड़ाना।
रिरक्षा–(सं. स्त्री.) रक्षा करने की इच्छा।
रिरना–(हि. क्रि. अ.) दीनता प्रकट करना।
रिरहा–(हि. वि.) गिड़गिड़ाकर भिक्षा माँगनवाला।
रिरी–(सं. स्त्री.) पित्तल, पीतल।
रिवाज–(अ. पुं.) प्रथा, चाल, रीति।
रिश्ता–(फा. पुं.) संबंध, नाता।
रिश्तेदार–(फा. पुं.) संबंधी, नातेदार।
रिश्तेदारी–(फा. स्त्री.) रिश्तेदार की स्थिति, भाव आदि।
रिश्वत–(फा. पुं.) घूस, उत्कोच; –खोर–(पुं.) घूस लेनेवाला; –खोरी–(स्त्री.) घूसखोरी, उत्कोच-ग्रहण।
रिषभ–(हि. पुं.) देखें 'ऋषभ'।
रिषीक–(सं. पुं.) शंकर, शिव, शम्भु, महादेव।
रिषीकार–(सं. पुं.) क्षेम, कल्याण।
रिष्ट–(सं. वि.) प्रसन्न, हृष्ट-पुष्ट।
रिष्टि–(सं. स्त्री.) खड्ग, तलवार, अशुभ, अमंगल।
रिष्यमूक–(हि. पुं.) देखें 'ऋष्यमूक'।
रिस–(हि. स्त्री.) क्रोध, रोष; (क्रि. प्र.) –मारना–क्रोध को रोकना।
रिसना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'रसना', छनकर बाहर टपकना।
रिसवाना–(हि. क्रि. स.) क्रोध करना।
रिसहा–(हि. वि.) क्रोधी।
रिसहाया–(हि. वि.) क्रुद्ध।
रिसान–(हि. पुं.) ताने के सूतों को फैलाकर स्वच्छ करने का काम।
रिसाना–(हि. क्रि. स.) किसी पर क्रुद्ध होना, क्रोधित करना।
रिसि–(हि. स्त्री.) देखें 'रिस', क्रोध।
रिसिआना, रिसियाना–(हि. क्रि. अ., स.) कुपित होना; क्रोध करना।
रिसिक–(हि. स्त्री.) खड्ग, तलवार।
रिसौंहा–(हि. वि.) क्रोध से भरा हुआ।
रिहा–(फा. वि.) बंधन, कैद आदि से मुक्त; –ई–(स्त्री.) छुटकारा।
रिहाण–(सं. पुं.) सेवा करना।
रिहायस–(सं. पुं.) चोर, ठग।
रींधना–(हि. क्रि. स.) खाद्य पदार्थ को उबालना, तलना या पकाना।
री–(सं. स्त्री.) गति, शब्द, वध, हत्या; (हि. अव्य.) सखियों के लिये संबोधन का शब्द, अरी, एरी।
रीगन–(हि. पुं.) एक प्रकार का धान जो कुआर में तैयार होता है।
रीछ–(हि. पुं.) भालू; –राज–(पुं.) जामवन्त।
रीझ–(हि. स्त्री.) रीझने की क्रिया या भाव, किसी बात पर प्रसन्न होना, किसी के गुण, रूप आदि पर मोहित होने का भाव।
रीझना–(हि. क्रि. अ.) प्रसन्न होना, मोहित या मुग्ध होना।
रीठ–(हि. स्त्री.) खड्ग, तलवार, युद्ध; (वि.) अशुभ।
रीठा–(हि. पुं.) एक वृक्ष, इसका बेर के बराबर फल, (इसे सुखा लिया जाता है और इसे पानी में भिगोकर मलने से इससे फेन निकलता है) इससे कपड़े स्वच्छ किये जाते हैं।
रीठी–(हि. स्त्री.) छोटा रीठा।
रीडर–(अं. पुं.) विश्वविद्यालय में व्याखाताओं का एक वर्ग।
रीढ़–(हि. स्त्री.) पीठ के बीचोबीच की लंबी हड्डी जो गरदन से कमर तक जाती है जिसमें पसलियाँ मिली होती हैं, मेरुदण्ड, पृष्ठवंश।
रीढा–(सं. स्त्री.) अवज्ञा, अवमान।
रीत–(हि. स्त्री.) देखें 'रीति'।
रीतना–(हि. क्रि. अ.) रिक्त होना, खाली होना।
रीता–(हि. वि.) जिसके भीतर कुछ न हो, खाली।
रीति–(सं. स्त्री.) कोई काम करने का ढंग, परिपाटी, नियम, प्रकार, तरह, ढब, गति, स्वभाव, प्रकृति, स्तुति, प्रशंसा काव्य की आत्मा अर्थात् वाक्य की ऐसी रचना जिसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य गुण हो।
रीतिका–(सं. स्त्री.) जस्ते का भस्म।
रीस–(हि. स्त्री.) स्पर्धा, ईर्ष्या रिस।
रीसना–(हि. क्रि. अ.) क्रुद्ध होना।
रीहा–(हि. स्त्री.) वनकटकोरा नाम की झाड़ी।
रुंज–(हि. पुं.) एक प्रकार का बाजा।
रुंड–(सं. पुं.) कबन्ध, वह जिसका हाथ-पैर छिन्न हो।
रुंडिका–(सं. स्त्री.) युद्ध-भूमि, ड्योढ़ी, बहुतायत।
रुंदवाना–(हि. क्रि. स.) पैर से कुचलवाना।
रुंधती–(हि. स्त्री.) देखें 'अरुंधती'।
रुंधना–(हि. क्रि. अ.) माग न मिलने के कारण अटकना, उलझना, रुकना, फँस जाना, किसी कार्य में लीन हो जाना।
रु–(हि. अव्य.) देखें 'अरु', और।
रुआँली–(हि. स्त्री.) रूई की पूनी।
रुआ–(हि. पुं.) देखें 'रोआँ', रोम; –घास–(स्त्री.) एक प्रकार की सुगंधित घास।
रुआब–(अ. पुं.) धाक, भय।
रुई–(हि. स्त्री.) कपास।
रुईदार–(हि. वि.) रुई से भरा हुआ।
रुकना–(हि. क्रि. अ.) आगे न बढ़ सकना, ठहर जाना, किसी कार्य का बीच में ही बंद हो जाना, आगा-पीछा करना, अटकना किसी क्रम का आगे न चलना।
रुकमंजनी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जो बगीचों में सजावट के लिय लगाया जाता है।
रुकमंगद–(हि. पुं.) देखें 'रुक्मांगद'।
रुकमिनी–(हि. स्त्री.) देख 'रुक्मिणी'।
रुकवाना–(हि. क्रि. स.) दूसरे को रोकने में प्रवृत्त करना।
रुकाव, रुकावट–(हि. पुं., स्त्री.) रुकने का भाव।
रुकुम–(हि. पुं.) देखें 'रुक्म'।
रुकुमी–(हि. पुं.) देखें 'रुक्मी'।
रुक्का–(अ. पुं.) परची, रसीद, पुरजा।
रुक्ख–(हि. पुं.) देखें 'वृक्ष', पेड़।
रुक्म–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, धतूरा, लोहा, नागकेसर, रुक्मिणी के एक भाई का नाम; (वि.) दीप्तिमान्; –कारक–(पुं.) स्वर्णकार, सोनार; –मय–(वि.) सोने का बना हुआ; –माली–(पुं.) भीष्मक के एक पुत्र का नाम; –रथ–(पुं.) सोने का बना हुआ रथ; –वत्–(वि.) सुवर्णयुक्त; –वती–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसको पद्मवती या चंपकमाला भी कहते हैं; –वाहन–(पुं.) द्रोणाचार्य; –सेन–

(पुं.) रुक्मिणी का छोटा भाई; **-स्तेय-** (पुं.) सोना चुरानेवाला ।

रुक्मिणी-(सं. स्त्री.) श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री थी ।

रुक्मिन्-(सं. पुं.) विदर्भ देश के राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र ।

रुक्ष-(सं. वि.) जिसमें चिकनाहट न हो, बिना प्रेम का, रूखा, नीरस, सूखा; (पुं.) नरकट; **-ता-**(स्त्री.) रुखाई, रूखापन ।

रुख-(फा. पुं.) कपोल, गाल, चेहरा, आकृति, दिशा ।

रुखसत-(अ. स्त्री.) विदाई अवकाश, काम से छुट्टी ।

रुखसती-((अ.वि.) जिसको छुट्टी मिली हो; (स्त्री.) विदाई ।

रुखाई-(हिं. स्त्री.) रूखा होने का भाव, रूखापन, शुष्कता, व्यवहार की कठोरता, शील का परित्याग ।

रुखाना-(हिं.क्रि.अ.) रूखा होना, सूखना ।

रुखानी-(हिं. स्त्री.) बढ़इयों का लकड़ी छीलने आदि का एक धारदार अस्त्र ।

रुखावट, रुखाहट-(हिं.स्त्री.) रूखापन, रुखाई ।

रुखिता-(हिं. स्त्री.) वह नायिका जो रोष या क्रोध से पूर्ण हो ।

रुखुरी-(हिं. स्त्री.) बहुत छोटा पौधा ।

रुखौंहाँ-(हिं. वि.) रुखाई लिये हुए ।

रुगन्वित-(सं. वि.) पीड़ायुक्त ।

रुग्भेषज-(सं. पुं.) रोग की औषधि ।

रुग्ण(न)-(सं. वि.) रोगग्रस्त, झुका हुआ, बिगड़ा हुआ; **-ता-**(स्त्री) रोगी होने का भाव ।

रुच-(सं. वि.) उज्ज्वल; (हिं. स्त्री.) देखें 'रुचि' ।

रुचक-(सं. पुं.) सज्जीखार, घोड़े का साज, लवण, नमक, दाँत, कबूतर, बिजौरा नीबू ।

रुचना-(हिं. क्रि. स.) अनुकल होना, पसंद आना ।

रुचा-(सं. स्त्री.) दीप्ति, प्रकाश, शोभा, इच्छा, पक्षियों का बोलना ।

रुचि-(सं. स्त्री.) अनुराग, प्रेम, आसक्ति, प्रवृत्ति, किरण, शोभा, छवि, खाने की इच्छा, सुन्दरता, भूख, स्वाद, एक अप्सरा का नाम; **-कर-**(वि.) शोभा के अनुकूल, योग्य; अच्छा-लगनेवाला; **-कारक-**(वि.) अच्छे स्वादवाला, स्वादिष्ट; **-कारी-**(वि.) अभिलषित, रुचिकर, मनोहर; **-ता-**(स्त्री.) अनुराग, प्रेम, सुन्दरता, अतिजगतीवृत्त का एक भेद; **-दा-**(स्त्री.) कुँदरू; **-फल-**(पुं.) नासपाती; **-मती-**(स्त्री.) उग्रसेन की रानी का नाम, रुचिभाव; (वि. स्त्री.) शोभापूर्ण; **-र-**(पुं.) कुंकुम, केशर, लवंग, चाँदी; (वि.) सुन्दर, अच्छा, मीठा; **-वदन-**(वि.) सुन्दर मुखवाला; **-वृत्ति-**(पुं.) अस्त्र के प्रहार का निवारण; **-रा-**(स्त्री.) एक वृत्त का नाम, कुंकुम, केसर, लवंग, मूली; **-०ई-**(हिं.स्त्री.) मनोहरता, सुन्दरता; **-वर्धक-**(वि.) रुचि उत्पन्न करनेवाला, भूख बढ़ानेवाला; **-ष्य-**(वि.) चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ ।

रुची-(हिं. स्त्री.) देखें 'रुचि'

रुच्छ-(हिं. वि.) देखें 'रूक्ष', रूखा ।

रुच्य-(सं. वि.) रुचिकर, सुन्दर ।

रुच्यकंद-(सं. पुं.) सूरन ।

रुज-(सं. पुं.) क्षत, घाव, वेदना, रोग, कष्ट, ढोलक के समान एक प्रकार का प्राचीन बाजा; **-ग्रस्त-**(वि.) रोगग्रस्त; **-स्कर-**(वि.) पीड़ा देनेवाला ।

रुजा-(सं.स्त्री.) रोग, पीड़ा; **-कर-**(वि.) रोग उत्पन्न करनेवाला; **-पह-**(वि.) पीड़ा या रोग को दूर करनेवाला; **-वी-**(वि.) पीड़ायुक्त, पीड़ित; **-सह-**(वि.) पीड़ा सहन करनेवाला ।

रुजी-(हिं. वि.) अस्वस्थ, रोगी ।

रुझना-(हिं. क्रि. अ.) घाव आदि का पूजना, देखें 'उलझना' ।

रुझनी-(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।

रुठ-(हिं. पुं.) क्रोध, रोष ।

रुठना-(हिं. क्रि. अ.) क्रुद्ध होना ।

रुठाना-(हिं.क्रि.स.) रूठने में प्रवृत्त करना ।

रुणित-(सं. वि.) शब्द करता हुआ, झनकारता हुआ ।

रुत-(सं. पुं.) पक्षियों का कलरव, शब्द, ध्वनि; (हिं. स्त्री.) देखें 'ऋतु' ।

रुदन-(सं. पुं.) क्रन्दन, रोने की क्रिया ।

रुदराछ-(हिं. पुं.) देखें 'रुद्राक्ष' ।

रुदित-(सं. वि.) रोता हुआ ।

रुद्ध-(सं. वि.) रोका हुआ, वेष्टित, घिरा हुआ, फँसा हुआ, मूँदा हुआ, जिसकी गति रोकी गई हो; **-कंठ-**(वि.) जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सकता हो ।

रुद्र-(सं.पुं.) एक प्रकार के गणदेवता जो संख्या में ग्यारह हैं, यथा—अजैकपाद, अहिब्रघ्न, पिनाकी, अपराजित, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शंभु, कपर्दी, रैवततथा बहुरूप; रौद्र रस, शिव का एक रूप; (वि.) भयंकर, डरावना; **-क-** (पुं.) बड़ा अगस्त का वृक्ष; **-कमल-**(पुं.) रुद्राक्ष; **-काली-**(स्त्री.) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम, उमा का नामान्तर; **-कोटि-**(पुं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम; **-गण-**(पुं.) पुराण के अनुसार शिव के परिषद; **-गर्भ-**(पुं.) अग्नि; **-ज-**(पुं.) पारद, पारा; **-जटा-**(स्त्री.) तीन-चार हाथ ऊँचा एक पौधा; **-ताल-**(पुं.) मृदंग का एक ताल; **-तेज-**(पुं.) कार्तिकेय; **-पति-**(पुं.) शिव, महादेव; **-पत्नी-**(स्त्री.) दुर्गा; **-प्रिया-**(स्त्री.) पार्वती; **-भू-**(स्त्री.) श्मशान, मरघट; **-भूमि-**(स्त्री.) मरघट; **-भैरवी-**(स्त्री.) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम; **-माल्य-**(पुं.) बेल का पेड़; **-यामल-**(पुं.) तान्त्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ; **-रेता-**(पुं.) पारद, पारा; **-रोदन-**(पुं.) सोना; **-रोमा-**(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; **-लता-**(स्त्री.) रुद्रजटा; **-लोक-**(पुं.) शिवलोक; **-वंती-**(स्त्री.) एक प्रसिद्ध वनौषधि; **-वदन-**(पुं.) महादेव के पाँच मुख, पाँच की संख्या; **-विंशति-**(स्त्री.) प्रभव आदि साठ संवत्सरों में से अन्तिम वर्षों का समूह; **-वीणा-**(स्त्री.) प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा; **-सुंदरी-**(स्त्री.) देवी की एक मूर्ति; **-हृदय-**(पुं.) एक प्राचीन उपनिषद् ।

रुद्रा-(सं. स्त्री.) रुद्रजटा नामक पौधा ।

रुद्राक्रीडा-(सं.पुं.) श्मशान, मरघट ।

रुद्राक्ष-(सं. पुं.) एक बड़ा वृक्ष, इसका गोल फल जिसकी माला बनाकर शैव भक्त पहनते और जप के समय व्यवहार में लाते हैं ।

रुद्राणी-(सं.स्त्री.) रुद्र की पत्नी, पार्वती, रुद्रजटा नाम की लता ।

रुद्रारि-(सं. पुं.) कामदेव ।

रुद्रिय-(सं. वि.) आनन्ददायक, बड़ाई करनेवाला ।

रुद्री-(सं. स्त्री.) वेद के अघमर्षण सूक्त की बारह आवृत्तियाँ ।

रुधिर-(सं.पुं.) रक्त, शोणित; **-पायी-**(पुं.) लोहू पीनेवाला राक्षस; **-पित्त-**(पुं.) नकसीर रोग; **-प्रदिग्ध-**

का बड़ा अभिमान हो; –ग्रह–(वि.) जिसका रंग-रूप सुन्दर हो; –घनाक्षरी–(स्त्री.) दण्डक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस अक्षर होते हैं; –घात–(पुं.) रूप या आकृति विगाड़ने का अपराध; –चतुर्दशी–(स्त्री.) कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी; –ज–(वि.) रूप से उत्पन्न; –जीवनी–(स्त्री.) वेश्या, रंडी; –तत्व–(पुं.) शील, स्वभाव; –तम–(वि.) बहुत सुन्दर; –ता–(स्त्री.) सुन्दरता; –दर्शक–(वि.) प्राचीन काल का मुद्राओं की परीक्षा करनेवाला; –धर–(वि.) सुन्दर; –धारी–(वि.) बहुरुपिया, रूप धारण करनेवाला; –पति–(पुं.) बिश्वकर्मा; –भेद–(पुं.) भिन्न रूप; –मंजरी–(स्त्री.) राधिका की एक सखी का नाम, एक प्रकार का फूल; –मनी–(हिं.वि.स्त्री.) रूपवती, सुन्दर; –मय–(वि.) बहुत सुन्दर; –मान्–(वि.) देखें 'रूपवान्'; –माला–(स्त्री.) एक मात्रिक छन्द का नाम, (इसका दूसरा नाम मदन है); –माली–(स्त्री.) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन मगण और नौ दीर्घ वर्ण होते हैं; –यौवन–(पुं.) रूप और युवावस्था; –रूपक–(पुं.) रूपक अलंकार का एक भेद; –वंत (हिं. वि.), –वान्–(वि.) रूपमय, सुन्दर; –वती–(स्त्री.) एक छन्द का नाम जिसको गौरी भी कहते हैं, चंपकमाला वृत्त का नाम, रुक्मवती; (वि.स्त्री.) सुन्दरी; –विपर्यय–(पुं.) रूप का परिवर्तन; –श्री–(स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी; –संपद–(स्त्री.) उत्तम रूप, सुन्दरता; –समृद्ध–(वि.) रूपशाली, रूपवान्; –समृद्धि–(स्त्री.) सुंदरता, खूबसूरती; –सी–(वि.स्त्री.) सुन्दर, मनोहर; –स्य–(वि.) रूपवान्, सुन्दर; –हानि–(स्त्री.) रूप का नाश।

रूपकातिशयोक्ति–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेय आदि का अर्थ समझाया जाता है।

रूपा–(हिं. पुं.) चांदी, घटिया चांदी जिसमें कुछ मिलावट हो, सफेद रंग का घोड़ा, सफेद रंग का बैल।

रूपाजीवा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

रूपाजिवोव–(सं. पुं.) इन्द्रियों द्वारा बाह्य वस्तु का ज्ञान।

रूपावली–(सं.स्त्री.) शब्द की विभक्तियों का वर्णन।

रूपाश्रय–(सं. पुं.) सुन्दर मनुष्य।

रूपास्त्र–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।

रूपित–(सं.पुं.) एक प्रकार का उपन्यास जिसमें ज्ञान, वैराग्य आदि पात्र बनाये जाते हैं।

रूपी–(हिं. वि.) रूपयुक्त, रूपवाला, सुन्दर, तुल्य, सदृश।

रूपोपजीविनी–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

रूपोपजीवी–(हिं. वि.) बहुरुपिया।

रूप्य–(सं. वि.) सुन्दर; (पुं.) रुपया।

रूप्यक–(सं.पुं.) रुपया।

रूप्याध्यक्ष–(सं. पुं.) टकसाल का प्रधान अधिकारी।

रूमना–(हिं.क्रि.अ.) झूलना, झूमना।

रूमाल–(फा.पुं.) कपड़े का वह छोटा-सा चौकोर टुकड़ा जो हाथ-मुँह पोंछने के काम आता है, रुमाल।

रूर–(सं. वि.) उत्तप्त, जला हुआ।

रूरना–(हिं. क्रि. अ.) हल्ला करना, चिल्लाना, कोलाहल करना।

रूरा–(हिं.वि.) श्रेष्ठ, सुन्दर, मनोहर।

रूलना–(हिं. क्रि. स.) दबा देना।

रूलर–(अं.पुं.) सीधी रेखाएँ या सतह खींचनेवाला बेलन के आकार का डंडा।

रूषित–(सं. वि.) धूल से ढका हुआ।

रूसना–(हिं.क्रि.अ.) रूठना, क्रुद्ध होना।

रूसा–(हिं. पुं.) अडूसा, एक सुगन्धित घास का नाम।

रूसी–(हिं.वि.) रूस देश का रहनेवाला, रूस-संबंधी; (स्त्री.) रूस देश की भाषा, सिर पर जमनेवाला भूसी के समान छिलका।

रूह–(अ. स्त्री.) आत्मा, जीवात्मा, सत्त्व, सार।

रूहड़–(हिं. पुं.) पुरानी रूई जो एक बार तोशक आदि में भरी जा चुकी हो।

रूहना–(हिं. क्रि. स.) आवेष्टित करना, घेरना।

रूही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष।

रेंकना–(हिं. क्रि. अ.) गदहे का बोलना, भद्दी तरह से गाना।

रेंगटा–(हिं. पुं.) गदहे का बच्चा।

रेंगना–(हिं.क्रि.अ.) साँप, कीड़े या चींटी का चलना, धीरे-धीरे चलना।

रेंगनी–(हिं. स्त्री.) भटकटैया।

रेंट–(हिं.पुं.) नाक का मल, नकटी।

रेंटा–(हिं. पुं.) लिसोड़े का फल।

रेंड़–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसके बीज का तेल गाढ़ा और रेचक होता है।

रेंड़मेवा–(हिं. पुं.) पपीता।

रेंडा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।

रेंड़ी–(हिं. स्त्री.) रेंड़ के बीज।

रेंदी–(हिं. स्त्री.) ककड़ी या खरबूजे का छोटा फल।

रेंरें–(हिं. पुं.) बच्चों के रोने का शब्द।

रे–(सं.अव्य.) एक संबोधन-शब्द जिससे आदर का अभाव सूचित होता है; (पुं.) संगीत में ऋषभ स्वर।

रेउता–(हिं. पुं.) व्यजन, बना, पंखा।

रेउती–(हिं. स्त्री.) देख 'रेवती'।

रेक–(सं. पुं.) भक, मेढक।

रेका–(सं. पुं.) शंका, सन्देह।

रेकार्ड–(अं. पुं.) ग्रामोफोन बाजे पर बजनेवाला लाख का बना चिह्नित तावा।

रेकान–(हिं.पुं.) वह भूमि जो नदी के पानी की पहुँच के बाहर हो।

रेख–(हिं. स्त्री.) रेखा, लकीर, चिह्न, गिनती, हिसाब, नई निकलती हुई मूँछें; (मुहा.) –खींचना–लकीर खींचना; –भींगना–मूँछ निकलती हुई जान पड़ना।

रेखना–(हिं. क्रि. अ.) लकीर खींचना, खरोंचना, छेदना।

रेखांश–(सं. पुं.) याम्योत्तर का एक अंश।

रेखा–(सं. स्त्री.) छद्म, कपट, उल्लेख, लकीर, गणना, गिनती, आकृति, आकार; –गणित–(पुं.) गणित का वह विभाग जिसम रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किय गये ह; –भूमि–(स्त्री.) लंका और सुमेरु के बीच का देश।

रेखाकार–(सं. वि.) रेखा-जैसा, रेखा के सदृश।

रेखित–(सं. वि.) जिस पर रेखा पड़ी हो, लकीर खींचा हुआ, फटा हुआ।

रेगिस्तान–(फा.पुं.) मरुभूमि, मरुदेश।

रेगिस्तानी–(फा. वि.) रेगिस्तान का, रेगिस्तान से संवद्ध।

रेच–(हिं. पुं.) ऐंठन, दोष।

रेचक–(सं. पुं.) प्राणायाम में खींची हुई साँस को पुनः धीरे धीरे बाहर निकालने की क्रिया; (वि.) कोष्ठ-शुद्धि करनेवाला, जिसके खाने से शौच आवे।

रेचन–(सं. पुं.) जुलाब, कोष्ठ शुद्धि।

रेचना–(हिं.क्रि.स.) अधोवायु या मल को बाहर निकालना।

रेचनीय–(सं. वि.) शौच लानेवाला।

रेचित–(सं.वि.) रेचन किया हुआ।

रेजगारी, रेजगी–(फा. स्त्री.) अल्प

मूल्य के सिक्के, खुदरा।
रैजू–(फा.पुं.) एक प्रकार का रेशा जो कूँची बनाने के काम में लाया जाता है।
रेडियम–(अं.पुं.) एक प्रसिद्ध दुर्लभ तथा बहुमूल्य धातु जिससे सदा बिजली की किरणें विकरित होती रहती हैं।
रेणु–(सं.पुं.) धूल, बालू, कणिका, अत्यन्त लघु परिमाण; (स्त्री.) विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम, पृथ्वी, सँभालू का बीज; **–का**–(स्त्री.) पृथ्वी, रज, धूल, बालू, परशुराम की माता का नाम जो विदर्भराज की कन्या और जमदग्नि की स्त्री थी; **–०सुत**–(पुं.) परशुराम; **–गर्भ**–(पुं.) ज्योतिषोक्त होरा-निर्णायक यन्त्र; **–त्व**–(पुं.) रेणु का भाव या धर्म; **–पदवी**–(स्त्री.) धूलि से भरा हुआ मार्ग; **–मत्**–(पुं.) रेणुका के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम; **–रूषित**–(पुं.) गर्दभ, गदहा; **–वास**–(पुं.) भ्रमर, भौंरा; **–सार**–(पुं.) कर्पूर, कपूर।
रेत–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य, जल, पारा, लोहा; (हिं.पुं.) रतन का एक अस्त्र; (स्त्री.) बालू, मरुस्थल।
रेतज–(सं. पुं.) पुत्र, लड़का।
रेतन–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य।
रेतना–(हिं. क्रि. स.) रेती से किसी वस्तु को रगड़कर उससे महीन कण गिराना, किसी अस्त्र की धार रगड़ना।
रेतल–(हिं.पुं.) भूरे रंग का एक पक्षी।
रेतला–(हिं. वि.) रेतीला।
रेतस्–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य।
रेता–(हिं. स्त्री.) बालू।
रेतिया–(हिं. पुं.) रेतनेवाला।
रेती–(हिं.स्त्री.) (लोहा, लकड़ी आदि) रेतने का लोहे का एक अस्त्र, नदी या समुद्र के किनारे की बलुई भूमि।
रेतीला–(हिं.वि.) बालुकामय, बलुआ।
रेतोधा–(सं.वि.स्त्री.) गर्भिणी, गर्भवती।
रेतोमार्ग–(सं.पुं.) शुक्र निकलने का छिद्र।
रेनी–(हिं. स्त्री.) वह वस्तु जिससे रंग निकलता हो।
रेनु–(हिं. पुं.) देखें 'रेणु'।
रेप–(सं. वि.) कृपण, क्रूर, निन्दित।
रेफ–(सं. पुं.) रकार, रवर्ग, 'र' का वह हलंत रूप जो इसके अन्य अक्षर के पहले आने पर उस अक्षर के माथे पर रखा जाता है; जैसे-दर्प, गर्व आदि में; राग, शब्द।
रेफविपुला–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
रेभ–(सं.वि.) कठोर वचन बोलनेवाला।
रेभण–(सं. पुं.) गाय का बोलना।
रेमि–(सं. वि.) रमण करनेवाला।
रेरिह–(सं.वि.) जीभ से बारंबार चाटना।
रेरिहाण–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
रेरुआ (वा)–(हिं.पुं.) बड़ा उल्लू पक्षी।
रेल–(हिं.स्त्री.) बहाव, धारा, अधिकता; (अं.स्त्री.) लोहे की पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है, वाष्प-शक्ति द्वारा स्वचालित यान या गाड़ी; **–बे-ठेल,–पेल**– (स्त्री.) भीड़-भाड़; रेलगाड़ी, इसका सामूहिक विभाग।
रेलना–(हिं. क्रि.अ.,स.) आगे की ओर झोंकना या ढकेलना, अधिक भरा होना, ठूँस-ठूँसकर भोजन करना।
रेला–(हिं.पुं.) तबले पर महीन और सुन्दर बोलों को बजाने की रीति, पंक्ति, समूह, धक्का-मुक्का, अधिकता, जल का प्रवाह, बहाव, दल बनाकर चढ़ाई, धावा, आक्रमण।
रेवँछा–(हिं.पुं.) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।
रेवड़–(हिं.पुं.) भेड़-बकरियों का झुंड।
रेवड़ी–((हिं.स्त्री.) चीनी की चाशनी का टुकड़ा जिस पर सफेद तिल चिपकाया होता है।
रेवत–(सं.पुं.) जँबीरी नीबू, बलराम के श्वशुर का नाम।
रेवतक–(सं. पुं.) कबूतर।
रेवती–(सं.स्त्री.) अश्विनी आदि नक्षत्रों में से सत्ताईसवाँ नक्षत्र जो बत्तीस तारों का समुदाय है, बलराम की पत्नी का नाम, दुर्गा, गाय।
रेवतीभव–(सं. पुं.) शनि।
रेवतीरमण–(सं.वि.) बलराम, विष्णु।
रेवतीश–(सं. पुं.) बलराम।
रेवा–(सं. स्त्री.) नर्मदा नदी, कामदेव की पत्नी, रति, दुर्गा, नील का पौधा, दीपक राग की एक रागिनी।
रेशम–(फा.पुं.) एक प्रकार के कोश-युक्त कीड़े के चारों ओर समावेष्टित महीन या बारीक रेशों या तंतुओं के गुच्छों से बननेवाला चमकीला और मजबूत सूत या उससे बना हुआ वस्त्र; (य कीड़े शहतूत के वृक्षों पर पाले जाते हैं।)
रेशमी–(फा.वि.) रेशम का, रेशम-संबंधी।
रेशा–(फा. पुं.) बारीक तंतु जो कुछ वनस्पतियों तथा कीड़ों से प्राप्त होता है।
रेष–(सं. पुं.) क्षति, हानि।
रेषण–(सं. पुं.) घोड़े का हिनहिनाना।
रेषा–(सं. स्त्री.) देखें 'रेषण'।
रेष्मन–(सं. पुं.) प्रलय-काल।
रेह–(हिं. स्त्री.) खार मिली हुई मट्टी जो ऊसर में पाई जाती है।
रेहन–(फा. पुं.) मकान या भूसम्पत्ति को महाजन के पास कर्ज के प्रतिभू के रूप में बंधक या गिरवी रखना; **–दार**–(पुं.) वह महाजन जिसके पास रेहन रखा गया हो; **–दारी**–(स्त्री.) वह जोत जो रेहन रखी गई हो; **–नामा**–(पुं.) रेहन के प्रमाण के लिए रेहन रखनेवाले व्यक्ति द्वारा लिखित लेख्य-पत्र या कबूलियत।
रेहुआ–(हिं. वि.) जिसमें रेह हो।
रतुआ–(हिं. पुं.) देखें 'रायता'।
रैदास–(हिं. पुं.) एक प्रसिद्ध भक्त जो जाति का चमार था, (यह रामानन्द का शिष्य था), चमार।
रैदासी–(हिं. वि., पुं.) रैदास भक्त के सम्प्रदाय का, एक प्रकार का मोटा धान।
रैन, रैनि–(हिं. स्त्री.) रात्रि, रात; **–चर**–(पुं.) राक्षस।
रैनी–(हिं. स्त्री.) चाँदी या सोने की वह गुल्ली जो तार खींचने के लिये बनाई जाती है।
रैमुनिया–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की अरहर।
रैयाराव–(हिं.पुं.) छोटा राजा, सरदार।
रैल–(हिं. स्त्री.) समूह।
रैवत–(सं. वि.) शंकर, महादेव।
रैवतक–(सं. पुं.) गुजरात का एक पर्वत जो जूनागढ़ के पास है, (इसको आजकल गिरनार कहते हैं।)
रैहर–(हिं. पुं.) झगड़ा, लड़ाई।
रोंग–(हिं. पुं.) लोम, रोयाँ।
रोंगटा–(हिं.पुं.) संपूर्ण शरीर पर के रोएँ; (मुहा.) रोंगटे खड़े होना–रोमांच होना।
रोंठा–(हिं. पुं.) कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
रोंव–(हिं. पुं.) रोआँ, लोम।
रोआँ–(हिं. पुं.) रोयाँ, लोम।
रोआव–(हिं. पुं.) प्रभाव, रुआव।
रोइया–(हिं. पुं.) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर रखकर ऊख के टुकड़े काटे जाते हैं।
रोउँ–(हिं. पुं.) देखें 'रोयाँ'।
रोक–(सं.पुं.) नकद रुपया, रोकड़, नकद व्यवहार का सौदा, छेद, नाव; (हिं.स्त्री.) किसी काम में बाधा, रोकनेवाली वस्तु, रुकाव, अटकाव, निषेध, मनाही; **–झोंक, टोक, थाम**–(स्त्री.) प्रतिबन्ध, बाधा, निषेध।
रोकड़–(हिं. स्त्री.) नकद रुपया-पैसा,

का बड़ा अभिमान हो; –ग्रह–(वि.) जिसका रंग-रूप सुन्दर हो; –घनाक्षरी–(स्त्री.) दण्डक छन्द का एक भद जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस अक्षर होते हैं; –घात–(पुं.) रूप या आकृति बिगाड़ने का अपराध; –चतुर्दशी–(स्त्री.) कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी; –ज–(वि.) रूप से उत्पन्न; –जीवनी–(स्त्री.) वेश्या, रंडी; –तत्व–(पुं.) शील, स्वभाव; –तम–(वि.) बहुत सुन्दर; –ता–(स्त्री.) सुन्दरता; –दर्शक–(वि.) प्राचीन काल का मुद्राओं की परीक्षा करनेवाला; –धर–(वि.) सुन्दर; –धारी–(वि.) बहुरुपिया, रूप धारण करनेवाला; –पति–(पुं.) बिश्वकर्मा; –भेद–(पुं.) भिन्न रूप; –मंजरी–(स्त्री.) राधिका की एक सखी का नाम, एक प्रकार का फूल; –मनी–(हिं.वि.स्त्री.) रूपवती, सुन्दर; –मय–(वि.) बहुत सुन्दर; –मान्–(वि.) देखें 'रूपवान्'; –माला–(स्त्री.) एक मात्रिक छन्द का नाम, (इसका दूसरा नाम मदन है); –माली–(स्त्री.) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन मगण और नौ दीर्घ वर्ण होते हैं; –यौवन–(पुं.) रूप और युवावस्था; –रूपक–(पुं.) रूपक अलंकार का एक भेद; –वंत (हिं. वि.), –वान्–(वि.) रूपमय, सुन्दर; –वती–(स्त्री.) एक छन्द का नाम जिसको गौरी भी कहते हैं, चंपकमाला वृत्त का नाम, रुक्मवती; (वि.स्त्री.) सुन्दरी; –विपर्यय–(पुं.) रूप का परिवर्तन; –श्री–(स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी; –संपद–(स्त्री.) उत्तम रूप, सुन्दरता; –समृद्ध–(वि.) रूपशाली, रूपवान्; –समृद्धि–(स्त्री.) सुंदरता, खूबसूरती; –सी–(वि.स्त्री.) सुन्दर, मनोहर; –स्थ–(वि.) रूपवान्, सुन्दर; –हानि–(स्त्री.) रूप का नाश।

रूपकातिशयोक्ति–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेय आदि का अर्थ समझाया जाता है।

रूपा–(हिं. पुं.) चाँदी, घटिया चाँदी जिसमें कुछ मिलावट हो, सफेद रंग का घोड़ा, सफेद रंग का बैल।

रूपाजीवा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

रूपाजिवोध–(सं. पुं.) इन्द्रियों द्वारा बाह्य वस्तु का ज्ञान।

रूपावली–(सं.स्त्री.) शब्द की विभक्तियों का वर्णन।

रूपाश्रय–(सं. पुं.) सुन्दर मनुष्य।

रूपास्त्र–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।

रूपित–(सं.पुं.) एक प्रकार का उपन्यास जिसमें ज्ञान, वैराग्य आदि पात्र बनाये जाते हैं।

रूपी–(हिं. वि.) रूपयुक्त, रूपवाला, सुन्दर, तुल्य, सदृश।

रूपोपजीविनी–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

रूपोपजीवी–(हिं. वि.) बहुरुपिया।

रूप्य–(सं. वि.) सुन्दर; (पु.) रुपया।

रूप्यक–(सं. पुं.) रुपया।

रूप्याध्यक्ष–(सं. पुं.) टकसाल का प्रधान अधिकारी।

रूमना–(हिं. क्रि.अ.) झूलना, झूमना।

रूमाल–(फा.पुं.) कपड़े का वह छोटा-सा चौकोर टुकड़ा जो हाथ-मुँह पोंछने के काम आता है, रुमाल।

रूर–(सं. वि.) उत्तप्त, जला हुआ।

रूरना–(हिं. क्रि. अ.) हल्ला करना, चिल्लाना, कोलाहल करना।

रूरा–(हिं.वि.) श्रेष्ठ, सुन्दर, मनोहर।

रूलना–(हिं. क्रि. स.) दबा देना।

रूलर–(अं.पुं.) सीधी रेखाएँ या सतह खीचनेवाला बेलन के आकार का डंडा।

रूषित–(सं. वि.) धूल से ढका हुआ।

रूसना–(हिं.क्रि.अ.) रूठना, क्रुद्ध होना।

रूसा–(हिं. पुं.) अड़ूसा, एक सुगन्धित घास का नाम।

रूसी–(हिं.वि.) रूस देश का रहनेवाला, रूस-संबंधी; (स्त्री.) रूस देश की भाषा, सिर पर जमनेवाला भूसी के समान छिलका।

रूह–(अ. स्त्री.) आत्मा, जीवात्मा, सत्त्व, सार।

रूहड़–(हिं. पुं.) पुरानी रूई जो एक बार तोशक आदि में भरी जा चुकी हो।

रूहना–(हिं. क्रि. स.) आवेष्टित करना, घेरना।

रूही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष।

रेंकना–(हिं. क्रि. अ.) गदहे का बोलना, भद्दी तरह से गाना।

रेंगटा–(हिं. पुं.) गदहे का बच्चा।

रेंगना–(हिं.क्रि.अ.) साँप, कीड़े या चींटी का चलना, धीरे-धीरे चलना।

रेंगनी–(हिं. स्त्री.) भटकटैया।

रेंट–(हिं. पुं.) नाक का मल, नकटी।

रेंटा–(हिं. पुं.) लिसोड़े का फल।

रेंड़–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसके बीज का तेल गाढ़ा और रेचक होता है।

रेंड़मेवा–(हिं. पुं.) पपीता।

रेंडा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।

रेंड़ी–(हिं. स्त्री.) रेड़ के बीज।

रेंदी–(हिं. स्त्री.) ककड़ी या खरबूजे का छोटा फल।

रेंरें–(हिं. पुं.) बच्चों के रोने का शब्द।

रे–(सं.अव्य.) एक संबोधन-शब्द जिससे आदर का अभाव सूचित होता है; (पुं.) संगीत में ऋषभ स्वर।

रेउता–(हिं. पुं.) व्यजन, बना, पंखा।

रेउती–(हिं. स्त्री.) देख 'रेवती'।

रेक–(सं. पुं.) भक, मेढक।

रेका–(सं. पुं.) शंका, सन्देह।

रेकार्ड–(अं. पुं.) ग्रामोफोन बाजे पर बजनेवाला लाख का बना चिह्नित तावा।

रेकान–(हिं.पुं.) वह भूमि जो नदी के पानी की पहुँच के बाहर हो।

रेख–(हिं. स्त्री.) रेखा, लकीर, चिह्न, गिनती, हिसाब, नई निकलती हुई मूँछे; (मुहा.) –खींचना–लकीर खींचना; –भींगना–मूँछ निकलती हुई जान पड़ना।

रेखना–(हिं. क्रि. अ.) लकीर खीचना, खरोंचना, छेदना।

रेखांश–(सं. पुं.) याम्योत्तर का एक अंश।

रेखा–(सं. स्त्री.) छद्म, कपट, उल्लेख, लकीर, गणना, गिनती, आकृति, आकार; –गणित–(पुं.) गणित का वह विभाग जिसम रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये गये है; –भूमि–(स्त्री.) लंका और सुमेरु के बीच का देश।

रेखाकार–(सं. वि.) रेखा-जैसा, रेखा के सदृश।

रेखित–(सं. वि.) जिस पर रेखा पड़ी हो, लकीर खीचा हुआ, फटा हुआ।

रेगिस्तान–(फा.पुं.) मरुभूमि, मरुदेश।

रेगिस्तानी–(फा. वि.) रेगिस्तान का, रेगिस्तान से संबद्ध।

रेच–(हिं. पुं.) ऐंठन, दोष।

रेचक–(सं. पुं.) प्राणायाम में खींची हुई साँस को पुनः धीरे धीरे बाहर निकालने की क्रिया; (वि.) कोष्ठ-शुद्धि करनेवाला, जिसके खाने से शौच आवे।

रेचन–(सं. पुं.) जुलाब, कोष्ठ शुद्धि।

रेचना–(हिं.क्रि.स.) अधोवायु या मल को बाहर निकालना।

रेचनीय–(सं. वि.) शौच लानेवाला।

रेचित–(सं.वि.) रेचन किया हुआ।

रेजगारी, रेजगी–(फा. स्त्री.) अल्प

मूल्य के सिक्के, खुदरा।
रेजू–(फा.पुं.) एक प्रकार का रेशा जो कूंची बनाने के काम में लाया जाता है।
रेडियम–(अं.पुं.) एक प्रसिद्ध दुर्लभ तथा बहुमूल्य धातु जिससे सदा बिजली की किरणें विकरित होती रहती हैं।
रेणु–(सं.पुं.) धूल, बालू, कणिका, अत्यन्त लघु परिमाण; (स्त्री.) विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम, पृथ्वी, सँभालू का बीज; **–का**–(स्त्री.) पृथ्वी, रज, धूल, बालू, परशुराम की माता का नाम जो विदर्भराज की कन्या और जमदग्नि की स्त्री थी; **–०सुत**–(पुं.) परशुराम; **–गर्भ**–(पुं.) ज्योतिषोक्त होरा-निर्णायक यन्त्र; **–त्व**–(पुं.) रेणु का भाव या धर्म; **–पदवी**–(स्त्री.) धूलि से भरा हुआ मार्ग; **–मत्**–(पुं.) रेणुका के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम; **–रूषित**–(पुं.) गर्दभ, गदहा; **–वास**–(पुं.) भ्रमर, भौंरा; **–सार**–(पुं.) कर्पूर, कपूर।
रेत–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य, जल, पारा, लोहा; (हिं.पुं.) रतन का एक अस्त्र; (स्त्री.) बालू, मरुस्थल।
रेतज–(सं. पुं.) पुत्र, लड़का।
रेतन–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य।
रेतना–(हिं. क्रि. स.) रेती से किसी वस्तु को रगड़कर उससे महीन कण गिराना, किसी अस्त्र की धार रगड़ना।
रेतल–(हिं.पुं.) भूरे रंग का एक पक्षी।
रेतला–(हिं. वि.) रेतीला।
रेतस्–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य।
रेता–(हिं. स्त्री.) बालू।
रेतिया–(हिं. पुं.) रेतनेवाला।
रेती–(हिं.स्त्री.) (लोहा, लकड़ी आदि) रेतने का लोहे का एक अस्त्र, नदी या समुद्र के किनारे की बलुई भूमि।
रेतीला–(हिं.वि.) बालुकामय, बलुआ।
रेतोधा–(सं.वि.स्त्री.) गर्भिणी, गर्भवती।
रेतोमार्ग–(सं.पुं.) शुक्र निकलने का छिद्र।
रेनी–(हिं. स्त्री.) वह वस्तु जिससे रंग निकलता हो।
रेनु–(हिं. पुं.) देखें 'रेणु'।
रेप–(सं. वि.) कृपण, क्रूर, निन्दित।
रेफ–(सं. पुं.) रकार, रवर्ग, 'र' का वह हलंत रूप जो इसके अन्य अक्षर के पहले आने पर उस अक्षर के माथे पर रखा जाता है; जैसे-दर्प, गर्व आदि में; राग, शब्द।
रेफविपुला–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
रेभ–(सं.वि.) कठोर वचन बोलनेवाला।
रेभण–(सं. पुं.) गाय का बोलना।
रेमि–(सं. वि.) रमण करनेवाला।
रेरिह–(सं.वि.) जीभ से बारंबार चाटना।
रेरिहाण–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
रेउआ (वा)–(हिं.पुं.) बड़ा उल्लू पक्षी।
रेल–(हिं.स्त्री.) बहाव, धारा, अधिकता; (अं.स्त्री.) लोहे की पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है, वाष्प-शक्ति द्वारा स्वचालित यान या गाड़ी; **–वे-ठेल,–पेल**–(स्त्री.) भीड़-भाड़; रेलगाड़ी, इसका सामूहिक विभाग।
रेलना–(हिं. क्रि.अ.,स.) आगे की ओर झोंकना या ढकेलना, अधिक भरा होना, ठूंस-ठूंसकर भोजन करना।
रेला–(हिं.पुं.) तबले पर महीन और सुन्दर बोलों को बजाने की रीति, पंक्ति, समूह, धक्का-मुक्का, अधिकता, जल का प्रवाह, बहाव, दल बनाकर चढ़ाई, धावा, आक्रमण।
रेवँछा–(हिं.पुं.) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।
रेवड़–(हिं.पुं.) भेड़-बकरियों का झुंड।
रेवड़ी–((हिं.स्त्री.) चीनी की चाशनी का टुकड़ा जिस पर सफेद तिल चिपकाया होता है।
रेवत–(सं.पुं.) जँबीरी नीबू, बलराम के श्वशुर का नाम।
रेवतक–(सं. पुं.) कबूतर।
रेवती–(सं.स्त्री.) अश्विनी आदि नक्षत्रों में से सत्ताईसवाँ नक्षत्र जो बत्तीस तारों का समुदाय है, बलराम की पत्नी का नाम, दुर्गा, गाय।
रेवतीभव–(सं. पुं.) शनि।
रेवतीरमण–(सं.वि.) बलराम, विष्णु।
रेवतीश–(सं. पुं.) बलराम।
रेवा–(सं. स्त्री.) नर्मदा नदी, कामदेव की पत्नी, रति, दुर्गा, नील का पौधा, दीपक राग की एक रागिनी।
रेशम–(फा.पुं.) एक प्रकार के कोशयुक्त कीड़े के चारों ओर समावेष्टित महीन या बारीक रेशों या तंतुओं के गुच्छों से बननेवाला चमकीला और मजबूत सूत या उससे बना हुआ वस्त्र; (ये कीड़े शहतूत के वृक्षों पर पाले जाते हैं।)
रेशमी–(फा.वि.) रेशम का, रेशम-संबंधी।
रेशा–(फा. पुं.) बारीक तंतु जो कुछ वनस्पतियों तथा कीड़ों से प्राप्त होता है।
रेष्–(सं. पुं.) क्षति, हानि।
रेषण–(सं. पुं.) घोड़े का हिनहिनाना।
रेषा–(सं. स्त्री.) देखें 'रेषण'।
रेष्मन–(सं. पुं.) प्रलय-काल।
रेह–(हिं. स्त्री.) खार मिली हुई मट्टी जो ऊसर में पाई जाती है।
रेहन–(फा. पुं.) मकान या भूसम्पत्ति को महाजन के पास कर्ज के प्रतिभू के रूप में बंधक या गिरवी रखना; **–दार**–(पुं.) वह महाजन जिसके पास रेहन रखा गया हो; **–दारी**–(स्त्री.) वह जोत जो रेहन रखी गई हो; **–नामा**–(पुं.) रेहन के प्रमाण के लिए रेहन रखनेवाले व्यक्ति द्वारा लिखित लेख्य-पत्र या कबूलियत।
रेहुआ–(हिं. वि.) जिसमें रेह हो।
रतुआ–(हिं. पुं.) देखें 'रायता'।
रैदास–(हिं. पुं.) एक प्रसिद्ध भक्त जो जाति का चमार था, (यह रामानन्द का शिष्य था), चमार।
रैदासी–(हिं. वि., पुं.) रैदास भक्त के सम्प्रदाय का, एक प्रकार का मोटा धान।
रैन, रैनि–(हिं. स्त्री.) रात्रि, रात; **–चर**–(पुं.) राक्षस।
रैनी–(हिं. स्त्री.) चाँदी या सोने की वह गुल्ली जो तार खींचने के लिये बनाई जाती है।
रैमुनिया–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की अरहर।
रैयाराव–(हिं.पुं.) छोटा राजा, सरदार।
रैल–(हिं. स्त्री.) समूह।
रैवत–(सं. वि.) शंकर, महादेव।
रैवतक–(सं. पुं.) गुजरात का एक पर्वत जो जूनागढ़ के पास है, (इसको आजकल गिरनार कहते हैं।)
रैहर–(हिं. पुं.) झगड़ा, लड़ाई।
रोंग–(हिं.पुं.) लोम, रोयाँ।
रोंगटा–(हिं.पुं.) संपूर्ण शरीर पर के रोएँ; (मुहा.) **रोंगटे खड़े होना**–रोमांच होना।
रोंठा–(हिं. पुं.) कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
रोंव–(हिं. पुं.) रोआँ, लोम।
रोआँ–(हिं. पुं.) रोयाँ, लोम।
रोआब–(हिं. पुं.) प्रभाव, रुआब।
रोइया–(हिं. पुं.) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर रखकर ऊख के टुकड़े काटे जाते हैं।
रोउँ–(हिं. पुं.) देखें 'रोयाँ'।
रोक–(सं.पुं.) नकद रुपया, रोकड़, नकद व्यवहार का सौदा, छेद, नाव; (हिं.स्त्री.) किसी काम में बाधा, रोकनेवाली वस्तु, रुकाव, अटकाव, निषेध, मनाही; **–टोक, टोक, थाम**–(स्त्री.) प्रतिबन्ध, बाधा, निषेध।
रोकड़–(हिं. स्त्री.) नकद रुपया-पैसा,

मूलधन, पूंजी, जमा; **–बही**–(स्त्री.) वह किताब या वही जिसमें नकद रुपयों के लेन-देन का हिसाब लिखा जाता है; **–बिक्री**–(स्त्री.) नकद दाम पर बिक्री।

रोकड़िया–(हिं. पुं.) रोकड़ रखनेवाला, कोषाध्यक्ष।

रोकना–(हिं. क्रि. स.) गति का अवरोध करना, बाधा डालना, मना करना, वश में करना, ऊपर न आन देना, स्थगित करना, प्रहार आदि न लाने देना, जाने न देना।

रोख–(हिं. पुं.) देखें 'रोष'।

रोग–(सं. पुं.) व्याधि; **–कारक**–(वि.) रोग उत्पन्न करने वाला; **–ग्रस्त**–(वि.) रोग से पीड़ित; **–न**–(पुं.) औषध; (वि.) रोग को हटानेवाला; **–ज्ञ**–(पु.) वैद्य; **–द**–(वि.) दुःख देनेवाला, रोग उत्पछ्न करनेवाला; **–नाशक**–(वि.) रोग दूर करनेवाला; **–निदान**–(पुं.) रोग के लक्षण से इसकी उत्पत्ति, कारण आदि की पहचान; **–पति**–(पुं.) ज्वर; **–प्रद**–(वि.) रोग उत्पन्न करनेवाला; **–भाज**–(वि.) रोगग्रस्त, रोगी; **–भू**–(स्त्री.) शरीर, देह; **–मुक्त**–(वि.) रोग से छुटकारा पाया हुआ; **–राज**– (पुं.) राजयक्ष्मा रोग; **–लक्षण**–(पुं.) रोग का निदान; **–विज्ञान**–(पुं.) रोग पहचानने के नियम आदि; **–विनिश्चय** (पुं.) रोग का निदान करना; **–शांति**–(स्त्री.) रोग-मुक्ति; **–शिला**–(स्त्री.) मनशिल, मैनसिल; **–ह**–(पुं.) औषध, दवा; **–हारी**–(पुं.) चिकित्सक, वैद्य; **–हृत्**–(वि.) रोगनाशक; **–हेतु**–(पुं.) रोग का कारण।

रोगन–(फा. पुं.) तेल, चिकनाई, रंग, वार्निश, पतला लेप; **–दार**–(वि.) जिसमें रोगन हो, रोगनयुक्त।

रोगाक्रांत–(सं. वि.) व्याधिग्रस्त।

रोगातुर–(सं. वि.) व्याधिग्रस्त, पीड़ित।

रोगिणी–(सं. वि., स्त्री.) रोगी (स्त्री)।

रोगित–(सं. वि.) रोग से पीड़ित।

रोगिया–(हिं. पुं.) रोगी।

रोगी–(सं. वि.) व्याधिग्रस्त, रुग्ण।

रोचक–(सं. पुं.) कदली, केला; (वि.) रुचिकारक, मनोरंजक; **–ता**–(स्त्री.) मनोहरता।

रोचकी–(सं. वि.) इच्छा करनेवाला।

रोचन–(सं. पुं.) अमलतास, सफेद सहजन, प्याज, अनार, सेमल, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, रोली, गोरोचन; (वि.) रुचनेवाला, शोभा देनेवाला, प्रिय लगनेवाला; **–फला**–(स्त्री.) ककड़ी।

रोचनक–(सं. पुं.) वंशलोचन।

रोचना–(सं. स्त्री.) लाल कमल, आकाश, स्वर्ग, वंशलोचन, वसुदेव की स्त्री का नाम।

रोचनी–(सं. स्त्री.) गोरोचन, मैनसिल।

रोचि–(सं. स्त्री.) प्रभा, दीप्ति, किरण।

रोचित–(सं. वि.) सुशोभित।

रोचिष्णु–(सं. वि.) रोचक, चमकदार।

रोचिस्–(सं. पुं.) प्रभा, कान्ति।

रोज–(फा. पुं.) दिवस, दिन; (अव्य.) प्रतिदिन, नित्य।

रोजगार–(फा. पुं.) जीविका का आर्थिक साधन, व्यवसाय, पेशा, व्यापार।

रोजगारी–(फा. पुं.) व्यापारी।

रोजनामचा–(फा. पुं.) दैनन्दिनी, डायरी।

रोजमर्रा–(फा. अव्य.) रोज या प्रतिदिन, अत्यह।

रोजा–(फा. पुं.) व्रत, उपवास, वह मासिक व्रत जो मुसलमान रमजान के महीने भर रखते हैं।

रोजाना–(फा. अव्य.) प्रतिदिन।

रोजी–(फा. स्त्री.) नित्य का भोजन, जीविका, पेशा, धंधा; **–दार**–(पुं.) रोजी पानवाला।

रोझ–(हिं. स्त्री.) नीलगाय।

रोट–(हिं. पुं.) गेहूँ के आटे की बहुत मोटी रोटी, लिट्टी।

रोटका–(हिं. पुं.) बाजरा।

रोटा–(हिं. वि.) पिसा हुआ।

रोटिहा–(हिं. पुं.) वह सेवक जो केवल भोजन पर काम करता है।

रोटी–(हिं. स्त्री.) गुंधे हुए आटे की टिकिया जो आँच पर सेंकी गई हो, फुलका, रसोई; (मुहा.) **(किसी बात की)–खाना**–कोई काम करके जीविका निर्वाह करना; **(किसी की)–तोड़ना**–किसी के आश्रित रहना; **–कपड़ा**–(पुं.) भोजन और वस्त्र; **–दाल**–(स्त्री.) जीविका-निर्वाह; **–फल**–(पुं.) एक प्रकार का फल जो खाने में स्वादिष्ट होता है।

रोठा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाजरा।

रोड़ा–(हिं. पुं.) बड़ा कंकड़, ईंट या पत्थर का ढला, एक प्रकार का मोटा धान।

रोद–(सं. पुं.) क्रन्दन, रोना, दुःख प्रकट करना।

रोदन–(सं. पुं.) क्रन्दन, रोना।

रोदस्–(सं. पुं.) स्वर्ग, भूमि।

रोदसी–(हिं. स्त्री.) पृथ्वी।

रोदा–(हिं. पुं.) कमान (धनुष) की डोरी, पतली ताँत जिससे सितार के परदे बाँधे जाते हैं।

रोध–(सं. पुं.) किनारा, तट, रुकावट।

रोधक–(सं. वि.) रोकनेवाला।

रोधन–(सं. वि.) रोकनेवाला; (पुं.) अवरोध, रुकावट।

रोधना–(हिं. क्रि. स.) रुकावट डालना, रोकना।

रोधस्वती–(सं. स्त्री.) नदी।

रोधित–(हिं. वि.) रोका हुआ।

रोधी–(सं. वि.) रोकनेवाला।

रोध्य–(सं. वि.) रोकने योग्य।

रोध्र–(सं. पुं.) लोध्र, लोध।

रोना–(हिं. क्रि. अ.) पीड़ा, दुःख आदि से व्याकुल होकर मुँह से विशेष प्रकार का स्वर निकालना तथा नेत्रों से जल बहाना, दुःख करना, पछताना, बुरा मानना, चिढ़ना; (पुं.) दुःख; (वि.) रोनेवाला, थोड़ी-सी बात पर दुःख माननेवाला, बात-बात पर बुरा माननेवाला, चिड़चिड़ा; **–रोकर**–(अव्य.) बड़ी कठिनाई और परिश्रम से; **–गाना**–(क्रि. अ.) विनती करना; **रोनी-धोनी**– (स्त्री.) शोक-प्रवृत्ति; **–पीटना**–(वि. अ.) विलाप करना।

रोप–(हिं. पुं.) हल की वह लकड़ी जो हरिस के छोर पर जड़ी रहती है।

रोपक–(सं. वि.) वृक्ष लगानवाला, स्थापित करनेवाला, उठानेवाला।

रोपण–(सं. पुं.) प्रादुर्भाव, मोहित करना, स्थापित करना, ऊपर रखना, खड़ा करना, लगाना (बीज या पौधा), पारद, पारा, घाव पर लेप लगाना।

रोपणीय–(सं. वि.) रोपने योग्य।

रोपना–(हिं. क्रि. स.) जमाना, लगाना, ठहराना, अड़ाना, किसी वस्तु को लेन के लिये हथेली या कोई पात्र आगे बढ़ाना, पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में लगाना, बीज बोना, रखना।

रोपनी–(हिं. स्त्री.) धान आदि के पौधों को क्यारी से उखाड़कर खेत में लगाना, रोपने का काम।

रोपित–(सं. वि.) रोपा हुआ, जमाया हुआ, लगाया हुआ, स्थापित, रखा हुआ, मोहित किया हुआ।

रोप्य–(सं. वि.) रोपने योग्य।
रोब–(अ. पुं.) बड़प्पन या प्रभाव, धाक, जोश; (मुहा.) **–जमाना**–धाक जमाना; **–में आना**–जोश में आना।
रोबदार–(अ. वि.) रोब से युक्त।
रोमंथ–(सं. पुं.) पागुर करने की क्रिया।
रोम–(सं. पुं.) लोम, शरीर के बाल, रोवाँ, छिद्र, जल, पानी, भेड़ आदि का ऊन; (मुहा.)**–रोम में**–संपूर्ण शरीर में; **–रोम से**–हृदय से; **–क**–(पुं.) चुम्बक; **–कूप**–(पुं.) शरीर के वे महीन छिद्र जिनमें रोवें निकले होते हैं; **–केशर**–(पुं.) चामर, चँवर; **–गर्त**–(पुं.) देखें 'रोमकूप'; **–गुच्छ**–(पुं.) चामर, चँवर; **–तक्षरी**–(स्त्री.) बिना रोवें की स्त्री; **–द्वार**–(पुं.) देखें 'रोमकूप'; **–पाट**–(पुं.) ऊनी वस्त्र, दुशाला; **–पाद**–(पुं.) अंग देश के एक प्राचीन राजा का नाम; **–पुलक**–(पुं.) रोमांच; **–फला**– (स्त्री.) डिडिश, डड़सी; **–बद्ध**–(वि.) रोओं से बँधा हुआ; **–भूमि**–(स्त्री.) चर्म, चमड़ा; **–रंध्र**–(पुं.) देखें 'रोमकूप'; **–राजि**–(स्त्री.) रोमावली, रोमों की पंक्ति; **–लता**–(स्त्री.) देखें 'रोमराजि'; **–ला**–(स्त्री.) बृहस्पति की कन्या का नाम; **–वल्ली**–(स्त्री.) कपिकच्छु, केवाँच; **–विकार**–(पुं.) रोमांच; **–श**–(पु.) मेष, भेड़ा, सुअर, एक ऋषि का नाम; **–०मूलिका**–(स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी; **–शातन**–(पुं.) बालों को काटना; **–हरण**–(पुं.) हरताल; **–हृष, –हृषण**–(पु.) रोमांच, रोमों का खड़ा होना; (वि.) भयंकर; **–हर्षित**– (वि.) पुलकित।
रोमांच–(सं. पुं.) रोमहर्षण, आनन्द या भय से रोंगटे खड़े होना, पुलक।
रोमांचित–(सं.वि.) जिसके रोंगटे खड़े हों।
रोमाग्र–(सं. पुं.) रोय की नोक।
रोमाली–(सं. स्त्री.) देखें 'रोमावली'।
रोमावलि, रोमावली–(सं. स्त्री.) रोमों की पंक्ति जो नाभि से ऊपर की ओर होती है।
रोमिल–(हिं. वि.) रोमयुक्त।
रोमोद्गति–(सं. स्त्री.) रोमांच, पुलक।
रोमोद्गम–(सं. पुं.) रोयाँ खड़ा होना।
रोयाँ–(हिं. पुं.) शरीर पर के लोम, या बाल, रोवाँ; (मुहा.)**–खड़ा होना**–रोमांच होना; **–पसीजना**– दया उत्पन्न होना।
रोर–(हिं. स्त्री.) कलकल, कोलाहल, घमासान, चिल्लाहट का शब्द; (वि.) प्रचण्ड, उपद्रवी, अत्याचारी।
रोरा–(हिं. पुं.) चूर गाँजा।
रोरी–(हिं. स्त्री.) हलदी-चूने से बनी हुई बुकनी जिसका तिलक लगाया जाता है, धूमधाम; (वि.) सुन्दर; (पुं.) लहसुनिया नामक रत्न।
रोल–(हिं. पुं.) पानी का तोड़, बहाव, नक्काशी करने का एक अस्त्र; (स्त्री.) कोलाहल, शब्द, ध्वनि।
रोलर–(अ. पुं.) लुढ़कनेवाला बेलन-सा यंत्र या उपकरण।
रोला–(सं. पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएँ होती हैं; (हिं. पुं.) कोलाहल, घमासान युद्ध, चौका-बरतन करने का काम।
रोली–(हिं. स्त्री.) देखें 'रोरी'।
रोवनहार–(हिं.पुं.) रोनेवाला, वह कुटुंबी जो घर में किसी के मर जाने पर विलाप करता है।
रोवना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'रोना'; (वि.) बहुत जल्दी बुरा माननेवाला, हँसी या खेल में बुरा माननेवाला, चिढ़नेवाला।
रोवनिहारा–(हिं.वि.) देखें 'रोवनहारा'।
रोवनी-धोवनी–(हिं. स्त्री.) रोने-धोने का काम।
रोवाँ–(हिं.पुं.) देखें 'रोयाँ'।
रोवासा–(हिं. वि.) जो रोने पर तैयार हो, जो रो देना चाहता हो।
रोशन–(फा.वि.) प्रकाशमान, चमकीला, प्रसिद्ध, विख्यात, प्रकट; **–चौकी**–(स्त्री.) शहनाई की तरह का एक वाद्य-यंत्र; **–दान**–(पुं.) गवाक्ष, खिड़की।
रोशनाई–(फा. स्त्री.) लिखने की मसि, स्याही।
रोशनी–(फा. स्त्री.) प्रकाश, दीपक, बत्ती, ज्ञान की उन्नति।
रोष–(सं. पुं.) क्रोध, उमंग, कुढ़न, विरोध, वैर।
रोषण–(सं. वि.) क्रोध करनेवाला।
रोषिन्, रोषी–(सं. वि.) क्रोधी।
रोस–(हिं. पुं.) देखें 'रोष', क्रोध।
रोसनाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'रोशनाई'।
रोसनी–(हिं.स्त्री.) देखें रोशनी', प्रकाश।
रोह–(सं. पुं.) चढ़ना, चढ़ाई; (हिं. पुं.) नीलगाय।
रोहज–(हिं. पुं.) नेत्र, आँख।
रोहण–(सं. पुं.) चढ़ना, चढ़ाई, अंकुरित होना, ऊपर को बढ़ना।
रोहना–(हिं. क्रि. अ., स.) चढना, ऊपर उठना या जाना, अपने ऊपर रखना, धारण करना, चढ़ाना, सवार कराना।
रोहा–(हिं. पुं.) आँख की पलक के भीतर दाने पड़ जाने का रोग।
रोहिणिका–(सं.स्त्री.) क्रुद्धा स्त्री।
रोहिणी–(सं. स्त्री.) स्त्री, गाय, बिजली, सफेद कौवाठोंठी, मजीठ, वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थीं, पाँच वर्ष की कुमारी, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र।
रोहिणीकांत–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
रोहिणीपति–(सं. पुं.) वसुदेव।
रोहित–(सं. पुं.) सूर्य, रोहू मछली, कुंकुम, केशर, रुधिर, इन्द्रधनुष, राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम, एक प्रकार का मृग; (वि.) लाल रंग का; **–वाह**–(पुं.) अग्नि।
रोहिताक्ष–(सं. पुं.) लाल आँख।
रोहिताश्व–(सं. पुं.) अग्नि, राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम।
रोही–(हिं. वि.) चढ़नेवाला; (पुं.) पीपल का पेड़, एक प्रकार का मृग, रोहिश घास, एक प्रकार का अस्त्र।
रोहुन–(हिं. पुं.) रोहन नाम का वृक्ष।
रोहू–(हिं.पुं..) एक प्रकार की बड़ी मछली।
रौंद–(हिं. स्त्री.) रौंदने की क्रिया या भाव, चक्कर।
रौंदन–(हिं. स्त्री.) रौंदने की क्रिया, मर्दन।
रौंदना–(हिं. क्रि. स.) पैरों से कुचलना, लातों से मारना, खूब पीटना।
रौंसा–(हिं. पुं.) कवाच का बीज।
रौं–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष।
रौक्ष्य–(सं. पुं.) रूक्षता, रूखापन।
रौगन–(अ. पुं.) तेल, रंग आदि उपकरणों से बना हुआ रोगन।
रौजा–(अ. पुं.) बाग, बगीचा, वह घर जो राजा, नवाब आदि की कब्र पर बनाया जाता है।
रौताइन–(हिं. स्त्री.) राव या रावत की स्त्री, ठकुराइन, स्त्रियों के लिये आदर-सूचक शब्द।
रौताई–(हिं. स्त्री.) राव या रावत होने का भाव, ठकुराई, सरदारी।
रौद्र–(सं.पुं.) काव्य के नौ रसों के अन्तर्गत एक रस जिसको उग्र भी कहते हैं, (इसमें क्रोधसूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन रहता है), आर्द्रा नक्षत्र, यम, कार्तिकेय, हेमन्त ऋतु, एक प्रकार का अस्त्र, ग्यारह मात्राओं का एक छन्द; (वि.) रुद्र-सम्बन्धी तीव्र, भयानक,

भयंकर; **–कर्म–**(पुं.) भयंकर काम; **–ता–**(स्त्री.) प्रचण्डता, डरावनापन।
रौद्रार्क–(सं.पुं.) तेईस मात्राओं का एक छन्द।
रौद्री–(सं. स्त्री.) रुद्र की पत्नी, चण्डी।
रौनक–(अ.स्त्री.) दीप्ति, चमक, शोभा, छटा; **–दार–**(वि.) सजा हुआ।
रौनी–(हिं. स्त्री.) देख 'रमणी'।
रौप्य–(सं. पुं.) चाँदी, रूपा; **–मुद्रा–**(स्त्री.) चाँदी की मुद्रा।
रौरव–(सं. पुं.) एक नरक का नाम; (वि.) चंचल, धूर्त, घोर, भयंकर।
रौरा–(हिं. पुं.) हल्ला, कोलाहल, ऊधम; (सव.) आपका।
रौराना–(हिं. क्रि. अ.) बकवक करना।
रौरी–(हिं. स्त्री.) कोलाहल।
रौरे–(हिं.सव.) आप, संबोधन का शब्द।
रौला–(हिं. पुं.) हल्ला, ऊधम।
रौलि–(हिं. स्त्री.) चपत, धौल।
रौशन–(फा. पुं.) देख 'रोशन'।
रौहाल–(हिं. स्त्री.) घोड़े की एक जाति, घोड़े की एक चाल।
रौहित–(सं. पुं.) रोहित मनु के पुत्र का नाम, कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
रौहिष(श)–(सं.पुं.) रोहिश नामक घास।
रौही–(सं. स्त्री.) मृगी, हरनी।

ल

ल–व्यंजन वर्ण का अट्ठाईसवाँ अक्षर; इसका उच्चारण-स्थान दंत है।
लंक–(सं. स्त्री.) कटि, कमर, लंका द्वीप; **–नाथ–**(पुं.) रावण, विभीषण।
लंका–(सं.स्त्री.) रावण का राज्य, कुलटा, व्यभिचारिणी, चुड़ैल; **–दाही–**(पुं.) हनुमान; **–नाथ–**(पु.) लंका द्वीप का राजा, रावण; **–पति–**(पुं.) रावण, विभीषण।
लंकेश, लंकेश्वर–(सं.पुं.) रावण, विभीषण।
लंखनी–(सं. स्त्री.) घोड़े की लगाम।
लंग–(सं. पुं.) संग, साथ, उपपति।
लंगक–(सं. पुं.) उपपति, जार।
लंगड़–(हिं. पुं.) लंगर; (वि.) लँगड़ा।
लँगड़ा–(हिं. वि.) जिसका पैर टूटा या बकाम हो, जिसका एक पाया टूट गया हो; (पुं.) एक प्रकार का बहुत बढ़िया कलमी आम।
लँगड़ाना–(हिं. क्रि.अ.) लँगड़े की तरह मचककर चलना।
[लँ]गड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द; (वि.) (वह स्त्री) जिसके पैर टूट गये हों।
[लं]गर–(फा.पुं.) लोहे का एक शंकवाकार भारी उपकरण जो नाव, जहाज आदि को रोक रखने के लिए धारा में गिरा या तट पर गाड़ दिया जाता है, आश्रय।
लँगरई, लँगराई–(हिं.स्त्री.) उपद्रव, ढिठाई।
लंगूर–(हिं.पुं.) बंदर, एक विशेष प्रकार का बंदर जिसका मुँह काला होता तथा पूंछ लंबी होती है; **–फल–**(पुं.) नारियल।
लंगूरी–(हिं. स्त्री.) घोड़ों की एक चाल।
लंगूल–(हिं. पुं.) पूँछ, दुम।
लंगोट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जो कमर में लपेटा जाता है, (इससे केवल उपस्थ ढप जाता है); **–बंद–**(पुं.) वह जो ब्रह्मचर्य का पालन करता हो, कसरती पहलवान।
लंगोटिया यार–(हिं.पुं.) बाल्यावस्था का मित्र
लंगोटी–(हिं. स्त्री.) कौपीन, कछनी; (मुहा.) **–पर फाग खेलना–**धन की कमी रहते हुए अधिक व्यय करना।
लंघक–(सं.वि.) लाँघनेवाला, सीमा के बाहर जानेवाला।
लंघन–(सं.पुं.) उपवास, लाँघने की क्रिया, अतिक्रमण।
लंघना–(सं. क्रि.स.) देखें 'लाँघना'।
लंघनीय, लंघ्य–(सं.वि.) लाँघने योग्य।
लँघाना–(सं. क्रि. स.) पार-उतारना या करना।
लंज–(सं. पुं.) काछ, द्रुम।
लंजिका–(हिं. स्त्री.) वेश्या।
लंठ–(हिं. वि.) मूर्ख, उद्दण्ड।
लंड–(हिं.पुं.) पुरुष की मूत्रेंद्रिय, शिश्न।
लंडूरा–(हिं. वि., पुं.) बिना पूँछ का, वह पक्षी जिसकी सारी पूँछ कट गई हो।
लंप–(हिं. पुं.) बत्ती, चिराग, लालटेन।
लंपट–(सं. वि.) व्यभिचारी, कामक; (पुं.) उपपति, जार।
लंपटता–(सं. स्त्री.) लंपट होने का भाव, दुराचारिता।
लंपाक–(सं. वि.) लंपट।
लंफ–(हिं. पुं.) उछाल।
लंफन–(हिं. पुं.) उछाल।
लंब–(सं.पुं.) किसी रेखा पर समकोण बनानेवाली रेखा, नर्तक, नाचनेवाला, पति, उत्कोच, घूस, राग का एक भेद, एक असुर का नाम, विषुवत् रेखा के समानान्तर रेखा; (वि.) दीर्घ, लंबा; **–कर्ण–**(वि., पुं.) जिसके कान लंब हों, राक्षस, हाथी, खरहा, बकरा; **–ग्रीव–**(पुं.) ऊँट; **–जठर–** (वि.) लंब पेटवाला; **–जिह्व–**(पुं.) एक राक्षस का नाम; **–तड़ंग–** (हिं. वि.) बहुत लंबा; **–दंता–** (वि.) लंबे दाँतवाला; **–न–**(पुं.) आश्रय, झूलने की क्रिया; **–पयोधरा–**(स्त्री.) जिस स्त्री के स्तन लंबा हों; **–मान–**(वि.) लंबा।
लंबा–(सं.स्त्री.) दक्ष की कन्या का नाम; **–स्तनी–**(स्त्री.) वह स्त्री जिसके स्तन लटकते हो।
लंबर–(हिं. पुं.) देखें 'नंबर'।
लंबरदार–(हिं. पुं.) देखें 'नंबरदार'।
लंबा–(हिं. वि.) जिसके दोनों छोर एक-दूसरे से बहुत दूरी पर हों, जिसकी ऊँचाई अधिक हो, ऊपर की ओर दूर तक उठा हुआ, विशाल, बड़ा, दीर्घ; (मुहा.) **–करना–**प्रस्थान कराना, चलता या रवाना करना, भूमि पर लेटा देना।
लंबाई–(हिं. स्त्री.) लंबा होने का भाव, लंबा आकार या विस्तार।
लंबान–(हिं. स्त्री.) लंबाई।
लंबिका–(सं.स्त्री.) गले के भीतर की घंटी।
लंबित–(सं. वि.) अवलंबित।
लंबी–(हिं. वि. स्त्री.) 'लंबा' शब्द का स्त्रीलिंग रूप; (मुहा.) **–तानना–**बेफिक्र सो जाना।
लंबोतरा–(हिं. वि.) लंबे आकार का, जो कुछ-कुछ लंबा हो।
लंबोदर–(सं. पुं.) गणेशजी।
लंबोष्ठ–(सं.पुं.) ऊँट; (वि.) लंबे ओठोंवाला।
लंभ (न) –(सं. पुं.) प्राप्ति।
लंभनीय–(सं. वि.) प्राप्य।
लंभित–(सं. वि.) प्राप्त किया हुआ।
लउ–(हिं. स्त्री.) लगन।
लउटी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लकुटी'।
लकच–(सं. पुं.) बड़हर का पेड़।
लकड़बग्घा–(हिं.पुं.) एक जंगली मांसाहारी पशु जो भेड़िये से कुछ बड़ा होता है।
लकड़हारा–(हिं. पुं.) वह जो जंगल से लकड़ी लाकर नगर में बेचता हो।
लकड़ा–(हिं.पुं.) लकड़ी का मोटा कुंदा, जुआर-बाजरे आदि का सूखा डंठल।
लकड़ी–(हिं. स्त्री.) वृक्ष का कोई मोटा भाग जो काटकर उससे अलग किया गया हो, काठ, ईंधन, छड़ी, लाठी; (मुहा.) **–होना–**सूखकर कड़ा हो जाना, अति दुर्बल होना।
लकलक–(हिं. वि.) खूब सफेद, चमकीला।
लकवा–(अ.पुं.) वह रोग जो शरीर के कुछ अंगों (हाथ आदि) को सुन्न कर देता है, पक्षाघात।
लकसी–(हिं.स्त्री.) फल आदि तोड़ने की

लगी जिसके सिरे पर लोहे की चन्द्राकार अँकुसी लगी होती है।
लकार–(सं. पुं.) 'ल' स्वरूप वर्ण।
लकीर–(हिं.स्त्री.) एक सीध में खींची हुई रेखा, आकृति, धारी, पंक्ति, रेखा के समान दूर तक का चिह्न; (मुहा.) **–का फकीर**–पुराने ढंग पर चलनेवाला; **–पीटना**–पुरानी प्रथाओं पर चलना।
लकुच–(सं. पुं.) बड़हर का वृक्ष।
लकुट–(सं.पुं.) लगुड़, लाठी; (हिं.पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसका जामुन के आकार का फल वर्षा ऋतु में पकता है।
लकुटी–(हि. स्त्री.) छोटी लाठी, छड़ी।
लकोड़ा–(हि.पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा जिसके रोयें के दुशाले बनते हैं।
लक्कड़–(हिं.पुं.) काठ का बड़ा कुंदा।
लक्का–(हि. पुं.) एक प्रकार का कबूतर, जो छाती उभाड़कर चलता है, इसकी, पूँछ फैली हुई रहती है; **–कबूतर**–(पुं.) नाच की एक मुद्रा।
लक्खी–(हि.वि.) लाख के रंग का; (पुं.) घोड़े की एक जाति, लखपती, बड़ा धनी।
लक्त–(सं. वि.) लाल रंग का।
लक्तक–(सं. पुं.) अलक्तक आलता, फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा।
लक्ष–(सं.पुं.) व्याज, बहाना, निशान, चिह्न, पर, अस्त्र का एक प्रकार का प्रहार; (वि., पुं.) एक लाख, सौ हजार की संख्या।
लक्षक–(सं., पुं., वि.) (वह) जो लक्ष कराता हो, जता देनेवाला।
लक्षण–(सं. पुं.) चिह्न, नाम जिससे जाना या पहचाना जाय, शरीर म दिखाई पड़नेवाले रोग के चिह्न, शरीर पर कहीं कहीं होनेवाला विशेष चिह्न, (ये चिह्न सामुद्रिक के अनुसार शुभाशुभ माने जाते हैं), सारस पक्षी, दर्शन, तरीका, चाल-ढाल; **–ज्ञ**–(पुं.) वह जो लक्षण पहचानता हो; **–त्व**–(पुं.) लक्षण का भाव या धर्म; **–लक्षणा**–(स्त्री.) लक्षणा का एक भेद; **–वंत**–(हिं. वि.) लक्षणयुक्त।
लक्षणा–(सं. स्त्री.) हंसी, सारसी, एक अप्सरा का नाम, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसके अभिप्रेत अर्थ का बोध होता है।
लक्षणी–(सं. वि.) जिसमें कोई लक्षण या चिह्न हो, लक्षण जाननेवाला।
लक्षणीय–(सं. वि.) लक्षण द्वारा जानने योग्य।
लक्षा–(सं. स्त्री.) एक लाख की संख्या।
लक्षि–(सं. स्त्री.) देखे 'लक्ष्मी'।
लक्षित–(सं. वि.) आलोचित, विचारा हुआ, देखा हुआ, बतलाया हुआ, जिस पर कोई चिह्न बना हो, अनुमान से जाना हुआ; (पुं.) शब्द का वह अर्थ जो लक्षणा शक्ति द्वारा जाना जाता है।
लक्षितव्य–(सं. वि.) लक्षित करने योग्य।
लक्षितलक्षणा–(सं.स्त्री.) लक्षणा अलंकार का एक भेद।
लक्षिता–(सं.स्त्री.) वह परकीया नायिका जिसका गुप्त प्रेम उसकी सखियों को मालूम हो जाय।
लक्षी–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण म चौबीस अक्षर होते हैं, (इस वृत्त को गंगोदक, गंगाधर या खंजन भी कहते हैं।)
लक्ष्म–(सं. पुं.) चिह्न।
लक्ष्मण–(सं. पुं.) चिह्न, लक्षण, सारस, दुर्योधन के एक पुत्र का नाम, दशरथ के द्वितीय पुत्र जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे; (वि.) शोभा और कान्तियुक्त।
लक्ष्मणा–(सं.स्त्री.) सफेद कण्टकारी का पौधा, दुर्योधन की बेटी का नाम, मुचकुंद का पेड़।
लक्ष्मी–(सं.स्त्री.) विष्णु की पत्नी, पद्मा, कमला, धन की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा, शोभा, सौन्दर्य, सम्पत्ति, सीताजी का एक नाम, हल्दी, मोती, स्थल कमल, पद्म, कमल, सफेद, तुलसी आर्या छन्द का एक भेद, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं; **–क**–(पुं.) भाग्यवान्; **–कांत**–(पुं.) नारायण; **–गृह**–(पुं.) लक्ष्मी का घर, लाल कमल; **–टोड़ी**–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की संकर रागिनी; **–ताल**–(पुं.) संगीत में १८ मात्राओं का एक ताल; **–त्व**–(पुं.) लक्ष्मी का भाव या धर्म, ऐश्वर्य; **–धर**–(पुं.) विष्णु, स्रग्विणी छन्द का दूसरा नाम; **–नाथ**–(पुं.) विष्णु; **–नारायण**–(पुं.) लक्ष्मी और नारायण, वह शालिग्राम शिला जिस पर चक्र बना रहता है; **–निधि**–(पुं.) राजा जनक के पुत्र का नाम; **–निवास**–(पुं.) लक्ष्मी का निवास-स्थान; **–पति**–(पुं.) विष्णु, वासुदेव, राजा सुपारी; **–पुत्र**–(पुं.) कामदेव, धनवान् पुरुष; **–पुष्प**–(पुं.) पद्मराग मणि; **–फल**–(पुं.) बेल; **–रमण**–(पुं.) नारायण, विष्णु; **–वसति**–(स्त्री.) कमल का फूल; **–बहिष्कृत**–(वि.) धनहीन, दरिद्र; **–वान्**–(पुं.) कटहल का पेड़; (वि.) धनवान्, धनी; **–श्रेष्ठा**–(स्त्री.) स्थल, पद्मिनी; **–सख**–(पुं.) राजा या धनवान् मनुष्य; **–सनाथ**–(वि.) रूप और ऐश्वर्ययुक्त; **–सहज**–(पुं.) चन्द्रमा।
लक्ष्य–(सं.पुं.) निशाना लगाने का स्थान, जिस पर किसी प्रकार का आक्षप किया जाय, अस्त्रों का एक प्रकार का संहार, उद्देश्य, शब्दों के वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य इन तीनों अर्थों म वह अर्थ जो लक्षणा से निकलता है; **–क्रम**–(पुं.) वह अज्ञात विधि जिससे उद्दिष्ट वस्तु का आकार और चेष्टा जानी जाय; **–ज्ञ**–(पुं.) लक्ष्य का ज्ञानी; **–०त्व**–(पुं.) वह ज्ञान जो चिह्न अथवा दृष्टान्त द्वारा उत्पन्न हो; **–ता**–(स्त्री.) लक्ष्य का भाव या धर्म; **–भेद**–(पुं.) वह निशाना जिससे चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदा जाता है; **–वीथी**–(स्त्री.) ब्रह्मलोक का मार्ग, वह विधि जिससे जीवन का उद्देश्य सिद्ध हो; **–वेधी**–(वि.) लक्ष्य का वेध करनेवाला; **–सुप्त**–(वि.) नींद तोड़नेवाला; **–हन्**–(वि.) लक्ष्य का वेध करनेवाला, ठीक निशाना लगानेवाला।
लक्ष्यार्थ–(सं. पुं.) लक्षणा से निकलनेवाला अर्थ।
लखघर–(हिं. पुं.) देखें 'लाक्षागृह'।
लखन–(हिं. पुं.) लक्ष्मण; (हिं. स्त्री.) लखने या देखने की क्रिया या भाव।
लखना–(हिं. क्रि. स.) लक्षण देखकर अनुमान कर लेना, देखना।
लखपती–(हिं. पुं.) जिसके पास लाखों रुपयों की सम्पत्ति हो।
लखमीतात–(हिं.पुं.) समुद्र।
लखमीवर–(हिं.पुं.) विष्णु।
लखर–(हिं.पुं.) काकड़ासिंगी नामक फल जिसको सुंघाकर मूर्च्छित आदमी को सचेत करते हैं।
लखरावँ–(हि.पुं.) आम की बड़ी वाटिका।
लखलुट–(हिं. वि.) धन लुटानेवाला, अपव्ययी।
लखाउ–(हिं.पुं.) चिह्न, लक्षण, स्मारक रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।
लखाना–(हिं. क्रि. स.) दिखलाना, समझा देना, अनुमान करा देना।
लखाव–(हिं. पुं.) देखें 'लखाउ'।
लखिमी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लक्ष्मी'।
लखिया–(हिं. वि.) लखनेवाला, अनुमान

करनेवाला।
लखी–(हिं. पुं.) लाख के रंग का घोड़ा।
लखेदना–(हिं. क्रि. स.) भगाना।
लखेरा–(हिं. पुं.) लाख की चूड़ी, खिलौने आदि बनानेवाली एक जाति।
लखोट (ठ)–(हिं. पुं.) देखें 'लकुट'।
लखौट–(हिं. पुं.) स्त्रियों के हाथ में पहिनने की लाख की चौड़ी चूड़ी।
लखौरी–(हिं. स्त्री.) पुराने ढंग की छोटी पतली ईंट, भौंरी का घर जो वह मिट्टी का बनाती है, किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना।
लगंत–(हिं. स्त्री.) लगने या स्त्री-प्रसंग करने की क्रिया या भाव, लग्न होने की क्रिया।
लग–(हिं. अव्य.) पास, पर्यन्त, तक, लिये, साथ, सँग; (स्त्री.) लगन, प्रेम।
लगढग–(हिं. अव्य.) देखें 'लगभग'।
लगदी–(हिं.स्त्री.) बच्चों के नीचे बिछाने की कथरी।
लगन–(हिं. स्त्री.) लगने की क्रिया या भाव, लगाव, प्रवृत्ति का किसी ओर लगना, प्रेम, लौ, संबंध; (पुं.) विवाह आदि के लिये स्थिर किया हुआ शुभ मुहूर्त, देखें 'लग्न'।
लगनपत्री–(हिं. स्त्री.) विवाह के मुहूर्त का पत्र जो कन्या का पिता वर के पिता के पास भेजवाता है।
लगना–(हिं. क्रि. स.) दो पदार्थों के तल का परस्पर मिलना, सटना, मिल जाना, जड़ा या चिपकाया जाना, जमना, उगना, स्थापित होना, चोट पहुँचना, संबंध में कोई होना, किनारे पर ठहरना, व्यय होना, क्रम में रखा जाना, जान पड़ना, आरंभ होना, गड़ना, चुभना, प्रहार पड़ना (लाठी का), किसी कार्य में तत्पर होना, निश्चय होना, साथ होना, चिह्नित होना, गाय-भैंस आदि का दुहा जाना, ठीक बैठना, छेड़छाड़ करना, आरोप होना, जलना, हिसाब होना, जहाज या नाव का छिछले पानी में धँस जाना, इकट्ठा होना, मूल्य निर्धारित होना, पाल को खींचकर चढ़ाना, बिछाना, फैलाना, किसी शस्त्र की धार पैनी करना, परचना, सधना, ताक या घात में रहना, संभोग करना, निश्चित स्थान पर पहुँचना, जानवरों का जोड़ा खाना; आवश्यक होना, प्रभाव पड़ना, सड़ना, गलना, टकराना, किसी वस्तु का शरीर पर जलन उत्पन्न करना, किसी पदार्थ का तल में बैठना, मला जाना, रगड़ खाना, दाँव पर रखा जाना, समीप पहुँचना; (पुं.) एक प्रकार का जंगली हरिना; **लगती बात**–मर्मवेधी वार्ता।
लगनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'लगन'।
लगनी–(हिं. स्त्री.) छोटी थाली।
लगभग–(हिं. अव्य.) प्रायः।
लगमात–(हिं. स्त्री.) स्वरों के चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यंजनों में जोड़े जाते हैं।
लगर–(हिं.पुं.) एक शिकारी पक्षी, बाज।
लगव–(हिं. वि.) मिथ्या, झूठ, असत्य।
लगवाना–(हिं. क्रि. स.) लगाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को लगाने में प्रवृत्त करना।
लगवार–(हिं. पुं.) उपपति, यार।
लगातार–(हिं.अव्य.) एक के बाद एक, अटूट।
लगान–(हिं. पुं.) लगने या लगाने की क्रिया या भाव; वह स्थान जहाँ भार ढोनेवाले अपने सिर पर का बोझ उतारकर सुस्ताते हैं, भूमिकर जो किसान भूस्वामी को देता है, राजस्व, पोत।
लगाना–(हिं. क्रि. स.) एक पदार्थ के छोर से दूसरे पदार्थ का छोर मिलाना, रगड़ना, चिपकाना, जोड़ना, आरोपित करना, अभियोग चलाना, नियुक्त करना, प्रवृत्त करना, सम्मिलित करना, संभोग करना, बिछाना, फैलाना, नाव या जहाज को छिछले किनारे पर रोकना, चिह्नित करना, सान धराना, बदले में देना, पास लाना, किसी के प्रति दुर्भाव उत्पन्न करना, छुआना, तत्पर करना, दाम आँकना, अपने साथ ले चलना, गाड़ना, धँसाना, पहिनना, ओढ़ना, परचाना, गाय-भैंस को दुहना, निश्चित स्थान पर पहुँचाना, जलाना, क्रम में रखना, अनुभव करना, व्यय करना, चोट पहुँचाना, पोतना, स्थापित करना, सड़ाना, अभिमान करना, चुनना, वृक्ष जमाना, काम में लाना, दाँव पर रखना।
लगाम–(फा.स्त्री.) घोड़े के मुँह में लगाने का लोहे का ढाँचा जिसके दोनों ओर चमड़े का तस्मा या रस्सा बँधा रहता है जिसको सवार या हाँकनेवाला हाथ में थामता है, बाग, रास।
लगाय–(हिं. स्त्री.) प्रेम।
लगार–(हिं. स्त्री.) बंधेज, लगाव, वह जिससे घनिष्टता का संबंध हो, मेली, लगने की क्रिया या भाव, लगन, प्रीति, क्रम, टिकान, भेद लेने के लिये भेजा हुआ मनुष्य, किसी घर के ऊपरी भाग से मिला हुआ कोई ऐसा स्थान जहाँ से कोई आ-जा सकता है।
लगालगी–(हिं. स्त्री.) लाग, संबंध, मेल-जोल, प्रेम, स्नेह।
लगालिका–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार अक्षर होते हैं।
लगाव–(हिं. पुं.) लगने का भाव, संबंध;–**ट**–(स्त्री.) प्रीति, प्रेम, संबंध।
लगावन–(हिं. पुं.) देखें 'लगाव'।
लगावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'लगाना'।
लगि–(हिं.अव्य.) देखें 'लग'; (स्त्री.) लग्गी।
लगित–(सं. वि.) संयुक्त, मिला हुआ।
लगी–(हिं. स्त्री.) मेल, प्रेम, देखें 'लग्गी'
लगु–(हिं. अव्य.) लग।
लगुड़–(सं. पुं.) दण्ड, डंडा, लाठी।
लगुल–(हिं. पुं.) शिश्न, लिंग।
लगूर–(हिं. स्त्री.) लांगल, पोंछ।
लगे–(हिं. अव्य.) देखें 'लग'।
लगौंहा–(हिं.वि.) जिसको लगन लगाने की अभिलाषा हो, रिझवैया।
लग्गा–(हिं. पुं.) लंबा बाँस, वह लंबा बाँस जिसके आगे एक अँकुसी लगी रहती है जिससे वृक्षों के फल तोड़े जाते हैं, कार्य आरंभ करना।
लग्गी–(हिं.स्त्री.) लंबा बाँस, मोटा लग्गा।
लग्घड़–(हिं. पुं.) श्येन पक्षी, बाज, एक प्रकार का चीता, लकड़बग्घा।
लग्घा, लग्घी–(पुं., स्त्री.) देखें 'लग्गा', 'लग्गी'।
लग्न–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार दिन का उतना अंश जितने में एक राशि उदय होती है, वह शुभ मुहूर्त जिसमें कोई मंगल-कार्य किया जाता है, विवाह का समय, ब्याह; (वि.) लगा हुआ, मिला हुआ, आसक्त, लज्जित;–**कंकण**–(पुं.) वह मंगलसूत्र या कंकण जो विवाह के पहिले वर और कन्या के हाथ में बाँधा जाता है;–**क**–(पुं.) प्रतिभू, संगीत में एक राग का नाम;–**काल**–(पुं.) लग्न का समय; –**कुंडली**–(स्त्री.) वह चक्र या कुण्डली जिससे यह पता चलता है कि जन्म के समय कौन-कौन से ग्रह किस-किस राशि में थे; –**ग्रह**–(पुं.) लग्न में स्थित ग्रह;–**दंड**–(पुं.) संगीत में स्वरों का परस्पर मिलाप; –**दिन**–(पुं.) विवाह का निश्चित दिन;–**पत्र**–(पुं.),–**पत्रिका**–(स्त्री.) वह पत्र जिसमें विवाह तथा इससे संबंध रखनेवाले

अन्य कृत्यों का विवरण लिखा रहता है; –वेला–(स्त्री.) लग्न का समय।
लग्नायु–(सं. स्त्री.) लग्न के अनुसार स्थिर की हुई आयु।
लग्निका–(सं. स्त्री.) नंगी स्त्री।
लग्नेश–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो।
लग्नोदय–(सं. पुं.) किसी लग्न के उदय होने का समय।
लघित्र–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का धारदार अस्त्र।
लघिमा–(सं. स्त्री.) लघुत्व, छोटापन, योग से प्राप्त वह शक्ति जिससे योगी बहुत छोटा तथा हलका बन सकता है।
लघीयस्–(सं.वि.) बहुत छोटा या हलका।
लघु–(सं. पुं.) शरीर, खस, पन्द्रह क्षण का समय, व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है, यथा–अ, इ, उ, ए, ओ आदि, चाँदी; (वि.) हलका, छोटा, सुन्दर, बढ़िया, थोड़ा, कम, दुर्बल, निःसार; **–करण**–(पुं.) छोटा या तुच्छ करना; **–काय**–(वि.) नाटे शरीर का; **–क्रम**–(पुं.) जल्दी-जल्दी चलने की क्रिया; **–क्रिया**–(स्त्री.) तुच्छ कार्य; **–गण**–(पुं.) अश्विनी, पुष्य और हस्त नक्षत्रों का समूह; **–चंदन**–(पुं.) अगर नामक सुगन्धित लकड़ी; **–चित्त**–(वि.) क्षिप्र-चित्त; **–चित्तता**–(स्त्री.) चित्त का अति चंचल होना; **–चेतस्**–(वि.) क्षुद्र या नीच विचारवाला, जो देने में उदार न हो; **–जंगल**–(पुं.) लवा नामक पक्षी; **–तर**–(वि.) बहुत छोटा; **–ता**–(स्त्री.) तुच्छता, हलकापन; **–तुपक**–(स्त्री.) तमंचा, पिस्तौल; **–त्व**–(पुं.) तुच्छता, छोटापन, हलकापन; **–दुंदुभी**–(स्त्री.) डुगडुगी; **–द्राक्षा**–(स्त्री.) किशमिश; **–पत्रफला**–(स्त्री.) छोटा गूलर; **–पत्री**–(स्त्री.) पीपल का वृक्ष; **–पर्णी**–(स्त्री.) सतावर; **–पाक**–(पुं.) सहज में पचनेवाला खाद्य; **–पाती**–(वि.) शीघ्र गिरनेवाला; **–पिच्छिल**–(पुं.) लिसोड़ा; **–प्रयत्न**–(वि.) आलसी; **–फल**–(पुं.) छोटा गूलर; **–वदर**–(पुं.) छोटा बेर; **–भव**–(पुं.) निकृष्ट जन्म; **–भाव**–(पुं.) सहज में होने-वाला कार्य; **–भोजन**–(पुं.) हलका भोजन; **–मति**–(वि.) छोटी बुद्धि-वाला, मूर्ख; **–मांस**–(पुं.) तीतर नामक पक्षी; **–मांसी**–(स्त्री.) छोटी जटामासी; **–मान**–(पुं.) नायिका का वह मान या अल्प रोष जो नायक को किसी अन्य स्त्री के साथ बात करते हुए देखकर उत्पन्न होता है; **–राशि**–(स्त्री.) छोटी संख्या; **–लता**–(स्त्री.) अनन्तमूल, करेले की लता; **–लय**–(पुं.) उशीर, खस; **–वासा**–(वि.) हलका तथा पतला वस्त्र पहननेवाला, **–वृत्ति**–(वि.) छोटा काम करनेवाला; **–वेधी**–(वि.) शीघ्र वेधनेवाला; **–शंका**–(स्त्री.) मूत्रोत्सर्ग; **–शंख**–(पुं.) घोंघा; **–शिखर**–(पुं.) संगीत में एक प्रकार का ताल; **–शीत**–(पुं.) लिसोड़ा; **–सत्त्व**–(वि.) क्षुद्र प्रकृति का; **–सार**–(वि.) जिसमें थोड़ा सार हो; **–हस्त**–(पुं.) वह जो शीघ्र वाण चलाता हो, धनुर्धर; **–हस्तता**–(स्त्री.) शीघ्रता से वाण चलाना; **–हृदय**–(वि.) चंचल चित्तवाला।
लघूकरण–(सं. पुं.) काटना, छाँटना।
लघूक्ति–(सं. स्त्री.) कम बोलना।
लघ्वानंद–(सं. वि.) कम आनन्द का।
लघ्वाशी–(सं. वि.) कम खानेवाला।
लघ्वाहार–(सं. पुं.) हलका भोजन।
लचक–(हिं. स्त्री.) लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव, किसी वस्तु का वह गुण जिससे वह दबती या झुकती है।
लचकना–(हिं. क्रि. अ.) दबाव पड़ने पर किसी लंबे पदार्थ का झुकना, लचना, स्त्रियों का चलती समय रह-रहकर झुकना।
लचकनि–(सं. स्त्री.) लचक, लचीलापन।
लचका–(हिं. पुं.) एक प्रकार का गोटा।
लचकाना–(हिं. क्रि. स.) झुकाना।
लचकीला, लचकौंहाँ–(हिं. वि.) लचकने योग्य, लचकनेवाला।
लचन–(हिं. स्त्री.) देखें 'लचक'।
लचना–(हिं. क्रि. अ.) लचकना।
लचनि–(हिं. स्त्री.) लचक।
लचलचा–(हिं. वि.) लचीला।
लचलचापन–(हिं. पुं.) लचीला होने का भाव।
लचाना–(हिं.क्रि.स.) लचकाना, झुकाना।
लचार–(हिं. वि.) देखें 'लाचार'।
लचारी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लाचारी', भेंट, एक प्रकार का ग्राम-गीत।
लच्छ–(हिं. पुं.) लक्ष्य, बहाना, सौ हजार की संख्या, लाख; (स्त्री.) लक्ष्मी।
लच्छण–(हिं. पुं.) लक्षण, स्वभाव।
लच्छन–(हिं. पुं.) देखें 'लक्षण'।
लच्छमी–(हि. स्त्री.) देखें 'लक्ष्मी'।
लच्छा–(हिं. पुं.) बहुत-से तारों या डोरों का समूह, झुप्पा, गुच्छा, एक प्रकार की मैदे की बनी हुई मिठाई, एक प्रकार का घटिया केसर, किसी पदार्थ के सूत की तरह लंबे तथा पतले कटे हुए टुकड़े, तारों की सिकड़ी का बना हुआ एक प्रकार का गहना; **–साख**–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की संकर रागिणी।
लच्छि–(हिं. पुं.) एक लाख की संख्या, (स्त्री.) लक्ष्मी; **–नाथ**–(पुं.) लक्ष्मी-पति, विष्णु; **–निवास**–(पुं.) विष्णु।
लच्छित–(सं. वि.) लक्ष्य किया हुआ, देखा हुआ।
लच्छी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का घोड़ा; (स्त्री.) लक्ष्मी, कलावत्तू, सूत, रेशम आदि की लपेटी हुई गुच्छी, अंटी।
लच्छेदार–(फा. वि.) लच्छों से युक्त।
लछन–(हिं. पुं.) लक्ष्मण, देखें 'लक्षण'।
लछमन–(हिं. पुं.) देखें 'लक्ष्मण'; **–झूला**–(पुं.) बदरीनारायण के मार्ग में हृषिकेश के पास बना हुआ लोहे के रस्सों पर लटका हुआ पुल।
लछमी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लक्ष्मी'।
लछारा–(हिं. वि.) लंबा।
लज–(हिं. स्त्री.) देखें 'लाज', लज्जा।
लजना–(हिं. क्रि. अ.) लजाना।
लजवाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे को लज्जित करना।
लजाधुर–(हिं.पुं.) लजालू नाम का पौधा; (वि.) लज्जावान्।
लजाना–(हिं. क्रि. अ., स.) लज्जित होना या करना।
लजारू, लजालू–(हिं. पुं.) लजाधुर नाम का पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ या बंद हो जाती हैं।
लजावना–(हिं. क्रि. अ., स.) लजाना।
लजियाना–(हिं. क्रि. स.) लजाना।
लजीज–(अ. वि.) स्वादिष्ट।
लजीला–(हिं. वि.) लज्जायुक्त।
लजुरी–(हिं. स्त्री.) कुएँ से पानी निकालने की रस्सी, लेजुर।
लजोर–(हिं. वि.) लज्जावान्।
लजोहा, लजौहाँ, लजौना–(हिं. वि.) लज्जावान्, लजीला।
लज्जका–(सं. स्त्री.) वनकपास।
लज्जत–(अ. स्त्री.) स्वाद; **–दार**–(वि.) स्वादिष्ट।
लज्जा–(सं. स्त्री.) अन्तःकरण की वह भावना जिसके कारण दूसरे के सामने

वृत्तियाँ संकुचित हो जाती हैं, लाज, मान-मर्यादा; **-कर**-(वि.) लज्जा उत्पन्न करनवाला; **-प्रद**-(वि.) लज्जा उत्पन्न करनेवाला; **-प्राया**-(स्त्री.) मुग्धा नायिका का एक भेद; **-लु**-(वि.) लज्जाशील; **-वत्,-वान्**-(वि.) लजाधुर; **-वती**-(वि. स्त्री.) लज्जाशील (स्त्री.); **-शील**-(वि.) जो दूसरे से लज्जा करता हो; **-शून्य**-(वि.) निर्लज्ज; **-हीन**-(वि.) निर्लज्ज।

लज्जिका-(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

लज्जित-(सं. वि.) लजाया हुआ।

लटंग-(हिं. पुं.) एक प्रकार का बाँस।

लट-(सं. पुं.) पागल, चोर; (हिं.स्त्री.) सिर के बालों का समूह जो नीचे तक लटका रहता है, बालों का गुच्छा, महीन कीड़े जो मनुष्य की आँतों में पड़ जाते हैं, एक प्रकार का बेंत, लपट।

लटक-(हिं. स्त्री.) लटकने की क्रिया या भाव, झुकाव, लचक, ढाल।

लटकन-(हिं. पुं.) नीचे की ओर लटकने की क्रिया या भाव, लुभानेवाली चाल, पगड़ी में लगे हुए रत्नों का गुच्छा, मलखम्भ का एक व्यायाम, लटकनेवाली वस्तु, नाक में पहनने का झुमका, एक वृक्ष जिसके फूलों से लाल रंग निकलता है।

लटकना-(हिं. क्रि. अ.) ऊँचे स्थान से नीचे की ओर (आधार की ओर) झुका रहना, झूलना, टँगना, लचकना, किसी वस्तु का किसी ओर झुकना, दुविधे में पड़ा रहना, किसी काम का बिना पूरा हुए पड़ा रहना, नम्र होना।

लटकवाना-(हिं. क्रि. स.) लटकाने का काम दूसरे से कराना।

लटका-(हिं. पुं.) गति, चाल, किसी शब्द या वाक्य का बारम्बार प्रयोग करना, बनावटी चेष्टा, हावभाव, तन्त्र-मन्त्र की छोटी युक्ति, टोटका, एक प्रकार का चलता गाना, किसी रोग की शान्ति का सूक्ष्म प्रयोग, बातचीत करने का बनावटी ढंग।

लटकाना-(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु का एक छोर किसी ऊँचे स्थान में बाँधकर नीचे का छोर निराधार रहने देना, आसरे में रखना, काम को पूरा न करके स्थगित रखना, किसी वस्तु को लचकाना या झुकाना, लटकने में प्रवृत्त करना।

लटकोली-(हिं. वि.) झूमता हुआ, बल खाता हुआ, लचकदार।

लटकू-(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी जड़ से रंग निकाला जाता है।

लटकौआ (वा)-(हिं. वि.) लटकनेवाला।

लटजीरा-(हिं. पुं.) अपामार्ग, चिचड़ा, एक प्रकार का महीन धान।

लटना-(हिं. क्रि. अ.) थककर गिर जाना, लड़खड़ाना, ढीला पड़ना, शिथिल होना, व्याकुल होना, दुर्वल होना, ललचाना, लुभाना, अनुरक्त होना, लीन होना।

लटपट (टा)-(हिं. वि.) गिरता-पड़ता, लड़खड़ाता हुआ, जो क्रम में न हो, टूटा-फूटा, थककर गिरा हुआ, जिसमें परत पड़ी हो, लेई की तरह गाढ़ा, ढीला, अशक्त, अव्यवस्थित।

लटपटान-(हिं. स्त्री.) लड़खड़ाहट, मनोहर गति, लचक।

लटपटाना-(हिं. क्रि. अ.) सीधे न चलकर इधर-उधर डग मारते हुए चलना, लड़खड़ाना, अनुरक्त होना, लीन होना, लुभाना, मोहित होना, स्थिर न रहना, डिगना।

लटा-(हिं. वि.) लोलुप, लंपट, बुरा, पतित, गिरा हुआ, नीच, हीन, तुच्छ।

लटापटी-(हिं. स्त्री.) लटपटाने की क्रिया या भाव, लड़ाई, झगड़ा।

लटापोट-(हिं. वि.) मुग्ध, मोहित।

लटिया-(हिं. स्त्री.) सूत आदि का लच्छा, आँटी।

लटी-(हिं. स्त्री.) बुरी बात, असत्य वार्ता, वेश्या, रंडी, भक्त स्त्री।

लटुआ-(हिं. पुं.) देखें 'लट्टू'।

लटुक-(हिं. पुं.) लकुट का वृक्ष और फल।

लटुरी-(हिं. स्त्री.) देखें 'लटूरी'।

लटू-(हिं. पुं.) देखें 'लट्टू'।

लटूरी-(हिं. स्त्री.) सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा, अलक, केश।

लटोरी-(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसके फलों में लसदार गूदा होता है।

लट्ट-(सं. पुं.) दुष्ट मनुष्य; **-पट्ट**-(वि.) देखें 'लथपथ'।

लट्टू-(हिं. पुं.) गोल आकार का एक खिलौना जिसको सूत लपेटकर जमीन पर फेंककर नचाया जाता है, लट्टू के आकार की कोई वस्तु; (मुहा.) **(किसी पर) -होना**-मुग्ध होना, आसक्त होना।

लट्ठ-(हिं. पुं.) बड़ी लाठी, सोंटा, बड़ा डंडा; **-बंदी**-(स्त्री.) खेत की सामान्य नाप जो लट्ठे से की जाय; **-बाज**-(वि.) लाठी चलानेवाला, बड़ी लाठी बाँधनेवाला; **-बाजी**-(स्त्री.) लाठियों की लड़ाई; **-मार**-(वि.) लट्ठ मारनेवाला, अप्रिय, कठोर, कर्कश।

लट्ठा-(हिं. पुं.) लकड़ी का मोटा लंबा टुकड़ा, खेत नापने का बाँस जो साढ़े पाँच हाथ लंबा होता है, लकड़ी का बल्ला, धरन, लकड़ी का खंभा, मोटा मारकीन।

लठ-(हिं. पुं.) देखें 'लट्ठ'।

लठियल-(हिं. वि.) लाठी बाँधनेवाला।

लठैत-(हिं. पुं.) लाठी चलानेवाला।

लड़ंत-(हिं. स्त्री.) लड़ाई, सामना।

लड़-(हिं.स्त्री.) पंक्ति, माला, रस्सी का एक तार, फूलों या मंजरियों का गुच्छा।

लड़कई-(हिं.स्त्री.) बाल्यावस्था, लड़कपन।

लड़कखेल-(हिं. पुं.) बालकों का खेल, अति सहज कार्य।

लड़कपन-(हिं. पुं.) बाल्यावस्था, लड़कों की चंचलता, चपलता।

लड़कबुद्धि-(हिं. स्त्री.) बालकों के समान बुद्धि।

लड़का-(हिं.पुं.) अल्प अवस्था का मनुष्य, बालक, पुत्र, बेटा; **-बाला**-(पुं.) परिवार, पुत्र-कलत्र आदि, सन्तति।

लड़की-(हिं. स्त्री.) छोटी अवस्था की स्त्री, कन्या, बालिका, बेटी; **-वाला**-(पुं.) कन्या का पिता या संबंधी।

लड़कोर (री), लड़कौरी-(हिं. वि. स्त्री.) जिस स्त्री की गोद में लड़का हो।

लड़खड़ाना-(हिं. क्रि. अ.) हिलना-डुलना, डगमगाकर गिरना, झोंका खाकर नीचे आ जाना।

लड़खड़ी-(हिं. स्त्री.) डगमगाहट।

लड़ना-(हिं. क्रि. अ.) मारनेवाले शत्रु पर आघात पहुँचाना, झगड़ा करना, भिड़ना, मल्लयुद्ध करना, एक-दूसरे को कठोर शब्द कहना, दो वस्तुओं का परस्पर टक्कर खाना, वादविवाद करना, लक्ष्य पर पहुँचना, टकराना, एक-दूसरे को गिराने का प्रयत्न करना, (बिच्छू, भिड़ आदि का) डंक मारना।

लड़बड़ाना-(हिं.क्रि.अ.) देखें 'लड़खड़ाना'।

लड़बावरा (ला)-(हिं. वि.) मूर्खता से पूर्ण, गँवार, अल्हड़, अनाड़ी।

लड़ाई-(हिं. स्त्री.) एक-दूसरे पर चोट पहुँचाने की क्रिया या भाव, वाद-विवाद, मल्लयुद्ध, संग्राम, युद्ध, परस्पर कठोर शब्दों का व्यवहार, कलह, झगड़ा, विरोध, अनबन, वैर, मुकदमे में सफलता प्राप्त करने के लिये एक-दूसरे

के विरुद्ध प्रयत्न, संघर्ष।
लड़ाका, लड़ाकू–(हिं. वि.) लड़नेवाला, योद्धा, सैनिक, झगड़ालू।
लड़ाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना, लड़ने का काम दूसरे से कराना, कलह के लिये दूसरे को उद्यत करना, लक्ष्य पर पहुँचाना, किसी स्थान पर फेंकना, भिड़ाना, सफलता प्राप्त करने के लिये सोच-विचार करना, लाड़-प्यार करना।
लड़ायता–(हिं. वि.) लड़ाई करनेवाला।
लड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लड़', पंक्ति।
लड़ुआ, लड़ुवा–(हिं. पुं.) मोदक, लड्डू।
लड़ैता–(हिं. वि.) प्रिय, प्यारा, लाड़ला, दुलारा, धृष्ट, लड़नेवाला, योद्धा।
लड्डू–(हिं.पुं.) गेंद के आकार की मिठाई, मोदक; (मुहा.) **मन के लड्डू खाना**–सुख की व्यर्थ कल्पनाएँ करना।
लड़्याना–(हिं. क्रि. स.) प्रेम करना।
लढंत–(हिं.पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
लढ़िया–(हिं. स्त्री.) बैलगाड़ी।
लत–(हिं. स्त्री.) किसी बुरी बात का अभ्यास, दुर्व्यसन, बुरी टेव।
लतखोर, लतखोरा–(हिं. वि.) वह जो सर्वदा लात खाता हो, सर्वदा ऐसा काम करनेवाला जिसके कारण मार खानी पड़े या गाली सुननी पड़े, नीच, दुष्ट, दास, द्वार पर रखा हुआ पैर पोंछने का टाट।
लतड़ी–(हिं. स्त्री.) एक मोटा अन्न, एक प्रकार की जूती जिसमें बहुत हलका तल्ला होता है।
लतपत–(हिं. वि.) देखें 'लथपथ'।
लतमर्दन–(हिं. पुं.) पैरों से रौंदने की क्रिया, लातों की मार।
लतर–(हिं. स्त्री.) बल, वल्ली, लता।
लतरा–(हिं.पुं.) एक प्रकार का मोटा अन्न।
लतरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की घास या पौधा, इसकी फली, मोट, खेसारी, एक प्रकार की जूती।
लता–(सं. स्त्री.) वह पौधा जो पृथ्वी पर फैलता है अथवा किसी वस्तु के साथ लिपटकर ऊपर को चढ़ता है, वल्ली, बेल, कोमल शाखा, माधवी, सुन्दर स्त्री, एक अप्सरा का नाम, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं; **–कर**–(पुं.) नाचने में हाथ हिलाने का एक ढंग; **–कुंज**–(पुं.) लताओं से आच्छादित स्थान; **–गृह**–(पुं) लता मंडप; **–जिह्व**–(पुं.) सर्प, साँप; **–पता**–(पुं.) पेड़-पौधों का समूह, जड़ी-बूटी; **–पर्ण**–(पुं.) विष्णु; **–पर्णी**–(स्त्री.) सौंफ; **–फल**–(पुं.) परवल; **–भवन**–(पुं.) लताओं का कुंज; **–मंडप**–(पुं.) लतागृह, लतामंडल; **–मंडल**–(पुं.) लताओं से आच्छादित स्थान; **–मणि**–(पुं.) प्रवाल, मूँगा; **–मृग**–(पुं.) शाखामृग, बंदर; **–यावक**–(पुं.) प्रवाल, मूँगा; **–रसन**–(पुं.) सर्प, साँप; **–वलय**–(पुं.) देखें 'लतागृह'; **–वृक्ष**–(पुं.) सलई का वृक्ष; **–वेष्टन**–(पुं.) एक प्रकार का आलिंगन; **–वेष्टित**–(पुं.) एक प्रकार का आलिंगन; (वि.) लताओं से आच्छादित।
लताड़ना–(हिं.क्रि.स.) पैरों से कुचलना, लात मारना, थकाना, व्यग्र करना।
लतार्क–(सं. पुं.) प्याज का पौधा।
लतालक–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
लतिका–(सं. स्त्री.) छोटी लता, बेल।
लतियर, लतियल–(हिं. वि.) जो सर्वदा लात खाता हो, लतखोर।
लतियाना–(हिं. क्रि. स.) पैरों से रौंदना, लात मारना।
लतिहर, लतिहल–(हिं. वि.) लतखोर।
लतीफा–(अ. पुं.) हास्यपूर्ण चुटकुला।
लत्ता–(हिं. पुं.) फटा-पुराना वस्त्र, चिथड़ा, कपड़े का टुकड़ा; **कपड़ा-लत्ता**–(पुं.) पहिनने के वस्त्र।
लत्ती–(हिं. स्त्री.) पशुओं की लात मारने की क्रिया, कपड़े की लंबी धज्जी, पतंग का पुछिल्ला।
लथपथ–(हिं. वि.) जो भीगकर तर हो गया हो, सना हुआ।
लथाड़–(हिं. स्त्री.) भूमि पर पटककर घसीटने की क्रिया, झिड़की, हानि।
लथाड़ना, लथेड़ना–(हिं. क्रि. स.) कीचड़ आदि पोतकर गंदा करना, भूमि पर पटककर घसीटना, हराना, मल्ल-युद्ध में पछाड़ना, शिथिल करना, थकाना, झिड़कियाँ सुनाना, डाँटना।
लदन–(हिं. स्त्री.) लदाव।
लदना–(हिं.क्रि.अ.) बोझ से भरना, परिपूर्ण होना, ऊपर तक भर जाना, (सामान ढोनेवाली गाड़ी का) वस्तुओं से भरा जाना, बोझ रखा जाना, बंदी होना, परलोक सिधारना, मर जाना।
लदबद–(हिं. अव्य.) किसी गीली वस्तु के गिरने के शब्द का अनुकरण।
लदवाना–(हिं. क्रि. स.) लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाऊ–(हिं. पुं.) देखें 'लदाव'।
लदाना–(हिं. क्रि. स.) लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाफँदा–(हिं.वि.) बोझ से भरा हुआ।
लदाव–(हिं. पु.) लादने की क्रिया या भाव, भार, बोझ, वह छत जिसकी ईंटों की जोड़ाई बिना धरन या कड़ी के आधार पर हो।
लदुआ(वा), लद्दू–(हिं.वि.) बोझ ढोनेवाला, जिस पर भार लादा जाय।
लद्धड़–(हिं. वि.) सुस्त, आलसी; **–पन**–(पुं.) सुस्ती।
लद्धना–(हिं. क्रि. स.) प्राप्त करना, पाना।
लना–(हिं. पुं.) एक वृक्ष जिससे सज्जी निकाली जाती है।
लनी–(हिं. स्त्री.) पान की क्यारी।
लप–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास, अंजली, अंजली भर वस्तु, लचीली वस्तु को पकड़कर हिलाने से उत्पन्न शब्द; तलवार, छुरे आदि की चमक की गति।
लपक–(हिं.स्त्री.) ज्वाला, लपट, लपट की तरह निकलनेवाली चमक, कान्ति, तेजी, वेग।
लपकना–(हिं. क्रि.अ.) वेग से चलना, दौड़ पड़ना, झपटना, किसी वस्तु को लेने के लिये झट से हाथ फैलाना; **लपककर**–(अव्य.) बड़े वेग से।
लपकी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की सीधी सिलाई।
लपझप–(हिं.वि.) चंचल, चपल, अधीर।
लपट–(हिं.स्त्री.) अग्नि की ज्वाला, वायु में फैली हुई गरमी, गंध, किसी प्रकार की गंध से पूरित हवा का झोंका।
लपटना–(हिं. क्रि. अ.) अंगों से सटना, आलिंगन करना, उलझना, लिपटना, फँसना, घिरा जाना, लगा रहना।
लपटा–(हिं.पु.) कोई गाढ़ी गीली वस्तु, कढ़ी, लेई, लपसी।
लपटाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) गले लगाना, आलिंगन करना, घेरना, लपेटना, सटना, सटाना, उलझना, उलझाना।
लपटौंवा, लपटौना–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास जिसकी बाल कपड़ों में लिपट जाती और कठिनाई से छूटती है; (वि.) चिपटनेवाला।
लपन–(सं. पुं.) मुख, भाषण, कथन।
लपना–(हिं. क्रि.अ.) लचीली वस्तु का झुकना, लचना, लपकना, ललचना।
लपलपाना–(हिं. क्रि. अ.) झोंक के साथ

इधर-उधर लचना, किसी कोमल वस्तु का हिलना, तलवार, छुरी आदि का चमकना।
लपलपाहट–(हिं. स्त्री.) लपलपाने की क्रिया, प्रकाश की चमक, झलक।
लपसी–(हिं. स्त्री.) थोड़ा घी डालकर बनाया हुआ हलवा, पानी में औटाया हुआ आटा, कोई गीली गाढ़ी वस्तु।
लपहा–(हिं.पुं.) पान की लता में लगनेवाला एक रोग।
लपाना–(हिं. क्रि. स.) लचीली वस्तु को झोंक से इधर-उधर फटकारना, आगे बढ़ाना, पतली छड़ी आदि डुलाना।
लपित–(सं. वि.) कहा हुआ, कथित।
लपेट–(हिं. स्त्री.) लपेटने की क्रिया या भाव, गठरी बाँधने में कपड़े की तह या मोड़, बाँधने की डोरी आदि का फेरा, ऐंठन, मरोड़, उलझन, फँसाव, पकड़, बंधन, मल्लयुद्ध की एक युक्ति, जाल, चक्कर।
लपेटन–(हिं.स्त्री.) लपेटने की क्रिया या भाव, लपेट, ऐंठन, मरोड़, उलझन, फँसाव; (पुं.) बाँधने का कपड़ा, बेठन, लपेटनी, लपेटने का बेलन, पैरों में उलझनेवाली वस्तु।
लपेटना–(हि. क्रि. स.) किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारों ओर घुमाकर बाँधना, घुमाव या फेरे के साथ चारों ओर फँसाना, फैली हुई वस्तु को गट्ठर के रूप में करना, परिवेष्टित करना, पकड़ में करना, कपड़े आदि में रखकर बाँधना, उलझन में डालना, फँसाना, लेप करना, पोतना, गति बंद करना।
लपेटनी–(हिं. स्त्री.) जुलाहे का तुर या लपेटन।
लपेटवाँ–(हिं. वि.) लपेटा हुआ, जो लपेटा जा सके, जिसमें सोने-चाँदी के तार लपेटे हों, लपेटकर बनाया हुआ, घुमाव-फिराव का, गूढ़ अर्थ का।
लप्पा–(हिं. पुं.) छत की धरन के नीचे लगाई हुई लकड़ी।
लप्सिका–(सं. स्त्री.) लपसी।
लफंगा–(फा. वि.) लंपट, व्यभिचारी।
लफना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लपना'।
लफलफानि–(हिं. स्त्री.) चमक।
लफाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'लपाना'।
लफ्ज–(अ. पुं.) शब्द, बात।
लब–(फा. पुं.) ओंठ।
लबड़धोंधों–(हिं. स्त्री.) झूठमूठ का कोलाहल, क्रम और व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अन्याय, अनीति।
लबड़ना–(हिं. क्रि. अ.) झूठ बोलना, गप हाँकना।
लबदा–(हिं. पुं.) मोटा भद्दा डंडा।
लबदी–(हिं. स्त्री.) छोटी पतली छड़ी।
लबनी–(हिं. स्त्री.) मिट्टी की लंबी हाँड़ी जो ताड़ी एकत्र होने के लिये ताड़ के पेड़ में बाँधी जाती है।
लबरा–(हिं. वि.) झूठ बोलनेवाला, गप हाँकनेवाला।
लबरी–(हिं.वि.स्त्री.) झूठ बोलनेवाली।
लबादा–(फा.पुं.) पहनने का लंबा चोगा।
लबार–(हिं. वि.) मिथ्यावादी, झूठ बोलनेवाला, गप्पी।
लबारी–(हिं. स्त्री.) झूठ बोलने का काम; (वि.) झूठा, चुगलखोर।
लबालब–(फा. अव्य.) बरतन आदि के मुख तक (भरा हुआ।)
लबी–(हिं. स्त्री.) ऊख का पका हुआ गाढ़ा रस, राव।
लबेद–(हिं. पुं.) वेद के विरुद्ध वचन, दन्तकथा, लोकाचार।
लबेदा–(हिं. पुं.) मोटा बड़ा डंडा।
लबेदी–(हिं.स्त्री.) मोटा छोटा डंडा, लाठी।
लब्ध–(सं. वि.) प्राप्त, पाया हुआ, उपार्जित, कमाया हुआ, गणित में भाग करने से प्राप्त फल; **–काम–**(वि.) जिसकी मनोकामना पूरी हो गई हो; **–कीर्ति–**(वि.) प्रख्यात, प्रसिद्ध; **–चेतन–**(वि.) जिसने पुनः चेतना प्राप्त की हो; **–जन्म–**(वि.) जिसने जन्म लिया हो; **–धन–**(वि.) धनवान; **–नाम –** (पुं.) प्रसिद्ध; **–नाश–**(पुं.) प्राप्त धन का नाश; **–प्रतिष्ठ–**(वि.) प्रतिष्ठित; **–लक्ष–**(वि.) जिसका निशाना ठीक लगे; **–वर–** (वि.) जिसने वर प्राप्त किया हो; **–वर्ण–**(वि.) विद्वान्, पंडित; **–विद्य–**(वि.) पण्डित; **–व्य–**(वि.) प्राप्त करने योग्य; **–शब्द–**(वि.) प्रसिद्ध, प्रख्यात; **–सिद्धि–**(वि.) जिसने सिद्धि पाई हो।
लब्धांक–(स. पुं.) गणित में भाग करने पर जो अंक प्राप्त हो, भाग-फल।
लब्धा–(सं. स्त्री.) विप्रलब्धा नायिका।
लब्धावकाश, लब्धावसर–(सं.वि.) जिसने अवकाश या छुट्टी पाई हो।
लब्धि–(सं. स्त्री.) लाभ, प्राप्ति, भाग देने पर प्राप्त संख्या, भाग-फल।
लब्धोदय–(सं. वि.) सौभाग्यशील।
लभन–(सं. पुं.) प्राप्ति।
लभस–(सं.पुं.) घोड़े की टाँग बाँधने की रस्सी
लभ्य–(सं.वि.) न्यायपूर्ण, उचित, पाने योग्य।
लमक–(सं. पुं.) उपपति, जार, लंपट।
लमकना–(हिं. क्रि. अ.) उत्कण्ठित होना, लपकना।
लमगजा–(हिं. पुं.) इकतारा।
लमघिचा–(हिं.वि.) लंबी गरदनवाला।
लमचा–(हिं.पुं.) एक प्रकार की बरसाती घास।
लमछड़–(हिं. वि.) लंबा और पतला; (पुं.) पुरानी चाल की लंबी बंदूक।
लमछुआ–(हिं. वि.) जो आकार में कुछ लंबा हो।
लमजक–(हिं.पुं.) ज्वरांकुश नाम की घास।
लमटंगा–(हिं. वि.) लंबी टाँगोंवाला; (पुं.) सारस पक्षी।
लमतड़ंग–(हिं.वि.) बहुत तगड़ा तथा ऊँचा।
लमधी–(हिं. पुं.) समधी का पिता।
लमाना–(हिं. क्रि. अ.) दूर चला जाना, लंबा होना, आगे या दूर तक बढ़ जाना।
लय–(स. पुं.) विनाश, लोप, प्रलय, सन्तोष, संश्लेष, एक वस्तु का दूसरे में मिल जाना, संगीत में नाच-गान और बजाने का मेल, एक पदार्थ का दूसरे में घुसना या मिलना, गाने का ढंग, वह आरोह या अवरोह जो संगीत के स्वर के निकलन में होता है, विश्राम, स्थिरता, मूर्च्छा, गूढ़ अनुराग, लगन, चित्त की वृत्तियों का सब ओर से हटकर एक ओर लगना, तद्रूप होना।
लयन–(सं. पुं.) विश्राम, शान्ति।
लर–(हिं. स्त्री.) देखें 'लड़'।
लरकई–(हिं. स्त्री.) लड़कपन।
लरकना–(हिं. क्रि. अ.) देख 'लटकना'।
लरकिनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लड़की'।
लरखर(रा)ना–(हिं.क्रि.अ.) लड़खड़ाना।
लरजना–(हिं. क्रि. अ.) हिलना, काँपना, भयभीत होना।
लरझर–(हिं. वि.) प्रचुर, बहुत अधिक।
लरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लड़ना'।
लरनि–(हिं. स्त्री.) लड़ाई, झगड़ा।
लराई–(हिं. स्त्री.) लड़ाई।
लरिकई–(हिं. स्त्री.) लड़कपन।
लरिक-सलोरी–(हिं. स्त्री.) लड़कपन।
लरिका–(हिं.पुं.) देखें 'लड़का'; **–ई–** (स्त्री.) लड़कपन।
लरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लड़ी'।
लर्ज–(हिं. पुं.) सितार में लगे हुए पीतल के तार का नाम।

ललक–(हिं. स्त्री.) प्रवल इच्छा, गहरी चाह।
ललकना–(हिं. क्रि. अ.) किसी वस्तु को प्राप्त करने की गहरी इच्छा होना, ललचना, उमंग से भर जाना।
ललकार–(हिं. स्त्री.) युद्ध के लिये उच्च स्वर से पुकारना,लड़ने के लिये बढ़ावा।
ललकारना–(हिं. क्रि. स.) युद्ध के लिये प्रतिद्वन्द्वी को उच्च स्वर से आह्वान करना, हाँक लगाना, लड़ने के लिये बढ़ावा देना, उत्साहित करना।
ललाक–(सं. पुं.) शिश्न, लिंगेन्द्रिय।
ललाट–(सं. पुं.) मस्तक, माथा, भाग्य का लेख; **–क**–(पुं.) चौड़ा ललाट; **–पटल**–(पुं.)मस्तक का तल;**–रेखा**–(स्त्री.) कपाल का लेख, भाग्यलेख।
ललाटाक्ष–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
ललाटाक्षी–(सं. स्त्री.) दुर्गा।
ललाटिका–(सं. स्त्री.) मस्तक पर का टीका, माथे पर पहनने का एक आभूषण।
ललाटूल–(सं.वि.) जिसका ललाट ऊँचा हो।
ललाना–(हिं. क्रि. अ.) ललचना।
ललाम–(सं. वि.) सुन्दर, मनोहर, लाल, प्रधान, श्रेष्ठ; (पुं.) चिह्न, सींग, अलंकार, गहना, घोड़े या शेर की गरदन पर के बाल, घोड़ा, प्रभाव, रत्न।
ललामक–(सं. पुं.) मस्तक पर लपेटने की माला।
ललामगु–(सं. पुं.) शिश्न, लिंगेन्द्रिय।
ललामन्–(सं. पुं.) ललाम।
ललामी–(सं. स्त्री.) कान में पहनने का एक आभूषण; (हिं. स्त्री.) सुन्दरता, शोभा, लालिमा।
ललित–(सं. पुं.) शृंगार रस में वह अंग-चेष्टा जिसमें सुकुमारता के साथ हाथ,पैर, भौं, आँख आदि अंग संचालित किये जाते हैं, एक विषम वर्णवृत्त का नाम; (वि.) मनोहर, सुन्दर, मनचाहा, चलित, हिलता हुआ;**–कला**–(स्त्री.) वह कला या विद्या जिसको व्यक्त करने में सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है;**–कांता**–(स्त्री.)पार्वती, दुर्गा;**–चैत्य**–(पुं.) एक प्रकार का सुन्दर मन्दिर;**–ताल**–(पुं.) संगीत में एक प्रकार का ताल; **–पद**–(पुं.) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस मात्राएँ होती हैं; **–प्रहार**–(पुं.) हलका प्रहार; **–प्रिय**–(पुं.) संगीत का एक ताल;**–लोचन** (वि.) सुन्दर नेत्रोंवाला; **–वनिता**–(स्त्री.) सुन्दर स्त्री।
ललिता–(सं. स्त्री.) कस्तूरी, राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक, एक रागिनी का नाम, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं; **–पंचमी**–(स्त्री.) आश्विन शुक्ला पंचमी जिस दिन ललिता देवी (पार्वती) का पूजन होता है।
ललितोपमा–(सं. स्त्री.) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता जताने के लिये सम, समान, तुल्य आदि शब्दों का व्यवहार न करके ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जिनसे बराबरी, मित्रता, निरादर आदि का भाव प्रकट हो।
लली–(हिं. स्त्री.) लड़की या नायिका के लिये प्रेम का शब्द, प्रेमिका, दुलारी लड़की।
ललौहाँ–(हिं. वि.) ललाई लिये हुए।
लल्ला–(हिं. पुं.) देखें 'लला'।
लल्लो–(हिं. स्त्री.) जिह्वा, जीभ।
लल्लोचप्पो, लल्लोपत्तो–(हिं. स्त्री.) चिकनी-चुपड़ी बातें जो केवल किसी को प्रसन्न करने के लिये कही जायँ, ठकुर-सुहाती।
लवंग–(सं. पुं.) एक वृक्ष जिसकी कली मसाले के काम में आती है, लौंग;**–लता**–(स्त्री.)राधिका की एक सखी का नाम, समोसे के आकार की एक प्रकार की मिठाई।
लव–(सं. पुं.) लवंग, बहुत अल्प मात्रा, लेश, विनाश, कटाई, छत्तीस निमेष का अल्प समय, पशु के शरीर के रोयें, सुरा-गाय की पूँछ के बाल, श्रीरामचन्द्र के दो यमज पुत्रों में से एक का नाम, (दूसरे का नाम कुश था)।
लवण–(सं. पुं.) नमक, नोन, देखें 'लवणासुर'; **–क्षार**–(पुं.) खारी नमक; **–खनि**–(स्त्री.) नमक की खान; **–जल**–(पुं.) खारा पानी, वह जल जिसमें नमक मिला हो; **–जलधि**–(पुं.) सागर, समुद्र; **–ता**–(स्त्री.) नमकीन स्वाद, लवण का भाव या धर्म; **–तृण**–(पुं.) लोनिया साग; **–तोय**–(पुं.) सागर, समुद्र; **–त्व**–(पुं.) देखें 'लवणता'; **–मद**–(पुं.) खारी नमक; **–समुद्र**–(पुं.) खारे पानी का समुद्र जो पुराणों के अनुसार सात समुद्रों में से एक माना जाता था।
लवणा–(सं. स्त्री.) दीप्ति, आभा।
लवणाकर–(सं. पुं.) नमक की खान।
लवणाब्धि–(सं. पुं.) खारे पानी का समुद्र।
लवणार्णव–(सं.पुं.)खारे पानी का समुद्र।
लवणासुर–(सं. पुं.) मधु नामक दैत्य का पुत्र जिसको शत्रुघ्न ने मारा था।
लवन–(सं. पुं.) छेदन, काटना, खेत की उपज की कटाई, अन्न जो खेत की कटाई की मजदूरी में दिया जाय, लुनाई, लौनी।
लवना–(हिं.क्रि. स.) पकी हुई फसल को काटकर इकट्ठा करना, लुनना।
लवनी–(हिं. स्त्री.) लुनाई, अन्न काटने की मजदूरी, मक्खन।
लवर–(हिं. स्त्री.) अग्नि की लपट या ज्वाला।
लवलासी–(हिं. स्त्री.) प्रेम का संबंध।
लवली–(सं. स्त्री.) हरफारेवड़ी नामक वृक्ष और उसका फल, एक विषम वर्णवृत्त का नाम।
लवलीन–(हिं. वि.) तन्मय, निमग्न।
लवलेश–(हिं. पुं.) अत्यन्त थोड़ी मात्रा, थोड़ा संबंध।
लवा–(हिं. पुं.) तीतर की जाति का एक पक्षी।
लवाई–(हिं. वि.) (वह गाय) जिसका बछवा अभी बहुत छोटा हो; (स्त्री.)खेत की उपज की कटाई, लवने का पारिश्रमिक
लवारा–(हिं. पुं.) गाय का बछवा।
लवासी–(हिं. वि.) बकवादी, गप्प हाँकनेवाला।
लवित्र–(सं. पुं.) हँसिया।
लव्य–(सं. वि.) काटने योग्य।
लशकारना–(हिं. क्रि. स.) शिकारी कुत्तों को ललकारना।
लशुन–(सं. पुं.) लहसुन।
लश्कर, लशकर–(फा. पुं.) सेना का बड़ा समूह, सैनिक विभाग या मुहकमा।
लश्करी–(फा. वि.) लश्कर-संबंधी।
लषण–(सं. पुं.) वांछा, चाह।
लषना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'लखना'।
लस–(हिं. पुं.) चिपकने या सटने का गुण, चिपकनेवाली वस्तु, लासा, चित्ताकर्षण।
लसक–(सं. पुं.) नर्तक, नाचनेवाला।
लसदार–(फा. वि.) लस से युक्त।
लसना–(हिं. क्रि. अ., स.) चिपकाना, सटाना, शोभित होना, विराजना।
लसनि–(हिं. स्त्री.) स्थिति, शोभा, छटा, सुन्दरता।
लसम–(हिं. वि.) जो खरा न हो, दूषित।
लसलसा–(हिं. वि.) लसदार, चिपचिपा।
लसलसाना–(हिं. क्रि अ.) चिपकना, चिपचिपाना।

लसलसाहट–(हिं. स्त्री.) लसदार होने का भाव या गुण।
लसा–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी।
लसिका–(सं. स्त्री.) लार, थूक।
लसित–(सं. वि.) शोभित।
लसी–(हिं. स्त्री.) लसलसाहट, आकर्षण, संबंध, लगाव, लाभ, दही, चीनी और बर्फ मिला हुआ पेय।
लसीका–(सं. स्त्री.) ईख का रस, मांस और चमड़े के बीच होनेवाला रस या पानी।
लसीला–(हिं. वि.) लसदार, चिपचिपा, सुन्दर।
लसुन–(हिं. पुं.) देखें 'लशुन'।
लसुनिया–(हिं. पुं.) देखें 'लहसुनिया'।
लसोड़ा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसमें बेर के समान गोल फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं।
लसौटा–(हिं. पुं.) बहेलिया का लासा रखने का बाँस का चोंगा।
लस्टम-पस्टम–(हिं. अव्य.) किसी-किसी प्रकार से।
लस्त–(सं. वि.) क्रीड़ित, सजावट से भरा हुआ; (हिं. वि.) अशक्त, शिथिल, थका हुआ, साहसहीन।
लस्सी–(हिं. स्त्री.) लस, चिपचिपाहट, छाछ, मठा, लसी नामक पेय।
लहँगा–(हिं. पुं.) स्त्रियों का कमर के नीचे का भाग ढाँपने का घेरादार पहनावा, घाँघरा।
लहक–(हिं. स्त्री.) लहकने की क्रिया का भाव, चमक, आग की लपट, छवि, शोभा।
लहकना–(हिं. क्रि. अ.) आग का दहकना, झोंके से लहराना, वायु का बहना, उत्कंठित होना, चाह से आगे बढ़ना।
लहकाना–(हिं. क्रि. स.) हवा में इधर-उधर हिलाना-डोलाना, झोंका देना, उत्साह देकर आगे बढ़ाना, भड़काना, ताव दिलाना, लपकाना।
लहकारना–(हिं. क्रि. स.) किसी के विरुद्ध कुछ करने के लिये ताव दिलाना, ललकारना।
लहकौर, लहकौरि–(हिं. स्त्री.) विवाह की वह रीति जिसमें दुलहा-दुलहिन एक-दूसरे के मुँह में कौर डालते हैं।
लहन–(हिं. पुं.) कंजा नाम की झाड़ी।
लहना–(हिं. क्रि. अ.) प्रयत्न करना, पाना; (पुं.) उधार दिया हुआ धन, किसी कारण मिलनेवाला धन, भाग्य।
लहनी–(हिं. स्त्री.) प्राप्ति, फल, भोग, ठठेरों का पात्र छीलने का उपकरण।
लहबर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बहुत लंबा ढीला-ढाला पहनावा, चोगा, झंडा, लंबी गरदनवाला एक प्रकार का तोता।
लहर–(हिं. स्त्री.) हवा के झोंके से आन्दोलित होनेवाला जल का तल, हिलोरा, उमंग, टेढ़ी-मेढ़ी रेखा, हवा का झोंका, वायु में उत्पन्न होनेवाली शब्द की गूँज, वक्र गति, मन की मौज, शरीर में रह-रहकर होनेवाली पीड़ा या बेहोशी; आनन्द की उमंग; (मुहा.) **–आना**–मौज आना, साँप के काटने पर शरीर में लहर उठना।
लहरदार–(फा. वि.) लहर या वक्र रेखाओं से युक्त।
लहरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लहराना'।
लहरपटोर–(हिं. पुं.) पुरानी चाल का एक प्रकार का लहरियादार रेशमी कपड़ा।
लहरा–(हिं. पुं.) लहर, तरंग, मौज, गाने के पहले ताल और स्वर मिलाना।
लहराना–(हिं. क्रि. अ., स.) वायु के वेग से इधर-उधर हिलना-डुलना, टेढ़े-मेढ़े ले जाना, हलकोरा लेना, विराजना, शोभित होना, उत्कंठित होना, लहरें उठना, मन में उमंग होना, लपकना, आग का दहकना, भड़कना, हिलाना-डुलाना।
लहरिया–(हिं. पुं.) टेढ़ी-मेढ़ी समानान्तर रेखाओं का समूह, एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग-बिरंगी टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ बनी होती हैं, ऐसे वस्त्र की बनी हुई साड़ी, देखें 'लहर'।
लहरियादार–(फा. वि.) जिसमें लहरिया या टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ बनी हों।
लहरी–(सं. स्त्री.) लहर, तरंग; (वि.) तरंगी, मनमौजी।
लहल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का राग।
लहलह–(हिं. वि.) लहलहाता हुआ, आनन्द से फूला हुआ।
लहलहा–(हिं. वि.) लहलहाता हुआ, आनन्दी, हृष्टपुष्ट।
लहलहाना–(हिं. क्रि. अ.) हराभरा या पत्तियों से भरा होना, दुर्बल शरीर का फिर से मोटा होना, प्रफुल्ल होना, सूखे पेड़-पौधों में नई पत्तियाँ निकलना।
लहसुन–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसकी जड़ में इसके फल के दाने पंक्तिबद्ध होते हैं।
लहसुनिया–(हिं. पुं.) धूमिल रंग का एक बहुमूल्य रत्न; **–हींग**–(स्त्री.) एक प्रकार की बनावटी हींग।
लहा–(हिं. पुं.) देखें 'लाह'।
लहाछेह–(हिं. पुं.) नाच की एक गति।
लहालह–(हिं. वि.) देखें 'लहलहा'।
लहालोट–(हिं. वि.) हँसी में लोटता हुआ, हँसी में मग्न, प्रेम में मग्न, मोहित, आनन्दविभोर।
लहास–(हिं. स्त्री.) शव।
लहासी–(हिं. स्त्री.) नाव या जहाज बाँधने की मोटी रस्सी।
लहि–(हिं. अव्य.) पर्यन्त, तक।
लहु–(हिं. अव्य.) देखें 'लौं'।
लहुरा–(हिं. वि.) वय या उम्र में छोटा।
लहू–(हिं. वि.) रक्त, रुधिर; (मुहा.) **–होना**–रुधिर से रँग जाना।
लहेरा–(हिं. पुं.) छोटे आकार का एक सदाबहार वृक्ष, लाह की चूड़ी बनाकर बेचनेवाला।
लाँक–(हिं. स्त्री.) कटि, कमर।
लाँग–(हिं. स्त्री.) धोती का वह भाग जो कमर के पीछे की ओर खोंसा जाता है, काछ।
लांगल–(सं. पुं.) खेत जोतने का हल, शिश्न, ताल का वृक्ष, एक प्रकार का फूल; **–की**–(स्त्री.) कलियारी नामक विषैला पौधा; **–ग्रह**–(पुं.) किसान, हलवाहा; **–ग्रहण**–(पुं.) हल जोतना; **–चक्र**–(पुं.) फलित ज्योतिष का एक प्रकार का चक्र; **–दंड**–(पुं.) हरिस; **–ध्वज**–(पुं.) बलराम; **–पद्धति**–(स्त्री.) हल जोतने से बनी हुई रेखा।
लांगलि–(सं. पुं.) मजीठ, गजपीपल, केवाँच, चव्य।
लांगलिक–(सं. पुं.) एक प्रकार का स्थावर विष।
लांगलिकी–(सं. स्त्री.) कलियारी नामक पौधा।
लांगली–(सं. पुं.) बलराम, नारियल; (स्त्री.) मजीठ, गजपीपल।
लांगुल लांगूल–(सं. पुं.) पूँछ, शिश्न।
लांगूली–(सं. पुं.) बंदर, केवाँच।
लाँघना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु के इस पार से उस पार जाना, किसी वस्तु को उछलकर पार करना, डाँकना।
लाँघनी उड़ी–(हिं. स्त्री.) मलखंभ का एक व्यायाम।
लाँच–(हिं. स्त्री.) उत्कोच, घूस।
लांछन–(सं. पुं.) चिह्न, धब्बा, दोष, कलंक।
लांछना–(सं. स्त्री.) देखें 'लांछन'।
लांछित–(सं. वि.) कलंकित।
लाइ–(हिं. स्त्री.) लुक, अग्नि।
लाइक–(हिं. वि.) लायक, योग्य।
लाइची–(हिं. स्त्री.) देखें 'इलायची'।

लाई–(हिं. स्त्री.) धान का लावा, लाजा, चुगली, ऊनी चादर, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; **–लुतरी**–(स्त्री.) चुगली।
लाऊ–(हिं. पुं.) लौकी, घिया।
लाकड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लकड़ी'।
लाकिनी–(सं. स्त्री.) तन्त्र के अनुसार एक योगिनी का नाम।
लाक्षकी–(सं. स्त्री.) सीता का नाम।
लाक्षण–(सं. वि.) लक्षण-संबंधी।
लाक्षणिक–(सं. पुं.) वह जो लक्षणों को जानता हो, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस मात्राएँ होती हैं; (वि.) लक्षण-संबंधी।
लाक्षण्य–(सं. वि.) लक्षण जाननेवाला।
लाक्षा–(सं. स्त्री.) लाख, लाह; **–गृह**–(पुं.) लाख का वह घर जिसको दुर्योधन ने पाण्डवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था; **–तरु**–(पुं.) पलाश का वृक्ष; **–रस**–(पुं.) महावर; **–वृक्ष**–(पुं.) पलाश का वृक्ष।
लाक्षिक–(सं. वि.) लाख का बना हुआ।
लाक्ष्मण–(सं. पुं.) लक्ष्मण के गोत्र की सन्तान।
लाख–(हिं. वि.) सौ हजार, बहुत अधिक; (पुं.) सौ हजार की संख्या; (स्त्री.) देखें लाक्षा'।
लाखना–(हिं. क्रि. स.) लाह लगाकर बरतन का छेद बंद करना।
लाखपती–(हिं. पुं.) देखें 'लखपती'।
लाखा–(हिं. पुं.) लाख का बना हुआ रंग, गेहूँ के पौधों में लगनेवाला एक रोग; **–गृह**–(पुं.) देखें 'लाक्षागृह'।
लाखी–(हिं. वि.) लाह के रंग का, मटमैला लाल; (पुं.) लाख के रंग का घोड़ा।
लाग–(हिं. स्त्री.) सम्पर्क, लगाव, युक्ति, उपाय, प्रेम, उपराचढ़ी, जादू, टोना, विशेष कौशल का स्वाँग जिसकी सत्यता जल्दी समझ में न आवे, (ब्राह्मण, भाट, नाई आदि को) शुभ अवसर पर दिया जानेवाला नियत धन, वह चेप जिससे चेचक आदि का टीका लगाया जाता है, भूमिकर, एक प्रकार का नाच, धातु को फूँककर बनाया हुआ भस्म, वैर; (अव्य.) पर्यन्त, तक; **–डाँट**–(स्त्री.) प्रतिस्पर्धा, शत्रुता, नाचने की एक मुद्रा।
लागत–(हिं. स्त्री.) वह व्यय जो किसी वस्तु को तैयार करने में लगे।
लागना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लगना'।
लागि–(हिं. अव्य.) निमित्त, लिये, हेतु, से, पर्यन्त, तक।
लागुडिक–(सं. वि., पुं.) जिसके हाथ में लाठी हो, पहरा देनेवाला।
लागू–(हिं. वि.) लगने योग्य, चरितार्थ, प्रचलित।
लागे–(हिं. अव्य.) वास्ते, लिये।
लाघव–(सं. पुं.) लघु होने का भाव, कमी, लघुता, अल्पता, हाथ की चातुरी, आरोग्य; (अव्य.) सहज में, जल्दी से।
लाघविक–(सं. वि.) संक्षिप्त, थोड़ा।
लाघवी–(हिं. स्त्री.) शीघ्रता, जल्दी।
लाचार–(फा. वि.) विवश; (अव्य.) विवश होकर।
लाचारी–(फा. वि.) लाचार या विवश अवस्था।
लाची–(हिं. स्त्री.) इलायची; **–दाना**–(पुं.) चीनी की बनी हुई छोटे-छोटे दानों के आकार की मिठाई।
लाछन–(हिं. पुं.) देखें 'लांछन'।
लाछी–(हिं. स्त्री.) लक्ष्मी।
लाज–(हिं. स्त्री.) लज्जा, शर्म, हया।
लाजक–(सं. पुं.) धान का लावा।
लाजना–(हिं. क्रि. अ.) लज्जित होना, शरमाना।
लाजपेया–(सं. स्त्री.) लावा का माँड़।
लाजभक्त–(सं. पुं.) लावा का भात।
लाजमंड–(सं. पुं.) लावा पकाकर इससे निकाला हुआ माँड़।
लाजवंत–(हिं. वि.) जिसको लज्जा हो।
लाजवं(व)ती–(हिं. स्त्री.) लजालू नाम का पौधा।
लाजवर्णी–(सं. स्त्री.) वह फुंसी जो मकड़ी के मूतने से निकल आती है।
लाजवाब–(फा. वि.) निरुत्तर, बेजोड़।
लाजशक्तु–(सं. पुं.) लावे का सत्तू।
लाजा–(सं. पुं.) भूना हुआ धान, लावा, चावल, भूमि।
लाट–(हिं. स्त्री.) मोटा तथा ऊँचा खंभा; (पुं.) वर्तमान गुजरात प्रदेश का एक प्राचीन प्रान्त, इस स्थान के अधिवासी, अंग्रेजी 'लार्ड' शब्द का अपभ्रंश।
लाटपत्र, लाटपर्ण–(सं. पुं.) दारचीनी।
लाटानुप्रास–(सं. पुं.) वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है परन्तु अन्वय के उलट-फेर से भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हैं।
लाटिका–(सं. स्त्री.) रचना-शैली की वह रीति जिसमें मृदु पदविन्यास होता है और अधिक संयुक्त पद तथा बड़े-बड़े समास नहीं होते।
लाटी–(हिं. स्त्री.) ओठों तथा मुख का) सूख जाना।
लाठ–(हिं. पुं., स्त्री.) देखें 'लाट'।
लाठी–(हिं. स्त्री.) लकड़ी, डंडा; (मुहा.) **–चलाना**–लाठी से मारपीट करना।
लाड़–(हिं. पुं.) बच्चों का प्यार या दुलार।
लाड़लड़ा–(हिं. पुं.) वृक्षों पर रहनेवाला एक प्रकार का सर्प।
लाड़लड़ैता–(हिं. वि.) अधिक प्यारा (पुत्र)।
लाड़ला–(हिं. वि.) जिसका लाड़ किया जाय, दुलारा।
लाड़ली–(हिं. वि. स्त्री.) दुलारी।
लाड़ू–(हिं. पुं.) लड्डू, मोदक।
लाढ़िया–(हिं. वि.) वह दलाल जो किसी दुकानदारों से मिला रहता है और ग्राहकों को धोखा देकर उस दुकानदार का माल बिकवाता है; **–पन**–(पुं.) धूर्तता, चालाकी।
लात–(हिं. स्त्री.) पैर, पाँव, पैर का आघात; (मुहा.) **–मारना**–तुच्छ जानकर छोड़ देना।
लाथ–(हिं. पुं.) बहाना।
लाद–(हिं. स्त्री.) लादने की क्रिया, ढेंकली के दूसरे छोर पर लगा हुआ बोझ, पेट, उदर, आँत, अँतड़ी।
लादना–(हिं. क्रि. अ.) किसी पदार्थ पर बहुत-सी वस्तुओं को रखना, गाड़ी या पशु की पीठ पर भार रखना, पीठ पर उठा लेना, किसी पर किसी काम का भार सौंपना।
लादिया–(हिं. पुं.) बोझ लादनेवाला।
लादी–(हिं. स्त्री.) कपड़ों की गठरी जो धोबी गधे की पीठ पर लादकर साफ करने के लिए ले जाते हैं।
लाधना–(हिं. क्रि. स.) प्राप्त करना, पाना।
लानंग–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अंगूर।
लानत–(अ. स्त्री.) भर्त्सना, धिक्कार।
लानती–(अ. वि., पुं.) (वह) जो सर्वदा फटकार सुनता हो।
लाना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को उठाकर अपने साथ लेकर आना, प्रत्यक्ष करना, सामने रखना, उत्पन्न करना, जलाना, आग लगाना।
लाने–(हिं. अव्य.) वास्ते, लिये।
लाप–(सं. पुं.) कथन, वार्ता।
लापता–(हिं. वि.) जिसका पता न हो, खोया हुआ, गुप्त।
लापसी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लपसी'।
लापी–(सं. वि.) बोलनेवाला।

लाप्य–(सं. वि.) कहने योग्य।
लाबर–(हिं. वि.) देखें 'लबार'।
लाभ–(सं. पुं.) प्राप्ति, मिलना, उपकार, भलाई; **–कर, –कारक**–(वि.) लाभदायक, जिससे लाभ हो; **–कारी**–(वि.) लाभ करनेवाला; **–दायक**–(वि.) गुणकारी; **–मद**–(पुं.) वह मद जिससे मनुष्य अपने को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन समझता है; **–लिप्सा**–(स्त्री.) प्राप्त करने की इच्छा; **–लिप्सु**–(वि.) पाने की इच्छा करनेवाला।
लाभ्य–(सं. पुं.) लाभ।
लाम–(हिं. पुं.) सेना, बहुत-से मनुष्यों का समूह।
लामज–(हिं.पुं.) खस की तरह की एक घास।
लामन–(हिं. पुं.) लटकन, लहँगा।
लामय–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
लामा–(हिं. पुं.) तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य, ऊँट की तरह का एक पशु; (वि.) लंबा।
लामी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लंबा फल जिसकी तरकारी बनती है।
लामें–(हिं. अव्य.) दूर।
लाय–(हिं. स्त्री.) आग की ज्वाला या लपट।
लायक–(अ. वि.) योग्य, समर्थ, उपयुक्त।
लायकी–(अ. स्त्री.) योग्यता।
लायची–(हिं. स्त्री.) देखें 'इलायची'।
लार–(हिं. स्त्री.) वह पतला लसदार थूक जो मुँह से स्वतः-रूप से निकलता है, पंक्ति, लासा; (अव्य.) पीछे, साथ; (मुहा.)**–लगाना**–फँसाना।
लारू–(हिं. पुं.) लड्डू।
लाल–(हिं. पुं.) छोटा प्रिय बालक, प्यारा बच्चा, पुत्र, बेटा, श्रीकृष्ण का एक नाम, दुलार, प्यार, लार, लाल रंग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, मानिक नाम का रत्न, लहू जैसा रंग; (वि.) लाल रंग का, अति क्रुद्ध, जो प्रतिस्पर्धावाले खेल में सब से पहले जीत गया हो; (मुहा.) **–पड़ना या होना**–अति क्रुद्ध होना; **–पीला होना**–क्रोध करना।
लालअंबारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पटुआ।
लालअगिन–(हिं.पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
लालआलू–(हिं.पुं.) रतालू, अरुई।
लालक–(हिं वि.) प्यार करनेवाला।
लालचंदन–(हिं. पु.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी कुछ कालापन लिये लाल होती है, देवीचन्दन।
लालच–(हिं. पुं.) किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र लालसा, लोलुपता, लोभ।
लालची–(हिं. वि.) लोभी, जिसको बहुत लालच हो।
लालटेन–(हिं. स्त्री.) प्रकाश करने का एक यन्त्र जिसमें तेल भरने के लिए पेंदी में पोला स्थान होता और टेम को ढकने के लिए शीशा लगा होता है।
लालड़ी–(हिं. स्त्री.) लाल रंग का एक प्रकार का नगीना।
लालन–(सं. पुं.) प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना, लाड़, प्यार; (हिं.पुं.) प्रिय बालक, प्यारा बच्चा, चिरौंजी; **–पालन**–(पुं.) भरण-पोषण।
लालना–(हिं. क्रि. स.) लाड़ करना।
लालनीय–(सं. वि.) दुलार या प्यार करने योग्य।
लालपानी–(हिं. पुं.) मद्य।
लाल-बुझक्कड़–(हिं. पुं.) वह जो कोई बात जानता न हो, केवल अटकल से आशय लगाता हो।
लालबेग–(हिं. पुं.) लाल रंग का एक प्रकार का परदार कीड़ा।
लालमन–(हिं. पुं.) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का लाल तोता जिसका शरीर लाल, डैने हरे, चोंच गुलाबी और दुम काली होती है।
लालमिर्च–(हिं. स्त्री.) मिरचा, मरचा।
लालमी–(हिं. पुं.) खरबूजा।
लालमुँहा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लाल निनावाँ जो मुख के भीतर हो जाता है।
लालमूली–(हिं. स्त्री.) सलजम।
लालयितव्य–(सं. वि.) लालन-पालन करने योग्य।
लालरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लालड़ी'।
लालस–(सं. पुं.) लालसा, चाह।
लालसफरी–(हिं. पुं.) अमरूद।
लालसमुद्र–(हिं. पुं.) लाल सागर।
लालसर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
लालसा–(सं. स्त्री.) किसी पदार्थ को प्राप्त करने की अधिक अभिलाषा, उत्सुकता, गर्भावस्था में उत्पन्न होनेवाली अभिलाषा, दोहद।
लाल सागर–(हिं.पुं.) भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है और स्वेज नहर तक फैला है।
लालसिखी–(हिं. पुं.) मुरगा।
लालसिरा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बत्तक जिसका सिर लाल होता है।
लालसी–(हिं. वि.) अभिलाषी, उत्सुक।
लाला–(सं. स्त्री.) मुख से निकलनेवाली लार, थूक; (हिं. पुं.) आदरसूचक संबोधन का शब्द, महाशय, (इस शब्द का व्यवहार पंजाब में अधिकतर होता है), कायस्थ जाति का सूचक शब्द, छोटे प्रिय व्यक्ति के लिये संबोधन।
लालाटिक–(सं. वि.) ललाट-संबंधी।
लालायित–(सं. वि.) जिसके मुख में लालच के कारण पानी भर आया हो, ललचाया हुआ।
लालास्रव–(हिं. पुं.) लूता, मकड़ी।
लालित–(सं. वि.) पाला-पोसा हुआ, प्यारा, दुलारा।
लालित्य–(सं. पुं.) ललित होने का भाव, मनोहरता, सुन्दरता।
लालिमा–(सं. स्त्री.) अरुणता, ललाई।
लाली–(हिं. स्त्री.) लाल होने का भाव, ललाई, प्रतिष्ठा, लली।
लालुका–(सं. स्त्री.) गले में पहनने का एक प्रकार का हार।
लाले–(हिं. पुं.) लालसा, अभिलाषा; (मुहा.) **(किसी वस्तु के)–पड़ना**–किसी वस्तु के लिये लालसा होना।
लाल्य–(सं. वि.) लालन करने योग्य।
लाल्हा–(हिं. पुं.) मरसे का साग।
लाव–(सं. पुं.) लवा नामक पक्षी; (हिं. स्त्री.) मोटी डोरी, रस्सा, उतनी भूमि जितनी एक दिन में सींची जा सके, वह ऋण जो ऋणी की कोई वस्तु बंधक रखकर दिया जाय।
लावक–(हिं. पुं.) ढोल के आकार का एक प्राचीन बाजा।
लावण–(सं. वि.) लवण-संबंधी, नमकीन।
लावणिक–(सं. पुं.) नमक बेचनेवाला।
लावण्य–(सं. पुं.) लवणत्व, लवण का स्वाद, अत्यन्त सुन्दरता, शील की उत्तमता।
लावण्या–(सं. स्त्री.) ब्राह्मी बूटी।
लावनता–(हिं. स्त्री.) देखें 'लावण्य'।
लावना–(हिं.क्रि.स.) लगाना, स्पर्श करना, जलाना, आग जलाना, देखें 'लाना'।
लावनि–(सं. स्त्री.) सौन्दर्य, लावण्य।
लावनी–(हिं. स्त्री.) गाने का एक प्रकार का छन्द, (इसको ख्याल भी कहते हैं।)
लावल्द–(फा. वि.) निःसंतान।
लावल्दी–(फा.स्त्री.) निःसंतान स्थिति।
लावा–(सं. पुं.) लवा नामक पक्षी; (हिं. पुं.) भूना हुआ धान, (ज्वार, बाजरा, रामदाना आदि), खील, लाई।

लावापरछन–(हिं. पुं.) विवाह के समय की एक रीति।
लावारिस–(अ. वि.) विना उत्तराधिकारी का, परित्यक्त।
लावारिसी–(सं. स्त्री.) लावारिस स्थिति।
लाविका–(अ. स्त्री.) लवा नामक पक्षी।
लाश–(फा. स्त्री.) मृत शरीर, शव।
लाष–(हिं. स्त्री.) देखें 'लाख'।
लाषना–(हि क्रि. स.) देखें 'लाखना'।
लास–(सं. पुं.) एक प्रकार का नाच, मटकने का भाव, जूस।
लासक–(सं. पुं.) नाचनेवाला, मोर।
लासकी–(सं. स्त्री.) नाचनेवाली स्त्री।
लासन–(हिं. पुं.) जहाज बाँधने का मोटा रस्सा; (सं. पुं.) नाचना।
लासा–(हिं. पुं.) कोई लसदार या चिपचिपी वस्तु, वह चिपचिपा पदार्थ जिससे बहेलिया चिड़ियों को फँसाते हैं, गोंद।
लासि–(हिं. पुं.) देखें 'लास्य'।
लासिका–(सं. स्त्री.) नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री।
लासी–(हिं. स्त्री.) गेहूँ की उपज को हानि पहुँचानेवाला एक काला कीड़ा।
लास्य–(सं. पुं.) भाव और ताल-सहित नाच जिसमें शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता है; स्त्रियों का नाच।
लास्यक–(सं. पुं.) नृत्य, नाच।
लास्या–(सं. स्त्री.) नाचनेवाली स्त्री।
लाह–(हिं. स्त्री.) लाख, चपड़ा, चमक, आभा; (पुं.) लाभ।
लाहन–(हिं. पुं.) वह महुआ जो मद्य चुआने के बाद बच जाता है और पशुओं को खिलाया जाता है, खमीर जिससे मद्य बनता है।
लाहल–(हिं. पुं.), **लाहौल**–(अ. पुं.) भूत-प्रेत की झाड़-फूंक में कहा जानेवाला शब्द।
लाही–(हिं. स्त्री.) लाल रंग का वह छोटा कीड़ा जो वृक्षों पर लाह उत्पन्न करता है, इसी प्रकार का कीड़ा जो उपज को बहुत हानि पहुँचाता है, लावा, सरसों; (वि.) लोहे के रंग का, मटमैले लाल रंग का।
लाहु–(हि. पुं.) लाभ।
लिंग–(सं. पुं.) चिह्न, लक्षण, साधक हेतु, सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति, व्याकरण में शब्दों का भेद जिससे उनके पुंलिंग या स्त्रीलिंग होने का पता लगता है, मीमांसा के छः लक्षण, सामर्थ्य, पुरुष की गुप्तेन्द्रिय, शिश्न; **–क**–(पुं.) कैथ का पेड़; **–देह**–(पुं.) वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी अपने किये हुए कर्मों का फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है; **–धारण**–(पुं.) वंश या सम्प्रदाय के चिह्न धारण करना; **–धारी**–(वि.) लिंग-धारण करनेवाला, चिह्नधारी; **–पीठ**–(पुं.) मन्दिर का अरघा जिस पर देवलिंग स्थापित रहता है; **–मूर्ति**–(पुं.) शिव; **–रोग**–(पुं.) शिश्न का एक रोग; **–वत्**–(वि.) चिह्नयुक्त; **–वर्ध**–(पुं.) कैथ का पेड़; **–वर्धन**–(पुं.) शिश्न की वृद्धि; **–वर्धिनी**–(स्त्री.) अपामार्ग, चिचड़ा; **–वर्धी**–(वि.) शिश्न की वृद्धि करनेवाला; **–विपर्यय**–(पुं.) व्याकरण में लिंग का परिवर्तन; **–वेदी**–(स्त्री.) वह अरघा जिस पर कोई देवमूर्ति स्थापित की जाती है; **–शरीर**–(पुं.) सूक्ष्म शरीर; **–स्थ**–(पुं.) ब्रह्मचारी।
लिंगाग्र–(सं. पुं.) शिश्न का अग्र-भाग।
लिंगानुशासन–(सं. पुं.) व्याकरण में शब्दों का लिंग-निरूपण करने के नियम।
लिंगार्चन–(सं. पुं.) शिवलिंग का पूजन।
लिंगालिका–(सं. स्त्री.) छोटी चुहिया, मुसटी।
लिंगी–(सं. पुं.) हाथी; (वि.) चिह्नवाला।
लि–(सं. पुं.) शान्ति, नाश, शेष, अन्त, हाथ में पहिनने का एक आभूषण।
लिए–(हिं. विभ.) हिंदी की एक विभक्ति जिसका प्रयोग सम्प्रदान कारक में किया जाता है। (निमित्त, प्रयोजन आदि के सूचनार्थ यह शब्द के साथ लगाया जाता है। उत्तम तथा मध्यम पुरुष के सर्वनामों को छोड़कर बाकी सर्वनामों तथा संज्ञाओं के साथ इसके पहले 'के' लगता है, यथा–मैं उसके या गोपाल के लिए पुस्तक लाया हूँ।)
लिकिन–(हिं. पुं.) मटमैले रंग की एक बड़ी चिड़िया।
लिकुच–(सं. पुं.) बड़हर का वृक्ष।
लिक्का–(सं. स्त्री.) जूँ का अंडा, लीख।
लिक्खाड़–(हिं. पुं.) बहुत लिखनेवाला, बहुत बड़ा लेखक (व्यंग्य में)।
लिक्षा–(सं. स्त्री.) जूँ का अंडा, लीख, एक सूक्ष्म परिमाण।
लिखत–(हिं. स्त्री.) लिखी हुई बात।
लिखन–(सं. पुं.) लिपि, लिखावट।
लिखना–(हिं. क्रि. स.) किसी नुकीली वस्तु से रेखा, अक्षर आदि के रूप में चिह्नित करना, अंकित करना, कोई बात लिपिबद्ध करना, लेख आदि की रचना करना, पुस्तक या ग्रंथ रचना।
लिखवाई–(हिं. स्त्री.) लिखाई।
लिखवाना–(हिं. क्रि. स.) लिखने का काम दूसरे से कराना।
लिखाई–(हिं. स्त्री.) लिखने का कार्य, लेख, लिपि, लिखने का ढंग, लिखावट, लिखने का शुल्क; **–पढ़ाई**–(स्त्री.) विद्योपार्जन।
लिखाना–(हिं. क्रि. स.) अंकित कराना, दूसरे से लिखने का काम कराना; (मुहा.)–**पढ़ाना**–शिक्षा देना।
लिखापढ़ी–(हिं. स्त्री.) चिट्ठियों का आना-जाना, पत्र-व्यवहार, किसी विषय को कागज पर लिखकर पक्का करना।
लिखावट–(हिं. स्त्री.) लिखे हुए अक्षर आदि, लिखने का ढंग, या प्रणाली, लेख।
लिखित–(सं. वि.) अंकित, लिखा हुआ; (पुं.) लिपि, लेख, प्रमाणपत्र।
लिखितक–(हिं. पुं.) एक प्रकार के प्राचीन चौखूंटे अक्षर जो मध्य एशिया के शिला-लेखों में पाये गये हैं।
लिखेरा–(हिं. पुं.) लिखनेवाला, लेखक।
लिख्या–(सं. स्त्री.) लीख, एक परिमाण।
लिचेन–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
लिच्छवि–(हिं. पुं.) भारत का एक प्राचीन राजवंश।
लिटाना–(हिं. क्रि. स.) लेटने की क्रिया कराना।
लिट्ट–(हिं. पुं.), **लिट्टी**–(हिं. स्त्री.) रोटी जो विना तवे के आग पर ही सेंकी जाय, बाटी।
लिठोर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नमकीन पकवान।
लिडार–(हिं. वि.) डरपोक, कायर।
लिपटना–(हिं. क्रि. अ.) चिपटना, सट जाना, तन्मय होकर किसी कार्य में प्रवृत्त होना, गले लगना, आलिंगन करना।
लिपटाना–(हिं. क्रि. स.) एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सटाना, चिपटाना, गले लगाना, आलिंगन करना।
लिपड़ा–(हिं. पुं.) कपड़ा; (वि.) लेई की तरह गीला और चिपचिपा।
लिपना–(हिं. क्रि. अ.) किसी रंग या गीली वस्तु से पोता जाना, रंग आदि का भद्दी तरह फैल जाना।
लिपवाना–(हिं. क्रि. स.) लीपने-पोतने का काम दूसरे से कराना।
लिपाई–(हिं. स्त्री.) लीपने-पोतने की क्रिया या भाव, लीपने की मजदूरी।

लाप्य–(सं. वि.) कहने योग्य।
लाबर–(हिं. वि.) देखें 'लबार'।
लाभ–(सं. पुं.) प्राप्ति, मिलना, उपकार, भलाई; **–कर**, **–कारक**–(वि.) लाभदायक, जिससे लाभ हो; **–कारी**–(वि.) लाभ करनेवाला; **–दायक**–(वि.) गुणकारी; **–मद**–(पुं.) वह मद जिससे मनुष्य अपने को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन समझता है; **–लिप्सा**–(स्त्री.) प्राप्त करने की इच्छा; **–लिप्सु**–(वि.) पाने की इच्छा करनेवाला।
लाभ्य–(सं. पुं.) लाभ।
लाम–(हिं. पुं.) सेना, बहुत-से मनुष्यों का समूह।
लामज–(हिं.पुं.) खस की तरह की एक घास।
लामन–(हिं. पुं.) लटकन, लहँगा।
लामय–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
लामा–(हिं. पुं.) तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य, ऊँट की तरह का एक पशु; (वि.) लंबा।
लामी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लंबा फल जिसकी तरकारी बनती है।
लामें–(हिं. अव्य.) दूर।
लाय–(हिं. स्त्री.) आग की ज्वाला या लपट।
लायक–(अ. वि.) योग्य, समर्थ, उपयुक्त।
लायकी–(अ. स्त्री.) योग्यता।
लायची–(हिं. स्त्री.) देखें 'इलायची'।
लार–(हिं. स्त्री.) वह पतला लसदार थूक जो मुँह से स्वतः-रूप से निकलता है, पंक्ति, लासा; (अव्य.) पीछे, साथ; (मुहा.)**–लगाना**–फँसाना।
लारू–(हिं. पुं.) लड्डू।
लाल–(हिं.पुं.) छोटा प्रिय बालक, प्यारा बच्चा, पुत्र, बेटा, श्रीकृष्ण का एक नाम, दुलार, प्यार, लार, लाल रंग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, मानिक नाम का रत्न, लहू जैसा रंग; (वि.) लाल रंग का, अति क्रुद्ध, जो प्रतिस्पर्धावाले खेल में सब से पहले जीत गया हो; (मुहा.) **–पड़ना या होना**–अति क्रुद्ध होना; **–पीला होना**–क्रोध करना।
लालअंधारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पटुआ।
लालअगिन–(हिं.पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
लालआलू–(हिं.पुं.) रतालू, अरुई।
लालक–(हिं वि.) प्यार करनेवाला।
लालचंदन–(हिं. पु.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी कुछ कालापन लिये लाल होती है, देवीचन्दन।
लालच–(हिं. पुं.) किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र लालसा, लोलुपता, लोभ।
लालची–(हिं. वि.) लोभी, जिसको बहुत लालच हो।
लालटेन–(हिं. स्त्री.) प्रकाश करने का एक यन्त्र जिसमें तेल भरने के लिए पेंदी में पोला स्थान होता और टेम को ढकने के लिए शीशा लगा होता है।
लालड़ी–(हिं. स्त्री.) लाल रंग का एक प्रकार का नगीना।
लालन–(सं. पुं.) प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना, लाड़, प्यार; (हिं.पुं.) प्रिय बालक, प्यारा बच्चा, चिरौंजी; **–पालन**–(पुं.) भरण-पोषण।
लालना–(हिं. क्रि. स.) लाड़ करना।
लालनीय–(सं. वि.) दुलार या प्यार करने योग्य।
लालपानी–(हिं. पुं.) मद्य।
लाल-बुझक्कड़–(हिं. पुं.) वह जो कोई बात जानता न हो, केवल अटकल से आशय लगाता हो।
लालबेग–(हिं. पुं.) लाल रंग का एक प्रकार का परदार कीड़ा।
लालमन–(हिं. पुं.) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का लाल तोता जिसका शरीर लाल, डैने हरे, चोंच गुलाबी और दुम काली होती है।
लालमिर्च–(हिं. स्त्री.) मिरचा, मरचा।
लालमी–(हिं. पुं.) खरबूजा।
लालमुँहा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लाल निनावाँ जो मुख के भीतर हो जाता है।
लालमूली–(हिं. स्त्री.) सलजम।
लालयितव्य–(सं. वि.) लालन-पालन करने योग्य।
लालरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लालड़ी'।
लालस–(सं. पुं.) लालसा, चाह।
लालसफरी–(हिं. पुं.) अमरूद।
लालसमुद्र–(हिं. पुं.) लाल सागर।
लालसर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
लालसा–(सं. स्त्री.) किसी पदार्थ को प्राप्त करने की अधिक अभिलाषा, उत्सुकता, गर्भावस्था में उत्पन्न होनेवाली अभिलाषा, दोहद।
लाल सागर–(हिं.पुं.) भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है और स्वेज नहर तक फैला है।
लालसिरी–(हिं. पुं.) मुरगा।
लालसिरा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बत्तक जिसका सिर लाल होता है।
लालसी–(हिं. वि.) अभिलाषी, उत्सुक।
लाला–(सं. स्त्री.) मुख से निकलनेवाली लार, थूक; (हिं. पुं.) आदरसूचक संबोधन का शब्द, महाशय, (इस शब्द का व्यवहार पंजाब में अधिकतर होता है), कायस्थ जाति का सूचक शब्द, छोटे प्रिय व्यक्ति के लिये संबोधन।
लालाटिक–(सं. वि.) ललाट-संबंधी।
लालायित–(सं. वि.) जिसके मुख में लालच के कारण पानी भर आया हो, ललचाया हुआ।
लालास्रव–(हिं. पुं.) लूता, मकड़ी।
लालित–(सं. वि.) पाला-पोसा हुआ, प्यारा, दुलारा।
लालित्य–(सं. पुं.) ललित होने का भाव, मनोहरता, सुन्दरता।
लालिमा–(सं. स्त्री.) अरुणता, ललाई।
लाली–(हिं. स्त्री.) लाल होने का भाव, ललाई, प्रतिष्ठा, लली।
लालुका–(सं. स्त्री.) गले में पहनने का एक प्रकार का हार।
लाले–(हिं. पुं.) लालसा, अभिलाषा; (मुहा.) **(किसी वस्तु के)–पड़ना**–किसी वस्तु के लिये लालसा होना।
लाल्य–(सं. वि.) लालन करने योग्य।
लाल्हा–(हिं. पुं.) मरसे का साग।
लाव–(सं. पुं.) लवा नामक पक्षी; (हिं. स्त्री.) मोटी डोरी, रस्सा, उतनी भूमि जितनी एक दिन में सींची जा सके, वह ऋण जो ऋणी की कोई वस्तु बंधक रखकर दिया जाय।
लावक–(हिं. पुं.) ढोल के आकार का एक प्राचीन बाजा।
लावण–(सं. वि.) लवण-संबंधी, नमकीन।
लावणिक–(सं. पुं.) नमक बेचनेवाला।
लावण्य–(सं. पुं.) लवणत्व, लवण का स्वाद, अत्यन्त सुन्दरता, शील की उत्तमता।
लावण्या–(सं. स्त्री.) ब्राह्मी बूटी।
लावनता–(हिं. स्त्री.) देखें 'लावण्य'।
लावना–(हिं.क्रि.स.) लगाना, स्पर्श करना, जलाना, आग जलाना, देखें 'लाना'।
लावनि–(सं. स्त्री.) सौन्दर्य, लावण्य।
लावनी–(हिं. स्त्री.) गाने का एक प्रकार का छन्द, (इसको ख्याल भी कहते हैं।)
लावल्द–(फा. वि.) निःसंतान।
लावल्दी–(फा.स्त्री.) निःसंतान स्थिति।
लावा–(सं. पुं.) लवा नामक पक्षी; (हिं. पुं.) भूना हुआ धान, (ज्वार, बाजरा, रामदाना आदि), खील, लाई।

लावापरछन–(हिं. पुं.) विवाह के समय की एक रीति।
लावारिस–(अ. वि.) विना उत्तराधिकारी का, परित्यक्त।
लावारिसी–(सं.स्त्री.) लावारिस स्थिति।
लाविका–(अ.स्त्री.) लवा नामक पक्षी।
लाश–(फा. स्त्री.) मृत शरीर, शव।
लाष–(हिं.स्त्री.) देखें 'लाख'।
लाषना–(हिं क्रि. स.) देखें 'लाखना'।
लास–(सं. पुं.) एक प्रकार का नाच, मटकने का भाव, जूस।
लासक–(सं. पुं.) नाचनेवाला, मोर।
लासकी–(सं. स्त्री.) नाचनेवाली स्त्री।
लासन–(हिं.पुं.) जहाज वांधने का मोटा रस्सा; (सं. पुं.) नाचना।
लासा–(हिं. पुं.) कोई लसदार या चिपचिपी वस्तु, वह चिपचिपा पदार्थ जिससे वहेलिया चिड़ियों को फँसाते हैं, गोंद।
लासि–(हिं. पुं.) देखें 'लास्य'।
लासिका–(सं. स्त्री.) नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री।
लासी–(हिं. स्त्री.) गेहूँ की उपज को हानि पहुँचानेवाला एक काला कीड़ा।
लास्य–(सं. पुं.) भाव और ताल-सहित नाच जिसमें शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता है, स्त्रियों का नाच।
लास्यक–(सं. पुं.) नृत्य, नाच।
लास्या–(सं. स्त्री.) नाचनेवाली स्त्री।
लाह–(हिं. स्त्री.) लाख, चपड़ा, चमक, आभा; (पुं.) लाभ।
लाहन–(हिं. पुं.) वह महुआ जो मद्य चुआने के वाद वच जाता है और पशुओं को खिलाया जाता है, खमीर जिससे मद्य वनता है।
लाहल–(हिं. पुं.), **लाहौल**–(अ. पुं.) भूत-प्रेत की झाड़-फूंक में कहा जानेवाला शब्द।
लाही–(हिं. स्त्री.) लाल रंग का वह छोटा कीड़ा जो वृक्षों पर लाह उत्पन्न करता है, इसी प्रकार का कीड़ा जो उपज को वहुत हानि पहुँचाता है, लावा, सरसों; (वि.) लोहे के रंग का, मटमैले लाल रंग का।
लाहु–(हिं. पुं.) लाभ।
लिंग–(सं. पुं.) चिह्न, लक्षण, साधक हेतु, सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति, व्याकरण में शब्दों का भेद जिससे उनके पुंलिंग या स्त्रीलिंग होने का पता लगता है, मीमांसा के छः लक्षण, सामर्थ्य, पुरुष की गुप्तेन्द्रिय, शिश्न; **–क**–(पुं.) कैथ का पेड़; **–देह**–(पुं.) वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी अपने किये हुए कर्मो का फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है; **–धारण**–(पुं.) वंश या सम्प्रदाय के चिह्न धारण करना; **–धारी**–(वि.) लिंग-धारण करनेवाला, चिह्नधारी; **–पीठ**–(पुं.) मन्दिर का अरघा जिस पर देवलिंग स्थापित रहता है; **–मूर्ति**–(पुं.) शिव; **–रोग**–(पुं.) शिश्न का एक रोग; **–वत्**–(वि.) चिह्नयुक्त; **–वर्ध**–(पुं.) कैथ का पेड़; **–वर्धन**–(पुं.) शिश्न की वृद्धि; **–वर्धिनी**–(स्त्री.) अपामार्ग, चिचड़ा; **–वर्धी**–(वि.) शिश्न की वृद्धि करनेवाला; **–विपर्यय**–(पुं.) व्याकरण में लिंग का परिवर्तन; **–वेदी**–(स्त्री.) वह अरघा जिस पर कोई देवमूर्त्ति स्थापित की जाती है; **–शरीर**–(पुं.) सूक्ष्म शरीर; **–स्थ**–(पुं.) ब्रह्मचारी।
लिंगाग्र–(सं. पुं.) शिश्न का अग्र-भाग।
लिंगानुशासन–(सं. पुं.) व्याकरण में शब्दों का लिंग-निरूपण करने के नियम।
लिंगार्चन–(सं. पुं.) शिवलिंग का पूजन।
लिंगालिका–(सं. स्त्री.) छोटी चुहिया, मुसटी।
लिंगी–(सं.पुं.) हाथी; (वि.) चिह्नवाला।
लि–(सं. पुं.) शान्ति, नाश, शेष, अन्त, हाथ में पहिनने का एक आभूषण।
लिए–(हिं.विभ.) हिंदी की एक विभक्ति जिसका प्रयोग सम्प्रदान कारक में किया जाता है। (निमित्त, प्रयोजन आदि के सूचनार्थ यह शब्द के साथ लगाया जाता है। उत्तम तथा मध्यम पुरुष के सर्वनामों को छोड़कर वाकी सर्वनामों तथा संज्ञाओं के साथ इसके पहले 'के' लगता है, *यथा*–मैं उसके या गोपाल के लिए पुस्तक लाया हूँ।)
लिक्खिन–(हिं. पुं.) मटमैले रंग की एक वड़ी चिड़िया।
लिकुच–(सं.पुं.) वड़हर का वृक्ष।
लिक्का–(सं. स्त्री.) जूँ का अंडा, लीख।
लिक्खाड़–(हिं. पुं.) वहुत लिखनेवाला, वहुत वड़ा लेखक (व्यंग्य में)।
लिक्षा–(सं. स्त्री.) जूँ का अंडा, लीख, एक सूक्ष्म परिमाण।
लिखत–(हिं. स्त्री.) लिखी हुई वात।
लिखन–(सं. पुं.) लिपि, लिखावट।
लिखना–(हिं. क्रि. स.) किसी नुकीली वस्तु से रेखा, अक्षर आदि के रूप में चिह्नित करना, अंकित करना, कोई वात लिपिवद्ध करना, लेख आदि की रचना करना, पुस्तक या ग्रंथ रचना।
लिखवाई–(हिं. स्त्री.) लिखाई।
लिखवाना–(हिं. क्रि. स.) लिखने का काम दूसरे से कराना।
लिखाई–(हिं. स्त्री.) लिखने का कार्य, लेख, लिपि, लिखने का ढंग, लिखावट, लिखने का शुल्क; **–पढ़ाई**–(स्त्री.) विद्योपार्जन।
लिखाना–(हिं. क्रि. स.) अंकित कराना, दूसरे से लिखने का काम कराना; (मुहा.)–पढ़ाना–शिक्षा देना।
लिखापढ़ी–(हिं. स्त्री.) चिट्ठियों का आना-जाना, पत्र-व्यवहार, किसी विषय को कागज पर लिखकर पक्का करना।
लिखावट–(हिं. स्त्री.) लिखे हुए अक्षर आदि, लिखने का ढंग, या प्रणाली, लेख।
लिखित–(सं. वि.) अंकित, लिखा हुआ; (पुं.) लिपि, लेख, प्रमाणपत्र।
लिखितक–(हिं.पुं.) एक प्रकार के प्राचीन चौखूँटे अक्षर जो मध्य एशिया के शिलालेखों में पाये गये हैं।
लिखेरा–(हिं. पुं.) लिखनेवाला, लेखक।
लिख्या–(सं. स्त्री.) लीख, एक परिमाण।
लिचेन–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास।
लिच्छवि–(हिं.पुं.) भारत का एक प्राचीन राजवंश।
लिटाना–(हिं. क्रि. स.) लेटने की क्रिया कराना।
लिट्ट–(हिं.पुं.), **लिट्टी**–(हिं. स्त्री.) रोटी जो विना तवे के आग पर ही सेंकी जाय, वाटी।
लिठोर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नमकीन पकवान।
लिडार–(हिं. वि.) डरपोक, कायर।
लिपटना–(हिं. क्रि. अ.) चिपटना, सट जाना, तन्मय होकर किसी कार्य में प्रवृत्त होना, गले लगना, आलिंगन करना।
लिपटाना–(हिं. क्रि. स.) एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सटाना, चिपटाना, गले लगाना, आलिंगन करना।
लिपड़ा–(हिं. पुं.) कपड़ा; (वि.) लेई की तरह गीला और चिपचिपा।
लिपना–(हिं. क्रि. अ.) किसी रंग या गीली वस्तु से पोता जाना, रंग आदि का भद्दी तरह फैल जाना।
लिपवाना–(हिं. क्रि. स.) लीपने-पोतने का काम दूसरे से कराना।
लिपाई–(हिं. स्त्री.) लीपने-पोतने की क्रिया या भाव, लीपने की मजदूरी।

लिपाना–(हिं. क्रि. अ., स.) रंग अथवा किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना, पुताना, घुली हुई मिट्टी, गोबर आदि का लेप करना।
लिपि–(सं. स्त्री.) वर्ण या अक्षर के अंकित चिह्न, लिखावट, लिखने की विविध पद्धतियाँ, लिखे हुए अक्षर; **–कर**–(पुं.) लेखक, लिखनेवाला; **–कार**–(पुं.) लेखक; **–ज्ञ**–(वि., पुं.) सुन्दर लिखनेवाला; **–न्यास**–(पुं.) लिखने की क्रिया, लिखावट; **–फलक**–(पुं.) पत्थर, धातु आदि का पट्ट जिस पर अक्षर खोदे जाते है; **–बद्ध**–(वि.) लिखित, लिखा हुआ; **–शाला**–(स्त्री.) पाठशाला।
लिपिक–(सं. पुं.) लेखक, किरानी, मुहर्रिर।
लिप्त–(सं. वि.) भक्षित, खाया हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ, अनुरक्त, तत्पर, संलग्न, पतला लेप चढ़ाया हुआ; **–हस्त**–(वि.) जिसका हाथ रुधिर से लथपथ हो।
लिप्तांग–(सं. वि.) जिसका शरीर सुगन्धित द्रव्यों से लेपन किया गया हो।
लिप्ता–(सं. स्त्री.) काल का एक प्राचीन परिमाण जो प्रायः एक मिनट के बराबर माना जाता है।
लिप्सा–(सं. स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा, लालच।
लिप्सित–(सं. वि.) अभिलषित।
लिप्सु–(सं. वि.) पाने की इच्छा करनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) पाने की इच्छा।
लिफाफा–(अ. पुं.) पत्र या चिट्ठी का आवरण या खोल, खाम।
लिबड़ी–(हिं. स्त्री.) कपड़ा-लत्ता।
लिबि, लिवि–(सं. स्त्री.) देखें 'लिपि'।
लियाकत–(अ. स्त्री.) योग्यता, गुण।
लिलाट, लिलार–(हिं. पुं.) देखें 'ललाट'।
लिव–(हिं. स्त्री.) लौ, लगन।
लिवाना–(हिं. क्रि. स.) लेने या लाने का काम दूसरे से कराना, थमाना।
लिवाल–(हिं. पुं.) मोल लेनेवाला।
लिवी–(सं. स्त्री.) लिपि, लिखावट।
लिवैया–(हिं. पुं.) लेनेवाला।
लिसोड़ा–(हिं. पुं.) एक मझोले आकार का वृक्ष, (बेर के बराबर इसके फल गुच्छों में लगते हैं।)
लिहाड़ा–(हिं. वि.) नीच, निकम्मा।
लिहाड़ी–(हिं. स्त्री.) उपहास, निन्दा।
लिहाज–(अ. पुं.) लज्जा, पक्षपात, कृपा-दृष्टि।
लिहाफ–(अ. पुं.) रजाई।
लिहिल–(हिं. वि.) चाटता हुआ।
लीक–(हिं. स्त्री.) चिह्न, लकीर, रेखा, गाड़ी आदि के चलने से बना हुआ चिह्न, बँधी हुई मर्यादा, यश, प्रतिष्ठा, हद, प्रतिबन्ध, भूरे रंग की एक चिड़िया, रीति, प्रथा, चाल; (मुहा.) **–करके**–लकीर खींचकर; **–खींचना**–किसी विषय में दृढ़-निश्चय होना; **–पीटना**–प्राचीन प्रथा के अनुसार चलना।
लीक्का–(सं. स्त्री.) लिक्षा, लीख।
लीख–(हिं. स्त्री.) जूँ का अंडा, एक छोटा परिमाण, लीक।
लीचड़–(हिं. वि.) जल्दी पिंड न छोड़नेवाला, चिपटनेवाला, सुस्त।
लीची–(हिं. स्त्री.) एक सदाबहार वृक्ष का फल जो खाने में मीठा होता है।
लीझी–(हिं. स्त्री.) देह में मले हुए उबटन के साथ छूटी हुई मैल, सीठी जो रस चूस लेने पर बची हो; (वि.) नीरस, निःसार।
लीथो–(अं. पुं.) शिलाखंड पर अक्षर खोदकर छापने की कला, यंत्र आदि।
लीद–(हिं. स्त्री.) (घोडे, गधे, ऊँट, हाथी आदि) पशुओं का मल।
लीन–(सं. वि.) तन्मय, मग्न, विचार में डूबा हुआ, तत्पर।
लीनता–(सं. स्त्री.) तत्परता, तन्मयता।
लीनो–(अं. पुं.) मुद्रण का वैज्ञानिक चमत्कारपूर्ण विद्युत्-चालित यंत्र जिसमें पूरी पंक्ति ढलकर निकलती चलती है।
लीपना–(हिं. क्रि स.) मिट्टी, गोबर आदि की पतली तह चढ़ाना, पोतना; (मुहा.) **लीप-पोतकर बराबर करना**–पूर्ण रूप से नष्ट करना।
लीम, लीम्–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चीड़ का पेड़, नीबू।
लील–(हिं. वि.) नीला, नीले रंग का; (पुं.) नील।
लीलना–(हिं. क्रि. स.) घोंटकर पेट में उतारना, निगलना।
लीलया–(स. अव्य.) खेल में, सहज में, विना परिश्रम के।
लीला–(सं. स्त्री.) क्रीड़ा, खेल, विचित्र कार्य, प्रेम, विनोद, नायिका का एक भाव, केवल मनोरंजन के लिये किया जानेवाला कार्य, कोई विचित्र कार्य, अवतारों के चरित्र का अभिनय, चौबीस मात्राओं का एक छंद; (हिं. पुं.) काले रंग का घोड़ा; **–कमल**–(पुं.) क्रीड़ा के लिये हाथ में लिया हुआ कमल; **–कर**–(पुं.) एक प्रकार का छन्द; **–कलह**–(पुं.) प्रेम का कलह; **–गृह**–(पुं.) खेल का घर; **–गेह**–(पुं.) क्रीड़ागार; **–तनु**–(पुं.) वह स्वाँग जो खेल दिखलाने के लिये धारण किया जाता है; **–तामरस**–(पुं.) देखें 'लीला कमल'; **–नटन**–(पुं.) कौतुक का नाच; **–पद्म**–(पुं.) लीला-कमल; **–पुरुषोत्तम**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–मनुष्य**–(पुं.) छद्मवेशी मनुष्य; **–मय**–(वि.) क्रीड़ा के भावों से परिपूर्ण; **–मात्र**–(अव्य.) खेलते-खेलते; **–वज्र**–(पुं.) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र; **–वती**–(वि. स्त्री.) विलासवती; (स्त्री.) प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् भास्कराचार्य की पुत्री का नाम जिन्होंने गणित की एक पुस्तक लिखी थी; **–वापी**–(स्त्री.) वह बावली जिसमें तैराकी की जाय; **–वेश्म**–(पुं.) लीलागृह; **–साध्य**–(वि.) सहज में होनेवाला; **–स्थल**–(पुं.) क्रीड़ा करने का स्थान।
लीलाब्ज–(सं. पुं.) लाल कमल।
लीलाभरण–(सं. पुं.) पद्म की माला से बना हुआ गहना।
लीलारविंद–(सं. पुं.) क्रीड़ा, खेल, लाल कमल।
लीलावतार–(स. पुं.) वह अवतार जिसमें विष्णु ने अपनी लीला दिखलाई हो।
लीलावधूत–(सं. वि.) स्वच्छन्द विचरनेवाला।
लीलोद्यान–(सं. पुं.) क्रीड़ा का उद्यान।
लीलोपचती–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह गुरु-वर्ण होते हैं।
लुँगाड़ा–(हिं. वि.) नीच, लुच्चा।
लुंगी–(हिं. स्त्री.) कमर में लपेटने का वस्त्र का छोटा टुकड़ा, एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।
लुंचन–(सं. पुं.) उखाड़ना, नोचना, काटना, तराशना, चुटकी से पकड़कर खींचना।
लुंचित–(स. वि.) नोचा हुआ।
लुंज–(हिं. वि.) विना हाथ-पैर के, लँगड़ा, लूला, बिना पत्तों का (वृक्ष) ठूंठ।
लुंटक–(सं. पुं.) एक प्रकार का साग।
लुंटा–(सं. स्त्री.) लूटना, चुराना।
लुंटाक–(सं. पुं.) तस्कर, चोर।
लुंटाकी–(सं. स्त्री.) चोर स्त्री।
लुंठक–(सं. पुं.) लुटेरा।
लुंठन–(सं. पुं.) लूटना, चराना।

लुंठा–(सं. स्त्री.) लूटना।
लुंठाक–(सं. पुं.) चोर, ठग, कौआ।
लुंठि–(सं. स्त्री.) लूटपाट, चोरी।
लुंड–(सं. पुं.) चोर।
लुंडमुंड–(हिं. पुं., वि.) बिना हाथ-पैर का, लँगड़ा, बिना सिर का धड़, कबंध।
लुंडा–(हिं. वि.) जिसकी पूंछ और पर झड़ गये हों या उखाड़ लिये गये हों, जिसकी पूंछ पर बाल न हों; (पुं.) लपेटे हुए सूत की पिंडी।
लुंडिका–(सं. स्त्री.) लपेटे हुए सूत की पिंडी या गोली।
लुंड़ियाना–(हिं. क्रि. स.) लुंडी बनाकर लपेटना।
लुंडी–(सं. स्त्री.) लपेटे हुए सूत की गोली।
लुआठा–(हिं. पुं.) वह लकड़ी जिसकी एक छोर जलती या जल गयी हो।
लुआठी–(हिं. स्त्री.) जलती हुई लकड़ी।
लुआर–(हिं. स्त्री.) लू।
लुकंजन–(हिं. पुं.) देखें 'लोपांजन'।
लुक–(हिं. पुं.) कोई चमकदार लेप, आग की लपट, लौ।
लुकठी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लुआठी'।
लुकना–(हिं. क्रि. अ.) आड़ में छिप जाना; (मुहा.) **लुक-छिपकर**–बहुत ही गुप्त रूप से।
लुकाट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके आमड़े के बराबर फल खट-मीठ होते हैं।
लुकाना, लुकोना–(हिं. क्रि. अ., स.) आड़ में रखना, छिपाना, छिपना।
लुकेठा–(हिं. पु.) देखें 'लुआठा'।
लुखिया–(हिं. स्त्री.) धूर्त स्त्री, वेश्या, रंडी।
लुगड़ा–(हिं. पुं.) कपड़ा, ओढ़नी।
लुगड़ी–(हिं. स्त्री.) देखें 'लुगदी'।
लुगदा–(हिं. पुं.) पिसी हुई गीली वस्तु का लोंदा।
लुगदी–(हिं. स्त्री.) पिसी हुई गीली वस्तु का छोटा गोला।
लुगरा–(हिं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा, फटा-पुराना वस्त्र, लत्ता।
लुगरी–(हिं. स्त्री.) फटी-पुरानी धोती।
लुगाई–(हिं. स्त्री.) स्त्री, औरत, पत्नी।
लुगी–(हिं. स्त्री.) पुराना वस्त्र।
लुग्गा–(हिं. पुं.) देखें 'लूगा', वस्त्र।
लुचकना–(हिं. क्रि.स.) झटके से खींचना।
लुचवाना–(हिं. क्रि. स.) नोचवाना, उखड़वाना।
लुचुई–(हिं. स्त्री.) मैदे की पतली पूरी, लूची।
लुच्चा–(हिं. वि.) दुराचारी, चालबाज, खोटा, चाई, नीच।
लुच्ची–(हिं. वि. स्त्री.) खोटी, नीच।
लुटंत–(हिं. स्त्री.) लूट।
लुटकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लटकना'।
लुटना–(हिं. क्रि. अ.) दूसरे के द्वारा लूटा जाना, डाकुओं के हाथ धन खोना, सर्वस्व नष्ट होना, निछावर होना।
लुटरा–(हिं. वि.) घुंघराला।
लुटवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'लुटाना'।
लुटाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे को लूटने देना, डाकुओं को छीनने देना, बिना मूल्य के देना, नष्ट करना, व्यर्थ फेंकना या व्यय करना, बहुतायत से बाँटना, अधिक दान करना।
लुटिया–(हिं. स्त्री.) धातु का छोटा लोटा।
लुटेरा–(हिं. पुं.) डाकू, लूटनेवाला।
लुट्टुर–(हिं. स्त्री.) कनकटी भेड़।
लुठन–(सं. पुं.) भूमि पर लोटना।
लुठना–(हिं. क्रि. अ.) भूमि पर लोटना, लुढ़कना।
लुठाना–(हिं. क्रि. स.) भूमि पर लोटाना।
लुठित–(सं. वि.) भूमि पर बारंबार लोटता हुआ।
लुड़कना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लुढ़कना'।
लुड़काना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'लुढ़काना'।
लुड़की–(हिं. स्त्री.) दही में बनी हुई भाँग।
लुड़खुड़ाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लड़-खड़ाना'।
लुढ़कना–(हिं. क्रि. अ.) गेंद की तरह भूमि पर चक्कर खाते हुए आगे बढ़ना, ढलकना, गिरकर नीचे-ऊपर होते हुए घिसटना।
लुढ़काना–(हिं. क्रि. स.) कोई वस्तु भूमि पर इस प्रकार फेंकना कि वह नीचे-ऊपर होती हुई कुछ दूर तक चली जाय।
लुढ़ना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लुढ़कना'।
लुढ़ाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'लुढ़काना'।
लुढ़ियाना–(हिं. क्रि.स.) गोल तुरपना या सिलाई करना।
लुतरा–(हिं. वि.) पिशुन, नटखट।
लुतरी–(हिं. वि. स्त्री.) पिशुन (स्त्री)।
लुत्फ–(अ. पुं.) आनन्द, मनोविनोद, स्वाद, जायका।
लुदरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।
लुनना–(हिं. क्रि. स.) खेत की तैयार उपज काटना, हटाना, दूर करना।
लुनाई–(हिं. स्त्री.) लावण्य।
लुनेरा–(हिं. पुं.) खेत की उपज काटनेवाला।
लुपना–(हिं. क्रि. अ.) छिपना।
लुप्त–(सं. वि.) अन्तर्हित, छिपा हुआ, अदृश्य, गायब, नष्ट।
लुप्तोपम–(स. वि.) उपमाशून्य, जिसमें उपमा का अंग लुप्त हो।
लुप्तोपमा–(स. स्त्री.) वह उपमा अलंकार जिसमें उसका कोई अंग लुप्ता हो।
लुबरी–(हिं. स्त्री.) किसी तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल, तलछट।
लुबुध(धा)–(हिं. वि.) देखें 'लुब्ध'।
लुबुधना–(हिं. क्रि. अ.) लुब्ध होना।
लुब्ध–(सं. वि.) आकांक्षायुक्त, लोभी, मोहित, तन-मन की सुध भूला हुआ; (पुं.) व्याध, बहेलिया; **–क**– (पुं.) व्याध, बहेलिया, लंपट, उत्तरी गोलार्ध का एक बहुत चमकीला तारा; **–ता**– (स्त्री.) लुब्ध होने का भाव या धर्म, लोभ।
लुब्धना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लुबुधना'।
लुब्धापति–(सं. स्त्री.) वह प्रौढ़ा नायिका जो पति तथा कुल के बड़े लोगों से लज्जा करती हो।
लुभाना–(हिं. क्रि. अ. स.) लुब्ध होना, मोह में पड़ना, तन-मन की सुध भूलना, लालच में पड़ना, मोहित करना, मोह में डालना, ललचाना, रिझाना।
लुभित–(हिं. वि.) मोहित लुभाया हुआ।
लुरका, लुरकी–(हिं. पुं., स्त्री.) कान में पहनने की छोटी बाली, मुरकी।
लुरना–(हिं. क्रि. अ.) लहराना, झूलना, झुक पड़ना, प्रवृत्त होना।
लुरियाना–(हिं. क्रि.अ.) सहसा आ जाना।
लुरी–(हिं.स्त्री.) हाल की ब्याई हुई गाय।
लुलन–(सं. पुं.) आन्दोलित होना, झूलना।
लुलना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लुरना'।
लुलाप–(सं. पुं.) महिष, भैंसा।
लुलित–(स.वि.) लटकता या झलता हुआ।
लुवार–(हिं. स्त्री.) जोर से बहनेवाली गरम हवा, लू।
लुशई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चाय।
लुहना–(हिं. क्रि. अ.) लुभाना।
लुहार–(हिं. पुं.) लोहे का काम करनेवाला, लोहे की वस्तु बनाने वाला, वह जाति जो लोहे की वस्तु बनाती है।
लुहारिन–(हिं. स्त्री.) लुहार की स्त्री।
लुहारी–(सं. स्त्री.) लुहार की स्त्री, लोहे की वस्तुएँ बनाने का काम।
लूंबरी–(हिं. स्त्री.) लोमड़ी।

लू–(हि स्त्री.) ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा, गरम हवा का झोंका; (मुहा०) **–लगना या मारना**–गरम हवा लगने से ज्वर आदि होना।
लूक–(हिं.पुं..) अग्नि की ज्वाला, आग की लपट, लुआठी, लुत्ती, उल्का, टूटा हुआ तारा; (स्त्री.) गरम हवा, लू; (मुहा.) **–लगाना**–आग लगाना।
लूकट–(हिं. पुं.) लुआठी।
लूकना–(हिं.क्रि.स.) आग लगाना, जलाना।
लूका–(हि. पुं.) अग्नि की ज्वाला या लपट, लुआठी, मछली फँसाने का एक प्रकार का जाल।
लूकी–(हिं. स्त्री.) स्फुलिंग, चिनगारी।
लूक्ष–(सं. वि.) रूक्ष, रूखा।
लूखा–(हिं. वि.) रूखा, रूक्ष।
लूगा–(हिं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा, धोती।
लूट–(हिं. स्त्री.) किसी का धन बलपूर्वक लूटने की क्रिया, डकैती, लूटने से मिला हुआ माल; **–क**–(पुं.) लूटनेवाला, डाकू, लुटेरा, शोभा म वढ़नेवाला; **–खूंद**–(स्त्री.) डाका, लूटमार; **–मार, –पाट**–(पुं.) मारपीटकर किसी का धन छीन लेना।
लूटना–(हिं. क्रि. स.) जबरदस्ती छीनना, बलपूर्वक नष्ट करना, धोखे से या अन्यायपूर्वक किसी का धन हर लेना, बहुत अधिक मूल्य लेना, ठगना, मोहित करना।
लूटि–(सं. स्त्री.) देखें 'लूट'।
लूता–(सं. स्त्री.) मकड़ी; **–तंतु**–(पुं.) मकड़े का जाला; **–मर्कटक**–(पुं.) एक प्रकार का वंदर, वनमानुस।
लूतिका–(सं. स्त्री.) मकड़ी।
लूती–(सं. स्त्री.) लुआठी।
लूनना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'लुनना'।
लूम–(हिं.पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
लूमना–(हिं. क्रि. अ.) लटकना।
लूमविष–(सं. पुं.) विच्छू।
लूयर–(हिं. वि.) युवा, सयाना।
लूरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'लुरना'।
लूला–(हिं. वि.) जिसका हाथ कट गया या वेकाम हो गया हो, लुंजा।
लूलू–(हिं. वि.) मूर्ख।
लूसन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का फलदार वृक्ष।
लेंड़–(हिं. पुं.) बँधा हुआ मल जो बत्ती के रूप में निकलता है।
लेंड़ी–(हिं. स्त्री.) वकरी, ऊँट आदि का वँधा हुआ मल।
लेंड़ौरी–(हिं. स्त्री.) चौपायों को दाना खिलाने का पात्र।
लेंहड़, लेंहड़ा–(हिं. पुं.) गाय, बैल आदि का झुंड।
ले–(हिं. अव्य.) आरंभ होकर, शुरू होकर, तक, पर्यन्त।
लेई–(हिं. स्त्री.) अवलेह, खूब गाढ़ा पकाया हुआ लसीला पदार्थ, लपसी, पानी घोलकर औटाया हुआ मैदा जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है, सुरखी और चूना मिलाकर गाढ़ा घोला हुआ मसाला जिससे ईंटों की जोड़ाई की जाती है; **–पूंजी**–(स्त्री.) सर्वस्व।
लेख–(सं. पुं.) लिपि, लिखे हुए अक्षर, लिखी हुई बात, लिखाई, लिखावट, लेखा, हिसाव-किताव, देवता; (हिं. स्त्री.) पक्की वात, लकीर; **–क**–(पुं.) लिपिक, लिखनवाला, ग्रन्थकार, किसी विषय पर लिखकर अपना विचार प्रकट करनेवाला; **–न**–(पुं.) लिखने का कार्य, लिखने की कला या विद्या, चित्र बनाना, हिसाव करना, कास, खाँसी; **–पत्र**–(पुं.) लिखा हुआ पक्का कागज, दस्तावेज; **–पत्रिका**–(स्त्री.) लिखे हुए आवश्यक कागज-पत्र; **–प्रणाली**–(स्त्री.) लिखने का ढंग; **–शैली**–(स्त्री.) लेख प्रणाली; **–हार**–(पुं.) पत्रवाहक, चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला; **–हारक, –हारी**–(पुं.) चिट्ठी ले जानेवाला।
लेखना–(हिं. क्रि. स.) लिखना, गिनना, चित्र बनाना, विचार करना; (मुहा.) **–जोखना**–ठीक अनुमान लगाना।
लेखनी–(सं. स्त्री.) कलम।
लेखनीय–(सं. वि.) लिखने योग्य।
लेखा–(सं. स्त्री.) लिखावट, रेखा, लकीर; (हिं. पुं.) हिसाव-किताव, गिनती, कूत, अनुमान, विचार, आयव्यय आदि का विवरण; (मुहा.) **–डेवढ़ करना**–हिसाव साफ करना या चुकती लिखना।
लेखावही–(हिं. स्त्री.) वह वही जिसमें लेन-देन का हिसाव लिखा जाता है, रोकड़वही।
लेखिका–(सं.स्त्री.) पुस्तक लिखनेवाली।
लेखित–(सं. वि.) लिखा या लिखवाया हुआ।
लेख्य–(सं. व.) लेखनीय, लिखने लायक, लिखा जाने योग्य; (पुं.) लेख।
लेख्यगत–(सं. वि.) लिखा हुआ, चिह्न किया हुआ, चित्रित किया हुआ।
लेख्यपत्र–(सं. पुं.) ताड़ का पत्ता, लेखपत्र, दस्तावेज, रसीद।
लेख्यमय–(सं. वि.) लिखा हुआ।
लेख्यस्थान–(सं. पु.) वह स्थान जहाँ हिसाब-किताव लिखने का काम होता है।
लेख्यारूढ़–(सं. वि.) जिसके विषय में लिखापढ़ी हुई हो।
लेजम–(फा. पुं.) धनुष-वाण चलाने का एक उपकरण, बच्चों को व्यायाम सिखाने के लिए व्यवहृत सिकड़ी, डंडे आदि का वना हुआ उपकरण।
लेजुर, लेजुरी–(हि. स्त्री.) डोरी, रस्सी।
लेट–(हिं. स्त्री.) सुरखी, चूना और कंकड़ मिलाकर पीटी हुई छत या फर्श।
लेटना–(हिं.क्रि.अ.) संपूण शरीर को भूमि या विस्तर पर पड़ा या शायित रखना, पौढ़ना, किसी वस्तु का एक ओर झुककर भूमि पर गिर जाना, मर जाना।
लेटा–(हिं. पुं.) गल्ले की मडी।
लेटाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
लेद–(हिं.पुं.) फाल्गुन में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत; (अ.पुं.) लोहा खरादने या पेंच आदि वनाने का यन्त्र।
लेदी–(हि. स्त्री.) जलाशय के किनारे रहनवाली एक प्रकार की चिड़िया।
लेन–(हि. पुं.) लेने की क्रिया या भाव, लहना; **–दार**–(पुं.) लेनेवाला, लहनदार, महाजन; **–देन**–(पुं.) लेन और देन का व्यवहार, महाजनी।
लेना–(हिं. क्रि. स.) प्राप्त करना, थामना, कोई वस्तु स्वीकार करना, संभोग करना, सचय करना, सेवन करना, लज्जित करना, किसी कार्य का भार ग्रहण करना, पहुँचाना, अगवानी करना, ऋण लेना, जीतना, भागते हुए को पकड़ना, मोल लेना, कार्य समाप्त करना, अपने अधिकार में करना; (मुहा.) **आड़े हाथ लेना**–व्यंग्य की बातें कहकर लज्जित करना; **ले डालना**–हराना; **ले-दे करना**–कलह करना; **–एक न देना दो**–किसी प्रकार का संसर्ग न रखना; **लेने के देने पड़ना**–लाभ के वदले हानि होना; **ले मरना**–अपने साथ दूसरों का नाश करना।
लेप–(सं. पुं.) लेई के समान कोई गाढ़ी वस्तु जो किसी वस्तु के ऊपर फलाकर पोती जाती है, उवटन।

लेपक–(सं. पुं.) लेप करनेवाला।
लेपना–(हिं. क्रि. स.) किसी गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना, पोतना।
लेपालक–(हिं. पुं.) दत्तक पुत्र, गोद लिया हुआ पुत्र।
लेपी–(सं. पुं.) देखें 'लेपक'।
लेप्य–(सं. वि.) लेपन करने योग्य, लीपने-पोतने योग्य; **–नारी**–(स्त्री.) पत्थर या मिट्टी की बनी हुई स्त्री की मूर्त्ति; **–मयी**–(स्त्री.) कठपुतली; **–स्त्री**–(स्त्री.) वह स्त्री जिसके अंग पर चंदन आदि का लेप लगा हो।
लेबरना–(हिं. क्रि. स.) ताने में माँड़ी लगाना।
लेबुल–(अं. पुं.) नाम, पता आदि का विवरण लिखा हुआ प्रेष्य सामग्रियों के ऊपर चिपकाया जानेवाला कागज का टुकड़ा।
लेर–(हिं. स्त्री.) लहर।
लेरुआ (वा)–(हिं. पुं.) गाय का बछड़ा।
लेलिहान–(सं. पुं.) शिव, महादेव, सप; (वि.) बारंबार चाटनेवाला।
लेव–(हिं. पुं.) लेप, कहगिल, आँच पर चढ़ाने के पहले पात्रों की पेंदी में मिट्टी का लेप करना, लेवा।
लेवा–(हिं. पुं.) मिट्टी का गिलावा, कहगिल, लेप, गाय-भैंस का थन; (वि.) लेनेवाला।
लेवार–(हिं. पुं.) लेव, गिलावा।
लेवाल–(हिं. पुं.) लेनेवाला।
लेश–(सं. पुं.) कण, अणु, सूक्ष्मता, यत्-किंचित् चिह्न, संसर्ग, लगाव, वह अलंकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन में एक ही अंश म रोचकता रहती है, एक प्रकार का गाना; (वि.) अल्प, थोड़ा।
लेश्या–(सं. स्त्री.) आलोक, दीप्ति, जैन धर्म के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण कर्म उसे बाँधता है।
लेषना–(हिं.क्रि.स.) देखें 'लखना', 'लिखना'।
लेसना–(हिं. क्रि. स.) जलाना, भीत पर मिट्टी का गिलावा पोतना, चिपकाना, सटाना, लेप करना, पोतना, चुगली खाना, विवाद उत्पन्न करने के लिए किसी को उत्तेजित करना।
लेह–(सं.पुं.) आहार, भोजन, रस, अवलेह।
लेहन–(सं. पुं.) जिह्वा से स्वाद लेना, चाटना।
लेहना–(हिं. पु.) खेत में कटी हुई उपज का वह अंश जो नाई, धोबी आदि को दिया जाता है, देखें 'लहना'।
लेहसुर–(हिं. पुं.) कुम्हारों का मिट्टी सानने का औजार।
लेहाजा–(अ. अव्य.) इस कारण से, इसलिए।
लेहाड़ा–(हिं. वि.) देखें 'लिहाड़ा'; **–पन**–(पुं.) देखें 'लिहाड़ापन'।
लेहाड़ी–(हिं. स्त्री.) लिहाड़ी, अपमान।
लेह्य–(सं. पुं.) अमृत, चाटन का पदार्थ; (वि.) चाटने के योग्य।
लैंगिक–(सं.वि.) लिंग-संबंधी; (पुं.) मूर्ति बनानेवाला, वैशेषिक दर्शन के अनुसार अनुमान, प्रमाण।
लैं–(हिं. अव्य.) पर्यन्त, तक।
लैंपा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।
लैला–(फा. स्त्री.) लैला-मजनूँ की प्रेम-कहानी की नायिका, प्रेयसी, सुंदरी।
लैस–(अ. वि.) हथियार, वरदी आदि से सुसज्जित।
लों–(हिं. अव्य.) तक।
लोंड़ी–(हिं. स्त्री.) कान का लोलक।
लोंदा–(हिं. पुं.) किसी गीली पदार्थ का बँधा हुआ गोला।
लो–(हिं. अव्य.) इसका प्रयोग श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिये होता है।
लोइ–(हिं.पुं.) लोग, जन; (स्त्री.) दीप्ति, प्रभा।
लोइन–(हिं. पुं.) लावण्य।
लोई–(हिं.स्त्री.) गंधे हुए आटे की गोली जिसको बेलकर रोटी बनाई जाती है, एक प्रकार का कंवल।
लोकंजन–(हिं. पुं.) 'लोकांजन'।
लोकंदा–(हिं.पुं.) विवाह के बाद ससुराल जानेवाली कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।
लोकंदी–(हिं. स्त्री.) ससुराल जाते समय कन्या के साथ भेजी हुई दासी।
लोक–(सं.पु.) भुवन, पुराण के अनुसार ऊपर सात लोक हैं; यथा–भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्य लोक; और सात लोक नीचे हैं; वद्यक के अनुसार विष जिसके दो भेद हैं–स्थावर और जंगम; (वृक्ष, लता, तृण आदि स्थावर; तथा पशु, पक्षी, कीट, मनुष्य आदि जंगम विष हैं), प्राणी, जन, मनुष्य, प्रदेश, दिशा, यश, कीर्ति, निवास-स्थान, संसार; **–कंटक**–(पुं.) दुष्ट मनुष्य; **–कंप**–(वि.) मनुष्यों को डरानेवाला; **–कथा**–(स्त्री.) जनश्रुति; **–कर्ता**–(पुं.) शिव, विष्णु; **–कल्प**–(वि.) संसार की स्थिति के सदृश; **–कांत**–(वि.) लोकप्रिय; **–कार**–(पुं.) लोककर्ता; **–कृत्**–(पुं.) सृष्टिकर्ता; **–कृते**–(अव्य.) लोगों के लिये; **–क्षित्**–(वि.) आकाश में रहनेवाला; **–गति**–(स्त्री.) लोकाचार, जीवन-यात्रा; **–गाथा**–(स्त्री.) जनश्रुति; **–गुरु**–(पुं.) जगत्गुरु; **–चक्षु**–(पु.) लोगों के नेत्र-स्वरूप, सूर्य; **–चर**–(वि.) संसार में घूमनवाला; **–चरित्र**–(पुं.) मनुष्यों के जीवन का इतिहास; **–जननी**–(स्त्री.) लक्ष्मी; **–जित्**–(वि) संसार को जीतनेवाला; **–ज्ञ**–(वि.) मानव-तत्त्वदर्शी; **–ज्येष्ठ**–(पुं.) बुद्धदेव; **–तंत्र**–(पुं.) संसार का इतिहास, जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा शासन; **–तत्त्व**–(पुं.) मानव-जाति का ज्ञान; **–तः**–(अव्य.) लोक-प्रथा के अनुसार; **–तुषार**–(पुं.) कपूर; **–त्रय**–(पुं.) तीनों लोक; यथा–स्वर्ग, मर्त्य और रसातल; **–दंभक**–(पुं.) ठग, वंचक; **–द्वार**–(पुं.) स्वर्ग का द्वार; **–धाता**–(पुं.) शिव, महादेव; **–धारिणी**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–धुनि**–(स्त्री.) जनश्रुति; **–नाथ**–(पुं.) विष्णु, शिव, राजा; **–नेता**–(पुं.) लोगों का नायक, शिव; **–प**–(पुं.) देख 'लोकपति'; **–पति**–(पुं.) विष्णु, लोकपाल; **–पथ**–(पु.) यातायात का पथ, लोकाचार; **–पद्धति**–(स्त्री.) सामान्य रीति; **–पाल**–(पुं.) दिक्पाल, पुराण के अनुसार आठ दिशाओं के आठ लोकपाल हैं, यथा–पूर्व दिशा का इन्द्र, दक्षिण-पूर्व कोण का अग्नि, दक्षिण का यम, दक्षिण-पश्चिम कोण का सूय या नैर्ऋत्य पश्चिम का वरुण, उत्तर-पश्चिम कोण का वायु, उत्तर का कुवेर तथा उत्तर-पूर्व कोण का ईशान है, शिव, विष्णु, राजा; **–०ता**–(स्त्री.) लोकपाल का धर्म; **–पितामह**–(पुं.) ब्रह्मा; **–पूजित**–(वि.) जन-समाज में मान्य; **–प्रकाशन, –प्रकाशक**–(पुं.) सूर्य; **–प्रत्यय**–(पुं.) वह जो संसार में सर्वत्र प्रचलित हो; **–प्रसिद्धि**–(स्त्री.) यश, ख्याति; **–प्रवाद**–(पुं.) जनप्रवाद, जनश्रुति; **–बंधु**–(पुं.) शिव, सूर्य; **–बांधव**–(पुं.) सब का मित्र, सूर्य; **–भर्ता**–(पुं.) जन-साधारण का अन्न दाता; **–भाज्**–(वि.) स्थानाधिकारी;

–भावन–(वि.,पुं.) संसार का कल्याण करनेवाला; –मत–(पुं.) जनता की राय; –मर्यादा–(स्त्री.) किसी व्यक्ति का विशिष्ट सम्मान, लोक-प्रथा; –माता–(स्त्री.) संसार की जननी, लक्ष्मी; –मार्ग–(पुं.) प्रचलित रीति, साधारण पन्थ; –यात्रा–(स्त्री.) जीवन-यात्रा, लोक-व्यापार; –रंजन–(वि.) जनता को प्रसन्न करनेवाला; –रक्षक–(पुं.) नृप, राजा; –रव–(पुं.) जनश्रुति; –लोचन–(पुं.) सूर्य; –वचन–(पुं.) जनप्रवाद, अफवाह; –वत्–(वि.) लोकसदृश; –वर्तन–(पुं.) मनुष्य-चरित्र; –वाद–(पुं.) जनश्रुति; –वार्ता–(स्त्री.) जनरव; –वाह्य–(वि.) लोक-निन्दित, आचारभ्रष्ट; –विक्रुष्ट–(वि.) लोक-निन्दित; –विज्ञात–(वि.) प्रसिद्ध, विख्यात; –विधि–(पुं.) सृष्टिकर्ता; –विरुद्ध–(वि.) जनमत के विरुद्ध; –विश्रुत्–(वि.) लोक या संसार में विख्यात; –विश्रुति–(स्त्री.) जनश्रुति; –विसर्ग–(पु.) जगत्,सृष्टि का अंत; –विस्तार–(पुं.) संसार में प्रसिद्धि; –वृत्त–(पुं.) लौकिक आचार; –वृत्तांत–(पुं.) मनुष्य-चरित्र, इतिहास; –व्यवहार–(पुं.) सर्वसाधारण में प्रचलित रीति; –व्रत–(पुं.) मनुष्य-समाज में प्रचलित रीति; –श्रुति–(स्त्री.) जनश्रुति; –संकर–(पुं.) समाज में झूठा व्यवहार करनेवाला; –संक्षय–(पुं.) संसार का नाश; –संग्रह–(पुं.) मनुष्यों की भीड़, सम्पूर्ण संसार; –सत्तात्मक–(वि.) जिस व्यवस्था में शासन जनता के अधिकार में हो; –साक्षी–(पुं.) ब्रह्म, अग्नि, सूर्य; –सात्–(अव्य.) सर्वसामान्य की भलाई के लिए; –सात्त–(वि.) जनता के कल्याण के लिए किया हुआ; –साधक–(वि.) संसार की सृष्टि करनेवाला; –सिद्ध–(वि.) प्रचलित, प्रसिद्ध; –सुंदर–(वि.) जिसको सामान्यतः लोग अच्छा कहते हों; –स्कंद–(पुं.) तमाल-वृक्ष; –स्थल–(पुं.) दैनिक घटना; –स्थिति–(स्त्री.) प्रचलित नियम; –हांदी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की हल्दी; –हार–(पुं., वि.) संसार को नष्ट करनेवाला; –हित–(पुं.) संसार की भलाई; –हिता–(स्त्री.) कुलथी।

लोकना–(हिं. क्रि. स.) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथ से पकड़ लेना, बीच में ही ले लेना।

लोकाकाश–(सं.पुं.) शून्य स्थान, आकाश।

लोकाचार–(सं. पुं.) लोक-व्यवहार, जन-समूह का आचार।

लोकाट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसमें बेर के सदृश मीठे फल लगते हैं।

लोकातिग–(सं. वि.) अद्भुत, असामान्य।

लोकातिशय–(सं. वि.) असाधारण, प्रथा के बाहर।

लोकात्मा–(सं. पुं.) जगत् की आत्मा के तुल्य विष्णु।

लोकादि–(सं. पुं.) संसार के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा।

लोकाधिप–(सं. पुं.) लोकपाल, नरपति।

लोकाधिपति–(सं. पुं.) लोकपाल, देवता।

लोकाना–(हिं.क्रि.स.) उछालना, फेंकना।

लोकानुग्रह–(सं. पुं.) संसार की भलाई।

लोकानुराग–(सं. पुं.) संसार का प्रेम।

लोकापवाद–(सं.पुं.) लोकनिन्दा, जनापवाद।

लोकाभ्युदय–(सं. पुं.) जनता की उन्नति।

लोकायत–(सं. पुं.) चार्वाक-शास्त्र, वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो, एक छन्द का नाम जिसको दुर्मिल भी कहते हैं।

लोकावेक्षण–(सं. पुं.) संसार की भलाई चाहना।

लोकेश–(सं. पुं.) ब्रह्मा, लोकपाल, इन्द्र, पारा।

लोकेश्वर–(सं. पुं.) लोकपाल।

लोकैषणा–(सं. स्त्री.) उत्कर्ष प्राप्त करने की इच्छा।

लोकोक्ति–(सं. स्त्री.) कहावत, वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति के आधार पर कोई सत्य व्यक्त किया जाता है।

लोकोत्तर–(सं. वि.) अद्भुत, विलक्षण।

लोखर–(हिं. पुं.) (नाई, बढ़ई, लोहार आदि के) अस्त्र।

लोग–(हिं. पुं.) जन, मनुष्य।

लोगाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'लुगाई', स्त्री।

लोच–(सं. पुं.) अश्रु, आँसू; (हिं. पुं.) लचक, कोमलता, अभिलाषा, अच्छा ढंग।

लोचक–(सं. पुं.) मांस-पिण्ड, आँख की पुतली, कागज, केला, सिर पर पहनने का एक आभूषण, निर्मोक या केंचुली।

लोचन–(सं. पुं.) आँख, नेत्र, जीरा, झरोखा; –पथ–(पुं.) दृष्टि-पथ; –हित–(वि.) नेत्रों के लिये लाभदायक; –हिता–(स्त्री.) तूतिया।

लोचना–(हिं.क्रि.अ.,स.) प्रकाशित करना, अभिलाषा करना, शोभित होना, रुचि उत्पन्न करना, ललचाना।

लोचशिर–(सं. पुं.) अजमोदा।

लोचून–(हिं. पुं.) लोहे का चूर।

लोजंग–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की नाव।

लोट–(हिं. स्त्री.) लोटने की क्रिया या भाव; (पुं.) उतार, घाट, देखें 'नोट'।

लोटन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हल, एक प्रकार का लोटनेवाला कबूतर, छोटी-छोटी कंकड़ियाँ जो यातायात में इधर-उधर लुढ़कती हैं।

लोटना–(हिं. क्रि. अ.) लुढ़कना, विश्राम करना, लेटना, चकित होना, कष्ट से तड़पना, करवटें बदलना, लोट जाना, मूर्च्छित होना।

लोटपटा–(हिं. पुं.) विवाह में वर और वधू का पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति, उलट-फेर, दाँव का इधर से उधर हो जाना।

लोटा–(हिं. पुं.) पानी आदि रखने का धातु का बना हुआ छोटा पात्र।

लोटिया–(हिं. स्त्री.) छोटा लोटा।

लोटी–(हिं. स्त्री.) छोटा लोटा।

लोड़न–(सं. पुं.) इधर-उधर हिलना, लुढ़कना, मंथन।

लोड़ना–(हिं. क्रि. अ.) आवश्यकता होना।

लोढ़ा–(हिं. पुं.) सिल पर किसी वस्तु को पीसने के काम में आनेवाला पत्थर का गोल लंबोतरा टुकड़ा, बट्टा; (मुहा.) –डालना–बराबर या सम करना।

लोढ़िया–(हिं. स्त्री.) छोटा लोढ़ा, बट्टा।

लोत–(सं. पुं.) चोरी का धन, चिह्न, अश्रु, आँसू।

लोत्र–(सं. पुं.) नेत्रजल, आँसू।

लोथ–(हिं. स्त्री.) मृत शरीर, शव; (मुहा.) –गिरना–मारा जाना; –डालना–हत्या करना।

लोथड़ा–(हिं. पुं.) मांस का बड़ा पिण्ड जिसमें हड्डी न हो।

लोदी–(पुं.) भारत के एक मुसलमान राजवंश का नाम।

लोध–(सं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और लकड़ी औषधों में प्रयुक्त होती है।

लोधरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का ताँवा जो जापान से आता है।

लोध्र–(सं. पुं.) देखें 'लोध'; –तिलक–

(पुं.) एक अलंकार जो उपमा का एक भेद है; -पुष्प-(पुं.) महुए का वृक्ष; -पुष्पिणी-(स्त्री.) छोटे धव का वृक्ष।
लोन-(हिं. पुं.) लवण, नमक, लावण्य, सुन्दरता; (मुहा.) (किसी का) -खाना-किसी के दिये हुए अन्न पर निर्वाह करना; (किसी का)-निकलना-विश्वासघात का फल भोगना; -न मानना-उपकार न मानना; जले या कटे पर-लगाना-कष्ट पर कष्ट देना; -सा लगना-अप्रिय मालूम होना।
लोना-(हिं. वि.) नमकीन, सुन्दर, सलोना; (पुं.) एक प्रकार का विकार जो ईंट, पत्थर तथा मिट्टी की भीतों में लग जाता है जिससे इनका ऊपरी तल झड़ने लगता है, नमकीन मिट्टी जिससे शोरा बनाया जाता है, वह धूल या मिट्टी जो लोना लगने पर भीत से झरती है, घोंघे की जाति का एक कीड़ा, जादू-टोना करनेवाली एक कल्पित डाइन का नाम; (क्रि. स.) लवना।
लोनाई-(हिं. स्त्री.) लावण्य, सुन्दरता।
लोनार-(हिं. पुं.) नमक बनाने का स्थान।
लोनिका-(हिं. स्त्री.) लोनी नामक साग।
लोनिया-(हिं. पुं.) एक जाति का नाम, (इन लोगों का व्यवसाय नमक बनाना है); (स्त्री.) लोनी नामक साग।
लोनी-(हिं. स्त्री.) कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग, एक प्रकार की क्षार-युक्त मिट्टी, वह क्षार जो चने आदि की पत्तियों में होता है।
लोप-(सं. पुं.) विच्छेद, क्षय, नाश, अभाव, अदर्शन, अन्तर्धान होना, छिपना, व्याकरण का वह नियम जिसके अनुसार शब्द-साधन में कोई वर्ण लुप्त हो जाता है।
लोपक-(सं. वि.) विघ्न या बाधा डालने-वाला।
लोपन-(सं. पुं.) नाश करना, लुप्त करना, हटाना।
लोपना-(हिं. क्रि. अ., स.) लुप्त होना, छिनना, मिटाना।
लोपांजन-(सं. पुं.) वह कल्पित अंजन जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।
लोपापाक-(सं. पुं.) शृगाल, सियार।
लोपापिका-(सं. स्त्री.) शृगाली।
लोपामुद्रा-(सं. स्त्री.) अगस्त्य मुनि की पत्नी।
लोपायक-(सं. पुं.) शृगाल, सियार।
लोपाश, लोपाशक-(सं. पुं.) शृगाल।
लोपाशिका-(सं. स्त्री.) सियारिन।
लोपी-(सं. वि.) क्षति पहुँचानेवाला।
लोप्ता-(सं. वि.) नियम भंग करनेवाला, हानि पहुँचानेवाला।
लोप्त्र-(सं. पुं.) चोरी का माल।
लोप्य-(सं. वि.) लोप या नाश करने योग्य।
लोबा-(हिं. स्त्री.) लोमड़ी।
लोबान-(फा. पुं.) एक वृक्ष से मिलने-वाला सुगंधित गोंद, छाल आदि।
लोबिया-(हिं. पुं.) एक प्रकार का सफेद तथा बड़े आकार का बोड़ा।
लोभ-(सं. पुं.) दूसरे के पदार्थ को लेने की वासना, लालच, आकांक्षा, लिप्सा, वांछा, कृपणता, कंजूसी।
लोभन-(सं. पुं.) लोभ, लालच।
लोभना-(हिं. क्रि. अ., स.) मुग्ध करना, लुभाना, लुब्ध होना।
लोभनीय(सं. वि.) लोभ के योग्य।
लोभयान-(सं. वि.) लालच बढ़ानेवाला।
लोभविजयी-(सं. पुं.) वह राजा जो धन लेकर युद्ध न करना चाहता हो।
लोभाना-(हिं. क्रि. अ., स.) मुग्ध होना, मोहित होना, मुग्ध करना।
लोभित-(सं. वि.) लुब्ध, लुभाया हुआ।
लोभी-(सं. वि.) लोभ करनेवाला, लालची।
लोभ्य-(सं. वि.) लालच करने योग्य।
लोम-(सं. पुं.) शरीर के रोयें, रोम, बाल, पूँछ; (हिं. पुं.) लोमड़ी; -क-(वि.) रोमयुक्त; -कर्ण-(पुं.) खरगोश, खरहा; -कीट-(पुं.) जूँ; -कप-(पुं.) शरीर में रोम की जड़ में का छिद्र; -गर्त-(पुं.) देखें 'रोमकूप'; -घ्न- (वि.) लोम-नाशक; -पाद-(पुं.) अंग-देशीय एक राजा जो महाराज दशरथ के मित्र थे; -प्रवाही -(वि.) लोमयुक्त; -मणि-(पुं.) लोम-निर्मित कवच; -यूक-(पुं.) ऊनी वस्त्र काटनेवाला कीड़ा; -वत्-(वि.) लोम के सदृश; -वाहन-(वि.) लोमयुक्त; -विवर-(पुं.) लोमकूप; -श-(पुं.) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जिनको पुराणों ने अमर माना है; (वि.) बड़े-बड़े रोओंवाला; -०कर्ण-(पुं.) खरगोश, खरहा; -शा-(स्त्री.) केवाँच, सौंफ, काकजंघा; -शी-(स्त्री.) ककड़ी; -श्य-(पुं.) रोयें की अधिकता; -संहर्षण- (पुं.) रोमांच; -सार-(पुं.) मरकत मणि; -सिक-(स्त्री.) सियारिन; -हर्ष-(पुं.) रोमांच, पुलक, एक राक्षस का नाम; -हर्षक-(वि.) अति भयंकर; -हर्षण-(पुं.) भय आदि से रोंगटे खड़े होना; -हृत्-(पुं.) हरताल।
लोमड़ी-(हिं. स्त्री.) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक वन्य पशु।
लोमाश-(सं. पुं.) शृगाल, गीदड़।
लोय-(हिं. पुं.) लोग, नयन, आँख; (स्त्री.) आग की लौ, लपट; (अव्य.) देखें 'लौं'।
लोयन-(हिं. पुं.) नयन, नेत्र।
लोर-(हिं. पुं.) कान का कुण्डल, लटकन, आँसू; (वि.) उत्सुक, चंचल।
लोरना-(हिं. क्रि. अ.) चंचल होना, लोटना, झुकना, लिपटना।
लोरी-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का गीत, (बच्चों को सुलाने के लिए स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं।)
लोल-(सं. वि.) चंचल, कंपायमान, हिलता-डोलता हुआ, क्षण में नष्ट होनेवाला, अति उत्सुक, क्षणिक; (पुं.) लिंगेंद्रिय।
लोलक-(सं. पुं.) बाली आदि में लगा हुआ लटकन, कान की लोलकी, घंटी का लटकन।
लोलकी-(हिं. स्त्री.) कान का नीचे का लटकता हुआ भाग, ललरी।
लोलदिनेश-(सं. पुं.) लोलार्क नामक सूर्य।
लोलना-(हिं. क्रि अ.) हिलना।
लोला-(सं. स्त्री.) जिह्वा, जीभ, लक्ष्मी, चंचला स्त्री, एक योगिनी का नाम, मधु नामक दैत्य की माता, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं; (हिं. पुं.) लड़कों का एक प्रकार का खिलौना।
लोलाक्षिका-(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसकी आँखें चंचल हों।
लोलार्क-(सं. पुं.) एक सूर्य; -कुंड-(पुं.) काशी के एक तीर्थ का नाम।
लोलित-(सं. वि.) शिथिल, ढीला, कंपित।
लोलिनी-(सं. स्त्री.) चंचल प्रकृति की स्त्री।
लोलुप-(सं. वि.) लोभी, लालची, चटोर, बहुत उत्सुक; -ता-(स्त्री.) लालच।
लोलुभ-(सं. वि.) देखें 'लोलुप', लालची।
लोलुव-(सं. वि.) बारंबार काटनेवाला।
लोलोर-(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
लोवा-(हिं. स्त्री.) लोमड़ी; (पुं.) तीतर की जाति का एक पक्षी, लवा।

लोष्ट–(सं. पुं.) ईंट या पत्थर का टुकड़ा, ढेला; (पुं.) **–घ्न**–किसान का खेत के ढेले फोड़ने का उपकरण, हेंगा; **–मय**–(वि.) ढेले से पूर्ण।

लोहँड़ा–(हिं.पुं.) लोहे की छोटी कड़ाही, तसला।

लोह–(सं. पुं.) लोहा नामक धातु; **–कांत**–(पुं.) चुंवक; **–कार**–(पुं.) लोहार; **–किट्ट**–(पुं.) लोहे की मैल; **–गिरि**–(पुं.) एक पर्वत का नाम; **–घातक**–(पुं.) लोहार; **–चालिका**–(स्त्री.) लोहे का वख्तर; **–चूर्ण**–(पुं.) लोहे का बुरादा; **–ज**–(पुं.) मंडूर, काँसा; **–जाल**–(पुं.) वर्म, वख्तर; **–जित्**–(पुं.) हीरक, हीरा; **–दारक**–(पुं.) एक नरक का नाम; **–नाल**–(पुं.) नाराच नाम का अस्त्र; **–पंचक**–(पुं.) वैद्यक के अनुसार सोना, चाँदी, ताँवा, राँगा और सीसा–ये पाँच धातुएँ; **–पाश**–(पुं.) लोहे की जंजीर; **–प्रतिमा**–(स्त्री.) लोहे की बनी हुई मूर्ति; **–वान**–(हिं. पुं.) देखें 'लोवान'; **–मय**–(वि.) लोहे का बना हुआ; **–मुक्तिका**–(स्त्री.) लाल रंग का मोती; **–मेखल**–(वि.)जो लोहे की मेखला पहने हुए हो; **–लंगर**–(हिं. पुं.) जहाज का लंगर; **–ल**–(वि.)अस्पष्ट वोलता हुआ; **–वत्**–(वि.) लोहे के समान; **–वर**–(पुं.) सुवर्ण, सोना; **–वर्म**–(पुं.) लोहे का कवच; **–शंकु**–(पुं.) लोहे का वरछा; **–श्लेषण**–(पुं.) सोहागा; **–सार**–(पुं.) पक्का लोहा।

लोहाँगी–(हिं. स्त्री.) वह छड़ी जिसके छोर पर लोहा मढ़ा होता है।

लोहा–(हिं. पुं.) इस नाम की प्रसिद्ध धातु, अस्त्र, लोहे की बनी हुई वस्तु, लाल रंग का वैल; (वि.) लाल, वहुत कड़ा; (मुहा.) **–गहना**–युद्ध करने के लिए अस्त्र उठाना ; **–वजना**–युद्ध होना; **(किसी का)–मानना**–किसी का आधिपत्य स्वीकार करना, हार जाना; **–लेना**–युद्ध करना, लड़ना; **लोहे के चने चवाना**–वहुत कठिन कार्य करना।

लोहाना–(हिं. क्रि. अ.) लोहे के पात्र में खाद्य पदार्थ रखने से उसका (लोहे का) रंग या स्वाद आ जाना।

लोहार–(हिं. पुं.) एक जाति जो लोहे के उपकरण आदि वनाती है।

लोहारी–(हिं. स्त्री.) लोहार का काम।

लोहिका–(सं. स्त्री.) लोहे का पात्र।

लोहित–(सं. पुं.) कुंकुम, केशर, लाल चन्दन, पीतल, रुधिर, युद्ध, एक प्रकार की मछली, मसूर; (वि.) लाल रंग का; **–क**–(पुं.) कांस्य, काँसा; एक प्रकार का धान; **–कल्माष**–(वि.) चितकवरा; **–कृष्ण**–(वि.) गाढ़ा लाल; **–क्षय**–(पुं.) रुधिर का नाश; **–ग्रीव**–(पुं.) अग्नि; **–चंदन**–(पुं.) केसर; **–त्व**–(पुं.) लाल रंग; **–पुष्पक**–(पुं.) अनार का वृक्ष; **–मृत्तिका**–(स्त्री.) लाल मिट्टी, गैरिक, गेरू; **–राग**–(पुं.) लाल रंग; **–वासा**–(वि.)जो लाल वस्त्र धारण किये हुए हो; **–शतपत्र**–(पुं.) लाल कमल; **–शवल**–(वि.) चितकवरा।

लोहितांग–(सं. पुं.) मंगल ग्रह।

लोहिता–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो क्रोध से उग्र हो गई हो।

लोहिताक्ष–(सं. पुं.) विष्णु, कोकिल, कोयल; (वि.) जिसकी आँखें लाल हों।

लोहिताक्षी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसकी आँखें लाल हों।

लोहितानन–(सं.वि.,पुं.) लाल मुखवाला, नेवला।

लोहितायस–(सं. पुं.) ताँवा।

लोहितार्ण–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

लोहितार्द्र–(सं. वि.) रुधिर से भीगा हुआ।

लोहितास्य–(सं. वि.) लाल मुँहवाला, जिसके मुख में रुधिर लगा हुआ हो।

लोहिताहि–(सं. पुं.) लाल रंग का सर्प।

लोहितिका–(सं.स्त्री.) रक्तवाहिनी नाड़ी।

लोहितीभूत–(सं. वि.) जो लाल हो गया हो।

लोहितेक्षण–(सं. वि.) लाल आँखोंवाला।

लोहितोत्पल–(सं. पुं.) लाल कमल।

लोहितोद–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।

लोहितोर्ण–(सं. वि.) जिसका ऊन लाल रंग का हो।

लोहित्य–(सं. पुं.) एक प्रकार का धान, ब्रह्मपुत्र नदी, एक समुद्र का नाम।

लोहित्या–(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।

लोहिनिका–(सं. स्त्री.) एक धमनी।

लोहिया–(हिं. पुं.) लोहे का व्यापार करनेवाली मारवाड़ी वनियों की एक जाति, लाल रंग का वैल, लोहे की वनी हुई गोली।

लोहू–(हिं. पुं.) रक्त, रुधिर।

लौं–(हिं. अव्य.) पर्यन्त, तक, तुल्य, समान।

लौंकना–(हिं. क्रि. अ., स.) चमकना, दिखाई पड़ना।

लौंग–(हिं. स्त्री.) एक वृक्ष की कली जो खिलने के पहले ही तोड़ ली जाती है, लौंग के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं; **–चिड़ा**–(पुं.) एक प्रकार का कवाव; **–मुश्क**–(पुं.) एक प्रकार का फूल।

लौंगिया मिर्च–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की वहुत कड़वी मिर्च।

लौंडा–(हिं. पुं.) छोकड़ा, वालक, सुन्दर लड़का; (वि.)अवोध, छिछोरा; **–पन**–(पुं.) लड़कपन, छिछोरपन।

लौंडी–(हिं. स्त्री.) दासी।

लौंडेवाज–(हिं. पुं.) वह जो सुन्दर वालक से प्रेम रखता और उसके साथ गुदा मैथुन करता हो।

लौंद–(हिं. पुं.) अधिमास, मलमास।

लौंदरा–(हिं. पुं.) वह पानी जो वर्षा ऋतु के आरंभ होने से पहले वरसता है, दौंगरा।

लौंदा–(हिं. पुं.) लोंदा।

लौंदी–(हिं.स्त्री.)एक प्रकार की करछी।

लौंन–(हिं. पुं.) देखें 'लवन'।

लौ–(हिं. स्त्री.) आग की लपट, ज्वाला दीपक की टेम, दीपशिखा, चित्त की वृत्ति, आशा, कामना; **–लीन**–(वि.) ध्यान में मग्न।

लौआ–(हिं. पुं.) कद्दू, घिया।

लौकना–(हिं.क्रि.अ.) दूर से दिखाई पड़ना।

लौका–(हिं. पुं.) कद्दू।

लौकिक–(सं.वि.)व्यावहारिक, सांसारिक, लोक-संवंधी, सात मात्राओं के एक छन्द का नाम; **–ज्ञान**–(पुं.) लोक-व्यवहार का ज्ञान; **–ता**–(स्त्री.) लोक-व्यवहार, शिष्टता; **–त्व**–(पुं.) देखें 'लौकिकता; **–न्याय**–(पुं.) साधारण नियम न्याय।

लौकिकाचार–(सं.पुं.) लोकाचार, कुलाचार।

लौकिकी–((सं.स्त्री.) ख्याति, प्रसिद्धि; **–यात्रा**–(स्त्री.) लोक-व्यवहार।

लौकी–(हिं. स्त्री.) कद्दू, घिया, भभके में लगाने की काठ या वाँस की नली।

लौक्य–(सं.वि.) लोक-संवंधी, साधारण, सामान्य।

लौज–(फा.पुं.) वादाम, एक प्रकार की वरफी जिसमें वादाम पीसकर पड़ता है।

लौजोरा–(हिं. पुं.) धातु गलानेवाला कर्मकार।
लौट–(हिं. स्त्री.) लौटने की क्रिया या भाव।
लौटना–(हिं. क्रि. अ., स.) कहीं पर जाकर वहाँ से वापस आना, पलटना, पीछे की ओर मुड़ना, उलटना-पलटना।
लौटपौट–(हिं. स्त्री.) उलटने-पलटने की क्रिया।
लौटफेर–(हिं. पुं.) इधर-उधर हो जाना, उलटफेर, बड़ा परिवर्तन।
लौटान–(हिं. स्त्री.) लौटने की क्रिया या भाव।
लौटाना–(हिं. क्रि. स.) फेरना, पलटाना, वापस करना, ऊपर-नीचे करना।
लौटानी–(हिं. अव्य.) लौटते समय।
लौड़ा–(हिं. पुं.) शिश्न, लिंग, पुरुष की मूत्रेन्द्रिय।
लौन–(हिं. पुं.) लवण, नमक।
लौनहार–(हिं. पुं.) लवन करनेवाला, फसल काटनेवाला।
लौना–(हिं. पुं.) वह रस्सी जिससे पशु के पिछले पैर बाँधे जाते हैं, खेत लुवने का काम, ईंधन।
लौनी–(हिं. स्त्री.) फसल की कटाई, लहना।
लौम–(सं. वि.) लोम-संबंधी।
लौरी–(हिं. स्त्री.) बछिया।
लौल्य–(सं. पुं.) चंचलता, अस्थिरता।
लौल्यता–(सं. स्त्री.) चंचलता, अधिक या उत्कट इच्छा।
लौल्यवत्–(सं. वि.) इच्छुक, अर्थलोलुप।
लौह–(सं. पुं.) लोहा नामक धातु; **–कांतक**–(पुं.) कांत लोहा; **–कार**–(पुं.) लोहार; **–किट्ट**–(पुं.) मंडूर; **–ज**–(पुं.) लोहे का मल, मंडूर; **–बंध**–(पुं.) लोहे की सिकड़ी; **–भांड**–(पुं.) लोहे का पात्र; **–मय**–(वि.) लोहे का बना हुआ; **–मल**–(पुं.) मंडूर; **–यंत्र**–(पुं.) लोहे की कल; **–सार**–(पुं.) एक प्रकार का नमक जो लोहे से बनाया जाता है।
लौहा–(सं. स्त्री.) लोहे का बना हुआ कड़ाहा।
लौहित–(सं. पुं.) शिव का त्रिशूल।
लौहित्य–(सं. पुं.) एक सागर का नाम, लाल सागर, ब्रह्मपुत्र नदी।
लौहेय–(सं. पुं.) लोहे का बना हुआ हल।
ल्याना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'लाना'।
ल्यारी–(हिं. पुं.) भेड़िया।
ल्यावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'लाना'।
ल्यौ–(हिं. स्त्री.) लौ, ध्यान।
ल्वारि–(हिं. स्त्री.) लू, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा।

व

व–हिंदी तथा संस्कृत वर्णमाला का उनतीसवाँ व्यंजन वर्ण। यह वर्ण उकार का विकार तथा अन्तस्थ अर्ध-व्यञ्जन माना जाता है। इसका उच्चारण-स्थान दन्त्य अथवा दन्त्यौष्ठ माना जाता है; (सं. पुं.) वायु, वरुण, बाहु, अस्त्र, समुद्र, बस्ती, बाण, अस्त्र, मद्य, वृक्ष, कलश से उत्पन्न ध्वनि; (वि.) बलवान्; (फा. अव्य.) और, भी।
वंक, वंकट–(हिं. वि.) वक्र, टेढ़ा, कुटिल; (पुं.) नदी का मोड़।
वंकनाली–(हिं. स्त्री.) सुषुम्ना नामक नाड़ी।
वंकिम–(हिं. वि.) झुका हुआ, टेढ़ा।
वंक्षु–(सं. स्त्री.) मध्य एशिया की सब से बड़ी नदी का संस्कृत नाम जो अक्सस के नाम से प्रसिद्ध है।
वंग–(सं. पुं.) राँगा नामक धातु।
वंगज–(सं. पुं.) सिन्दूर, पीतल; (वि.) वंग देश में उत्पन्न।
वंगन–(सं. पुं.) बैंगन।
वंगसेत–(सं. पुं.) लाल फूलोंवाला अगस्त्य।
वंगाली–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
वंगीय–(सं. वि.) वंग देश का।
वंचक–(सं. वि., पुं.) चोर, ठग, धूर्त, सियार।
वंचन–(सं. पुं.) धोखा देना या खाना।
वंचना–(सं. स्त्री.) धोखा, छल।
वंचनीय–(सं. वि.) ठगने योग्य।
वंचित–(सं. वि.) धोखे में आया हुआ, विमुख।
वंदक–(सं. पुं.) स्तुति करनेवाला।
वंदन–(सं. पुं.) प्रणाम, स्तुति; **–माला**–(स्त्री.) तोरण, बंदनवार; **–मालिका**–(स्त्री.) वह माला जो सजावट के लिए घरों के द्वार, मण्डप आदि के चारों ओर बाँधी जाती है; **–वार**–(हिं. स्त्री.) देखें 'वंदनमालिका'।
वंदना–(सं. स्त्री.) स्तुति, प्रणाम।
वंदनीय–(सं. वि.) वंदन करने योग्य।
वंदी–(सं. पुं.) स्तुति-पाठक, मागध, भाट, कैदी; **–पाल**–(पुं.) कारागृह का रक्षक।
वंद्य–(सं. वि.) वंदना करने योग्य।
वंध्य–(सं. वि.) निष्फल, अनुत्पादक।
वंध्या–(सं. स्त्री.) वह स्त्री या गाय जिसे बच्चा न होता हो; **–तनय, –पुत्र, –सुत**–(पुं.) कोई साधारणतः न होनेवाली या असंभव बात।
वंश–(सं. पुं.) सन्तति, गोत्र, कुल, सन्तान, जाति, पीठ की रीढ़, वर्ग, बाँसुरी, तलवार के बीच का भाग, जनसंख्या, अतिथि, हाथ या पैर की हड्डी, नाक के ऊपर की हड्डी, वंशलोचन, बाँस; **–क**–(पुं.) छोटी किस्म का बाँस; **–कठिन**–(पुं.) बाँस का जंगल; **–कर**–(पुं.) वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरंभ होता है; **–कर्पूर**–(पुं.) वंशलोचन; **–कीर्ति**–(स्त्री.) वंश का गौरव; **–क्षय**–(पुं.) वंश का नाश; **–चरित्र**–(पुं.) वंश का इतिहास; **–चिंतक**–(पुं.) वह जो अपने वंश का परिचय देने में समर्थ हो; **–च्छेत्ता**–(पुं.) बढ़ई; (वि.) जिसके वंश का गौरव नष्ट हो गया हो; **–ज**–(वि.) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो; (पुं.) अगर, पुत्र, बाँस का चावल, वंशलोचन; **–जा**–(स्त्री.) कन्या, वंशलोचन; **–तंडुल**–(पुं.) बाँस का चावल; **–तिलक**–(पुं.) एक छन्द का नाम; **–दा**–(स्त्री.) राजा पुरु की एक पत्नी का नाम; **–धर**–(वि.) वंश की मर्यादा रखनेवाला; (पुं.) सन्तति, सन्तान; **–धान्य**–(पुं.) बाँस का चावल; **–धारा**–(स्त्री.) कुलपद्धति; **–धारी**–(वि.) वंश की रक्षा करनेवाला; **–नर्तिन्**–(पुं.) भाँड़; **–नालिका**–(स्त्री.) बाँसुरी; **–नाश**–(पुं.) वंश का लोप; **–नेत्र**–(पुं.) गन्ने की पोर जिसमें गाड़ने पर अंकुर उत्पन्न होता है; **–पत्र**–(पुं.) एक छन्द का नाम; **–पत्रक**–(पुं.) हरताल; **–पतित**–(पुं.) एक छन्द का नाम; **–पत्री**–(स्त्री.) एक प्रकर की हींग; **–परंपरा**–(स्त्री.) सन्तति-क्रम; **–पुष्पा**–(स्त्री.) सहदेई लता; **–पीत**–(पुं.) गुग्गुल; **–पूरक**–(पुं.) ईख की पोर; **–बीज**–(पुं.) बाँस का चावल; **–भृत्**–(पुं.) वह जो वंश का पालन करता हो; **–मय**–(वि.) बाँस का बना हुआ; **–मर्यादा**–(स्त्री.) वंश-परंपरा से प्राप्त गौरव; **–यव**–(पुं.) बाँस का चावल; **–राज**–(पुं.) सब से बड़ा बाँस; **–लोचन**–(पुं.)

बाँस के पोले भाग में बननेवाला सफेद पदार्थ; **–वर्धन**–(वि.) कुल का गौरव बढ़ानेवाला; **–वितति**–(स्त्री.) बाँस का जंगल; **–विदल**–(पुं.) बाँस की बनी हुई चिमटी; **–विस्तर**–(पुं.) वंशपरंपरा; **–वृद्धि**–(स्त्री.) वंश की समृद्धि; **–शर्करा**–(स्त्री.) वंशलोचन; **–शलाका**–(स्त्री.) बीन, सितार आदि बाजों का डंडा; **–स्थ**–(पुं.) बारह वर्णो का एक वर्णवृत्त; **–स्थिति**–(स्त्री.) वंश की मर्यादा।

वंशागत–(सं. वि.) वंशपरंपरा से आया हुआ।

वंशहीन–(सं. वि.) निःसन्तान।

वंशाग्र–(सं. पुं.) बाँस का कल्ला।

वंशानुक्रम–(सं. पुं.) वंशपरंपरा।

वंशावली–(सं. स्त्री) पूर्व-पुरुषों की नामावली।

वंशिका–(सं. स्त्री.) वंश, बाँसुरी, पिप्पली।

वंशी–(सं. स्त्री.) मुरली, बाँसुरी; **–धर**–(पुं.) बाँसुरी बजानेवाला, श्रीकृष्ण; **–वट**–(पुं.) वृन्दावन में वह बरगद का वृक्ष जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।

वंशोद्भव–(सं. वि.) कुल में उत्पन्न।

वक–(सं. पुं.) बगला नामक पक्षी, एक दैत्य का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था, अगस्त के वृक्ष का फूल, कुवेर; **–त्व**–(पुं.) कुटिलता; **–पंचक**–(पुं.) कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक की पाँच तिथियाँ; **–यंत्र**–(पुं.) अर्क उतारने का भभका; **–वृत्ति**–(पुं.) अपना काम निकालने के लिये घात में रहना; **–व्रत**–(पुं.) कपटी मनुष्य।

वकालत–(फा. स्त्री.) वकील का पद, पेशा, शिक्षा आदि।

वकासुर–(सं. पुं.) एक दैत्य जो पूतना का भाई और कंस का अनुचर था।

वकील–(फा. पुं.) कचहरी में फरीकों की ओर से पैरवी करनेवाला शैक्षणिक योग्यता तथा विधिक मान्यताप्राप्त कार्यकर्ता।

वकुल–(सं. पुं.) अगस्त का वृक्ष या फूल, मौलसिरी।

वकुली–(सं. स्त्री.) मौलसिरी।

वक्त–(फा. पुं.) समय, काल, मीआद, अवसर।

वक्तव्य–(सं. वि.) वाच्य, कहने योग्य, कुत्सित; (पुं.) वचन, कथन, निन्दा; **–ता**–(स्त्री.) कथन, योग्यता।

वक्ता–(सं. वि.) बोलनेवाला, बोलने में निपुण, वाग्मी, बहुभाषी, पण्डित; (पुं.) भाषण देनेवाला, व्यास।

वक्तुकाम–(सं. वि.) बोलने का इच्छुक या अभिलाषी।

वक्तृक–(सं. पुं.) बोलनेवाला।

वक्तृता–(सं. स्त्री.) व्याख्यान, कथन।

वक्तृत्व–(सं. पुं.) व्याख्यान, कथन।

वक्त्र–(सं. पुं.) मुख, आनन, काम का आरंभ, दंत, दाँत, अनुष्टुप् के अनुरूप एक प्रकार का छन्द; **–ज**–(वि., पुं.) मुख से उत्पन्न, ब्राह्मण; **–तुंड**–(पुं.) गणेश; **–दंष्ट्र**–(पुं.) शकर, सूअर; **–दल**–(पुं.) तालू; **–द्वार**–(पुं.) मुख, विवर; **–पट्ट**–(पुं.) वह पात्र जिसमें घोड़ा चना खाता है, तोबड़ा; **–वाहु**–(पुं.) वाराही-कन्द; **–भेदी**–(वि.) तीता, चरपरा; **–रंध्र**–(पुं.) देखें 'वक्त्रद्वार'; **–रुह**–(वि.) मुख से उत्पन्न होनेवाला; **–रोग**–(पुं.) मुँह की बीमारी; **–वास**–(पुं.) नारंगी; **–शल्या**–(स्त्री.) गुंजा, घुंघची; **–शोधन**–(पुं.) नीवू, कमरख।

वक्त्रासव–(सं. पुं.) लार, थूक।

वक्त्री–(सं. स्त्री.) स्त्री वक्ता।

वक्फ–(अ. पुं.) धर्मार्थ दान की हुई भूमि या संपत्ति।

वक्फनामा–(अ. पुं.) वक्फ-संबंधी लेख्य-पत्र या पट्टा।

वक्र–(सं. पुं.) नदी का मोड़, मंगल ग्रह, शनैश्चर, एक राक्षस जिसको भीम ने मारा था; (वि.) टेढ़ा, तिरछा, क्रूर, चालवाज; **–कंटक**–(पुं.) बेर का पेड़; **–गति**–(स्त्री.) टेढ़ी चाल; **–गामी**–(वि.) कुटिल; **–गुल्फ, –ग्रीव**–(पुं.) ऊँट; **–चंचु**–(पुं.) सुग्गा, तोता; **–ता**–(स्त्री.) टेढ़ापन, क्रूरता; **–तुंड**–(पुं.) गणेश, वह जिसके ओठ टेढ़े हों; **–दंष्ट्र**–(पुं.) शूकर, सूअर; **–दृष्टि**–(स्त्री.) क्रोध की दृष्टि; **–धर**–(पुं.) शिव; **–नाल**–(पुं.) मुख से बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा; **–नास**–(वि.) जिसकी नाक टेढ़ी हो; **–नासिक**–(पुं.) उल्लू पक्षी; **–पाद**–(वि.) लँगड़ा; **–पुच्छ**–(पुं.) कुत्ता; **–पुष्प**–(पुं.) पलाश का पेड़; **–भाव**–(पुं.) कुटिलता; **–वक्त्र**–(पुं.) शूकर, सूअर; **–शृंग**–(वि.) टेढ़े सींगोंवाला।

वक्रांग–(सं. पुं.) हंस, सर्प, टेढ़ा अंग; (वि.) जिसका अंग टेढ़ा हो।

वक्रित–(सं. वि.) जो टेढ़ा हो गया हो।

वक्री–(सं. पुं.) वह जिसके अंग जन्म से ही टेढ़े हों; (वि.) कुटिल, धूर्त, पीछे की ओर गमन करनेवाला; **–कृत**–(वि.) टेढ़ा किया हुआ; **–भाव**–(पुं.) टेढ़ापन, कपट।

वक्रोक्ति–(सं. स्त्री.) कटूक्ति, व्यंग्य, वह शब्दालंकार जिसमें श्लेष के प्रयोग रहते हैं।

वक्ष–(हि. पुं.) वक्षःस्थल, हृदय, छाती, बैल।

वक्षःस्थल–(सं. पुं.) देखें 'वक्ष'।

वक्षोज, वक्षोरुह–(सं. पुं.) स्तन, कुच।

वक्ष्यमाण–(सं. वि.) वाच्य, वक्तव्य, कहने योग्य।

वगलामुखी–(सं. स्त्री.) दस महाविद्याओं के अन्तर्गत एक देवी विशेष।

वगैरह–(अ. अव्य.) आदि, इत्यादि।

वच–(सं. पुं.) शुक, तोता, सूर्य, वचन।

वचन–(सं. पुं.) बोलने की क्रिया, बोले जानेवाले सार्थक शब्द, वाक्य, वाणी, भाषा, भाषित, उक्ति, व्याकरण में शब्द का वह विधान जिससे एक या अनेक का बोध होता है, (हिन्दी में शब्द एकवचन तथा बहुवचन होते हैं, परन्तु संस्कृत में द्विवचन का भी रूप होता है); **–कर**–(वि.) जो अपने वचन पर दृढ़ रहे; **–कारी**–(वि.) आज्ञाकारी; **–गोचर**–(वि.) जो वचन द्वारा प्रत्यक्ष कहा हुआ हो; **–ग्राही**–(वि.) वचन के अनुसार काम करनेवाला; **–पटु**–(वि.) बोलने में प्रवीण; **–लक्षिता**–(स्त्री.) वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसके उपपति को उसका प्रेम प्रगट होता है; **–विदग्धा**–(स्त्री.) वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से अपने उपपति को वशीभूत करलेती है; **–विरुद्ध**–(वि.) शास्त्रविरुद्ध; **–विरोध**–(पुं.) शास्त्र-वाक्य जो प्रमाण के विरुद्ध हो; **–सहाय**–(पुं.) बातचीत करनेवाला साथी।

वचनानुग–(सं. वि.) वचन के अनुसार चलनेवाला।

वचनीय–(सं. वि.) कहने योग्य, निंदनीय।

वचनीयता–(सं. स्त्री.) लोकापवाद।

वचनेस्थित–(सं. वि.) जो अपने वचन पर दृढ़ हो।

वचनोपक्रम–(सं. पुं.) वाक्यारंभ।

वचर–(सं. पुं.) कुक्कुट, मुरगा।

वचस्कर–(सं. वि.) वचन के अनुसार काम करनेवाला।

वचस्य–(सं. वि.) प्रख्यात।
वचा–(सं. स्त्री.) एक पकार की औषधि।
वच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'वक्ष, वत्स'।
वजन–(अ. पुं.) भार, बोझ, तौल, मान।
वजनी–(अ. वि.) भारी, महत्त्वयुक्त, तौला जानेवाला।
वजह–(अ. पुं.) कारण, सबब।
वजीफा–(अ. पुं.) वृत्ति, छात्रवृत्ति।
वजीर–(अ. पुं.) मंत्री, राजमंत्री, शतरंज की एक गोटी।
वजीरी–(अ. स्त्री.) मंत्रि-पद।
वज्र–(सं. पुं.) इन्द्र का अस्त्र विशेष, हीरा, बिजली, पक्का लोहा, बरछा, भाला, थूहर का पौधा, विष्णुके चरणोंका चिह्न, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से पंद्रहवाँ योग; (वि.) बहुत कड़ा या पुष्ट, घोर, भयंकर; **–कंकट**–(पुं.) हनुमान्; **–कंद**–(पुं.) शकरकंद; **–गोप**–(पुं.) बीरबहूटी; **–घोष**– (पुं.) बिजली की कड़क; **–चर्मा**–(पुं.) गैंडा; **–चंचु**–(पुं.) गिद्ध; **–जित्**–(पुं.) गरुड़ का एक नाम; **–ज्वलन**–(पुं.) विद्युत्, बिजली; **–तुंड**–(पुं.) गरुड़, गणेश; **–दंड**–(पुं.) एक अस्त्र जिसको इन्द्र ने अर्जुन को दिया था; **–दंत**–(पुं.) शूकर, चूहा; **–दंती**–(स्त्री.) एक प्रकार का पौधा; **–दंष्ट्र**–(पुं.) एक राक्षस का नाम; **–देह**–(पुं.) बलराम; **–धर**–(पुं.) इन्द्र; **–नख**– (पुं.) नृसिंह; **–पाणि**–(पुं.) इन्द्र; **–मणि**–(पुं.) हीरक, हीरा; **–मय**–(वि.) वज्र के समान अभंग्य; **–मुष्टि**–(पुं.) इन्द्र, एक राक्षस का नाम; **–मूली**–(स्त्री.) जंगली उड़द; **–योगिनी**–(स्त्री.) तन्त्रोक्त एक देवी का नाम; **–रथ**– (पुं.) क्षत्रिय; **–रद**–(पुं.) शूकर, सुअर; **–रूप**–(वि.) वज्र के समान बनावट का; **–लेप**–(पुं.) वह मसाला या पलस्तर जिसका लेप करने से भीत, मूर्ति आदि अभंग्य हो जाती है; **–लौह**–(पुं.) चुंबक; **–वीर**–(पुं.) महाकाल रुद्र का नाम; **–वृक्ष**–(पुं.) थूहर; **–सार**–(पुं.) हीरा; **–हस्त**–(पुं.) शिव, इन्द्र।
वज्रांग–(सं. पुं.) सर्प, साँप, हनुमान।
वज्रा–(सं. स्त्री.) थूहर, गुड़ुच, दुर्गा।
वज्राकर–(सं. पुं.) हीरे की खान।
वज्राघात–(सं. पुं.) आकस्मिक दुर्घटना।
वज्राभ–(सं. वि.) हीरे के समान चमकवाला।
वज्रायुध–(सं. पुं.) इन्द्र।
वज्रासन–(सं. पुं.) हठ-योग का एक आसन।
वज्री–(सं. पुं.) वज्रधारी, इन्द्र, थूहर का पौधा।
वज्रोदरी–(सं. स्त्री.) एक राक्षसी का नाम।
वज्रोली–(सं. स्त्री.) हठ-योग की एक मुद्रा।
वट–(सं. पुं.) बरगद का पेड़।
वटक–(सं. पुं.) बड़ा पकौड़ा, बड़ी टिकिया या गोली।
वटर–(सं. पुं.) मथानी, पगड़ी।
वटवासी–(सं. वि.) बरगद के वृक्ष पर रहनेवाला; (पुं.) यक्ष।
वटसावित्री–(सं. स्त्री.) एक व्रत जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।
वटिका, वटी–(सं. स्त्री.) छोटी गोली, टिकिया।
वटु–(सं. पुं.) ब्रह्मचारी, बालक।
वटुक–(सं. पुं.) बालक, ब्रह्मचारी, एक भैरव।
वड़व–(सं. पुं.) घोटक, घोड़ा।
वड़वा–(सं. स्त्री.) घोड़ी, अश्विनी नक्षत्र, वड़वाग्नि, दासी।
वड़वाग्नि–(सं. स्त्री.) वड़वानल।
वड़वानल–(सं. पुं.) समुद्र की अग्नि।
वड़वामुख–(सं. पुं.) शिव का एक नाम।
वड़वावक्त्र–(सं. पुं.) वड़वामुख।
वड़वासुत–(सं. पुं.) अश्विनीकुमार।
वड़ा–(सं. स्त्री.) वटक, बड़ा।
वणिक्–(सं. पुं.) व्यवसायी, बनिया, वैश्य।
वणिग्बंधु–(सं. पुं.) नील का पौधा।
वणिग्वह–(सं. पुं.) उष्ट्र, ऊँट।
वणिज–(सं. पुं.) ज्योतिष में एक करण का नाम।
वतंस–(हिं. पुं.) देखें 'अवतंस', शिरोभूषण।
वतन–(अ. पुं.) देश, जन्मभूमि।
वतायन–(सं. पुं.) वातायन, झरोखा।
वत्–(सं. अव्य.) समान, तुल्य (समस्तपदों में प्रयुक्त।)
वत्स–(सं. पुं.) बच्चा, शिशु, बालक, गाय का बच्चा, बछड़ा, पुत्र (प्यार का संबोधन), वक्ष, छाती, वत्सासुर; **–कामा**–(स्त्री.) वह स्त्री जिसको पुत्र की कामना हो; **–तंत्री**–(स्त्री.) बछवा बाँधने की रस्सी; **–नाभ**–(पुं.) बछनाग विष; **–पाल**–(पुं.) बच्चा पालनेवाला, श्रीकृष्ण; **–ल**–(वि.) सन्तान के प्रति प्रेमपूर्ण, छोटे के प्रति स्नेहवान् या कृपालु; (पुं.) माता-पिता का अपनी सन्तति के लिये प्रेम।
वत्सर–(सं. पुं.) वर्ष, साल, ध्रुव के एक पुत्र का नाम।
वत्सा–(सं. स्त्री.) बछिया।
वत्सादन–(सं. पुं.) वृक, भेड़िया।
वत्सादनी–(सं. स्त्री.) गुड़ुच, गिलोय।
वत्सासुर–(सं. पुं.) एक असुर जो कंस का अनुचर था, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
वदतोव्याघात–(सं. पुं.) कथन का वह दोष जब कोई बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।
वदन–(सं. पुं.) मुख, अगला भाग, कथन, बात कहना।
वदनरोग–(सं. पुं.) मुख का रोग।
वदन्य–(सं. वि.) देखें 'वदान्य', उदार।
वदान्य–(सं. वि.) उदार, मधुर बोलनेवाला।
वदाम–(सं. पुं.) बादाम का फल।
वदि–(सं. अव्य.) कृष्ण पक्ष में।
वदितव्य, वद्य–(सं. वि.) कहने योग्य।
वध–(सं. पुं.) उत्पात, हत्या, मारण, हनन; **–क**–(वि.) हिंसक, वध करनेवाला, घातक; (पुं.) मृत्यु, मरण; **–दंड**–(पुं.) प्राण-दण्ड।
वधास्त्र–(सं. पुं.) इन्द्र का वज्र।
वधाह–(सं. वि.) वध करने योग्य।
वधुका–(सं. स्त्री.) पुत्र की स्त्री, पतोहू, दुलहिन।
वधुटी–(सं. स्त्री.) अविवाहिता कन्या।
वधू–(सं. स्त्री.) नारी, स्त्री, पुत्रवधू, पतोह, नवविवाहिता स्त्री, भार्या, पत्नी।
वधूटी–(सं. स्त्री.) पुत्रवधू, पतोहू, दुलहिन, भार्या।
वधूवस्त्र–(सं. पुं.) वह वस्त्र जो कन्या को विवाह के समय पहनाया जाता है।
वध्य–(सं. वि.) वध करने योग्य; **–ता**–(स्त्री.) मारने का भाव।
वन–(सं. पुं.) जंगल, राशि, किरण, फूलों का गुच्छा, कुसुम, फूल, जल, पानी, आलय, घर, शंकराचार्य के शिष्यों की एक उपाधि; **–कंद**–(पुं.) जंगली सूरन; **–कर्णिका**– (स्त्री.) सलई का पेड़; **–काम**–(वि.) जंगल में रहनेवाला; **–कुक्कुट**– (पुं.) जंगली मुर्गा; **–कुंजर**–(पुं.) जंगली हाथी; **–कोकिलक**– (पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं; **–कोलि**– (स्त्री.) जंगली बेर; **–क्रीड़ा**–(स्त्री.) जंगल में क्रीड़ा या विहार; **–ग**– (वि.) जंगल में

रहनेवाला; –गज–(पुं.) जंगली हाथी; –गव–(पुं.) जंगली गाय; –गहन–(पुं.) घना जंगल; –गुप्त–(पुं.) गुप्त-चर, भेदिया; –गुल्म–(पुं.) जंगली लता; –गोचर–(पुं.) व्याध; –चर–(वि.) जंगल में घूमनेवाला; –ज–(वि.) जो वन में उत्पन्न हो; (पुं.) अंबुज, कमल; –जीवी–(पुं.) लकड़-हारा; –द–(पुं.) मेघ, बादल; –दमन–(पुं.) जंगली दौना; –दाह–(पुं.) जंगल की अग्नि; –दुर्गा–(स्त्री.) तन्त्रोक्त एक देवी की मूर्ति; –देव–(पुं.) वन का अधिष्ठाता देवता; –द्विप–(पुं.) जंगली हाथी; –धेनु–(स्त्री.) नीलगाय; –प–(पुं.) वनवासी, लकड़-हारा; –पन्नग–(पुं.) जंगली सर्प; –पांसुल–(पुं.) व्याध, शिकारी; –पादप–(पुं.) जंगली वृक्ष; –पार्श्व–(पुं.) जंगल के आसपास का स्थान; –पाल–(पुं.) जंगल का रक्षक; –प्रिय–(पुं.) कोकिल, कोयल; –बर्हो–(पुं.) जंगली मोर; –मल्लिका–(स्त्री.) सेवती का फूल; –मानुष–(पुं.) विना पूँछ का वड़ा वंदर जिसका आकार मनुष्य से वहुत मिलता-जुलता होता है; –माला–(स्त्री.) जंगली फूलों की माला, सव ऋतुओं में होनेवाले अनेक प्रकार के फूलों से बनी हुई माला जो श्रीकृष्ण को वहुत प्रिय है, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं; –मालिका–(स्त्री.) चमेली का फूल; –माली–(पुं.) श्रीकृष्ण; –राज–(पुं.) सिंह; –राजी–(स्त्री.) वनसमूह; –रुह–(पुं.) पद्म, कमल; –लक्ष्मी–(स्त्री.) जंगल की शोभा; –वह्नि–(पुं.) दावानल; –वास–(पुं.) जंगल में निवास; –वासी–(वि.) वस्ती छोड़कर वन में रहनेवाला; –स्थ–(वि.) वनवासी; –स्थली–(स्त्री.) वनभूमि, जंगली प्रदेश; –हरि–(पुं.) सिंह; –हास–(पुं.) कुन्द का फूल; –हुताशन–(पुं.) वनाग्नि, दावानल।

वनस्पति–(सं. पुं.) वह वृक्ष जिसमें फूल न हों केवल पत्ते ही हों, लता, वृक्ष आदि, पेड़-पौधे; –विज्ञान, –शास्त्र–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधों आदि के विषय में सांगोपांग विवेचन होता है।

वनाखु–(सं. पुं.) शशक, खरहा।

वनाग्नि–(सं. स्त्री.) वन में स्वतः लगनेवाली आग, दावानल।

वनाटन–(सं. पुं.) जंगल में घूमना।

वनालक्त–(सं. पुं.) गैरिक, गेरू।

वनालय–(सं. पुं.) जंगल में रहने का घर।

वनाश्रमी–(सं. वि.) वानप्रस्थ आश्रमावलम्बी।

वनाश्रित–(सं. वि.) जिसने वानप्रस्थ आश्रम धारण किया हो।

वनिल–(सं. वि.) याचित, माँगा हुआ।

वनिता–(सं. स्त्री.) प्रियतमा, अनुरक्त स्त्री, औरत, छः वर्णो का एक वृत्त जिसको तिलका या डिल्ला भी कहते हैं; –द्विष्–(पुं.) स्त्रियों से ईर्ष्या करनेवाला मनुष्य; –भोजी–(स्त्री.) नागकन्या; –मुख–(पुं.) स्त्री का मुखमण्डल; –विलास–(पुं.) स्त्री-संभोग की इच्छा।

वनिन्, वनी–(सं. वि.) वनवासी, जंगल में रहनेवाला।

वनी–(सं. स्त्री.) वनस्थली, छोटा वन।

वनीयक–(सं. पुं.) भिक्षुक, माँगनेवाला।

वनेचर–(सं. वि.) वन में रहनेवाला।

वनोद्देश–(सं. पुं.) वन के बीच का स्थान।

वनोद्भव–(सं. वि.) वन में उत्पन्न।

वनोद्भवा–(सं. स्त्री.) जंगली कपास।

वनौकस्–(सं. पुं.) वंदर, तपस्वी।

वनौघ–(सं. पुं.) वनसमूह।

वनौषधि–(सं. स्त्री.) जंगली जड़ी-बूटी।

वन्य–(सं. वि.) जंगल में उत्पन्न होनेवाला, जंगली; –दमन–(पुं.) जंगली दौने का पौधा; –द्विप–(पुं.) जंगली हाथी; –धान्य–(पुं.) तिन्नी का चावल; –पक्षी–(पुं.) जंगली चिड़िया; –वृक्ष–(पुं.) पीपल का पेड़।

वन्याशन–(सं. वि.) जंगली फल खानेवाला।

वन्याश्रमी–(सं. वि.) देखें 'वनाश्रमी'।

वपन–(सं. पुं.) सिर मूँड़ना, बीज बोना।

वपनी–(सं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ जुलाहे कपड़ा बुनते हैं।

वपनीय–(सं. वि.) बोने योग्य।

वपा–(सं. स्त्री.) छिद्र, छेद, वसा, बाँबी।

वपु–(सं. पुं.) शरीर, देह।

वपुमान–(हिं. वि.) शरीरधारी।

वपुष्टमा–(सं. स्त्री.) काशीराज की कन्या जिसका विवाह परीक्षित् के पुत्र जनमेजय से हुआ था।

वपोदर–(सं. वि.) तोंदवाला।

वप्तव्य–(सं. वि.) वपनीय, बोने योग्य।

वप्ता–(सं. वि.) बीज बोनेवाला।

वफा–(फा. पुं.) सच्चाई, कृतज्ञता, नेकनीयती; –दार–(पुं.) सच्चाई से काम करनेवाला।

वव–(सं. पुं.) ज्योतिष में ग्यारह करणों के अन्तर्गत प्रथम करण।

वभ्रु–(सं. पुं.) एक यदुवंशीय योद्धा का नाम।

वम, वमन–(सं. पुं.) उलटी, कै।

वमनी–(सं. स्त्री.) जलौका, जोंक।

वमि–(सं. स्त्री.) वमन का रोग।

वमित–(सं. वि.) जिसको वमन कराया गया हो।

वयःक्रम–(सं. पुं.) आयुष्य, उम्र।

वयःसंधि–(सं. स्त्री.) बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का काल।

वयःसम–(सं. वि.) समान वय का।

वय–(सं. पुं.) तन्तुवाय, जुलाहा, उम्र, अवस्था, आयु।

वयन–(सं. पुं.) बुनने की क्रिया या भाव।

वयस्क–(सं. वि.) अवस्थावाला, युवावस्था को पहुँचा हुआ, बालिग।

वयस्य–(सं. पुं.) समान वय का, हमजोली, मित्र; –क–(पुं.) मित्र, बन्धु; –त्व–(पुं.) मित्रता, बन्धुत्व, वयस्य का भाव या धर्म; –भाव–(पुं.) बन्धुता, मैत्री।

वयस्या–(सं. स्त्री.) सखी।

वयोगत–(सं. पुं.) बुढ़ापा; (वि.) वृद्ध।

वयोधा–(सं. स्त्री., पुं.) शक्ति, युवा, अन्नदाता।

वयोवस्था–(सं. स्त्री.) जीवनकाल।

वयोवृद्ध–(सं. वि.) जो वय या उम्र में वड़ा हो।

वरंच–(सं. अव्य.) परन्तु, बल्कि।

वरंड–(सं. पुं.) ओसारा, मुँहासा, घास का गट्ठर।

वरंडक–(सं. पुं.) हाथी की पीठ पर कसने का हौदा।

वरंडा–(हिं. पुं.) देखें 'वरामदा'।

वर–(सं. पुं.) कुंकुम, केसर, बालक, पति, जामाता, दूल्हा, किसी देवी-देवतासे माँगा हुआ मनोरथ या उसका फल या सिद्धि; (वि.) श्रेष्ठ (समस्तपदों के अंत में)।

वरकंदा–(सं. स्त्री.) खिरनी का वृक्ष।

वरक–(अ. पुं.) पुस्तक के पन्ने, धातु का महीन पत्तर।

वरज–(सं. वि.) ज्येष्ठ, वड़ा।

वरट–(सं. पुं.) हंस, भिड़, वर्रे।

वरण–(सं. पुं.) चुनना, किसी काम के लिए किसी व्यक्ति को चुनना, मंगल-कार्य के विधान में होता आदि कार्यकर्ताओं को नियुक्त करके उनका सत्कार करना, विवाह में कन्या द्वारा वर को अंगीकार करने की क्रिया, पूजा, अर्चना, सत्कार।

वरणक–(सं. वि.) वरण करनेवाला ।
वरणमाला–(सं. स्त्री.) विवाह के समय पहनाने की माला ।
वरणी–(सं. स्त्री.) विवाहादि में पुरोहित तथा ब्राह्मणों को मिलनेवाली दक्षिणा ।
वरणीय–(सं.वि.) चुनने योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा ।
वरतनु–(सं.स्त्री.) सुन्दर स्त्री; (पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं ।
वरद–(सं. वि.) वर देनेवाला, प्रसन्न ।
वरदक्षिणा–(सं.स्त्री.) वह धन जो विवाह के समय वर को कन्या के पिता से मिलता है, दहेज ।
वरदा–(सं. स्त्री.) कन्या; (वि.स्त्री.) वर देनेवाली; **–चतुर्थी**–(स्त्री.) माघ शुक्ला चतुर्थी ।
वरदाता–(सं. पुं.) वर देनेवाला, अभीष्ट देनेवाला ।
वरदान–(सं. पुं.) किसी देवता आदि का प्रसन्न होकर भक्त को माँगी हुई वस्तु देना, इच्छित फल की प्राप्ति ।
वरदानिक–(सं. वि.) वरदान-संबंधी ।
वरदानी–(सं.पुं.) वरदान देनेवाला ।
वरदी–(फा. स्त्री.) राज कर्मचारियों (सैनिक, सिपाही आदि) का काम के समय का विशिष्ट पहनावा ।
वरधर्म–(सं.पुं.) श्रेष्ठ कर्म, बड़ा काम ।
वरन्–(हि. अव्य.) ऐसा न हो कि ।
वरना–(फा. अव्य.) नहीं तो ।
वरनिश्चय–(सं. पुं.) पति चुनना ।
वरपक्ष–(सं. पुं.) वरयात्रा, बारात ।
वरपक्षीय–(सं. वि.) वरपक्ष-संबंधी ।
वरपीत–(सं. पुं.) हरताल ।
वरप्रद–(सं. वि.) वर देनेवाला ।
वरप्रदान–(सं.पुं.) मनोरथ सिद्ध करना, वर देना ।
वरप्रभ–(सं. वि.) बहुत चमकता हुआ ।
वरप्रस्थान–(सं. पुं.) वरयात्रा, बारात ।
वरफल–(सं. पुं.) श्रेष्ठ फल, नारियल ।
वरयात्रा–(सं. स्त्री.) विवाह करने के लिए वर का बारात आदि के साथ कन्या के घर जाना, बारात ।
वरयोग्य–(सं.वि.) आशीर्वाद देने योग्य, उपहार पाने योग्य, विवाह के योग्य ।
वररुचि–(सं.पुं.) एक प्राचीन वैयाकरण और प्रसिद्ध कवि ।
वरवत्सला–(सं. स्त्री.) सास ।
वरवर्ण–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, श्रेष्ठ वर्ण, बढ़िया रंग ।
वरवर्णिनी–(सं.स्त्री.) उत्तम स्त्री, लाक्षा, लाख, हल्दी, गौरी, लक्ष्मी ।
वरवारण–(सं. पुं.) सुन्दर हाथी ।
वरसुंदरी–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं ।
वरही–(हि. स्त्री.) सोने की एक लंबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहिनाई जाती है ।
वरांगना–(सं. स्त्री.) सुन्दर स्त्री ।
वरा–(सं. स्त्री.) पार्वती, हरिद्रा, हल्दी, मद्य; (वि. स्त्री.) वरण करनेवाली; (समस्त पदों के अंत में प्रयुक्त) ।
वराक–(सं. वि.) शोचनीय, नीच ।
वराट–(सं. पुं.) कपर्दक, कौड़ी, रस्सी, पद्मबीज ।
वराटिका–(सं. स्त्री.) कपर्दक, कौड़ी, तुच्छ वस्तु ।
वराड़ी–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
वरानना–(सं. स्त्री.) सुन्दर स्त्री ।
वराम्र–(सं. पुं.) करमर्द, करौंदा ।
वरारक–(सं. पुं.) हीरक, हीरा ।
वरारोह–(सं. पुं.) विष्णु ।
वरासन–(सं.पुं.) श्रेष्ठ आसन, सिंहासन ।
वरासी–(सं. स्त्री.) मैला वस्त्र ।
वराह–(सं.पुं.) विष्णु, एक पर्वत का नाम, शिशुमार, सूँस, अठारह द्वीपों में से एक; **–कंद**–(पुं.) वाराही कन्द; **–कण**–(पुं.) एक बाण का नाम; **–कर्णी**–(स्त्री.) असगन्ध; **–काली**–(स्त्री.) हुरहुर का पौधा; **–क्रांता**–(स्त्री.) लज्जालु, शूकरी; **–मिहिर**–(पुं.) ज्योतिष के एक प्रसिद्ध आचार्य, ऐसा विश्वास है कि यह राजा विक्रमादित्य के नौ रत्नों में से एक थे; **–व्यूह**–(पुं.) प्राचीन काल की एक प्रकार की सेना की रचना; **–शृंग**–(पुं.) शिव, महादेव ।
वराहिका–(सं. स्त्री.) केंवाच ।
वराही–(सं. स्त्री.) वाराही कन्द, शूकरी ।
वरिशी–(सं. स्त्री.) कँटिया ।
वरिष–(सं. पुं.) वत्सर, वर्ष ।
वरिषा–(सं. स्त्री.) वर्षा; **–प्रिय**–(पुं.) चातक पक्षी ।
वरिष्ठ–(सं. वि.) श्रेष्ठ, उत्तम, विस्तीर्ण ।
वरीवरा–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं ।
वरीषु–(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव ।
वरुण–(सं. पुं.) एक देवता जो कश्यप के पुत्र थे, (यह अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और देवताओं के रक्षक तथा जल के अधिपति माने जाते हैं), जल, पानी, सूर्य, एक ग्रह का नाम; **–ग्रस्त**– (वि.) जल में डूबा हुआ; **–ग्रह**–(पुं.) घोड़ों का एक रोग; **–देव**–(पुं.) शतभिषा नक्षत्र; **–पाश**–(पुं.) वरुण का अस्त्र, पाश, फंदा; **–मंडल**–(पुं.) नक्षत्रों का मण्डल जिसमें रेवती, पूर्वाषाढ़ा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, उत्तरा भाद्रपद और शतभिषा हैं ।
वरुणात्मजा–(सं. स्त्री.) वारुणी, मदिरा ।
वरुणानी–(सं. स्त्री.) वरुण की पत्नी ।
वरुणालय, वरुणावास–(सं. पुं.) समुद्र ।
वरुणेश–(सं. पुं.) शतभिषा नक्षत्र ।
वरुणोद–(सं. पुं.) सागर, समुद्र ।
वरूथ–(सं. पुं.) तनुत्राण, कवच, वर्म, ढाल, सेना ।
वरूथाधिप, वरूथाधिपति–(सं. पुं.) सेनापति ।
वरूथिनी–(सं. स्त्री.) सेना ।
वरेंद्र–(सं. पुं.) इन्द्र, राजा ।
वरेण्य–(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) मुख्य, प्रधान, पूजनीय ।
वरेय–(सं. पुं.) सूर्य ।
वरेयु–(सं. वि.) विवाह के लिये कन्या माँगनेवाला ।
वरेश–(सं. पुं.) सर्वेश्वर, भगवान् ।
वरेश्वर–(सं. पुं.) शिव ।
वरोट–(सं. पुं.) मरुआ नामक पौधा ।
वरोरु–(सं. वि.स्त्री.) सुन्दर जाँघोंवाली (स्त्री.) ।
वरोहशाखी–(सं. पुं.) पाकर का वृक्ष ।
वर्कट–(सं. पुं.) कील, काँटा, अर्गला ।
वर्कर–(सं. पुं.) भेड़ का बच्चा, मेमना ।
वर्कराट–(सं.पुं.) कटाक्ष, दोपहर की गरमी ।
वर्ग–(सं. पुं.) एक तरह के अनेक पदार्थों का समूह, समान धर्मवाले पदार्थों का समूह, व्याकरण में एक ही स्थान से उच्चारण होनेवाले व्यञ्जन वर्णों का समूह, प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद, जाति, श्रेणी, दो समान अंकों या राशियों का गुणनफल, रेखागणित में वह चतुर्भुज जिसकी लंबाई-चौड़ाई बराबर हो तथा जिसके चारों कोण समकोण हों; **–घन**–(पुं.) किसी राशि का घनफल; **–ण**–(पुं.) गुणन; **–पद**–(पुं.) वर्गमूल; **–फल**–(पुं.) वह अंक जो दो समान राशियों को गुणा करने से प्राप्त हो; **–मूल**– (पुं.) किसी वर्गफल के दो बराबर गुणन-खंड; **–वर्ग**–(पुं.) वर्ग का वर्गफल ।
वर्गीय–(सं. वि.) वर्ग-संबंधी ।
वर्चटी–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
वर्चस्–(सं. पुं.) तेज, अन्न ।

वर्चस्क–(सं. पुं.) दीप्ति, तेज ।

वर्चस्वी–(सं. पुं.) चन्द्रमा; (वि.) दीप्तियुक्त ।

वर्जक–(सं. वि.) वर्जन करनेवाला ।

वर्जन–(सं. पुं.) त्याग, छोड़ना, वारण, मनाही ।

वर्जनीय–(सं. वि.) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निषिद्ध, मना किया हुआ ।

वर्जित–(सं. वि.) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ ।

वर्ज्य–(सं. वि.) छोड़ने योग्य ।

वर्ण–(सं. पुं.) जाति, (यथा–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र); पदार्थों का लाल, काला, पीला आदि रंग, प्रकार, यश, कीर्ति, गुण, स्तुति, चित्र, तलवार, रूप, अक्षर, व्याकरण के अनुसार अकारादि स्वरों के चिह्न या संकेत; **–कंट**–(पुं.) तुत्थ, तूतिया; **–कदंडक**–(पुं.) चित्रकार की कूँची, एक प्रकार का छन्द; **–क्रम**–(पुं.) रंगों का विन्यास, अक्षरों की श्रेणी; **–खंडमेरु**–(पुं.) छन्दःशास्त्र की वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने वर्णो से कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त में कितने गुरु और कितने लघु वर्ण होते हैं; **–गत**–(वि.) वर्ण-संबंधी; **–चारक**–(पुं.) चित्रकार; **–ज**–(वि.) वर्ण या जाति में उत्पन्न; **–ज्येष्ठ**–(पुं.) ब्राह्मण; **–तूलि**–(स्त्री.) चित्रकार की कूँची; **–द**–(वि.) रंग देनेवाला; **–दाता**–(वि.) वर्णद; **–दात्री**–(स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी; **–दूषक**–(वि.) जाति को नष्ट करनेवाला; **–धर्म**–(पुं.) वर्णाश्रम धर्म; **–नष्ट**–(पु.) पिंगल-शास्त्र के अनुसार वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वर्णो की मात्राओं के अनुसार वृत्तों के विविध भेदों का रूप लघु-गुरु वर्ण के विचार से कैसा होगा; **–पताका**–(स्त्री.) पिंगल-शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के विविध भेदों में कितने गुरु तथा कितने लघु वर्ण होते हैं; **–पाताल**–(पुं.) पिंगल-शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि विविध-संख्यक वर्णो से कुल कितने वृत्त हो सकते हैं और उनमें कितने लघ्वादि तथा कितने लघ्वन्त, कितने गुर्वादि तथा कितने गुर्वन्त, कितने सर्वगुरु एवं कितने सर्वलघु होंगे; **–पात्र**–(पुं.) चित्रकार का रंग रखने का पात्र; **–प्रत्यय**–(पुं.) पिंगल-शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि मात्राओं की संख्यानुसार वर्णवृत्तों में कितने भेद हो सकते हैं, उनके स्वरूप क्या होंगे आदि; **–प्रस्तार**–(पुं.) पिंगल-शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि विभिन्न मात्रिक वृत्तों के कितने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप किस प्रकार होंगे; **–भेद**–(पुं.) रंग का भेद; **–मात्रिका**–(स्त्री.) सरस्वती; **–माला**–(स्त्री.) वर्ण, श्रेणी, किसी भाषा के क्रम से अक्षरों का समूह; **–राशि**–(स्त्री.) वर्णसमूह; **–रेखा**–(स्त्री.) खड़िया; **–लिपि**–(स्त्री.) अक्षर, वर्ण, लेखनप्रणाली; **–वती**–(स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी; **–वर्ति**–(स्त्री.) लेखनी, तूली; **–वादी**–(वि.) प्रशंसा करनेवाला; **–विकार**–(पुं.) निरुक्त के अनुसार शब्दों में एक वर्ण का बिगड़कर दूसरा वर्ण हो जाना; **–विचार**–(पुं.) व्याकरण का वह विभाग जिसमें वर्णो के आकार, उच्चारण, सन्धि आदि के नियमों का वर्णन रहता है, प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' के अंतर्गत था और व्याकरण से स्वतन्त्र माना जाता था; **–विपर्यय**–(पुं.) निरुक्त के अनुसार शब्दों के वर्णो का उलट-फेर होना; **–विलोड़क**–(पुं.) वह जो दूसरे के लिखे हुए लेख को अपना बतलाता हो; **–वृत्त**–(पुं.) वह पद्य जिसके चरणों में वर्णो की संख्या तथा लघु-गुरु मात्राओं के क्रमों में समानता हो; **–श्रेष्ठ**–(पुं.) चारों वर्णों में श्रेष्ठ, ब्राह्मण; **–संकर**–(पुं.) ब्राह्मणादि वर्णों के अनुलोम या प्रतिलोम से उत्पन्न जाति, व्यभिचार से उत्पन्न संतान, दोगला; **–संघात**–(पुं.) वर्ण-समूह; **–संयोग**–(पुं.) सवर्ण विवाह; **–संसर्ग**–(पुं.) अंतर्जातीय विवाह; **–सूची**–(स्त्री.) छन्दःशास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या, उनकी शुद्धता तथा उनके भेदों में आदि, अन्त, लघु और आदि, अन्त, गुरु की संख्या जानी जाती है; **–स्थान**–(पुं.) वर्ण आदि का उच्चारण-स्थान ।

वर्णन–(सं. पुं.) गुणकीर्तन, चित्रण, रँगना, विस्तारसहित किसी बात को कहना ।

वर्णना–(सं. स्त्री.) गुणकथन, स्तुति, प्रशंसा ।

वर्णनीय–(सं. वि.) वर्णन करने योग्य ।

वर्णा–(सं. स्त्री.) आढ़की, अरहर ।

वर्णाका–(सं. स्त्री.) लेखनी ।

वर्णाट–(सं. पुं.) चित्रकार, गवैया ।

वर्णाश्रम–(सं. पुं.) चारों वर्णों का आश्रम; **–धर्म**–(पुं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारों वर्णों का आश्रम-धर्म जिसमें रहकर वे कर्म द्वारा ऐहिक और पारलौकिक कल्याण प्राप्त करते हैं ।

वर्णिक–(सं. पुं.) लेखक ।

वर्णिक वृत्त–(सं. पुं.) वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में वर्णो की संख्या तथा गुरु-लघु मात्राओं के स्थान या क्रम समान हों, वर्ण-वृत्त ।

वर्णित–(सं. वि.) वर्णन किया हुआ, कहा हुआ, प्रशंसित ।

वर्णी–(सं. पुं.) लेखक, चित्रकार, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण ।

वर्ण्य–(सं. वि.) वर्णन करने योग्य; (पुं.) प्रस्तुत विषय ।

वर्तक–(सं. पुं.) बटुआ, नर बटर ।

वर्तका–(सं. स्त्री.) वर्तक पक्षी, मादा बटेर ।

वर्तन–(सं. पुं.) व्यवसाय, जीवनवृत्ति, परिवर्तन, उलट-फेर, स्थिति, ठहराव, स्थापन, रखना, व्यवहार, बरताव, पात्र, सिल-बट्टे पर पीसना ।

वर्तनि–(सं. स्त्री.) शुद्ध राग का एक भेद ।

वर्तनी–(सं. स्त्री.) बटने की क्रिया, पिसाई ।

वर्तमान–(सं. पुं.) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया अभी होती है या हो रही है, समाप्त नहीं हुई है, वृत्तान्त, समाचार, चलता व्यवहार; (वि.) जो चल रहा हो, आधुनिक, विद्यमान, उपस्थित, साक्षात्; **–ता**–(स्त्री.) आधुनिकता, उपस्थिति ।

वर्ति–(सं. स्त्री.) दीपशिखा, वत्ती, अंजन, उबटन, गोली, दीप, दीया, बटी ।

वर्तिक–(सं. पुं.) बटेर पक्षी ।

वर्तिका–(सं. स्त्री.) मादा बटेर, बत्ती, शलाका, सलाई ।

वर्तित–(सं. वि.) सम्पादित, चलाया हुआ, किया हुआ, जारी किया हुआ, प्रस्तुत, ठीक किया हुआ ।

वर्तितव्य–(सं. वि.) स्थिति के योग्य ।

वर्ती–(सं. वि.) बरतने योग्य, स्थिर रहनेवाला ।

वर्तुल–(सं. वि.) वृत्ताकार, गोल; (पुं.) मटर, गाजर, सोहागा ।

वर्त्म–(सं. पुं.) मार्ग, पथ, गाड़ी के पहिये

की लकीर, आधार, आँख की पलक, किनारा, बारी।
वर्दी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वरदी'।
वर्द्ध(र्ध)क–(सं. वि.) पूरक, बढ़ानेवाला, काटनेवाला।
वर्द्ध(र्ध)कि(की)–(सं. पुं.) त्वष्टा, रथकार, बढ़ई।
वर्द्ध(र्ध)न–(सं.वि.) बढ़ानेवाला; (पुं.) वृद्धि, उन्नति, बढ़ाना, छीलना, पूर्ति।
वर्द्ध(र्ध)नी–(सं.स्त्री.) सम्मार्जनी, झाड़, कमण्डलु।
वर्द्ध(ध)नीय–(सं. वि.) बढ़ाने योग्य।
वर्द्धा(र्धा)पक–(सं. वि.) कर्णवेध की क्रिया करनेवाला।
वर्द्धा(र्धा)पन–(सं.पुं.) कर्णवेध, कनछेदन।
वर्द्ध(र्ध)मान–(सं.वि.) बढ़नेवाला, बढ़ता हुआ; (पुं.) विष्णु, रेंड़ का पेड़, एक वर्णवृत्त का नाम।
वर्द्धि(र्धि)त–(सं. वि.) बुद्धिप्राप्त, बढ़ा हुआ, पूर्ण, प्रसूत।
वर्द्धि(र्धि)ष्णु–(सं. वि.) बढ़नेवाला।
वर्द्धी(र्धी)–(सं. स्त्री.) चमड़े की रस्सी, बद्धी नामक आभूषण।
वर्ध्म–(सं. पुं.) आँत उतरने का रोग।
वर्म–(सं. पुं.) तनुत्राण, कवच; **–कंटक**–(पुं.) पित्तपापड़ा; **–धर**–(वि.) कवच पहने हुए; **–हर**–(वि.) कवचधारी।
वर्मा–(सं. पुं.) क्षत्रियों या कायस्थों की उपाधि।
वर्मिक, वर्मित–(सं. वि.) कवचधारी।
वर्य–(सं. वि.) प्रधान, श्रेष्ठ।
वर्या–(सं. स्त्री.) कन्या।
वर्वर–(सं. पुं.) पीत चन्दन, बोल, घुंघराले बाल, एक देश का नाम, नीच या शूद्र जाति, असभ्य व्यक्ति; (वि.) दुष्ट, नीच; **–ता**– (स्त्री.) असभ्यावस्था।
वर्वरा–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की मक्खी।
वर्ष–(सं. पुं.) पृथ्वी के विभिन्न देश या प्रधान भाग, वृष्टि, वर्षा, मेघ, बादल, संवत्सर, बारह महीने का काल; **–कर**–(पुं.) मेघ, बादल; **–करी**–(स्त्री.) झींगुर; **–काम**–(पुं.) वृष्टि की कामना करनेवाला; **–कामेष्टि**–(पुं.) वर्षा होने के लिये किया जानेवाला यज्ञ; **–काली**–(स्त्री.) जीरक, जीरा; **–केतु**–(पुं.) लाल पुनर्नवा; **–कोष**–(पुं.) दैवज्ञ, ज्योतिषी; **–गाँठ**–(हिं. पुं.) जन्म-दिन का उत्सव; **–घ्न**–(पुं.) पवन; **–ज**–(वि.) वृष्टि से उत्पन्न; **–ण**–(पुं.) वृष्टि, पानी बरसना; **–धर**– (पुं.) मेघ, बादल; **–पति**–(पुं.) संवत्सर का अधिपति; **–प्रिय**–(पुं.) चातक पक्षी, पपीहा; **–फल**–(पुं.) फलित ज्योतिष में जातक के अनुसार वह कुण्डली जिसमें वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण रहता है; **–वृद्ध**–(वि.) जो वय में बड़ा हो; **–वृद्धि**–(स्त्री.) वय की वृद्धि; **–शत**–(पुं.) सौ वर्ष; **–सहस्र**–(वि.) हजार वर्ष।
वर्षांग–(सं. पुं.) मास, महीना।
वर्षा–(सं. स्त्री.) पानी बरसने की ऋतु, पानी बरसने की क्रिया; (मुहा.) **–होना**–किसी वस्तु का अधिक परिमाण में प्राप्त होना।
वर्षाकाल–(सं. पुं.) बरसात।
वर्षाकालीन–(सं. वि.) बरसाती।
वर्षागम–(सं. पुं.) वर्षा ऋतु का आगमन।
वर्षाचर–(सं. वि.) वर्षा में घूमनेवाला।
वर्षाघृत–(सं. वि.) वर्षा काल में प्राप्त।
वर्षाप्रिय–(सं. पुं.) पपीहा।
वर्षाबीज–(सं. पुं.) मेघ, बादल।
वर्षाभव–(सं. वि.) वर्षा में उत्पन्न।
वर्षाभू–(सं. पुं.) इन्द्रगोप नामक कीड़ा; (वि.) वर्षा में उत्पन्न होनेवाला।
वर्षामद–(सं. पुं.) मयूर, मोर।
वर्षायस–(सं. वि.) अति वृद्ध।
वर्षारात्र–(सं. पुं.) वर्षाकाल की रात।
वर्षार्चि–(सं. पुं.) मंगल ग्रह।
वर्षाल–(सं. पुं.) फतिंगा।
वर्षावत्–(सं. वि.) वर्षा के समान।
वर्षावसान–(सं. पुं.) शरद् ऋतु।
वर्षासमय–(सं. पुं.) वर्षाकाल।
वर्षाहिक–(सं. पुं.) बरसाती साँप।
वर्षिक–(सं. वि.) वर्ष या वर्षा-संबंधी।
वर्षिता–(सं. वि.) बरसनेवाला।
वर्षिष्ठ–(सं.वि.) बहुत बूढ़ा, अत्यन्त बलवान्।
वर्षीका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
वर्षीय–(सं. वि.) वर्ष-संबंधी।
वर्षुक–(सं. वि.) बरसनेवाला।
वर्षेश–(सं. पुं.) वर्ष का स्वामी।
वर्ष्म–(सं. पुं.) शरीर; **–वत्**– (वि.) शरीर के समान; **–वीर्य**–(पुं.) शारीरिक बल।
वर्ह–(सं. पुं.) मोर का पंख, पत्ता।
वर्हण–(सं. पुं.) पत्ता।
वर्हिण–(सं. पुं.) मयूर, मोर; **–वाहन**–(पुं.) कार्तिकेय।
वर्ही–(सं. स्त्री.) मयूर, मोर।
वलंतिका–(सं. स्त्री.) संगीत शास्त्रोक्त स्वर-क्रम का भेद।
वलंब–(सं. पुं.) सीधी रेखा के ऊपर लंब रेखा।
वल–(सं. पुं.) मेघ, एक असुर का नाम जो बृहस्पति के द्वारा मारा गया था।
वलती–(सं. स्त्री.) वह मण्डप जो घर के शिखर पर बना हो, रावटी।
वलद्विष्–(सं. पुं.) इन्द्र।
वलन–(सं. पुं.) ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार नक्षत्र आदि का अयनांश से हटकर चलना या विचलन।
वलनांश–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह का अयनांश से हटकर चलने की अथवा वक्र गति की दूरी।
वलनाशन, वलनिसूदन–(सं. पुं.) इन्द्र।
वलभी–(सं. स्त्री.) घर की चोटी, घर के शिखर पर बना हुआ मण्डप, एक प्राचीन राजवंश का नाम।
वलय–(सं. पुं.) मण्डल, वेष्टन, कंकण, चूड़ी, गोल घेरा।
वलयित–(सं. वि.) घिरा हुआ, गोल मुड़ा हुआ।
वलसूदन–(सं. पुं.) इन्द्र।
वलाट–(सं. पुं.) मुद्ग, मूंग।
वलाहक–(सं. पुं.) मेघ, बादल, पर्वत, एक दैत्य का नाम।
वलि–(सं. पुं.) रेखा, लकीर, पेट में पड़ी हुई सिकुड़न, देवी-देवता को अर्पण करने की वस्तु, एक प्रकार का बाजा, श्रेणी, पंक्ति, राजकर, छाजन की ओलती, एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र था जिसको विष्णु ने वामन का अवतार लेकर छला था।
वलिक–(सं. पुं.) ओरी, ओलती।
वलित–(सं. वि.) बल खाया हुआ, लचका हुआ, झुकाया या मोड़ा हुआ, आवेष्टित, लिपटा हुआ, सिकुड़ा हुआ, ढपा हुआ, युक्त।
वलिमुख–(सं. पुं.) वानर, बंदर।
वली–(सं. स्त्री.) श्रेणी, पंक्ति, रेखा, लकीर, झुर्री; (अ. पुं.) स्वामी, अधिपति, संरक्षक।
वलीमुख–(सं. पुं.) बंदर।
वल्क–(सं. पुं.) वल्कल, छाल; **–तरु**–(पुं.) सुपारी का वृक्ष; **–द्रुम**–(पुं.) भोजपत्र का पेड़।
वल्कल–(सं. पुं.) वृक्ष की छाल, इसका बना हुआ वस्त्र।
वल्कली–(सं. वि.) वल्कलधारी, छाल का

वस्त्र पहिननेवाला।
वल्गन–(सं. पुं.) घोड़े की दुलकी चाल।
वल्गु, वल्गुज–(सं. पुं.) छाग, बकरी; **–पत्र**–(पुं.) वनमूंग।
वल्गुल–(सं. पुं.) शृगाल, सियार।
वल्गुली–(सं. स्त्री.) चमगादड़, पिटारा।
वल्द–(अ. पुं.) पुत्र, बेटा।
वल्मीक–(सं. पुं.) दीमक का लगाया हुआ मिट्टी का स्तूप, बाँबी, वाल्मीकि ऋषि।
वल्लक–(सं. पुं.) एक प्रकार का समुद्री जन्तु।
वल्लकी–(सं. स्त्री.) वीणा, बीन।
वल्लभ–(सं. वि.) प्रिय, प्यारा; (पुं.) अध्यक्ष, अति प्रिय व्यक्ति, प्यारा मित्र, नायक, वल्लभ संप्रदाय के प्रसिद्ध आचार्य, वल्लभाचार्य।
वल्लभा–(सं. स्त्री.) प्यारी स्त्री; (वि. स्त्री.) प्रियतमा, प्यारी।
वल्लभाचार्य–(सं. पुं.) वल्लभाचारी वैष्णव सम्प्रदाय के प्रतिष्ठाता एक आचार्य।
वल्लभी–(सं. पुं.) देखें 'वलभी'।
वल्लर–(सं. पुं.) मंजरी, कुंज।
वल्लरि, वल्लरी–(सं. स्त्री.) वल्ली, मंजरी, लता, एक प्रकार का बाजा।
वल्लव–(सं. पुं.) अज्ञातवास के समय भीमसेन ने अपना यह नाम रखा था।
वल्लि–(सं. स्त्री.) लता, पृथ्वी।
वल्लिका–(सं. स्त्री.) पोई का साग।
वल्ली–(सं. स्त्री.) लता, अजमोदा।
वल्लुर–(सं. पुं.) निर्जन या दुर्गम स्थान।
वल्लूर–(सं. पुं.) सूखा मांस, सूअर का मांस, ऊसर भूमि, उजाड़ स्थान, जंगल।
वल्वज–(सं. पुं.) उलखल, ओखली।
वल्वल–(सं. पुं.) एक दैत्य जिसको बलरामजी ने मारा था।
वव–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार ग्यारह करणों में से एक।
वशंकृत–(सं. वि.) वश में किया हुआ।
वशंवद–(सं. वि.) वशीभूत; (पुं.) दास, आज्ञाकारी सेवक।
वश–(सं. पुं.) इच्छा, एक व्यक्ति का दूसरे पर प्रभाव, अधिकार, अनुकूल करने की शक्ति, वेश्याओं का रहने का स्थान; **–कर**–(वि.) वश में करनेवाला; **–का**–(स्त्री.) वश में लाई हुई स्त्री; **–क्रिया**–(स्त्री.) वशीकरण; **–ग**–(वि.) वशीभूत; **–गत**–(वि.) वशीभूत; **–गमन**–(पुं.) वशीभूत होना; **–गा**–(स्त्री.) वशीभूत स्त्री; **–गामी**–(वि.) वश में लाया हुआ; **–ता**–(स्त्री.) वश में होने का भाव या धर्म; **–नीय**–(वि.) वश में करने योग्य; **–वर्ती**–(वि.) वशीभूत, जो दूसरे के वश में हो।
वशा–(सं. स्त्री.) बाँझ स्त्री, पत्नी, पति की बहन, ननद, वशीभूत स्त्री।
वशानुग–(सं. वि.) वशीभूत, आज्ञाकारी।
वशिता–(सं. स्त्री.) अधीनता, मोहने की क्रिया या भाव, मोहन।
वशित्व–(सं. पुं.) योग के आठ ऐश्वर्यों में से एक जिसके सिद्ध होने पर साधक सब को अपने वश में कर लेता है।
वशिनी–(सं. स्त्री.) शमी का वृक्ष।
वशिमा–(सं. स्त्री.) योग की आठ सिद्धियों में से एक।
वशिष्ट–(सं. पुं.) देखें 'वसिष्ठ'।
वशी–(सं. वि.) जितेन्द्रिय, अपने को वश में रखनेवाला, अधीन, वश में लाया हुआ; **–करण**–(पुं.) (मणि, मन्त्र या औषध) के द्वारा किसी को अपने वश में करना; **–कृत**–(वि.) मोहित, मुग्ध, वश में किया हुआ; **–भूत**–(वि.) वश में लाया हुआ, अधीन।
वश्य–(सं. वि.) किसी की इच्छा के अधीन; (पुं.) दास, सेवक; **–ता**–(स्त्री.) वश में होने की अवस्था; **–त्व**–(पुं.) देखें 'वश्यता'।
वश्या–(सं. स्त्री.) वशीभूता स्त्री, गोरोचना।
वषट्–(सं. अव्य.) इस शब्द का उच्चारण अग्नि में आहुति देते समय होता है; **–कार**–(पुं.) देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ।
वष्कयणी–(सं. स्त्री.) बकेना गाय।
वसंत–(सं.पुं.) चैत्र और वैशाख महीने की ऋतु, एक राग का नाम, एक ताल का नाम, फूलों का गुच्छा, मसूरिका रोग, चेचक; **–काल**–(पुं.) वसंत ऋतु; **–जा**–(स्त्री.) सफेद जूही; **–तिलक**–(पुं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं; **–तिलका**–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम; **–दूत**–(पुं.) चैत्र मास, कोयल, आम का वृक्ष; **–दूती**–(स्त्री.) पाटली वृक्ष, माधवी लता, कोयल; **–पंचमी**–(स्त्री.) माघ शुक्ला पंचमी, श्री-पंचमी; **–बंधु**–(पुं.) कामदेव; **–भैरवी**–(स्त्री.) एक रागिनी का नाम; **–मारू**–(पुं.) संपूर्ण जाति का एक राग; **–मालिका**–(स्त्री.) एक छन्द का नाम; **–रोग**–(पुं.) मसूरिका, चेचक; **–ललना**–(स्त्री.) सफेद जूही; **–वाक्**–(पुं.) चौदह तालों में से एक ताल का नाम; **–वितल**–(पुं.) विष्णु की एक मूर्ति; **–व्रण**–(पुं.) मसूरिका रोग; **–शेखर**–(पुं.) किन्नरों का एक भेद; **–सख**–(पुं.) कामदेव।
वसंतोत्सव–(सं. पुं.) फाल्गुन में होनेवाला होली का उत्सव, एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था।
वसती–(सं. स्त्री.) निकेतन, घर, वासस्थान।
वसन–(सं. पुं.) वस्त्र, आवरण, ढापने की वस्तु, निवास, स्त्रियों की कमर का एक आभूषण।
वसनार्णवा–(सं. स्त्री.) भूमि, पृथ्वी।
वसह–(हिं. पुं.) वृषभ, बैल।
वसा–(सं.स्त्री.) मेद-धातु, चरबी, भेजा।
वसादनी–(सं. पुं.) पीला शीशम।
वसामेह–(सं. पुं.) एक प्रकार का मूत्र-रोग जिसमें मूत्र के साथ वसा गिरती है।
वसारोह–(सं. पुं.) छत्रक, कुकुरमुत्ता।
वसि–(सं. वि.) वसन, वस्त्र।
वसिक–(सं. वि.) शून्य, रिक्त, खाली।
वसितव्य–(सं. वि.) पहनने योग्य।
वसिष्ठ–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध मन्त्रद्रष्टा ऋषि, सप्तर्षि मण्डल का एक तारा; **–पुराण**–(पुं.) एक उपपुराण का नाम; **–संहिता**–(स्त्री.) एक स्मृति का नाम।
वसीयत–(अ.स्त्री.) वह लिखित व्यवस्था, लेख्यपत्र आदि जो कोई व्यक्ति अपने मरणोपरांत अपनी सम्पत्ति के विभाजन या उत्तराधिकार के लिए निर्धारित कर जाता है।
वसीयतनामा–(अ. पुं.) वसीयत-संबंधी लेख्यपत्र।
वसुंधरा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
वसु–(सं. पुं.) अगस्त्य का वृक्ष, अग्नि, किरण, देवताओं का एक गण जिसके अन्तर्गत आठ भेद हैं; यथा–धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास; कुबेर, शिव, सूर्य, वृक्ष, साधु-पुरुष, सज्जन, कुलीन कायस्थ की पदवी विशेष, छप्पय का एक भेद, रत्न, धन, सुवर्ण, जल, आठ की संख्या; (स्त्री.) दक्ष-प्रजापति की एक कन्या का नाम; (वि.) मधुर; **–चरण**–(पुं.) भगण के चौथे भेद का नाम जिसके

आदि में गुरु तथा वाद में दो लघु वर्ण होते हैं; **-चारुक-**(पुं.) सुवर्ण, सोना; **-द-**(पुं.) कुबेर; **-दा-**(स्त्री.) माली राक्षस की पत्नी का नाम, पृथ्वी; **-दान-**(पुं.) धनदान; **-देव-**(पुं.) श्रीकृष्ण के पिता का नाम; **-देवत-**(पुं.) धनिष्ठा नक्षत्र; **-धर्मिका-**(स्त्री.) स्फटिक, विल्लौर; **-धा-**(स्त्री.) पृथ्वी; **-धान-**(पुं.) धनदान; **-धानी-**(स्त्री.) पृथ्वी; **-धारा-**(स्त्री.) कुबेर की पुरी, अलका, जैन शक्ति-विशेष; **-धारी-**(वि.) सम्पत्ति-शाली; **-नेत्र-**(पुं.) ब्रह्मा; **-पति-**(पुं.) कृष्ण; **-पाल-**(पुं.) पृथ्वीपति, राजा; **-प्रद-**(पुं.) कुवेर, शिव, स्कन्द के एक अनुचर का नाम; **-प्रभा-**(स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम; **-प्राण-**(पुं.) अग्नि; **-भ-**(पुं.) धनिष्ठा नक्षत्र; **-भरित-**(वि.) धनपूर्ण; **-मती-**(स्त्री.) पृथ्वी, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ वर्ण होते हैं; **-रुचि-**(पुं.) एक गन्धर्व का नाम; **-रूप-**(पुं.) शिव, महादेव; **-रेता-**(पुं.) शिव, महादेव, अग्नि; **-वाह-**(पुं.) एक मुनि; **-श्री-**(स्त्री.) स्कन्द की एक मातृका का नाम, वसु-धारा; **-स्थली-**(स्त्री.) कुवेर की नगरी, अलकापुरी; **-हंस-**(पुं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

वसूक-(सं. पुं.) अगस्त्य का वृक्ष।

वसूत्तम-(सं. पुं.) वहुत वड़ा धनी।

वसूमती-(सं. स्त्री.) पृथ्वी।

वसूया-(सं. स्त्री.) धन की कामना।

वसूल-(अ. वि.) लब्ध या प्राप्त (धन, लेना-पावना आदि)।

वसूली-(अ. स्त्री.) प्राप्ति, मिली हुई रकम।

वस्तव्य-(सं. वि.) वास के योग्य।

वस्तव्यता-(सं. स्त्री.) वस्तव्य होने का भाव या धर्म।

वस्ति-(सं. स्त्री.) पेट का नाभि के नीचे का भाग, पेड़ू, मूत्राशय, पिचकारी।

वस्तिकर्म-(सं. पुं.) (गुदा, योनि अथवा लिंगेंद्रिय के मार्गो से) पिचकारी द्वारा औषध या जल चढ़ाने की क्रिया।

वस्तिवात-(सं. पुं.) एक मूत्र-रोग।

वस्तु-(सं. पुं.) वह जिसकी सत्ता या अस्तित्व हो, वह जो सचमुच हो, गोचर पदार्थ, वृत्तान्त, कथा-वस्तु, नाटक का आख्यान; **-ज्ञान-**(पुं.) किसी वस्तु का ज्ञान, तत्त्वज्ञान; **-तः-**(अव्य.) यथार्थ में, सचमुच; **-निर्देश-**(पुं.) नाटक के मंगलाचरण का एक भेद जिसमें उसकी कथा का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है; **-बल-**(पुं.) किसी पदार्थ का गुण; **-भाव-**(पुं.) वस्तु का धर्म या गुण; **-भेद-**(पुं.) वस्तु का प्रकार; **-वाद-**(पुं.) वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार संसार की सत्ता उसी रूप में मानी जाती है जैसी वह सामान्य मनुष्य को दृष्टिगोचर है, (यह सिद्धान्त अद्वैतवाद के विपरीत है); **-विचार-**(पुं.) वस्तु का गुण-निर्धारण; **-शासन-**(पुं.) वस्तुविचार; **-शून्य-**(वि.) द्रव्यहीन।

वस्तूपमा-(सं. स्त्री.) उपमा अलंकार का एक भेद।

वस्त्र-(सं. पुं.) कपड़ा, पोशाक; **-कुट्टिम-**(पुं.) खेमा; **-गृह-**(पुं.) छोलदारी, छोटा तंवू; **-ग्रंथि-**(स्त्री.) इजारवंद; **-घघरी-**(स्त्री.) एक प्रकार की छलनी; **-द-**(वि.) वस्त्र देनेवाला; **-परिधान-**(पुं.) कपड़ा पहनना; **-पुत्रिका-**(स्त्री.) कपड़े की गुड़िया; **-भूषणा-**(स्त्री.) मजीठ; **-युग्म-**(पुं.) कपड़े का जोड़ा; **-रंजक-**(पुं.) कुसुम का वृक्ष; **-विलास-**(पुं.) अच्छा कपड़ा पहनकर गर्व करना; **-वेश-**(पुं.) कपड़े का बना हुआ घर, खेमा; **-वेष्टित-**(वि.) वस्त्र से लपेटा हुआ।

वस्त्रांचल-(सं. पुं.) कपड़े का छोर।

वस्त्रागार-(सं. पुं.) कपड़े की दुकान।

वस्त्री-(सं. वि.) कपड़ा पहने हुए।

वस्न-(सं. पुं.) वल्कल, छाल, द्रव्य, धन।

वहंत-(सं. पुं.) वायु, वाहक।

वह-(हिं. सर्व.) इस शब्द से किसी मनुष्य या स्त्री का संकेत होता है, कर्ताकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम का एकवचन शब्द, यह शब्द दूर या परोक्ष की वस्तु के निर्देश के लिए विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है; (सं. वि.) वाहक, ले जानेवाला; (सं. पुं.) घोड़ा, वायु, मार्ग।

वहन-(सं. पुं.) वेड़ा, भार ले जाने का कार्य, (उत्तरदायित्व) अपने ऊपर लेना, उठाना, किसी वस्तु को सिर, कंधे आदि पर रखकर कहीं ले जाना।

वहनीय-(सं. वि.) ले जाने योग्य जिम्मे-दारी लेने योग्य।

वहम-(अ. पुं.) भ्रम, संशय, मिथ्या धारणा।

वहमी-(अ. वि.) वहमयुक्त, संशय करने-वाला।

वहल-(सं. पुं.) नौका; (वि.) पुष्ट, दृढ़।

वहला-(सं. स्त्री.) वड़ी इलायची, एक रागिनी का नाम।

वहाँ-(हिं. अव्य.) उस स्थान में या पर, उस जगह।

वहिः-(सं. अव्य.) वाहर।

वहित-(सं. वि.) प्रसिद्ध, प्रख्यात, प्राप्त।

वहित्र-(सं. पुं.) नौका, नाव।

वहिनी-(सं. स्त्री.) नौका, नाव।

वहिरंग-(सं. पुं.) शरीर का वाहरी भाग, वाहरी मनुष्य, वह मनुष्य जो किसी गुट का न हो, यज्ञ आदि में पहले किया जानेवाला कृत्य; (वि.) ऊपरी, वाहरी।

वहिरिंद्रिय-(सं. स्त्री.) कर्मेन्द्रिय।

वहिर्गत-(सं. वि.) वाहर किया हुआ, निकाला हुआ।

वहिर्गमन-(सं. पुं.) किसी काम से घर के वाहर जाना।

वहिर्जगत्-(सं. पुं.) दृश्यमान जगत्।

वहिर्देश-(सं. पुं.) विदेश, परदेश।

वहिर्द्वार-(सं. पुं.) घर का वाहरी फाटक, तोरण।

वहिर्ध्वजा-(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।

वहिर्भव-(सं. वि.) वाह्य प्रकृति का।

वहिर्भवन-(सं. पुं.) वाहर का घर।

वहिर्भाव-(सं. वि.) वाह्य भाव।

वहिर्भूत-(सं. वि.) वहिर्गत, वाहर किया हुआ।

वहिर्मनस्-(सं. वि.) मन के वाहर का।

वहिर्मुख-(सं. वि.) वाहरी, विमुख।

वहिर्योग-(सं. पुं.) हठ-योग।

वहिर्लापिका-(सं. स्त्री.) प्रहेलिका, वह पहेली जिसके उत्तर का पूरा शब्द उसमें नहीं होता।

वहिश्चर-(सं. पुं.) कर्कट, केकड़ा।

वहिष्करण-(सं. पुं.) वहिष्कार।

वहिष्कार-(सं. पुं.) दूर करना, त्यागना।

वहिष्कार्य-(सं. वि.) वहिष्कार करने योग्य।

वहिष्कृत-(सं. वि.) वाहर किया हुआ, त्यागा हुआ, निकाला हुआ।

वहिष्कृति-(सं. स्त्री.) वहिष्कार।

वहिष्ठ-(सं. वि.) अधिक भार उठाने-वाला।

वहिष्प्राण-(सं. पुं.) श्वासवायु, प्राणतुल्य प्रिय वस्तु।

वहीं-(हिं. अव्य.) उसी स्थान पर।

वही-(हिं. सर्व.) पूर्वोक्त व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो, निर्दिष्ट व्यक्ति या वस्तु।

वादुलि–(सं. पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
वाद्य–(सं. पुं.) बाजा; **–क**–(पुं.) बाजा बजानेवाला।
वान–(हिं. पुं.) देखें 'बाण'।
वानप्रस्थ–(सं. पुं.) महुए का वृक्ष, पलाश वृक्ष, आर्यों की प्राचीन पद्धति के अनुसार मनुष्य के जीवन का तीसरा आश्रम।
वानर–(सं. पुं.) बंदर, दोहे का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में दस गुरु और अट्ठाईस लघु वर्ण होते हैं; **–केतन**, **–केतु**–(पुं.) अर्जुन; **–प्रिय**–(पुं.) खिरनी।
वानरी–(सं. स्त्री.) बँदरिया, मर्कटी, केवाँच।
वानरी-बीज–(सं.पुं.) केवाँच का बीज।
वानरेंद्र–(सं. पुं.) सुग्रीव, हनुमान।
वानल–(सं. पुं.) काली तुलसी।
वानवासिका–(सं. स्त्री.) सोलह मात्राओं के छन्दों का एक भेद, चौपाई का एक भेद जिसमें नवीं और बारहवीं मात्राएँ लघु होती हैं।
वानस्पत्य–(सं. वि.) वनस्पति-संबंधी।
वानीर–(सं. पुं.) बेंत, पाकड़ का वृक्ष।
वानीरक–(सं. पुं.) मूंज।
वाप–(सं. पुं.) वपन, बोना, मुंडन, क्षेत्र।
वापक–(सं. पुं.) बीज बोनेवाला।
वापन–(सं. पुं.) बीज बोना।
वापस–(फा.वि.) प्रत्यावर्तित, लौटा या लौटाया हुआ।
वापसी–(फा. स्त्री.) लौटने या लौटाने की क्रिया या भाव, प्रत्यावर्तन; (वि.) देखें 'वापस'।
वापिका–(सं. स्त्री.) वापी, बावली।
वापित–(सं. वि.) मूँड़ा हुआ, बोया हुआ।
वापी–(सं. स्त्री.) छोटा जलाशय, बावली।
वाम–(सं. वि.) बायाँ, प्रतिकूल, विरुद्ध, खोटा, दुष्ट, नीच, टेढ़ा, कुटिल, बुरा; (पुं.) कामदेव, वरुण, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, धन, कुच, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस अक्षर होते हैं जिसको मकरन्द, माधवी या मंजरी भी कहते हैं, एक रुद्र का नाम; **–देव**–(पुं.) शिव, महादेव, राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम; **–देवी**–(स्त्री.) दुर्गा, सावित्री; **–नेत्र**–(पुं.) बाईं आँख; **–नेत्रा**–(स्त्री.) सुन्दर नेत्रोंवाली स्त्री; **–मार्ग**–(पुं.) एक तान्त्रिक मत जिसमें मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा देवी की पूजा की जाती है; राजनीति में हिंसात्मक क्रांति की समर्थक विचार-धारा; **–मार्गी**–(वि., पुं.) वाममार्ग का समर्थक; **–लोचना**–(स्त्री.) सुन्दरी स्त्री।
वामन–(सं. वि.) छोटे डीलडौल का, नाटा, बौना; (पुं.) विष्णु का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये अदिति के गर्भ से हुआ था, एक पुराण का नाम, विष्णु, शिव, एक दिग्गज का नाम; **–द्वादशी**–(स्त्री.) भादों शुक्ला द्वादशी।
वामना–(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।
वामनिका–(सं. स्त्री.) बौनी स्त्री, स्कन्द की एक मातृका का नाम।
वामनी–(सं. स्त्री.) बौनी स्त्री, घोड़ी; **–कृत**–(वि.) वामन या छोटा किया हुआ।
वामा–(सं. स्त्री.) दुर्गा, स्त्री, एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
वामाक्षी–(सं. स्त्री.) सुन्दर स्त्री।
वामावर्त (र्त्त)–(सं.पुं.) किसी देव-प्रतिमा की बाईं ओर से घूमकर की जानेवाली प्रदक्षिणा।
वामिल–(सं. वि.) पाखंडी, दंभी।
वामी–(सं. स्त्री.) शृगालिका, घोड़ी।
वामेतर–(सं. वि.) बायाँ का उलटा, दाहिना।
वामोरु (रू)–(सं.वि., स्त्री.) सुंदर जाँघों-वाली (स्त्री), सुंदरी स्त्री।
वायक–(सं. पुं.) जुलाहा, बुननेवाला।
वायदंड–(सं. पुं.) जुलाहे की ढरकी।
वायन–(सं. पुं.) विवाहादि के उपलक्ष्य में बनाया हुआ पकवान।
वायवी–(सं. स्त्री.) उत्तर-पश्चिम का कोण।
वायवीय–(सं. वि.) वायु-संबंधी।
वायव्य–(सं. वि.) वायु-संबंधी; (पुं.) पश्चिमोत्तर दिशा जिसका अधिपति वायु है, वायुपुराण, एक अस्त्र का नाम।
वायस–(सं. पुं.) अगर का वृक्ष, काक, कौआ।
वायसतुंड–(सं. पुं.) कौआठोंठी।
वायसांतक–(सं. पुं.) पेचक, उल्लू।
वायसी–(सं. स्त्री.) सफेद घुँघची, कौआ-ठोंठी, छोटी मकोय।
वायु–(सं.स्त्री.) हवा, वात; **–कोण**–(पुं.) पश्चिमोत्तर दिशा; **–गुल्म**–(पुं.) चक्रवात, बवंडर; **–पुत्र**–(पुं.) भीम, हनुमान; **–मंडल**–(पुं.) आकाश; **–लोक**–(पुं.) पुराण के अनुसार एक लोक का नाम, आकाश; **–वाह**–(पुं.) धुआँ; **–सख**–(पुं.) अग्नि; **–सखि**–(पुं.) अग्नि, आग; **–सूनु**–(पुं.) हनुमान।
वारंक–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया।
वारंग–(सं. पुं.) अँकुसी के आकार का एक शस्त्र।
वारंवार–(हिं. अव्य.) देखें 'बारंबार'।
वार–(सं. पुं.) द्वार, अवरोध, रुकावट, आवरण, ढाँपने की वस्तु, क्षण, अवसर, सप्ताह का कोई दिन, बाण, समुद्र या नदी का तट, मद्य पीने का पात्र, दाँव, बारी; (हिं. पुं.) आक्रमण, आघात, चोट, प्रहार; (मुहा.) **–खाली जाना**–युक्ति विफल होना।
वारक–(सं. वि.) निषेध करनेवाला।
वारकन्या–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
वारटा–(सं. स्त्री.) हँसी।
वारण–(सं. पुं.) निषेध, रुकावट, बाधा, हाथी, अंकुश, कवच, हरताल, छप्पय छन्द का एक भेद।
वारणावत–(सं. पुं.) गंगा के किनारे का एक प्राचीन जनपद जहाँ पांडवों को जलाने के लिये दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था।
वारणीय–(सं. वि.) निषेध करने योग्य।
वारणेंद्र–(सं. पुं.) सुन्दर हाथी।
वारतिय–(हिं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
वारद–(हिं. पुं.) मेघ, बादल।
वारन–(हिं. स्त्री.) निछावर, बलि; (पुं.) बंदनवार, तोरण।
वारना–(हिं. क्रि. अ.) उत्सर्ग करना, निछावर करना; (मुहा.) **वारने जाना**–निछावर होना।
वारनारी–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
वारपार–(हिं.पुं.) (नदी, झील आदि के) दोनों किनारे, पूरा विस्तार, इधर-उधर का छोर; (अव्य.) इस किनारे से उस किनारे तक, पूरी चौड़ाई या मोटाई तक।
वार-फेर–(हिं. स्त्री.) निछावर, बलि, वह रुपया-पैसा जो वर तथा वधू के सिर पर से घुमाकर परजुनियों को बाँटा जाता है।
वारमुखी–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
वारमुख्या–(सं. स्त्री.) श्रेष्ठ वारांगना।
वारयितव्य–(सं. वि.) निवारण करने योग्य।
वारयिता–(सं. पुं.) पति, स्वामी।
वारयुवती–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।
वारवधू–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी।

वारवाणि–(सं. पुं.) बंसी बजानेवाला, न्यायाधीश ।
वारविलासिनी, वारसुंदरी, वारस्त्री–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
वारांगणा(ना)–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
वारांनिधि–(सं. पुं.) समुद्र ।
वारा–(हिं. पुं.) लाभ, व्यय की बचत; (वि.) उत्सर्ग या निछावर किया हुआ, सस्ता ।
वाराणसी–(सं. स्त्री.) काशी का प्राचीन नाम ।
वारा-न्यारा–(हिं. पुं.) निर्णय, किसी झगड़े का निपटारा ।
वारालिका–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी ।
वाराह–(सं. पुं.) शूकर, सूअर, देखें 'वराह'; **–पत्री**–(स्त्री.) असगंध ।
वाराही–(सं. स्त्री.) एक मातृका का नाम, एक योगिनी, वाराहीकन्द, कँगनी; **–कंद**–(पुं.) एक प्रकार का बड़ा कंद, गेंठी ।
वारि–(सं. पुं.) जल, पानी, कोई तरल पदार्थ; (स्त्री.) वाणी, सरस्वती, छोटी गगरी; **–कंटक**–(पुं.) सिंघाड़ा; **–कोल**–(पुं.) कछुआ; **–गर्भोदर**–(पुं.) मेघ, बादल; **–चत्वर**–(पुं.) कुम्भिका, सिंघाड़ा; **–चामर**–(पुं.) शैवाल, सेवार; **–ज, –जात**–(पुं., वि.) जल में उत्पन्न, कमल, मछली, शंख, कौड़ी; **–तस्कर**–(पुं.) मेघ, बादल; **–द**–(पुं.) मेघ, बादल, नागरमोथा; **–द्र**–(पुं.) चातक, पपीहा; **–धर**–(पुं.) देखें 'वारिद'; **–धार**–(पुं.) मेघ, बादल; **–धारा**–(स्त्री.) जल की धारा; **–धि, –नाथ–, –निधि**–(पुं.) समुद्र; **–यंत्र**–(पुं.) जलयंत्र; **–राशि**–(पुं.) समुद्र; **–रुह**–(पुं.) कमल; **–वर्त**–(पुं.) एक मेघ का नाम; **–वाह**–(पुं.) मेघ, मोथा; **–श**–(सं. पुं.) विष्णु ।
वारित–(सं. वि.) रोका हुआ ।
वारियाँ–(हिं. स्त्री.) निछावर, बलि; (मुहा.)–जाऊँ–तुम पर निछावर हूँ ।
वारिस–(अ. पुं.) उत्तराधिकारी ।
वारींद्र–(सं. पुं.) समुद्र ।
वारी–(सं. स्त्री.) हाथी बाँधने की सिकड़ी, छोटा गगरा ।
वारीट–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी ।
वारीफेरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'वारफेर', निछावर ।
वारीश–(सं. पुं.) समुद्र ।
वारुण–(सं. पुं.) शतभिषा नक्षत्र, जल, हरताल, एक अस्त्र का नाम; **–कर्म**–(पुं.) जलाशय बनाने का काम ।
वारुणी–(सं. स्त्री.) मदिरा, वरुण की स्त्री, कदंब के फलों से बनाया हुआ मद्य, एक पर्व का नाम, भुइँ-आमला, शतभिषा नक्षत्र, उपनिषद् विद्या, पश्चिम दिशा ।
वारुण्य–(सं. वि.) वरुण-संबंधी ।
वार्क्ष्य–(सं. वि.) वृक्ष-संबंधी ।
वार्णिक–(सं. पुं.) लेखक ।
वार्त्तक–(सं. पुं.) बटेर नामक पक्षी ।
वार्त्ता–(सं. स्त्री.) किंवदन्ती, वृत्तान्त, समाचार, प्रसंग, विषय, बात ।
वार्त्तायन–(सं. पुं.) दूत ।
वार्त्तालाप–(सं. पुं.) बातचीत ।
वार्त्तावह–(सं. पुं.) समाचार ले जानेवाला दूत ।
वार्त्तिक–(सं. पुं.) दूत, चर, आचार-शास्त्र का अध्ययन करनेवाला, व्याख्या, मौलिक ग्रन्थ के अर्थों को स्पष्ट करनेवाला ग्रंथ ।
वार्दर–(सं. पुं.) रेशम, जल, आम की गुठली ।
वार्धक्य–(सं. पुं.) वृद्धि, बढ़ती, बुढ़ापा ।
वार्भट–(सं. पुं.) घड़ियाल ।
वार्वट–(सं. पुं.) नौका, नावों का बेड़ा ।
वार्षभ–(सं. वि.) वृषभ-संबंधी ।
वार्षिक–(सं. वि.) वर्ष-संबंधी, प्रति वर्ष होनेवाला, वर्षा ऋतु का ।
वार्षिकी–(सं. स्त्री.) बेले का फूल, वर्ष में नियमित रूप से होनेवाला समारोह, पूजन आदि ।
वार्ष्णि, वार्ष्णेय–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण ।
वाल–(सं. पुं.) केश, बालक ।
वालक–(सं. पुं.) कंकण, अँगूठी, शिशु, बालक, केश, बाल ।
वालव–(सं. पुं.) ज्योतिष में एक करण का नाम ।
वाला–(सं. स्त्री.) इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक छंद; (हिं. अव्य.) संबंधसूचक प्रत्यय (कर्तृत्व, स्वामित्व आदि का सूचक) ।
वालिका–(सं. स्त्री.) कान में पहनने का एक गहना, बाली ।
वालिद–(अ. पुं.) पिता, बाप ।
वालिदा–(अ. स्त्री.) माता, माँ ।
वाली–(सं. पुं.) सुग्रीव का बड़ा भाई; (हिं. प्रत्य.) 'वाला' का स्त्री लिंग रूप ।
वालुका–(सं. स्त्री.) रेत, बालू, कपूर; **–प्रभा**–(स्त्री.) एक नरक का नाम; **–यंत्र**–(पुं.) औषध बनाने का एक यन्त्र ।
वालेय–(सं. पुं.) गर्दभ, गदहा, पुत्र ।
वाल्कली–(सं. स्त्री.) मदिरा ।
वाल्मीकि–(सं. पुं.) संस्कृत के आदि कवि जिनकी बनाई हुई रामायण अति प्रसिद्ध है ।
वाल्मीकीय–(सं. वि.) वाल्मीकि-संबंधी ।
वावदूक–(सं. वि.) वाग्मी, अच्छा बोलनेवाला ।
वाशन–(सं. पुं.) पक्षियों का बोलना; (वि.) चहचहानेवाला ।
वाशिता–(सं. स्त्री.) हथिनी, मादा हाथी ।
वाशिष्ठ–(सं. वि.) वशिष्ठ-संबंधी; (पुं.) एक उपपुराण का नाम ।
वाशिष्ठी–(सं. स्त्री.) गोमती नदी ।
वाश्र–(सं. पुं.) मन्दिर, चौराहा ।
वाष्प–(सं. पुं.) अश्रु, आँसू, लोहा, भाफ ।
वासंत–(सं. पुं.) ऊँट, कोयल, मूंग ।
वासंतक–(सं. वि.) वसन्त ऋतु-संबंधी ।
वासंतिक–(सं. पुं.) भाँड़, विदूषक, नाचनेवाला; (वि.) वसंत-संबंधी ।
वासंती–(सं. स्त्री.) माधवी लता, जूही, मदनोत्सव, दुर्गा, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते हैं ।
वास–(सं. पुं.) अवस्थान, गृह, घर ।
वासक–(सं. पुं.) वासर, दिन, ध्रुवक राग का एक भेद, अड़सा; **–सज्जा**–(स्त्री.) वह नायिका जो अपने प्रियतम से मिलने के लिये शृंगार करके उसकी बाट देखती हो ।
वासगृह–(सं. पुं.) शयनागार, सोने का कमरा, अन्तःपुर ।
वासगेह–(सं. पुं.) देखें 'वासगृह' ।
वासतेय–(सं. वि.) बसने योग्य ।
वासन–(सं. पुं.) धूप आदि से सुगन्धित करना, वस्त्र, ज्ञान ।
वासना–(सं. स्त्री.) ज्ञान, संस्कार, कामना, इच्छा, अर्क की पत्नी का नाम, दुर्गा; (हिं. क्रि. स.) देखें 'बासना' ।
वासप्रासाद–(सं. पुं.) रहने योग्य महल ।
वासभवन–(सं. पुं.) वासगृह ।
वासभूमि–(सं. स्त्री.) वासस्थान ।
वासर–(सं. पुं.) दिवस, दिन ।
वासरकन्यका–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात ।
वासरकृत, वासरमणि–(सं. पुं.) सूर्य ।
वासरसंग–(सं. पुं.) प्रातःकाल ।
वासराधीश, वासरेश–(सं. पुं.) सूर्य ।
वासव–(सं. पुं.) धनिष्टा नक्षत्र, इन्द्र ।
वासवज–(सं. पुं.) वासव का पुत्र अर्जुन ।
वासवि–(सं. पुं.) इन्द्र का पुत्र अर्जुन

वासवी–(सं. स्त्री.) व्यास की माता सत्यवती।
वास-वेश्म–(सं. पुं.) रहने का घर।
वासा–(सं. वि.) माधवी लता, अड़ूसा।
वासि–(सं. पुं.) कुठार, वसूला।
वासित–(सं. वि.) सुगन्धित किया हुआ, वस्त्र से ढपा हुआ, वासी।
वासिता–(सं. स्त्री.) हथिनी, स्त्री, आर्या छन्द का एक भेद।
वासिल–(अ. वि.) प्राप्त, वसूल।
वासिष्ठ–(सं. वि.) वसिष्ठ-संबंधी; (पुं.) रुधिर।
वासी–(स. वि.) बसनेवाला, रहनेवाला; (स्त्री.) बढ़ई का वसूला।
वासु–(सं. पुं.) विष्णु, पुनर्वसु नक्षत्र।
वासुकि(की)–(सं. पुं.) एक नागराज का नाम।
वासुदेव–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण, अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।
वासुभद्र–(सं. पुं.) वासुदेव।
वासुरा–(सं. स्त्री.) हाथी, रात्रि, भूमि।
वास्तव–(सं. वि.) सत्य, यथार्थ; **–में** सचमुच।
वास्तविक–(सं. वि.) प्रकृत, यथार्थ, सत्य, ठीक।
वास्तव्य–(सं. वि.) बसने या रहने योग्य, बसनेवाला; (पुं.) बस्ती।
वास्तु–(सं. पुं.) वह स्थान जिस पर घर बनाया जाता है, घर; **–पति**–(पुं.) वास्तु का अधिष्ठाता देवता; **–परीक्षा**–(स्त्री.) वास्तु का शुभाशुभ विचार; **–पूजा**–(स्त्री.) वास्तु-पति की पूजा जो नये बने हुए घर में प्रवेश करने पर की जाती है; **–याग**–(पुं.) गृह-प्रवेश के समय किया जानेवाला याग; **–विद्या**–(स्त्री.) गृह-निर्माण की कला; **–शांति**–(स्त्री.) गृह-प्रवेश के समय किया जानेवाला शांति-कर्म; **–शास्त्र**–(पुं.) गृहनिर्माण-विद्या।
वास्तूक–(सं. पुं.) बथुआ का साग।
वास्ते–(अ. अव्य.) के लिए, के हेतु।
वाह–(सं. पुं.) वाहन, सवारी, बैल, भैंसा, वायु; (फा. अव्य.) आश्चर्य, प्रशंसा आदि भावसूचक अव्यय, धन्य, शाबाश; **–वाह**–(अव्य.) धन्य-धन्य, क्या कहना है; **–वाही**–(स्त्री.) साधु-वाद, प्रशंसा।
वाहक–(सं. पुं.) बोझ ढोने या ले जानेवाला, सारथी।
वाहन–(सं. पुं.) यान; **–ता**–(स्त्री.) वाहन का कार्य या धर्म; **–प**–(पुं.) मारवाही पशु की देखरेख करनेवाला।
वाहनिक–(सं. वि.) बोझ ढोकर जीविका निर्वाह करनेवाला।
वाहनीय–(सं. वि.) वहन करने योग्य।
वाहरिपु–(सं. पुं.) महिष, भैंसा।
वाहिक–(सं. पुं.) गाड़ी, छकड़ा।
वाहित–(सं. वि.) वहन किया हुआ।
वाहिनी–(सं. स्त्री.) सेना, सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ अश्व तथा ४०५ पैदल सिपाही होते थे।
वाहिनीपति–(सं. पुं.) सेनापति।
वाहियात–(फा. वि.) व्यर्थ, निरर्थक, बेकार, रद्दी।
वाही–(सं. वि.) वहन करनेवाला, बहानेवाला।
वाहु–(सं. स्त्री.) भुजदण्ड, रेखागणित में किसी क्षेत्र की रेखा, भुजा; **–मूल**–(पुं.) काँख।
वाहुल–(सं. पुं.) कार्तिक मास।
वाहुल्य–(सं. पुं.) अधिकता, आधिक्य।
वाह्य–(सं. पुं.) सवारी; (वि.) ढोया या चढ़ा जानेवाला; **–क**–(पुं.) वाहक, गाड़ी, छकड़ा; **–त्व**–(पुं.) वाह्य का भाव या धर्म।
वाह्यांतर–(सं. वि.) भीतर और बाहर का।
वाह्येंद्रिय–(सं. पुं.) शरीर की पाँचों इन्द्रियाँ, यथा–आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।
वाह्लीक–(सं. पुं.) भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर का एक प्राचीन जनपद, इस देश का घोड़ा, कुंकुम, केशर, एक गन्धर्व का नाम।
विंद–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, प्राप्ति, लाभ; (हि. पुं.) देखें 'विंदु'।
विंदक–(सं. पुं.) ज्ञाता, जानकार, प्राप्त करनेवाला।
विंदु–(सं. पुं.) जलकण, बूँद, बुंदकी, अनुस्वार, शून्य, कण, कनी, छोटा टुकड़ा; **–चित्रक**–(पुं.) सफेद चित्तियों का हरिन; **–तंत्र**–(पुं.) चौपड़ आदि की बिसात; **–पत्र**–(पुं.) भोज-पत्र; **–माधव**–(पुं.) काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु-मूर्ति का नाम।
विंदुर–(हि. पुं.) छोटी बिंदी, बुँद की।
विंदुल–(सं. पुं.) एक कीड़ा जिसके स्पर्श से शरीर पर फफोले पड़ जाते है।
विंदुसार–(सं. पुं.) चन्द्रगुप्त के एक पुत्र का नाम, (सम्राट् अशोक इन्ही के पुत्र थे।)
विंध–(हि. पुं.) देखें 'विंध्य'।
विंध्य–(सं. पुं.) भारत के मध्य भाग सीमा पर का एक प्रसिद्ध पर्वत; **–कूट**–(पुं.) अगस्त्य मुनि का एक नाम; **–वासिनी**–(स्त्री.) देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जापुर के पास अवस्थित है।
विंध्याचल–(सं. पुं.) विंध्य पर्वत।
विंध्यावली–(सं. स्त्री.) राजा बलि की पत्नी का नाम।
विंब–(सं. पुं.) देखें 'बिंब'।
विंश–(सं. वि.) बीसवाँ।
विंशति–(सं. स्त्री.) बीस की संख्या; **–बाहु**–(पुं.) रावण।
विंशतीश–(सं. पुं.) बीस गाँवों का स्वामी।
विंशोत्तरी–(सं. स्त्री.) फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य का शुभाशुभ जानने की एक रीति।
वि–(सं. उप.) यह विशेष, निषेध, वैरूप्य आदि अर्थों में शब्दों के आदि में लगाया जाता है; (पुं.) आकाश, नेत्र, अन्न।
विकंकत–(सं. पुं.) एक जंगली वृक्ष, कंटकारी।
विकंपन–(सं. पुं.) कँपकँपी।
विकंपित–(सं. वि.) काँपता हुआ, चंचल।
विक–(सं. पुं.) तुरत की ब्यायी हुई गाय का दूध, पीयूष।
विकच–(सं. वि.) केशरहित।
विकट–(सं. वि.) विकराल, भयंकर, विशाल, दुर्गम, दुःसाध्य, टेढ़ा, वक्र, कठिन; **–त्व**–(पुं.), **–ता**–(स्त्री.) विकरालता; **–मूर्ति**–(वि.) भयंकर आकृतिवाला; **–वदन**–(पुं.) भयंकर मुख; **–विषाण**–(पुं.) साँभर मृग।
विकटाक्ष–(सं. पुं.) विकराल आँखोंवाला।
विकटानन–(सं. वि.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) जिसकी आकृति भद्दी हो।
विकत्थन–(सं. पुं.) झूठी आत्म-प्रशंसा।
विकत्थना–(सं. स्त्री.) आत्मश्लाघा।
विकत्था–(सं. स्त्री.) आत्मप्रशंसा।
विकथा–(सं. स्त्री.) बेकार बात।
विकर–(सं. पुं.) व्याधि, रोग, तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।
विकरार–(हि. वि.) विकराल, भयंकर, भीषण, डरावना, व्याकुल।
विकराल–(सं. वि.) भयंकर, डरावना; **–ता**–(स्त्री.) भयंकरता।
विकर्ण–(सं. पुं.) दुर्योधन के एक भाई का नाम।
विकर्णक–(सं. पुं.) शिव के एक गण का नाम।

विकर्तन–(सं. पुं.) सूर्य, मदार का क्षुप ।
विकर्म–(सं. पुं.) निषिद्ध-कर्म, दुराचरण ।
विकर्षण–(सं. पुं.) आकर्षण, खींचना, नाश, वह शास्त्र जिसमें आकर्षण-संबंधी तत्वों का वर्णन हो ।
विकल–(सं. वि.) व्याकुल, बेचैन, अ-समर्थ, खंडित, टूटा-फूटा; –**ता**–(स्त्री.) व्याकुलता ।
विकलांग–(सं. वि.) जिसका कोई अंग कम, अधिक या टूटा-फूटा हो ।
विकला–(सं. स्त्री.) कला का साठवाँ भाग, अति सूक्ष्म काल, वह स्त्री जिसका ऋतुधर्म बंद हो गया हो ।
विकलाना–(हि. क्रि. अ.) व्याकुल होना ।
विकलास–(सं. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा ।
विकलित–(सं. वि.) व्यग्र, व्याकुल ।
विकली–(सं. स्त्री.) ऋतुहीना स्त्री ।
विकलेंद्रिय–(सं. वि.) जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में न हों ।
विकल्प–(सं.पुं.) भ्रान्ति, धोखा, विभिन्नता, चित्त में किसी बात को स्थिर करके उसके विरुद्ध सोचना, विरुद्ध कल्पना, अनेक नियमों आदि में से एक को ग्रहण करना, योग के अनुसार एक प्रकार की चित्त-वृत्ति, वह काव्यालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों में से एक का होना कहा जाता है, विचित्रता, व्याकरण में किसी नियम के दो या अधिक भेदों में से इच्छानुसार किसी एक का ग्रहण ।
विकल्पित–(सं.वि.) अनियमित, संदिग्ध ।
विकल्पी–(सं. वि.) विकल्पयुक्त ।
विकल्मष–(सं. वि.) पापरहित ।
विकवच–(सं. वि.) कवचरहित ।
विकश्वर–(सं. वि.) विकासशील ।
विकस–(सं. पुं.) चन्द्रमा ।
विकसन–(सं. पुं.) फूटना, खिलना ।
विकसना–(हि.क्रि.अ.) विकसना, खिलना ।
विकसित–(सं. वि.) फुल्ल, खिला हुआ ।
विकस्वर–(सं. वि.) विकास होनेवाला, खिलनेवाला; (पुं.) वह काव्यालंकार जिसमें पहले कोई बात कही जाती है और बाद में किसी सामान्य बात से उसकी पुष्टि की जाती है ।
विकार–(सं. पुं.) किसी वस्तु के रूप, रंग आदि में परिवर्तन, विकृति, बुराई, दोष, चित्त की सदोष प्रवृत्ति, वासना, परिणाम, अवगुण ।
विकारी–(सं. वि.) विकारयुक्त, बुरी वासनावाला, जिसमें उलट-फेर हुआ हो; (पुं.) एक संवत्सर का नाम ।
विकाल–(सं. पुं.) अतिकाल, देर ।
विकाश–(सं.पुं.) विस्तार, बढ़ती, फैलाव, प्रकाश, आकाश, खिलना, किसी वस्तु की वृद्धि के क्रम में उसके रूप, आकार आदि में धीरे-धीरे परिवर्तन होना ।
विकाशक–(सं.वि.) विकाश करनेवाला ।
विकाशन–(सं. पुं.) विकाश, खिलना ।
विकाशी–(सं. वि.) विकाश करनेवाला ।
विकास–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव, पुष्प आदि का खिलना, क्रमशः उन्नति करना ।
विकासन–(सं. पुं.) प्रकाशन, प्रदर्शन ।
विकासना–(हि.क्रि.अ.,स.) प्रकट करना, विकसित करना, विकसना, खिलना ।
विकिर–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, कुआँ ।
विकिरण–(सं.पुं.) रश्मियों का छितराना ।
विकीर्ण–(सं. वि.) प्रसिद्ध, चारों ओर फैला हुआ; (पुं.) स्वर के उच्चारण का एक दोष ।
विकुंठ–(सं. पुं.) देखें 'वैकुंठ', स्वर्ग ।
विकुंठन–(सं. पुं.) दुर्बलता ।
विकुंडल–(सं. वि.) कुंडलरहित ।
विकुक्षि–(सं. वि.) तोंदवाला ।
विकुत्सा–(सं. स्त्री.) अत्यधिक निन्दा ।
विकुर्वित–(सं. पुं.) विभिन्न रूप धारण करना ।
विकूजन–(सं. पुं.) पक्षियों का शब्द करना ।
विकूबर–(सं. वि.) सुन्दर, मनोहर ।
विकृत–(सं. वि.) विगड़ा हुआ, कुरूप, भद्दा, जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो, अपूर्ण, अधूरा, असाधारण, विचित्र, रोगी, विद्रोही; (पुं.) एक संवत्सर का नाम; –**दृष्टि**–(पुं.) तिरछी दृष्टिवाला, ऐंचाताना ; –**स्वर**–(पुं.) संगीत में वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी जगह ठहरता हो ।
विकृति–(सं. स्त्री.) विकार, विगाड़, मन का क्षोभ, शत्रुता, परिवर्तन, उन्नति, तेईस वर्णों के एक वृत्त का नाम ।
विकृष्ट–(सं. वि.) आकृष्ट, खींचा हुआ ।
विकेशी–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, पूतना नामक राक्षसी ।
विक्रम–(सं. पुं.) विष्णु, बल या शक्ति की अधिकता, पराक्रम, गति, ढंग, एक संवत्सर का नाम, राजा विक्रमादित्य ।
विक्रमण–(सं. पुं.) पादविक्षेप, चलना ।
विक्रमाजीत–(हि. पुं.) विक्रमादित्य ।
विक्रमादित्य–(सं. पुं.) उज्जयिनी के एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा का नाम, (ये बड़े विद्याप्रेमी, उदार और गुणग्राहक थे । ऐसा विश्वास है कि विक्रम संवत् इन्हीं का चलाया हुआ है ।)
विक्रमाब्द–(सं. पुं.) विक्रमादित्य का चलाया हुआ संवत् ।
विक्रमी–(हि. वि.) वीर, पराक्रमी; (पुं.) विष्णु, सिंह ।
विक्रय–(सं. पुं.) बेचने का कार्य, बिक्री; –**क**–(पुं.) विक्रेता, बेचनेवाला; –**ण**–(पुं.) बिक्री; –**पत्र**– (पुं.) बिक्री का परचा या चिट्ठा ।
विक्रयी–(सं. पुं.) बेचनेवाला ।
विक्रांत–(सं. वि.) तेजस्वी, प्रतापी, शूरवीर; (पुं.) चलने का ढंग, साहस, एक प्रजापति का नाम, हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम ।
विक्रांता–(सं.स्त्री.) हंसपदी लता, अड़हुल ।
विक्रांति–(सं. स्त्री.) शूरता, वीरता, घोड़े की एक चाल ।
विक्रायक–(सं. वि.) बेचनेवाला, विक्रेता ।
विक्रियोपमा–(सं. स्त्री.) वह उपमा-लंकार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया का वर्णन होता है ।
विक्री–(हि. स्त्री.) बेचने की क्रिया या भाव, बिक्री ।
विक्रीत–(सं. वि.) बेचा हुआ ।
विक्रेता–(सं.पुं.) बेचने या बिक्री करनेवाला ।
विक्रेय–(सं. वि.) बिकनेवाला. बिकने योग्य ।
विक्लिष्ट–(सं. वि.) बहुत थका हुआ, क्षतिग्रस्त ।
विक्लेद–(सं. पुं.) आर्द्रता, गीलापन ।
विक्लेश–(सं. पुं.) बड़ा कष्ट ।
विक्षत–(सं. वि.) बुरी तरह से घायल ।
विक्षाव–(सं. पुं.) शब्द, ध्वनि ।
विक्षिप्त–(सं. वि.) फेंका हुआ, छितराया हुआ, व्याकुल, पागल; (पुं.) योग में चित्तवृत्ति का अस्थिर होना; –**ता**–(स्त्री.) पागलपन ।
विक्षुब्ध–(सं. वि.) जिसका मन अशांत या चंचल हो ।
विक्षेप–(सं. पुं.) इधर-उधर फेंकना या छितराना, चित्त को इधर-उधर भट-काना, एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, बाधा, विघ्न, एक प्रकार का रोग, धनुष की डोरी चढ़ाना ।
विक्षेपण–(सं. पुं.) इधर-उधर फेंकने का काम, चित्त की उद्विग्नता ।
विक्षोभण–(सं.पुं.) क्षोभ, हिलाना, फाड़ना ।
विक्षोभी–(सं. वि.) क्षोभ या दुःख उत्पन्न करनेवाला ।

विखंडी–(सं.वि.) खंड या टुकड़े करनेवाला।
विख–(हिं.पुं.) देखें 'विष'।
विखनन–(सं. पुं.) खोदने का काम।
विखनस्–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
विखहा–(हिं. पुं.) विषहा।
विखादितक–(सं.पुं.) पशुओं द्वारा खाया हुआ शव।
विखान–(हिं. पुं.) देखें 'विषाण', सींग।
विखानस–(सं. पुं.) एक मुनि।
विखाना–(सं. स्त्री.) जिह्वा, जीभ।
विखायँध–(हिं. स्त्री.) कड़वी गन्ध।
विख्यात–(सं. वि.) प्रसिद्ध।
विख्याति–(सं. स्त्री.) विख्यात होने का भाव, प्रसिद्धि।
विगंध–(सं. वि.) दुर्गन्ध, गन्धहीन, जिसमें किसी प्रकार की गन्ध न हो।
विगणन–(सं. पुं.) हिसाब करना, लेखा करना।
विगत–(सं. वि.) जो बीत गया हो, पहले का, जो चला गया हो, विना प्रभा का, रहित; **–भय**–(वि.) निर्भीक, निडर; **–शोक**–(वि.) शोकरहित; **–श्री**–(वि.) श्रीरहित; **–स्पृह**–(वि.) देखें 'निःस्पृह'।
विगता–(सं.स्त्री.) वह स्त्री जो परपुरुष से प्रेम करती हो।
विगति–(सं. स्त्री.) दुर्गति, दुर्दशा।
विगम–(सं. पुं.) अन्त, नाश, मृत्यु।
विगर्भा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका गर्भपात हुआ हो।
विगर्हण–(सं. पुं.) निन्दा।
विगर्हणा–(सं. स्त्री.) निंदा, डाँट-डपट, धिक्कार।
विगर्हित–(सं. वि.) निन्दनीय, जिसको डांट-फटकार सुनाई गई हो।
विगर्ही–(सं. वि.) निन्दाकारक।
विगलन–(सं. पुं.) नाश।
विगलित–(सं. वि.) जो गिर गया हो, जो ढीला पड़ गया हो, विगड़ा हुआ, शिथिल।
विगाथा–(सं. स्त्री.) आर्या छन्द का एक भेद, (इसका दूसरा नाम उद्गीति है।)
विगाह–(सं. पुं.) अवगाहन, स्नान।
विगाहन–(सं. पुं.) देखें 'विगाह'।
विगाहमान–(सं. वि.) स्नान करनेवाला।
विगाहा–(हिं. स्त्री.) आर्या छन्द का एक भेद।
विगीत–(सं. वि.) गर्हित, निन्दित।
विगीति–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
विगुण–(सं. वि.) विकृत, गुणहीन; **–ता**–(स्त्री.) गुणहीनता।
विगूढ़–(सं. वि.) निन्दित, गुप्त।
विगृहीत–(सं. वि.) अलग किया हुआ।
विग्रह–(सं. पुं.) विभाग, दूर करना, व्याकरण में यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों को अलग करना, युद्ध, कलह, झगड़ा, आकृति, मूर्ति, शरीर, शृंगार, सजावट।
विग्रहण–(सं. पुं.) रूप धारण करना, विभाजन।
विग्रही–(सं. वि.) युद्ध करनेवाला, लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।
विघटन–(सं. पुं.) तोड़ना-फोड़ना, अलगाना।
विघटित–(सं. वि.) तोड़ा-फोड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ।
विघन–(हिं. पुं.) देखें 'विघ्न'; (सं. पुं.) एक प्रकार का वड़ा हथौड़ा।
विघर्षण–(सं. पुं.) रगड़ना, घिसना।
विघात–(सं. पुं.) आघात, प्रहार, चोट, नाश।
विघातक–(सं. वि.) नाश करनेवाला, वाधक।
विघातन–(सं. पुं.) हत्या।
विघाती–(सं. वि.) हत्या करनेवाला, हत्यारा, आघात करनेवाला।
विघूर्णन–(सं. पुं.) चारों ओर घुमाना, चक्कर देना।
विघ्न–(सं. पुं.) वाधा, रुकावट, अड़चन, कठिनाई; **–क, –कर**–(वि.) वाधा डालनेवाला; **–कारी**–(वि.) विघ्न डालनेवाला; **–नायक**–(पुं.) गणश; **–नाशक**–(पुं.) गणेश।
विघ्नेश–(सं. पुं.) गणेश।
विघ्नेशवाहन–(सं. पुं.) मूषक, चूहा।
विघ्नेश्वर–(सं. पुं.) गणेश।
विचंद्र–(सं. वि.) चन्द्ररहित।
विचंद्रा–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात।
विचकित–(सं. वि.) घवड़ाया हुआ।
विचकिल–(सं. पुं.) दौने का पौधा, एक प्रकार की चमेली।
विचक्षण–(सं. वि.) चमकता हुआ, निपुण, चतुर, वुद्धिमान्, पंडित, जो स्पष्ट दिखाई पड़ता हो।
विचच्छन–(हिं. वि.) देखें 'विचक्षण'।
विचक्षु–(सं. वि.) जिसकी आँख नष्ट हो गई हो।
विचय–(सं. पुं.) एकत्र करना, परीक्षा करना।
विचयन–(सं. पुं.) इकट्ठा करना।
विचरण–(सं. पुं.) घूमना-फिरना, चलना।
विचरन–(हिं. पुं.) विचरण।
विचरना–(हिं. क्रि.अ.) घूमना-फिरना, चलना।
विचरनि–(हिं. स्त्री.) चलने-फिरने की क्रिया।
विचल–(सं. वि.) अस्थिर, हिलता-डोलता हुआ, डिगा हुआ, हटा हुआ; **–ता**–(स्त्री.) अस्थिरता, चंचलता।
विचलना–(हिं. क्रि. अ.) अपने स्थान से हट जाना, अधीर होना, प्रतिज्ञा से डिगना।
विचलाना–(हिं.क्रि.स.) विचलित करना, इधर-उधर हटाना।
विचलित–(सं. वि.) अस्थिर, चंचल, डिगा हुआ, अपनी प्रतिज्ञा से डिगा हुआ।
विचार–(सं.पुं.) मन में उत्पन्न होनेवाली वात, भाव आदि, भावना, न्यायालय का वादी-प्रतिवादी के मुकदमे का निर्णय; **–क**–(पुं.) विचार करनेवाला, न्यायाधीश, नेता, जासूस; **–ज्ञ**–(पुं.) निर्णय करनेवाला; **–ण**–(पुं.) विचार, मीमांसा; **–णा**–(स्त्री.) विचार करने की क्रिया या भाव; **–णीय**–(वि.) विचार करने योग्य; **–पति**–(पुं.) न्यायाधीश; **–वान्**–(वि.) जिसमें विचारने की शक्ति हो, विचारशील; **–शक्ति**–(स्त्री.) भला-वुरा समझने की शक्ति; **–शास्त्र**–(पुं.) मीमांसा-शास्त्र; **–शील**–(वि.) देखें 'विचारवान्'; **–०ता**–(स्त्री.) वुद्धिमानी; **–स्थल**–(पुं.) न्यायालय, न्यायस्थल।
विचारना–(हिं. क्रि. स.) सोचना, समझना, ढूँढ़ना, पता लगाना।
विचाराध्यक्ष–(सं. पुं.) न्यायाधीश।
विचारालय–(सं.पुं.) न्यायालय, विचार-स्थल।
विचारित–(सं.वि.) सोचा-विचारा हुआ।
विचारी–(सं.वि.,पुं.) विचरण करनेवाला, इधर-उधर घूमनेवाला, विचार करनेवाला, कवन्ध के एक पुत्र का नाम।
विचार्य–(सं. वि.) विचारणीय, विचार करने योग्य; **–माण**–(वि.) विचार करने योग्य।
विचालन–(सं.पुं.) नष्ट करना, हटाना, चलाना।
विचिंतन–(सं.पुं.) चिन्ता करना, सोचना।
विचिंतनीय–(सं. वि.) सोचने योग्य।

विचिंता–(सं. स्त्री.) सोच-विचार ।
विचिंतित–(सं.वि.) सोचा-विचारा हुआ ।
विचिंत्य–(सं. वि.) विचार करने योग्य, जिसमें किसी प्रकार का सन्देह हो ।
विचिंत्यमान–(सं.वि.) विचार किया हुआ।
विचिकित्सा–(सं. स्त्री.) अनिश्चय, सन्देह ।
विचित–(सं.वि.) जिसका अनुसंधान किया गया हो ।
विचिति–(सं. स्त्री.) अनुसंधान ।
विचित्ति–(सं. पुं.) चित्त ठिकाने न रहने की अवस्था ।
विचित्र–(सं. वि.) अनेक रंगों का, विलक्षण, असाधारण, चकित करनेवाला, रमणीय, सुन्दर; (पुं.) वह अलंकार जिसमें किसी फल की सिद्धि के लिये किसी विपरीत प्रयत्न का वर्णन रहता है; **–ता**–(स्त्री.) विलक्षणता, अद्‌भुत होने का भाव; **–देह**–(पुं.) मेघ, बादल; **–वीर्य**–(पुं.) चन्द्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र का नाम; **–शाला**–(स्त्री.) अजायबघर ।
विचित्रा–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
विचित्रित–(सं. वि.) रंग-बिरंगा ।
विचूर्णन–(सं. पुं.) बुकनी करना ।
विचूर्णित–(सं.वि.) बारीक चूर्ण किया हुआ।
विचेतन–(सं. वि.) अचेत ।
विचेता–(सं.वि.) व्यग्र, घबड़ाया हुआ ।
विचेष्टन–(सं. पुं.) इधर-उधर लोटना, तड़पना ।
विचेष्टा–(सं. स्त्री.) प्रयत्न, कुचेष्टा ।
विचेष्टित–(सं.वि.) जिसके लिए प्रयत्न किया गया हो; (पुं.) क्रिया, व्यापार ।
विच्छंद–(सं. पुं.) देवालय, मन्दिर ।
विच्छित्ति–(सं. स्त्री.) काटकर टुकड़े अलगाना, त्रुटि, कमी, अलगाव, एक प्रकार का हार, साहित्य में वह हाव जिसमें नायिका थोड़े ही शृंगार से पुरुष को मोहित करने का प्रयत्न करती है ।
विच्छिन्न–(सं. वि.) विभक्त, काटकर अलगाया हुआ, पृथक्, अलग, जिसका अन्त किया जा चुका हो ।
विच्छेद–(सं. पुं.) विरह, वियोग, नाश, काटने या अलगाने की क्रिया, क्रम का बीच में खंडित होना; टुकड़े-टुकड़े करना, बीच में पड़नेवाला खाली स्थान, कविता में यति ।
विच्छेदक–(सं. वि., पुं.) काटकर अलग करनेवाला, विभाजक ।
विच्छेदन–(सं. पुं.) अलग करने की क्रिया, नाश ।
विच्छेदनीय–(सं. वि.) काटकर अलगाने योग्य, विभाग करने योग्य ।
विच्छेदी–(सं. वि.) काटनेवाला ।
विच्छेद्य–(सं. वि.) विच्छेदनीय ।
विच्युत–(सं. वि.) अपने स्थान से गिरा या हटा हुआ ।
विछलना–(हिं. क्रि. अ.) विचलित होना, फिसलना ।
विछेद–(हिं. पुं.) वियोग, विछोह, प्रिय से अलग होना ।
विछोई–(हिं. विं.) जिसका अपने प्रिय से वियोग हुआ हो, वियोगी ।
विछोह–(हिं. पुं.) वियोग, प्रिय से अलग होना ।
विजंघ–(सं. वि.) विना जाँघ का ।
विजई–(हिं. वि., पुं.) देखें 'विजयी' ।
विजन–(सं. वि.) जनशून्य, एकान्त; (पं.) निर्जन स्थान, पंखा, बेना; **–ता**–(स्त्री.) एकान्तता ।
विजनन–(सं. पुं.) जनन करने की क्रिया, प्रसव ।
विजना–(हिं. पुं.) पंखा, बेना ।
विजन्मा–(सं. पुं.) किसी स्त्री का उसके उपपति से जनमा हुआ पुत्र, जारज, दोगला ।
विजयंती–(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम ।
विजय–(सं. स्त्री.) जय, जीत; (पुं.) सवैया छन्द का एक भेद; **–कंटक**–(पुं.) विजय में विघ्न डालनेवाला; **–कृ**–(वि.) सर्वदा जीतनेवाला; **–कुंजर**–(पुं.) राजा की सवारी का हाथी; **–केतु**–(पुं.) विजय-पताका; **–डिंडिम**–(पुं) लड़ाई में बजाने का एक प्राचीन नगाड़ा; **–पताका**–(स्त्री.) वह झंडा जो सेना के विजय प्राप्त करने पर फहराया जाता है; **–पूर्णिमा**–(स्त्री.) आश्विन की पूर्णिमा; **–यात्रा**–(स्त्री.) वह यात्रा जो विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय; **–लक्ष्मी**–(स्त्री.) विजय की अधिष्ठात्री देवी; **–श्री**–(स्त्री.) विजयलक्ष्मी; **–सार**–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी अनेक इमारती कामों में लगती है ।
विजया–(सं. स्त्री.) दुर्गा, यम की भार्या का नाम, भाँग, एक ओषधि, मजीठ, श्रीकृष्ण की माला का नाम, एक योगिनी का नाम, एक मात्रिक छन्द का नाम; **–एकादशी**–(स्त्री.) आश्विन शुक्ला एकादशी ; **–दशमी**–(स्त्री.) आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्योहार होता है ।
विजयानंद–(सं. पुं.) संगीत के एक ताल का नाम ।
विजयी–(सं.वि.,पुं.) (वह) जिसने विजय प्राप्त की हो, जीतनेवाला, अर्जुन का एक नाम।
विजयेश–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
विजयोत्सव–(सं. पुं.) विजया-दशमी को होनेवाला उत्सव ।
विजर–(सं. वि.) जरारहित, जिसको बुढ़ापा न ग्रसे ।
विजर्जर–(सं. वि.) अत्यन्त जर्जर ।
विजल–(सं. पुं.) वर्षा न होना, सूखा पड़ना ।
विजल्प–(सं. पुं.) व्यर्थ बात, बकवाद ।
विजाग–(हिं. पुं.) वियोग ।
विजागी–(हिं. वि., पुं.) वियोगी ।
विजात–(सं. वि.) वर्णसंकर, दोगला ।
विजाता–(सं. स्त्री.) जिस स्त्री को हाल में बच्चा हुआ हो ।
विजाति–(सं. वि.) भिन्न जाति का ।
विजातीय–(सं. वि.) जो भिन्न जाति का हो ।
विजानु–(सं. पुं.) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों में से एक ।
विजार–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मटिया भूमि ।
विजारत–(अ. स्त्री.) मंत्री का पद, कार्य-भार आदि ।
विजिगीषा–(सं. पुं.) विजय प्राप्त करने की अभिलाषा, उत्कर्ष, उन्नति ।
विजित–(सं. वि.) जीता हुआ; (पुं.) जीता हुआ प्रदेश ।
विजितात्मा–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
विजिताश्व–(सं. पुं.) राजा पृथु के एक पुत्र का नाम ।
विजिति–(सं. स्त्री.) विजय, जीत ।
विजित्वर–(सं. पुं.) जीतनेवाला ।
विजिहीर्षा–(सं. स्त्री.) विहार करने की इच्छा ।
विजिह्म–(सं. वि.) वक्र, कुटिल ।
विजीष–(सं. वि.) जिसको विजय प्राप्त करने की अभिलाषा हो ।
विजृंभण–(सं. पुं.) जँभाई लेना, भौंह सिकोड़ना ।
विजृंभा–(सं. स्त्री.) जँभाई ।

विजृंभित–(सं. वि.) व्याप्त, विकसित।
विजेतव्य–(सं. वि.) जो जीतने योग्य हो।
विजेता–(सं. पुं.) विजय करनेवाला, जीतनेवाला।
विजेय–(सं. वि.) जीते जाने योग्य।
विजै–(हिं. स्त्री.) देखें 'विजय'; **–सार**–(पुं.) देखें 'विजयसार'।
विजोहा–(हिं. पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे ६ अक्षर होते है, (इसको विमोहा भी कहते हैं।)
विज्जु–(हिं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली।
विज्जुल–(हिं. पुं.) त्वचा, छिलका।
विज्जुलता–(हिं. स्त्री.) विद्युल्लता, बिजली।
विज्जोहा–(हिं. पुं.) देखें 'विजोहा'।
विज्ञ–(सं. वि., पुं.) बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान्; **–ता**–(स्त्री.) पाण्डित्य, बुद्धिमानी।
विज्ञात–(सं. वि.) सूचित किया हुआ, बतलाया हुआ।
विज्ञप्ति–(सं. स्त्री.) विज्ञापन।
विज्ञात–(सं. वि.) प्रसिद्ध।
विज्ञातव्य–(सं. वि.) जानने योग्य।
विज्ञाता–(सं. पुं.) जाननेवाला।
विज्ञान–(सं. पुं.) ज्ञान, किसी विषय के सिद्धान्तों का विशेष रूप से विवेचित ज्ञान, क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान, कार्य में कुशलता, ब्रह्म, आत्मा, आकाश, मोक्ष, निश्चयात्मक बुद्धि; **–कोश**–(पुं.) वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि; **–ता**–(स्त्री.) विज्ञान का अवलंबन; **–पति**–(पुं.) परम ज्ञानी; **–पाद**–(पुं.) वेदव्यास का एक नाम; **–मयकोष**–(पुं.) बुद्धि तथा ज्ञानेन्द्रियों का समूह; **–वाद**–(पुं.) वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता मानी जाती है, विज्ञान के उत्कष का समर्थन; **–वादी**–(पुं.) विज्ञानवाद का अनुयायी।
विज्ञानिक–(सं.वि.,पुं.) देखें 'वैज्ञानिक'।
विज्ञानी–(सं. पुं.) वह जिसको किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक।
विज्ञापक–(सं. पुं.) समझाने या बतलानेवाला, विज्ञापन करनेवाला।
विज्ञापन–(सं.पुं.) किसी बात को जताने की क्रिया, सूचना देना, वह पत्र जिसके द्वारा कोई बात सूचित की जाती है।
विज्ञापित–(सं. वि.) जिसका विज्ञापन किया गया हो।
विज्ञेय–(सं. वि.) जानने या समझने योग्य।
विटंक–(सं. पुं.) कबूतर का दरबा; (वि.) सुन्दर।
विट–(सं. पुं.) लम्पट, कामुक, धूर्त, चतुर, वह व्यक्ति जो अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति भोगविलास में नष्ट कर चुका हो, नायक का सखा जो बड़ा धूर्त और बात बनाने में निपुण हो, चूहा, नारंगी का वृक्ष, सोंचर लवण।
विटप–(सं. पुं.) वृक्ष या लता की नई शाखा, झाड़ी, कोपल, वृक्ष, पादप, पेड़।
विटपी–(स. पुं.) वृक्ष, पेड़; **–मृग**–(पुं.) बंदर।
विटलवण–(सं. पुं.) सोंचर नमक।
विट्ठल–(हि. पुं.) दक्षिण भारत की विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति का नाम।
विडंबक–(सं. पुं.) ठीक-ठीक अनुकरण करनेवाला, चिढ़ानेवाला।
विडंबन–(सं. पुं.) निन्दा या उपहास करना, नकल उतारना।
विडंबना–(सं. स्त्री.) अनुकरण करना, हँसी उड़ाना, चिढ़ाना।
विडंबनीय–(सं. वि.) अनुकरण करने योग्य, चिढ़ाने लायक।
विडंबित–(सं. वि.) उपहास किया हुआ, ठगा हुआ।
विडंबी–(सं. पुं.) विडंबना करनेवाला।
विडरना–(हिं. क्रि. अ.) इधर-उधर या तितर-बितर होना, दौड़ना, भागना।
विडराना, विडारना–(हिं. क्रि. अ., स.) छितराना, इधर-उधर करना, नष्ट करना, दौड़ना, भागना।
विडाल–(सं. पुं.) आँख का पिण्ड, मार्जार, बिल्ली, हरताल।
विडौजा–(सं. पुं.) इन्द्र का एक नाम।
विड्ग्रह–(सं. पुं.) मल का अवरोध।
विड्ज–(सं. वि., पुं.) विष्ठा आदि में उत्पन्न होनेवाले (कीड़े)।
विड्बंध–(सं. पुं.) मल का अवरोध।
विड्भंग–(सं. पु.) बहुत शौच होना।
विड्भेदी–(सं. वि, पुं.) विरेचक (औषध)।
वितंड–(सं. पुं.) गज, हाथी।
वितंडा–(सं. स्त्री.) दूसरे के पक्ष को दबाकर अपने पक्ष की स्थापना, व्यर्थ लड़ाई-झगड़ा।
वितंत–(हि. पुं.) एक प्रकार का बिना तार का बाजा।
वित–(हिं. वि.) चतुर, ज्ञाता, निपुण।
वितत–(सं. वि.) विस्तृत, फैला हुआ।
विततना–(हिं. क्रि. अ.) व्याकुल होना।
वितति–(सं. स्त्री.) विस्तार, फैलाव।
वितथ–(सं. वि.) मिथ्या, झूठ, निरर्थक।
वितद्रु–(सं. पुं.) पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।
वितनु–(सं. वि.) अति सूक्ष्म, शरीररहित।
वितपन्न–(हिं.वि.) व्युत्पन्न, दक्ष, प्रवीण।
वितरक–(सं. वि.) बाँटनेवाला।
वितरण–(सं. पुं.) अर्पण करना, देना, बाँटना।
वितरन–(हिं. पुं.) वितरण।
वितरना–(हिं. क्रि. स.) वितरण करना।
वितरिक्त–(हिं. अव्य.) व्यतिरिक्त, अतिरिक्त, सिवाय।
वितरित–(सं. वि.) बाँटा हुआ।
वितरेक–(हिं. अव्य.) व्यतिरिक्त, अतिरिक्त, सिवाय।
वितर्क–(सं. पुं.) तर्क, दलील, सन्देह, अनुमान, वह अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के सन्देह का उल्लेख रहता है और जिसका निर्णय नहीं हो पाता।
वितर्क्य–(सं. वि.) अति विलक्षण, तर्क के योग्य।
वितल–(सं. पुं.) सात पातालों में से तीसरा पाताल।
वितस्ता–(सं. स्त्री.) पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।
वितस्ति–(सं. पुं.) बित्ता, बारह अंगुल का माप।
वितान–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव, बड़ा चँदवा, समूह, अवकाश, घृणा, एक प्रकार का छन्द, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।
वितानक–(सं. पुं.) बड़ा चँदवा, समूह, जमघट।
वितानना–(हिं. क्रि. स.) चँदवा आदि तानना।
वितामस–(सं. पुं.) प्रकाश, उजाला।
वितिक्रम–(हिं. पुं.) देखें 'व्यतिक्रम'।
वितिमिर–(सं. वि.) अन्धकारशून्य।
वितीत–(हिं. वि.) देखें 'व्यतीत', बीता हुआ।
वितुंड–(हिं. पुं.) गज, हाथी।
वितु–(हिं. पुं.) वित्त, धन, सम्पत्ति।
वितुष्ट–(सं. वि.) असन्तुष्ट।
वितृण–(सं. वि.) तृणहीन।
वितृप्त–(सं. वि.) जो तृप्त हो।
वितृष्ण–(सं. वि.) तृष्णा से रहित।

वितृष्णता–(सं. स्त्री.) निस्पृहता ।
वितृष्णा–(सं. स्त्री.) तृष्णा का अभाव ।
वितोय–(सं. वि.) जलहीन ।
वित्त–(सं. पुं.) सम्पत्ति, धन; (वि.) जाना हुआ, समझा हुआ, विख्यात, प्रसिद्ध; **–कोश**–(पुं.) रुपया-पैसा रखने की थैली ; **–दा**–(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; **–पति**–(पुं.) कुबेर; **–पुरी**–(स्त्री.) कुबेर की नगरी; **–हीन**–(वि.) धनहीन, दरिद्र ।
वित्तेश, वित्तेश्वर–(सं. पुं.) कुबेर ।
वित्रप–(सं. वि.) निर्लज्ज ।
वित्रस्त–(सं. वि.) बहुत डरा हुआ ।
वित्रास–(सं. पुं.) भय, डर ।
विथकना–(हिं. क्रि. अ.) शिथिल होना, मोहित होकर चुप हो जाना ।
विथकित–(हिं. वि.) शिथिल, थका हुआ, जो आश्चर्य या मोह के कारण चुप हो गया हो ।
विथराना–(हिं. क्रि. अ.) इधर-उधर छितराना ।
विथा–(हिं. स्त्री.) व्यथा, पीड़ा, रोग ।
विथारना–(हिं. क्रि. स.) छितराना, फैलाना ।
विथित–(हिं. वि.) व्यथित, पीड़ायुक्त, दुःखी ।
विथुरा–(हिं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका उसके स्वामी से वियोग हुआ हो ।
विथ्या–(सं. स्त्री.) गोभी ।
विदक्षिण–(सं. वि.) दक्षिणारहित ।
विदग्ध–(सं.पुं.) रसिक मनुष्य, विद्वान्, पण्डित, चतुर; (वि.) जला हुआ; **–ता**–(स्त्री.) पाण्डित्य, चतुराई ।
विदग्धा–(सं. स्त्री.) वह परकीया नायिका जो बड़ी चतुराई से परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करती है ।
विदमान–(हिं. वि., अव्य.) विद्यमान, सम्मुख ।
विदरण–(सं. पुं.) विदारण करना, फाड़ना ।
विदरना–(हिं. क्रि. अ.) विदीर्ण होना, फटना ।
विदर्भ–(सं. पुं.) बरार देश का प्राचीन नाम, एक प्राचीन राजा का नाम जिसके नाम पर इस देश का नाम पड़ा था, मसूढ़ा फूलने का रोग; **–जा**–(स्त्री.) दमयन्ती; **–राज**–(पुं.) दमयन्ती के पिता भीष्म जो विदर्भ के राजा थे ।
विदल–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, अनार का दाना, बाँस का बना हुआ कोई पात्र; (वि.) जिसमें दल न हो, बिना दल का ।
विदलन–(सं. पुं.) मलने या दलने की क्रिया, टुकड़े करना, फाड़ना ।
विदलना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना, फाड़ना ।
विदलित–(सं. वि.) फाड़ा हुआ, टुकड़े किया हुआ, रौंदा हुआ, मला हुआ ।
विदा–(हिं. स्त्री.) प्रस्थान, कहीं जाने की आज्ञा, विदाई ।
विदाई–(हिं. स्त्री.) प्रस्थान, विदा होने की अनुमति ।
विदाय–(सं. पुं.) विसर्जन, प्रस्थान ।
विदार–(सं. पुं.) समर, युद्ध ।
विदारक–(सं. पुं.) जल के बीच का वृक्ष या पर्वत; (वि.) फाड़नेवाला ।
विदारण–(सं.पुं.) फाड़ना, मार डालना, हत्या करना, समर, युद्ध, लड़ाई ।
विदारना–(हिं. क्रि. स.) फाड़ना, फाड़कर अलग-अलग या टुकड़े करना ।
विदारित–(सं. वि.) विदीर्ण, फाड़ा हुआ ।
विदारी–(सं. वि.) विदीर्ण करनेवाला, फाड़नेवाला ।
विदारीकंद–(सं. पुं.) भूमि-कुष्मांड ।
विदारु–(सं. पुं.) कृकलास, गिरगिट ।
विदाह–(सं. पुं.) हाथ-पैर में होनेवाली जलन ।
विदाही–(सं. वि., पुं.) दाह उत्पन्न करनेवाला (पदार्थ) ।
विदित–(सं. वि.) ज्ञात, जाना हुआ ।
विदिथ–(सं. पुं.) पण्डित, विद्वान्, योगी ।
विदिशा–(सं. स्त्री.) वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम ।
विदिश्–(सं. स्त्री.) दो दिशाओं के बीच का कोण ।
विदीधिति–(सं. वि.) किरणहीन ।
विदीर्ण–(सं. वि.) बीच से फाड़ा हुआ, टूटा-फूटा ।
विदुर–(सं. पुं.) पण्डित, ज्ञानी, जानकार, कौरवों के प्रसिद्ध मन्त्री जो नीति में बड़े चतुर थे ।
विदुल–(सं. पुं.) जलबेंत, एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य ।
विदुष–(सं. पुं.) विद्वान्, पण्डित ।
विदुषी–(सं. स्त्री.) शिक्षित स्त्री, विद्वान् स्त्री ।
विदूर–(सं. वि.) जो बहुत दूर हो; (पुं.) एक पहाड़ जहाँ वैदूर्य मणि मिलता है ।
विदूरत्व–(सं. पुं.) बहुत दूर होना ।
विदूषक–(सं. पुं.) कामुक, लंपट, बातचीत करके दूसरों को हँसानेवाला, भाँड़, दूसरों की निन्दा करनेवाला, खल, दुष्ट, वह नायक जो अपने परिहास तथा कौतुक आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है ।
विदूषण–(सं. पुं.) दोष लगाना, निंदा करना ।
विदूषना–(हिं. क्रि. अ., स.) कष्ट देना, दोषी ठहराना, दुःखी होना ।
विदेव–(सं. पुं.) राक्षस, यक्ष ।
विदेश–(सं. पुं.) अपने देश के अतिरिक्त दूसरा देश, परदेश ।
विदेशी–(हिं. वि.), **विदेशीय**–(सं. वि.) परदेशी, विदेश-संबंधी ।
विदेह–(सं.वि., पुं.) (वह) जो शरीररहित हो, राजा जनक का एक नाम; **–त्व**–(पुं.) शरीर का नाश, मृत्यु; **–पुर**–(पुं.) राजा जनक की राजधानी, जनकपुर ।
विदोष–(सं. वि.) दोषरहित ।
विद्ध–(सं. वि.) छेदा हुआ, फेंका हुआ, बाधित, तुल्य, समान, वक्र, टेढ़ा, मिला हुआ ।
विद्यमान–(सं. वि.) वर्तमान, उपस्थित; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) उपस्थिति ।
विद्या–(सं. स्त्री.) शिक्षा आदि द्वारा उपार्जित ज्ञान, किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान, विज्ञान, दुर्गा, सीता की एक सखी का नाम, आर्या छन्द का एक भेद; **–गुरु**–(पुं.) पढ़ानेवाला, शिक्षक ; **–गृह**–(पुं.) विद्यालय, पाठशाला ; **–दाता**–(पुं.) विद्या पढ़ानेवाला, गुरु; **–दान**–(पुं.) विद्या पढ़ाना, शिक्षा देना; **–देवी**–(स्त्री.) सरस्वती; **–धन**–(पुं.) विद्यारूपी धन; **–धर**–(पुं.) एक प्रकार की देवयोनि जिसके अन्तर्गत गन्धर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं, वैद्यक का एक प्रकार का यन्त्र; **–धरी**–(स्त्री.) विद्याधर की स्त्री, किन्नरी; **–धारी**–(पुं.) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं; **–मणि**–(पुं.) विद्यारूपी रत्न; **–मार्ग**–(पुं.) श्रेष्ठ मार्ग; **–राशि**–(पुं.) शिव, महादेव; **–वान्**–(वि., पुं.) विद्वान्, पंडित; **–विद्**–(पुं.) विद्वान्, पंडित; **–विरुद्ध**–(वि.) ज्ञान के विपरीत; **–श्रम**–(पुं.) विद्यालय; **–सागर**–(वि.) सब शास्त्रों का जाननेवाला ।
विद्यागम–(सं. पुं.) ज्ञान की प्राप्ति ।
विद्याधार–(सं. पुं.) विद्वान्, पण्डित ।

विद्याधिप–(सं.पुं.) गुरु, शिक्षक, विद्वान्।
विद्यारंभ–(सं. पुं.) बालकों को विद्या पढ़ाना प्रारम्भ करने का संस्कार।
विद्यार्थी–(सं. पुं.) विद्या पढ़नेवाला, छात्र, शिष्य ।
विद्यालय–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती है, पाठशाला।
विद्युता–(सं. स्त्री.) विद्युत, बिजली, एक अप्सरा का नाम ।
विद्युताक्ष–(सं. पुं.) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम ।
विद्युत्–(सं. स्त्री.) वज्र, बिजली; **–केश**–(पुं.) एक राक्षस; **–पात**–(पुं.) वज्रपात, बिजली का गिरना; **–पुंज**–(पुं.) विद्युन्माला; **–प्रभ**–(वि.) बिजली के समान चमकवाला ; **–प्रिय**–(पुं.) काँसा, काँसे का पात्र ।
विद्युद्गौरी–(सं. स्त्री.) शक्ति की एक मूर्ति का नाम ।
विद्युन्मापक–(सं. पुं.) वह यन्त्र जिसके द्वारा बिजली का बल, प्रवाह आदि मापा जाता है ।
विद्युन्माला–(सं.स्त्री.) बिजली का समूह, एक यक्षिणी का नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ गुरु वर्ण होते हैं।
विद्युन्माली–(सं. पुं.) पुराणानुसार एक राक्षस का नाम ।
विद्युल्लता–(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली ।
विद्युल्लेखा–(सं. स्त्री.) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं; (इसका दूसरा नाम शेषराज है।)
विद्येश–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
विद्योत–(सं. स्त्री.) बिजली।
विद्योतन–(सं. वि.) दीप्तियुक्त ।
विद्योती–(सं. वि.) दीप्तिपूर्ण ।
विद्रध–(सं. वि.) मोटा, पुष्ट ।
विद्रध–(सं. वि.) स्थूल, मोटा, पक्का ।
विद्रधि–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का पेट के भीतर का फोड़ा ।
विद्राव–(सं. पुं.) बहना, पिघलना ।
विद्रावण–(सं. पुं.) पिघलना, बहना, गलना, भागना, एक दानव का नाम ।
विद्रावणी–(सं. स्त्री.) कौवाठोंठी ।
विद्रावित–(सं.वि.) भगाया हुआ, पिघला हुआ ।
विद्रावी–(सं. वि.) भागनेवाला, पिघलनेवाला ।
विद्रुत–(सं. वि.) गला हुआ, भागा हुआ ।
विद्रुम–(सं. पुं.) प्रवाल, मूँगा ।
विद्रोह–(सं. पुं.) द्वेष, राज्य को हानि पहुँचानेवाला सामूहिक उपद्रव ।
विद्रोही–(सं. पुं., वि.) विद्रोह करनेवाला, राज्य को हानि पहुँचानेवाला ।
विद्वत्तम–(सं. वि.) विद्वानों में श्रेष्ठ ।
विद्वत्ता–(सं. स्त्री.) पाण्डित्य, पंडिताई।
विद्वत्व–(सं.पुं.) देखें 'विद्वत्ता', पांडित्य ।
विद्वान्–(सं.वि.,पुं.) (वह) जो आत्मा के स्वरूप को समझता हो, (वह) जो किसी विद्या या शास्त्र का जानकार हो, पण्डित, सर्वज्ञ ।
विद्विष्–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी ।
विद्विष्ट–(सं. वि.) जिसके साथ शत्रुता या द्वेष हो ।
विद्वेष–(सं. पुं.) शत्रुता ।
विद्वेषण–(सं. पुं.) शत्रुता, वैर ।
विद्वेषिता–(सं. स्त्री.) शत्रुता ।
विद्वेषी, विद्वेषक–(सं. वि., पुं.) शत्रुता करनेवाला, वैरी ।
विधंस–(हिं. पुं.) विध्वंस, नाश ।
विधंसना–(हिं. क्रि. स.) नाश करना ।
विध–(हिं. पुं.) विधि, ब्रह्मा ।
विधत्री–(सं. स्त्री.) ब्रह्मा की शक्ति ।
विधन–(सं. वि.) निर्धन; **–ता**–(स्त्री.) निर्धनता ।
विधना–(हिं. क्रि. स.) फँसाना, बेधना; (हिं. स्त्री.) भवितव्यता, होनेवाली बात; (हिं. पुं.) विधि, ब्रह्मा ।
विधर–(हिं. अव्य.) देखें 'उधर', उस ओर ।
विधरण–(सं. पुं.) रोकना, पकड़ना ।
विधर्म–(सं. पुं.) वह धर्म जो अपना न हो, पराये का धर्म; (वि.) गुणहीन ।
विधर्मिक, विधर्मी–(सं.वि.,पुं.) (वह) जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी है ।
विधवा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, राँड़, बेवा ; **–पन**–(हिं. पुं.) रँड़ापा, वैधव्य ।
विधवाश्रम–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ निराश्रय विधवाओं के पालन-पोषण आदि का प्रबन्ध रहता है ।
विधाँसना–(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना, इधर-उधर करना ।
विधातव्य–(सं. वि.) कर्त्तव्य, करने योग्य ।
विधाता–(सं. पुं.) रचनेवाला, बनानेवाला, व्यवस्था करनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला, जगत् की रचना करनेवाला।
विधात्री–(सं.स्त्री.) विधान करनेवाली ।
विधान–(सं. पुं.) किसी कार्य का आयोजन, अनुष्ठान, विन्यास, प्रबन्ध, विधि, पद्धति, कानून, ढंग, उपाय, पूजा, प्रेरणा, व्यवस्था, रचना, नाटक में वह स्थान जहाँ किसी वाक्य से सुख-दुःख दोनों दरशाया जाता है ।
विधानक, विधानज्ञ–(सं. पुं., वि.) विधि या विधान जाननेवाला ।
विधानसप्तमी–(सं. स्त्री.) माघ शुक्ला सप्तमी ।
विधानी–(सं. पुं.) विधिपूर्वक कार्य करनेवाला, विधानज्ञ ।
विधायक–(सं.वि., पुं.) विधान बनाने या रचनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला ।
विधारण–(सं.पुं) रोकना, वहन करना ।
विधारा–(सं.स्त्री.) एक लता जो औषधों में प्रयुक्त होती है ।
विधि–(सं.स्त्री.) कार्यक्रम, काम करने की रीति, ढंग, नियम, व्यवस्था, योजना, प्रकार, कानून, संगति, मेल, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे कोई आज्ञा दी जाती है, वह अर्थालंकार जिसमें सिद्ध विषय का दुबारा विधान किया जाता है; (पुं.) सृष्टि रचनेवाला, ब्रह्मा, विष्णु; (मुहा.)**–बठना**–मेल होना, अनुकूलता होना; **–ज्ञ**–(वि.) विधि या विधान जाननेवाला ; **–त्व**–(पुं.) विधि का भाव या धर्म ; **–त्सा**–(स्त्री.) विधान करने की इच्छा; **–त्सु**–(वि.) विधान की इच्छा करनेवाला; **–दृष्ट**–(वि.) शास्त्रविहित; **–पत्नी, –रानी**–(सं., हिं.स्त्री.) सरस्वती; **–पुत्र**–(पुं.) नारद; **–पुर**–(पुं.) ब्रह्मलोक; **–पूर्वक**–(अव्य.) नियम के अनुसार; **–बोधित**–(वि.) शास्त्रसम्मत; **–लोक**– (पुं.) ब्रह्मलोक ; **–वत्**–(अव्य.) विधिपूर्वक, पद्धति के अनुसार; **–वद्ध**–(वि.) नियमवद्ध; **–वधू**–(स्त्री.) सरस्वती ; **–वाहन**–(पुं.) हंस ; **–शास्त्र**–(पुं.) व्यवहारशास्त्र, स्मृतिशास्त्र ।
विधिना–(हिं. पुं.) विधि, ब्रह्मा ।
विधुंतुद–(सं.पुं.) चन्द्रमा को कष्ट देनेवाला राहु ।
विधु–(सं. पुं.) चन्द्रमा, वायु, कपूर, विष्णु, ब्रह्मा, आयुध ; **–क्रांत**–(पुं.) संगीत का एक ताल; **–दार**–(स्त्री.) चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी; **–प्रिया**–(स्त्री.) कुमुदिनी ; **–बंधु**–(पुं.) कुमुद का फूल ; **–मणि**–(पुं., स्त्री.) चन्द्रकान्तमणि; **–मुखी**–(स्त्री.) चन्द्रमुखी, सुन्दर स्त्री; **–वदनी**–(स्त्री.)

चन्द्रमा के समान मुखवाली स्त्री, सुन्दर स्त्री।
विधुर-(सं. वि.) व्यग्र, व्याकुल, दुःखी, असमर्थ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ; (पुं.) वियोग, मोक्ष।
विधूत-(सं. वि.) काँपता हुआ, हटाया हुआ, दूर किया हुआ।
विधूम-(सं.वि.) धूम्ररहित, विना धुएँ का।
विधेय-(सं. वि.) कर्त्तव्य, जिसका करना उचित हो, होनेवाला, अधीन, वशीभूत, नियम या विधि द्वारा जानने योग्य, जिसका विधान होनेवाला हो; (पुं.) वाक्य का वह अंश जिसमें कर्त्ता के विषय में कुछ कहा जाता है।
विधेयता-(सं.स्त्री.) विधेय होने का भाव, अधीनता।
विधेयात्मा-(सं. पुं.) विष्णु।
विधेयाविमर्ष-(सं. पुं.) साहित्य में वह वाक्यदोष जो विधेय अंश की मुख्य बात को विच्छिन्न स्थान पर रखने से होता है।
विध्यपाश्रय-(सं. पुं.) विधि का आश्रय करनेवाला मनुष्य।
विध्याभास-(सं. पुं.) वह अर्थालंकार जिसमें किसी अनिष्ट या आपत्ति की संभावना होने पर विवश होकर किसी बात की सम्मति दी जाती है।
विध्वंश-(सं. पुं.) नाश, अनादर, वैर।
विध्वंसक-(सं.वि., पुं.) नाश करनेवाला।
विध्वंसित-(सं. वि.) नाश किया हुआ।
विध्वंसी-(सं. वि.) नाश करनेवाला।
विध्वस्त-(सं. वि.) नाश किया हुआ।
विन-(हिं. सर्व.) उस; (अव्य.) विना।
विनत-(सं. वि.) विनीत, नम्र, शिष्ट, झुका हुआ, सिकुड़ा हुआ; (पुं.) शिव, महादेव, सुग्रीव की सेना के एक बंदर का नाम।
विनतड़ी-(हिं. स्त्री.) देखें 'विनति'।
विनता-(सं. स्त्री.) दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो गरुड़ की माता थी।
विनतासूनु-(सं. पुं.) गरुड़।
विनति-(सं. स्त्री.) विनती, नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, प्रार्थना, झुकाव, शासन, दण्ड, निवारण, रोक।
विनती-(हिं. स्त्री.) देखें 'विनति'।
विनमन-(सं. पुं.) झुकना, नवाना।
विनम्र-(सं.वि.) अति विनीत, सुशील।
विनय-(सं. स्त्री.) नम्रता, प्रार्थना, विनती, नीति, शासन; (पुं.) जितेन्द्रिय, संयमी; **-कर्म**-(पुं.) शिक्षण, विद्या, शिक्षा, ज्ञान; **-ग्राही**-(वि.) नियम का पालन करनेवाला; **-ता**-(स्त्री.) विनय का भाव या धर्म; **-धर**-(पुं.) पुरोहित; **-पत्र**-(पुं.) प्रार्थना-पत्र; **-पिटक**-(पुं.) बौद्धों का एक प्राचीन धर्म-ग्रन्थ जो पाली भाषा में लिखा है; **-वान्**-(वि.) नम्र, शिष्ट; **-शील**-(वि.) विनययुक्त, सुशील; **-स्थ**-(वि.) आज्ञाकारी।
विनयिता-(सं. पुं.) विष्णु।
विनयी-(सं. वि.) विनययुक्त, विनीत, नम्र।
विनशन-(सं. पुं.) नाश।
विनशना, विनशाना-(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'विनसना', 'विनसाना'।
विनश्वर-(सं. वि.) अनित्य, नष्ट होनेवाला; **-ता**-(स्त्री.) अनित्यता।
विनष्ट-(सं. वि.) जो नष्ट हो गया हो, ध्वस्त, मरा हुआ, बुरे आचरण का, पतित।
विनस-(सं. वि.) विना नाक का।
विनसना-(हिं. क्रि. अ.) लुप्त होना, नष्ट होना।
विनसाना-(हिं. क्रि. स.) नष्ट करना, विगाड़ना।
विना-(सं. अव्य.) अभाव में।
विनाती-(हिं. स्त्री.) विनय, प्रार्थना।
विनाथ-(सं. वि.) विना रक्षक का, अनाथ।
विनाम-(सं. पुं.) झुकाव, टेढ़ापन।
विनायक-(सं. पुं.) गणनायक, गणेश, गरुड़, विघ्न, बाधा; **-केतु**-(पुं.) श्रीकृष्ण; **-चतुर्थी**-(स्त्री.) माघ सुदी चौथ।
विनाश-(सं. पुं.) ध्वंस, नाश, लोप, हानि।
विनाशक-(सं.पुं., वि.) विनाश करनेवाला।
विनाशन-(सं. पुं.) संहार, नाश।
विनाशित-(सं. वि.) नाश किया हुआ, विगाड़ा हुआ।
विनास-(हिं. पुं.) विनाश।
विनासक-(सं. वि.) विना नाक का, नकटा।
विनासन-(हिं. पुं.) देखें 'विनाशन'।
विनासना-(हिं. क्रि. स.) संहार करना, नष्ट करना, विगाड़ना।
विनाह-(सं. पुं.) कुएँ का ढपना।
विनिंदक-(सं. पुं.) निन्दा करनेवाला।
विनिंदित-(सं. वि.) जिसकी वहुत निन्दा की गई हो।
विनिःसृत-(सं.वि.) वाहर निकाला हुआ।
विनिकार-(सं. पुं.) अपराध, क्षति।
विनिक्षिप्त-(सं.वि.) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
विनिग्रह-(सं.पुं.) प्रतिबंध, वंवेज, संयम।
विनिघ्न-(सं. वि.) गुणा किया हुआ।
विनिद्र-(सं. वि.) निद्रारहित; **-ता**-(स्त्री.) निद्रा का अभाव; **-त्व**-(पुं.) जागरण, विनिद्रता।
विनिध्वस्त-(सं. वि.) ध्वस्त, नष्ट।
विनिपात-(सं. पुं.) ध्वंस, वध, हत्या, अपमान; **-क**-(वि.) संहार या अपमान करनेवाला।
विनिपातित-(सं. वि.) गिराया हुआ।
विनिमय-(सं. पुं.) परिवर्तन, अदल-वदल, वंधक, गिरवी।
विनियुक्त-(सं. वि.) नियोजित, किसी काम में लगाया हुआ।
विनियोग-(सं. पुं.) फल की आकांक्षा से किसी वस्तु का उपयोग, प्रयोग, वैदिक कृत्य में किसी मन्त्र का प्रयोग, विभाग।
विनियोजित-(सं. वि.) प्रेरित, नियुक्त, लगाया हुआ, अर्पित।
विनिर्गत-(सं. वि.) निकला हुआ, वीता हुआ।
विनिर्गम-(सं. पुं.) वाहर होना, निकलना, प्रस्थान।
विनिर्घोष-(सं. पुं.) उच्च शब्द।
विनिर्जय-(सं. पुं.) पूर्ण रूप से विजय।
विनिर्जित-(सं. वि.) पराभूत, पराजित।
विनिर्भय-(सं. वि.) भयरहित।
विनिर्मल-(सं. वि.) अति निर्मल।
विनिर्माण-(सं.पुं.) अच्छी तरह बनाना।
विनिर्मित(सं. वि.) अच्छी तरह बनाया हुआ।
विनिर्मुक्त-(सं. वि.) बंधन से रहित, छुटकारा पाया हुआ।
विनिर्मुक्ति-(सं. स्त्री.) मोक्ष, उद्धार।
विनिर्मोक-(सं. वि.) वस्त्ररहित।
विनिर्याण-(सं. पुं.) गमन, जाना।
विनिर्वृत्त-(सं. वि.) सम्पन्न, समाप्त।
विनिवर्तन-(सं. पुं.) लौटना।
विनिवर्तित-(सं. वि.) लौटाया हुआ।
विनिवारण-(सं. पुं.) रोक, नियंत्रण, निषेध।
विनिवृत्त-(सं. वि.) लौटा हुआ।
विनिवेदन-(सं. पुं.) विशेष रूप से निवेदन करना।
विनिवेश-(सं.पुं.) वास, प्रवेश, घुसना।
विनिवेशन-(सं. पुं.) स्थिति, वास प्रवेश।

विनिवेशित–(सं. वि.) स्थापित, ठहरा हुआ, वसा हुआ ।
विनिवेशी–(सं. वि.) प्रवेश करनेवाला, वसनेवाला ।
विनिश्चय–(सं. पुं.) पूर्ण रूप से निर्णय करना ।
विनिश्चल–(सं. वि.) दृढ़, पूर्णतः स्थिर।
विनिष्कंप–(सं. वि.) कंपरहित ।
विनिष्पात–(सं. पुं.) आघात, चोट ।
विनिष्पेष–(सं. पुं.) पीसना, घिसना ।
विनिहत–(सं. वि.) आहत, चोट खाया हुआ ।
विनीत–(सं. वि.) सुशील, शिष्ट, नम्र, संयमी, सिखलाया हुआ, शासित, धार्मिक; (पुं.) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम; **–ता**–(स्त्री.) नम्रता ।
विनीति–(सं. स्त्री.) सुशीलता, सम्मान ।
विनु–(हिं. अव्य.) देखें 'विना' ।
विनूठा–(हिं. वि.) अपूर्व, अनूठा, सुन्दर ।
विनेता–(सं. पुं.) शिक्षक, शासनकर्ता ।
विनेत्र–(सं. पुं.) शिक्षक, उपदेशक ।
विनोक्ति–(सं. स्त्री,) वह अलंकार जिसमें किसी वस्तु की श्रेष्ठता या हीनता का वर्णन रहता है ।
विनोद–(सं. पुं.) मनोरंजक व्यापार, कौतूहल, खेलकूद, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द ।
विनोदन–(सं. पुं.) खेलकूद, परिहास ।
विनोदित–(सं. वि.) हर्षित, प्रसन्न ।
विनोदी–(सं. वि.) क्रीड़ा करनेवाला, खेल-कूद करनेवाला, हँसी करनेवाला, आनंदी ।
विन्यस्त–(सं. वि.) स्थापित, रखा हुआ ।
विन्यास–(सं. पुं.) ठीक स्थान पर रखना या बैठाना, जड़ना ।
विपंची–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की वीणा ।
विपक्व–(सं. वि.) अच्छी तरह पका हुआ ।
विपक्ष–(सं. पुं.) विरुद्ध पक्ष, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, विरोध, खण्डन, व्याकरण में वाधक नियम या अपवाद; (वि.) विरुद्ध, प्रतिकूल, विना पक्ष या डैने का ;**–ता**–(स्त्री.) विपक्ष होने की क्रिया या भाव।
विपक्षी–(सं. पुं., वि.) विरुद्ध पक्ष का, शत्रु, प्रतिवादी, विना पर का ।
विपक्षीय–(सं. वि.) शत्रु के पक्ष का ।
विपणी–(सं. स्त्री.) हाट, दुकान ।
विपताक–(सं. वि.) पताकारहित, विना झंडे का ।
विपत्ति–(सं. स्त्री.) आपत्ति, क्लेश, संकट की अवस्था, कठिनाई; (मुहा.) **–झेलना**–कष्ट सहना ; **–भुगतना**–दुःख सहना; **–मोल लेना**–झंझट में पड़ना ।
विपथ–(सं. पुं.) कुमार्ग, वुरा मार्ग ।
विपद्–(सं. स्त्री.) आपत्ति, संकट ।
विपदा–(सं. स्त्री.) विपत्ति, संकट, दुःख ।
विपन्न–(सं. वि.) आपत्ति में पड़ा हुआ, दुःखी, भ्रम में पड़ा हुआ ;**–ता**–(स्त्री.) विपत्ति ।
विपराक्रम–(सं. वि.) पराक्रमरहित ।
विपरिणाम–(सं. पुं.) परिवर्तन, परिणाम ।
विपरिधान–(सं. पुं.) परिवर्तन ।
विपरिभ्रंश–(सं. पुं.) विनाश ।
विपरिवर्तन–(सं. पुं.) चक्कर खाना ।
विपरीत–(सं. वि.) विरुद्ध, रुष्ट, दुःखद, अनुपयुक्त; (पुं.) वह अर्थालंकार जिसमें स्वयं साधक ही अपने कार्य की सिद्धि में बाधक दिखलाया जाता है ;**–ता**–(स्त्री.) विपरीत होने का भाव ।
विपरीतार्थ–(सं. वि.) जिसका अर्थ उलटा हो ।
विपरीतोपमा–(सं. स्त्री.) वह उपमा जिसमें किसी भाग्यशाली व्यक्ति की हीनता का वर्णन किया गया हो ।
विपर्णक–(सं. वि.) विना पत्तों का ।
विपर्यय–(सं. पुं.) व्यतिक्रम, मिथ्या ज्ञान, उलट-फेर, अव्यवस्था, भ्रम, नाश ।
विपर्यस्त–(सं. वि.) उलटा-पलटा हुआ ।
विपर्यास–(सं. पुं.) व्यतिक्रम, मिथ्या ज्ञान ।
विपल–(सं. पुं.) समय का अति सूक्ष्म विभाग जो पल का साठवाँ भाग होता है ।
विपलायी–(सं. वि.) भागनेवाला ।
विपलाश–(सं. वि.) विना पत्तों का ।
विपवन–(सं. पुं.) शुद्ध हवा ।
विपश्चित्–(सं.वि.,पुं.) सूक्ष्मदर्शी, विद्वान्, पण्डित ।
विपाक–(सं. पुं.) पूर्ण दशा को पहुँचना, कर्म का फल, परिणाम, खाये हुए भोजन का पेट में पचना, स्वाद, दुर्दशा, दुर्गति ।
विपाटन–(सं. पुं.) उखाड़ना, खोदना ।
विपाटल–(सं. वि.) जिसका रंग हलका लाल हो ।
विपाटित–(सं. वि.) उखाड़ा हुआ ।
विपात–(सं. पुं.) नाश ।
विपातक–(सं.पुं.,वि.) नाश करनेवाला ।
विपात(द)न–(सं. पुं.) वध, हत्या ।
विपादिका–(सं. स्त्री.) बेवाई, पहेली ।
विपादित–(सं. वि.) नष्ट किया हुआ ।
विपाप–(सं. वि.) पापरहित ।
विपाल–(सं. वि.) जिसका पालनेवाला कोई न हो ।
विपाश–(सं. वि.) पाशरहित ।
विपाशा(सा)–(सं.स्त्री.) पंजाब की व्यास नदी का प्राचीन नाम ।
विपिन–(सं. पुं.) उपवन, वाटिका, जंगल ;**–चर**–(वि.) वन में रहनेवाला मनुष्य या पशु; **–तिलका**–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं ;**–पति**–(पुं.) सिंह ; **–विहारी**–(वि.) जंगल में विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण का एक नाम ।
विपुंसक–(सं. वि.) पुरुषत्व से हीन ।
विपुंसी–(सं. स्त्री.) पुरुष के समान चेष्टा और प्रकृतिवाली स्त्री ।
विपुत्र–(सं. वि.) पुत्रहीन, पुत्ररहित ।
विपुत्रा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसको कोई पुत्र न हो ।
विपुल–(सं. वि.) बृहत्, अगाध, संख्या या परिमाण में अधिक; (पुं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) अधिकता, बहुतायत; **–मति**–(पुं.) बहुत बुद्धिमान्; **–स्कंध**–(पुं.) अर्जुन का एक नाम ।
विपुला–(सं. स्त्री.) वसुन्धरा, पृथ्वी, आर्या छन्द का एक भेद, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं; **–ई**–(हिं. स्त्री.) विपुलता, अधिकता ।
विपुष्ट–(सं. वि.) अपुष्ट, अदृढ़ ।
विपुष्प–(सं. वि.) विना फूल का ।
विपुष्पित–(सं. वि.) प्रफुल्लित, फूल से विहीन किया हुआ ।
विपोहना–(हिं. क्रि. स.) लीपना-पोतना, नाश करना ।
विप्र–(सं. पुं.) ब्राह्मण, पुरोहित; **–चरण**–(पुं.) विष्णु के हृदय पर भृगु मुनि के लात का चिह्न; **–देव**–(पुं.) ब्राह्मण; **–पद**–(पुं.) भृगु मुनि के लात का चिह्न जो विष्णु की छाती पर माना जाता है; **–बंधु**–(पुं.) नीच ब्राह्मण; **–राम**–(पुं.) परशुराम ।

विप्रकर्ष–(सं. पुं.) दूर खींच ले जाना।
विप्रकर्षण–(सं. पुं.) दूर खींच ले जाने की क्रिया; –शक्ति–(स्त्री.) परमाणुओं की वह शक्ति जिससे वे सटे रहते हैं।
विप्रकार–(सं. पुं.) तिरस्कार, अपमान।
विप्रकीर्ण–(सं. वि.) अव्यवस्थित, छितराया हुआ, बिखरा हुआ।
विप्रकृत–(सं. वि.) तिरस्कार किया हुआ।
विप्रकृष्ट–(सं. वि.) खींचकर दूर किया हुआ।
विप्रचित्ति–(सं. पुं.) एक दानव जिसके पुत्र का नाम राहु था।
विप्रतारक–(सं. वि.) धोखा देनेवाला।
विप्रतिपत्ति–(सं. स्त्री.) मेल न होना, विरोध।
विप्रतिसार–(सं. पुं.) पश्चात्ताप।
विप्रतीप–(सं. वि.) प्रतिकूल, विरुद्ध।
विप्रथित–(सं. वि.) प्रसिद्ध।
विप्रदुष्ट–(सं. वि.) कामुक, लंपट।
विप्रधर्ष–(सं. पुं.) इधर-उधर परेशान होना, भागते फिरना।
विप्रनष्ट–(सं. वि.) पूर्णतः नष्ट।
विप्रपात–(सं. पुं.) पूर्णतः गिरना, ढालुआँ टीला।
विप्रबुद्ध–(सं. वि.) जागा हुआ।
विप्रबोधित–(सं. वि.) अच्छी तरह समझाया हुआ।
विप्रमत्त–(सं. वि.) प्रमादपूर्ण, प्रमत्त।
विप्रमाथी–(सं. वि.) अच्छी तरह मथनेवाला।
विप्रमादी–(सं. वि.) विप्रमत्त।
विप्रमोक्ष–(सं. पुं.) विमोचन, मुक्ति।
विप्रमोह–(सं. पुं.) चमत्कार।
विप्रयाण–(सं. पुं.) पलायन, भागना।
विप्रयुक्त–(सं. वि.) अलग, बिछुड़ा हुआ।
विप्रयोग–(सं. पुं.) वियोग।
विप्रलंभ–(सं. पुं.) प्रियजन का न मिलना, विरह, शृंगार-रस का वह भेद जिसमें नायक-नायिका के विरहजन्य सन्ताप का वर्णन रहता है।
विप्रलंभक–(सं. वि.) छली, धूर्त।
विप्रलब्ध–(सं. वि.) प्रतारित, धोखा खाया हुआ, वंचित।
विप्रलब्धा–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो संकेत-स्थान में प्रिय को न पाकर निराश होती है।
विप्रलाप–(सं. पुं.) व्यर्थ बकवाद।
विप्रलीन–(सं. वि.) चारों ओर बिखरा हुआ।
विप्रलुंपक–(सं. वि.) लोलुप, लालची।
विप्रलुप्त–(सं. वि.) चुराया हुआ, लूटा हुआ, उड़ाया हुआ।
विप्रलोप–(सं. पुं.) पूर्ण लोप, नाश।
विप्रलोभी–(सं. वि.) बहुत लालची, ठग।
विप्रवसित–(सं. वि.) परदेश गया हुआ।
विप्रवाद–(सं. पुं.) लड़ाई, झगड़ा, कलह।
विप्रवास–(सं. पुं.) परदेश में रहना।
विप्रवीर–(सं. वि.) बड़ा पराक्रमी।
विप्रव्राजिनी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो दो पुरुषों से संबंध रखती हो।
विप्रश्न–(सं. पुं.) भाग्य-संबंधी प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष से मिले।
विप्रश्निक–(सं. पुं.) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
विप्रसारण–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव।
विप्रेक्षण–(सं. पुं.) अच्छी तरह देखना।
विप्रेक्षित–(सं. वि.) अच्छी तरह देखा हुआ।
विप्रेत–(सं. वि.) जो बीत गया हो।
विप्रेषित–(सं. वि.) बाहर भेजा हुआ।
विप्लव–(सं. पुं.) उपद्रव, विद्रोह, विपत्ति, अव्यवस्था, विनाश, डाँट-डपट, नदी की बाढ़, नाव का डूबना, घोड़े की सरपट चाल।
विप्लाद–(सं. पुं.) नदी की बाढ़।
विप्लावक–(सं. पुं.) राज्यद्रोही, विद्रोही।
विप्लावी–(सं. वि.) उपद्रव करनेवाला।
विप्लुत–(सं. वि.) आकुल, घबड़ाया हुआ।
विप्लुति–(सं. स्त्री.) उपद्रव, विप्लव।
विफल–(सं. वि.) फलरहित, परिणामहीन, व्यर्थ, निष्फल, हताश, निराश।
विबंध–(सं. पुं.) आलिंगन, घेर लेना।
विबंधु–(सं. वि.) बंधुरहित।
विबल–(सं. वि.) दुर्बल, अशक्त।
विबुद्ध–(सं. वि.) जाग्रत, जागता हुआ, विकसित, खिला हुआ।
विबुध–(सं. पुं.) बुद्धिमान्, पण्डित, चन्द्रमा, देवता, शिव, महादेव; –तटिनी–(स्त्री.) आकाशगंगा; –तरु–(पुं.) कल्प-वृक्ष; –धेनु–(स्त्री.) कामधेनु; –पति–(पुं.) इन्द्र; –विलासिनी–(स्त्री.) देवता की स्त्री, अप्सरा; –वन–(पुं.) नन्दनवन; –वेलि–(स्त्री.) कल्पलता; –वैद्य–(पुं.) अश्विनीकुमार।
विबुधाधिप, विबुधाधिपति–(सं.पुं.) इन्द्र।
विबुधान–(सं. पुं.) आचार्य, देवता।
विबुधापगा–(सं. स्त्री.) आकाशगंगा।
विबुधावास–(सं. पुं.) देवमन्दिर, स्वर्ग।
विबुधेतर–(सं. पुं.) असुर, दैत्य।
विबोध–(सं. पुं.) जागरण, अच्छा ज्ञान, सचेत होना।
विबोधन–(सं. पुं.) समझाना-बुझाना, ढाढ़स देना, जागना, जगाना।
विबोधित–(सं. वि.) जताया या बतलाया हुआ, जगाया हुआ।
विभंग–(सं. पुं.) विभाग, क्रम का टूटना, मुख का भाव, भ्रूभंग।
विभंज–(हिं. पुं.) टूटना, नाश, ध्वंस।
विभक्त–(सं.वि.) अलग या विभाग किया हुआ, बाँटा हुआ।
विभक्ति–(सं. स्त्री.) अलग होने क्रिया या भाव, विभाग, बाँट, व्याकरण में शब्द में लगनेवाला वह शब्द जिससे उस शब्द का क्रिया से संबंध सूचित होता है।
विभग्न–(सं. वि-) टूटा-फूटा।
विभव–(सं. पुं.) ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति, मोक्ष, बहुतायत, साठ संवत्सरों में से एक का नाम; –मद–(पुं.) धन, का अहंकार; –वान्–(वि.) शक्तिशाली; –शाली–(वि.) ऐश्वर्ययुक्त।
विभांडक–(सं. पुं.) एक मुनि जो ऋष्यशृंग के पता थे।
विभाँति–(हिं. स्त्री.) प्रकार, भेद।
विभा–(सं. स्त्री.) प्रभा, कान्ति, शोभा; –कर–(पुं.) सूर्य, अग्नि, राजा, अर्क, वृक्ष।
विभाग–(सं. पुं.) बाँटने की क्रिया या भाव, बँटवरा, बखरा, अध्याय, प्रकरण; –वत्–(वि.) विभाग के तुल्य।
विभागी–(सं. वि., पुं.) विभाग करनेवाला।
विभाजक–(सं. वि., पुं.) विभाग करनेवाला, बाँटनेवाला, गणित में वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या में भाग दिया जाता है, भाजक।
विभाजन–(सं. पुं.) भाग करने या बाँटने की क्रिया, पात्र, बरतन।
विभाजित–(सं. वि.) भाग किया हुआ, बाँटा हुआ, खण्ड किया हुआ।
विभाज्य–(सं. वि.) विभाग करने योग्य।
विभात–(सं. पुं.) प्रभात, सवेरा।
विभाति–(सं. स्त्री.) शोभा, सुन्दरता।
विभाना–(हिं. क्रि. अ.) चमकना, सुशोभित होना।
विभारना–(हिं. क्रि. अ.) चमकना।
विभाव–(सं. पुं.) अलंकार-शास्त्र में वह क्रिया जो रति आदि भावों को मन में उल्लास या उत्तेजित करती है।
विभावन–(सं. पुं.) विशेष रूप से चिन्तन।

विभावना–(सं. स्त्री.) वह अर्थालंकार जिसमें कारण के विना कार्य का होना, अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति, अथवा अपवाद या विरुद्ध कारण से किसी कार्य की सिद्धि दिखलाई जाती है।
विभावनीय–(सं. वि.) चिन्तन करने योग्य।
विभावरी–(सं. स्त्री.) रात्रि, वह रात जिसमें तारे जगमगाते हों, हल्दी, धूर्त स्त्री, कुटनी, बहुत बकवाद करनेवाली स्त्री।
विभावरीश–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
विभावसु–(सं. वि.) अधिक प्रभाववाला; (पुं.) एक वसु का नाम, सूर्य, अग्नि, मदार का वृक्ष, एक प्रकार का हार, चन्द्रमा, एक ऋषि का नाम।
विभावित–(सं. वि.) चिन्तित, सोचा हुआ।
विभास–(सं. पुं.) चमक, एक राग का नाम।
विभासक–(सं. वि., पुं.) चमकनेवाला, चमकानेवाला।
विभासना–(हिं. क्रि. अ.) चमकना।
विभासित–(सं. वि.) प्रकाशित, प्रकट।
विभिन्न–(सं. वि.) काटकर अलग किया हुआ, पृथक्, अनेक प्रकार का, उलटा; **–ता**–(स्त्री.) भेद।
विभीत–(सं. वि.) डरा हुआ।
विभीतक–(सं. पुं.) बहेड़े का वृक्ष।
विभीति–(सं. स्त्री.) भय, डर, शंका, सन्देह।
विभीषक–(सं. वि.) डरानेवाला।
विभीषण–(सं. वि.) बड़ा भयंकर या डरावना; (पुं.) रावण का भाई।
विभीषिका–(सं. स्त्री.) भय-प्रदर्शन, डरवाना।
विभु–(सं. वि.) जो सर्वत्र वर्तमान हो, जो सर्वव्यापक हो, सर्वत्र पहुँचनेवाला, महान्, बहुत बड़ा, नित्य, अचल, दृढ़, शक्तिमान्; (पुं.) ब्रह्म, आत्मा, ईश्वर, स्वामी, शिव, विष्णु।
विभुक्रतु–(सं. पुं.) शत्रु को हरानेवाला।
विभुता, विभुत्व–(सं. स्त्री., पुं.) ऐश्वर्य, प्रभुता, शक्ति।
विभूति–(सं. स्त्री.) वृद्धि, बढ़ती, ऐश्वर्य, विभव, धन, सम्पत्ति, अलौकिक शक्ति, शिवजी के अंग में लगाने की राख, प्रभुत्व, बड़ाई, सृष्टि, लक्ष्मी, एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था, विष्णु का नित्य और स्थायी ऐश्वर्य, वह अलौकिक शक्ति जिसके अन्तर्गत आठ सिद्धियाँ हैं, यथा–अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व; **–मत्**–(वि.) धनवान्; **–मान्**–(वि.) ऐश्वर्यशाली, धनवान्।
विभूषण–(सं. पुं.) अलंकार, गहना।
विभूषणा–(सं. स्त्री.) शोभा।
विभूषना–(हिं. क्रि. स.) अलंकृत करना, सजाना।
विभूषा–(सं. स्त्री.) अलंकार, गहना।
विभूषित–(सं. वि.) सुशोभित, अलंकारों से सजाया हुआ, गुणों से युक्त।
विभृष्णु–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
विभेंटन–(हिं. पुं.) गले लगाना, भेंट करना।
विभेतव्य–(सं. वि.) डरने योग्य।
विभेत्ता–(सं. वि.) डरानेवाला।
विभेद–(सं. पुं.) विभाग, विभिन्नता, भेद, प्रकार, अन्तर, धँसना, प्रवेश करना, खंडन, फूट; **–क**–(वि.) काटनेवाला, भेद डालनेवाला; **–कारी**–(वि.) व्यक्तियों में फूट उत्पन्न करनेवाला, विभेदक।
विभेदन–(सं. पुं.) छेदना, तोड़ना, फूट डालना।
विभेदना–(हिं. क्रि. स.) छेदना, काटना, प्रवेश करना।
विभेदी–(सं. वि.) छेदनेवाला, फूट डालनेवाला, काटनेवाला।
विभो–(सं. पुं.) हे प्रभु।
विभोर–(सं. वि.) डूबा हुआ, तल्लीन।
विभौ–(हिं. पुं.) देखें 'विभव'।
विभ्रंश–(सं. पुं.) पतन, नाश, अवनति।
विभ्रंशित–(सं. वि.) पतित, विलुप्त।
विभ्रंशित-ज्ञान–(सं. वि.) ज्ञानशून्य।
विभ्रम–(सं. पुं.) भ्रमण, चक्कर, भ्रम, संशय, सन्देह, भूल, व्यग्रता, स्त्रियों का वह हाव जिसमें वे भ्रम में पड़कर अनेक भाव प्रकट करती हैं।
विभ्रमा–(सं. स्त्री.) वार्धक्य, बुढ़ापा।
विभ्रमी–(सं. वि.) विभ्रमयुक्त।
विभ्रांत–(सं. वि.) भ्रम में पड़ा हुआ, चक्कर खाता हुआ।
विभ्रांति–(सं. स्त्री.) व्यग्रता, घबड़ाहट।
विभ्राट–(सं. पुं.) विपत्ति, उपद्रव, संकट।
विमंडन–(सं. पुं.) शृंगार करना, सजाना, आभूषण, गहना।
विमंडित–(सं. वि.) सुशोभित, सजा हुआ।
विमत–(सं. पुं.) विरुद्ध मत या सिद्धांत।
विमति–(सं. पुं.) दुर्बुद्धि, बुरा विचार, कुमति, विमत।
विमत्सर–(सं. पुं.) अधिक अहंकार, बहुत घमण्ड।
विमद–(सं. वि.) मदरहित।
विमन, विमनस्क–(सं. वि.) उदास, खिन्न।
विमन्यु–(सं. वि.) क्रोध-रहित।
विमर्द–(सं. पुं.) पीसना, मथना, लड़ाई-झगड़ा, विनाश, युद्ध।
विमर्दक–(सं. वि.) नाश करनेवाला, चूर-चूर करनेवाला, पीसनेवाला।
विमर्दन–(सं. पुं.) कुचलना, पीसना, नष्ट करना, मार डालना।
विमर्दित–(सं. वि.) कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ।
विमर्दी–(सं. वि., पुं.) नष्ट करनेवाला, वध करनेवाला।
विमर्श–(सं. पुं.) समालोचना, परामर्श, परीक्षा, किसी बात पर अच्छी तरह विचार करना।
विमर्ष–(सं. पुं.) देखें 'विमर्श', नाटक का एक अंग जिसके अन्तर्गत अपवाद, खेद, संकट, द्वंद्व, विरोध आदि का वर्णन रहता है।
विमल–(सं. वि.) निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध, सुन्दर, मनोहर; (पुं.) चाँदी; **–क**–(पुं.) एक प्रकार का बहुमूल्य रत्न; **–ता**–(स्त्री.) शुद्धता, पवित्रता, मनोहरता; **–त्व**–(पुं.) मनोहरता, स्वच्छता, पवित्रता, निर्मलता; **–दान**–(पुं.) केवल ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये दिया हुआ दान; **–ध्वनि**–(पुं.) छः चरणों का एक छन्द जो दोहा और सवैया को मिलाकर बनता है।
विमला–(सं. वि. स्त्री.) निर्मल, स्वच्छ; (स्त्री.) सरस्वती देवी; **–पति**–(पुं.) विष्णु।
विमलात्मा–(सं. वि.) शुद्ध अन्तःकरणवाला।
विमलार्थक–(सं. वि.) स्वच्छ।
विमलीकरण–(सं. पुं) विमल या शुद्ध करने की क्रिया।
विमाता–(सं. स्त्री.) सौतेली माँ।
विमातृज–(सं. पुं.) सौतेला भाई।
विमान–(सं. पुं.) वायु-यान, हवाई जहाज आकाश-मार्ग, मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो खूब सज-धज के साथ निकाली जाती है, रथ, सात खंडों का प्रासाद, अनादर।
विमानना–(सं. स्त्री.) अपमान, तिरस्कार।
विमानपोत–(सं. पुं.) हवाई जहाज।
विमानयितव्य–(सं. वि.) तिरस्कार करने योग्य।

विमाय–(सं. वि.) मायाहीन।
विमार्ग–(सं. पुं.) कुमार्ग, कुचाल।
विमिश्र, विमिश्रित–(सं. वि.) मिश्रित, मिला हुआ।
विमुक्त–(सं. वि.) पूर्णतः मुक्त, जो बन्धन से छूटा हुआ हो, स्वतन्त्र, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ; **–ता**–(स्त्री.) विमोचन, विमुक्ति।
विमुक्ति–(सं. स्त्री.) मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा।
विमुख–(सं. वि.) मुखरहित, निवृत्त, उदासीन, विरुद्ध, निराश; **–ता**–(स्त्री.) विरोध, अप्रसन्नता, उदासीनता।
विमुग्ध–(सं. वि.) मोहित, भ्रांत, भ्रम में पड़ा हुआ, व्यग्र, घबड़ाया हुआ, उन्मत्त, पागल, भूला हुआ; **–कारी**–(वि.) मोहित करनेवाला, भ्रम में डालनेवाला।
विमुद–(सं. वि.) आनन्दरहित, उदास, खिन्न।
विमूर्च्छ–(सं. वि.) जिसकी मूर्च्छा दूर हो गई हो।
विमूढ़–(सं. वि.) मोहग्रस्त, भ्रम में पड़ा हुआ, बेसुध, अचेत, ज्ञानरहित, जड़बुद्धि, विमोहित; **–गर्भ**–(पुं.) वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा हुआ या चेतनाशून्य हो।
विमूल–(सं. वि.) निर्मूल, बिना जड का।
विमूलन–(सं. पुं.) नाश, ध्वंस।
विमृग्य–(सं. वि.) अन्वेषण के योग्य।
विमृत्यु–(सं. वि.) मृत्युरहित, अमर।
विमृश–(सं. पुं.) आलोचना।
विमृष्ट–(सं. वि.) जिस पर तर्क-वितर्क या विचार किया गया हो।
विमोक–(सं. पुं.) मुक्ति, छुटकारा।
विमोक्ता–(सं. पुं.) मुक्त करनेवाला।
विमोक्ष–(सं. पुं.) मुक्ति, छुटकारा।
विमोक्षक–(सं. वि., पुं.) मुक्ति देनेवाला।
विमोक्षण–(सं. पुं.) विमोचन, मुक्ति।
विमोक्षित–(सं. वि.) मुक्त, विमोचित।
विमोघ–(सं. वि.) अमोघ, व्यर्थ।
विमोचक–(सं. वि.) बंधन से मुक्त करनेवाला।
विमोचन–(सं. पुं.) बन्धन खोलना, मुक्त करना, बाहर करना, निकालना, फेंकना, गिराना।
विमोचना–(हिं. क्रि. स.) मुक्त करना, छुटकारा देना, गिराना, टपकाना।
विमोचित–(सं. वि.) मुक्त किया हुआ, खोला हुआ।
विमोह–(सं. पुं.) भ्रम, अज्ञान, अचेत या बेसुध होना, एक नरक का नाम।
विमोहक–(सं. वि., पुं.) चित्त को लुभानेवाला, भ्रम में डालनेवाला।
विमोहन–(सं. पुं.) मुग्ध करना, चित्त को लुभाना, कामदेव के एक बाण का नाम।
विमोहना–(हिं.क्रि.अ.,स.) मोहित होना या करना, बेसुध होना या करना, धोखे में डालना।
विमोहा–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं, (इसका दूसरा नाम विजोहा है।)
विमोहित–(सं. वि.) मुग्ध, लुभाया हुआ, मूर्च्छित, भ्रम में डाला हुआ।
विमोही–(सं. वि.) मोहित करनेवाला, लुभानेवाला।
विमौट–(हिं. पुं.) दीमक का उठाया हुआ मिट्टी का स्तूप, बाँबी।
विमौन–(सं. वि.) जो मौन न हो।
विमौली–(सं. वि.) शिरोभूषण-रहित।
वियंग–(हिं.पुं.) दो अंगोंवाले, अर्धनारीश्वर शिव, महादेव।
विय–(हिं. वि.) दो, जोड़ा।
वियत्–(सं. पुं.) आकाश, वायुमण्डल; **–पताका**–(स्त्री.) विद्युत्, बिजली।
वियद्गंगा–(सं. स्त्री.) मंदाकिनी।
वियद्ग–(सं. वि.) आकाशगामी।
वियद्भूति–(सं. स्त्री.) अंधकार।
वियन्मणि–(सं. पुं.) सूर्य।
वियम–(सं. पुं.) संयम, दुःख, क्लेश।
वियुक्त–(सं. वि.) जिसका वियोग हुआ हो, बिछुड़ा हुआ, रहित, हीन।
वियुत–(सं. वि.) रहित, अलग, हीन।
वियो–(हिं. वि.) अन्य, दूसरा।
वियोग–(सं. पुं.) अलग होने का भाव, विच्छेद, विरह, अलगाव।
वियोगांत–(सं.वि.) ऐसा नाटक, उपन्यास या कहानी जिसकी कथा का अन्त वियोगपूर्ण या दुःखपूर्ण हो।
वियोगिन, वियोगिनी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम से बिछुड़ी हुई हो।
वियोगी–(हिं. पुं., वि.) विरही पुरुष, जो अपनी प्रियतमा से बिछुड़ा हुआ हो।
वियोजक–(सं. पुं.) पृथक् करनेवाला, गणित में वह संख्या जो किसी बड़ी संख्या से घटाई जानेवाली हो।
वियोजन–(सं. पुं.) पृथक् करना, बाकी निकालना।
वियोजनीय–(सं. वि.) विश्लिष्ट, अलग किया जानेवाला।
वियोजित–(सं. वि.) अलगाया हुआ।
विरंग–(हिं. वि.) बुरे रंग का, अनेक रंगों का।
विरंच–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
विरंचि–(सं. पुं.) विरंच, सृष्टि रचनेवाले ब्रह्मा; **–सुत**–(पुं.) ब्रह्मा के पुत्र नारद।
विरक्त–(सं. वि.) विमुख, अप्रसन्न, उदासीन; **–ता**–(स्त्री.) विमुखता, अप्रसन्नता
विरक्ति–(सं. स्त्री.) उदासीनता, विराग।
विरचन–(सं. पुं.) निर्माण, बनाना।
विरचना–(हिं. क्रि. स.) निर्माण करना, बनाना, सजाना, जी उचटना।
विरचयिता–(सं. पुं.) निर्माण करनेवाला, बनानेवाला।
विरचित–(सं. वि.) निर्मित, बनाया हुआ, लिखित, लिखा हुआ।
विरज–(सं. वि.) स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष।
विरजस्का–(सं. वि.) जिस स्त्री का रजोधर्म बंद हो गया हो।
विरजा–(सं. स्त्री.) कैथ का पेड़।
विरत–(सं. वि.) विमुख, जो तत्पर न हो, विरक्त, वैरागी, लीन।
विरति–(सं. स्त्री.) उदासीनता, वैराग्य।
विरथ–(सं. वि.) बिना रथ का, पैदल, रथ से गिरा हुआ।
विरद–(हिं. पुं.) प्रसिद्धि, यश, कीर्ति; (सं. वि.) बिना दाँत का।
विरदावली–(हिं. स्त्री.) यश की कथा।
विरदैत–(हिं. वि.) यशस्वी।
विरम–(सं. पुं.) देखें 'विराम'।
विरमण–(सं. पुं.) संभोग, विलास, त्याग।
विरमना–(हिं. क्रि. अ.) विराम करना, ठहरना, रम जाना, रुक जाना।
विरमाना–(हिं. क्रि. स.) अनुरक्त करना, फँसाना, किसी कार्य में फँसा रखना, भुलावे में रखना।
विरल–(सं. वि.) जो घना न हो, जो दूर-दूर हो, पतला, दुर्लभ, अल्प, थोड़ा; **–ता**–(स्त्री.) विरल होने का भाव।
विरव–(सं. वि.) शब्दरहित।
विरश्मि–(सं. वि.) बिना किरणों का।
विरस–(सं. वि.) नीरस, फीका, बिना स्वाद का, अरुचिकर, अप्रिय, रसहीन (काव्य); **–ता**–(स्त्री.) फीकापन, नीरसता।
विरह–(सं.पुं.) किसी प्रिय-जन से अलग होने का भाव, किसी वस्तु का अभाव, वियोग, वियोग से होनेवाला दुःख आदि।

विरहा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का गीत जिसको अहीर या गड़ेरिये गाते हैं।
विरहिणी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम से वियोग हुआ हो, और जिसके कारण वह दुःखी हो।
विरहित–(सं. वि.) रहित, शून्य, विना।
विरही–(सं. वि., पुं.) जिसका प्रियतमा से वियोग हुआ हो, वह जो इस वियोग से दुःखी हो।
विरहोत्कंठिता–(सं. स्त्री.) वह नायिका जिसको दृढ़ विश्वास हो कि उसका पति या प्रियतम अमुक समय में आयेगा परन्तु किसी कारणवश वह न आवे।
विराग–(सं. पुं.) लगन या इच्छा का न होना, उदासीन भाव, वैराग्य, संगीत में एक में मिले हुए दो राग।
विरागित–(सं. वि.) विरागयुक्त।
विरागी–(सं. वि., पुं.) विरक्त, संसार-त्यागी व्यक्ति, उदासीन।
विराजना–(हिं. क्रि. अ.) उपस्थित रहना, शोभित होना, वैठना।
विराजमान–(सं. वि.) सुशोभित, बैठा हुआ।
विराजित–(सं. वि.) वैठा हुआ, विद्यमान, उपस्थित।
विराजिन्–(सं. वि.) सुशोभित, उपस्थित।
विराट्–(सं. पुं.) ब्रह्म का स्थूल रूप जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व है, कान्ति, दीपक; (वि.) बहुत वड़ा या भारी।
विराट–(सं. पुं.) मत्स्य देश, इस देश के राजा जिनके यहाँ अज्ञातवास के समय पाण्डव लोग सेवक वनकर रहे थे, संगीत में एक ताल का नाम।
विरातक–(सं. पुं.) अर्जुन वृक्ष।
विराध–(सं. पुं.) क्लेश, पीड़ा, कष्ट देना, एक राक्षस जिसको राम ने दण्डकारण्य में मारा था।
विराधन–(सं. पुं.) पीड़ा, कष्ट, विराध।
विराम–(सं.पुं.) रुकना, ठहराव, विश्राम, वोलने आदि के समय वाक्य में वह स्थान जहाँ ठहरना पड़ता हो, छन्द के चरणों में पढ़ते समय ठहरने का स्थान, यति; **–ताल**–(पुं.) संगीत में एक ताल का नाम।
विराल–(सं. पुं.) विडाल, विल्ली।
विराव–(सं. पुं.) शब्द, वोली।
विरावी–(सं. वि.) कोलाहल करनेवाला, चिल्लानेवाला।
विरास, विरासी–(हिं. पुं., वि.) देखें 'विलास', 'विलासी'।
विरिंचि–(हिं. पुं.) ब्रह्मा, शिव, विष्णु।
विरुज–(सं. वि.) रोगरहित, नीरोग।
विरुझना–(हिं. क्रि. अ.) उलझना।
विरुत–(सं. वि.) कूजित, गूँजता हुआ।
विरुद–(सं. पुं.) यश, कीर्ति, वह कविता जिसमें किसी के गुण, प्रताप आदि का वर्णन हो।
विरुदावली–(सं. स्त्री.) किसी के प्रताप, पराक्रम आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन।
विरुद्ध–(सं. वि.) प्रतिकूल, विपरीत, अप्रसन्न, अनुचित; **–कर्मा**–(पुं.) विपरीत आचरणवाला मनुष्य, साहित्य में श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें किसी एक क्रिया के अनेक विरुद्ध फल दिखलाये जाते हैं; **–ता**–(स्त्री.) प्रतिकूलता, वैपरीत्य; **–रूपक**–(पुं.) रूपक अलंकार का वह भेद जिसमें कही हुई कोई वात स्थूलतया असम्वद्ध जान पड़ती है, परन्तु विचार करने पर संगत सिद्ध होती है।
विरुद्धार्थदीपक–(सं. पुं.) दीपक अलंकार का एक भद जिसमें किसी एक कथन से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखलाया जाता है।
विरुधिर–(सं. वि.) रक्तहीन, जिसमें रुधिर न हो।
विरूक्ष–(सं. वि.) जो रूखा हो, कर्कश।
विरूढ़–(सं. वि.) आरूढ़, चढ़ा हुआ, उत्पन्न।
विरूथिनी–(सं. स्त्री.) वैशाख कृष्णा एकादशी।
विरूप–(सं. वि.) कुरूप, भद्दा, विविध रूपों का, शोभारहित, वदला हुआ, विरुद्ध, भिन्न, उलटा; **–ता**–(स्त्री.) कुरूपता, भद्दापन।
विरूपा–(सं. स्त्री.) यम की पत्नी का नाम; (वि.) कुरूप, भद्दा।
विरूपाक्ष–(सं. वि.) डरावने नेत्रोंवाला; (पुं.) शिव, महादेव, एक दिग्गज का नाम, रावण के एक सेनापति का नाम।
विरूपिका–(सं. स्त्री.) कुरूपा स्त्री।
विरूपी–(सं. वि.) कुरूप।
विरेचक–(सं. वि.) शौच लानेवाला।
विरेचन–(सं.पुं.) शौच लानेवाली औषध।
विरोक–(सं. पुं.) सूर्य, किरण, दीप्ति, चमक।
विरोचन–(सं. वि.) प्रकाशमान; (पुं.) सूर्य की किरण, चन्द्रमा, विष्णु, मदार का पौधा; **–सुत**–(पुं.) राजा बलि।
विरोध–(सं. पुं.) विपरीत भाव, वैर, शत्रुता, अनवन, उलटी स्थिति, व्याघात, नाश, मेल का न होना, वह अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया अथवा द्रव्य में से किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विपरीतता दिखाई जाती हो, नाटक का एक अंग जिसमें किसी वर्णन के क्रम में किसी आपत्ति का आभास दिखलाया जाता है।
विरोधक–(सं. वि.) विरोध करनेवाला।
विरोधन–(सं. पुं.) नाश, नाटक में विमर्श का एक अंग जो उस समय होता है जब किसी कारण से कोई कार्य नष्ट होता हुआ दिखलाया जाता है।
विरोधना–(हिं. क्रि. स.) विरोध करना, शत्रुता करना।
विरोधाचरण–(सं.पुं.) शत्रुता का व्यवहार।
विरोधाभास–(सं. पुं.) वह अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया अथवा द्रव्य का विरोध दिखाई पड़ता है।
विरोधित–(सं. वि.) जिसका विरोध किया गया हो।
विरोधिता–(सं. स्त्री.) शत्रुता, वैर।
विरोधिनी–(सं. स्त्री.) विरोध करनेवाली।
विरोधी–(सं. वि., पुं.) विरोध करनेवाला, प्रतिद्वंद्वी, विपक्षी, शत्रु, साठ संवत्सरों में से पचीसवाँ संवत्सर।
विरोधी-श्लेष–(सं. पुं.) श्लेष अलंकार का वह भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों के द्वारा दो पदार्थों में भेद, न्यूनाधिकता या विरोध दिखलाया जाता है।
विरोधोक्ति–(सं. स्त्री.) परस्पर-विरोधी कथन।
विरोधोपमा–(सं. स्त्री.) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें किसी वस्तु की उपमा दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है।
विरोध्य–(सं. वि.) विरोध के योग्य।
विरोपण–(सं.पुं.) रोपना, पौधा लगाना, घाव का भरना।
विरोम–(सं. वि.) रोम-रहित, विना रोयें का।
विरोष–(सं. वि.) क्रोधरहित, विना क्रोध का, धीर।
विरोहण–(सं. पुं.) पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में लगाना।
विरोही–(सं. पुं.) पौधा लगानेवाला।
विलंघन–(सं. पुं.) लंघन करना, उपवास करना, कूद या लाँघकर पार करना।
विलंघना–(सं. स्त्री.) वाधा आदि दूर करना।

विलंघनीय–(सं. वि.) पार करने योग्य।
विलंघित–(सं. वि.) विफल, पराजित, पराभूत।
विलंघी–(सं. वि.) नियम का उल्लंघन करनेवाला।
विलंब–(सं. पुं.) दीर्घसूत्रता, देर।
विलंबन–(सं. पुं.) देर करना, विलंब करना, लटकना।
विलंबना–(हिं. क्रि. अ.) देर करना, लटकना, मन में बसना।
विलंबित–(सं. वि.) लटकता हुआ, जिसमें देर हुई हो।
विलंबित-गति–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।
विलंबी–(सं. वि.) देर करनेवाला।
विलंभ–(सं. पुं.) उदारता, उपहार।
विल–(सं. वि.) विल, छिद्र, कंदरा।
विलक्ष–(सं. वि.) व्यग्र, घवड़ाया हुआ, आश्चर्य में पड़ा हुआ।
विलक्षण–(सं. वि.) अपूर्व, अद्‌भुत; –**ता**–(स्त्री.) अनोखापन।
विलखना–(हिं. क्रि. अ.) दुःखी होना।
विलखाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) विकल करना, घवड़ाना।
विलग–(हिं. वि.) अलग, पृथक्; (पुं.) भेद।
विलगाना–(हिं. क्रि. अ., स.) अलग होना या करना, पृथक् करना।
विलग्न–(सं. वि.) संलग्न, लगा हुआ।
विलच्छन–(हिं. वि.) देखें 'विलक्षण'।
विलज्ज–(सं. वि.) लज्जारहित।
विलपन–(सं. पुं.) विलाप, वार्तालाप।
विलपना–(हिं. क्रि. अ.) विलाप करना, रोना।
विलपाना–(हिं. क्रि. स.) रुलाना, किसी को विलाप करने में प्रवृत्त करना।
विलब्ध–(सं. वि.) अलग किया हुआ।
विलय–(सं. पुं.) प्रलय, लोप, नाश, मृत्यु।
विलसन–(सं. पुं.) चमकने की क्रिया, आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा।
विलसना–(हिं. क्रि अ.) विलास करना, क्रीड़ा करना, शोभित होना।
विलसाना–(हिं.क्रि.अ., स.) देखें 'विलसना', विलसने में प्रवृत्त करना।
विलाप–(सं. पुं.) क्रन्दन, विकल होकर रोने की क्रिया।
विलापना–(हिं. क्रि. अ.) विलाप करना, रोना।
विलायत–(अ.पुं.) इंगलैंड, अमेरिका आदि पश्चिमी देश।
विलायती–(अ. वि.) विलायत का।
विलायन–(सं. पुं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।
विलावली–(हिं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
विलास–(सं. पुं.) हर्ष, आनन्द, सुख-भोग, मनोरंजन, हाव-भाव, किसी अंग की मनोहर चेष्टा, अगभंगी, सुखोपभोग; –**भवन**,–**मंदिर**,–**वेश्म**–(पुं.) क्रीड़ागृह, नाचघर; –**विपिन**–(पुं.) क्रीड़ावन; –**शील**–(वि.) विलास करनेवाला।
विलासिका–(सं. स्त्री.) नाटक में एक प्रकार का रूपक।
विलासिनी–(सं. स्त्री.) सुन्दर युवा स्त्री, वेश्या, रंडी, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।
विलासी–(सं.वि.,पुं.) कामी पुरुष, विलास-शील।
विलिखित–(सं. वि.) लिखा हुआ, खुदा हुआ।
विलिप्त–(सं. वि.) लिपा-पुता हुआ।
विलीक–(हिं. वि.) अनुचित, अयोग्य।
विलीन–(सं.वि.) लिप्त, छिपा हुआ, नष्ट।
विलुंपक–(सं. पुं.) चोर, ठग।
विलुप्त–(सं. वि.) जिसका विलोप हो गया हो।
विलुभित–(सं. वि.) चंचल।
विलुलित–(सं. वि.) लहराता हुआ।
विलून–(सं. वि.) कटा हुआ, अलग किया हुआ।
विलेप–(सं. पुं.) लेप।
विलेपन–(सं. पुं.) लेप करने की क्रिया, शरीर में लगाने का पदार्थ, अंगराग।
विलेशय–(सं. पुं.) विल में रहनेवाला जीव, सर्प, साँप।
विलोक–(सं. पुं.) दृष्टि।
विलोकना–(हिं. क्रि. स.) अवलोकन करना, देखना।
विलोकनीय–(सं. वि.) देखने योग्य।
विलोकित–(सं. वि.) देखा हुआ।
विलोचन–(सं. पुं.) नयन, नेत्र, आँख, एक नरक का नाम, आँख फोड़ने की क्रिया।
विलोड़ना–(हिं. क्रि. स.) मथना, क्षुब्ध करना।
विलोप–(सं. पुं.) नाश, हानि, विघ्न, लोप।
विलोपक–(सं. वि.) नाश करनेवाला।
विलोपना–(हिं. क्रि. स.) लोप करना, बाधा डालना।
विलोपी–(सं. वि) नाश करनेवाला।
विलोभ–(सं. पुं.) मोह, भ्रम, माया।
विलोभन–(सं. पुं.) मोहित करने की क्रिया या भाव।
विलोम–(सं. वि.) प्रतिकूल, विपरीत, उलटा; (पुं.) उलटा क्रम, संगीत में स्वर का अवरोह या उतार, सर्प, कुत्ता; –**क्रिया**–(स्त्री.) अन्त से आदि की ओर जानेवाली क्रिया; –**ज**–(वि.) उच्च वर्ण की माता तथा नीच वर्ण के पिता से उत्पन्न (संतान); –**जिह्व**–(पुं.) हस्ती, हाथी; –**वर्ण**–(पुं.) वर्णसंकर जाति।
विलोल–(सं. वि.) चंचल, चपल।
विलोलन–(सं. पुं.) कंपन, काँपना।
विल्व–(सं. पुं.) वेल का पेड़; –**पत्र**–(पुं.) वेल का पत्ता; –**मंगल**–(पुं.) सूरदास का अन्धा होने के पहले का नाम।
विवंश–(सं. वि.) वंशरहित।
विव–(हिं. वि.) दो, दूसरा।
विवक्ता–(सं.पुं.) कहनेवाला, संशोधक।
विवक्षा–(सं. स्त्री.) बोलने की इच्छा, आशय, तात्पर्य, अर्थ।
विवक्षित–(सं.वि.) अभिलषित, इच्छित अभिप्रेत, कथित।
विवदना–(हिं. क्रि. अ.) शास्त्रार्थ करना, झगड़ा या विवाद करना।
विवर–(सं. पुं.) विल, छेद, गड्ढा, कंदरा, गुहा।
विवरण–(सं. पुं.) सविस्तार वर्णन, व्याख्या, भाष्य, टीका, वृत्तान्त।
विवर्जक–(सं. वि.) त्याग करनेवाला।
विवर्जन–(सं. पुं.) परित्याग, उपेक्षा।
विवर्जनीय–(सं. वि.) त्याग करने योग्य।
विवर्जित–(सं. वि.) त्यक्त, निषिद्ध, उपेक्षित, रहित।
विवर्ण–(सं. वि.) रंग बदलनेवाला, नीच, कान्तिहीन; (पुं.) साहित्य में भय, लज्जा मोह आदि के कारण नायक या नायिका के मुख का रंग उदास हो जाने का भाव।
विवर्त–(सं. पुं.) समूह, नृत्य, आकाश, रूपान्तर, भ्रम, भ्रान्ति।
विवर्तन–(सं. पुं.) परिभ्रमण, घूमना, फिरना।
विवर्तवाद–(सं. पुं.) वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसके द्वारा संसार को माया तथा ब्रह्म को सत्य मानते हैं।
विवर्तित–(सं. वि.) परिवर्तित, बदला हुआ, उखड़ा हुआ।
विवर्धन–(सं. पुं.) वृद्धि, बढ़ती, उन्नति।
विवर्धित–(सं. वि.) बढ़ा हुआ, उन्नत।

विवश–(सं. वि.) पराधीन, लाचार; **–ता**–(स्त्री.) पराधीनता, लाचारी।
विवशीकृत–(सं. वि.) विवश किया हुआ।
विवस–(हिं. वि.) देखें 'विवश'।
विवस्त्र–(सं. वि.) वस्त्रहीन, नंगा।
विवस्वत्–(सं. पुं.) सूर्य, अरुण, पंद्रहवें प्रजापति का नाम।
विवाक्य–(सं. वि.) वाक्यहीन।
विवाद–(सं. पुं.) वाग्युद्ध, झगड़ा, कलह, मतभेद; (मुहा०) **–उठाना**– मतभेद प्रकट करना, झगड़ा आरंभ करना; **–क**–(पुं.) झगड़ालू, विवाद करनेवाला।
विवादास्पद–(सं. वि.) जिस पर विवाद या झगड़ा हो, विवाद के योग्य।
विवादी–(सं. वि., पुं.) विवाद करनेवाला, वादी, संगीत में वह स्वर जिसका व्यवहार किसी राग में बहुत कम होता है।
विवाधिक–(सं. पुं.) फेरीवाला, घूम-फिरकर पदार्थ बेचनेवाला।
विवास–(सं. पुं.) प्रवास, वास।
विवासन–(सं. पुं.) वास करना।
विवाह–(सं. पुं.) वह संस्कार जिसमें पुरुष और स्त्री यौनचर्या तथा संतान की उत्पत्ति के लिए परस्पर सम्बद्ध किये जाते हैं, पाणिग्रहण, परिणय, व्याह, दारकर्म।
विवाहना–(हिं. क्रि. स.) व्याह करना।
विवाहित–(सं. वि.) जिसका विवाह हो चुका हो।
विवाहिता–(सं. वि. स्त्री.) व्याही हुई स्त्री।
विवाही–(हिं. वि. स्त्री.) जिसका विवाह हो चुका हो।
विवाह्य–(सं. वि.) पाणिग्रहण करने योग्य।
विवि–(हिं. वि.) दो, दूसरा।
विविक्त–(सं. वि.) पृथक् किया हुआ, विखरा हुआ, पवित्र, निर्जन; **–चरित**–(वि.) शुद्ध आचरणवाला।
विविक्षु–(सं. वि.) आश्रय चाहनेवाला।
विविचार–(सं. वि.) विवेक या विचार-रहित।
विविचारी–(सं. वि., पुं.) दुराचारी, दुश्चरित्र।
विवित्सा–(सं. स्त्री.) जानने की इच्छा।
विवित्सु–(सं. वि.) जानने के लिये उत्सुक।
विविदिषा–(सं. स्त्री.) जानने की इच्छा।
विविध–(सं. वि.) अनेक प्रकार का।
विविर–(सं. पुं.) खोह, गुहा, विल।
विबुध–(सं. पुं.) देवता, ज्ञानी, पण्डित; **–पुर**–(पुं.) स्वर्ग; **–प्रिया**–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम; **–वन**–(पुं.) नन्दनवन; **–वैद्य**–(पुं.) अश्विनीकुमार।
विबुधेश–(सं. पुं.) देवताओं के राजा इन्द्र।
विवृत–(सं. वि.) विस्तृत, फैला हुआ।
विवृत्त–(सं. वि.) घूमता हुआ, चक्कर खाता हुआ।
विवृत्ति–(सं. स्त्री.) परिभ्रमण, चक्कर, भाग्य, टीका।
विवृत्तोक्ति–(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें श्लेष का अर्थ कवि स्वयं प्रकट कर देता है।
विवेक–(सं. पुं.) भले-बुरे का ज्ञान, अच्छा-बुरा जानने की शक्ति, बुद्धि, विचार, ज्ञान; **–ज्ञ**–(पुं.) वह जिसको भले-बुरे का पूरा ज्ञान हो; **–ज्ञान**–(पुं.) तत्त्वज्ञान, सच्चा ज्ञान; **–ता**–(स्त्री.) ज्ञान; **–वान्**–(वि.) बुद्धिमान्, विवेकी।
विवेकी–(सं. वि., पुं.) भले-बुरे का ज्ञान रखनेवाला, बुद्धिमान्, ज्ञानी, न्यायाधीश।
विवेचन–(सं. पुं.) परीक्षा, जाँच, निर्णय, अनुसंधान, मीमांसा, व्याख्या।
विवेचना–(सं. स्त्री.) देखें 'विवेचन'।
विवेचनीय–(सं. वि.) मीमांसा या विवेचन करने योग्य।
विवेचित–(सं. वि.) निश्चित, विवेचन किया हुआ।
विव्वोक–(सं. पुं.) शृंगार के अनुसार वह भाव जिससे स्त्रियाँ संयोग के समय नायक का अनादर करती हैं।
विशंक–(सं. वि.) निर्भय, निडर।
विशंकनीय–(सं. वि.) शंकायुक्त, डरपोक।
विशंका–(सं. स्त्री.) अविश्वास, संदेह।
विशंकी–(सं. वि.) जिसको किसी का भय हो, आशंकायुक्त।
विश–(सं. पुं.) मृणाल, कमल की डंडी, मनुष्य।
विशद–(सं. वि.) स्पष्ट, स्वच्छ, सफेद, सुन्दर, अनुकूल, प्रसन्न; (पुं.) सफेद रंग।
विशब्द–(सं. वि.) शब्दरहित।
विशय–(सं. पुं.) संशय, सन्देह।
विशयी–(सं. वि.) संशययुक्त।
विशर, विशरण–(सं. पुं.) वध करना, मार डालना।
विशल्य–(सं. वि.) शल्यरहित, चिन्ताशून्य।
विशस्ति–(सं. स्त्री.) वध, हत्या।
विशांपति–(सं. पुं.) राजा।
विशाख–(सं. पुं.) शिव, कार्तिकेय, एक देवता का नाम; (वि.) शाखाहीन।
विशाखा–(सं. स्त्री.) सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र।
विशाय–(सं. पुं.) पहरेदारों का वारी-वारी से सोना।
विशारद–(सं. पुं.) किसी विषय का अच्छा विद्वान्, दक्ष, कुशल; (वि.) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रसिद्ध, विद्वान्, अभिमानी।
विशारदा–(सं. स्त्री.) केंवाच, एक पौधा।
विशाल–(सं. वि.) विस्तृत और बड़ा, लंबा-चौड़ा, भव्य, प्रसिद्ध; **–क**–(पुं.) एक यक्ष का नाम, गरुड़, कपित्थ, कैथ; **–ता**–(स्त्री.) विशाल होने का भाव।
विशाला–(सं. स्त्री.) दक्ष की एक कन्या का नाम, इन्द्रवारुणी लता।
विशालाक्ष–(सं. पुं.) विष्णु, शिव, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) बड़ी आँखोंवाला।
विशालाक्षी–(सं. स्त्री.) चौंसठ योगिनियों में से एक का नाम, बड़ी-बड़ी आँखों-वाली स्त्री, पार्वती।
विशिका–(सं. स्त्री.) बालू, रेत।
विशिख–(सं. पुं.) बाण, एक प्रकार की घास।
विशिष्ट–(सं. वि.) विलक्षण, अद्‌भुत, अधिक शिष्ट, यशस्वी, कीर्तिशाली, विशेषतायुक्त, मिला हुआ, प्रसिद्ध; **–ता**–(स्त्री.) विशेषता।
विशिष्टाद्वैत–(सं. पुं.) वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार जीवात्मा और संसार को ब्रह्म से भिन्न होने पर भी उससे अभिन्न माना जाता है।
विशीर्ण–(सं. वि.) जीर्ण, बहुत पुराना, सूखा हुआ; **–पर्ण**–(पुं.) नीम का वृक्ष।
विशीर्ष–(सं. वि.) बिना सिर का।
विशील–(सं. वि.) बुरे चरित्र का, दुष्ट।
विशुंडि–(सं. पुं.) कश्यप के एक पुत्र का नाम।
विशुद्ध–(सं. वि.) अति शुद्ध, जिसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो, सच्चा; **–चरित्र**–(पुं.) शुद्ध आचरण करनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) पवित्रता।
विशुद्धि–(सं. स्त्री.) पवित्रता।
विशूचिका–(सं. स्त्री.) देखें 'विसूचिका'।
विशृंखल–(सं. वि.) शृंखलारहित, जिसमें किसी प्रकार का बंधन न हो।
विशृंग–(सं. वि.) शृंगरहित, विना सींग का।
विशेष–(सं. वि.) असाधारण, अधिक; (पुं.) अन्तर, भेद, प्रकार, तारतम्य, समानता, विचित्रता, नियम, सार, तत्त्व अधिकता, वस्तु, पदार्थ, खास गुण

या धर्म, वैशेषिक दर्शन के अनुसार सात प्रकार के पदार्थों में से एक, साहित्य में वह अलंकार जिसमें विना किसी आधार के आधेय का वर्णन होता है या थोड़ा कार्य करने पर बहुत बड़ा लाभ होना, अथवा किसी एक वस्तु का अनेक स्थानों में होना वर्णन किया जाता है।
विशेषक–(सं. वि.) विशेषता को स्पष्ट करनेवाला; (पुं.) तिलक, साहित्य में वह पद्य जिसमें तीन श्लोकों या पदों की एक ही क्रिया होती है।
विशेषज्ञ–(सं. पुं.) किसी विषय का अच्छा और विशिष्ट जानकार।
विशेषण–(सं. पुं.) वह जो किसी प्रकार की विशेषता प्रकट करता हो, व्याकरण में वह शब्द जो किसी संज्ञा की विशेषता सूचित करता है।
विशेषता–(सं. स्त्री.) विशिष्ट होने का भाव या धर्म, खूबी।
विशेषना–(हि. क्रि. स.) विशेषता प्रदान करना, निर्णय करना।
विशेषित–(सं. वि.) जो विशेष गुण के आधार पर अलग किया गया हो।
विशेषोक्ति–(सं. स्त्री.) साहित्य में वह अलंकार जिसमें पूर्ण कारण के न रहने पर भी कार्य की सिद्धि का वर्णन किया जाता है।
विशेष्य–(सं. पुं.) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा रहता है।
विशोक–(सं. वि.) शोकरहित; (पुं.) शोक का अंत, युधिष्ठिर के एक अनुचर का नाम।
विशोधन–(सं. पुं.) विशुद्ध करना।
विशोधिनी–(सं. स्त्री.) नागदंती लता।
विशोधी–(सं. वि.) साफ या शुद्ध करनेवाला।
विशोध्य–(सं. वि.) शोधन करने योग्य।
विशोष–(सं. पुं.) शुष्कता, रूखापन।
विशोषण–(सं. पुं.) अच्छी तरह सोखना।
विश्रंभ–(सं. पुं.) विश्वास, प्रेम, हत्या, इधर-उधर आनन्द से घूमना, प्रेमी और प्रेमिका का रति के समय का झगड़ा।
विश्रब्ध–(सं. वि.) विश्वसनीय, शान्त, निर्भय, निडर; **–नवोढ़ा**–(स्त्री.) वह नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर थोड़ा-थोड़ा प्रेम और विश्वास होने लगा हो।
विश्रम–(सं. पुं.) देखें 'विश्राम'।
विश्रयी–(सं. वि.) आश्रय या सहारा लेनेवाला।
विश्रवा–(सं. पुं.) एक प्राचीन ऋषि जो पुलस्त्य मुनि के पुत्र थे।
विश्रांत–(सं. वि.) जिसकी थकावट दूर हो गई हो।
विश्रांति–(सं. स्त्री.) विश्राम, आराम।
विश्राम–(सं. पुं.) थकावट दूर करना, श्रम मिटाना, आराम करना, सुख, ठहरने का स्थान, मकान।
विश्राव–(सं. पुं.) अधिक प्रसिद्धि।
विश्री–(सं. वि.) शोभाहीन, कुरूप, भद्दा।
विश्रुत–(सं. वि.) विख्यात, प्रसिद्ध।
विश्रुतात्मा–(सं. पुं.) विष्णु।
विश्रुति–(सं. स्त्री.) प्रसिद्धि।
विश्लिष्ट–(सं. स्त्री.) अलग किया हुआ, प्रकाशित, विकसित, शिथिल, थका हुआ, मुक्त।
विश्लेष–(सं.पुं.) पृथक् होना, शिथिलता; वियोग, विछोह।
विश्लेषण–(सं. पुं.) किसी पदार्थ के संयोजक तत्त्वों को पृथक् करना।
विश्वंभर–(सं. पुं.) परमेश्वर।
विश्वंभरा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
विश्व–((सं. पुं.) समस्त ब्रह्माण्ड, चौदहों भुवनों का समूह, संसार, शिव, विष्णु, देह, शरीर, जीवात्मा, एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य, देवताओं का एक गण जिसके अन्तर्गत दस देवता है, यथा–वसु, सत्य, ऋतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा; (वि.) समस्त, सर्वव्यापक; **–कथा**–(स्त्री.) संसारसंबंधी कथा; **–कर्त्ता**–(पुं.) परमेश्वर; **–कर्मजा**–(स्त्री.) सूर्य की पत्नी का नाम; **–कर्मा**–(पुं.) संपूर्ण संसार की रचना करनेवाला, ईश्वर, ब्रह्मा, सूर्य, शिव, बढ़ई, थवई, लोहार, एक देवता जो सव प्रकार की शिल्प-कलाओं के अधिष्ठाता माने जाते हैं; **–काय**–(पुं.) विष्णु; **–काया**–(स्त्री.) दुर्गा; **–कारक**–(पुं.) विश्व के कर्ता, शिव; **–कारु**–(पुं.) विश्वकर्मा; **–कूट**–(पुं.) हिमालय की एक चोटी का नाम; **–कृत्**–(पुं.) देखें 'विश्वकर्मा'; **–कोश**–(पुं.) वह ग्रंथ जिसमें ज्ञान के सब अंगों का सारगर्भ विवरण रहता है; **–क्षय**–(पुं.) प्रलय; **–ग**–(पुं.) ब्रह्मा; **–गत**–(वि.) विश्वव्याप्त; **–गर्भ**–(पुं.) शिव, विष्णु; **–गुरु**–(पुं.) विष्णु; **–चक्षु**–(पुं.) ईश्वर; **–जन्य**–(वि.) विश्व का हित करनेवाला; **–जयी**–(वि.) विश्व को जीतनेवाला; **–जित्**–(पुं.) वह जिसने संपूर्ण विश्व पर विजय प्राप्त की हो; **–तनु**–(पुं.) विष्णु; **–तृप्त**–(पुं.) परमेश्वर, विष्णु। **–दासा**–(स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम; **–दृश्**–(वि.) सबको देखनेवाला (परमेश्वर); **–देव**–(पुं.) वह देवता जिनकी पूजा नान्दीमुख श्राद्ध में होती है; **–धर**–(पुं.) विष्णु; **–नाथ**–(पुं.) शिव, महादेव, काशी के सर्व-प्रसिद्ध शिवलिंग का नाम; **–नाभ**–(पुं.) विष्णु; **–बाहु**–(पुं.) शिव, महादेव; **–माता**–(स्त्री.) दुर्गा; **–मुखी**–(स्त्री.) पार्वती; **–मोहन**–(वि.) सबको मुग्ध करनेवाला; (पुं.) **–योनि**–विष्णु; (पुं.) विश्व का कारण ब्रह्मा; **–रुची**–(स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक; **–रूप**–(पुं.) शिव, विष्णु, श्रीकृष्ण का वह रूप जो उन्होंने अर्जुन को गीता का उपदेश सुनाते समय दिखलाया था; **–रूपी**–(पुं.) विष्णु; **–लोचन**–(पुं.) सूर्य, चन्द्रमा; **–वास**–(पुं.) संसार, दुनिया; **–विद्**–(पुं.) बहुत बड़ा ज्ञानी; **–विद्यालय**–(पुं.) वह संस्था जिसमें सब प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है; **–विधाता**–(पुं.) सृष्टिकर्ता; **–विभावन**–(पुं.) संसार का प्रतिपालक; **–विश्रुत**–(वि.) संसार में प्रसिद्ध; **–विश्व**–(पुं.) ईश्वर; **–वृक्ष**–(पुं.) विष्णु; **–व्यापी**–(वि.) जो सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो; **–श्रवा**–(पुं.) एक ऋषि जो कुवेर, रावण आदि के पिता थे; **–सत्तम**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–सू**–(वि.) ईश्वर; **–सृज्**–(पुं.) ब्रह्मा, जगदीश्वर; **–सृष्टि**–(स्त्री.) संसार की सृष्टि; **–हेतु**–(पुं.) विष्णु।
विश्वसन–(सं. पुं.) विश्वास।
विश्वसनीय–(सं. पुं.) विश्वास करने योग्य।
विश्वसित–(सं.वि.) विश्वासपूर्ण, विश्वस्त।
विश्वस्त–(सं. वि.) विश्वसनीय।
विश्वात्मा–(सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
विश्वाधार, विश्वाधिप–(सं. पुं.) परमेश्वर।
विश्वामित्र–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो क्षत्रिय थे, (इनका नाम गाधिज, गाधेय और कौशिक भी था।)
विश्वायन–(सं. पुं.) विश्वात्मा, ब्रह्मा।

विश्वावसु–(सं. पुं.) एक गन्धर्व का नाम, विष्णु, एक संवत्सर का नाम; (स्त्री.) रात ।
विश्वास–(सं. पुं.) किसी विषय में होनेवाली विशिष्ट धारणा, भरोसा; **–कारक**– (वि.) मन में विश्वास उत्पन्न करनेवाला; **–घात**– (पुं.) विश्वास करनेवाले के साथ धोखा छल करना; **–पात्र**–(वि., पुं.) (वह) जिस पर भरोसा किया जाय; **–स्थान**–(पुं.) विश्वासपात्र ।
विश्वासन–(सं. पुं.) विश्वास उत्पन्न करना ।
विश्वासिक–(सं. वि.) विश्वास के योग्य।
विश्वासी–(सं. पुं. वि.) विश्वास करनेवाला, वह जिस पर विश्वास किया जाय।
विश्वेदेव–(सं. पुं.) अग्नि, देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्रादि नौ देवता माने जाते है ।
विश्वेश–(सं. पुं.) शिव, विष्णु, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।
विश्वेश्वर–(सं. पुं.) शिव की एक मूर्ति का नाम ।
विषंड–(सं.पुं.) मृणाल, कमल की नाल ।
विष–(सं. पुं.) वह पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में प्रविष्ट होने पर प्राण ले लेता अथवा स्वास्थ्य नष्ट कर देता है, गरल, वछनाग, कलियारी; (मुहा.) **–की गाँठ**– अनेक प्रकार के उपद्रव खड़ा करनेवाला; **–कंठ**–(पुं.) महादेव; **–कन्या**– (स्त्री.) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करने पर मनुष्य मर जाता है; **–कृत**– (वि.) विष मिला हुआ; **–घ्न**–(वि.) विष का नाश करनेवाला; **–घ्नी**–(स्त्री.) वनतुलसी, भूम्यामलकी, हल्दी, अपामार्ग; **–चक्र**–(पुं.) चकोर पक्षी; **–जल**– (पुं.) विषैला पानी; **–जुष्ट**–(वि.) विष मिला हुआ; **–तंत्र**–(पुं.)–, **विद्या**–(स्त्री.) सर्पादि का विष दूर करने की चिकिसा; **–दंतक**–(पुं.) सर्प; **–दुष्ट**–(वि.) विषमिश्रित; **–द्रुम**–(पुं.) कुचले का वृक्ष; **–धर**–(पुं.) सर्प, साँप; **–नाशक**–(वि.) विष को दूर करनेवाला; **–पन्नग**–(पुं.) विषैला साँप; **–पुच्छ**–(पुं.) बिच्छू; **–पुष्प**– (पुं.) विषैला फूल; **–पुष्पक**– (पुं.) मैनफल; **–भिषज्**–, **–वैद्य**–(पुं.) विष की चिकित्सा करनेवाला **–भुजंग**– (पुं.) विषैला साँप; **–मंत्र**–(पुं.) वह जो विष उतारने का मन्त्र जानता हो; **–मय**–(वि.) जहरीला ।
विषण्ण–(सं. वि.) चिन्तित, दुःखी ।
विषण्णता–(सं. स्त्री.) उदासी ।
विषम–(सं. वि.) जो समान या बराबर न हो, (वह संख्या) जो २ से बराबर विभाज्य न हो, ताक, बहुत तीव्र, अति कठिन, भयंकर; (पुं.) संगीत में एक प्रकार का ताल, संकट, विपत्ति, वह वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बराबर या समसंख्यक अक्षर न हों, वह अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है; **–क**–(वि.) असमान, जो बराबर न हो; **–कर्ण**–(पुं.) असमान कर्णोवाला चतुर्भुज; **–कर्म**–(पुं.) असाधारण कार्य; **–कोण**–(पुं.) समकोण से बड़ा कोण; **–खात**–(पुं.) वह गड्ढा जिसके चारों किनारे बराबर न हों; **–चतुरस्र**–(पुं.) वह असमान बाहुओं का चतुष्कोण-क्षेत्र जिसके आमने-सामने की भुजाएँ समानान्तर हों; **–चतुष्कोण**–(पुं.) विषम भुजाओंवाला चतुष्कोण-क्षेत्र; **–ज्वर**– (पुं.) वह ज्वर जो प्रतिदिन आता हो, परन्तु इसके आने का कोई नियत समय न हो तथा तापमान भी प्रतिदिन समान न हो; **–ता**– (स्त्री.) असमानता, द्रोह, वैर; **–त्रिभुज**–(पुं.) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ समान न हों; **–दलक**–(पुं.) वह सीप जिसके दोनों दल समान न हों; **–नयन**, **–नेत्र**– (पुं.) शिव, महादेव; **–राशि**–(स्त्री.) अयुग्म राशियाँ; यथा–मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ; **–रूप**–(वि.) जो समरूप का न हो; **–वल्कल**– (पुं.) नारंगी, नीबू; **–विभाग**–(पुं.) असमान अंश; **–वृत्त**–(पुं.) वह छन्द जिसके चरण समान न हों; **–वेग**– (पुं.) वेग जो न्यूनाधिक हो; **–शील**– (वि.) उद्धत, उद्दंड; **–साहस**– (पुं.) बहुत साहस ।
विषमाक्ष–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
विषमायुध–(सं. पुं.) कामदेव ।
विषमेक्षण–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
विषमेषु–(सं. पुं.) कामदेव ।
विषय–(सं. पुं.) वह जिस पर कुछ विचार किया जाय, सम्पत्ति, भौतिक आनंद, देश, राज्य, स्त्री-सम्भोग, मैथुन; **–क**– (वि.) विषय-संबंधी; **–कर्म**–(पुं.) सांसारिक कार्य; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**– (पुं.) विषय में लिप्त होने का भाव या धर्म; **–पति**–(पुं.) राजा या शासक; **–वासी**–(वि.) जनपदवासी ।
विषयांत–(सं. पुं.) देश की सीमा ।
विषयात्मक–(सं.वि.) विषय-संबंधी ।
विषयाधिप–(सं. पुं.) शासन करनेवाला ।
विषयी–(सं. वि; पुं.) कामदेव, विलासी, कामी, धनवान् ।
विषयेंद्रिय–(सं. पुं.) नाक, कान आदि इन्द्रियाँ ।
विषांकुर–(सं. पुं.) विषाक्त शल्य, तीर ।
विषांगना–(सं. स्त्री.) विष-कन्या ।
विषांतक–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
विषा–(सं. स्त्री.) कलियारी, कड़वी तरोई ।
विषाक्त–(सं. वि.) विषयुक्त ।
विषाग्रज–(सं. पुं.) तलवार ।
विषाण–(सं. पुं.) हाथी का दाँत, पशु का सींग, सूअर का दाँत, इमली ।
विषाद–(सं. पुं.) दुःख, खेद, निश्चेष्ट होने का भाव, मूर्खता ।
विषादी–(सं. वि.. पुं.) (वह) जिसको विषाद हो ।
विषान्न–(सं.पुं.) विष मिला हुआ भोजन ।
विषापवादी–(सं. वि.) विष दूर करने के लिए मंत्र का प्रयोग करनेवाला ।
विषापह–(सं. वि.) विषनाशक ।
विषायुध–(सं. पुं.) विष में बुझाया हुआ अस्त्र, सर्प, साँप ।
विषास्त्र–(सं. पुं.) देखें 'विषायुध' ।
विषुव–(सं. पुं.) ज्योतिष के अनुसार वह काल जब सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुँचता है और दिन-रात बराबर होते हैं, (ऐसा समय वर्ष में दो बार आता है । २१ मार्च तथा २२ सितम्बर को दिन-रात बराबर होते हैं ।)
विषुवत् रेखा–(सं. स्त्री.) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी से तल पर उसके दोनों ध्रुवों से समदूरस्थ भाग की परिधिस्वरूप खींची हुई मानी जाती है ।
विषूचिका–(सं. स्त्री.) देखें 'विसूचिका' ।
विष्कंभ–(सं. पुं.) फलित ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों में से पहला योग, विस्तार, विघ्न, नाटक का वह अंक जिसमें मध्यम पात्रों द्वारा कथानक की प्रगति की सूचना दी जाती है, वृक्ष, अर्गल ।
विष्कंभक–(सं. पुं.) देखें 'विष्कंभ' ।
विष्कंभी–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
विष्कर–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, अर्गल ।
विष्कलन–(सं. पुं.) भोजन, आहार ।
विष्टंभ–(सं. पुं.) बाधा, रुकावट, आक्रमण, चढ़ाई ।

विष्टंभन–(सं. पुं.) रोकने या संकुचित करने की क्रिया ।
विष्टप्–(सं. पुं.) स्वर्गलोक ।
विष्टर–(सं. पुं.) कुश का बना हुआ आसन ।
विष्टि–(सं. स्त्री.) विना पुरस्कार का काम, वेगार, वेतन ।
विष्ठा–(सं. स्त्री.) मल, गू-भुक्–(पुं.) शूकर, सूअर ।
विष्णु–(सं.पुं.) हिन्दुओं के एक बहुत बड़े, प्रधान देवता जो सृष्टि के पालन-पोषण करनेवाले माने जाते हैं, अग्नि, वारह आदित्यों में से पहला आदित्य; **–कांची**–(स्त्री.) दक्षिण का एक प्राचीन तीर्थ ; **–क्रांत**–(पुं.) संगीत में एक प्रकार का ताल ; **–क्रांता**– (स्त्री.) नीली अपराजिता लता ; **–गुप्त**–(पुं.) प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का नाम, बड़ी मूली; **–चक्र**–(पुं.) सुदर्शन चक्र; **–तिथि**–(स्त्री.) एकादशी और द्वादशी तिथियाँ ; **–पत्नी**–(स्त्री.) लक्ष्मी; **–पदी**–(स्त्री.) गंगा नदी जो विष्णु के पैरों से निकली हुई मानी जाती है; **–पुरी**– (स्त्री.) वैकुण्ठ ; **–प्रिया**–(स्त्री.) लक्ष्मी, तुलसी ; **–माया**–(स्त्री.) दुर्गा; **–लोक**–(पुं.) वैकुण्ठ; **–वाहन**–(पुं.) गरुड़।
विष्वक्–(सं. वि., पुं.) (वह) जो सर्वत्र व्याप्त हो ।
विष्वक्सेन–(सं. पुं.) विष्णु का एक नाम ।
विष्वग्वात–(सं. पुं.) सब ओर से बहने-वाली वायु ।
विसंचारी–(सं. वि.) विषयभोगी ।
विसंज्ञ–(सं. वि.) संज्ञाशून्य ।
विसंशय–(सं. वि.) संशयरहित ।
विसदृश–(सं.वि.) विपरीत,विरुद्ध,अद्भुत।
विसम–(हिं. वि.) देखें 'विषम'; **–ता**–(स्त्री.) देखें 'विषमता' ।
विसयना–(हिं. क्रि. अ.) अस्त होना ।
विसरण–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव ।
विसर्ग–(सं. पुं.) त्याग, दान, शौच, मोक्ष, दीप्ति, चमक, वियोग, वर्णमाला में वह वर्ण (:) जिसका उच्चारण आधे "ह" के समान होता है, प्रलय ।
विसर्गिक–(सं. वि.) आकर्षण करने-वाला, त्यागनेवाला ।
विसर्गी–(सं. वि.) त्यागनेवाला, दान देनेवाला ।
विसर्जन–(सं. पुं.) परित्याग, विदा होना, प्रतिमा का नदी आदि में बहाया जाना, पूजन आदि में अन्तिम उपचार,समाप्ति ।
विसर्प–(सं. पुं.) एक रोग जिसमें ज्वर के साथ सारे शरीर में फुंसियाँ निकल आती है ।
विसर्पण–(सं. पुं.) फैलना, फेंकना ।
विसर्पी–(सं. वि.) फैलनेवाला ।
विसल–(सं. पुं.) वृक्ष का नया पत्ता ।
विसार–(सं.पुं.) विस्तार,फैलाव, प्रवाह।
विसारित–(सं. वि.) फैलाया हुआ ।
विसाल–(हिं. वि.) देखें 'विशाल' ।
विसूचिका–(सं. स्त्री.) हैजा नामक रोग।
विसूरण–(सं. पुं.) दुःख, चिन्ता ।
विसूर्य–(सं. वि.) सूर्यरहित ।
विसृत–(सं. वि.) विस्तृत, चौड़ा, निर्गत, निकाला हुआ, कहा हुआ ।
विसृष्ट–(सं.वि.) त्यागा हुआ, फेंका हुआ।
विसोम–(सं. वि.) चन्द्रशून्य ।
विसौरभ–(सं. वि.) दुर्गन्ध, गन्धरहित ।
विस्तर–(सं. पुं.) देखें 'विस्तार', आधार, समूह, आसन; (वि.) प्रभूत, अधिक; **–ता**–(स्त्री.) अधिक होने का भाव ।
विस्तार–(सं. पुं.) लंबा-चौड़ा होने का भाव, फैलाव, विशालता, पेड़ की शाखा।
विस्तारित–(सं. वि.) फैलाया हुआ ।
विस्तारी–(सं. पुं.) बरगद का वृक्ष ।
विस्तीर्ण–(सं. वि.) विस्तृत, विशाल, विपुल, बहुत बड़ा; **–ता**–(स्त्री.) विपुलता, फैलाव, विस्तृति ।
विस्तृत–(सं. वि.) लंबा-चौड़ा, विशाल, विस्तारवाला ।
विस्तृति–(सं. स्त्री.) विस्तार, फैलाव ।
विस्फार–(सं. पुं.) धनुष की टंकार, कम्प, स्फूर्ति ।
विस्फारित–(सं. वि.) अस्थिर, चंचल ।
विस्फुलिंग–(सं. पुं.) आग की चिनगारी।
विस्फूर्जन–(सं. पु.) किसी पदार्थ का फैलना या बढ़ना ।
विस्फोट–(सं. पुं.) किसी पदार्थ का तेज आवाज के साथ फूटना, विषैला फोड़ा ।
विस्फोटक–(सं.पुं.) शीतला रोग, चेचक।
विस्फोटन–(सं. पु.) धड़ाके का शब्द ।
विस्मय–(सं. पुं.) आश्चर्य, अभिमान, गर्व, साहित्य में अद्भुत रस का स्थायी भाव जो विलक्षण पदार्थ के वर्णन से चित्त में उत्पन्न होता है ।
विस्मयनीय–(सं. वि.) विस्मय के योग्य ।
विस्मयान्वित–(सं. वि.) आश्चर्ययुक्त ।
विस्मरण–(सं. पुं.) स्मरण न रखना, भूल जाना ।
विस्मारक–(सं. वि.) भुलानेवाला ।
विस्मित–(सं.वि.) आश्चर्ययुक्त, चकित ।
विस्मृत–(सं.वि.) जो याद न हो, भूला हुआ।
विस्मृति–(सं.स्त्री.) विस्मरण, भूल जाना।
विस्रंभ–(सं. पुं.) विश्वास ।
विस्रवण–(सं. पुं.) क्षरण, बहना, झरना ।
विस्राव्य–(सं. वि.) बहाने योग्य ।
विस्रुत–(सं. वि.) बहा हुआ ।
विस्वन–(सं. वि.) शब्द, ध्वनि ।
विस्राम–(हिं. पुं.) देखें 'विश्राम' ।
विहंग–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, वाण, तीर, मेघ, बादल, चन्द्रमा, सूर्य ।
विहंगम–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, सूर्य ।
विहंगमा–(सं. स्त्री.) सूर्य की एक किरण, बहँगी की लकड़ी ।
विहंगराज–(सं. पुं.) गरुड़ ।
विहंगिका–(सं. स्त्री.) बहँगी ।
विहंता–(सं. पुं.) नाश करनेवाला ।
विहँसना–(हिं. क्रि. अ.) मुसकाना ।
विहत–(सं. वि.) विफल, टूटा हुआ ।
विहति–(सं. स्त्री.) नाश,ध्वंस,विफलता।
विहनन–(सं. पुं.) हिंसा, हत्या ।
विहर–(सं. पुं.) हरण, विछोह ।
विहरण–(सं.पुं.) घूमना-फिरना, फैलाना।
विहसित–(सं. पुं.) मंद हास, मुसकुराहट
विहस्त–(सं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, विना हाथ का ।
विहाग–(हिं. पुं.) एक राग ।
विहायस–(सं.पुं.) आकाश, पक्षी, चिड़िया।
विहार–(सं.पुं.) रति-क्रीड़ा,संभोग, संभोग करने का स्थान, बौद्धों का मठ, क्रीड़ा, मनोरंजन के लिये इधर-उधर घूमना ।
विहारक–(सं. वि.) विहार करनेवाला ।
विहारण–(सं. पुं.) विहार, क्रीड़ा ।
विहारस्थान–(सं. पुं.) क्रीड़ा-भूमि ।
विहारी–(सं. वि., पुं.) विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण का एक नाम ।
विहास–(सं. वि.) मुसकान ।
विहिंसक–(सं. वि.) नाश करनेवाला ।
विहित–(सं.वि.) किया हुआ, दिया हुआ, विधान किया हुआ, युक्त, करने योग्य ।
विहीन–(सं. वि.) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, रहित ।
विहीनता–(सं.स्त्री.) विहीन होने का भाव।
विहृति–(सं. स्त्री.) विहार, क्रीड़ा ।
विह्वल–(सं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ; **–ता**–(स्त्री.) व्याकुलता ।
विह्वली–(सं. पुं.) वह जो बहुत घबड़ा गया हो।
वीक्षण–(सं. पुं.) निरीक्षण, देखने की क्रिया।

वीक्षणीय–(सं. वि.) दर्शनीय, देखने योग्य।
वीक्षा–(सं. स्त्री.) देखने की क्रिया।
वीक्षित–(सं. वि.) अच्छी तरह देखा हुआ।
वीचि–(सं. स्त्री.) तरंग, लहर, दीप्ति, चमक।
वीचिमाली–(सं. पुं.) समुद्र।
वीची–(सं. स्त्री.) तरंग, लहर।
वीज–(सं. पुं.) शुक्र, वीर्य, मूल कारण, तत्त्व, मूल, मज्जा, बीया, अंकुर, तेज, निधि, फल, तन्त्र के अनुसार किसी मन्त्र का मूल-तत्त्व; **–क**– (हि. पुं.) देखें 'वीजक'; **–का**–(स्त्री.) मुनक्का; **–कोश**– (पुं.) कमलगट्टा, सिंघाड़ा, वह कोश जिसमें बीज रहते हैं; **–गणित**–(पुं.) वह गणित जिसमें अज्ञात राशियों के लिये अक्षरों का प्रयोग होता है; **–गर्भ**–(पुं.) परवल; **–धान्य**–(पुं.) धनिया; **–पुरुष**–(पुं.) आदिपुरुष; **–वर**–(पुं.) उड़द, माष; **–वाहन**–(पुं.) शिव, महादेव।
वीजन–(सं. पुं.) व्यजन, पंखा।
वीजोदक–(सं. पुं.) आकाश से गिरनेवाला ओला, बिनौरी।
वीटिका, वीटी– (सं. स्त्री.) नागवल्ली, पान का बीड़ा।
वीणा–(सं. स्त्री.) सितार जैसा एक प्रसिद्ध बाजा, बीन; **–पाणि**–(स्त्री.) सरस्वती; **–वती**–(स्त्री.) एक अप्सरा का नाम, सरस्वती; **–हस्त**– (पुं.) शिव, महादेव।
वीत–(सं. वि.) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, मुक्त, समाप्त, निवृत्त, सुन्दर, जो बीत गया हो; **–दंभ**–(वि.) जिसने अहंकार त्याग दिया हो; **–भय**–(वि.) जिसका भय दूर हो गया हो; **–मल**–(वि.) पापरहित, कलंकरहित, विमल; **–राग**–(वि.) निस्पृह; (पुं.) बुद्ध का एक नाम; **–शोक**–(वि.) जिसने शोक आदि का त्याग किया हो; **–सूत्र**–(पुं.) यज्ञोपवीत।
वीति–(सं. स्त्री.) गति, चाल, दीप्ति, चमक, गर्भ-धारण करने की क्रिया; **–होत्र**–(पुं.) अग्नि, सूर्य, यज्ञ करनेवाला।
वीथिका, वीथी–(सं. स्त्री.) मार्ग, सड़क, रविमार्ग, जिस मार्ग से सूर्य आकाश में चलता है, आकाश में नक्षत्रों का स्थान, दृश्य-काव्य अथवा रूपक का एक भेद जिसमें एक ही नायक होता है और जो एक ही अंक का होता है।
वीथ्यंग–(सं. पु.) रूपक में वीथी का एक अंग।
वीनाह–(सं. पुं.) कुएँ के ऊपर का ढपना।
वीप्सा–(सं. स्त्री.) व्याप्ति, एक काव्यालंकार।
वीर–(सं. वि.) साहसी और बलवान्, शूर, श्रेष्ठ, चतुर; (पुं.) योद्धा, यज्ञ की अग्नि, खस, काँजी, कुश, अर्जुन वृक्ष, कनेर, आलूबोखारा, तान्त्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक, पति, पुत्र, भाई, विष्णु, एक दैत्य का नाम, साहित्य में एक रस जिससे वीरता, उत्साह आदि की पुष्टि होती है; **–कर्मा**–(वि. पुं.) वीरोचित कार्य करनेवाला; **–काम**–(वि.) पुत्र की कामना करनेवाला; **–कुक्षि**–(स्त्री.) वह स्त्री जो वीर पुत्र की जननी है; **–केशरी**–(पुं.) वीरों में अति श्रेष्ठ योद्धा; **–गति**–(स्त्री.) वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने पर प्राप्त होती है; **–तरु**–(पुं.) अर्जुन वृक्ष; **–ता**–(स्त्री.) शूरता; **–धन्वा**–(पुं.) कन्दर्प, कामदेव; **–प्रसू**–(स्त्री.) वह स्त्री जो वीर सन्तान उत्पन्न करनेवाली हो; **–बाहु**–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **–भद्र**–(पुं.) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, शिव के एक प्रसिद्ध गण, उशीर, खस; **–भुक्ति**–(स्त्री.) वीरभूमि जिले का प्राचीन नाम; **–मर्दल**–(पुं.) प्राचीन काल का एक ढोल जो युद्ध में बजाया जाता था; **–माता**– (स्त्री.) वह स्त्री जिसका पुत्र वीर हो; **–मार्ग**–(पुं.) स्वर्ग; **–रेणु**–(पुं.) भीमसेन; **–ललित**–(वि.) वीर तथा कोमल स्वभाव का; **–लोक**–(पुं.) स्वर्ग; **–वर**–(वि.) अति वीर; **–वृक्ष**–(पुं.) भिलावाँ, अर्जुन वृक्ष; **–व्रत**–(वि.) दृढ़-संकल्प; **–शय्या**–(स्त्री.) रणभूमि; **–शव**–(पुं.) शिव के उपासकों का एक भेद; **–स्थान**–(पुं.) स्वर्गलोक।
वीरांतक–(सं. वि.) वीरों का नाश करनेवाला।
वीरा–(सं.स्त्री.) सुरा, विदारीकन्द, वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हो।
वीराचारी–(सं. पुं.) एक प्रकार के वाममार्गी जो मद्यादि में देवता की कल्पना करते हैं।
वीरान–(फा.वि.) निर्जन, उजाड़, ऊसर, सुनसान।
वीराष्टक–(सं. पुं.) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
वीरासन–(सं. पुं.) साधकों का एक विशिष्ट प्रकार का आसन।
वीरेश, वीरेश्वर–(सं. पुं.) महादेव, बड़ा योद्धा।
वीर्य–(सं. पुं.) शुक्र, रेत, बीज, इन्द्रिय, पराक्रम, बल, शक्ति; **–ज**–(पुं.) पुत्र; **–तम**–(वि.) अति पराक्रमी; **–हारी**–(पुं.) एक यक्ष का नाम।
वीहार–(सं. पुं.) देखें 'विहार'।
वृंत–(सं. पुं.) फल के ऊपर की ढेंपी, ढेंढ़ी, बौंड़ी, स्तन का अगला भाग, बैंगन।
वृंद–(सं. पुं.) समूह; (पुं.) सौ करोड़ की संख्या।
वृंदा–(सं. स्त्री.) तुलसी, राधा का एक नाम।
वृंदारक–(सं. वि.) सुन्दर, मनोहर।
वृंदावन–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण के क्रीड़ावन का नाम।
वृंहण–(सं. वि.) पुष्टिकारक; (पुं.) मुनक्का।
वृंहित–(सं. पुं.) हाथी का चिंघाड़।
वृक–(सं. पुं.) भेड़िया, हुँडार, सियार, चोर, वज्र, अगस्त्य का वृक्ष; **–दीप्ति**–(पुं.) कृष्ण के एक पुत्र का नाम; **–धूर्त**–(पुं.) शृगाल, सियार; **–रथ**–(पु.) कर्ण के एक भाई का नाम।
वृकोदर–(सं. पुं.) भीमसेन।
वृक्क–(सं. पुं.) गुरदा।
वृक्कल–(सं. पुं.) मूत्राशय।
वृक्का–(सं. स्त्री.) हृदय।
वृक्ष–(सं. पुं.) पेड़, पादप, विटप, कोई बड़ा क्षुप; **–क**–(पुं.) छोटा पेड़; **–चर**–(पुं.) बंदर; **–नाथ**–(पुं.) बरगद का पेड़; **–राज**–(पुं.) पीपल का पेड़, परजाता; **–स्नेह**–(पुं.) गोंद, लासा।
वृक्षायुर्वेद–(सं. पुं.) वृक्षों के रोगों का चिकित्सा-शास्त्र।
वृज–(हि. पुं.) देखें 'व्रज'।
वृजन–(सं. पुं.) आकाश, संग्राम, पाप, बल, शक्ति, बाल।
वृजिन–(सं. पुं.) पाप, दुःख, कष्ट; (वि.) कुटिल, टेढ़ा।
वृत–(सं. वि.) नियुक्त, आच्छादित, स्वीकृत।
वृत्त–(सं. पुं.) चरित्र, वार्ता, स्तन के आगे का भाग, समाचार, वृत्तांत, कछुआ, अंजीर, प्रवृत्ति, एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या तथा गुरु-लघु वर्णो के क्रम का नियम रहता है, गोल परिधि का क्षेत्र, मण्डल; (वि.) पूरा किया हुआ, दृढ़, पुष्ट,

गोल, वर्तुल, मरा हुआ, ढँपा हुआ; **–कर्कटी**–(स्त्री.) खरबूजा; **–खंड**–(पुं.) वृत्त का कोई खण्ड, कमान; **–चेष्टा**–(स्त्री.) स्वभाव, प्रकृति; **–पुष्प**–(पुं.) **–मल्लिका**–(स्त्री.) मोतिया; **–फल**–(पुं.) कैथ; **–श्लाघी**–(वि.) जिसको अपने काम का गर्व हो; **–सादी**–(वि.) कुलनाशक; **–स्थ**–(वि.) सदाचारी।

वृत्तानुवर्ती–(सं. वि.) सदाचारी।

वृत्तांत–(सं. पुं.) समाचार, प्रस्ताव, किसी बीती हुई घटना का विवरण।

वृत्ति–(सं.स्त्री.) जीविका, व्यवहार, चित्त की विशेष अवस्था, व्यापार, व्याख्या, संहार करने का एक प्रकार का शस्त्र, कार्य, व्यापार, किसी दीन विद्यार्थी आदि को उसकी सहायता के निमित्त दिया जानेवाला धन, शब्द-शक्ति (अभिधा आदि); **–कार**–(पुं.) वह जिसने किसी सूत्र-ग्रंथ पर वृत्ति लिखी हो।

वृत्यानुप्रास–(सं. पुं.) शब्दालंकार का एक भेद जिसमें एक ही व्यंजन वर्ण वारंवार प्रयोग किया जाता है।

वृत्युपाय–(सं.पुं.) अपने कुटुम्ब के भरण-पोषण का उपाय।

वृत्र–(सं. पुं.) अन्धकार, शत्रु, एक दानव जिसको इन्द्र ने मारा था, (इसको मारने के लिये दधीचि ऋषि की हड्डियों का वज्र बनाया गया था), मेघ, बादल; **–घ्न**–(पुं.) इन्द्र; **–घ्नी**–(स्त्री.) सरस्वती नदी; **–त्व**–(पुं.) शत्रुता; **–नाशन**–(पुं.) इन्द्र।

वृत्रासुर–(सं. पुं.) देखें 'वृत्र'।

वृथा–(सं. वि., अव्य.) व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल।

वृद्ध–(सं. वि.) जीर्ण, जर्जर, बुड्ढा, विद्वान्, पण्डित; **–काल**–(पुं.) बुढ़ापा; **–ता**–(स्त्री.) बुढ़ापा; **–त्व**–(पुं.) बुढ़ापा; **–नाभि**–(वि.) तोंदीला; **–युवती**–(स्त्री.) कुटनी, दाई; **–श्रवा**–(पुं.) इन्द्र; **–सूचक**–(पुं.) कपास।

वृद्धा–(सं. स्त्री.) बुड्ढी स्त्री।

वृद्धि–(सं. स्त्री.) अष्ट-वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि, अधिकता, बढ़ती, समृद्धि, सूद, परिवार में सन्तान उत्पन्न होने पर लगनेवाला अशौच; **–जीवक**–(वि.) सूदखोर; **–मत् (मान्)**–(वि.) अंकुरित, बढ़ा हुआ; **–योग**–(पुं.) फलित ज्योतिष का एक योग।

वृश्चिक–(सं. पुं.) शूक, कीट, बिच्छू, मेषादि बारह राशियों में से आठवीं राशि का नाम।

वृश्चिकाली–(सं. स्त्री.) एक लता जिसके पत्तों पर महीन रोयें होते हैं, जिसके स्पर्श होने से बड़ी जलन होती है।

वृष–(सं. पुं.) बैल, साँड़, मेषादि राशियों में से दूसरी राशि, श्रीकृष्ण, कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक, बलवान मनुष्य, मोर का पंख; **–केतन**–(पुं.) वृषध्वज, शिव, गणेश; **–केतु**–(पुं.) शिव, कर्ण के एक पुत्र का नाम; **–क्रतु**–(पुं.) इन्द्र; **–ण**–(पुं.) अण्डकोष, इन्द्र, कर्ण, साँड़; **–दर्भ**–(पुं.) श्रीकृष्ण का एक नाम; **–ध्वज**–(पुं.) शिव, महादेव, गणेश; **–न**–(पुं.) इन्द्र, कर्ण, विष्णु; **–भानु**–(पुं.) श्रीराधिका के पिता।

वृषभ–(सं. पुं.) बैल, साँड़, वीर या श्रेष्ठ मनुष्य, कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक, कान का छेद, विष्णु, साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद; **–केतु**–(पुं.) शिव; **–ध्वज**–(पुं.) शिव, महादेव; **–पल्लव**–(पुं.) अड़से का वृक्ष।

वृषभेक्षण–(सं. पुं.) विष्णु।

वृषल–(सं.पुं.) शूद्र, घोड़ा, सम्राट् चन्द्रगुप्त का नाम, पाप-कर्म करनेवाला व्यक्ति।

वृषली–(सं.स्त्री.) अविवाहिता कन्या जो रजस्वला हो गई हो, वह स्त्री जो अपने पति को त्यागकर पर-पुरुष से प्रेम करती हो, शूद्रा, पापी या नीच स्त्री, ऋतुमती स्त्री।

वृषा–(सं. स्त्री.) मूसाकानी नाम की लता, गाय।

वृषाणक–(सं. पुं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

वृषायण–(सं. पुं.) गौरैया चिड़िया।

वृषोत्सर्ग–(सं. पुं.) शास्त्रीय विधिपूर्वक साँड़ को दागकर छोड़ना।

वृष्टि–(सं.स्त्री.) मेघों से जल-बिंदुओं का टपकना, वपण, वर्षा, बहुत-सी वस्तुओं का ऊपर से गिराया जाना; **–जीवन**–(पुं.) चातक पक्षी; **–भू**–(पुं.) मण्डूक, मेढक।

वृष्णि–(सं. पुं.) मेष, यादव, यदुवंश, श्रीकृष्ण, वायु, अग्नि, इन्द्र, साँड़; (वि.) उग्र, प्रचण्ड; **–गर्भ**–(पुं.) श्रीकृष्ण।

वृष्य–(सं. पुं.) वे पदार्थ जिनके सेवन से वीर्य की वृद्धि होती है; (वि.) चित्त को प्रसन्न करनेवाला, कामोद्दीपक।

वृष्या–(सं. स्त्री.) सतावर, केंवाच, विदारीकन्द।

वृहच्छद–(सं. पुं.) अखरोट।

वृहत्–(सं.वि.) विपुल, बड़ा, महान्, भारी।

वृहती–(सं. स्त्री.) उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, वनभंटा, वाक्य, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नौ मात्राएँ होती हैं, महती; **–पति**–(पुं.) बृहस्पति।

वृहत्पाद–(सं. पुं.) बरगद का वृक्ष।

वृहत्फल–(सं. पुं.) जामुन, कटहल।

वृहद्भानु–(सं. पुं.) सूर्य, अग्नि, सत्यभामा के एक पुत्र का नाम।

वृहद्रथ–(सं. पुं.) इन्द्र, यज्ञपात्र, मौर्य राज-वंश के अन्तिम राजा का नाम।

वृहद्रावी–(सं. पुं.) उल्लू पक्षी।

वृहन्नल–(सं. पुं.) बाहु, बाँह, अर्जुन।

वृहन्नला–(सं. स्त्री.) अर्जुन का उस समय का नाम जब वह अज्ञात-वास के समय स्त्री-वेष में रहकर राजा विराट् की कन्या को नाचना-गाना सिखाते थे।

वृहस्पति–(सं. पुं.) अंगिरा के पुत्र जो देवताओं के गुरु हैं, बृहस्पति।

वे–(हिं. सर्व.) "वह" शब्द का बहुवचन।

वेक्षण–(सं. पुं.) अच्छी तरह से खोजना या ढूंढ़ना।

वेग–(सं. पुं.) प्रवाह, धारा, बहाव, शुक्र, मूत्र, विष्ठा आदि के निर्गम की प्रवृत्ति, त्वरा, शीघ्रता, वृद्धि, उद्यम, प्रवृत्ति, प्रसन्नता, आनन्द; **–ग**–(वि.) वेग से चलनेवाला; **–वान्**–(वि.) वेग से चलनेवाला; **–वाहिनी**–(स्त्री.) गंगा; **–सर**–(पुं.) वेग से चलनेवाला घोड़ा।

वेगानिल–(सं. पुं.) प्रबल वायु।

वेगी–(सं. वि.) वेगवान्, जिसमें बहुत वेग हो।

वेड़ा–(सं. स्त्री.) नौका, नाव, देखें 'बेड़ा'।

वेण–(सं. पुं.) गति, ज्ञान, चिन्ता, राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।

वेणा–(सं. स्त्री.) उशीर, खस।

वेणि–(सं. स्त्री.) स्त्रियों के बालों की लटकती हुई चोटी, नदियों का संगम; **–माधव**–(पुं.) प्रयाग की एक चतुर्भुज देवमूर्ति का नाम।

वेणी–(सं.स्त्री.) बालों की लटकती हुई चोटी, कवरी।

वेणीर–(सं. पुं.) नीम का वृक्ष, रीठा।

वेणु–(सं. पुं.) वंश, बाँस, बाँस की बाँसुरी; **–कार**–(पुं.) वंशी बनानेवाला; **–होत्र**–(पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

वेतंड–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
वेतन–(सं. पुं.) वह धन जो कर्मचारी को नियत समय पर दिया जाता है, जीविका का आश्रय, वृत्ति; **–भोगी**–(वि.) वेतन पर काम करनेवाला।
वेतस–(सं. पुं.) वेंत।
वेताल–(सं. पुं.) द्वारपाल, संतरी, वह शव जिस पर भूतों ने अधिकार कर लिया हो, शिव के एक गण, छप्पय का एक भेद।
वेत्ता–(सं. वि.) ज्ञाता, जाननेवाला।
वेत्र–(सं. पुं.) वेंत; **–क**–(पुं.) सरपत; **–कार**–(पुं.) वेंत के पात्र आदि बनानेवाला; **–धर**–(पुं.) द्वारपाल, संतरी, **–वती**–(स्त्री.) वेतवा नदी।
वेत्रासन–(सं. पुं.) वेंत का बना हुआ आसन।
वेत्रासुर–(सं. पुं.) एक दानव का नाम जो इन्द्र के द्वारा मारा गया था।
वेद–(सं. पुं.) विष्णु, वित्त, श्रुति, निगम, हिंदुओं पवित्र आदि धर्म-ग्रंथ, ब्रह्म-प्रतिपादक वाक्य, यज्ञांग, आम्नाय; **–क**–(वि.) परिचय करानेवाला; **–कर्ता**–(पुं.) विष्णु, शिव, सूर्य; **–गर्भा**–(पुं.) सरस्वती नदी; **–गुह्य**–(पुं.) विष्णु; **–घोष**–(पुं.) वेदध्वनि; **–चक्षु**–(पुं.) ज्ञानचक्षु; **–जननी**–(स्त्री.) सावित्री; **–ज्ञ**–(वि.) वेदों का ज्ञानी; **–तत्व**–(पुं.) वेद का ज्ञान; **–दर्शी**–(वि.) वेदों का जाननेवाला; **–दान**–(पुं.) वेद विषयक उपदेश; **–धर्म**–(पुं.) वेदोक्त धर्म; **–ध्वनि**–(स्त्री.) वेदघोष; **–निंदक**–(पुं.) वेदों की निन्दा करनेवाला, नास्तिक; **–पाठ**–(पुं.) वेदाध्ययन; **–पारग**–(पुं.) वेदों का ज्ञाता; **–पुण्य**–(पुं.) वेद पढ़ने से होनेवाला पुण्य; **–पुरुष**–(पुं.) वेद या ज्ञान-रूप पुरुष; **–फल**–(पुं.) वह फल जो यज्ञ आदि करने से प्राप्त होता है; **–बाहु**–(पुं.) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम, श्रीकृष्ण; **–मंत्र**–(पुं.) वेदों के मन्त्र; **–माता**–(स्त्री.) गायत्री, सावित्री, दुर्गा, सरस्वती; **–मूर्ति**–(पुं.) सूर्य नारायण; **–वती**–(स्त्री.) कुशध्वज राजा की कन्या; **–रहस्य**–(पुं.) उपनिषद्; **–वाक्य**–(पुं.) वेद का कोई वाक्य, वह बात जो पूर्णतः प्रामाणिक हो; **–वाहन**–(पुं.) सूर्य देव; **–विद्**–(वि.) देखें 'वेदज्ञ'; **–व्यास**–(पुं.) कृष्ण-द्वैपायन नामक मुनि; **–श्रुत**–(पुं.) वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम; **–सम्मत**–(वि.) वेदोक्त मत के अनुकूल; **–सम्मित**–(वि.) वेदों में लिखित या प्रतिपादित; **–स्तुति**–(स्त्री.) ब्रह्मस्तुति; **–हीन**–(वि.) जिसको वेद का ज्ञान नहीं है।
वेदना–(सं. स्त्री.) व्यथा, कष्ट, पीड़ा।
वेदनीय–(सं. वि.) वेदनायुक्त, वेदनाप्रद।
वेदाग्रणी–(सं. स्त्री.) सरस्वती।
वेदांग–(सं. पुं.) वेद के अंगस्वरूप शास्त्र जो ६ हैं, यथा–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द, बारह आदित्यों में से एक।
वेदांत–(सं. पुं.) वेद का अंतिम अंश अर्थात् उपनिषद् और आरण्यक जिनमें आत्मा, परमात्मा, संसार आदि का निरूपण है, ब्रह्मविद्या, अध्यात्म-विद्या, षट्दर्शनों में से एक दर्शन जिसमें ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की गई है, उत्तर मीमांसा, अद्वैतवाद; **–सूत्र**–(पुं.) महर्षि बादरायण के बनाये हुए सूत्र जो वेदान्त-शास्त्र के मूल माने जाते हैं।
वेदांती–(सं. पुं.) वेदान्त-शास्त्र को अच्छी तरह जाननेवाला, ब्रह्मवादी।
वेदात्मा–(सं. पुं.) विष्णु, सूर्य नारायण।
वेदाधिप–(सं. पुं.) चारों वेदों के अधिपति ग्रह, यथा–ऋग्वेद के बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल तथा अथर्ववेद के बुध हैं।
वेदाध्यक्ष–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण, विष्णु।
वेदार–(सं. पुं.) कृकलास, गिरगिट।
वेदि–(सं. स्त्री.) यज्ञ-कार्य के लिये स्वच्छ करके तैयार की हुई भूमि, नामांकित अँगूठी।
वेदिजा–(सं. स्त्री.) द्रौपदी।
वेदित–(सं. वि.) ज्ञापित, जाना हुआ।
वेदितव्य–(सं. वि.) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
वेदी–(सं. स्त्री.) यज्ञ, पूजन आदि के लिये तैयार की हुई भूमि।
वेदेश, वेदेश्वर–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
वेदोक्त, वेदोदित–(सं. वि.) वेद में कहा हुआ।
वेद्य–(सं. वि.) वेदितव्य, जानने योग्य।
वेध–(सं. पुं.) छेदने की क्रिया, भेदन करना, वेधना, यन्त्र आदि की सहायता से ग्रह, नक्षत्र तथा तारों को देखना, ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो।
वेधक–(सं. वि.) वेध करनेवाला।
वेधन–(सं. पुं.) वेध करना, गड़ाना।
वेधनी–(सं. स्त्री.) अंकुश।
वेधमुख्या–(सं. स्त्री.) कस्तूरी।
वेधशाला–(सं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी, गति आदि जानने के यन्त्र हों।
वेधा–(सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य।
वेधालय–(सं. पुं.) देखें 'वेधशाला'।
वेधित–(सं. वि.) छिद्रित, छेदा हुआ, विद्ध।
वेधी–(सं. वि.) वेधनेवाला, छेदनेवाला।
वेध्य–(सं. वि.) वेधनीय, छेदने योग्य।
वेपथु–(सं. पुं.) कंप, कँपकँपी।
वेपन–(सं. पुं.) कंपन, काँपना।
वेपमान–(सं. वि.) कंपमान, काँपता हुआ।
वेल–(सं. पुं.) उपवन।
वेला–(सं. स्त्री.) समय, क्षण, काल, अवसर, मर्यादा, समुद्र का किनारा, समुद्र की लहर, रोग, दिन-रात का चौबीसवाँ भाग, वाणी, भोजन का समय।
वेलावलि–(सं. पुं.) एक रागिनी का नाम।
वेल्लज–(सं. पुं.) काली मिर्च।
वेल्लि–(सं. स्त्री.) लता, बेल।
वेल्लित–(सं. वि.) कंपित, लिपटा हुआ
वेल्ली–(सं. स्त्री.) बेल, लता।
वेश–(सं. पुं.) वस्त्र, आभूषण आदि से अपने को सजाना, वस्त्र आदि पहनने का ढंग, पहनने के वस्त्र, वस्त्रगृह, वेश्या का घर, तंबू; (मुहा.) **–धारण करना**–भेस बनाना; **–धर**–(पुं.) वह जो भेष बदले हुए हो; **–धारी**–(वि.) वेश (भेस) धारण करनेवाला; **–भाव**–(पुं.) वेश-परिधान का ढंग **–भूषा**–(स्त्री.) पहनावा; **–युवती, –वनिता**–(स्त्री.) वेश्या, रंडी।
वेशर–(सं. पुं.) खच्चर।
वेशी–(सं. वि.) वेश धारण करनेवाला।
वेश्म–(सं. पुं.) गृह, घर; **–वास**–(पुं.) रहने का घर।
वेश्य–(सं. वि.) प्रवेश करने योग्य।
वेश्यांगना–(सं. स्त्री.) कुलटा स्त्री।
वेश्या–(सं. स्त्री.) गणिका, रंडी।
वेष–(सं. पुं.) नेपथ्य, रंगमंच के पीछे का वह स्थान जहाँ अभिनेता वस्त्र आदि पहनते हैं, रंडी का घर, बदला हुआ भेस।
वेषकार–(सं. पुं.) वेष्टन, वेठन।
वेष्टक–(सं. पुं.) प्राचीर, घेरा; (वि.) घेरनेवाला।
वेष्टन–(सं. पुं.) वलन, घेरने या लपेटने की क्रिया, मुकुट, उष्णीष, पगड़ी, कान का छेद, गुग्गुल।
वेष्टित–(सं. वि.) लपेटा हुआ, घिरा हुआ।

वैकक्ष–(सं. पुं.) जनेऊ की तरह पहनने का एक प्रकार का हार।
वैकटिक–(सं. पुं.) रत्न-परीक्षक, जौहरी।
वैकट्य–(सं. पुं.) विकटता।
वैकलिक–(सं. पुं.) रत्न-परीक्षक, जौहरी।
वैकल्प–(सं. पुं.) विकल्प का भाव, विकल्पता।
वैकल्पिक–(सं. वि.) सन्दिग्ध, जिसमें किसी प्रकार का सन्देह हो, ऐच्छिक, (विषय) जिसे चुनने का विकल्प हो।
वैकल्य–(सं. पुं.) विकलता, घवड़ाहट, अंगहीनता, न्यूनता, कमी, टेढ़ापन।
वैकारिक–(सं. वि.) विगड़ा हुआ, विकृत।
वैकाल–(सं. पुं.) अपराह्न, तीसरा पहर।
वैकालिक–(सं. वि.) संध्या के समय होनेवाला।
वैकुंठ–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण, विष्णु, स्वर्ग।
वैकृत–(सं. पुं.) विकार, दुर्लक्षण, संकट-सूचक घटना या लक्षण; (वि.) विकृत, विकारग्रस्त।
वैकृत्य–(सं. पुं.) वीभत्स रस, इस रस का अवलम्बन।
वैक्रमीय–(सं. वि.) विक्रम-संबंधी।
वैक्रांत–(सं. पुं.) मणि विशेष, चुन्नी।
वैक्लव्य–(सं. पुं.) विक्लव, व्याकुलता, अस्तव्यस्तता।
वैखरी–(सं. स्त्री.) कण्ठ से उत्पन्न होनेवाले स्वर का एक विशिष्ट प्रकार जो ऊँचा और गम्भीर होता है।
वैखानस–(सं. पुं.) वानप्रस्थ, तपस्वी, ब्रह्मचारी।
वैगुण्य–(सं. पुं.) दोष, अपराध।
वैघात्य–(सं. वि.) मार डालने योग्य।
वैचित्र, वैचित्र्य–(सं. पुं.) विचित्रता, विलक्षणता।
वैजयंत–(सं. पुं.) इन्द्रपुरी, इन्द्रगृह, अरणी।
वैजयंतिक–(सं. वि.) झंडा उठानेवाला।
वैजयंतिका–(सं. स्त्री.) झंडा, पताका।
वैजयंती–(सं. स्त्री.) पताका, झंडा, पाँच रंगों के फूलों की लंबी माला जो श्रीकृष्ण पहनते थे।
वैजयिक–(सं. वि.) विजय-संबंधी।
वैजिक–(सं. वि.) वीर्य-संबंधी, वीज-संबंधी।
वैज्ञानिक–(सं. वि.) विज्ञान-संबंधी, निपुण, दक्ष; (पुं.) वह जो विज्ञान जानता हो।
वैडाल व्रत–(सं. पुं.) पाप और कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधु बना रहना।
वैडूर्य–(सं. पुं.) वैदूर्य मणि।
वैणिक–(सं. पुं.) वीन वजानेवाला।
वैतंडिक–(सं. पुं.) व्यर्थ झगड़ा करनेवाला।
वैतंसिक–(सं. पुं.) मांस वेचनेवाला, कसाई।
वैतथ्य–(सं. पुं.) विफलता, असत्यता।
वैतनिक–(सं. वि., पुं.) वेतन लेकर काम करनेवाला।
वैतरणी–(सं. स्त्री.) यमलोक और पृथ्वी के बीच एक कल्पित नदी का नाम।
वैतानिक–(सं. पुं.) वह अग्नि जो अग्नि-होत्र आदि कृत्य के लिये हो।
वैताल–(सं. पुं.) स्तुतिपाठक; (वि.) वेताल-संबंधी।
वैतालिक–(सं. पुं.) प्राचीन काल का वह स्तुति-पाठक जो राजाओं को प्रातःकाल स्तुति गाकर जगाता था।
वैतालीय–(सं. वि.) वेताल-संबंधी; (पुं.) एक वृत्त जिसके पहले और तीसरे पादों में चौदह तथा दूसरे और चौथे पादों में सोलह मात्राएँ रहती हैं।
वैतृष्य–(सं. पुं.) लोभ से रहित होने का भाव।
वैदंभ–(सं. पुं.) शिव का एक नाम।
वैदक–(हिं. पुं.) देखें 'वैद्यक'।
वैदग्ध–(सं. पुं.) पाण्डित्य, चतुराई, रसिकता, शोभा।
वैदर्भ–(सं. पुं.) विदर्भ देश का राजा, दमयन्ती के पिता भीमसेन, वातचीत करने में चतुराई; (वि.) विदर्भ देश-संबंधी।
वैदर्भी–(सं. स्त्री.) अगस्त्य ऋषि की पत्नी, दमयन्ती, रुक्मिणी, वाक्य की वह शैली जिसमें मधुर वर्णों का प्रयोग हो।
वैदिक–(सं. पुं.) वह ब्राह्मण जो वेद जानता हो; (वि.) वेद-संबंधी, वेदोक्त क्रिया-कर्म से संबंध।
वैदिश–(सं. पुं.) विदिशा का निवासी।
वैदुष्य–(सं. पुं.) विद्वत्ता, पाण्डित्य।
वैदूर्य–(सं. पुं.) लहसुनिया नाम का रत्न।
वैदेशिक–(सं. वि.) विदेश-संबंधी, परदेश से आया हुआ; (पुं.) विदेशी व्यक्ति।
वैदेह–(सं. पुं.) राजा विदेह के पुत्र का नाम।
वैदेहिक–(सं. पुं.) वणिक, व्यापारी।
वैदेही–(सं. स्त्री.) विदेह के राजा जनक की कन्या सीता।
वैद्य–(सं. पुं.) आयुर्वेद के अनुसार चिकित्सा करनेवाला, आयुर्वेद का विद्वान्, चिकित्सक, पण्डित; –क– (पुं.) चिकित्सा-शास्त्र, आयुर्वेद; –नाथ–(पुं.) संथाल परगने का प्रसिद्ध शैव-तीर्थ; –बंधु–(पुं.) अमलतास का वृक्ष।
वैद्युत–(सं. वि.) विद्युत्-संबंधी, विजली का।
वैद्रुम–(सं. वि.) विद्रुम-संबंधी, मूंगे का।
वैध–(सं. वि.) विधि के अनुसार, विधिक, न्यायपूर्ण।
वैधर्म्य–(सं. पुं.) विधर्मी होने का भाव, नास्तिकता।
वैधव–(सं. पुं.) चन्द्रमा के पुत्र बुध।
वैधवेय–(सं. पुं.) विधवा का पुत्र।
वैधव्य–(सं. पुं.) विधवा होने का भाव, अवस्था आदि, रँड़ापा।
वैधात्र–(सं. पुं.) विधाता के पुत्र सनत्-कुमार।
वैधृत–(सं. पुं.) ग्यारहवें मन्वन्तर के एक इन्द्र का नाम।
वैधृति–(सं. स्त्री.) ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों में से एक।
वैधेय–(सं. वि.) विधि-संबंधी, मूर्ख।
वैनतेय–(सं. पुं.) विनता की सन्तान, गरुड़, अरुण।
वैनायक–(सं. वि.) विनायक या गणेश-संबंधी।
वैपरीत्य–(सं. पुं.) प्रतिकूलता, विपरीतता।
वैपार, वैपारी–(हिं. पुं.) देखें 'व्यापार, व्यापारी'।
वैपित्र–(सं. पुं.) वे सतानें जिनकी माता एक पर पिता भिन्न हों।
वैपुल्य–(सं. पुं.) विपुलता, अधिकता।
वैफल्य–(सं. पुं.) विफल होने का भाव।
वैभव–(सं. पुं.) विभव, धन, महिमा, महत्त्व, विभुति, सामर्थ्य; –शाली–(वि.) जिसके पास बहुत धन हो।
वैभाषिक–(सं. वि.) विभाषा-संबंधी, वैकल्पिक।
वैभ्राज–(सं. पुं.) देवताओं का बगीचा।
वैमनस्य–(सं. पुं.) द्वेष, शत्रुता।
वैमल्य–(सं. पुं.) विमलता, स्वच्छता।
वैमात्र–(सं. वि., पुं) विमाता से उत्पन्न, सौतेला (भाई)।
वैमात्री–(सं. वि., स्त्री.) सौतेली (बहन)।
वैमानिक–(सं. वि.) आकाश में उड़नेवाला; (पुं.) देवयोनि विशेष, विमान-चालक।
वैमुख्य–(सं. पुं.) विमुखता, विपरीतता।
वैयग्र्य–(सं. पुं.) मानसिक चंचलता।
वैयाकरण–(सं. पुं.) वह जो व्याकरण-शास्त्र अच्छी तरह जानता हो।
वैयाघ्र–(सं. वि.) व्याघ्र-संबंधी।

वैयास–(सं. वि.) व्यास-संबंधी, व्यास का ।
वैयासिक–(सं. वि.) व्यास का बनाया हुआ ।
वैर–(सं. पुं.) विरोध, द्वेष, शत्रुता; **–कर**–(वि.) शत्रुता पैदा करनेवाला; **–कारिता**– (स्त्री.) शत्रुता; **–ता**– (स्त्री.) शत्रुता; **–भाव**–(पुं.) शत्रुता; **–शुद्धि**–(स्त्री.) वैर का बदला ।
वैरल्य–(सं. पुं.) विरल का भाव, विरलता ।
वैराग–(हिं. पुं.) देखें 'वैराग्य' ।
वैरागी–(सं. वि., पुं.) जिसके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, उदासीन, वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद ।
वैराग्य–(सं. पुं.) विरक्ति, चित्त की वह वृत्ति जिसके अनुसार संसार की विषय-वासना असार जान पड़ती है और व्यक्ति संसार के प्रपंच को त्यागकर एकान्त में जाकर ईश्वर का भजन करता है ।
वैराज–(सं. पुं.) एक मनु का नाम, सत्ताईसवें कल्प का नाम ।
वैराज्य–(सं. पुं.) प्राचीन काल की एक प्रकार की शासन-प्रणाली जिसमें दो राजा एक ही देश में राज्य करते थे ।
वैराट–(सं. वि.) विस्तृत, लंबा-चौड़ा, विराट देश का ।
वैरी–(सं. वि.) शत्रुतापूर्ण; (पुं.) शत्रु ।
वैरूप्य–(सं. पुं.) विरूपता, विकृति ।
वैलक्षण्य–(सं. पुं.) विलक्षणता, विभिन्नता ।
वैलक्ष्य–(सं. पुं.) लज्जा, विस्मय, आश्चर्य ।
वैवर्ण–(सं. पुं.) मलिनता ।
वैवर्त–(सं. पुं.) पहिये के समान चक्कर खाते हुए घूमना ।
वैवश्य–(सं. पुं.) विवशता ।
वैवस्वत–(सं. पुं.) सूर्य के पुत्र शनि, सातवें मनु का नाम, एक रुद्र का नाम, (आजकल का मन्वंतर वैवस्वत मनु का है ।)
वैवाहिक–(सं. वि.) विवाह-संबंधी; (पुं.) कन्या अथवा पुत्र का ससुर, समधी ।
वैवाह्य–(सं. वि.) विवाह-संबंधी ।
वैशंपायन–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे ।
वैशद्य–(सं. पुं.) निर्मलता, स्वच्छता ।
वैशाख–(सं. पुं.) चैत्र के बाद का महीना जो जेठ के पहिले होता है, वैसाख ।
वैशाखी–(सं. स्त्री.) वैशाख की पूर्णिमा ।
वैशाली–(सं. वि.) विशाल नगर-संबंधी ।
वैशिक–(सं. पुं.) अनेक वेश्याओं के साथ रमण करनेवाला नायक ।
वैशिष्ट–(सं. पुं.) विशिष्टता ।
वैशेषिक–(सं. पुं.) कणाद मुनि-कृत दर्शन-शास्त्र का जाननेवाला या अनुयायी; (वि.) विशेषतायुक्त ।
वैश्मीय–(सं. वि.) वेश्म या गृह-संबंधी ।
वैश्य–(सं. पुं.) हिंदुओं की चार जातियों में से तृतीय वर्ण, वणिक, बनिया; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) वैश्य का भाव या धर्म ।
वैश्या–(सं. स्त्री.) वैश्य जाति की स्त्री, बुनियाइन ।
वैश्रवण–(सं. पुं.) शिव, कुवेर ।
वैश्व–(सं. पुं.) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।
वैश्वजनीन–(सं. वि.) संसार भर के लोगों से संबंध रखनेवाला ।
वैश्वदेव–(सं. पुं.) विश्वदेव के उद्देश्य से किया जानेवाला होम या यज्ञ ।
वैश्वदेवत–(सं. पुं.) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।
वैश्वरूप–(सं. वि.) विश्वरूप-संबंधी ।
वैश्वानर–(सं. पुं.) परमात्मा, अग्नि, पित्त, चेतन, चीता नाम का वृक्ष ।
वैश्वासिक–(सं. वि.) जिस पर विश्वास किया जाय, विश्वस्त ।
वैषम, वैषम्य–(सं. पुं.) विषमता, विषम होने का भाव ।
वैषयिक–(सं. पुं.) वह जो सर्वदा विषय-वासना में लिप्त रहता हो, विषयी, लंपट; (वि.) विषय-संबंधी ।
वैष्टुत–(सं. पुं.) होम का भस्म ।
वैष्णव–(सं. वि.) विष्णु-संबंधी; (पुं.) विष्णु का भक्त, विष्णु की पूजा करनेवाला, एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय, (इस सम्प्रदाय के लोग बड़े आचार-विचार से रहते हैं ।)
वैष्णवी–(सं. स्त्री.) विष्णु की शक्ति, दुर्गा, गंगा, तुलसी, पृथ्वी, श्रवण नक्षत्र, वैष्णव स्त्री ।
वैसर्गिक–(सं. वि.) त्याज्य, विसर्जन करने योग्य ।
वैसा–(हिं. वि., अव्य.) उस प्रकार या तरह (का) ; **वैसे**–(अव्य.) उसी प्रकार से ।
वैसूचन–(सं. पुं.) नाटक में पुरुषों का स्त्री का अभिनय करना ।
वैस्तारिक–(सं. वि.) विस्तार-संबंधी ।
वैहंग–(सं. वि.) पक्षी-संबंधी ।
वैहायस–(सं. वि.) आकाश-संबंधी ।
वैहासिक–(सं. पुं.) विदूषक, भाँड़ ।
वोक–(हिं. अव्य.) ओर ।
वोछा–(हिं. वि.) देखें 'ओछा' ।
वोढव्य–(सं. वि.) वाह्य, ढोने लायक ।
वोल–(सं. पुं.) एक सुगन्धित गोंद ।
वोल्लाह–(सं. पुं.) वह घोड़ा जिसकी दुम और कंधे पर के बाल (अयाल) छोटे हों ।
वोहित्थ–(सं. पुं.) पोत, जहाज ।
वौषट्–(सं. अव्य.) देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में घृतादि की आहुति देने का मन्त्र ।
व्यंग–(सं. पुं.) मेढक, वह जिसका कोई अंग टूटा या विकृत हो, शब्द का वह अर्थ जो उसकी व्यंजना-वृत्ति से प्रकट होता है, ताना ।
व्यंगित–(सं. वि.) विकल, घबड़ाया हुआ ।
व्यंगीकृत–(सं. वि.) विकलांग किया हुआ ।
व्यंग्य–(सं. पुं.) देखें 'व्यंग', ताना ।
व्यंजक–(सं. वि.) प्रकाशक, प्रकट करनेवाला; (पुं.) हृदय के भावों को प्रकट करनेवाला अभिनय ।
व्यंजन–(सं. पुं.) तरकारी, शाक आदि जो रोटी, चावल आदि के साथ खाया जाता है, अवयव, शरीर, दिन, चिह्न, मूंछ, पकाया हुआ भोजन, वर्ण-माला के वे अक्षर जिनका बिना स्वर की सहायता से उच्चारण नहीं किया जा सकता ।
व्यंजना–(सं. स्त्री.) प्रकट करने की क्रिया, शब्द की वह वृत्ति या शक्ति जिससे उसके सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ का बोध होता है ।
व्यंसक–(सं. पुं.) धूर्त ।
व्यंसित–(सं. वि.) धोखा खाया हुआ ।
व्यक्त–(सं. वि.) स्पष्ट, प्रकट, स्थूल, बड़ा, प्रकाशित, देखा हुआ, अनुमान किया हुआ; (पुं.) सांख्य-मत से प्रकृति का स्थूल रूप; **–गंधा**–(स्त्री.) नीली अपराजिता, सोनजूही; **–गणित**– (पुं.) अंकविद्या; **–ता**– (स्त्री.) व्यक्त होने का भाव; **–दृष्टार्थ**–(पुं.) प्रत्यक्षदर्शी, देखी हुई बात को कहनेवाला; **–राशि**–(स्त्री.) गणित में ज्ञात राशि; **–रूप**–(पुं.) विष्णु ।
व्यक्ति–(सं. स्त्री.) मनुष्य की वह सत्ता जो अलग होने पर भी समाज के अंग मानी है, स्पष्टता, मनुष्य, जीव, शरीर, वस्तु, पदार्थ ।
व्यक्तिगत–(सं. वि.) निजी ।
व्यक्तीकृत–(सं. वि.) प्रकाशित, प्रकट किया हुआ ।
व्यक्तित्व–(सं. पुं.) व्यक्ति की विशेषता, गुण आदि ।
व्यक्तीभूत–(सं. वि.) प्रकट किया हुआ ।
व्यक्तोदित–(सं. वि.) स्पष्ट कहा हुआ ।

व्यग्र–(सं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, त्रस्त, डरा हुआ, उद्योगी, उत्साही, आसक्त, काम में लगा हुआ; **–ता**–(स्त्री.) व्याकुलता, घबड़ाहट।
व्यजन–(सं. पुं.) हवा करने या झलने का पंखा, बेना।
व्यतिकर–(सं. पुं.) विनाश, व्याप्ति, समूह, व्यसन, सम्बन्ध, मिलावट।
व्यतिक्रम–(सं. पुं.) विपर्यय, उलट-फेर, विघ्न, बाधा।
व्यतिक्रमण–(सं. पुं.) क्रम में उलट-फेर होना, व्यतिक्रम।
व्यतिचार–(सं. पुं.) पापाचरण।
व्यतिपात–(सं. पुं.) बड़ा उपद्रव, अपमान।
व्यतिरिक्त–(सं. वि.) विभिन्न, अलग, पृथक् किया हुआ; (अव्य.) अतिरिक्त; **–ता**–(स्त्री.) विभिन्नता।
व्यतिरेक–(सं. पुं.) अभाव, भिन्नता, वृद्धि, बढ़ती, अतिक्रमण, वह अर्थालंकार जिसमें उपमान से उपमेय की अधिकता या न्यूनता वर्णन की जाती है; **–व्याप्ति**–(स्त्री.) जिसमें जो गुण नहीं है उसमें वह गुण दिखलाना।
व्यतिरेकी–(सं.वि.,पुं.) (वह) जो किसी पदार्थ में व्यतिरेक उत्पन्न करता हो।
व्यतिषक्त–(सं. वि.) आसक्त, मिला हुआ।
व्यतिहार–(सं. पुं.) गाली-गलौज, मार-पीट।
व्यतीकार–(सं. पुं.) विनाश, व्यतिकर।
व्यतीत–(सं. वि.) बीता हुआ, गत, मृत।
व्यतीपात–(सं. पुं.) कोई अमंगलसूचक उत्पात, अपमान, ज्योतिष के सत्ताईस योगों के अन्तर्गत सत्रहवाँ योग।
व्यत्यय–(सं. पुं.) व्यतिक्रम, विपर्यय।
व्यथक–(सं. वि.) पीड़ा देनेवाला।
व्यथन–(सं. पुं.) व्यथा, पीड़ा।
व्यथा–(सं. स्त्री.) दुःख, पीड़ा, भय, क्लेश।
व्यथित–(सं. वि.) दुःखित, पीड़ित, जिसको किसी प्रकार का कष्ट हो।
व्यधिक्षेप–(सं. पुं.) निन्दा।
व्यपदेश–(सं. पुं.) कपट, छल, नाम, कुल, वंश, जाति, व्यवहार, निन्दा।
व्यपनीत–(सं. वि.) दूर किया हुआ।
व्यपोह–(सं. पुं.) विनाश।
व्यभिचार–(सं. पुं.) अनैतिक आचरण, कुकर्म, पुरुष का परस्त्री से अथवा स्त्री का परपुरुष से अनुचित यौन संबंध, छिनारा, न्याय में हेतु-दोष।
व्यभिचारिता–(सं. स्त्री.) व्यभिचारी होने का भाव या धर्म।
व्यभिचारिणी–(सं. स्त्री.) परपुरुष-गामिनी स्त्री।
व्यभिचारी–(सं. वि., पुं.) व्यभिचार करनेवाला, वह जो आचरण से भ्रष्ट हो, परस्त्रीगामी, साहित्य में चौंतीस प्रकार के श्रृंगार-भावों में से एक।
व्यय–(सं. पुं.) खर्च, परित्याग, नाश, दान, ज्योतिष में लग्न से बारहवें स्थान का नाम; **–कर**–(वि.) व्यय करनेवाला; **–शील**–(वि.) बहुत व्यय करनेवाला।
व्यर्थ–(सं. वि.) निरर्थक, बिना आशय का, लाभशून्य; (अव्य.) योंही, बिना मतलब के; **–ता**–(स्त्री.) विफलता, निष्फलता।
व्यलीक–(सं. पुं.) काम के आवेग में किया जानेवाला अपराध, विलक्षणता, दुःख, कष्ट, डाँट-डपट; (वि.) अद्भुत, कष्टकारक, अप्रिय, बिना काम का।
व्यवकलन–(सं. पुं.) गणित में किसी संख्या में से दूसरी संख्या घटाने की क्रिया।
व्यवकलित–(सं. वि.) घटाया हुआ।
व्यवकीर्ण–(सं. वि.) मिश्रित, मिलाया हुआ।
व्यवच्छिन्न–(सं. वि.) विभक्त, काटकर अलगाया हुआ।
व्यवच्छेद–(सं. पुं.) पृथक्त्व, अलगाव, विभाग, खण्ड, निवृत्ति, छुटकारा, विराम।
व्यवच्छेदक–(सं.वि.) व्यवच्छेद करनेवाला।
व्यवधान–(सं. पुं.) विभाग, खण्ड, भेद, समाप्ति, आच्छादन, आड़ करनेवाली वस्तु।
व्यवधायक–(सं. वि.) छिपानेवाला, आड़ करने या छिपानेवाला।
व्यवसाय–(सं. पुं.) जीविका का कार्य, यत्न, उद्यम, व्यापार, अभिप्राय।
व्यवसायी–(सं. वि., पुं.) व्यवसाय करनेवाला, किसी कार्य का अनुष्ठान करनेवाला, व्यापारी।
व्यवसित–(सं. वि.) उद्यत, तत्पर।
व्यवस्था–(सं. स्त्री.) प्रबन्ध, नियम, स्थिति, शास्त्र-निरूपित विधि, वस्तुओं को सजाकर यथास्थान रखना।
व्यवस्थाता–(सं. स्त्री.) प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला, प्रबंधक।
व्यवस्थापक–(सं.वि.,पुं.) नियमपूर्वक किसी कार्य को चलानेवाला, प्रबन्ध करनेवाला।
व्यवस्थापत्र–(सं.पुं.) वह लेख्य-पत्र जिसमें किसी विधि-विहित व्यवस्था का विधान लिखा हो।
व्यवस्थापन–(सं. पुं.) निर्धारण, निरूपण।
व्यवस्थापिका सभा–(सं. स्त्री.) नियम या विधान बनानेवाली सभा।
व्यवस्थापित–(सं. वि.) निर्धारित, नियमित।
व्यवस्थित–(सं. वि.) जिसकी व्यवस्था की गई हो, नियमित, संगठित।
व्यवहरण–(सं. पुं.) विवाद-विषय को न्यायालय में उपस्थित करना।
व्यवहर्ता–(सं. पुं.) मुकदमा लड़नेवाला।
व्यवहार–(सं. पुं.) विवाद, न्याय, प्रयोग या उपयोग, स्थिति, क्रिया, कार्य, झगड़ा, व्यापार, लेन-देन का काम; **–क**–(पुं.) व्यापारी; **–विधि**–(स्त्री.), **–शास्त्र**–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें व्यवहार या विवाद-संबंधी बातों का विवेचन हो।
व्यवहारास्पद–(सं. पुं.) अभियोग।
व्यवहारिक–(सं. वि.) जो व्यवहार के लिये उपयुक्त हो, व्यवहार-संबंधी।
व्यवहारी–(सं. वि.) व्यवहार करनेवाला, जो व्यवहार में आता हो।
व्यवहृत–(सं. वि.) जो काम में लाया गया हो, आचरित, विचारित, प्रयुक्त।
व्यवहृति–(सं. स्त्री.) व्यापार, व्यवहार।
व्यष्टका–(सं. स्त्री.) कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा।
व्यष्टि–(सं. स्त्री.) समाज से अलग व्यक्ति का स्वतंत्र अस्तित्व, व्यक्तित्व।
व्यसन–(सं. पुं.) आपत्ति, दुःख, कष्ट, पतन, विनाश, पाप, अमंगल, निष्फल प्रयत्न, विषय-वासना में अनुराग, दुर्भाग्य, अयोग्यता, काम और क्रोधजनित दोष, किसी बात का प्रेम।
व्यसनी–(सं.पुं., वि.) जिसको किसी प्रकार का व्यसन हो, वेश्यागामी।
व्यस्त–(सं. वि.) व्याप्त, फैला हुआ, व्याकुल, घबड़ाया हुआ, किसी काम में लगा हुआ।
व्याकरण–(सं. पुं.) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों, वाक्यों आदि के शुद्ध प्रयोग के नियमों का विवेचन रहता है।
व्याकर्ता–(सं. पुं.) सृष्टिकर्ता।
व्याकीर्ण–(सं. वि.) चारों ओर फैलाया हुआ।
व्याकुल–(सं. वि.) व्यग्र, विकल, घबड़ाया हुआ, कातर, उत्कंठित; **–ता**–(स्त्री.) विकलता, घबड़ाहट।

व्याकृति–(सं. स्त्री.) पार्थक्य, व्याख्या।
व्याक्रोश–(सं. पुं.) तिरस्कार करते हुए कटूक्ति कहना, चिल्लाना; **–क**–(वि.) चिल्लानेवाला।
व्याक्षेप–(सं. पुं.) विलम्ब, देर, वाधा, व्याकुलता।
व्याख्या–(सं.स्त्री.) वह विवेचन जो कठिन वाक्यों आदि का अर्थ सरल भाषा में स्पष्ट करता हो, टीका, वर्णन।
व्याख्यात–(सं. वि.) जिसकी व्याख्या की गई हो।
व्याख्याता–(सं. पुं.) व्याख्या करनेवाला, व्याख्यान देनेवाला।
व्याख्यान–(सं. पुं.) किसी विषय की व्याख्या या टीका करने का काम, भाषण, वक्तृता।
व्याख्यानशाला–(सं. स्त्री.) वह स्थान जहाँ व्याख्यान दिया जाता हो।
व्याख्येय–(सं. वि.) व्याख्यान देने या समझाने योग्य।
व्याघट्टन–(सं. पुं.) अच्छी तरह रगड़ने का काम, मंथन।
व्याघात–(सं. पुं.) ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से तेरहवाँ योग जो अशुभ माना जाता है, अन्तराय, विघ्न, वाधा, प्रहार, मार, वह अलंकार जिसमें एक ही साधन या उपाय से दो विरोधी कार्यों का होना व्यक्त किया जाता है।
व्याघ्र–(सं.पुं.) एक हिंस्र जंतु, बाघ, सर्वश्रेष्ठ, प्रधान; **–घंटा**–(स्त्री.) किंकिणी नाम की लता; **–चम**–(पुं.) बाघ या सिंह की खाल; **–नख**–(पुं.) शेर का नख, नखी नामक गन्धद्रव्य; **–नायक**–(पुं.) शृगाल, सियार; **–मुख**–(पुं.) बिल्ली; **–वक्त्र**–(पुं.) शिव का गण, बिल्ली।
व्याज–(सं. पुं.) कपट, छल, विघ्न, वाधा, विलम्ब, देर; **–निंदा**–(स्त्री.) छल या कपट से की हुई निंदा, वह शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार की निंदा की जाती है; **–मय**–(वि.) कपट से भरा हुआ; **–स्तुति**–(स्त्री.) वह स्तुति जो निंदा के वहाने की जाय और वस्तुतः स्तुति न जान पड़े, वह काव्यालंकार जिसमें इस प्रकार की स्तुति की जाती है।
व्याजी–(सं. स्त्री.) घलुवा।
व्याजोक्ति–(सं. स्त्री.) वह उक्ति जिसमें किसी प्रकार का कपट हो, वह काव्यालंकार जिसमें किसी वात को छिपाने के लिये कोई वहाना किया जाता है।
व्याडि–(सं. पुं.) एक ऋषि जिन्होंने व्याकरण और शब्दकोश बनाया था।
व्यात्त–(सं.वि.) फैलाया या खोला हुआ।
व्यादान–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव।
व्यादीर्ण–(सं.वि.) अति दीर्घ, फैलाया हुआ।
व्याध–(सं. पुं.) जंगली पशुओं को मारकर निर्वाह करनेवाला, शिकारी, लुब्ध, प्राचीन काल की शबर नाम की जाति, नीच और दुष्ट व्यक्ति।
व्याधि–(सं. स्त्री.) रोग, पीड़ा, आपत्ति, विरह आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार का रोग उत्पन्न होना।
व्याधित–(सं. वि.) रोगी।
व्याधूत–(सं. वि.) कंपित, काँपता हुआ।
व्यान–(सं. पुं.) शरीर में रहनेवाली पाँच वायुओं में से एक जो सम्पूर्ण शरीर में संचार करनेवाली मानी जाती है।
व्यापक–(सं. वि.) चारों ओर फैला हुआ, आच्छादक, सर्वत्र व्याप्त; **–न्यास**–(पुं.) किसी देवता का मूल-मन्त्र पढ़ते हुए सिर से पैर तक सर्वांग-न्यास की क्रिया।
व्यापत्ति–(सं. स्त्री.) मृत्यु।
व्यापना–(हिं. क्रि. अ.) व्याप्त होना, सर्वत्र फैलना।
व्यापादित–(सं. वि.) मारा हुआ।
व्यापार–(सं. पुं.) कर्म, कार्य, काम, व्यवसाय, विक्री, अभ्यास, उद्योग, प्रयोग।
व्यापारी–(सं. पुं.) व्यवसाय करनेवाला, व्यवसायी।
व्यापित्व–(सं. पुं.) व्यापक होने का भाव या धर्म।
व्यापी–(सं.वि.) जो व्याप्त हो, व्यापक।
व्यापृत–(सं. वि.) किसी कार्य में लीन।
व्याप्त–(सं. वि.) समाक्रान्त, सम्पूर्ण, परिपूरित, विस्तारित, सर्वत्र फैला हुआ।
व्याप्ति–(सं. स्त्री.) सर्वत्र व्याप्त होना, आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिल जाना; **–मत्**–(वि.) व्याप्तियुक्त।
व्याप्य–(सं.पुं.) साधन, हेतु; (वि.) व्याप्त होने योग्य।
व्यामिश्र–(सं. वि.) सम्मिलित, मिला हुआ।
व्यामोह–(सं. पुं.) मोह, अज्ञान।
व्यायत–(सं. वि.) अतिशय, दीर्घ।
व्यायाम–(सं. वि.) शरीर पुष्ट करने के लिये किया जानेवाला, श्रम क्रीड़ा आदि, कसरत, युद्ध की तैयारी।
व्यायामी–(सं. वि.) व्यायाम या कसरत करनेवाला।
व्यायुध–(सं. वि.) निःशस्त्र।
व्यायोग–(सं. पुं.) साहित्य में दस प्रकार के रूपक या दृश्य काव्यों में से एक।
व्यारोष–(सं. पुं.) आक्रोष, क्रोध।
व्याल–(सं. पुं.) सर्प, साँप, व्याघ्र, दुष्ट हाथी, राजा, विष्णु, कोई हिंस्र पशु, दण्डक छन्द का एक भेद; **–ग्राह**–(पुं.) सँपेरा; **–मृग**–(पुं) शेर।
व्यालि–(सं. पुं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
व्यालिक–(सं. पुं.) सँपेरा।
व्यालू–(हिं. पुं.) रात्रि का भोजन।
व्यालोल–(सं. वि.) थोड़ा हिलता हुआ।
व्यावर्तक–(सं. वि.) पीछे की ओर लौटनेवाला।
व्यावहारिक–(सं. वि.) जो व्यवहार में आता हो, व्यवहार-संबंधी।
व्यावृत्त–(सं. वि.) निषिद्ध, खंडित, बाँट हुआ।
व्यावृत्ति–(सं. स्त्री.) खण्डन, निषेध, निवृत्ति।
व्यास–(सं. पुं.) विस्तार, फैलाव, वृत्त की मध्य रेखा, पुराणादि का पाठ करनेवाला ब्राह्मण, देखें 'वेदव्यास'।
व्यासार्ध–(सं. पुं.) व्यास का आधा भाग
व्याहत–(सं. वि.) निवारित, आहत, निषिद्ध।
व्याहरण–(सं. पुं.) कथन, उक्ति।
व्याहार–(सं. पुं.) वाक्य।
व्याहृत–(सं. वि.) कथित, कहा हुआ।
व्याहृति–(सं. स्त्री.) कथन, उक्ति, मन्त्र विशेष–"ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः"।
व्युत्क्रम–(सं. पुं.) क्रम में उलट-फेर होना।
व्युत्पत्ति–(सं. स्त्री.) मूल, उद्गम, उत्पत्ति, प्रगाढ़ ज्ञान, किसी शब्द का मूल रूप जिससे वह बना हो।
व्युत्पन्न–(सं. वि., पुं.) जिसका संस्कार हो चुका हो, किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता, व्युत्पत्ति युक्त।
व्युत्पादक–(सं. वि.) उत्पन्न करनेवाला।
व्युत्पादन–(सं. पुं.) व्युत्पत्ति।
व्युत्पादित–(सं. वि.) व्युत्पन्न, उत्पादित।
व्युदस्त–(सं. वि.) परित्यक्त, निवारित, फेंका हुआ।
व्यपदेश–(सं. पुं.) छल, वंचना।
व्युपशम–(सं. पुं.) अशान्ति।
व्यूढ़–(सं. वि.) स्थूल, मोटा, तुल्य, समान, दृढ़।
व्यूह–(सं. पुं.) समूह, निर्माण, रचना, शरीर, देह, सेना, परिणाम, शिश्न,

लिंग, युद्ध-भूमि में सेना टुकड़ियों में दुर्भेद्य ढंग से स्थापित किया जाना; **–पृष्ठ**–(पुं.) व्यूह का पिछला भाग।

व्योम–(सं. पुं.) आकाश, वायु, जल; **–केश**–(पुं.) शिव, महादेव; **–गंगा**–(स्त्री.) मन्दाकिनी; **–गमनी विद्या**–(स्त्री.) आकाश में उड़ने की विद्या; **–चर**–आकाश में भ्रमण करनेवाला; **–चारी**–(पुं.) देवता, पक्षी; **–धूम**–(पुं.) मेघ, बादल; **–पाद**–(पुं.) विष्णु; **–मंडल**–(पुं.) आकाश; **–यान**–(पुं.) हवाई जहाज; **–वल्ली**–(स्त्री.) अमरबेल; **–सद्**–(पुं.) देवता, गन्धर्व; **–सरित्**–(स्त्री.) आकाशगंगा; **–स्थली**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–स्पृश्**–(वि.) बहुत ऊँचा।

व्योमोदक–(सं. पुं.) बरसाती पानी।

व्रज–(सं. पुं.) व्रजन, गमन, जाना, चलना, समूह, झुण्ड, गोष्ठ, मथुरा और वृन्दावन के आसपास का प्रान्त जो श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र तथा और अति पवित्र माना जाता है; **–क**–(पुं.) तपस्वी; **–किशोर**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–नाथ**–(पुं.) श्रीकृष्ण, व्रजभूमि के अधिपति; **–भाषा**–(स्त्री.) मथुरा, आगरा तथा इसके आसपास के प्रदेशों में बोली जानेवाली भाषा, (हिंदी के अधिकांश कवियों) यथा–सूर, तुलसी, बिहारी आदि ने व्रजभाषा में काव्य रचे हैं। किसी समय दिल्ली और आगरे का मध्यवर्ती प्रदेश व्रजभूमि कहलाता था। इस राज्य की राजधानी मथुरा थी; **–भू**–(वि.) व्रज में उत्पन्न; **–मंडल**–(पुं.) व्रजभूमि, व्रज और इसके आसपास का प्रदेश; **–मोहन**–(पुं.) श्रीकृष्ण; **–राज**–(पुं.) व्रजमोहन; **–लाल**–(हिं. पुं.) नन्दलाल, श्रीकृष्ण; **–वर,–वल्लभ**–(पुं.) श्रीकृष्ण।

व्रजन–(सं. पुं.) गमन, जाना, चलना।

व्रजांगना–(सं. स्त्री.) व्रज की स्त्री, गोपी।

व्रजेंद्र, व्रजेश्वर–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।

व्रज्या–(सं. स्त्री.) पर्यटन, घूमना-फिरना, आक्रमण, चढ़ाई, गमन, दल, नाट्यशाला।

व्रण–(सं. पुं.) क्षत, फोड़ा।

व्रणजिता–(सं. स्त्री.) गोरखमुण्डी।

व्रणस्राव–(सं. पुं.) घाव या फोड़े से पीब निकलना।

व्रणहा–(सं. स्त्री.) गुरुच।

व्रणीय–(सं. वि.) व्रण-संबंधी।

व्रत–(सं. पुं.) भक्षण, भोजन, किसी पर्व-तिथि को पुण्य प्राप्त करने के निमित्त उपवास करना, संकल्प; **–चर्या**–(स्त्री.) व्रत का अनुष्ठान; **–चारी**–(वि.) व्रत करनेवाला; **–धर**–(वि.) व्रत धारण करनेवाला; **–पक्ष**–(पुं.) भाद्रपद मास का शुक्ल पक्ष; **–पारण**–(पुं.) व्रत के अन्त में किया जानेवाला पारण; **–भिक्षा**–(स्त्री.) उपनयन-संस्कार के समय की भिक्षा; **–स्थ**–(वि.) व्रतधर।

व्रतादेश–(सं. पुं.) उपनयन-संस्कार।

व्रती–(सं. पुं.) यजमान, जिसने किसी प्रकार का व्रत लिया हो, ब्रह्मचारी।

व्रतेश–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

व्रश्चन–(सं. पुं.) कुठार, कुल्हाड़ी, छेनी।

व्राचड–(सं. स्त्री.) अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका प्रचार प्राचीन समय में सिन्धु देश में था, पैशाची भाषा का एक भेद।

व्राज–(सं. पुं.) दल, समूह।

व्राजपति–(सं. पुं.) दल या समूह का नायक।

व्रात–(सं. पुं.) जीविका के लिये किया जानेवाला परिश्रम।

व्रात्य–(सं. वि.) व्रत-संबंधी, संस्कार-रहित, उपनयन-संस्काररहित, वर्णसंकर, दोगला।

व्रीड, व्रीडन–(सं. पुं.) लज्जा, शर्म।

व्रीडा–(सं. स्त्री.) लज्जा, शर्म।

व्रीहि–(सं. पुं.) चावल।

व्रीहिकांचन–(सं. पुं.) मसूर।

व्रीहिमुख–(सं. पुं.) एक प्रकार का शस्त्र।

व्रीहिवेला–(सं. स्त्री.) शरत्काल।

श

श हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान तालु है—इसी से यह "तालव्य श" कहलाता है। यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में सीत्कार होती है। इसलिए यह ऊष्म वर्ण भी कहलाता है; (सं. पुं.) शिव, महादेव, शास्त्र, शस्त्र, शुभ, कल्याण।

शं–(सं. पुं.) मंगल, कल्याण, शास्त्र, सुख, शान्ति।

शंक–(सं. पुं.) आशंका, भय, डर।

शंकना–(हिं. क्रि. अ.) शंका करना, सन्देह करना, डरना।

शंकनीय–(सं. वि.) शंका करने योग्य।

शंकर–(सं. पुं.) शिव, महादेव, शंकराचार्य, कबूतर, भीमसेनी कपूर, एक छन्द का नाम, एक सम्पूर्ण जाति का राग; (वि.) शुभ, कल्याण करनेवाला, लाभदायक; **–ताल**–(पुं.) संगीत में एक प्रकार का ताल जिसमें ग्यारह मात्राएँ होती हैं; **–प्रिय**–(पुं.) तीतर पक्षी, धतूरा; **–वाणी**–(स्त्री.) ब्रह्म-वाक्य; **–शुक्र**–(पुं.) पारद, पारा; **–शैल**–(पुं.) कैलास।

शंकरा–(सं. स्त्री.) शिव की भार्या, भवानी, एक राग का नाम; (वि. स्त्री.) मंगल करनेवाली।

शंकराचारी–(हिं. पुं.) शंकराचार्य के मत का अनुयायी।

शंकराचार्य–(सं. पुं.) सुप्रसिद्ध अद्वैतवाद के प्रवर्तक प्रसिद्ध दार्शनिक।

शंकराभरण–(सं. पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का राग।

शंकरालय–(सं. पुं.) कैलास।

शंकरावास–(सं. पुं.) कैलास, भीमसेनी कपूर।

शंकरी–(सं. स्त्री.) शिव की पत्नी, पार्वती, एक रागिनी का नाम; (वि. स्त्री.) शंकरा।

शंकरीय–(सं. वि.) शंकर-संबंधी।

शंकर्षण–(सं. पुं.) विष्णु।

शंका–(सं. स्त्री.) मन में होनेवाला अनिष्ट का भय, डर, संशय, आशंका, साहित्य में वह संचारी भाव जो अपने किये हुए किसी अनुचित व्यवहार अथवा किसी प्रकार से होनेवाली इष्ट-हानि के कारण उत्पन्न होता है; **–मय**–(वि.) शंकायुक्त।

शंकित–(सं. वि.) अनिश्चित, संदेह-युक्त, डरा हुआ।

शंकितव्य–(सं. वि.) शंका के योग्य।

शंकु–(सं. पुं.) कोई नुकीली वस्तु, बरछा, भाला, खूँटा, मेख, कील, शिव, कामदेव, राक्षस, विष, दस लाख की संख्या, प्राचीन काल का एक बाजा, पाप, उग्रसेन के एक पुत्र का नाम, पत्ते की नस, नखी नामक गन्धद्रव्य; **–कर्ण**–(पुं.) गर्दभ, गदहा; **–कर्णी**–(पुं.) शिव, महादेव; **–जिह्व**–(पुं.) ज्योतिष में एक गणित-विधि; **–पुच्छ**–(वि.) जिसकी पूँछ में डंक हो; **–मुखी**–(स्त्री.) जोंक।

शंकुला–(सं. स्त्री.) सुपारी काटने का सरौता।

शंख–(सं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है, कपाल की हड्डी, कुबेर की एक निधि, नौ

पद्म की संख्या; **–कंद–**(पुं.) कंद विशेष; **–चरी–**(स्त्री.) मस्तक पर चन्दन का तिलक; **–चूड़–**(पुं.) एक दैत्य का नाम; **–ज–**(पुं.) मोती; **–जीरा–**(पुं.) संगजराहत पत्थर; **–धर–**(पुं.) विष्णु; **–धरा–**(स्त्री.) हुरहुर का पौधा; **–धवला–**(स्त्री.) सफेद जूही; (वि.) शंख के समान सफेद; **–नारी–**(स्त्री.) एक वृत्त का नाम; **–पाणि–**(पुं.) विष्णु; **–पाषाण–**(पुं.) संखिया; **–पुष्पिका–**(स्त्री.) सफेद जूही; **–पुष्पी–**(स्त्री.) एक तृण; **–प्रणाद–**(पुं.) शंख का शब्द; **–प्रवर–**(वि.) बड़ा शंख; **–प्रस्थ–**(पुं.) चन्द्रमा का कलंक; **–भस्म–**(पुं.) एक प्रकार का चूना; **–भृत–**(पुं.) शंख धारण करनेवाले विष्णु; **–मालिनी–**(स्त्री.) शंखपुष्पी; **–मुख–**(पुं.) घड़ियाल; **–मुद्रा–**(स्त्री.) अँगुलियों को मोड़कर शंख की आकृति बनाने की मुद्रा; **–मूल–**(पुं.) शंख का अग्रभाग; **–यूथिका–**(स्त्री.) सफेद जूही; **–लिखित–**(वि.) निर्दोष; **–वात–**(पुं.) सिर की पीड़ा।

शंखालुक–(सं. पुं.) सफेद शकरकंद।

शंखास्थि–(सं. स्त्री.) सिर की हड्डी।

शंखाहुलि–(सं. स्त्री.) शंखपुष्पी।

शंखिनी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की वनौषधि, एक देवी का नाम, सीप, स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

शंगर–(स. पुं.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।

शंग(ज)रफ–(हिं. पुं.) देखें 'शिंगरफ'।

शंड–(सं. पुं.) षण्ड, हिजड़ा।

शंतनु–(सं. वि.) सुन्दर शरीरवाला; (पुं.) भीष्म के पिता का नाम।

शंताति–(सं. वि.) सुख करनेवाला।

शंतातीय–(सं. वि.) स्तोत्र-संबंधी।

शंबर–(सं. पुं.) जल, पानी, चित्र, बादल; **–कंद–**(पुं.) वाराहीकंद; **–माया–**(स्त्री.) इन्द्रजाल; **–सूदन–**(पुं.) कामदेव।

शंबल–(सं. पुं.) तट, किनारा, ईर्ष्या, द्वेष।

शंबली–(सं. स्त्री.) कुटनी।

शंबसादन–(सं. पुं.) एक दैत्य का नाम।

शंबु–(सं. पुं.) घोंघा, सीप।

शंबूक–(सं. पुं.) हाथी की सूँड़ का अगला भाग, शंख, एक दैत्य का नाम।

शंभु–(सं. पुं.) शिव, महादेव, ग्यारह रुद्रों में से एक, ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, पारद, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस वर्ण होते हैं; (वि.) सुख की वृद्धि करनेवाला; **–कांता–**(स्त्री.) पार्वती; **–तनय, –नंदन–**(पुं.) गणेश, कार्तिकेय; **–नाथ–**(पुं.) शिव, महादेव; **–बीज–**(पुं.) पारद, पारा; **–भूषण–**(पुं.) चन्द्रमा; **–लोक–**(पुं.) कैलास; **–वल्लभ–**(पुं.) सफेद कमल।

शंसन–(सं. पुं.) कथन, प्रार्थना, हिंसन।

शंसनीय–(सं. वि.) हिंसनीय, प्रार्थनीय।

शंसित–(सं. वि.) निश्चित, सूचित, वांछित, हिंसित।

शंस्य–(सं. वि.) स्तुति करने योग्य।

शऊर–(हिं. पुं.) किसी काम को करने का सुन्दर ढंग, कौशल आदि; **–दार–**(पुं.) शऊरवाला व्यक्ति।

शक–(सं. पुं.) एक प्राचीन जाति जिसने ईसा से दो सौ पूर्व भारत पर आक्रमण किया था, शालिवाहन राजा का चलाया हुआ संवत् जो ईसवी सन् से ७८ वर्ष बाद आरंभ हुआ था; (अ. पुं.) शंका, संदेह, द्विविधा।

शककारक–(सं. पुं.) कोई संवत् चलानेवाला।

शकट–(सं. पुं.) बैलगाड़ी, छकड़ा, दो हजार पल का मान, धव का पेड़, रोहिणी नक्षत्र, एक असुर जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था; **–धूम–**(पुं.) एक नक्षत्र का नाम; **–व्यूह–**(पुं.) सेना को इस प्रकार वर्गों में रखना कि आगे का भाग पतला तथा पीछे का चौड़ा हो।

शकटाक्ष–(सं. पुं.) गाड़ी का धुरा।

शकटार–(सं. पुं.) राजा महानन्द का प्रधान मन्त्री जिसने चाणक्य से मिलकर षड्यन्त्र रचा और नन्द वंश का नाश किया था।

शकटारि–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।

शकटासुर–(सं. पुं.) एक दैत्य जिसको कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिये भेजा था परन्तु वह स्वयं मारा गया।

शकटि–(सं. स्त्री.) छोटी गाड़ी।

शकटिक–(सं. वि.) शकट-संबंधी।

शकटिका–(सं. स्त्री.) बच्चों के खेलने की गाड़ी।

शकटी–(सं. स्त्री.) छोटी गाड़ी।

शकर–(फा. पुं.) शक्कर, कच्ची चीनी।

शकरकंद–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मीठा कंद।

शकरपाला(रा)–(फा. पुं.) एक प्रकार का पकवान।

शकरपीटन–(हिं. पुं.) एक प्रकार की पहाड़ी कँटीली झाड़ी।

शकल–(सं. पुं.) खण्ड, टुकड़ा, छाल, चमड़ा, शक्कर, कमलदण्ड, दालचीनी; (हि. स्त्री.) शक्ल, रूप, मुखाकृति।

शकलेंदु–(सं. पुं.) अपूर्ण चन्द्रमा।

शकव–(सं. पुं.) राजहंस।

शकांतक–(सं. पुं.) विक्रमादित्य।

शकादित्य–(सं. पुं.) शालिवाहन राजा।

शकाब्द–(सं. पुं.) शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्।

शकार–(सं.पुं.) श स्वरूप वर्ण, संस्कृत के नाटकों में राजा के साले के लिये यह शब्द प्रयुक्त होता है।

शकारि–(सं. पुं.) विक्रमादित्य।

शकील–(फा. वि.) सुन्दर।

शकुंत–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, एक प्रकार का कौआ, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

शकुंतला–(सं. स्त्री.) मेनका नाम की अप्सरा के गर्भ से तथा विश्वामित्र के औरस से उत्पन्न कन्या जिसका पालन-पोषण कण्व ऋषि ने किया और विवाह राजा दुष्यन्त से हुआ था। इनके गर्भ से भरत का जन्म हुआ था।

शकुंतलात्मज–(सं. पुं.) राजा भरत।

शकुंतिका–(सं. स्त्री.) छोटी चिड़िया।

शकुंद–(सं. पुं.) सफेद कनेर।

शकुन–(सं. पुं.) शुभाशुभसूचक लक्षण, शुभ या अशुभ की पूर्व-सूचना, शुभ घड़ी, सगुन, पक्षी, चिड़िया, गृध्र, मंगल-गीत; (मुहा.)**–विचारना**–कोई मंगल कार्य करने से पहले शुभ घड़ी, मुहूर्त आदि स्थिर करना अथवा शुभाशुभ लक्षण देखकर यह स्थिर करना कि कार्य होगा या नहीं; **–ज्ञ–**(वि.) शकुन का शुभाशुभ फल जाननेवाला; **–शास्त्र–**(पुं.) वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभाशुभ फलों का विवेचन होता है।

शकुनि–(सं. पुं.) पक्षी, चिड़िया, गिद्ध, दुर्योधन के मामा का नाम जो इनका मंत्री और कौरवों के कुकर्मों का प्रधान प्रेरक था।

शकुनिवाद–(सं. पुं.) प्रातःकाल के समय पक्षियों का शब्द करना।

शकुनी–(सं. स्त्री.) श्यामा पक्षी, मादा गौरैया, एक पूतना का नाम।

शकुनी–(सं. पुं.) शकुनों का शुभाशुभ फल जाननेवाला।

शकुनीश्वर–(सं. पुं.) गरुड़।

शकुनोपदेश–(सं. पुं.) शकुन-शास्त्र।
शकृत्–(सं. पुं.) विष्ठा, गोवर।
शकृत्द्वार–(सं. पुं.) गुदा।
शक्कर–(सं. पुं.) वृष, वैल; (हिं. स्त्री.) चीनी, खाँड़।
शक्करी–(सं. स्त्री.) वर्णवृत्तों के अन्तर्गत चौदह अक्षरवाले छन्दों का नाम।
शक्की–(अ. वि.) जिसे शक हो, शक करनेवाला।
शक्त–(सं. वि.) समर्थ।
शक्तव–(सं. पुं.) भूने हुए अन्न का आटा, सत्तू।
शक्ति–(सं. स्त्री.) सामर्थ्य, वल, शौर्य, पराक्रम, लक्ष्मी, गौरी, प्रधान अष्ट-शक्तियाँ (जो इन्द्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी और भैरवी हैं), प्रकृति, माया, दुर्गा, तलवार, आर्थिक और सैनिक दृष्टि से रामुन्नत राज्य, दूसरे पर प्रभाव डालने-वाला वल, न्याय के अनुसार वह संवंघ जो किसी पदार्थ तथा उसका वोघ करानेवाले शब्द में होता है; **–कर**–(वि.) वल देनेवाला; **–ग्रह**–((पुं.) शिव, महादेव, कार्तिकेय; **–तः**–(अव्य.) शक्ति के अनुसार; **–घर**–(पुं.) भालावर-दार, कार्तिकेय; **–पाणि**–(पुं.) स्कन्द, कार्तिकेय; **–पूजक**–(पुं.) तान्त्रिक, वाममार्गी; **–पूर्व**–(पुं.) पराशर; **–भृत्**–कार्तिकेय; **–मंत्र**–(पुं.) शक्ति के उपासकों का मंत्र; **–मत्,–मान्** (वि.) वलवान्; **–मत्ता**–(स्त्री.) शक्तिमान् होने का भाव या धर्म; **–मत्त्व**–(पुं.) शक्तिमत्ता; **–मय**–(वि.) शक्तिपूर्ण; **–वादी**–(पुं.) शक्ति की उपासना करनेवाला; **–वीर**–(पुं.) वाममार्गी; **–वैकल्य**–(पुं.) असमर्थता; **–हर**–(वि.) वल-नाशक; **–हीन**–(वि.) निर्वल, नपुंसक।
शक्ती–(सं. पुं.) एक प्रकार का मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।
शक्तु–(सं. पुं.) भूने हुए अन्न का आटा, सत्तू।
शक्य–(सं. वि.) होने योग्य, क्रियात्मक, किया जाने योग्य, शक्तियुक्त, संभव; (पुं.) वह अर्थ जो शब्द की अभिघा-शक्ति से प्रकट हो; **–ता**–(स्त्री.) शक्य होने का भाव या धर्म।
शक्र–(सं. पुं.) दैत्यों का नाश करनेवाले इन्द्र, अर्जुन वृक्ष, ज्येष्ठा नक्षत्र, रगण का चौथा भेद जिसमें ६ मात्राएँ होती हैं; **–कार्मुक**–(पुं.) इन्द्रधनुष; **–केतु**–(पुं.) इन्द्रध्वज; **–गोप**–(पुं.) वीर-वहूटी; **–चाप**–(पुं.) इन्द्रधनुष; **–जानु**–(पुं.) रामायण के अनुसार एक वानर का नाम; **–जाल**–(पुं.) इन्द्रजाल; **–जित्**–(पुं.) मेघनाद; **–तरु**–(पुं.) भाँग का पौघा; **–दिश्**–(स्त्री.) पूर्व दिशा; **–द्रुम**–(पुं.) वकुल, मौलसिरी का पेड़; **–धनु**–(पुं.) इन्द्रधनुष; **–नंदन**–(पुं.) अर्जुन; **–नेमी**–(पुं.) देवदार का वृक्ष; **–पादप**–(पुं.) शक्रनेमी; **–पुष्पिका**–(स्त्री.) नागदौना; **–पुर**–(पुं.) अमरावती; **–प्रस्थ**–(पुं.) इन्द्रप्रस्थ जिसको प्राचीन काल में पाण्डवों ने वसाया था; **–वीज**–(पुं.) इन्द्रयव; **–भवन**–(पुं.) स्वर्ग; **–वाहन**–(पुं.) मेघ, वादल; **–शरासन**–(पुं.) इन्द्रधनुष; **–शाला**–(स्त्री.) यज्ञ-भूमि में वह स्थान जहाँ इन्द्र के उद्देश्य से वलि दी जाती है; **–सारथि**–(पुं.) मातलि; **–सुत**–(पुं.) इन्द्र का पुत्र जयंत, वालि।
शक्राख्य–(सं. पुं.) पेचक, उल्लू।
शक्राग्नि–(सं. स्त्री.) विशाखा नक्षत्र।
शक्राणी–(सं. स्त्री.) इन्द्र की पत्नी, शची।
शक्रायुघ–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष।
शक्रारि–(सं. पुं.) इन्द्र का शत्रु।
शक्राशन–(सं. पुं.) विजया, भाँग।
शक्रासन–(सं. पुं.) इंद्र का आसन।
शक्रि–(सं. पुं.) वज्र, पर्वत।
शक्ल–(अ. स्त्री.) आकृति, स्वरूप।
शगुन–(हिं. पुं.) देखें 'शकुन', भेंट, एक प्रकार की रीति जो विवाह की वातचीत पक्की होने पर की जाती है, टीका, तिलक।
शगुनिया–(हिं. पुं.) शुभाशुभ शगुनों का विचार करनेवाला व्यक्ति।
शचि, शची–(सं. स्त्री.) इन्द्र की पत्नी; **–पति**–(पुं.) इंद्र।
शचीश–(सं. पुं.) इन्द्र।
शठ–(सं. पुं.) धतूरे का पेड़; (वि.) धूर्त, दुष्ट, वंचक, वदमाश, मूर्ख, पाँच प्रकार के नायकों में से एक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो; **–ता**–(स्त्री.) धूर्तता; **–त्व**–(पुं.) शठता।
शठी–(सं. स्त्री.) कपूरकचरी।
शठोदर–(सं. वि.) धूर्त।
शण–(सं. पुं.) सन नाम का पौघा।
शणालुक–(सं. पुं.) अमलतास का वृक्ष।
शत–(सं. वि.) दस का दस गुना, सौ; (पुं.) सौ की संख्या; **–क**–(पुं.) एक ही प्रकार की सौ वस्तुओं का संग्रह, सौ वर्षों का समूह, शताब्दी; **–किरण**–(पुं.) एक प्रकार की समाधि; **–कुंद**–(पुं.) सफेद कनेर; **–कुसुमा**–(स्त्री.) शतपुष्पा, सौंफ; **–कोटि**–(पुं.) सौ करोड़ की संख्या; **–क्रतु**–(पुं.) इन्द्र; **–खंड**–(पुं.) सुवर्ण, सोना; **–गु**–(पुं.) सौ गायों का स्वामी; **–गुण**–(वि.) सौ-गुना; **–घ्नी**–(स्त्री.) एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र; **–चंडी**–(स्त्री.) सौ वार चण्डी-स्तोत्र का पाठ; **–च्छद**–(पुं.) सौ पँखुड़ियों का कमल; **–जटा**–(स्त्री.) शतमली, सतावर; **–जिह्व**–(पुं.) शिव, महादेव; **–तारा**–(पुं.) शतभिषा नक्षत्र; **–दल**–(पुं.) पद्म, कमल; **–दला**–(स्त्री.) सेवती, गुलाव; **–द्रु**–(स्त्री.) सतलज नदी का प्राचीन नाम; **–धन्वा**–(पुं.) एक योद्धा जिसको कृष्ण ने मारा था; **–धा**–(अव्य.) सौ प्रकार से; **–धामा**–(पुं.) विष्णु; **–धृति**–(पुं.) इन्द्र, व्रह्मा, स्वर्ग; **–धौत**–(वि.) सौ वार धोया हुआ; **–पत्र**–(पुं.) कमल, पद्म, मयूर, मोर, कठफोड़वा पक्षी; (वि.) सौ पत्तोंवाला, सौ पँखुड़ियोंवाला; **–पत्रा**–(स्त्री.) दूर्वा, दूव; **–पत्री**–(स्त्री.) एक प्रकार का गुलाव; **–पथ**–(वि.) सैकड़ों मार्गों या शाखाओंवाला; **–०व्राह्मण**–(पुं.) यजुर्वेद का एक व्राह्मण जिसमें कर्मकाण्ड का विस्तृत वर्णन है; **–पथीय**–(वि.) शतपथ व्राह्मण-संवंघी; **–पद**–(पुं.) कनखजूरा, गोजर; **–पदी**–(स्त्री.) कनखजूरा, गोजर, सतावर; **–पाल**–(पुं.) वह जो सौ मनुष्यों का पालन करता हो; **–पुत्री**–(स्त्री.) सतपुतिया, तरोई; **–पुष्प**–(पुं.) साठी धान; **–पुष्पा**–(स्त्री.) सोवे का साग; **–वलि**–(पुं.) रामायण के अनुसार एक वानर का नाम; **–वाहु**–(पुं.) एक असुर का नाम; (त्रि.) सौ भुजाओंवाला; **–वुद्धि**–(वि.) वहुत वुद्धिमान्; **–भिषा**–(स्त्री.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से चौवीसवाँ नक्षत्र; **–भीरु**–(पुं.) चमेली का पौघा; **–मख**–(पुं.) शत-क्रतु, इन्द्र; **–मन्यु**–(पुं.) उलूक, उल्लू; **–मयूख**–(पुं.) चन्द्रमा; **–मल्ल**–(पुं.) संखिया नामक विष; **–मूल**–

(पुं.) एक असुर का नाम; **–मुखी–** (स्त्री.) दुर्गा; **–मूला–**(पुं.) रुद्र का एक रूप; **–रुद्र–**(पुं.) रुद्र का एक रूप जो सौ मखोंवाला है; **–रूपा–** (स्त्री.) ब्रह्मा की मानसी कन्या और पत्नी, (इन्ही के गर्भ से स्वायंभुव मनु की उत्पत्ति हुई थी); **–लक्ष–**(पुं.) सौ लाख, करोड़; **–वार्षिक–**(वि.) सौ वर्षो पर होनेवाला; **–वाही–** (स्त्री.) वह स्त्री जो अपने पिता के घर से ससुराल में बहुत-सा धन लाई हो; **–वीर–**(पुं.) विष्णु का एक नाम; **–वीर्या–**(स्त्री.) शतावर, सफेद मूसली; **–शः–**(अव्य.) सैकड़ों प्रकार से; **–शीर्ष–**(पुं.) विष्णु का एक नाम; **–संवत्सर–**(पुं.) सौ वर्ष; **–सहस्र–**(पुं.) एक लाख; **–सहस्रांशु–**(पुं.) चन्द्रमा।

शतरंज–(फा. पुं.) १६–१६ गोटियों से ६४ खानोंवाले बिसात पर दो व्यक्तियों द्वारा खेला जानेवाला प्रसिद्ध खेल।

शतरंजी–(फा. वि.) शतरंज का, शतरंज-संबंधी; (स्त्री.) दरी, शतरंज की बिसात।

शतांश–(सं. पुं.) सौवाँ भाग।

शताक्षी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, पार्वती, रात्रि, सौंफ।

शतानंद–(सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, देवकी-नन्दन।

शतानन–(सं. पुं.) बिल्व, बेल।

शतानीक–(सं. पुं.) वृद्ध पुरुष, एक मुनि जो व्यास के शिष्य थे, जनमेजय के पुत्र का नाम, नकुल का एक पुत्र जो द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, एक असुर का नाम, सौ सैनिकों का नायक।

शताब्दी–(सं. स्त्री.) सौ वर्षो का समय।

शतायु–(सं. वि., पुं.) (वह) जिसकी आयु सौ वर्ष की हो।

शतायुध–(सं. वि.) जो सौ अस्त्र धारण करता हो।

शतार–(सं. पुं.) वज्र, सुदर्शन चक्र।

शतार्ध–(सं. वि., पुं.) पचास।

शतावधान–(सं. पुं.) वह मनुष्य जो एक साथ बहुत-सी बातों को सुनकर उनको क्रम से याद रखता हो, वह जो एक साथ अनेक काम करता हो।

शतावधानी–(सं. पुं.) शतावधान; (स्त्री.) एक साथ बहुत से काम करना।

शतावर–(सं. पुं.) सफेद मूसली।

शतावरी–(सं. स्त्री.) इन्द्र की भार्या।

शतावर्त–(सं. पुं.) विष्णु, महादेव।

शताष्टक–(सं. पुं.) एक सौ आठ।

शताह्वा–(सं. स्त्री.) सतावर।

शती–(सं. स्त्री.) सौ का समूह, शताब्दी।

शतेश–(सं. पुं.) सौ गाँवों का अधिपति।

शतोदर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।

शत्रि–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।

शत्रुंतप–(सं. वि.) शत्रु को जीतनेवाला।

शत्रुंदम–(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) शत्रु को दमन करनेवाला।

शत्रु–(सं. पुं.) रिपु, वैरी, अरि, द्वेषी; **–कंटका–**(स्त्री.) सुपारी; **–घाती–** (वि.) शत्रु का नाश करनेवाला; (पुं.) शत्रुघ्न के एक पुत्र का नाम; **–घ्न–**(पुं.) रामचन्द्र के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे; **–जित्–**(पुं.) शत्रु को जीतनेवाला; **–ता–**(स्त्री.) वैर-भाव; **–त्व–** (पुं) शत्रुता; **–ताई–**(हिं. स्त्री.) शत्रुता; **–निबर्हण–** (पुं.) शत्रु का नाश; **–निलय–**(पुं.) शत्रु के रहने का स्थान; **–बाधक–**(वि.) शत्रु को पीड़ा देनेवाला; **–मर्दन–**(पुं.) शत्रुओं का नाश करनेवाला, शत्रुघ्न; **–बल–**(पुं.) शत्रु की सेना; **–वत्–** (अव्य.) शत्रु के समान; **–विनाशन–**(पुं.) शिव, महादेव; **–साल–**(हिं. वि.) शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला; **–हंता–**(वि.) शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्वरी–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात।

शदक–(सं. पुं.) भूसी-सहित अन्न।

शनि–(सं. पुं.) शनैश्चर ग्रह, (यह सूर्य से अधिक दूरी पर है। सूर्य की परिक्रमा करने में इसको उनतीस वर्ष एक सौ सड़सठ दिन लगते हैं। इसका व्यास प्रायः सत्तर हजार मील है। यह पृथ्वी से सात गुना बड़ा तथा नव्वे गुना भारी है। दूर-बीन से देखने पर यह ज्योतिर्मय वलय से घिरा हुआ दिखाई पड़ता है); **–प्रदोष–**(पुं.) शनिवार के दिन होने-वाला प्रदोष; **–प्रिय–** (पुं.) नीलमणि, नीलम; **–रुह–**(पुं.) भैंसा; **–वार–** (पुं.) वह वार जो शुक्रवार के बाद तथा रविवार के पहले पड़ता है।

शनैः–(सं. अव्य.) धीरे-धीरे।

शनैश्चर–(सं. पुं.) शनि ग्रह।

शपथ–(सं. पुं.) सौगन्ध; **–पत्र–**(पुं.) शपथपूर्वक लिखा हुआ पत्र।

शप्त–(सं. वि., पुं.) (वह मनुष्य) जिसको शाप दिया गया हो।

शफ–(सं. पुं.) पशु का खुर, वृक्ष की जड़।

शफरुक–(सं. पुं.) संदूक, पेटी।

शफा–(अ. पुं.) आरोग्य; **–खाना–** (पुं.) चिकित्सालय।

शबनम–(फा. स्त्री.) ओस।

शबल–(सं. वि.) चितकबरा।

शबलक–(सं. वि.) रंगबिरंगा, चितकबरा।

शबलता–(सं. स्त्री.) चितकबरापन।

शबला–(सं. स्त्री.) चितकबरी गाय, कामधेनु।

शबलित–(सं. वि.) चितकबरा।

शब्द–(सं. पुं.) आवाज, ध्वनि, नाद, वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव का बोध होता है; **–कार–**(वि.) ध्वनिकारक; **–कोश(ष)–** (पुं.) वह ग्रंथ जिसमें अक्षर-क्रम से शब्दों के अर्थ, पर्याय आदि संकलित हों, अभिधान; **–ग–**(वि.) वायु; **–ग्रह–**(पुं.) कर्ण, कान; **–चातुर्य–**(पुं.) बोलचाल में प्रवीणता; **–चित्र–**(पुं.) अनुप्रास नामक अलंकार; **–नृत्य–**(पुं) एक प्रकार का नाच; **–पति–**(पुं.) नाम मात्र का नेता; **–प्रभेद–**(पुं.) शब्द की विभिन्नता; **–प्रकाश–**(पुं) शब्द के अर्थों का निरूपण; **–प्रमाण–**(पुं.) वह प्रमाण जो किसी के मौखिक कथन के आधार पर हो; **–ब्रह्म–**(पुं.) शब्दात्मक ब्रह्म, ॐकार, वेद, श्रुति; **–भेदी–** (पुं.) देखें 'शब्दवेधी'; **–मय–** (वि.) शब्द से गूँजता हुआ; **–महेश्वर–**(पुं.) महादेव; **–मात्र–**(पुं.) केवल शब्द; **–माला–** (स्त्री.) शब्दसमूह; **–योनि–**(स्त्री.) शब्द की उत्पत्ति; **–रहित–**(वि.) निःशब्द, शब्द से रहित; **–वत्–**(अव्य.) शब्द के समान; **–वारिधि–**(पुं.) शब्दों का समूह, शब्दसागर; **–विद्या–**(स्त्री.) (स्त्री.) व्याकरण; **–विज्ञान–** (पुं.) वह शास्त्र जिसमें शब्द-विषयक तत्त्वों का निरूपण होता है; **–विरोध–**(पुं.) विरुद्धार्थक शब्द का व्यवहार; **–वेधी–** (पुं.) वह धनुर्धारी जो आँखों से बिना देखे केवल शब्द से लक्ष्य का निरूपण करके उसे अचूक रूप से बाण से मारता है, अर्जुन, दशरथ; **–शक्ति–** (स्त्री.) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका अर्थ व्यक्त होता है; **–शासन–** (पुं.) व्याकरण शास्त्र; **–शास्त्र–** (पुं.) व्याकरण; **–श्लेष–**(पुं.) वह अलंकार जिसमें एक शब्द का दो या दो से अधिक अर्थो में प्रयोग हो; **–संभव–**(पुं.) वायु; **–साधन–**(पुं.)

व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन होता है; –सिद्धि–(स्त्री.) शब्द का शुद्ध प्रयोग; –सौंदर्य,-सौष्ठव–(पुं.) लेख में शब्दों की सुंदर योजना; –स्मृति–(स्त्री.) शब्द का स्मरण; –हीन–(वि.) शब्दरहित।
शब्दाकर–(सं. पुं.) शब्दों का उत्पत्ति-स्थान।
शब्दाक्षर–(सं.पुं.) शब्द में प्रयुक्त अक्षर, ॐ।
शब्दाडंबर–(सं. पुं.) बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग जिसमें भाव की कमी हो, शब्दजाल।
शब्दातिग–(सं. पुं.) विष्णु।
शब्दातीत–(सं. वि., पुं.) (वह) जो शब्द से परे हो, ईश्वर।
शब्दाधिष्ठान–(सं. पुं.) शब्द का आश्रय-स्थान, कान।
शब्दाध्याहार–(सं. पुं.) वाक्य का अर्थ पूर्ण करने के लिये उपयुक्त शब्द जोड़ना।
शब्दानुकरण–(सं. पुं.) शब्द का अनुकरण।
शब्दानुशासन–(सं. पुं.) व्याकरण।
शब्दायमान–(सं.वि.) शब्द करता हुआ।
शब्दार्थ–(सं. पुं.) किसी शब्द का अर्थ।
शब्दालंकार–(सं. पुं.) साहित्य में वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या पदों के विन्यास से भाषा में लालित्य उत्पन्न किया जाता है।
शब्दित–(सं. वि.) ध्वनित, जिससे शब्द निकला हो।
शब्दप्रिय–(सं. स्त्री.) कर्ण, कान।
शम–(सं. पुं.) शान्ति, मोक्ष, निवृत्ति, क्षमा, उपचार, अन्तःकरण अथवा बाह्य इन्द्रियों का निग्रह, साहित्य में शान्त रस का स्थायी भाव, संयम, तिरस्कार; –क–(वि.) शान्तिकारक; –गिरा–(स्त्री.) शान्ति-कथा।
शमन–(सं. पुं.) यज्ञ के लिये पशुओं का बलिदान, निवृत्ति, चित्त की स्थिरता, शान्ति, हिंसा, प्रतिसंहार, आघात, तिरस्कार; (वि.) निवारण करनेवाला; –स्वसा–(स्त्री.) यम की बहिन, यमुना।
शमनी–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात।
शमनीय–(सं. वि.) शमन करने योग्य।
शमल–(सं. पुं.) पाप, विष्ठा।
शमशेर–(फा. स्त्री.) तलवार, खड्ग।
शमा–(फा. स्त्री.) मोमबत्ती, दीया; –दान–(पुं.) मोमबत्तियों का आधान, दीवट।
शमि–(सं. स्त्री.) शमी वृक्ष।
शमिक–(सं.पुं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
शमित–(सं. वि.) शमन या शांत किया हुआ।
शमिता–(सं. पुं.) शान्तिकारक, यज्ञ में पशु का बलिदान करनेवाला।
शमिष्ठ–(सं. वि.) अति शान्त।
शमी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष; (वि.) शान्त।
शमीक–(सं.पुं.) एक प्रसिद्ध ऋषि, (तपस्या करते समय राजा परीक्षित् ने इनके गले में मरा हुआ साँप डाल दिया था।)
शमीगर्भ–(सं. पुं.) ब्राह्मण, अग्नि।
शमीर–(सं. पुं.) शमी वृक्ष; –कंद–(पुं.) वाराहीकंद।
शय–(सं. वि.) हाथ, शय्या, साँप, नींद।
शयन–(सं. पुं.) निद्रालु व्यक्ति, वह जिसको नींद आ रही हो।
शयथ–(सं.पुं.) अजगर, शूकर, मृत्यु, सर्प।
शयन–(सं. पुं.) निद्रा, शय्या, स्त्री-प्रसंग, मैथुन; –आरती–(स्त्री.) देवता की वह आरती जो रात्रि के समय की जाती है; –कक्ष–(पुं.) सोने का कमरा; –गृह–(पुं.) सोने का कमरा या घर; –प्रकोष्ठ–(पुं.) शयनगृह; –बोधिनी–(स्त्री.) अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी; –भूमि–(स्त्री.) सोने का स्थान; –मंदिर–(पुं.) शयनागार, सोने का कमरा; –महल–(हिं. पुं.) शयन का कमरा; –स्थान–(पुं.) सोने का स्थान।
शयनागार–(सं. पुं.) शयनगृह।
शयनास्पद–(सं. पुं.) बिछौना।
शयनीय–(सं. वि.) शयन के योग्य, सोने लायक; –गृह–(पुं.) शयनागार; –वास–(पुं.) वे वस्त्र जो सोते समय पहने जाते हैं।
शयनैकादशी–(सं. स्त्री.) आषाढ़ शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु के शयन का आरंभ माना जाता है।
शयांडक–(सं. पुं.) गिरगिट।
शयान–(सं. वि.) निद्रित, जो सोया हो।
शयालु–(सं. वि.) जिसको नींद आती हो।
शयित–(सं. वि.) निद्रालु, सोया हुआ।
शयितव्य–(सं. वि.) सोने योग्य।
शय्या–(सं. स्त्री.) सेज, पलंग, खाट; –गत–(वि.) बिछौने पर सोया हुआ; –दान–(पुं.) मृतक के उद्देश्य से चारपाई, बिछावन आदि का दान; –पाल–(पुं.) राजाओं के शयनागार का प्रबन्ध करनेवाला; –वेश्म–((पुं.) सोने का घर।
शरंड–(सं. पुं.) पक्षी, कामुक, धूर्त, गिरगिट, छिपकली।
शर–(सं. पुं.) बाण, तीर, सरकंडा, नरकट, जल, पाँच की संख्या, दूध की मलाई, उशीर, खस, भाले का फल।
शरकांड–(सं. पुं.) शरकंडा, सरपत।
शरकार–(सं. पुं.) तीर बनानेवाला।
शरगुल्म–(सं. पुं.) सरकंडा।
शरघात–(सं. पुं.) तीर की चोट।
शरच्चंद्र, **शरच्छशि**–(सं. पुं.) शरद्-काल का चन्द्रमा।
शरच्छिखी–(सं. पुं.) मयूर, मोर।
शरज–(सं.वि.) सरकंडे का बना हुआ।
शरज्ज्योत्स्ना–(सं. स्त्री.) शरद्-काल की चन्द्रिका।
शरट–(सं. पुं.) कृकलास, गिरगिट।
शरण–(सं.पुं.) आश्रय, रक्षा, घर, आश्रय-स्थान, अधीन या आश्रित व्यक्ति।
शरणागत, शरणापन्न–(सं. वि.) शरण में आया हुआ।
शरणार्थी–(सं. वि.) शरण चाहनेवाला।
शरणालय–(सं. पुं.) आश्रय-स्थान।
शरणी–(सं. स्त्री.) मार्ग; (हिं.वि.स्त्री.) शरण देनेवाली।
शरण्य–(सं. वि.) शरणागत की रक्षा करनेवाला।
शरण्या–(सं. स्त्री.) शरणागत की रक्षा करनेवाली, दुर्गा।
शरत्(द्)–(सं.स्त्री.) वर्ष, वह ऋतु जो क्वार और कार्तिक महीने में होती है; –काल–(पुं.) शरद्-ऋतु; –पर्व (पुं.), –पूर्णिमा–(स्त्री.) आश्विन मास की पूर्णिमा; –समय–(पुं.) शरद्-काल।
शरदंड–(सं. पुं.) सरकंडा, चाबुक।
शरदंत–(सं. पुं.) हेमन्त ऋतु।
शरदिंदु–(सं. पुं.) शरत्-ऋतु का चन्द्रमा।
शरदिज–(सं. वि.) शरत्-ऋतु में उत्पन्न होनेवाला।
शरद्वत्–(सं पुं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
शरधि–(सं. पुं.) तूण, तरकश।
शरपट्टी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का शस्त्र।
शरपुंख–(सं.पुं.) बाण में लगा हुआ पर, सरफोंका नामक क्षुप।
शरबत–(अ. पुं.) मधुर पेय, चीनी आदि का रस।
शरबत-पिलाई–(हिं. स्त्री.) वह धन जो कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष को शरबत पिलाते समय देते हैं।

शरवती–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पीला रंग, एक प्रकार का अच्छा कपड़ा, मीठा नीवू, फालसा; (वि.) रसदार, सरस।
शरभंग–(सं. पुं.) एक महर्षि का नाम जिनका दर्शन करने के लिये रामचन्द्र वनवास-काल में गये थे।
शरभ–(सं. पुं.) सिंह, हाथी का वच्चा, टिड्डी, राम की सेना का एक यूथपति वंदर का नाम, ऊँट, विष्णु, एक प्रकार का पक्षी, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं, (इसको शशिकला या मणिगुण भी कहते हैं), दोहे का एक भेद, आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग।
शरभा–(सं. स्त्री.) शुष्क अवयवोंवाली विवाह के अयोग्य कन्या।
शरभू–(सं. पुं.) कार्तिकेय।
शरम–(हिं. स्त्री.) लज्जा।
शरमाऊ–(हिं. वि.) लज्जालु।
शरमाना–(हिं.क्रि.अ.) लज्जा का अनुभव करना।
शरमिंदगी–(हिं. स्त्री.) लज्जा, शरम।
शरमिंदा–(हिं. वि.) लज्जित।
शरमीला–(हिं. वि.) लज्जालु।
शरमुख–(सं. पुं.) वाण का अग्रभाग।
शरयु(यू)–(सं. स्त्री.) सरयू नदी।
शरल–(सं. वि.) सरल, स्वच्छ-हृदय।
शरवत्–(सं. वि.) वाण के तुल्य।
शरवाणि–(सं. पुं.) तीर का फल।
शरवारण–(सं. पुं.) ढाल।
शरवृष्टि–(सं. स्त्री.) वाणों की वर्षा।
शरशय्या–(सं.स्त्री.) वाणों की वनी हुई शय्या।
शरस–(सं. पुं.) शर, वाण, तीर।
शराकत–(फा.स्त्री.) साझा, हिस्सेदारी।
शराघात–(सं.पुं.) वाण का आघात।
शराटि–(सं. पुं.) टिटिहरी नामक पक्षी।
शरापना–(हिं.क्रि.स.) शाप देना।
शराफत–(अ. स्त्री.) सज्जनता।
शराव–(अ. स्त्री.) मद्य, मदिरा; **–खाना**–(पुं.) शराव की दुकान; **–खोरी**–(स्त्री.) मद्यपान।
शरावी–(हिं. पुं.) शराव पीनेवाला।
शराभ्यास–(सं. पुं.) वाणशिक्षा।
शरारत–(अ. स्त्री.) पाजीपन, दुष्टता।
शरारती–(हिं. वि.) शरारत करनेवाला।
शरारोप–(सं. पुं.) धनुप, कमान।
शराव–(सं.पुं.) मिट्टी का पात्र, कसोरा, पुरवा, एक सेर का परिमाण।
शरावर–(सं. पुं.) ढाल, कवच।
शरावरण–(सं.पुं.) तीर का वार रोकने की ढाल।
शरावाप–(सं. पुं.) धनुष, कमान।
शराविका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का कुष्ठ रोग।
शराश्रय–(सं. पुं.) तूण, तरकश।
शरासन–(सं. पुं.) धनुष, कमान, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
शरिष्ठ–(हिं. वि.) श्रेष्ठ, उत्तम।
शरीक–(अ. वि.) सम्मिलित, साझी।
शरीफ–(अ. वि.) सज्जन।
शरीफा–(हिं.पुं.) मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फल वहुत मीठा होता और कार्तिक में पकता है, सीताफल, श्रीफल।
शरीर–(सं. पुं.) गात्र, कलेवर, देह; **–कर्ता**–(वि.) सृष्टिकर्ता; **–ज**–(पुं.) रोग, कामदेव; **–त्याग**–(पुं.) मृत्यु; **–धातु**–(स्त्री.) वीर्य, रक्त और मांस; **–पतन**–(पुं.) मृत्यु; **–पात**–(पुं.) शरीर का नाश; **–प्रभ**–(पुं.) शरीर से उत्पन्न; **–वंध**–(पुं.) देह का ढाँचा; **–भाज्**–(पुं.) शरीरधारी; **–भृत्**–(वि.) देहधारी; **–रक्षक**–(पुं.) वह सैनिक जो राजा आदि की रक्षा के लिये सर्वदा उनके साथ रहता है; **–वृत्ति**–(स्त्री.) जीविका; **–शास्त्र**–(पुं.) शरीर-विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें शरीर के सव अवयवों की रचना, इनके कार्य आदि का विवेचन होता है; **–शुश्रूषा**–(स्त्री.) देह की सेवा; **–शोषण**–(पुं.) देह का क्षय; **–संस्कार**–(पुं.) गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के मनुष्य के सोलह संस्कार; **–स्थ**–(वि.) जीवित, जीता हुआ।
शरीरांत–(सं. पुं.) मृत्यु, मौत।
शरीरार्पण–(सं. पुं.) किसी कार्य में अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना।
शरीरावरण–(सं.पुं.) चर्म, चमड़ा, खाल।
शरीरी–(सं. पुं.) शरीरधारी, प्राणी, जन्तु, चेतन, जीवधारी।
शरेज–(सं. पुं.) कार्तिकेय।
शर्कर–(सं. पुं.) चीनी, कंकड़, वालू का कण; **–क**–(पुं.) शरवती नीवू; **–जा**–(स्त्री.) चीनी।
शर्करा–(सं. स्त्री.) शक्कर, खाँड़, चीनी, उपल, कंडा, ठीकरा, वालू का कण।
शर्करी–(सं. स्त्री.) चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, लेखनी, मेखला, नदी।
शर्करीय–(सं. वि.) चीनी का।
शर्कोट–(सं. पुं.) सर्प, साँप।
शर्त–(अ.स्त्री.) प्रतिवंध, प्रतिज्ञा, वाजी।
शर्तिया–(अ. वि., अव्य.) अवश्य, वदकर।
शर्वत–(हिं. पुं.) देखें 'शरवत'।
शर्म–(फा. स्त्री.) देखें 'शरम'।
शर्मकृत्–(सं. वि.) मंगलकारी।
शर्मण्य–(सं. वि.) सुख के योग्य।
शर्मद–(सं. वि.) आनन्द देनेवाला।
शर्मन्–(सं. पुं.) सुख, आनन्द; (पुं.) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्मरी–(सं. स्त्री.) दारुहल्दी।
शर्मा–(सं. पुं.) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्मिष्ठा–(सं. स्त्री.) वृषपर्वा नामक असुरराज की कन्या जो देवयानी की सहेली थी।
शर्या–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात।
शर्व–(सं. पुं.) शिव, महादेव, विष्णु; **–पत्नी**–(स्त्री.) पार्वती, लक्ष्मी; **–पर्वत**–(पुं.) कैलास।
शर्वर–(सं.पुं.) अन्धकार, अँधेरा, कामदेव।
शर्वरी–(सं. स्त्री.) निशा, रात्रि, रात, हल्दी, सन्ध्या, शाम; **–कर**–(पुं.) विष्णु; **–दीपक**–(पुं.) चन्द्रमा।
शर्वरीश–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
शर्वाक्ष–(सं. पुं.) रुद्राक्ष।
शर्वाचल–(सं. पुं.) कैलास।
शर्वाणी–(सं. स्त्री.) पार्वती।
शर्शरीक–(सं. पुं.) घोड़ा, अग्नि।
शर्षीका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
शल–(सं. पुं.) ताड़ का वृक्ष, ब्रह्मा, कंस का मंत्री, धृतराष्ट्र का पुत्र।
शलक–(सं. पुं.) साही का काँटा।
शलगम, शलजम–(अ. पुं.) गाजर की तरह का एक कंद।
शलभ–(सं. पुं.) शरभ, टिड्डी, छप्पय छन्द का एक भेद।
शलल–(सं. पुं.) साही का काँटा।
शललित–(सं. वि.) काँटों से युक्त।
शलली–(सं. स्त्री.) शलल।
शलाक–(सं. पुं.) सलाई; **–धूर्त**–(पुं.) चिड़ीमार, वहेलिया।
शलाका–(सं. स्त्री.) लोहे, लकड़ी आदि की लंवी सलाई, सींक, मैना पक्षी, छाते की कमानी, शर, वाण, चित्रकार की कूँची, जुआ खेलने का पासा, सुरमा लगाने की सलाई।
शलातुर–(सं. पुं.) प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि की वासभूमि।
शली–(सं. स्त्री.) साही नामक जंतु।
शल्क–(सं. पुं.) वल्कल, छिलका।

शल्प–(हिं. पुं.) बाढ़, बौछार, धड़ाका ।
शल्मलि–(सं. पुं.) सेमल का वृक्ष ।
शल्य–(सं. पुं.) बाण, भाले के आकार का एक अस्त्र, पाप, दुर्वाक्य, अस्थि, हड्डी, छप्पय छन्द का एक भेद, अस्त्र-चिकित्सा; **–कंठ**–(पुं.) साही नामक जंतु; **–की**–(स्त्री.) साही नामक जंतु; **–क्रिया,–चिकित्सा**–(स्त्री.) फोड़े आदि की चीर-फाड़ करने की विधि; **–शास्त्र**–(पुं.) चिकित्सा-शास्त्र का वह अंग जिसमें शरीर में फोड़े आदि को चीर-फाड़कर नीरोग किया जाता है ।
शल्यारि–(सं. पुं.) शल्यराज को मारने-वाले युधिष्ठिर ।
शल्योद्धार–(सं. पुं.) शरीर में गड़े हुए बाण या काँटे आदि निकालने की क्रिया ।
शल्ल–(सं. पुं.) त्वचा, चमड़ा, वृक्ष की छाल; **–की**–(स्त्री.) साही नामक जंतु ।
शल्लिका–(सं. स्त्री.) नौका, नाव ।
शल्व–(सं. पुं.) देखें 'शाल्व' ।
शव–(सं. पुं.) मृत शरीर, लाश; **–दाह**–(पुं.) मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया; **–भस्म**–(पुं.) चिता की भस्म, मरघट की राख; **–मंदिर**–(पुं.) मरघट; **–यान**–(पुं.) शव ले जाने की अरथी; **–रथ**–(पुं.) शवयान, अरथी; **–वाह**–(पुं.) शव को ढोने-वाला; **–शयन**–(पुं.) श्मशान, मरघट; **–साधन**–(पुं.) शव के ऊपर बैठकर तन्त्रोक्त मन्त्र को सिद्ध करना; **–सान**–(पुं.) पथिक, यात्री ।
शवल–(सं. वि.) चितकबरा ।
शवला–(सं. स्त्री.) चितकबरी गाय ।
शवलित–(सं. वि.) मिश्रित, मिलाया हुआ ।
शवाग्नि–(सं. स्त्री.) शवदाह की अग्नि ।
शवोद्वह–(सं. पुं.) शव ढोनेवाला ।
शश–(सं. पुं.) खरहा, चन्द्रमा का लांछन या कलंक, कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में से एक; **–क**–(पुं.) खरहा; **–घातक**–(पुं.) बाज पक्षी; **–धर**–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; **–भृत्**–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; **–मौलि**–(पुं.) शिव, महादेव; **–लक्षण,–लांछन**–(पुं.) चन्द्रमा; **–विंदु**–(पुं.) विष्णु, चित्ररथ के एक पुत्र का नाम; **–विषाण**–(पुं.) असंभव बात; **–शृंग**–(पुं.) कोई अन-होनी या असंभव बात; **–स्थली**–(स्त्री.) गंगा और यमुना के मध्य का प्रदेश ।
शशांक–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कपूर; **–ज**–(पुं.) बुध ग्रह ।
शशाद–(सं. पुं.) श्येन पक्षी, बाज ।
शशि, शशी–(सं. पुं.) चन्द्रमा, छप्पय छन्द का एक भेद; **–कर**–(पुं.) चन्द्रमा की किरण; **–कला**–(स्त्री.) चन्द्रमा की कला, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह मात्राएँ होती हैं; **–कांत**–(पुं.) कुमुदिनी; **–कुल**–(पुं.) चन्द्रवंश; **–खंड**–(पुं.) चन्द्रमा की कला; **–ज**–(पुं.) बुध ग्रह; **–तनय**–(पुं.) चन्द्रमा के पुत्र, बुध ग्रह; **–तिथि**–(स्त्री.) पूर्णमासी; **–धर**–(पुं.) महा-देव; **–पर्ण**–(पुं.) परवल; **–पुत्र**–(पुं.) बुध ग्रह; **–पुष्प**–(पुं.) पद्म, कमल; **–पोषक**–(पुं.) शुक्ल पक्ष; **–प्रभ**–(पुं.) कुमुद, कुई, मोती; (वि.) चन्द्रमा के समान प्रभावाला; **–प्रभा**–(स्त्री.) ज्योत्स्ना, चन्द्रिका; **–प्रिय**–(पुं.) मुक्ता, मोती; **–प्रिया**–(स्त्री.) सत्ताईस नक्षत्र जिन्हें चन्द्रमा की पत्नियाँ मानते हैं; **–भाल**–(पुं.) शिव, महादेव; **–भूषण**–(पुं.) महादेव; **–मंडल**–(पुं.) चन्द्रमण्डल; **–मणि**–(पुं.) चन्द्रकान्त मणि; **–मुख**–(वि.) अति मनोहर मुखवाला; **–मौलि**–(पुं.) शिव; **–रस**–(पुं.) अमृत; **–रेखा**–(स्त्री.) चन्द्रमा की एक कला; **–लेखा**–(स्त्री.) चन्द्रमा की कला, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं; **–वदन**–(वि.) सुन्दर मुखवाला; **–वदना**–(स्त्री.) चन्द्रमुखी, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं; **–विमल**–(वि.) चन्द्रमा के समान स्वच्छ; **–शाला**–(स्त्री.) शीशमहल; **–शिखामणि**–(पुं.) शिव, महादेव; **–शेखर**–(पुं.) शिव, महा-देव; **–शोषक**–(पुं.) कृष्ण पक्ष; **–सुत**–(पुं.) बुध ग्रह; **–हीरा**–(हिं. पुं.) चन्द्रकान्त मणि ।
शशीश–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
शश्वत्–(सं. वि.) बहुत अधिक; (अव्य.) बारंबार ।
शष्कुल–(सं. पुं.) करंज ।
शष्कुली–(सं.स्त्री.) कर्णरन्ध्र, कान का छेद ।
शष्प–(सं. पुं.) नई घास, नव तृण ।
शस्त–(सं. पुं.) कल्याण, भलाई; (वि.) प्रशंसा किया हुआ, प्रशस्त, उत्तम ।
शस्तक–(सं. पुं.) हाथ में पहनने का चमड़े का त्राण ।
शस्तता–(सं. स्त्री.) प्रस्तार, फैलाव ।
शस्ति–(सं. स्त्री.) स्तुति, प्रशंसा ।
शस्त्र–(सं. पुं.) लोहा, अस्त्र, खड्ग, तलवार; **–कर्म**–(पुं.) घाव या फोड़े को चीरना; **–क्रिया**–(स्त्री.) देखें 'शस्त्र-कर्म'; **–गृह**–(पुं.) शस्त्र रखने का घर; **–जीवी**–(पुं.) सैनिक; **–पाणि**–(वि.) जिसके हाथ में शस्त्र हो; **–प्रहार**–(पुं.) शस्त्र का आघात; **–बंध**–(पुं.) शस्त्र द्वारा बाँधना; **–भृत्**–(पुं.) शस्त्रधारी सैनिक; **–वत्**–(वि.) शस्त्र के समान; **–विद्या**–(स्त्री.) शस्त्र चलाने की विद्या, धनुर्वेद; **–वृत्ति**–(वि.) शस्त्र चलाना ही जिसकी जीविका हो; **–शाला**–(स्त्री.) शस्त्र-गृह; **–शास्त्र**–(पुं.) धनुर्वेद; **–शिक्षा**–(स्त्री.) शस्त्र चलाने की विद्या; **–हत**–(वि.) शस्त्र के आघात से मरा हुआ; **–हस्त**–(पुं.) शस्त्रधारी मनुष्य ।
शस्त्रागार–(सं. पुं.) शस्त्रशाला ।
शस्त्राभ्यास–(सं. पुं.) शस्त्रशिक्षा ।
शस्त्रायुध–(सं. वि.) शस्त्रधारी ।
शस्त्री–(सं.वि.) शस्त्र चलानेवाला; (पुं.) सैनिक ।
शस्त्रोपजीवी–(सं. वि., पुं.) शस्त्र द्वारा अपनी जीविका चलानेवाला, सैनिक ।
शस्य–(सं. पुं.) वृक्ष, लता आदि का फल, फसल ।
शहंशाह–(फा. पुं.) सम्राट् ।
शहंशाही–(फा. वि.) शहंशाह का, शहंशाह-संबंधी ।
शह–(फा. पुं., स्त्री.) शतरंज के खेल में बादशाह को दी गई किश्त ।
शहजादा–(फा. पुं.) राजकुमार ।
शहजादी–(फा. स्त्री.) राजकुमारी ।
शहजोर–(फा. वि.) बलवान ।
शहजोरी–(फा. स्त्री.) बल, दबाव, धाक, जबरदस्ती ।
शहतूत–(फा. पुं.) एक प्रकार का फल ।
शहद–(फा. पुं.) मधु ।
शहनाई–(फा. स्त्री.) एक प्रकार का वाद्य-यंत्र ।
शहवाला–(फा. पुं.) दूल्हे के साथ रहने-वाला बालक ।
शहर–(फा. पुं.) नगर ।
शहरी–(फा.वि.) शहर का, शहर-संबंधी ।
शहाना–(फा. पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग; (वि.) उत्तम, बढ़िया ।
शहाबा–(हिं. पुं.) देखें 'अगिया-बैताल' ।
शहाबी–(हिं. वि.) गहरे लाल रंग का ।
शहीद–(अ. पुं.) आत्म-बलिदान करने-वाला वीर ।

शांकर–(सं. पुं.) आर्द्रा नक्षत्र, एक छन्द का नाम, शंकराचार्य का अनुयायी; (वि.) शंकर-संबंधी; **–भाष्य**–(पुं.) एक प्रसिद्ध वेदान्त-दर्शन।
शांकरी–(सं. स्त्री.) शिवसूत्र।
शांख–(सं. पुं.) शंख की ध्वनि।
शांखिक–(सं. पुं.) शंख वजानेवाला।
शांडिल्य–(सं.पुं.) एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि, इनके कुल में उत्पन्न व्यक्ति।
शांत–(सं. वि.) सौम्य, गंभीर, मौन, चुप, जितेन्द्रिय, उत्साहरहित, शिथिल, श्रान्त, थका हुआ, स्थिर, मरा हुआ, विघ्न या वाधारहित, दुर्वल, मनोविकाररहित, जो उद्दीप्त न हो; (पुं.) काव्य के नौ रसों में से एक; **–ता**–(स्त्री.) रागादि का अभाव, विराग; **–नु**–(पुं.) द्वापर युग के इक्कीसवें चन्द्रवंशी राजा का नाम; **–प्रकृति**–(वि.) शान्त स्वभाव का; **–रूप**–(वि.) सरल स्वभाव का।
शांता–(सं. स्त्री.) राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यशृंग ऋषि को व्याही थी, रेणुका, शमी, आँवला, दूव।
शांतात्मा–(सं. वि.) शान्त स्वभाव का, साधु प्रकृति का।
शांति–(सं. स्त्री.) चित्त की स्थिरता, शमन, स्तब्धता, स्वस्थता, गम्भीरता, अमंगल दूर करने का उपचार, दुर्गा का एक नाम, षोड़श मातृकाओं में से एक; **–कर**–(वि.) शान्ति करनेवाला; **–कर्म**–(पुं.) वाधा, पाप आदि के निवारण का उपाय (पूजा-पाठ आदि); **–काम**–(वि.) शान्ति की कामना करनेवाला; **–घट**–(पुं.) वह जलपूर्ण घट जो देवादि की प्रतिमा के सामने रखा जाता है; **–द**–(पुं.) विष्णु; (वि.) शान्ति देनेवाला; **–दाता**–(पुं.) **–दायक**–(वि.) शान्ति देनेवाला; **–प्रद**–(वि.) शान्ति देनेवाला; **–वाचन**–(पुं.) सव प्रकार की वाधा को दूर करने के लिये मन्त्र-पाठ; **–होम**–(पुं.) अमंगल की शांति के लिये किया जानेवाला हवन।
शांव–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण के पुत्र का नाम।
शांवरिक–(सं. पुं.) जादूगर।
शांवरी–(सं. स्त्री.) इन्द्रजाल।
शांवुक, शांवूक–(सं. पु.) घोंघा।
शांभव–(सं. वि.) शिव-संवंधी।
शांभवी–(सं. स्त्री.) दुर्गा देवी।
शाकंभरी–(सं. स्त्री.) शक जाति की इष्ट देवी, भगवती दुर्गा।
शाकंभरीय–(सं. पुं.) साँभर नमक।
शाक–(सं. पुं.) भाजी, तरकारी, साग, शक्ति, (वि.) शक जाति-संबंधी।
शाकद्वीप–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप।
शाकद्वीपीय–(सं. पुं., वि.) शाकद्वीप का रहनेवाला, ब्राह्मणों का एक भेद।
शाकभक्ष–(सं. वि.)) शाकाहारी।
शाकट–(सं. वि.) शकट-संवंधी; (पुं.) गाड़ी का वैल, गाड़ी का वोझ।
शाकटायन–(सं. पुं.) एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।
शाकटिक–(सं. वि.) देखें 'शाकट'।
शाकल–(सं. वि.) खण्ड-संवंधी; (पुं.) खण्ड, टुकड़ा, हवन की सामग्री जिसमें जौ, तिल, घृत, मधु आदि मिला रहता है।
शाकल्य–(सं. पुं.) एक अति प्राचीन ऋषि का नाम।
शाकश्रेष्ठ–(सं. पुं.) वथुआ का शाक।
शाकाद–(सं. पुं.) शाकभोजी।
शाकान्न–(सं. पुं.) साग मिला हुआ भात।
शाकाम्ल–(सं. पुं.) इमली।
शाकारी–(सं. स्त्री.) प्राकृत भाषा का एक भेद।
शाकाहार–(सं. पुं.) अन्न, फल, फूल, पत्तों आदि का भोजन।
शाकाहारी–(सं. पुं., वि.) अन्न, फल, फूल तथा शाक खानेवाला।
शाकिनी–(सं. स्त्री.) एक पिशाची जो दुर्गा की अनुचरी मानी जाती है, डाइन, चुड़ैल।
शाकुंतल–(सं. पुं.) शकुन्तला का पुत्र, भरत।
शाकुन–(सं. पुं.) शकुन द्वारा मनुष्य का शुभाशुभ वतानेवाला।
शाकुनिक–(सं. पुं.) व्याध, वहेलिया।
शाकेक्षु–(सं. पु.) गन्ने का एक भेद।
शाकेश्वर–(सं. पुं.) वह राजा जिसके नाम पर संवत् चले।
शाकोल–(सं. पुं.) एक प्रकार की लता।
शाक्कर–(सं. पुं.) वृषभ, वैल।
शाक्त–(सं. पुं.) शक्ति का उपासक, वह जो दुर्गा, काली, तारा आदि शक्तियों की उपासना करता हो; (वि.) शक्ति-संवंधी।
शाक्य–(सं. पुं.) वुद्धदेव, एक प्राचीन क्षत्रिय जाति का नाम; **–पुंगव, –मुनि, –सिंह**–(पुं.) वुद्धदेव।
शाक्र–(सं. पुं.) ज्येष्ठा नक्षत्र; (वि.) शक्र या इन्द्र-संवंधी।
शाक्वर–(सं. पुं.) इन्द्र का वज्र, वैल, साँड़।
शाख–(सं. पुं.) कार्तिकेय, कृतिका का पुत्र; (फा. स्त्री.) शाखा, डाल।
शाखांग–(सं. पुं.) शरीर का अवयव, हाथ, पैर।
शाखा–(सं. स्त्री.) डाल, टहनी, शरीर का अवयव, हाथ, पैर, वाहु, अँगुली, किसी वस्तु आदि का अंग, या भाग भेद, विभाग, किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद; **–कंट**–(पुं.) थूहर; **–कंटक**–(पुं.) थूहर; **–चंक्रमण**–(पुं.) एक डाल से दूसरी डाल पर कूदकर जाना; **–चंद्रन्याय**–(पुं.) वह कहावत जो ऐसे विषय में कही जाती है जो सत्य मान लिया जाता है, पर वस्तुतः सत्य नहीं होता; **–नगर**–(पुं.) किसी नगर का प्रान्त-भाग, उपनगर; **–मृग**–(पुं.) वंदर, गिलहरी; **–शिफा**–(स्त्री.) वह शाखा जो नीचे की ओर झुककर भूमि में जड़ पकड़ ले।
शाखाग्र–(सं. पुं.) शाखा का अगला भाग, अँगुली।
शाखाम्ला–(सं. स्त्री.) इमली का पेड़।
शाखास्थि–(सं. स्त्री.) हाथ की हड्डी।
शाखी–(सं. पुं.) वेद की किसी शाखा का अनुयायी।
शाखीय–(सं. वि.) शाखा-संवंधी।
शाखोच्चार–(सं. पुं.) विवाह के समय वर-कन्या की वंशावली का वर्णन।
शाखोट–(सं. पुं.) सिहोर का वृक्ष।
शागिर्द–(फा. पुं.) शिष्य, चेला।
शागिर्दी–(फा. स्त्री.) शिष्यता, चेलाई।
शाट, शाटक–(सं. पुं.) पट, वस्त्र, कपड़े का टुकड़ा।
शाटिका, शाटी–(सं. स्त्री.) धोती, साड़ी।
शाठ्य–(सं. पुं.) शठता, दुष्टता।
शाड्वल–(सं. पुं.) देखें 'शाद्वल'।
शाण–(सं. पुं.) सन के रेशे का वना हुआ कपड़ा, हथियार पैना करने का पत्थर, सान।
शाणित–(सं. वि.) सान पर रखा हुआ, जिसकी धार तेज की गई हो।
शातकुंभ–(सं. पुं.) धतूरे का पौधा, सुवर्ण, सोना।
शातन–(सं. पुं.) काटना, चोखा करना, नष्ट करना।
शातपत्र–(सं.वि.) शतपत्र के तुल्य, कमल के समान।

शातपत्रक–(सं. पुं.) चन्द्रिका, चाँदनी।
शातवाहन–(सं. पुं.) देखें 'शालिवाहन'।
शातोदर–(सं.वि.) क्षीण, दुवला-पतला।
शात्रव–(सं. पुं.) शत्रुता।
शाद–(सं. पुं.) कर्दम, कीचड़, दूब।
शाद्वल–(सं. पुं.) दूब, हरी घास; (वि.) हरा-भरा (मैदान)।
शादी–(फा. स्त्री.) विवाह।
शान–(फा. स्त्री.) वैभव, गौरव।
शानदार–(फा. वि.) वैभवशाली।
शानशौकत–(अ. स्त्री.) वैभव, तड़क-भड़क
शानैश्चर–(सं. वि.) शनि ग्रह-संबंधी।
शाप–(सं.पुं.) किसी का अनिष्ट मनाते हुए बुरी कामना व्यक्त करना, आक्रोश, धिक्कार, कामना, फटकार; **–ग्रस्त**–(सं.वि.) जो शाप से संतप्त हो; **–मुक्त**–(वि.) जिसके ऊपर से शाप का प्रभाव हट गया हो।
शापांबु–(सं. पुं.) वह जल जिसको हाथ में लेकर शाप दिया जाय।
शापास्त्र–(सं. पुं.) वह जिसका अस्त्र शाप देना ही हो।
शापित–(सं. वि.) जिसको शाप दिया गया हो।
शापोद्धार–(सं. पुं.) शाप के प्रभाव से छुटकारा।
शाफरिक–(सं. पुं.) मछुआ, धीवर।
शावर–(सं. पुं.) शिवकृत तन्त्रविशेष, पाप, अविकार, दुःख, बुराई; **–भाष्य**–(पुं) शवरस्वामी-कृत भाष्य।
शावरी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
शावल–(सं. पुं.) शंकर।
शावाश–(फा. अव्य.) प्रशंसासूचक शब्द।
शावाशी–(फा.स्त्री.) प्रशंसा, सराहना।
शाब्द–(सं. वि.) शब्द-सम्बन्धी।
शाब्दिक–(सं. पुं.) शब्दशास्त्र का ज्ञाता, वैयाकरण; (वि.) शब्द-संबंधी।
शाब्दी–(सं. वि.) शब्द-सम्बन्धी; (स्त्री.) सरस्वती; **–व्यंजना**–(स्त्री.) साहित्य में वह व्यंजना जो शब्द विशेष के प्रयोग पर निर्भर हो।
शाम–(फा. स्त्री.) संध्या।
शामकरण–(हिं. पुं.) वह घोड़ा जिसके कान काले हों।
शामत–(अ. स्त्री.) दुर्दशा।
शामनी–(सं.स्त्री.) दक्षिण दिशा।
शामियाना–(फा. पुं.) एक प्रकार का बड़ा तंबू, चंदवा।
शामिल–(फा. वि.) संयुक्त, सम्मिलित।
शाम्ी–(हिं. स्त्री.) लोहे, पीतल आदि का छल्ला जो छड़ी, छाते आदि के छोर पर लगाया जाता है।
शामूल–(सं. पुं.) ऊनी वस्त्र।
शायक–(सं.पुं.) बाण, तीर, तलवार।
शायद–(फा. अव्य.) कदाचित्।
शायर–(अ. पुं.) कवि।
शायरी–(अ. स्त्री.) कविता।
शायित–(सं. वि.) पतित, लिटाया हुआ।
शायी–(सं. वि.) शयनकारी, सोनेवाला।
शारंग–(सं. पुं.) चातक, हरिण, हाथी, मोर; (वि.) चितकवरा; **–ज**–(पुं.) एक प्रकार का पक्षी; **–धनुष**–(पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण; **–पाणि**–(पुं.) कृष्ण, राम; **–पानि**–(हिं. पुं.) शारंगपाणि; **–भृत्**–(पुं.) विष्णु, कृष्ण।
शारंगी–(सं. स्त्री.) सारंगी नाम का बाजा।
शार–(सं. वि.) चितकवरा, पीला।
शारद–(सं. पुं.) सफेद कमल, मौलसिरी का वृक्ष, वर्ष, साल, मेघ, बादल; (वि.) शरत्-काल का, नूतन, नया।
शारदांबा–(सं. स्त्री.) सरस्वती।
शारदा–(सं. स्त्री.) सरस्वती, दुर्गा।
शारदिक–(सं.पुं.) शरद-ऋतु में होनेवाला ज्वर, रोग आदि।
शारदी–(सं. स्त्री.) जलपीपल, शरद् पूर्णिमा; (वि.) शरद् ऋतु-संबंधी।
शारदीय–(सं. वि.) शरत्-काल का; **–महापूजा**–(स्त्री.) शरत्-काल के नवरात्र में होनेवाली दुर्गापूजा।
शारि–(सं. पुं.) पासा खेलने की गोटी।
शारिका–(सं. स्त्री.) मैना नामक पक्षी।
शारिकाकवच–(सं. पुं.) दुर्गा का एक कवच।
शारित–(सं. वि.) रंगबिरंगा।
शारिपट्ट–(सं. पुं.) चौसर खेलने की बिसात।
शारिफल–(सं. पुं.) चौसर या शतरंज खेलने की बिसात।
शारिवा–(सं.स्त्री.) अनन्तमूल, सालसा।
शारिशृंग–(सं. पुं.) जुआ खेलने की गोटी।
शारी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का मैना पक्षी, मूँज।
शारीर–(सं. पुं.) वृष, बैल; (वि.) शरीर से उत्पन्न, शरीर-संबंधी; **–क**–(वि.) शरीर से उत्पन्न; **–०भाष्य**–(पुं.) शंकराचार्यकृत ब्रह्मसूत्र का भाष्य; **–मीमांसा**–(स्त्री.) वेदान्तसूत्र; **–सूत्र**–(पुं.) वेदान्तसूत्र; **–विधान**–(पुं.) वह शास्त्र जिसमें जीवों के उत्पन्न होने और शरीर-रचना का विवेचन होता है।
शारीरिक–(सं. वि.) शरीर-संबंधी।
शार्कर–(सं. वि.) शर्करा-संबंधी, चीनी से बना हुआ।
शार्ङ्ग–(सं. पुं.) धनुष, विष्णु का धनुष; **–क**–(पुं.) पक्षी, चिड़िया; **–धर**–(पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण।
शार्ङ्गेष्टा–(सं. स्त्री.) घुंघची।
शार्ङ्गायुध–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण।
शार्ङ्गी–(सं. पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण, धनुर्धारी।
शार्दूल–(सं. पुं.) व्याघ्र, बाघ, राक्षस, चीते का वृक्ष, दोहे का एक भेद; (वि.) सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ (यौगिक शब्द के उत्तर पद में); **–कंद**–(पुं.) जंगली प्याज; **–ललिता**–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं; **–विक्रीडित**–(पुं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
शार्वरी–(सं. स्त्री.) रात्रि, रात।
शाल–(फा. स्त्री.) एक प्रकार की ऊनी चादर, दुशाला।
शालग्राम–(सं. पुं.) गंडकी नदी में मिलनेवाली एक प्रकार की पत्थर की वटिका जिस पर चक्र का चिह्न रहता है।
शालन–(सं. पुं.) साग।
शालपर्णी–(सं.स्त्री.) सरिवन नामक वृक्ष।
शालभ–(सं. वि.) शलभ-संबंधी।
शालभंजिका, शालभंजी–(सं. स्त्री.) कठपुतली।
शालमर्कट–(सं. पुं.) अनार का पेड़।
शालरस–(सं. पुं.) राल, धूना।
शालसार–(सं. पुं.) हींग, राल, धूना।
शालांकी–(सं. पुं.) गुड़िया, कठपुतली।
शाला–(सं. स्त्री.) स्थान, गृह, घर, इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग से बननेवाला एक प्रकार का वृत्त; **–द्वार**–(पुं.) घर का द्वार; **–पति**–(पुं.) घर का मालिक; **–मुख**–(पुं.) घर का अगला भाग; **–मृग**–(पुं.) सियार, कुत्ता; **–वृक**–(पुं.) बंदर, कुत्ता, सियार।
शालाक्य–(सं. पुं.) वह चिकित्सक जो आँख, नाक, कान, मुख आदि के रोगों की चिकित्सा करता हो।
शालातुरीय–(सं. पुं.) पाणिनि मुनि का एक नाम।
शालार–(सं. पुं.) सोपान, सीढ़ी।

शालि–(सं. पुं.) धान्य, धान, काला जीरा, पक्षी, एक यज्ञ का नाम; **–का**–(स्त्री.) देखें 'शारिका', मैना; **–गोप**–(पुं.) धान के खेत की रखवाली करनेवाला; **–धान**–(हिं. पुं.) वासमती चावल; **–पर्णी**–(पुं.) सरिवन नामक वृक्ष; **–वाह**–(पुं.) अन्न ढोनेवाला बैल; **–वाहन**–(पुं.) शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा जिसने शक संवत् चलाया था; **–होत्र**–(पुं.) घोड़ा, नकुल का बनाया हुआ पशुओं की चिकित्सा का शास्त्र; **–होत्री**–(पुं.) पशुओं की चिकित्सा करनेवाला वैद्य।

शालिनी–(सं. स्त्री.) ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त; **–करण**–(पुं.) तिरस्कार।

शाली–(सं. स्त्री.) काला जीरा, मेथी।

शालीन–(सं. वि.) सदृश, समान, विनीत, लज्जायुक्त, अच्छे आचार-विचार का; **–ता**–(स्त्री.) विनय, नम्रता; **–त्व**–(पुं.) शालीन होने का भाव या धर्म, शिष्टता।

शालीना–(सं. स्त्री.) सौंफ का पौधा।

शालीय–(सं. वि.) शाल वृक्ष-सम्बन्धी।

शालूक–(सं. पुं.) कमल की जड़, भसींड़।

शालूर–(सं. पुं.) भेक, मेढक।

शालेय–(सं. पुं.) मधुरिका, सौंफ।

शाल्मल–(सं. पुं.) सेमल का वृक्ष।

शाल्मलि–(सं. पुं., स्त्री.) सेमल का वृक्ष, पुराण के अनुसार एक द्वीप का नाम।

शाल्व–(सं. पुं.) प्राचीन मेरु राज्य के अधिपति का नाम।

शाल्वण–(सं. पुं.) फोड़ा पकाने का लेप या मरहम।

शाव, शावक–(सं. पुं.) शिशु, वच्चा, पशु आदि का वच्चा।

शावता–(सं. स्त्री.) वचपन।

शावर–(सं. पुं.) मीमांसा-भाष्य का नाम।

शावरी–(सं. स्त्री.) केवाँच।

शाशक–(सं. वि.) शशक-सम्बन्धी, खरहे का।

शाश्वत–(सं. पुं.) नित्य, स्थायी।

शाश्वती–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।

शासक–(सं. पुं.) राजा, शासन करनेवाला, अधिकारी।

शासन–(सं. पुं.) सरकार द्वारा की जानेवाली प्रचलित राज्य-व्यवस्था, आज्ञा, आदेश, शास्त्र, लिखित प्रतिज्ञा, दण्ड, इन्द्रियों का निग्रह; **–धर**–(पुं.) राजदूत, शासक; **–पत्र**–(पुं.) वह शिला या ताम्रपत्र जिस पर किसी राजा की आज्ञा लिखी या खोदी हुई हो; **–वाहक**–(पुं.) आज्ञावाहक, राजदूत; **–शिला**–(स्त्री.) वह शिला जिस पर राजा की कोई आज्ञा खोदी गई हो; **–हार**–(पुं.) राजदूत; **–हारक**–(पुं.) देखें 'शासनहार'।

शासनी–(सं. स्त्री.) धर्म का उपदेश करनेवाली स्त्री।

शासनीय–(सं. वि.) शासन करने योग्य।

शासित–(सं. वि.) शासन किया हुआ, दण्ड दिया हुआ।

शासिता, शास्ता–(सं. पुं.) शासन करनेवाला, राजा।

शास्त्र–(सं. पुं.) हिन्दुओं के ऋषि-मुनियों के बनाये हुए प्राचीन ग्रंथ, (धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला आदि से संवद्ध) प्रगाढ़ और व्यवस्थित विवेचन के ग्रंथ; **–कार**–(पुं.) शास्त्र बनानेवाला; **–चक्षु**–(पुं.) व्याकरण, ज्ञानी, पण्डित; **–ज्ञ**–(पुं.) शास्त्र को जाननेवाला; **–दर्शी**–(पुं. वि.) शास्त्र का विद्वान्; **–वक्ता**–(वि.) शास्त्र का उपदेश देनेवाला; **–वत्**–(अव्य.) शास्त्र के अनुसार।

शास्त्री–(सं. पुं.) एक उपाधि जो इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय से दी जाती है, शास्त्रज्ञ, पण्डित।

शास्त्रीय–(सं. वि.) शास्त्र-सम्वन्धी।

शास्त्रोक्त–(सं. वि.) शास्त्रों में कहा हुआ।

शाहंशाह–(फा. पुं.) देखें 'शहंशाह'।

शाह–(फा. पुं.) राजा, सम्राट्।

शाहजादा–(फा. पुं.) राजकुमार।

शाही–(फा. वि.) शाह का, शाह-संबंधी।

शिंकित–(सं. वि.) आघ्रात, सूँघा हुआ।

शिंघाण–(सं. पुं.) काँच का पात्र, नाक के भीतर का मल।

शिंघाणक–(सं. पुं.) कफ।

शिंघित–(सं. वि.) सूँघा हुआ।

शिंजित–(सं. वि.) वजता हुआ, झनकता हुआ।

शिंजिनी–(सं. स्त्री.) धनुष की डोरी, चिल्ला, घुँघरू।

शिंशपा–(सं. स्त्री.) शीशम का वृक्ष, अशोक वृक्ष।

शिंशुमार–(सं. पुं.) सूँस नामक जल-जन्तु।

शिंहान–(सं. पुं.) काँच का पात्र।

शि–(सं. पुं.) सौभाग्य, शान्ति, महादेव।

शिकंजा–(फा. पुं.) कसने, निचोड़ने आदि के काम आनेवाला यंत्र।

शिकन–(फा. स्त्री.) सिकुड़न।

शिकमी–(फा. पुं.) दूसरे का खेत लगान पर जोतनेवाला किसान।

शिकायत–(अ. स्त्री.) निंदा, चुगली।

शिकार–(फा. पुं.) आखेट, मृगया।

शिकारी–(फा. वि.) शिकार-संवंधी, शिकार के योग्य; (पुं.) शिकार करनेवाला।

शिक्य–(सं. पुं.) छत में लटकाने का छीका, सिकहर।

शिक्षक–(सं. पुं.) शिक्षा देनेवाला, गुरु।

शिक्षण–(सं. पुं.) शिक्षा, पढ़ाने का काम।

शिक्षणीय–(सं. वि.) शिक्षा के उपयुक्त, सिखाने लायक।

शिक्षा–(सं. स्त्री.) पढ़ने या पढ़ाने की क्रिया, छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, मात्रा आदि का निरूपण है, ज्ञान या विद्या की प्राप्ति, दक्षता, निपुणता, उपदेश, दण्ड, शासन; **–कर**–(पुं.) सिखलानेवाला; **–गुरु**–(पुं.) दीक्षा-गुरु, विद्या पढ़ानेवाला गुरु; **–ग्राहक**–(पुं.) विद्यार्थी; **–दंड**–(पुं.) किसी बुरी चाल को छुड़ाने के लिये दिया जानेवाला दंड; **–पद**–(पुं.) उपदेश; **–परिषद्**–(स्त्री.) शिक्षा का प्रवन्ध करनेवाली सभा; **–प्रद**–(वि.) शिक्षा देनेवाला; **–विभाग**–(पुं.) वह राजकीय विभाग जिसके द्वारा सार्वजनिक शिक्षा का प्रवन्ध होता है; **–हीन**–(वि.) अशिक्षित।

शिक्षाक्षेप–(सं. पुं.) काव्य में वह अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा कोई कार्य रोका जाता है।

शिक्षित–(सं. वि.) जिसने शिक्षा पाई हो, विद्वान्, पंडित।

शिक्षितव्य–(सं. वि.) शिक्षा के योग्य।

शिक्षिताक्षर–(सं. पुं.) शिक्षक, छात्र।

शिखंड–(सं. पुं.) मोर की पूँछ, शिखा, चोटी, काकपक्ष, काकुल।

शिखंडिक–(सं. पुं.) कुक्कुट, मुर्गा, एक प्रकार का मानिक।

शिखंडिनी–(सं. स्त्री.) मयूरी, मोरनी, द्रुपदराज की कन्या।

शिखंडी–(सं. पुं.) मयूर, मोर, कुक्कुट, मुर्गा, व्राण, तीर, घुँघची, विष्णु, मोर की पूँछ, शिव, श्रीकृष्ण, वालों की चोटी, द्रुपद का पुत्र जो महाभारत में पांडवों की ओर से लड़ा था।

शिखर–(सं. पुं.) सिरा, ऊपरी भाग, अग्र-भाग, पहाड़ की चोटी, लवंग, एक तान्त्रिक विद्या, एक अस्त्र का नाम,

कँगूरा, मंडप, गुम्मद, काँख, एक प्रकार का लाल रत्न; **–वासिनी–**(स्त्री.) शिखर पर बसनेवाली, दुर्गा।

शिखरन–(हिं. पुं.) दही और चीनी से बनाया हुआ एक पेय जिसमें केशर, इलायची, मेवे आदि डाले जाते हैं।

शिखरिणी–(सं. स्त्री.) शिखरन, स्त्रियों में श्रेष्ठ, बेले का फूल, छाती पर की रोमावली, किशमिश, सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

शिखरी–(सं. पुं.) वृक्ष, पहाड़ी दुर्ग, कोट, एक प्रकार का मृग, वह गदा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी।

शिखा–(सं. स्त्री.) आग की लपट, चोटी, चुटिया, शाखा, डाली, पक्षियों के सिर पर की कलँगी, दीये की टेम, नोक, सिरा, ऊपर को उभड़ा हुआ भाग, स्तन का अग्र-भाग, पेड़ की जड़, तुलसी, प्रकाश की किरण, एक वर्णवृत्त का नाम; **–कंद–**(पुं.) शलजम; **–चल–**(पुं.) मयूर, मोर; **–तरु–**(पुं.) दीवट; **–धर–**(पुं.) मोर; **–मणि–**(पुं.) श्रेष्ठ व्यक्ति; **–मूल–**(पुं.) वह कन्द जिसके ऊपर पत्तियों का गुच्छा हो; **–ल–**(पुं.) मयूर, मोर; **–लु–**(पुं.) मयूर, शिखा; **–वत्, –वान्–**(वि.) शिखायुक्त; (पुं.) अग्नि, आग, मोर; **–वर–**(पुं.) कटहल का वृक्ष; **–वल–**(पुं.) मयूर, मोर; **–वृक्ष–**(पुं.) दीपवृक्ष, दीवट; **–वृद्धि–**(स्त्री.) सूद-दर-सूद।

शिखाभरण–(सं. पुं.) शिरोभूषण।

शिखिन्–(सं. पुं.) मयूर, मोर, कामदेव, अग्नि, तीन की संख्या; **–कंठ–**(पुं.) तुत्थ, तूतिया; (वि.) मोर के कंठ के समान; **–कंद–**(पुं.) कुँदुरू; **–ग्रीव–**(पुं.) एक प्रकार का नीला पत्थर; **–ध्वज–** (पुं.) कार्तिकेय, धूम्र, धुआँ; **–वाहन–**(वि.) कार्तिकेय।

शिखिनी–(सं. स्त्री.) मोरनी, मुर्गी, जटाधारी का पौधा।

शिखी–(सं. पुं.) मोर, अग्नि, इन्द्र, बगला पक्षी, एक नाग का नाम, एक प्रकार का विष, केवाँच, पर्वत, मेथी, सतावर, घोड़ा, केतु ग्रह, वृक्ष, कुक्कुट, मुर्गा, बाण, तीर, साँड़, पुच्छल तारा, तीन की संख्या।

शित–(सं. वि.) कृश, दुर्बल, नुकीला, चोखा; **–कर–**(पुं.) कपूर; **–कर्णा–**(स्त्री.) वासक, अड़ूसा; **–च्छत्रा–**(स्त्री.) सौंफ; **–ता–**(स्त्री.) तीक्ष्णता, धार; **–पर्ण–** (पुं.) मुस्तक, मोथा; **–शिव–**(पुं.) सेंधा नमक; **–शूक–**(पुं.) जौ, गेहूँ।

शिताफल–(सं. पुं.) सीताफल, शरीफा।

शितावर–(सं. पुं.) देखें 'सतावर'।

शिति–(सं. वि.) शुक्ल, सफेद, काला; (पुं.) भोजपत्र का वृक्ष; **–कंठ–**(पुं.) शिव, महादेव, मोर, चातक, पपीहा; **–कुंभ–**(पुं.) कनेर का वृक्ष; **–प्रभ–**(पुं.) विष्णु; **–रत्न–**(पुं.) नीलम; **–वासा–** (पुं.) नीलाम्बर, बलदेव।

शिथिल–(सं. वि.) ढीला, श्रान्त, थका हुआ, मन्द, सुस्त, धीमा, आलस्ययुक्त, अदृढ़, अस्पष्ट; **–ता–**(स्त्री.) ढिलाई, थकावट, आलस्य, शक्ति की कमी, वाक्यों में अर्थ-संबंध न होना।

शिथिलाई–(हिं. स्त्री.) शिथिलता।

शिथिलाना–(हिं. क्रि. अ.) थकना।

शिथिलित–(सं. वि.) जो शिथिल हो गया हो।

शिथिलीकरण–(सं. पुं.) शिथिल करना।

शिथिलीभूत–(सं. वि.) शिथिल पड़ा हुआ।

शिनाख्त–(फा. स्त्री.) पहचान, परख।

शिपि–(सं. पुं.) किरण; (स्त्री.) चमड़ा, खाल।

शिप्रा–(सं. स्त्री.) उज्जैन के पास बहनेवाली एक नदी का नाम।

शिफर–(हिं. पुं.) ढाल।

शिफा–(सं. स्त्री.) कोड़े की फटकार या मार।

शिफारुह–(सं. पुं.) बरगद का वृक्ष।

शिमी–(सं. स्त्री.) शिंबी, सेम।

शिया–(फा. पुं.) एक मुसलमान संप्रदाय या उसका अनुयायी।

शिरःकंप–(सं. पुं.) सिर का काँपना।

शिरःखंड–(सं. पुं.) माथे की हड्डी।

शिरःशूल–(सं. पुं.) सिर की पीड़ा।

शिर–(सं. पुं.) मस्तक, माथा, सिर, खोपड़ी, शिखर, सब से ऊँचा भाग, प्रधान, अगुआ, चोटी, सिरा; **–त्राण–**(हिं. पुं.) देखें 'शिरस्त्राण'; **–नैत–**(हिं. पुं.) गढ़वाल के आसपास का एक प्रदेश; **–पेंच–**(हिं. पुं.) देखें 'सिरपेंच'; **–फूल–**(हिं. पुं.) स्त्रियों का सिर पर पहनने का एक आभूषण; **–मौर–**(हिं. पुं.) शिरोभूषण, मुकुट, प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरासिज, शिरसिरुह–(सं. पुं.) बाल, केश।

शिरस्क–(सं. पुं.) पगड़ी।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण–(सं. पुं.) युद्ध के समय सिर पर पहनने की लोहे की टोपी।

शिरश्चंद्र–(सं. पुं.) शंकर, शंभु।

शिरा–(सं. स्त्री.) शरीर की रुधिरवाहिनी नाड़ी, नस, जल की धारा या सोता; **–फल–**(पुं.) नारियल, अंजीर; **–मूल–**(पुं.) नाभि, ढोंढ़ी; **–हर्ष–**(पुं.) नसों का झनझनाना।

शिरीष–(सं. पुं.) सिरिस का पेड़।

शिरोगृह–(सं. पुं.) अट्टालिका, का सब से ऊपर का कमरा या कोठा।

शिरोज–(सं. पुं.) केश, बाल।

शिरोधरा–(सं. स्त्री.) गरदन, ग्रीवा।

शिरोधाम–(सं. पुं.) चारपाई का सिरहाना।

शिरोधार्य–(सं. वि.) आदरपूर्वक मानने योग्य, सिर पर धरने योग्य।

शिरोधि–(सं. स्त्री.) गरदन।

शिरोभाग–(सं. पुं.) अग्रभाग, मस्तक का भाग।

शिरोभूषण–(सं. पुं.) सिर पर पहनने का गहना, मुकुट, चूड़ामणि।

शिरोमणि–(सं. पुं.) चूड़ामणि, शिरोरत्न, श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोमाली–(हिं. पुं.) शिव, महादेव।

शिरोमौलि–(सं. पुं.) सिर का रत्न।

शिरोरुजा–(सं. स्त्री.) सिर की वेदना।

शिरोरुह–(सं. पुं.) सिर के केश या बाल

शिरोवेष्टन–(सं. पुं.) पगड़ी, मुरेठा।

शिल–(हिं. पुं.) उंछ, शिला (पत्थर)।

शिला–(सं. स्त्री.) पाषाण, पत्थर, पत्थर का बड़ा टुकड़ा, चट्टान, मैनसिल, कपूर, शिलाजीत, गेरू, गोरोचन, उंछ वृत्ति, हरीतकी, हर्रे; **–कुसुम–** (पुं.) शिलाजीत; **–गृह–**(पुं.) पत्थर का बना हुआ घर; **–चक्र–**(पुं.) शालग्राम की मूर्ति; **–ज, –जतु–**(पुं.), **–जीत–**(हिं. स्त्री.) काले रंग की एक प्रसिद्ध औषध जो शिला का रस है; **–धातु–**(स्त्री.) एक प्रकार का गेरू, खड़िया मिट्टी; **–निचय–** (पुं.) पत्थर के खंडों का ढेर; **–निर्यास–** (पुं.) शिलाजीत; **–नीड़–** (पुं.) गरुड़; **–न्यास–**(स्त्री.) किसी भवन की नीवें देने का कार्य; **–पट–**(पुं.) पत्थर की चट्टान, मसाला पीसने की सिल; **–पुष्प-प्रसून–** (पुं.) छरीला नामक गन्ध-द्रव्य; **–बंध–**(पुं.)

पत्थर के टुकड़ों का बना हुआ प्राचीर; **–भेद–** (पुं.) पत्थर तोड़ने की छेनी; **–मय–**(वि.) पत्थर का बना हुआ ; **–मल–** (पुं.) शिलाजीत; **–रस–**(पुं.) एक प्रकार का लोबान की तरह का सुगन्धित गोंद; **–लेख–** (पुं.) पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख; **–वृष्टि–**(स्त्री.) आकाश से ओले या पत्थर गिरना; **–वेश्म–**(पुं.) पत्थर का बना हुआ मकान; **–शस्त्र–**(पुं.) पत्थर का बना हुआ अस्त्र; **–स्तंभ–** (पुं.) पत्थर का खंभा; **–हरि–** (पुं.) शालग्राम की मूर्ति ।

शिलादित्य– (सं. पुं.) मालव देश के प्राचीन राजा हर्षवर्धन ।

शिलास्थि–(सं. स्त्री.) गरदन की वह हड्डी जिस पर कपाल टिका होता है ।

शिलि–(सं. पुं.) भोजपत्र; (स्त्री.) दरवाजे के नीचे की लकड़ी, चौखट ।

शिलींध्र–(सं. पुं.) केले का फूल ।

शिलींध्रक–(सं. पुं.) कुकुरमुत्ता ।

शिली–(सं. स्त्री.) चौखट के नीचे की लकड़ी, डेहरी, भाला, बाण; **–पद–** (पुं.) फीलपाँव नामक रोग; **–पृष्ठ–** (पु) तलवार; **–मुख–**(पुं.) भ्रमर, भौंरा, युद्ध, लड़ाई ।

शिलेय–(सं. पुं.) शिलाजीत; (वि.) शिला-संबंधी ।

शिल्प–(सं. पुं.) हाथ की कारीगरी से वस्तुएँ बनाना, हस्तकौशल, कला-संबंधी व्यवसाय; **–कला–**(स्त्री.) हस्त-कौशल; **–कार–**(पुं.) शिल्पी; **–कारी–** (पुं.)वह जो शिल्प का कार्य करता हो; **–गृह–** (पुं.) शिल्पशाला, वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पी मिलकर चीजें बनाते हों ; **–जीवी–** (पुं.) शिल्पी; **–प्रजापति–**(पुं.) विश्वकर्मा; **–विद्या–** (स्त्री.) शिल्प-संबंधी विद्या; **–शाला–** (स्त्री.) शिल्पगृह; **–शास्त्र–**(पुं.) वह शास्त्र जिसमें हाथ से विविध वस्तुएँ बनाने का विवेचन होता है ।

शिल्पिक, शिल्पी–(सं. पुं.) शिल्पकार, राज, थवई ।

शिवंकर–(सं. वि.) कल्याण करनेवाला ।

शिव–(सं.पुं.) महादेव, ईश्वर, महेश्वर, मंगल, मुख, कल्याण, जल, पानी, सेंधा नमक, फिटकरी, सोहागा, चाँदी, लोहा, मिर्च, मोक्ष, पारा, वेद, वसु, ग्यारह मात्राओं का एक छन्द; **–क–**(पुं.) काँटा, खूँटा; **–कर्णी–** (स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; **–कांता–**(स्त्री.) दुर्गा; **–कारिणी–**(स्त्री.) शिवा, दुर्गा; (वि. स्त्री.) मंगल करनेवाली; **–कारी–**(वि.) कल्याण करनेवाला; **–किंकर–**(पुं.) शिव का गण या दूत; **–कीर्तन–**(पु.) शिव का कीर्तन करनेवाला, शैव; **–क्षेत्र–**(पुं.) कैलास; **–गण–**(पुं.) शिव का अनुचर; **–ता–**(स्त्री.) शिव का पद, भाव या धर्म, मोक्ष; **–तेज–** (पुं.) पारद, पारा; **–दत्त–**(पुं.) सुदर्शन चक्र; **–दूती–**(स्त्री.) दुर्गा; **–द्रुम–**(पुं.) वेल का पेड़; **–द्विष्टा–** (स्त्री.) केतकी, केवड़ा; **–धातु–** (स्त्री.) पारद, पारा; **–नंदन–**(पुं.) गणेशजी; **–निर्माल्य–**(पुं.) शिव को अर्पित की हुई वस्तु, अग्राह्य या त्याज्य वस्तु; **–नाथ–**(पुं.) महादेव; **–पुराण–** (पुं.)अठारह पुराणों में से एक; **–पुरी–** (स्त्री.) काशी; **–प्रिया–**(स्त्री.) दुर्गा; **–बीज–**(पुं.) पारद, पारा; **–भक्त–**(पुं.) शिव का भक्त, शैव; **–भक्ति–**(स्त्री.) शिव की भक्ति; **–भागवत–**(पुं.)शिव-पुराण; **–मय–** (वि.) शिव के समान; **–मल्ली–** (स्त्री.) मौलसिरी; **–योषित्–**(स्त्री.) शिव की पत्नी, दुर्गा; **–रात्रि–** (स्त्री.) फाल्गुन कृष्ण की चतुर्दशी; **–रानी–**(हिं. स्त्री.) पार्वती; **–लिंग–** (पुं.) महादेवजी का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है; **–लिंगी–** (स्त्री.) एक प्रकार की प्रसिद्ध लता; **–लोक–**(पुं.) कैलास; **–वल्लभा–** (स्त्री.) पार्वती; **–वाहन–**(पुं.) वृषभ, बैल; **–शक्ति–**(स्त्री.) पार्वती; **–सायुज्य–**(पुं.) वह मोक्ष जिसमें मनुष्य शिव-रूप हो जाता है; **–सुंदरी–** (स्त्री.) दुर्गा ।

शिवा–(सं. स्त्री.) दुर्गा, पार्वती, मुक्ति, मोक्ष, अनन्तमूल, मेथी, दूब, गोरोचन, शमी वृक्ष, शृगाली, सियारिन ।

शिवाक्ष–(सं. पुं.) रुद्राक्ष ।

शिवानी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष ।

शिवारुत–(सं. पुं.) सियार के बोलने का शब्द ।

शिवालय–(सं. पुं.) वह मन्दिर जिसमें शिव की मूर्ति या लिंग स्थापित हो, कोई देव-मन्दिर ।

शिवाला–(हिं. पुं.) शिवालय, शिव का मन्दिर ।

शिवालु–(सं. पुं.) शृगाल, सियार ।

शिवाह्लाद–(सं. पुं.) शिव का आनन्द ।

शिवाह्वय–(सं. पुं.) पारा, सफेद मदार ।

शिवि–(सं. पुं.) भूर्जपत्र का वृक्ष, राजा उशीनर के पुत्र जो बड़े धर्मात्मा और दानी थे ।

शिविका–(सं. स्त्री.) पालकी, डोली ।

शिविर–(सं. पुं.) डेरा, गढ़, पड़ाव, छावनी, तंबू ।

शिशिर–(सं. पुं.)शीत-काल, हिम, ओस, शीत; (वि.)शीतल,ठंढा; **–कर–**(पुं.) चन्द्रमा; **–किरण–**(पुं.) चन्द्रमा; **–ता–**(स्त्री.) शीत का प्रकोप; **–दीधिति–**(पुं.) चन्द्रमा; **–मयूख–** (पुं.) चंद्रमा ।

शिशिरांशु–(सं. पुं.) चन्द्रमा ।

शिशु–(सं. पुं.) बालक, छोटा लड़का, (विशेषतः आठ वर्ष तक का बालक); **–काल–**(पुं.) बचपन; **–ता–**(स्त्री.) बचपन; **–ताई–**(हिं. स्त्री.) शिशुता; **–त्व–**(पुं.) शैशव, बचपन; **–नाग–** (पुं.) एक राक्षस का नाम; **–पन–** (हिं. पुं.) बालकपन; **–पाल–**(पुं.) चेदि-वंश का एक राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था; **–भाव–**(पुं.) लड़कपन; **–मार–**(पुं.) नक्षत्रमंडल विशेष, सूंस नामक जलजन्तु, विष्णु, कृष्ण; **–०चक्र–**(पुं.) सौर-जगत्, सब ग्रहों-सहित सूर्य; **–०मुखी–**(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; **–वाहक–**(पुं.) जंगली बकरा ।

शिश्न–(सं. पुं.)उपस्थ, पुरुष का लिंग ।

शिष–(हिं. स्त्री.) शिखा, चोटी, सीख; (पुं.) शिष्य ।

शिषरी–(हिं. वि.) शिखरवाला ।

शिष्ट–(सं. वि.) शान्त, सुशील, अच्छे स्वभाव का, विनीत, शिक्षित, सज्जन, बुद्धिमान, प्रधान, प्रसिद्ध; (पुं.) मन्त्री, सभासद; **–ता–**(स्त्री.) सज्जनता, उत्तमता, भलमनसी; **–सभा–**(स्त्री.) राजसभा; **–समाज–**(पुं.) शिष्ट जनों का समाज ।

शिष्टाचार–(सं. पुं.) भले आदमियों की तरह व्यवहार, विनय, आदर, नम्रता, सभ्य व्यवहार, (शिष्टाचार के आठ लक्षण हैं, यथा——दान, सत्य, तपस्या, अलोभ, विद्या, इज्या, पूजा और दम ।)

शिष्टि–(सं. स्त्री.) आज्ञा,शासन, दण्ड ।

शिष्य–(सं. पुं.) शिक्षा या उपदेश देने

के योग्य व्यक्ति, विद्यार्थी, चेला; –ता– (स्त्री.) शिष्य होने का भाव या धर्म; –त्व–(पुं.) शिष्यता।
शिष्या–(सं. स्त्री.) एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते हैं, (इसका दूसरा नाम शीर्ष-रूपक है।)
शीकर–(सं पुं.) तुषार, शीत, जाड़ा, पानी की बूँद, वर्षा की छोटी-छोटी बूँदें।
शीघ्र–(सं. अव्य.) तुरत, झटपट; (पुं.) वायु, हवा; –कारी–(वि.) शीघ्रता से काम करनेवाला; –कोपी–(वि.) जिसको शीघ्र क्रोध आता हो; –ग–(पुं.) सूर्य, वायु, खरहा; –गामी–(वि.) शीघ्र चलनेवाला; –ता–(स्त्री.) त्वरा, जल्दी; –त्व–(पुं.) त्वरा; –पतन–(पुं.) मैथुन काल में वीर्य का शीघ्र स्खलित होना; –पाणि–(पुं.) वायु; –पुष्प–(पुं.) अगस्त्य का वृक्ष; –यान–(वि.) वेग से चलनेवाला; –वह–(वि.) शीघ्रता से ढोनेवाला; –वाही–(वि.) शीघ्र ले जानेवाला; –वेधी–(वि.) शीघ्रता से वाण चलानेवाला; –संचारी–(वि.) देखें 'शीघ्रगामी'।
शीत–(सं. पुं.) जाड़ा, तुषार, ओस, जाड़े की ऋतु, जाड़ा लगने से होनेवाला ज्वर, सरदी, जुकाम; (वि.) शीतल, ठंढा; –क–(वि.) दीर्घसूत्री, काम करने में विलम्ब करनेवाला; –कटिबंध–(पुं.) पृथ्वी के उत्तर तथा दक्षिण के भूमिखण्ड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से ६६½° से परे और उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों के बीच में माने जाते हैं, (इन भागों में जाड़ा बहुत पड़ता है); –कर–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; –काल–(पुं.) हिम ऋतु, अगहन-पूस का महीना; –क्षार–(पुं.) शुद्ध सोहागा; –गंध–(पुं.) सफेद चन्दन; –गात्र–(पुं.) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर; –गु–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; –च्छाय–(पुं.) बरगद का वृक्ष; –दीधिति–(पुं.) चन्द्रमा; –दीप्य–(पुं.) सफेद जीरा; –दूर्वा–(स्त्री.) सफेद दूब; –द्युति–(पुं.) चन्द्रमा; –पुष्प–(पुं.) छड़ीला, सिरिस; –प्रभ–(पुं.) कर्पूर, कपूर; –फल–(पुं.) गूलर, आमला; –भानु–(पुं.) चन्द्रमा –भीरु– (वि.) ठंढक से डरनेवाला; –मयूख, –मरीचि–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; –मूलक–(पुं.) उशीर, खस; –रम्य–(वि.) जो शीत-काल में रमणीय हो; –रश्मि– (पुं.) चन्द्रमा, कपूर; –वासा– (स्त्री.) यूथिका, जूही; –शैल–(पुं.) हिमालय पर्वत।
शीतल–(सं. वि.) ठंढा, शान्त, उद्वेग-रहित; (पुं.) ठंढक, खस, हिम, चम्पा; –चीनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'कबाब-चीनी'; –ता–(स्त्री.) ठंढापन, सरदी, जड़ता; –ताई–(हिं. स्त्री.) ठंढापन।
शीतला–(सं. स्त्री.) वसन्त रोग, चेचक, इस रोग की अधिष्ठात्री देवी; **शीतलाष्टमी**–(स्त्री.) चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि।
शीतांबु–(सं. पुं.) ठंढा जल।
शीतांशु–(सं. पुं.) कपूर, चन्द्रमा।
शीता–(सं. स्त्री.) क्षीरिणी, खिरनी।
शीताद्रि–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत।
शीताभ–(सं. पुं.) कपूर, चन्द्रमा।
शीताश्म–(सं. पुं) चन्द्रकान्त मणि।
शीतेतर–(सं. वि.) उष्ण, गरम।
शीतोदक–(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
शीतोष्ण–(सं. वि.) शीत और उष्ण।
शीत्कार–(सं. पुं.) स्त्रियों की रति-काल की ध्वनि, सी-सी करना।
शीफर–(सं. वि.) सुन्दर, रम्य।
शीभर–(सं. पुं.) शीकर, जलप्रवाह।
शीभ्य–(सं. पुं.) शिव, महादेव, वृषभ, बैल।
शीमूल–(सं. पुं.) सेमल का वृक्ष।
शीरा (राँ)–(फा. पुं.) चाशनी, गाढ़ा पेय।
शीर्ण–(सं. वि.) दुबला-पतला, टूटा-फूटा, मुरझाया हुआ, गिरा हुआ, फटा-पुराना, सिकुड़ा हुआ; –त्व–(पुं.) कृशता; –दल–(पुं.) नीम का पेड़।
शीर्ति–(सं. स्त्री.) तोड़ने या फोड़ने की क्रिया।
शीर्ष–(सं. पुं.) मस्तक, माथा, कपाल, सिर, अग्र-भाग, चोटी; –क–(पुं.) शिरा, चोटी, निर्णय, वह शब्द-समूह जो लेख आदि के विषय-परिचय के लिये उसके ऊपर लिखा जाता है; –घाती–(वि.) सिर काटनेवाला; –च्छेद–(पुं.) सिर काटना; –च्छेदिक–(वि.) वध करने योग्य; –तः–(अव्य.) मस्तक पर; –पट्टक–(पुं.) मस्तक पर बाँधने की पट्टी; –भार–(पुं.) माथे पर का बोझ; –रक्ष–(पुं.) शिरस्त्राण, टोप; –रक्षण–(पुं.) पगड़ी; –बिंदु–(पुं.) सिर का सब से ऊपर का भाग, ऊँचाई में सब से ऊपर का स्थान।
शील–(सं. पुं.) चरित्र, आचरण, चाल, व्यवहार, स्वभाव, प्रवृत्ति, उत्तम आचरण; (वि.) स्वभाववाला (समास में); –त्याग–(पुं.) शील छोड़ना; –धर–(वि.) सच्चरित्र, कोमल स्वभाव का; –भ्रंश–(पुं) शील का परित्याग; –वान्–(वि.) कोमल स्वभाववाला; –विप्लव–(पुं.) शील का त्याग; –वृत्त–(वि.) सुशील; –शाली–(वि.) अच्छे स्वभाव का।
शीली–(सं. वि.) शीलयुक्त।
शीलद–(सं. पुं.) शैवाल, सेवार।
शीश–(हिं. पुं.) देखें 'शीर्ष'।
शीशा–(फा. पुं.) काँच, लालटेन का काँच या चिमनी।
शीशी–(हिं. स्त्री.) काँच की छोटी बोतल।
शुंग–(सं. पुं.) बरगद, पाकड़ का पेड़, एक प्राचीन ब्राह्मण राजवंश; –वंश–(पुं.) एक प्राचीन ब्राह्मण राजवंश जो मौर्यों के बाद राजसिंहासन पर बैठा था।
शुंठी–(सं. स्त्री.) सोंठ।
शुंड–(सं. पुं.) हाथी की सूँड़; –क–(पुं.) एक प्रकार का नगाड़ा।
शुंडा–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, मद्य, हाथी की सूँड़; –दंड–(पुं.) हाथी की सूँड़; –पान–(पुं.) कलवरिया।
शुंडार–(सं. पुं.) मद्य बनाने या बेचनेवाला।
शुंडाल–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
शुंडिक–(सं. पुं.) मद्य बिकने का स्थान, कलवरिया।
शुंडिका–(सं. स्त्री.) गले के भीतर की घंटी।
शुंडिनी–(सं. स्त्री.) छछूँदर।
शुंभ–(सं. पुं.) एक दानव जिसको दुर्गा ने मारा था; –घातिनी–(स्त्री.) दुर्गा।
शुक–(सं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा, कपड़े का अंचल, पगड़ी, साफा, सिरिस का पेड़; सुग्गा, तोता, व्यास के पुत्र शुकदेव; –कीट–(पुं.) हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा; –तरु–(पुं.) सिरिस का पेड़; –तुंड–(पुं.) तोते की चोंच; –देव–(पुं.) वेदव्यास के पुत्र का नाम; –नास–(पुं.) केवाँच; –प्रिय–(पुं.) कमरख; –रूप–(वि.) जिसका रंग शुक के समान हो; –वल्लभ–(पुं.) दाड़िम, अनार; –वाह–(पुं.) कामदेव; –वृक्ष–(पुं.) सिरिस का पेड़; –शिंबा–(स्त्री.) केवाँच।
शुकादन–(सं. पुं.) दाड़िम, अनार।
शुकानन–(सं. वि.) जिसका मुख सुग्गे के समान हो।
शुकी–(सं. स्त्री.) कश्यप की स्त्री, सुग्गी।
शुक्त–(सं. वि.) निष्ठुर, कठोर, अम्ल, खट्टा, निर्जन, सुनसान।
शुक्ताम्ल–(सं. पुं.) चूक का साग।
शुक्ति–(सं. स्त्री.) सीप, सुतुही, शंख,

हड्डी, ववासीर का रोग; **–ज–**(पुं.) मोती; **–पुटोपम–**(पुं.) वदाम; **–बीज–**(पुं.) मुक्ता, मोती; **–मणि–**(पुं.) देखें 'शुक्तिवीज'; **–वधू–**(स्त्री.) सीपी।

शुक्र–(सं. पुं.) रेत, वीर्य, अग्नि, शक्ति, वल, सामर्थ्य, एक ग्रह का नाम, वृहस्पतिवार के वाद का दिन, शुक्राचार्य; **–कर–**(पुं.) मज्जा; **–दोष–**(पुं.) नपुंसकता; **–मेह–**(पुं.) प्रमेह रोग; **–वार–**(पुं.) सप्ताह का छठा दिन; **–शिष्य–**(पुं.) असुर, दैत्य; **–सुत–**(पुं.) केतु।

शुक्रांग–(सं. पुं.) मयूर, मोर।

शुक्रा–(सं. स्त्री.) वंशलोचन।

शुक्राचार्य–(सं. पुं.) दैत्यों के गुरु जो महर्षि भृगु के पुत्र थे।

शुक्ल–(सं. वि.) श्वेत वर्ण का, सफेद; (पुं.) चाँदी, नवनीत, मक्खन, विष्णु का एक नाम, ब्राह्मणों की एक पदवी; **–ता–**(स्त्री.) श्वेतता, सफेदी; **–त्व–**(पुं.) सफेदी, सितपक्ष, वह पक्ष जिसमें पन्द्रह दिनों तक चन्द्रमा की वृद्धि होती है; **–पुष्प–**(पुं.) मैनफल; **–फल–**(पुं.) आक, मदार; **–फला–**(स्त्री.) शमी वृक्ष; **–फेन–**(पुं.) समुद्रफेन; **–भंडी–**(स्त्री.) सफेद सरसों; **–मंडल–**(पुं.) आँख की पुतली के चारों ओर का सफेद भाग; **–वंश–**(पुं.) सफेद वाँस; **–वृक्ष–**(पुं.) धव का पेड़; **–सारंग–**(पुं.) सफेद रंग का पपीहा।

शुक्लांगी–(सं. स्त्री.) शेफालिका, निर्गुण्डी।

शुक्ला–(सं. स्त्री.) सरस्वती, चीनी, विदारीकंद।

शुक्लापांग–(सं. पुं.) मयूर, मोर।

शुक्लाम्ल–(सं. पुं.) चूक नाम का साग।

शुक्लार्क–(सं. पुं.) सफेद मदार।

शुक्लिमा–(सं. स्त्री.) शुक्लता, सफेदी।

शुक्लोपल–(सं. पुं.) सफेद पत्थर।

शुक्लौदन–(सं. पुं.) अरवा चावल।

शुचि–(सं. पुं.) अग्नि, ज्येष्ठ मास, शृंगार रस, चन्द्रमा, शुक्र, ब्राह्मण, कार्तिकेय, पवित्रता; (वि.) स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध, पवित्र, पापरहित; **–कर्मा–**(वि.) पवित्र कर्म करनेवाला; **–ता–**(स्त्री.) पवित्रता; **–द्रुम–**(पुं.) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।

शुतुर–(फा. पुं.) ऊँट; **–मुर्ग–**(पुं.) अफ्रीका में पाया जानेवाला विशालकाय पक्षी जिसके पंख कीमती और वहुत सुन्दर होते हैं।

शुद्ध–(सं. वि.) दोषरहित, पवित्र, निर्मल, उज्ज्वल, सफेद, ठीक, सही, विना मिलावट का, असली; **–ता–**(स्त्री.) शुद्ध होने का भाव; **–पक्ष–**(पुं.) शुक्ल पक्ष, अमावस्या के वाद पूर्णिमा तक का पंद्रह दिन; **–बुद्धि–**(वि.) पापरहित वुद्धिवाला; **–बोध–**(वि.) ज्ञानयुक्त; **–भाव–**(पुं.) पवित्र भावना; **–मति–**(वि.) पवित्र वुद्धिवाला; **–रूपी–**(वि.) उज्ज्वल रूपवाला; **–वंश्य–**(वि.) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो; **–विराज–**(पुं.) छन्द का एक भेद; **–साध्य वासना–**(स्त्री.) शब्द की एक लक्षणा-शक्ति।

शुद्धांत–(सं. पुं.) अन्तःपुर।

शुद्धात्मा–(सं. वि.) पवित्र स्वभाव का।

शुद्धापह्नुति–(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें उपमेय को असत्य ठहराकर अथवा उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है।

शुद्धावास–(सं. पुं.) स्वर्ग।

शुद्धि–(सं. स्त्री.) शुद्ध करने की क्रिया, मार्जन, सफाई, अन्य धर्मावलंवी को वैदिक धर्मावलंवी बनाने का संस्कार, स्वच्छता, दुर्गा; **–कृत्–**(वि.) शुद्धिकारक; **–पत्र–**(पुं.) वह पत्र जिसमें मुद्रित पुस्तक की अशुद्धियाँ लिखी रहती हैं।

शुद्धोदन–(सं. पुं.) एक शाक्य राजा जो वुद्धदेव के पिता थे।

शुद्धोदनि–(सं. पुं.) विष्णु।

शुनःशेप–(सं. पुं.) एक ऋषि का नाम।

शुन–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता, वायु।

शुनाशीर–(सं. पुं.) इन्द्र और वायु देवता।

शुनि–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।

शुनी–(सं. स्त्री.) कुक्कुरी, कुतिया।

शुभंकर–(सं. वि.) शुभ या मंगल करनेवाला।

शुभंकरी–(सं. स्त्री.) पार्वती, दुर्गा।

शुभ–(सं. पुं.) मंगल, भलाई, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक; (वि.) कल्याणकारी, सुन्दर, उत्तम, सुखी; **–कर–**(वि.) मंगलजनक; **–कर्म–**(पुं.) मंगलजनक कार्य; **–कृत–**(वि.) कल्याणकारी; **–करी–**(स्त्री.) पार्वती; **–क्षण–**(पुं.) शुभ मुहूर्त; **–चिंतक–**(वि.) हितैषी; **–द–**(वि.) मंगलप्रद; **–दर्शन–**(वि.) सुन्दर; **–दायी–**(वि.) शुभ करनेवाला; **–पत्रिका–**(स्त्री.) मंगल-पत्रिका; **–प्रद–**(वि.) मंगल करनेवाला; **–भावना–**(स्त्री.) मंगलजनक-भावना; **–मय–**(वि.) मंगलमय; **–वक्त्रा**(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; **–स्थली–**(स्त्री.) यज्ञभूमि, पवित्र स्थान।

शुभांगी–(सं. स्त्री.) कामदेव की पत्नी रति।

शुभा–(सं. स्त्री.) कान्ति, शोभा, इच्छा।

शुभागमन–(सं. पुं.) सुखद आगमन।

शुभाचार–(सं. वि.) जिसका आचार बहुत अच्छा हो।

शुभाचारा–(सं. स्त्री.) पार्वती की एक सखी का नाम।

शुभान्वित–(सं. वि.) मंगलयुक्त।

शुभार्थी–(सं. वि.) शुभ कामना करनेवाला।

शुभावह–(सं. वि.) मंगलजनक।

शुभाशय–(सं. वि.) धार्मिक।

शुभाशुभ–(सं. वि.) शुभ और अशुभ।

शुभ्र–(सं. वि.) उज्ज्वल, सफेद; (पुं.) अभ्रक, चाँदी, सेंधा नमक, चंदन; **–ता–**(स्त्री.) शुक्लता, सफेदी; **–रश्मि–**(पुं.) चन्द्रमा।

शुभ्रांशु–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कपूर।

शुभ्रा–(सं. स्त्री.) फिटकरी, चीनी।

शुभ्रिका–(सं. स्त्री.) मधु से वनाई हुई चीनी।

शुमार–(फा. पुं.) गिनती, गणना।

शुल्क–(सं. पुं.) घाट का कर, राजकर, वह धन जो वर या उसके पिता द्वारा कन्या को विवाह के दहेज के रूप में दिया जाय, दहेज, मूल, होड़, छात्रों द्वारा विद्याध्ययन के लिए दिया जानेवाला धन; **–शाला–**(स्त्री.) वह स्थान जहाँ कर, चुंगी आदि चुकाई जाती है।

शुल्ल–(सं. पुं.) रज्जु, रस्सी।

शुश्रूषक–(सं. पुं., वि.) सेवा या शुश्रूषा करनेवाला।

शुश्रूषा–(सं. स्त्री.) वच्चे का पालन-पोषण, सेवा, परिचर्या, टहल।

शुश्रूषु–(सं. वि.) सेवा करने का अभिलाषी।

शुष्क–(सं. वि.) अनार्द्र, सूखा, नीरस, वृष्टिहीन, स्नेहरहित, निर्मोही, निरर्थक, व्यर्थ; **–कंठ–**(वि.) प्यासा; **–ता–**(स्त्री.) शुष्क होने का भाव, नीरसता, निर्दयता, कर्कशता; **–पत्र–**(पुं.) सूखा पत्ता; **–मुख–**(वि.) कृपण, कंजूस।

शुष्कली–(सं. पुं.) मांस।

शुष्कार्द्र–(सं. पुं.) शुण्ठी, शुंठी, सोंठ।

शुष्ण–(सं. पुं.) सूर्य, अग्नि।

शुष्म–(सं. पुं.) तेज, पराक्रम।

शूक–(सं. पुं.) अन्न की वाल, एक प्रकार का कीड़ा, टूँड़; **–कीट–**(पुं.) एक प्रकार

का रोओंवाला कीड़ा; -पिंडी-(स्त्री.) केवाँच।

शूकर-(सं. पुं.) वराह, सूअर; -क्षेत्र-(पुं.) नैमिषारण्य के पास के एक तीर्थ का नाम; -शिंबी-(स्त्री.) सेम की फली।

शूकल-(सं. पुं.) भड़कनेवाला घोड़ा।

शूका-(सं. स्त्री.) कपिकच्छु, केवाँच।

शूची-(सं. स्त्री.) सूई।

शूद्र-(सं. पुं.) आर्यों के चार वर्णों में से अन्तिम वर्ण, (ब्रह्मा के पैर से इस वर्ण की उत्पत्ति मानी जाती है), अन्त्यज वर्ण, शूद्र जाति का पुरुष; -क-(पुं.) शूद्र, विदिशा नगरी का एक राजा जिसका संस्कृत में लिखा हुआ 'मृच्छकटिक' नाटक बहुत प्रसिद्ध है; -ता-(स्त्री.) शूद्र का भाव या धर्म; -त्व-(पुं.) शूद्रता; -द्युति-(स्त्री.) नीला रंग; -प्रिय-(पुं.) प्याज।

शूद्रा, शूद्री-(सं. स्त्री.) शूद्र की स्त्री।

शूना-(सं. स्त्री.) गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ अनजान में अनेक जीवों की हत्या होती है, यथा-चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, जल रखने का स्थान आदि।

शूनावत्-(सं. पुं.) कसाई।

शून्य-(सं. पुं.) रिक्त स्थान, आकाश, बिंदु, निर्जन स्थान, अभाव, स्वर्ग, विष्णु; (वि.) निर्जन, रहित, खाली; -गर्भ-(वि.) मूर्ख; -ता-(स्त्री.) शून्य का भाव; -वाद-(पुं.) बौद्धों का सिद्धान्त जिसमें जीव तथा ईश्वर की सत्ता नहीं मानी जाती; -वादी-(पुं.) बौद्ध, नास्तिक।

शून्या-(सं. स्त्री.) वन्ध्या या बाँझ औरत।

शून्यालय-(सं. पुं.) एकान्त स्थान।

शूप-(हिं. पुं.) शूर्प, सूप।

शूपकार-(हिं. पुं.) देखें 'सूपकार'।

शूम-(अ. वि.) कृपण, कंजूस।

शूर-(सं. पुं.) वीर, योद्धा, सूर्य, सिंह, बड़हर, मसूर, विष्णु, चीते का पेड़; (वि.) शक्तिशाली, वीर; -ता-(स्त्री.), -त्व-(पुं.) वीरता; -ताई-(हिं. स्त्री.) वीरता; -भूमि-(स्त्री.) उग्रसेन की एक कन्या का नाम; -विद्या-(स्त्री.) युद्ध करने की विद्या; -वीर-(पुं.) वीर योद्धा; -०ता-(हिं. स्त्री.) शौर्य; -सेन-(पुं.) मथुरा के एक राजा जो श्रीकृष्ण के दादा (पितामह) थे।

शूरण-(सं. पुं.) जमीकन्द, ओल।

शूरन-(हिं. पुं.) देखें 'सूरन'।

शूरा-(हिं. पुं.) सूर्य।

शूर्प-(सं. पुं.) गेहूँ, चावल आदि पछोड़ने का पात्र, सूप, बत्तीस सेर का एक प्राचीन परिमाण; -कर्ण-(पुं.) गणेश।

शूर्पणखा-(सं. स्त्री.) रावण की बहिन का नाम।

शूर्पी-(सं. स्त्री.) बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।

शूर्म-(सं. पुं.) लोहे की बनी हुई मूर्ति।

शूल-(सं. पुं.) मृत्यु, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से नवाँ योग, प्राचीन समय का बरछा, लोहे की कील, सूली जिस पर अभियुक्त को चढ़ाकर प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था, त्रिशूल, व्यथा, पेट में होनेवाली तीव्र पीड़ा या वेदना जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है, टीस, पीड़ा, झंडा, पताका; -ग्रह-(पुं.) शिव; -घ्न-(वि.) शूल या पीड़ा मिटानेवाला; -धन्वा-(पुं.) शिव, महादेव; -धर, -धारी-(पुं.) शिव; -धरा-(स्त्री.) दुर्गा; -पाणि-(पुं.) शिव, महादेव; -प्रोत-(पुं.) नरक के एक भाग का नाम; -योग-(पुं.) फलित ज्योतिष में एक योग का नाम; -हस्त-(पुं.) महादेव।

शूलना-(हिं. क्रि. अ.) व्यथा या पीड़ा होना।

शूलांग-(सं. पुं.) शिव, महादेव।

शूला-(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी, लोहे की नुकीली छड़, सूली।

शूलिक-(सं. पुं.) शशक, खरहा।

शूलिका-(सं. स्त्री.) सीकचे में गोदकर भूना हुआ मांस, कबाब।

शूलिनी-(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक नाम।

शूलिमुख-(सं. पुं.) एक नरक का नाम।

शूली-(सं. स्त्री.) देखें 'सूली'।

शूली-(सं. वि., पुं.) शूल धारण करनेवाला, शिव।

शृंखल-(सं. पुं.) कमर में पहनने की मेखला, करधनी, हथकड़ी, बेड़ी, परंपरा, रीति, क्रम; -ता-(स्त्री.) क्रमबद्ध होने का भाव, क्रमिकता।

शृंखला-(सं. स्त्री.) क्रम, मेखला, करधनी, तागड़ी, श्रेणी, परंपरा; -बद्ध-(वि.) क्रमिक, सिकड़ी से बँधा हुआ।

शृंखलित-(सं. वि.) क्रमबद्ध, सिकड़ी से बँधा हुआ।

शृंग-(सं. पुं.) पर्वत का शिखर, चोटी, (गौ, भैंस आदि) पशुओं का सींग, चिह्न, मकान आदि का ऊपरी भाग, प्रभुत्व, कमल, सोंठ, अदरक, स्तन, छाती; (वि.) तीक्ष्ण; -कंद-(पुं.) सिंघाड़ा; -कूट-(पुं.) एक पर्वत का नाम; -पुर-(पुं.) एक पर्वत का नाम; -रुह-(पुं.) सिंघाड़ा; -वेर-(पुं.) सोंठ, अदरक; -०पुर-(पुं.) रामायण में कथित निषादराज गुह की पुरी का नाम।

शृंगाट, शृंगाटक-(सं. पुं.) चतुष्पथ, चौराहा, चौमुहानी, सिंघाड़ा, गोखरू।

शृंगार-(सं. पुं.) सिन्दूर, लवंग, रति, मैथुन, साहित्य का एक प्रधान रस जिसका आविर्भाव स्त्री-पुरुष के संयोग करने की कामना से होता है, (इसमें नायक-नायिका के परस्पर मिलने पर होनेवाले सुख का निदर्शन रहता है। इसके संयोग और वियोग दो प्रधान भेद हैं), स्त्रियों का आभूषण, वस्त्र आदि से शरीर को सुशोभित करना, सजावट, शोभा देनेवाली वस्तु, भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने इष्ट देवता को पति और अपने को पत्नी मानता है।

शृंगारक-(सं. पुं.) सिन्दूर, सेंदुर।

शृंगारजन्मा-(सं. पुं.) कामदेव।

शृंगारना-(हिं. क्रि. स.) शृंगार करना, सजाना।

शृंगारभूषण-(सं. पुं.) सिन्दूर, हरताल।

शृंगारमंडप-(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ नायक और नायिका क्रीड़ा करते हैं।

शृंगारयोनि-(सं. पुं.) मदन, कामदेव।

शृंगारवेश-(सं. पुं.) शृंगार या रति के लिये सजावट।

शृंगारहाट-(सं. पुं.) वेश्याओं के रहने का स्थान।

शृंगारिक-(सं. वि.) शृंगार-सम्बन्धी।

शृंगारिणी-(सं. स्त्री.) शृंगार करनेवाली स्त्री, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं, (इसका दूसरा नाम स्रग्विणी, मोहना या लक्ष्मीधरा है।)

शृंगारित-(सं. वि.) शृंगार किया हुआ, सँवारा हुआ।

शृंगारिया-(हिं. पुं.) देवी-देवता का शृंगार करनेवाला, बहुरूपिया।

शृंगारुहा-(सं. स्त्री.) सिंघाड़ा।

शृंगालिका-(सं. स्त्री.) विदारीकन्द।

शृंगि-(सं. स्त्री.) सिंघी मछली।

शृंगिका-(सं. स्त्री.) मेढ़ासिंगी, पीतल, अतीस।

शृंगी-(सं. स्त्री.) काकड़ासिंगी, अतीस, बरगद, मजीठ, आमड़ा; (पुं.) शिव, महादेव, सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, सिंगा, पर्वत, वृक्ष, एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे; (वि.) शृंगयुक्त; -गिरि-(पुं.) एक पर्वत का नाम।

शृंगेरी मठ–(सं. पुं.) शंकराचार्य के एक प्रसिद्ध मठ का नाम।
शृगाल–(सं. पुं.) गीदड़, सियार, खल, भीरु व्यक्ति, डरपोक; –**घंटी**–(स्त्री.) तालमखाना; –**जंबु**–(पुं.) तरबूज।
शृंगालिका, शृगाली–(सं. स्त्री.) मादा सियार, सियारिन।
शृत–(सं. पुं.) क्वाथ, काढ़ा।
शृव–(सं. पुं.) मलद्वार, गुदा; (वि.) भ्रष्ट।
शृष्टि–(सं. पुं.) कंस के आठ भाइयों में से एक।
शेख–(पुं.) मुसलमानों में एक जाति।
शेखर–(सं. पुं.) शिरोभूषण, किरीट, मुकुट, चोटी, माथा, श्रेष्ठतासूचक शब्द, पिंगल में तगण का एक भेद।
शेखरित–(सं. वि.) मुकुटयुक्त।
शेखरी–(सं. स्त्री.) लवंग, सहिजन की जड़।
शेखावत–(हिं. पुं.) राजपूत क्षत्रियों का एक भेद।
शेखी–(हिं. स्त्री.) घमंड, डींग; (मुहा.) –**बघारना** डींग मारना।
शेफ–(सं. पुं.) शिश्न, लिंग।
शेर–(फा. पुं.) सिंह, बाघ, व्याघ्र, बहुत साहसी व्यक्ति।
शेरपंजा–(हिं. पुं.) बघनखा नामक अस्त्र।
शेरबच्चा–(हिं. पुं.) पराक्रमी पुरुष, एक प्रकार की छोटी बंदूक।
शेरवानी–(फा. स्त्री.) एक प्रकार का लंबा कोट-जैसा मुसलमानी पहनावा।
शेलक–(सं. पुं.) लिसोड़ा।
शेव–(सं. पुं.) मेढ़्र, लिंग, सर्प, उन्नति, ऊँचाई, सुख।
शेष–(सं. पुं.) अनन्त, सर्पराज, अवशिष्ट भाग, समाप्ति, अन्त, परिणाम, वध, नाश, लक्ष्मण, दिग्गज, छप्पय छन्द का एक भेद, स्मारक वस्तु, बलराम, परमेश्वर, घटाने से या भाग देने पर बची हुई संख्या; (वि.) बचा हुआ, बाकी, उच्छिष्ट; –**धर**–(पुं.) शिव, महादेव; –**नाग**–(पुं.) अनन्त; –**भाग**–(पुं.) बचा हुआ भाग; –**भूषण**–(पुं.) विष्णु; –**राज**–(पुं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण होते हैं; –**रात्रि**–(स्त्री.) रात का पिछला पहर; –**व**–(पुं.) कार्य देखकर कारण का अनुमान; –**शायी**–(पुं.) शेषनाग पर शयन करनेवाले विष्णु।
शेषांश–(सं. पुं.) बचा हुआ अंश या भाग।
शेषा–(सं. स्त्री.) देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य जो प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है।
शेषोक्त–(सं. वि.) अन्त में कहा हुआ।
शैक्या–(सं. पुं.) सिकहर, छीका; (वि.) दृढ़।
शैखरेय–(सं. पुं.) अपामार्ग, चिचड़ा।
शैघ्र्य–(सं. पुं.) शीघ्रता।
शैतान–(अ. पुं.) राक्षस, दैत्य, असुर।
शैतानी–(अ. वि.) शैतान का; (स्त्री.) शैतान का काम, दुष्टता।
शैत्य–(सं. पुं.) शीत, ठंढक।
शैथिल्य–(सं. पुं.) शिथिलता, ढिलाई।
शैनेय–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण के एक सारथी का नाम।
शैल–(सं. पुं.) चट्टान, रसवत, शिलाजीत, पर्वत, पहाड़; (वि.) पथरीला, कठोर; –**कन्या**–(स्त्री.) पार्वती; –**कुमारी**–(स्त्री.) पार्वती; –**गंगा**–(स्त्री.) गोवर्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्रीकृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था; –**गुरु**–(पुं.) हिमालय पर्वत; –**जा**–(स्त्री.) पार्वती, गजपिप्पली, दुर्गा; –**तटी**–(स्त्री.) पहाड़ की तराई; –**तनया**, –**दुहिता**–(स्त्री.) पार्वती; –**धर**–(पुं.) श्रीकृष्ण; –**नंदिनी**–(स्त्री.) पार्वती; –**पति**–(पुं.) हिमालय; –**पथ**–(पुं.) पहाड़ी मार्ग; –**पुत्री**–(स्त्री.) पार्वती, गंगा, नौ दुर्गाओं में से एक; –**बीज**–(पुं.) भिलावाँ; –**रंध्र**–(पुं.) पहाड़ी गुफा; –**राज**–(पुं.) हिमालय पर्वत; –**शिखा**–(स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं; –**शृंग**–(पुं.) पर्वत का शिखर; –**संभव**–(पुं.) शिलाजीत; –**सुता**–(स्त्री.) पार्वती, दुर्गा; –**सेतु**–(पुं.) पत्थर का पुल।
शैलाग्र–(सं. पुं.) पर्वत का शिखर।
शैलाट–(सं. पुं.) पहाड़ी आदमी।
शैलादि–(सं. पुं.) शिव के एक गण।
शैलाधिराज–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत।
शैलासा–(सं. स्त्री.) पार्वती।
शैलाह्व–(सं. पुं.) शिलाजीत।
शैली–(सं. स्त्री.) चाल-ढाल, ढंग, रीति, प्रथा, प्रणाली, परिपाटी, (काव्य, कला आदि की) रचना की रीति, पत्थर की मूर्ति।
शैलू–(हिं. पुं.) लिसोड़ा, एक प्रकार की चटाई।
शैलूक–(सं. पुं.) कमलदण्ड, मसींड़।
शैलूष–(सं. पुं.) अभिनय करनेवाला, नट, बेल का वृक्ष, धूर्त मनुष्य, गंधर्वों का स्वामी।
शैलूषिकी–(सं. स्त्री.) नट जाति की स्त्री, नटी।
शैलेंद्र–(सं. पुं.) शैलराज, हिमालय।
शैलेय–(सं. पुं.) तालपर्णी, शिलाजीत, सेंधा नमक, सिंह, भौंरा; (वि.) शैल-संबंधी, पहाड़ी, पथरीला, पत्थर के समान।
शैलेयी–(सं. स्त्री.) पार्वती।
शैलेश–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत।
शैलेश्वर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
शैल्य–(सं. वि.) पथरीला, कड़ा, कठोर।
शैव–(सं. पुं.) धतूरा, शिव का उपासक, पाशुपत अस्त्र; (वि.) शिव-संबंधी, शिव का; –**पत्र**–(पुं.) बिल्वपत्र।
शैवल–(सं. पुं.) पद्माख, सेवार, एक देश का नाम।
शैवलिनी–(सं. स्त्री.) नदी।
शैवाल–(सं. पुं.) सेवार।
शैवी–(सं. स्त्री.) पार्वती, मनसा नाम की देवी, मंगल, कल्याण।
शैव्य–(सं. वि.) शिव-संबंधी, शिव का।
शैव्या–(सं. स्त्री.) राजा हरिश्चन्द्र की रानी का नाम।
शैशव–(सं. पुं.) बाल्यावस्था, बचपन, लड़कपन; (वि.) बचपन का, शिशु-संबंधी।
शैशिर–(सं. वि.) शिशिर-संबंधी, शिशिर में उत्पन्न।
शोक–(सं. पुं.) वह मनोविकार जो अनिष्ट अथवा इष्ट-नाश से उत्पन्न होता है, शोच, खेद; –**कर**, –**कारक**–(वि.) शोकजनक; –**नाश**–(पुं.) शोक का नाश; –**मय**–(वि.) शोक से पूर्ण; –**वत्**, –**वान्**–(वि.) शोकयुक्त; –**हर**–(पुं.) एक छन्द का नाम; (वि.) शोकहारी; –**हारी**–(वि.) शोक को दूर करनेवाला।
शोकाकुल–(सं. वि.) शोक से व्याकुल।
शोकातुर–(सं. वि.) दुःख या शोक से व्याकुल।
शोकार्त–(सं. वि.) शोकाकुल।
शोच–(सं. पुं.) चिन्ता, दुःख।
शोचनीय–(सं. वि.) शोक करने योग्य, बहुत दीन।
शोचितव्य–(सं. वि.) शोक करने योग्य।
शोच्य–(सं. वि.) चिन्ता करने योग्य।
शोण–(सं. पुं.) सिन्दूर, रुधिर, अग्नि, लाल रंग, ललाई, सोना, एक नदी का नाम, मंगल ग्रह; –**पुष्पक**–(पुं.) कचनार; –**भद्र**–(पुं.) सोन नदी;

–मणि–(पुं.) पद्मराग मणि, मानिक।
शोणित–(सं. पुं.) रक्त, कुंकुम, केसर, ईंगुर; (वि.) लाल रंग का, लाल।
शोणितोत्पल–(सं. पुं.) लाल कमल।
शोणितोद–(सं. पुं.) एक यक्ष का नाम।
शोथ–(सं. पुं.) किसी अंग का फूल जाना, सूजन।
शोथघ्न–(सं. पुं.) शोथ, मुरदासंख।
शोध–(सं. पुं.) निर्मलता, परीक्षा, जाँच, अनुसन्धान, खोज, शुद्ध करने की क्रिया, परिशोध; –क–(पुं.) खोजने या ढूँढ़नेवाला, सुधारक, वह संख्या जिसके घटाने से वर्गमूल पूर्ण संख्या हो।
शोधन–(सं. पुं.) शौच, शुद्धता, पवित्रता, प्रायश्चित, धातुओं को औषध बनाने के लिये शुद्ध करना, ऋण चुकाना, अशुद्धियों को ठीक करना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, आचरण सुधारने के लिये दण्ड देना, खोजना, ढूँढ़ना, छान-बीन, जाँच, शरीर की धातुओं को वमन, विरेचन आदि से शुद्ध करना।
शोधना–(हिं. क्रि. स.) शुद्ध करना, औषध बनाने के लिये धातु आदि को शुद्ध करना, खोजना, ढूँढ़ना, सुधारना, ठीक करना।
शोधनी–(सं. स्त्री.) मार्जनी, झाड़ू, बुहारी।
शोधनीय–(सं. वि.) शुद्ध करने के योग्य।
शोधवाना–(हिं. क्रि. स.) शोधने का काम दूसरे से कराना, ठीक कराना।
शोधित–(सं. वि.) परिष्कृत, शुद्ध किया हुआ।
शोधैया–(हिं. पुं.) शोधनेवाला, सुधारक।
शोफ–(सं. पुं.) शोथ, सूजन।
शोभ–(सं. पुं.) शोभन, शोभा; (वि.) शोभायुक्त, सुन्दर; –न–(पुं.) शुभ, कल्याण, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक, धर्म, पुण्य, सौन्दर्य, एक मात्रिक छन्द का नाम, मालकोश राग का एक भेद, आभूषण, शिव का एक नाम; (वि.) उत्तम, रमणीय, उचित, सुहावना।
शोभना–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी, गोरोचन, सुन्दर स्त्री; (वि. स्त्री.) सुन्दरी; (क्रि. अ.) सुशोभित होना।
शोभनीय–(सं. वि.) शोभा के योग्य, सुंदर।
शोभा–(सं. स्त्री.) दीप्ति, चमक, कान्ति, द्युति, छवि, सुन्दरता, छटा, सजावट, बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त, हल्दी, गोरोचन, चमेली।
शोभांजन–(सं. पुं.) सहजन का वृक्ष।
शोभाकर–(सं. वि.) शोभा उत्पन्न करनेवाला।
शोभान्वित–(सं. वि.) शोभायुक्त।
शोभायमान–(सं. वि.) सुन्दर, सोहाता हुआ।
शोभावली–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
शोभित–(सं. वि.) शोभायुक्त, विभूषित।
शोर–(फा. पुं.) हल्ला, कोलाहल।
शोरवा–(फा. पुं.) तरकारी का रसा या सुरुवा।
शोला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष; (फा. पुं.) आग की लपट, ज्वाला।
शोष–(सं. पुं.) सूखने का भाव, शोषण, यक्ष्मा रोग, बच्चों का सुखंडी रोग।
शोषक–(सं. वि.) सोखनेवाला, शोषण करनेवाला, नाश करनेवाला।
शोषण–(सं. पुं.) सोखना, सुखाना, क्षीण करना, नाश करना पूंजीपतियों द्वारा श्रमिक वर्ग से अनुचित लाभ उठाना।
शोषणीय–(सं. वि.) शोषण के योग्य।
शोषित–(सं. वि.) सोखा हुआ, सुखाया हुआ, जिसका शोषण किया गया हो (श्रमिक वर्ग आदि)।
शोहरत–(अ. स्त्री.) प्रसिद्धि, ख्याति।
शौंड–(सं. वि.) जो मद्य पीकर मतवाला हो, प्रगल्भ; –ता–(स्त्री.) मत्तता।
शौंडी–(सं. पुं.) पिप्पली, मिर्च।
शौंडीर–(सं. वि.) अहंकारी, घमंडी।
शौक–(अ. पुं.) चाह, रुचि, इच्छा, रहन-सहन या बनाव-सिंगार का स्तर।
शौकीन–(अ. वि.) जिसे शौक हो।
शौकीनी–(हिं. स्त्री.) शौक।
शौक्तिक–(सं. वि.) मुक्ता या सीपी-संबंधी।
शौक्तिका–(सं. स्त्री.) सीप।
शौक्तेय–(सं. वि.) शुक्ति-संबंधी।
शौखेय–(सं. पु.) गरुड़ पक्षी, श्येन पक्षी, बाज
शौच–(सं. पु.) शुचिता, पवित्रता, निषिद्ध खाद्य वस्तुओं का वर्जन, मलत्याग आदि कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सब से पहले किये जाते हैं; –कर्म–(पुं.), –विधि–(स्त्री.) शास्त्रानुसार शुद्धि की क्रिया।
शौचाचार–(सं. पुं.) शौच-कर्म।
शौचेय–(सं. पुं.) रजक, धोबी।
शौटीर–(सं. पुं.) त्यागी, वीर।
शौन–(सं. पुं.) वह मांस जो बिक्री के लिये रखा हो।
शौनक–(सं. पुं.) एक वैदिक ऋषि का नाम।
शौनिक–(सं. पुं.) आखेट, मृगया।
शौरसेन–(सं. वि.) महाराज शूरसेन का राज्य।
शौरसेनी–(सं. स्त्री.) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा।
शौरि–(सं. पुं.) विष्णु, शनि ग्रह, कृष्ण।
शौरिप्रिय–(सं. पुं.) हीरक, हीरा।
शौरिरत्न–(सं. पुं.) नीलम।
शौर्य–(सं. पुं.) शूरता, वीरता।
शौल–(सं. पुं) लांगल, हल का फार।
शौल्किक–(सं. पुं.) शुल्क, कर आदि उगाहनेवाला अधिकारी।
शौल्फ–(सं. पुं.) सौंफ, सुलफे का साग।
श्मन्–(सं. पुं.) मुख, शव।
श्मशान–(सं. पुं.) शव जलाने का स्थान, मरघट; –पति–(पुं.) शिव, महादेव; –भैरवी–(स्त्री.) दुर्गा; –वासी–(पुं.) शिव, चाण्डाल; –वासिनी–(स्त्री.) काली।
श्मश्रु–(सं. पुं.) मुख पर के बाल, दाढ़ी, मूँछ; –कर–(पुं.) हज्जाम; –ल–(वि.) दाढ़ी-मूँछवाला; –शेखर–(पुं.) नारियल का पेड़।
श्याम–(सं. वि.) काला, साँवले रंग का; (पुं.) मेघ, बादल, कोयल, धतूरा, दौना, एक राग का नाम, श्रीकृष्ण का एक नाम –कंठ–(पुं.) नीलकंठ पक्षी, मोर, शिव, महादेव; –क–(वि.) काले रंग का; –कर्ण–(पुं.) वह सफेद घोड़ा जिसके कान काले होते हैं; –जीरा–(हिं. पुं.) काला जीरा, एक प्रकार का महीन धान; –टीका–(हिं. पुं.) काला टीका जो बच्चों को कुदृष्टि से बचाने के लिये लगाया जाता है; –ता–(स्त्री.) कृष्णता, कालापन, मलिनता, उदासी; –पर्ण–(पुं.) सिरिस का पेड़; –पूरबी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का संकर राग; –मंजरी– (स्त्री.) एक प्रकार की काली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं; –मृग–(पुं.) काला हरिन; –सुंदर–(पुं.) श्रीकृष्ण।
श्यामल–(सं. वि.) काले रंग का, साँवला; (पुं.) एक प्रकार का बहुत विषैला बिच्छू; –ता– (स्त्री.) कालापन, सांवलापन।
श्यामला–(सं. स्त्री.) पार्वती, जामुन, कस्तूरी।
श्यामांग–(सं. वि.) सांवले रंग का।
श्यामा–(सं. स्त्री.) श्याम वर्ण की स्त्री, राधा का एक नाम, एक गोपी का नाम, सोलह वर्ष की तरुणी, कालिका देवी, रात, छाया, यमुना, काली गाय, कोयल, सांवां नामक अन्न, तुलसी, कमलगट्टा, कस्तूरी, हल्दी, हरीतकी, सारिका।

श्याल, श्यालक–(सं. पुं.) पत्नी का भाई, साला, भगिनीपति, बहनोई; (हि. पुं.) सियार, गीदड़।
श्यालिका–(सं. स्त्री.) पत्नी की बहिन, साली।
श्येन–(सं. पुं.) बाज नामक पक्षी।
श्येनगामी–(सं. वि.) वेग से जानेवाला।
श्येनिका–(सं. स्त्री.) बाज पक्षी की मादा, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
श्येनी–(सं. स्त्री.) मादा बाज, कश्यप की एक कन्या का नाम।
श्योणाक, श्योनाक–(सं. पुं.) सोनापाठा नामक क्षुप, लोध।
श्रद्दधान–(सं. वि.) श्रद्धायुक्त, श्रद्धालु।
श्रद्धा–(सं. स्त्री.) बड़ों के प्रति पूज्य-भाव, विश्वास, आदर, स्पृहा, कामना, शास्त्रादि में दृढ़ भक्ति, बड़ों के वचनों में विश्वास, आस्था, चित्त की प्रसन्नता, भक्ति, कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि को ब्याही थी; **–तव्य**–(वि.) श्रद्धा करने योग्य; **–देय**– (वि.) श्रद्धापूर्वक दिया जानेवाला; **–मय**–(स्त्री.) श्रद्धा से पूर्ण; **–लु**– (स्त्री.) वह स्त्री जिसके मन में गर्भावस्था के कारण अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ हों; (वि.) श्रद्धायुक्त, श्रद्धावान्; **–वान्**–(वि.) श्रद्धायुक्त, जिनके मन में श्रद्धा हो।
श्रद्धास्पद–(सं.वि.) श्रद्धा का पात्र, पूजनीय।
श्रद्धेय–(सं. वि.) श्रद्धा के योग्य।
श्रम–(सं. पुं.) प्रयास, अभ्यास, परिश्रम, थकावट, शास्त्रों का अभ्यास, तपस्या, चिकित्सा, व्यायाम, स्वेद, पसीना, साहित्य के संचारी भावों में से एक; **–कण**–(पुं.) पसीने की बूँदें; **–कर**–(वि.) परिश्रम करनेवाला; **–घ्न**–(वि.) श्रम को मिटानेवाला; **–छिद्**–(वि.) श्रम को दूर करनेवाला; **–जल**– (पुं.) पसीना; **–जित्**–(वि.) परिश्रम करने पर न थकनेवाला; **–जीवी**–(वि.) परिश्रम करके पेट पालनेवाला; **–बिंदु**–(पुं.) पसीने की बूंद; **–वारि**– (पुं.) स्वेद, पसीना; **–विनोद**– (पुं.) परिश्रम से होनेवाला सुख; **–विभाग**–(पुं.) कारखाने में कार्य का विभाग; **–शीकर**–(पुं.) श्रमकण, पसीना; **–साध्य**–(वि.) परिश्रम से किया जानेवाला; **–सिद्ध**–(वि.) परिश्रम से प्राप्त; **–स्थान**–(पुं.) कार्यालय, परिश्रम करने का स्थान।
श्रमण–(सं. पुं.) बौद्ध संन्यासी, नीच कर्म करनेवाला, नीच कर्मजीवी।
श्रमांबु–(सं. पुं.) श्रमवारि, पसीना।
श्रमिक–(सं. पुं.) नौकर, मजदूर।
श्रमित–(सं. वि.) श्रान्त, शिथिल, थका हुआ।
श्रमी–(सं. पुं.) परिश्रमी व्यक्ति, श्रमजीवी।
श्रयण–(सं. पुं.) आश्रय।
श्रवण–(सं. पुं.) श्रवणेन्द्रिय, कान, सुनने की क्रिया, नौ प्रकार की भक्तियों में से एक, एक नक्षत्र; **–गोचर**–(वि.) कर्णगोचर, जो सुनाई पड़ता हो या पड़ सके; **–पथ**–(पुं.) कान; **–विद्या**–(स्त्री.) संगीत-शास्त्र; **–विभ्रम**–(पुं.) सुनने की भूल; **–विषय**– (पुं.) श्रवणगोचर शब्द, कथन आदि; **–व्याधि**–(स्त्री.) कान का रोग।
श्रवणा–(सं. स्त्री.) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से बाईसवाँ नक्षत्र।
श्रवणीय–(सं. वि.) सुनने योग्य।
श्रवन–(हिं. पुं.) सुनना, कान।
श्रवना–(हि. क्रि.अ.,स.) बहना, गिराना, बहाना।
श्रविष्ठा–((सं. स्त्री.) धनिष्ठा नक्षत्र; **–रमण**–(पुं.) चन्द्रमा।
श्रव्य–(सं वि.) सुनने योग्य, जो सुना जा सके।
श्रांत–(सं. पुं.) तपस्वी; (वि.) जितेन्द्रिय, खिन्न, दुःखी, निवृत्त, थका हुआ, श्रम से क्लान्त।
श्रांति–(सं स्त्री.) थकान, श्रम, खेद, दुःख।
श्राद्ध–(सं. पुं.) श्रद्धापूर्वक किया हुआ कार्य, वह कर्म जो शास्त्र-विधि के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है; **–कर्ता**–(पुं.) श्राद्ध करने का अधिकारी; **–कर्म**–(पुं.) पितरों को पिंडदान आदि; **–काल**–(पुं.) अशौच के अन्त का दूसरा दिन; **–पक्ष**–(पुं.) पितृपक्ष; **–भोक्ता**–(पुं.) श्राद्ध भोजन करनेवाला ब्राह्मण।
श्राद्धिक–(सं.वि.) श्राद्ध-संबंधी (द्रव्यादि)।
श्राप–(हिं. पुं.) देखें 'शाप'।
श्राम–(स. पुं.) मण्डप, घर, काल, समय।
श्राव–(सं. पुं.) श्रवण, कान।
श्रावक–(सं. पुं.) बौद्ध या जैन संन्यासी, नास्तिक, कौआ, शिष्य, दूर का शब्द।
श्रावण–(सं पुं.) कान से सुनकर अर्जित ज्ञान, वर्ष का चौथा महीना जिसकी पूर्णिमा तिथि को श्रवण नक्षत्र रहता है।
श्रावणा–(सं. स्त्री.) सुदर्शना नामक वृक्ष, भूकदम्ब।
श्रावणी–(सं. स्त्री.) श्रवण नक्षत्रयुक्त पौर्णमासी, श्रावण मास की पूर्णिमा, (इस दिन हिंदुओं का 'रक्षाबंधन' या 'सलोनो' नामक त्योहार होता है।)
श्रावयितव्य–(सं. वि.) सुनाने योग्य।
श्रावस्ती–(सं. स्त्री.) एक प्राचीन जनपद और उसकी राजधानी, (इसको आजकल 'सहेत-महेत' कहते हैं।)
श्रावित–(सं. वि.) सुनाया गया।
श्राव्य–(सं. वि.) श्रोतव्य, सुनने लायक।
श्रित–(सं. वि.) सेवित, आश्रित, पका हुआ।
श्रियंमन्या–(सं. स्त्री.) अपने को लक्ष्मी समझनेवाली स्त्री।
श्रिय–(सं. पुं.) मंगल, कल्याण, शोभा।
श्रिया–(सं. स्त्री.) विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी।
श्री–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, कमला, कीर्ति, यश, पद्म, कमल, वृद्धि, सिद्धि, बेल का वृक्ष, मति, ऐश्वर्य, अधिकार, उपकरण, त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम), सरस्वती प्रभा, शोभा, ऋद्धि और सिद्धि नामक औषधियाँ, कान्ति, चमक, सफेद चन्दन, बिंदी नामक स्त्रियों का आभूषण, एक आदर-सूचक शब्द जो नाम के आगे लिखा जाता है, वैष्णवों का एक सम्प्रदाय, एकाक्षर छन्द विशेष, एक राग का नाम; **–कंठ**–(पुं.) शिव, महादेव, एक पक्षी का नाम; **–कर**–(पुं.) लाल कमल, विष्णु; (वि.) शोभा कारक; **–करण**–(पुं.) लेखनी, कायस्थों की एक शाखा; **–कांत**–(पुं.) लक्ष्मीपति, विष्णु; **–काम**–(वि.) धनधान्य की कामना करनेवाला; **–कीर्ति**–(स्त्री.) ताल का एक भेद; **–कृष्ण**–(पुं.) द्वारकानाथ, वासुदेव, कृष्ण; **–क्षेत्र**–(पुं.) जगन्नाथ पुरी तथा उसके आस-पास का प्रदेश; **–खंड**–(पुं.) हरिचन्दन; **–शैल**–(पुं.) मलय पर्वत; **–गंध**–(पुं.) सफेद चन्दन; **–गदित**–(पुं.) साहित्य में रूपक का एक भेद; **–गर्भ**–(पुं.) विष्णु, खड्ग, तलवार; **–गेह**–(पुं.) पद्म, कमल; **–चक्र**–(पुं.) त्रिपुर-सुन्दरी का पूजा-मन्त्र विशेष, इन्द्र के रथ, का चक्र; **–टंक**–(पुं.) संगीत में एक प्रकार का राग; **–तरु**–(पुं.)

साल का पेड़; **–ताल–**(पुं.) एक प्रकार का ताल वृक्ष; **–दयित–**(पुं.) विष्णु; **–दामा–**(पुं.) श्रीकृष्ण के एक ग्वाल सखा का नाम; **–घर–**(पुं.) शालग्राम-चक्र, विष्णु; (वि.) तेजस्वी, तेजवान्; **–नाथ–**(पुं.) विष्णु; **–निकेत–**(पुं.) लाल कमल, सुवर्ण, सोना, वैकुण्ठ; **–निकेतन–**(पुं.) विष्णु, वैकुण्ठ; **–निधि–**(पुं.) विष्णु; **–निवास–**(पुं.) लक्ष्मी का निवास, विष्णु; **–पंचमी–**(स्त्री.) माघ शुक्ला पंचमी, वसन्त-पंचमी; **–पति–**(पुं.) विष्णु, कृष्ण, नारायण, कुबेर, राजा; **–पथ–**(पुं.) राजमार्ग, वड़ी और चौड़ी सड़क; **–पर्ण–**(पुं.) पद्म, कमल; **–पाद–**(पुं.) पूज्यपाद, वह जिसका चरण पूजने योग्य हो; **–पुट–**(पुं.) एक प्रकार का छन्द–; **–पुत्र–**(पुं.) कामदेव, इंद्र का घोड़ा; **–प्रद–**(वि.) ऐश्वर्य देनेवाला; **–प्रदा–**(स्त्री.) राधा; **–प्रसून–**(पुं.) लवंग, लौंग, **–प्रिय–**(पुं.) हरताल; **–फल–**(पुं.) वेल का वृक्ष, आँवला; **–फला–**(स्त्री.) करेली, आमला; **–बंधु–**(पुं.) अमृत; **–बीज–**(पुं.) ताड़ का वृक्ष; **–भक्ष–**(पुं.) देवता को चढ़ाने का मधुपर्क; **–भानु–**(पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; **–मंजरी–**(स्त्री.) तुलसी, सुरसा; **–मंत–**(पुं.) एक प्रकार का आभूपण, स्त्रियों के सिर के वीच की माँग; (वि.) धनवान्, धनाढ्य; **–मत्–**(वि.) ऐश्वर्यशाली, धनवान्, श्रीयुक्त, सुन्दर; (पुं.) नील का पौधा, विष्णु, पीपल का पेड़, शिव, कुवेर; **–मती–**(स्त्री.) स्त्रियों के लिये आदर-सूचक शब्द, राधा, लक्ष्मी; **–मय–**(वि., पुं.) श्रीयुक्त, विष्णु; **–मलापहा–**(स्त्री.) तंवाकू; **–महिमन्–**(पुं.) शिव, महादेव; **–मान्–**(वि., पुं.) श्रीयुत्, धनवान्; **–माल–**(पुं.) पश्चिम भारत के वैश्यों की एक जाति; **–माला–**(स्त्री.) गले में पहनने का एक आभूपण; **–मुख–**(पुं.) एक संवत्सर का नाम, सुन्दर मुख; (वि.) सुन्दर; **–मूर्ति–**(स्त्री.) विष्णु की प्रतिमा; **–युक्त–**(वि.) श्रीमान्, शोभासम्पन्न; (पुं.) एक आदरसूचक शब्द जो वड़े आदमियों के नाम के पहले लगाया जाता है; **–युत्–**(वि., पुं.) श्रीयुक्त; **–रंग–**(पुं.) लक्ष्मीपति, विष्णु, ताल का एक भेद; **–रमण–**(पुं.) विष्णु, संगीत में एक संकर राग का नाम; **–राग–**(पुं.) संगीत के मुख्य ६ रागों में से एक राग; **–रूपा–**(स्त्री.) राधा; **–लाभ–**(पुं.) धन-लाभ, सौभाग्य, वृद्धि; **–वंत–**(वि.) सम्पत्ति शाली, धनाढ्य; **–वत्स–**(पुं.) विष्णु के वक्षस्थल पर का अंगुष्ठ-प्रमाण चिह्न जो भृगु के चरण-प्रहार से वना हुआ माना जाता है; **–वद–**(वि.) भावी शुभ कहनेवाला; **–वर्धन–**(पुं.) शिव, एक राग का नाम; **–वल्ली–**(स्त्री.) एक प्रकार की लता जिसका व्यवहार औपधों में होता है; **–वास, –वासक–**(पुं.) तारपीन का तेल, पद्म, कमल, विष्णु, शिव, देवदारु, चन्दन, गुग्गुल, धूप; **–विद्या–**(स्त्री.) त्रिपुरसुन्दरी नाम की एक महाविद्या; **–वृक्ष–**(पुं.) अश्वत्थ, पीपल, विल्व-वृक्ष; **–वृद्धि–**(स्त्री.) धन-धान्य की वृद्धि; **–सहोदर–**(पुं.) चन्द्रमा; **–स्वरूपिणी–**(स्त्री.) राधा; **–हत–**(वि.) निस्तेज, शोभा-रहित; **–हरा–**(स्त्री.) राधा; **–हर्ष–**(पुं.) विष्णु, नारायण, संस्कृत के 'नैषधीय चरितम्' महाकाव्य के प्रणेता।

श्रुत–(सं. पुं.) कालिन्दी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; (वि.) सुना हुआ, ज्ञात, प्रसिद्ध; **–कीर्ति–**(पुं.) अर्जुन के एक पुत्र का नाम जो द्रौपदी से उत्पन्न थे; (वि.) कीर्तियुक्त; **–देव–**(पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; **–देवी–**(स्त्री.) सरस्वती, वासुकि की वहिन का नाम; **–पूर्व–**(वि.) जो पहले सुना गया हो; **–शील–**(वि.) पण्डित और सदाचारी; **–सेन–**(पुं.) जनमेजय के पिता का नाम; **–सेना–**(स्त्री.) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

श्रुतार्थ–(सं. पुं.) वह वात जो सुनने के साथ ही समझ में आ जाय।

श्रुति–(सं. स्त्री.) वेद, कर्ण, कान, सुनी हुई वात, वार्ता, श्रवण नक्षत्र, जनश्रुति, ध्वनि, शब्द, अनुप्रास का एक भेद, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा, अभिधान, नाम, विद्या, विद्वत्ता; **–कट–**(पुं.) तपस्या, प्रायश्चित्त; **–कटु–**(पुं.) कठोर या कर्कश शब्द, काव्य में ऐसे शब्दों का व्यवहार; (वि.) सुनने में कठोर; **–कथित–**(वि.) वेदोक्त; **–तत्पर–**(वि.) वेदाभ्यास में लीन; **–धर–**(वि., पुं.) (वह मनुष्य) जिसको श्लोकादि सुनते ही स्मरण हो जाता हो; **–पथ–**(पुं.) श्रवणेंद्रिय, वेद-विहित पथ; **–भाल–**(पुं.) ब्रह्मा; **–मार्ग, –मंडल–**(पुं.) कर्ण, कान; **–मुख–**(पुं.) ब्रह्मा; **–वर्जित–**(वि.) वधिर, वहिरा; **–वेध–**(पुं.) कर्णवेध, कन-छेदन, **–सागर–**(पुं.) विष्णु।

श्रुत्यनुप्रास–(सं. पुं.) अनुप्रास का वह भेद जहाँ एक ही स्थान से या एक-से उच्चारण होनेवाले व्यंजन अक्षर अनेक वार प्रयोग किये जायँ।

श्रुवा–(सं. स्त्री.) देखें 'स्रुवा'।

श्रूयमाण–(सं. वि.) जो सुना जाय।

श्रेढी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का पहाड़ा जिसका विवरण लीलावती में लिखा है।

श्रेणि–(सं. स्त्री.) पंक्ति, अवली, परम्परा, श्रृंखला, मण्डली, समूह, दल, सेना, सिकड़ी, पानी भरने का डोल, सीढ़ी, किसी वस्तु का ऊपरी भाग; **–का–**(वि.) तंवू, खेमा; **–बद्ध–**(पुं.) क्रम-वद्ध; **–मत्–**(पुं.) सेनापति।

श्रेणी–(सं. स्त्री.) देखें 'श्रेणि'; **–कृत–**(वि.) पंक्ति में सजा हुआ; **–धर्म–**(पुं.) किसी समुदाय की रीति; **–बद्ध–**(वि.) क्रमवद्ध।

श्रेय–(सं. पुं.) सामवेद, धर्म, पुण्य, सदाचार, मुक्ति, चतुर्वर्ग–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, कल्याण; (वि.) अधिक अच्छा, यश तथा कल्याण देनेवाला, श्रेष्ठ, उत्तम।

श्रेयस्–(सं. पुं.) देखें श्रेय; **–कर–**(वि.) मंगलकारी, शुभ फल देनेवाला; **–करी–**(स्त्री.) हरीतकी, हर; **–काम–**(पुं.) मंगल चाहनेवाला।

श्रेयोमय–(सं. वि.) मंगलमय, शुभ।

श्रेष्ठ–(सं. पुं.) गाय का दूध, कुवेर, राजा, ब्राह्मण, विष्णु, महादेव; (वि.) प्रशस्त, उत्तम, ज्येष्ठ, वड़ा, वृद्ध, वूढ़ा, कल्याणप्रद, पूज्य, उत्कृष्ट, मुख्य; **–तः–**(अव्य.) उत्तम रूप से; **–तम–**(वि.) सव से श्रेष्ठ; **–तर–**(वि.) जो दो व्यक्तियों या पदार्थों में श्रेष्ठ हो; **–ता–**(स्त्री.) विशिष्टता, प्रधानता, उत्तमता, वड़ाई; **–लवण–**(पुं.) सेंधा नमक; **–वृक्ष–**(पुं.) अरण वृक्ष।

श्रेष्ठा–(सं. स्त्री.) स्थलपद्मिनी, त्रिफला।

श्रेष्ठी–(सं. पुं.) प्रतिष्ठित व्यवसायी, सेठ, साहूकार।

श्रोण–(सं. पुं.) पंगु, लंज।

श्रोणि–(सं. स्त्री.) कटिदेश, कमर, नितम्ब, चूतड़, मार्ग, पथ; **–कपाल–**(पुं.)

जंघास्थि; –बिंब–(पुं.) करधनी ; –सूत्र–(पुं.) तलवार लटकाने का परतला, कमर की करधनी।
श्रोणी–(सं. स्त्री.) कटि, कमर, नितम्ब, चूतड़।
श्रोत–(सं. पुं.) श्रवणेंद्रिय, कान; –व्यव्यक–(वि.) सुनने योग्य।
श्रोता–(सं. पुं.) सुननेवाला, कथा आदि सुननेवाला।
श्रोत्र–(सं. पुं.) कर्ण, कान, वेदज्ञान; –ज्ञ–(वि.) श्रवण-पटु; **–मूल**–(पुं.) कर्णमूल; **–हीन**–(वि.) बहिरा।
श्रोत्रिय–(सं. पुं.) वह ब्राह्मण जिसने वेद का अध्ययन किया हो।
श्रोत्री–(हि. पुं.) श्रोत्रिय।
श्रोन–(हि. पुं.) देखें 'शोण'।
श्रोनित–(हि. पुं.) देखें 'शोणित'।
श्रौत–(सं. वि.) श्रुति-संबंधी, श्रवण-संबंधी, जो वेद के अनुसार हो, यज्ञ-संबंधी; (पुं.)तीन प्रकार की अग्नियाँ; यथा–गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण, वेद-विहित धर्म; यथा–दान, अग्निहोत्र और यज्ञ; **–श्रव**–(पुं.) शिशुपाल का एक नाम; **–सूत्र**–(पुं.) वे सूत्र जिनका विधान यज्ञादि में होता है।
श्रौत्रजन्म–(सं. पुं.) द्विजों का उपनयन-संस्कार।
श्लक्ष्ण–(सं. वि.) अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म, चिकना, मनोहर; **–ता**–(स्त्री.) सूक्ष्मता, चिकनापन, सुन्दरता।
श्लथ–(सं.वि.) शिथिल, ढीला, दुर्बल, अशक्त, मन्द, धीमा, जो बँधा न हो।
श्लाघन–(सं. वि.) अपनी प्रशंसा करने-वाला; (पुं.) डीग हाँकना।
श्लाघनीय–(सं. वि.) प्रशंसनीय, श्रेष्ठ, उत्तम।
श्लाघनीयता–(सं.स्त्री.) श्लाघा, खुशामद।
श्लाघा–(सं. स्त्री.) प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई।
श्लाघित–(सं. वि.) प्रशंसित।
श्लाघ्य–(सं. वि.) प्रशंसनीय, सराहने योग्य,श्रेष्ठ,उत्तम; **–ता**–(स्त्री.) श्लाघा।
श्लिष्ट–(सं.वि.)(शब्द)जिसका दो या अनेक अर्थ हो, मिला हुआ, जुटा हुआ, चिपका हुआ, आलिंगित; **–रूपक**–(पुं.) वह अलंकार जिसमें श्लेष के द्वारा रूपका-लंकार होता है।
श्लिष्टाक्षेप–(सं.पुं.) वह अलंकार जिसमें श्लिष्ट पदों के प्रयोग से आक्षेप होता है।
श्लिष्टि–(सं.स्त्री.)जोड़,मिलाना,आलिंगन।
श्लिष्टोक्ति–(सं. स्त्री.) श्लेषयुक्त वाक्य या कथन।
श्लीपद–(सं. पुं.) फीलपाँव नामक रोग।
श्लील–(सं.वि.)शुभ, मंगलदायक, उत्तम।
श्लेष–(सं. पुं.) संयोग, मिलान, जोड़, आलिंगन, वह अलंकार जिसमें दो या अनेक अर्थोंवाले शब्द हों अथवा वे अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुए हों; **–क**–(वि.) जोड़नेवाला, मिलानेवाला; **–ण**–(पुं.) संयुक्त करना, मिलाना, आलिंगन।
श्लेषा–(सं. स्त्री.) आलिंगन, भेंट।
श्लेषोपमा–(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमान और उपमेय दोनों पर घटते है।
श्लेष्मल–(सं. पुं.) लिसोड़ा।
श्लेष्मा–(सं. पु.) कफ।
श्लैष्मिक–(सं. वि.) श्लेष्मा-सम्बन्धी।
श्लोक–(सं. पुं.) पद्य, कविता, अनुष्टुप् छन्द, यश, प्रसिद्धि, कीर्ति, शब्द, ध्वनि, स्तुति, प्रशंसा, पुकार, आह्वान; **–कृत्**–(पुं.) श्लोक बनानेवाला; **–त्व**–(पुं.) श्लोक का भाव।
श्वक–(सं. पुं.) वृक, भेड़िया।
श्वक्रीडी–(सं. पुं.) कुत्तों के साथ खेलनेवाला।
श्वजीविका–(सं. स्त्री.) दासत्व-वृत्ति।
श्वन्–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता।
श्वपच–(सं.पुं.) चाण्डाल, डोम, कुत्ते का मांस खानेवाला मनुष्य।
श्वपति–(सं. पुं.) किरात-वेषधारी रुद्र का अनुचर।
श्वपाक–(सं. पुं.) चाण्डाल, व्याध।
श्वफल–(सं. पुं.) बिजौरा नीबू।
श्वफल्क–(सं.पु.) विष्णुपुत्र, अक्रूर के पिता।
श्वभीरु–(सं. पुं.) श्रृगाल, सियार।
श्वभ्र–(सं. पुं.) एक नरक का नाम, दरार, छेद।
श्वशुर–(सं. पुं.) पति या पत्नी का पिता, ससुर, पूज्य व्यक्ति।
श्वश्रू–(सं. स्त्री.) पति या पत्नी की माता, सास।
श्वसन–(सं. पुं.) साँस लेना, हाँफना, आह भरना, मैनफल, मदन वृक्ष।
श्वसनाशन–(सं. पुं.) सर्प, साँप।
श्वस्तन–(सं.पुं.) आनेवाला दूसरा दिन।
श्वान–(सं. पुं.) कुक्कुर, कुत्ता, छप्पय छन्द का एक भेद।
श्वास–(सं. पुं.) प्राणवायु, साँस, दम, दमे का रोग, जल्दी-जल्दी साँस लेना, हाँफना; **–कास**–(पुं.) दमा, खाँसी; **–रोध**–(पुं.) दम घुटना।
श्वासा–(हि. स्त्री.) साँस, दम, प्राण।
श्वासोच्छ्वास–(सं. पुं.) वेग से साँस खीचना और बाहर निकालना।
श्वेत–(सं. पुं.) चाँदी, सफेद रंग, कौड़ी, शंख, सफेद जीरा, सफेद घोड़ा, सफेद वराह, एक द्वीप का नाम, सफेद बादल; (वि.) सफेद, उजला; **–कंद**–(पुं.)प्याज; **–कुंजर**–(पुं.)सफेद हाथी, ऐरावत; **–कुष्ठ**–(पुं.) सफेद दागवाला कोढ़; **–कृष्ण**–(वि.)सफेद और काला; (पुं.) एक बात और दूसरी बात; **–केतु**–(पुं.) उद्दालक ऋषि के पुत्र का नाम; **–केश**–(पुं.) सफेद बाल; **–गज**–(पुं.) ऐरावत हाथी; **–गरुत्**–(पुं.) राजहंस; **–च्छद**–(पुं.) वनतुलसी, हंस; **–ता**–(स्त्री.) सफेदी; **–द्युति**–(पुं.) चन्द्रमा; **–द्वीप**–(पुं.) पुराणानुसार एक द्वीप का नाम; **–धातु**–(स्त्री.) खड़िया; **–धामा**–(पुं.) चन्द्रमा, कपूर; **–नील**–(पुं.) बादल; **–पक्ष**–(पुं.) हंस; **–प्रदर**–(पुं.) वह रोग जिसमें स्त्रियों की योनि से सफेद स्राव होता है; **–फला**–(स्त्री.) सफेद भंटा; **–भानु**–(पुं.) चन्द्रमा; **–मयूख**–(पुं.) चन्द्रमा; **–रत्न**–(पुं.) स्फटिक; **–रश्मि**–(पुं.) चन्द्रमा; **–रस**–(पुं.) मक्खन; **–वाराह**–(पुं.) ब्रह्मा की सृष्टि के आदि-युग का प्रथम कल्प; **–वाहन**–(पुं.) चन्द्रमा, अर्जुन।
श्वेतांबर–(सं. पुं.) सफेद वस्त्र, जैनों के एक सम्प्रदाय का नाम।
श्वेता–(सं. स्त्री.) कौड़ी, वंशलोचन, फिटकिरी, चीनी, शक्कर, मिस्री, सफेद घुंघची; (वि. स्त्री.) सफेद रंगवाली।
श्वेताद्रि–(सं. पुं.) कैलास पर्वत।
श्वेताश्वतर–(सं. पुं.) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

ष

ष संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में इकतीसवाँ अक्षर, (इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है। इसी से यह मूर्धन्य कहलाता है); (सं. पुं.) केश, ध्वंस, नाश, अवशेष, निर्वाण, मुक्ति, स्वर्ग; (वि.) उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर।
षंजन–(सं. पुं.) आलिंगन, समागम।
षंड–(सं. पुं.) वृषभ, साँड़, क्लीव, नपुंसक,

हिजड़ा, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
षंडता–(सं. स्त्री.) नपुंसकता, क्लीवता।
षंडत्व–(सं. पुं.) हिजड़ापन।
षंड(ढ)योनि–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो पुरुष-समागम के अयोग्य हो।
षट्–(सं. वि.) गिनती में छः; (पुं.) ६ की संख्या, षाड़व जाति का एक राग।
षट्कर्म–(सं. पुं.) ब्राह्मणों के छः प्रकार के कर्म, यथा–यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह।
षट्कला–(सं. स्त्री.) संगीत में ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक।
षट्कार–(सं. पुं.) षट् शब्द का उच्चारण।
षट्कोण–(सं. पुं.) छः कोनों की आकृति, वज्र, हीरा; (वि.) छपहला।
षट्चक्र–(सं. पुं.) हठ-योग के अनुसार कुंडलिनी के ऊपर के ६ चक्र, षड्यंत्र।
षट्चरण–(सं.पुं.) भ्रमर, भौंरा, खटमल; (वि.) छः पैरोंवाला।
षट्ताल–(सं. पुं.) मृदंग का एक ताल जो आठ मात्राओं का होता है।
षट्तिला–(सं. स्त्री.) माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम।
षट्पद–(सं. वि.) छः पैरोंवाला; **–प्रिय**–(पुं.) पद्म, कमल।
षट्पदा–(सं. स्त्री.) भ्रमरी, भौंरी, खटमल।
षट्पदी–(सं. वि. स्त्री.) छः परोंवाली; (स्त्री.) भ्रमरी, भौंरी, छप्पय नामक छन्द।
षट्पाद–(सं. पुं.) छः पैरोंवाला एक प्रकार का कीड़ा।
षट्प्रज्ञ–(सं. पुं.) व्यभिचारी, लंपट।
षट्मुख–(सं. पुं.) कार्तिकेय।
षट्रस–(सं. पुं.) छः प्रकार का रस या स्वाद, षड्रस।
षट्राग–(सं. पुं.) संगीत के छः राग, यथा–भैरव, मल्लार, श्री, हिंडोल, मालकोश और दीपक-बखेड़ा।
षट्रिपु–(सं. पुं.) देखें 'षड्रिपु'।
षट्वांग–(सं. पुं.) खट्वांग नामक राजर्षि जिनको दो घड़ी की साधना से मुक्ति मिली थी।
षट्शास्त्र–(सं. पुं.) हिन्दुओं के छः दर्शन, षड्दर्शन।
षट्शास्त्री–(सं. पुं.) छः दर्शनों का ज्ञाता।
षडंग–(सं. पुं.) शरीर के छः अवयव, यथा–दो जाँघें, दो बाहुएँ, मस्तक और छाती, वेद के अंगभूत छः शास्त्र, यथा–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द, तन्त्रानुसार हृदयादि षड्वयव, यथा–हृदय, मस्तक, शिखा, कवच, नेत्र और करतल-पृष्ठ, छः प्रकार के योगांग, यथा–प्रत्याहार, ध्यान, प्राणायाम, धारणा, तर्क और समाधि।
षडंगी–(हिं. वि.) छः अंगोंवाला।
षडंश–(सं. पुं.) छः भागों में से एक भाग।
षडक्ष–(सं. वि.) छः आँखोंवाला।
षडक्षर–(सं. वि.) छः अक्षरों से युक्त।
षडग्नि–(सं. स्त्री.) कर्मकाण्ड के अनुसार छः प्रकार की अग्नियाँ, यथा–गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, आवसथ्य, सभ्याग्नि और औपासनाग्नि।
षडश्व–(सं. पुं.) छः घोड़ों की गाड़ी या रथ।
षडस्र–(सं. वि.) जिसमें छः कोने हों।
षडात्मा–(सं. पुं.) अग्नि।
षडानन–(सं. वि.) छः मुखोंवाला; (पुं.) कार्तिकेय।
षड्ग–(सं. पुं.) देखें 'षड्ज'।
षड्गुण–(सं. पुं.) छः गुणों का समूह; *यथा–ऐश्वर्य, ज्ञान, यश, श्री, वैराग्य और धर्म*; (वि.) जिसमें छः गुण हों।
षड्ज–(सं. पुं.) संगीत के सात स्वरों में चौथा स्वर जो मयूर के स्वर से मिलता-जुलता माना जाता है।
षड्दर्शन–(सं. पुं.) हिंदुओं के छः दर्शन-शास्त्र; *यथा*–न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त, मीमांसा और योग।
षड्दर्शनी–(सं. पुं.) छः दर्शनों को जाननेवाला ज्ञानी।
षड्भाव–(सं. पुं.) दर्शन के अनुसार छः पदार्थ; यथा–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय; ज्योतिष मत से छः भाव; यथा–लज्जित, गर्वित, क्षुधित, तृषित, मुदित और शोभित।
षड्भुजा–(सं.स्त्री.) खरबूजा, दुर्गा की मूर्ति का भेद।
षड्यंत्र–(सं. पुं.) किसी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से कोई अनिष्ट-कार्य करना, भीतरी चाल, कपटपूर्ण आयोजन, कुचक्र।
षड्रस–(सं. पुं.) छः प्रकार का स्वाद या रस; यथा–मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय।
षड्रिपु–(सं. पुं.) काम, क्रोध, लोभ, मद और मात्सर्य–ये छः मनोविकार।
षड्वक्त्र–(सं. पुं.) षडानन, कार्तिकेय।
षड्वर्ग–(सं. पुं.) छः वस्तुओं का समूह।
षड्विकार–(सं.पु.) प्राणी के छः विकार; यथा–उत्पत्ति, वृद्धि, बाल्यावस्था, प्रौढ़ता, वृद्धता और मृत्यु।
षड्विंदु–(सं. पु.) एक प्रकार का कीड़ा जिसकी पीठ पर छः बिंदियाँ होती हैं।
षण्मास–(सं. पुं.) छः महीना, आधा वर्ष।
षण्मासिक–(सं.वि.) छः महीनों में होनेवाला, अर्ध-वार्षिक।
षण्मुख–(सं. पुं.) षडानन, कार्तिकेय।
षष्ट–(सं. वि.) छः संख्या का, साठवाँ (समास में)।
षष्टि–(सं. वि., स्त्री.) साठ (की संख्या)।
षष्टिक–(सं. पुं.) साठी धान।
षष्टिका–(सं. स्त्री.) साठी धान।
षष्टितंत्र–(सं. पुं.) सांख्य शास्त्र जिसमें साठ पदार्थों का विचार किया गया है।
षष्टिविद्या–(सं. स्त्री.) सांख्य विद्या।
षष्ठ–(सं. वि.) जिसका स्थान पाँच के उपरान्त हो, छठा।
षष्ठक–(सं. वि.) छठा।
षष्ठांश–(सं. पुं.) छठा भाग।
षष्ठिका–(सं. स्त्री.) षष्ठी देवी।
षष्ठी–(सं. स्त्री.) किसी मास की शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि, कात्यायनी, सोलह मातृकाओं में से एक जो छोटे बालकों का प्रतिपालन करती है, दुर्गा, व्याकरण में संबंध-कारक की विभक्ति।
षष्ठीप्रिय–(सं. पुं.) स्कन्द, कार्तिकेय।
षाडव–(सं. पुं.) एक राग का नाम।
षाण्मातुर–(सं.पुं.) कार्तिकेय जो कृत्तिकादि छः स्त्रियों का स्तनपान करके पले थे।
षाण्मासिक–(सं. वि.) छठवें महीने में होनेवाला, छमाही।
षादतर–(सं. पुं.) संगीत में वह बनावटी सप्तक जो मंद्र से नीचे का होता है।
षाष्ठ–(सं. वि.) षष्ठ, छठा।
षाष्ठिक–(सं. वि.) षष्ठी-संबंधी।
षुष्ठपु–(सं. पुं.) गर्भ-विमोचन।
षोडश–(सं. वि.) सोलहवाँ; (पुं.) सोलह की संख्या।
षोडशकल–(सं.वि.) जिसमें सोलह अंश या कलाएँ हों।
षोडश-कला–(सं.पुं.,स्त्री.) चन्द्रमा, विष्णु की एक विराट मूर्ति।
षोडशगण–(सं. पुं.) पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय, पंचभूत तथा मन का समूह।
षोडशदान–(सं. पुं.) श्राद्धादि के समय किये जानेवाले सोलह प्रकार के दान; यथा–भूमि, आसन, जल, वस्त्र, दीप, अन्न, ताम्बूल, छत्र, गन्ध, माला, फल, शय्या, खड़ाऊँ, गाय, सोना और चाँदी।
षोडशपूजन–(सं.पु.) देखें 'षोडशोपचार'।
षोडशभुजा–(सं. स्त्री.) सोलह हाथोंवाली दुर्गा।

षोडशमातृका–(सं.स्त्री.) देवियाँ जो संख्या में सोलह मानी गई हैं, यथा–गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, लक्ष्मी, शान्ति, पुष्टि, धृति, तुष्टि और आत्मदेवता।
षोडशविधि–(सं. वि.) सोलह प्रकार का।
षोडशशृंगार–(सं. पुं.) पूर्ण शृंगार जो सोलह अंगों का होता है।
षोडशसंस्कार–(सं. पुं.) गर्भाधान से मृतक-कर्म तक के सोलह संस्कार जो द्विजातियों के लिये शास्त्र में कहे गये हैं।
षोडशांशु–(सं. पुं.) शुक्र ग्रह।
शोडशार–(सं. पुं.) वेदी के ऊपर बनाया जानेवाला चक्र विशेष।
षोडशिका–(सं. स्त्री.) एक प्राचीन परिमाण जो प्रायः सोलह माशे का होता था।
षोडशी–(सं. वि. स्त्री.) सोलह वर्ष की स्त्री, नवयौवना स्त्री, दस महाविद्याओं में से एक।
षोडशोपचार–(सं. पुं.) पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह हैं, यथा–आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, यज्ञोपवीत, स्नान, वसन, आभरण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, चन्दन और नैवेद्य।
ष्ठीवन–(सं. पुं.) थूकना।
ष्ठीवी–(सं.स्त्री.) थूक।
ष्ठ्यूत–(सं. वि.) थूका हुआ।

स

स–हिन्दी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है; (सं. पुं.) ईश्वर, शिव, विष्णु, सर्प, पक्षी, चन्द्रमा, वायु, जीवात्मा, कान्ति, ज्ञान, चिन्ता, संगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर; (उप.) सह, समान, वही आदि अर्थों में उपसर्ग की तरह भी प्रयुक्त होता है।
सं–(सं. उप.) इसका व्यवहार संगति, समानता, शोभा आदि सूचित करने के लिये होता है; यथा–संताप, संयोग आदि।
सँइतना–(हिं. क्रि. स.) लीपना, पोतना, संचय करना, सहेजना।
सँउपना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सौंपना'।
संक–(हिं. स्त्री.) देखें 'शंका'।
संकट–(सं. वि.) संकीर्ण, घनीभूत, तंग, एकत्रित, अभेद्य; (पुं.) विपत्ति, दुःख, कष्ट; –चतुर्थी–(स्त्री.) श्रावण कृष्णा चतुर्थी; –चौथ–(हिं. स्त्री.) माघ कृष्णा चतुर्थी।
संकटा–(सं. स्त्री.) एक देवी का नाम, ज्योतिष के अनुसार एक योगिनी का नाम।
संकत–(हिं. पुं.) देखें 'संकेत'।
संकना–(हिं. क्रि. अ.) शंका करना, सन्देह करना।
संकर–(सं. पुं.) मिश्रित होने का भाव, मिश्रण, दोगला, वर्णसंकर जाति; (हिं. पुं.) देखें 'शंकर'।
संकरता–(सं.स्त्री.) मिलावट, वर्णसंकरता।
संकर-घरनी–(हिं. स्त्री.) पार्वती।
सँकरा–(हिं. वि.) जो अधिक चौड़ा न हो, तंग; (पुं.) कष्ट, आपत्ति।
सँकराना–(हिं. क्रि. स.) संकुचित करना, कष्ट देना।
संकर्षण–(सं. पुं.) आकर्षण, खिंचाव।
संकल–(हिं. स्त्री.) सिकड़ी।
संकलन–(सं. पुं.) संग्रह, ढेर, एकत्रीकरण, अच्छे विषयों को चुनकर ग्रंथ बनाना।
संकलित–(सं. वि.) संकलन किया हुआ।
संकल्प–(सं. पुं.) विचार, दृढ़ निश्चय या उद्देश्य।
संकल्पना, संकलपना–(हिं. क्रि. अ., स.) किसी बात का दृढ़ निश्चय करना, धार्मिक उद्देश्य से कुछ दान देना, विचार करना।
संकष्ट–(हिं. पुं.) संकट।
सँकाना–(हिं. क्रि. अ.) शंका करना, डरना।
संकार–(हिं. पुं.) संकेत।
संकारना–(हिं. क्रि. स.) संकेत करना।
संकाश–(सं. वि., अव्य.) सदृश, समीप, निकट।
संकीण–(सं. पुं.) संकट, विपत्ति, वह राग या रागिनी जो दो दूसरे राग या रागिनियों के मेल से बनी हो; (वि.) अपवित्र, संकुचित, सँकरा, तुच्छ, नीच, शूद्र।
संकीर्णता–(सं. स्त्री.) क्षुद्रता, ओछापन, तंगी।
संकीर्तन–(सं. पुं.) गाकर भगवद्-भजन करना।
संकुचन–(सं. पुं.) सिकुड़ना।
संकुचित–(सं. वि.) सिकुड़ा या सिमटा हुआ।
संकुल–(सं.पुं.) युद्ध, समूह, झुण्ड; (वि.) घना।
संकुलता–(सं.स्त्री.) घनापन, परिपर्णता।
संकुलित–(सं. वि.) एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ।
संकेत–(सं. पुं.) इंगित, शृंगारपूर्ण चेष्टा, चिह्न।
संकेतना–(हिं. क्रि. स.) संकट में डालना।
संकोच–(सं. पुं.) सिकुड़ना, सहमना, लज्जा, हिचक, कमी।
संकोचन–(स. पुं.) सिकुड़ने की क्रिया, हिचक, लज्जा।
सँकोचना–(हिं. क्रि. अ., स.) संकुचित करना, संकोच करना।
संकोचित–(सं. वि.) लज्जित।
संकोची–(सं. वि., पुं.) संकोच या लज्जा करनेवाला, सिकुड़नेवाला।
संकोपना–(हिं. क्रि. अ.) क्रोध करना।
संक्रंदन–(सं. पुं.) शक्र, इन्द्र।
संक्रम–(सं.पुं.) प्राप्ति, संक्रान्ति, कठिनता से आगे बढ़ने की क्रिया, सेतु, पुल, उपाय।
संक्रमण–(सं. पुं.) संक्रांति, अतिक्रमण, गमन, घूमना-फिरना, सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना।
संक्रमणिका–(सं.स्त्री.) सीढ़ियों की पंक्ति।
संक्रमित–(सं. वि.) दूसरी राशि में प्रविष्ट (सूर्य), स्थापित, प्रतिबिंबित।
संक्रांत–(सं. वि.) युक्त, प्रविष्ट, संचारित, व्याप्त, प्रतिबिम्बित, एक राशि से दूसरी राशि में प्रविष्ट (सूर्य, ग्रह आदि।)
संक्रांति–(सं. स्त्री.) संचार, गमन, सूर्य का एक राशि से दूसरी में जाना, व्याप्ति, प्रतिबिंब।
संक्रामक–(सं. वि.) संसर्ग या छूत से फैलनेवाला (रोग, यथा-प्लेग, महामारी आदि।)
संक्षय–(सं. पुं.) नाश, क्षय।
संक्षिप्त–(सं. वि.) संक्षेप किया हुआ, अल्प, थोड़ा।
संक्षिप्त-लिपि–(सं. स्त्री.) वह सांकेतिक लेखन-प्रणाली जिसमें विशेष ध्वनियों के लिए छोटे-छोटे चिह्न निरूपित रहते हैं।
संक्षुब्ध–(सं. वि.) व्याकुल, घबड़ाया हुआ।
संक्षेप–(सं. पुं.) थोड़े में बहुत बात कहना, कम करना, घटाना, छोटा रूप, सारांश।
संक्षेपण–(सं. पुं.) संक्षेप करने की क्रिया।
संक्षेपतः–(सं. अव्य.) संक्षेप में, थोड़े में।
संक्षोभ–(सं. पुं.) चंचलता, गर्व, घमंड।
संक्षेपतया–(सं. अव्य.) संक्षेप में, थोड़े में, सारांश के रुप में।
संख–(हिं. पुं.) देखें 'राख'।
संखनारी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
संखा–(हिं. पुं.) चक्की के ऊपरी पाट में लगी हुई लकड़ी।

संखार–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
संखिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार की वहुत विषैली उपधातु या पत्थर, इससे वनाया हुआ भस्म जो औषध में प्रयुक्त होता है।
संख्या–(सं. स्त्री.) गणना, गिनती, अंक; **–लिपि**–(स्त्री.) लिखने की विशिष्ट प्रणाली जिसमें अक्षरों की जगह अंक लिखते हैं।
संख्यात–(सं. वि.) गिना हुआ।
संख्येय–(सं. वि.) जो गिना जा सके, गणनीय।
संग–(फा. पुं.) पत्थर, चट्टान; **–मरमर**, **–मर्मर**–(पुं.) इमारतों में काम आनेवाला चिकना, चमकीला और मूल्यवान् पत्थर।
संग–(सं. पुं.) साथ होना, संसर्ग, सहवास, संवंध, मिलने की क्रिया; (हिं. अव्य.) साथ, सहित।
संगठन–(हिं. पुं.) अलग-अलग शक्तियों, लोगों, अंगों आदि को इस प्रकार एक में मिलाना कि उनमें एकतावद्ध शक्ति आ जाय, संघटन, ठोस व्यवस्था।
संगठित–(हिं. वि.) संगठन किया हुआ।
संगत–(सं. पुं.) संगति, मैथुन, संसर्ग; (हिं. स्त्री.) गाने के साथ वाजा वजाना, उदासी सावुओं का मठ; (वि.) उपयुक्त, सामंजस्ययुक्त।
संगतरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मीठी नारंगी, संतरा।
संगति–(सं. स्त्री.) संगम, मेल, संवंध, उपयुक्तता, सामंजस्य।
संगतिया–(हिं. पुं.) वह जो नाचने या गानेवाले के साथ रहकर तवला, सारंगी आदि वजाता है, साथी।
संगती–(हिं. पुं.) देखें 'संगतिया'।
संगम–(सं. पुं.) दो नदियों का मिलन, मिलाप, सम्मेलन।
संगल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का रेशम।
संगसी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सँड़सी'।
संगाती–(हिं. पुं.) साथी, संगी, मित्र, दोस्त।
संगिनी–(सं. स्त्री.) भार्या, पत्नी, साथ की सखी।
संगी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
संगी–(सं. पुं.) साथी, मित्र, दोस्त; (वि.) साथ रहनेवाला, आसक्त, कामुक।
संगीत–(सं. पुं.) गाना, गायन, नृत्य आदि-कलाएँ; **–वेश्म-, शाला**–(पुं.) संगीत-भवन; **–शास्त्र**–(पुं.) संगीत-विद्या या कला।
संगीन–(फा. वि.) पत्थर का वना हुआ, सख्त, मजवूत।
संगीनी–(फा. स्त्री.) मजवूती।
संगृहीत–(सं. वि.) संग्रह किया हुआ।
संगोतरा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की नारंगी, संतरा।
संगोपन–(सं. पुं.) गुप्त रखना, छिपाना।
संगोपित–(सं. वि.) छिपाया हुआ।
संग्रह–(सं. पुं.) एकत्र करने की क्रिया, वह ग्रन्थ जिसमें चुने हुए लेख आदि एकत्र किये गये हों, संकलन, संयम, जमघट, जमाव, सभा, स्वीकार, स्त्री-प्रसंग, सूची।
संग्रहण–(सं. पुं.) देखें 'संग्रह'।
संग्रहणी–(सं. स्त्री.) एक रोग जिसमें भोजन किये हुये पदार्थ का पाचन नहीं होता और वह अपक्व मल के रूप में निकल जाता है।
संग्रहालय–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ प्राचीन काल की वस्तुओं का संग्रह हो।
संग्रही–(सं. पुं.) संग्रह करनेवाला।
संग्रहीता–(सं. पुं.) देखें 'संग्रही'।
संग्राम–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई।
संग्राही–(सं. पुं.) मल का अवरोध करनेवाला पदार्थ।
संघ–(सं. पुं.) समुदाय, दल, सभा, समाज।
संघटन–(सं. पुं.) संयोग, मेल, निर्माण, रचना, संगठन।
संघटित–(सं. वि.) एकत्र किया हुआ, व्यवस्थित, संगठित।
संघर्ष–(सं. पुं.) रगड़, घर्षण, मर्दन, स्पर्धा।
संघर्षी–(सं. वि.) संघर्ष करनेवाला।
संघात–(सं. पुं.) समूह, जमाव, आघात, चोट, एक नरक का नाम।
संघातक–(सं. वि.) प्राण लेनेवाला।
संघाती–(सं. पुं.) प्राणनाशक।
संघाती, सँघाती–(हिं. पुं.) साथी, दोस्त।
संचय–(सं. पुं.) संग्रह, समूह, ढेर, वहुतायत, एकत्र करना।
संचयी–(सं. वि.) संचय करनेवाला, कृपण, कंजूस।
संचर, संचरण–(सं. पुं.) गमन, चलना, संक्रमण।
संचरित–(सं. वि.) प्रस्थित, प्रचलित।
संचल–(सं. पुं.) साँभर नमक।
संचलन–(सं. पुं.) हिलना, डोलना, चलना, फिरना, काँपना।
संचार–(सं. पुं.) गमन, चलना, रोग का संक्रमण, फैलने की क्रिया या भाव, उत्तेजन, कष्ट, विपत्ति, ग्रहों या नक्षत्रों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।
संचारक–(सं. पुं.) चलानेवाला, ले जानेवाला, संचार करनेवाला।
संचारण–(सं. पुं.) प्रसारण, फैलाव।
संचारिका–(सं. स्त्री.) कुटनी, दूती।
संचारित–(सं. वि.) चलाया या फैलाया हुआ।
संचारी–(सं. पुं.) संगीत-शास्त्र के अनुसार गीत के चार चरणों में से तीसरा चरण, वायु, हवा, साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं; (वि.) संचार करनेवाला, संक्रामक।
संचाल–(सं. पुं.) कंपन, चलना।
संचालक–(सं. वि., पुं.) गति देने या चलानेवाला।
संचालन–(सं. पुं.) चलाना, गति देना।
संचालित–(सं. वि.) चलाया हुआ।
संचित–(सं. वि.) संचय किया हुआ, ढेर लगाया हुआ।
संजन–(सं. पुं.) वन्धन, संघटन।
संजय–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक मंत्री का नाम; (स्त्री.) विजय।
संजल्प–(सं. पुं.) वार्तालाप, वातचीत।
संजात–(सं. वि.) प्राप्त, उत्पन्न।
संजीव–(सं. पुं.) पुनः जीवित करनेवाला।
संजीवनी–(सं. स्त्री.) जीवनदायिनी औषधि, मरे हुए लोगों को जिलाने की विद्या।
संजुता–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छंद।
संजोग–(हिं. पुं.) देखें 'संयोग'।
संजोगी–(हिं. पुं.) भार्या के साथ रहनेवाला पुरुष।
सँजोना–(हिं. क्रि. स.) सुसज्जित करना, सजाना।
संजोह–(हिं. पुं.) लकड़ी का वह चौखटा जिसको जुलाहे वुनते समय छत से लटका देते हैं।
संज्ञ–(सं. वि.) जो सव विषयों को अच्छी तरह जानता हो।
संज्ञा–(सं. स्त्री.) चेतना, ज्ञान, वुद्धि, संकेत, गायत्री, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी वस्तु का वोध होता है, नाम, सूर्य की पत्नी का नाम।
संज्ञान–(सं. पुं.) वोध, ज्ञान, संकेत।
संज्ञापन–(सं. पुं.) विज्ञापन, कथन।
संज्ञाहीन–(सं. वि.) अचेत, वेसुध।
संज्वर–(सं. पुं.) अधिक ताप या ज्वर।
सँझवाती–(हिं. स्त्री.) संध्या के समय जलाने का दीपक, संध्या के समय गाया जानेवाला गीत; (वि.) संध्या-संवंधी।

संज्ञा–(हिं.स्त्री.) संध्या, सूर्यास्त का समय।
सँझिया–(हिं. पुं.) संध्या का भोजन।
सँठ–(हिं. पुं.) चुप्पी, शठ, धूर्त, नीच।
संड–(हिं. पुं.) साँड़; **–मुसंड**–(वि.) हट्टा-कट्टा।
सँड़सा–(हिं. पुं.) गरम लोहे को पकड़ने का लोहार का एक औजार।
सँड़सी–(हिं. स्त्री.) छोटा सँड़सा।
संडा–(हिं. वि.) हृष्टपुष्ट।
संडास–(हिं. पुं.) कुएँ की तरह का गहरा गड्ढा, शौचकूप।
संत–(सं. पुं.) साधु, धर्मात्मा, महात्मा।
संतति–(सं. स्त्री.) संतान, फैलाव, विस्तार, अविच्छिन्नता।
संतप्त–(सं. वि.) श्रान्त, थका हुआ, जला हुआ, दुःखी, पीड़ित।
संतरण–(सं. वि.) पार करनेवाला, तारक, नष्ट करनेवाला; (पुं.) पार करने की क्रिया।
संतरा–(हिं. पुं.) बड़ी नारंगी।
संतरी–(हिं. पुं.) पहरा देनेवाला सिपाही, द्वारपाल, पहरेदार।
संतर्जन–(सं.पुं.) डराना, धमकाना, भगाना।
संतर्पक–(सं. वि.) तृप्त करनेवाला।
संतर्पण–(सं. पुं.) तृप्त करना।
संतर्पित–(सं. वि.) तृप्त किया हुआ।
संतान–(सं. पुं.) कल्प वृक्ष, बाल-बच्चे, वंश, कुल, विस्तार, प्रवन्ध, व्याप्ति।
संतानिका–(सं. स्त्री.) छुरी या चाकू का फल, मलाई, साढ़ी।
संताप–(सं. पुं.) अग्नि या धूप का ताप, जलन, कष्ट, दुःख, दाह, रोग, ज्वर, शत्रु।
संतापन–(सं. पुं.) कामदेव के पाँच बाणों में से एक, कष्ट देना; (वि.) कष्ट देनेवाला।
संतापी–(सं. वि.) दुःख या सन्ताप देनेवाला।
संतुष्ट–(सं. वि.) जिसकी तृप्ति हो गई हो, तृप्त।
संतोष–(सं. पुं.) चित्त की वह वृत्ति जिसमें मनुष्य अपनी वर्तमान दशा में सुख का अनुभव करता है, शान्ति, तृप्ति, प्रसन्नता, हर्ष।
संतोषण–(सं. पुं.) संतोष, तृप्ति, संतुष्ट करने की क्रिया।
संतोषणीय–(सं. वि.) संतुष्ट करने योग्य।
संतोषना–(हि.क्रि.स.) संतोष दिलाना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना।
संतोषी–(सं. वि.) संतुष्ट।
संदंश–(सं. पुं.) सँड़सा, सँड़सी।
संदर्प–(सं. पुं.) अभिमान।
संदर्भ–(सं. पुं.) रचना, प्रबंध, संग्रह, विस्तार, निबंध, ग्रंथ की टीका, व्याख्यात्मक पूर्व-संबंध।
संदर्शन–(सं. पुं.) अच्छी तरह देखने की क्रिया।
संदल–(अ. पुं.) चंदन।
संदली–(अ. वि.) चंदन का।
संदान–(सं. पुं.) शृंखला, सिकड़ी, रस्सी।
संदिग्ध–(सं. वि.) संदेहयुक्त; (पुं.) एक प्रकार का व्यंग्य।
संदिग्धत्व–(सं. पुं.) सन्देह, भाव-अभिव्यक्ति का वह दोष जिसमें किसी उक्ति का ठीक-ठीक अर्थ प्रकट नहीं होता।
संदिग्धमति–(सं.वि.) संदेह करनेवाला।
संदिग्धार्थ–(सं. पुं.) वह विषय जो विवादास्पद हो।
संदिष्ट–(सं. पुं.) वार्तालाप, समाचार; (वि.) कथित, कहा हुआ।
संदीपक–(सं. वि.) उद्दीपक, उद्दीपन करनेवाला।
संदीपन–(सं.पुं.) उद्दीप्त करने की क्रिया।
संदीपनी–(सं. स्त्री.) संगीत में पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी श्रुति।
संदीपित–(सं. वि.) प्रज्वलित, जलाया हुआ।
संदूक–(अ. पुं.) पेटी, बकस।
संदेश–(सं. पुं.) संवाद, समाचार, एक प्रकार की बँगला मिठाई।
संदेशहर–(सं.पुं.) समाचार ले जानेवाला।
सं (सँ) देसा–(हिं. पुं.) समाचार।
संदेह–(सं. पुं.) संशय, द्विधाभाव, शक, अनिश्चय।
संदोल–(सं. वि.) सुंदर हिंडोला, कर्ण-फूल नामक आभूषण।
संदोह–(सं. पुं.) समूह, झुण्ड।
संधा–(सं. स्त्री.) स्थिति, प्रतिज्ञा, अनुसन्धान, मिलन।
संधान–(सं.पुं.) संघटन, योजन, अन्वेषण, खोज, सन्धि, मेल।
संधानिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का आम का अचार।
संधानी–(सं. स्त्री.) मदिरा बनाने का स्थान, संयोजन, बंधन, प्राप्ति, पालन।
संधि–(सं. स्त्री.) आपस का मेल, एक राजा का विपक्षी राजा के साथ विशिष्ट शर्तों पर मैत्री-भाव स्थापित करना, शरीर की हड्डियों का जोड़, संयोग, संघटन, भेद, साधन, संयुक्त शब्दों में दो वर्णों का एक में मिलना।
संधिचौर–(सं. पुं.) सेंध लगाकर चोरी करनेवाला।
संधिजीवक–(सं. पुं.) कुटना।
संधितस्कर–(सं. पुं.) सेंध लगाकर चोरी करनेवाला।
संधिनी–(सं. स्त्री.) गाभिन गाय, वह गाय जो बछवे के विना दूध देती हो।
संधिपूजा–(सं. स्त्री.) देवी की वह पूजा जो महाष्टमी और महानवमी की सन्धि में होती है।
संधि-बंधन–(सं. पुं.) शिरा, नस।
संधिभंग–(सं. पुं.) शरीर के किसी जोड़ का टूटना।
संधिराग–(सं. पुं.) सिन्दूर।
संधिवेला–(सं. स्त्री.) संध्या का समय।
संध्या–(सं. स्त्री) दिन के अवसान का समय, साँझ, उपासना जो दिन के तीनों संधि-कालों में (सुबह, दोपहर और शाम) की जाती है; **–काल**–(पुं.) सन्ध्योपासन करने का समय, साँझ।
संयस्त–(सं. वि.) देखें 'सन्यस्त'।
संयास–(सं. पुं.) देखें 'सन्यास'।
संयासी–(सं. वि., पुं.) देखें 'सन्यासी'।
संपत्ति–(सं. स्त्री.) ऐश्वर्य, धन, शोभा, गौरव, अधिकता, लाभ, प्राप्ति, सफलता।
संपद्–(सं. स्त्री) संपत्ति, ऐश्वर्य विभव, सौभाग्य, गौरव, अधिकता।
संपदा–(हिं. स्त्री.) धन, ऐश्वर्य।
संपन्न–(सं. वि.) साधित, पूरा किया हुआ, संपत्तिशाली; **–ता**–(स्त्री.) संपूर्णता।
संपर्क–(सं. पुं.) मिश्रण, मिलावट, संयोग, मिलाप, संसर्ग, लगाव, स्पर्श, योग, जोड़।
संपाक–(सं. पुं.) अच्छी तरह पचना।
संपाचन–(सं. पुं.) देखें 'संपाक'।
संपाट–(सं. पुं.) किसी त्रिभुज की बढ़ाई हुई भुजा पर गिरनेवाला लंब।
संपाठ्य–(सं.वि.) अच्छी तरह पढ़ने योग्य।
संपात–(सं. पुं.) एक साथ गिरना, प्रवेश, संगम, मिलने का स्थान, घटित होना।
संपाति–(सं. पुं.) जटायु के बड़े भाई का नाम।
संपादक–(सं.पुं.) सम्पन्न करनेवाला, किसी काम को पूरा करनेवाला, समाचार-पत्र या पुस्तक का संशोधन, संकलन आदि करनेवाला।
संपादकीय–(सं. वि.) संपादक-संबंधी।
संपादन–(सं. पुं.) प्रस्तुत करना, बनाना, ठीक करना, पुस्तक आदि को सुधार कर प्रकाशित होने के योग्य बनाना।
संपादनीय–(सं. वि.) संपादन करने योग्य।

संपादित–(सं. वि.) निष्पन्न, पूरा किया हुआ, संपादन किया हुआ।
संपाद्य–(सं. वि.) संपादन करने योग्य; (पुं.) ज्यामिति-शास्त्र की बनावट-संबंधी प्रतिज्ञा।
संपादी–(सं. वि.) पूरा करनेवाला।
संपीडन–(सं. पुं.) खूब पीड़ा देना, खब दबाना या निचोड़ना।
संपुट–(सं. पुं.) पात्र के आकार की वह वस्तु जिसमें कुछ भरने के लिये स्थान हो, दोना, डिब्बा, अंजलि।
संपुटी–(सं. स्त्री.) छोटा संपुट, कटोरी।
संपूजन–(सं. पुं.) भली भाँति पूजन करना।
संपूजित–(सं. वि.) अधिक सम्मान के योग्य।
संपूर्ण–(सं. वि.) पूरा, भरा हुआ, पूर्ण, पूरा किया हुआ; (पुं.) वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों; **–कालीन**–(वि.) पूरे समय तक रहनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) समाप्ति, संपूर्ण होने का भाव।
सपेरा–(हिं. पुं.) साँप का तमाशा दिखानेवाला, मदारी।
सँपोलिया–(हिं. पुं.) साँप पकड़नेवाला।
संप्रकाशक–(सं. वि.) अच्छी तरह प्रकाशित करनेवाला।
संप्रक्षालन–(सं. पुं.) पूरी तरह से धोना।
संप्रति–(सं. अव्य.) इस समय, अभी, ठीक तरह से।
संप्रतिपत्ति–(सं. स्त्री.) अभियुक्त का न्यायालय में सच्ची बात स्वीकार करना, पहुँच, प्राप्ति।
संप्रतिपन्न–(सं. वि.) स्वीकृत, मंजूर।
संप्रतिपादन–(सं. पुं.) पूरा करना।
संप्रतिरोधक–(सं. वि.) प्रतिबन्धक।
संप्रतीक्ष्य–(सं. वि.) भली भाँति देखने योग्य।
संप्रतीति–(सं. स्त्री.) प्रसिद्धि।
संप्रदान–(सं. पुं.) दान देने की क्रिया या भाव, वह वस्तु जिसका दान किया जाता है, दीक्षा, भेंट, व्याकरण में चतुर्थी विभक्ति-युक्त वह शब्द जिसके साथ "को" या "के लिये" प्रयुक्त होता है।
संप्रदाय–(सं. पुं.) गुरु परंपरागत उपदेश, गुरुमंत्र, धर्म-संबंधी कोई विशेष मत, मार्ग, पन्थ, रीति।
संप्रदायी–(सं. वि., पुं.) मतावलम्बी, दाता, सिद्ध करनेवाला।
संप्रधारण–(सं. पुं.) उचित-अनुचित का विचार।
संप्रमाद–(सं. पुं.) मोह, भ्रान्ति।
संप्रमुक्ति–(सं. स्त्री.) मोक्ष, छुटकारा।
संप्रयास–(सं. पुं.) अधिक प्रयास।
संप्रयुक्त–(सं. वि.) एक साथ किया हुआ, जोड़ा हुआ, संबद्ध, मिला हुआ।
संप्रयोग–(सं. पुं.) मेल, मिलाप, मैथुन, वशीकरण।
संप्रयोगी–(सं. पुं.) कामुक, लंपट; (वि.) संप्रयोग करनेवाला।
संप्रवृत्त–(सं. वि.) आरंभ किया हुआ।
संप्रसाद–(सं. पुं.) योगशास्त्र के अनुसार चित्त की पूर्ण शांति।
संप्रस्थित–(सं. वि.) जो प्रस्थान कर चुका हो।
संप्रहर्ष–(सं. पुं.) अत्यधिक प्रसन्नता।
संप्रहार–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई, गमन।
संप्राप्त–(सं. वि.) प्राप्त, पाया हुआ, उपस्थित, पहुँचा हुआ, कहा हुआ।
संप्रिय–(सं. वि.) अधिक प्यारा।
संप्रीति–(सं. स्त्री.) संतोष, हर्ष।
संप्रेक्षण–(सं. पुं.) अच्छी तरह देखना।
संप्रोक्षण–(सं. पुं.) अच्छी तरह पानी छिड़कना।
संप्लुत–(सं. वि.) जल में डूबा हुआ।
संबंध–(सं. पुं.) समृद्धि, उन्नति, गहरी मित्रता, संसर्ग, संपर्क, लगाव, एक साथ मिलना या जुटना, नाता, संयोग, मेल, विवाह, योग्यता, उपयुक्तता, व्याकरण में वह कारक जिसमें "का, की या के" विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं।
संबंधातिशयोक्ति–(सं. स्त्री.) अति-शयोक्ति अलंकार का वह भेद जिसमें असंबंध में संबंध दिखलाया जाता है।
संबंधी–(सं. पुं.) नातेदार, जिसके साथ विवाह के कारण संबंध हुआ हो, समधी।
संबद्ध–(सं. वि.) बँधा हुआ, संबंधयुक्त।
संबल–(सं. पुं.) सेमल का वृक्ष, रास्ते का भोजन, संखिया।
संबाध–(सं. पुं.) संकट, बाधा, अड़चन; (वि.) संकुल, पूर्ण, भीड़ से भरा हुआ।
संबाधक–(सं. वि.) बाधा पहुँचानेवाला।
संबुद्ध–(सं. पुं.) ज्ञानी, पूर्ण रूप से जाना हुआ।
संबोध–(सं. पुं.) ज्ञान, पूरा बोध, धैर्य, ढाढ़स, सांत्वना।
संबोधन–(सं. पुं.) पुकारना, नींद से उठाना, जगाना, जताना, समझाना, व्याकरण में वह कारक जिसका प्रयोग किसी को पुकारने के लिये किया जाता है।
संभक्ष–(सं. पुं.) साथ-साथ भोजन करना।
संभग्न–(सं. वि.) पूर्णतः या बिलकुल टूटा हुआ, छिन्न-भिन्न।
संभय–(सं. पुं.) अधिक डर।
संभरण–(सं. पुं.) पालन-पोषण, विधान, तैयारी।
संभल–(सं. पुं.) घटक, दलाल।
सँभलना–(हिं. क्रि. अ.) टिका रहना, रुकना, काबू में रहना, सचेत होना, बुरी अवस्था को सुधार लेना, चंगा होना।
संभव–(सं. पुं.) हेतु, कारण, जन्म, उत्पत्ति, प्रमाण का एक होना, घटित होना प्रसंग, समाई, समागम, मेल, उपयुक्तता, युक्ति, संभावना, संकेत; (वि.) जो हो सके, जो हो।
संभवतः–(सं. अव्य.) हो सकता है, शायद।
संभवनीय–(सं. वि.) जो हो सकता हो।
सँभाल–(हिं. स्त्री.) रक्षा, प्रबन्ध, चेतना, पोषण का भार।
सँभालना–(हिं. क्रि. स.) रक्षा करना, गिरने से बचाना, रोकना, थामना, सहेजना, निर्वाह करना, दशा बिगड़ने से बचाना, प्रबन्ध करना, पालन-पोषण करना।
संभावन–(सं. पुं.) पूजा, सत्कार, आदर, चिन्ता, योग्यता, कल्पना, संपादन, मान, प्रतिष्ठा, संभव होना।
संभावना–(सं. स्त्री.) देखें 'संभावन'।
संभावनीय–(सं. वि.) संभावन के योग्य, सत्कार करने योग्य।
संभावित–(सं. वि.) विख्यात, प्रसिद्ध, मन में लाया हुआ, जो हो सकता हो।
संभाषण–(सं. पुं.) कथोपकथन, बात-चीत।
संभाषणीय–(सं. वि.) सम्भाषण करने योग्य।
संभु–(हिं. पुं.) देखें 'शंभु'।
संभूत–(सं. वि.) उत्पन्न, उपयुक्त।
संभूति–(सं. स्त्री.) क्षमता, शक्ति, जन्म, उत्पत्ति, उपयुक्तता।
संभृत–(सं. वि.) हृष्टपुष्ट, पाया हुआ, दिया हुआ, भरा हुआ, बनाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ, युक्त, सहित।
संभृतश्री–(सं. स्त्री.) मेघ, बादल।
संभृतांग–(सं वि.) हृष्टपुष्ट।
संभृति–(सं. स्त्री.) अच्छी तरह पालन-पोषण, समूह, अधिकता।
संभेद–(सं. पुं.) वियोग।
संभोग–(सं. पुं.) किसी वस्तु का भली भाँति उपभोग, सुरत, मैथुन, रति-क्रीड़ा, हर्ष, वह शृंगार जिसमें नायक और नायिका परस्पर दर्शन, स्पर्शादि द्वारा अनुरक्त होकर एक-दूसरे के साथ प्रेम का आनंद लेते हैं।

संभोगी–(सं. वि., पुं.) संभोग करनेवाला।
संभोजन–(सं. पुं.) एक साथ बैठकर भोजन करना।
संभ्रम–(सं. पुं.) डर से उत्पन्न व्याकुलता, आवेग, भ्रांति, भूल, चक्कर, आतुरता, उतावलापन, उत्कंठा।
संभ्रांत–(सं. वि.) उद्विग्न, घबड़ाया हुआ, घुमाया हुआ, चक्कर खाया हुआ।
संभ्रांति–(सं. स्त्री.) उद्वेग, घबड़ाहट, चकपकाहट, हड़बड़ी।
संयंत्रित–(सं.वि.) बँधा हुआ, जकड़ा हुआ।
संयत्–(सं. वि.) संवद्ध, लगा हुआ।
संयत–(सं. वि.) बँधा हुआ, जकड़ा हुआ, वंद किया हुआ, व्यवस्थित, जिसने इन्द्रियों और मन को वश में किया हो, उद्यत, नियंत्रित; (पुं.) यति, संन्यासी।
संयताहार–(सं. वि.) थोड़ा खानेवाला।
संयति–(सं. स्त्री.) निरोध, वश में रखना।
संयम–(सं. पुं.) वन्धन, वश में करने की क्रिया या भाव, नियंत्रण, हानिकारक वस्तुओं से बचना, उद्योग, प्रयत्न।
संयमन–(सं. पुं.) आत्मनिग्रह, मन को वश में रखना, इन्द्रियों का दमन, नियंत्रण।
संयमनी–(सं. स्त्री.) यम की नगरी।
संयमित–(सं. वि.) दमन किया हुआ, बँधा हुआ, वश में लाया हुआ, नियंत्रित।
संयमी–(स. वि., पुं.) आत्मनिग्रही, योगी।
संयात–(सं. वि.) प्राप्त, पहुँचा हुआ।
संयान–(सं. पुं.) यात्रा, प्रस्थान।
संयुक्त–(सं. वि.) लगा हुआ, मिला हुआ, सवद्ध।
संयुक्ता–(सं. स्त्री.) आवर्तकी लता, एक प्रकार का छन्द।
संयुग–(सं.पुं.) युद्ध, लड़ाई, संयोग, भिड़ंत।
संयुत–(सं. वि.) संयुक्त, जुड़ा हुआ; (पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
संयोग–(सं. पुं.) दो वस्तुओं का एक में मिलना, मिलान, मिलाप, समागम, शृंगार-रस का एक भेद, सम्वन्ध, स्त्री-पुरुष का सहवास, विवाह-सम्वन्ध, मतो का एक होना, दो या अधिक व्यञ्जन वर्णो का मेल, जोड़, अप्रत्याशित अवसर; **–मंत्र**–(पुं.) विवाह के समय पढ़ा जानेवाला वेद-मन्त्र।
संयोगित–(सं. वि.) संयोग किया हुआ।
संयोगी–(सं. वि.) संयोग करनेवाला, मिलानेवाला, विवाहित, जो अपनी प्रिया के साथ हो।
संयोगी–(हिं. पुं.) वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद।
संयोजक–(सं. वि.) मिलानेवाला, जोड़नेवाला; (पुं.) व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या उपवाक्यों को जोड़ता है।
संयोजन–(सं. पुं.) स्त्रीप्रसंग, मैथुन, जोड़ने या मिलाने की क्रिया, देखें 'संयोजना'।
संयोजना–(सं. स्त्री.) प्रबन्ध, व्यवस्था, प्रसंग, सहवास, भववन्धन का कारण, देखें 'संयोजन'।
संयोजित–(सं. वि.) मिलाया हुआ।
संरंभ–(सं. पुं.) क्रोध, उत्साह, उत्कण्ठा, आडम्वर, गर्व, आरम्भ, युद्ध, लड़ाई।
संरक्त–(सं.वि.) अनुरक्त, आसक्त, कुपित।
संरक्षक–(सं. पुं., वि.) रक्षा करनेवाला, पालन-पोषण करनेवाला, सहायक, आश्रय देनेवाला।
संरक्षण–(सं. पुं.) देखरेख, प्रतिवन्ध, रक्षा।
संरक्षणीय–(सं. वि.) संरक्षण करने योग्य।
संरक्षित–(सं. वि.) संरक्षण किया हुआ।
संरब्ध–(सं. वि.) खूव मिला हुआ, उत्तेजित, उद्विग्न, क्रुद्ध, फूला या सूजा हुआ।
संरुद्ध–(सं. वि.) अच्छी तरह भरा हुआ, आच्छादित, ढपा हुआ।
संरूढ़–(सं. वि.) अच्छी तरह लगा हुआ।
संरोध–(सं. पुं.) अवरोध, वाधा।
संरोधन–(सं. पुं.) रुकावट डालना, हद बाँधना, वंद करना।
संरोपित–(सं.वि.) जमाया या लगाया हुआ।
संलक्षित–(सं. वि.) लक्षणों से जाना हुआ, पहचाना हुआ।
संलक्ष्य–(सं. वि.) वह जो लक्षित हो सके; **–क्रमव्यंग्य**–(पुं.) वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ के निकलने का भाव व्यक्त होता है।
संलग्न–(सं. वि.) संयुक्त, मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
संलपन–(सं. पुं.) संलाप, वातचीत।
संलयन–(सं. पु.) लीन होना, नष्ट होना।
संलाप–(सं. पु.) आपस की वातचीत, नाटक में एक प्रकार का संवाद जो धैर्यपूर्ण होता है।
संलापक–(सं. वि.) संलाप करनेवाला।
संलिप्त–(सं.वि.) अच्छी तरह लिपटा हुआ।
संलीन–(सं. वि.) पूर्णतः लीन, आच्छादित, सिकुड़ा हुआ।
संवत्–(सं. पुं.) संवत्सर, वर्ष, वर्ष-गणना जो किसी संख्या द्वारा सूचित की जाती है, विक्रम-संवत्।
संवदना–(सं. स्त्री.) मन्त्र, औषधि आदि से किसी को वश में करने की क्रिया।
सँवर–(हिं. स्त्री.) स्मृति, स्मरण, याद, समाचार।
संवरण–(सं.पुं.) छिपाव, ढपना, परदा, घेरा, सेतु, पुल, चुनाव, कुरु के पिता का नाम।
संवरणीय–(सं.वि.) निवारण करने योग्य, छिपाने योग्य, वरण करने योग्य।
सँवरना–(हिं.क्रि.अ.) अलंकृत होना, सजना।
संवरित–(सं. वि.) गोपित, छिपाया हुआ।
सँवरिया–(हिं.वि.) देखें 'साँवला'; (पुं.) कृष्ण।
संवर्ग–(सं. पुं.) एक वस्तु का दूसरे में लीन होना, खपत, गुणनफल।
संवर्जन–(सं. पुं.) छीनना, खसोटना।
संवर्त–(सं. पुं.) लपेटने की क्रिया या भाव, घुमाव, चक्कर, एक कल्प का नाम, समूह, राशि, ग्रहों का योग, बहेड़े का वृक्ष।
संवर्तक–(सं. वि.) लपेटनेवाला, नाश करनेवाला।
संवर्तन–(सं. पुं.) फेरा या चक्कर देना, लपेटना।
संवर्तनी–(सं. स्त्री.) प्रलय।
संवर्तिका–(सं. स्त्री.) लपेटी हुई वस्तु, वलराम का अस्त्र।
संवर्धक–(सं. वि.) संवर्धन करनेवाला।
संवर्धन–(सं. पुं.) वढ़ाना, पालना, पोसना, उन्नत करना, बढ़ना।
संवर्धनीय–(सं. वि.) वढ़ाने या पालने-पोसने योग्य, संवर्धन के योग्य।
संवर्धित–(सं. वि.) बढ़ाया हुआ, पाला-पोसा हुआ।
संवलन–(सं. पुं.) संयोग, मेल-मिलाप।
संवलित–(सं.वि.) मिलाया हुआ, घिरा हुआ।
संवहन–(सं. पुं.) वहन करना, ले जाना।
संवाद–(सं. पु.) सन्देश, समाचार, वातचीत, वृत्तान्त, प्रसंग, चर्चा, सहमति, नियुक्ति, व्यवहार।
संवादक–(सं. पुं.) भाषण करनेवाला।
संवादन–(सं. पु.) भाषण, वातचीत।
संवादिका–(सं. स्त्री.) कीड़ा, चीटी।
संवादित–(सं. वि.) वोलने में प्रवृत्त किया हुआ, मनाया हुआ।
संवादिता–(सं. स्त्री.) सादृश्य, समानता।
संवादी–(सं. वि.) संवाद करनेवाला, सहमत होनेवाला, अनुकूल होनेवाला; (पुं.) संगीत में वह स्वर जो वादी के साथ मिल जाता और उसका सहायक होता है।
संवार–(सं. पुं.) आच्छादन, ढाँपना, छिपाना, वाधा, अड़चन।
संवारण–(सं. पुं.) निषेध, छिपाना।

संवारणीय–(सं. वि.) छिपाने योग्य, धारण करने योग्य।
सँवारना–(हि. क्रि. स.) अलंकृत करना, सजाना, क्रम से रखना, ठीक करना।
संवारित–(सं. वि.) रोका हुआ, मना किया हुआ।
संवार्य–(सं.वि.) रोकने योग्य, छिपाने योग्य।
संवास–(सं. पुं.) सभा, समाज, परस्पर सम्बन्ध, सहवास, मैथुन, सार्वजनिक स्थान।
संवाह–(सं. पुं.) ले जाना, ढोना, शरीर दबाना।
संवाहक–(सं. पुं.) ढोनेवाला, बदन मलनेवाला।
संवाहन–(सं. पुं.) अंगमर्दन, हाथ-पैर दबाना, ले जाना, पहुँचाना, ढोना।
संवाहित–(सं. वि.) पहुँचाया हुआ, ढोया हुआ, जिसका अंग मर्दन किया गया हो।
संवाही–(सं. वि., पुं.) हाथ-पैर दबानेवाला, ढोनेवाला, पहुँचानेवाला।
संविग्न–(सं.वि.) घबड़ाया हुआ, डरा हुआ।
संवित्–(सं. स्त्री.) अंगीकार, युद्ध, लड़ाई, संकेत, वुद्धि, नियम, प्राप्ति।
संविद्–(सं. वि.) चेतनायुक्त; (स्त्री.) समझौता, देखें 'संवित्'।
संविदा–(सं. स्त्री.) व्यवस्था, व्यवहार, विचित्रता, घटना, रहन-सहन, ठहराव।
संविदित–(सं. वि.) जाना या समझाया हुआ, ढूँढ़ा हुआ, वादा किया हुआ, जिसको राय या परामर्श दिया हुआ हो।
संविधान–(सं.पुं.) व्यवस्था, रीति, योजना, विधान, किसी राष्ट्र की शासन-व्यवस्था के लिए विधितः बनाये गये आधारभूत नियमों का संग्रह।
संविभजन–(सं. पुं.) देखें 'संविभाग'।
संविभाग–(सं. पुं.) बाँट, बँटवारा, भाग।
संविष्ट–(सं. वि.) निविष्ट, बैठा हुआ, आगत, पहुँचा हुआ।
संवीक्षण–(सं. पुं.) अन्वेषण, खोज।
संवीत–(सं. वि.) अलंकृत, ढपा हुआ; (पुं.) पहनावा, वस्त्र।
संवृत–(सं. वि.) आच्छादित, ढपा हुआ, रक्षित, लपेटा हुआ, रूँधा हुआ; –कोष्ठ–(वि.) बद्धकोष्ठ; –मंत्र–(पुं.) गुप्त मन्त्रणा।
संवृत्त–(सं. वि.) उपस्थित, समागत, पहुँचा हुआ, उत्पन्न।
संवृद्ध–(सं. वि.) बढ़ा हुआ, उन्नत।
संवेग–(सं. पुं.) आवेग, घबड़ाहट, भय।
संवेजन–(सं. पुं.) उद्विग्नता, घबड़ाहट।
संवेद–(सं.पुं.) अनुभव, वेदना, ज्ञान, बोध।
संवेदन(ना)–(सं. पुं., स्त्री.) अनुभव करना, प्रकट करना, जताना।
संवेदनीय–(सं.वि.) अनुभव करने योग्य, जताने योग्य।
संवेदित–(सं. वि.) अनुभव किया हुआ, प्रतीत, जताया हुआ।
संवेद्य–(सं. वि.) अनुभव करने योग्य, प्रतीति कराने योग्य, जताने योग्य।
संवेश–(सं. पुं.) निद्रा, नींद, उपवेशन, आसन, शय्या, प्रवेश, घुसना, उपभोग, स्थान।
संवेशक–(सं.पुं., वि.) व्यवस्थित करनेवाला।
संवेशन–(सं.पुं.) प्रवेश करना, व्यवस्था, सोना।
संवेष्ट–(सं. वि.) वेष्टित, घिरा हुआ।
संशप्त–(सं. वि.) वाग्बद्ध, जिसने शपथ-पूर्वक प्रतिज्ञा की हो।
संशब्द–(सं. पुं.) प्रशंसा, स्तुति, ललकार।
संशमन–(सं. पुं.) शान्त करना, निवृत्त करना, नष्ट करना, न रहने देना।
संशय–(सं. पुं.) सन्देह, आशंका, सन्देह-नामक काव्यालंकार; –स्थ–(वि.) सन्देहयुक्त।
संशयाक्षेप–(सं. पुं.) सन्देह का दूर होना।
संशयात्मक–(सं. वि.) सन्देहजनक।
संशयान–(सं. वि.) संशययुक्त।
संशयालु–(सं. वि.) संशय या सन्देह करनेवाला।
संशयित–(सं. वि.) संदिग्ध, दुविधा में पड़ा हुआ, अनिश्चित।
संशयी–(सं.वि.) सन्देह करनेवाला, शक्की।
संशयोपमा–(सं. स्त्री.) वह उपमालंकार जिसमें कई वस्तुओं की समानता संशय के रूप में कही जाती है।
संशयित–(सं. वि.) सन्दिग्ध, अनिश्चित।
संशरण–(सं. पुं.) शरण में जाना।
संशासन–(सं. पुं.) उत्तम राज्य-प्रबंध।
संशित–(सं. वि.) निर्णीत, स्थिर किया हुआ, दक्ष, निपुण, सम्पूर्ण, पूरा।
संशिष्ट–(सं. वि.) बचा हुआ, बाकी।
संशीत–(सं. वि.) ठंड से जमा हुआ।
संशुद्ध–(सं. वि.) विशुद्ध, परीक्षित, अपराध से मुक्त किया हुआ।
संशुद्धि–(सं. वि.) पूरी सफाई, शुद्धि।
संशोधक–(सं. वि.) संशोधन करनेवाला, संस्कार करनेवाला, चुकानेवाला।
संशोधन–(सं.पुं.) शुद्ध करना, त्रुटि या दोष दूर करना, ऋण आदि को चुकता करना।
संशोधनीय–(सं. वि.) सुधारने योग्य।
संशोधित–(सं. वि.) परिष्कृत, निर्मल किया हुआ, सुधारा या ठीक किया हुआ।
संशोषण–(सं. पुं.) सोखना, सुखाना।
संशोषित–(सं. वि.) सोखा हुआ।
संश्रय–(सं. पुं.) आश्रय, शरण, संयोग, समागम, अवलम्बन, सहारा, उद्देश्य, लक्ष्य, ठहरने का स्थान।
संश्रयण–(सं. पुं.) अवलम्ब, पनाह।
संश्रयणीय–(सं. वि.) सहारा लेने योग्य।
संश्रयी–(सं.वि., पुं.) सहारा लेनेवाला, नौकर
संश्रव–(सं. पुं.) अंगीकार, अस्वीकार, प्रतिज्ञा।
संश्रवण–(सं. पुं.) खूब कान लगाकर सुनना, अंगीकार।
संश्रांत–(सं. वि.) बिलकुल थका हुआ।
संश्रावक–(सं.पुं.) श्रोता, सुननेवाला, शिष्य।
संश्रित–(सं. वि.) संयुक्त, जुटा हुआ, आलिंगित, टँगा हुआ, ठहरा हुआ।
संश्रुत–(सं. वि.) स्वीकृत, अंगीकार किया हुआ, अच्छी तरह सुना हुआ।
संश्रुत्य–(सं. पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
संश्लिष्ट–(सं. वि.) आलिंगित, सम्मिलित, मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त; (पुं.) राशि, ढेर, एक प्रकार का मण्डप।
संश्लेष–(सं. पुं.) आलिंगन, परिरम्भण, मेल-मिलाप, संयुक्त करना।
संश्लेषण–(सं.पुं.) मिलाना, सटना, मिलना।
संश्लेषित–(सं. वि.) आलिंगित, संयुक्त, सटाया हुआ।
संश्लेषी–(सं. पुं.) आलिंगन करनेवाला।
संस, संसइ–(हि. पुं.) देखें 'संशय'।
संसक्त–(सं. वि.) संबद्ध, लगा हुआ, जड़ा हुआ, आसक्त, प्रेम में फँसा हुआ, प्रवृत्त, लगा हुआ।
संसक्ति–(सं. स्त्री.) आसक्ति, प्रवृत्ति, लगाव, परमाणुओं की परस्पर मिलने की शक्ति।
संसनाना–(हि.क्रि.अ.) देखें 'सनसनाना'।
संसय–(हि. पुं.) देखें 'संशय'।
संसरण–(सं. पुं.) गमन, चलना, राजपथ, चौड़ी सड़क, लड़ाई छिड़ना, संसार, जगत्, यात्रियों के ठहरने का स्थान।
संसर्ग–(सं. पुं.) सम्बन्ध, संपर्क, लगाव, न्याय के अनुसार समवाय-संबंध, सहवास, समागम, परिचय, घनिष्ठता; –दोष–(पुं.) बुरी संगत से उत्पन्न अवगुण या दोष; –विद्या–(स्त्री.) व्यवहार-कुशलता।
संसर्गाभाव–(सं. पु.) संबंध का न होना।
संसर्गी–(सं. पु.) साथी, मित्र; (स्त्री.)

शुद्धि; (वि.) संसर्ग-संबंधी, संवद्ध।
संसर्जन–(सं. पुं.) संयोग होना, मिलना, जुटना, त्याग करना, छोड़ना, हटाना।
संसर्पण–(सं.पुं.) धीरे-धीरे चलना, रेंगना, सरकना, एकाएक आक्रमण करना।
संसर्पी–(सं.वि.) सरकनेवाला, रेंगनेवाला।
संसाद–(सं. पुं.) सभा, समाज।
संसादित–(सं. वि.) एकत्र किया हुआ, सजाया हुआ।
संसाधक–(सं. वि.) वश में करनेवाला, संपादन करनेवाला।
संसाधन–(सं. पुं.) आयोजन, वश में करना।
संसार–(सं. पुं.) मर्त्यलोक, जगत्, सृष्टि, गृहस्थी, आवागमन, वारंवार जन्म-मरण होना; **–गुरु**–(पुं.) जगद्‌गुरु, कामदेव; **–चक्र**–(पु.) नाना योनियों में भ्रमण, मायाजाल, प्रपंच, संसार का उलट-फेर; **–तिलक**–(पुं.) एक प्रकार का उत्तम चावल; **–भावन**–(पुं.) संसार को दुःखमय जानना; **–मंडल**–(पुं.) भूमण्डल; **–मार्ग**–(पुं.) स्त्रियों की जननेन्द्रिय; **–सागर**–(पुं.) संसाररूपी समुद्र; **–सारथि**–(पुं.) शिव, महादेव।
संसारी–(सं.वि.) संसार-संबंधी, लौकिक, संसार में रहनेवाला, वारंवार जन्म लेनेवाला, व्यवहारकुशल।
संसिक्त–(सं. वि.) अच्छी तरह सींचा हुआ।
संसिद्ध–(सं. वि.) प्रस्तुत, उद्यत, प्राप्त, अच्छी तरह पका हुआ, निपुण, कुशल।
संसिद्धि–(सं. स्त्री.) किसी कार्य का निष्पन्न या पूर्ण होना, परिणाम, पूर्णता, प्रकृति।
संसी–(हिं. स्त्री.) देखे 'सँड़सी'।
संसुप्त–(सं.वि.) गाढ़ी नींद में सोया हुआ।
संसूचक–(सं. वि.) प्रकट करनेवाला, जतानेवाला, भेद खोलनेवाला।
संसूचित–(सं. वि.) प्रकट किया हुआ, जताया हुआ।
संसूच्य–(सं. वि.) जताने योग्य।
संसृत–(सं. स्त्री.) वारंवार जन्म लेने की परंपरा, आवागमन, भवचक्र, संसार।
संसृष्ट–(सं. वि.) एक साथ उत्पन्न, परस्पर मिला हुआ, अन्तर्गत, संगृहीत, जुटाया हुआ, सम्पन्न किया हुआ, घनिष्ठ; **–होम**–(पुं.) सूर्य और अग्नि को एक ही में दी जानेवाली आहुति।
संसृष्टि–(सं. स्त्री.) एक साथ उत्पत्ति, परस्पर संबंध, लगाव, मिलावट, घनिष्ठता, हेलमेल, दो या अधिक अलंकारों का एक में मिलना, एक ही श्लोक में दो या तीन अलंकारो का होना।
संसेक–(सं. पुं.) अच्छी तरह पानी का छिड़काव।
संसेवन–(सं. पुं.) उपयोग में लाना, व्यवहार करना, सेवा।
संसेविता, संसेवी–(सं.वि.) अच्छी तरह सेवा करनेवाला।
संस्करण–(सं.पुं.) शुद्ध करना, सुधारना, सुन्दर रूप में लाना, पुस्तकों की एक बार की छपाई, द्विजातियो का विवाह-संस्कार।
संस्कर्ता–(सं. पुं.) संस्कार करनेवाला।
संस्कार–(सं.पु.) सुधार, अनुभव, मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन, वे कृत्य जो जन्म से मरण पर्यन्त द्विजातियों के लिये शास्त्र में बतलाये गये है, ये सोलह है, यथा-विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन, आदि; त्रुटि का दूर होना, शुद्धि, पवित्र करना, धारणा, विश्वास, कल्पित विषय, इन्द्रियों पर बाह्य विषयों से पड़नेवाला प्रभाव, पूर्वजन्म का अर्जित गुण-दोष, शिक्षा, उपदेश, संगत आदि से चित्त पर पड़नेवाला प्रभाव, शौच, भूषित करना, सजाना, जीर्णोद्धार; **–क**– (वि.) संस्कार करनेवाला, शुद्ध करनेवाला; **–ज**– (वि.) संस्कार से उत्पन्न; **–वर्जित, –हीन**–(वि.) जिसका संस्कार न हुआ हो, व्रात्य।
संस्कारी–(सं. वि.) संस्कार करनेवाला; (पुं.) सोलह मात्राओं का एक छन्द।
संस्कृत–(सं. पुं.) भारतवर्ष की प्राचीन राष्ट्र-भाषा, देववाणी; (वि.) संस्कार किया हुआ, जिसका उपनयन हुआ हो, मंत्र से पवित्र किया हुआ, अभिषिक्त, सजाया हुआ, पकाया हुआ, शुद्ध किया हुआ।
संस्कृति–(सं. स्त्री.) संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट, सभ्यता, चौबीस वर्णो के वृत्तों की संज्ञा।
संस्क्रिया–(सं. स्त्री.) संस्कार, शोधन।
संस्खलन–(सं. पुं.) भूल करना, चूकना।
संस्खलित–(सं.वि.) गिरा हुआ, भूला हुआ।
संस्तंभ–(सं.पुं.) हाथ-पैर आदि की गति का एकाएक रुक जाना, लकवा।
संस्तर–(सं. पु.) शय्या, विस्तर, तह, परत।
संस्तव–(सं. पुं.) प्रशंसा, स्तुति।
संस्तीर्ण–(स वि.) छितराया या फैलाया हुआ।
संस्तुत–(सं.वि.) प्रशंसित, जिसकी स्तुति की गई हो।
संस्था–(सं. स्त्री.) व्यवस्था, नियम, आकृति, गुण, अन्त, समाप्ति, मृत्यु, नाश, प्रलय, हिंसा, वध, मर्यादा, व्यवसाय, जत्था, मण्डल, समाज, सभा, समुदाय।
संस्थान–(सं. पुं.) स्थिति, ठहराव, प्रबन्ध, आयोजन, ढाँचा, चिह्न, निकटता, चौराहा, रचना, निर्माण, जीवन, पालन, अनुसरण, जनपद, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, आकृति, रूप, प्रकृति, स्वभाव, रोग का लक्षण, नाश, मृत्यु, सामीप्य, पड़ोस।
संस्थापक–(सं. त्रि., पुं.) प्रवर्तक, स्थापित करनेवाला, किसी सभा, समाज आदि की स्थापना करनेवाला; चित्र, खिलौना आदि बनानेवाला।
संस्थापन–(सं.पुं.) स्थापना करना, जमाना, बैठाना, कोई नई बात चलाना, रूप या आकार देना।
संस्थापित–(सं. वि.) निर्मित, बैठाया हुआ, संचित, स्थापित, प्रवर्तित।
संस्थित–(सं. वि.) ठहरा हुआ, जमाया हुआ, बटोरा हुआ, ढेर लगाया हुआ।
संस्थिति–(सं.स्त्री.) स्थित होने की क्रिया या भाव, अस्तित्व, प्रकृति, स्वभाव।
संस्पर्धा–(स. स्त्री.) ईर्ष्या, डाह।
संस्पृष्ट–(सं. वि.) जुटा हुआ, सटा हुआ, छुआ हुआ, परस्पर संबद्ध।
संस्मरण–(सं. पुं.) याद, स्मरण, नाम लेना, स्मृति के आधार पर विगत अनुभवो के विभिन्न विषयों आदि के संबंध में लिखा हुआ ग्रंथ।
संस्मरणीय–(सं. वि.) नाम जपने योग्य।
संस्मरित–(सं. वि.) याद दिलाया हुआ।
संस्रव–(सं. वि.) एक साथ बहना, बहता हुआ जल, किसी वस्तु का बचा हुआ अंश।
संस्रावित–(सं.वि.) बहा हुआ, टपका हुआ।
संहत–(सं. वि.) संयुक्त, एक मे मिला हुआ, घना, गठा हुआ, दृढ़, एकत्र, इकट्ठा, मिश्रित, एकमत।
संहतांजलि–(सं. वि.) करबद्ध, जो हाथ जोड़े हुए हो।
संहति–(सं. स्त्री.) समूह, झुण्ड, मेल, दृढ़ संबंध, ढेर, राशि, घनत्व, ठोसपन, सन्धि, जोड़, परमाणुओं का परस्पर संयोग।
संहनन–(सं. पुं.) शरीर का मर्दन, वध, मार डालना, संयोग, मेल, दृढ़ता।

संहरण–(सं. पुं.) बलपूर्वक छीन लेना।
संहरना–(हि. क्रि. अ., स.) संहार करना, नष्ट होना।
संहर्षण–(सं. पुं.) पुलक, रोयें खड़े होना।
संहात–(सं. पुं.) समूह, जमावड़ा।
संहार–(सं. पुं.) इकट्ठा करना, बटोरना, समेटना, संग्रह, संचय, संक्षेप करना, संकोच, सिकुड़ना, निवारण, रोक, कौशल, निपुणता, ध्वंस, नाश, समाप्ति, अन्त, प्रलय; –क–(वि.) नाश करनेवाला; –काल–(पुं.) विश्व के नाश का समय, प्रलय; –भैरव–(पुं.) कालभैरव।
संहारना–(हि. क्रि. स.) ध्वंस करना, नाश करना, मार डालना।
संहित–(सं. वि.) एकत्र किया हुआ, बटोरा हुआ, मिलाया हुआ, संयुक्त, लगा हुआ।
संहिता–(सं.स्त्री.) वह ग्रन्थ जिसमें नियमों, सिद्धांतों आदि का क्रमबद्ध निरूपण या संकलन किया गया हो, संयोग, मेल, मिलावट, व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का परस्पर मिलकर एक होना, सन्धि, वेदों का मुख्य भाग, धर्म-शास्त्र।
संहृत–(सं. वि.) समेटा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ, नष्ट, संक्षिप्त।
संहृति–(सं. स्त्री.) संग्रह, संक्षेप, नाश।
सइ–(हि. अव्य.) से, साथ; (प्रत्य.) विभक्ति का एक चिह्न जो करण और अपादान कारक में प्रयुक्त होता है।
सइयो–(हि. स्त्री.) देखें 'सखी'।
सई–(हि. स्त्री.) वृद्धि, बढ़ती।
सईस–(हि. पुं.) देखें 'साईस'।
सउँ–(हि. अव्य.) सों, से।
सऊर–(हि. पुं.) देखें 'शऊर'।
सकंटक–(सं. वि.) कण्टकयुक्त, कँटीला।
सकंप–(सं.वि.) कंपायमान, काँपता हुआ।
सक–(हि.स्त्री.) शक्ति; (पुं.) साका, धाक।
सकट–(सं.पुं.) शाखोट का वृक्ष; (हि.पुं.) शकट, गाड़ी, सग्गड़।
सकटी–(हि. स्त्री.) छोटा सग्गड़ या गाड़ी।
सकड़ी–(हि. स्त्री) सिकड़ी।
सकत–(हि. स्त्री.) शक्ति, बल, सामर्थ्य; (अव्य.) यथासंभव, भरसक।
सकती–(हि. स्त्री.) शक्ति, शक्ति नामक अस्त्र।
सकना–(हि. क्रि. अ.) कोई काम करने के योग्य होना, (इस क्रिया का व्यवहार सर्वदा किसी दूसरी क्रिया के साथ ही किया जाता है।)
सकपकाना–(हि. क्रि. अ.) चकपकाना, हिचकिचाना, आगा-पीछा करना, लज्जित होना, (प्रेम, लज्जा या शंका के कारण) व्यग्रता दिखलाना।
सकरना–(हि. क्रि. अ., स.) सकारा जाना, स्वीकृत होना, मान जाना।
सकरा–(हि. वि.) देखें 'सँकरा'।
सकरिया–(हि. स्त्री.) लाल शकरकन्द, रतालू।
सकरुण–(सं. वि.) करुणाशील, दयायुक्त।
सकर्तृक–(सं. वि.) (वाक्य या क्रिया) जिसमें या जिसका कर्ता हो।
सकर्मक–(सं.पुं.) वह क्रिया जिसका कर्म हो; (वि.) कर्मयुक्त; –क्रिया–(स्त्री.) वह क्रिया जिसका प्रभाव उसके कर्म पर समाप्त होता है।
सकल–(सं. वि.) समस्त, अखिल, कुल; (पुं.) दर्शन-शास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवों में से एक, पशु, निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति; –जननी–(स्त्री.) प्रकृति; –प्रिय–(वि.) सब को अच्छा लगनेवाला; –सिद्धि–(वि.) अणिमादि सभी सिद्धियों से युक्त।
सकलाधार–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
सकलेंदु–(सं. पुं.) पूर्ण चन्द्र, पूर्णिमा का चन्द्रमा।
सकलेश्वर–(सं. पुं.) विष्णु।
सकसकाना–(हि. क्रि. अ.) अत्यन्त भयभीत होना, डर के मारे काँपना।
सकसाना–(हि. क्रि. अ.) भयभीत होना, डर मानना।
सकाना–(हि. क्रि. अ.) शंका करना, संदेह करना, दुःखी होना, हिचकना।
सकाम–(सं. वि.) लब्धकाम, जिसकी कामना पूरी हो गई हो, प्रेम करनेवाला, कामी, फल की कामना से कोई काम करनेवाला।
सकामा–(सं. स्त्री.) मैथुन की इच्छा रखनेवाली स्त्री, कामवती स्त्री।
सकामी–(हि. वि.) कामनायुक्त, कामी, विषयी।
सकार–(सं. पुं.) "स" अक्षर।
सकारण–(सं.वि.) हेतुयुक्त, कारण-सहित।
सकारना–(हि. क्रि. स.) स्वीकार करना, (महाजनों का) हुंडी की मिति पूरी होने के एक दिन पहले उसे स्वीकार करते हुए उस पर हस्ताक्षर करना।
सकारविपुला–(सं.स्त्री.) एक छन्द का नाम।
सकाश–(सं. वि.) समीप, निकट।
सकिलना–(हि.क्रि.अ.) सरकना, फिसलना, हो सकना।
सकुच–(हि. स्त्री.) संकोच, लज्जा।
सकुचना–(हि. क्रि. अ.) संकोच करना, लज्जा करना, फूलों का संपुटित होना।
सकुचाई–(हि. स्त्री.) संकोच, लज्जा।
सकुचाना–(हि. क्रि. अ., स.) संकोच करना, सिकोड़ना, लज्जित करना।
सकुची–(हि. स्त्री.) कछुवे के आकार की लंबी और कड़ी पूँछवाली एक प्रकार की मछली, (यह पानी के बाहर भी रह सकती है।)
सकुचीला–(हि. वि.) संकोच करनेवाला।
सकुचौहाँ–(हि. वि.) संकोच करनेवाला।
सकुड़ना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'सिकुड़ना'।
सकुतूहल–(सं. वि.) कौतुकयुक्त।
सकुन–(हि. पुं.) शकुन पक्षी, चिड़िया।
सकुनी–(हि. स्त्री.) चील, चिड़िया।
सकुल्य–(सं. वि.) सगोत्र, एक ही कुल या वंश का।
सकृत्–(सं. अव्य.) एक बार, साथ, सदा।
सकृत्प्रजा–(सं. स्त्री.) बाँझपन, शेरनी।
सकेत–(हि. पुं.) संकेत, निर्दिष्ट स्थान, विपत्ति, कष्ट, दुःख; (वि.) संकीर्ण, संकुचित।
सकेतना–(हि.क्रि.अ.) सिकुड़ना, संकुचित होना।
सकेलना–(हि. क्रि. स.) इकट्ठा करना, जमा करना।
सकोच–(हि. पुं.) देखें 'संकोच'।
सकोड़ना–(हि.क्रि.स.) देखें 'सिकोड़ना'।
सकोप, सकोपित–(सं.,हि.वि.) क्रोधयुक्त।
सकोपना–(हि. क्रि. अ.) क्रोध करना।
सकोरा–(हि. पुं.) मिट्टी का छोटा पात्र, कसोरा।
सकौतुक–(सं. वि.) कौतुकयुक्त।
सक्करी–(हि.स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
सक्ति–(सं.स्त्री.) संग, संयोग; (हि.स्त्री.) देखें 'शक्ति'।
सक्तु–(सं.पुं.) भूने हुए अन्न को पीसकर तैयार किया हुआ आटा, सत्तू।
सक्र–(हि. पुं.) शक्र, इन्द्र; –पति–(पुं.) विष्णु।
सक्रारि–(हि. पुं.) मेघनाद।
सक्रिय–(सं. वि.) क्रियायुक्त, फुर्तीला।
सक्रोध–(सं. पु.) सकोप, क्रोधयुक्त।
सक्षण–(सं. वि.) सावकाश।
सक्षम–(सं. वि.) समर्थ, काम करने योग्य, क्षमायुक्त।
सक्षार–(सं. वि.) क्षारयुक्त, नमकीन।
सख–(हि. पुं.) सखा, मित्र, साथी; –त्व–

(पुं.) मित्रता।
सखरस–(हिं. पुं.) मक्खन।
सखरा–((हिं. वि.) खारा; (पुं.) जल में पकाया हुआ भोजन, कच्ची रसोई।
सखरी–(हिं. स्त्री) कच्ची रसोई।
सखा–(हिं. पुं.) साथी, संगी, सहचर, नाटक में वह व्यक्ति जो सर्वदा नायक के साथ रहता है।
सखित्व–(सं. पुं.) बन्धुता, मित्रता।
सखी–(सं.स्त्री.) सहचरी, सहेली, नाटक में वह स्त्री जो सर्वदा नायिका के साथ रहती है, एक प्रकार का छन्द।
सखीभाव–(सं. पुं.) वैष्णवों का भगवद्-भजन का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने को इष्टदेवता की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना करता है।
सखुआ–(हिं. पुं.) शाल वृक्ष, साखू।
सख्त–(अ. वि.) कठोर, कड़ा, कठिन, कठोर-हृदय।
सख्ती–(अ. स्त्री.) सख्त होने की अवस्था, भाव आदि, कठोरता, कड़ाई, कठिनता।
सख्य–(सं. पुं.) बंधुता, सखा का भाव, मित्रता, वैष्णवों के मत के अनुसार वह भक्ति जिसमें भक्त इष्ट देवता को अपना सखा मानता है;–**ता**–(स्त्री.) मैत्री।
सगंध–(सं. वि.) गंधयुक्त।
सग–(फा. पुं.) कुत्ता; (वि.) सगा।
सगड़ी–(हि. स्त्री.) छोटा सग्गड़।
सगण–(सं. पुं.) छन्दःशास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होता है।
सगन–(हिं. पुं.) देखें 'सगण'।
सगपन–(हिं. पुं.) देखें 'सगापन'
सगपहती, सगपैती–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।
सगबग–(हिं. वि.) तराबोर, लथपथ, परिपूर्ण, भीत।
सगबग(गा)ना–(हिं. क्रि. अ.) लथपथ होना, तराबोर होना, भयभीत होना, जाग्रत होना, घबड़ाना।
सगभत्ता–(हिं.पुं.) साग मिलाकर पकाया हुआ भात।
सगर–(सं. पुं.) एक सूर्यवंशी राजा जो बड़े धर्मात्मा थे, (इनके साठ हजार पुत्र थे। राजा भगीरथ इन्हीं के वंशज थे।)
सगरा–(हिं. वि.) सम्पूर्ण, कुल; (पुं.) तालाब, झील।
सगर्व–(सं.वि.) अभिमानी, अहंकारी
सगल–(हिं. वि.) देखें 'सकल'।
सगा–(हिं.वि.) एक ही माँ-बाप से उत्पन्न, सहोदर, निकट के संबंध का।
सगाई–(हिं. स्त्री.) विवाह-संबंध का निश्चय, मँगनी, शूद्रों में स्त्री-पुरुष का एक प्रकार का विवाह के तुल्य संबंध, संबंध, नाता।
सगापन–(हिं. पुं.) सगा होने का भाव, आत्मीयता।
सगुण–(सं.वि.) गुणयुक्त, गुणवान्; (पुं.) साकार ब्रह्म, वह सम्प्रदाय जिसमें ईश्वर को सगुणरूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।
सगुणता–(सं.स्त्री.) सगुण होने का भाव।
सगुन–(हिं.पुं.,वि.) देखें 'शकुन', 'सगुण'।
सगुनाना–(हिं.क्रि.स.) शकुन बतलाना।
सगुनिया–(हिं. पुं.) शकुन विचारने या बतलानेवाला।
सगुनौती–(हिं. स्त्री.) शकुन विचारने की क्रिया।
सगृह–(सं. वि.) सपरिवार, घरवाला।
सगोती–(हिं.वि.,पुं.) सगोत्र, एक वंश का, नाते के लोग, भाई-बन्धु।
सगौती–(हिं. स्त्री.) खाने का मांस।
सघन–(सं. वि.) अविरल, घना, ठोस; –**ता**–(स्त्री.) सघन होने का भाव, ठोसपन।
सघृण–(सं. वि.) घृणायुक्त।
सच–(हिं.वि.) यथार्थ, वास्तविक, सत्य।
सचन–(सं. पुं.) सेवा करने की क्रिया या भाव।
सचना–(हिं. क्रि. स.) एकत्रित करना, इकट्ठा करना।
सचमुच–(हिं. अव्य.) यथार्थ में, वस्तुतः, निस्सन्देह, निश्चय।
सचरना–(हिं. क्रि. अ.) प्रचलित होना, फैलना, संचार करना।
सचराचर–(सं. पुं.) सब चर और अचर प्राणी।
सचल–(सं. वि.) जंगम, चलायमान, चलनेवाला।
सचाई–(हिं. स्त्री.) सत्यता, सच्चापन, ईमानदारी।
सचान–(सं. पुं.) श्येन पक्षी, बाज।
सचारना–(हिं. क्रि. स.) फैलाना।
सचिंत–(सं. वि.) चिन्तायुक्त, चिन्तित।
सचिक्कण–(सं. वि.) बहुत चिकना।
सचित्–(सं. वि.) जिसको ज्ञान या चेतना हो।
सचित्त–(सं. वि.) जिसका ध्यान किसी एक ओर लगा हो।
सचित्र–(सं. वि.) चित्रयुक्त, चित्रित।
सचिव–(सं. पुं.) मन्त्री, सहायक, मित्र।
सची–(सं. स्त्री.) शची, इन्द्राणी।
सचीसुत–(सं. पुं.) जयन्त।
सचु–(हिं. पुं.) सुख, आनन्द, प्रसन्नता।
सचेत–(हिं. वि.) चेतनायुक्त, समझदार, सावधान।
सचेतन–(सं. वि.) चैतन्य, चतुर; (पुं.) सज्ञान प्राणी।
सचेती–(हिं. स्त्री.) सावधानी।
सचेष्ट–(सं. वि.) चेष्टा या प्रयत्न करनेवाला।
सच्चरित (त्र)–(सं. वि.) जिसका चाल-चलन अच्छा हो।
सच्चा–(हिं. वि.) सत्यवादी, सच बोलनेवाला, ईमानदार, यथार्थ, वास्तविक, विशुद्ध, ठीक।
सच्चाई–(हिं. स्त्री.) सत्यता, सच्चापन, ईमानदारी।
सच्चापन–(हिं. पुं.) सत्यता, सच्चाई।
सच्चाहट–(हिं. स्त्री.) सत्यता, सच्चापन।
सच्चित्–(सं. पुं.) सत् और चित् से युक्त ब्रह्म।
सच्चिदानंद–(सं. पुं.) सत्, ज्ञान और सुखस्वरूप ब्रह्म।
सच्छंद–(हिं. वि.) देखें 'स्वच्छंद'।
सच्छत–(हिं. वि.) घायल।
सच्छाय–(हिं. वि.) छायायुक्त।
सच्छात्र–(सं. पुं.) उत्तम विद्यार्थी।
सच्छी–(हिं. पुं.) साक्षी।
सज–(हिं. स्त्री.) सजने की क्रिया या भाव, रूप, शकल, शोभा, सौंदर्य।
सजग–(हिं. वि.) सतर्क, सावधान।
सजदार–(हिं. वि.) अच्छी आकृति का, सुन्दर।
सजधज, सजबज–(सं. स्त्री.) शृंगार, सजावट।
सजन–(सं. वि.) जनयुक्त; (पुं.) भला आदमी, पति, प्रियतम, यार, आशिक।
सजना–(हिं. क्रि. अ., स.) शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, सुशोभित होना; (पुं.) सहिजन वृक्ष, पति।
सजनी–(हिं. स्त्री.) सखी।
सजन्य–(सं. वि.) सजातीय।
सजल–(सं. वि.) जलयुक्त, अश्रुपूर्ण।
सजवना–(हिं. पुं.) तैयारी।
सजवाई–(हिं. स्त्री.) सजने या सजाने की क्रिया, सजाने का शुल्क।

सजवाना–(हिं. क्रि. स.) सजाने का काम दूसरे से कराना ।
सजा–(फा. पुं.) दंड, जुरमाना, बदला ।
सजाई–(हिं. स्त्री.) सजाने की क्रिया या भाव, सजाने का शुल्क ।
सजागर–(सं. वि.) जाग्रत, जागता हुआ ।
सजाति–(सं. वि., पुं.) एक ही जाति के व्यक्ति, एक जाति का ।
सजातीय–(सं.वि.) एक जाति या गोत्र का।
सजान–(हिं. वि.) सज्ञान, चतुर ।
सजाना–(हिं, क्रि. स.) शृंगार करना, अलंकृत करना, वस्तुओं को व्यवस्थित रूप से रखना ।
सजाव–(हिं. पुं.) मलाईयुक्त दही ।
सजावट–(हिं. स्त्री.) शोभा, तैयारी ।
सजावन–(हिं. पुं.) सजाने का भाव या क्रिया ।
सजीउ–(हिं. वि.) देखें 'सजीव'।
सजीला–(हिं. वि.) सजधज के साथ रहनेवाला, मनोहर, सुन्दर, छैला, सुडौल।
सजीव–(सं. वि.) जीवित, जिसमें प्राण हो, ओजस्वी; (पुं.) जीवधारी प्राणी।
सजीवन–(हिं. पुं.) संजीवनी नामक बूटी; **–बूटी**–(स्त्री.) रुद्रवन्ती; **–मंत्र**–(पुं.) वह मन्त्र जिसके विषय में यह कहा जाता है कि यह मृत प्राणी को जिला देता है ।
सजुग–(हिं. वि.) सचेत, चैतन्य ।
सजुता–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं।
सजूरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई।
सजोना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सजना'।
सज्ज–(सं. वि.) सज्जित, सजा हुआ, कवचधारी; **–ता**–(स्त्री.) सजावट।
सज्जन–(सं. पुं.) सत्पुरुष, भला आदमी, सभ्य व्यक्ति, अच्छे कुल का मनुष्य, प्रियतम, सजाने की क्रिया या भाव; **–ता**–(स्त्री.) भलमनसी; **–ताई**–(हिं. स्त्री.) भलमनसी ।
सज्जा–(सं. स्त्री.) वेशभूषा, सजावट; (हिं. स्त्री.) चारपाई, शय्या ।
सज्जित–(सं. वि.) विभूषित, सजा हुआ ।
सज्जी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का क्षार जो भूरापन लिये सफेद होता है; **–खार**–(पुं.) सज्जी; **–बूटी**–(स्त्री.) एक वनस्पति जिससे सज्जी निकाली जाती है ।
सज्जुता–(हिं. स्त्री.) सजुता नामक छन्द ।
सज्जुष्ट–(सं. वि.) सुखदायक, आनन्द देनेवाला ।
सज्ञान–(सं.वि.) ज्ञानयुक्त, चतुर, बुद्धिमान्।
सज्ञनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का छोटा पक्षी ।
सटक–(हिं. स्त्री.) सटकने की क्रिया, खिसकने की क्रिया, हुक्के में लगा हुआ लंबा नैचा, पतली लचकनेवाली छड़ी ।
सटकना–(हिं. क्रि. अ.) धीरे से भाग जाना, चंपत होना, बालों से अन्न के दाने निकालने के लिये उनको पीटना ।
सटकाना–(हिं. क्रि. स.) किसी को कोड़े, छड़ी आदि से मारना, सट-सट शब्द करते हुए हुक्का पीना ।
सटकार–(हिं. स्त्री.) सटकारने की क्रिया या भाव ।
सटकारना–(हिं. क्रि. स.) किसी लचीली वस्तु से किसी को मारना, झटकारना ।
सटकारा–(हिं. वि.) चिकना और लंबा ।
सटकारी–(हिं.स्त्री.) लचकनेवाली पतली छड़ी ।
सटक्का–(हिं.पुं.) देखें 'सटक', दौड़, झपट।
सटना–(हि.क्रि.अ.) दो वस्तुओं का परस्पर लगना, चिपकना, साथ होना, मिलना ।
सटपट–(हिं. स्त्री.) सटपटाने की क्रिया, चकपकाहट, असमंजस, संकट, दुविधा ।
सटपटाना–(हिं. क्रि. अ.) सटपट की ध्वनि होना, हिचकिचाना, भौचक्का होना ।
सटर-पटर–(हिं. वि.) अत्यंत साधारण, तुच्छ; (स्त्री.) तुच्छ वस्तु, उलझन का काम ।
सटसट–(हिं.अव्य.) सट-सट शब्द के साथ, अति शीघ्र, तुरत ।
सटा–(सं. स्त्री.) जटा, शिखा, केशर ।
सटाक–(हिं. पुं.) सट शब्द ।
सटाकी–(हिं. स्त्री.) छड़ी में लगी हुई चमड़े की पट्टी ।
सटान–(हिं. स्त्री.) सटने की क्रिया या भाव, मिलान ।
सटाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) मिलाना, जोड़ना, मारपीट करना, स्त्री-पुरुष का संयोग होना।
सटिया–(हिं. स्त्री.) सोने या चांदी की एक प्रकार की चूड़ी ।
सटीक–(सं. वि.) टीका या व्याख्या सहित; (हिं. वि.) ठीक, जैसा चाहिये वैसा ।
सट्टक–(सं.पुं.) नाटक का एक भेद जिसमें प्रायः अद्भुत रस का वर्णन रहता है ।
सट्टा–(हिं. पुं.) किसी काम को निश्चित करने के लिये लिखा हुआ प्रतिज्ञापत्र, हाट; **–बट्टा**–(पुं.) हेलमेल, मेलमिलाप।
सट्टी–(हिं. स्त्री.) वह हाट जिसमें फल, तरकारी आदि बिकती है ।
सट्टेबाज–(हिं. पुं.) लाभ की आशा से चीजों का थोक सौदा करना ।
सठ–(हिं.वि.,पुं.) देखें 'शठ', दुष्ट, पाजी ।
सठता–(हिं. स्त्री.) शठता, दुष्टता ।
सठियाना–(हिं.क्रि.अ.) साठ वर्ष का होना, बुड्ढा होना, वृद्धावस्था के कारण विवेक तथा बुद्धि का कम होना ।
सठेरा–(हिं. पुं.) संठा, सनई ।
सड़क–(हिं.स्त्री.) राजमार्ग, मार्ग, रास्ता ।
सड़न–(हिं.स्त्री.) सड़ने का भाव या क्रिया।
सड़ना–(हिं. क्रि. अ.) किसी पदार्थ में दुर्गंधयुक्त विकार होना, दुर्दशा भोगना बुरी अवस्था में पहुँचना, ।
सड़सठ–(हिं. वि.) साठ और सात की संख्या का; (पुं.) वह संख्या जो गिनती में साठ और सात हो, ६७; **–वाँ**–(वि.) गिनती में सड़सठ के स्थान पर होनेवाला।
सड़सी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सँड़सी' ।
सड़ाइँद–(हिं. स्त्री.) सड़ी हुई चीज से निकलनेवाली दुर्गंध ।
सड़ाक–(हिं. पुं.) कोड़े आदि को सटकारने का शब्द; (अव्य.) शीघ्रता के साथ ।
सड़ान–(हिं. स्त्री.) सड़ने की क्रिया ।
सड़ाना–(हिं. क्रि. स.) किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना ।
सड़ायँध–(हिं.स्त्री.) सड़ी हुई वस्तु की दुर्गंध
सड़ाव–(हिं.पुं.) सड़ने की क्रिया या भाव ।
सड़ासड़–(हिं. अव्य.) सड़-सड़ शब्द के साथ ।
सड़ियल–(हिं. वि.) सड़ा या गला हुआ, तुच्छ, नीच ।
सत–(हिं. पुं.) सत्व, किसी पदार्थ का मूल तत्त्व, सार भाग, शक्ति; (वि.) सात का संक्षिप्त रूप, सौ ।
सतकार–(हिं. पुं.) देखें 'सत्कार' ।
सतकारना–(हिं.क्रि.स.) सम्मान करना ।
सतगोठिया–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती है ।
सतगुरु–(हिं. पुं.) अच्छा गुरु, परमात्मा ।
सतजुग–(हिं. पुं.) देखें 'सत्ययुग'।
सतत–(सं. अव्य.) सर्वदा, निरन्तर; **–ग**, **–गति**–(पुं.) वायु, हवा ।
सतदल–(हिं. पुं.) कमल, [illegible] ।
सतनजा–(हिं. पुं.) सात प्रकार के अन्नों का मिश्रण ।
सतनी–(हिं.स्त्री.) [illegible] वृक्ष, [illegible] ।
सतनु–(सं. वि.) शरीरवाला ।
सतपतिया–(हिं. स्त्री.) वह स्त्री जिसने सात पति किये हों, व्यभिचारिणी, [illegible], एक प्रकार की तरोई ।

सतपदी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सप्तपदी'।
सतपुतिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की तरोई जो वर्षा ऋतु में होती है।
सतपुरिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की जंगली मधुमक्खी।
सतफेरा–(हिं. पुं.) विवाह के समय होनेवाला सप्तपदी नामक कृत्य।
सतभइया–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मैना।
सतभाव–(हिं. पुं.) सद्भाव, सज्जनता, सचाई।
सतभौंरी–(हिं. स्त्री.) विवाह के समय वर और कन्या का सात बार अग्नि की प्रदक्षिणा करना।
सतमा(वाँ)सा–(हिं. वि., पुं.) सात महीने गर्भाधान के बाद उत्पन्न होनेवाला (बच्चा), वह रीति जो गर्भाधान के सातवे महीने में की जाती है।
सतमली–(हिं. स्त्री.) शतावरी, सतावर।
सतयुग–(हिं. पुं.) देखें 'सत्ययुग'।
सतरंगा–(हिं. वि.) जिसमें सात रंग हों।
सतरंज–(हिं. स्त्री.) देखें 'शतरंज'।
सतरंजी–(हिं. स्त्री.) देखे 'शतरंजी'।
सतरह–(हिं. वि., पुं.) देखें 'सत्तरह'।
सतराना–(हिं.क्रि.अ.) क्रोध करना, कुढना।
सतरौहाँ–(हिं. वि.) कुपित, क्रोधयुक्त।
सतर्क–(सं. वि.) तर्कयुक्त, सावधान; **–ता**–(स्त्री.) सावधानी।
सतपना–(हिं. क्रि. स.) भली भाँति सन्तुष्ट करना।
सतल–(सं. वि.) तलयुक्त, पेंदीवाला।
सतलज–(हिं. स्त्री.) पंजाब की पाँच प्रसिद्ध नदियों मे से एक, शतद्रु नदी।
सतलड़ा–(हिं. वि., पु.) सात लड़ियों का (हार)।
सतवंती–(हिं. स्त्री.) सती, पतिव्रता स्त्री।
सतशीर्ष–(सं. पुं.) विष्णु का एक नाम।
सतसंग–(हिं. पु.) देखें 'सत्संग'।
सतसंगी–(हिं. वि.) देखें 'सत्संगी'।
सतसई–(हिं. स्त्री.) सात सौ पद्यों का समूह, वह ग्रन्थ जिसमें सात सौ पद्य हों।
सतह–(अ. स्त्री.) तल, भूभाग आदि का ऊपरी स्तर।
सतहत्तर–(हिं. वि.) सत्तर और सात की संख्या का; (पु.) सत्तर और सात की संख्या, ७७; **–वाँ**–(वि.) जो क्रम में सतहत्तर के स्थान पर हो।
सतांग–(हिं. पुं.) रथ, यान।
सतानंद–(हिं. पुं.) गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे, शतानंद।
सतार–(सं. वि.) ताराओं से मंडित।
सतालू–(हिं. पुं.) एक छोटा वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते है, सफतालू।
सतावर–(हिं. स्त्री.) एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ औषधों के काम में आती है, शतावर।
सतासी–(हिं. वि., पुं.) अस्सी और सात (की संख्या), ८७; **–वाँ**–(वि.) जिसका क्रम या स्थान अस्सी और सात पर पड़ता हो।
सति–(सं. स्त्री.) दान।
सतिमिर–(सं. वि.) अन्धकारयुक्त।
सतिल–(सं.वि.) तिलयुक्त, तिल के साथ।
सतिवन–(हिं. पुं.) एक बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसकी छाल दवाओं के काम में आती है, सप्तपर्णी।
सती–(सं. स्त्री.) साध्वी स्त्री, पतिव्रता स्त्री, वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले, दक्ष की कन्या का नाम जो शिव को ब्याही थी, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार अक्षर होते हैं, विश्वामित्र की पत्नी का नाम; **–चौरा**–(हिं. पुं.) वह वेदी या चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक के रूप में बनाया जाता है; **–त्व**–(पुं.) सती होने का भाव; **–०हरण**–(पु.) परस्त्री के साथ बलात्कार; **–पन**–(हिं. पुं.) सती होने का भाव।
सतुआ–(हिं. पुं.) भूने हुए जौ, चने आदि का महीन आटा, सत्तू; **–संक्रांति**–(स्त्री.) मेष-संक्रांति जिस दिन सत्तू दान दिया जाता है।
सतुष–(सं. वि.) भूसी-सहित (अन्न)।
सतृण–(सं. वि.) तृणयुक्त।
सतृष्ण, सतृष–(सं.वि.) पिपासित, प्यासा, अभिलाषी।
सतेज(जा)–(हिं., सं. वि.) तेजस्वी, बलवान्।
सतैरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की मधुमक्खी।
सतोगुण–(हिं. पुं.) देखें 'सत्वगुण'।
सतोगुणी–(हिं. वि.) सात्विक, उत्तम प्रकृति का।
सतौला–(हिं. पुं.) प्रसूता स्त्री का विधिपूर्वक सातवें दिन का स्नान।
सत्–(सं. वि.) सत्ता या अस्तित्व से युक्त, सत्य, शुभ, विद्यमान, चिरस्थायी; (पुं.) ब्रह्म, सत्य।
सत्कथा–(स. स्त्री.) शास्त्र-संबंधी कथा।
सत्करण–(सं. पुं.) सत्कार करना, आदर करना।
सत्कर्म–(सं. पुं.) अच्छा कार्य, पुण्य।
सत्कवि–(सं. पुं.) श्रेष्ठ कवि, सुकवि।
सत्कार–(सं. पु.) आदर, सम्मान, पूजा, आतिथ्य।
सत्कार्य–(सं. पुं.) सत्कर्म, अच्छा काम; (वि.) सत्कार करने योग्य।
सत्कीर्ति–(सं.स्त्री.) उत्तम कीर्ति, सुयश।
सत्कुल–(सं. पुं.) अच्छा कुल; (वि.) अच्छे कुल का, कुलीन।
सत्कृत–(सं. वि.) जिसका सत्कार किया गया हो; (पुं.) विष्णु।
सत्कृति–(सं. स्त्री.) सत्कार।
सत्क्रिया–(सं. स्त्री.) शव की दाह-क्रिया, अच्छा व्यवहार, पुरस्कार।
सत्त–(हिं. पुं.) किसी पदार्थ का सार भाग, सत्व।
सत्तर–(हिं. वि.) साठ और दस की संख्या का; (पुं.) साठ और दस की संख्या, ७०; **–वाँ**–(वि.) जो क्रम में सत्तर के स्थान पर हो।
सत्तर्क–(सं. पुं.) उत्तम तर्क।
सत्ता–(सं. स्त्री.) विद्यमानता, अस्तित्व, उत्कर्ष, उत्पत्ति, प्रभुत्व, शक्ति, वेदांतानुसार गुण, द्रव्य तथा कर्म विशिष्ट जाति।
सत्ता–(हिं. स्त्री.) ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमे सात बूटियाँ हों।
सत्ताइस–(हिं. वि.) बीस और सात की संख्या का; (पुं.) बीस और सात की संख्या, २७; **–वाँ**–(वि.) जो क्रम में सत्ताइस के स्थान पर पड़ता हो।
सत्ताधारी–(सं. वि., पुं.) अधिकारी।
सत्तानबे–(हिं. वि.) नब्बे और सात की संख्या का; (पुं.) नब्बे और सात की संख्या, ९७; **–वाँ**–(वि.) जो क्रम में सत्तानबे के स्थान पर पड़ता हो।
सत्तावन–(हिं. वि.) पचास और सात की संख्या का; (पुं.) पचास और सात की संख्या, ५७; **–वाँ**–(वि.) जो क्रम में सत्तावन के स्थान पर पड़ता हो।
सत्ताशास्त्र–(सं. पु.) पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।
सत्तासी–(हिं. वि.) अस्सी और सात की संख्या का; (पुं.) अस्सी और सात की संख्या, ८७; **–वाँ**–(वि.) जो सत्तासी के स्थान पर हो।
सत्तू–(हिं. पुं.) जो, चने आदि को भूनकर पीसा हुआ आटा, सतुआ।
सत्पति–(सं. पु.) साधुओं का पालन करनेवाला।

सत्पत्र–(सं. पुं.) कमल का नया पत्ता ।
सत्पथ–(सं. पुं.) उत्तम मार्ग, सम्प्रदाय या सिद्धान्त ।
सत्पशु–(सं. पुं.) उत्तम पशु ।
सत्पात्र–(सं. पुं.) दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति, श्रेष्ठ या सदाचारी मनुष्य, अच्छा वर, उपयुक्त व्यक्ति ।
सत्पुत्र–(सं. पुं.) सुपुत्र, उत्तम संतान ।
सत्पुरुष–(सं.पुं.) पूज्य पुरुष, भला आदमी ।
सत्पुष्प–(सं. पुं.) बढ़िया फूल ।
सत्फल–(सं. पुं.) नारियल, अनार ।
सत्य–(सं. पुं.) सतयुग, कृतयुग, यथार्थ या ठीक बात, प्रतिज्ञा, शपथ, पातंजल-दर्शन के अनुसार यथार्थ बात और विचार, ब्रह्म, विष्णु, पीपल का वृक्ष, नवें कल्प का नाम, उचित पक्ष, पारमार्थिक सत्ता, सात ऊर्ध्व लोकों में से सब से ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं; (वि.) वास्तविक, सच्चा, ठीक, सही; **–कर्मा**–(पुं.) सत्कार्य करनेवाला; **–काम**–(वि.) सत्य का प्रेमी; **–घ्न**–(वि.) सत्य की उपेक्षा करनेवाला; **–जित्**–(वि.) कृष्ण के एक पुत्र का नाम; **–ज्ञ**–(वि.) सत्य को जाननेवाला; **–तः**–(अव्य.) वस्तुतः, यथार्थ में, सचमुच; **–ता**–(स्त्री.) वास्तविकता, सचाई; **–धृति**–(वि.) सत्यशील; **–नारायण**–(पुं.) सत्यस्वरूप विष्णु; **–पर**–(वि.) सच्चा; **–पुरुष**–(पुं.) परमात्मा; **–प्रतिज्ञ**–(वि.) सत्यवादी, वचन का सच्चा; **–फल**–(पुं.) बेल का वृक्ष; **–भामा**–(स्त्री.) श्रीकृष्ण की एक प्रधान महिषी का नाम; **–भारत**–(पुं.) वेदव्यास; **–भाषण**–(पुं.) सच बात कहना; **–युग**–(पुं.) चार युगों में से पहले युग का नाम; **–युगी**–(वि.) सत्य-युग का, सत्यनिष्ठ; **–रूप**–(पुं.) विष्णु; **–लोक**–(पुं.) ब्रह्मलोक ; **–वती**–(स्त्री.) वेदव्यास की माता का नाम; **–वाचक**–(वि.) सच बोलनेवाला; **–वादी**–(पुं., वि.) यथार्थ वक्ता, सत्य पर दृढ़ रहनेवाला, सत्य बोलनेवाला; **–वान**–(पुं.) सावित्री के पति का नाम; **–वाहन**–(वि.) सत्य पर दृढ़ रहनेवाला; **–विक्रम**–(वि.) सत्यवादी; **–व्रत**–(वि.) सच बोलनेवाला; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **–शील**–(वि.) सच्चा; **–संकल्प**–(वि.) विचारे हुए काम को पूरा करनेवाला; **–संध**–(वि.) सत्यवादी; (पुं.) विष्णु, रामचन्द्र ।
सत्या–(सं. स्त्री.) व्यास की माता सत्यवती, कृष्ण की पत्नी सत्यभामा, दुर्गा ।
सत्याग्रह–(सं. पुं.) किसी न्यायपूर्ण पक्ष के लिये निरन्तर शान्तिपूर्ण आग्रह ।
सत्यानास–(हिं. पुं.) सर्वनाश, ध्वंस ।
सत्यानासी–(हिं वि.) नाश करनेवाला, अभागा; (पुं.) एक कँटीला पौधा ।
सत्यायु–(सं. पुं.) उर्वशी के एक पुत्र का नाम ।
सत्येतर–(सं. वि.) सत्य से भिन्न, झूठा ।
सत्र–(सं. पुं.) यज्ञ, धन, घर, वह स्थान जहाँ अनाथों को भोजन दिया जाता है, शिक्षण-संस्था की वार्षिक कार्यविधि, विधानसभा के अधिवेशन की एक अवधि ।
सत्रि, सत्री–(हिं. पुं.) यज्ञकर्ता ।
सत्व–(सं. पुं.) अस्तित्व, सत्ता, चित्त की प्रवृत्ति, तत्व, चैतन्य, प्राण, जीव; **–गुण**–(पुं.) अच्छे काम करने का गुण; **–धाम**–(पुं.) विष्णु का एक नाम ।
सत्वर–(सं.अव्य.) शीघ्र, तुरत, झटपट ।
सत्संग–(सं.पुं.) साधु या सज्जन के साथ उठना-बैठना ।
सत्संगति–(सं. स्त्री.) देखें 'सत्संग' ।
सत्संगी–(सं. वि.) सत्संग करनवाला ।
सत्समागम–(सं. पुं.) भले आदमियों का संसर्ग ।
सथर–(हिं. पुं.) स्थल, स्थान, भूमि ।
सथिया–(हिं. पुं.) स्वस्तिक, एक मंगलसूचक चिह्न जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओं के रूप में बनता है, स्वास्तिक (卐), चीर-फाड़ करनेवाला ।
सदंभ–(सं. वि.) घमंडी ।
सद–(हिं. अव्य.) तुरत; (वि.) नवीन, ताजा; (स्त्री.) प्रकृति, अभ्यास ।
सदई–(हिं. अव्य.) सर्वदा ।
सदक्ष–(सं. वि.) ज्ञानयुक्त, विवेकी ।
सदन–(सं. पुं.) घर, जल, पानी, स्थिरता, विराम, थकावट ।
सदना–(हिं. क्रि. अ.) छेद से रसना, चूना ।
सदवर्ग–(सं. पुं.) हजारा गेंदा ।
सदय–(सं. वि.) दयालु, दयायुक्त ।
सदर्थ–(सं. पुं.) नेक विषय ।
सदर्थना–(हिं. क्रि. स.) पुष्टि या समर्थन करना ।
सदर्प–(सं. वि.) अभिमानी, घमंडी ।
सदसत्–(सं. वि.) सच और झूठ, अच्छा और बुरा; **–फल**–(पुं.) भला और बुरा फल; **–विवेक**–(पुं.) अच्छे और बुरे की पहचान या ज्ञान ।
सदस्य–(सं. पुं.) याजक, यज्ञ करनेवाला; किसी सभा या समाज का सभासद ।
सदहा–(हिं. पुं.) अनाज आदि लादने की बड़ी बैलगाड़ी; (वि.) सैकड़ों ।
सदा–(सं. अव्य.) सर्वदा, निरन्तर ।
सदागति–(सं.पुं.) वायु, हवा, सूर्य, विष्णु; (वि.) सर्वदा चलनेवाला ।
सदागम–(सं. पुं.) अच्छा सिद्धान्त ।
सदाचरण–(सं. पुं.) अच्छा चाल-चलन ।
सदाचार–(सं. पुं.) सात्विक व्यवहार, साधुओं का-सा आचरण, भलमनसी, रीति ।
सदाचारी–(सं.वि.) धर्मात्मा, पुण्यात्मा, अच्छे आचरणवाला, सर्वदा घूमनेवाला ।
सदातन–(सं. पुं.) विष्णु; (वि.) नित्य ।
सदानंद–(सं. वि.) सर्वदा प्रसन्न रहनेवाला; (पुं.) शिव ।
सदाफल–(सं. पुं.) नारियल, गूलर, बेल, कटहल, एक प्रकार का नीबू ; (वि.) हमेशा फलनेवाला ।
सदावरत–(हिं. पुं.) देखें 'सदावर्त' ।
सदाबहार–(हिं.वि.) जो सर्वदा हरा बना रहे; (पुं.) वह वृक्ष जो सदा हरा रहे ।
सदाभव–(सं. वि.) चिरन्तन, सदा रहनेवाला ।
सदावर्त–(सं. पुं.) नित्य दीन-दुखियों को अन्न बाँटना, वह भोजन जो दीन-दुखियों को प्रतिदिन बाँटा जाय ।
सदाशय–(सं. वि.) उच्च विचारवाला, उदाराशय ।
सदाशिव–(सं. वि.) सर्वदा कल्याण करनेवाला, सदा दयालु; (पुं.) शिव, महादेव ।
सदासुख–(सं. वि.) सर्वदा सुखी ।
सदासुहागिन–(हिं. वि. स्त्री.) (स्त्री) जो बहुकाल तक सुहागिन बनी रहे, जो पतिहीन न हो; (स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
सदुक्ति–(सं. स्त्री.) साधु-कथन ।
सदुपदेश–(सं. पुं.) उत्तम शिक्षा, अच्छा उपदेश, अच्छी सलाह ।
सदृश–(सं. वि.) उचित, तुल्य, बराबर, अनुरूप, समान; **–ता**–(स्त्री.) समानता, तुल्यता ।
सदेश–(सं. वि., पुं.) पड़ोसी, पड़ोस ।
सदेह–(सं. वि., अव्य.) देहयुक्त, बिना शरीर त्यागे हुए, शरीर धारण किये हुए ।
सदैव–(सं. अव्य.) सर्वदा ।
सदोष–(सं. वि.) [illegible], अपराधी, दोषी ।
सद्–(सं. वि.) 'सत्' का [illegible] रूप ।

सद्गति–(सं. स्त्री.) उत्तम गति, मुक्ति, निर्वाण, सच्चरित्र, अच्छा व्यवहार।
सद्गुण–(सं. पुं.) उत्तम गुण, दया आदि गुण; (वि.) गुणवान्।
सद्गुणी–(हिं. वि.) अच्छे गुणोंवाला।
सद्गुरु–(सं. पुं.) धर्म-गुरु, अच्छा शिक्षक, परमेश्वर।
सद्ग्रंथ–(सं. पुं.) अच्छा ग्रन्थ, सन्मार्ग पर लेजानेवाला ग्रन्थ।
सद्ग्रह–(सं. पुं.) शुभ ग्रह, वृहस्पति और शुक्र ग्रह।
सद्द–(हिं. वि.) देखें 'शब्द'; (अव्य.) सद्य, तुरत।
सद्धर्म–(सं. पुं.) उत्तम धर्म।
सद्धेतु–(सं. पुं.) दोषरहित हेतु।
सद्भाव–(सं.पुं.) अच्छा भाव, मैत्री, मेलजोल।
सद्भू–(सं. वि.) सत्य, यथार्थ।
सद्म–(सं. पुं.) घर, जल, पानी, पृथ्वी और आकाश।
सद्मिनी–(सं. स्त्री.) वड़ा घर, महल।
सद्यः–(सं. अव्य.) अभी, तुरत; **–क्षत**–(वि.) जो अभी घायल हुआ हो; **–प्रसूता**–(स्त्री.) जिसको अभी बच्चा पैदा हुआ हो; **–फल**–(वि.) जिसका फल तुरत मिल जाय।
सद्य–(सं.अव्य.) इसी क्षण, इसी समय, अभी, तुरत, शीघ्र; (पुं.) शिव का एक रूप।
सद्योजात–(सं.पुं.) शिव; (वि.) इसी क्षण उत्पन्न।
सद्रत्न–(सं. पुं.) उत्तम रत्न।
सद्वंश–(सं. पुं.) उत्तम वंश।
सद्विद्या–(सं. स्त्री.) ब्रह्मविद्या, ब्रह्मज्ञान।
सधना–(हिं. क्रि. अ.) सिद्ध होना, पूरा होना, अभ्यस्त होना, लक्ष्य ठीक होना, घोड़ों आदि का निकलना, ठीक नापा जाना।
सधर्म–(सं. वि.) एक ही धर्म या स्वभाववाला, तुल्य, समान; **–चारिणी**–(स्त्री.) भार्या, पत्नी।
सधर्मी–(सं. वि.) समान, तुल्य, सधर्म।
सधवा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन।
सधाना–(हिं. क्रि. स.) साधने का काम दूसरे से कराना।
सधावर–(हिं. पं.) वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने में दिया जाता है।
सधूम्र–(सं. वि.) धुएँ से युक्त।
सन–(हिं. पुं.) बोया जानेवाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सियाँ बनाई जाती हैं।
सनई–(हिं. स्त्री.) छोटी जाति का सन।
सनक–(सं. पुं.) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक; (हिं. स्त्री.) किसी बात की धुन, चित्त की प्रवृत्ति, उन्माद; (मुहा.) **–सवार होना**–किसी बात की धुन होना।
सनकना–(हिं. क्रि. अ.) पागल या झक्की होना।
सनकाना–(हिं. क्रि. स.) किसी को सनकने में प्रवृत्त करना।
सनकारना, सनकियाना–(हिं. क्रि. स.) आँख से इशारा या संकेत करना।
सनत्–(सं. पुं.) ब्रह्मा।
सनत्कुमार–(सं. पुं.) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनत्ता–(हिं. पुं.) वह वृक्ष जिस पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।
सनद–(अ. स्त्री.) प्रमाण-पत्र।
सनना–(हिं. क्रि. अ.) जल के योग से किसी वस्तु के चूर्ण के कणों का परस्पर मिलना, लेई बन जाना, पगना।
सननी– (हिं. स्त्री.) देखें 'सानी'।
सनमान–(हिं. पुं.) सम्मान, प्रतिष्ठा।
सनमानना–(हिं. क्रि. स.) सत्कार करना।
सनमुख–(हिं. अव्य.) देखें 'सम्मुख'।
सनसनाना–(हिं. क्रि. अ.) हवा के वेग से शब्द होना, खौलते हुए पानी से शब्द होना।
सनसनाहट–(हिं. पुं.) सनसनाने का शब्द।
सनसनी–(हिं. स्त्री.) उद्वेग, घवड़ाहट, खलवली, झुनझुनी, सनसनाहट।
सनाढ्य–(हिं. पुं.) गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।
सनातन–(सं. पुं.) विष्णु, शिव, ब्रह्मा, प्राचीन काल से चला आता हुआ क्रम; (वि.) बहुत पुराना, नित्य, परम्परागत; **–धर्म**–(पुं.) परम्परागत धर्म, वर्तमान हिन्दू धर्म का वह स्वरूप जो परम्परा से माना जाता है, (इस धर्म में पुराण, तन्त्र, देवी-देवताओं की उपासना, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-माहात्म्य आदि मान्य हैं); **–पुरुष**–(पुं.) विष्णु, भगवान्।
सनातनी–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा; (हिं. पुं.) सनातन धर्म का अनुयायी; (हिं. वि.) जिसकी परम्परा बहुत पुरानी हो, सनातन।
सनाथ–(सं. वि.) जिसकी रक्षा करनेवाला कोई हो।
सनाथा–(सं. वि. स्त्री.) (वह स्त्री) जिसका पति जीवित हो।
सनाभ–(सं. पुं.) सहोदर भाई।
सनामक, सनामा–(सं. वि.) एक नाम का।
सनाह–(हिं. पुं.) कवच।
सनित–(हिं. वि.) सना हुआ।
सनिद्र–(सं. वि.) निद्रायुक्त।
सनीचर–(हिं. पुं.) देखें 'शनैश्चर'।
सनीचरी–(हिं. पुं.) ज्योतिपानुसार शनि की दशा जिसमें दुःख, व्याधि आदि की अधिकता रहती है।
सनीड–(सं. अव्य.) निकट, पास, पड़ोस में।
सनह–(हिं. पुं.) देखें 'स्नेह', प्रेम।
सनेही–(हिं. वि.) प्रेमी, प्रेम करनेवाला; (पुं.) प्रियतम।
सन्–(अ. पुं.) साल, संवत्।
सन्न–(सं. वि.) स्तम्भित, भौचक, हीन, रहित, स्तब्ध, डर से चुप; (पुं.) चिरौंजी का वृक्ष।
सन्नत–(सं. वि.) झुका हुआ, सिकुड़ा हुआ, उदास।
सन्नद्ध–(सं.वि.) कवच आदि धारण कर तैयार, उपद्रवी, बँधा हुआ, कसा हुआ, समीप का।
सन्नाटा–(हिं. पुं.) निःशब्दता, नीरवता, विलकुल चुप रहने का भाव, उदासी, वायु का सन-सन शब्द; (वि.) निस्तब्ध, एकान्त, नीरव; (मुहा.) **–खींचना**–एकदम चुप हो जाना; **सन्नाटे में आना**–एकदम स्तब्ध होना।
सन्नाद–(सं. पुं.) भीषण शब्द।
सन्नाह–(सं. पुं.) उद्योग, प्रयत्न, अंगत्राण, कवच, युद्ध का पहनावा।
सन्निकट–(सं. अव्य.) समीप, पास।
सन्निकर्ष–(सं. पुं.) समीप, सामने की स्थिति।
सन्निधान–(सं. वि.) निकटता, समीपता, आश्रय, इन्द्रिय-विषय, समागम।
सन्निधि–(सं. स्त्री.) समीपता, निकटता, आमने-सामने की स्थिति, पड़ोस, इन्द्रिय-विषय।
सन्निनाद–(सं. पुं.) जोर का शब्द।
सन्निपात–(सं. पुं.) ताल का एक भेद, समूह, संयोग, संग्राम, युद्ध, नाश, जुटना, भिड़ना, इकट्ठा होना, (वात, पित्त, तथा कफ का) एक साथ विगड़ना।
सन्निबद्ध–(सं. वि.) जकड़ा हुआ, लगा हुआ।
सन्निमग्न–(सं. वि.) पूरा डूबा हुआ, सोया हुआ।
सन्निरुद्ध–(सं. वि.) रोका हुआ, ठहराया हुआ, दमन किया हुआ।

सन्निरोध–(सं. पुं.) रुकावट, बाधा, दमन।
सन्निवार्य–(सं. वि.) निवारण करने या रोकने लायक।
सन्निविष्ट–(सं. वि.) एक साथ बैठा हुआ, निकटवर्ती, उपस्थित, पास का, लगा हुआ, रखा हुआ, आया हुआ।
सन्निवेश–(सं. पुं.) आकृति, रचना, व्यवस्था, योजना, समाज, समूह, एकत्र होना, जुटना, स्थिति, आधार, लगाना, बैठाना, रखना, अँटना, ठहराना, एक साथ बैठना, गाँव के लोगों का पंचायत आदि के लिए इकट्ठा होने का स्थान।
सन्निवेशित–(सं. वि.) बैठाया हुआ, जमाया हुआ, ठहराया हुआ, स्थापित, अँटाया हुआ।
सन्निहित–(सं. वि.) समीप का, निकट का, एक साथ या पास रखा हुआ, उद्यत, तैयार।
सन्मान–(हिं. पुं.) देखें 'सम्मान'।
सन्मुख–(हिं. अव्य.) देखें 'सम्मुख'।
सन्न्यसन–(सं. पुं.) त्याग, फेंकना, छोड़ना, स्थापित करना, रखना।
सन्न्यस्त–(सं. वि.) समर्पित, जिसने सन्यास लिया हो।
सन्न्यास–(सं. पुं.) विषय-भोग के कर्मों का त्याग, चतुर्थ आश्रम, एक रोग विशेष, संसार के प्रपंच से अलग होने की अवस्था, त्याग।
सन्यासी–(हिं. वि., पुं.) चतुर्थ आश्रमी, जिसने संन्यास-ग्रहण किया हो, वैरागी, त्यागी।
सपई–(हिं. स्त्री.) पेट का केंचुआ।
सपक्ष–(सं. वि.) तुल्य, समान, समर्थक, अनुकूल, डैनोंवाला; (पुं.) मित्र, सहायक, अनुकूल पक्ष, न्याय में वह बात या दृष्टान्त जिससे साध्य का समर्थन हो।
सपक्षता–(सं. स्त्री.) पक्षावलम्बन, अनुकूलता।
सपटा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का टाट।
सपत्न–(सं. पुं.) शत्रु, वैरी, विरोधी।
सपत्नी–(सं. स्त्री.) एक ही पति की दूसरी स्त्री, सौत।
सपत्नीक–(सं. वि.) पत्नी या सपत्नी के सहित
सपत्र–(सं. पुं.) बाण, तीर; (वि.) पत्तों से युक्त।
सपथ–(हिं. स्त्री.) सौगन्ध।
सपदि–(सं. अव्य.) तुरत, शीघ्र।
सपना–(हिं. पुं.) स्वप्न, निद्रा की अवस्था में चित्त-गोचर अनुभव।
सपरदा, सपरदाई–(हिं. पुं.) गानेवाली रंडी के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला, भड़ुवा, समाजी।
सपरना–(हिं. क्रि. अ.) किसी कार्य का पूरा या समाप्त होना, निबहना, किया जा सकना, हो सकना।
सपराना–(हिं. क्रि. स.) काम पूरा करना, निबटाना।
सपरिकर–(सं. वि.) अनुचरवर्ग के साथ, ठाट-बाट से युक्त।
सपरिच्छद–(सं. वि.) देखें 'सपरिकर'।
सपर्या–(सं. स्त्री.) आराधना, उपासना।
सपाट–(हिं. वि.) समतल, बराबर, चिकना, जिसका तल चौरस हो।
सपाटा–(हिं. पुं.) दौड़ने या चलने का वेग, झोंक, झपट; **सैर-सपाटा**–(पुं.) घूमना-फिरना।
सपाद–(सं. वि.) पादयुक्त, जिसके साथ उसका चौथाई भाग बढ़ा हुआ हो।
सपाल–(सं.वि.) लोक का पालन करनेवाला।
सपिंड–(सं. पुं.) सात पुरखों तक के संबंधी, एक ही वंश के वे पुरुष जो एक ही पितरों को पिण्डदान देते हों, (सपिण्ड को कुल में जन्म और मरण का अशौच लगता है।)
सपिंडीकरण–(सं. पुं.) मृतक के निमित्त वह श्राद्ध जिससे वह पितरों के साथ मिलाया जाता है।
सपीतक–(सं. पुं.) घीयातरोई, नेनुवा।
सपुत्र–(सं. वि.) पुत्रवान्।
सपुष्प–(सं. वि.) पुष्पयुक्त, जिसमें फूल हो।
सपूत–(हिं. पुं.) अच्छा पुत्र, वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करता हो।
सपूती–(हिं. स्त्री.) सपूत होने का भाव, योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।
सपेद–(हिं. वि.) श्वेत।
सपेरा–(हिं. पुं.) देखें 'सँपेरा'।
सपोला–(हिं.पुं.) साँप का छोटा बच्चा।
सप्त–(सं. वि.) वह जो गिनती में सात हो; (पुं.) सात की संख्या, ७; **–ऋषि**–(पुं.) देखें 'सप्तर्षि'; **–क**–(वि.) सातवाँ, जिसमें सात की संख्या हो; (पुं.) सात वस्तुओं का समूह, संगीत में सात स्वरों का समूह; **–की**–(स्त्री.) चन्द्रहार, किंकिणी, कमर की करधनी; **–ग्रही**–(स्त्री.) एक ही राशि में सात ग्रहों का एकत्रित होना; **–च्छद**–(पुं.) छतिवन नाम का वृक्ष; **–जिह्व**–(पुं.) अग्नि, (इसकी सात जिह्वाओं के नाम–काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता हैं); **–ज्वाल**–(हिं. पुं.) अग्नि; **–दीधिति**–(पुं.) अग्नि; **–द्वीप**–(पुं.) पुराण के अनुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य भाग, (इनके नाम–जम्बू द्वीप, कुश द्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, क्रौंच द्वीप और पुष्कर द्वीप है); **–धातु**–(स्त्री.) शरीर की सात धातुएँ, यथा–रस, रक्त, मांस, वसा, अस्थि, मज्जा और शुक्र; **–धान्य**–(पुं.) जौ, धान, उड़द आदि सात अन्न जो पूजा में उपयोग किये जाते हैं; **–नाड़ीचक्र**–(पुं.) फलित ज्योतिष के एक चक्र का नाम; **–पत्र**–(पुं.) सप्तपर्ण वृक्ष, छतिवन; **–पदार्थ**–(पुं.) द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव–ये सात पदार्थ; **–पदी**–(स्त्री.) विवाह की वह रीति जिसमें वर और वधू अग्नि की सात बार परिक्रमा करते हैं; **–पर्ण**–(पुं.) छतिवन का वृक्ष, एक प्रकार की मिठाई; **–पर्णी**–(स्त्री.) लज्जालु नाम की लता; **–पाताल**–(पुं.) पृथ्वी के नीचे के सात लोक जिनके नाम–अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल हैं; **–पुत्री**–(स्त्री.) सतपुतिया नामक तरकारी; **–पुरी**–(स्त्री.) सात पवित्र तीर्थ; यथा–काशी, कांची, उज्जयिनी, हरिद्वार, अयोध्या, मथुरा और द्वारका; **–भूम**–(वि.) सात मंजिला, खंडोवाला (महल); **–म**–(वि.) सातवाँ; **–मातृका**–(स्त्री.) सात शक्तियाँ जिनका पूजन शुभ कार्यों के अवसर पर होता है, इनके नाम–ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री और चामुण्डा हैं; **–मी**–(स्त्री.) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की सातवीं तिथि; **–रुचि**–(पुं.) अग्नि का एक नाम; **–शती**–(स्त्री) सात सौ श्लोकों का देवी-माहात्म्य, सात सौ का समूह, बंगाल के ब्राह्मणों की एक श्रेणी; **–स्वर**–(पुं.) संगीत के सात स्वर।
सप्तर्षि–(सं. पुं.) ब्रह्मा के सात मानस पुत्र जो ऋषि थे, इनके नाम–मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अंगिरा और वसिष्ठ हैं; (ये स्वायम्भुव मन्वन्तर में थे। चौदहों मन्वन्तर के भिन्न-भिन्न सप्तर्षि होते हैं।)
सप्तला–(सं. स्त्री.) नवमल्लिका, चमेली।
सप्ताश्ववाहन–(सं. पुं.) सूर्य।

सप्ताह–(सं. पुं.) सात दिनों का काल, हफ्ता।
सप्रमाण–(सं. वि.) प्रामाणिक।
सफर–(अ.पुं.) यात्रा, रवानगी, पर्यटन; **–मना**–(स्त्री.) स्थल-सेना का एक विभाग।
सफरदाई–(हिं. पुं.) साज वजानेवाला।
सफरी–(अ. वि.) सफर का, सफर-संवंधी।
सफल–(सं. वि.) फलयुक्त, अमोघ, सर्थाक, जिसका कुछ परिणाम हो, कृत-कार्य; **–ता**–(स्त्री.) पूरा होना, पूर्णता, सिद्धि।
सफला–(सं. स्त्री.) पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।
सफलीभत–(सं.वि.) जो सफल या पूरा हुआ हो।
सफा–(हिं. वि.) देखें 'साफ'।
सफाई–(हिं.स्त्री.) साफ होने की अवस्था, गुण या भाव, स्वच्छता, निर्मलता, अभि-युक्त का निर्दोष होने का प्रमाण, कौशल।
सफाचट–(हिं. वि.) विलकुल साफ, पेड़-पौधा आदि उखाड़कर साफ किया हुआ, पूर्णतः मुँड़ा हुआ (सिर)।
पतालू–(हिं. पुं.) देखें 'सफतालू'।
सफेद–(फा. वि.) उजला, उज्ज्वल, साफ, नर्मल, गोरा।
सफदा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का उम्दा आम।
सफेदी–(फा. स्त्री.) सफेद होने की अवस्था, गुण या भाव, उज्ज्वलता, गोरापन।
सब–(हिं. वि.) समस्त, समग्र, कुल, पूरा, समूचा।
सवक–(अ. पुं.) पाठ, उपदेश, शिक्षा।
सवद–(हिं. पुं.) देखें 'शब्द'।
सवव–(अ. पुं.) कारण, हेतु।
सवल–(सं. वि.) वलवान्, सैन्ययुक्त।
सवार–(हिं. अव्य.) शीघ्र, तुरत।
सवीज–(सं. वि.) वीज-सहित।
सवूत–(हिं. पुं.) प्रमाण, गवाही।
सवेरा–(हिं. पुं.) प्रातःकाल, सवेरा।
सवेरे–(हिं. अव्य.) प्रातः समय।
सब्ज–(फा. वि.) हरा, हरा-भरा।
सब्जी–(फा. स्त्री.) हरियाली, तरकारी, भाजी।
सभर्तृका–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सघवा।
सभय–(स. वि.) भययुक्त।
सभा–(सं.स्त्री.) कुछ या वहुत से लोगों का वैठकर किसी वात पर परामर्श करना, परिषद्, समिति, समूह, झुंड।
सभागा–(हिं. वि.) भाग्यवान्, मनोहर।
सभागृह–(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ किसी सभा या समिति का अधिवेशन होता हो।
सभाजन–(सं. पुं.) आदर-सत्कार।
सभापति–(सं. पुं.) (सभा समिति आदि का) अध्यक्ष।
सभाव–(सं. वि.) तेजस्वी, पराक्रमी।
सभासद(द्)–(सं. पुं.) वह जो किसी सभा का सदस्य हो।
सभोचित–(सं. पुं.) पण्डित; (वि.) सभा के योग्य।
सभ्य–(सं. पुं.) सभासद, सदस्य, वह जिसका आचरण अच्छा हो; (वि.) सभा-संवंघी, शिष्ट, संस्कृत।
सभ्यता–(सं.स्त्री.), **सभ्यत्व**–(सं. पुं.) सभ्य होने का भाव, शिष्टता, भल-मनसी, सज्जनता।
समंत–(सं. पुं.) सीमा-प्रान्त, किनारा; (वि.) सब, कुल।
समंतिक–(सं. अव्य.) सीमा के पास।
सम–(सं.वि.) कुल, समान, तुल्य, वरावर, समतल, जूस (संख्या); (पुं.) गायन के समय वह स्थान जहाँ गाने-वजाने-वाले का सिर आप-से-आप हिल जाता है, ताल के अनुसार निश्चित स्थान, वर्गमूल निकालने की क्रिया में राशि के ऊपर लगाई जानेवाली रेखा, वह अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संवंध का वर्णन रहता है।
समकक्ष–(सं. वि.) तुल्य, समान।
समकन्या–(सं.स्त्री.) विवाह के योग्य कन्या।
समकर्म–(सं. वि.) जिनके काम या धंधे समान हों।
समकालीन–(सं. वि.) एक ही समय में रहने या होनेवाला।
समकोण–(सं. वि.) ९० अंश का कोण।
समक्ष–(सं.अव्य.) सम्मुख, आँखों के सामने।
समग्र–(सं. वि.) सम्पूर्ण, पूरा।
समचतुष्कोण–(सं. पुं.) वह चतुर्भुज जिसके चारों कोण समान हों।
समचर–(सं. वि.) समान आचरणवाला।
समचित्त–(सं. पुं.) वह जिसका चित्त सुख-दुःख (दोनों) में समान रहता हो।
समजातीय–(सं. वि.) एक ही जाति का।
समज्ञा–(सं. स्त्री.) कीर्ति, यश।
समझ–(हिं. स्त्री.) ज्ञान, वुद्धि।
समझदार–(हिं. वि.) वुद्धिमान्।
समझदारी–(हिं.स्त्री.) समझ, ज्ञान, वुद्धि।
समझना–(हिं. क्रि. स.) किसी वात को अच्छी तरह ध्यान में लाना, विचारना, वोध होना (अर्थ आदि का)।
समझाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।
समझौता–(हिं. पुं.) आपस का निवटारा।
समतल–(सं. वि.) जिसका तल या सतह वरावर हो।
समता, समत्व–(सं. स्त्री., पुं.) समान होने का भाव, वरावरी।
समत्रिभुज–(सं. पुं.) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ वरावर हों।
समत्सर–(सं. वि.) डाह करनेवाला।
समद–(सं. वि.) मदयुक्त, अभिमानी।
समदन–(सं. पुं.) संग्राम, युद्ध।
समदना–(हिं.क्रि.अ.) प्रेमपूर्वक मिलना।
समदर्शन–(सं. वि.) जो सव मनुष्यों को समान दृष्टि से देखता हो।
समदृष्टि–(सं. वि.) देखें 'समदर्शन'।
समदर्शी–(सं. वि.) जो सव को एक भाव से देखता हो।
समद्विभुज–(सं. वि.) दो समान भुजाओं-वाला।
समधिगम–(सं.पुं.) भली भाँति समझना।
समधियाना–(हिं. पुं.) समधी का घर।
समधी–(हिं. पुं.) पुत्र या कन्या का ससुर।
समन–(अं.पुं.) न्यायालय की प्रतिवादी आदि के नाम न्यायाधीश के समक्ष उपस्थित होने की लिखित सूचना या आदेशपत्र।
समनुज्ञा–(सं. स्त्री.) अनुज्ञा, अनुमति।
समन्वय–(सं.पुं.) संयोग, मिलाप, अवरोध, कार्य-कारण का निर्वाह।
समन्वित–(सं. वि.) संयुक्त, मिला हुआ, विना रुकावट का।
समपाद–(सं. पुं.) वह कविता जिसके चारों चरण समान हों।
समभाग–(सं. पुं.) समान भाग।
समभुज–(सं. वि.) समान, समतल, वरावर भुजाओंवाला (क्षेत्र)।
समय–(सं. पुं.) काल, उपयुक्त वेला, अवसर, अवकाश, संवत्, अन्तिम काल, वाक्य, उपदेश, धर्म, आचार, निर्देश; **–ज्ञ**– (वि.) समय के अनुसार चलने-वाला, समय का पावंद।
समर–(सं. पुं.) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।
समरजित्–(सं. वि.) युद्ध में जीतनेवाला।
समरथ–(हिं. वि.) देखें 'समर्थ'।
समरपोत–(सं. पुं.) लड़ाई का जहाज।
समरभू, समरभूमि–(सं. स्त्री.) लड़ाई का मैदान।

समरांगण-(सं. पुं.)युद्धस्थल, समरभूमि।
समर्घ-(सं. वि.) कम मूल्य का, सस्ता।
समर्चन-(सं. पुं.) अर्चन, पूजन।
समर्थ-(सं. वि.) बलवान्, सामर्थ्यवाला योग्य, अभिलषित, अनुकूल।
समर्थक-(सं.वि.,पुं.) समर्थन करनेवाला।
समर्थता-(सं.स्त्री.), **समर्थत्व**-(सं. पुं.) शक्ति, सामर्थ्य।
समर्थन-(सं. पुं.) किसी मत की पुष्टि, सामर्थ्य,शक्ति,संभावना,उत्साह,विवेचन।
समर्थनीय-((सं.वि.)समर्थन करने योग्य।
समर्थित-(सं. वि.) समर्थन किया हुआ, स्थिर किया हुआ, सम्भावित।
समर्पक-(सं.वि.,वि.)समर्पण करनेवाला।
समर्पण-(सं. पुं.) किसी को कोई वस्तु आदरपूर्वक भेंट करना, दान देना, स्थापित करना।
समर्पित-(सं. वि.) समर्पण किया हुआ, स्थापित, जिसकी स्थापना की गई हो।
समर्याद-(सं.वि.) सीमायुक्त, सच्चरित्र।
समल-(सं. वि.) मलिन, मैला।
समवकार-(सं. पुं.) एक प्रकार का वीर-रस-प्रधान नाटक जिसमें देवता और असुरों के युद्ध का वर्णन रहता है।
समवतार-(सं. पुं.) अवतरण, उतरने की क्रिया, उतरने का स्थान।
समवर्ती-(सं. पुं.) यम का एक नाम; (वि.) समान रूप आदि में स्थित।
समवस्था-(सं.स्त्री.)तुल्य अवस्था या दशा।
समवाय-(सं. पुं.) समूह, नित्य सम्बन्ध, न्याय के अनुसार अवयव और अवयवी का अविच्छेद्य सम्बन्ध।
समवायी-(सं. वि.) जिसमें समवाय अथवा नित्य-संबंध हो।
समवृत्त-(सं.वि.) बिलकुल गोल, संपूर्ण गोलाईवाला; (पुं.) वह छन्द जिसके चारों चरण बराबर हों।
समवेक्षण-(सं. पुं.) भली भाँति देखना।
समवेत-(सं. वि.) एक में मिला हुआ, संचित; (पुं.) सम्बन्ध।
समवेदना-(सं. स्त्री.) सहानुभूति।
समशंकु-(सं. पुं.) वह समय जब सूर्य ठीक ऊर्ध्व-बिंदु पर आता है, दोपहर का समय।
समशीतोष्ण-(सं.वि.) (जलवायु,तापमान आदि) जो न अधिक ठंडा हो न अधिक गरम; **-कटिबंध**-(पुं.)पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबन्ध के उत्तर कर्क रेखा से उत्तरी शीत-कटिबंध तक और दक्षिणार्ध में मकर रेखा से दक्षिणी शीत-कटिबंध के बीच में पड़ते हैं, (इन स्थानों में न तो बहुत सर्दी पड़ती है और न बहुत गरमी।)
समष्टि-(सं. स्त्री.) सामूहिकता, समवेत सत्ता।
समसंख्यात-(सं. वि.) समान अंकवाला।
समसुप्ति-(सं. पुं.) कल्पान्त, महाप्रलय।
समसौरभ-(सं. वि.) जिनमें सदृश या एक-सी गन्ध हो।
समस्त-(सं. वि.) समग्र, कुल, संयुक्त, एक में मिलाया हुआ, संक्षिप्त।
समस्थली-(सं. स्त्री.) गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश।
समस्या-(सं. स्त्री.) किसी श्लोक, छन्द आदि का वह अन्तिम पद जो अनुरूप श्लोक या छन्द बनाने के लिये किसी को दिया जाता है; (इसी के आधार पर वह पूरा श्लोक या छन्द बनाता है), कठिन विषय, कठिन प्रश्न; **-पूर्ति**-(स्त्री.) छंद के चरण के आधार पर अनुरूप छंद या श्लोक बनाना।
समांतर-(सं. पुं.) वे सरल रेखाएँ जो बढ़ाई जाने पर एक-दूसरे से न मिलें।
समांश-(सं. पुं.) तुल्य अंश, बराबर टुकड़ा।
समांस-(सं. वि.) मांसयुक्त, मांसल।
समा-(सं. स्त्री.) वर्ष, साल।
समा-(हि. पुं.) समय, काल।
समाई-(हि. स्त्री.) समाने का भाव, शक्ति, सामर्थ्य।
समाकुल-(सं. वि.) संशयित, संदिग्ध, बहुत घबड़ाया हुआ।
समाक्रांत-(सं. वि.) व्याप्त, फैला हुआ।
समाख्या-(सं. स्त्री.) कीर्ति, यश, संज्ञा, नाम।
समाख्यान-(सं. पुं.) वर्णन, व्याख्या।
समागत-(सं. वि.) उपस्थित, मिलित, आया हुआ।
समागम-(सं. पुं.) आगमन, आना, मिलना, भेंट।
समागमन-(सं. पुं.) आना, पहुँचना, भेंट।
समाघात-(सं. पु.) युद्ध, लड़ाई, वध, हत्या।
समाचार-(सं. पु.) उत्तम व्यवहार, संवाद, खबर।
समाचार-पत्र-(सं. पुं.) समाचार का पत्र, अखबार।
समाच्छन्न-(सं. वि.) आच्छादित, ढपा हुआ।
समाज-(सं. पु.) मनुष्यों का संगठित समूह, संघ, सभा, समुदाय।
समाजवाद-(सं. पुं.) वह राजनीतिक सिद्धांत जो वैधानिक उपायों द्वारा राष्ट्रीय संपत्ति के समान विभाजन का प्रतिपादन करता है।
समाजवादी-(सं.पुं., वि.) समाजवाद का समर्थक या अनुयायी।
समातृ-(सं. स्त्री.) वह जो माता के समान हो।
समादर-(सं. पुं.) सम्मान, आदर।
समादरणीय-(सं. वि.) आदर-सत्कार के योग्य।
समादृत-(सं. वि.) सम्मानित।
समादेय-(सं. वि.) आदर-सत्कार करने योग्य।
समादेश-(सं. पुं.) आदेश, आज्ञा।
समाधान-(सं. पुं.) चित्त को एकाग्र कर ब्रह्म की ओर लगाना, समाधि, किसी प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर, निष्पत्ति, निबटारा, नियम, अन्वेषण, अनुसन्धान, ध्यान, समर्थन, नाटक का एक अंग।
समाधि-(सं. स्त्री.)समर्थन, नियम, ध्यान, अंगीकार, काव्य का वह गुण जिसमें दो घटनाएँ दैवयोग से एक ही समय होती हैं, वह अलंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारणसे किसी कार्य का सहज में होना वर्णन किया जाता है, योग, एकाग्रता, मौन-भाव, निद्रा, कारण, सामग्री, प्रतिज्ञा, योग की चरमावस्था, (आरंभ में एकाग्रचित्त से धारणा, इसके बाद ध्यान और तदुपरान्त समाधि। इसमें साधक सब प्रकार की चित्त-वृत्तियों से निर्मुक्त होकर एक विशेष प्रकार के आनन्द में मग्न हो जाता है), शव को मिट्टी में गाड़ना।
समाधिक्षेत्र-(सं. पुं.) वह स्थान जहाँ मृत साधुओं आदि को गाड़ते हैं।
समाधित-(सं. वि.) समाधियुक्त, जिसने समाधि ली हो।
समाधित्व-(सं. पुं.) समाधि ग्रहण करने का भाव या धर्म।
समाधिस्थ-(सं. वि.) समाधि लगाये हुए।
समाधेय-(सं.वि.) समाधान करने योग्य।
समान-(सं.वि.) सम, तुल्य, बराबर, मान में सदृश; (पु.) शरीरस्थ वायु विशेष, एक स्थान से उच्चारण होनेवाले वर्ण; **-करण**-(वि.) एक ही उच्चारण-स्थान-वाला (अक्षर); **-काल**-(अव्य.) एक ही समय में; **-ता**-(स्त्री.) समान होने का

भाव या धर्म, तुल्यत्व; **–रूप–**(वि.) समान आकारवाला; **–वयस्क–**(वि.) बराबर उम्र का; **–शय्य–**(पुं. वि.) एक ही चारपाई पर सोनेवाला; **–शील–**(वि.) तुल्य या एक-सा स्वभाववाला।
समाना–(हिं. क्रि. अ.) भरना, अँटना।
समानाक्षर–(सं. पुं.) स्वर वर्ण।
समानाधिकरण–(सं. पुं.) व्याकरण में वे शब्द या वाक्यांश जो एक-से कारक की विभक्ति से युक्त हों, समान आधार।
समानार्थ–(सं. वि.) तुल्य अर्थवाला।
समानिका–(सं.स्त्री.)एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते है।
समानीत–(सं. वि.) आदर या यत्नपूर्वक लाया हुआ।
समानुपात–(सं. पुं.) दो अथवा अनेक अनुपातों का समानत्व या सम्बन्ध।
समानोदक–(सं. पुं.) जिनके ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।
समानोपमा–(सं. स्त्री.) उपमा अलंकार का एक भेद।
समापक–(सं. वि.) समाप्त या पूर्ण करनेवाला।
समापत्ति–(सं.स्त्री.)एक ही समय में एक ही स्थान पर घटित या उपस्थित होना।
समापन–(सं. पुं.) परिच्छेद, समाप्त करना, समाप्ति, वध, समाधान, प्राप्ति।
समापनीय–(सं. वि.)समाप्त करने योग्य।
समापन्न–(सं. वि.) समाप्त किया हुआ, घटित।
समापिका–(सं. स्त्री.) व्याकरण में वह क्रिया जिससे वाक्य का अर्थ पूरा होता है।
समापित–(सं. वि.) समाप्त किया हुआ।
समाप्त–(सं. वि.) जिसका अन्त हो गया हो, जो पूरा हो गया हो।
समाप्ति–(सं. स्त्री.) अवसान, अन्त, समाप्त होने का भाव।
समाभाषण–(सं. पुं.) बातचीत, भाषण।
समाम्नाय–(सं. पुं.)समष्टि, समूह, शास्त्र।
समायोग–(सं. पुं.) संयोग, अनेक मनुष्यों का एकत्रित होना, प्रयोजन या उद्देश्य।
समारंभ–(सं. पुं.) आरम्भ।
समारंभण–(सं. पुं.) आलिंगन, आरंभ।
समाराधन–(सं. पुं.) आराधना, सेवा।
समारोह–(सं. पुं.) धूमधाम, तड़क-भड़क, आडंबर, आरोहण, चढ़ना, सम्मत होना।
समार्थ–(सं. वि.) समान अर्थयुक्त; (पुं.) पर्याय शब्द।
समालंभ–(सं. पुं.) शरीर पर अंगराग आदि का लेप करना, मारण, वध।
समालाप–(सं. पुं.) अच्छी तरह बात-चीत करना।
समालोच–(सं. पुं.) अच्छी तरह किया जानेवाला आलोचन।
समालोचक–(सं. पुं., वि.) किसी वस्तु के गुण-दोष बतलानेवाला, समालोचना करनेवाला।
समालोचन–(सं. पुं.) गुण-दोष की अच्छी तरह से आलोचना।
समालोचना–(सं. स्त्री.) अच्छी तरह देखना-भालना, (गुण-दोष, ग्रंथ आदि की) विवेचना, आलोचना।
समालोची–(सं. पुं., वि.) समालोचना करनेवाला।
समावत–(सं. पुं.) वापस आना, लौटना।
समावर्तन–(सं. पुं.) वापस आना, वेदाध्ययन के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना, इस समय का स्नान और यज्ञ।
समावर्तनीय–(सं. वि.) जो समावर्तन नामक संस्कार करने के योग्य हो।
समाविष्ट–(सं. वि.) प्रविष्ट, जिसका समावेश हुआ हो, जिसका मन एक ओर लगा हो।
समावृत–(सं. वि.) पूर्ण रूप से ढपा या छाया हुआ।
समावृत्त–(सं. वि.) विद्याध्ययन के बाद समावर्तन-संस्कार के बाद घर लौटा हुआ।
समावेश–(सं. पुं.) अंतर्भाव, शामिल या अन्तर्गत होना, चित्त को एक ओर लगाना, एक साथ रहना।
समाश्रय–(सं. पुं.)अवलम्बन, रक्षा, सहाय।
समाश्रित–(सं. वि.) अच्छी तरह आश्रित, जिसने आश्रय ग्रहण किया हो।
समाश्लेष–(सं. पुं.) आलिंगन।
समाश्वासक–(सं. पुं.) धीरज देनेवाला।
समाश्वासन–(सं. पुं.) आश्वासन, धीरज।
समास–(सं. पुं.) संग्रह, समाहार, संक्षेप, समर्थन, व्याकरण में दो या अधिक पदों का मिलकर एक पद बनना, (समास छः प्रकार के होते हैं, यथा–द्वन्द्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय, तत्पुरुष, द्विगु और अव्ययीभाव।)
समासक्त–(सं. वि.) संयुक्त, मिला हुआ।
समासन्न–(सं. वि.) निकटस्थ, पास का।
समासादित–(सं. वि.) प्राप्त, पाया हुआ, लाया हुआ, आक्रान्त, जिस पर आक्रमण किया गया हो, आहृत, चुराया हुआ, उद्धृत, लिखा हुआ।
समासीन–(सं. वि.)प्रतिष्ठित, बैठा हुआ।
समासोक्त–(सं. वि.) संक्षेप या थोड़े में कहा हुआ।
समासोक्ति–(सं. स्त्री.) वह अर्थालंकार जिसमें समान लिंग, समान विशेषण, समान कार्य आदि द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।
समाहत–(सं. वि.) आहत।
समाहरण–(सं. पुं.) देखें 'समाहार'।
समाहर्ता–(सं. पुं.) मिलानेवाला, संचय करनेवाला।
समाहार–(सं. पुं.) संग्रह, समूह, मिलान, राशि, संक्षेप, समास का एक भेद; **–द्वंद्व–**(पुं.)द्वन्द्व समास का वह भेद जिसमें उसके पदों के मेल से उनसे विशिष्ट अर्थ सूचित होता है, जैसे–दाल-रोटी, हाथ-पाँव इत्यादि।
समाहित–(सं. वि.) स्वीकार किया हुआ, स्थापित, निष्पन्न।
समाहृत–(सं. वि.) संग्रह किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, संगृहीत।
समाह्वान–(सं. पुं.) पुकार, ललकार।
समिता–(सं. स्त्री.) गेहूँ का महीन चूर्ण, मैदा।
समिति–(सं. स्त्री.) सभा, समाज, संग-साथ, युद्ध, सन्निपात नामक रोग।
समिद्ध–(सं. वि.) प्रदीप्त, जलता हुआ।
समिध–(सं. पुं.) अग्नि, आग।
समिधा–(हिं. स्त्री.) अग्नि जलाने का काठ, ईंधन, यज्ञ में जलाने की लकड़ी।
समीकरण–(सं. पुं.) तुल्य या बराबर करने की क्रिया, गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात राशि निकाली जाती है।
समीकृत–(सं. वि.) बराबर किया हुआ।
समीक्ष, समीक्षण–(सं. पुं.) अच्छी तरह देखने की क्रिया, अन्वेषण, विवेचन।
समीक्षा–(सं. स्त्री.) अच्छी तरह देखने की क्रिया, अच्छी तरह परीक्षण, आलोचना, सांख्य में बतलाये हुए प्रकृति-पुरुष का भेद, बुद्धि, अहंकार आदि भाव, मीमांसाशास्त्र, आत्म-विद्या, यत्न।
समीक्षित–(सं.वि.) जिसकी समीक्षा की गई हो, आलोचित, अन्वेषित।
समीच–(सं. पुं.) समुद्र, सागर।
समीचक–(सं. पुं.) मैथुन।
समीचीन–(सं. वि.) यथार्थ, ठीक, उचित, न्यायसंगत।
समीप–(सं. वि.) निकट, पास।
समीपग–(सं. वि.) जो समीप हो गया हो।

समीपता–(सं. स्त्री.) निकटता ।
समीपवर्ती–(सं. वि.) निकट में स्थित, पास का ।
समीपस्थ–(सं. वि.) पास का ।
समीर–(सं. पुं.) वायु, हवा, शमी वृक्ष ।
समीरण–(सं. पुं.) वायु, हवा, पथिक, गन्ध, तुलसी ।
समीहन–(सं. पुं.) विष्णु ।
समीहा–(सं. स्त्री.) उद्योग, प्रयत्न, अनुसन्धान ।
समीहित–(सं. वि.) चेष्टित, अभीप्ट ।
समुंदर–(हिं. पुं.) समुद्र; **–फूल**–(पुं.) एक प्रकार की औषधि, विधारा; **–सोख**–(पुं.) एक प्रकार का क्षुप जिसके बीज औषधों में प्रयुक्त होते हैं ।
समुचित–(सं. वि.) उचित, योग्य, ठीक, उपयुक्त ।
समुच्चय–(सं. पुं.) समाहार, समूह, राशि, दो अथवा दो से अधिक शब्दों आदि का परस्पर मिलना, साहित्य में वह अलंकार जिसमें हर्ष, विषाद, आश्चर्य आदि अनेक भावों का एक साथ मन में उदित होना वर्णन किया जाता है अथवा जहाँ एक ही कार्य के लिए अनेक उपायों का वर्णन रहता है ।
समुच्चित–(सं. वि.) ढेर लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ ।
समुच्छेद–(सं. पुं.) ध्वंस, विनाश ।
समुज्ज्वल–(सं. वि.) बहुत सफेद, चमकता हुआ ।
समुझ–(हिं. स्त्री.) बुद्धि ।
समुत्कंठ–(सं. वि.) व्यग्र, घबड़ाया हुआ ।
समुत्कीर्ण–(सं. वि.) विदीर्ण, छेदा हुआ ।
समुत्तर–(सं. पुं.) ठीक उत्तर ।
समुत्थान–(सं. पु.) आरंभ, उठने की क्रिया, उदय, उत्पत्ति, उठाना, रोग की शान्ति ।
समुत्थित–(सं. वि.) अच्छी तरह उठा हुआ, अद्भुत, उत्पन्न ।
समुत्पन्न–(सं.वि.) उद्गत, घटित, उत्पन्न ।
समुत्पाटित–(सं. वि.) जड़ से उखाड़ा हुआ, उन्मूलित ।
समुत्सर्ग–(सं. पुं.) उत्सर्ग, त्याग ।
समुदय–(सं. पुं.) उठने या उदित होने की क्रिया, युद्ध, लड़ाई ।
समुदाय–(सं. पुं.) भिन्न-भिन्न वर्गों का समूह, ढेर, झुंड, युद्ध, उन्नति ।
समुदाव–(हिं. पु.) समुदाय ।
समुदित–(सं. वि.) उठा हुआ, उन्नत, उत्पन्न ।
समुदीरण–(सं. पु.) उच्चारण ।
समुदीरित–(सं.वि.) उच्चारण किया हुआ ।
समुद्गक–(सं. पुं.) एक छन्द का नाम ।
समुद्गत–(सं. वि.) उत्पन्न, उदित ।
समुद्गीत–(सं. वि.) ऊँचे स्वर में गाया हुआ ।
समुद्धत–(सं. वि.) घमंड में फूला हुआ, उजड्ड ।
समुद्धरण–(सं. पुं.) उन्मूलन, उखाड़ने की क्रिया, उद्धार ।
समुद्भव–(सं. पुं.) उत्पत्ति ।
समुद्भास–(सं. पुं.) प्रकाश, वायु ।
समुद्यत–(सं. वि.) प्रस्तुत, तैयार ।
समुद्र–(सं. पुं.) जल का असीम समूह, अम्बुधि, सागर, किसी वस्तु, गुण आदि का आगार या खान ; **–कल्लोल**–(पुं.) सागर की गरज; **–कांता**–(स्त्री.) नदी; **–गुप्त**–(पुं.) गुप्तवंशीय एक बड़े पराक्रमी राजा का नाम; **–ज**–(वि.) मुक्ता, मोती; (वि.) समुद्र में उत्पन्न; **–तीर**–(पुं.) समुद्र का किनारा; **–दयिता**–(स्त्री.) नदी; **–नवनीत**–(पुं.) अमृत, चन्द्रमा; **–नेमि**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–पत्नी**–(स्त्री.) नदी; **–पात**–(पुं.) एक प्रकार की लता; **–फल**–(पुं.) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं; **–फेन**–(पुं.) समुद्र का ठोस झाग; **–मंडूकी**–(स्त्री.) शुक्ति, सीप; **–मंथन**–(पुं.) समुद्र को मथना; **–मालिनी**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–यात्रा**–(स्त्री.) समुद्र-मार्ग से दूर देश की यात्रा; **–यान**–(पुं.) जहाज; **–यायी**–(वि.) समुद्र-यात्रा करनेवाला; **–रसना**–(स्त्री.) पृथ्वी; **–लवण**–(पुं.) समुद्र के जल से बनाया हुआ नमक; **–वह्नि**–(पुं.) बड़वानल; **–वास**–(वि.) अग्नि, आग; **–वासी**–(वि.) समुद्र के किनारे बसनेवाला; **–सार**–(पु.) सीप, मोती; **–सुभगा**–(स्त्री.) गंगा नदी ।
समुद्रांत–(सं. पु.) समुद्र का किनारा ।
समुद्रांबरा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी ।
समुद्रायणा–(सं. स्त्री.) नदी ।
समुद्रावरणा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी ।
समुद्वेग–(सं. पु.) तीव्र उत्कण्ठा ।
समुन्नत–(सं. वि.) अति उन्नत, बहुत ऊँचा, समृद्ध ।
समुन्नति–(सं. स्त्री.) उत्थान, बड़ाई, समृद्धि, उन्नति, तरक्की ।
समुन्नद्ध–(सं. वि.) गर्वित, अभिमानी, ऊपर उठा हुआ ।
समुन्नयन–(सं. पुं.) ऊपर उठाने या उन्नत करने की क्रिया, लाभ, प्राप्ति ।
समुन्नाद–(सं. पु.) समूह का नाश ।
समुन्नाह–(सं. पुं.) ऊँचाई ।
समुन्नेय–(सं. वि.) अविकार में करने योग्य ।
समुन्मुख–(सं. अव्य.) सामने ।
समुन्मूलन–(सं. पुं.) निर्मूलन, पूर्ण रूप से नाश ।
समुपवेश–(सं. पुं.) आदर, सत्कार, बैठने की क्रिया ।
समुपस्तंभ–(सं.पुं.) संक्षेप करने की क्रिया ।
समुपस्था–(सं. स्त्री.) समीपता ।
समुपार्जन–(सं. पुं.) अच्छी तरह उपार्जन, विशेष रूप से प्राप्त करना ।
समुपालंभ–(सं. पुं.) क्रोधयुक्त वाक्य, तिरस्कार ।
समुपेक्षक–(सं. वि.) उपेक्षा करनेवाला ।
समुपेत–(सं. वि.) समागत, आया हुआ ।
समुपेप्सु–(सं. वि.) अच्छी तरह पाने की इच्छा करनेवाला ।
समुल्लसित–(सं. वि.) आनन्दित ।
समुल्लास–(सं. पुं.) आनन्द, प्रसन्नता, ग्रन्थ का अध्याय या परिच्छेद ।
समुल्लेखन–(सं. पु.) खनन, खोदना, उन्मूलन ।
समुहा–(हिं. वि.) सम्मुख का, सामने का ।
समुहाना–(हिं. क्रि. अ.) सामने आना या होना ।
समूढ़–(सं. वि.) संचित, ढेर किया हुआ, संशोधित, विवाहित, संगत, ठीक, दमन किया हुआ ।
समूल–(सं. वि.) मूलयुक्त, जड़वाला, जिसका कोई हेतु हो; (अव्य.) मूल [illegible] सहित, जड़ से ।
समूलक–(सं. वि.) समूल, मूल-सहित ।
समूह–(सं. पु.) समुदाय, झुंड, ढेर ।
समूहगंध–(सं. पु.) गंधबिलाव ।
समृद्ध–(सं. वि.) जिसके पास अधिक सम्पत्ति हो, सम्पन्न, उन्नतिशील ।
समृद्धि–(सं. स्त्री.) ऐश्वर्य, उन्नति, सफलता, प्रभाव, सम्पत्ति ।
समेटना–(हिं. क्रि. स.) बिखरी हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना, बटोरना, अपने ऊपर लेना ।
समेत–(सं. वि.) संयुक्त, मिला हुआ; (अव्य.) सहित, साथ ।
समेधित–(सं. वि.) [illegible] ।
समोह–(सं. पुं.) संग्राम, युद्ध; (वि.) मोहयुक्त ।

समौरिया–(हिं. वि.) समवयस्क, बराबर वय का।
सम्–(सं. उप.) पूर्णता, आधिक्य आदि द्योतक उपसर्ग।
सम्मंतव्य–(सं. वि.) अच्छी तरह विचारने योग्य।
सम्मत–(सं. वि.) अभिमत, जिसकी राय मिली हो, सहमत; (पुं.) अनुमति, आज्ञा, सम्मति।
सम्मति–(सं. स्त्री.) इच्छा, ऐकमत्य, प्रतिष्ठा, अभिप्राय, मत, अनुमति, आज्ञा, आदेश।
सम्मद–(सं. पुं.) आमोद, हर्ष।
सम्मन–(हिं. पुं.) अदालत की ओर से किसी को न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा।
सम्मर्द–(सं. पुं.) युद्ध, लड़ाई, आपस का विवाद।
सम्मर्दन–(सं. पुं.) वासुदेव के एक पुत्र का नाम, अच्छी तरह मलने का कार्य।
सम्मा–(सं. स्त्री.) तुल्यता, समानता।
सम्माद–(सं. पुं.) उन्माद, पागलपन।
सम्मान–(सं. पुं.) प्रतिष्ठा, मान, परिमाण आदि मापना।
सम्मानना–(हिं. क्रि. स.) आदर-सत्कार करना।
सम्माननीय–(सं. वि.) आदर के योग्य।
सम्मानित–(सं. वि.) आदर किया हुआ।
सम्मान्य–(सं. वि.) आदर करने योग्य।
सम्मार्ग–(सं. पुं.) श्रेष्ठ पद, मोक्ष।
सम्मार्जन–(सं. पुं.) संशोधन, साफ करना।
सम्मार्जनी–(सं. स्त्री.) झाड़ू, बुहारी।
सम्मिलन–(सं.पुं.) मिलन, मिलाप, मेल।
सम्मिलित–(सं. वि.) युक्त, मिला हुआ।
सम्मिश्रण–(सं. पुं.) मिलाने की क्रिया, मिलावट।
सम्मुख–(सं. वि., अव्य.) अभिमुख, आगे, सामने (का)।
सम्मूढ–(सं. वि.) मुग्ध, निर्बोध, अज्ञान।
सम्मृष्ट–(सं. वि.) अच्छी तरह स्वच्छ या साफ किया हुआ।
सम्मेघ–(सं. पुं.) मेघपूर्ण आकाश।
सम्मेलन–(सं. पुं.) मनुष्यों का एकत्रित समाज, जमघट, सभा, समिति, संगम, मेल।
सम्मोह–(सं. पुं.) भ्रम, सन्देह, मूर्च्छा, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु वर्ण होता है।
सम्मोहक–(सं. वि.) लुभानेवाला, संज्ञाहीन करनेवाला।
सम्मोहन–(सं. पुं.) मोहित करने की क्रिया, शत्रु को मोहित करनेवाला एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण का नाम।
सम्यक्–(सं. वि.) ठीक, उपयुक्त, पूरा।
सम्यक्ज्ञान–(सं. पुं.) पूरा ज्ञान।
सम्यक्योग–(सं. पुं.) ध्यान-निविष्ट योग समाधि।
सम्राज्ञी–(सं. स्त्री.) सम्राट् की पत्नी, राजमहिषी।
सम्राट्–(सं. पुं.) राजाधिराज।
सयत्न–(सं. वि., अव्य.) यत्नपूर्ण, यत्नपूर्वक।
सयन–(सं. पुं.) बन्धन, विश्वामित्र के पुत्र का नाम, (हिं. पुं.) देखे 'शयन'।
सयान–(हिं. वि.) चतुर, प्राप्तवयस्क।
सयानपन–(हिं. पुं.) चतुराई, दक्षता।
सयाना–(हिं. वि.) प्रौढ़ वय का, बुद्धिमान्, धूर्त।
सर–(सं. पुं.) सरोवर, तालाब, जल, बाण, गति, पानी का झरना; (फा. पुं.) सिर, चोटी, शीर्ष।
सरई–(हिं. स्त्री.) सरहरी।
सरकंडा–(हिं. पुं.) सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाँठें होती हैं।
सरक–(सं. पुं.) सरोवर, तालाब, आकाश, मद्यपान, यात्रियों का दल।
सरकना–(हिं. क्रि. अ.) रेंगना, किसी ओर हटना, टलना, खिसकना, काम चलना, निर्वाह होना, किसी ओर बढ़ना।
सरकार–(फा. स्त्री.) देश का शासन-मंडल, हुकूमत।
सरकारी–(फा. वि.) सरकार-संबंधी, राजकीय।
सरक्त–(सं. वि.) रक्त से लथपथ।
सरग–(हिं. पुं.) देखें 'स्वर्ग'।
सरगना–(हिं. वि.) अगुआ, प्रधान।
सरगम–(हिं. पुं.) स्वर-ग्राम, संगीत के सातों स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम।
सरघा–(सं. स्त्री.) मधुमक्खी।
सरज–(सं. पुं.) नवनीत, मक्खन; (वि.) मलिन, मैला।
सरजना–(हिं. क्रि. स.) सृष्टि करना, बनाना।
सरजीवन–(हिं. वि.) जिलानेवाला, उपजाऊ, हरा-भरा।
सरट, सरटक–(सं. पु.) कृकलास, गिरगिट।
सरण–(सं. पुं.) गमन, आगे बढ़ना।
सरणि, सरणी–(सं. स्त्री.) पंक्ति, पगडंडी, लकीर।
सरताज–(हिं. पुं.) श्रेष्ठ व्यक्ति।
सरता-बरता–(हिं. पुं.) बाँट, बँटाई।
सरतारा–(हिं. वि.) निश्चित।
सरदल–(हिं. पुं.) द्वार का साह।
सरदार–(हिं. पुं.) नेता, अगुआ, सिखों की पदवी।
सरदारनी–(हिं. स्त्री.) सरदार की पत्नी।
सरदारी–(हिं. स्त्री.) सरदार होने की अवस्था या भाव।
सरधर–(हिं. पुं.) तरकश, तूणीर।
सरन–(हिं. स्त्री.) देखें 'शरण'।
सरनदीप–(हिं. पुं.) देखें 'सिंहलद्वीप'।
सरना–(हिं. क्रि. अ.) काम चलना, सम्पादित होना, हिलना-डोलना, सरकना, पूरा पड़ना, किया जाना।
सरनी–(हिं. स्त्री.) मार्ग।
सरपट–(हिं. स्त्री.) घोड़े की बहुत वेग की चाल या दौड़; (अव्य.) ऐसी चाल में।
सरपत–(हिं. पुं.) कुश की तरह की एक घास जिसमें बहुत लंबी पत्तियाँ होती हैं जो छप्पर आदि बनाने के काम में आती है।
सरबंधी–(हिं. पुं.) धनुर्धारी।
सरब–(हिं. वि.) देखें 'सर्व'।
सरबस–(हिं. पुं.) देखें 'सर्वस्व'।
सरम–(हिं. स्त्री.) लज्जा।
सरमा–(सं. स्त्री.) विभीषण की स्त्री का नाम, देवताओं की एक कुतिया।
सरमात्मज–(सं.पुं.) कुत्ते का बच्चा, पिल्ला।
सरया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मोटा धान जिसका चावल लाल होता है।
सरयू–(सं. स्त्री.) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम, घाघरा।
सरर–(हिं. पुं.) बाँस या सरकंडे की पतली छड़ी।
सरराना–(हिं. क्रि. अ.) हवा की तीव्र गति से सर-सर शब्द उत्पन्न होना।
सरल–(सं. पुं.) चीड़ का वृक्ष, देवदार, अग्नि, पक्षी, गंधाबिरोजा; (वि.) जो टेढ़ा न हो, सीधा, भोला-भाला, सहज, कपटरहित; **–काष्ठ**–(पुं.) चीड़ की लकड़ी; **–ता**–(स्त्री.) सिधाई, सीधापन, सुगमता, सादापन, सचाई; **–द्रु**–(पुं.) चिरौंजी का पेड़; **–द्रव**–(पुं.) गंधाबिरोजा; **–निर्यास**–(पुं.) गंधाबिरोजा; **–रस**–(पुं.) गंधाबिरोजा।
सरला–(सं. स्त्री.) मोतिया, सफेद निसोथ, काली तुलसी, चीड़ का पेड़।

सरलित–(सं. वि.) सीधा किया हुआ ।
सरवन–(सं. पुं.) अंधक मुनि के पुत्र जो अपने माता-पिता को वहँगी में बैठाकर ढोया करते थे, श्रवणकुमार ।
सरवर–(हिं. पुं.) देखें 'सरोवर', तालाब; (स्त्री.) बराबरी ।
सरवरि–(हिं. स्त्री.) बराबरी, सादृश्य, तुलना ।
सरवाक–(हिं. पुं.) संपुट, दीया, कसोरा ।
सरवान–(हिं. पुं.) तंबू ।
सरस–(सं. वि.) रसयुक्त, रसीला, स्वादिष्ट, मधुर, मीठा, हरा, गीला, नया, मनोहर, सुन्दर, भावपूर्ण, सहृदय, रसिक; (पुं.) सरोवर, तालाब, छप्पय का एक भेद ।
सरसई–(हि. स्त्री.) सरस्वती नदी, सरस्वती देवी, हरापन, सरसता, आरंभ में फलों के सरसों के तुल्य दाने ।
सरसठ–(हिं. वि., पुं.) देखें 'सड़सठ' ।
सरसता–(सं.स्त्री.) सरस होने का भाव, स्वाद आदि ।
सरसना–(हि. क्रि. अ.) बढ़ना, पनपना, शोभित होना, रसपूर्ण होना, हरा होना, भावावेश में आना ।
सरसर–(हिं. पुं.) साँप के रेंगने का शब्द, वायु के चलने से उत्पन्न शब्द ।
सरसराना–((हिं. क्रि. अ.) वायु का वेग से चलना, सरसर की ध्वनि होना, सनसनाना ।
सरसराहट–(हिं. स्त्री.) झाड़ आदि में साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न शब्द, वायु के बहने का शब्द, सुरसुराहट ।
सरसरी–(अ. अव्य.) जल्दी में, बिना सोचे-समझे; (वि.) जल्दी में किया जानेवाला, त्वरित, चलता ।
सरसाई–(हिं. स्त्री.) सरसता, अधिकता, शोभा ।
सरसाना–(हिं.क्रि.अ.,स.) रसपूर्ण करना, हराभरा करना, सरसना ।
सरसिका–(सं. स्त्री.) छोटा ताल, बावली ।
सरसिज–(स. पुं.) पद्म, कमल; (वि.) तालाब में उत्पन्न होनेवाला ।
सरसिजयोनि–(सं. पुं.) ब्रह्मा ।
सरसिरुह–(सं. पुं.) पद्म, कमल ।
सरसी–(सं. स्त्री.) पुष्करिणी, बावली, ताल, एक प्रकार का वर्णवृत्त, (इसका दूसरा नाम सिंहक या [illegible] है); –रुह–(पुं.) पद्म, कमल ।
सरसेटना–(हि. क्रि. स.) फटकारना, भला-बुरा कहना ।

सरसों–(हिं.स्त्री.) सर्षप, एक तेलहन का पौधा जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकाला जाता है ।
सरसौंहाँ–(हिं. वि.) सरस बनाया हुआ ।
सरस्वती–(सं. स्त्री.) पंजाब की एक प्राचीन नदी का नाम, शारदा, वाग्देवी, वाणी, विद्या, दुर्गा, ब्राह्मी, गाय, स्त्री, रत्न, सोम लता, एक छन्द का नाम; –पूजा–(स्त्री.) सरस्वती का पूजनोत्सव जो वसन्त पंचमी (माघ शुक्ला पंचमी) को होता है; –व्रत–(पुं.) श्रीपंचमी-व्रत ।
सरह–(हिं. पुं.) पतंग, फतिंगा, टिड्डी ।
सरहज–(हिं. स्त्री.) साले की स्त्री ।
सरहरा–(हि.वि.) सीधा ऊपर गया हुआ, चिकना, जिस पर पैर फिसले ।
सरहरी–(हिं. स्त्री.) सरपत की जाति का एक पौधा ।
सराँग–(हिं. स्त्री.) मोटे लोहे का ठीहा जिस पर लोहार पात्र बनाते हैं ।
सरा–(हिं. स्त्री.) देखें 'सराय' ।
सराई–(हिं. स्त्री.) शलाका, सलाई, सरकंडे की पतली छड़ी, मिट्टी की कटोरी या दीया, सकोरा ।
सराग–(हि.पुं.) लोहे की छड़ या सीकचा ।
सराजक–(सं.वि.) राजा द्वारा शासित ।
सराजाम–(हिं. पुं.) सामग्री ।
सराध–(हिं. पुं.) देखें 'श्राद्ध' ।
सराना–(हिं. क्रि. स.) किसी काम को पूरा करना ।
सराप–(हिं. पुं.) देखें 'शाप' ।
सरापना–(हिं. क्रि. स.) शाप देना ।
सराफ–(हिं. पुं.) रुपये-पैसे या सोने-चाँदी का लेन-देन करनेवाला महाजन, सोने-चाँदी का व्यापारी, वह दुकानदार जो रुपये, नोट आदि भुनाता है ।
सराफा–(हिं. पुं.) सराफी, रुपये-पैसे या सोने-चाँदी के लेन-देन का काम, सराफों का बाजार ।
सराफ़ी–(हिं स्त्री.) सराफ का काम, सोना-चाँदी या रुपये-पैसे के लेन-देन का व्यापार, महाजनी, वह बट्टा जो नोट, रुपये आदि भुनाने के बदले दिया जाता है ।
सराबोर–(हिं. वि.) भीगा हुआ ।
सराय–(फा. स्त्री.) यात्रियों का विश्राम-गृह, पड़ाव ।
सराव–(सं. पुं.) पीने का पात्र, सकोरा, कटोरा दीया ।
सरावग, सरावगी–(हिं. पुं.) जैन धर्मावलम्बी, जैनी ।

सरासन–(हिं. पुं.) देखें 'शरासन' ।
सरासर–(हि.अव्य.) आद्योपान्त, पूर्णतया ।
सराह–(हिं. स्त्री.) श्लाघा, प्रशंसा ।
सराहना–(हिं. क्रि. स.) प्रशंसा करना; (स्त्री.) बड़ाई, तारीफ ।
सराहनीय–(हिं. वि.) प्रशंसा करने योग्य, अच्छा, बढ़िया ।
सरि–(हिं. स्त्री.) सरिता, नदी, समता, बराबरी; (वि.) सदृश, समान ।
सरिका–(सं. स्त्री.) मुक्ता, मोती, हींग, ताल ।
सरित्–(सं. स्त्री.) नदी ।
सरिता–(सं. स्त्री.) जल की धारा, नदी ।
सरित्पति–(सं. पुं.) समुद्र ।
सरित्सुत–(सं. पुं.) भीष्म ।
सरिया–(हिं. स्त्री.) सरई, पतली छड़, कोई छोटी मुद्रा ।
सरियाना–(हिं. क्रि. स.) बिखरी हुई वस्तुओं को ढंग से समेटना, इकट्ठा करना, थाक लगाना ।
सरिल–(सं. पुं.) देखें 'सलिल', जल ।
सरिवन–(हि.पुं.) शालपर्णी नामक वृक्ष ।
सरिवरि–(हिं. स्त्री.) समता, बराबरी ।
सरिस–(हिं. वि.) देखें 'सदृश', समान ।
सरीखा–(हि.वि.) तुल्य, सदृश, समान ।
सरीफा–(हिं. पुं.) एक छोटा वृक्ष जिसका फल बहुत मीठा होता है, शरीफा, श्रीफल ।
सरीर–(हिं. पुं.) देखें 'शरीर', देह ।
सरीसृप–(सं. पुं.) कोई रेंगनेवाला जन्तु, साँप, विष्णु का एक नाम; (वि.) रेंगनेवाला ।
सरुच्–(सं. वि.) शोभायुक्त, कान्तिमान् ।
सरुज–(सं. वि.) रोगग्रस्त, रोगी ।
सरुष–(सं. वि.) क्रोधपूर्ण, कुपित ।
सरूप–(सं. वि.) साकार, सदृश, समान आकारवाला, सुन्दर, रूपवान्; (हि.पुं.) देखें 'स्वरूप' ; –ता–(स्त्री.) –त्व–(पुं.) समानता ।
सरूपोपमा–(सं. स्त्री.) देखें 'समानोपमा' ।
सरेख–(हि. वि.) उम्र में बड़ा और बुद्धिमान, श्रेष्ठ, सयाना ।
सरेखना–(हि. क्रि. स.) देखें '[illegible]' ।
सरेखा–(हि. वि.) देखें 'सरेख' ।
सरेफ–(सं. वि.) रेफयुक्त ।
सरेरा–(हि. पुं.) पाल में [illegible] रस्सी जिसको ढीला [illegible] हवा निकल जाती है, [illegible] की [illegible] ।
सरो–(हि. पुं.) एक ऊँचा और सीधा

वृक्ष जो बगीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है, बनझाऊ।
सरोई–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बड़ा या ऊँचा वृक्ष।
सरोग–(सं. वि.) रोगग्रस्त, रोगी।
सरोज–(सं. पुं.) पद्म, कमल; **–मुखी**–(स्त्री.) कमल के समान मुखवाली स्त्री।
सरोजिनी–(सं. स्त्री.) पद्म, कमल का पौधा, कमलों से भरा हुआ तालाब।
सरोरुह–(सं. पुं.) पद्म, कमल।
सरोरुहासन–(सं. पुं.) पद्मासन।
सरोला–(हिं.पुं.) एक प्रकार की मिठाई।
सरोवर–(सं. पुं.) तालाब, पोखरा, झील।
सरोष–(सं. वि.) रोषपूर्ण, कुपित।
सरोही–(हिं. स्त्री.) देखें 'सिरोही'।
सरौ–(हिं.पुं.) कटोरा, ढपना, देखें 'सरो'।
सरौता–(हिं. पुं.) सुपारी काटने का एक यन्त्र।
सरौती–(हिं. स्त्री.) छोटा सरौता, एक प्रकार की पतली ईख।
सर्कस–(अं. पुं.) शारीरिक कौशल, जानवरों के कुछ विशिष्ट खेल आदि का प्रदर्शन, ऐसा प्रदर्शन दिखलानेवाली संस्था।
सर्कार, सर्कारी–(हिं. वि., स्त्री.) देखें 'सरकार, सरकारी'।
सर्ग–(सं. पुं.) विष्णु, शिव, अनुमति, आज्ञा, प्रकृति, स्वभाव, अध्याय, प्रकरण, परिच्छेद, उत्साह, मोह, मूर्च्छा, परित्याग, संसार की उत्पत्ति, संकल्प, प्रवृत्ति, चेष्टा, प्रयत्न, जीव, प्राणी, गमन, गति, बहाव, मूल, उद्गम, सन्तति, सन्तान; (हिं.पुं.) स्वर्ग; **–कर्ता**–(पुं.) ब्रह्मा; **–पताली**–(हिं. पुं.) ऐंचाताना; वह बैल जिसकी एक सींग ऊपर उठी और दूसरी नीचे झुकी हुई हो; **–बंध**–(पुं.) वह बड़ा काव्य जो अनेक सर्गों में विभक्त हो।
सर्ज–(हिं. पुं.) शल्लकी वृक्ष, बड़ी जाति का शाल वृक्ष, धूना, राल, सलई का पेड़।
सर्जन–(सं. पुं.) विसर्जन, त्याग करना, छोड़ना, निकालना, सृष्टि, सर्ग।
सर्जमणि–(सं. पुं.) धूना, गोंद, मोचरस।
सर्जि–(सं. पुं.) सज्जीखार।
सर्जी–(सं. स्त्री.) सज्जी मिट्टी।
सर्जू–(हिं. स्त्री.) देखें 'सरयू'।
सर्ता–(सं. पुं.) घोटक, घोड़ा।
सर्प–(सं. पुं.) सरकना, रेंगना, एक म्लेच्छ जाति का नाम, साँप; **–काल**–(पुं.) गरुड़; **–गंधा**– (स्त्री.) एक वृक्ष का नाम, नागदमनी; **–गति**–(स्त्री.) कुटिल गति, कपट की चाल; **–घाती**–(वि.) साँप मारनेवाला; **–छिद्र**–(पुं.) साँप का बिल; **–ण**–(पुं.) धीरे-धीरे चलना, रेंगना; **–तृण**–(पुं.) नकुलकंद; **–दंष्ट्र**–(पुं.) साँप का दाँत; **–दंष्ट्रा**–(स्त्री.) वृश्चिकाली; **–निर्मोचन**–(पुं.) साँप की केंचुली; **–प्रिय**–(पुं.) चन्दन का वृक्ष; **–फेण**–(पुं.) अफीम; **–बंध**–(पुं.) कुटिल चाल; **–बल**–(पुं.) साँप की शक्ति, विष; **–बेलि**–(स्त्री.) नागवल्ली, पान; **–भुज्**–(पुं.) मोर; **–माली**–(पुं.) शिव; **–यज्ञ**–(पुं.) राजा जनमेजय का नागों के संहार के लिये किया हुआ यज्ञ; **–राज**–(पुं.) शेषनाग; **–लता, –वल्ली**–(स्त्री.) पान; **–विद्या**– (स्त्री.) साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या; **–शीर्ष**–(पुं.) एक प्रकार की ईंट जो वेदी बनाने के काम में आती है; **–सत्र**–(पुं.) सर्प-यज्ञ।
सर्पाक्ष–(सं.पुं.) रुद्राक्ष, सरहटी (एक पौधा)।
सर्पारि–(सं. पुं.) नेवला, गरुड़, मोर।
सर्पावास–(सं. पुं.) चन्दन, सर्प के रहने का स्थान।
सर्पाशन–(सं. पुं.) गरुड़, मोर।
सर्पिणी–(सं.स्त्री.) साँपिन, भुजंगी लता।
सर्पिस–(सं. पुं.) हवि, घृत।
सर्पी–(सं. वि.) धीरे-धीरे चलनेवाला, रेंगनेवाला।
सर्पेष्ट–(सं. पुं.) श्रीखण्ड, चन्दन।
सर्बस–(हिं. पुं.) देखें 'सर्वस्व'।
सर्म–(हिं. पुं.) लज्जा।
सर्व–(सं. पुं.) शिव, महादेव, शिव की एक मूर्ति, विष्णु, पारा, शिलाजीत, रसवत; (सं. वि.) सम्पूर्ण, समग्र, सब; **–क**–(वि.) सकल, समग्र; **–कर्त्ता**–(पुं.) ब्रह्मा; **–काम**–(वि.) सब प्रकार की कामनाओं या इच्छाओं को पूरा करनेवाला; **–०द**–(वि.) सब कामनाएँ पूरी करनेवाला; **–०मय**–(वि.) सब कामनाओं से युक्त; **–कामिक**–(वि.) सब विषयों की कामना पूर्ण करनेवाला; **–कामी**–(वि.) सब प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करनेवाला; **–कारक**–(वि.) सब-कुछ करनेवाला; **–कारण**–(पुं.) सब का कारण; **–कारी**–(पुं.) ब्रह्मा; **–काल**–(अव्य.) सब समय, सदा; **–केसर**–(पुं.) मौलसिरी का वृक्ष; **–गंध**–(पुं.) इलायची, नागकेसर, लवंग, केसर, अगर; **–ग**–(पुं.) शिव, ब्रह्मा, आत्मा, भीम के पुत्र का नाम; **–गत**–(वि.) सर्वव्यापी; **–गुणी**–(वि.) सर्वगुणसम्पन्न; **–गुरु**–(पुं.) सब का गुरु; **–ग्रहरूपी**–(पुं.) विष्णु, जनार्दन; **–ग्रास**–(पुं.) चन्द्र या सूर्य-ग्रहण जिसमें उनका संपूर्ण मण्डल छिप जाता है; **–चारी**–(वि.) सर्वव्यापक; (पुं.) शिव; **–जन**–(पुं.) सब लोग; **–०प्रिय**–(वि.) सब का प्रिय; **–जनीन**–(वि.) सर्वजन-संबंधी; **–जनीय**–(वि.) सब के लिए हितकर; **–जय**–(पुं.) पूर्ण जय, पूरी जीत; **–जित्**–(पुं.) काल, मृत्यु; **–जीवी**–(पुं.) वह जिसके बाप, दादा और परदादा–तीनों जीवित हों; **–ज्ञ**–(पुं.) शिव, विष्णु देवता, ईश्वर; (वि.) सब कुछ जाननेवाला; **–०ता**–(स्त्री.) सर्वज्ञ होने का भाव; **–ज्ञा**–(स्त्री.) दुर्गा; **–ज्ञाता**–(वि.) सब-कुछ जाननेवाला; **–तंत्र**–(वि.) जिसको सब शास्त्र ज्ञात हों; **–तः**– (अव्य.) सब ओर, चारों ओर, पूर्ण रूप से **–त्र**–(अव्य.) हर जगह, सब स्थान में; **–०ग**–(वि.) व्यापक; (पुं.) वायु; **–०गामी**–(वि.) सर्वव्यापक, वायु, **–था**–(अव्य.) सब प्रकार से, सब तरह से, अतिशय, बिलकुल, पूर्णतः; **–दंडधर**–(पुं.) शिव, महादेव; **–द**–(वि.) सब-कुछ देनेवाला; (पुं.) शिव, महादेव; **–दमन**–(पुं.) शकुन्तला का पुत्र, भरत; **–दर्शन**–(पुं.) जिसकी सब लोगों पर दृष्टि हो; **–दर्शी**–(वि.) सब-कुछ देखनेवाला; (पुं.) परमेश्वर; **–दा**–(अव्य.) सदा, हमेशा; **–दुःखक्षय**–(पुं.) सब प्रकार के दुःखों से निवृत्ति, मोक्ष; **–देवमय**–(वि.) सकल देवताओं के स्वरूपों से युक्त; **–देवमुख**–(पुं.) अग्नि; **–देशीय**–(वि.) सब देशों से संबद्ध; **–द्वारिक**–(वि.) दिग्विजयी; **–धन्वी**–(पुं.) कन्दर्प, कामदेव; **–धर**–(वि.) सब को धारण करनेवाला; **–धातुक**–(पुं.) ताम्र, तांबा; **–धाम**–(पुं.) जन्मभूमि; **–धारी**–(पुं.) शिव, महादेव; **–नाभ**–(पुं.) एक प्रकार का अस्त्र; **–नाम**–(पुं.) विष्णु, ब्रह्मा, महेश, व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के लिए प्रयुक्त किया जाता है, यथा–मैं, तू, वह आदि; **–नायक**–(पुं.) सब का नेता या अग्रणी; **–नाश**–(पुं.) सत्यानास; **–नाशी**– (वि.)–सब का नाश करनेवाला; **–निधन**–(पुं.) सब का नाश या वध; **–नियंता**–(वि.) सब को वश में करनेवाला;

–नियोजक–(पुं.) विष्णु; **–पति**–(पुं.) विष्णु, सब का स्वामी; **–पालक**–(वि.) सब का पालन करनेवाला; **–पूत**–(वि.) सब तरह से पवित्र; **–पूरक**–(वि.) सब इच्छाएं पूर्ण करनेवाला; **–पूर्व**–(अव्य.) सब से पहले; **–पृष्ठ**–(अव्य.) सब के पीछे; **–प्रद**–(वि.) सब-कुछ देनेवाला; **–प्रिय**–(वि.) सब का प्यारा, जो सब को अच्छा लगे; (पुं.) शिवभक्त, महादेव का प्रिय; **–भक्ष, –भक्षी** – (वि.) सब-कुछ खानेवाला; **–भाव**–(पुं.) सम्पूर्ण सत्ता या अस्तित्व; **–भूत**–(पुं.) सब प्राणी, सारी सृष्टि; **–०हित**–(पुं.) सब प्राणियों की भलाई; **–भूतांतक**–(पुं.) यम; **–भूतात्मक**– (वि.) सर्वभूतस्वरूप; **–भूतात्मा**–(पुं.) सब प्राणियों की आत्मा; **–भूताधिपति**–(पुं.) विष्णु; **–भोगी**– (वि.) सब का आनन्द लेनेवाला, सब-कुछ खानेवाला; **–मंगला**–(स्त्री.) सब प्रकार का मंगल करनेवाली दुर्गा, लक्ष्मी; **–मात्रा**–(स्त्री.) छन्द का एक भेद; **–योनि**–(पुं.) सब का कारण; **–रक्षण**–(पुं.) सब प्रकार से रक्षा करना; **–रसा**–(स्त्री.) लावे का माँड़; **–लिंगी**–(वि.) आडम्बरी, पाखण्डी; **–लोकेश, –लोकेश्वर**–(पुं.) ब्रह्मा, विष्णु; **–वल्लभा**–(स्त्री.) कुलटा स्त्री, छिनार; **–वादी**–(वि.) सब कुछ बोलनेवाला; (पुं.) शिव का एक नाम; **–वास**–(पुं.) शिव, महादेव; **–विज्ञानी**–(वि., पुं.) सब विज्ञानों का जाननेवाला; **–विद्**–(पुं.) परब्रह्म, परमेश्वर, ओंकार; **–विद्व**–(वि.) सब विषयों का विद्वान्; **–विद्या**–(स्त्री.) सब प्रकार की विद्याएं; **–वीर**–(वि.) जिसके बहुत-से योग्य पुत्र हों; **–वेद**–(वि.) सर्वज्ञ; **–व्यापक**–(वि.) देखें 'सर्वव्यापी'; **–व्यापी**–(वि.) सब में रहनेवाला; **–शक्तिमान्**–(वि.) जिसमें सब-कुछ करने का सामर्थ्य हो; (पुं.) परमेश्वर; **–शः**–(अव्य.) पूर्ण रूप से; **–श्रेष्ठ**–(वि.) सब से बड़ा, सब से उत्तम; **–श्वेता**–(स्त्री.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा; **–संपन्न**–(वि.) सब तरह से सम्पन्न; **–संभव**–(पुं.) जहाँ से सब की उत्पत्ति होती है; **–स**–(हिं. पुं.) देखें 'सर्वस्व'; **–सत्य**–(वि.) यथार्थ; **–समता**– (स्त्री.) सब के प्रति समान व्यवहार; **–समृद्ध**–(वि.) सब तरह से सम्पन्न; **–सह**–(वि.) सब-कुछ सहनेवाला; **–साक्षी**–(पुं.) अग्नि, वायु; **–साधारण**–(वि.) सामान्य, जो सब में पाया जाय; (पुं.) साधारण लोग, जनता; **–सामान्य**–(वि.) जो सब में सामान्य रूप से पाया जाय; **–सिद्धा**–(स्त्री.) शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियाँ; **–सिद्धार्थ**–(वि.) जिसका सब आशय सिद्ध हुआ हो; **–सिद्धि**–(पुं.) सब कार्यों और कामनाओं का पूरा होना; **–स्व**–(पुं.) सम्पूर्ण सम्पत्ति, सब-कुछ, कुल माल-टाल; **–हर**–(वि.) सब-कुछ हर लेनेवाला; (पुं.) यमराज, काल, शंकर, महादेव; **–हारी**–(वि.) सब-कुछ हरनेवाला; **–हित**–(वि.) सब का हितकारक; **–हुत**–(पुं.) यज्ञ।

सर्वतोभद्र–(सं. वि.) सब प्रकार से कल्याणप्रद; (पुं.) विष्णु का रथ, एक प्रकार का चित्रकाव्य, एक प्रकार का पूजाधार चक्र जिसके ऊपर घटादि स्थापन कर पूजा की जाती है, वह चौकोर गृह या मंदिर जिसके चारों ओर द्वार हों, पूजा के लिये वस्त्र पर बनाया हुआ एक मांगलिक चिह्न, जिसके सिर तथा दाढ़ी-मूंछ के बाल मुँड़े हों, वह पहेली जिसमें शब्द के खंडों के भी अलग-अलग अर्थ ग्रहण किये जाते हैं।

सर्वतोभद्रा–(सं. स्त्री.) अभिनय करनेवाली, नटी।

सर्वतोभावेन–(सं. अव्य.) पूर्ण रूप से, भली भाँति।

सर्वतोमुख–(सं. वि.) जिसका मुख चारों ओर हो, व्यापक; (पुं.) जल, आकाश, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, स्वर्ग, अग्नि, आत्मा।

सर्वांग–(सं. पुं.) सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव, शिव, महादेव; **–सुंदर**–(वि.) जिसका सम्पूर्ण शरीर सुन्दर हो।

सर्वांतक–(सं. वि.) सब का अन्त करनेवाला।

सर्वांतर्यामी–(सं. पुं.) सब के मन की बात जाननेवाला।

सर्वाक्ष–(सं. पुं.) शिवाक्ष, रुद्राक्ष।

सर्वाणी–(सं. स्त्री.) शर्वाणी, दुर्गा।

सर्वातिथि–(सं. पुं.) वह जो सब का सत्कार करे।

सर्वात्मा–(सं. पुं.) सब की आत्मा, ब्रह्मा, शिव।

सर्वाधिकार–(सं. पुं.) पूर्ण प्रभुत्व, पूरा अधिकार।

सर्वाधिकारी–(सं. पुं.) पूरा अधिकार रखनेवाला।

सर्वाधिपत्य–(सं. पुं.) सब के ऊपर प्रभुत्व।

सर्वानंद–(सं. वि.) जिसको सभी स्थितियों में आनन्द मिलता हो।

सर्वानुभू–(सं. वि.) सब विषयों का अनुभव करनेवाला।

सर्वाप्ति–(सं. स्त्री.) सब विषयों की प्राप्ति।

सर्वाभाव–(सं. पुं.) सब प्रकार का अभाव।

सर्वाभिसंधक–(सं. वि.) सब को धोखा देनेवाला।

सर्वाभिसार–(सं. पुं.) आक्रमण के लिये सम्पूर्ण सेना की तैयारी।

सर्वार्थ–(सं. पुं.) सकल पदार्थ; **–चिंतक**–(वि.) सब की चिन्ता करनेवाला; **–साधक**–(वि.) सब कार्य पूरा करनेवाला; **–साधन**–(पुं.) सब काम पूरा करनेवाला; **–सिद्धि**–(स्त्री.) सकल मनोरथों की सिद्धि।

सर्वावसर–(सं. पुं.) आधी रात।

सर्वाशय–(सं. पुं.) शिव।

सर्वाशी–(सं. वि.) सब-कुछ खानेवाला।

सर्वास्तिवाद–(सं. पुं.) वह दार्शनिक सिद्धान्त जो सब पदार्थों की वास्तविक सत्ता मानता है।

सर्वाह्न–(सं. पुं.) समस्त दिन।

सर्वेश, सर्वेश्वर–(सं. पुं.) सब का स्वामी या मालिक, शिव, ईश्वर, चक्रवर्ती राजा।

सर्वोत्तम–(सं. वि.) सर्वश्रेष्ठ, सब से उत्तम।

सर्वौषधि–(सं. स्त्री.) आयुर्वेद की औषधियों का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत दस बूटियाँ हैं, यथा–कुष्ठ, जटामासी, हरिद्रा, वच, चन्दन, शैलेय, मुर्रा, रक्तचन्दन, कपूर और मुस्त।

सर्षप–(सं. पुं.) सरसों, सरसों भर का परिमाण; **–कंद**–(पुं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है।

सर्षपी–(स्त्री.) सफेद सरसों।

सर्सों–(हिं. स्त्री.) देखें 'सरसों'।

सलई–(हिं. स्त्री.) शल्लकी वृक्ष, चीड़ का पेड़।

सलक्षण–(सं. वि.) लक्षणयुक्त।

सलग–(हिं. वि.) समूचा, पूरा।

सलज–(हिं. पुं.) पहाड़ी बरफ का पानी।

सलज्ज–(सं. वि.) जिसको लज्जा हो, लज्जाशील।

सलना–(हिं. क्रि. अ., स.) छिदना, साला

जाना, छेदकर लकड़ी आदि बैठाया जाना; (पुं.) लकड़ी छेदने का बरमा।
सलवट–(हिं. स्त्री.) देखें 'सिलवट'।
सलसलाना–(हिं. क्रि. अ.) सरसराना, खुजलाना, गुदगुदी होना, गीला होना।
सलसलाहट–(हिं.स्त्री.) खुजली, गुदगुदी।
सलहज–(हिं. स्त्री.) साले की स्त्री, सरहज।
सलाई–(हिं. स्त्री.) धातु की बनी हुई पतली और छोटी तीली, दियासलाई, सालने की क्रिया या भाव, सालने की मजदूरी, चीड़ की लकड़ी; (मुहा.) **–फेरना**–आँख में सुरमा लगाना
सलाजीत–(हिं. स्त्री.) देखें 'शिलाजीत'।
सलाद–(हिं. पुं.) (अं. सैलड् का अपभ्रंश) गाजर, मूली आदि का सिरके में डाला हुआ अचार।
सलाम–(अ.पुं.) नमस्कार, प्रणाम, बंदगी।
सलामत–(अ.स्त्री.) कुशल, बचाव, रक्षा।
सलामी–(फा. स्त्री.) सलाम करने की क्रिया, मुद्रा आदि।
सलाम-कराई–(हिं. स्त्री.) वह धन जो कन्यापक्षवाले दूल्हे को विवाह में मिलनी के समय देते हैं।
सलार–(हिं.पुं.) एक प्रकार की चिड़िया।
सलाह–(अ. स्त्री.) राय, मंत्रणा; **–कार**–(पुं.) सलाह देनेवाला।
सलिल–(सं.पुं.) जल, पानी, अश्रु; **–कुंतल**–(पुं.) सेवार; **–क्रिया**–(स्त्री.) जलांजलि, तर्पण; **–चर**–(वि.) जलचर; **–ज**–(पुं.) पद्म, कमल; **–द**–(पुं.) मेघ, बादल; **–निधि**–(पुं.) समुद्र, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते है, (इसका दूसरा नाम सरसी है); **–पति**–(पुं.) वरुण, समुद्र, सागर; **–प्रिय**–(पुं.) शूकर, सूअर; **–मय**–(वि.) जलपूर्ण; **–मुच्**–(पुं.) मेघ, बादल; **–योनि**–(पुं.) ब्रह्मा; **–राज**–(पुं.) सागर, समुद्र।
सलिलाकर–(सं. पुं.) समुद्र।
सलिलाधिप–(सं. पुं.) वरुण।
सलिलार्णव–(सं. पुं.) समुद्र।
सलिलाशय–(सं. पुं.) तालाब।
सलिलेंद्र–(सं. पुं.) वरुण।
सलिलौदन–(सं.पुं.) पकाया हुआ भात।
सलीपर–(अं. पुं.) (अं. स्लीपर का अपभ्रंश) चप्पल, रेल की पटरियों के नीचे बिछाने का लकड़ी का मोटा पटरा, पहिये पर चढ़ाने की हाल।
सलील–(सं. वि.) लीलायुक्त।
सलूक–(हिं.पुं.) बरताव, व्यवहार, नेकी।
सलूना–(हिं. वि.) देखें 'सलोना'।
सलोतर–(हिं. पुं.) पशु विशेषतः अश्वों का चिकित्सा-शास्त्र।
सलोतरी–(हिं. पुं.) घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला, शालिहोत्र।
सलोना–(हिं. वि.) नमक मिला हुआ, नमकीन, रसीला, सुन्दर; **–पन**–(पुं.) सलोना होने का भाव।
सलोनो–(हिं. पुं.) हिन्दुओं का वह त्यौहार जो श्रावण मास की पूर्णिमा को पड़ता है, रक्षाबंधन।
सल्तनत–(अ.स्त्री.) राज्य, राजत्व, शासन।
सल्लकी–(सं. स्त्री.) सलई का वृक्ष।
सल्लक्ष्य–(सं.पुं.) उत्तम लक्ष्य या लक्षण।
सल्लम–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा, गजी, गाढ़ा।
सल्लू–(हिं. पुं.) चमड़े की डोरी।
सव–(सं.पुं.) यज्ञ, सन्तान, सूर्य, चन्द्रमा।
सवत (ति)–(हिं. स्त्री.) देखें 'सौत'।
सवत्स–(सं.वि.) जिसके साथ बच्चा हो।
सवन–(सं. पुं.) यज्ञ, यज्ञ-स्नान, प्रसव, चन्द्रमा, अग्नि, भृगु के एक पुत्र का नाम; **–मुख**–(पुं.) यज्ञ का आरम्भ।
सवया, सवयस्क–(सं.वि.) समान वय का।
सवर्ण–(सं. वि.) सदृश, समान, समान वर्ण या जाति का।
सवर्णा–(सं.स्त्री.) सूर्य की पत्नी, छाया।
सवाँग–(हिं. पुं.) देखें 'स्वाँग'।
सवा–(हिं. वि.) सम्पूर्ण और एक का चतुर्थांशयुक्त, चौथाई-सहित; **–ई**–(स्त्री.) एक और चौथाई, सवा, जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।
सवाद–(हिं. पुं.) देखें 'स्वाद'।
सवादिक–(हिं. वि.) स्वाद देनेवाला।
सवाब–(हिं. अ.) स्वर्ग में मिलनेवाला शुभ कर्म का फल, पुण्य, भलाई।
सवाया–(हिं. वि.) सवागुना।
सवार–(फा. पुं.) घोड़े पर चढ़ा हुआ व्यक्ति, सैनिक आदि।
सवारना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सँवारना'।
सवारी–(हिं. स्त्री.) भाड़े की गाड़ी, रिक्सा, मोटर आदि, सवार होने की क्रिया, कुश्ती का एक दाँव।
सवाल–(अ. पुं.) प्रार्थना, याचना, अर्जी, गणित का प्रश्न।
सविकल्प–(सं. वि.) सन्देहयुक्त, संदिग्ध, विकल्पयुक्त; (पुं.) एक प्रकार की समाधि।
सविकार–(सं.वि.) जिसमें विकार हो।
सविकाश–(सं.वि.) फैला हुआ, खिला हुआ।
सविचार–(सं. वि.) विचारपूर्ण।
सविता–(सं. पुं.) दिवाकर, सूर्य, मदार का पेड़; **–पुत्र**–(पुं.) शनि, यम आदि; **–सुत**–(पुं.) शनैश्चर।
सवित्री–(सं. स्त्री.) प्रसव करनेवाली माता, गौ।
सविनय–(सं. वि.) विनययुक्त, विनीत; **–अवज्ञा**–(स्त्री.) राज्य के अन्यायपूर्ण कानून का शान्तिपूर्वक उल्लंघन।
सविलास–(सं.वि.) भोग-विलास करनेवाला।
सवेरा–(हिं. पुं.) सूर्योदय का समय, प्रातःकाल।
सवैया–(हिं. पुं.) सवा सेर का बाट, वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या का सवागुना रहता है, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु वर्ण रहता है, सवाई।
सव्य–(सं. वि.) वाम, बायाँ, प्रतिकूल, विरुद्ध; (पुं.) विष्णु, यज्ञोपवीत, अंगिरा के एक पुत्र का नाम।
सव्यचारी–(सं. पुं.) अर्जुन, अर्जुन वृक्ष।
सव्यभिचार–(सं. वि.) नैयायिक मत से हेत्वाभास का एक भेद।
सव्यसाची–(सं.पुं.) अर्जुन का एक नाम।
सव्याधि–(सं. वि.) व्याधिग्रस्त, पीड़ित।
सव्रत–(सं. वि.) व्रत या नियमयुक्त।
सशंक–(सं. वि.) शंकायुक्त, भयभीत, डरा हुआ, डरपोक, शंका उत्पन्न करनेवाला।
सशंकना–(हिं. क्रि. अ.) शंका करना, डरना।
सशब्द–(सं. वि.) शब्दयुक्त।
सशरीर–(सं. वि.) शरीरधारी।
सशिरस्क–(सं. वि.) मस्तकयुक्त।
सशोक–(सं. वि.) जिसको शोक या दुःख हो।
सश्रीक–(सं. वि.) लक्ष्मीवान्, धनवान्।
ससंग–(सं. वि.) साथ का, संबद्ध।
सस–(हिं. पुं.) शशि, चन्द्रमा, शशक, खरहा।
ससक–(हिं. पुं.) शशक, खरहा।
ससत्वा–(सं. स्त्री.) गर्भवती स्त्री।
ससरना–(हिं.क्रि.अ.) सरकना, फिसलना।
ससि–(हिं. पुं.) शशि, चन्द्रमा; **–धर**–(पुं.) शिव, चन्द्रमा।
ससी–(हिं. पुं.) चन्द्रमा।
ससुर–(हिं. पुं.) पति या पत्नी का पिता, श्वसुर।
ससुरा–(हिं. पुं.) श्वसुर, एक प्रकार की गाली।

(पुं.) पद्म, कमल; –धा– (अव्य.) हजारों प्रकार से; –धारा– (स्त्री.) हजारों छेद का एक पात्र; –धी– (वि.) बहुत चतुर; –नयन– (पुं.) इन्द्र; –नाम– (पुं.) वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के एक हजार नाम हों; –नेत्र– (पुं.) इन्द्र; –पत्र– (पुं.) कमल-पत्र; –पाद– (पुं.) सूर्य, विष्णु, सारस पक्षी; –बाहु– (पुं.) राजा कृतवीर्य के पुत्र, हैहय; –भुजा– (स्त्री.) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम; –मूली– (स्त्री.) बड़ी शतावर; –मौलि– (पुं.) विष्णु; –रश्मि– (पुं.) सूर्य; –लोचन– (पुं.) इन्द्र; –वक्त्र– (पुं.) इन्द्र; –शः– (अव्य.) हजारों बार; –शीर्ष– (पुं.) विष्णु।

सहस्रांशु–(सं. पुं.) सूर्य।

सहस्रांशुज–(सं. पुं.) शनि ग्रह।

सहस्रा–(सं.स्त्री.) मयूर-शिखा, मोर-शिखा।

सहस्राक्ष–(सं. पुं.) इन्द्र, विष्णु।

सहस्रानन–(सं. पुं.) विष्णु।

सहा–(सं. पुं.) ग्वारपाठा, घीकुआर, कुकही नामक पौधा, सेवती, मेहँदी, अगहन का महीना।

सहाइ, सहाई–(हिं.वि.) सहायक; (स्त्री.) सहायता, मदद।

सहाउ–(हिं. पुं.) देखें 'सहाय'।

सहादर–(सं. अव्य.) आदर के साथ।

सहाध्ययन–(सं. पुं.) एक साथ पढ़ना।

सहाध्यायी–(सं. पुं.) सहपाठी, एक साथ पढ़नेवाला।

सहाना–(हिं. पुं.) एक प्रकार का राग।

सहानुभूति–(सं. स्त्री.) किसी के कष्ट को देखकर स्वयं दुःखी होना।

सहापवाद–(सं. वि.) निन्दायुक्त।

सहाय–(सं. पुं.) सहायता, आश्रय, भरोसा, सहायक; –क– (वि.) सहायता करनेवाला; –ता– (स्त्री.) आर्थिक अथवा शारीरिक साहाय्य।

सहायिनी–(सं. स्त्री.) मदद करनेवाली स्त्री।

सहायी–(सं. वि.) सहायता करनेवाला।

सहार–(हिं. पुं.) सहन करने की क्रिया, सहनशीलता।

सहारना–(हिं. क्रि. स.) सहन करना।

सहारा–(हिं. पुं.) सहायता, मदद, आश्रय, आसरा, भरोसा।

सहार्द–(सं. वि.) प्रेमयुक्त, स्नेहसहित।

सहालग–(हिं.पुं.) हिन्दू ज्योतिषियों के अनुसार वह वर्ष, वे महीने या वे दिन जब विवाह के मुहूर्त हों।

सहिजन–(हिं.पुं.) शोभांजन, एक बड़ा वृक्ष जिसकी फलियों की तरकारी बनती है।

सहिजानी–(हिं. स्त्री.) चिह्न।

सहित–(सं.वि.) संयुक्त, मिलित, हितकर, भलाई चाहनेवाला; (अव्य.) साथ, समेत।

सहितव्य–(सं. वि.) सहन करने योग्य।

सहिथी–(हिं. स्त्री.) बरछी।

सहिदान–(हिं. पुं.), **सहिदानी**–(हिं. पुं., स्त्री.) निशान, पहिचान की वस्तु।

सहिष्णु–(सं. वि.) सहनशील, जो सहन कर सके; –ता– (स्त्री.) सहनशीलता।

सहुँ–(हिं. अव्य.) सम्मुख, सामने।

सहृदय–(सं. वि.) दयावान्, दयालु, प्रसन्नचित्त, समझदार, सज्जन, रसिक; –ता– (स्त्री.) सौजन्य, रसिकता, दयालुता

सहेजना–(हिं. क्रि. स.) अच्छी तरह जाँचना, सँभालना, समझाकर देना।

सहेजवाना–(हिं. क्रि. स.) सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेत–(हिं.पुं.) नायक-नायिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान।

सहेतु, सहेतुक–(सं. वि.) हेतुयुक्त, जिसमें कोई हेतु या कारण हो।

सहेरवा–(हिं. पुं.) हरसिंगार का वृक्ष।

सहेल–(हिं. पुं.) वह सहायता जो कृषक अपने भू-स्वामी को खेत जोतने-बोने में देता है।

सहेली–(हिं. स्त्री.) साथ में रहनेवाली स्त्री, अनुचरी, संगिनी, दासी।

सहैया–(हिं. वि.) सहन करनेवाला।

सहोक्ति–(सं. स्त्री.) एक काव्यालंकार जिसमें 'सह, संग, साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है तथा अनेक कार्य एक साथ होते हुए वर्णन किये जाते हैं, (ऐसे अलंकारों में क्रिया प्रायः एक ही रहती है।)

सहोढ–(सं. पुं.) गर्भवती अवस्था में ब्याही हुई कन्या का पुत्र।

सहोदर–(सं. पुं.) एक ही उदर से उत्पन्न सन्तान, एक ही माता के पुत्र; (वि.) सगा।

सहोर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।

सह्य–(सं. वि.) सहने योग्य; –ता– (स्त्री.) सहन।

सह्याद्रि–(सं. पुं.) बंबई प्रदेश की एक पर्वतमाला।

साँई–(हिं. पुं.) परमेश्वर, स्वामी, पति, फकीरों की एक उपाधि।

साँकड़–(हिं. पुं.) शृंखला, सीकड़।

साँकड़ा–(हिं. पुं.) पैर में पहनने का चाँदी का एक प्रकार का आभूषण।

साँकर–(हिं. स्त्री.) शृंखला, (वि.) तंग, सँकरा, दुःखमय।

साँकरा–(हिं. वि.) सँकरा; (पुं.) साँकड़ा।

सांकर्य–(सं. पुं.) मिश्रण, मिलावट।

सांकल्पित–(सं. वि.) संकल्प-संबंधी।

सांकेतिक–(सं. वि.) संकेत-संबंधी।

सांक्रामिक–(सं. वि.) जो शीघ्र संक्रमण करे, छूत से उत्पन्न होनेवाला।

सांक्षेपिक–(सं. वि.) संक्षिप्त।

सांख्य–(सं. पुं.) महर्षि कपिलकृत दर्शन जो प्रकृति को ही संसार का मूल और सत्त्व, रज तथा तम के योग से सृष्टि का विकास होना मानता है; –योग– (पुं.) ज्ञानयोग, ब्रह्मविद्या।

साँग–(हिं. स्त्री.) भाले के आकार की एक प्रकार की बरछी।

सांग–(सं. वि.) अंगयुक्त, सम्पूर्ण।

साँगरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का रंग जिससे कपड़े रँगे जाते हैं।

साँगी–(हिं. स्त्री.) बरछी, बैलगाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान, इक्के या गाड़ी के नीचे लगी हुई जाली।

सांगोपांग–(सं. अव्य.) अंगों और उपांगों सहित।

सांग्रामिक–(सं.वि.) युद्ध या संग्राम-संबंधी।

सांघाटिका–(सं. स्त्री.) स्त्री-प्रसंग, मैथुन, कुटनी, दूती।

सांघात–(सं. पुं.) समूह, दल।

सांघातिक–(सं. वि.) हनन करनेवाला, मारक।

साँच–(हिं. वि.) सत्य, यथार्थ, ठीक; (पुं.) सच्ची बात।

साँचला–(हिं. वि.) सत्यवादी, सच्चा।

साँचा–(हिं. पुं.) वह उपकरण जिसमें कोई तरल या गलाया हुआ पदार्थ ढालकर किसी विशेष आकार की कोई वस्तु बनाई जाती है, बेलबूटा छापने का ठप्पा, छापा, किसी वस्तु की छोटी आकृति जो आदर्श के रूप में बनाई जाती है; (मुहा.) **साँचे में ढला हुआ**–बहुत ही सुन्दर बनावट का।

साँचिया–(हिं. पुं.) किसी प्रकार का साँचा बनानेवाला।

साँची–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पान; (स्त्री.) पुस्तकों की छपाई का वह प्रकार जिसमें पंक्तियाँ बेंड़े बल होती, पृष्ठ कम चौड़े और अधिक लंबे होते तथा पन्ने अलग-अलग रहते हैं।

साँझ–(हिं. स्त्री.) सन्ध्या, शाम ।
साँझा–(हिं.पुं.) किसी व्यवसाय में हिस्सा, पत्ती, साझा ।
साँझी–(हिं. स्त्री.) मन्दिरों में देवता के आगे भूमि पर फूल-पत्तियों की सजावट ।
साँट–(हिं. स्त्री.) पतली छड़ी, कोड़ा, शरीर पर चाबुक, कोड़े आदि की मार का चिह्न या दाग ।
साँटा–(हिं. पुं.) डंडा, ईख, गन्ना, कोड़ा, करगह का वह डंडा जिसकी सहायता से ताने के सूत नीचे-ऊपर होते हैं ।
साँटिया–(हिं. पुं.) डुगडुगी पीटनेवाला ।
साँटी–(हिं. स्त्री.) पतली छोटी छड़ी, बाँस की कमची, शाखा, मेल-मिलाप, बदला, प्रतिकार, टूटे हुए रस्से के खंडों को गाँठ देकर जोड़ने की एक विधि ।
साँठ–(हिं. पुं.) साँटा, सरकंडा, वह लंबा डंडा जिससे पीटकर अन्न के दाने अलगाये जाते हैं, ईख, गन्ना; **–गाँठ**–(स्त्री.) मेल-मिलाप, मित्रता, दोस्ती ।
साँठना–(हिं, क्रि. स.) पकड़े रहना ।
साँठी–(हिं.स्त्री.) पूँजी, मूलधन, गदहपूरना ।
साँड़–(हिं. पुं.) वह घोड़ा या बैल जो बधिया नहीं किया जाता और जोड़ खिलाने के लिये पाला जाता है, वृषोत्सर्ग में छोड़ा हुआ बैल; (वि.) बलिष्ठ, कुकर्मी ।
साँड़नी–(हिं. स्त्री.) ऊँटनी जो तेज चलती और सवारी के काम में आती है ।
साँड़ा–(हिं. पुं.) छिपकली की जाति का एक प्रकार का जंतु ।
साँड़िया–(हिं, पुं.) वेग से चलनेवाला ऊँट, साँड़नी पर सवारी करनेवाला ।
सांततिक–(सं. वि.) संतान-संबंधी ।
सांतर–(सं. वि.) विरल, सछिद्र, झीना ।
सांत्वन–(सं. पुं.) आश्वासन, ढाढ़स, प्रणय, प्रेम, सन्धि, मेल ।
सांत्वना–(सं. स्त्री.) सांत्वन ।
सांत्वित–(सं. वि.) जिसे सांत्वना दी गई हो ।
साँथरी–(हिं. स्त्री.) चटाई, बिछौना ।
साँथा–(हिं. पु.) चमड़ा कूटने का लोहे का एक औजार ।
साँथी–(हिं. स्त्री.) ताने के सूतों का नीचे-ऊपर होने की क्रिया ।
साँद–(हिं. पुं.) ठेंगुर ।
सांद्र–(सं. वि.) स्निग्ध, चिकना, सुन्दर ।
सांद्रपद–(सं. पुं.) एक छन्द जिसके प्रति चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं ।
सांद्रपुष्प–(सं. पुं.) बहेड़ा ।
साँध–(हिं. पुं.) लक्ष्य ।
साँधना–(हिं. क्रि. स.) निशाना लगाना, रस्सियों आदि में जोड़ लगाना, मिश्रित करना, मिलाना, सानना, पूरा करना ।
साँधा–(हिं. पुं.) दो रस्सियों को जोड़ने में दी हुई गाँठ ।
सांध्य–(सं. वि.) संध्या-संबंधी ।
साँप–(हिं. पुं.) एक प्रसिद्ध विषधर लंबा कीड़ा जो पेट के बल भूमि पर रेंगता है, भुजंग, सर्प, बहुत दुष्ट मनुष्य; (मुहा.) **कलेजे पर साँप लोटना**–ईर्ष्या आदि के कारण चित्त में बहुत दुःख होना; **साँप-छछूँदर की दशा**–द्विविधा या असमंजस की अवस्था ।
साँपधरन–(हिं. पुं.) शिव, महादेव ।
साँपा–(हिं. पुं.) देखें 'सियापा' ।
साँपिन–(हिं. स्त्री.) साँप की मादा, सर्पिणी ।
सांप्रत–(सं.अव्य) इस समय, अभी ।
सांप्रतिक–(सं.वि.) वर्तमान काल का ।
सांप्रदायिक–(सं.वि.) संप्रदाय-संबंधी ।
सांब–(सं. पुं.) जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
सांबरी–(सं.स्त्री.) माया, जादूगरी ।
साँभर–(हिं. पुं.) राजपूताने की एक झील, इसके खारे पानी से बनाया हुआ नमक ।
साँवक–(हिं. पुं.) वह ऋण जो हरवाहों को दिया जाता है, साँवाँ नामक अन्न ।
साँवत–(हिं. पुं.) एक प्रकार का राग ।
साँवती–(हिं. स्त्री.) (बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, इक्के आदि के नीचे लगाई हुई) जाली जिसमें घास रखी जाती है ।
सांवत्सर, सांवत्सरक–(सं. पुं.) गणक, ज्योतिषी ।
सांवत्सरिक–(सं. वि.) संवत्सर-संबंधी, वार्षिक; (पुं.) गणक, दैवज्ञ ।
साँवलताई–(हिं. स्त्री.) श्यामता ।
साँवला–(हिं. वि.) श्याम वर्ण का; (पुं.) पति या प्रेमी, श्रीकृष्ण का एक नाम ।
साँवलापन–(हिं. पुं.) साँवला होने का भाव, श्यामता ।
साँवाँ–(हिं. पुं.) कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न ।
सांवादिक–(सं. पुं.) नैयायिक ; (वि.) संवाद से संबद्ध ।
सांशयिक–(सं. वि.) सन्देहयुक्त ।
साँस–(हिं. स्त्री.) नाक या मुख से हवा खींचकर फेफड़ों में पहुँचाना तथा फिर बाहर निकालने की क्रिया, श्वास, दम, अवकाश, छुट्टी, वह महीन दरार जिससे हवा आ-जा सकती है, श्वास का रोग; (मुहा.)–**उड़ना**–मरण के समय बड़ी कठिनता से साँस चलना; **–चढ़ना**–कठिनता से साँस लेना; **–टूटना**–बड़ी कठिनाई से साँस लेना; **–तक न लेना**–बिलकुल मौन रहना; **–फूलना**–जल्दी-जल्दी साँस खींचना और छोड़ना; **–भरना**–आह भरना; **–रहते**– जीवित रहते प्राण रहते; **उलटी साँस लेना**–मरण के समय बड़ी कठिनता से साँस का चलना; **लंबी साँस लेना**–देर तक साँस लेना ।
साँसत–(हिं. स्त्री.) अधिक कष्ट या पीड़ा, दम घुटने का कष्ट, झंझट ।
साँसतघर–(हिं. पुं.) कारागार में बहुत छोटी तथा अँधेरी कोठरी ।
साँसना–(हिं. क्रि. स.) शासन करना, दण्ड देना , कष्ट देना, दुःख पहुँचाना, डाँटना, डपटना ।
सांसर्गिक–(सं. वि.) संसर्ग-संबंधी ।
साँसा–(हिं. पुं.) श्वास, साँस, प्राण, जीवन, बहुत कष्ट, चिन्ता, सन्देह, भय ।
सांसारिक–(सं. वि.) संसार-संबंधी, लौकिक ।
सांस्कारिक–(सं. वि.) संस्कार से संबद्ध ।
सांस्थानिक–(सं. वि.) एक ही देश का ।
सा–(सं. स्त्री.) गौरी, लक्ष्मी; (हिं. अव्य.) तुल्य, समान, सदृश; (पुं.) सप्तक का प्रथम स्वर ।
साइत–(सं. स्त्री.) शुभ लग्न, क्षण, मुहूर्त, एक घंटे या अढ़ाई घड़ी का समय ।
साइयाँ–(हिं. पुं.) देखें 'साँई' ।
साइर–(हिं. पुं.) देखें 'शायर', कवि ।
साई–(हिं. पुं.) वह धन जो गाने-बजानेवालों, सवारी ढोनेवालों आदि को विवाह आदि अवसर पर काम करने के लिए अग्रिम दिया जाता है, बयाना ।
साईकाँटा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल चमड़ा सिझाने के काम में आती है ।
साईस–(हिं. पुं.) घोड़े की सेवा करनेवाला नौकर ।
साईसी–(हिं. स्त्री.) साईस का काम या पद ।
साउज–(हिं. पुं.) आखेट का पशु ।
साकंभरी–(हिं. पुं.) साँभर झील के आसपास का एक नगर ।
साक–(हिं. स्त्री.) साख, धाक; (हिं. पुं.) शाक या साग, तरकारी, भाजी ।

साकचेरि–(हिं. स्त्री.) मेहँदी।
साकट–(हिं. पुं.) शाक्त मत का अनुयायी, जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो, दुष्ट, पाजी।
साकर–(हिं. स्त्री.) देखें 'साँकल'।
साकल्य–(सं. पुं.) समग्रता, सपूर्णता।
साकांक्ष–(सं. वि.) आकांक्षायुक्त, लोभी, इच्छुक।
साका–(हिं. पुं.) संवत्, शाका, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति का स्मारक, धाक, अवसर, वह बड़ा काम जो कर्ता का यश दिखलाता हो; (मुहा.)–चलाना–धाक जमाना।
साकार–(सं. वि.) मूर्तिमान्, मूर्त, स्थूल; (पुं.) ईश्वर का आकारयुक्त रूप।
साकारोपासना–(सं. स्त्री.) ईश्वर की मूर्ति की उपासना करना।
साकेत–(सं. पुं.) अयोध्या नगरी।
साकेतक–(सं. पुं.) अयोध्या में रहनेवाला।
साकेतन–(सं.पुं.) अयोध्या नगरी।
साक्षत–(सं. वि.) अक्षतसहित।
साक्षर–(सं. पुं.) शिक्षित, जो लिखना-पढ़ना जानता हो।
साक्षात्–(सं. अव्य.) प्रत्यक्ष, सम्मुख; –करण–(पुं.) प्रत्यक्ष करना; –कार–(पुं.) भेंट, पदार्थों का वह ज्ञान जो इन्द्रियों द्वारा होता है; –कारी–(वि. पुं.) भेंट करनेवाला।
साक्षिता, साक्षित्व–(सं. स्त्री., पुं.) गवाही।
साक्षी–(सं. वि., पुं.) (वह) जिसने किसी घटना को अपनी आँखों से देखा हो, दर्शक, देखनेवाला, गवाह, साखी।
साक्ष्य–(सं. पुं.) साक्षी का काम, गवाही।
साख–(हिं. पुं.) गवाह, गवाही, प्रमाण; (स्त्री.) मर्यादा, धाक, प्रामाणिकता, लेनदेन में खरापन या प्रतिष्ठा।
साखना–(हिं. क्रि. अ.) गवाही देना।
साखर–(हिं. वि.) देखें 'साक्षर'।
साखा–(हिं. स्त्री.) देखें 'शाखा'।
साखी–(हिं. पुं.) साक्षी, गवाह, वृक्ष, पेड़; (स्त्री.) गवाही, ज्ञान-संबंधी कविता या पद।
साखू–(हिं. पुं.) साल का वृक्ष, सखुआ।
साखोचारन–(हिं. पुं.) विवाह के समय वर तथा वधू के वंश, गोत्र आदि का बखान करना, गोत्रोच्चार।
साखोट–(हिं. पुं.) सिहोर वृक्ष।
साख्य–(सं. पुं.) मैत्रित्व, बन्धुत्व।
साग–(हिं. पुं.) शाक, भाजी, तरकारी; –पात–(पुं.) रूखा-सूखा भोजन।
सागर–(सं. पुं.) उदधि, समुद्र, बड़ा तालाब, जलाशय, सगर के एक पुत्र का नाम; –गामिनी–(स्त्री.) नदी; –धरा–(स्त्री.) पृथ्वी; –नेमि–(स्त्री.) पृथ्वी; –मेखला–(स्त्री.) पृथ्वी; –वासी–(वि.) समुद्र-तट पर रहनेवाला।
सागरांबरा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी।
सागरोदक–(सं. पुं.) समुद्र का जल।
सागरालय–(सं. पुं.) वरुण।
सागू–(हिं. पुं.) ताड़ की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।
सागूदाना–(हिं. पुं.) सागू नामक वृक्ष के तने के गूदे को पीसकर बनाया हुआ दाना।
सागौन–(हिं. पुं.) एक पेड़।
साग्नि–(सं. वि.) जो अग्नि के सहित हो, अग्नियुक्त।
साग्निक–(सं. वि.) सर्वदा यज्ञ करनेवाला।
साग्र–(सं. वि.) समग्र, समस्त, कुल।
साग्रह–(सं. वि.) आग्रह से युक्त।
साचरी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
साचार–(सं. वि.) आचारयुक्त।
साचिव्य–(सं. पुं.) मंत्रित्व, सहायता।
साची कुम्हड़ा–(हिं. पुं.) सफेद कोंहड़ा, पेठा।
साचीकृत–(सं. वि.) टेढ़ा किया हुआ।
साज–(सं. पुं.) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र; (फा. पुं.) सामग्री, सामान, सजावट की, सामग्री।
साजगिरी–(हिं. स्त्री.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
साजन–(हिं. पुं.) स्वामी, पति, प्रेमी, ईश्वर, भद्र पुरुष, सज्जन।
साजना–(हिं. क्रि. स.) सजावट करना।
साजबाज–(हिं. पुं.) घनिष्ठता, मेल-जोल।
साजुज्य–(हिं. पुं.) देखें 'सायुज्य'।
साझा–(हिं. पुं.) हिस्सा, साझेदारी, हिस्सेदारी।
साझी–(हिं. पुं.) हिस्सेदार।
साझेदार–(हिं. पुं.) हिस्सेदार, साझी।
साझेदारी–(हिं. स्त्री.) हिस्सेदारी।
साटक–(हिं. पुं.) छिलका, भूसी, तुच्छ पदार्थ, एक प्रकार का छन्द।
साटन–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा जो कई रंगों का होता है।
साटना–(हिं. क्रि. स.) दो वस्तुओं को गोंद आदि से परस्पर मिलाना, जोड़ना, सटाना, चिपकाना।
साठ–(हिं. वि.) पचास और दस की संख्या का; (पुं.) पचास और दस की संख्या, ६०; –नाठ–(वि.) जिसकी सम्पत्ति नष्ट हो गई हो, निर्धन, दरिद्र, तितर-बितर; –साती–(स्त्री.) देखें 'साढ़ेसाती'।
साठा–(हिं. पुं.) ईख, गन्ना, एक प्रकार की मधुमक्खी; (वि.) साठ वर्ष के वय का।
साठी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान।
साड़ा–(हिं. पुं.) घोड़ों का एक प्राणघातक रोग।
साड़ी–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों के पहनने की किनारदार धोती।
साढ़साती–(हिं. स्त्री.) देखें 'साढ़ेसाती'।
साढ़ी–(हिं. स्त्री.) आसाढ़ में बोई जानेवाली फसल, खौलाये हुए दूध पर जमनेवाली मलाई, साल वृक्ष का गोंद।
साढ़ू–(हिं. पुं.) साली का पति।
साढ़े–(हिं. वि.) आधे के साथ।
साढ़ेसाती–(हिं. स्त्री.) शनि ग्रह का साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने या साढ़े सात दिन की दशा जो अशुभ मानी जाती है।
सात–(हिं. वि.) पाँच और दो की संख्या का; (पुं.) पाँच और दो की संख्या, ७; –पाँच–(पुं.) बहाना, धूर्तता; –पूती–(स्त्री.) सतपुतिया नामक तरकारी; –फेरी–(स्त्री.) विवाह के समय वर-वधू का अग्नि का सात बार फेरा करना; –समुंदर पार–बहुत दूर।
सातला–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का थूहर जिसका दूध पीले रंग का होता है।
सातिशय–(सं. वि.) अतिशय, बहुत अधिक।
साती–(सं. स्त्री.) सर्प-दंश की एक प्रकार की चिकित्सा।
सात्मक–(सं. वि.) आत्मा से युक्त।
सात्म्य–(सं. पुं.) अनुकूलता, सारूप्य।
सात्यकि–(सं. पुं.) महाभारत के युद्ध में पाण्डवों का पक्ष लेनेवाले एक यादव जो श्रीकृष्ण के सारथी थे।
सात्वत–(सं. पुं.) बलराम, श्रीकृष्ण, विष्णु, यदुवंशी, एक वर्णसंकर जाति।
सात्वती–(सं. स्त्री.) शिशुपाल की माता, सुभद्रा; –वृत्ति–(स्त्री.) साहित्य के अनुसार वह वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शान्त रसों में होता है।
सात्विक–(सं. पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, वह भाव जिसमें सत्त्व गुण प्रबल हो, एक भाव जिसमें स्वेद, स्तम्भ, रोमांच, स्वरभंग, वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रुपात और मूर्च्छा के लक्षण दिखाई पड़ते हैं; (वि.) सत्त्वगुणयुक्त, सत्वगुण-संबंधी।

सात्विकी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, दुर्गा की एक तरह की पूजा।

साथ–(हिं. पुं.) मिलकर या संग रहने का भाव, सहचार, घनिष्ठता, मेल-मिलाप, सहचर, साथी, सर्वदा पास रहनेवाला; (अव्य.) सहित, प्रति, से, (विरुद्ध भाव) से; **–ही**–(अव्य.) अतिरिक्त, सिवाय; **–साथ**–(अव्य.) एक साथ; **एक साथ**–(अव्य.) सब मिलकर।

साथरा–(हिं.पुं.) विस्तर, विछौना, चटाई।

साथी–(सं. पुं.) साथ रहनेवाला, मित्र।

साद–(सं. पुं.) शरण, गति, विषाद, क्षीणता, नाश, हिंसा, अभिलाषा, इच्छा।

सादगी–(फा. स्त्री.) वनावट का अभाव, सरलता, सादापन।

सादन–(सं. पुं.) उच्छेदन, विनाश।

सादर–(सं. वि., अव्य.) आदरपूर्ण, आदरपूर्वक।

सादा–(फा. वि.) विना सजावट या वनावट का, सरल, सीधा, कोरा, भोला।

सादित–(सं. वि.) विध्वस्त, छिन्न-भिन्न।

सादी–(हिं. स्त्री.) शादी, विवाह।

सादूर–(हिं. पुं.) शार्दूल, सिंह।

सादृश्य–(सं. पुं.) एकरूपता, समानता, समान धर्म, वरावरी।

साधंत–(सं. पुं.) भिक्षुक।

साध–(हिं. स्त्री.) अभिलाषा, इच्छा, कामना, गर्भ के सातवें महीने में होनेवाला एक रश्म जिसमें गर्भिणी को उसके संबंधी फल, मिठाई आदि देते हैं; (पुं.) उत्तर-पश्चिम भारत का एक धर्म-सम्प्रदाय, सज्जन, साधु, महात्मा; (वि.) उत्तम, अच्छा।

साधक–(सं. पुं.) योगी, तपस्वी, कारण, दूसरे के स्वार्थसाधन में सहायक; (वि.) सिद्ध करनेवाला, पूरा करनेवाला।

साधन–(सं.पुं.) कार्य आदि संपादित करने की क्रिया, हेतु, कारण, विधान, मृतक-संस्कार, गति, धन, उपकरण, सामग्री, अनुगमन, सैन्य, उपाय, सिद्धि, प्रमाण, युक्ति, उपासना, साधना, मन्त्र आदि सिद्ध करना।

साधनता–(सं. स्त्री.), **साधनत्व**–(सं.पुं) सिद्ध करने की क्रिया।

साधनवान्–(सं. वि.) साधनयुक्त।

साधनहार–(हिं. वि.) साधनेवाला, सिद्ध करनेवाला।

साधना–(हिं.क्रि.स.) कोई कार्य सिद्ध करना, पूरा करना, [illegible] प्रमाणित करना, पक्का करना, ठहराना, नापना, मन्त्र-सिद्धि के लिये उपासना करना, शुद्ध करना, वश में करना; (सं.स्त्री.) तपस्या, उपासना, सिद्ध करने का उद्योग।

साधनी–(हिं. स्त्री.) राजगीर का भूमि सतह चौरस करने का एक उपकरण।

साधनीय–(सं. वि.) साधना करने योग्य, जो साधा जा सके, सिद्ध करने योग्य, प्राप करने योग्य।

साधयितव्य–(सं. वि.) साधने योग्य।

साधयिता–(सं. पुं.) साधनेवाला, साधक।

साधर्म्य–(सं. पुं.) धर्म, गुण आदि की समानता।

साधार–(सं. वि.) आधारयुक्त।

साधारण–(सं. वि.) समान, तुल्य, सदृश्य, सामान्य, जिसमें कोई विशेषता न हो, सहज, सार्वजनिक; **–तः**, **–तया**–(अव्य.) सामान्य रूप से, वहुधा, प्रायः; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं) साधारण होने का भाव; **–धर्म**–(पुं.) जीवन के सामान्य धर्म, यथा-आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि।

साधिका–(सं.वि.स्त्री.) साधना करनेवाली, गहरी नींद।

साधित–(सं. वि.) सिद्ध किया हुआ, साधा हुआ, शोधित, शुद्ध किया हुआ, दण्ड दिया हुआ, नाश किया हुआ।

साधु–(सं. पुं.) उत्तम कुल में उत्पन्न, मुनि, सज्जन, संत, यति; (वि.) धार्मिक, समर्थ, योग्य, निपुण, उचित, उत्तम, अच्छा, प्रशंसनीय, सच्चा; (मुहा.)–साधु कहना–प्रशंसा करना; **–क**–(पुं.) कदम्ब का वृक्ष; **–कर्म**–(पुं.) अच्छा काम; **–जात**–(वि.) उज्ज्वल, सुंदर; **–ता**–(स्त्री.), **त्व**–(पुं.) सज्जनता, भलमनसी, भलाई, सीधापन; **–दर्शी**–(वि.) विवेकी; **–दायी**–(वि.) उत्तम वस्तु का दान करनेवाला; **–धी**–(स्त्री.) अच्छी बुद्धि; **–पुष्प**–(पुं.) उत्तम फूल; **–भवन**–(पुं.) साधुओं के रहने की कुटी; **–भाव**–(पुं.) साधुता, सज्जनता; **–मती**–(स्त्री.) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम; **–मात्रा**–(स्त्री.) उपयुक्त परिमाण; **–वाद**–(पुं.) प्रशंसा करना; **–वादी**–(वि.) सत्य बोलनेवाला; **–वृत्त**–(वि.) अच्छे चरित्रवाला; **–वृत्ति**–(स्त्री.) उत्तम जीविका; **–साधु**–(अव्य.) धन्य-धन्य, वाह-वाह।

साधू–(हिं. पुं.) धार्मिक पुरुष, सन्त, सज्जन, भद्र पुरुष, सीधा आदमी।

साधो–(हिं. पुं.) सन्त या साधु का संबोधन कारक-रूप।

साध्य–(सं. पुं.) गण-देवता जो संख्या में वारह हैं, ज्योतिष के अनुसार एक योग का नाम, न्याय में वह तथ्य जिसे प्रमाणित करना हो, सामर्थ्य, शक्ति; (वि.) साधन करने योग्य, सरल, सहज, प्रतिपाद्य, जिसकी अनुमति हो; **–ता**–(स्त्री.) साध्य का भाव या धर्म; **–वसाना**, **–वसानिका**–(स्त्री.) साहित्य में लक्षणा का एक भेद; **–सम**–(पुं.) न्याय में वह हेतु जो साध्य की तरह प्रमाणित करना होता है।

साध्वस–(सं. पुं.) भय, त्रास, घवड़ाहट, व्याकुलता।

साध्वी–(सं. स्त्री.) पतिव्रता स्त्री, शुद्ध चरित्रवाली स्त्री, सच्चरित्रा नारी।

सानंद–(सं. वि., अव्य.) आनन्द सहित, आल्हादयुक्त।

सान–(हिं. पुं.) अस्त्रादि की धार पैनी करने का विशिष्ट पत्थर, शाण; (मुहा.) –धरना–सान पर शस्त्र पैना करना।

सानना–(हिं. क्रि. स.) सम्मिलित करना, माँड़ना, भागी वनाना, लपेटना, गूथना।

सानी–(हिं. स्त्री.) वह चारा जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है, एक में मिले हुए कई खाद्य पदार्थ।

सानु–(सं. पुं.) सूर्य, पत्ता, समतल भूमि, पर्वत का शिखर, वन, जंगल, गिरिशृंग, मार्ग।

सान्निध्य–(सं. पुं.) सामीप्य, समीपता।

सान्वय–(सं. वि.) अन्वय से युक्त।

साप–(हिं. पुं.) शाप।

सापत्न्य–(सं. पुं.) सपत्नी-भाव, सौतपन, शत्रु, सौत का लड़का।

सापत्य–(सं. वि.) सन्तानवाला।

सापना–(हिं. क्रि.स.) शाप देना, गाली देना।

सापराध–(सं. वि.) अपराध से युक्त।

सापेक्ष–(हिं. वि.) दूसरे पर निर्भर रहनेवाला।

साफ–(अ. वि.) स्वच्छ, सफेद, निर्मल, शुद्ध, पवित्र, सच्चरित्र, स्पष्ट (कथन), निष्कंटक या निर्विघ्न; (मुहा.)–रहना–स्पष्ट रूप में रहना, सच बोलना; –छूटना–[illegible] [illegible]; –[illegible]–[illegible]; –[illegible]–[illegible]।

साफल्य–(सं.पुं.) सिद्धि, लाभ, [illegible]

साफा–(हिं. पुं.) सिर पर बाँधने की पगड़ी, मुरेठा।
साफी–(हिं. स्त्री.) हाथ-मुँह पोंछने की रूमाल, छोटी तौलिया।
साबन–(हिं. पुं.) देखें 'साबुन'।
साबर–(हि. पुं.) साँभर मृग का चमड़ा जो बहुत कोमल होता है, थूहर का पौधा, मिट्टी खोदने का एक अस्त्र।
साबल–(हिं. पुं.) बरछी, भाला, साबर।
साबस–(हि. पुं.) देखें 'शाबास' वाहवाही देन की क्रिया; (अव्य.) धन्य, वाहवाह।
साबिक–(अ. वि.) पिछला, पुराना, गत।
साबित–(अ.वि.) प्रमाणित, सिद्ध, समूचा।
साबूदाना–(हि. पुं.) देखें 'सागूदाना'।
साबू(बु)न–(अ. पुं.) शरीर तथा कपड़े साफ करने की वस्तु जो सोडा, तेल आदि के सम्मिश्रण से बनती है।
साभ्रांगिका–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।
सामंजस्य–(सं. पुं.) अनुकूलता, उपयुक्तता, संगति, मेल।
सामंत–(सं. पुं.) किसी राज्य का कोई बड़ा सरदार, कर देनेवाला राजा, वीर, योद्धा, समीपता; **–सारंग**–(पुं.) एक प्रकार का सारंग राग।
सामंती–(सं.स्त्री.) एक प्रकार की रागिनी; (स्त्री.) सामंत का पद।
साम–(सं. पुं.) वेदों के मन्त्र जो यज्ञ में गाकर पढ़े जाते हैं, सामवेद, मधुर भाषण, शत्रु, मीठी-मीठी बातें कहकर अपनी ओर मिलाने की विधि; (हिं.पुं.) देखें 'श्याम'; (हिं. स्त्री.) 'शाम'।
सामग–(सं.पुं.) सामवेद का ज्ञाता ब्राह्मण, विष्णु।
सामग्री–(सं. स्त्री.) किसी विशेष कार्य में उपयोग आनेवाले पदार्थ, सामान, साधन।
सामग्र्य–(सं. पुं.) अस्त्र-शस्त्र, भण्डार।
सामना–(हिं. पुं.) भेंट, किसी वस्तु का अगला भाग, लड़ाई, भिड़ंत, सामने होना, स्त्रियों का परदा न करना; (मुहा.) **–करना**–भिड़ना, धृष्टतापूर्वक उत्तर देना।
सामनी–(सं. स्त्री.) पशुओं को बाँधने की रस्सी।
सामने–(हि.अव्य.) सम्मुख, सीधे, आगे, उपस्थिति में, मुकाबले या विरोध में।
सामयिक–(सं. वि.) समयोचित, समय के अनुकूल, समय-संबंधी, वर्तमान समय का।
सामरथ–(हिं. स्त्री.) देखें 'सामर्थ्य'।
सामराधिप–(हिं. पुं.) सेनापति।
सामरिक–(सं. वि.) समर-संबंधी।
सामर्थी–(हिं. वि.) सामर्थ्य रखनेवाला, बलवान्, पराक्रमी।
सामर्थ्य–(सं. पुं., स्त्री.) शक्ति, बल, योग्यता, कोई काम करने की शक्ति; शब्द की व्यंजना-शक्ति जिससे वह अर्थ प्रकट करता है, व्याकरण में शब्दों का परस्पर-संबंध।
सामवाद–(सं.पुं.) प्रिय वचन, मीठी बोली।
सामवायिक–(सं. पुं.) मन्त्री; (वि.) जिसमें नित्य-संबंध हो, समूह-संबंधी।
सामवेद–(सं. पुं.) भारतीय आर्यो के प्राचीन धर्म-ग्रंथ चार वेदों में से तीसरा वेद।
सामवेदिक–(सं.पुं.) सामवेद का अनुयायी ब्राह्मण।
सामसाली–(हिं. वि., पुं.) राजनीति के साम, दाम, दण्ड और भेद को जाननेवाला, राजनीतिज्ञ।
सामहिं–(हिं. अव्य.) सम्मुख, सामने।
सामाँ–(हि. पुं.) देखें 'साँवाँ'।
सामाजिक–(सं. वि.) समाज से संबंध रखनेवाला, समाज-संबंधी, रसज्ञ; **–तंत्र**–(पुं.) समाज-संबंधी नियम।
सामाजिकता–(सं. स्त्री.) लौकिकता।
सामाधान–(सं.पुं.) शमन करने की क्रिया, शान्ति।
सामान–(सं. पुं.) उपकरण, सामग्री, साधनरूप वस्तुएँ।
सामान्य–(सं. पु.) समानता, सादृश्य, साधारण कार्य, वह काव्यालंकार जिसमें अनेक वस्तुओं का समान धर्म वर्णन किया जाता है, वह गुण जो सामान्य रूप से किसी जाति की सब व्यक्तियों, वस्तुओं आदि में पाया जाय; (वि.) जिसमें कोई विशेषता न हो, साधारण, तुच्छ, मामूली, समान, समग्र; **–तः,–तया**–(अव्य.) साधारणतः; **–भविष्यत्**–(पुं.) व्याकरण में भविष्य काल की क्रिया का साधारण रूप; **–भूत**–(पुं.) भत काल की क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का केवक भूतकालिक रूप प्रयुक्त होता है; जैसे–गया, उठा आदि; **–लक्षण**–((पुं.) वह गुण या चिह्न जिससे किसी जाति के सब पदार्थों का ज्ञान होता है; **–वचन**–(पुं.) साधारण कथन या वाक्य; **–वर्तमान**– (पुं.) वर्तमान काल की क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया का वर्तमान काल में होना व्यक्त होता है; **–विधि**– (स्त्री.) साधारण नियम, शिक्षा आदि; यथा–चोरी मत करो, किसी को कष्ट मत दो आदि।
सामान्यतोदृष्ट–(सं. पुं.) तर्क या न्यायशास्त्र के अनुसार अनुमान-संबंधी एक प्रकार की भूल, (ऐसी भूल तब होती है जब ऐसे पदार्थों के आधार पर अनुमान किया जाता है जो न कार्य हों, न कारण।)
सामान्या–(सं. स्त्री.) साधारण नायिका, वेश्या।
सामासिक–(सं. वि.) समास से संबंध रखनेवाला।
सामि–(सं. स्त्री.) निन्दा।
सामियाना–(हिं.पुं.) देखें 'शामियाना'।
सामिल–(हिं. वि.) देखें 'शामिल'।
सामिष–(सं. वि.) मछली, मांस आदि के साथ (भोजन)।
सामी–(हिं. पुं.) देखें 'स्वामी'; (स्त्री.) शामी।
सामीची–(सं. स्त्री.) प्रार्थना, स्तुति।
सामीप्य–(सं. पुं.) समीप होने का भाव, निकटता, समीपता, पड़ोस।
सामुझि–(हिं. स्त्री.) देखें 'समझ'।
सामुदायिक–(सं.वि.) समुदाय-संबंधी।
सामुद्र–(सं. पुं.) समुद्र-जल से निकाला हुआ नमक, समुद्रफेन, शरीर के चिह्न, सामुद्रिक व्यापार करनेवाला; (वि.) समुद्र-संबंधी।
सामुद्रिक–(सं.वि.) समुद्र-संबंधी; (पुं.) फलित ज्योतिष का वह भाग जिसमें हाथ, पैर, ललाट आदि पर की रेखाओं से तथा शरीर के अन्य चिह्न देखकर मनुष्य का भत, भविष्य और वर्तमान का शुभाशुभ फल जाना जाता है।
सामुहाँ–(हिं. अव्य.) आगे, सामने।
सामुहें–(हिं. अव्य.) सामने।
सामूहिक–(सं. वि.) समूह-संबंधी।
सामोद–(स. वि.) आनन्दयुक्त।
सामोद्भव–(सं. पुं.) हस्ती, हाथी।
साम्य–(सं. पुं.) समता, तुल्यता, बराबरी।
साम्यवाद–(सं. पुं.) कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित पाश्चात्य राजनीतिक सिद्धान्त जिसका उद्देश्य विश्व में वर्गहीन समाज की स्थापना करना है।
साम्यावस्था–(स स्त्री.) समान अवस्था, वह अवस्था जिसमें सत्त्व, रज और तम–तीनों गुण बराबर हों।
साम्राज्य–(सं. पुं.) वह राज्य जिसके अधीन बहुत-से देश हों और जिसमें एक सम्राट् का शासन हो, आधिपत्य, पूर्ण

अधिकार; –वाद–(पं.) साम्राज्य को बढ़ाते रहने का सिद्धान्त, सार्वभौम सत्ता; –वादी–(वि., पुं.) साम्राज्यवाद का, समर्थक या अनुयायी।
सायं–(सं. वि.) संध्या-संबंधी; (पुं.) दिन का अन्तिम भाग; –**काल**–(पुं.) संध्या समय; –**कालीन**– (वि.) संध्या समय का; –**गृह**–(पुं.) वह परिव्राजक जो संध्या समय जहाँ पहुँचता है वहीं ठहर जाता है; –**तन**–(वि.) संध्या के समय का; –**प्रातः**–(अव्य.) सवेरे तथा संध्या को; –**संध्या**– (स्त्री.) वह उपासना जो सायंकाल के समय की जाती है।
सायक–(सं. पुं.) बाण, तीर, तलवार, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
सायण–(सं. पुं.) वेदों के एक सुप्रसिद्ध भाष्यकार।
सायन–(सं. पुं.) सूर्य की एक स्थिति जिसमें अयन (ग्रह-कक्षों का संपात) हो।
सायर–(हि. पुं.) सागर, समुद्र, ऊपरी भाग, वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं देना पड़ता, फुटकर, एक प्रकार का धान।
साया–(हि.पुं.) स्त्रियों का साड़ी के नीचे पहनने का एक वस्त्र; (फा. पुं.) छाया, छाँह, परछाई, संरक्षण, आश्रय, कृपा।
सायास–(सं. वि.) कष्टसहित।
सायाह्न–(सं. पुं.) दिन के अन्तिम तीन मुहूर्त, संध्या।
सायुज्य–(सं. पुं.) सादृश्य, अभेद, एकत्व, पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें मुक्त पुरुष ब्रह्म में लीन हो जाता है।
सारंग–(सं. पुं.) कोयल, बाज पक्षी, चातक पक्षी, लवा पक्षी, खंजन, कौआ, कबूतर, चित्र मृग, हरिण, हाथी, छाता, राजहंस, शंभु, शिव, दीपक, बाण, तीर, जल, समुद्र, श्रीकृष्ण का एक नाम, विष्णु का धनुष, सूर्य, भौंरा, घोड़ा, रात्रि मेघ, ज्योति, पृथ्वी, फूल, कपूर, चन्दन, शंख, पद्म, चन्द्रमा, सुवर्ण, आभरण, कामदेव, महीन वस्त्र, केश, मोर, बिजली, सम्पूर्ण जाति का एक राग, हल, मेढक, आकाश, मोती, नक्षत्र, हाथ, स्तन, छप्पय छन्द का एक भेद, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बाईस अक्षर होते हैं, एक सुगन्धित द्रव्य, शोभा, भूमि, सर्प, स्त्री, नारी, दिन, खड्ग, एक प्रकार की मधुमक्खी, सारंगी नामक वाद्ययन्त्र; (वि.) सुन्दर, सुहावना, रँगा हुआ; –**चर**–(पुं.) काँच, शीशा; –**पाणि**–(पुं.) विष्णु; –**लोचना**–(स्त्री.) मृगनयनी।
सारंगा–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकड़ी की बनी होती है, एक रागिनी का नाम।
सारंगिक–(सं. पुं.) व्याध, चिड़ीमार, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं।
सारंगिया–(हि.पुं.) सारंगी बजानेवाला।
सारंगी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा।
सारंड–(सं. पुं.) साँप का अंडा।
सार–(सं. पुं.) सत, जल, पानी, मक्खन, अमृत, जंगल, बल, अभिप्राय, निष्कर्ष, मज्जा, वायु, द्रव्य, अस्थि, कपूर, तलवार, क्वाथ, काढ़ा, मूँग, अनार का पेड़, चिरौंजी का वृक्ष, परिणाम, फल, लकड़ी का हीर, जुआ खेलने का पासा, दूध की साढ़ी, मलाई, वह अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णन किया जाता है, एक प्रकार का मात्रिक छन्द, स्वाद, गोशाला, बाड़ा; (वि.) उत्तम, मुख्य, परमावश्यक, दृढ़।
सार–(हिं.पुं.) पत्नी का भाई, साला, लोहा।
सारखा–(हि. वि.) समान, सदृश।
सारगंध–(सं. पुं.) चन्दन।
सारण–(सं.पुं.) अतिसार रोग, आँवला।
सारणिक–(सं. पुं.) पथिक, बटोही।
सारणी–(सं.स्त्री.) प्रसारणी, छोटी नदी।
सारतरु–(सं. पुं.) केले का पौधा, खैर का वृक्ष।
सारता–(सं.स्त्री.) सार का भाव या धर्म।
सारथि, सारथी–(सं.पुं.) रथ हाँकनेवाला।
सारद–(हि. स्त्री.) शारदा, सरस्वती; (वि.) शरद्-संबंधी।
सारदा–(हि. स्त्री.) देखें 'शारदा'।
सारदी–(हि. वि.) देखें 'शारदीय'।
सारदूल–(हि. पुं.) देखें 'शार्दूल'।
सारद्रुम–(सं. पुं.) खैर का पेड़।
सारना–(हि. क्रि. अ.) पूर्ण करना, समाप्त करना, साधना, बनाना, देख-रेख करना, सँभालना, सुशोभित करना, सुंदर बनाना, रक्षा करना, आँखों में अंजन आदि लगाना।
सारनाथ–(हि. पुं.) बनारस से चार मील उत्तर-पश्चिम में स्थित एक स्थान जहाँ बुद्ध का एक मन्दिर है तथा दो प्राचीन बौद्ध स्तूप हैं।
सारभाटा–(हि. पुं.) समुद्र की वह बाढ़ जिसमें पानी पहले बढ़कर तट या किनारे से आगे बढ़ जाता और कुछ देर बाद पीछे हट जाता है।
सारभांड–(सं. पुं.) व्यापार की बहुमूल्य वस्तुएँ, कोष।
सारभत–(सं. वि.) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।
सारमेय–(सं.पुं.) कुक्कुर, कुत्ता, सरमा की सन्तान।
साररूप–(सं. वि.) सर्वोत्तम, मुख्य।
सारल्य–(सं. पुं.) सरल होने का भाव, सरलता।
सारवती–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसमें तीन भगण और एक गुरु वर्ण होता है।
सारवर्जित–(सं. वि.) जिसमें कोई सार या तत्त्व न हो, निःसार।
सारवस्तु–(सं. पुं.) मूल्यवान वस्तु।
सारस–(सं. पुं.) पद्म, कमल, झील का पानी, स्त्रियों का कटिभूषण, चन्द्रमा, छप्पय का एक भेद, हंस, एक प्रसिद्ध लंबी टाँगोंवाला पक्षी।
सारसन–(सं. पुं.) तलवार की पेटी, कटिबन्ध।
सारसी–(सं. स्त्री.) आर्या छन्द का एक भेद जिसमें पाँच गुरु और अड़तालीस लघु मात्राएँ होती है, मादा सारस पक्षी।
सारसुता–(हि. स्त्री.) यमुना।
सारसुती–(हि. स्त्री.) देखें 'सरस्वती'।
सारसैंधव–(सं. पुं.) सेंधा नमक।
सारस्वत–(सं. पुं.) दिल्ली के उत्तर-पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है, इस देश के निवासी ब्राह्मण, एक प्रसिद्ध व्याकरण; (वि.) सरस्वती-संबंधी।
सारांश–(सं. पुं.) संक्षेप, सार, तात्पर्य, परिणाम, उपसंहार, परिशिष्ट।
सारा–(सं. स्त्री.) थूहर, केला, दूब; (पुं.) एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरे से बढ़कर कही जाती है, साला; (हि.वि.) सम्पूर्ण, समूचा, पूरा।
सारावती–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का छन्द जिसको सारावली भी कहते हैं।
सारि–(सं.पुं.) पासा या चौपड़ की गोटी
सारिउँ–(हि. स्त्री.) मैना पक्षी।
सारिक–(सं. पुं.), **सारिका**–(सं. स्त्री.) पक्षी।

सारिखा–(हिं.वि.) सरीखा, तुल्य, समान।
सारिणी–(सं. स्त्री.) सहदेई, महावला, दुरालभा, प्रसारिणी, लाल पुनर्नवा।
सारिवा–(सं.स्त्री.) अनन्तमूल नामक लता।
सारिष्ट–(सं. वि.) सब से सुन्दर, सब से श्रेष्ठ।
सारी–(सं. स्त्री.) सारिका पक्षी, मैना।
सारूप्य–(सं. पुं.) एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता का रूप प्राप्त कर लेता है, समानरूप होने का भाव, एकरूपता।
सारो–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अग-हनिया धान।
सारोपा–(सं. स्त्री.) साहित्य में वह लक्षणा जिसमें एक पदार्थ में दूसरे का आरोप किया जाता है।
सार्थ–(सं. पुं.) वनियों का समूह; (वि.) अर्थसहित; **–क**–(वि.) अर्थयुक्त, सफल, सिद्ध, उपकारी, गुणकारी; **–०ता**–(स्त्री.) सफलता; **–पति**–(वि.) विदेशों से व्यापार करनेवाला; **–भृत्**–(पुं.) वणिक्, वनिया; **–वत् (वान्)**–(वि.) अर्थसहित, ठीक-ठीक; **–वाह**–(पुं.) वणिक्, वनिया।
सार्दूल–(हिं. पुं.) देखें 'शार्दूल', सिंह।
सार्द्र–(सं. वि.) आर्द्र, भीगा हुआ, गीला।
सार्ध–(सं. वि.) अर्धयुक्त, जिसमें पूरे के अतिरिक्त आधा और भी मिला हो।
सार्व–(सं. वि.) सब से संबंध रखनेवाला; **–कर्मिक**–(वि.) सब काम करने-वाला; **–काल**–(वि.) सब समय होनेवाला; **–कालिक**–(वि.) जो सब कालों में होता है; **–गुणिक**–(वि.) सकल गुण-संबंधी; **–जनिक**–(वि.) सर्वसाधारण-संबंधी; **–जनीन**–(वि.) सब लोगों से सम्बन्ध रखनेवाला; **–जन्य**–(वि.) जिससे सब लोगों का हित हो; **–देशिक**–(वि.) सब देशों का; **–भौतिक**–(वि.) सब भूतों से सम्बन्ध रखनेवाला; **–भौम**–(पुं.) सम्राट्, चक्रवर्ती राजा; (वि.) सारी पृथ्वी का शासन करनेवाला; **–राष्ट्रीय**–(वि.) सब राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला; **–लौकिक**–(वि.) सर्वत्र प्रसिद्ध, सब लोगों से सम्बन्ध रखनेवाला; **–वर्णिक**–(वि.) सब वर्णों से सम्बन्ध रखने-वाला; **–वैद्य**–(वि.) सर्व विद्यायुक्त; **–वैदिक**–(वि.) सब वेदों से सम्बन्ध रखनेवाला; **–सेनी**–(स्त्री.) भरत की कन्या का नाम।
सार्वत्रिक–(सं.वि.) सब स्थानों से संबंध रखनेवाला।
साल–(सं. पुं.) एक प्रकार की मछली, राल, धूना, एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, प्राकार, परकोटा, प्राचीर, भीत, गढ़; (हिं.पुं.) शाल, छेद, वह छेद जिसमें चूल बैठाई जाती है, घाव, दुःख, कष्ट; (फा. पुं.) वर्ष, १२ महीने की अवधि; **–गिरह**–(फा.स्त्री.) वर्ष-तिथि, वार्षिक जन्म-दिवस; **–ब-साल**–(फा. अव्य.) प्रतिवर्ष।
सालंग–(सं. पुं.) संगीत के तीन प्रकार के रागों में से एक जो बिलकुल शुद्ध हो परन्तु जिसमें किसी राग का आभास जान पड़ता हो।
सालई–(हिं. स्त्री.) देखें 'सलई'।
सालक–(हिं. वि.) सालनेवाला, दुःख देनेवाला।
सालग्राम–(हिं. पुं.) देखें 'शालग्राम'।
सालग्रामी–(हिं. स्त्री.) गण्डक नदी।
सालन–(हिं. पुं.) मांस, मछली या शाक-भाजी की मसालेदार तरकारी।
सालना–(हिं.क्रि.स.) चुभाना, गड़ाना, छेद में बैठाना, पीड़ा देना, दुःख पहुँचाना।
सालनिर्यास–(सं. पुं.) राल, धूना।
सालपर्णी–(हिं. स्त्री.) शालपर्णी, सरि-वन।
सालभंजिका–(सं. स्त्री.) गुड़िया, पुतली।
सालम मिस्री–(हिं. स्त्री.) सुधामूली, एक पौधा जिसका कन्द कसेरू के समान होता है, (इसका प्रयोग पुष्टिकर औषधों में होता है।)
सालरस–(सं. पुं.) राल, धूना।
सालस–(सं. पुं.) दो पक्षों के झगड़े निब-टानेवाला, पंच।
सालसा–(हिं. पुं.) रक्तशोधक औषधि विशेष, रक्तशोधक औषध।
साला–(सं. स्त्री.) शाला, गृह, घर; (हिं. पुं.) पत्नी का भाई, एक प्रकार की गाली, मैना।
सालिग्राम–(हिं. पुं) देखें 'शालग्राम'।
सालाना–(फा. अव्य., वि.) प्रतिवर्ष, वार्षिक।
साली–(हिं. स्त्री.) पत्नी की वहिन।
सालु–(हिं. पुं.) ईर्ष्या, डाह, कष्ट।
सालू–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लाल रंग की साड़ी जो मांगलिक कार्यों में पहनी जाती है।
सालेया–(सं. स्त्री.) मधुरिका, सौंफ।
सालोक्य–(सं. पुं.) एक ही लोक में वास, पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक, (इसमें मुक्त भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है।)
साल्मली–(हिं. पुं.) देखें 'शाल्मली।
सावँकरन–(हिं. पुं.) सफेद रंग का घोड़ा जिसके दोनों कान काले होते हैं।
सावंत–(हिं. पुं.) देखें 'सामंत', योद्धा, वीर।
साव–(हिं. पुं.) देखें 'साहु'।
सावक–(हिं. पुं.) शावक, शिशु, बच्चा।
सावकाश–(सं. पुं.) अवकाश, छुट्टी, अवसर; (अव्य.) सुविधे से; (वि.) जिसे अवकाश हो।
सावचेत–(हिं. वि.) सावधान, सचेत।
सावचेती–(हिं. स्त्री.) सावधानी।
सावज–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जंगली पशु जिसका आखेट किया जाता है।
सावत–(हिं. पुं.) सौतों का परस्पर द्वेष, डाह।
सावधान–(सं. वि.) सचेत, सतर्क।
सावधानता–(सं. स्त्री.) सावधानी।
सावधानी–(हिं. स्त्री.) सचेतता, सतर्कता।
सावधि–(सं. वि.) अवधियुक्त।
सावन–(हिं. पुं.) श्रावण मास, आषाढ़ और भादों के बीच का महीना, इस महीने में गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत; (सं. पुं.) एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।
सावनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'श्रावणी', सावन महीने में गाया जानेवाला लोकगीत।
सावयव–(सं. वि.) अवयवयुक्त।
सावर–(सं. पुं.) लोध, पाप, अपराध; (हिं. पुं.) शिवकृत एक मन्त्र का नाम, एक प्रकार का लंबा अस्त्र जिसका एक सिरा नुकीला होता है, एक प्रकार का हिरन।
सावर्ण–(सं. पुं.) आठवें मनु, सावर्णि मनु; (वि.) समान वर्ण अथवा जाति का।
सावर्णि–(सं. पुं.) अष्टम मनु जो सूर्य के एक पुत्र थे, एक मन्वन्तर का नाम।
सावशेष–(सं. वि.) अवशेषयुक्त।
सावष्टंभ–(सं. पुं.) वह घर जिसके उत्तर तथा दक्षिण भाग में सड़क हो; (वि.) स्वावलंबी।
सावित्र–(सं. पुं.) ब्राह्मण, शंकर, वसु, सूर्य, गर्भ, सूर्य के पुत्र, एक प्रकार का अस्त्र; (वि.) सूर्यवंशीय।
सावित्री–(सं. स्त्री.) वेदमाता, गायत्री, उपनयन-संस्कार, सोहागिन स्त्री, यमुना नदी, सरस्वती नदी, ब्रह्मा की पत्नी,

सरस्वती, दक्ष की कन्या का नाम, राजा अश्वपति की कन्या जो सत्यवान् को व्याही थी।
सावित्रीसूत्र–(सं. पुं.) यज्ञोपवीत।
साशंक–(सं. वि.) आशंकायुक्त।
साष्टांग–(सं. वि.) आठों अंगसहित; **–प्रणाम**–(पुं.) माथा, हाथ, पैर, आँख, हृदय, जाँघ, वचन और मन से पृथ्वी पर लेटकर प्रणाम करना; **–योग**–(पुं.) वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि–ये आठों अंग हों।
सास–(हिं. स्त्री.) पति या पत्नी की माता।
सासत(ति)–(हिं. स्त्री.) दंड, सजा, साँसत, शासन।
सासनलेट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जालीदार सफेद कपड़ा।
सासरा–(हिं. पुं.) देखें 'ससुराल'।
सासव–(सं. वि.) मद्ययुक्त।
सासा–(हिं. पुं.) श्वास, साँस, सन्देह।
सासुर–(हिं. पुं.) ससुर, ससुराल।
सास्ना–(सं. स्त्री.) गौ का गलकंवल।
साह–(हिं. पुं.) साधु, सज्जन, भला आदमी, व्यापारी, साहूकार, धनी, महाजन, सेठ, लकड़ी या पत्थर का लंबा टुकड़ा जो द्वार के चौखट में दोनों ओर लगा रहता है, देखें 'शाह'।
साहचर्य–(सं. पुं.) सहचर होने का भाव, सहगमन, संग, साथ।
साहनी–(हिं. स्त्री.) मेल, साथी, संगी।
साह(हि)व–(अ. पुं.) मालिक, स्वामी, मित्र, साथी, हाकिम, अधिकारी, ईश्वर, अंग्रेज, गोरा।
साहवाना–(अ. वि.) साहव-जैसा।
साहवी–(अ. वि.) साहव का, साहव से संवद्ध; (स्त्री.) साहवीयत।
साहवीयत–(हिं. स्त्री.) साहवी ठाट-वाट।
साहस–(सं. पुं.) दृढ़तापूर्वक कार्य करने की क्रिया, हिम्मत, द्वेष, अत्याचार, दण्ड, क्रूरता, कोई वुरा कार्य, वलपूर्वक किसी का धन छीनना।
साहसिक–(सं. वि.) साहस करनेवाला, हिम्मती; (पुं.) झूठ वोलनेवाला, चोर, ठग, रूक्ष वचन वोलनेवाला, निडर, परस्त्रीगामी।
साहसिकता–(सं. स्त्री.) निर्भीकता।
साहसी–(सं. वि.) जो साहस करता हो, हिम्मती।
साहस्र–(सं. वि.) सहस्र-संवंधी, हजार का।
साहस्रक–(सं. वि.) सहस्र-संवंधी।
साहा–(हिं. पुं.) विवाह आदि के लिय शुभ लग्न, साधु, भला आदमी, राजा, अधिपति।
साहाय्य–(सं. पुं.) सहायता।
साहि–(हिं. पुं.) राजा।
साहित्य–(सं. पुं.) एकत्र होना, मिलना, वाक्य में पदों का एक प्रकार का सम्वन्ध जिसमें वे परस्पर अपेक्षित होते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया से होता है, लिपिवद्ध विचार, ज्ञान, गद्य-पद्य के वे कल्पना प्रसूत ग्रन्थ जिनमें ज्ञान-सम्वन्वी स्थायी विचार लिखे रहते हैं।
साहित्यिक–(सं. वि.) साहित्य-सम्वन्धी; (पुं.) साहित्य का ज्ञाता।
साहियाँ–(हिं. पुं.) देखें 'साँईं'।
साही–(हिं. स्त्री.) विल्ली से कुछ वड़ा एक प्रसिद्ध जंतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं।
साहु–(हिं. पुं.) सज्जन, महाजन, धनी, साहूकार, भद्र पुरुष।
साहू–(हिं. पुं.) देखें 'साहु'; **–कार**–(पुं.) वड़ा महाजन, कोठीवाल; **–कारी**–(स्त्री.) रुपये का लेनदेन, महाजनी; (वि.) साहूकार-सम्वन्धी।
साहें–(हिं. स्त्री.) वाँह, भुजा; (अव्य.) सम्मुख, सामने।
सिंकना–(हिं. क्रि. अ.) आँच पर पकना, सेंका जाना।
सिंगल–(हिं. पुं.) संकेत, इशारा, रेलगाड़ी को रोकने का संकेत-स्तंभ।
सिंगा–(हिं. पुं.) फूँककर वजाया जानेवाला एक प्रकार का वाजा।
सिंगार–(हिं. पुं.) शृंगार, सजावट, शोभा, शृंगार-रस; **–दान**–(पुं.) वह छोटी पेटी जिसमें दर्पण, कंघी आदि शृंगार की सामग्रियाँ रखी जाती हैं; **–हाट**–(पुं.) वेश्याओं के रहने का वाजार; **–हार**–(पुं.) हरसिंगार, परजाते का फल।
सिंगारना–(हिं. क्रि. स.) सँवारना, सजाना।
सिंगारिया–(हिं. पुं.) किसी देवमूर्ति का शृंगार करनेवाला पुजारी।
सिंगारी–(हिं. पुं.) शृंगार करनेवाला, सजानेवाला।
सिंगाल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का पहाड़ी वकरा।
सिंगासन–(हिं. पुं.) देखें 'सिंहासन'।
सिंगिया–(हिं. पुं.) एक पौधे की जड़ जो वड़ी विषैली होती है।
सिंगी–(हिं. पुं.) सींग का वना हुआ फूँककर वजाने का वाजा, एक प्रकार की मछली, सींग की नली जिससे शरीर का विषाक्त या दूषित रक्त चूसकर निकालते हैं।
सिंगौटी–(हिं. स्त्री.) वैल की सींग पर पहनाने का आभषण, सींग का वना हुआ वाजा, वह छोटी पिटारी जिसमें स्त्रियाँ शृंगार की सामग्रियाँ रखती हैं।
सिंघ–(हिं. पुं.) सिंह।
सिंघल, सिंघली–(हिं. पुं.) देखें 'सिंहल', 'सिंहली'।
सिंघाड़ा–(हिं. पुं.) पानी में फैलनेवाली एक लता जिसका तिकोना फल खाया जाता है, सिंघाड़े के आकार का वेल-वूटा, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा समोसा नामक नमकीन पकवान।
सिंघासन–(हिं. पुं.) देखें 'सिंहासन'
सिंघिनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सिंहिनी'।
सिंघिया–(हिं. पुं.) देखें 'सिंगिया'।
सिंघी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की छोटी मछली, सोंठ।
सिंघेला–(हिं. पुं.) सिंह का वच्चा।
सिंचन–(सं. पुं.) सींचना, पानी से तर करना।
सिंचना–(हिं. क्रि. अ.) सींचा जाना।
सिंचाई–(हिं. स्त्री.) पानी छिड़कने का काम, भूमि को जल से तर करने की क्रिया, सींचने का कार्य या पारिश्रमिक।
सिंचाना–(हिं. क्रि. स.) पानी छिड़काना, सींचने का काम कराना।
सिंचित–(सं. वि.) सींचा हुआ, जल से तर किया हुआ।
सिंचिता–(सं. स्त्री.) पिप्पली नामक प्रसिद्ध ओषधि।
सिंजित–(हिं. स्त्री.) गहनों आदि की झनकार।
सिंदन–(हिं. पुं.) देखें 'स्यंदन'।
सिंदुरी, सिंदुवार–(हिं. स्त्री.) वलूत जाति का एक वृक्ष।
सिंदूर–(सं. पुं.) सीसा नामक धातु से वनाया हुआ एक प्रकार का लाल चूर्ण जिसको सोहागिन स्त्रियाँ माँग में लगाती हैं; **–तिलका**–(स्त्री.) सधवा स्त्री; **–दान**–(पुं.) सिंदूर रखने की एक प्रकार की लकड़ी की डिविया।
सिंदूरिया–(हिं. वि.) सिंदूर के रंग का, वहुत लाल; (स्त्री.) सिंदूरपुष्पी नाम का पौधा।
सिंदूरी–(हिं. वि.) सिंदूर के रंग का; (स्त्री.) लाल कपड़ा।

सिंदोरा–(हिं. पुं.) लकड़ी की एक डिबिया जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर रखती हैं।
सिंध–(सं. पुं.) पश्चिमी पाकिस्तान का एक प्रदेश, पंजाब की एक प्रधान नदी, एक रागिनी का नाम।
सिंधवी–(हिं. स्त्री.) एक रागिनी।
सिंधी–(हिं.स्त्री.)सिंध देश की भाषा; (पुं.) सिंध का निवासी; (वि.) सिंध-संबंधी।
सिंधु–(सं. पुं.) समुद्र, सागर, वरुण देवता, चार की संख्या, सात की संख्या, सिंधु प्रदेश या नदी, इस देश का निवासी, निर्गुण्डी का पौधा, ओठों का गीलापन, सम्पूर्ण जाति का एक राग; **–कन्या**–(स्त्री.) लक्ष्मी; **–कफ**–(पुं.) समुद्र-फेन; **–क्षार**–(पुं.) सोहागा; **–ज**–(पुं.) सेंधा नमक, पारा, सोहागा; (वि.) समुद्र में उत्पन्न; **–जा**–(स्त्री.) लक्ष्मी, वह सीप जिससे मोती निकलता है; **–जात**–(पुं.) मुक्ता, मोती; **–ड़ा**–(स्त्री.) एक रागिनी; **–नंदन**–(पुं.) चन्द्रमा; **–नाथ, –पति**–(पुं.) समुद्र; **–पत्नी**–(स्त्री.) नदी; **–पिब**–(पुं.) अगस्त्य ऋषि; **–पुत्र**–(पुं.) चन्द्रमा; **–पुष्प**–(पुं.) शंख, कदंब, मौलसिरी; **–मध्य**– (पुं.) अमृत; **–माता**–(स्त्री.) सरस्वती; **–र**–(पुं.) हाथी, आठ की संख्या; **–०रमणि**–(पुं.) गजमुक्ता; **–०वदन**–(पुं.) गणेश; **–वार**–(पुं.) निर्गुण्डी; **–वासिनी**– (स्त्री.) लक्ष्मी; **–विष**–(पुं.) हलाहल या कालकूट विष; **–शयन**– (पुं.) विष्णु; **–सुत**–(पुं.) जालन्धर नामक राक्षस जिसको शिव ने मारा था; **–सुता**–(स्त्री.) लक्ष्मी।
सिंधूद्भव–(सं. पुं.) सेंधा नमक।
सिंधूरा–(हिं.पुं.)सम्पूर्ण जाति का एक राग।
सिंधोरा–(हिं. पुं.) सिंदूर रखने का लकड़ी का पात्र।
सिंह–(सं. पुं.) मृगेंद्र, पशुराज, ज्योतिष में मेषादि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि, वीर पुरुष, छप्पय का एक भेद; **–केलि**–(पुं.) सिंह का संभोग; **–केशर**–(पुं.) सिंह की गरदन पर के बाल; **–तुंड**–(पुं.) सेंहुड़ का पौधा; **–द्वार**–(पुं.) भवन आदि का प्रधान द्वार जहाँ सिंह की मूर्ति बनी हो; **–ध्वनि**–(स्त्री.) सिंहनाद; **–नंदन**–(पुं.) संगीत में एक ताल का नाम; **–नाद**–(पुं.) सिंह की गरज, वीरों की ललकार, शिव, महादेव, संगीत में एक ताल का नाम, एक वर्णवृत्त का नाम जिसको नन्दिनी या कलहंस भी कहते हैं; **–पुच्छ**–(पुं.) पिठवन; **–पौर**–(पुं.) प्रधान द्वार जहाँ सिंह की मूर्ति बनी हो; **–मुख**–(पुं.) सिंह के समान मुखवाला; **–मुखी**– (स्त्री.) बाँस, अड़ूसा; **–याना, –रथा**–(स्त्री.) दुर्गा; **–रव**–(पुं.) सिंह की गरज; **–लीला**–(पुं.) संगीत में एक ताल; **–वाहना, –वाहिनी**–(स्त्री.) दुर्गा देवी; **–विक्रम**–(पुं.) एक प्रकार का छन्द जिसमें पैंतालीस अक्षर होते हैं; **–विक्रीडित**–(पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं, संगीत में एक प्रकार का ताल, एक प्रकार की समाधि; **–विस्फूर्जित**–(पुं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं; **–स्थ**–(वि.) एक पर्व जो वृहस्पति के सिंह राशि में होने पर होता है; **–स्था**–(स्त्री.) दुर्गा।
सिंहनी–(हिं.स्त्री.) शेरनी, एक छन्द जिसके चारों पदों में क्रम से बारह, अठारह, बीस और बाईस मात्राएँ होती हैं।
सिंहल–(सं.पुं.) भारत के दक्षिण में स्थित एक छोटे द्वीप का प्राचीन नाम।
सिंहलक–(सं.पुं.) बढ़िया पीतल, राँगा।
सिंहलद्वीप–(सं. पुं.) सिंहल नामक टापू जो भारत के दक्षिण में है।
सिंहलद्वीपी–(सं. पुं.) सिंहल द्वीप का निवासी।
सिंहली–(हिं. वि.) सिंहल द्वीप का।
सिंहाक्ष–(सं.वि.) सिंह के समान आँखों-वाला।
सिंहाण–(सं. पुं.) नाक का मल, लोहे का मुरचा।
सिंहावलोकन–(सं. पुं.) सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना, आगे बढ़ने से पहले पिछली बातों पर दृष्टिपात करना, पद्य-रचना की एक शैली जिसमें पिछले चरण के अन्त के कुछ शब्दों या पदों को लेकर आगे का चरण आरंभ होता है।
सिंहावलोकित–(सं. पुं.) न्याय का वह भेद जिसमें पास की बातों पर ध्यान न देकर पिछली बातों पर ध्यान दिया गया हो।
सिंहासन–(सं.स्त्री.) राजा का स्वर्णनिर्मित आसन, राजाओं का श्रेष्ठ आसन, देवता को बैठाने की चौकी आदि।
सिंहिका–(सं. स्त्री.) एक राक्षसी जो राहु की माता थी, (यह दक्षिण समुद्र में रहती थी और उड़नेवाले जीवों की परछाईं देखकर उनको खींचकर खा जाती थी।)
सिंहिकासुनू–(सं. पुं.) राहु।
सिंहिनी–(सं. स्त्री.) मादा सिंह, शेरनी।
सिंही–(सं. स्त्री.) शेरनी, बैंगन, अड़ूसा, सिंगा नाम का बाजा, आर्या छन्द का एक भेद।
सिंहेश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा।
सिंहोड़–(हिं. पुं.) सेंहुड़, थूहर।
सिंहोदरी–(सं. वि.) सिंह के समान पतली कमरवाली।
सिंहोद्धता–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
सिंहोन्नता–(सं. स्त्री.) एक छन्द का नाम।
सिअरा–(हिं. पुं.) छाया, परछाईं।
सिआना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सिलाना'।
सिआमंग–(हिं. पुं.) सुमात्रा द्वीप में पाया जानेवाला एक प्रकार का बंदर।
सिआर–(हिं.पुं.) श्रृगाल, सियार, गीदड़।
सिकंजा–(हिं. पुं.) देखें 'शिकंजा'।
सिकंदर–(फा.पुं.) इतिहास-प्रसिद्ध यूनानी बादशाह तथा विजेता।
सिकंदरी–(फा. वि.) सिकंदर का।
सिकटा–(हिं. पुं.) खपड़े या मिट्टी के टूटे हुए पात्रों का छोटा टुकड़ा।
सिकड़ी–(हिं.स्त्री.) किवाड़ की जंजीर या साँकल, श्रृंखला के आकार का गले में पहनने का सोने का गहना, करधनी।
सिकता–(सं. स्त्री.) बलुई भूमि, बालू, रेत, पथरी (रोग), चीनी।
सिकत्तर–(हिं. पुं.) किसी संस्था या सभा का मंत्री।
सिकरवार–(हिं. पुं.) क्षत्रियों की एक शाखा।
सिकरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सिकड़ी'।
सिकली–(हिं. स्त्री.) धारदार हथियारों को माँजने और उन पर सान चढ़ाने की क्रिया; **–गर**–(पुं.) सिकली करने-वाला कारीगर।
सिकहर–(हिं. पुं.) छीका।
सिकहुली–(हिं. स्त्री.) काश या मूँज की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकार–(हिं. पुं.) देखें 'शिकार'।
सिकारी–(हिं.पुं., वि.) देखें 'शिकारी'।
सिकुड़न–(हिं. स्त्री.) वस्त्र आदि का सिमटना, सिकुड़ने का चिह्न, संकोच।
सिकुड़ना–(हिं. क्रि. अ.) सिमटना, बटुरना, आकुंचित होना, संकीर्ण होना।
सिकुरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सिकुड़ना'।
सिकोड़ना–(हिं. क्रि. स.) संकुचित करना,

संकीर्ण करना, बटोरना, समेटना।
सिकोरना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सिकोड़ना'।
सिकोरा–(हिं. पुं.) देखें 'कसोरा'।
सिकोली–(हिं. स्त्री.) बेंत आदि की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकोही–(हिं. वि.) गर्वीला, घमंडी, वीर।
सिक्कक–(सं. पुं.) बाँसुरी में लगाने की जीभी।
सिक्कड़–(हिं. पुं.) सिकड़ी।
सिक्कर–(हिं. पुं.) देखें 'सिक्कड़'।
सिक्का–(अ. पुं.) मुद्रा, छाप, मुहर, रुपये-पैसे आदि पर अंकित राजकीय छाप, पदक, टकसाल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है, माल का वह दाम जिसमें दलाली सम्मिलित हो; (मुहा.)–**जमना**–प्रभुत्व स्थापित होना।
सिक्की–(हिं. स्त्री.) छोटा सिक्का।
सिक्ख–(हिं. पुं.) देखें 'सिख'।
सिक्त–(सं. वि.) सिंचित, सींचा हुआ, भीगा हुआ।
सिक्थ–(सं. पुं.) भात, भात का ग्रास।
सिखंडी–(हिं. पुं.) देखें 'शिखंडी'।
सिख–(हिं. स्त्री.) शिक्षा, उपदेश, सीख; (पुं.) शिष्य, चेला, नानक-पंथी संप्रदाय या उसका अनुयायी।
सिखना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सीखना'।
सिखर–(हिं. पुं.) देखें 'शिखर'।
सिखरन–(हिं. स्त्री.) दही में चीनी मिलाकर बनाया हुआ शरबत जिसमें केशर, इलायची, मेवे आदि पड़े हों।
सिखलाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सिखाना'।
सिखा–(हिं स्त्री.) शिखा, चुटिया, चंदी।
सिखाना–(हिं. क्रि. स.) उपदेश देना, शिक्षा देना, पढ़ाना, बतलाना, धमकाना, दण्ड देना;–**पढ़ाना**–चतुर बनाना, शिक्षा देना।
सिखापन–(हिं. पुं.) उपदेश, शिक्षा, सिखाने का काम।
सिखावन–(हिं. पुं.) उपदेश, शिक्षा।
सिखावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सिखलाना'।
सिखिर–(हिं. पुं.) देखें 'शिखर'।
सिखी–(हिं. पुं.) देखें 'शिखी'।
सिगनल–(अं. पुं.) रेलगाड़ी रोकने का प्रसिद्ध संकेत-स्तम्भ, सिगल।
सिगरेट–(अं. पुं.) धूम्रपान के लिए कागज में तंबाकू भरकर बनाई हुई वस्तु।
सिगार–(अं. पुं.) चुरुट।
सिगरा–(हिं. वि.) सम्पूर्ण, समग्र, सब।
सिगोन–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की रेतीली मिट्टी।
सिचय–(सं. पुं.) वस्त्र, कपड़ा, जीर्ण वस्त्र।
सिचान–(हिं. पुं.) श्येन, बाज पक्षी।
सिच्छा–(हिं. स्त्री.) देखें 'शिक्षा'।
सिजल–(हिं. वि.) जो देखने में सुन्दर हो।
सिजादर–(हिं. पुं.) नाव में पाल चढ़ाने का रस्सा।
सिझना–(हिं. क्रि. अ.) आँच पर पकना, सिझाया जाना।
सिझाना–(हिं. क्रि. स.) आँच पर पकाकर गलाना, रींधना, शरीर को क्षीण बनाना।
सिटकिनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की पतली छड़ जो किवाड़ बंद करने के लिये लगाई जाती है, चटखनी।
सिटपिटाना–(हिं. क्रि. अ.) दब जाना, मंद पड़ जाना, स्तब्ध होना, सकुचाना।
सिट्टी–(हिं. स्त्री.) बहुत बढ़-बढ़कर बोलना; (मुहा.)–**गुम होना**–सिटपिटा जाना।
सिठना–(हिं. पुं.), **सिठनी**–(हिं. स्त्री.) विवाह के समय गाई जानेवाली गाली।
सिठाई–(हिं. स्त्री.) फीकापन, नीरसता, मन्दता।
सिड़–(हिं. स्त्री.) उन्माद, पागलपन, सनक; –**पन**–(पुं.) पागलपन; –**बिल्ला**–(वि.) पागल, झक्की।
सिड़ी–(हिं. वि.) पागल, सनकी, उन्मत्त।
सितंबर–(अं. पुं.) अंग्रेजी वर्ष का नवाँ महीना।
सित–(सं. पुं.) चाँदी, मूली, चन्दन, शुक्राचार्य, शुक्ल पक्ष, शक्कर, चीनी, तिल, भोजपत्र; (वि.) श्वेत, उजला, चमकीला, स्वच्छ; –**कंठ**–(पुं.) महादेव; (वि.) सफेद गरदनवाला; –**कमल**–(पुं.) सफेद कमल; –**कर**–(पुं.) भीमसेनी कपूर; –**कर्णी**–(स्त्री.) वासक; –**काच**–(पुं.) बिल्लौर; –**कुंजर**–(पुं.) इन्द्र का हाथी, ऐरावत; –**क्षार**–(पुं.) सफेद सोहागा; –**गुंजा**–(स्त्री.) सफेद घुंघची; –**चंदन**–(पुं.) श्रीखण्ड, चन्दन; –**छत्रा**–(स्त्री.) सौंफ; –**ज**–(पुं.) मधु से निकाली हुई शक्कर; –**जा**–(स्त्री.) मधु, शर्करा; –**जीरक**–(पुं.) सफेद जीरा; –**ता**–(स्त्री.) सफेदी; –**तुरग**–(पुं.) अर्जुन; –**दीधिति**–(पुं.) चन्द्रमा; –**ध्वज**–(पुं.) हंस; –**धातु**–(स्त्री.) खड़िया मिट्टी; –**पक्ष**–(पुं.) शुक्ल पक्ष, हंस; –**पुष्प**–(पुं.) सिरिस का वृक्ष; –**पुष्पा**–(स्त्री.) चमेली का फूल; –**प्रभ**–(पुं.) चाँदी; –**भानु**–(पुं.) चन्द्रमा; –**मणि**–(पुं.) स्फटिक, बिल्लौर; –**माष**–(पुं.) बोड़ा, लोबिया; –**मेघ**–(पुं) सफेद बादल; –**रंज**–(पुं.) कर्पूर, कपूर; –**रश्मि**–(पुं.) चन्द्रमा; –**राग**–(पुं.) चाँदी; –**रुचि**–(पुं.) चद्रमा; –**वराह**–(पुं.) श्वेत वारह; –०**पत्नी**–(स्त्री.) पृथ्वी, धरती; –**वाजी**–(पुं.) अर्जुन; –**वारण**–(पुं.) सफेद हाथी; –**शिव**–(पुं.) सेंधा नमक, शमी का वृक्ष; –**सागर**–(पुं.) क्षीर-सागर; –**सिंधु**–(पुं.) क्षीरसमुद्र; (स्त्री.) गंगा।
सितम–(फा. पुं.) जुल्म, अन्याय, अत्याचार; –**गर**–(पुं.) अत्याचारी, अन्यायी।
सितली–(हिं. स्त्री.) पीड़ा आदि की अवस्था में निकलनेवाला पसीना।
सितांग–(सं. पुं.) बेले का पौधा, एक प्रकार का कपूर।
सितांबर–(सं. पुं.) वह जो सफेद वस्त्र पहनता हो।
सितांभोज–(सं. पुं.) सफेद कमल।
सितांशु–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कर्पूर।
सिता–(सं. स्त्री.) शर्करा, चीनी, चाँदी, गोरोचन, मल्लिका पुष्प, सफेद भटकटैया, सफेद दूब, शुक्ल पक्ष, चन्द्रिका, चाँदनी; –**खंड**–(पुं.) मिस्री।
सितानन–(सं. पुं.) गरुड़, बिल्व वृक्ष; (वि.) सफेद मुँहवाला।
सितापांग–(सं. पुं.) मयूर, मोर।
सिताब्ज–(सं. पुं.) सफेद कमल।
सिताभ–(सं. पुं.) कर्पूर, सफेद मेघ, सफेद चीनी।
सितार–(हिं. पुं.) कए प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो इसमें लगे हुए तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।
सितारा–(फा. पुं.) तारा, नक्षत्र, भाग्य, चाँदी-सोने की टिकली, चमकी; (मुहा.)–**चमकना**–भाग्य चमकना; –**बुलंद होना**–सितारा चमकना।
सितालक–(सं. पुं.) सफेद मदार।
सितालिका–(सं. स्त्री.) सीप, सितुही।
सितावर–(सं. पुं.) सुसना का साग।
सिताश्व–(सं. पुं.) चन्द्रमा; (वि.) सफेद घोड़ेवाला।
सितासित–(सं. वि.) सफेद और काला; (पुं.) बलदेव।
सिति–(सं. वि.) शुक्ल, उजला, कृष्ण, काला; –**कंठ**–(पुं.) नीलकंठ, शिव, महादेव।

सितुई, सितुही–(हिं. स्त्री.) सुतुही।
सितेक्षु–(सं. पुं.) सफेद ईख।
सितेतर–(सं. वि.) काला या नीला; **–गति**–(पुं.) अग्नि, आग।
सितोत्पल–(सं. पुं.) सफेद कमल।
सितोदर–(सं. पुं.) कुबेर।
सितोद्भव–(सं. पुं.) सफेद चन्दन।
सितोपल–(सं. पुं.) स्फटिक, बिल्लौर।
सितोपला–(सं. स्त्री.) शर्करा, चीनी, मिस्री।
सिथिल–(हिं. वि.) देखें 'शिथिल'।
सिदामा–(हिं. पुं.) देखें 'श्रीदामा'।
सिदिका–(हिं. वि.) सत्य, सच्चा।
सिद्ध–(सं. पुं.) एक प्रकार के देवता जो भुवर्लोक में रहते हैं, अर्हत्, वह जिसने योग या तपोवल से सिद्धि पाई हो, महात्मा, ज्ञानी, ज्योतिष में एक योग का नाम, व्यवहार, काला धतूरा, सफेद सरसों, सेंधा नमक; (वि.) प्रसिद्ध, सम्पन्न, जिसका साधन हो गया हो, प्राप्त, सफल, अनुकूल किया हुआ, लक्ष्य पर पहुँचाया हुआ, निर्णीत, प्रस्तुत, जिसका तप या योग-साधन पूरा हो चुका हो, मोक्ष का अधिकारी, जिसका अर्थ पूरा हो, जो ठीक घटा हो, जो प्रमाण द्वारा निश्चित हो, शोधा हुआ, आँच पर पकाया हुआ; **–क**–(वि.) सिद्ध करनेवाला, काम पूरा करनेवाला; **–कज्जल**–(पुं.) वह काजल जिसको लगाने से लोग वशीभूत होते हैं; **–कारी**–(वि.) धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करनेवाला; **–कार्य**–(वि.) सफल; **–काम**–(वि.) कृतार्थ, कृतकार्य, सफल; **–क्षेत्र**–(पुं.) सिद्धाश्रम; **–गंगा**–(स्त्री.) मन्दाकिनी, आकाशगंगा; **–गति**–(स्त्री.) वे कर्म जिनके करने से मनुष्य सिद्ध होता है; **–गुटिका**–(स्त्री.) वह मन्त्रसिद्ध गोली जिसको मुख में रख लेने से अद्भुत शक्ति आ जाती है; **–गुरु**–(पुं.) वह गुरु जिसका मन्त्र सिद्ध हो; **–जन**–(पुं.) सिद्ध मनुष्य; **–जल**–(पुं.) पकाया हुआ जल; **–ता**–(स्त्री.) सिद्धि, पूर्णता, प्रामाणिकता; **–तापस**–(पुं.) वह तपस्वी जिसने सिद्धि प्राप्त की हो; **–त्व**–(पुं.) देखें 'सिद्धता'; **–दर्शन**–(पुं.) सिद्ध पुरुष का साक्षात्कार; **–देव**–(पुं.) महादेव; **–द्रव्य**–(पुं.) जादू का द्रव्य; **–धातु**–(स्त्री.) पारद, पारा; **–धाम**–(पुं.) सिद्ध-स्थान; **–नाथ**–(पु.) महादेव; **–पक्ष**–(पुं.) प्रमाणित बात; **–पथ**–(पुं.) आकाश, प्रसिद्ध मार्ग; **–पात्र**–(पुं.) स्कन्द के एक अनुचर का नाम; **–पीठ**–(पुं.) वह स्थान जहाँ जपादि करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है; **–पुष्प**–(पुं.) कनेर का फूल; **–प्रयोजन**–(पुं.) सफेद सरसों; **–भूमि**–(स्त्री.) सिद्ध-स्थान; **–मंत्र**–(पुं.) वह मन्त्र जो सिद्ध हो चुका हो; **–मत**–(पुं.) सिद्ध महात्माओं का मत; **–मातृका**–(स्त्री.) एक देवी का नाम; **–मानस**–(वि.) जिसकी अभिलाषा सिद्ध हुई हो; **–योगी**–(स्त्री.) शिव, महादेव; **–रस**–(पुं.) पारद, पारा; **–रसायन**–(पुं.) दीर्घ जीवन और शारीरिकशक्ति देनेवाली औपध; **–लक्ष**–(वि.) जिसका लक्ष्य या निशाना कभी न चूकता हो; **–विद्या**–(स्त्री.) एक महाविद्या; **–संकल्प**–(वि.) जिसकी सब कामनाएँ पूर्ण हों; **–सरित्**–(स्त्री.) आकाशगंगा; **–साधन**–(पुं.) प्रमाणित बात को प्रमाणित करना; **–सिंधु**–(पुं.) स्वर्ग-गंगा; **–सेवित**–(पुं.) वटुक भैरव; **–हस्त**–(वि.) जिसका हाथ कोई काम करने में मँजा हो।
सिद्धांजन–(सं. पुं.) वह अंजन जिसको आँखों में लगाने से भूमि-गर्भ की वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं।
सिद्धांत–(सं. पुं.) वह नियम जो विद्वानों द्वारा सत्य माना जाता है, वह मत जो भली भाँति सोच-विचारकर स्थिर किया गया हो, मुख्य अभिप्राय, तत्त्व की बात, निर्णीत विषय, किसी विषय पर लिखी हुई कोई विद्वत्तापूर्ण पुस्तक, वह मत जो पूर्वपक्ष के बाद सिद्ध किया गया हो।
सिद्धांतज्ञ–(सं. पुं.) तत्त्वज्ञ, सिद्धांत को जाननेवाला।
सिद्धांतित–(सं. वि.) प्रमाणित, निर्णय किया हुआ।
सिद्धांती–(सं. पुं.) तार्किक, मीमांसक, शास्त्र के तत्त्व को जाननेवाला।
सिद्धांबा–(सं. स्त्री.) दुर्गा।
सिद्धा–(सं. स्त्री.) आठ योगिनियों में से एक, देवांगना, आर्या छन्द का एक भेद, सिद्ध की स्त्री।
सिद्धाई–(हिं. स्त्री.) सिद्ध होने की अवस्था।
सिद्धान्न–(सं. पुं.) पका हुआ अन्न, भात।
सिद्धार्थ–(सं. वि.) जिसकी सब कामनाएँ पूर्ण हो गई हों; (पुं) गौतम बुद्ध, राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम, जैनों के चौबीसवें अर्हत्।
सिद्धासन–(सं. पुं.) हठ-योग के चौरासी आसनों में से एक प्रधान आसन।
सिद्धि–(सं. स्त्री.) निवटारा, योग विशेष, दुर्गा, खड़ाऊँ, भाग्योदय, मोक्ष, मुक्ति, सफलता, धन, प्रवीणता, कौशल, प्रभाव, भाँग, पूर्णता, निश्चय होना, प्रमाणित होना, कौशल, निर्णय, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम, गणेश की दो स्त्रियों में से एक, छप्पय का एक भेद, संगीत में एक श्रुति, राजा जनक की पुत्रवधू, तप या योग पूर्ण होने का अलौकिक फल, योग की आठ सिद्धियाँ (अणिमा, गरिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व); **–दा, –दाता**–(वि.) सिद्धि देनेवाला; **–प्रद**–(वि.) सिद्धि देनेवाला; **–बीज**–(पुं.) सिद्धि का कारण; **–भूमि**–(स्त्री.) वह स्थान जहाँ तप आदि की शीघ्र सिद्धि होती है; **–मार्ग**–(पुं.) मोक्ष का मार्ग; **–योग**–(पुं.) ज्योतिष में एक प्रकार का शुभ योग; **–वाद**–(पुं.) ज्ञान-विषयक वार्ता; **–विनायक**–(पुं.) सिद्धिदाता गणेशजी; **–साधक**–(वि.) मनोरथ सिद्ध करनेवाला; **–स्थान**–(पुं.) वह स्थान जहाँ पुरश्चरण, योग आदि करने से शीघ्र सिद्धि होती है।
सिद्धेश्वर–(सं. पुं.) योगियों में श्रेष्ठ, महायोगी, शिव, महादेव।
सिद्धेश्वरी–(सं. स्त्री.) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम।
सिद्धोदक–(सं. पुं.) पकाया हुआ जल, काँजी।
सिद्धौषध–(सं.स्त्री.) वह औषध जिसके सेवन करने से रोग-निवृत्ति होती है।
सिधरी–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार की मछली।
सिधाई–(हिं. स्त्री.) सरलता, सीधापन।
सिधाना, सिधारना–(हिं. क्रि. अ.) जाना, प्रस्थान करना, स्वर्गवास होना, मरना।
सिधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'सिद्धि'।
सिध्म–(सं. वि.) श्वेत कुष्ठ से ग्रस्त।
सिनक–(हिं. स्त्री.) नाक की मैल, नेटा।
सिनकना–(हिं. क्रि. अ.) नाक का मैल, साँस के झोंके से बाहर निकालना।
सिनि–(हिं. पुं.) एक यादव जो सात्यकि का पिता था, क्षत्रियों की एक शाखा।
सिनीवाली–(सं. स्त्री.) अंगिरा की पुत्री का नाम, दुर्गा।
सिनेमा–(अ. पुं.) चित्रपट पर प्रदर्शित आधुनिक यांत्रिक मनोरंजन, इसका भवन;

–घर–(पुं) वह स्थान जहाँ सिनेमा का प्रदर्शन होता है।
सिन्नी–(हि.स्त्री.) मिठाई आदि जो किसी देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाती है।
सिपाका भाथी–(हि. स्त्री.) लोहारों या सोनारों की हाथ से चलाने की भाथी।
सिपारस, सिपारिश–(हि. स्त्री.) देखें 'सिफारिश'।
सिपारसी–(हि. वि.) देखें 'सिफारिशी'।
सिपाहियाना–(फा. वि.) सिपाही-जैसा, सिपाही का।
सिपाही–(फा.पुं.) सैनिक, योद्धा, पुलिस, चपरासी।
सिपुर्द, सपुर्द–(हि. वि.) सौंपा हुआ।
सिप्पा–(हि. पुं.) लक्ष्य-वेध, युक्ति, ढंग, प्रारम्भिक कार्य, प्रभाव, धाक; (मुहा.) **–जमाना, भिड़ाना या लड़ाना**–किसी कार्य को पूरा करने के लिये उपाय लगाना।
सिप्रा–(सं. स्त्री.) उज्जयिनी की एक प्रसिद्ध नदी।
सिफारिश–(फा. स्त्री.) किसी के गुणों का दूसरे से अनुमोदन करना।
सिफारिशी–(फा.वि.) सिफारिश-संबंधी।
सिबिका–(हि. स्त्री.) देखें 'शिविका'।
सिमंत–(हि. पुं.) देखें 'सीमंत'।
सिमई–(हि. स्त्री.) सिवई।
सिमट–(हि. स्त्री.) सिमटने की क्रिया या भाव।
सिमटना–(हि. क्रि. अ.) सिकुड़ना, संकुचित होना, सिटपिटाना, बटुरना, बटोरा जाना, निवटना, लज्जित होना।
सिमटी–(हि. स्त्री.) एक प्रकार का कपड़ा।
सिमरगोला–(हि. पुं.) एक प्रकार की वर्तुल वास्तु-रचना।
सिमरना–(हि. क्रि. स.) देखें 'सुमिरना'।
सिमरिख–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
सिमल–(हि. पुं.) जुए में लगी हुई खूँटी।
सिमाना–(हि. पुं.) सीवाना, हद।
सिमिटना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'सिमटना'।
सिमृति–(हि. स्त्री.) देखें 'स्मृति'।
सिमेंट–(अं. पुं.) मकान आदि पलस्तर करने का पत्थर आदि का चूर्ण।
सिमेटना–(हि. क्रि. स.) समेटना।
सिम्मालू–(सं. पुं.) सिंदुवार, निर्गुंडी।
सिय–(हि. स्त्री.) सीता, जानकी।
सियना–(हि. क्रि. स.) उपजाना, रचना, सीना।
सियरा–(हि. वि.) शीतल, ठंढा, कच्चा।
सियराई–(हि. स्त्री.) शीतलता, ठंढापन।
सियराना–(हि. क्रि. अ.) ठंढा होना, शीतल होना।
सिया–(हि. स्त्री.) जानकी, सीता।
सियाना–(हि. क्रि. स.) देखें 'सिलवाना'।
सियापा–(हि. पुं.) मृत व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक बहुत-सी स्त्रियों का प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की चाल, मातम।
सियार–(हि. पुं.) शृगाल, गीदड़; **–लाठी**–(पुं.) अमलतास।
सियारा–(हि. पुं.) वह उपकरण जिससे जुती हुई भूमि बराबर की जाती है।
सियाल–(हि. पुं.) देखें 'सियार', शृगाल, गीदड़।
सियाला–(हि. पुं.) शीत काल, जाड़े की ऋतु।
सियाली–(हि. स्त्री.) जाड़े की ऋतु की उपज।
सियावड़ी–(हि. स्त्री.) वह काली हाँड़ी जो चिड़ियों को डराने के लिये खेत में रखी जाती है।
सियाह–(फा. वि.) काला।
सियाहा–(फा.पुं.) रोजनामचा, कर्मचारी की कार्य-तालिका, लगान की वसूली की वही।
सियाही–(फा.स्त्री.) कालापन, श्यामलता, रोशनाई।
सिर–(हि. पुं.) शिर, कपाल, खोपड़ी, सिरा, चोटी, ऊपरी छोर; (मुहा.) **–आँखों पर आना**–अति सत्कार किया जाना; **–आँखों पर होना या बठाना**–माननीय होना; **–उठाना**–उपद्रव मचाना, आमत्सम्मानपूर्वक रहना; **–ऊँचा करना**–अभिमान के साथ लोगों के बीच रहना; **–खपाना**– अधिक सोच-विचार करना; **–खाना**–बकवाद से परेशान करना; **–खाली करना**–व्यर्थ बकवाद करना; **–घूमना**–मस्तक में पीड़ा होना; **–चकराना**–सिर में चक्कर आना; **–चढ़ाना**–आदर दिखलाना, बढ़ावा देना; **–झुकाना**–लज्जा से गरदन नीची करना, प्रणाम करना; **–देना**–जान देना; **–धरना**–स्वीकार करना; **–धुनना**–पछतावा करना; **–नीचा करना**–लज्जावश सिर झुकाना; **–पटकना**–बहुत परिश्रम करना, दुःखी होना; **–पर आना**–भूत-प्रेत का प्रभाव होना; **–पर खून सवार होना**–हत्या करने पर उतारू होना; **–पर पड़ना**–जिम्मे होना; **–पर पाँव रखना**–जल्दी से भाग जाना; **–पर सींग निकलना**–कोई अनहोनी बात होना; **–पर होना**–सहायक होना; **–फिरना**–सिर चकराना; **–मारना**–सोचते-सोचते व्यग्र होना; **–मुड़ाते ही ओला पड़ना**–किसी कार्य के आरंभ होते ही विघ्न पड़ना; **–से पैर तक**–आद्योपान्त, पूर्णरूप से; **–से पर तक आग लगना**–अति क्रुद्ध होना; **–से खेल जाना**–प्राण दे देना; **–होना**–जिम्मे होना।
सिरई–हि. स्त्री.) चारपाई में सिरहाने की पाटी।
सिरकटा–(हि. वि.) जिसका सिर कट गया हो, दूसरे को हानि पहुँचानेवाला।
सिरका–(फा. पुं.) खमीर उठाया हुआ ईख आदि का रस, आम का मीठा अचार।
सिरकी–(हि. स्त्री,) सरकंडा, सरई, सरहरी, सरई की तीलियों की बनी हुई टट्टी जो भीत या गाड़ियों पर धूप या पानी से बचाने के लिये लगाई जाती है।
सिरखप–(हि. वि.) परीश्रमी, सिर खपानेवाला।
सिरखपी–(हि. स्त्री.) परिश्रम, माथापच्ची।
सिरखिली–(हि. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।
सिरगा–(हि. स्त्री.) घोड़े की एक जाति।
सिरगिरी–(हि. स्त्री.) चिड़ियों के सिर पर की कलँगी।
सिरचंद–(हि. पुं.) एक प्रकार का अर्धचन्द्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहनाया जाता है।
सिरजक–(हि. पुं.) सृष्टिकर्ता, रचना करनेवाला।
सिरजन–(हि. पुं.) निर्माण, सृष्टि; **–हार**–(पुं.) निर्माता, स्रष्टा।
सिरजना–(हि. क्रि. स.) सृष्टि करना, निर्माण करना, संचय करना, बनाना।
सिरजित–(हि. वि.) निर्मित, रचा हुआ।
सिरताज–(हि. पुं.) सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु, शिरोमणि, सरदार, मुकुट।
सिरतान–(हि. पुं.) कृषक, असामी।
सिरत्राण–(हि. पुं.) देखें 'शिरस्त्राण'।
सिरदार–(हि. पु.) देखें 'सरदार'।
सिरदुआली–(हि. स्त्री.) घोड़े की लगाम में लगी हुई डोरी या चमड़े का पट्टा।
सिरनेत–(हि. पुं.) पगड़ी, चीरा, क्षत्रियों की एक शाखा।
सिरपाव–(हि. पुं.) देखें 'सिरोपाव'।
सिरफूल–(हि.पुं.) स्त्रियों का एक आभूषण

जिसको वे सिर पर पहनती हैं।

सिरफेंटा, सिरबंद–(हिं. पुं.) पगड़ी, मुरेठा ।

सिरबंदी–(हिं. स्त्री.) मस्तक पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

सिरमगजन–(हिं. पुं.) माथापच्ची।

सिरमनि–(हिं. पुं.) देखें 'शिरोमणि'।

सिरमौर–(हिं. पुं.) शिरोमणि, सिर पर पहनने का मुकुट ।

सिररुह–(हिं. पुं.) देखें 'शिरोरुह'।

सिरवा–(हिं. पुं.) ओसाने में हवा करने का कपड़ा ।

सिरवार–(हिं. पुं.) भूस्वामी का वह भृत्य जो उसकी खेती का प्रबन्ध करता है।

सिरस–(हिं. पुं.) शीशम की तरह का एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष, एक प्रकार का लसदार रासायनिक द्रव।

सिरसी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का तीतर।

सिरहाना–(हिं. पुं.) चारपाई में सिर की ओर का भाग।

सिरा–(सं. स्त्री.) रक्तवाहिनी नाड़ी, शिरा, सिंचाई की नाली, पानी की पतली धारा, कलश, गगरा; (हिं. स्त्री.) लंबाई का अन्त, छोर, अन्तिम भाग, आरंभ का भाग, अग्रभाग; **सिरे का**–अत्युत्तम।

सिराजी–(हिं. पुं.) शीराज का घोड़ा या कबूतर ।

सिराना–(हिं. क्रि. अ., स.) शीतल होना, ठंढा होना, उत्साहहीन होना, समाप्त होना, दूर होना, मिटना, अवकाश मिलना, समाप्त होना, शीतल करना ।

सिरामोक्ष–(सं. पुं.) दूषित रक्त निकालने के लिये फसद खुलवाना ।

सिराला–(सं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा, कमरख ।

सिराली–(हिं. स्त्री.) मोर के सिर पर की कलँगी ।

सिरावन–(हिं. पुं.) खेत चौरस करने का हेंगा ।

सिरावना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सिराना'।

सिरावृत्त–(सं. पुं.) सीसक, सीसा ।

सिराहर्ष–(सं. पुं.) आँख के डोरों की लाली ।

सिरियारी–(हिं. स्त्री.) सुसना का साग।

सिरी–(हिं. स्त्री.) श्री, लक्ष्मी, शोभा, रोली, माथे पहनने पर का एक आभूषण; **–पंचमी**–(स्त्री.) श्रीपंचमी, वसंतपंचमी ।

सिरीस–(हिं. पुं.) देखें 'सिरस' ।

सिरोना–(हिं. पुं.) घड़ा रखने का रस्सी का बना हुआ मेंड़रा, इंडुरी, विड़वा ।

सिरोपाव–(हिं. पुं.) सिर से पैर तक का पहनावा जो राजा की ओर से सम्मान के रूप में दिया जाता था ।

सिरोमनि–(हिं. पुं.) देखें 'शिरोमणि'।

सिरोरुह–(हिं. पुं.) देखें 'शिरोरुह' ।

सिरोही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की काली चिड़िया, राजपूताना का एक स्थान।

सिर्का–(हिं. पुं.) देखें 'सिरका'।

सिल–(हिं. स्त्री.) शिला, पत्थर, चट्टान, पत्थर की पटिया जिस पर वट्टे से मसाला आदि पीसा जाता है, पत्थर की चिकनी की हुई चौकोर पटिया; (पुं.) बलूत की जाति का एक वृक्ष।

सिलक–(हिं. स्त्री.) लड़ी, हार, पंक्ति; (पुं.) धागा ।

सिलकी–(हिं. पुं.) बेल ।

सिलखड़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का चिकना कोमल पत्थर जिसके पात्र वनाये जाते हैं।

सिलगना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सुलगना'।

सिलप–(हिं. पुं.) देखें 'शिल्प' ।

सिलपट–(हिं. वि.) चौरस, बरावर, घिसा हुआ, नष्ट, चौपट; (पुं.) चप्पल, जूती ।

सिलपोहनी–(हिं. स्त्री.) विवाह की एक रीति ।

सिलफोड़ा–(हिं. पुं.) पत्थरचड़ ।

सिलमाकुर–(हिं. पुं.) पाल वनानेवाला।

सिलवट–(हिं. स्त्री.) सिकुड़न ।

सिलवाना–(हिं. क्रि. स.) सीने का काम दूसरे से कराना ।

सिलसिला–(अ. पुं.) क्रम, श्रृंखला, तरतीव ।

सिलसिलावार–(अ. वि.) क्रमबद्ध।

सिलहट–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान ।

सिलहटिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की नाव ।

सिलहार, सिलहारा–(हिं. पुं.) अनाज कटने के वाद खेत में गिरे हुए अन्न के दानों को वीननेवाला।

सिलहिला–(हिं. वि.) जिस पर पैर फिसले, चिकना ।

सिलही–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया ।

सिला–(हिं. स्त्री.) शिला, फसल कटने के वाद खेत में गिरे हुए अन्न के दानों को वटोरने की क्रिया, पछोड़ने या फटकने के लिये रखा हुआ अन्न का ढेर; (अ. पुं.) बदला ।

सिलाई–(हिं. स्त्री.) सीने का काम या ढंग, टाँका, सीयन, सीने का शुल्क ।

सिलाजीत–(हिं. पुं.) देखें 'शिलाजीत', पत्थर की चट्टानों से निकलनेवाला एक प्रकार का लसदार निर्यास ।

सिलाना–(हिं. क्रि. स.) सीने का काम दूसरे से कराना ।

सिलावार्क–(हिं. पुं.) पत्थरफूल ।

सिलारस–(हिं. पुं.) सिल्हक नामक वृक्ष का गोंद जो वहुत सुगन्धित होता है।

सिलावट–(हिं. पुं.) पत्थर गढ़नेवाला, संगतराश ।

सिलासार–(हिं. पुं.) लोहा ।

सिलाहर–(हिं. पुं.) फसल कटने के वाद खेत से अन्न के दाने वीनकर निर्वाह करनेवाला ।

सिलाही–(हिं. पुं.) सैनिक।

सिलिया–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पत्थर जो घर वनाने के काम में आता है।

सिलीमुख–(हिं. पुं.) देखें 'शिलीमुख'।

सिलेट–(हिं. स्त्री.) काले पत्थर की पतली पटरी जिस पर लड़के लिखते हैं।

सिलोच्च–(हिं. पुं.) एक प्राचीन पर्वत का नाम ।

सिलौआ–(हिं. पुं.) सन के मोटे रेशे।

सिलौट, सिलौटा–(हिं. पुं.) पत्थर का चिकना टुकड़ा, सिल और वट्टा ।

सिलौटी–(हिं. स्त्री.) (भाँग, मसाला आदि) पीसने की छोटी सिल ।

सिल्प–(हिं. पुं.) देखें 'शिल्प'।

सिल्लकी–(सं. स्त्री.) सलई का पेड़।

सिल्ला–(हिं. पुं.) अन्न के दाने जो फसल कट जाने पर पड़े रह जाते है, खलिहान में गिरा हुआ अन्न ।

सिल्ली–(हिं. स्त्री.) पत्थर की छोटी और पतली पटिया, हथियार पैना करने का पत्थर का छोटा टुकड़ा, लकड़ी का मोटा कुंदा।

सिल्ह, सिल्हक–(सं. पुं.) सिलारस नामक गन्ध-द्रव्य, इस नाम का वृक्ष।

सिव–(हिं. पुं.) देखें 'शिव' ।

सिवई–(हिं. स्त्री.) गूँथे हुए मैदे के सूत-जैसे पूरे हुए महीन लच्छे जो चीनी के साथ दूध में पकाकर खाये जाते हैं।

सिवक–(सं. पुं.) सीनेवाला, दरजी ।

सिवलिंगी–(हिं. स्त्री.) देखें 'शिवलिंगी'।

सिवा–(हिं. स्त्री.) देखें 'शिवा; (अव्य.) अलावा, सिवाय ।

सिवाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'सिलाई'।
सिवान–(हिं. पुं.) सरहद, गाँव के चारों ओर के खेत।
सिवाय–(अ. अव्य.) अलावा, वगैर।
सिवार, सिवाल–(हिं. पुं.) शैवाल, जल में होनेवाली एक घास।
सिवाली–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हलके रंग का पन्ना।
सिश्ट–(हिं. स्त्री.) वंसी की डोरी।
सिसकना–(हिं. क्रि अ.) रुक-रुककर लंबी साँस लेते हुए भीतर ही भीतर रोना, उलटी साँस लेना, खुलकर न रोना, व्याकुल होना।
सिसकारना–(हिं.क्रि.अ.,स.) मुख से सीटी के समान शब्द निकालना, लहकारना, सी-सी शब्द करना, पीड़ा आदि के कारण शीत्कार करना।
सिसकारी–(हिं. स्त्री.) सीटी के समान शब्द, सिसकारने का शब्द, जीभ दबाकर मुख से साँस खींचने का शब्द, लहकारने की क्रिया।
सिसकी–(हिं. स्त्री.) भीतर ही भीतर रोने में रुक-रुककर निकलनेवाला शब्द, सिसकारी, शीत्कार।
सिसिर–(हिं. पुं.) देखें 'शिशिर'।
सिसु–(हिं. पुं.) देखें 'शिशु', वालक।
सिसुमार–(हिं. पुं.) सूँस।
सिसोदिया–(हिं. पुं.) राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा।
सिहपण–(हिं. पुं.) वासक, अड़ूसा।
सिहरना–(हिं. क्रि. अ.) ठंढक से काँपना, भयभीत होना, रोंगटे खड़े होना।
सिहरा–(हिं. पुं.) देखें 'सेहरा'।
सिहराना–(हिं. क्रि. स.) ठंढ से कँपाना, डराना।
सिहरी–(हिं. स्त्री.) ठंढ के कारण कँप-कँपी, भय, जूड़ी।
सिहान–(हिं. स्त्री.) ईर्ष्या की दृष्टि से देखना, डाह करना, ललचना।
सिहाना–(हिं. क्रि. अ.,स.) ईर्ष्या करना।
सिहारना–(हिं. क्रि. स.) ढूँढ़ना, अन्वेषण करना।
सिहिकना–(हिं. क्रि. अ.) सूखना।
सिहुंड–(सं. पुं.) सेंहुड़ का पौधा।
सिहोड़–(हिं. पुं.) सेहुँड़, थूहर।
सींक–(हिं. पुं.) मूँज, सरपत आदि की पतली तीली, किसी तृण का महीन डंठल, तिनका, नाक का एक गहना, लौंग, कील, शंकु, खड़ी महीन धारी।
सींकर–(हिं. पुं.) सींक में लगा हुआ फूल या घूआ।
सींका–(हिं. पुं.) पेड़-पौधों की महीन टहनी।
सींकिया–(हिं. पुं.) एक प्रकार का महीन कपड़ा जिसमें सींक के समान महीन धारियाँ रहती हैं।
सींग–(हिं. पुं.) शृंग, खुरवाले कुछ पशुओं के सिर के दोनों ओर शाखा के समान निकले हुए नुकीले अवयव, विषाण, पुरुष की इन्द्रिय; (मुहा.) **(किसी के सिर पर)–जमना या होना**–कोई विशिष्टता होना; **–समाना**–ठिकाना मिलना।
सींगड़ा–(हिं. पुं.) वारूद रखने का सींग का चोंगा, मुख से बजाने का एक प्रकार का वाजा, सींगी।
सींगना–(हिं. क्रि. स.) चुराये हुए पशु को सींग से पहचानना।
सींगरी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी वनती है।
सींगी–(हिं. स्त्री.) हरिन के सींग का वना हुआ वाजा जो मुँह से वजाया जाता है, एक प्रकार की मछली, वह पोला सींग जिसके द्वारा दूषित रक्त चूसकर निकाला जाता है।
सींच–(हिं.स्त्री.) सींचने की क्रिया, सिंचाई।
सींचना–(हिं. क्रि. स.) पेड़-पौधों को पानी देना, पानी छिड़ककर तर करना, भिगोना।
सींवँ–(हिं. पुं.) सीमा, सरहद।
सी–(हिं. वि. स्त्री.) 'सा' का स्त्री-लिंग रूप, समान, तुल्य; (स्त्री.) सीत्कार, वीज की वोआई।
सीउ–(हिं. पुं.) शीत, ठंढक।
सीकचा–(हिं. पुं.) छोटी-सी पतली छड़, तीली।
सीकर–(सं. पुं.) पानी की बूँद, छींटा, पसीना, कण।
सीकल–(हिं. पुं.) डाल का पका हुआ आम, शस्त्रों का मुरचा छुड़ाने की क्रिया, सिकली।
सीकस, सीकसी–(हिं. पुं., स्त्री.) ऊसर।
सीका–(हिं. पुं.) सिर पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण, देखें 'छींका'।
सीकाकाई–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रीठे की भाँति वाल मलने के काम में आती हैं।
सीको–(हिं. स्त्री.) छोटा सिकहर; (पुं.) छिद्र, छेद।
सीकुर–(हिं. पुं.) जौ, गेहूँ आदि की वालों पर के पतले शूक।
सीख–(हिं. स्त्री.) शिक्षा, सिखलाने की वात, परामर्श; (फा. स्त्री.) लोहे की पतली छड़ या सलाख।
सीखन–(हिं. स्त्री.) शिक्षा, सीखना।
सीखना–(हिं. क्रि. स.) ज्ञान प्राप्त करना, किसी से कोई वात जानना, किसी से कोई कार्य करने की विधि जानना, अभ्यास करना, अनुभव प्राप्त करना।
सीगारा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा।
सीजना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सीझना'।
सीझ–(हिं.स्त्री.) सीझने की क्रिया या भाव।
सीझना–(हिं. क्रि. अ.) आँच और पानी के योग से पकना, आँच या गरमी पाकर मृदु होना, कष्ट सहना, दुःख झेलना, चमड़े का मसाला लगाने पर मृदु और चिकना होना, (सूद आदि) मिलने योग्य होना, ऋण का निवटारा होना।
सीट–(हिं. स्त्री.) अभिमानपूर्ण शब्द, डींग।
सीटना–(हिं. क्रि. अ.) डींग मारना।
सीटपटाँग–(हिं.स्त्री.) वढ़-वढ़कर वोलना घमंड से भरी हुई वात।
सीटी–(हिं. स्त्री.) वह महीन शब्द जो ओठों को सिकोड़कर मुख से वेग से वायु निकालने पर उत्पन्न होता है, वाजे आदि का इस प्रकार का शब्द, वह वाजा या खिलौना जिसको फूंकने से इस प्रकार का शब्द निकलता है।
सीठना–(हिं. पुं.) अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं, गाली।
सीठनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सीठना'।
सीठा–(हिं. वि.) नीरस, फीका; **–पन**–(पुं.) फीकापन।
सीठी–(हिं. स्त्री.) (किसी फल, फूल, पत्ते आदि का) रस निकाल लेने पर वचा हुआ अंश, निःसार पदार्थ।
सीड़–(हिं. स्त्री.) सील, तरी, नमी।
सीढ़ी–(हिं. स्त्री.) निसेनी, जीना, ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिये दो वाँसों का वना हुआ लंवा ढाँचा जिस पर पैर रखने के लिये थोड़ी-थोड़ी दूर पर वेंड़े वल डंडे लगे होते हैं, आगे वढ़ने का क्रम।
सीत–(हिं.पुं.) देखें 'शीत', ठंढक।
सीतल–(हिं. वि.) देखें 'शीतल', ठंढा; **–चीनी**–(स्त्री.) देखें 'शीतलचीनी'; **–पाटी**–(स्त्री.) एक प्रकार की चिकनी चटाई, एक प्रकार का धारीदार कपड़ा; **–बुकनी**–(स्त्री.) सत्तू।

सीतला–(हिं. स्त्री.) देखें 'शीतला'।
सीता–(सं. स्त्री.) मिथिला के राजा जनक की कन्या जो श्रीरामचन्द्र को व्याही थी, वैदेही, जानकी, उमा, लक्ष्मी, मदिरा, भूमि जोतने में हल के फाल से बनी हुई रेखा, एक वर्ण-वृत्त का नाम ;–**द्रव्य**–(पुं.) खेती के उपादान ; –**धर**–(पुं.) वलरामजी; –**पति**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र ; –**फल**–(पुं.) शरीफा, कुम्हड़ा ;–**रमण**–(पुं.) श्रीरामचन्द्र।
सीताध्यक्ष–(सं. पुं.) वह राजकर्मचारी जो राजा की निजी खेती-वारी का काम देखता है ।
सीताहार–(सं. पुं.) एक प्रकार का पौधा।
सीतिनक–(सं. पुं.) मटर, दाल ।
सीत्कार–(सं. पुं.) पीड़ा या आनन्द के समय मुख से साँस खींचने से उत्पन्न सी-सी शब्द, सिसकारी।
सीथ–(हिं. पुं.) पके हुए अन्न का दाना, भात का दाना।
सीद–(सं. पुं.) व्याज पर रुपया देना ।
सीदना–(हिं. क्रि. अ., स.) दुःख पाना, कष्ट देना।
सीध–(सं. पुं.) आलस्य, सुस्ती ।
सीध–(हिं.स्त्री.) ठीक सामने की स्थिति, सम्मुख विस्तार या लंवाई, लक्ष्य।
सीधा–(हिं.वि.) जो टेढ़ा न हो, विना इधर-उधर मुड़े एक ओर जानेवाला, (मार्ग), जो ठीक लक्ष्य की ओर हो, जो कपटी न हो, शान्त, शिष्ट, सहज, दाहिना; (अव्य.) सम्मुख, ठीक सामने की ओर; (पुं.) आटा, चावल आदि; –**सीधी तरह**–शिष्टता से; –**सादा**–(वि.) सज्जन, भोला-भाला; –**पन**–(पुं.) भोलापन; (मुहा.) (**किसी को**) –**करना**–दण्ड देकर ठीक करना।
सीधु–(सं. पुं.) गुड़ की वनी हुई मदिरा; –**गंध**–(पुं.) वकुल, मौलसिरी; –**पुष्पी**–(स्त्री.) धव का वृक्ष ; –**रस**–(पुं.) आम का पेड़; –**वृक्ष**–(पुं.) थूहर।
सीधे–(हिं. अव्य.) सम्मुख, ठीक सामने की ओर, विना मुड़े हुए, शिष्टता से ।
सीना–(हिं. क्रि. स.) (कपड़े, चमड़े आदि के टुकड़ों को) सूई और डोरे से जोड़ना, टाँका मारना; (फा. पुं.) छाती।
सीनातोड़–(हिं. पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
सीनावाँह–(हिं. पुं.) एक प्रकार का व्यायाम ।
सीप–(हिं. पु., स्त्री.) शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजन्तु जो ताल, झील आदि में पाया जाता है, सीपी, सुतुही ।
सीपज–(हिं. पुं.) मोती ।
सीपति–(हिं. पु.) देखें 'श्रीपति', विष्णु।
सीपर–(हिं. पुं.) ढाल ।
सीपसुत–(हिं. पुं.) मुक्ता, मोती ।
सीपिज–(हिं. पुं.) मोती ।
सीपी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सीप' ।
सीबी–(हिं. स्त्री.) सी-सी का शब्द, सिसकारी।
सीमंत–(सं. पुं.) स्त्रियों की माँग, हिन्दुओं में एक संस्कार जो गर्भ-स्थिति के चौथे, छठे या आठवें महीने में किया जाता है, वैद्यक के अनुसार अस्थियों का सन्धि-स्थान ।
सीमंतक–(सं. पुं.) सिन्दूर, एक प्रकार का मानिक (रत्न) ।
सीमंतिनी–(सं. स्त्री.) नारी, स्त्री ।
सीमंतोन्नयन–(सं. पुं.) हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से तीसरा संस्कार ।
सीमांत–(सं. पुं.) सीमा, हद, सीमावर्ती क्षेत्र या प्रदेश ।
सीमा–(सं. स्त्री.) किसी प्रदेश आदि के विस्तार का अन्तिम स्थान, हद, किनारा, मेंड़, तीर, क्षेत्र, अंडकोष; (मुहा.)–**के वाहर जाना**–अधिक होना, अतिक्रमण करना; –**वाँधना**–सीमा स्थिर करना; –**कृषाण**–(पुं.) किसान, खेत जोतनेवाला; –**गिरि**–(पुं.) वह पर्वत जो सीमाप्रान्त पर हो; –**पाल**–(पुं.) सीमा का रक्षक; –**वद्ध**–(वि.) सीमाओं से घिरा हुआ, सीमा के भीतर किया हुआ; –**लिंग**–(पुं.) सीमास्थल, सरहद, सीमा का चिह्न; –**विवाद**–(पुं.) सीमा-संवंधी झगड़ा; –**वृक्ष**–(पुं.) सीमा-स्थल पर लगा हुआ वृक्ष; –**संधि**–(स्त्री.) दो प्रान्तों आदि की सीमाओं का मिलन-स्थल; –**सेतु**–(पुं.) हदवंदी ।
सीमातिक्रमण–(सं. पुं.) सीमा का उल्लंघन करना ।
सीमातिवंध–(सं. पुं.) नियम, मर्यादा।
सीमाधिप–(सं. पुं.) सीमा का अध्यक्ष ।
सीमिक–(सं. पुं.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा, दीमक ।
सीमेंट–(अं. पुं.) पत्थर आदि का विशेष रूप से वना हुआ चूर्ण जो पक्के मकान में पलस्तर करने के काम में आता है ।
सीमोल्लंघन–(सं. पुं.) सीमा लाँघना, सीमातिक्रमण, मर्यादा या कानून के विरुद्ध काम करना ।
सीय–(हिं. स्त्री.) सीता, जानकी ।
सीयन–(हिं. स्त्री.) सिलाई ।
सीर–(सं. पुं.) सूर्य, अर्क वृक्ष, हल, हल जोतनेवाला वैल; (हिं. स्त्री.) वह भूमि जिसको भूस्वामी स्वयं वहुत दिनों से जोतता चला आता हो ।
सीरक–(सं. पुं.) शिशुमार, सूँस, सूर्य, हल ।
सीरख–(हिं. पुं.) देखें 'शीर्ष' ।
सीरधर–(सं. पुं.) वलराम, हल धारण करनेवाला ।
सीरध्वज–(सं. पुं.) चन्द्रवंशीय राजा जनक।
सीरन–(हिं. पुं.) वच्चों का पहनावा ।
सीरनी–(हिं. स्त्री.) मिठाई चढ़ाना, सिन्नी।
सीरपति–(सं. पुं.) कृषक ।
सीरपाणि–(सं. पुं.) हलधर, वलदेव ।
सीरवाह, सीरवाहक–(सं. पुं.) हलवाहा, किसान ।
सीरष–(हिं. पुं.) देखें 'शीर्ष' ।
सीरा–(हिं. पुं.) पकाकर मधु के समान गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस, चाशनी, हलवा, चारपाई का सिरहाना; (वि.) शीतल, ठंढा ।
सीरोसा–(हिं. पुं.) एक प्रकार की मिठाई ।
सील–(हिं. स्त्री.) आर्द्रता, सीड़, तरी; (हिं. पुं.) देखें 'शील' ।
सीला–(हिं. पुं.) अन्न के दाने जो फसल काट लेने पर खेत में पड़े रह जाते हैं, सिल्ला, खेत में गिरे हुए दानों को चुनकर निर्वाह करनेवाला; (वि.) तर, गीला।
सीवड़ी–(हिं. पुं.) गाँव की सीमा, सिवान।
सीवन–(सं. पुं.) सीने का काम, सिलाई, सन्धि, जोड़ ।
सीवनी–(सं. स्त्री.) वह रेखा जो अण्डकोष के वीचोवीच से मलद्वार तक जाती है ।
सीस–(हिं. पुं.) मस्तक, माथा, सिर, कन्धा।
सीसक–(सं. पुं.) सीसा नामक धातु ।
सीसताज–(हिं. पुं.) आखेट करनेवाले पक्षी, (वाज आदि) के सिर पर पहनाने की टोपी ।
सीसत्रान–(हिं. पुं.) शिरस्त्राण, टोप ।
सीसपत्र, सीसपत्रक–(सं. पुं.) सीसा (धातु)।
सीसफूल–(हिं. पुं.) फूल के आकार का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है।
सीसम–(हिं. पुं.) देखें 'शीशम' ।
सीसल–(हिं. पुं.) केवड़े की तरह का एक क्षुप ।
सीसा–(हिं. पुं.) एक मूल धातु जो वहुत भारी होती और जिसका रंग नीलापन लिये काला होता है ।

सीसी–(हिं. स्त्री.) सीत्कार, सिसकारी, शीत आदि के कारण मुँह से निकलनेवाला शब्द ।
सीसो(सौ)दिया–(हिं. पुं.) देखें 'सिसोदिया' ।
सीह–(हिं. स्त्री.) गन्ध; (पुं.) सिंह; **–गोस**–(पुं.) एक प्रकार का हिंस्र जन्तु जिसके कान काले होते हैं ।
सुं–(हिं. अव्य.) देखें 'सों' ।
सुंखड़–(हिं. पुं.) साधुओं का एक सम्प्रदाय ।
सुंघनी–(हिं. स्त्री.) तंबाकू के पत्ते की महीन बुकनी जो सूँघी जाती है, नस्य, हुलास ।
सुंघाना–(हिं. क्रि. स.) कोई चीज किसी की नाक से लगाकर सूँघने की क्रिया कराना ।
सुंड–(हिं. पुं.) शुंड; **–भुसुंड**–(पुं.) हाथी ।
सुंडा–(हिं. पुं.) शुंड, सूँड़ ।
सुंडाल–(हिं. पुं.) हाथी ।
सुंदर–(सं. वि.) जो देखने में अच्छा लगे, आकर्षक रूपवाला, खूबसूरत, भला, अच्छा; (पुं.) कामदेव; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) सुंदर होने का भाव, सौंदर्य, खूबसूरती; **–ताई**–(हिं. स्त्री.) सुंदरता ।
सुंदरी–(सं. वि. स्त्री.) 'सुंदर' का स्त्रीलिंग रूप; (स्त्री.) रूपवती स्त्री, एक योगिनी, एक वर्ण-वृत्त ।
सुंधावट–(हिं. स्त्री.) सोंधापन, सोंधी महक ।
सुंबा–(हिं. पुं.) स्पंज, दागी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर डाला जानेवाला गीला कपड़ा, पुचारा, तोप की नली स्वच्छ करने का गज, लोहार का गरम लोहे में छेद करने का अस्त्र ।
सुंबी, सुंभी–(हिं. स्त्री.) छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है ।
सु–(सं. उप.) एक उपसर्ग जिसको शब्दों में जोड़ने से उत्तम, श्रेष्ठ, सुंदर आदि अर्थ सूचित होता है; (वि.) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ; (सर्व.) वह, सो ।
सुअटा–(हिं. पुं.) शुक, सुग्गा ।
सुअन–(हिं. पुं.) पुत्र, बेटा, देखें 'सुमन'; **–जर्द**–(पुं.) देखें 'सोनजर्द' ।
सुअना–(हिं. क्रि. अ.) उत्पन्न होना; (पुं.) सुग्गा, तोता ।
सुअर–(हिं. पुं.) शूकर, सूअर ।
सुअवसर–(सं. पुं.) अच्छा अवसर, अच्छा मौका ।
सुआ–(हिं. पुं.) देखें 'सूआ', तोता ।
सुआउ–(हिं. वि.) दीर्घायु, दीर्घजीवी ।
सुआद–(हिं. पुं.) स्वाद ।
सुआमी–(हिं. पुं.) देखें 'स्वामी' ।
सुआर–(हिं. पुं.) सूपकार, रसोइया ।
सुआरव–(हिं. वि.) मीठे स्वर से बोलनेवाला ।
सुआसन–(सं. पुं.) बैठने का सुंदर आसन ।
सुआसिनी–(हिं. स्त्री.) 'पड़ोसिन' ।
सुआहित–(हिं. पुं.) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों में से एक हाथ ।
सुई–(हिं. स्त्री.) देखें 'सूई' ।
सुकंटका–(सं. स्त्री.) घीकुआर, पिण्डखजूर ।
सुकंठ–(सं. वि.) जिसका कंठ सुंदर हो, सुरीला; (पुं.) सुग्रीव का एक नाम ।
सुकंठी–(सं. स्त्री.) गन्धर्व की स्त्री ।
सुकंद–(सं. पुं.) कसेरू ।
सुक–(हिं. पुं.) शुक, सुग्गा, कीर, सिरिस का वृक्ष ।
सुकचाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सकुचाना' ।
सुकटि–(सं. वि. स्त्री.) सुंदर कमरवाली ।
सुकटु–(सं. पुं.) सिरिस का पेड़ ।
सुकड़ना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सिकुड़ना' ।
सुकथा–(सं. स्त्री.) उत्तम कथा, सुवाक्य ।
सुकनासा–(हिं. वि.) जिसकी नाक सुग्गे के ठोर के समान हो ।
सुकनासिका–(सं. वि. स्त्री.) सुंदर नाकवाली ।
सुकन्यक–(सं. वि.) जिसको सुंदर कन्या हो ।
सुकन्या–(सं. स्त्री.) सुंदर कन्या ।
सुकपोल–(सं. वि.) जिसके गाल सुंदर हों ।
सुकमल–(सं. पुं.) सुंदर कमल ।
सुकर–(सं. वि.) सुसाध्य, जो सहज में किया जा सके ।
सुकरता–(सं. स्त्री.) सुकर होने का भाव, सुंदरता, सरलता ।
सुकरा–(सं. स्त्री.) अच्छी गाय ।
सुकरात–(अ. पुं.) प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक ।
सुकराना–(हिं. पुं.) देखें 'शुक्राना' ।
सुकरित–(हिं. वि.) शुभ, अच्छा ।
सुकर्ण–(सं. वि.) जिसके कान सुंदर हों ।
सुकर्म–(सं. पुं.) सत्कर्म, अच्छा काम, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक ।
सुकर्मा, सुकर्मी–(सं. वि.) अच्छा काम करनेवाला, सदाचारी, पुण्यवान् ।
सुकल–(हिं. पुं.) देखें 'शुक्ल', एक प्रकार का आम जो सावन में पकता है ।
सुकल्प–(सं. वि.) अति निपुण ।
सुकल्पित–(सं. वि.) अच्छी तरह कल्पना या चिंतन किया हुआ ।
सुकवाना–(हिं. क्रि. अ.) अचंभे में पड़ना ।
सुकवि–(सं. पुं.) अच्छा कवि ।
सुकांडी–(सं. पुं.) भ्रमर, भौंरा ।
सुकांत–(सं. वि.) बहुत सुंदर ।
सुकांति–(सं. वि.) सुंदर कान्तिवाला ।
सुकाज–(हिं. पुं.) उत्तम कार्य, अच्छा काम ।
सुकाल–(सं. पुं.) सुसमय, उत्तम समय, वह वर्ष जो अन्न आदि की उपज के लिये अच्छा हो ।
सुकावना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सुखाना' ।
सुकाशन–(सं. वि.) बहुत चमकीला ।
सुकिज–(हिं. पुं.) सुकृत, शुभ कार्य ।
सुकिया–(हिं. स्त्री.) देखें 'स्वकीया' ।
सुकी–(हिं. स्त्री.) सुग्गी, तोते की मादा ।
सुकीउ–(हिं. स्त्री.) स्वकीया नायिका ।
सुकीर्ति–(सं. स्त्री.) अच्छी कीर्ति; (वि.) अच्छे यशवाला ।
सुकुंडल–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
सुकुआर–(हिं. वि.) देखें 'सुकुमार' ।
सुकुचा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके स्तन सुंदर हों ।
सुकुड़ना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सिकुड़ना' ।
सुकुति–(हिं. स्त्री.) शुक्ति, सीप ।
सुकुमार–(सं. वि.) जिसके अंग कोमल हों; (पुं.) सुंदर कोमल अंगोंवाला बालक, बनचम्पा, तमाकू का पत्ता, वह काव्य जो कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त हो; **–ता**–(स्त्री.) कोमलता ।
सुकुमारा–(सं. स्त्री.) चमेली, जूही, मालती ।
सुकुमारिका–(सं. स्त्री.) केले का वृक्ष ।
सुकुमारी–(सं. स्त्री.) कन्या, बालिका; (वि. स्त्री.) कोमलांगी, कोमल अंगोंवाली ।
सुकुरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सिकुड़ना' ।
सुकुल–(सं. पुं.) उत्तम वंश या कुल; (वि.) जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो, (हिं. वि., पुं.) देखें 'शुक्ल'; **–ता**–(स्त्री.) कुलीनता ।
सुकुवा(वाँ)र–(हिं. वि.) देखें 'सुकुमार' ।
सुकुसुमा–(सं. स्त्री.) स्कन्द की एक मातृका का नाम ।
सुकृत–(सं. पुं.) सत्कार्य, पुण्य, दान, दया, पुरस्कार; (वि.) धार्मिक, पुण्यवान् ।
सुकृतात्मा–(सं. वि.) पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।
सुकृति–(सं. स्त्री.) शुभ कार्य, अच्छा काम; (वि.) सुकृत ।
सुकृती–(सं. वि.) धार्मिक, पुण्यवान्, सत्कर्म करनेवाला, भाग्यवान्, बुद्धिमान् ।

सुकृत्य–(सं. पुं.) धर्म-कार्य, पुण्य ।
सुकृष्ट–(सं. वि.) अच्छी तरह जोता हुआ ।
सुकेत–(सं. पुं.) आदित्य, सूर्य ।
सुकेशा–(सं.वि.) जिसके बाल सुंदर हों ।
सुकेश–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसके बाल सुंदर हों ।
सुकेश–(सं. पुं.) सुमाली और माली नामक राक्षसों के पिता का नाम ।
सुकेशी–(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम; (वि.) (वह स्त्री) जिसके बाल सुंदर हों ।
सुकेसर–(सं. पुं.) सिंह, शेर ।
सुकोमल–(सं. वि.) बहुत कोमल ।
सुक्कान–(हिं. पुं.) पतवार ।
सुक्कानी–(हि. पुं.) मल्लाह ।
सुक्ख–(हिं. पुं.) देखें 'सुख' ।
सुक्ता–(सं. स्त्री.) इमली ।
सुक्ति–(हिं. स्त्री.) शुक्ति, सीप ।
सुक्र–(हि. पुं.) देखें 'शुक्र' ।
सुक्रित–(हिं. वि.) देखें 'सुकृत' ।
सुक्षम–(हिं. वि.) देखें 'सूक्ष्म' ।
सुक्षेत्र–(सं.पुं.) दसवें मनु के पुत्र का नाम, अच्छा खेत; (वि.) उत्तम क्षेत्रोंवाला ।
सुखंडी–(हिं. स्त्री.) बच्चों का एक रोग जिसमें उनका संपूर्ण शरीर सूख जाता है; (वि.) बहुत दुबला-पतला ।
सुखंद–(हिं. वि.) आनन्द देनेवाला, सुखद ।
सुख–(सं. पुं.) आत्मा या मनोवृत्ति को अच्छा लगनेवाला वह अनभव जिसकी सब को अभिलाषा रहती है, आरोग्य, स्वर्ग, जल, एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छव्वीस अक्षर होते हैं; (वि.) प्रसन्न, आनंदित; (मुहा.)–**की नींद सोना**–निश्चित होकर रहना; –**आसन**–(पुं.) पालकी, डोली; –**कंद**–(वि.) सुख देनेवाला; –**कंदर**–(वि.) जो सुख का आकर हो; –**कर**–(वि.) सुख देनेवाला; –**करण**–(वि.) आनन्द उत्पन्न करनेवाला; –**कारक**–(वि.) सुखदायक, सुख देनेवाला; –**कारी**–(वि.) सुख देनेवाला; –**कृत**–(वि.) सहज में किया जानेवाला; –**क्रिया**–(स्त्री.) सहज काम; –**गंध**–(वि.) सुंदर गन्धवाला; –**ग**–(वि.) सुखपूर्वक जानेवाला; –**गम**–(वि.) सुगम; –**ग्राह्य**–(वि.) जो सहज में लिया जा सके; –**चर**–(वि.) आराम से चलनेवाला; –**जनक**–(वि.) आनन्ददायक; –**जननी**–(वि. स्त्री.) सुख देनेवाली; –**जात**–(वि.) प्रसन्न; –**ज्ञ**–(वि.) सुख को जाननेवाला; –**ढरन**–(हिं.वि.) सुखदायक; –**द**–(पुं.) विष्णु का निवास, ध्रुवताल; (वि.) सुख देनेवाला; –**दा**–(वि.स्त्री.) सुख देनेवाली; (स्त्री.) स्वर्ग की वेश्या, एक प्रकार का छन्द; –**दाता**–(वि.,पुं.) आनन्द देनेवाला; –**दान**–(हिं. वि.) सुख देनेवाला; –**दानी**–(हिं.वि.) आनन्द देनेवाला; (स्त्री.) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पचीस अक्षर होते हैं; –**दायक**–(वि.) आनन्द देनेवाला; –**दायी**–(वि.) सुखद, सुख देनेवाला; –**दास**–(हिं.पुं.) एक प्रकार का उम्दा अगहनिया धान; –**देनी**–(हिं.वि.स्त्री.) सुखदायिनी; –**दनी**–(हिं.वि.स्त्री.) आनन्द देनेवाली; –**धाम**–(पुं.) आनन्द का स्थान, स्वर्ग; –**पाल**–(हिं. पुं.) एक प्रकार की पालकी; –**पूर्वक**–(अव्य.) आनन्द से, सुख से; –**प्रद**–(वि.) सुख देनेवाला; –**प्रबोधक**–(वि.) सुख का भाव जगानेवाला; –**प्रश्न**–(पुं.) कुशल की बात पूछना; –**प्रसव**–(पुं.) बिना कष्ट के बच्चा जनना; –**प्रसवा**–(स्त्री.) सुख से संतान जननेवाली स्त्री; –**प्रसुप्त**–(वि.) आनन्द से सोया हुआ; –**बद्ध**–(वि.) आनन्द-दायक; –**बोध**–(पुं.) सुख का अनुभव; –**भागी**–(वि.) सुखभोगी; –**भेद्य**–(वि.) शीघ्र टूटनेवाला; –**भोग**–(पुं.) सुख का भोग; –**भोजन**–(पुं.) स्वादिष्ट भोजन; –**रात्रि**–(स्त्री.) कार्तिक मास की अमावस्या, आनंद की रात; –**वंत**–(हिं. वि.) प्रसन्न, आनन्ददायक; –**वह**–(वि.) आनन्द देनेवाला; –**वादी**–(पुं.) सुख को सार्थक माननेवाला, विलासी; –**वास**–(पुं.) आनन्द का स्थान; –**शायी**–(वि.) सुख से सोनेवाला; –**संचार**–(वि.) सुख से घूमनेवाला; –**साध्य**–(वि.) जिसके साधन करने में कोई कष्ट न हो, सहज; –**सार**–(पुं.) मोक्ष; –**सुप्त**–(वि.) सुख से सोया हुआ; –**सुप्ति**–(स्त्री.) सुख की नींद; –**सेव्य**–(वि.) सुख से सेवन करने योग्य; –**स्पर्श**–(पुं.) सुखजनक स्पर्श ।
सुखना–(हिं. क्रि. अ.) सूखना ।
सुखमा–(हिं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त, देखें 'सुषमा' ।
सुखवन–(हिं. पुं.) धूप में सूखने के लिए डाला हुआ अनाज, इस प्रकार सूखने से वजन में होनेवाली कमी ।
सुखांत–(सं. वि.) जिसका अन्त सुखमय हो; –**नाटक**–(पुं.) वह नाटक जिसके अन्त में पुनर्मिलन, अभीष्ट-सिद्धि आदि घटित हो ।
सुखागत–(सं. पुं.) स्वागत ।
सुखादित–(सं. वि.) सुख से खाया हुआ ।
सुखाधार–(सं. पुं.) स्वर्ग; (वि.) सुख का आधार-स्वरूप ।
सुखाना–(हिं. क्रि. स.) अग्नि या धूप से किसी वस्तु का गीलापन दूर करना, गीलापन दूर करने की कोई क्रिया करना ।
सुखानी–(हिं. पुं.) मल्लाह, माँझी ।
सुखारा, सुखारी–(हिं. वि.) सुख देनेवाला, सुखी, प्रसन्न ।
सुखाराध्य–(सं. वि.) सहज में ही प्रसन्न होनेवाला ।
सुखारोहण–(सं. पुं.) सोपान, सीढ़ी ।
सुखार्थी–(सं. वि.) सुख चाहनेवाला ।
सुखाली–(सं. वि.) आनन्ददायक ।
सुखावती–(सं. स्त्री.) बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग ।
सुखावह–(सं. वि.) सुख देनेवाला ।
सुखाश–(सं. पुं.) वरुण, तरबूज, वह भोजन जो खाने में अच्छा लगे ।
सुखाशा–(सं. स्त्री.) सुख की आशा ।
सुखासन–(सं. पुं.) वह आसन जिस पर बैठने से सुख मिलता हो, पालकी, डोली ।
सुखासीन–(सं. वि.) सुख से बैठा हुआ ।
सुखिआ–(हिं. वि.) देखें 'सुखिया' ।
सुखित–(सं.वि.) देखें 'सुखी'; (हिं. वि.) शुष्क, सूखा हुआ ।
सुखिता–(हिं. स्त्री.), **सुखित्व**–(सं. पुं.) सुखी होने का भाव, आनन्द ।
सुखिया–(हिं. वि.) सुखी, प्रसन्न ।
सुखिर–(हिं. पुं.) साँप के रहने का बिल, बाँबी ।
सुखी–(सं. वि.) जो सुखपूर्वक दिन बिता रहा हो, सुख से युक्त, आनन्दित ।
सुखीन–(हिं. पुं.) एक प्रकार की चिड़िया ।
सुखेन–(हिं. पुं.) देखें 'सुषेण' ।
सुखैलक–(सं. पुं.) एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं ।
सुखेष्ट–(सं. पुं.) शिव, महादेव ।
सुखोत्सव–(सं. पुं.) आनन्द का उत्सव ।
सुखोद्य–(सं. वि.) जिसका उच्चारण करने में कठिनाई न हो ।
सुख्याति–(सं. स्त्री.) प्रशंसा, यश, प्रसिद्धि ।

सुगंध–(सं. वि.) सुंदर गंधवाला, खुशबूदार; (पुं.) छोटा जीरा, नीलोत्पल, चन्दन, गन्धराज, गठिवन, चना, गन्धक, चूना, कुंदरू, बासमती चावल, केवड़ा, कसेरू; **–गंधा–** (स्त्री.) दारुहल्दी ; **–पत्रा–**(स्त्री.) सतावर, विधारा ; **–पत्री–**(स्त्री.) जावित्री; **–वाला–**(स्त्री.) एक प्रकार की सुगन्धित वनौषधि; **–मय–**(वि.) सुगन्धपूर्ण; **–मुख्या–** (स्त्री.) कस्तूरी; **–मूल–** (पुं.) हरफारेवड़ी; **–मला–** (स्त्री.) स्थल-कमल, हरफारेवड़ी; **–मूषिका–**(स्त्री.) छछूंदर; **–वल्कल–** (पुं.) दारचीनी; **–शालि–**(पुं.) बासमती चावल।

सुगंधा–(सं. स्त्री.) असबर्ग, कपूर-कचरी, सोंठ, सलई, सौंफ, सेवती, माधवी लता, बकुची ।

सुगंधि–(सं.स्त्री.) सुगन्ध, अच्छी महक; (पुं.) मोथा, कसेरू, धनिया, पिप्पलीमूल, तुंबुरू ।

सुगंधिका–(सं. स्त्री.) मृगनाभि, कस्तूरी, केवड़ा ।

सुगंधित–(सं. वि.) सुगंधयुक्त ।

सुगंधिमूल–(सं. पुं.) खस ।

सुगंधी–(सं.वि.) सुगंधयुक्त, खुशबूदार ।

सुगणक–(सं. पुं.) अच्छी गणना करनेवाला ज्योतिषी ।

सुगत–(सं. वि.) अच्छी चाल से जानेवाला; (पुं.) बुद्ध भगवान् ।

सुगति–(सं. स्त्री.) उत्तम गति, मोक्ष, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्राएँ होती हैं और अन्त में एक गुरु वर्ण होता है ।

सुगना–(हिं.पुं.) देखें 'सहिजन', तोता ।

सुगम–(सं.वि.) सरल, सहज, जहाँ जाने में कठिनता न हो; **–ता–**(स्त्री.) सरलता ।

सुगम्य–(सं. वि.) सरलता से जाने या जानने योग्य, सुगम ।

सुगल–(हिं. पुं.) वालि का भाई सुग्रीव ।

सुगहन–(सं. वि.) अति घना, निबिड़ ।

सुगात्र–(सं. वि.) सुंदर शरीरवाला ।

सुगाना–(हिं. क्रि. स.) संदेह करना ।

सुगीति–(सं. स्त्री.) सुंदर गान ।

सुगीतिका–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पचीस मात्राएँ होती हैं तथा आदि में लघु और अन्त में गुरु अक्षर होता है ।

सुगुप्त–(सं.वि.) अच्छी तरह छिपाया हुआ, गुप्त ।

सुगुरु–(सं. वि.) जिसने अच्छे गुरु से मन्त्र लिया हो ।

सुगूढ़–(सं. वि.) बहुत ही गूढ़ या गुप्त ।

सुगृहीत–(सं. वि.) अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ ।

सुगोप–(सं. वि.) अच्छी तरह रक्षा करनेवाला ।

सुग्गा–(हिं. पुं.) शुक, तोता; **–पंखी–** (पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान ।

सुग्रीव–(सं.पुं.) विष्णु का घोड़ा, शंख, इन्द्र, रामजी का सखा और वालि का छोटा भाई, वानरपति, राजहंस, एक असुर का नाम; (वि.) सुंदर गरदनवाला ।

सुग्रीवा–(सं.स्त्री.) एक अप्सरा का नाम ।

सुघट–(सं.वि.) जो सहज में बन सकता हो, अच्छा बना हुआ, सुडौल, सुंदर ।

सुघटित–(सं.वि.) सुंदर ढंग से बना हुआ ।

सुघड़–(हिं. वि.) प्रवीण, निपुण, कुशल, सुडौल, सुंदर; **–ई–**(स्त्री.) निपुणता, सुडौलपन, सुंदरता; **–ता–** (स्त्री.) सुघड़पन; **–पन–**(पुं.) कुशलता, दक्षता, सुंदरता ।

सुघड़ाई, सुघड़ापा–(हिं. स्त्री.) सुंदरता, सुडौलपन, निपुणता, कुशलता ।

सुघर–(हिं. वि.) देखें 'सुघड़'; **–ता–** (स्त्री.) सुघड़ होने का भाव ; **–पन–** (पुं.) कुशलता, दक्षता, सुंदरता ।

सुघराई–(हिं. स्त्री.) सुघड़ाई, सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी; **–कान्हड़ा–** (पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग; **–टोड़ी–**(स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।

सुघरी–(हिं. स्त्री.) शुभ समय, अच्छा मुहूर्त; (वि. स्त्री.) सुंदर, सुडौल ।

सुघोर–(सं.वि.) अतिशय घोर, बहुत गाढ़ा।

सुघोष–(सं. पुं.) नकुल के शंख का नाम, मधुर ध्वनि ।

सुचंग–(हिं. पुं.) घोड़ा ।

सुचक्र–(सं. वि.) उत्तम चक्रयुक्त ।

सुचक्षु–(सं. पुं.) शिव, महादेव, पण्डित, सुंदर आँख; (वि.) सुंदर आँखोंवाला ।

सुचतुर–(सं. वि.) अति चतुर ।

सुचना–(हि.क्रि.स.) संचय करना, इकट्ठा करना ।

सुचरित–(सं.वि.) सच्चरित्र, सदाचारी; (पुं.) सदाचार ।

सुचरित्रा–(सं. स्त्री.) पतिपरायणा स्त्री, सती ।

सुचर्मा–(सं. पुं.) भोजपत्र ।

सुचा–(हि. वि.) देखें 'शुचि'; (स्त्री.) चेतना, ज्ञान ।

सुचाना–(हि. क्रि. स.) किसी को सोचने-समझने में प्रवृत्त करना, चिताना ।

सुचार–(हि.वि.) सुंदर, मनोहर; (स्त्री.) सुचाल ।

सुचारु–(सं. वि.) अति मनोहर, बहुत सुंदर; (पुं.) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

सुचाल–(हि.स्त्री.) अच्छी चाल, सदाचार

सुचाली–(हि. वि.) अच्छे चाल-चलन का, जिसका आचरण सुंदर हो ।

सुचिंतित–(सं. वि.) भली भाँति सोचा-विचारा हुआ ।

सुचिंतितार्थ–(सं. वि.) जिसने अच्छी तरह अर्थ समझ लिया हो ।

सुचि–(हि.वि.) शुचि; (स्त्री.) सूई ।

सुचित–(हि. वि.) किसी कार्य से निवृत्त। निश्चित, सावधान, स्थिर, पवित्र, शुद्ध ।

सुचिताई–(हि. स्त्री.) सुचित्त-भाव, एकाग्रता, स्थिरता ।

सुचिती–(हि. वि.) स्थिरचित्त, जो दुविधा में न हो, निश्चिन्त ।

सुचित्त–(सं. वि.) स्थिरचित्त, शान्त, जो अपने काम से निवृत्त हो गया हो ।

सुचित्र–(सं. पुं.) सुंदर चित्र ।

सुचित्रक–(सं. पुं.) चीतला साँप ।

सुचित्रबीजा–(सं. स्त्री.) वायबिडंग ।

सुचित्रा–(सं.स्त्री.) फूट नाम की ककड़ी ।

सुचिमंत–(हि. वि.) सदाचारी, शुद्ध आचरणवाला ।

सुचिर–(सं. वि.) बहुत दिनों तक रहनेवाला ।

सुची–(हि. स्त्री.) देखें 'शची' ।

सुचुटी–(सं. स्त्री.) चिमटा, सँड़सी ।

सुचेतन–(सं. वि.) अच्छी समझवाला ।

सुचेलक–(सं.पुं.) सुंदर और महीन वस्त्र ।

सुच्छंद–(हि. वि.) देखें 'स्वच्छंद' ।

सुच्छम–(हि. वि.) सूक्ष्म, थोड़ा ।

सुजड़–(हि. पुं.) खड्ग, तलवार ।

सुजड़ी–(हि. स्त्री.) कटारी ।

सुजन–(सं. पुं.) साधु, सज्जन, भले, कुल, परिवार के लोग ; **–ता–**(स्त्री.) सौजन्य, सज्जनता ।

सुजन्मा–(सं. वि.) अच्छे कुल में उत्पन्न ।

सुजय–(सं. पुं.) पूर्ण रूप से विजय ।

सुजल्प–(सं. वि.) सुंदर वक्ता ।

सुजल्प–(सं. पुं.) उत्तम भाषण ।

सुजात–(हि. पुं.) देखें 'सुजन' ।

सुजागर–(हि. वि.) देखने में सुंदर, सुशोभित, प्रकाशमान ।

सुजात–(सं. वि.) उत्तम कुल में उत्पन्न, सुंदर, विवाहित स्त्री-पुरुष से उत्पन्न; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सुजातरिपु–(सं. पुं.) युधिष्ठिर।
सुजाति–(सं. स्त्री.) उत्तम जाति; (वि.) अच्छे कुल का।
सुजातिया–(हिं. वि.) अच्छे कुल का, अपनी जाति का।
सुजान–(हिं. वि.) चतुर, निपुण, सच्चरित्र, प्रवीण, पण्डित; (पुं.) पति, प्रेमी, परमात्मा, ईश्वर; **–ता**–(स्त्री.) सुजान होने का भाव या धर्म।
सुजानी–(हिं. वि.) ज्ञानी, पण्डित।
सुजावा–(हिं. पुं.) बैलगाड़ी की वह लकड़ी जो फड़ में लगती है।
सुजिह्व–(सं. वि.) मधुरभाषी।
सुजीर्ण–(सं. वि.) अच्छी तरह पचा हुआ (अन्न)।
सुजीवित–(सं. पुं.) सफल या सुखी जीवन।
सुजोग–(हिं. पुं.) सुअवसर, अच्छा अवसर, सुयोग।
सुजोधन–(हिं. पुं.) देखें 'सुयोधन'।
सुजोर–(हिं. वि.) दृढ़।
सुज्ञ–(सं. वि.) पण्डित, सुविज्ञ।
सुज्ञान–(सं. पुं.) उत्तम ज्ञान, अच्छी जानकारी।
सुझाना–(हिं. क्रि. स.) समझा देना, बताना, दिखलाना।
सुटकना–(हिं. क्रि. अ., स.) सिकुड़ना, निगल जाना, चाबुक लगाना।
सुठ–(हिं. वि.) देखें 'सुठि'।
सुठहर–(हिं. पुं.) अच्छा स्थान।
सुठार–(हिं. वि.) सुडौल, सुंदर आकृति का।
सुठि, सुठौना–(हिं. वि.) सुंदर, बढ़िया; (अव्य.) पूरा-पूरा।
सुड़कना–(हिं. वि. स.) पानी आदि को नाक से भीतर खींचना, नाक के मल को भीतर खींचना, पी जाना।
सुड़सुड़ान–(हिं. क्रि. अ., स.) सुड़-सुड़ शब्द उत्पन्न होना या करना, हुक्का पीना।
सुडौल्ल–(हिं. वि.) सुंदर आकृति का।
सुढंग–(हिं. पुं.) अच्छी रीति या ढंग; (वि.) अच्छी चाल का, अच्छे ढंग का।
सुढर–(हिं. वि.) प्रसन्न और दयालु, सुडौल, कृपापूर्ण।
सुढार–(हिं. वि.) सुडौल, सुंदर।
सुतंत–**सुतंत्र**–(हिं. वि.) स्वतंत्र।
सुतंतु–(सं. पुं.) विष्णु, शिव, महादेव, एक दानव का नाम।
सुतंत्रि–(सं. पुं.) वीन आदि तार के बाजे अच्छी तरह बजानेवाला।
सुत–(सं. पुं.) आत्मज, पुत्र, बेटा; (वि.) जात, उत्पन्न, पार्थिव; **–त्व**–(पुं.) सुत का भाव या धर्म; **–दा**–(वि. स्त्री.) पुत्र देनेवाली।
सुतना–(हिं. पुं.) देखें 'सूथन'।
सुतनु–(हिं. वि.) सुंदर शरीरवाला, कृशांग; **–ता**–(स्त्री.) शरीर की सुंदरता।
सुतनू–(सं. स्त्री.) सुंदर स्त्री, कोमलांगी, उग्रसेन की कन्या का नाम।
सुतप–(सं. पुं.) सूर्य, विष्णु।
सुतपस्वी–(सं. पुं.) घोर तपस्या करनेवाला।
सुतप्त–(सं. वि.) अत्यन्त गरम।
सुतरण–(सं. वि.) सुख से तैरने या पार करने योग्य।
सुतरां–(सं. अव्य.) अतः, निदान, अत्यंत, और भी।
सुतरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुतली'।
सुतल–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार छठा पाताल।
सुतली–(हिं. स्त्री.) डोरी, रस्सी, सुतरी।
सुतवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सुलाना'।
सुतहर–(हिं. पुं.) देखें 'सुतार'।
सुतहा–(हिं. पुं.) सूत बेचनेवाला व्यापारी।
सुतहार–(हिं. पुं.) देखे 'सुतार'।
सुतही–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुतुही'।
सुता–(सं. स्त्री.) कन्या, पुत्री, लड़की।
सुतात्मज–(सं. पुं.) नाती, पोता।
सुतापति–(सं. पुं.) दामाद, जामाता।
सुतार–(सं. वि.) अत्यन्त उज्ज्वल, उत्तम, अच्छा; (हिं. पुं.) शिल्पकार, बढ़ई, सुविधा।
सुतारा–(सं. स्त्री.) सांख्य-दर्शन के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।
सुतारी–(हिं. स्त्री.) मोचियों का सूजा जिससे वे जूता सीते ह, बढ़ई का काम ; (पुं.) शिल्पकार।
सुतार्थी–(सं. वि.) पुत्र की कामना करनेवाला।
सुताल–(सं. वि.) सुंदर तालवाला।
सुताली–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुतारी'।
सुतासुत–(सं. पुं.) दौहित्र, नाती।
सुतिक्त–(सं. वि.) बहुत तीता।
सुतिनी–(सं. स्त्री.) पुत्रवती स्त्री।
सुतिया–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों का गले में पहनने का हँसुली नामक गहना।
सुतीक्ष्ण–(सं. वि.) अति तीक्ष्ण।
सुतीच्छन–(हिं. वि.) देखें 'सुतीक्ष्ण'।
सुतुंग–(सं. पुं.) नारियल का वृक्ष।
सुतुही–(हिं. स्त्री.) शुक्ति, सीपी।
सुतेजन–(सं. वि.) नुकीला, धारदार।
सुतेजित–(सं. वि.) सुतीक्ष्ण।
सुतोष–(सं. पुं.) सन्तोष, धैर्य।
सुथना–(हिं. पुं.) देखें 'सूथन', पाजामा।
सुथनी–(हिं. स्त्री.) स्त्रियों का पहनने का एक प्रकार का ढीला पाजामा, पिंडालू, रतालू।
सुथरा–(हिं. वि.) स्वच्छ, निर्मल; **–ई**–(स्त्री.) स्वच्छता; **–पन**–(पुं.) स्वच्छता।
सुथरेशाही–(हिं. पुं.) गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया हुआ सम्प्रदाय, इस सम्प्रदाय का अनुयायी।
सुदंत–(सं. पुं.) अभिनय करनेवाला, नट; (वि.) सुंदर दाँतोंवाला।
सुदंष्ट्र–(सं. वि.) सुंदर दाँतोंवाला।
सुदक्षिण–(सं. वि.) बहुत निपुण।
सुदक्षिणा–(सं. स्त्री.) उत्तम दक्षिणा।
सुदच्छिन–(हिं. वि.) देखें 'सुदक्षिण'।
सुदत्त–(सं. वि.) अच्छे उद्देश्य से दिया हुआ।
सुदरसन–(हिं. वि., पुं.) देखें 'सुदर्शन'।
सुदर्शन–(सं. पुं.) विष्णु के चक्र का नाम, शिव; (वि.) देखने में सुंदर, मनोहर।
सुदर्शना–(सं. स्त्री.) शुक्ल पक्ष की रात्रि, इंद्रपुरी; (वि. स्त्री.) रूपवती।
सुदल–(सं. वि.) अच्छे दलों या पत्तोंवाला।
सुदामा–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण का एक सखा, समुद्र, सागर, इंद्र का हाथी, ऐरावत; (स्त्री.) स्कन्द की एक मातृका का नाम।
सुदारुण–(सं. वि.) अत्यन्त भयंकर।
सुदावन–(सं. पुं.) राजा जनक का एक मंत्री।
सुदास–(सं. पुं.) ईश्वर की नियमतः उपासना करनेवाला, दिवोदास का पुत्र तथा त्रित्सु का राजा, एक प्राचीन जनपद का नाम।
सुदि–(सं. स्त्री.) देखें 'सुदी'।
सुदिन–(सं. पुं.) शुभ दिन, अच्छा दिन।
सुदिनाह–(सं. पुं.) पुण्य दिवस, शुभ दि।
सुदिव–(सं. वि.) दीप्तिमान्, चमकीला।
सुदिवस–(सं. पुं.) देखें 'सुदिन'।
सुदी–(हिं. स्त्री.) शुक्ल पक्ष, किसी महीने का उजाला पक्ष।
सुदीति–(सं. वि.) बहुत चमकीला।
सुदीपति–(हिं. स्त्री.) सुदीप्ति।
सुदीप्ति–(सं. स्त्री.) अधिक प्रकाश।
सुदीघ–(सं. वि.) अति दीर्घ, बहुत लंबा; **–फला**–(स्त्री.) ककड़ी।
सुदीर्घा–(सं. वि. स्त्री.) बहुत लंबी।
सुदुःखित–(सं. वि.) बहुत दुःखी।

सुदुर्भग–(सं. वि.) अभागा।
सुदूर–(सं. वि.) बहुत दूर।
सुदृढ़–(सं. वि.) बहुत दृढ़।
सुदृश्–(सं. वि.) देखने में सुंदर।
सुदृष्ट–(सं. वि.) अच्छी तरह देखा हुआ।
सुदेव–(सं. पुं.) उत्तम देवता।
सुदेश–(सं. पुं.) उत्तम देश, सुंदर देश, उपयुक्त स्थान।
सुदेष्णा–(सं. स्त्री.) राजा विराट् की पत्नी, कीचक की वहिन।
सुदेस–(हिं. पुं.) देखें 'सुदेश', स्वदेश।
सुदेह–(सं. पुं.) सुंदर शरीर; (वि.) सुंदर।
सुदव–(सं. पुं.) सौभाग्य, अच्छा भाग्य।
सुद्धाँ–(हिं अव्य.) समेत, सहित।
सुद्धि–(हिं. स्त्री.) देखें 'शुद्धि'।
सुद्युत–(सं. वि.) अति प्रकाशमान्।
सुद्विज–(सं. पुं.) उत्तम ब्राह्मण।
सुधंग–(हिं. पुं.) अच्छा ढंग।
सुध–(हिं. स्त्री.) स्मरण, स्मृति, चेतना, पता; (वि.) शुद्ध; (मुहा.) **–दिलाना**–स्मरण कराना; **–न रहना**–भूल जाना; **–बिसरना**–(किसी को) भूल जाना; **–बिसारना**–अचेत करना।
सुधन–(सं. वि.) वड़ा धनी।
सुधन्वा–(सं. वि.) उत्तम धनुष धारण करनेवाला, धनुर्विद्या में कुशल; (पुं.) विश्वकर्मा, विष्णु, कुरु का एक पुत्र।
सुधबुध–(हिं. स्त्री.) चेतना, होश।
सुधरना–(हिं. क्रि. अ.) दुरुस्त या ठीक होना, विगड़े हुए का बनना।
सुधराई–(हिं. स्त्री.) सुधारने की क्रिया, सुधार।
सुधर्म–(सं. पुं.) उत्तम धर्म, पुण्य, किन्नरों के एक राजा का नाम; (वि.) धर्मपरायण।
सुधर्मा–(सं. स्त्री.) देवसभा।
सुधर्मा–(सं. वि.), **सुधर्मी**–(हि. वि.) धर्मपरायण, धर्मनिष्ठ।
सुधवाना–(हिं. क्रि. स.) शोधन कराना।
सुधांग–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
सुधांशु–(सं. पुं.) चन्द्रमा, कपूर; **–रत्न**–(पुं.) मोती।
सुधा–(सं. स्त्री.) अमृत, मकरंद, थूहर, गंगा, ईंट, विजली, दूध, जल, हरीतकी, हर्रे, पृथ्वी, मधु, घर, चूना, अर्क, रस, विष, एक प्रकार का वृत्त; **–कंठ**–(पुं.) कोकिल, कोयल; **–क्षार**–(पुं.) चूने का क्षार; **–क्षालित**–(वि.) चूना पोता हुआ; **–गेह**– (पुं.) चन्द्रमा; **–घट**–(पुं.) सुधाकर, चन्द्रमा; **–दीधिति**–(पुं.) सुधांशु, चन्द्रमा; **–धर**–(पुं.) चन्द्रमा; (वि.) जिसके अधर में अमृत हो; **–धवल**– (वि.) चूने के समान सफेद; **–धाम**–(पुं.) चन्द्रमा; **–धारा**– (स्त्री.) अमृत की धारा; **–धौत**–(वि.) सफेदी किया हुआ; **–निधि**– (पुं.) चन्द्रमा, समुद्र, दण्डक वृत्त का एक भेद; **–पाणि**–(पुं.) धन्वंतरि; **–भुज्,–भोजी**–(पुं.) अमृत-पान करनेवाले देवता; **–भृत्ति**–(पुं.) चन्द्रमा; **–मय**– (वि.) अमृत से भरा हुआ; **–मयूख**–(पुं.) चन्द्रमा; **–मूली**–(स्त्री.) सालम मिस्री; **–योनि**– (पुं.) चन्द्रमा; **–रश्मि**– (पुं.) सुधांशु, चन्द्रमा; **–वास**–(पुं.) चन्द्रमा, खीरा; **–श्रवा**–(पुं.) अमृत बरसानेवाला; **–सदन**–(पुं.) चन्द्रमा; **–सिंधु**–(पुं.) अमृत का समुद्र; **–सू**–(पुं.) अमृत उत्पन्न करनेवाला, चन्द्रमा; **–हर**–(पुं.) गरुड़।
सुधाई–(हिं. स्त्री.) सिधाई।
सुधाकर–(सं.पुं.) चंद्रमा।
सुधाना–(हिं. क्रि. स.) सोधने का काम दूसरे से कराना, ठीक कराना।
सुधार–(सं. पुं.) सुधारने या दोष दूर करने की क्रिया, संस्कार।
सुधारक–(हिं. पुं.) त्रुटियों का संशोधन करनेवाला, संशोधक।
सुधारना–(हिं. क्रिं. स.) संशोधन करना, बिगड़े को बनाना, सँवारना।
सुधारा–(हिं. वि.) सरल, सीधा।
सुधि–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुध'।
सुधिति–(सं. स्त्री.) कुठार, कुल्हाड़ी।
सुधी–(सं. पुं.) पण्डित, विद्वान्; (वि.) चतुर, धार्मिक, अच्छी वुद्धिवाला; (स्त्री.) नेक वुद्धि।
सुधीर–(सं. वि.) बहुत धैर्यवाला।
सुधृत–(सं. वि.) दृढ़ता से पकड़ा हुआ।
सुधोद्भव–(सं. पुं.) धन्वन्तरि।
सुधोद्भवा–(सं. स्त्री.) हरीतकी, हर्रे।
सुधौत–(सं. वि.) अच्छी तरह धुला या साफ किया हुआ।
सुनंद–(सं. पुं.) बलभद्र का मूसल।
सुनंदन–(सं. पुं.) कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुनंदा–(सं. स्त्री.) उमा, गौरी, दुष्यंत के पुत्र भरत की पत्नी, गाय, गोरोचन, नारी, स्त्री, कृष्ण की एक पत्नी का नाम, एक तिथि का नाम।
सुनंदिनी–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम, (इसको प्रवोधिता या मंजुभाषिणी भी कहते हैं।)
सुन–(हिं. वि.) देखें 'सुन्न'।
सुनकिरवा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का हरे रंग का फतिगा, जुगनू।
सुनक्षत्र–(सं. पुं.) शुभ नक्षत्र।
सुनक्षत्रा–(सं. स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुनगुन–(हिं. स्त्री.) किसी बात का खुलनेवाला अस्पष्ट भेद, टोह, कानाफूसी।
सुनना–(हिं. क्रि. स.) कानों से शब्द को ग्रहण करना, भली-बुरी या उलटी-सीधी वातें सहन करना; (मुहा.) **सुनी-अनसुनी करना**–किसी बात को सुनकर भी उस पर ध्यान न देना।
सुनबहरी–(हिं. स्त्री.) एक तरह का कुष्ठ रोग।
सुनय–(सं. पुं.) उत्तम नीति।
सुनयन–(सं. वि.) सुंदर आँखोंवाला।
सुनयना–(सं. स्त्री.) राजा जनक की पत्नी का नाम (वि. स्त्री.) सुंदर नेत्रोंवाली।
सुनवाई–(हिं. स्त्री.) (मुकदमा, प्रार्थना आदि) सुनने की क्रिया या भाव।
सुनवैया–(हि.वि.) सुननेवाला, सुनानेवाला।
सुनसर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का गहना।
सुनसान–(हिं. वि.) निर्जन, उजाड़; (पुं.) सन्नाटा।
सुनहरा, सुनहला–(हिं. वि.) सोने के रंग का, सोने का।
सुनहा–(हिं. पुं.) श्वान, कुत्ता।
सुनाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुनवाई'।
सुनाद–(सं. पुं.) शंख; (वि.) उत्तम शब्दयुक्त।
सुनाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना, कर्णगोचर कराना, खरी-खोटी कहना, फटकारना।
सुनाभ–(सं. पुं.) मैनाक पर्वत, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सुनाम–(सं. पुं.) यश, कीर्ति।
सुनामा–(सं. वि.) यशस्वी, कीर्तिशाली।
सुनायक–(सं. पुं.) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
सुनार–(सं. पुं.) चटक, गौरैया, साँप का अंडा; (हिं. पुं.) सोने-चाँदी के गहने बनानेवाला।
सुनारी–(हिं. स्त्री.) सुनार का काम, सुनार की स्त्री; (सं. स्त्री.) उत्तम स्त्री।
सुनाल–(सं. पुं.) लाल कमल।
सुनावनी–(हिं. स्त्री.) परदेश से किसी

सम्बन्धी आदि की मृत्यु का समाचार आना, ऐसा समाचार पाकर स्नान करना।
सुनासा–(सं.स्त्री.) कौआठोंठी, सुंदर नाक।
सुनासिक–(सं. वि.) सुंदर नाकवाला।
सुनासिका–(सं. स्त्री.) सुंदर नाक।
सुनासीर–(सं. पुं.) इन्द्र।
सुनिकृष्ट–(सं. वि.) अति निकृष्ट।
सुनिखात–(सं. वि.) अच्छी तरह खोदा हुआ।
सुनितंबिनी–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसका नितंब बहुत सुंदर हो।
सुनिद्र–(सं.वि.) गहरी नींद में सोया हुआ।
सुनिद्रा–(सं. स्त्री.) गहरी नींद।
सुनियत–(सं. वि.) अच्छी तरह संयत।
सुनिरूपित–(सं. वि.) अच्छी तरह निरूपित किया हुआ।
सुनिर्मल–(सं. वि.) अति स्वच्छ।
सुनिर्मित–(सं.वि.) अच्छी तरह बना हुआ।
सुनिश्चय–(सं. पुं.) दृढ़ निश्चय।
सुनिश्चल–(सं. वि.) अचल, स्थिर, दृढ़।
सुनिश्चित–(सं. वि.) अच्छी तरह निश्चित किया हुआ।
सुनीति–(सं. स्त्री.) अच्छी नीति, राजा उत्तानपाद की पत्नी जो ध्रुव की माता थी।
सुनील–(सं. पुं.) नील कमल, अनार का वृक्ष।
सुनेत्र–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) सुंदर नेत्रोंवाला।
सुनैया–(हिं. वि.) सुननेवाला।
सुनोची–(हिं. पुं.) एक प्रकार का घोड़ा।
सुन्न–(हिं. वि.) निर्जीव, निःस्तब्ध, संवेदन-रहित; (पुं.) शून्य, सुन्ना।
सुन्नसान–(हिं. वि.) देखें 'सुनसान'।
सुन्ना–(हिं. पुं.) शून्य, विन्दु।
सुपक्क–(हिं. वि.) देख 'सुपक्व'।
सुपक्व–(सं. वि.) अच्छी तरह पका हुआ।
सुपक्ष–(सं. वि.) सुंदर पंखोंवाला।
सुपच–(हिं. पुं.) श्वपच, चाण्डाल, डोम।
सुपट–(सं. पुं.) सुंदर वस्त्र; (वि.) सुंदर वस्त्र धारण करनेवाला।
सुपत–(हिं. वि.) मानयुक्त, प्रतिष्ठायुक्त।
सुपत्र–(सं. पुं.) इंगुदी वृक्ष, हिंगोट, तेजपत्र; (वि.) सुंदर पत्तोंवाला।
सुपत्रा–(सं. स्त्री.) सतावर, पालक का साग, शालपर्णी।
सुपथ–(सं. पुं.) सन्मार्ग, अच्छा मार्ग, एक वृत्त जिसके प्रत्यक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं; (वि.) समतल।
सुपथ्य–(सं. पुं.) वह आहार या भोजन जो रोगी के लिये हितकर हो।
सुपद–(सं. वि.) सुंदर पैरोंवाला।
सुपद्म–(सं. पुं.) सुंदर कमल।
सुपन–(हिं. पुं.) स्वप्न, सपना।
सुपना–(हिं. पुं.) स्वप्न, सपना।
सुपनाना–(हिं. क्रि. अ., स.) स्वप्न दिखलाना, स्वप्न देखना।
सुपर्ण–(सं. पुं.) गरुड़, मुरगा, पक्षी, चिड़िया, विष्णु, गन्धर्व, अमलतास, नागकेशर, किरण, घोड़ा, सेना के व्यूह की एक प्रकार की रचना, सुंदर पत्ता, (वि.) सुंदर पत्तोंवाला, सुंदर परोंवाला; **–केतु**–(पुं.) विष्णु; **–राज**–(पुं.) पक्षिराज, गरुड़; **–सद्**–(पुं.) विष्णु।
सुपर्णा–(सं. स्त्री.) गरुड़ की माता का नाम, पद्मिनी, कमलिनी।
सुपर्णिका–(सं. स्त्री.) शालपर्णी, पलाशी।
सुपर्णी–(सं. स्त्री.) सुपर्णा, अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
सुपर्णीतनय–(सं. पुं.) गरुड़।
सुपलायित–(सं. वि.) गुप्त रूप से भागा हुआ।
सुपवित्र–(सं. वि.) अति पवित्र; (पुं.) एक छन्द जिसके पहले के बारह अक्षर गुरु और बाकी लघु होते हैं।
सुपात्र–(सं. पुं.) अच्छा पात्र, वह जो किसी कार्य के लिये उपयुक्त हो, विद्या आदि गुणयुक्त व्यक्ति।
सुपार–(सं. वि.) जिसको पार करने में कोई कठिनाई न हो।
सुपारी–(हिं. स्त्री.) नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसके फल टुकड़े-टुकड़े काटकर पान के साथ खाये जाते हैं, डली।
सुपार्श्व–(सं.पुं.) जैनियों के चौबीस तीर्थकरों में से सातवें तीर्थंकर का नाम।
सुपास–(हिं. पुं.) सुख, सुविधा।
सुपासी–(हिं.वि.) आनन्ददायक, सुख देनेवाला।
सुपिष्ट–(सं.वि.) अच्छी तरह पीसा हुआ।
सुपीत–(सं. वि.) गहरे पीले रंग का।
सुपुत्र–(सं. पुं.) उत्तम पुत्र, सपूत।
सुपुरुष–(सं. पुं.) सत्पुरुष, सज्जन, भला आदमी।
सुपुर्द–(हिं. पुं.) सौंपा हुआ।
सुपुष्ट–(सं. वि.) जो बहुत दृढ़ हो।
सुपुष्प–(सं. वि.) जिसमें सुंदर फूल लगे हों।
सुपुष्पा–(सं. स्त्री.) सौंफ, सेवती।
सुपूत–(सं. वि.) अत्यन्त पवित्र; (हिं. पुं.) अच्छा पुत्र।
सुपूती–(हिं. स्त्री.) सपूत होने का भाव, अच्छे पुत्रवाली स्त्री।
सुपूर–(सं. वि.) सहज में पूर्ण होने योग्य।
सुपूर्ण–(सं. वि.) बिलकुल भरा हुआ।
सुपेती–(हिं. स्त्री.) देखें 'सफेदी'।
सुपेली–(हिं. स्त्री.) छोटा सूप।
सुपैदा–(हिं. पुं.) देखें 'सफेदा'।
सुप्त–(सं. वि.) निद्रित, सोया हुआ, ठिठुरा हुआ, मरा हुआ; **–क**–(पुं.) निद्रा, नींद; **–घातक**–(वि.) निद्रित अवस्था में वध करनेवाला; **–च्युत**–(वि.) जिसकी नींद खुल गई हो; **–ज्ञान**–(पुं.) स्वप्न, सपना; **–ता**–(स्त्री.), **–त्व**–(पुं.) निद्रा, नींद; **–प्रबुद्ध**(वि.) जो सोकर उठा हो; **–वाक्य**–(पुं.) निद्रा की अवस्था में कहे हुए शब्द; **–स्थ**–(वि.) सोया हुआ।
सुप्तांग–(सं. पुं.) चेष्टाशून्य या सुन्न अंग।
सुप्तांगता–(सं. स्त्री.) निश्चेष्टता।
सुप्ति–(सं. स्त्री.) निद्रा, नींद, उँघाई।
सुप्रकाश–(सं. वि.) उत्तम प्रकाशयुक्त।
सुप्रगुप्त–(सं.वि.) अच्छी तरह छिपा हुआ।
सुप्रजा–(सं. वि.) अधिक या अच्छी संतानोंवाला।
सुप्रजात–(सं. वि.) जिसके बहुत से बाल-बच्चे हों।
सुप्रज्ञ–(सं. वि.) बहुत बुद्धिमान्।
सुप्रतिज्ञ–(सं. वि.) जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे।
सुप्रतिज्ञा–(सं. स्त्री.) दृढ़ प्रतिज्ञा।
सुप्रतिष्ठ–(सं. वि.) जिसका सब लोग आदर-सम्मान करते हों, बहुत प्रसिद्ध।
सुप्रतिष्ठा–(सं. स्त्री.) प्रसिद्धि, सुनाम, स्कन्द की एक मातृका का नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं।
सुप्रतिष्ठित–(सं. वि.) उत्तम रूप से प्रतिष्ठित; (पुं.) एक देवपुत्र का नाम।
सुप्रतीक–(सं. पुं.) शिव, कामदेव; (वि.) सज्जन, सुरूप, सुंदर।
सुप्रबुद्ध–(सं. वि.) जिसको अच्छा बोध या ज्ञान हो।
सुप्रभ–(सं. वि.) सुंदर।
सुप्रभा–(सं. स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, स्कन्द की एक मातृका का नाम, सुंदर प्रकाश, सात सरस्वतियों में से एक।
सुप्रभात–(सं. पुं.) मंगलसूचक प्रातःकाल।
सुप्रभाव–(सं.पुं.) अच्छा प्रभाव शक्तिमत्ता।
सुप्रयुक्त–(सं. वि.) अच्छी तरह या शुद्ध रूप से प्रयोग किया हुआ।

सुप्रलंभ–(सं.वि.) सहज में मिलने योग्य।
सुप्रलाप–(सं. पुं.) सुंदर भाषण।
सुप्रसन्न–(सं. पुं.) कुबेर; (वि.) अत्यन्त निर्मल, बहुत प्रसन्न।
सुप्रसाद–(सं. पुं.) शिव, विष्णु, एक असुर का नाम।
सुप्रसिद्ध–(सं. वि.) अति विख्यात।
सुप्राप्य–(सं. वि.) सुगमता से प्राप्त होने योग्य।
सुप्रिय–(सं. वि.) बहुत प्यारा; (पुं.) एक गन्धर्व का नाम।
सुप्रिया–(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम, सोलह मात्राओं का एक वृत्त जिसमें अन्तिम वर्ण के अतिरिक्त सब वर्ण लघु होते हैं, एक प्रकार की चौपाई।
सुप्रौढ़–(सं. वि.) अति वृद्ध, बहुत बूढ़ा।
सुफल–(सं. पुं.) कैथ, बादाम, अनार, मूंग, सुंदर फल, अच्छा परिणाम; (वि.) सुंदर फलवाला, कृतार्थ, सफल।
सुफला–(सं. स्त्री.) इन्द्रवारुणी, कुम्हड़ा, मुनक्का; (वि. स्त्री.) सुंदर फल देनेवाली।
सुफेद–(हि. वि.) देखें 'सफेद'।
सुबंधन–(सं.वि.) अच्छी तरह बँधा हुआ।
सुबंधु–(सं.पुं.) अच्छा मित्र, अच्छा भाई।
सुबड़ी–(हि. स्त्री.) टलही चाँदी।
सुबरनी–(हि. स्त्री.) छड़ी।
सुबल–(सं. पुं.) गान्धार का एक राजा जो शकुनि का पिता और धृतराष्ट्र का ससुर था।
सुबह–(अ. पुं.) प्रातः, भोर, सवेरा; (मुहा.)–शाम करना–टाल-मटोल करना।
सुबहुश्रुत–(सं. वि.) सर्वशास्त्रज्ञ।
सुबाल–(सं. पुं.) अच्छा बालक।
सुबास–(हि. स्त्री.) सुगन्ध, सुंदर निवास-स्थान, एक प्रकार का धान।
सुबासना–(हि.स्त्री.) सुगन्ध; (हि.क्रि.स.) सुगन्धित करना, महकाना।
सुबासित–(हि. वि.) देखें 'सुवासित'।
सुबाहु–(सं. वि.) दृढ़ या सुंदर बाहुवाला; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक दानव का नाम, प्रद्युम्न का एक पुत्र; –शत्रु–(पुं.) श्रीरामचन्द्र।
सुबिस्ता, सुबीता–(हि.पुं.) देखें 'सुभीता'।
सुबुद्ध–(हि. वि.) सावधान, बुद्धिमान्।
सुबुद्धि–(सं. वि.) बुद्धिमान्, उत्तम बुद्धिवाला; (स्त्री.) उत्तम बुद्धि।
सुबूत–(अ. पुं.) प्रमाण, सबूत।
सुबोध–(सं. वि.) जो सहज में समझ में आ जाय, सरल; (पुं.) उत्तम ज्ञान।
सुबोधिनी–(सं. स्त्री.) सद् ज्ञानवाली।
सुब्रह्मण्य–(सं. पुं.) शिव, विष्णु, कार्तिकेय, दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रान्त।
सुभंग–(सं. पुं.) नारियल का वृक्ष।
सुभ–(हि. वि.) देखें 'शुभ'।
सुभक्ष्य–(सं. पुं.) उत्तम भोजन-द्रव्य।
सुभग–(सं. वि.) सुंदर, मनोहर, भाग्यवान्, आनन्ददायक, प्रिय, सुखद; (पुं.) गन्धक, सोहागा, चम्पा, शिव, अशोक; –ता–(स्त्री.) सौन्दर्य, प्रेम।
सुभगा–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जो पति को प्यारी हो, हल्दी, तुलसी, कस्तूरी, बेला, मोतिया, चमेली, स्कन्द की एक मातृका का नाम, पाँच वर्ष की कुमारी, एक प्रकार की रागिनी।
सुभग्ग–(हि. वि.) देखें 'सुभग'।
सुभट–(सं.पुं.) वीर योद्धा, अच्छा सैनिक।
सुभट्ट–(सं. पुं.) बहुत बड़ा पण्डित।
सुभद्र–(सं.पुं.) मंगल, कल्याण, सौभाग्य, श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, विष्णु, सनत्कुमार; (वि.) भाग्यवान्, सज्जन, मांगलिक; –क–(पुं.) बेल का वृक्ष।
सुभद्रा–(सं. स्त्री.) दुर्गा का एक रूप, संगीत में एक श्रुति का नाम, श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी, अनिरुद्ध की पत्नी का नाम।
सुभद्रिका–(सं. स्त्री.) श्रीकृष्ण की छोटी बहन, एक वर्ण-वृत्त का नाम।
सुभद्रेश–(सं. पुं.) अर्जुन।
सुभर–(सं. वि.) सम्पूर्ण, प्रचुर।
सुभव–(सं. पुं.) साठ संवत्सरों में से अन्तिम संवत्सर का नाम।
सुभांजन–(सं. पुं.) सहिजन का वृक्ष।
सुभा–(सं. स्त्री.) शोभा, पर-नारी, हर्रे।
सुभाइ, सुभाउ–(हि. पु.) देखें 'स्वभाव'; (अव्य.) स्वभावतः, सहज भाव से।
सुभाग–(हि. पुं.) सौभाग्य, भाग्य; (सं. वि.) भाग्यवान्।
सुभागी–(हि.वि.) भाग्यवान्, भाग्यशाली।
सुभागीन–(हि. वि.) सुभग, भाग्यवान्।
सुभाग्य–(हि. वि.) बहुत भाग्यवान्।
सुभाना–(हि. क्रि. अ.) शोभित होना।
सुभानु–(सं. पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुभाय–(हि. पु.) स्वभाव।
सुभायक–(हि. वि.) स्वाभाविक।
सुभाव–(हि. पु.) स्वभाव।
सुभाषण–(सं. पुं.) सुंदर भाषण।
सुभाषित–(सं. वि.) अच्छी तरह कहा हुआ; (पुं.) सुभाषण, सुंदर उक्ति।
सुभाषी–(सं. वि.) मधुर बोलनेवाला।
सुभिक्ष–(सं. पुं.) ऐसा समय जब अन्न प्रचुर हो, सुकाल।
सुभिषज्–(सं. वि.) अच्छी चिकित्सा करनेवाला।
सुभी–(हि. वि. स्त्री.) शुभकारिणी।
सुभीत–(सं. वि.) बहुत डरा हुआ।
सुभीता–(हि. पुं.) सुगमता, सुयोग, आसानी, सुविधा।
सुभीम–(सं. वि.) बहुत डरावना
सुभीमा–(सं. स्त्री.) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।
सुभीरक–(सं. पुं.) पलाश का वृक्ष।
सुभीरु–(सं. वि.) बहुत डरपोक।
सुभुक्त–(सं.वि.) अच्छी तरह खाया हुआ।
सुभुज–(सं. वि.) सुंदर भुजाओंवाला।
सुभूति–(सं. स्त्री.) उन्नति।
सुभूमि–(सं. स्त्री.) अच्छी भूमि।
सुभूषण–(सं. पुं.) उत्तम अलंकार।
सुभूषित–(सं. वि.) भली भाँति अलंकृत।
सुभेषज–(सं. पुं.) उत्तम औषध।
सुभोग्य–(सं.वि.) अच्छी तरह भोगने योग्य।
सुभोज–(सं. पुं.) उत्तम भोजन।
सुभौटी–(हि. स्त्री.) शोभा।
सुभ्र–(हि. वि.) देखें 'शुभ्र'।
सुभ्रु, सुभ्रू–(सं. स्त्री.) उत्तम भ्रू, सुंदर भौंह, स्कन्द की एक मातृका का नाम।
सुमंगल–(सं. वि.) शुभ, कल्याणकारी।
सुमंगला–(सं.स्त्री.) एक अप्सरा का नाम, स्कन्द की एक मातृका का नाम।
सुमंगली–(हि. स्त्री.) विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।
सुमंत–(सं. पु.) राजा दशरथ का मन्त्री और सारथि।
सुमंत्रित–(सं. वि.) जिसे अच्छी तरह मंत्रणा दी गई हो।
सुमंत्री–(सं. पुं.) कुशल मंत्री।
सुमंद–(सं.वि.) बहुत सुस्त; (पुं.) [illegible] [illegible] [illegible] है।
सुम–(सं. पु.) पुष्प, चन्द्रमा, आकाश।
सुमत–(सं. वि.) ज्ञानवान्, बुद्धिमान्; (हि. स्त्री.) सुमति।
सुमति–(सं. पु.) भरत के एक पुत्र का नाम; (स्त्री.) सद्बुद्धि, अच्छी मति, भक्ति, प्रार्थना, याचना, मैत्री, मेल-जोल; (वि.) उत्तम बुद्धिमान्।
सुमद–(सं. वि.) मदोन्मत्त, मतवाला; (पु.) श्रीरामचन्द्र की सेना का एक वानर सेनापति।

सुमदुम–(हिं. वि.) स्थूलकाय, मोटा ।
सुमधुर–(सं. वि.) रसयुक्त, बहुत मीठा ।
सुमध्यमा, सुमध्या–(सं. स्त्री.) सुंदर कमरवाली ।
सुमन–(सं.पुं.) गेहूँ, धतूरा, देवता, पण्डित, एक दानव का नाम, पुष्प, फूल; (वि.) सुंदर, मनोहर; **–चाप**–(पुं.) कामदेव ।
सुमनस्क–(सं. वि.) प्रसन्न, सुखी ।
सुमना–(सं. स्त्री.) चमेली, सेवती, कैकेयी ।
सुमनामुख–(सं. वि.) सुंदर मुखवाला ।
सुमनित–(हिं.वि.) सुंदर रत्न जड़ा हुआ ।
सुमनोहर–(सं.वि.) बहुत सुंदर ।
सुमनौकस–(सं. पुं.) स्वर्ग ।
सुमरन–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुमरनी' ।
सुमरना–(हिं. क्रि. स.) स्मरण करना, ध्यान करना, बारंबार नाम लेना, ईश्वर का नाम जपना ।
सुमरनी–(हिं. स्त्री.) नाम जपने की छोटी माला जिसमें सत्ताईस दाने होते है।
सुमरीचिका–(सं. स्त्री.) सांख्य के अनुसार पाँच बाह्य तुष्टियों में से एक ।
सुमहत्–(सं. व.) बहुत, अनेक ।
सुमहाबल–(सं. वि.) बहुत बलवान् ।
सुमहाबाहु–(सं. वि.) जिसकी भुजा बहुत लंबी हो ।
सुमहारथ–(सं. पुं.) बहुत वीर पुरुष ।
सुमाता–(सं. स्त्री.) सुंदर माता, उत्तम माता ।
सुमानिका–(सं. स्त्री.) सात अक्षरों का एक वृत्त ।
सुमानस–(सं. वि.) सहृदय, अच्छे मन का ।
सुमार्ग–(सं. पुं.) उत्तम मार्ग ।
सुमालिनी–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं ।
सुमाली–(सं. पुं.) एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे ।
सुमित्र–(सं. पुं.) अच्छा मित्र, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, अभिमन्यु के सारथी का नाम ।
सुमित्रा–(सं.स्त्री.) राजा दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता थीं; **–नंदन**–(पुं.) लक्ष्मण और शत्रुघ्न ।
सुमिरन–(हिं. पुं.) देखें 'स्मरण' ।
सुमिरना–(हिं. क्रि. स.) नाम जपना ।
सुमिरनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुमरनी' ।
सुमुख–(सं. पुं.) गणेश, गरुड़ के पुत्र का नाम, शिव , किन्नरों का राजा, पण्डित, आचार्य, सफेद तुलसी, एक प्रकार का जलपक्षी, सुंदर मुख; (वि.) सुंदर मुखवाला, मनोहर, प्रसन्न, कृपालु ।
सुमुखा–(सं. स्त्री.) सुंदर स्त्री ।
सुमुखी–(सं. स्त्री.) सुंदर मुखवाली स्त्री, एक अप्सरा का नाम, संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते है, दर्पण; (वि. स्त्री.) सुंदर मुखवाली ।
सुमुहूर्त–(सं. पुं.) शुभ समय ।
सुमूलक–(सं. पुं.) गाजर ।
सुमूषित–(सं. वि.) वंचित, ठगा हुआ ।
सुमृग–(सं. पुं.) वह वन जहाँ बहुत से जंगली पशु हों ।
सुमृति–(हिं. स्त्री.) देखें 'स्मृति' ।
सुमृत्यु–(सं. स्त्री.) अच्छी मृत्यु ।
सुमेध–(सं. वि.) उत्तम बुद्धिवाला, बुद्धिमान् ।
सुमेधा–(सं. स्त्री.) मालकँगनी ।
सुमेर–(हिं. पुं.) देखें 'सुमेरु' ।
सुमेरु–(सं. पुं.) पुराण के अनुसार पृथ्वी का मध्यस्थ पर्वत, जपमाला के बीच का दाना, शिव, उत्तरी ध्रुव, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह मात्राएँ होती हैं; (वि.) अति सुंदर, बहुत ऊँचा; **–वृत्त**–(पुं.) वह वृत्त जो उत्तरी ध्रुव से २३½ अक्षांश दक्षिण माना गया है; **–समुद्र**–(पुं.) उत्तर महासागर ।
सुम्मा–(हिं. पुं.) बकरा ।
सुम्मी–(हिं. स्त्री.) सुनारों का छिद्र करने का एक उपकरण ।
सुम्हार–(हिं. पुं.) एक प्रकार का धान ।
सुयज्ञ–(सं. पुं.) अच्छा यज्ञ ।
सुयत–(सं. वि.) जितेन्द्रिय ।
सुयश–(सं. वि.) अति यशस्वी, उत्तम यशवाला; (पुं.) सुकीर्ति, अच्छा यश ।
सुयशा–(सं.स्त्री.) एक अप्सरा का नाम, परीक्षित् की एक पत्नी का नाम ।
सुयुक्त–(सं. वि.) अच्छी तरह मिला हुआ, संयुक्त ।
सुयुक्ति–(सं. स्त्री.) अच्छी सलाह ।
सुयुद्ध–(सं. पुं.) न्यायसंगत युद्ध, धर्मयुद्ध ।
सुयोग–(सं. पुं.) संयोग, अच्छा अवसर ।
सुयोग्य–(सं. वि.) बहुत योग्य ।
सुयोधन–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन ।
सुरंग–(सं. पुं.) अच्छा रंग, शिगरफ, नारंगी; (वि.) अच्छे रंग का, सुंदर; (हिं. स्त्री.) भूमि या पहाड़ खोदकर बनाया हुआ मार्ग, वह छिद्र जो चोर भीत खोदकर बनाते हैं, सेंध ।
सुरंगधातु–(सं. पुं.) गेरू ।
सुरंगी–(सं. स्त्री.) कौआठोठी ।
सुर–(सं. पुं.) देवता, सूर्य, पण्डित, ध्वनि, ऋषि, मुनि; (हिं. पुं.) स्वर, आवाज; (मुहा.) **सुर में सुर मिलाना**–हाँ में हाँ करना, शुश्रूषा करना ।
सुरक–(हिं. पुं.) नाक पर माले की आकृति का तिलक; (हिं. स्त्री.) सुरकने की क्रिया या भाव ।
सुरकना–(हिं. क्रि. स.) साँस के साथ धीरे-धीरे नाक से पानी आदि खीचना, सुड़कना ।
सुरकरी–(सं. पुं.) देवताओं का हाथी, दिग्गज ।
सुरकानन–(सं. पुं.) देवताओं के विहार करने का वन ।
सुरकामिनी–(सं. स्त्री.) अप्सरा ।
सुरकार्मुक–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष ।
सुरकार्य–(सं. पुं.) देवताओं के उद्देश्य से किया जानेवाला काम ।
सुरकाष्ठ–(सं. पुं.) देवदारु ।
सुरकुल–(सं. पुं.) देवताओं का निवास स्थान ।
सुरकृत–(सं. पुं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) देवताओं का किया हुआ ।
सुरकुदाव–(हिं. पुं.) धोखा देने के लिये बोली बदलकर बोलना ।
सुरकेतु–(सं. पुं.) इन्द्र, इन्द्र की ध्वजा ।
सुरक्त–(सं. वि.) अति अनुरक्त ।
सुरक्ष–(सं. पुं.) एक मुनि, एक पर्वत ।
सुरक्षण–(सं. पुं.) रखवाली ।
सुरक्षा–(सं. स्त्री.) समुचित रक्षा ।
सुरक्षित–(सं. वि.) अच्छी तरह रक्षित, सँभाल कर रखा हुआ ।
सुरख–(हिं. वि.) लाल ।
सुरग–(हिं. पुं.) स्वर्ग ।
सुरगज–(हिं. पुं.) इन्द्र का हाथी ।
सुरगण–(सं. पुं.) देवताओं का समूह ।
सुरगति–(सं. स्त्री.) दैवी गति ।
सुरगर्भ–(सं. पुं.) देव-सन्तान ।
सुरगाय–(हिं. स्त्री.) कामधेनु ।
सुरगायक(न)–(सं. पुं.) गन्धर्व ।
सुरगिरि–(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत ।
सुरगुरु–(सं. पुं.) देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।
सुरगैया–(हिं. स्त्री.) कामधेनु ।
सुरचाप–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष ।
सुरज–(हिं. पुं.) देखें 'सूर्य' ।
सुरजन–(सं. पुं.) देवताओं का समूह; (हिं. वि. पुं.) सज्जन, चतुर ।
सुरजनी–(सं. स्त्री.) चाँदनी रात ।
सुरज्येष्ठ–(सं. पुं.) देवताओं में श्रेष्ठ, ब्रह्मा ।

सुरझन–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुलझन'।
सुरझना, सुरझाना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'सुलझना', 'सुलझाना'।
सुरटीप–(हिं. स्त्री.) सुर का आलाप।
सुरत–(सं.पुं.) कामकेलि, रतिक्रीड़ा, मैथुन।
सुरत–(हिं. स्त्री.) ध्यान, याद; (मुहा.) **–बिसारना**–भूल जाना।
सुरतरंगिणी–(सं. स्त्री.) गंगा।
सुरतरु–(सं. पुं.) देवतरु, कल्पवृक्ष।
सुरता–(सं. स्त्री.) देवता का (भाव, धर्म या कार्य), देवसमूह, संभोग का आनन्द, एक अप्सरा का नाम; (हिं. पुं.) हल में लगी हुई बाँस की नली जिसमें अन्न के दाने डालकर वोये जाते हैं; (हिं. स्त्री.) चिन्ता, ध्यान, चेत, सुध।
सुरतात–(सं.पुं.) देवताओं के पिता, कश्यप।
सुरतान–(हिं. स्त्री.) स्वर का आलाप।
सुरति–(सं. स्त्री.) भोग-विलास, विहार, संभोग; (हिं. स्त्री.) स्मरण, सुध, चेत, देखें 'सूरत'; **–गोपना**–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो रतिक्रीड़ा करके आई हो और अपनी सखियों से छिपाती हो; **–वंत**–(हिं.वि.) कामातुर; **–विचित्रा**–(स्त्री.) वह मध्या नायिका जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।
सुरती–(हिं. स्त्री.) तमाकू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ खाया जाता है।
सुरत्न–(सं. पुं.) सोना, मानिक; (वि.) उत्तम रत्नों से युक्त, सर्वश्रेष्ठ।
सुरत्राण, सुरत्राता–(सं. पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण, इन्द्र।
सुरथ–(सं. पुं.) एक चन्द्रवंशीय राजा जिन्होंने पृथ्वी पर पहले-पहल दुर्गा की पूजा की थी और देवी के वरदान से सावर्णि नामक मनु हुए थे, एक पर्वत का नाम।
सुरदार–(हिं. वि.) जिसके गले का स्वर लययुक्त हो, सुरीला।
सुरदारु–(सं. पुं.) देवदार का वृक्ष।
सुरदीर्घिका–(सं. स्त्री.) आकाशगंगा, मन्दाकिनी।
सुरदुंदुभि–(सं.स्त्री.) देवताओं का नगाड़ा।
सुरदेवी–(सं. स्त्री.) योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ से जन्म लिया था।
सुरदेश–(सं. पुं.) देवलोक, स्वर्ग।
सुरद्रुम–(सं. पुं.) कल्पवृक्ष।
सुरद्विप–(सं. पुं.) ऐरावत हाथी।
सुरद्विष्–(सं. पुं.) असुर, राक्षस।
सुरधाम–(सं.पुं.) देवलोक, स्वर्ग; (मुहा.) **–सिधारना**–मर जाना।
सुरधुनी–(हिं. स्त्री.) मंदाकिनी, गंगा।
सुरधेनु–(सं. स्त्री.) कामधेनु।
सुरनगर–(सं. पुं.) स्वर्ग।
सुरनदी–(सं. स्त्री.) आकाशगंगा, गंगा।
सुरनाथ, सुरनायक–(सं. पुं.) इन्द्र।
सुरनारी–(सं. स्त्री.) देवांगना।
सुरनाह–(हिं. पुं.) देवराज, इन्द्र।
सुरनिम्नगा–(सं. स्त्री.) गंगा।
सुरनिलय–(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत।
सुरपति–(सं. पुं.) देवराज इन्द्र।
सुरपतिगुरु–(सं. पुं.) वृहस्पति।
सुरपतिचाप–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष।
सुरपतितनय–(सं. पुं.) अर्जुन।
सुरपथ–(सं. पुं.) आकाश।
सुरपर्वत–(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत।
सुरपाल–(सं. पुं.) इन्द्र।
सुरपुर–(सं. पुं.) अमरावती।
सुरप्रिय–(सं. पुं.) अगस्त्य, इन्द्र, वृहस्पति।
सुरप्रिया–(सं.स्त्री.) जाती पुष्प, चमेली।
सुरफाँक ताल–(हिं. पुं.) मृदंग का एक ताल।
सुरबुली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल से रंग बनता है।
सुरबृच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'सुरवृक्ष'।
सुरबेल–(हिं. स्त्री.) कल्प-लता।
सुरभंग–(हिं. पुं.) स्वर का विपर्यास जो प्रेम, आनन्द, भय आदि के कारण उत्पन्न होता है।
सुरभवन–(सं. पुं.) देवताओं का निवास-स्थान, मन्दिर, सुरपुरी, अमरावती।
सुरभान–(हिं. पुं.) इन्द्र, सूर्य।
सुरभि–(सं. पुं.) सोना, सुगन्ध, चम्पा, जायफल, वसन्त ऋतु, कदम्ब वृक्ष, मौलसिरी, चैत का महीना; (स्त्री.) सुगंध, सुवास, सलई, गाय, पृथ्वी, तुलसी, सुरा, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; (वि.) सुगंधित, सुंदर, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध; **–गंध**–(पुं.) तेजपत्ता; **–गंधा**–(स्त्री.) चमेली; **–च्छद**–(पुं.) कपित्थ, कैथ; **–पुत्र**–(पुं.) साँड़, बैल; **–बाण**–(पुं.) कामदेव; **–मास**–(पुं.) चैत का महीना; **–मुख**–(पुं) वसंत ऋतु का आरम्भ; **–वल्कल**–(पुं.) दारचीनी; **–समय**–(पुं.) वसन्त।
सुरभित–(सं. पुं.) सुगंधित, प्रसिद्ध।
सुरभिमान्–(सं. वि.) सुगन्धयुक्त।
सुरभी–(सं.स्त्री.) सुगन्ध, केवाँच, रुद्रजटा, चन्दन, गाय; **–गोत्र**–(पुं.) बैल; **–पुर**–(पुं.) गोलोक।
सुरभूप–(सं. पुं.) इन्द्र, विष्णु।
सुरभोग–(सं. पुं.) अमृत।
सुरभौन–(हिं. पुं.) देखें 'सुरभवन'।
सुरमंडल–(सं. पुं.) देवताओं का मण्डल, एक प्रकार का बाजा।
सुरमणि–(सं. पुं.) चिन्तामणि।
सुरमणीय–(सं. वि.) अति सुंदर।
सुरमई–(हिं. वि.) सुरमे के रंग का, नीलाभ।
सुरमौर–(हिं.पुं.) देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु।
सुरम्य–(सं. वि.) बहुत सुंदर।
सुरयान–(सं. पुं.) देवताओं का रथ।
सुरयुवती–(सं. स्त्री.) अप्सरा।
सुरराज–(सं. पुं.) सुरपति, इन्द्र।
सुरराजगुरु–(सं. पुं.) वृहस्पति।
सुरराया–(हिं. पुं.) इन्द्र।
सुररिपु–(सं. पुं.) देवताओं के शत्रु, राक्षस।
सुररूख–(हिं. पुं.) कल्पवृक्ष।
सुरलासिका–(सं. स्त्री.) वंसी की ध्वनि, बाँसुरी।
सुरली–(हिं. स्त्री.) सुंदर क्रीड़ा।
सुरलोक–(सं. पुं.) स्वर्ग; **–सुंदरी**–(स्त्री.) अप्सरा।
सुरवधू–(सं. स्त्री.) देवताओं की पत्नी।
सुरवर–(सं. पुं.) इन्द्र।
सुरवर्त्म–(सं. पुं.) आकाश।
सुरवल्ली–(सं. स्त्री.) तुलसी।
सुरवस–(हिं. पुं.) जुलाहों की पतली छड़ी जिसका व्यवहार वे ताना तैयार करने में करते हैं।
सुरवा–(हिं. पुं.) देखें 'सुवा'।
सुरवाणी–(सं. स्त्री.) संस्कृत भाषा।
सुरवास–(सं. पुं.) देवस्थान, स्वर्ग।
सुरवाहिनी–(सं. स्त्री.) गंगा नदी।
सुरविटप–(सं. पुं.) कल्पवृक्ष।
सुरवीथी–(सं. स्त्री.) नक्षत्रों का मार्ग।
सुरवीर–(सं. पुं.) इन्द्र।
सुरवृक्ष–(सं. पुं.) कल्पतरु।
सुरवेश्म–(सं. पुं.) स्वर्ग।
सुरवैरी, सुरशत्रु–(सं. पुं.) देवताओं के शत्रु, असुर।
सुरशत्रुहन्–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
सुरशयनी–(सं. स्त्री.) आषाढ़ शुक्ला एकादशी।
सुरशाखी–(सं. पुं.) कल्पवृक्ष।
सुरशिल्पी–(सं. पुं.) विश्वकर्मा।
सुरश्रेष्ठ–(सं. पुं.) विष्णु, शिव, इन्द्र, गणेश।
सुरस–(सं. वि.) स्वादिष्ट, सुंदर, रसीला।
सुरसख–(सं. पुं.) देवताओं के सखा, इन्द्र।

सुरसती–(हिं. स्त्री.) देखें 'सरस्वती'।
सुरसत्तम–(सं. पुं.) देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु।
सुरसदन, सुरसद्म–(सं. पुं.) अमरपुरी, स्वर्ग।
सुरसर–(सं. पुं.) मानसरोवर; **–सुता**–(स्त्री.) सरयू नदी।
सुरसरि, सुरसरिता–(सं. स्त्री.) गंगा नदी, गोदावरी।
सुरसा–(सं. स्त्री.) तुलसी, सौंफ, ब्राह्मी, सतावर, पुनर्नवा, सर्पगन्धा, जूही, एक प्रकार की रागिनी, एक प्रकार का वृत्त, एक प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्र में रहती थी और जिसने हनुमान् को समुद्र पार करते समय रोका था, दुर्गा का एक नाम, एक अप्सरा का नाम।
सुरसाईं–(हिं. पुं.) इन्द्र, शिव।
सुरसाल–(हिं. पुं.) दानव, असुर, राक्षस।
सुरसाहब–(हिं. पुं.) देवताओं के स्वामी।
सुरसिंधु–(सं. पुं.) गंगा।
सुरसुंदर–(सं. वि.) बहुत सुंदर।
सुरसुंदरी–(सं. स्त्री.) अप्सरा, दुर्गा, योगिनी विशेष।
सुरसुत–(सं. पुं.) देवपुत्र।
सुरसुरभी–(सं. स्त्री.) कामधेनु।
सुरसुराना–(हिं. क्रि. अ.) खुजली होना, कीड़ों का रेंगना।
सुरसुराहट, सुरसुरी–(हिं. स्त्री.) खुजली, गुदगुदी, अनाज में लगनेवाला लाल रंग का कीड़ा।
सुरसेना–(सं. स्त्री.) देवताओं की सेना।
सुरसैनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुरशयनी'।
सुरस्कंद–(सं. पुं.) एक असुर।
सुरस्त्री–(सं. स्त्री.) अप्सरा।
सुरस्थान–(सं. पुं.) देवलोक, स्वर्ग।
सुरस्वामी–(सं. पुं.) देवताओं के स्वामी इन्द्र।
सुरहरा–(हिं. वि.) सुरसुर शब्द से युक्त।
सुरही–(हिं. स्त्री.) सुरभि गाय।
सुरांगना–(सं. स्त्री.) देवपत्नी, अप्सरा।
सुरा–(सं. स्त्री.) मद्य, जल, पानी।
सुराई–(हिं. स्त्री.) शूरता, वीरता।
सुराकर–(सं. पुं.) नारियल का पेड़।
सुराकार–(सं. पुं.) मद्य बनानेवाला।
सुराख–(हिं. पुं.) छेद, देखें 'सूराख'।
सुराग–(सं. पुं.) सुंदर राग, अत्यंत प्रेम; (हिं.पुं.) देखें 'सूराख'।
सुरागाय–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की जंगली गाय जिसकी पूंछ के बाल का चँवर बनता है।
सुरागार, सुरागृह–(सं. पुं.) मद्यगृह।
सुराचार्य–(सं. पुं.) बृहस्पति।
सुराज–(हिं. पुं.) देखें 'स्वराज्य'।
सुराजिका–(सं. स्त्री.) छिपकली।
सुराजीव–(सं. पुं.) विष्णु।
सुराज्य–(सं. पुं.) वह राज्य या शासन जिसमें प्रजा को सुख और शांति मिले।
सुराथी–(हिं. स्त्री.) वह लकड़ी का डंडा जिससे पीटकर अन्न के दाने अलगाये जाते हैं।
सुराधिप, सुराधीश–(सं. पुं.) देवताओं के अधिपति, इन्द्र।
सुराध्यक्ष–(सं. पुं.) ब्रह्मा, कृष्ण, शिव।
सुरानीक–(सं. पुं.) देवताओं की सेना।
सुरापगा–(सं. स्त्री.) गंगा नदी।
सुरापात्र–(सं. पुं.) मदिरा रखने या पीने का पात्र।
सुरापान–(सं. पुं.) मद्य पीना।
सुरामत्त–(सं. वि.) मद्य पीकर उन्मत्त।
सुरायुध–(सं. पुं.) देवताओं का अस्त्र।
सुरारि–(सं. पुं.) असुर, राक्षस; **–हंता**–(पुं.) विष्णु।
सुरालय–(सं. पुं.) देवताओं का वास-स्थान।
सुरावती, सुरावनि–(सं. स्त्री.) कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, पृथ्वी।
सुरावास, सुराश्रय–(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत।
सुराष्ट्र–(सं. पुं.) एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के पश्चिम में था।
सुराष्ट्रजा–(सं. स्त्री.) गोपीचन्दन।
सुरासार–(सं. पुं.) मद्यसार।
सुरासुर–(सं. पुं.) देवता और दानव; **–गुरु**–(पुं.) शिव, कश्यप।
सुराही–(अ. स्त्री.) लंबे तथा सँकरे मुँह का जल-पात्र; **–दार, –नुमा**–(वि.) सुराही के आकार का।
सुरी–(सं. स्त्री.) देवपत्नी, देवांगना।
सुरीला–(हिं. वि.) मधुर स्वरवाला।
सुरुख–(हिं. वि.) सदय, अनुकूल।
सुरुचि–(सं. स्त्री.) उत्तम रुचि, अत्यन्त प्रसन्नता, राजा उत्तानपाद की एक स्त्री का नाम; (पुं.) एक गन्धर्वराज का नाम, एक दक्ष का नाम; (वि.) सुंदर रुचिवाला।
सुरुचिर–(सं. वि.) अति मनोहर, उज्ज्वल।
सुरुज–(सं.वि.) अस्वस्थ, रोगी; (हिं.पुं.) सूर्य; **–मुखी**–(हिं. स्त्री.) देखें 'सूर्यमुखी'।
सुरुवा–(हिं. पुं.) देखें 'शोरवा'।
सुरूप–(सं. वि.) सुंदर, विद्वान्, बुद्धिमान्; (पुं.) शिव, एक असुर का नाम।
सुरूपता–(सं. स्त्री.) सुंदरता।
सुरूपा–(सं. वि., स्त्री.) सुंदर रूपवाली; (स्त्री.) सेवती, बेला।
सुरूहक–(सं. पुं.) खच्चर।
सुरेंद्र–(सं. पुं.) सुरपति, इन्द्र; **–गोप**–(पुं.) वीरबहूटी; **–चाप**–(पुं.) इन्द्रधनुष; **–जित्**–(पुं.) इन्द्रजित्, गरुड़; **–पूज्य**–(पुं.) बृहस्पति; **–लोक**–(पुं.) इन्द्रलोक; **–वज्रा**–(स्त्री.) एक वर्णवृत्त का नाम; **–वती**–(स्त्री.) इन्द्राणी, शची
सुरेखा–(सं. स्त्री.) शुभ रेखा।
सुरेतर–(सं. पुं.) असुर।
सुरेश–(सं. पुं.) इन्द्र, शिव, विष्णु, कृष्ण
सुरेशलोक–(सं. पुं.) इन्द्रलोक।
सुरेश्वरी–(सं. स्त्री.) दुर्गा, लक्ष्मी।
सुरैत–(हिं. स्त्री.) रखनी, रखेली, उपपत्नी; **–वाल**–(पुं.) सुरैत का पुत्र।
सुरैतिन–(हिं. स्त्री.) रखनी, रखेली।
सुरोचना–(सं. स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुरोचि–(हिं. वि.) सुंदर, मनोहर।
सुरोत्तम–(सं. पुं.) सूर्य, विष्णु।
सुरौकस्–(सं. पुं.) सुरालय, स्वर्ग।
सुर्ख–(फा. वि.) लाल।
सुर्खी–(फा. स्त्री.) लाली।
सुर्ती–(हिं. स्त्री.) सुरती।
सुलक्षण–(सं. वि.) शुभ लक्षणों से युक्त, भाग्यवान्; (पुं.) शुभ लक्षण या चिह्न, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्राएँ होती हैं।
सुलक्षणा–(सं. स्त्री.) पार्वती की एक सखी का नाम; (वि. स्त्री.) शुभ लक्षणों से युक्त।
सुलक्षणी–(हिं. वि., स्त्री.) अच्छे लक्षणोंवाली स्त्री।
सुलगना–(हिं. क्रि. अ.) आग पकड़ना, धुएँ के साथ जलना, (चिलम पर रखे हुए तंबाकू का) धुआँ देने लगना, ईर्ष्या से जलना, कुढ़ना।
सुलगाना–(हिं. क्रि. स.) प्रज्वलित करना, जलाना, दुःखी करना, भड़काना, तंबाकू चढ़ाकर पीने योग्य बनाना।
सुलग्न–(सं.पुं.) शुभ मुहूर्त, अच्छी साइत।
सुलच्छन–(हिं. पुं., वि.) देखें 'सुलक्षण'।
सुलच्छनी–(हिं. वि.) देखें 'सुलक्षणा'।
सुलछ–(हिं. वि.) सुंदर।
सुलझन–(हिं. स्त्री.) सुलझने की क्रिया या भाव।
सुलझना–(हिं.क्रि.अ.) उलझन दूर होना, गाँठ आदि खुलना, (कोई कार्य, समस्या आदि) हल होना।

सुलझाना–(हिं. क्रि. स.) उलझन को दूर करना, हल करना।
सुलझाव–(हिं. पुं.) सुलझने की क्रिया।
सुलटा–(हिं.वि.) जो उलटा न हो, सीधा।
सुलतान–(अ.पुं.) सम्राट्, बादशाह, राजा।
सुलताना–(अ. स्त्री.) सम्राज्ञी, रानी।
सुलताना चंपा–(हिं.पुं.) पुन्नाग नामक वृक्ष।
सुलतानी–(अ. वि.) सुलतान का।
सुलफ–(हिं. वि.) लचीला, कोमल, मृदु।
सुलभ–(सं. वि.) सहज में मिलनेवाला, सुगम, उपयोगी, साधारण; (पुं.) अग्निहोत्र की अग्नि; **–ता**–(स्त्री.) सुलभ होने का भाव, सुगमता; **–त्व**–(पुं.) सुलभता।
सुलभा–(सं. स्त्री.) जंगली उड़द, माषपर्णी।
सुलभेतर–(सं.वि.) दुर्लभ, कठिन, महँगा।
सुलभ्य–(सं. वि.) सहज में मिलनेवाला।
सुललित–(सं. वि.) अत्यन्त सुंदर।
सुलह–(अ. स्त्री.) मेल, मेल-जोल, वैर का मिटना, आपसी समझौता।
सुलाखना–(हिं. क्रि. स.) सोने-चाँदी को तपाकर परखना।
सुलाना–(हिं. क्रि. स.) सोने में प्रवृत्त करना, लिटाना।
सुलिखित–(सं.वि.) अच्छी तरह लिखा हुआ।
सुलेख–(सं. पुं.) सुंदर लिखावट।
सुलेखक–(सं. पुं.) अच्छा लेख या निवन्ध लिखनेवाला, सुंदर अक्षर लिखनेवाला।
सुलोक–(सं. पुं.) स्वर्ग।
सुलोचन–(सं. वि.) सुंदर आँखोंवाला; (पुं.) चकोर, रुक्मिणी के पिता का नाम, हरिण, धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
सुलोचना–(सं. स्त्री.) मेघनाद की पत्नी का नाम; (वि.स्त्री.) सुंदर आँखोंवाली।
सुलोचनी–(हिं.वि.,स्त्री.) सुंदर नेत्रोंवाली।
सुलोम–(सं. वि.) जिसके रोयें सुंदर हों।
सुलोह–(सं. पुं.) एक प्रकार का उत्तम लोहा।
सुलोहित–(सं. वि.) गहरे लाल रंग का।
सुलोहिता–(सं. स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
वक्ता–(सं. पुं.) अच्छा भाषण देनेवाला, शिव।
सुवक्त्र–(सं. वि.) सुंदर मुखवाला।
सुवक्षा–(सं. वि.) जिसकी छाती सुंदर और चौड़ी हो।
सुवचन–(सं. वि.) सुवक्ता, मीठा बोलनेवाला; (पुं.) मधुर वचन।
सुवज्र–(सं. पुं.) इन्द्र का एक नाम।
सुवटा–(हिं. पुं.) देखें 'सुअटा', तोता।
सुवदन–(सं. वि.) सुंदर मुखवाला।
सुवदना–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बीस अक्षर होते हैं; (वि. स्त्री.) सुमुखी।
सुवन–(सं. पुं.) सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा।
सुवना–(हिं. पुं.) सुग्गा।
सुवर्चल–(सं. पुं.) काला नमक।
सुवर्ण–(सं. पुं.) बहुमूल्य धातु विशेष, सोना, कांचन; (वि.) सोने का बना हुआ; **–कमल**–(पुं.) लाल कमल; **–करनी**–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की जड़ी; **–कर्ता**–(पुं.) सोनार; **–कार**–(पुं.) सोनार; **–गिरि**–(पुं.) राजगृह के एक पर्वत का नाम; **–तिलका**–(स्त्री.) ज्योतिष्मती लता; **–दुग्धी**–(स्त्री.) भटकटैया; **–पक्ष**–(पुं.) गरुड़; **–पद्म**–(पुं.) लाल कमल; **–फला**–(स्त्री.) चंपा, केला; **–माक्षिक**–(पुं.) सोना-मक्खी; **–मित्र**–(पुं.) सुहागा; **–रेखा**–(स्त्री.) राँची के पहाड़ों से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरनेवाली एक नदी का नाम; **–वर्ण**–(पुं.) विष्णु; **–वर्णा**–(स्त्री.) हल्दी; **–सूत्र**–(पुं.) सोने की सिकड़ी, सोने का तार।
सुवर्णा–(सं. स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
सुवर्णाकर–(सं. पुं.) सोने का आकार या खान।
सुवर्तुल–(सं. वि.) पूर्णतः गोल।
सुवर्मा–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) उत्तम कवच से युक्त।
सुवर्ष–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, उत्तम वर्ष।
सुवसन–(सं. पुं.) उत्तम वस्त्र।
सुवा–(हिं. पुं.) सुग्गा।
सुवाक्य–(सं. वि.) मधुरभाषी; (पुं.) मीठे वचन।
सुवार्ता–(सं. स्त्री.) कृष्ण की एक स्त्री का नाम, उत्तम वार्ता।
सुवास–(सं.पुं.) अच्छी गन्ध, सुंदर घर।
सुवासक–(सं. पुं.) तरबूज।
सुवासिका–(सं. वि., स्त्री.) सुगन्ध या खुशबू देनेवाली।
सुवासित–(सं. वि.) सुगन्धयुक्त, खुशबूदार।
सुवासिनी–(सं. स्त्री.) युवावस्था में भी पिता के घर रहनेवाली स्त्री, सधवा स्त्री।
सुविक्रम–(सं. वि.) अत्यन्त पराक्रमी।
सुविक्रांत–(सं. वि.) बहुत पराक्रमी; (पुं.) शूर-वीर।
सुविक्लव–(सं. वि.) अत्यन्त व्यग्र।
सुविख्यात–(सं. वि.) बहुत प्रसिद्ध।
सुविचक्षण–(सं. वि.) बहुत बुद्धिमान्।
सुविचार–(सं. पुं.) उत्तम विचार, सुंदर न्याय, कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुविज्ञ–(सं. वि.) अतिशय चतुर।
सुविज्ञेय–(सं. वि.) सहज में जानने योग्य।
सुवितत–(सं. वि.) अच्छी तरह फैला हुआ, सुप्रसिद्ध।
सुवित्त–(सं. पुं.) असीम धन।
सुविदग्ध–(सं. वि.) बहुत चतुर।
सुविदित–(सं. वि.) अच्छी तरह जाना हुआ, सुप्रसिद्ध।
सुविद्य–(सं.वि.) बड़ा विद्वान् या पंडित।
सुविद्या–(सं. स्त्री.) उत्तम विद्या।
सुविधा–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुभीता'।
सुविधान–(सं. पुं.) अच्छा नियम या व्यवस्था।
सुविनीत–(सं. वि.) अत्यन्त नम्र।
सुविभक्त–(सं. वि.) ठीक तरह बाँटा हुआ।
सुविशाला–(सं. स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुवीज–(सं. पुं.) सुंदर बीज, शिव।
सुवीर–(सं. पुं.) बड़ा योद्धा।
सुवृक्ष–(सं. पुं.) फल-फूलों से लदा हुआ वृक्ष।
सुवृत्त–(सं. पुं.), **सुवृत्ता**–(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
सुवृत्ति–(सं. स्त्री.) उत्तम जीविका।
सुवेल–(सं. पुं.) समुद्र के किनारे का एक पर्वत जहाँ श्रीरामचन्द्र सेना सहित ठहरे थे; (वि.) बहुत झुका हुआ।
सुवेश–(सं. वि.) सुंदर वेशयुक्त, सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित।
सुवेष–(सं. वि.) देखें 'सुवेश'।
सुवेसल–(हिं. वि.) सुंदर, मनोहर।
सुवैया–(हिं. पुं.) सोनेवाला।
सुवो–(हिं. पुं.) शुक, सुग्गा।
सुव्यक्त–(सं. वि.) बहुत स्पष्ट।
सुव्यवस्थित–(सं. वि.) जिसकी व्यवस्था अच्छी तरह की गई हो।
सुव्याहृत–(सं. वि.) अच्छी तरह कहा हुआ।
सुव्रत–(सं. पुं.) एक प्रजापति का नाम, स्कन्द के एक अनुचर का नाम; (वि.) धर्मनिष्ठ, विनीत।
सुशकत–(सं. वि.) सुसाध्य, आसान, सरल।
सुशब्द–(सं. वि.) मधुर स्वरपूर्ण।
सुशक–(सं. वि.) सुसाध्य, आसान।
सुशक्त–(सं. वि.) सक्षम, समर्थ।

सुशरण्य–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
सुशरीर–(सं. वि.) सुडौल शरीरवाला।
सुशल्य–(सं. पुं.) खदिर, खैर।
सुशासित–(सं. वि.) अच्छी तरह शासित।
सुशिक्षित–(सं. वि.) उत्तम रूप से शिक्षित।
सुशिख–(सं. पुं.) अग्नि।
सुशिष्ट–(सं. वि.) बहुत शिष्ट या नम्र।
सुशीतला–(सं. स्त्री.) खीरा, ककड़ी।
सुशील–(सं. वि.) उत्तम स्वभाववाला, विनीत, नम्र, सरल, सीधा।
सुशीलता–(सं. स्त्री.) नम्रता, विनय।
सुशीला–(सं. स्त्री.) राधा की एक अनुचरी का नाम।
सुशृंग–(सं. वि.) सुंदर सींगोंवाला; (पुं.) शृंगी ऋषि।
सुशोण–(सं. वि.) गाढ़ा लाल।
सुशोभन–(सं. वि.) अत्यन्त शोभायुक्त, दिव्य।
सुशोभित–(सं. वि.) अत्यन्त शोभायमान।
सुश्राव्य–(सं. वि.) जो सुनने में अच्छा जान पड़े।
सुश्री–(सं. वि.) बहुत सुंदर, बहुत धनी।
सुश्रुत–(सं. वि.) प्रसिद्ध, अच्छी तरह सुना हुआ; (पुं.) आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्राचीन और प्रसिद्ध आचार्य।
सुश्रूषा–(हिं. स्त्री.) देखें 'शुश्रूषा'।
सुश्लिष्ट–(सं. वि.) अति दृढ़, जुड़ा हुआ, श्लेपयुक्त।
सुष–(हिं. पुं.) देखें 'सुख'।
सुषमा–(सं. स्त्री.) परम शोभा, आकर्षक सुंदरता, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
सुषमाशाली–(सं. वि.) जिसमें अधिक शोभा हो।
सुषिक्त–(सं.वि.) अच्छी तरह सींचा हुआ।
सुषिर–(सं. पुं.) बाँस, बेंत, अग्नि, आग, वायु से बजनेवाला यन्त्र, छिद्र, छेद, वायुमण्डल, लवंग; (वि.) छिद्रयुक्त।
सुषुप्त–(सं.वि.) गहरी नींद में सोया हुआ।
सुषुप्ति–(सं. स्त्री.) सुनिद्रा, गहरी नींद, वेदान्त के अनुसार अज्ञान, चित्त की एक वृत्ति जिसमें जीव को ब्रह्म की प्राप्ति होती है, परन्तु उसको उसका ज्ञान नहीं होता।
सुषुप्सा–(सं. स्त्री.) सोने की इच्छा।
सुषुम्ना–(सं. स्त्री.) हठयोग के अनुसार शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो मेरुदंड के बाह्य भाग में तथा इड़ा और पिंगला नाडियों के मध्य में अवस्थित है।
सुषेण–(सं. पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, परीक्षित् के एक पुत्र का नाम, सुग्रीव का चिकित्सक।
सुषोपति–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुषुप्ति'।
सुष्ट–(सं. वि.) अच्छा, भला।
सुष्टुत–(सं. वि.) भली भाँति स्तुत या प्रशंसित।
सुष्ठ–(हिं. अव्य.) अच्छी तरह; (वि.) सुंदर; –ता–(स्त्री.) सुंदरता।
सुष्ठु–(सं. अव्य.) अत्यन्त, भली भाँति, अच्छी तरह; (पुं.) प्रशंसा।
सुष्ठुता–(सं. स्त्री.) सौभाग्य, मंगल, कल्याण, सुंदरता।
सुष्म–(सं. पुं.) रज्जु, रस्सी।
सुष्मना–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुषुम्ना'।
सुसंग–(सं. पुं.) उत्तम संगति।
सुसंगत–(सं. वि.) अच्छी तरह मिला हुआ, बहुत संगत।
सुसंगति–(सं. स्त्री.) सत्संग, अच्छी संगत, साधु का संग।
सुसंगृहीत–(सं. वि.) अच्छी तरह संग्रह किया हुआ।
सुसंत्रस्त–(सं. वि.) बहुत डरा हुआ।
सुसंध–(सं. वि.) प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला।
सुसंपिष्ट–(सं. वि.) अच्छी तरह चूर्ण किया हुआ।
सुसंपूर्ण–(सं. वि.) अच्छी तरह समाप्त किया हुआ।
सुसंस्कृत–(सं. वि.) उत्तम संस्कारयुक्त।
सुसकना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सिसकना'।
सुसज्जित–(सं. वि.) शोभायमान, अच्छी तरह सजाया हुआ।
सुसताना–(हिं. क्रि. अ.) सुस्ताना, श्रम मिटाना, थकावट दूर करना।
सुसती–(हिं. स्त्री.) सुस्ती, थकावट।
सुसत्या–(सं. स्त्री.) राजा जनक की पत्नी का नाम।
सुसमय–(सं. पुं.) सुभिक्ष, सुकाल, अच्छा समय।
सुसमृद्ध–(सं. वि.) अति समृद्धिशाली।
सुसमा–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुषमा'।
सुसर–(हिं. पुं.) देखें 'ससुर'।
सुसरार, सुसरारि–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुसराल'।
सुसराल–(सं.स्त्री.) ससुर का घर, ससुराल
सुसरित्–(हिं. स्त्री.) मन्दाकिनी, गंगा।
सुसरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुरसरी'।
सुसह–(सं. वि.) सहन किया जाने योग्य।
सुसा–(हिं. स्त्री.) स्वसा, बहन।
सुसाइ(य)टी–(अं. स्त्री.) सभा।
सुसाध्य–(सं.वि.) जिसका साधन सहज में किया जा सके।
सुसाना–(हिं. क्रि.अ.) सिसकना।
सुसार–(सं. पुं.) लाल खैर का पेड़, नीलम मणि।
सुसारवान्–(सं. पुं.) स्फटिक, विल्लौर।
सुसिकता–(सं. स्त्री.) उत्तम बालू।
सुसिक्त–(सं. वि.) अच्छी तरह सींचा हुआ।
सुसिद्ध–(सं. वि.) पूर्ण रूप से सिद्ध।
सुसिद्धि–(सं. स्त्री.) साहित्य में एक प्रकार का अलंकार, (यह ऐसे प्रसंग में होता है जहाँ एक मनुष्य परिश्रम करता है परन्तु इसका फल दूसरा भोगता है।)
सुसुकना–(हिं.क्रि.अ.) देखें 'सिसकना'।
सुसुड़ी–(हिं. स्त्री.) जौ आदि अन्नों में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
सुसूक्ष्म–(सं. वि.) अति सूक्ष्म।
सुसेन–(हिं. पुं.) देखें 'सुषेण'।
सुसेवित–(सं. वि.) उत्तम रूप से पूजित।
सुस्त–(फा. वि.) ढीला, मंद, निस्तेज, आलसी, कमजोर।
सुस्तना(नी)–(सं. स्त्री.) सुंदर स्तनवाली स्त्री, वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।
सुस्ताई–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुस्ती'।
सुस्ताना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सुसताना'।
सुस्ती–(फा. स्त्री.) ढिलाई, मंदता, आलस, कमजोरी।
सुस्तैन–(हिं. पुं.) देखें 'स्वस्तयन'।
सुस्थ–(सं. वि.) नीरोग, स्वस्थ, सुस्थित, भली भाँति स्थित, सुंदर, प्रसन्न, सुखी; –चित्त–(वि.) जिसका चित्त प्रसन्न हो; –ता–(स्त्री.) आरोग्य, आनन्द, प्रसन्नता।
सुस्थावती–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
सुस्थित–(सं. वि.) अविचल, दृढ़, स्वस्थ, नीरोग, भाग्यवान्।
सुस्थिति–(सं. स्त्री.) प्रसन्नता, आनन्द, कुशल, क्षेम।
सुस्थिर–(सं. वि.) अविचल, दृढ़, स्वस्थ, नीरोग।
सुस्नात–(सं. वि.) अच्छी तरह स्नान किया हुआ।
सुस्मित–(सं. वि.) हँसमुख, हँसोड़।
सुस्मिता–(सं. स्त्री.) हँसमुख स्त्री।
सुस्वन–(सं. वि.) मधुर शब्द या ध्वनियुक्त।

सुस्वप्न–(सं. पुं.) शुभ स्वप्न।
सुस्वर–(सं. पुं.) उत्तम स्वर, शंख; (वि.) सुकंठ, सुरीला; **–ता**–(स्त्री.) सुस्वर होने का भाव या धर्म।
सुस्वाद(दु)–(सं. वि.) बहुत स्वादिष्ट, स्वादयुक्त।
सुस्वाप–(सं. पुं.) गहरी नींद।
सुहंगम–(हिं. वि.) सहज, सरल।
सुहँगा–(हिं. वि.) जो महँगा न हो, सस्ता।
सुहटा–(हिं. वि.) सुंदर, सुहावना।
सुहनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'सोहनी'।
सुहवत–(अ. स्त्री.) संग, साथ, मैत्री।
सुहवती–(हिं. वि.) सुहवत का।
सुहराना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सहलाना'।
सुहव–(हिं. पुं.) एक राग।
सुहवी–(हिं. स्त्री.) एक राग का नाम।
सुहा–(हिं. पुं.) लाल नामक पक्षी।
सुहाग–(हिं. पुं.) स्त्री की सधवा होने की अवस्था, सौभाग्य, वह वस्त्र जो वर या कन्या को विवाह के समय पहनाया जाता है, मांगलिक गीत, प्रणय-चेष्टा।
सुहागन–(हिं. स्त्री.) सुहागिन।
सुहागा–(हिं. पुं.) गन्धक के सोते से निकलनेवाला एक प्रकार का क्षार।
सुहागिन–(हिं. स्त्री.) सधवा स्त्री, वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सुहागिनि, सुहागिली–(हिं.स्त्री.) सुहागिन।
सुहाता–(हिं. वि.) जो सहा जा सके।
सुहाना–(हिं. क्रि. अ.) शोभा देना, अच्छा लगना, भला मालूम होना; (वि.) सुहावना।
सुहाया–(हिं. वि.) देखें 'सुहावना'।
सुहारी–(हिं. स्त्री.) सादी पूरी जिसमें पीठी आदि न भरी हो।
सुहाल–(हिं. पुं.) मैदे का वना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव–(हिं. वि.) सुंदर, सुहावना।
सुहावता–(हिं. वि.) सुहावना, भला।
सुहावन, सुहावना–(हिं. वि.) जो देखने में भला मालूम हो, सुंदर, रमणीक; **–पन**–(पुं.) सुंदरता।
सुहावला–(हिं. वि.) सुहावना, सुंदर।
सुहास, सुहासी–(हिं.वि.) सुंदर मुसकानवाला, चारुहासी।
सुहासिनी–(सं. वि. स्त्री.) सुंदर हँसी हँसनेवाली (स्त्री)।
सुहित–(सं. वि.) विहित, हितकर।
सुहृत, सुहृद्–(सं. पुं.) मित्र, बन्धु, सखा; (वि.) स्नेहपूर्ण, उदार हृदयवाला।
सुहृदय–(सं. वि.) सहृदय, स्नेहशील।
सुहेला–(हिं. वि.) सुखदायक, सुंदर; (पुं.) मंगल-गीत, स्तुति।
सुहोत्र–(सं. पुं.) सहदेव के एक पुत्र का नाम, एक दैत्य का नाम।
सूं–(हिं. अव्य.) तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिह्न, सों, से।
सूंइस–(हिं. पुं.) देखें 'सूंस'।
सूंघना–(हिं. क्रि. स.) महक लेना, वास लेना, बहुत कम या सूक्ष्म भोजन करना, सर्प का काटना, कल्याण की कामना से बच्चों का मस्तक का वास लेना।
सूंघा–(हिं. पुं.) भेदिया, सूँघकर आखेट तक पहुँचानेवाला कुत्ता, वह जो सूँघकर बतला देता हो कि अमुक स्थान में भूमि के भीतर जल या धन है।
सूंड़–(हिं. स्त्री.) हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती और भूमि तक लटकती है, शुण्ड।
सूंडाल–(हिं. पुं.) हाथी।
सूंड़ि–(हिं. स्त्री.) हाथी की सूँड़।
सूंड़ी–(हिं. स्त्री.) (कपास, अन्न, ऊख आदि के) पौधों को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
सूंस–(हिं. स्त्री.) एक प्रसिद्ध वड़ा जल-जन्तु, शिशुमार।
सूंह–(हिं. अव्य.) सम्मुख, सामने।
सूअर–(हिं. पुं.) एक स्तनपायी वन्य जन्तु, शूकर, एक प्रकार की गाली; **–बियान**–(स्त्री.) वह स्त्री जो प्रति वर्ष बच्चा जनती है।
सूआ–(हिं. पुं.) बड़ी सूई, सूजा, सुग्गा, तोता।
सूई–(हिं. स्त्री.) पक्के लोहे का पतला तार जिसका एक छोर नुकीला तथा दूसरे छोर पर एक छेद होता है जिसमें तागा पिरोकर कपड़ा सीते है, सूची, महीन काँटा, घड़ी का काँटा, (कपास, अनाज आदि का) अँखुआ, सूई के आकार की कोई वस्तु; **–डोरा**–(पुं.) मलखंभ का एक व्यायाम।
सूक–(हिं. पुं.) देखें 'शुक्र, शुक्र'।
सूकना–(हिं. क्रि. अ.) सूखना।
सूकर–(सं. पुं.) शूकर, सूअर, एक नरक का नाम; **–कंद**–(पुं.) वाराहीकन्द; **–क्षेत्र**–(पुं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो मथुरा प्रान्त में है, (अव यह 'सोरों' नाम से प्रसिद्ध है।)
सूकरी–(सं. स्त्री.) शूकरी, सूअरी।
सूका–(हिं. पुं.) चार आने के मूल्य की मुद्रा, चवन्नी।
सूक्त–(सं. वि.) अच्छी तरह कहा हुआ; (पुं.) उत्तम कथन, उत्तम भाषण, वेद-मन्त्रों या ऋचाओं का समूह, वैदिक स्तुति; **–वाक्य**–(पुं.) यथोचित वाक्य।
सूक्ति–(सं. स्त्री.) युक्तिपूर्ण वाक्य, सुंदर पद या वाक्य।
सूक्तिक–(सं.पुं.) एक प्रकार का करताल।
सूक्षम–(हिं. वि.) देखें 'सूक्ष्म'।
सूक्ष्म–(सं. वि.) बहुत महीन, गूढ़ बातों को समझने में समर्थ, कठिनाई से समझ में आने योग्य; (पुं.) परिमाण, लिंग-शरीर, शिव का एक नाम, जीरा, निर्मली, रीठा, सुपारी, छल, कपट, एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्तियों का अनुशीलन और वर्णन किया जाता है; **–कोण**–(पुं.) समकोण से छोटा कोण; **–तंडुल**–(पुं.) पोस्ते का दाना; **–ता**–(स्त्री.) बारीकी; **–दर्शक यंत्र**–(पुं.) अणुवीक्षण यन्त्र, वह यन्त्र जिससे सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई पड़ते हैं; **–दर्शिता**–(स्त्री.) सूक्ष्म बातों को सोचने-समझने का गुण; **–दर्शी**–(वि.) कुशाग्रबुद्धि, सूक्ष्म बातों को समझने-वाला; **–दृष्टि**–(वि.) जो सूक्ष्म बातों को समझ लेता हो; **–देही**–(वि.) सूक्ष्म शरीरवाला; **–नाम**–(पुं.) विष्णु का एक नाम; **–पत्र**–(पुं.) धनिया, कुकरौंदा; **–पत्रक**–(पुं.) वनतुलसी; **–पत्रिका**–(स्त्री.) सौंफ, सतावर; **–पर्णी**–(स्त्री.) रामतुलसी; **–पाद**–(वि.) जिसके पैर छोटे हों; **–फल**–(पुं.) लिसोड़ा; **–बीज**–(पुं.) खसखस, **–भूत**–(पुं.) सांख्य के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध–ये पाँचों तत्व; **–मति**–(वि.) तीक्ष्णबुद्धि; **–वस्त्र**–(पुं.) महीन कपड़ा; **–शरीर**–(पुं.) दर्शन के अनुसार पाँचों प्राण, पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म-भूत, मन और बुद्धि– इन सत्रहों तत्त्वों का समूह।
सूक्ष्माक्ष–(सं. वि.) तीव्रदृष्टि।
सूक्ष्मात्मा–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
सूख–(हिं. वि.) देखें 'सूखा'।
सूखना–(हिं. क्रि.अ.) गीलापन मिट जाना, रसहीन होना, नष्ट होना, दुर्बल होना, सुन्न होना, उदास होना, डरना, तेज नष्ट होना, कड़ा होना; (मुहा.) **सूखकर काँटा हो जाना**–बहुत दुर्बल होना।
सूखा–(हिं. वि.) जिसमें जल का अंश न रह गया हो, तेजरहित, कठोर, कोरा; (पुं.) पानी का न बरसना, अवर्षण,

जलहीन स्थान, नदी का किनारा, बच्चों की एक प्रकार की बीमारी, सुखंडी, सूखा हुआ तंबाकू का पत्ता जो चूना मिलाकर खाया जाता है; (मुहा.) **–जवाब देना–** स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना।
सूघर–(हि. वि.) देखें 'सुघड़'।
सूचक–(सं. वि.) सूचना देनेवाला, ज्ञापक, बोधक; (पुं.) सूई, दरजी, सूत्रकार, गुप्तचर, भेदिया, पिशुन, कौआ, बिल्ली, सियार, एक प्रकार का महीन चावल।
सूचना–(सं. स्त्री.) बताने या भेद देने की क्रिया, विज्ञप्ति, ज्ञापन, वह बात जो बतलाने के लिये कही जाय, विज्ञापन, संकेत, बतलाना; **–पत्र–**(पुं.) विज्ञापन, विज्ञप्ति।
सूचनीय–(सं. वि.) सूचित करने योग्य।
सूचा–(हि. स्त्री.) सूचना, संकेत; (वि.) सावधान।
सूचिक–(सं. पुं.) दरजी।
सूचिका–(सं. स्त्री.) सूई, हाथी की सूँड़, केवड़ा, एक अप्सरा का नाम।
सूचिकामुख–(सं. पुं.) हाथी।
सूचित–(सं. वि.) ज्ञापित, बतालाया हुआ, बहुत उपयुक्त या योग्य।
सूचिभेद्य–(सं. वि.) बहुत घना।
सूचिमल्लिका–(सं.स्त्री.) नेवारी का फूल।
सूचिरदन–(सं. पुं.) नकुल, नेवला।
सूचिरोमा–(सं. पुं.) वराह, शूकर।
सूचिवत् (वान्)–(सं. पुं.) गरुड़।
सूचिवदन–(सं. पुं.) नेवला, मच्छड़।
सूचिशालि–(सं. पुं.) एक प्रकार का महीन चावल।
सूचिशिखा–(सं. स्त्री.) सूई की नोक।
सूचिसूत्र–(सं पुं.) सूई में पिरोने का धागा।
सूचि–(सं. स्त्री.) कपड़ा सीने की सूई, दृष्टि, भेदिया, सफेद कुश, केतकी, केवड़ा, सेना का एक प्रकार का व्यूह, पुस्तक के अध्यायों की तालिका, कोई अन्य तालिका, पिंगल के अनुसार एक युक्ति जिससे मात्रिक छन्दों की संख्या आदि जानी जाती है; **–कर्म–**(पुं.) सिलाई का काम; **–पत्र–**(पुं.) पुस्तकों के नाम, मूल्य आदि का विवरण-पत्र; **–पद्म–**(पुं.) सेना का एक प्रकार का व्यूह; **–पाश–**(पुं.) सूई का छेद; **–मुख–**(पुं.) हीरा एक नरक का नाम।
सूच्छम–(हि. वि.) देखें 'सूक्ष्म'।
सूच्याकार–(सं. वि.) सूई के आकार का, लंबा और नुकीला।
सूच्यार्थ–(सं. पुं.) साहित्य में किसी पद आदि का वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना-शक्ति से जाना जाता है।
सूछम–(हि. वि.) देखें 'सूक्ष्म'।
सूजन–(हि. स्त्री.) सूजने की क्रिया या अवस्था, शोथ।
सूजना–(हि. क्रि. अ.) शरीर के किसी अंग का फूलना, शोथ होना।
सूजनी–(हि. स्त्री.) देखें 'सुजनी'।
सूजा–(हि. पुं.) मोटी बड़ी सूई, सूआ, छकड़ा, गाड़ी के पीछे की ओर उसको टिकाने के लिये लगाया हुआ डंडा।
सूजाक–(फा.पुं.) एक प्रकार का प्रमेह रोग।
सूजी–(हि. स्त्री.) गेहूँ का दरदरा आटा जो अनेक प्रकार के पकवान बनाने में प्रयुक्त किया जाता है, सूई; (पुं.) दरजी।
सूझ–(सं. स्त्री.) दृष्टि, अनूठी बात, उद्भावना; **–बूझ–**(स्त्री.) सोचने-समझने की बुद्धि।
सूझना–(हि.क्रि.अ.) दिखाई पड़ना, ध्यान में आना, छुट्टी पाना।
सूटा–(हि. पुं.) तंबाकू या गाँजे का धुआँ जोर से खींचना।
सूत–(सं. पुं.) रथ हाँकनेवाला, सारथि, बढ़ई, सूत्रकार, पौराणिक, एक वर्ण-संकर जाति, सूर्य, पारा, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम; (वि.) प्रसूत, प्रेरित किया हुआ।
सूत–(हि. पुं.) कपड़ा बुनने का धागा, रेशम आदि का महीन रेशा या तन्तु, तागा, डोरा, करधनी, नापने का एक मान, लकड़ी आदि गढ़ते समय उस पर चिह्न डालने की सूत की डोरी, थोड़े शब्दों में बहुत अर्थ व्यक्त करना; (वि.) भला, अच्छा।
सूतक–(सं. पुं.) जन्म, वह अशौच जो सन्तान होने पर परिवारवालों को लगता है, मरणाशौच जो परिवार में किसी के मरने पर लगता है, सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण; **–गेह–**(पुं.) सूतिकागृह।
सूतकान्न–(सं. पुं.) सूतकी के घर का अन्न।
सूतकाशौच–(सं. पुं.) जननाशौच।
सूतकी–(सं.वि.) जिसको सूतक लगा हो।
सूतज, सूततनय–(सं. पुं.) कर्ण का नाम।
सूतधार–(हि. पुं.) बढ़ई।
सूतनंदन–(सं. पुं.) कर्ण।
सूतना–(हि. क्रि. अ.) निद्रा लेना, सोना।
सूतपुत्र–(सं. पुं.) कर्ण, कीचक, सारथि।
सूतलड़–(हि. पुं.) रहट।
सूतवशा–(सं. स्त्री.) बच्चा न देनेवाली गाय।
सूता–(हि. पुं.) तन्तु, सूत; (सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो।
सूति–(सं. स्त्री.) जनन, प्रसव, जन्म, सीवन, अन्न की उत्पत्ति; (पुं.) हंस।
सूतिका–(सं. स्त्री.) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो।
सूतिकागार, सूतिकागृह–(सं. पुं.) प्रसव-गृह, सौरी।
सूतिगृह–(सं. पुं.) देखें 'सूतिकागार'।
सूतिमारुत–(सं. पुं.) प्रसव-पीड़ा।
सूतिमास–(सं. पुं.) वह महीना जिसमें किसी स्त्री को प्रसव हो।
सूती–(हि. वि.) सूत का बना हुआ; (स्त्री.) सीपी।
सूतीघर–(हि. पुं.) सूतिकागार।
सूत्र–(सं. पुं.) तन्तु, सूत, तागा, डोरा, यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यवस्था, नियम, रेखा, निमित्त, कारण, मूल, पता लगाने का साधन, टोह, थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो।
सूत्रकंठ–(सं. पुं.) खंजन पक्षी, कबूतर।
सूत्रक–(सं. पुं.) सूत, धागा।
सूत्रकर्म–(सं. पुं.) बढ़ई का काम।
सूत्रकार–(सं. पुं.) सूत्रों की रचना करने-वाला, बढ़ई, जुलाहा।
सूत्रकोश–(सं. पुं.) सूत की अंटी।
सूत्रग्रंथ–(सं. पुं.) सूत्रों में रचित मूलग्रंथ।
सूत्रतर्कुटी–(सं. स्त्री.) तकली, टेकुआ।
सूत्रधार–(सं. पुं.) नाट्यशाला का व्यव-स्थापक या प्रधान नट।
सूत्रपात–(सं. पुं.) आरंभ, शुरू।
सूत्रपुष्प–(सं. पुं.) कपास का पौधा।
सूत्रयंत्र–(सं. पुं.) करघा, ढरकी।
सूत्रला–(सं. स्त्री.) तकली, टेकुआ।
सूत्रवाप–(सं. पुं.) कपड़ा बुनने का काम।
सूत्रविक्रयी–(सं. वि.) सूत बेचनेवाला।
सूत्रविद्–(सं. पुं.) सूत्रों को जाननेवाला।
सूत्रवेष्टन–(सं. पुं.) करघा।
सूत्रशाख–(सं. पुं.) शरीर।
सूत्रात्मा–(सं. पुं.) जीवात्मा।
सूत्राली–(सं. स्त्री.) माला, हार।
सूत्री–(सं. वि.) सूत्रयुक्त।
सूत्रीय–(सं. वि.) सूत्र-संबंधी।
सूथन–(हि. पुं.) पाजामा, सुथना।
सूथनी–(हि. स्त्री.) स्त्रियों का पहनने का पायजामा, सुथना।
सूथार–(हि. पुं.) सुतार।
सूद–(सं. पुं.) सूपकार, रसोइया; (फा. पुं.) ब्याज, लाभ।

सूदक–(सं. वि.) नाश करनेवाला।
सूदकर्म–(सं. पुं.) भोजन पकाना।
सूदखोर–(फा. पुं.) सूद लेनेवाला।
सूदखोरी–(फा.स्त्री.) सूद या ब्याज लेना।
सूदन–(सं. पुं.) अंगीकार करने की क्रिया, वध, नाश, फेंकने की क्रिया।
सूदना–(हिं. क्रि. स.) नाश करना।
सूदशाला–(सं. स्त्री.) पाकशाला।
सूदशास्त्र–(सं.पुं.) पाकशास्त्र।
सूदा–(हिं. पुं.) ठगों की मण्डली का वह ठग जो यात्रियों को बहकाकर अपनी मण्डली में लाता है।
सूदित–(सं.वि.) आहत, नष्ट किया हुआ।
सूदी–(हिं.वि.) ब्याज पर लिया या दिया हुआ (धन)।
सूध–(हिं. वि.) देखें 'सूधा'; (स्त्री.) सीध; (अव्य.) सीधा।
सूधना–(हिं. क्रि. अ.) सच होना, ठीक होना।
सूधा–(हिं. वि.) सीधा, सरल, जो वक्र न हो।
सूधे–(हिं. अव्य.) सीधे।
सून–(सं. पुं.) प्रसव, फूल, पुत्र; (वि.) फूला हुआ, विकसित, उत्पन्न; (हिं.वि.) शून्य, सूना, रहित।
सूनसान–(हिं. वि.) सुनसान, निर्जन।
सूना–(हिं. वि.) जनहीन; (पुं.) निर्जन स्थान; **–पन**–(पुं.) एकान्त, सन्नाटा; (मुहा.) **–लगना**–उदास लगना।
सूनिक–(सं. पुं.) मांस बेचनेवाला।
सूनु–(सं.पुं.) सूर्य, पुत्र, बेटा, छोटा भाई, नाती।
सूनृत–(सं. वि., पुं.) सत्य और प्रिय (वचन), दयालु।
सूनृता–(सं.स्त्री.) सत्य और प्रिय भाषण, सद्भाव।
सूप–(सं.पुं.) (मूंग, अरहर, मसूर आदि की) पकी हुई दाल, रसदार तरकारी, बाण, तीर, रसोइया; (हिं.पुं.) अनाज फटकने का सींकों का बना हुआ पात्र।
सूपक–(हिं. पुं.) रसोइया।
सूपनखा–(हिं. स्त्री.) देखें 'शूर्पणखा'।
सूपशास्त्र–(सं. पुं.) पाकशास्त्र।
सूपस्थान–(सं. पुं.) पाकशाला।
सूपांग–(सं. पुं.) हींग।
सूपा–(हिं. पुं.) शूर्प, सूप।
सूपाय–(सं. पुं.) सदुपाय, उत्तम उपाय।
सूफिया–(अ. पुं.) मुसलमान साधुओं का एक संप्रदाय।
सूफियाना–(अ. वि.) सूफियों के योग्य।
सूफी–(फा. वि.) संत, पवित्र; (पुं.) उदासीन, इस्लामी फकीर।
सूब–(हिं. पुं.) ताँबा।
सूबड़ा–(हिं. पुं.) वह चाँदी जिसमें जस्ते का मेल हो।
सूबा–(अ.पुं.) राज्य का प्रदेश या प्रांत।
सूबेदार–(अ.पुं.) सूबे का शासक।
सूबेदारी–(अ. स्त्री.) सूबेदार का पद।
सूभर–(हिं. वि.) शुभ्र, सुंदर, सफेद।
सूम–(सं. पुं.) दूध, जल, आकाश; (हिं.वि.) कंजूस, कृपण।
सूर–(सं.पुं.) सूर्य, अर्क, मदार, आचार्य, पण्डित, छप्पय का एक भेद; (हिं.पुं.) सूरदास कवि; (हिं. वि.) अंधा।
सूरकंद–(सं. पुं.) जमीकन्द, सूरन।
सूरकांत–(सं. पुं.) सूर्यकान्त मणि।
सूरकुमार–(सं. पुं.) वसुदेव।
सूरज–(हिं. पुं.) सूर्य; (सं. पुं.) शनि, सुग्रीव; (मुहा.) **–को दीपक दिखाना**–जो स्वयं पण्डित है उसको शिक्षा देना; **–पर थूकना**– (किसी निर्दोष व्यक्ति पर) लांछन लगाना।
सूरज भगत–(हिं. पुं.) एक प्रकार की गिलहरी।
सूरजमुखी–(हिं.स्त्री.) एक पौधा जिसमें पीले रंग के बड़े फूल लगते हैं, (सूर्यास्त के समय यह फूल नीचे की ओर झुक जाता और सूर्योदय होने पर फिर उठने लगता है, सूर्यमुखी।
सूरज-सुत–(हिं. पुं.) सुग्रीव।
सूरज-सुता–(हिं. स्त्री.) यमुना नदी।
सूरण–(सं. पुं.) जमीकंद, ओल।
सूरत–(अ. पुं.) कुरान का एक अध्याय, रूप, शकल, चेहरा, सुंदरता, उपाय, ढंग, तौर, लक्षण; **–दार**–(वि.) सुंदर; **–हराम**–(वि.) देखने में सुंदर पर निकम्मा।
सूरता, सूरताई–(हिं.स्त्री.) देखें 'शूरता'।
सूरति–(हिं. स्त्री.) स्मरण, सुध, सूरत।
सूरदास–(हिं. पुं.) हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो अनन्य कृष्ण-भक्त और अन्धे थे।
सूरन–(हिं. पुं.) जमीकन्द, ओल।
सूरपनखा–(हिं. स्त्री.) देखें 'शूर्पणखा'।
सूरपुत्र–(सं. पुं.) सूर्य के पुत्र सुग्रीव।
सूरमा–(हिं. पुं.) वीर, योद्धा, बहादुर।
सूरमापन–(हिं. पुं.) शूरता।
सूरसागर–(हिं. पुं.) हिन्दी के महाकवि सूरदास-कृत एक महाकाव्य जिसमें कृष्ण-लीलाओं का वर्णन है।
सूरसावंत–(सं. पुं.) नायक, सरदार, युद्ध-मन्त्री।
सूरसुत–(सं. पुं.) सुग्रीव, शनि ग्रह।
सूरसुता–(सं. स्त्री.) सूर्य की लड़की यमुना।
सूरसूत–(सं. पुं.) सूर्य के सारथि अरुण।
सूरसेन–(हिं. पुं.) देखें 'शूरसेन'; **–पुर**–(पुं.) मथुरा नगरी।
सूरि–(सं. पुं.) पण्डित, विद्वान्, सूर्य। बृहस्पति, कृष्ण, ऋत्विक, यज्ञ करनेवाला,
सूरी–(सं. स्त्री.) पंडिता, विदुषी, सूर्य की पत्नी, कुन्ती।
सूरुज–(हिं. पुं.) देखें 'सूर्य'।
सूर्प–(सं. पुं.) शूर्प, सूप।
सूर्पनखा–(हिं. स्त्री.) शूर्पणखा।
सूर्य–(सं.पुं.) रवि, आदित्य, सूरज, सोना, ताँबा, बलि के एक पुत्र का नाम, अर्क, आक, बारह की संख्या; **–कमल**–(पुं.) सूरजमुखी का फूल; **–कांत**–(पुं.) एक मणि; **–काल**–(पुं.) दिवस, दिन; **–ग्रहण**–(पुं.) सूर्य का ग्रहण; **–ज**–(पुं.) मनु, यम, शनि ग्रह, सुग्रीव, कर्ण, रेवन्त; **–जा**–(स्त्री.) यमुना नदी; **–तनय**–(पुं.) सूर्य के पुत्र, मनु, यम आदि; **–तनया**–(स्त्री.) यमुना नदी; **–तापिनी**–(स्त्री.) एक उपनिषद् का नाम; **–नक्षत्र**–(पुं.) सूर्य के साथ किसी नक्षत्र का योग; **–नाभ**–(पुं.) एक दानव का नाम; **–नेत्र**–(पुं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; **–पत्नी**–(स्त्री.) छाया; **–पत्र**–(पुं.) मदार का पौधा; **–पर्व**–(पुं.) वह समय जब सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश करता है; **–पाद**–(पुं.) सूर्य-किरण; **–पुत्र**–(पुं.) वरुण, शनि, यम, अश्विनीकुमार, सुग्रीव, कर्ण; **–पुत्री**–(स्त्री.) यमुना, बिजली; **–पूजा**– (स्त्री.) सूर्य की उपासना; **–प्रभ**– (पुं.) एक प्रकार की समाधि; (वि.) सूर्य के समान दीप्तिमान्; **–बिंब**–(पुं.) सूर्य का मण्डल; **–भक्त**–(पुं.) सूर्य का उपासक; **–भ्राता**–(पुं.) ऐरावत हाथी; **–मंडल**– (पुं.) सूर्य का घेरा; **–मणि**– (पुं.) सूर्यकान्त मणि; **–मुखी**– (पुं.) सूरजमुखी; **–रश्मि**–(पुं.) सूर्य की किरण; **–लोक**–(पुं.) सौर जगत्; **–वंश**– (पुं.) सूर्य की सन्तति, इक्ष्वाकु वंश; **–वल्लभा**–(स्त्री.) कमलिनी; **–वार**–(पुं.) रविवार; **–विलोकन**– (पुं.) जन्म के चौथे महीने होनेवाला एक मांगलिक कृत्य

जिसमें नवजात शिशु को सूर्य का दर्शन कराया जाता है; **–वृक्ष–** (पुं.) मदार का पौधा; **–व्रत–**(पुं.) रविवार को किया जानेवाला व्रत; **–शोभा–** (स्त्री.) सूर्य का प्रकाश, धूप; **–संक्रम–** (पुं.) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश; **–सारथि–**(पुं.) अरुण; **–सुत–**(पुं.) शनि, कर्ण, सुग्रीव।

सूर्यांशु–(सं. पुं.) सूर्य की किरण।

सूर्या–(सं स्त्री.) सूर्य की पत्नी, सन्ध्या।

सूर्यातप–(सं. पुं.) धूप।

सूर्यात्मज–(सं. पुं.) कर्ण, शनि, सुग्रीव।

सूर्यायाम–(सं. पुं) सूर्यास्त का समय।

सूर्यालोक–(सं. पुं.) सूर्य का प्रकाश।

सूर्यावर्त–(सं. पुं.) हुरहुर, गजपीपल, अर्धकपाली, आधासीसी।

सूर्याश्म–(सं. पुं.) सूर्यान्त मणि।

सूर्यास्त–(सं. पुं.) सूर्य के डूबने का समय।

सूर्योदय–(सं. पुं.) सूर्य के निकलने का समय, प्रातःकाल।

सूर्योपस्थान–(सं. पुं.) वैदिक सन्ध्योपासन में सूर्य की एक प्रकार की उपासना।

सूर्योपासक–(सं. पुं.) सूर्य की उपासना या पूजा करनेवाला।

सूर्योपासना–(सं. स्त्री.) सूर्य की पूजा या उपासना।

सूल–(हि. पुं.) शूल, वरछा, भाला, कोई चुभनेवाली नुकीली वस्तु, भाला चुभने के समान पीड़ा, माला के ऊपर का फुलरा; **–धर, –धारी–**(पुं.) देखें 'शूलधर', 'शूलधारी'।

सूलना–(हिं. क्रि.अ.,स.) भाले से छेदना या छिदना, व्यथित होना, पीड़ा होना।

सूलपानि–(हिं. पुं.) देखें 'शूलपाणि'।

सूली–(हिं. स्त्री.) प्राण-दण्ड देने की एक प्राचीन रीति जिसमें अपराधी को नुकीले डंडे के ऊपर बैठा दिया जाता और उसके मस्तक पर प्रहार किया जाता था, शूली, फाँसी।

सूवना–(हिं. क्रि. अ.) वहना।

सूवा–(हिं. पुं.) शुक, सुग्गा।

सूस, सूसमार–(हिं. पुं.) एक प्रकार का जलजन्तु, शिशुमार।

सूहा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का लाल रंग, सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग; (वि.) लाल रंग का; **–कान्हड़ा–** (पुं.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी; **–टोड़ी–**(स्त्री.) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

सूही–(हिं.वि.स्त्री.) देखें 'सूहा'; (स्त्री.) लालिमा।

सृंखला–(हिं. स्त्री.) देखें 'शृंखला'।

सृंग–(हि. स्त्री.) देखें 'शृंग'; **–वेरपुर–** (पुं.) देखें 'शृंगवेरपुर'।

सृंगी–(हि. पुं.) देखें 'शृंगी'।

सृंजय–(सं. पुं.) मनु के एक पुत्र का नाम, वह वंश जिसमें धृष्टद्युम्न उत्पन्न हुए थे।

सृकंडु–(सं. पुं.) खुजली का रोग।

सृक–(सं. पुं.) वाण, कमल, वायु, वज्र; (हिं. स्त्री.) माला।

सृकाल–(हि. पुं.) शृगाल, सियार।

सृक्था–(सं. स्त्री.) जोंक।

सृग–(हिं. स्त्री.) माला, गजरा, हार।

सृगाल–(सं. पुं.) सियार, गीदड़, भीरु या डरपोक व्यक्ति, धूर्त; **–वदन–**(पुं.) एक असुर का नाम।

सृगालिनी, सृगाली–(सं. स्त्री.) गीदड़ी, लोमड़ी।

सृग्विनी–(हिं. स्त्री.) देखें 'स्रग्विणी'।

सृजक–(हि. पुं.) सृष्टि करनेवाला, उत्पन्न करनेवाला।

सृजन–(हिं. पुं.) सृष्टि, सर्जन।

सृजनहार–(हिं. पुं.) सृष्टिकर्ता।

सृजना–(हिं. क्रि. स.) सृष्टि करना, उत्पन्न करना।

सृज्य–(सं. वि.) सृजन करने योग्य।

सृणीका–(सं. स्त्री.) थूक, लार।

सृत–(सं. वि.) खिसका हुआ।

सृष्ट–(सं.वि.) रचित, निश्चित, संकल्प में दृढ़, अलंकृत, युक्त, उत्पन्न।

सृष्टि–(सं. स्त्री.) निर्माण, रचना, उत्पत्ति, जगत् की उत्पत्ति, प्रकृति, संसार, उदारता; **–कर्ता–**(पुं.) संसार की रचना करनेवाले ब्रह्मा, ईश्वर; **–विज्ञान–**(पुं.) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि-रचना आदि का विवेचन हो।

सेंक–(हिं.स्त्री.) सेंकने की क्रिया या भाव।

सेंकना–(हिं. क्रि. स.) आँच के समीप अथवा आग पर रखकर गरम करना, भूनना; (मुहा.) **आँख सेंकना–**सुंदर स्त्री को एक-टक देखना; **धूप सेंकना–** धूप में बैठकर शरीर को गरम करना।

सेंगर–(हिं. पुं.) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी वनती है, बवूल का फल, एक प्रकार का अगहनिया धान, क्षत्रियों की एक शाखा।

सेंगरा–(हिं. पुं.) वह मोटा डंडा जिससे रस्सियों से लटकाकर भारी पत्थर आदि एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाते हैं।

सेंठा–(हि.पुं.) मूँज के सरकंडे का निचला भाग

सेंढ़–(हिं.पुं.) एक प्रकार का खनिज पदार्थ।

सेंत–(हि. स्त्री.) किसी चीज की प्राप्ति में कुछ व्यय न होना, कुछ धन न लगना; **–का–**विना दाम का, संख्या या परिमाण में बहुत अधिक; **–में–** (अव्य.) विना कुछ दाम दिये; **–मेंत–** (अव्य.) विना दाम दिये, वृथा।

सेंति, सती–(हिं. स्त्री.) देखें 'सेंत'।

सेंथी–(हिं. स्त्री.) वरछी, भाला।

सेंदुर–(हिं. पुं.) देखें 'सिंदूर', ईगुर की वुकनी; (मुहा.)**–चढ़ना–**किसी कन्या का विवाह होना; **–देना–**विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सेंदुर भरना।

सेंदुरा–(हिं. वि.) सेंदूर के रंग का; (पुं.) सेंदुर रखने का डिब्बा।

सेंदुरिया–(हिं. पुं.) एक सदाबहार पौधा जिसमें सिन्दूर के समान लाल फूल लगते हैं; (वि.) सेंदुर के रंग का।

सेंदुरी–(हिं. स्त्री.) लाल रंग की गाय।

सेंध–(हिं. स्त्री.) चोरी करने के लिये भीत खोदकर वनाया हुआ छेद जिससे होकर चोर घर के भीतर घुसता है, सुरंग।

सेंधना–(हिं.क्रि.स.) सेंध या सुरंग लगाना।

सेंधा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का नमक जो खान से निकलता है, सैन्धव, लाहौरी नमक।

सेंधिया–(हिं. वि.) रात को सेंध लगानेवाला; (पुं.) ककड़ी की जाति की एक लता, फूट, एक प्रकार का विष, ग्वालियर का प्रसिद्ध मराठा राजवंश।

सेंधी–(हिं.स्त्री.) खजूर, खजूर की मदिरा।

सेंधुर–(हिं. पुं.) देखें 'सेंदुर', सिन्दूर।

सेंवई–(हिं. स्त्री.) मैदे के सुखाये हुए सूत के समान महीन लच्छे जो घी में तलकर तथा दूध और चीनी में पकाकर खाये जाते हैं।

सेंवर–(हिं. पुं.) देखें 'सेमल'।

सेंहा–(हिं. पुं.) कुआँ खोदनेवाला श्रमिक।

सेंहुड़–(हिं. पुं.) थूहर।

से–(हिं. विभ.) करण और अपादान कारकों का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति; (वि.) 'सा' का वहुवचन रूप, समान, सदृश; (सर्व.) वे (व्रजभापा में)।

सेउ–(हिं. पुं.) देखें 'सेव'।

सेक–(सं. पुं.) जल-सिचन, सिंचाव, छिड़काव, छींटा, अभिषेक।

सेकड़ा–(हिं. पुं.) हलवाहे की वैल हाँकने की छड़ी।

सेकपात्र, सेकभाजन–(सं. पुं.) सींचने का पात्र।
सेकित–(सं. वि.) खूब सींचा हुआ।
सेकुवा–(हिं. पुं.) लंबे डंडे का करछा।
सेक्तव्य–(सं. वि.) सींचने योग्य।
सेक्ता–(सं. पुं.) सींचनेवाला।
सेखर–(हिं. पुं.) देखें 'शेखर'।
सेचक–(सं. वि.) सींचनेवाला; (पुं.) मेघ, बादल।
सेचन–(सं. पुं.) सिंचाई, छिड़काव, मार्जन, अभिषेक।
सेचनीय–(सं. वि.) सींचने योग्य।
सेचित–(सं. वि.) सींचा हुआ।
सेच्य–(सं. वि.) सींचने योग्य।
सेज–(हिं. स्त्री.) शय्या, पलंग, बिछौना।
सेजपाल–(हिं. पुं.) राजा के शयनागार पर पहरा देनेवाला।
सेजरिया–(हिं. स्त्री.) छोटा पलंग या सेज।
सेज्या–(हिं. स्त्री.) शय्या, सेज।
सेझना–(हिं. क्रि. अ.) दूर होना, हटना।
सेटना–(हिं. क्रि. अ.) समझना, बूझना, मानना।
सेठ–(हिं. पुं.) महाजन, साहूकार, कोठीवाल, बड़ा व्यापारी, धनी मनुष्य, सुनार, खत्रियों की एक जाति, दलाल।
सेठन–(हिं. पुं.) झाड़ू, बुहारी।
सेत–(हिं. पुं.) देखें 'सेतु'; (वि.) श्वेत; **–कुली**–(पुं.) सफेद जाति का नाग; **–द्युति**–(पुं.) चन्द्रमा; **–वाह**–(पुं.) चन्द्रमा, अर्जुन; **–वाल**–(पुं.) वैश्यों की एक जाति।
सेतिका–(सं. स्त्री.) अयोध्या नगरी।
सेतु–(सं. पुं.) जल रोकने का बाँध, मेंड़, पुल, सीमा, मर्यादा, व्यवस्था, टीका, व्याख्या, प्रणव, ओंकार; **–क**–(पुं.) पुल, बाँध; **–कर**–(वि.) पुल बनानेवाला; **–प्रद**–(पुं.) कृष्ण का एक नाम; **–बंध**–(पुं.) वह पुल जो लंका पर आक्रमण करने के लिये श्री रामचन्द्र ने समुद्र पर बनवाया था; **–बंधन**–(पुं.) नदी में पुल की बँधाई; **–भेद**–(पुं.) पुल का टूटना; **–शैल**–(पुं.) सरहद का पहाड़।
सेथिया–(हिं. पुं.) नेत्रों की चिकित्सा करनेवाला।
सेद–(हिं. पुं.) देखें 'स्वेद', पसीना।
सेदज–(हिं. वि.) देखें 'स्वेदज'।
सेदरा–(हिं. पुं.) वह घर जिसमें तीन ओर द्वार हों।
सेध–(सं. पुं.) निषेध, निवारण।
सेधक–(सं. वि.) हटाने या रोकनेवाला।
सेन–(सं. पुं.) सेना, शरीर, जीवन, बंगाल के वैद्य जाति की उपाधि; (वि.) सनाथ, आश्रित, अधीन; (हिं. पुं.) बाज पक्षी; (सं. स्त्री.) 'सेना' का समासगत रूप।
सेनजित्–(सं. वि.) सेना को जीतनेवाला; (पुं.) कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सेनप–(सं. पुं.) सेनापति।
सेना–(सं. स्त्री.) युद्ध की शिक्षा पाये हुए अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित मनुष्यों का समूह, पलटन, सिपाहियों का जत्था, भाला, बरछा, इन्द्र का वज्र; (हिं. क्रि. स.) सेवा-टहल करना, आराधना करना, व्यवहार करना, लिये बैठे रहना, पड़ा रहना, चिड़ियों का अंडे पर बैठना; **–कर्म**–(पुं.) सेना का नेतृत्व; **–ग्र**–(पुं.) सेना का अगला भाग; **–जीवी**–(पुं.) सैनिक, योद्धा; **–दार**–(हिं. पुं.) सेनानायक; **–नायक**–(पुं.) सेनापति; **–पति**–(पुं.) सेनानायक, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **–पत्य**–(पुं.) सेनापति का कार्य या पद; **–पाल**–(पुं.) सेनापति; **–मुख**–(पुं.) सेना का अगला भाग; **–वास**–(पुं.) वह स्थान जहाँ सेना रहती हो, छावनी, शिविर; **–वाह**–(पुं.) सेनानायक; **–व्यूह**–(पुं.) सैन्य-विन्यास, सेना की विभिन्न स्थानों में विशेष प्रकार से नियुक्ति; **–स्थान**–(पुं.) शिविर।
सेनाधिप–(सं. पुं.) सेनापति।
सेनाध्यक्ष–(सं. पुं.) सेनापति।
सेनानी–(सं. पुं.) सेनापति, कार्तिकेय का एक नाम, एक रुद्र का नाम।
सेनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'श्रेणी'।
सेनिका–(हिं. स्त्री.) बाज पक्षी की मादा, एक छन्द का नाम।
सेब–(फा. पुं.) एक प्रसिद्ध फल तथा उसका वृक्ष।
सेमंती–(सं. स्त्री.) सफेद गुलाब।
सेम–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेमई–(हिं. पुं.) हलका हरा रंग; (वि.) हलके हरे रंग का; (स्त्री.) सेवँई।
सेमर–(हिं. पुं.) दलदल भूमि, सेमल।
सेमल–(हिं. पुं.) एक बहुत बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल होते हैं, इसके फलों या ढ़ोढ़ों में गूदा नहीं होता केवल रूई होती है।
सेमा–(हिं पुं.) बड़ी सेम।
सेर–(हिं. पुं.) सोलह छटाक या अस्सी तोले की तौल, मन का चालीसवाँ भाग, एक प्रकार धान, सिंह; (फा. वि.) तृप्त।
सेरवा–(हिं. पुं.) वह कपड़ा जो अन्न को ओसाने में हवा करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है।
सेरही–(हिं. स्त्री.) फसल की उपज पर लगनेवाला एक कर।
सेरा–(हिं. पुं.) चारपाई की पाटी जो सिरहाने की ओर रहती है।
सेराना–(हिं. क्रि. अ., स.) शीतल होना, ठंढा होना, तृप्त होना, समाप्त होना, जीवित न रहना, ठंढा करना, मूर्ति आदि का जल में प्रवाह करना।
सेराल–(सं. पुं.) हलका पीलापन।
सेरीना–(हिं. स्त्री.) अन्न या चारे का वह अंश जो कृषक भूस्वामी को देता है।
सेल–(हिं. पुं.) भाला, बरछा।
सेलखड़ी–(हिं. स्त्री.) खड़िया मिट्टी।
सेलना–(हिं. क्रि. अ.) मर जाना।
सेला–(हिं. पुं.) रेशमी चादर या दुपट्टा, साफा, भुजिया धान।
सेलिया–(हिं. पुं.) घोड़े की एक जाति।
सेलिस–(सं. पुं.) एक प्रकार का सफेद हिरन।
सेली–(हिं. स्त्री.) छोटा भाला, बरछी, छोटा दुपट्टा, गाँती, एक प्रकार की मछली, बद्धी या माला जिसको साधु गले में डाले रहते अथवा माथे पर लपेटते हैं, एक प्रकार का स्त्रियों का गहना।
सेल्ला–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अस्त्र, भाला।
सेल्ह–(हिं. पुं.) देखें 'सेल'।
सेल्हा–(हिं. पुं.) देखें 'सेला', एक प्रकार का अगहनिया धान।
सेल्ही–(हिं. स्त्री.) छोटा दुपट्टा, गाँती।
सेवँई–(हिं. स्त्री.) गूँथे हुए मैदे के सूत के समान लच्छे, जो घी में भूनकर तथा दूध और चीनी में पका कर खाये जाते हैं।
सेवँढ़ी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का धान।
सेव–(हिं. पुं.) सूत के रूप का बेसन का बना हुआ एक पक्वान्न।
सेवक–(सं. वि.) सेवा करनेवाला; (पुं.) भृत्य, भक्त, उपासक, व्यवहार करनेवाला, छोड़कर कहीं न जानेवाला, सीनेवाला, दरजी।
सेवकाई–(हिं. स्त्री.) सेवा-टहल।
सेवड़ा–(हिं. पुं.) एक प्रकार का मोटा सेव, जैन साधुओं का एक भेद।
सेवति–(हिं. स्त्री.) देखें 'स्वाति'।
सेवती–(सं. स्त्री.) गुलाब का एक भेद

जो सफेद होता है।
सेवन–(सं. पुं.) सीना, गूँथना, आराधना, पूजन, निरंतर निवास, सम्भोग, उपभोग, प्रयोग, सेवा, परिचर्या; (हिं. पुं.) साँवाँ की तरह की एक प्रकार की घास।
सेवना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सेना'।
सेवनी–(सं. स्त्री.) सूची, सूई, जोड़, टाँका, दासी।
सेवनीय–(सं. वि.) सेवा करने योग्य, पूजा के योग्य, सीने योग्य।
सेवर–(हिं. पुं.) देखें 'शवर'; (वि.) कम पका हुआ (मिट्टी का पात्र)।
सेवल–(हिं. पुं.) विवाह की एक रीति।
सेवा–(सं. स्त्री.) दूसरे को सुख पहुँचाने का काम, टहल, चाकरी, आराधना, पूजा, आश्रय, शरण, रक्षा, संभोग, मैथुन; **–में**–(हिं. अव्य.) सेवा-कार्य के लिए।
सेवा-टहल–(हिं.स्त्री.) परिचर्या, शुश्रूषा।
सेवाती–(हिं. स्त्री.) देखें 'स्वाति'।
सेवा-धर्म–(सं. पुं.) सेवा-संबंधी काम।
सेवापन–(हिं. पुं.) दासत्व, टहल।
सेवाबंदगी–(हिं.स्त्री.) आराधना, पूजा।
सेवार, सेवाल–(हिं. स्त्री.) एक तरह की पानी में फैलनेवाली घास, शैवाल।
सेवावृत्ति–(सं. स्त्री.) दासत्व।
सेवि–(सं. पुं.) बेर का फल, सेव।
सेविका–(सं. स्त्री.) सेवँई नामक पकवान, परिचारिका, दासी।
सेवित–(सं.वि.) जिसकी परिचर्या या सेवा की गई हो, आराधित, उपभोग किया हुआ, आश्रित, व्यवहार में लाया हुआ।
सेवितव्य–(सं. वि.) सेवा के योग्य, आश्रयणीय।
सेविता–(सं.स्त्री.) सेवा, दासवृत्ति; (पुं.) उपासक, उपभोग करनेवाला।
सेवी–(सं.वि.) सेवा या आराधना करनेवाला, संभोग करनेवाला।
सेव्य–(सं. पुं.) पीपल का वृक्ष, गौरैया पक्षी, जल, एक प्रकार का मद्य, स्वामी, मालिक; (वि.) आराधना करने योग्य, रक्षा करने योग्य; **–सेवक**–(पुं.) स्वामी और सेवक।
सेव्या–(सं. स्त्री.) वह पौधा जो दूसरे पेड़ों पर उगता है, बंदाल।
सेश्वर–(सं. वि.) ईश्वरयुक्त, जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो; **–सांख्य**–(पुं.) पातंजल-दर्शन।
सेप–(हिं. पुं.) देखें 'शेष'।
सेस–(हिं. पुं.) देखें 'शेष'।
सेसनाग–(हिं. पुं.) देखें 'शेषनाग'।
सेसरंग–(हिं. वि.) श्वेत रंग।
सेसर–(हिं. पुं.) ताश का एक खेल, छल, कपट।
सेसरिया–(हिं. पुं.) छल से दूसरे का धन अपहरण करनेवाला।
सेहत–(अ. स्त्री.) स्वास्थ्य, आरोग्य।
सेहथना–(हिं.क्रि.स.) झाड़ना, बुहारना।
सेहरा–(हिं. पुं.) विवाह का मुकुट, मौर, विवाह के अवसर पर वर के घर पर गाया जानेवाला गीत; (मुहा.) **किसी के सिर पर सेहरा बाँधना**–दूल्हा बनाया जाना, काम का श्रेय दिया जाना।
सेहरी–(हिं. स्त्री.) छोटी मछली, सहरी।
सेहा–(हिं. पुं.) कुआँ खोदनेवाला।
सेहिथान–(हिं. पुं.) खलिहान स्वच्छ करने का कूँचा।
सेही–(हिं. स्त्री.) साही नामक जन्तु जिसके शरीर पर बड़े-बड़े काँटे होते हैं।
सेहुँआ–(हिं. पुं.) एक प्रकार का चर्मरोग जिसमें वक्ष पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं।
सेहुँड़–(हिं. पुं.) थूहर।
सैंगर–(हिं. पुं.) बबूल की फली।
सैंतना–(हिं. क्रि. स.) संचित करना, बटोरना, हाथों से समेटना, सँभालना, सावधानी से अपनी रक्षा में रखना।
सैंतालीस–(हिं. वि.) जो संख्या में चालीस और सात हो; (पुं.) चालीस और सात की संख्या, ४७; **–वाँ**–(वि.) जिसका स्थान सैंतालीस पर हो।
सैंतीस–(हिं. वि.) जो संख्या में तीस और सात हो; (पुं.) तीस और सात की संख्या, ३७; **–वाँ**–(वि.) जिसका स्थान सैंतीस पर हो।
सैंथी–(हिं. स्त्री.) भाला।
सैंदूर–(सं. वि.) सिन्दूर के रंग का, सिंदूरी।
सैंधव–(सं. पुं.) सेंधा नमक, सिन्ध देश का घोड़ा, सिन्धु देश का राजा जयद्रथ; (वि.) सिन्धु देश में उत्पन्न, समुद्र-संबंधी।
सैंधवी–(सं. स्त्री.) संपूर्ण जाति की एक रागिनी।
सैंहल–(सं. वि.) सिंहल द्वीप-संबंधी।
सैं–(हिं. स्त्री.) तत्त्व, सार, शक्ति, लाभ, वृद्धि, बढ़ती; (वि., पुं.) शत, सौ।
सैकड़ा–(हिं. पुं.) सौ का समूह।
सैकड़े–(हिं. अव्य.) प्रतिशत।
सैकड़ों–(हिं. वि.) कई सौ।
सैकत–(सं. पुं.) बलुआ किनारा, रेतीली जमीन; (वि.) रेतीला, बलुआ।
सैकतिक–(सं. वि.) रेतीला, बलुआ।
सैका–(हिं. पुं.) घड़े के आकार का मिट्टी का बड़ा पात्र।
सैजन–(हिं. पुं.) देखें 'सहिजन'।
सैतव–(सं. वि.) सेतु-संबंधी।
सैथी–(हिं. स्त्री.) बरछी, भाला।
सैद्धांतिक–(सं. वि.) सिद्धान्त या तत्त्व-संबंधी; (पुं.) सिद्धान्त जानने या माननेवाला, तान्त्रिक।
सैन–(हिं. स्त्री.) संकेत, इंगित लक्षण, चिह्न, सेना; (पुं.) देखें 'शयन', श्येन।
सैनपति–(हिं. पुं.) सेनापति।
सैनभोग–(हिं. पुं.) वह नैवेद्य जो रात्रि के समय मन्दिरों में देवता को चढ़ाया जाता है, शयन-भोग।
सैना–(हिं. स्त्री.) सेना।
सैनानिक–(सं. वि.) सेना के अग्र-भाग से संबद्ध।
सैनापत्य–(सं. पुं.) सेनापति का पद या कार्य; (वि.) सेनापति-संबंधी।
सैनिक–(सं. पुं.) सेना का सिपाही, फौजी, संतरी; (वि.) सेना-संबंधी; **–ता**–(स्त्री.) युद्ध, लड़ाई, सैनिक का कार्य।
सैनिका–(हिं.स्त्री.) एक प्रकार का छंद।
सैनी–(हिं. पुं.) नापित।
सैनेय–(हिं. वि.) सेना के योग्य।
सैनेश–(हिं. पुं.) सेनापति।
सैनेस–(सं. पुं.) देखें 'सैनेश'।
सैन्य–(सं. पुं.) सेना, शिविर, छावनी; (वि.) सेना-संबंधी; **–नायक**–(पुं.) सेनापति; **–पृष्ठ**–(पुं.) सेना का पिछला भाग; **–वास**–(पुं.) छावनी, पड़ाव।
सैमंतिक–(सं. पुं.) सिन्दूर, सेंदुर।
सैयद–(अ. पुं.) नेता, सरदार, इमाम।
सैयाँ–(हिं. पुं.) स्वामी, पति।
सैया–(हिं. स्त्री.) देखें 'शय्या'।
सैरंध्र–(सं. पुं.) गृहदास, घर का भृत्य।
सैरंध्रिका–(सं. स्त्री.) दासी, टहलनी।
सैरंध्री–(सं. स्त्री.) अन्तःपुर में रहनेवाली दासी, द्रौपदी का एक नाम।
सैर–(अ. स्त्री.) भ्रमण।
सैरिभ–(सं. पुं.) स्वर्ग, आकाश।
सैल–(हिं. पुं.) देखें 'शैल', जल की बाढ़, स्रोत, बहाव; **–कुमारी**–(स्त्री.) देखें 'शैल-कुमारी'; **–जा–, –सुता**–(स्त्री.) देखें 'शैलजा'।
सैला–(हिं. पुं.) लकड़ी का छोटा डंडा, मेख, गुल्ली, मुँगरी, चैला, वह छोटा

डंडा जो जुए के छेद में डाला जाता है।
सैलात्मजा–(हिं.स्त्री.) शैलात्मजा, पार्वती।
सैलानी–(हिं. वि.) मनमाना घूमनेवाला, आनन्दी, मनमौजी।
सैलाव–(फा. पुं.) बाढ़।
सैलावी–(फा. वि.) बाढ़-संबंधी।
सैली–(हिं. स्त्री.) छोटा सैला, चैली।
सैव–(हिं. वि.) देखें 'शैव'।
सैवल, सैवाल–(हिं. पुं.) देखें 'शैवाल'।
सैस–(सं. वि.) सीसे का बना हुआ।
सैसव–(हिं .वि., पुं.) देखें 'शैशव'।
सों–(हिं.स्त्री .) देखें 'सौंह'; (अव्य.) सहित, साथ; (सर्व.) सो; (प्रत्य.) द्वारा, से।
सोंच–(हि. पुं.) देखें 'सोच'।
सोंचर नमक–(हिं. पुं.) काला नमक।
सोंटा–(हिं. पुं.) बाँस आदि का सुडौल तथा पतला टुकड़ा, मोटा डंडा, लाठी, भंग-घोंटना, मस्तूल वनाने की लकड़ी; **–वरदार**–(पुं.) वल्लमवरदार।
सोंठ–(हिं.स्त्री.) सुखाया हुआ अदरक, शुंठी।
सोंठौरा–(हिं. पुं.) मेवे, चीनी आदि का वना हुआ एक प्रकार का लड्डू जिसमें सोंठ डाली जाती है, (यह प्रसूता स्त्री को खिलाया जाता है।)
सोंधा–(सं. वि.) सुगन्धित, सूखी भूमि, मिट्टी के नये पात्र आदि पर पानी पड़ने से निकलनेवाली सुगन्ध के समान; (पुं.) स्त्रियों के सिर के वाल धोने का एक प्रकार का,सुगन्धित मसाला, सोंधी सुगन्ध।
सोंधिया–(हिं. पुं.) रोहिष घास।
सोंधी–(हिं.पुं.) एक प्रकार का वढ़िया धान।
सोंधु–(हिं. वि.) देखें 'सोंधा'।
सोंपना–(हिं. क्रि.स.) देखें 'सौंपना'।
सोंवनिया–(हिं. पुं.) स्त्रियों का नाक में पहनने का एक प्रकार का गहना।
सोंह–(हि.स्त्री.) देखें 'सौंह'; (अव्य.) सामने।
सो–(हिं. सर्व.) वह; (अव्य.) अतएव, इसलिये; (वि.) समान, भाँति।
सोऽहम्–(सं.) संस्कृत का एक वाक्य जिसका अर्थ है—"वही मैं हूँ", (वेदान्त के सिद्धान्त के अनुसार जीव और ब्रह्म में कोई अन्तर नहीं है और ब्रह्म संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है।)
सोऽहमस्मि–(सं.) देखें 'सोऽहम्'।
सोअना–(हिं. क्रि.अ.) देखें 'सोना', निद्रा लेना।
सोआ–(हि.पुं.) एक प्रकार का सुगन्धित शाक।
सोई–(हि.स्त्री.) वह गड्ढा जिसमें वरसात या वाढ़ का पानी भर जाता है, डावर; (सर्व.) वही; (अव्य.) इसलिए।
सोक–(हिं. पुं.) देखें 'शोक'।
सोकन–(हिं. पुं.) देखें 'सोखन'।
सोकना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'सोखना', शोक करना।
सोखता–(हिं. पुं.) देखें 'सोख्ता'।
सोखन–(हिं. वि.) सोखनेवाला; (पुं.) एक प्रकार का जंगली धान।
सोखना–(हिं. क्रि. स.) रस खींच लेना, चूस लेना, पीना।
सोखाई–(हिं. स्त्री.) सोखने की क्रिया या भाव, सोखाने का शुल्क।
सोख्ता–(हिं. पुं.) स्याहीसोख (कागज)।
सोगंद–(हिं. स्त्री.) सौगंध, शपथ।
सोगिनी–(हि.वि.स्त्री.) शोक करनेवाली, दुःखिता।
सोच–(हिं. पुं.) सोचने की क्रिया या भाव, चिन्ता, दुःख, पश्चात्ताप।
सोचना–(हि.क्रि.अ.,स.) चिन्ता करना, विचार करना, दुःख करना।
सोच-विचार–(हिं. पुं.) किसी विषय पर युक्तिसंगत रूप से मनन करना।
सोचाना–(हिं. क्रि. स.) विचार कराना, सोचने में प्रवृत्त करना।
सोचु–(हिं. पुं.) देखें 'सोच'।
सोज–(हिं. स्त्री.) सूजने की अवस्था, सूजन, शोथ।
सोजनी–(फा. स्त्री.) देखें 'सुजनी'।
सोझ, सोझा–(हिं. वि.) सरल, सीधा।
सोटा–(हिं. पुं.) देखें 'सोंटा'।
सोठ–(हिं. स्त्री.) देखें 'सोंठ'।
सोडा–(अं. पुं.) सज्जी से वना हुआ एक क्षार चूर्ण।
सोढ–(सं. वि.) सहिष्णु, सहनशील।
सोढर–(हिं. वि.) मूर्ख।
सोढव्य–(सं. वि.) सहन करने योग्य।
सोढा–(सं. वि.) क्षमाशील।
सोत–(हिं. पुं.) देखें 'स्रोत', सोता।
सोता–(हिं. पुं.) जल की निरन्तर वहनेवाली छोटी धारा, झरना, नदी की शाखा, नहर।
सोतिया–(हिं. स्त्री.) छोटा सोता।
सोती–(हिं. स्त्री.) छोटा सोता, धारा।
सोत्कंठ–(सं.वि.) उत्कण्ठा-सहित, लालसा-युक्त।
सोत्कर्ष–(सं. वि.) उन्नतिशील।
सोत्सव–(सं. वि.) उत्सव-सहित, प्रफुल्ल, प्रसन्न।
सोथ–(हि. पुं.) देखें 'शोथ'।
सोदर–(सं. वि., पुं.) सगा, सहोदर, सगा भाई।
सोदरा, सोदरी–(सं. स्त्री.) सगी वहन।
सोद्वेग–(सं. वि.) उद्वेग-युक्त, विचलित, चिन्तित।
सोध–(हिं. पुं.) ऋण चुकाने की क्रिया, खोज, टोह, पता-ठिकाना, संशोधन।
सोधक–(हिं. पुं.) शोधक, शोधनेवाला।
सोधन–(हिं. पुं.) खोजना, अनुसंधान।
सोधना–(हिं. क्रि. स.) शुद्ध करना, निर्णय करना, दोष हटाना, ठीक करना, खोजना, ऋण चुकाना, जन्म-पत्री आदि पर विचार करना, औषध के लिए सोना, पारा आदि शुद्ध करना।
सोधवाना, सोधाना–(हिं. क्रि. स.) शुद्ध कराना।
सोन–(हिं. पुं.) भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम, एक प्रकार का जलपक्षी, 'सोना' का समस्त-पद-रूप; **–कीकर**–(पुं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसका गोंद औषध में प्रयुक्त होता है; **–केला**–(पुं.) चंपा केला; **–चंपा**–(पुं.) पीले रंग का चंपा; **–चिरी**–(स्त्री.) नटी; **–जूही**–(स्त्री.) पीली जूही; **–भद्र**–(पुं.) सोन नदी।
सोनहला–(हिं. वि.) देखे 'सुनहला'।
सोनहा–(हिं. पुं.) कुत्ते की जाति का एक छोटा हिंस्र पशु।
सोना–(हिं. पुं.) पीले रंग की एक प्रसिद्ध वहुमूल्य धातु, सुवर्ण, कोई वहुमूल्य वस्तु, वहुत महँगी और अति सुंदर वस्तु, एक प्रकार का राजहंस, मझोले कद का एक पहाड़ी वृक्ष; (क्रि. अ.) नींद लेना, शयन करना; (मुहा.) **सोने का घर मिट्टी होना**–धन-वैभव का नाश होना; **सोने में घुन लगना**–कोई असंभव घटना होना; **सोने में सुगंध होना**–किसी उत्तम वस्तु में कोई अपूर्व विशेषता होना; **–गेरू**–(पुं.) अधिक लाल तथा कोमल गेरू; **–पाठा**–(पुं.) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसके फल, वीज तथा छाल औषधों में प्रयुक्त होते हैं; **–पेट**–(पुं.) सोने की खान; **–मक्खी, –माखी**–(स्त्री.) एक प्रकार का खनिज पदार्थ।
सोनार–(हिं. पुं.) देखें 'सुनार'।
सोनित–(हिं. पुं.) देखें 'शोणित', रुधिर।
सोनी–(हिं. पुं.) तुन की जाति का एक वृक्ष, स्वर्णकार, सुनार।

सोन्माद–(हिं. वि.) उन्मादयुक्त ।
सोपकरण–(सं. वि.) उपकरणयुक्त ।
सोपत–(हिं. पुं.) सुविधा, सुख का प्रबन्ध ।
सोपप्लव–(सं. पुं.) राहु-ग्रस्त (ग्रहण लगा हुआ) सूर्य और चन्द्रमा ।
सोपम–(सं. वि.) उपमायुक्त ।
सोपवास–(सं. वि.) उपवास के साथ ।
सोपहास–(सं. वि.) उपहास-युक्त ।
सोपाक–(सं. पुं.) चांडाल, वनौषधि वेचनेवाला ।
सोपाधि, सोपाधिक–(सं. वि.) उपाधियुक्त ।
सोपान–(सं. पुं.) सीढ़ी ।
सोपानित–(सं. वि.) सीढ़ियों से युक्त ।
सोपाश्रय–(सं. वि.) उपाश्रय-युक्त ।
सोपि–(सं. सर्व.) वह भी ।
सोफता–(हिं. पुं.) एकान्त या निर्जन स्थान, रोग में कमी होना ।
सोफा–(अं. पुं.) गद्दीदार आसन ।
सोभ–(हिं. स्त्री.) देखें 'शोभा' ।
सोभन–(हिं. वि., पुं.) देखें 'शोभन' ।
सोभना–(हिं. क्रि. अ.) शोभित होना, सुंदर लगना ।
सोभर–(हिं. पुं.) सूतिका-गृह, सौरी ।
सोभा–(हिं. स्त्री.) देखें 'शोभा'; **–कारी**–(वि.) सुंदर, मनोहर ।
सोभायमान–(हिं. वि.) देखें 'शोभायमान' ।
सोभित–(हिं. वि.) देखें 'शोभित' ।
सोम–(सं. पुं.) स्वर्ग, आकाश, सोमवार, चन्द्रमा, अमृत, यम, वायु, कुवेर, जल, सोम-यज्ञ, आठ वसुओं में से एक, एक वानर का नाम, सोमलता का रस, यज्ञ की सामग्री, स्त्रियों का एक रोग, एक वैदिक देवता; **–क**–(पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; **–कर**–(पुं.) चन्द्रमा की किरण; **–कांत**–(पुं.) चन्द्रकान्त मणि; **–क्रतु**–(पुं.) सोमयज्ञ ; **–क्षय**–(पुं.) अमावस्या ; **–गर्भ**–(पुं.) विष्णु ; **–ज**–(पुं.) बुध ग्रह ; **–जाजी**–(हिं. पुं.) सोम-यज्ञ करनेवाला; **–दिन**–(पुं.) चन्द्रवार; ; **–धारा**–(स्त्री.) स्वर्ग; **–नाथ**–(पुं.) जूनागढ़ राज्य का एक प्राचीन शिव-मंदिर; **–पति**–(पुं.) इन्द्र; **–पा**–(वि.) सोमपान करनेवाला; **–पान**–(पुं.) सोम पीने की क्रिया ; **–पायी**–(वि.) सोमपान करनेवाला ; **–पुत्र**–(पुं.) चन्द्रमा के पुत्र बुध ; **–प्रदोष**–(पुं.) सोमवार को पड़नेवाला प्रदोषव्रत ; **–बंधु**–(पुं.) कुमुद, सूर्य, बुध ; **–बेल**–(हिं. स्त्री.) गुलचाँदनी का पौधा; **–भवा**–(स्त्री.) नर्मदा नदी; **–भू**–(पुं.) सोमज, बुध; **–मख**–(पुं.) सोमयज्ञ; **–याग**–(पुं.) एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पिया जाता था ; **–याजी**–(पुं.) सोम-यज्ञ करनेवाला; **–योनि**–(पुं.) हरिचन्दन, पीला चन्दन ; **–रस**–(पुं.) सोमलता का रस ; **–राज**–(पुं.) चन्द्रमा ; **–०सुत**–(पुं.) चन्द्रमा का पुत्र बुध ; **–राजी**–(पुं.) बाकुची, काली जीरी, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं; **–राज्य**–(पुं.) चन्द्रलोक; **–रोग**–(पुं.) स्त्रियों का बहुमूत्र रोग; **–लोक**–(पुं.) चन्द्रलोक; **–वंश**–(पुं.) चन्द्रवंश ; **–वंशीय**–(वि.) चन्द्रवंश का; **–वती अमावस्या**–(स्त्री.) सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुण्य तिथि मानी जाती है; **–वल्लरि**–(स्त्री.) सोमलता; **–वल्ली**–(स्त्री.) सोमलता, गुडूची, ब्राह्मी, गजपीपल; **–वार**–(पुं.) चन्द्रमा का वार, चन्द्रवार ; **–वारी**–(हिं. स्त्री.) सोमवार-संबंधी ; **–वीथी**–(स्त्री.) चन्द्रमण्डल; **–व्रत**–(पुं.) सोमवार का व्रत; **–संज्ञ**–(पुं.) कपूर ; **–सार**–(पुं.) सफेद खैर; **–सिंधु**–(पुं.) विष्णु; **–सुत**–(पुं.) चन्द्रमा के पुत्र बुध ; **–सुता**–(स्त्री.) नर्मदा नदी ।
सोमा–(सं. स्त्री.) सोमलता, एक अप्सरा का नाम ।
सोमाधार–(सं. पुं.) सोम रखने का पात्र ।
सोमाभा–(सं. स्त्री.) चन्द्रमा की किरणें ।
सोमालक–(सं. पुं.) पुखराज नामक मणि ।
सोमावती–(सं. स्त्री.) चन्द्रमा की माता का नाम ।
सोमाष्टमी–(सं. स्त्री.) सोमवार को पड़नेवाली अष्टमी ।
सोमास्त्र–(सं. पुं.) चन्द्रमा का अस्त्र ।
सोमीय–(सं. वि.) सोम-संबंधी ।
सोमेश्वर–(सं. पुं.) काशी में सोम द्वारा प्रतिष्ठित शिवलिंग, संगीत-शास्त्र के प्रणेता एक प्राचीन कवि का नाम ।
सोमोद्भव–(सं. वि.) चन्द्रमा से उत्पन्न ।
सोय–(हिं. सर्व.) सो, वही ।
सोया–(हिं. पुं.) देखें 'सोआ' ।
सोर–(हिं. स्त्री.) मूल, जड़; (पुं.) शोर, कोलाहल ।
सोरठ–(हिं. पुं.) गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम, इस प्रदेश की राजधानी सूरत, एक रागिनी का नाम ; **–मल्लार**–(पुं.) संपूर्ण जाति का एक राग ।
सोरठा–(हिं. पुं.) अड़तालीस मात्राओं का एक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरणों में ग्यारह तथा दूसरे और चौथे चरणों में तेरह मात्राएँ होती हैं ।
सोरठी–(हिं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम ।
सोरन–(हिं. पुं.) सूरन ।
सोरह–(हिं. वि., पुं.) देखें 'सोलह' ।
सोर(ल)ही–(हिं. स्त्री.) सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे लोग जुआ खेलते हैं, सोलह कौड़ियों से खेला जानेवाला जुआ
सोरा–(हिं. पुं.) शोरा, मिट्टी से निकलनेवाला एक प्रकार का नमक ।
सोलंकी–(हिं. पुं.) क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश ।
सोलपोल–(हिं. वि.) व्यर्थ, निष्फल ।
सोलह–(हिं. वि.) दस और छः की संख्या का; (पुं.) दस और छः की संख्या, १६; **–वाँ**–(वि.) जिसका स्थान पन्द्रह के बाद हो; **–सिंगार**–(पुं.) स्त्रियों का पूरा सिंगार जिसके अन्तर्गत शरीर में उबटन लगाना, स्नान करना, सुंदर वस्त्र पहनना, बाल सँवारना, काजल लगाना, माँग में सेंदुर भरना, महावर लगाना, मस्तक पर तिलक लगाना, चिवुक पर टीका लगाना, मेहँदी लगाना, सुगन्ध लगाना, गहना पहनना, मिस्सी लगाना, पान खाना, ओठों को लाल करना तथा माला पहनना है ।
सोलाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सुलाना' ।
सोल्लास–(सं. वि., अव्य.) उल्लासयुक्त, आनन्दपूर्वक ।
सोवज–(हिं. पुं.) देखें 'सावज' ।
सोवड़–(हिं. पुं.) देखें 'सौरी' ।
सोवना–(हिं. क्रि. अ.) निद्रा लेना ।
सोवा–(हिं. पुं.) देखें 'सोआ' ।
सोवाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सुलाना' ।
सोवैया–(हिं. पुं.) सोनेवाला ।
सोषण–(हिं. पुं.) देखें 'शोषण' ।
सोषना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सोखना' ।
सोषु–(हिं. वि.) सोखनेवाला ।
सोहगी–(हिं. स्त्री.) विवाह-संबंध में तिलक चढ़ाने के बाद की एक रीति जिसमें वर के घर से कन्या को गहना, वस्त्र आदि भेजा जाता है, सोहाग की वस्तु ।
सोहन–(हिं. पुं., वि.) शोभन, अच्छा लगने-

वाला; -पपड़ी-(स्त्री.) एक प्रकार की मिठाई जो रेशों के जमे हुए कतरे के रूप में बनाई जाती है; -हलवा-(पुं.) एक प्रकार की मेवा आदि डालकर कतरे के रूप में जमाई हुई मिठाई।

सोहना-(हिं. क्रि. अ., स.) शोभित होना, सजना, अच्छा लगना, उपयुक्त होना, खेत में उगी हुई घास को काटकर अलग करना, निराना; (पुं.) कसेरों का एक नुकीला उपकरण।

सोहनी-(हिं. स्त्री.) झाड़ू, बुहारी, एक रागिनी का नाम, खेत की घास सोहने की क्रिया।

सोहर-(हिं. पुं.) एक प्रकार का लोक-गीत जिसको स्त्रियाँ घर में बच्चा पैदा होने पर गाती हैं; (स्त्री.) सूतिकागृह, सौरी, नाव का पाल खींचने की रस्सी।

सोहराना-(हिं. क्रि. स.) सहलाना, शरीर पर हाथ फेरना।

सोहला-(हिं. पुं.) मांगलिक गीत, सोहर।

सोहाइन-(हिं. वि.) सुहावना, सुंदर।

सोहाई-(हिं. स्त्री.) खेत में उगी हुई घास उखाड़ने या निकालने का काम, निराई, निराने का वेतन।

सोहाग-(हिं. पुं.) सुहाग, सौभाग्य।

सोहागा-(हिं. पुं.) एक प्रसिद्ध क्षार द्रव्य, सुहागा।

सोहागिन, सोहागिनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'सुहागिन'।

सोहाता-(हिं. वि.) सुहावना, अच्छा।

सोहाना-(हिं. क्रि. अ.) शोभित होना, सजना, अच्छा लगना, रुचना।

सोहाया-(हिं. वि.) शोभायमान, सुंदर।

सोहारद-(हि. पुं.) देखें 'सौहार्द'।

सोहारी-(हिं. स्त्री.) पूरी।

सोहाल-(हि. पुं.) देखें 'सुहाल'।

सोहावन-(हिं. वि.) सुंदर।

सोहावना-(हिं. वि.) सुहावना; (क्रि. अ.) देखें 'सुहाना'।

सोहासित-(हिं. वि.) रुचिर, प्रिय।

सोहिं-(हि. अव्य.) देखें 'सौंह'।

सोहिनी-(सं. वि. स्त्री.) शोभायमान, सुंदर; (स्त्री.) एक रागिनी का नाम।

सोहिल-(हिं. पुं.) अगस्त्य नामक तारा जो चन्द्रमा के पास दिखाई पड़ता है।

सोहिला-(हि. पुं.) देखें 'सोहला'।

सोहीं, सोहैं-(हि. अव्य.) सम्मुख, सामने।

सौं-(हि. स्त्री.) सौह; (अव्य.) समान, सा।

सौंधा-(हिं. वि.) अच्छा, उत्तम, उचित।

सौंधाई-(हिं. स्त्री.) अधिकता।

सौंचना-(हिं. क्रि. अ.) मल-त्याग करना, पानी से गुदा धोना।

सौंचर नमक-(हिं. पुं.) सोंचर नमक।

सौंज-(हिं. स्त्री.) देखें 'साज', सामान।

सौंड़-(हिं. पुं.) ओढ़ने का वस्त्र (कंवल आदि)।

सौंतुख-(हिं. पुं.) प्रत्यक्ष वात; (अव्य.) सम्मुख, आँख के सामने।

सौंदना-(हि. क्रि. स.) कपड़ों को रेह के पानी में भिगोना, सानना, मिलाना।

सौंदर्ज-(हिं. पुं.) देखें 'सौंदर्य'।

सौंदर्य-(सं. पुं.) सुंदरता; -ता-(हिं. स्त्री.) सौंदर्य।

सौंध-(हिं. स्त्री.) सुगन्ध।

सौंधना-(हिं. क्रि. स.) सुगन्धित करना, वासना।

सौंधा-(हिं. वि.) सोंधा, रुचिकर।

सौंनमक्खी-(हिं. स्त्री.) देखें 'सोनामक्खी'।

सौंफ-(हिं. स्त्री.) इस नाम का पौधा जिसके वीज औषधों तथा मसालों में व्यवहार किये जाते हैं।

सौंफिया, सौंफी-(हिं. स्त्री.) सौंफ की वनी हुई मदिरा।

सौंरई-(हिं. स्त्री.) साँवलापन।

सौंरना-(हिं. क्रि. अ., स.) सँवरना, याद करना।

सौंह-(हिं. पुं.) शपथ, सौगन्ध; (अव्य.) सम्मुख, सामने।

सौंहन-(हिं. पुं.) देखें 'सोहन'।

सौंही-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का अस्त्र।

सौ-(हिं. वि., पुं.) नव्वे और दस (की संख्या), १०० (मुहा.) **-की एक वात**-सर्वमान्य या उचित वात।

सौक-(हिं. स्त्री.) सपत्नी, सौत; (पुं.) शौक; (वि.) एक सौ।

सौकरायण-(सं. पुं.) व्याध, शिकारी।

सौकर्य-(सं. पुं.) सुविधा, सुभीता, सुकरता, शूकरता, सूअरपन।

सौकीन-(हिं. वि.) देखें 'शौकीन'।

सौकीनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'शौकीनी'।

सौकुमार्य-(सं. पुं.) सुकुमारता, कोमलता, यौवन, काव्य का वह गुण जिसमें कटु शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता।

सौक्रत्य-(सं. पुं.) यज्ञ, योग आदि का अनुष्ठान।

सौक्ष्म्य-(सं. पुं.) सूक्ष्म का धर्म या भाव।

सौख-(सं. पुं.) सुख का भाव या धर्म; (हिं. पुं.) शौक।

सौख्य-(सं. पुं.) सुख, आनंद।

सौख्यदायी-(सं. वि.) सुख देनेवाला।

सौगंद-(हिं. स्त्री.) शपथ।

सौगंध-(सं. पुं.) सुगन्ध; (पुं.) सुगंधित तैल, इत्र आदि; इनका व्यापारी; (हिं. स्त्री.) सौगंद।

सौगंधक-(सं. पुं.) नीला कमल।

सौगत-(सं. वि.) सुगत-संबंधी; (पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सौगम्य-(सं. पुं.) सुगमता।

सौगरिय-(हिं. पुं.) क्षत्रियों की एक जाति का नाम।

सौगात-(फा. स्त्री.) इष्ट मित्रों को देने के लिये वस्तु, भेंट।

सौगाती-(हिं. वि.) उपहार देने योग्य, उत्तम, वढ़िया।

सौघा-(हिं. वि.) कम मूल्य का।

सौच-(हिं. पुं.) देखें 'शौच'।

सौचिक-(सं. पुं.) दरजी, एक वर्णसंकर जाति।

सौज-(हिं. स्त्री.) उपकरण, सामग्री।

सौजना-(हिं. क्रि. अ.) देखें 'सजना'।

सौजन्य-(सं. पुं.) सुजनता, भलमनसी।

सौजन्यता-(हिं. पुं.) देखें 'सौजन्य'।

सौजा-(हिं. पुं.) वह पशु या पक्षी जिसका आखेट किया जाय।

सौत-(हिं. स्त्री.) किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका।

सौतिया डाह-(हिं. स्त्री.) वह ईर्ष्या जो सपत्नियों में होती है।

सौतन, सौति, सौतिन-(हिं. स्त्री.) देखें 'सौत'।

सौतुक-(हिं. अव्य.) सम्मुख, सामने।

सौतेला-(हिं. वि.) सौत से उत्पन्न, जिसका संवंध सौत से हो।

सौत्र-(सं. वि.) सूत्र-संवंधी।

सौत्रामणी-(सं. स्त्री.) एक यज्ञ जो इन्द्र के प्रीत्यर्थ किया जाता है।

सौत्रिक-(सं. पुं.) जुलाहा।

सौदर्य-(सं. पुं.) भ्रातृत्व, भाईचारा; (वि.) सगे भाई का।

सौदा-(फा. पुं.) खरीद-विक्री, वाणिज्य, मोल की वस्तु, माल।

सौदागर-(फा. पुं.) सौदा वेचनेवाला, व्यापारी।

सौदागरी-(हिं. स्त्री.) सौदागर का काम।

सौदामनी-(सं. स्त्री.) विद्युत्, विजली, एक रागिनी का नाम, एक अप्सरा का नाम।

सौदामिनी-(सं. स्त्री.) देखें 'सौदामनी'।

सौदायिक-(सं. पुं.) वह धन आदि जो स्त्री को उसके विवाह के समय उसके माता-

पिता या पति के यहाँ मिलता है,स्त्री-धन।
सौध–(सं. पुं.) भवन, चाँदी, दूधिया पत्थर; (वि.) सुधा-संबंधी।
सौधकार–(सं. पुं.) घर बनानेवाला राज।
सौधार–(सं. पुं.) नाटक के चौदह भागों में से एक।
सौधाल–(सं. पुं.) शिवालय।
सौनंद–(सं. पुं.) बलदेव का मूसल।
सौन–(सं. पुं.) कसाई।
सौनक–(हिं. पुं.) देखें 'शौनक'।
सौनन–(हिं. स्त्री.) देखें 'सौंदन'।
सौनिक–(सं. पुं.) मांस बेचनेवाला, बहेलिया।
सौपना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'सौंपना'।
सौपर्ण–(सं. पुं.) मरकत मणि, पन्ना।
सौफियाना–(हिं. वि.) सूफियों का-सा।
सौबल–(सं.पुं.) राजा सुबल के पुत्र शकुनि।
सौबली–(सं.स्त्री.) सौबल की पुत्री गांधारी।
सौबिगा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बुलबुल।
सौभ–(सं. पुं.) राजा हरिश्चन्द्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में थी, एक प्राचीन जनपद का नाम।
सौभग–(सं.पुं.) सुख, सुंदरता, आनन्द।
सौभद्र–(सं. पुं.) सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु।
सौभरि–(सं. पुं.) एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मान्धाता की पचास कन्याओं से विवाह किया था।
सौभागिनी–(हिं. स्त्री.) सधवा स्त्री, सोहागिन।
सौभाग्य–(सं. पुं.) अच्छा भाग्य, सुख, आनन्द, कुशल, क्षेम, अनुराग, सिन्दूर, सोहागा, स्त्री का सधवा होना, सुंदरता, ऐश्वर्य, शुभ-कामना, मनोहरता, सफलता; **–तृतीया**–(स्त्री.) भाद्रपद मास की शुक्ला तृतीया; **–व्रत**–(पुं.) फाल्गुन शुक्ला तृतीया तिथि का व्रत; **–वती**–(वि., स्त्री.) (वह स्त्री) जिसका पति जीवित हो, अच्छे भाग्यवाली; **–वान्**–(वि.) अच्छे भाग्यवाला, सुखी।
सौभिक्ष्य–(सं. पुं.) खाद्य पदार्थों की प्रचुरता का समय।
सौम–(सं. वि.) चन्द्रमा-संबंधी।
सौमन–(सं. पुं.) एक प्रकार का अस्त्र।
सौमनस–(सं.वि.) सुमन-संबंधी, मनोहर; (पुं.) प्रफुल्लता, अनुग्रह, कृपा, एक अस्त्र-संहार।
सौमनसा–(सं स्त्री.) जावित्री।
सौमनस्य–(सं. पुं.) श्राद्ध में ब्राह्मण के हाथ में फूल देना, आनन्द।
सौमित्र–(सं. पुं.) सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण।
सौमित्रा–(हिं. स्त्री.) देखें 'सुमित्रा'।
सौमुख्य–(सं. पुं.) प्रसन्नता।
सौम्य–(सं. पुं.) बुध ग्रह, विप्र, ब्राह्मण, सोम यज्ञ, पित्त, अगहन का महीना, साठ संवत्सरों में से एक, सुशीलता, मृगशिरा नक्षत्र, हथेली का मध्य भाग; (वि.) उज्ज्वल, सुंदर, प्रसन्न, शुभ, उत्तर की ओर का, शान्त, चन्द्र-संबंधी; **–गंधा**–(स्त्री.) सेवती; **–ता**–(स्त्री.) शीतलता, ठंढक, उत्तमता, सुंदरता; **–दर्शन**–(वि.) जो देखने में सुंदर हो; **–वार**–(पुं.) बुधवार; **–शिखा**–(स्त्री.) विषम वृत्त के दो भेदों में से एक।
सौम्या–(सं. स्त्री.) दुर्गा, रुद्रजटा, बड़ी मालकँगनी, घुँघची, ब्राह्मी, मोती, मृगशिरा नक्षत्र, आर्या छन्द का एक भेद।
सौर–(सं. पुं.) सूर्य के पुत्र शनि, बीसवें कल्प का नाम, धनिया, सूर्योपासक, सूर्य का भक्त; (वि.) सूर्य-संबंधी, सूर्य से उत्पन्न।
सौरज–(सं. पुं.) धनिया।
सौरठवाल–(हिं. पुं.) वैश्यों की एक जाति।
सौरत–(सं. वि.) सुरत या रति-क्रीड़ा-संबंधी।
सौर-दिवस–(सं. पुं.) एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय, साठ दंडों का काल।
सौरभ–(सं. पुं.) सुगन्ध, केशर, धनिया, एक प्रकार का बढ़िया आम; (वि.) सुगन्धयुक्त, खुशबूदार।
सौरभक–(सं. पुं.) एक प्रकार का छंद।
सौरभित–(सं. वि.) महकनेवाला, सौरभ-युक्त।
सौरभेय–(सं. पुं.) वृष, साँड़।
सौरभेयी–(सं. स्त्री.) गाय, एक अप्सरा का नाम।
सौरभ्य–(सं. पुं.) सुगंध, कीर्ति, प्रसिद्धि, कुबेर।
सौर-मास–(सं. पुं.) वह महीना जो सूर्य के किसी राशि में रहने तक माना जाता है, एक संक्राति से दूसरी संक्रांति तक का समय।
सौर-वर्ष, सौर-संवत्सर–(सं. पुं.) उतना काल जितना सूर्य के मेषादि बारह राशियों पर घूम आने में लगता है।
सौरसेन–(हिं. पुं.) देखें 'शौरसेन'।
सौरसेय–(सं. पुं.) स्कन्द, कार्तिकेय।
सौराटी–(सं. स्त्री.) एक रागिनी का नाम।
सौराष्ट्र–(सं. पुं.) काठियावाड़ का प्राचीन नाम, काँसा, एक वर्णवृत्त का नाम; **–क**–(पुं.) सौराष्ट्र का रहनेवाला; **–मृत्तिका**–(स्त्री.) गोपीचंदन।
सौराष्ट्रिक–(सं. वि.) सौराष्ट्र-संबंधी।
सौरास्त्र–(सं. पुं.) एक प्रकार का दिव्यास्त्र।
सौरि–(सं. पुं.) शनि, हुरहुर का पौधा।
सौरिक–(सं. वि.) स्वर्गीय, मद्य-संबंधी।
सौरिरत्न–(सं. पुं.) नीलम।
सौरी–(हिं. स्त्री.) वह कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जनती है, प्रसूतिका गृह; (सं. स्त्री.) सूर्य की पत्नी, गाय।
सौरेय–(सं. पुं.) सफेद कटसरैया।
सौर्य–(सं. वि.) सूर्य-संबंधी; (पुं.) सूर्य का पुत्र।
सौलभ्य–(सं. पुं.) सुलभता।
सौवर्चल–(सं. पुं.) सोंचर नमक, सज्जी मिट्टी।
सौवर्ण–(सं. वि.) सुवर्ण-संबंधी; (पुं.) सोने का अलंकार।
सौविद–(सं. पुं.) अन्तःपुर का रक्षक, कंचुकी।
सौवीर–(सं. पुं.) सिन्धु नद के पास का एक प्राचीन देश, बेर का फल, रसांजन, सुरमा।
सौवीरांजन–(सं. पुं.) सुरमा।
सौवीरा–(सं. स्त्री.) संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना।
सौशील्य–(सं. पुं.) शुद्ध स्वभाव, साधुता।
सौश्रिय–(सं. पुं.) ऐश्वर्य, विभव।
सौष्ठव–(सं. पुं.) उपयुक्तता, सुडौलपन, सुंदरता, शरीर की एक मुद्रा, नाटक का एक अंग।
सौसन–(फा. पुं.) एक फूल।
सौसनी–(फा. पुं.) सौसन के रंग का, लाली लिये नीला।
सौस्वर्य–(सं. पं.) सुस्वरता, सुरीलापन।
सौहँ–(हिं. स्त्री.) शपथ; (अव्य.) सम्मुख, सामने, आगे।
सौहर–(हिं. पुं.) पति।
सौहाद–(सं. पुं.) देखें 'सौहार्द'।
सौहार्द–(सं. पुं.) मित्रता, मत्री।
सौहित्य–(सं. पुं.) तृप्ति, सन्तोष, पूर्णता।
सौहीं–(फा. स्त्री.) एक प्रकार की रेती; (अव्य.) सामने, आगे।
सौहृद–(सं. पुं.) मित्रता, मित्र; (वि.) मित्र-संबंधी।
स्कंद–(सं.पुं.) कार्तिकेय, कुमार, शरीर, राजा, उछलना, पारद, नटी, तट, महादेव, पण्डित, बाल-रोग, विनाश, ध्वंस; **–क**–(पुं.) सैनिक, एक प्रकार का छन्द;

-गुप्त-(पुं.) गुप्त वंश के एक प्रसिद्ध प्राचीन सम्राट्,(इनका शासन-काल ईस्वी सन् ४५० से ४६७ तक माना जाता है); -जननी-(स्त्री.) पार्वती; -जित्-(पुं.) विष्णु का एक नाम; -पुराण-(पुं.) अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण का नाम; -फला- (स्त्री.) खजूर; -माता-(स्त्री.) दुर्गा; -षष्ठी-(स्त्री.) चैत्र शुक्ला षष्ठी।

स्कंदन-(सं.पुं.) कोठा स्वच्छ होना, रेचन, गमन, शोषण।

स्कंदित-(सं. वि.) पतित, गिरा हुआ।

स्कंदी-(सं. वि.) उछलने-कूदनेवाला।

स्कंध-(सं. पुं.) कंधा, मोटे वृक्ष का तना, शाखा, समूह, राजा, सेना का अंग, ग्रन्थ का कोई खण्ड, मार्ग, भंडार, शरीर, युद्ध, आचार्य, सन्धि, आर्या छन्द का एक भेद, दर्शन-शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध-ये पाँच तत्त्व; -चाप-(पुं.) वहँगी जिसपर बोझ ढोते हैं; -तरु-(पुं.) नारियल का वृक्ष; -देश- (पुं.) हाथी की गरदन, कंधा; -पथ-(पुं.) पगडंडी; -फल- (स्त्री.) खजूर; -रुह-(पुं.) वट-वृक्ष; -वाह-(पुं.) वह पशु जो कंधे के बल बोझ ढोता हो; -शृंग- (पुं.) भैंसा।

स्कंधावार-(सं. पुं.) सेना, छावनी, शिविर।

स्कंभ-(सं. पुं.) स्तम्भ, खंभा।

स्कूल-(अं. पुं.) विद्यालय।

स्कूली-(हिं. वि.) स्कूल-संबंधी।

स्क्रू-(अं. पुं.) वह कील जो घुमाकर लोहे, लकड़ी आदि में जड़ी जाती है।

स्खलन-(सं. पुं.) पतन, गिरना।

स्खलित-(सं. वि.) गिरा हुआ, विचलित, फिसला हुआ, सरका हुआ, लड़खड़ाया हुआ, क्षरित, टपका हुआ।

स्टेशन-(अं. पुं.) रेलगाड़ी का पड़ाव या विराम-स्थल।

स्तंब-(सं. पुं.) गुल्म, घास की आँटी।

स्तंबक-(सं. पुं.) गुच्छा।

स्तंबकार-(सं. पुं.) गुच्छा बनानेवाला।

स्तंबहनन-(सं. पुं.) घास करने की खुरपी।

स्तंबी-(सं. स्त्री.) घास करने की खुरपी।

स्तंभ-(सं. पुं.) खंभा, थूनी, प्रतिबन्ध, रुकावट, जड़ता, पेड़ का तना, अभिमान, काव्य के सात्त्विक भावों में से एक।

स्तंभक-(सं. वि.) रोकनेवाला; (पुं.) खंभा, थूनी।

स्तंभकर-(सं. वि.) रोकनेवाला।

स्तंभता-(सं. स्त्री.) जड़ता।

स्तंभन-(सं. पुं.) अवरोध, रुकावट, स्थिरीकरण, वीर्य आदि के स्खलन में विलंब, शीघ्र वीर्यपात रोकने की औषध, जड़ीकरण, किसी की चेष्टा या शक्ति को रोकने की तान्त्रिक विधि, मल का अवरोध, कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

स्तंभनी-(सं. स्त्री.) एक प्रकार का इन्द्रजाल।

स्तंभनीय-(सं. वि.) स्तंभन करने योग्य।

स्तंभनवृत्ति-(सं. स्त्री.) प्राणायाम में साँस रोकने का कार्य।

स्तंभिका-(सं. स्त्री.) छोटा खंभा, खँभिया।

स्तंभित-(सं. वि.) जड़ीभूत, निश्चल, स्थिर, निवारित, रोका हुआ।

स्तंभिनी-(सं. स्त्री.) योग के अनुसार चित्त-वृत्तियों में से एक।

स्तंभी-(सं. वि.) रोकनेवाला।

स्तन-(सं. पुं.) स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है, कुच; -दात्री-(स्त्री.) छाती का दूध पिलानेवाली; -पान-(पुं.) स्तन का दूध पीना या पिलाना; -पायी-(वि.) जो माता के स्तन का दूध पीता हो; -मुख-(पुं.) स्तन का अग्र-भाग, चूँची।

स्तनित-(सं. वि.) ध्वनित, गर्जन करता हुआ।

स्तन्यप-(सं. पुं.) दूध पीनेवाला बच्चा।

स्तब्ध-(सं. वि.) स्तंभित, स्थिर, दृढ़, मंद, धीमा, अभिमानी, हठी, मूर्च्छित, गतिहीन; -कर्ण-(वि.) बहरा; -ता-(स्त्री.) स्थिरता, दृढ़ता, जड़ता; -पाद-(वि.) जिसके पैर जकड़ गये हों; -मति-(वि.) मंदबुद्धि।

स्तर-(सं. पुं.) सतह, तह, परत, शय्या, सेज, भूगर्भ-शास्त्र के अनुसार विभिन्न कालों में बनी हुई भूमि की परतें।

स्तरण-(सं. पुं.) फैलाने की क्रिया, बिछाना, स्तर बनना।

स्तरणीय-(सं. वि.) फैलाने योग्य।

स्तरु-(सं. पुं.) वैरी, शत्रु।

स्तर्य-(सं. पुं.) फैलाने या बिखेरने योग्य।

स्तव-(सं.पुं.) प्रशंसा, स्तोत्र, स्तुति, गाना।

स्तवक-(सं. पुं.) फूलों का गुच्छा, स्तोत्र, ढेर, समूह, पुस्तक का अध्याय, परिच्छेद।

स्तवन-(सं. पुं.) स्तुति।

स्तवनीय-(सं. वि.) स्तुति करने योग्य।

स्तवरक-(सं. पुं.) वेष्टन, घेरा।

स्तवितव्य-(सं. वि.) प्रशंसा के योग्य, स्तवनीय।

स्तविता-(सं. वि.) स्तुति करनेवाला।

स्तवेय्य-(सं. पुं.) इन्द्र।

स्तव्य-(सं. वि.) स्तुति करने योग्य।

स्ताव-(सं. पुं.) गुणगान।

स्तावक-(सं. वि.) गुणगान करनेवाला।

स्ताव्य-(सं. वि.) प्रशंसा के योग्य।

स्तिमित-(सं. वि.) निश्चल, स्थिर, सन्तुष्ट, प्रसन्न, भीगा; (पुं.) आर्द्रता।

स्तीर्ण-(सं. वि.) विस्तीर्ण, फैलाया हुआ।

स्तुत-(सं. वि.) प्रशंसित, स्तुति किया हुआ, कीर्तित; (पुं.) स्तुति, प्रशंसा।

स्तुति-(सं. स्त्री.) गुणकीर्तन, प्रशंसा; -पाठक-(पुं.) चारण, भाट; -वाद-(पुं.) गुणगान; -वादक-(वि.) प्रशंसा करनेवाला, प्रशंसक, खुशामदी; -व्रत-(पुं.) स्तुति-पाठक।

स्तुत्य-(सं. वि.) प्रशंसनीय, स्तुति के योग्य

स्तुत्या-(सं. स्त्री.) गोपीचन्दन।

स्तुभक-(सं. पुं.) छाग, बकरा।

स्तूप-(सं. पुं.) मिट्टी आदि का ढेर, ऊँचा ढूह या टीला, छाजन में लगी हुई सब से बड़ी धरन, चिता, ईंट-पत्थर आदि का बना हुआ वह ऊँचा टीला जिसके नीचे बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की हड्डी आदि गाड़कर रखी गई हो।

स्तेन-(सं. पुं.) चोर, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।

स्तेम-(सं. पुं.) गीलापन।

स्तेय-(सं. पुं.) चौर्य, चोरी।

स्तेयी-(सं. पुं.) सुनार, चूहा।

स्तोक-(सं. पुं.) चातक, पपीहा, बूँद; (वि.) थोड़ा, कम।

स्तोतव्य-(सं. वि.) स्तुति के योग्य।

स्तोता-(सं. पुं., वि.) स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र-(सं. पुं.) कविता के रूप में किसी देवता का वर्णन, स्तुति।

स्तोत्रीय-(सं. वि.) स्तोत्र-संबंधी।

स्तोभ-(सं. पुं.) सामवेद का एक अंग।

स्तोम्य-(सं. पुं.) मस्तक, थन, अन्न, लोहे का नुकीला डंडा, समूह, राशि, स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ करनेवाला, एक प्रकार की ईंट।

स्तोम्य-(सं. वि.) प्रार्थना करने योग्य।

स्त्यन-(सं. पुं.) घनत्व, अमृत; (वि.) कड़ा, घना, चिकना।

स्त्येन-(सं. पुं.) चोर।

स्त्री-(सं. स्त्री.) नारी, पत्नी, प्रियंगु लता, एक वृत्त का नाम; -करण-(पुं.) संभोग, मैथुन; -काम-(वि.) स्त्री की कामना करनेवाला; -कोश-

(पुं.) खड्ग, तलवार; –क्षीर–(पुं.) स्त्री के स्तन का दूध; –गमन–(पुं.) संभोग, मैथुन; –गवी–(स्त्री.) धेनु, गाय; –गुरु–(स्त्री.) दीक्षा देनेवाली स्त्री; –घातक–(वि.,पुं.) स्त्री की हत्या करनेवाला; –चंचल–(वि.) कामी, लंपट; –चौर–(पुं.) स्त्री को चुरानेवाला; –जननी–(स्त्री.) वह स्त्री जो केवल कन्या उत्पन्न करती है; –जित्–(वि.) स्त्री के वशीभूत; –त्व–(पुं.) स्त्री का धर्म; –धन–(पुं.) वह सम्पत्ति या धन जिस पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो; –धर्म–(पुं.) आर्तव, स्त्री का रजस्वला होना, मैथुन, स्त्रियों का शुभ कर्म; –धर्मिणी–(स्त्री.) रजस्वला स्त्री; –धूर्त–(पुं.) स्त्रियों को छलनेवाला पुरुष; –ध्वज–(स्त्री.) जिसमें स्त्रियों के चिह्न हों; –निबंधन–(पुं.) गृहस्थी का कार्य जो स्त्रियाँ करती हैं; –पर–(पुं.) कामी, लंपट; –पुर–(पुं.) अन्तःपुर; –पुष्प–(पुं.) आर्तव; –प्रसंग–(पुं.) संभोग, मैथुन; –प्रिय–(पुं.) आम का पेड़, अशोक; –भूषण–(पुं.) केतकी, केवड़ा; –मंत्र–(पुं.) वह मन्त्र जिसके अन्त में स्वाहा शब्द हो, स्त्री की राय; –रंजन–(पुं.) तांबूल; –रत्न–(पुं.) उत्तम नारी, लक्ष्मी; –राज्य–(पुं.) वह देश जहाँ स्त्रियों का राज्य हो; –रोग–(पुं.) स्त्रियों का योनिसंबंधी रोग; –लंपट–(वि.) विषयी, कामी; –लिंग–(पुं.) व्याकरण में स्त्रीवाचक शब्द, भग, योनि; –व्रत–(पुं.) अपनी पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना; –संग–(पुं.) स्त्री-समागम; –संग्रहण–(पुं.) व्यभिचार, बलात्कार; –संसर्ग–(पुं.) मैथुन; –संभोग–(पुं.) मैथुन; –सेवा–(स्त्री.) मैथुन; –स्वभाव–(पुं.) अन्तःपुर का रक्षक; –हत्या–(स्त्री.) स्त्री का वध।

स्त्रैण–(सं.वि.) स्त्री-संबंधी, स्त्री के योग्य।

स्थंडिल–(सं. पुं.) यज्ञ के लिये स्वच्छ की हुई भूमि, मिट्टी का ढेर, सीमा।

स्थ–(सं.प्रत्य.) उपस्थित, स्थित, (इन अर्थों में यह शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है।)

स्थकित–(सं. वि.) शिथिल, थका हुआ।

स्थग–(सं. पुं.) धूर्त, छली।

स्थगन–(सं.पुं.) स्थगित करना, गोपन।

स्थगित–(सं. वि.) गुप्त, छिपा हुआ, रोका हुआ, मुलतवी किया हुआ।

स्थगु–(सं. पुं.) पीठ पर का कूबड़।

स्थपति–(सं. पुं.) राजा, शासक, अन्तःपुर का रक्षक, भवन-निर्माण कला में निपुण, रथ हाँकनेवाला।

स्थपनी–(सं. स्त्री.) दोनों भौंहों के बीच का स्थान।

स्थपुट–(सं. वि.) कुब्ज, कुबड़ा; (पुं.) कूबड़।

स्थल–(सं. पुं.) भूभाग, भूमि, स्थान, जगह, अवसर, पुस्तक का विशिष्ट अंश या परिच्छेद; –कंद–(पुं.) जमीकंद; –कमल–(पुं.) कमल के आकार का एक फूल जो भूमि पर होता है; –काली–(स्त्री.) दुर्गा की एक सहचरी का नाम; –कुमुद–(पुं.) कनेर; –ग–(वि.) भूमि पर रहनेवाला; –चर–(वि.) स्थल पर रहने या विचरनेवाला; –चारी–(वि.) स्थलचर; –ज–(वि.) भूमि से उत्पन्न; –नीरज–(पुं.) स्थल-कमल; –पथ–(पुं.) सड़क, मार्ग; –पद्म–(पुं.) शतपत्र, तमालक, स्थल-कमल; –पिंडा–(स्त्री.) पिंडखजूर; –मंजरी–(स्त्री.) अपामार्ग, लटजीरा; –मर्कट–(पुं.) करौंदा; –युद्ध–(पुं.) भूमि पर होनेवाली लड़ाई; –विहंग–(पुं.) भूमि पर विचरनेवाला पक्षी; –शृंगाट–(पुं.) गोखरू।

स्थलारविंद–(सं. पुं.) स्थल-कमल।

स्थली–(सं. स्त्री.) जलशून्य भूमि, ऊँची-नीची भूमि, स्थान।

स्थलीय–(सं. वि.) स्थानीय, स्थल-संबंधी।

स्थलेरुहा–(सं. स्त्री.) घृतकुमारी, घीकुआर।

स्थलेशय–(सं. पुं.) कुरंग, हरिन।

स्थवि–(सं. पुं.) तन्तुवाय, जुलाहा, स्वर्ग, अग्नि।

स्थविर–(सं. पुं.) ब्रह्मा, वृद्ध (व्यक्ति), बुड्ढा, भिक्षुक, कदम्ब; (वि.) अचल, वृद्ध।

स्थविरा–(सं. स्त्री.) बुड्ढी स्त्री।

स्थविष्ठ–(सं.वि.) बहुत स्थूल या मोटा

स्थाई–(हिं. वि.) देखें 'स्थायी'।

स्थाणु–(सं. पुं.) शिव, महादेव, ब्रह्मा, एक प्रकार का अस्त्र, वृक्ष का तना, खंभा, थूनी; –तीर्थ–(पुं.) थानेश्वर नामक तीर्थ; –रोग–(पुं.) घोड़ों का एक प्रकार का रोग।

स्थातव्य–(सं.वि.) ठहरने या रहने योग्य।

स्थान–(सं. पुं.) स्थिति, ठहराव, टिकाव, ठौर, भूमि-भाग, मैदान, वेदी, डेरा, पद, राज्य, देश, देवालय, गढ़, अवसर, अवस्था, कारण, नियुक्ति का पद, किसी ग्रन्थ का परिच्छेद; –क–(पुं.) नगर, पेड़ का थाला, नाचने में एक प्रकार की मुद्रा; –चंचला–(स्त्री.) बनतुलसी; –चिंतक–(पुं.) सेना के पड़ाव का प्रबन्ध करनेवाला; –च्युत–(वि.) अपने स्थान से गिरा हुआ, अपने पद से हटाया हुआ; –त्याग–(पुं.) स्थान का छोड़ देना; –पाल–(पुं.) स्थान विशेष का रक्षक; –भंग–(पुं.) देखें 'स्थानच्युति'; –भूमि–(स्त्री.) रहने का ठौर; –भ्रष्ट–(वि.) स्थानच्युत; –मृग–(पुं.) मगर, कछुआ; –विद्–(वि.) स्थान का जानकार; –स्थ–(वि.) जो अपने स्थान पर स्थिर हो।

स्थानांतर–(सं. पुं.) दूसरा स्थान।

स्थानांतरित–(सं. वि.) एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर किया हुआ या नियुक्त।

स्थानाध्यक्ष–(सं. पुं.) किसी स्थान का रक्षक।

स्थानापन्न–(सं. वि.) दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला।

स्थानिक–(सं. वि.) स्थानीय; (पुं.) स्थान का रक्षक, मन्दिर का प्रबंधक।

स्थानी–(सं. वि.) उपयुक्त, उचित, स्थायी, ठहरनेवाला।

स्थानीय–(सं. वि.) स्थानस्थ, स्थानसंबंधी, स्थान के योग्य।

स्थानेश्वर–(सं. पुं.) कुरुक्षेत्र का थानेश्वर नामक स्थान।

स्थापक–(सं. वि.) स्थापित करनेवाला, संस्थापक; (पुं.) देवमूर्ति बनानेवाला, गिरवी रखनेवाला, सूत्रधार का सहकारी।

स्थापत्य–(सं. पुं.) अन्तःपुर का रक्षक, भवननिर्माण, वास्तु-कला; –वेद–(पुं.) चार उपवेदों में से एक।

स्थापन–(सं. पुं.) प्रतिपादन, निरूपण, रक्षा का उपाय, रोकने की विधि, नया काम आरंभ करना, खड़ा करना, बैठाना, जमाना, स्थापित करना (संस्था आदि), सिद्ध करना, समाधि।

स्थापना–(सं. स्त्री.) स्थापन, प्रतिष्ठित करना, बैठाना, सिद्ध करना।

स्थापनिक–(सं.वि.) स्थापित किया हुआ।

स्थापनीय–(सं.वि.) स्थापित करने योग्य।

स्थापित–(सं. वि.) जिसकी स्थापना की गई हो, निर्दिष्ट, व्यवस्थित, निश्चित, प्रतिष्ठित, रक्षित।

स्थाय–(सं. पुं.) आधार, पात्र।
स्थायिता, स्थायित्व–(सं. स्त्री., पुं.) स्थायी होने का भाव, स्थिरता, दृढ़ता, टिकाव, ठहराव।
स्थायी–(सं. वि.) स्थिर रहनेवाला, ठहरनेवाला, टिकनेवाला, विश्वस्त; (पुं.) साहित्य में वह भाव जिसकी स्थिति सर्वदा मन में बनी रहती है; –**भाव**–(पुं.) साहित्य के भाव जो संख्या में नौ हैं, यथा–रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निन्दा, विस्मय और निर्वेद; –**समिति**–(स्त्री.) कुछ निर्दिष्ट काल तक किसी सभा का संचालन करनेवाली कार्यकारिणी सभा।
स्थाल–(सं. पुं.) थाल, परात, थाली।
स्थालक–(सं. पुं.) पीठ की रीढ़।
स्थाली–(सं. स्त्री.) मिट्टी की कटोरी, हँड़िया; –**पाक**–(पुं.) आहुति के लिये दूध में पकाया हुआ चावल या जौ; –**पुलाक-न्याय**–(पुं.) समान स्थिति में रहनेवाली वस्तुओं में से एक की परीक्षा करके अन्य वस्तुओं की स्थिति आदि का अनुमान कर लेने की क्रिया; –**वृक्ष**–(पुं.) अश्वत्थ, पीपल।
स्थावर–(सं. पुं.) पर्वत, धनुष की डोरी, अचल सम्पत्ति; (वि.) एक ही स्थान में रहनेवाला, स्थायी; –**राज**–(पुं.) हिमालय; –**विष**–(पुं.) स्थावर पदार्थों में होनेवाला विष।
स्थाविर–(सं. पुं.) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
स्थित–(सं. वि.) ठहरा हुआ, टिका हुआ, रहनेवाला, विद्यमान, बसा हुआ, लगा हुआ, निश्चल, स्थिर, खड़ा हुआ, अपनी प्रतिज्ञा पर अटल; –**धी**–(वि.) जिसका चित्त या बुद्धि सर्वदा स्थिर रहे; –**प्रज्ञ**–(वि.) समस्त विकारों से रहित, आत्मसन्तोषी।
स्थिति–(सं. स्त्री.) ढंग, पद, अस्तित्व, आकृति, स्थिरता, संयोग, ठहरने का स्थान, निवृत्ति, नियम, पालन, सीमा, मर्यादा, निवास, अवस्था, दशा; –**स्थापक**–(पुं.) किसी वस्तु का अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त करना, लचीलापन; (वि.) लचीला, सहज में झुकनेवाला; –०**ता**–(स्त्री.) लचीलापन।
स्थिर–(सं. पुं.) वृक्ष, पर्वत, मोक्ष, ज्योतिष में एक योग का नाम, साँड़, स्कन्द का एक अनुचर, एक प्रकार का छन्द; (वि.) निश्चल, गतिहीन, दृढ़, अचल, शान्त, स्थायी, निश्चित; –**कर्मा**–(वि.) दृढ़ता से काम करनेवाला; –**गंध**–(पुं.) चम्पा; –**चित्त**–(वि.) जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो; –**च्छद**–(पुं.) भोजपत्र; –**च्छाय**–(वि.) छायाप्रद वृक्ष; –**जिह्व**–(पुं.) मछली; –**जीविता**–(स्त्री.) सेमल का वृक्ष; –**जीवी**–(वि.) दीर्घायु; –**ता**–(स्त्री.), –**त्व**–(पुं.) दृढ़ता, धैर्य; –**दंष्ट्र**–(पुं.) सर्प; –**पत्र**–(पुं.) हिंताल वृक्ष; –**पुष्प**–(पुं.) चम्पा का वृक्ष; –**फला**–(स्त्री.) कूष्मांड की लता; –**बुद्धि**–(वि.) दृढ़चित्त, जिसका मन स्थिर हो; –**मति**–(स्त्री.) स्थिर-बुद्धि; –**मद**–(पुं.) मयूर, मोर; –**यौवन**–(पुं.) विद्याधर; –**राग**–(पुं.) दृढ़ प्रेम; –**वाच्**–(वि.) सत्यप्रतिज्ञ; –**श्री**–(वि.) जिसकी सम्पत्ति स्थायी हो।
स्थिरा–(सं. स्त्री.) पृथ्वी, दृढ़ चित्तवाली स्त्री।
स्थिरायु–(सं. पुं.) चिरंजीवी, दीर्घजीवी।
स्थूण–(सं. पुं.) एक यक्ष का नाम।
स्थूणा–(सं. स्त्री.) खंभा, थूनी, वृक्ष-स्तम्भ, निहाई।
स्थूल–(सं. वि.) असूक्ष्म, मोटा, मूर्ख, जिसका तल समान न हो; (पुं.) कटहल, शिव के एक गण का नाम; –**कंद**–(पुं.) सूरन, ओल; –**कणा**–(स्त्री.) मँगरैला; –**चाप**–(पुं.) रूई धुनने की धुनकी; –**ता**–(स्त्री.), –**त्व**–(पुं.) मोटापन, भारीपन, मूर्खता, असूक्ष्मता; –**ताल**–(पुं.) हिंताल; –**दर्भा**–(स्त्री.) मूँज नामक घास; –**दर्शक**–(पुं.) जिस यन्त्र की सहायता से सूक्ष्म वस्तु बड़ी दिखाई पड़ती है; –**दला**–(स्त्री.) घीकुआर; –**नाल**–(पुं.) बड़ा नरकट; –**नास**–(पुं.) शूकर, सूअर; –**नासिक**–(वि.) जिसकी नाक बड़ी और मोटी हो; (पुं.) सूअर; –**पट**–(पुं.) मोटा कपड़ा; –**पत्र**–(पुं.) दमनक, दौना; –**पाद**–(पुं.) फीलपाँव रोग से ग्रस्त; –**पुष्प**–(पुं.) अगस्त्य का वृक्ष; –**फला**–(स्त्री.) शाल्मली; –**भाव**–(पुं.) असूक्ष्म भाव; –**मंजरी**–(स्त्री.) अपामार्ग, चिचड़ा; –**मरिच**–(पुं.) शीतलचीनी; –**मुख**–(वि.) चौड़े मुखवाला; –**मूल**–(पुं.) बड़ी मूली; –**रोग**–(पुं.) अधिक मोटा होने का रोग; –**लक्ष**–(वि., पुं.) बड़ा दानी, विद्वान्, पण्डित; –**लक्षिता**–(स्त्री.) दानशीलता, पाण्डित्य; –**वृक्ष**–(पुं.) मौलसिरी का पेड़; –**शाटक**–(पुं.) मोटा कपड़ा; –**शालि**–(पुं.) एक प्रकार का मोटा चावल; –**शिंबी**–(स्त्री.) सफेद सेम; –**शिर**–(वि.) बड़े मस्तक-वाला; –**स्कंध**–(पुं.) बड़हर; –**हस्त**–(पुं.) हाथी की सूँड़।
स्थूलांग–(सं. वि.) मोटे शरीरवाला।
स्थूलांत्र–(सं. पुं.) बड़ी आँत।
स्थूला–(सं. स्त्री.) गजपीपल, बड़ी इलायची।
स्थूलाक्ष–(सं. पुं.) खर का साथी एक राक्षस।
स्थूलास्य–(सं. पुं.) सर्प, साँप; (वि.) बड़े मुँहवाला।
स्थैर्य–(सं. पुं.) स्थिर होने का भाव, स्थिरता।
स्थौल्य–(सं. पुं.) स्थूल होने का भाव, स्थूलता।
स्नपन–(सं. पुं.) नहाने की क्रिया।
स्नपित–(सं. वि.) नहाया हुआ।
स्नात–(सं. वि.) जिसने स्नान किया हो, नहाया हुआ; (पुं.) स्नातक।
स्नातक–(सं. पुं.) वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत के समाप्त होने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो; किसी विश्वविद्यालय की शिक्षा-समाप्ति के बाद उपाधि से मंडित व्यक्ति।
स्नातव्य–(सं. वि.) नहाने योग्य।
स्नान–(सं. पुं.) शरीर को स्वच्छ तथा शिथिलता दूर करने के लिये इसे जल से धोना, मूर्ति को जल से धोना, अवगाहन; –**कलश**–(पुं.) वह घड़ा जिसमें नहाने का पानी रखा हो; –**गृह**–(पुं.) वह कोठरी जिसमें स्नान किया जाता हो; –**विधि**–(स्त्री.) स्नान का नियम; –**वेश्म**–(पुं.) स्नानगृह; –**शाला**–(स्त्री.) स्नानगृह।
स्नानांबु–(सं. पुं.) स्नान करने का जल।
स्नानीय–(सं. वि.) नहाने योग्य।
स्नानोदक–(सं. पुं.) स्नान करने का जल।
स्नायविक–(सं. वि.) स्नायु-संबंधी।
स्नायी–(सं. वि.) स्नान करनेवाला।
स्नायु–(सं. स्त्री.) शरीर की रक्त-वाहिनी नस, शिरा, नाड़ी; –**रोग**–(पुं.) नहरुआ नामक रोग।
स्निग्ध–(सं. पुं.) तेल, मोम, गंधा-बिरोजा, दूध पर की मलाई; (वि.) शीतल, ठंढा, तेल लगा हुआ, चिकना,

तैलयुक्त; **–कंदा–**(स्त्री.) कंदली; **–च्छद–**(पुं.)बरगद का वृक्ष; **–जीरक–**(पुं.) ईसबगोल; **–तंडुल–**(पुं.) साठी धान; **–ता–**(स्त्री.) चिकनापन, शीतलता; **–पर्णी–**(स्त्री.) पिठवन; **–बीज–**(पुं.) ईसबगोल; **–मज्जक–**(पुं.) बादाम।

स्निघा–(सं. स्त्री.) मज्जा, अस्थिसार।

स्नुषा–(सं. स्त्री)पुत्रवधू, लड़के की स्त्री।

स्नुही–(सं. स्त्री.) थूहड़ का पौधा।

स्नेह–(सं. पुं.)प्रेम, प्यार, चिकना पदार्थ (तेल, मलाई आदि), कोमलता, एक राग का नाम; **–कुंभ–**(पुं.) तेल का घड़ा; **–पात्र–**(पुं.)प्रेमपात्र, जिससे प्रेम किया जाय; **–पान–**(पुं.) कुछ विशिष्ट रोगों में घी, तेल आदि पीने की क्रिया; **–फल–**(पुं.) तिल; **–बीज–**(पुं.) चिरौंजी; **–वृक्ष–**(पुं.) देवदार।

स्नेहन–(सं. पुं.) शरीर में तेल लगाना, कफ, मक्खन।

स्नेहित–(सं. वि.) चिकना, तेल लगाया हुआ।

स्नेही–(हिं. पुं.) मित्र, बन्धु, चित्रकार; (वि.) स्नेहयुक्त।

स्पंद–(सं. पुं.) किसी वस्तु का धीरे-धीरे हिलना या काँपना, नसों आदि का फड़कना।

स्पंदन–(सं. पुं.) देखें 'स्पंद'।

स्पंदिनी–(सं. स्त्री.) रजस्वला स्त्री।

स्पंदी–(सं. वि.) काँपने या फड़कनेवाला।

स्पर्धा–(सं. स्त्री.) संघर्ष, रगड़, साहस, ईर्ष्या, साम्य, बराबरी का होड़।

स्पर्धी–(सं. वि.) स्पर्धा करनेवाला।

स्पर्श–(सं. पुं.) छूना, छूने से होनेवाला बोध, पीड़ा, कष्ट, आपत्ति, वायु, एक प्रकार का रतिबन्ध, वर्गाक्षर, व्याकरण में उच्चारण-भेद से 'क' से 'म' तक के पचीस व्यंजनवर्ण, ग्रहण में छाया का आरंभ होना; **–कोण–**(पुं.) रेखागणित में वह कोण जो किसी स्पर्श-रेखा से बनता है; **–ज, –जन्य–**(वि.) स्पर्श से उत्पन्न, संक्रामक, छुतहा; **–दिशा–**(स्त्री.) वह दिशा जिधर से ग्रहण की छाया का स्पर्श हुआ हो; **–मणि–**(पुं.) पारस पत्थर; **–रसिक–**(पुं.) कामुक, लम्पट; **–रेखा–**(स्त्री.) गणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि के किसी एक बिन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाय; **–लज्जा–**(स्त्री.) लज्जालु नामक लता।

स्पर्शनेंद्रिय–(सं. पुं.) स्पर्श करने या छूने की इंद्रिय।

स्पर्शा–(सं. स्त्री.)कुलटा, छिनाल स्त्री।

स्पर्शाक्रामक–(सं. वि.) स्पर्श या संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला, संक्रामक।

स्पर्शानंदा–(सं. स्त्री.) अप्सरा।

स्पर्शास्पर्श–(सं. पुं.) छूने या न छूने का विचार, छूतछात।

स्पर्शी–(सं. वि.) छूनेवाला।

स्पर्शेंद्रिय–(सं. पुं.) वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है, त्वचा।

स्पर्शोपल–(सं. पुं.) पारस पत्थर।

स्पष्ट–(सं. वि.) जिसके समझने या देखने में कोई कठिनता न हो, व्यक्त, प्रत्यक्ष; **–कथन–**(पुं.) वह कथन जिसमें किसी दूसरे की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हो; **–तया–**(अव्य.) स्पष्ट रूप से; **–ता–**(स्त्री.) स्पष्ट होने का भाव; **–वक्ता–**(पुं.)ठीक-ठीक या साफ-साफ कहनेवाला; **–वादी–**(पुं.) बिना पक्षपात के बोलनेवाला, स्पष्टवक्ता।

स्पष्टीकरण–(सं.पुं.)स्पष्ट करने की क्रिया।

स्पृक्का–(सं. स्त्री.)लजाधुर लता, ब्राह्मी।

स्पृश–(सं. वि.) स्पर्श करनेवाला।

स्पृश्य–(सं.वि.)स्पर्श करने या छूने योग्य।

स्पृष्ट–(सं. वि.) स्पर्श किया हुआ।

स्पृहणीय–(सं. वि.) वांछनीय, जिसके लिये स्पृहा या अभिलाषा की जाय।

स्पृहा–(सं. स्त्री.) वांछा, कामना, अभिलाषा।

स्पृही–(सं. वि.) अभिलाषा करनेवाला।

स्फटिक–(सं. पुं.) एक प्रकार का काँच के समान पारदर्शक पत्थर, बिल्लौर, फिटकीरी, सूर्यकान्त मणि; **–विष–**(पुं.) दारुमोच नामक विष।

स्फटिका–(सं. स्त्री.) फिटकिरी।

स्फटिकाभ्र–(सं. पुं.) कपूर।

स्फटिकारि–(सं. स्त्री.) फिटकिरी।

स्फटिकोपम–(सं. पुं.) कपूर, चन्द्रकान्त मणि।

स्फटिकोपल–(सं. पुं.) बिल्लौर।

स्फाटक–(सं. पुं.) फिटकिरी।

स्फाटिक–(सं. वि.) बिल्लौर-सम्बन्धी।

स्फार–(सं.वि.)विपुल, बहुत, विकट, प्रचुर।

स्फाल–(सं. पुं.) स्फूर्ति, तीव्रता।

स्फिक्, स्फिच्–(सं. पुं.) चूतर।

स्फीत–(सं.वि.) समृद्ध, फूला हुआ, बढ़ा हुआ।

स्फीति–(सं. स्त्री.) वृद्धि, बढ़ती।

स्फुट–(सं. वि.) खिला हुआ, विकसित, स्पष्ट, शुक्ल, अलग-अलग, फुटकर, व्यक्त, प्रत्यक्ष।

स्फुटन–(सं. पुं.)विकसित होना, खिलना।

स्फुटबंधनी–(सं. स्त्री.) मालकँगनी।

स्फुटा–(सं. स्त्री.) साँप का फन।

स्फुटार्थ–(सं. वि.) स्पष्ट अर्थ का।

स्फुटिका–(सं. स्त्री.) फिटकिरी।

स्फुटित–(सं. वि.) विकसित, खिला हुआ, स्पष्ट किया हुआ, हँसता हुआ।

स्फुटी–(सं. स्त्री.) पैर में बिवाई फटना, ककड़ी, फूट।

स्फुटीकरण–(सं.पुं.)प्रकट या स्पष्ट करना।

स्फुर–(सं. पुं.) किसी पदार्थ का थोड़ा-थोड़ा हिलना, किसी अंग का फड़कना।

स्फुरति–(हिं. स्त्री.) देखें 'स्फूर्ति'।

स्फुरित–(सं.वि.)हिलने या फड़कनेवाला।

स्फुल–(सं. पुं.) तंबू।

स्फुलन–(सं. पुं.) स्फुरण।

स्फुलिंग–(सं. पुं.) आग की चिनगारी।

स्फुलिंगिनी–(सं. स्त्री.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

स्फूर्जन–(सं. पुं.) तेंदू नामक वृक्ष।

स्फूर्ति–(सं. स्त्री.) स्फुरण, धीरे-धीरे हिलना, आवेश, प्रेरणा, उत्तेजना।

स्फोट–(सं. पुं.) फोड़ा, फुंसी, विदारण, किसी वस्तु का फूटना, मुक्ता, मोती, शब्द का नित्यत्व।

स्फोटक–(सं. पु.) फोड़ा-फुंसी, भिलावाँ।

स्फोटन–(सं. पुं.) विदारण, फाड़ना, शब्द, ध्वनि।

स्फोटा–(सं. स्त्री.) साँप का फन।

स्फोटिनी–(सं. स्त्री.) कर्कटिका, ककड़ी।

स्फोरण–(सं. पुं.) स्फुरण, स्फूर्ति।

स्मय–(सं. पुं.) गर्व, अभिमान।

स्मर–(सं. पुं.) कामदेव, मदन, स्मृति, स्मरण, शुद्ध राग का एक भेद; **–कथा–**(स्त्री.) काम को उत्तेजित करनेवाली कथा; **–कूपक–**(पुं.) योनि, भग; **–गुरु–**(पुं.) श्रीकृष्ण; **–गृह–**(पुं.)भग, योनि; **–च्छत्र–**(पुं.) भग, योनि; **–दशा–**(स्त्री.)प्रेमी और प्रेमिका के समागम न होने पर उनके विरह की अवस्था; **–दहन–**(पुं.) शिव, महादेव; **–ध्वज–**(पुं.) पुरुष का लिंग; **–ध्वजा–**(स्त्री.) चाँदनी रात; **–प्रिया–**(स्त्री.) कामदेव की पत्नी, रति; **–मंदिर–**(पुं.) योनि, भग; **–लेखनी–** (स्त्री.) मैना पक्षी; **–वधू–**(स्त्री.) कामदेव की पत्नी, रति;

-वीथिका-(स्त्री.)वेश्या, रंडी; -शत्रु-(पुं.) कामदेव के शत्रु, शिव; -सख-(पुं.) चन्द्रमा।
स्मरण-(सं. पुं.) स्मृति, किसी बात की याद, चर्चा, नौ प्रकार की भक्तियों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता को बारंबार याद करता रहता है, साहित्य में वह अलंकार जिसमें समान वस्तु को देखकर पूर्वानुभूत वस्तु का स्मरण होता है; -पत्र-(पुं.) वह पत्र जो किसी को कोई बात याद दिलाने के लिये लिखा जाय; -शक्ति-(स्त्री.) स्मरण या याद रखने की शक्ति।
स्मरणीय-(सं. वि.) याद करने योग्य।
स्मरना-(हिं. क्रि. स.) याद करना।
स्मरागार-(सं. पुं.) भग, योनि।
स्मरारि-(सं. पुं.) शिव, महादेव।
स्मरासव-(सं. पुं.) ताड़ी।
स्मरोद्दीपन-(सं. पुं.) कामोद्दीपन।
स्मर्ण-(हिं. पुं.) देखें 'स्मरण'।
स्मर्तव्य-(सं. वि.) स्मरण करने योग्य।
स्मशान-(हिं. पुं.) देखें 'श्मशान'।
स्मारक-(सं. वि.) स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला; (पुं.) वह भवन, स्तूप आदि जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिये निर्मित की जाय।
स्मारणी-(सं. स्त्री.) ब्राह्मी बूटी।
स्मार्त-(सं. पुं.) स्मृति-शास्त्र के अनुसार कर्म, स्मृति-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता; (वि.) स्मृति-संबंधी।
स्मित-(सं. पुं.) मंद हास, धीमी हँसी; (वि.) विकसित, खिला हुआ।
स्मृत-(सं. वि.) याद किया हुआ।
स्मृति-(सं.स्त्री.) स्मरण, याद, मानसिक शक्ति विशेष, चिंतन, शास्त्रविशेष, धर्मशास्त्र, संहिता, अठारह की संख्या, एक छंद का नाम; -कार- (पुं.) स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला; -कारक- (पुं.) धर्मशास्त्र के प्रणेता मन्वादि ऋषि; -पाठक-(पुं.) स्मृति-शास्त्र पढ़नेवाला; -बोधिनी-(स्त्री.) ब्राह्मी बूटी; -भ्रंश-(पुं.) स्मरण-शक्ति का नाश; -विभ्रम-(पुं.) स्मरण-शक्ति का नाश; -विरुद्ध-(वि.) धर्मशास्त्र के विपरीत; -शास्त्र-(पुं.) धर्मशास्त्र; -सम्मत- (वि.) धर्म-शास्त्र द्वारा अनुमोदित; -हर-(वि.) स्मृतिनाशक; -हेतु- (पुं.) भावना, वासना।
स्मेर-(सं. वि.) विकसित, खिला हुआ।
स्यंद, स्यंदन-(सं. पुं.) टपकना, चूना, गलना, पसीजना, निकलना।
कास्यंदनि-(सं. स्त्री.) छोटी नदी, नहर।
स्यमंतक-(सं.पुं.)श्रीकृष्ण का प्रसिद्धमणि, (पुराण के अनुसार इसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा था।)
स्यमिक-(सं. पुं.) वल्मीक, बाँबी।
स्यात्-(सं. अव्य.) कदाचित्।
स्याद्वाद-(सं.पुं.)जैन-दर्शन का संशयवाद।
स्यान-(हिं. वि.) देखें 'स्याना'।
स्यानप-(हिं. पुं.) देखें 'स्यानपन'।
स्यानपत-(हिं. पुं.) चतुराई, धूर्तता।
स्यानपन-(हिं. पुं.) चतुरता।
स्याना-(हिं. वि.) चतुर, धूर्त, वयस्क, प्रौढ़; (पुं.) वृद्ध, गाँव का मुखिया, हकीम, ओझा; -पन-(पुं.) प्राप्त-वयस्कता, चतुराई, धूर्तता।
स्याबास-(हिं. अव्य.) देखें 'शाबास'।
स्यामक-(हिं. पुं.) देखें 'श्यामक'।
स्यामकरन-(हिं. पुं.) देखें 'श्यामकर्ण'।
स्यामता-(हिं. स्त्री.) देखें 'श्यामता'।
स्यामल-(हिं. वि.) देखें 'श्यामल'।
स्यामलिया-(हिं. पुं.) कृष्ण।
स्यामा-(हिं.स्त्री.) देखें 'श्यामा'।
स्यार-(हिं. पुं.) गीदड़, सियार; -पन-(पुं.) शृगाल के सदृश प्रकृति, भीरुता, चालाकी; -लाठी-(स्त्री.) अमलतास।
स्यारी-(हिं. स्त्री.) शृगाली, सियारिन।
स्याल-(सं.पुं.) श्यालक, साला।
स्यालक-(सं. पुं.) पत्नी का भाई, साला।
स्यालिवा, स्याली-(सं. स्त्री.) पत्नी की बहन, साली।
स्याह-(फा. वि.) काला।
स्याह जीरा-(हिं.पुं.) काला जीरा।
स्याही-(फा. स्त्री.) कालापन, कालिख, काजल, रोशनाई, मषि।
स्यूत-(सं. वि.) सिला हुआ।
स्यूति-(सं. स्त्री.) सिलाई, सन्तति।
स्यून-(सं. पुं.) रश्मि, किरण, सूर्य।
स्यों, स्यो-(हिं.अव्य.)सहित, समीप, पास।
स्रंग-(हिं. पुं.) देखें 'शृंग', सींग।
स्रंस-(सं. पुं.) पतन, भ्रंश, नाश।
स्रंसन-(सं.पुं.) गर्भपात, अवःपतन, नाश।
स्रक्-(सं.स्त्री.)फूलों की माला, ज्योतिष में एक प्रकार का योग, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह वर्ण होते हैं।
स्रगणु-(सं. पुं.) माला के आकार में लिखित मन्त्र।
स्रग्धर-(सं. वि.) माला पहननेवाला।
स्रग्धरा-(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में एक्कीस अक्षर होते हैं; (वि.) माला पहननेवाला।
स्रग्विणी-(सं. स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं; (वि. स्त्री.) माला पहननेवाली।
स्रज-(सं.स्त्री.) माला।
स्रज्वा-(सं.पुं.)माला बनानेवाला माली।
स्रम-(हिं. पुं.) देखें 'श्रम'।
स्रमित-(सं. वि.) देखें 'श्रमित'।
स्रवंती-(सं. स्त्री.) नदी।
स्रव-(सं. पुं.) मूत्र, झरना, बहाव।
स्रवण-(सं. पुं.) पसीना, मूत्र, गर्भपात; (हिं. पुं.) देखें 'श्रवण'।
स्रवना-(हिं. क्रि. अ.) बहना, टपकना, गिरना।
स्रष्टा-(सं. पुं.) ब्रह्मा, शिव, विष्णु, सृष्टि करनेवाला।
स्रापित-(हिं. वि.) देखें 'शापित'।
स्राव-(सं. पुं.) क्षरण, झरना।
स्रावक-(सं.पुं.)बहाने या टपकानेवाला।
स्रावित-(सं. वि.) टपकाकर या चुआकर निकाला हुआ।
स्रावी-(सं. वि.) रसानेवाला, बहानेवाला।
स्राव्य-(सं. वि.) बहाने योग्य।
स्रिग-(हिं. पुं.) देखें 'शृंग'।
स्रिय-(हिं. स्त्री.) देखें 'श्रिय'।
स्रुघ्नी-(सं. स्त्री.) सज्जी मिट्टी।
स्रुत-(हिं. वि.) देखें 'श्रुत'; (सं. वि.) बहता हुआ।
स्रुति-(सं. स्त्री.) बहाव, क्षरण।
स्रुवा-(सं. स्त्री.) हवन करने की एक प्रकार की लकड़ी की बनी हुई छोटी करछी।
स्रेनी-(हिं. स्त्री.) देखें 'श्रेणी'।
स्रोत-(सं.पुं.) पानी का झरना या सोता।
स्रोतस्विनी-(सं. स्त्री.) नदी।
स्रोतोवहा-(सं. स्त्री.) नदी।
स्रोन-(हिं. पुं.) देखें 'श्रवण'।
स्रोनित-(हिं. पुं.) देखें 'शोणित'।
स्वंग-(सं. पुं.) सुंदर शरीर; (वि.) अच्छे अंगोंवाला।
स्वः-(सं. पुं.) स्वर्ग; -सरिता-(स्त्री.) गंगा; -सुंदरी-(स्त्री.) अप्सरा।
स्व-(सं. पुं.)धन, विष्णु, जाति, बन्धु; (वि.) अपना, आत्मीय।
स्वकंपन-(सं. पुं.) वायु, हवा।
स्वक-(सं. वि.) निजी।
स्वकरण-(सं. पुं.)स्वीकार, अपना स्वत्व जताना।

स्वकर्म–(सं. पुं.) अपना काम ।
स्वकर्मी–(सं. वि.) स्वार्थी ।
स्वकामी–(सं. वि.) केवल अपने लिये काम करनेवाला, स्वार्थी ।
स्वकाल–(स. पुं.) किसी कार्य का उपयुक्त या निर्दिष्ट काल ।
स्वकीया–(सं. स्त्री.) अपने ही पति में अनुराग करनेवाली नायिका ।
स्वकुल–(स. पुं.) अपना वंश; **–क्षय**–(वि.) अपने कुल का नाश करनेवाला ।
स्वकुल्य–(सं. वि.) अपने कुल का ।
स्वकृत–(सं. वि.) अपना काम करनेवाला, अपना किया हुआ ।
स्वगत–(सं. अव्य.) आप ही आप, अपने आप को; **–कथन**–(पुं.) नाटक में किसी पात्र का अपने प्रति बोलना ।
स्वगृह–(सं. पुं.) अपना घर ।
स्वगोप–(सं. वि.) अपने शरीर को बचानेवाला ।
स्वच्छंद–(सं. वि.) स्वाधीन, स्वतन्त्र, मनमाना, बेधड़क, **–चारिणी**–(स्त्री.) वेश्या, रंडी; **–चारी**–(वि.) मनमौजी; **–ता**–(स्त्री.) स्वतन्त्रता; **–पत्र**–(पुं.) अभ्रक; **–मणि**–(पुं.) स्फटिक ।
स्वच्छ–(सं. वि.) शुक्ल, उज्ज्वल, निर्मल, पवित्र; (पुं.) स्फटिक, अभ्रक, मोती; **–ता**–(स्त्री.) निर्मलता ।
स्वच्छना–(हिं. क्रि. स.) निर्मल करना ।
स्वच्छी–(हिं. वि.) स्वच्छ ।
स्वज–(सं. पुं.) रुधिर, पुत्र, बेटा, पसीना; (वि.) आप से आप उत्पन्न, स्वाभाविक ।
स्वजन–(सं. पुं.) संबंधी, आत्मीय जन ।
स्वजनता–(सं. स्त्री.) स्वजन का सम्बन्ध ।
स्वजन्मा–(सं. वि.) अपने आप उत्पन्न ।
स्वजात–(सं. वि.) पुत्र, बेटा; (वि.) स्वज ।
स्वजाति–(सं. स्त्री.) अपनी जाति ।
स्वजातीय–(सं. वि.) अपनी जाति का, एक ही जाति का ।
स्वजात्य–(सं. वि.) अपनी जाति का ।
स्वजित–(सं. वि.) अपनी इंद्रियों पर विजय करनेवाला ।
स्वतंत्र–(सं. वि.) जो किसी के अधीन या अंतर्गत न हो, स्वेच्छाचारी, मनमानी करनेवाला, भिन्न, पृथक् ।
स्वतंत्रता–(सं. स्त्री.) स्वतंत्र होने का भाव, स्वाधीनता ।
स्वतंत्री–(सं. वि.) स्वाधीन ।
स्वतः–(सं. अव्य.) अपने आप, आप ही ।
स्वतुल्य–(सं. वि.) अपने तुल्य, अपने समान ।
स्वतोविरोधी–(सं. पुं.) अपना ही खण्डन या विरोध करनेवाला ।
स्वत्व–(सं. पुं.) अधिकार, स्वामित्व ।
स्वत्वाधिकारी–(सं. पुं.) स्वामी, अधिकारी ।
स्वदन–(सं. पुं.) स्वाद लेना, चखना ।
स्वदृष्ट–(सं. पुं.) स्वयं देखा हुआ ।
स्वदेश–(सं. पुं.) वह देश जिसमें किसी का जन्म और पालन-पोषण हुआ हो, मातृभूमि ।
स्वदेशी, स्वदेशीय–(सं. वि.) अपने देश का, अपने देश से संबद्ध, अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ ।
स्वदोषज–(सं. वि.) जो अपने दोष से उत्पन्न हो ।
स्वधर्म–(सं. पुं.) अपना धर्म ।
स्वधा–(सं. अव्य.) देवता तथा पितरों को हवि और दान देने का मन्त्र, पितरों के निमित्त देने का अन्न; (स्त्री.) दक्ष की कन्या का नाम ।
स्वधाकर–(सं. वि.) श्राद्ध करनेवाला ।
स्वधाधिप–(सं. पुं.) अग्नि ।
स्वधाभोजी–(सं. पुं.) पितृगण ।
स्वधिति–(सं. स्त्री.) वज्र, कुठार, कुल्हाड़ी ।
स्वधीत–(सं. वि.) अच्छी तरह पाठ किया हुआ ।
स्वन–(सं. पुं.) ध्वनि, शब्द ।
स्वनाम–(सं. पुं.) अपना नाम; **–धन्य**–(वि.) अपने नाम के कारण धन्य होनेवाला ।
स्वनामा–(सं. पुं.) जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो ।
स्वनित–(सं. पुं.) शब्द, मेघ की गड़गड़ाहट; (वि.) शब्दित, ध्वनित ।
स्वनिष्ठ–(सं. वि.) अपना काम स्वयं करनेवाला ।
स्वनुष्ठित–(सं. वि.) उत्तम रूप से किया हुआ ।
स्वन्न–(सं. पुं.) उत्तम अन्न ।
स्वपक्ष–(सं. पुं.) अपना पक्ष ।
स्वपतित–(सं. वि.) आप से आप गिरा हुआ ।
स्वपन–(सं. पुं.) निद्रा, नींद, सपना ।
स्वपनीय–(सं. वि.) निद्रा के योग्य ।
स्वपूर्ण–(सं. वि.) अपने अस्तित्व से पूर्णतः संतुष्ट ।
स्वप्न–(सं. पुं.) निद्रा, निद्रावस्था में चित्तवृत्तिजनित प्रत्यक्ष बोध, नींद; **–कृत**–(वि.) नींद लानेवाला; **–गृह**–(पुं.) सोने का घर; **–ज**–(वि.) नींद में उत्पन्न; **–ज्ञान**–(पुं.) स्वप्न में होनेवाला ज्ञान; **–दर्शन**–(वि.) बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करनेवाला; **–दोष**–(पुं.) निद्रावस्था में स्वतः वीर्यपात; **–निकेतन**–(पुं.) शयनागार; **–स्थान**–(पुं.) निद्रागृह ।
स्वप्नांत–(सं. पुं.) जागरण ।
स्वप्नाना–(हि. क्रि. स.) स्वप्न दिखाना ।
स्वप्नालु–(सं. वि.) निद्रालु, सोनेवाला ।
स्वप्रकाश–(सं. वि.) जो स्वयं ही प्रकाशमान् हो ।
स्वप्रकृतिक–(सं. वि.) प्रकृति से ही उत्पन्न होनेवाला ।
स्वप्रधान–(सं. वि.) अपने पर भरोसा रखनेवाला, स्वाधीन ।
स्ववरन–(हिं. वि.) देखें 'सुवर्ण' ।
स्वबीज–(सं. पुं.) आत्मा ।
स्वभाउ–(हिं. पुं.) देखें 'स्वभाव' ।
स्वभाव–(सं. पुं.) मन की प्रवृत्ति, स्वाभाविक अवस्था, प्रकृति, बान; **–ज**–(वि.) प्रकृति से उत्पन्न, सहज; **–तः**–(अव्य.) स्वभाव या प्रकृति से; **–त्व**–(पुं.) प्रकृतिगत भाव; **–सिद्ध**–(वि.) स्वाभाविक, सहज, स्वभाव से होनेवाला ।
स्वभाविक–(हिं. वि.) देखें 'स्वाभाविक' ।
स्वभावोक्ति–(सं. स्त्री.) वह अलंकार जिसमें किसी की जाति, अवस्था आदि के अनुसार यथावत् और प्राकृतिक रूप से वर्णन किया जाता है ।
स्वभू–(सं. पुं.) विष्णु, ब्रह्मा, शिव; (वि.) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो ।
स्वभूति–(सं. स्त्री.) अपना हित या कल्याण ।
स्वभूमि–(सं. स्त्री.) अपनी भूमि, स्वदेश ।
स्वयं–(सं. अव्य.) आप से आप, आप ही; **–दत्त**–(पुं.) वह बालक जो स्वयं किसी का दत्तकपुत्र बन जाय; **–दान**–(पुं.) स्वेच्छा से कन्यादान करना; **–दूत**–(पुं.) वह नायक जो अपनी काम-वासना को नायिका पर स्वयं प्रकट करता हो; **–दूती**–(स्त्री.) वह नायिका जो नायक पर अपनी काम-वासना को स्वयं प्रकट करती हो; **–दृश**–(वि.) स्वयं देखनेवाला; **–प्रकाश**–(वि.) जो स्वयं प्रकाशित हो; (पुं.) परमेश्वर, परमात्मा; **–प्रभा**–(स्त्री.) एक अप्सरा का नाम; **–प्रमाण**–(वि.) जिसकी सत्यता के लिए प्रमाण की आवश्यकता न हो; **–फल**–(वि.) जो आप ही अपना फल हो और किसी दूसरे कारण से न उत्पन्न हुआ हो; **–भू**–(पुं.) ब्रह्मा, विष्णु,

शिव, कामदेव, काल; (वि.) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो; **-वर-** (पुं.) भारती संस्कृति की एक प्राचीन रीति जिसमें विवाहयोग्य कन्या अनेक विवाहार्थियों में से अपना वर चुन लेती थी; **-वरण-** (पुं.) अपना वर स्वयं चुन लेना; **-वरा-** (स्त्री.) अपने लिये स्वयं वर चुननेवाली स्त्री; **-वह-** (पुं.) स्वयं अपने आप को धारण करनेवाला; **-सिद्ध-** (वि.) जिसकी सिद्धि के लिये दूसरे तर्क, प्रमाण आदि की आवश्यकता न हो, जिसने आप ही सिद्धि प्राप्त कर ली हो; **-सेवक-** (पुं.) वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के सेवा का कार्य करता-हो।

स्वयमधिगत- (सं. वि.) स्वयं प्राप्त किया हुआ।

स्वयमनुष्ठित- (सं. वि.) जिसका अनुष्ठान स्वयं किया गया हो।

स्वयमर्जित- (सं. वि.) स्वयं कमाया हुआ।

स्वयमीश्वर- (सं. पुं.) परमात्मा, परमेश्वर।

स्वयमुज्ज्वल- (सं. वि.) जो स्वयं ही द्युतिमान् हो।

स्वयमुदित- (सं. वि.) जो अपने आप उदित हुआ हो।

स्वयमेव- (सं. अव्य.) अपने आप, खुद, स्वयं ही।

स्वयश- (सं. पुं.) अपनी कीर्ति।

स्वयुक्त- (सं. वि.) परस्पर संयुक्त।

स्वयुक्ति- (सं. स्त्री.) अपनी युक्ति।

स्वयोनि- (सं. वि.) जो आप ही अपनी उत्पत्ति का स्थान हो।

स्वर- (सं. पुं.) स्वर्ग, आकाश, परलोक, वह ध्वनि जो व्यक्ति के कंठ से उत्पन्न हो, (यह उदात्त, अनुदात्त और स्वरित—तीन प्रकार की होती है), व्याकरण में वह वर्ण जिसका उच्चारण आप से आप या स्वतन्त्र होता है, (यह ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत—तीन प्रकार से उच्चारित होता है), नासिक्य स्वर जिसके द्वारा अजपा मन्त्र का जप होता है, संगीत में सात प्रकार के सुर जो कोमलता या तीव्रता के आधार पर निश्चित हैं, (संगीत में सा, रे, ग, म, प, ध, नि—ये सात स्वर होते हैं); (मुहा.) **-उतरना-** स्वर का धीमा होना; **-चढ़ना-** स्वर का तीव्र होना।

स्वरकर- (सं. वि.) स्वर को सुरीला बनानेवाला।

स्वरक्षय- (सं. पुं.) गला बैठने का विकार।

स्वरनादी- (सं. पुं.) मुख से फूंककर बजाने का बाजा।

स्वरभंग- (सं. पुं.) गला बैठने और स्पष्ट स्वर न निकलने का रोग।

स्वरभंगी- (सं. वि., पुं.) (वह) जिसका गला बैठ गया हो।

स्वरभानु- (सं. पुं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

स्वरभाव- (सं. पुं.) स्वर से ही भावों को प्रकट करना।

स्वरभेद- (सं. पुं.) गला बैठ जाना।

स्वरमंडल- (सं. पुं.) एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।

स्वरलासिका- (सं. स्त्री.) मुरली, बंसी।

स्वरशास्त्र- (सं. पुं.) वह शास्त्र जिसमें स्वर-संबंधी बातों का विवेचन हो।

स्वरसंक्रम- (सं. पुं.) संगीत में स्वरों का उतार-चढ़ाव।

स्वरस- (सं. पुं.) (फल, फूल, पत्ती आदि को) कूट-पीसकर निकाला हुआ रस।

स्वरसाद- (सं. पुं.) गला बैठ जाना।

स्वरसादि- (सं. पुं.) क्वाथ, काढ़ा।

स्वरांत- (सं. वि.) जिसके अन्त में कोई स्वर हो।

स्वरांश- (सं. पुं.) संगीत में स्वर का आधा अंश।

स्वराज्य- (सं. पुं.) वह राज्य जिसमें वहाँ के निवासी स्वयं स्वतंत्र रुप से शासन करते हैं।

स्वराट्- (सं. पुं.) ईश्वर, ब्रह्मा।

स्वरापगा- (सं. स्त्री.) मन्दाकिनी, गंगा।

स्वराष्ट्र- (सं. पुं.) अपना राज्य।

स्वरित- (सं. वि.) स्वर युक्त; (पुं.) का वह उच्चारण जो न बहुत तीव्र हो और न बहुत धीमा।

स्वरुचि- (सं. स्त्री.) स्वेच्छा, अपनी रुचि।

स्वरूप- (सं. पुं.) आकृति, आकार, मूर्ति, चित्र, स्वभाव, अभिनय में देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप, वह जो किसी देवता का रूप धारण किये हो, विद्वान्, पण्डित; (वि.) सुंदर, तुल्य; (अव्य) (समस्त पदों में) के रूप में; **-ज्ञ-** (पुं.) परमात्मा का स्वरूप पहचाननेवाला; **-प्रतिष्ठा-** (स्त्री.) जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों और गुणों से युक्त होना; **-वान्-** (वि.) सुंदर; **-संबंध-** (पुं.) अभिन्न सम्बन्ध।

स्वरूपाभास- (सं. पुं.) वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास दिखाई पड़ना।

स्वरूपी- (सं. वि.) स्वरूपयुक्त, स्वरूपवाला, जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।

स्वरूपोत्प्रेक्षा- (सं. स्त्री.) उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद।

स्वरोचिष- (सं. पुं.) स्वारोचिष मनु के पिता का नाम।

स्वरोद- (सं. पुं.) एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।

स्वरोदय- (सं. पुं.) वह शास्त्र जिसमें स्वर द्वारा शुभाशुभ फल बतलाया जाता है।

स्वर्ग- (सं. पुं.) देवलोक, सुरलोक, वह स्थान जहाँ दुःख का लेश भी न हो, ईश्वर, आकाश, सुख; (मुहा.) **-सिधारना-** मृत्यु को प्राप्त होना; **-काम-** (वि.) स्वर्ग की कामना करनेवाला; **-गंगा-** (स्त्री.) मन्दाकिनी; **-गति-** (स्त्री.), **-गमन-** (पुं.) मरण; **-गामी-** (वि.) स्वर्गीय, स्वर्ग को जानेवाला, मृत, मरा हुआ; **-तरु-** (पुं.) पारिजात, परजाता; **-द-** (वि.) स्वर्ग देनेवाला; **-धेनु-** (स्त्री.) कामधेनु; **-नदी-** (स्त्री.) आकाश-गंगा; **-पति-** (पुं.) इन्द्र; **-पुरी-** (स्त्री.) इन्द्र की पुरी, अमरावती; **-पुष्प-** (पुं.) लवंग; **-लाभ-** (पुं.) स्वर्ग में पहुँचना, मरना; **-लोक-** (पुं.) देवलोक; **-लोकेश-** (पुं.) इन्द्र; **-वधू-** (स्त्री.) अप्सरा; **-वाणी-** (स्त्री.) आकाशवाणी; **-वास-** (पुं.) स्वर्ग में रहना, मरना; **-वासी-** (वि.) मृत, जो मर गया हो; **-सार-** (पुं.) एक ताल का नाम; **-स्त्री-** (स्त्री.) अप्सरा; **-स्थ-** (वि.) स्वर्गवासी।

स्वर्गापगा- (सं. स्त्री.) मन्दाकिनी।

स्वर्गामी- (सं. वि.) जो स्वर्ग चला गया हो।

स्वर्गारूढ़- (सं. वि.) स्वर्ग को सिधारा हुआ, मृत।

स्वर्गारोहण- (सं. पुं.) स्वर्ग सिधारना, मरना।

स्वर्गी- (सं. पुं.) देवता; (वि.) स्वर्गगामी, स्वर्ग-संबंधी।

स्वर्गीय- (सं. वि.) स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्ग का, मृत, मरा हुआ।

स्वर्जि, स्वर्जिक- (सं. स्त्री., पुं.) यवक्षार, शोरा।

स्वर्ण- (सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, धतूरा

नागकेशर; **–कदली–**(स्त्री.) सोना-केला; **–कमल–**(पुं.) लाल कमल; **–काय–**(पुं.) गरुड़; **–कार–** (पुं.) सुनार; **–कूट–**(पुं.) हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम; **–क्षीरी–**(स्त्री.) भड़भाँड़; **–गिरि–**(पुं.) सुमेरु पर्वत; **–चूड़–**(पुं.) नीलकण्ठ पक्षी; **–ज–**(पुं.) सोनामक्खी नामक धातु; **–जातिका–** (स्त्री.) पीली चमेली; **–जीवी–**(पुं.) सोनार; **–जूही–** (हिं. स्त्री.)पीली जूही; **–द–**(वि.)सोना दान करनेवाला; **–दा–** (स्त्री.) मन्दाकिनी; **–दीधिति–** (पुं.) अग्नि; **–द्रु–**(पुं.) अमलतास; **–निभ–**(वि.) सोने के रंग के समान; **–पक्ष–**(पुं.)गरुड़; **–पत्र–**(पुं.) सोने का पत्तर; **–पर्पटी–** (स्त्री.) संग्रहणी रोग की एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक औषधि; **–पुष्प–** (पुं.) अमलतास, चम्पा; **–फल–** (पुं.) धतूरा; **–भाज्–**(पुं.) सूर्य; **–भूमि–** (स्त्री.) वह स्थान जहाँ सब प्रकार का सुख उपलब्ध हो; **–भूषण–**(पुं.) सोने का अलंकार; **–माक्षिक–**(पुं.) सोनामक्खी नामक उपधातु; **–मुद्रा–**(स्त्री.) सोने की मुद्रा; **–यूथिका–**(स्त्री.) पीली जूही; **–रेखा–** (स्त्री.) एक विद्याधरी का नाम; **–लता–** (स्त्री.) ज्योतिष्मती लता, मालकँगनी; **–वर्णा–**(स्त्री.) हल्दी, दारुहल्दी; **–विंदु–**(पुं.) विष्णु; **–विद्या–**(स्त्री.) सोना बनाने की विद्या।

स्वर्णाकर–(सं. पुं.) सोने की खान।

स्वर्णाभ–(सं.पुं.) हरताल; (वि.) सोने के रंग-जैसा।

स्वर्णाभा–(सं. स्त्री.) पीली जूही।

स्वर्णारि–(सं. पुं.) गन्धक, सीसा।

स्वर्णिका–(सं. स्त्री.) धनिया।

स्वर्धुनी–(सं. स्त्री.) गंगा।

स्वर्नगरी–(सं. स्त्री.) अमरावती नगरी।

स्वर्नदी–(सं. स्त्री.) स्वर्गगंगा।

स्वर्पति–(सं. पुं.) स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

स्वर्भानु–(सं. पुं.) राहु, सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

स्वर्लोक–(सं. पुं.) स्वर्ग।

स्वर्वधू, स्वर्वेश्या–(सं. स्त्री.) अप्सरा।

स्वर्वैद्य–(सं. पुं.) स्वर्ग के वैद्य, अश्विनीकुमार।

स्वल्प–(सं. वि.) अत्यल्प, बहुत थोड़ा; **–केशरी–**(पुं.)कचनार; **–केशी–**(वि.) जिसके बहुत कम बाल हों; **–जंबुक–**(पुं.) लोमड़ी; **–दृश्–**(वि.) बहुत कम देखनेवाला, अदूरदर्शी; **–फला–**(स्त्री.) अपराजिता; **–शरीर–**(वि.) छोटे शरीर का।

स्ववरन–(हिं. पुं.) देखें 'सुवर्ण'।

स्ववश–(सं. वि.) जो अपने वश में हो, जितेन्द्रिय।

स्ववासिनी–(सं. स्त्री.) अपने पिता के घर रहनेवाली स्त्री।

स्वश्लाघा–(सं. स्त्री.) आत्माभिमान।

स्वसंभव–(सं.वि.)जो अपने से उत्पन्न हो।

स्वसंभूत–(सं. वि.) जो आप से आप उत्पन्न हो।

स्वसंवेदन–(सं.पुं.) अपना अनुभव।

स्वसंवेद्य–(सं. वि.) केवल अपने ही अनुभव के योग्य।

स्वसमुत्थ–(सं. वि.) स्वाभाविक।

स्वसा–(सं. स्त्री.) भगिनी, बहिन।

स्वसिद्ध–(सं. वि.) स्वयंसिद्ध।

स्वसुर, स्वसुराल–(हिं. पुं., स्त्री.) देखें 'ससुर, ससुराल'।

स्वस्ति–(सं.अव्य.) आशीर्वादसूचक शब्द विशेष, कल्याण हो, मंगल हो; (स्त्री.) कल्याण, मंगल, सुख; **–क–**(पुं.) एक प्रकार का शाक, लहसुन, हठयोग का एक आसन, एक प्रकार का मंगल-द्रव्य जो चावल पीसकर बनाया जाता है, चतुष्पथ; रतालू, सर्प के फन पर की रेखा, एक प्रकार का मांगलिक चिह्न (卐), शरीर के विशिष्ट अंगों में होनेवाला कोई शुभ चिह्न; **–कर्म–**(पुं.) मंगलजनक कर्म; **–का–**(स्त्री.) चमेली; (हिं. स्त्री.) स्वस्तिक नामक मंगल-चिह्न; **–कृत्–**(पुं.)शिव; (वि.) मंगल करनेवाला; **–ग–**(वि.) सुख से गमन करनेवाला; **–द–**(पुं.) शिव; (वि.) मंगल करनेवाला; **–मत्, –मान्–**(वि.) सौभाग्यशाली; **–मती–**(स्त्री.) कार्तिकेय की एक मातृका नाम; **–मुख–**(पुं.) स्तुति-पाठक, ब्राह्मण; **–वाचन–**(पुं.) मांगलिक कार्यों के आरंभ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य; **–वाच्य–**(पुं.) आशीर्वाद।

स्वस्त्ययन–(सं. पुं.) वह मंगलजनक कर्म जिसके करने से अशुभ का नाश हो और शुभ प्राप्त हो, ब्राह्मण का आशीर्वाद देना; (वि.) मंगलकारक।

स्वस्थ–(सं. वि.) जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो, रोगमुक्त, सावधान; **–चित्त–**(वि.) शान्तचित्त।

स्वस्थान–(सं. पुं.) अपना स्थान।

स्वस्रीय–(सं. पुं.) बहन का लड़का, भानजा।

स्वस्रीया–(सं. स्त्री.) बहिन की लड़की, भानजी।

स्वाँग–(हिं. पुं.) हँसी-मजाक के लिए धारण किया हुआ रूप, इस प्रकार का खेल-तमाशा, भेस बनाना, नकल करना।

स्वाँस–(हिं. स्त्री.) देखें 'साँस'।

स्वाँसा–(हिं. स्त्री.) साँस।

स्वाकार–(सं. पुं.) स्वभाव।

स्वाक्षर–(सं. पुं.) हस्ताक्षर।

स्वाक्षरित–(सं.वि.)हस्ताक्षर किया हुआ।

स्वाख्यात–(सं. वि.) अच्छी तरह कहा हुआ।

स्वागत–(सं. पुं.) किसी के पधारने पर उसका आदरसहित अभिनन्दन करना, अगवानी; **–कारिणी सभा–**(स्त्री.) वह विशिष्ट समिति जो किसी बड़ी सभा या सम्मेलन में दूर से आनेवाले प्रतिनिधियों का स्वागत, ठहरने तथा भोजन आदि का प्रबन्ध करने के लिये संघटित होती है; **–कारी–**(वि.) अगवानी करनेवाला; **–पतिका–**(स्त्री.) वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने पर प्रसन्न होती है; **–प्रिया–**(पुं.) वह नायक जो अपनी प्रेमिका के परदेश से लौटने पर प्रसन्न होता है।

स्वागता–(सं. स्त्री.) वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।

स्वागतिक–(सं. पुं.) अभ्यागत का सत्कार करनेवाला।

स्वाच्छंद्य–(सं. पुं.) स्वच्छंदता।

स्वातंत्र्य–(सं. पुं.) स्वतंत्रता।

स्वाति–(सं.स्त्री.)सूर्य की पत्नी, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पंद्रहवाँ नक्षत्र; **–पंथ–**(पुं.) आकाशगंगा; **–सुत–**(पुं.) मुक्ता, मोती; **–सुवन–**(हिं. पुं.) मुक्ता, मोती।

स्वाद–(सं. पुं.) जीभ को होनेवाली रसानुभूति, इच्छा, कामना, आनन्द; (मुहा.)**–चखाना–**किये हुए अपराध का दण्ड देकर संतप्त करना।

स्वादक–(सं. पुं.) स्वाद चखनेवाला, वह जो भोज्य पदार्थों के तैयार हो जाने पर उन्हें चखता है।

स्वादन–(सं. पुं.) स्वाद लेना, चखना, आनन्द लेना।

स्वादित–(सं. वि.) चखा हुआ।

स्वादिष्ट–(हिं.वि.), **स्वादिष्ठ**–(सं.वि.) जो खाने में अच्छा लगे।
स्वादी–(सं. वि.) स्वाद चखनेवाला, रसिक।
स्वादु–(सं. पुं.) मीठा रस, गुड़, महुआ, चिरौंजी, अनार, बेर, सेंधा नमक, दूध; (स्त्री.) द्राक्षा, दाख; (वि.) मीठा, मधुर, सुंदर; **–कंद**–(पुं.) पिडालू; **–खंड**–(पुं.) गुड़ का टुकड़ा; **–तिक्त**–(पुं.) अखरोट; **–धन्वा**–(पुं.) कामदेव; **–फला**–(स्त्री.) केला; **–मूल**–((पुं.) गाजर; **–रसा**–(स्त्री.) सतावर, दाख; **–लता**–(स्त्री.) विदारीकंद।
स्वाद्य–(सं. वि.) स्वाद लेने या चखने योग्य।
स्वाधिष्ठान–(सं. पुं.) हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के एक चक्र का नाम जिसका स्थान शिश्न के मूल में है।
स्वाधीन–(सं. वि.) स्वतन्त्र, किसी का नियंत्रण न माननेवाला, अपनी इच्छानुसार चलनेवाला; **–ता**–(स्त्री.) स्वतन्त्रता; **–पतिका**–(स्त्री.) पति को वशीभूत करनेवाली नायिका; **–भर्तृका**–(स्त्री.) स्वाधीनपतिका।
स्वाधीनी–(हि. स्त्री.) स्वाधीनता।
स्वाध्याय–(सं. पुं.) वेदों का नियमपूर्वक अध्ययन, किसी विषय का अनुशीलन, अध्ययन, वेद।
स्वाध्यायी–(सं. पुं.) वेद-पाठक।
स्वान–(सं. पुं.) शब्द, घड़घड़ाहट।
स्वानुभव–(सं. पुं.) अपना अनुभव।
स्वानुरूप–(सं. वि.) अपने समान।
स्वाप–(सं. पुं.) निद्रा, नींद, स्वप्न।
स्वापक–(सं. वि.) नींद लानेवाला।
स्वापन–(सं. पुं.) नींद लाने की औषध; (वि.) नींद लानेवाला; (पुं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिसके प्रभाव से शत्रु सो जाते थे।
स्वाभाविक–(सं. वि.) नैसर्गिक, प्राकृतिक, जो स्वभाव से उत्पन्न हो।
स्वाभाव्य–(सं.वि.) अपने आप होनेवाला।
स्वामि–(हि. पुं.) देखें 'स्वामी'।
स्वामिकार्तिक–(सं. पुं.) शिव के पुत्र कार्तिकेय, स्कन्द।
स्वामिकुमार–(सं. पुं.) स्वामिकार्तिक।
स्वामिता–(सं. स्त्री.), **स्वामित्व**–(सं.पुं.) प्रभुत्व।
स्वामिनी–(सं. स्त्री.) मालिकिन, राधिका।
स्वामी–(सं. पुं.) मालिक, प्रभु, पति, ईश्वर, राजा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु, साधु-संन्यासियों की उपाधि, सेनानायक, गरुड़।
स्वाम्य–(सं. पुं.) स्वामित्व, स्वत्व।
स्वाम्युपकारक–(सं. वि.) अपने मालिक का हित करनेवाला।
स्वायंभुव–(सं. पुं.) प्रथम मनु का नाम।
स्वायंभू–(सं. पुं.) देखें 'स्वायंभुव'।
स्वायत्त–(सं.वि.) जो अपने ही अधीन हो, जिस पर अपना अधिकार हो; **–शासन**–(पुं.) स्थानिक स्वसंचालित शासन-व्यवस्था।
स्वार–(सं. पुं.) बादल की गड़गड़ाहट।
स्वारथ, स्वारथी–(हि पुं., वि.) देखें 'स्वार्थ,' 'स्वार्थी'।
स्वारब्ध–(सं.वि.) स्वयं आरंभ किया हुआ।
स्वाराज्य–(सं. पुं.) वह शासन-प्रबन्ध जिसका संचालन अपने ही देश के लोगों के हाथ में हो, स्वर्ग का राज्य, स्वर्गलोक।
स्वारी–(हि. स्त्री.) देखें 'सवारी'।
स्वारोचिष–(सं. पुं.) स्वरोचिष के पुत्र दूसरे मनु।
स्वार्जित–(सं. वि.) अपना कमाया हुआ।
स्वार्थ–(सं. पुं.) अपना उद्देश्य, अपना लाभ, अपना धन, अपना प्रयोजन; (वि.) अपना उद्देश्य साधनेवाला; **–त्याग**–(पुं.) दूसरे की भलाई अथवा किसी अच्छे काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ देना; **–त्यागी**–(वि.) दूसरे के भले के लिये अपने हित को निछावर कर देनेवाला; **–पंडित**–(वि.) अपना अभिप्राय साधने में चतुर; **–पर**–(वि.) जो केवल अपना ही स्वार्थ देखता हो; **–०ता**–(स्त्री.) स्वार्थ; **–परायण**–(वि.) स्वार्थपर; **–०ता**–(स्त्री.) स्वार्थ; **–साधक**–(वि.) अपना अर्थ साधनेवाला; **–साधन**–(पुं.) अपना प्रयोजन पूरा करना।
स्वार्थांध–(सं. वि.) जो अपने हित या लाभ के सामने और किसी की हानि या लाभ पर विचार नहीं करता।
स्वार्थिक–(सं. वि.) अपने स्वार्थ के उद्देश्य से सम्पादित, स्वार्थपर।
स्वार्थी–(सं.वि.) अपना ही स्वार्थ देखनेवाला।
स्वालक्षण–(सं. वि.) जो सरलता से पहचाना जा सके।
स्वावश्य–(सं. पुं.) आत्मवशता।
स्वाल–(हि. पुं.) देखें 'सवाल'।
स्वाशित–(सं. वि.) अच्छी तरह भोजन किया हुआ।
स्वाश्रय–(सं. पुं.) अपनी सामर्थ्य का आश्रय।
स्वाश्रित–(सं. वि.) स्वावलंबी।
स्वास–(हिं. पुं.) देखें 'श्वास', साँस।
स्वासा–(हिं. स्त्री.) श्वास, साँस।
स्वासीन–(सं. वि.) सुख से बैठा हुआ।
स्वास्थ्य–(सं. पुं.) नीरोगता, आरोग्य, सन्तोष, मानसिक शांति।
स्वास्थ्यकर–(सं. वि.) आरोग्यवर्धक।
स्वाहा–(सं. अव्य.) वह शब्द या मन्त्र जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने में किया जाता है; (स्त्री.) अग्नि की पत्नी का नाम; (मुहा.) **–करना**–नष्ट करना; **–कृत्**–(पुं.) यज्ञ करनेवाला; **–पति**–(पुं.) अग्नि; **–भुज्**–(पुं.) देवता; **–वल्लभ**–(पुं.) अग्नि।
स्वाहार–(सं. पुं.) अपना आहार।
स्वाहार्ह–(सं. वि.) हवि पाने योय।
स्वाहेय–(सं. पुं.) कार्तिकेय।
स्विन्न–(सं. वि.) सीझा हुआ, उबाला हुआ।
स्वीकरण–(सं. पुं.) अंगीकार करना, मानना, अपनाना, विवाह करना।
स्वीकरणीय–(सं. वि.) मानने योग्य।
स्वीकार–(सं. पुं.) अंगीकार, प्रतिज्ञा, वचन, पत्नी-रूप में ग्रहण करना, स्त्रीकर।
स्वीकार्य–(सं. वि.) मानने योग्य।
स्वीकृत–(सं. वि.) अंगीकृत, स्वीकार किया हुआ, परिगृहीत।
स्वीकृति–(सं. स्त्री.) सम्मति, स्वीकार।
स्वीय–(सं. वि.) स्वकीय, अपना, निजी; (पुं.) आत्मीय।
स्वीया–(सं. स्त्री.) वह नायिका जो स्वामी में अनुरक्त तथा पतिव्रता रहने की चेष्टा करती है।
स्वेच्छा–(सं. स्त्री.) अपनी इच्छा; **–मृत्यु**–(वि.) अपनी इच्छानुसार मरनेवाला; **–सेवक**–(पुं.) विना किसी पुरस्कार या वेतन के अपनी इच्छा से कोई काम करनेवाला, स्वयंसेवक।
स्वेच्छाचार–(सं. पुं.) मनमाना काम करना, जो जी में आये वही करना।
स्वेच्छाचारिता–(सं. स्त्री.) निरंकुशता, मनमानी करना।
स्वेच्छाचारी–(सं. वि.) अपनी इच्छानुसार चलनेवाला, मनमाना काम करनेवाला।
स्वेद–(सं. पुं.) घर्म, पसीना, ताप, गरमी;

–क–(पुं.) पसीना लानेवाली औषध; **–ज–**(वि., पुं.) पसीने से उत्पन्न होनेवाला (जीव); **–जल–**(पुं.) पसीना; **–नाश–**(पुं.) वायु; **–माता–**(स्त्री.) मुक्त अन्न का बननेवाला रस; **–स्राव–**(पुं.) पसीना निकलना।
स्वेदन–(सं.पुं.) स्वेद या पसीना निकलना।
स्वेदनिका–(सं. स्त्री.) पाकशाला, रसोईघर।
स्वेदनी–(सं. स्त्री.) लोहे का पात्र, तवा।
स्वेदांबु–(सं. पुं.) स्वेदजल, पसीना।
स्वेदायन–(सं. पुं.) रोमकूप।
स्वेदित–(सं. वि.) पसीने से युक्त, सेंका हुआ।
स्वेदी–(सं. वि.) पसीना लानेवाला।
स्वै–(हिं. सर्व.) सो, वही।
स्वैर–(सं. वि.) मनमाना आचरण करनेवाला, ऐच्छिक, यथेच्छ, मनमाना; (पुं.) स्वेच्छाधीनता; **–गति–**(वि.) स्वाधीनतापूर्वक भ्रमण करना; **–चारिणी–** (स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री, **–चारी–**(वि.) मनमाना काम करनेवाला, व्यभिचारी; **–ता–**(स्त्री.) स्वच्छन्दता; **–वर्ती–** (वि.) स्वेच्छाचारी; **–वृत्त–**(वि.) स्वेच्छाचारी; **–वृत्ति–**(स्त्री.) स्वाधीन वृत्ति।
स्वैराचार–(सं. पुं.) मनमाना काम करना।
स्वैरिणी–(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री।
स्वैरता–(सं. स्त्री.) स्वच्छन्दता।
स्वैरी–(सं. वि.) स्वतन्त्र, स्वाधीन।
स्वोत्थ–(सं. वि.) आप से निकला हुआ।
स्वोपार्जित–(सं. वि.) स्वयं उपार्जित किया हुआ, स्वयं कमाया हुआ।
स्वौजस्–(सं. पुं.) अपना ओज या तेज।

ह

ह– संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तैंतीसवाँ व्यंजन, (उच्चारण-विभाग के अनुसार यह ऊष्म वर्ण कहलाता है। इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है); (सं. पुं.) शिव, जल, हंसी, शून्य, मंगल, शुभ, आकाश, योग का एक आसन, घोड़ा, रुधिर, स्वर्ग, विष्णु, युद्ध, भग, चन्द्रमा, ज्ञान, ध्यान, गर्व, कारण।
हं–(सं. अव्य.) क्रोध का शब्द।
हंक–(हिं. स्त्री.) देखें 'हाँक', पुकार।
हँकड़ना–(हिं. क्रि. अ.) झिड़कते हुए जोर से चिल्लाना, ललकारना, साँड़ आदि का बोलना।
हँकरना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हँकड़ना'।
हँकवा–(हिं. पुं.) सिंह के आखेट का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग ढोल आदि बजाकर तथा कोलाहल करते हुए सिंह को शिकारी के मचान की ओर ले जाते हैं।
हँकवाना–(हिं. क्रि. स.) हाँक लगवाना, बुलवाना, (बैल-गाड़ी आदि किसी के द्वारा) चलवाना।
हँकवया–(हिं. पुं.) हाँकनेवाला।
हंका–(हिं. स्त्री.) ललकार, डपट।
हँकाई–(हिं. स्त्री.) हाँकने की क्रिया या भाव, हाँकने का शुल्क।
हँकाना–(हिं. क्रि. स.) चौपायों या पशुओं को चिल्लाकर हटाना या एक ओर ले जाना, हाँकना, पुकारना, हाँकने का काम दूसरे से कराना।
हँकार–(हिं. स्त्री.) जोर से पुकारना, बुलाने की क्रिया, पुकारने के लिये संबोधन की ऊँची आवाज, ललकार; (मुहा.)**–पड़ना**–बुलाने के लिये पुकार होना।
हँकारना–(हिं. क्रि. अ., स.) पुकारना, बुलवाना, ललकारना, हुँकारना।
हँकारा–(हिं.पुं.) पुकार, निमंत्रण, बुलावा।
हंगामा–(फा. पुं.) उपद्रव, दंगा, हल्ला, कोलाहल।
हंडना–(हिं. क्रि. अ.) घूमना-फिरना, व्यर्थ मारा-मारा फिरना, छानबीन करना, इधर-उधर ढूँढ़ना।
हंडा–(हिं. पुं.) पानी रखने का धातु का बड़ा पात्र।
हँड़िया–(हिं. स्त्री.) मिट्टी का लोटे के आकार का चौड़े मुँह का पात्र, हाँड़ी, इस आकार का काँच का पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।
हंडी–(सं.स्त्री.) हाँड़ी।
हंत–(सं. अव्य.) संभ्रम, (विषाद, हर्ष आदि) सूचक शब्द।
हंतकार–(सं. पुं.) (अतिथि, संन्यासी आदि के लिये) निकाला हुआ भोजन।
हंतव्य–(सं. वि.) मारने योग्य।
हंता–(सं. पुं.) मारनेवाला, हत्यारा।
हँथोरी–(हिं.स्त्री.) देखें 'हथेली'।
हँथौरा–(हिं. पुं.) देखें 'हथौड़ा'।
हँफनि–(हिं. स्त्री.) हाँफने की क्रिया; (मुहा.) **–मिटाना**–सुस्ताना।
हंबा, हंभा–(सं.स्त्री.) गाय-बैल के रँभाने का शब्द।
हंस–(सं. पुं.) एक प्रकार के यति जो ब्रह्मचर्य से रहते और प्रतिग्रह को स्वीकार नहीं करते, एक प्रकार का जलचर पक्षी, बत्तक, सारस, गाय का एक भेद, एक प्रकार का घोड़ा, प्राणवायु, एक प्रकार का योग, सूर्य, आत्मा, परब्रह्म, द्वेष, शिव, विष्णु, पर्वत, कामदेव, भैंसा, एक वर्णवृत्त का नाम, एक प्रकार का नाच, अजपा मन्त्र; (वि.) श्रेष्ठ, विशुद्ध; **–क–**(पुं.) हंस पक्षी, पैर में पहनने की बिछिया, संगीत में एक प्रकार का ताल; **–कूट–**(पुं.) बैल का कूबड़ या डिल्ला; **–ग–**(पुं.) ब्रह्मा; **–गति–**(स्त्री.) हंस के समान सुंदर धीमी चाल, बीस मात्राओं के एक छन्द का नाम; **–गद्गदा–**(स्त्री.) प्रियभाषिणी स्त्री; **–गर्भ–**(पुं.) एक प्रकार का रत्न; **–गामिनी–**(स्त्री.) हंस के समान गति से चलनेवाली स्त्री; **–चौपड़–**(हिं. पुं.) एक प्रकार का प्राचीन चौपड़ का खेल; **–जा–**(स्त्री.) सूर्य की कन्या, यमुना; **–दाहन–**(पुं.) गुग्गुल, धूप; **–नादिनी–**(स्त्री.) मधुरभाषिणी स्त्री; **–पदिका–**(स्त्री.) राजा दुष्यन्त की एक रानी का नाम; **–पदी–**(स्त्री.) गोधापदी नाम की लता; **–पाद–**(पुं.) ईंगुर, शिंगरिफ; **–मंगला–**(स्त्री.) एक संकर रागिनी का नाम; **–माला–**(स्त्री.) हंसों की पंक्ति; **–यान–**(पुं.) हंसवाहन, ब्रह्मा; **–याना–**(स्त्री.) सरस्वती; **–रथ–**(पुं.) ब्रह्मा; **–राज–**(पुं.) बड़ा हंस, एक बूटी जो पहाड़ों की चट्टानों में पाई जाती है; **–रुत–** (पुं.) हंस का शब्द, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ शब्द होते हैं; **–लोमश–**(पुं.) कसीस; **–वंश–**(पुं.) सूर्य का वंश; **–वती–** (स्त्री.) राजा दुष्यन्त की पत्नी; **–वाह, –वाहन–**(पुं.) ब्रह्मा; **–वाहिनी–**(स्त्री.) सरस्वती; **–सुता–**(स्त्री.) सूर्य की कन्या, यमुना नदी।
हँसन–(हिं. स्त्री.) हँसने की क्रिया या भाव।
हँसना–(हिं. क्रि. अ) आनन्द के साथ मुख से वेग से एक विशेष प्रकार का शब्द निकालना, खिलखिलाना, मनोहर जान पड़ना, आनन्द मनाना, ठठोली करना, किसी का उपहास करना; (मुहा.)

हँसकर बात उड़ाना–अनावश्यक समझ-कर किसी बात पर ध्यान न देना;
हँसते-हँसते– प्रसन्नतापूर्वक; **–बोलना**–हँसी की बात करना ।
हँसनि–(हिं. स्त्री.) देखें 'हँसी' ।
हँसमुख–(हिं. वि.) प्रसन्नवदन, जिसके मुख से प्रसन्नता झलकती हो, विनोदप्रिय।
हँसली–(हिं. स्त्री.) गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकर हड्डी, गले में पहनने का एक मण्डलाकार गहना।
हँसाई–(हिं. स्त्री.) हँसने की क्रिया या भाव, उपहास, लोकनिन्दा ।
हंसाधिरूढ़–(सं. पुं.) ब्रह्मा ।
हंसाधिरूढ़ा–(सं. स्त्री.) सरस्वती ।
हँसाना–(हिं. क्रि. स.) दूसरों को हँसने में प्रवृत्त करना ।
हँसाय–(हिं. स्त्री.) देखें 'हँसाई' ।
हंसालि–(सं. स्त्री.) एक छंद ।
हंसिका–(सं. स्त्री.) सैंतीस मात्राओं का एक छन्द जिसमें बीसवीं मात्रा पर यति होती है, हंसी ।
हंसिनी–(सं. स्त्री.) हंस की मादा, हंसी ।
हँसिया–(हिं. पुं.) एक धारदार अर्ध-चन्द्राकार उपकरण जिससे खेत की उपज काटी जाती है, चमड़ा छीलकर चिकना करने का एक औजार, गरदन के नीचे की हड्डी ।
हंसी–(सं. स्त्री.) हंस की मादा, दुधार गाय, बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।
हँसी–(हिं. स्त्री.) हँसने की क्रिया या भाव, ठठोली, विनोदपूर्ण उक्ति, निन्दा; **हँसी-खेल**–(पुं.) ठठोली; **–ठट्ठा**–(पुं.) मजाक; **–छूटना**–हँसना; **–में उड़ाना**–किसी (मुहा.); **–उड़ाना**–निन्दा करना; बात को हँसकर टाल देना; **–में ले जाना**–मजाक समझना; **–समझना**–सहज जानना ।
हंसीय–(सं. वि.) हंस-संबंधी ।
हँसुआ, हँसुवा–(हिं. पुं.) देखें 'हँसिया' ।
हँसोड़–(हिं. वि.) जो सदा हँसता हो, विनोदी ।
हंसोदक–(सं. पुं.) नये मिट्टी के पात्र में भरकर धूप में रखा हुआ जल ।
हँसौहाँ–(हिं. वि.) सदा हँसता हुआ, हँसी से युक्त ।
हई–(हिं. स्त्री.) आश्चर्य, अचरज ।
हउँ–(हिं. सर्व.) देखें 'हौं' ।
हक–(अ. पुं.) सत्य, सच्चाई, उचित, स्वत्व अधिकार; (वि.) ठीक, उचित, न्याय्य, प्राप्य ।

हकतलफी–(अ. स्त्री.) हक मारना, अन्याय ।
हकदार–(फा. वि.) हकवाला, अधि-कारी, स्वत्वधारी ।
हकबकाना–(हिं. क्रि. अ.) स्तम्भित होना, घबड़ाना, ठक रह जाना ।
हकला–(हिं. वि.) हकलानेवाला, रुक-रुककर बोलनेवाला ।
हकलाना–(हिं. क्रि. अ.) बोलने में अटकना, रुक-रुककर बोलना ।
हकशफा–(फा. पुं.) अपनी भूमि से संलग्न भूमि को खरीदने का अग्राधिकार।
हकार–(सं. पुं.) 'ह' अक्षर या वर्ण ।
हकीकत–(अ. स्त्री.) असलीयत, यथार्थता, वृत्तांत, हालत, सच बात ।
हकीकी–(अ. वि.) असली, सच्चा ।
हकीम–(अ. पुं.) ज्ञानी, बुद्धिमान्, यूनानी चिकित्सक ।
हकीमी–(अ. स्त्री.) हकीम का काम, पेशा आदि ।
हक्काबक्का–(हिं. वि.) घबड़ाया हुआ, भौचक ।
हक्कार–(सं. पुं.) चिल्लाकर बुलाने का शब्द, पुकार ।
हगना–(हिं. क्रि. अ.) मलोत्सर्ग करना, मल-त्याग करना, दबाव के कारण कोई वस्तु दे देना ।
हगाना–(हिं. क्रि.स.) हगने की क्रिया में सहायता देना ।
हगास–(हिं. स्त्री.) मल-त्याग करने की इच्छा या आवश्यकता ।
हगोड़ा–(हिं. वि.) बहुत हगनेवाला ।
हचकना–(हिं. क्रि.अ.) धक्के से ऊपर-नीचे हिलना-डोलना ।
हचका–(हिं. पुं.) धक्का, झोंका ।
हचकाना–(हिं.क्रि.स.) झोंका देकर हिलाना।
हचकोला–(हिं.पुं.) वह धक्का जो गाड़ी आदि के हिलने-डोलने से लगे, हचका ।
हचना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हिचकना' ।
हजम–(अ. पुं.) पाचन-क्रिया, गबन ।
हजरत–(अ. पुं.) दरबार, हुजूर, सम्मान-सूचक संबोधन ।
हजाम–(हिं. पुं.) नाई, नापित ।
हजामत–(अ. स्त्री.) बाल काटना, दाढ़ी बनाना, क्षौर ।
हजार–(फा. वि.) सहस्र ।
हजारी–(फा.वि.) हजार से संबद्ध ।
हजारों–(हिं. वि.) कई सहस्र ।
हज्ज–(अ.पुं.) काबे की तीर्थयात्रा, संकल्प ।
हज्जाम–(हिं. पुं.) बाल बनानेवाला, नाई, नाऊ ।

हट–(हिं. पुं.) देखें 'हठ' ।
हटक, हटकन–(हिं. स्त्री.) वर्जन, गायों तथा अन्य चौपायों को हाँकने की छड़ी ।
हटकना–(हिं.क्रि.स.) निषेध करना, मना करना, चौपायों को किसी ओर जाने से रोककर दूसरी ओर हाँकना ।
हटका–(हिं. पुं.) किवाड़ों को खुलने से रोकने के लिये लगाया हुआ काठ, ब्योंड़ा ।
हटकि–(हिं. अव्य.) अकारण ।
हटतार–(हिं. पुं.) माला का सूत ।
हटताल–(हिं. स्त्री.) देखें 'हड़ताल' ।
हटना–(हिं.क्रि.अ.) एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान में जाना, सरकना, खिस-कना, पीछे की ओर जाना, प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहना, दूर होना, किसी बात का नियत समय के बाद होना, सामने से दूर होना, विमुख होना, जी चुराना; **–उड़ी**–(स्त्री.) एक प्रकार का मलखंभ का व्यायाम ।
हटवया, हटवार–(हिं.पुं.) हाट में बैठ-कर सौदा बेचनेवाला, दुकानदार।
हटवाई–(हिं. स्त्री.) क्रय-विक्रय, सौदा मोल लेना या बेचना ।
हटवाना–(हिं. क्रि. स.) हटाने का काम दूसरे से कराना ।
हटाना–(हिं. क्रि. स.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना, खिसकाना, स्थान छोड़ने के लिये विवश करना, किसी स्थान से दूर करना, प्रतिज्ञा से विचलित करना, डिगाना ।
हटुवा–(हिं. पुं.) दुकानदार, अन्न तौलने-वाला, बया ।
हटौती–(हिं. स्त्री.) शरीर की गठन ।
हट्ट–(सं. पुं.) हाट, बाजार ।
हट्टविलासिनी–(सं. स्त्री.) वेश्या, रंडी ।
हट्टा-कट्टा–(हिं. वि.) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।
हट्टाध्यक्ष–(सं. पुं.) हाट का अध्यक्ष ।
हठ–(सं. पुं.) दुराग्रह, टेक, दृढ़ प्रतिज्ञा; (मुहा.)**–पकड़ना**–दुराग्रह करना; **–रखना**–किसी के हठ को पूरा करना; **–धर्म**–(पुं.) दुराग्रह, कट्टरपन; **–धर्मी**–(स्त्री.) अपनी बात पर अड़नेवाला, अपने मत, हठ आदि पर अड़ने की प्रकृति; **–योग**–(पुं.) वह योग जिसमें आसन, सिद्धि, प्राणा-याम, नेति, धौति आदि क्रियाओं से शरीर की शुद्धि की जाती है तथा चित्त को एकाग्र कर परमात्मा के ध्यान में लगाया जाता है; **–शील**–(वि.) हठी ।

हठना–(हिं. क्रि. अ.) दुराग्रह करना।
हठात्–(सं. अव्य.) हठपूर्वक, दुराग्रह से, बलपूर्वक; –कार–(पुं.) बलात्कार।
हठिका–(सं. स्त्री.) कोलाहल।
हठी–(सं. वि.) हठ करनेवाला।
हठीला–(हिं. वि.) अपनी प्रतिज्ञा का पक्का, धीर, वीर, दृढ़संकल्प।
हड़–(सं. स्त्री.) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं, एक प्रकार का आभूषण जो नाक में पहना जाता है।
हड़क–(हिं. स्त्री.) पागल कुत्ते के काटने से उत्पन्न जल के लिये बड़ी व्याकुलता, किसी वस्तु को प्राप्त करने की झक, उत्कट अभिलाषा।
हड़कना–(हिं. क्रि. अ.) व्याकुल होना, लालायित होना।
हड़काना–(हिं. क्रि. स.) किसी के पीछे लगाना, लहकाना, तरसाना।
हड़गीला–(हिं. पुं.) बगले की जाति का एक पक्षी।
हड़जोड़–(हिं. पुं.) एक प्रकार की लता जो भीतरी चोट के स्थान पर लगाई जाती है।
हड़ताल–(हिं.स्त्री.) मजदूरों आदि द्वारा किसी बात पर असन्तोष प्रकट करने के लिये सामूहिक रूप से काम-धंधा बंद करना।
हड़ना–(हिं.क्रि.अ.) तौल में जाँचा जाना।
हड़प–(हिं.पुं.) निगला हुआ ग्रास, पेट में डाला हुआ कौर, अनुचित रीति से ले लेना।
हड़पना–(हिं. क्रि. स.) खा जाना, दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना।
हड़-फटन–(हिं.स्त्री.) हड्डियों की व्यथा।
हड़फूटनी–(हिं. स्त्री.) चमगादड़।
हड़फोड़–(हिं.पुं.) एक प्रकार की चिड़िया।
हड़बड़–(हिं. स्त्री.) उतावली, आतुरता का ढंग।
हड़बड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) शीघ्रता के कारण घबड़ाहट से कोई काम करना, आतुर होना, किसी को जल्दी काम करने के लिए घबड़ाहट में डालना।
हड़बड़िया–(हिं. वि.) उतावला।
हड़बड़ी–(हिं. स्त्री.) उतावली, आतुरता के कारण घबड़ाहट।
हड़हड़ाना–(हिं. क्रि. अ., स.) उतावली से दूसरे को व्यग्र करना, हड़-हड़ शब्द होना।
हड़हा–(हिं. पुं.) जंगली बैल; (वि.) अति दुर्बल, जिसके शरीर में केवल हड्डी रह गई हो।
हड़ा–(हिं. पुं., अव्य.) पक्षियों को उड़ाने का शब्द जो खेत के रखवाले करते हैं।
हड़ावल–(हिं. स्त्री.) हड्डियों का समूह, हड्डी का ढाँचा, ठठरी, हड्डियों की माला।
हडि–(सं. पुं.) प्राचीन काल की काठ की बेड़ी।
हड़ीला–(हिं.वि.) जिसमें हड्डी हो, हड़हा।
हड्डा–(हिं. पुं.) एक तरह का कीड़ा, भिड़, बर्रे।
हड्डी–(हिं. स्त्री.) अस्थि, हाड़; (मुहा.) हड्डियाँ निकल आना–अति दुर्बल हो जाना; –तोड़ना–बहुत मारना-पीटना; पुरानी हड्डी–वृद्ध मनुष्य, वह जिसको भीतरी बल हो।
हत–(सं.वि.) वध किया हुआ, मारा हुआ, तंग किया हुआ, छला हुआ, पीड़ित, ग्रस्त, लगा हुआ, निकृष्ट, गुणा किया हुआ, बिगाड़ा हुआ, आशाहीन; –ज्ञान–(वि.) ज्ञानशून्य, अचेत; –दैव–(वि.) भाग्यहीन, अभागा; –पुत्र–(वि.) जिसका पुत्र मर गया हो; –प्रभ–(वि.) प्रभारहित; –प्रभाव–(वि.) जिसका प्रभाव न रह गया हो; –बुद्धि–(वि.) बुद्धिहीन, मूर्ख; –भाग्य–(वि.) अभागा; –मूर्ख–(वि.) बहुत बड़ा मूर्ख; –वीर्य–(वि.) शक्तिहीन, बलहीन; –स्वर–(वि.) स्वरभंगयुक्त, जिसकी बोली बैठ गई हो।
हतना–(हिं. क्रि. स.) वध करना, मार डालना, मारना-पीटना।
हतवाना–(हिं. क्रि. स.) हतने का काम दूसरे से कराना, पिटवाना।
हता–(सं. स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री; (हिं. क्रि. अ.) था।
हतादर–(सं. वि.) जिसका आदर घट गया हो।
हताध्वर–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
हताना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'हतवाना'।
हताश–(सं. वि.) आशारहित, निराश, दुःखी, दीन।
हताहत–(सं. वि.) मृत और घायल।
हति–(सं. स्त्री.) वध, हत्या।
हतोत्साह–(सं. वि.) जिसको कुछ करने का उत्साह न रह गया हो, जिसको किसी काम का उमंग न हो।
हतौजस्–(सं. वि.) तेजहीन, दुर्बल।
हत्या–(हिं. पुं.) किसी यन्त्र का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है, मूठ, लकड़ी का उपकरण जिससे खेत की नालियों का पानी क्यारी में चारों ओर उलीचा जाता है, निवार बुनने का एक यन्त्र, केले के फलों का गुच्छा, दीवाल पर लगाया हुआ हाथ का छापा; ईंट या पत्थर का टुकड़ा जिस पर हाथ रखकर दंड किया जाता है; –जड़ी–(स्त्री.) एक प्रकार का सुगन्धित पत्तियोंवाला का पौधा।
हत्थी–(हिं. स्त्री.) शस्त्र की मूठ।
हत्थे–(हिं. अव्य.) हाथ में; (मुहा.) –चढ़ना–वश में होना।
हत्या–(सं. स्त्री.) वध, झंझट, बखेड़ा; (मुहा.)–लगना–मार डालने का पाप लगना।
हत्यार, हत्यारा–(हिं. पुं.) हत्या करनेवाला।
हत्यारी–(हिं. स्त्री.) हत्या करनेवाली, हत्या करने का पाप।
हथ–(हिं. पुं.) "हाथ" तथा क्वचित् "हाथी" शब्द का संक्षिप्त रूप, (इसका व्यवहार समस्त-पदों में होता है); –उधार–(पुं.) वह ऋण जो थोड़े दिनों के लिये बिना लिखा-पढ़ी के लिया या दिया जाय, हथफेर; –कंडा–(पुं.) हस्तलाघव, गुप्त चाल; –कड़ी–(स्त्री.) कैदियों के हाथों में पहनाने का लोहे की बेड़ी; –कल–(पुं.) पेंच ढीली करने या कसने का एक औजार; –कोड़ा–(पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति; –छुट–(वि.) जिसको तुरत किसी को मार देने की आदत हो; –नाल–(पुं.) वह तोप जो हाथी की पीठ पर रखकर चलाई जाती है; –फूल–(पुं.) एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा, हथेली के दूसरे ओर पहनने का एक प्रकार का गहना; –फेर–(पुं.) प्रेम से शरीर पर हाथ फेरना, चतुराई के साथ किसी का धन उड़ा लेना, चुपचाप किसी का माल हरण करना, देखें 'हथ-उधार'; –बेंटा–(पुं.) गन्ना काटने की कुदाली; –लेवा–(पुं.) विवाह-संस्कार में वर तथा कन्या का हाथ अपने हाथ में लेना, पाणिग्रहण; –बाँस–(पुं.) नाव खेने की सामग्री; –सार–(स्त्री.) हाथी बाँधने का स्थान, फीलखाना।
हथनी–(हिं. स्त्री.) मादा हाथी, हथिनी।
हथबाँसना–(हिं.क्रि.स.) व्यवहार में लाना।
हथाहथी–(हिं. अव्य.) हाथोहाथ, झटपट।
हथिनी–(हिं. स्त्री.) मादा हाथी, हथनी।
हथिया–(हिं. पुं.) हस्त नक्षत्र।
हथियाना–(हिं. क्रि. स.) अधिकार में करना, हाथ में लेना, धोखा देकर दूसरे की वस्तु ले लेना, हाथ से पकड़ना।

हथियार–(हिं. पुं.) कोई वस्तु बनाने का औजार, अस्त्र-शस्त्र, लिंगेंद्रिय; **–बंद**–(वि.) शस्त्रधारी, जो हथियार धारण किये हो।
हथुई रोटी–(हिं. स्त्री.) गीले आटे की लोई को हथेलियों से दबाकर बनाई हुई रोटी।
हथेरा–(हिं. पुं.) पानी उलीचने का उपकरण, हत्था।
हथेरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'हथेली'।
हथेली–(हिं. स्त्री.) हाथ की कलाई के आगे वह चौड़ा भाग जिसमें उँगलियाँ होती हैं, करतल; (मुहा.)**–पर जान होना**– प्राण जाने का भय होना।
हथोरी–(हिं. स्त्री.) देखें 'हथेली'।
हथौटी–(हिं. स्त्री.) हस्तकौशल, कोई काम करने का ढंग।
हथौड़ा–(हिं. पुं.) ठोंकने के काम आनेवाला लोहे का एक उपकरण।
हथौड़ी–(हिं. स्त्री.) छोटा हथौड़ा।
हथौना–(हिं. पुं.) वर और कन्या के हाथ में मिठाई रखने की रीति।
हथ्यार–(हिं. पुं.) देखें 'हथियार'।
हद–(अ. स्त्री.) सीमा, किनारा, नियत स्थान; **–बंदी**–(स्त्री.) हद का निर्धारण।
हद्द–(अ. स्त्री.) देखें 'हद'।
हनन–(सं. पुं.) वध, मारण, आघात, गुणा करने की क्रिया।
हनना–(हिं. क्रि. स.) वध करना, मार डालना, प्रहार करना, पीटना, हथौड़े से ठोकना।
हनवाना–(हिं. क्रि. स.) हनने का कार्य दूसरे से कराना।
हननीय–(सं. वि.) वध करने योग्य।
हनील–(सं. पुं.) केतकी, केवड़ा।
हनु–(सं. पुं.) ठुड्ढी, चिबुक।
हनुका–(सं. स्त्री.) जबड़ा।
हनुग्रह–(सं. पुं.) दाढ़ बैठ जाने का रोग।
हनुमंत–(हिं. पुं.) हनुमान्।
हनुमंती–(हिं. स्त्री.) मलखंभ का एक व्यायाम।
हनुमान(न्)–(सं. वि.) जबड़ेवाला; (पुं.) एक वीर वानर जो रामचन्द्र का परम भक्त था; **–बैठक** (स्त्री.) एक प्रकार की कसरत।
हनुल–(सं. वि.) पुष्ट दाढ़वाला।
हनुस्तंभ–(सं. पुं.) हनुग्रह रोग।
हनू–(सं. स्त्री.) हनु, ठुड्ढी; **–फाल**–(पुं.) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ होती हैं; **–मत्**, **–मान्**–(पुं.) हनुमान्।
हनुष–(सं. पुं.) राक्षस।
हनोद–(हिं.पुं.) हिंडोल राग का एक भेद।
हप–(हिं. पुं.) मुँह में झट से लेकर ओठों को बंद करने का शब्द; (मुहा.)**–कर जाना**–मुँह में डालकर झट से खा जाना।
हपटाना–(हिं. क्रि. अ.) हाँफना।
हबकना–(हिं. क्रि. स.) खाने या काटने के लिये झट से मुख खोलना, दाँत से काटना।
हबर-हबर–(हिं. अव्य.) हड़बड़ी के साथ, उतावली से।
हबराना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हड़बड़ाना'।
हबशी–(अ. पुं.) निग्रो जाति का व्यक्ति।
हबेली–(हिं. स्त्री.) देखें 'हवेली'।
हब्बा-डब्बा–(हिं. पुं.) बच्चों का तेजी से साँस चलने का रोग।
हम–(हिं. सर्व.) उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम "मैं" का बहुवचन रूप; (पुं.) अहंकार, अभिमान, "हम" का भाव।
हमता–(हिं. पुं.) अहंकार।
हमरा(रो)–(हिं. सर्व.) देखें 'हमारा'।
हमहमी–(हिं. स्त्री.) देखें 'हमाहमी'।
हमारा–(हिं. सर्व.) 'हम' का सम्बन्ध-कारक रूप।
हमाहमी–(हिं. स्त्री.) स्वार्थपरता, अहंकार, अपने स्वार्थ-साधन का प्रयत्न।
हमें–(हिं. सर्व.) "हम" का कर्म और सम्प्रदान कारक रूप, हम को।
हमेव–(हिं. पुं.) अभिमान, अहंकार।
हमेशा–(फा. अव्य.) सर्वदा।
हमैं–(हिं. सर्व.) देखें 'हमें'।
हम्मीर–(सं. पुं.) संपूर्ण जाति का एक संकर राग; **–नट**–(पुं.) एक संकर राग का नाम।
हयंद–(हिं. पुं.) अच्छा सुंदर घोड़ा।
हय–(सं. पुं.) अश्व, घोड़ा, चार मात्राओं का एक छन्द, इन्द्र का एक नाम, धनु राशि, कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द; **–कातरा**–(स्त्री.) वृक्ष विशेष; **–गंध**–(पुं.) काला नमक; **–गंधा**–(स्त्री.) असगन्ध; **–गृह**–(पुं.) अश्वशाला; **–ग्रीव**–(पुं.) एक असुर का नाम, विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक; **–ग्रीवा**–(स्त्री.) दुर्गा; **–घ्न**–(पुं.) करवीर वृक्ष; **–द्विष**–(पुं.) भैंसा; **–नाल**–(हिं.स्त्री.) घोड़ों द्वारा खींची जानेवाली तोप; **–प्रिय**–(पुं.) यव, जौ; **–प्रिया**–(स्त्री.) असगन्ध; **–मारक**–(पुं.) कनेर, पीपल का वृक्ष; **–मुख**–(पुं.) एक राक्षस का नाम; **–मेध**–(पुं.) अश्वमेध यज्ञ; **–वाहन**–(पुं.) कुबेर; **–विद्या**–(स्त्री.) अश्व-विद्या; **–वैरी**–(पुं.) भैंसा; **–शाला**–(स्त्री.) अश्वशाला, घुड़साल; **–शास्त्र**–(पुं.) अश्वशास्त्र; **–शिक्षा**–(स्त्री.) अश्वों की शिक्षा।
हयन–(सं.पुं.) ढकी हुई गाड़ी।
हयना–(हिं. क्रि. स.) हत्या करना, मार डालना, वध करना, नष्ट करना।
हया–(सं. स्त्री.) असगन्ध; (अ. स्त्री.) लज्जा।
हयागार–(सं. पुं.) अश्वशाला।
हयानन–(सं. पुं.) देखें 'हयग्रीव'।
हयारोह–(सं.पुं.) अश्वारोही, घुड़सवार।
हयालय–(सं. पुं.) अश्वशाला।
हयोत्तम–(सं. पुं.) उत्तम घोड़ा।
हर–(सं. पुं.) शिव, महादेव, अग्नि, गदहा, हरण, भाग, गणित में किसी संख्या का भाजक, भिन्न में नीचे की संख्या, छप्पय का एक भेद, रगण का पहला भेद; (वि.) छीनने या लूटनेवाला, मिटानेवाला, नाश करनेवाला, दूर करनेवाला, वाहक, ले जानेवाला।
हर–(फा. वि.) प्रत्येक।
हरएँ–(हिं. अव्य.) धीरे-धीरे।
हरक–(सं. पुं.) शिव, महादेव; (वि.) हरण करनेवाला।
हरकत–(अ. स्त्री.) हिलना-डोलना, गति, चाल, चेष्टा।
हरकना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'हटकना'।
हरकारा–(हिं. पुं.) सन्देश अथवा चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला।
हरकेस–(हिं. पुं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।
हरख–(हिं. पुं.) देखें 'हर्ष'।
हरखना–(हिं. क्रि. अ.) प्रसन्न होना।
हरखाना–(हिं. क्रि. स.) प्रसन्न करना।
हरगिज–(फा. अव्य.) कभी, किसी हालत में (नहीं के साथ प्रयुक्त।)
हरगौरी–(सं.स्त्री.) शिव की अर्धनारीश्वर मूर्ति।
हरचूड़ामणि–(सं. पुं.) चन्द्रमा।
हरज–(अ. पुं.) हानि, क्षति, समय की बरबादी।
हरजा–(हिं. पुं.) हानि, हरज।
हरजाना–(फा. पुं.) क्षतिपूर्ति।
हरट्ट–(हिं. वि.) हृष्ट-पुष्ट।
हरण–(सं. पुं.) संहार, नाश, दूर करना, हटाना, लूटना, छीनना, खौलता हुआ जल, कौड़ी, भुज, बाहु, शुक्र, ग्रहण करना,

भाग देना, विभाग करना, ले जाना।
हरणीय–(सं. वि.) हरण करने योग्य, छीनने लायक।
हरता–(हिं. वि.) देखें 'हर्ता'; **–धरता**–(पुं.) जिसको रक्षा और नाश (दोनों करने) का अधिकार हो, स्वामी, पूर्ण अधिकारी।
हरतार, हरताल–(हिं. स्त्री.) पीले रंग का एक खनिज पदार्थ; (मुहा.) **–लगाना**–नष्ट करना, मिटा देना।
हरताली–(हिं. वि.) हरताल के रंग का; (स्त्री.) ऐसा रंग।
हरतेज–(सं. पुं.) पारद, पारा।
हरद–(हिं. स्त्री.) हरिद्रा, हलदी।
हरदा–(हिं. पुं.) अनाज की पत्तियों को खा जानेवाला एक कीड़ा।
हरदिया–(हिं. वि.) हल्दी के रंग का, पीला।
हरदी–(हिं. स्त्री.) हरिद्रा, हलदी।
हरद्वार–(हिं. पुं.) देखें 'हरिद्वार'।
हरनर्तक–(सं. पुं.) एक प्रकार का छन्द।
हरना–(हिं. क्रि. अ., स.) किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध ले लेना, छीनना, लूटना, मिटाना, दूर करना, नाश करना, ले जाना, पराजित होना, शिथिल होना; (मुहा.) प्राण **हरना**–मार डालना; मन **हरना**–लुभाना।
हरना–(हिं. पुं.) देखें 'हिरन'।
हरनाक(कु)स–(हिं. पुं.) देखें 'हिरण्यकशिपु'।
हरनाच्छ–(हिं. पुं.) देखें 'हिरण्याक्ष'।
हरनी–(हिं. स्त्री.) मादा हरिन, मृगी।
हरनेत्र–(सं. पुं.) शिव के नेत्र, तीन की संख्या।
हरनौटा–(हिं. पुं.) हरिन का बच्चा।
हरपा–(हिं. पुं.) सुनारों का तराजू रखने का डब्बा।
हरपुर–(सं. पुं.) शिवलोक, शिव की पुरी।
हरप्रिय–(सं. पुं.) धतूरा, शिव का प्रिय भक्त।
हरफारेवड़ी, हरफार्‌योरी–(हिं. स्त्री.) कमरख की जाति का एक वृक्ष जिसके सिंघाड़े के समान फल खटमीठे होते है।
हरबर–(हिं. अव्य.) हड़बड़ी के साथ, शीघ्र।
हरबराना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हड़बड़ाना'।
हरबीज–(सं. पुं.) पारद, पारा।
हरबोंग–(हिं. वि.) गँवार, अक्खड़, मूर्ख।
हरभूली–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का धतूरा।
हरम–(अ. पुं.) अंतःपुर।
हरमजदगी–(फा. स्त्री.) हरामजादे का काम, आदत आदि।
हररूप–(सं. पुं.) शिव, महादेव।
हरवल–(हिं. स्त्री.) हलवाहे को बिना ब्याज के दिया हुआ धन।
हरवली–(हिं. स्त्री.) सेना की अध्यक्षता।
हरवल्लभ–(सं. पुं.) ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक भेद।
हरवा–(हिं. पुं.) देखें 'हार'।
हरवाना–(हिं. क्रि. स.) हड़बड़ाना, शीघ्रता करना, हराना।
हरवाल–(हिं. पुं.) सुरानी नाम की घास।
हरवाहन–(सं. पुं.) शिव की सवारी, बैल।
हरवाहा–(हिं. पुं.) हल चलानेवाला श्रमिक, हलवाहा।
हरवाही–(हिं. स्त्री.) हलवाहे का काम या वेतन।
हरशंकरी–(हिं. स्त्री.) पीपल और पाकड़ का संग्लन वृक्ष।
हरशेखरा–(सं. स्त्री.) गंगा।
हरख–(हिं. पुं.) देखें 'हर्ष', प्रसन्नता।
हरखना–(हिं. क्रि. अ.) प्रसन्न होना।
हरखाना–(हिं. क्रि. अ., स.) प्रसन्न होना, हर्षित करना, प्रसन्न करना।
हरषित–(हिं. वि.) हर्षित, प्रसन्न।
हरसना–(हिं. क्रि. अ.) हरखना, प्रसन्न होना।
हरसाना–(हिं. क्रि. स.) देखें 'हरखाना'।
हरसिंगार–(हिं. पुं.) पारिजात, परजाता।
हरसूनु–(सं. पुं.) कार्तिकेय।
हरहा–(हिं. पुं.) हैरान करनेवाला पशु, वृक, भेड़िया; **–ई**–(स्त्री.) वह अक्खड़ गाय जो इधर-उधर भागती फिरती है।
हरहार–(सं. पुं.) शिव का हार, सर्प।
हरहूरा–(सं. स्त्री.) हुरहुर, द्राक्षा, दाख।
हरांस–(हिं. पुं.) मन्द ज्वर।
हरा–(हिं. वि.) हरित, घास या पत्ती के रंग का, प्रसन्न, प्रफुल्ल, सजीव, जो सूखा या मरा न हो, (फल) जो पका न हो; (पुं.) हरित वर्ण, चौपायों को खिलाने का हरा चारा; (स्त्री.) पार्वती; **–पन**–(पुं.) हरा होने का भाव; **–भरा**–(वि.) प्रफुल्ल, ताजा।
हराद्रि–(सं. पुं.) कैलास पर्वत।
हराना–(हिं. क्रि. स.) शत्रु को युद्ध में पराजित करना, शत्रु को पीछे हटाना, प्रतिद्वंद्वी को परास्त करना, उद्योग शिथिल करना, थकाना।
हराम–(अ. वि.) निषिद्ध, वर्जित, त्याज्य, धर्मविरुद्ध; (पुं.) व्यभिचार; **–खोर**–(पुं.) हराम का माल खानेवाला; **–खोरी**–(स्त्री.) हरामखोर का काम; **–जादा**–(पुं.) जारज, दोगला; **–जादी**–(स्त्री.) दोगली।
हरामी–(अ. वि.) हराम का जनमा हुआ, दुष्ट, पाजी।
हरारत–(अ. स्त्री.) हल्का ज्वर, सुस्ती।
हरावर, हरावल–(सं. पुं.) सेना का अगला भाग, ठगों का सरदार जो आगे-आगे चलता है।
हरावास–(सं. पुं.) शिव का आवास, कैलास।
हराहर–(हिं. पुं.) देखें 'हलाहल'।
हरि–(सं. पुं.) विष्णु, सिंह, सुग्गा, सर्प, बाँस, मूँग, श्रीरामचन्द्र, अठारह वर्णो का एक छन्द, गरुड़ का एक पुत्र, शृगाल, सिंह राशि, हंस, अग्नि, कोयल, मोर, बंदर, मेढक, चंद्रमा, घोड़ा, वायु, सूर्य, ब्रह्मा, शिव, यमराज, किरण, एक संवत्सर का नाम; (वि.) पीला, हरा, भूरा; **–कथा**–(स्त्री.) भगवान् या उनके अवतारों के चरित्र का वर्णन; **–कर्म**–(पुं.) यज्ञ; **–कीर्तन**–(पुं.) भगवान् के अवतारों का स्तुतिगान, भगवद्‌भजन; **–केश**–(पुं.) शिव, विष्णु; **–क्षेत्र**–(पुं.) हिमालय का एक प्राचीन पुण्य-स्थान; **–गंध**–(पुं.) पीला चन्दन; **–गीतिका**–(स्त्री.) अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द; **–चंदन**–(पुं.) एक प्रकार का चन्दन, पीला चन्दन, चाँदनी, कमल, केशर; **–चर्म**–(पुं.) व्याघ्र-चर्म; **–चाप**–(पुं.) इन्द्रधनुष; **–जटा**–(स्त्री.) रावण की अनुचरी एक राक्षसी का नाम; **–जन**–(पुं.) ईश्वर का भक्त, अछूत; **–जीवक**–(पुं.) चने का पौधा; **–ताल**–(पुं.) पीत वर्ण की एक उपधातु, हरताल; **–तालिका**–(स्त्री.) भाद्रपद शुक्ला तृतीया, स्त्रियों का तीज का व्रत; **–ताली**–(स्त्री.) आकाश-रेखा, तलवार की धार का भाग; **–दिन**–(पुं.) श्रीहरि का दिन, एकादशी; **–दिश्**–(स्त्री.) पूर्व दिशा; **–देव**–(पुं.) श्रवण नक्षत्र; **–द्वार**–(पुं.) सहारनपुर के अंतर्गत एक प्राचीन तीर्थ-स्थान जहाँ पहाड़ों से निकलकर गंगाजी समतल भूमि में आई हैं; **–धनुष**–(पुं.) इन्द्रधनुष; **–धाम**–(पुं.) विष्णुलोक, वैकुंठ; **–नक्षत्र**–(पुं.) श्रवण नक्षत्र; **–नख**–(पुं.) सिंह या बाघ का नख; **–नाथ**–(पुं.) वानरों में श्रेष्ठ, हनुमान्; **–नाम**–(पुं.) भगवान् का नाम; **–पद**–(पुं.) विष्णुलोक, वैकुंठ, एक छन्द जिसके पहले तथा तीसरे चरणों में सोलह तथा दूसरे और चौथे चरणों में ग्यारह मात्राएँ होती हैं; **–पर्ण**–

(पुं.) कृष्ण चन्दन; **–पुर–**(पुं.) विष्णु-लोक, वैकुण्ठ; **–पैड़ी–**(हिं. स्त्री.) हरिद्वार तीर्थ में गंगा पर एक विशेष घाट; **–प्रबोध–**(पुं.) कार्तिक शुक्ला एकादशी; **–प्रिय–**(पुं.) कदम्ब वृक्ष, कनेर, काला चंदन; **–प्रिया–**(स्त्री.) लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी तिथि, मधु, पृथ्वी, लाल चन्दन, एक मात्रिक छन्द का नाम; **–प्रीता–**(स्त्री.) ज्योतिष में एक मुहूर्त का नाम; **–बीज–**(पुं.) हरताल; **–बोधिनी–**(स्त्री.) कार्तिक शुक्ला एकादशी; **–भक्त–**(पुं.) विष्णु का भक्त, ईश्वर का प्रेमी; **–भक्ति–**(स्त्री.) ईश्वर में प्रेम; **–भुज्–**(पुं.) सर्प, साँप; **–मंथ–**(पुं.) अग्निमंथ का वृक्ष जिसकी लकड़ी को रगड़कर आग जलाई जाती है; **–मंदिर–**(पुं.) विष्णु का मंदिर; **–मेध–**(पुं.) अश्वमेध यज्ञ ; **–यान–** (पुं.) गरुड़; **–योजन–**(पुं.) रथ में घोड़े जोतना; **–योनि–**(पुं.) ब्रह्मा; **–लीला–**(स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं; **–लोक–**(पुं.) विष्णुलोक, वैकुंठ ; **–वंश–**(पुं.) वह ग्रन्थ जिसमें श्रीकृष्ण और उनके वंश का विस्तृत वर्णन लिखा है; **–वल्लभ–**(पुं.) मुचकुंद का वृक्ष; **–वल्लभा–**(स्त्री.) लक्ष्मी, तुलसी; **–वास–**(पुं.) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष; **–वासर–**(पुं.) रविवार, एकादशी और द्वादशी–ये दोनों तिथियाँ; **–वाहन–**(पुं.) गरुड़, इन्द्र, सूर्य; **–बीज–**(पुं.) हरिताल, हरताल; **–व्रत–**(पुं.) भगवान् श्रीहरि के निमित्त किया जानेवाला व्रत; **–शयनी–**(स्त्री.) आषाढ़ शुक्ला एकादशी; **–शर–**(पुं.) शिव, महादेव; **–संकीतन–**(पुं.) श्रीहरि का नामोच्चारण; **–सुत–**(पुं.) प्रद्युम्न, अर्जुन; **–हय–**(पुं.) इन्द्र, गणेश, कार्तिकेय, सूर्य; **–हर क्षेत्र–**(पुं.) बिहार प्रान्त का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान।

हरिअर–(हिं. वि.) हरित, हरा।

हरिअरी–(हिं. स्त्री.) हरा होने का भाव, हरियाली।

हरिआना–(हिं. वि. अ.) हरा होना।

हरिआली–(हि. स्त्री.) घास, पेड़-पौधों आदि का विस्तार, हरिअरी।

हरिण–(सं. पुं.) मृग, कुरंग, दिन, शिव, विष्णु, सूर्य, हंस, भूरा रंग; (वि.) भूरे रंग का; **–क–**(पुं.) हरिन का बच्चा; **–कलंक–**(पुं.) चन्द्रमा; **–नयना–**(स्त्री.) हरिण के समान सुंदर आँखोंवाली स्त्री; **–नर्तक–**(पुं.) किन्नर; **–प्लुता–**(स्त्री.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं; **–लक्षण–**(पुं.) चन्द्रमा; **–लांछन–**(पुं.) चन्द्रमा ; **–हृदय–** (वि.) भीरु, डरपोक।

हरिणाक्ष–(सं. वि.) हरिण के समान आँखोंवाला।

हरिणाक्षी–(सं.वि.,स्त्री.) हरिण के समान नेत्रोंवाली।

हरिणी–(सं. स्त्री.) मृगी, मादा हरिन, सुवर्ण की प्रतिमा, दूर्वा, दूब, कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक, सत्रह वर्णों के एक वर्णवृत्त का नाम, पीली चमेली, मजीठ, विजया, भाँग, तरुणी।

हरित्–(सं.वि.) हरा, गाढ़े पीले रंग का; (पुं.) सूर्य के घोड़े का नाम, विष्णु, सूर्य, सिंह, हल्दी, पन्ना, एक प्रकार का तृण।

हरित–(सं. वि.) हरे रंग का, भूरा, बदामी; (पुं.) सेना, हरियाली, शाक-भाजी, कश्यप के एक पुत्र का नाम; **–नेत्र–**(पुं.) उल्लू; **–मणि–**(पुं.) मरकतमणि, पन्ना।

हरिता–(सं. स्त्री.) हरिद्रा, हल्दी, दूब, भरे रंग का अंगूर।

हरिताश्म–(सं. पुं.) तुत्थ, तूतिया, पन्ना।

हरितोपल–(सं. पुं.) मरकत मणि, पन्ना।

हरिदश्व–(सं. पुं.) सूर्य, अर्क वृक्ष।

हरिद्र–(सं. पुं.) पीला चन्दन; **–क–**(पुं.) देखें 'हरिद्र'।

हरिद्रा–(सं. स्त्री.) हल्दी ।

हरिद्राभ–(सं. पुं.) पीला।

हरिद्रा-राग–(सं. पुं.) साहित्य में प्रेम या राग का एक भेद, वह प्रेम जो हल्दी के रंग के समान अस्थायी हो।

हरिन–(हिं. पुं.) खुर और सीगवाला एक प्रसिद्ध वन्य चौपाया, हरिण, मृग।

हरिनाकुश–(हिं.पुं.) देखें 'हिरण्यकशिपु'।

हरिनाक्ष–(हिं. पुं.) देखें 'हिरण्याक्ष'।

हरिनी–(सं. स्त्री.) मादा हरिन।

हरिन्मणि–(सं. पुं.) मरकत मणि, पन्ना।

हरियर–(हिं. वि.) हरे रंग का, हरा।

हरियाई–(हिं. स्त्री.) हरियाली।

हरियाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हरिआना', हरा होना।

हरियाली–(हिं. स्त्री.) हरे-हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार, हरिआली, हरा चारा जो चौपायों को खिलाया जाता है; (मुहा.)**–सूझना–**सर्वत्र आनन्द ही आनन्द दिखाई पड़ना; **–तीज–**(स्त्री.) सावन वदी तीज।

हरिश्चन्द्र–(सं. पुं.) त्रेता-युग के सूर्य-वंश के अट्ठाईसवें राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे, (ये बड़े सत्यव्रत और दानी थे।)

हरिस–(हिं. स्त्री.) हल की वह लंबी लकड़ी जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी जड़ी होती है तथा दूसरे सिरे पर जुआ लगाया जाता है।

हरिहाई–(हिं. स्त्री.) देखें 'हरहाई'।

हरिहित–(सं. पुं.) इन्द्रगोप, बीरबहूटी।

हरी–(सं.स्त्री.) चौदह वर्णो का एक वृत्त।

हरीचाह–(हिं. पुं.) एक प्रकार की घास जिसकी जड़ में नीबू के समान सुगंध होती है, गंधतृण।

हरीतकी–(सं. स्त्री.) हड़, हर्रे।

हरीरा–(सं. पुं.) दूध में सूजी, चीनी, इलायची आदि डालकर पकाया हुआ एक पेय पदार्थ जो विशेषतः प्रसूता को पिलाया जाता है।

हरीश–(सं. पुं.) बंदरों के राजा सुग्रीव।

हरीस–(हिं. स्त्री.) देखें 'हरिस'।

हरुअ, हरुआ(वा)–(हिं.वि.) देखें 'हलका'।

हरुआ(वा)ई–(हिं. स्त्री.) हलकापन।

हरुआना–(हिं. क्रि. अ.) हलका होना, शीघ्रता करना।

हरुए–(हिं. अव्य.) धीरे-धीरे, चुपचाप।

हरे–(सं. पुं.) 'हरि' शब्द का संबोधन का रूप।

हरेणु–(सं.स्त्री.) रेणुका नामक गन्धद्रव्य।

हरेवा–(हिं. पुं.) हरे रंग की एक चिड़िया।

हरेना–(हिं. पुं.) हल में लगी हुई वह छोटी गावदुम लकड़ी जिसमें फाल लगाया जाता है।

हरैया–(हिं. वि.) हरनेवाला।

हरो(रौ)ल–(हिं. पुं.) देखें 'हरावल'।

हर्तव्य–(सं. वि.) हरण करने योग्य।

हर्ता–(सं.पुं.) हरण करनेवाला, संहारक।

हर्फ़–(अ. पुं.) अक्षर।

हर्बा–(हिं. पुं.) अस्त्र-शस्त्र।

हर्मुट–(सं. पुं.) सूर्य, कछुआ।

हर्म्य–(सं. पुं.) राजभवन, हवेली।

हर्म्यपृष्ठ–(सं. पुं.) हर्म्य की छत या पाटन।

हर्यश्व–(सं. पुं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, इंद्र।

हर्यश्वचाप–(सं. पुं.) इन्द्रधनुष।

हर्रे–(हिं. स्त्री.) हड़, हर्रे।

हर्रा–(हिं. पुं.) बड़ी जाति की हड़।

हर्रे–(हिं. स्त्री.) देखें 'हड़'।
हरैंया–(हिं. स्त्री.) हाथ में पहनने का एक प्रकार का गहना।
हर्ष–(सं. पुं.) आनन्द, प्रफुल्लता, कृष्ण के एक पुत्र का नाम; –क–(वि.) आनन्द देनेवाला; –कर–(वि.) प्रसन्न करनेवाला; –धारिका–(स्त्री.) चौदह प्रकार के तालों में से एक; –नाद–(पुं.) आनन्द-ध्वनि, आनन्दसूचक शब्द; –वधन–(पुं.) भारत के प्रसिद्ध और अंतिम हिंदू सम्राट् का नाम।
हर्षण–(सं. पुं.) आनन्द से रोंगटे खड़े होना, प्रफुल्लित करना, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, सत्ताईस योगों में से चौदहवाँ योग, अस्त्र का संहार।
हर्षाना–(हिं. क्रि. अ., स.) प्रसन्न होना, आनन्दित करना, प्रफुल्ल होना।
हर्षित–(सं. वि.) आनन्दित, प्रसन्न।
हर्षुल–(सं. पुं.) एक वृद्ध का नाम; (वि.) हर्षित करनेवाला।
हल्–(सं. पुं.) शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।
हलंत–(सं. वि., पुं.) (वह शुद्ध व्यंजन) जिसके उच्चारण में स्वर न लगा हो।
हल–(सं. पुं.) भूमि जोतने का यन्त्र, लांगल, एक अस्त्र का नाम, पैर का चिह्न; (अ. पुं.) समाधान, सुलझाव; (क्रि. प्र.)–जोतना–खेत में हल चलाना, खेती करना।
हलकंप–(हिं. पुं.) बहुत बड़ा हल्ला या उथल-पुथल, चारों ओर फैली हुई घबड़ाहट।
हलकई–(हिं. स्त्री.) हलकापन, ओछापन, तुच्छता।
हलककुद–(सं. पुं.) देखें 'हरैंना'।
हलकना–(हिं. क्रि. अ.) हिलना-डोलना, लहराना।
हलका–(हिं. वि.) जो तौल में भारी न हो, जो गाढ़ा न हो, पतला, (प्रहार) जो गहरा न हो, सहज, जो कठिन न हो, ओछा, थोड़ा, जो चटकीला न हो, मामूली, जो बहुत उपजाऊ न हो, महीन, छूँछा, घटिया, मन्द, जिसमें गम्भीरता न हो; (पुं.) तरंग, लहर; (अ. पुं.) प्रांत, प्रदेश, मंडल, किसी अधिकारी का कार्यक्षेत्र; (मुहा.) –करना–ओछा सिद्ध करना, अपमानित करना।
हलकाई–(हिं. स्त्री.) हलकापन, ओछापन।
हलकान–(हिं. वि.) देखें 'हैरान'।
हलकाना–(हिं. क्रि. अ., स.) हिलोरा देना, हिलाना, बोझ कम करना, हलका होना।
हलकापन–(हिं. पुं.) हलका होने का भाव, तुच्छ बुद्धि, ओछापन, अप्रतिष्ठा, नीचता।
हलकारा–(हिं. पुं.) देखें 'हरकारा'।
हलकारी–(हिं. स्त्री.) कपड़े पर रंग पक्का करने के लिये पहिले उसमें फिटकिरी आदि का पुट देना।
हलकोरा–(हिं. पुं.) तरंग, पानी की लहर।
हलग्राही–(सं. पुं.) हल चलानेवाला, खेत जोतनेवाला।
हलचल–(हिं. स्त्री.) अधीरता, व्यग्रता, घबड़ाहट, उपद्रव, खलबली, हिलना-डोलना, कंप।
हलजीवी–(सं. वि.) हल चलाकर खेती करनेवाला (किसान)।
हलजुता–(हिं. स्त्री.) सामान्य किसान, गँवार।
हलड़ा–(हिं. पुं.) देखें 'हलरा'।
हलदंड–(सं. पुं.) हल का लंबा डंडा, हरिस।
हलदहात–(हिं. स्त्री.) विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर में तेल और हल्दी लगाने की रीति।
हलदी–(हिं. स्त्री.) एक छोटा पौधा जिसकी ग्रन्थिल जड़ मसालों में व्यवहार की जाती है, हरिद्रा, हल्दी; (मुहा.)–उठना या चढ़ाना–विवाह के कुछ दिन पहले वर और कन्या के शरीर में हल्दी और तेल पोतना; –लगना–विवाह होना; –लगे न फिटकिरी रंग आवे चोखा–बिना परिश्रम के कार्य की सिद्धि होना।
हलदू–(हिं. पुं.) एक बहुत ऊँचा वृक्ष जिसकी पीली लकड़ी बहुत पुष्ट होती है।
हलधर–(सं. पुं.) हल धारण करनेवाले बलरामजी।
हलना–(हिं. क्रि. स.) हिलना, डोलना, घुसना।
हलपाणि–(सं. पुं.) बलरामजी
हलफ–(अ. पुं.) शपथ, कसम; –नामा–(पुं.) शपथ-पत्र।
हलफा–(हिं. पुं.) हिलोरा, तरंग, लहर, तेज साँस चलने का रोग।
हलफी–(अ. वि.) शपथपूर्वक कहा हुआ।
हलब–(हिं. पुं.) शाम के पास का एक देश जहाँ का काँच प्रसिद्ध था।
हलबल–(हिं. पुं.) हलचल।
हलबी, हलब्बी–(हिं. वि., पुं.) हलब देश का (काँच), बढ़िया (काँच)।
हलभली, हलबली–(हिं. स्त्री.) देखें 'हड़बड़ी'
हलभृत्–(सं. पुं.) बलदेवजी।
हलभृति–(सं. स्त्री.) कृषिकर्म, किसानी।
हलमुख–(सं. पुं.) हल का फाल।
हलमुखी–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं।
हलराना–(हिं. क्रि. अ.) छोटे बच्चे को हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना-डुलाना, प्यार से हाथ पर झुलाना।
हलवत–(हिं. स्त्री.) वर्ष में पहले-पहल खेत में हल ले जाने की रीति।
हलवा–(अ. पुं.) एक प्रकार का मिष्टान्न, मोहनभोग।
हलवाइन–(हिं. स्त्री.) हलवाई की स्त्री।
हलवाई–(हिं. पुं.) मिठाई बनाने और बेचनेवाला।
हलवाह, हलवाहा–(हिं. पुं.) हल जोतने का काम करनेवाला मजदूर या नौकर।
हलहलाना–(हिं. क्रि. स.) कँपाना, हिलाना, डुलाना।
हला–(सं. स्त्री.) सखी, पृथ्वी, जल।
हलाक–(अ. पुं.) मौत, काल, विनाश।
हलाकू–(अ. वि.) वध करनेवाला।
हलाभियोग–(सं. पुं.) हलवत।
हलायुध–(सं. पुं.) बलदेव, बलराम।
हलाल–(अ. वि.) विहित, धर्म-निर्दिष्ट; (मुहा.) –करना– पशु को धीरे-धीरे गला रेतकर मारना।
हलाहल–(सं. पुं.) वह प्रचण्ड विष जो समुद्र-मन्थन के समय निकला था, जिसे शिवजी ने पान किया था, बहुत तीव्र विष।
हली–(सं. पुं.) बलदेव, कृषक, किसान।
हलीशा–(सं. स्त्री.) हरीस, हल-दंड।
हलुक(का)–(हिं. वि.) देखें 'हलका'।
हलुवा–(सं. पुं.) देखें 'हलवा'।
हलोर–(हिं. पुं.) देखें 'हिलोरा'।
हलोरना–(हिं. क्रि. स.) जल में हाथ डालकर हिलाना-डुलाना, मथना, अन्न को सूप से पछोड़ना, अधिक मात्रा में द्रव्य प्राप्त करना।
हलोरा–(हिं. पुं.) देखें 'हिलोरा'।
हल्का–(हिं. वि.) देखें 'हलका'।
हल्दी–(हिं. स्त्री.) देखें 'हलदी'।
हल्य–(सं. वि.) हल-सम्बन्धी, हल से जोता हुआ।
हल्या–(सं. स्त्री.) हलों का समुदाय।
हल्लक–(सं. पुं.) लाल कमल।
हल्लन–(सं. पुं.) करवट बदलना, इधर-उधर डोलना।

हल्ला–(हिं. पुं.) कोलाहल, चिल्लाहट, हाँक, लड़ाई के समय की ललकार, धावा।
हल्लीश(ष)–(सं. पुं.) मंडलाकार स्थिति में नाचने की एक विधि, नाट्य शास्त्र में अठारह उपरूपकों में से एक जिसमें एक ही अंक होता और नृत्य की प्रधानता होती है।
हवन–(सं. पुं.) होम, किसी देवता के निमित्त अग्नि में घृत, तिल, जौ आदि डालने की क्रिया, अग्नि, अग्निकुण्ड।
हवनी–(सं. स्त्री.) होमकुण्ड।
हवनीय–(सं. वि.) हवन के योग्य; (पुं.) वह पदार्थ जो हवन करने में अग्नि में डाला जाता है।
हवा–(अ. स्त्री.) वायु, समीर, साँस, प्राण, किंवदंती, झूठी खबर, पाद, भूत-प्रेतादि।
हवाई–(हिं. वि.) हवा से संबद्ध।
हवाचक्की–(हिं. स्त्री.) आटा पीसने की हवा की शक्ति से चलनेवाली चक्की।
हवादार–(फा. वि.) वायु से पूर्ण, जहाँ खूब हवा लगती हो।
हवापानी–(अ. स्त्री.) जलवायु।
हवाला–(अ. पुं.) उल्लेख, संकेत, सौंपने की क्रिया।
हवास–(अ. पुं.) होश, मानसिक शक्तियाँ।
हवि–(सं. स्त्री.) वह द्रव्य जिसकी आहुति अग्नि में दी जाय।
हवित्री–(सं. स्त्री.) अग्निकुण्ड।
हविर्गृह–(सं. पुं.) हवन करने का घर।
हविर्दान–(सं. पुं.) यज्ञ में घृत आदि की आहुति।
हविर्भुज्–(सं. पुं.) अग्नि, देवता।
हविर्भू–(सं. स्त्री.) हवन का स्थान।
हविर्यज्ञ–(सं. पुं.) हवि द्वारा किया हुआ यज्ञ।
हविर्हुति–(सं. स्त्री.) हवि की आहुति।
हविष्पति–(सं. पुं.) यजमान।
हविष्य–(सं. वि.) हवन करने योग्य, जिसकी आहुति दी जानेवाली हो।
हविष्यान्न–(सं. पुं.) वह अन्न या आहार जो यज्ञ के समय खाया जाय, खाने की पवित्र वस्तु।
हवेली–(अ. स्त्री.) पक्का मकान, महल।
हव्य–(सं. पुं.) वह वस्तु जिसकी आहुति किसी देवता के निमित्त अग्नि में दी जाय; (वि.) हवि के योग; **–पाक**– (पुं.) चरु; **–भुज्**– (पुं.) अग्नि; **–योनि**– (पुं.) देवता; **–वाह**– (पुं.) अग्नि, पीपल का वृक्ष।
हव्याश, हव्याशन–(सं. पुं.) अग्नि।
हसंतिका–(सं. स्त्री.) अँगीठी।
हसंती–(सं. स्त्री.) अग्नि रखने का पात्र।
हसन–(सं. पुं.) परिहास, विनोद।
हसिका–(सं. स्त्री.) हँसी, ठट्ठा।
हसित–(सं. पुं.) उपहास, हँसी, ठट्ठा, कामदेव का धनुष; (वि.) विकसित, खिला हुआ, जो हँसा गया हो।
हसीन–(अ. वि.) सुंदर।
हस्त–(सं. पुं.) हाथ, हाथी की सूँड़, चौबीस अँगुल की नाप, संगीत या नृत्य में हाथ की मुद्राओं से भाव व्यक्त करना, लिखावट, वासुदेव के एक पुत्र का नाम, गुच्छा, समूह, एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं; **–क**–(पुं.) संगीत का एक ताल, ताली बजाना; **–कार्य**–(पुं.) हाथ का काम या शिल्प; **–कोहलि**–(स्त्री.) वर और कन्या की कलाई में मंगल-सूत्र बाँधने की क्रिया; **–कौशल**–(पुं.) काम करने में हाथ की कुशलता; **–क्रिया**–(स्त्री.) हस्तकौशल, हाथ से लिंगेन्द्रिय का संचालन करके कृतिम वीर्य-पात करना, **–क्षेप**–(पुं.) दूसरे के काम में हाथ डालना; **–गत**–(वि.) हाथ में आया हुआ, प्राप्त; **–ग्रह**–(पुं.) हाथ पकड़ना, विवाह; **–ग्राह**–(वि.) हाथ पकड़ानेवाला; (पुं.) विवाह; **–चापल्य**–(पुं.) हाथ की चतुराई; **–तल**–(पुं.) हथेली; **–ताल**–(पुं.) हाथ से ताल देना; **–त्राण**–(पुं.) अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहनने का कवच; **–धारण**–(पुं.) हाथ पकड़ना, हाथ का सहारा देना; **–पृष्ठ**–(पुं.) हथेली के पीछे का भाग; **–मैथुन**–(पुं.) कृत्रिम वीर्यपात के लिए हाथ से लिंगेंद्रिय का संचालन; **–योग**–(पुं.) हाथ जोड़ना; **–रेखा**–(स्त्री.) हथेली पर पड़ी हुई लकीर; **–लाघव**–(पुं.) हाथ की चतुराई; **–लिखित**–(वि.) हाथ का लिखा हुआ; **–लिपि**–(स्त्री.) हाथ की लिखावट; **–वारण**– (पुं.) आघात को हाथ पर रोकना; **–विन्यास**–(पुं.) हाथों की स्थिति; **–सिद्धि**– (स्त्री.) वेतन; **–सूत्र**–(पुं.) हाथ में बाँधने का मंगल-सूत्र।
हस्तांतरण–(सं. पुं.) संपत्ति आदि का स्वत्व या स्वामित्व विधित: दूसरे को देना।
हस्तांतरित–(सं. वि.) जिसका हस्तांतरण हुआ हो।
हस्ता–(सं. स्त्री) हस्त नक्षत्र।
हस्तामलक–(सं. पुं.) हाथ में लिये हुए आँवले की तरह वह वस्तु या विषय जो अच्छी तरह समझ में आ जाय।
हस्तालिंगन–(सं. पुं.) हाथ मिलाना।
हस्ति, हस्ती–(सं. पुं.) गज, हाथी; **–कंद**–(पुं.) एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है, हाथीकंद; **–क**–(पुं.) हाथियों का समूह; **–कक्ष्य**–(पुं.) व्याघ्र, सिंह; **–कर्ण**–(पुं.) पलाश का वृक्ष; **–कर्णिक**–(पुं.) हठयोग का एक आसन; **–कोलि**–(स्त्री.) बड़ा बेर; **–घ्न**–(वि.) हाथी को मारनेवाला; **–दंत**– (पुं.) हाथी-दाँत, मूली; **–नासा**–(स्त्री.) हाथी की सूँड़; **–प**–(पुं.) महावत; **–पद**–(पुं.) हाथी के पाँव का चिह्न; **–पर्णी**–(स्त्री) ककड़ी; **–पिप्पली**–(स्त्री.) गजपीपल; **–मद**–(पुं.) वह जल जो हाथी के गण्डस्थल से निकलता है; **–मल्ल**–(पुं.)) गणेश, ऐरावत; **–वाह**–(पुं.) महावत; **–विषाण**–(पुं.) केले का वृक्ष; **–शाला**–(स्त्री.) फीलखाना; **–सूत्र**–(पुं.) हाथी चलाने की विद्या।
हस्तिनापुर–(सं. पुं.) कौरवों की राजधानी का नाम।
हस्तिनी–(सं. स्त्री.) मादा हाथी, हथिनी, कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।
हस्ते–(हिं. अव्य.) हाथ से, हत्थे।
हहर–(हिं. स्त्री.) कँपकँपी, थर्राहट, डर।
हहरना–(हिं. क्रि. अ.) काँपना, थरथराना, थर्राना, ठक रह जाना, दहलना, ईर्ष्या करना, सिहाना।
हहराना–(हिं. क्रि. स.) कँपाना, थरथराना, डराना, भयभीत करना।
हहलना, हहलाना–(हिं. क्रि. अ., स.) देखें 'हहरना', 'हहराना'।
हहा–(हिं. स्त्री.) हँसने का शब्द, ठट्ठा, गिड़गिड़ाने का शब्द, विनती।
हाँ–(हिं. अव्य.) स्वीकृति अथवा सम्मति-सूचक शब्द; (मुहा.) **–करना**–स्वीकार कर लेना; **–हाँजी हाँजी करना**–चापलूसी करना।
हाँक–(हिं. स्त्री.) चिल्लाकर पुकारने का शब्द, लड़ाई में धावा करने के समय की चिल्लाहट, ललकार, दुहाई, बढ़ावा।
हाँकना–(हिं. क्रि. स.) चिल्लाकर पुकारना, ललकारना, (घोड़े, बैल, ऊँट आदि से) गाड़ी चलवाना, गाड़ी में जुते हुए जानवरों को आगे बढ़ाना, चौपायों को किसी स्थान से हटाना, पंखे से हवा करना, पंखा झलना,

बढ़-बढ़कर बातें करना, हाँक लगाना।
हांगर–(हिं. पुं.) एक प्रकार की बड़ी मछली।
हांगा–(हिं. पुं.) शरीर का बल।
हांगी–(हिं. स्त्री.) स्वीकृति, हामी।
हाँड़ना–(हिं. वि.) व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला, आवारा।
हाँड़ी–(हिं. स्त्री.) बटलोई के आकार का मट्टी का पात्र, इस आकार का मोमबत्ती जलाकर रखने का काँच का पात्र; (मुहा.) **–पकना**–कोई षड्यन्त्र रचा जाना।
हाँता–(हिं. वि.) हटाया हुआ, छोड़ा हुआ।
हाँपना, हाँफना–(हिं. क्रि. अ.) (दौड़ने, कठिन परिश्रम करने या रोग के कारण) साँस का वेग से चलना।
हाँफा–(हिं. पुं.) हाँफने की क्रिया या भाव।
हाँसना–(हिं. क्रि. अ.) हँसना।
हाँसल–(हिं. पुं.) एक प्रकार का घोड़ा।
हाँसी–(हिं. स्त्री.) हँसने की क्रिया या भाव, उपहास, निन्दा।
हाँहाँ–(हिं. अव्य.) कोई काम करनेवाले को रोकने के लिए कहा जानेवाला शब्द।
हा–(सं. अव्य.) शोक या दुःखसूचक शब्द; (वि.) वध करनेवाला, मारनेवाला।
हाई–(हिं. स्त्री.) अवस्था, दशा, ढंग, तरीका।
हाऊ–(हिं. पुं.) बच्चों को डराने का शब्द, हौवा, भकाऊँ।
हाकल–(सं. पुं.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।
हाकलिका–(सं. स्त्री.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं।
हाकली–(सं. स्त्री.) दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
हाकिम–(अ. पुं.) सरकारी उच्च अधिकारी, मालिक।
हाकिमाना–(अ. वि.) हाकिम के जैसा।
हाजमा–(अ. पुं.) पाचन-शक्ति।
हाजिर–(अ. वि.) उपस्थित, मौजूद।
हाजिरी–(अ. स्त्री.) उपस्थिति, मौजदगी।
हाजी–(अ. पुं.) हज करनेवाला, वह जो हज कर चुका हो।
हाट–(हिं. स्त्री.) दुकान, बाजार, बाजार लगने का दिन; (क्रि. प्र.) **–करना**–दुकान लगाना; **–क**–(पुं.) सुवर्ण, सोना, धतूरा; **–०पुर**–(पुं.) लंका; **–लोचन**–(पुं.) हिरण्याक्ष।
हाटकीय–(सं. वि.) सोने का बना हुआ।
हाड़–(हिं. पुं.) अस्थि, हड्डी, कुलीनता।
हाड़ा–(हिं. पुं.) लाल रंग का बड़ा हड्डा।
हाड़ी–(हिं. पुं.) एक प्रकार का बगला, कौआ।
हाथ–(हिं. पुं.) (मनुष्य, बंदर आदि प्राणियों का) किसी पदार्थ को पकड़ने या छूने का अवयव, हस्त, बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, चौबीस अँगुल की नाप, (ताश, जुए आदि के खेल में) एक आदमी के खेलने की बारी, किसी हथियार की मुठिया, किसी कार्यालय में काम करनेवाले मनुष्य, तलवार आदि चलाने का ढंग; (मुहा.) **–आना**–प्राप्त होना; **–उठाना**–किसी को मारने के लिये हाथ तानना; **–ऊँचा होना**–दान देने में उद्यत होना; **–कट जाना**–किसी योग्य सहायक का न रह जाना; **–की मैल**–कोई तुच्छ वस्तु; **–खाली होना**–पास में धन न रह जाना; **–खुजलाना**– मारने-पीटने की इच्छा होना, धन आदि मिलने के लक्षण सूचित होना; **–खींच लेना**–किसी कार्य से अलग हो जाना; **–चलाना**–मारना, पीटना; **–चूमना**–किसी के हस्तकौशल पर प्रसन्नता दिखलाना; **–छोड़ना**–प्रहार करना; **–जोड़ना**–प्रणाम करना, विनती करना; **(दूर से) –जोड़ना**–संसर्ग से दूर रहना; **–डालना**–कोई काम आरंभ करना; **–तंग होना**–पास में धन की कमी होना; **–धोकर पीछे पड़ना**–जी-जान से संलग्न हो जाना; **–धोना**–खो देना; **–पकड़ना**–सहारा देना, मदद करना; **–पत्थर तले दबना**–आपत्ति में पड़ना, विवश होना; **–पर हाथ धरे बैठे रहना**–कोई उद्यम न करना; **–पसारना**–हाथ फैलाकर कुछ माँगना; **–पाँव ठंडे होना**–मरणासन्न होना; **–पाँव पटकना**–छटपटाना; **–पाँव फूलना**–व्यग्र होना, घबड़ा जाना; **–पाँव हिलाना**–प्रयत्न या उद्योग करना; **–पैर जोड़ना**–बड़ी विनती करना; **(किसी वस्तु पर)–फेरना**–चुरा लेना; **–मलना**– पछताना; **–मारना**–किसी वस्तु को चुरा लेना; **–में आना**–अधीन होना; **–में करना**–अपने वश में करना; **–रँगना**–उत्कोच लेना, घूस लेना; **–रोपना**– हाथ फैलाना; **–लगना**–प्राप्त होना, पाना; **(किसी काम में)–लगाना**–कोई कार्य आरंभ करना; **हाथोहाथ**–(अव्य.) तुरत, शीघ्र; **–०लेना**– आदर किया जाना; **–कंडा**–(पुं.) देखें 'हथकंडा'; **–तोड़** (पुं.) मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **–पान, –फल**–(पुं.) हथेली के पीछे की ओर पहिनने का एक आभूषण; **–बाँह**–(पुं.) कसरत करने का एक ढंग।
हाथा–(हिं. पुं.) किसी हथियार की मूठ, पंजे की छाप या चिह्न; **–छाँही**–(स्त्री.) व्यवहार में कपट; **–जोड़ी**–(स्त्री.) एक पौधा जो औषधों में प्रयुक्त होता है; **–पाई, –बाँही**–(स्त्री.) मुठभेड़, धौलधप्पड़।
हाथी–(हिं. पुं.) एक बड़ा (वन्य तथा पालतू) स्तन-पायी चौपाया, हस्ती; (मुहा.) **–पर चढ़ना**–बहुत धनी होना; **–खाना**–(पुं.) हाथी बाँधने का स्थान; **–चक**–(पुं.) एक प्रकार का पौधा जो औषधों में प्रयुक्त होता है; **–दाँत**–(पुं.) हाथी के मुँह के दोनों छोरों पर निकले हुए लंबे सफेद दाँत; **–नाल**–(स्त्री.) हाथी की पीठ पर लादकर ले जाने की पुराने चाल की तोप; **–पाँव**–(पुं.) फीलपाँव नामक रोग; **–वान**–(पुं.) महावत।
हान–(सं. पुं.) हानि, परित्याग।
हानि–(सं. स्त्री.) नाश, क्षय, अभाव, अनिष्ट, बुराई, क्षति, घाटा; **–कर**–(वि.) अनिष्ट करनेवाला, स्वास्थ्य बिगाड़नेवाला; **–कारक, –कारी**–(वि.) बुरा परिणाम उत्पन्न करनेवाला, हानि पहुँचानेवाला।
हामी–(हिं. स्त्री.) स्वीकृति, स्वीकार; (मुहा.) **–भरना**– स्वीकार करना।
हाय–(हिं. पुं.) पीड़ा अथवा दुःख सूचित करने का शब्द, आह; (स्त्री.) पीड़ा, दुःख, कष्ट; (मुहा.) **किसी की हाय पड़ना**–किसी को कष्ट देने पर उसका बुरा फल मिलना; **–हाय**–(अव्य.) शोक, दुःख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द; (स्त्री.) परेशानी, झंझट।
हायन–(सं. पुं.) वत्सर, साल, एक प्रकार का लाल धान।
हायल–(हिं. वि.) घायल, शिथिल, मूर्च्छित, रोकनेवाला।
हार–(सं. वि.) चुरानेवाला, ले जानेवाला, नाश करनेवाला, सुंदर, मनोहर; (पुं.) सोने-चाँदी या मोतियों की माला, अंकगणित में भाजक, छन्दःशास्त्र में गुरु-मात्रा, युद्ध, लड़ाई; (हिं. स्त्री.) पराजय, असफलता।
हारक–(सं. पुं.) धूर्त, चोर, गणित में भाजक, हार, माला; (वि.) हरण करनेवाला, ले जानेवाला।

हारगुटिका–(सं.स्त्री.) माला का दाना।
हारना–(हिं. क्रि. अ.) पराभूत होना, शिथिल होना, थक जाना, असमर्थ होना, निराश होना, (लड़ाई, जुए आदि में) धन गँवाना, छोड़ देना; **हारकर रह जाना**–विवश होकर छोड़ देना।
हारबंध–(सं. पुं.) एक चित्रकाव्य जिसमें पद्य हार के आकार में लिखे जाते हैं।
हारभरा–(सं.स्त्री.) द्राक्षा, दाख।
हारल–(हिं.पुं.) एक प्रकार की चिड़िया।
हारसिंगार–(हिं. पुं.) हरसिंगार, परजाता।
हारहूर–(सं.पुं.) मद्य।
हारा–(सं. स्त्री.) मद्य; (पुं.) चौहान राजपूतों की एक शाखा; (हिं. पुं.) एक प्रत्यय जो "वाला" के अर्थ में कुछ शब्दों के अंत में प्रयुक्त होता है।
हारावली–(सं.स्त्री.) मोतियों की माला।
हारि–(सं. स्त्री.) पथिकसमूह, हार, पराभव; **–कंठ**–(पुं.) कोकिल, कोयल; (वि.) जिसके गले में हार हो।
हारिणाश्वा–(सं. स्त्री.) संगीत में एक मूर्च्छना का नाम।
हारित–(सं. पुं.) सुग्गा, एक वर्णवृत्त का नाम; (वि.) हरण किया हुआ, लाया हुआ, खोया हुआ।
हारिद्र–(सं. वि.) हल्दी से रँगा हुआ; (पुं.) पीला रंग।
हारिल–(हिं. पुं.) एक प्रकार की हरे रंग की चिड़िया जो प्रायः अपने पंजे में लकड़ी का टुकड़ा या तिनका लिये रहती है।
हारी–(सं.वि.) हरण करनेवाला, छीननेवाला, चरानेवाला, लूटनेवाला, नाश करनेवाला, जीतनेवाला, मोहित करनेवाला, हार पहननेवाला; (पुं.) एक वर्णवृत्त का नाम।
हारीत–(सं. पुं.) एक प्रकार का कबूतर, चोर, लुटेरा, लुटेरापन, चोरी; **–क**–(पुं.) परेवा पक्षी; **–बंध**–(पुं.) एक प्रकार का छन्द।
हारुक–(सं.पुं.) हरण करनेवाला, छीननेवाला।
हार्द–(सं. पुं.) अभिप्राय, स्नेह; (वि.) हृदय का।
हार्दिक–(सं. वि.) हृदय-संबंधी, हृदय का, हृदय से निकला हुआ, आंतरिक, सच्चा।
हार्दिक्य–(सं. पुं.) मित्रभाव, मित्रता।
हार्य–(सं. वि.) छीनने योग्य, स्वीकार करने योग्य, छोड़ने योग्य, रोकने योग्य, ले जाने योग्य।

हाल–(सं. पुं.) बलराम, हल, लांगल; (हिं. स्त्री.) लोहे का वह पट्टा जो गाड़ी के पहिये पर चढ़ाया जाता है; (अ. पुं.) दशा, वर्तमान काल, वृत्तांत; (हिं. अव्य.) अभी, तुरत।
हालगोला–(हिं. पुं.) गेंद।
हालडोल–(हिं. पुं.) कंप, हलचल।
हालना–(हिं. क्रि. अ.) हिलना, डोलना, झूमना।
हालरा–(हिं. पुं.) बच्चे को हाथों में लेकर हिलाने-डुलाने का कार्य, लहर, हिलोरा, झोंका।
हालहल–(सं. पुं.) देखें 'हलाहल'।
हालहूल–(हिं. स्त्री.) हल्ला, उपद्रव, हलचल।
हाला–(सं. स्त्री.) मद्य, मदिरा।
हालाहल–(सं. पुं.) देखें 'हलाहल'।
हालाहली–(सं. स्त्री.) मदिरा।
हालिनी–(सं. स्त्री.) एक प्रकार की छिपकली।
हाली–(हिं.वि.,अव्य.) अभी (का), तत्काल।
हाव–(सं. पुं.) पास बुलाने की क्रिया या भाव, प्रेमातुर अवस्था में नायिका की पुरुष को आकर्षण करनेवाली चेष्टाएँ।
हावनीय–(सं. वि.) हवन करने योग्य।
हाव-भाव–(सं. पुं.) पुरुषों का चित्त आकर्षण करनेवाली स्त्रियों की चेष्टा।
हावर–(हिं. पुं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट होती है।
हावला-बावला–(हिं. वि.) सनकी, झक्की।
हास–(सं. पुं.) हँसने की क्रिया या भाव, हँसी, उपहास, निन्दा; **–क**–(पुं.) हँसानेवाला; **–कर**–(वि.) हँसानेवाला।
हासन–(सं. पुं.) हँसानेवाला व्यक्ति।
हासनिक–(सं.पु.) क्रीड़ा या खेल का साथी।
हासशील–(सं. वि.) हँसनेवाला।
हासिल–(अ. वि.) जो कुछ हाथ लगे, लब्ध।
हासी–(सं. वि.) हँसनेवाला।
हास्त–(सं. वि.) हस्त संबंधी।
हास्तिक–(सं. पुं.) हाथियों का झुंड।
हास्य–(सं. पुं.) हँसने की क्रिया या भाव, हँसी, साहित्य में नौ स्थायी भावों में से एक, ठट्ठा, उपहास; (वि.) उपहास के योग्य; **–कर**–(वि.) हँसानेवाला; **–रस**–(पुं.) काव्य का हास्यकर रस।
हास्यास्पद–(सं. पुं.) हास्य का विषय, वह जिसको देखकर लोग हँस पड़ें।
हास्योत्पादक–(सं. वि.) उपहास के योग्य, हास्य उत्पन्न करनेवाला।

हाहंत–(सं. अव्य.) अत्यन्त शोकसूचक शब्द।
हाहा–(सं. पुं.) देव-गन्धर्व विशेष; (हिं. पुं.) हँसने का शब्द, गिड़गिड़ाने का शब्द; **–कार**–(हिं.पुं.) घबड़ाहट की चिल्लाहट, युद्ध का कोलाहल; **–ठीठी**–(हिं. स्त्री.) हँसी, ठट्ठा।
हाही–(हिं. स्त्री.) कुछ पाने की उत्कट इच्छा; (मुहा.)**–पड़ना**–कोई वस्तु पाने के लिए बहुत लालायित होना।
हाहू–(हिं. पुं.) कोलाहल, हलचल; **–बेर**–(पुं.) जंगली बेर, झरबेरी।
हिंकरना–(हिं. क्रि. अ.) घोड़ों का हिनहिनाना।
हिंकार–(हिं.पुं.) गाय के रँभाने का शब्द।
हिंगनबेर–(हिं. पुं.) इंगुदी वृक्ष, हिंगोट।
हिंगु–(सं.पुं.) एक वृक्ष, हींग।
हिंगोट–(हिं. पुं.) इंगुदी वृक्ष।
हिंडन–(सं. पुं.) घूमना-फिरना, क्रीड़ा, खेल, रति, मैथुन।
हिंडोरा–(हिं. पुं.) देखें 'हिंडोला'।
हिंडोरी–(हिं. स्त्री.) छोटा हिंडोला।
हिंडोल–(हिं. पुं.) हिंडोला, एक प्रकार का राग।
हिंडोलना, हिंडोला–(हिं. पुं.) पालना, झूला; (क्रि. स.) घँघोलना।
हिंडोली–(सं.स्त्री.) एक रागिनी का नाम
हिंदी–(फा. स्त्री.) भारतवर्ष की बोली, भारत की राष्ट्र-भाषा, नागरी।
हिंदुत्व–(हिं.पुं.) हिंदू होने का भाव या गुण।
हिन्दुस्तान–(हिं. पुं.) देखें 'भारतवर्ष'।
हिंदुस्तानी–(फा. वि.) हिन्दुस्तान-संबंधी; (पुं.) यहाँ का निवासी; (स्त्री.) यहाँ की भाषा।
हिंदू–(हिं. पुं.) वेद-विहित सनातन धर्म का अनुयायी; **–पन**–(पुं.) हिंदुत्व।
हिंदोरना–(हिं. क्रि. स.) तरल वस्तु में हाथ डालकर इधर-उधर घुमाना।
हिंदोल–(सं. पुं.) एक उत्सव जिसमें देवताओं की मूर्ति झूले पर बैठाकर झुलाई जाती है, एक राग का नाम।
हिंदोस्तान–(हिं. पुं.) भारतवर्ष।
हियाँ–(हिं. अव्य.) यहाँ।
हिंव, हिंवार–(हिं.पुं.) हिम, पाला।
हिंस–(हिं. स्त्री.) घोड़े का हिनहिनाना।
हिंसक–(सं. वि.) घातक, हत्यारा, हानि पहुँचानेवाला; (पुं.) हिंस्र पशु।
हिंसन–(सं. पुं.) जीवों का वध, जान मारना, जीवों को कष्ट देना, द्वेष करना, अनिष्ट करना।

हिंसनीय–(सं. वि.) हिंसा करने योग्य।
हिंसा–(सं. स्त्री,) वध, हत्या, हानि पहुँचाना, कष्ट देना, ईर्ष्या, द्वेष; **–कर्म**–(पु.) किसी को मारने या कष्ट देने का काम।
हिंसात्मक–(सं. वि.) जिसमें हिंसा हो, हिंसा से युक्त।
हिंसारु–(सं. पुं.) हिंस्र पशु, व्याघ्र।
हिंसालु–(सं. वि.) हिंसापूर्ण, वधशील, मारनेवाला, घातक।
हिंसालुक–(सं. वि.) घातक, हिंसात्मक।
हिंसित–(सं. वि.) जिसके प्रति हिंसा की गई हो, मारा हुआ।
हिंसितव्य–(सं. वि.) हिंसा करने योग्य।
हिंस्य–(सं. पुं.) जिसकी हिंसा की जाने को हो, वध्य।
हिंस्र–(सं. वि.) हिंसा से पूर्ण, घातक; (पुं.) हिंसा या जीव-वध करनेवाला जन्तु।
हिंस्रक–(सं. पुं.) हिंसा करनेवाला पशु।
हिंस्रा–(सं. स्त्री.) जटामासी, भटकटैया।
हिं–(हिं. प्रत्य.) पुरानी हिंदी की एक विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सभी कारकों में होता था, परन्तु वाद में इसका प्रयोग ("को" के अर्थ में) कर्म और सम्प्रदानकारकों में होने लगा।
हिअ, हिआ–(हिं. पुं.) हृदय, छाती।
हिआउ, हिआव–(हिं. पुं.) साहस।
हिकमत–(अ. स्त्री.) चतुराई, वुद्धिमानी, युक्ति।
हिकमती–(फा. वि.) चालाक, बुद्धिमान्।
हिकलाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हकलाना'।
हिक्कल–(हिं. पुं.) वौद्ध संन्यासियों का दण्ड।
हिक्का–(सं. स्त्री.) हिचकी, अधिक हिचकी आने का रोग।
हिचक–(हिं. स्त्री.) कोई काम करते समय चित्त रुक या अटक आना, आगा-पीछा।
हिचकना–(हिं. क्रि. अ.) कोई काम करने में आगा-पीछा करना, हिचकी आना।
हिचकिचाना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हिचकना'।
हिचकिचाहट–(हिं. स्त्री.) देखें 'हिचक'।
हिचकी–(हिं. स्त्री.) पेट की वायु का कण्ठ से झटका देते हुए निकलना, रह-रहकर सिसकने का शब्द।
हिचर-मिचर–(हिं. पुं.) आगा-पीछा, टालमटोल।
हिजड़ा–(हिं. पुं.) नपुंसक।
हिजरी–(अ. पुं.) मुसलमानों का संवत्।
हिज्जल–(सं. पुं.) एक प्रकार का वृक्ष, समुद्रफल।
हिडिंब–(सं. पुं.) एक राक्षस जिसको वनवास के समय भीम ने मार डाला था।
हिडिंबा–(सं. स्त्री.) हिडिंब राक्षस की वहिन, घटोत्कच की माता।
हिंडोरा–(हिं. पुं.) देखें 'हिंडोला'।
हित–(सं. वि.) उपकारी, लाभदायक, अनुकूल, प्रिय, अच्छा व्यवहार करनेवाला, पथ्य; (पु.) लाभ, कल्याण, मंगल, मित्र, संवंधी, प्रेम, स्नेह, अनुकूलता, भलाई, लाभ; (अव्य.) निमित्त, वास्ते, लिये; **–क**–(पुं.) शिशु, बच्चा; **–कर**–(वि.) लाभ पहुँचानेवाला, उपयोगी, स्वास्थ्य-कर; **–कर्ता**–(पुं.) भलाई करनेवाला; **–कर्म**–(पुं.) भलाई का कार्य; **–काम**–(वि.) भलाई की इच्छा करनेवाला; **–कारक**–(वि.) लाभ पहुँचानेवाला, स्वास्थ्यकर, भलाई करनेवाला; **–कारी**–(वि.) उपकार या कल्याण करनेवाला; **–चिंतक**–(वि.) भला चाहनेवाला; **–चिंतन**–(पुं.) किसी का भला चाहना; **–ता**–(स्त्री.) भलाई; **–वचन**–(पुं.) कल्याण, उपदेश; **–वादी**–(वि.) उपकार या लाभ की वात कहनेवाला।
हिताई–(हिं. स्त्री.) संवंध, नाता।
हिताना–(हिं. क्रि. अ.) अनुकूल होना, अच्छा लगना।
हितानुवंधी–(सं. वि.) भलाई चाहनेवाला।
हितार्थी–(सं. वि.) हित या भलाई चाहनेवाला।
हितावह–(सं. वि.) हितकारी, जिसमें भलाई हो।
हिताहित–(सं. पुं.) भलाई-बुराई, हानि-लाभ।
हिती, हितू–(हिं. पुं.) भलाई चाहनेवाला, मित्र, सम्वन्धी, स्नेही।
हितेच्छा–(सं. स्त्री.) उपकार या हित का ध्यान।
हितेच्छु–(सं. वि.) कल्याण मनानेवाला।
हितैषिता–(सं. स्त्री.) किसी का कल्याण चाहने की वृत्ति।
हितैषी–(सं. वि.) भला चाहनेवाला, कल्याण मनानेवाला; (पुं.) मित्र।
हितोक्ति–(सं. स्त्री.) भलाई का उपदेश।
हितोपदेश–(सं. पुं.) भलाई का उपदेश।
हिनती–(हिं. स्त्री.) देखें 'हीनता'।
हिनहिनाना–(हिं. क्रि. अ.) घोड़े का वोलना।
हिनहिनाहट–(हिं. स्त्री.) घोड़े की वोली।
हिफाजत–(अ. स्त्री.) रक्षा, रखवाली।
हिमंचल–(हि. पुं.) देखें 'हिमाचल'।
हिमंत–(हि. पुं.) देखें 'हेमंत'।
हिम–(सं. वि.) शीत, शीतल, ठंढा; (पुं.) पाला, चन्द्रमा, चन्दन, मोती, जाड़े की ऋतु, कपूर, मक्खन, कमल, खस, हिमालय पर्वत; **–उपल**–(पुं.) ओला, पत्थर; **–ऋतु**–(स्त्री.) जाड़े की ऋतु; **–कण**–(पु.) पाले के महीन कण; **–कर**–(पुं.) कपूर, चन्द्रमा; **–०तनय**–(पुं.) वुध; **–किरण**–(पुं.) चन्द्रमा; **–कूट**–(पुं.) शिशिर ऋतु; **–खंड**–(पुं.) हिमालय पर्वत, ओला; **–गिरि**–(पुं.) हिमालय पर्वत; **–गृह**–(पुं.) शीतल या ठंढी बनाई हुई कोठरी; **–ज**–(पुं.) हिमालय पर्वत, मैनाक; **–जा**–(स्त्री.) पार्वती; **–ज्योति, –दीधिति**–(पुं.) चन्द्रमा; **–दुग्धा**– (स्त्री.) खिरनी; **–द्युति**– (पुं.) चन्द्रमा; **–द्रुम**–(पुं.) वकायन का वृक्ष; **–धर**–(पुं.) हिमालय पर्वत; **–पात**–(पुं.) पाला पड़ना; **–भानु**–(पुं.) चन्द्रमा; **–भूभृत्**–(पुं.) हिमालय पर्वत; **–मयूख**–(पु.) चन्द्रमा; **–रश्मि**–(पुं.) चन्द्रमा; **–वत्**–(पुं.) हिमालय पर्वत; **–वान्**–(पुं.) हिमालय पर्वत, कैलास पर्वत, चन्द्रमा; **–वारि**–(पुं.) ठंढा पानी; **–वृष्टि**–(स्त्री.) पाला गिरना; **–शैल**–(पुं.) हिमालय पर्वत; **–जा**–(स्त्री.) पार्वती; **–सुत**–(पुं.) चन्द्रमा।
हिमांभ–(सं. पुं.) ठंढा पानी।
हिमांशु–(सं. पुं.) कपूर, चाँदी, चन्द्रमा।
हिमा–(सं. स्त्री.) छोटी इलायची, नागर-मोथा, रेणुका, मूली।
हिमाचल–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत।
हिमाद्रि–(सं. पुं.) हिमालय पर्वत; **–जा**–(स्त्री.) पार्वती; **–तनया**–(स्त्री.) दुर्गा।
हिमानी–(सं. स्त्री.) वर्फ का ढेर।
हिमाब्ज–(सं. पुं.) नील कमल।
हिमाभ्र–(सं. पुं.) कपूर।
हिमाराति–(सं. पुं.) अग्नि, सूर्य, मदार का वृक्ष।
हिमालय–(सं. पुं.) भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत जो संसार में सव से ऊँचा पर्वत है; **–सुता**–(स्त्री.) पार्वती।
हिमावती–(सं. स्त्री.) स्वर्णक्षीरी नामक ओषधि।
हिमि–(हिं. पुं.) हिम, पाला।
हिमिका–(सं. स्त्री.) घास आदि पर जमा हुआ पाला, शिशिर-विन्दु।

हिमोदक–(सं. पुं.) ठंढा पानी ।
हिमोपम–(सं. पुं.) प्रवाल, मूँगा ।
हिम्मत–(अ. स्त्री.) साहस, वीरता ।
हिम्मती–(अ.वि.) हिम्मतवाला, साहसी ।
हिय, हियरा–(हिं. पुं.) हृदय, मन, छाती ।
हियाँ–(हि. अव्य.) यहाँ, इस जगह ।
हिया–(हि. पुं.) हृदय, मन, वक्षःस्थल, छाती; (मुहा.) **–जलना**–बहुत क्रोध होना; **–लगाना**–गले लगाना; **हिये का अंधा**–ज्ञानशून्य ।
हियाव–(हिं.पुं.) साहस, दृढ़ता; (मुहा.) **–खुलना**–साहस होना, संकोच हटना; **–पड़ना**–साहस होना ।
हिर–(सं. पुं.) कपड़े आदि की पट्टी ।
हिरकना–(हिं. क्रि. अ.) पास जाना, सटना ।
हिरकाना–(हिं. क्रि. स.) पास ले जाना, सटाना ।
हिरगिनी–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की बढ़िया कपास ।
हिरण–(सं.पुं.) रेत, वीर्य, सोना, कौड़ी; (हिं. पुं.) हरिन, मृग ।
हिरण्मय–(सं. पुं.) जम्बू द्वीप के नौ खंडों में से एक; (वि.) सोने का बना हुआ ।
हिरण्य–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, धतूरा, वीर्य, कौड़ी, धन, चाँदी, अमृत, ज्योति, ज्ञान, तत्व, एक मान या तौल; **–कण**–(वि.) जो कान में सोने का कुण्डल पहिने हुए हो; **–कर्त्ता**–(पुं.) सुनार; **–कशिपु**–(पुं.) एक दैत्य जिसको नृसिंहावतार में विष्णु ने मारा था; **–कार**–(पुं.) सुनार; **–केश**–(पुं.) विष्णु; **–गर्भ**–(पुं.) ब्रह्मा, वह ज्योतिर्मय अण्ड जिससे ब्रह्मा तथा सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति हुई थी, सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा; **–चक्र**–(पुं.) वह रथ जिसका पहिया सोने का बना हो; **–ज**–(वि.) सोने का बना हुआ; **–दा**–(वि.) पृथ्वी; **–नाभ**–(पुं.) मैनाक पर्वत; **–पति**–(पुं.) शिव, महादेव; **–पुर**–(पुं.) असुरों के एक नगर का नाम; **–पुष्पी**–(स्त्री.) करियारी नामक विषैला पौधा; **–बाहु**–(पुं.) शिव, महादेव, एक नाग का नाम; **–बिंदु**– (पुं.) अग्नि, आग; **–रूप**–(वि.) सुवर्ण के समान रूपवाला ; **–रेता**– (पुं.) अग्नि, आग, सूर्य, शिव ; **–लोमा**–(पुं.) भीष्म का एक नाम; **–वर्म**–(पुं.) सोने का कवच; **–वान्**–(वि.) जिसके पास सोना हो; **–वाह**–(पुं.) शिव, महादेव; **–शृंग**–(पुं.) सोने के शिखरवाला एक कल्पित पर्वत ।
हिरण्याक्ष–(सं. पुं.) एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था, (विष्णु ने वराह अवतार लेकर इसको मारा था ।)
हिरण्याश्व–(सं. पुं.) सोलह महादानों में से एक ।
हिरदय–(हिं. पुं.) देखें 'हृदय' ।
हिरदावल–(हिं. पुं.) घोड़े की छाती पर की एक भौंरी जो अशुभ मानी जाती है ।
हिरन–(हिं.पुं.) हरिण, मृग; (मुहा.) **–हो जाना**–वेग से भाग जाना; **–खुरी**–(स्त्री.) एक प्रकार का बरसाती पौधा ।
हिरनाकुश–(हिं. पुं.) देखें 'हिरण्यकशिपु' ।
हिरनौटा–(हिं. पुं.) हरिन का बच्चा ।
हिरस–(हिं. स्त्री.) ईर्ष्या ।
हिराना–(हिं. क्रि. अ.) खो जाना, मिटना, दूर होना, हक्काबक्का होना, ध्यान में न रहना, भूल जाना, मवेशियों को खाद के लिये खेतों में बाँधना ।
हिरावल–(हिं. पुं.) देखें 'हरावल' ।
हिरासत–(अ. स्त्री.) हवालात, नजरबंदी ।
हिरौल–(हिं. पुं.) देखें 'हरावल' ।
हिलकी–(हिं. स्त्री.) हिचकी, सिसकी ।
हिलकोर, हिलकोरा–(हिं. पुं.) तरंग, लहर ।
हिलकोरना–(हिं. क्रि. अ.) पानी को हिलाकर लहरें उठाना ।
हिलग–(हिं. स्त्री.) संबंध, लगाव, प्रेम, हेलमेल ।
हिलगना–(हिं. क्रि. अ.) अटकना, फँसना, हिल-मिल जाना, परचना, पास आना, सटना ।
हिलगाना–(हिं. क्रि. स.) अटकाना, फँसाना, परचाना ।
हिलना–(हिं. क्रि. अ.) अपने स्थान से टलना, चलायमान होना, डोलना, रोकना, ढीला होना, काँपना, थरथराना, जल में प्रवेश करना, झूमना, लहराना, स्थिर न रहना; **–मिलना**– (क्रि. स.) परचना ।
हिलमोची–(सं.स्त्री.) एक प्रकार का साग ।
हिलसा–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार की चिपटी और बड़ी मछली ।
हिलाना–(हिं. क्रि. स.) स्थान से उठाना, टालना, चलायमान करना, डुलाना, झुलाना, कँपाना, अनुरक्त करना, परचाना, जल में प्रवेश कराना ।
हिलाल–(अ. पुं.) दूज का चन्द्रमा ।
हिलोर, हिलोरा–(हिं. पुं.) हवा के वेग से जल का उठना और गिरना, तरंग, लहर ।
हिलोरना–(हिं. क्रि. स.) जल को इधर-उधर हिलाना, डुलाना, लहराना ।
हिलोल–(हिं. पुं.) देखें 'हिलोर' ।
हिल्लोल–(सं. पुं.) हिलोरा, लहर, आनन्द की तरंग, एक राग का नाम ।
हिल्लोलन–(सं. पुं.) लहराना, झूलना ।
हिवँ–(हिं. पुं.) हिम, पाला ।
हिवार–(हिं. पुं.) पाला ।
हिसाब–(अ. पुं.) गिनती गणना, जोड़, सवाल का प्रश्न, गणित-विद्या, लेन-देन का ब्योरा; **–किताब**– (पुं.) आर्थिक लेन-देन का ब्योरा; **–चोर**–(पुं.) वह जो हिसाब-किताब लिखने में चोरी करता हो; **–बही**– (स्त्री.) वह पुस्तक जिसमें लेन-देन का ब्योरा लिखा जाता हो ।
हिसिषा–(हिं. स्त्री.) ईर्ष्या, स्पर्धा, बराबरी करने का भाव ।
हिस्सा–(अ. पुं.) भाग, अंश, खंड; **–बखरा**–(पुं.) भाग, अंश ।
हिस्सेदार–(अ. पुं.) अंश का अधिकारी, साझी ।
हिस्सेदारी–(अ. स्त्री.) साझा ।
हिहि–(सं. अव्य.) हँसने का शब्द ।
हिहिनाना–(हिं. क्रि. अ.) घोड़े का हिनहिनाना ।
हींग–(हिं. स्त्री.) एक प्रकार के वृक्ष का जमाया हुआ गोंद या दूध जो मसालों में व्यवहार किया जाता है, (इसमें बड़ी तीव्र गन्ध होती है), हिंगु ।
हींछा–(हिं. स्त्री.) इच्छा ।
हींस–(हिं. स्त्री.) घोड़े या गदहे के बोलने का शब्द, रेंकना, हिनहिनाहट ।
हींसना–(हिं. क्रि. अ.) हिनहिनाना, रेंकना ।
हींहीं–(सं. स्त्री.) हँसने का शब्द ।
ही–(सं. अव्य.) वह शब्द जो बात पर जोर देने अथवा स्वीकृति, परिमिति, निश्चय, अल्पता आदि सूचित करने के लिए प्रयोग किया जाता है ।
हीअ–(हिं. पुं.) देखें 'हिय', हृदय ।
हीक–(हिं. स्त्री.) हिचकी, हलकी दुर्गंध जिससे मतली आने लगती है ।
हीचना–(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हिचकना' ।
हीछना–(हिं. क्रि. स.) इच्छा करना ।
हीठना–(हिं. क्रि. अ.) पास जाना, समीप होना ।

हीन–(सं. वि.) त्यक्त, छोड़ा हुआ, अल्प, तुच्छ, कम, सुखसमृद्धिरहित, दीन, नीच, निष्कपट, बुरा, शून्य, वंचित, ओछा; (पुं.) अप्रमाणिक साक्षी या गवाह, अधम नायक; –कर्मा–(वि.) बुरा काम करनेवाला, अपना निर्दिष्ट कर्म न करनेवाला; –कुल– (वि.) नीच या बुरे कुल का; –क्रम–(पुं.) काव्य का वह दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ वर्णित विषयों के क्रम का सम्यक् निर्वाह न हुआ हो; –चरित–(वि.) जिसका आचरण बुरा हो; –ज–(वि.) नीच जाति से उत्पन्न; –जाति–(स्त्री.) नीच जाति या वर्ण; –ता–(स्त्री.) क्षुद्रता, नीचता; –त्व–(पुं.) तुच्छता; –दग्ध–(वि.) थोड़ा जला हुआ; –पक्ष–(पुं.) दुर्बल या समर्थित न होनेवाला पक्ष; –बल–(वि.) शक्तिहीन; –बाहु–(पुं.) शिव के एक गण का नाम; –बुद्धि–(वि.) जड़, मूर्ख; –मति–(वि.) बुद्धिहीन; –मूल्य–(वि.) कम दाम का; –यान–(पुं.) बौद्ध मतावलम्बियों की एक प्राचीन शाखा जिनके धर्मग्रन्थ पाली भाषा में हैं; –योग–(वि.) योगभ्रष्ट; –योनि–(वि.) नीच जाति का; –रस–(पुं.) काव्य का वह दोष जिसमें किसी रस का वर्णन करते हुए उस रस के विरुद्ध दूसरे रस का वर्णन किया जाता है; –रोमा–(वि.) रोमहीन, कम रोओंवाला; –वर्ण–(पुं.) नीच जाति या वर्ण; –वाद–(पु.) मिथ्या तर्क, झूठी बहस; –वादी–(वि.) विपरीत बातें कहनेवाला; –वीर्य–(वि.) हीनबल; –सख्य–(पुं.) नीचों के साथ मित्रता।

हीनांग–(सं. वि.) खण्डित अंगवाला, जो सर्वांगपूर्ण न हो।

हीनांगी–(सं. स्त्री.) छोटी चींटी।

हीनार्थ–(सं. वि.) अर्थहीन, जिसका कोई अर्थ न हो, विफल, जिसका कार्य सिद्ध न हुआ हो।

हीनोपमा–(सं. स्त्री.) काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिये छोटे उपमान का प्रयोग किया जाय, बड़े की छोटे से उपमा।

हीय, हीया–(हि. पुं.) हृदय, हिया।

हीर–(सं. पुं.) इन्द्र का वज्र, शिव, मोती की माला, हीरा नामक रत्न, सर्प, सिंह, बिजली, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह वर्ण होते हैं, एक मात्रिक छन्द का नाम; (हि. पुं.) सार, गूदा, शक्ति, बल, वीर्य, लकड़ी के भीतर का सार-भाग।

हीरक–(सं. पुं.) हीरा नामक रत्न।

हीरा–(सं. स्त्री.) लक्ष्मी, चींटी; (हि. पुं.) एक रत्न जो कड़ाई और चमक के लिये प्रसिद्ध है, अति उत्तम वस्तु।

हीराकसीस–(हि. पुं.) लोहे का वह विकार जो गन्धक के रासायनिक योग से बनता है, (यह देखने में कुछ हरापन लिये मटमैले रंग का होता है।)

हीरादोखी–(हि. स्त्री.) विजयसाल का गोंद।

हीरानखी–(हि. पुं.) एक प्रकार का बारीक धान।

हीरामन–(हि. पुं.) सुग्गे की एक कल्पित जाति जो सोने के रंग की मानी जाती है।

हीला–(अ. पुं.) बहाना, बनावट; –हवाला–(पुं.) टालमटोल।

ही ही–(हि. स्त्री.) जोर से ही-ही करते हुए हँसना, उच्च हास्य का शब्द, हँसते हुए उपहास करना।

हुं–(सं. अव्य.) तन्त्रोक्त बीज-मन्त्र का शब्द।

हुँ–(हि. अव्य.) स्वीकृतिसूचक शब्द, हाँ।

हुंकना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'हुँकारना'।

हुंकार–(हि. पुं.) ललकार, गरज।

हुंकारना–(हि. क्रि. अ.) ललकारना, गरजना।

हुँकारी–(हि. स्त्री.) 'हुँ' करने की क्रिया, मानना, हामी, एक स्वीकृतिसूचक शब्द; (मुहा.)–भरना–स्वीकृति देना।

हुंड–(सं. पुं.) व्याघ्र, बाघ, सूअर, राक्षस, जड़-बुद्धि या मूर्ख व्यक्ति।

हुंडन–(सं. पुं.) शिव के एक गण का नाम।

हुंडा–(हि. पुं.) वह धन जो वर पक्षवाले कन्या के पिताको विवाह-कृत्य के लिये देते हैं।

हुँडार–(हि. पुं.) वृक, भेड़िया।

हुंडावन–(हि. पुं.) वह रकम जो हुंडी लिखते समय बट्टे के रूप में काट ली जाती है।

हुंडी–(हि. स्त्री.) आपस में लेन-देन करनेवाले महाजनों या व्यापारियों में कोई निश्चित रकम देने या दिलाने के लिए किसी महाजन के नाम लिखित प्रतिज्ञा-पत्र, कर्ज देने का एक प्रकार; –बही–(स्त्री.) वह किताब या बही जिसमें सब तरह की हुंडियों की प्रतिलिपि रहती है; दर्शनी हुंडी–(स्त्री.) वह हुंडी जिसको दिखलाते ही रुपया चुका देना होता है; (मुहा.) –सकारना–हुंडी के रुपये देना स्वीकार करना।

हुँत(ते)–(हि. प्रत्य.) प्राचीन हिन्दी की तृतीया या पंचमी विभक्ति, द्वारा, वास्ते, लिये।

हु–(हि. अव्य.) अतिरिक्त, और भी।

हुआँ–(हि. पुं.) सियार के बोलने का शब्द।

हुआँना–(हि. क्रि. अ.) सियार की तरह हुआँ-हुआँ करना।

हुकना–(हि क्रि. अ.) भलना, चूकना, विस्मृत होना।

हुकर-पुकर–(हि. स्त्री.) व्यग्रता, अधीरता, घबड़ाहट, हुकुर-हुकुर।

हुकरना–(हि. क्रि. अ.) देखें 'हुँकारना'।

हुकुम–(हि. पुं.) आज्ञा।

हुकूमत–(अ. स्त्री.) शासन, राज्य, अधिकार।

हुकुर-पुकुर, हुकुर-हुकुर–(हि. स्त्री.) शीघ्रता से साँस चलने की धड़कन।

हुक्का–(अ. पुं.) तंबाकू पीने का एक उपकरण, गुड़गुड़ी।

हुक्का-पानी–(हि. पुं.) परस्पर हुक्का-का शब्द, पीने-पिलाने का व्यवहार, खाने-पीने का जाति-बिरादरी का व्यवहार; (मुहा.) –बंद करना–जाति से अलग करना।

हुक्म–(अ. पुं.) आज्ञा, आदेश।

हुक्मी–(अ. वि.) हुक्म-संबंधी।

हुचकी–(हि. स्त्री.) हिचकी।

हुजूर–(अ. पुं.) उच्च कर्मचारी को संबोधन करने का मान्य शब्द।

हुजूरी–(हि. स्त्री.) उच्च कर्मचारी या धनी व्यक्ति के समीप रहने की क्रिया।

हुज्जत–(अ. स्त्री.) दलील, बहस।

हुज्जती–(हि. वि.) हुज्जत-संबंधी।

हुड–(सं. पुं.) मेष, मेढ़ा, लाठी।

हुड़कना–(हि. क्रि. अ.) बच्चे का अपने प्रिय व्यक्ति के लिये व्याकुल होकर रोना।

हुड़का–(हि. पुं.) किसी प्रिय व्यक्ति के अचानक वियोग से होनेवाली मानसिक व्यथा (विशेषत: बच्चों को)।

हुड़काना–(हि. क्रि. स.) अधिक भयभीत और दु:खी करना, ललचाना।

हुड़दंग(गा)–(हि. पुं.) उपद्रव।

हुड़ुक–(हि. पुं.) एक प्रकार का डमरू के आकार का बाजा।

हुडुक्क–(सं. पुं.) मतवाला मनुष्य, अर्गल, लोहबंदा।

हुत–(सं. वि.) हवन किया हुआ, अग्नि में डाला हुआ; (पुं.) हवन की सामग्री,

शिव; -भक्ष-(पुं.) अग्नि; -भुक्-(पुं.) विष्णु, शिव, अग्नि; -०प्रिया-(स्त्री.) अग्नि की भार्या, स्वाहा; -वह-(पुं.) अग्नि, आग; -शेष-हवन की बची हुई सामग्री।
हुता-(हिं. क्रि. अ.) प्राचीन अवधी हिन्दी में "होना" क्रिया का भूतकालिक रूप, था।
हुताग्नि-(सं. पुं.) अग्निहोत्री।
हुताश-(सं. पुं.) अग्नि, आग, भय, डर, तीन की संख्या, चीता का वृक्ष।
हुताशन-(सं. पुं.) अग्नि, आग।
हुति-(सं. स्त्री.) हवन; (हिं. प्रत्य.) से।
हुतो-(हिं. क्रि. अ.) (अवधी में) "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हुदकाना-(हिं. क्रि. स.) उभाड़ना, उसकाना।
हुदना-(हिं. क्रि. अ.) स्तब्ध होना, रुकना।
हुन-(हिं. पुं.) सुवर्ण, मुद्रा, सोना; (मुहा.)-बरसना-धन की अधिकता होना।
हुनना-(हिं. क्रि. स.) हवन करना, आहुति देना।
हुनर-(फा. पुं.) कारीगरी।
हुन्न-(हिं. पुं.) देखें 'हुन'।
हुब्ब-(अ. स्त्री.) अनुराग, चाह, उत्साह।
हुमकना-(हिं. क्रि. अ.) उछलना-कूदना, पैरों से बल लगाकर ठेलना, ठुमकना, तानना।
हुमगना-(हिं. क्रि. अ.) देखें 'हुमकना'।
हुरदंग(गा)-(हिं. पुं.) देखें 'हुड़दंग'।
हुरहुर-(हिं. पुं.) एक बरसाती पौधा।
हुरहुरिया-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का पक्षी।
हुरुट्टक-(सं. पुं.) हाथी का अंकुश।
हुरुमयी-(हिं. स्त्री.) एक प्रकार का नाच।
हुल-(सं. पुं.) एक प्रकार का दोधारा छुरा।
हुलकना-(हिं. क्रि. अ.) वमन करना।
हुलकी-((हिं. स्त्री.) वमन, हैजे का रोग।
हुलना-(हिं. क्रि. स.) लाठी से ठेलना।
हुलसना-(हिं. क्रि. अ.) आनन्द से फूलना, उमड़ना, बढ़ना।
हुलसाना-(हिं. क्रि. स.) हर्ष की उमंग उत्पन्न करना।
हुलसी-(हिं. स्त्री.) आनन्द, हुलास, कुछ लोगों के अनुसार तुलसीदास की माता का नाम।
हुलहुल-(हिं. पुं.) एक प्रकार का बरसाती पौधा, हुरहुर।
हुलहुली-(हिं. पुं.) आनंद-उत्सव के समय स्त्रियों द्वारा एक साथ मिलकर किया जानेवाला अस्पष्ट शब्द।
हुलाना-(हिं. क्रि. स.) लाठी से ठेलना।
हुलास-(हिं. पुं.) आनन्द की उमंग, उत्साह; (स्त्री.) सुंघनी; -दानी-(स्त्री.) सुंघनी रखने की डिबिया।
हुलासी-(हिं. वि.) उत्साही, आनन्दी।
हुलिया-(अ. पुं.) चेहरा, शक्ल, शक्ल-सूरत का ब्योरा।
हुलु-(सं. पुं.) भेड़ा।
हुलूक-(हिं. पुं.) एक जाति का बंदर।
हुल्ल-(सं. पुं.) एक प्रकार का नृत्य।
हुल्लड़-(हिं. पुं.) उपद्रव, ऊधम, दंगा, हलचल, आन्दोलन।
हुल्लास-(सं. पुं.) एक प्रकार का छन्द।
हुश्-(हिं. अव्य.) अनुचित बात आदि बोलने से रोकने के लिये यह शब्द कहा जाता है।
हुसियार-(हिं. वि.) चतुर।
हुसैनी कान्हड़ा-(हिं. पुं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
हुस्यार-(हिं. वि.) चतुर।
हुहव-(सं. पुं.) एक नरक का नाम।
हुहु-(सं. पुं.) एक गन्धर्व का नाम।
हूँ-(हिं. अव्य.) स्वीकारसूचक शब्द, (क्रि.अ.) 'होना' क्रिया का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप।
हूँकना-(हिं. क्रि. अ.) गाय का जोर से बोलना, जोर से रोना, किसी बात को याद करके रोना, वीरों का ललकारना।
हूँठा-(हिं. पुं.) साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूँड़ा-(हिं. स्त्री.) सिंचाई आदि कार्यों में किसानों का परस्पर सहायता लेना-देना।
हूँस-(हिं. स्त्री.) ईर्ष्या, डाह, कोसना, फटकार।
हूँसना-(हिं. क्रि. स.) दृष्टि लगाना, ईर्ष्या से जलना, फटकारना, कोसना।
हूक-(हिं. स्त्री.) हृदय की पीड़ा, दर्द, खटका।
हूकना-(हिं. क्रि. अ.) पीड़ा होना, पीड़ा से चौंक उठना।
हूटना-(हिं. क्रि. अ.) हटना, टलना, मुंह फेरना।
हूठा-(हिं. पुं.) अँगूठा, ठेंगा; (मुहा.) -देना-किसी को चिढ़ाने के लिये अँगूठा दिखलाना।
हूड़-(हिं. वि.) असावधान, उजड्ड, अनाड़ी, हठी, जिद्दी।
हूण-(सं. पुं.) एक प्राचीन असभ्य जाति जो ईसवी चौथी शताब्दी में एशिया तथा यूरोप के सभ्य देशों पर आक्रमण करके फैली थी।
हूत-(सं. वि.) बुलाया हुआ।
हून-(सं. पुं.) प्राचीन समय में प्रचलित सोने की एक मुद्रा जो तौल में पचास ग्रेन होती थी।
हूनना-(हिं. क्रि. स.) आग में डालना।
हूरना-(हिं. क्रि. स.) चुभाना, गड़ाना।
हूरा-(हिं. पुं.) लाठी का अग्रभाग, लाठी।
हूल-(हिं. स्त्री.) लासा लगा हुआ चिड़िया फँसाने का बाँस, (लाठी, भाले, डंडे, छरे आदि की नोक से) भोंकने की क्रिया, कोलाहल, आनन्द का शब्द, ललकार, आनन्द।
हूलना-(हिं. क्रि. स.) (लाठी, भाले आदि की) नोक को गड़ाना या धँसाना, गोदना, चुभाना।
हूला-(हिं. पुं.) शस्त्र आदि से हूलने की क्रिया।
हूश-(हिं. वि.) अशिष्ट, असभ्य, गँवार।
हूहू-(सं. पुं.) एक प्रकार के गन्धर्व।
हूहू-(हिं. पुं.) अग्नि के जलने का शब्द।
हृच्छय-(सं. पुं.) कन्दर्प, कामदेव।
हृच्छूल-(सं. पुं.) हृदय का शूल (रोग)।
हृच्छोक-(सं. पुं.) हृदय का शोक।
हृच्छोष-(सं. पुं.) हृदय के भीतर की शुष्कता।
हृत्-(सं. पुं.) हृदय, वक्षःस्थल।
हृत-(सं. वि.) हरण किया हुआ, लिया हुआ।
हृति-(सं. स्त्री.) हरण, नाश, लूट।
हृत्कंप-(सं. पुं.) हृदय का कम्प, धड़कन, जी दहलना।
हृत्ताप-(सं. पुं.) हृदय की जलन।
हृत्पिंड-(सं. पुं.) हृदय का कोष।
हृत्पीड़न-(सं. पुं.) छाती की पीड़ा।
हृत्पीड़ा-(सं. स्त्री.) हृदय की पीड़ा।
हृत्पुंडरीक-(सं. पुं.) हृदयरूपी कमल।
हृत्प्रतिष्ठ-(सं. वि.) हृदय में स्थित।
हृत्पुष्कर-(सं. पुं.) हृदयरूपी पद्म।
हृत्प्रिय-(सं. पुं.) हृदय को प्रिय।
हृद्-(सं. पुं.) हृदय, मन।
हृदयंगम-(सं. पुं.) मन में बैठा हुआ, उपयुक्त, मनोहर, सुंदर।
हृदय-(सं. पुं.) वक्षःस्थल, चेतना-स्थान, अन्तःकरण, मन, विवेक, बुद्धि, अन्तरात्मा, किसी वस्तु का सार भाग, हीर, तत्व, गूढ़ रहस्य, अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, प्राणाधार; -ग्रंथि-(स्त्री.) हृदय की गाँठ; -ग्रह-(पुं.) हृदय फड़कने का रोग; -ग्राह-(पुं.) रहस्य जान लेना; -ग्राही-(वि.) मन को लुभानेवाला;

रुचिकर; **–चौर–**(पुं.) मन को मोहने-वाल. व्यक्ति; **–ज–**(वि)अन्त.करण से उत्पन्न; **–ज्ञ–**(वि.) मन के भाव को जाननेवाला; **–दाही–**(वि.) हृदय जलानेवाला; **–निकेत–**(पुं.) मनसिज, कामदेव; **–प्रमाथी–**(वि.) मन को मोहनेवाला; **–प्रिय–**(वि.) अत्यन्त प्यारा; **–वल्लभ–**(पुं.) प्रियतम, प्रेम-पात्र; **–वान्–**(वि.) प्रेमी, रसिक; **–विदारक–**(वि.) अत्यन्त शोक, करुणा अथवा दया उत्पन्न करनेवाला; **–वृत्ति–**(स्त्री.) अन्तःकरण की वृत्ति; **–वेधी–**(वि.) मन को वेधन करनेवाला, वहुत वुरा लगनेवाला; **–व्याधि–**(स्त्री.)हृदय का रोग; **–शोक–**(पुं.) हृदय का कष्ट या शोक; **–स्थ–**(वि.) हृदय में रहनेवाला; **–स्थान–**(पुं.) वक्षःस्थल; **–स्पर्शी–**(वि.) हृदय पर प्रभाव डालनेवाला, मन में दया उत्पन्न करनेवाला; **–हारी–**(वि.) मन मोहनेवाला, जी को लुभानेवाला।

हृदयालु–(सं. वि.) सहृदय, सुशील।

हृदयेश–(सं. पुं.) पति, स्वामी, प्रेमपात्र।

हृदयेश्वर–(सं. पुं.) पति, स्वामी।

हृदयेशा–(सं. स्त्री.) भार्या, पत्नी।

हृदयोन्मादिनी–(सं. वि.)हृदय को उन्मत्त या मुग्ध करनेवाली।

हृदिस्पृश्–(सं. वि.) सुंदर, मनोहर।

हृद्ग–(सं. वि.) हृदय में जानेवाला।

हृद्गत–(सं. वि.) आन्तरिक, मन का, चित्त में आया हुआ, रुचिकर, प्रिय।

हृद्ग्रह–(सं. पुं.) हृदय की पीड़ा।

हृद्दाह–(सं. पुं.) कलेजे की जलन।

हृद्य–(सं. पुं.) जीरा, दालचीनी, कैथ, दही, मधु की शराव ; (वि.) हृदय का, भीतरी, हृदय को अच्छा लगनेवाला, सुंदर, सुहावना ; **–गंध–**(पुं.) सफेद जीरा, वेल का पेड़; **–गंधा–**(स्त्री.) अजमोदा; **–ता–**(स्त्री.) सद्भाव, प्रेम।

हृद्यांशु–(सं. पुं.) चन्द्रमा।

हृद्रुज्–(सं. स्त्री.) हृदय की पीड़ा।

हृद्रोग–(सं. पुं.) हृदय का रोग।

हृद्वर्ती–(सं. वि.) हृदयस्थ।

हृन्मोह–(सं. पुं.) हृदय का मोह।

हृल्लास–(सं. पुं.) हिक्का रोग, हिचकी।

हृल्लेख–(सं. पु.) ज्ञान, तर्क।

हृल्लेखा–(सं. स्त्री.) उत्सुकता, व्यग्रता, व्याकुलता।

हृषि–(सं. स्त्री.) आनन्द, हर्ष, कान्ति।

हृषित–(सं.वि.)विस्मृत, पुलकित, प्रणत।

हृषीक–(सं. पुं.) विषयग्राही इन्द्रियाँ।

हृषीकनाथ–(सं. पुं.) विष्णु।

हृषीकेश–(सं. पुं.) विष्णु, श्रीकृष्ण, पूस का महीना, हरिद्वार के पास का एक तीर्थ-स्थान।

हृष्ट–(सं. वि.) हर्षित, आनन्दयुक्त, पुलकित, विस्मित; **–पुष्ट–**(वि.) मोटा-ताजा; **–मानस–**(वि.) प्रसन्न-चित्त; **–रोमा–**(वि.) रोमांचित, पुलकित।

हृष्टि–(सं. स्त्री.) हर्ष, प्रसन्नता, गर्व से फूलना।

हृष्यका–(सं. स्त्री.) संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना।

हेंहें–(हिं. अव्य.) धीरे-धीरे हँसने का शब्द, हीनतासूचक शब्द, गिड़गिड़ाने की आवाज।

हेंगा–(हिं. पुं.) वह चौड़ा पटरा जिससे जोते हुए खेत की मिट्टी वरावर की जाती है।

हेंगी–(हिं. स्त्री.) छोटा हेंगा।

हे–(सं.अव्य.)संवोधन के लिए प्रयुक्त शब्द।

हेकड़–(हिं. वि.) हृष्टपुष्ट, उजड्ड, अक्खड़, प्रचण्ड, प्रवल।

हेकड़ी–(हिं. स्त्री.) प्रचण्डता, उग्रता, अक्खड़पन, वलात्कार।

हेठ–(हिं. पुं.) वाधा, पीड़ा; (वि.) हेठा।

हेठा–(हिं. वि.) तुच्छ, नीचा, कम; **–पन–**(पुं.) तुच्छता, नीचता।

हेठी–(हिं. स्त्री.) मानहानि, अप्रतिष्ठा।

हेड़ी–(हिं. स्त्री.) चौपायों का समूह जिसको वनजारे वेचने के लिये साथ-साथ हाँकते चलते हैं; (पुं.) आखेटी, व्याध।

हेत–(हिं. पुं.) देखें 'हेतु', कारण।

हेति–(सं. स्त्री.) अस्त्र, आग की लपट, शिखा, धनुष की टंकार, अंकुर, अँखुआ।

हेतु–(सं. पुं.) प्रयोजन, कारण, न्याय के अनुसार व्यापक कारण, उद्देश्य, अभिप्राय, तर्क, तर्कशास्त्र, वह अर्था-लंकार जिसमें कारण ही कार्य कहा जाता है; **–क–**(वि.) कारण-संवंधी; **–मान्–**(वि.) जिसका कोई हेतु या कारण हो; **–रूपक–** (पुं.) वह अलंकार जिसमें हेतु द्वारा गाम्भीर्य आदि दरसाया जाता है; **–वाद–**(पुं.) तर्क-विद्या, नास्तिक-व्यग्रता, कुतर्क; **–वादी–**(वि., पुं.) तर्क करनेवाला, नास्तिक; **–विद्या–**(स्त्री.) **–शास्त्र–** (पुं.) तर्कशास्त्र; **–हेतु-मद्भाव–**(पुं.) कार्य और कारण का सम्वन्ध; **–हेतुमद् भूतकाल–** (पुं.) व्याकरण में भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो वातों का होना कहा जाता है जिनमें से एक कथन दूसरे पर निर्भर हो, यथा–यदि तुम जल्दी गये होते तो तुमको गाड़ी मिल गई होती।

हेतूत्प्रेक्षा–(सं. स्त्री.) वह उत्प्रेक्षा अलं-कार जहाँ हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है।

हेतूपमा–(सं. स्त्री.) वह उपमा अलंकार जिसमें हेतु द्वारा उपमा दी जाती है।

हेत्वपह्नुति–(सं. स्त्री.) वह अपह्नुति अलंकार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण दिया जाता हैं।

हेत्वाभास–(सं. पुं.) हेतुदोष, वह जो यथार्थतः हेतु नहीं है परन्तु हेतु जैसा प्रतीत होता है, झूठा हेतु या कारण, कुतर्क।

हेमंत–(सं. पुं.) अगहन और पूस महीने की ऋतु।

हेमंतनाथ–(सं. पुं.) कपित्थ, कैथ।

हेम–(सं. पुं.) सुवर्ण, सोना, एक माशे की तौल, बुद्ध का एक नाम, वदामी रंग का घोड़ा, हिम, पाला; **–कंदल–**(पुं.) प्रवाल, मूँगा; **–क–**(पुं.) सुवर्ण-खंड; **–कर–**(पुं.) शिव, सूर्य; **–कर्ता–**(पुं.) सुनार; **–कांति–** (स्त्री.) दारुहल्दी; (वि.) सोने के समान कान्तिवाला; **–कार–**(पुं.) सुनार; **–कूट–** (पुं.) हिमालय की एक पर्वत-श्रेणी; **केलि–**(पुं.) अग्नि, आग; **–केश–**(पुं.) शिव, महादेव; **–गर्भ–**(वि.) जिसके बीच में सुवर्ण हो; (पुं.) उत्तर दिशा का एक पर्वत; **–गिरि–**(पुं.)सुमेरु पर्वत; **–घ्न–**(पुं.) सीसा नामक धातु; **–घ्नी–**(स्त्री.) हरिद्रा, हलदी; **–चंद्र–**(पुं.) एक प्राचीन जैन आचार्य का नाम; **–चूर्ण–**(पुं.) सोने की वुकनी; **–ज–**(पुं.) टीन, राँगा; **–ज्वाल–**(पुं) अग्नि; **–तरु–** (पुं.) धतूरा; **–तार–**(पुं.) तुत्थ, तूतिया; **–तुला–**(स्त्री.) सुवर्ण का तुलादान; **–दीनार–** (पुं.) सोने की मुद्रा; **–दुग्ध–**(पुं.) गूलर; **–धन्वा–**(पु.) ग्यारहवें मनु के एक पुत्र का नाम; **–धान्य–** (पुं.) तिल या उसका पौधा ; **–नेत्र–** (पुं.) यक्ष; **–पर्वत–**(पुं.) सुमेरु पर्वत; **–पुष्प–**(पुं.) जवापुष्प, नागकेशर, अमलतास, चम्पा का फूल ; **–पुष्पी–** (स्त्री.) इन्द्रवारुणी, अमलतास ; **–प्रभ–**(वि.) सोने के समान प्रभायुक्त ; (पुं) विद्याधर ; **–प्रभा–** (स्त्री.) विद्या-धरी; **–मय–** (वि.) सुवर्णनिर्मित,

सोने का बना हुआ; **-माली**-(पुं.) एक राक्षस जो खर का सेनापति था; **-मित्र**-(पुं.) फिटकिरी; **-लं**-(पुं.) कृकलास, गिरगिट; **-लता**-(स्त्री.) सोमलता, ब्राह्मी, एक शाक; **-वल**-(पुं.) मुक्ता, मोती; **-शंख**-(पुं.) विष्णु; **-सुता**- (स्त्री.) पार्वती, दुर्गा।
हेमांग-(सं. पुं.) गरुड़, विष्णु, चम्पक वृक्ष; (वि.) सुवर्णमय शरीरवाला।
हेमांगद-(सं. पुं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।
हेमांचल-(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत।
हेमांबुज-(सं. पुं.) सुवर्ण के रंग का पद्म।
हेमा-(सं. स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।
हेमाद्रि-(सं. पुं.) सुमेरु पर्वत।
हेमाल-(सं. पुं.) एक राग का नाम।
हेम्ना-(सं.स्त्री.)एक संकीर्ण राग का नाम।
हेय-(सं. वि.) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निकृष्ट, बुरा।
हेरंब-(सं. पुं.) गणेश, भैंसा, धीरोद्धत नायक; **-जननी**-(स्त्री.) पार्वती।
हेर-(सं. वि.) किरीट, हल्दी; (हिं. स्त्री.) ढूँढ़ना।
हेरना-(हिं. क्रि. स.) खोजना, जाँच-पड़ताल करना; **-फेरना**-(क्रि. स.) इधर-उधर करना, अदल-बदल करना।
हेर-फेर-(हिं.प.) चक्कर, घुमाव, बातों का आडम्बर, अन्तर, उलट-पलट, कुटिल युक्ति, दाँव-पेंच।
हेरवाना-(हिं. क्रि. स.) खोजवाना।
हेराना-(हिं. क्रि. अ., स.) अभाव होना, खो जाना, नष्ट होना, लुप्त हो जाना, अपनी सुधबुध खो देना, लीन होना, तन्मय होना, देखें 'हेरवाना'।
हेराफेरी-(हिं. स्त्री.) अदल-बदल, इधर-उधर होना या करना।
हेरिक-(सं. पुं.) भेद लेनेवाला दूत।
हेरी-(हिं. स्त्री.) पुकार, गुहार देना, आह्वान।
हेरुक-(सं. पुं.) बुद्धदेव, गणेश।
हेल-(हिं. पुं.) घनिष्ठता, मेलजोल (मेल के साथ प्रयुक्त)।
हेलन-(सं. पुं.)अवज्ञा करना, तिरस्कार, क्रीड़ा करना।
हेलना-(हिं. क्रि. अ., स.) क्रीड़ा करना, विनोद करना,हँसी उड़ाना,ध्यान न देना, जल में प्रवेश करना, पैठना, परवाह न करना, तुच्छ समझना, अवज्ञा करना।
हेलमेल-(हिं. पुं.) मेलजोल, मित्रता, घनिष्ठ सम्बन्ध, परिचय, संग-साथ।
हेलया-(सं. अव्य.) खेल में, सहज में।
हेला-(सं. स्त्री.) स्त्रियों की मोहक चेष्टा, अवज्ञा, तिरस्कार, केलि-क्रीड़ा, चाँदनी, क्रीड़ा, खेल; (हिं.पुं.) पुकार, चिल्लाहट, आक्रमण, चढ़ाई, ठेलने का काम, खेप, बारी, मैला उठाने का काम, मेहतर।
हेलि-(सं. पुं.) सूर्य; (स्त्री.) आलिंगन।
हेलिन-(हिं. स्त्री.) डोमिन।
हेली-(हिं. स्त्री.) सहेली, सखी।
हेवंत-(हिं. पुं.) देखें 'हेमंत'।
हेष- (सं. पुं.) घोड़े का हिनहिनाना।
हैं-(हिं. अव्य.) एक आश्चर्यसूचक शब्द, असम्मतिसूचक शब्द; (क्रि. अ.) "होना" क्रिया के वर्तमान काल बहुवचन का रूप।
हैंस-(हिं.स्त्री.)एक प्रकार का छोटा पौधा।
है-(हिं. क्रि. अ.) "होना" क्रिया के वर्तमान काल एकवचन का रूप।
हैकड़-(हिं. वि.) देखें 'हेकड़'।
हैकल-(हिं. स्त्री.) घोड़े के गले में पहनाने का एक गहना,स्त्रियों के गले में पहनने की एक प्रकार की माला, हुमेल।
हैजा-(अ. पुं.) कै-दस्त की संक्रामक महामारी, विषूचिका।
हैतुक-(सं. वि.) जिसका कोई हेतु हो, कारण-संबंधी, तार्किक; (पुं) सन्देह करनेवाला, नास्तिक, तार्किक, कुतर्की।
हैना-(हिं. क्रि. स.)मारना, हनन करना।
हैमंत-(सं. वि.) हेमन्त ऋतु-सम्बन्धी।
हैम-(सं. पुं.) प्रातःकाल के ओस का पानी, शिव, हिमालय, ओस, पाला; (वि.) सुवर्णमय, सोने का, सुनहले रंग का, पाले का, जाड़े का।
हैमन-(सं. वि.) हेमन्त ऋतु में होनेवाला, सोने का।
हैमवत-(सं. वि.)हिमालय-संबंधी, हिमालय का; (पुं.)हिमालय का निवासी।
हैमवती-(सं. स्त्री.) पार्वती, उमा, हर्रे, गंगा, हल्दी, थूहर, खिरनी।
हैमा-(सं. स्त्री.) पीली चमेली।
हैमी-(सं. स्त्री.) केतकी।
हैरंब-(सं. वि.) गणेश-संबंधी; (पुं.) गणेश का उपासक।
हैरण्य-(सं. वि.)हिरण्य-संबंधी, सोने का।
हैवान-(अ. पुं.) जानवर, पशु।
हैवानी-(हिं. स्त्री.) पशुता।
हैसियत-(अ. स्त्री.) सामर्थ्य, बिसात, मालियत, निजी संपत्ति, ओहदा, पद; **-दार**-(वि.) हैसियतवाला।
हैहय-(सं. पुं.) सहस्रार्जुन, पश्चिम दिशा का एक पर्वत, एक क्षत्रिय वंश का नाम।
हैहयराज, **हैहयाधिराज**-(सं. पुं.) सहस्रार्जुन।
हैहै-(हिं. अव्य.) हाय-हाय।
हों-(हिं. क्रि. अ.) "होना" क्रिया का सम्भावनासूचक बहुवचन रूप।
होंठ-(हिं. पुं.) ओष्ठ, ओठ; (मुहा.) **-चबाना**-क्रोध से ओठों को दाँतों से काटना।
होंठल-(हिं. वि.) मोटे-मोटे ओष्ठोंवाला।
होंठी-(हिं. स्त्री.) किनारा, धार, छोर, टुकड़ा।
हो-(सं. पुं.) पुकारने का शब्द, हे; (हिं. क्रि. अ.) "होना" क्रिया का सम्भावनासूचक, मध्यम पुरुष, बहुवचन के वर्तमान काल का रूप।
होड़-(हिं. स्त्री.) स्पर्धा, बराबर होने का प्रयत्न, बराबरी, हठ, बाजी, शर्त।
होड़ा-बादी, **होड़ा-होड़ी**-(हिं. स्त्री.) चढ़ा-उपरी, दूसरे की बराबरी करने का प्रयत्न, लागडाँट।
होतब-(हिं. पुं.)होनहार,होनेवाली बात।
होतव्य-(हिं. पुं.) भवितव्यता, होनहार।
होतव्यता-(हिं. स्त्री.) भवितव्यता, होनहार।
होता-(सं. पुं.) यज्ञादि में आहुति देनेवाला पुरोहित, यज्ञकर्ता; (वि.) हवन करनेवाला।
होत्र-(सं. पुं.) हवि, होम।
होत्री-(सं. पुं.) देखें 'होता'।
होनहार-(हिं. वि.) भावी, जो होनेवाला हो, अच्छे लक्षणों का, जिसमें उन्नति के लक्षण हों; (पुं., स्त्री.) भवितव्यता।
होना-(हिं. क्रि.अ.) अस्तित्व रखना, उपस्थित रहना, एक रूप से दूसरे रूप में आना, भुगतना, घटित किया जाना, बनाया जाना, कोई संयोग आ पड़ना, कोई काम निकलना, हानि पहुँचना; (मुहा.) **कहीं का होना**-कहीं पर जाकर टिक जाना; **कहीं से होते हुए**-किसी मार्ग से जाते हुए; **हो आना**-किसी से भेंट करके लौट आना; **-जाना**-पूर्ण होना।
होनी-(हिं. स्त्री.) होनहार, होनेवाली घटना या बात, भवितव्यता।
होम-(सं. पुं.) आहुति देने का कर्म, किसी देवता के उद्देश्य से अग्नि में तिल, जौ आदि डालना, यज्ञ, हवन; (मुहा.)**-कर देना**-भस्म करना, नष्ट कर देना;

—काष्ठी—(स्त्री.)यज्ञ की अग्नि सुलगाने की फुँकनी; —कुंड—(पुं.) वह कुंड या गड्ढा जिसमें हवन किया जाता है; —तुरंग—(पुं.) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा; —दुह—(पुं.) होम के लिये दूध दुहनेवाला; —धेनु—(स्त्री.) वह गाय जिसके घी से हवन होता है।
होमना—(हिं. क्रि. स.) हवन करना, छोड़ देना, नष्ट करना।
होमाग्नि—(सं. स्त्री.) यज्ञ की अग्नि।
होमीय—(सं. वि.) होम-संबंधी।
होर—(हि. वि.) ठहरा हुआ, रुका हुआ।
होरसा—(हिं.पुं.) पत्थर की गोल चिकनी चौकी जिस पर चन्दन रगड़ा जाता है अथवा रोटी बेली जाती है, चौका।
होरहा—(हिं. पुं.) चने का हरा दाना, आग में भूना हुआ चने का हरा दाना।
होरा—(सं. स्त्री.) एक राशि या लग्न का आधा भाग, दिन-रात का चौबीसवाँ भाग, अढ़ाई घड़ी का समय, जन्म-कुण्डली, चिह्न।
होरिल—(हिं. पुं.) नवजात बालक।
होरिहार—(हिं. पुं.) होली खेलनेवाला।
होरी—(हिं. स्त्री.) वह बड़ी नाव जो जहाजी माल उतारने-चढ़ाने के काम में आती है, देखें 'होली'।
होलक—(हिं. पुं.) आग में भूनी हुई हरा चना या मटर की फलियाँ।
होला—(सं. स्त्री.) होली का त्यौहार; (पुं.) आग में भूनी हुई हरा चना या मटर की फली, चने का हरा दाना।
होलाक—(सं. पुं.) आग की गरमी पहुँचाकर पसीना लाने की विधि।
होलाका—(सं.स्त्री.)वसन्तोत्सव, होली का त्यौहार, फाल्गुन मास की पूर्णमासी।
होलाष्टक—(सं. पुं.)होली के त्यौहार के पहले के आठ दिन जिनमें विवाहादि कृत्य वर्जित हैं।
होलिका—(सं. स्त्री.) होली का त्यौहार, लकड़ी, घास-फूस आदि का ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है, एक राक्षसी का नाम।
होली—(हिं.स्त्री.)हिन्दुओं का एक त्यौहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है, (इसमें लोग एक दूसरे पर रंग और कुंकुम डालते है); (मुहा.)—खेलना—एक दूसरे के ऊपर रंग, अबीर, आदि डालना, होली में गाया जानेवाला गीत।
होश—(फा. पुं.) संज्ञा, चेतना, सुधबुध, स्मरण, समझ।
होशियार—(फा. वि.) समझदार, अक्लमंद, बुद्धिमान्।
होशियारी—(फा.स्त्री.)समझ, बुद्धिमानी।
होस—(हिं. पुं.) देखें 'होश', चेतना।
हो हो—(हि. अव्य.) सम्बोधन का शब्द।
हौं—(हिं. सर्व.) ब्रजभाषा में "मैं" के लिये प्रयुक्त शब्द; (क्रि. अ.) 'होना' क्रिया का वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष का रूप, हूँ।
हौंकना—(हिं. क्रि. स.) आग सुलगाना, धौंकना, हाँफना, गरजना।
हौंस—(हि. स्त्री.) देखें 'हौस', उमंग।
हौ—(हिं. क्रि. अ.) ब्रजभाषा में "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हौआ (वा)—(हिं.पुं.) लड़कों को डराने के लिये एक कल्पित वस्तु का नाम,।
हौका—(हिं. पुं.) प्रबल लोभ या तृष्णा, भुक्खड़पन, खाने का लालच।
हौतभुज—(सं. पुं.) कृत्तिका नक्षत्र।
हौताशन—(सं. वि.) अग्नि-संबंधी।
हौतक—(सं. वि.) होता-संबंधी।
हौत्र—(सं. पुं.) होता का भाव या कर्म।
हौद—(हिं. पुं.) कुण्ड, छोटा जलाशय, मिट्टी का चौड़े मुँह का बड़ा पात्र, नाँद।
हौरा—(हिं. पुं.) हल्ला, कोलाहल।
हौली—(हिं. स्त्री.) मदिरा उतारने तथा बेचने का स्थान।
हौले-हौले—(हिं. अव्य.) मन्द गति से, धीरे-धीरे, हल्के से।
हौस—(हिं. स्त्री.) चाह, इच्छा, अभिलाषा, कामना, उमंग, उत्साह, लालसा।
हौसला—(अ.पुं.)सामर्थ्य, साहस, हिम्मत; —मंद—(वि.) साहसी।
ह्यस्—(सं. अव्य.) गत दिन, काल।
ह्यस्तन—(सं. वि.) (गत) कल का।
ह्याँ—(हिं.अव्य.) यहाँ, इस स्थान पर।
ह्यो—(हिं. पुं.) देखें 'हिया'।
ह्रद—(सं. पुं.) बड़ा तालाब या झील, सरोवर, गहरा गड्ढा, किरण।
ह्रदग्रह—(सं. पुं.) कुंभीर नामक जलजन्तु।
ह्रदनी—(सं. स्त्री.) नदी, बिजली।
ह्रसित—(सं. वि.) छोटा किया हुआ, घटाया हुआ।
ह्रस्व—(सं. वि.) छोटे परिमाण का, नाटा, छोटे आकार का, कम, थोड़ा, नीच, तुच्छ; (सं. पुं.) एक प्रकार का साग, हीराकसीस, व्याकरण में वे स्वर जो खींचकर नहीं बोले जाते; —क—(वि.)बहुत छोटा; —कर्ण—(पुं.) एक राक्षस; —ता—(स्त्री.) अल्पता, लघुता, छोटाई; —दा—(स्त्री.) सलई का पेड़; —पर्ण—(पुं.) पाकर का वृक्ष; —पर्व—(पुं.) काला गन्ना; —मूला—(पुं.) खजूर, छुहारा।
ह्रस्वांग—(सं. वि.) नाटा, ठिगना।
ह्राद—(सं. पुं.) शब्द, ध्वनि, मेघ की गर्जना।
ह्रादिनी—(सं. स्त्री.) विद्युत्, बिजली, नदी।
ह्रास—(सं. पुं.) क्षय, क्षीणता, कमी, शक्ति का कम होना, शब्द।
ह्रासन—(सं. पुं.) कम करना।
ह्री—(सं.स्त्री.) लज्जा, यक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म को व्याही थी।
ह्रीक—(सं. पुं.) नेवला।
ह्रीका—(सं. स्त्री.) त्रास, डर, लज्जा।
ह्रीण—(सं. वि.) लज्जित।
ह्रीत—(सं. वि.) लजाया हुआ।
ह्रीति—(सं. स्त्री.) लज्जा, शर्म।
ह्रीमान्—(हिं. वि.) लज्जाशील।
ह्रीमूढ़—(सं. वि.) लज्जा से दबा हुआ।
ह्रीवेर—(सं. पुं.) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, सुगन्धबाला।
ह्लाद—(सं. पुं.) आनन्द, हिरण्यकशिपु के एक पुत्र का नाम।
ह्लादक—(सं. वि.) प्रसन्न करनेवाला, आनन्द देनेवाला।
ह्लादन—(सं. पुं.) आह्लाद, प्रसन्नता; (पुं.) महादेव, शिव।
ह्लादिका—(सं. स्त्री.) आनन्द देनेवाली।
ह्लादिनी—(सं. स्त्री.) ईश्वर की एक शक्ति का नाम, बिजली, वज्र, एक नदी का नाम।
ह्लादी—(सं. वि.) प्रसन्न।
ह्लेषा—(सं. स्त्री.) घोड़े की हिनहिनाहट।
ह्वलन—(सं. पुं.)इधर-उधर लुढ़कना, थरथराहट।
ह्वाँ—(हिं. अव्य.) वहाँ, उस स्थान पर।
ह्वान—(सं. पुं.) आह्वान, बुलावा।

Some Important Idioms and Proverbs

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अ

अंक देना–आलिंगन करना, गले लगाना।
अंग अंग ढीला करना–अति शिथिल कर देना।
अंग अंग ढीला होना–बहुत थक जाना।
अंग अंग मुस्कुराना–अति प्रसन्न होना, बहुत खुश होना।
अंग न लगना–भोजन का पुष्टिकारक प्रभाव शरीर पर न होना, काफी खाना खाने पर भी दुबला होना।
अंगारे उगलना–क्रोध में आकर कठोर वचन बोलना।
अंगारे बरसना–धूप बड़ी तेज होना, सूर्य का तीव्र होना।
अंगारे सिर पर धरना–बड़ी आपत्ति को सहन करना।
अंगारों पर लेटना–बहुत व्यग्र होना, घबड़ाना।
अंगुलियाँ उठना–बदनाम होना, अपकीर्ति प्राप्त करना।
अँगुलियाँ उठाना–बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना।
अंगुलियों पर गिना जाना–संख्या में बहुत कम होना।
अँगुलियों पर नचाना–तंग करना, परेशान करना।
अँगुलियों पर नाचना–वशीभूत होना।
अँगुली उठाना–हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना।
अँगूठा चमना–बड़ी विनती करना।
अँगूठा दिखाना–चिढ़ाना, सा जवाब देना, अस्वीकार करना।
अँचरा पसारना–भिक्षा माँगना।
अंजर-पंजर ढीला करना–बहुत मारना-पीटना।
अंटी पर चढ़ना–अधिकार में आना।
अंडा सिखावे बच्चों को चीं-चीं न कर–छोटे का अपने बड़ों को उपदेश देना।
अंडा सेवे और कोई, लेवे दूसरा कोई–परिश्रम और कोई करे और उसका फल दूसरा कोई उठावे।
अंडे होंगे तो बच्चे बहुत होंगे–मूल धन बना रहेगा तो सूद बहुत मिलेगा।
अंडे सेना–बेकार बैठे रहना।
अंतड़ियों में बल पड़ना–हँसते-हँसते पेटमें पीड़ा हो जाना।
अंत करना–जान से मार डालना, समाप्त करना।
अंत पाना–गुप्त भेद को जान लेना।
अंत बुरे का बुरा–बुरा काम करने का अन्त बुरा ही होता है।
अंत समय–मृत्युकाल, मरणका समय, आखिरी वक्त।
अँतड़ियाँ टटोलना–भेद या रहस्य का पता लगाना।
अंधा क्या चाहे, दो आँखें–आवश्यक वस्तु यदि सहज में मिल जाय तो कैसा अच्छा हो।
अंधा क्या जाने बसन्त की बहार–जिस मनुष्य ने किसी वस्तु को नहीं देखा।
अंधाधुंध उड़ाना–धन का अविवेकिता-पूर्वक अपव्यय करना।
अंधा बगला कीचड़ खाय–मूर्ख के लिए क्षुद्र या असार वस्तु भी अमूल्य है।
अंधा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे–अधिकार मिलने पर अपने ही वंश, जाति आदि के लोगों का उपकार करना सामान्य बात है।
अंधा पीसे, कुत्ता खाय–परिश्रम करके धन कोई कमाये और उसका उपभोग कोई दूसरा ही करे।
अंधा बन जाना–धोखे में आ जाना, धोखा खा जाना।
अंधा बनाना–धोखा देना।
अंधे के हाथ बटेर लगना–किसी को किसी वस्तु का सहज में मिल जाना।
अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है–कटु वचन सच्चे होने पर भी सभी को बुरे लगते हैं।
अंधे को अंधेरे में बड़ी दूर की सूझी–अपने धुन में लगे रहने से मूढ़ मनुष्य को अनोखी बात सूझती है।
अंधे को अँधेरे में बड़ी दूर की सूझी–किसी मूर्ख का दूरंदेशी की बात कहना।
अंधे की लकड़ी–एक मात्र आश्रय।
अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा–जहाँ अव्यवस्था होती है वहाँ भले-बुरे सब एक समान समझे जाते हैं।
अंधेर मचाना–अन्याय करना।
अकड़ दिखाना–अभिमान करना, गर्व करना।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता–अकेला मनुष्य किसी बड़े काम को नहीं कर सकता।
अक्ल का दुश्मन–नासमझ, बुद्धिहीन, बेवकूफ।
अक्ल का पुतला–बड़ा बुद्धिमान् पुरुष।
अक्ल के घोड़े दौड़ाना–नाना प्रकार के विचार करना।
अक्ल चकराना–बुद्धि काम न करना, समझ में न आना।
अक्ल चरने जाना–बुद्धि का काम न करना।
अक्ल पर पत्थर पड़ना–भले-बुरे का ज्ञान न होना, मति भ्रष्ट या विवेकरहित होना।
अक्ल पर परदा पड़ना–बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल मारी जाना।
अक्ल मारी जाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
अक्ल बड़ी की भैंस–शरीर पुष्ट होने से बुद्धि नहीं बढ़ती।
अखाड़ा जमाना–आमोद-प्रमोद के लिये एकत्रित होना।
अखाड़ा मारना–विजय प्राप्त करना, किसी कार्य का सिद्ध होना।
अखाड़े में (उतरना)–मुकाबला करना।
अखाड़े से भागना–हारकर चले जाना।
अग्नि में घी डालना–तकरार बढ़ाना, क्रोध प्रज्वलित करना।
अगर-मगर करना–तरह-तरह के बहाने करना।
अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बन्दे ने–ईश्वर अच्छा ही करता है, बुरा काम मनुष्य करता है।
अच्छे घर बायन देना–अपने से अधिक बलवान् से शत्रुता करना।
अच्छे दिन देखना–आनन्द से जिन्दगी बिताना।
अजीर्ण होना–कष्टसाध्य होना।
अटकल पच्चू–बिना सोच-विचार किये हुए।
अटका बनिया देय उधार–दबा हुआ मनुष्य सब-कुछ कर सकता है।
अठखेलियाँ करना (सूझना)–उपहास करना, दिल्लगी करना।
अड़ंगा अड़ाना (देना)–विघ्न डालना, तरकीब लगाना।

अड़ंगे पर चढ़ना–आधीन होना।
अड़ंगे पर चढ़ाना–वशीभूत करना।
अड्डा जमना–एकत्रित होना, इकट्ठा होना।
अड्डा जमाना–अधिकार करना।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप, अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप–किसी बात की अति बुरी होती है।
अधजल गगरी छलकत जाय–ओछे मनुष्य बहुत दिखावा करते है।
अन्न जल उठ जाना (पूरा होना)–एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना, मर जाना।
अपना उल्लू सीधा करना–अपना मतलब सिद्ध करना।
अपना खाना, अपना कमाना–परिवार से अलग होकर रहना।
अपना घर दूर से सूझता है–अपना फायदा सभी को देख पड़ता है।
अपना घर समझना–किसी तरह का संकोच न करना।
अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष–अपने ही कुटुम्ब के लोग बुरे हों तो दूसरों को क्यों दोष देना।
अपना वही जो आवे काम–सच्चा मित्र वही है जो समय पर सहायता दे।
अपना-सा मुंह लेकर रह जाना–लज्जित होना, अवाक् होना, चुप रह जाना।
अपना ही राग अलापना–स्वार्थ साधन की बात करना।
अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग–एक साथ मिलकर कोई काम न करने की विधि।
अपनी कब्र आप खोदना–स्वयं अपने नाश का साधन उपस्थित करना।
अपनी करनी पार उतरनी–जैसी करनी वैसा फल।
अपनी खिचड़ी अलग पकाना–सबसे अलग रहना, निराले विचार का होना।
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है–कमजोर भी अपने स्थान पर बलवान् होता है।
अपनी दही को कोई खट्टा नहीं कहता–अपनी वस्तु को कोई बुरा नही कहता।
अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़–नीच लोग अपनी हानि करते हुए भी दूसरों की हानि करते हैं।
अपनी नींद सोना अपनी नींद जागना–स्वतंत्र रहना, किसी के आधीन न होना।
अपनी पगड़ी अपने हाथ–अपनी प्रतिष्ठा अपने ही हाथ होती है।
अपनी ही गाये जाना–सर्वदा अपने मतलब की बात कहते रहना।
अपनी ही पड़ी रहना–अपने लाभ का ही सर्वदा ध्यान रखना।
अपने दिनों को रोना–कष्टपूर्ण जीवन बिताना।
अपने पावों पर आप कुल्हाड़ी मारना–अपने हाथो से अपनी हानि करना।
अपने पूत को कोई काना नहीं कहता–अपनी वस्तु को कोई बुरा नही कहता।
अपने पैरों खड़ा होना–दूसरे के आश्रित न रहकर स्वावलम्बी होना।
अपने बछड़े के दाँत गिनना–किसी रहस्य को जान लेना।
अपने बल पर खड़े होना–स्वावलम्वी होना, किसी का आश्रय न लेना।
अपने मार्ग में काँटे बोना–ऐसा काम करना जिससे अपने को हानि पहुँचे।
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना–अपने मुँह से अपनी शेखी करना।
अपने हाथों पापड़ बलना–जान-बूझकर कष्ट उठाना।
अब पछताये होत क्या चिड़िया चुंग गई खेत–समय बीत जाने पर पछतावा करना वृथा है।
अभिलाषाओं का भवन बनाना–हवा में पुल बांधना, कल्पना मात्र करना।
अभी तो तुम्हारे दूध के दाँत भी नहीं टूटे–तुम अभी बच्चे हो, तुमको दुनियाँ का कुछ अनुभव नही है।
अमर हो जाना–चिरस्थायी यश प्राप्त करना।
अमचूर बना देना–हड्डी-पसली तोड़ डालना।
अमल पानी करना–नशापानी करना।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को दम भारी–धनिक को अपना प्राण बड़ा प्यारा होता है, वह चिरजीवी होना चाहता है, परन्तु गरीब को जान भारी जान पड़ती है।
अरण्य रोदन–निरर्थक कार्य।
अरमान निकालना–मनोकामना पूरी करना।
अल खामोश नीम राजी–मौन रहना स्वीकृति का लक्षण है।
अल्पाहारी सदा सुखी–थोड़ा खानेवाला रोगी नही होता।
अवसर से चूकना–मौका हाथ से निकल जाना।
अशर्फियाँ लुटें और कोयले पर मोहर–बड़ी-बड़ी रकम तो बिना कुछ सोचे-समझे खर्च की जाय परन्तु छोटी रकमो के खर्च मे बहुत विचार किया जाय।
अस्सी आमद चौरासी का खर्च–आमदनी से अधिक व्यय करना।
अस्सी हजार फिरना–तुच्छ व्यक्ति होना, महत्त्वरहित होना।

आ

आँख आना–आँख लाल होकर दुखना।
आँख उठाकर भी न देखना–ध्यान तक न लगाना।
आँख उठाना–हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना, बुरी निगाह से देखना।
आँख ऊँची होना–प्रतिष्ठित होना।
आँख ऊँची न होना–शर्मिन्दा होना।
आँख और कान में चार अंगुल का फर्क है–देखी हुई बात को सब कोई मानता है, परन्तु सुनी हुई बात पर कोई विश्वास नही करता।
आँख का तिल खो देना–अंध हो जाना।
आँख, कान खोलकर चलना–अति सावधान रहना।
आँख की पुतली फिर जाना–मरणासन्न होना।
आँख के अन्धे, नाम नयनसुख–कलम पकड़ने का शऊर नही लेखक बनते है।
आँख खुल जाना–आश्चर्य होना।
आँख चीर चीर कर (फाड़कर) देखना–उत्सुक होकर देखना, घूरना।
आँख चुराना–लज्जा के कारण सामने न देखना।
आँख चूकी माल दोस्तों का–अपना वस्तु यदि सावधानी से न रक्खोगे तो चोर चुरा ले जायगा।
आँख जाना–अन्धा होना।
आँख ठंढी होना–शान्ति मिलना।
आँख ठहरना–रुचिकर होना, पसन्द आना।
आँख तरसना–देखने की बड़ी लालसा होना।
आँख तले न लाना–तुच्छ समझना।
आँख न ठहरना–चकाचौंध लगना।
आँख न लगना–नींद न आना।
आँख न दीदा, काढ़ कसीदा–किसी कार्य करने में समर्थ न होकर उस कार्य को करने की चेष्टा करना।
आँख फोड़ना–धोखा देना।
आँख बंद करना–असावधान होना।
आँख बचा जाना–सम्मुख उपस्थित न होना।
आँख बदलना–बेमुरौवत होना।
आँख भर रोना–आँखों में आँसू आ जाना।

आँख भर आना—आँखों में आँसू आ जाना।
आँख मटकाना—सैन चलाना, आँखों से संकेत करना।
आँख मारना—संकेत करना, सैन करना।
आँख मिलाना—किसी के सामने देखना।
आँख मुँदना—मृत्यु को प्राप्त होना।
आँख मूँदना—विचारपूर्वक काम न करना।
आँख में शील न होना—निर्लज्ज होना।
आँख मैली करना—बेमुरौवत होना।
आँख रखना—किसी से प्रेम करना; देखते रहना।
आँख लगना—आसक्त होना।
आँख से ओझल न करना—सर्वदा अपने सामने रखना।
आँख से दूर, दिल से दूर—दूर देश में रहने से प्रेमभाव बहुधा कम हो जाता है।
आँखें उठना—देखना।
आँखें खुलना—सावधान होना।
आँखें चढ़ना—नशे में आँखें लाल होना, क्रोध करना।
आँखें चार होने से मोहब्बत आ जाती है—अर्थ स्पष्ट है।
आँखें जमीन में लग जाना—अति लज्जित होना।
आँखें झुक जाना—नींद आना।
आँखें दिखाना—डाँटना, धमकाना।
आँखें निकालना—डाँटना, डपटना।
आँखें पथरा जाना—आँखों का निमेष-रहित होना।
आँखें फटना—आश्चर्य युक्त होना।
आँखें फिरना—बेमुरौवत होना।
आँखें फेरना—प्रतिकूल होना।
आँखें बिछाना—प्रेम सहित आदर करना।
आँखें बैठना—अन्धा हो जाना।
आँखों का पानी गिर जाना—निर्लज्ज हो जाना।
आँखों की पट्टी खुलना—सचेत हो जाना।
आँखों के सामने अँधेरा छा जाना—शून्य दिखलाई पड़ना।
आँखों के सामने नाचना—याद आना।
आँखों पर ठीकरी धरना—निर्लज्ज होना।
आँखों पर पट्टी बाँधना—असावधान होना।
आँखों पर परदा पड़ना—असावधान हो जाना।
आँखों में काँटा होना—असह्य हो जाना।
आँखों में खटकना—बुरा जान पड़ना।
आँखों में खून उतर आना—अति क्रुद्ध होना।
आँखों में चर्बी छा जाना—बड़ा अभिमान होना।
आँखों में चुभना—बुरा लगना।

आँखों में जगह देना—प्रतिष्ठा करना।
आँखों में जगह मिलना—प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
आँखों में धूल झोंकना—धोखा देना।
आँखों में न ठहरना—अनुकूल न होना, पसन्द न आना।
आँखों में पालना—अत्यन्त प्रिय रखना।
आँखों में फिरना—बारंबार याद आना।
आँखों में समा जाना—बहुत प्रिय होना।
आँखों में से उड़ा देना—देखते-देखते चुरा लेना।
आँखों में हलका होना—प्रतिष्ठा कम होना
आँखों से काजल चुराना—बड़ी चालाकी करना।
आँखों से गिरना—मान का नाश होना।
आँच अधिक खा जाना—अधिक पक जाना।
आँच खाना—हानि उठाना।
आँच न आने देना—कष्ट को रोकना, तकलीफ न पहुँचने देना।
आँत भारी तो माथ भारी—आँतों में विकार होने से सिर में पीड़ा होती है।
आँधी के आम—बड़ा सस्ता वस्तु।
आँसू एक नहीं, कलेजा टूक टूक—पाखंड, दिखावटी रुलाई।
आँसुओं की झड़ी लगना—अति विलाप करना।
आँसू पीकर रह जाना—अधिक शोक के कारण चुप रहना।
आँसू पीना—अपने दुःख को दबा रखना।
आँसू पोंछना—थोड़ा-सा देकर किसी को शान्त करना।
आँसू बहाना—विलाप करना, रोना।
आई तो रोजी, नहीं तो रोजा—आमदनी होने पर सुख से बीतते हैं, नहीं तो उपवास ही होता है।
आकाश के तारे तोड़ना—कठिन कार्य करने में उद्यत होना।
आकाश गंगा में नहाना—असंभव को संभव करने की चेष्टा करना।
आकाश-पाताल एक करना—बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जाँच-पड़ताल करना।
आकाश फट पड़ना—अति वृष्टि होना।
आकाश में छेद करना—बड़ी चालाकी दिखलाना।
आकाश में छेद हो जाना—अधिक वृष्टि होना।
आकाश में थेगली लगाना—बड़ी चतुराई करना।
आकाश से बातें करना—बहुत ऊँचा होना, शेख़ी हाँकना।

आखिर करना—समाप्त करना।
आग दिखाना—जला भस्म कर देना।
आग पड़ना—बहुत गरम होना।
आग-पानी से गुजरना—सब तरह के कष्टों को सहन करना।
आग फाँकना—बहुत झूठ बोलना।
आग-बबूला हो जाना—अत्यन्त उत्तेजित होना।
आग में ईंधन डालना—क्रोध बढ़ाना।
आग में कूदना—आफत में पड़ना।
आग में झोंक देना—नष्ट कर देना, आपत्ति में डाल देना।
आग में पानी डालना—क्रोध को शमन करना।
आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकले तो सार—जब सब कुछ नष्ट होता हो तब जो कुछ मिल जाय उसी को सर्वस्व समझना चाहिये।
आग लगना—क्रोध आना।
आग लगने पर कुआँ खोदना—आपत्ति आ जाने पर उसका उपाय सोचना।
आग लगाकर तमाशा देखना—झगड़ा आरंभ करके प्रसन्न होना।
आग लगाकर पानी को दौड़ना—उपद्रव आरंभ करके शान्त करने का प्रयत्न करना।
आग लगाना—झगड़ा खड़ा करना, उत्तेजित करना।
आगा-पीछा करना—दुविधा में पड़ना, हिचकिचाना।
आगा-पीछा न सोचना—अपने फायदे-नुकसान का ख्याल न करना।
आगा रोकना—मुकाबले पर आना।
आगे नाथ न पीछे पगहा—किसी संबंधी या संरक्षक का न होना।
आगे-आगे हो लेना—किसी काम का सहज हो जाना।
आँट पड़ना—मनमुटाव होना।
आँट रखना—शत्रुता करना।
आज-कल के फेर में पड़ना—वक्त टालना।
आज-कल करना—टालमटोल करना हीला हवाला करना।
आज मरे कल दूसरा दिन—जब तक साँसा तब तक आशा।
आजादी खुदा की नियामत है—स्वतन्त्रता ईश्वर का वरदान है।
आटे का चिराग घर रखें तो चूहा खाय, बाहर रखें तो कौआ ले जाय—बचाने का जब कोई उपाय न हो तब कुछ नहीं किया जा सकता।

आटे दाल का भाव मालूम होना—सब प्रकार के कष्टों का अनुभव होना।
आटे के साथ घुन का पिसा जाना—दोषी मनुष्य के साथ देने से निर्दोषी को भी कष्ट उठाना पड़ता है।
आठ अठारह कर देना—अति कष्ट देना।
आठ-आठ आँसू रोना—अति विलाप करना।
आठों पहर शूली पर रहना—सर्वदा कष्ट ही कष्ट भोगना।
आड़ी देकर बैठना—जम जाना।
आड़े आना—आश्रय लेना, सहारा लेना।
आड़े समय काम आना—विपत्ति काल में सहायता देना।
आड़े हाथ लेना—भला-बुरा कहना।
आत्मा ठंडी करना—शान्ति देना।
आत्मा ठंडी होना—शान्ति प्राप्त करना।
आत्मा मसोसना—दुःखी होना।
आदमी की पेशानी दिल का आयना है—मनुष्य के चेहरे से उसके हृदय के भावों का पता चल जाता है।
आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे—संसर्ग से मनुष्य के चरित्र का पता चलता है और सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से होती है।
आदमी बनना—शिष्टाचार जानना।
आदमी बनाना—शिष्ट या सभ्य बनाना।
आदमी मुश्किल से मिलता है—सच्चे और ईमानदार मनुष्य जल्दी नहीं मिलते।
आदि-अन्त सोचना—पूरी तरह से विचार करना।
आधा तीतर, आधा बटेर—अस्त व्यस्त, गड़बड़, अधूरा, अपूर्ण।
आधी छोड़ सारी को धाव, आधी रहे न सारी पावे—अधिक लालच करने से सर्वथा हानि होती है।
आन की आन में—अति शीघ्र, तुरत।
आन तोड़ना—अपने निश्चय से सट जाना।
आन निभाना—अपने निश्चय पर अटल रहना।
आनाकानी करना—बहाना करना।
आप-आप करना—अति शुश्रूषा या विनती करना।
आप काज महा काज—किसी कार्य को स्वयं ही करना ठीक होता है।
आप को आसमान पर खींचना—अपने को बहुत बड़ा जानना।
आपको खींचना—स्वयं अलग हो जाना।
आप बीती कहना—अपने ऊपर बीते हुए कष्ट को दूसरे से कहना।
आप भला तो जग भला—भला मनुष्य संसार में सभी को सज्जन समझता है।
आप ही मियाँ मँगते द्वार खड़े दरवेश—जो स्वयं सहायता चाहता है वह दूसरे को क्या सहायता दे सकता है।
आपस में गिरह पड़ना—आपस में मनमुटाव होना।
आपा खोना—अभिमान त्याग करना।
आपा न सँभलना—अपना ही निर्वाह न हो सकना, अपना शरीर अपने अधिकार में न होना।
आपे में आना—होश सँभालना।
आपे में न रहना—अपने पर अधिकार खो बैठना, मदोन्मत्त हो जाना।
आपे से निकल पड़ना—अति व्यग्र होना।
आपे से बाहर होना—क्रोध में आकर बड़े गर्व से बोलना।
आब आब कर मर गये सिरहाने रखा पानी—किसी से ऐसी भाषा बोलना जिसको वह न समझता हो।
आब देना (चढ़ाना)—चमकाना, पालिश करना।
आ बला गले लग—आपत्ति में जानबूझकर पड़ना।
आबरू खाक में मिलना—मान-मर्यादा खो बैठना, बेइज्जत होना।
आम, ईख, नीबू, वणिक मारे ही रस देत—अर्थ स्पष्ट है।
आम के आम गुठली के दाम—किसी कार्य में दुगुना फायदा होना।
आम खाने से काम कि गठलों गिनने से काम—मनुष्य को अपने मतलब का काम करना चाहिये, निरर्थक कार्य न करना चाहिये।
आयँ-आयँ करना—बेमतलब बोलना।
आया है सो जायगा राजा रंक फकीर—जो उत्पन्न हुआ है वह एक दिन अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा—सामने से सब लुट गया तू देखता ही रह गया।
आयी को रोकना—मौत से बचाना।
आयी-गयी करना—समाप्त करना, खतम करना, माफ करना, छिपाना।
आयु का पट्टा लिखवाकर लाना—सर्वदा जीवित रहने की इच्छा करना।
आये की खुशी न गये का गम—सर्वदा सन्तुष्ट रहना।
आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास—किसी बड़े काम करने को आये थे परन्तु तुच्छ कार्य करने लगे।
आरती उतारना—प्रतिष्ठा करना, इज्जत करना।
आरे चलना—अति दुःखी होना।
आल्हा गाना—जगह-जगह समाचार फैलाते फिरना।
आव देखना न ताव देखना—सोच विचार कुछ भी न करना।
आवभगत करना—अतिथि आदि का सत्कार करना।
आवभगत में स्वाहा करना—नीरस व्यवहार करना।
आवाजें कसना—मर्मवेधी बात कहना।
आवें का आवाँ बिगड़ना—संपूर्ण कुटुम्ब का दुश्चरित्र होना।
आशाओं पर पानी फिरना—सब तरह से हताश होना।
आसन हिलना—चलायमान होना।
आस-पास बरसे, दिल्ली पड़ी तरसे—जो चाहता है उसको न मिलकर दूसरे को किसी वस्तु का मिलना।
आसमान टूटना—विपत्ति आना।
आसमान दिखाना—पराजित करना, हराना।
आसमान देखना—हार जाना।
आसमान पर उड़ना—इतराना, गर्व करना।
आसमान पर चढ़ना—बड़ा प्रशंसा करना।
आसमान पर दिमाग चढ़ना—बड़ा गर्व करना।
आसमान पर थूकना—बड़ा अभिमान करना।
आसमान पर सिर उठाना—बहुत शोर-गुल करना।
आसमान पर होना—उच्च पद प्राप्त करना।
आसमान से गिरना—अनायास मिलना।
आसमान से टक्कर खाना—बहुत ऊँचा होना।
आसमान हिलाना (डोलना)—चलायमान होना, विचलित होना।
आस्तीन का साँप—कपटी मित्र।
आस्तीन चढ़ाना—लड़ने के लिये तैयार होना।
आस्तीन में साँप पालना—छिपे दुश्मन को सहारा देना।
आह करके रह जाना—कष्ट को चुपचाप सह लेना।
आह पड़ना—किसी को सताने का फल मिलना।
आह भरना—दुःख में लंबी साँस लेना।
आहारे व्यवहारे च लज्जा नैव कार्या—भोजन करने और व्यवहार करने में लज्जा न करनी चाहिये।

इ

इकते इक माई के लाल पड़े हैं—संसार में एक से एक गुणी और विद्वान् पड़े हैं।
इज्जत गँवाना—मान भंग होना।
इज्जत दो कौड़ी की न रहना—प्रतिष्ठा खो बैठना।
इज्जत बिगाड़ना—अप्रतिष्ठित करना।
इतना नफा खाओ जितना दाल में नोन—थोड़ा ही मुनाफा करना चाहिये।
इतनी-सी जान और गज भर की जबान—छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी बात।
इतिश्री करना—समाप्त करना, खतम करना।
इतिश्री होना—समाप्त होना, खतम होना।
इधर-उधर कर देना—किसी वस्तु को छिपा देना।
इधर-उधर करना—बहानेबाजी करना।
इधर-उधर की हाँकना—व्यर्थ की बकवाद करना, गप हाँकना।
इधर-उधर देखना—हिचकिचाना।
इधर-उधर देखने लगना—निरुत्तर हो जाना।
इधर-उधर लगाना—चुगलखोरी करना।
इधर का न उधर का—निरर्थक, व्यर्थ, बेफायदा।
इधर की उधर लगाना—कलह उपस्थित करना।
इने-गिने—गिनती में बहुत कम, केवल काम चलाने योग्य।
इन्हीं पावों जाना—तुरत चले जाना, देर न करना।
इस कान से सुना, उस कान से निकाल दिया—किसी की बात पर ध्यान न देना।

ई

ईंट की लेनी, पत्थर की देनी—बदला चुकाने की विधि, दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार।
ईंटों से निकल कर कीचड़ में पड़ना—एक आपत्ति से छुटकारा पाया और दूसरी आपत्ति में जा गिरा।
ईंट से ईंट बजाना—नाश होना।
ईंट का घर मिट्टी कर देना—धन और संपत्ति का नाश कर देना।
ईंधन हो जाना—शक्तिहीन हो जाना।
ईद का चाँद होना—बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़ना, मुश्किल से थोड़े समय के लिए भेंट होना।
ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया—संसार में सर्वत्र भाग्य की विचित्रता देख पड़ती है, कोई ऐश्वर्य में प्रसन्न है, कोई गरीबी में मर रहा है।
ईश्वर को प्यारा होना—थोड़ी उमर में मर जाना।

उ

उखड़ जाना—स्वीकार न करना।
उखड़ी बातें करना—हृदय से न कहना।
उखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर—जब किसी कठिन कार्य करने में लगे तो आपत्तियों से क्या डरना।
उखाड़ देना—बिगाड़ना, नष्ट करना।
उगल देना—रहस्य या भेद को प्रकाशित करना।
उछलकर चलना—अभिमान दिखलाना, अपनी शक्ति के बाहर काम करना।
उछल कूद दिखलाना—शेखी हाँकना।
उछल पड़ना—अति प्रसन्न होना।
उठ जाना—मृत्यु को प्राप्त होना, व्यय होना, समाप्त होना।
उठा न रखना—कोई कसर न छोड़ रखना।
उड़कर पड़ना—बड़ी लालच करना।
उड़ती खबर पाना—अफवाह मिलना।
उड़ती चिड़िया पहचानना—मन की भावना को जान लेना।
उड़ा जाना—खा जाना, व्यय कर देना।
उड़ा देना—खो देना।
उड़ा ले जाना—चुरा लेना, अपहरण करना।
उड़ा लेना—हर लेना, ठग लेना।
उतर जाना—भाव मंदा होना, तेज न रहना।
उतार-चढ़ाव देखना—अनुभव होना, तजुर्बा होना।
उतारू होना—प्रस्तुत होना, तैय्यार होना।
उतावला होना—शीघ्रता करना, जल्दीबाजी करना।
उथल-पुथल होना—उलट-पलट होना।
उथल-पुथल करना—गड़बड़ी करना।
उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान—खेती सर्वोत्तम धंधा है। उससे नीचे व्यापार, नौकरी निकृष्ट कार्य है। और भीख माँगना बहुत ही हीन कार्य है।
उदरं निमित्तं बहुकृत वेषः—पेट के लिये मनुष्य सब कुछ (भले-बुरे काम) करता है।
उधार का खाना और फूस का तापना बराबर है—जिस प्रकार फूस की आग जल्दी बुझ जाती है इसी तरह से उधार लेकर खाना भी ज्यादा दिनों तक नहीं चलता।
उधार दिया गाहक छोड़ा—उधार दी हुई वस्तु का दाम माँगने पर गाहक उसके पास फिर नहीं आता।
उधेड़ डालना—फाड़ डालना।
उधेड़ बुन में लगना—चिन्ता, फिक्र करना।
उन्नीस बीस का फर्क—बहुत थोड़ा अन्तर।
उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं—किसी मनुष्य की सब सन्तान एक प्रकृति की नहीं होती।
उफ न करना—आपत्ति आदि को चुपचाप सह लेना।
उबल पड़ना—क्रुद्ध होना।
उभार पर होना—वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना।
उभारा देना—उत्तेजित करना, उभाड़ना, साहस बढ़ाना।
उभारा लेना—सँभालना।
उमंगें मिटना—उत्साह कम होना।
उलझ पड़ना—लड़ पड़ना।
उलझन में डालना—व्यग्र करना।
उलझन में पड़ना—झंझट में फँसना।
उलट-फेर होना—परिवर्तन होना, उलट-पलट होना।
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे—अपना दोष स्वीकार न करके पूछनेवाले पर क्रोध दिखलाना।
उलटा बाँस बरेली को—विपरीत कार्य करना।
उलटी गंगा बहना—विपरीत कार्य करना।
उलटी पट्टी पढ़ाना—उचित मार्ग से विचलित करना।
उलटी बातें कहना—असंगत वार्ता कहना।
उलटी माला फेरना—किसी का अनिष्ट चाहना।
उलटी साँस लेना—मरणासन्न होना।
उलटे पाँव जाना—लौट जाना।
उलल-जलूल बकना—बेमतलब की बातें कहना।
उल्लू बनना—मूर्ख बनना।
उल्लू बनाना—मूर्ख बनाना।
उल्लू बोलना—किसी स्थान का उजाड़ होना।

ऊ

ऊँच नीच का भेद न रखना—सबके साथ समान-व्यवहार करना।

ऊँचा बोल बोलना—श्लाघा करना, अभिमान करना।
ऊँचा सुनना—कम सुन पड़ना, कुछ बहरा होना।
ऊँची जगह पाना—प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
ऊँची दुकान फीका पकवान—बहुत सा आडंबर हो परन्तु तत्त्व कुछ न हो।
ऊँट किस करवट बैठता है—क्या स्थिति उपस्थित होती है।
ऊँट के गले में बिल्ली बाँधना—बेमेल का काम करना।
ऊँट की चोरी और झुके झुके—छिपकर बड़ा काम करने का उद्योग।
ऊँट के मुँह में जीरा देना—आवश्यकता अधिक होने पर अल्प मात्रा देना।
ऊटपटाँग हाँकना—बेमतलब की बातें कहना।
ऊधम मचाना—उपद्रव करना।
ऊपर पड़ना—दुःख उठाना।
ऊधो का लेना, न माधो का देना—स्वार्थ-परायण होना, निश्चिन्त रहना।
ऊसर में बीज डालना—बिना मतलब का काम करना।

ए

एँड़ी चोटी का पसीना एक करना—बड़ा कठिन परिश्रम करना।
एक अंग वह भी गन्दा—सब पदार्थों का प्रायः अभाव।
एक अनार सौ बीमार—आवश्यकता से अधिक माँग।
एक आँख से देखना—समान व्यवहार करना।
एक ईंट के लिए महल गिराना—जरा-सी बात के लिये अनर्थ मचाना।
एक एक रग जानना—अच्छी तरह से परिचित होना।
एक और एक ग्यारह होते हैं—एकता में बड़ा सामर्थ्य है।
एक का एक खाये जाना—आपस में द्वेष करना।
एक की दस सुनाना—एक अपशब्द कहने पर बहुतेरी गालियाँ देना।
एक के तीन बनाना—अनुचित लाभ उठाना।
एक के दूने से सौ केस सवाये भले—अधिक विक्री होने से अधिक लाभ होता है।
एक चुप हजार को हरावे—मौन रहने से बकनेवाले अन्त में चुप हो जाते हैं।
एक टक लगाना—निगाह जमाकर देखना।
एक टाँग से फिरना—बहुत इधर उधर घूमना।
एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत—आरोग्य रहना सर्वप्रधान है।
एक तरफा डिगरी देना—पक्षपात दिखलाना, अपूर्ण न्याय करना।
एक तो चोरी, दूसरे सीना जोरी—एक तो काम बिगाड़ना दूसरे क्रोध दिखलाना।
एक तो तितलौकी दूसरे नीम चढ़ी—एक तो स्वयं नीच दूसरे नीचों का संग।
एक थैली के चट्टे बट्टे—एक समान, सभी बराबर के होना।
एक दम में हजार दम—एक मनुष्य से हजारों की परवरिश।
एक न एक रोग लगा रहना—चिन्ता न हटना, शान्ति न मिलना।
एक न चलना—कुछ न कर सकना।
एक न शुद दो शुद—आपत्ति पर आपत्तियाँ आना।
एक न सुनना—कुछ न मानना।
एक पंथ दो काज—किसी एक उद्योग से अन्य कार्य का सफल होना।
एक पर से सौ कौवे बनाना—थोड़ी-सी बात को बहुत बढ़ा देना।
एक बात होना—सहज होना।
एक म्यान में दो तलवार नहीं रहती—एक ही स्थान पर दो शक्तिशाली मनुष्य नहीं रहते।
एक रस रहना—किसी प्रकार का विकार न होना।
एक लकड़ी से सबको हाँकना—लेन देन के व्यवहार में सबको बराबर समझना।
एक सूत्र में बाँधना—संघटित करना।
एक सौ चौवालीस लगाना—बोलना बन्द कर देना।
एक हाथ से ताली नहीं बजती—अकेले मनुष्य के किये कोई कार्य नहीं होता।
एक ही साँचे में ढलना—समान विचार का होना।
एक हो जाना—मिल जाना।
एक होना—अद्वितीय होना, भाव-भेद न रखना।
एकादशी को खाया द्वादशी को निकालना—एक दिन का दिया हुआ दूसरे दिन लौटाना पड़े।

ऐ

ऐंचा तानी में पड़ना—झगड़े में फँसना।
ऐंठ जाना—असन्तुष्ट होना।
ऐंठ ढीली करना—गर्व हटाना।
ऐंठ दिखाना—गर्व करना, अभिमान दिखाना।
ऐंठ निकालना—गर्व दूर हो जाना।
ऐंठ लेना—ठग लेना।
ऐंड़ा बेंड़ा चलना—कुपथ पर चलना।
ऐब करने को भी हुनर चाहिए—बुरा काम करने के लिये भी चतुराई की आवश्यकता होती है।
ऐसा वैसा समझना—सामान्य मनुष्य जानना।
ऐसी-तैसी करना—सब बुरा-भला उपाय रचना।
ऐसे जीने से मर जाना अच्छा—अधिक कष्ट मिलने पर मनुष्य मरण को अच्छा समझता है।

ओ

ओखली में सिर देना—जान-बूझकर अपने को आपत्ति में डालना।
ओछे की प्रीत बालू की भीत—ओछे मनुष्य की मित्रता स्थायी नहीं होती।
ओढ़नी की बतास लगना—स्त्री के प्रेम में फँसना।
ओर-छोर न मिलना—भेद का पता न चलना।
ओले पड़ना—आपत्तियाँ आना।
ओस चाटे प्यास नहीं जाती—आवश्यकता अधिक होने पर थोड़ी वस्तु से सन्तोष नहीं होता।

औ

औंधी खोपड़ी—परम मूर्ख मनुष्य।
औंधे मुँह गिरना—हार जाना।
औकात पर आना—असली बात प्रकट करना।
औकात पर रहना—शक्ति के अनुसार चलना।
औकात बसर होना—निर्वाह करना।
औघट घाट बचाकर चलना—विपत्तियों से सावधान रहना।
औदक होना—भय के कारण चौंक उठना।
औन पौन करना—छल-कपट का व्यवहार करना।
और का और हो जाना—बिलकुल बदल जाना।
और बात खोटी सही दाल रोटी—जीवन निर्वाह ही सबसे बढ़कर व्यवसाय है।
औसान खता होना—होश बिगड़ जाना।

क

कंघी चोटी से फुरसत न मिलना—सिंगार-पटार में सदा लीन रहना।
कंगाली (मुफलिसी) में आँटा गीला—एक आपत्ति रहते हुए दूसरी आपत्ति आ पड़ना।
कंचन बरसना—अधिक धन की प्राप्ति।

कंजूस, मक्खीचूस—बहुत बड़ा कृपण।
कंटकेनैव कंटकम्—काँटे से ही काँटा निकाला जाता है।
कंटक निकलना—दुःख दूर होना।
कंठगत करना—खा लेना, याद कर लेना।
कंठस्थ करना—जबानी याद कर लेना।
कंधा डालना—साहस छोड़ देना।
कंधा लगाना—सहायता करना, सहारा देना।
ककड़ी के चोर को फाँसी नहीं दी जाती—साधारण अपराध के लिये मृत्युदंड नहीं दिया जाता।
कचूमर निकालना—बुरा अवस्था करना।
कच्चा करना—झूठा सिद्ध करना।
कच्चा चिट्ठा—पोल, गुप्त बात।
कच्चा दिल करना—उदास होना।
कच्चा होना—लज्जित होना।
कच्ची गोलियाँ खेलना—पूरा अनुभव प्राप्त करना।
कटे जाना—कुढ़ते जाना।
कटे पर निमक छिड़कना—दुःखी मनुष्य को और भी दुखाना।
कठपुतली बनाना—दूसरों के कहने में चलना।
कड़कर बोलना—क्रोध से गरज कर बोलना।
कड़ियाँ झेलना—दुःख सहन करना।
कढ़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा—एक आपत्ति से छूटा दूसरे में गिरा।
कतर ब्योंत करना—काट छाँट करना।
कतरा के जाना—बचकर निकल भागना।
कदम बढ़ाना—चले जाना, तेज चलना, अग्रसर होना।
कदर खो देता है हर बार का आना जाना—बारंबार आने-जाने से प्रतिष्ठा कम हो जाती है।
कनखियों से देखना—तिरछी नजर से देखना।
कपड़े उतारना—ठगना, लूटना।
कपड़ों से होना—स्त्रियों का रजस्वला होना।
कपाट खुलना—ज्ञान उत्पन्न होना।
कपालक्रिया करना—सिर फोड़ना।
कपास तौलना—मूर्ख होना।
कब्र में पर लटकाना—मरण के समीप होना।
कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर—सबका समय सर्वदा समान नहीं रहता।
कम खर्च बालानशीन—कम खर्च में उत्तम वस्तु मिलना।
कमर कसना—उद्यत होना, तत्पर होना।
कमर खोलना—कार्य समाप्त होने पर विश्राम करना।
कमर टूटना—निराश होना, उत्साह भंग होना।
कमर सीधी करना—थकावट दूर करने के लिये लेट जाना।

कमान का निकला तीर और मुंह से निकली बात वापस नहीं आती—अर्थ स्पष्ट है।
कमान हो जाना—झुक जाना।
करघा छोड़ जुलाहा जाय, नाहक चोट बेचारा खाय—जो मनुष्य अपना काम छोड़कर दूसरे प्रपंच में पड़ता है वह हानि उठाता है।
कर सेवा, पा मेवा—बड़ों का आज्ञा पालन करने से लाभ होता है।
करते धरते न बनना—असमर्थ हो जाना।
करनी खाक की बात लाख की—करना कुछ नहीं, बड़ी बड़ी बातें बनाना।
करम फूटना—अभागा होना।
करम हीन खेती करे, मरे बैल या सूखा पड़े—भाग्यहीन पुरुष को किसी कार्य में सिद्धि नहीं मिलती।
करवट बदलना—स्वीकार न करना, परिवर्तन होना।
कल ऐंठना—चित्त के भाव में परिवर्तन करना।
कल पड़ना—चैन मिलना।
कलई खुलना—गुप्त बातों को प्रकट करना।
कलई खोलना—रहस्य उद्घाटन होना, भेद खोलना।
कलम तोड़ना—विलक्षण बातें लिखना।
कलमा पढ़ना—विश्वास रखना, मुसलमान बनना।
कलेजा खाना—परेशान करना।
कलेजा छलनी होना—मर्मवेधी बातों से चित्त दुखाना, कष्ट देना।
कलेजा ठंढा होना—शान्ति मिलना।
कलेजा तर होना—चित्त अत्यन्त प्रसन्न होना।
कलेजा थाम कर रह जाना—ठक रह जाना, मन मसोस कर रहना।
कलेजा थामना—जी कड़ा करना।
कलेजा धकधक होना—व्यग्र होना, घबड़ाना।
कलेजा निकाल कर धर देना—मर्म की बातों को कहना।
कलेजा निकालना—बहुत दुःखी होना।
कलेजा पसीजना—दया उत्पन्न होना।
कलेजा फटना—अत्यन्त दुःख होना।
कलेजा बढ़ना—उत्साहित होना।
कलेजा बाँसों उछलना—बहुत प्रसन्न होना।
कलेजा मुंह में आना—चित्त व्याकुल होना।
कलेजा रखना—साहस होना।
कलेजे को मसलना—हृदय को चोट पहुँचाना।
कलेजे पर हाथ धरना—चित्त में विचार करना।
कलेजे में छेद करना—चित्त बहुत दुखाना।

कलेजे से लगाकर रखना—बहुत प्रेम करना।
कलेजे से लगाना—आलिंगन करना, प्रेम करना।
कसर निकालना—बदला लेना।
कसौटी पर कसना—परखना, अन्वेषण करना।
कहने से करना भला—बातें करने से काम करना अच्छा होता है।
कहा सूनी हो जाना—झगड़ा फसाद होना।
कहाँ राजा भोज कहाँ गाँगू तेली—दो वस्तुओं में बड़ा भारी अन्तर।
कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती का कुनबा जोड़ा—बेकार की चीजों को इकट्ठा करके भी कोई वस्तु तैयार हो सकती है।
कहीं का न छोड़ना—भ्रष्ट करना, बरबाद करना।
कहे से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता—मनुष्य अपनी इच्छा से काम करता है दूसरों के कहने से नहीं करता।
काँख में कतरनी रखना—कपट रूप में हानि पहुँचाना।
काँटा सा खटकना—बहुत अखरना।
काँटे बोना—हानि पहुँचाना।
काँटे से काँटा निकालना—शत्रु का नाश शत्रु से कराना।
काँटों पर पाँव रखना—दुःख या आपत्ति में पड़ना।
काँटों पर लोटना—बड़ी आपत्ति सहन करना।
काँटों की शैय्या पर सोना—दुःखमय जीवन बिताना।
काँटों में हाथ पड़ना—आपत्ति में फँसना।
काँटों में घसीटना—अति लज्जित करना।
का वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने—अर्थ स्पष्ट है।
कागज काले करना—व्यर्थ की लिखा पढ़ी करना।
कागज पूरे होना—जीवन समाप्त होना।
कागजी घोड़े दौड़ाना—समाचार फैलाना, केवल पत्र-व्यवहार करते रहना।
कागरौल करना—शोर गुल मचाना।
काट खाने दौड़ना—भयानक रूप धारण करना।
काटा और उलट गया—कहकर मुकर जाना।
काटो तो बदन में खून नहीं—अति भयभीत होने की दशा।
काठ की हाँड़ी आँच पर बारंबार नहीं चढ़ती—छल बारंबार सफल नहीं होता।
काठ में पाँव ठोंकना—कैद कर लेना।

कान काटना–बड़ी चालाकी करना, धोखा देना।
कान के कीड़े मर जाना–सुनने में बहुत बुरा लगना।
कान खड़े होना–सावधान होना।
कान खाना–शोरगुल मचाना।
कान खुलना–होश में आना।
कान छिदाय सो गुड़ खाय–जो दुःख उठाता है वही अन्त में सुख पाता है।
कान तक पहुँचना–सुनने में आना।
कान देना–ध्यान पूर्वक सुनना।
कान धर कर सुनना–बड़े ध्यान से सुनना।
कान न होना–ग्रहण न करना।
कान पकड़ना–किसी बुरे काम को न करने का निश्चय करना।
कान पड़ा शब्द सुनाई न देना–बड़ा शोर गुल होना।
कान पर जूं चलना (रेंगना)–ध्यान न देना।
कान भरना–पिशुनता करना, चुगली खाना।
कान में डाल देना–किसी को कोई बात सुना देना।
कान में पड़ना–सुन पड़ना।
कान में फूंकना–चुपके से सुना देना।
कान होना–सुनते ही किसी बात पर विश्वास कर लेना।
काना फूंसी करना–भेद की बात धीरे से कान में कहना।
कानी कौड़ी पास में न होना–अति दरिद्र होना।
कानूनी शिकंजे में फँसना–अभियोग चलाना।
काने को काना कहना–अप्रिय सच्ची बात किसी से कहना।
कानोंकान खबर न होना–अत्यन्त गुप्त रखना।
कानों को न लगना–विश्वास में न आना।
कानों पर हाथ धरना–अपरिचित बन जाना।
कानों में तेल डालना–किसी बात को सुनने की इच्छा न होना।
काफिया तंग होना–विवश हो जाना।
काफूर होना–भाग जाना, चम्पत होना।
काबुल में क्या गधे नहीं होते–बुराइयाँ सर्वत्र पाई जाती हैं।
काम आना–मृत्यु को प्राप्त होना, मारा जाना।
काम कर जाना–प्रभाव डालना।
काम का न काज का, दुश्मन अनाज का–बेकार आदमी।
काम चलाऊ–कुछ उपयोग में आनेवाला।
काम तमाम करना–जान से मार डालना।
कामको काम सिखाता है–अभ्यास से काम करना आ जाता है।
काम न देना–बेकार होना।
काम निकालना–अभीष्ट सिद्ध होना।
काम न धंधा तीन रोटी बंधा–केवल पेट भरना ही मुख्य उद्देश्य होना।
काम प्यारा है, चाम नहीं–अर्थ स्पष्ट है।
कायँ कायँ लगाय रखना–कलह करना।
कायापलट होना–बहुत बड़ा परिवर्तन होना।
काल कवलित होना–मृत्यु को प्राप्त होना।
कालचक्र में पड़ना–विपत्ति में फँसना।
काला अक्षर भैंस बराबर होना–निरक्षर मूर्ख होना।
कालिख लगना–बदनाम होना।
कासा दीज, वासा न दीजै–अपरिचित को भोजन देना चाहिये, घर में टिकाना न चाहिये।
किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना–अपना कर्तव्य न समझना।
किताब का कीड़ा–अधिक पढ़नेवाला मनुष्य।
किनारा करना–अलग हो जाना।
किनारे लगना–पूरा होना, समाप्त होना।
किनारे लगाना–पार उतारना।
किनारे हो जाना–नष्ट होना, बिगड़ जाना।
किया आगे आना–अपने किये का फल प्राप्त होना।
किया कराया बराबर करना–सब परिश्रम व्यर्थ हो जाना।
किर किरा होना–मार्ग छोड़ देना।
किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान–नौकरी करने पर मान-प्रतिष्ठा नहीं रहती।
किस खेत की मूली–तुच्छ व्यक्ति।
किस चिड़िया का नाम–अपरिचित व्यक्ति।
किसी की कुछ नहीं चलती जब तकदीर फिरती है–भाग्य के आग किसी का कुछ नहीं चलता।
किस्मत खुलना–अच्छे दिन आना।
किस्मत फूटना–मन्द भाग्य होना।
किस्मत लड़ना–भाग्य के अनुकल होना।
किसी गिनती में न होना–कुछ महत्त्व न रखना।
किसी मर्ज की दवा नहीं–किसी काम का न होना।
किस्सा तमाम होना–झगड़ा निबट जाना।
कीच उछालना–नीचता करना।
कीच में पत्थर फेंकना–नीच पुरुष से झमेला करना।
कुंठित छुरी से गला रेतना–अत्यन्त कष्ट पहुँचाना।
कुआँ खोदना–हानि करने का उद्योग करना।
कुएँ में भाँग पड़ना–सब की अक्ल मारा जाना
कुछ कमान झुके कुछ गोसा–कलह में दोनों दल जब कुछ हानि सहने को तत्पर होते हैं तभी झगड़ा तय होता है।
कुछ खोकर ही अक्ल आती है–बिना कुछ हानि उठाये लाभ नहीं होता।
कुतार होना–काम बिगाड़ना।
कुतिया चोरों मिल गई पहरा किसका दे–रक्षक जब चोरों से मिल जाते हैं तब रखवाली नहीं हो सकती।
कुत्ता काटना–पागल होना।
कुत्ते की मौत मरना–दुर्दशा में पड़कर मृत्यु होना।
कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है–पशु को भी स्वच्छता अच्छी लगती है।
कुत्ते की दुम बारह वर्ष नली में रखी जाय तब भी टेढ़ी की टेढ़ी–नीच मनुष्य अपनी कुटिलता कभी नहीं छोड़ता।
कुत्ते की नींद सोना–अचेत होकर न सोना।
कुत्ते के भौंकने से हाथी नहीं डरते–क्षुद्र मनुष्यों के भला-बुरा कहने से सज्जन लोग क्षुब्ध नहीं होते।
कुत्ते को घी हजम नहीं होता–क्षुद्र मनुष्य सम्पत्ति पाकर गुप्त नहीं रख सकता।
कुप्पा होना–मोटा ताजा हो जाना।
कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है–अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है।
कुलबुला उठना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
कुल्हिया में गड़ फोड़ना–गुप्त रूप से कोई काम करना।
कूच बोलना–प्रस्थान करना, चल जाना।
कूट कूट कर भरना–अधिक होना।
कूड़ पर फुलेल डालना–कृतघ्न पर उपकार करना।
कूपमण्डक बनना–अपने अल्प ज्ञान की श्लाघा करना।
केंचुली बदलना–शारीरिक स्वास्थ्य में उन्नति होना।
कैंड़ा बदलना–ढंग बदलना।
कैंड़े पर आना–अनुकल होना।
कैंड़े पर लाना–ढंग पर लाना।
कै हंसा मोती चुने, कै भूखो मर जाय–प्रतिष्ठित पुरुष को जान से भी अधिक प्रतिष्ठा प्यारी होती है।
कोई दम का मेहमान होना–मरणासन्न होना।
कोउ नृप होय हमें का हानी–किसी को

लाभ हो हमसे क्या मतलब ।
कोख उजड़ना—सन्तान का मरण ।
कोख की आँच—सन्तान के वियोग का दुःख
कोख खुलना—प्रथम सन्तान का जन्म ।
कोठीवाला रोवे, छप्परवाला सोवे—अमीर सर्वदा व्यग्र रहता है तथा गरीब सुख की नींद सोता है ।
कोदो देकर पढ़ना—अच्छी तरह पढ़ना-लिखना न जानना ।
कोयले की दलाली में हाथ काले—संगति का असर अवश्य पड़ता है ।
कोयला होय न ऊजला सौ मन साबुन धोय—नीच मनुष्य हजारों उपाय करने पर भी अपनी नीचता नहीं छोड़ता ।
कोर-कसर—बेशी-कमी ।
कोरा टालना—कुछ भी न देना ।
कोरा रखना—कुछ न सिखलाना ।
कोरा रह जाना—कुछ भी न मिलना ।
कोरा जवाब देना—निराशाजनक उत्तर देना ।
कोरी-कोरी सुनाना—डाँट डपट करना ।
कोरी पटिया पर लिखना—कोई नया कार्य आरंभ करना ।
कोसों दूर भागना—अरुचि या घृणा होना ।
कोसों दूर रहना—कोई मतलब न रखना ।
कोल्हू का बैल—दिन रात काम करनेवाला मनुष्य ।
कौड़ियों के मोल लेना—बहुत सस्ता खरीदना ।
कौड़ी काम भी न होना—किसी के काम का न होना ।
कौड़ी के तीन-तीन होना—बड़ा सस्ता होना, विपत्ति में पड़ना ।
कौड़ी-कौड़ी को मुहताज होना—धन की कमी होना ।
कौवा चला हंस की चाल—साधारण मनुष्य होकर बड़े आदमियों का अनुकरण करना ।
कौवे बोलना—उजाड़ होना ।
क्या पड़ी है—क्या प्रयोजन है ।
क्या पानी मथने से घी निकलता है—बेकार काम करने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, बड़ा कृपण कुछ दे नहीं सकता ।
क्या मुँह दिखाना—क्या उत्तर देना ।
क्रोध पी जाना—क्रोध को दबा लेना ।

ख

खग जाने खग ही की भाषा—जिसकी सोहबत में जो रहता है वह उसके विचार से परिचित रहता है ।
खचाखच भरना—बहुत भीड़भाड़ होना ।
खटका लगा रहना—डर बनी रहना ।
खट-पट होना—लड़ाई झगड़ा होना ।
खटाई में पड़ना—अनिश्चित अवस्था में होना ।
खड़े खड़े बुलाना—थोड़े समय के लिये बुलाना ।
खप जाना—नष्ट होना ।
खबर लेना—सजा देना ।
खयाली घोड़े दौड़ाना—कल्पना करना, धुन बाँधना ।
खयाली पुलाव पकाना—केवल कल्पना करना ।
खरबूजे को देखकर खरबजा रंग पकड़ता है—दूसरे का अनुकरण करना स्वाभाविक होता है ।
खरी खोटी सुनाना—साफ-साफ बात कहना, भला-बुरा कहना ।
खरी मजूरी चोखा काम—पूरी मजदूरी देने से काम अच्छा होता है ।
खलबली मचना—उपद्रव होना ।
ख़लक़ की जुबान खुदा का नक्कारा—समाज के विचार को ईश्वर की आज्ञा समझना चाहिये ।
खली गुड़ का एक भाव करना—भले-बुरे को समान जानना ।
खाँडे की धार पर चलना—कठिन कार्य करना ।
खाइये मनभाता, पहिनिये जगभाता—अपनी रुचि के अनुसार भोजन और दूसरे के पसन्द का वस्त्र पहिनना चाहिये ।
खाओ वहाँ तो पानी पियो यहाँ—अति शीघ्र काम पूरा करो ।
खाक उड़ाना—मारे-मारे फिरना ।
खाक छानना—भटकते फिरना ।
खाक डालना—छिपा रखना, दबा देना ।
खाक फाँकना—मिथ्या बोलना ।
खाक में मिलना—बरबाद हो जाना ।
खाक में मिलाना—नष्ट करना, बरबाद करना ।
खाक डाले चाँद नहीं छिपता—यशस्वी की निन्दा करने से उसका यश नष्ट नहीं होता ।
खाकर डकार न लेना—चुपके से दबा लेना ।
खाने के और दिखाने के दाँत और होते हैं—ऊपर से तो शिष्टाचार करना और मन में कपट करना ।
खाने को दौड़ना—अति क्रुद्ध होना ।
खाने को पीछे, नहाने को पहिले—भोजन करने के पहिले स्नान करना चाहिये ।
खाय तो पछताय, न खाय सो भी पछताय—जो पदार्थ दिखाव में सुन्दर हो परन्तु भीतर से खराब निकले उसको ग्रहण करने से पछतावा होता है ।
खार खाना—द्वेष करना, कुढ़ना ।
खाल उधेड़ना—कड़ा दंड देना ।
खाला जी का घर—बड़ा सहज काम ।
खाल ओढ़िके सिंह की स्यार सिंह नहिं होय—बाहरी रूप बदलने से किसी का असली गुण नहीं बदलता ।
खिंचा रहना—वैमनस्य रखना ।
खिचड़ी पकाना—छिपी तरह से कोई षड्यन्त्र करना ।
खिचड़ी माँग चार यार, दही पापड़ घी अचार—दही, पापड़, घी और अचार खिचड़ी के साथ खाने में अच्छे लगते हैं ।
खिल उठना—प्रसन्न होना ।
खिलखिलाकर हँसना—ठट्ठा मारकर हँसना ।
खिसक जाना—चुपके से भाग जाना ।
खिसिया जाना—असन्तुष्ट होना ।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे—लज्जित होने पर क्रोध दिखलाना ।
खिलाये का नाम नहीं रुलाये का नाम—बच्चों को खिलाना कोई नहीं देखता जब वह रोता है तो सब देखता है ।
खींचा-तानी में पड़ना—झगड़े में फँसना ।
खुदा-खुदा करके—किसी न किसी प्रकार से, बड़ी मुश्किल से ।
खुदा गंजे को नाखन न दे—अनधिकारी को अधिकार मिलना बुरा होता है ।
खुदाई में ढले फकना—ईश्वर का कृतघ्न होना ।
खुल (कर) खेलना—स्वच्छंद, बेफिक्र होना ।
खुल पड़ना (जाना)—भेद का प्रकट होना ।
खुले आम—सबके सम्मुख, सबके सामने ।
खुले दिल—उदार हृदय से ।
खुशामद से ही आमद है—खुशामद से सब काम निकल जाता है ।
खुशामदी टट्टू—वह जो सर्वदा अमीरों की खुशामद किया करता है ।
खूंटे के बल बछड़ा कूदे—दूसरे के भरोसे बल दिखलाना ।
खून उबलना—(खौलना)—क्रोध उत्पन्न होना, गुस्सा आना ।
खून का प्यासा—हत्या करने के लिये उद्यत ।
खून की नदी बहाना—बहुतेरों की हत्या करना ।
खून के घूंट पीना—बड़ा कष्ट सहन करना ।
खून भरी आँखों से देखना—अति क्रुद्ध होना ।
खून लगाकर शहीदों में दाखिल होना—बिना कोई महत्व का कार्य किये हुए बड़ा बनने की चेष्टा करना ।
खून सफेद होना—बहुत डर जाना ।
खून सूखना—बहुत डर जाना ।
खून से हाथ रंगना—हत्या करना ।
खेत रहना—लड़ाई में मृत्यु होना ।
खेती खसमसेती—मालिक के स्वयं निरीक्षण से ही खेती अच्छी होती है ।
खेल बिगड़ना—बना बनाया कार्य नष्ट होना ।
खेल बिगाड़ना—बना बनाया कार्य नष्ट

कर देना।
खेलना खाना–आनन्द में समय विताना।
खोकर सीखना–हानि उठाकर तजुर्वा होना।
खोटा बेटा, खोटा पैसा भी समय पर काम आ जाता है–निकृष्ट वस्तु भी किसी समय उपयोग में आ जाती है।
खोदा पहाड़, निकली चुहिया–अति परिश्रम करने पर कुछ भी लाभ न होना।
खोद-खोदकर पूछना–तर्क वितर्क करना।
खोपड़ी खाना–वहुत वकवाद करके परेशान करना।
खोपड़ी गंजी करना–सिर पर मार-मारकर वालों को उड़ा देना
खोपड़ी रँगना–सिर फोड़कर लोहू वहाना।

ग

गंगा गये गंगाराम, जमुना गये जमुनादास–ऐसा मनुष्य जिसका कोई दृढ़ सिद्धान्त नहीं होता।
गंगा नहा लेना–किसी काम से निवृत्त होना।
गंगाजली उठाना–हाथ में गंगाजल लेकर कसम खाना।
गंगालाभ होना–देहान्त होना।
गँजेड़ी यार किसके, दम लगाई खिसके–स्वार्थी मनुष्य किसी के मित्र नहीं होते।
गगन भेदी पताका फहराना–प्रभाव सहित शासन करना।
गज भर छाती होना––उत्साहयुक्त होना।
गट कर जाना–जल्दी से पी जाना।
गठरी मारना–माल चुरा ले जाना।
गड़ जाना–लज्जा से झेंप जाना।
गड़े मुरदे उखाड़ना–वीती हुई वातों को कहकर वैमनस्य जागृत करना।
गढ़े में पड़ना–पतित होना, नष्ट होना।
गत वनाना–दुर्दशा करना।
गधा खेत खाय, जलाहा मारा जाय–अपराध कोई करे और दण्ड किसी दूसरे को दिया जाय।
गधा धोने से वछड़ा नहीं होता–मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृति किसी तरह से नही वदली जा सकती।
गधे चराना–मूर्ख वने रहना।
गधे को वाप वनाना–मूर्ख व्यक्ति का आदर करना।
गधे पर चढ़ाना–वेइज्जत करना।
गधों को हलवा खिलाना–नीचों का सत्कार करना।
गप्प मारना–वेफायदे की वात करना, झूठ वोलना।
गम खाना–शान्ति धारण करना।
गयंद का भार गधे पर धरना–जो काम योग्य व्यक्ति कर सके उसको अयोग्य को सौंपना।
गया गुजरा जानना–तुच्छ समझना।
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं–समय पर चूकना अच्छा नहीं होता।
गये थे रोजा छुड़ाने, नमाज पड़ी गले–उपकार करने चले थे, मगर स्वयं दुःख भोगना पड़ा।
गरम होना–क्रोध करना।
गरदन उठाना–भिड़ जाना, प्रतिवाद करना।
गरदन उठाने का मौका न मिलना–कार्य में अति व्यस्त रहना, अवकाश न मिलना।
गरदन काटना–कष्ट पहुँचाना, हानि पहुँचाना।
गरदन झुकना–विनीत वन जाना।
गरदन झुकाना–नम्र होना, अधीन होना।
गरदन नापना–गरदनियाँ देकर हटा देना।
गरदन पर छुरी फेरना–अत्याचार करना।
गरदन पर सवार होना–पीछे पड़ जाना, वहुत तंग करना।
गरीव की हाय वुरी होती है–गरीव पर कभी अत्याचार न करना चाहिये।
गरीव रोजे रखे तो दिन वड़े हो गये–गरीव का समय सर्वदा दुख से ही वीतता है।
गरीव सव कोई कहते हैं, वड़े आदमी कोई नहीं कहता–गरीवों की त्रुटियों को सव कोई देखता है, अमीरों की कोई नहीं देखता।
गरीवी में मुँह छिपाना–शर्मिन्दा होना।
गर्द भी न पाना–खोजने से न मिलना, वरावरी में न ठहरना।
गला काटना–अत्याचार करना, पीड़ा पहुँचाना।
गला घोंटना–अत्याचार करना, वड़ा कष्ट देना।
गला फँसना–लाचार हो जाना।
गला फँसाना–विपत्ति में डालना।
गला रेतना–अत्याचार करना।
गला सूखना–प्यास लगना।
गली गली मारा फिरना–दुर्दशा होना।
गले का हार होना–वड़ा प्यारा वनना, चिपट जाना।
गले पड़ना–ऊपर आ जाना।
गले मढ़ना–इच्छा के विरुद्ध कोई काम किसी को सौंपना।
गले से लगाना–प्यार करना।
गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त–अर्थ स्पष्ट है।
गहरा असामी–वहुत धन देनेवाला।
गहरा हाथ मारना–इच्छा की हुई वस्तु का अधिक परिमाण में मिलना।
गहरी चाल चलना–वड़ा छल करना।
गहरी छानना–आनन्द के समय विताना, अधिक वार्तालाप होना।
गाँठ काटना–वहुत मँहगा वेचना, जेव काटना।
गाँठ का पूरा–वड़ा अमीर।
गाँठ खुलना–झंझट दूर होना।
गाँठ पर गाँठ पड़ना–झंझटें वढ़ जाना।
गाँठ में जमा तो खातिर जमा–पास में धन होने से किसी वात की फिक्र नहीं रहती।
गाँठ में वाँधना–अच्छी तरह याद रखना।
गाँठ लेना–अपने पक्ष में कर लेना।
गागर में सागर भरना–थोड़े में कहना, संक्षिप्त में वर्णन करना।
गाजर-मूली समझना–तुच्छ जानना।
गाड़ी चल पड़ना–कार्य का आरंभ होना।
गाड़ी रुक जाना–चलता काम वंद होना।
गाढ़ी कमाई–परिश्रम से कमाया हुआ धन।
गाढ़ी छनना–वड़ी मित्रता होना।
गाल वजाना–वकवक करना।
गिन गिनकर दिन काटना–वड़े कष्ट में दिन विताना।
गिन गिनकर पाँव धरना–धीरे-धीरे चलना सावधानी से काम करना।
गिन गिनकर वदला लेना–वड़ी तकलीफ देना, पूरी तरह से वदला चुकाना।
गिरगिट की तरह रंग वदलना–वारंवार अपना मत वदलना, किसी सिद्धान्त पर स्थिर न रहना।
गिरह टटोलना–कुछ लेने की इच्छा करना।
गिरह पड़ जाना–मनमुटाव होना।
गीत गाना–प्रशंसा करना, तारीफ करना।
गीदड़ की शामत आवे तो गाँव की ओर भागे–भाग्य विगड़ जाने पर वुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है।
गीदड़ भभकियाँ दिखलाना–वृथा डराना, झूठ-मूठ त्रास देना।
गुंजा मानिक एक समान–पंडित और मूर्ख का भेद न समझना।
गुट्ट वाँधना–दलवन्दी करना।
गुड्डा वाँधना–अपमानित करना, वेइज्जत करना।
गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज–वृथा का आडम्वर रचना।
गुड़-गोवर कर देना–काम को विगाड़ देना।
गुड़ देने से मरे तो जहर क्यों देना–यदि समझाने से काम हो जाये तो दंड क्यों देना?
गुथ पड़ना–लड़ जाना।
गुदड़ी का लाल–किसी के रंग-रूप से उसके

गुणों का पता न चलना।
गुनाह बेलज्जत—नीच कर्म करने पर भी न मिलना।
गुर निकालना—उपाय का पता लगाना।
गुरु गुड़ रह गये, चेला चीनी हो गये—चेले का गुरु से भी अधिक विद्वान् होना।
गुल खिलना—विचित्र घटना होना।
गुल खिलाना—विचित्र घटना उपस्थित करना
गुलछर्रे उड़ाना—आनन्द मनाना।
गूंगे गुड़ खाना—अपना अनुभव न प्रकट कर सकना।
गूलर का फूल लेना—न मिलनेवाली वस्तु की आकांक्षा करना।
गूलर का फूल हो जाना—लुप्त हो जाना, वेपते होना।
गोकुल से मथुरा न्यारी—परस्पर संबंध न होना
गोद में बैठाकर आँखों में ऊँगली—कृतघ्नता प्रकट करना।
गोद में लड़का शहर भर ढिंढोरा—पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना।
गोबर गिरा तो कुछ लेकर ही उठेगा—धन उधार लिया तो कुछ सूद जरूर ही देना पड़ेगा।
गोली मारना—त्याग देना, छोड़ देना।
गोरखधंधे में पड़ना—झंझट में पड़ना।
गौं निकालना—स्वार्थ सिद्ध होना।

घ

घड़ों पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना।
घनचक्कर में पड़ना—आफत में पड़ जाना।
घर आया कुत्ता भी नहीं निकाला जाता—अतिथि का अपमान न करना चाहिये।
घर उजड़ना—संपूर्ण संपत्ति का नाश होना।
घर करना—पति बनाना।
घर काटने दौड़ना—मकान में दिल न लगना।
घर का दिया बुझ जाना—एकमात्र पुत्र की मृत्यु होना।
घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध—विद्वान् मनुष्य की अपने देश में उतनी प्रतिष्ठा नहीं होती जितनी अन्य देश में होती है।
घर का न घाट का—कहीं का भी न होना।
घर का भेदिया लंका ढाहे—आपस के वैर का बुरा परिणाम होता है।
घर का रास्ता लेना—भाग जाना।
घर की आधी भली बाहर की सारी कुछ नहीं—घर में काम करके थोड़ा ही मिले तो भी बाहर के व्यवसाय से अच्छा है।
घर की खांड़ किरकिरी लगे, चोरी का गुड़ मीठा—बुरी रीति से प्राप्त की हुई वस्तु घर की वस्तु से अधिक अच्छी लगती है।
घर की खेती—सहज में मिलनेवाला पदार्थ।
घर की मुर्गी साग बराबर—घर की वस्तु का विशेष आदर नहीं होता।
घर के घर रहना—लाभ हानि बराबर होना।
घर के पीरों को तेल का मलीदा—घर के लोगों के साथ तो बुरा व्यवहार किया जाय और बाहर की बड़ी प्रतिष्ठा।
घर खीर तो बाहर खीर—घर में धन है तो बाहर भी प्रतिष्ठा होगी।
घर घर पूजा होना—सर्वत्र प्रतिष्ठा होना।
घर घर यही लेखा—सभी परिवार में समान स्थिति रहती है।
घर तक पहुँचना—पूर्ण करना।
घर फूंक तमाशा—संपत्ति का नाश करके आनन्द मचाना।
घर बनना—आर्थिक स्थिति सुधरना।
घर बसना—विवाह होना, घर में स्त्री का आगमन।
घर बैठे—बिना बाहर गये।
घर बैठे गंगा आना—अनायास धन मिलना।
घर में चूहे कूदना—अति दरिद्र होना।
घर में डाल लेना—पत्नी बनाना।
घर में दिया तो मसजिद में दिया—बाहर की फिक्र करने के पहिले अपने घर की स्थिति सम्भालो।
घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने—झूठा आडंबर रचना।
घर सिर पर उठाना—बड़ा कोलाहल मचाना।
घर से बाहर न निकलना—संसार का अनुभव न प्राप्त करना।
घाट घाट का पानी पीना—सब तरह के अनुभव प्राप्त करना।
घात में रहना—अर्थ सिद्ध करने के लिये ताक में रहना।
घात लगाना—नुकसान पहुँचाने के लिये मौका ढूंढ़ना।
घाव पर निमक छिड़कना—दुःखी को और भी कष्ट देना।
घाव हरा होना—बीते हुए कष्ट का स्मरण होना
घास काटना (खोदना)—व्यर्थ के काम में समय गँवाना।
घास खा जाना—पागल होना।
घिग्घी बंधना—बहुत डर के कारण मुख से शब्द न निकलना।
घी कहाँ गया खिचड़ी में—अपनी वस्तु का अपने प्रयोग में आना।
घी के दीपक जलाना—हर्ष और आनन्द मनाना
घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो—मनुष्य को इतना धन खर्च करना चाहिये कि बाहर मान मर्यादा बनी रहे।
घुट घुटकर मरना—कष्ट भोगकर शरीर छूटना
घुटने टेकना—अधीन होना, विनीत भाव दिखलाना, आत्मसमर्पण करना।
घुन लगना—किसी भीतरी रोग से अति दुर्बल हो जाना।
घुमाकर नाक पकड़ना—अपने अभिप्राय को लपेट की बातों में प्रकट करना।
घुमा फिराकर बात करना—साफ-साफ बात न कहना।
घुल-घुलकर बात करना—घनिष्ठता में प्रेमपूर्वक बातें करना।
घुल जाना—बड़ा दुर्बल होना।
घोड़ा घास से यारी करे तो क्या खाय—व्यापार में मुनाफा न लेने से काम नहीं चलता।
घोड़ा घुड़साल में ही बिकता है—जहाँ की वस्तु वहीं बिकती है।
घोड़े बेचकर सोना—निश्चिन्त होकर सोना।
घोलकर पी जाना—किसी प्रकार की चिन्ता न करना।

च

चंग पर चढ़ाना—उत्तेजित करना।
चंगुल में फँसना—परवश हो जाना।
चंडूखाने की गप्प—झूठी बात।
चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ—उत्तम वस्तु थोड़ी मात्रा में भी भली होती है, बुरी वस्तु अधिक भी भली नहीं होती।
चंपत हो जाना—भाग जाना।
चक्कर में डालना—झगड़े में फँसाना।
चक्कर में पड़ना—धोखे में आ जाना।
चक्की पीसना—बड़ा परिश्रम करना।
चकमा देना—धोखे में डालना।
चचा बन जाना—अधिक चालाक होना।
चट कर जाना—जल्दी से खा जाना।
चटनी हो जाना—खूब पिस जाना।
चट्टे-बट्टे लड़ाना—इधर-उधर की बातें कहकर झगड़ा खड़ा करना।
चढ़ा जाना—पी जाना।
चबा-चबाकर बातें करना—साफ खोलकर न कहना।
चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—बड़ा कृपण होना।
चरका देना—धोखा देना।
चरण छूना—विनती करना, प्रणाम करना।
चरबी बढ़ना—मोटा-ताजा होना।
चलता करना—रवाना करना।
चल बसना—मर जाना।
चलती गाड़ी में ओट लगाना—काम में

विघ्न डालना ।
चहल-पहल मचना—रौनक होना ।
चाँद पर थूकना—किसी की निन्दा करके स्वयं दूषित होना ।
चाँदी का जूता मारना—घूस देना ।
चाँदी होना—अधिक लाभ होना ।
चाकरी में नाकरी क्या—नौकरी करने पर कुछ इनकार नहीं हो सकता ।
चादर उतार डालना—वेशर्म होना ।
चादर के बाहर पर फलाना—आय से अधिक व्यय करना ।
चादर तानकर सोना—निश्चिन्त हो जाना ।
चादर देखकर पाँव फैलाना—शक्ति के अनुसार काम करना ।
चार आँसू गिराना—शोक करना ।
चार चाँद वढ़ाना—इज्जत वढ़ाना ।
चार दिन—थोड़े दिन तक ।
चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात—सर्वदा सुख के दिन नहीं रहते ।
चार बातें सुनाना—खरी खोटी सुनाना ।
चार पैसे हाथ में होना—आर्थिक स्थिति अच्छी होना ।
चारो खाने चित्त आना—बुरी तरह से हारना
चाल चलना—धूर्तता करना, दगावाजी करना, कपट व्यवहार करना ।
चारपाई से लग जाना—रोग से अति दुर्वल हो जाना ।
चाल पड़ना—रिवाज होना, फर्क आना ।
चाल में आना—धोखे में पड़ना ।
चिकना घड़ा—जिस पर किसी शिक्षा का प्रभाव न पड़े ।
चिकनी-चुपड़ी बातें करना—मीठा वोलकर धोखा देना ।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—वेहया पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता ।
चिड़िया फँसाना—किसी मालदार असामी को धोखा देकर अपने वश में करना ।
चित करना—हानि पहुँचाना, हराना ।
चित पर चढ़ना—मन को भला लगना ।
चितापर पाँव रखना—मरणकाल समीपआना
चित्र वन जाना—मूर्ति की तरह चुपचाप वैठ जाना ।
चिराग गुल होना—मृत्यु होना ।
चिराग ठंढा होना—पुरुपार्थ का अन्त होना ।
चिराग तले अँधरा—न्याय के स्थान में अन्याय होना ।
चिराग लेकर ढूँढना—वड़ी खोज करना ।
चिलम पर आग भी न रखवाना—अति तुच्छ समझना ।
चिल्ल-पों करना—रोना, विलाप करना, चिल्लाना ।
चीं बोलना—हार मानना ।
चींटी चाहे सागर थाह—सामान्य मनुष्य का वड़े काम करने में उद्योग ।
चुटकियों में—अति शीघ्र, तुरत ।
चुटकियों में उड़ाना—दिल्लगी में टालना ।
चुटकी लेना—मर्मवेधी वातें कहना ।
चुल्लू भर पानी भी न पूछना—किसी काम में न आना ।
चुल्लू भर पानी में डूब मरना—लज्जावश मुँह न दिखलाना ।
चुल्लू में उल्लू, लोटे में गड़गप—शराव की कम या अधिक मात्राओं का प्रभाव जो पीनेवाले पर प्रत्याशित होता है ।
चूँचकार करना—आपत्ति करना, वाद-विवाद करना ।
चूड़ियाँ पहनना—कायर बनना ।
चूड़ियाँ फूटना—विधवा होना ।
चूल्हा न जलना—भोजन न मिलना ।
चूल्हे को फूंकना और दाढ़ी रखना—दो असंगत कार्य करना ।
चूल्हे की है न चक्की की—ऐसी स्त्री जो कोई काम न कर सकती हो ।
चूल्हे में पड़ना—नष्ट होना ।
चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है—किसी का जाति स्वभाव नहीं छूटता ।
चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाते—क्षुद्र मनुष्य से वड़ा काम नहीं हो सकता ।
चेहरा उतरना—उदास होना ।
चेहरे पर हवाइयाँ उतरना—भयत्रस्त होना ।
चैन की छनना, चैन की वंसी बजाना—आनन्द से जीवन विताना ।
चोचले दिखलाना—इतराना ।
चोट उभड़ना—दुःख फिर से आ जाना
चोट करना—आक्रमण करना, धावा करना ।
चोट पर चोट लगना—दुःख में दुःख होना ।
चोटी हाथ में आना—वश में होना ।
चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली—रखवाला ही यदि चोर हो तो रखवाली कैसे हो सकती है ।
चोर की दाढ़ी में तिनका—चोर को सदा सन्देह वना रहता है कि वह कहीं पकड़ा न जावे ।
चोर के पैर नहीं होते—चोर का मन सदा डरा करता है ।
चोर-चोर मौसेरे भाई—एक ही स्वभाव और व्यवसायवाले मनुष्य परस्पर मेल रखते हैं ।
चोरी का माल मोरी में—बुरी तरह से कमाया हुआ धन वुरे कार्यों में खर्च होता है ।
चौकन्ना होना—सावधान होना ।
चौकस रहना—सचेत रहना ।
चौका लगाना—सत्यानाश करना ।
चौखट चूमना—आधीनता स्वीकार करना ।
चौथ का चाँद—भादों सुदी चौथ का चन्द्रमा जिसको देखने से कलंक लगता है ।
चौपट करना—नष्ट करना, वरवाद करना ।

छ

छँटा हुआ—प्रसिद्ध, मशहूर ।
छक्के छुड़ाना—परास्त करना ।
छक्के छूटना—साहस न होना ।
छक्के-पंज उड़ाना—आनन्द मचाना ।
छछूंदर के सिर में चमेली का तेल—अयोग्य व्यक्ति को उत्तम पदार्थ मिलना ।
छटपटा उठना—व्यग्र होना, घवड़ा जाना ।
छटाँक चून चौवारे रसोई—झूठा आडंवर ।
छठी का दूध याद आना—कठिन कष्ट पड़ना ।
छत्रछाया में रहना—आधीन रहना ।
छप्पन टके खर्च होना—ज्यादा खर्च होना ।
छप्पर पर रख देना—त्याग देना, छोड़ देना ।
छप्पर फाड़कर मिलना—अनायास प्राप्त होना
छाती का पत्थर टलना—दुःख दूर होना ।
छाती के किवाड़ खोलना—उदारता से खर्च करना ।
छाती खोलकर चलना—निर्भय होकर चलना ।
छाती जलना—दुःख देना ।
छाती जुड़ाना—शान्ति मिलना ।
छाती ठंठी करना—चित्त सन्तुष्ट करना ।
छाती ठोकना—दिल कड़ा करना ।
छाती तले रखना—प्रेमपूर्वक पास रखना ।
छाती पर कोदो दरना—सन्मुख अनुचित कार्य करना, कष्ट पहुँचाना ।
छाती पर पत्थर रखना—कष्ट सहना ।
छाती पर बाल न होना—वीर होना ।
छातीपर साँपलेटना—ईर्ष्याकरना, डाहकरना
छाती पीटना—शोक मनाना ।
छाती से लगाना—प्यार करना ।
छान डालना—अन्वेषण करना, खोज करना
छापा मारना—लूट लेना ।
छाया तक न पड़ना—कुछ प्रभाव न पड़ना ।
छिद्रान्वेषण करना—ऐव निकालना ।
छिपा रुस्तम निकलना—योग्य सिद्ध होना, दुष्ट सिद्ध होना ।
छींकते ही नाक कटना—अपराध करते ही दण्ड मिलना ।
छींटे डालना—मर्मवेधी वातों का संकेत करना
छीछालेदर करना—दुर्दशा करना ।
छुट्टी पाना—निस्तार होना, मुक्त होना ।
छुरी खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरी

पर गिरे बात एक ही है—हानि दोनों ही तरह से होती है।
छुरी तले दम लेना—कष्ट से जिन्दगी विताना।
छुरी तेज करना—कष्ट देना, सताना।
छू-मंतर हो जाना—भाग जाना।
छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ बड़े मियाँ सुभान अल्लाह—बड़े में छोटे से अधिक दुर्गुण जब देख पड़ता है तब कहा जाता है।
छोटे मुँह बड़ी बात—बढ़बढ़कर बातें करना।

ज

जंगल में मंगल होना—निर्जन स्थान में आनन्द का उत्सव होना।
जग में देखने का ही नाता—संसार में जीते जी का ही नाता रहता है।
जगह कर जाना—प्रभाव डालना।
जगह करना—मकान बनाना, स्थान देना।
जड़ उखाड़ना—नाश करना।
जड़ छोड़ना—जमकर बैठना।
जनमघुट्टी में दिया जाना—जन्म से ही अभ्यास डालना।
जने-जने की लकड़ी एक जने का बोझ—समष्टि में बड़ा बल होता है।
जब अपनी उतार ली तब दूसरेकी उतारने में क्या लगता है—जब अपनी इज्जत गई तब दूसरे की इज्जत बरबाद करने में क्या है।
जब तक जीना तब तक सीना—जिन्दगी भर संसारी झंझटें बनी रहती हैं।
जबरदस्त का ठेंगा सिर पर—निर्बल सदा बलवान् के आधीन रहता है।
जबरा मारे रोने न दे—निर्बल को बलवान् सदा कष्ट देता है।
जबां शीरी मुल्क गीरी—मीठा बोलकर मनुष्य संसार में सबको प्रसन्न कर सकता है।
जबान एक होना—अपने कहे पर दृढ़ रहना।
जबान खींचना—बड़ा दण्ड देना।
जबान देना—प्रतिज्ञा करना, वचन देना।
जबान पर चढ़ा रहना—अच्छी तरह से याद रहना।
जबान पर लाना—कह बैठना।
जबान बदलना—कहकर मुकर जाना।
जबान में लगाम न होना—अशिष्ट वचन बोलना।
जबान हिलना—बांचना।
जबान ही हाथी पर चढ़ावे और जबान ही सिर कटावे—भला-बुरा बोलने पर ही मनुष्य की उन्नति और अवनति निर्भर होती है।
जबानी जमा-खर्च करना—दिखावटी सहानुभूति दिखलाना।
जमाने की लहर के साथ चलना—स्थिति के अनुसार काम करना।
जमीन आसमान एक करना—बड़ी खोज करना।
जमीन पर पाँव न रखना—बड़ा गर्व करना।
जमीन में गड़ जाना—बड़ा लज्जित होना।
जल की मछली जल में ही भली—जहाँ की वस्तु वहीं अच्छी लगती है।
जल में रहकर मगर से बैर—जिसके आधीन रहे उसीसे शत्रुता करना।
जल-जलकर भस्म होना—क्रोधवश दुःख पाना
जली भुनी कहना—कठोर शब्दों का प्रयोग करना।
जले पर नमक छिड़कना—दुःखी को और दुःख देना।
जहर का घूंट पीना—क्रोध के आवेग को रोकना।
जहर दिखाई देना—घृणा होना।
जहर लगना—बुरा मालूम होना।
जहाँ का तहाँ खपा देना—जानसे मार डालना।
जहाँ की मिट्टी वहीं ले जाती है—जहाँ मरना होता है वहीं मनुष्य चला जाता है।
जहाँ गुड़ होगा, वहीं चींटियाँ होंगी—लोग वहीं इकट्ठा होते हैं जहाँ उनको कुछ मिलने की आशा होती है।
जहाँ गुल है वहीं काँटा भी है—गुण के साथ कभी-कभी दोष भी देख पड़ते हैं।
जहाँ चार बासन होंगे वहीं खड़कें गे—जहाँ अनेक मनुष्य होते हैं वहाँ पर झगड़ा होता ही है।
जहाँ जायँ बाले मियाँ तहाँ जाय पूंछ—अमीरों के साथ सर्वदा उनके पिछलग्गू बने रहते हैं।
जहाँ मुर्गा नहीं होता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता—किसी के बिना संसार का कोई काम नहीं रुकता।
जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि—कवि अपनी कल्पना से सर्वत्र पहुँच जाता है।
जस दूल्हा तस बनी बराता—जैसे को वैसा साथी मिलता है।
जा धमकना—अकस्मात् पहुँच जाना।
जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी—जिसकी जैसी भावना रहती है उसको देवता की वैसी ही मूर्ति देख पड़ती है।
जाके पांव न फटी बेवाई, सो क्या जाने पीर पराई—जिसने स्वयं कष्ट का अनुभव नहीं किया है वह पराये की पीड़ा को क्या जाने।
जागते को जगाना—समझदार को शिक्षा देना।
जादू डालना—अपने मतलब में फँसाना।
जान आना—शक्ति आना।
जान का जंजाल हो जाना—अरुचिकर होना।
जान का गाहक बन जाना—प्राण लेने के लिये उद्यत होना।
जान के लाले पड़ना—जीवन की चिन्ता होना।
जान चुराना—काम करने से जी चुराना।
जान खाना—बहुत परेशान करना।
जान खोना—अधिक कष्ट सहना।
जान छूटना—आपत्ति से छुटकारा पाना।
जान छुड़ाना—आपत्ति से बचना।
जान डालना—उत्साहित करना, जोरदार बनाना।
जान पर खेलना—अपने को संकट में डालना।
जान पर बनना—जान जान का डर होना।
जान-बूझकर मक्खी निगलना—अपने हाथों से अपना अनिष्ट बुलाना।
जान भारी होना—जिन्दगी दुःखमय होना।
जान मारकर काम करना—अपने मस्तक पराक्रम करना।
जान में जान आना—सन्तोष मिलना।
जान सूखना—भयभीत होना।
जान से हाथ धोना—मृत्यु प्राप्त करना।
जानवरों में कौवा मनुष्यों में नौवा—ये बड़े चतुर होते हैं।
जान से जाना—मरना।
जामे से बाहर होना—कुपित बड़ा होना।
जाल फैलाना—षड़यन्त्र रचना।
जाल डालना—धोखा देना।
जाल में फँसना—धोखे में आ जाना।
जिस हाँडी में खाना उसी में छेद करना—उपकार के बदले अपकार करना।
जिसकी छाया में बैठना, उसी को जड़ काटना—जो अपना हित करे उसका अपकार करना।
जिसकी बँदरिया वही नचावे—जिसका काम वही कर सकता है।
जितने मुँह उतनी बात—भिन्न-भिन्न मनुष्यों के पृथक् विचार होते हैं।
जिस डाल पर बैठे उसीको काटे—जो आश्रय दे उसीसे अपकार करना।
जिसके हाथ लोई, उसका सब कोई—धनी मनुष्य की सब लोग खुशामद करते हैं।
जिह्वाग्र होना—अच्छी तरह से याद होना।
जी उचट जाना—मन न लगना।
जी कांपना—डर लगना।
जी का बोझ हलका होना—चिन्ता से छूटना।
जी छोड़ना—हिम्मत हारना।
जी चुराना—सुस्ती करना।

जी छूट जाना—हताश होना।
जी छोटा करना—उदास होना।
जी जलाना—दुःखी करना।
जी टँगा रहना—खटका बना रहना।
जी टूट जाना—उत्साहहीन होना।
जी दहल जाना—व्यग्र होना, घबड़ाना।
जी न भरना—तृप्त न होना।
जी पक जाना—तंग आ जाना।
जी में जी आना—धैर्ययुक्त होना।
जी से उतर जाना—अच्छा न लगना।
जी हुजूर बनना—अफसर बनना।
जीभ चलते रहना—बकवाद करते रहना।
जीभ जली, पर स्वाद न आया—अच्छा काम किया पर फल उलटा मिला।
जीभ पकड़ना—बोलने से रोकना।
जीभ लपलपाना—भोजन करने की लालसा होना।
जीभ सँभालकर बोलना—शिष्टता से वार्तालाप करना।
जीवन की घड़ियाँ गिनना—मृत्यु समीप आना
जुए को कंधे से उतारना—स्वतंत्र हो जाना।
जुल देना—धोखा देना, उभाड़ना।
जूँ की डर से गुदड़ी नहीं जाती—थोड़े से कष्ट के लिये काम नहीं छोड़ा जाता।
जूड़ी आना—कष्ट जान पड़ना।
जूता चाटना—चापलूसी करना।
जूता लगना—लज्जित होना।
जूता लगाना—अपमान करना।
जूतियाँ चटकाते फिरना—बुरा काम करने में व्यग्र रहना।
जूते की नोक पर मारना—अति तुच्छ समझना।
जूते से बात करना—अपमानित करना।
जेब से जाना—खर्च होना।
जैसा दाम वैसा काम—जैसी मजदूरी वैसा काम
जैसा देश वैसा भेष बनाना—स्थिति के अनुसार चलना।
जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ—एक समान होना
जोड़तोड़ करना—उपाय निकालना।
जोड़ा न होना—अद्वितीय होना।
जोर डालना—दबाव डालना।
जौहर खुलना—परीक्षा होना।
जौहर दिखलाना—गुण प्रकट करना।
ज्यों-ज्यों भीजे कामरी, त्यों त्यों भारी होय—कर्ज अदा न करने पर वह बढ़ता ही जाता है।

झ

झंडा गाड़ना—अधिकार स्थापित करना।
झख मारना—व्यर्थ की बकवाद करना, विवश हो जाना।
झगड़ा मोल लेना—जान बूझकर कलह करना।
झटक जाना—शरीर दुर्बल होना।
झटक लेना—ठग लेना, अपहरण करना।
झड़ी लगा देना—अधिक संख्या या परिमाण में उपस्थित करना।
झपट लेना—छीन लेना।
झाँसा देना—धोखे में डालना।
झाँसे में आना—धोखे में पड़ना।
झाड़ पड़ना—डाटा जाना।
झाड़ फेरना—नष्ट कर देना।
झाड़ मारना—तिरस्कार करना।
झूठ सच कहना—निन्दा करना।
झूठे का मुँह काला, सच्चे का बोलबाला—सच्चे की विजय होती है, झूठा हार जाता है।
झूठे के पाँव नहीं होते—झूठे मनुष्य को साहस नहीं होता।
झोपड़ी डालना—कुछ देर तक ठहरना।
झोपड़ी में रहे, महलों का ख्वाब देखे—बड़ी-बड़ी आकांक्षा करना।

ट

टकटकी बँधना—पलक न झिपना।
टकराते फिरना—इधर-उधर खोजते फिरना, भटकना, दुःख उठाते रहना।
टकसाल हो जाना—प्रधान स्थान होना।
टकसाली बात करना—प्रामाणिक बात कहना।
टका सा जवाब देना—स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना।
टक्कर खाना—नुकसान उठाना।
टक्कर का होना—समान होना।
टक्कर लगना—नुकसान पहुँचाना।
टका पास न होना—पास में धन न होना।
टका सा मुँह लेकर रह जाना—शर्मिन्दा होना।
टके का सब खेल है—धन से ही संसार में सब काम होता है।
टट्टी की आड़ में शिकार करना—धूर्तता से छिपकर कार्य साधना, छिपकर पाप करना।
टपक पड़ना—अकस्मात् आ पहुँचना।
टरका देना—टालना, बिना कुछ दिये वापस करना।
टर टर करना—बेफायदा बक-बक करना।
टस से मस न होना—विनती और शुश्रूषा का प्रभाव न पड़ना।
टाँक लेना—नोट कर लेना, लिख लेना।
टाँका देना—सिलना।
टाँके खोलना—गुप्त बातों को प्रकट करना।
टाँग अड़ाना—विघ्न डालना, हस्तक्षेप करना।
टाँग तले से निकल जाना—पराजय स्वीकार करना।
टाँग तोड़ना—बेकार घूमते फिरना।
टाँग पसारकर सोना—चैन से कालक्षेप करना।
टाँगे रह जाना—चलते-चलते शिथिल हो जाना।
टायँ टायँ करना—व्यर्थ बक बक करना।
टायँ टायँ फिस हो जाना—उद्योग करने पर असफल होना।
टाट उलटना—दीवालिया बन जाना।
टापते रह जाना—कुछ हासिल न होना।
टालमटोल करना—बहानेबाजी करना।
टिप्पस लगाना—अपना मतलब साधने के लिये ढंग रचना।
टीका टिप्पणी करना—किसी विषय की समालोचना करना।
टीका भेजना—कन्या पक्ष का वर पक्ष के घर पर विवाह स्थिर होने के निमित्त फल, मिठाई, वस्त्र आदि भेजना।
टीपटाप दिखलाना—गौरव दिखलाना।
टीस होना—शरीर में कही पर पीड़ा होना।
टुकड़गदाई—वह जो भोजन मिलने की आशा से अड़ा रहता है।
टुकड़ा तोड़ना—किसी के आश्रित होकर रहना।
टुकड़ा माँगना—भिक्षा माँगना।
टुकड़े लगना—खाने-पीने के लिये किसी के आश्रित होना।
टुटपुँजिया—अल्प धनवाला मनुष्य।
टूट पड़ना—आक्रमण करना, कमी होना।
टूटी बाँह गले में पड़ना—किसी का बोझ अपने सिर पर पड़ना।
टेक रख लेना—मान-मर्यादा स्थापित करना।
टेढ़ा होना—अकड़ दिखलाना।
टेढ़ी अँगुली से ही घी निकलता है—निरा सीधा बने रहने से काम नहीं चलता।
टेढ़ी खीर—कठिनता से होनेवाला कार्य।
टेढ़ी चाल चलना—कपट-व्यवहार करना।
टेढ़ी टोपी लगाना—शान दिखलाना।
टेढ़ी नजर से देखना—बुरी निगाह से देखना।
टोपी उछालना—आनन्द का प्रदर्शन करना।
टोपी बदलना—किसी मनुष्य को अपना मित्र बना लेना।

ठ

ठंढक लगना—सरदी लगना।
ठंढा पड़ जाना—क्रोध चला जाना, उत्साहहीन होना, शान्त होना।
ठंढा लोहा गरम लोहे को काट देता है—शान्त रहने से क्रोधी का कुछ बस नहीं चलता, वह अन्त में हार जाता है।
ठंढा हो जाना—मृत्यु को प्राप्त होना।
ठंढी साँस लेना—सोच-विचार में उदास

हो रहना ।
ठकुरसुहाती कहना—शुश्रूषा करना ।
ठठरी होना—अति दुर्बल हो जाना ।
ठठेरे ठठेरे बदलौवल—समान व्यवसायवालों का परस्पर संबंध, बराबरी ।
ठाट बदलना—आडंबर करना ।
ठान लेना—निश्चय कर लेना ।
ठाला बनिया क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी में धरे—बेकार आदमी फजूल का काम किया करता है ।
ठिकाना करना—प्रबंध करना, विवाह करना ।
ठिकाने की बात कहना—उचित वार्ता कहना ।
ठिकाने न रहना—स्थायी न रहना ।
ठिकाने लगना—काम में आना ।
ठिकाने लगाना—अन्त कर देना ।
ठीक कर देना—सजा देना ।
ठी-ठी करना—हँसना ।
ठोंकना-बजाना—जाँच करना, परीक्षा करना।
ठोकर खाकर सँभलना—हानि हो जाने पर सचेत हो जाना ।
ठोकर खाते फिरना—बेकार भटकते फिरना ।
ठोकर पर ठोकर खाना—एक कष्ट के बाद दूसरे का आना ।
ठोकर लगना—हानि उठाना ।

ड

डंक मारना—तकलीफ देना ।
डंका बजना—शोहरत होना, विस्तार होना ।
डंके की चोट कहना—स्पष्ट शब्दों में कहना ।
डंड पेलना—खा-पीकर मस्त रहना ।
डंडी मारना—कम तौलना ।
डकार तक न लेना—अच्छी तरह से हजम कर जाना, चुप रह जाना ।
डकारना—किसी की वस्तु अपहरण करना ।
डट जाना—स्थिर होना ।
डाइन भी अपने बच्चे को नहीं खाती—सभी स्त्रियाँ अपने बच्चे का लाड़-प्यार करती हैं ।
डाटकर भोजन करना—खूब पेट भरकर खाना ।
डावाँडोल होना—स्थिर न रहना ।
डाढ़ें मारना—चिल्लाते हुए रोना ।
डींग मारना—शेखी करना ।
डुगडुगी पीटना—ढिंढोरा पीटना, प्रसिद्ध करना ।
डूबे रहना—लीन होना ।
डूबते को तिनके का सहारा—पूरी निराशा होने पर थोड़ी-सी आशा होना ।
डेढ़ ईंट की मसजिद अलग बनाना—न्यारे मत का होना, अपना मत सबसे निराला रखना ।
डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना—सबसे निराले मत का होना ।
डेरा डंडा कूच करना—प्रस्थान करना ।
डोरी ढीली करना—शासन की कड़ाई कम करना ।
डोरे पर लगाना—सीधी राह पर लगाना ।

ढ

ढपोर संख—बेवकूफ, बेअक्ल ।
ढब निकालना—उपाय ढूँढना ।
ढब पर चढ़ना—वश में होना ।
ढब पर लाना—उचित मार्ग पर लाना ।
ढर्रे पर लगाना—अनुकूल बनाना ।
ढर्रे से बातें करना—बड़े ढंग से बोलना ।
ढाई दिन की बादशाह्त करना—थोड़े दिनों के लिए अधिकारी बनना ।
ढाक के वही तीन पात—सर्वदा सामान्य स्थिति में रहनेवाला ।
ढील-ढाल करना—देर करना ।
ढूँढकर लड़ाई मोल लेना—जान-बूझकर झगड़ा खड़ा करना ।
ढेर कर देना—मार डालना ।
ढेर लगा देना—अधिक संख्या में इकट्ठा कर देना ।

त

तकदीर आजमाना—भाग्य की परीक्षा करना ।
तकदीर चमकना—भाग्य में उन्नति होना ।
तकदीर ठोंकना—भाग्य का दोष देना ।
तकदीर फूट जाना—किस्मत बिगड़ जाना ।
तकदीर बनना—किस्मत अच्छी होना ।
तकदीर सो जाना—बुरे समय का आना ।
तकाज़े का हुक्का भी नहीं पिया जाता—उधार ली हुई वस्तु बुरी होती है ।
तख्ता उलटना—भाग्य का विपरीत होना ।
तन कर चलना—गर्व से चलना ।
तन जाना—परस्पर वैमनस्य उपस्थित होना ।
तपस्या निष्फल होना—मेहनत बेकार होना ।
तवेले की बला बन्दर के सिर पर—किसी का अपराध दूसरे के सिर पर ठोंकना ।
ताल ठोंकना—लड़ने भिड़ने के लिये तैयार होना ।
तालियाँ बजाना—कुनाम करना ।
तालू से जीभ न लगाना—बराबर बकते रहना ।
ताव खाना—क्रुद्ध होना ।
तिनका भी न रहना—कुछ भी शेष न बच जाना ।
तिनके की ओट में पहाड़—संसार में सब कुछ देखते हुए भी मनुष्य अन्धा बना रहता है ।
तिल धरने की जगह न होना—बड़ी भीड़-भाड़ होना ।
तिलांजलि देना—सब संबंध छोड़ देना ।
तीन-तेरह करना—इधर उधर करना ।
तीनों लोक दिखाई पड़ना—भयंकर स्थिति होना ।
तीर बन जाना—दौड़कर भाग जाना ।
तीसमारखाँ बन जाना—मिथ्या अभिमान दिखलाना ।
तुल जाना—तत्पर होना ।
तू डार-डार, मैं पात पात—चालाक व्यक्ति से बराबरी की चालाकी करना ।
तूती बोलना—प्रसिद्ध होना, विख्यात होना ।
तू-तू, मैं-मैं करना—गाली गुपाड़ा मचाना ।
तूफान खड़ा करना—उपद्रव मचाना ।
तेल चल चुकना—शक्ति पूरी हो जाना ।
तेवर बदल जाना—बेमुरौवत होना ।
तेवर बिगड़ना—क्रुद्ध होना ।
तोताचश्मी करना—बेमुरौवती दिखलाना ।
तोते की तरह आँखें फेरना—बेमुरौवत बन जाना ।
तोते की तरह पढ़ना—बिना अर्थ समझे पाठ याद करना ।
त्योरियों पर बल पड़ना—क्रुद्ध होना ।
त्योरी चढ़ाना—क्रोध करना ।
त्राहि त्राहि करना—सहायता के लिये पुकार करना ।
त्रिशंकु बन जाना—कहीं का भी न रह जाना ।

थ

थरथरी लगना—काँपने लगना ।
थर्रा जाना—डर जाना ।
थाली का बैंगन—किसी ओर न रहनेवाला ।
थाह मिलना—भेद का पता लगाना ।
थाह लगाना—अन्वेषण करना ।
थुड़ी थुड़ी करना—तिरस्कार करना ।
थूककर चाटना—अपनी प्रतिज्ञा से डिग जाना ।
थूक लगाकर छोड़ देना—नीचा दिखलाना ।
थू-थू करना—घृणा करना ।
थैली का मुँह खोलना—अंधाधुंध खर्च करना ।
थोथा होना—उदास होना ।

द

दंग रह जाना—घबड़ा जाना ।

दंड कमंडल उठाना–अपनी सामग्री उठाकर रवाना हो जाना ।
दक्षिण भुजा उठाना–सहायक बनना ।
दबक जाना–ठिठक जाना, छिप जाना ।
दबाव डालना–लाचार करना ।
दम उलटना–जी घबड़ाना, अन्तिम श्वास लेना ।
दम खाना (लेना)–सुस्ताना ।
दम खींचना–साँस रोकना ।
दम घोंट घोंटकर मारना–बड़ी दुर्दशा करके हत्या करना ।
दम घोंटना–गला दबाकर हत्या करना ।
दम चुराना–मुरदे के समान बन जाना ।
दम टूटना–थक जाना ।
दम तोड़ना–अन्तिम श्वास निकल जाना, मरना ।
दम देना–दिलासा देना, बड़ा प्रिय जानना ।
दम नाक तक आ जाना–व्यग्र हो जाना ।
दम निकलना–आफत में पड़ना, मरना ।
दम पर आ बनना–आफत में पड़ना ।
दम फूलना–साँस फूलना ।
दम मारने की फुरसत न मिलना–कार्य में बहुत व्यस्त रहना ।
दम में दम आना–जीवित रहना ।
दम लेना–आराम करना ।
दम साधना–साँस रोकना ।
दमड़ी की घोड़ी छः पसेरी दाना–हैसियत से ज्यादा खर्च ।
दर्जी की सुई कभी ताश में कभी टाट में–कामकाजी मनुष्य कभी बेकाम नही रहता ।
दर्पन में मुख देखना–अपने ऐब पर ध्यान देना ।
दर्यादिल बनना–उदारता दिखलाना ।
दलदल में फँसना–आफत में पड़ना ।
दाँत तले अँगुली दबाना–अचरज दिखलाना ।
दाँत तले तिनका दबाना–विनीत भाव दिखलाना ।
दाँतों में पसीना आ जाना–बहुत मेहनत करना ।
दाँव चुकाना–बदला लेना ।
दाँव चूकना–हाथ से मौका जाने देना ।
दायें-बायें करना–इधर-उधर छिपाना ।
दाल न गलना–विवश हो जाना, लाचार होना ।
दाल में काला होना–सन्देह होना ।
दाल रोटी से खुश–सामान्य रीति से जीवन निर्वाह ।
दाहिने आना–अनुकूल होना ।
दिन आना–अन्त समय आ जाना ।
दिन ईद औ रात शब्बेरात–सर्वदा आनन्द में बीतना ।
दिन काटना–कष्ट से जीवन बिताना ।
दिन दहाड़े–दिन में सबके जागते हुए ।
दिन दूना रात चौगुनी बढ़ना–अच्छी तरक्की होना ।
दिन फिर जाना–भाग्योदय होना ।
दिन भारी हो जाना–जीवन दुःखपूर्ण होना ।
दिमाग बिगड़ना–गर्व करना ।
दिमाग लड़ाना–बहुत सोचना ।
दिमाग सातवें आसमान में होना–बड़ा घमंड करना ।
दिया लेकर खोजना–इधर-उधर ढूंढना ।
दिल की लगी बुझाना–मानसिक कष्ट शान्त करना ।
दिल खिलना–प्रसन्न होना ।
दिल का मैला–कपटी मनुष्य ।
दिल खुलना–संकोच का हट जाना ।
दिल छीन लेना–प्रेमासक्त होना ।
दिल चुराना–मोहित करना ।
दिल फटना–घृणा होना ।
दिल की दिल में रहना–मन की मन रहना ।
दिल जमाना–किसी काम के करने में मन लगाना ।
दिल टूटना–निराश होना, हताश होना ।
दिल की दिल में रह जाना–अभिलाषा पूर्ण न होना ।
दिल दहलना–भय त्रस्त होना ।
दिल दुखाना–कष्ट पहुँचाना ।
दिल न मिलना–प्रेम न होना ।
दिल पक जाना–अत्यन्त पीड़ित होना ।
दिल बढ़ाना–उत्साह बढ़ाना ।
दिल पसीजना–दयायुक्त होना ।
दिल फीका हो जाना–मन हट जाना ।
दिल मिलाना–प्रेम करना ।
दिल में गड़ जाना–अच्छा लगना ।
दिल में चुभना–चित्त को बुरा लगना ।
दिल में रखना–गुप्त रखना, प्रिय जानना ।
दिल से दिल की राहत होना–घनिष्ठ प्रेम होना ।
दिल से करना–मन लगाकर कोई काम करना ।
दीपक में बत्ती पड़ना–सन्ध्या होना ।
दुकान बढ़ाना–दुकान बन्द करना ।
दुखड़ा रोना–अपना दुःख दूसरे को सुनाना ।
दुनिया की हवा लगना–संसार के प्रपंचों में पड़ना ।
दुम दबाकर भाग जाना–तेजी के साथ भाग जाना ।
दुपट्टा तानकर सोना–निश्चिन्त रहना ।
दुह लेना–धन का अपहरण करना ।
दुहाई देना–न्याय की प्रार्थना करना ।
दूज का चाँद–जो कभी नजर पड़ जावे ।
दूध का दूध, पानी का पानी–सच्चा न्याय होना ।
दूध की नदियाँ बहाना–धन का वैभव दिखलाना ।
दूध के दाँत न टूटना–बाल्यावस्था, अनुभवहीनता ।
दून की लेना–शेखी करना ।
दूर की बात–बुद्धिमानी की बातचीत ।
दूर की सोचना–भविष्य की बातों पर कल्पना करना ।
दूर रहना–अलग रहना ।
दूसरा रंग न चढ़ना–स्थिर रहना, बातें न बदलना ।
दूसरे का मुंह देखना–दूसरे से मदद चाहना ।
देख-भाल कर पाँव उठाना–सावधानी से काम करना ।
देखते रह जाना–चकित होना ।
देते ही बनना–लाचार होकर देना ।
देना थोड़ा, दिलासा बहुत–अर्थ स्पष्ट है ।
दो कौड़ी का हो जाना–अपमानित होना ।
दो-दो बातें करना–थोड़ी सी बातचीत करना ।
दो-दो बातों को तरसना–अति दुर्दशा में होना ।
दो नाव पर पैर रखना–दो पक्षों का समर्थन करना ।
दोनों तरह से मौत–हर तरह से आपत्ति होना ।
दोनों हाथों में लड्डू होना–सब तरह की मौज होना ।
दोस्ती में लेन-देन बैर का मूल–अर्थ स्पष्ट है
दृष्टि से गिरना–मान-मर्यादा की हानि ।
द्वार खुल जाना–उपाय निकालना ।
द्वार झांकना–सहायता की प्रार्थना करना ।
द्विविधा में पड़ना–सन्देहयुक्त होना ।

ध

धक् से (कलेजा) होना–यकायक घबड़ा उठना ।
धक्का देना–तिरस्कार करना ।
धक्का खाते फिरना–दुर्दशा होना ।
धक्का लगना–नुकसान होना, कष्ट मिलना ।
धड़का खुलना–भयहीन होना ।
धता बताना–तिरस्कार करना, धूर्तता से टाल देना ।
धमा चौकड़ी करना–इकट्ठा होकर शोर-गुल मचाना ।
धर दबाना–हराना, जमीन पर पटक देना ।

धर पकड़ करना–गिरफ्तार करना।
धर लेना–पकड़ लेना ।
धरा रह जाना–व्यर्थ होना ।
धर्म निभाना–अपने कर्तव्य का पालन करना ।
धांधली मचाना–बेकार का झंझट करना ।
धाक देना–फँसा देना ।
धाक बाँधना–प्रभाव होना ।
धार चढ़ाना–शस्त्र आदि की धार तेज करना ।
धारो धार रोना–बहुत आँसू बहाते हुए रोना ।
धींगा धींगी करना–व्यर्थ का झगड़ा करना ।
धुकधुकी बंधना–डर जाना ।
धुन का पक्का–अपने सिद्धान्त का पक्का ।
धुन बाँधना–चित्त लगाना ।
धुन सवार होना–किसी विषय के लिये पीछे दौड़ना ।
धुर्रे उड़ाना–लजाना, टुकड़े-टेकड़े कर देना ।
धूनी रमाना–किसी जगह गड़कर बैठना ।
धूल उड़ना–चेहरा फीका होना, रौनक जाती रहना ।
धूल डालना–छिपा देना ।
धूल फाँकना–बेकारी में घूमना ।
धूल में मिल जाना–नष्ट होना ।
धूल में मिलाना–नष्ट कर देना ।
धोखे की टट्टी–भ्रम में डालनेवाला पदार्थ ।
धोती ढीली होना–डर जाना ।
धो देना–मिटा देना ।
धोये सौ बार के काजर होय न सेत–नीच मनुष्य की नीचता कभी नहीं जाती ।
ध्यान से उतरना–भूल जाना ।

न

नंगे बड़े परमेश्वर से–नीच मनुष्य से सब लोग डरते हैं ।
न इधर के रहे न उधर के रहे–निराश्रय होना ।
नकेल डालना–वश में करना ।
नकेल हाथ में होना–वश में होना ।
नक्कू बनना–बदनाम होना ।
नख-सिख वर्णन करना–आद्योपान्त वर्णन करना ।
नजर लगना–कुदृष्टि का प्रभाव पड़ना ।
नटखटी करना–धृष्टता दिखलाना ।
नजर में जँचना–पसन्द आना ।
नजर पर चढ़ना–प्रिय बनना ।
नजरों से गिरना–इज्जत बिगड़ना ।
नजला गिरना–बुरा प्रभाव होना ।
नदी नाव संयोग–संयोग से भेंट होना ।
नथूने फुलाना–क्रोध दिखलाना ।
नपी-तुली कहना–ठीक ठीक बात कहना ।
नमक खाना–नौकरी कर लेना ।
नमक मिर्च लगाना–बढ़ाकर बातें कहना ।
नमक छिड़कना (कटे पर)–बड़ी तकलीफ देना ।
नमस्कार करना–त्याग देना, छोड़ना ।
नया गुल खिलना–विलक्षण घटना होना ।
नरक भोगना–दुर्गति होना ।
नसनस में–सम्पूर्ण शरीर में ।
नसीब न होना–प्राप्त न होना ।
नसीब लड़ना–भाग्य का अनुकूल होना ।
नाक कटना–बदनाम होना ।
नाक कटी पर घी तो चाटा–बेहया का चिह्न होना ।
नाक का बाल होना–अति प्रिय होना ।
नाक न होना–निर्लज्ज होना ।
नाक पर हाथ धरना–स्वीकार करना ।
नाक भौं सिकोड़ना–नाखुश होना ।
नाक में दम करना–बहुत परेशान करना ।
नाक रखना–प्रतिष्ठा स्थापित करना ।
नाक रगड़ना–अधीन होना ।
नाक रह जाना–प्रतिष्ठा स्थापित रहना ।
नाकों चना चबाना–बहुत परेशान करना ।
नाच नचाना–दिक करना, परेशान करना ।
नादिरशाही होना–बड़ा अत्याचार होना ।
नानी मर जाना–शर्मिन्दा होना ।
नानी याद आना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना ।
नाम कर जाना–प्रसिद्ध हो जाना ।
नाम का–केवल कहने मात्र का ।
नाम कमाना–यश प्राप्त करना ।
नाम खोना–कलंकित होना ।
नाम चमकना–यश का फैलना ।
नाम चलना–प्रसिद्ध होना ।
नाम डुबोना–यश खो बैठना ।
नाम निकल जाना–कलंकित होना ।
नाम बिकना–अपराधी बनाना ।
नाम लगाना–अपराधी बनाना ।
नाम लेना–याद आना ।
नाम लेना छोड़ देना–बिलकुल भूल जाना ।
निगाह चढ़ना–रुचिकर होना, पसन्द आना ।
निगाहें मोटी करना–अनबन हो जाना ।
निगाहों में जँचना–पसन्द आना ।
नियत डावाँडोल होना (बदलना)–लालच में पड़ना ।
नींद हराम होना–निद्रा न आना ।
नींव डालना–किसी काम को आरंभ करना ।
नीचा दिखाना–लज्जित करना ।
नुकताचीनी करना–ऐब ढूंढना ।
नोंक झोंक करना–छेड़छाड़ करना ।
नौका डूबना–काम बिगड़ जाना ।
नौ दिन चले अढ़ाई कोस–बड़ी सुस्ती से काम करना ।
नौ दो ग्यारह होना–भाग जाना ।
नौबत बजना–आनन्द के बाजे बजना ।

प

पंजा मारना–झपटना ।
पंजे में करना–वश में करना ।
पंजे से निकलना–स्वाधीन होना ।
पक्का पोढ़ा करना–निश्चय करना ।
पगड़ी उछालना–बेइज्जत करना ।
पगड़ी उतारना–बेइज्जत करना ।
पगड़ी की लाज गँवाना–इज्जत खो बैठना ।
पगड़ी की लाज रखना–मान-मर्यादा बनाये रखना ।
पगड़ी बदलना–आपस में दोस्ती करना ।
पगड़ी बाँधना–स्थानापन्न होना ।
पगड़ी सँभालना–इज्जत बचाना ।
पचड़ा लेकर बठना–झगड़ा शुरू करना ।
पट पड़ना–बन्द हो जाना ।
पट सकना–निभ जाना ।
पट हो जाना–नष्ट हो जाना ।
पटरा हो जाना–बहुत हानि पहुँचना ।
पट्टी में आना–किसी के बहकाने में आना ।
पट्टी पढ़ाना–बहकाना ।
पढ़े तो हैं, पर गुने नहीं–व्यावहारिक ज्ञान न होना ।
पत गँवाना–मान-मर्यादा का नाश होना ।
पत्ता खड़कना–कुछ आहट पा लेना ।
पत रख ना–लाज रखना ।
पत्थर का कलेजा करना–दृढ़ होना, निठुर हो जाना ।
पत्थर की छाती करना–वीर बनना ।
पत्थर की लकीर बन जाना–दृढ़ होना ।
पत्थर ढोना–बड़े परिश्रम का कार्य करना ।
पत्थर तले हाथ आना–परवश हो जाना ।
पत्थर पड़ना–आपत्ति आना ।
पत्थर पसीजना–कठोर हृदय मनुष्य में दया होना ।
पत्थर पानी होना–कठोर हृदय का दयालु होना ।
पत्थर से पारस होना–निर्धन से धनी बनना ।
पदानुसरण करना–पीछे-पीछे चलना ।
पर न मार सकना–पहुँच न होना ।
पर लगना–चालाक होना ।
परछाई न पड़ना–प्रभाव न होना ।
परछाई से भागना–अति घृणा करना ।
परदा डालना–किसी बात को गुप्त रखना ।

परदा फाश होना—भेद खुलना
परमात्मा के नाम पर देना—धर्मार्थ दान करना।
परलोक दिखाना—हत्या करना।
परलोक बिगाड़ना—नीच कार्य करना।
परलोक यात्रा—मरण, मृत्यु।
पराई आग में कूदना—दूसरे के कष्ट में पड़ना।
पराधीन सपनहुँ सुख नाहीं—पराधीन मनुष्य को कभी सुख नहीं मिलता।
पराये हाथों पड़ना—विवश हो जाना।
पलस्तर ढीला होना—अति शिथिल होना।
पल्ला छुड़ाना—छुटकारा पाना।
पल्ला पसारना—किसी से कुछ माँगना।
पल्ला भारी होना—किसी दल का बलवान् होना।
पर्वत पर कुवाँ खोदना—वृथा परिश्रम करना।
पर्वत से राई करना—बड़े से छोटा बना देना।
पलक लगना—नींद लगना।
पसीना बहाना—बड़ी मेहनत करना।
पसीना-पसीना हो जाना—बहुत घबड़ा जाना।
पहले आत्मा, पीछे परमात्मा—अपना स्वार्थ पहले देखकर पीछे दूसरे के हित का विचार करना।
पहाड़ टूटना—आफत आना।
पाँव पूजना—इज्जत करना।
पानी उतर जाना—आबरू जाना, अप्रतिष्ठित होना।
पानी का बुलबुला—शीघ्र नष्ट हो जानेवाली वस्तु।
पानी की तरह बहाना—बड़ी फजूलखर्ची करना।
पानी के मोल बिकना—बहुत सस्ते दाम पर बिकना।
पानी गँवाना—बेइज्जत होना।
पानी भरना—दास बन जाना।
पानी पानी करना—बहुत लजा देना।
पानी पानी होना—लज्जित हो जाना।
पानी फेरना—निर्मूल करना, मिटा देना।
पानी में आग लगाना—झगड़ा खड़ा करना।
पानी पानी हो जाना—दयार्द्र होना, सहज होना।
पाप का घड़ा भर जाना—बहुत ज्यादा पापों का इकट्ठा होना।
पाप काटना—कलह दूर करना।
पाप मोल लेना—जान-बूझकर विपत्ति में पड़ना।

पापड़ बेलना—बड़ी विपत्ति सहन करना।
पार उतार देना—काम पूरा करना।
पार पाना—भेद का पता लग जाना, जीतना।
पार लगाना—पूरा कर देना।
पारस हाथ लगना—अलभ्य वस्तु प्राप्त होना।
पाला पड़ना—सम्पर्क होना, वास्ता होना।
पासा फेंकना—किसी प्रकार का उद्योग लगाना।
पिंड छूटना—पीछा छूट जाना।
पित्ता मारना—मन मारना, क्रोध हटाना।
पीछा छुड़ाना—छुटकारा पाना।
पीछे पड़ना—परेशान करना।
पीठ ठोंकना—साहस बँधाना।
पीठ दिखाना—युद्ध में से भाग जाना।
पीठ पर—किसी माता की एक के बाद दूसरी सन्तान को कहा जाता है।
पीठ पर हाथ फेरना—शाबाशी देना।
पीठ पर हाथ होना—सहायक बनना।
पीठ पीछे—किसी की अनुपस्थिति में।
पीठ फेरकर बैठना—असन्तुष्ट होना।
पीर बबर्ची—वह मनुष्य जिससे सभी प्रकार का काम लिया जाता है।
पीस डालना—नष्ट करना, बड़ा कष्ट देना।
पुकार सुनना—विनती सुनना।
पुतलियों का तमाशा दिखाना—छल करना।
पुल बाँधना (बातों का)—बातों को बढ़ाकर कहना।
पूछ होना—आदर होना।
पूछते पूछते दिल्ली चले जाना—सर्वत्र जाने का मार्ग है।
पूत के पाँव पालन में पहचाने जाते हैं—बाल्यावस्था में ही लड़कों के भविष्य का अनुमान होता है।
पूत अपनो सबको प्यारो—अपनी सन्तान सबको प्यारी लगती है।
पूर्वापर सोचना—आदि अन्त का विचार करना।
पेंच खोलना—धोखा देना।
पेंच घुमाना—चित फेरना।
पेंच में पड़ना—विपत्ति में फँसना।
पेट काटना—पूरा भोजन न देना।
पेट का पानी न हिलना—भेद को गुप्त रखना।
पेट की आग बुझाना—भोजन करना।
पेट की मार देना—भूखों मारना।
पेट जो चाहे सो करावे—जीविका के लिये अनेक प्रकार के भले-बुरे काम किये जाते हैं।
पेट पालना—जीवन का निर्वाह।
पेट पालना कुत्ता भी जानता है—स्वार्थी पुरुष अपना मतलब साध लेता है।
पेट पीटना—भूख के मारे शोर गुल मचाना।
पेट में चूहे दौड़ना—भूख लगना।
पेट पीठ एक हो जाना—अति दुर्बल होना।
पेट में घुसना—रहस्य का पता लगाना।
पेट में पैठना—भेद का पता लगाना।
पेट में बात न पचना—रहस्य को छिपाकर न रखना।
पेट से होना—गर्भवती होना।
पैंतरे बदलना—छल करना।
पैर आगे न पड़ना—साहस कम होना।
पैर उखड़ जाना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
पैर उखड़ना—हारकर भाग जाना।
पैर जमना—अधिकार करना।
पैर के नीचे से निकल जाना—अति व्यग्र होना।
पैसे के तीन अधले भुनाना—बड़ी कंजूसी दिखलाना।
पोथे के पोथे रँगना—बहुत-सी पुस्तक लिख डालना।
पोल खोलना—गुप्त बातों को प्रकाशित करना।
पौ फटना—प्रातःकाल होना।
पौ बारह होना—अच्छा मुनाफा होना।
पौने सोलह आना ठीक—प्रायः दुरुस्त।
प्याज के छिलके उतारना—भेद खोलना।
प्रकाश डालना—स्पष्ट करना।
प्रथम ग्रास में मक्खी पड़ना—आरंभ में ही विघ्न होना।
प्रभुता पाय काहि मद नाहीं—अधिकारी बनने पर सबको अभिमान हो जाता है।
प्रशंसा करते मुँह सूखना—बड़ी शुश्रूषा करना।
प्राण खाना—बड़ा परेशान करना।
प्राण दंड देना—फाँसी देना।
प्राण दान देना—जान बचाना।
प्राण निकलना—मृत्यु को प्राप्त करना।
प्राणपखेरू उड़ना—मृत्यु को प्राप्त होना।
प्राण सूख जाना—बहुत डर जाना।
प्राण हरना—जान मार डालना।
प्राणों पर बीतना—आफ़त में पड़ना।
प्राणों में प्राण आना—मन सावधान होना।
प्रेम में नेम कहाँ—प्रेम में कोई नियम नहीं रहता।

फ

फंदे में पड़ना—छला जाना।
फटा मन, फटा दूध नहीं मिलता—अर्थ स्पष्ट है।

फटे पड़ना–अभिमान करना।
फड़क उठना–प्रसन्न होना।
फब्तियाँ उड़ाना–हँसी दिल्लगी करना।
फल पाना–बदला मिलना।
फलना, फूलना–मनोरथ सिद्ध होना।
फाँड़ा बाँधना–तैयार हो जाना।
फाँसी लगाना–बड़ा कष्ट होना।
फाके पड़ना–भूखों मरना।
फाग खेलना–आनन्द मचाना।
फाड़ खाने को दौड़ना–भयंकर क्रोध दिखलाना।
फिर जाना–साथ छोड़ देना।
फूंक डालना–बरबाद करना।
फूंक से पहाड़ उड़ाना–थोड़ी-सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना।
फूट डालना–शत्रुता बढ़ाना।
फूट-फूट कर रोना–बहुत विलाप करना।
फूटी आँख न सुहाना–अच्छा न लगना।
फूल कर कुप्पा हो जाना–बहुत खुश होना।
फूल कर बैठना–अपने बड़े अभिमान में रहना।
फूल जाना–बहुत खुश होना।
फूल टहनी में ही अच्छा लगता है–सभी वस्तु अपनी जगह पर ही अच्छी लगती हैं।
फूल बोना–भलाई करना।
फूल सूंघ कर रहना–अनशन करना, कुछ न खाना।
फूला न समाता–बहुत खुश होना।
फूले अंग न समाना–अति प्रसन्न होना।
फेरे में आ जाना–धोखे में पड़ जाना।
फेरे पड़ना–ब्याह होना।

ब

बंटाधार करना–नाश करना।
बंद बंद अलग करना–टुकड़े-टुकड़े करना।
बंद बंद जकड़ जाना–सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा होना।
बंदर घुड़की–झूठा भय दिखलाना।
बंदर के हाथ आइना–जो जिस वस्तु का गुण नहीं जानता वह उसको देना।
बकरे की माँ कबतक खैर मनावेगी–जिसका नाश होना हो वह नहीं बच सकता।
बगलें बजाना–खुशी दिखलाना।
बगुला भगत होना–पाखंड दिखलाना।
बचकर खेलना–सचेत होकर काम करना।
बछिया का ताऊ–परम मूर्ख व्यक्ति।
बटन खोल देना–उदार बन जाना।
बट्टा लगना–बेइज्जत होना।
बड़ी बोल बोलना–शेखी हांकना।
बड़ी बड़ी बातें करना–शेखी दिखलाना।
बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है–बलवान् सदा निर्बल को कष्ट देते हैं।
बड़े घर की हवा खाना–बन्दीगृह में जाना।
बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्लाह–छोटे का बड़े से गुण आदि में बढ़कर होना।
बड़े बोल का सिर नीचा–बहुत बड़े अभिमानी का अवश्य नाश होता है।
बढ़-बढ़कर बात करना–गर्व दिखलाना।
बतीसी गिनना–सब दाँतों को टूट जाना।
बने रहना–जीवित रहना।
बन गये तो लालाजी, बिगड़ गये तो बुद्धू–काम बन जाने पर सभी वाहवाही देते हैं और बिगड़ जाने पर मूर्ख बनाते हैं।
बनिये की सलाम बेगरज नहीं होती–बनिये बड़े स्वार्थी होते हैं।
बराबर करना–अन्त करना।
बहती गंगा में हाथ धोना–सुबरी हालत में अच्छे काम करना।
बहार लूटना–आनन्द लेना।
बहुत से जोगी मठ उजाड़–काम करनेवाले अनेक परन्तु उसका फल कुछ न होना।
बाँबी में हाथ तू डाल, मन्त्र मैं पढ़ूँ–किसी दूसरे को आपत्ति में डालना और स्वयं बचे रहना।
बाँयें हाथ का खेल–अति सहज कार्य।
बाँसों उछलना–बहुत प्रसन्न होना।
बाँह पकड़ना–आश्रय देना।
बाई पच जाना–शान्त होना।
बाग उठाना–घोड़े को हाँकना।
बाग ढीली करना–किसी विषय में शिथिलता दिखलाना।
बाजार गर्म होना–किसी पदार्थ की अधिकता।
बाजार मन्दा पड़ना–बेंचा-बिक्री का कम होना।
बाजी मारना–कार्य की सिद्धि होना।
बाढ़ पर चढ़ना–बहकाने में आ जाना।
बात काटना–बीच में बोल उठना।
बात का पूरा होना–दृढ़ संकल्प होना।
बात का बतंगड़ करना–थोड़ी-सी बात को बढ़ा देना।
बात की बात में–तुरत, फौरन।
बात खुल जाना–भेद मालूम हो जाना।
बात टालना–ठीक जवाब न देना।
बात जाना–इज्जत खोना।
बात न पूछना–सम्मान न करना।
बात तक न पूछना–किसी की इज्जत न करना।
बात न पूछना–उपेक्षा करना।
बात पकड़ना–किसी के कथन में दोष निकालना।
बात पी जाना–बात सुनकर चुप रह जाना।
बात पक्की होना–निश्चय होना।
बात बढ़ाना–झगड़ा बढ़ाना।
बात बनाना–झूठ बोलना।
बात भला न भैया सबसे बड़ा रुपैया–धन की बड़ी महिमा है।
बात में आना–किसी के कहने को मान लेना, धोखे में पड़ना।
बात रख लेना–इज्जत बचाना।
बातों में उड़ाना–टालमटोल करना।
बातों पर न जाना–विश्वास न करना।
बाधवाई फिरना–इधर-उधर मारे-मारे फिरना।
बानगी दिखाना–नमूना दिखलाना।
बाप-दादों का नाम डुबाना–कुल की मर्यादा को नष्ट करना।
बाप ने मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज–झूठे शेखी लेनेवाला मनुष्य।
बारह पत्थर बाहर करना–शहर बाहर निकाल देना।
बाल की खाल निकालना–बड़ी छानबीन करना।
बाल बाँका न होना–किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचना।
बाल-बाल बचना–बेलाग बच जाना।
बाल-बाल मोती पिरोना–बड़ी सजधज करना।
बाल सफेद होना–वृद्ध होना।
बालू की भीत–शीघ्र नष्ट होनेवाला पदार्थ।
बासी कढ़ी में उबाल आना–वृद्धावस्था में जवानी की उमंग।
बिगड़ जाना–धनहीन हो जाना।
बिगड़ बैठना–अप्रसन्न होना।
बिजली गिरना–बड़ी आपत्ति आ पड़ना।
बिलख बिलख कर रोना–बड़ा विलाप करना।
बिल्ली से दूध की रखवाली करना–जानते हुए आपत्ति में डालना।
बीच-बचाव करना–झगड़ा तय करना।
बीच में पड़ना–हस्तक्षेप करना।
बीड़ा उठाना–किसी बात को करने का दृढ़ निश्चय करना।
बुत बन रहना–चुपचाप बैठे रहना।
बुत्ते देना–धोखा देना।
बूढ़े तोते को पढ़ाना–बूढ़े को शिक्षा देना।
बेगार टालना–चित्त लगाकर काम न करना।

बेड़ा पार करना–कार्य समाप्त करना।
बेतुकी हाँकना–व्यर्थ की बातें करना।
बेदाग बचना–किसी तरह का नुकसान न होना।
बेपेंदी का लोटा–बिना किसी सिद्धान्त का मनुष्य।
बेवक्त की शहनाई बजाना–बेमौके की बातें करना।
बे सिर-पैर की हाँकना–बे मतलब की बातें करना।
बैठे बैठाये–बिला किसी वजह के।
बोझ उठाना–किसी काम की जवाबदेही अपने ऊपर लेना।
बोझ हलका होना–चिन्ता कम होना।
बोल जाना–टूट जाना, मर जाना।
बोलती बन्द करना–चुप कर देना।
बोलबाला होना–इज्जत बढ़ना।

भ

भंग खाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
भंडा फोड़ना–भेद खोलना।
भँवर में नाव फँसना–विपत्ति में पड़ जाना।
भड़क उठना–क्रुद्ध होना।
भनक पड़ना–सुन पड़ना।
भन्ना उठना–उत्तेजित होना।
भबकी देना–धमकाना।
भभूत रमाना–संन्यासी बन जाना।
भर पाना–मिल जाना, प्राप्त करना, बदला मिल जाना।
भरम खुलना–रहस्य का प्रकट होना।
भरम गँवाना–मान-मर्यादा खोना।
भरी थाली में लात मारना–मिली हुई संपत्ति को त्याग देना।
भरे को भरना–धनवान् को धन देना।
भरें में आना–किसी के कपट में पड़ जाना।
भाग्य का पलटा खाना–भाग्य में परिवर्तन होना।
भाग्य खुलना–अच्छे समय का आना।
भाग्य चमकना–भाग्योदय होना।
भाड़ में जाना–नाश होना।
भाड़ झोंकना–नीच कार्य करना।
भाड़े का टट्टू–पैसा लेकर काम करनेवाला।
भाँप लेना–जान लेना।
भारी बन के बैठना–बड़ा अभिमान करना।
भीगी बिल्ली बन जाना–डर से दब जाना।
भीतर ही भीतर–चित्त में।
भीष्म प्रतिज्ञा करना–कठिन प्रतिज्ञा ठान लेना।
भुजा उठाना–प्रतिज्ञा करना।
भुजा टूटना–भाई की मृत्यु।
भुरकुस निकालना–खब मारपीट करना।
भूत चढ़ना–क्रोध आना।
भूत झाड़ना–अभिमान हटाना।
भूलभुलैया में पड़ना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
भेड़ियाधसान मचना–बिना सोचे-विचारे पीछा करना।
भैंस के आगे बीन बजावे भैंस लगी पगुराय–मूर्ख के आगे बुद्धिमानी की बातें कहना निष्फल होता है।
भोर का मुर्गा बोला, पंछी मुँह खोला–प्रातःकाल हुआ और पेट भरने की चिन्ता लगी।
भौंर न छांड़े केतकी तीखे कंटक जान–अनेक आपत्तियों के होने पर भी प्रेमियों का प्रेम नहीं हटता।
भौंहें चढ़ाना–क्रोध करना।

म

मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते–अर्थ स्पष्ट है।
मक्खियाँ भिनकना–घृणित बने रहना।
मक्खी मारना–बेकार बैठे रहना।
मग्ज चाटना–बकवाद किये जाना।
मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाता है–स्वभाव से ही जाति गुण प्राप्त होता है।
मजा चखाना–बदला देना, सजा देना।
मतलब के लिए गधे को बाप बनाना–अपना मतलब सिद्ध करने के लिये नीच का भी मान करना।
मतलब गाँठना–स्वार्थ सिद्धि।
मन के लड्डू खाना–मन की तरंगें करना।
मन चंगा तो कठौती में गंगा–यदि मन शुद्ध है तो किसी तीर्थ में जाने की आवश्यकता नहीं।
मन भावे मूड़ डुलावे–इच्छा होने पर भी अस्वीकार करना।
मन मारे बैठना–उदास होना।
मनमानी घरजानी करना–जो कुछ इच्छा हो उसको करना।
मन रखना–सन्तोष देना।
मन रीझना–चित्त प्रसन्न होना।
मरता क्या न करता–मृत्यु की आशंका होने पर मनुष्य सभी काम करता है।
मरने तक की फुरसत न मिलना–काम में बड़े लीन रहना।
मरने पर वैद्य बुलाना–काम खराब हो जाने पर सुधारने का प्रयत्न करना।
मर मिटना–किसी काम के करने में बड़ा कष्ट उठाना।
मरम्मत करना–मारना।
मलमलकर पैसा देना–बड़ी कृपणता दिखलाना।
मलयागिरि की भीलनी चन्दन देत जराय–जहाँ पर कोई वस्तु बहुतायत से होती है वहाँ उसकी कदर नहीं होती।
मल्हार गाना–आनन्द मचाना।
मसक जाना–जीर्ण वस्त्र का दबकर फट जाना।
महाभारत होना–लड़ाई-झगड़ा होना।
माँग उजड़ना–विधवा होना।
माँगी मौत भी न मिलना–अभिलषित वस्तु का प्राप्त न होना।
माँगे रहड़ दे बहेड़ा–बुद्धि विपरीत होना।
माता का दूध लजाना–डरपोक होना।
माथा खाली करना–बहुत बकवाद करना।
माथा पटकना–व्यर्थ का प्रयत्न करना।
मान न मान मैं तेरा मेहमान–इच्छा के विरुद्ध होना।
मानो तो देव नहीं पत्थर–विश्वास ही फलदायक होता है।
मार के आगे भूत भागे–मार से सभी डरते हैं।
मारते के अगाड़ी और भागते के पिछाड़ी–बड़ा कायर मनुष्य।
मार-मारकर वैद्य बनाना–जबरन् योग्य बनाने का प्रयत्न करना।
मारा जाना–बड़ी तकलीफ पहुँचाना।
माल उड़ाना–धन का अपव्यय करना।
माल मुफ्त दिल बेरहम–दूसरे का धन उड़ाने में संकोच नहीं रहता।
मिजाज न मिलना–बड़ा अभिमान करना।
मिट्टी खराब करना–बेइज्जत करना।
मिट्टी देना–शव को गाड़ना।
मिट्टी पलीद करना–दुर्दशा करना।
मिट्टी में मिल जाना–नष्ट हो जाना।
मिट्टी हो जाना–नष्ट होना।
मियाँ की जूती मियाँ का सर–किसी की वस्तु से उसका नुकसान होना।
मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी–दोनों पक्ष का यदि अभिमत है तो झगड़ा काहे का।
मिरचे लगना–बुरा लगना।
मीठा दर्द–हलकी पीड़ा।
मीठा मीठा गप्प कड़वा कड़वा थू–अच्छी वस्तु रख लेना और खराब को फेंक देना।
मीठी मार मारना–भला बनाकर बुराई करना।
मीठी छूरी–मित्र बनकर हानि पहुँचानेवाला।
मुँह काला होना–कलंकित होना।

मुंह की खाना–कठोर उत्तर मिलना।
मुंह खराब करना–गाली बकना।
मुंह चढ़ाना–ढीठ बनाना।
मुंह चाटना–खुशामद करना।
मुंह ताकना–कुछ पाने की अभिलाषा करना।
मुंह देख की मोहब्बत–झूठा प्रेम।
मुंह पकड़ना–बोलने न देना।
मुंह पर हवाई उड़ना–चेहरा फीका पड़ जाना।
मुंहमांगी मौत भी न मिलना–चाही हुई वस्तु का प्राप्त न होना।
मुंह मीठा करना–मिठाई खिलाना।
मुंह में पानी भर आना–लालच उत्पन्न होना।
मुट्ठी गरम करना–घूस देना।
मुट्ठी में आना–वशीभूत होना।
मुहर्रमी सूरत–रोनी सूरत।
मूछों पर ताव देना–शेखी दिखलाना।
मृदंग बजाना–आनन्द करना।
मेढ़े लड़ाना–झगड़ा खड़ा करना।
मैदान मारना–विजय प्राप्त करना।
मोची का मोची रह जाना–मूर्ख का मूर्ख बने रहना।
मोम हो जाना–मृदु होना।
मोरचा मारना–विजय प्राप्त करना।
मौत के दिन पूरे करना–दुःख से जिन्दगी बिताना।
म्याऊँ का ठौर कौन पकड़े–भय के स्थान में कौन जावे।
म्यान के बाहर हो जाना–क्रोधवश होना।

य

यथा नाम तथा गुण–जैसा नाम वैसा गुण।
यमपुर जाना–मृत्यु को प्राप्त होना।
यमपुर भेजना–मार डालना।
यज्ञ में आहुति देना–क्रोध भड़काना, अच्छे काम में लगना।
यज्ञ सफल होना–अच्छा काम पूरा होना।
युग बीत जाना–बहुत काल व्यतीत होना।
योग देना–सहायता करना।

र

रंग उड़ना–मुख फीका पड़ जाना।
रंग चढ़ना–नशे में चूर होना।
रंग जमना–प्रभाव होना।
रंग देखना–नतीजा देखना।
रंग भंग होना–मजा बिगड़ जाना।
रंग बांधना–प्रभाव दिखलाना।
रंग लाना–प्रभाव दिखलाना।
रकाब में पैर रखना–तैयार हो जाना।
रक्त की नदी बहाना–बड़ा युद्ध होना।
रग रग जानना–अच्छी तरह से पहिचानना।
रफू चक्कर होना–भाग जाना।
रसातल को पहुँचा देना–सर्वनाश करना।
रस्सी का साँप बनाना–बेमतलब की झंझट खड़ी करना।
रस्सी जल गई ऐंठन न गयी–नाश हो जाने पर भी हठ न गया।
रह रह करके–थोड़ी-थोड़ी देर बाद।
रहा-सहा–बचा हुआ।
राई का पर्वत करना–छोटी-सी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।
राई रत्ती से जानकारी–पूरी तरह से जानकारी।
रात दिन एक करना–निरन्तर परिश्रम करना।
राम कहानी कहना–अपना दुखड़ा रोना।
रामराज्य–सुखपूर्ण राज्य।
राम राम करके प्राण बचाना–बड़ी कठिनाई से जान बचाना।
राम राम जपना पराया माल अपना–देखने में सीधा हृदय का कुटिल होना।
राह ताकना–इन्तजारी करना।
राह पर लाना–सुधारना।
रुपया ठीकरी करना–फजूल खर्ची करना।
रुपया परखै बार बार, आदमी परख एकबार–मनुष्य एक ही बार जाँचा जाता है, रुपया कई बार परखा जाता है।
रोकड़ मिलाना–आय-व्यय का हिसाब करना।
रोज कुवाँ खोदना, रोज पानी पीना–रोज कमाना, रोज खाना।
रोजगार चमकना–रोजगार में लाभ होना।
रोटी तोड़ना–बिना मेहनत के जीविका चलाना।

ल

लंगड़ लड़ाना–झगड़ा खड़ा करना।
लंगर उठाना–जहाज को चालू करना।
लंगर डालना–हिम्मत हारना।
लंगोटिया यार–बाल्यावस्था का मित्र।
लंगोटी पर फाग खेलना–दरिद्रता में आनन्द मचाना।
लंगोटी बँधवा देना–दरिद्र कर देना।
लंबी-चौड़ी हांकना–शेखी हांकना।
लंबी तानना–सो जाना।
लकीर पीटना–समयचूकने पर वृथा उद्योग करना।
लकड़ी के बल बँदरिया नाचे–भय दिखला-कर काम कराना।
लकीर का फकीर होना–पुरानी बातों को ढोना।
लगाव रखना–संबंध रखना।
लगा लगाना–उपाय सोचना।
लगे हाथ करना–सिलसिले में कोई काम कर डालना।
लटके रहना–अनिश्चित अवस्था में रहना।
लपेट में आना–विपत्ति में फँस जाना।
लल्लो-चप्पो करना–विनती करना।
लहू के घूंट पीना–बड़ी आपत्ति सहन करना।
लहू चूसना–बहुत परेशान करना।
लहू पसीना एक करना–बड़ी मेहनत करना।
लहू लगाकर शहीदों में भरती–थोड़ा-सा काम कर नामवरी चाहना।
लहू सूख जाना–बड़ा भयभीत होना।
लाख का घर खाक होना–बड़ी संपत्ति का नाश होना।
लागडाँट करना–शत्रुता करना।
लात मारना–तिरस्कार करना।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते–नीच मनुष्य बिना मार खाये सीधा नहीं होता।
लाल झंडी दिखाना–काम में रुकावट डालना।
लासा लगाना–धोखे में फँसाना।
लीपापोती करना–ऐब छिपाने का प्रयत्न करना।
लुटिया डुबोना–काम बिगाड़ना।
लेने के देने पड़ना–लाभ के बदले हानि होना।
ले मरना–आफत में डालना।
लोटपोट हो जाना–अति प्रसन्न होना।
लोहा मानना–किसी के पराक्रम को स्वीकार करना।
लोहा लेना–युद्ध करना।
लोहे के चने चबाना–परिश्रम का काम करना।
लौ लगना–धुन लगना।

व

वकीलों के हाथ पराये जेब में–वकील लोग दूसरे से धन लेने का सर्वदा प्रयत्न करते हैं।
वचन तोड़ना–अपनी प्रतिज्ञा से हट जाना।
वज्र बहिरा–बिलकुल बहरा।
वसंत की खबर न होना–जानकार न होना।
वह गुड़ नहीं जो चींटी खाय–हम बड़े सचेत हैं, दूसरा हमको ठग नहीं सकता।
वहम की दवा लुकमान के पास नहीं है–सन्देह की कोई औषधि संसार में नहीं है।

वार देना–न्योछावर करना।
वाहवाही होना–प्रशंसा होना।
विभीषण वनना–घर का भेदिया होना।
विष उगलना–विपरीत बोलना।
विष के घूंट पीना–कटु वचन सहन करना।
वीरगति प्राप्त करना–वीरता से लड़कर मरना।
वेदवाक्य समझना–प्रामाणिक मानना।
वैकुंठवास–मृत्यु।

श

शरीर में आग लगना–क्रोध उत्पन्न होना।
शरीर में बिजली दौड़ना–उत्तेजित होना।
शस्त्र में ढीले होना–साहस टूट जाना।
शह देना–उभाड़ना, भड़काना।
शहद लगाकर चाटना–बेकाम समझकर रख छोड़ना।
शान दिखाना–गर्व करना।
शिकंजे में पड़ना–आफत में पड़ना।
शिकार हाथ लगना–असामी मिल जाना।
शिकार होना–फन्दे में पड़ना।
शीश में उतारना–वश में करना।
शखी वघारना–अभिमान दिखलाना।
शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाना–विना पक्षपात का न्याय करना।
शेर के मुँह में हाथ डालना–साहस का काम करना।
शैतान के कान काटना–भेद का पता लगाना।
श्रीगणेश करना–किसी कार्य का आरंभ करना।

ष

षड्यंत्र रचना–छिपकर किसी भयंकर कार्य को करने का उद्योग करना।
षट्‌राग में पड़ना–आपत्ति में पड़ना।
षड्रस भोजन करना–आनन्द से समय विताना।
षोडश श्रृंगार करना–खूब सिंगार-पटार करना।

स

संकल्प-विकल्प करना–सोच-विचार में पड़ना।
सइयाँ भये कोतवाल अब भय काहे का–किसी को उच्च पद मिल जावे तो उसके आश्रित निश्चिन्त रहते हैं।
सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाव–अर्थ स्पष्ट है।
सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुंह काला–सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।
सठिया जाना–वुद्धि भ्रष्ट होना।
सत्तू बाँधकर पीछा करना–बुरी तरह से परेशान करना।
सदा कागज की नाव नहीं वहती–छल सर्वदा फलीभूत नहीं होता।
सदा की नींद सोना–मृत्यु को प्राप्त करना।
सनक सवार होना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सन्नाटे में आ जाना–मूक होना, डर जाना।
सफेद झूठ–ऐसा झूठ जिसमें सचाई का लेशमात्र भी न हो।
सफाई देना–निर्दोष सिद्ध करने का उद्योग।
सब गुड़ गोबर हो जाना–किया-कराया काम विगड़ जाना।
सब धान वाइस पसेरी–भले बुरे को समान जानना।
सब रामायण सुन गये सीता किसका नाम–सब समझकर भी अनजान बनना।
सब्ज वाग दिखलाना–झूठी आशा दिखलाना।
सब शकल लंगूर की एक दुम की कसर है–बदसूरत मनुष्य के लिये प्रयोग होता है।
सर करना–जीतना, विजय पाना।
साँप को दूध पिलाना–दुष्ट के साथ उपकार करना।
साँप छछूंदर की गति होना–द्विविधा में पड़ना।
साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे–काम बन जाय और कोई हानि भी न हो।
साँस तक न लेना–चुप रह जाना।
साँस पूरे होना–मृत्यु होना।
साई देना–किसी काम के लिये कुछ पेशगी देना।
साढ़े साती आना–अभाग्य का समय आना।
सात-पाँच करना–छल-कपट करना।
साये से भागना–नफरत करना।
सारे जमाने की बातें सुनना–दुनिया में बुरा कहा जाना।
सिंहासन डिगाना–भयभीत होना।
सिक्का जमना–प्रभाव फैलना।
सिक्का जमाना–धाक बैठाना।
सिटपिटा जाना–घवड़ा उठना।
सितम ढाना–बड़ा क्लेश देना।
सितारा चमकना–भाग्यवान् होना।
सिर आँखों पर बैठना–अति प्रिय होना।
सिर उठाकर चलना–अभिमान दिखाना।
सिर उठाना–उपद्रव खड़ा करना।
सिर ऊँचा होना–इज्जत होना।
सिर काटना–बड़ी तकलीफ देना।
सिर गरम होना (फिर जाना)–पागल होना।
सिर चढ़ाना–ढीठ करना।
सिर झुकाना–प्रतिष्ठा करना।
सिर देना–वलिदान करना।
सिर धुनना–पछताना।
सिर पकड़कर रोना–बड़ा पश्चात्ताप करना।
सिर पटकना–बड़ा उद्योग करना।
सिर पर आना–पास आना।
सिर पर आ पहुँचना–नजदीक आ जाना।
सिर पर कोई न होना–अनाथ होना।
सिर पर खड़ा होना–बहुत पास आना।
सिर पर खून सवार होना–हत्या करने के लिये उतारू होना।
सिर पर भूत सवार होना–बुद्धि-भ्रष्ट होना।
सिर पर से तिनके उतारना–थोड़ा उपकार करना।
सिर पर लेना–अपने जिम्मे में लेना।
सिर पर मौत आना–मृत्यु पास होना।
सिर पर हाथ रखना–सहायक होना।
सिर मारना–बड़ा उद्योग करना।
सिरमौर बनाना–अधिक प्रतिष्ठा करना।
सिरहाने का साँप–पास का शत्रु।
सिर हिलाना–अस्वीकार करना।
सिर होना–व्यग्र करना।
सीधा बनाना–गर्व हटाना।
सीधी नजर से देखना–शिष्टता का व्यवहार करना।
सीधे मुँह बात न करना–घमंड दिखलाना।
सुर्खाब का पर लगाना–विशिष्टता होना।
सुरमा बना डालना–बहुत महीन पीसना।
सुहाग लूट जाना–विधवा होना।
सूई के नोके से निकालना–बड़ी तकलीफ देना।
सूखकर काँटा हो जाना–बड़ा दुर्बल होना।
सूखा जवाब देना–विना कुछ दिये टाल देना।
सूरज धूल डालने से नहीं छिपता–नीचों की दुष्टता से भले आदमियों का गुण नहीं छिपता।

ह

हँस-खेलकर मारना–प्रेम दिखलाते हुए कष्ट देना।
हक्का-बक्का रह जाना–अचरज में पड़ना।
हजम करना–हर लेना।
हजामत बना देना–ठग लेना।
हजारों टाँकी सहकर महादेव बनते हैं–कष्ट विना उठाये महत्त्व नहीं मिलता।
हड़बड़ा उठना–घवड़ा जाना।
हड़प लेना–ठग लेना।
हथियार रख देना–आधीन हो जाना।

Authenticated Administrative Phraseology of Words & Terms.

प्रामाणिक प्रशासनिक शब्दावली

जनतंत्र की केन्द्रीय तथा प्रादेशिक शासन व्यवस्था में प्रयुक्त आंग्ल पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी अर्थ

A

Abandonment—परित्यजन, परित्याग।
Abandonment of holdings—जोतों का परित्याग।
Abate—कमी होना, उपशमित होना, उपशमन करना।
Abatement—कमी, छूट, समाप्ति, अंत, उपशमन, कटौती।
Abatement of land Revenue—मालगुजारी का घटना या घटाया जाना।
Abatement of rent—भारक या भाड़े में कमी।
Abbreviated—संक्षिप्त, संक्षिप्त किया गया।
Abbreviation—संक्षेप संक्षिप्त रूप, शब्द संक्षेप।
Abduction—अपहरण, भगाना, अपवर्तन।
Abet—अवप्रेरित करना।
Abetment—अवप्रेरण, अवप्रेरणा।
Abide—टिकाना, जारी रहना।
Abide by—पालन करना।
Abide by rules—नियमों का पालन करना।
Ablution—तीर्थ स्नान।
Abnormal—असामान्य, अपसामान्य।
Abolition—समाप्ति, उन्मूलन, समाप्त करना।
Abolition of post—पद तोड़ना या समाप्त करना।
Above-noted—ऊपर लिखा हुआ, ऊपर उद्धृत।
Above par—प्रत्यक्ष मूल्य से ऊपर, अधिक मूल्य पर।
Above standard—प्रमाप से ऊपर, माप से ऊपर।
Abrogate—निराकरण करना।
Abscond—भाग जाना, फरार होना।
Absconder—प्रपलायी, फरार।
Absconding—फरार, प्रपलायी।
Absence—अनुपस्थिति, गैरहाजिरी।
Absentee—अनुपस्थाता।
Absentee statement—अनुपस्थिति का विवरणपत्र, गैरहाजिरी का नक्शा।
Absolute Order—निरपेक्ष आज्ञा।
Absorption (of temporary hands into permanent vacancies)—खपना, खपा लेना, खपत, अन्तर्भूत करना, अन्तर्भाव (अस्थायी कर्मचारियों की स्थायी रिक्त स्थानों में)।
Abstract—(*n.*) सार, सारांश, सत्व (*Med.*), सामान्य; (*adj.*) अमूर्त्त, गुणवाची।
Abstract Book—सार पुस्तक।
Abstract of cost—लागत का सार।
Abstract of stock issues—दिये गये सामान का उपसंक्षेप।
Abutment—मेहराब का पाया, अंत्याधार।
Academic—शिक्षा-संबंधी, शैक्षिक, विद्योचित, शास्त्रीय, आविविद्य।
Academy—विद्वत् परिषद्।
Accede to—स्वीकार करना, मान लेना।
Acceleration—त्वरण।
Acceptance—अंगीकृति, अंगीकार, स्वीकृति, स्वीकार, सकार, मंजूरी, मानना प्रतिग्रहण।
Acceptance for registration—रजिस्ट्री के लिए स्वीकृति, पंजीयन के लिये स्वीकृति।
Access—पहुँच, प्रवेश, अभिगम।
Accessory—(*n.*) उपसाधन, उपांग; (*adj.*) अतिरिक्त, सहायक, उपसाधिक, उपसहायक।
Accident—दुर्घटना, संयोग।
Accident report—दुर्घटना सम्वाद।
Accommodate—स्थान देना, जगह देना, निबाहना।
Accommodation—सुविधा, स्थान, जगह, घर, मेल-मिलाप (reconciliation), निबाह, समायोजन
Accommodation work—निवास निर्माण कार्य।
Accompanied by—के साथ, सहित।
Accompanying—साथ का।
Accord—(*n.*) सहमति, अभिसंविदा, ऐकमत्य; (*v.*) देना, प्रदान करना, मेल खाना, अनुरूप होना, सहमति देना।
Accord sanction—स्वीकृति देना।
Account—खाता, विवरण, वृत्तांत, लेखा, हिसाब, गणना।
Accountant—लेखाकार।
Accountant clerk—लेखाकार लिपिक।
Accountant General—महालेखाकार।
Accounting & disposal of Government Estates—राजकीय सम्पत्ति का लेखा-जोखा।
Accoutrement—साज-सामान।
Accrual increment—प्रोद्भूत वेतन वृद्धि।
Accuracy—यथार्थता, परिशुद्धता।
Accurate—यथार्थ, सही, ठीक, विशुद्ध, परिशुद्ध।
Accurately—ठीक-ठीक।
Accusation—दोषारोपण, अभियोजन, अभियोग।
Accused—अभियुक्त।
Acidity—अम्लता।
Acknowledge—स्वीकार करना, प्राप्ति सूचना या पावती भेजना, मानना, कबूलना, पावती देना, रसीद देना।
Acknowledgement—रसीद, पावती, प्राप्ति-सूचना, स्वीकृति, स्वीकरण, आभारोक्ति।
Acknowledgement of consideration made before a registering officer—प्रतिफल की प्राप्ति-स्वीकृति जो पंजीयन अधिकारी के सामने किया जाय।
Acknowledgement due—रसीदी, पावती।

Acknowledgement of liability—दायित्व स्वीकरण।
"A" Class allowance—"अ" श्रेणी का भत्ता।
A copy of the court's order passed in the marginal note of a case—मुकदमे में अदालत का जो उपान्तर अंकित आदेश हुआ है उसकी एक नकल या प्रतिलिपि।
Acoustics—ध्वनिकी, श्रवण-गुण विज्ञान।
Acquaintance—परिचय।
Acquire—अध्याप्त करना, ले लेना, अर्जित या अर्जन करना।
Acquisition—अभिग्रहण, अवाप्ति, अर्जन।
Acquisition of land—भूमि अर्जन।
Acquisition or leasing—अवाप्ति या पट्टा।
Acquit—(as distinguished from discharge)—विमुक्त करना, छोड़ देना।
Acquittal—विमुक्ति, विमोचन।
Acquittance Roll—निष्क्रय वर्ति, वेतन या पगार चिट्ठा, कब्जल वसूल।
Acquitted—विमुक्त।
Acreage—क्षेत्रफल, रकबा।
Act—कार्य, कर्म, काम, कृत्य, अधिनियम, अंक।
Acting allowance—कार्यवाहक भत्ता।
Acting appointment—कार्यवाहक नियुक्ति।
Actinomycosis—कठजीभी।
Action—क्रिया, कार्य, काररवाई।
Active service—सक्रिय नौकरी, सक्रिय सेवा, सामरिक सेवा।
Activity—क्रिया, कार्यशीलता, सक्रियता, चेष्टा, कार्यकलाप, हलचल, सरगर्मी।
Actual—वास्तविक, असली।
Actual travelling allowance—वास्तविक यात्रा-भत्ता व्यय।
Actual travelling expenses—वास्तविक यात्रा-व्यय।
Acute Angle—न्यून कोण।
Adaptation—अनुकूलन, अभ्यनुकूलन, रूपांतर, रूपांतरण।
Addendum—अनुबंध, परिशिष्ट।
Addition—योग, जोड़, अधिकत्व।
Addition and alteration—परिवर्धन और परिवर्तन, बढ़ाव और बदलाव।
Additional—अतिरिक्त, अपर।
Additional Assistant Research Officer—अतिरिक्त या अपर सहायक अन्वेषण अधिकारी।
Additional Deputy Secretary—अतिरिक्त या अपर प्रतिमंत्री।
Additional District Magistrate—अतिरिक्त या अपर जिला मजिस्ट्रेट।
Additional entry—अतिरिक्त प्रविष्टि।
Additional fees—अतिरिक्त शुल्क।
Additional grant—अतिरिक्त अनुदान।
Additional Judge—अतिरिक्त या अपर न्यायाधीश, अपर जज।
Additional pay—अतिरिक्त वेतन।
Additional police—अतिरिक्त पुलिस।
Additional Police-Tax—अतिरिक्त पुलिस कर।
Additional remuneration of extra work—अधिक काम के लिए अतिरिक्त पारिश्रमिक।
Address—पता, सरनामा, संबोधन, संभाषण, अभिभाषण।
Address (To present an)—अभिनन्दन पत्र देना।
Adequate—पर्याप्त, काफी, समुचित।
Adhering to—दर कायम रहते हुए।
Adhesion—अभिलाग, आसंजन।
Adhesive stamp—चिपकनेवाला न्यायालय फीस मुद्रांक या टिकट।
Ad hoc—तदर्थ।
Ad hoc Committee—तदर्थ समिति।
Adjacent—आसन्न, समीपस्थ, सटा हुआ।
Adjudication—न्याय या न्यायिक निर्णय, अधिनिर्णयन।
Adjustment—समंजन, समायोजन, बैठ-बिठाव।
Adjustment of central transaction—केन्द्रीय लेनदेनों का समंजन।
Adjutant—एजुटेन्ट।
Administration, (letter of)—प्रबन्ध पत्र, प्रशासन पत्र।
Administration Board—प्रशासन परिषद्।
Administration of execution—निष्पादन का स्वीकार किया जाना।
Administrative—प्रशासनिक, प्रशासकीय, प्रशासन-संबंधी।
Administrative Account—प्रशासकीय या प्रशासनिक लेखा।
Administrative approval—प्रशासकीय अनुमोदन।
Administrative Authority—प्रशासकीय अधिकारी।
Administrative Board—प्रशासकीय परिषद्।
Administrative charge—प्रशासकीय कार्यभार, प्रशासन-भार।
Administrative Control—प्रशासकीय नियंत्रण।
Administrative Department—प्रशासकीय या प्रशासनिक विभाग।
Administrative Policy—प्रशासकीय या प्रशासनिक नीति।
Administrative quarters—बड़े अफसरों के बंगले।
Administrative report—प्रशासकीय सम्वाद।
Administrative sanction—प्रशासकीय स्वीकृति या मंजूरी।
Administrator—प्रशासक।
Administrator General—महा प्रशासक।
Admissibility in evidence—साक्ष्य में ग्राह्यता, साक्ष्य में मान्यता या स्वीकार्यता।
Admissibility of leave—छुट्टी का मिल सकना, छुट्टी की नियमानुकूलता।
Admissible—ग्राह्य, स्वीकार्य।
Admission—प्रवेश, दाखिला, स्वीकृति, मानना।
Admission Board—प्रवेश परिषद्।
Admission card—प्रवेशपत्रक।
Admission of College (to privileges of)—के विशेषाधिकारों के लिए कालेजों का स्वीकृत किया जाना।
Admission of instrument—करणपत्रों का ग्राह्य किया जाना।
Admission Register—प्रवेशपंजी, दाखिला रजिस्टर।
Admission of students—छात्रों का प्रवेश, विद्यार्थी प्रवेश।
Admit—दाखिल करना, भर्ती करना, स्वीकार करना, ग्रहण करना।
Admitted to hearing—सुनवाई के लिये स्वीकृत।
Admonitions—डाँट फटकार, भर्त्सना।
Adolescent—किशोर।
Adopt—ग्रहण करना, धारण करना।
Adopt—अपनाना, मान लेना, अंगीकार करना, दत्तक ग्रहण करना, गोद लेना।
Adoption—दत्तक ग्रहण, गोद लेना।

Adoption deed—दत्तक-पत्र, गोदनामा।
Adult education—प्रौढ़ शिक्षा।
Adult school—प्रौढ़ पाठशाला।
Adult women school—प्रौढ़ महिला पाठशाला।
Adulteration—मिलावट, अपमिश्रण।
Adumberate—छायांकित, छायामात्र, दिखाया हुआ।
Ad valorem—मूल्यानुसार, यथामूल्य।
Ad valorem scale—क्रमसूची, मूल्यानुसार।
Advance—अग्रिम, पेशगी, अग्रगति, उन्नति।
Advance increment—अग्रिम वेतन-वृद्धि।
Advance payment—पेशगी भुगतान, अग्रिम भुगतान।
Adverse possession—विरुद्धाधिकार, प्रतिकूल कब्जा।
Advertise—विज्ञापन करना, विज्ञापन देना।
Advertisement—विज्ञापन, इश्तहार।
Advice—सूचना, परामर्श, मंत्रणा, सलाह।
Advice of credit transfer—नामे संक्रम सूचना।
Advice of debit transfer—जमा संक्रम सूचना।
Advisable—उचित, मुनासिब, समुचित।
Advisory—परामर्शदात्री, सलाहकार।
Advisory Committee—सलाहकार समिति, परामर्शदात्री समिति।
Advisory Officer—सलाहकार अफसर, मंत्रणा अधिकारी।
Advocate—अधिवक्ता।
Advocate General—महा अधिवक्ता।
Aerial—एरियल।
Aerial lines—हवाई लाइनें, हवाई तार।
A few showers occurred in the east U. P.—उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में कुछ हलके छींटे पड़े।
Affect—प्रभावित करना, असर डालना, प्रभाव पड़ना।
Affected—प्रभावित, (रोग) ग्रसित, ग्रस्त।
Affidavit—शपथपत्र, हलफ़नामा।
Affiliation—सम्बन्ध, संबंधन, संबद्धता।
Affinity, Chemical—रासायनिक बंधुत्व।
Affirm—प्रतिज्ञा करना, दृढ़ता से कहना, प्रतिज्ञापन करना, पुष्टि करना।
Affirmation—अभिवचन, प्रतिज्ञान, प्रतिज्ञापन।
Afflux—चढ़ाव (पानी का)।
Aforesaid—उपर्युक्त, पूर्वोक्त।
Afrah—अफरा (रोग)।
Afternoon—तीसरे पहर, अपराह्न।
Age—वयस, अवस्था, वय, उम्र, काल, युग।
Age limit—उम्र की कैद, वय सीमा, वयस्सीमा, आयु सीमा।
Agency, (Central India)—मध्यभारत एजेंसी।
Agency Police—एजेंसी पुलिस।
Agenda—कार्यावली, कार्य सूची।
Age-entry—आयु लिखन, उम्र का इन्दराज।
Agent—अभिकर्ता, आढ़तिया, कारक, कर्ता।
Aggregate—सकल, कुल, सब, तमाम, समूह, पूर्ण योग, जोड़, सम्पूर्ण, समाहार, समुच्चय, समुदाय।
Aggregating—कुल मिलाकर, सब मिलाकर।
Agitation—हलचल, आन्दोलन।
Agree—सहमत होना, राजी होना, करार करना।
Agreed upon—सहमत, रजामन्द, तैयार।
Agreement—समझौता, अहदबंदी।
Agreement—करार, सहमति, रजामंदी, कती, अन्वय।
Agreement for service—सेवा करार या इकरारनामा।
Agreement of lease—पट्टा देने का इकरारनामा या नियम पत्र।
Agricultural—कृषि विषयक, खेती का, कृषि-संबंधी।
Agricultural implements—कृषि उपकरण, खेती के औजार।
Agricultural Inspector—कृषि निरीक्षक, खेती परिदर्शक।
Agricultural lease—कृषि पट्टा।
Agricultural Machinery—कृषि यन्त्र।
Agricultural purposes—कृषि प्रयोजन, खेतिहरी के प्रयोजनीय।
Agriculturists Loans Act—कृषि-कर्ज अधिनियम।
Aided—सहायता-प्राप्त।
Aided school—सहायता प्राप्त स्कूल या पाठशाला।
Air gun—विमान-तोप।
Alcove—वाहिका, आला।
Alienation—अलग करण, हस्तान्तरण, अपवर्तन, स्वत्वार्पण अन्य-संक्रामण, अपहरण।
Aliens Branch—विदेशी शाखा।
Alignment—संरेखण, मार्ग-रेखा निर्धारण, सीध, निर्धारित सीध।
Alimony—निर्वाह धन, संभृति, निर्वाह व्यय।
Allegation—अभिकथन, आरोप, इलजाम।
All India Radio—आकाशवाणी।
Allocation—बँटवारा, बांट, विनियान।
Allocation of funds—रुपये का बँटवारा।
Allot—नियत करना, बांटना।
Allotment—नियतन, बांट, बंटन।
Allotment of houses—मकानों का दिया जाना।
Allotment of land—भूमि का नियतन।
Allotment of Residence—आवास-गृह का नियतन।
Allow—अनुज्ञा करना, स्वीकार करना, इजाज़त देना।
Allowance—भत्ता।
Allowance and Honoraria—भत्ते और मतदेय।
Allowance to an ex-proprietor—साकितुल मिल्कियत असामी (tenant) को भत्ता।
Alluvial—जलोट।
Alluvion—कछार, कछारी भूमि, जलोढ़क।
Almirah—अलमारी।
Alphabetic order—वर्णानुक्रमिक।
Alter—परिवर्तन करना।
Alteration—अदल-बदल, तबदीली, परिवर्तन, बदलाव।
Alternative—वैकल्पिक।
Amalgamation—एकीकरण, समामेलन, संकरण, धातुमिश्रण।
Ambiguous—संदिग्ध, द्व्यर्थक, गोलमाल, अस्पष्ट, अनेकार्थ (क)।
Amend—संशोधन करना।
Amended from time to time—समय समय पर संशोधित।
Amendment—संशोधन।
Amendment Act—संशोधन का कानूनी विधान।

Ammunition Pouch—गोला - बारूद की थैली।
Amnesty—राजक्षमा, सर्वक्षमा, क्षमा-दान, निर्मुक्ति।
Amortization—परिशोधन।
Amount—धनराशि, रकम, मिश्रधन।
Amount, (estimated for recovery)—परिग्रहणार्थ कूती हुई धनराशि।
Ampere—ऐंपियर।
Amphistomous—द्विमुखी कृमि।
Anachronism—काल-दोष।
Analogous—एकरूप, सदृश, समवृत्ति, अनुरूप।
Analysis—विश्लेषण।
Analysis of rate—महसूलों का बिश्लेषण।
Analyst—विश्लेषक।
Ancestral property—पैतृक सम्पत्ति।
Anchor—लंगर।
Anchor bolt—लंगर का बल्ला।
Angle of inclination—नतिकोण।
Animal husbandry—पशुपालन।
Ankle—टखना।
Annexed—नत्थी किया हुआ, मिलाया हुआ।
Annexure—अनुबंध, अनुलग्नक।
Annotated—टीका सहित।
Announce—घोषणा करना, ख्यापन करना, ऐलान करना, आख्यापन या आख्यापित करना।
Annual—वार्षिक, सालाना।
Annual accounts—वार्षिक हिसाब या लेखा।
Annual Administration Report—वार्षिक प्रशासन विवरण, प्रशासन का वार्षिक सम्वाद।
Annual Administrative Report—वार्षिक प्रशासकीय रिपोर्ट।
Annual entry in character roll—चरित्रवर्ति में वार्षिक प्रविष्टि, अमलनामे में सालाना इन्दराज।
Annual indents—वार्षिक माँगपत्र।
Annual increment—वार्षिक वृद्धि।
Annual Memorandum—वार्षिक स्मृति-पत्र।
Annual repair estimate—वार्षिक मरम्मत का तखमीना।
Annual repairs to roads, building & culverts—सड़कों, इमारतों और पुलियों की वार्षिक मरम्मत।
Annual reports—वार्षिक विवरण, सालाना सम्वाद।
Annual reports on establishment—स्थापना की वार्षिक विवरण।
Annual review—वार्षिक समीक्षा।
Annual statement—वार्षिक विवरण, सालाना नक्शा।
Annuity—वार्षिक वृत्ति, वार्षिकी।
Annuity Bond—वार्षिक वृत्ति या वार्षिकी प्रतिज्ञा-पत्र।
Annulled—रद किया हुआ, निराकरण किया हुआ।
Annulment of settlement—भू-व्यवस्था को रद्द करना।
Anomalous—असंगत, अनियमित।
Anomaly—असंगति, अनियमितता।
Anonymous—गुमनाम, नाम-रहित।
Answer Book—कापी, परीक्षा की कापी, इम्तिहान की कापी, उत्तर पुस्तक।
Ante—पूर्व।
Anthrax—गिल्टी रोग।
Anticipated—प्रत्याशित, पूर्व - अनुमानित।
Anticipated excess—प्रत्याशित व्यय-वृद्धि।
Anticipated saving—प्रत्याशित बचत।
Anticipation—प्रत्याशा।
Anticipatory—प्रत्याशी।
Anticipatory pension—प्रत्याशी पेंशन, प्रत्याशी निवृत्ति-वेतन।
Antidote—विषघ्न, प्रतिकारक।
Anti-inflationary—मुद्रास्फीति निवारक।
Antiquities—पुरावशेष, प्राचीन अवशेष।
Antiquity—प्राचीन काल, पुरातत्व, पुरावशेष।
Anti-Rabic—प्रत्यात्पर्क।
Antiseptic fluid—पूतिदोषरोधी द्रव।
Apathy—उदासीनता।
Aperture—सूराख, छेद, छिद्र, द्वारक।
Apex—सिरा, चोटी, शिखर, शिखाग्र, शिरोविंदु।
Apology—माफी माँगना, क्षमा याचना।
Apparatus—यन्त्र, उपकरण।
Apparent—आभासी, भासमान, दृष्ट, प्रत्यक्ष।
Appeal—अपील।
Appeals against assessment of Municipal taxes—म्युनिसिपल करों के निर्धारण के विरुद्ध अपील।
Appeals against the order of—की आज्ञा के विरुद्ध अपील।
Appearance—उपस्थिति, मौजूदगी, हाजिरी, पेशी, दर्शन, आभास, प्रतीति, रूप।
Appearance slip—हाजिरी अदालत का परचा, न्यायालय उपस्थिति पत्रक।
Appellant—अपीलकर्त्ता, अपीलार्थी।
Appellate authority—अपीलीय अधिकारी।
Appellate Court—अपीली न्यायालय।
Appellate juristiction—अपीली अधिकार क्षेत्र।
Appellate powers—अपीली अधिकार।
Appellation—अभियान।
Appended—संलग्न, नत्थी किया हुआ।
Appendices—अनुबंध।
Appendices to budget estimates—वजट का तखमीना अनुबंध।
Appendix—परिशिष्ट, अनुबंध।
Appertaining to—सम्बन्ध रखनेवाला, से सम्बद्ध, से संसक्त।
Appliance—साधन, साधित्र।
Applicability—प्रयोज्यता।
Applicant—प्रार्थी, आवेदक।
Application—प्रार्थनापत्र, आवेदन, पत्र, अर्जी।
Application for alienation—हस्तान्तरण का प्रार्थनापत्र।
Apply—लागू होना, लागू करना, प्रयोग करना, आवेदन करना।
Appointment—नियुक्ति।
Appointment of Commission—आयोग की नियुक्ति।
Appointment department—नियुक्ति विभाग।
Appointment of power—अधिकार के निष्पादन में नियुक्ति।
Appraisement—मूल्य-निर्धारण, मूल्यांकन, कूतना, आँकना।
Appreciation—मूल्य - वृद्धि, गुण-दोष विवेचन, रसग्रहण।
Apprentice—शिक्षु, शागिर्द, प्रशिक्षु।
Apprentice supervisors—प्रशिक्षु पर्यवेक्षक।
Appropriate class—समुचित वर्ग।
Appropriate stamp prescribed or indicated—नियत किया हुआ या वताया हुआ स्टाम्प, समुचित स्टाम्प।
Appropriation—विनियोग, विनियोजन।

Assistant teacher—सहायक अध्यापक।
Association—संस्था, समाज, साहचर्य, संयोजन।
Assumed rent—माना हुआ या कल्पित लगान।
Assumption of charge—कार्यभार ग्रहण।
Assumption of charge (of duties)—कार्यभार ग्रहण।
Assurance—आश्वासन, वचन देना, बीमा।
Asterisk—तारक-चिह्न, तारे का निशान।
As usual—साधारणतया।
At a discount—बट्टे पर, बट्टे से।
Athletic—खेलकूद-सम्बन्धी, व्यायाम-विषयक।
At once—तुरन्त, सद्य।
At a premium—बढ़ती पर, बढ़ौती से।
Attached Estates—संलग्न रियासतें, कुर्क की हुई संपत्ति।
Attached to or with—साथ अनुलग्न।
Attachment—आसंग, कुड़की।
Attachment of salary—वेतन की कुड़की।
Attendance—उपस्थिति।
Attendance Grant—उपस्थिति अनुदान।
Attendance Register—उपस्थिति रजिस्टर, उपस्थिति पंजिका।
Attendant—परिचर, परिचारक, अनुवर्ती, सेवक।
Attest—प्रमाणित करना, साक्ष्यंकन करना, तस्दीक़ करना।
Attestation—साक्ष्यंकन, प्रमाणीकरण, तस्दीक़।
Attested—प्रमाणित, साक्ष्यंकित, तस्दीक़ किया हुआ।
Attesting witness—साक्ष्यंकन करने वाला गवाह या साक्षी, तस्दीक़ी गवाह।
Attorney—न्यायवादी, अभिवक्ता।
At your earliest convenience—यथाशीघ्र।
Auction—नीलाम, प्रतिक्रोश।
Audit—लेखा-परीक्षा, अंकेक्षण।
Audit and Inspection Note—लेखा-परीक्षा तथा निरीक्षण टिप्पणी, आडिट तथा निरीक्षण नोट।
Audit Note—लेखा-परीक्षा टीप, लेखा-वदी परीक्षा टिप्पणी।
Audit objections—लेखा-परीक्षा आपत्तियाँ, आडिट की आपत्तियाँ।
Audit Officer—लेखा-परीक्षा अधिकारी।
Audited Accounts—जाँचे हुए लेखे, जाँचे हुए हिसाब, आडिट किये हुए लेखे या हिसाब।
Auditor—लेखा-परीक्षक, अंकेक्षक।
Auditorium—सभा-भवन, दर्शककक्ष।
Auger—बरमा, गिलमिट।
Aural education—कर्ण-शिक्षा, श्रवण-शिक्षा।
Authentic—विश्वस्त, प्रामाणिक।
Authentication—प्रमाणीकरण।
Authentication of powers of attorney—प्रतिनिधि-पत्र का प्रमाणीकरण या तस्दीक़।
Authorities—प्राधिकारीवर्ग।
Authorities to adopt—दत्तक-ग्रहण के अधिकार-पत्र, गोद लेने के अधिकार-पत्र।
Authority—सत्ता, प्राधिकार, अधिकार, हैसियत, प्राधिकारी, अधिकारी।
Authority affording technical sanction to estimate—तखमीने की जावते की स्वीकृति देनेवाले प्राधिकारी।
Authorization—आदेश, अनुज्ञा, इजाजत।
Authorize—अधिकार या प्राधिकार देना।
Authorized agent—अधिकृत या प्राधिकृत एजेंट या अभिकर्ता, अधिकार-प्राप्त एजेंट।
Authorized discharge—प्राधिकृत निकासी, अधिकृत निकासी।
Automatic gates—स्वतः चल फाटक।
Automatically—आप ही आप, स्वतः।
Available—प्राप्य, उपलभ्य।
Avenue—मार्ग, तरुवीथि।
Average—औसत, माध्य, सामान्य।
Average anna condition—आनों में फसल की हालत।
Average cost—औसत लागत।
Average day and night temperature—दिन और रात का औसत तापमान।
Average pay—औसत वेतन।
Average salary—औसत वेतन।
Avian tuberculin test—पक्षियों की यक्ष्मा परीक्षा।
Await—प्रतीक्षा करना।
Await or suspend—प्रतीक्षा करना या स्थगित करना।
Award—पंचनामा, पंचाट, इनाम, पारितोषिक।
Axis—अक्ष, धुरी।
Axis of a cone—शंकु-अक्ष।
Axis of a cylinder—बेलन-अक्ष।
Axis of circle or sphere—वृत्त या गोल का अक्ष।
Axis of a rotation—घूर्णाक्ष।
Axles—धुरा, धुरी।

B

Background—पृष्ठभूमि, पृष्ठाधार।
Bacteria—जीवाणु।
Badges—बिल्ला, बैज।
Baggage allowance—सामान भत्ता।
Bail—प्रतिभूति, जमानत, जामिन, प्रतिभू, उपनिधि।
Bail bonds—प्रतिभूपत्र, जमानत-पत्र।
Bailable—जमानत योग्य, जमानती, प्रतिमाव्य।
Bailment—निक्षेपण, उपनिधान।
Balance—संतुलन, तराजू, शेष।
Balance (Cash)—रोकड़ बाकी।
Balance Sheet—लेन-देन का चिट्ठा।
Balcony—बारजा, बरामदा, छज्जा।
Ballast—गिट्टी।
Balled Ammunition—गोली।
Balustrade—कटघरा, जंगला, वेदिका।
Ban—रोक, प्रतिबंध, निषेध।
Band—बैन्ड, पट्टी, बंधन।
Bandolier—बंडोलिया, कारतूस रखने की खानेदार पेटी।
Bank—तट, कोठी, धनागार, बैंक, अधिकोश।
Bank-Canal—नहर की पटरी।
Bank draft—बैंक की हुंडी।
Banquet hall—भोज या दावत-भवन।
Bar—रुकावट, रोक, अर्गल, छड़, दंड, रोधिका, बाधा।
Barbed wire—कँटीला तार।
Bar-fetters—डंडा, बड़ी।
Barge—बोझा ढोनेवाली नाव (Cargo boat), बजड़ा (Pleasure boat).
Barn—खलिहान, खत्ता।
Barometer—वायुदाबमापी।
Barrack—बैरक, बारिक।
Barred by limitation—अवधि-बाधित, काल-बाधित।
Barrage—बाँध।
Barren—ऊसर, बंजर, वन्ध्या।
Barret—बैरेट, टोपी।
Barrister—बैरिस्टर, विधिवक्ता।
Barrow—हाथगाड़ी, ठेला।

Base line—आधार रेखा।
Basement—तहखाना।
Base plate—आधार-पट्टिका,आधार-पट्टी।
Batch—जत्था, दल।
Bath—स्नान, कुंड।
Bathe—स्नान करना, नहाना।
Bath tube—स्नान कुंड।
Baton—डंडा।
Battalion—बटालियन, वाहिनी।
Batten—डंडा, पट्टी, हत्था।
Batter—ढहाना, गिराना, तोड़ना, चकनाचूर करना।
Bay—खंड, खाड़ी, आला।
Bayonets—संगीन, किरच।
Bay window—निकली खिड़की।
Beam—धरनी, धरन, कड़ी, शहतीर।
Bearing (direction)—दिशा, रुख, दिक्-स्थिति, दिङ्मान।
Bearing (post)—बैरंग।
Beat (*v.*)—मारना, पीटना।
Beat—हलका, इलाका।
Beat of the gong—घंटे-घड़ियाल की चोट।
Bed—खाट,शय्या,तल,तह,संस्तर,क्यारी।
Bedding—बिस्तरा, संस्तरण।
Bed level—तह का स्तर।
Bed of river—नदी की तलहटी।
Bed plate—तल पट्टिका, तल-पट्टी, आधार-पट्ट।
Bed-stead—खाट।
Behaviour—आचरण,बरताव,व्यवहार।
Belief—विश्वास।
Bell—घंटी, घंटा।
Bellows—धोंकनी, भाथी।
Below par—प्रत्यक्ष मूल्य से नीचे, अवमूल्य पर।
Belt—पेटी, पट्टा, इलाका, कटिबंध, क्षेत्र।
Bench—पीठ,कक्ष, न्यायपीठ, न्यायसभा, न्यायाधीशवर्ग।
Bench mark—तल-चिह्न, स्तरांक।
Bench of High Court Judges—न्यायाधीशगण।
Bench of Honorary Magistrates—अवैतनिक न्यायाधीशों की न्यायसभा।
Bend—मोड़।
Bending movement—नमन-घूर्ण।
Benevolent funds—हितकारी निधि।
Berth—बर्थ, शायिका, नौशय्या।
Besides—अलावा, अतिरिक्त।
Between—बीच, मध्य।
Beyond time—समय के पश्चात्।
Bib cock—टोंटी।
Biennial—द्वैवार्षिक,द्विवर्षजीवी, दिवर्षी, दोसाला।
Bifurcation—द्विशाखन।
Bill—बिल, पुरजा, हिसाब का परचा, विधेयक।
Bill of exchange—हुंडी।
Bill of lading—वहन-पत्र, लदान-पत्र, बिल्टी।
Bill of quantities—राशि-सूची।
Bit, Bit head, Bit reins—लगाम, दहाना, कजलगाम।
Binder—बाँधनेवाला, बन्धकी।
Binding Material—जोड़नेवाली वस्तु।
Bitumen—डामर।
Bituminous Cement—डामर मिश्रित सीमेंट।
Black quarter—जहरबाद, लँगड़ी।
Blacksmith—लोहार।
Black book—कोरा रजिस्टर।
Blanket—कम्बल।
Blanket-coat—कम्बल कोट।
Blasting—विस्फोटन।
Bleach—विरंजित करना।
Blight—तुषार, चित्ती।
Blind—परदा, झिलमिली।
Blotter—चूसक, सोख्ता।
Blouse—ब्लाउज, कुरती।
Bludgeon—सोंटा, डंडा।
Blue fringe—नीली झालर।
Blue vitriol—नीला थोथा, तूतिया।
Board—पट्ट, तख्ता, पाट, फलक, खान-पान, परिषद्।
Board of Revenue—राजस्व-मंडल।
Boat—नाव।
Boatman—मल्लाह।
Bodily infirmity—शारीरिक दुर्बलता।
Boiler—वाष्पित्र।
Boiler-house-attendant—वाष्पित्र गृह परिचर।
Boiling point—क्वथनांक।
Bolt—अर्गल, सिटकनी, चटखनी।
Bonafide—असली, सच्चा, प्रामाणिक, वास्तविक, सद्भावपूर्ण, विश्वस्त, सदाशयी।
Bond—बाँड, तमस्सुक, बंध, बंध-पत्र, ऋण-पत्र।
Bond of indemnity—क्षतिपूर्ति बंध-पत्र।
Bond stress—जुड़ने की शक्ति।
Book (*v.*)—बुक करना।
Book transfer—टीपांतरण, खातांतरण
Book value—बही मूल्य।
Booking—बुकिंग।
Boring—वेध, वेधन, नोरस।
Borrower—ऋण कर्त्ता।
Bottle—बोतल।
Bottomry bond—पोतबंध।
Boulders—गोला पत्थर, गोलाश्म।
Boundary—सीमा, हद, सीमांत।
Boundary wall—चहारदीवारी, घेरा।
Box—संदूक, पेटी।
Boxwood—बक्स वृक्ष की लकड़ी।
Brace—पिस्तौल की पेटी, परतला, बंधनी, धनुर्बंधनी।
Braces—गैलिस।
Brackets—कोष्ठक, बंधनी, कोहनी।
Brake speed—रुद्ध गति।
Branch—शाखा।
Branch depots—ब्रांच डिपो, शाखा कोठार।
Branching—शाखायें फूटना, शाखा-विन्यास।
Brand—दाग, दागना।
Brass scale—पीतल का पैमाना।
Breach—दरार, भंग, विच्छेद।
Breach of canals—नहर भंग।
Breach of law—विधि भंग, अनुशासन भंग।
Breach of prison-discipline—कारा-अनुशासन भंग।
Breach of rule—नियम भंग, नियम-उल्लंघन।
Breach of Trust—विश्वास भंग, न्यास भंग।
Breadth—चौड़ाई।
Breakdown—भंग, खराबी, टूट-फूट, विभंग।
Break out—प्रारम्भ होना।
Break of service—नौकरी का क्रम-भंग
Breakwater—पनकट, तरंगरोध।
Breast wall—आवक्ष, भित्ति।
Breeches—बिरजिस।
Brick—ईंट।
Brick-work—ईंट-चिनाई।
Bridge—पुल।
Bridle—लगाम।
Bridle path—अश्वपथ।
Bridoon reins—कजलगाम, रिसाले की लगाम।

Broadcast rice—छींटा हुआ धान।
Buck ammunition—छर्रा।
Bucket—डोल, बाल्टी।
Buckle—बकसुआ, बकलस।
Budget—बजट, आय-व्ययक।
Budget allotment—बजट-नियतन।
Budget estimate—बजट अनुमान।
Budget Expenditure—बजट व्यय।
Budget grant—बजट अनुदान।
Budget head—बजट शीर्षक।
Budgeting—रुपया बजट किया जाना।
Budget provision—बजट व्यवस्था।
Budget session—बजट अधिवेशन।
Bugle—बिगल, बिगुल।
Bugler—बिगुल बजानेवाला, बिगुलर।
Building—भवन, इमारत।
Building and Road Branch—भवन और सड़क विभाग।
Bulk—ढेर, अंबार।
Bulk head—विमानभीत, पोतभीत।
Bullet—गोली।
Bullet proof—गोलीसह।
Bulletin—बुलेटिन, विज्ञप्ति।
Bullion—सोना-चाँदी।
Bully—गुंडा।
Bundle lifter—बस्ता उठानेवाला।
Bunds—बंद, बाँध।
Bungalow, Inspection—डाक बँगला।
Bureau—कार्यालय, ब्यूरो।
Burglar alarm—चोर-घंटी।
Burglary—सेंध लगाना, नकबजनी।
Burial—दफन, शवाधान।
Business—कार्य, काम, व्यापार, कारोबार, व्यवसाय।
Butter-like—मक्खन जैसा।
Butt joint—सपाट जोड़।
Buttress—पुश्ताटेक, सहारा।
By-Law—उपनियम।
By order—की आज्ञा से, के आदेश से।

C

Cable—तार, समुद्री तार।
Cable jointer—केब्ल संयोजक।
Cadet—कैडेट, सेनाछात्र।
Cadre—संवर्ग।
Cadre of Indian Service of Engineers—भारतीय इंजिनियरी सेवा का संवर्ग।
Cadre of U.P. Service of Engineers—उत्तर प्रदेशीय इंजिनियरी सेवा का संवर्ग।
Calamity—आपदा, आपद्।
Calculate—गणना करना, परिकलन करना, हिसाब लगाना।
Calculator—गणक, गणित्र।
Calendar month—पंचांग मास।
Calendar year—कैलेन्डर वर्ष, पंचांग वर्ष।
Caliber—व्यास, अंतर्व्यास, शक्ति, क्षमता।
Calling for the record—कागजात तलब करना।
Camber—कमानदार उभार, कैम्बर।
Campaign—मुहिम, अभियान।
Camp equipage—शिविर सामग्री।
Camp equipment—शिविर उपस्कर।
Camp Patrol—पड़ाव का पहरेदार।
Canal Act—नहर का कानून, केनाल एक्ट।
Canal & Forest Department of Provincial Government—प्रान्तीय सरकार का नहर तथा जंगलात विभाग।
Canal Produce—नहर की पैदावार।
Cancellation—मन-सूखी, विलोपन, निरसन।
Cancellation deed—निरसन-पत्र।
Cancelling officer—रद्द या खारिज करनेवाला अधिकारी।
Cancelled stamp—रद्द किये हुए स्टाम्प, निरसित मुद्रांक।
Candid—साफ, खरा, ऋजु, निष्कपट, स्पष्टवादी।
Candidate—उम्मीदवार, अभ्यर्थी।
Caning—बेंत-प्रहार।
Canopy—सायबान, वितान, मंडप, छत्री।
Cantilever—बाहुधरन।
Cantonment Act—छावनी कानून।
Cantonment Agency—छावनी एजेंसी, छावनी अभिकर्तृत्व।
Canvas shoe—किरमिच का जूता।
Canvass—वोट माँगना।
Canvassing—पक्ष प्रचार, मतार्जन।
Capacity—क्षमता, सामर्थ्य, समाई, धारिता, हैसियत।
Capillary—केशिका।
Capillary attraction—केशिका-कर्षण।
Capital—पूँजी, मूल, मूलधन।
Capital and Revenue Accounts—पूँजी और राजस्व लेखा।
Capitalized—पूँजीकृत।
Capital outlay—पूँजीगत परिव्यय।
Capital punishment—प्राणदंड।
Capitation tax—प्रतिव्यक्ति प्रभार।
Cap of a well—कुएँ का चौखटा।
Capture—बंदीकरण।
Carbine bucket—कड़ाबीन आधार।
Cardboard—दफ्ती।
Care—देखरेख, परिचर्या।
Career—घुड़दौड़ का मैदान, दौर, जीवनक्रम, जीवनचर्य्या।
Careful—सावधान।
Care of—मार्फत, द्वारा।
Cargo—नौभार, माल।
Carpenter—बढ़ई, तिरखान।
Carriage of Government money—सरकारी रुपये का वहन।
Carriage of tools and plant—औजारों और स्थिर-यंत्रों की ढुलाई।
Cartage—ढुलाई, गाड़ी-भाड़ा।
Cartridge—कारतूस।
Casement—झरोखा, खिड़की, गवाक्ष, वातायन।
Cash—नकद, रोकड़, नकदी।
Cash book—रोकड़ बही।
Cash chest—नक़दी बक्स।
Cashier—रोकड़िया, खजांची, रोकड़पाल।
Cash memo—नकदी पुरजा, नकद पर्ची।
Cash outlay—नकदी लागत।
Cash rents—नकदी लगान।
Cast iron—ढला लोहा, कच्चा लोहा।
Castration—बधियाकरण, अण्डोच्छेदन।
Casual—आकस्मिक, नमित्तिक, अनियत।
Casual leave—आकस्मिक या नैमित्तिक छुट्टी।
Casual leave register—आकस्मिक छुट्टी का रजिस्टर।
Casual vacancy—आकस्मिक रिक्ति।
Catalogue—सूची, सूची-पत्र।
Catalogue of Register Books—रजिस्टरों की सूची।
Catchment—स्रवण।
Catchment area—स्रवण क्षेत्र।
Category—श्रेणी, दर्जा, वर्ग, कोटि।
Cattle breeding Farm—पशुओं की नसलकशी का फार्म।
Cattle-killers—पशुवध-यंत्र।
Cattle pound—काजी हाउस, काजी हौद, मवेशीखाना।

Cattle Priroplasmosis or (Red water)—लाल मूत्र रोग।
Cattle Theft Police—पशुहरण पुलिस, मवेशी चोर पुलिस।
Cause List—मुकद्दमों की सूची, वाद सूची।
Cause of Action—वादकारण, वाद हेतु।
Caution—सावधानी, सतर्कता।
Caveat—इत्तलानामा, उजरदारी, वारणी, आपत्ति-सूचना।
Cease—बंद होना।
Ceased—समाप्त, खत्म हुआ, अन्त हुआ।
Ceiling—भीतरी छत, छत, छतगीरी, तलंचा।
Celebration of literacy week—साक्षरता सप्ताह समारोह।
Cell—कोठरी, कोशिका, कोषाणु।
Cellular—कोष्ठीय, कोशिक।
Cement—सिमेंट।
Cemetries—कब्रिस्तान।
Censure—निन्दा।
Census—जनगणना, मर्दुमशुमारी।
Centage charges—सैकड़े पर खर्चा, सौ पर खर्चा।
Central areas—केन्द्रीय क्षेत्र।
Central board of Waqfs—केन्द्रीय वक्फ बोर्ड।
Central depot—केन्द्रीय कोठार।
Central Excise—केन्द्रीय उत्पादन कर।
Centralize—केन्द्रीयकरण।
Central Record Office—केन्द्रीय अभिलेखालय, केन्द्रीय मुहाफिजखाना।
Central Record Room—केन्द्रीय अभिलेखागार, मरकज़ी मुहाफिजखाना।
Central Revenue Stamps—केन्द्रीय राजस्व-स्टाम्प या मुद्रांक।
Central Road Development Fund—केन्द्रीय सड़क विकास कोप।
Central Stamp Store—केन्द्रीय स्टाम्प भंडार, केन्द्रीय मुद्रांक भंडार।
Centre of gravity—गुरुत्व-केन्द्र।
Centrifugal—अपकेंद्र।
Centrifugal pump—अपकेंद्री पम्प।
Centripetal—अभिकेंद्र।
Ceremony—संस्कार, अनुष्ठान।
Certificate—प्रमाणपत्र।
Certificate, medical—चिकित्सकीय प्रमाणपत्र।
Certificate of fitness—आरोग्यपत्र।
Certificate of registration—रजिस्टरी का प्रमाण पत्र।
Certificate of Sale—विक्रय प्रमाण-पत्र।
Certification—प्रमाणन।
Certified—प्रमाणित।
Certified extract—प्रमाणित अवतरण, प्रमाणित उद्धरण, तस्दीक़ किया इन्तखाव।
Certify—प्रमाणित करना, तस्दीक़ करना।
Cess—उपकर।
Ceteris Paribus—अन्य बातें पूर्ववत् रहते हुए, अन्य बातें यथापूर्व रहते हुए।
Chain—जंजीर, शृंखला, जरीब।
Chain and arrows—जरीब और तीर।
Chair—पीठिका।
Chairman—सभापति, अध्यक्ष।
Chancellor—कुलपति।
Channel—जलमार्ग, जलांतराल, वाहिका।
Chaplain—पादरी, पुरोहित।
Chapter—अध्याय, परिच्छेद।
Character—चरित्र, सदाचार, स्वरूप, लक्षण, गुण-धर्म।
Character of rainfall—वर्षा का स्वरूप।
Character roll—चरित्रपंजी।
Charge—मूल्य, प्रभार, अभियोग, भार रक्षण, आदेश, हमला, स्फोटक।
Chargeable—आदेय, आरोपणीय, प्रभारी।
Chargeable under—खर्च में, पड़ने योग्य, में व्ययनीय।
Charge cetrificate—कार्यभार प्रमाण-पत्र।
Charge of office—पदभार, पद का चार्ज।
Charge sheet—आरोप-पत्र, फर्द जुर्म।
Charitable—धर्मार्थ, खराती।
Charter Party—जहाज का किराया-नामा, नौ भाटक संविदा।
Chaufer—कोर मारना।
Check date—जाँच की तारीख, पड़ताल की तारीख।
Checking of Accounts—हिसाब की जाँच।
Check measurement—मापों की पड़-ताल, मापों की जाँच, नापों की जाँच।
Check nut—रोक ढिबरी।
Check of discount—बट्टे की जाँच-पड़ताल।
Check of Stores—भंडार की जाँच या पड़ताल।
Chemical—रासायनिक।
Cheque—चेक, धनादेश।
Chest—छाती, सीना, पेटी, तिजोरी।
Chief Evacuee Welfare Officer—प्रधान निष्कान्तजन कल्याण अधि-कारी।
Chief Controlling Revenue Autho-rity—मुख्य नियंत्रक राजस्व प्राधिकारी।
Chief Inspector of Stamps—प्रधान स्टाम्प निरीक्षक।
Chief Justice—मुख्य न्यायाधीश।
Chief Secretary—मुख्य सचिव।
Chimney—चिमनी, धुआँकस, धुआँरा।
Cholera—हैजा, विषूचिका।
Chord—जीवा।
Chronological order—तैथिक क्रम।
Chronology—कालक्रम विज्ञान।
Cinema—सिनेमा, चलचित्र।
Cinematograph Act—चलचित्र ऐक्ट।
Circle—हल्का, मंडल, परिमंडल।
Circle—वृत्त, चक्र, घेरा।
Circle Inspector—हलका निरीक्षक।
Circuit—सरकिट, परिपथ, परिधि।
Circuit House—सरकिट हाउस, विश्राम भवन।
Circular—परिपत्र, वर्तुल।
Circular order—गश्ती आज्ञा।
Circulars of the Board of Rev-enue in Department VII—सप्तम विभाग में राजस्व मंडल की गश्ती चिट्ठियाँ।
Circulate—घुमाना।
Circulation—प्रचार, परिचालन, परि-संचरण, परिवहन, संचार।
Circumlocution—व्यास-शैली, वाग्जाल।
Circumstance—परिस्थिति।
Circumstances, unavoidable—अनिवार्य परिस्थिति।
Circumstantial—परिस्थितिक।
Cistern—हौज, कुंड, टंकी।
Citation—वाचन-पत्र, उद्धरण, आह्वान, उल्लेख।
City allowance—नगर भत्ता, सिटी भत्ता।
Civil Aviation Department—नागर विमान विभाग।
Civil employ—असैनिक नौकरी।
Civil employee—असैनिक कर्मचारी।
Civil Police—नागर पुलिस।

Civil Procedure—दीवानी प्रक्रिया।
Civil Service—लोक-सेवा।
Civil Service Regulation—लोक-सेवा विनियम।
Civil Surgeon—सरकारी, शल्याकार।
Claim—दावा।
Claimant—दावेदार, वादी।
Claims—दावे।
Claims inadmissible—अग्राह्य दावे।
Claims of contractors—ठेकेदारों के दावे।
Clamp—शिकंजा।
Class—वर्ग, श्रणी, दर्जा, कक्षा।
Classification—वर्गीकरण।
Classification and Control of Appeal Rules—अपील के नियमों का वर्गीकरण तथा नियंत्रण।
Classified—वर्गीकृत।
Clause—खंड वाक्य।
Clearing agents—निकासी एजेंट।
Cleanliness—सफाई, स्वच्छता।
Clearing office—चेक के भुगतान का कार्यालय।
Clemency—राज्यक्षमा, मृदुलता।
Clergy—याजक वर्ग।
Clerical staff—लिपिकवर्ग, अमला।
Clerk—लिपिक।
Clinical—नैदानिक।
Clip—काटना, कतरना।
Clipping—कर्तन, कटाई।
Clock-winder—घड़ी की चावी देनेवाला।
Close—(*adj.*) निकट, (*v*) वन्द करना।
Closet—कोठरी, कमरा, तहखाना, आला, ताक, अलमारी।
Closing—अंतिम, इति।
Closing Balance—शेष रोकड़।
Closing Stock—अंतिम स्टाक।
Closure—समापन, समाप्ति, वंदी।
Closure Report—समापन सूचना।
Cloud—वादल, मेघ।
Clumsy—भद्दा।
Clustery—गुच्छेदार।
Co-accused—सहाभियुक्त।
Coagulate—जमाना, जमना।
Coagulation—जमाव, आतंचन।
Coaltar—तारकोल, अलकतरा।
Coarse—मोटा, स्थूल।
Coat of Arms—कुल चिह्न।
Coat of paint—रंग या रोगन का लेप।

Cock-bile—टोटी।
Cock-stop—टोटी (वढ़िया किस्म की)।
Code—नियमावली, संहिता, कोड।
Code of Civil Procedure—दीवानी प्रक्रिया संहिता।
Code-word—कूट-शब्द।
Codicil—क्रोड़-पत्र।
Co-efficient—गुणांक।
Coercion—बलप्रयोग, जबरदस्ती।
Cognate—सजातीय, सगोत्र, एक ही कुल से संबंधित।
Cognizable—प्रज्ञेय।
Cognizable offence—प्रज्ञेय अपराध।
Cognizance—विचाराधिकार, विचारण, प्रज्ञान।
Cohesion—संसक्ति, संसंजन, संलाग, सम्बद्धता।
Coin—सिक्का, मुद्रा।
Coinage—टंकण, सिक्का-ढलाई।
Collaboration—सहयोग।
Collate—मिलाना।
Collateral agreement—संपार्श्विक समझौता।
Collateral Security—समर्थक ऋणाधार
Collation—समाकलन, मिलान।
Collective fine—सामूहिक जुर्माना या अर्थदंड।
Collector—जिलाधीश, समाहर्ता।
College—महाविद्यालय, कॉलिज।
Collision—संघट्टन, टक्कर।
Colonial prisoners—उपनिवेशी वन्दी।
Colonial Service—उपनिवेशी सरकारी सेवा।
Colony—उपनिवेश, वस्ती।
Column—स्तम्भ, खंमा।
Combating a (disease)—रोग का मुकावला करना।
Combination of Posts—पदों का संयोजन।
Combustion—दहन।
Combustion chamber mistri—दहन-कक्ष मिस्त्री।
Comma—अल्प विराम।
Commandant—कमांडेंट, आदेशक।
Commemoration Volume—स्मारक ग्रंथ, अभिनन्दन-ग्रन्थ।
Commence—आरम्भ करना, शुरू करना।
Commencement—आरम्भ।
Commencement of Act—ऐक्ट का आरंभ, अधिनियम का आरम्भ।

Commend—सराहना, प्रशंसा करना, सिफारिश करना।
Commentary—भाष्य, टीका।
Commentator—टीकाकार, वृत्तिकार।
Commercial—वाणिज्य सम्बन्धी, वाणिज्यिक।
Commercial Department—वाणिज्य विभाग।
Commercial Formaline—तिजारती एलकोहाल।
Commission—कमीशन, आयोग, समिति।
Commissioner—कमिश्नर, आयुक्त।
Commission of inquiry—जाँच आयोग, जाँच कमीशन।
Commissioner of Revenue—माल कमिश्नर, माल आयुक्त।
Commit—सेशन सुपुर्द करना।
Commitment—सुपुर्दगी, वचनवद्धता।
Committal—सुपुर्दगी।
Committee—समिति।
Committee of Courses in Military Science—युद्ध-विद्या पाठ्यक्रम समिति।
Commode—कमोड, आलमारी।
Commodity—पण्य, माल।
Common Contingent Charges—सामान्य प्रासंगिक व्यय।
Communal harmony—साम्प्रदायिक मेल।
Communal hatred—साम्प्रदायिक घृणा।
Communal riot—साम्प्रदायिक दंगा।
Communication—संचार, संदेश, सूचना, संगमन।
Communique—विज्ञप्ति, सरकारी सूचना।
Commutation—परिवर्तन, दिकपरिवर्तन लघुकरण।
Commutation of Pension—निवृत्ति वेतन का परिवर्त्तन।
Commute—परिवर्तन करना, कम करना।
Commuted value—विनिमय मूल्य।
Company—कम्पनी, समवाय।
Comparative statement—तुल नात्मक विवरण।
Compartment—डिब्बा।
Compass—परकार।
Compassionate gratuity—अनुग्रह उपदान।
Compensation—क्षतिपूर्ति, मुआवजा, प्रतिकर।

Compensatory Allowance—प्रतिकर भत्ता।
Compete—मुकाबिला करना, होड़ करना, प्रतियोगिता करना, प्रतियोगी होना।
Competency—सक्षमता, सामर्थ्य।
Competent—सक्षम, समर्थ।
Competent authority—सक्षम प्राधिकारी।
Competent Court—सक्षम न्यायालय।
Competitive Examination—प्रतियोगिता परीक्षा।
Compilation—संग्रह, संकलन।
Compiled—संग्रह किया हुआ, संकलित।
Compilation of Statistics—आंकड़ों का संकलन।
Complainant—फ़रियादी, वादी।
Completion Plans—समापन मानचित्र (नक्शे)।
Completion of Courses—विषयों की समाप्ति।
Complex Mahal—शामलाती महाल, साझे का महाल।
Comply—मानना, पालन करना।
Component parts—पुर्जे, अवयव।
Composite slab—मसाले की शिला।
Composition deed—समझौता पत्र।
Compound—राजीनामा करना, अहाता।
Compoundable offences—प्रशम्य अपराध।
Compounder—कंपाउंडर, सम्मिश्रक।
Compression—संपीडन, दबाव।
Comprising—समाविष्ट करते हुए।
Compromise—समझौता।
Compulsion—बाध्यता, विवशता, मजबूरी।
Compulsory Primary Education Manual—अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा नियम पुस्तक।
Compulsory registration—अनिवार्य पंजीयन, अनिवार्य रजिस्टरी।
Compulsory retirement—अनिवार्य निवृत्ति।
Compute—हिसाब लगाना, संगणना करना।
Computation—संगणना।
Computation of Fees—शुल्क संगणना।
Computed—संगणित।
Computor—संगणक।
Concave—[illegible]।
Concentration Camp—बंदी शिविर, नजरबंदी शिविर।
Concentric—संकेन्द्रीय।
Concession—रिआयत।
Concisely—संक्षेपतः, संक्षिप्त रूप से।
Concrete work—कंकरीट का काम।
Concur—सहमत होना।
Concurrence—सहमति।
Concurrent—समवर्ती, संगामी।
Concurrent Judgment—संगामी निर्णय।
Condemned prisoner—अपराधित बंदी।
Condenser attendant—संघनित्र परिचर।
Condiment—(खाने का) मसाला।
Condition of qualifying service—सेवा की अर्हता-शर्त।
Conditional—सशर्त, शर्तबन्द।
Conditionally—शर्त के साथ।
Conditional long-term settlement—सशर्त दीर्घकालीन बन्दोबस्त।
Conditional order—सशर्त आदेश, सप्रतिबन्ध आज्ञा।
Conditional Sale—सशर्त विक्रय।
Conditions of Service—नौकरी की शर्तें।
Condonation—क्षमा, माफ़ी।
Condonation of shortage in attendance—उपस्थिति की कमी की माफ़ी।
Conduct—चालचलन, आचरण, व्यवहार, आचार।
Conduction—संवहन, चालन।
Conductor—संवाहक, चालक।
Conduit—नाली, तारनाली, वाहक नाली।
Cone—शंकु।
Confederacy—राज्यसंघ।
Confer—देना, प्रदान करना, परामर्श करना, राय लेना, मत पूछना, बातचीत करना।
Conference—सम्मेलन।
Conferment of Powers—अधिकार प्रदान।
Confession—[illegible], [illegible]।
Confidence—भरोसा, विश्वास।
Confidential—गोपनीय, विश्रब्ध।
Confirm—पुष्टि करना, दृढ़ करना, पक्का करना, [illegible]।
Confirmation—अनुमोदन, पुष्टि करना, [illegible]।
Confiscated weapon—जब्त किया हुआ हथियार।
Confiscation—जब्ती, राज्यसात्करण।
Conformity—अनुरूपता, अनुकूलता, समानता, मेल, समविन्यास।
Confused—गड़बड़, घबराया हुआ, भ्रमात्मक।
Conic section—शांकव, काट।
Conjecture—अनुमान, अंदाजा।
Conjugal rights—दाम्पत्य अधिकार।
Connivance—चश्मपोशी, असम्मत अनुमति।
Connive—जानकर उपेक्षा करना, आँखें मूंदना।
Conscientious—अंतर्भावनाशील, सद्विवेकी।
Conscription—जबरिया भरती, अनिवार्य भरती।
Consecutive—निरंतर, लगातार, क्रमिक।
Consequential—आनुषंगिक, परिणामी।
Conservancy animals—मैला ढोनेवाले पशु।
Consideration—प्रतिफल, विचार।
Consign—माल भेजना।
Consignment—परेषित या प्रेषित माल, प्रेषण।
Consignor—माल भेजनेवाला, प्रेषक।
Consistent—संगत।
Consolidated—संघटित।
Consolidated bills and Consolidated Statements—संघटित बिल और विवरण-पत्र।
Consolidated debt—समेकित ऋण।
Consolidated forecast—समेकित पूर्वानुमान।
Consolidated Pay—समेकित वेतन।
Consolidation—समेकन, चकबंदी।
Consolidation of holdings—चकबन्दी।
Consolidation Officer—चकबन्दी अधिकारी।
Consolidator—चकबन्दी कर्ता।
Conspiracy—षड्यन्त्र, साजिश।
Constable—सिपाही, [illegible]।
Constant—स्थिर, [illegible], [illegible]।
Constitution—[illegible]।
Construction—निर्माण, [illegible]।
Consumable—[illegible]।
Consumer—[illegible]।

Contact—सम्पर्क, संस्पर्श।
Contagious disease—छूत की बीमारी, संक्रामक रोग।
Contemplated—अवेक्षित।
Contempt—अवमान, अवज्ञा, अवहेला।
Contents—विषय-सूची अन्तर्वस्तु।
Context—प्रसंग, संदर्भ।
Contingencies—प्रासंगिक व्यय।
Contingent—प्रासंगिक।
Contingent charges—फुटकर व्यय।
Contingent Expenditure—सांयोगिक व्ययभार।
Continuance—जारी रहना।
Continuation—जारी रहना, सिलसिला।
Continuous Active Service—अविच्छिन्न सक्रिय नौकरी, अविरत सक्रिय भृत्या।
Contour—रूपरेखा।
Contraband—निषिद्ध, वर्जित।
Contract—ठेका, करार, संविदा।
Contract allowance—नियत भत्ते।
Contract of Sale—विक्रय करार।
Contractual relation—संविदागत संबंध।
Contradistinction—विभेद।
Contrary—विपरीत, विरोधी, प्रतिकूल।
Contravention—उल्लंघन।
Contribution—अंशदान, चन्दा।
Contribution for leave and pension—छुट्टी और अनुवृत्ति के लिये अंशदान।
Control clock—नियंत्रक घड़ी।
Control flume—नियंत्रक फ्लूमनाली।
Controller of Stamps—स्टाम्प नियंत्रक, मुद्रांक नियंत्रक।
Controlling officer—नियंत्रण अधिकारी।
Controversial—विवादालक।
Convalescent—उपशमक, उपशमी।
Convene—सभा बुलाना, संयोजन करना।
Convener—संयोजक।
Conventionally—रिवाजी तौर पर, प्रयानुसार।
Conversant—परिचित, वाक़िफ।
Conversation—बातचीत।
Conversing—बातचीत करते हुए।
Conversion—परिवर्तन, बदलान।
Conveyance—सम्पत्ति हस्तांतरण, हस्तांतरण (पत्र) सवारी।
Conveyance Allowance—सवारी भत्ता।
Convict—सिद्धदोष, क़ैदी।
Convicting—सजा देनेवाले, दंड देनेवाले।
Convicting Court—सजा देनेवाली अदालत।
Conviction—अभिशस्ति।
Co-operative Society—सहकारी समिति।
Co-opt—सहयोजित करना।
Co-ordination—समन्वय, तालमेल, एकरूपता।
Co-owner—सहस्वामी।
Coparcener—अंशी, भागीदार।
Copy—नकल, प्रतिलिपि।
Copy forwarded to—प्रतिलिपि भेजी गई।
Copyist—प्रतिलिपिक, नकलनवीस।
Copy of Extract—उद्धरण की प्रतिलिपि।
Copy Stamped Papers—प्रतिलिपि मुद्रित पत्र।
Corbel—टोडा।
Cornice—कंगूरा, कारनिस।
Coronation—राजतिलक, राज्याभिषेक।
Coronor—अपमृत्यु विचारक।
Corporal armourer—कारपोरल आर्मरर, कारपोरल आयुधकार।
Corporal Instructor—व्यायाम शिक्षक।
Corporal punishment—शारीरिक दंड।
Corpuscle—कणिका।
Corrected proof—संशोधित शोध्यपत्र।
Correction—संशोधन, शोधन, दुरुस्ती, शुद्धि।
Correction and addition slips—शोधन तथा जोड़ पर्चियाँ।
Correspondence—पत्रव्यवहार।
Corrigenda—शुद्धिपत्र।
Corrosive Sublimate—रसपुष्प।
Corrugated—नालीदार।
Cost—लागत, खर्च, व्यय, परिव्यय।
Cost realized—वसूल लागत।
Co-tenant—सह-कृषक, खाता शरीक।
Cotton balls—कपास का गूल।
Council House—सभाभवन, कौंसिल हाउस।
Council of Physical Culture—शारीरिक शिक्षा परिषद।
Council of States—राज्य सभा।
Counsel—मंत्रणा, सलाह, वकील।
Counter affidavit—प्रतिशपथपत्र।
Counter-balance—प्रतितोलित करना, काट करना, तुल्य भार करना, बराबर करना, प्रतिसंतुलित करना।
Counter-claim—प्रति या जवाबी।
Counterfeit coin—जाली सिक्का।
Counterpart—प्रतिलिपि, मुसन्ना, तद्रूप, मेल, जोड़, जवाब, प्रतिरूप।
Counter signature—प्रतिहस्ताक्षर।
Countersigned—प्रतिहस्ताक्षरित।
Counting of service for—के लिये नौकरी का जोड़ना।
Country—देश, प्रदेश।
Country wood—देशी लकड़ी।
Coupon—कूपन।
Course of Submission—उपस्थापन क्रम।
Courses of Study—पाठ्यक्रम, पाठचर्या, कोर्स।
Court—न्यायालय, अदालत।
Courteous—शिष्ट।
Court Fee Act—न्यायालय फीस या शुल्क-विधान, कानून रसूम अदालत।
Court Fee Label—न्ययाशुल्क चिप्पी।
Court Martial—फौजी अदालत, सैनिक न्यायालय।
Court of Law—न्यायालय।
Court of Small Causes—लघुवाद न्यायालय, अदालत खफीफा।
Court of Wards—प्रतिपालक अभिकरण।
Covenant—प्रसंविदा।
Crab—केकड़ा, कर्क।
Craft—शिल्प, व्यवसाय, धंधा।
Create a right—अधिकार पैदा करना।
Creation of a Post—जगह का क़ायम किया जाना, पदस्थापन।
Creative—सृजनात्मक, सर्जनात्मक।
Credit—जमा।
Credit advice—जमा-सूचना।
Credit notes—जमा-पत्र, साख-पत्र।
Credit revenue—ऋण राजस्व।
Crest—शिखर, चोटी, शीर्ष।
Crime Police—अपराध रोधक पुलिस।
Crime Records Officer—अपराध अभिलेख अधिकारी।
Crime reports—अपराध रपटें।
Criminal Intelligence Gazette—खुफिया विभाग का गजट या राजपत्र।

Criminal Investigation Department (C. I. D.)—खुफिया पुलिस विभाग, गुप्तचर पुलिस विभाग।
Criminal mental patient—अपराधी मस्तिष्क रोगी।
Criminal offence—दण्ड्य अपराध।
Criticise—आलोचना या समालोचना करना।
Crockery—चीनी मिट्टी के बरतन।
Crop failure—फसल का खराब होना, फसल का बिगड़ जाना।
Crops—फसलें।
Cross-appeal—प्रति-अपील।
Cross-examination—प्रति परीक्षा, जिरह।
Crossing of efficiency bar—प्रगुणता रोध का पार करना।
Cross-objection—प्रत्याक्षेप, प्रति आपत्ति।
Cross Section—अनुप्रस्थ या आड़ी काट, व्यत्यस्त।
Crown of an arch—तोरण-शीर्ष, मेहराब का शीर्ष।
Cruelty towards animals—जानवरों के प्रति निर्दयता।
Cube—घन।
Cube root—घन-मूल।
Cubic foot—घन फुट।
Culinary—पाकशाला।
Culpable—दंडनीय, सदोष।
Culpable homicide not amounting to murder—सदोष मानव-वध।
Culturable—कृषियोग्य, कृष्य।
Cultivator—किसान, कृषक।
Cultivation—खेती।
Culture medium—पोषक माध्यम, संवर्धन माध्यम।
Culvert—पुलिआ।
Cumbersome—कष्टकर, बोझिल।
Cupboard—आलमारी
Curator (of Museum)—संग्रहालय अध्यक्ष।
Currency—मुद्रा, चलार्थ।
Current—(*n.*) धारा, बिजलीधारा; (*adj.*) प्रचलित।
Curriculum—पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों की सूची।
Curtain wall—रक्षक दीवार या भीत; रक्षक परदा।
Curtness—रुखाई।

Curve—वक्र, वक्रता, घुमाव।
Cushion—गद्दी।
Custodian—परिरक्षक।
Custody—हिरासत, अभिरक्षा।
Custody of stamps—स्टाम्प का संरक्षण।
Custody of wills—वसीयतनामों की अभिरक्षा।
Customary—आचारिक, रूढ़िजन्य।
Custom officer—सीमाशुल्क अधिकारी।
Cut—कटौती।
Cutaneous—त्वचीय।
Cut motion—कटौती प्रस्ताव।
Cutting—काटना, कटाई।
Cut water—पनकट।
Cycle allowance—साइकिल भत्ता।
Cyclostyle—चक्रलेखित्र।
Cysto—कोष्ठ।

D

D.B.B.L. guns—दुनली कारतूसी बन्दूकें।
Dacoity—डकैती, डाका।
Dagger—छुरा।
Daily allowance—दैनिक भत्ता।
Daily labour return—दैनिक भृति का चिट्ठा।
Dak—डाक।
Dak Bungalow Establishment—डाक बँगले के कर्मचारी।
Damage—क्षति, हानि, टूट-फूट।
Damaged stamp—क्षतिग्रस्त स्टाम्प।
Damages suit—क्षतिपूर्ति का वाद।
Danger—खतरा, संकट।
Dangerous—भयानक, भयावह, खतरनाक।
Data—दत्त सामग्री, आधार-सामग्री, आँकड़े।
Date—तारीख, दिनांक, तिथि।
Dated—दिनांकित।
Date of birth—जन्म-दिवस, जन्म दिनांक।
Date of institution—प्रवेशकीय तिथि।
Day scholar—अनावासिक छात्र।
Day school—दोपहर का स्कूल, दैनिक स्कूल।
Dealer—व्यापारी।
Dean—संकायाध्यक्ष।
Dearness allowance—महँगाई का भत्ता।

Debate—वाद-विवाद।
Debenture—ऋणपत्र।
Debit—नामे, नामखाता।
Debit advice—नामे डालने की सूचना।
Debited—नामे डाला।
Deceased—मृत, स्वर्गीय।
Decentralization Committee—विकेन्द्रीकरण समिति।
Decimal fraction—दशमलव भिन्न।
Decision—निश्चय, निर्णय, फैसला।
Declaration form—घोषणा पत्र।
Declaration of trust—न्यास-घोषणा।
Declaratory—घोषणात्मक।
Declaratory decree—घोषणात्मक डिग्री।
Decontrol—नियन्त्रण हटाना।
Decree—डिगरी, आज्ञप्ति।
Decree-absolute—अंतिम डिगरी।
Decree-holder—डिगरीधारी, डिगरीदार।
Decree for judicial separation—जुडिशिआल विच्छेद की डिगरी।
Deduction—कटौती, मिनहाई।
Deed—विलेख।
Deed of agreement—इकरारनामा।
Deed of Exchange विनिमय-पत्र।
Deed of gift—दान पत्र।
Deed of lease—पट्टा।
Deface—विरूप करना।
De facto—वस्तुतः, दरअसल।
Defalcation—खयानत, गबन।
Defamation—मानहानि।
Default—चूक, अभाव।
Defaulter—बाकीदार।
Defect—दोष, त्रुटि, खराबी, कमी।
Defective—सदोष, दोषयुक्त, त्रुटिपूर्ण, खराब।
Defence—प्रतिरक्षा, प्रतिवाद।
Defence Department—रक्षा-विभाग।
Defence Savings Provident Fund—रक्षा-बचत निर्वाह-निधि।
Defence witness—प्रतिवादी साक्षी।
Defendant—प्रतिवादी।
Deferred pay—आस्थगित वेतन।
Deficiency—न्यूनता, कमी, कसर, अभाव, त्रुटि।
Deficiency in embezzlement—गबन-धन में कमी।
Deficiently stamped—न्यूनस्टाम्प युक्त।
Deficit—घाटा, कमी।

Deficit grant—घाटा-पूरक अनुदान।
Define—परिमापा करना।
Definite share—निश्चित या सीमित भाग।
Definition—परिमापा।
Defraud—कपट करना।
Degeneration—अपकर्प, अपविकास।
Degree—उपाधि, घात, कोटि, अंश, अवस्था।
Degree College—महाविद्यालय,उपाधि महाविद्यालय।
De jure—विधितः, न्यायतः।
Delegacy—प्रातिनिधिक।
Delete—निकाल देना, काट देना।
Delegation—शिष्टमंडल, प्रत्यायोग।
Delegation of power—अधिकार मार सौंपना।
Delinquency—अपचार।
Delinquent—अपचारी, वक्राया।
Deliver—देना, प्रदान करना, सुपुर्द करना, छोड़ना, सौंपना, (मालका) मुक्त करना।
Delivery—सुपुर्दगी, दे देना, सौंप।
Delivery of goods—माल छुड़ाई, सुपुर्दगी।
Demand—माँग, अमियाचना।
Demarcated—सीमांकित।
Demeanour—व्यवहार, चेष्टा, मुद्रा।
Demi-official—अर्ध सरकारी।
Demised—पट्टे पर दी गई (भूमि)।
Demodectic scabies—खुजली।
Demonstration farm—प्रदर्शन फार्म।
Demurrage—विलम्ब-शुल्क।
Denaturalized—विप्रकृत।
Denomination—मूल्य-वर्ग संज्ञा।
Denominator—हर (गणित)।
De novo—नये सिरे से।
Department—विभाग।
Departmental—वैभागिक।
Departmental cognizance—वैभागिक हस्तक्षेप।
Departmental inquiry—विमागीय या वैभागिक जाँच।
Departmental proceedings—विभागीय या वैभागिक काररवाई।
Departure from normal—सामान्य अवस्था से विचलन।
Deportation—विवासना।
Deposit—(*n.*) जमा; (*v*) जमा करना, निक्षेप करना।
Deposit slip—जमा पर्ची।
Depot— डिपो, मंडार, गोदाम।
Depressed class—दलित वर्ग, दलित जाति।
Deputation—शिष्ट-मंडल, प्रतिनियुक्ति।
Deputation allowance—प्रतिनियुक्ति भत्ता।
Depute—प्रतिनियुक्त करना।
Deputy Commissioner—उपआयुक्त।
Deputy Director of Education—उप शिक्षा संचालक।
Deputy Hydro-electric Engineer-उप जल-विद्युत् अमियन्ता।
Deputy Revenue Engineer—प्रति-राजस्व अभियन्ता।
Deputy Revenue Officer—उप माल अफसर।
Deputy Secretary—उप सचिव।
Derailment—पटरी से उतरना।
Dereliction—उत्त्याग।
Derogate—आंशिक निष्प्रभव करना, अमर्यादित करना।
Derogatory—अप्रतिष्ठाजनक, अल्पकारी, अपकर्षी।
Descendant—संतति, वंशज।
Descent—उद्भव, औलाद।
Describe—वर्णन करना, बयान करना।
Description of executants—निष्पादकों का विवरण।
Descriptive roll—विवरणी।
Descriptor—वर्णनकर्त्ता।
Desert—छोड़ देना, परित्याग, त्यजन, रेगिस्तान, मरुस्थल, मरुभूमि।
Deserter—मगोड़ा।
Desired—वांछित, इच्छित, अमिलपित।
Desiccator—शोषित्र, सोख्ता।
Designate—मनोनीत, नामित।
Designation—पदनाम, ओहदा।
Despatch—भेजना, प्रेषण, शीघ्रता।
Despatcher—प्रेषक।
Destruction—विनाश, विघटन।
Detailed bills—ब्यौरेवार पुर्जा।
Detailed estimate—ब्यौरेवार अनुमान या तखमीना।
Detailed list—विस्तृत सूची।
Detain—निरुद्ध करना, रोकना।
Detained student—परीक्षा से रोके गये छात्र।
Detection—अन्वेषण, पहचान, संसूचन खोज।
Detective—जासूस, गुप्तचर, खुफिया।
Detention—निरोध, रुलाई, अवरोध, नजरबन्दी।
Detention alowance—अवरोधन भत्ता।
Detenu—निरुद्ध, क़ैदी।
Deterioration—अपह्रसन, ह्रास, कमी।
Development—विकास, उन्नति।
Deviate—विचलित होना।
Devolution—अंतरण, न्यागमन।
Devolve—न्यागत होना, सौंपना।
Diagnosis—निदान।
Diameter—व्यास।
Diamond drill Foreman—हीरक वरमा फोरमैन।
Diarised—दैनंदिनी पर उल्लिखित।
Diarrhoea—अतिसार, दस्त की बीमारी।
Diary—दैनंदिनी, रोजनामचा, दैनिकी, डायरी।
Diary Copy Book—दैनिकी की नकल प्रति।
Dietary—आहार संबंधी।
Diet money—भोजन मूल्य।
Difference of opinion—मतभेद।
Differentiate—भेद परखना।
Digest—निचय, सार-संग्रह।
Dignity—गरिमा, गौरव।
Digress—विषयान्तर होना।
Dilatory tactics—विलंबी युक्तियाँ।
Diploma—सनद।
Diplomacy—राजनय, कूटनीति।
Direct—सीधा, सरल, प्रत्यक्ष।
Direct charges—प्रत्यक्ष प्रभार।
Direct expression—स्पष्टार्थ कथन।
Direction—निदेश, निदेशन।
Director—निदेशक।
Directorate—निदेशालय।
Director General of Commercial Intelligence and Statistics—वाणिज्य संबंधी जानकारी और आँकड़ों के महा निदेशक।
Director of Agriculture—कृषि निदेशक।
Director of Education—शिक्षा निदेशक।
Director of Jail Industries—कारागार उद्योग निदेशक।
Disability—अशक्तता, निर्योग्यता।
Disability leave—अशक्तता छुट्टी।
Disagree—असहमत होना।

Disappearance—लोप, गायब।
Disarm—नि:शस्त्र करना।
Disburse—वितरण करना, भुगतान करना।
Disbursement—भुगतान, परिव्यय, वितरण।
Disbursing—वितरण-कारी।
Disbursing Officer—वितरण-अधिकारी।
Disc—बिम्ब, चकती।
Discharge—निस्सारण।
Discharged Prisoner's Aid Society—उन्मुक्त वन्दी सहायक समिति।
Disciplinary action—अनुशासनिक कारवाई।
Discipline—अनुशासन।
Disclaimer—दावा छोड़ देना।
Disconnection—संबंध-विच्छेद, वियोजन।
Discount—मिती-काटा, वट्टा।
Discrepancy—असंगति।
Discrepancy memo—असंगति पत्र।
Discretion—विवेक।
Discretionary registration—विवेकाधीन रजिस्टरी।
Discussion—विचार-विमर्श, विवेचन।
Disembark—(नाव से) उतरना।
Disembarkation—जहाज से उतार या अवरोहण।
Disinfectant—रोगणुनाशक, निस्संक्रामक।
Disinfection—निस्संक्रमण, रोगणुनाशन।
Dismantlement—इमारत को गिराना।
Dismissal—पदच्युति।
Dismissal from service—नौकरी से कार्यच्युत करना, नौकरी से वर्खास्त करना।
Dismissed in default—अनुपस्थिति के कारण खारिज।
Dismissed summarily—क्षिप्रता से खारिज।
Disobedience—अवज्ञा, आज्ञाभंग, आज्ञोल्लंघन।
Dispensary—औषधालय।
Dispense with—अलग करना।
Disposal—निर्वर्तन, निपटारा।
Dispose of—वेच डालना, निपटाना।
Disposition—प्रवृत्ति, चित्तवत्ति।
Disputable claim—विवादास्पद दावा।
Disqualification—अनहता, अयोग्यता।

Dissolution—भंग, विलयन, विघटन।
Dissolution of partnership—साझा-भंग।
Dissolve—विघटित करना, घुलना, घोलना, घुलाना।
Dissolving—भंग करना।
Distinctive—विशिष्ट, प्रभेदक।
Distinction—प्रभेद, भिन्नता, विशिष्टता, विभेद।
Distinct matters—विभिन्न विषय, विविध विषय।
Distinguishing letter—विशेषक अक्षर, विभेदक अक्षर।
Distress warrant—अभिहार वारंट।
Distribute—वितरण करना, बाँटना।
Distribution—विस्तार, वितरण।
Distribution main—वितरण का मुख्य पाइप या तार।
Distribution of power—शक्ति का वितरण।
District Adult Education Committee—जिला प्रौढ़ शिक्षा समिति।
District Board—जिला वोर्ड, जिला परिषद।
District Executive Force—जिला पुलिस।
District Field Instructor—जिला क्षेत्र शिक्षक।
District grain account—जिला अन्न-राशि लेखा।
District Inspector of Schools—जिला विद्यालय निरीक्षक।
District Intelligence Staff—जिला खुफिया पुलिस विभाग।
District Medical Officer of Health—जिला स्वास्थ्य अधिकारी।
District Municipal Board—जिला नगरपालिका समिति।
District Organiser—जिला आयोजक।
District Statement—जिला नकशा या व्यौरा।
District Waqf Committee—जिला वक्फ समिति।
Ditto—यथोपरि, ऐज़न।
Diversion—विचलन, हटना, हट जाना।
Diversity factor—भेद गुणक।
Dividend—लाभांश।
Divisional—मंडल या प्रभाग संबंधी।
Divisional Canal Officer—मंडल नहर अधिकारी।

Division of holdings—जोतों का विभाजन।
Divorce—विवाह-विच्छेद, तलाक।
Docket—सारांश, कार्यक्रम।
Docket form—डाकेट फार्म।
Docketing—डाकेट बनाना।
Document—दस्तावेज, प्रलेख।
Documentary—दस्तावेजी, लेख्य।
Documentary evidence—लेख्य साक्ष्य।
D.O. letter—अर्ध-सरकारी पत्र।
Domestic purpose—घरेलू काम।
Domestic Science—गृहविज्ञान, घरेलू विज्ञान, गृहविद्या।
Domicile—अधिवास।
Donation—दान।
Donee of authority to adopt—गोद लेने का आहाता।
Donor—दाता।
Dotted Lines—विंदु रेखा।
Double lock—दो कुंजीवाला ताला।
Double shift system—द्विपारी प्रथा।
Doubtful entry—संदिग्ध प्रविष्टि।
Dourine Act—डूरिन नियम।
Dowry—दहेज।
Drafter—मसौदा बनानेवाला।
Draft for approval—मंजूरी के लिए मसौदा, स्वीकृति के लिए पांडुलेख।
Draught—घूंट।
Drawing—रेखाचित्र।
Drawing establishment—रेखाचित्र स्थापना।
Drawing officer—आहर्ता अधिकारी।
Dress—वेष, वर्दी।
Dess Regulations—वेष नियम।
Drill—कवायद, व्यायाम।
Driver—चालक, ड्राइवर।
Drought—अनावृष्टि, सूखा।
Dryage—सूखन।
Dry weather prevailed thereafter till the end of the month—*उसके पश्चात् मास के अन्त तक अना-* वृष्टि रही।
Due—देय, प्राप्य, उचित।
Due disposal of cases—प्रकरणों तथा वादों का उचित निर्वर्तन।
Duly—यथोचित, विविवत्।
Duly approved—विधिवत् स्वीकृत, वाजाब्ता मंजर।
Duly stamped—विधिवत अंकपत्रित।

Duplicate—अनुलिपि, दोहरा।
Durability—स्थायित्व।
Duration of absence—अनुपस्थिति की अवधि।
Duress—दवाव, वाध्यता, विवाध्यता।
Dustproof—धूलरोधक।
Duty—कर्त्तव्य, कार्य, महसूल, शुल्क।
Duty allowance—शुल्क भत्ता।
Duty on conveyance—सम्पत्ति हस्तान्तरण पर शुल्क।
Duty on counterpart or duplicate—प्रतिलिपि या अनुलिपि पर शुल्क।
Dying declaration—मृत्युकालीन घोषणा।
Dysentery—रक्तातिसार, पेचिश।

E

Early—शीघ्र, जल्दी, अगेती।
Early Kharif Crop—अगेती खरीफ की फसल।
Earmark—(के लिये) अलग रखना, निर्दिष्ट करना।
Earned—अर्जित, उपार्जित।
Earned leave—अर्जित छुट्टी।
Earned leave on average pay—औसत वेतन पर अर्जित छुट्टी।
Earned leave on full pay—पूरे वेतन पर अर्जित छुट्टी।
Earned leave on half average pay on medical certificate—चिकित्सक के प्रमाणपत्र के आधार पर आधी औसत वेतन पर अर्जित छुट्टी।
Earnest money—वयाना, पेशगी।
Earth-work—मिट्टी का काम।
Easement—सुखभोग।
Easement of light—प्रकाश का सुखभोग।
Easement, suit of—सुखभोग का वाद।
East-coast fever—पूर्व-तटीय ज्वर।
Eaves—ओलती।
Ebony—आवनूस।
Eccentric—उत्केन्द्र।
Ecclesiastical—गिरजे-संवंधी, धर्म-संवंधी।
Economics—अर्थशास्त्र।
Economy—मितव्ययिता, अर्थव्यवस्था, अर्थनीति, किफायत।
Ectozoa—वहिर्परजीवी।
Edition—संस्करण।
Education—शिक्षा।
Educational—शिक्षा-सम्बन्धी।
Educational code—शिक्षाविधि संग्रह।
Educational Psychology—शिक्षा मनोविज्ञान।
Education Expansion Department—शिक्षा प्रसार विभाग।
Education Expansion Officer—शिक्षा प्रसार अधिकारी।
Effect of enactments—अधिनियमों का प्रभाव।
Effect of registration—रजिस्टरी का प्रभाव।
Effective capacity—प्रभावी क्षमता।
Efficiency—निपुणता, कार्यक्षमता।
Efficiency Bar—दक्षता-रोध।
Efficient—निपुण, कार्यक्षम।
Egress—निर्गम, निर्गमन।
Ejectment—वेदखली।
Elastic garters—लचकदार गेटिस।
Elect—निर्वाचित करना, चुनना।
Election—निर्वाचन, चुनाव।
Election campaign—चुनाव अभियान।
Election to retain his old or revised scale of pay—अपना पुराना या नया वेतनक्रम रखने की छूट।
Electrical and Mechanical Assistant of Tubewells & Irrigation works—नलकूप तथा सिंचाई के विद्युतिक एवं यांत्रिक सहायक।
Electrical contractors—बिजली के ठेकेदार।
Electrical equipment—विद्युत् उपस्कर।
Electrical installation—विद्युत् प्रतिष्ठापन।
Electrical merchants—विद्युत् व्यवसायी
Electrical shocks—बिजली के धक्के।
Electrical supervisors—विद्युत् पर्यवेक्षक।
Electrical Supply Administration—विद्युत् प्रदाय प्रशासन।
Electrician—बिजली मिस्त्री।
Electricia's Pay—बिजली मिस्त्री का वेतन।
Electric Inspector—विद्युत् निरीक्षक।
Electricity—विद्युत्, बिजली।
Elecrification—विद्युतन।
Elegance—सुन्दरता।
Elementary—प्रारम्भिक, प्राथमिक।
Elementary knowledge—प्राथमिक ज्ञान।
Elementary Psychology—प्राथमिक मनोविज्ञान।
Elementary Rules—प्रारम्भिक नियम।
Elevation—उच्चता, उत्थान।
Eligible—योग्य, पात्र।
Eligibility—पात्रता, योग्यता।
Eliminate—निरसन करना, लुप्त करना
Elimination—निरसन, विलोपन।
Ellipse—दीर्घवृत्त।
Elliptic and curved figure—दीर्घवृत्त एवं वक्र क्षेत्र।
Eloquent—वाग्मी, वाग्मितापूर्ण।
Embankment—बाँध, भराव, वंध।
Embarassment—आकुलता, परेशानी।
Embarkation—नौरोहण।
Embezzlement—गबन।
Emergency—आपात, विपत्ति, संकटकाल, आकस्मिक आवश्यकता।
Emergency provisions—संकटकालीन आदेश।
Emergent—आपाती, आपातिक।
Emergent Contingent Grant—आपाती प्रासंगिक अनुदान।
Emergent Indent—अत्यावश्यक माँगपत्र, आत्ययिक माँगपत्र।
Emolument—उपलब्धि, पारिश्रमिक।
Emphasis—जोर, वल।
Employment—नौकरी, काम, धंधा।
Empower—अधिकार देना।
Empowered—अधिकार प्राप्त, अधिकृत
Emulsion—पायस, मिश्रण।
Enact—अधिनियम वनाना।
Enactment—अधिनियम।
Employer—नियोक्ता, मालिक।
Enamelling—मीनाकारी।
En-camera trial—गुप्त-कक्ष-विचार।
Encamp—डेरा डालना, पड़ाव डालना, शिविर लगाना।
Encamping ground—पड़ाव भूमि, शिविर स्थल।
Eucampment—डेरा, पड़ाव, शिविर, छावनी।
Encash—भुनाना, तुड़ाना, सकारना, हुंडी का भुगतान देना।
Encasing—आवेष्टित करना।
Enclose—वंद करना।
Enclosure—सह-पत्र, संलग्न-पत्र।
Encroachment—अतिसर्पण, जमीन

दबा लेना।
Encumbered—भारग्रस्त।
Endorse—पृष्ठांकन या पृष्ठांकित करना।
Endorsed—पृष्ठांकित।
Endorsement—पृष्ठांकन, बेचान, अनुमोदन सकार, समर्थन।
Endowment—धर्मस्व, धर्मादा, धर्मदाय।
Energy—ऊर्जा।
Enforce—लागू करना, प्रवर्तित करना।
Enforcing appearance—उपस्थिति के लिये बाध्य करना।
Engineer—इंजिनियर, अभियंता।
Engineer, Electrical—विद्युत् अभियंता।
Engineer, Mechanical—यांत्रिक अभियंता।
Engraving—नक्काशी, खुदाई।
Enhance—बढ़ाना।
Enhancement—वृद्धि, बढ़ाया जाना।
Enjoyment—उपभोग, उपयोग।
Enquiry—जाँच, पूछताछ।
Enrolment—नामांकन, नामनिवेश पंजीयन।
Enrolment of pleaders—वकीलों का भरती किया जाना या भरती होना।
Ensuing—आगामी, आनेवाला, अनुवर्ती।
Enteritis—आंत्रार्ति।
Enterprise—उद्यम।
Entertain—सत्कार करना, खिलाना-पिलाना, ग्रहण करना, दाखिल करना।
Entertainment and Betting Tax—मनोरंजन और पणनकर।
Entertainment of staff—कर्मचारी वर्ग का नौकर रखा जाना।
Entertainment Tax Stamps—मनोरंजन कर मुद्रांक।
Entitled—अधिकारी।
Entitled to—का अधिकारी।
Entries—प्रवेश, प्रविष्टि।
Environment—परिस्थिति, पर्यावरण।
Epidemic—महामारी।
Epidiascope—पारा पारचित्रदर्शी।
Epizootic—पशुमहामारी।
Epizootic lypmphangitis—पशुमहामारी गल प्रदाह।
Equation—समीकरण।
Equilibrium—समतोल, साम्यावस्था।
Equipment—सज्जा-सामान, उपकरण, उपस्कर।
Equipment Table—सज्जा सामान सूची।
Equitable charge—साम्यिक भार।
Eqitable mortgage—साम्यिक बन्धक।
Equity—साम्या, औचित्य।
Equity of redemption—मोचन अधिकार।
Equivalent—बराबर, तुल्य, समान, सम।
Erasing—लुप्तिकरण, अपमार्जन।
Erasure—काट-कूट।
Erected—बनाया गया।
Errata list—अशुद्धि सूची।
Erratic—अनियत।
Erroneous entry—अशुद्ध प्रविष्टि।
Error—त्रुटि, अशुद्धि, भूल, गलती।
Escape—(*v.*) भाग जाना, निकल भागना; (*n.*) पलायन।
Escaped—निकल भागा।
Escapee—भागा हुआ, भग्गू।
Escheat—राजगामी (होना)।
Escort—अनुरक्षी।
Essential—अनिवार्य, आवश्यक।
Essence—सत्त्व, आसव।
Establishment—स्थापना, कर्मचारिवर्ग, सिब्बंदी।
Establishment order book—स्थापना-आज्ञापंजी।
Estate—जागीर, भूसम्पत्ति, संपदा।
Estimate—आगणन, तखमीना, प्राक्कलन, अनुमान।
Estimated—प्राक्कलित।
Estimated yield of current year—चालू वर्ष की अनुमानित उपज।
Estimated market value—आगणित पण मूल्य।
Estimates and plans—आगणन और मानचित्र।
Estoppel—विबंधन।
Etiquette—सभ्याचार, शिष्टाचार।
Evacuee Welfare Officer—निष्क्रांतजन कल्याण अधिकारी।
Evasion of registration—रजिस्टरी का अपवंचन।
Evidence—साक्ष्य, शहादत, प्रमाण।
Evident—स्पष्ट।
Evolution—क्रम-विकास, विकास।
Examination—परीक्षा, परीक्षण, जाँच।
Examination charges—परीक्षा व्यय।
Examination Committee—परीक्षा-समिति।
Examination for certificate in Military Science—युद्धविद्या प्रमाण-पत्र के लिये परीक्षा।
Examination in chief—मुख्य परीक्षण।
Examination in Indian Music (Diploma)—भारतीय संगीत की (डिप्लोमा) परीक्षा।
Examine—परीक्षा लेना या करना, जाँचना।
Examiner—परीक्षक।
Examiner of questioned documents—संदिग्ध लेख पत्रों के परीक्षक।
Example—उदाहरण।
Ex-cadre post—नि:संवर्ग पद।
Exceed—अधिक होना, बढ़ जाना, आगे बढ़ना।
Exceeding—बढ़ा हुआ।
Excellency, His—परमश्रेष्ठ।
Except—अतिरिक्त।
Excepting isolated thunder storms—इक्के-दुक्के गरज तूफानों को छोड़कर।
Exception—अपवाद।
Exceptional circumstances—विशेष या आपवादिक परिस्थितियाँ।
Exception—अपवाद।
Except where otherwise provided—जहाँ अन्यथा व्यवस्था की गई हो।
Excess—अधिकता, आधिक्य, बढ़ती, अतिरिक्त, ज्यादती।
Excess and savings—अधिक व्यय और बचत।
Excess grant—सीमोपरि अनुदान।
Excessive—अत्यधिक।
Excessive use—अत्यधिक प्रयोग।
Excess over the scale—वेतन क्रम के ऊपर बढ़ती।
Excess of the sanctioned allotment—स्वीकृत दिष्टि से अधिक।
Exchange—विनिमय।
Exchange compensation allowance—विनिमय क्षतिपूरक भत्ता।
Exchange deed—विनिमय पत्र।
Exchange, Instrument of—विनिमय करणपत्र।
Excise Department—आबकारी विभाग, उत्पादकर विभाग।
Exclude—छोड़ना, अलग करना।

Exclusion—वहिष्कार, अपवर्जन।
Exclusive—अनन्य, एकान्तिक।
Exclusively—केवल।
Excreta—पखाना, विष्ठा, पुरीष, मलमत्र, मैला, गू।
Execute (*v.*)—फाँसी देना, पूरा करना, तामील करना, निष्पादन करना।
Executed Document—निष्पादित लेखपत्र।
Executant—निष्पादक।
Execution—फांसी, कार्यान्वयन, निष्पादन।
Executioner—जल्लाद, वधिक, फांसी देनेवाला, निष्पादन कर्ता।
Execution of a decree—डिग्री का निष्पादन।
Execution of deeds—लेख्यकरण, दस्तावेज लिखना, दस्तावेज करना।
Execution, Denial of—निष्पादन से इन्कार करना।
Execution of warrant—अधिपत्र की तामील।
Execution of work—निर्माण कार्यो का किया जाना।
Executive—कार्यपालिका, कार्यकारी।
Executive Authority—कार्यकारी प्राधिकारी।
Executive Committee—कार्यकारिणी समिति।
Executive Council of the University—विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद्।
Executive Engineer—कार्यकारी अभियंता।
Executor—निष्पादक।
Exemplification—सोदाहरण प्रतिपादन।
Exempt—बरी, मुक्त।
Exemption—मुक्ति, छूट, माफी।
Exercise—प्रयोग, कसरत, व्यायाम, अभ्यास।
Ex-gratia—अनुग्रहपूर्वक।
Ex-gratia relief—अनुग्रह रूप सहायता।
Exhaust—(*v.*) खाली कर देना, निर्बल कर देना, खींच लेना, खतम कर डालना; (*n.*) निकास नली।
Exhibit—प्रदर्शित या प्रदर्शनीय वस्तु।
Existing—वर्तमान।
Ex-officio—पदेन, पद के नाते।
Ex-officio Sub-Registrars—पदेन उपपंजीयक।
Ex-officio vendors—पदेन विक्रेता।
Exoneration—छुटकारा, भार-मुक्ति, दोष-मुक्ति।
Expanded metal—बरफी जाली।
Expansion joint—प्रसरण जोड़।
Ex parte—एकपक्षीय।
Expectoration—कफ निस्सारण, थूक, खखार।
Expediency—कालोचितता।
Expedient—इष्टकर, कालोचित।
Expedition fee—शीघ्रता शुल्क।
Expel—निकाल बाहर करना।
Expenditure—व्यय, खर्च।
Expense voucher—खर्चे का पुर्जा, व्यय-प्रमाणक।
Expensive—महँगा।
Experimental—प्रयोगात्मक,प्रायोगिक।
Expert—विशेषज्ञ।
Expiration—अन्त, समाप्ति।
Expire—समाप्त होना, मृत्यु होना।
Expiry—समाप्ति, अंत।
Expiry of leave—छुट्टी की समाप्ति।
Explain—व्याख्या करना, समझाना, स्पष्ट करना, जवाब देना, सफाई देना।
Explanation—स्पष्टीकरण, व्याख्या।
Explanation of fluctuations—कमीबेशी की व्याख्या।
Explanatory clause—व्याख्यात्मक वाक्यखंड।
Explanatory memo—व्याख्यात्मक स्मृति-टीप।
Explanatory memorandum—व्याख्यात्मक स्मृतिपत्र।
Explanatory supplements—व्याख्यात्मक अनुपूरक।
Expletive—आलंकारिक, पूरक।
Explode—धड़ाके से फूटना, फूटना, विस्फोट होना।
Exploitation—दोहन, शोषण,उपयोग।
Explore—गवेषण करना
Explosion—विस्फोट।
Explosive—विस्फोटक।
Explosive Act—विस्फोटक पदार्थ का विधान।
Export—निर्यात।
Exposure—प्रदर्शन खुलाव, अपावरण।
Express—(*v.*) अभिव्यक्त करना, (*adj.*) तुरत।
Express delivery—तुरत वितरण।
Expression—अभिव्यक्ति, व्यंजक, पद, पदावली।
Ex-proprietary—गत स्वामित्व।
Ex-proprietary tenant—गतस्वामित्व काश्तकार।
Expulsion—निष्कासन, वहिष्करण।
Ex-soldier—भूतपूर्व सैनिक।
Ex-student—भूतपूर्व छात्र।
Ex-teacher—भूतपूर्व अध्यापक।
Ex-tenant—भूतपूर्व आसामी।
Extension—विस्तार, व्याप्ति, फैलाव।
Extension of leave—छुट्टी बढ़ाना।
Extension of load—भार-वृद्धि।
Extension of post—पदकाल-वृद्धि।
Extension of Time—समय-वृद्धि।
Extent of act—विधान का विस्तार।
Extent of jurisdiction—अधिकार-क्षेत्र का विस्तार।
External—बाह्य, बाहरी।
Extinction—विलोप, समाप्ति।
Extinguishment and Extinction of right—अधिकार की समाप्ति और लोप।
Extinguisher, fire—अग्निप्रशामक।
Extortion—अकपर्षण।
Extra—अतिरिक्त।
Extra cost—अतिरिक्त लागत।
Extra curriculum activities—पाठेतर कार्य।
Extracts—उद्धरण, अवतरण, सार, सत्व, अर्क, निष्कर्ष।
Extradition—प्रत्यर्पण, (विदेशी अपराधियों को) देश को लौटाना।
Extrados—वहिःस्तर।
Extra Municipal—नगरपालिका के बाहर।
Extra mural—भित्तिबाह्य, जेल के बाहर का।
Extraneous—बाहरी।
Extraneous duties—अतिरिक्त कर्त्तव्य।
Extraordinary—असाधारण।
Extraordinary leave—असाधारण छुट्टी।
Extraordinary leave without pay—बिना वेतन की असाधारण छुट्टी।
Extraordinary pension—असाधारण पेंशन।

Extra-statutory—कानून के वाहर का, विधि वाह्य।
Extremist—उग्रवादी, चरमपंथी।
Exudation—स्राव, पसीना।
Eye & hook—तुकमा और हुक, छेद और हुक।

F

Fabric—वनावट, वस्त्र, कपड़ा।
Face value—प्रत्यक्ष मूल्य।
Factory—कारखाना, फैक्टरी।
Faculty—मन:शक्ति, संकल्प।
Faculty (Arts)—साहित्यादि संकाय।
Faculty (Education)—शिक्षा संकाय।
Faculty (Law)—विधि संकाय।
Faculty (Medicine)—चिकित्सा संकाय।
Faculty (Science)—विज्ञान संकाय।
Fade—मुरझाना।
Faecal discharges—मलत्याग।
Faeces—मल, विष्ठा।
Failed—असफल।
Failure—चूक, असफलता।
Faint—फीका, मंद, हल्का।
Faint compliment—हल्की प्रशंसा।
Fair average quality—उचित औसत किस्त।
Fair Copy—सुवाच्य प्रतिलिपि, साफ कापी।
Fair letter—परिष्कृत पत्र।
Fair—मेला।
Falange—अग्रीव।
Fall—प्रपात, पतन, अवपात।
Fallow—परती, हलका लाल।
False entries—झूठे इन्दराज।
False personation—छद्म धारण।
Familiarise—से परिचित करना।
Family—परिवार।
Family arrangement—पारिवारिक समझौता।
Family Pension—परिवार निवृत्ति-वेतन
Famine code—दुर्भिक्ष संहिता।
Famine duty—दुर्भिक्ष ड्यूटी, दुर्भिक्ष कर्त्तव्य।
Famine programme—दुर्भिक्ष कार्यक्रम
Famine project—दुर्भिक्ष योजना।
Famine relief—दुर्भिक्ष सहायता।
Fan, ceiling—छत का पंखा।
Fan, Exhaust—रिक्तकर पंखा।
Fan, light—हलका पंखा, डाट के ऊपर का रोशनदान।
Fan, table—मेज का पंखा।
Farar—फरार, भगा हुआ।
Farcy—जहरवाद।
Fare-Ferry—भाड़ा घाट।
Fast—तेज, तीव्र, अनशन।
Fasten—बाँधना।
Fastening—वंधन।
Fatigue cap—किश्ती टोपी।
Fatigue duty—श्रम-दंड।
Fault—दोष, चूक।
Fault-finding—दोषान्वेषण, दोष निकालना।
Fault of style—शैली की त्रुटि।
Faulty—दोषपूर्ण, सदोष।
Favourable—अनुकूल, माफिक।
Federal Railway Authority—संघीय रेलवे प्राधिकारी।
Federation—संघ।
Fee certificate—शुल्क प्रमाण-पत्र।
Feeder—पोषक।
Feeder channel—पोषक नाली या धारा।
Feeder road—पोषक सड़क।
Feeder well—पोषक कूप।
Feed Pump Attendant—फीड पम्प परिचारक।
Fees—फीस, शुल्क।
Fees, Admission—प्रवेश शुल्क।
Fees, Athletic—खेल कसरत संबंधी शुल्क।
Fees, Boarding House—छात्रावास शुल्क।
Fees book—फीस रजिस्टर।
Fees, Conveyance—यान शुल्क।
Fees, Delegacy—प्रतिनिधित्व शुल्क।
Fees, Examination—परीक्षा शुल्क।
Fees, Games—खेल शुल्क।
Fees, Hostel—छात्रावास शुल्क।
Fees, Ink—मसी शुल्क।
Fees, Laboratory—प्रयोगशाला शुल्क
Fees, Library—पुस्तकालय शुल्क।
Fees, Medical—चिकित्सा शुल्क।
Fees, Membership—सदस्यता शुल्क।
Fees, Music—संगीत शुल्क।
Fees, Readmission—पुन:प्रवेश शुल्क।
Fees, Recreation—मनोरंजन शुल्क।
Fees, Retotaling—पुनर्योग शुल्क।
Fees, Scrutiny—सूक्ष्मपरीक्षा शुल्क।
Fees, Tuition—पढ़ाई शुल्क।
Felling (timber)—(वृक्ष) गिराना।
Fellowship—शिक्षावृत्ति।
Female—महिला, जनाना, स्त्री, मादा।
Feminine style—स्त्रियोचित शैली।
Fence—घेरा, चहारदीवारी, वाड़, कटघरा, जँगला।
Fencing—पटेवाजी, वनैती, वाड़ लगाना।
Fenestra—गवाक्ष, झरोखा।
Ferro-gallic—फैरो गैलिक।
Ferro-paper—फैरो कागज।
Ferro-prussiate—फैरो प्रूशियेट।
Ferrotype apparatus machine—फरोटाइप उपकरण मशीन।
Ferro-typer—नक्शा छापनेवाला।
Ferrule—जोड़चूड़ी।
Ferry—घाट।
Fertiliser—खाद।
Fetters—वेड़ी।
Fibrin—फाइब्रिन।
Field—खेत, मदान।
Field book—खसरा, क्षेत्र-पंजी।
Figure—अंक, आकार, आकृति।
File—(*v.*) मुकदमा दायर करना; दाखिल दफ्तर करना, मिसिल में नत्थी करना; (*n.*) मिसिल।
File a suit—मुकदमा दायर करना।
File board—मिसिल पुट्ठा।
File book of circulars—गश्ती चिट्ठियों की फाइल।
File cover—मिसिल आवरण।
File Register—मिसिल पंजी।
Filing of documents—मुकदमे में कागजात दाखिल करना।
Filled—पूरित।
Fillet—फीता, चपती, पट्टी।
Filling—भराई; भरना।
Film—फिल्म।
Film Advisory Committee—चलचित्र परामर्श दात्री समिति।
Final—अन्तिम।
Final bell—आखिरी घंटी, अन्तिम घंटी।
Finality—पूर्णता, अंतिमता।
Final payment—अन्तिम भुगतान।
Final statement of expenses and savings—अधिक व्यय और वचत का अन्तिम विवरण।
Finally decided—अंतिम रूप से निपटाया गया, अंतिम रूप से निर्णीत।
Finance—वित्त।
Finance Committee—वित्त समिति।
Financial—वित्तीय।

Financial Hand-book—वित्तपुस्तक।
Financial irregularity—वित्तीय अवैधता।
Financial power—वित्तिक शक्ति।
Financial year—वित्त वर्ष।
Finding—निर्णय, तजवीज, निष्कर्ष।
Finding in issues remitted—बड़ी अदालत द्वारा छोटी अदालत को भेजे हुये विवाद-विषयों पर तजवीजें।
Fine—अर्थदण्ड, जुर्माना।
Fine line—बारीक रेखा, सूक्ष्म रेखा।
Finger Print Bureau—अंगुलि छाप ब्यूरो या दफ्तर।
Finial—शिखर, कलश, स्तूपिका।
Fire-alarm—आग लगने की चेतावनी।
Fire-brick—अग्निसह ईंट।
Fire Brigade—दमकल-वाहिनी।
Fireman—फायरमैन।
Fireplace—चूल्हा, आतिशदान।
Fire-proof safe—अग्निसह तिजोरी।
Fire service—दमकल सेवा।
Fire Station Officer—दमकल स्टेशन अधिकारी।
Fireworks—आतिशबाजी।
Firm—कोठी, व्यवसाय संघ।
First aid—प्रारम्भिक या प्राथमिक उपचार।
First appeal from order—आज्ञा की पहली अपील।
First application—प्रथम प्रार्थना-पत्र।
First floor—पहली मंजिल।
Firsthand—प्रत्यक्ष, प्रथम।
First Information Report—प्रारम्भिक सूचना या रपट, रपट इब्तिदाई।
Fiscal—राजकोषीय।
Fisheries—मीन क्षेत्र।
Fitness—योग्यता।
Fitness Certificate—स्वस्थता-पत्र।
Fitness for further advancement—अग्रिम उन्नति के लिये योग्यता।
Fitter—मिस्त्री।
Fix—निश्चित करना, नियत करना, स्थिर करना।
Fix a date—दिनांक निश्चित करना, तिथि स्थिर करना।
Fixation—स्थिरीकरण, स्थिरीभवन।
Fixation of pay—वेतन स्थिर करना, वेतन निर्धारण।
Fixed Deposit—आवधिक जमा, मियादी जमा।
Fixed for hearing—सुनवाई या समाअत के लिये नियत की गई।
Fixed rate tenant—नियत दर कृषक या असामी।
Fixtures—स्थावर, स्थायक।
Flag "A"—झंडी 'क'।
Flag staff—ध्वज-दंड, पताका डंडा।
Flake—पपड़ी, संस्तर, जाला।
Flat—चपटा, सपाट।
Flea—पिस्सू।
Float—तरिंदा, तिरौंदा, पीपा, तुंबी।
Floatation—कर्जा चालू करना, प्लवन।
Floatation debt—अल्पकाल-ऋण।
Flogging—कोड़े लगाना, बेत लगाना।
Flood—बाढ़, सैलाब।
Flood relief—बाढ़ पीड़ितों की सहायता।
Floor—फर्श, मंजिलें।
Flow and Lift Irrigation—बहाव और उठान की सिंचाई।
Flow Irrigation—बहाव की सिंचाई।
Fluctuate—घटना-बढ़ना।
Flukes—फाल, पर्णाभ।
Flume—नालिका।
Flush—बहाव, संप्रवाह।
Flush latrine—बहाव पैखाना।
Flyproof—मक्खी रोक।
Focus—नाभि।
Folio—पन्ना।
Following—नीचे लिखा हुआ, निम्नलिखित।
Foolscap—फुलिसकेप।
Foot—फुट, पैर।
Foot and mouth Disease—खुरपका मुखपका।
Footing—पांव रखने की जगह, नींव, बुनियाद।
Forage cap—फौजी टोपी, फारेज टोपी।
For approval—मंजूरी के लिये।
Force—बल।
Force majeure—दुर्धर्ष शक्ति, दैवी आफत।
For consideration—विचारार्थ।
For disposal—निपटारे के लिये।
Forecast—पूर्वानुमान।
Forecast of stamps—स्टाम्पों का पूर्वानुमान, मुद्रांकों का पूर्वानुमान।
Foreclosure—मोचन निषेध।
Foreclosure of mortgage—बंधक मोचन-निषेध।
Fore-end—अगला सिरा।
Foregoing—पूर्वगत, पूर्ववर्ती।
Foreign articles—विदेशी वस्तु।
Foreign currency—विदेशी मुद्रा, विदेशी चल-मुद्रा।
Foreigner—विदेशी।
Foreign law—विदेशी कानून।
Foreign service—विदेशी सेवा।
Foreman—फोरमैन।
Foreman of jury—जूरी का पंच।
Foremost—अग्रतम, सब से आगे।
Forenoon—दोपहर से पहले, पूर्वाह्न।
Forensic—न्यायालय-सम्बन्धी, अदालती।
Forest—जंगल, वन।
Forfeit—जब्त हो जाना।
Forfeitur—जब्ती, अपवर्तन।
Forge—(*v.*) गढ़ना, जालसाजी करना; (*n.*) भट्टी।
For general information—सर्वसाधारण की सूचना के लिये।
Forgery—जाल, जालसाजी, कूट-रचना।
For information—सूचनार्थ।
Fork—खाना खाने का कांटा, दुशाख।
Formal—औपचारिक।
Formaldehyde—फर्मल्डीहाइड, एक प्रकार का अल्कोहाल।
Formality—औपचारिकता।
Formal order—औपचारिक आदेश।
Formal sanction—औपचारिक मंजूरी।
Formation—रचना, बनावट, निर्माण।
Form of oath or affirmation—शपथ या सत्योक्ति का रूप।
Form—फार्म, प्रपत्र।
Forms, stock book of—प्रपत्रों की संचय पुस्तक।
Form, standard—मानक रूप।
Form, tender—टेण्डर का फार्म, निविदा प्रपत्र।
Formula—सूत्र, फारमूला।
For necessary action—आवश्यक कार्यवाही के लिये।
Forthcoming—आने वाला, आगामी।
For the preparation of the estimate of cost—लागत का तखमीना बनाने के लिये।
Fortnight—पक्ष, द्विसप्ताह।
Fortnightly—पाक्षिक, द्विसाप्ताहिक।
Fortnightly statement—पाक्षिक विवरण।
Forum—क्षेत्र, स्थल, वाक्पीठ।
Forwarded—अग्रप्रेषित।

Forwarding note—अग्रप्रेषण टिप्पणी।
Foundry—ढलाई घर।
Fountain—उत्स्रोत, फुहारा।
Fraction—भिन्न।
Frame—ढांचा, चौखटा।
Framing of issues—तनकीह कायम करना, विवाद प्रश्नों का स्थिर करना।
Fraud—धोखा, कपट, जालसाजी।
Fraudulent—कपटपूर्ण, कपटी।
Free board—मुफ्त खाना, निःशुल्क भोजन।
Free of charge—निःशुल्क, मुफ्त।
Freeship—फीस माफ, निःशुल्कता।
Free of rent—किराया मुक्त।
Free Passage—निःशुल्क यात्रा।
Freight—माल भाड़ा, भाड़ा।
Frequency—वारंवारता, आवृत्ति।
Friction—रगड़, घर्षण।
Frieze—चित्रवल्लरी।
Fringe—तटीय प्रांत, उपांत।
From time to time—समय-समय पर।
Frontispiece—मुख चित्र।
Fuel allowance—ईंधन भत्ता।
Fugitive—भगोड़ा, फरार।
Fugitive Offender—भगोड़ा या फरार अपराधी।
Fulcrum—टेक, सहारा, आलंब।
Full bench—पूर्ण पीठ।
Full particulars—पूरा ब्योरा, सारा हाल।
Full supply level—पूर्णप्रदाय स्तर।
Function—क्रिया, कार्य, काम।
Functus officio—अभारमुक्त।
Fundamental guide book—मौलिक पथ- प्रदर्शिनी पुस्तक।
Fundamental rules—मौलिक नियम, आधारभूत नियम।
Fund, Provident—निर्वाह-निधि।
Furlong—फर्लांग।
Furlough—छुट्टी, रुखसत।
Furnish (security)—जमानत दाखिल करना।
Furniture—फर्नीचर, उपस्कर, साज।
Further action—आगे काररवाई।
Further charge—अधिक भार।
Further information—अधिक जानकारी।
Fuse—फ्यूज, फलीता, संगलक।
Future—भविष्य।

G

Gable—वलभी, त्रि अंकी।
Gallery—दीर्घा, वीथि।
Gallows—फाँसी, फाँसी का तख्ता।
Galvanized—जस्तीकृत।
Galvanized wire—जस्ती तार।
Gambling—जुआ, द्यूत।
Game Laws—शिकार कानून, आखेट कानून।
Games—खेल, शिकार, आखेट।
Game fee—खेल शुल्क।
Gang hut—श्रमिक-समूह का झोपड़ा।
Garage—मोटरखाना।
Gas hand-grenades—गैस के हथगोले।
Gate—फाटक, द्वार, कपाट।
Gate book—फाटक पंजी, फाटक वही।
Gatekeeper—द्वारपाल, दरबान।
Gauge—गेज, मापक, मापी।
Gazette—गजट, राजपत्र।
Gazetted establishment—राजपत्रित स्थापना।
Gazette, Extraordinary—असाधारण गजट या राजपत्र।
Gazetted officers—गजटेड अफसर, राजपत्रित अधिकारी।
General—सामान्य, साधारण।
General and special powers of attorney—सामान्य और विशेष प्रतिनिधि पत्र।
General application—सामान्य प्रयोग।
General letter—सामान्य चिट्ठी।
General Manager—जनरल मैनेजर, महा प्रबंधक।
General power—सामान्य अधिकार।
General Provident Fund—सामान्य निर्वाह-निधि।
General rules—सामान्य नियम।
General Rules, Civil—दीवानी के सामान्य नियम।
General Rules, Criminal—फौजदारी के सामान्य नियम।
General Science—सामान्य विज्ञान।
General sequence—सामान्य अनुक्रम।
Generating station—बिजलीघर।
Generation of energy—ऊर्जा का उत्पादन।
Generator—जनक, जनित्र।
Gentlemen of the jury—सभ्यगण।
Geological Survey—भू-विज्ञान सर्वेक्षण।

Geologist—भू-विज्ञानविद्, भूवैज्ञानिक।
Germ—जीवाणु।
G. I.—भारत सरकार।
Gift—दान, उपहार, भेंट।
Gift of movable property—चल-सम्पत्ति का दान।
Girder—गाटर, गर्डर।
Girth—लपेट, घेरा।
Given under my hand and seal of the Court—मेरे हस्ताक्षर और अदालत की मोहर से दिया गया।
Glass—शीशा, काँच।
Glazed—चमकदार, चमकाया हुआ।
Glue—सरेस।
G. O.—सरकारी आज्ञा।
Gold lace—सुनहला फीता।
Good behaviour—अच्छा चलन, नेक चलनी, सदाचरण, सद्व्यवहार।
Good faith—नेकनियती, सद्भाव।
Goods—माल, सामान, मांडक।
Goods train—मालगाड़ी।
Goodwill—सद्भावना, सुनाम, कीर्तिस्व।
Govern—शासन करना, हुकूमत करना।
Governance—शासन।
Governed—शासित।
Governed by clause—अमुक धारा के अधीन।
Governing Body—शासी निकाय या सभा।
Government—सरकार, शासन।
Government advocate—सरकारी वकील, सरकारी अधिवक्ता।
Government affairs—राजकाज, राजकार्य, सरकारी काम।
Government appeal—सरकारी अपील, गवर्नमेन्ट अपील।
Government building—सरकारी भवन, सरकारी इमारत।
Government of India Act—भारत सरकार विधान, गवर्नमेन्ट आफ इन्डिया एक्ट।
Government order—सरकारी आज्ञा।
Government pleader—सरकारी वकील।
Government Promissory Notes—सरकारी वचन पत्र।
Government Railway Police—गवर्नमेन्ट रेलवे पुलिस, सरकारी रेलवे पुलिस, जी० आर० पी०।
Government resolution—सरकारी

निश्चय, राज-निश्य।

Government servants—सरकारी नौकर, राज कर्मचारी।

Government studbull—सरकारी सांड़।

Governor—गवर्नर, राज्यपाल।

Governor General—महा राज्यपाल।

Governor General in Council—सपरिषद् महा राज्यपाल।

Grace marks—अनुग्रहांक।

Gradation list—पदक्रम सूची।

Grade—कोटि, वर्ग, श्रेणी, दर्जा।

Graded—कोटिवद्ध, क्रमवद्ध।

Grade promotion—कोटि वृद्धि।

Grading—कोटिकरण।

Gradient— ढाल, क्रमिकता

Graduation—स्नातकीकरण।

Grain godown—अन्न गोदाम, गल्ला गोदाम।

Grain products—अन्न से वने हुए पदार्थ।

Grain store—अन्न स्टोर, अन्न कोष्ठागार।

Grand total—कुल जोड़, पूर्ण योग।

Grant—अनुदान।

Grant, Attendance—उपस्थिति अनुदान।

Grant, Boarding—छात्रावास अनुदान।

Grant, Building—भवन अनुदान।

Grant, cadet—केडेट अनुदान, वालवीर अनुदान।

Grant, Fixed—नियत अनुदान।

Grant, Furniture and equipment-उपस्कर और सज्जा अनुदान।

Grant-in-aid—सहायक अनुदान।

Grant, Interim—अंतरिम अनुदान।

Grant, Maintenance—अनुरक्षण अनुदान।

Gatnt of gratuity—ग्रेचुटी की मंजूरी, अनुग्रह-धन का अनुदान।

Grant of leave—छुट्टी का मंजूर होना, छुट्टी का स्वीकृत होना।

Grant, ordinary—साधारण अनुदान।

Grant, Preliminary—प्रारम्भिक अनुदान।

Grants, Recurring and Non-recurring—आवर्ती तथा अनावर्ती अनुदान।

Grant, Special—विशप अनुदान।

Grant, staff—कर्मचारियों के लिये अनुदान।

Grant, Supplementary—अनुपूरक अनुदान।

Graph—ग्राफ, लेखाचित्र।

Gratification—परितुष्टि।

Gratings—जाली।

Gratitude—एहसान, कृतज्ञता।

Gratuity—उपदान, आनुतोपिक।

Grave—गर्त, कब्र।

Gravel—कंकड़, वजरी।

Gravity—गुरुत्व।

Greasefree—चर्वीरहित, स्नेहमुक्त।

Greaser—ग्रीज लगानेवाला, ग्रीजर।

Great coat—वरान कोट, ओवर कोट।

Grid—जाल, जालक।

Griddle—(रोटी सेंकने का) तवा।

Grievous hurt—गहरी चोट।

Grindstone—सान, चक्की, जाँता, सिल।

Grit—कंकड़, गिट्टी, वजरी।

Gross area—कुल क्षेत्रफल, कुल रकवा।

Gross commanded area—कुल अधिक्षेत्र।

Gross income—कुल आय।

Gross negligence—घोर उपेक्षा, घोर प्रमाद।

Gross receipt and expenditure—कुल आय और व्यय।

Gross salary—कुल वेतन।

Ground floor—पहिली या निचली मंजिल।

Grounds—मैदान, आधार।

Grounds of appeal—अपील के आधार।

Ground water supplies—भूमिगत जल पुञ्ज।

Group—समूह, समुदाय, दल, वर्ग, यूथ, गुट।

Group leader—दल नायक, ग्रुपलीडर।

Group of minor heads—लघुशीर्षक समुदाय।

Groyne—क्षेपिका, रोधिका।

Guarantee letter—गारन्टी पत्र, प्रत्यामूति पत्र।

Guard—गारद, रक्षी।

Guard book—रक्षक पुस्तक।

Guardian—संरक्षक, अभिभावक।

Guardianship—संरक्षकता।

Guidance—मार्ग-प्रदर्शन, निर्देशन।

Guide—मार्ग प्रदर्शन करना, मार्ग-दर्शक।

Guilty—दोषी।

Gum—गोंद।

Gun barrel—वन्दूक की नली।

Gutter—मलनाली, मोरी।

Gymnasium—व्यायामशाला।

H

Habitual—अभ्यासिक, अभ्यस्त, आदी

Haemorrhagic Septecemia—गलघोंटू।

Half-fee—अर्धशुल्क, अर्ध फीस।

Half margin—अर्धोपान्त।

Half-yearly balance—छमाही शेप।

Half-yearly register of stock—सामान का छमाही रजिस्टर।

Hall—वड़ा कमरा।

Halt—विराम, अवस्थान।

Halting allowance—विराम-भत्ता।

Hammer—घन, हथौड़ा।

Hammerman—हथौड़िया।

Hand-book—पुस्तिका, गुटका।

Hand-cliffs—हथकड़ी।

Handicap—रुकावट, अवरोध।

Handicraft—हस्तशिल्प, दस्तकारी, शिल्पकारी, शिल्पकर्म।

Handling of animals—पशु प्रवन्ध।

Handrail—सीढ़ी का डंडा।

Hand receipt—दस्ती रसीद।

Hangar—विमानशाला, हवाई जहाज।

Harmony—मेल, ऐक्य, तालमेल, ताल-स्वर का मेल, सामंजस्य।

Harness—साज।

Harvesting—फसल काटना, कटाई।

Hasp—कुंडा, लच्छा।

Haunch of arch—डाट का पुट्ठा।

Haversack—झोला।

Head—शीर्ष, मद्द।

Head Assistant—मुख्य सहायक।

Head clerk—प्रधान लेखक, मुख्य क्लर्क।

Head dress—टोप, पगड़ी।

Head, Major—वृहत् (वड़ा) शीर्षक।

Head master—प्रधानाध्यापक।

Head Minor—लघुशीर्षक।

Head mistress—प्रधानाध्यापिका।

Head of account—लेखा शीर्षक।

Head of Department—विभागाध्यक्ष।

Head of office—कार्यालयाध्यक्ष।
Head quarter—मुख्य केन्द्र, सदर मुकाम, मुख्यालय।
Head regulator—प्रधान नियामक।
Head rope—ऊपरी रस्सी।
Headway—प्रगति, अग्रगति।
Headworks—मुखरचना।
Health certificate—स्वास्थ्य प्रमाण-पत्र।
Hearing—सुनवाई, श्रुति, श्रवण।
Heater—तापक, ऊष्मक।
Heating—गरम करना, तापन।
Heat stroke—लू-लगना, तापाघात।
Height—ऊँचाई।
Helmet—लोहे का टोप, शिरस्त्राण।
Helminthic—कृमि संबंधी।
Hereby—इसके द्वारा।
Hereditary—पैत्रिक, मौरूसी, आनुवंशिक, वंशानुगत।
Herein—यहाँ।
Hereinafter—इससे आगे।
Her Excellency—परम श्रेष्ठ।
Hessian cloth—टाट।
Hexagon—षट्कोण षड्भुज।
High Court—उच्च न्यायालय।
High Court of Judicature—हाईकोर्ट।
Higher authority—उच्चतर प्राधिकारी।
High flood level—बाढ़ सीमा।
High School Examination—हाईस्कूल परीक्षा।
High tension—अति तनाव।
Highway—राजमार्ग, मुख्यमार्ग।
Hill allowance—पहाड़ का भत्ता।
Hinge—कोर, कब्जा
Hip rafter—काठी कड़ी।
Hire—किराया, भाड़ा, भाटक।
Hire purchase—भाटक-क्रय।
Hiring agreement—किराया संविदा पत्र।
His Excellency—परम श्रेष्ठ।
History—इतिहास।
History sheet—इतिवृत्त, वृत्त-पत्र।
History ticket—वृत्त-पत्र।
Hoe—कुदाल।
Holding cost—रोक रखने की लागत।
Holding—जोत, क्षेत्र, चक।
Holiday—छुट्टी।
Holiday, public—सार्वजनिक छुट्टी, सरकारी छुट्टी।
Hollow—खोखला।
Homogeneous—एक-सा, तुल्य, सजातीय, समांग।
Honey cómb work—जालीदार काम।
Honorarium—मानदेय।
Hon'ble—माननीय।
Honorific Prefixes—(नाम के पहले) सम्मानसूचक उपाधि।
Honours Courses—सम्मान पाठ्यक्रम।
Honorary—अवैतनिक।
Hood—छतरी, छज्जा।
Hook—काँटा, अंकुश।
Hoop iron—छरपट्टी पत्ती।
Horse allowance—घोड़े का भत्ता।
Horses fly—अश्वमक्षिका।
Horse power—अश्वशक्ति।
Horse stallion—बीजाश्व, वृषणाश्व, घुड़ साँड़।
Hose pipe—चमड़े या रबड़ का नल, हौज नल।
Hosetops—होजटाप।
Hospital—चिकित्सालय, अस्पताल।
Hospital attendant—चिकित्सालय परिचर।
Hospital equipment—चिकित्सालय सज्जा, अस्पताल का साज-सामान।
Hospital leave—अस्पताली छुट्टी।
Hospital requisites—चिकित्सालय की आवश्यक वस्तुएँ।
Hostel—छात्रावास।
Hostel fees—छात्रावास शुल्क।
House rent—मकान का किराया।
House rent allowance—मकान-किराया भत्ता, किराया भत्ता।
Humane killer—सुगम वध यंत्र।
Hunger strike—भूख हड़ताल।
Hydel colony—जल बिजली-बस्ती।
Hydel Commercial Engineer—जल विद्युत् वाणिज्य अभियन्ता।
Hydraulic—द्रवचालित।
Hydro—जल, पानी।
Hydro-electric—जल-बिजली, जल-विद्युत्, पन-बिजली।
Hydro-electric Engineer—जल-बिजली अभियन्ता।
Hydro-electric grid—जलविद्युत् तार जाल, जल-बिजली तार जाल।
Hydrological data—जल विज्ञान संबंधी बातें।
Hygiene—स्वास्थ्य-विज्ञान
Hyperbola—अतिपरवलय।
Hypotenuse—कर्ण (गणित)।
Hypothecation—दृष्टिबंधक।
Hypothesis—मूल कल्पना, परिकल्पना, प्रमेय, प्राक्कल्पना।

I

I am directed to—मुझे निदेश हुआ है कि।
I am directed to enquire—मुझे अनुसंधान करने का निदेश हुआ है।
I am to add—मुझे यह भी लिखना है कि।
Identical—समरूप, सर्वसम।
Identification—पहिचान, शिनाख्त, अभिज्ञान।
Identify—पहिचान करना, शिनाख्त करना।
Idiocy—जड़ता, जड़बुद्धिता।
Idiot—जड़, जड़मति, जड़बुद्धि।
I have the honour to—भवन्निष्ठ।
I have the honour to say—सेवा में निवेदन है कि।
Illegal—अवैध, गैरकानूनी।
Illegible copy—अपाठ्य।
Illustration—निर्देशन, निर्देश-चित्र।
Image—प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, बिंब।
Immaterial—असार।
Immediate—तात्कालिक, तत्काली, अविलंब।
Immerse—डुबाना, बोरना।
Imminent—सन्निकट, आसन्न।
Immoderate to large defect—मध्यम से लेकर अधिक कमी के साथ।
Immoral—अनैतिक।
Immoral traffic—स्त्रियों का भगाना और बेचना।
Immovable property—अचल सम्पत्ति।
Immunity—उन्मुक्ति।
Impersonation—प्रतिरूपण, पर रूप धारण।
Imprevious—अपारगम्य, अभेद्य, अप्रवेश्य।
Implement—(*v.*)कार्यान्वित करना, (*n.*) साधन, उपकरण, औजार।
Implied—लक्षित, छिपा, अंतर्निहित।
Implied contract—अंतर्निहित संविदा।
Import—आयात।
Important—महत्त्वपूर्ण, जरूरी, आवश्यक।

Imposition—आरोपण।
Impound—अवरुद्ध करना।
Impounded document—अवरुद्ध लेखपत्र।
Impracticable—अव्यावहारिक, अव्यवहार्य।
Impressions—छाप, निशानी, चिह्न।
Impressment—बलात् भरती।
Imprest—पेशगी, अग्रदाय।
Imprisonment—बंदीकरण, कैद, कारावास।
Improved—उन्नत, सुधारा हुआ।
Improvise—(आवश्यकता पर) तुरन्त प्रबन्ध कर लेना।
In accordance with—के अनुसार।
Inadequate—अपर्याप्त।
Inadvertantly—भूल से, असावधानी से, अनजाने।
In anticipation—की उम्मीद में, की प्रत्याशा में, के भरोसे पर।
In anticipation of sanction—स्वीकृति की प्रत्याशा में, स्वीकृति की उम्मीद से।
Inaugural—प्रतिष्ठापनिक।
In camera—बंद कमरे में।
Incapable—अयोग्य, असमर्थ।
Incarcerate—कैद करना, जेल में बंद करना, जेल करना।
In case of—के संबंध में, के मामले में।
Inch—इंच।
Incidental charges—प्रासंगिक व्यय।
Incision—चीरा।
Inclined—झुका हुआ, नत।
Inclusive—को लेकर या मिलाकर, शामिल करके।
Income—आय, आमदनी।
Income-tax—आयकर।
Incompliance with—का पालन करते हुए।
In connection with—के सम्बन्ध में।
In consequence—के फलस्वरूप, परिणामस्वरूप।
Inconsistent—असंगत, अननुरूप।
In continuation of—के सिलसिले में।
Incorporate—निगमित करना, मिला लेना।
Incorporation—समावेशन, निगमन। प्रारम्भण।
Increase—वृद्धि, बढ़ती।
Increment—वेतन वृद्धि, वृद्धि।
Incubation period—अंडा फूटने की अवधि।
Incumbency—धारण, पदधारणकाल।
Incumbent—धारक, पदस्थ।
Incur—व्यय करना।
Indecent to mention—उल्लेख करना अनुपयुक्त या अश्लील।
In default of—न देने के कारण, न अदा करने के कारण।
Indemnity Bond—क्षतिपूरण बंध।
Indent—माँगपत्र।
Indent, Supplementary—अनुपूरक माँगपत्र।
Independent—स्वतंत्र,स्वाधीन,आजाद।
Index—अभिसूचक।
Indian Air force—भारतीय वायु सेना।
Indian and Colonial Divorce—भारतीय और औपनिवेशिक विवाह-विच्छेद।
Indian Arms Act—भारतीय शस्त्र-विधान।
Indian Army Act—भारतीय सेना विधान।
Indian Civil Service—भारतीय जनपद भृत्या।
Indian Divorce Act—भारतीय तलाक विधान,भारतीय विवाह विच्छेद विधान।
Indian etiquette—भारतीय शिष्टाचार।
Indian Evidence Act—भारतीय साक्ष्य विधान, कानून शहादत।
Indian Penal Code—भारतीय दंड-संहिता।
Indian Store Department—भारतीय भण्डार वस्तु विभाग, भारतीय भाण्डागार-विभाग।
Indian Succession Act—भारतीय उत्तराधिकार विधान।
Indian Territorial Force—भारतीय प्रदेशी सेना।
Indication—लक्षण, चिह्न, सूचना, संकेत।
Indifferent—उदासीन।
Indigent—गरीब, निर्धन, कंगाल, अकिञ्चन।
Indiscipline—अनुशासनहीनता।
Indiscriminate—अविवेकपूर्ण,अंधाधुंध, अविवेकी।
In dispute—विवादास्पद, विवादग्रस्त।
Indivisible transactions—अविभाज्य लेन-देन, अविभाज्य व्यवहार।
Indolence—सुस्ती, काहिली, आलस्य, अकर्मण्यता।
Indoor patient—अंतरंग रोगी।
Induce—प्रेरित करना, लालच देना, प्रलोभन देना।
Induction—आगम, प्रेरण।
In due course—यथासमय।
Industrialist—उद्योगपति।
Industrialize—औद्योगीकरण, उद्योग-विकासन।
Industrious—परिश्रमी, उद्योगी।
Industry—उद्योग।
Inefficiency—अप्रगुणता, अकुशलता।
Inertia—जड़ता, निश्चेष्टता।
Inevitable payments—अपरिहार्य भुगतान।
Inexact—अयथातथ, अशुद्ध।
In exercise of the power conferred by—द्वारा दिए गये अधिकार को काम में लाते हुए, द्वारा प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए।
Infanticide—शिशुवध, शिशुहत्या।
Infantile Leishmaniasis—बच्चों का कालाजार।
Infantry—पैदल सेना, पदाति।
Infantry training—पैदल सेना की ट्रेनिंग, पैदल सेना शिक्षण।
Infection—छूत, संक्रमण, संक्रामण, संदूषण।
Infectious jaundice of the dog—कुत्ते का संक्रामक पांडु रोग।
Inferior servant—अवर कर्मचारी।
Inferior Servants Establishment—अवर सेवक स्थापना।
Infestation—पीड़ा, बाधा।
Infinitesimal—अत्यन्त छोटा, अतिलघु, अतिसूक्ष्म, अनंत सूक्ष्म।
Infirmity—अशक्तता, दौर्बल्य।
Inflammable—ज्वलनशील,ज्वालाग्राही।
Inflation—स्फीति।
Influence—प्रभाव।
Infra—नीचे।
Infringe—अतिलंघन करना।
Infringement—अतिलंघन।
In furtherance of a common cause—सार्वजनिक हित की उन्नति के लिए।
Ingredient—अंश,अंग, अवयव, उपादान।
Ingress—प्रवेश, घुसना।
Inherent—अन्तर्निहित।

Initial pay—प्रारम्भिक वेतन।
Initials—प्रथमाक्षरी, छोटे हस्ताक्षर।
Injection—सुई लगाना, सुई।
Injury report—क्षत का रिपोर्ट, आघात का रिपोर्ट।
Injury to records—कागजात की क्षति।
Inlet—प्रवेश द्वार।
In lieu of—के बदले या स्थान में।
Inmate—आवासी, रहनेवाला, रहैया।
In moderate excess—कुछ वाजिबी से अधिक।
Inoculation—टीका।
In partial modification—आंशिक संशोधन करते हुए।
In proper form—उचित रूप में।
Inquest—अन्वीक्षण।
Inquiry—जाँच।
Insane—विक्षिप्त, पागल, उन्मत्त, उन्मादी
Insanity—विक्षिप्तता, पागलपन, उन्माद।
Inscription—शिलालेख।
Insemination—सेचन, गर्भाधान।
Insertion—अन्तर्वेश, बीच में रखना।
Insignificant—उपेक्ष्य।
Insolvency—दिवाला।
Insolvent—दिलाविया।
Inspection of treasuries—खजानों का मुआयना या निरीक्षण, कोषागारों का निरीक्षण।
Inspection report—मुआयना रिपोर्ट, निरीक्षण रिपोर्ट।
Inspectorate—निरीक्षक वर्ग, निरीक्षण-कार्यालय, निरीक्षणालय।
Inspectorate of Stamps—स्टाम्प निरीक्षणाधिकारी।
Inspector General of Prison—जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल, महा कारा निरीक्षक।
Inspector of Jail Buildings—कारागृह निरीक्षक, जेल की इमारतों के इन्स्पेक्टर, जेल भवनों के निरीक्षक।
Inspectress—निरीक्षिका।
Instal—प्रतिष्ठापन करना।
Installation—संस्थापन।
Instalment—किश्त।
Instant attention—तत्काल ध्यान।
Institution—संस्था।
Instruct—शिक्षा देना, सिखाना, अनुदेश देना।
Instruction—अनुदेश, सीख, शिक्षा, हिदायत।
Instructor—शिक्षक, इन्सट्रक्टर।
Instrument—करण।
In supersession of—करते हुए।
Insurance—बीमा।
Intangible property—अमूर्त संपत्ति।
Integrity certificate—सत्यनिष्ठा प्रमाण-पत्र।
Intelligence Test—बुद्धि-परीक्षण।
Intelligent—समझदार, बुद्धिमान्।
Intend—विचार करना, इरादा करना।
Intensity—तीव्रता।
Inter alia—अन्य बातों के साथ-साथ।
Intercourse—समागम, संसर्ग, वृद्धि।
Interest—सूद, व्याज, हित, स्वार्थ।
Interest-bearing securities—व्याजी-सरकारी हुंडियाँ।
Interests of Public Service—सार्वजनिक सेवा के हित।
Interim—अंतरिम।
Interlineation—पंक्ति मध्यलेख, सतरों के बीच लिखित, पंक्तियों के बीच लिखना।
Intermediary—बिचौलिया, मध्यम, मध्यवर्ती।
Intermediate—बीच का, मध्यवर्ती, माध्यमिक, मध्यस्थ।
Intermediate forecast—बीच का पूर्वानुमान।
Intermittent cultivation—आंतरायिक खेती।
Interpretation—व्याख्या, अर्थ-निर्णय, भाषांतर, निर्वचन।
Interrogate—प्रश्न करना, पूछ-ताछ करना।
Interrogatory—प्रश्नमाला।
Interrupt—रोकना, बाधा डालना, अवरोध करना।
Interruption—विघ्न, अवरोध, बाधा।
Inter-University—अन्तर्विश्वविद्यालय।
Interval—अवकाश, अंतर, मध्यावकाश।
Interview—मुलाकात, भेंट, साक्षात्कार।
Intestate—इच्छा पत्र हीन।
Intestinal—आंत्र, आंत्रिक।
Intestinal contents—आंतों का अंतर्द्रव्य।
In the alternative—विकल्प में।
In the circumstances—इस परिस्थिति में।
Intimate—प्रगाढ़, दिली, जिगरी, घनिष्ठ; (*v.*) सूचना देना, आगाह करना।
Intimation—सूचना।
Intimation Book—सूचना पुस्तक।
In toto—बिल्कुल, पूर्णतया, संपूर्णतः, पूरी तरह से।
Intoxicating drug—मादक द्रव्य।
Intramural—भित्त भीतर, जेल के भीतर का।
Introduction—प्रस्तावना, परिचय, आमुख।
Invalid—निर्बल, दुर्बल, असमर्थ, अशक्त, अमान्य, अवैध।
Invalidate—अवैध करना, रद्द करना, अमान्य होना या करना।
Invalid pension—असमर्थता की पेंशन।
Inventory—सूची, तालिका।
Inverse—प्रतिलोमी, उलटा।
Investigation of claims—दावों की जांच।
Investment—रुपया लगाना, निवेश निधान, लगा धन।
Invidious—द्वेषजनक।
Invoice—बीजक।
Ipso facto—तथ्यतः, स्वतः।
Irksome—थकाऊ, कठिन, दुःखद, भारी, अप्रिय, नागवार।
Irrecoverable—वसूल न होने के योग्य, नाकाबिल वसूल, अशोध्य, अपूर्णीय।
Irregularity—अनियमितता, विषमता।
Irrelevant—असंबद्ध, विसंगता।
Irrespective of—बिना इस बात के विचार के।
Irrigation—सिंचाई।
Irrigation Branch—सिंचाई शाखा।
Isolated—विच्छिन्न।
Isolation—पृथक्करण, अलगाव।
Isometric—सममितीय, सम-माप, समायाम।
Issue of Commission—कमीशन जारी करना।
Issue price—जारी करते समय का मूल्य, निर्गम मूल्य।
Item—मद्द।
Iteration—पुनरुक्ति।
Itinerating—गश्ती, सफरी।

J

Jackarch—जैक मेहराब।
Jacket—जाकेट, मिरजई, कमरी।
Jail—बंधनागार, कारा, कारागार।
Jailor—कारापाल।

Jaillor, Deputy—सहकारीकारापाल।
Jai, District—जिला कारागृह।
Jail premises—कारागृह का अहाता, कारोपान्त।
Jeep—जीप, एक प्रकार की मोटर गाड़ी।
Jerk—झटका।
Jet—धार, प्रधार, स्रुति।
Jetty—घक्का, घाट।
Job—काम, नौकरी, कार्य।
Johne's disease—पुराना कीटाणु, अतिसार।
Joinery—जुड़ाई।
Joining report—कार्यग्रहण रिपोर्ट।
Joining time—कार्यग्रहण अवधि।
Joint—(*n.*) जोड़, संधि, दर्ज; (*adj.*) संयुक्त।
Joint family property—संयुक्त कुटुंब संपत्ति।
Joint holding—संयुक्त जोत।
Joist—कड़ी।
Journal—पत्रिका, रोजनामचा, दैनिकी।
Judge—न्यायाधीश।
Judgment—निर्णय, फैसला, विवेक।
Judgment-Debtor—निर्णीत ऋणी।
Judge, Small Cause Court—अल्पवाद न्यायालय के न्यायाधीश।
Judgment writer—निर्णय लेखक।
Judicature—न्यायालय।
Judical—न्यायिक।
Judicial Authority—न्यायिक प्राधिकारी।
Judicial Commissioner—न्यायिक आयुक्त।
Judicial Committee of Privy Council—प्रिवी कौंसिल की न्यायिक समिति।
Judicial investigation—न्यायिक जाँच।
Judicial notice—न्यायिक अवगम, न्यायालय द्वारा किसी वाद को स्वयं विचार में लेना।
Judicial Proceeding—न्यायिक कार्यवाही।
Judicial separation—न्यायिक विवाह-विच्छेद।
Judiciary—न्यायांग, न्यायपालिका।
Jumble—एक में सटाकर।
Junior electrician—अवर बिजली मिस्त्री।
Junior grade clerk—अवर श्रेणी के लिपिक।
Junction—संगम, जंकशन।
Jurisdiction—अधिकार-क्षेत्र, क्षेत्राधिकार।
Jurisdictional purposes—अधिकार-क्षेत्रीय प्रयोजन।
Jurisdictional value—अधिकार-क्षेत्रीय मूल्य।
Jury—जूरी।
Justice—न्याय।
Justice of Peace—शांति न्यायाधिपति।
Justification—तर्क-संगति।
Juvenile—अल्पवयस्क, किशोर।
Juvenile offender—अल्पवयस्क या किशोर अपराधी।

K

Kala-azar—कालाजार।
Kanungo competitive examination—कानूनगो प्रतियोगिता परीक्षा।
Keenest critic—तीव्रतम आलोचक।
Keeper—पालक।
Keeping—संरक्षण, पालन।
Keep the peace—शान्ति पालन करना, शान्ति रखना।
Keep with file—फाइल में रखिये।
Kettle—देगची, पतीली, केटली।
Key—कुंजी, ताली।
Keystone—चावी पत्थर, संधान प्रस्तर।
Kidnap—हरण करना।
Kidnapping—हरण।
Kilowatt—किलोवाट।
Kind of leave—छुट्टी का प्रकार।
Kindly acknowledge receipt—कृपया पाने की सूचना दें, कृपया रसीद से सूचित कीजिये।
King Post—मुख्य स्तंभ।
Kink—ऐंठ, ऐंठन।
Kit—यात्रा का सामान, सामान का झोला।
Kit bag—किट थैला, सिपाही के सामानों का थैला।
Knicker—नीकर, निकर, घुटन्ना।
Knicker-bockers—पतलून।
Knob—टीला, घुंडी, लट्टू।
Knot—गाँठ, गिरह।
Knowledge—ज्ञान, जानकारी।

L

Lebel—चिप्पी, नामपत्र।
Laboratory Assistant—प्रयोगशाला सहायक।
Laboratory Attendant—प्रयोगशाला सेवक।
Labour—श्रम, श्रमिक-वर्ग, मजदूर, कामगार।
Labour, Hard—कड़ा परिश्रम, सख्त मशक्कत।
Lacerate—विदीर्ण, चिरा-फटा।
Lady Principal—प्रधान आचार्याणी।
Lake—झील।
Lance bucket—वल्लम आधार।
Land Acquisition Officer—भूमि प्राप्ति अधिकारी।
Landed property—भू-सम्पत्ति।
Land holder—भूमिधारी, क्षेत्रपति, भूस्वामी।
Land improvement loans—भूमि सुधार ऋण।
Land lord—भूस्वामी, जमींदार।
Land Record—भू-अभिलेख।
Land Record Clerk—भू-अभिलेख लिपिक।
Land Record Department—भू-अभिलेख विभाग।
Land Record Manual—भू-अभिलेख-सार-संग्रह।
Land revenue—भू-राजस्व, मालगुजारी।
Land Revenue Act—ऐक्ट मालगुजारी, भूराजस्व अधिनियम।
Lane—गली।
Language—भाषा।
Lantern—लालटेन।
Lapse—(*v.*) व्यपगत होना, बीत जाना; (*n.*) लय, बीतना, चूक, कमी।
Lapsed—गतावधि, समाप्त।
Larder—खाद्य-सामग्री भंडार।
Large—वृहत्।
Last pay certificate—अंतिम वेतन प्रमाण-पत्र।
Latch—अर्गला, सिटकिनी।
Late—स्वर्गीय।
Lathe—खराद।
Latitude—अक्षांश, अक्षांतर।
Latter—पश्चादुक्त।
Lattice—जालक, झिलमिली।
Lavatory—संडास, पाखाना, शौचालय।
Law—विधि, कानून, नियम।
Lawful—विधि संगत, वैध।
Lawful assembly—विधि या संगत वैध सभा।

Lawful custody—विधिसंगत या वैध संरक्षण ।
Lawful exercise of powers—अधिकारों का विधिसंगत प्रयोग ।
Law of succession—उत्तराधिकार विधान ।
Law suit—मुकदमा ।
Lawyer—विधिज्ञ, वकील ।
Lay down—लिटाना, पेश करना, त्यागना ।
Layout—अभिन्यास, विन्यास, खाका ।
Layout plan—नकशा ।
Lead—(*n.*) सीसा, गोली; (*v.*) आगे जाना, नेतृत्व करना ।
Leading—*प्रमुख, अग्रज, प्रधान, अगला ।*
Leakage—च्यवन, दरार, क्षरण, टपकन ।
Leakage of papers—कागजातों का बाहर मालूम होना ।
Lease—पट्टा ।
Lease deed—पट्टा, पट्टानामा ।
Leasehold—पट्टेदारी ।
Lease of Government building—सरकारी इमारतों का पट्टा ।
Lease of land—जमीन का पट्टा ।
Leave account—छुट्टी का लेखा ।
Leave application—छुट्टी का प्रार्थना-पत्र ।
Leave application of Scholars—छात्रों का छुट्टी का प्रार्थना-पत्र ।
Leave, casual—आकस्मिक छुट्टी ।
Leave, disability—असमर्थता की छुट्टी ।
Leave due—छुट्टी वाजिव ।
Leave earned—अर्जित छुट्टी ।
Leave, ex-India—भारत से वाहर जाने की छुट्टी ।
Leave, extraordinary—असाधारण छुट्टी ।
Leave, hospital—अस्पताली छुट्टी ।
Leave, maternity—प्रसूति छुट्टी ।
Leave on average pay—औसत वेतन पर छुट्टी ।
Leave on full pay—पूरे वेतन पर छुट्टी ।
Leave on medical certificate—चिकित्सकीय प्रमाणपत्र पर छुट्टी ।
Leave on private affair—निजी कार्यार्थ छुट्टी ।
Leave on quarter average pay—चौथाई औसत वेतन पर छुट्टी ।
Leave preparatory to retirement—निवृत्तिपूर्व छुट्टी ।
Leave, privilege—रियासती छुट्टी ।
Leave, quarantine—संगरोध छुट्टी ।
Leave, recess—विश्राम छुट्टी ।
Leave, reserve—रिजर्व, छुट्टी ।
Leave salary—छुट्टी का वेतन ।
Leave, study—अध्ययनार्थ छुट्टी ।
Leaving certificate—विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र ।
Ledger—खाता वही, खाता ।
Leech—जोंक ।
Leeward—हवा ओर दिशा ।
Legal—वैध, कानूनी, प्राविधिक ।
Legal advisor—कानूनी या विधि सलाहकार ।
Legal documents—कानूनी कागजात या लेख्य-पत्र ।
Legal enactment—विधिक विधायन ।
Legal expenses—न्याय व्यय, कानूनी खर्च ।
Legal grounds—विधिक कारण ।
Legality—वैधता ।
Legal practitioner—वकालत पेशा, अभिभाषक ।
Legal Practitioner's Act—विधिवृत्तिक विधान ।
Legal practitioner's certificate stamps—विधि जीवी प्रमाण-पत्र मुद्रांक ।
Legal proceedings—कानूनी कार्यवाही ।
Legal profession—वकालत, विधि वृत्ति ।
Legal Remembrancer—विधि उद्बोधक ।
Legatee—रिक्थी, रिक्थभागी ।
Legislate—कानून वनाना, विधि वनाना ।
Legislation—कानून, विधान, विधि-निर्माण ।
Legislative Assembly—विधानसभा ।
Legislative Council—विधान परिषद् ।
Legislature—विधान मंडल ।
Legitimate—तर्कसंगत, वैध, औरस ।
Legitimate dues—जायज मुतालवा, वैध प्राप्य ।
Legitimate duty—न्याय कर्त्तव्य ।
Leishmaniasis—कालाजार ।
Leper—कोढ़ी ।
Lessee—पट्टेदार पट्टाधारी ।
Lessor—पट्टादाता, पट्टाकर्ता ।
Less supply—कम पूर्ति ।
Lettered slip—अक्षरांकित पर्चा ।
Letter, forwarding—प्रेषणपत्र ।
Letter of allotment of shares in any company—किसी कम्पनी में अंश नियतन पत्र ।
Letter of credit—उधार-पत्र, साख-पत्र ।
Letter of licence—अनुज्ञप्ति पत्र ।
Letters of administration—प्रशासन ।
Letters patient appeal—राजदया अपील ।
Level—स्तर, तल; (*adj.*) चौरस, समतल, सपाट ।
Level-books—समतल-माप पुस्तिका ।
Level crossing—समपार ।
Levelling staff—*तलेक्षण गज ।*
Lever arm—उत्तोलक भुजा ।
Leviable—आरोप्य ।
Levied—आरोपित ।
Levy—उगाही, उद्ग्रहण ।
Liability—दायिता, दायित्व, जिम्मेदारी ।
Liable—उत्तरदायी, जिम्मेदार ।
Liable to disqualification—अयोग्य ठहराये जा सकने योग्य ।
Liberal rain—अच्छी वर्षा ।
Librarian—पुस्तकाध्यक्ष ।
Library—पुस्तकालय ।
Lice—जूं ।
Licence fee—अनुज्ञप्ति शुल्क ।
Licence, revocation of—अनुज्ञप्ति खंडन ।
Licensed—लाइसेन्स प्राप्त ।
Licensed stamp vendor—लाइसेन्स प्राप्त विक्रेता ।
Licensed vendors—लाइसेन्सप्राप्त विक्रेता ।
Licence-holder—अनुज्ञाग्राही, लाइसेन्सदार ।
Licensing authority—अनुज्ञा-पत्रदायक प्राधिकारी ।
Lien—ग्रहणाधिकार, पूर्वाधिकार ।
Lien, suspended—स्थगित ग्रहणाधिकार ।
Lien, suspension or termination or revival of—ग्रहणाधिकार का स्थगन, समापन या पुनर्प्रवर्तन ।
Lieu of—के वदले ।
Lieu of, in—के वदले, के स्थान पर ।
Life convict—आजीवन कैदी ।
Life insurance policy, duty on—जीवन वीमा पॉलिसी पर शुल्क ।

Life licence—आजीवन अनुज्ञा-पत्र।
Life preservers—प्राणरक्षक, जान बचाने वाले।
Life sentence—आजीवन दंड।
Life tenure—आजीवन भूधृति।
Lift—लिफ्ट, उत्थापक।
Lift irrigation—ढेकुल से सिंचाई, उठान सिंचाई।
Light—(*adj.*) हलका, लघु; (*n.*) उजाला, रोशनी।
Lightning conductor—तडित् संवाहक।
Likely—संभावनीय।
Litigation—मुकदमेबाजी।
Lime—चूना।
Limestone—चूना पत्थर।
Limit—सीमा, मर्यादा।
Limit and limitation of right—अधिकार की सीमा और अवधि।
Limitation—अवधि, सीमाबंध।
Line—रेखा, सतर।
Lineal descendants—वंशागत संतति।
Linear—रेखाकार, रेखीय।
Line Inspector—लाइन निरीक्षक।
Lineman—लाइनमैन।
Line Supervisor—लाइन पर्यवेक्षक।
Linger—देर लगाना, हिचकिचाना, दुःख या बीमारी में पड़े रहना।
Link—कड़ी, बंध, संपर्क, योजक।
Linking—श्रृंखलन।
Lintel—लिन्टल, सरदल।
Liquidation—परिसमापन, समापन।
List—सूची।
Listing of cases—मुकदमों को सूची बद्ध करना।
Literature—साहित्य।
Liver—यकृत्, जिगर।
Livery—वर्दी।
Live-stock—पशुधन।
Load—(*n.*) भार, बोझ; (*v.*) भरना, लादना।
Loaded—भरा, भरित।
Loading—लदान, गोली भरना, भारण।
Loamy—दुमट, दुमटी।
Loan—ऋण, उधार, कर्जा।
Loans and advances—ऋण और अग्रिम।
Lobby—कक्ष, गोष्ठी, कक्ष।
Local—स्थानीय, मुकामी।
Local allowance—स्थानीय भत्ता।
Local board—स्थानीय बोर्ड, स्थानीय मंडल।
Local body—स्थानीय निकाय।
Local breeds—स्थानीय नस्लें।
Local cess—स्थानीयकर, अबवाब।
Local custom—स्थानीय रिवाज, दस्तूर-देही।
Local depot—स्थानीय डिपो।
Local enquiry—स्थानीय जाँच।
Local fund—स्थानीय निधि।
Local Government—स्थानीय सरकार।
Local head—स्थानीय प्रमुख।
Locality—आसपास, पास-पड़ोस।
Local limit—स्थानीय सीमा।
Local management—स्थानीय प्रबंध।
Local rate—स्थानीय दर।
Local Self-Government—स्थानीय स्वायत्त शासन।
Local thunder showers were experienced all over the province—सारे प्रान्त मे बिजली की गरज के साथ स्थानिक वर्षा हुई।
Lock—ताला।
Lock, Canal—ताला (नहर)।
Locking up—बन्द करना, कैदियों को ताले में बन्द करना।
Lock-up—हवालात, बंदीखाना, रोधागार।
Locomotive—रेल-इंजन।
Locum tenes—स्थानापन्न।
Locus standi—अधिकारिता।
Locust—टिड्डी।
Log—लट्ठा।
Logarithm—लघुगणक।
Log book—कार्य-पंजी।
Log sheets—कार्यपंजी के पन्ने।
Long term—दीर्घावधि।
Longitude—देशान्तर, रेखांश।
Longitudinal section—अनुलंब काट।
Look—देखना, निगाह डालना।
Loophole—विवर।
Loose—ढीला, अलग्न, असंगठित।
Loose cotton—खुली हुई रूई।
Lorry—लारी।
Lorry coolie—लारी कुली।
Lorry driver—लारी चालक।
Loss—हानि, घाटा, नुकसान।
Loss of seniority—वरीयता की हानि।
Lounge—(*v.*) आराम करना, टालमटोल करना, (*n.*) विश्राम कक्ष।
Louver—झिलमिली।
Lower—निचला।
Lower Court—निचली अदालत, निचला न्यायालय।
Lower Division Assistant—अवर श्रेणी सहायक।
Lower Grade Clerk—अवर श्रेणी क्लर्क।
Lower Subordinate—अधस्तन, अधीनस्थ।
Lowest rate in the month—मास का न्यूनतम भाव या मूल्य।
Low tension—न्यून तनाव, निम्न वोल्टता।
Lubricate—चिकनाना, तेल देना।
Lubricator—स्नेहक, तेलदान।
Luggage—असबाब, सामान।
Lump—पिंड, ढेला।
Lump cash rent—एकराशि नकद लगान।
Lump sum—इकमुश्त रकम, एकराशि।
Lunatic—पागल, विक्षिप्त, उन्मत्त।
Luxury—ऐश, विलास।
Lymphatic glands—लसीका ग्रन्थि।

M

Machine—मशीन, यन्त्र।
Machinery—मशीनें, मशीनरी।
Magazine—मैगजिन, बारूदखाना, बारूद घर, पत्रिका।
Magistrate—मजिस्ट्रेट, दंडाधिकारी, दण्डनायक।
Magnetic needle—चुम्बकी सुई।
Magniloquence—शब्दाडम्बरता।
Magnitude—कांतिमान, महत्ता, परिमाण।
Mahogany—महोगनी, तुन।
Maintenance—अनुरक्षण, पोषण, भरण-पोषण।
Maintenance and Repairs—अनुरक्षण और मरम्मत।
Maintenance Inspector—अनुरक्षण निरीक्षक।
Maintenancy of boundary and survey marks—सीमाद्योतक तथा सर्वेक्षण चिन्हों का अनुरक्षण।
Maintenance officer—अनुरक्षण अधिकारी।
Maintenance, Suit for—भरण-पोषण का दावा, जीवन निर्वाहवाद।

Main walls—सदर दीवारें।
Major—वयस्क बालिग, मुख्य, वहत्।
Major head—मुख्य शीर्ष।
Majority—बहुमत, वयस्कता, अधिकांश।
Major works—बड़े निर्माण कार्य।
Making up deficit duty—शुल्क की कमी को पूर्ण करना।
Male Line—पुरुष परंपरा।
Malleable—कुट्य, घातवर्ध्य।
Mammary abscess—थनों का फोड़ा।
Management—प्रबंध।
Management of accounts of Government properties—सरकारी सम्पत्ति का प्रबंध और हिसाब।
Manager—प्रबंधक, व्यवस्थापक।
Mandatory—प्रादेशात्मक।
Manhole—नरमोखा, नर विवर।
Manifesto—घोषणापत्र।
Manual of orders—आज्ञा पुस्तिका।
Manoeuvre, Field, Firing and Artillery Practice Act—युद्धाभ्यास, चाँदमारी और गोलाबारी अभ्यास का विधान।
Mantelpiece—अंगीठी के ऊपर की कगार या पटरी।
Mansion—महल, भवन।
Manual (Books)—सारसंग्रह।
Manual of Government orders—सरकारी आज्ञाओं की पुस्तिका।
Manufacture—(*v.*) माल बनाना या तैयार करना, निर्माण।
Manufacturing Process—निर्माण क्रिया।
Manure—खाद।
Manure pit—खाद का गड्ढा।
Manuscript—पांडुलिपि, हस्तलेख।
Map—नकशा, मानचित्र।
Map-correction—नक्शा ठीक करना, मानचित्र संशोधन।
Mappist—नकशा बनानेवाला, मानचित्रकार।
Marble—संगमरमर।
March—अभियान, कूच करना, चलना।
March in file—पंक्ति में मार्च करना, पंक्ति में चलना।
Margin—हाशिया, उपान्त।
Marginal—उपान्त का, औपान्तिक, हाशिये का, उपांतस्थ।
Marginal adjustment—औपान्तिक समाधान।
Marginal heading—हाशिये की सुर्खी, उपान्त शीर्षक।
Marginally noted—उपान्त, लिखित।
Marine Officer—समुद्रीय अधिकारी।
Marine Policies—समुद्री बीमा पालिसी।
Mark—(*v.*) चिन्हित करना, निर्दिष्ट करना, देखना, निशान लगाना, चिन्ह लगाना; (*n.*) चिन्ह।
Market—मंडी, बाजार, विपणि।
Marketable security—विक्रेय सरकारी हुंडी।
Market dues—बाजार की उगाही।
Market price—बाजार भाव या मूल्य।
Market rate—बाजार भाव, आपणिक।
Market value—बाजार मूल्य।
Marriage certificate—वैवाहिक या विवाह प्रमाण-पत्र।
Marriage, dissolution of—विवाह-भंग।
Marriage, nullity of—विवाह रद्द करना।
Marsh—दलदल।
Martial right—सैनिक अधिकार।
Masculine style—पुरुषोचित शैली।
Mask—मुखावरण, मुखौटा, चेहरा, मुखपट।
Mason—राज।
Masonry—चिनाई, राजगीरी।
Masonry work—ईंट-पत्थर का काम, ईंट चूने का काम।
Master of ship—पोतपति, पोताध्यक्ष, जहाज मास्टर।
Master Security Printing—सरकारी हुण्डियों के मुद्रण अध्यक्ष।
Material—भौतिक, महत्वपूर्ण, ठोस; (*n.*) सामग्री, पदार्थ, सामान, मसाला।
Material change—महत्वपूर्ण परिवर्तन।
Material exhibit—महत्वपूर्ण प्रदर्शित वस्तु।
Material injustice—वास्तविक अन्याय, खासा अन्याय।
Materials—पदार्थ, सामग्री सामान।
Maternity hospital—प्रसूति चिकित्सालय, जच्चा-बच्चा अस्पताल।
Maternity leave—प्रसूति छुट्टी।
Mathematical and Surveying Instruments—गणित और भूमाप-सम्बन्धी उपकरण।
Matron—मातृका, मैट्रन।
Matter—मामला, विषय, वस्तु, पदार्थ, द्रव्य।
Mature—परिपक्व, प्रौढ़।
Maturity—परिपक्वता, प्रौढ़ता, परिपाक।
Maximum—अधिकतम, ज्यादा से ज्यादा।
Maximum demand—अधिकतम माँग।
Maximum & minimum salary—अधिकतम और न्यूनतम वेतन।
Maximum temperature—अधिकतम ताप।
Meal—खाना, भोजन, खुराक।
Mean—माध्य, औसत।
Mean cloud amount was slightly below normal—औसत बादलमान प्रसम से कुछ ही कम था।
Mean daily range of temperature—दैनिक तापमान का औसत उतार-चढ़ाव।
Mean direction of wind—वायु की माध्य दिशा।
Mean of month—महीने का औसत।
Mean temperature—माध्यम या औसत तापमान।
Mean velocity at 8 a.m.—आठ बजे प्रातः का औसत वेग।
Measure—नाप, माप।
Measuring glass—नापने का गिलास, माप यंत्र।
Measurement—माप, पैमाइश।
Measurement Book—माप-पुस्तक।
Mechanical—यन्त्रवत्, यांत्रिक।
Mechanical Engineer—मैकेनिकल इंजीनियर, यांत्रिक अभियंता।
Medical—(*n.*) चिकित्सा, डाक्टरी; (*adj.*) चिकित्सा संबन्धी, औषधीय।
Medical Board—चिकित्सा बोर्ड।
Medical certificate—चिकित्सा प्रमाण-पत्र, डाक्टरी प्रमाण-पत्र।
Medical certificate of fitness—कार्यक्षमता का डाक्टरी प्रमाण-पत्र।
Medical leave—बीमारी की छुट्टी
Medical Officer—चिकित्साधिकारी।
Medical Practitioner—चिकित्सक, डाक्टर, चिकित्साकर्मी।
Medical Report—डाक्टर की या डाक्टरी रिपोर्ट।
Medicine—ओषधि, दवाई।
Medium—माध्यम, मध्य, माध्य।
Meeting—सभा, बैठक, अधिवेशन।

Life licence—आजीवन अनुज्ञा-पत्र।
Life preservers—प्राणरक्षक, जान बचाने वाले।
Life sentence—आजीवन दंड।
Life tenure—आजीवन भूधृति।
Lift—लिफ्ट, उत्थापक।
Lift irrigation—ढेकुल से सिंचाई, उठान सिंचाई।
Light—(*adj.*) हलका, लघु; (*n.*) उजाला, रोशनी।
Lightning conductor—तडित् संवाहक।
Likely—संभावनीय।
Litigation—मुकदमेबाजी।
Lime—चूना।
Limestone—चूना पत्थर।
Limit—सीमा, मर्यादा।
Limit and limitation of right—अधिकार की सीमा और अवधि।
Limitation—अवधि, सीमाबंध।
Line—रेखा, सतर।
Lineal descendants—वंशागत संतति।
Linear—रेखाकार, रेखीय।
Line Inspector—लाइन निरीक्षक।
Lineman—लाइनमैन।
Line Supervisor—लाइन पर्यवेक्षक।
Linger—देर लगाना, हिचकिचाना, दुःख या बीमारी में पड़े रहना।
Link—कड़ी, बंध, संपर्क, योजक।
Linking—शृंखलन।
Lintel—लिन्टल, सरदल।
Liquidation—परिसमापन, समापन।
List—सूची।
Listing of cases—मुकदमों को सूची बद्ध करना।
Literature—साहित्य।
Liver—यकृत्, जिगर।
Livery—वर्दी।
Live-stock—पशुधन।
Load—(*n.*) भार, बोझ; (*v.*) भरना, लादना।
Loaded—भरा, भरित।
Loading—लदान, गोली भरना, भारण।
Loamy—दुमट, दुमटी।
Loan—ऋण, उधार, कर्जा।
Loans and advances—ऋण और अग्रिम।
Lobby—कक्ष, गोष्ठी, कक्ष।
Local—स्थानीय, मुकामी।
Local allowance—स्थानीय भत्ता।
Local board—स्थानीय बोर्ड, स्थानीय मंडल।
Local body—स्थानीय निकाय।
Local breeds—स्थानीय नस्लें।
Local cess—स्थानीयकर, अबवाब।
Local custom—स्थानीय रिवाज, दस्तूर-देही।
Local depot—स्थानीय डिपो।
Local enquiry—स्थानीय जाँच।
Local fund—स्थानीय निधि।
Local Government—स्थानीय सरकार।
Local head—स्थानीय प्रमुख।
Locality—आसपास, पास-पड़ोस।
Local limit—स्थानीय सीमा।
Local management—स्थानीय प्रबंध।
Local rate—स्थानीय दर।
Local Self-Government—स्थानीय स्वायत्त शासन।
Local thunder showers were experienced all over the province—सारे प्रान्त में बिजली की गरज के साथ स्थानिक वर्षा हुई।
Lock—ताला।
Lock, Canal—ताला (नहर)।
Locking up—बन्द करना, कैदियों को ताले में बन्द करना।
Lock-up—हवालात, बंदीखाना, रोधागार।
Locomotive—रेल-इंजन।
Locum tenes—स्थानापन्न।
Locus standi—अधिकारिता।
Locust—टिड्डी।
Log—लट्ठा।
Logarithm—लघुगणक।
Log book—कार्य-पंजी।
Log sheets—कार्यपंजी के पन्ने।
Long term—दीर्घावधि।
Longitude—देशान्तर, रेखांश।
Longitudinal section—अनुलंब काट।
Look—देखना, निगाह डालना।
Loophole—विवर।
Loose—ढीला, अलग्न, असंगठित।
Loose cotton—खुली हुई रूई।
Lorry—लारी।
Lorry coolie—लारी कुली।
Lorry driver—लारी चालक।
Loss—हानि, घाटा, नुकसान।
Loss of seniority—वरीयता की हानि।
Lounge—(*v.*) आराम करना, टालमटोल करना, (*n.*) विश्राम कक्ष।
Louver—झिलमिली।
Lower—निचला।
Lower Court—निचली अदालत, निचला न्यायालय।
Lower Division Assistant—अवर श्रेणी सहायक।
Lower Grade Clerk—अवर श्रेणी क्लर्क।
Lower Subordinate—अवस्तन, अधीनस्थ।
Lowest rate in the month—मास का न्यूनतम भाव या मूल्य।
Low tension—न्यून तनाव, निम्न वोल्टता।
Lubricate—चिकनाना, तेल देना।
Lubricator—स्नेहक, तेलदान।
Luggage—असबाब, सामान।
Lump—पिंड, ढेला।
Lump cash rent—एकराशि नकद लगान।
Lump sum—इकमुश्त रकम, एकराशि।
Lunatic—पागल, विक्षिप्त, उन्मत्त।
Luxury—ऐश, विलास।
Lymphatic glands—लसीका ग्रन्थि।

M

Machine—मशीन, यन्त्र।
Machinery—मशीनें, मशीनरी।
Magazine—मैगजिन, बारूदखाना, बारूद घर, पत्रिका।
Magistrate—मजिस्ट्रेट, दंडाधिकारी, दण्डनायक।
Magnetic needle—चुम्बकी सुई।
Magniloquence—शब्दाडम्बरता।
Magnitude—कांतिमान, महत्ता, परिमाण।
Mahogany—महोगनी, तुन।
Maintenance—अनुरक्षण, पोषण, भरण-पोषण।
Maintenance and Repairs—अनुरक्षण और मरम्मत।
Maintenance Inspector—अनुरक्षण निरीक्षक।
Maintenancy of boundary and survey marks—सीमाद्योतक तथा सर्वेक्षण चिन्हों का अनुरक्षण।
Maintenance officer—अनुरक्षण अधिकारी।
Maintenance, Suit for—भरण-पोषण का दावा, जीवन निर्वाहवाद।

Main walls—सदर दीवारें।
Major—वयस्क बालिग, मुख्य, बृहत्।
Major head—मुख्य शीर्ष।
Majority—बहुमत, वयस्कता, अधिकांश।
Major works—बड़े निर्माण कार्य।
Making up deficit duty—शुल्क की कमी को पूर्ण करना।
Male Line—पुरुष परंपरा।
Malleable—कुट्य, घातवर्ध्य।
Mammary abscess—थनों का फोड़ा।
Management—प्रबंध।
Management of accounts of Government properties—सरकारी सम्पत्ति का प्रबंध और हिसाब।
Manager—प्रबंधक, व्यवस्थापक।
Mandatory—आदेशात्मक।
Manhole—नरमोखा, नर विवर।
Manifesto—घोषणापत्र।
Manual of orders—आज्ञा पुस्तिका।
Manoeuvre, Field, Firing and Artillery Practice Act—युद्धाभ्यास, चांदमारी और गोलाबारी अभ्यास का विधान।
Mantelpiece—अंगीठी के ऊपर की कगार या पटरी।
Mansion—महल, भवन।
Manual (Books)—सारसंग्रह।
Manual of Government orders—सरकारी आज्ञाओं की पुस्तिका।
Manufacture—(v.) माल बनाना या तैयार करना, निर्माण।
Manufacturing Process—निर्माण क्रिया।
Manure—खाद।
Manure pit—खाद का गड्ढा।
Manuscript—पांडुलिपि, हस्तलेख।
Map—नकशा, मानचित्र।
Map-correction—नकशा ठीक करना, मानचित्र संशोधन।
Mappist—नकशा बनानेवाला, मानचित्रकार।
Marble—संगमरमर।
March—अभियान, कूच करना, चलना।
March in file—पंक्ति में मार्च करना, पंक्ति में चलना।
Margin—हाशिया, उपान्त।
Marginal—उपान्त का, सीमान्तिक, हाशिये का, उपान्त्य।
Marginal adjustment—सीमान्तिक समायोजन।

Marginal heading—हाशिये की सुर्खी, उपान्त शीर्षक।
Marginally noted—उपान्त, लिखित।
Marine Officer—समुद्रीय अधिकारी।
Marine Policies—समुद्री बीमा पालिसी।
Mark—(v.) चिन्हित करना, निर्दिष्ट करना, देखना, निशान लगाना, चिन्ह लगाना; (n.) चिन्ह।
Market—मंडी, बाजार, विपणि।
Marketable security—विक्रेय सरकारी हुंडी।
Market dues—बाजार की उगाही।
Market price—बाजार भाव या मूल्य।
Market rate—बाजार भाव, आपणिक।
Market value—बाजार मूल्य।
Marriage certificate—वैवाहिक या विवाह प्रमाण-पत्र।
Marriage, dissolution of—विवाह-भंग।
Marriage, nullity of—विवाह रद्द करना।
Marsh—दलदल।
Martial right—सैनिक अधिकार।
Masculine style—पुरुषोचित शैली।
Mask—मुखावरण, मुखौटा, चेहरा, मुखपट।
Mason—राज।
Masonry—चिनाई, राजगीरी।
Masonry work—ईंट-पत्थर का काम, ईंट चूने का काम।
Master of ship—पोतपति, पोताध्यक्ष, जहाज मास्टर।
Master Security Printing—सरकारी हुण्डियों के मुद्रण अध्यक्ष।
Material—भौतिक, महत्वपूर्ण, ठोस; (n.) सामग्री, पदार्थ, सामान, मसाला।
Material change—महत्वपूर्ण परिवर्तन।
Material exhibit—महत्वपूर्ण प्रदर्शित वस्तु।
Material injustice—वास्तविक अन्याय, खासा अन्याय।
Materials—पदार्थ, सामग्री सामान।
Maternity hospital—प्रसूति चिकित्सालय, जच्चा-बच्चा अस्पताल।
Maternity leave—प्रसूति छुट्टी।
Mathematical and Surveying Instruments—गणित और सर्वेक्षण सम्बन्धी उपकरण।
Matron—मातृका, मेट्रन।

Matter—मामला, विषय, वस्तु, पदार्थ, द्रव्य।
Mature—परिपक्व, प्रौढ़।
Maturity—परिपक्वता, प्रौढ़ता, परिपाक।
Maximum—अधिकतम, ज्यादा से ज्यादा।
Maximum demand—अधिकतम मांग।
Maximum & minimum salary—अधिकतम और न्यूनतम वेतन।
Maximum temperature—अधिकतम ताप।
Meal—खाना, भोजन, खुराक।
Mean—माध्य, औसत।
Mean cloud amount was slightly below normal—औसत बादलमान प्रसम से कुछ ही कम था।
Mean daily range of temperature—दैनिक तापमान का औसत उतार-चढ़ाव।
Mean direction of wind—वायु की माध्य दिशा।
Mean of month—महीने का औसत।
Mean temperature—माध्यम या औसत तापमान।
Mean velocity at 8 a.m.—आठ बजे प्रातः का औसत वेग।
Measure—नाप, माप।
Measuring glass—नापने का गिलास, माप यंत्र।
Measurement—माप, पैमाइश।
Measurement Book—माप-पुस्तक।
Mechanical—यन्त्रवत्, यांत्रिक।
Mechanical Engineer—मैकेनिकल इंजीनियर, यांत्रिक अभियंता।
Medical—(n.) चिकित्सा, डाक्टरी; (adj.) चिकित्सा संबंधी, औषधीय।
Medical Board—चिकित्सा बोर्ड।
Medical certificate—चिकित्सा प्रमाण-पत्र, डाक्टरी प्रमाण-पत्र।
Medical certificate of fitness—कार्य-क्षमता का डाक्टरी प्रमाण-पत्र।
Medical leave—बीमारी की छुट्टी
Medical Officer—चिकित्साधिकारी [illegible]।
Medical Practitioner—चिकित्सक, डाक्टर, चिकित्साव्यवसायी।
Medical Report—डाक्टर की या डाक्टरी रिपोर्ट।
Medicine—औषधि, दवाई।
Medium—माध्यम, मध्य, मध्यम।
Meeting—सभा, [illegible], [illegible]।

Member—सदस्य ।
Membership—सदस्यता ।
Members of the Committee of Courses in Agriculture or Art—कृषि विज्ञान अथवा कला पाठ्यक्रम समिति के सदस्य ।
Members of the Committee of Courses in Biology—जीव विज्ञान पाठ्यक्रम समिति के सदस्य ।
Members of the Committee of Courses in Chemistry—रसायन शास्त्र पाठ्यक्रम समिति के सदस्य ।
Members of the Committee of Courses in Logic—तर्कशास्त्र पाठ्यक्रम समिति के सदस्य ।
Members of the Committee of Courses in Mathematics—गणित पाठ्यक्रम समिति के सदस्य ।
Members of the Committee of Courses in Modern European Languages—आधुनिक योरोपीय भाषा पाठ्यक्रम समिति के सदस्य ।
Members of the Committee of Courses in Physics—भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम समिति के सदस्य ।
Memo—स्मृतिपत्र, यादी, ज्ञापक ।
Memo of appearance—उपस्थिति का स्मृतिपत्र ।
Memo of cost—याददाश्त खर्च, व्यय-स्मरणपत्र ।
Memoranda—ज्ञापन-पत्र ।
Memorandum of agreement—याददाश्त इकरारनामा, इकरारनामे का ज्ञापन-पत्र ।
Memorandum of appeal—अपील का ज्ञापन-पत्र ।
Memorandum of association of a company—कंपनी का संघ नियम, कम्पनी का याददाश्त शराकत, कंपनी का विधान-पत्र ।
Memorandum of evidence—साक्ष्य का प्रमाणपत्र, साक्ष्य का संक्षिप्त विवरण ।
Memorandum of securities—सरकारी हुण्डियों का ज्ञापन पत्र या संक्षिप्त विवरण ।
Memorial—स्मरण-पत्र, स्मारक, अभ्यावेदन ।
Memorialist—अभ्यावेदक ।
Men of influence—प्रभावशील व्यक्ति ।
Mensuration—क्षेत्रमिति ।
Mental aberration—मानसिक विकार, वदहवासी ।
Mental defect—मस्तिष्क दोष, दिमागी खराबी ।
Mental Hospital—मस्तिष्क रोग चिकित्सालय, पागलों का अस्पताल ।
Mental patient—मस्तिष्क रोगी ।
Mention—उल्लेख, जिक्र ।
Mercy petition—दया याचिका, रहम की दरख्वास्त ।
Merget—विलय, विलयन ।
Mesne profit—मध्यवर्ती लाभ ।
Mess—रसोई, चौका ।
Message, Original—मूल संदेश ।
Mess allowance—भोजनालय भत्ता ।
Mess manager—पाकशाला प्रबन्धक ।
Mess supervisor—भोजनालय पर्यवेक्षक ।
Metal road—पक्की सड़क ।
Metal work—धातु शिल्प ।
Metallic tape—लोहे का फीता ।
Meteorological Department—मौसम विज्ञान-विभाग ।
Meteorological observatories—मौसम विज्ञान मान मन्दिर, वेधशाला ।
Method—ढंग, रीति, विधि ।
Method of preparation—तैयारी का ढंग ।
Metropolitan pattern—राजधानी का नमूना ।
Microscopical examination—सूक्ष्मदर्शी परीक्षण ।
Mid-wife—दाई, धात्री ।
Mid-wifery—धात्री-विद्या, प्रसूति-विद्या ।
Migration—प्रव्रजन, प्रवसन, देशांतरण ।
Migration certificate—प्रव्रजन प्रमाण-पत्र ।
Mild—मुलायम, हल्का, धीमा, मंदा, मीठा, कोमल, मृदु ।
Mileage—मील-दूरी, मील भत्ता ।
Mileage allowance—मील-भत्ता ।
Military—(*n.*) सेना, फौज, लश्कर; (*adj.*) सैनिक, फौजी ।
Military encamping grounds—सैनिक पड़ाव ।
Military, Naval & Air Force—सैनिक, नौ और नभ सेनाएँ ।
Military officer—सैनिक अधिकारी, फौजी अफसर, सेना अधिकारी ।
Military prisoner—सैनिक बन्दी ।
Military service—सैनिक या सैन्य सेवा ।
Military stores—युद्ध सम्बन्धी सामान, सैनिक कोष्ठागार, सैनिक सामग्री ।
Milk zones—दूध के इलाके, दूध प्राप्त करने के क्षेत्र ।
Mineral—खनिज ।
Miniature—लघुरूप ।
Minimum—न्यूनतम, सब से अल्पतम, कम ।
Minimum qualification—न्यूनतम योग्यता, कम से कम योग्यता ।
Minister for Communication—यातायात मंत्री ।
Minister-in-charge—कार्यभारी मंत्री ।
Ministerial Establishment and Menial—लेखकवर्गीय और परिचारक स्थापनाएँ ।
Ministerial Servants—लेखकवर्गीय सेवक ।
Ministerial Staff—लेखकवर्गीय कर्मचारीगण ।
Minister of Agriculture—कृषि मंत्री ।
Minister of Development—विकास मंत्री ।
Minister of Excise—आवकारी मंत्री ।
Minister of Finance—वित्त मंत्री ।
Minister of Food—खाद्य मंत्री ।
Minister of Public Health—जन-स्वास्थ्य मंत्री ।
Minister of Public Works Department—निर्माण मंत्री ।
Minister of Revenue—माल मंत्री ।
Ministry—मंत्रिमण्डल ।
Minor—(*adj.*) लघु, छोटा; (*n.*) नावालिग, अवयस्क ।
Minor Estimates—लघु तखमीने ।
Minor Head—लघु शीर्ष ।
Minor under the guardianship of—की संरक्षता में अवयस्क या नावालिग ।
Minor work—छोटे निर्माण कार्य ।
Minutes Book—कार्य वृत्त पुस्तक ।
Misappropriation—दुरुपयोग ।
Misbehaviour—कदाचार, दुर्व्यवहार ।
Miscarriage—गर्भपात ।
Miscarriage of Justice—न्याय का अपवहन ।
Miscellaneous—विविध, प्रकीर्ण ।

Miscellaneous Expenditure—विविध व्यय ।
Miscellaneous subordinate posts—विविध अधीनस्थ नौकरियाँ, विविध अधीनस्थ स्थान ।
Misconduct—बुरा चलन, दुराचरण, दुराचार ।
Misdescription—अशुद्ध वर्णन ।
Misplace—कुठौर रखना ।
Mistake—भूल, त्रुटि गलती, अशुद्धि, भ्रम, चूक ।
Mistress—अध्यापिका ।
Misused stamps—दुरुपयोग किये हुए स्टाम्प ।
Mitigate—कम करना, शमन करना, हलका करना ।
Mitigation—कमी, न्यूनीकरण, शमन ।
Mix—मिलाना, मिश्रण करना ।
Mixer—मिश्रक, मिलानेवाला ।
Mobile traffic squads—यातायात नियंत्रण का गश्ती दस्ता ।
Moderate defect—साधारण या मामूली दोष ।
Moderation—मंदन ।
Modification—रूपांतरण, अदल-बदल, सुधार, परिष्कार ।
Modified grant—परिवर्तित अनुदान ।
Modify—परिवर्तन करना, सुधार करना ।
Modulus—मापांक ।
Moiety fees—अर्द्ध शुल्क ।
Moisture—नमी, आर्द्रता ।
Molasses—सीरा, चोटा, जूसी ।
Moment, bending—नमन घूर्ण ।
Moment of inertia—जड़ता प्रवृत्ति ।
Momentum—संवेग ।
Monetary—धन-संबंधी, आर्थिक ।
Monetary allotment—आर्थिक अनुदान ।
Money—रुपया-पैसा, मुद्रा, धन ।
Money order—मनीआर्डर, धनादेश ।
Monopoly—इजारा, एकाधिकार ।
Monsoon damage—वर्षा द्वारा टूट-फूट, वर्षा से हानि ।
Monsoon and crops—मानसून और फसलें ।
Month—मास, महीना ।
Month in which to be accounted for—महीना जिसमें हिसाब डाला जाय ।
Monthly abstract—मासिक सारांश ।
Monthly account—मासिक लेखा ।
Monthly returns—मासिक विवरण-पत्र, माहवारी नकशा ।
Moral—नैतिक ।
Moral turpitude—नैतिक हीनता, नैतिक पतन ।
Morbid specimens—विकृत नमूने, रुग्ण नमूने ।
Mortality—मृत्यु, मरण मृत्यु-संख्या ।
Mortagage—रेहन, बंधक, गिरवी ।
Mortgagee—बन्धकग्राही, बंधकी ।
Mortgage bond—बंधक-पत्र ।
Mortgagee's cultivation—बंधकग्राही की खेती या जोत ।
Mortgage deed—बंधक पत्र ।
Mortgaged property, reconveyance of—बन्धक की हुई सम्पत्ति की वापसी ।
Mortgager—बंधक-कर्ता ।
Motion, formal—यथानियम, प्रस्ताव ।
Motor-car—मोटर गाड़ी ।
Motor engine—मोटर मशीन ।
Motor cycle allowance—मोटर साइकिल भत्ता ।
Motor transport section—मोटर वाहन उपविभाग ।
Mould—साँचा ।
Moulding—साँचा बनाना, गढ़ाई, गढ़न, साँचा ।
Mounted lineman—सवार लाइनमैन, आरोही लाइनमैन ।
Mounted Police—सवार पुलिस ।
Movable—चल, जंगम ।
Movable property—चल सम्पत्ति ।
Movement—गमन, गति, हरकत ।
Mucous membrane—श्लेष्मल झिल्ली ।
Mud mortar—गारा ।
Mug—मग, हत्थेदार बेलनी, प्याला ।
Mule—खच्चर ।
Multifarious suit—बहुविवाद ।
Municipality—नगरपालिका ।
Munshi—मुंशी ।
Munsif—मुंसिफ ।
Murder—खून, हत्या ।
Museum—अजायबघर, संग्रहालय ।
Music—संगीत ।
Musket—बंदूक ।
Musketry—बंदूक, बन्दूक विद्या, बन्दूकबाजी सिखा ।
Musketry course—बन्दूक शिक्षा का पाठ्यक्रम ।
Muster—हाजिरी, गिनती, सूची ।
Muster Roll—हाजिरी की किताब, उपस्थिति नामावली ।
Mutation—दाखिल-खारिज, उत्परिवर्तन ।
Mutatis Mutandis—यथोचित परिवर्तनों सहित ।
Mutiny—बलवा, गदर, विद्रोह, विप्लव, दंगा-फसाद ।
Muzzle—थूथन ।
My lord—श्रीमन् ।

N

N.B.—विशेष सूचना ।
Naib Tahsildar—नायब तहसीलदार
Naik—नायक ।
Nail—कांटिया, कील ।
Narration—वर्णन ।
Narrative—वृतांत ।
Narrative of the case—मामले का वर्णन या वृतांत ।
Narrow—संकीर्ण, तंग ।
National Economy—राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था ।
Nationalisation—राष्ट्रीयकरण ।
Native Converts Marriage Dissolution Act—देशी ईसाइयों का विवाह विच्छेद विधान ।
Native of India—भारतवासी ।
Natural causes—प्राकृतिक कारण ।
Naturalisation—नागरिकीकरण, देशीकरण ।
Natural forces—स्वाभाविक शक्तियाँ ।
Nature—प्रकार, प्रकृति, स्वभाव, किस्म ।
Nature of the case—मुकद्दमे का प्रकार ।
Nature of the claim—दावे का प्रकार ।
Nature of vacancy—रिक्ति का प्रकार ।
Navigable channels—[illegible] ।
Navigation—नौ-[illegible], [illegible] ।
Nayar Dam Project Division—[illegible] ।
Nazul land—[illegible] ।
Necessary and [illegible] ।
Negative—[illegible], [illegible] ।
Neel [illegible] ।

Negotiable—परक्राम्य, विनिमेय।
Negotiable Instrument Act—परक्राम्य हुंडी विधान।
Negotiation—क्रय-विक्रय, सौदा, वातचीत, वार्ता।
Neighbourhood—पड़ोस।
Net—शुद्ध, पूरा।
Net assets—पूरी परिसंपत्ति।
Net emoluments—शुद्ध उपलब्धि।
Net income—शुद्ध आमदनी या आय।
Net pay due—शुद्ध प्राप्य वेतन।
Net profit—शुद्ध लाभ।
Neutral—तटस्थ, उदासीन।
Neutral axis—उदासीन अक्ष।
New expenditure—नूतन व्यय।
New fallow—नई परती।
Nickel—निकल, कलई।
Night charge—रात्रिक अधिभार।
Night duty—रात की नौकरी।
Night duty squad—रात की नौकरी का स्काड।
Night duty watch—रात की नौकरी का पहरा।
Night round—रात का गश्त, रात का फेरा।
Nightsoil—मैला, विष्ठा।
Night watchman—रात का पहरेदार।
Nipple—स्तनाग्र, चूचुक।
Nomenclature—अभिधान, नाम-पद्धति, नामकरण।
Nomenclature of roads—सड़कों का नामकरण।
Nominal—नाम मात्र।
Nominal Roll—नाम-सूची, नामावली।
Nomination—नामांकन, नामजदगी।
Nomination of reporters—संवाद-दाताओं का नामांकन।
Nominee—नामिता, मनोनीत।
Non-agricultural Land—अकृष्य भूमि।
Non-commissioned officer—अराजादिष्ट अधिकारी।
Non-compliance—पालन न करना, अपालन।
Non-food-crops—खाद्येतर फसलें।
Non-gazetted establishment—अराजपत्रित संस्थापन।
Non-gazetted officer—अराजपत्रित अधिकारी।
Non-government—शासनेतर, गैर-सरकारी।
Non-industrial consumer—अनौद्योगिक उपभोक्ता।
Non-Judicial Stamp—न्यायिकेतर मुद्रांक।
Non-labouring—अपरिश्रमी, मेहनत न करनेवाला।
Non-license—विना लाइसेंस का।
Non-occupancy—गैर दखिलकारी।
Non-pensionable post—विना पेंशन की या अपेंशनी नौकरी।
Non-porous—अरंध्र।
Non-postal stamp—डाक इतर टिकट।
Non-recurring expenditure—अनावर्ती व्यय।
Non-residential—अनावासिक, अनिवासी।
Non-scheduled—अपरिगणित।
Non-vegetarian—आमिष भोजी।
Normal—सामान्य, प्रसामान्य।
Normally—सामान्यत:।
Normal School—प्रशिक्षण विद्यालय।
Normal time—प्रसामान्य अवधि।
North India Ferries Act—उत्तर भारतीय घाट विधान।
Notarial function—लेख्य प्रमाणन।
Notary public—लेख्य प्रमाणक।
Notch—खाँच, दाँत।
Note—नोट, टिप्पणी।
Note Book—टिप्पणी पुस्तिका।
Noted—टीप किया गया, लिख लिया गया।
Note for Financial Committee—वित्त परिषदीय स्मृति-पत्र।
Note-form—टिप्पणी चिट।
Noter—टिप्पणीक।
Noter and drafter—टिप्पणी लेखक और पांडु-लेखक।
Notes and orders—टिप्पणियाँ और आज्ञायें।
Note sheet—टिप्पणी फलक।
Notice—सूचना, सूचना-पत्र।
Notice of completion of work—कार्य पूरा करने की सूचना।
Notice of ejectment—वेदखली की सूचना।
Notice writer—सूचना लेखक।
Notification—विज्ञप्ति, सूचना, अधिसूचना।
Notification of acquisition of Land—भूमि प्राप्ति की अधिसूचना।
Noting—टिप्पणी, टिप्पणी लिखना।
Notwithstanding—के होते हुए भी।
Nozzle—टोंटी, तुंड, थुथना।
Nucleus—केन्द्र, केंद्रक, नाभिक।
Nuisance—कंटक, उत्पात, अपदूषण।
Null and void—अकृत और शून्य।
Nullity of marriage—विवाह की अकृति।
Number—संख्या।
Numbering of chapters—परिच्छेदों पर संख्या-क्रम डालना।
Numbers of pier—खम्भों की संख्या।
Numerator—अंश।
Numerical—संख्यात्मक, आंकिक।
Numismatic—मुद्रा संबंधी।
Nursery—शिशुपालन गृह, पौधशाला।
Nut—काष्ठ फल, ढेवरी।

O

Oar—डाँड़, चप्पू।
Oath—शपथ, हलफ।
Oath of allegiance—निष्ठा शपथ।
Object—(*n.*) पदार्थ, वस्तु, विषय, आशय, उद्देश्य, निमित्त, प्रयोजन; (*v.*) आपत्ति उठाना या करना।
Objection—एतराज, आपत्ति।
Objection statement—आपत्ति-विवरण-पत्र।
Objectionable—आपत्तिजनक, काविल-एतराज।
Objects and reasons—उद्देश्य और कारण।
Obligation of residence—आवाद रहने की कैद, निवास-प्रतिबन्ध बंधन या आवंध।
Obligatory—जरूरी, अनिवार्य, अवैकल्पिक, बाध्य।
Oblique—तिर्यक्, तिरछा।
Oblong—आयताकार, आयतरूप।
Obscure—अस्पष्ट, अप्रसिद्ध, गुप्त, पोशीदा।
Obsolete plants—लुप्तप्रयोग स्थिर यंत्र, अप्रचलित स्थिर यंत्र।
Observation—अवलोकन, अवलोक, प्रेक्षण।
Observe—पालन करना, अनुपालन करना।
Obstacle—रुकावट, बाधा।

Obtuse angle—अधिककोण।
Occasional—कदाचनिक, कभी-कभी का, यदा-कदा।
Occasional check—यदा-कदा की पड़ताल।
Occupancy—दखीलकारी अधिभोग।
Occupancy tenant—दखलकारी असामी दखलकारी काश्तकार, भोक्ता कृषक।
Occupancy tenants of Government estates others than Nazuls—नजूल के अतिरिक्त दूसरी सरकारी भूमि के दखलकारी असामी।
Occupancy tenants under Act—विधान के अधीन दखलकारी असामी।
Occupation—काम, धंधा, व्यवसाय, उपजीविका।
Occupiers rate—किरायेदार की दर।
Occur—घटना या घटित होना।
Occurrence—घटना, वाकया।
Octagon—अष्टभुज।
Octennial—अठसाला।
Octroi—चुंगी।
Octroi duty—चुंगीकर।
Odd—विषम।
Of current year's crop—चालू वर्ष की फसल का।
Offence—अपराध, जुर्म।
Offer—(*v.*) पेश करना, देना; (*n.*) प्रस्ताव, अर्पण, दाम, मोल, उपदान, उपहार।
Office—कार्यालय, दफ्तर।
Office begs to submit that—कार्यालय का निवेदन है कि।
Office mate—कार्यालय के साथी।
Office memorandum—कार्यालय ज्ञापन।
Office order—कार्यालय आदेश।
Officer—अधिकारी, अफसर, पदाधिकारी।
Officer on Special Duty—विशेष कार्याधिकारी।
Officers training class in land records and survey—कागजात देही और मुसाहत के अफसरों का प्रशिक्षण।
Office Superintendent—कार्यालय अधीक्षक।
Office to note—कार्यालय नोट करे।
Official—(*adj.*) सरकारी, राजकीय, आधिकारिक, अफसरान, कर्मचारी।
Official Assignee—सरकारी समानुदेशिती।
Official Receiver—सरकारी ग्रहीता, सरकारी रिसीवर।
Official Trustee—सरकारी न्यासधारी।
Officiating—स्थानापन्न।
Officiating appointment—स्थानापन्न नियुक्ति।
Offset piece—गोनिया।
Of normal nature—सामान्य ढंग का, असामान्य प्रकार का।
Of previous year's crop—पिछले वर्ष की फसल का।
Oil cake—खली।
Oil-engineDriver—तेल इंजन चालक, तेल इंजन ड्राइवर।
Oilers—तेलवाला
Old fallow—पुरानी परती।
Omitted—छोड़ा हुआ।
On average pay—औसत वेतन पर।
On behalf of—की ओर से।
On deputation—प्रतिनियुक्ति पर।
On probation—परीक्षण पर।
On service—कार्यार्थ।
On special duty—विशेष कार्यार्थ।
On the examination of—की जांच करने पर।
Onus—भार, दायित्व।
Ooze—(*n.*) चूना, छनना, टपकना, रसाव, बहाव, कीचड़, पंक, मृदुपंक।
Opening—उद्घाटन, प्रारम्भ, मुख, द्वार।
Opinion—राय, मत।
Opium Department—अफीम विभाग।
Opposite party—विपक्ष, प्रतिपक्ष, प्रतिपक्षी, विरोधी दल।
Optical square—प्रकाशीय गुनिया।
Option—विकल्प, मर्जी, रुचि।
Oral lease—मौखिक पट्टा, जबानी पट्टा।
Orbit—कक्षा, परिक्रमा पथ।
Orchard—फलों का बाग, फल वाटिका, फलोद्यान।
Order—आज्ञा, आदेश।
Orderly—अर्दली।
Order sheet—आदेश पत्रक।
Ordinance—अध्यादेश, आर्डिनेंस।
Ordinary—साधारण, मामूली।
Ordinary grant—साधारण अनुदान।
Ordinary [illegible]—साधारण [illegible]।
Ordnance—लड़ाई के हथियार, बड़ी तोपें, तोपखाना, गोला-बारूद।
Ordinate—कोटि।
Ore—कच्ची धातु, अयस्क।
Organ—अंग।
Organised—संगठित।
Oriental—पूर्वी।
Orientation—स्थिति निर्धारण, स्थिति निरूपण, दिग्विन्यास।
Original—मूल, मौलिक, प्रारंभिक।
Original authority—मूल प्राधिकारी, मूल अधिकार।
Ornamental work—बेल-बूटा, अलंकारी या सजावटी।
Orphan—अनाथ।
Orphanage—अनाथालय।
Other non-contract contingencies—अन्य अनियत प्रासंगिक व्यय।
Outbreak—फैलना (रोग का), फूट निकलना, शुरू होना।
Outdoor—बाहर का, बाह्य।
Outdoor patient—बहिरंग या बाहरी रोगी।
Outline—रूपरेखा, रूपरेखा।
Out post—बाहरी चौकी।
Outrage—अत्याचार, बलात्कार।
Outset—आरम्भ।
Outskirt villages—किनारे के गांव पार्श्ववर्ती गांव।
Outturn—उत्पादन, पैदावार, उपज।
Oval—अंडाकार।
Oven—चूल्हा, तन्दूर।
Over—ऊपर, पर, समाप्त।
Overcharge—अधिप्रभार।
Overcrowding—अधिक भीड़, बहुत भीड़ होना, अति संकुलता।
Overhead—ऊपरिव्यय।
Over leaf—पृष्ठ के दूसरी ओर।
Overlook—उपेक्षा करना, ध्यान न देना।
Over payment—अधिक भुगतान।
Overseas pay—समुद्र पार का वेतन।
Overseer—ओवरसियर।
Over stay—अधिक ठहरना।
Overstay on leave—छुट्टी पर अधिक ठहरना।
Overtime payment—[illegible]।
Owner's rate—[illegible]।

P

Package—गट्ठर, संवेस्टन ।
Packet—पुलिदा ।
Packet Post—पुलिदा डाक ।
Paint—रंग, रोगन ।
Painter—रंगसाज ।
Pair of compasses—परकार ।
Pamphlet—पुस्तिका, चौपन्ना ।
Pan—कढ़ाई, पलड़ा ।
Panel—दिलहा, नामिका, सूची ।
Pane of glass—शीशे का टुकड़ा ।
Pantographer—प्रतिलिपिक यंत्र, नकशों को छोटा-वड़ा करनेवाला यंत्र ।
Paper under consideration—विचाराधीन पत्र ।
Paper-weight—पत्र-भार, पेपर-वेट ।
Par—समता, सममूल्य ।
Para—पैरा, कंडिका ।
Parabola—परवलय ।
Parade—परेड, कवायद ।
Paragraph—कंडिका ।
Parallelogram—समानान्तर या समांतर चतुर्भुज ।
Parapets—मुंडेर, प्राकार ।
Paraphernalia—समान, असवाव ।
Parasite—परजीवी, पराश्रयी ।
Parasitic nodules—परजीविका ग्रन्थिका ।
Parcel—पार्सल ।
Pardon—(*n.*)क्षमा; (*v.*)क्षमा करना ।
Parity—समानता, समता ।
Park—उद्यान, संसदीय ।
Parliamentary Secretary—सभा सचिव ।
Parlour—वैठक ।
Parole—पैरोल, वागविश्वास, वाचिक ।
Part—भाग, अंश, अंग ।
Partial—आंशिक, पक्षपाती ।
Partial allotment—आंशिक नियतन या वाँटा ।
Particular—(*n.*) विवरण, व्योरा, विशेष; (*adj.*) विशिष्ट ।
Particular points—विशेष वातें
Partition—वँटवारा ।
Partnership, Dissolution of—भागिता-भंग, साझेदारों का टूटना ।
Part Performance—आंशिक पालन ।
Part-time—अंशकालिक ।
Part-time appointment—अंशकालिक नियुक्ति ।
Part transaction—आंशिक लेन-देन ।
Party—पक्ष, दल ।
Party to the suit—फरीक मुकद्दमा ।
Pass—(*v.*) उत्तीर्ण होना, पारित होना; (*n.*) प्रवेश-पत्र ।
Passage—मार्ग, गली ।
Passenger train—सवारी गाड़ी ।
Pass on—आगे वढ़ाना ।
Passport—पार-पत्र ।
Pasture—चरागाह ।
Patent medicines—पेटेन्ट दवाइयाँ, एकस्व भेषज ।
Pathological specimens—रोग-विषयक नमूने ।
Pathology—रोग विज्ञान, शरीर-चिकित्सा विज्ञान ।
Patrol—(*n.*) गश्त; (*v.*) गश्त लगाना ।
Patrolling—गश्त लगाना ।
Patron—संरक्षक ।
Pattern—नमूना, प्रतिरूप, आदर्श ।
Pauper appeal—अकिंचन अपील ।
Pauper suits—अकिंचन वाद ।
Pavement—फर्श, पटरी ।
Pay—वेतन, तनख्वाह ।
Pay and allowance—वेतन और भत्ता ।
Pay bill—वेतन-पत्र ।
Payee—पानेवाला, आदाता ।
Payment—भुगतान, अदायगी ।
Pay of establishment—संस्थापन का वेतन ।
Pay of officers—अधिकारियों का वेतन ।
Pay, personal—वैयक्तिक वेतन ।
Pay, progressive—वढ़ती वेतन, वर्धमान वेतन ।
Pay, special—विशेष वेतन ।
Pay, substantive—मौलिक वेतन ।
Pay, time-scale—कालानुक्रम वेतन ।
Peace propaganda—शान्ति प्रचार ।
Pebble—कंकड़, गिट्टी, वजरी ।
Pecuniary—आर्थिक, धन-संवंधी ।
Pecuniary Loss—आर्थिक हानि ।
Pedagogy—शिक्षण विज्ञान ।
Pedestal—उपपीठ, पादपीठ, चौकी ।
Pedestrian—पैदल चलनेवाला ।
Peel—छीलना ।
Peg—खूंटी ।
Penal—दंडात्मक, दांडिक ।
Penalty—दंड, शास्ति ।
Pendant—लटकन, झूमकन ।
Pendency—लंवन ।
Pending—अनिर्णीत, निलंवित ।
Pending disposal of—मुकद्दमा फैसला होने तक ।
Pending travelling allowance bills—निलंवित यात्रिक भत्ता विल ।
Penetration—वेधन, प्रवेश ।
Pension—पेन्शन, निवृत्ति-वेतन ।
Pensionable post—पेंशनी पद या नौकरी ।
Pensionable service—पेंशनी नौकरी ।
Pensionary charges—पेंशन-सम्वन्धी व्यय ।
Pensioner—पेंशनर, पेन्शन पानेवाला ।
Pension paper—पेंशन-पत्र ।
Pension payment orders—पेंशन भुगतान आज्ञा ।
Peon—चपरासी ।
Percentage—प्रतिशतता ।
Percentage increase and decrease—प्रतिशत वढ़ती या कमी ।
Perennial—वारहमासी, चिरस्थायी, वर्षानुवर्षी ।
Perforator—छिद्रक ।
Performance of additional duties—अतिरिक्त कर्त्तव्यों का पालन या संपादन ।
Perimeter—परिमाप, परिसीमा ।
Periodical—सावधिक, कालिक, सामयिक ।
Periodical Inspection—सामयिक निरीक्षण ।
Periodically—सामयिक तौर पर ।
Periodical payment—सामयिक भुगतान ।
Periodical review—सामयिक समीक्षन ।
Period of limitation—अवधि-काल ।
Permanent—स्थायी ।
Permanent advance—स्थायी अग्रधन, स्थायी पेशगी ।
Permanent lessee—स्थायी पट्टेदार ।
Permanently settled—स्थायी रूप से वन्दोवस्त किया हुआ ।
Permanent out-let—स्थायी निकास, पानी निकलने का स्थायी मार्ग ।
Permanent tenure-holder—स्थायी भू-धृतिधारी ।
Permit—(*n.*)अनुज्ञा पत्र; (*v.*)अनुज्ञा देना ।
Perpetrate—अपराध करना ।

Perpetual allowance—शाश्वत भत्ता।
Perpetuate—जीवित रखना, कायम रखना।
Persian script—फारसी लिपि।
Personal—व्यक्तिगत, वैयक्तिक, निजी, स्वीय, व्यक्तिक।
Personal allowance—वैयक्तिक भत्ता।
Personal aPpearance—व्यक्तिगत उपस्थिति।
Personal appearance exempt from—व्यक्तिगत उपस्थिति से मुक्त।
Personal Assistants—वैयक्तिक सहायक।
Personal, executing—निष्पादन करने वाले व्यक्ति।
Personal file—वैयक्तिक फाइल।
Personal law—स्वधर्म-शास्त्र।
Personally—स्वयं, अपने आप।
Personal pay—व्यक्तिक वेतन।
Personal remark—वैयक्तिक टिप्पणी।
Persuade—समझाना, मनाना।
Peruse—पढ़ना, अवलोकन करना।
Petition—याचिका, अर्जी।
Petitioner—प्रार्थी।
Petition officer—प्रार्थी अधिकारी।
Petition respecting offence—अपराध-सम्बन्धी याचिका।
Petition writer—याचिका लेखक।
Petty—छोटा-मोटा, फुटकर।
Petty contingent expenditure—क्षुद्र प्रासंगिक व्यय।
Petty establishment—लघु संस्थापन।
Petty estimates—छोटे-मोटे तखमीने।
Petty works—छोटे-मोटे काम।
Physical assets—भौतिक सम्पत्ति।
Physical training—व्यायाम-शिक्षण।
Piece work—ठेका।
Piece work agreement—ठेके के काम का इकरारनामा।
Pier—पाया, खम्बा, स्तंभ, पानी में बना हुआ चबूतरा।
Pile foundation—खूंटा नींव।
Pilgrim—तीर्थयात्री।
Pilgrim pass—तीर्थयात्री पार-पत्र।
Pillar—खम्बा, पाया, स्तम्भ।
Pillow-slip—गिलाफ।
Pilot scheme—मार्गदर्शी योजना।
Pioneer—पुरोगामी।
Piroplasmosis—[illegible], पैत्तिक ज्वर।
Pistol—पिस्तौल।

Pitching—उपनियान।
Pivot—चूल, कीलक, धुरी।
Place of trial—विचार-स्थान।
Plague—प्लेग, ताऊन।
Plain clothes police—खुफिया पुलिस।
Plaint—वाद-पत्र, अर्जी दावा।
Plaintiff—वादी।
Plan—मापचित्र, आलेख, योजना।
Plant—पादप, पौधा, संयंत्र।
Plant & Machinery—संयंत्र और मशीनें।
Plantation—रोपण, बाग लगाना, वृक्ष-वाटिका।
Plantation, Roadside—सड़क के किनारे बाग-बगीचे लगाना।
Plaster—पलस्तर, लेप।
Plastic—सुनम्य।
Platoon—प्लैटून।
Platoon Commander—प्लैटून कमांडर।
Playground—खेल का मैदान।
Pleader—वकील, अभिवक्ता।
Please quote—कृपया उद्धृत कीजिए।
Please report—कृपया रिपोर्ट कीजिए।
Plumb—साहुल।
Plus and minus memo—धन और ऋण का स्मृतिपत्र।
Pocket register—जेबी रजिस्टर।
Point—बिन्दु, नोक, बात, विषय।
Pointing masonry—टीपकारी।
Poison—विष।
Police department—पुलिस विभाग।
Police force—पुलिस या आरक्षी दल।
Police guard—पुलिस गारद।
Police Office Manual—पुलिस कार्यालय पुस्तिका।
Police recruit—पुलिस रंगरूट।
Police Regulations - पुलिस-नियमावली।
Police station—थाना।
Police Training School—पुलिस प्रशिक्षण संस्था।
Policy—नीति, कार्य-नीति।
Political sufferer—राजनीतिक पीड़ित।
Polling booth—निर्वाचन स्थान, वोट देने का स्थान।
Polygon—बहुभुज।
Pond—कुंड, ताल।
Popularise—लोकप्रिय बनाना।
Population—आबादी, जनसंख्या।
Porous—छिद्रिल, [illegible]।
Port—बंदरगाह, पत्तन।

Portable—सुवाह्य।
Porter—भारिक, कुली।
Port officer—पत्तन अधिकारी।
Portrait—रूप चित्र।
Positive—धनात्मक, निश्चयात्मक।
Possession—कब्जा।
Post—डाक, पद, [illegible], स्थान।
Postage stamps—डाक टिकट।
Post and Telegraph Department—डाक और तार विभाग।
Post master—पोस्टमास्टर, डाक पाल।
Postal Life Insurance premium—डाक जीवन बीमा की किस्त।
Postal notice—डाक नोटिस।
Posting—तैनाती, स्थापना, [illegible]।
Postings and transfers—तैनाती और बदली।
Post mortem—शव-परीक्षा।
Post office—डाकघर।
Postponed—मुलतवी करना।
Postscript—पश्च-लेख।
Post, permanent—स्थायी पद, स्थायी नौकरी।
Post, temporary—अस्थायी पद, अस्थायी नौकरी।
Posture—आसन, अंग-स्थिति।
Post-war—युद्धोत्तर।
Post-war planning and development—युद्धोत्तर योजना और विकास।
Potash—पोटाश।
Pouch—थैली, [illegible]।
Pound—कांजीहाउस, पशु [illegible]।
Powder—(*n.*) बुकनी, चूर्ण; (*v.*) चूर्ण करना।
Power—शक्ति, सामर्थ्य, क्षमता।
Power House Superintendent—बिजलीघर अधीक्षक।
Power of attorney—[illegible], [illegible]नामा, [illegible]।
Power of authority—[illegible]।
Power of owner—[illegible]।
Power, exercise of—अधिकार का प्रयोग।
Power to [illegible]—[illegible] अधिकार।
Power, vested—[illegible] अधिकार।
Practically—[illegible]।
Practice—[illegible], [illegible], [illegible]।

Preamble—प्रस्तावना, आमुख।
Pre-audit—पूर्व लेखा-परीक्षा।
Precaution—पूर्वोपाय।
Precede—पहिले आना या होना।
Precedence—पूर्वता, अग्रता।
Precedent—पूर्व दृष्टान्त, पूर्व निर्णय, मिसाल।
Precept—आदेश, आदेशिका, उपदेश।
Precise—परिशुद्ध।
Precision—परिशुद्धि।
Predecessor—पूर्वाधिकारी।
Predisposing—पुरः प्रवर्तक।
Pre-emption—हक शफा, पूर्वक्रय।
Preferable—अधिमान्य।
Preferably—अच्छा तो हो कि।
Preference—तरजीह, अधिमान, अभिरुचि।
Prefix—(*n.*) उपसर्ग; (*v.*) पहिले लगाना या जोड़ना।
Prejudice—पक्षपात, प्रतिकूल प्रभाव।
Preliminary—प्रारम्भिक।
Preliminary objection—प्रारंभिक आपत्ति।
Preliminary report—प्रारम्भिक रिपोर्ट।
Preliminary statement of expenses and savings—अधिक व्ययों और बचतों का प्रारंभिक विवरण-पत्र।
Premature—प्राक्पक्व।
Premature release—प्राक्पक्व रिहाई।
Premier—प्रधान मंत्री।
Premium—प्रीमियम, अधिमूल्य।
Prepare—तैयार करना, बनाना।
Preparatory to retirement—निवृत्ति-पूर्व, निवृत्ति से पहले।
Preparation of fair letters—परिष्कृत पत्रों को तैयार करना।
Preponderance—प्रबलता, प्राधान्य।
Prescribe—विहित करना, निर्धारित करना।
Prescribed—निर्धारित, विहित, नियत।
Prescribed form—नियत या विहित फारम।
Prescribed minimum expenditure—नियत न्यूनतम व्यय।
Prescribing the form—रूप का निर्धारण करते हुए।
Prescription—नुसखा, भोगाधिकार, चिरभोग।
Presentation—उपस्थापन, उपहार, प्रस्तुति।
Presentation by unauthorized person—अनधिकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुति।
Presentation of documents—लेख-पत्रों की प्रस्तुति।
Presented—प्रस्तुत।
Preservative—परिरक्षक, परिरक्षी।
Presidency town—महानगर।
Presiding—अधिष्ठाता।
Presiding officer—प्रधान अधिष्ठाता।
President—सभापति, अध्यक्ष, राष्ट्रपति।
Presumption—प्रकल्पना।
Presumptive pay—प्रकल्पित।
Pretence—बहाना।
Preventive—निरोधक, निवारक, प्रतिबंधक, रोगनिवारक।
Preventive inoculation—रोग-निवारक टीका।
Preventive measures—निवारक उपाय।
Previous—पहिला, पूर्व, पिछला।
Previous sanction—पूर्वस्वीकृति, पूर्व मंजूरी।
Prima facie—प्रथम दृष्टि में।
Primary School—प्रारम्भिक पाठशाला।
Primary unit—प्राथमिक इकाई।
Primary units of appropriation—विनियोग की प्राथमिक इकाइयाँ।
Primary units of expenditure—व्यय की प्राथमिक इकाइयाँ।
Prime-mover—मुख्य या प्रथम चालक।
Principal—(*adj.*) प्रधान, मूल; (*n.*) प्रधानाचार्य मूलधन।
Principal rafter—मुख्य धरन।
Principle—सिद्धान्त, तत्त्व, प्रमुख नियम।
Printing—मुद्रण, छपाई।
Priority—आदिता, पूर्वता, अग्रता, प्राथमिकता।
Prismatic compass—प्रिज्मी कुतुबनुमा।
Prisoner—कैदी, बन्दी, कारावंदी।
Prisoner Ledger—कारागार खातावही।
Prison offences—जेल के अपराध।
Prison van—कैदी गाड़ी।
Private—निजी, वैयक्तिक, अशासकीय।
Private candidate—प्राइवेट परीक्षार्थी।
Private person—गैरसरकारी व्यक्ति।
Privilege leave—विशेषाधिकार छुट्टी।
Privy—शौचघर।
Prize—इनाम, पारितोषिक, पुरस्कार।
Probate—इच्छा-पत्र प्रमाण।
Probation—परिवीक्षा।
Probationary period—परिवीक्षाधीन काल।
Probationer—पारीक्षणिक।
Procedure—क्रियाविधि, प्रक्रिया।
Proceedings—कार्यवाही, काररवाई।
Proceeds—आगम।
Process—प्रक्रम, प्रक्रिया, आदेशिका।
Process fees—प्रक्रिया शुल्क।
Processing—उपयोगीकरण।
Process of cleaning—सफाई की प्रक्रिया।
Process server—आदेशिका को तामील करनेवाला।
Proclamation—घोषणा, ऐलान।
Procure—वसूल करना, प्राप्त करना।
Procuress—कुटनी, दूती।
Production—उत्पादन, उत्पाद, पैदा, पैदावार।
Profession—वृत्ति, पेशा, व्यवसाय।
Professional—व्यवसायिक।
Professional College—व्यवसायिक विद्यालय।
Proficiency—प्रवीणता।
Proficient—प्रवीण।
Profit and loss account—लाभ-हानि लेखा।
Proforma—नियमानुरूप।
Proforma account—कच्चा लेखा।
Proforma defendant—प्रोफार्मा प्रतिवादी।
Proforma respondent—प्रोफार्मा प्रत्यर्थी।
Programme—कार्यक्रम।
Progress—प्रगति, उन्नति।
Progressive—प्रगतिशील, वर्धमान, क्रमिक।
Progressive decline—क्रमिक गिरावट या कमी।
Progressive Party—प्रगतिशील दल।
Progressive pay—वर्धमान वेतन।
Progress report—प्रगति रिपोर्ट।
Progress statement—प्रगति विवरण-पत्र।
Prohibited—निषिद्ध।
Prohibition—मद्यनिषेध, नशाबंदी, निषेध, प्रतिषेध।
Prohibition articles—निषिद्ध वस्तुएँ।
Project—योजना, प्रायोजना।

Projection—प्रक्षेप, प्रक्षेपण।
Prominent—प्रमुख, प्रधान।
Promissory note—रुक्का, वचन-पत्र।
Promotion—पदोन्नति, तरक्की।
Promulgation—प्रख्यापन, एलान।
Proof—प्रमाण, उपपत्ति, सिद्धि।
Propaganda—प्रचार।
Property—सम्पत्ति, जायदाद, गुण, गुण-धर्म।
Proportion—अनुपात, समानुपात।
Proportionate—आनुपातिक, समानुपाती।
Proportionate pension—आनुपातिक पेंशन।
Propose—प्रस्ताव करना, प्रज्ञप्ति करना।
Proposed estimate—प्रस्तावित तखमीना, प्रस्तावित प्राक्कलन।
Proposition statement—प्रस्ताव विवरण-पत्र।
Proprietary cultivation—स्वाम्य काश्त
Proprietor—स्वामी, स्वत्वधारी।
Proprietary right—स्वाम्याधिकार।
Propulsion charges—नोदन व्यय।
Pro-rata—यथानुपात।
Prosecuting Inspector—अभियोजन निरीक्षक।
Prosecution—अभियोजन, चालान।
Prospectus—विवरण-पत्र, विवरणिका।
Prostitution—वेश्यावृत्ति, वेश्याकर्म।
Protected monuments—अभिसंरक्षित स्मारक।
Protection—रक्षा, सुरक्षा, संरक्षण, बचाव, संरक्षण।
Protector of emigrants—उत्प्रवासी संरक्षक।
Protest of bill or note—हुंडी या रुक्का के न सकारने का विरोध-पत्र।
Provided by the rule—नियम द्वारा निर्धारित किया गया।
Provided that—शर्त यह है कि।
Province—प्रांत, प्रदेश, जनपद।
Provincial—प्रान्तीय।
Provincial Armed Constabulary—प्रान्तीय सशस्त्र रक्षिदल।
Provident fund—निर्वाहनिधि, भविष्य निधि।
Provincial Government—प्रान्तीय सरकार।
Provincial Grain Account—प्रान्तीय अन्न लेखा।

Provincialization—प्रान्तीयकरण।
Provincial return—प्रान्तीय नक्शा।
Provisional—अस्थायी, अन्तरिम।
Provisional appointment—अस्थायी नौकरी।
Provisional substantive—अस्थायी मूल।
Provision—व्यवस्था, खाद्य-सामग्री, उपबंध, शर्त।
Provision of sections—धाराओं के उपबंध।
Proviso—प्रतिबंध, उपबंध, शर्त, परन्तुक।
Proxy—प्रतिपत्र, प्रतिपत्री।
Pseudonymous communications—कृतक नाम से चिट्ठियाँ।
Public Accounts Committee—सरकारी लेखा समिति।
Public affairs—सार्वजनिक मामले।
Publication—प्रकाशन।
Public conveyance—किराये की गाड़ी, भाड़े की गाड़ी।
Public debt—राष्ट्र ऋण, राज्य ऋण।
Public Health—सार्वजनिक स्वास्थ्य।
Public Health Department—सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग।
Publicity—प्रकाशन, प्रचार, विज्ञापन।
Public interest—सार्वजनिक या लोकहित।
Public officers—सार्वजनिक अधिकारी।
Public purpose—सार्वजनिक उद्देश्य।
Public safety—जन सुरक्षा।
Public servant—लोक सेवक।
Public Service—लोक-सेवा।
Public Service Commission—लोक सेवा आयोग।
Public utility—सार्वजनिक उपयोगिता।
Public Works Department—सार्वजनिक निर्माण विभाग।
Puisne judge—अवर न्यायाधीश।
Pumping set—पंप-सामग्री।
Punching—छेद करना।
Punching and cancellation of court fee stamps—न्याय शुल्क स्टाम्प को छेदना और रद्द करना।
Punishable—दंडनीय, दण्ड योग्य।
Punishment—दंड, सजा।
Punitive clause—[illegible]
Punitive tax—[illegible]
Purchase—क्रय, खरीद।
Purchasing centre—क्रय केन्द्र।

Pure—शुद्ध, विशुद्ध।
Pursue—पीछा करना, अनुसरण करना।
Purview—सीमा, अधिकार, कानून का अंश, विस्तार।
Putrefaction—पूयन, सड़न।
Pyramid—सूच्यस्तंभ, पिरामिड।

Q

Quadrangle—चतुष्कोण।
Quadrant—पाद, चतुर्थांश।
Quadratic equation—वर्ग या द्विघात समीकरण।
Quadrennial—चतुर्वर्षीय।
Quadruplicate—चौगुना, चार प्रतियाँ।
Qualification—योग्यता, उपाधि, [illegible]।
Qualified—योग्य, योग्यता-प्राप्त।
Qualify—अर्हता प्राप्त करना, योग्य बनना, योग्यता प्राप्त करना।
Qualifying for pension—पेंशन के लिये योग्य होना।
Quantity—राशि, मात्रा, तादाद, परिमाण।
Quarantine—[illegible], निरोध, संगरोध।
Quarantine Leave—[illegible] छुट्टी।
Quarry Charts—खदान का मानचित्र।
Quarter—निवास-स्थान; चौथाई।
Quarterly—त्रैमासिक, तिमाही।
Quarterly reports—त्रैमासिक विवरण।
Quarterly statement—त्रैमासिक विवरण-पत्र।
Quash—रद्द करना।
Quasi permanent—अर्धस्थायी।
Query—प्रश्न, सवाल।
Questionnaire—प्रश्नावली।
Questionnaire for inspecting office—निरीक्षण कार्यालय के लिये प्रश्नावली।
Question of Policy—नीति का प्रश्न।
Question paper—प्रश्नपत्र।
Queue—पंक्ति, कतार।
Quinquennial—[illegible]
Quorum—[illegible]
Quotation—[illegible]

R

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Rail—रेल की पटरी।
Railing of horses—घोड़ों का कटघरा।
Railway—रेलवे, रेल।
Railway Administration—रेलवे प्रशासन।
Railway approach road—रेल तक पहुँचने की सड़क।
Railway crossing—रेल का फाटक।
Railway feeder road—रेलवे पोषक सड़क।
Railway Protection Police—रेलवे रक्षा पुलिस।
Railway receipt—बिल्टी।
Railway runner—रेल हरकारा।
Rainfall—वर्षा, वृष्टि।
Raingauge—वर्षामापी।
Raise an alarm—हल्ला मचाना।
Ramp—ढाल, ढलान।
Random—यादृच्छिक, बेतर्तीब।
Range—क्षेत्र, इलाका, प्रक्षेत्र, मंडल।
Rank—पदवी, पद, ओहदा, दर्जा, कोटि।
Rank and file—साधारण सैनिक वर्ग।
Rankers—सिपाहियों की श्रेणी।
Rate-analysis of road metal—सड़क के कंकड़ का दर-विश्लेषण।
Rate of exchange—विनिमय-दर।
Rate of pay—वेतन-दर।
Ration—रसद, राशन।
Raw—कच्चा, अनुभवरहित, अपक्व, असंस्कृत।
Raw-material—कच्चा माल, उपादान।
Re-admission—पुन:प्रवेश।
Re-affirm—पुन: पुष्ट करना, पुन: प्रतिज्ञा करना।
Realization—उगाही, प्राप्ति, वसूली।
Realization, charitable—धर्मार्थ चन्दा।
Realizing—अनुभव करते हुए, वसूल करते हुए।
Re-appropriation—पुनर्विनियोग।
Re-appropriation of funds—निधि का पुनर्विनियोग।
Rearmament—पुन: शस्त्रीकरण।
Rearrange—पुनर्विन्यास करना।
Rebate—छूट, कटौती।
Recall from leave—छुट्टी से वापस बुलाना।
Recapture—पुन: बंदी बनाना।
Recast—पुन: ढलाई करना।
Receipt—रसीद, प्राप्ति, वसूली, पावती।
Receipt book—रसीद बही।
Receipt book for fees and fines—शुल्क तथा अर्थदंड की प्राप्ति पुस्तिका।
Receipt preservation and disposal of records—अभिलेखों की प्राप्ति, परिरक्षा और निर्वर्तन।
Receiver—पानेवाला, प्राप्ता, ग्राही, प्रापक, आदायक, गृहीता।
Recent—हाल का, अभिनव।
Recent date—हाल की तारीख।
Receptacle—आशय, धानी, आधार।
Reception—स्वागत, स्वागत समारोह।
Recess—अवकाश, विश्रांति-काल।
Recess leave—विश्राम छुट्टी।
Recital—प्रस्तुति, गायन।
Recipient—पानेवाला, आदाता।
Reciprocity—पारस्परिकता, अन्योन्यता, परस्परता।
Reclamation—संशोधन, भूमि उद्धार।
Recognisable—पहचानने योग्य।
Recognise—मानना, पहिचानना, मान्यता देना या प्रदान करना।
Recognised Agent—मान्यताप्राप्त या मान्य अभिकर्ता।
Racognizance—मुचलका।
Recollect—स्मरण करना।
Recollection—स्मरण।
Racommendation—सिफारिश।
Reconcile the discrepancy—त्रुटियों को ठीक करना, असंगति समाधान करना।
Reconnection—पुनर्योजन।
Reconnaissance—वीक्षण, टोह, प्रारंभिक सर्वेक्षण।
Reconsideration—पुनर्विचार।
Raconstitution—पुनर्गठन।
Reconstruction of tube-wells—कूपों का पुनर्निर्माण।
Record—अभिलेख।
Recorded—अभिलिखित।
Record-in-charge—अभिलेखाधिकारी।
Record-keeper—अभिलेख-पाल।
Record-officer—अभिलेख अधिकारी।
Records of rights—अधिकार अभिलेख।
Record of service—सेवा-वृत्त.।
Record of the case specified below—नीचे निर्दिष्ट मुकदमे की मिसिल।
Record plans—सुरक्षित मानचित्र।
Record room—अभिलेखशाला।
Recover—वसूल करना, पुन: प्राप्त करना।
Recovery—पुन: प्राप्ति, उपलब्धि, वसूली।
Recovery List—वसूली की सूची।
Recreation—मनोरंजन।
Recreative leave—मनोरंजन की छुट्टी।
Recruit—(*n.*) रंगरूट; (*v.*) भर्ती करना।
Racruitment—भरती।
Rectangle—आयत।
Rectification of accounts—लेखा शोधन।
Rectification of error—अशुद्धि शोधन।
Rectify—सुधारना, ठीक करना, परिशोधन करना।
Rector—अधिष्ठाता।
Recuperate—पुन: बल प्राप्त करना।
Recurring—आवर्तक, आवर्ती।
Recurring grant—आवर्ती अनुदान।
Redeem—निष्क्रय करना, रुपया देकर लौटा लेना, बन्धक छुड़ाना, मोचन करना, हुंडी के बदले रुपया देना।
Redeemable—चुकाने योग्य, निष्क्रेय, मोच्य।
Redemption—मोचन, विमोचन, निष्क्रमण, छुड़ाना।
Redemption of mortgages—बन्धक मोचन, बंधक छुड़ाना।
Red ink—लाल रोशनाई।
Reduce—पदावनत करना, घटाना, कम करना।
Reduced rates—घटाया दर, कम किया हुआ भाव।
Reduction—कमी, कटौती, घटाव।
Reduction to a lower post—निम्नतर पद पर किया जाना।
Redundancy—अतिरिक्तता।
Redundant—अतिरिक्त।
Red water (Cattle Piroplasmosis)—लाल मूत्र रोग (पशुओं का)।
Re-employ—पुनर्नियुक्त करना।
Re-employment—पुनर्नियुक्ति।
Refer—हवाला देना, उल्लेख करना, निर्देश करना।
Reference—हवाला, संदर्भ, निर्देशन।
Reference clerk—हवाला लिपिक।
Reference Table—निर्देशन सारिणी।
Referential—निर्देशनीय।
Referring department—निर्देशक विभाग।
Reflection—प्रतिबिंब, परावर्तन।
Reflector—परावर्तक प्रकाशक्षेपी।
Reform—(*n.*) सुधार; (*v.*) सुधार करना।

Reformation—सुधार ।
Reformative—सुधारात्मक ।
Reformatory—सुधारालय ।
Refraction—वर्तन ।
Refresher Course—नवीकर पाठ्यक्रम ।
Refugee—शरणार्थी ।
Refund—वापसी ।
Refund of fees—फीस की वापसी ।
Refunds and renewals—रुपये की वापसी और नवीनीकरण ।
Refund voucher—रुपये के वापसी का पुर्जा ।
Refusal—अस्वीकार, अस्वीकृति ।
Refuse—अस्वीकार करना ।
Regarding—के विषय में, के बारे में ।
Region—प्रदेश, क्षेत्र, इलाका ।
Regional Accounts Officer—प्रादेशिक लेखा अधिकारी ।
Regional grain account—प्रादेशिक अन्न लेखा ।
Register—पंजी, पंजिका ।
Register, attendance—उपस्थिति पंजी ।
Register books—पंजिका पुस्तक ।
Registered—रजिस्टरी किया हुआ, पंजीकृत, पंजीबद्ध ।
Registered graduates—पंजीकृत स्नातक ।
Registered medical practitioner—पंजीकृत चिकित्सक ।
Register-keeper—पंजीपाल ।
Register of agreements—इकरारनामों की पंजी ।
Register of calamities—आपदा पंजी ।
Register of estates—रियासतों की पंजी ।
Register of groves—बागों की पंजी ।
Register of thumb impressions—अंगुष्ठ निशानों की पंजिका ।
Register of nontestamentary documents relating to immovable property—अचल संपत्ति-सम्बन्धी गैरवसीयती लेखों की पंजिका ।
Register of recording transactions relating to the deposit and withdrawal of sealed covers—मुहरबन्द लिफाफे के जमा करने और वापिस लेने की पंजी ।
Register of recording brief abstracts of powers of attorney authenticated—प्रमाणित प्रतिनिधि-पत्रों के [illegible] की पंजिका ।
Register of entering wills and authorities to adopt—इच्छा पत्रों और गोद लेने के अधिकार-पत्रों की पंजिका ।
Register of entering documents to movable property—चलसंपत्ति-सम्बन्धी लेख्यपत्रों की पंजिका ।
Registered documents—पंजीकृत लेख्यपत्र ।
Registering officer, direction of—पंजीयन अधिकारी के आदेश ।
Registering officer—पंजीयन अधिकारी ।
Register of patients—रोगी पंजिका ।
Register of correspondence—पत्र-व्यवहार पंजिका ।
Registered address—पंजीकृत पता ।
Registered letter—रजिस्ट्री चिट्ठी ।
Registrar—पंजीयक, कुलसचिव ।
Registration—पंजीयन, पंजीकरण ।
Registration Act—पंजीयन अधिनियम ।
Registration establishment—पंजीयन संस्थापना ।
Regular—नियमित, सम, स्थायी, सम्मित ।
Regular channel—नियमित मार्ग ।
Regular forecast—नियमित पूर्वानुमान ।
Regularise—नियमित करना ।
Regulated—नियमित, नियंत्रित ।
Regulation—नियमन, विनियमन, विनियम ।
Regulation of examination—परीक्षा का विनियम ।
Regulation, University—विश्वविद्यालय का विनियम ।
Regulator—नियामक, विनियामक ।
Re-imbursement—प्रतिपूर्ति, वापसी ।
Re-import—पुनः आयात ।
Reinforcement—प्रबल, प्रबलीकरण, बलवर्धन ।
Reinstatement—पुनर्स्थापन, बहाली ।
Reiterate—पुनः कहना ।
Rejected—अस्वीकृत, रद्द ।
Rejoinder—प्रत्युत्तर, जवाबी ।
Relaxation—ढील, रियायत, शिथिलन, छूट, रियायत ।
Relaxation of rule—[illegible] ।
Related—[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
Release—मोचन, [illegible], मुक्ति, छुटकारा, विमुक्ति, रिहाई, छूट; (v.) मुक्त करना, छोड़ना, निर्मुक्त करना ।
Release, duty on—निर्मुक्ति-पर [illegible] शुल्क ।
Relevant—संगत, संबद्ध ।
Relief—सहायता, राहत, [illegible] [illegible], [illegible] ।
Relief parties—सहायताकारी टोलियाँ ।
Relieving—भारग्राही, मुक्ति ।
Relieving officer—भारग्राही अधिकारी ।
Religious instruction—धार्मिक शिक्षा ।
Relinquishment of land—भूमि का अधिकार त्याग ।
Remand case—प्रतिप्रेषित विवाद ।
Remanded—प्रतिप्रेषित ।
Remark—मन्तव्य, टिप्पणी ।
Remedy—उपाय, इलाज, उपचार ।
Reminder—स्मरण-पत्र, अनुस्मारक ।
Reminder form—अनुस्मारक फार्म ।
Remission—छूट, क्षमा, माफी, परिहार ।
Remission of fine—जुर्माने की माफी ।
Remit—भेजना, परिहार करना, छूट देना ।
Remittance—प्रेषण, भेजना, भेजी गई रकम ।
Remittance transactions—प्रेषण व्यवहार ।
Remodel—नया रूप देना ।
Removal—[illegible] [illegible], [illegible], निराकरण ।
Remunerate—पारिश्रमिक या मेहनताना देना ।
Remuneration—पारिश्रमिक ।
Remuneration of [illegible] officers—[illegible] [illegible] का पारिश्रमिक ।
Rendering—[illegible] ।
Renew—[illegible] [illegible] [illegible] करना ।
Renewal—[illegible], [illegible], नवीकरण ।
Renewal [illegible] ।
Renewal [illegible] [illegible] ।
Ren[illegible] ।
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Rent assessment—लगान निर्धारण।
Rent-free quarter—वे - किराये का निवासस्थान।
Rent statement—किराये का विवरण।
Reorganisation—पुनर्गठन।
Repair—मरम्मत, सुधार।
Repatriate—देश को लौटाना, देश-प्रत्यावर्तन।
Repay—ऋण चुकाना, शोधन करना।
Repeal—(*n.*) निरसन; (*v*) निरसन करना।
Repealed—निरासित।
Repeat—दोहराना, आवृत्ति करना।
Replace—प्रतिस्थापितकरण, बदलना।
Replacement—प्रतिस्थापन, बदल, बदलाई, बदलान।
Replenished—पुनर्भरित।
Report—(*n.*) विवरण, प्रतिवेदन, रपट, सूचना, इतिवृत्त; (*v.*) सूचना देना, रपट लिखाना।
Reporter—प्रदिवेदक, संवाददाता।
Report of occurrence—घटना की सूचना।
Report of officer—अधिकारी की सूचना।
Repose, angle of—विश्राम कोण।
Represent—अभिवेदन करना, निरूपण करना, प्रतिनिधित्व करना।
Representation—प्रतिवेदन, अभिवेदन।
Representative—(*n.*) प्रतिनिधि; (*adj.*) प्रतिनिधिक।
Representative fraction—उपलक्षक भाग।
Reproduce—हूबहू लिखना, ठीक वैसा ही कहना।
Republic—गण-राज्य।
Republication—पुन: प्रकाशन।
Repugnant—प्रतीप, विरुद्ध।
Request—निवेदन, प्रार्थना।
Requiring—आदेश देते हुए, अपेक्षा करते हुए।
Requisition—माँग, अधियाचन, अधिग्रहण।
Requisitioner—अधियाचक।
Requisitioning authority—अधियाचक अधिकारी।
Requisition slip—माँग-पर्ची।
Re-registration—पुन: पजीयन।
Rescind—रद्द करना, मंसूख करना।
Rescue Home—बचाव गृह।
Rescue officer—बचावाधिकारी।
Research—गवेषणा, अनुसंधान।
Research Institute—गवेषणालय।
Research officer—अनुसंधान अधिकारी।
Reserve—आरक्षण, प्रारक्षण।
Reservation—आरक्षण, प्रारक्षण।
Reservoir—जलाशय, कुंड, हौज, जलाधार।
Re-settlement—फिर से बसाना, पुन: स्थापन।
Residence—आवास, निवास, पदावास।
Residence of students—विद्यार्थी निवास।
Resident Engineer—स्थानिक इंजिनियर या अभियन्ता।
Residential quarter—निवास-भवन।
Residue—अवशेष।
Resignation—त्यागपत्र, इस्तीफा।
Resignation from public service—लोक सेवा से त्यागपत्र देना।
Resistence—प्रतिरोध।
Resjudicata—प्राङ्न्याय।
Resolution—प्रस्ताव, संकल्प।
Resource—साधन।
Respectively—क्रमश:, क्रमानुसार।
Respondent—प्रत्यर्थी।
Responsibility—उत्तरदायित्व, दायित्व, जिम्मेदारी।
Responsible—उत्तरदायी, जिम्मेदार।
Resitution—वापसी, लौटाना, पुनरास्थापन।
Restore—फेर देना, लौटाना, पुन: स्थापन करना।
Restrain from doing—करने से रोकना।
Restraint by court—न्यायालय द्वारा निग्रह।
Restrict—सीमित करना, निर्बद्ध करना।
Restriction—प्रतिबन्ध, रोक, पाबदी, निर्बंधन।
Rest-House—डाक बँगला।
Restriction and Control—प्रतिबन्ध और नियंत्रण।
Result—फल, परिणाम।
Resume—प्रत्यादान करना, पुनर्ग्रहण करना, पुनरारंभ करना।
Resumption—पुनर्ग्रहण, प्रत्यादान, पुनरारंभ।
Retailer—फुटकर बेचनेवाला, खुदरा व्यापारी।
Retail price—फुटकर भाव।
Retainer—प्रतिधारण कर्ता।
Retard—रोकना।
Retardation—मंदन।
Retention—धारण, अवरोधन।
Retire—निवृत्त होना, सेवा निवृत्त होना।
Retired—निवृत्ति-प्राप्त।
Retirement—निवृत्ति।
Re-totalling of marks—प्राप्तांक का पुन: योग।
Retrenchment—छँटनी।
Retrograde—पश्चगामी।
Retrospective effect—पूर्व व्याप्ति।
Return—विवरणी, लेखा, वापसी, उत्तर।
Return of major and minor works—बड़े और छोटे निर्माण कार्यो की विवरणी।
Revenue—राजस्व, मालगुजारी।
Revenue account—राजस्व लेखा, आय-व्यय लेखा।
Revenue Administration—राजस्व प्रशासन।
Revenue Administration Report—राजस्व प्रशासन सूचना।
Revenue defaulter—राजस्व का बाकीदार।
Revenue free tenure—भू-राजस्व मुक्त-जोत।
Revenue jurisdiction—राजस्व अधिकार-क्षेत्र।
Revenue paying mahals—राजस्व देनेवाले महाल।
Revenue Reserve Fund—अनुरक्षण-आरक्षित निधि।
Revenue Stamp—राजस्व स्टाम्प।
Revered—सम्मानित।
Reverse—उल्टा, विपरीत, प्रतिलोम।
Reversion—प्रतिवर्तन, प्रत्यावर्तन, परावर्तन, उत्तरभोग।
Reversioner—उत्तरभोगी।
Reversioner, release by Hindu—हिन्दू उत्तर भोगी द्वारा मोचन या त्याग।
Reversion to land-lord—भू-स्वामी को प्रतिवर्तन।
Revert—प्रत्यावर्तित होना।
Revetted—जोड़ा हुआ, रिवीट किया हुआ।
Review—पुनर्विलोकन, समीक्षा।
Review application—पुनर्विलोकन प्रार्थना-पत्र।
Review of judgment—निर्णय का पुनर्विचार।

Revised—संशोधित, दोहराया, परिशोधित।
Revised estimate—संशोधित, तखमीना।
Revised figures—संशोधित आंकड़े।
Revised Manual—संशोधित पुस्तिका।
Revising boards—पुनरीक्षण परिषद्।
Revising Officer—पुनरीक्षण अधिकारी।
Revision—पुनरीक्षण, दोहराना, पुनर्विचार, परिशोधन।
Revisional Jurisdiction—पुनरीक्षण न्यायाधिकार।
Revision of pay scale—वेतन-मान का परिशोधन।
Revision of sentence sheet—दंडफलक का संशोधन।
Revival—पुनरुज्जीवन।
Revive—पुनरुज्जीवित करना।
Revoke—प्रतिसंहरण करना।
Revolver—रिवाल्वर।
Revolver holster—रिवाल्वर का खोल।
Reward—पारितोषिक, पुरस्कार।
Re-written—पुनःलिखित।
Rex—राजा या रानी।
Rib—पसली, पर्शुका।
Rib of an arch—महराब का पार्श्व।
Rifle—राइफिल।
Right—(*adj.*) ठीक, उचित, दाहिना; (*n.*) अधिकार।
Right of Preemption—पूर्व क्रयाधिकार, हक़शफा।
Right Reverend—महा आदरणीय।
Rights, instruments creating—स्वत्व पैदा करनेवाले करण पत्र।
Rinderpest—पशुप्लेग।
Ringworm—दाद, दद्रु।
Riot—दंगा, बलवा।
Riot-sufferers—दंगा-पीड़ित।
Rival tenants—प्रतिद्वन्द्वी कृषक।
Road—सड़क।
Road roller—सड़क कूटने का इंजन।
Roadway—सड़कमार्ग।
Robbery—बटमारी, लूट।
Roll—फर्द, पंजी।
Roll call—उपस्थिति।
Rolled steel—बेल्लित इस्पात।
Roman script—रोमन लिपि।
Room—कमरा, कक्ष, [illegible]।
Root—जड़, मूल।
Rotary—[illegible]।
Roster—कर्मचारियों के कार्य करने की सूची।
Roster of duties—ड्यूटी की पंजिका।
Rot—गलना, सड़ना।
Rotten—दूषित, सड़ा हुआ, गला हुआ।
Rough—कच्चा, भद्दा, रूक्ष, रुखड़, मोटा।
Roughly—मोटे तौर पर, स्थूलतः, बेढंगे तरीके से, अशिष्टता से।
Round—गोल।
Round about expression—घुमा-फिराकर कही हुई बात।
Round worms—गोलकृमि।
Route—मार्ग, पथ, रास्ता।
Routine—दिनचर्या, नेमी, नैत्यक, सामान्य।
Routine action—सामान्य कारवाई।
Routine clerk—सामान्य लिपिक।
Routine note—नेमी नोट।
Royalty—स्वामित्व, स्वत्व-शुल्क।
Rubber cap—रबर की टोपी।
Rule—(*n.*) नियम, शासन; (*v.*) शासन करना, नियमित करना।
Ruling—व्यवस्था, रेखांकन, रेखा।
Rule of proportion—समानुपात नियम।
Rule, fundamental—मौलिक नियम।
Rules of court—न्यायालय के नियम।
Rules of medical attendance on government servants—सरकारी कर्मचारियों के चिकित्सा-संबन्धी नियम।
Rule, subsidiary—सहायक नियम।
Runner—हरकारा, धावक, धावन।
Running bill—चलता बिल।
Running statement—चलता विवरण।
Rupture—फटन, विदार।
Rural—ग्राम्य, देहाती।
Rural areas—ग्रामीण क्षेत्र।
Rural development library—ग्राम विकास पुस्तकालय।
Rural library—ग्राम पुस्तकालय।
Rural outposts—ग्राम चौकियाँ।
Rust—(*n.*) जंग, मोर्चा; (*v.*) जंग या मोर्चा लगना।
Rusty—जंग लगा हुआ, मोर्चा लगा हुआ।
Rusticate—निष्कासित करना।
Rustication—निष्कासन।

S

Sack—थैली, बोरा।
Saddle—काठी, जीन।
Saddlery—जीनसाजी।
Saddlery allowance—काठी भत्ता।
Safe custody—सुरक्षित अभिरक्षा।
Safeguard—बचाव, परित्राण, सुरक्षण, रक्षोपाय।
Safety factor—सुरक्षा कारक।
Safety pin—सुरक्षा पिन।
Sag—झोल, अवलम्बन, अवनमन।
Salary—वेतन।
Sale—विक्रय, बिक्री।
Saleable forms—विक्रय योग्य प्रपत्र।
Sale, agreement for—विक्रय के लिए इकरारनामा।
Sale certificate—विक्रय प्रमाणपत्र।
Sale proposal—बिक्री का प्रस्ताव।
Saloon—आगारिका, सैलून।
Salvage—निस्तार, निस्तारण, बचाया हुआ माल।
Sample—नमूना, बानगी, प्रतिदर्श।
Sanction—मंजूरी, स्वीकृति।
Sanctioned—मंजूरी, स्वीकृत।
Sanctioned estimate—स्वीकृत तखमीना, स्वीकृत आगणन।
Sanction to estimate—तखमीने की स्वीकृति, तखमीने की मंजूरी।
Sanction to prosecute—अदालत में अभियोग चलाने की स्वीकृति।
Sanitary—सफाई-संबंधी, [illegible], स्वास्थ्यकर।
Sanitation—सफाई, [illegible], [illegible]-रक्षा।
Sash—[illegible], दुपट्टा।
Saturated aqueous solution—संतृप्त जलीय घोल।
Savings Bank—बचत बैंक।
Scaffold—मचान।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
Scale—[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Scattered thunder showers—जहाँ-तहाँ कड़क के साथ बूंदें पड़ना।
Scene of outbreak—रोग फैलने का स्थल।
Schedule—अनुसूची, तालिका, सूची, सारणी।
Scheduled—अनुसूचित।
Scholarship—छात्रवृत्ति, वजीफा।
Scholar's register—छात्र रजिस्टर।
School clerk—स्कूल क्लर्क, विद्यालय, लिपिक।
Science—विज्ञान।
Scientific Research Committee—वैज्ञानिक अनुसंधान समिति।
Scored out—काट दिया गया।
Scouring—जल वेग से मिट्टी का कटाव।
Scout—स्काउट, बालचर।
Scrap—(*v.*) छीलना, खुरचना; (*n.*) कतरन, रद्दी माल, खुरचा, रगड़।
Screen—परदा, यवनिका, आवरण, चिक।
Script—लिपि।
Scrutiny—संवीक्षा, छानवीन।
Sculpture—मूर्तिकला।
Scum—मैली, मली।
Seal—(*v.*) मुद्रा या मोहर लगाना, बंद करना; (*n.*) मुहर, मुद्रा।
Sealed samples—मुहर बंद नमूने।
Search—तलाशी, खोज।
Search and grant of copies—प्रतिलिपियों की तलाश और स्वीकृति।
Searching post—तलाशी की चौकी।
Season conditions—मौसिम की हालत या अवस्था।
Seasonal consumers—मौसमी उपभोक्ता।
Seasonal fever—फसली बुखार, ऋतु-ज्वर।
Seasonal load—मौसमी भार।
Seat of outbreak—शुरू होने का स्थान।
Secant—छेदिका।
Seclusion—एकान्त, अलहदगी, अलग किया जाना।
Second appeal—द्वितीय अपील।
Secondary education—माध्यमिक शिक्षा।
Second session—दूसरा सत्र।
Secretary Board of Revenue—माल वोर्ड के सचिव, सचिव मालवोर्ड।
Secretary of State—मंत्री।
Secretary to Government Uttar Pradesh Economics and Statistics Department — उत्तर प्रदेशीय सरकार के अर्थशास्त्र तथा सांख्यिकी विभाग के सचिव।
Secret Service Charges—गुप्त व्यय, खुफिया व्यय।
Section—धारा, अनुभाग, काट, खंड।
Section, Cross—अनुप्रस्थ काट।
Section leader—टुकड़ी नायक, सेक्शन लीडर।
Section, long—लम्वानी काट, अन्वायात काट।
Sector—क्षेत्र, क्षेत्रक, खंड।
Secular—धर्म निरपेक्ष, लौकिक, चिरन्तन।
Secular education—लौकिक शिक्षा, लोकपरक शिक्षा।
Secure—प्राप्त करना, लब्ध करना।
Security—जमानत, प्रतिभूति, प्रतिभू, सुरक्षा, ऋण-पत्र।
Security Bond—प्रतिभूति पत्र।
Sedition—राजद्रोह।
Seepage drain—प्रस्राव नाली।
Segment—खंड।
Seizure—कुड़की, कब्जा, अभिग्रहण।
Select—चुना हुआ।
Selection Committee—चुनाव समिति।
Self-defence—आत्मरक्षा।
Self-explanatory—स्वतःस्पष्ट।
Senate—सीनेट, अधिसभा।
Senior—प्रवर, बड़ा, ज्येष्ठ, वरिष्ठ।
Seniority—ज्येष्ठता, प्रवरता, वरिष्ठता।
Sentence—दंडादेश।
Sentence in lieu of fine—अर्थदंड के बदले कारावास दंड, जुर्माने के बदले में कैद की सजा।
Sentence of death—प्राणदंड आज्ञा।
Sentence of imprisonment—कारावास दंड, कद की सजा।
Sentencing authority—सजा करनेवाला अधिकारी, दंड आज्ञा देनेवाला अधिकारी।
Sentry—सन्तरी।
Separate confinement—अलग बंद करना, पृथक् बंधन।
Separate interest—पृथक् हित।
Separately assessed—अलग कर या लगान निर्धारित किया गया।
Sequence—अनुक्रम, सिलसिला, आनुपूर्व्य, कथाक्रम।
Sergeant—सारजेंट।
Serial—क्रमिक, धारावाही।
Serially—अनुक्रमशः, यथाक्रम, सिलसिलेवार।
Serialise—क्रमबद्ध करना।
Serial number—क्रमसंख्या, क्रमांक।
Serpentine—सर्पिल।
Serum—रक्तोद, लस।
Servant—नौकर, सेवक भृत्य, कर्मचारी।
Serve—तामील करना।
Service Book—सेवापुस्तिका।
Service Postage Stamp—डाक के सरकारी टिकट।
Servitude—सुविधा-भार।
Session—सत्र, अधिवेशन।
Set aside—खारिज करना, रद्द करना।
Set at liberty—मुक्त कर देना, छोड़ देना, रिहा करना।
Set off—समंजन, मुजराई।
Settlement—बन्दोबस्त, भू-व्यवस्था, निश्चय, निपटारा, समझौता।
Settling of cultivators—कृषकों को बसाना।
Severalty—पार्थक्य, पृथक्त्व।
Sewage disposal—मल-निर्यास।
Sewer—गंदी नाली, मल नाली, मल मोरी।
Sex—लिंग।
Sex-perversity—अप्राकृतिक काम वासना।
Sextan—षष्ठक।
Sexual—यौन, लैंगिक।
Shade—कांति, छाया।
Shaft—दंड, धुरा, कांड, नाल, कूपक, लाट।
Shallow—कम गहरा, उथला, छिछला, हलका, ओछा, ऊपरी।
Shank—पिंडली, दड।
Shape—आकार, आकृति, रूप।
Share warrant—शेयर वारन्ट अंशाविपत्र।
Sharp curve—कैंची मोड़।
She-buffallo—भैंस।
Sheet—चादर, फलक।
Shelf—आलमारी निधानी।
Shelter—आश्रय, शरण, रक्षक।
Shift—पारी, हटाव।
Shingle—बजरी, शैल-खंड।
Shipping orders—पोत परिवहन आदेश।

Shirt—कमीज।
Shock—झटका, सदमा, धक्का।
Shoeing—नाल लगाना।
Short-draw—थोड़ा थोड़ा निकालना।
Shorts—नेकर, घुटन्ना।
Short-term—अल्पकाल।
Shoulder-badge—स्कन्ध बिल्ला, कंधे का बिल्ला।
Shutters—झिलमिली, कपाट।
Sick attendant—रोगियों का परिचर।
Siding—पथिका।
Sieve—(n.) छलनी, चलनी; (v.) छानना, सूक्ष्म परीक्षा करना।
Sieve-test—छलनी परीक्षा।
Sign—(v.) हस्ताक्षर करना; (n.) चिन्ह, निशान।
Signature—हस्ताक्षर।
Silt—मल, खाद।
Silver chevrons—रुपहले बिल्ले।
Simple Imprisonment—साधारण कारावास, सादी कैद।
Simplification—सरल करना, सरलीकरण।
Simultaneously—एकसाथ, उसी समय, साथ-साथ, युगपत्।
Sincerely— सच्चाई या सद्भाव से।
Single lock—इकहरा ताला।
Sink—(v.) डूबना, डुबाना; (n.) अपवाहिका, हौदी, निष्कास।
Sire—प्रजनक, पूर्वज, महाराज।
Sir-holder—सीरदार।
Site—स्थल, स्थान, मौका।
Siteplan—मौके का नक्शा।
Situate—स्थित।
Six weeks prior notice—छः सप्ताह पूर्व सूचना।
Sizarship—फीसमाफी।
Skeleton—ढांचा, कंकाल।
Skid—फिसलना।
Skill—कौशल, कुशलता, निपुणता।
Skilled labour—कुशल श्रम।
Skin—खाल, त्वचा, त्वक्।
Skirting—घेरा।
Sky light—रोशनदान, झरोखा।
Slab—शिला, पट्टी, सिल्ली, पटिया।
Slate—स्लेट।
Slide—फिसलना।
Sliding scale—खिसकी क्रम।
Slight to moderate defect—थोड़ी से लेकर मध्यम कमी तक।

Slip—सरकना।
Slipper—स्लीपर।
Slipshod—लापरवाह।
Slope—ढाल, ढलान।
Sluice gates—जलद्वार।
Small Cause Court—अदालत खफीफा, लघुवाद न्यायालय।
Small millet—ज्वार बाजरा।
Small Saving Scheme—अल्प बचत योजना।
Smooth—चिकना, चिक्कण, मसृण।
Smuggling—चोरबाजारी, तस्कर व्यापार।
Snow—बरफ, हिम।
Soaring prices—ऊंचे भाव।
Social service—समाज सेवा।
Socket—कोटर, गर्त।
Soil classifier—भूमि वर्गीकारक।
Sole executor—एकमात्र निष्पादक।
Solicit—याचना करना, अभ्यर्थना करना।
Solid ठोस, घन।
Solitary cell—एकांत कोठरी।
Solitary confinement—एकांत कारावास या परिरोध।
Solution—साधन, हल, समाधान।
Sort—छांटना।
Space—जगह, अवकाश, आकाश।
Span—विस्तार, बित्ता।
Spare—फालतू, अतिरिक्त।
Sparingly—किफायत से या कम।
Spear and spearhead—बल्लम और भाला।
Special Armed Constabulary—विशेष सशस्त्र रक्षिवर्ग।
Special Audit—विशेष लेखा-परीक्षा।
Specialist—विशेषज्ञ।
Sepcial Constable—विशेष सिपाही, विशेष रक्षी।
Special Disability Leave—असमर्थता की विशेष छुट्टी।
Special messenger—विशेष दूत, विशेष संदेशवाहक।
Special reason—विशेष कारण।
Specific—विशिष्ट।
Specific area—विशिष्ट क्षेत्र।
Specification—विशिष्ट विवरण।
Specific performance—यथाविनिर्दिष्ट पालन।
Specific Relief Act—विनिर्दिष्ट अनुतोष विधान।

Specified below—नीचे दिया गया, निम्न निर्दिष्ट।
Specify—उल्लिखित करना।
Speculative reference—परिकल्पित निर्देश।
Speed—चाल, रफ्तार, गति।
Spelling—हिज्जे, वर्ण-विन्यास।
Sphere—गोला।
Spike—कांटा, कील, मेख, नोक कांटा।
Spill way—उत्प्लव मार्ग
Spiral—सर्पिल।
Spirit—सुरा।
Splash—छींटा डालना, छपाका करना।
Spleen—प्लीहा, तिल्ली।
Splenic tissue—प्लीहा तंतु।
Splinter—खपाची, किरच।
Sport—खेल, क्रीड़ा।
Spray—फुहार।
Spread—फैलना।
Spring—झरना, स्रोत, सोता।
Spring level—स्रोत स्तर।
Sprinkle—छिड़कना, छींटा देना।
Spur—एड़, ठोकर, कंट।
Squad—दस्ता, टुकड़ी।
Square root—वर्ग मूल।
Squat—पलथी मारकर बैठना, अनधिवास करना।
Squeeze—(v.) निचोड़ना; (n.) निचोड़।
Stabilization—स्थिरीकरण।
Stable—(n.) अस्तबल; (adj.) स्थायी, टिकाऊ।
Staff—कर्मचारी वर्ग, अमला।
Stage—दर्जा, अवस्था, मंच, मचान।
Staircase—जीना, सीढ़ी, सोपान।
Stallion—घोड़ा [illegible]।
Stamp defalcation—[illegible]।
Stamp duty—स्टाम्प या मुद्रांक शुल्क।
Stamped—मुहर लगा हुआ।
Stamp vendor—स्टाम्प विक्रेता।
Stand—[illegible]।
Standard design—[illegible]।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Statement of expenditure—व्यय विवरण, व्यय विवरण-पत्र ।
Statement of holdings and rentals—जोत व लगान के प्रकार का व्योरा ।
Stationed—संस्थापित ।
Stationery—लेखन-सामग्री, कागज, कलम-दावात ।
Station officer—वड़े दारोगा, वड़े थानेदार ।
Statistical table—सांख्यिकीय तालिका ।
Statistics—सांख्यिकी आँकड़े ।
Statue—प्रतिमा, मूर्ति ।
Statutory—कानूनी, वैधानिक ।
Statute—कानून, अधिनियम ।
Statutes—लेखवद्ध कानून, व्यवस्थापन ।
Statutory responsibility—कानूनी जिम्मेदारी, सांविधिक, उत्तरदायित्व ।
Stay of suit—वाद रोक ।
Steady trend—स्थिर प्रवृत्ति ।
Steam—भाप, वाष्प ।
Stem—तना, डंठल, स्तंभ ।
Steno-cum Asst. clerk—आशु-लिपिक तथा सहायक क्लर्क ।
Stenographer—लिपिक, आशु ।
Step—पद, पदक्षेप, कदम ।
Step-mother—सौतेली माँ, विमाता ।
Stereo typed—रूढ़, रूढ़िगत ।
Sterile—वाँझ, वंध्या, विसंक्रमित ।
Sterilized—विसंक्रमित ।
Stimulus—उद्दीपन, उद्दीप्ति ।
Stipend—वृत्तिका, वजीफा ।
Stipendiary—वृत्तिक, वृत्तिकाग्राही ।
Stipendiary students—वृत्तिक विद्यार्थी ।
Stirrup—रकाव, छल्ला ।
Stock—सामान, माल, छड़, स्कंध, पशु-धन, वंश ।
Stock taking—माल जाँचना, माल पड़ताल ।
Stoppage—ठहरना, विराम, रुकना ।
Stopping of increment—वेतनवृद्धि रोक देना ।
Storage—संग्रह, गोदाम, भंडार ।
Storeman—भांडारिक ।
Storm—तूफान, झंझावात ।
Straggle—भटकते फिरना ।
Straggler—भटकया,भटकते-फिरनेवाला ।
Strain—तनाव, खिचाव, अतिश्रम ।
Strap—फीता ।

Stratum—स्तर ।
Stream gauging observation—प्रवाह-मान-ईक्षण ।
Stress—प्रतिवल, वलाघात, भार ।
Stretch—फैलाव ।
String—डोरी, रस्सी, वंधक ।
Stripe—धारी ।
Strong room—सुरक्षित कमरा ।
Strut—थाम, सहारा, स्तंभ ।
Stud-bull—सरकारी साँड़ ।
Stud-ram—वीजाज ।
Study leave—अध्ययन छुट्टी ।
Style—ढंग, वनावट, रचना ।
Sub Divisional officer—हाकिम परगना, उपखंड अधिकारी ।
Sub-head—उपशीर्षक ।
Sub-Inspector—उपनिरीक्षक, थानेदार, दारोगा ।
Subject—विषय, वस्तु, प्रजा ।
Sub-maxillary—उपजंभ ।
Submerged area—जलमग्न क्षेत्र, पानी में डूबा हुआ क्षेत्र ।
Submergence—डूवना ।
Submitted—पेश या निवेदन किया गया ।
Subordinate—अधीनस्थ, अधीन, मातहत, निचला ।
Sub-paragraph—उप कंडिका ।
Sub-proprietor—उपस्वत्वधारी, उपस्वामी ।
Sub-rule—उपनियम ।
Subscription—चंदा ।
Sub-section—उपधारा, उपखंड ।
Sub-settlement—उपव्यवस्था ।
Subsidiary book—गौण पुस्तक ।
Subsidiary leave—सहायक छुट्टी ।
Subsidiary rules—अनुषंगी नियम ।
Subsidize—आर्थिक सहायता देना, उपदान देना ।
Subsidy—उपदान ।
Subsistence allowance—निर्वाह भत्ता ।
Subsistence grant—गुजारा अनुदान ।
Sub-soil—नीचे की या निचली मिट्टी ।
Substantive post—मूल या मौलिक पद ।
Substitution application—प्रतिस्थापन, प्रार्थना-पत्र ।
Substract—घटाना ।
Sub-tenant—शिकमीदार, शिकमी काश्तकार ।
Subvert—विध्वंस करना ।

Succession—अनुक्रम, उत्तराधिकारी ।
Succession Certificate—उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र ।
Suction—चसण ।
Sufficient—पर्याप्त, काफी ।
Sufficiently—पर्याप्त रूप से, काफी तौर पर ।
Suffix—प्रत्यय ।
Suit, civil—दीवानी मुकदमा ।
Sugarcane seed—गन्ने का वीज ।
Suicidal—आत्महत्यात्मक ।
Suicide—आत्महत्या, आत्मघात ।
Suit—वाद, नालिश, दावा, मुकदमा ।
Suit for guardianship—संरक्षतावाद ।
Suits Valuation Act—वाद मूल्यन विधान, नालिशों की मालियत का कानून ।
Summarily—सरसरी तौर पर ।
Summary decision—सरसरी निर्णय ।
Summary dismissal—सरसरी पदच्युति, सरसरी वरखास्तगी ।
Summary Judgement—सरसरी निर्णय ।
Summary proceedings—सरसरी कार्यवाही ।
Summary punishment—सरसरी निर्णय द्वारा दंड ।
Summer vacation—ग्रीष्मावकाश ।
Summons—सम्मन, आह्वान-पत्र ।
Sun-stroke—लू, लू लगना ।
Superannuation—अधिवर्षता, पचपन-साला, वृद्धावस्था ।
Superannuation, date of—पचपन साले की तारीख ।
Superfluous—अतिरिक्त, फालतू ।
Superintendence—अधीक्षण ।
Superintendence of ferries—घाटों की देखभाल, घाटों का अधीक्षण ।
Superintendent of Stamps—स्टाम्प अधीक्षक ।
Superintendent Printing and Stationery—मुद्रण तथा लेखन-सामग्री अधीक्षक ।
Superintending—अधीक्षक,अधीक्षण ।
Superior class convict—उच्च श्रेणी का कदी ।
Superior classification—उच्च वर्गीकरण ।
Superior proprietor—मालिक आला, वड़ा मालिक ।

Supplementary—अनुपूरक, पूरक, संपूरक ।
Supplementary estimate—अनुपूरक तखमीना, अनुपूरक प्राक्कलन ।
Supply—(*n.*) रसद, संभरण, प्रदाय; (*v.*) रसद देना, संभरण करना ।
Suppress—दबाना, दमन करना ।
Suppression—दमन, दबाया जाना ।
Suppurating lesions—मवाद पड़ा हुआ घाव ।
Suppurative lungs—पूयित फेफड़े, पूयित फुफ्फुस ।
Surcharge—अधिभार, अधिप्रभार ।
Surety—जामिन, प्रतिभू ।
Surface—सतह, स्तर, पृष्ठ ।
Surgeon—शल्य-चिकित्सक ।
Surgical—शल्य-क्रिया विषयक, शल्य शास्त्र-संबंधी ।
Surname—कुल नाम, अल्ल ।
Surprise—अचम्भा, आश्चर्य ।
Surprise visit—आकस्मिक निरीक्षण ।
Surrender of lease—पट्टे का इस्तीफा, पट्टे का समर्पण ।
Surveillance—निगरानी ।
Survey-instruments—पैमाइश के औजार, भूमाप यंत्र ।
Survey of India—भारतीय भूमाप ।
Survey and Settlement—पैमाइश और बन्दोबस्त, भूमाप और भू-व्यवस्था ।
Surviving—उत्तरजीवी ।
Suspect—संदेह करना ।
Suspected—संदिग्ध ।
Suspense account—उचन्त खाता ।
Suspend—मुअत्तल करना, निलंबित करना ।
Suspension—मुअत्तली, निलंबन ।
Suspension of licences—लाइसेन्स की मुअत्तली या निलंबन ।
Swab—रुई का फोहा, फुरेरी ।
Swamp—दलदल ।
Sway—प्रभुत्व, झुकाव ।
Sweeper—मेहतर, भंगी, संमार्जक ।
Sweepings—कूड़ा-करकट ।
Swing—झूला ।
Switch—बिजली का बटन ।
Symptom—लक्षण ।
Syphon—निनाल, साइफन ।
Syringe—पिचकारी ।
System—पद्धति, प्रणाली, तंत्र, ढंग ।
Systematic—[illegible] ।

T

T. A. Bill—यात्रिक भत्ते का बिल ।
Table—टेबुल, मेज, नकशा, सारणी ।
Table of rates of advalorem fees on institution of suits—वादस्थापन पर मूल्यानुसार शुल्क के दरों की सारणी ।
Tablet—तख्ती, पत्थर, नामपट्टी, टिकिया ।
Tabulate—सारणी बद्ध करना, सारणीकरण ।
Tack—बाँधना, जोड़ना, गांठना ।
Tact and ability—युक्ति और योग्यता ।
Tag—नत्थी करने का फीता ।
Tail of canal—नहर का अन्तिम भाग ।
Taking execution proceedings—जरा की कारखाई करना ।
Tallow—(*n.*) चरबी, पशुवसा; (*v.*) चरबी लगाना, चिकना करना ।
Tenement—घर, मकान का हिस्सा, भवनभाग ।
Tangent—स्पर्शी, स्पर्शरेखा ।
Tap—टोंटी, पेचतराश, तूंटी ।
Tape worms—फीता, कृमि ।
Tar—अलकतरा, तारकोल ।
Target—लक्ष्य, निशाना, चाँद ।
Tariff—शुल्कदर ।
Tarpaulin—तिरपाल ।
Task—काम, कार्य ।
Tax—कर, टैक्स ।
Taxing Judge—करनिर्धारक जज ।
Teacher—अध्यापक ।
Teaching staff—अध्यापक वर्ग ।
Tearsmoke squad—अश्रुधूम टुकड़ी ।
Technical—प्राविधिक, (as technical) औद्योगिक, शिल्पी, शिल्पीय, तकनीकी, पारिभाषिक ।
Technical assistant—तकनीकी सहायक ।
Technical branch—तकनीकी शाखा ।
Technical duties—तकनीकी कर्तव्य ।
Technical Inspector—टैक्निकल इंस्पैक्टर, तकनीकी निरीक्षक ।
Technical reason—प्राविधिक कारण ।
Technical sanction—प्राविधिक स्वीकृति, बाजाब्ता मंजूरी ।
Technique—प्रविधि, तकनीक ।
Telegram—तार ।
Telegraph office—तारघर ।
Telephone—टेलीफोन ।
Telescope—दूरबीन, दूरदर्शक यंत्र ।

Temper—पानी चढ़ाना ।
Temperature—तापमान, ताप ।
Tempered—[illegible] ।
Temporarily—अस्थायी रूप से ।
Temporary—अस्थायी ।
Temporary acquisition of land—भूमि की अस्थायी प्राप्ति ।
Temporary appointment—अस्थायी नियुक्ति ।
Temporary candidate—अस्थायी उम्मीदवार ।
Temporary esablishment—अस्थायी संस्थापना ।
Temporary outlet—अस्थायी निर्गम, अस्थायी नाली ।
Tenancy—[illegible] काश्तकारी, भूमिधारण, काश्तकारी, किरायेदारी ।
Tenant—असामी, किरायेदार, काश्तकार ।
Tenant-at-will—कच्चा काश्तकार, कच्चा असामी ।
Tenant-in-chief—असली काश्तकार ।
Tender—टेण्डर, निविदा ।
Tender form rates—निविदा फार्मदर ।
Tensile—तन्य ।
Tension—तनाव, तनन, प्रतान ।
Tent—तम्बू ।
Tenure in perpetuity—पट्टा इस्तमरारी ।
Tenure in reversality—[illegible] ।
Tenure of post—पद की अवधि ।
Tenure post—आवधिक पद ।
Term—कार्यकाल, अवधि, मियाद, शर्त ।
Terminal—अंत का, अंतिम, [illegible], आवधिक ।
Terminal charges—[illegible] ।
Terminal Examination—[illegible] परीक्षा ।
Terminal Register—[illegible] ।
Term in [illegible] ।
Terminus—[illegible] ।
Term of [illegible] ।
Term [illegible] ।
Term [illegible] ।
Terrace—[illegible] ।
Terr[illegible] ।
Terr[illegible] ।

Testamentary—इच्छापत्र-सम्बन्धी, वसीयती।
Testator—इच्छापत्रकर्त्ता।
Tested entries—जाँचे हुए इन्दराज।
Tetanus—धनुर्वात, धनुस्तंभ।
Text book—पाठ्यपुस्तक।
Thatch—(*n.*) छप्पर; (*v.*) छप्पर छाना।
Theatre—रंगशाला।
Theft—चोरी, चौर्य।
Theodolite—थियोडोलाइट, पैमाइश में प्रयुक्त दूरबीन विशेष।
Theodolite Survey—थियोडोलाइट सर्वेक्षण।
Theorem—प्रमेय।
Theoretically—सिद्धांततः, सैद्धांतिक रूप से।
Theory—सिद्धांत, उपपत्ति, वाद, मत।
Thermometer—थर्मामीटर, तापमापी।
Thorax—वक्ष।
Through proper channel—उचित माध्यम से।
Through traffic—सीधा परियात।
Thumb-impression—अँगूठा निशान, अंगुष्ठ चिह्न।
Ticket—टिकट।
Tick—किलनी।
Tile—खपरैल।
Timber—इमारती लकड़ी।
Time barred—कालबाधित।
Time-keeper—समयपाल।
Time scale—समय-मान।
Time-scale of pay—वेतन का समय-मान।
Time-table—समय-सारणी।
Tissue—ऊतक, जालीदार कपड़ा।
Title—उपाधि, खिताब, नाम, शीर्षक।
Title deeds—आगम-पत्र।
Title holder—उपाधिधान, उपाधिधारी।
Title to leave—छुट्टी का अधिकार।
To—को, सेवा में।
Today—आज।
Toe wall—रोक दीवार।
Ton—टन।
Tonnage—टन भार, टन मान।
Tools and plants—उपकरण और स्थिर-यंत्र।
Top—चोटी, शिखर, ऊपर का सिरा।
Topic—प्रकरण।
Topographical map—स्थलरूपरेखीय मानचित्र।
Topography—स्थलाकृति विज्ञान।
Torch—टार्च, चोरबत्ती।
Torrent—तीव्र धारा, तेज धारा।
Torsion—मरोड़, ऐंठन।
Total—(*n.*) जोड़, योग, कुल जोड़; (*adj.*) कुल, संपूर्ण।
Total emolument—संपूर्ण परिलाभ।
Totalling Register—योगपंजी।
Tour—दौरा।
Tour allowance—दौरे का भत्ता।
Tour Contingent Bill—दौरा प्रासंगिक बिल।
Tour Programme—दौरे का कार्यक्रम।
Town Improvement Trust—नगर विकास प्रन्यास।
Tracer—अनुरेखक।
Tracing—अनुरेखण।
Tract—क्षेत्र, प्रदेश, भू-भाग।
Traction—खींचना, कर्षण।
Trade Mark—व्यापार, चिन्ह, मार्का।
Tradition—परम्परा।
Traditional—पारम्परीण।
Traffic—पणन, व्यापार, यातायात।
Traffic census—यातायात संबंधी गणना।
Traffic Inspector—यातायात निरीक्षक।
Traffic in women and children—औरतों और बच्चों को बेचने का अपराध।
Traffic Police—ट्राफिक पुलिस, चौराहा पुलिस।
Trailor—ट्रेलर, अनुयान।
Train—ट्रेन, रेलगाड़ी।
Trained—प्रशिक्षित।
Training—प्रशिक्षण।
Training College—प्रशिक्षण विद्यालय।
Training institution—प्रशिक्षण संस्था।
Transaction—व्यवहार, लेना-देना, लेन-देन, सौदा।
Transcription—प्रतिलेखन, लिप्यंतर।
Transfer—बदली, स्थानांतरण, संक्रामण, अंतरण।
Transfer charges—हस्तांतरण व्यय।
Transfer debit (or credit)—नाम या जमा में अंतरण।
Transfer, duty of—हस्तांतरण शुल्क।
Transferee—संक्राती, हस्तांतरी।
Transfer of charge—कार्यभार हस्तांतरण।
Transfer of control—नियंत्रण हस्तांतरण।
Transfer of lease—पट्टे का हस्तांतरण।
Transfer of Property Act, 1882—सम्पत्ति हस्तांतरण ऐक्ट १८८२।
Transfer of rights—स्वत्वों का हस्तांतरण।
Transferor—हस्तांतरक, हस्तांतरणकारी।
Transfer of shares—शेयर का हस्तांतरण, अंश हस्तांतरण।
Transfer of site—आस्थान परिवर्तन, मौका बदलना।
Transfer statement—नकशा इंतकाल, स्थानांतरण विवरण।
Transformation—रूपांतर, रूपांतरण।
Transformer—परिवर्तक।
Transhipment—नौकांतरण।
Transit charge—परिवहन प्रभार।
Transition curve—संक्रामी वक्र।
Transit loss—परिवहन हानि।
Transitory—क्षणिक, अस्थायी।
Translation—अनुवाद, भाषांतर।
Transmission—पारेषण, पारगमन, संचरण, संचारण।
Transmit—भजना, पारेषण करना।
Transmitted—पारेषित, संचारित।
Transpire—घटित होना।
Transplantation—रोपाई करना, आरोपण, प्रतिरोपण।
Transplanted rice—रोपा हुआ धान।
Transport—वहन, परिवहन।
Transverse—अनुप्रस्थ, आड़ा।
Trapezium—समलम्ब, चतुर्भुज।
Trapezoid—समलंबाभ चतुर्भुज।
Travel Agent—यात्रा एजेंट या अभिकर्ता।
Travelling allowance rules—यात्रिक भत्ते के नियम।
Treasurer—कोषाध्यक्ष।
Treasure vault—खजाने का तहखाना।
Treasury—खजाना, कोषागार।
Treasury Bills—राजकोष पत्र।
Treasury officer—हाकिम खजाना, कोषागार अधिकारी।
Treatment—व्यवहार, बरताव, इलाज, उपचार, प्रतिपादन।
Tremor—कंप, प्रकंप।
Trench—खाई।
Trespasser—अतिचारी।
Trial—विचार, विचारण, परीक्षण।
Triangular—त्रिकोणी, त्रिभुजाकार।

Tribunal—न्यायाधिकरण, अधिकरण।
Triplicate—तिहरा, तृतीयक, तीन प्रतियाँ करना।
Tripod—त्रिपाद, तिपाई।
Trolley—ट्राली, ठेला।
Trousers—पतलून।
True copy—सही प्रतिलिपि, पक्की नकल।
Trumpeter—तुरमची।
Trust—न्यास, ट्रस्ट।
Trust, declaration of—न्यास-घोषणा।
Trustee—न्यासी, न्यासधारी, ट्रस्टी।
Turst endowment—न्यास धर्मादा।
Trust property—न्यास सम्पत्ति।
Tube—नली, नल।
Tuberculin Test—यक्ष्मा परीक्षा।
Tuberculosis—क्षयरोग, तपेदिक।
Tube well operators—नलकूप चालक।
Tube wells—नलकूप।
Tumour—अर्बुद, इल्ला।
Tunic—कुरती, कंचुक।
Tunnel—सुरंग।
Turner—टर्नर, खरादी।
Turner-welder—खरादी झलाईगर।
Turnover—कुल विक्री।
Tution fee—पढ़ाई की फीस।
Tutorial—शिक्षा संबंधी।
Type writers—टाइपराइटर, टंकण यंत्र।
Typist—टाइपिस्ट, टंकक।

U

Ugly—अशोभनीय, भद्दा।
Ultra vires—अधिकार के बाहर, शक्ति बाह्य।
Unauthorized—अनधिकृत।
Unavoidable circumstances—अपरिहार्य स्थिति।
Uncertified film—अप्रमाणित फिल्म।
Unlcaimed—अस्वामिक, अदावी।
Unclaimed articles—अदावी वस्तुएँ। लावारसी सामान।
Unclaimed documents—बेदावा या अदावी दस्तावेज, अस्वामिक लेख्यपत्र।
Unclassified—अवर्गीकृत, अवर्गित।
Unclassified item—अवर्गीकृत मद।
Uncultivated land—अकृष्ट भूमि।
Uncurrent coin—अप्रचलित मुद्रा, अप्रचलित सिक्का।
Under—के अधीन, के अनुसार।
Under cover of—की ओट में, के आड़ में।
Undergo—सहना, भुगतना।
Under proprietor—उपस्वामी, उपस्वत्वधारी।
Under Secretary—अवरसचिव।
Under Section—धारा के अधीन।
Undersigned—अधोहस्ताक्षरक।
Undertaking—उपक्रम, वचन, प्रतिश्रुति, वचनबद्ध होना।
Under the auspices of—के तत्वावधान में।
Under the guardianship of—की संरक्षता में।
Under trial—विचाराधीन।
Under-trial prisoner—विचाराधीन बन्दी।
Undue—अनुचित।
Unequivocal—स्पष्ट, संदेहरहित।
Unexpired—असमाप्त।
Unfunded debt—अनिधिक ऋण।
Unhealthiness—अस्वास्थ्य।
Unification—एकीकरण।
Uniform—(*n.*) वर्दी; (*adj.*) एकसम, समरूप, समांग, समान।
Uniform allowance—वर्दी भत्ता।
Uniformity—एकरूपता, समरूपता।
Uniform Procedure—समान कार्यविधि, एकसार विधि।
Unimportant—महत्वहीन।
Union—संघ।
Union fee—संघ शुल्क या चंदा।
Unirrigated—न सींचा गया, बारानी, खाकी।
Unit—एकक, इकाई, मात्रक, दल, एकांश।
Univer al—सार्विक, सार्वत्रिक।
University—विश्वविद्यालय।
University Grants Committee—विश्वविद्यालय अनुदान समिति।
Unlawful Assembly—अवैध या विधिविरुद्ध समुदाय, गर कानूनी जमाअत।
Unlocking—ताला खोलना।
Unmetalled Road—कच्ची सड़क।
Unnatural—अस्वाभाविक, अप्राकृतिक।
Unnatural offence—अप्राकृतिक अपराध।
Un-official—अनधिकारिक, गैरसरकारी।
Un-official body—अनधिकारिक संस्था।
Un-official Register—अनधिकारिक पंजी।
Unpaid apprentices—अवैतनिक प्रशिक्षु।
Unpalatable—अस्वादिष्ट।
Unproductive works—अनुत्पादक निर्माणकार्य।
Unrecorded cases—अलिखित या अलेखबद्ध मामले।
Unregistered—बे-रजिस्टरी।
Unregistered memo—अपंजीकृत स्मृति पत्र।
Unrestricted power—बेरोक अधिकार।
Unserviceable—निकम्मा, बेकाम, नाकारा।
Unskilled—अकुशल।
Unsound—अस्वस्थ्य, रोगी, विकृतचित्त।
Unsurveyed areas—अमापित क्षेत्र, गैर-पैमायशी क्षेत्र।
Untested candidate—असूचीगत उम्मीदवार।
Unused loose revenue stamps—अप्रयुक्त अबद्ध माल के टिकट।
Unusual occurrence—असाधारण घटना।
Unwholesome—अस्वास्थ्यकर।
Upper Grade Clerk—उच्च श्रेणी लिपिक।
Upper Subordinate Service (Supervisor)—उच्च अधीनस्थ सेवा (पर्यवेक्षक)।
Upstream—बहाव के ऊपर।
Up-to-date—आज तक का, अद्यतन।
Urban—शहरी, नागरिक, नागर।
Urban outpost—नगर चौकी।
Urgency—अविलंबिता।
Urgent—तुरंत, शीघ्र।
Urgent copy—जरूरी प्रतिलिपि।
Urgent slip—अत्यावश्यक पर्ची।
Urinal—पेशाबघर, मूत्रकुंड, मूत्रालय।
Urine—मूत्र, पेशाब।
Use—प्रयोग।
Usual—साधारण, सामान्य।
Usufructuary Mortgagee—भोग बंधक
Utilization—उपयोग।
Utilize—काम में लाना।

V

Vacancy—रिक्तस्थान, रिक्तता, रिक्ति, खाली जगह।
Vacation—दीर्घविकाश।
Vacation Department—अवकाश विभाग।
Vaccine—टीका, टीके की दवा।
Vaccinal lymph—वैक्सीन लसीका।
Vaccination—टीका।
Vacuum—रिक्तक, शून्यक, निर्वात।

Vagrancy—आवारागर्दी।
Vagrant—आवारा।
Vague—अस्पष्ट, अनिश्चित।
Vagueness—अस्पष्टता, अनिश्चितता।
Valid—वैध, मान्य।
Validate—वैध या कानूनी बनाना।
Validity—वैधता, मान्यता।
Validity of certificate or endorsement—प्रमाणपत्र या पृष्ठलेख की वधता या मान्यता।
Valley rafter—घाटी कड़ी।
Valuable—मूल्यवान।
Valuation—मूल्यन, मूल्यांकन।
Valuation Act—मूल्यन विधान।
Valuation for duty—चुंगी या शुल्क के लिये मूल्यन।
Value—मूल्य, मान, मूल्यन।
Valve—कपाट, पुट।
Van—यान।
Vapour—भाप, वाष्प।
Variation—परिवर्तन, घट-बढ़, उतार-चढ़ाव, विभिन्नता, विविधता।
Various—विविध, विभिन्न।
Varnish—चमकदार रोगन, वार्निश।
Vault—तहखाना।
Vehicle—गाड़ी, सवारी, यान, वाहक।
Velocity—वेग, गति।
Venetian blind—झिलमिली।
Ventilate—संवातित करना।
Ventilation—संवातन।
Ventricle—निलय।
Verandah—बरामदा, दालान।
Verbal—मौखिक, शाब्दिक।
Verbally—जबानी, मौखिक रूप से।
Verification—सत्यापन जाँच।
Verification of account—लेखा जाँच।
Verification of stock—संचय की जाँच।
Verified—जाँचा हुआ, सत्यापित।
Versus—बनाम, विरुद्ध।
Vertex—शीर्ष, मूर्धा।
Vertical—उदग्र, खड़ा, ऊर्ध्वाधर।
Vest—निहित होना।
Vested—निहित।
Vestibule—ड्योढ़ी, द्वार-प्रकोष्ठ, अंतराल।
Veteran—अखाड़िया, ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध, पक्का अनुभवी।
Veterinary—पशु-चिकित्सा।
Veterinary Surgeon—पशु चिकित्सा सर्जन।
Veterinary Service—पशु-चिकित्सा सेवा।
Veto—रोधाधिकार, निषेधाधिकार।
Vexation—उत्पीड़न, संतापन।
Via—से होकर, बराह।
Viaduct—पुल।
Vibration—कम्पन।
Vice—उप।
Vice-chancellor—उप कुलपति।
Viceroy—वाइसराय, बड़े लाट।
Vice versa—विलोमतः।
Vicinity—सामीप्य।
Vide—देखिये।
Vigil—जागरण, रतजगा, सतर्कता।
Vigilance—चौकसी, सतर्कता, जागरण।
Village—ग्राम।
Village Chaukidar—ग्राम का चौकीदार।
Village Defence Societies—ग्राम रक्षा समितियाँ।
Village headman—मुखिया।
Violate—अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना।
Violation of duties—कर्त्तव्य का उल्लंघन।
Violation of rules—नियमों का उल्लंघन।
Violence—हिंसा।
Violent—हिंसात्मक, हिंस्र, प्रचंड।
Virulent—अति उग्र, प्रचंड, विषैला।
Virus—विषाणु।
Visa—प्रवेशपत्र।
Viscera—अभ्यंतरांग, अँतड़ियाँ।
Viscosity—श्यानता।
Vision—दृष्टि, निगाह।
Visit—निरीक्षण, मुलाकात, भेंट।
Visitation—भेंट, निरीक्षण।
Visitor—मुलाकाती, दर्शक।
Visitors book—निरीक्षण पुस्तक।
Visual Signalling Section—दृष्टिक संकेत उपविभाग।
Vitiate—विदूषित या निष्फल करना।
Viva voce—मौखिक परीक्षा।
Vocation—व्यवसाय, वृत्ति, काम-धंधा।
Vocational—व्यावसायिक, काम-धंधा सम्बन्धी।
Vocational staff—व्यावसायिक कर्मचारीवर्ग।
Void—शून्य, हीन, प्रभावहीन।
Voidable—शून्यकरणीय, हीनकरणीय।
Volatile—वाष्पशील।
Volley—बौछार।
Voltage—वोल्टता, विद्युत दाब।
Volume—परिमाण, आयतन।
Volume of water—पानी का परिमाण।
Voluntary contribution—ऐच्छिक या स्वैच्छिक चंदा।
Voter—मतदाता।
Vouch—दायी होना, साक्ष्य देना।
Voyage—जलयात्रा, समुद्र-यात्रा।
Vulgur fraction—साधारण भिन्न।
Vulnerable—भेद्य।

W

Wage—मजदूरी, मजूरी।
Wage earner—श्रमजीवी, मजदूर।
Wage-earning Scheme—मजूरी अर्जन योजना।
Wagon—डिब्बा, मालडिब्बा।
Waist—कमर, कटि।
Waistcoat—बंडी, वासकट।
Waiving of recovery—वसूली छोड़ देना।
Walking stick gun—बन्दूकदार छड़ी।
War concession leave—युद्ध अनुग्रह छुट्टी।
War-costs Surcharge—युद्धकालीन अधिभार।
Ward—कक्ष, रोगीकक्ष।
Wardrobe—तोशाखाना, वस्त्रागार, कपड़ों की आलमारी।
Warehouse—गोदाम, मालगोदाम।
Warehousing of arms—हथियारों को मालघर में रखना।
Warn—चेतावनी देना।
Warning—चेतावनी।
Warning, formal—बाजाब्ता चेतावनी, औपचारिक चेतावनी।
Warp—ताना, तानी, लकडी का मुड़ना।
Warrant for goods—माल अधिपत्र।
Warrant of arrest—आसेध अधिपत्र, गिरफ्तारी का वारंट।
Warrant of commitment—सुपुर्दगी का अधिपत्र।
Warrant officer—वारंट अधिकारी, अधिपत्र अधिकारी।
Warrant of precedence—पूर्वता अधिपत्र।
Wastage—अतिक्षय, बरबादी, छीजन।
Wastage of water—पानी की बरबादी।
Waste—(*v.*) बरबाद करना, अपव्यय,

उच्छिष्ट, क्षय, नाश ।
Wasteland—बंजर ।
Watch—निगाह रखना, पहरा देना ।
Watch and ward (Police)—पहरा और निगरानी पुलिस ।
Watchman—पहरेदार, प्रहरी ।
Water bottle—पानी की बोतल ।
Water carrier—भिश्ती, पानी ढोने वाला ।
Water closet—शौचघर ।
Water course—नाला, जलमार्ग ।
Water logged area—जल-लग्न क्षेत्र ।
Water-logged land—जल-लग्न भूमि ।
Water-marked paper—जल चिन्ह कागज ।
Water power—जलशक्ति ।
Waterproof—बरसाती, जलाभेद्य ।
Water raising—पानी उठाना ।
Water rate—जल-शुल्क ।
Water Regulation Establishment—जलव्यवस्था संस्थापना ।
Waterways—जलमार्ग, प्रवाह, नहर ।
Wavy—लहरदार, तरंगित ।
Wax—मोम ।
Ways and means estimate—उपाय और साधन-सम्बन्धी तखमीना ।
Weapon—आयुध, शस्त्र, हथियार ।
Wear & tear—टूट-फूट ।
Weather Report—मौसम का हाल ।
Wedge—फन्नी, पच्चड़ ।
Weeding—निराई, निराना ।
Weeding of Records—कागजात की छँटनी ।
Weeding lable—निराई चिप्पी ।
Weeding list—निराई सूची ।
Weeding slip—छँटाई पर्ची, निराई पर्ची
Weed out—(v.) निकालना, खारिज करना, दूर करना ।
Weekly list—साप्ताहिक सूची ।
Weeviling—घुन लगना ।
Weigh—तौलना ।
Weighment—तौला ।
Weir—बाँध, बन्ध, उद्रोध ।
Weld—झलाई करना, झालना ।
Welder—झलाईगर, संधाता ।
Welding—झलाई ।
Welfare centre—कल्याण केन्द्र ।
Well-boring—कूप-वेधन, कुएँ की बोरिंग ।
Well in time—काफी पहले ।
Wharf—पक्का घाट ।
Whereas—चूंकि, जबकि ।
Whipping—कोड़े मारना, कोड़े लगाना ।
Whistle—सीटी ।
White chevron—सफेद बिल्ला ।
White vest—सफेद वासकट ।
Whole—सब, पूर्ण, सम्पूर्ण, सारा ।
Whole period—सम्पूर्ण अवधि ।
Wholesale price—थोक भाव ।
Wholesome—स्वास्थ्यकर ।
Wholly—पूर्णतया, पूर्णतः, पूरे तौर से ।
Wilful absence from duty—जानबूझकर काम से गैरहाजिर या अनुपस्थित होना ।
Will—वसीयत, इच्छा-पत्र ।
Wind—हवा, पवन, वायु ।
Winder—घुमावदार पैड़ी ।
Winding up—समेटना, समापन ।
Wing—पक्ष, पाख, बाजू, पंख, पर ।
Wireless operator—वायरलेस आपरेटर, बेतार प्रचालक ।
Wireless Telegraphy Section—बेतार प्रेषण उपविभाग ।
Wireman—तार मिस्त्री ।
Withdrawal—परावर्तन, रुपया निकालना ।
Withdrawal and repayment—रुपये निकालना और भुगतान ।
Withhold—रोक रखना ।
Withholding on efficiency bar—दक्षता अर्गल पर रोक लगाना ।
Without fail—निश्चित रूप से ।
Without prejudice—बिना प्रतिकूल प्रभाव डाले ।
With reference to—के संबंध या प्रसंग में ।
With retrospective effect—पूर्व व्याप्ति सहित ।
Witness—साक्षी, गवाही ।
Women Police—महिला पुलिस ।
Wordy—शब्दाडम्बरमय ।
Work Accounts—निर्माण-कार्य लेखा ।
Work-charged—निर्माण-प्रभारित ।
Working agreement—काम करने का इकरारनामा ।
Working Committee—कार्यकारिणी-समिति ।
Working dress—दफ्तरी पोशाक, कार्यालय वेश ।
Working day—काम के दिन, कार्य-दिवस ।
Working plan—कार्य-आयोजना ।
Workman—कामगर, कारीगर, मजदूर ।
Work memo—निर्माण-कार्य स्मृति पत्र ।
Work-orders—निर्माण कार्यादेश ।
Works—निर्माण, निर्माण शाला ।
Works abstract—निर्माण कार्यों का गोशवारा, निर्माणसार ।
Works accounts—निर्माण लेखा ।
Works expenditure—निर्माण कार्यों पर व्यय, निर्माण व्यय ।
Works outlay—निर्माण कार्य पर लागत ।
Workshop—कारखाना, कर्मशाला ।
Wrench—रिंच, मरोड़ ।
Writ—आदेश, लेख ।
Write off—बट्टेखाते लिखना ।
Write off losses—हानि की रकमों को बट्टेखाते डालना ।
Writing—लेखन, लेख, लिखावट ।
Written authority—लिखित प्राधिकार ।
Written examination of complaints—शिकायतों की लिखित जाँच ।
Written instrument—लिखित दस्तावेज, करण-पत्र ।
Written Statement—तहरीरी बयान, प्रतिवाद-पत्र, लिखित बयान ।

Y

Yield—(v.) झुकना, हार मानना; (n.) उपज, उत्पाद, पैदावार ।
Youngmen's Christian Association—नवयुवक ईसाई संघ ।
Yours faithfully—भवनिष्ठ ।

Z

Zenith—खमध्य, खस्वस्तिक, शिरोबिंदु ।
Zero—शून्य ।
Zero hour—अभियान-वेला ।
Zig-zag—टेढ़ा-मेढ़ा ।
Zinc—जस्ता ।
Zodiac—राशिचक्र ।
Zodiac, sign of—राशि ।
Zonal—कटिबंधीय, क्षेत्रीय, प्रादेशिक, मंडलीय ।
Zone—कटिबंध, क्षेत्र, खंड, प्रदेश ।
Zone, arctic—उत्तर-ध्रुवीय कटिबंध ।
Zone, antarctic—दक्षिण-ध्रुवीय कटिबंध ।
Zoogeography—प्राणि भूगोल ।
Zoologist—प्राणि वैज्ञानिक ।
Zoology—प्राणि-विज्ञान ।

Technical and Scientific Glossary

प्राविधिक तथा वैज्ञानिक शब्दावली

A

Abacus—गिनतारा
Abandonment—परित्याग
Abate—कमी करना, न्यून करना, हटाना, शांत करना
Abatement—घटाव, न्यूनीकरण, शमन, निराकरण
Abaxial—अपाक्ष
Abbreviation—संक्षेप
Abdomen—उदर
Abdominal—उदरीय, उदरी
Abdominal air-sack—उदरीय वायु-कोश
Abduction—अपवर्तन, अपहरण
Abductor—अपवर्तनी
Aberrant—विपथी
Aberration—विपथन
Abet—दुरुत्साहित करना
Abetment—दुरुत्साहन
Abinition—आदितः, आरम्भतः
Abiogenesis—अजीवात् जीवोत्पत्ति, अजीव-प्रजनन
Abiogeny—अजीवात् जीवोत्पत्ति, अजीव-प्रजनन
Abjection—अपक्षेप
Ablation—अपक्षरण
Abnormal—अपसामान्य
Abnormality—अपसामान्यता
Abolition—समाप्ति, उन्मूलन
Aboral—अपमुख
Aboriginal—आदिवासी
Abortion—वृद्धिरोध, गर्भपात
Abortive—रुद्धवृद्धि, गर्भपातिक
Abrasion—अपघर्षण
Abrasive—अपघर्षी
Abridged—संक्षिप्त
Abscised—विलगित
Abscissa—भुज
Abscission—विलगन
Absciss—विलग
Abscond—भाग जाना, फरार होना
Absolule—निरपेक्ष, परम, पूर्ण, अबाधित
Absolule error—निरपेक्ष त्रुटि
Absolute motion—निरपेक्ष गति
Absolute temperature—परम ताप
Absolute zero—परम शून्य
Absorb—अवशोषण करना
Absorbance—अवशोषणांक
Absorbed—अवशोषित
Absorptiometer—अवशोषणमापी
Absorption—अवशोषण
Absorptive—अवशोषी
Absorptivity—अवशोषणक्षमता, अवशोषण, अवशोषकता
Abstract (*adj.*) अमूर्त; (*n.*) सारांश
Abstraction—अपहरण, अपाकुंचन
Abundance—बाहुल्य
Abundant—बहुल
Abysmal—वितलीय
Abyss—वितल
Abyssal—वितली, वितल
Abyssinian—ऐबिसिनी
Academy—विद्या, विद्वत् या शिक्षा-परिषद्
Acantha—कंट
Acarpelous, Acarpellous—अनंडपी
Acarpous—अफलद
Acaulescent—अस्तंभी
Accelerate—त्वरित करना
Accelerated—त्वरित
Acceleration—त्वरण
Accelerative—त्वरक
Accelaratory—त्वरमान
Acceptance—अंगीकार, अंगीकृति, स्वीकार, स्वीकृति, ग्रहण
Acceptor—ग्राही, स्वीकारी
Access—अभिगम्यता, पहुँच, प्रवेश
Accessory (*adj.* & *n.*)—अतिरिक्त, सहायक या गौण (वस्तु)
Accident—दुर्घटना
Accidental—आकस्मिक, संयोगी
Acclimatization—पारिस्थितिक अनुकूलन
Account—लेखा, हिसाब, गणना
Accountant—लेखापाल
Accountant General—महालेखापाल
Accrete—सहवर्धित
Accretion—अभिवृद्धि
Accumbent—प्रतिस्थित
Accumulated—संचित
Accumulation—संचय, संचयन
Accumulator—संचायक
Accuracy—यथार्थता
Accurate—यथार्थ
Accusation—अभियोग, दोषारोपण
Accused—अभियुक्त, मुलजिम
Accutrous—अमूल कशेरुक
Acephalous—अशीर्षी
Acerose, Acerous—सूच्याकार
Achlamydeous—अपरिदली
Achlamydy—अपरिदलिता
Achoric, Achromatic, Achromous, Achroous—अरंज्य
Achromat—अवर्णक, अरंजक
Achromatisation—अवर्णीकरण
Achromatism—अवर्णता
Acicular—सूच्याकार
Acid (*n.*) —अम्ल, तेजाब, एसिड, (*adj.*)—अम्लीय
Acid salt—अम्लीय लवण
Acidic—अम्लीय, आम्ल
Acidification—अम्लीकरण
Acidify—अम्लीय या आम्ल करना
Acidimeter—अम्लमापी
Acidimetry—अम्लमिति
Acidity—अम्लता
Acidulate—आम्ल करना
Acidulated—अम्लीकृत
Acinus—गुच्छकोष्ठक
Acknowledgement—प्राप्ति, स्वीकार, स्वीकृति, स्वीकरण
Acline—अनत
Aclinic—अनत
Acneform—पिटिकाकार
Acoelous—आगुहिक

Acoustic—ध्वनिक, श्रवण-, ध्वनि-
Acoustical—ध्वनिक
Acoustic centre—श्रवण-केंद्र
Acoustic energy—ध्वनिकऊर्जा
Acoustic radiation—ध्वनि-विकिरण
Acoustics—ध्वानिकी, ध्वनि-विज्ञान
Acoustimeter—ध्वनिमापी
Acquired—उपार्जित
Acre—एकड़
Acreage—क्षेत्रफल, रकवा
Acrid—उग्र, तीक्ष्ण
Acrocarpic—अक्षांतफली
Acrocarpous—अक्षांतफली
Acrocout, Acrocoutous—अग्ररोमी
Acrodout—अग्रदंती
Acrogenous—अग्रवर्धी
Acrogynous—अग्रजायांगी
Acrogyny—अग्रजायांगिता
Acromegaly—अग्रातिकायता
Acromian—असंकूट
Acropetal—अग्राभिसारी
Acropleurogenous—अग्रपार्श्वजनित
Acropynchous—अग्रतुंडी
Acroscopic—अग्रोन्मुख
Acrospore—अग्रबीजाणु
Act—क्रिया करना
Actinal—मुखदिशी
Actnic—क्रियाशील
Acting—कार्यवाह
Action—क्रिया, कर्म
Activate—सक्रिय या उत्तेजित करना
Activated—सक्रियित, उत्तेजित
Activation—सक्रियण
Activator—सक्रियकारक
Active—सक्रिय, क्रियाशील
Activity—सक्रियता
Actual—वास्तविक
Actuarial Science—बीमा-विज्ञान
Actuary—बीमा-विज्ञ
Actuate—चालू करना, प्रवृत्त करना
Actuating—प्रवर्तक
Aculeolate—सशूल
Aculeus—सशूल
Acute (*Bot.*)—निशिताग्र
(*Geom.*) न्यून
Acyclic—अचक्रीय
Adamantine—हीरकसम
Adaptable—अनुकूलनशील
Adaptability—अनुकूलनशीलता
Adaptation—अनुकूलन
Adaptive—अनुकूली
Adaxial—अभ्यक्ष
Add—योग करना, जोड़ना
Addend—योज्य
Addition (*n.*)—योग, जोड़;
(*adj.*) योगात्मक
Additional—योज्य, अतिरिक्त
Additive—योगज, योज्य, योजित
Adductor—अभिवर्तनी
Adherent—आसंजित
Adhesion—आसंजन
Adhesive—आसंजनशील, आसंजक
Ad hoc—एतदर्थ
Adiabatic—रुद्धोष्म
Ad infinitum—यावदंत, अनंत बार, अनंततः
Adjacent—संलग्न, निकटवर्ती, आसन्न
Adjoint—सहखंडज
Adjudication—न्यायिक निर्णय
Adjust—समायोजन करना
Adjustable—समायोज्य
Adjusted—समायोजित
Adjustment—समायोजन
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासी
Administrator—प्रशासक
Admissibility—ग्राह्यता, मान्यता
Admissible—ग्राह्य, मान्य
Admittance—प्रवेश्यता
Admixture—अधिमिश्रण
Adnation—संलग्नता
Adneural—अधितंत्रिक
Adnexed—आलग्न
Adolescence—किशोरावस्था
Adolescent—किशोर
Adoption—दत्तक-ग्रहण, गोद
Adoral—अभिमुखीय
Adpressed—अधिलग्न
Adrectal—अधिमलाशयी
Adrenal—अधिवृक्क
Adsorbed—अधिशोषित
Adsorbent—अधिशोषक, अधिशोषी
Adsorption—अधिशोषण
Adult—प्रौढ़, वयस्क
Adulterate—अपमिश्रण करना, मिलावट करना
Adulterated—अपमिश्रित, मिलावटी
Adulteration—अपमिश्रण, मिलावट
Ad valorem—यथामूल्य, मूल्यानुसार
Advanced—प्रगत
Advancing—अग्रगामी, प्रगामी
Advection—अधिवहन
Advective—अधिवाही
Adventitious—अपस्थानिक, आगंतुक
Adventitia—बाह्य कंचुक
Adventurer, Adventurous—साहसिक
Adverse possession—विरुद्धाधिकार
Aedeagus—लिंगाग्रिका
Aedian, edien—वायूढ़, वातोढ़
Aelotropic—विषम दिक्
Aeon—युग
Aeration—वायु-मिश्रण, वातन
Aerenchyma—वायूतक
Aerial—आकाशी, वायव
Aero-aquatic—जलवातीय
Aerobe—वायु-जीव, ऑक्सिजीव
Aerodynamics—वायुगतिकी
Aerolite—अश्म-उल्का
Aerologic (al)—वायुविज्ञानी
Aerologist—वायु-वैज्ञानिक, वायु-विज्ञानी
Aerology—वायु-विज्ञान
Aeronautic—वैमानिकी
Aeroplane—विमान, हवाई जहाज
Aerosiderite—लोह-उल्का
Aestivation—पुष्पदल विन्यास
Aether—ईथर
Afferent—अभिवाही
Affinity—बंधुता
Affluent—सहायक नदी
Afforestation—वनरोपण
After-effect—उत्तर-प्रभाव
Agamete—अयुग्मक
Agamous—अयुग्मनी
Agany—अयुग्मन, अयुग्मकता
Agaricacious—छत्रकीय
Agaricoid—छत्रकाभ
Agaricole—छत्रकवासी
Agaricology—छत्रक-विज्ञान
Agaricolous—छत्रकवासी
Agate—गोमेद
Age—काल, युग, आयु, वयस्, उम्र
Agency—कारकता, अभिकर्तृत्व
Agenda—कार्यावली
Agent—अभिकर्ता, कर्मक, कारक
Agglomerate—पुंजित
Agglomerated—पुंजित
Aggrading—अभिवर्धी
Aggradation—अभिवृद्धि

Aggregate—समुच्चय, पुंज
Aggregated—समुच्चयित
Aggregation—समुच्चयन
Agonic—शून्यदिक्पाती
Agrarian—भूमिसंबंधी, भूमि-
Agricultural—कृषीय, कृषि-
Agriculturist—कृषक, किसान, कृषि-विज्ञानी
Agro-forestal—कृषि-वनसंबंधी
Agronomy—शस्य-विज्ञान
Agrotype—कृषीय प्रजाति
A-horizon—क-संस्तर
Air—वायु, हवा, वात
Aircraft—वायुयान
Air-navigation—विमानचालन
Air-pressure—वायुदाब
Air route—वायुमार्ग
Air-tight—वायुरोधी
Akinete—निश्चेष्ट बीजाणु
Ala—पक्षक
Alate—सपक्षक
Albinism—रंजकहीनता
Albino—रंजकहीन जीव
Albinotic—रंजकहीन
Alburnum—रसदारु
Alchemist—कीमियागर
Alchemy—कीमिया
Alepidate—विशल्की
Algae—शैवाल
Algebra—बीजगणित
Algebraic, Algebraical—बीजीय
Algebraically—बीजत:
Algical—शैवालवासी
Algicolous—शैवालवासी
Algorithm—कलन-विधि
Alidade—दर्शरेखक
Alienation—हस्तांतरण, स्वत्वांतरण
Alignment—संरेखण
Alimentary canal—आहार-नाल
Alimentary system—आहार-तंत्र
Aliquot part—अशेष-भाजक खंड
Alisphenoid—पक्षजतुक
Alkali—क्षार, क्षारीय
Alkalic—क्षारीय
Alkalimetry—क्षारमिति
Alkaline—क्षारीय
Alkalinity—क्षारता
Allantoic—अपरापोषिका, अपरापोषिकीय
Allantois—अपरापोषिका
Allegation—आरोप, इलजाम
Allele—युग्म-विकल्पी
Allelic—युग्मविकल्पी
Allelism—युग्मविकल्पता
Allelomorph—युग्मविकल्पी
Alliaceous—लशुनी
Allocthon—अपरस्थानिक
Allocthonous—अपरस्थानिक
Allogamous—परनिषेची
Allogamy—परनिषेचन
Allogenic—अन्यत्रजात
Allotriomorphic—अपरूपक
Allotrope—अपररूप
Allotropic—अपररूपी
Allotropism—अपररूपता
Allotropy—अपररूपता
Allocation—बँटवारा, विभाजन
Alloy—मिश्रधातु, धातु-मिश्रण
Allowance—भत्ता
Alluvial—जलोढ़
Alluvium—जलोढ़क
Almanac—पंचांग
Almond—बादाम
Altazimuth—उद्दिगंशक
Alteration—परिवर्तन
Alternando—एकांतर अनुपात
Alternant—एकांतरक
Alternate—एकांतर
Alternately—एकांतरत:
Alternating—एकांतर, प्रत्यावर्ती
Alternation—एकांतरण
Alternative—वैकल्पिक
Alternatively—विकल्पत:
Alternator—प्रत्यावर्त्तित्र
Altimeter—तुंगतामापी
Altitude—तुंगता, उच्चता, ऊँचाई, उन्नतांश, शीर्षलंब
Altocumulus—मध्यकपाली
Altostratus—मध्यस्तरी
Alum—फिटकरी
Alveolar—कूपिका
Alveolus—कूपिका
A. M. (ante meridian)—पूर्वाह्न
Amalgum—पारद-धातु मिश्रण
Amalgamated—पारदित
Amalgamation—पारदन
Amber—कहरुवा
Ambiguity—संदिग्धता
Ambiguous—संदिग्ध
Ambitus—परिरेखा
Ambulaeral—वीथि
Ambulatory—चलनक्षम, चलनार्थ
Amendment—संशोधन
Ametabola—अकायांतरणी, अरूपांतरणी
Ametabolous—अकायांतरणी
Amethyst—जामुनी
Amnion—उल्व
Amniota—उल्वी-वर्ग
Amount—मात्रा, परिमाण, रकम
Amphibean—जलस्थलचर
Amphibious—जलस्थली
Amphicocous—उभयगुहिक
Amphidisc—उभयपट्टिका
Amphigamous—अज्ञात जननांगी
Amphithecium—बाह्यस्तर
Amphitropous—अनुप्रस्थ
Amphoteric—उभयधर्मी
Amplexicaul—स्तंभालिंगी
Amplification—प्रवर्धन
Amplifier—प्रवर्धक
Amplifying—प्रवर्धक
Amplitude—आयाम, कोणांक
Ampulla—तुंबिका
Amputation—विच्छेदन
Amygdaloid(al)—वातामकी
Amygdular—वातामकी
Amyloplant—मंडप्लवक
Anabolism—उपचय
Anadromous—समुद्रापगामी
Anaerobe—अवायुजीव
Anaerobic—अवायु
Anaesthetic—निश्चेतक, संवेदनाहरी
Anal—गुद
Analgeric—पीड़ाहारी
Analogous—सदृश, अनुरूप, तुल्यरूप
Analogy—सादृश्य, अनुरूपता, तुल्यरूपता
Analyse—विश्लेषण करना
Analysed—विश्लेषित
Analyser—विश्लेपक
Analysis—विश्लेषण
Analyst—विश्लेषक
Analytical—विश्लेषात्मक, विश्लेषिक, विश्लेषीय
Analytically—विश्लेषिक विधि से
Anamorphism—जटिल कायांतरण
Anaphoresis—ऋण-कण-संचलन
Anapophyses—पश्चवर्ध
Anarchy—अराजकता
Anastigmatic—अनबिन्दुक

Appresorium—आसंगांग
Appressed—लग्न
Approach—उपगमन
Approver—सरकारी गवाह
Approximate—सन्निकट, लगभग
Approximately—सन्निकटतः, लगभग
Approximation—सन्निकटन
Apricot—खुबानी
Apse—स्तम्भिका
Apsidal—स्तम्भिका
Apsis—स्तम्भिका
Aqua-culture—जल-कृषि
Aquarium—जल-जीवशाला
Aquarius—कुंभ
Aquasol—जल-विलय
Aquatic—जलीय
Aqueous—जलीय
Aquifer—जलभरा, जलभृत
Arable—कृष्य, कृषित
Arbitrary—स्वेच्छ
Arbitration—पंचायत
Arbitrator—पंच, मध्यस्थ
Arboreal—वृक्षीय, वृक्षवासी
Arborescent—वृक्षवत्, वृक्षसम
Arboricolous—वृक्षवासी
Arboriculture—वृक्ष-संवर्धन
Arc—चाप
Arch—चाप, मेहराव
Archaean—आद्यमहाकल्प, आद्यमहा-कल्पी
Archaeological—पुरातात्विक
Archaeology—पुरातत्व-विज्ञान
Archaic—आद्य, आदि, पुरातन, पुराकालीन
Arched—चापाकार
Archegonium—स्त्रीधानी
Archenteron—आद्यंत्र
Archesporial—प्रपसू
Archesporium—प्रप्रसूतक
Archetype—आद्यप्ररूप
Archimorphic—पुराकृतिक
Archinephric—आदिवृक्क
Archinephros—आदिवृक्क
Archipelago—द्वीपसमूह
Archipterigyal—आद्यपखीय
Archipterygeum—आद्यपखक
Architectural—स्थापत्य
Arctic—उत्तरध्रुवीय, उत्तर-ध्रुव-
Arctogaea—उत्तरभू
Arcualia—आदिचापिका
Arcturus—स्वाति
Arcuate—चापाकार
Area—क्षेत्रफल, क्षेत्र
Areal—क्षेत्रफलीय, क्षेत्रीय
Arenaceous—वालुकामय
Arenicole, Arenicolous—वालुकावासी
Areole—गर्तरोम
Arescent—शुष्कोन्मुख
Argentate—रजताभ
Argenteum—रजतस्तर
Argentic—रजतीय
Argentiferous—रजतयुक्त, रजतमय
Argentine—रजताभ
Argillaceous—मृण्मय, मृद्-
Arid—रूक्ष, शुष्क
Aridity—शुष्कता
Aril—बीजचोल
Arista—शक, शृंग
Aristate—शूकमय, शूकधारी
Arithmetic—अंकगणित
Arm—बाहु, भुजा
Armilla—वलयक
Armillate—वलयकी
Armoury—शस्त्रागार, हथियारघर
Aromatic—सुरभि-
Arrangement—विन्यास, व्यवस्था
Array—सरणी, व्यूह
Arrowroot—अरारूट
Arsenal—शस्त्रागार, सिलहखाना
Arsenious oxide—संखिया
Art—कला
Arterial—धमनी, धमनीय
Arteriola—धमनिका
Artery—धमनी
Artesian—उत्स्रुत
Arthropods—संधिपाद प्राणी
Article—वस्तु, अनुच्छेद
Articulation—संधि
Artifice—युक्ति
Artificial—कृत्रिम
Artisan—शिल्पी, कारीगर
Artistry—कारीगरी
Aryan, Aryo—आर्य
Ascend—आरोहण करना
Ascendance—आरोहण
Ascending—आरोही
Ascension—आरोहण
Ascent—आरोहण
Aseptate—पटहीन
Asexual—अलैंगिक, अलिंगी
Ash—राख, भस्म
Aspect—अभिमुखता
Asperic—अगोली
Aspherizing—अगोलीकरण
Aspirator—चूषित्र
Asporogenic, Asporogenous—बीजाणु-अजन
Assagai—भाला
Assay—आमापन
Assemblage—समुच्चय
Assigned—निर्दिष्ट
Assimilate—स्वांगीकरण करना, अपनाना
Assimilation—स्वांगीकरण
Assimilative—स्वांगीकारक
Associate—सहचारी
Association—साहचर्य, सहवास
Associativity—सहचारिता
Associes—सहवासक
Assortment—वर्गीकरण
Assume—मानना, कल्पना करना
Assumption—कल्पना
Assurgent—वक्रारोही
Astatic—अस्थतिक
Aster—तारक, तारा
Asterism—तारापुंज
Astigmatic—अबिंदुक
Astigmatism—अबिंदुकता
Astraeiform—तारकाकार
Astragalus—गुल्फास्थि
Astringent—कषाय
Astrographic—ताराचित्री
Astrography—खगोल चित्रण
Astrologer—ज्योतिषी
Astrology—ज्योतिष
Astrometry—खगोलमिति
Astronomer—खगोलज्ञ
Astronomical—खगोलीय
Astronomy—खगोल-विज्ञान, खगोलिकी
Astrophy—अपुष्टि
Astro-physics—ताराभौतिकी
Asymbiotic—असहजीवी
Asymmetric(al)—असममित
Asymmetry—असममिति
Asymptote—अनंतस्पर्शी
Asymptotic—उपगामी
Asynchronous—अतुल्यकालिक
Atavism—पूर्वजता

Atectonic—अविवर्तनिक
Athermancy—ऊष्मा अपार्यता
Athermanous—ऊष्मा-अपार्य
Atmometer—वाष्पनमापी
Atmosphere—वायुमंडल
Atmospheric—वायुमंडलीय
Atmospherics—वायु-वैद्युत क्षोभ
Atom—परमाणु
Atomic—परमाण्वीय
Atomicity—परमाणुकता
Atomistics—परमाण्विकी
Atomization—कणीकरण, कणन
Atomize—कणित करना
Atomizer—कणित्र
Atrial—परिकोष्ठी, परिकोष्ठ-
Atrichous—अरोमी
Atriopore—परिकोष्ठरंध्र
Atrium—अलिंद, परिकोष्ठ
Atrophy—अपुष्टि, क्षीणता
Attachment—संलगन, (Law) कुड़की
Attenate apex—संकीर्णाग्र
Attenuation—क्षीणता, क्षीणन
Attenuator—क्षीणकारी
Attested—साक्ष्यंकित, प्रमाणित
Attracted—आकृष्ट
Attraction—आकर्षण
Attribute—गुण
Attrition—सन्निघर्षण
Audibility—श्रव्यता
Audible—श्रव्य
Audio—श्रव्य
Audiometer—श्रव्यतामापी
Audit—लेखा-परीक्षा
Auditorium—सभाभवन
Auditory—श्रवण
Augend—योजक
Augmentation—संवर्धन
Aural—कर्णज
Aureole—मंडल
Auricle—पालि, अलिंद, कर्णपल्लव
Auriferous—स्वर्णमय
Auriform—पालिरूप
Aurora—ध्रुवीय ज्योति
Authigenic—तत्रजात
Auto—स्व, स्वत:
Autoantibiosis—स्वप्रतिजीविता
Autocarp—स्वनिषेचीफलन
Autocarpy—स्वनिषेचफलन
Autocatalysis—स्व-उत्प्रेरण

Autochthon—स्वस्थानिक शैलपिंड
Autochthonous—स्वस्थानिक
Autocollimating—स्वत: समांतरी
Autocollimation—स्वत: समांतरण
Autocorrelation—स्वसह-संबंध
Autodeliquescent—स्वप्रस्वेदी
Autoecious—एकाश्रयी
Autoecology—स्वपारिस्थितिकी
Autogamous—स्वकयुग्मी
Autogamy—स्वकयुग्मन
Autoicous—उभयलिंगाश्रयी
Autolith—अग्रजांतर्वेश
Autolysis—स्वलयन
Automatic—स्वचालित, स्वत:
Autometamorpheism—स्वकायांतरण
Auto-oxidation—स्वत: उपचयन
Autophagous—स्वत:भोजी
Autophagy—स्वत:भोजिता
Autopigmentation—स्वरंजन
Autoretardation—स्वत:मंदन
Autosome—अलिंग-सूत्र
Autostylic—स्वनिलंबित
Autotomy—स्वविच्छेदन
Autotransformer—स्वपरिणामित्र
Autotrophic—स्वपोषित
Autumn—शरद्, पतझड़
Autumnal—शारद
Auxanogram—वृद्धि-आलेखी
Auxanograph—वृद्धि-आलेख
Auxanometer—वृद्धिमापी
Auxiliary—सहायक
Auxochrome—वर्णवर्धक
Auxochromic—वर्णवर्धी
Available—प्राप्य
Avalanche—हिमानी अवधाव
Avenue—वीथि
Average—औसत, माध्य
Awn—शूक
Axial—अक्षीय
Axil—कक्ष
Axillary—कक्षवर्ती, कक्षीय
Axiom—स्वयंसिद्ध
Axis—अक्ष
Axle—धुरी
Azeotrope—स्थिर-क्वथनांक
Azeotropic—स्थिर-क्वथनांकी
Azimuth—दिगंश
Azimuthal—दिगंशीय
Azoic—जंतुहीन, प्राग्जैविक

B

Baboon—बैबून
Baccate—सरस
Bacillar, Bacilliform—दंडाकार
Bacillus—दंडाणु
Backbone—रीढ़
Background—पृष्ठभूमि, पृष्ठ भूमिक
Backwater—पश्च-जल
Bacteria—जीवाणु
Bacterial—जीवाण्विक
Bactericidal—जीवाणुनाशी
Bactericide—जीवाणुनाशी
Bacteriological—जीवाणुविज्ञानसंबंधी
Bacteriologist—जीवाणु-वैज्ञानिक, जीवाणु-विज्ञानी
Bacteriology—जीवाणुविज्ञान
Bacteriolysis—जीवाणुलयन, जीवाण्विक-विघटन
Bacteriophage—जीवाणुभोजी
Bad conductor—कुचालक
Bail—जमानत, जामिन, प्रतिभू
Bailable—जमानती
Balance—तुला, तराजू
Balanced—संतुलित
Balancing—(*adj*) संतोलक; (*n*) संतोलन
Ballistic—प्रक्षिपिक, प्रक्षेप-
Ballistics—प्राक्षेपिकी
Balloon—बैलून, गुब्बारा
Balsam—गुलमेहँदी
Band—पट्टी
Banded—पट्टित
Bank—तट, किनारा, बैंक
Bar—पट्टी, स्तंभ, दंड, रोधिका, छड़ शलाका, सिल, सिल्ली
Barbarian—बर्बर
Barbarianism—बर्बरता
Barbaric—बर्बर
Barbed—कंटकीय
Barbel—स्पर्शप्रवर्ध
Barbule—पिच्छिका
Bark—छाल
Barogram—वायुदाब-आलेख
Barograph—वायुदाबलेखी
Barometer—वायुदाबमापी
Barometric—वायुदाबमापी
Barometry—वायुदाबमिति
Baroscope—वायुदाबदर्शी
Barrel—पीपा

Barren—ऊसर, वंजर, अनुर्वर, वंध्य
Barrier—रोध, रोधिका
Barter—वस्तु-विनिमय
Barycentre—केंद्रक
Barysphere—गुरुमंडल
Basal—आधारिक, आधार-
Basalia—आधारिका
Basaltiform—संपुलकित
Base—आधार
Basidorsal—आधार-पृष्ठिका
Basihyal—आधार-कंठिका
Basipodite—दूरपादांश
Basic—आधारी, मूल
Basifixed—अधःबद्ध
Basifugal—अग्राभिसारी, तलापसारी
Basil—तुलसी
Basipetal— तलाभिसारी
Basis—आधार
Bay—खाड़ी, उपसागर
Beach—पुलिन
Bead—मनका, मणिका
Beak—चोंच, चंचु
Beam—दंड
Bean—सेम
Bear—रीछ, भाल
Beat—विस्पंद
Beating—विस्पंदन
Bed—क्यारी, संस्तर, तल
Bedrock—आधारशैल
Bedded—संस्तरित
Bedding—संस्तरण
Bee—मधुमक्षिका
Beeswax—मधुमोम
Beet—चुकंदर
Beetle—भृंग
Behaviour—व्यवहार
Belfry—पशुशाला
Bellows—धौंकनी
Belly—तुंद
Belt—कटिबंध, मेखला, पेट्टी
Bend—मोड़, घुमाव, वलय
Bending—वंकन
Beneficiation—सज्जीकरण
Benthic—नितलस्थ
Benthonic—नितलस्थ
Benthos—नितल
Berry—सरस फल
Berrylet—सरसिका
Betel nut—सुपारी
Biangular—द्विकोणीय

Bias—अभिमति
Biased—अभिमत
Biaxial—द्विअक्षीय
Biceps—द्विशिरस्क
Bicipital—द्विशाखी, द्विशिरस्की
Biconcave—उभयावतल
Biconvex—उभयोत्तल
Bicornuate—द्विशृंगी
Bicuspid—द्वयग्री
Bidimensional—द्विविम
Bidimensionality—द्विविमता
Biennial—द्विवर्षी
Bifacial—द्विपृष्ठी
Bifanged—द्विमूलीय
Bifid—द्विशाखित, द्विशाखी
Bifilar—द्विसूत्री, द्वितंतु
Bifoliate—द्विपर्णी
Bifollicular—द्विसंपुटकी
Bifurcate—द्विशाखित होना या करना
Bifurcation—द्विशाखन
Bigeminal—द्विश्रेणिक
Bilabiate—द्वि-ओष्ठी
Bilaminar—द्विफलकीय
Bilateral—द्विपार्श्विक, द्विपार्श्व, द्विपक्षीय, द्विपक्ष
Bilaterality—द्विपार्श्वता
Bile—पित्त
Bilingual—द्विभाषिक, द्विभाषिता
Bill—चोंच, चंचु
Billion—दस खर्ब, दस अरब
Billow—महातरंग
Bilobed—द्विपालिक
Bilocular—द्विकोष्ठकी
Bilophodont—द्विकटक
Bimerous—द्वितयी
Bimetallic—द्विधातुक
Bimodal—द्विबहुलक
Biniary — (*Astron.*) युग्मतारा; (*Chem.*) द्वि-अंगी, द्विकर्मी; (*Math.*) द्विचर, द्वि-आधारी; द्वयावर्ती, द्विक्रम
Binaural—द्विकर्णी
Binding—बंधन-बंधक
Binocular—द्विनेत्री
Binodal—द्विनोडी
Binode—द्विनोड
Binominal—द्विपद
Binormal—उपाभिलंब
Bio-chemical—जीव-रसायनिक
Bio-chemistry—जीव-रसायन
Biochore—जीवसीमा

Biogenesis—जैवोत्पत्ति
Biogenous—जीवजीवी
Biogeography—जीवभूगोल
Biological—जैव, जैविक
Biology—जीव-विज्ञान
Bioluminescence—जीव-संदीप्ति
Biometrician—जीव-सांख्यिक
Biometry—जीव-सांख्यिकी
Bionomic—जीवपारिस्थितिक
Bionomics, Bionomy—जीवपारिस्थितिकी
Biophagus—जीव-भोजी
Biophysics—जीव-भौतिकी
Bioplasm—जीव द्रव्य
Biosphere—जीव-मंडल
Biota—जीव-समूह
Biotic—जीवीय
Biotite—काला अभ्रक
Biotype—समानजीवी
Biparous—(*Bot.*) द्विशाखी; (*Zool.*) द्विप्रसू
Bipartite—द्विखंडी, द्विभाजित, द्विपाक्षिक, द्विदलीय
Biped—द्विपाद
Bipedal—द्विपाद
Bipinnate—द्विपिच्छकी
Biplanar—द्विसमतल
Biplication—द्विवलन
Bipolar—द्विध्रुवीय
Bipunctate—द्विबिंदुक
Biquadratic—चतुर्घात
Biquartz—द्विस्फटिक
Biramous—द्विशाखी
Birch—भूर्ज
Bird of prey—शिकारी पक्षी
Bi-rectangular—द्विसमकोणीय
Birefrigence—द्वि-अपवर्तन
Birefrigent—द्वि-अपवर्ती
Birth—जन्म
Bisect—द्विभाजित अथवा अर्धित करना
Bisection—अर्धन, द्विभाजन
Bisector, Bisecting—अर्धक, द्विभाजक
Biserial—द्विपंक्तिक
Biseriate—द्विपंक्तिक
Bisexual—द्विलिंगी
Bismuth—बिस्मथ
Bisporic—द्विबीजाणुक
Bispory—द्विबीजाणुता
Bitangent—द्विस्पर्शरेखा
Bitter—तिक्त, कड़वा

Biuncinate—द्विअंकुशी
Bivalency—द्विसंयोजकता, युगलन
Bivalent—युगली, द्विसंयोजक
Bivalve—द्विकपाटी
Bivariant, Bivariate—द्विचर
Black sea—काला सागर
Black green—कृष्ण हरित
Bladder—थैली
Blade—पटल
Blanket—आवरण
Blast—विस्फोट, झोंका (हवा का)
Blasting—(*adj.*) विस्फोटक; (*n.*) विस्फोटन
Bleach—(*n.*) विरंजक (*v.*) रंग उड़ाना, विरंजन करना
Bleachability—विरंजकता
Bleachable—विरंजनीय
Bleaching—(*n.*) विरंजन, (*adj.*) विरंजक
Bleeding—(*n.*) स्रवण, (*adj.*) स्रावी
Blend, Blending—मिश्रण, मिश्र
Blister—फफोला
Block—खंड, खंडक, गुटका
Blocking—अवरोध, अवरोधन
Blood—रुधिर
Bloom—पुष्पपुंज, राग
Blossom—पुष्पपुंज, मंजरी, पुष्प
Blossoming—पुष्पन
Blotch—दाग
Blow—आघात
Blower—आघाता
Bluish—नीलाभ
Blurred—अस्पष्ट
Body—शरीर, देह, काय, पिंड, वस्तु
Bog—दलदल
Boiling—क्वथन
Boiling point—क्वथनांक
Bomb (Volcanic)—ज्वालामुखी बम
Bombardment—बमबाजी
Bond—बंध, बंधन
Bone—अस्थि, हड्डी
Bony—अस्थिल
Boom—सहसा वृद्धि
Border—सीमांत
Bore—वेधन करना
Borer—वेधक
Botanist—वनस्पतिज्ञ
Botany—वनस्पति-विज्ञान
Botryoidal—गुच्छाकार
Bottom—तल, तली
Bound—परिबंध, बद्ध
Boundary—परिसीमा, सीमा, सीमांत
Bounded—परिबद्ध
Bounding—सीमक
Boundless—अंतहीन
Bourgeois—मध्यवर्ग
Brachial—बाहु-
Brachiole—पक्षक
Brachium—प्रगंड
Brachyaxis—लघु-अक्ष
Brachyblast—लघुशाखा
Brachycephalic—लघुशिरस्क
Brachydont—लघुदंत
Brachypodium—लघुपाद
Brackets—कोष्ठक, बंधनी
Brackish—नुनखरा, खारा
Bract—सहपत्र
Bracteate—सहपत्री
Bracteole—सहपत्रिका
Bractlet—सहपत्रक
Braided—गुंफित
Braiding—गुंफन
Brain—मस्तिष्क
Branch—शाखा
Branched—शाखित
Branching—शाखन
Branchia—गिल, क्लोम
Brass—पीतल, पित्तल
Breadth—चौड़ाई
Break—अवकाश, भंग
Breakdown—भंग
Breakwater—तरंगरोध
Breast—छाती, स्तन
Breathing—श्वसन
Breccia—संकोणाश्म
Brecciated—संकोणाश्मित
Breed—नस्ल
Breeding—प्रजनन
Breeze—समीर
Brew—मद्य बनना या बनाना
Brewery—भट्ठी
Bridge—पुल, सेतु
Bridging—सेतु-बंधन
Brilliancy—कांति
Brimstone—गंधक
Brine—लवण-जल
Brinish—नमकीन
Bristle—शुक
Bristly—शुकमय
Brittle—भंगुर
Brittleness—भंगुरता
Broadcasting—प्रसारण
Broken—खंडित
Brokerage—दलाली
Bronze—काँसा, कांस्य
Bronzing—कांस्यन
Brood chamber—अंडकक्ष
Brood pouch—भ्रूणधानी
Brook—नाली
Broom rapes—भुँइफोड़
Brown—बादामी, भूरा
Brushwood—झाड़
Bubble—बुदबुद, बुलबुला
Buccal—मुख-
Buckling—आकुंचन
Buckwheat—कुट्टू
Bud—कली, कलिका
Budding—मुकुलन
Budget—आय-व्ययक
Buffer—उभय-प्रतिरोधी
Buffering—उभय-प्रतिरोधन
Building—(*n.*) इमारत, रचना; (*adj.*) इमारती
Bulbous—कंदीय
Bulge—उभार
Bulk—आयतन, स्थूलता
Bulky—स्थूल
Bumping—उच्छलन
Bunch—गुच्छ, पुंज
Bunched—गुच्छित
Bund—बंध
Bundle—बंडल, पूल
Bunodont—वप्रदंत
Bunodonta—वप्रदंती
Buoyancy—उत्प्लावकता
Burden—भार, बोझ
Burner—बर्नर, ज्वालक
Burning—आतशी, ज्वालक
Burnt—दग्ध
Burrow—बिल
Burrowing—बिलकारी
Burst—प्रस्फोट
Bushel—बुशेल
Buttress—वप्र, पुश्ता
Bylane—उपवीथिका
By-law—उपनियम
By-pass—उपमार्ग, उपमार्गी
By-product—उपोत्पाद
Byssus—सूत्रगुच्छ

C

Cable—समुद्री तार
Cadophore—मुकुलधर
Caducous—आशुपाती
Caecal—अंधनाल
Caecum—अंधनाल
Caenogenesis—नवोत्पत्ति
Caenogenetic—नवोत्पन्न
Caespitose—दर्भिल
Caffeine—कैफीन
Cake—पिंड, सिल, वट्टी, टिक्की
Calcium—कैल्सियम
Calculate—परिकलन करना
Calculating—परिकलन
Calculation—परिकलन
Calculus—कलन
—differential—अवकलन
Caldera—ज्वालामुखी कुंड
Calendar—कैलेंडर
Calibrated—अंशशोधित
Calibration—अंशशोधन, अंशांकन
Calm—शांत, प्रशांत
Calomel—रस-कपूर
Calorie—कैलोरी
Calorimeter—ऊष्मा-मापी
Calorimetry—ऊष्मामिति
Calving—हिमानी-खंडन
Calx—भस्म
Calyx—बाह्यदलपुंज
Camera—कैमरा
Camouflage—छद्मावरण
Campanulate—घंटाकार
Camphene—कैम्फीन
Camphor—कपूर, कर्पूर
Canal—कुल्या, नहर
Cancer—कर्क
—tropic of—कर्क रेखा
Candle—मोमवत्ती
Canescent—जीर्णपर्णी
Canine—रदनक
Cannibal—नरभक्षी
Cannibalism—नरभक्षण
Cannibalistic—स्वजातिभक्षी
Canonical—विहित
Canvas—किरमिच
Canyon—गभीर खड्ड
Cap—टोपी, छत्रक
Capacitance—धारिता
Capacitive—धारिता-
Capacitor—संधारित्र
Capacity—क्षमता, धारिता
Cape—अंतरीप
Capillary—केशिका
Capilliform—केशवत्
Capillitium—तंतु-जाल
Capital—पूंजी, राजधानी
Capital sentence—प्राणदंड
Capitate—समुंड
Capitular—मुंडतल
Capping—छद
Capricorn—मकर
—,Tropic of मकर रेखा
Capsular—संपुटी
Capsule—संपुट, संपुटिका
Carapace—पृष्ठवर्म
Carat—कैरट
Caravan—कारवाँ
Carvancer—सार्थवाह
Caraway—अजमोद
Carbon—कार्बन
Carbonated—कार्बनीकृत
Cardiac—जठर, हृदय
Cardinals—दिग्विंदु
Cardioid—हृदयाभ
Cargo—नौभार
Carnivora, Carnivorous—मांसाहारी
Carotid—ग्रीवा
Carotin—पर्णवतिक
Carpal—मणिबंधिका
Carpel—अंडप
Carpellary—अंडपी
Carpology—फलरचना-विज्ञान
Carpophore—फलधर
Carpospore—फलबीजाणु
Carpus—मणिबंध
Carrier—वाहक
Cartillage—उपास्थि
Cartographer—मानचित्रकार
Cartography—मानचित्रण (कला)
Carved—उत्कीर्ण
Case—विषय, प्रकरण, स्थिति
Casein—केसीन
Catabolism—अपचय
Cataclasis—अपदलन
Cataclasite—अपदलाश्म
Cataclistic—अपदलनी
Cataclysm—प्रलय
Catadioptric—परापवर्ती
Catalogue—सारणी
Cataloguing—सूत्रीकरण
Catalyser—उत्प्रेरक
Catalysis—उत्प्रेरण
Catalyst—उत्प्रेरक
Catalytic—उत्प्रेरक
Cataract—प्रपात
Category—संवर्ग
Catenate—शृंखलित
Catenulate—शृंखलित
Caterpillar—इल्ली
Cathode—कैथोड
Cathodic—कैथोडी
Cation—धनायन
Cationic—धनायनिक
Catoptric—परावर्तनी
Cattle—पशु
Caudal—पुच्छीय
Caudate—पुच्छीय, पुच्छ
Caudex—स्तंभमूल
Caulescent—दृश्यस्तंभी
Caulicolous—स्तंभवासी
Cauliflower—फूलगोभी
Cauline—स्तंभिक
Causal—कारणात्मक
Causality—कारणता
Caustic—(*adj.*) दाहक, किरणस्पर्शी
Causticization—दाहकीकरण
Cave—गुहा, गुफा
Cavern—कंदरा
Cavitation—कोटरन
Cavity—कोटर, गुहिका
Cedar—देवदारु, देवदार
Celestial—खगोलीय
Cell—कोशिका
Cellular—कोशिकीय, कोशिकामय
Cement—सीमेन्ट
Cementation—संयोजन
Census—गणना, जनगणना
Centisimal—शतिक
Centigram—सेंटिग्राम
Centimeter—सेंटिमीटर
Centepede—शतपाद
Central—केंद्रीय
Centre—केंद्र
Centric—केंद्रिक
Centrifugal—अपकेंद्री, अपकेंद्र
Centrifuging—अपकेंद्रण
Centriole—तारककेंद्र
Centripetal—अभिकेंद्र, अभिकेंद्री
Centroid—केंद्रक

Centrolecithal—केंद्रपीतकी
Centrosphere—तारक-परिकेंद्र
Cephalic—शिरस्य
Cephalization—शिरप्राधान्य
Cephalothorax—शिरोवक्ष
Ceramic—चीनी मिट्टी
Ceramics—मृत्तिका-शिल्प
Ceratohyal—मध्यकंठिका
Cerebellun—अनुमस्तिष्क
Cerebral—प्रमस्तिष्कीय, प्रमस्तिष्क
Cerebro—प्रमस्तिष्क
Cerebrum—प्रमस्तिष्क
Cervical—ग्रैव
Cervicum—ग्रीवा
Cervix uteri—गर्भाशय-ग्रीवा
Chamber—कोष्ठ, कक्ष, कक्षिका
Chamois—साँभर
Chance—संयोग, अवसर
Change—परिवर्तन, अंतर
Channel—प्रणाल, वाहिका, जलमार्ग
Character—लक्षण, गुण, स्वरूप
Characteristic—(*n.*) लक्षण, विशेपता, अभिलक्षण
Charcoal—काठ कोयला, चारकोल
Chasm—गह्वर
Check—जाँच, निरोध
Chemical—रासायनिक
Chemisorbtion—रासायनिक शोषण
Chemist—रसायनज्ञ
Chemistry—रसायन, रसायन-विज्ञान
Chemo—रसायन
Chewing—चर्वण
Chimney—चिमनी
Chloric—क्लोरिक
Chloroform—क्लोरोफार्म
Chlorometer—क्लोरीनमापी
Chlorometry—क्लोरीनमिति
Chlorophyll—पर्णहरित
Chlorosis—हरिमाहीनता
Chlorotic—हरिमाहीन
Chocolate—चाकलेट
Choice—वरण, चयन, चुनाव
Choline—कोलीन
Chondroid—उपास्थिसम
Chord—जीवा
Chorda dorsalis—पृष्ठ-रज्जु
Chorion—जरायु
Chorography—क्षेत्रवर्णनी भूगोल
Choroid—रक्तक-पटल
Choroid plexus—रक्तक जालक
Choropleth—वर्णमात्री
Choro-shcematic—वर्णप्रतीकी
Chromate—क्रोमेट
Chromatic—वर्णिक
Chromaticity—वर्णकता
Chromatism—वर्णकता
Chromatophore—वर्णकी लवक
Chromatoscope—वर्णदर्शक
Chrome—क्रोम
Chromic—क्रोमिक
Chromium—क्रोमियम
Chromocentre—परिसूत्र विंदु
Chromogen—वर्णकोत्पादक
Chromogenesis—वर्णकोत्पादन
Chromogenetic—वर्णकोत्पादकी
Chromometer—वर्णमापी
Chromoparous—वर्णक-उत्सर्गी
Chromophilous—अभिरंजकरागी
Chromophore—वर्ण-मूलक
Chromophorous—वर्णकधारी
Chromoplast—वर्णी लवक
Chromoscope—वर्णदर्शी
Chromosphere—वर्ण-मंडल
Chronograph—समयलेखी
Chronological—कालानुक्रम
Chronology—कालानुक्रम
Chronometer—कालमापी
Cilia (Cilium)—पक्ष्माभिका
Ciliary—पक्ष्माभिकी
Ciliated—पक्ष्माभिकामय
Cinchona—सिंकोना
Cinema—सिनेमा, चलचित्र
Cinematography—चलचित्रिकी
Cinereous, Cineraceous—भस्मी
Cinigulum—मेखला
Cinnabar—ईंगुर, सिंगरफ
Cinnamon—दालचीनी
Cion (Sion, Scion)—कलम
Cipher—शून्य, सिफर
Circinate—कुंडलित
Circle—वृत्त
Circuit—परिपथ
Circulating—परिसंचारी
Circulation—परिसंचरण
Circulatory—परिसंचारी
Circumcentre—परिकेंद्र
Circumcircle—परिवृत्त
Circumference—परिधि
Circumnavigation—नौ-परिसंचलन
Circumnutation—शिखाचक्रण
Circumorbital—परिअक्षीय
Circumpolar—परिध्रुवीय
Circumscribed—परिगत
—circle—परिवृत्त
Cirrhous—सतंतु
Cisform—समपक्षरूप
Cistern—हौज, कुंडिका
Citadel—नगर-दुर्ग, गढ़
Citron—गलगल
City—नगर, शहर
Cladophyll—पर्णाभस्तंभ
Clam—सीपी
Clamp—शिकंजा
Clan—गोत्र, कुल
Clarify—निर्मल करना
Clasper—आलिंगक
Class—वर्ग, संवर्ग
Classical—चिरसम्मत, शास्त्रीय
Classification—वर्गीकरण
Classified—वर्गीकृत
Clastic rock—सखंडाश्म
Clavate—मुद्गराकार
Claw—नखर
Clay—मिट्टी, चिकनी मिट्टी, मृत्तिका
Cleaner—शोधित्र, मार्जक
Cleanse—शोधन करना, साफ करना
Clearing—निर्मलन
Cleavage—विदलन, दरार, विदर
Cleaved—विदलित
Cleft—(*adj.*) विदलित; (*n.*) दरार, विदार
Clepsydra—जलघड़ी
Cliff—भृगु
Climate—जलवायु
Climatic—जलवायु-संबंधी
Climatology—जलवायु-विज्ञान
Climax—चरम अवस्था
Climber—आरोही लता
Climbing—आरोही
Clinoaxis—प्रवण-अक्ष
Clinometer—प्रवणतामापी
Clip—क्लिप
Cloaca—अवस्कर
Clock—घड़ी
Clockwise—दक्षिणावर्त
Close coupling—गाढ़ युग्मन
Closed—संवृत्त, बंद
Closure—निमीलन, वेष्टन
Clot—थक्का
Cloud—मेघ, बादल, अभ्र

Clouded—मेघाच्छन्न, धुंधला
Clove—लवग, लौंग
Cluster—गुच्छ
Clypeus—मुखपाली
Cnemial—प्रजंघिका
Cnidocil—दंश-प्रवर्ध
Coagulate—स्कंदन
Coagulated—स्कंदित
Coagulation—स्कंदन
Coagulum—स्कंद
Coal—कोयला, पत्थर का कोयला
Coaltar—अलकतरा
Coalesce—संलीन होना, सम्मिलित होना
Coalescence—सम्मिलन, संलयन
Coarse—स्थूल, मोटा, घटिया
Coast—तट
Coastal—तटीय
Coat—आवरण, लेप, विलेप
Coated—लेपित, विलेपित
Coating—लेपन, विलेपन
Coaxal, Coaxial—समाक्ष
Coaxially—समाक्षत:
Cobalt—कोबाल्ट
Cocaine—कोकेन
Coccus—गोलाणु
Coccygeal—अनुत्रिक
Coccyx—अनुत्रिक
Cochlea—कर्णावर्त्त
Cockroach—तिलचट्टा
Cocoon—कोकून, कोया
Code—संकेत, कोड
Coefficient—गुणांक
Coelenteron—अंतरगुहिका
Coeliac—उदरगुहा-
Coelom (e)—सीलोम, देहगुहा
Coelostat—तारास्थापी
Coenocytic—संकोशिकी
Coenosarc—योजकनाल
Coercive—निग्रह
Coercivity—निग्राहिता
Co-existant—सहवर्ती
Co-factor—सहखंड
Co-gradient—सहरूपांतरी
Cogwheel—दंत-चक्र
Cognate—सजात
Cohabitation—सहवास
Cohere—संसक्त होना
Coherence—संबद्धता, संसक्तता
Coherent—संवद्ध, संसक्त
Cohesion—संसंजन

Cohesive—संसजक
Coil—कुंडली
Coiled—कुंडलित
Coiling—कुंडलीकरण
Coin—सिक्का, मुद्रा
Coincide—संपाती होना
Coincidence—संपात
Coincident—संपाती
Coition (Coitus)—मैथुन
Coke—कोक
Cold—शीत, ठंडा
Coleoptile—प्रांकुर-चोल
Coleorhiza—मूलांकुर चोल
Colic—वृहदांत्र
Collaborator—सहयोगी
Collapse—निपात
Collection—संग्रह
Collective—सामूहिक
Collector—संग्राहक
Collenocyte—श्लेषी कोशिका
Collimate—संधानित करना
Collimating—समांतरकारी
Collimation—संधान, समांतरण
Collimator—संधानक, समांतरित्र
Collinear—समरेख
Collinearity—समरेखता
Collision—संघट्ट, टक्कर, संघट्टन
Colloid—कोलाइड
Colobus—कोलोवस
Colon—कोलन, वृहदंत्र
Colonist—उपनिवेशी, उपनिवेशक
Colonization—उपनिवेशन
Colony—निवह, उपनिवेश
Coloration—रंजन
Colorimeter—वर्णमापी
Colorimetric—वर्णमापी
Colorimetry—वर्णमिति
Colour—रंग, वर्ण
Coloured—रंगीन
Colouring—(*adj.*) रंजक; (*n.*) रंजन
Combinational—संयुक्त
Combined—योगिक, संयुक्त
Combining—संयोजी
Combustible—दाह्य
Combustion—दहन
Comet—धूमकेतु, पुच्छलतारा
Commate—रोमगुच्छी
Commensal—सहभोजी
Commensalism—सहभोजिता
Commensurable—सम्मेय

Commercial—व्यापारिक
Commingling—सम्मिश्रण
Commissary—अधिकारी
Commission—कमीशन, आयोग, दलाली
Commisural—परियोजी, संधायी
Commodity—पण्य
Common—साधारण, सामान्य
Communal—समुदायी, सामुदायिक, सांप्रदायिक
Communalism—सामुदायिकता, सांप्रदायिकता
Communication—संचार
Community—समुदाय
Commutate—दिक्परिवर्तन करना
Commutative—क्रम-विनिमेय
Commutator—दिक्-परिवर्तक
Compact-(*n.*) संहति; (*adj.*) संहत (*v.*) संहत करना या होना
Compaction—संहनन
Companion—सहचर
Comparative—तुलनात्मक
Comparator—तुलनित्र
Comparison—तुलना
Compass—कुतुबनुमा, दिक्सूचक, कंपास
Compasses—परकार
Compensate—क्षतिपूर्ति करना, प्रतिकार करना
Compensated—प्रतिकारित
Compensating—प्रतिकारी
Compensation—प्रतिकार, क्षतिपूर्ति
Compensator—प्रतिकारित्र
Compensatory—क्षतिपूरक, प्रतिकारी
Competency—क्षमता, सामर्थ्य
Competent—समर्थ
Competition—प्रतियोगिता
Complement—पूरक,
Complementary—पूरक
Complete—पूर्ण, संपूर्ण
Complex—सम्मिश्र, संकर, जटिल
Compliance—अनुवृत्ति
Complicated—जटिल
Component—घटक
Composite—संग्रथित, मिश्र
Composition—संघटन, संयोजन
Compound—यौगिक, मिश्र
Compounded—संयोजित
Compounding—संयोजन, संयोजक
Compressed—संपीडित
Compressibility—संपीड्यता

Compressible—संपीड्य
Compression—संपीडन
Compressive—संपीडन
Computation—परिकलन
Computational—परिकलनी
Computor—परिकलक
Concave—अवतल
Concavity—अवतलता
Concentrate—(*n.*)-सांद्र (*v.*) सांद्र करना, गाढ़ा करना, संकेन्द्रित करना
Concentration—सांद्रण, गाढ़ापन, सांद्रता
Concentrator—सांद्रक
Concentric—संकेंद्री
Concept—धारणा, संकल्पना
Conceptacle—धानी
Conception—संकल्पना
Conch—शंख
Conchate—शंखाकार
Conchoid, Conchoidal—शंखाभ
Conclusion—परिणाम, निष्कर्ष
Concolorous—समवर्नी
Concomitant—सहगामी
Concord—सुसंगति, सुश्रवता
Concordant—सुसंगत, सुस्वर -(*Geol.*) अनुस्तरी
Concrete—कंकरीट
Concretion—संग्रथन
Concretionary—संग्रथित
Concurrence—संगमन
Concurrent—संगामी
Concyclic—एकवृत्तीय
Condensation—संघनन
Condense—संघनित करना
Condensed—सघनित
Condenser—संघनित्र
Condensing—संघननकारक
Condition—प्रतिबंध, शर्त, दशा, अवस्था, परिस्थिति
Conditional—प्रतिबंधी
Conditioned—अनुकूलित, प्रतिबाधित
Conditioning—अनुकूलन
Condominium—सहशासित प्रदेश
Conductance—चालकता
Conduction—चालन
Conductive—चालनीय
Conductivity—चालकता
Conductometer—चालकतामापी
Conductor—चालक
Condyle—अस्थिकंद
Cone—शंकु, कोण
Confidence—विश्वास्यता
Configuration—विन्यास, संरूपण
Configurational—विन्यासी
Confirmation—संपुष्टि
Confirmatory—संपुष्टिकारी
Confluence—संगम
Confocal—संनाभि
Conformable—समविन्यासी
Conformal—अनुकोण
Conformity—समविन्यास
Congeal—जमना, जमाना
Congenital—जन्मजात
Conglobate—संपिंडित
Conglomerate—संगुटिका, संगुटिकाश्म
Conglomeration—संगुटीकरण
Congruence—सर्वांगसमता
Congruent—सर्वांगसम, समशेष
Conic—शांकव
Conical—शंकु-रूप, शंक्वाकार
Conicoid—शांक्वज
Conics—शांकव गणित
Conifer—शांकु वृक्ष
Coniferous—शंकुधारी
Conjoint—संयुक्त
Conjugant—संयुग्मक
Conjugate—(*adj.*) संयुग्मी; (*v.*) संयुग्मन करना
Conjugated—अनुबद्ध, संयुग्मित
Conjugating—सयुग्मन
Conjugation—संयुग्मन
Conjunction—योग, युति
Connate—सहजात
Connation—सहज संयोजन
Connect—संबद्ध करना, जोड़ना
Connected—योजित
Connecting—योजक, संयोजी
Connection—संबंधन, जोड़
Connective—योजी, संयोजी, संयोजक
Connivent—अग्रस्पर्शी
Conoid—शंकुभ
Consanguineous—समोद्भव
Consanguinity—समोद्भवता
Consecutive—क्रमागत
Consequent—(*adj.*)अनुवर्ती; (*n.*) परपद
Consequent poles—उपध्रुव
Conservation—संरक्षण
Conservative—संरक्षी
Consistence—संगति, अविरोध
Consistent—संगत, अविरोधी
Consistometer—गाढ़तामापी
Consociation—संवास
Consocies—संवासक
Consolidated—संपिंडित
Consolidation—संपिंडन
Consonance—संवाहिता
Consonant—सवाही
Consortium—सहजीवन
Constancy—स्थिरता
Constant—नियत, स्थिर, अचर, अचल, एक-समान, सतत, अविरत
Constellation—तारा-मंडल
Constituent—अवयव, घटक
Constitution—रचना, संघटन
Constitutional—संघटनात्मक, रचनात्मक
Constrained—प्रतिबंधित
Constraint—प्रतिबंध
Constricted—संकीर्णित
Constriction—संकीर्णन
Constrictor—संकीर्णक
Construct—रचना करना, निर्माण करना
Construction—रचना, निर्माण
Constructive—रचनात्मक
Consume—खपाना, उपभोग करना
Consumption—व्यय, उपभोग, खपत
Contact—संस्पर्श, संपर्क, स्पर्श
Contagious—संसर्गज
Contain—अंतर्विष्ट करना
Contaminated—संदूषित
Contamination—संदूषण, संदूष्यता
Contemporary—समकालीन
Content—अंतर्वस्तु, अंश
Contigious—समीपस्थ, संलग्न
Continent—महाद्वीप
Continental—महाद्वीपी
Continentality—महाद्वीपीयता
Contingency—आसंग
Continued—वितत
Continuity—सातत्य
Continuous—सतत, अविरत, अविच्छिन्न
Continuum—सातत्मक
Contorted—कुंचित
Contortion—कुंचन
Contour—रूपरेखा
Contract—संकुचित करना या होना
Contracted—संकुंचित

Contractile—संकुंचनशील
Contracting—संकुंची
Contraction—संकुंचन
Contra-current—प्रतिगामी
Contradiction—विरोध
Contra-gradient—प्रविरूपांतरी
Contraposed—प्रतिस्थापित
Contra-related—प्रतिसंबंधित
Contrast—विपर्यास
Contrasting—विपरीत
Contravalency—प्रति-संयोजकता
Contravariant—प्रतिचर
Contrivance—प्रयुक्ति
Control—नियंत्रण
Controller—नियंत्रक
Controlling—नियंत्रक
Convection—संवहन
Convectional—संवहनीय
Convective—संवहनी
Convector—संवहनकारक
Conventional—रूढ़
Converge—अभिसरित होना या करना
Convergence—अभिसरण
Convergent—अभिसारी
Converging—अभिसारी
Converse— विलोम, विपरीत
Conversely—विलोमत:
Conversion—रूपांतरण
Convert—रूपांतरण करना
Converter—परिवर्तक, परिवर्त्तित्र
Convex—उत्तल
Convexity—उत्तलता
Convexo-concave—उत्तलावतल
Convexo-convex—उभयोत्तल
Convex-solid angle—उत्तल ठोस कोण
Convolute, Convoluted—संवलित
Convolution—संवलन
Cool—शीतल
Cooling (*n.*);—शीतलन, (*adj.*) शीतलक
Cooperative—सहकारी
Coordinate—निर्देशांक, निर्देशी
Coordinates—निर्देशांक
Coordination—समन्वय
Cop—शिखर
Coplanar—समतलीय
Copper—तांबा, ताम्र
Copperas—हराकस, कसीस
Coppice—गुल्मवन

Copra—खोपरा, गरी
Coprodaeum—पूर्व-अवस्कर
Coprophagous—विष्ठाभोजी
Coprophagy—विष्ठाभोजिता
Copula—सेतुक
Copulation—मैथुन, संयुग्मन
Copulatory—मैथुनी, मैथुन-
Coracoid—अंसतुंड
Coral—प्रवाल, मूंगा
Coralloidal—प्रवालाभ
Corallum—प्रवाल
Core—क्रोड
Coriaceous—चर्मिल
Coriandar—धनिया
Corium—चर्म
Cork—कार्क, काग
Corm—घनकंद
Cormorant—पनकोवा
Corn—धान्य, मक्का
Cornice—कार्निस
Corniculate—शृंगी
Cornified—शृंगित
Cornu—शृंग
Cornual—शृंगी
Cornute—शृंगी
Corolla—दलपुंज
Corollary—उपप्रमेय
Corona—किरीट
Coronal—किरीटी, किरीट-, हृद्
Coronoid—चंचुभ
Corpus—पिंड
Corpuscle—कणिका
Corpuscular—कणिकामय
Corpusculum—पिंडक
Corrasion—अपघर्षण
Correct—शुद्ध, ठीक, सही
Corrected—संशोधित
Correction—संशोधन, संशुद्धि
Correlated—सहसंबंधित
Correlation—सहसंबंध
Correlogram—सहसंबंधचित्र
Correspond—संगत होना, तदनुरूपी होना
Correspondence—संगतता
Corresponding—संगत
Corrode—संक्षारित करना
Corrosion—संक्षारण
Corrosive—संक्षारक
Corrugated—नालीदार
Cortex—वल्कुट

Cortoculous—वल्कवासी
Corundum—कुरंड
Corymb—समशिख
Cosec—व्युत्क्रमज्या
Coseismal line—सहभूकंपन-रेखा
Cosmetics—अंगराग
Cosmical—ब्रह्माण्डीय
Cosmic—अंतरिक्ष
Cosmogony—ब्रह्मांडोत्पत्ति
Cosmology—ब्रह्मांडिकी
Cosmos—ब्रह्मांड
Costa—शिरा, पर्शुका
Costal—पर्शुकी
Costate—शिरायुक्त
Cost price—क्रय-मूल्य
Coterminus—सहावसानी
Cotidal—समज्वारीय
Cotton—कपास
Cotyledon—बीजपत्र
Cotyledonary—बीजपत्रीय
Cotyliform—बीजपत्राकार
Cotyloid bone—कसास्थि
Cotype—सहप्ररूप
Coulee—लावा-प्रवाह
Count—गिनती, गणना
Countable—गणनीय
Counter—गणित्र
Counterbalance—प्रतिसंतुलन
Counter-clockwise—वामावर्त
Counter-current—विपरीत धारा
Counterpoise—प्रतितोल
Counterpoised—प्रतितुलित
Counterweight—प्रतितोलकभार
Counting rate—गणन-दर
Country rock—स्थानीय शैल
Couple—बल-युग्म
Coupled—युग्मित
Coupling—युग्मन
Course—मार्ग
Courtship—अनुरंजन
Covalence—सहसंयोजकता
Covalence, Covalency—सहसंयोजकता
Covalent—सहसंयोजक
Covariance—सहप्रसरण
Covariant—सहपरिवर्त
Covariation—सहविचरण
Cover—आवरण
Covered—आवृत्त
Covering—आवरण

Coverts—देहपिच्छ
Coxa—कक्षांग
Coxite—कक्षाधार
Coxopodyte—कक्षीपादांश
Crab—केंकड़ा, कर्कट
Crack—दरार
Cracker—पटाखा
Crackle—चटचटाना
Crag—शृंग
Crane—सारस
Cranial—कपालीय
Cranidium—ऊर्ध्वकपाल
Cranium—कपाल
Crater lake—ज्वालामुखी झील
Crateriform—कटोराकार
Crawl—विसर्प
Crawling—रिंगी (*n.*) रिंगण
Cray—कूटक
Creation—सृष्टि
Creative—सर्जनात्मक
Credit—(*n.*) उधार; (*v.*) जमा करना
Creeping—विसर्पण
Creeping plant—विसर्पी लता
Crenate—कुंठदंती
Crenulated—सूक्ष्मदंती
Crescent—बालचंद्र (*adj.*) धन्वाकार, बालचंद्राकार, चापाकार
Crest—शिखा, शीर्ष, शृंग, शिखर
Crested—किरीटी
Crevasse—हिम-विदर
Crevice—विदरिका
Crib—शिखर
Cricket—झींगुर
Crimson—किरमिजी
Crinkling—कुंचन
Crispate—कुंचित
Cristate—किरीटी
Criterion—कसौटी
Critical—आलोचनात्मक, क्रान्तिक
Crocodile—मकर, नक्र
Crome—क्रोम
Crop—शस्य, फसल
Cross—संकर, संकरण, तिर्यक
Cross fertilization—परनिषेचन
Crown—शिखर, मुकुट
Crude—अपरिष्कृत, कच्चा
Crush—संदलन
Crist—पर्पटी, पपड़ी, पटल
Crustification—पपड़ी बनना
Crustified—पर्पटित
Crustose—पर्पटीमय
Cryoscope—हिमांकमापी
Cryoscopy—हिमांकमापन
Cryptic—गोपक, गुप्त
Cryptovolcanic—गूढ़ ज्वालामुखीय
Cryptozoic—तमजीवी
Crypts—प्रगुहिका
Crystal—क्रिस्टल, रवा
Crystalline—क्रिस्टलीय, रवेदार
Cube—घन
Cubic, Cubical—घन, घनाकृति, घनीय, त्रिघात
Cubit—हाथ
Cuboid—घनास्थि
Cuboidal—घनाकार
Cucumber—ककड़ी, खीरा
Cultivable—कृष्य
Cultivation—कृषि
Cultural—सांस्कृतिक
Culture—संवर्ध, संवर्धन, संस्कृति, पालन
Culvert—पुलिया
Cumin—जीरा
Cumulant—संचयी
Cumulate—संचित
Cumulative—संचयी
Cuneate, Cuneiform—फानाकार
Cupel—खर्पर
Cupellation—खर्परण
Cupola—गुंबद
Cupronickel—ताम्र-निकल
Cupule—प्यालिका
Cupuliform—प्यालिकाकार
Curator—संग्रहालय-अध्यक्ष
Cure—चिकित्सा, संसाधन
Current—धारा, प्रवाह
Curvature—वक्रता
Curve—वक्र, वक्र रेखा
Curved—वक्र
Curvilinear—वक्र रेखी
Cusp—उभयाग्र
Cuspate—अग्रवर्धी
Cuspidal—उभयाग्री
Custard apple—शरीफा
Custom—सीमा-शुल्क
Cutaneous—त्वचीय
Cutch—खदिर कत्था
Cuticle—उपत्वचा, उपचर्म
Cutis—चर्म
Cuttings—कतरन
Cwm—हिमज गह्वर
Cycle—चक्र, आवर्तन
Cyclic—चक्रीय, चक्रिक
Cyclical—चक्रीय
Cyclically—चक्रतः
Cycloid—चक्रज, चक्राभ
Cycloidal—चक्रजीय
Cyclone—चक्रवात
Cyclosis—जीव द्रव्य भ्रमण
Cylinder—बेलन, सिलिंडर.
Cylindrical—बेलनाकार
Cylindroid—बेलनाभ
Cymbiform—नौकाकार
Cyme—ससीमाक्ष
Cymose—ससीमाक्षी
Cypher—शून्य, सिफर
Cytogenetic—कोशिकानुवंशिक
Cytogenesis—कोशिकानुवंशिकी
Cytogenous—कोशिकोत्पादक
Cytological—कोशिकीय
Cytology—कोशिका-विज्ञान
Cytostome—कोशिकामुख

D

Dairy—दुग्धशाला
Dale—घाटी
Dam—बाँध
Dammed—अवरुद्ध
Damp—नम, आर्द्र
Damping—अवमंदन
Dampness—सीलन, आर्द्रता, नमी
Dark ages—तमोयुग
Dart—प्रासक
Data—दत्त, उपात्त, आँकड़े
Date—खजूर, छुहारा
Datum level—आधार तल
Daughter atom—विघटन परमाणु
Daughter Cell—संतति कोशिका
D.C.—डीसी, दिष्ट धारा
D.D.T.—डी. डी. टी.
Deactivation—निष्क्रिय करण, निष्क्रियण
Dead mine—रिक्त खान
Dead Sea—मृत सागर
Debris—मलवा
Decagon—दशभुज
Decagram—डेकाग्राम
Decant—नियारना, निस्तारण करना
Decanter—नियरनी, निस्तारित्र

Decapitation—शिरच्छेदन
Decay—क्षय
Deceleration—मंदन
Decelerometer—मंदनमापी
Decidua—पतनिका
Deciduous—पर्णपाती, पाती
Decigram—डेसिग्राम
Decile—दशमक
Decimal—दशमलव, दशमिक
Decimalize—दशमलवकरण, दशमिकीकरण
Declinate—अधोनत
Declination—दिक्पात,क्रांति, अपक्रम
Declinometer—दिक्पात मापी
Declivity—ढाल
Decollement—अपकर्तन
Decoloration—विरंजन
Decolorization—विरंजनीकरण
Decolourise—विरंजित करना या होना
Decompose—अपघटन होना
Decomposed—अपघटित
Decomposition—अपघटन, वियोजन
Decomposing—अपघटक
Decrease-(*n.*) ह्रास (*v.*)—ह्रास होना
Decreasing—ह्रासमान
Decrement—अपक्षय
Decrepitate—कड़कड़ाना
Decrepitation—कड़कड़न,कड़कड़ाहट
Decurrent—अधोवर्धी
Deduce—निगमन करना
Deducible—निगम्य
Deduction—निगमन
Deductive—निगमनिक
Deep—गंभीर
Defacto—वास्तविक
Defect—कमी, क्षति, दोष
Defective—सदोष
Defensive—सुरक्षा, प्रतिरक्षा
Defile—संकीर्ण दर्रा
Define—निश्चित करना, परिभाषित करना
Defined—निश्चित, स्पष्ट
Definite—निश्चित
Definition—परिभाषा, स्पष्टता, निश्चयन
Deflagrate—उद्दहन अपस्फीत करना, हवा निकालना
Deflation—अपवाहन, अपस्फीति
Deflect—विक्षेपित करना
Deflecting—विक्षेपक
Deflection—विक्षेप
Deflexed—अपनत
Deflocculating—अनूर्णक
Deflocculation—अनूर्णन
Defoliation—निष्पत्रण
Deforestation—वन-अपरोपण
Deformation—विरूपण, विकृति
Deformative—विरूपक, विरूप
Degeneracy—अपभ्रष्टता
Degenerate (*v.*)-अपभ्रष्ट होना, (*adj.*) अपभ्रष्ट
Degenerated—ह्रसित
Degeneration—ह्रास, अपभ्रंशन
Degradation—निम्नीकरण, निम्न-कोटीकरण
Degraded—निम्नीकृत
Degree—अंश, अंशांक, मात्रा, घात, कोटि
Dehisence—स्फुटन
Dehydrate—निर्जल करना
Dehydrated—निर्जलित, निर्जलीकृत
Dehydrating—निर्जलीकारक
Dehydration—निर्जलीकरण
Dejection cone—अवसाद शंकु
Dejure—वैध
Delayed—विलंबित
Delicate—सूक्ष्म
Deliquesce—प्रस्वेदित होना
Deliquescence—प्रस्वेदन
Deliquescent—प्रस्वेद्य, पसीजनेवाला, प्रस्वेदी
Delta—डेल्टा
Deltaic—डेल्टीय
Delthyrium—त्रिकोणी छिद्र
Deltidium—त्रिकोणिका
Deltoid—डेल्टाकार, त्रिकोणाकार
Deltoidus—अंसछदा
Demagnetise—विचुंबकित करना
Demersal—तलमज्जी
Demi-plate—अर्ध-पट्ट
Demegraphic—जनसांख्यिकीय
Demography—जनसांख्यिकी
Demonstrate—निरूपण करना, प्रमाण देना, निदर्शन करना
Demonstration—निरूपण, प्रमाण, निदर्शन
Demonstrative—निरूपणात्मक
Demulsification—विपायसीकरण
Denaturation—विकृतीकरण
Denatured—विकृतीकृत
Dendrite—द्रुमाश्म, द्रुमाकृति
Dendritic—द्रुमाकृतिक
Dendroid—वृक्षाभ
Dendron—वृक्षिका
Denizen—निवासी
Denominator—हर
Dense—घन, सघन
Density—घनत्व
Dental—दंत
Dentary—दंतकास्थि
Dentate—खंदनी
Dentide—दंतिका
Dentition—दंत-विन्यास
Denudation—अनाच्छादन
Deodorant—गंधहारक निर्गंधीकारक
Deodorisation—गंधहरण, निर्गंधीकरण
Deodorised—निर्गन्धीकृत
Deodorizer—गंधहारक, निर्गन्धीकारक
Depasture—पशुचारण, चरना
Dependent—परतंत्र, आश्रित
Depletion—अवक्षय
Depolarisation—विध्रुवण
Deposit—निक्षेप
Deposited—निक्षेपित
Deposition—निक्षेपण
Depreciation—अवमूल्यन
Depressed—अवनमित
Depression—अवनमन
Depressor—अवनमवी
Deranged—अपविन्यस्त
Derangement—अपविन्यास
Derivative—व्युत्पन्न
Derive—व्युत्पन्न करना
Derived—व्युत्पन्न
Dermal—त्वचीय, चर्मी
Dermic—चर्म
Descend—अवरोहण करना
Descending—अवरोही
Descension—अवरोहण
Descent—अवरोहण, अवरोह
Describe—वर्णन करना, खींचना, निर्माण करना
Description—वर्णन, निर्माण
Descriptive—वर्णनात्मक
Desert—मरुस्थल, मरु
Desiccation—शुष्कन, निर्जलीकरण
Desiccator—जलशोषित्र
Design (*n.*)—अभिकल्प, अभिकल्पना (*v.*) अभिकल्पना करना

Desilvering—विरजतन
Desilverisation—विरजतीकरण
Desmodent—कूटदंती
Desolation—उजाड़, निर्जनता
Desorption—विशोषण
Destitution—अभावग्रस्तता
Destruction—नाश, विनाश
Destructive—विनाशी
Deswelling—विशोथ, विशोथन
Detached—अनासक्त
Detailed—विस्तृत
Detection—पहचान, अभिज्ञान, संसूचन
Detector—संसूचक, अभिज्ञापक
Detergent—अपमार्जक
Determinant—सारणिक
Determinate—परिमित, निर्धारी
Determination—निर्धारण
Determine—निर्धारित करना
Determined—निर्धारित
Determiner—निर्धारक
Determining—निर्धारी
Detonate—विस्फोटित करना
Detonating—विस्फोट-प्रेरक
Detonator—विस्फोट-प्रेरक
Detrital—अपरदी
Detritus—अपरद
Deuteric—पश्चकालिक
Devastation—उजड़ना
Develope—व्यक्त करना, विकसित करना
Developer—व्यक्तकारी, विकासकारी
Development—विकास, व्यक्तीकरण, परिवर्धन
Deviate (*adj.*) विचल
Deviation—विचलन
Device—युक्ति
Devolution—अवक्रमण
Dew—ओस
Dextral—दक्षिणावर्त
Diabetes—मधुमेह
Diacidic—द्विआम्लिक
Diacoele—तृतीय निलय
Diad—द्विक
Diadelphous—द्विसंघी
Diagnostic—निदानसूचक
Diagonal—विकर्ण,
Diagram—आरेख
Diagrammatic—आरेखी
Dialyse—अपोहन करना
Dialysed—अपोहित
Dialyser—अपोहक
Dialysing—अपोहक
Dialysis—अपोहन
Diamagnetic—प्रतिचुंबकीय
Diamagnetism—प्रतिचुंबकत्व
Diameter—व्यास
Diametral—व्यासीय
Diametrically—व्यासत:
Diamond—हीरक, हीरा
Diaphaneity—पारदर्शिता
Diaphragm—मध्यपट, तनुपट
Diapophysis—द्विविवर्ध
Diasteme—दंतावकाश
Diaster—द्वितारकी
Diastole—अनुशिथिलन
Diastrophism—पटल-विरूपण
Diathemancy—ऊष्मा-पार्यता
Diathermanous, Diathermic—ऊष्मा-पार्य
Diathermometer—ऊष्मापार्यता मापी
Diatomic—द्विपरमाणुक
Diatreme—ज्वाला नलिका
Dibasic—द्विक्षारकी
Dichasial—युग्म-शाखिक
Dichasium—युग्मशाखन
Dichogamous—भिन्नकालपाकी
Dichogamy—भिन्नकाल पक्वता
Dichotomize—द्विभाजित करना
Dichotomous—द्विभाजी
Dichotomy—द्विभाजन
Dichroism—द्विवर्णता
Dichroscope—द्विवर्णदर्शी
Diclinous—एकलिंगी
Dicondylic—द्विकंदी
Dicotyledon, Dicolyledonous—द्विबीजपत्री
Dictyostele—जालरंभ
Dicyclic—द्विचक्रीय
Didactylous—द्विअंगुलिक
Didactyly—द्विअंगुलिता
Didynamous—द्विदीर्घी
Dielectric—परावैद्युत
Difference—अंतर
Differentiability—अवकलनीयता
Differentiable—अवकलनीय
Differential—विभेदक, भेददर्शी
Differentiate—अवकलन करना
Differentiated—अवकलित, विभेदित
Differentiation—विभेदन
Diffraction—विवर्तन
Diffuse (*v.*) विसारित करना, विकरित होना (*adj.*) विसारित, विसरित
Diffused—विसरित, विसारित
Diffusor—विसारक
Diffusible—विसरणशील
Diffusiometer—विसरणमापी, विसारमापी
Diffusion—विसरण, विसार
Deffusibility—विसरणशीलता
Digametic—द्वियुग्मकी
Digenetic—द्विपरपोषी
Digestion—पाचन
Digestive—पाचक
Digit—अंगुलि, अंगुलिपर्व, अंक, व्यास का द्वादशांक
Digitate—अंगुल्याकार
Digitigrade—पादाग्रचारी; अंगुलिचारी
Digitigradism—अंगुलिचारिता
Dihedralangle—द्वितल कोण
Dihexagonal—द्विषट्कोणीय
Dihybrid—द्विसंकर
Dilation—आयतन-प्रसार
Dilatometer—प्रसारमापी
Dilator—विस्फारिणी
Diluent—तनुकारी
Dilute (*adj.*) तनु
(*v.*) तनु करना, तनु होना
Diluted—तनुकृत
Dilution—तनुकरण
Dilutor—तनुकारी
Dimension—विस्तार, लंबाई, चौड़ाई, विमा, घात
Dimensional—विमीय
Dimer—द्वितय, द्वितयाणु
Dimerous—द्वितयी
Diminution—ह्रास
Dimorph—द्वितीय रूप
Dimorphic—द्विरूपी
Dimorphism—द्विरूपता
Dimorphous—द्विरूपी
Dimpling—प्रगर्तन
Dip—नमन, नति
Dephyodont—द्विवारदंती
Diplanetic—द्विचाली
Diplanetism—द्विचालिता
Diploid—द्विगुणित
Diploidy—द्विगुणितमा
Diplospondylous—द्विवत्त कशेरुकी
Diplospondyly—द्विवृत्त कशेरुकता
Diplospory—द्विगुणित बीजाणुता

Diploxylic—द्विदारूक
Dipole—द्विध्रुव
Direct—सरल, सीधा, ऋजु, प्रत्यक्ष, समक्ष
Directed—दिष्ट
Direction—दिशा, दिक्
Directional—दिशात्मक
Directive—दैशिक, दिशिक
Director—नियामक
Directrix—नियता
Disassociation—असाहचर्य
Disc—बिम्ब, मंडलक, चक्रिका
Discharge— विसर्जन
Discoid, Discoidal—चक्रिकाभ, चक्रिक
Discontinuity—असांतत्य, भंग
Discontinuous—असंतत
Discord, Discordance—विसंगति, विस्वर
Discordant—विसंगत, विस्वर, अननुस्तरी
Discount—बट्टा, मितीकाटा
Discoverer—शोधकर्ता, खोजकर्ता
Discovery—शोध, खोज
Discrepancy—विसंगति
Discrete—विविक्त
Discriminant—विविक्तिकर
Disease—रोग
Disharmonic—विविधरूपी
Disinfectant—रोगाणुनाशी, संक्रमण-हारी
Disinfection—संक्रमण-हरण, रोगाणु-नाशन
Disinfestation—पीड़न हरण
Disintegrating—विघटन
Disintegration—विघटन, कणीकरण
Disjunction—वियोजन
Disjunctor—वियोजक
Dislocation—स्थान-भ्रंश
Disorganise—विसंघटित होना
Dispersal—प्रकीर्णन, प्रक्षेपन
Dispersed—प्रकीर्ण, परिक्षेपित
Dispersion—परिक्षेपन, प्रकीर्णन
Dispersive—वर्ण-विक्षेपक
Displace—विस्थापित
Displacement—विस्थापन
Disposition—स्थिति, अवस्था
Disruptive—विदारी
Dissect—विच्छेदन करना
Dissected—विच्छेदित
Dissecting—विच्छेदन

Dissection—विच्छेदन
Disseminated—विकीर्ण
Dissemination—विकीर्णन
Dissepiment—अंडाशय-पट, भित्तियोजिका
Dissimilar—असमरूप, असमान
Dissipation—क्षय, विसरण
Dissipative—क्षयकारी
Dissociated—वियोजित
Dissociating—वियोजी
Dissociation—वियोजन
Dissolution—विलयन
Dissolve—घुलना
Dissolved—विघटित, घुला हुआ
Dissonance—असंवादिता
Dissonant—असंवादी
Distal—दूरस्थ
Distance—दूरी
Distichous—द्विपंक्तिक
Distil—आसवन करना
Distillate—आसुत
Distillation—आसवन
Distilled—आसवित आसुत,
Distillery—आसवनी, मद्यनिर्माणशाला
Distilling—आसवन
Distinct—भिन्न, अलग, सुस्पष्ट, सुव्यक्त
Distinction—विभेद
Distorted—विकृत
Distortion—विकृति, विरुपण
Distributary—जलवितरिका
Distributed—वितरित
Distribution—वितरण
Distributive—वितरित
Disturbance—विक्षोभ
Disturbed—विक्षुब्ध
Ditetragonal—द्विचतुष्कोणी
Diurnal— आह्निक, दैनिक
Divalent—द्विसंयोजक
Divariant—द्विचर
Divaricator—अनावरक
Diverge—अपसारित करना या होना
Divergence—अपसरण, अपसारिता
Divergent—अपसारी
Diverging—अपसारी।
Diversion—दिक्परिवर्तन
Divide—विभाजित करना, भाग देना, बाँटना।
Divided—विभाजित
Dividend—भाज्य, लाभांश
Diving cell—निमज्जन-कोष्ट

Divisibility—भाज्यता, विभाज्यता
Divisible—भाज्य, विभाज्य
Division—भाग, प्रभाग
Divisor—भाजक
Dodecagon—द्वादशभुज
Dodecahedral—द्वादशफलकी
Dodecahedron—द्वादशफलक
Dodecatomary—राशि
Doliocephal—दीर्घशिरस्क
Doliocephalic—दीर्घशिरस्क
Doliform—डोलकाकार
Doliomorphic—मुक्तघटकीय
Doliomorphism—मुक्त घटकत्व
Dolphin—सूँस
Domain—प्रभाव क्षेत्र
Dome—डोम, गुंबद
Domestic—आंतरिक, देशी
Domestication—पालतू बनाना
Dominance—प्रभाविता, प्रमुखता
Dominant—प्रभावी, प्रमुख
Dore Silver—स्वर्णयुक्त चाँदी
Dormancy—प्रसुप्ति
Dormant—प्रसुप्त
Dorsal—अपाक्ष, पृष्ठीय
Dorsifixed—पृष्ठ-लग्न
Dorsiventral—पृष्ठाधरी
Dorso-lateral—पृष्ठपार्श्वीय
Dorso-rentral—अधरापृष्ठी
Dorsum—पृष्ठ
Dose—मात्रा, खुराक
Dot—बिन्दु
Dotted—बिन्दुकित, बूंददार, छिटकी
Double—द्विगुण, युग्म, द्विक्, उभय, द्विधा, दो
Doublet—द्विक्
Down—नत
Downward—अधोमुखी
Downy—मृदुरोमिल
Drag—कर्षण
Dragnet—महाजाल
Drain—नाली, अपवाहिका
Drainage—अपवाहतंत्र
Dressing—प्रसाधन
Drit—गति
Drilling—छेद करना, वेधन, वेध
Driven—चालित
Driver—चालक
Drizzle—फुहार
Drone—पुंमधुप, नर भौंरा

Drop—बूंद, बिन्दु
Droplet—बिन्दुक, छोटा बूंद सूक्ष्म बिन्दु या बूंद
Dropper—ड्रापर, बिन्दुपाती
Drought—सूखा
Drowned—निमज्जित, मग्न, डूबा हुआ
Drug—दवा, औषध
Dry—शुष्क, सूखा, निर्जल, सूखी
Drying—सुखाना, शुष्कन, शुष्कीकरण, जल शोषण
Dual—द्वै, दोहरा
Duct—वाहिनी
Ductile—तन्य
Ductility—तन्यता
Dull—मंद, सुस्त
Duopoly—द्वयाधिकार
Durability—दीर्घस्थायित्व
Duration—अवधि
Dusk—गोधूलि, साँझ
Dust—धूल, धूलि
Duster—प्रकीर्णक, झाड़न
Dusting—प्रकीर्णन, झाड़वा
Dwarf—वामन, बौना
Dwarfism—वामनता, बौनापन
Dyad—द्वयक, द्विक
Dyadic—द्वयकीय
Dye—रंजक
Dyeing—रंजन, रँगना
Dynamic—वेग, गतिक
Dynamical—गतिकीय
Dynamically—गतिकीत:
Dynamics—गति-विज्ञान

E

Ear—बाल, कर्ण, कान
Earth—पृथ्वी, भूमि, मृत्तिका, मिट्टी
Earthquake—भूचाल, भूकंप, भूँडोल
Earthworm—केंचुआ
East—प्राची, पूर्व
Ebb—भाटा
Ebullition—क्वथन, उबाल
Eccentric—उत्केन्द्र
Eccentricity—उत्केन्द्रता
Ecesis—आस्थापन
Echinate—कंटकी
Echo—प्रतिध्वनि
Eclipse—ग्रहण
Eclipsed—ग्रहण-ग्रस्त, ग्रस्त, ग्रसा हुआ
Ecliptic—क्रांतिवृत्त
Ecological—परिस्थितिक
Ecologist—परिस्थिति-विज्ञानी
Ecology—परिस्थितिकी, परिस्थिति-विज्ञान
Economic—आर्थिक
Economical—मितव्ययी किफायती,
Ecotype—परिस्थितिक प्ररूप
Ectocyst—बाह्य या बाहरी पुटिका या पुटी
Ectocyst—बाह्य त्वचा, बाहरी चमड़ा
Ectoparasite—बाह्य परजीवी
Edaphic—मृदीय
Eddy—भँवर
Edge—कोर, किनारा
Eel—ईल, सर्पमीन
Effect—प्रभाव
Effective—प्रभावी, कार्यकारी
Efferent—अपवाही
Effervesce—बुदबुदाना
Efficiency—दक्षता
Effloresce—उत्फुल्ल या लोनी लगना
Efflorescence—उत्फुल्लन, लोनी
Efflorescent—उत्फुल्ल, लोनिया
Effluent—बहिप्रवाही, बहि:स्राव
Efflux—आयास
Effort—आयास
Effusion—नि:सरण
Effusive—नि:सृत
Egestion—बहि:क्षेपण
Egg—अंडा, अंड
Egress—मोचन
Egret—बगुला
Ejaculation—स्खलन
Ejection—निष्कासन, निकालना
Elaeometer—तेलमापी
Elaieplast—तैलद लवक
Elasmobranch—उपास्थिमीन
Elastic—प्रत्यास्थ
Elastica—प्रत्यास्थिका
Elasticity—प्रत्यास्थता
Electric—विद्युत्, बिजली
Electrical—वैद्युत
Electricity—विद्युत्
Electrification—विद्युतीकरण
Electrolysis—वैद्युत अपघटन
Electrolyte—विद्युत् अपघट्य
Electrolytic—विद्युत् अपघटनी
Electro—विद्युत्
Electro magnetism—विद्युत्-चुम्बकत्व
Electro-mechanical—विद्युत्-यांत्रिकी
Electro-meter—विद्युत्मापी
Electrometric—विद्युत्मापी
Electrometry—विद्युत्मिति
Electron—इलक्ट्रान
Electro-negative—ऋण विद्युती
Electroplate—बिजली से मुलम्मा करना
Electro-positive—धनविद्युती
Electroscope—विद्युत्दर्शी
Electrostatic—स्थिर वैद्युत,
Electrostatics—स्थिर विद्युतिकी
Electrotyping—वैद्युत, मुद्रण, बिजली छपाई
Electrovalency—वैद्युत संयोजकता
Electrovalent—वैद्युत संयोजक
Element—तत्व, मूलतत्व, मूल अवयव
Elementary—तात्विक मौलिक प्रारंभिक
Elevated—उन्नत, उत्थित
Elevation—उत्थान, उत्थापन, उन्नयन, उच्चता, ऊँचाई, उन्नतांश।
Elevator—उत्थापक
Eliminant—विलोपन फल
Eliminate—विलुप्त करना, विलोपन या गायब करना
Elimination—विलोपन
Elixir—अल अक्सीर, अमृत
Ellipse—दीर्घवृत्त
Ellipsoid—दीर्घवृतज
Elliptic—दीर्घवृत्तीय
Elliptical—दीर्घवृत्तीय
Elongate—लंबा
Elongation—दीर्घीकरण, लंबा बनाना
Eluvial—अनूढ़
Eluvium—अनूढक
Elytrum—पक्षवर्म
Emanating—प्रसर्जन
Emanation—प्रसर्जन
Embankment—तटबंध, बाँध
Embayment—लघुखाड़ी
Embedded—अंत:स्थापित
Embedding—अंत:स्थापन
Embryo—भ्रूण
Embryogeny—भ्रूणोद्भव
Embryological—भ्रूण-विज्ञानी
Embrology—भ्रूण-विज्ञान
Embryonio—भ्रूणीय प्रारंभिक
Emerald—पन्ना, मरकत, जमुर्रद
Emigrant—उत्प्रवासी
Emigration—उत्प्रवास, उत्प्रवासन
Emission—उत्सर्जन

Emissive—उत्सर्जक, उत्सर्जन
Emissivity—उत्सर्जकता
Emittance—उत्सर्जन
Emitted—उत्सर्जित
Emitter—उत्सर्जक
Empirical—आनुभाविक
Emplacement—अभिस्थापन
Employee—कर्मचारी, मुलाजिम
Employer—नियोक्ता, मालिक
Emulification—पायसीकरण
Emulsifier—पायसीकारक
Emulsify—पायस वनाना
Emulsion—पायस
Emulsoid—पायसाभ
Enamel—इनैमल करना, कलई करना
Enantiomorph—प्रतिविंव रूप
Enantiomorphic—प्रतिविंवरूपी
Enantiomorphism—प्रतिविंवरुपिता
Enantiomorphy—प्रतिविंवरुपिता
Enantio-tropic—उत्क्रम्परुपिता
Enation—उद्वर्धन, उद्वर्ध
Encampment—शीवेर वनाना, पड़ाव डालना
Enceinte—प्राकारी नगर
Encephalocele—प्रमस्तिष्कगुहा
Enclave—विदेशी
Enclosed—परिवद्ध
Enclosure—वाड़ा, अहाता
Encrustation—पपड़ी, जमना, पपड़ी, पर्पटी
Encystation—पुटी भवन
Encystment—पुटी भवन
End—सिरा, छोर, अंत
Endarch—मध्यादिदारुक
Endemic—विशेपक्षेत्री
Endemism—विशेषक्षेत्रिग
Endite—अंतःपालि
Endobiotic—जीवांतर्वासी
Endocardium—अंत-हृद्स्तर
Endocarp—अंतः फलभित्ति
Endocrine—अंतःस्रावी
Endocrinology—अंतःस्राव विज्ञान
Endocyst—अंतःपुटिका
Endoderm—अंतस्त्वचा, अंतश्चर्म
Endodermis—अंतस्त्वचा अंतश्चर्म
Endoergic—ऊर्जाशोपी
Endogen—अंतर्जात
Endogenous—अंतर्जात
Endolymph—अंतर्लसिका
Endometrium—गर्भाशय, अंतःस्तर
Endomixis—अंतःमिश्रण
Endo-parasite—अंतःपरजीवी
Endophyte—अंतःपादपी
Endoplasm—अंतःप्रद्रव्य
Endopodite—अंतपादांग
Endosarc—अंतःप्रद्रव्य
Endosiphon—अंतर्नली
Endo-Skeleton—अंत-कंकाल
Endosome—अंतःकाय
Endosomosis—अंतःपरासरण
Endosperm—भ्रूणपोष
Endosporium—वीजाणु अंतःचोल
Endosteum—अंतः अस्थिछद
Endostome—अंतःवीजाणु द्वार
Endothelium—अंतःस्तर
Endothermic—ऊष्माशोपी
Endozoic—अंतःजंतुक
Enechelon—सोपानी
Energetics—ऊर्जा-विज्ञान
Energise—ऊर्जित करना
Energization—ऊर्जायन
Energy—ऊर्जा
Enervating—शक्ति ह्रासक
Englacial—अर्तहिमानी
Engulf—परिग्रहण करना
Enlargement—विवर्धन
Enquiry—अन्वेषण, खोज, जाँच
Enrichment—समृद्धि
Ensheathing—परिच्छादक
Ensiform—खड्गाकार, खड्ग या तलवार-सा
Enteric—आंत्र
Enterocoele—आंत्र गुहा
Enteron—अंत्र, आँत
Entire—अछिन्न कोर, समग्र, समचा
Entocuneiform—अंतःकीलिका
Entoglossal—अंतःजिह्विका
Entomogenous—कीटजीवी
Entomology—कीट विज्ञान
Entomophagous—कीटाहारी
Entomophilous—कीटपरागित
Entomophily—कीट परागण
Entrance—प्रवेश
Enumeration—गणन, गिनना
Enumerator—गणनाकार
Enunciate—प्रतिज्ञापित करना
Enunciation—प्रतिज्ञापन
Envelope (*n.*) अन्वालोप, आवरण (*v.*) आवत करना
Environment—वातावरण, परिस्थिति
Eolian—वायूढ़, वायुक्त
Ephemeral—अल्पकालिक
Ephemeris—पंचांग
Epibiotic—जीवोपरवासी
Epiblast—अधिकोरक
Epiblema—मूलीय त्वचा
Epicardium—अधिहृद्स्वर
Epicentral—अधिकेन्द्री
Epicentre—अधिकेन्द्र
Epicentrum—अधिकेन्द्र
Epicoele—अनुमस्तिष्क गुहा
Epicondyle—अधि अस्थि कंद
Epicontinental—अधिमहाद्वीपीय
Epicotyl—वीजपत्रोपरिक
Epicranial—अधिकपाल
Epicranium—अधिकपाल
Epicuticula—अधित्वक
Epicycle—अधिचक्र
Epicycloid—अधिचक्रज
Epidemic—महामारी
Epiderm—वाह्यत्वचा
Epidermal—अधिचर्म
Epidermis—वाह्यत्वचा, अधिचर्म
Epigastric—अधिजठर
Epigeal—भूम्युपरिक
Epigean—भूम्युपरिक
Epigenesis—पश्चजनन
Epigenetic—पश्यजात
Epinasty—अधोकुंचन
Epineural—अधितंत्रिक
Epi-otic—अधिकर्णिक
Epipharynx—अधिग्रसनी
Epiphyllous—पारिदल लग्न
Epiphysis—अधिप्रवर्ध
Epiphyte—अधिपादप
Epipleura—अधिपार्श्वक
Epipodium—अधिपाद
Epipterygoid—अधिपंखांगिका
Epipubis—अधिजंघनास्थि
Episcope—अपारचित्रदर्शी
Episematic—अधिवोधक
Episternum—अधिउरोस्थि
Epistrophecos—अक्षक, अक्षककशेरुक
Epitheca—अधिप्रावरक
Epithelial, *Epithelium*—उ
Epithermal zone—अल्पतापीपकल मंडल
Epithet—विशेषक
Epixylous—काष्ठोपरिक
Epizoic—अधिजंतुक
Epizone—उपरिमंडल

Epoch—युग
Equal—समान, बराबर, सम, तुल्य
Equality—समता, समिका
Equate —समीकरण करना
Equation—समीकरण
Equator —विषुवत् वृत्त, निरक्ष
Equatorial—विषुवतीय, निरक्षीय, मध्यवर्ती
Equiangular—समानकोणिक
Equiconcave—समावतल
Equiconjugate—समसंयुग्मी
Equiconvex—समसमोत्तल
Equicross—सवज्रानुपाती
Equidistant—समदूरस्थ
Equigranular—वामकणिक
Equilateral—समहु
Equilibrant—संतुलक
Equilibrium—साम्यावस्था, साम्य, संतुलन
Equimolecular—सम-अणुक
Equimomental—सम-आघूर्ण
Equinoctial—विषुव
Equinox—विषुव
Equipartition—समविभाजन
Equiplanation—सपाटीकरण
Equipment—उपस्कर
Equipotential—सम-विभव
Equivalence—तुल्यता
Equivalent—(*adj.*) तुल्य तुल्यभार; (*n.*) तुल्यांक
Equivalve—सम कपाट
Era—महाकल्प, संवत्
Eradicant—उन्मूलक
Eradication—उन्मूलन
Erect—ऊर्ध्व, ऊर्ध्वशीर्षी
Erection—उद्धर्पण
Eriometer—तंतुमापी
Erosion—अपरदन
Erosive—अपरदनकारी
Erratic—अनियमित
Error—त्रुटि, भूल, गलती
Erumpent—उद्भेदी
Erupted—उद्गीर्ण
Eruption—उद्गार, उद्भेदन
Eruptive—उद्गारी
Erythrism—अतिरक्तता
Erythrocyle—लाल रुधिर कणिका
Escape—पलायन करना, बाहर निकलना
Escarpment—कगार
Escribe—वहिर्वृत्त खींचना
Essence—सार, इत्र, सत
Estimate- (*n.*)—आकलन (*v.*) आकलन करना, आँकना, कूतना
Estimated—आकलित
Estimation—आकलन
Estipulate—अननुपर्णी
Estrus—कामोन्माद, मदचक्र
Estuarine—ज्वारनदमुखी
Estuary—ज्वारनदमुख, वेला संगम
Etaerio—पुंज
Etched—निक्षारित
Etching—निक्षारण, निखारना
Ether—ईथर
Ethereal—ईथरी
Ethnic—मानव जातीय
Ethnography—मानव जातिवर्णना
Ethnology—मानव जाति विज्ञान
Ethology—जीव परिस्थितिकी
Etiolated—पांडुरित
Etiolation—पांडुरता
Eudiometry—गैस आयतन मिति
Eugenic—सुजननिक
Eugenics—सुजननिकी, सुजनन विज्ञान
Euhedral—पूर्णफलकी
Euryphagous—विविधहारी
Eustatic—सुस्थितिक
Eustatism—सुस्थितिकता
Eutectic—गुलनक्रांतिक
Euthenic—सुजीवनिक
Evacuate—रिक्त करना
Evacuated—निर्वातित, रिक्तीकृत
Evacuation—निर्वातन, रिक्तीकरण
Evaginated—वहिर्वलित
Evagination—वहिर्वलन
Evaluate—मान निकालना
Evaluation—मानांकन, मूल्यांकन
Evanescent—क्षणस्थायी, क्षणजीवी
Evaporate—वाष्पित करना, वाष्पित होना
Evaporated—वाष्पित
Evaporation—वाष्पन
Evaporative—वाष्पनिक
Evaporator—वाष्पित्र
Evaporimeter—वाष्पनमापी
Even—सम
Evenly—समविकीर्ण
Everglade—दलदल
Evergreen—सदाहरित, सदापर्णी
Eversible Sac—शर कोश
Event—घटना
Evidence—प्रमाण, साक्ष्य
Evident—प्रत्यक्ष
Evolute—केन्द्रज
Evolution—विकास
Evolutionary—विकासीय
Exact—यथातथ, यथार्थ, बिल्कुल ठीक
Exactness—यथातथ्य
Examination—परीक्षण, जांच, परीक्षा
Example—उदाहरण
Ex-centre—वहिष्केन्द्र
Excentric—उत्केन्द्र
Exchange—विनिमय
Excitation—उत्तेजन, ऊर्जन
Excite—उत्तेजित करना, ऊर्जित करना
Excited—उत्तेजित
Exciting—उत्तेजक
Exclave—वहिःक्षेत्र
Exclusion—अपवर्जन
Exconjugants—पूर्वसंयुग्मी
Excrescence—अपवृद्धि
Excreta—उत्सर्ग
Excretion—उत्सर्जन, उत्सग
Excretory— उत्सर्जन
Excurrent—वहिर्वर्धी, वहिर्वाही
Excursion—अभियान
Exercise—अभ्यास
Exfoliate—अपिशल्कित होना, अपपत्रित होना
Exfoliation—अपपत्रण
Exhalation—उच्छ्वसन
Exhalent—उच्छ्वासी, अपवाही
Exhaust (*v.*)रेचन करना, निर्वात करना, समाप्त करना (*n.*)रेचक, निर्वातक
Exhaustion—निर्वातन, रेचन, समापन
Exine—वाह्यचोल
Exit—निर्गम
Exite—वहिर्पाल
Exocarp—वाह्यफल-भित्ति
Exocoelum—वाह्य देह गुहा
Exocrine—वहिःस्रावी
Exoergic—ऊर्जाउन्मोची
Exogene—वहिर्जात
Exogenetic Exogenous—वहिर्जात
Exopodite—वहिःपादांग
Exoskeleton—वहिःकंकाल
Exosmosis—वहिःपरासरण

Exostome—वहि:वीजांडद्वार
Exothermal—ऊष्माक्षेपी, ऊष्मा-उन्मोची
Exotic—विदेशी, विदेशज, विदेशागत
Expand—प्रसार करना
Expanded—प्रसारित
Expanse—विस्तार
Expansion—प्रसार, प्रसरण
Expansivity—प्रसरणीयता
Expedition—खोज यात्रा
Experiment—प्रयोग
Experimental—प्रायोगिक, प्रयोगात्मक
Experimenter—प्रयोगकर्ता
Expiration—नि:श्वसन, साँस छोड़ना
Explanation—व्याख्या, स्पष्टीकरण
Explicit—स्पष्ट
Explode—विस्फोट करना या होना
Exploding—विस्फोटी
Exploitation—शोषण, उपयोग
Exploration—अन्वेषण, खोज
Explore—अन्वेषण करना, खोज करना
Explorer—अन्वेषक
Explosion—विस्फोटन, विस्फोट
Explosive—विस्फोटक
Exponent—घातांक
Exponential—चरघातांकी
Export—निर्यात
Exporter—निर्यातक
Exposure—अनावरण, प्रभावन
Expression—व्यंजक
Expulsion—वहिष्करण, वहिष्कार
Exsert—उद्वर्ध
Exserted—नि:सृत, वाहर निकला हुआ
Exsolution—अपविलयन
Ex-stipulate—अननुपर्णी
Extended—विस्तृत
Extensibility—वितान्यता
Extensible—वितान्य
Extension—विस्तार
Extensive—विस्तीर्ण
Extensor—प्रसारिणी
Extent—विस्तार, सीमा
Exterior—व्राह्य, वहिर्भाग
External—वाह्य
Externally—व्राह्यत:
Extinct—विलुप्त
Extinction—विलोप
Extract-(*n.*) निचोड़, निष्कर्ष, सार (*v.*) सार निकालना, निष्कर्षण करना
Extraction—निष्कर्षण, सार, निचोड़
Extraordinary—असामान्य, असाधारण
Extrapolation—वहिर्वेशन
Extreme—(*adj.*) चरम; (*n.*) पराकाष्ठा
Extremity—अग्रांडा, छोर, सिरा
Extrinsic—वाह्य
Extrose—वहिर्मुखी
Extrude—वहिर्वेधन करना
Extruded—वहिर्वेधित
Extrusion—वहिर्वेधन
Extrusive—वहिर्वेधी
Exudate-(*n.*) परेसान, नि:स्राव (*v.*) नि:स्रवण होना, रिसना
Exudation—रिसन, रिसाव, प्रस्वेदन, निस्रावण
Exude-(*n.*)रिसाव, नि:स्राव (*v.*) रिसना, नि:स्रवण होना
Exuviae—निर्मोक
Exuvial—निर्मोकी
Eye—नेत्र, आँख
Eyepiece—नेत्रिका

F

Fabella—शिम्बिका
Fabrication—रचना
Face—फलक, पार्श्व, पहल, चेहरा, आनन
-Value—अंकित मूल्य
Facet—फलाकिका, फलक
Faceted—फलाकित
Facial—आननी
Facies—संलक्षणी
Facing—लेप
Fact—तथ्य
Factor—घटक, उपादान, कारक
Factorial—क्रमगुणित
Factorisation—गुणन-खंडन
Factorise—गुणनखंड करना
Facultative—विकल्पी
Faeces—विष्ठा
Faint—मंद, हलका
Faleo—वंजर
Falcate—दात्राकार
Falciform—हँसियाकार
Fallacy—हेत्वाभास
Fallow—परती, पालेहर,
False—आभासी, मिथ्या, कूट,
Family—कुल, कुटंव, परिवार
Fang—विषदंत
Farming—कृषि, खेती
Fasciated—संपट्टित
Fasciation—संपट्टन
Fascicle—पूलिका, गुच्छ
Fasciculate—पूलिकित
Fastigiate—कूर्चशाखित
Fat—वसा, चर्वी
Fatty—वसीय, चर्वीवाला
Fault—दोष
Faulted—भ्रंशित
Faulting—भ्रंशन
Faulty—सदोष
Fauna—जंतु या प्राणी समूह
Favoid—मधुकोशाभ
Feather—पिच्छ, पर
Feature—लक्षण
Febricide—ज्वरनाशी
Fecundity—वहुप्रजता, जननशक्ति
Federation—राजसंघ
Feeble—क्षीण, तनु
Feed—भरण
Femoral—ऊरु
Fenestra (Fenester)—गवाक्ष
Fennel—सौंफ
Ferment-(*n.*) किण्व; (*v.*) किण्वन करना, किण्वित करना
Fermentation—किण्वन
Fermented—किण्वित
Ferro—लोह
Ferro-alloy—लोह मिश्रधातु
Ferruginous—लोहमय
Fertility—उर्वरता
Fertilization—निषेचन
Fertilized—निषेचित
Fertilizer—उर्वरक
Fertilizing—उर्वरकारी, उर्वरताकारी
Fibre—तंतु, सूत्र, रेशा
Fibril—तंतुक
Fibrous—रेशेदार
Fibula—वहिर्जंघिका
Fictitious—कल्पित
Fiducial—विश्वास्य
Field—क्षेत्र, खेत, स्थान
Figure—अंक
Filament—तंतु
File-(*n.*) रेती; (*v.*) रेतना
Filial—संतानीय, पुत्रोचित
Filiform—तंतुरूप

Filings—रेतन
Filler—पूरक
Film—परत
Filter—(*n.*) पुनिस्पंदक, छन्ना; (*v.*) छानना, निःस्पंदन करना
Filtrate—निस्पंद
Filtration—निस्पंदन, छनाई
Fimbria—झालर
Fimbriate—झालरदार
Final—अंतिम
Fine—परिष्कृत, पतला, सूक्ष्म, महीन, बारीक
Finished—परिष्कृत
Finishing—परिष्कृति
Finite—परिमित, सांत
Fireproof—अग्निसह, अदाह्य
Firestone—चकमक
Fireworks—आतिशबाजी
Firth—तंग खाड़ी
Fish—मछली, मीन, मत्स्य
Fishery—मत्स्य उद्योग, मत्स्य क्षेत्र
Fissile—विदल्य
Fissility—विदल्यता
Fission—विखंडन
Fissionable—विखंडनीय
Fissure—विदर, दरार
Fistular—नलीदार
Fitting—आसंजन
Fixation—यौगिकीकरण
Fixative—स्थायीकार
Fixed—यौगिकीकृत
Fixer—स्थायीकर
Flaccid—श्लथ, ढीला
Flagellate, Flagellated—कशाभिक
Flake—पत्रक
Flaky—पत्रकी
Flame—ज्वाला
Flank—पार्श्व
Flaser—रेखित
Flash—दमक, क्षणदीप्ति, आकस्मिक प्रवाह
Flat—सपाट, समतल, चपटा
Fleet—बेड़ा
Fleshy—मांसल, गूदेदार
Flexibility—नम्यता, लचक, लचीलापन
Flexible—नम्य, लचीला, लचकदार
Flexuous—टेढ़ामेढ़ा
Flexure—आनमन
Flicker—स्फुरण
Flint—चकमक

Float (*n.*)—प्लव
Floatation—प्लवन
Flocculation—ऊर्णन
Floccule—ऊर्णिका
Flocculent—ऊर्णिक
Flocculise—ऊर्णित करना
Flocculus—ऊर्णिका
Flora—पेड़-पौधे, वनस्पति-समूह
Floret—पुष्पक
Floriferous—पुष्पित
Floristic—पादपी
Floscelle—पुष्पाभिका
Flour—चूर्ण
Flow—प्रवाह
Flower—पुष्प, फूल
Fluctuation—घट-बढ़, उतार-चढ़ाव
Fluid—तरल
Fluidimeter—तरलतामापी
Fluidity—तरलता
Fluke—पर्णाभकृमि
Fluorescence—प्रतिदीप्ति
Fluorescent—प्रतिदीप्तिशील
Fluvial, Fluviatile—नदीय
Fluvioglacial—सरिता हिमी
Fluviraption—नदीय अपवहन
Flux—अभिवाह
Focal—नाभीय, सनाभि
Focus—नाभि
Foetal—गर्भ-
Foetus—गर्भ
Fog—कुहरा
Foil—पत्री, पर्णिका
Fold—वलन
Folded—वलित
Folder—पुटक
Foliaceous—पर्णिल, पर्णाकार, शल्कित
Foliate—पर्णिल
Foliated—शल्कित
Foliation—पत्रण, शल्कन
Folicolous—पर्णवासी, पत्रवासी
Foliose—पर्णिल
Follicle—गर्त, कूप, पुटक
Forage—चारा
Foramen, Foramina—रंध्र
Forbidden—वर्जित
Force—बल
Forebrain—अग्र-मस्तिष्क
Forecast—पूर्वानुमान
Foregut, Foreintestine—अग्रांत्र
Foreshore—तटाग्र

Form—रूप, आकृति
Formation—निर्माण, रचना, समावान, शैल-समूह
Formula—सूत्र
Fortification—किलेबंदी
Fortress—दुर्ग
Fossa—खात
Fossil—फॉसिल, जीवाश्म
Fossula—खातिका
Fovea—खात
Fraction—भिन्न, प्रभाज
Fractional—भिन्नात्मक, प्रभाजी. प्रभाजित
Fractionate—प्रभाजन करना
Fractionation—प्रभाजन
Fractionator—प्रभाजक
Fragile—भंगुर
Fragment—खंड, टुकड़ा
Fragmental—खंडमय
Fragmentation—खंडन
Frame—सांचा
Free—अलग्न, मुक्त
Freeze—(*v.*) जमना, जमाना
Freezing point—हिमांक
Frequency—आवृत्ति, बारंबारता
Frescoe—भित्तिचित्र
Fresh water—अलवण जल
Friable—सुचूर्ण्य, चूर्णशील
Friction—घर्षण
Frictional—घर्षणी
Frontier—सीमांत क्षेत्र, सीमा
Frontoclypeus—अग्रमुखपालि
Frontogenesis—वाताग्र-उत्पत्ति
Frost—तुषार, पाला
Froth—झाग
Frothy—झागदार
Fructification—फलन
Fructose—फलशर्करा
Frugivorous—फलभक्षी
Frustum—छिन्नक
Fruticulous—क्षुपवासी
Fruticose—क्षुपिल
Fugaceous—आशुपाती
Fulcra—आलंब समूह
Fulcrum—आलंब
Fumarole—धूममुख
Fume—धूम
Fumigant—धूमक, धूमद
Fumigate—धूमित करना
Fumigation—धूमन

Fuming—सधूम, धूमायमान
Function—कार्य, फलन
Functional—क्रियात्मक, कर्मोपलक्षी, फलनिक
Fundamental—मूल, मौलिक
Fungicide—कवकनाशी
Fungus (Fungi)—कवक
Funicle, Funiculus—बीजांड-वृंत
Funnel—कीप
Furnace—भट्टी
Fuse—(*v*). गलना, गलाना, मिलना, मिलाना, संगलित होना या करना, फ्यूज होना
Fusible—गलनीय
Fusiform—तकुरूप, तकुआनुमा
Fusion—गलन, संगलन, संलयन, संयोजन, संयुक्ति

G

Galactic—गांगेय
Galactometer—दुग्धमापी, दूधमापी
Galaxy—आकाशगंगा
Gale—झंझा
Gall—पिटिका
Gall bladder—पित्ताशय
Gallon—गैलन
Galvanise—जस्ता चढ़ाना
Galvanised—जस्तेदार
Galvanometer—धारामापी
Galvanoscope—धारादर्शी
Gametic—युग्मकी
Gametocyte—युग्मक जनक
Gametogenesis—युग्मकजनन
Gametophyte—युग्मकोद्भिद
Gamopetalous—संयुक्तदली
Gamophyllous—संयुक्त परिदली
Gamosepalous—संयुक्त बाह्यदली
Ganglion—गुच्छिका
Gangue—आधात्री
Gap—दर्रा, विदर, अंतराल
Gaping—विस्फारण
Garlic—लहसुन, लशुन
Gas—गैस
Gaseous—गसीय
Gasification—गैसीकरण
Gasify—गैसीभूत होना या करना
Gasolin—पैट्रोल
Gasometer—गैसमापी
Gastral—जठरीय
Gastric—जठरीय, आमाशयी
Gastrocutaneous pore—जठर-त्वचारंध्र
Gastrodermis—जठर-चर्म
Gastrointestinal—जठरांत्र
Gastropore—जठर-नाल
Gauge—प्रमापी, गेज
Gauze—जाली
Geanticline—भूअपनति
Gelatine—जिलेटिन
Gelatinous—जिलेटिनी, श्लेषी
Geneological—वंश-
Genera—वंश
General—व्यापक, सामान्य
Generate—जनन करना
Generating—जनक
Generation—पीढ़ी, उत्पादन, जनन
Generator—जनक, जनित्र
Genesis—उत्पत्ति
Genetic—आनुवंशिक
Genetics—आनुवंशिक विज्ञान, आनुवंशिकी
Geniculate—जानुनत
Genital—जननिक, जननांगी
Genitalia,Genitals—जननेन्द्रिय
Genotype—समजीनी
Genu—जानुका
Genus—वंश
Geoanticline—भूअपनति
Geobiont—भूमिवासी
Geobiotic—भूजीवीय
Geocarpic—भूमिफलनी
Geocentric—भूकेन्द्रिक, भूकेन्द्रीय
Geochemist—भूरसायनज्ञ
Geochemistry—भूरसायन
Geocratic—अधिकस्थली
Geodesic—अल्पांतरी
Geodesy—भूगणित
Geodetic—भूगणितीय
Geographical—भौगोलिक
Geography—भूगोल
Geological—भू-वैज्ञानिक
Geologist—भूविज्ञानी
Geology—भूविज्ञान, भौमिकी
Geomagnetic—भूचुम्बकीय
Geomagnetism—भूचुम्बकत्व
Geometrical—ज्यामितीय
Geometry—ज्यामिति, रेखागणित
Geomorphic—भू-आकृतिक
Geomorphology—भू-आकृति विज्ञान
Geophilous—भूमिरागी
Geophysical—भूभौतिकीय
Geophysicist—भूभौतिकीविद्
Geophysics—भूभौतिकी
Geophyte—भूगर्भोद्भिद
Geostrophic—भूविक्षेपी
Geosyncline—भू-अभिनति
Geotaxis—गुरुत्वीय अनुचलन
Geotectonic—भूविवर्तनिक
Geotropic—गुरुत्वानुवर्ती
Geotropism, Geotropy—गुरुत्वानुवर्तन
Geotype—भू-प्ररूप
Germ—रोगाणु
Germicide—रोगाणुनाशी
Germinal—भ्रूणीय, जननिक
Germination—अंकुरण
Gestation—गर्भावधि
Geyser—उष्णोत्स
Ghost signal—कपट संकेत
Giant—वृहत्, महा
Gibbous—अर्धाधिक
Gigantism—अतिकायता
Gild—सोना चढ़ाना
Ginger—अदरक
Glacial—हिमनदीय
Glaciated—हिमनदित
Glaciation—हिमनदन
Glacier—हिमनद, हिमानी
Gladius—शृंगीपत्र
Gland—ग्रंथि
Glandular—ग्रंथिल, ग्रंथिमय
Glans—मुंड
Glare—चौंध
Glass—काँच, काच
Glassy—काचाभ, काच-सदृश
Glaucescent—नीलाभ
Glaucous—नीलाभ
Glaze (*n.*)—लुक, चमक (*v.*) ग्लेज करना, काचित करना, लुक चढ़ाना
Glazed—चमकदार, काचित
Glide—विसर्पण
Gliding—(*adj.*) विसर्पी; (*n.*) विसर्पण
Glisette—विसर्पिका
Globe—गोला, गोलक
Globoid—गोलाभ
Globular—गोलाकार
Globule—गोलिका
Glochid, Glochidium—अंकुशलोम
Glochidiate—अंकुशलोमी

Glomerate—पुंजित
Glomerule—गुच्छ, केशिका-गुच्छ
Glossophyal—जिह्वाकंठिकी
Glossy—चमकदार
Glottis—घाँटी
Glow—दीप्ति
Glucose—ग्लूकोज
Glue—सरेस
Glume—तुष
Glutinous—लसदार
Golden number—स्वर्णांक
Gonocyst—बहुजननपुटी
Gonoduct—युग्मक-वाहिनी
Gonoecium—जननपुटी
Good conductor—सुचालक
Gorge—महाखड्ड
Gouge—मृद्लेप
Graben—द्रोणिका
Grade—(*n.*) श्रेणी, दर्जा, कोटि, क्रम; (*v.*) कोटि निर्धारण करना
Graded—प्रवणित, क्रमिक, श्रेणीकृत
Gradient—प्रवणता
Graduated—अंशांकित
Graduation—अंशांकन, समानयन
Graft—(*n.*) कलम; (*v.*) कलम रोपना
Grafting—रोपण
Grain—कण, दाना, अनाज
Grand mean—महा-माध्य
Grand total—सर्वयोग
Granular—दानेदार, कणिकामय, रवेदार
Granularity—कणिकामयता, कणिकता
Granulated—दानेदार, कणिकायित, कणीभूत
Granulation—कणिकायन, कणीभवन
Granule—कणिका, कनी
Granulitic—कणिकीय
Granulose—दानेदार, कणिकामय
Graph—ग्राफ, आलेख, रेखाचित्र
Graphic, Graphical—आलेखी
Grate—जालिका
Graticule—रेखाजाल, सूत्रजाल
Gravel—बजरी
Gravimeter—गुरुत्वमापी
Gravitation—गुरुत्वाकर्षण, गुरुत्व
Gravitational—गुरुत्वीय
Gravity—गुरुत्व
Grazing angle—पृष्ठसर्पीकोण
Grease—चिकनाई, स्नेह
Great Bear—सप्तर्षि
Gregarious—यूथी
Gregariousness—यूथिता
Grey—धूसर
Gritty—कणमय
Gross—सकल, कुल
Ground—स्थल, भूमि
Groundshrew—छछूँदर
Group—वर्ग, समूह
Grouped—समूहित
Grouping—समूहन
Growth—वृद्धि
Guard—कवच, रक्षक
Guide line—निर्देशक रेखा
Guiding—निर्देशक
Gullet—ग्रसिका
Gully—अवनालिका
Gunpowder—बारूद
Gust—निर्घात, झोंका
Gustatory—रससंवेदी
Gut—आहारनली
Guttation—बिन्दुस्राव
Gynaeceum—जायांग
Gynandromorph—स्त्रीपुंरूप
Gynandromorphism—स्त्रीपुंरूपता
Gynandrophore—पुंजायांगधर
Gynandrous—पुंजायांगी
Gyno-basic—जायांगनाभिक
Gynophore—जायांगधर
Gyration—परिभ्रमण
Gyrodynamics—परिभ्रमणगतिकी
Gyromagnetism—घूर्ण-चुंबकत्व
Gyroscope, Gyrostat—घूर्णाक्षस्थापी

H

Habit—प्रकृति, स्वभाव
Habitat—आवास
Habitation—वासस्थान
Hackly—बंधुर
Hade—उन्नमन
Haemocoel—रुधिर-गुहिका
Haemoflagellate—रुधिरकशाभी प्राणी
Hail—करका, ओला
Hailstone—ओला
Hairy—रोयेंदार, रोमिल
Half-breed—प्रजाति-संकर
Hallux—पादांगुष्ठ
Halmyrolysis—समुद्री लोहचयन
Halo—परिवेष, प्रभामंडल
Halobios—समुद्री जीवसमूह
Halobiotic—समुद्रवासी
Halter—संतोलक अंग
Hamate—अंकुशिका
Hamtioid—अंकुशाभ
Hamlet—पल्ली
Handicraft—हस्तशिल्प
Hanging—अवलंबी, निलंबी
Haphazard—यदृच्छ
Haploid—अगुणित
Haplostele—बेलनरंभ
Hapteron—स्थापनांग
Haptotropic—स्पर्शानुवर्ती
Haptotropism—स्पर्शानुवर्तन
Harbour—पोताश्रय
Hardened—दृढ़ीभूत, कठोरीभूत
Hardening—दृढ़ीभवन, कठोरीभवन, दृढ़ीकरण, कठोरीकरण
Hardness—कठोरता, दृढ़ता, कड़ापन
Hardrime—कठोर तुहिन
Harmonic—संनादी, हरात्मक
Harmony—सहस्वरता, सुस्वरता
Harsh—रूक्ष
Harvest—सस्य, फसल
Harvesting—सस्य-संग्रहण, मत्स्य-संग्रहण
Hastate—भालाकार, भालाभ, कुंताभ
Haustorium—चूषकांग
Hazard—संकट
Haze—धुंध
Head—मुंडक, शीर्ष, सिर
Headland—अंतरीप
Headlight—अग्रदीप
Headward—अभिशीर्ष
Heat—ऊष्मा
Heater—तापक
Heathland—अजोत भूमि
Heating—तापन
Heavy—भारी, घोर, सघन
Heliacal—सहसूर्य
Helical—कुंडलिनी
Helicoid—कुंडलिनीरूप, घोंघाकार, सर्पिलज
Heliocentric—सूर्य केंद्रिय
Heliographic—सूर्यनिर्देशीय
Heliometer—सूर्यबिम्बमापी
Heliophyte—आतपोद्भिद्
Helioscope—सूर्यदर्शी, सौर दूरबीन
Heliostat—सूर्यस्थिरदर्शी
Heliotropic—सूर्यानुवर्ती
Heliotropism—सूर्यानुवर्तन
Helix—कुंडलिनी

Hellenes—यूनानी, ग्रीक
Hellenism—ग्रीकवाद
Hellubraum—रज्जुलावा
Hemicrystalline—अर्धरवादार
Hemicyclic—अर्धचक्रिक
Hemihedral—अर्धफलकीय
Hemihedrism—अर्धफलकता
Hemihedron—अर्धफलक
Hemimixis—अर्धमिश्रण
Hemimorphic—अर्धाकृति
Hemisphere—गोलार्ध
Hemispherical—अर्धगोल
Hemp—भाँग, सन
Hepatic—यकृती
Heptagon—सप्तभुज
Herb, Herbage—शाक, बूटी
Herbaceous—शाकीय, अकाष्ठिल
Herbarium—वनस्पति-संग्रहालय
Herbicide—शाकनाशी
Herbicolous—शाकवासी
Herbivore, Herbivorous—शाकाहारी, शाकभक्षी
Hereditary—आनुवंशिक
Heredity—आनुवंशिकता
Heritability—वंशागतित्व
Heritable—वंशागत
Hermaphrodite, Hermaphroditic—उभयलिंगी
Hermaphroditism—उभयलिंगता
Heron—वक, वगुला
Herpolehode—तल-लुंठज
Hetero—विषम
Heterocyclic—विषमचक्रीय
Heterodont—विषमदंती
Heterodyne—संकरण
Heteroecious—भिन्नाश्रयी
Heteroecism—भिन्नाश्रयिता
Heterogamete—विषमयुग्मक
Heterogamous—विषमयुग्मकी, विविधपुष्पी
Heterogamy—विषमयुग्मन, विविधपुष्पता
Heterogeneity—विषमांगता
Heterogeneous—विषमांग, विषमांगी, विषमजातीय, विजातीय,
Heterogenetic—विषमजातीय, विजातीय
Heteromorph—विषमरूप
Heteromorphic—विषमरूपी
Heteromorphism—विषमरूपता
Heteropolar—विषमध्रुवी
Heteropoly—विषम-बहुलक
Heteropolymerisation—विषम बहुलकीकरण
Heteroscedasticity—विषमविचालिता
Heterosis—संकरओज
Heterosporus—विषमबीजाणु
Heterospory—विषमबीजाणुता
Heterostatic—विषमविभव
Heterostyly—विषमवर्तिकात्व
Heterotrophic—परपोषित
Heterozygosis—विषमयुग्मजता
Heterozygote—विषमयुग्मज
Heterozygous—विषमयुग्मजी
Hexagon—षड्भुज
Hexagonal—षट्कोणीय, चतुरक्ष
Hexahedron—षट्फलक
Hexamerous—षट्तयी
Hierarchy—पदानुक्रम
High—उच्च
Higher—उच्चतर
Highland—उच्चभूमि
Highway—महामार्ग, राजमार्ग
Hill—पहाड़ी
Hilum—नाभिका
Hind—पश्च
Hinge—कब्जा
Hinterland—पश्चभूमि
Hip—श्रोणि
Hippopotamus—दरियाई घोड़ा
Hirsute—दीर्घलोमी
Hirtellous—किंचित् दीर्घलोमी
Hispid—दृढ़लोमी
Histogenesis—ऊतक-जनन
Histogram—आयतचित्र
Histological—ऊतिकीय
Histology—ऊतक-विज्ञान, ऊतिकी
Histolysis—ऊतकलय
Historigram—कालिकचित्र
Hoarfrost—धवल तुषार, पाला
Hoary—श्वेत रोमिल
Hodograph—वेगालेख
Holdfast—स्थापनांग
Holding—जोत
Holoblastic—पूर्णभंजी
Holobrach—पूर्णक्लोम
Holocrine—पूर्णस्रावी
Hologamete—पूर्णयुग्मक
Hologamous—पूर्णयुग्मक
Hologamy—पूर्णयुग्मन
Holohedral—पूर्णफलकीय
Holohyaline—पूर्णकाचिक
Holometabolic—पूर्णरूपांतरित
Holophytic—पादपसम
Holostomatous—पूर्णपरिमुखी
Homicide—नरघाती
Homo-centric—संकेंद्री
Homocercal—समपालिपुच्छ
Homoclinal—एकदिग्नत
Homocline—एकनतिक
Homodont—समदंती
Homoeomorphic—समरूपी
Homogamous—समपुष्पी, समकालपाकी, समयुग्मकी
Homogamy—समपुष्पता, समकालपक्वता, समयुग्मन
Homogeneity—समांगता, समघातता
Homogeneous—समांग, समांगी, सजातीय, समघात
Homographic—वज्रानुपाती
Homography—वज्रानुपातिता
Homologous—समजात, सजातीय
Homologue—सजाती, समजात
Homology—समजातता, सजातीयता
Homomorphic—समरूपी
Homomorphism—समरूपता
Homoplasty—अभिसरण
Homopolar—समध्रुवी
Homoscedastic—समविचाली
Homoscedasticity—समविचालिता
Homoseismal—सहभूकंप
Homosporous—समबीजाणु
Homospory—समबीजाणुता
Homotaxis—समक्रम, समस्तरक्रम
Homothetic—समस्थिति
Homozygosis—समयुग्मजता
Homozygote—समयुग्मज
Homozygous—समयुग्मजी
Honestone—शाणाश्म
Hook—अंकुश
Horizon—क्षितिज
Horizontal—क्षैतिज
Hornbill—धनेश
Horny scutes—शृंगी शल्क
Horograph—सीमालेखी
Horse-power—अश्व-शक्ति
Horticulture—उद्यानकृषि
Host—परपोशी, आतिथेय
Hot—तप्त, गरम
Hourglass—रेतघड़ी

Illuminating—प्रदीपक
Illumination—प्रदीप्ति
Illusion—भ्रम
Illusory—आभासी
Illustration—उदाहरण, दृष्टांत
Image—प्रतिबिम्ब
Imaginary—कल्पित, काल्पनिक
Imago—पूर्णकीट
IImbibe—अंत:शोषण करना
Imbibition—अंत:शोषण
Imbibitional—अंत:शोषित
Imbricate—कोरछादी, खपरैल
Imitation—(*adj.*) कृत्रिम, नकली
Imitative—अनुकारी
Immersion—निमज्जन
Immigrant—आप्रवासी
Immigration—आप्रवासन, आप्रवास
Immiscible—अमिश्रणीय
Immobile—निश्चल, अचल
Immortality—अविनाशिता
Immune—असंक्राम्य, प्रतिरक्षित
Immunity—असंक्राम्यता, प्रतिरक्षा
Immunization—प्रतिरक्षीकरण, असंक्रमीकरण
Impact—संघट्ट, टक्कर
Impalpable—स्पर्शगोचर
Imparipinnate—विषम-पक्षाकार
Impenetrability—अवेध्यता
Imperceptible—अप्रत्यक्ष, अगोचर
Imperfect—अपूर्ण
Imperforate—अछिद्री
Impermeable—अपारगम्य
Impervious—अप्रवेश्य
Impinge—टकराना
Implantation—आरोपण
IImplanted—रोपित
Immplement—औजार
Implicit—अस्पष्ट
Impregnate—संसिक्त या संसेचित करना
Impregnated—संसिक्त, संसेचित, व्याप्त
Impregnation गर्भाधान, संसेचन
Impression,—mprint—छाप, चिह्न
Improbable—अप्रायिक
Improper—(*Math.*) विषम
Improved—उन्नत,संशोधित,सुधरा हुआ
Impulse—आवेग
Impulsive—आवेगी
Inaccessible—अगम्य

Inaccurate—अयथार्थ
Inactivation—निष्क्रियण
Inactive—निष्क्रिय
Inanimate—निर्जीव, अचेतन
Inaudible—अश्रव्य
Inbreak—अंतर्भंग
Inbred—अंत:प्रजात
Inbreeding—अंत:प्रजनन
Incandescence—तापदीप्ति
Incandescent—तापदीप्त
Incentre—अंत:केन्द्र
Incidence—आपतन
Incident—आपतित
Incinerate—भस्म करना
Incineration—भस्मीकरण
Incipient—प्रारंभी
Inncircle—अंतर्वृत्त
Incised—अध:कर्तित
Incisiform—कृंतकरूपी
Incision—कटाव, चीरा
Incisive—कृंतकी
Incisor—कृंतक
Inclination—झुकाव, आनति
Inclined—आनत, झुका हुआ
Included—अंतर्गत, अंतर्विष्ट
Inclusion—अंतवश, अंतर्वेशन
Income—आय
Incoming—प्रवेशी
Incommensurable—असम्मेय
Incompetent—असमर्थ
Incomplete—अपूर्ण, असंपूर्ण
Incompressible—असंपीड्य
Incongruent—असर्वांगसम
Inconsistent—असंगत, विरोधी
Incorporated—समाविष्ट
Incorporation—समावेशन
Incorrect—अशुद्ध, गलत
Increase—वृद्धि
Increasing—वर्द्धमान
Incrustation—पपड़ी
Incubation—ऊष्मायन, उद्‌भवन
Incubator—ऊष्मायित्र
Incumbent—उपाश्रयी
Incurrent—अंतर्वाही
Indehiscent—अस्फुटनशील
Indefinite—अनिश्चित
Indentation—दंतुरता
Indented—दंतुरित
Indenting—दंतुरण
Independent—स्वतंत्र

Indestructibility—अविनाशिता
Inderterminancy—अनिर्धार्यता
Indeterminate—अपरिमित, अनिर्धारित, अनिर्धार्य
Index—घातांक, सूचक
Indicator—सूचक
Indicatrix—द्योतिका
Indicial—घातांकी
Indifferent—उदासीन
Indigenous—देशज
Indigo—नील
Indirect—परोक्ष, अप्रत्यक्ष
Indistinguishable—अप्रभेद्य
Individual—(*adj.*) व्यक्तिगत, व्यष्टि; (*n.*) व्यक्ति, व्यष्टि
Individuality—व्यक्तित्व, व्यष्टित्व
Indivisible—अविभाज्य
Indraft—अंत:प्रवेशी
Induced—प्रेरित
Inductance—प्रेरकत्व
Induction—प्रेरण
Inductive—प्रेरणिक
Inductor—प्रेरक
Indurated—दृढ़ीभूत, कठोरीभूत
Induration—दृढ़ीकरण, कठोरीकरण, दृढ़ीभवन, कठोरीभवन
Industrial—औद्योगिक
Industrialisation—औद्योगीकरण
Industrialised—औद्योगीकृत
Industry—उद्योग
Ineffecrtive—अप्रभावी
Inelastic—अप्रत्यास्थ
Inequality—असमता, असमिका
Inequigranular—असमकणिक
Inert—अक्रिय, जड़
Inertia—जड़त्व
Inertial—जड़त्वीय
Inexhaustible—अक्षय
Inextensible—अवितान्य
Infanticide—शिशुहत्या
Infection—संक्रमण
Infectous, Infective—संक्रामक
Infenrece—अनुमिति, अनुमान
Inferior—अवर, अधोवर्ती, निम्न
Infertile—अनुर्वर
Infested—ग्रस्त
Infilling—आपूर्णन
Infinite—अनंत, अपरिमित
Infinitesimal—अनंतसूक्ष्म, अत्यणु
Infinity—अनंत, अनंती

Inflammable—ज्वलनशील
Inflated—स्फीत, फूला हुआ
Inflation—स्फीति
Inflected, Inflexed—अंतर्नत
Inflexion—नति-परिवर्तन
Inflorescence—पुष्पक्रम
Inflow, Influx—अंतर्वाह
Infrangible—अभंगुर
Infrasonic—अवश्रव्य
Infrasonics—अवश्राविकी
Infundibular—कीपाकार
Infundibuliform—कीपाकार
Infundibulum—कीप, कीपक
Inglstion—अंतर्ग्रहण
Ingot—सिल, सिल्ली
Inguinal—वंक्षण
Inhalation—निश्वसन, अंतःश्वसन्
Inhalent—अंतर्वाही
Inherent—जन्मजात
Inheritance—वंशागति
Inherited—वंशागत
Inhibition—संदमन, निरोध
Inhibitor—निरोधक, संदमक
Inhibitory—निरोधी
Initial—आदि, आरंभिक, प्रारंभिक
Injected—अंतःक्षिप्त
Injection—अंतःक्षेपण
Inland—अंतःस्थलीय, अंतर्देशी
Inlet—प्रवेश-द्वार, अंतर्गम, निवेशिका
Inner—आंतर, भीतरी, आभ्यंतर, आंतरिक
Inoculation—टीका
Inoperculate—ढक्कनहीन, प्रच्छदहीन
Inorganic—(*Chem.*) अकार्बनिक; (*Biol.*)—अजैव
Input—(*n.*) निवेश; (*adj.*) निविष्ट, निवेशी
Insect—कीट
Insectivorous—कीटाहारी
Insecurity—असुरक्षा
Insemination—वीर्य-सेचन
Insequent—अक्रमवर्ती
Inserted—निविष्ट, आलग्न
Insertion—निवेशन
Insignificant—नगण्य, उपेक्षणीय
Insolation—आतपन, सूर्यातप
Insolubility—अविलेयता
Insoluble—अविलेय
Inspection—निरीक्षण
Inspiration—निःश्वसन

Instability—अस्थायित्व
Instantaneous—तात्क्षणिक
Instinct—सहज वृत्ति, नैसर्गिक वृत्ति
Instrument—औजार, यंत्र
Insular—द्वीपीय, द्वीपवासी
Insulated—रोधी
Insulation—रोधन, विद्युत्‌रोधन, ऊष्मारोधन
Insulator—रोधी
Integer—पूर्णसंख्या, पूर्णांक
Integrability—समकलनीयता
Integrable—समकलनीय
Integral—समाकल
Integrand—समाकल्प
Integrate—समाकलन करना
Integrated—समाकलित
Integration—समाकलन
Integument—अध्यावरण
Integumental, Integumentary—अध्यावरणी
Intense—तीव्र
Intensity—तीव्रता
Intensive—गहन
Interaction—अन्योन्य या पारस्परिक क्रिया
Interambulacral—अंतरावीथी
Inter-articular—अंतरासंधि
Inter-artrial—अंतरा-अलिंद
Inter-atomic—अंतरापरमाणुक
Interbreeding—संकरण
Interchange—विनिमय
Intercommunication—अन्योन्य-संचार
Intercourse—परस्पर-व्यवहार
Interdependence—अन्योन्याश्रय
Interfoliar—अंतरापर्णी
Intergrowth—अंतर्वृद्धि
Interior—(*n.*) अभ्यंतर, अंतरंग
Intermediary—मध्यस्थ
Intermediate—माध्यमिक, मध्यवर्ती, माध्य
Intermigration—अन्योन्य-प्रवसन
Internal—आंतर, आंतरिक, अभ्यंतर
International—अंतर्राष्ट्रीय
Internode—पर्व, पोरी
Interpenetration—अंतर्वेधन
Interplantation—अंतरारोपण
Inter-regional—अंतःप्रदेशीय
Inter-relationship—परस्पर संबंध
Intersecting—प्रतिच्छेदी

Intersection—प्रतिच्छेद, प्रतिच्छेदन
Interspace—अंतराल
Interstice—अंतराल, अंतराकाश
Interval—अंतराल, अंतर
Intervisibility—परस्पर-दृश्यता
Intervisible—परस्पर-दृश्य
Intestinal—आंत्रिक, आंत्र
Intestine—आंत, आंत्र
Intimate—घनिष्ठ
Intra—अंतः, अंतर
Intrinsic—निज, नैज, आंतर
Intromittent—प्रवेशी
Introrse—अंतर्मुख
Intrusion—अंतर्वेध, अंतर्वेधन
Intrusive—अंतर्वेधी
Inundation—आप्लाव, आप्लावन
Invaginated—अंतर्वलित
Invagination—अंतर्वलन
Invariable—अचर, अपरिवर्ती
Invariants—शून्यचर, निश्चर
Invention—आविष्कार, ईजाद
Inventor—आविष्कारक, ईजादकर्ता
Inverse—प्रतिलोम, प्रतीप, व्युत्क्रम
Inversion—प्रतिलोमन, प्रतीपन
Inversive—प्रतिलोमी
Invertebrate—अकशेरुकी, अ-पृष्ठवंशी
Inverted—प्रतिलोमित, [illegible]
Investigation—अन्वेषण
Investigator—अन्वेषक
Investment—निवेश
Invigorating—शक्तिवर्धक
Invisibility—अदृश्यता
Invisible—अदृश्य
Invoice—बीजक
Involuntary—अनैच्छिक
Involution—अंतर्वलन
Iodine—आयोडीन
Ion—आयन
Ionic—आयनिक, आयनी
Ionisation—आयनन
Iridescence—रंगदीप्ति
Iridium—इरीडियम
Iron—लोहा, लौह
Irradiation—किरणन
Irreducible—[illegible]
Irregular—अनियमित
Irresolvable—[illegible], [illegible], अविभेदनीय
Irreversible—[illegible]

Irritant—उत्तेजक
Islet—उपद्वीप
Isobar—समदाब-रेखा
Isobaric—समदाबी
Isochronism—समकालत्व
Isoclinal—समनत
Isogamous—समयग्मकी
Isogamy—समयुग्मन
Isolate—विलग करना
Isolated—वियुक्त
Isolation—वियोजन, विलगन
Isologous—समजातीय
Isomeric, Isomerous—समावयवी
Isomorphous—समाकृतिक
Isostasy—समस्थिति
Isostatic—समस्थितिक
Isothermal—समतापी
Iteration—पुनरावृत्ति

J

Jaculator—उत्क्षेपक
Jarovisation—वसंतीकरण
Jerk—झटका
Jewelled—रत्नित
Joint—संधि
Jointed—संधित
Junction—संधि
Jupiter—बृहस्पति, गुरु
Justifiable—तर्कसंगत
Justification—तर्क-संगति
Juxtaposition—सन्निधि, सान्निध्य

K

Kangaroo—कंगारू
Karyology—केन्द्रक-विज्ञान
Katabolism—अपचय
Katazone—निम्नमंडल
Keel—नौतल
Kernel—गरी, अष्टि
Kidney—वृक्क
Kiln—भट्ठा
Kinematograph—चलचित्रदर्शी
Kinesis—गतिक्रम
Kinetic—गतिक, गतिज
Kinetics—चलगति-विज्ञान, चलगतिकी
Kinship—बंधुता
Kinsmen—निकट-संबंधी, ज्ञाति
Knob—घुंडी
Knot—गाँठ, ग्रंथि

L

Labial—ओष्ठ, ओष्ठीय
Labiate—ओष्ठी
Laboratory—प्रयोगशाला
Lac—लाख, लाक्षा
Laccate—चमकीला
Laciniate—विदीर्ण
Lactometer—दुग्धमापी
Lactose—दुग्ध-शर्करा
Laevorotation—वामावर्तन
Lag—पश्चता
Lake—झील, सरोवर
Lamellar—स्तरित, स्तरमय, पटलित
Lamelliform—पटलिकारूप
Lamina—स्तरिका, पटल
Laminar—स्तरीय
Laminated—स्तरित, पटलित
Lanate—लोमश, बालदार
Lanceolate—भालाकार
Landscape—दृश्यभूमि
Lanuginous—रोमश
Lapis lazuli—लाजवर्द
Larva Larval—डिंभक,
Larynx—कंठ
Latent—गुप्त
Lateral—पार्श्व, पार्श्विक, पार्श्वीय
Lathe—खराद
Latitude—अक्षांश
Lattice—जालक
Law—नियम, सिद्धांत, विधि, कानून
Lax—विरल
Laxative—रेचक, दस्तावर
Layer—परत, स्तर
Leading—अग्रग, प्रधान
Leaflet—पत्रक, पर्णक
Leafsheath—पर्णच्छद
Leafstalk—पर्णकवृंत
Leakage—च्यवन, क्षरण
Least—न्यूनतम, अल्पतम, लघुतम
Leech—जोंक
Legacy—रिक्थ
Legume—शिंब, फली
Leguminous—शिंबी, फलीदार
Lesion—क्षत
Lethal—घातक
Levee—तटबंध
Level—समतल, क्षैतिज
Lever—उत्तोलक
Libra—तुला
Ligament—स्नायु
Lightning—तड़ित्, बिजली
Ligulate—जीभिकाकार
Limestone—चूनापत्थर
Limitation—सीमाबंधन, सीमा
Limnetic—सरोवरी
Lineage—वंश-परंपरा
Linear—रेखीय, रैखिक, रेखाकार
Lineate—रेखित
Liner—जहाज
Lining—अस्तर
Link—कड़ी, शृंखला, बंध
Linkage—सहलग्नता
Linseed—अलसी
Liquefaction—द्रवण, द्रावण
Liquid—द्रव
Lithification—अश्मीभवन
Lithography—अश्ममुद्रण
Lithology—अश्म-विज्ञान
Lithophyte—अश्मोद्भिद
Lithosphere—स्थलमंडल
Livelihood—जीविका
Liver—यकृत्, जिगर
Livestock—पशुधन
Lizard—गोधिका, छिपकली
Load—बोझ, भार
Loadstar—ध्रुवतारा
Loadstone—चुंबक
Loam—दुमट
Local—स्थानीय
Localization—स्थानीकरण, स्थान-निर्धारण
Location—स्थान, अवस्थिति
Locomotion—चलन, गमन
Locomotive—रेल का इंजन
Locule—कोष्ठक
Loculus—कोष्ठक
Locus—बिंदुपथ, रेखापथ
Locust—टिड्डी
Lodestar—ध्रुवतारा
Lodestone—चुंबक पत्थर
Logarithm—लघुगणक
Logical—तर्क-संगत
Longevity—आयु-काल, दीर्घ आयु
Longitude—रेखांश, देशांतर
Longitudinal—देशांतरीय
Loose—अबद्ध, अदृढ़
Lowland—निम्न भूमि
Lowlying—निम्न
Lowest—निम्नतम

Lubricant—स्नेहक
Lubrication—स्नेहन
Lukewarm—कुनकुना, गुनगुना, अल्पोष्ण
Lumber—कटि, कमर
Luminance—ज्योतिर्मयता
Luminescence—संदीप्ति
Luminosity—ज्योति
Luminous—दीप्त, प्रदीपी
Lunar—चांद्र
Lunation—चांद्र मास
Lung—फुफ्फुस, फेफड़ा
Lustre—द्युति, चमक
Lustrous—द्युतिमान, चमकीला
Lymph—लसीका
Lymphatic—लसीका-संबंधी

M

Machine—यंत्र, कल, मशीन
Machinery—यंत्रावली
Macro—दीर्घ, गुरु
Macula—धब्बा
Maculose—धब्बेदार
Madder—मंजिष्ठ
Magnet—चुंबक
Magnetic—चुंबकीय
Magnetisation—चुंबकन
Magnetism—चुंबकत्व
Magnetometer—चुंबकत्वमापी
Magnetoscope—चुंबकत्वदर्शी
Magnification—आवर्धन
Magnifier—आवर्धक
Magnitude—परिमाण
Main—मुख्य, प्रमुख
Maintenance—पोषण
Major—दीर्घ, गुरु, मुख्य
Male—नर, पुं-
Malleable—आघातवर्ध्य
Malnutrition—कुपोषण
Maltose—यवशर्करा
Mammal—स्तनधारी, स्तनी, स्तनपायी
Mammary—स्तन
Mankind—मानवजाति
Manual skill—हस्त कौशल
Manufacture—औद्योगिक निर्माण
Manufacturer—निर्माता
Mapping—मानचित्रण, भूमापन
Marble—संगमरमर
Margin—सीमा, तट, कोर, उपांत
Marginal—सीमांत, उपांतस्थ, उपांत
Marine—समुद्री
Maritime—समुद्रवर्ती, समुद्रतटीय, अनुसमुद्री
Mark—अंक, चिह्न, निशान
Marked—अंकित
Marrow—मज्जा
Marsh—कच्छ
Marsupium—शिशुधानी
Mass—द्रव्यमान, संहति
Massive—स्थूल, संपुंजित
Mastication—चर्वण
Material—पदार्थ, सामग्री, वस्तु, द्रव्य
Maternal—मातृक
Mathematical—गणितीय
Mathematics—गणित
Mating—संगम
Matter—द्रव्य, पदार्थ
Maturation—परिपक्वन
Mature—परिपक्व, प्रौढ़
Maturity—परिपक्वता, प्रौढ़ता
Maximum—महत्तम, उच्चतम, अधिकतम
Mean—माध्य, औसत
Meander—विसर्प
Means—मध्यपद
Measure—माप
Measurement—माप, मापन नाप, तौल
Mechanical—यांत्रिक, यंत्र-संबंधी
Mechanics—यंत्र-विज्ञान, यांत्रिकी
Mechanism—यांत्रिकत्व, यंत्रावली
Medial—मध्यस्थ, मध्यवर्ती, मध्य
Median—मध्य, मध्यस्थ
Medium (*adj.*) मध्यम; (*n.*) माध्यम
Mega—स्थूल, स्पष्ट, गुरु
Melanism—अतिकृष्णता
Melody—लय, स्वरानुक्रम
Melt—गलना, पिघलना
Melting point—गलनांक
Membrane—झिल्ली, झिल्लिका, कला
Menagerie—प्राणिशाला
Menstruation—ऋतुस्राव, रजोधर्म
Mental—मानसिक
Merchantman—सौदागर, व्यापारी
Mercuration—पारद-निवेशन
Mercuric—पारदिक
Mercury—बुध ग्रह, पारद, पारा
Meridian—याम्योत्तर
Meridional—रेखांशिक
Meshwork—जाल
Mesothorax—मध्यवक्ष
Metabolic—उपापचयी
Metabolism—उपापचय
Metal—धातु
Metalled road—पक्की सड़क
Metallic—धात्विक, धातु
Metallization—धात्विकीकरण
Metallurgy—धातुकर्म
Metamorphism—कायांतरण
Metamorphosis—कायांतरण
Meta-throrax—पश्च-वक्ष
Meteor—उल्का
Meteorite—उल्कापिंड
Meteorologist—मौसम-विज्ञ
Meteorology—मौसम-विज्ञान
Method—रीति, विधि
Methodology—विधि-तंत्र
Metre—मीटर
Metropolis—महानगर
Metropolitan—महानगरीय
Mica—अभ्रक
Micaceous—अभ्रकी
Micro—सूक्ष्म, लघु-
Microscope—सूक्ष्मदर्शी
Microzon—सूक्ष्मप्राणी
Midbrain—मध्यमस्तिष्क
Migration—प्रवास
Mild—मंद, मृदु
Middew—फफूंदी
Military—सैनिक
Milky—दूधिया
Milky way—आकाश गंगा
Mill—चक्की, मिल, कारखाना
Mimetic—अनुहारी
Mimicry—अनुहरण
Mine—खान, खदान
Mineral—खनिज
Mineralization—खनिजन
Mineralogy—खनिज-विज्ञान
Miniature—लघु रूप, लघु
Minimum—न्यूनतम, अल्पतम, लघुतम
Minor—लघु, गौण
Mirage—मरीचिका
Mirror—दर्पण
Miscibility—मिश्रणीयता
Miscible—मिश्रणीय
Mist—कुहासा
Mixed—मिश्रित
Mixture—मिश्रण
Mobile—गतिशील, [illegible]

Mobility—गतिशीलता
Mode—विधि, रीति, प्रणाली
Model—नमूना, प्रतिरूप
Moderate—साधारण, मंद
Modicum—किंचित्
Modification—रूपांतर, रूपांतरण परिवर्तन
Modified—रूपांतरित, परिवर्तित
Modifying—रूपांतरक
Moist—नम, आर्द्र, भीगा
Moisture—आर्द्रता, नमी
Molasses—शीरा
Molecular—आणविक
Molecule—अणु
Moment—आघूर्ण
Momental—आघूर्णी
Momentum—संवेग
Moniliform—मालाकार
Mono—एक, एकल
Monopoly—एकाधिकार
Monotropy—एकरूपता
Monsoon—मानसून
Moonstone—चंद्रकांतमणि
Moorland—क्षावर भूमि
Morphological—आकृतिक
Morphology—आकृति-विज्ञान
Mortality—मृत्यु-संख्या, मृत्युदर, मर्त्यता
Moth—शलभ
Motile—गतिशील, चर
Motion—गति
Motion picture—चल-चित्र
Motor—प्रेरक
Movement—गति, आंदोलन, संचलन
Mucus—श्लेष्मा
Multiple (*adj.*) गुणित, बहुगुण, वहु, बहुत (*n.*) गुणज, अपवर्त्य
Multiplicand—गुण्य
Multiplication—गुणन
Multiplicity—बहुकल्प
Multiplier—गुणक
Muscle—पेशी
Muscular—पेशीय
Musical—संगीत, संगीतिक
Mutual—पारस्परिक, अन्योन्य
Mutualism—सहोपकारिता
Myco—कवक
Myopia—निकट-दृष्टि

N

Nadir—अधोबिंदु
Nasal—नासा, नासीय
Nascent—नवजात
Natality—जन्म-दर
National—राष्ट्रीय
Nationality—राष्ट्रीयता
Native—प्राकृत, प्राकृतिक, मूल निवासी
Natural—प्राकृत, प्राकृतिक, स्वाभाविक
Naturalist—प्रकृति-विज्ञानी
Nature—प्रकृति, निसर्ग
Nautical—नाविक, समुद्री
Navel—नाभि
Navigable—नाव्य
Navigation—नौ-संचालन
Neaptide—लघुतम ज्वार
Nebula—नीहारिका
Necrosis—अस्थिक्षय
Nectar—मकरंद
Nectary—मकरंदकोप
Negative—ऋण, ऋणात्मक
Negligible—उपेक्षणीय
Nerve—तंत्रिका
Nervous—तंत्रिकीय
Network—जाल
Neural—तंत्रिकीय
Neuration—शिरा-विन्यास
Neutral—उदासीन, तटस्थ
Neutralization—उदासीनीकरण, तटस्थीकरण
Neutrality—उदासीनता, तटस्थता
Nipple—स्तनाग्र, चूचुक
Nitre—शोरा
Nocturnal—रात्रिचर, नैश
Nodule—ग्रंथिका
Nomad—चलवासी, खानाबदोश
Nomadic—यायावर, चलवासी
Nomadism—यायावरता, चलवासिता
Nonadaptive—अननुकूलनी
Non-conductor—अचालक
Non-contractile—अकुंचनशील
Non-metallic—अधात्विक
Non-poisonous—विषहीन, निर्विष
Non-resistant—अप्रतिरोधक
Norm—मानक
Normal—प्रसामान्य, प्राकृत, मानक सामान्य, साधारण
Normality—प्रसामान्यता
Normative—मानकी
Notation—संकेतन, अंकन, अंकन-पद्धति
Nuclear—केंद्रक, केंद्रकीय, नाभिकीय
Nucleus—केंद्रक
Null—शून्य
Number—संख्या
Numeral (*n.*) संख्यांक; (*adj.*) संख्यात्मक
Numerator—अंश
Numerical—संख्यात्मक
Nutrient—पोषक
Nutriment—पोषक आहार
Nutrition—पोषण
Nutritive—पोषक

O

Oasis—नखलिस्तान, मरूद्यान
Object—वस्तु, पिंड
Objective—वस्तुनिष्ठ
Oblique—तिर्यक, तिरछा
Obliquity—तिर्यकता, तिरछापन
Oblong—आयतरूप, दीर्घायत
Observation—प्रेक्षण
Observatory—वेधशाला
Observer—प्रेक्षक
Obsolescent—लुप्तप्राय
Obsolete—लुप्त
Obstacle—अवरोध
Obtuse—कुंठाग्र
Occipital—अनुकपाल
Occult—गूढ़
Occupance—अधिष्ठान
Occupation—व्यवसाय
Occupational—व्यावसायिक
Oceanic—महासागरी
Oceanography—समुद्र-विज्ञान
Ochre—गैरिक
Octagon—अष्टभुज
Octahedral—अष्टफलकीय
Octahedron—अष्टफलक
Octave—अष्टक
Octopod—अष्टपाद
Octopus—अष्टभुज
Ocular—चाक्षुप
Odd—विषम
Odour—गंध
Oestrum—कामोन्माद
Offshoot—प्रशाखा
Oil—तैल, तेल
Ointment—मरहम
Olfactory—घ्राण
Olive—जैतून
Omnibus—बस
Omnivorous—सर्वाहारी
Ooze—रिसना

Oozing—स्पंदन
Opal—दूधिया पत्थर
Opacity—अपारदर्शिता, अपार्यता
Opaque—अपारदर्शी, अपार्य
Open—खुला, विकृत
Opening—मुख
Operation—प्रचालन, संक्रिया, चीर-फाड़, शल्य-क्रिया
Operative—क्रियात्मक, क्रियाकारी
Operator—प्रचालक
Opium—अफीम, अहिफेन
Opposing—विरोधी
Opposite—सम्मुख, विपरीत
Optic—दृक्, प्रकाशिक
Optical—प्रकाशीय, प्रकाशिक
Optics—प्रकाशिकी, प्रकाश-विज्ञान
Optimum—अनुकूलतम, इष्टतम
Oval—मुखी, मौखिक, मुख
Orb—खगोलीय गोला या बिंब
Orbit—अक्षा
Orbital—अक्षक
Order—क्रम, कोटि
Ordered—क्रमित
Ore—अयस्क
Organ—अंग
Organic—कार्बनिक, जैव
Organisation—संगठन
Orifice—मुख, रंध्र, द्वार
Origin—उद्गम, उद्भव, उत्पत्ति
Original—प्रारंभिक, मूल, मौलिक
Ornamentation—अलंकार, अलंकरण
Orographic—पर्वती
Orography—पर्वत-विज्ञान
Orpiment—हरताल
Oscillating—दोलायमान
Oscillation—दोलन
Osteology—अस्थिविज्ञान
Ostrich—शुतुरमुर्ग,
Outlet—निर्गम, निकास
Outline—रूपरेखा
Output—निर्गम, निर्गत, उत्पादन
Outskirt—बहिर्भाग, सीमांत
Ova—अंडाणु
Ovarian—अंडाशय, अंडाशयी
Ovary—अंडाशय
Oven—आँवा, भट्टी
Over-cooling—अतिशीतन
Overgrowth—अतिवृद्धि, अधिवृद्धि
Overload—अतिभार
Overloaded—अतिभारित
Overseas—समुद्रपार
Overtone—अधिस्वरता
Oviparous—अंडज, अंडप्रजक
Ovule—बीजांड
Ovum—डिम्ब
Oxygen—आक्सीजन
Oyster—सूक्ति, सीप

P

Pack animal—भारवाही या लद्दू पशु
Paint—प्रलेप
Pair—युग्म, युगल
Pairing—युग्मन
Palaeontology—जीवाश्म-विज्ञान
Palatal—तालु, तालव्य
Palate—तालु, अधरिका
Pallid—पांडु
Palm (*Bot.*) ताल, ताड़ (*Zool.*) हथेली, करतल
Palpable—स्पर्श्य
Pancreas—अग्न्याशय
Pancreatic—अग्न्याशयी
Pangamy—यदृच्छा-संगमन
Panicle—पुष्प-गुच्छ
Parabola—परवलय
Parabolic—परवलयिक
Parachute—अवतरण-छत्र
Paradox—विरोधाभास
Parallel—समांतर
Parallelism—समांतरता
Parallelogram—समांतर-चतुर्भुज
Parasite—परजीवी
Parasitic—परजीविता
Parasitism—परजीविता
Parasitology—परजीवी-विज्ञान
Parchment—चर्म-पत्र
Parent—जनक, मूल
Parental—जनकीय, पैत्रिक
Parenthesis—कोष्ठक, बंधनी
Parietal—भित्तीय
Parity—समता, जातीयता
Part—भाग, अंश
Partial—आंशिक, खंड
Particle—कण, तिनका
Particular—विशेष, विशिष्ट
Parting—विसंधि, विभाजन
Partition—विभाजन, वितरण
Partner—सहभागी, साझेदार
Partnership—सहभागिता, साझा
Partridge—तीतर
Parturition—प्रसव
Passive—निष्क्रिय
Patch—चकती
Path—पथ
Pathogen—रोगजनक
Pathogenic—रोगजनक
Pathogenetic—रोगजनक
Pathogenous—रोगजनक
Pathological—रोग-विज्ञान संबंधी
Pathology—रोग-विज्ञान
Patrimony—पैतृक धन या संपत्ति
Pattern—प्रतिरूप, ढाँचा, चित्र, आकृति, प्रतिमान
Peacock—मोर, मयूर
Peak—शिखर
Pear—नाशपाती
Pearl—मुक्ता, मोती
Pearly—मौक्तिक, मोतिया
Pedal—पदिक
Pedestal—पीठिका
Pedicle—पुष्पवृंत
Peduncle—वृंतक
Pelvic—श्रोणीय
Pelvis—श्रोणि, बास्ते
Pendulum—लोलक
Penetrating—वेधी, अंतर्वेधी
Penetrant—वेधी
Penetration—वेधन, प्रवेश
Pentagon—पंचभुज
Pentagonal—पंचभुजीय
Percent—प्रतिशत
Percentage—प्रतिशतता
Perceptibility—अवगम्यता
Perception—अवगम
Percolating—अंतःस्रावी
Percolation—अंतःस्रवण
Percussion—आघात
Perennial—बहुवर्षी, चिरस्थायी
Perfect—पूर्ण, परिपूर्ण, आदर्श, यथातथ
Perforate—छिद्री
Perforated—सछिद्र, छिद्रित
Perforation—छिद्र, छिद्रण
Pericardiac—हृदयावरणी
Pericardia—हृदयावरणी
Pericardium—हृदयावरण
Perimeter—परिमाप
Period—अवधि, काल
Periodic—आवर्ती
Periodical—आवर्ती

Periodicity—आवर्तिता
Peripheral—परिधीय
Periphery—परिधि
Permanent—स्थायी, चिरस्थायी
Permeability—पारगम्यता, चुंबकशीलता
Permeable—पारगम्य
Permissible—अनुमेय
Perpendicular—लंब
Perpendicularity—लंबता
Perpetual—शाश्वत, सतत
Personal—व्यक्तिगत
Perspective—संदर्श
Pervious—प्रवेश्य
Pest—नाशक जीव, नाशक रोग
Petal—दल, पँखुड़ी
Petiole—वृंत, पर्ण-वृंत
Petrel—समुद्रकाक
Petrified—अश्मीभूत
Petrifaction—अश्मीभवन
Petrography—शैलवर्णना
Petrology—शैल-विज्ञान
Petrologist—शैल-वेत्ता
Phalanx—अंगुलास्थि
Pharmaceutical—औषधीय
Pharmacy—औषधशाला, औषध-निर्माण-विज्ञान
Phase—कला, प्रावस्था
Phono—ध्वनि
Photo—प्रकाश
Physical—भौतिक, प्राकृतिक
Physicist—भौतिक-विज्ञानी
Physics—भौतिकी
Physiognomy—रूप
Physiography—भू-आकृति-विज्ञान
Physiology—शरीर-क्रिया-विज्ञान
Physique—शरीर-गठन
Phytophagous—पादपभोजी,पदापभक्षी
Pictorial—चित्रमय
Piercing—वेधन
Pig iron—कच्चा लोहा
Pigment—वर्णक
Pigmentation—वर्णकता
Pillar—स्तंभ
Pine—चीड
Pink—गुलाबी
Pinnacle—शिखरिका
Pipe—नल, नाल, नली, नलिका
Pisciculture—मत्स्य-पालन
Pistil—स्त्री-केसर
Pith—मज्जा
Pituitary—पीयष
Pivot—धूराग्र, कीलक
Pivotal—धूराग्रीय
Plain—मैदान, सपाट
Plan—नक्शा, आयोजना
Plane—तल, समतल
Planet—ग्रह
Planetary—ग्रहीय
Planetoid—सूक्ष्मग्रह
Plant—पादप, पौधा, वनस्पतिः, संयंत्र
Plasma—जीवद्रव्य
Plastic—सुघट्य
Plasticity—सुघट्यता
Plate—पट्टिका, पट
Plateau—पठार
Plating—पट्टन, विद्युत्-लेपन
Pleur—फुफ्फुसावरण
Pliability—आनम्यता
Pliable—आनम्य
Plumb—साहुल
Plus—धन
Pocket—कोशिका
Pod—फली, शिंब
Point—विंदु, अंक
Points—संकेतक, सूचक
Poisoning—विषाक्तन
Poisonous—विषाक्त
Polar—ध्रुवीय
Polarisation—ध्रुवण
Polarised—ध्रुवित
Polarity—ध्रुवता
Pole—ध्रुव
Polestar—ध्रुवतारा
Polish—पालिश
Political—राजनीतिक
Pollen—पराग
Pollination—परागण
Pollution—प्रदूषण
Poly—वहु
Polyandrous—वहुपतिका
Polyandry—वहुपतित्व
Polygon—वहुभुज
Polygonal—बहुभुजी
Polygonial—वहुभुजी
Population—जनसंख्या
Pore—रंध्र, छिद्र
Porosity—सरंध्रता
Porous—सरंध्र, सरंध्री
Portal—प्रवेश द्वार
Portrait—रूपचित्र
Position—स्थिति, स्थल, स्थान
Positive—धनात्मक, धन, सकारात्मक
Possibilism—संभाव्यतावाद
Possibility—संभाव्यता
Possible—संभव, संभाव्य
Posterior—पश्च
Posture—आसन, संस्थिति
Potency—शक्ति
Pouch—कोष्ठ
Power—सामर्थ्य, क्षमता, शक्ति
Practical—प्रयोगात्मक, प्रायोगिक, व्यावहारिक
Precious—वहुमूल्य
Precipice—खड़ी चट्टान
Precise—परिशुद्धता, परिशुद्धि
Precursor—पूर्वगामी
Prediction—प्रागुक्ति
Pre-existing—पूर्ववर्ती
Preferential—वरणात्मक
Prehistoric—प्रागैतिहासिक
Preliminary—प्रारंभिक
Preservation—परिरक्षण
Preservative—परिरक्षक
Pressure—दाव
Prevention—निरोध
Preventive—निरोधी, निरोधक
Price—मूल्य, भाव
Primary—आद्य, प्रथम, प्राथमिक, मुख्य, प्रधान, मूल
Prime—अभाज्य, प्रधान
Primitive—आदिम, आद्य, आदि
Primordial—आद्य,आदिकालिक,मौलिक
Principal (*adj.*) मुख्य; (*n.*) मूलधन
Principle—नियम
Priority—अग्रता
Probability—प्रायिकता
Probable—प्रायिक
Problem—प्रश्न, समस्या, निर्मेय
Proboscis—शुंड, शुंडिका
Procedure—प्रक्रिया
Process—प्रक्रम
Product—उत्पादन, गुणनफल
Production—उत्पादन
Productive—उत्पादक
Productivity—उत्पादकता
Progenitor—प्रजनक
Progeny—संतति
Progress—प्रगति
Progressive—प्रगामी, वर्धमान
Project—प्रायोजना

Projectile—प्रक्षेप्य
Projection—प्रक्षेप, प्रक्षेपण
Projective—प्रक्षेपीय
Proletariat—श्रमजीवी
Proof—प्रमाण, उपपत्ति
Propagation—प्रवर्धन
Property—गुण, गुणधर्म, संपत्ति
Proportion—समानुपात, अनुपात, भाग
Proportional—समानुपाती, अनुपातिक
Proposition—साध्य
Prostrate—शयान
Protectant—रक्षक
Protecting—रक्षी
Protection—रक्षण
Protective—रक्षी, संरक्षक, रक्षण
Protoplasm—जीवद्रव्य
Prototype—आदिप्ररूप
Protuberance—उद्वर्ध
Proximal—समीपस्थ, निकटस्थ
Proximity—सामीप्य
Pseudo-form—छद्म रूप, आभासी रूप
Psychology—मनोविज्ञान
Pubescent—रोमिल
Pull—कर्षण
Pulley—घिरनी, चरखी
Pulmonary—फुफ्फुसी
Pulp—मज्जा, गूदा, लुगदी
Pulsance—स्पंदता
Pulsating—स्पंदमान
Pulsation—स्पंदन
Pulse—स्पंद, नाड़ी
Pulverisation—पेषण, पीसना, चूर्णन
Pungent—तीखा
Pupil—तारा, पुतली, कनीनिका
Pure—शुद्ध
Purgative—रेचक
Purification—शोधन, निर्मलीकरण, स्वच्छीकरण
Purified—शोधित
Purify—शोधन करना
Purity—शुद्धता
Purple—नील-लोहित, बैंगनी
Pustular—स्फोट पूर्ण
Pustule—स्फोट
Putrefaction—पूयन, सड़ान
Putrefy—सड़ना, पूयित होना
Putrescent—पूतिमान
Pygmy—वामन, बौना
Pyramidal—पिरैमिडी
Pyrene—गुठली
Pyrogenetic—अग्निजात
Pyrometer—उत्तापमापी
Pyrometry—उत्तापमिति
Pyrosphere—उत्तापमंडल
Python—अजगर

Q

Quadrangle—चतुर्भुज
Quadrangular—चतुर्भुजी
Quadrant—चतुर्थांश
Quadratic—वर्ग, द्विघात, द्विघाती
Quadric—द्विघाती
Quadrilateral—चतुर्भुज
Quadruped—चतुष्पाद, चौपाया
Quadruple—चतुर्गुण
Quadruplet—चतुष्क
Quagmire—दलदल
Quail—बटर
Qualitative—गुणात्मक
Quality—गुण, विशेषता, गुणता
Quantic—समघाती
Quantile—विभाजक
Quantitative—मात्रात्मक, परिमाणात्मक
Quantity—मात्रा, परिमाण
Quarantine—संगरोध
Quarry—खुली खान
Quarter—चतुर्थांश, चौथाई
Quartic—चतुर्घाती
Quartile—चतुर्थक
Quartz—स्फटिक
Quasi—अर्ध
Quaternary—चतुष्क, चतुर्थ
Quay—जहाजी घाट
Quench—शमन करना, बुझाना
Quicksand—चोट रेत
Quicksilver—पारा, पारद
Quiescent—शांत
Quinine—कुनैन
Quintuplet—पंचक
Quotation—निवेदित दर या मूल्य
Quotient—भागफल

R

Race—प्रजाति
Racial—प्रजातीय
Radial—त्रिज्य
Radiant—विकिरणी, विकिरण
Radiated—विकीर्ण
Radiation—विकिरण
Radiology—विकिरण चिकित्सा-विज्ञान
Radius—त्रिज्या
Railroad—रेल मार्ग
Railway—रेलमार्ग, रेलवे, रेल
Rancid—विकृतगंधी
Random—यादृच्छिक, संयोगिक, अनियमित
Rank—कोटि
Rare—दुर्लभ
Rarefaction—विरलन, विरलता
Rarefied—विरलित
Raspberry—रसभरी
Rate—दर
Ratio—अनुपात
Rational—परिमेय
Rationalisation—परिमेयकरण
Ravine—खड्ड
Raw—कच्चा
Ray—रश्मि, किरण
Reactance—प्रतिघात
Reactant—अभिकारक
Reaction—प्रतिक्रिया
Reactive—अभिक्रियाशील
Reactivity—प्रतिक्रिया क्षमता
Readings—पाठ्यांक
Reagent—अभिकर्मक
Real—वास्तविक
Realm—परिमंडल
Reason—हेतु
Recapitulation—पुनरावर्तन
Receiver—ग्राही, अभिग्राही
Receiving—ग्राही, अभिग्राही
Receptacle—पात्र
Reception—अभिग्रहण
Receptor—ग्राही
Recessive—अप्रभावी
Reciprocal—अन्योन्य, पारस्परिक
Reclamation—भूमि उद्धार
Reclinate—अवनत
Recoil(*n.*)—प्रतिक्षेप; (*adj.*) प्रतिक्षिप्त
Reconciliation—समाधान
Reconcilable—समाधेय
Record—अभिलेख
Recorder—अभिलेखी
Recording—अभिलेखन
Recovery—उपलब्धि, प्राप्ति, पुनःप्राप्ति
Rectal—मलाशयी
Rectangle—आयत
Rectangular—आयताकार, समकोणिक, समकोणीय

Rectilinear—सरलरेखी, सरल-रेखात्मक
Rectum—मलाशय
Recumbent—शयान
Recurrence—पुनरावृत्ति
Recurrent—पुनरावर्ती, प्रत्यावर्ती
Recurring—आवर्त, आवर्ती
Reddish—रक्ताभ
Reduction—लघुकरण, न्यूनीकरण
Reef—भित्ति, शैल-भित्ति
Reference—निर्देश
Refinement—शोधन, परिष्करण
Refinery—परिष्करण-शाला
Refining—शोधन, परिष्करण
Reflectance—परावर्तकता
Reflected—परावर्तित
Reflection—परावर्तन
Reflectivity—परावर्तकता
Reflector—परावर्तक
Reflex angle—वृहत् कोण
Refraction—अपवर्तन
Refractivity—अपवर्तकता
Refrigerant—प्रशनिक
Refrigerate—प्रशीनित करना
Refrigeration—प्रशीवन
Regeneration—पुनरुद्भवन
Regime—शासन, प्रवृत्ति
Region—प्रदेश, क्षेत्र
Regional—प्रादेशिक
Regionalism—प्रादेशिकता
Regular—नियमित
Regulate—नियंत्रण करना
Regulation—नियंत्रण
Regulator—नियंत्रक
Reinforced—प्रवलित
Reinforcement—प्रवलीकरन, प्रवलन
Relapse—पुनरावर्तन
Related—संबंधित
Relation—संबंध
Relative—आपेक्षिक, सापेक्ष
Relativistic—आपेक्षिकीय
Relativity—आपेक्षिकता
Release—मोचन
Released—निर्मुक्त
Relic—अवशेष
Relict—अवशिष्ट
Remainder—वाकी, शेष, शेषफल
Remains—अवशेष
Remote—सुदूर
Removable—अपनेय
Removal—निष्कासन, अपनयन
Renual—वृक्कीय
Renewal—नवीकरण
Reniform—वृक्काकार
Repair—सुधार
Repeated—वारंवार
Repetition—पुनरावृत्ति
Replaceable—प्रतिस्थापनीय
Replacement—प्रतिस्थापन
Replenishment—पुनःपूर्ति
Replica—प्रतिकृति
Replicate—दोहरा
Replication—प्रतिकृति, पुनरावृत्ति
Report—प्रतिवेदन
Represent—निरूपित करना, निरूपण करना
Representation—निरूपण
Representative (*n.*) प्रतिनिधि; (*adj.*) निरूपक
Reproduction—पुनरुत्पादन
Reproductive—जननीय, जनन-
Reptile—सरीसृप
Requisite—आवश्यक
Research—अनुसंधान
Researcher—अनुसंधायक
Residual—अवशिष्ट
Residue—अवशेष
Resistance—प्रतिरोध, प्रतिरोधन
Resistant—प्रतिरोधक, प्रतिरोधी
Resistivity—प्रतिरोधकता
Resistor—प्रतिरोधक
Resonance—अनुनाद
Resonant—अनुनादी
Resonator—अनुनादक
Resources—साधन, संपदा
Respectively—क्रमानुसार, क्रमशः
Respiration—श्वसन, श्वासोच्छ्वास
Respiratory—श्वसन-
Response—अनुक्रिया
Rest—विराम
Restless—अशांत
Restoration—पुनःस्थापन
Result—परिणाम, फल, नतीजा
Resultant—परिणामी
Resurgence—पुनरुत्थान
Retentive—धारणशील
Retentiveness—धारणशीलता
Retentivity—धारणशीलता
Retina—दृष्टिपटल
Retort—भभका
Retractile—आकुंचनशील
Retractor—आकुंचक
Reversal—उत्क्रमण
Reverse—उत्क्रम
Revolution—परिक्रमण
Revolving—परिक्रामी
Rhomb—समचतुर्भुज
Rhomboidal—चतुष्कोणी
Rhombus—समचतुर्भुज
Rhythm—लय, ताल
Rib—शिरा, पसली, पर्शुका
Ridge—कटक
Rigid—दृढ़
Rigidity—दृढ़ता
Ring—वलय
Riparian—नदतटीय
Riverain—नदतटीय
Riverine—नदीय
Road—सड़क, मार्ग
Rock—शैल, चट्टान
Rocky—शैलमय, शैलीय, चट्टानी, पथरीला
Rod—शलाका, दंड, छड़
Root—मूल, जड़
Rotary—घूर्णी
Rotate—घूर्णन करना, घूमना
Rotating—घूर्णी
Rotation—घूर्णन
Rotational—घूर्णी, घूर्णात्मक
Rotator—घूर्णी
Rotatory—घूर्णनी
Rough—रूक्ष, स्थूल
Route—मार्ग
Rubber—रबड़
Ruby—पद्मराग, माणिक्य, लाल, मरकत
Rule—नियम
Ruling—रेखांकन
Ruminant—रोमंथी
Rumination—रोमंथन
Rural—ग्रामी
Rust—मोरचा, जंग
Rut—मदकाल

S

Sac—थैली, कोश
Sacved basil—तुलसी
Saddle—पल्याण, काठी
Safety—निरापद
Saffron—केसर

Saline—नमकीन, लवणीय, खारा
Salinity—खारापन
Salinometer—लवणमापी
Saliva—लार, लाला
Salivarium—लालाशय
Salivary—लाला-
Salt—लवण
Salting—लवणन
Saltness—लवणता
Saltpetre—शोरा
Sample—प्रतिदर्श, नमूना
Sand—बालू, रेत
Sandstone—बालुकाश्म, बलुआ पत्थर
Sandy—बलुई
Saponification—साबुनीकरण
Sapphire—नीलम
Sapwood—रसहास
Sarcophagous—मांसभोगी
Satellite—उपग्रह
Saturated—संतप्त
Saturate—संतृप्त करना
Saturation—संतृप्ति, संतृप्तीकरण
Saturn—शनि
Saw—आरी, आरा
Scalariform—सीढ़ीनुमा
Scale—मापनी, पैमाना
Scansorial—आरोही
Scar—क्षत-चिह्न
Scarcity—न्यूनता, कमी
Scariose—झिल्लीनुमा
Scarious—झिल्लीनुमा
Scarlet—सिंदूरी
Scarp—कगार
Scarplet—कगारिका
Scatter—प्रकीर्णन
Scattered—प्रकीर्ण
Scattering—प्रकीर्णन
Scent—गंध
Sciatic—नितंब
Science—विज्ञान
Scion—कलम
Sclorosis—ऊतक दृढ़न
Scorpion—बिच्छू, वृश्चिक
Scrapings—खुरचन
Screen—परदा, आवरण
Screw—पेच
Scum—मल
Sea—सागर, समुद्र
Seal—बंद करना, मोहर लगाना, मुंह बंद करना
Sealed—बंद किया हुआ, मुद्रित
Search—खोज
Season—ऋतु, मौसम
Seasonal—मौसमी
Secant—छेदक, छेदक रेखा
Secondary—गौण, माध्यमिक
Secretion—स्रवण, स्राव
Secretory—स्रावी
Sectile—छेद्य
Section—काट, परिच्छेद, खंड, धारा, विभाग
Sediment—तलछट, अवसाद
Sedimentary—तलछटी, अवसादी
Sedimentation—अवसादन
Seed—बीज
Seedling—पौध, बेहन
Segment—खंड
Segmental—खंड युक्त, सखंड
Segmented—खंडित
Segregation—पृथक्करण
Seismic—भूकंपी
Seismo—भूकंप-
Selected—वरित
Selection—वरण
Selective—वरणात्मक
Selectivity—वरण-क्षमता
Selenography—चंद्र-भूगोल
Self—स्वतः, स्व, स्वयं
Semi—अर्ध
Semen—शुक्र
Seminal—शुक्रीय
Senscence—जीर्णता
Senscent—जीर्णमान
Sensation—संवेदन
Sense—संवेद
Sensible—संवेद्य
Sensile—संवेदिका
Sensitive—संवेदी, संवेदनशील
Sensitivity—संवेदनशीलता
Sensory—संवेदी
Separation—पृथक्करण, पृथक्भवन, पार्थक्य, अंतराल
Septal—पटीय
Septum—पट
Sequence—अनुक्रम
Sequent—अनुवर्ती
Sequential—अनुक्रमिक
Serial—क्रमिक
Seriate—पंक्तिबद्ध
Sericulture—रेशम उत्पादन
Series—श्रेणी, माला
Set—समुच्चय
Setiform—शूकाकार
Sewer—मल-नल
Sex—लिंग
Sexual—लैंगिक, यौन
Sexuality—लैंगिकता
Shade—छाया, छटा
Shallow—छिछला, अगंभीर
Shape—आकृति, आकार, रूप
Share—अंश, भाग
Sharp—तीक्ष्ण, तीव्र
Sharpness—तीक्ष्णता, तीव्रता
Sheath—आच्छद, कोष
Sheet—चादर
Sheeted—चादरी
Shell—कवच, खोल, कोश
Shellac—चपड़ा, लाख
Shipment—नौप्रेषण, नौभार
Shock—धक्का, प्रघात
Shoot—प्ररोह
Short sight—निकट-दृष्टि
Short wave—लघु तरंग
Shot—विस्फोट
Shower—बौछार, वर्षण
Shrinkage—संकुचन
Shrub—क्षुप, झाड़ी
Side—पार्श्व
Sidereal—नाक्षत्र
Sieve—चालनी, छन्नी
Sight—दृष्टि, दृश्य
Sign—चिह्न
Signal—संकेत
Significance—सार्थकता
Significant—सार्थक
Silence—नीरवता
Silky—रेशमी
Silver—चांदी, रजत
Silvered—रजतित
Silvering—रजतन
Similar—समरूप
Similarity—समरूपता
Similitude—सादृश्य
Simple—सरल, साधारण, सादा
Simplification—सरलीकरण
Simplify—सरल करना
Simultanity—समकालिकता, युगपता
Simultaneous—समकालिक, युगपत्
Sine—ज्या
Single—एकाकी, अकेला, एकल

Singular—विचित्र
Singularity—विचित्रता
Sinistral—वामावर्त
Sinuous—लहरदार
Sinus—कोटर
Skeletal—कंकाली
Skeleton—कंकाल, अस्थि-पंजर, पंजर
Sketch—रेखाचित्र
Skim—काछना, मल उतारना, मलाई तारना
Skimmed milk—मखनिया दूध
Skull—खोपड़ी
Sky-blue—नभोनील
Skyscraper—गगनचुंबी भवन
Skag—कोह, धातुमल
Slake—बुझाना
Slaked lime—बुझा चूना
Slaggy—धातुमलीय
Slant—तिर्यक् तिरछा
Slope—ढलान, ढाल
Sloping—ढलवाँ
Slump—अवपात
Smoke—धूम, धुआँ
Smooth—चिकना
Snail—घोंघा
Snow—हिम
Soak—भिगोना
Soap—साबुन
Social—सामाजिक
Sociology—समाज-विज्ञान
Soft—मृदु, नरम, कोमल
Soil—मिट्टी, मृदा, भमि
Solar—सौर
Sofar system—सौर परिवार
Soider—टाँका, झाल
Solid—ठोस, घन
Solidification—जमना, पिंडन, जमाना
Solidify—जमना, पिंडित होना, जमाना
Solitary—अकेला, एकल
Solstice—अपनांत, संक्रान्ति
Solubility—विलेयता, विलनशीलता, घुलनशीलता
Solubilize—विलेयीकरण
Soluble—विलेय
Solute—विलेय
Solution—सावन, हल
Solve—हल करना, समाधान करना
Sonorous—ध्वानिक
Sound—ध्वनि, शब्द
Sounding—गहराई नापना, गंभीरता मापन
Sour—खट्टा, अम्ल
Source—उद्गम, स्रोत
Space—आकाश, अंतरिक्ष, दिक्, स्थान, समष्टि; (*adj.*) आकाशीय
Spacing—अंतरण, अंतराल
Spark—चिनगारी, स्फुलिंग
Spatial—आकाशीय, स्थानिक
Spawn—जलांडक, अंडजनन
Special—विशिष्ट, विशेष
Specialization—विशिष्टीकरण
Species—जाति
Specific—आपेक्षिक, विशिष्ट, विशेष
Specificity—विशिष्टता
Specified—निर्दिष्ट
Specimen—प्रतिरूप, निदर्श, नमूना
Speed—चाल
Sperm—शुक्राणु
Spermary—शुक्रग्रंथी
Spermatogenesis—शुक्रजनन
Sphere—गोला
Spherical—गोलाकार, गोलीय
Spheroid, Spheroidal—गोलाभ
Spine—रीढ़, मेरुदंड
Spinescent—शूलाग्री
Spinous—शूलमय
Spiral—सर्पिल
Spleen—प्लीहा, तिल्ली
Splendent—दीप्तिमान
Split—विभक्त
Spontaneity—स्वत:प्रवर्तित
Spontaneous—स्वत:, स्वत: प्रवर्तित
Spore—बीजाणु
Spot—बिंदु, धब्बा
Spotted—चकत्तेदार
Spray—फुहार
Spring—कमानी
Sprouting—अंकुरण
Spurious—मिथ्या
Square—वर्ग
Square root—वर्गमूल
Stable—स्थायी
Stabilized—स्थायीकृत
Stability—स्थायित्व
Stabilization—स्थायीकरण
Stabilizer—स्थायीकारी
Stage—मंच, अवस्था
Stagnant—बँधा, रुद्ध
Stagnation—प्रगतिरोध
Stalk—वृंत
Stamen—पुंकेसर
Standard—मानक, प्रामाणिक
Standaradized—मानकीकृत
Standardization—मानकीकरण
Staple (*n.*)—रेशा; (*adj.*) प्रमुख
Stargish—तारामीन
Starter—प्रवर्तक
State—स्थिति, अवस्था
Static—स्थिर, स्थैतिक
Statics—स्थिति-विज्ञान, स्थैतिकी
Stationary—अचल, अप्रगामी, स्तब्ध, अचल
Statistical—सांख्यिकीय
Statistician—सांख्यिकीविद्
Statistics—सांख्यिकी
Steady—अपरिवर्ती, अचर
Steel—इस्पात, फौलाद
Steep—सीधा ढाल, खड़ा ढाल
Stellar—तारकीय
Stem—स्तंभ, तना
Stereo—त्रिविम
Sterile—वंध्य, बाँझ
Sterility—वंध्यता, बाँझपन
Sterilization—बंध्यकरण
Sternum—उरोस्थि
Stigmatic—बिंदुक
Stigmatism—बिंदुकता
Sting—दंश, डंक
Stomach—जठर, आमाशय
Stone—अष्टि, गुठली
Stopper—डाट
Storm—झंझावात तूफान
Straight—ऋजु, सीधा, सरल
Strainer—छन्ना
Stratification—स्तरण, स्तरविन्यास
Stratified—स्तरित
Stratify—स्तरित होना
Stratum—स्तर
Stream—सरिता, धारा
Stream line—प्रवाह-रेखा, धारा-रेखा
Strength—सामर्थ्य
Stress—प्रतिबल
Stria—रेखांकन, खरोंच
Striate—रेखित, धारीदार
Striation—रेखांकन, पट्टी, धारी
Stridulation—घर्षण-ध्वनि
String—रज्जु, तार, डोर, डोरी, सूत्र
Striped—रेखित, धारीदार
Strong—प्रबल, बलवान्

Structural—संरचनात्मक
Structure—संरचना
Study—अध्ययन
Stump—ठूंठ
Styliform—शूकाकार
Subclass—उपवर्ग
Subdivided—प्रविभाजित
Subdivision—प्रविभाजन
Sub—अवः, उप
Subjective—व्यक्तिनिष्ट
Submarine—पनडुब्बी
Submerged—निमग्न
Submersion—निमज्जन
Subsequent—परवर्ती
Subsidiary—गौण, सहायक
Sub-species—उपजाति
Substitute—प्रतिस्थापन करना, प्रति-स्थापित करना
Substituent—प्रतिस्थापी
Substitution—प्रतिस्थापन
Substratum—अधःस्तर, आधार
Subtended—कांक्षांतरित, अंतरित
Subtract—व्यवकलन, घटाना
Subtraction—व्यवकलन, घटाना
Suburb—उपनगर
Subway—सुरंगपथ
Succession—अनुक्रम, अनुक्रमण
Successional—अनुक्रमिक
Successive—उत्तरोत्तर
Successively—उत्तरोत्तर
Succulent—गूदेदार रसदार
Suck—चूसना
Sucker—चूषक
Sucking—चूषण
Sucrose—ईक्षु-शर्करा
Suction—चूषण
Sufficiency—पर्याप्तता
Sulphur—गंधक
Sulphurous—गंधकी
Sum—योगफल, जोड़
Summarization—संक्षेपण
Summation—संकलन
Summit—शिखर
Sun-spot—सूर्य-कलंक
Sunflower—सूरजमुखी, सूर्यमुखी
Sunstone—सूर्यकांत
Supercooling—अतिशीतलन
Superficial—पृष्ठीय
Superfine—अतिसूक्ष्म
Supergiant—महादानव
Superheating—अतितापन
Superinposition—अध्यारोपण
Superior—ऊर्ध्व, ऊर्ध्ववर्ती
Supersonic—पराध्वनिक
Supination—उत्तानन
Supine—उत्तान
Supplement—संपूरक
Supplementary—संपूरक
Supply—संभरण
Support—टेक, आधार
Supposed—काल्पित
Supposition—कल्पना
Suppressed—विरुद्ध
Suppressor—निरोधी
Surface—पृष्ठ, बहिस्तल सतह
Surge—महोर्मि
Surgery—शल्य कर्म, शल्य-विज्ञान
Survey—सर्वेक्षण
Surveying—सर्वेक्षण
Survival—उत्तरजीविता, अतिजीविता
Suspended—निलंबित, लटका हुआ
Suspension—निलंबन
Suspensor—निलंबक,
Suspensory—निलंबक, निलंबन
Swarm—दल, वृंद, झुंड
Swelling—फूलना, शोथ, सूजन
Swirl—भँवर
Symbiosis—सहजीवन
Symbiont—सहजीवी
Symbiotic—सहजीवी
Symbol—प्रतीक
Symbolical—प्रतीकात्मक
Symmetrical—सममित
Symmetry—सममिति
Symptom—लक्षण
Synchronisation—तुल्यकालन
Synchronism—तुल्यकालत्व
Synchronous—तुल्यकालिक
Synclinal—अभिनत
Syncline—अभिनत
Syngenesis—सहजनन
Syngenetic—सहजात
Synthesis—संश्लेषण
Synthetic—संश्लिष्ट, सांश्लेषिक, कृत्रिम
Syrup—शर्बत, चाशनी
System—निकाय, तंत्र, पद्धति, प्रणाली
Systematic—क्रमबद्ध
Systemic—सर्वांगी
Systole—प्रकुंचन

T

Table—मंच, सारणी
Tableland—पठार
Tabular—सारणीबद्ध
Tabulation—सारणीयन
Tailed—सपुच्छ
Tallow—चरबी, पशुवसा
Tangent—स्पर्शरेखा
Tangential—स्पर्शरेखीय
Tap root—मूसला जड़
Target—लक्ष्य
Teats—चुचुक
Technical—तकनीकी, प्राविधि
Technician—तकनीकज्ञ, प्रविधिज्ञ
Technique—तकनीक, प्रविधि
Technology—शिल्प-विज्ञान
Telescope—दूरबीन, दूरदर्शक
Telescopic—दूरदर्शी
Telethermal—दूरतापीय
Temperate climate—शीतोष्ण जलवायु
Temperature—ताप, तापमान
Temporal—कालिक
Temporary—अल्पकालिक, अस्थायी, अल्पस्थायी
Tendency—प्रवृत्ति
Tenor—औसत प्रतिशत
Tensility—तन्यता
Tension—तनाव
Tensional—तनाव-मूलक
Tentacle—स्पर्शक
Tepid—गुनगुना, अल्पोष्ण
Termite—दीमक
Terrace—वेदिका
Terrestrial—स्थलीय, पार्थिव, भौमिक
Territorial—प्रादेशिक
Territory—प्रदेश, क्षेत्र
Tertiary—तृतीय, तृतीयक
Test—परीक्षण, परख
Tetra—चतुष्-
Tetragonal—चतुष्कोणीय
Texture—गठन, बुनावट
Theorem—प्रमेय
Theoretical—सैद्धांतिक
Theory—सिद्धांत, वाद
Thermal—उष्मीय
Thermion—तापायन
Thermionic—तापायनिक
Thermo-electricity—ताप-विद्युत
Thermometer—तापमापी

Thermoscope—तापदर्शी
Thoracic—वक्षीय
Thorax—वक्ष
Thorn—कंटक, काँटा
Threshhole—देहली
Three-demensional—त्रिविम
Thunder—मेघगर्जन, गरज
Tidal—ज्वारीय
Tide—ज्वार, ज्वार-भाटा
Tier—सोपान
Tilage—जोताई
Tilted—नत
Time—समय, काल, अवधि
Timing—काल-मापन
Tint—आभा
Tissue—ऊतक
Tolerance—सहन
Toothed—दंतुर
Topographical—स्थलाकृतिक
Topography—स्थलाकृति
Torrid zone—उष्ण कटिबंध
Tortuous—कुटिल
Total—जोड़, योग
Touch-me-not—गुलमेंहदी
Toxic—विषैला
Toxin—जीव-विष
Trace—अनुरेख, अनुरेखन
Tracing—अनुरेखन
Track—लीथ, पगडंडी, राह, पथ
Tract—प्रदेश, क्षेत्र
Trade—व्यापार
Transference—स्थानांतरण
Transferred—स्थानांतरित
Transform—रूपांतर
Transformation—रूपांतरण, रूपांतर
Transforming—रूपांतरण
Transgression—अतिक्रमण
Transgressive—अतिक्रामी
Transition—संक्रमण
Transitivity—संक्रमणता
Transitory—क्षणिक
Transmarine—पारसमुद्री
Transmission—संचरण, पारगमन, प्रेषण, संचारण
Transmit—प्रेषण करना, संचार करना
Transmutation—तत्वांतरण
Transparency—पारदर्शिता, पारदर्शकता, पारदर्शी, चित्र
Transparent—पारदर्शी, पारदर्शक,
Transplantation—प्रतिरोपण
Transplanting—प्रतिरोपण
Transversal—अनुप्रस्थ, तिर्यक, छेदी रेखा
Transverse—अनुप्रस्थ, आड़ा
Treatment—विवेचन, उपचार, अभिक्रिया
Trend—प्रवृत्ति, उपनति
Trial—जाँच, परख
Triangle—त्रिभुज, त्रिकोण,
Triangular—त्रिभुजीय, त्रिकोणीय
Triangulation—त्रिभुजन
Tribe—आदिम जाति
Tributary—सहायक नदी
Trigonal—त्रिकोणीय
Trigonometric—त्रिकोणमितीय
Trigonometry—त्रिकोणमिति
Tripartite—त्रिभागी
Triple—त्रिगुणा, त्रिधा, त्रि-, त्रिक
Triploid—त्रिगुणित
Trisect—समत्रिभाजित करना
Trisection—समत्रिभाजन
Trochoidal—चक्रीय, चक्री
Tropic of cancer—कर्क-रेखा
Tropic of capricorn—मकर रेखा
Tropics—अयन-मंडल, उष्ण कटिबंध
Tropical region—उष्ण कटिबंधीय प्रदेश
True—वास्तविक, यथार्थ, तद्रूप, यथार्थता
Trunk—कांड, स्तम्भ
Truth—यथार्थता, सत्यता
Tube—नली, नलिका
Tuber—कंद
Tuberose—कंदाकार
Tuberous—कंदिल, गाँठदार
Tubular—नलिकाकार
Tubule—नलिका
Tumour—अर्बुद
Tuned—समस्वरित
Tunnel—सुरंग
Turbulence—विक्षोभ
Turbulent—विक्षुब्ध
Turgid—स्फीत
Turmeric—हल्दी, हरिद्रा
Turning point—वर्तन-बिंदु
Turquoise—फीरोजा
Turtle—कछुआ, कच्छप
Twilight—सांध्य प्रकाश
Twin—यमज
Twiner—वल्लरी, वल्ली
Twist—ऐंठन, मरोड़
Type—प्ररूप
Typical—प्रारूपिक, प्ररूपी

U

Ultimate—चरम, अंतिम
Ultramarine—समुद्रपार
Umbel—पुष्पछत्र
Unassorted—अवर्गित
Uncertainty—अनिश्चितता
Unctuous—चिक्कण
Underground—भूमिगत
Undermine—तलोच्छेदन
Undetermined—अनिर्धारित
Undulate—तरंगित
Undulating—तरंगित
Undulation—तरंगण
Undulatory—तरंगित
Unequal—असमान
Uneven—असम, विषम
Ungrouped—अवर्गीकृत
Ungulate—खुरदार
Uni—एक
Uniform—एकसमान
Uniformitarianism—एकरूपतावाद
Uniformity—एकसमानता
Unilateral—एकपार्श्वी, एक पार्श्विक
Union—संघ
Unison—स्वरैक्य, स्वरमेल
Unit—मात्रक, इकाई, एकक, एकांक
Unitary—ऐकिक
Universal—सार्वत्रिक, सार्विक
Universe—विश्व
Unknown—अज्ञात
Unlike—विजातीय, विपरीत
Unlimited—असीमित
Unproductive—अनुत्पादक
Unsaturation—असंतृप्ति
Unstable—अस्थायी
Unstratified—अस्तरित
Upheaval—प्रोत्थान
Upland—अधित्यका, उच्चभूमि
Uplift—उत्थान
Upthrow—ऊर्ध्वपात
Upturned—उलटा
Urban—नगरीय, शहरी
Ureter—मूत्रवाहिनी
Urethra—मूत्रमार्ग
Urinary—मूत्रीय
Urine—मूत्र
Uterus—गर्भाशय

V

Vacuity—फुहर, रिक्तता
Vacuum—निर्वात
Vagina—आच्छद, योनि
Valence, Valency—संयोजकता
Valid—मान्य
Validity—मान्यता, वैधता
Valley—घाटी
Valorization—मूल्य स्थिरीकरण
Value—मूल्य, मान
Vaporisation—वाष्पन
Vapour—वाष्प
Variability—परिवर्तनशीलता, परिवर्तिता
Variable—परिवर्तनशील, परिवर्तन
Variation—विभिन्नता, विविधता, परिवर्तन
Variegated—चितकबरा
Variegation—चितकबरापन
Variety—किस्म, उपजाति
Varnish (*n.*)—वार्निश; (*v.*) वार्निश करना
Vary—परिवर्तित होना, विचरित होना
Varying—परिवर्ती
Vat—कुंड
Vegetable—वनस्पति
Vegetation—वनस्पति, पेड़-पौधे
Vein—शिरा
Velocity—वेग
Vena cava—महाशिरा
Venation—शिरा विन्यास
Veneer—पृष्ठावरण
Venom—विष, जहर
Venomous—विषैला
Vent—द्वार, मुख, निकास
Ventilation—संवातन
Ventral—अभ्यक्ष
Verifiable—सत्यापनीय
Verification—सत्यापन, जांच
Verify—सत्यापित करना, जांच करना
Vermicular—कृमिरूप
Vermiform—कृमिरूप
Vermilion—सिंदूर
Vermin—पीड़क जंतु
Vernalization—वसंतीकरण
Vertebra—कशेरुक
Vertebral—कशेरुक
Vertebrate—कशेरुकी
Vertex—शीर्ष
Vertical—उर्ध्वाधर, उदग्र, खड़ा
Vericle—पुटिका
Vessel—वाहिका
Vestige—अवशेष
Vestigial—अवशेषी
Vibration—कंपन
Vigour—ओज
Vinegar—सिरका
Violet—बैंगनी
Virtual—कल्पित, आभासी
Visibility—दृश्यता
Visible—दृश्य
Vision—दृष्टि
Visual—चाक्षुष
Vital—जैव, जीव-संबंधी
Vitality—जीवन-शक्ति
Vitrification—काचन
Void—रिक्ति
Volatile—वाष्पशील
Volatility—वाष्पशीलता
Volatilization—वाष्पीकरण
Volcanic—ज्वालामुखीय
Volcano—ज्वालामुखी
Volcanology—ज्वालामुखी-विज्ञान
Volume—आयतन
Volumetric—आयतनी
Voluntary—ऐच्छिक
Volution—वलन
Vortex—भ्रमिल
Vorticity—भ्रमिलता
Vulcanism—ज्वालामुखी उद्भव
Vulgar fraction—साधारण भिन्न
Wage-earner—मजदूर
Wall—भित्ति, दीवार
Wandering—परिभ्रमी
Wavehouse—गोदाम
Warm—गुनगुना
Warping—संवलन
Wart—मस्सा
Warty—मस्सेदार
Wasp—बर्रे
Waste—रद्दी
Water clock—जल घड़ी
Water level—जलतल
Water-tight—जल-रोधी
Water weed—जल वनस्पति
Wave—तरंग
Wavy—तरंगित, ऊर्मिल, लहरदार
Wax—मोम
Waxy—मोमी
Weak—तनु, दुर्बल
Weather—मौसम
Weathering—अपक्षय
Webbed—जालयुक्त
Weight—भार, तौल, वजन, बाट
Well-ordered—सुक्रमित
Wetness—गीलापन
Whirl—चक्कर
Whirlpool—भँवर
Whirled—चक्करदार
Wild basil—वन तुलसी
Wilting—म्लान होना, कुम्हलाना, मुरझाना
Wind—वात, पवन
Windmill—पवन-चक्की
Winged—सपक्ष
Wire—तार
Withdrawal—अपनयन
Womb—गर्भाशय
Woolly—लोमश
Worker—श्रमिक

X

X-ray—एक्स-किरण

Y

Yearling—एकवर्षी
Yeast—खमीर
Yield—उत्पाद, प्राप्ति, लब्धि, उपज
Yolk—पीतक

Z

Zenith—खमध्य, शिरोबिंदु
Zero—शून्य
Zodiac—राशिचक्र
Zonal—मंडलीय, कटिबंधीय
Zone—खंड, प्रदेश, क्षेत्र, मंडल, कटिबंध
Zoning—मंडलन
Zoological garden—चिड़ियाघर
Zoogeography—प्राणि-भूगोल
Zoologist—प्राणि-विज्ञानी
Zoology—प्राणि-विज्ञान
Zooparasite—प्राणि-परजीवी।
Zoophagous—प्राणिभक्षी

The End